हिन्दी राष्ट्रभाषा कोश

हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वानों की सहायता से
सम्पादित

संकलनकर्ता

विश्वेश्वरनारायण श्रीवास्तव
एम० ए०, एल्-एल० बी०, साहित्यरत्न

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'
संयुक्त सम्पादक "सरस्वती"

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९५२

मूल्य [illegible]

मुद्रक तथा प्रकाशक—के० मित्रा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रस्तावना

शब्दों के आकार-प्रकार और प्रयोग में समय-समय पर रूपान्तर और परिवर्त्तन होता रहता है। यही नहीं, कुछ नवीन शब्द जहाँ प्रयोग में आने लगते हैं, वहीं कुछ प्राचीन शब्दों का प्रयोग भी कम होने लगता है। ऐसी दशा में यह नितान्त आवश्यक है कि किसी भी भाषा के शब्दों को एकत्र कर सुरक्षित रक्खा जाए। इससे दो लाभ होते हैं। एक तो भाषा का रूप सुरक्षित रहता है, दूसरे इसकी सहायता से भाषा के रूप में निखार भी आता रहता है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी में यों तो अनेक कोश सुलभ हैं; किन्तु इनमें से इने-गिने कोश ही ऐसे हैं, जो सही अर्थ में कोश की विशेषताओं को चरितार्थ करते हैं। किसी में अनावश्यक रूप से शब्दों की भरमार मिलेगी, तो किसी में शब्दार्थ इतना विस्तृत अथवा संक्षिप्त मिलेगा कि कोश से लाभ उठानेवालों को खीझ हो उठती है। हम यह दावा नहीं करते कि प्रस्तुत कोश सर्वांगपूर्ण है; किन्तु इसके संकलन और संपादन में यह ध्यान अवश्य रखा गया है कि प्राचीन और अर्वाचीन गद्य-पद्य में प्रयुक्त होनेवाले अधिक-से-अधिक और नवीनतम शब्द संगृहीत किए जाएँ। प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों का भी यथास्थान समावेश किया गया है और प्राचीन-अर्वाचीन प्रचलित मुहाविरे भी दे दिए गए हैं। फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी हमने इस कोश में स्थान दिया है।

अन्त में भारतीय संविधान परिषद् द्वारा स्वीकृत संविधान शब्दावली भी हमने दे दी है, जिससे इस कोश की उपयोगिता अपने-आप अधिक हो गई है। हमें विश्वास है, जन-साधारण, छात्रवर्ग एवं हिन्दी-प्रेमी इस कोश से लाभान्वित होंगे।

जिन कोशों और ग्रन्थों से सहायता लेकर हमने प्रस्तुत कोश निर्मित किया है, उनके सुयोग्य लेखकों, सम्पादकों और प्रकाशकों के प्रति हम अपनी आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

—संकलनकर्त्ता

संकेत-परिचय

अंग्रे०—अंग्रेजी शब्द
अ०—अरबी शब्द
अनु०—अनुकरण शब्द
अव्य०—अव्यय
उप०—उपसर्ग
क्रि० अ०—क्रिया अकर्मक
क्रि० वि०—क्रियाविशेषण
क्रि० स०—क्रिया सकर्मक
तु०—तुरकी शब्द
दे०—देखिए
पुं०—पुंल्लिंग
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रे०—प्रेरणार्थक रूप
फा०—फारसी शब्द
यू०—यूनानी शब्द
पुर्त्त०—पुर्त्तगाली शब्द
बहु०—बहुवचन
मुहा०—मुहाविरा
यौ०—यौगिक (दो या अधिक शब्दों के पद
वि०—विशेषण
व्या०—व्याकरण
सं०—संस्कृत
सं० पुं०—संज्ञा पुंल्लिंग
सर्व०—सर्वनाम
स्त्री०—स्त्रीलिंग
*—इस चिह्नवाले शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होते हैं।
†—इस चिह्नवाले शब्दों का प्रयोग प्रांतीय है।
‡—इस चिह्नवाले शब्द ग्राम्य हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक—के० मित्रा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अ

अ—संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का प्रथम वर्ण है। कंठ से इसका उच्चारण होने के कारण इसको कण्ठ्य वर्ण कहते हैं। इस अक्षर की सहायता के बिना व्यंजनों का अलग उच्चारण नहीं हो सकता; इसी से वर्णमाला में क, च, त, प आदि वर्ण अकारयुक्त समझे, लिखे और बोले जाते हैं। शब्द के पूर्व आकर यह विपरीत अर्थ सूचित करता है, यथा—अकारण, अयोग्य। (सं०) पुं०—विष्णु, कीर्ति, सरस्वती ।

(वि०) निषेध, थोड़ा, अभाव, कृपा, भेद। गणित में अ १ संख्यावाची है। व्यंजन वर्ण से आरम्भ होनेवाले शब्दों के पहले इसे जोड़ देने से उस शब्द का अर्थ निषेधसूचक या विपरीत हो जाता है। जैसे—असफल।

अ—उप० विशेषण और संज्ञा शब्दों के पहले लगकर यह उनके अर्थों में परिवर्तन करता है। यह जिस शब्द के पहले लगाया जाता है, उस शब्द के अर्थ का प्राय: अभाव सूचित करता है। जैसे—अधर्म, अन्याय, अचल। कहीं कहीं यह अक्षर शब्द के अर्थ को दूषित भी करता है। जैसे—अभागा, अकाल। स्वर से आरम्भ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब इस अक्षर को लगाना होता है, तब उसे "अन" कर देते हैं। जैसे—अनंत, अनेक, अनीश्वर।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. अग्नि। ३. विराट। ४. ब्रह्मा। ५. विश्व। ६. ललाट। ७. वायु। ८. इन्द्र। ९. कुबेर। १०. अमृत। ११. कीर्त्ति। १२. सरस्वती। वि० १. रक्षा करनेवाला। २. पैदा करनेवाला ।

—संज्ञा पुं० अउर—और (ब्रजभाषा या
में) १. आक, चिह्न, संकेत,
, अपराध, पर्वत, पाप, समीप, छाप।
लेख। लिखावट। ३. संख्या का चिह्न,
१, २, ३। आँकड़ा। अदद। ४. भाग्य।
दिठौना=नजर से बचाने के लिए
के माथे पर लगाई जानेवाली काजल की बिन्दी। ६. धब्बा। दाग। ७. नौ की संख्या (क्योंकि संख्या के अंक ९ ही हैं)। ८. नाटक का एक अंश जिसके अंत में यवनिका गिरा दी जाती है। ९. दस प्रकार के रूपकों में से एक। १०. गोद। ११. शरीर। अंग। १२. पाप। दुख। १३. बार। दफा।

मुहा०—अंक लेना, देना या लगना=गले लगना। आलिंगन करना। अंक भरना=हृदय से लगाना। लिपटाना।

अंककार—संज्ञा पुं० युद्ध या द्वन्द्व जीत अथवा हार का निर्णायक ।

अंकगणित—संज्ञा पुं० अंकों से संबंध रखनेवाली बातों का ज्ञान करानेवाली विद्या। अंक-विज्ञान। हिसाब। दे० "अँकरोरी"। संख्या की मीमांसा ।

अँकटा—संज्ञा पुं० (दे०) छोटा कंकड़ ।

अँकटी—संज्ञा स्त्री० छोटी कंकड़ी ।

अँकड़ी—संज्ञा स्त्री० १. हुक। कटिया। २. तीर का टेढ़ा फल। टेढ़ी गाँसी। ३. लता-बेल। ४. लग्गी। फल तोड़ने का बाँस का बड़ा डंडा।

अँहुड़ी—संज्ञा स्त्री० लता-विशेष। बाकला। बरकला।

अंकधारण—संज्ञा पुं० [वि० अंकधारी] चिह्नों को दगवाना। गरम धातु से चक्र, त्रिशूल आदि के चिह्न बाँह पर छपवाना। (वैष्णव)।

अंकन—संज्ञा पुं० [वि० अंकनीय, अंकित, अंक्य] लिखने की क्रिया। गिनती करने की क्रिया। १. निशान करना। २. चिह्न या लिखना। ३. गरम धातु से शंख, चक्र या त्रिशूल के चिह्न बाँह पर छपवाना। ४. अपभ्रंश—आँकना अर्थात् अनुमान करना।

अंकना—क्रि० लिखना, छापना, संकेत करना, चिह्न करना, मोलभाव करना। आँका या कूता जाना। अनुमान करना।

अंकपलई—संज्ञा स्त्री० एक वह विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रखकर उनके समूह से वाक्य के समान तात्पर्य निकालते हैं।

अंकपाली–संज्ञा स्त्री० दाई। धाय।

अंकमाल–संज्ञा पुं० १. भेंट। २. आलिंगन। गले लगना।

अंकमालिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटी माला या हार। २. भेंट। आलिंगन।

अँकरा–संज्ञा पुं० एक तृण (घास) जो गेहूँ के पौधों के साथ उगता है।

अँकरी–संज्ञा स्त्री० अँकरा।

अँकरोरी, अँकरौरी––संज्ञा स्त्री० खपड़े या कंकड़ का छोटा टुकड़ा। दे०–अँकटा, अँकटी।

अँकवार, अंकवार––संज्ञा स्त्री० काँख, कोख। दे० "अंक" [छाती। गोद।]

मुहा०––अँकवार देना या भरना गले लगाना। छाती से लगाना। भेंटना। आलिंगन करना। अंकवार भरी रहना=गोद में बच्चा रहना अर्थात् संतान का रहना। जैसे–बहू तुम्हारी अँकवार भरी रहे।–– आशीर्वाद।

यौ०––भेंट अँकवार=आलिंगन। मिलना।

अकवारना क्रि० स० गले लगाना। आलिंगन करना।

अंकविद्या–संज्ञा स्त्री० अंकों, संख्याओं का हिसाब। दे० "अंकगणित"।

अँकाई–संज्ञा स्त्री० १. आँक। कूत। अटकल। अनुमान। २. उपज में मे किसान और जमींदार के हिस्सों का बँटवारा।

अँकाना–क्रि० स० अंदाज लगवाना। कूत लगवाना। मूल्य निश्चित कराना। २. जँचवाना, परीक्षा कराना।

अँकाव–संज्ञा पुं० आँकने का काम। कुताई। मोल-भाव ठहराना।

अंकावतार–सं० पुं० पात्रों द्वारा नाटक के एक अंक के अंत में अगले अंक के अभिनय का संकेत या सूचना।

अंकित–वि० १. निशान किया हुआ। चिह्नित। २. लिखित। ३. वर्णित। ४. मुद्रित।

अँकुड़ा–संज्ञा पुं० दे० अँकड़ी। १. लोहे की छड़ जिसका एक सिरा टेढ़ा या झुका हुआ होता है जो दूर से वस्तुओं को खींचने के काम में आती है, जैसे भट्ठी में से काँच का सामान खींचने में। २. गाय-बैल के पेट की मरोड़ या दर्द या ऐंठन या ऐंचा। ३. पायजा। कुलाबा। ४. लोहे का एक गोल पच्चड़ जो किवाड़ की चूल में ठुका रहता है।

अँकुड़ी–संज्ञा स्त्री० १. हुक। कटिया। २. लोहे की झुकी हुई छड़।

अँकुड़ीदार–वि० जिसमें अटकने के लिए अँकुड़ी, कटिया या हुक लगी हो।

संज्ञा पुं० एक विशेष शैली का कसीदा। गड़ारी।

अंकुर–संज्ञा पुं० [क्रि० अंकुरना, वि० अंकुरित] १. अँखुआ। गाभ। अँगूसा। २. कनखा। डाभ। कल्ला। कोंपल। आँख। ३. कली। ४. नोक। ५. रक्त। खून। रुधिर। ६. रोयाँ। ७. पानी। ८. मांस के छोटे-छोटे लाल दाने, जो घाव भरते समय उस पर निकल आते हैं––भराव। अंगूर। ९. अंकुश। फुनगी।

अंकुरना, अँकुराना*–क्रि० अ० उगना। जमना। अंकुर फोड़ना।

सं० पुं० चिड़ियों का घोंसला। नीड।

अंकुरित–वि० उगा हुआ। जिसमें अंकुर हो गया हो।

अंकुरितयौवन–वि० युवावस्था की पहली दशा। यौवन का आरम्भ।

अंकुरितयौवना–वि० युवती। ऐसी स्त्री जिसमें यौवन के चिह्न दिखलाई पड़ने लगे हों।

अंकुश–संज्ञा पुं० १. आँकुस। हाथी को हाँकने का भाला। लोहे का एक शस्त्र जो प्रायः एक हाथ लंबा होता है और जिसके एक सिरे पर भाले के समान नोक होती है। यह हाथी हाँकने के काम में आता है। २. मुड़ा हुआ काँटा। ३. दबाव। रोक। प्रतिबंध।

अंकुशग्रह–संज्ञा पुं० १. फीलवान। महावत। हाथीवान। २. निषादी।

अंकुशदंता–वि० ऐसा हाथी जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा नीचे की ओर झुका हो। गुंडा।

अँकुसी–संज्ञा स्त्री० १. हुक। कँटिया। झुकी या टेढ़ी कील जिसमें कोई चीज़ फँसाई या लटकाई जाय। २. टढ़ी छड़ जिसे बाहर

से किवाड़ के छेद में डालकर सिटकिनी खोलते हैं।

अंकोट–संज्ञा पुं० एक पहाड़ी पेड़। दे० "अंकोल"।

अँकोर–संज्ञा पुं० १. गोद। अंक। दे० "अँकवार"। २. नजर। भेंट। ३. रिश्वत। घूस। ४. कलेवा या खुराक जो खेत में काम करनेवालों के पास भेजा जाता है। छाक। कोर। दोपहर।

अंकोरना–(पाठभेद-अकोरना) क्रि० स० १. गरम करना। भूजना। २. घूस लेना।

अँकोरी–स्त्री० १. आलिंगन। २. गोद।

अंकोल–सं० पुं० एक पहाड़ी पेड़। "अंकोर"।

अंक्य–वि० निशान लगाने के उपयुक्त। चिह्न करने योग्य। अंक लगाने योग्य।

संज्ञा पुं० १. दागने के योग्य (अपराधी)। २ तबला पखावज आदि बाजे जो गोद में रखकर बजाये जाते हैं।

अँखड़ी–स्त्री० नेत्र। दे० "आँख"।

अँख-मीचनी–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौली"।

अँखिया–संज्ञा स्त्री० १. हथौड़ी से ठोंक ठोंककर नक्काशी करने का ठप्पा या कलम। †२. दे० "आँख"।

अँखुआ–संज्ञा पुं० दे० "अंकुर"। १. बीज से फूटकर निकली हुई वह टेढ़ी नोक जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं। अंकुर। २. बीज से निकली हुई पहली कोमल बँधी पत्ती। कल्ला। डाभ। कोंपल।

अँखुआना–क्रि० अ० उगना। जमना। अंकुर फेंकना या फोड़ना।

अंग–संज्ञा पुं० १. देह। शरीर। बदन। गात्र। २. अवयव। ३. खंड। अंश। भाग। टुकड़ा। ४. प्रकार। भेद। भाँति। ५. उपाय। ६. पक्ष। अनुकूल पक्ष। सहायक। सुहृद। तरफदार। ७. प्रत्यययुक्त शब्द का प्रत्यय-रहित भाग। प्रकृति। (व्या०)। ८. जन्म-लग्न। ९. वह साधन जिसके द्वारा कोई काम हो। १०. बिहार में भागलपुर के आसपास के प्रदेश का पुराना नाम जिसकी राजधानी चंपापुरी थी। ११. एक संबोधन। प्रियवर। प्रिय। १२. छः की संख्या। १३. ओर। पार्श्व। १४. नाटक में अप्रधान रस। १५. नाटक में नायक या अंगी का कार्यसाधक पात्र। १६. सेना के हाथी, घोड़े, रथ और पैदल चार विभाग। १७. योग के आठ विधान। १८. राजनीति के स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना सात अंग। १९. शास्त्र-विशेष। वेदांग। जैन शास्त्र-विशेष। २०. बलि राजा का क्षेत्रज पुत्र।

मुहा०–अंग छूना = माथा छूकर कसम खाना। अंग टूटना = अँगड़ाई आना। आलस्य से जँभाई के साथ अंगों का फैलाया जाना। अंग तोड़ना = अँगड़ाई लेना। अंग लगना या लगाना = छाती से लगना। आलिंगन करना। लिपटना। अंग लगना या बलवान् करना = १. शरीर को पुष्ट करना (भोजन का) जैसे, भोजन का अंग लगना। २. काम में आना। ३. हिलना। परचना। अंग गोदना = शरीर के किसी भाग में तिल के नकली दाग बनवाना। अंग करना = अंगीकार करना।

वि० १. गौण। अप्रधान। २. उलटा। दे०–'अंगराग', 'अंगराज'।

अंगग्रह–संज्ञा पुं० अकड़वायु। वातरोग।

अंगज–वि० शरीर से पैदा हुआ।

संज्ञा पुं० [स्त्री० अंगजा] १. बेटा। पुत्र। लड़का। २. पसीना। ३. केश। बाल। रोम। ४. काम, क्रोध इत्यादि विकार। ५. साहित्य में कायिक अनुभाव। ६. कामदेव। ७. मद। ८. रोग।

अंगजा–संज्ञा स्त्री० पुत्री। कन्या। बेटी।

अंगजाई–संज्ञा स्त्री० दे० "अंगजा"।

अंगड़-खंगड़–संज्ञा पुं० १. लोहे, पत्थर, ईंट, लकड़ी आदि का टूटा-फूटा सामान।

वि० २. टूटा-फूटा। ३. गिरा-पड़ा।

अँगड़ाई–संज्ञा स्त्री० शरीर या बदन टूटना। शरीर मरोड़ना। आलस से जँभाई के साथ अंगों को तानना।

अँगड़ाई लेना=आलस्य दूर करने के लिए शरीर को तानना।
अँगड़ाना–क्रि० अ० सुस्ती से ऐंड़ाना। आलस्य के कारण शरीर तोड़ना। बंद या जोड़ों के भारीपन को हटाने के लिए अंगों को तानना या पसारना।
अंगण–संज्ञा पुं० सहन। आँगन।
अंगत्राण–संज्ञा पुं० १. अँगरखा। कुरता। अंग को ढकनेवाला। २. कवच।
अंगद–संज्ञा पुं० १. बाहु का एक विशेष गहना। बिजायठ। बाजूबन्द। २. बालि नामक बंदर का पुत्र। ३. लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।
अंगदान–संज्ञा पुं० १. लड़ाई से भागना। पीठ दिखलाना। २. शरीरदान। तन-समर्पण। रति या सुरति (स्त्री के लिए)।
अँगना†–संज्ञा पुं० दे० "आँगन"। अँगनाई, चौक, मकान के बीच की खुली भूमि।
अंगना–संज्ञा स्त्री० १. सुन्दरी, स्त्री। कामिनी। सुन्दर अंगवाली स्त्री। २. सार्व-भौम नामक उत्तर दिग्गज की हथिनी।
अँगनाई–संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।
अँगनैया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।
अंगन्यास–संज्ञा पुं० मंत्रों को पढ़ते हुए एक एक अंग का स्पर्श करने की क्रिया। (तंत्र)
अंगभंग–संज्ञा पुं० १. शरीर के किसी भाग की हानि। किसी अवयव का नाश या खण्डन। अंग का खंडित होना। २. स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा। अंगभंगी। चेष्टा। वि० अपाहज। जिसका कोई अवयव टूटा या कटा हो। लँगड़ा, लूला, लुंज।
अंगभंगी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों की मोहित करने की एक विधि। २. चेष्टा।
अंगभूत–वि० १. किसी वस्तु का अंग। २. भीतर। अंतर्गत। अंतर्भूत।
संज्ञा पुं० बेटा। पुत्र। दे० "अंगज"।
अंगमर्द–संज्ञा पुं० १. गठिया। २. संवाहक। हाथ पैर की मालिश करनेवाला नौकर।
अंगरक्षक–सं० पुं० राजा-महाराजा आदि के साथ रहकर उनके शरीर की रक्षा करने-वाले सैनिक या सेवक। राज्यपाल या राष्ट्र-पति आदि के साथ रहनेवाले अधिकारी।
अंगरक्षा–संज्ञा स्त्री० बचाव। शरीर की रक्षा या बचाव।
अँगरखा–संज्ञा पुं० वस्त्र-विशेष जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है और जिसमें बाँधने के लिए कपड़े की तनी होती है। एक प्रकार की अचकन।
अँगरा‡–संज्ञा पुं० १. अंगारा। दहकता हुआ कोयला। २. बैलों के पैर का रोग-विशेष।
अंगराग–संज्ञा पुं० १. उबटन। २. केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों से मिश्रित या केवल चंदन, जो शरीर में लगाया जाय। ३. आभूषण। ४. शरीर की शोभा के लिए महावर, अल्ता आदि। ५. मुँह पर लगाने की एक प्रकार की सुगन्धित देशी बुकनी।
अंगराज–संज्ञा पुं० कर्ण का नाम।
अँगराना *–क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"। अँगड़ाई लेना।
अँगरी–संज्ञा स्त्री० कवच। जिरह बख्तर। झिलम। परिच्छद।
संज्ञा स्त्री० अंगुलित्राण।
अँगरेज़–संज्ञा पुं० [वि० अँगरेज़ी] इंगलैंड देशवासी।
अँगरेज़ियत–संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ीपन। अँग-रेजी चाल-ढाल। अँगरेज़ों की तरह का रंग-ढंग।
अँगरेज़ी–वि० विलायती। अँगरेज़ों का। इंगलैंड देश का।
संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ों की भाषा। इंगलैंड-वासियों की बोली।
अँगलेट–संज्ञा पुं० देह का ढाँचा। शरीर की गठन। काठी।
अँगवना *–क्रि० स० १. स्वीकार करना। २. ओढ़ना। अपने ऊपर ले लेना। ३. सहना। उठाना।
अँगवारा–संज्ञा पुं० १. गाँव के किसी छोटे अंश का स्वामी। २. खेत की जोताई में एक दूसरे की सहायता।
अंगविकृति–संज्ञा स्त्री० १. मुँह का बनाना।

मुँह बिगाड़ना। २. मूर्च्छा। मृगी या मिरगी रोग। अपस्मार।

अंगविक्षेप–संज्ञा पुं० १. नृत्य की मुद्रा। २. शरीर द्वारा भाव बताना। ३. एक प्रकार का नृत्य।

अंगविद्या–संज्ञा स्त्री० अंगों की शुभाशुभ चिह्न-सम्बन्धी विद्या।

अंगशोष–संज्ञा पुं० सूखा नामक रोग। एक रोग जिसमें शरीर सूखता जाता है।

अंगसिहरी–संज्ञा स्त्री० जूड़ी ज्वर आने के पहले शरीर का कंप। कपकँपी। मानसिक विकारों से अंगों की सिहरन।

अंगहार–संज्ञा पुं० १. अंगों द्वारा भाव प्रदर्शन। अंगविक्षेप। २. नाटयशाला में नृत्य की १०८ मुद्राएं।

अंगहीन–वि० अंगरहित। अंग-भंग। संज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम।

अंगांगिभाव–संज्ञा पुं० १. अंग का संपूर्ण के साथ संबंध। अवयव और अवयवी का परस्पर संबंध। २. गौण और मुख्य का परस्पर संबंध। ३. अलंकार में संकर का एक भेद।

अंगा–संज्ञा पुं० पहनने का एक लंबा वस्त्र। अँगरखा।

अंगाकरी–संज्ञा स्त्री० मधुकरी। अंगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी।

अंगार–संज्ञा पुं० दहकता हुआ कोयला। बिना धुएँ की आग का दहकता हुआ टुकड़ा।

मुहा०–अंगार उगलना=कड़ी कड़ी बातें कहना। अंगारों पर पैर रखना=१. जान बूझकर हानिकर काम करना। खतरे में डालना। २. क्रोध प्रकट करना। ३. जमीन पर पैर न रखना। इतराकर चलना। अंगारों पर लोटना=१. अत्यंत क्रोध प्रकट करना। आगबबूला होना। २. दाह से जलना। ईर्ष्या से व्याकुल होना। लाल अंगारा=१. गहरा लाल। २. अत्यंत क्रोधित।

अंगारक–संज्ञा पुं० १. मंगल ग्रह। २. अंगारा। ३. कटसरैया का पेड़। ४. भृंगराज। भँगरा। भंगरैया।

अंगारधानिका–संज्ञा स्त्री० अँगीठी। अंगार रखने का पात्र।

अंगारपाचित–संज्ञा पुं० दहकती हुई आग पर पकाया हुआ। जैसे, नानखताई। कबाब।

अंगारपुष्प–संज्ञा पुं० हिंगोट का पेड़। इंगुदी वृक्ष।

अंगारमणि–संज्ञा पुं० मूँगा। प्रवाल।

अंगारमती–संज्ञा स्त्री० कर्ण की स्त्री।

अंगारवल्ली–संज्ञा स्त्री० घुँघची, गुंजा।

अंगारा–संज्ञा पुं० दे० "अंगार"।

अंगारिणी–संज्ञा स्त्री० १. अँगीठी। बोरसी। बरोसी। २. वह दिशा जिस पर अस्त होते हुए सूर्य की लाली छाई हो।

अंगारी–संज्ञा स्त्री० १. चिनगारी। २. छोटा अंगारा। ३. बाटी। लिटटी। अंगाकड़ी।‡ ४. बोरसी। अगीठी।

अँगारी–संज्ञा स्त्री० १. गन्ने के सिरे पर की पत्ती। २. गँडेरी। गन्ने, ईख के छोटे कटे टुकड़े।

अंगिका–संज्ञा स्त्री० चोली। स्त्रियों की कुरती। अँगिया। कंचुकी।

अँगिया–संज्ञा स्त्री० दे० "अंगिका"।

अंगिरस–संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २. बृहस्पति। ३. साठ संवत्सरों में से छठा। ४. कटीला गोंद। कतीरा।

अंगिरा–संज्ञा पुं० दे० "अंगिरस"। तारा। ब्रह्मा के मानस पुत्र। 'अंगिरा-संहिता' के रचयिता, बृहस्पति के पिता।

अँगिराना*–क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

अंगी–संज्ञा पुं० १. देहधारी। शरीरवाला। २. अवयवी। उपकार्य। समष्टि। अंशी। ३. मुख्य। प्रधान। ४. चौदह विद्याएँ। ५. नाटक का प्रधान नायक। ६. नाटक में प्रधान रस। ७. किसी समुदाय का मुखिया।

अंगीकार–संज्ञा पुं० ग्रहण। स्वीकार। मंजूर।

अंगीकृत–वि० ग्रहण किया हुआ। स्वीकृत। मंजूर। स्वीकार। अपनाया हुआ।

अँगीठा–संज्ञा पुं० बड़ी अँगीठी। अग्निपात्र।

अँगीठी–संज्ञा स्त्री० आग रखने का बरतन। गोरसी। आतिशदान।

अंगुर†–संज्ञा पुं० दे० "अंगुल"।
अँगुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।
अंगुल–संज्ञा पुं० १. आठ जौ के बराबर लंबाई। २. ग्रास या बारहवाँ भाग। (ज्यो०) ३. नापने में एक गिरह का तीसरा भाग।
अंगुलित्राण–संज्ञा पुं० उँगुलियों का वह परिधान जो बाण चलाते समय उँगलियों पर चढ़ा लिया जाता है और जो गोह के चमड़े का बनता है। एक प्रकार का दस्ताना।
अंगुलिपर्व–संज्ञा पुं० उँगलियों की पोर। उँगली की गाँठों के बीच का भाग।
अँगुली, अँगुरी–संज्ञा स्त्री० १. उँगली। २. हाथी की सूँड़ का अगला भाग।
अंगुल्यादेश–संज्ञा पुं० संकेत। उँगली से इशारा करना।
अंगुल्यानिर्देश–संज्ञा पुं० कलंक। बदनामी। लांछन। किसी पर अंगुली का उठ जाना।
अंगुश्ताना–संज्ञा पुं० [फा०] १. उँगली पर पहनने की पीतल या लोहे की टोपी जिसे दरजी सीते समय उँगली में पहन लेते हैं। २. अड़सी। आरसी। हाथ के अँगूठे की मुँदरी विशेष।
अंगुश्तरी–संज्ञा स्त्री० अँगूठी।
अंगुश्तनुमाई–संज्ञा स्त्री० बदनामी। कलंक।
अंगुष्ठ–संज्ञा पुं० अँगूठा। हाथ या पैर के सिरे की सबसे मोटी उँगली।
अँगुसी–संज्ञा स्त्री० १. सोनारों की टेढ़ी नली जिससे दीये की लौ को फूँककर टाँका जोड़ते हैं। बकनाल। २. हल का फाल।
अँगूठा–संज्ञा पुं० अंगुष्ठ। मनुष्य के हाथ व पैर के सिरे की सबसे मोटी उँगली।
मुहा०–अँगूठा चूमना=१. शुश्रूषा करना। खुशामद करना। २. अधीन होना। अँगूठा दिखाना=१. किसी वस्तु को देने से अवज्ञापूर्वक नाहीं करना। २. किसी काम को करने से हट जाना। किसी कार्य का करना अस्वीकार करना। अँगूठे पर मारना=परवा न करना। तुच्छ समझना।
अँगूठी–संज्ञा स्त्री० १. मुद्रिका। मुँदरी। छल्ला। उँगली में पहनने का गहना विशेष। २. उँगली में लिपटाया हुआ तागा (जुलाहे)।
अंगूर–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक लता और उसके फल का नाम। दाख। द्राक्षा।
मुहा०–अंगूर का मड़वा या अंगूर की टट्टी=१. अंगूर की बेल के चढ़ने और फैलने के लिए बाँस की खपच्चियों का बना हुआ टट्टर या मंडप। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।
संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] १. घाव का भराव। २. मांस के छोटे छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पड़ते हैं।
मुहा०–अंगूर तड़कना या फटना=भरते हुए घाव पर बँधी हुई मांस की झिल्ली का हट जाना।
अंगूरशेफा–संज्ञा पुं० [फा०] हिमालय पर्वत की जड़ी-विशेष।
अँगूरी–वि० १. अंगूर के रंग का। संज्ञा पुं० हलका हरा रंग। २. अंगूर से बना हुआ।
अँगेजना*–क्रि० स० १. स्वीकार करना। २. उठाना। महना। बरदाश्त करना। अंगीकार करना।
अँगेठी–संज्ञा स्त्री० दे० "अँगीठी"।
अँगेरना*–क्रि० स० स्वीकार करना। मंजूर करना। सहना। बरदाश्त करना।
अँगोछना–क्रि० अ० गीले कपड़े या अँगौछे से शरीर को पोंछना या साफ करना।
अँगोछा–संज्ञा पुं० १. देह पोंछने का कपड़ा। तौलिया। गमछा। २. उपरना। उपवस्त्र। उत्तरीय।
अँगोछी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय। २. देह पोंछने का छोटा कपड़ा।
अँगोजना*–क्रि० स० दे० "अँगेजना"।
अँगोरा–संज्ञा पुं० मच्छर।
अँगौगा–संज्ञा पुं० देवता को चढ़ाने या धर्म्मार्थ बाँटने के लिए अलग निकाला हुआ अन्न आदि। पुजौरा। अँगऊँ।
अँगौरिया–संज्ञा पुं० वह हलवाहा जिसे मजदूरी न देकर हल बैल उधार देते हैं।
अँघड़ा–संज्ञा पुं० काँसे का छल्ला जिसे स्त्रियाँ पैर के अँगूठ में पहनती हैं।

अंघस–संज्ञा पुं० पातक। पाप।

अँघिया–संज्ञा स्त्री० छलनी जिससे आटा या मैदा चाला जाता है। अँगिया। आखा।

अंघ्रि–संज्ञा पुं० १. पाँव। चरण। पैर। २. वृक्षों की जड़।

अंघ्रिप–संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

अँचरा–संज्ञा पुं० दे० "आँचल"। अंचल।

अंचल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आँचल। पल्ला। साड़ी का छोर। दे० "आँचल"। २. देश का वह प्रांत या भाग जो सीमा के पास हो। ३. नदी के किनारे की भूमि। ४. तट। किनारा। ५. क्षेत्र।

अँचला–संज्ञा पुं० १. कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधु लोग धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं। २. दे० "आँचल"।

अँचवना–क्रि० अ० भोजन के उपरान्त हाथ और मुँह धोना। आचमन करना।

अंचित–वि० आराधित। पूजित।

अंछर–संज्ञा पुं० १. मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें काँटे से उभर आते हैं।† २. अक्षर। ३. जादू। टोना।

मुहा०–अंछर मारना=मंत्र का प्रयोग करना। जादू करना। टोना करना।

अंज–संज्ञा पुं० दे० "कंज"।

अंजन–संज्ञा पुं० १. विशेष प्रक्रिया से तैयार की हुई आँख में लगाने की ओषधि। २. काजल। सुरमा। ३. रात्रि। रात। ४. रोशनाई। स्याही। मसि। ५. छिपकली। ६. नैर्ऋत्यकोण या पश्चिम का दिग्गज। ७. बगला-विशेष। ८. नटी। ९. पेड़ विशेष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। १०. सिद्धांजन, जिसके लगाने से गड़ा हुआ धन दिखाई पड़ता है। ११. पर्वत-विशेष। १२. कद्रु से उत्पन्न एक सर्प का नाम। १३. लेप। १४. माया। १५. एक प्रकार का धान्य। १६. मिथिला देश का एक प्राचीन राजा। १७. एक प्रकार की घास जो उत्तर प्रदेश में होती है और जिसे पशु खाते हैं। १८. अँगरेजी 'इंजन' का अपभ्रंश। १९. द्व्यर्थक शब्द।
वि० काला। सुरमई रंग का।

अंजनकेश–संज्ञा पुं० १. दिया। दीपक। २. वह पुरुष जिसके बाल अंजन के समान काले हों।

अंजनकेशी–संज्ञा स्त्री० १. एक सुगंध द्रव्य जिसे नख कहते हैं। २. वह स्त्री जिसके बाल अंजन के समान काले हों।

अंजन-शलाका–संज्ञा स्त्री० सुरमचू। चाँदी, जस्ते आदि की वह सलाई जिससे आँख में सुरमा आदि लगाया जाता है।

अंजनसार–वि० अंजन-युक्त। काजल या सुरमा लगा हुआ।

अंजनहारी–संज्ञा स्त्री० १. बिलनी। गुहंजनी। आँख की पलक के किनारे की फुन्सी। अंजना। २. एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जिसे बिलनी या कुम्हारी भी कहते हैं। भृंग। ३. वह स्त्री जो किसी के अंजन या काजल लगावे।

अंजना–संज्ञा स्त्री० १. हनुमान् की माता। २. गुहांजनी। बिलनी। दो रंग की छिपकली।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा धान।
*क्रि० स० दे० "आँजना"।

अंजनाद्रि–संज्ञा पुं० पर्वत-विशेष।

अंजनानंदन–संज्ञा पुं० हनुमान्।

अंजनी–संज्ञा स्त्री० १. अंजना जो हनुमान् की माता थीं। २. माया। ३. कुटकी। ४. चंदन आदि लगाने योग्य स्त्री। ५. बिलनी। आँख के पलक की फुड़िया।

अंजबार–संज्ञा पुं० [फा०] एक पौधा जिसकी जड़ का काढ़ा और शरबत सरदी और कफ के रोग में दिया जाता है।

अंजर-पंजर–संज्ञा पुं० ठठरी। शरीर का जोड़। पसली।
मुहा०–अंजर-पंजर ढीला होना=शरीर के जोड़ों का हिल जाना। उखड़ना। देह का बंद बंद टूटना। शिथिल होना।
क्रि० वि० पार्श्व म। अगल बगल।

अंजल, अंजला–संज्ञा पुं० दे० "अंजली" और "अन्नजल"।

अंजलि, अंजली–संज्ञा स्त्री० १. दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा। दोनों

हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट। २. उतनी वस्तु जितनी एक अँजुली में आवे। अंजलि भर अनाज जिसे प्रस्थ या कुड़व भी कहते हैं। अंजुलि। ३. सोलह तोले के बराबर की नाप दोपसर या पसां। ४. हथेलियों से दान देने के लिए निकाला हुआ अन्न। ५. अंजलि-अंजलि से दिया हुआ जल। अंजलि देना। तर्पण करना। ६. श्रद्धा से अर्पित करना। ७. श्रद्धा से अर्पित किये हुए पुष्प आदि। ८. श्रद्धा। नति। आशीर्वाद।

अंजलिकर्म–संज्ञा पुं० सुशीलता। प्रणाम। नमस्कार। विनय करना।

अंजलिगत–वि० १. प्राप्त। हाथ में आया हुआ। २. दोनों हथेलियों पर रक्खा हुआ। अँजली में आया हुआ।

अंजलिपुट–संज्ञा पुं० अंजलि। दोनों हथेलियों के मिलाने से बनी हुई दोने जैसी मुद्रा।

अंजलिबद्ध–वि० कर-बद्ध। हाथ जोड़े हुए।

अंजलिबंधन–संज्ञा पुं० हाथ जोड़ना।

अँजवाना–क्रि० स० सुरमा या अजन लगवाना।

अंजसा–अ० शीघ्रता से। शीघ्रता।

अंजहा–†वि० हिं० [स्त्री० अंजही] अन्न से बना हुआ। अनाज का।

अंजही–संज्ञा स्त्री० ऐसा बाजार जहाँ अन्न बिकता हो। अनाज की मंडी। मिठाई जो अनाज से बनी हो।

अँजाना–क्रि० स० अँजवाना। अंजन या सुरमा लगवाना।

अंजाम–संज्ञा पुं० [फा०] १. परिणाम। फल। २. अंत। समाप्ति। पूर्ति।

मुहा०–अंजाम देना=पूर्ण करना।

अंजित–वि० आँजे हुए। अंजन लगाए हुए।

अंजीर–संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।

अंजुमन–संज्ञा स्त्री० (फा०) सभा। मजलिस।

अँजुरी, अंजुली*†–संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि"।

अँजोर*†–पुं० दे० "उजाला"। प्रकाश, रोशनी, चाँदनी।

अँजोरना*†–क्रि० स० १. संचय करना। इकट्ठा करना। बटोरना। २. हरण करना। छीन लेना। क्रि० स० प्रकाशित करना। जलाना-बालना। जैसे—दीपक अँजोरना।

अँजोरा†–वि० दे० "अँजोर", "उजाला"। यौ०–अँजोरा पाख–शुक्ल पक्ष।

अजोरी*†–संज्ञा स्त्री० १. उजाली। चमक। रोशनी। प्रकाशयुक्त। २. चंद्रिका। चाँदनी। वि० स्त्री० प्रकाशमयी। उजाली।

अंझा–संज्ञा पुं० छुट्टी। नागा। तातील। अवकाश।

अँटना–क्रि० अ० १. समाना। किसी वस्तु के भीतर आ जाना। २. किसी वस्तु के ऊपर सटीक बैठना। ठीक से चिपकना। ठीक उतरना। ३. ढँक जाना। भर जाना। ४. काफी होना। पूरा पड़ना। काम चलना। ५. खपना। पूरा होना।

अंटा–संज्ञा पुं० १. गोला। गेंद। बड़ी गोली। २. रेशम या सूत का लच्छा। ३. बिलियर्ड एक खेल जो हाथी-दाँत की गोलियों से मेज पर खेला जाता है। ४. बड़ी कौड़ी।

अंटा-गुड़गुड़–वि० १. अचेत। बमुध। २. नशे में चूर। बेहोश।

सं० पुं० एक प्रकार का जुआ।

अंटाघर–संज्ञा पुं० ऐसा घर जिसमें गोली का खेल खेला जाय।

अंटाचित–क्रि० वि० चित। सीधा पीठ के बल। पीठ जमीन पर किये हुए।

मुहा०–अंटाचित होना=१. अवाक् होना। सन्न होना। स्तंभित होना। २. बरबाद होना। बेकार होना। किसी काम का न रह जाना। ३. नशे में अचेत होना। बेखबर होना। बेमुध होना।

अंटाबंधू–संज्ञा पुं० कौड़ी जो जुए में फेंकी जाती है।

अँटिया–संज्ञा स्त्री० खर, घास या पतली लकड़ियों आदि की बँधी हुई गठरी। छोटी गठरी। गठिया। मुट्ठी। पूला।

अँटियाना–क्रि० स० १. हथेली में या उँगलियों के बीच में छिपाना। २. चारों उँगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना। ३.

खर, घास या पतली लकड़ियों का मुट्ठा बाँधना। ४. हजम करना। गायब करना। ५. अंटी में रख लेना।

अंटी—संज्ञा स्त्री० [क्रि० अँटियाना] १. धाई उँगलियों के बीच का अंतर या स्थान। २. धोती की कमर पर रहनेवाली गाँठ। धोती के किनारे की लपेट जिसके कारण धोती बँधी रहती है।

मुहा०—अंटी करना=कोई वस्तु ले लेना। अपने अधिकार में करना। अंटी मारना=१. जुआ खेलते समय कौड़ी को उँगलियों के बीच में छिपा लेना। २. आँख बचाकर धीरे से दूसरे की वस्तु को उड़ा लेना। धोखा देकर कोई चीज ले लेना। ३. लपेट में कमर की दाहिनी या बाईं ओर वह स्थान जिसमें रुपया, पैसा लपेट कर रख लिया जाता है। ४. डोड़ैया। तर्जनी के ऊपर मध्यमा को चढ़ाकर बनाई हुई मुद्रा। डँड़ोइया। (जब कोई लड़का खेल में किसी अस्पृश्य वस्तु को छू लेता है तब और लड़के छूत से बचने के लिए ऐसी मुद्रा बनाते हैं।) ५. रेशम या सूत की लच्छी। अट्टी। ६. सूत लपेटने की लकड़ी। अंटरन। ७. बिगाड़ होना। विरोध या अंटी पड़ना। ८. मुरकी। कान में पहनने की छोटी बाली।

अँटौतल—संज्ञा पुं० ढक्कन। जो तेली के बैल की आँख पर बाँधा जाता है।

अँठई†—संज्ञा स्त्री० किलनी।

अंठी—संज्ञा स्त्री०। १. बीज। गुठली। चीयाँ। २. गाँठ। गिरह। ३. कड़ापन। गिलटी।

अंड—संज्ञा पुं० १. अंडा जिसे फोड़कर विशेष जीवों का बच्चा निकलता है। २. फोता। अंडकोश। ३. विश्व ब्रह्मांड। ४. वीर्य्य। शुक्र। बीज। ५. मृगनाभि। कस्तूरी का नाफा। ६. शिव का एक नाम। ७. मानसिक अज्ञान (जैन)। ८. मकानों की छाजन के ऊपर के गोल कलश।

अंडकटाह—संज्ञा पुं० जगत्, संसार, विश्व। ब्रह्मांड। जीव का कर्म-विपाक स्थान।

अंडकोश—संज्ञा पुं० १. फोता। आँड। खुसिया। वृषण। २. ब्रह्मांड। अखिल विश्व। ३. सीमा। ४. फल का छिलका। ५. कस्तूरी की थैली।

अंडज—संज्ञा पुं० जीव; जो जीव अंडे से उत्पन्न होते हैं जैसे, पक्षी, सर्प, मछली इत्यादि। अंडे से उत्पन्न।

अंडबंड—संज्ञा स्त्री० १. बे सिर पैर की बात। ऊटपटांग बात। असंबद्ध वार्ता। बकबक। अनाप-शनाप। २. गाली।

वि० असंबद्ध। अस्त व्यस्त। बे सिर पैर का। इधर उधर का। व्यर्थ का।

अँडरना†—क्रि० अ० रेड़ना। गर्भना। धान के पौधे की बाल निकलने की अवस्था।

अंडस—संज्ञा स्त्री० संकट। बाधा। असुविधा। कठिनाई।

अंडवृद्धि—संज्ञा स्त्री० फोते का बढ़ना। एक रोग—जिसमें अंडकोश या फोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है।

अंडा—संज्ञा पुं० [वि० अंडैल] १. वह गोल वस्तु जिसे फोड़कर जलचर, पक्षी और सर्प आदि अंडज जीवों के बच्चे निकलते हैं। बैजा। गोलाकार।

मुहा०—अंडा सेना=१. पक्षियों का अपने अंडों पर गर्मी पहुँचाने के लिए बैठना। २. अंडा मिलना या पाना=परीक्षा में शून्य अंक मिलना। बेकार बैठे रहना। किसी कार्य के फल की प्रतीक्षा करना।

अंडाकार—वि० अंडे के आकार का। लंबाई लिये हुए गोल। बैजावी।

अंडाकृति—संज्ञा स्त्री० अंडे की शकल। अंडे का आकार।

वि० दे० "अंडाकार"।

अंडी—संज्ञा स्त्री० १. रेंड़ी। २. रेंड़ या एरंड का पेड़, फल या बीज। ३. एक प्रकार का मोटा रेशमी कपड़ा।

अँडुआ—संज्ञा पुं० बिना बधिया किया हुआ जानवर। दे० "आँड़"।

अंडुआना—क्रि० स० बधिया करना—बछड़े के अंडकोश को निकलवाना।

अँडुआ बैल—संज्ञा पुं० १. वह बैल जो बधियाया न गया हो। साँड़। २. सुस्त आदमी। ३. बड़े अंडकोशवाला आदमी जो उसके कारण चल न सके।

अंडैल–वि० अंडेवाली। जिसके पेट में अंडे हों।

अंत–संज्ञा पुं० १. शेषांश। २. प्रान्त। ३.सीमा। अवधि। पराकाष्ठा। ४. प्रलय। नाश। मृत्यु। समाप्ति। अवसान।५. स्वरूप। स्वभाव। ६. गुप्त भाव। भेद। रहस्य। मन की बात। ७ पश्चात्। पीछे। ८. सुंदर। ९ इति। जीवन की समाप्ति। १०. फल निष्पत्ति। परिणाम। ११. निदान। निर्णय। १२. भीतरी भाग। भीतर। १३. समीप। निकट। १४. अन्यत्र। दूर। और जगह। मुहा०–अंत बनना। सद्गति होना=अच्छा परिणाम होना। अंत बिगड़ना=मृत्यु के बाद अगति होना। परिणाम बुरा होना। अंत करना=समाप्त करना। अंत हो गया=सीमोल्लंघन हो गया। सीमा से बढ़ गया।

अंतक–वि० १.नाश करनेवाला। अंत करनेवाला। २. वह शक्ति जो जीवन का अंत करती है। संज्ञा पुं० १. मृत्यु। २. काल। यमराज। ३. सन्निपात ज्वर का एक भेद। ४. ईश्वर, जो प्रलय में सबका नाश करता है। ५. शिव।

अंतकर–वि० विनाशक। नाशकर।

अंतकारी–संज्ञा पुं० संहारक। मार डालनेवाला। समाप्ति करनेवाला।

अंतकाल–संज्ञा पुं० १. मरने का समय। अंतिम समय। २. मौत। मृत्यु।

अंतक्रिया–संज्ञा स्त्री० अंत्येष्टि कर्म्म। मृत्यु के बाद का क्रिया कर्म्म। मृतक-क्रिया।

अंतग–संज्ञा पुं० पारगामी। पारंगत। पूर्ण ज्ञाता। निपुण।

अंतगति–संज्ञा स्त्री० मृत्यु। मरण। मौत। अंतिम दशा।

अंतघाई*–वि० धोखा देनेवाला। विश्वासघाती।

अंतड़ी–संज्ञा स्त्री० आँत।

मुहा०–अँतड़ी जलना=बहुत भूख लगना। पेट जलना। अँतड़ी गले में पड़ना=किसी संकट में पड़ना। अँतड़ियों का बल खोलना=कई दिनों के बाद भोजन मिलने पर पेट भर खाना।

अंतच्छद–संज्ञा पुं० अन्दर से ढकनेवाला। आच्छादन।

अंतज, अंत्यज–संज्ञा पुं० शूद्र से भी नीच। जो द्विजाति के संस्कारों से विहीन होते हैं उनकी "अंत्यज" संज्ञा मानी गई है। मेहतर-चांडाल।

अंततः–अव्य० अन्त में। आखिर में। शेषतः चरम सीमा पहुँचने पर।

अंतपाल–संज्ञा पुं० १. राज्य की सीमा पर रहनेवाला पहरेदार। २. दरबान। द्वारपाल। डयोढ़ीदार।

अंतरंग–वि० १. भीतरी। २. घनिष्ठ। स्वजन। ३. दिली। गुप्त बातों का जाननेवाला। जिगरी। ४. अंतःकरण का। मानसिक। संज्ञा पुं० मित्र। दिली दोस्त। आत्मीय।

अंतरंग-सभा–संज्ञा स्त्री० किसी संस्था की चुनी हुई वह छोटी सभा या समिति जो उसकी व्यवस्था करती है।

अंतरंगी–वि० दे० "अंतरंग"।

अंतर–संज्ञा पुं० १. भेद। अलगाव। विभिन्नता। २. मध्य। बीच। भीतर। फासला। दूरी। अवकाश। दो वस्तुओं के बीच की जगह। ३. मध्यवर्ती समय। दो घटनाओं के बीच का काल। बीच। ४. आड़। ओट। परदा। व्यवधान। दो चीजों के बीच में पड़ी हुई वस्तु। ५. छेद। रंध्र। छिद्र। ६. अलग। भिन्न। अपर। जुदा। भेद।

अंतर्द्धान–वि० सामने से लुप्त होना। दिखलाई न पड़ना। दृष्टिगोचर न होना।

अंतरचक्र–संज्ञा पुं० १. दिशाओं और विदिशाओं के बीच के अंतर को चार चार भागों में बाँटने से बने हुए ३२ भाग। २. भिन्न भिन्न दिशाओं में चिड़ियों की बोली सुनकर शुभाशुभ फल बताने की विद्या। ३. शरीर के षट् चक्रों में से कोई चक्र। ४. भाई बंधु की मंडली। आत्मीय वर्ग।

अंतरजामी†–संज्ञा पुं० दे० "अंतर्यामी"।

अंतरदिशा–संज्ञा स्त्री० दो दिशाओं के बीच की दिशा। दिशाओं के कोण।

अंतरतम–संज्ञा पुं० हृदय का सबसे भीतरी भाग। अन्तःकरण। किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग।

अंतरपट–संज्ञा पुं० १. आड़। ओट। आड़

करने का कपड़ा। परदा। २. विवाह में यम को आहुति देते समय अग्नि और वर-वधू के बीच में डाला हुआ पर्दा। ३. दुराव। छिपाव। ४. कपड़मिट्टी=धातु या ओषधि को फूँकने के पहले उसकी लुगदी वा संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़ौरी। ५. गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ कपड़ा।

अंतरस्थ–वि० अंदर रहनेवाला। भीतर का। दे० "अंतर"।

अंतरज्ञ–संज्ञा पुं० भेद जाननेवाला। दे० "अंतर्यामी"।

अँतरा–संज्ञा पुं० १. अंतर। बीच। अंझा। नागा। २. ज्वर जो एक दिन के अन्तर से आता है। ३. कोना। ४. किसी गीत में स्थायी या टेक के अतिरिक्त बाकी और पद या चरण। ५. प्रातःकाल और संध्या के बीच का समय। दिन।

वि० बीच में एक छोड़कर दूसरा।

अंतरा–क्रि० वि० १. बीच। मध्य। २. निकट। पास। ३. सिवाय। अतिरिक्त। ४. अलग। पृथक्। ५. रहित। बिना।

अंतर्घट–संज्ञा पुं० अंतःकरण। हृदय। मन।

अंतर्ज्ञान–संज्ञा पुं० मन के अंदर होनेवाला ज्ञान। अंतर्बोध। प्रज्ञा।

अंतर्गृही–संज्ञा स्त्री० काशी की सीमा में प्रधान पुण्य-स्थलों की यात्रा।

अंतर्जानु–वि० हाथों को घुटनों के बीच रखे हुए।

अंतरात्मा–संज्ञा स्त्री० १. अंतःकरण। २. जीवात्मा।

अंतरापत्या–संज्ञा स्त्री० गर्भवती। गर्भिणी। गुर्विणी। द्विजीवा।

अंतराय–संज्ञा पुं० १. विघ्न। बाधा। रुकावट। २. ज्ञान का बाधक। ३. योग की सिद्धि के नौ विघ्न।

अंतराना–क्रि० स० अलग करना। पृथक् करना। अन्दर करना।

अंतराल–संज्ञा पुं० १. घेरा। मंडल। घिरा हुआ स्थान। २. बीच। मध्य।

अंतरिक्ष–संज्ञा पुं० १. पृथिवी और अन्य लोकों के बीच का स्थान। दो ग्रहों या तारों के बीच का शून्य स्थान। गगन। वायु। शून्य। आकाश। अधर। २. स्वर्गलोक। ३. केतुमाल नामक एक भूखंड।

अंतरिख, अंतरिच्छ*–संज्ञा पुं० दे० "अंतरिक्ष"।

अंतरित–वि० १. भीतर रक्खा हुआ। भीतर किया हुआ। छिपा हुआ। २. गुप्त। अंतर्धान। तिरोहित। ३. ढका हुआ। आच्छादित। ४. स्वतंत्र। अलग किया हुआ। ५. गर्भस्थ।

अंतरिया–संज्ञा पुं० एक दिन का अन्तर देकर आनेवाला बुखार। बीच देकर आने-वाला ज्वर।

अंतरीप–संज्ञा पुं० १. भूमि का वह भाग जो सँकरा होता हुआ अंत में समुद्र में लुप्त हो जाय। २. द्वीप। टापू।

अंतरीय–संज्ञा पुं० धोती। अधोवस्त्र। कमर में पहनने का वस्त्र।

वि० भीतरी। भीतर का। अंदर का।

अन्तरौया–संज्ञा पुं० भीतर का। बिचला। मध्य का। परिधान। वस्त्र।

अँतरौटा–संज्ञा पुं० महीन कपड़ा जो सारी के नीचे पहना जाता है।

अंतर्गत–वि० १. मध्यस्थ। पैठा हुआ। भीतर आया हुआ। अंतर्भूत। समाया हुआ। शामिल। सम्मिलित। २. गुप्त। भीतरी। छिपा हुआ। ३. अंतःकरणस्थित। हृदय के भीतर का।

*संज्ञा पुं० मन। चित्त। जी। हृदय।

अंतर्गति–संज्ञा स्त्री० १. मन का भाव। मन की तरंग। चित्तवृत्ति। भावना। २. चित्त की अभिलाषा। कामना। हार्दिक इच्छा। ३. विस्मृत।

अंतर्दशा–संज्ञा स्त्री० मनुष्य के जीवन में मुख्य ग्रह के भोग-काल में अन्य ग्रहों के आगमन के समय की दशा (ज्योतिष)।

अंतर्दशाह–संज्ञा पुं० वह कर्मकांड जो मरने के बाद के दस दिनों में किया जाता है।

अंतर्दाह–संज्ञा पुं० छाती की जलन। शरीर की ज्वाला। मानसिक ताप।

अंतर्द्धान–संज्ञा पुं० छिपाव। लोप। वि० अदृश्य। गुप्त। अलक्ष। गायब। अंतर्हित। अप्रकट। छिपा हुआ। लुप्त।

अंतर्ध्यान–संज्ञा पुं० मानसिक ध्यान। मन संबंधी ज्ञान।

अंतर्नयन–संज्ञा पुं० ज्ञानमय दृष्टि। भीतरी या ज्ञान के नेत्र। ज्ञानचक्षु।

अंतर्निविष्ट–वि० १. भीतर बैठा हुआ। अंदर रक्खा हुआ। २. मन में जमा हुआ। अतःकरण में स्थित। हृदय में बैठा हुआ।

अंतर्निहित–वि० अंदर छिपा हुआ।

अंतर्पट–संज्ञा पुं० देखो "अंतरपट"।

अंतर्बोध–संज्ञा पुं० १. आत्मा की पहचान। आत्मज्ञान। २. आंतरिक अनुभूति।

अंतर्भाव–संज्ञा पुं० [वि० अंतर्भावित, अंतर्भूत] १. अंतर्गत होना। भीतरी समावेश। सम्मिलित होना। २. छिपाव। तिरोभाव। विलीनता। ३. नाश। अभाव। ४. भीतरी मतलब। अभिप्राय। आशय। मंशा।

अंतर्भावना–संज्ञा स्त्री० १. सोच विचार। ध्यान। चिंता। २. गुणन-फल के अंतर से संख्याओं को सुधारना।

अंतर्भावित–वि० १. अंतर्गत। अंतर्भूत। सम्मिलित। भीतर। २. भीतर किया हुआ। छिपाया हुआ। लुप्त।

अतर्भुक्त–वि० भीतर आया हुआ। शामिल। दे० "अंतर्भूत"।

अंतर्भूत–वि० दे० "अंतर्भाव"

अंतर्मना–वि० अनमना। उदास।

अंतर्मल–संज्ञा पुं० मन का कलुष या बुराई।

अंतर्मुख–वि० जिसका छिद्र या मुंह भीतर की ओर हो। भीतरी मुँहवाला, जैसे अंतर्मुख फोड़ा।
क्रि० वि० जो बाहरी प्रपंचों से हटकर परमात्मा की ओर उन्मुख हो। भीतर की ओर प्रवृत्त।

अंतर्यामी–वि० १. जिसकी गति मन के भीतर तक हो। भीतर जानेवाला। २. अंतःकरण से प्रेरणा करनेवाला। चित्त पर अधिकार रखनेवाला। ३. मन की बात जाननेवाला। संज्ञा पुं० ईश्वर। परमेश्वर।

अंतर्राष्ट्रीय–वि० दे० अंताराष्ट्रिय (शुद्ध रूप)। संसार के सब या अनेक राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला।

अंतर्लंब–संज्ञा पुं० ऐसा त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लंब का पतन हो।

अंतर्लापिका–संज्ञा स्त्री० ऐसी पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो।

अंतर्लीन–वि० डूबा हुआ। मग्न। भीतर छिपा हुआ। विलीन। बाह्य प्रपंचों से विमुख।

अंतर्वर्त्ती–वि० भीतरी। भीतर रहनेवाली।

अंतर्वर्ण–संज्ञा पुं० अंतिम वर्ण का। शूद्र। चतुर्थ वर्ण का।

अंतर्वाणी–संज्ञा पुं० पंडित। विद्वान्। शास्त्र को जाननेवाला।

अंतर्विकार–संज्ञा पुं० भूख, प्यास, पीड़ा आदि शरीर के धर्म।

अंतर्वेगी ज्वर–संज्ञा पुं० ज्वर-विशेष जिसमें रोगी को पसीना नहीं आता।

अंतर्वेद–संज्ञा पुं० [वि० अन्तर्वेदी] १. वह देश जिसमें यज्ञों की वेदियाँ हों। २. ब्रह्मावर्त। गंगा और यमुना के बीच का देश। ३. दोआबा। दो नदियों के बीच का देश।

अंतर्वेदना–संज्ञा स्त्री० अंतःकरण की वेदना। भीतरी या मानसिक कष्ट। मार्मिक पीड़ा।

अंतर्वेदी–वि० अंतर्वेद का निवासी। गंगा-यमुना के दोआवा में वसनेवाला।

अंतर्वेशिक–संज्ञा पुं० अंतःपुर-रक्षक। ख्वाजासरा।

अंतर्हित–वि० गुप्त। छिपा हुआ। तिरोहित। अंतर्द्धान। अदृश्य।

अंतर्शय्या–संज्ञा स्त्री० (शुद्ध रूप–अंतःशय्या) १. भूमिशय्या। मृत्युशय्या। २. मरघट। श्मशान। मसान। ३. मृत्यु।

अंतस–संज्ञा पुं० अंतःकरण। चित्त। हृदय।

अंतसद–संज्ञा पुं० शिष्य। चेला।

अंतसमय–संज्ञा पुं० अंतकाल। मरणकाल। मृत्युकाल। दे० "इंतकाल"।

अंतस्तल–संज्ञा पुं० मन। चेतना। हृदय। शरीर का भीतरी या मध्यवर्ती स्थान।

अंतस्ताप–संज्ञा पुं० मानसिक कष्ट। आन्तरिक पीड़ा।

अंतस्थ–वि० [विशे० अंतस्थित] १. भीतरी। २. बीच या मध्य में स्थित। बीचवाला। मध्यवर्ती ३. य, र, ल, व, अंतस्थ वर्ण कहलाते हैं। (व्याकरण)।

अंतस्नान–संज्ञा पुं० यज्ञ-विशेषों के समाप्त होने या पूर्णाहुति होने पर किया जानेवाला उन यज्ञों का अंगभूत स्नान। (धर्मशास्त्र)

अंतस्सलिल–वि० [स्त्री० अंतस्सलिला] जिसके जल का प्रवाह भीतर हो, बाहर न देख पड़े, जैसे सरस्वती नदी, जो गुप्त कही जाती है।

अंतस्सलिला–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती नदी। २. फल्गु नदी।

अंताराष्ट्रिय–वि० संसार के सब या अनेक देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। अनेक राष्ट्रों से सम्बन्धित। सार्वराष्ट्रीय।

अंतावरी–संज्ञा स्त्री० आँतों का समूह। अँतड़ी।

अंतावशायी–संज्ञा पुं० १. गाँव की सीमा के बाहर रहनेवाला। २. अस्पृश्य। अछूत।

अंतावसायी–संज्ञा पुं० १. नाई। २. हिंसा करनेवाला। चांडाल।

अंतिक–संज्ञा पुं० समीप। पास। निकट।

अंतिम–वि० १. आखिरी। जो अंत में हो। सबके पीछे का। २. सबसे बढ़कर। हद दरजे का। चरम।

अंतेउर, अंतेवर*–संज्ञा पुं० रनिवास। जनानखाना। अंतःपुर।

अंतेवासी–संज्ञा पुं० १. गुरु के समीप रहनेवाला विद्यार्थी। शिष्य। चेला। २. ग्राम के बाहर रहनेवाला। चांडाल। अंत्यज। अछूत।

अंतःकरण–संज्ञा पुं० १. मन। वह इंद्रिय जो संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुख-दुःखादि का अनुभव करती है। २. नैतिक बुद्धि। विवेक।

अंतःपटी–संज्ञा स्त्री० किसी चित्रपट में नदी, पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य। १. सोम-रस छानने का वस्त्र। २. विवाह में यमराज को आहुति देते समय वर-वधू और अग्नि के बीच डाला जानेवाला पर्दा। ३. रंगमंच पर सबसे आगेवाले पर्दे के बाद के पर्दे।

अंतःपुर–संज्ञा पुं० [संज्ञा अंतःपुरिक] जनानखाना। रनिवास। भीतरी महल। परदे में रहनेवाली स्त्रियों के रहने का स्थान।

अंतःपुरिक–संज्ञा पुं० कंचुकी। अंतःपुर का रक्षक।

अंतःराष्ट्रिय–वि० दे० अंताराष्ट्रिय।

अंतःशरीर–संज्ञा पुं० आत्मा। लिंगशरीर।

अंतःसंज्ञा–संज्ञा पुं० १. वह जीव जो अपने सुख-दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सके। जैसे, वृक्ष। २. अनुभव, चेतना।

अंत्य–वि० अंतिम। नीच। अधम जाति का। आखिरी। सबसे बाद का।
संज्ञा पुं० १. वह जिसकी गणना अंत में हो। जैसे, लग्नों में मीन, नक्षत्रों में रेवती। २. दस सागर की संख्या (१०००,०००,०००,०००,०००)। यम।

अंत्यकर्म–संज्ञा पुं० अंत्येष्टि क्रिया। प्रेतकर्म। मरण के बाद से त्रयोदशाह तक की पिंडदानादि विधि।

अंत्यज–संज्ञा पुं० १. जिसका जन्म अंतिम वर्ण में हुआ हो। शूद्र जो अछूत समझा जाय या जिसका छुआ हुआ जल द्विज ग्रहण न कर सकें; जैसे, धोबी, चमार आदि। २. चांडाल, डोम आदि, जिनका स्पर्श भी वर्जित है।

अंत्यवर्ण–संज्ञा पुं० शूद्र। १. अंतिम वर्ण। २. वर्णमाला के अंत का अक्षर, 'ह'। ३. पद के अंत में आनेवाला अक्षर। अन्त्याक्षर।

अंत्यविपुला–संज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक भेद।

अंत्या–संज्ञा स्त्री० १. चांडाल की स्त्री। चंडालिनी। २. अंत की। अंतिम।

अंत्याक्षर–संज्ञा पुं० १. वह अक्षर जो किसी

शब्द या पद के अंत में आवे। २. वर्णमाला का अंतिम अक्षर "ह"।

अंत्याक्षरी–संज्ञा स्त्री० किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाला दूसरा पद्य या श्लोक कहना। (विद्यार्थियों में प्रचलित)।

अंत्यानुप्रास–संज्ञा पुं० पद्य के शब्दों के अंतिम अक्षरों का सजातीय होना। एक शब्दालंकार। (साहित्य)

अंत्येष्टि–संज्ञा पुं० क्रिया कर्म। शवदाह से सपिंडन तक की विधि।
क्रि० स० शवदाह ।

अंत्र–संज्ञा पुं० अँतड़ी। आँत।

अंत्रकूजन–संज्ञा पुं० आँतों की गुड़गुड़ाहट। आँतों का शब्द।

अंत्रवृद्धि–संज्ञा स्त्री० वह रोग जिसमें आँत उतर जाती है।

अंत्रांडवृद्धि–संज्ञा स्त्री० विशेष रोग जिसमें आँतें उतरकर फोते में चली आती हैं और वह फूल जाता है।

अंत्री*–संज्ञा स्त्री० आँत। अँतड़ी।

अंथऊ–संज्ञा पुं० सूर्यास्त से पहले का भोजन (जैन)।

अंदर–क्रि० वि० [फा०] भीतर।

अँदरसा–संज्ञा पुं० मिठाई विशेष ।

अंदरूनी–वि० [फा०] भीतर का।

अंदाज–संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा अंदाजी, क्रि० वि० अंदाजन] १. अनुमान। अटकल। मान। नाप जोख। कूत। तखमीना। दे० "अंदाजा"। २. ढंग। ढब। तौर। तर्ज। ३. चेष्टा। मटक। भाव।

अंदाजन–क्रि० वि० [फा०] १. अनुमान से। अन्दाज से। अटकल से। २. लगभग। करीब ।

अंदाजा–संज्ञा पुं० [फा०] अनुमान। अटकल। कूत। तखमीना।

अंदु, अंदुक–संज्ञा पुं० १. पाजेब। स्त्रियों के पैर में पहनने का विशेष गहना। पैरी। पैंजनी। २. हाथी को बाँधने का साँकड़ा या रस्सी।

अँदुआ–संज्ञा पुं० लकड़ी का बना काँटेदार यंत्र जो हाथियों के पिछले पैर में डाला जाता है।

अंदेशा–संज्ञा पुं० [फा०] १. सोच। फिक्र। चिंता। २. संदेह। संशय। अनुमान। शक। ३. खटका। आशंका। भय। डर। ४. हानि। ५. दुविधा। पसोपेश। असमंजस। आगा पीछा।

अंध–वि० [संज्ञा अंधता] १. अंधा। नेत्रहीन। चक्षु-विहीन। बिना आँख का। दृष्टिरहित व्यक्ति। २. मूर्ख। अज्ञानी। अनजान। अविवेकी। बुद्धिहीन। ३. अचेत। असावधान। गाफिल। ४. उन्मत्त। मस्त। मतवाला।
संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जिसे आँखें न हों। नेत्रहीन प्राणी। अंधा। २. पानी। जल। ३. चमगादड़। ४. उल्लू। ५. अंधकार। अँधेरा। ६. कवियों द्वारा नियत पद्धति के विरुद्ध वर्णन का काव्य-दोष।

अंधक–संज्ञा पुं० १. अंधा। बिना आँखवाला मनुष्य। दृष्टिरहित व्यक्ति। २. दैत्य। जो कश्यप और दिति का पुत्र था। ३. देश-विशेष। ४. मुनि-विशेष। महाभारत में वर्णित एक देश-विशेष के निवासी।

अंधकार–संज्ञा पुं० तिमिर। अँधेरा।

अंधकूप–संज्ञा पुं० १. अंधा कुआँ। सूखा कुआँ। वह कुआँ जिसका जल सूख गया हो और जो घास-पात से ढका हो। २. एक नरक का नाम। ३. अंधकार।

अंधखोपड़ी–संज्ञा स्त्री० मूर्ख। भोंदू। नासमझ। बुद्धि-रहित।

अंधड़–संज्ञा पु० आँधी। तूफान। गर्द से भरी बड़े झोंके की वायु।

अंधतमस–संज्ञा पुं० १. घोर अंधकार। गहिरा या गाढ़ा अँधेरा। २. नरक-विशेष।

अंधता–संज्ञा स्त्री० १. दृष्टिहीनता। अंधापन। २. मूर्खता (लाक्षणिक प्रयोग)।

अंधतामिस्र–संज्ञा पुं० १. घोर अँधेरेवाला नरक। २. सांख्य में इच्छा के विपर्य्यय या विघात के पाँच भेदों में से एक। ३. जीने की इच्छा रहते भी मरने का भय। ४. पाँच क्लेशों में से एक। मृत्यु का भय। (योग) ५. इस नाम का नरक।

अंधधुंध*–संज्ञा स्त्री० दे० "अंधाधुंध"। अंधों के समान, बिना नियम के।

अंधपरंपरा–संज्ञा स्त्री० १. बिना विचारे या समझे-बूझे दूसरों के या पुरानी चाल का अनुकरण। २. भेड़ियाधँसान। ३. लकीर के फकीर।

अंधपूतना-ग्रह–संज्ञा पुं० बालकों का एक रोग-विशेष।

अंधबाई*–संज्ञा स्त्री० अंधड़। तूफान। आँधी।

अँधरा†*–वि० दे० "अंधा"।

अँधरी–संज्ञा स्त्री० १. अंधी स्त्री। २. पहिए की गोलाई को पूरा करनेवाली धनुष के आकार की लकड़ियों की चूल।

अंधविश्वास–संज्ञा पुं० बिना विचार किये किसी बात पर विश्वास। विवेकशून्य धारणा। तर्क की कसौटी पर प्रायः खरा न उतर सकनेवाला विश्वास।

अंधस–संज्ञा पुं० भात। राँधे हुए चावल।

अंधसुत–संज्ञा वि० अन्धे का पुत्र। राजा दुर्योधन आदि।

अंधसैन्य–संज्ञा पुं० सेना जो शिक्षित न हो।

अंधा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अंधी] जिसे कुछ दिखलाई न पड़े। दृष्टिरहित जीव।

वि० १. बिना आँख का। दृष्टिरहित। २. विचार-रहित। मूर्ख। अविवेकी। जो अच्छे-बुरे का विचार न रखता हो।

मुहा०–अंधा बनना=जान बूझकर किसी बात पर ध्यान न देना।–अंधे की लकड़ी या लाठी=१. एकमात्र सहारा। आधार या आसरा। २. इकलौता लड़का। अंधा दीया=वह दीपक जो मंद या धुँधला जलता हो।–अंधा भैंसा=एक प्रकार का लड़कों का खेल। अंधा बनाना=भ्रम में डालना। मूर्ख बनाना। ३. जिसमें कुछ दिखाई न दे। अंधकार।

यौ०–अंधा शीशा या आइना=धुँधला दर्पण। वह शीशा जिसमें चेहरा साफ न दिखाई देता हो। अंधा कुआँ=१. सूखा कुआँ। वह कुआँ जिसमें पानी न हो और जिसका मुँह घास-पात से ढका हो। २. लड़कों का खेल विशेष।

अंधाधुंध–संज्ञा स्त्री० १. बहुत अंधेरा। घोर अंधकार। २. अन्याय। अंधेर। अविचार। धींगाधींगी। गड़बड़।

अंधार*†–संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा"। संज्ञा पुं० रस्सी का जाल जिसमें भूसा, घास आदि भरकर बैल पर लादते हैं।

अंधाहुली–संज्ञा स्त्री० दे० "चोरपुष्पी"।

अँधियार†–संज्ञा पुं० वि० दे० "अंधकार" या "अँधेरा"।

अँधियारा*‡–संज्ञा पुं० वि० दे० "अंधकार" या "अँधेरा"।

अँधियारी–संज्ञा स्त्री० वह पट्टी जो शिकारी पक्षियों, उपद्रवी घोड़ों और चीतों की आँख पर बाँधी जावे।

अंधसंधि–सं० पुं० छिद्र। छेद। भौंका। गढ़ा।

अंधु–संज्ञा पुं० कुआँ। जल।

अंधेर–संज्ञा पुं० १. उत्पात। अन्याय। अत्याचार। जुल्म। २. कुप्रबंध। अंधाधुंध। उपद्रव। गड़बड़। धींगाधींगी।

अंधेरखाता–संज्ञा पुं० १. गड़बड़ी। व्यतिक्रम। हिसाब-किताब और व्यवहार में गड़बड़ी। २. अविचार। अन्याय। कुप्रबंध। अन्यथाचार।

अँधेरना*–क्रि० स० अँधेरा करना।

अँधेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अँधेरी] १. प्रकाश का अभाव। अंधकार। तम। २. धुँधलापन। धुंध।

यौ०–अँधेरा गुप घोर अंधकार। ऐसा अंधेरा जिसमें कुछ दिखाई न दे। ३. परछाईं। छाया। ४. शोक। उदासी। उत्साहहीनता।

वि० अंधकारमय। प्रकाशरहित।

मुहा०–अँधेरे घर का उजाला=१. अत्यंत सुंदर। कांतिमान्। २. शुभ लक्षणोंवाला। कुलदीपक। वंश की मर्यादा बढ़ानेवाला। ३. इकलौता बेटा। मुँह अँधेरे या अँधेरे मुँह=बड़े सबेरे। बड़े तड़के।

अँधेरा-उजाला–संज्ञा पुं० "रात-दिन" का खिलौना। कागज मोड़कर बनाया हुआ लड़कों का एक खिलौना।

अँधेरिया–संज्ञा स्त्री० १. अँधेरा। अंधकार। २. अँधेरी रात। काली रात। अँधेरा पाख। संज्ञा स्त्री० [देश०] ऊख की पहली गोड़ाई।

अँधेरी–संज्ञा स्त्री० १. अंधकार। तम। प्रकाश का अभाव। २. अँधेरी रात। काली

रात। ३. आँधी। अंधड़। ४. घोड़ों या बैलों की आँख पर डालने का परदा। दे० 'अँधियारी'।

मुहा०–अँधेरी डालना या देना= किसी की आँख मूदकर उसकी दुर्गति करना। वि० प्रकाशरहित। तमसाच्छादित। बिना उजले की। जैसे—अँधेरी रात।

मुहा०–अँधेरी कोठरी=१. पेट। गर्भ। धरन। कोख। २. गुप्त भेद। रहस्य।

अँधोटी–संज्ञा स्त्री० अँधियारी। घोड़े या बैल की आँख बंद करने का ढक्कन।

अंध्यार*–संज्ञा पुं० दे० "अंधकार" या "अँधेरा"।

अँध्यारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "अँधेरी"।

अंध्र–संज्ञा पुं० १. शिकारी। बहेलिया। चिड़ीमार। व्याध। २. वैदेहक पिता और करावर माता से उत्पन्न नीच जाति। दक्षिणदेश का एक प्रान्त विशेष। अंध्र या आंध्र देश का निवासी।

अंध्रभृत्य–संज्ञा पुं० मगध देश का एक प्राचीन राजवंश।

अंब–संज्ञा स्त्री० दे० "अंबा"। माता। संज्ञा पुं० आम का वृक्ष। पेड़।

अंबक–संज्ञा पुं० १. नेत्र। आँख। चक्षु। २. पिता। ३. ताँबा।

अंबत–संज्ञा पुं० खट्टा, खटाई।

अंबर–संज्ञा पुं० १. कपड़ा। वस्त्र। पट। २. स्त्रियों के पहनने की एक रँगी किनारेदार धोती। ३. आसमान। आकाश। ४. कपास। ५. एक सुगंधित वस्तु जो ह्वेल मछली की अँतड़ियों में जमी हुई मिलती है। ६. इत्र। ७. अभ्रक धातु। अबरक। ८. राजपूताने का एक प्राचीन नगर। ९. अमृत। १०. प्राचीन ग्रंथों के अनुसार उत्तरीय (क्व०)

भारत का देश-विशेष। ११. मेघ। बादल।

अंबरबारी–संज्ञा पुं० विशेष झाड़ी जिसकी लकड़ी और जड़ से रसवत या रसौत निकलता है। दारु हल्दी। चित्रा।

अंबर-डंबर–संज्ञा पुं० संध्या-समय की लाली जो सूर्य के डूबते समय होती है। (मेघ)

अंबरबेलि–संज्ञा स्त्री० आकाशबेल।

अँबराई–संज्ञा स्त्री० आम की बारी। आम का बगीचा। अँबराव।

अँबराव*–संज्ञा पुं० दे० "अँबराई"।

अंबरांत–संज्ञा पुं० १. कपड़े का किनारा। २. क्षितिज। वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं।

अंबरीष–संज्ञा पुं० १. भाड़। २. वह मिट्टी का बर्तन जिसमें भड़भूजे गरम बालू डालकर दाना भूनते हैं। ३. शिव। ४. विष्णु। ५. सूर्य्य। भास्कर। ६. किशोर अर्थात् ११ वर्ष से छोटा बालक। ७. विशेष नरक। ८. अयोध्या का एक सूर्य्यवंशी परम वैष्णव राजा। ९. आमड़े का पेड़ और फल। १०. अनुताप। पश्चात्ताप। ११ लड़ाई। युद्ध। समर।

अंबरौक–संज्ञा पुं० देवता।

अंबल–संज्ञा स्त्री० मादक वस्तु। खट्टा रस।

अंबष्ठ–संज्ञा पुं० [स्त्री०] १. पंजाब के मध्यभाग का प्राचीन नाम। २. अंबष्ठ देश में बसनेवाला मनुष्य। ३. ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष। (स्मृति)। ४. हाथीवान। फीलवान। महावत। हस्तिपक।

अंबष्ठा–संज्ञा स्त्री० १. अंबष्ठ की स्त्री। २. ब्राह्मणी लता। पाढ़ा।

अंबा–संज्ञा स्त्री० १. जननी। माता। मा। अम्मा। २. दुर्गा। पार्वती। देवी। ३. एक लता। पाढ़ा अंबष्ठा। ४ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की तीन कन्याओं में सबसे बड़ी जिन्हें भीष्म पितामह अपने भाई विचित्र-वीर्य्य के लिए हर लाये थे।

अंबापोली–संज्ञा स्त्री० अमावट। अमरस।

अंबार–संज्ञा पुं० [फा०] समूह। ढेर। राशि।

अंबारी–संज्ञा स्त्री० १. चँदवा। हाथी की पीठ पर रखने का हौदा जिसके ऊपर एक छज्जेदार मंडप होता है। २. छज्जा।

अंबालिका–संज्ञा स्त्री० १. माता। मा। दे० 'अंबष्ठा' २. अंबष्ठा लता। ३. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में

से सबसे छोटी जिसे भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिए हर कर लाये थे।

अंबिका–संज्ञा स्त्री० दे० 'अंबा' १. माता। मा। २. देवी। दुर्गा। पार्वती। ३. जैनों की एक देवी। ४. कुटकी का वृक्ष। ५. अंबष्ठा लता। ६. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में मझली, जिसे भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिए हरकर लाये थे।

अंबिकेय–संज्ञा पुं० १. गणेश। २. कार्त्तिकेय। ३. धृतराष्ट्र। ४. अंबिका के पुत्र।

अँबिया–संज्ञा स्त्री० टिकोरा। केरी। बिना जाली पड़ा आम का छोटा कच्चा फल।

अँबिरथा*–वि० वृथा। व्यर्थ। बेकार।

अंबु–संज्ञा पुं० १. जल। पानी। सलिल। नीर। २. सुगंधबाला। ३. चार की संख्या। ४. जन्मकुंडली के १२ स्थानों या घरों में चौथा।

अंबुकण–संज्ञा पुं० ओस। तुषार। शीत। सीकर।

अंबुज–संज्ञा पुं० [स्त्री० अंबुजा] १. कमल। पद्म। २. जल से उत्पन्न वस्तु। ३. वज्र। ४. बेत। ५. ब्रह्मा। ६. शंख। ७. जल से उत्पन्न कोई भी वस्तु।

अंबुजन्म–संज्ञा पुं० कमल। पद्म। पंकज।

अंबुद–वि० जो जल दे।

संज्ञा पुं० १. मेघ। घटा। बादल। २. मोथा।

अंबुधर–संज्ञा पुं० वारिद। मेघ। बादल। वारिधर।

अंबुधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर। सिंधु। जलधि। पाथोधि।

अंबुनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर। पयोधि। वारिधि।

अंबुप–संज्ञा पुं० १. सागर। समुद्र। २. वरुण। ३. शतभिषा नक्षत्र।

अंबुपति–संज्ञा पुं० १. सागर। २. वरुण।

अंबुभृत–संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. सागर। ३. मोथा।

अंबुराशि–संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।

अंबुरुह–संज्ञा पुं० कमल।

अंबुवाह–संज्ञा पुं० मेघ। बादल। वारिद।

अंबुवेतस–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पानी में होनेवाला बेंत।

अंबुशायी–संज्ञा पुं० भगवान् विष्णु।

अंबोद–संज्ञा पुं० बादल। जलद। अभ्र। मेघ।

अंबोह–संज्ञा पुं० [फा०] झुंड। समाज। जमघट। भीड़भाड़। समूह।

अंभ–संज्ञा पुं० दे० 'अंबु' १. पानी। जल। २. पितरलोक। ३. लग्न से चौथी राशि। ४. चार की संख्या। ५. देवता। ६. पितर। ७. असुर। राक्षस।

अंभसू–संज्ञा पुं० [सं०] अंबु। जल। पानी।

अंभसार–संज्ञा पुं० मोती।

अंभनिधि–संज्ञा पुं० दे० "अंभोनिधि"। समुद्र। सागर। जलधि।

अंभोज–वि० जल मे उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. पद्म। कमल। २. चंद्रमा। ३. सारस पक्षी। ४. शंख। ५. कपूर।

अंभोधर–संज्ञा पुं० १. जलद। बादल। मेघ। २. मोथा।

अंभोनिधि–संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।

अंभोराशि–संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।

अंभोरुह–संज्ञा पुं० पद्म। नलिन। अरविंद। कमल।

अँवरा†–संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।

अंश–संज्ञा पुं० १. विभाग। भाग। टुकड़ा। २. बाँट। हिस्सा। ३. भाज्य अंक। ४. भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ५. चौथा भाग। ६. सोलहवाँ भाग। कला। ७. वृत्त की परिधि का ३६०वाँ भाग जिसे इकाई मानकर कोण वा चाप का प्रमाण बतलाया जाता है। ८. कारबार या लाभ का हिस्सा। ९. बारह आदित्यों में से एक। १०. दिन। ११. पितृधन का भाग।

अंशक–संज्ञा पुं० [स्त्री० अंशिका] दे० 'अंश' १. टुकड़ा। भाग। २. दिन। ३. पट्टीदार। हिस्सेदार। साझीदार।

वि० १ अंश धारण करनेवाला। अंशधारी। २. विभाजक। बाँटनेवाला।

अंशतः–क्रि० वि० किसी अंश में। कुछ हद तक। थोड़ी मात्रा में।

अंशपत्र—संज्ञा पुं० वह कागज जिसमें पट्टीदारों का हिस्सा या अंश लिखा हो।
अंशल—संज्ञा पुं० बाँटनेवाला। भाग करनेवाला। चाणक्य मुनि।
अंशसुता—संज्ञा स्त्री० यमुना।
अंशावतार—संज्ञा पुं० वह अवतार जो पूर्ण न हो और जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ अंश ही हो।
अंशांश—संज्ञा पुं० भाग का भाग।
अंशी—वि० [स्त्री० अंशिनी] **१**. अंशधारी। अंश रखनेवाला। २. अवतारी। देवता की सामर्थ्य या शक्ति रखनवाला।
संज्ञा पुं० हिस्सेदार। अवयवी। बटाऊ। भागी। बाँटनेवाला। बटवैया।
अंशु—संज्ञा पुं० १. रश्मि। किरण। प्रभा। आभा। २. लता का कोई भाग। ३. तागा। सूत। ४. बहुत सूक्ष्म हिस्सा। ५. दिनकर। सूर्य्य। ६. मयूख।
अंशुक—संज्ञा पुं० १. रेशमी कपड़ा। २. पतला या महीन कपड़ा। ३. दुपट्टा। उपरना। ४. ओढ़नी। ५. तेजपात।
अंशुजाल—संज्ञा पुं० रश्मि-समुदाय।
अंशुधर—संज्ञा पुं० १. रश्मिधारी। सूर्य। २. अग्नि। ३. चन्द्रमा। ४. दीप। ५. देवता। ६. ब्रह्मा। ७. प्रतापी।
अंशुनाभि—संज्ञा स्त्री० वह बिंदु जिस पर समानांतर प्रकाश की किरणें तिरछी और इकट्ठी होकर मिलें।
अंशुमान्—संज्ञा पुं० १. दिनकर। सूर्य्य। २. अयोध्या के सूर्य्यवंशीय राजा विशेष।
अंशुमाला—संज्ञा स्त्री० सूर्य की किरणें या उनका जाल।
अंशुमाली—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. तिग्मरश्मि।
अंस—संज्ञा पुं० दे० "अंश"। १. भाग। हिस्सा। २. कंधा।
अंसल—वि० बलवान्।
अँसुआ, अँसुवा*—संज्ञा पुं० दे०"आँसू"। अश्रु।
अँसुवाना*‡—क्रि० अ० आँसू से भर जाना। अश्रुपूर्ण होना।
अंह—संज्ञा पुं० १. दुष्कर्म। अपराध। पाप। २. व्याकुलता। दुःख। ३. बाधा। विघ्न।
अँहड़ा—संज्ञा पुं० बटखरा। तौलने का बाट।
अंहस्पात—संज्ञा पुं० मल मास। क्षय मास।
अँहुड़ी—संज्ञा स्त्री० लता-विशेष। बाकला। बरकला।
अउर*—संयो० दे० "तथा" "और"।
अऊत*—वि० [स्त्री० अऊती] १. पुत्रहीन, जिसके सन्तान न हो। बिना पुत्र का। निपूता। निर्वंश। क्वारा। २. मूर्ख। जाहिल।
अऊलना*—क्रि० अ० १. जलना। गरम होना। २. गरमी पड़ना। दे० "औलना"। ३. छिदना। चुभना। ४. छिपना। ५. छिलना।
अकंटक—वि० १. बिना काँटे का। २. बाधा-रहित। बिना रोक टोक का। ३. शत्रु-रहित। अविरोधी। निरुपाधि। चैन से।
अकंपन—वि० [वि० अकंपित, अकंप्य] १. दृढ़। कठोर। न काँपनेवाला। स्थिर। २. मजबूत।
सं० पुं० रावण के एक सेनापति का नाम।
अक—संज्ञा पुं० १. पाप। २. दुःख।
अकउआ—संज्ञा पुं० अर्क। मदार। अकवन।
अकच—संज्ञा पुं० केतुग्रह।
वि० बिना बालों का।
अकच्छ—वि० १. नंगा। नग्न। २. व्यभिचारी। परस्त्रीगामी। ३. मेहरा। लम्पट। ४. जैन सम्प्रदाय के साधु, विशेषतः ये निर्ग्रन्थ कहे जाते हैं। ५. जो धोती आदि की लाँग न बाँधे।
अकड़—संज्ञा स्त्री० १. ऐंठ। खिंचाव। बल। मरोड़। २. कड़ाई के साथ ऐंठ। ३. अहंकार। घमंड। शेखी। ४. धृष्टता। ढिठाई। ५. हठ। जिद। अड़। ६. टेढ़ापन। बाँकापन। ७. फुलाहट।
अकड़ना—क्रि० अ० [संज्ञा अकड़, अकड़ाव] १. ऐंठना। सूखकर सिकुड़ना और कड़ा होना। २. ठिठुरना। सुन्न होना। ३. तनना। छाती को उभाड़कर डील को थोड़ा पीछे की ओर झुकाना। ४. शेखी करना। घमंड दिखाना। ५. धृष्टता या ढिठाई करना। ६. हठ करना। जिद करना। अड़ना। ७. चिटकना। मिजाज बदलना।

अकड़बाई–संज्ञा स्त्री० ऐंटन। कुड़ल। शरीर की नसों का पीड़ा के सहित खिंचना। अंगग्रह। वातरोग। नशों का जकड़ना।

अकड़बाज–संज्ञा पुं० अकड़ैत। छैला। बाँका। वि० शेखीबाज। अभिमानी। ऐंठदार।

अकड़बाजी–संज्ञा स्त्री० शेखी। अभिमान। ऐंठ।

अकड़-मकड़–संज्ञा स्त्री० ऐंठकर चलने की चाल। घमंड। अभिमान।

अकड़ा–संज्ञा पुं० रोग-विशेष।

अकड़ाव–संज्ञा पुं० खिंचाव। तनाव। ऐंठन।

अकड़ैत–वि० दे० "अकड़बाज"। अभिमानी। बाँका। छैला।

अकत*–वि० पूर्ण। सारा। समूचा। क्रि० वि० बिल्कुल। सरासर।

अकथ–वि० १. अवर्णनीय। जो कहा न जा सके। अनिर्वचनीय। २. न कहने योग्य।

अकथा–संज्ञा स्त्री० १ कुकथा। मन्दकथा। २. अपभाषा।

अकथनीय–वि० दे० "अकथ"। जो न कहा जा सके। अनिर्वचनीय। अवर्णनीय। न कहने योग्य।

अकथ्य–वि० दे० "अकथ" अवर्णनीय। अनिर्वचनीय। न कहने योग्य।

अकधक*†–संज्ञा पु० १. आगा पीछा। सोच विचार। २. आशंका। डर। भय।

अकनना†–क्रि० स० १. आहट लेना। कान लगाकर सुनना। २. सुनना।

अकना–क्रि० अ० घबराना। ऊब जाना।

अकपट–वि० कपटहीन। सरल। सीधा। छल-रहित।

अकपटता–संज्ञा स्त्री० उदारता। सरलता।

अकबक–संज्ञा स्त्री० १. निरर्थक वाक्य। अनाप शनाप। व्यर्थ का बकना। असंबद्ध प्रलाप। २. धड़क। घबराहट। खटका। ३. चतुराई। छक्का-पंजा।
वि० [सं० अवाक्] निःस्तब्ध। भौंचक्का।

अकबकाना–क्रि० अ० घबराना। चकित या भौचक्का होना।

अकबरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मिठाई-विशेष। २. लकड़ी पर की एक प्रकार की नक्काशी।
वि० अकबर बादशाह संबंधी।

अक़बाल–संज्ञा पुं० दे० "इकबाल"। प्रताप।

अकर–वि० १. कठिन। न करने योग्य। विकट। २. बिना हाथ का। हस्तरहित। ३. बिना महसूल या कर का।

अकरकरा–संज्ञा पुं० पौधा-विशेष की जड़ जो दवा के काम में आती है।

अकरखना*–क्रि० स० १. तानना। खींचना। २. चढ़ाना।

अकरण–संज्ञा पुं० [वि० अकरणीय] १. कर्म की कमी या अभाव। २. फलरहित या कर्म न किये हुए के समान होना। ३. बिना इंद्रियों के। ईश्वर। परमात्मा। वि० कठिन। न करने योग्य।
*वि० बिना कारण का।

अकरणीय–वि० जो करने के योग्य न हो। न करने लायक।

अकरा†–वि० [स्त्री० अकरी] १. मोल न लेने योग्य। तेज। महँगा। अधिक दाम का। २. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया। खरा।

अकरास–संज्ञा स्त्री० देह टूटना। अँगड़ाई। संज्ञा स्त्री० सुस्ती। आलस्य।

अकरासू–वि० स्त्री० गर्भिणी। गर्भवती।

अकरी–संज्ञा स्त्री० लकड़ी का चोंगा जो हल में लगा रहता है और जिसमें से बीज डालते जाते हैं।

अकर्त्तव्य–वि० जो करने योग्य न हो। जिसे करना उचित न हो।

अकर्त्ता–वि० १. कर्म न करनेवाला। कर्म से विरत। २. 'सांख्य' का पुरुष, जो कर्मों से निर्लिप्त रहता है।

अकर्तृक–संज्ञा पुं० जिसका कोई रचयिता या कर्त्ता न हो।

अकर्म–संज्ञा पुं० १. न करने योग्य काम। कुकर्म। अपराध। पाप। अधर्म। बुराई। बुरा कर्म। २. कर्म का अभाव। वि०–कामहीन, बेकार बैठा। निगोड़ा। चाण्डाल। अपराधी।

अकर्मक–संज्ञा पुं० ऐसी क्रिया जिसे किसी कर्म की आवश्यकता न हो। (व्या०)

अकर्मण्य–वि० आलसी। कुछ काम न करने-वाला। काम करने के अयोग्य। गया-बीता।

अकर्मण्यता–संज्ञा स्त्री० अकर्मण्य होने का भाव। निकम्मापन। आलस्य।

अकर्म्मी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अकर्मिणी] पापी। दुष्कर्मी। अपराधी। बुरा कर्म्म करनेवाला।

अकलंक–वि० निष्कलंक। निर्दोष। दोषरहित। †संज्ञा पुं० लांछन। दोष।

अकलंकता–संज्ञा स्त्री० निष्कलंकता। निर्दोषिता।

अकलंकित–वि० निर्दोष। कलंकरहित।

अकल–वि० १. जिसके अवयव न हों। जिसके खंड न हों। समूचा। २. विना चतुराई या कला का।
वि० विकल। व्याकुल। बेचैन।
संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

अकलुष–वि० जिसमें कोई पाप या दोष न हो। पवित्र। शुद्ध। निर्मल। साफ।

अकल्पित–वि० सच्चा। कल्पना-रहित।

अकल्याण–वि० अमंगल। अशकुन। अशुभ, मन्द। बुरा।

अकलखुरा–वि० १. अकेला खानेवाला। मतलबी। स्वार्थी। २. मनहूस। रूखा। जो मिलनसार न हो। ३. डाही। ईर्ष्यालु।

अकलबीर–संज्ञा पुं० १. भाँग की तरह का पौधा विशेष। २. वज्र। कलबीर।

अकवन–संज्ञा पुं० मदार। आक। अकौआ।

अकवार–संज्ञा पुं० कुक्ष। कांख। गोदी। दोनों हाथों के बीच का स्थान।

अकस–संज्ञा पुं० १. शत्रुता। द्वेष। अदावत। बैर। २. बुरी उत्तेजना। ईर्ष्या।

अकसना–क्रि० स० १. शत्रुता रखना। बैर करना। २. बराबरी करना।

अकसर–क्रि० वि० [अ०] बहुधा। प्रायः। अधिकतर। विशेष करके। बहुत करके।
*क्रि० वि०, वि० बिना किसी साथ के। अकेले।

अकसीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रसायन। कीमिया। वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। २. वह औषधि जो प्रत्येक रोग का नाश करे।
(वि०) अव्यर्थ। अत्यन्त गुणकारी।

अकस्मात्–क्रि० वि० १. सहसा। अचानक। एकबारगी। अनायास। २. अपने आप। दैवयोग से। संयोगवश।

अकह*–वि० दे० "अकथ"। न कहने योग्य। अवर्णनीय।

अकहुवा*†–वि० दे० "अकथ"। अकथनीय।

अका–(वि०) निर्बोध। जड़। मूढ़। पागल।

अकांड–वि० शाखारहित।
क्रि० वि० सहसा। एकबारगी।

अकांडतांडव–संज्ञा पुं० वितंडावाद। व्यर्थ की उछल-कूद या बकवाद।

अकांडपात–(वि०) होते ही मर जाने-वाला।

अकाज–संज्ञा पुं० [क्रि० अकाजना, वि० अकाजी] १. बिगाड़। कार्य्य की हानि। विघ्न। नुकसान। हर्ज। २. बुरा या खोटा काम। दुष्कर्म।
*क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बिना काम।

अकाजना*–क्रि० अ० १. हानि होना। २. मरना। गत होना।
क्रि० स० हानि या हर्ज करना।

अकाजी*–वि० [स्त्री० अकाजिन] अकाज करनेवाला। बाधक। कार्य्य की हानि करने-वाला।

अकाट्य–वि० न काटने योग्य। जिसका खंडन न हो सके। मजबूत। दृढ़।

अकाम–वि० विना इच्छा का। कामनारहित। निःस्पृह।
क्रि० वि० बिना काम के। अकारथ। निष्फल। निष्प्रयोजन। व्यर्थ।

अकामनिर्जरा–संज्ञा स्त्री० जैनों के मतानुसार कर्मनाश का भेद-विशेष।

अकाय–वि० १. शरीररहित। बिना देह के। २. जन्म न लेनेवाला। शरीर न धारण करनेवाला। ३. निराकार।

अकार–संज्ञा पुं० "अ" अक्षर।

अकारज*–संज्ञा पुं० १. काम की हानि। हर्ज। नुकसान। २. बुरा काम।

अकारन–वि० दे० "अकारण"।

अकारण–वि० १. बिना कारण का। विना वजह का। २. स्वयंभू। जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो।
क्रि० वि० बिना कारण। बेसबब। व्यर्थ। निरर्थक।

अकारथ*–क्रि० वि० निष्फल। बेकाम। बिना प्रयोजन। व्यर्थ। जिसमें कोई लाभ न हो।

अकाल–संज्ञा पुं० [वि० अकालिक] १. कुसमय। अनवसर। २. दुर्भिक्ष। दुष्काल। तेजी। महँगी।
क्रि० अ०—भुखमरी पड़ना।
३. कमी। घाटा। ४. सिक्ख संप्रदाय में परमात्मा का नाम।

अकालकुसुम–संज्ञा पुं० १. बिना ऋतु या समय का फूल (अशुभ)। २. बेसमय की चीज।

अकालपुरुष–संज्ञा पुं० सिक्खों के ग्रन्थों में ईश्वर नाम है।

अकालमूर्ति–संज्ञा स्त्री० अविनाशी या नित्य पुरुष।

अकालमृत्यु–संज्ञा स्त्री० कुसमय की मौत। असामयिक मृत्यु। कम अवस्था में मरना।

अकालिक–वि० असमय में होनेवाला। बेमौका। असामयिक।

अकाली–संज्ञा पुं० [सिक्ख-विशेष] नानकपंथी साधु जो चक्र के साथ सिर में काले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं।

अकाव†–संज्ञा पुं० दे० "आक"। मदार।

अकास*–संज्ञा पुं० दे० "आकाश"।

अकासदीया–संज्ञा पुं० बाँस में लटकाया जानेवाला दीपक (कार्त्तिक मास में एक धार्मिक विधि)।

अकासबानी–संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

अकासी*†–संज्ञा स्त्री० १. चील। २. ताड़ी।

अकिंचित्कर–वि० जिससे कुछ न हो सके। अशक्य। असमर्थ।

अकिंचन–वि० दरिद्र। दीन। दुखी। निर्धन। कंगाल।

अकिंचनता–संज्ञा स्त्री० गरीबी। निर्धनता।

अकिल‡–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"। बुद्धि।

अकिलदाढ़–संज्ञा पुं० पूरी युवा अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत।

अक़ीक़–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का लाल पत्थर जिस पर मुहर खोदी जाती है।

अकीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० बदनामी। अयश। अपयश।

अकीर्तिकर–वि० दुर्नाम करनेवाला। अयशस्कर।

अकुंठ–वि० १. तेज। तीव्र। २. चोखा। तीक्ष्ण। ३. उत्तम। खरा।

अकुताना*–क्रि० अ० दे० "उकताना"। ऊबना। घबड़ाना।

अकुल–वि० १. जिसके कुल में कोई न हो। २. नीच या बुरे कुल का। निगोड़ा।
संज्ञा पुं० बुरा कुल। नीच कुल।

अकुलाना–क्रि० अ० १. व्याकुल होना। घबराना। २. लीन होना। मग्न होना। ३. जल्दी करना। उतावला होना।

अकुलीन–वि० कमीना। क्षुद्र। कुलहीन। नीच वंश में उत्पन्न। कुजाति।

अकुशल–वि० अमंगल, अशुभ। बुरा।

अकूत–वि० अपरिमित। जो कूता न जा सके। बेअंदाज़।

अकूल–वि० जिसका किनारा न हो। जिसका कोई अन्त न हो।

अकूहल*–वि० (देश०) अधिक। बहुत। ज्यादा।

अकृत–वि० १. बिगाड़ा हुआ। २. बिना किया हुआ। ३. स्वयंभू। जो किसी का बनाया न हो। नित्य। ४. प्राकृतिक। ५. बेकाम। निकम्मा। ६. मंदा। बुरा।

अकृतज्ञ–वि० कृतघ्न। किये हुए उपकार को न माननेवाला।

अकृत्रिम–वि० प्राकृतिक। जो बनावटी न हो।

अकृती–वि० जिससे कुछ न हो सके। अकर्मण्य।

अकेला–वि० [स्त्री० अकेली] १. बिना साथी का। तनहा। २. निराला। अद्वितीय।

यौ०—अकेला दम=एक ही जीव। अकेला दुकेला=एक या दो। अधिक नहीं। संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

अकेले—क्रि० वि० १. एकाकी। साथी-रहित। २. केवल।

अकोतर सौ*—वि० एक सौ एक। सौ के ऊपर एक।

अकोर—सं० स्त्री० घूस। मुहभरी। तोहफा।

अकोसना*—क्रि० स० दे० "कोसना"। बुरा-भला कहना। गालियाँ देना। शाप देना।

अकौवा†—संज्ञा पुं० १. आक। मदार। २. गले का कौआ। घंटी।

अर्क—संज्ञा पुं० मदार। दे० अकौवा।

अक्खड़—वि० १. उद्धत। किसी का कहना न माननेवाला। उच्छृंखल। २. झगड़ालू। बिगड़ल। ३. बेडर। निर्भय। ४. अशिष्ट। असभ्य। उद्दण्ड। ५. उजड्ड। जड़। ६. खरा। स्पष्टवक्ता।

अक्खड़पन—संज्ञा पुं० १. उजड्डपन। अशिष्टता। असभ्यता। २. उग्रता। क
३. स्पष्टवादिता। ४. निःशंकता।

अक्खा—संज्ञा पुं० खुरजी। गोन। बैलों पर अनाज आदि लादने का दोहरा थैला।

अक्खो मक्खो—संज्ञा पुं० दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुँह पर 'अक्खो मक्खो' कहते हुए फेरना। (नजर से बचाने के लिए)

अकूत—वि० जो कूता न जा सके। बे-अंदाज। अपरिमित।

अक्रम—वि० बेसिलसिले। बिना क्रम का। अंडबंड। बेतरतीब।
संज्ञा पुं० क्रम का अभाव। व्यतिक्रम।

अक्रम संन्यास—संज्ञा पुं० संन्यास जो क्रम से (ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ के पीछे) न लिया जाकर बीच ही में लिया गया हो।

अक्रमातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० अतिशयोक्ति अलंकार का भेद-विशेष जिसमें कारण के साथ ही कार्य्य का वर्णन होता है।

अक्रिय—वि० १. निश्चेष्ट। स्तब्ध। जड़। २. जो काम न करे। क्रियारहित।

अक्रूर—वि० सरल। कोमल स्वभाव। दयालु। संज्ञा पुं० श्वफल्क का पुत्र एक यादव जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था।

अक़्ल—संज्ञा स्त्री० [अ०] समझ। बुद्धि। ज्ञान। प्रज्ञा।
मुहा०—अक्ल का दुश्मन=बेवकूफ़। मूर्ख। अक्ल का पूरा=(व्यंग) मूर्ख। जड़। अक्ल खर्च करना=समझ का प्रयोग करना। सोचना। अक्ल का चरने जाना=समझ का जाता रहना। बुद्धि का अभाव होना। अक्ल मारी जाना=बुद्धि नष्ट होना।

अक़्लमंद—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा अक्ल-मंदी] बुद्धिमान्। समझदार। चतुर।

अक़्लमंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] विज्ञता। चतुराई। समझदारी।

अक्लिष्ट—वि० १. सरल। सुगम। आसान। सहज। २. बिना कष्ट के।

अक़्ली—वि० अक्ल या बुद्धि-संबंधी तर्क के अनुकूल। समझ के अनुसार। उचित। वाजिब।

अक्ष—संज्ञा पुं० [स्त्री० अक्षा] १. खेलने का पाँसा। २. चौसर। पाँसों का खेल। ३. गाड़ी। छकड़ा। ४. धुरी। ५. वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केन्द्र से होती हुई दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। ६. तराजू की डाँड़ी। ७. मुक-दमा। मामला। ८ आँख। ९. इंद्रिय। १०. साँप। ११. रुद्राक्ष। १२. आत्मा। १३. गरुड़। १४. मण्डल। १५. ज्ञान।

अक्षकूट—संज्ञा पुं० आँख की पुतली।

अक्षक्रीडा—संज्ञा स्त्री० चौपड़। पाँसे का खेल। चौसर।

अक्षत—वि० समूचा। जो टूटा न हो। अखंडित।
संज्ञा पुं० १. बिना टूटा हुआ चावल जो देवताओं को चढ़ाया जाता है। २. जौ। ३. धान का लावा।

अक्षतयोनि—वि० ऐसी कन्या या स्त्री जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षता–वि० जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो (स्त्री)।
संज्ञा स्त्री० वह विधवा स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

अक्षपाद–सं० पुं० १. गौतम ऋषि जो न्यायशास्त्र के प्रवर्त्तक माने जाते हैं। २. नैयायिक। तार्किक।

अक्षम–वि० [संज्ञा अक्षमता] १. असहिष्णु। क्षमारहित। २. असमर्थ। अशक्त। क्षमतारहित।

अक्षमता–संज्ञा स्त्री० १. क्षमा की कमी। असहिष्णुता। २. डाह। ईर्ष्या। ३. असामर्थ्य।

अक्षय–वि० १. जिसका नाश या क्षय न हो। अविनाशी। २. कल्प के अंत तक रहनेवाला। अमर। चिरंजीवी। स्थिर।

अक्षयकुमार–संज्ञा पुं० रावण के उस पुत्र का नाम जो हनुमान द्वारा मारा गया था।

अक्षयतृतीया–संज्ञा स्त्री० आखा तीज। वैशाख शुक्ल तृतीया।

अक्षयनवमी–संज्ञा स्त्री० कार्त्तिक शुक्ला नवमी। (स्नान-दान आदि)।

अक्षयवट–संज्ञा पुं० बरगद का पेड़ जो प्रयाग और गया में है, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते।

अक्षय्य–वि० अक्षय। अविनाशी। जिसका नाश न हो। नित्य।

अक्षर–वि० नित्य। अविनाशी। निर्विकार।सत्य।
संज्ञा पुं० १. अकारादि वर्ण। २. आत्मा। ३. आकाश। ४. ब्रह्म। ५. धर्म। ६. तपस्या। ७. मोक्ष। ८. जल।

अक्षरमाला–संज्ञा स्त्री० वर्णमाला।

अक्षरन्यास–संज्ञा पुं० १. लिखावट। लेख। २. मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नाक, काम आदि छूना। अंगन्यास। (तंत्र तथा धर्मशास्त्र)।

अक्षरविन्यास–संज्ञा पुं० लेख। लिपि।

अक्षरशः–क्रि० वि० बिलकुल। सब। एक एक अक्षर।

अक्षरेखा–संज्ञा स्त्री० वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केन्द्र से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।

अक्षरौटी–संज्ञा स्त्री० १. लेख। लिपि का ढंग। २. वर्णमाला। ३. पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं।

अक्षांश–संज्ञा पुं० १. भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व पश्चिम मानी गई हैं। २. वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। ३. किसी नियत स्थान और भूमध्य रेखा के बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर। ४. किसी नक्षत्र के क्रान्तिवृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणांतर।

अक्षि–संज्ञा स्त्री० आँख। नयन। नेत्र।

अक्षिगत–वि० आँख पर चढ़ा हुआ (शत्रु)।

अक्षिगोलक–संज्ञा पुं० आँख का टेंटर।

अक्षितारा–संज्ञा स्त्री० आँख की पुतली।

अक्षिपटल–संज्ञा पुं० आँख का परदा।

अक्षिविभ्रम–क्रि० अ० आँख घुमाना। कटाक्ष करना।

अक्षिविक्षेप–संज्ञा पुं० कटाक्षपात।

अक्षीव–वि० सहनशील। शान्त।

अक्षुण्ण–वि० १. जो टूटा न हो। अविकृत। समूचा। २. अनाड़ी। ३. अछूत। अघूर्णित। ४. मनस्ताप-रहित।

अक्षोट–संज्ञा पुं० अखरोट।

अक्षोनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

अक्षोभ–संज्ञा पुं० क्षोभ की कमी। शांति।
वि० १. शांत। गंभीर। क्षोभरहित। २. बिना मोह के। ३. निर्भय। निडर। ४. जिसे बुरा काम करते हिचक न हो।

अक्षौहिणी–संज्ञा स्त्री० चतुरंगिणी सेना जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और २१,८७० हाथी होते थे।

अक्खड़–वि० गँवार। जंगली।

अक्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. छाया। प्रतिबिंब। परछाईं। २. चित्र। तसवीर।

अक्सर–क्रि० वि० दे० "अकसर"। प्रायः। कभी-कभी।

अखंग*–वि० जो न चूके। अविनाशी।

अखंड–वि० १. संपूर्ण। समग्र। पूरा। जिसके खंड न हों। खण्डरहित। २. जो बीच में न रुके। लगातार। ३. निर्विघ्न। बेरोक।

अखंडनीय–वि० १. जिसके खंड या टुकड़े न हो सकें। २. पुष्ट। युक्तियुक्त। जिसके विरुद्ध न कहा जा सके।

अखंडल*–वि० [अखंड] १. अविच्छिन्न। अखंड। २. संपूर्ण। समस्त। पूरा। समूचा। संज्ञा पुं० दे० "आखंडल"।

अखंडित–वि० १. अविच्छिन्न। जिसके खण्ड या टुकड़े न हुए हों। २. संपूर्ण। समस्त। ३. बाधारहित। ४. लगातार। जिसका क्रम न टूटा हो।

अखज–वि० [अखाद्य] १. जो खाया न जा सके। न खाने योग्य। २. बुरा।

अखड़ैत–संज्ञा पुं० (प्रत्य०) पहलवान। मल्ल। बलवान् मनुष्य।

अखती-अखतीज–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षय-तृतीया"।

अखनी–संज्ञा स्त्री० [अ० यखनी] शोरवा। मांस का रसा।

अख़बार–संज्ञा पुं० [अ०] समाचारपत्र।

अख़बार-नवीस–संज्ञा पुं० अखबार लिखने-वाला। पत्रकार।

अख़बार-नवीसी–संज्ञा स्त्री० अखबार लिखने का कार्य। पत्रकारी।

अखरना–क्रि० स० कष्टकर होना। खलना। बुरा लगना। अनुचित मालूम होना।

अखरा*–वि० बनावटी। कृत्रिम। झूठा। संज्ञा पुं० जौ का आटा जिसमें भूसी मिली हो।

अखरावट, अखरावटी–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षरौटी"।

अखरोट–संज्ञा पुं० वृक्ष एवं फल-विशेष।

अखर्व–वि० जो खर्व या छोटा न हो। बहुत बड़ा।

अखलाक–संज्ञा पुं० [अ०] आचार। शिष्टा-चार। मुरव्वत। शील।

अखाड़ा–संज्ञा पुं० १. कुश्ती लड़ने या कसरत करने का स्थान। २. साधुओं की सांप्रदायिक मंडली। ३. गाने बजानेवालों और तमाशा दिखानेवालों की मंडली। दल। ४. दरबार। रंगभूमि। सभा।

अखात–संज्ञा पुं० उपसागर। खाड़ी। झील। बड़ा तालाब।

अखाद्य–वि० अभक्ष्य। जो खाने योग्य न हो।

अखिल–वि० १. सब। सारा। समग्र। संपूर्ण। पूरा। समस्त। २. सर्वांगपूर्ण। अखंड।

अखिलेश–संज्ञा पुं० अखिल जगत् का स्वामी। ईश्वर।

अखीर–संज्ञा पुं० [अ०] १. समाप्ति। २. छोर। अंत।

अखूट–वि० अखण्ड, जो न घटे। जो कम न हो। अक्षय। बहुत।

अखेट–संज्ञा पुं० आखेट। शिकार।

अखेटक–संज्ञा पुं० शिकारी।

अखैबर–संज्ञा पुं० अक्षयवट।

अ-खोर*–वि० १. सज्जन। भद्र। २ सुंदर। ३. निर्दोष।

वि० [फा०] आखोर। खराब। निकम्मा। बुरा। संज्ञा पुं० १. कूड़ा-करकट। २. बुरा चारा। खराब घास। बिचाली।

अखोह–संज्ञा पुं० ऊबड़-खाबड़ या ऊँची नीची भूमि।

अखौट अखौटा–संज्ञा पुं० १. चक्की या जाँते के बीच की कीली। २. लोहे या लकड़ी का डंडा जिस पर गड़ारी घूमती है।

अल्लाह–अव्य० आश्चर्यसूचक या उद्वेग शब्द।

अख़्तियार–संज्ञा पुं० दे० "इख़्तियार"। अधिकार।

अख्याति–संज्ञा स्त्री० अकीर्त्ति, अपयश। दुर्नाम।

अख्यायिका–संज्ञा स्त्री० आख्यायिका। छोटी कहानी। प्रचलित कथा।

अख्यान*–संज्ञा पुं० दे० "आख्यान"।

अगंड–संज्ञा पुं० कबंध। वह धड़ जिसका हाथ-पैर कट गया हो।

अग–वि० १. जो न चले। अटल। अचल। २. टेढ़ा चलनेवाला।

संज्ञा पुं० १. वृक्ष। पेड़। २. पहाड़। ३. सूर्य। ४. साँप।

अगज–वि० जो पर्वत से उत्पन्न हुआ हो। संज्ञा पुं० १. हाथी। २. शिलाजीत।

अगटना†–क्रि० अ० एकत्र होना। जमा होना।

अगड़*–संज्ञा पुं० अभिमान। ऐंठ। दर्प। अकड़।

अगड़धत्ता–वि० १. ऊँचा। लंबा। तड़ंगा। २. बड़ा। श्रेष्ठ।

अगड़बगड़–वि० [अनु०] क्रमविहीन। अडबंड। जिसका सिर पैर न हो। पचमेल। संज्ञा पुं० १. प्रलाप। बे सिर पैर की बात। २. अंडबंड काम। व्यर्थ का कार्य।

अगण–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में चार बुरे गण–जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणनीय–वि० १. सामान्य। जो गिनने योग्य न हो। २. असंख्य। अनगिनत।

अगणित–वि० अपार। अनगिनत। बहुत। असंख्य।

अगण्य–वि० १. अनगिनत। २. तुच्छ। साधारण। असार। ३. बहुत। असंख्य।

अगता–क्रि० वि० अग्रिम। पेशगी।

अगति–संज्ञा स्त्री० १. दुर्दशा। खराबी। बुरी गति। २. नरक। मृत्यु के पीछे की बुरी दशा। ३. मरने के पीछे शव की दाह आदि क्रिया। ४. अकालमृत्यु। वि० गति का अभाव। स्थिरता। आश्रयहीन।

अगत्या–क्रि० वि० आगे से। भविष्य। अकस्मात्। विवश हो। लाचारी हालत में। जब और कोई गति न हो।

अगती–वि० दुराचारी। पापी। जिसकी बुरी गति हो।† वि० [सं० अग्रतः] पेशगी। अगाऊ। क्रि० वि० पहले से।

अगद–संज्ञा पुं० दवाई वि० नीरोग। आरोग्य।

अगनित*–वि० दे० "असंख्य"। "अगणित"।

अगनू*–संज्ञा स्त्री० अग्निकोण। उत्तर-पूर्व का कोना।

अगनेउ*–संज्ञा पुं० आग्नेय दिशा। अग्निकोण। उत्तर-पूर्व का कोना।

अगनेत*–संज्ञा पुं० अग्निकोण। आग्नेय दिशा।

अगम–वि० १. दुर्गम। अवघट। जहाँ पहुँच न हो सके। २. विकट। कठिन। ३. अलभ्य। दुर्लभ। ४. बहुत। अत्यंत। अधिक। ५. दुर्बोध। बुद्धि के परे। ६. बहुत गहरा। अथाह। संज्ञा पुं० दे० "आगम"।

अगमन*–क्रि० वि० १. पहले। प्रथम। आगे। २. पहले से। आगे से।

अगमनीया–वि० जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने की मनाही हो, जैसे गुरु-पत्नी आदि।

अगमानी*–संज्ञा पुं० सरदार। अगुआ। नायक। संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"। आगे जाकर स्वागत।

अगम्य–वि० १. जहाँ किसी की पहुँच न हो सके। गहन। अवघट। २. कठिन। मुश्किल। ३. अधिक। अत्यंत। ४. जहाँ बुद्धि काम न दे। दुर्बोध। अज्ञेय। ५. अथाह। बहुत गहरा।

अगम्या–वि० (स्त्री) जिससे साथ संभोग करने की मनाही हो। जैसे राजपत्नी, गुरुपत्नी, विमाता आदि।

अगर–संज्ञा पुं० विशेष पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है। अव्य० [फा०] जो। यदि। मुहा०–अगर मगर करना = १. आगा पीछा करना। २. तर्क करना। हुज्जत करना।

अगरई–वि० रंग-विशेष। श्यामता लिये हुए सुनहले संदली रंग का।

अगरचे–अव्य० [फा०] यद्यपि। गोकि।

अगरना*–क्रि० अ० बढ़ना। अगुआ बनना।

अगरबत्ती–संज्ञा स्त्री० धूपबत्ती।

अगरवाला–संज्ञा पुं० वैश्यवर्ण के अन्तर्गत एक शाखा। एक जाति।

अगरा*–वि० १. पहला। अगला। प्रथम। २. उत्तम। श्रेष्ठ। बढ़कर। ३. अधिक। बहुत।

अगराना*–क्रि० स० दुलार दिखाना।
अगरी–संज्ञा स्त्री० घास-विशेष।
[सं० अर्गल] ब्योंड़ा। लोहे या लकड़ी का डंडा जो किवाड़ में रोक की तरह पल्लों के पीछे बेंड़ा लगाया जाता है। किवाड़ बंद करने के लिए इसे दीवाल में छेद करके या पल्लों के पीछे कुंडों में ठहरा दिया जाता है।
संज्ञा स्त्री० फूस की छाजन का ढंग विशेष।
*संज्ञा स्त्री० बुरी बात। अनुचित बात। अंडबंड बात।
अगरु–संज्ञा पुं० ऊद। अगर की लकड़ी।
अगरो*–वि० १. अगला। आगे का। बड़ा। २. निपुण। चतुर।
अगल बगल–क्रि० वि० [फा०] आसपास। दोनों पार्श्वों में। दोनों बगलों में। दोनों ओर। इधर उधर।
अगला–वि० [स्त्री० अगली] १. सामने का। आगे का। "पिछला" का। विपरीत। किसी वस्तु के आगे की (अग्रवर्ती) वस्तु। २. प्रथम। पहले का। पूर्ववर्ती। ३. पुराना। प्राचीन। ४. आनेवाला। आगामी। ५. दूसरा। अपर।
संज्ञा पुं० १. प्रधान। मुखिया। २. चतुर मनुष्य। ३. पुरखा। पूर्वज। (बहुवचन में)
अगवना–क्रि० अ० तैयार होना। आगे बढ़ना। उद्यत होना।
अगवा–सं० पुं० दूत। अगवानी।
अगवाई–संज्ञा स्त्री० अगवानी। स्वागत।
संज्ञा पुं० अगुआ। आगे चलनेवाला।
अगवान–संज्ञा पुं० १. अगवानी करनेवाला। २. कन्यापक्ष के लोग जो बरात का आगे बढ़कर स्वागत करते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।
अगवानी–संज्ञा स्त्री० १. स्वागत। अभ्यर्थना। अतिथि के निकट पहुँचने पर आगे बढ़कर उससे सादर मिलना। पेशवाई। २. विवाह में आगे बढ़कर बरात का स्वागत करने की रीति।
*संज्ञा पुं० नेता। मुखिया। अगुआ।

अगवार–संज्ञा पुं० १. हलवाहे आदि के लिए अलग किया हुआ अन्न। २. ओसाने में भूसे के साथ चला जानेवाला अन्न।
अगवाँसी–संज्ञा स्त्री० १. हल की वह लकड़ी जिसमें फाल (लोहे का नुकीला भाग) लगा रहता है। २. उपज में हलवाहे का भाग।
अगवाही–सं० स्त्री० अग्निदाह।
अगस्त–संज्ञा पुं० दे० "अगस्त्य"। अंगरेजी वर्ष का आठवाँ मास।
अगस्त्य–संज्ञा पुं० १. विशेष ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २. विशेष तारा जो भादों में सिंह के सूर्य्य के १७ अंश पर उदय होता है। ३. पेड़ विशेष जिसके फूल अर्द्धचंद्राकार सफेद या लाल होते हैं।
अगह*–वि० १. चंचल। जो हाथ में न आ सके। जो पकड़ में न आवे। २. अवर्णनीय। अचिन्तनीय। ३. कठिन।
अगहण–अगहन–संज्ञा पुं० [वि० अग्रहायण-अगहनिया, अगहनी] मार्गशीर्ष। हेमंत ऋतु का पहला महीना। मगसिर।
अगहनिया–वि० अगहन में होनेवाला (धान)।
अगहनी–संज्ञा स्त्री० अगहन में काटी जाने-वाली फसल।
अगहार–संज्ञा पुं० वह भूमि जिसे बेचने का अधिकार न हो।
अगाउनी*–क्रि० वि० अगवानी।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगौनी"।
अगाऊ–क्रि० वि० पेशगी। अग्रिम। निश्चित समय से पहले।
*वि० आगे का। अगला।
*क्रि० वि० प्रथम। पहले। आगे।
अगाड़ा†–संज्ञा पुं० तरी। गाँजर। खादरा। कछार।
संज्ञा पुं० वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।
अगाड़ी–क्रि० वि० १. आगे। २. भविष्य में। ३. समक्ष। सामने। ४. बाद में। पहले। पूर्व।

संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के सामने या आगे का अंग या भाग। २. घोड़े के गराँव में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर उधर दो खूंटों से बँधी रहती हैं। ३. हल्ला। सेना का पहला धावा।

मुहा०–अगाड़ी मारना–मोहरा मारना। बैरी की अगली सेना को हराना।

अगाध–वि० १. असीम। अपार। बहुत। २. जिसकी थाह न मिले। अगाह। बहुत गहरा। अथाह। ३. दुर्बोध। जो समझ में न आवे।

संज्ञा पु० गड्ढा। छेद।

अगार–संज्ञा पुं० दे० "आगार"।

क्रि० वि० १. पहले। आगे। प्रथम। २. भंडार।

अगास*–संज्ञा पु० चबूतरा जो दरवाजे के सामने हो।

अगाह*–वि० १. अगाध। अथाह। बहुत गहरा। २. बहुत। अत्यंत। अधिक।

क्रि० वि० पहले से। आगे से।

*वि० [फा० आगाह] जिसे सूचना या चेतावनी मिल गई हो। विदित। प्रकट। ज्ञात।

अगाही†–संज्ञा स्त्री० किसी बात के होने की पहले से सूचना या संकेत।

अगिन*–संज्ञा स्त्री० [क्रि० अगियाना] १. आग। आँच। वह्नि। २. एक छोटी चिड़िया जिसका आकार गौरैया के बराबर होता है। ३. अगिया घास।

वि० अगणित। बेशुमार। अनगिनती।

अगिनगोला–संज्ञा पु० वह गोला जो फटने पर आग लगा दे।

अगिन बोट–संज्ञा पु० स्टीमर। वह बड़ी नाव जो भाप, तेल या बिजली से चलती है।

अगिनित*–वि० दे० "अगणित"।

अगिया–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि] १. एक प्रकार का स्वर या घास। २. नीली चाय। यज्ञकुश। अगिन घास। ३. पहाड़ी पौधा-विशेष जिसके पत्तों और डंठलों में जहरीले रोएँ होते हैं। ४. बैलों और घोड़ों का रोग-विशेष। ५. अगिया सन। कीड़ा।

अगिया कोइलिया–संज्ञा पुं० दो कल्पित बैतालों के नाम जिन्हें विक्रमादित्य ने वश में कर लिया था।

अगियाना–क्रि० अ० १. अंग का दाहयुक्त होना। तप उठना। जलन होना। २. आग तापना। आग से कोई वस्तु सुखाना।

अगिया बैताल–संज्ञा पुं० १. विक्रमादित्य के सिद्ध किये हुए दो कल्पित बैतालों में से एक का नाम। २. मुँह से आग की लौ निकालनेवाला कल्पित भूत। ३. अत्यंत क्रोधी आदमी।

अगियार, अगियारी–संज्ञा स्त्री० धूप देने की क्रिया। आग में सुगंध-द्रव्य डालकर पूजन करने की विधि।

अगियासन–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कीड़ा। २. एक प्रकार की घास। ३. एक चर्मरोग जिसमें फफोले निकल आते हैं।

अगोठा*–संज्ञा पु० १. आगे का भाग। २. एक कन्द। यह जमींकन्द की भाँति जमीन के नीचे पैदा होता है। छोटे-छोटे फल इसकी लता में भी लगते हैं।

अगोत पछोत*–क्रि० वि० आगे और पीछे की ओर।

संज्ञा पुं० अगाड़ी-पिछाड़ी। आगे का भाग और पीछे का भाग।

अगुआ–संज्ञा पु० १. अग्रगामी। पहले चलनेवाला। कोई काम प्रथम बार करनेवाला। नेता। आगे चलनेवाला। २. प्रधान। नायक। मुखिया। ३. पथ-दर्शक। रास्ता दिखानेवाला। मार्ग बतानेवाला। ४. विवाह या संबंध तय करनेवाला।

अगुआई–संज्ञा स्त्री० १. अगुआ होने का काम। अग्रसरता। २. प्रधानता। नेतृत्व। सरदारी। ३. रास्ता दिखाना। मार्ग-प्रदर्शन। किसी काम को पहले करना।

***अगुवानी**–संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगुण–वि० १. निर्गुण। जिसमें रज, तम आदि गुण न हों। २. गुणहीन। निर्गुणी। मूर्ख। संज्ञा पुं० दोष। अवगुण। बुराई।

अगुताना*†–क्रि० अ० दे० "उकताना"। ऊबना।

अ-गुरु–वि० १. हलका। जो भारी न हो। २. जिसने गुरु से दीक्षा न पाई हो। जिसने कोई गुरु न किया हो। दीक्षाहीन। संज्ञा पुं० ऊद। अगर पेड़।

अगुवा–संज्ञा पुं० दे० "अगुआ"। १. मार्ग दिखानेवाला।२. एक पक्षी या कीड़ा विशेष। ३. देवता-विशेष।

अगुसरना–प्रत्य० आगे बढ़ना। अग्रसर होना।

अगुसारना†*–क्रि० स० आगे बढ़ाना। आगे करना।

अगूठना†–क्रि० सं० १. ढकना। तोपना। २. रोकना। घेरना। छेकना।

अगूठा–क्रि० वि० घेरा। मुहासिरा।

अगूढ़–वि० १. प्रकट। जो छिपा न हो। २. आसान। सहज। सरल। संज्ञा पुं० साहित्य में गुणीभूत व्यंग्य के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है।

अगूता–क्रि० वि० सामने। आगे।

अगेह–वि० जिसका घरबार न हो। बिना घरबार का। गृहविहीन।

अगोचर–वि० जिसका ज्ञान इंद्रियों को न हो सके। जो इंद्रियों के अनुभव से परे हो। इंद्रियातीत।

अगोट–संज्ञा पुं० १. आड़। ओट। २. सहारा। आधार। आश्रय।

अगोटना–क्रि० स० १. घेरना। रोकना। २. पहरे में रखना। कैद करना। ३. छिपाना। गुप्त रखना।
प्रत्य० १. स्वीकार करना। मानना। २. चुनना। पसन्द करना।
क्रि० अ० १. ठहरना। रुकना। २. फँसना।

अगोरना–क्रि० स० १. रास्ता देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली करना। ३. रोकना।

अगोरिया–संज्ञा पुं० रखवाला।

अगौनी*–क्रि० वि० आगे।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"। भेंट के लिए आगे जाना।

अगौरा–संज्ञा पुं० गन्ने के ऊपर का पतला बिना रस का भाग जिसमें रस कम होता और जो स्वादहीन होता है।

अगौहैं*–क्रि वि० आगे की तरफ।

अग्नि–संज्ञा स्त्री० १. ताप। आग और प्रकाश। (आकाश आदि पंच भूतों में से एक) २. वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३. पाचन-शक्ति। जठराग्नि। ४. पित्त। ५. तीन की संख्या। ६. सोना। ७. चित्रक वृक्ष। ८. ज्वाला। वह्नि। ताप।

अग्निउत्पात–संज्ञा पुं० आग लगना। आकाश से अग्नि बरसना। धूम्रकेतु दर्शन। उल्कापात।

अग्निकर्म–संज्ञा पुं० १. हवन। अग्निहोत्र। २. शवदाह।

अग्निकीट–संज्ञा पुं० समंदर नामक कीड़ा-विशेष जिसके विषय में जनश्रुति है कि वह अग्नि में रहता है।

अग्निकुंड–सं० पुं० अग्नि जलाने के लिए गढ़ा। हवन करने का धातुनिर्मित चौकोर बर्तन।

अग्निकुमार–संज्ञा पुं० १. शिव के ज्येष्ठ पुत्र। कार्त्तिकेय। २. क्षुधावर्द्धक औषध-विशेष।

अग्निकुल–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का वंश-विशेष जिसकी उत्पत्ति यज्ञ की अग्नि से हुई बतलाई जाती है।

अग्निकोण–संज्ञा पुं० पूर्व और दक्षिण का कोना जिसमें अग्नि का वास कहा जाता है।

अग्निक्रिया–संज्ञा स्त्री० मुर्दा जलाना। शव का अग्निसंस्कार।

अग्निक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० आतिशबाजी।

अग्निगर्भ–संज्ञा पुं० आतिशी शीशा। सूर्य्य-कांत मणि। वह मणि जिसमें सूर्य की किरणों से आग पैदा हो।
वि० जिसमें आग हो।

अग्निज–वि० १. अग्नि से पैदा हुआ। २. अग्नि को पैदा करनेवाला। ३. पाचक। अग्नि-संदीपक। भूख बढ़ानेवाला।

अग्निजिह्वा–संज्ञा स्त्री० आग की लौ या लपट। (अग्नि देवता की सात जिह्वाएँ कही गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपा।)

अग्निज्वाला–संज्ञा स्त्री० १. अग्निशिखा। आग की लपट। २. आँवले का पेड़।

अग्निदाह–संज्ञा पु० १. मुर्दा जलाना। शवदाह। २. जलाना।

अग्निदीपक–वि० पाचनशक्ति या जठराग्नि को बढ़ानेवाला। भूख बढ़ानेवाला।

अग्निदेव–संज्ञा पु० वैदिक देवता। अग्नि-कोणाधिपति।

अग्निदीपन–संज्ञा पु० १. पाचन-शक्ति का बलवान् होना। २. पाचन-शक्ति को बढ़ाने-वाली दवा।

अग्निपरीक्षा–संज्ञा स्त्री० १. अग्निशुद्धि। प्राचीन काल में संदिग्ध व्यक्ति को जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी, तेल या लोहा स्पर्श कराकर दोषी या निर्दोष सिद्ध करने की क्रिया। २. कड़ी परीक्षा। खतरनाक जाँच। ३. सोने चाँदी आदि को आग में तपाकर परखना।

अग्निपुराण–संज्ञा पु० अठारह पुराणों में एक पुराण।

अग्निपूजक–संज्ञा पु० अग्नि की पूजा करने-वाला। अग्नि को देवता मानकर उसकी पूजा करनेवाला पारसी।

अग्निबाण–संज्ञा पु० १. ऐसा बाण जिसमें से आग की ज्वाला निकले। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।

अग्निबाव–संज्ञा पु० रोग-विशेष। पित्ती या जुड़-पित्ती नाम का एक रोग।

अग्निमंथ–संज्ञा पु० १. अरणी नामक वे लकड़ियाँ जिनको रगड़कर यज्ञ के लिए आग निकाली जाती है। २. अरणी वृक्ष।

अग्निमांद्य–संज्ञा पुं० भूख मर जाना। भूख कम या बिलकुल न लगने का रोग। मंदाग्नि।

अग्निमुख–संज्ञा पु० १. देवता। २. ब्राह्मण। ३. प्रेत। ४. चीते का पेड़।

अग्नियंत्र–संज्ञा पु० बंदूक। तोप। तमंचा।

अग्निलिंग–संज्ञा पु० १. आग की लौ का रंग और उसके झुकाव को देखकर शुभाशुभ फल बतलाने की विद्या। २. अग्नि का लिंगाकार पुंज।

अग्निवंश–संज्ञा पु० अग्निकुल।

अग्निशाला–संज्ञा स्त्री० वह कोठरी जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो।

अग्निशिखा–संज्ञा स्त्री० १. आग की लौ। २ कलियारी।

अग्निशुद्धि–संज्ञा स्त्री० १. आग डालकर या उसके स्पर्श द्वारा किसी वस्तु को शुद्ध करना। २. अग्निपरीक्षा।

अग्निष्टोम–संज्ञा पु० १. अग्नि-संबंधी वेदोक्त अग्निस्तव। २. यज्ञ-विशेष जो ज्योतिष्टोम यज्ञ का रूपांतर है।

अग्निसंस्कार–संज्ञा पु० १. जलाना। तपाना। २. शुद्धि के लिए आग छुलाना। ३. शव के जलाने की क्रिया। मृतक का दाह-कर्म।

अग्निहोत्र–संज्ञा पु० वेद के मंत्रों को पढ़ते हुए यज्ञ की अग्नि में आहुति देने की क्रिया।

अग्निहोत्री–संज्ञा पु० १. ब्राह्मणों का एक वंश-विशेष। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक शाखा। २. अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्न्यस्त्र–संज्ञा पु० १. आग्नेयास्त्र। वह अस्त्र जिससे आग निकले। २. वह अस्त्र जो आग द्वारा चलाया जाय।

अग्न्याधान–संज्ञा पु० १. अग्निहोत्र। २. अग्नि की विधि के अनुसार स्थापना। अग्निरक्षण।

अग्य–वि० दे० "अज्ञ"।

अग्यारी–संज्ञा स्त्री० १. धूपदान। आग में सुगंधित द्रव्य जलाना। २. अग्निकुण्ड।

अग्र–संज्ञा पु० १. सिरा। नोक। आगे का भाग। अगला हिस्सा। २. ऊपर का भाग। सिर। शिखर। ३. एक राजा का नाम। क्रि० वि० आगे।

वि० १. प्रथम। पहले। आगे। २. मुख्य। श्रेष्ठ। उत्तम। प्रधान। अगुआ।

अग्रगण्य–वि० प्रधान। श्रेष्ठ। मुख्य। गिनती करते समय जो सबसे पहले गिना जाय।

अग्रगामी–संज्ञा पुं० नेता। आगे चलनेवाला। उन्नतिशील।

अग्रज–संज्ञा पुं० १. जो आगे पैदा हुआ हो। ज्येष्ठ भ्राता। बड़ा भाई। २. ब्राह्मण। ३. नेता। अगुआ। नायक।
*वि० उत्तम। श्रेष्ठ।

अग्रणी–वि० समाज का मुखिया। आगे चलनेवाला। अगुआ। श्रेष्ठ।

अग्रजन्मा–संज्ञा पुं० १. जिसका जन्म पहले हुआ हो। २. ब्राह्मण। ३. ब्रह्मा। ४. बड़ा भाई।

अग्रदूत–संज्ञा पुं० आगे बढ़कर किसी के आने की सूचना देनेवाला। आगे-आगे चलनेवाला दूत।

अग्रभाग–संज्ञा पुं० पहला भाग। पहला हिस्सा।

अग्रशोची–संज्ञा पुं० दूरदर्शी। पहले से सोच लेनेवाला। आगे की बात सोच लेनेवाला।

अग्रसर–संज्ञा पुं० १. नेता। मुखिया। आगे जानेवाला व्यक्ति। अगुआ। २. आरंभ करनेवाला। ३. आगे बढ़ा हुआ।

अग्रसोची–वि० दे० "अग्रशोची"। पहले से सोचनेवाला। दूरदर्शी।

अग्रहायण–संज्ञा पुं० अगहन या मार्गशीर्ष मास।

अग्रहार–संज्ञा पुं० १. राजा की ओर से ब्राह्मण को दी हुई भूमि। २. देवता को अर्पित सम्पत्ति। ३. धान्यपूर्ण खेत।

अग्राशन–संज्ञा पुं० भोजन के आरंभ में देवता के लिए निकाला हुआ अंश।

अग्राह्य–वि० १. त्याज्य। छोड़ने योग्य। २. जो ग्रहण करने योग्य न हो। ३. अमान्य। न मानने लायक़। ४. तुच्छ। निस्सार। ५. शिवनिर्माल्य।

अग्रिम–वि० १. अगला। पहले से। पेशगी। २. आगामी। आगे आनेवाला। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। मुख्य। प्रधान।

अघ–संज्ञा पुं० १. पाप। अधर्म। अपराध। दोष। पातक। २. व्यसन। ३. दुःख। ४. अघासुर।

अघरवानि–संज्ञा पुं० १. पापी। अधर्मी। २. पापों का समुदाय।

अघट–वि० १. असंभाव्य। जो घटित न हो। जो होने योग्य न हो। २. कठिन। दुर्घट। *३. बेमेल। अनुपयुक्त।
वि० १. जो घटे नहीं। अक्षय। २. स्थिर। एकरस।

अघटित–वि० १. असंभव। न होने योग्य। अनहोना। अयोग्य। २. जो घटित न हुआ हो। जो हुआ न हो। *३. अवश्य होनेवाला। अमिट। अनिवार्य। ४. अनुचित।
*वि० बहुत अधिक। जो घटकर न हो।

अघनाशक–वि० जो पाप का नाश करे। पाप दूर करनेवाले प्रयोग, मंत्र जप करना आदि।

अघमर्षण–वि० १. पापनाशक। पाप हटानेवाला वैदिक मंत्र। २. एक क्रिया जो सन्ध्योपासन में की जाती है।

अघवाना–क्रि० स० १. पेट भर खिलाना। २. तृप्त करना। चक्क कर देना।

अघाट–संज्ञा पुं० ऐसी भूमि जिसे उसका स्वामी बेच न सके।

अघात*–संज्ञा पुं० दे० "आघात"।
वि० अधिक। बहुत। (ब्रज) तृप्त होना। सन्तुष्ट होना। इतना खाना कि और खाने की इच्छा न रहे।

अघाना–क्रि० अ० १. इतना भोजन करना कि और खाने की इच्छा न रहे। छककर भोजन करना। भोजन से संतुष्ट होना। छकना। पेट भर खाना या पीना। २. तृप्त होना। ३. प्रसन्न होना। खुशी होना। ४. थकना।
मुहा०–अघाकर=मन भर। यथेष्ट।

अघारि–संज्ञा पुं० १. पापों का नाश करनेवाला। २. श्रीकृष्ण।

अघासुर–संज्ञा पुं० कंस का सेनापति अघ दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था।

अघी–वि० पाप करनेवाला। पातकी।

अघोर–वि० १. सुन्दर। सौम्य। सुहावना। २. बहुत भयंकर। अत्यंत घोर। ३. वीभत्स। घृणित।
संज्ञा पुं० १. शिव का रूप विशेष। २. एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मल-मूत्र आदि को अस्पृश्य नहीं मानते। ३. उपासना-विशेष। दे० 'अघोरी'।

अघोरनाथ–संज्ञा पुं० शंकर। महादेव। शिव।

अघोरपंथ–संज्ञा पुं० अघोरियों का संप्रदाय या मत।

अघोरपंथी–संज्ञा पुं० अघोरी। औघड़। अघोर मत को माननेवाला।

अघोरी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अघोरिन] १. अघोर-पंथी। अघोर मत का अनुयायी। औघड़। २. भक्ष्याभक्ष का विचार न करनेवाला।
वि० घिनौना। घृणित। वीभत्स।

अघोष–संज्ञा पुं० व्याकरण का एक वर्णसमूह जिसमें प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा अक्षर तथा श, ष और स भी हैं।

अच–संज्ञा पुं० स्वरवर्ण, संज्ञा-विशेष। छिपाकर करना।

अचंड–वि० धीर। शांत। सुशील। मृदु। सरल स्वभाववाला।

अचंचल–वि० १. स्थिर। जो चंचल न हो। २. धीर। गंभीर। जो घबड़ाया न हो। दृढ़ चित्तवाला।

अचंभव*–संज्ञा पुं० आश्चर्य। अचंभा।

अचंभा–संज्ञा पुं० १. विस्मय। आश्चर्य। अचरज। २. अचरज की बात। चमत्कार।

अचंभा करना–क्रि० अ० विस्मित होना। आश्चर्यित होना।

अचंभित*–वि० चकित। विस्मित। आश्चर्यित।

अचक–वि० पूर्ण। भरपूर। खूब। ज्यादा। बहुत।
संज्ञा पुं० घबराहट। भौचक्कापन। आश्चर्य।
अ०–अचानक। हठात्। अकस्मात्। बिना जाने बूझे।

अचकन–संज्ञा पुं० अँगरखा। एक प्रकार का लंबा अंगा। शेरवानी।

अचक्का–संज्ञा पुं० अपरिचित। अनजान।

अचंगरा*–वि० छेड़छाड़ करनेवाला। शरारती। नटखट।

अचकरी, अचगरी*–संज्ञा स्त्री० नटखटी। शरारत। छेड़छाड़। लंपटता। खिलवाड़पन। अनुचित काम। धींगा-धींगी। अत्याचार।

अचना*–क्रि० स० [सं० आचमन] पीना। आचमन करना।

अचपल–वि० १. गंभीर। स्थिर। अचंचल। धीर। २. शोख। बहुत चंचल।

अचपली–संज्ञा स्त्री० क्रीड़ा। अठखेली। किलोल।

अचर–वि० अचल। न चलनेवाला। स्थावर। जड़।

अचरज–संज्ञा पुं० अचंभा। आश्चर्य।

अचरा–संज्ञा पुं० साड़ी का वह छोर जो छाती पर रहता है। पल्ला।
दे० "आँचल" और "अंचल"।

अचल–वि० १. स्थिर। अटल। जो न चले। ठहरा हुआ। २. चिरस्थायी। सब दिन रहनेवाला। ३. दृढ़। पक्का। ध्रुव। ४. जो नष्ट न हो। मजबूत। पुख्ता।
संज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड़। २. वृक्ष। ३. जैनियों का पहला तीर्थंकर।

अचलधृति–संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त-विशेष।

अचला–वि० न चलनेवाली। ठहरी हुई। स्थिर।
संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरणी। धरती।

अचला सप्तमी–संज्ञा स्त्री० माघ शुक्ला सप्तमी। इस दिन के किये शुभ कर्म अचल होते हैं।

अचवन–संज्ञा पुं० [क्रि० अचवना] १. भोजन के पीछे हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना। २. आचमन। पीने की क्रिया।

अचवना–क्रि० स० १. पीना। आचमन करना। २. भोजन के पश्चात् हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना। ३. छोड़ देना। खो देना।

अचवाना–क्रि० स० १. आचमन कराना। पिलाना। २. भोज के पश्चात् हाथ-मुँह धुलाना।

अचांचक–क्रि० वि० दे० "अचानक"।

अचाका*–क्रि० वि० सहसा। अचानक।
अचान*–क्रि० वि० दे० "अचानक"। सहसा।
अचानक–क्रि० वि० सहसा। हठात्। एकाएक। बिना कारण। दैवयोग से।
अचाना–क्रि० स० दे० "अचवाना"।
अचार–संज्ञा पु० [फा०] मसालों के साथ तेल में कुछ दिन रखकर खट्टी की हुई तरकारी या फल। कचूमर। अथाना।
*संज्ञा पुं० दे० "आचार"। व्यवहार। चाल-चलन।
संज्ञा पुं० चिरौंजी का वृक्ष।
अचारी*–संज्ञा पुं० १. सदाचारी मनुष्य। संयमी पुरुष। २. रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।
संज्ञा स्त्री० [फा० अचार] छिले हुए कच्चे आम की धूप में पकाई-सिझाई फाँक।
अचाह–संज्ञा स्त्री० चाह या इच्छा का अभाव। अरुचि। उदासीनता।
वि० जिसे चाह या इच्छा न हो।
अचाहा*–वि० अनचाहा। जिस की चाह न हो।
संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जो प्रेमपात्र न हो। *२. निर्मोही। प्रीति न करनेवाला।
अचाही*–वि० इच्छारहित। निष्काम।
अचिंत*–वि० चिन्ताहीन, निर्बुध। बेसुध। चितारहति। निश्चिंत। बेफिक्र।
अचिंतनीय–वि० दुर्बोध जो ध्यान में न आ सके। अज्ञेय।
अचिंतित–वि० १. जो ध्यान में भी न आया हो। २. जिसके विषय में विचार न किया गया हो। ३. जिस पर विचार न हुआ हो। ४. बिना सोचा बिचारा। ५. आकस्मिक ६. बेफिक्र। निश्चिन्त।
अचिंत्य–वि० १. दुर्बोध। जिसकी चिंता न की जा सके। अज्ञेय। कल्पना से परे। २. जो कूता न जा सके। अतुल। ३. अनुमान या आशा से अधिक।
अचित्–संज्ञा पुं० चैतन्यहीन। जड़ प्रकृति।
अचिर–क्रि० वि० तुरन्त। शीघ्र। अविलंब। जल्दी।
अचिरात्–क्रि० वि० जल्दी।
अचीता–वि० [स्त्री० अचीती] १. जिसकी इच्छा न की गई हो। २. आकस्मिक ३. जिसका पहले से अनुमान न हो। ४. अधिक। बहुत।
वि० बेफिक्र। निश्चित। चिन्ता-रहित।
अचूक–वि० १. सच्चा। जो न चूके। जो अवश्य सफल हो। २. पक्का। ठीक।
क्रि० वि० १. कौशल से। निपुणता के साथ। निश्चित। २. अवश्य। निश्चय। जरूर।
अचेत–वि० १. बेसुध। बेहोश। मूर्च्छित। चेतनारहित। २. व्याकुल। घबराया हुआ। विकल। ३. बेखबर। अनजान। ४. मूर्ख। नासमझ। मूढ़। *५ जड़।
*संज्ञा पुं० [सं० अचित्] जड़ प्रकृति। जडत्व। अज्ञान। माया।
अचेतन–वि० चेतनाहीन। जिसे इंद्रिय जनित ज्ञान अथवा सुख-दुःख आदि के अनुभव की शक्ति न हो। जड़। संज्ञाशून्य। मूर्च्छित। बेहोश।
अचैतन्य–संज्ञा पुं० १. अनात्मा। जड़। वह जो ज्ञानस्वरूप न हो। २. मूर्खता। अज्ञता। निर्जीव। जड़ पदार्थ।
अचैन–संज्ञा पुं० बेचैनी। व्याकुलता। विकलता। परेशानी।
वि० बेचैन। व्याकुल। दुखी। विकल। असुख। अरम्य।
अचोना*–संज्ञा पुं० पूजा का कटोरा। पंचपात्र। आचमन करने या पीने का बरतन।
अच्छ–वि० स्वच्छ। निर्मल।
संज्ञा पुं० दे० "अक्ष"।
अच्छत–वि० अधिक। बहुत।
सं० पुं० १. देवताओं पर चढ़ाने का चावल। २. संपूर्ण। ३. क्षत-हीन, जिसे घाव न लगा हो। दे० "अक्षत"।
अचिंतनीय–वि० जो ध्यान में न आ सके। चिन्ता से परे।
अच्छर–संज्ञा पुं० वर्ण। दे० "अक्षर"।
अच्छरा, अच्छरी*–संज्ञा स्त्री० स्वर्ग की गणिका। अप्सरा।

अच्छा–वि० १. उत्तम। भला। मनोहर। बढ़िया।
मुहा०–अच्छे आना=उपयुक्त अवसर पर आना। अच्छा दिन=सुख-संपत्ति का दिन। अच्छा-भला=स्वस्थ। अच्छा लगना=रुचिकर जान पड़ना। अच्छा होना=नीरोग हो जाना।
२. नीरोग। स्वस्थ। चंगा।
संज्ञा पुं० अच्छे पुरुष=१. श्रेष्ठ मनुष्य। बड़ा आदमी। २. गुरुजन। बड़े बूढ़े। (बहुवचन)।
क्रि० वि० अच्छी तरह। खूब।
अव्य० स्वीकारोक्ति।

अच्छाई–संज्ञा स्त्री० दे० "अच्छापन"। गुण। उत्तमता। सुघराई।

अच्छापन–संज्ञा पुं० गुण। अच्छे होने का भाव। उत्तमता। भलाई।

अच्छाबिच्छा–वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। चुना हुआ। २. चंगा। स्वस्थ। नीरोग।

अच्छोत*–वि० दे० 'अच्छन'। अधिक। बहुत।

अच्छोहिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

अच्युत–वि० १. अटल। स्थिर। जो गिरा न हो। २. अविनाशी। नित्य। अमर। सर्वदा वर्तमान रहनेवाला। ३. जो विचलित न हो। ४. जिसका स्खलन न हो। संज्ञा पुं० विष्णु।

अच्युतानंद–वि० जिसका आनंद सदैव हो। संज्ञा पुं० ईश्वर। परमेश्वर।

अछक*–वि० जो छका न हो। भूखा। अतृप्त। असंतुष्ट।

अछकना*–क्रि० वि० न अघाना। तृप्त न होना।

अछत*–क्रि० वि० ['आछना' का कृदंत रूप] १. सम्मुख। सामने। उपस्थिति में। रहते हुए। २. सिवाय। अतिरिक्त। वि० न रहता हुआ। जो उपस्थित न हो। अविद्यमान।

अछताना पछताना–क्रि० अ० किये हुए बुरे कर्मों से दुःखी होना। पछताना। पश्चात्ताप करना।

अछत्र–संज्ञा पुं० जिसके छत्र नहीं। राज्य से च्युत। राज्य-हीन।

अछन*–संज्ञा पुं० बहुत दिन। बहुत समय। चिरकाल।
क्रि० वि० धीरे धीरे। रुक-रुककर। ठहर ठहरकर

अछना*–क्रि० अ० उपस्थित रहना। विद्यमान रहना।

अछय*–वि० दे० "अक्षय"।

अछरा*–संज्ञा स्त्री० स्वर्ग की वेश्या। अप्सरा।

अछरी–संज्ञा स्त्री० दे० "अछरा"।

अछरौटी–संज्ञा स्त्री० (प्रत्य०) ककहरा। वर्णमाला।

अछवाना–क्रि० स० कंघी करना। साफ करना। सँवारना।

अछवानी–संज्ञा स्त्री० [हि० अजवाइन] अजवाइन, सोंठ तथा मेवों को पीसकर घी में पकाया हुआ द्रव, जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।

अछाम*–वि० १. मोटा। २. बड़ा। भारी। ३. बलवान्। हृष्ट-पुष्ट।

अछूत–वि० १. अस्पृश्य। जिसे अपवित्र मानकर लोग न छुएँ। जो छुआ न गया हो। न छूने योग्य। २. जो काम में न लाया गया हो। कोरा। ताजा। (आधुनिक)

अछूता–वि० [स्त्री० अछूती] १. जो छुआ न गया हो। अस्पृश्य। २. जो बर्ता न गया हो। नवीन। नया। कोरा। ताजा। ३. पवित्र। ४. कुमारी।

अछेद*–वि० अभेद्य। अखंडच। जिसका छेदन न हो सके। अविनाशी।
संज्ञा पुं० अभेद। अभिन्नता।

अछेद्य–वि० १. जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। २. अविनाशी।

अछेव*–वि० छिद्र या दोष रहित। बेदाग। शुद्ध।

अछेह*–वि० १. सदैव। निरंतर। लगातार। २. बहुत। अधिक।

अछोप*–वि० १. बिना वस्त्र के। नंगा। २. तुच्छ। दीन।

अछोभ–वि० दे० *"अक्षोभ"। स्थिर। शान्त। गम्भीर। क्षोभहीन।*

अछोर–वि० जिसका ओर छोर न हो। असीम। बेहद। बहुत अधिक।

अछोह–संज्ञा पुं० १. शांति। स्थिरता। क्षोभ का अभाव। २. निर्दयता।

वि० [सं० अक्षोभ्य] स्थिर। शांत। गंभीर।

अजगम–संज्ञा पुं० छप्पय का एक भेद।

अज–वि० अजन्मा। जिसका जन्म न हो। स्वयंभू।

संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कामदेव। ५. सूर्य्यवंशीय राजा जो दशरथ के पिता थे। ६. भेड़ा। ७. बकरा। ८. शक्ति। माया। ९. मेष राशि। १०. आज। वर्तमान दिन।

*क्रि० वि० अब। अभी तक। (यह शब्द "हूँ" के साथ आता है।) दे० 'आज'।

अजगंधा–संज्ञा स्त्री० अजमोदा।

अजगर–संज्ञा पुं० १. बहुत मोटी जाति का साँप, जो अपने शरीर के भारीपन तथा आलस्य के लिए प्रसिद्ध है। २. आलसी। निकम्मा।

अजगरी–संज्ञा स्त्री० अजगर की भाँति बिना परिश्रम की जीविका।

वि० १. अजगर की तरह। २. बिना परिश्रम का।

अजगव–संज्ञा पुं० पिनाक। शिवजी का धनुष।

अजगुत–संज्ञा पुं० १. युक्ति-विरुद्ध। असंगत या अनुचित बात। अचंभे की या असाधारण बात। २. आश्चर्य।

वि० आश्चर्यजनक। असंगत। बिना देखी-सुनी। अद्भुत।

अजग़ैब*–संज्ञा पुं० वह स्थान जो दिखलाई न पड़े। अदृष्ट स्थान। परोक्ष।

अजग़ैबी–वि० छिपा हुआ। गुप्त। आकस्मिक। अचानक आया हुआ।

अजड़–वि० चेतन। जो जड़ न हो। संज्ञा पुं० चेतन पदार्थ।

अजदहा–संज्ञा पुं० बड़ा मोटा साँप। दे० *"अजगर"*।

अजन–वि० *जन्म-बंधन-रहित। अनादि।* स्वयंभू।

वि० सुनसान। एकाकी। निर्जन।

अजनबी–वि० [अ०] १. अनजान। अज्ञात। अपरिचित। २. नया आया हुआ। परदेसी। ३. अनोखा।

अजन्म–वि० दे० "अजन्मा"।

अजन्मा–वि० जो जन्म के बंधन से रहित हो। अनादि। नित्य। अमर।

अजपा–वि० १. जिसका उच्चारण न किया जाय। २. जो जप या भजन न करे। संज्ञा पुं० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का मंत्र।

अजपाल–संज्ञा पुं० गड़ेरिया।

अजब–वि० [अ०] अनोखा। अनूठा। विलक्षण। अद्भुत। विचित्र।

अज़मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. महत्त्व। प्रताप। २. चमत्कार।

अज़माना–क्रि० स० प्रयोग में लाकर देखना। दे० "आज़माना"।

अजमोद–संज्ञा पुं० १. अजवायन की तरह का एक पेड़। २. दवाई का नाम।

अजय–संज्ञा पुं० १. हार। पराजय। २. छप्पय छंद का एक भेद। ३. वीरभूमि जिले की एक नदी का नाम।

वि०–जो जीता न जा सके। अजेय।

अजया–संज्ञा स्त्री० भाँग। विजया। *संज्ञा स्त्री० बकरी।

अजय्य–वि० अजेय। जो जीता न जा सके।

अजर–वि० १. जवान। युवा। अमर। यौवन। जरारहित। जो बूढ़ा न हो। २. जो सदा एकरम्म रहे।

वि० जो न पचे। जो हजम न हो।

अजरायल*–वि० १. चिरस्थायी। पक्का। २. जो पुराना न हो।

अजराल–वि० बलवान्।

अजवायन–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं। यवानी।

अजस*–संज्ञा पुं० बदनामी। अपकीर्त्ति। अपयश।

अजसी–वि० यशरहित। अपयशी। निंद्य। बदनाम।

अजस्र–क्रि० वि० सर्वदा। निरन्तर। सदा। हमेशा। नित्य। प्रतिक्षण।

अजहत्स्वार्था–संज्ञा स्त्री० लक्षणा का वह भेद जिसमें शब्द अपने वाच्यार्थ को धारण करता हुआ भी भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रकट करे।

अजहद–क्रि० वि० [फा०] हद से ज्यादा। बहुत अधिक।

अजहूँ–क्रि० वि० आज तक। अभी तक। दे० "अज"।

अजा–वि० जन्मरहित। जिसका जन्म न हुआ हो।
संज्ञा स्त्री० १. बकरी। २. माया या प्रकृति। ३. दुर्गा। शक्ति।

अजाचक–संज्ञा पुं० दे० "अयाचक"। अयाची। भरपूरा। सम्पन्न। न माँगनेवाला।

अजाची–संज्ञा० पुं० दे० "अयाची"।

अजात–वि० अजन्मा। जो पैदा न हुआ हो। जन्मरहित।

अजातशत्रु–वि० जिसका कोई शत्रु न हो। शत्रुरहित।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. राजा युधिष्ठिर। ३. उपनिषद् में वर्णित काशी का एक ज्ञानी राजा। ४. राजगृह (मगध) के राजा बिंबसार का पुत्र, जो गौतम बुद्ध के समय में हुआ था।

अजाति–संज्ञा पुं० दे० "अजाती"।

अजाती–वि० जो जाति से निकाल दिया गया हो। जाति से च्युत।

अजान–वि० १. अनजान। अबोध। नासमझ। अज्ञान। मूर्ख। अविवेकी। निर्बोध। जो न जानता हो। २. अपरिचित। अज्ञात।
संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके नीचे जाने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ऐसा लोग समझते हैं।
संज्ञा पुं० [अ० अजान] बाँग। मसजिदों में होनेवाली नमाज़ की पुकार।
मुहा०–अजान में–जानकारी के अभाव में। अज्ञान से। अनभिज्ञता से।

अजानपन–संज्ञा पुं० अज्ञान। नासमझी।

अजाब–संज्ञा पुं० [अ०] दुख। कष्ट। विपत्ति। आफत।

अजामिल–संज्ञा पुं० भागवत पुराणानुसार एक पापी ब्राह्मण, जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेने से तर गया था।

अजाय*–वि० अनुचित। बेजा।

अजायब–संज्ञा पुं० [अ०] अजब का बहुवचन। विलक्षण पदार्थ या व्यापार। अद्भुत वस्तु। विचित्र पदार्थ।

अजायबखाना–संज्ञा पुं० [अ०] वह भवन जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखे रहते हैं। अद्भुत-वस्तु-संग्रहालय। म्यूज़ियम। अजायबघर।

अजायबघर–संज्ञा पुं० दे० "अजायबखाना"।

अजार*–संज्ञा पुं० दे० "आज़ार"।

अजारा–संज्ञा पुं० दे० "इजारा"।

अजिऔरा*†–संज्ञा पुं० दादी या आजी के पिता का घर।

अजित–वि० जो जीता न गया हो।
संज्ञा पुं० १. बुद्ध। २. शिव। ३. विष्णु।

अजितेंद्रिय–वि० जो इन्द्रियों के वश में हो। जो विषय में आसक्त हो।

अजी–अव्य० जी। संबोधनसूचक शब्द।
संज्ञा स्त्री० बकरी।

अजीगर्त–संज्ञा पुं० एक ब्राह्मण जो शुनःशेप का पिता था।

अज़ीज़–वि० [अ०] प्रिय। प्यारा।
संज्ञा पुं० सुहृद। संबंधी। नातेदार।

अजीब–वि० [अ०] अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अनूठा।

अजीरन–संज्ञा पुं० दे० "अजीर्ण"।

अजीर्ण–संज्ञा पुं० १. अन्न न पचने का दोष। अपच। बदहजमी। २. बहुतायत। अत्यंत अधिकता। जैसे, बुद्धि का अजीर्ण। (व्यंग्य)
वि० नया। जो पुराना न हो।

अ-जीव–संज्ञा पुं० जिसमें चेतना न हो। जड़ पदार्थ।
वि० मृत। बिना प्राण का।

अजुगत–संज्ञा स्त्री० अन्धेर। उत्पात। अत्याचार। उत्पाती कार्य।

अजुगुत–संज्ञा पुं० दे० "अजुगत"।

अजूजा*–संज्ञा पुं० [देश०] बिज्जू की तरह का जानवर जो मुर्दा खाता है।

अजूबा–वि० [अ०] अनोखा। अद्भुत।

अजूरा*–संज्ञा पुं० जो जुड़ा न हो। पृथक्। अलग।

(अ०) मजदूरी। भाड़ा।

अजूह*–संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।

अजेय–वि० जो जीता न जा सके।

अजोग–वि० जो योग्य न हो। दे० "अयोग्य"।

अजोता–संज्ञा पुं० चैत्र मास की पूर्णिमा। (इस दिन बैल नहीं नाधे जाते।)

अजोरना*–क्रि० स० इकट्ठा करना। जमा करना।

क्रि० वि० दे० "अँजोरना"।

अजौं–अजौं*–क्रि० वि० आज तक। अब भी। अब तक।

अज्ञ–संज्ञा पुं० न जाननेवाला। अज्ञानी। जड़। मूर्ख। नासमझ। अबोध।

अज्ञता–संज्ञा स्त्री० नादानी। नासमझी। जड़ता। मूर्खता।

अज्ञा*–संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।

अज्ञात–वि० १. अप्रकट। अपरिचित। जो जाना हुआ न हो। अविदित। २. जिसे मालूम न हो। जैसे, अज्ञातयौवना।

*क्रि० वि० अनजान में। बिना जाने।

अज्ञातनामा–वि० १. जिसका नाम ज्ञात न हो। २. तुच्छ। अविख्यात। साधारण।

अज्ञातवास–संज्ञा पुं० छिपकर रहना। ऐसे स्थान पर रहना जहाँ कोई पता न पा सके।

अज्ञातयौवना–संज्ञा स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आने का ज्ञान न हो।

अज्ञान–संज्ञा पुं० १. मूर्खता। ज्ञानहीनता। जड़ता। २. जीवात्मा को गुण और गुण के कामों से अलग न समझने का अविवेक। ३. न्याय में निग्रह स्थान।

वि० जड़। मूर्ख। नासमझ।

अज्ञानतः–अव्य० अज्ञान से। बेसमझी से। अनजाने।

अज्ञानी–वि० जड़। ज्ञानशून्य। मूर्ख। नासमझ।

अज्ञेय–वि० दुरूह। न जानने योग्य। जो समझ में न आ सके। बोधगम्य।

अझर*–वि० जो न झरे, न गिरे और न बरसे।

अटंबर–संज्ञा पुं० ढेर। अटाला। राशि। समूह।

अट–संज्ञा स्त्री० प्रतिबंध। रोक। शर्त। कैद।

अटक–संज्ञा स्त्री० [क्रि० अटकाना। वि० अटकाऊ] १. रुकावट। अड़चन। रोक। विघ्न। बाधा। ३. संकोच। हिचक। ४. सिन्ध नदी का दूसरा नाम। ५. हर्ज। अकाज। ६. एक शहर का नाम।

अटकन*–संज्ञा पुं० रोक। दे० "अटक"।

अटकन-चटकन–संज्ञा पुं० [देश०] बच्चों का एक खेल।

अटकना–क्रि० अ० १. अड़ना। रुकना। ठहरना। २. लगा रहना। फँसना। ३. प्रीति करना। प्रेम में फँसना। ४. विवाद या झगड़ा करना।

अटकर*–संज्ञा स्त्री० अन्दाज। दे० "अटकल"।

अटकरना†–क्रि० स० कूतना। अटकल लगाना। अंदाज करना।

अटकल–संज्ञा स्त्री० १. अनुमान। कल्पना। विचार। २. अंदाज। कूत।

अटकलपच्चू–संज्ञा पुं० बिना प्रमाण। मोटा अंदाज। कल्पना। अनिश्चित।

वि० ऊटपटाँग। खयाली।

क्रि० वि० अनुमान से। अंदाज से।

अटका–संज्ञा पुं० १. जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात तथा धन। २. मिट्टी का पात्र-विशेष।

अटकाना–क्रि० स० १. उलझाना। फँसाना। २. छेकना। किसी कार्य में विघ्न डालना। रोकना। ठहराना। अड़ाना। ३. पूरा करने में देर करना।

अटकाव–संज्ञा पुं० १. रुकावट। रोक। बंधन। २. विघ्न। बाधा।

अटखट*–वि० अंडबंड। अट्ट-सट्ट।

अटखेल–वि० बहुत खेलनेवाला। खिलाड़ी। चंचल।

अटट–वि० मोटा। पोढ़ा। दृढ़।
अटन–संज्ञा पुं० चलना। घूमना। फिरना। भ्रमण। यात्रा।
अटना–क्रि० अ० १. घूमना। फिरना। २. यात्रा या सफर करना।
क्रि० अ० आड़ करना। ओट करना। छेकना। ३. समाना। भरना।
अटपट–वि० [स्त्री० अटपटी] १. टेढ़ा। विकट। मुश्किल। कठिन। २. दुर्गम। ३. गूढ़। जटिल। ४. अनियमित। ऊटपटाँग। ५. बाँका। टर्रा।
अटपटाना–क्रि० अ० १. गड़बड़ाना। चूकना। २. लड़खड़ाना। अटकना। ३. संकोच करना। हिचकना।
अटपटी*–संज्ञा स्त्री० १. नटखटी। शरारती। २. तिरछी। ऐंड़ी। टेढ़ी। बेढंगी। ३. कठिन।
अटब्बर–संज्ञा पुं० आडंबर। अभिमान। दर्प।
संज्ञा पुं० कुटुंब। परिवार। कुनबा।
अटरनी–संज्ञा पुं० [अंग्र०] कलकत्ता और बंबई हाईकोर्टों में मुअक्किलों के मुकद्दमे लेकर पैरवी के लिए बैरिस्टर नियुक्त करनेवाला वकील या मुख्तार।
अटल–वि० १. अचल। स्थिर। जो न टले। २. चिरस्थायी। सदैव बना रहनेवाला। नित्य। ३. अवश्यंभावी। जिसका होना निश्चित हो। ४. ध्रुव। पक्का। दृढ़। पोढ़ा। ५. गुसाइयों के एक अखाड़े का नाम।
अटवाटी-खटवाटी–संज्ञा स्त्री० साज-समाज। खाट-खटोला।
मुहा०—अटवाटी खटवाटी लेकर पड़ना कामकाज छोड़ रूठकर अलग पड़ रहना।
अटवी–संज्ञा स्त्री० कानन। जंगल। वन।
अटहर–संज्ञा स्त्री० १. राशि। ढेर। २. पगड़ी। फेंटा।
संज्ञा पुं० कठिनाई। मुश्किल।
अटा–संज्ञा स्त्री० अटारी। घर के ऊपर का कोठा।
संज्ञा पुं० अटाला। राशि। ढेर। समूह।
अटाटूट–वि० बिलकुल। नितांत। पूरे तौर से।
अटारी–संज्ञा स्त्री० घर के ऊपर की छत या कोठरी। कोठा। दे० "अटा"।
अटाल–संज्ञा पुं० धरहरा। बुर्ज।
अटाला–संज्ञा पुं० १. राशि। ढेर। २. सामान। असबाब। सामग्री। ३. कसाइयों की बस्ती।
अटिया–संज्ञा स्त्री० छोटी मड़ैया। झोपड़ी। छोटा मकान। पर्णकुटी।
अटेक–वि० निराश्रय। उद्देश्यहीन। भ्रष्ट-प्रतिज्ञ।
अटूट–वि० १. जो टूटने योग्य न हो। दृढ़। मजबूत। पुष्ट। २. अजेय। जिसका पतन न हो। ३. लगातार। अखंड। ४. अधिक। बहुत। ५. संपूर्ण। पूरा। कुल।
अटेरन–संज्ञा पुं० [क्रि० अटेरना] १. ओटना। सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यंत्र। चरखी। फेरी। २. घोड़े को कावा या चक्कर देने की रीति।
अटेरना–क्रि० स० १. अटेरन से सूत की आँटी या गड्डी बनाना। २. मात्रा से अधिक नशा पीना। ३. मोड़ना।
अट्ट–संज्ञा पुं० अट्टालिका। अटारी। मकान में सबसे ऊपर का कोठा। हाट। बाजार।
वि० ऊँचा। जिसमें जोर का शब्द हो।
अट्ट-सट्ट–संज्ञा पुं० [अनु०] अंट-संट। अनाप-शनाप। प्रलाप। व्यर्थ की बात।
अट्टहास–संज्ञा पुं० जोर की हँसी। ठठाकर या खिलखिलाकर हँसना।
अट्टालिका–संज्ञा स्त्री० १. कोठा। अटारी। २. राजगृह। प्रासाद।
अट्टी–संज्ञा स्त्री० लच्छी। अटेरन पर लपटा हुआ सूत या ऊन।
अट्ठा–संज्ञा पुं० ताश का आठ बूटियों-वाला पत्ता।
अट्ठाइस–वि० दे० "अट्ठाईस"।
अट्ठाईस–वि० बीस और आठ। २८।
अट्ठानबे–वि० नब्बे और आठ। ९८।
अट्ठावन–वि० पचास और आठ। ५८।
अट्ठासी–वि० दे० "अठासी"। अस्सी और आठ। ८८।

अठंग*–संज्ञा पुं० अष्टांग योग।
अठ*–वि० दे० "आठ"। (समास में)। ८।
अठइसी–संज्ञा स्त्री० २८ गाही। १४० की संख्या जिसे फल आदि के लेन-देन में सैकड़ा मानते हैं।
अठई–संज्ञा स्त्री० अष्टमी तिथि।
अठकौशल–संज्ञा पुं० १. मंत्रणा। सलाह। २. पंचायत। गोष्ठी।
अठखेली–संज्ञा स्त्री० १. क्रीड़ा। विनोद। २. चुलबुलाहट। चपलता।
अठन्नी–संज्ञा स्त्री० आधा रुपया। आठ आने का सिक्का। अधेली।
अठत्तर–वि० दे० "अठहत्तर"। सत्तर और आठ। ७८।
अठपहला–वि० आठ कोने का। आठ पार्श्ववाला।
अठपाव–संज्ञा पुं० ऊधम। शरारत। उपद्रव।
अठमासा–संज्ञा पुं० दे० खेत जो आठ मास तक जोता जाय। वह गर्भ जो आठ महीने में उत्पन्न हो जाय। "अठवाँसा"
अठमासी–संज्ञा स्त्री० गिनी। आठ माशे का सोने का सिक्का। आठवें मास उत्पन्न बालिका।
अठल–संज्ञा पुं० संस्कार-विशेष।
अठलाना*–क्रि० अ० १. इतराना। ठसक दिखाना। ऐंठ दिखाना। गर्व जनाना। २. नखरा या चोचला करना। ३.मदोन्मत्त होना। मस्ती दिखाना। ४. छेड़ने के लिए जान बूझकर अनजान बनना।
अठबाँस–वि० अठपहला। अठपहली वस्त्र।
अठवाँसा–वि० वह गर्भ जो आठ ही मास में उत्पन्न हो जाय।
संज्ञा पुं० १. सीमंत संस्कार-विशेष। २. वह खेत जिसमें ईख बोई जाय और जो असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय।
अठवारा–संज्ञा पुं० १. सप्ताह। हफ्ता। आठ दिन का समय। २. आठवाँ दिन।
अठहत्तर–वि० सत्तर और आठ। ७८।
अठाई*†–वि० उपद्रवी। उत्पाती। नटखट। शरीर।
अठान–संज्ञा पुं० १. जो कार्य्य ठानने योग्य न हो। अयोग्य या दुष्कर कर्म। २. शत्रुता। झगड़ा। वैर।
अठाना*†–क्रि० स० सताना। पीड़ित करना। क्रि० स० ठानना। मचाना।
अठारह–वि० दस और आठ। १८।
संज्ञा पुं० १. चौसर का एक दाँव। २. काव्य में पुराणसूचक संकेत या शब्द।
अठासी–वि० अस्सी और आठ। ८८।
अठेल–वि० १. जो ठेला न जाय। बलवान्। मजबूत। जोरावर। जो हट न सके। २. यथेष्ट। प्रचुर। ३. दृढ़। स्थिर।
अठोठ–संज्ञा पुं० आडंबर। पाखंड। ठाट।
अठोतरसौ–वि० एक सौ आठ। १०८।
अठोतरी–संज्ञा स्त्री० १०८ गुरियों की माला। १०८ का समूह
अडंग–संज्ञा पुं० १. मण्डी। हाट। बाजार। विदेशीय या प्रान्तीय वस्तुओं के उतारने की जगह। उतार। २. विघ्न। रुकावट।
अड़ंगा–संज्ञा पुं० १. विघ्न। बाधा। २. रोक। टाँग अड़ाना। रुकावट। प्रतिबन्ध।
अड़–संज्ञा पुं० १. हठ। ज़िद। २. झगड़ा। विरोध। ३. गमन। चेष्टा।
अड़काना†–क्रि० स० दे० "अड़ाना"।
अडग–वि० स्थिर। न डिगनेवाला। अचल। अटल।
अड़गड़ा–संज्ञा पुं० [अनु०] १. घोड़ों या बैलों के बिकने की जगह। २. बैलगाड़ियों के ठहरने का स्थान।
अड़गोड़ा–संज्ञा पुं० लकड़ी का लम्बा टुकड़ा जिसे नटखट चौपायों के गले में बाँधते हैं। ढुलना। डेंगना। ठेकुर।
अड़चन–संज्ञा स्त्री० दे० "अड़चल"। रुकावट। बाधा। विघ्न। आपत्ति।
अड़चल–संज्ञा स्त्री० अड़चन। विघ्न। बाधा। अंडस। आपत्ति। कठिनाई। दिक्कत।
अड़तल–संज्ञा पुं० १. ओट। आड़। ओझल। २. शरण। ३. हीला। बहाना। रक्षा।
अड़तला–संज्ञा पुं० बचानेवाला। रक्षा करनेवाला। दे० "अड़तल"।
अड़तालीस–वि० चालीस और आठ। ४८

अड़तीस–वि० तीस और आठ। ३८।

अड़दार–वि० १. अड़ियल। रुक रुक कर चलनेवाला। २. ऐंड़दार। ३. मतवाला। मस्त।

अड़ना–क्रि० अ० १. रुकना। थमना। ठहरना। २. हठ या जिद करना। ३. द्विविधा करना। ४. निश्चय से च्युत होना।

अड़बंग*†–वि० १. टेढ़ा मेढ़ा। अटपट। अड़बड़। ऊँचा-नीचा। २. दुर्गम। कठिन। ३. विलक्षण। अनोखा। बाँका। तिर्छा। ४. विघ्न। रुकावट।

अड़बंगा–वि० दे० "अड़बंग"।

अड़बन्ध–संज्ञा पुं० कटिबन्ध। कौपीन।

अड़बल–संज्ञा पुं० अड़ जानेवाला। रुकनेवाला। हठी। मगरा। अड़आ।

अडर*–वि० विना डर के। निर्भय।

अड़सठ–वि० साठ और आठ। ६८।

अड़हुल–संज्ञा पुं० देवी फूल। जपा या जवापुष्प।

अड़ाड़–संज्ञा पुं० १. चौपायों के रहने का बाड़ा। खरिक। २. दे० "अड़ार"।

अड़ाड़ा–संज्ञा पुं० ढोंग।

अड़ान–संज्ञा स्त्री० १. पड़ाव। २ रुकने का स्थान।

अड़ाना–क्रि० स० १. उलझाना। ठहराना। रोकाना। टिकाना। अटकाना। २. टेकना। डाट लगाना। ३. ठूँसना। भरना। ४. कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना। ५. गिराना। ढरकाना।

संज्ञा पुं० १. राग-विशेष। २. वह लकड़ी जो छत या दीवार आदि को गिरने से बचाने के लिए लगाई जाती है। डाट। धन्नः। चाँड़। थूनी।

अड़ानी–संज्ञा स्त्री० छाता। रोकनेवाला। बड़ा पंखा।

अड़ायता–वि० आड़ या ओट करनेवाला।

अड़ार–संज्ञा पुं० १. राशि। ढेर। समूह। २. बेचने के लिए रक्खा हुआ इंधन। ३. लकड़ी या इंधन की दूकान। टाल। *वि० टेढ़ा। आड़ा। तिरछा।

अडारना†–क्रि० स० देना। डालना।

अडिग–वि० न डिगनेवाला। दृढ़। स्थिर। अटल।

अड़ियल–वि० १. रुक-रुक या अड़कर चलनेवाला। जो चलते चलते रुक जाता है। २. सुस्त। मट्ठर। ३. जिद्दी। हठी।

अड़िया–संज्ञा स्त्री० अण्डे के आकार की एक लकड़ी जिसे टेककर फकीर बैठते हैं। लम्बे आकार की कच्चे सूत की पिण्डी। फेंटी।

अड़ी–संज्ञा स्त्री० १. हठ। आग्रह। जिद। २. आवश्यकता का समय। ३. रोक। वि०–हठी। आग्रही।

अडीठ–वि० जो दिखाई न दे। छिपा हुआ। गुप्त।

अडूलना*–क्रि० स० उड़ेलना।

अडूसा–संज्ञा पुं० पौधा-विशेष जिसके पत्ते और फूल आदि दवा के काम आते हैं। रूसा। वसा।

अडोल–वि० १. जो न हिले। स्थिर। अटल। अचल। दृढ़। २. स्तब्ध। ठकमारा।

अड़ोसपड़ोस–संज्ञा पुं० पास ही में। आस-पास। करीब।

अड़ोसी-पड़ोसी–संज्ञा पुं० आस-पास का रहनेवाला। हमसाया।

अड्डा–संज्ञा पुं० १. टिकने का स्थान। ठहरने की जगह। २. केंद्रस्थान। प्रधान स्थान। ३. मिलने या इकट्ठा होने की जगह। ४. चिड़ियों के बैठने के लिए लकड़ी या लोहे की छड़। ५. कबूतरों की छतरी। ६. करघा। ७. सेना रहने का स्थान। छावनी।

अढ़तिया–संज्ञा पुं० १. आढ़त करनेवाला। वह दूकानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता हो। २. दलाल।

अढ़वना–क्रि० स० काम में लगाना। आज्ञा देना।

अढ़वायक*–संज्ञा पुं० जो दूसरों से काम लेता हो।

अढ़ाई–वि० संख्या-विशेष, दो और आधा।

अढ़ाईगुना–वि० दो और आधे के बराबर।
अढ़िया–संज्ञा स्त्री० [देश०] काठ, पत्थर या लोहे का छोटा बर्तन।
अढ़क–संज्ञा पुं० चोट। ठोकर।
अढ़कना–क्रि० अ० १. सहारा लेना। २ ठोकर खाना।
अढ़कि–अव्य० उढ़ककर। सहारा लेकर।
अढ़ैया–संज्ञा पुं० १. ढाई गुने का पहाड़ा २. २½ सेर की तौल या बाट।
अणि–संज्ञा स्त्री० तीखी धार। नोक। सीमा। किनारा। अक्षाग्र। कीलक। पहिये के अग्रभाग का काँटा। बाढ़। धार।
वि० वहुत छोटा।
अणिमा–संज्ञा स्त्री० अष्ट सिद्धियों में पहली सिद्धि, जिससे योगी छोटे से छोटा रूप धारण कर सकता है।
अणी–संज्ञा स्त्री० दे० "अणि"। अनी।
अणीय–वि० अति सूक्ष्म। बारीक।
अणु–संज्ञा पुं० १. द्वयणुक से सूक्ष्म और परमाणु से बड़ा कण (६० परमाणुओं का)। २. छोटा कण या टुकड़ा। ३. रजकण। ४. अत्यंत सूक्ष्म मात्रा। ५. धान्य-विशेष।
वि० १. बहुत छोटा। अति सूक्ष्म। २. दिखाई न देनेवाला।
अणुमात्र–वि० छोटा-सा। अत्यन्त सूक्ष्म।
अणुवाद–संज्ञा पुं० १. वैशेषिक दर्शन। २. वह दर्शन या सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया हो (रामानुज का)।
अणुवादी–संज्ञा पुं० १. जो वैशेषिक दर्शन को माने। नैयायिक। २. रामानुज का अनुयायी।
अणुवीक्षण–संज्ञा पुं० १. खुर्दबीन। सूक्ष्म-दर्शक यंत्र। २. छिद्रान्वेषण। बाल की खाल निकालना।
अतंद्रिक–वि० १. चुस्त। चंचल। आलस्य-रहित। २. बेचैन। व्याकुल।
अतः–क्रि० वि० इसलिए। इससे। इस कारण। इस वजह से।
अतएव–क्रि० वि० इसलिए। इस हेतु से। इस कारण से।
अतथ्य–वि० असत्य। झूठ।
अतद्गुण–संज्ञा पुं० वह अलंकार जिसमें पर्याप्त कारण रहने पर भी किसी वस्तु या प्राणी में दूसरी वस्तु या प्राणी के गुण का ग्रहण नहीं दिखलाया जाता।
अतनु या अतन–वि० १. देह या शरीर-रहित। २. स्थूल। मोटा।
संज्ञा पुं० कामदेव। अनंग।
अतरंग–संज्ञा पुं० वह क्रिया जिससे लंगर जमीन से उखाड़कर रखा जाता है।
अतर–संज्ञा पुं० [अ० इत्र] फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार। दे० "इत्र"।
अतरदान–संज्ञा पुं० [फा० इत्रदान] इत्र रखने का बर्तन।
अतरसों–क्रि० वि० १. आनेवाला तीसरा दिन। परसों के आगे का आनेवाला दिन। २. तीसरा बीता हुआ दिन। परसों से पहले का बीता हुआ दिन।
अतर्कित–वि० १. आकस्मिक। जिसका पहले से अनुमान न हो। २. जो सोचा समझा न गया हो। जिस पर विचार न हुआ हो।
अतर्क्य–वि० तर्क-वितर्क के अयोग्य। अचिंत्य। अनिर्वचनीय।
अतल–संज्ञा पुं० १. पाताल का एक भेद। २. बिना तल का। बिना पेंदे का। ३. गोल।
अतलस–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक रेशमी कपड़ा।
अतलस्पर्श–वि० अगाध, अति गंभीर। जिसके तल का स्पर्श न हो सके।
अतलस्पर्शी–वि० अथाह। अतल को छूने-वाला। बहुत गहरा।
अतलांतक–संज्ञा पुं० [अंग्रे० एटलाण्टिक] एक महासागर जो यूरोप और अफ्रीका के पश्चिमी किनारे से अमेरिका के पूर्वी किनारे तक फैला हुआ है।
अतसी–संज्ञा स्त्री० अलसी। तीसी। सन।
अतवार–संज्ञा पुं० इतवार। ऐतवार। दे० "रविवार"।
अता–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रदान।
अताई–वि० [अ०] १. प्रवीण। दक्ष। कुशल। २. चालाक। धूर्त। ३. किसी काम

को बिना सीखे हुए करनेवाला। ४. गवैया। ५. जन्त्री बजानेवाला, बजवैया।

अति–वि० अधिक। बहुत। ज्यादा।
संज्ञा स्त्री० बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

अतिउक्ति–संज्ञा स्त्री० अत्युक्ति। असंभव। प्रशंसा काव्य का एक अलंकार। दे० "अत्युक्ति"।

अतिकाय–वि० मोटा। स्थूल।
संज्ञा पुं० १. बड़ा शरीर। २. भयानक शरीरवाला। ३. रावण का एक पुत्र।

अतिकाल–संज्ञा पुं० १. देर। विलंब। २. कुसमय।

अतिकृच्छ्–संज्ञा पुं० १. अत्यन्त कष्ट। २. १२ दिनों का व्रत-विशेष। (धर्मशास्त्र)

अतिकृति–संज्ञा स्त्री० १. पचीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा। २. मात्रा से अधिक की हुई।

अतिक्रम–संज्ञा पुं० १. विपरीत व्यवहार। मर्य्यादा या नियम का उल्लंघन। २. पार होना। ३. अपमान करना। अन्यथाचरण। ४. क्रमभंग करना।

अतिक्रमण–संज्ञा पुं० सीमा के बाहर जाना या भीतर आना। उल्लंघन। बढ़ जाना।

अतिक्रांत–वि० १. सीमा के बाहर गया हुआ। पार गया हुआ। २. व्यतीत। बीता हुआ।

अतिगति–संज्ञा स्त्री० मोक्ष। मुक्ति। अन्तिम गति।

अतिचार–संज्ञा पुं० १. व्यतिक्रम। विघात। २. ग्रहों की शीघ्र चाल। एक राशि का भोगकाल समाप्त किये बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना।

अतिजगती–संज्ञा स्त्री० तेरह वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

अतिथि–संज्ञा पुं० १. अभ्यागत। मेहमान। पाहुन। साधु। यात्री। घर में आया हुआ अज्ञात व्यक्ति। २. वह संन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे। व्रात्य। ३. यज्ञ में सोमलता लानेवाला। ४. अग्नि। ५. राम के पौत्र तथा कुश के पुत्र का नाम। ६. अग्नि का एक नाम। ७. राम के पौत्र और अयोध्या के राजा सुहोत्र का एक नाम।

अतिथिपूजा–संज्ञा स्त्री० १. मेहमानदारी। अतिथि का आदर-सत्कार। २. पंचमहायज्ञों में से एक।

अतिथिभक्त–संज्ञा पुं० अतिथियों की सेवा करनेवाला। अतिथिपूजक।

अतिथियज्ञ–संज्ञा पुं० १. अतिथिपूजा। अतिथि का स्वागत। २. पंचमहायज्ञों में से एक।

अतिदेश–संज्ञा पुं० १. वह नियम जो अन्य विषयों में भी काम आवे। बहुत व्यापक नियम। २. बदली। ३. अति प्रभाव। ४. पूर्वकथित। ५. पहले कही बात या नियम की उपेक्षा करनेवाला, उसे न माननेवाला।

अतिधृति–संज्ञा स्त्री० १. उन्नीस वर्ण के चार चरणोंवाले वृत्तों की संज्ञा। २. उन्नीस की संख्या (गणित)।

अतिपत्था–संज्ञा पुं० बड़ा मार्ग। राजपथ। सड़क।

अतिपर–संज्ञा पुं० १. अतिशत्रु। महावैरी। २. उदासीन। ३. असम्बन्ध।

अतिपराक्रम–संज्ञा पुं० बड़ा प्रताप। बड़ा तेज। अति तेजस्वी।

अतिपात–संज्ञा पुं० १. गड़बड़ी। अव्यवस्था। २. अन्याय। उत्पात। उपद्रव। अतिक्रम। ३. विघ्न। बाधा। विरोध। ४. मियाद समाप्त होना। ५. उपेक्षा। ६. दुरुपयोग।

अतिपातक–संज्ञा पुं० पुरुष के लिए माता, बेटी और पतोहू के साथ और स्त्री के लिए पुत्र, पिता और दामाद के साथ गमन।

अतिपान–संज्ञा पुं० बहुत पीना। मत्तता। पीने का व्यसन।

अतिपार्श्व–संज्ञा पुं० सन्निकट। समीप। अतिनिकट। बहुत ही पास। दूर नहीं।

अतिप्रसंग–संज्ञा पुं० अत्यंत मेल। पुनरुक्ति। अतिविस्तार। व्यभिचार। क्रम का नाश करना।

अतिबरवै–संज्ञा पुं० छंद-विशेष।

अतिबल–वि० प्रचंड। अत्यंत बली।

अतिबला–संज्ञा स्त्री० १. एक प्राचीन युद्ध-विद्या जिसके सीखने से श्रम और ज्वर

आदि की बाधा का भय नहीं रहता था। २. कँगही या ककही नामक पौधा। पीत-बला। बरियारी का पेड़।

अतिमुक्त–वि० १. विषयवासना-रहित। २. जिसकी मुक्ति हो गई हो। ३. अनुर्वर। बाँझ।

अतियोग–संज्ञा पुं० एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ नियत परिमाण से अत्यधिक मिलाव।

अतिरंजन–संज्ञा पुं० अत्युक्ति। बढ़ा-चढ़ाकर कहने की रीति। वर्णन का अतिरेक।

अतिरथी–संज्ञा पुं० अतिशय योद्धा। वह जो अकेले बहुतों के साथ लड़ सके।

अतिरिक्त–क्रि० वि० १. अलावा। छोड़कर। सिवाय। परिमाण से अधिक।

वि० १. बचा हुआ। शेष। २. भिन्न। अलग।

अतिरिक्त पत्र–संज्ञा पुं० क्रोड़पत्र। अखबार के साथ बँटनेवाली सूचना या विज्ञापन।

अतिरेक–संज्ञा पुं० आधिक्य। अतिशय। बहुत ही। बाहुल्य। ज्यादती। व्यर्थ या अनावश्यक वृद्धि।

अतिरोग–संज्ञा पुं० महाव्याधि। यक्ष्मा। क्षयी। असाध्य रोग।

अतिवाद–संज्ञा पुं० १. सच्ची बात। २. कड़ुई बात। अपमानजनक भाषा। ३. शेखी। डींग।

अतिवादी–वि० १. सत्य बोलने वाला। २. कटुवादी। ३. डींग मारने वाला। बकवादी।

अतिवाहिक–संज्ञा पुं० पाताल-निवासी।

अतिविषा–संज्ञा स्त्री० १. अतीस। २. अत्यंत विषवाली।

अतिवेल–वि० बेहद। असीम।

अतिवृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. अत्यंत वर्षा। २. छः ईतियों में से एक।

अतिव्याप्ति–संज्ञा स्त्री० लक्षण के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के गृहीत हो जाने का दोष (न्याय-शास्त्र)।

अतिशय–वि० अधिक। बहुत।

संज्ञा पुं० १. प्राचीनों के अनुसार एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर संभावना या असंभावना दिखलाई जाय। २. यश। बाहुल्य। ३. बहुत बड़े हाथवाला।

अतिशय उक्ति–संज्ञा स्त्री० अत्यन्त चतुराई। काव्य का अलंकार-विशेष। दे० "अतिशयोक्ति"।

अतिशयी–वि० श्रेष्ठ। अधिक। अत्यन्त।

अतिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० अलंकार-विशेष जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में संबंध तथा इनके विपरीत आदि दिखाकर किसी वस्तु का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करते हैं।

अतिशयोपमा–संज्ञा स्त्री० दे० "अनन्वय" अलंकार।

अतिसंध–संज्ञा पुं० आज्ञा या प्रतिज्ञा का भंग करना।

अतिसंधान–संज्ञा पुं० १. अतिक्रमण। धोखा। २. विश्वासघात।

अतिसामान्य–संज्ञा पुं० वह बात जो इतने अधिक साधारण रूप में कही जाय कि पूरी पूरी सब पर न घटे (न्याय)।

अतिसार–संज्ञा पुं० १ संग्रहणी। रोग-विशेष जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है। २. जठर की व्याधि। पेट की पीड़ा।

अतिहसित–संज्ञा पुं० हास के छः भेदों में से एक जिसमें हँसनेवाला ताली पीटे और उसके नेत्रों से आँसू निकलें।

अतींद्रिय–वि० अप्रत्यक्ष। अगोचर। अव्यक्त। जिसका अनुभव इंद्रियों से न हो।

अतीत–वि० १. बीता हुआ। भूत। गत। व्यतीत। २. पृथक्। अलग। ३. मरा हुआ।

क्रि० वि० बाहर। परे। अतिक्रान्त।

संज्ञा पुं० १. संगीत शास्त्रानुसार परिमाण-विशेष। २. संन्यासी। यति। साधु।

अतीतकाल–संज्ञा पुं० बीता हुआ समय।

अतीतना*–क्रि० अ० बीतना। गुजरना।

क्रि० स० १. व्यतीत करना। बिताना। २. त्यागना। छोड़ना।

अतीथ*–संज्ञा पुं० दे० "अतिथि"।

अतीव–वि० अतिशय। यथेष्ट। बहुत। अत्यंत।

अतीस–संज्ञा पुं० पहाड़ी पौधा-विशेष जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विषा। अतिविषा। औषध-विशेष।

अतीसार–संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"। एक रोग।

अतुराई*–संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता। आतुरता। जल्दी। २. चपलता। चंचलता।

अतुराना*–क्रि० अ० अकुलाना। आतुर होना। घबराना। शीघ्रता करना।

अतुल–वि० १. जिसकी तौल न हो सके। २. बहुत अधिक। अमित। असीम। ३. अनुपम। अनोखा। बेजोड़। असदृश। तुलना रहित।

संज्ञा पुं० १. केशव के अनुसार अनुकूल नायक। २. तिल का पेड़।

अतुलनीय–वि० १. अपार। बहुत अधिक। २. उपमारहित। सर्वश्रेष्ठ। अनुपम। अद्वितीय।

अतुलित–वि० १. जो तौला हुआ न हो। २. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३. असंख्य। ४. अनोखा। अनुपम।

अतुल्य–वि० १. असदृश। असमान। २. अनुपम। बेजोड़।

अतूथ*–वि० विचित्र। अपूर्व।

अतूल*–वि० दे० "अतुल"।

अतृप्त–वि० [संज्ञा अतृप्ति] १. जो तृप्त न हो। २. भूखा।

अतृप्ति–संज्ञा स्त्री० असंतुष्टि।

अतेज–वि० क्षीणता। हतश्री। हतप्रभ।

अतोर*–वि० दृढ़। न टूटनेवाला। अभंग।

अतोल–वि० १. अप्रमाणित। जिसका अंदाज न किया गया हो। २. बहुत अधिक। ३. बेजोड़। अनुपम।

अतौल–वि० दे० "अतोल"।

अत्त*†–संज्ञा स्त्री०। अधिकता। ज्यादती दे० "अति"।

अत्ता–संज्ञा स्त्री० १. माता। २. ज्येष्ठा बहिन। ३. बड़ी मौसी। ४. सास।

अत्तार–संज्ञा पुं० [अ०] १. गंधी। इत्र या तेल बेचनेवाला। २. यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला।

अत्तिका–संज्ञा स्त्री० जेठी बहिन।

अत्यंत–वि० बहुत ज्यादा। सीमा से अधिक। अतिशय। अतीव।

अत्यंताभाव–संज्ञा पुं० १ पूर्ण अभाव। बिलकुल कमी। सत्ता का बिलकुल न होना। २. पाँच प्रकार के अभावों में से एक। तीनों कालों में असंभव। जैसे, आकाशकुसुम, बंध्या-पुत्र। (वैशेषिक) नितान्त अभाव।

अत्यंतिक–वि० १. समीप का। नजदीकी। २. जो बहुत घूमता हो।

अत्यम्ल–संज्ञा पुं० इमली।
वि० बहुत खट्टा।

अत्यर्थ–संज्ञा पुं० विस्तार। अतिशय। अधिक।

अत्यय–संज्ञा पुं० १. विनाश। मृत्यु। नाश। २. सीमा के बाहर जाना। अतिक्रम। राजाज्ञा का उल्लंघन। अपराध। पाप। ३. दंड। ४. कष्ट। ५. दोष।

अत्यष्टि–संज्ञा स्त्री० १७ वर्ण के चार पदों के वृत्तों की संज्ञा।

अत्याचार–संज्ञा पुं० १. कुव्यवहार। आचार। अन्याय का अतिक्रमण। ज्यादती। २. दुराचार। पाप। निषिद्ध आचरण। ३. पाखंड। आडंबर। ढोंग।

अत्याचारी–वि० १. अत्याचार करनेवाला। अन्यायी। निष्ठुर। २. पाखंडी। ढोंगी। ३. दुरात्मा। कुकर्मी।

अत्याज्य–वि० १. जो छोड़ने योग्य न हो। २. जो छोड़ा न जा सके।

अत्युक्त–वि० जिसका वर्णन बहुत बढ़ा चढ़ाकर किया गया हो।

अत्युक्ति–संज्ञा स्त्री० १. बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करने की शैली। २. काव्य में एक अलंकार।

अत्युक्था–संज्ञा स्त्री० छंद-विशेष।

अत्युत्कट–वि० अतिशय कठिन। अतितीव्र।

अत्युत्कण्ठा–संज्ञा स्त्री० अतिशय मनस्ताप। अत्यन्त चिन्ता।

अत्युत्कृष्ट–वि० अत्युत्तम। बहुत अच्छा।

अत्युत्तम–संज्ञा पुं० वि० अति रमणीय। अतिशय। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा।

अत्युत्तर–संज्ञा पुं० सिद्धान्त। निश्चय करना। मीमांसा-निर्धारण।

अत्र–क्रि० वि० यहाँ। इस स्थान पर।
*संज्ञा पुं० "अस्त्र" का अपभ्रंश।

अत्रत्य–[अपभ्रंश] क्रि० वि० यहीं का। इसी स्थान का। दे० 'अत्र'।

अत्रक–वि० १. यहाँ का। २. ऐहिक। इस लोक का।
अ-त्रप–वि० निर्लज्ज। लज्जाहीन। बेशर्म। बेहया।
अत्रभवान्–संज्ञा पुं० [स्त्री० अत्रभवती] माननीय। श्लाघ्य। पूज्य। श्रेष्ठ।
अत्रस्थ–संज्ञा पुं० इसी स्थान का वासी। यहीं रहनेवाला। यहाँ का।
अत्रि–संज्ञा पुं० १. आकाश में सप्तर्षि-मंडल का एक तारा। २. सप्तर्षियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं।
अत्रैगुण्य–संज्ञा पुं० सत्त्व, रज, तम गुणों का न होना।
अथ–अव्य० १. अब। २. अनंतर। ३. एक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रंथ या लेख का आरंभ करते थे। ४. प्रश्न। ५. अधिकार। ६. संशय। ७. अकल्प। ८. समुच्चय। ९. तदन्तर। तदुपरि। पश्चात्।
अथऊ†–संज्ञा पुं० जैन लोगों का सूर्यास्त के पहले करने का भोजन।
अथक–वि० न थकनेवाला। अश्रांत। अथकित। अक्लांत।
अथच–अव्य० और। और भी।
अथना*–क्रि० अ० डूबना। अस्त होना।
अथमना†–संज्ञा पुं० 'उगमना' का उलटा। पश्चिम दिशा।
अथरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अथरी] नाँद। मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बर्तन।
अथर्व–संज्ञा पुं० १. चार वेदों में अन्तिम वेद जिसके मंत्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु और अंगिरा गोत्रवाले थे। २. अतिवृद्ध।
अथर्वण–संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. अथर्ववेद।
अथर्वणी–संज्ञा पुं० पुरोहित। अथर्ववेदज्ञ ब्राह्मण।
अथर्वन्–संज्ञा पुं० दे० "अथर्व"।
अथर्वनी–संज्ञा पुं० पुरोहित। कर्मकांडी। यज्ञादि करानेवाला।
अथर्वशिख–संज्ञा पुं० एक उपनिषद।
अथर्वशिखामणि–संज्ञा पुं० एक उपनिषद।
अथर्वशिर–संज्ञा पुं० अथर्ववेद का सातवाँ उपनिषद।
अथर्वा–संज्ञा पुं० ब्रह्माके ज्येष्ठ पुत्र का नाम।
अथल–संज्ञा पुं० वह भूमि जो लगान लेकर दूसरे को जोतने को दी जाती है।
अथवना*–क्रि० अ० १. (सूर्य्य, चंद्र आदि का) डूबना। अस्त होना। २. चला जाना। लुप्त होना। अदृश्य होना।
अथवा–अव्य० १. या। वा। किंवा। एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। २. प्रकारान्तर। पक्षान्तर। ३. विकल्प का सूचक शब्द।
अथाई–संज्ञा स्त्री० १. बैठक। बैठने की जगह। २. इकट्ठे होकर पंचायत करने की जगह। ३. घर के सामने का चबूतरा। ४. सभा। मंडली। जमावड़ा।
अथान, अथाना–संज्ञा पुं० अचार। खटाई। वि० बिना स्थान। बेठिकाने।
अथाना*–क्रि० अ० दे० "अथवना"। क्रि० स० १. ढूँढ़ना। २. थाह लेना। गहराई नापना।
अथाह–वि० १. अगाध। बहुत गहरा। जिसकी थाह न हो। २. बहुत अधिक। जिसका अंदाज न हो सके। अपरिमित। ३. गूढ़। गंभीर। संज्ञा पुं० १. गहराई। २. जलाशय। ३. समुद्र।
अथिर*–वि० जो स्थिर न हो। दे० "अस्थिर"।
अथोर*–वि० १. बहुत। अधिक। २. पूरा। थोड़ा नहीं।
अदाध–अप्रज्वलित। अपक्व। न जला हुआ। कच्चा।
अदंक*–संज्ञा पुं० भय। डर। भीति।
अदंड–वि० १. जो दंड के अयोग्य हो। सजा से मुक्त। २. जिस पर कर न लगे। ३. निडर। निर्भय। स्वेच्छाचारी। ४. बली। ५. पलाश आदि के दंड से रहित (धर्मशास्त्र)। ६. उद्दंड।

संज्ञा पुं० वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे। मुआफी।

अदंडनीय–वि० १. जो दंड पाने के अयोग्य हो। अदंड्य। २. स्वधर्मनिष्ठ। सदाचारी। महात्मा।

अदंडमान–वि० जो दंड के योग्य न हो। दंड से मुक्त।

अदंड्य–वि० जिसे दंड न दिया जा सके। दंड से मुक्त।

अदंत–वि० १. जिसके दाँत न हों। २. दुध-मुहाँ। बहुत छोटी अवस्था का। ३. वे अक्षर जिन्हें बोलने में दाँतों की सहायता न लेनी पड़े (व्याकरण)।

अदंभ–वि० १. पाखंडविहीन। दंभ या अभिमान से रहित। २. निश्छल। सच्चा। निष्कपट। ३. प्राकृतिक। स्वाभाविक। ४. शुद्ध। स्वच्छ। साफ।

संज्ञा पुं० शिव।

अदग–वि० १. शुद्ध। बेदाग २. निर्दोष। निरपराध। ३. अछूता। अस्पृष्ट। ४. साफ।

अदत्त–वि० १. न दिया हुआ। असमर्पित। २. अप्रतिपादित।

संज्ञा पुं० वह वस्तु जिसके दिये जाने पर भी लेनेवाले को उसे रखने का अधिकार न हो (स्मृति)।

अदत्ता–संज्ञा स्त्री० कुमारी। अनूढ़ा। अविवाहिता कन्या। वह कन्या जिसका अभी वाक्‌दान न हुआ हो।

अदद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गिनती। संख्या। २. संख्या का संकेत या चिह्न।

अदन–संज्ञा पुं० [अ०] पैगंबरी मतों के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रखा था।

अदना–वि० [अ०] १. क्षुद्र। तुच्छ। नीच। २. सामान्य। साधारण। मामूली।

अदब–संज्ञा पुं० [अ०] बड़ों का आदर सम्मान। शिष्टाचार। कायदा।

अदबदाकर–क्रि० वि० हठ करके। अड़कर। अवश्य।

अदभ्र–वि० १. अधिक। बहुत। प्रचुर। २. अनंत। अपार। ३. यथेष्ट। ४. संपूर्ण। पूरा।

संज्ञा पुं० म्लेच्छोत्पादक पुरुष।

अदम–संज्ञा पुं० अभाव। न होना। अनुपस्थिति। परलोक।

अदमसबूत–संज्ञा पुं० प्रमाण का अभाव। सबूत का न होना।

अदमहाज़िरी–संज्ञा स्त्री० गैरहाजिरी। अनुपस्थिति।

अदमपैरवी–संज्ञा स्त्री० किसी मुक़द्दमे में आवश्यक कार्रवाई न करना।

अदम्य–वि० प्रबल। जिसका दमन न हो सके। दुर्दान्त। प्रचंड।

अदय–वि० १. निर्दय। निष्ठुर। (व्यक्ति) २. दयारहित। (व्यापार)।

अदरक–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है। हरी सोंठ।

अदरकी–संज्ञा स्त्री० टिकिया। जो सोंठ और गुड़ मिलाकर बनाई जाती है।

अदरसा–संज्ञा पुं० अनरसा। मिठाई-विशेष।

अदरा–संज्ञा पुं० आर्द्रा नक्षत्र। दे० "आर्द्रा"।

वि० दुलरुआ (पुत्र आदि)।

अदराना–क्रि० अ० इतराना। बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना। क्रि० स० आदर देकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

अदर्शन–संज्ञा पुं० १. अनुपस्थिति। असाक्षात्। २. विनाश। लोप।

वि० छिपा। ढका। लुका। गुप्त।

अदर्शनीय–वि० १. जो देखने के योग्य न हो। २. बुरा। कुरूप। भद्दा। अदृश्य।

अदल–संज्ञा पुं० [अ०] न्याय।

अदल-बदल–संज्ञा पुं० [अ०] परिवर्तन। उलट-पुलट। हेर-फेर।

अदली*–संज्ञा पुं० [अ० अदल] न्याय करनेवाला।

अदवान–संज्ञा स्त्री० अदवायन। चारपाई के पैताने की रस्सी। ओनचन। औंचन।

अदहन–संज्ञा पुं० आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें चावल दाल आदि पकाते हैं।

अदाँत—वि० १. बिना दाँत का (पशुओं के संबंध में)

अदांत—वि० १. विषयासक्त। जो इंद्रियों का दमन न कर सके। २. अक्खड़। उद्दंड।

अदा—वि० [अ०] चुकता। बेबाक।

मुहा०—अदा करना=पालन या पूरा करना। जैसे—फर्ज अदा करना।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नखरा। हाव-भाव। २. तर्ज। ढंग।

अदाई*—वि० [अ० अदा] १. चालबाज़। २. ढंगी।

अदायाँ*—वि० बायाँ या वाम। प्रतिकूल। बुरा।

अदाग*—वि० १. बिना दाग के। साफ। २. पवित्र। निर्दोष।

अदागी† —वि० दे० "अदाग"।

अदाता—संज्ञा पुं० १. सूम। कृपण। कंजूस। अदानी। २. लीचड़। ३. दान-शक्ति-हीन।

अदान*—वि० १. नासमझ। नादान। २. दान का अभाव।

अदानी—वि० दान न देनेवाला। कंजूस। कृपण।

अदायगी—संज्ञा स्त्री० ऋण या देन का चुकाया जाना।

अदाया—संज्ञा स्त्री० दयाशून्यता। कठोरता। निर्दयता। निष्ठुरता।

अदालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० अदालती] १. न्यायालय। कचहरी। २. न्याय करनेवाला।

यौ०—अदालत खफ़ीफ़ा=वह दीवानी अदालत जिसमें छोटे मुकद्दमे लिये जाते हैं। अदालत दीवानी=वह अदालत जिसमें संपत्ति या स्वत्व-संबंधी बातों का निर्णय होता है। अदालत माल=वह अदालत जिसमें लगान और मालगुज़ारी संबंधी मुक़द्दमे दायर किए जाते हैं।

अदालती—वि० [अ० अदालत] १. जो मुक़द्दमा लड़े। २. अदालत का। अदालत संबंधी।

अदावँ—संज्ञा पुं० बुरा दाँव। कठिनाई। असमंजस।

अदावत—संज्ञा स्त्री० [अ०] बैर। शत्रुता। दुश्मनी।

अदावती—वि० १. अदावत रखनेवाला। २. विरोध से उत्पन्न। द्वेष-मूलक। वैरी। शत्रु।

अदाह*—संज्ञा स्त्री० हाव-भाव। नाज-नखरा।

अदित*—संज्ञा पुं० दे० "आदित्य"।

अदिति—संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. प्रकृति। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता हैं। ४. अतरिक्ष। ५. द्युलोक। ६. माता। ७. पिता।

अदितिनंदन—संज्ञा पुं० देवता। सुर।

अदितिसुत—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. देवता।

अदिन—संज्ञा पुं० १. कुदिन। बुरा दिन। संकट या दुःख का समय। २. अभाग्य। बुरी दशा।

अदिव्य—वि० १. बुरा। २. साधारण। लौकिक। ३. स्वर्ग का नहीं। पृथ्वी का।

अदिव्य नायक—संज्ञा पुं० काव्यादि का वह नायक जो मनुष्य हो (साहित्य)।

अदिष्ट*—वि० दे० "अदृष्ट"। १. भाग्य। प्रारब्ध। विपत्ति। २. न देखा हुआ।

अदिष्टी*—वि० १. अभागा। २. मूर्ख। जो दूर तक न सोचे। ३. भाग्य को न माननेवाला। नास्तिक।

अदीठ*—वि० १. अलक्ष्य। बिना देखा हुआ। लुप्त। २. अनोखा।

अदीन—वि० १. उग्र। प्रचंड। २. दीनता-रहित। निडर। ३. उदार।

अदीयमान—वि० जो न दिया जाय।

अदीर—वि० सूक्ष्म। महीन। छोटा।

अदुंद*—वि० १. निर्द्वंद्व। द्वंद्वरहित। जिसमें झंझट न हो। बाधा-रहित। २. शांत। निश्चित। ३. अनोखा। अद्वितीय।

अदूर—क्रि० वि० पास। समीप।

अदूरदर्शी—वि० नासमझ। अविचारी। जो दूर तक न सोचे।

अदूषण—वि० शुद्ध। दोष-रहित। पवित्र।

अदूषित—वि० शुद्ध। निर्दोष। पवित्र। कलंक-रहित।

अदृश्य—वि० १ गुप्त। जो दिखाई न दे। २. अगोचर। जिसका ज्ञान इंद्रियों को न हो। ३. छिपा हुआ। लुप्त।

अदृष्ट—वि० १. जो देखा हुआ न हो। २. लुप्त। अदृश्य। ३. प्राकृतिक।

संज्ञा पुं० १. भाग्य। २. अग्नि और जल आदि से उत्पन्न आपत्ति।

अदृष्ट पुरुष—संज्ञा पुं० १. किसी कार्य में स्वयं कूद पड़नेवाला। २. बिना बनाये बननेवाला। ३. भाग्य। ४. ब्रह्मा।

अदृष्टपूर्व—वि० १. अद्वितीय। जो पहले न देखा गया हो। २. अनोखा। अद्‌भुत। विलक्षण।

अदृष्टफल—संज्ञा पुं० पूर्व कर्मों के फल। सुख-दुःख। भाग्य-फल।

अदृष्टवाद—संज्ञा पुं० सिद्धांत-विशेष जो परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूपण करता है। भाग्य को प्रधानता देनेवाला वाद।

अदृष्टार्थ—संज्ञा पुं० वह शब्द-प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का साक्षात् इस संसार में न हो; जैसे, स्वर्ग, परमात्मा इत्यादि। आप्त वाक्य मात्र का विषय।

अदेख*—वि० १. गुप्त। अदृश्य। २. जो देखा हुआ न हो। दे० "अदृष्ट"।

अदेखी—वि० डाही। द्वेष करनेवाला। ईर्ष्यालु। जो न देख सके।

अदेय—वि० जो देने योग्य न हो। जिसे दिया न जा सके।

अदेयदान—संज्ञा पुं० अयोग्य को दान। अपात्र को दान।

अदेस*—संज्ञा पुं० १. आदेश। आज्ञा। २. दंडवत्। प्रणाम। (साधु)

अदेह—वि० जिसके शरीर न हो।

संज्ञा पुं० १ अनंग। कामदेव। २. राजा जनक।

अदोख*—वि० दोष रहित। दे० "अदोष"।

अदोखिल*—वि० निष्कलंक। निर्दोष।

अदोष*—वि० १. निरपराध। २. दोष-रहित। निष्कलंक।

अदौरी†—संज्ञा स्त्री० उर्द की सुखाई हुई बरी।

अद्धरज*—संज्ञा पुं० दे० "अध्वर्यु"।

अद्धा—संज्ञा पुं० १. आधा। २. आधी बोतल।

अद्धी—संज्ञा स्त्री० १. एक पैसे का सोलहवाँ भाग। आधी दमड़ी। २. आधा। बराबर भाग। ३. महीन सूती कपड़ा। तनजेब।

अद्‌भुत—वि० अनोखा। आश्चर्यजनक। विचित्र।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से एक।

अद्‌भुतालय—संज्ञा पुं० दे० "अजायबघर"।

अद्‌भुतोपमा—संज्ञा स्त्री० उपमा अलंकार का एक भेद।

अद्य—क्रि० वि० आज। अब। अभी। वर्तमान दिन।

अद्यतन—वि० १. आजकल का। वर्तमान समय का। इस समय तक का। २. काल-विशेष (व्याकरण)।

अद्यापि—क्रि० वि० आज भी। आज तक। अभी तक।

अद्यावधि—क्रि० वि० अब तक। आज से लेकर।

अद्रव्य—संज्ञा पुं० शून्य। सत्ताहीन पदार्थ। अभाव।

वि० दरिद्र। गरीब। द्रव्यहीन।

अद्रा*—संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।

अद्रि—संज्ञा पुं० १. शैल। पहाड़। पर्वत। अचल। २. वृक्ष। ३. सूर्य। ४. परिमाण विशेष।

अद्रिकीला—संज्ञा स्त्री० भूमि। पृथ्वी।

अद्रिज—संज्ञा पुं० शिलाजीत। गेरू। पर्वत-जात वस्तु।

अद्रिजा—संज्ञा स्त्री० १. अद्रितनया। पार्वती। २. सहेली। ३ वृक्ष। ४. पहाड़ पर उत्पन्न होनेवाली लता।

अद्रितनया—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। पार्वती। २. गंगा। ३. वृत्त-विशेष। दे० "अद्रिजा"।

अद्रिपति—संज्ञा पुं० पर्वतराज। हिमालय पर्वत।

अद्रिवह्नि—संज्ञा स्त्री० पर्वत से उत्पन्न अग्नि।

अद्रिभिद्—संज्ञा पुं० १ पर्वतभेदक। २. वज्र। ३. इन्द्र।

अद्रिराज—संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत।

अद्रिशृंग—संज्ञा पुं० पर्वत के ऊपर का भाग। पर्वत-शिखर। चोटी।

अद्वितीय–वि० १. अकेला। २. बेजोड़। जिसके ऐसा दूसरा न हो। अतुल्य। अनुपम। अनोखा। ३. मुख्य। प्रधान।

अद्वैत–वि० १. एकाकी। २. अनोखा। बेजोड़। ३. भेदरहित।
संज्ञा पुं० ईश्वर। ब्रह्म। (वेदांत)

अद्वैतवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी की सत्ता नहीं मानी जाती तथा आत्मा और परमात्मा में भी भेद नहीं माना जाता। (वेदांत)।

अद्वैतवादी–संज्ञा पुं० १. जो अद्वैत मत को माने। २. बौद्ध-विशेष।

अधः–अव्य० नीचे। तले। आधा।
संज्ञा स्त्री० पैर के नीच की दिशा।

अधःपतन–संज्ञा पुं० १. नीचे गिरना। २. अवनति। बुरी गति। ३. दुर्दशा। ४. नाश।

अधःपात–संज्ञा पुं० १. नीचे गिरना। पतन। अवनति। २. ध्वंस। नष्ट। दुर्दशा। ३. सौभाग्य-सम्पत्ति से वंचित होना।

अधःप्रस्तरण–संज्ञा पुं० कुशासन। तृण-शय्या।

अधःशिरा–संज्ञा पुं० १. अधोमुख। २. सूर्यवंशीय त्रिशंकु राजा।

अधःक्षिप्त–संज्ञा पुं० (वि० निन्दित।) त्रिशंकु। ययाति राजा।

अध–अव्य० दे० "अधः"।
वि० आधा। 'आधा' शब्द का छोटा रूप। जैसे—अधकचरा। अधखिला।

अधकचरा–वि० १. अपरिपक्व। २. अधूरा। असंपूर्ण। ३. अकुशल। अदक्ष। ४. आधा कटा या पीसा हुआ। दरदरा।

अधकपारी–संज्ञा स्त्री० १. आधा सीसी। आधे सिर का दर्द। २. सूर्यावर्त्त।

अधकरी–संज्ञा स्त्री० १. कर। मालगुजारी। २. महसूल या किराये की आधी रकम जो किसी नियत समय पर दी जाय। अठनिया किस्त।

अधकहा–वि० आधा या अस्पष्ट रूप में कहा हुआ।

अधकृत–वि० अधीन। नीचे किया हुआ।

अधखिला–वि० अर्द्ध विकसित। आधा खिला हुआ।

अधखुला–वि० आधा खुला हुआ।

अधघट–वि० अस्पष्ट। जिससे ठीक अर्थ न निकले। अटपट।

अधचरा–वि० आधा खाया या चरा हुआ।

अधड़ा*–वि० [स्त्री० अधड़ी] १. न ऊपर न नीचे का। बिना आधार का। २. असंबद्ध। ऊटपटाँग। बे सिर-पैर का।

अधन*–वि० दरिद्र। कंगाल।

अधनिया–वि० दो पैसे का। आध आने का।

अधन्ना–संज्ञा पुं० आध आने या दो पैसे का सिक्का। टका।

अधपई–संज्ञा स्त्री० दो छटाँक की तौल। एक सेर के आठवें हिस्से का बाट।

अधफर–संज्ञा पुं० बीच का भाग। अधर। अंतरिक्ष।

अधबर–*संज्ञा पुं० १. बीच। २. आधा रास्ता।

अधबुध–वि० जिसका ज्ञान अधूरा हो। अर्द्ध-शिक्षित।

अधबैसू–*वि० [स्त्री० अधबैसी] मध्यम अवस्था की अधेड़ (स्त्री)। अधेड़।

अधम–वि० १. निकृष्ट। नीच। बुरा। २. दुष्ट। पापी। ३. नीची श्रेणी का।

अधमई*–संज्ञा स्त्री० अधमता। नीचता।

अधमता–संज्ञा स्त्री० नीचता। खोटापन।

अधमरा–वि० मरने के लगभग। मृतप्राय। अधमुआ।

अधमर्ण–संज्ञा पुं० उधार लेनेवाला। ऋणी।

अधमाई–संज्ञा स्त्री० दुष्टता। नीचता। अधमता। दे० "अधमई"।

अधमा दूती–संज्ञा स्त्री० कटु बातें कहकर नायक या नायिका का संदेशा एक दूसरे को पहुँचानेवाली दूती।

अधम नायिका–संज्ञा स्त्री० ऐसी नायिका जो प्रिय या नायक के हितकारी होने पर भी उसके प्रति कुव्यवहार या अहित करे। अकारण क्रुद्ध रहनेवाली नायिका।

अधमुआ–वि० दे० "अधमरा"।

अधमुख–संज्ञा पुं० "अधोमुख"।

अधर–संज्ञा पुं० १. ओठ। २. आकाश। बिना आधार का स्थान। ३. पाताल।

४. चंचल। ५. जो पकड़ में न आवे। ६. नीच। बुरा। ७. मध्य। ८ शून्य।
मुहा०–अधर में झूलना, पड़ना या लटकना= १. पूरा न होना। अधूरा रहना। २. दुबिधा या पसोपेश में पड़ना।

अधरज–संज्ञा पुं० दे० १. ओठों की ललाई। २. ओठ पर की पान या मिस्सी की धड़ी।

अधरपान–संज्ञा पुं० ओठों का चुम्बन।

अधरबुद्धि–वि० नासमझ।

अधरम–संज्ञा पुं० दे० "अधर्म"।

अधरमधु–संज्ञा पुं० अधररस। अधरामृत।

अधरा–संज्ञा स्त्री० दे० "अधीर।" नीचा।

अधराधर–संज्ञा पुं० नीचे का ओंठ।

अधरामृत–संज्ञा पुं० अधररस। ओंठों की मिठास।

अधरीकृत–क्रि० स० १. अपवादित। २. पराहत। ३. तिरस्कृत। निन्दित।

अधरीभूत–वि० अधरीकृत। विप्रकृत।

अधर्म–संज्ञा पुं० कुकर्म। बुरा काम। दुराचार। धर्म के विरुद्ध कार्य।

अधर्मात्मा–वि० अधर्म करनेवाला। पापी।

अधर्मी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधर्मिणी] दुराचारी। पापी। अधर्म करनेवाला।

आ-धवा–संज्ञा स्त्री० विधवा स्त्री।

अधस्–अव्य० नीचे। निम्न। तल। पाताल।

अधसेरा–संज्ञा पुं० दो पाव की तौल। सेर का आधा।

अधस्तल–संज्ञा पुं० नीचे की तह या कोठरी। तहखाना।

अधाधुंध–क्रि० वि० दे० "अंधाधुंध"। असंख्य। अपार।

अधान–संज्ञा पुं० चूल्हे पर रक्खा हुआ पानी। दे० "अदहन"।

अधावट–वि० आधा औटा हुआ। (दूध)

अधार–संज्ञा पुं० सहारा। दे० "आधार"।

अधारी–संज्ञा स्त्री० १. आश्रय। आधार। सहारा। २. काठ के डंडे में लगा हुआ साधुओं का पीढ़ा। ३. यात्रा का सामान रखने का थैला या झोला।
वि० जी को सहारा देनेवाली। प्रिय।

अधार्मिक–वि० अन्यायी। धर्महीन। जो धार्मिक न हो। अधर्मी। दुराचारी।

अधि–शब्दों के पहले लगाया जानेवाला उपसर्ग जिसके ये अर्थ होते हैं—१. प्रधान। मुख्य। जैसे—अधिपति। २. ऊपर। ऊँचा। जैसे—अधिराज। अधिकरण। ३. अधिक। ज्यादा। जैसे—अधिमास। ४. संबंध में। जैसे—आध्यात्मिक। ५. पास। जैसे—अधितट अर्थात् तट के पास। ६. में। जैसे—अधिकाशि अर्थात् काशी में।

अधिक–वि० १. बहुत। अधिक। विशेष। २. शेष। बचा हुआ। फालतू।
संज्ञा पुं० १. अलंकार-विशेष। २. न्याय में एक निग्रह-स्थान। ३. प्रतिपक्षी को पकड़ में लाने का एक साधन।

अधिकता–संज्ञा स्त्री० बढ़ती। वृद्धि। बहुतायत। विशेषता। ज्यादती।

अधिक मास–संज्ञा पुं० मलमास। लौंद का महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावास्या तक ऐसा समय जिसमें संक्रांति नहीं पड़ती। (प्रति तीसरे वर्ष)

अधिकरण–संज्ञा पुं० १. आश्रय। आधार। सहारा। २. सातवाँ कारक। व्याकरण में कर्त्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार। ३. शीर्षक। प्रकरण। ४. अधिष्ठान। दर्शन में आधार विषय।

अधिकांग–वि० जिसके कोई अंग अधिक हो। जैसे—छः अँगुलीवाला।

अधिकांश–संज्ञा पुं० अधिक भाग।
वि० बहुत।
क्रि० वि० १. अधिकतर। विशेषकर। २. प्रायः। अक्सर।

अधिकाई*–संज्ञा स्त्री० १. अधिकता। ज्यादती। बहुतायत। २. महिमा। बड़ाई।

अधिकाना–क्रि० अ० बढ़ना। अधिक या ज्यादा होना।

अधिकार–संज्ञा पुं० १. आधिपत्य। कार्य्यभार। प्रभुत्व। प्रधानता। २. शीर्षक। प्रकरण। ३. स्वत्व। हक। अख्तियार। ४. कब्जा करना। प्राप्ति। ५. शक्ति। सामर्थ्य। ६. जानकारी। योग्यता। ७.

रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता। (नाट्यशास्त्र)
†*वि० पुं० अधिक।
अधिकारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिकारिणी] १. स्वामी। प्रभु। मालिक। २. हकदार। ३. जिसमें योग्यता हो। उपयुक्त पात्र। ४. नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त होता है।
अधिकृत–वि० प्राप्त। अधिकार में आया हुआ। उपलब्ध।
संज्ञा पुं० अध्यक्ष। अधिकारी। अधिकार-पूर्वक कहा हुआ। प्रामाणिक।
अधिक्रम–संज्ञा पुं० चढ़ाई। चढ़ाव। आरोहण।
अधिगत–वि० १. प्राप्त। २. ज्ञात।
अधिगम–संज्ञा पुं० १. ज्ञान। पहुँच। गति। २. वह ज्ञान जो दूसरे के उपदेश से प्राप्त हो। ३. बड़प्पन। ऐश्वर्य्य।
अधिज्य–वि० १. धनुष पर ज्या चढ़ाये हुए। युद्धार्थी। २. वीर।
अधित्यका–संज्ञा स्त्री० ऊँचा पहाड़ी मैदान। पहाड़ के ऊपर की चौरस जमीन।
अधिदेव, अधिदेवता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधि-देवी] कुलदेव। इष्टदेव।
अधिदैव–वि० आकस्मिक। दैविक।
अधिदैवत–संज्ञा पुं० वह मंत्र या प्रकरण जिसमें वायु, अग्नि, सूर्य्य आदि देवताओं के नाम-कीर्त्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले। वि० देवता से संबंध रखनेवाला।
अधिनायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिनायिका] मुखिया। अगुआ। सरदार।
अधिनायकतंत्र–संज्ञा पुं० वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य के सब कार्य उसके अधिनायक की ही इच्छा और आज्ञा से होते हैं। (अँग्रे०-डिक्टेटरशिप) तानाशाही।
अधिनायकवाद–संज्ञा पुं० अधिनायकतंत्र का सिद्धान्त।
अधिनायकी–संज्ञा स्त्री० अधिनायक का कार्य, पद या भाव।
अधिप–संज्ञा पुं० १. राजा। २. मालिक। स्वामी। ३. मुखिया। सरदार। ४. अधिक की रक्षा करने में समर्थ।
अधिपति–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिपत्नी] १. स्वामी। २. नायक। मुखिया। अफसर।
अधिमांस–संज्ञा पुं० आँख का फोड़ा।
अधिमास–संज्ञा पुं० दे० "अधिक मास"। मलमास। लौंद का महीना।
अधिया–संज्ञा स्त्री० १. आधा भाग। २. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी। ३. रीति-विशेष जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को दिया जाता है।
संज्ञा पुं० आधे गाँव का पट्टीदार।
अधियाना–क्रि० स० आधा करना। दो बरा-बर भागों में बाँटना।
अधियार–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधियारिन] १. किसी जायदाद में आधा भाग। २. आधे का स्वामी। ३. वह असामी या जमींदार जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का साझीदार हो।
अधियारी–संज्ञा स्त्री० किसी सम्पत्ति में आधी हिस्सेदारी।
अधिरथ–संज्ञा पुं० १. सारथी। २. बड़ा रथ।
अधिराज–संज्ञा पुं० राज्य का स्वामी। राजा। महाराज।
अधिराज्य–संज्ञा पुं० साम्राज्य।
अधिरोहण–संज्ञा पुं० ऊपर उठना। चढ़ना। सवार होना।
अधिवास–संज्ञा पुं० [वि० अधिवासित] १. रहने का स्थान। २. सुगन्धि। ३. विवाह से पहले हलदी-तेल चढ़ाने की रीति। ४. उबटन। ५. यज्ञ या मंदिर में स्थापना के पहले मूर्त्ति को पवित्र जल में रखना (धर्मशास्त्र)।
अधिवासी–संज्ञा पुं० रहनेवाला। निवासी।
अधिवेदन–संज्ञा पुं० विवाह। संस्कार।
अधिवेशन–संज्ञा पुं० जलसा। बैठक। उत्सव।
अधिष्ठाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिष्ठात्री] १. अध्यक्ष। प्रधान। मुखिया। २. वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो। ३. ईश्वर।
अधिष्ठान–संज्ञा पुं० [वि० अधिष्ठित] १. रहने की जगह। २. शहर। नगर। ३. स्थिति। पड़ाव। ४. आधार। आश्रय।

५. वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे, रस्सी में सर्प और सीप में चाँदी का। ६. (सांख्य) भोक्ता और भोग का संयोग। ७. राजसत्ता। अधिकार। शासन।

अधिष्ठान शरीर–संज्ञा पुं० सूक्ष्म शरीर, जिसमें मरण के उपरांत पितृलोक में आत्मा का निवास रहता है।

अधिष्ठित–वि० १. स्थापित। २. नियुक्त। ३. निर्वाचित।

अधीत–संज्ञा पुं० पढ़ा हुआ। पठित। शिक्षित। वि० जो पढ़ा जा चुका हो।

अधीन–वि० [संज्ञा अधीनता] १. आश्रित। मातहत। २. लाचार। विवश। ३. अवलंबित। आश्रित।
संज्ञा पुं० सेवक। दास।

अधीनता–संज्ञा स्त्री० १. पराधीनता। परतंत्रता। २. विवशता। ३. दीनता।
क्रि० अ० अधीन या वश में होना।

अधीर–वि० [संज्ञा अधीरता] १. उद्विग्न। घबराया हुआ। २. व्याकुल। बेचैन। विह्वल। ३. असंतोषी। ४. चंचल। उतावला। आतुर।

अधीरज–संज्ञा पुं० घबराहट। अधीरता। अधैर्य। चंचलता।

अधीरा–संज्ञा स्त्री० ऐसी नायिका जो नायक में पर-नारी-विलास-सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर कोप प्रकट करे।

अधीश, अधीश्वर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधीश्वरी] १. स्वामी। मालिक। २. राजा।

अधुना–क्रि० वि० [वि० आधुनिक] इस समय। संप्रति। आजकल।

अधुनातन–वि० वर्त्तमान काल का। 'सनातन' का उलटा। बिलकुल नवीन।

अधूत–संज्ञा पुं० १. निडर। निर्भय। २. अकंपित। ३. उचक्का। ४. ढीठ।

अधूरा–वि० [स्त्री० अधूरी] जो पूरा न हो। अपूर्ण।

अधेड़–वि० जवानी और बुढ़ापे के बीच का। ढलती जवानी का।

अधेला–संज्ञा पुं० पैसे का आधा। आधा पैसा।

अधेली–संज्ञा स्त्री० अठन्नी। रुपये का आधा सिक्का। आठ आना।

अधैर्य–संज्ञा पुं० उतावला। अस्थिर। व्याकुल।

अधैर्यवान्–वि० आतुर। व्यग्र। उतावला।

अधो–अव्य० दे० "अधः"। नीचे। तले।

अधोगत–वि० अवनत। नीचगामी।

अधोगति–संज्ञा स्त्री० १. पतन। अवनति। २. दुर्गति। दुर्दशा।

अधोगमन–संज्ञा पुं० १. गिरना। नीचे जाना। २. पतन। अवनति।

अधोगामी–वि० [स्त्री० अधोगामिनी] १. जो गिर गया हो। २. जिसका पतन हो गया हो।

अधोतर–संज्ञा पुं० १. दोहरी बुनावट का देशी मोटा कपड़ा-विशेष। २. वर्णसंकर।

अधोधम–संज्ञा पुं० अति नीच। नीच से नीच।

अधोभुवन–संज्ञा पुं० पाताल। बलि के रहने का स्थान।

अधोमस्तक–संज्ञा पुं० १. सूर्यवंश के त्रिशंकु राजा का नाम। २. नीचा सिर।

अधोमार्ग–संज्ञा पुं० १. नीचे का मार्ग। २. गुदा। ३. सुरंग का रास्ता।

अधोमुख–वि० १. उलटा। औंधा। २. नीचे मुँह किए हुए।
क्रि० वि० मुँह के बल।

अधोलंब–संज्ञा पुं० लंब। वह खड़ी रेखा जो किसी दूसरी सीधी आड़ी रेखा से समकोण पर मिलती हो।

अधोवस्त्र–संज्ञा पुं० नीचे के अंगों में पहनने का कपड़ा। धोती।

अधोवायु–संज्ञा पुं० पाद। गोज। अपानवायु।

अधोक्षज–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. नारायण। ३. इन्द्रियजन्य ज्ञान को वश में करने वाला। ४. योगिराज। ५. वासुदेव।

अध्यक्ष–संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. मुखिया। नायक। ३. अधिष्ठाता।

अध्यक्षर–संज्ञा पुं० प्रणव। ओं। ओंकार।

अध्ययन–संज्ञा पुं० पढ़ाई। पढ़ने का काम।

अध्यवसाय–संज्ञा पुं० १. लगातार। किसी काम में परिश्रम के साथ लगे रहना। २. निश्चय। ३. उत्साह।

अध्यवसायी–वि० [स्त्री० अध्यवसायिनी] १. उद्योगी। उद्यमी। उद्योग में निरंतर लगा रहनेवाला। २. कार्यशील। ३. उत्साही।

अध्यस्त–वि० जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो; जैसे रज्जु में सर्प का। (वेदांत)

अध्यशन–संज्ञा पुं० भोजन करने के बाद ही फिर भोजन करना। अधिक परिमाण में खाना।

अध्यात्म–संज्ञा पुं० आत्मज्ञान। ज्ञानतत्त्व। ब्रह्मविचार।

अध्यात्मवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान ही मुख्य माना जाता है।

अध्यापक–संज्ञा पुं० [स्त्री० अध्यापिका] पढ़ानेवाला। गुरु। शिक्षक।

अध्यापकी–संज्ञा स्त्री० अध्यापक या शिक्षक का कार्य। पढ़ाने का काम।

अध्यापन–संज्ञा पुं० पढ़ाने का काम। शिक्षण-कार्य।

अध्याय–संज्ञा पुं० पाठ। परिच्छेद। सर्ग।

अध्यारोप–संज्ञा पुं० १. दोष। अध्यास। एक व्यापार का दूसरे पर आरोप करना। २. झूठी कल्पना। एक वस्तु का दूसरी वस्तु में भ्रम।

अध्यारोहण–संज्ञा पुं० चढ़ना। आरोहण।

अध्यारोही–वि० चढ़नेवाला। आरोहण-कर्त्ता।

अध्यास–संज्ञा पुं० झूठा ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अध्यारोप।

अध्यासन–संज्ञा पुं० १. बैठना। उपवेशन। २. आरोपण।

अध्याहरण–संज्ञा पुं० कल्पना करना। वितर्क करना।

अध्याहार–संज्ञा पुं० १. विचार। बहस। तर्क-वितर्क। २. अस्पष्ट वाक्य को अन्य शब्दों में स्पष्ट करने का कार्य। ३. वाक्य को पूरा करने के लिए उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना।

अध्युषित–वि० बसा हुआ। रहता हुआ।

अध्यूढ़ा–संज्ञा स्त्री० १. ज्येष्ठा पत्नी। २. वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले।

अध्यूढ़ा–संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री। परिणीता।

अध्येता–संज्ञा पुं० छात्र। शिष्य। पाठक।

अध्येय–वि० जो पढ़ने योग्य हो।

अध्येषणा–संज्ञा स्त्री० १. याचना। माँगना। २. आदरपूर्वक प्रार्थना। ३. प्रश्न।

अध्रुव–वि० १. अस्थिर। चंचल। डावाँ-डोल। जो दृढ़ न हो। २. अनिश्चित। जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो।

अध्व–संज्ञा पुं० बाट। मार्ग। पन्थ।

अध्वग–संज्ञा पुं० १. पथिक। बटोही। २. उष्ट्र। ३. सूर्य। ४. खेचर। ५. वृक्ष-विशेष। ६. पन्थ।

अध्वगा–संज्ञा स्त्री० भागीरथी। गंगा। जाह्नवी।

अध्वगामी–संज्ञा पुं० १. पथिक। २. पन्थ।

अध्वजा–संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष।

अध्वनीन–संज्ञा पुं० १. पथिक। २. भ्रमण-कर्त्ता। पर्यटन।

अध्वन्य–संज्ञा पुं० पथिक।

अध्वर–संज्ञा पुं० १. यज्ञ। याग। २. वसुभेद। ३. सावधान।

अध्वर्यु–संज्ञा पुं० वह ब्राह्मण जो यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़े। २. यज्ञादि में हवन आदि करनेवाला प्रधान व्यक्ति।

अन्–अव्य० अभाव या निषेधसूचक अव्यय। जैसे—अनादि। अनधिकार। ना। नहीं। बिना। रहित।

अनंग–वि० [क्रि० अनगना] देह-रहित। जिसके शरीर न हो।
संज्ञा पुं० कामदेव।

अनंगक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० १. संभोग। रति। २. छंदःशास्त्र में मुक्तक नामक विषम वृत्त का भेद-विशेष।

अनंगना*–क्रि० अ० शरीर की सुध छोड़ देना। सुधबुध भुला देना।

अनंगशेखर–संज्ञा पुं० दंडक नामक वर्ण-वृत्त का भेद-विशेष।

अनंगारि–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

अनंगी–वि० [स्त्री० अनंगिनी] १. जिसके अंग न हो। २. बिना शरीर का। ३. भाग

या हिस्से से रहित। ४. स्वतंत्र, जो किसी का अंग न हो।
संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. ईश्वर।
अनंत–वि० १. असीम। सीमारहित। बहुत बड़ा। २. बहुत अधिक। ३. अविनाशी।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. लक्ष्मण। ३. शेषनाग। ४. बलराम। ५. आकाश। ६. बाँह का गहना। ७. अनंता। सूत का गंडा जिसे अनंतचतुर्दशी के व्रत के दिन बाँह में पहनते हैं। ८. अभ्रक। ९. काश्मीर का एक राजा। १०. सिन्दुवार-वृक्ष। ११. अनन्तजित् नामक जैनाचार्य वासुकि।
अनन्तगौर–संज्ञा पुं० संगीतशास्त्र। स्वरभेद।
अनंतचतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० भाद्र शुक्ल चतुर्दशी। अनन्तदेव का व्रत-विशेष।
अनंतमूल–संज्ञा पुं० एक बेल या पौधा जो रक्त शुद्ध करने की दवा है।
अनंतर–क्रि० वि० १. पश्चात्। पीछे। उपरांत। २. सदैव। निरंतर। लगातार।
अनंतवीर्य–वि० १. अपरिसीम पराक्रम। २. अपार पौरुषवाला।
अनंता–वि० जिसका अंत न हो।
संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. कलियारी। ४. दूब। ५. अनंतमूल। ६. अनंतसूत्र। ७. पीपर।
अनंद–संज्ञा पुं० १. चौदह वर्णों का वृत्त-विशेष। *२. दे० "आनंद"।
अनंदी–संज्ञा पुं० १. धान-विशेष। २. दे० "आनंदी"।
अनंभ–वि० बिना पानी का।
*वि० विघ्न-रहित। बिना बाधा के।
अनंश–संज्ञा पुं० अंश-रहित। बटवारे में हिस्सा पाने का अनधिकारी।
अन*–क्रि० वि० बिना। रहित।
वि० दूसरा। अन्य।
अनः–संज्ञा पुं० १. शकट। २. अन्न। ३. जननी। ४. जन्म। ५. अत्यल्प काल।
अनअहिवात–संज्ञा पुं० विधवापन। वैधव्य। रँड़ापा।
अनइच्छा–संज्ञा स्त्री० बिना चाह। बिना प्रयोजन।
अनइच्छित–संज्ञा पुं० बिना चाह का। जो अभीष्ट न हो।
अनऋतु–संज्ञा स्त्री० १. असमय। बेमौसिम। २. अकाल। ३. ऋतु के विरुद्ध कार्य।
अनक*–संज्ञा पुं० दे० "आनक"।
अनकरीब–क्रि० वि० (अ०) करीब करीब। प्रायः। लगभग।
अनकना*–क्रि० स० १. सुनना। २. छिपकर या चुपचाप सुनना।
अनकहा–वि० [स्त्री० अनकही] जो कहा हुआ न हो। अकथित।
मुहा०–अनकही देना=चुपचाप होना।
अनख–संज्ञा पुं० १. कोप। क्रोध। नाराजी। २. द्वेष। ईर्ष्या। डाह। ३. खिन्नता। दुःख। ग्लानि। ४. झंझट। अनरीति। ५. डिठौना। काजल की बिंदी जिसे डीठ (नजर) से बचाने के लिए माथे में लगाते हैं।
वि० जिसके नाखून न हों।
अनखना*–क्रि० अ० क्रोध करना। रुष्ट होना। खीजना। रिसाना। चिढ़ना।
अनखगार–संज्ञा पुं० क्रोधयुक्त गाली। क्रोध की गाली।
अनखाना*–क्रि० अ० क्रोध करना। रिसाना। खीजना। रुष्ट होना।
क्रि० स० अप्रसन्न या नाराज करना।
अनखाहट–संज्ञा स्त्री० अनख दिखाने की क्रिया या भाव। गुस्सा। क्रोध। नाराजगी।
अनखी*†–वि० क्रोध करनेवाला। जल्दी नाराज हो जानेवाला।
अनखौंहा*†–वि० [स्त्री० अनखौंही] १. क्रोधी। रुष्ट। कुपित। २. चिड़चिड़ा। शीघ्र क्रोध करनेवाला। ३. क्रोध दिलानेवाला। ४. बुरा। अनुचित।
अनगढ़–वि० १. स्वयंभू। जिसे किसी ने बनाया न हो। २. बिना गढ़ा हुआ। ३. भद्दा। बेडंगा। बेतुका। अंडबंड। ४. उजड्ड। अक्खड़। गँवार।
अनगन*–वि० [स्त्री० अनगनी] असंख्य। अगणित।
अनगना–वि० जो गिना हुआ न हो। बहुत। अपार।

संज्ञा पुं० गर्भ का आठवाँ महीना।
क्रि० अ० देर करना।

अनगवना–क्रि० अ० रुककर विलंब करना। जान-बूझकर देर करना।

अनगिनत–वि० गणना-रहित। असंख्य। अपार। बहुत।

अनगिना–वि० १. जो गिना हुआ न हो। २. असंख्य। बहुत।

अनगैरी*–वि० दूसरे का। पराया।

अनघ–वि० पाप-रहित। निर्दोष। शुद्ध। पवित्र।
संज्ञा पुं० जो पाप न हो। पुण्य।

अनघैरी*–वि० जो बुलाया न गया हो। बिना निमंत्रण के। अपरिचित।

अनघोर*–संज्ञा पुं० अंधेर। अन्याय। अत्याचार। ज्यादती।

अनचाहत*–वि० जो न चाहता हो। प्रेम न करनेवाला।

अनचाहा–वि० जिसकी इच्छा न की जाय।

अनचीन्हा*–वि० जो परिचित न हो। अज्ञात।

अनजनमा–वि० जिसका जन्म न हुआ हो। ईश्वर का एक विशेषण।
संज्ञा पुं० ईश्वर। दे० "अजन्मा"।

अनजान–वि० १. मूर्ख। अज्ञानी। नादान। नासमझ। २. अज्ञात। जो परिचित न हो।

अनट*–संज्ञा पुं० १. अत्याचार। उपद्रव। २. अनीति। अन्याय।

अनडीठ*–वि० जो देखा हुआ न हो।

अनत–वि० सीधा। जो झुका हुआ न हो।
*क्रि०वि० अन्यत्र। और कहीं। दूसरी जगह।

अनति–वि० थोड़ा। कम।
संज्ञा स्त्री० अहंकार। अभिमान। नम्रता का अभाव।

अनदेखा–वि० [स्त्री० अनदेखी] जो देखा हुआ न हो।

अनद्यतन भविष्य–संज्ञा पुं० व्याकरण में भविष्यकाल का एक भेद।

अनद्यतन भूत–संज्ञा पुं० व्याकरण में भूतकाल का एक भेद।

अनधिकार–संज्ञा पुं० १. अधिकार का न होना। २. विवशता। लाचारी। ३. अयोग्यता।
वि० १. अधिकाररहित। २. योग्यता-रहित।
यौ०–अनधिकारचर्चा=जिस विषय में गति न हो, उसमें टाँग अड़ाना।

अनधिकारी–वि० १. अधिकार-रहित हो। २. योग्यता-रहित। अपात्र।

अनधिकृत–वि० जिस पर अधिकार न किया गया हो।

अनधिगत–वि० बिना जाना या समझा हुआ। अज्ञात।

अनध्यवसाय–संज्ञा पुं० १. ढिलाई। अध्यवसाय की कमी। अतत्परता। २. किसी एक वस्तु के संबंध में साधारण अनिश्चय का वर्णन किया जाना।

अनध्याय–संज्ञा पुं० १. छुट्टी या अवकाश का दिन। २. वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का निषेध हो। (अमावास्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा आदि।)

अनन्नास–संज्ञा पुं० [पुर्त० अनानास] राम-बाँस की तरह का एक छोटा पौधा जिसके डंठल के अंकुरों की गाँठ खटमीठी और खाने योग्य होती है।

अनन्य–वि० [स्त्री० अनन्या] एकनिष्ठ। एक ही में लीन। अन्य से संबंध न रखने वाला। जैसे—अनन्य भक्त।
संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

अनन्यता–संज्ञा स्त्री० १. एकनिष्ठा। २. अन्य के संबंध का अभाव।

अनन्वय–संज्ञा पुं० अलंकार-विशेष। जिसमें किसी वस्तु को उसके ही समान बनाया जाय। जैसे, आप तो आप ही हैं।

अनन्वित–वि० १. पृथक्। असंबद्ध। २. अंड बंड। इधर-उधर का।

अनपच–संज्ञा पुं० अपच। अजीर्ण। अफरा।

अनपढ़–वि० जो पढ़ा न हो। मूर्ख। अशिक्षित।

अनपढ़ा–वि० मूर्ख। अज्ञ। विद्याहीन। अशिक्षित।

अनपत्य–वि० निःसन्तान। निर्वंश। पुत्रहीन।

अनपत्रप–वि० निर्लज्ज। फूहड़। लज्जाहीन।

अनपराध–वि० निर्दोष। निरपराध। दोष-शून्य। शुद्ध। सच्चरित्र।

अनपाय–वि० १. अनश्वर। अक्षय। अनाश्य। चिरस्थायी। २. अलंकृत।

अनपायी–संज्ञा पुं० १. स्थिर। निश्चय। अविनश्वर। २. पाप-रहित।

अनपायिनी–संज्ञा स्त्री० नाशरहित। अचल। दृढ़। नित्य।

अनपेक्ष–वि० स्वाधीन। निरपेक्ष। लापरवाह।

अनपेक्ष्य–वि० अननुरुद्ध। अमान्य-कृत। वर्जित। अनिच्छित।

अनपेक्षा–संज्ञा स्त्री० अपेक्षा का न होना। लापरवाही।

अनपेक्षित–वि० जिसकी चाह या परवा न हो।

अनपेक्ष्य–वि० जिसे किसी की अपेक्षा या परवा न हो।

अनफाँस*–संज्ञा स्त्री० छुटकारा। मुक्ति। मोक्ष।

अनबन–संज्ञा पुं० झगड़ा। बिगाड़। विरोध। *वि० भिन्न भिन्न। विविध। भाँति भाँति के।

अनबिधा–वि० जिसमें छेद न किया गया हो। बिना बेधा हुआ। जैसे, अनबिधा मोती।

अनबूझ–वि० नासमझ। अनजान। अज्ञान। बुद्धिहीन। निर्बोध। जो बूझा या समझा न जा सके।

अनबोल–वि० १. मौन। चुप्पा। न बोलनेवाला। २. गूँगा। ३. जो अपने सुख-दुःख को न बता सके। (पशुओं के लिए)

अनबोलना–वि० गूँगा। न बोलनेवाला। (पशु)।

अनबोला–संज्ञा पुं० बोलचाल या बातचीत न होना।
वि० दे० "अनवोलता"।

अनब्याहा–वि० [स्त्री० अनब्याही] क्वाँरा। जिसका विवाह न हुआ हो।

अनभल*–संज्ञा पुं० अमंगल। बुराई। अहित। हानि।

अनभिगमन–संज्ञा पुं० अस्थान-गमन। भयंकर स्थान में गमन।

अनभिज्ञ–वि० [स्त्री० अनभिज्ञा, संज्ञा, अनभिज्ञता] १. मूर्ख। अनजान। अज्ञ। २. बिना जान-पहचान का अपरिचित।

अनभिज्ञता–संज्ञा स्त्री० मूर्खता। अनाड़ीपन। अनजानपन।

अनभिप्रेत–वि० अनिच्छित। अभिप्राय-विरुद्ध। अनभिमत।

अनभिमत–वि० असम्मति। मत-विरुद्ध। अनिष्ट। अभिमत या राय का न होना।

अनभिव्यक्त–वि० अस्पष्ट। अव्यक्त। अप्रकाश।

अनभीष्ट–वि० जो अभीष्ट न हो। अवांछित। आशय के विरुद्ध। जिसकी इच्छा न की गई हो।

अनभो*–संज्ञा पुं० अचंभा। आश्चर्य। अनहोनी बात। अलौकिक। अपूर्व। वि० अनोखा। अद्भुत।

अनभोरी*–संज्ञा स्त्री० भुलावा। चकमा।

अनभ्यस्त–वि० १. जिसका अभ्यास न किया गया हो। अपठित। २. जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व। नौसिखुआ।

अनभ्यास–संज्ञा पुं० अभ्यास का अभाव। अव्यवहार। अशिक्षा। अनध्ययन।

अनमन–अनमना वि० [सं० अन्यमनस्क] १. जिसका जी न लगता हो। खिन्न। सुस्त। उदास। २. अस्वस्थ। रोगी।

अनमापा*–वि० जो नापा जाने योग्य न हो।

अनमारग*–संज्ञा पुं० बुरा रास्ता। कुमार्ग।

अनम्र–वि० अविनत। अविनयी। उद्दण्ड।

अनमिल*–वि० अटपट। बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध। टूटे-फूटे।

अनमिलता–वि० जो मिलता न हो। अलभ्य। अदृश्य।

अनमीलना*–क्रि० स० नेत्र खोलना।

अनमेल–वि० १. असंबद्ध। बेजोड़। २. जिसमें मेल न हो। विशुद्ध।

अनमोल–वि० १. अमूल्य। २. बहुमूल्य। मूल्यवान्। ३. उत्तम। सुंदर।

अनय–संज्ञा पुं० १. विपद्। बुराई। अमंगल। २. पाप। अनीति। अन्याय। ३. व्यसन। ४. भाग्य।

अनरना*–क्रि० स० अपमान करना। बेइज्जती करना।
अनरस–संज्ञा पुं० १. रस का न होना। शुष्कता। २. रुखाई। कोप। मान। ३. अनबन। मनमोटाव। मनोमालिन्य। ४. खेद। दुःख। रंज। ५. वह काव्य जिसमें रस न हो।
अनरसना–क्रि० अ० उदास होना। नाराज होना। दुखी होना।
अनरसा*–वि० रोगी। बीमार। अनमना।
अनराता*–वि० १. सादा। जो रँगा हुआ न हो। २. जो प्रेम में न पड़ा हो।
अनरीति–संज्ञा स्त्री० १. बुरी रीति। कुचाल। २. अनुचित व्यवहार।
अनरुचि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अरुचि"।
अनरूप*–वि० १. बदसूरत। कुरूप। २. जो समान न हो। असदृश।
अनर्गल–वि० १. अंडबंड। व्यर्थ। २. बेधड़क। ३. लगातार।
अनर्घ–वि० १. बहुमूल्य। कीमती। २. सस्ता। कम कीमत का।
अनर्घ्य–वि० १. जो पूज्य न हो। २. बहुमूल्य। अमूल्य। अत्युत्कृष्ट।
अनर्जित–वि० अनुपार्जित। विना कमाया हुआ।
अनर्थ–संज्ञा पुं० १. अन्य अर्थ। उलटा मतलब। २. कार्य्य की हानि। नुकसान। ३. विपद। बुरा। ४. वह धन जो अधर्म से प्राप्त किया जाय। ५. अनुचित।
अनर्थक–वि० १. व्यर्थ। बेकार। २. जिसका कोई अर्थ न हो।
अनर्थकारी–वि० स्त्री० [अनर्थकारिणी] १. विरुद्ध अर्थ करनेवाला। २. अनिष्टकारी। अहितकर। ३. उत्पाती। उपद्रवी।
अनन्नास–संज्ञा पुं० १. अनायास। २. आनारस। उष्णदेशीय फल-विशेष।
अनर्ह–वि० अनुपयुक्त। अयोग्य। कुपात्र।
अनल–संज्ञा पुं० १. आग। २. तीन की संख्या। ३. पूर्णता-रहित। ४. पाचन-शक्ति। ५. अष्ट वसुओं में से एक का नाम।
अनलपक्ष–संज्ञा पुं० चिड़िया-विशेष। कहते हैं कि यह सदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा देती है।
अनलप्रभा–संज्ञा स्त्री० १. ज्योतिष्मती नामक लता-विशेष। २. अग्नि की शिखा। दीप्ति।
अनलप्रिया–संज्ञा स्त्री० अग्नि-भार्या। स्वाहा।
अनल्प–वि० जो अल्प या थोड़ा न हो। बहुत। अधिक। ज्यादा।
अनलमुख–वि० जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ग्रहण करे।
संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण। २. देवता।
अनलस–वि० जिसमें आलस्य न हो। फुर्तीला। चैतन्य। परिश्रमी। उद्योगी।
अनलेख–वि० अगोचर। अदृश्य।
अनवकाश–वि० अवकाश-रहित। निरवसर। अवकाश या फुरसत का न होना।
अनवच्छिन्न–वि० १. संयुक्त। जुड़ा हुआ। २. अटूट। अखंडित।
अनवट–संज्ञा पुं० पैर के अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का छल्ला। बिछिया।
संज्ञा पुं० ढोका। कोल्हू के बैल की आँखों का ढक्कन।
अनवद्य–वि० १. दोप-रहित। २. अनिन्दित। ३. सुन्दर। स्वच्छ। ४. संभ्रान्त।
अनवद्यांग–संज्ञा पुं० सुन्दर अंग। सुडौल शरीर।
अनवधान–संज्ञा पुं० असावधानी। बेपरवाही।
अनवधानता–संज्ञा पुं० मनोयोग-शून्यता। प्रमाद। असावधानता।
अनवधि–वि० असीम। जिसकी सीमा न हो। क्रि० वि० सदैव। निरंतर।
अनवरत–क्रि० वि० सदैव। निरंतर। लगातार। हमेशा।
अनवसर–संज्ञा पुं० १. अवकाश का न होना। २. बुरा समय। बेमौका।
अनवस्था–संज्ञा स्त्री० १. अव्यवस्था। दुर्दशा। २. अधीरता। ३. न्याय में एक प्रकार का दोष।
अनवस्थित–वि० १. चंचल। अधीर। अशांत। २. बिना आधार का। निरवलंब।
अनवस्थिति–संज्ञा स्त्री० १. अधीरता। २.

आश्रयहीनता। ३. समाधि प्राप्त हो जाने पर भी चित्त का स्थिर न होना (योग)। ४. वासरहित।

अनवासना–क्रि० वि० नये बर्तन को पहले-पहल काम में लाना।

अनवाँसा–संज्ञा पुं० औंसा। कटी हुई फसल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला।

अनवाँसी–संज्ञा स्त्री० एक बिस्वे का $\frac{1}{400}$ हिस्सा। बिस्वांसी का बीसवाँ भाग।

अनवाद*–संज्ञा पुं० कटु वचन।

अनशन–संज्ञा पुं० उपवास। अन्न का त्याग।

अनश्वर–वि० जो नष्ट न हो। अविनाशी। १. सनातन। २. स्थिर। अटल।

अन-सखरी–संज्ञा स्त्री० निखरी। घी में पका हुआ भोजन। पक्की रसोई।

अनसमझा*–वि० १. नासमझ। २. बिना समझा हुआ।

अनसहत*–वि० असह्य। जो सहन न हो सके।

अनसुन–वि० आनाकानी करना। न सुना हुआ।

अनसुना–वि० अनसुनी। अश्रुत। जो सुना हुआ न हो।
मुहा०–अनसुनी करना=आनाकानी करना। टालमटोल करना। बहँटियाना।

अनसूया–संज्ञा स्त्री० १. नुक्ताचीनी न करना। पराये गुण में दोष न देखना। २. ईर्ष्या का न होना। ३. अत्रि मुनि की स्त्री।

अनहद-नाद–संज्ञा पुं० दे० "अनाहत"। योग का साधन। वह शब्द जो कान बंद करने पर भी भीतर सुनाई पड़ता है।

अनहित*–संज्ञा पुं० १. अपकार। बुराई। अहित २. शत्रु। बैरी। द्वेषी।
वि० अहित या बुरा चाहनेवाला। अशुभ-चिंतक। भला न चाहनेवाला।

अनहोता–वि० १. निर्धन। दरिद्र। गरीब। २. अलौकिक। न होनेवाला। अनोखा। अभूतपूर्व।

अनहोना–वि० असंभव। अनोखा। अलौकिक।

अनहोनी–वि० न होनेवाली। अनोखी।
संज्ञा स्त्री० अलौकिक बात।

अन्हौरी–संज्ञा स्त्री० गर्मी ऋतु की फुंसियाँ। अमहौर। अम्हौरी। मसरियाँ।

अनाकानी–संज्ञा स्त्री० (अन्य रूप-आनाकानी) सुनी-अनसुनी। टाल-मटोल। जान-बूझ-कर बात को टाल देना या बहलाना।

अनाकार–वि० बिना आकार का। निराकार।

अनाखर*–वि० १. अनगढ़। बेढंगा। बेडौल। २. अपढ़।

अनागत–वि० १. जो न आया हो। अनुपस्थित। २. होनहार। भावी। भवितव्य। ३. अज्ञात। अपरिचित। ४. जिसका आदि न हो। अजन्मा। ५. आश्चर्यजनक। अपूर्व। अनोखा।
क्रि० वि० अचानक। अप्रत्याशित। सहसा। एकबारगी।

अनागम–संज्ञा पुं० न आना। आगमन का अभाव।

अनाघ्रात–वि० १. बिना सूंघा हुआ। २. अस्पृष्ट। अभिनव। ३. कोरा। नया।

अनाचार–संज्ञा पुं० [वि० अनाचारी] १. दुराचार। बुरा आचरण। २. कुत्सित कार्य। नियम या सदाचार के विरुद्ध काम। कुचाल। ३. अद्भुत।

अनाचारिता–संज्ञा स्त्री० १. दुराचारिता। बुरा आचरण। २. बुरी चाल। कुरीति।

अनाज–संज्ञा पुं० अन्न। दाना। धान्य। शस्य।

अनाड़ी–वि० १. मूर्ख। नासमझ। अनजान। २. अदक्ष। जो निपुण न हो। अकुशल।

अनाड़ीपन–संज्ञा पुं० अनभिज्ञता। मूर्खता।

अनाढ्य–वि० १. दरिद्र। २. दुखी।

अनातप–संज्ञा पुं० १. छाया। छाहँ। २. धर्माभाव।
वि० ठंडा। शीतल। ३. तापरहित।

अनातपत्र–वि० छत्ररहित।

अनात्म–वि० १. प्रज्ञाहीन २. अपने से भिन्न।
संज्ञा पुं० १. आत्मा का विरोधी। २. जड़। अचेतन।

अनात्मवान्–वि० १. जो अपने मन को वश में नहीं कर सकता। २. आत्मा को न माननेवाला।

अनात्म्य–वि० आत्मभिन्न। पर। अपने परिवार से प्रेम न करनेवाला।

अनाथ–वि० १. जिसके नाथ न हो। बिना स्वामी का। २. जिसका कोई पालन-पोषण करनेवाला न हो। ३. आश्रय-रहित। अशरण। ४. दुखी। दीन। ५. पितृहीन। ६. निर्धन।

अनाथिनी–संज्ञा स्त्री० पतिहीना। विधवा। निःसहाय स्त्री।

अनाथालय–संज्ञा पुं० १. वह जगह जहाँ दीन-दुखियों और निराश्रितों का पालन हो। २. अनाथ बच्चों की रक्षा का या रहने का स्थान। अनाथाश्रम।

अनाथाश्रम–संज्ञा पुं० दे० "अनाथालय"।

अनादर–संज्ञा पुं० [वि० अनादरणीय, अनादृत] १. अपमान। बेइज्जती। २. आदर का न होना। निरादर। अवज्ञा। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें प्राप्त वस्तु के समान दूसरी अप्राप्त वस्तु की कामना करके प्राप्त वस्तु का अनादर प्रकट किया जाता है।

अनादि–वि० नित्य। ब्रह्म। जिसका आदि न हो।

अनादिष्ट–वि० अननुज्ञात। बिना आज्ञा का। जिसके करने की आज्ञा न हो।

अनादृत–वि० जिसका अनादर या अपमान हुआ हो।

अनाद्यन्त–वि० जिसका आदि और अन्त न हो। नित्य। अनन्त। सनातन। सर्वकालीन। शाश्वत। **ब्रह्म**।

अनाप-शनाप–संज्ञा पुं० १. असम्बद्ध प्रलाप। व्यर्थ बकवाद। २. अंडबंड। ऊटपटांग। बेसिर-पैर की बात।

अनाप्त–वि० १. जो प्राप्त न हुआ हो। अलब्ध। २. असत्य। ३. जो विश्वास के योग्य न हो। ४. अनिपुण। अकुशल। अनाड़ी। ५. अनात्मीय। ६. अप्राप्त। ७. परदेसी। अपरिचित।

अनाम–वि० [स्त्री० अनामा] १. जो प्रसिद्ध न हो। २. जिसका नाम न हो। बिना नाम का।
संज्ञा पुं० एक देश का नाम।

अनामक–संज्ञा पुं० १. रोग-विशेष। अर्शरोग। बवासीर। २. नाम-हीन। ३. कुप्रसिद्ध। ४. मलमास।

अनामय–वि० १. नीरोग। रोग-रहित। स्वस्थ २. दोषरहित।
संज्ञा पुं० १. नीरोगता। स्वास्थ्य। २. कुशल क्षेम। ३. महादेव।

अनामा–संज्ञा स्त्री० दे० "अनामिका"।

अनामिका–संज्ञा स्त्री० अनामा। कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली।

अ-नायक–वि० १. स्वामी-रहित। २. बिना नेता का। ३. रक्षाहीन। ४. अस्त-व्यस्त।

अनायत–वि० अविस्तृत। अप्रशस्त।

अनायत्त–वि० १. अनधीन। अवशीभूत। २. उच्छृंखल। ३. स्वतंत्र।

अनायास–क्रि० वि० अकस्मात्। बिना प्रयत्न। अचानक। सहज। बिना उद्योग।

अनार–संज्ञा पुं० [फा०] दाड़िम। एक पेड़ और फल विशेष जिसके भीतर मीठे या खट्टे दाने निकलते हैं।
संज्ञा पुं० अनीति। अन्याय।

अनारदाना–संज्ञा पुं० [फा०] खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। खटाई विशेष।

अनारम्भ–संज्ञा पुं० आरम्भाभाव। आरंभ-हीनता।

अनारी*–वि० लाल। एक विशेष प्रकार का लाल रंग। अनार के रंग का।
वि० दे० "अनाड़ी"। अकुशल।

अनारोग्य–संज्ञा पुं० अस्वस्थता। रुग्णावस्था। अस्वास्थ्य।

अनार्य–संज्ञा पुं० १. दस्यु। म्लेच्छ। २. जो आर्य न हो। जिसका गोत्र-प्रवर्त्तक कोई ऋषि न हो। अश्रेष्ठ। ३. अप्रधान। ४. अनाड़ी। ५. नीच।

अनार्यकर्मा–वि० आर्यों से विरुद्ध कर्म करनेवाला। निन्दिताचार। गर्हित।

अनार्यजुष्ट–वि० अनार्यों के कर्म। अनार्य-सेवित क्रिया।

अनार्यता–संज्ञा स्त्री० अनार्य होने का भाव या धर्म। नीचता। क्षुद्रता।

अनार्यदेश–संज्ञा पुं० अनार्यों का वासस्थान। जहाँ चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था न हो।

अनावश्यक–वि० [संज्ञा अनावश्यकता] व्यर्थ। जो आवश्यक न हो। बेकार। अप्रयोजनीय।

अनावश्यकता–संज्ञा स्त्री० अप्रयोजनीयता।

अनाविल–वि० निर्मल। परिष्कृत। स्वच्छ। साफ। सुथरा। आविलता यानी मैल से रहित।

अनावृत–वि० १. खुला हुआ। जो ढँका या बंद न हो। २. जो घिरा न हो। ३. नग्न।

अनावृष्टि–संज्ञा स्त्री० वर्षा का न होना। सूखा।

अनाश्रमी–वि० १. जो वर्णाश्रम धर्म द्वारा निर्धारित किसी आश्रम में न हो। २. आश्रमभ्रष्ट। भ्रष्ट। पतित।

अनाश्रय–वि०जिसका कोई सहारा या अवलंब न हो। निराश्रय। दीन। अनाथ। अरक्षित। अपने भरोसे रहनेवाला। पृथक्-कृत।

अनाश्रित–वि० आश्रयहीन। निराश्रय। बिना सहारे का।

अनासक्त–वि० [संज्ञा अनासक्ति] किसी विषय में आसक्त न होनेवाला। निर्लेप।

अनास्था–संज्ञा स्त्री० १. अश्रद्धा। आस्था अर्थात् श्रद्धा और विश्वास का न होना। २. अनादर। अपमान। अप्रतिष्ठा। ३. उपेक्षा।

अनाह–संज्ञा पुं० पेट फूलना। अफरा।

अनाहक़*–क्रि० वि० बिना हक (ग्रामीण) दे० "नाहक"।

अनाहत–वि० आघातरहित। जो घायल न हुआ हो।

संज्ञा पुं० १. शब्दयोग के अनुसार वह शब्द जो दोनों अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने पर सुनाई देता है। २. शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक। (हठयोग में) ३. आघात के बिना उत्पन्न शब्द। ४. कोरा (वस्त्र आदि)

अनाहार–संज्ञा पुं० भोजन की कमी या उसका त्याग।

वि० १. निराहार। जिसने कुछ खाया न हो। भूखा। २. जिससे कुछ खाया न जाय। उपवास या लंघन करनेवाला।

अनाहारी–संज्ञा पुं० अभुक्त। उपवासी। अभोजन।

अनाहूत–वि० जो बुलाया न गया हो। अनिमंत्रित।

अनिकेता–वि० अनिकेतन। निरालय। गृहस्थ। निर्वासि। बिना घर का।

अनिगीर्ण–संज्ञा पुं० अनुक्त। अकथित। वि० न निगला हुआ।

अनिच्छा–संज्ञा स्त्री० [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक] इच्छा का न होना। अरुचि। उपेक्षा।

अनिच्छित–वि० १. जिसकी कामना या आकांक्षा न हो। २. अरुचिकर।

अनिच्छुक–वि० जिसे चाह न हो। निराकांक्षी। निरभिलाषी।

अनिंद्य–वि० १. निर्दोष। जो निंदा के अयोग्य हो। २. उत्तम। प्रशंसनीय।

अनिंदनीय–वि० "अनिंद्य"। अनिंदित।

अनिंदित–वि० अगर्हित। उत्तम।

अनित्य–वि० [स्त्री० अनित्या। संज्ञा अनित्यत्व, अनित्यता] १. क्षणिक। अस्थायी। जिसका अंत होना निश्चित हो। २. नश्वर। विनाशी। नाशवान्। ३. जो स्वयं कार्यरूप हो और जिसका कोई कारण हो। ४. मिथ्या। झूठा। अस्थिर।

अनित्यता–संज्ञा स्त्री० १. अस्थिरता। क्षणभंगुरता। २. नश्वरता।

अनित्यतावादी–संज्ञा पुं० जो किसी वस्तु को चिरस्थायी नहीं मानते। बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय।

अनिद्र–वि० जिसे नींद न आती हो। जो सो न सके।

संज्ञा पुं० नींद न आने का रोग।

अनिबंध–वि० जिसके लिए कोई बंधन न हों। स्वतंत्र।

अनिमिष, अनिमेष–वि० टकटकी। स्थिर दृष्टि। निमेषशून्य।

क्रि० वि० १. टकटकी बाँध के। एकटक। बिना पलक गिराए। २. निरंतर।

अनिमिष-आचार्य—संज्ञा पुं० देवगुरु। बृहस्पति।

अनियंत्रित—वि० १. स्वेच्छाचारी। जिस पर कोई नियंत्रण या प्रतिबंध न हो। बिना रोक-टोक का। जिस पर कोई अनुशासन या अंकुश न हो। २. मनमाना।

अनियत—वि० १. अनिश्चित। २. अस्थिर। जो दृढ़ न हो। ३. असीम। अपरिमित। नियम-हीन।

अनियम—संज्ञा पुं० नियम का न होना। व्यवस्थाहीनता। व्यतिक्रम।

अनियमित—वि० १. गड़बड़। अव्यवस्थित। नियमरहित। बेकायदा। २. अनिर्दिष्ट। अनिश्चित। ३. नियमहीन।

अनियारा*—वि० [स्त्री० अनियारी] नुकीला। पैना। तेज।

अनिरुद्ध—वि० बाधारहित। जो रोका हुआ न हो। बेरोक।

संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनका विवाह ऊषा के साथ हुआ था।

अनिर्णय—संज्ञा पुं० द्विविधा। संदेह। संशय। दो बातों में से किसी का निश्चय न होना। अनिश्चय। अनवधारण।

अनिर्णीत—संज्ञा पुं० अनिर्धारित। अनिश्चित।

अनिर्दिष्ट—वि० १. अनिर्धारित। जो बताया न गया हो। २. अनिश्चित। ३ असीम। अनुद्दिष्ट।

अनिर्देश्य—वि० अनिर्वचनीय। जिसके विषय में न बतलाया जा सके।

अनिर्वचनीय—वि० अवर्णनीय। अकथनीय। जिसका वाणी से ठीक-ठीक वर्णन न किया जा सके। २. जिसका वर्णन करना उचित न हो।

अनिर्वाच्य—वि० जो वाणी से न कहा जा सके। जिसका बतलाना शक्ति से परे हो। २. जो चुनाव के योग्य न हो।

अनिर्वाप्य—वि० जिसका निर्वापन न हो सके। जो बुझाई न जा सके (आग)।

अनिल—संज्ञा पुं० १. हवा। वायु। पवन। २. आठ वसुओं में से एक विशेष वसु का नाम। ३. वायु का देवता। ४. गठिया। ५. पक्षाघात। ६. एक ऋषि का नाम। ७. ४९ संख्या।

अनिलकुमार—संज्ञा पुं० १. पवनसुत। हनुमान्। २. जैनों के एक देवता।

अनिलघ्नक—संज्ञा पुं० विभीतक वृक्ष। बहेड़े का वृक्ष।

अनिलसखा—संज्ञा पुं० अग्नि। आग।

अनिलात्मज—संज्ञा पुं० १. वायुपुत्र। २. हनुमान। ३. भीमसेन।

अनिलामय—संज्ञा पुं० वातरोग। अजीर्ण।

अनिलाशी—संज्ञा पुं० १. वायु भक्षण के द्वारा जीवन धारण करनेवाला। तपस्वी। २. सर्प। ३. व्रत-विशेष।

अनिवारित—वि० अप्रतिषिद्ध। अवारित। बाधारहित। वारण-शून्य।

अनिवार्य—वि० १. अवश्यम्भावी। आवश्यक। जिसको रोका न जा सकता हो। जो हटे नहीं। २. जिसका निवारण करना संभव न हो। ३. जो अवश्य हो। जिसके बिना काम न चल सके।

अनिश्चित—वि० अनियत। निश्चयरहित। अनिर्दिष्ट। जिसके होने न होने में संदेह हो।

अनिष्ट—वि० जो इष्ट न हो। बुरा। अवांछित।

संज्ञा पुं० कष्ट। शत्रु। अमंगल। अहित। खराबी। बुराई।

अनिष्टकर—वि० अपकारक। अहितकर।

अनिष्ठुर—वि० अनिर्दय। सरलचित्त।

अनिष्णात—वि० अप्रवीण। अज्ञानी। अपकार।

अनी—संज्ञा स्त्री० १. अणी। नोक। कोर। २. किसी चीज का अगला सिरा। ३. समूह। दल। झुंड। ४. सेना।

संज्ञा स्त्री० ग्लानि।

अनीक—संज्ञा पुं० १. सेना। २. युद्ध। ३. झुंड। समूह। ४. आकार-प्रकार। ५. सिरा। ६. चेहरा।

*वि० बुरा। जो अच्छा न हो। खराब।

अनीकस्थ—संज्ञा पुं० सेनारक्षक। हस्तिपक। राज-रक्षक। चिह्न।

अनीकिनी—संज्ञा स्त्री० अक्षौहिणी सेना का दशांश। कमल।

अनीठ*—वि० १. अनिष्ट। अप्रिय। २. खराब। बुरा।

अनीति–संज्ञा स्त्री० १. कुचाल। दुर्नीति। अन्याय। अत्याचार। २. शरारत। ३. अंधेर।

अनीदृश–वि० अतुल्य। असमान। बराबर नहीं। बेजोड़।

अनीप्सित–वि० [संज्ञा स्त्री० अनीप्सिता] जिसकी चाह या इच्छा न हो। अनचाहा।

अनीश–वि० [स्त्री० अनीशा] १. जिसके स्वामी न हो। २. असमर्थ। अनाथ। ३. सबसे उत्तम।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. जीव। माया।

अनीश्वर–वि० ईश्वर-भिन्न। नास्तिक।

अनीश्वरवाद–संज्ञा पुं० १. वह वाद या विचार जो ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार नहीं करता। नास्तिकवाद। २. मीमांसा।

अनीश्वरवादी–वि० १. नास्तिक। ईश्वर के अस्तित्व को न माननेवाला। २. अभक्त। ३. मीमांसक।

अनीस–संज्ञा पुं० अनाथ। जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो।

अनीह–संज्ञा पुं० इच्छारहित। निर्लोभ। निस्पृह। निश्चेष्ट। बेपरवाह। आलसी।

अनीहा–संज्ञा स्त्री० निर्लोभ। अनिच्छा। उदासीनता।

अनु–उप० एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का संयोग करता है—१. पीछे। पश्चात्। जैसे, अनुचर। २. सदृश। जैसे, अनुरूप। ३. साथ। जैसे, अनुगमन। अनुलोभ। ४. प्रत्येक। जैसे, अनुदिन। ५. बारंबार। जैसे अनुशीलन। (अनुसार, जैसे अनुकूल)

अव्य० हाँ। ठीक है।

अनुकंपा–संज्ञा स्त्री० १. संवेदना। सहानुभूति। २. कृपा। अनुग्रह। ३. करुणा। स्नेह।

अनुकंपित–वि० वह जिस पर कृपा की गई हो। अनुगृहीत।

अनुकंप्य–संज्ञा पुं० अनुग्राह्य। कृपापात्र।

अनुकथन–संज्ञा पुं० कहने के बाद कथन। पश्चात् कथन। बारंबार कथन।

अनुकरण–संज्ञा पुं० [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] १. नकल। किसी काम को देखकर वैसा ही काम करना या वैसा ही काम। २. वह जो पीछे किया जाय। ३. अनुरूप ४. सदृशकरण। प्रतिरूपकरण।

अनुकरणीय–वि० नकल करने योग्य।

अनुकर्त्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुकर्त्री] १. आज्ञाकारी। २. अनुकरण करनेवाला।

अनुकर्षण–संज्ञा पुं० खींच। आकर्षण।

अनुकार–संज्ञा पुं० अनुसरण। दे० "अनुकरण"।

अनुकारी–वि० [स्त्री० अनुकारिणी] १. अनुकरण करनेवाला। २. आज्ञाकारी। ३. अनुकर्त्ता।

अनुकूल–वि० १. अनुसार। २. हितू। हितैषी। सहायक। पक्ष में रहनेवाला। ३. प्रसन्न।

संज्ञा पुं० १. नायक जो अपनी विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो। २. काव्य में एक अलंकार-विशेष जिसमें प्रतिकूल वस्तु के द्वारा अनुकूल वस्तु को सिद्ध किया जाता है।

अनुकूलता–संज्ञा स्त्री० १. पक्ष या हित में होना। २. अविरुद्धता। अप्रतिकूलता। ३. सहायता। पक्षपात। ४. प्रसन्नता।

अनुकूलना*–क्रि० स० १. सदय होना। २. लाभदायक होना। ३. प्रसन्न होना।

अनुकृत–वि० अनुकरण किया हुआ। नकल किया हुआ। किसी वस्तु को देखकर वैसा ही बनाया हुआ।

अनुकृति–संज्ञा स्त्री० १. नकल। २. किसी वस्तु को देखकर वैसा ही कार्य किया हुआ या वैसी ही बनाई हुई वस्तु। काव्य में एक अलंकार जिसमें किसी कारण से एक वस्तु दूसरी वस्तु के समान दिखलाई जाय।

अनुक्त–वि० [स्त्री० अनुक्ता] अकथित। जो कहा हुआ न हो। अश्रुतपूर्व।

अनुक्रम–संज्ञा पुं० परिपाटी। क्रम। सिलसिला। रीति-भाँति।

वि० सिलसिले के अनुसार। एक के बाद दूसरा। क्रम से। यथाक्रम।

अनुक्रमणिका–संज्ञा स्त्री० १. किसी क्रम से (जैसे वर्णमाला के अनुसार) बनाई हुई सूची। २. क्रम। ३. सिलसिलेबार बनी

हुई। ४. निघण्टु। ५. भूमिका। ग्रन्थों का मुखबन्ध। ६. आभास।

अनुक्रिया–संज्ञा स्त्री० दे० "अनुक्रम"।

अनुक्रोश–संज्ञा पुं० १. कृपा। दया। अनुकम्पा। २. स्नेह।

अनुक्षण–क्रि० वि० १. प्रतिक्षण। २. सदैव। सर्वदा। लगातार। निरंतर। नित्य।

अनुखाल–संज्ञा पुं० १. खांई। खाड़ी। २. चौड़े मुँह का नाला।

अनुग, अनुगत–वि० [संज्ञा अनुगति] १. कही हुई बात के अनुसार चलनेवाला। पीछे चलनेवाला। आज्ञाकारी। अनुयायी। २. अनुकूल। ३. आश्रित। ४. शरणागत। ५. सेवक। ६. मिलता-जुलता।

संज्ञा पुं० सेवक। भृत्य। नौकर।

अनुगतार्थ–वि० प्रायः समान अर्थवाला।

अनुगति–संज्ञा स्त्री० १. अनुसरण। अनु- गमन। २. अनुकरण। ३. मरना। मरण।

अनुगमन–संज्ञा पुं० १. अनुसरण। पीछे चलने की क्रिया। २. समान आचरण। ३. सहगमन। ४. विधवा का मृत पति के साथ सती होना।

अनुगामी–वि० १. अनुवर्ती। पीछे चलने- वाला। २. आज्ञाकारी। ३. समान आचरण करनेवाला। ४. साथी। सहचर। ५. सेवक।

अनुगुण–संज्ञा पुं० १. एक ही समान गुणों- वाला। अनुसार। अनुरूप। २. स्वाभाविक विचित्रता।

अनुगृहीत–वि० १. उपकृत। आभारी। जिस पर अनुग्रह किया गया हो। २. कृतज्ञ। ३. प्रतिपालित। ४. आश्वासित।

अनुग्रह–संज्ञा पुं० [वि० अनुगृहीत, अनुग्राही, अनुग्राहक] १. दया। कृपा। २. आभार। ३. दुख दूर करनेवाला। कृपा करनेवाला। ४. रिआयत।

अनुग्राहक–वि० [स्त्री० अनुग्राहिका] आभार करनेवाला। अनुग्रह करनेवाला। उपकार करनेवाला। कृपालु। दयावान।

अनुग्राही–वि० दे० "अनुग्राहक"।

अनुचर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुचरी] १. आज्ञानुसार आचरण करनेवाला। नौकर। सेवक। २. संगी। साथी।

अनुचित–वि० जो उचित न हो। अयुक्त। १. बुरा। खराब। अनुपयुक्त। २. अयोग्य। ३. अनरीत।

अनुच्छ्रित–वि० उन्नतिरहित। बहुत ऊँचा नहीं।

अनुज–वि० बाद में पैदा होनेवाला।

संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई। लघु भ्राता।

अनुजीवी–संज्ञा पुं० पराधीन। आश्रित। परतन्त्र। दूसरे पर जीवित रहनेवाला। दास। सेवक। (संज्ञा स्त्री० अनुजीविनी)

अनुज्झित–वि० अविक्षत। अत्यक्त। नहीं छोड़ा हुआ।

अनुज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. आज्ञा। आदेश। अनुमति। २. काव्य में एक अलंकार जिसमें दूषित वस्तु में कोई विशेष गुण देखकर उसके प्राप्त करने की इच्छा का वर्णन किया जाता है।

अनुज्ञात–संज्ञा पुं० वि० आज्ञा-प्राप्त।

अनुतप्त–वि० अनुशोची। पश्चात्ताप-विशिष्ट। पछतानेवाला।

अनुताप–संज्ञा पुं० [वि० अनुतप्त] १. पश्चात्ताप। अफसोस। २. रंज। दुःख। ३. जलन। तपन।

अनुतापित–संज्ञा पुं० दुःखित। अनुशोचक।

अनुतारा–संज्ञा स्त्री० उपग्रह। उपतारा।

अनुत्तीर्ण–वि० जो उत्तीर्ण न हुआ हो। परीक्षा में असफल। जो पार न उतरा हो।

अनुत्कण्ठा–संज्ञा स्त्री० निरुद्वेग । उत्कण्ठा- रहित।

अनुत्तर–वि० १. जो उत्तर न दे सके। जिसका उत्तर न हो। कायल। २. श्रेष्ठ। ३. स्थिर। ४. करना=चुप कर देना। ५. जैनों के देवता-विशेष ।

अनुदय–संज्ञा पुं० उदय के पूर्वकाल। उदय- रहित। भोर। सबेरा।

अनुदात्त–वि० १. तुच्छ। छोटा। २. स्वर के तीन भेदों में से एक। नीचा स्वर।

३. लघु (उच्चारण)। ४. अनुदार। ५. पाणिनि व्याकरण के अनुसार एक श्रुति-स्वर।

अनुदार–वि० [संज्ञा स्त्री० अनुदारता] जो उदार न हो। संकीर्ण। कृपण। कंजूस।

अनुदिन–क्रि० वि० प्रतिदिन। हर रोज।

अनुद्वाह–संज्ञा पुं० अविवाह। अनूढ़ावस्था। कुमारपन।

अनुद्विग्न–वि० निश्चिंत। उद्वेग-रहित। स्वस्थ। स्थिर।

अनुद्वेग–वि० उद्वेग-रहित। व्याकुल नहीं। निश्चित।

अनुद्यमी–वि० आलसी। सुस्त। प्रयास न करनेवाला।

अनुधावन–संज्ञा पुं० [वि० अनुधावक, अनुधावित] १. अनुसरण। किसी के पीछे चलना। २. अनुकरण। ३. खोज। अनुसंधान। ४. पीछा करना। ५. प्रियतमा के पीछे चलना। ६. स्वच्छ करना। पवित्र करना।

अनुनय–संज्ञा पुं० १. चिरौरी। विनती। विनय। प्रार्थना। २. मनाना। ३. देव या अतिथि के प्रति आदर। ४. युक्त आचरण।

अनुनाद–संज्ञा पुं० [वि० अनुनादित] प्रतिध्वनि। प्रतिशब्द। जोर का शब्द।

अनुनासिक–वि० १. जो अक्षर मुँह और नाक से बोला जाय जैसे ङ, ञ, ण, न, म। २. नासिका-सम्बन्धी।

अनुप–वि० अनुपम। अपूर्व।

अनुपकारी–संज्ञा पुं० अहितकारी। अपकारक।

अनुपद–वि० अनुगामी। पीछे पीछे चलनेवाला।

क्रि० वि० १. पीछे पीछे। कदम कदम पर। बाद। पीछे। २. शीघ्र। जल्दी।

अनुपम–वि० [संज्ञा अनुपमता] १. अनोखा। २. बेजोड़। ३. उत्तम। जिसकी उपमा न हो। जिसका जोड़ न हो।

अनुपमेय–वि० दे० "अनुपम"। उपमा-रहित। जिसकी तुलना के लिए उचित उपमा न मिलती हो।

अनुपयुक्त–वि० १. जो उपयुक्त न हो। जो ठीक न हो। अयोग्य। २. अनुचित। ३. काम में न आने योग्य।

अनुपयुक्तता–संज्ञा स्त्री० अयोग्यता।

अनुपयोग–संज्ञा पुं० १. व्यवहार का अभाव। काम में न लाना। २. दुर्व्यवहार।

अनुपयोगिता–संज्ञा स्त्री० उपयोगिता का न होना। अर्थरहित होना। लाभदायक न होना।

अनुपयोगी–वि० व्यर्थ का। बेकाम।

अनुपल–संज्ञा पुं० पल का साठवाँ हिस्सा। काल। गणना में एक विशेष अंश।

अनुपस्थित–वि० १. जो सामने उपस्थित न हो। गैरहाजिर। जिसकी स्थिति प्रत्यक्ष में न हो। २. असंपूर्ण।

अनुपस्थिति–संज्ञा स्त्री० अविद्यमानता। गैरहाजिरी। प्रत्यक्ष में न होने की स्थिति।

अनुपात–संज्ञा पुं० १. गणित की त्रैराशिक क्रिया। एक वस्तु का दूसरी वस्तु से तुलनात्मक संबंध। तुलनात्मक गिराव या चढ़ाव। २. समान मात्रा में से गिरना। ३. तुलनात्मक सम्बन्ध।

अनुपातक–संज्ञा पुं० १. ब्रह्महत्या के बराबर पाप। २. उपपातक जैसे–चोरी, झूठ बोलना।

अनुपादेय–वि० जो उपादेय या ठीक न हो।

अनुपान–संज्ञा पुं० वह पदार्थ जिसके साथ औषध का सेवन किया जाय।

अनुपाय–वि० उपायहीन। निरवलम्ब। निराश्रय।

अनुप्राणित–वि० जिसमें प्राण या जीवनी शक्ति भरी गई हो। जिसे प्रेरणा दी गई हो। प्रेरित।

अनुप्राशन–संज्ञा पुं० खाना।

क्रि० स० भक्षण करना। होना या देना।

अनुप्रास–संज्ञा पुं० शब्दालंकार-विशेष। यमक पद-विन्यास। जिसमें एक ही अक्षर, शब्दांश या शब्द बार-बार आता है। कविता में एक ही अक्षर का शब्दों के आरभ या अंत में बार बार आना। मित्राक्षर-योजना। वर्णमैत्री।

अनुबंध–संज्ञा पुं० १. बंधन। लगाव। संबंध।

* २. किसी के द्वारा अनुकरण। ३. आरंभ। ४. मित्र। सुहृद। ५. शिशु में अनुकरण करने की प्रवृत्ति। ६. बाधा। ७. फल (कार्य आदि का)। ८. प्रधान रोग के कारण उसके साथ ही दूसरा रोग। ९. छोटी वस्तु (गणित)। १०. वेदांत का एक तत्व।

अनुभव–संज्ञा पुं० [वि० अनुभवी] १. वह ज्ञान जो स्मृति से प्राप्त न हो। २. वह ज्ञान जो पर्यवेक्षण, साक्षात्कार या प्रयोग द्वारा स्वयं प्राप्त हुआ हो। प्रत्यक्ष से प्राप्त ज्ञान। ज्ञान प्राप्त होने के बाद जो संस्कार हो जाते हैं उनका मस्तिष्क पर परिणाम। ३. परीक्षण। ४. परीक्षण द्वारा प्राप्त ज्ञान। ५. यथार्थ ज्ञान। तजरबा।

अनुभवी–वि० जानकार। जिसने अनुभव प्राप्त किया हो। तजरबेकार।

अनुभाव–संज्ञा पुं० १. बड़ाई। महिमा प्रताप। तेज। २. दृढ़ विश्वास। ३. काव्य में रस का द्वितीय उत्तेजक। चित्त के भाव को व्यक्त करनेवाली कटाक्ष आदि शारीरिक चेष्टाएँ।

अनुभावी–वि० [स्त्री० अनुभाविनी] १. अनुभवी। ज्ञाता। २. साक्षी।

अनुभूत–वि० १. परीक्षित। २. जिसका साक्षात् ज्ञान हुआ हो। अनुभव किया हुआ। जिसका ज्ञान, देखने चखने, सूंघने आदि से हुआ हो।

अनुभूति–संज्ञा स्त्री० १. अनुभव की बात। अनुभव। २. बोध। परिज्ञान। ३. स्मृति को छोड़कर किसी भी प्रकार से प्राप्त ज्ञान। ४. न्याय शास्त्र के आप्त वाक्य आदि चार प्रमाणों से प्राप्त ज्ञान।

अनुमत–वि० सम्मत। स्वीकृत। अंगीकृत। एकमत। सहमत।

अनुमति–संज्ञा स्त्री० १. सम्मति। स्वीकृति। २. आज्ञा। हुक्म। ३. इजाजत।

अनुमरण–क्रि० अ० एक संग मरना। सहमरण। सती होना।

अनुमान–संज्ञा पुं० [वि० अनुमित] १. अनुभव। बोध। अटकल। अंदाजा। २. न्याय के यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के चार प्रमाणों में से एक, जिससे प्रत्यक्ष प्रमाण और तर्क के द्वारा अप्रत्यक्ष का ज्ञान किया जाय।

अनुमापक–संज्ञा पुं० निर्णायक। अनुमान का हेतु। निश्चय का कारण।

अनुमानना*–क्रि० स० अनुमान या अंदाजा करना।

अनुमित–वि० अनुमान किया हुआ। तर्क आदि के द्वारा भावित।

अनुमिति–संज्ञा स्त्री० अनुमान। अंदाजा।

अनुमेय–वि० अनुमान का विषय।

अनुमोदन–संज्ञा पुं० १. स्वेच्छा से दिया हुआ मत। २. आनन्दयुक्त सम्मति। प्रसन्नतायुक्त स्वीकृति। ३. समर्थन। ४. प्रसन्नता का प्रकाशन। प्रसन्न होना।

अनुयायी–वि० [स्त्री० अनुयायिनी] १. अनुकरण करनेवाला। पिछलगा। २. पीछे चलनेवाला। ३. अनुगामी। अनुवर्ती। संज्ञा पुं० अनुचर। दास। सेवक।

अनुयोग–संज्ञा पुं० १. ताड़ना। २. धमकी। घुड़की। ३. तिरस्कार। आक्षेप। ४. प्रश्न। जिज्ञासा। ५. निन्दा। शिक्षा। ६. उपदेश। प्रबोध। ७. ब्रह्मासन।

अनुयोगकारी–संज्ञा पुं० १, तिरस्कारक। आक्षेपक। २. प्रश्नकारक।

अनुयोगी–संज्ञा पुं० १. निन्दित। तिरस्कृत। २. मिलानेवाला।

अनुयोजक–संज्ञा पुं० अनुयोगकारी। उपदेशक।

अनुयोजन–संज्ञा पुं० प्रश्न। जिज्ञासा। पूछपांछ।

अनुयोज्य–वि० १. अनुयोगार्ह। आज्ञाप्य। २. निन्दा योग्य। ३. सेवक। ४. प्रतिनिधि।

अनुरंजन–संज्ञा पुं० १. प्रीति। अनुराग। २. प्रसन्नता। ३. मनबहलाव। ४. शरीर पर गीला या सूखा लेप जैसे–चंदन, पाउडर लगाना।

अनुरंजित–प्रसन्न। रँगा हुआ। आकृष्ट।

अनुरक्त–वि० १. आसक्त। अनुराग से युक्त। २. लीन। ३. प्रेमी। ४. भक्त। श्रद्धालु।

अनुरत—वि० आसक्त। लीन।

अनुराग—संज्ञा पुं० १. देखने के बाद की प्रीति। २. प्रीति। प्रेम। ३. रुझान। ४. लाल रंग। ५. लगन। ६. लेप।

अनुरागना—क्रि० स० प्रीति या प्रेम करना।

अनुरागी—वि० [स्त्री० अनुरागिनी] १. विरागी का विपरीत। प्रेमी। अनुराग करनेवाला। २. जिस पर लेप किया हो। ३. संगीत में एक स्वर विशेष।

अनुराध—संज्ञा पुं० १. प्रार्थना। विनय। २. समाप्त करना। ३. जो मनुष्य अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न हो।

अनुराधपुर—संज्ञा पुं० लंका में एक प्राचीन नगर।

अनुराधना*—क्रि० स० १. मनाना। विनय करना। २. समाप्त करना।

अनुराधा—संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में १७वें नक्षत्र का नाम।

अनुरूप—वि० १. प्रतिकृति। तुल्य रूप का। एक-सा। अनुहार। सदृश। समान। २. योग्य। उपयुक्त।

अनुरूपता—संज्ञा स्त्री० १. सादृश्य। समानता। २. उपयुक्तता।

अनुरूपना*—क्रि० अ० किसी के अनुरूप होना।
क्रि० स० किसी के अनुरूप बनाना।

अनुरोध—संज्ञा पुं० १. नम्रतापूर्वक किसी बात के लिए आग्रह। दबाव। सिफारिश। २. प्रेरणा। ३. सम्मान। ४. विचार करना या ध्यान देना।

अनुलाप—संज्ञा पुं० कथित का पुनः पुनः कथन। मुहुः।

अनुलिप्त—वि० अभिषिक्त। लिप्त। दिग्ध।

अनुलेप—संज्ञा पुं० अंग लेप। उबटन। पोतन। लेपन।

अनुलेपन—संज्ञा पुं० १. लेपन। लेप करना। २. उबटन लगाना। बटना। ३. लीपना। लेप। उबटन।

अनुलोम—संज्ञा पुं० १. उल्टा। ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। २. अवरोही। संगीत में सुरों का उतार।

अनुलोमन—संज्ञा पुं० दस्त लानेवाली वह दवा जो पेट में से गाँठों को निकाल दे। कब्जियत दूर करनेवाली दवा। कोष्ठबद्धता की ओषधि।

अनुलोम विवाह—संज्ञा पुं० उच्च वर्ण के पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।

अनुवर्तन—संज्ञा पुं० १. अनुकरण। किसी के आचरण के अनुसार आचरण। अनुगमन। समान आचरण। २. किसी नियम का अनेक स्थानों पर लगाना।

अनुवर्ती—वि० [स्त्री० अनुवर्तिनी] पीछे-पीछे चलनेवाला। अनुगामी। अनुयायी।

अनुवाक्—संज्ञा पुं० १. पुस्तक का एक भाग। किसी अध्याय या प्रकरण का एक अंश। २. ग्रन्थावयव। ३. वेद के अध्याय का एक अंश।

अनुवाद—संज्ञा पुं० १. उल्था। भाषांतर। २. फिर कहना। दोहराना। ३. 'न्याय' में वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का बारंबार कथन हो (न्याय)। ४. निन्दा। अपवाद।

अनुवादक—संज्ञा पुं० उल्था, अनुवाद या भाषांतर करनेवाला।

अनुवादित—वि० अनूदित। अनुवाद किया हुआ।

अनुवाद्य—वि० अनुवाद करने योग्य। जिसका अनुवाद किया जाय।

अनुवृत्ति—संज्ञा स्त्री० १. किसी पद के पहले अंश से कुछ वाक्य उसके आगे के अंश में अर्थ समझाने के लिए लाना। २. उपजीविका। ३. सेवा-मार्ग।

अनुशय—संज्ञा पुं० १. पश्चात्ताप। पछतावा। अफसोस। अनुताप। २. जिज्ञासा। ३. द्वेष। घृणा। पुराना वैर। झगड़ा। ४. घनिष्ठ संबंध। ५. परिणाम। ६. वाद-विवाद।

अनुशयाना—संज्ञा स्त्री० परकीया नायिका जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से दुखी हो।

अनुशयी—संज्ञा पुं० पश्चात्तापी। रोग-विशेष। बैरी।

अनुशासक–संज्ञा पुं० १. शासन करनेवाला आज्ञा या आदेश देनेवाला। २. शिक्षक। उपदेश देनेवाला। ३. राज्य का प्रबंध करनेवाला।

अनुशासन–संज्ञा पुं० १. आज्ञा। आदेश। हुक्म। २. उपदेश। शिक्षा। ३. व्याख्यान। विवरण। ४. महाभारत का एक पर्व।

अनुशास्ता–संज्ञा पुं० १. शिक्षक। उपदेष्टा। २. अनुशासक।

अनुशीलन–संज्ञा पुं० १. अध्ययन। मनन। चिंतन। विचार। २. बार बार का अभ्यास। ३. आन्दोलन।

अनुशोक–संज्ञा पुं० पश्चात्ताप। खेद।

अनुशोचन–संज्ञा पुं० पश्चात्ताप करना।

अनशोचना–संज्ञा स्त्री० अनुताप। पछतावा। अफसोस।

अनुश्रुत–वि० परम्परा से चला आया हुआ। परम्परागत।

अनुश्रुति–संज्ञा स्त्री० वह बात जिसे लोग परम्परा से सुनते चले आये हों। परंपरागत कथा या उक्ति।

अनुषंग–संज्ञा पुं० [वि० आनुषंगिक] १. दया। करुणा। २. संबंध। लगाव। ३. मिलन। ४. प्रणय। ५. प्रसंग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना। ६. शब्द का शब्द से और कार्य का कारण से संबंध। ७. पूर्व कर्म का अवश्यंभावी फल (धर्मशास्त्र)।

अनुष्टुप्–संज्ञा पुं० १. ३२ अक्षरों के वर्णवृत्त का एक भेद। श्लोकों का एक प्रकार जिसमें आठ आठ अक्षरों के चार पद होते हैं। २. सरस्वती।

अनुष्ठान–संज्ञा पुं० १. किसी विशेष संकल्प से किया हुआ कार्य। उपक्रम। कार्य का आरंभ। २. नियमपूर्वक कोई काम करना। शास्त्र-सम्मत कर्म करना। ३. सूचना। ४. प्रयोग। फल के निमित्त किसी देवता की पूजा। पुरश्चरण। ५. आचरण।

अनुष्ठान-शरीर–संज्ञा पुं० लिंग-देह। आद्य देह।

अनुष्ठित–वि० आरब्ध। आचरित। जिसका अनुष्ठान किया गया हो। जिसका प्रयोग या आचरण किया गया हो।

अनुष्ठेय–वि०१.उपक्रान्त। कर्मारब्ध। २.किया जानेवाला। करने योग्य।

अनुसंधान–संज्ञा पुं० १. पीछे लगना। २. खोज। अन्वेषण। जाँच-पड़ताल। ३. चेष्टा। ४. शोध-कार्य। प्रयत्न।

अनुसंधानी–संज्ञा पुं० अनुसंधानकारी। अनेक विषयों का अन्वेषण करनेवाला।

अनुसंधानना*–क्रि० स० १. खोज करना। ढूँढ़ना। २. सोचना।

अनुसंधि–संज्ञा स्त्री० गुप्त परामर्श या संधि। षड़यंत्र। कुचक्र।

अनुसरण–संज्ञा पुं० १. अनुवर्तन। पीछे या साथ चलना। पश्चाद्गमन। २. नकल। अनुकरण।

अनुसरना*–क्रि० स० १. साथ साथ या पीछे चलना। २. अनुकरण करना।

अनुसार–वि० अनुरूप। तुल्य। अनुकूल। समान। मुआफ़िक़। जिसमें सादृश्य हो।

अनुसारना*–क्रि० स० १. अनुकरण करना। नकल करके चलना। २. आचरण करना। ३. कोई काम करना।

अनुसारी*–वि० जो अनुसरण या अनुकरण करता हो।

अनुसाल*–संज्ञा पुं० पीड़ा। वेदना। कष्ट। रंज।

अनुसूचन–संज्ञा पुं० विचार। ध्यान।

अनुसूचना–संज्ञा स्त्री० आन्दोलन। सुचिन्ता। अनुष्ठान।

अनुस्वार–संज्ञा पुं० १. स्वर के ऊपर की बिंदी। २. स्वर के बिलकुल बाद का हलंत वर्ण, जिसका चिह्न (ं) है। ३. निगृहीत।

अनुहरत*–वि० [हिं० अनुहरना का कृदंत रूप] १. अनुरूप। समान। २. योग्य। अनुकूल। ठीक।

अनुहार–वि० १. समान। सदृश। तुल्य। २. अनुसार। अनुकूल।
संज्ञा स्त्री० १. प्रकार। भेद। २. आकृति। ३. समानता। सादृश्य।

अनुहारना*–क्रि० स० सदृश या समान करना ।
अनुहारी–वि० [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण करनेवाला ।
अनुहार्य–संज्ञा पुं० १. मासिक श्राद्ध । २. समान करने योग्य। ३. अनुकूल करने योग्य।
अनूठा–वि० [स्त्री० अनूठी] १. अपूर्व। अनोखा। विलक्षण। अद्भुत। २. अच्छा। बढ़िया। ३. नया। निराला।
अनूठापन–संज्ञा पुं० १. अनोखापन। विचित्रता। विलक्षणता। २. अच्छाई। सुंदरता ।
अनूढ़ा–संज्ञा स्त्री० १. वह बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम करती हो। २. कुँवारी। अविवाहिता ।
अनूढ़ागामी–संज्ञा पुं० व्यभिचारी। गणिका-सेवी। लंपट ।
अनूदित–वि० १. कहा या किया हुआ। २. अनुवाद किया हुआ। भाषांतर या उलथा किया हुआ ।
अनूप–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ जल अधिक हो। जलप्रधान देश ।
वि० १. जिसकी उपमा न हो। उपमा-रहित। बेजोड़। २. अच्छा। सुंदर ।
अनूपम–वि० अनोखा ।
अनृत–संज्ञा पुं० १. जो सत्य न हो। असत्य। झूठ। मिथ्या। २. अन्यथा। विपरीत। वितथ।
अनृतवादी–वि० मिथ्यावादी ।
अनेऊ*–वि० बुरा। खराब। कुटिल। टेढ़ा-मेढ़ा ।
अनेक–वि० एक से अधिक। कई। बहुत।
अनेकज–संज्ञा पुं० १. द्विज। २. पक्षी। ३. बहुजात ।
अनेकता–संज्ञा स्त्री० १. भेद। विरोध। २. आधिक्य। एक से अधिक होना ।
अनेकधा–अव्य० बारंबार।
अनेकशः–अव्य० अनेक प्रकार। बहु प्रकार।
अनेकार्थ–वि० बहुत-से अर्थोंवाला । जिसके एक से अधिक अर्थ निकलते हों।
अनेग*–वि० दे० "अनेक"।
अनेरा–वि० [स्त्री० अनेरी] १. झूठा। २. अन्यायी। दुष्ट। ३. झूठ। व्यर्थ। बेमतलब। ४. निकम्मा।
क्रि० वि० व्यर्थ।
अनैक्य–संज्ञा पुं० १. मतभेद। फूट। एका न होना। २. विरोध। ३. असंयोग।
अनठ†–संज्ञा पुं० १. दिन के आरंभ में कोई अप्रिय कार्य या अनुभव जिससे चित्त क्षुब्ध हो जाय। २. वह दिन जब बाजार बंद रहे। ३. अनिष्ट। बुराई।
अनैतिक–वि० जो नैतिक न हो। नीति-विरुद्ध।
अनैस*†–संज्ञा पुं० अहित। बुराई।
वि० बुरा।
अनैसना*–क्रि० अ० रूठना। बुरा मानना।
अनैसा*–वि० [स्त्री० अनैसी] खराब। अप्रिय। बुरा।
अनैसे*–क्रि० वि० कुदृष्टि से। बुरे भाव से।
अनैहा*–संज्ञा पुं० उपद्रव। उत्पात।
अनोखा–वि० [स्त्री० अनोखी] १. विचित्र। अजीब। विलक्षण। निराला। अपूर्व। अद्भुत। २. नया। ३. सुंदर। ४. दुर्लभ।
अनोखापन–संज्ञा पुं० १. विचित्रता। निरालापन। विलक्षणता। २. नयापन। ३. खूबसूरती। सुंदरता।
अनोना–वि० अलोना। नोनरहित।
अनौचित्य–संज्ञा पुं० उचित बात का न होना। अनुपयुक्तता। अनैतिकता। जो उचित या न्यायसंगत न हो।
अनौट*–संज्ञा पुं० दे० "अनवट"।
अन्न–संज्ञा पुं० १. अनाज। वह धान्य जो खाने के काम में आता हो। २. दाना। गल्ला। ३. सूर्य। ४. पृथ्वी। ५. जल। ६. प्राण।
अन्नकष्ट–संज्ञा पुं० दुर्भिक्ष। कष्ट से अन्न मिलना।
अन्नकूट–संज्ञा पुं० १. पर्व-विशेष। २. एक उत्सव जो प्रायः कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन होता है। इसमें अनेक प्रकार के व्यंजनों का भोग भगवान् को लगाया जाता है। ३. एक साथ कई प्रकार का भोजन।

अन्नक्षेत्र–संज्ञा पुं० वह जगह जहाँ भूखों को अन्न मिलता हो। दे० "अन्नसत्र"।

अन्नजल–संज्ञा पुं० १.दाना-पानी। खान-पान। अन्न-पानी। २. जीविका।

मुहा०–अन्न-जल त्यागना या छोड़ना=उपवास करना। अन्नजल उठ जाना=जीविका छूट जाना।

अन्नदाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अन्नदात्री] १. अन्न देनेवाला। २. पोषक। रक्षक। प्रतिपालक। ३. स्वामी।

अन्नदान–संज्ञा पुं० आहार-दान। अन्नव्यय।

अन्नदास–संज्ञा पुं० १. पेट के लिए दास बननेवाले। २. पेटू।

अन्नपानी–संज्ञा पुं० भोजन और जल।

अन्नपूर्णा–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा का एक रूप। अन्न की अधिष्ठात्री देवी। २. काशीश्वरी। विश्वेश्वरी। ३. वह स्त्री जो भली भाँति भोजन कराती हो। ४. पार्वती जी का एक नाम।

अन्नप्राशन–संज्ञा पुं० संस्कार-विशेष जब बच्चों को पहले पहल अन्न खिलाते हैं।

अन्नभाजन–संज्ञा पुं० भोजन करने का बर्तन।

अन्नभिक्षा–संज्ञा स्त्री० अन्न के लिए प्रार्थना। अन्न माँगना।

अन्नभोक्ता–संज्ञा पुं० १. अन्न खानेवाला। २. जिसके साथ खान-पान ह।

अन्नमय–१. अन्नस्वरूप। २. अन्न द्वारा वर्धित। ३. अन्न से पूर्ण। ४. अन्न से बना हुआ।

अन्नमय कोश–संज्ञा पुं० १. पंच कोशों में से पहला। २. अन्न से बना हुआ। त्वचा से लेकर वीर्य्य तक के अंगों के समूह का नाम। ३. स्थूल शरीर (वेदांत)।

अन्नरस–संज्ञा पुं० माँड़। अन्न का सार भाग।

अन्नलिप्सा–संज्ञा स्त्री० क्षुधा। बुभुक्षा।

अन्नविकार–संज्ञा पुं० १. शुक्र। वीर्य। २. विष्ठा। मल। ३. अन्न से उत्पन्न रोग।

अन्नब्रह्म–संज्ञा पुं० अन्नस्वरूप ब्रह्म।

अन्नसत्र–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ भूखों को भोजन बाँटा जाता है।

अन्ना–संज्ञा स्त्री० १. धाय। दाई। धात्री। २. उपमाता।

अन्नाभाव–संज्ञा पुं० अन्न की कमी। दुर्भिक्ष। अकाल।

अन्नार्थी–संज्ञा पुं० भोजन के लिए अन्न माँगनेवाला।

अन्नाहारी–संज्ञा पुं० अन्नभोक्ता। अन्न खानेवाला।

अन्नी–संज्ञा स्त्री० दाई। धाय। धात्री। उपमाता।

अन्य–वि० १. भिन्न। दूसरा। गैर। और कोई। और कुछ। २. पृथक्।

अन्यकृत–वि० अन्य द्वारा किया हुआ। भिन्न-संपादित।

अन्यख्याति–संज्ञा स्त्री० अख्याति। दुष्कीर्त्ति। दुर्नाम। (दर्शन में इस शब्द का प्रयोग आत्मविषयक मिथ्या ज्ञान के अर्थ में होता है।)

अन्यगामी–संज्ञा पुं० १. व्यभिचारी। २. परस्त्रीगामी। लंपट। ३. परिवर्तन। बदला किया हुआ।

अन्यचरण–सँज्ञा पुं० उलटा चलन। विपरीत व्यवहार। विरुद्ध आचरण।

अन्यचाली–संज्ञा पुं० स्वधर्मत्यागी। कुपथगामी।

अन्यज–संज्ञा पुं० कुयोनि। हीन जाति। जारज।

अन्यत–क्रि० वि० १. किसी और से। २. किसी अन्यत्र स्थान से। अन्यत्र से। ३. स्थानांतर।

अन्यतम–वि० बहुतों में से एक। सबसे बढ़कर। प्रधान। मुख्य।

अन्यत्र–वि० दूसरी जगह। और कहीं।

अन्यथा–वि० १. उलटा। विपरीत। प्रतिकूल। विरुद्ध। २. झूठ। असत्य।

अव्य० नहीं तो।

अन्यथासिद्धि–संज्ञा स्त्री० १. न्याय में एक दोष, जिसमें तर्क से अयथार्थ बात की सिद्धि की जाय। २. अभावनीय कार्यों की उत्पत्ति।

अन्यदेशी या अन्यदेशीय–संज्ञा पुं० दूसरे देश के वासी। भिन्न देशी।

अन्यपुरुष–संज्ञा पुं० १. दूसरा मनुष्य। २. व्याकरण में वह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। जैसे, 'यह', 'वह', 'कोई'।

अन्यपुष्ट–संज्ञा पुं० १. कोकिल। कोइल। पिक। २. परपालित। दूसरे के द्वारा पालित।

अन्यपूर्वा–संज्ञा स्त्री० १. परपूर्वा। २. जिस विवाहित स्त्री का पति के मरने पर पुनर्वार विवाह हो। द्विरूढ़ा। दो बार ब्याही हुई।

अन्यभृत–संज्ञा पुं० १. काक। कौआ। २. कोइल। पिक।

अन्यमनस् या अन्यमनस्क–वि० अनमना। जिसका मन न लगता हो। चिंतित। उदास।

अन्यमनस्कता–संज्ञा स्त्री० १. अन्यमनस्क होना। २. दूसरी ओर मन लगाना। ३. प्रस्तुत बात पर असावधानी।

अन्यसंभोगदुःखिता–संज्ञा स्त्री० वह नायिका जो अपने प्रिय के शरीर पर अन्य किसी स्त्री के साथ संभोग के चिह्न देखकर दुःखी हो।

अन्यसुरतिदुःखिता–संज्ञा स्त्री० दे० "अन्य-संभोगदुःखिता"।

अन्यदृश–वि० अन्य प्रकार। भिन्न रूप। विसदृश।

अन्यान्य–वि० अपरापर। भिन्न भिन्न। दूसरे दूसरे। और और।

अन्यापदेश–संज्ञा पुं० दे० "अन्योक्ति"।

अन्याय–संज्ञा पुं० [वि० अन्यायी] १. अत्याचार। अनुचित व्यवहार। अनीति। बेइंसाफी। अविचार। २. अंधेर। ३. जुल्म। उपद्रव।

अन्यायी–वि० [संज्ञा अत्याचारी] अन्याय करनेवाला। अधर्मी। न्यायशून्य। दुष्ट।

अन्यारा*–वि० १. जो अलग न हो। २. अद्भुत। अनोखा। ३. अधिक। बहुत।

अन्यून–वि० [संज्ञा स्त्री० न्यूनता] जो न्यून न हो। बहुत। अधिक।

अन्योक्ति–संज्ञा स्त्री० अन्यापदेश। वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय।

अन्योदर्य–वि० दूसरे के पेट से उत्पन्न: 'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य–सर्व० आपस में। परस्पर। संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जाय। उभयतः मिलाप।

अन्योन्याभाव–संज्ञा पुं० किसी एक या दूसरी वस्तु का न होना।

अन्योन्याश्रय–संज्ञा पुं० [वि० अन्योन्याश्रित] १. आपस का सहारा। एक दूसरे की आवश्यकता। २. सापेक्ष ज्ञान। न्याय में एक वस्तु के ज्ञान के लिए दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा।

अन्वय–संज्ञा पुं० [वि० अन्वयी] १. तारतम्य। परस्पर संबंध। २. मेल। संयोग। ३. पद्यों के शब्दों को वाक्यरचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य्य। ४. शून्य। ५. अवकाश। खाली स्थान। ६. कार्य्य-कारण का संबंध। ७. खानदान। वंश। ८. एक बात की सिद्धि से दूसरी बात की सिद्धि का संबंध। ९. पदच्छेद। १०. संतति।

अन्वज्ञ–वि० वंशावलि जाननेवाला। बन्दी। भाट।

अन्वयी–वि० संबंध-विशिष्ट। संपर्की। पश्चाद्वर्ती।

अन्वह–संज्ञा पुं० नित्य। प्रत्यह। प्रतिदिन।

अन्वान्वय–वि० संयोजित। संयुक्त। द्वन्द्व। समास का एक भेद।

अन्वित–वि० १. युक्त। २. मिला हुआ। संबंधित। ३. पूरा।

अन्वितार्क–संज्ञा पुं० अन्वय के द्वारा निकलनेवाला अर्थ। अन्दर किया या मिला हुआ अर्थ।

अन्वीक्षण–संज्ञा पुं० १. ध्यान। विचार। २. अनुसंधान। खोज। पता लगाना।

अन्वीक्षा–संज्ञा स्त्री० १. ध्यान से देखना। २. खोज। अनुसंधान।

अन्वेषक–वि० [स्त्री० अन्वेषिका] खोज करनेवाला। पता लगानेवाला। अनुसंधान-कर्ता।

अन्वेषण–संज्ञा पुं० [स्त्री० अन्वेषणा] ढूँढ़। खोज। अनुसंधान। पता लगाना।
अन्वेषी–वि ०[स्त्री० अन्वेषिणी] खोज करनेवाला। अन्वेषक।
अन्हवाना*–क्रि० स० स्नान कराना। नहलाना।
अन्हान–संज्ञा पुं० १. स्नान। नहाना। स्नान का पर्व।
अन्हाना*†–क्रि० अ० दे० "नहाना"।
अन्होना–संज्ञा पुं० १. असाध्य। २. असंभव। जो न हो सके।
अप्–संज्ञा पुं० पानी। जल।
अपंग–वि० १. अंगरहित। जिसके कोई अंग न हो। २. बेबस। अशक्त। ३. लूला। लँगड़ा।
अप–उप० १. विरुद्ध। उलटा। २. नीच। अधम। बुरा। ३. अधिक। ४. वियोग। ५. विपर्यय। ६. चौर्यनिर्देश। ७. यज्ञकर्म। ८. हर्ष। ९. अनिर्देश्य। १०. प्रज्ञा। यह उपसर्ग जिस शब्द के पहले आता है उसके अर्थ में निम्नलिखित विशेषता उत्पन्न करता है। १. निषेध। जैसे अपमान। २. अपकृष्ट (दूषण)। जैसे, अपकर्म। अपपाठ। दूर, जैसे अपतर। ३. विकृति। जैसे, अपांग। ४. विशेपता। जैसे, अपहरण।
सर्व० आप का संक्षिप्त रूप (यौगिक में)। जैसे—अपस्वार्थी। अपकाजी।
अपकर्त्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अपकर्त्री] १. बुरा करनेवाली। २. पापी।
अपकर्म–संज्ञा पुं० पाप। बुरा काम। कुकर्म। कुचलन।
अपकर्ष–संज्ञा पुं० १. गिराना। २. नीचे की ओर खींचना। ३. उतार। कमी होना। ४. अनादर। अपमान। ५. मुख्य काल के रहते अमुख्य काल में कर्म करना। ६. जघन्यता।
अपकर्षण–संज्ञा पुं० खींचना। तानना।
अपकलंक–पुं० अपयश। कलंक। मिथ्यापवाद। दुर्नाम।
अपकाजी–वि० मतलबी। स्वार्थ पूरा करनेवाला।
अपकार–संज्ञा पुं० १. अहित। बुराई। अनिष्ट। हानि। क्षति। २. अनुपकार। नुकसान। ३. अनादर। अपमान।
अपकारक–वि० १. अनिष्टकारी। बुराई करनेवाला। हानिकारी। २. विरोधी। द्वेषी।
अपकारिता–संज्ञा स्त्री० अपकार (बुराई या हानि) करने की क्रिया या भाव।
अपकारी–वि० [स्त्री० अपकारिणी] १. हानि। बुराई करनेवाला। २. द्वेषी। विरोध करनेवाला।
अपकारीचार–*वि० हानि करनेवाला। विघ्न डालनेवाला।
अपकीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० अकीर्ति। अपयश। बुराई। बदनामी। निंदा।
अपकृत–वि० १. अपकार प्राप्त। २. जिसका विरोध किया गया हो। 'उपकृत' का उलटा। ३. अपमानित।
अपकृति–संज्ञा स्त्री० दे० "अपकार"।
अपकृष्ट–वि० [संज्ञा अपकृष्टता] १. पतित। भ्रष्ट। गिरा हुआ। २. अधम। नीच। ३. बुरा। खराब। निकृष्ट। ४. न्यून। ५. हटाया हुआ। ६. दूर। ७. नीचे लाया हुआ। ८. नीचा।
अपकृष्टता–संज्ञा स्त्री० १. जघन्यता। निकृष्टत्व। नीचता। २. दूरी।
अपक्रम–संज्ञा पुं० १. क्रम का न होना। व्यतिक्रम। उलट-पलट। गड़बड़। २. भागना। छूटना। पलायन।
अपक्रोश–संज्ञा पुं० निन्दन। भर्त्सन।
अपक्व–वि० १. कच्चा। जो पका हुआ न हो। २. जिसे अभ्यास न हो। असिद्ध।
अपगत–वि० [संज्ञा अपगति] भागा हुआ। हटा हुआ। दूर गया। मरा। मृत। नष्ट। गत।
अपगा–संज्ञा स्त्री० नदी।
अपघन–संज्ञा पुं० शरीर।
वि० बिना बादल का। मेघ-रहित।
अपघात–संज्ञा पुं० [वि० अपघातक, अपघाती] १. वध। हत्या। २. विश्वासघात। धोखा।
संज्ञा पुं० आत्महत्या।

अपघातक–संज्ञा पुं० विश्वासघाती। घातक।
अपच–संज्ञा पुं० कुपच। अजीर्ण।
अपचय–संज्ञा पुं० अजीर्ण। उबकाई। नाश। बर्बादी। गँवाना। खोना।
अपचार–संज्ञा पुं० [वि० अपचारी] १. बुरा बर्त्ताव। अनुचित आचरण। २. अनिष्ट। ३. बुराई। निंदा। अपयश। ४. कुपथ्य। स्वास्थ्य-नाशक व्यवहार। ५. टोटा। घाटा। क्षति। क्षीणता। ६. अनुपस्थिति। ७. अपराध। दोष।
अपचाल*–संज्ञा पुं० बुरा रास्ता। कुचाल। नटखटी। खोटाई।
अपचिति–संज्ञा स्त्री० पूजा। नाश।
अपचीकृत–संज्ञा पुं० सूक्ष्म भूत। आकाश आदि पाँच भूतों के पृथक्-पृथक् भाव।
अपची–संज्ञा स्त्री० गंडमाला रोग का भेद-विशेष।
अपछाया–संज्ञा स्त्री० प्रेत। उपदेवता।
अपजय–संज्ञा स्त्री० हार। पराजय।
अपजस*–संज्ञा पुं० दे० "अपयश"। बदनामी।
अपट–वि० [संज्ञा अपटुता] १. जो चतुर न हो। २. आलसी। सुस्त।
अपटक–संज्ञा पुं० अर्द्धांगी। पक्षपाती।
अपटन–संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।
अपटी–संज्ञा स्त्री० वस्त्रावरण। कनात। तंबू।
अपटु–संज्ञा पुं० १. अचतुर। निर्बुद्धि। अकुशल। अनिपुण। २. व्याधित। रोगी।
अपठ–वि० १. जो पढ़ा न गया हो। अपढ़। २. मूर्ख। ३. अनभ्यस्त।
अपठित–संज्ञा पुं० अशिक्षित। अध्ययनरहित।
अपठ्‌मान*–वि० १. न पढ़ने योग्य। २. जो न पढ़ा जाय।
अपड–संज्ञा पुं० स्थायी। अटल। पोढ़ा। दृढ़।
अपडर*–संज्ञा पुं० १. शंका। भय। २. मिथ्या भय। निष्कारण डर।
अपडरना*–क्रि० अ० डरना। भयभीत होना। शंकित होना।
अपड़ाना*–क्रि० अ० [संज्ञा अपड़ाव] १. रार या झगड़ा करना। २. खींचा-तानी करना।
अपड़ाव*–संज्ञा पुं० [क्रि० अपड़ाना] तकरार। झगड़ा। रार।
अपढ़–वि० जो पढ़ा न हो। अनपढ़। मूर्ख।
अपत*–वि० १. पत्र-रहित। जिसमें पत्ते न हों। २. नग्न। आच्छादन-रहित। ३. नीच। अधम। ४. निर्लज्ज। ५. पापी।
अपतई*–संज्ञा पुं० १. बेहयाई। निर्लज्जता। २. चंचलता। ३. उत्पात। ढिठाई।
अपताना*–संज्ञा पुं० जंजाल। प्रपंच। झगड़ा। माया।
अ-पति*–वि० विधवा। बिना पति की। वि० दुष्ट। पापी। संज्ञा स्त्री० १. दुर्दशा। दुर्गति। २. अपमान। अनादर।
अपतियारा–वि० विश्वासघातक। कपटी।
अपतोस*–संज्ञा पुं० दुख। रंज। असंतोष।
अपत्य–संज्ञा पुं० संतान।
अपत्य-शत्रु–संज्ञा पुं० कर्कट। केकड़ा।
अपत्य-स्नेह–संज्ञा पुं० संतान के प्रति स्वाभाविक मोह।
अपत्रप–वि० लज्जाहीन। निर्लज्ज।
अपथ–संज्ञा पुं० १. बीहड़ रास्ता। विकट मार्ग। २. कुपथ। बुरा मार्ग। ३. मार्ग-रहित।
अपथ्य–वि० १. जो पथ्य के योग्य न हो। स्वास्थ्यनाशक। २. अहितकर। बुरा। संज्ञा पुं० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।
अपथ्याशी–संज्ञा पुं० कुपथ्य-भोक्ता। कुपथ्य अभिलाषी।
अ-पद–संज्ञा पुं० १. पदरहित। २. बिना पैर के रेंगनेवाले जंतु। जैसे, साँप, केंचुआ आदि। ३. पंगु। ४. कर्मच्युत।
अपदस्थ–वि० स्थानभ्रष्ट। कर्मच्युत। पद-च्युत। अपने पद से हटाया गया।
अपदार्थ–संज्ञा पुं० अयोग्य वस्तु। अवस्तु। पदार्थभिन्न। अनुपम पदार्थ।
अपदेखा–वि० १. अपने को बड़ा समझने वाला। घमंडी। आत्मश्लाघी। २. स्वार्थी।
अपदेवता–संज्ञा पुं० प्रेत। पिशाच। निकृष्ट देवता।
अपदेश–संज्ञा पुं० छल। कपट। बहाना।

अपद्रव्य–संज्ञा पुं० १. बुरी चीज। निकृष्ट वस्तु। २. बुरा धन।

अपध्यस्त–संज्ञा पुं० अपमानित। परास्त।

अपध्वंसक–संज्ञा पुं० [वि० अपध्वंसी, अपध्वस्त] विनाश। क्षय। अध:पतन। अपमान। पराजय। हार।

अपनपौ*–संज्ञा पुं० १. आत्मीयता। २. संबंध। ३. आत्मभाव। आत्मस्वरूप। ४. संज्ञा। सुध। चेतना। होश। ज्ञान। ५. अहंकार। गर्व। ६. मर्यादा।

अपनयन–संज्ञा पुं० [वि० अपनीत] १. हटाना। दूर करना। स्थानान्तरित करना। २. गणित के समीकरण में किसी परिमाण को एक पक्ष से दूसरे पक्ष में ले जाना। ३. खंडन। ४. मरण। ५. निष्कृति।

अपना–सर्व० [क्रि० अपनाना] निज का (तीनों पुरुषों में)।
संज्ञा पुं० स्वजन। आत्मीय। संबंधी।
मुहा०–अपना-सा करना=अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना। भरसक करना। अपना-सा मुँह लेकर रह जाना=किसी बात में असफल होने पर लज्जित होना। अपनी अपनी पड़ना=अपनी अपनी चिंता में रहना। अपने तक रखना=किसी से न कहना। गुप्त रखना।

यौ०–अपने आप=स्वयं। खुद। स्वत:।

अपनाना–क्रि० स० १. अपना बनाना। अपनी शरण में लेना। २. अपने अधिकार में करना। ३. अपने अनुकूल करना। अपनी ओर करना। ४. अपना संबंध जोड़ना।

अपनापन–संज्ञा पुं० १. स्वजनता। आत्मीयता। २. आत्माभिमान।

अपनाम–संज्ञा पुं० बदनामी। निंदा।

अपनायत–संज्ञा स्त्री० १. आत्मीयता। अपनापन। अपने से संबंध। २. नाता। ३. गोता। घराना। ४. भाईचारा।

अपनीत–वि० हटाया गया। दूरीकृत। अपसारित।

अपनोदन–संज्ञा पुं० १. हटाना। २. खंडन। तोड़ना।

अपवश–१. स्वाधीन। स्वतंत्र। २. अपने वश में।

अपभय–संज्ञा पुं० १. निडरता। निर्भयता। २. व्यर्थ भय। ३. डर। भय।
वि० जो न डरे। निर्भय।

अपभ्रष्ट–वि० गिरा हुआ। पतित। विकृत। बिगड़ा हुआ।

अपभ्रंश–संज्ञा पुं० [वि० अपभ्रंशित] १. बिगड़ा हुआ शब्द। २. विकृति। बिगाड़। ३. पतन। गिराव। ४. व्याकरण-विरुद्ध शब्द। ग्राम्य भाषा। ५. तद्भव शब्द का और बिगड़ा रूप।

अपभाषा–संज्ञा स्त्री० १. गँवारी बोली। २. कुवाक्य। असाधु शब्द।

अपमान–संज्ञा पुं० १. असम्मान। अनादर। २. अवज्ञा। ३. बेइज्जती। तिरस्कार।

अपमानना*–क्रि० स० अनादर या अपमान करना। तिरस्कार करना।

अपमानित–वि० १. अपमान-प्राप्त। निंदित। २. बेइज्ज़त।

अपमानी–वि० [स्त्री० अपमानिनी] तिरस्कार या निरादर करनेवाला।

अपमार्ग–संज्ञा पुं० बुरा रास्ता। कुपंथ।

अपमृत्यु–संज्ञा स्त्री० १. असामयिक मृत्यु। **जैसे**–साँप आदि के काटने से मरना। २. अस्वाभाविक कारणों से अकाल मृत्यु।

अपयश–संज्ञा पुं० १. बुराई। बदनामी। दुर्नाम। २. लांछन। कलंक। अख्याति।

अपयोग–संज्ञा पुं० बुरा योग। कुसमय। अशकुन।

अपरंच–अव्य० और भी। पुन:। फिर भी।

अपरंपार*–वि० १. असीम। जिसका पारावार न हो। २. बेहद।

अपर–वि० [स्त्री० अपरा] १. प्रथम। पहला। २. पिछला। ३. इतर। भिन्न। अन्य। दूसरा।

अपरग–संज्ञा पुं० अन्यमार्गी। अन्यगामी। व्यभिचारी।

अपरछन*–वि० १. जो ढका न हो। २. प्रच्छन्न। छिपा। गुप्त।

अपरता–संज्ञा स्त्री० परायापन। भेद-भाव का न होना। अपनापन।
*वि० मतलबी। स्वार्थी।

अपरती*–संज्ञा स्त्री० १. स्वार्थ। मतलब। २. बेईमानी। ३. खेती न की गई भूमि।

अपरत्व–संज्ञा पुं० १. पुरानापन। अर्वाचीनता। २. परायापन। बेगानगी।

अपरना*–संज्ञा स्त्री०। १. बिना पत्तेवाली। जो पेड़ों के पत्ते भी न खाए। २. उमा। पार्वती। भवानी।

अपरबल*–वि० प्रबली। बलवान्।

अपरम्पार–संज्ञा पुं० अपार। अनन्त। असीम। अशेष।

अपरलोक–संज्ञा पुं० स्वर्ग। परलोक।

अपरस–वि० १. जो किसी से न छूआ गया हो। २. छूने के अयोग्य।
संज्ञा पुं० चर्मरोग विशेष जो हथेली और तलवे में होता है।

अपरांत–संज्ञा पुं० पश्चिम का देश।

अपरा–संज्ञा स्त्री० १. ब्रह्मविद्या या अध्यात्म के अतिरिक्त दूसरी विद्या। लौकिक विद्या। पदार्थविद्या। २. पश्चिम दिशा। ३. एकादशी-विशेष का नाम।

अपराग–संज्ञा पुं० द्वेष। वैर। अरुचि। विरक्ति। उदासीनता।

अपराजय–संज्ञा पुं० अपराभव।। जीत। पराभव-हीनता।

अपराजित–वि० जो जीता न जाय। अजेय। अनिर्जित।
सं० पुं० १. विष्णु। २. ऋषि-विशेष। ३. शिव।

अपराजिता–संज्ञा स्त्री० १. विष्णुक्रांता लता। २. दुर्गा। ३. कौआठोठी। ४. कोयल। ५. अयोध्या का एक नाम। ६. चौदह अक्षरों के एक वृत्त का नाम। ७. जयन्ती। जयन्ती वृक्ष। अशनपर्णी। स्वल्पफला। शेफाली। शमी-भेद। शंखिनी।
वि० न जीती हुई। उपमा के अयोग्य।

अपराध–संज्ञा पुं० [वि० अपराधी] १. दोष। पाप। गलती। जुर्म। २. अधर्म। अन्याय। ३. भूल। चूक।

अपराधी–वि० [स्त्री० अपराधिनी] अपराध करनेवाला। दोषी। पापी। मुलजिम। अन्यायी।

अपराधीन–वि० स्वाधीन। जो परतंत्र नहीं है।

अपरान्ह–संज्ञा पुं० दोपहर के पीछे का समय। तीसरा पहर। दिन का शेष भाग।

अपरिग्रह–संज्ञा पुं० १. अस्वीकार। दान का न लेना। २. विराग। आवश्यक धन से अधिक का त्याग। ३. संगत्याग। योगशास्त्र में पाँचवाँ यम। ४. अप्रतिग्रह।

अपरिचय–संज्ञा पुं० परिचय का न होना।

अपरिचित–वि० अनजान। अज्ञात। जिससे परिचय न हो। जो जाना-बूझा न हो।

अपरिच्छद–वि० १. वस्त्रहीन। २. मलिन वसन। अनुपयुक्त वेश।

अपरिच्छिन्न–वि० १. अभेद्य। जिसका खंड न हो सके। २. मिला हुआ। ३. सीमा-रहित। असीम। ४. खुला। अनढका।

अपरिणत–वि० १. अपरिपक्व। कच्चा। २. ज्यों का त्यों। न बदला गया।

अपरिणामी–वि० [स्त्री० अपरिणामिनी] १. परिणाम-शून्य। विकार-रहित। जिसकी दशा या रूप में परिवर्त्तन न हो। २. व्यर्थ। निष्फल। बेकार।

अपरिणीत–संज्ञा पुं० अविवाहित। कुमार। क्वारा।

अपरिणीता–संज्ञा स्त्री० अविवाहिता कन्या। अनूढ़ा।

अपरितुष्ट–वि० १. असन्तुष्ट। तृप्ति-रहित। २. निरानन्द।

अपरिपक्व–वि० १. कच्चा। अपक्व। २. अधकच्चा। अधकचरा। ३. अपटु। ४. परिपाकहीन।

अपरिपाटी–संज्ञा स्त्री० अनरीति। कुढंग।

अपरिमित–वि० १. बेहद। असीम। २. असंख्य। अगणित। ३. अधिक। प्रचुर। ४. परिमाणहीन।

अपरिमेय–वि० १. जिसका अंदाज न हो।

अकूत। २. अनगिनत। असंख्य। जिसका नाप या तौल न हो सके।

अपरिम्लान–वि० १. म्लानरहित। २. खिला हुआ।

अपरिवर्त्तनीय–वि० जिसमें कोई परिवर्त्तन या हेर फेर न हो सके।

अपरिष्कार–संज्ञा पुं० १. मलिन। मैला-कुचला। २. अनिर्मल। ३. अशुद्ध। ४. अस्पष्ट।

अपरिसर–वि० संकीर्ण। संकुचित।

अपरिहार–संज्ञा पुं० [वि० अपरिहारित, अपरिहार्य्य] १. जिसका निवारण न हो। जो रोका न जा सके। २. दूर करने के उपाय का न होना।

अपरिहार्य्य–वि० १. अनिवार्य्य। अवश्यंभावी। जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके। २. न छोड़ने योग्य। अत्याज्य। ३. सम्मान योग्य। आदरणीय। ४. जो छीनने के योग्य न हो। ५. जिसके बिना काम न चले। आवश्यक।

अपरीक्षित–वि० अनजाँचा। जिसकी जाँच न हुई हो।

अपरुद्ध–वि० १. खेदी। पछताऊ। पश्चात्तापी। क्षुब्ध। २. अप्रस्तुत।

अपरूप–वि० १. भद्दा। बदसूरत। बेडौल। २. अनोखा। अपूर्व। विकृत रूप।

अपरोक्ष–वि० प्रत्यक्ष। समक्ष। आँखों के सामने।

अपर्णा–संज्ञा स्त्री० १. उमा। पार्वती। २. दुर्गा। दे० "अपरना"।
वि० बिना पत्ते की।

अपर्याप्त–वि० स्वल्प। थोड़ा। न्यून।

अपलक–वि० जिसकी पलकें न गिरें। एकटक। क्रि० वि० बिना पलक झपकाए। टक लगाए।

अपलज्ज–संज्ञा पुं० १. बेहया। निर्लज्ज। २. नकचढ़ा।

अपलक्षण–संज्ञा पुं० बुरे लक्षण। बुरा चिह्न। अपशकुन।

अपलाप–संज्ञा पुं० १. व्यर्थ की बकवाद। २. ऊटपटाँग बकना। ३. असत्य कहना। छिपाना।

अपलोक–संज्ञा पुं० १. अपयश। २. दुर्गति। बदनामी। अपवाद। मिथ्या दोषारोपण।

अपवर्ग–संज्ञा पुं० १. निर्वाण। मोक्ष। मुक्ति। परमगति। २. त्याग। ३. दान। ४. निर्जन।

अपवर्जन–संज्ञा पुं० [वि० अपवर्जित] त्यागना। मुक्त करना। छोड़ना।

अपवर्तन–संज्ञा पुं० १. अपवर्त। २. संक्षेपकरण। अल्पकरण। ३. लेन-देन। ४. अंक काटना।

अपवश*–वि० अपने वश में। अपने अधीन। 'परवश' का उलटा।

अपवसना*–क्रि० अ० खिसकना। भागना। चल देना।
वि० बुरे वस्त्र पहिने हुए।

अपवाद–संज्ञा पुं० [वि० अपवादित] १. प्रतिवाद। खंडन। विरोध। २. निंदा। कलंक। अपकीर्ति। ३. पाप। दोष। ४. वह नियम जो व्यापक नियम में न आवे। उत्सर्ग का विरोधी। ५. राय। सम्मति। ६. आज्ञा। आदेश।

अपवादक, **अपवादी**–वि० १. निंदा करनेवाला। २. विरोधी। बाधा पहुँचानेवाला।

अपवादित–वि० दुर्नामग्रस्त। परिवादयुक्त।

अपवारण–संज्ञा पुं० [वि० अपवारित] १. रोक। व्यवधान। ओट। आड़। २. हटाने या दूर करने का काम। ३. अंतर्द्धान। गायब।

अपवाहन–संज्ञा पुं० १. दुष्ट वाहन। २. फुसलाकर लाना। भगा देना। ३. एक राज्य से भगाकर दूसरे राज्य में बसाना।

अपवित्र–वि० अशुद्ध। जो पवित्र न हो। नापाक। मलिन।

अपवित्रता–संज्ञा स्त्री० अशुद्धता। अशुद्धि। अशौच। मैलापन।

अपविद्ध–वि० १. त्यक्त। छोड़ा हुआ। २. बेधा हुआ। विद्ध। प्रत्याख्यात। निराकृत। चूर्णित।
संज्ञा पुं० वह पुत्र जिसको उसके माता-पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्र के समान पाला हो (स्मृति)।

अपविद्ध पुत्र–संज्ञा पुं० १. बारह प्रकार

के गौण पुत्रों में से एक पुत्र २. पिता-माता से छोड़ा हुआ पुत्र।
अपव्यय–संज्ञा पुं० १. निरर्थक व्यय। वृथा व्यय। फजूलखर्ची। २. कुकर्म में धन फेंकना। बुरे कामों में खर्च।
अपव्ययी–वि० १. अधिक खर्च करनेवाला। फजूलखर्ची। अर्थनाशक। २. निरर्थक।
अपशकुन–संज्ञा पुं० बुरा शकुन। असगुन। अशुभ-सूचक। अमंगल लक्षण।
अपशद–संज्ञा पुं० "अपसद"। नीच। यह शब्द जिस शब्द के अन्त में आता है, उस शब्द का नीच अर्थ कर देता है–
यथाः–धृतराष्ट्रापशद=नीच धृतराष्ट्र।
ब्राह्मणापशद=नीच ब्राह्मण।
अपशब्द–संज्ञा पुं० १. बुरा शब्द। गाली। कुवाच्य। २. पाद। अपान वायु। गोज। ३. व्यर्थ का शब्द। ४. अशुद्ध शब्द। ५. दूसरी भाषा का शब्द।
अपसगुन*–संज्ञा पुं० दे० "अपशकुन"।
अपसना*–क्रि० अ० १. भागना। चल देना। २. खिसकना। सरकना।
अपसर–वि० १. अपने मन का। २. आप ही आप। मनमाना। ३. सटकना। खसकना।
अपसरण–संज्ञा पुं० प्रस्थान। चला जाना।
अपसर्जन–संज्ञा पुं० त्याग करना। छोड़ देना।
अपसर्प–संज्ञा पुं० १. प्रणिधि। २. गूढ़ पुरुष। ३. हरकारा। ४. दूत। चर।
अपसव्य–वि० १. 'सव्य' का उलटा। शरीर का दाहिना हिस्सा। दक्षिण। २. विरुद्ध। उलटा। ३. दहिने कंधे पर जनेऊ रक्खे हुए।
अपसौन–क्रि० अ० उपस्थित होना। पहुँचना।
अपसोसना–क्रि० अ० सोच या अफसोस करना।
अपसौन–संज्ञा पुं० असगुन। बुरा सगुन।
अपस्नान–संज्ञा पुं० [वि० अपस्नात] मृतक-स्नान। स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं।
अपस्मार–संज्ञा पुं० मूर्च्छा। मिरगी। रोग-विशेष जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है।
अपस्वर–संज्ञा पुं० बुरा।बेसुरा या कर्कश स्वर।
अपस्वार्थी–वि० अपना मतलब साधनेवाला। खुदगरज।
अपह–वि० विनाशक। नाश करनेवाला। जैसे क्लेशापह।
अपहत–वि० १. मारा हुआ। नष्ट किया हुआ। २. अलग किया हुआ।
अपहनन–संज्ञा पुं० हत्या। वध। घात।
अपहरई–क्रि० स० १. चुराता है। २. नाश करता है। ३. चुरा ले। ४. छीन ले। ५. नाश करे।
अपहरण–संज्ञा पुं० [वि० अपहरणीय, अपहरित, अपहृत, अपहर्ता] १. लूट। हरण। २. चोरी। ३. छिपाव।
अपहरना–क्रि० स० १. लूटना। ले लेना। छीनना। २. चुराना। ३. घटाना। कम करना। नाश करना।
अपहर्ता–संज्ञा पुं० १. हर लेनेवाला। छीननेवाला। ले लेनेवाला। २. चोर। लुटेरा। लूटनेवाला। ३. जो छिपावे।
अपहा–वि० १. हन्ता। हत्याकारी। २. हिंसक। वधिक।
अपहार–संज्ञा पुं० १. अपचय। हानि। २. धन का निष्कारण व्यय।
अपहारक–वि० १. अपहरणकर्ता। २. तस्कर। चोर।
अपहारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अपहारिणी] दे० "अपहर्त्ता"। अपहरण करनेवाला।
अपहास–संज्ञा पुं० १. उपहास। २. मजाक। दिल्लगी। ३. अकारण हँसी।
अपहृत–वि० छीना हुआ। लूटा हुआ। चुराया हुआ।
अपह्नव–संज्ञा पुं० १. दुराव। छिपाव। २. कपट। ३. बहाना। मिस। टाल-मटूल। ४. अपलाप।
अपह्नुति–संज्ञा स्त्री० १. छिपाव। दुराव। २. टाल-मटूल। बहाना। ३. काव्यालंकार विशेष जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय।

अपांग–संज्ञा पुं० आँख की कोर। नेत्रकोण। कटाक्ष। आँख का कोना। नेत्र का अन्त भाग।
वि० अंगहीन। अंगभंग।

अपांनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।

अपा–संज्ञा पुं० घमंड। गर्व।

अपाक–वि० १. अपचार। २. अजीर्णता। संज्ञा पुं० १. उदरामय। २. अपक्व। ३. आम। ४. असिद्ध।

अपाकरण–संज्ञा पुं० १. पृथक् करना। अलगाना। हटाना। दूर करना। २. चुकता करना।

अपांग दर्शन–संज्ञा पुं० १. टेढ़ा देखना। २. कटाक्ष।

अपाटव–संज्ञा पुं० १. अपटुता। अनिपुणता। अचतुराई। २. बोदापन। मूर्खता।

अपात्र–वि० १. अयोग्य। कुपात्र। असत्पात्र। २. मूर्ख। अनारी। ३. श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य (ब्राह्मण)।

अपात्रीकरण–संज्ञा पुं० १. नवनिधि पापों में से एक पाप विशेष। २. अयथा निर्णय। ३. जाति-भ्रष्ट करना।

अपादान–संज्ञा पुं० १. स्थानान्तरीकरण। हटाना। विभाग। अलगाव। २. व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारंभ सूचित होता है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे "घर से"।

अपान–संज्ञा पुं० १. दस या पाँच प्राणों में से एक। २. अपान वायु। ३. वह वायु जो बाल से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है। ४. मल-मूत्र को बाहर निकालने-वाली वायु। ५. गुदा। गुह्यस्थान।
*संज्ञा पुं० १. आत्मज्ञान। आत्मभाव। आत्मतत्त्व। २. भरम। ३. आपा। आत्मगौरव। ४. सुध। चेतना। होश-हवास। ५. अहम्। घमंड। अभिमान।
* सर्व० दे० "अपना"।

अपान-वायु–संज्ञा पुं० १. पाँच प्रकार की वायु में से एक। २. पाद। गुदास्थ वायु।

अपाप–वि० १. निर्दोष। २. निष्पाप। धर्मी।

अपामार्ग–संज्ञा पुं० चिचड़ा। चिचड़ी। अंझा-झारा। लटजीरा।

अपाय–संज्ञा पुं० १. अलगाव। विश्लेष। २. पीछे हटना। अपगमन। ३. नाश। ४. अन्यथाचार। कुरीति। ५. क्षय। हानि। अपचय।
वि० १. लँगड़ा। बिना पैर का। २. अपाहिज। निरुपाय। असमर्थ।

अपायी–वि० १. मृत। २. चलित। ३. पलायित।

अपार–वि० १. जिसकी सीमा न हो। असीम। बेहद। २. अतिशय। असंख्य। बहुत। ३. पारावारहीन। ४. कूलरहित।

अपारक–संज्ञा पुं० अक्षम। क्षमताशून्य।

अपार्थ–संज्ञा पुं० कविता का वह दोष जिसमें वाक्यार्थ स्पष्ट न हो।

अपार्थक्य–संज्ञा पुं० १. अभिन्नता। २. पृथक्-ताशून्य। अभेद। ३. एकत्व।

अपाव*–संज्ञा पुं० अत्याचार। अन्याय। उपद्रव।

अपावन–वि० [स्त्री० अपावनी] अशुचि। अशुद्ध। जो पवित्र न हो। मलिन।

अपाश्रय–वि० १. अनाथ। २. दीन। ३. निराश्रय। आश्रयरहित।

अपाश्रित–वि० १. त्यागी। २. एकान्तसेवी।

अपाहज या अपाहिज–वि० १. लूला-लँगड़ा। अंगभंग। खंज। २. जो काम करने के योग्य न हो। ३. आलसी। सुस्त।

अपि–अव्य० १. भी। ही। २. ठीक। निश्चय।

अपि च–अव्य० वाक्यान्तर-द्योतक।

अपिंडी–वि० पिंड या शरीर रहित। अशरीरी।

अपितु–अव्य० १. किंतु। लेकिन। २. बल्कि।

अपिधान–संज्ञा पुं० आवरण। आच्छादन। ढकना। ढक्कन।

अपीच –वि० सुन्दर। खूबसूरत।

अपीन–वि० १. हलका। २. क्षीण। ३. कृश।

अपीनस–संज्ञा पुं० नाक का रोग-विशेष। पीनस।

अपील–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. विचारार्थ प्रार्थना। पुनर्विचार के लिए निवेदन। २. मातहत अदालत के फैसले के विरुद्ध

ऊँची अदालत में फिर से विचार के लिए अभियोग उपस्थित करना।

अ-पुत्र–वि० पुत्रहीन। जिसके संतान न हो। निर्वंश।

अपुनपो–संज्ञा पुं० अपनापन।

अपुनीत–वि० १. अशुद्ध। जो पवित्र न हो। २. दोषयुक्त। दूषित।

अपूठन*–क्रि० स० १. नाश करना। ध्वस्त करना। २. उलट देना।

अपूठा*–वि० १. अनभिज्ञ। अपरिपक्व। अजानकार।

वि० अविकसित। जो खिला न हो।

अपूत–वि० १. अशुद्ध। अपवित्र। २. निपूता। जिसके पुत्र न हो।

*संज्ञा पुं० बुरा लड़का। कुपूत।

अपूप–संज्ञा पुं० यज्ञीय हविष्यान्न विशेष। पुआ।

अपूर–वि० १. पूर्ण। २. भरपूर। ३. बहुत।

अपूरना*–क्रि० स० १.भरना। २. फूँकना। ३. बजाना (शंख)।

अपूरा*–संज्ञा पुं० [स्त्री० अपूरी] १. फैलाहुआ। २. व्याप्त। ३. भरा हुआ।

अपूर्ण–वि० १. जो पूरा न हो। २. अधूरा। जो पूर्ण न हो। असमाप्त। ३. कम।

अपूर्णता–संज्ञा स्त्री० १. अधूरापन। २. कमी। न्यूनता।

अपूर्णभूत–संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय। जैसे—वह खाता था।

अपूर्व–वि० १. जो पहले न रहा हो। २. अनोखा। अद्भुत। अनुपम। विचित्र। ३ श्रेष्ठ। उत्तम।

अपूर्वता–संज्ञा स्त्री०अनोखापन। विलक्षणता।

अपूर्वरूप–संज्ञा पुं० विशेष काव्यालंकार जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का निषेध हो।

अपेक्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० अपेक्षित] १. आवश्यकता। २. इच्छा। आकांक्षा। अभिलाषा। चाह। ३. सहारा। भरोसा। आशा। ४. कार्य्य-कारण का अन्योन्य संबंध। ५. तुलना। बराबरी। समानता।

अपेक्षाकृत–अव्य० बराबरी में। तुलना में।

अपेक्षाबुद्धि–संज्ञा स्त्री० अनेक विषयों को एक करनेवाली बुद्धि।

अपेक्षित–वि० १. जिसकी आवश्यकता हो। जिसकी अपेक्षा हो। आवश्यक। २. अभिलषित। वांछित। चाहा हुआ।

अपेक्ष्य–वि० अपेक्षा करने के योग्य। दे० "अपेक्षित"।

अपेख–वि० अदृश्य। अलक्ष। अदृष्ट।

अपेय–वि० जो पीने योग्य न हो। पान निषिद्ध।

अपेल*–वि० १. अचल। जो हटे या टले नहीं। अटल। २. मानने योग्य।

अपैठ*–वि० जहाँ पैठ न हो सके। दुर्गम। अगम।

अपोगंड–वि० १. सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्था का। २. बालिग। ३. बालक। ४. मूर्ख। ५. कम या अधिक अंगोंवाला।

अपोहन–संज्ञा पुं० तर्क के द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करना।

अपौरुष–संज्ञा पुं० १. कापुरुषत्व। २. असाहस। पुरुषार्थहीन। ३. नपुंसक।

अप्रकट–वि० जो प्रकट न हो। गुप्त। छिपा हुआ।

अप्रकाश–वि० १. अप्रकट। अप्रसिद्ध। २. गुप्त। छिपा।

अप्रकाशित–वि० १. अंधेरा। जहाँ प्रकाश न हो। २. जो गुप्त हो। अप्रकट। छिपा हुआ। ३. जो सबके सामने न रक्खा गया हो। ४. जो छापा न गया हो।

अप्रकाश्य–वि० गोपनीय। न प्रकाश करने योग्य।

अप्रकृत–वि० १. अप्राकृतिक। जो स्वाभाविक न हो। २. कृत्रिम। बनावटी। ३. असत्य। झूठा। ४. उपस्थित विषय से असंबद्ध।

अप्रगल्भ–वि० १. अप्रौढ़। कच्चा। २. निरुत्साहित।

अप्रचलित–वि० जिसका चलन न हो। जो

प्रचलित न हो। जिसका व्यवहार न होता हो। अप्रयुक्त।

अप्रणय–संज्ञा पुं० प्रीतिच्छेद। विशाद। भेद। अमीत। प्रकरण भिन्न। अप्रेम। अप्रीति।

अप्रताप–वि० तेजहीन। अप्रबल। अप्रचण्ड।

अप्रतिभ–वि० १. उदास। सुस्त। मंद। जिसमें प्रतिभा न हो। २. दुर्बुद्धि ३. लज्जावान।

अप्रतिभा–संज्ञा स्त्री० १. प्रतिभा का न होना। २. न्याय में निग्रह-स्थान विशेष।

अप्रतिम–वि० अनोखा। अद्वितीय। असदृश। अतुल्य। निरुपम। अनुपमेय। असमान। बेजोड़।

अप्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [वि० अप्रतिष्ठित] १. अपमान। अनादर। बेइज्जती। २. बुराई। अपयश।

अप्रतिष्ठित–वि० अपमानित। अनादृत। तिरस्कृत।

अप्रतिरथ–संज्ञा पुं० १. यात्रा गमन। सैनिक गमन। २. सामवेद। ३. अमंगल। ४. योद्धा। ५. योद्धारहित।

अप्रतिहृ–वि० अनाघात। अवंचित। अव्यतिक्रम।

अप्रतिहत–वि० अपराजित जो प्रतिहत न हो।

अप्रतीति–वि० १. विश्वास के अयोग्य। २. अज्ञान। ३. अश्रद्धेय।

अप्रतुल–संज्ञा पुं० अभाव। असंगति।

अप्रत्यक्ष–वि० १. जो प्रत्यक्ष न हो। परोक्ष। २. छिपा। गुप्त। अदृष्ट। अलक्षित।

अप्रत्यय–संज्ञा पुं० अविश्वास। सन्देह।

अप्रत्याशित–वि० जिसकी आशा न की गई हो। अचानक होनेवाला।

अप्रथा–संज्ञा स्त्री० अव्यवहार। छिपाव।

अप्रधान–वि० १. गौण। २. कनिष्ठ। ३. जघन्य। क्षुद्र।

अप्रमाण–संज्ञा पुं० अनिर्दशन। अदृष्टान्त। अशास्त्र।

अप्रमाद–संज्ञा पुं० प्रमाद का अभाव। बुद्धि का ठीक-ठिकाने रहना।
वि० प्रमादरहित।

अप्रमेय–वि० १. नापे जाने के अयोग्य। असीम। अनंत। अपार। २. जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो सके।

अप्रयुक्त–वि० जो प्रयोग में न आया हो। जिसका व्यवहार न हुआ हो।

अप्रसन्न–वि० १. नाराज। २. जो खुश न हो। जो संतुष्ट न हो। ३. खिन्न। दुखी। उदास। ४. मलिन। गँदला। मैला।

अप्रसन्नता–संज्ञा स्त्री० १. नाराजगी। असंतोष। २. क्रोध। रोष। गुस्सा। ३. खिन्नता।

अप्रसाद–संज्ञा पुं० निग्रह। असम्मति।

अप्रसिद्ध–वि० १. जो विख्यात न हो। २. अप्रकट। छिपा हुआ।

अप्रस्तुत–वि० १. अनुपस्थित। जो उपस्थित न हो। गैरहाजिर। जो प्रस्तुत न हो। २. जिसका प्रसंग न आया हो।
संज्ञा पुं० उपमान।

अप्रस्तुत प्रशंसा–संज्ञा स्त्री० अलंकार विशेष जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता है।

अप्राकृत–वि० अप्राकृतिक। जो स्वाभाविक न हो। असाधारण।

अप्राप्त–वि० १. दुर्लभ। जो प्राप्त न हो। २. जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३. परोक्ष। अप्रत्यक्ष। अप्रस्तुत। ४. अनागत।

अप्राप्तव्यवहार–वि० नाबालिग। जो सोलह वर्ष से कम का हो (बालक)।

अप्राप्य–वि० अलभ्य। जो प्राप्त न हो सके। न मिलने लायक।

अप्रामाणिक–वि० [स्त्री० अप्रामाणिकी] १. प्रमाणशून्य। जो प्रमाण से सिद्ध न हो। ऊटपटाँग। २. विश्वास न करने योग्य।

अप्रासंगिक–वि० १. जिसका कोई प्रसंग न हो। २. जिसकी कोई बात न हुई हो। प्रसंग से असंबद्ध। ३. जिसका कोई क्रम न हो।

अप्रिय–वि०–१. जो प्रिय न हो। २. जो न रुचे। ३. अनचाहा। अनभीष्ट। जिसकी चाह न हो। ४. अहित।

अप्रियवचन–संज्ञा पुं० निष्ठुर वाक्य। कुवाक्य।

अप्रियवक्ता–संज्ञा पुं० निष्ठुरभाषी। उग्रवक्ता।

अप्रीति–संज्ञा स्त्री० अप्रणय। असद्भाव। अप्रेम। अरुचि। वैर।

अप्रतीतिकर–संज्ञा पुं० अरुचिकर। निठुर। कठोर।

अप्रैल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अँगरेजी चौथे मास का नाम।

अप्सरा–संज्ञा स्त्री० १. जल या भाप के कण। २. वेश्याओं की जाति-विशेष। ३. इंद्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना। परी। स्वर्ग की वेश्या।

अफ़ग़ान–संज्ञा पुं० [अ०] काबुली। अफगानिस्तान-निवासी।

अफ़यून–संज्ञा स्त्री० दे० "अफ़ीम"। एक प्रकार का नशीला द्रव्य।

अफरना–क्रि० अ० १. पेट का फूलना। २. भोजन से तृप्त होना। भर पेट खाना। ३. ऊबना। ४. अधिक की इच्छा न रखना।

अफरा–संज्ञा पुं० अपच या वायु से पेट फूलना।

अफराई–संज्ञा स्त्री० अघाना। अफरना। परितृप्ति।

अफराना*–क्रि० अ० अघाना। भोजन से तृप्ति करना।

अफल–वि० १. फलरहित। निष्फल। २. वृथा। जिसका कोई प्रयोजन न हो। ३. वन्ध्या। बाँझ। ४. झाऊ का वृक्ष।

अफला–संज्ञा स्त्री० आमलकी वृक्ष। घृतकुमारी। घीकुवार।

अफ़लातून–संज्ञा पुं० पश्चिम का एक दार्शनिक।

अफ़वाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जो खबर पक्की न हो। अनिश्चित चर्चा। २. जनश्रुति। गप्प। किंवदन्ती।

अफ़सर–संज्ञा पुं० [अंग्रे० आफ़िसर] १. मुखिया। प्रधान। २. अधिकारी। हाकिम।

अफ़सरी–संज्ञा स्त्री० १. अधिकार। २. शासन। हुकूमत। ३. बड़प्पन।

अफ़साना–संज्ञा पुं० [फा०] कथा। कहानी। किस्सा।

अफ़सोस–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुःख। शोक। रंज। २. पछतावा। पश्चात्ताप। ३. खेद।

अफ़ीम–संज्ञा स्त्री० आफू। एक प्रकार की नशीली वस्तु। पोस्त के ढेंढ़ का गोंद जो कड़आ, मादक और विष होता है। औषधविशेष।

अफ़ीमची–संज्ञा पुं० १. अफ़ीम खानेवाला। २. जिसे अफ़ीम खाने की आदत या नशा हो।

अफ़ीमी–वि० अफ़ीम खानेवाला। अफीमची।

अफुल्ल–वि० १. उदास। २. पुष्परहित। बिना फूल का। ३. कली।

अफेंडा–संज्ञा पुं० १. मनमौजी। २. अपमानी। अहंकारी।

अफेन–वि० १. फेनरहित। झागरहित। २. कफरहित।

अफैलावट–संज्ञा पुं० १. संकीर्ण। २. विस्ताररहित।

अब–क्रि० वि० १. इस समय। इस घड़ी। इस क्षण। २. अभी। अब ही।

मुहा०–अब की=इस बार। अब जाकर=इतनी देर पीछे। अबतब लगना या होना=मरने का समय निकट पहुँचना।

अबकर्तन–संज्ञा पुं० १. सूत्र-यंत्र। २. चरखा।

अबखरा–संज्ञा पुं० [अ०] वाष्प। भाप।

अबटन –संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

अबतब–अव्य० १. मृतप्राय। तुरन्त। अभी। २. जब कभी।

अबतर–वि० [फा०] [संज्ञा अबतरी] १. बिगड़ा हुआ। २. खराब। बुरा।

अबद्ध–वि० १. मुक्त। जो बँधा न हो। २. स्वतंत्र। निरंकुश।

अबध–वि० १. खाली न जानेवाला। अचूक। २. जो रोका न जा सके। ३. जिसका बध न किया जा सके। ४. जिसे बाँधा न जा सके।

अबधू*–वि० अबोध। अज्ञानी। मूर्ख। अनाड़ी।
संज्ञा पुं० अवधूत। त्याग करनेवाला। विरक्त।

अबधूत–संज्ञा पुं० १. योगी। २. संन्यासी। ३. महात्मा। ४. जीवन-मुक्त। ५. पाप-रहित।

अबध्य–वि० [स्त्री० अबध्या] १. जिसे मारना उचित न हो। २. जिसे शास्त्रानुसार प्राणदंड न दिया जा सके। जैसे, स्त्री, गुरु, स्नातक, दूत, ब्राह्मण। ३. जिसे कोई मार न सके।

अबनी–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनी"। पृथ्वी। धरणी। धरती।

अबन्धित–वि० १. बंधनरहित। स्वच्छंद। २. स्वेच्छाचारी।

अबर*–वि० निर्बल। कमजोर।

अबरक–संज्ञा पुं० १. धातु विशेष, जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती हैं। भोड़र। भोडल। २. पत्थर-विशेष।

अबरख–संज्ञा पुं० दे० "अबरक"।

अबरस–संज्ञा पुं० [फा०] १ घोड़े का रंग-विशेष, जो सब्ज से कुछ खुलता हुआ सफेद होता है। २. इस रंग का घोड़ा।

अबरा–संज्ञा पुं० [फा०] १. उपल्ला। उपल्ली। 'अस्तर' का उलटा। दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। २. गाँठ जो न खुल सके। ३. उलझन।

अबरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक तरह का धारीदार चिकना कागज। २. पीला पत्थर-विशेष, जो पच्चीकारी के काम में आता है। ३. एक तरह की लाह की रँगाई।

अबरू–संज्ञा स्त्री० [फा०] भौंह। दे० "अब्रू"।

अबल–वि० बलरहित। निर्बल। दुबला। कमजोर।

अबलक–वि० दोरंगा। कबरा। संज्ञा पुं० वह बैल या घोड़ा जिसका रंग सफेद और काला हो।

अबलखा–संज्ञा पुं० काला पक्षी-विशेष।

अबला–संज्ञा स्त्री० बलहीना। नारी। स्त्री। औरत।

अबस–क्रि० वि० जो अपने वश में न हो।

अबहन–संज्ञा पुं० उबटन। देह साफ करने के लिए सरसों, चिरौंजी आदि का लेप।

अबवाब–संज्ञा पुं० [अ०] वह अधिक कर जो सरकार मालगुजारी पर लगाती है।

अबा–संज्ञा पुं० [अ०] पहनावा-विशेष जो अंगे के नीचे पहना जाता है।

अबाती*–वि० १. वायुरहित। २. जिसे हवा न हिलाती हो। ३. जो भीतर-भीतर सुलगनेवाला हो।

अबादान–वि० [अ० आबाद] भरा-पूरा। पूरा बसा हुआ।

अबादानी–संज्ञा स्त्री० [फा० आबादानी] १. आबादी। बस्ती। २. पूर्णता। ३. रौनक। चहल-पहल। ४. शुभकामना।

अबाध–वि० १. निर्विघ्न। बाधारहित। बिना रोक-टोक का। २. असंख्य। अपार। ३. जो असंगत न होता हो।

अबाधित–वि० १. निर्विघ्न। बेरोक। २. स्वतंत्र।

अबाध्य–वि० १. जो रोका न जा सके। २. आवश्यक।

अबान*–वि० १. निहत्था। २. शस्त्र या हथियार-रहित।

अबाबील–संज्ञा स्त्री० [फा०] काले रंग की चिड़िया-विशेष। कन्हैया। कृष्णा।

अबार*–संज्ञा स्त्री० दे० "अबेर"। बेर। देर। विलंब।

अबास*–संज्ञा पुं० घर। मकान। वासस्थान।

अबीर–संज्ञा पुं० [अ०] रंगीन बुकनी या अबरक का चूर जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों को लगाते हैं।

अबीरी–वि० [अ०] अबीर के रंगवाला। कुछ कुछ स्याही लिये लाल रंग का।
संज्ञा पुं० अबीरी रंग।

अबूझ–वि० अज्ञानी। अबोध। नासमझ। मूर्ख। नादान।

अबूत*–वि० १. निकम्मा। व्यर्थ का। २. निःसंतान। ३. शक्तिहीन।

अबे–अव्य० हे। अरे (छोटे या नीच के लिए संबोधन)।

मुहा०—अबे-तबे करना=अपमानजनक वाक्य बोलना।
अबेध—वि० जो बेधा या छेदा न गया हो।
अबेर*—संज्ञा स्त्री० देरी। विलंब।
अबेश*—वि० बहुत। ज्यादा। अधिक।
अबोध—संज्ञा पुं० नासमझी। अज्ञता। मूर्खता। वि० अनजान। मूर्ख।
अबोल*—वि० १. चुपचाप। अवाक्। मौन। २. जिसके बारे में कह या बोल न सके। अनिर्वचनीय।
संज्ञा पुं० बुरे वचन। बुरा बोल।
अबोला—संज्ञा पुं० जो न बोले। दुख या रूठने के कारण मौन।
अब्ज—संज्ञा पुं० १. जो वस्तु जल से उत्पन्न हुई हो। २. पद्म। कमल। ३. शंख। ४. कपूर। ५. चंद्रमा। ६. धन्वन्तरि। ७. हिज्जल। ईजड़ ८. अरब। सौ करोड़। ९. चक्र।
अब्जद—संज्ञा पुं० [अ०] वर्णमाला। अरबी में अक्षरों द्वारा अंक सूचित करने की प्रणाली।
अब्जा—संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।
अब्द—संज्ञा पुं० १. संवत्सर। २. वर्ष। साल। ३. मेघ। बादल। ४. आकाश। ५. एक पर्वत। वि० जल देनेवाला।
अब्बा—संज्ञा पुं० [फा०] पिता। बाप।
अब्धि—संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. तालाब। सरोवर। ३. चार और सात की संख्या। ४. अर्णव।
अब्धिज—संज्ञा पुं० [स्त्री० अब्धिजा] १. समुद्र से उत्पन्न हुई वस्तु। २. चंद्रमा। ३. शंख। ४. अश्विनीकुमार।
अब्धिनगरी—संज्ञा स्त्री० द्वारकापुरी।
अब्बास—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० अब्बासी] गुले अब्बास। गुलाबाँस। पौधा-विशेष जो फूल के लिए लगाया जाता है।
अब्बासी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार की कपास, जो मिस्र में होती है। २. लाल रंग-विशेष।
अब्र—संज्ञा पुं० [फा०] मेघ। बादल।
अब्रू—संज्ञा स्त्री० [फा०] भौंह।
अब्रह्मण्य—संज्ञा पुं० १. अब्राह्मणोचित कर्म। जैसे—हिंसा-आदि। २. जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो। ३. एक प्रकार, जो पुराने काल में 'अनुचित कर्म हो गया' की सूचक थी।
अभंग—वि० १. पूरा। अखंड। २. जिसका नाश न हो। जो मिटे या नष्ट न हो। ३. बराबर। लगातार।
अभंगपद—संज्ञा पुं० अलंकार-विशेष। वह श्लेष, जिसमें अक्षरों को इधर-उधर बिना किये ही अर्थ प्रकट हों।
अभंगी*—वि० १. पूरा। जो बटा न हो। अखंड। २. जिसका कोई कुछ ले न सके।
अभंजन—वि० अखंड। अटूट।
अभक्त—वि० १. भक्तिरहित। श्रद्धाहीन। २. भगवद्‌विमुख। ३. शठ। ४. जो अलग न किया गया हो। ५. पूरा।
अभक्ष या अभक्ष्य—वि० १. न खाने योग्य। अखाद्य। २. जिसका खाना मना हो।
अभग्न—वि० पूरा। अखंड।
अभद्र—वि० १. अशिष्ट। बेहूदा। २. नीच। कमीना। ३. अशुभ।
अभद्रता—संज्ञा स्त्री० १. अशिष्टता। बेहूदगी। २. अमांगलिकता।
अभयंकर—वि० जो भयंकर न हो। दे० "अभयकर"।
अभय—वि० [स्त्री० अभया] १. निडर। निर्भय। २. त्रासरहित।
मुहा०—अभय देना या अभय बाँह देना=शरण देना। भय से बचाने का वचन देना।
अभयकर—वि० अभय देनेवाला। डर दूर करनेवाला। दुख से उद्धार करनेवाला।
अभयदान—संज्ञा पुं० १. शरण देना। रक्षा करना। भय से बचाने का वचन देना। २. दुःख से उद्धार।
अभयपद—संज्ञा पुं० मोक्ष। मुक्ति।
अभयवचन—संज्ञा पुं० रक्षा का वचन। भय से बचाने की प्रतिज्ञा।
अभया—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। भगवती। २. हर्र या हरीतकी-विशेष।
अभर*—वि० जो ढोने योग्य न हो। दुर्वह।

अभरन*–संज्ञा पुं० दे० "आभरण"। आभूषण। अलंकार। गहना।
वि० १. अनादृत। अपमानित। २. दुर्दशा-ग्रस्त। ३. जलील।
अभरम*–वि० १. जो भ्रम न करे। अभ्रांत। २. निडर। निःशंक। ३. अमर्यादा। क्रि० वि० निश्चय। निःसंदेह।
अभल*–वि० जो अच्छा न हो। बुरा।
अभव्य–वि० १. जो होने योग्य न हो। २. अनोखा। अद्भुत। ३. बुरा। अशुभ।
अभाऊ*–वि० १. अच्छा न लगनेवाला। २. अशोभित।
अभाग*–संज्ञा पुं० दे० "अभाग्य"। विपत्ति। दुर्दशा। विपद।
अभागा–वि० [स्त्री० अभागिनी] भाग्य-हीन। मंदभागी। बदकिस्मत।
अभागी–वि० [स्त्री० अभागिनी] १. भाग्य-हीन। २. जो सम्पत्ति के भाग का अधिकारी न हो।
अभाग्य–संज्ञा पुं० भाग्यहीनता। दुर्भाग्य। बदकिस्मती।
अभाजन–वि० १. पात्र-रहित। २. कुपात्र। ३. अविश्वासी।
अभार–वि० १. हलका। २. लघु। अगुरु।
अभाव–संज्ञा पुं० १.अविद्यमानता। अनुपस्थित होना। न होना। २. कमी। त्रुटि। ३. टोटा। घाटा। ४. बुरा भाव। ५. विरोध।
अभावना–वि० जो अच्छा न लगे। अप्रिय।
अभावनीय–वि० अचिन्तनीय। अतर्क्य। जिसका पहले से अनुमान या विचार न किया गया हो। अकल्पित। अचिन्त्य।
अभि–उप० एक उपसर्ग, जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—१. सामने। २. बुरा। ३. इच्छा। ४. समीप। ५. बारंबार। ६.अच्छी तरह। ७. दूर। ८. ऊपर। ९. ओर। तरफ। १०. आता हुआ। ११. चौफेरा। १२. आगे। १३. समन्तत्। १४. उभयार्थ। १५. वीप्सा। १६. इत्थम्भाव। १७. धर्षण। १८. अभिलाष। १९. आभिमुख्य। २०. चिह्न। २१. औत्सुक्य।
अभिक–संज्ञा पुं० कामुक। लम्पट। लुच्चा।
अभिक्रमण–संज्ञा पुं० १. धावा। चढ़ाई। २. पास आना। पहुँचना।
अभिख्या–संज्ञा स्त्री० १. नाम। २. शोभा। ३. उपाधि।
अभिगमन–संज्ञा पुं० १. निकटगमन। पास जाना। २. संभोग। सहवास। ३. देवमूर्ति के मार्ग को गोबर से लीपकर स्वच्छ करना।
अभिगामी–वि० [स्त्री० अभिगामिनी] १. निकट जानेवाला। २. संभोग या सहवास करनेवाला।
अभिग्रह–संज्ञा पुं० १. अभिक्रमण। २. अभि-योग। ३. आक्रम। ४. गौरव। ५. सुकीर्ति। ६.अपहार। ७. लुण्ठन। ८. चोरी। ९. लड़ाई के लिए आह्वान। १०. उत्साह बढ़ानेवाला। ११. योद्धाओं का परस्पर कथन।
अभिघात–संज्ञा पुं० [वि० अभिघातक, अभिघाती] १. डंडा आदि के द्वारा मारना। चोट पहुँचना। आघात। प्रहार। मार। २. दाँत से काटना।
अभिचार–संज्ञा पुं० १.पुरश्चरण। २.मंत्र-यंत्र-द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसा-कर्म।
अभिचारक–संज्ञा पुं० यंत्र-मंत्र द्वारा उच्चाटन आदि कर्म करनेवाला।
अभिचारी–वि० [स्त्री० अभिचारिणी] १. अनिष्टकारक। २. यंत्र-मंत्र आदि का प्रयोग करनेवाला।
अभिजन–संज्ञा पुं० १. परिवार। २. वंश। कुल। ३. जन्मभूमि। ४. पूर्वजों का निवास-स्थान। ५. जो घर में सबसे बड़ा हो। ६. पालक। पोषी। रक्षक। ७. गोष्ठी। ८. प्रसिद्धि। ख्याति।
अभिजात–वि० १. कुलीन। जो अच्छे कुल में पैदा हुआ हो। २. पंडित। बुद्धिमान्। ३. योग्य। उपयुक्त। ४. मान्य। पूजनीय। ५. मनोहर। सुंदर। रूपवान्।
अभिजित–वि० विजयी।
संज्ञा पुं० १. नक्षत्र-विशेष, जिसमें तीन तारे हैं। २. मुहूर्त-विशेष। ३. दिवस का अष्टम मुहूर्त।

अभिज्ञ–वि० १. विज्ञ। जानकार। ज्ञाता। पंडित। २. कुशल। निपुण।

अभिज्ञता–संज्ञा स्त्री० १. विज्ञता। जानकारी। २. पांडित्य। नैपुण्य।

अभिज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. स्मृति। याद। २. अलौकिक ज्ञान-बल जो ध्यान की चारों अवस्थाओं के बाद होता है।

अभिज्ञान–संज्ञा पुं० [वि० अभिज्ञात] १. स्मृति। याद। ख्याल। २. पहचान। लक्षण। ३. चिह्न। निशानी। सहिदानी।

अभिधा–संज्ञा स्त्री० १. नाम। २. संज्ञा। ३. शब्द के नियत अर्थ को ही प्रकट करनेवाली शक्ति। (साहित्य)

अभिधान–संज्ञा पुं० १. एक नाम। २. कथन। ३. शब्दकोश। ४. संज्ञा।

अभिधायक–वि० १. जो नाम रक्खे। २. कहनेवाला। ३. सूचक।

अभिधेय–वि० १. प्रतिपाद्य। वाच्य। अभिधान। अर्थ। अभिधागम्य। २. जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाय।
संज्ञा पु० नाम।

अभिनंदन–संज्ञा पुं० १. आनन्द। २. प्रशंसा। प्रोत्साहन। ३. संतोष। ४. उत्तेजना। ५. विनीत प्रार्थना। ६. वृद्धि-विशेष। ७. आनन्दन। हर्षण।

यौ०–अभिनंदनपत्र–वह आदर या प्रतिष्ठा-सूचक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रकट करने के लिए उसे सुनाया और अर्पित किया जाता है। [अँग्रे० एड्रेस]।

अभिनंदनीय–वि० वंदनीय। जो प्रशंसा के योग्य हो। पूजनीय।

अभिनंदित–वि० प्रशंसित। वंदित।

अभिनय–संज्ञा पुं० १. स्वाँग। नकल। दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल के लिए धारण करना। २. नाटक का खेल।

अभिनव–वि० १. नूतन। नव्य। नया। नवीन। २. ताजा।

अभिनवगुप्त–संज्ञा पुं० संस्कृत के एक प्रसिद्ध अलंकार-शास्त्री तथा 'रस' के अंतिम मत के स्थापक।

अभिनिविष्ट–वि० १. गड़ा या धँसा हुआ। २. बैठा हुआ। ३. लिप्त। मग्न। अनन्य मन से अनुरक्त। ४. मनोयोगी। ५. आविष्ट। ६. प्रणिहित।

अभिनिवेश–संज्ञा पुं० १. पैठ। प्रवेश। २. गति। ३. लीनता। मनोयोग। एकाग्रचिंतन। ४. तत्परता। दृढ़ संकल्प। ५. मृत्युशंका। योगशास्त्र में मरण के भय से उत्पन्न क्लेश। ६. मनोनिवेश। ७. प्रणिधान। विचार।

अभिनीत–वि० १. निकट लाया हुआ। २. अलंकृत। सुसज्जित। ३. न्याय्य। उचित। ४. खेला हुआ। अभिनय किया हुआ। (नाटक)।

अभिनेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अभिनेत्री] १. अभिनय करनेवाला। स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। एक्टर। २. नट।

अभिनेय–वि० खेलने योग्य (नाटक)। जिसका अभिनय किया जा सके।

अभिन्न–वि० [संज्ञा अभिन्नता] १. जो मिला हो। संबद्ध। २. संयुक्त। मिश्रित।

अभिन्नपद–संज्ञा पुं० श्लेष अलंकार-विशेष।

अभिप्राय–संज्ञा पुं० मतलब। आशय। तात्पर्य। अर्थ।

अभिप्रेत–वि० अभिप्राय का विषय। वांछित। अभीष्ट।

अभिभव–संज्ञा पुं० पराजय। हार। पराभव। नीचा दिखाना।

अभिभावक–वि० १. पराजित करनेवाला। २. वशीभूत करनेवाला। ३. स्तंभित कर देनेवाला। ४. सहायक। रक्षक। सरपरस्त। ५. आश्रय देनेवाला।

अभिभावकता–संज्ञा स्त्री० [अभिभावकत्व पुं०] १. सहायता। २. तत्त्वावधायकता।

अभिभाषण–संज्ञा पुं० भाषण। व्याख्यान। वक्तृता।

अभिभूत–वि० १. पराभूत। हराया हुआ। पराजित। २. पीड़ित। ३. वशीभूत। जो बस में किया गया हो। ४. विचलित। ५. अज्ञान। ६. अचैतन्य। ७. विह्वल।

अभिमंत्रण–संज्ञा पुं० [वि० अभिमंत्रित] १. संस्कार, जो मंत्र द्वारा हो। २. आवाहन।

अभिमंत्रित–वि० मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। आवाहन किया हुआ।

अभिमत–वि० १. वांछित। मनोनीत। २. राय के अनुसार। सम्मत। अनुमत। संज्ञा पुं० १. मत। राय। सम्मति। २. विचार। ३. इष्ट। मनचाही बात।

अभिमति–संज्ञा स्त्री० १. घमंड। अभिमान। अहंकार। गर्व। २. अहंभाव। ३. इच्छा। अभिलाषा। चाह। ४. विचार। राय। मति।

अभिमन्यु–संज्ञा पुं० १.अर्जुन का पुत्र-विशेष। २. काश्मीर के एक राजा का नाम।

अभिमर्षण–संज्ञा पुं० १. मनन। चिन्तन। २. परस्त्री-गमन।

अभिमान–संज्ञा पुं० १. गर्व। अहंकार। घमंड। मद। २. आक्षेप।

अभिमानजनक–वि० गर्वजनक। अहंकार-युक्त।

अभिमानी–वि० [स्त्री० अभिमानिनी] १. घमंडी। अहंकारी। २. अकड़बाज। ३. अनादर से खिन्न। ४. अभिमानयुक्त। ५. आक्षेपान्वित।

अभिमुख–क्रि० वि० समक्ष। आगे। सामने। सम्मुख।

अभियान–संज्ञा पुं० १. प्रस्थान। चढ़कर या चलकर आगे जाना। २. चढ़ाई। धावा।

अभियुक्त–वि० [स्त्री० अभियुक्ता] अपराधी। प्रतिवादी।

अभियोक्ता–वि० [स्त्री०अभियोक्त्री] वादी। मुद्दई। जो अभियोग उपस्थित करे।

अभियोग–संज्ञा पुं० १. आवेदन। जो किसी के विरुद्ध न्यायालय में किया जाय। २. नालिश। मुकद्दमा। ३. आक्रमण। चढ़ाई। ४. उद्योग।

अभियोगी–वि० नालिश करनेवाला। फरियादी। जो अभियोग चलावे।

अभिरत–वि०लीन। अनुरक्त। युक्त। सहित।

अभिरना*–क्रि० अ० १. लड़ना। भिड़ना। २. टेकना।
क्रि० स० मिलाना।

अभिराम–वि० [स्त्री०अभिरामा] १. रमणीय। सुंदर। मनोहर। २. प्रिय। रम्य।

अभिरुचि–संज्ञा स्त्री० १. पसंद चाह। २. प्रवृत्ति। ३. आस्वाद।

अभिरूप–वि० १. योग्य। उपयुक्त। २. विद्वान्। ३. कामदेव। ४. चन्द्रमा। ५. शिव। ६. विष्णु। ७. सदृश।

अभिलषणीय–वि० वांछनीय। मनोहर। सुंदर।

अभिलषित–वि० इष्ट। वांछित। इच्छित। चाहा हुआ।

अभिलाख*–संज्ञा पुं० दे० "अभिलाष"। आकांक्षा। स्पृहा। कामना।

अभिलाष–संज्ञा पुं० १. चाह। इच्छा। कामना। मनोरथ। २. प्रिय से मिलने की इच्छा। ३. वियोग-शृङ्गार के अंतर्गत दस दशाओं में से एक।

अभिलाषा–संज्ञा स्त्री० चाह। इच्छा। आकांक्षा। कामना।

अभिलाषी–वि० [स्त्री० अभिलाषिणी] जो इच्छा करे। आकांक्षी। इच्छुक।

अभिलाषुक–वि० इच्छान्वित। सस्पृह।

अभिलास–संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाष"।

अभिवंदन–संज्ञा पुं० प्रणाम। नमस्कार। स्तुति आदि।

अभिवंदना–संज्ञा स्त्री० दे० "अभिवंदन"।

अभिवाद–संज्ञा पुं० दुर्वचन। गाली।

अभिवादन–संज्ञा पुं० प्रणाम। नमस्कार। वंदना। स्तुति आदि। "अभिवंदन"।

अभिवादनीय–वि० प्रणम्य। प्रणाम के योग्य।

अभिव्यंजक–वि० १. प्रकाशक। २. बताने वाला। ३. सूचना देने वाला। ४. बोधक।

अभिव्यक्त–वि० प्रकाशित। विज्ञापित। प्रकट किया हुआ। स्पष्ट किया हुआ।

अभिव्यक्ति–संज्ञा स्त्री० १. साक्षात्कार। स्पष्टीकरण। प्रकाशन। २. विज्ञापन। घोषणा। ३. सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य में आविर्भाव। जैसे, बीज से अंकुर निकलना।

अभिशप्त–वि० १. जिसे शाप दिया गया हो। २. जिस पर झूठा दोष लगा हो।

अभिशस्त–वि० मैथुन का दोषी।

अभिशस्ति–संज्ञा स्त्री० याचना।

अभिशाप–संज्ञा पुं० १. शाप। बददुआ।

२. मिथ्या दोष लगाना। ३. बुरा मानना।
अभिशापित–वि० दे० "अभिशप्त"।
अभिषंग–संज्ञा पुं० १. हार। पराभव। २. आक्रोश। निंदा। कोसना। ३. झूठा दोषारोपण। मिथ्या अपवाद। ४. आलिंगन। दृढ़ मिलाप। ५. कसम। शपथ। ६. भूत-प्रेत का आवेश। ७. शोक।
अभिषव–संज्ञा पुं० १. यज्ञस्नान। २. चिर स्थापित। ३. मद्योत्पादक द्रव्य। ४. सोमलता-पान।
अभिषिक्त–वि० [स्त्री० अभिषिक्ता] १. कृताभिषेक। जिसका अभिषेक हुआ हो। २. राजपद पर निर्वाचित। ३. कर्म में नियुक्त। पदस्थ। ४. बाधा-शांति के लिए जिस पर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो।
अभिषेक–संज्ञा पुं० १. छिड़काव। जल से सींचना। २. ऊपर से जल डालकर स्नान। ३. मार्जन। बाधाशांति या मंगल के लिए मंत्र पढ़कर कुश और दूब से जल छिड़कना। ४. विधिपूर्वक मंत्र से जल छिड़ककर राज-पद पर निर्वाचन। ५. शान्ति-स्नान। ६. शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा रखकर धीरे धीरे पानी टपकाना। ७. कर्म में नियोग करना। पदस्थ करण।
अभिष्यंद–संज्ञा स्त्री० १. स्राव। बहाव। २. आँख आना। ३. अत्यधिक वृद्धि।
अभिसंधि–संज्ञा पुं० १. धोखा। वंचना। २. कुचक्र। चुपचाप कोई काम करने की कई आदमियों की सलाह। षड्यन्त्र। ३. मेल करना। संधि करना। ४. इच्छा। कामना। ५. जोड़।
अभिसंधिता–संज्ञा स्त्री० कलहांतरिता नायिका।
अभिसंपात–संज्ञा पुं० १. अभिशाप। २. संग्राम। ३. क्रोध। मन्यु। रिस।
अभिसर–संज्ञा पुं० १. साथी। संगी। सहचर। २. अनुचर।
अभिसरण–संज्ञा पुं० १. आगे जाना। २. समीप जाना। ३. प्रिय से मिलने के लिए जाना।
अभिसरना*–क्रि० अ० १. जाना। संचरण करना। २. किसी वांछित स्थान को गमन। ३. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जाना।
अभिसार–संज्ञा पुं० [वि० अभिसारिका, अभिसारी] १. सहारा। सहाय। २. लड़ाई। युद्ध। ३. प्रिय से मिलने के लिए नायिका या नायक का संकेत-स्थल में जाना। ४. बल।
अभिसारना*–क्रि० अ० दे० "अभिसरना"।
अभिसारिका–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिए स्वयं जाय या प्रिय को बुलावे।
अभिसारिणी–संज्ञा स्त्री० दे० "अभिसारिका"।
अभिसारी–वि० [स्त्री० अभिसारिका] १. साधक। २. सहायक। ३. जो प्रिया से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जावे।
अभिहित–वि० १. कथित। कहा हुआ। उक्त। २. प्रकाशित। व्यक्त।
अभी–क्रि० वि० १. इसी समय। इसी वक्त। २. शीघ्र।
अभीक–वि० १. निडर। निर्भय। २. कठोर-हृदय। निष्ठुर। ३. उत्सुक।
अभीक्ष्ण–संज्ञा पुं० पुनः-पुनः। बार-बार। भूयोभूयः।
अभीत–संज्ञा पुं० निडर। निर्भय। साहसी।
अभीप्सा–संज्ञा स्त्री० [वि० अभीप्सित, अभीप्सु] किसी वस्तु के पाने की प्रबल इच्छा। उत्कट अभिलाषा।
अभीप्सित–वि० अभीष्ट। वांछित। प्रिय। मनोभिलषित।
अभीर–संज्ञा पुं० १. ग्वाला। गोप। अहीर। २. छंद-विशेष।
अभीरु–वि० निर्दोष। निर्भय।
संज्ञा पुं० १. महादेव। २. भैरव। ३. शतावरि।
अभीष्ट–वि० १. इच्छित। चाहा हुआ। २. मनोनीत। चुना हुआ। ३. आशय के अनुकूल। अभिलषित।
संज्ञा पुं० मनचाही बात। मनोरथ।

अभुआना–क्रि० अ० हाथ-पैर पटकने और जोर-जोर से सिर हिलाने आदि के लक्षण, जिससे यह समझा जाय कि सिर पर भूत आया है।

अभुक्त–वि० १. जो खाया न गया हो। न लीला हुआ। २. अव्यवहृत। बिना बर्त्ता हुआ।

अभुक्तमूल–संज्ञा पुं० ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ी। (ज्योतिष)। गंडांत।

अभू†*–क्रि० वि० दे० १. "अभी"। अब ही। अब। २. आज।

अभूखन†*–संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"। गहना।

अभूत–वि० १. जो हुआ न हो। वर्तमान। २. अनोखा। अपूर्व।

अभूतपूर्व–वि० १. अनोखा। अद्भुत। विलक्षण। २. जो पहले न हुआ हो।

अभूतरिपु–संज्ञा पुं० अजातशत्रु। शत्रुहीन। रिपुहीन। जिसका कोई वैरी न हो।

अभेद–संज्ञा पुं० [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १. अभिन्नता। अविशेष। एकत्व। २. समानता। एकरूपता। ऐक्य। ३. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक। ४. परस्पर। वि० भेदरहित। समान। एकरूप।
*वि० दे० "अभेद्य"। जो भेदा न जा सके। क्षत न होना।

अभेदनीय–वि० जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।
संज्ञा पुं० हीरा।

अभेदवादी–वि० जीव और ब्रह्म में भेद न माननेवाला सम्प्रदाय। अद्वैतवादी।

अभेद्य–वि० १. जो टूट न सके। अखण्डनीय। २. जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

अभेय–संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

अभेरना–क्रि० स० १. सटाकर रखना। २. भिड़ाना। मिलाकर रखना। ३ मिश्रित करना। मिलाना।

अभेर*–संज्ञा, पुं० दे० "अभेद"।

अभेरा–संज्ञा पुं० १. टक्कर। रगड़। २. मुठ-भेड़।

अभोजन–संज्ञा पुं० भोजनाभाव। अनाहार। उपवास। अनशन।

अभोजी–संज्ञा पुं० अखादक। अभोगी।

अभौतिक–वि० १. जो सांसारिक न हो। जो पंचभूत का न बना हो। २. अगोचर। अदृश्य।

अभ्यंग–संज्ञा पुं० [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] १. लेपन। चारों ओर पोतना। २. शरीर में तेल लगाना।

अभ्यञ्जन–संज्ञा पुं० तैल लेपन। उबटन।

अभ्यंतर–संज्ञा पुं० १. बीच। मध्य। २. हृदय। ३. अन्तराल। अन्तर।
क्रि० वि० अंदर। भीतर।

अभ्यंतरवर्ती–संज्ञा पुं० मध्यवासी।

अभ्यर्थना–संज्ञा स्त्री० [वि० अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित] १. विनय। सम्मुख प्रार्थना। विनती। २. अगवानी। सम्मान के लिए आगे बढ़कर लेना। ३. आदर। ४. सम्भाषण।

अभ्यसित–वि० दे० "अभ्यस्त"।

अभ्यस्त–वि० १. बार-बार किया हुआ। जिसका अभ्यास किया गया हो। २. जिसने अभ्यास किया हो। ३. निपुण। दक्ष। ४. चतुर।

अभ्यागत–वि० १. अतिथि। मेहमान। पाहुना। २. सामने आया हुआ।

अभ्यास–संज्ञा पुं० [वि० अभ्यासी, अभ्यस्त] १. साधन। पूर्णता प्राप्त करने के लिए फिर-फिर एक ही क्रिया का अवलंबन। आवृत्ति। मश्क। २. टेव। बान। आदत। ३. चिन्तन। ४. शिक्षा।

अभ्यासी–वि० [स्त्री० अभ्यासिनी] जो अभ्यास करे। साधक।

अभ्युत्थान–संज्ञा पुं० १. उठना। २. किसी बड़े के आने पर उसके आदर के लिए उठकर खड़ा हो जाना। ३. समृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ४. उठान। उदय। आरंभ। ५. उत्पत्ति।

अभ्युदय–संज्ञा पुं० १. ग्रहों का उदय। २. उत्पत्ति। प्रादुर्भाव। ३. कामना या मनोरथ की सिद्धि। ४. विवाह आदि शुभ अवसर। ५. बढ़ती। वृद्धि। उन्नति। ६. ऐश्वर्य। ७. प्रारंभ। शुरुआत।

अभ्युपगम–संज्ञा पुं० [वि० अभ्युपगत] १. प्राप्ति। सामने आना या जाना। २. अंगीकार। स्वीकार। मंजूर। ३. किसी ऐसी बात को मानकर, जिसका खंडन करना है, फिर उसकी विशेष परीक्षा करना। (न्याय)

अभ्र–संज्ञा पुं० १. अभ्रक धातु। २. नभ। आकाश। ३. बादल। ४. सोना। स्वर्ण। ५. नागरमोथा। ६. ऋतु। ७. धूल। ८. कपूर।

अभ्रक–संज्ञा पुं० भोडर। अबरक। धातु-विशेष।

अभ्रांत–वि० १. भ्रांति-रहित। भ्रम का न होना। २. स्थिर।

अभ्रान्ति–संज्ञा स्त्री० भ्रांति का न होना। स्थिरता।

अमंगल–वि० अशुभ। मंगलशून्य। दुर्लक्षण। संज्ञा पुं० १. दुःख। २. अशुभ। अकल्याण।

अमंगलजनक–वि० अशुभ-जनक। दुर्लक्षण-युक्त।

अमंगल्य–वि० अशुभ-जनक। अनिष्ट सूचक।

अमंद–वि० १. तेज। जो मंद न हो। २ श्रेष्ठ। उत्तम। ३. उद्योग करनेवाला।

अम–अव्य० १. शीघ्रता। २. अल्प। संज्ञा पुं० आँव। रोग-विशेष।

अमका–संज्ञा पुं० १. ऐसा। २. अमुक। फलाना।

अमका ढमका–संज्ञा पुं० फलाना। अमुक। अज्ञात अथवा गोपनीय नाम के पुरुष का बोधक।

अमचूर–संज्ञा पुं० १. सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण। पिसी हुई आम की फाँकें। २. खटाई।

अमड़ा–संज्ञा पुं० पेड़-विशेष, जिसमें आम की तरह के छोटे-छोटे खट्टे फल लगते हैं। अमारी।

अमत–संज्ञा पुं० १. असम्मति। मत का न होना। २. बीमारी। रोग। ३. काल। मृत्यु।

अमत्त–वि० १. जो मत्त न हो। मदरहित। २. बिना घमंड का। ३. शांत। स्थिरचित्त।

अमत्सर–संज्ञा पुं० द्वेषाभाव। मत्सर-रहित।

अमन–संज्ञा पुं० [अ०] १. चैन। शांति। आराम। २. बचाव। रक्षा।

अमनस्क–वि० मन या इच्छा से रहित। उदासीन। अनमन।

अमनिया*–वि० [देश०] पवित्र। शुद्ध। अछूता। संज्ञा स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया। (साधु)

अमनिया करना–क्रि० स० १. साग को छीलना। बनाना। २. अनाज को बीन फटककर साफ करना।

अमनैक–संज्ञा पुं० १. हकदार। अधिकारी। २. अवध सूबे के एक किस्म के काश्तकार जिनको पुश्तैनी लगान के बारे में कुछ खास अधिकार प्राप्त हैं। ३. सरदार। ४. ढीठ।

अमनोज्ञ–वि० असुन्दर। कुरूप। घिनौना।

अमनोयोग–संज्ञा पुं० अनवधानता।

अमर–वि० चिरजीवी। जो न मरे। नित्य। चिरस्थायी। मरणरहित। संज्ञा पुं० [स्त्री० अमरा, अमरी] १. देवता। २. हड़जोड़ का पेड़। ३ पारा। ४. उन-चास पवनों में से एक। ५. अमरकोश। लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्त्ता अमरसिंह। ६. कुलिश वृक्ष। अस्थि-संहारक वृक्ष। ७. गणित में ३३ संख्या। ८. एक पर्वत का नाम।

अमरख*–संज्ञा पुं० [स्त्री० अमरखी] १. कोप। क्रोध। गुस्सा। २. दुःख। क्षोभ। रंज।

अमरखी*–वि० १. बुरा माननेवाला। २. दुखी होनेवाला। ३. क्रोधकरनेवाला।

अमरज–वि० देवजात। देव से उत्पन्न। देवभाव।

अमरता–संज्ञा स्त्री० १. देवत्व। देवभाव। देव-सायुज्य। २. मृत्यु का न होना।

अमरत्व–संज्ञा पुं० दे० "अमरता"।

अमरद्विज–संज्ञा पुं० देवल ब्राह्मण। पुजारी।

अमरपख*–संज्ञा पुं० पितृपक्ष।

अमरपति–संज्ञा पुं० इन्द्र। देवों का राजा।

अमरपद–संज्ञा पुं० मोक्ष। मुक्ति।

अमरपुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अमरपुरी] देवताओं के रहने का स्थान। अमरावती।

अमरबेल–संज्ञा स्त्री० दे० "अमरबेल"। आकाश बेल। पीली लता या बौर जिसमें जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं। आकाश-बौर।
अमरलोक–संज्ञा पुं० स्वर्ग। इंद्रपुरी। देवलोक।
अमरवल्ली–संज्ञा स्त्री० अमरबेल । अमर-बौरिया । आकाश-बँवर ।
अमरस–संज्ञा पुं० दे० "अमावट"। १. आम की पूड़ी । २. आम का रस और दूध मिलाकर बनाया गया पेय।
अमरसिंह–संज्ञा पुं० विक्रमादित्य के नौ रत्नों में से एक रत्न। अमरकोष के ग्रन्थकार।
अमरसी–वि० सुनहला। जिसका रंग आम के रस की तरह पीला हो।
अमरा–संज्ञा स्त्री० १. दूब । २. गुर्च । ३. सेंहुड़ । थूहर । ४. नीली कोयल। ५. झिल्ली जो गर्भ के बालक के बदन में लिपटी रहती है ।
अमराई–संज्ञा स्त्री० आम का बगीचा । आम का घना बाग।
अमरायल–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
अमराव*†–संज्ञा पुं० दे० "अमराई" ।
अमरावती–संज्ञा स्त्री० स्वर्ग। इंद्रपुरी।
अमरी–संज्ञा स्त्री० १. देवपत्नी। देवता की स्त्री। २. देवकन्या । ३. पेड़ विशेष। सर। पियासाल। ४. आसन ।
अमरू–संज्ञा पुं० १. रेशमी कपड़ा विशेष। २. एक राजा ३. एक कवि का नाम।
अमरूत–संज्ञा पुं० अमरूद। पेड़ तथा फल विशेष ।
वि० सुस्थिर। शान्त। अचंचल। निर्वात।
अमरूद–संज्ञा पुं० सफरी । विही। फल विशेष।
अमरेश–संज्ञा पुं० देवताओं का राजा। इंद्र । अमरेश्वर ।
अमरैया–संज्ञा स्त्री० "अमराई ।"
अमर्याद–वि० १. जो मर्यादा के विरुद्ध हो। बेकायदा । २. जो प्रतिष्ठित न हो।
अमर्यादा–संज्ञा स्त्री० १. बेइज्जती । असम्मान । अप्रतिष्ठा। २. मानहानि। ३. अनीति ।
अमर्ष–संज्ञा पुं० [वि० अमर्षित, अमर्षी] १. क्रोध। गुस्सा। २. वह द्वेष या दुःख जो ऐसे मनुष्य का कोई अपकार न कर सकने के कारण उत्पन्न होता है जिसने अपना तिरस्कार किया हो। ३. अक्षमा। असहिष्णुता ।
अमर्षण–संज्ञा पुं० गुस्सा। क्रोध ।
वि० १. क्रोधी। कोपान्वित। २. रोगी।
अमर्षी–वि० [स्त्री० अमर्षिणी] १. क्रोधी। २. जो सहन न कर सके। शीघ्र ही बुरा माननेवाला ।
अमल–वि० १. स्वच्छ। निर्मल। २. निर्दोष। पापरहित ।
संज्ञा पुं० [अ०] १. आचरण। व्यवहार। २. कार्य। ३.साधन। ४.शासन। अधिकार। हुकूमत। ५. आदत। बान। लत। टेव। ६. नशा। ७. असर। प्रभाव। ८. समय। वक्त। भोगकाल। ९. प्रयोग। १०. राज्य।
अमलता–संज्ञा स्त्री० १.स्वच्छता। निर्मलता। २. निर्दोषता ।
अमलतास–संज्ञा पुं० १. पेड़-विशेष जिसमें लंबी गोल फलियाँ लगती हैं। २. औषध-विशेष।
अमलदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दखल। शासन। अधिकार । २. एक प्रकार की काश्तकारी जिसमें असामी को पैदावार के अनुसार लगान देना पड़ता है। कनकूत।
अमलपट्टा–संज्ञा पुं० वह दस्तावेज या अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिंदे को किसी कार्य्य में नियुक्त करने के लिए दिया जाय।
अमलबेत–संज्ञा १.पुं० लता-विशेष जिसकी सूखी हुई टहनियाँ खट्टी होती हैं और चूरण में पड़ती हैं। २. पेड़-विशेष जिसके फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है।
अमला–संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. सातला वृक्ष। ३. पाताल। ४. आँवला।
संज्ञा पुं० [अ०] कचहरी में काम करने-वाला। कार्य्याधिकारी। कर्म्मचारी।
यौ०–अमलाफैला=कचहरी के कर्म्मचारी ।

अमली–वि० [अ०] १. व्यावहारिक। अमल में आनेवाला। काम में आने वाला। २. कर्मण्य। अमल करनेवाला। ३. नशा करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० इमली।

अमलोनी–संज्ञा स्त्री० नोनी। नोनियाँ घास-विशेष।

अमहर–संज्ञा पुं० अमचुर। सूखी खटाई।

अमहल–संज्ञा पुं० १. व्यापक। जो सर्वत्र हो। २. जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो।

अमाँ–अव्य० मुसलमानों का एक संबोधन। ऐ मियाँ।

अमा–संज्ञा स्त्री० १. घर। २. मर्त्यलोक। ३. अमावस्या की कला। ४. रात।

अमातना*–क्रि० स० १. बुलाना। आमंत्रित करना। २. निमंत्रण देना। न्योता देना।

अमात्य–संज्ञा पुं० मंत्री। दीवान।

अमान–वि० १. मानरहित। जिसका मान या अंदाज न हो। बहुत। बेहद। अपरिमित। २. सीधा-सादा। गर्वरहित। निरहंकारी। ३. तुच्छ। अप्रतिष्ठित। अनादृत।
संज्ञा पुं० [अ०] १. बचाव। रक्षा। २. शरण।

अमानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अपनी वस्तु कुछ समय के लिए दूसरे के पास रखना। २. धरोहर। थाती।

अमानतदार–संज्ञा पुं० थाती रखनेवाला। वह जिसके पास अमानत रखी जाय।

अमानतनामा–संज्ञा पुं० वह पत्र जिस पर अमानत में रखी हुई चीजों का विवरण हो।

अमाना–क्रि० अ० १. अँटना। समाना। २. इतराना। फूलना। घमंड करना। ३. खपना।

अमानी–वि० जिसमें घमंड न हो। निरभिमान। अहंकाररहित।
संज्ञा स्त्री० १. खास। सरकारी भूमि। २. वह जमीन या कोई काम जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो। ३. लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रिआयत हो।
†संज्ञा स्त्री० मनमानी। अपने मन का काम। अंधेर।

अमानुष–वि० १. जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हो। जो मनुष्य से न हो सके। २. जो मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध हो। पैशाचिक। पाशव।
संज्ञा पुं० १. जो प्राणी मनुष्य से भिन्न हो। २. देवता। ३. राक्षस।

अमानुषी–वि० १. जो मानव-स्वभाव के विरुद्ध हो। पाशव। पैशाचिक। २. मानवी शक्ति से भिन्न। ३. देवी। ४. देवयोनिसंबद्ध।

अमान्य–वि० अस्वीकार। नामंजूर। इनकार। त्याज्य।

अमाय*–वि० दे० "अमाया"। कपट-रहित। वास्तव। यथार्थ। माया-रहित।

अमाया–वि० १. निर्लिप्त। जो माया से प्रभावित न हो। २. निश्छल। निष्कपट।

अमारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"।

अमार्ग–संज्ञा १. पुं० बुरा मार्ग। कुराह। २. बुरी चाल। ३. दुराचरण।

अमावट–संज्ञा स्त्री० १. आम के सुखाये हुए रस की पर्त या तह। २. पहिना जाति की मछली-विशेष।

अमावस–संज्ञा स्त्री० दे० "अमावस्या।" चान्द्र मास का अन्तिम दिन।

अमावस्या–संज्ञा स्त्री० कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि।

अमाह–संज्ञा पुं० नाखूना। आँख के डेले से निकला हुआ लाल मांस।

अमिउ–संज्ञा पुं० अमृत। सुधा।

अमिट–वि० १. नित्य। २. जो मिट न सके। जो नष्ट न हो। ३. अटल। दृढ़। स्थायी। अवश्यंभावी। जिसका होना निश्चित हो।

अमित–वि० १. बहुत। अधिक। प्रचुर। असीम। बेहद। २. बहुत। अधिक।

अमिताभ–संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध।
वि० अत्यंत आभावाला। जिसकी आभा की कोई सीमा न हो। असीम कान्तिवाला।

अमिताशन–संज्ञा पुं० अग्नि।
वि० बहुत खानेवाला।

अमितौजा–संज्ञा पुं० सर्वशक्तिमान्।

अमित्र–वि० १. बैरी। शत्रु। अरि। दुश्मन। २. जिसका कोई दोस्त न हो।

अमित्रभूत–वि० विपक्ष। बैरी। अहितकारी।

अमिय–संज्ञा पुं० सुधा। अमृत।

अमिय-मूरि–संज्ञा स्त्री० संजीवनी जड़ी। अमृतबूटी।

अमिरती –संज्ञा स्त्री० दे० "इमरती"। १. एक प्रकार की मिठाई। २. एक प्रकार क. जल पीने का धातु का गिलास।

अमिल –वि० १. जो मिलने योग्य न हो। अप्राप्य। २. बेजोड़। बेमेल। ३. जिससे मेल-जोल न हो। ४. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।

अमिली–संज्ञा स्त्री० १. दे० "इमली"। २. विरोध। मन-मुटाव। मेल या अनुकूलता न होना।

अमिश्रराशि–संज्ञा स्त्री० इकाई से लेकर नौ तक के अंक। वह राशि जो इकाई से प्रकट की जाय।

अमिश्रित–वि० १. खालिस। २. जिसमें मेल न हो। जो मिलाया न गया हो।

अमिष–संज्ञा पुं० १. बहाना या छल का न होना। २. दे० "आमिष"।
वि० निश्छल। जो बहानेबाज न हो।

अमी*–संज्ञा पुं० दे० "अमिय"। अमृत। सुधा। आसव।
वि० रोगी। पीड़ित।

अमीकर*–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

अमीत*–संज्ञा पुं० वैरी। शत्रु।

अमीन–संज्ञा पुं० [अ०] वह अदालती कर्म्मचारी जिसके सुपुर्द बाहर का पैमाइशी काम हो।

अमीर–संज्ञा पुं० [अ०] १. धनाढ्य। धनवान्। २. सरदार। कार्याधिकार रखनेवाला। ३. उदार। ४. अफगानिस्तान के राजा की उपाधि।

अमीराना–वि० अमीरों के समान। जिससे अमीरी प्रकट होती हो।

अमीरी–संज्ञा स्त्री० १. धन-सम्पन्नता। धनाढ्यता। २. उदारता।
वि० अमीर के समान। जैसे अमीरी ठाट।

अमुक–वि० १. वह। कोई व्यक्ति। ऐसा ऐसा। फ़लाँ। (इस शब्द का प्रयोग किसी नाम के स्थान पर करते हैं।) २. बुद्धिस्थ व्यक्ति। ३. सम्मुखागत।

अमुत्र–अव्य० परकाल। परलोक।

अमूर्त्त–वि० निराकार। बिना आकार के।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. जीव। ३. आत्मा। ४. दिशा। आकाश। ५. काल। ६. वायु।

अमूर्ति–वि० आकृति-रहित। निराकार। विष्णु।

अमूर्त्तिमान्–वि० १. जिसकी मूर्त्ति न हो। निराकार। २. जो दिखलाई न पड़े। अप्रत्यक्ष।

अमूल–वि० मूल-रहित। निर्मूल। जड़-शून्य। जड़-रहित। प्रमाण-रहित।
संज्ञा पुं० प्रकृति। (सांख्य)

अमूलक–वि० १. मूल-रहित। निर्मूल। जिसकी कोई जड़ न हो। २. असत्य। मिथ्या। ३. अप्रामाणिक।

अमूल्य–वि० १. जिसका मूल्य न हो। अनमोल। २. बहुमूल्य। बेशकीमत। ३. उत्तम। बढ़िया। श्रेष्ठ।

अमृत–संज्ञा पुं० १. सुधा। वह वस्तु जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है। पीयूष। २. घी। ३. जल। ४. अन्न। ५. यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री। ६. दूध। ७. औषध। ८. विष। ९. मुक्ति। १०. सुन्दर। प्रिय। ११. महादेव का एक नाम। १२. ४ की संख्या। १३. बिना माँगे मिला दान। १४. सोनी। १५. एक छंद। १६. सोना। १७. धन। १८. पारा। १९. बछनाग। २०. मीठी वस्तु। २१. अयाचित वस्तु। २२. भक्षणीय द्रव्य। सुस्वादु द्रव्य। २३. पारद। २४. जीवित। २५. धन्वन्तरि। २६. वाराहीकन्द। २७. वनमूँग। २८. देवना।
वि० मरणरहित।

अमृतकर–संज्ञा पुं० निशाकर। चंद्रमा।

अमृतकुण्ड–संज्ञा पुं० अमृत का पात्र।

अमृतकुंडली–संज्ञा स्त्री० १. छंद-विशेष। २. बाजा-विशेष।

अमृतगति–संज्ञा स्त्री० छंद-विशेष।

अमृतजटा–संज्ञा स्त्री० जटामाँसी।

अमृततरंगिणी–संज्ञा स्त्री० १. ज्योत्स्ना। २. प्रकाशमयी रात्रि।

अमृतत्व–संज्ञा पुं० १. न मरना। मरण का अभाव। २. मुक्ति। मोक्ष।

अमृतदान–संज्ञा पुं० १. भोजन की चीजें रखने का एक प्रकार का ढकनेदार बर्तन। २. अचार रखने का बर्तन-विशेष।

अमृतदीधिति–संज्ञा पुं० चन्द्रमा। शशांक। शशधर।

अमृतधारा–संज्ञा स्त्री० १. औषध-विशेष। २. वर्णवृत्त-विशेष।

अमृतध्वनि–संज्ञा स्त्री० एक २४ मात्राओं का यौगिक छंद।

अमृतफल–संज्ञा पुं० पटोल। परवर।

अमृतफला–संज्ञा स्त्री० १. दाख। अंगूर। २. आमलकी।

अमृतबान–संज्ञा पुं० लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन जिसमें अचार वगैरह रक्खा जाता है।

अमृतमूरि–संज्ञा स्त्री० संजीवनी बूटी। अमरमूरि।

अमृतयोग–संज्ञा पुं० एक शुभ फल-दायक योग। फलित ज्योतिष।

अमृतरस–संज्ञा पुं० सुधा। अमृत।

अमृतलता–संज्ञा स्त्री० गिलोय। गुर्च।

अमृतवल्ली–संज्ञा स्त्री० गुर्च लता।

अमृतबिन्दु–संज्ञा पुं० एक उपनिषद् का नाम।

अमृतसंजीवनी–वि० दे० "मृतसंजीवनी"।

अमृतसंभवा–संज्ञा स्त्री० गुर्च।

अमृतसार–संज्ञा स्त्री० अंगूर।
संज्ञा पुं० १. घी। २. मक्खन। नवनीत।

अमृतस्रवा–संज्ञा स्त्री० कदली वृक्ष। लता-विशेष।

अमृतांशु–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

अमृता–संज्ञा स्त्री० १. गुर्च। २. दूर्वा। ३. तुलसी। ४. मदिरा। ५. आमलकी। हरीतकी। ६. पिप्पली।

अमृती–संज्ञा स्त्री० लुटिया। मिठाई-विशेष।

अमृष्य–वि० असह्य। अक्षन्तव्य।

अमेजना*–क्रि० स० मिलाना। मिलावट करना।

अमेधा–वि० मूर्ख। मूढ़। अबोध।

अमेध्य–संज्ञा पुं० अशुद्ध पदार्थ। अपवित्र वस्तु। विष्ठा, मल-मूत्र आदि।
वि० १. जो वस्तु यज्ञ में काम न आ सके। जैसे, पशुओं में कुत्ता और अन्नों में मसूर, उर्द आदि। २. जो यज्ञ कराने योग्य न हो। ३. अशुद्ध। अपवित्र।

अमेय–वि० १. सीमारहित। बेहद। २. अज्ञेय। जो जाना न जा सके।

अमेरिका–संज्ञा पुं० पश्चिमी गोलार्द्ध का एक महादेश, जो उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में है।

अमेल–वि० असम्बद्ध। बेमेल। जो एक तरह या एक समान न हो। जिसमें मेल-मिलाप न हो।

अमोला–संज्ञा पुं० आम का नया निकलता हुआ फल।

अमोही–वि० १. मोहरहित। निर्मोही। निष्ठुर। २. विरक्त।

अमौआ–संज्ञा पुं० १. आम के सूखे रस का-सा रंग जो कई प्रकार का होता है, जैसे पीला, सुनहरा, मूँगिया, इत्यादि। २. इस रंग का कपड़ा।

अम्माँ–संज्ञा स्त्री० माँ। माता।

अम्मामा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा साफा।

अम्मारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"। हाथी का हौदा।

अम्ल–संज्ञा पुं० १. खटाई। २. तेजाब।
वि० खट्टा। तुर्श।

अम्लजन–संज्ञा पुं० दे० "आक्सिजन"।

अम्लपित्त–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।

अम्लवेत–संज्ञा पुं० अमलवेत।

अम्लसार–संज्ञा पुं० १. काँजी। २. चूक। ३. अमलबेत। ४. हिंताल। ५. आमलासार गंधक।

अम्लान–वि० १. जो उदास न हो। मलिनता-रहित। २. साफ। स्वच्छ। निर्मल। ३. हृष्ट। ताजा।

अम्लानता–संज्ञा स्त्री० हृष्टभाव। प्रसन्नता।

अम्ली–संज्ञा स्त्री० अमिली। इमली।

अम्होरी या अम्हौरी–संज्ञा स्त्री० बहुत छोटी-छोटी फुंसियाँ जो गर्मी के दिनों में पसीने के कारण शरीर में निकलती हैं। अन्हौरी। अँधोरा। घमौरी।

अय–संज्ञा पुं० १. लोहा। २. हथियार। अस्त्र-शस्त्र ३. आग।

अयत्न–संज्ञा पुं० १. औदास्य। २. अयतन। ३. असत्कार।

अयथा–वि० १. झूठ। मिथ्या। अनथ्य। २. अयोग्य।

अयथार्थ–संज्ञा पुं० मिथ्या। अन्याय। अन्धेर।

अयःपिण्ड–संज्ञा पुं० लौह-पिण्ड। लोहे का गोला।

अयन–संज्ञा पुं० १. चाल। गति-गमन। २. वर्ष का आधा भाग। ३. आश्रय। ४. मार्ग। ५. सूर्य्य या चंद्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। ६. बारह राशियों के चक्र का आधा। ७. राशिचक्र की गति। ८. ज्योतिषशास्त्र। ९. एक प्रकार का सेनानिवेश (कवायद)। १०. आश्रम। ११. स्थान। १२. घर। १३. काल। समय। १४. अंश। १५. एक यज्ञ जो अयन के प्रारम्भ में होता था। १६. गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।

अयनकाल–संज्ञा पुं० १. छः महीने का काल। २. वह काल जो एक अयन में लगे।

अयनसंक्रम–संज्ञा पुं० मकर और कर्क की संक्रांति। अयन-संक्रांति।

अयनसंक्रांति–संज्ञा स्त्री० दे० "अयनसंक्रम"।

अयनसंपात–संज्ञा पुं० अयनांशों का योग। दे० "अयनांश"।

अयनांश–संज्ञा पुं० सूर्य की गति-विशेष के काल का भाग। अयनभाग।

अयश–संज्ञा पुं० १. बुराई। अपयश। निंदा। २. कलंक। ३. अख्याति।

अयशस्कर–वि० दुर्नामजनक। अख्यातिकर।

अयशी–वि० बदनाम। अख्यातियुक्त। प्रतिष्ठा-रहित।

अयस–संज्ञा पुं० लोहा।

अयस्कांत–संज्ञा पुं० १. चुंबक पत्थर। २. मणि-विशेष।

अयाचक–वि० १. न माँगनेवाला। जो माँगे नहीं। याचारहित। अभिक्षुक। २. संतुष्ट। ३. पूर्णकाम।

अयाचित–वि० बिना माँगा हुआ। बिना यांचा के प्राप्त। अप्रार्थित।

अयाचित व्रत–वि० बिना माँगे हुए प्राप्त पदार्थों से जीविका निर्वाह करनेवाला।

अयाची–वि० १. अयाचक। न माँगनेवाला। २. धनी। संपन्न।

अयाच्य–वि० १. भरा-पूरा। जिसे माँगने की आवश्यकता न हो। २. तृप्त। संतुष्ट।

अयान–वि० दे० "अजान"। १. पैदल। बिना सवारी का। २. लड़काई। मूर्खता। अनजानपन।

अयानप, अयानपन–संज्ञा पुं० १. अज्ञता। बेसमझी २.। लड़कपन। मूर्खता। ३. भोलापन। सीधापन।

अयाना–वि० भोला। अबूझ। मूर्ख।

अयानी*–वि० [पुं० अयाना] अज्ञानी। मूर्ख। बुद्धिहीन।

अयाल–संज्ञा पुं० [फा०] केसर। घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल।

अयास–क्रि० वि० बिना परिश्रम के। बिना मेहनत के। अनायास।

अयि–अव्य० हे। अय। अरे। अरी। संबोधन का शब्द।

अयुक्त–वि० १. असंगत। अयोग्य। अनुपयुक्त। अनुचित। बेठीक। २. असिम्श्रित। अलग। असंयुक्त। ३. आपद्ग्रस्त। ४. अनमना। उदास। ५. असंबद्ध। ६. युक्तिशून्य।

अयुक्ति–संज्ञा स्त्री० १. गड़बड़ी। युक्ति का न होना। असंबद्धता। २. योग न देना। अप्रवृत्ति।

अयुग, अयुग्म–वि० १. विषम। ताक। २. एकाकी। अकेला।

अयुत–संज्ञा पुं० दस हजार की संख्या। वि० बिना जोड़ का।

अयुत्–वि० अयुक्त। असमिलित। असमिश्रित।

अयुध–संज्ञा पुं० आयुध। अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

अये–अव्य० सम्बोधनार्थ। विषादार्थ। स्मरणार्थ। कोपार्थ।

अयोग–संज्ञा पुं० १. योग का न होना। विश्लेष। विच्छेद। अनैक्य। २. बुरा योग। फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह-नक्षत्रादि का पड़ना। ३. कुसमय। कुकाल। ४. संकट। कठिनाई। ५. वह वाक्य जिसका अर्थ सुगमता से न लगे। कूट। ६. अप्राप्ति। ७. असंभव।

वि० बुरा। अप्रशस्त। अनुचित। अयोग्य।

अयोगव–संज्ञा पुं० शूद्र के औरस से वैश्या कन्या के गर्भ से जात सन्तान। जाति-विशेष।

अयोग्य–वि० १. अकुशल। जो योग्य न हो। अनुपयुक्त। २. निकम्मा। नालायक। अपात्र। ३. अनुचित। ना-मुनासिब। ४. बेकाम।

अयोघन–संज्ञा पुं० एकत्रीभूत लौह-पुंज। निहाली। हथौड़ा। निहाई।

अयोध्या–संज्ञा स्त्री० अवधपुरी। कोशला।

अयोध्यानाथ–संज्ञा पुं० अयोध्याधिपति।

अयोनि–वि० १. अजन्मा। जो उत्पन्न न हुआ हो। २. नित्य।

संज्ञा पुं० जीव-विशेष। योनिजात भिन्न। वृक्ष आदि।

अरंड–संज्ञा पुं० दे० "एरंड", "रेंड"। अण्डी वृक्ष।

अरंभ*–संज्ञा पुं० १. दे० "आरंभ"। २. शोर। हलचल। ३. शब्द। नाद।

अरंभना*–क्रि० अ० १. बोलना। नाद करना। २. शोर करना। ३. आरंभ होना। शुरू होना।

क्रि० स० आरंभ करना।

अर*–संज्ञा पुं० अड़। जिद।

अरई*–संज्ञा पुं० मथानी। सई पनैठी जिसमें बैलों आदि के लिए लोहा लगा रहता है।

अरक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. आसव। किसी पदार्थ का रस जो भभके से खींचने से निकले। २. रस। तत्त्व। ३. पसीना।

अरकना–क्रि० अ० १. ठकराना। अरराकर गिरना। २. फटना। दरकना।

अरक़ नाना–संज्ञा पुं० अरक़ विशेष जो पुदीना और सिरका मिलाकर खींचने से बनता है।

अरकना-बरकना*–क्रि० अ० खींचा-तानी करना। इधर-उधर करना।

अरकाटी–संज्ञा पुं० कुली भरती कराकर बाहर टापुओं में भेजनेवाला।

अरग–संज्ञा पुं० [देश०] सुगंध का झोंका।

अरगजा–संज्ञा पुं० एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाने से बनता है। दे० "अर्गजा"।

अरगजी–संज्ञा पुं० रंग-विशेष जो अरगजे की तरह होता है।

अरगट*–वि० १. अलग। पृथक्। भिन्न। २. निराला।

अरगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "अलगनी"। बाँस, लकड़ी या रस्सी जो कपड़े आदि टाँगने के लिए लटकाई जाय।

अरगवानी–संज्ञा पुं० [फा०] लाल रंग। वि० १. लाल। २. बैंगनी।

अरगल–संज्ञा पुं० दे० "अर्गल"।

अरगला–संज्ञा पुं० १. अर्गल। ब्योंड़ा। २. संयम। रोक।

अरगाना*–क्रि० अ० १. पृथक् या अलग होना। २. मौन होना। सन्नाटा खींचना। चुप्पी साधना।

क्रि० स० छाँटना। अलग करना।

अरघ–संज्ञा पुं० दे० "अर्घ"। अर्घ्य। षोडशोपचार में से पूजन का एक उपचार।

अरघा–संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १. एक गाव-दुम पात्र जिसमें अरघ का जल रखकर दिया जाता है। २. जलधरी। वह आधार जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। जलहरी। ३. चँवना। कुएँ की जगत पर पानी के लिए बना हुआ रास्ता।

अरघान*–संज्ञा पुं० महँक। गंध।

अरचन*–संज्ञा पुं० दे० "अर्चन"। १. पूजन। २. सम्मान।

अरचना*–क्रि० स० पूजा करना।

अरज–संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज] १. निवेदन। विनती। विनय। २. चौड़ाई।

अरजना*–क्रि० स० अर्ज करना। निवेदन करना।

अरजल–संज्ञा पुं० १. वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले पैर और अगला दाहिना पैर सफेद या एक रंग के हों। (ऐबी)। २. वर्णशंकर। ३. नीच जाति का पुरुष।

अरजी–संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज़ी] प्रार्थना-पत्र। आवेदन या निवेदनपत्र।

†[अ० अर्ज] प्रार्थी। अर्ज करनेवाला।

अरझना–क्रि० अ० उलझना। फँसना। बझना।

अरणा–संज्ञा स्त्री० जंगली भैंस।

अरणि, अरणी–संज्ञा स्त्री० १. वृक्ष। २. गनियार। अँगेथू। ३. सूर्य्य। ४. पीपल या शमी काष्ठ का बना हुआ यंत्र-विशेष जिससे यज्ञों में आग निकालते हैं। अग्निमंथ।

अरण्य–संज्ञा पुं० १. कानन। विपिन। वन। जंगल। २. कायफल। ३. संन्यासियों के दस भेदों में से एक।

अरण्यरोदन–संज्ञा पुं० १. निष्फल रोना। २. ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे। ३. ऐसी पुकार जिसे सुननेवाला कोई न हो।

अरण्यवासी–संज्ञा पुं० वनस्थ। वनवासी। तपस्वी। मुनि।

अरति–संज्ञा स्त्री० चित्त का न लगना। विराग। बेचैनी।

अरथ*–संज्ञा पुं० दे० "अर्थ"।

अरथाना*–क्रि० स० समझाना। विवरण करना। व्याख्या करना।

अरथी–संज्ञा स्त्री० टिखटी। सीढ़ी के आकार का ढाँचा जिसपर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं।

संज्ञा पुं० पैदल। जो रथी न हो।

वि० दे० "अर्थी"।

अरदना–क्रि० स० १. कुचलना। रौंदना। २. नाश या वध करना।

अरदली–संज्ञा पुं० [अंग्रे० आर्डरली] साथ में या दरवाजे पर रहनेवाला चपरासी।

अरदास–संज्ञा स्त्री० [फा० अर्जदाश्त] १. नज़र। निवेदन के साथ भेंट। २. देवता के निमित्त भेंट निकालना। ३. नानक-पंथियों के विशेष व्यवहार का शब्द।

अरधंग–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"। आधा अंग।

अरधंगी*–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।

अरध*–वि० दे० "अर्ध"। आधा।

क्रि० वि० भीतर। अंदर।

अरदन–वि० बिना दाँत का। दे० "अर्द्धन"।

अरन*–संज्ञा पुं० दे० "अरण्य"। वन।

अरना–संज्ञा पुं० जंगली भैंसा। अन्ना भैंसा।

*क्रि० अ० दे० "अड़ना"।

अरनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अड़नि"।

अरनी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की लकड़ी जिसे रगड़कर आग पैदा करते हैं। २. छोटा वृक्ष-विशेष जो हिमालय पर होता है। ३. यज्ञ का अग्नि-मंथन काष्ठ।

वि० दे० "अरणि"।

अरपन*–संज्ञा पुं० दे० "अर्पण"।

अरपना*–क्रि० स० अर्पण करना।

अरब–संज्ञा पुं० १. सौ करोड़। २. इस स्थान की संख्या। ३. घोड़ा। ४. इंद्र।

संज्ञा पुं० [अ०] १. एशिया खंड का एक मरुदेश। २. अरबी घोड़ा।

अरबर*–वि० दे० "अड़बड़"।

अरबराना*–क्रि० अ० १. हड़बड़ाना। व्याकुल होना।

२. चलने में लड़खड़ाना।

अरबरी*–संज्ञा स्त्री० घबराहट। हड़बड़ी। व्याकुलता।

अरबी–वि० अरब देश में उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. अरबी घोड़ा। ऐराकी। ताजी। २. अरबी ऊँट। ३. ताशा। अरबी बाजा।

अरबीला*–वि० भोलाभाला। सीधा।

अरभक*–वि० दे० "अर्भक"।

अरमान–संज्ञा पुं० [तु०] लालसा। इच्छा। हौसला। चाह।

अरर–अव्य० अत्यंत व्यग्रता तथा अचंभे का सूचक शब्द।

अरराना–क्रि० अ० १. अररर शब्द करना। टूटने या गिरने का शब्द करना। २. भहरा पड़ना। एकाएक गिरना।

अरवा–संज्ञा पुं० वह चावल जो कच्चे अर्थात् बिना उबाले धान से निकाला जाय।
संज्ञा पुं० ताखा। आला।
अरविंद–संज्ञा पुं० १. कमल। पंकज। उत्पल। २. सारस।
अरवी–संज्ञा स्त्री० कंद-विशेष जो तरकारी के रूप में खाया जाता है। घुइयाँ। कच्चू। बंडा।
अरस–वि० १. बिना रस का। नीरस। फीका। २. अनाड़ी। गँवार। मूर्ख। उजड्ड।
संज्ञा पुं० आलस्य।
संज्ञा पुं० [अ० अर्श] १. छत। २. धरहरा। ३. महल।
अरसट्टा–संज्ञा पुं० आँकाव। निरख। परख।
अरसन-परसन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लड़कों का खेल। आँखमिचौनी।
अरसना*–क्रि० अ० ढीला पड़ना। मंद होना। शिथिल पड़ना।
अरसना-परसना–क्रि० स० मिलना। भेंटना। आलिंगन करना।
अरस परस–संज्ञा पुं० अखमिचौनी। लड़कों का एक खेल। छुआ छुई।
संज्ञा पुं० देखना।
अरसा–संज्ञा पुं० १. काल। समय। २. विलंब। देर। अतिकाल।
अरसात–संज्ञा पुं० २४ अक्षरों का वृत्त-विशेष।
अरसान–संज्ञा पुं० वृत्त-विशेष जिसमें २४ अक्षर, ७ भगण और १ रगण होता है।
अरसाना*–क्रि० अ० १. अलसाना। २. निद्राग्रस्त होना।
अरसिक–वि० अरसज्ञ। अविदग्ध।
अरसी*–संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"। तीसी।
अरसीला*–वि० आलसी। आलस्य से भरा।
अरसौहाँ–वि० दे० "अलसौहाँ"। आलस्य से पूर्ण।
अरहट–संज्ञा पुं० रेहटा। रहट नामक यंत्र जिससे कुएँ से पानी निकालते हैं। पानी का चरखा।
अरहन–संज्ञा पुं० रेहन। वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है।
अरहना*–संज्ञा स्त्री० पूजा। अर्चा।
अरहर–संज्ञा स्त्री० दाल-विशेष। तुवरी। तुअर। तूर।
अराक–संज्ञा पुं० [अ० इराक] १. देश-विशेष जो अरब में है। २. वहाँ का घोड़ा।
अराज–वि० १. बिना राजा का। २. बिना क्षत्रिय का।
संज्ञा पुं० हलचल। अराजकता। शासन-विप्लव।
अराजक–वि० जहाँ राजा न हो। राजशून्य। राजाहीन। बिना राजा का।
अराजकता–संज्ञा स्त्री० १. राजा का अभाव। २. शासन का अभाव। ३. हलचल। अशांति। अंधेर।
अराति–संज्ञा पुं० १. शत्रु। रिपु। वैरी। २. काम, क्रोध आदि विकार। ३. छः की संख्या।
अराधन–संज्ञा पुं० दे० "आराधन"।
अराधना–क्रि० स० १. आराधना करना। पूजना। सेवा करना। २. मंत्र जपना। ध्यान करना।
अराधी–वि० आराधना या पूजा करनेवाला। पूजक।
अराबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. रथ। गाड़ी। २. चरखा। वह गाड़ी जिस पर तोप लादी जाय।
अराम†–संज्ञा पुं० दे० "आराम"।
अरारा–संज्ञा पुं० अरराने का शब्द। ददोरा।
अरारूट–संज्ञा पुं० [अंग्रे० एरारूट] पौधा-विशेष जिसके कंद का आटा तीखुर की तरह काम में आता है।
अरारोट–संज्ञा पुं० दे० "अरारूट"। पदार्थ-विशेष।
अराल–वि० टेढ़ा। कुटिल।
संज्ञा पुं० १. राल। २. मस्त हाथी।
अरावल–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
अरि–संज्ञा पुं० १. शत्रु। रिपु। वैरी। २. चक्र। ३. काम, क्रोध आदि। ४. छः की संख्या। ५. लग्न से छठा स्थान। (ज्यो०) ६. विट् खदिर। दुर्गंधित खर।
अरिन्दम–वि० शत्रुजयी। योद्धा। बली। शत्रुओं को दमन करनेवाला।

अरिमंडल—संज्ञा पुं० शत्रुसमूह शत्रु-राज्य।

अरियाना*—क्रि० स० तिरस्कार करना। अरे कहकर बोलना।

अरिल्ल—संज्ञा पुं० सोलह मात्राओं का छंद-विशेष।

अरिषड्वर्ग—संज्ञा पुं० छः शत्रुओं का समुदाय। काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, और मत्सर।

अरिष्ट—संज्ञा पुं० १. पीड़ा। दुःख। २. तक्र। ३. विपाक। ४. विपत्ति। आपत्ति। ५. अमंगल। दुर्भाग्य। ६. बुरा शकुन। ७. दुष्ट ग्रहों का योग। मरणकारक योग। ८. मद्य-विशेष जो धूप में ओषधियों का खमीर उठाकर बनता है। ९. काढ़ा। १०. वृषभासुर। ११. अनिष्ट-सूचक उत्पात; जैसे भूकंप। १२. सूतिकागृह। सौरी।
वि० १. अविनाशी। दृढ़। २. शुभ। ३. अशुभ। बुरा।

अरिष्टनेमि—संज्ञा पुं० १. कश्यप प्रजापति का एक नाम। २. कश्यपजी का एक पुत्र जो विनता से उत्पन्न हुआ था। ३. राजा सगर के ससुर का नाम। ४. २२वें तीर्थंकर का नाम (जैन)।

अरिहन—संज्ञा पुं० १. शत्रुघ्न। २. दे० "अरहर"। वि० शत्रु को मारनेवाला।

अरिहा—वि० जो शत्रु का नाश करे। संज्ञा पुं० लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न।

अरी—अव्य० स्त्रियों के लिए संबोधन।

अरीठा—संज्ञा पुं० रीठा।

अरुंतुद—वि० १. मर्मभेदी। मर्म तक को कष्ट पहुँचानेवाला। २. कठोर। कर्कश। ३. नाश करनेवाला। हानिकारक। अपथ्य।

अरुंधती—संज्ञा स्त्री० १. वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म से ब्याही गई थी। ३. एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षिमंडलस्थ वशिष्ठ के पास पड़ता है।

अरु—संयो० दे० "और"। फिर। पुनः।

अरुई†—संज्ञा स्त्री दे० "अरवी"। गर्भवती स्त्री का चिह्न। उसकी अरुचि।

अरुचि—संज्ञा स्त्री० १. अनिच्छा। रुचि का न होना। २. मन्दाग्नि रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती। ३. जी मचलाना। ४. नफरत। घृणा। ५. अश्रद्धा।

अरुचिकर—वि० जो अच्छा न लगे। जो रुचिकर न हो।

अरुज—वि० १. जो बीमार न हो। नीरोग। रोग से मुक्त। पीड़ा-रहित (फोड़ा आदि)। २ प्रसन्न।

अरुझना—क्रि० अ० दे० "उलझना"। झगड़ना।

अरुझाना—क्रि० स० दे० १. "उलझाना"। फँसाना। २. फाँसना।

अरुण—वि० [स्त्री० अरुणा] १. लाल। २. रक्त। ३. वृक्ष। ४. अव्यक्त राग। ५. ईषद्रक्त वर्ण। ६. सन्ध्या-राग। ७. शब्द-रहित।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. सूर्य्य का सारथी। ३. गुड़। ४. लालिमा जो संध्या सवेरे पश्चिम में दिखलाई पड़ती है ५. कुष्ठ रोग-विशेष। ६. गहरा लाल रंग ७. कुमकुम। ८. सिंदूर। ९. देश-विशेष १०. माघ के महीने का सूर्य। ११. गूँगा १२. जटायु के पिता का नाम। १३. सोना १४. लाल नामक रत्न।

अरुण कमल—संज्ञा पुं० रक्त कमल।

अरुणचूड़—संज्ञा पुं० मुर्गा। कुक्कुट।

अरुणप्रिया—संज्ञा स्त्री० १. छाया और संज्ञा, सूर्य्य की स्त्रियाँ। २. एक अप्सरा का नाम।

अरुण-लोचन—संज्ञा पुं० १. लाल नेत्र। २. कपोत। कबूतर। ३. कोकिल।

अरुणशिखा—संज्ञा पुं० मुर्गा।

अरुण-सारथि—संज्ञा पुं० सूर्य। भानु। दिवाकर।

अरुणाई—संज्ञा स्त्री० १. लालिमा। रक्तता। लाली। २. लाल रंग।

अरुणाभ—वि० लाल आभा से युक्त। लाली लिये हुए।

अरुणिमा—संज्ञा स्त्री० लालिमा। सुर्खी।

अरुणोदय—संज्ञा पुं० उषा-काल। ब्राह्म मुहूर्त्त। तड़का। भोर। विहान। प्रातः-काल। प्रभात।

अरुणोपल—संज्ञा पुं० १. पद्मराग मणि-विशेष। २. लाल।

अरुन*—वि० दे० "अरुण"।

अरुनाना*—क्रि० अ० लाल होना। क्रि० स० लाल करना।

अरुनारा–वि० १. लाल। २. लाल रंग का।
अरुरना*–क्रि० अ० बल खाना। लचकना। मुड़ना।
अरुवा–संज्ञा पुं० लता-विशेष जिसका कंद खाया जाता है।
संज्ञा पुं० उल्लू पक्षी। घुग्घू।
अरुढ़–वि० दे० "आरूढ़"। १. सवार २. तत्पर।
अरुलना–क्रि० अ० १. घाव होना। छिदना। २. पीड़ित या दुखी होना।
अरूप–वि० १. रूपरहित। निराकार। २. कुरूप। कुत्सित रूप। ३. कुश्री।
अरे–अव्य० १. ए। ओ। संबोधन का शब्द। २. एक आश्चर्य्यसूचक अव्यय। ३ नीच सम्बोधन। ४ सक्रोध आह्वान।
अरेब–संज्ञा पुं० पाप। अपराध। दोष।
अरेरना*–क्रि० अ० रगड़ना।
अरोग–वि० रोगरहित। भला। चंगा।
अरोगना*–क्रि० अ० १. दे० "आरोगना"। (मेवाड़ी भाषा में) २. भोजन करना।
अरोच*–संज्ञा पुं० दे० "अरुचि"।
अरोचक–संज्ञा पुं० रोग-विशेष जिसमें अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता। अरुचि रोग। वि० जिसमें अरुचि हो। अरुचिकर।
अरोड़ा–संज्ञा पुं० खत्रियों की एक शाखा जो पंजाब में विशेष संख्या में पाई जाती है।
अरोहन*–संज्ञा पुं० दे० "आरोहण"।
अरोहना–क्रि० अ० [दे० आरोहण] चढ़ना।
अर्क–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. सूर्य्य। ३. ताँबा। ४. स्फटिक। ५. विष्णु। ६. पंडित। ७. मदार। आक। ८. बारह की संख्या। ९. रविवार। १०. प्रशंसा। स्तुति। ११. विद्वान्। १२. बड़ा भाई। संज्ञा पुं० [अ०] उतारा या निचोड़ा हुआ। रस। दे० "अरक"।
अर्कज–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य के पुत्र। यम। २. अश्विनीकुमार। ३. शनि। ४. कर्ण। ५. सुग्रीव।
अर्कजा–संज्ञा स्त्री० १. यमुना। सूर्य्य की कन्या। २. ताप्ती।
अर्कट–संज्ञा स्त्री० सतर्कता। सावधानी।
अर्क-तनय–संज्ञा पुं० १. कर्णराज। २. सावर्णि मनु। ३. शनि। ४. यम।
अर्कनाना–संज्ञा पुं० [अ०] पुदीने का अर्क जो सिरके के साथ भबके में उतारा जाता है।
अर्कव्रत–संज्ञा पुं० १. राजा का प्रजा की वृद्धि के लिए उससे कर लेना। २. आरोग्य-सप्तमी का व्रत। ३. सूर्य का व्रत।
अर्कोपल–संज्ञा पुं० १. सूर्य्यकांत मणि। २. पद्मराग। लाल।
अर्गजा–दे० "अरगजा"।
अर्गनि–संज्ञा पुं० "अरगनी"।
अर्गल–संज्ञा पुं० १. वह लकड़ी जिसे किवाड़ बंद करके पीछे से आड़ी लगा देते हैं। अरगल। अगरी। ब्योंड़ा। हुड़का। २. किवाड़। ३. अवरोध। ४. कल्लोल। ५. वे रंग-बिरंग के बादल जो सूर्य्योदय या सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में दिखाई पड़ते हैं। ६. मांस। ७. एक नरक-विशेष।
अर्गला–संज्ञा स्त्री० १. अग्गल। अगरी। २. ब्योंड़ा। ३. किल्ली। बिल्ली। सिटकिनी। खील। ४. हाथी बाँधने की जंजीर। ५. एक स्तोत्र जिसका दुर्गासप्तशती के आदि में पाठ करते हैं। मत्स्यसूक्त। ६. बाधक। ७. रुकावट। अवरोध।
अर्गली–संज्ञा स्त्री० भेड़ की एक जाति जो मिस्र, स्याम आदि देशों में पाई जाती है।
अर्घ–संज्ञा पुं० १. षोडशोपचार में से एक। जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंडुल और जौ को मिलाकर देवता को अर्पण करना। २. अर्घ देने का पदार्थ। ३. सामने जल गिराना। जलदान। ४. अँचवाना। हाथ धोने के लिए जल देना। ५. भाव। मूल्य। ६. भेंट। ७. जल से सम्मानार्थ सींचना। ८. शहद। मधु। ९. घोड़ा।
अर्घपात्र–संज्ञा पुं० ताँबे का बरतन जो शंख के आकार का होता है और जिससे सूर्य्य। आदि देवताओं को अर्घ दिया जाता है। अर्घा
अर्घा–संज्ञा पुं० १. तर्पण का पात्र-विशेष। अर्घपात्र। २. जलहरी।
अर्घ्य–वि० १. पूजनीय। २. बहुमूल्य। ३.

पूजा में देने योग्य (जल, फूल, मूल आदि)। ४. भेंट देने योग्य।
संज्ञा पुं० १. दर्शनी। भेंट। उपहार। २. उत्तम। ३. गृह में आये हुए को जल आदि देना।
अर्चक–वि० अर्चनाकारी। पूजा करनेवाला।
अर्चन–संज्ञा पुं० १. पूजन। पूजा। २. सत्कार। आदर।
अर्चनीय–वि० १. आदरणीय। २. वंदनीय। ३. पूजनीय। पूजा करने योग्य।
अर्चा–संज्ञा स्त्री० १. पूजा। २. सेवा। ३. आराधना। ४. प्रतिमा। ५. देवमूर्ति।
अर्चि–संज्ञा स्त्री० १. सूर्य की किरण। २. अग्नि-शिखा। आग की लपट। आँच। ३. चमक। ज्योति। ४. धूप।
अर्चित–वि० १. आराधित। पूजित। २. आदृत।
अर्चिरादिमार्ग–संज्ञा पुं० देवयान। उत्तर मार्ग। वह मार्ग जिससे मुक्त जीव भगवान् के पास जाते हैं।
अर्चिष्मान्–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. सूर्य। वि० दीप्तिमान्। देदीप्यमान।
अर्च्य–संज्ञा पुं० पूजनीय। पूज्य।
अर्ज–संज्ञा स्त्री० [अ०] विनय। विनती। संज्ञा पुं० १. आयत। २. चौड़ाई।
अर्जक–संज्ञा पुं० उपार्जनकर्ता। कमानेवाला।
अर्जदाश्त–संज्ञा स्त्री० प्रार्थना-पत्र। निवेदन-पत्र।
अर्जन–संज्ञा पुं० [वि० अर्जनीय] १. कमाना। पैदा करना। लाभ। उपार्जन। कमाई। प्राप्ति। २. संग्रह करना। संग्रह।
अर्जमा–*संज्ञा पुं० दे० "अर्यमा"।
अर्जित–वि० १. इकट्ठा किया हुआ। संचित। संगृहीत। २. कमाया हुआ। प्राप्त। लब्ध।
अर्जी–संज्ञा स्त्री० आवेदन या प्रार्थना-पत्र।
अर्जीदावा–संज्ञा पुं० वह प्रार्थना-पत्र जो अदालत में न्याय के लिए दिया जाय।
अर्जीनवीस–संज्ञा वि० दूसरों की अर्जियाँ लिखने का काम करनेवाला।
अर्जुन–संज्ञा पुं० १. वृक्ष-विशेष। काहू। २. पाँच पाँडवों में से तीसरे का नाम। ३. हैहयवंशी राजा-विशेष। सहस्रार्जुन। ४. मोर। ५. सफेद कनेर। ६. एकलौता बेटा। ७. इंद्र। ८. चाँदी। ९. सोना। १०. आँख की फूली।
अर्जुनी–संज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। २. उषा। ३. कुटनी। ४. करतोया नदी।
अर्ण–संज्ञा पुं० १. अक्षर। वर्ण। जैसे, पंचार्ण= पंचाक्षर। २. पानी। जल। ३. एक दंडक वृत्त। ४. शालवृक्ष। ५. लहर। ६. नदी। ७. बाढ़।
अर्णव–संज्ञा पुं० १. सागर। समुद्र। २. सूर्य्य। ३. इंद्र। ४. अंतरिक्ष। ५. दंडक वृत्त-विशेष। ६. चार की संख्या।
अर्णवपोत–संज्ञा पुं० जहाज। वृहत् नौका। समुद्र-यान।
अर्णवयान–संज्ञा पुं० जहाज।
अर्थ–संज्ञा पुं० [वि० अर्थी] १. शब्द का अभिप्राय। २. शब्द की शक्ति। मानी। ३. प्रयोजन। अभिप्राय। मतलब। ४. इष्ट। काम। ५. हेतु। कारण। निमित्त। ६. इन्द्रियों के विषय। ७. संपत्ति। धन।
अर्थंकर–वि० [स्त्री० अर्थकरी] जिससे धन उपार्जन किया जाय। लाभकारी। जिससे धन पैदा हो। जैसे, अर्थकरी विद्या। लाभप्रद।
अर्थगौरव–संज्ञा पुं० अर्थ की गम्भीरता।
अर्थज्ञ–संज्ञा पुं० भाव-मर्मज्ञ।
अर्थज्ञान–संज्ञा पुं० तात्पर्य।
अर्थतः–अव्य० फलतः। वस्तुतः।
अर्थदंड–संज्ञा पुं० वह धन जो किसी अपराध के दंड में अपराधी से लिया जाय। धन का दण्ड। जुर्माना।
अर्थदूषण–संज्ञा पुं० अपरिमित व्यय।
अर्थनाश–संज्ञा पुं० १. निराश। २. धननाश।
अर्थपति–संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. अति धनी। राजा।
अर्थपर–वि० १. कृपण। २. व्यय। ३. शंकित।
अर्थपिशाच–वि० धनलोलुप। धन के सामने कर्त्तव्याकर्त्तव्य पर ध्यान न देनेवाला। बहुत बड़ा कजूस।
अर्थप्रयोग–संज्ञा पुं० १. वृद्धि। २. निमित्त। ३. धनदान।

अर्थप्राप्ति–संज्ञा स्त्री० धनलाभ। लभ्य।
अर्थमंत्री–संज्ञा पुं० दे० "अर्थसचिव"।
अर्थवत्व–वि० प्रयोजनार्हता। प्रयोजनीयता।
अर्थवाद–संज्ञा पुं० १. वह वाक्य जिसमे किसी विधि के करने की उत्तेजना पाई जाय। २. वह वाक्य जो सिद्धांत के रूप में न कहा जाय, केवल किसी ओर मूर्खों का चित्त प्रवृत्त करने के लिए कहा जाय। ३. काल्पनिक। ४. फलश्रुति। ५. स्तुति। ६. प्रशंसा। ७. प्ररोचक वाक्य।
अर्थविज्ञान–संज्ञा पुं० शब्दार्थज्ञान।
अर्थवृद्धि–संज्ञा स्त्री० धनवर्द्धन।
अर्थवेद–संज्ञा पुं० शिल्पशास्त्र।
अर्थशाली–संज्ञा पुं० धनशाली। धनवान्।
अर्थशास्त्र–संज्ञा पुं० १. वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विधान हो। २. राज्य के प्रबंध, वृद्धि, रक्षा आदि की विद्या। ३. धन उपार्जक शास्त्र।
अर्थसचिव–संज्ञा पुं० अर्थमंत्री। वह मंत्री जो राज्य के आर्थिक विषयों की देख-रेख करे।
अर्थात्–अव्य० १. यानी। मतलब यह कि। २. विवरणसूचक शब्द। ३. वस्तुतः। अर्थतः। फलतः।
अर्थान्तर–संज्ञा पुं० अन्यार्थ। दूसरा अर्थ।
अर्थान्तरन्यास–संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य-द्वारा समर्थन किया जाय।
अर्थाना*–क्रि० स० अर्थ करना। मतलब लगाना।
अर्थापत्ति–संज्ञा पुं० १. ऐसा प्रमाण जो स्व-संबद्ध दूसरी युक्ति को भी सिद्ध कर दे (मीमांसा)। २. अर्थालंकार-विशेष जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात की सिद्धि दिखलाई जाय।
अर्थालंकार–संज्ञा पुं० अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय।
अर्थी–वि० [स्त्री० अर्थिनी] १. याचक। जो इच्छा रक्खे। चाह रखनेवाला। २. प्रयोजनवाला। जिसकी गरज हो। संज्ञा पुं० १. मुद्दई। वादी। २. सेवक। ३. धनवान्। संज्ञा स्त्री० दे० "अरथी"। मुरदे की खाट।
अर्दन–संज्ञा पुं० १. हिंसा। पीड़न। २. जाना। ३. याचना करना। माँगना। ४. बेचैनी। ५. शिव का एक नाम। ६. भयंकर पीड़ा।
अर्दना*–क्रि० स० पीड़ित करना। सताना।
अर्दली–संज्ञा पुं० दे० "अरदली"।
अर्दावा–वि० मोटा आटा। दलिया।
अर्दित–वि० १. पीड़ित। यंत्रणायुक्त। हिंसित। २. याचित। ३. गत।
अर्द्ध–वि० १. आधा। २. तुल्य-विभाग। सम विभाग। ३. मध्य।
अर्द्धचन्द्र–संज्ञा पुं० १. चन्द्रखण्ड। अर्द्धेन्दु। आधा चाँद। अष्टमी का चन्द्रमा। २. चंद्रिका। मोरपंख पर की आँख। ३. नखक्षत। ४. एक प्रकार का बाण। ५. चंद्रबिंदु। सानुनासिक का एक चिह्न। ६. एक प्रकार का त्रिपुंड्र। ७. गरदनिया। गलहसा। निकाल बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाने की मुद्रा। (अँगूठा और उसके बाद की अँगुली को फैलाने से उक्त मुद्रा बनती है)।
अर्द्धजल–संज्ञा पुं० मुमूर्षु को स्नान करा के आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया।
अर्द्धनयन–संज्ञा पुं० देवताओं के मस्तक की तीसरी आँख।
अर्द्धनारीश–संज्ञा पुं० शिव। १. महादेव। हर-गौरी। २. मूर्त्ति-विशेष।
अर्द्धनारीश्वर–संज्ञा पुं० तंत्र में शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप।
अर्द्धनिमेष–संज्ञा पुं० आधा क्षण।
अर्द्धमागधी–संज्ञा स्त्री० १. प्राकृत का भेद-विशेष। २. काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।
अर्द्धरथ–संज्ञा पुं० एक रथी से न्यून योद्धा। अर्द्धरथी।
अर्द्धरात्र–संज्ञा पुं०, महानिशा। रात्रि का अर्द्ध भाग। आधी रात।
अर्द्धवृत्त–संज्ञा पुं० मध्यबिन्दु से समान अन्तर पर खींची हुई गोल रेखा का आधा अंश। आधा गोला या वृत्त।
अर्द्धसमवृत्त–संज्ञा पुं० वृत्त का आधा भाग।

अर्द्धसमवृत्ति–संज्ञा पुं० छंद-विशेष जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो। जैसे, दोहा और सोरठा।

अर्द्धांग–संज्ञा पुं० १. आधा अंग। २. लकवा रोग जिसमें आधा अंग बेकाम हो जाता है। शीतांग। रोग-विशेष। फालिज। ३ पक्षाघात।

अर्द्धांगिनी–संज्ञा स्त्री० पत्नी। स्त्री।

अर्द्धांगी–संज्ञा पुं० शिव।
वि० अर्द्धांग-रोग-ग्रस्त।

अर्द्धांश–संज्ञा पुं० अर्द्धभाग।

अर्द्धाली–संज्ञा स्त्री० चौपाई की दो पंक्तियों में से एक। आधी चौपाई।

अर्द्धोदय–संज्ञा पुं० पर्व-विशेष जो उस दिन होता है जिस दिन माघ की अमावास्या रविवार को होती है और श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग पड़ता है।

अर्धंग*–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"। आधा अंग।

अर्धंगी–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।

अर्पण–संज्ञा पुं० [वि० अर्पित] १. भेंट। नजर। २. समर्पण। ३. दान देना। ४. स्थापन।

अर्पना–क्रि० स० दे० "अरपना"।

अर्ब–संज्ञा पुं० दश कोटि। संख्या-विशेष।

अर्ब-खर्ब–असंख्य।

अर्ब-दर्ब*–संज्ञा पुं० सम्पत्ति। धन-दौलत।

अर्बाक्–वि० १. प्राक्। पूर्व। आदि। २. अग्र। ३. निकट। ४. पश्चात्।

अर्बुद–संज्ञा पुं० १. दश कोटि। गणित में नवें स्थान की संख्या। दस करोड़। २. अरावली पहाड़। आबू पर्वत। ३. राक्षस-विशेष। ४. कद्रु का पुत्र, सर्प-विशेष। ५. बादल। मेघ। ६. गर्भ जो दो मास का हो। ७. रोग-विशेष जिसमें एक प्रकार की गाँठ शरीर में पड़ जाती है। बतौरी।

अर्भ–संज्ञा पुं० १. बालक। २. शिशिर ऋतु। ३. शिष्य। ४. साग-पात।

अर्भक–वि० १. छोटा। २. अल्प। कम। ३. मर्ख। ४. पतला। दुबला। कृश।
संज्ञा पुं० लड़का। बालक। शिशु।

अर्य्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० अर्या, अर्याणी, अर्यी] १. ईश्वर। स्वामी। मालिक। २. वैश्य।
वि० १. बढ़िया। श्रेष्ठ। उत्तम। २. कृपालु। ३. प्रिय। ४. निष्ठ।

अर्य्यमा–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. बारह आदित्यों में से एक। ३. पितर के गणों में से एक। ४. उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। ५. अर्क वृक्ष। मदार। ६. नित्य। ७. घनिष्ठ मित्र।

अर्राना–क्रि० अ० एक बेर आ पड़ना।

अर्रारा–संज्ञा पुं० एक ही समय गिरना। अकस्मात् गिरना।

अर्वाक्–अव्य० १. पीछे। २. इधर। ३. पास। निकट। समीप।

अर्वाचीन–वि० १. बाद का। पीछे का। २. आधुनिक। प्राचीन का उल्टा। ३. नया। नवीन। नूतन। ४. अज्ञान। ५. विरुद्ध।

अर्श–संज्ञा पुं० रोग-विशेष। बवासीर।
संज्ञा पुं० [अ०] १. स्वर्ग। २. आकाश।

अर्श-पर्श–संज्ञा पुं० १. छुआछूत। २. अशुद्ध।

अर्ह–वि० १. पूज्य। श्रेष्ठ। २. योग्य। उत्तम पात्र। उपयुक्त। जैसे, पूजार्ह, मानार्ह, दंडार्ह।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. इंद्र। मूल्यवान्। कीमती।

अर्हणा–संज्ञा स्त्री० [वि० अर्हणीय] पूजा। उपहार।

अर्हंत=–संज्ञा पुं० जैन-विशेष। जैनियों के एक तीर्थंकर का नाम।

अर्हत, अर्हन–वि० पूजा।
संज्ञा पुं० जिनदेव।

अर्ह्य–वि० मान्य। पूज्य। पूजनीय।

अलं–अव्य० दे० "अलम"।

अलंकरण–संज्ञा पुं० सजाना। किसी चीज को अलंकारों या बेलबूटों से अलंकृत करना। सजावट।

अलंकार–संज्ञा पुं० [वि० अलंकृत] १. गहना। आभूषण। जेवर। आभरण। २. वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार

और रोचकता आ जाय। ३. नायिका का सौंदर्य्य बढ़ानेवाली चेष्टाएँ। हाव-भाव।
अलंकारहीन–वि० १. भूषणरहित। २. अशोभित।
अलंकृत–वि० १. भूषित। शोभित। विभूषित। सँवारा हुआ। २. अलंकारयुक्त।
अलंग–संज्ञा पुं० १. ओर। तरफ। दिशा। पार। छोर। २. एक तरफ।
मुहा०–अलंग पर आना वा होना=घोड़ी का मस्ताना।
अलंघनीय–वि० अलंघ्य। जो लाँघा न जा सके।
अलंघ्य–वि० जिसे फाँद न सकें। जो लाँघने योग्य न हो २. जिसे टाल न सकें। ३. जिससे पीछा न छुड़ा सकें।
अलंब–संज्ञा पुं० दे० "आलंब"। सहारा।
अल–अव्य० १. भूषण। २. पर्याप्त। ३. वारण। ४. वृथा। ५. शक्ति। ६. निरर्थक। ७. मधुमक्खी तथा बिच्छू का डंक। ८. पानी में रहनेवाला।
अलक–संज्ञा पुं० १. केश। लट। मस्तक के इधर-उधर लटकते हुए बाल। घुँघराले बाल। २. चुटिया। ३. हरताल। ४. मदार।
अलकतारा–संज्ञा पुं० धूना। कोलतार। पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ।
अलक-लड़ैता*–वि० [स्त्री० अलकलडैंती] दुलारा। लाड़ला।
अलकसलोरा*–वि० [स्त्री० अलकसलोरी] प्यारा। लाड़ला। दुलारा।
अलका–संज्ञा स्त्री० १. कुबेरपुरी। २. आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।
अलकाधिप–संज्ञा पुं० कुबेर। धनेश्वर।
अलकापति–संज्ञा पुं० कुबेर।
अलकावलि–संज्ञा स्त्री० वेणी। केशों का समूह। बालों की लटें। घुँघराले बाल।
अलक्त, अलक्तक–संज्ञा पुं० १. चपड़ा। लाख। २. लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।
अलक्षण–संज्ञा पुं० [स्त्री० अलक्षणा] बुरे चिह्न। कुलक्षण। अशुभ चिह्न या लक्षण। बुरे लक्षणवाला। लक्षण का न होना।
अलक्षित–वि० १. अज्ञात। अप्रकट। २. गायब। अदृश्य। गुप्त।
अलक्ष्य–वि० १. गायब। अदृश्य। जो दिखाई न पड़े। २. जिसका लक्षण न बताया जा सके।
अलख–वि० १. अनदेखा। जो दिखाई न पड़े। अप्रत्यक्ष। अदृश्य। २. इन्द्रियों से परे। अगोचर। ईश्वर का एक विशेषण।
मुहा०–अलख जगाना=१. पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना। २. परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना।
अलखधारी–संज्ञा पुं० दे० "अलखनामी"।
अलखनामी–संज्ञा पुं० साधु-विशेष। जो भिक्षा के लिए जोर जोर से "अलख अलख" पुकारते हैं।
अलखित*–वि० दे० "अलक्षित"।
अलग–वि० न्यारा। पृथक्। भिन्न। अलहदा।
मुहा०–अलग करना=१. दूर करना। हटाना। २. छुड़ाना। बरखास्त करना। ३. बेलाग। रक्षित।
अलगनी–संज्ञा स्त्री० "अरगनी"। आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े लटकाने या फैलाने के लिए घर में बाँधा जाता है। डारा।
अलगरज–वि० दे० "अलगरजी"। लापरवाही।
अलगरजी†–१. [अ०] लापरवाह। बेगरज। २. चिन्ता न करनेवाला। बेफिक्र।
संज्ञा स्त्री० बेपरवाही।
अलगाना–क्रि० स० १. छाँटना। अलग करना। २. हटाना। दूर करना।
अलगोजा–संज्ञा पुं० बाँसुरी-विशेष।
अलच्छ*–वि० दे० "अलक्ष्य"। जो दिखलाई न पड़े।
अलज्ज–वि० बेहया। निर्लज्ज। बेशर्म।
अलडबलड–संज्ञा स्त्री० १. जड़। निर्बुद्धि। २. बकबक। ३. अव्यवस्थित।
अलतनी–संज्ञा स्त्री० हाथी की बागडोर।
अलता–संज्ञा पुं० १. महावर। जावक। २. खसी की मूत्रेन्द्रिय। ३. आलता। लाख का रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।
अलपाका–संज्ञा पुं० १. जानवर-विशेष जो

दक्षिण अमेरिका में मिलता है और ऊँट की तरह होता है। २. इस जानवर का ऊन। ३. एक प्रकार का महीन कपड़ा।

अलफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० अलफी] बिना बाँह का लंबा कुरता-विशेष।

अलबत्ता–अव्य० १. निस्संदेह। बेशक। निःसंशय। २. बहुत ठीक। हाँ। ३. परन्तु। लेकिन। किन्तु।

अलबम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्र एकत्र करके रखे जाते हैं। चित्र-संग्रह। दे० "चित्राधार"

अलबेला–वि० [स्त्री० अलबेली] १. छैल-छबीला। बाँका। छैला। बना-ठना। २. अनूठा। अनोखा। अद्‌भुत। सुन्दर। ३. अल्हड़। लापरवाह। मनमौजी। संज्ञा पुं० नारियल का बना हुक्का।

अलबेलापन–संज्ञा पुं० १. सज-धज। छैलापन। २. अनूठापन। अनोखापन। ३. सुन्दरता। ४. अल्हड़पन। लापरवाही।

अलबी तलबी–संज्ञा स्त्री० अरबी, फारसी या कठिन उर्दू। (उपेक्षा)

अलभ्य–वि० १. जो मिलने योग्य न हो। अप्राप्य। २. दुर्लभ। जो कठिनता से मिल सके दुष्प्राप्य। ३. अनमोल। अमूल्य। बहुमूल्य।

अलम्–अव्य० १. यथेष्ट। काफी। पर्याप्त। २. पूर्ण। ३. सामर्थ्य। ४. पूर्णता। ५. निषेध। ६. निरर्थक। ७ बहुत। बस। ८. समूह। भीड़।

अलम–संज्ञा पुं० १. दुःख। रंज। २. झंडा।

अलमस्त–वि० १. मस्त, मतवाला। बेहोश, बदहोश। २. चिन्ता-रहित। बेफिक्र।

अलमारी–संज्ञा स्त्री० लकड़ी की खड़ी सन्दूक जिसमें चीजें रखने के लिए खाने या दर बने रहते हैं।

अलर्क–संज्ञा पुं० १. पागल कुत्ता। २. सफेद मदार या आक। ३. प्राचीन राजा-विशेष जिसने एक अंध ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निकालकर दे दी थीं।

अलल-टप्पू–वि० अंड-बंड। अटकलपच्चू। बेठिकाने का। बे-सिरपैर का।

अलल-बछेड़ा–संज्ञा पुं० १. घोड़े का जवान बच्चा। २. अल्हड़ आदमी।

अललम हिसाब–क्रि० वि० बिना हिसाब किये धन लेना या देना।

अललाना†–क्रि० अ० १. चिल्लाना। २. गला फाड़कर बोलना।

अलवाँती–वि० जिसके बच्चा उत्पन्न हुआ हो (स्त्री)। जच्चा। प्रसूता।

अलवाई–वि० (गाय या भैंस) जिसको बच्चा जने एक या दो महीने हुए हों। "बाखरी" का उलटा।

अलवान–संज्ञा पुं० [अ०] ऊनी चादर।

अलस–वि० १. ढीला। सुस्त। आलसी। मन्द। २. कर्मों में अनुत्साही। थका हुआ। ३. कुत्ते के ज्वर का नाम।

अलसत–संज्ञा स्त्री० आलस्य। शैथिल्य।

अलसन, अलसानि*–संज्ञा स्त्री० १. सुस्ती। आलस्य। २. शैथिल्य। शिथिलता।

अलसाना–क्रि० अ० १. आलस्य से ग्रसित होना। शिथिलता अनुभव करना। २. ऊँघना। झूमना। ३. हिलना।

अलसी–संज्ञा स्त्री० १. एक पौधा-विशेष जिसके बीजों से तेल निकलता है। २. उस पौधे के बीज। तीसी। मसीना।

अलसेट*–संज्ञा स्त्री० [वि० अलसेटिया] १. ढिलाई। व्यर्थ का विलंब। २. चकमा। भुलावा। हीला-हवाला। ३. विघ्न। बाधा। अड़चन। ४. झगड़ा। लड़ाई।

अलसेटिया*–वि० १. व्यर्थ में विलंब करनेवाला। २. विघ्न पैदा करनेवाला। ३. टालमटूल करनेवाला। ४. लड़ाई-झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

अलसौंहाँ–वि० [स्त्री० अलसौंही] १. आलसी। क्लांत। शिथिल। २. उनींदा। निद्राग्रस्त।

अलहदगी–संज्ञा स्त्री० [अ०] अलगाव। जुदा या अलग होने का भाव। पार्थक्य।

अलहदा–वि० [अ०] अलग। पृथक्।

अलहदी–वि० दे० "अहदी"। आलसी।

अलाई–वि० आलस्ययुक्त। आलसी। काहिल। संज्ञा पुं० घोड़े की जाति-विशेष।

अलात–संज्ञा स्त्री० जलती हुई लकड़ी। अंगारा।

अलातचक्र–संज्ञा पुं० १. जलती हुई लकड़ी को जोर से घुमाने से बना हुआ मंडल। २. बनेंठी।
अलान–संज्ञा पुं० १. हस्तिबन्धन। हाथी बाँधने का खूँटा या सिक्कड़। २. बेड़ी। बंधन। ३. बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी हुई लकड़ी।
अलाप–संज्ञा पुं० दे० "आलाप"। राग स्फुट करने के लिए स्वरविस्तार।
अलापना–क्रि० अ० १. स्वरों का विस्तार करना। २. गाना। ३. बोलना। बातचीत करना।
अलानिया–क्रि० वि० खुले आम। सबके सामने।
अलापी*–वि० १. स्वरों का विस्तार करनेवाला। गायक। २. बोलनेवाला।
अलाबू–संज्ञा स्त्री० १. तूँबा। २. लौवा। ३. कद्दू।
अलाम*–वि० बात बनानेवाला। झूठ बोलनेवाला।
अलामत–संज्ञा स्त्री० १. बीमारी। रोग। २. निशानी।
अलायक*–संज्ञा पुं० नालायक। अयोग्य। जो लायक न हो।
अलार–संज्ञा पुं० दरवाजा। कपाट। किवाड़। *आग का ढेर। अलाव। भट्ठी। आँवाँ।
अलाल–वि० १. सुस्त। आलसी। २. निकम्मा। अकर्मण्य।
अलाव*–संज्ञा पुं० १. आग का ढेर। तापने के लिए जलाई हुई आग। कौड़ा। २. धूनी। जखीरा।
अलावा–क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवाय।
अलिंग–वि० १. चिह्न या लिंग-रहित। २. जिसकी कोई पहचान बतलाई न जा सके। संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मित्र। २. ब्रह्म।
अलिंजर–संज्ञा पुं० झज्झर। घड़ा। पानी रखने का मिट्टी का बरतन।
अलिंद–संज्ञा पुं० मकान के बाहरी द्वार के आगे का छज्जा या चबूतरा।
संज्ञा पुं० भौंरा। अलि।
अलि–संज्ञा पुं० [स्त्री० अलिनी] १. भौंरा। २. कौवा। ३. कोयला। ४. बिच्छू। ५. कुत्ता। ६. वृश्चिक राशि। ७. मदिरा। संज्ञा स्त्री० दे० "अली"। सखी।
अलिनि–संज्ञा स्त्री० भ्रमरी।
अली–संज्ञा स्त्री० १. सहेली। सखी। आली। २. कतार। पंक्ति। लाइन।
*संज्ञा पुं० भौंरा। भ्रमर।
अलीक–वि० १. झूठा। मिथ्या। असत्य। २. जिसके मर्यादा न हो। प्रतिष्ठा-रहित। संज्ञा पुं० १. अप्रतिष्ठा। २. असार। अमर्यादा। ३. माथा। ४. स्वर्ग।
अलीन–संज्ञा पुं० १. साह। बाजू। द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी। २. दालान या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवार से सटा होता है।
वि० १. अग्राह्य। २. अनुपयुक्त। अयोग्य। अनुचित। बेजा। ३. जो मग्न न हो। विरत। अमनोयोगी।
अलील–वि० [अ०] रोगी। बीमार। रुग्ण।
अलीह*–वि० १. झूठ। मिथ्या। असत्य। २. अनुचित।
अलुक्–संज्ञा पुं० व्याकरण में समास का भेद-विशेष जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे सरसिज, मनसिज।
अलुझना*–क्रि० अ० दे० "अरुझना" और "उलझना"।
अलुटना*–क्रि० अ० गिरना-पड़ना। लड़खड़ाना। डगमगाना।
अलुमीनम–संज्ञा पुं० [अंग्रे० एलुमीनियम] एक धातु-विशेष जो कुछ-कुछ नीलापन लिये सफेद होती है।
अलूला*–संज्ञा पुं० १. भभूका। लपट। बबूला। २. बुलबुला।
अलेख–वि० १. दुर्बोध। अज्ञेय। जिसके विषय में कोई भावना न हो सके। २. लिखने के अयोग्य। अनगिनत।
वि० जो दिखाई न पड़े। अदृश्य।
अलेखा*–वि० १. जिसका हिसाब न हो। २. निष्प्रयोजन। व्यर्थ। निष्फल।

अलेखी*–वि० १. अंडबंड काम करनेवाला। २. गड़बड़ी करनेवाला। अन्यायी। अंधेर-कर्ता।

अलैकपलवा–संज्ञा पुं० अलीक। प्रलाप। झूठ बोलना। मनमाना। बकवाद।

अलैया-बलैया–संज्ञा स्त्री० १. निछावर। २. खेल।

अलोक–वि० १. अदृश्य। जो दिखाई न पड़े। २. एकांत। निर्जन। ३. पुण्यरहित।
संज्ञा पुं० १. परलोक। पातालादि लोक। २. कलंक। निंदा। मिथ्या दोष।

अलोकन–संज्ञा पुं० गुप्त होना। अदृश्यता। चम्पत होना।

अलोकना*–क्रि० स० ताकना। देखना।

अलोना या अलोणा, अलौना–वि० [स्त्री० अलोनी] १. जिसमें नमक न हो। २. जिसमें नमक न खाया जाय। जैसे, अलोना व्रत। ३. फीका। बेस्वाद। बेमजा।

अलोप –वि० दे० "लोप"। गायब। छिपा।

अलोलिक*–संज्ञा पुं० १. स्थिरता। अचंचलता। धीरता। अटल।

अलौकिक–वि० १. लोकोत्तर। इस लोक में दिखाई न देनेवाला। २. अद्‌भुत। अपूर्व। ३. अमानुष। ४. अनोखा। ५. सर्वसुन्दर। सर्वश्रेष्ठ।

अल्कत–वि० [अ०] काटा या रद्द किया हुआ।

अल्प–वि० १. कम। थोड़ा। कुछ। किंचित्। २. लघु। छोटा।
संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई का वर्णन होता है।

अल्पजीवी–वि० जिसकी आयु कम हो। अल्पायु। शीघ्र मरनेवाला।

अल्पबुद्धि–संज्ञा पुं० मन्दबुद्धि। असमझ।

अल्पज्ञ–वि० १. छोटी बुद्धि का। थोड़ा ज्ञान रखनेवाला। २. नासमझ।

अल्पता–संज्ञा स्त्री० १. न्यूनता। कमी। २. छोटाई।

अल्पत्व–संज्ञा पुं० दे० "अल्पता"।

अल्पप्राण–संज्ञा पुं० १. जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु का उपयोग थोड़ा किया जाय। २. व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल और व।

अल्पमत–संज्ञा पुं० थोड़े से लोगों का मत। बहुमत का उलटा। वे लोग जिनकी संख्या या मत औरों के मुकाबिले में कम हो। अल्पसंख्यक।

अल्पवयस्क–वि० कमसिन। छोटी आयु का।

अल्पशः–क्रि० वि० क्रमशः। थोड़ा थोड़ा करके। धीरे धीरे।

अल्पसंख्यक–वि० गिनती के थोड़े या कम।
संज्ञा पुं० वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरों की अपेक्षा कम हो।

अल्पसर–संज्ञा पुं० छोटी तलैया।

अल्पायु–वि० छोटी अवस्था का। जिसकी आयु कम हो।

अल्पाहार–संज्ञा पुं० थोड़ा खाना। अल्प आहार।

अल्ल–संज्ञा पुं० उपगोत्रज नाम। वंश का नाम। जैसे–पाँड़े, त्रिपाठी, मिश्र।

अल्लम-गल्लम–संज्ञा पुं० अंटसंट। अनाप-शनाप। प्रलाप। व्यर्थ की बकवाद।

अल्लाना*–†क्रि० अ० दे० "अललाना"।

अल्लामा–वि० [अ०] कर्कशा। लड़ाकी। लड़नेवाली (स्त्री०)।

अल्लाह–संज्ञा पुं० (अ०) ईश्वर।
यौ०–अल्लाहो अकबर=ईश्वर महान् है।

अल्हजा*–संज्ञा पुं० गप्प। इधर उधर की बात।

अल्हड़–वि० १. लापरवाह। मनमौजी। २. अनुभव-रहित। जिसे व्यवहार-ज्ञान न हो। अनसिखा। ३. उजड्ड। उद्धत। ४. गँवार। अनाड़ी।
संज्ञा पुं० नया बैल या बछड़ा जो निकाला न गया हो।

अल्हड़पन–संज्ञा पुं० १. मनमौजीपन। लापरवाही। २. भोलापन। व्यवहार-ज्ञान का अभाव। ३. अक्खड़पन। उजड्डपन। ४. गँवारपन। अनाड़ीपन।

अवंती–संज्ञा स्त्री० उज्जैन। उज्जयिनी (यह

सप्तपुरियों में से एक है)। विशाला। यह महाराज विक्रमादित्य की राजधानी थी।

अव–उपसर्ग-विशेष। १. विशेष। २. निश्चय। ३. अनादर। ४. आलंबन। ५. विज्ञान। ६. व्याप। ७. शुद्धि। ८. अल्प। ९. परिभव। १०. नियोग। ११. पालन। यह जिस शब्द में लगता है, उसमें निम्नलिखित अर्थों की योजना करता है––१. निश्चय, जैसे–अवधारण। २. अनादर, जैसे––अवज्ञा। ३. न्यूनता या कमी, जैसे––अवघात। ४. निचाई या गहराई, जैसे––अवतार। अवक्षेप। ५. व्याप्ति, जैसे––अवकाश। अवगाहन। *अव्य० दे० "और"।

अवकथन–संज्ञा पुं० स्तुति। उपासना। प्रसादक वाक्य।

अवकर्तन–संज्ञा पुं० सूत बनाने का यंत्र। चरखा।

अवकर्षण–संज्ञा पुं० उद्धार। निष्कर्षण। बाहर खींचना।

अवकलन–संज्ञा पुं० [वि० १. इकट्ठा करके मिला देना। २. देखना ३. जानना। ज्ञान। ४. ग्रहण।

अवकलना*–क्रि० अ० ज्ञान होना। समझ में आना।

अवकाश–संज्ञा पुं० १. खाली। रिक्त स्थान। २. आकाश। अंतरिक्ष। शून्य स्थान। ३. अंतर। दूरी। फासिला। ४. समय। अवसर। मौका। ५. खाली वक्त। फुर्सत। छुट्टी। ६. सुभीता।

अवकिरण–संज्ञा पुं० [वि० अवकीर्ण, अवकृष्ट] फैलाना। छितराना। बिखेरना।

अवकीर्ण–वि० १. बिखेरा हुआ। फैलाया या छितराया हुआ। २. नष्ट। नाश किया हुआ। ३. चूर चूर किया हुआ। ४. विक्षिप्त। ५. अनाहत।

अवकीर्णी–वि० १. क्षतव्रत। नियमभ्रष्ट व्रत। २. निषिद्ध वस्तुओं के संसर्ग से जिसका व्रत भंग हो गया हो। ३. अयोग्य वस्तुसेवी मनुष्य।

अवकुञ्चन–संज्ञा पुं० वक्रीकरण। टेढ़ा करना। मोड़ना।

अवकुण्ठन–संज्ञा पुं० साहस-परित्याग। भीरु होना। असाहसी होना।

अवकुण्ठित–संज्ञा पुं० असाहसी। भीरु।

अवकृपा–संज्ञा स्त्री० कृपा का न होना। नाराजगी।

अवकेशी–वि० बाँझ। बन्ध्या। निष्पुत्र। पुत्रहीन। सन्तान-रहित।

अवक्तव्य–वि० अकथ्य। कथन के अयोग्य।

अवक्रन्दन–संज्ञा पुं० खूब जोर से क्रन्दन। चिल्ला चिल्लाकर रोना।

अवक्खन–संज्ञा पुं० देखना।

अवक्रुष्ट–वि० १. भर्त्सित। निन्दित। २. मन्द ध्वनित। ३. कुशब्दयुक्त। गाली दिया हुआ।

अवखण्डन–संज्ञा पुं० खनन। खोदना।

अवखात–संज्ञा पुं० गहरा गड्ढा।

अवगत–वि० १. ज्ञात। विदित। मालूम। जाना हुआ। २. परिचित। ३. गिरा हुआ। नीचे गया हुआ।

अवगतना*–क्रि० स० विचार करना। समझना।

अवगति–संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। धारणा। समझ। ज्ञान। बोध। विज्ञता। २. बुरी गति। ३. गमन।

अवगाढ़–वि० १. निमज्जित। कृतस्नान। २ घुसा। प्रविष्ट। छिपा।

अवगात–संज्ञा पुं० अपघात। अपमृत्यु।

अवगारना*–क्रि० स० जताना। समझाना-बुझाना।

अवगाह*–वि० १. बहुत गहरा। अथाह। २. कठिन। अनहोना। *संज्ञा पुं० १. गहरा स्थान। २. कठिनाई। ३. संकट का स्थान। ४. हलना। भीतर प्रवेश करना। ५. जल मे हलकर स्नान करना। ६. बालटी।

अवगाहन–संज्ञा पुं० [वि० अवगाहित] १. पानी में हलकर स्नान। डुबकी। गोता। निमज्जन। २. पैठ। प्रवेश। ३. विलोड़न। मंथन। ४. छान-बीन। खोज। ५. लीन होकर विचार करना। चित्त लगाना। ६. अथाह। अति गहरा।

अवगाहना*–क्रि० अ० १. निमज्जन करना। हलकर नहाना। २. धँसना। पैठना। ३. एकाग्रचित्त होना।
क्रि० स० १. खोज या छान-बीन करना। २. विचलित करना। हलचल डालना। ३. हिलाना। चलाना। ४. विचारना। सोचना। ५. धारण करना। ६. ग्रहण करना। लेना।

अवगीत–संज्ञा पुं० निन्दा। दोषदुष्ट। अति निन्दित। विशेष लांछित।

अवगुंठन–संज्ञा पुं० [वि० अवगुंठित] १. ढक्कन। छिपाना। ढँकना। २. रेखा से घेरना। ३. घूँघट। ४. बुर्का।

अवगुंफन–संज्ञा पुं० गूँथना। गुहना। [वि० अवगुंफित।]

अवगुण–संज्ञा पुं० १. ऐब। दोष। २. बुराई। खोट। अवगुन। "औगुण"।

अवगूहन–संज्ञा पुं० आलिंगन। आश्लेष। प्रेम से परस्पर अंग-संस्पर्श।

अवग्रह–संज्ञा पुं० १. रोक। बाधा। २. वृष्टि। ३. बालटी। ४. अंकुश (हाथी को संयत रखने का)। ५. बहु काल। ६. ग्रहण। ७. अपहरण। ८. हाथी का मस्तक। ९. हाथियों का झुण्ड। १०. स्वभाव। ज्ञान ११. ज्ञान-विशेष। (जैन-दर्शन)। १२. अड़चन। १३. वर्षा का न होना। अनावृष्टि। १४. बंद। बाँध। १५. संधि-विच्छेद (व्या०)। १६. 'अनुग्रह' का उलटा। १७. प्रकृति। स्वभाव। १८. कोसना। शाप।

अवघट–वि० १. कुघाट। २. विकट। दुर्गम। कठिन। ३. अड़बड़। ऊँचा-खाला। टूटा-फूटा।

अवचट–संज्ञा पुं० १. औचक। अचक्का। अनजान। २. संकट। कठिनाई। अंडस।
क्रि० वि० अचानक। अकस्मात्। अनजान में।

अवचर–वि० १. एक दृष्टि। २. औचक। अचानक। एकबारगी।

अवचय–संज्ञा पुं० चुनकर इकट्ठा करना। फल-फूल आदि तोड़कर या चुनकर इकट्ठा करना।

अवचेतन–वि० जिसे पूरी चेतना न हो। आंशिक या थोड़ी चेतनावाला।

अवचेतना–संज्ञा स्त्री० चेतना की प्रायः सुषुप्त-सी अवस्था जिसमें किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता।

अवचेष्टा–संज्ञा स्त्री० मन्द चेष्टा। अनाड़ीपन।

अवच्छिन्न–वि० १. अलग किया हुआ। पृथक्। २. विशेषण-सहित। ३. सीमाबद्ध।

अवच्छेद–संज्ञा पुं० [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] १. भेद। अलगाव। २. सीमा। हद। ३. छानबीन। अवधारण। ४. विभाग। परिच्छेद।

अवच्छेदक–वि० १. अलग करनेवाला। भेद बतानेवाला। २. हद बाँधनेवाला। ३. निश्चय करानेवाला। अवधारक।
संज्ञा पुं० विशेषण।

अवछंग*–संज्ञा पुं० दे० "उछंग"।

अवज्ञा–संज्ञा स्त्री० [वि० अवज्ञात, अवज्ञेय] १. अनादर। अपमान। २. उपेक्षा। अमान्यकरण। आज्ञा न मानना। अवहेला। ३. हार। पराजय। ४. काव्यालंकार-विशेष जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न प्राप्त करना दिखलाया जाय।

अवज्ञात–वि० उपेक्षित। अनादृत। अपमानित।

अवज्ञेय–वि० तिरस्कार, अनादर या अपमान के योग्य।

अवट–अव्य० १. औंटाकर। खौलाकर। २. गर्त गह्वर। छिद्र। ३. नटवृत्ति से जीवन काटनेवाला।

अवटना–क्रि० स० १. मथना। २. किसी द्रव पदार्थ को आँच पर गाढ़ा करना।
क्रि० अ० फिरना। घूमना।

अवडेरना–क्रि० स० १. झंझट में फँसाना। फेर में डालना। २. परेशान करना। तंग करना। ३. शांतिभंग करना।

अवडेर–संज्ञा पुं० [देश०] १. चक्कर। फेर। २. बखेड़ा। झंझट। ३. रंग में भंग। बाधा।

अवडेरा–वि० १. फेर का। चक्करदार। २. जिसमें झंझट हो। ३. कुढंगा। बेढब।

अवढर–वि० नीच पर भी ढलने या दया करनेवाला। बिना विचारे दया करने वाला।

अवतंस–संज्ञा पुं० [वि० अवतंसित] १. गहना। अलंकार। भूषण। २. शिरोभूषण। चूड़ामणि। सिरपेच। टीका। ३. मुकुट। ४. सबसे उत्तम पुरुष। श्रेष्ठ व्यक्ति। ५. हार। माला। ६. बाली। मुरकी। ७. कर्णफूल। ८. दूल्हा।

अवतरण–संज्ञा पुं० १. पार होना। उतरना। अवरोहण। २. जन्म लेना। ३. नकल। प्रतिकृति। ४. प्रादुर्भाव। ५. सीढ़ी। ६. घाट। ७. भाषान्तर। अनुवाद।

अवतरणिका–संज्ञा स्त्री० १. भूमिका। प्रस्तावना। वक्तव्य विषय की सूचना। उपोद्घात। २. परिपाटी। ३. आभास।

अवतरना*–क्रि० अ० १. प्रकट होना। उपजना। जन्मना। २. प्रकाश पाना। ३. नीचे उतरना।

अवतरित–वि० १. ऊपर से नीचे उतारा हुआ। किसी दूसरे स्थल से लिया हुआ। उद्धृत। २. जिसने अवतार धारण किया हो।

अवतार–संज्ञा पुं० १. नीचे आना। उतरना। २. जन्म। शरीर-ग्रहण। ३. देवता का मनुष्यादि संसारी प्राणियों के शरीर को धारण करना। ४. विष्णु या ईश्वर का संसार में शरीर धारण करना। भगवान् का लीलार्थ प्राकट्य। *५. सृष्टि।

अवतारण–संज्ञा पुं० [स्त्री० अवतारणा] १. नीचे लाना। उतारना। २. नकल करना। ३. उदाहृत करना।

अवतारना–क्रि० स० १. रचना। बनाना। २. पैदा करना। ३. जन्म देना।

अवतारी–वि० १. उतरनेवाला। २.अवतार लेनेवाला। ३. देवांश-धारी।४. अनोखा। अलौकिक। ५. अलौकिक शक्तिवाला।

अवतीर्ण–वि० १. आविर्भूत। जन्मा हुआ। उत्पन्न। अवतार लिया हुआ। २. ऊपर से नीचे आया हुआ। ३. उत्तीर्ण।

अवतोका–संज्ञा स्त्री० वह गाय जिसका गर्भ गिर गया हो।

अवदशा–संज्ञा स्त्री० बुरी गति। दुर्दशा।

अवदात–वि० १. श्वेत। उज्ज्वल। २. स्वच्छ। शुद्ध। निर्मल। ३. गौर। शुक्ल वर्ण का। ४. पीत। पीला।

संज्ञा पुं० १. अच्छा काम। पवित्र आचरण। २. तोड़ना। खंडन। ३. पराक्रम। बल। शक्ति। ४. अतिक्रम। उल्लंघन। ५. पवित्र करना। ६. साफ करना। ७. त्याग। उत्सर्ग। ८. निवेदन। ९. कुत्सित दान। १०. वध। मार डालना। ११. अत्यंत यशस्कर कार्य, जिसकी कहानियाँ चलें।

अवदान–संज्ञा पुं० १. निवेदन। २. खण्डन। ३. उत्सर्ग। ४. शुद्धाचरण। ५. सुकर्म।

अवदान्य–वि० १. बली। पराक्रमी। २. हद से बाहर जानेवाला। अतिक्रमणकारी। ३. कंजूस। सूम।

अवदारण–संज्ञा पुं० [वि० अवदारित] १. विदारण करना। तोड़ना। फोड़ना। चीरना। २. खंता। मिट्टी खोदने का रंभा।

अवदाह–संज्ञा पुं० खास।

अवदीर्ण–वि० पिघला हुआ।

अवदोह–संज्ञा पुं० दूध दुहना।

अवदीच–संज्ञा पुं० गुजराती ब्राह्मणों की शाखा-विशेष। उत्तर भारत के रहनेवाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे, वे औदीच्य या अवदीच कहे जाते हैं।

अवद्ध–वि० बन्धन-शून्य। अनियंत्रित।

अवद्धमुख–वि० अप्रियवादी। दुर्मुख। मुखर।

अवद्य–वि० १. पापी। अधम। २. निन्दनीय। कुत्सित। त्याज्य। नीच। ३. दोषयुक्त। ४. अनथ्य। ५. अनिष्ट।

अवद्योत–वि० ईषदुज्ज्वल। किंचिद्दीप्त। अल्पप्रकाश।

संज्ञा पुं० संस्कृत व्याकरण का एक ग्रन्थ-विशेष।

अवध–संज्ञा पुं० १. कोशल देश। २. अयोध्या नगरी।

संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

अवधान–संज्ञा पुं० १. एकाग्रचित्त होना। मनोयोग। मनःसंयोजन। चित्त का लगाव। २. चित्त की वृत्ति का निरोध

कर उसे एक ओर लगाना। समाधि ३. चौकसी। सावधानी।

*संज्ञा पुं० गर्भ। पेट।

अवधारण–संज्ञा पुं० [वि० अवधारित, अवधारणीय, अवधार्य्य] निश्चय। स्थिरीकरण विचारपूर्वक निर्धारण करना।

अवधारना*–क्रि० स० १. धारण करना। ग्रहण करना। लेना। २. अपनाना।

अवधारी–क्रि० वि० निश्चय किया गया। सोचा गया।

अवधि–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। हद। २. निश्चित समय। मियाद। ३. अंतिम काल। अंत समय।

अव्य० १. पर्यंत। तक। २. से। लौं।

अवधिमान*–संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।

अवधी–वि० अवध से संबंधित। अवध का। संज्ञा स्त्री० अवध की बोली।

अवधीय–अव्य० १. विचार कर। सोचकर। २. अपमानित कर।

अवधूत–संज्ञा पुं० [स्त्री० अवधूतिन] १. संन्यासी। साधु। योगी। २. उदासीन। ३. कम्पित। कम्पायमान। ४. परिवर्जित। परिष्कृत।

अवध्य–वि० वध के अयोग्य। जिसको प्राण-दण्ड न दिया जा सके।

अवन–संज्ञा पुं० १. प्रसन्न करना। २. रक्षा। बचाव।

संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।

अवनत–वि० १. नीचा। झुका हुआ। २. गिरा हुआ। पतित। ३. कम। ४. विनीत, ५. अधःपतित। दुर्दशाग्रस्त।

अवनति–संज्ञा स्त्री० १. कमी। न्यूनता। घटती। २. अधोगति। दुर्दशा। हीन दशा। ३. झुकाना। झुकाव। ४. नम्रता। ५. विनती। ६. प्राप्त। आया हुआ। उपस्थित।

अवना –क्रि० अ० दे० "आवना"।

अवनि–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। जमीन। २. रक्षण। पालन।

अवपात–संज्ञा पुं० १. पतन। गिराव। २. कुंड। गड्ढा। ३. खाँड़ा। माला। हाथियों के फँसाने का गड्ढा। ४. नाटक में भयादि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखाकर अंक की समाप्ति।

अवनिप–संज्ञा पुं० राजा। नृप। नरेश।

अवनिभू–संज्ञा पुं० मंगलग्रह। भौम।

अवनी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। मेदिनी। भूमि।

अवनीकुमारी–संज्ञा स्त्री० सीता। मिथिलेश-कुमारी।

अवनीपति–संज्ञा पुं० भूपति। राजा।

अवनीपरमणी–संज्ञा स्त्री० रानी। राजा की पत्नी।

अवनेजन–संज्ञा पुं० धौतकरण। मार्जन।

अवन्द्य–वि० अपूज्य। अवन्दनीय। प्रणाम के अयोग्य।

अवन्ध्य–वि० सफल। फलवान्।

अवभास–संज्ञा पुं० १. प्रकाशकरण। प्रकाशन। २. माया। प्रपंच।

अवभृथ–संज्ञा पुं० १. वह बचा हुआ काम जिसे करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर है। २. यज्ञ के अंत का स्नान। ३. व्रत। ४. यज्ञ-शेष। ५. यज्ञ आदि की समाप्ति का स्नान। औषधि आदि से लिप्त होकर कुटुम्ब परिजन सहित स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं।

अवबोध–संज्ञा पुं० ज्ञान। बोध। जागना।

अवम–संज्ञा पुं० १. पितरों का गण-विशेष। २. मलमास। अधिमास। ३. तीन तिथियाँ जिस दिन में हों। ४. निम्नतम। सबसे छोटा। ५ अन्य। दूसरा। ६. अंतिम। ७. सौर और चांद्र मासों का अंतर।

अवमत–वि० अपमानित। तिरस्कृत। अवज्ञात

अवम तिथि–संज्ञा स्त्री० ऐसी तिथियाँ जिसका क्षय हो गया हो।

अवमर्दन–संज्ञा पुं० (वि० अवमर्दित) कष्ट पहुँचाना। कुचलना। रौंदना या मलना।

अवमर्श संधि–संज्ञा स्त्री० संधि-विशेष। (नाट्य शास्त्र)।

अवमर्षण–संज्ञा पुं० लोप। अपक्षय। परिक्षय।

अवमान–संज्ञा पुं० [वि० अवमानित] तिरस्कार। अपमान। अपयश।

अवमानता–संज्ञा स्त्री० अनादर। अपमान। दे० "अवमान।'

क्रि० स० अपमान करना।

अवमानित–वि० अपमानत्रस्त। असम्मानित।

अवमूर्द्ध–संज्ञा पुं० अधःशिर। अधोमस्तक।

अवयव–संज्ञा पुं० १. भाग। अंश। हिस्सा। २. शरीर का अंग। ३. तर्कपूर्ण वाक्य का एक भेद या अंश। (न्याय)। ४. हस्त, पाद आदि भाग। एक देश।

अवयवी–वि० १. बहुत से अवयवोंवाला। अंगी। २. कुल। संपूर्ण। समस्त। अंगसहित। संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसके बहुत-से अवयव हों। २. शरीर। देह।

अवर*–वि० १. दूसरा। अन्य। और। २. नीच। अधम। क्षुद्र। ३. कनिष्ठ। ४. मन्द। ५. चरम।

अवरज–संज्ञा पुं० १. अनुज। कनिष्ठ भ्राता। २. शूद्र।

अवरजा–संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा भगिनी। छोटी बहिन।

अवरत–वि० १. विरत। निवृत्त। २. स्थिर। ठहरा हुआ। ३. पृथक्। अलग। *संज्ञा पुं० दे० "आवर्त्त"।

अवराधक–वि० पूजा करनेवाला। उपासक। सेवक। ध्यानी। दास। सेवा करनेवाला। आराधना करनेवाला।

अवराधन–संज्ञा पुं० उपासना। सेवा। पूजा। आराधना।

अवराधना*–क्रि० स० पूजना। सेवा करना। उपासना करना।

अवराधी*–वि० उपासक। पूजक। आराधक।

अवरुद्ध–वि० १. रुका हुआ। २. छिपा हुआ। गुप्त। ३. रोका हुआ। छेका हुआ। ४. कैद में रखा हुआ। ५. ढका हुआ। ६. गुप्त वेष में छिपा हुआ। ७. निकाला हुआ। भगाया हुआ। ८. प्राप्त। लब्ध।

अवरूढ़–वि० उतरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। 'आरूढ़' का उलटा। पास आया हुआ।

अवरेख–संज्ञा स्त्री० १. लेख। लकीर। २. प्रतिज्ञा।

अवरेखना*–क्रि० स० [सं० अवलेखन] १. लिखना। चित्रित करना। उरेहना। २. अनुमान करना। सोचना। कल्पना करना। ३. देखना। ४. जानना। मानना।

अवरेब–संज्ञा पुं० [रेब=गति] १. टेढ़ी गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट। **यौ०**–अवरेबदार=तिरछी काट का। ३. कठिनाई। खराबी। ४. उलझन। पेंच। ५. विवाद। झगड़ा। खींचा-तानी।

अवरोध–संज्ञा पुं० १. रोक। रुकावट। अटक। अड़चन। २. घेर लेना। ३. बंद करना। निरोध। ४. अनुरोध। दबाव। ५. अंतःपुर। रनिवास।

अवरोधक–वि० विघ्न डालनेवाला। रोकनेवाला।

अवरोधन–संज्ञा पुं० [वि० अवरोधित, अवरोधी, अवरुद्ध] १. छेकना। रोकना। २. जनाना। अंतःपुर।

अवरोधना–क्रि० स० मना करना। निषेध करना। रोकना।

अवरोधित–वि० जो रोका गया हो। रोका हुआ।

अवरोधी–वि० [स्त्री० अवरोधिनी] रोकनेवाला।

अवरोह–संज्ञा पुं० १. नीचे की ओर ढाल। उतार। २. गिराव। अधःपतन। अवनति। स्वरों का नीचे उतरना (संगीत)। पेड़ की डाल से भूमि की ओर लटकी जटा (जैसे बड़ की)।

अवरोहण–संज्ञा पुं० [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] उतार। गिराव। नीचे की ओर जाना। पतन।

अवरोहना*–क्रि० अ० नीचे आना। उतरना।

क्रि० अ० ऊपर जाना। चढ़ना।

*क्रि० स० अंकित करना। खींचना। चित्रित करना।

*क्रि० स० रोकना।

अवरोही–(स्वर)–संज्ञा पुं० क्रमानुसार उतरते हुए स्वर (संगीत)। आरोही का उलटा। विलोम।

अवर्ण–वि० १. जिसका कोई वर्ण या रंग न हो। २. वर्ण-धर्म-रहित। ३. बुरे रंग का।

बदरंग। ४. अकार। ५. निन्दा। ६. परिवाद।

अवर्ण्य–वि० अवर्णनीय। वर्णन के अयोग्य। संज्ञा पुं० उपमान। जो वर्ण्य या उपमेय न हो।

अवर्त–संज्ञा पुं० पानी का चक्कर। भँवर। घुमाव। चक्कर।

अवर्तमान–वि० अभाव। अनुपस्थित। मृत।

अवर्षण–संज्ञा पुं० वर्षा का अभाव।

अवलंघना–क्रि० स० लाँघना।

अवलंब–संज्ञा पुं० १. सहारा। आसरा। आश्रय। आधार। २. शरण। पड़ाव।

अवलंबन–संज्ञा पुं० [वि० अवलंबित, अवलंबी] १. सहारा। आश्रय। आधार। २. ग्रहण। धारण। ३. ठेस। पड़ाव।

अवलंबना*–क्रि० स० १. टिकना। अवलंबन करना। सहारा लेना। २. ग्रहण या धारण करना।

अवलंबनीय–वि० आश्रयणीय। अवलंबन करने के योग्य।

अवलंबित–वि० १. सहारे पर टिका हुआ। आश्रित। २. लटकता हुआ। ३. निर्भर। किसी बात के होने पर स्थिर किया हुआ।

अवलंबी–वि० [स्त्री० अवलंबिनी] १. सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।

अवलिप्त–वि० १ लगा या पोता हुआ। २. आसक्त। ३. घमंडी।

अवली*–संज्ञा स्त्री० १. पाँती। पंक्ति। २. झुंड। समूह। ३. वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिए खेत से पहले पहल काटी जाती है।

अवलीक–वि० १. पवित्र। शुद्ध। २. कलंक-रहित।

अवलेखना–क्रि० स० १. चिह्न डालना। २. खुरचना। खोदना।

अवलेप–संज्ञा पुं० १. लेप। उबटन। २. अहंकार। घमंड। गर्व।

अवलेपन–संज्ञा पुं० १. पोतना। लगाना। २. वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. अभिमान। घमंड। ४. दोष। बुराई। दूषण।

अवलेह–संज्ञा पुं० [वि० अवलेह्य] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २. माजून। चटनी। ३. वह औषध जो चाटी जाय। ४. चाटनेवाली कोई चीज। भोज्य-विशेष।

अवलेहन–१. जिह्वा से आस्वादन। चखना। चाटना। २. चटनी।

अवलोकन–संज्ञा पुं० [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] १. देखना। २. दर्शन। ३. दृष्टि। ४. खोज-बीन। देख-भाल। जाँच-पड़ताल।

अवलोकना*–क्रि० स० १. देखना। २. पता लगाना। अनुसंधान करना। जाँचना।

अवलोकनि*–संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख। चितवन। ३. देखने का ढंग।

अवलोकनीय–वि० दर्शनीय। देखने योग्य।

अवलोक–क्रि० स० देख। देखे। देखिए। दृष्टि दीजिए।

अवलोचना*–क्रि० स० अलग करना। दूर करना।

अवश–वि० १. विवश। लाचार। बाध्य। २. पराधीन। बलहीन। असमर्थ। ३. अबाध्य। अनायत्त। अनधीन।

अवशिष्ट–वि० बाकी। शेष। बचा हुआ। अवशेष।

अवशेष–वि० १. शेष। बचा हुआ। बाकी। २. समाप्त। अन्त।
संज्ञा पुं० [वि० अवशिष्ट] १. शेष वस्तु। २. समाप्ति। अंत।

अवशेषित–वि० बचा हुआ। बाकी। जो बच रहा।

अवश्य–क्रि० वि० निश्चय करके। निःसंदेह जरूर।
वि० [स्त्री० अवश्या] १. जो वश में न हो। २. जो वश में न आ सके।

अवश्यम्भावी–वि० निस्सन्देह। होने के योग्य। एकान्त भावी। अटल। आवश्यक।

अवश्यमेव–क्रि० वि० निश्चय ही। अवश्य ही। जरूर। निःसंदेह।

अवर्षण–संज्ञा पुं० वृष्टि का अभाव। वर्षा का न होना। अनावृष्टि।

अवसन्न–वि० १. दुःखी। विषाद-प्राप्त। २. नष्ट होनेवाला। ३. आलसी। सुस्त। ४. निकम्मा। ५. श्रान्त। क्लान्त। गिरा हुआ। थका हुआ। ६. जड़ीभूत। ७. उदास। ८. गहरा (जैसे घाव)। ९. समाप्त (जैसे दृष्टि)।

अवसर–संज्ञा पुं० १. काल। समय। २. अवकाश। फुरसत। ३. इत्तफाक। संयोग। मौका। ४. विराम। विश्राम। ५. प्रस्ताव। ६. मंत्र-विशेष। ७. वर्षण। ८. वत्सर। ९. क्षण।

मुहा०––अवसर चूकना=मौका हाथ से जाने देना।

१०. एक काव्यालंकार जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाय।

अवराधी*–वि० पूजा या उपासना करनेवाला। पुजारी।

अवसर्पिणी–संज्ञा स्त्री० जैन शास्त्रानुसार पतन का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।

अवसाद–संज्ञा पुं० १. क्षय। नाश। २. दुख। विषाद। ३. दीनता। ४. कमजोरी। ५. थकावट।

अवसान–संज्ञा पुं० १. अंत। समाप्ति। २. ठहराव। विराम। ३. हद। सीमा। ४. सायंकाल। ५. मरण। मृत्यु। ६. शेष।

अवसि–क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

अवसित–वि० १. जिसका अवसान या अन्त हुआ हो। समाप्त। गत। बीता हुआ। २. बदला हुआ। परिणत।

अवसेख*–वि० दे० "अवशेष"।

अवसेचन–संज्ञा पुं० १. पानी देना। सींचना। २. पसीना निकलना। पसीजना। ३. रोगी के शरीर से पसीना निकालने की क्रिया। ४. शरीर का खून निकालना।

अवसेर, अवसेरि*–संज्ञा स्त्री० १. अटकाव। उलझन। २. विलंब। देर। ३. चिन्ता। व्यग्रता। उचाट। ४. हैरानी। परेशानी। ५. चाह। ६. आशा।

अवसेरना–क्रि० स० तंग करना। दुःख देना। कष्ट देना। छेड़ना।

अवस्था–संज्ञा स्त्री० १. गति। दशा। हालत। २. काल। समय। ३. उम्र। आयु। ४. स्थिति। ५. मनुष्य की चार अवस्थाएँ––जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। ६. मनुष्य-जीवन की आठ अवस्थाएँ––बाल-कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्। ७. उपस्थिति (जैसे अदालत में)। ८. स्थायित्व (दे० "अनवस्था")। ९. स्त्री की जननेंद्रिय और मलेंद्रिय।

अवस्थांतर–संज्ञा पुं० दूसरी अवस्था। अन्य दशा।

अवस्थात्रय–संज्ञा पुं० जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्थाएँ हैं।

अवस्थाता–संज्ञा पुं० अधिष्ठाता। अवस्थानकारी।

अवस्थान–संज्ञा पुं० १. जगह। स्थान। २. वास। ठहराव। टिकना। ३. स्थिति।

अवस्थापन–संज्ञा पुं० स्थापित करना।

अवस्थित–वि० १. उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। २. ठहरा हुआ। कृतावस्थान। ३. स्थिरीभूत।

अवस्थिति–संज्ञा स्त्री० १. स्थिति। सत्ता। २. वर्तमानता। मौजूदगी।

अवहित–वि० १. विज्ञात। २. अवधान। ३. गत।

अवहित्था–संज्ञा स्त्री० १. छिपाव। भाव। छिपाना। २. छद्मवेश। चालाकी से अपने को छिपाना।

अवही–संज्ञा पुं० बबूर-विशेष।

अवहेलना–संज्ञा स्त्री० १. आज्ञा न मानना। तिरस्कार। २. ध्यान न देना। लापरवाही। *क्रि० स० तिरस्कार करना। उल्लंघन करना।

अवहेला–स्त्री० दे० "अवहेलना"। अनादर। अश्रद्धा। अवज्ञा।

अवहेलित–वि० तिरस्कृत। जिसकी अवज्ञा हुई हो।

अवाँ–संज्ञा पुं० दे० "आँवाँ"। पजावा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाते हैं।

अवांछनीय–वि० जिसके न होने की इच्छा की जाय। जिसका होना अच्छा न समझा जाय।

अवांतर–वि० मध्यवर्ती। अंतर्गत।
संज्ञा पुं० बीच। मध्य।
यौ०–१. अवांतर दिशा=बीच की दिशा। विदिशा। २. अवांतर भेद=अंतर्गत भेद। भाग का भाग।
अवांर–संज्ञा स्त्री० विलम्ब। अत्याचार।
अवांसी–संज्ञा स्त्री० वह बोझ जो नवान्न के लिए फसल में से पहले काटा जाय। अवली। कवल।
अवाई–संज्ञा स्त्री० १. आना। आगमन। २. गहरी जोताई। 'सेव' का उलटा।
अवाक्–वि० १. मौन। चुप। वाक्य-रहित। २. स्तब्ध। स्तंभित। चकित। विस्मित।
अवाङ्मुख–वि० १. उलटा। अधोमुख। नत। नीचे मुँह का। २. लज्जित।
अवाची–संज्ञा स्त्री० दक्षिण दिशा।
अवाच्य–वि० १. अनिंदित। विशुद्ध। जो कहने के अयोग्य हो। २. जिससे बात करना उचित न हो। नीच।
संज्ञा पुं० १. कुवाच्य। गाली। अकथ्य। २. मौनी। गुपचुप। ३. दक्षिण दिशा का।
अवाज*–संज्ञा स्त्री० दे० "आवाज"।
अवाध्य–वि० अतर्क्य। बिना विधा।
अवाधी–वि० बाधाहीन। दुःखरहित। सुख-रूप।
अवार–संज्ञा पुं० नदी के इस पार का किनारा। 'पार' का उलटा।
अवारजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. जमा-खर्च की बही। २. विशेष बही जिसमें प्रत्येक असामी की जोत आदि लिखी जाती है।
अवारना*–क्रि० स० १. मना करना। रोकना। २. दे० "वारना"।
संज्ञा स्त्री० १. मोड़। किनारा २. मुख-विवर। मुँह का छेद।
अवास*–संज्ञा पुं० दे० "आवास"। वास। घर। निवासस्थान।
अवि–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. आक। मदार। ३. भेड़ा। ४. बकरा। ५. पहाड़। ६. रक्षक। प्रभु। ७. वायु। ८. एक पर्वत। ९. दीवाल। १०. चूहे के चमड़े का ढक्कन।
अविकच–वि० बिना खिला हुआ। जो विकसित न हुआ हो।
अविकल–वि० १. वैसा ही। यथार्थ। ज्यों का त्यों। २. समस्त। पूरा। पूर्ण। ३. त्रुटिरहित। ४. शान्त। निश्चल। ५. नियमित। नियमबद्ध।
अविकल्प–वि० १. निश्चित। २. निःसंदेह। असंदिग्ध। असंशय।
अविकल्पित–वि० सन्देहरहित। असंशय।
अविकार–वि० १. निर्दोष। विकृति-शून्य। विकार-रहित। अविकल। २. जिसका रूप-रंग न बदले।
संज्ञा पुं० १. विकार का अभाव। जन्म-मरणादि विकार-शून्य। अज। २. अविनाशी। ईश्वर। अविकारी।
अविकारी–वि० [स्त्री० अविकारिणी] १. जो एक-सा रहे। निर्विकार। जिसमें विकार न हो। २. जो किसी का विकार न हो। जो किसी में विकार न उत्पन्न करे।
अविकृत–वि० पुं० जो बिगड़ा या बदला न हो। जिसमें विकार न आया हो।।
अविगत–वि० १. जो ज्ञात न हो। २. अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३. नित्य। जिसका नाश न हो।
अविचल–वि० १. अचल। स्थिर। अटल। जो विचलित न हो। स्थावर। २. भयशून्य। निष्कम्प। निडर।
अविचलित–वि० स्थिर। दृढ़। निश्चित।
अविचार–संज्ञा पुं० १. विचार का न होना। २. अविवेक। अज्ञान। ३. अत्याचार। अन्याय। अधर्म। ४. भूल।
अविचारित–वि० अविवेचित। अकृत-विचार।
अविचारी–वि० [स्त्री० अविचारिणी] १. विचाररहित। बेसमझ। २. अन्यायी। अत्याचारी। ३. अविचक्षण।
अविच्छिन्न–वि० लगातार। अटूट। अभिन्न। संलग्न। युक्त। भेद-रहित।
अविच्छेद–वि० जिसका विच्छेद न हो। लगातार। अटूट।
अविज्ञ–वि० अनजान। अनभिज्ञ। अज्ञानी।
अविज्ञता–संज्ञा स्त्री० अनैपुण्य। अप्रवीणता। अबोध।

अविज्ञात–वि० १. अज्ञात। जो जाना हुआ न हो। २. अर्थ-निश्चय-शून्य। बेसमझा।

अविज्ञेय–वि० न जानने योग्य। जो जाना न जा सके।

अवित–वि० पाला हुआ।

अवितत्–वि० उलटा। विरुद्ध। विपरीत।

अवितत–वि० विस्तार-रहित। संकुचित। अविस्तृत।

अवितथ–संज्ञा पुं० सत्य। यथार्थ। वि० सत्यवान। यथार्थ। विशिष्ट।

अवितर्कित–वि० निश्चित। निस्सन्देह।

अविदग्ध–वि० अपाण्डित्य। अचतुर। अनभिज्ञ।

अविदग्धता–संज्ञा स्त्री० अनिपुणता।

अविदित–वि० अज्ञात। जो विदित न हो। अनवगत। बिना जाना हुआ।

अविद्य–वि० मूर्ख। अनभिज्ञ। विद्यारहित।

अविद्यमान–वि० १. अनुपस्थित। जो उपस्थित न हो। अवर्तमान। २. असत्। ३. असत्य। झूठ। मिथ्या। ४. अभाव। ५. असत्ता।

अविधि–संज्ञा स्त्री० १. अज्ञान। विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। मोह। २. माया का एक भेद। ३. कर्मकाण्ड। ४. जड़। सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति। ५. मूर्खता। अज्ञता। वि० नियम के विरुद्ध। जो नियमानुसार न हो। अनियमित।

अविनय–संज्ञा पुं० उद्दंडता। ढिठाई। विनय का न होना। नम्रतारहित।

अविनश्वर–वि० चिरस्थायी। जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। नाश न होनेवाला। ईश्वर।

अविनाभाव–संज्ञा पुं० १. संबंध। २. किसी भी वस्तु का दूसरी वस्तु से आवश्यक संबंध, जैसे अग्नि और धूम का (अग्नि रहेगी तो ही धूम होगा, और धूम होगा तो अग्नि रहेगी ही)।

अविनाश–संज्ञा पुं० अक्षय। विनाश का अभाव।

अविनासी, अविनाशी–वि० [स्त्री० अविनाशिनी] १. अक्षय। अक्षर। जिसका नाश न हो। २. नित्य। शाश्वत। सर्वदा रहनेवाला। ३. परमात्मा।

अविनीत–वि० [स्त्री० अविनीता] १. उद्धत। जो विनीत न हो। २. अदांत। दुर्दांत। सरकश। ३. दुष्ट। ४. ढीठ। अन्यायी। चंचल। उच्छृंखल। उद्दण्ड।

अविभक्त–वि० १. मिला हुआ। २. जो बाँटा न गया हो। ३. एक। अभिन्न। ४. अविभाज्य।

अविभिन्न–वि० दे० "अभिन्न"। एक में मिला हुआ। जो विभिन्न या अलग न हो।

अविमुक्त–वि० बद्ध। जो विमुक्त न हो। संज्ञा पुं० १. कनपटी। २. काशी के पास एक तीर्थ।

अविमुक्त क्षेत्र–वि० काशी।

अविरत–वि० १. विराम का अभाव। लगातार। निरंतर। २. लगा हुआ। क्रि० वि० १. लगातार। निरंतर। २. नित्य। हमेशा। सदैव।

अविरति–संज्ञा स्त्री० १. लीनता। निवृत्ति का अभाव। २. विषयासक्ति। ३. बेचैनी। अशांति।

अविरल–वि० १. अविच्छिन्न। मिला हुआ। २. सघन। घना। ३. निरन्तर।

अविराम–वि० १. बिना विश्राम लिये हुए। २. निरंतर। लगातार। अनवरत।

अविरोध–संज्ञा पुं० १. बराबरी। समानता। २. विरोध का न होना। अनुकूलता। ३. मेल। संगति। मिलाप। प्रीति। द्वेष का अभाव। एकता। ४. सुख। चैन।

अविरोधी–वि० १. अनुकूल। जो विरोधी न हो। २. मित्र। ३. मिलापी। धीर। शान्त।

अविरोधिनी–संज्ञा स्त्री० धीरज या शान्ति रखनेवाली स्त्री।

अविलंब–संज्ञा पुं० बिना विलम्ब या देर के। शीघ्र। तुरन्त। झटपट। फौरन।

अविवादी–वि० मेली। सहज स्वभाव का। शान्त। झगड़ा न करनेवाला।

अविवाहित–वि० [स्त्री० अविवाहिता] कुँआरा। जिसका ब्याह न हुआ हो।

अविवेक–संज्ञा पुं० १. अविचार। विवेक का न होना। २. अज्ञान। नादान। मूर्ख। विचारहीनता। मूर्खपन। ३. अन्याय।

अविवेकता–संज्ञा स्त्री० १. अज्ञान। नादानी। २. विवेक का अभाव।

अविवेकी–वि० १. मूर्ख। मूढ़। विवेक-रहित। २. नहीं विचारनेवाला। अविचारी। ३. अन्यायी।

अविशेष–वि० १. भेदक धर्मरहित। बराबर। समान। सदृश। २. सामान्य। विशेषता-रहित।
संज्ञा पुं० १. भेदक धर्म का अभाव। २. सांख्य में सांतत्व, धीरत्व और मूढ़त्व आदि विशेषताओं से रहित सूक्ष्म भूत।

अविश्रांत–वि० १. जो न रुके। २. जो थके नहीं।

अविश्वसनीय–वि० अविश्वासी। जिस पर विश्वास न किया जा सके।

अविश्वास–संज्ञा पुं० १. विश्वास का न होना। बेएतबारी। २. अप्रत्यय। अनिश्चय। ३. अप्रतीति। प्रतीतिहीनता।

अविश्वासी–वि० १. विश्वास न करने वाला। २. जिस पर विश्वास न किया जाय।

अविषय–वि० १. अगोचर। जो मन या इंद्रिय का विषय न हो। २. अनिर्वचनीय। ३. पहुँच के बाहर का। ४. असंभव या अनुचित बात।

अविहड़*–वि० अखंड। अनश्वर। खंडित न होनेवाला।

अविहित–वि० जो विहित या ठीक न हो। अनुचित।

अवीरा–वि० १. स्वतंत्र (स्त्री)। २. जिसके पुत्र और पति न हों (स्त्री)।

अवेक्षण–संज्ञा पुं० [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] १. देखना। अवलोकन। २. देख-भाल। जाँच-पड़ताल।

अवेज*–संज्ञा पुं० [अ० एवज] बदला। प्रतीकार।

अवेर–संज्ञा स्त्री० विलम्ब। अबेर। देरी। अधिक समय।

अवेस*–संज्ञा पुं० दे० "आवेश"।

अवैतनिक–वि० जो वेतन या तनख्वाह न ले। आनरेरी।

अवैदिक–वि० जो वेद के विरुद्ध हो।

अवैध–वि० विधि या कानून के विरुद्ध। गैर कानूनी।

अव्यक्त–वि० १. अज्ञात। अनिर्वचनीय। २. अगोचर। अप्रत्यक्ष। जो प्रकट न हो। अप्रकाशित। ३. जिसमें रूप-गुण न हो।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. शिव। ३. कामदेव। कन्दर्प। मूर्ख। परमात्मा। क्रियारहित। ४. प्रकृति-प्रधान। (सांख्य)। ५. सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। ६. ब्रह्म। ७. बीजगणित में वह राशि जिसका नाम अनिश्चित हो। अनवगत राशि। ८. जीव। ९. एक उपनिषद् का नाम। १०. अस्पष्ट रूप से कथित।

अव्यक्त गणित–संज्ञा पुं० बीजगणित।

अव्यक्तराग–संज्ञा पुं० १. ईषत् लोहित वर्ण। हलका लाल। २. गौर। श्वेत।

अव्यक्तलिंग–संज्ञा पुं० १. सांख्य के अनुसार महत्त्वादि। २. संन्यासी। ३. वह रोग जो पहचाना न जाय।

अव्यग्र–वि० घबड़ाहट-रहित। अनाकुल।

अव्यय–वि० १. अक्षय। नाशरहित। जो विकार को प्राप्त न हो। सदा एकरस रहनेवाला। २. कृपण। ३. नित्य। आदि-अंत-रहित।
संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो। शब्द-विशेष। २. परब्रह्म। ३. शिव। ४. विष्णु। परमेश्वर।

अव्ययीभाव–संज्ञा पुं० समास का भेद-विशेष (व्याकरण)।

अव्यर्थ–वि० १. सफल। सार्थक। २. अमोघ। जो न चूके। ३. अचूक। ४. अवश्य असर करनेवाला।

अव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [वि० अव्यवस्थित] १. नियमरहित। बेकायदगी। २. स्थिति या मर्य्यादा का अभाव। ३. शास्त्रादि-विरुद्ध व्यवस्था। अनरीति। अविधि। ४. बेइंतजामी। गड़बड़। ५. असम्मति।

अव्यवस्थ –वि० १. सिद्धान्तरहित। शास्त्रादि-मर्य्यादा-रहित। २. बेठिकाने का। ३. अस्थिर। चंचल।

अव्यवहार्य––वि० १. जो व्यवहार में न लाया जा सके। २. पतित। नीच। ३. जातिभ्रष्ट।

अव्यवहित–वि० १. व्यवधान-रहित। २. सन्निकट। अत्यन्त समीप।

अव्याकृत–वि० १. विकाररहित। २. गुप्त। अप्रकट। ३. कारणरूप। ४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति।

अव्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [वि० अव्याप्त] १. व्याप्ति का न होना। २. किसी वस्तु का ऐसा लक्षण, जो उसी पर न घटे; अर्थात् लक्ष्य में लक्षण का न घटना; जैसे, गौ का लक्षण करने के लिए कहें कि जिसके एक सींग होता है, वह गौ है। यह अव्याप्ति दोष हुआ, क्योंकि यह लक्षण गौ पर न घटा, गैंड़े पर घट गया। (न्यायशास्त्र)। ३. न फैलना। ४. अप्राप्ति।

अव्यावृत–वि० १. लगातार। निरंतर। अटूट। २. जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों।

अव्याहत –वि० १. बेरोक। अप्रतिरुद्ध। अवरोधरहित। २. ठीक। सत्य। युक्तियुक्त।

अव्युत्पन्न–वि० १. अनाड़ी। मूर्ख। अनभिज्ञ। २. वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके (व्याकरण)।

अव्वल–वि० [अ०] १. आदि। पहला। प्रथम। २. श्रेष्ठ। उत्तम। संज्ञा पुं० आदि। प्रारंभ।

अशंक–वि० १. बेडर। निर्भय। निडर। २. शंका-रहित। ३. निश्चिन्त।

अशंबल–वि० अर्थहीन। मार्ग-व्यय-शून्य। पाथेय-हीन।

अशकुन–संज्ञा पुं० असगुन। भावी के लिए बुरे चिह्न। बुरा शकुन। बुरा लक्षण।

अशक्त–वि० [संज्ञा अशक्ति] १. शक्तिरहित। कमजोर। निर्बल। २. असमर्थ।

अशक्तता–संज्ञा स्त्री० अक्षमता। अपारगता। शक्ति-हीनता।

अशक्ति–संज्ञा स्त्री० [वि० अशक्त] १. क्षीणता। शक्तिहीनता। कमजोरी। निर्बलता। २. इंद्रियों और बुद्धि का बेकाम होना (सांख्य)।

अशक्य–वि० न होने योग्य। असाध्य। शक्यरहित। असम्भव।

अशक्यता–संज्ञा स्त्री० असाध्य। साध्यातिरिक्त।

अशन–संज्ञा पुं० १. आहार। अन्न। भोजन। २. खाने की क्रिया। खाना। भक्षण।

अशना–वि० खानेवाली।

अशनाच्छादन–संज्ञा पुं० अन्न-वस्त्र। रोटी-कपड़ा।

अशनि–संज्ञा पुं० बिजली। वज्र। इन्द्र का शस्त्र।

अशम–संज्ञा पुं० लुब्ध। विक्लव। अशान्ति। विश्रामाभाव।

अशम्य–वि० विरामयोग्य। अविश्रान्ति।

अशरण–वि० १. जिसे कहीं शरण न हो। अनाथ। २. निराश्रय। रक्षाहीन। निरालंब।

अशरफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सोलह से पचीस रुपये तक का सोने का एक सिक्का। मोहर। स्वर्णमुद्रा। २. पीले रंग का एक फूल।

अशराफ़–वि० [अ०] शरीफ। भद्र। भला।

अशरीर–संज्ञा पुं० कन्दर्प। काम। मदन। वि० शरीर-रहित।

अशरीरी–वि० बिना शरीर का। जिसका शरीर न हो।

अशांत–वि० १. जो शान्त न हो। अस्थिर। चंचल। २. अशिष्ट। दुरन्त। ३. अधीर। ४. असन्तुष्ट।

अशांतता–संज्ञा स्त्री० अशिष्टता। दौरात्म्य। घबड़ाहट।

अशांति–संज्ञा स्त्री० १. अस्थिरता। हलचल। खलबली। चंचलता। २. असंतोष। क्षोभ। ३. उत्पात। ४. असुखी।

अशालीन–वि० धृष्ट। ढीठ।

अशासित–वि० अकृत शासन। शासन-रहित।

अशावरी या असावरी–संज्ञा स्त्री० रागिनी-विशेष।

अशास्त्र–वि० शास्त्र-विरुद्ध। अवैध। विधि-हीन।

अशास्त्रीय–वि० वेद-विरुद्ध। अवैध।

अशिक्षित–वि० अनसीखा। जिसने शिक्षा न पाई हो। अनपढ़। बेपढ़ा-लिखा। असभ्य। अनभिज्ञ। अपण्डित।

अशित–वि० भुक्त। खादित।

अशिर–संज्ञा पुं० १. हीरक। हीरा। २. अग्नि। ३. राक्षस। ४. सूर्य।

अशिरस्क–वि० मस्तकहीन। कबन्ध। धड़।

अशिव–संज्ञा पुं० अमंगल। अहित।
वि० अमंगल या अहित। नुकसान करनेवाला।

अशिशिर–वि० अशीतल। ग्रीष्म। उष्ण।

अशिश्विका–संज्ञा स्त्री० अनपत्या। पुत्र-कन्या-हीना स्त्री।

अशिष्ट–वि० १. बेहूदा। उजड्ड। २. प्रगल्भ। ३. असभ्य। ४. मूर्ख।

अशिष्टता–संज्ञा स्त्री० १. उजड्डपन। बेहूदगी। असाधुता। २. ढिठाई। ३. असभ्यता।

अशुचि–वि० [संज्ञा अशौच] १. अपवित्र। २. अशुद्ध। ३. मैला। गंदा।

अशुद्ध–वि० १. नापाक। अपवित्र। २. असंस्कृत। बिना शोधा। ३. गलत। बेठीक। अकृत-शोधन। अपरिष्कृत। अशुचि। ४. [illegible]

अशुद्धता–संज्ञा स्त्री० १. गंदगी। अपवित्रता। २. गलती।

अशुद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "अशुद्धता"। १. अशोधन। २. भूल। ३. अशौच।

अशुन*–संज्ञा पुं० अश्विनी नक्षत्र।

अशुभ–संज्ञा पुं० १. अहित। अमंगल। २. अपराध। पाप। ३. बुराई।
वि० बुरा। जो शुभ न हो।

अशुभचिन्ता–संज्ञा स्त्री० अनिष्ट सोचना। बुरा चिन्तन।

अशुभदर्शन–संज्ञा पुं० अमंगल दर्शन। मन्द लक्षण।

अशून्यशयनव्रत–संज्ञा पुं० व्रत-विशेष। श्रावण कृष्ण द्वितीया को यह व्रत किया जाता है।

अशेष–वि० १. समूचा। पूरा। समग्र। २. शेषहीन। निःशेष। खतम। समाप्त। ३. अनंत। बहुत।

अशेषज्ञ–वि० सर्वज्ञ। सर्ववित्। सब जानने वाला।

अशेषतः–अव्य० सब प्रकार से। अनेक रूप से।

अशेष विशेष–संज्ञा पुं० अनेक प्रकार। बहुत तरह।

अशोक–वि० १. दुःख-शून्य। शोकरहित। २. शोक न देनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पेड़-विशेष जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लंबी-लंबी और किनारों पर लहरदार होती हैं। २. पारा। ३. राजा-विशेष।

अशोकपुष्पमंजरी–संज्ञा स्त्री० दंडक वृत्त का भेद-विशेष।

अशोक-वाटिका–संज्ञा स्त्री० १. रम्य उद्यान। जो शोक मिटावे। २. रावण का वह प्रसिद्ध बगीचा जिसमें उसने सीताजी को ले जाकर रक्खा था।

अशोच–संज्ञा पुं० १. अविचार। २. अशुचि। अपवित्रता। अशुद्धता।

अशोच्य–वि० न सोचने योग्य। जिसके बार में चिन्ता न करने की जरूरत हो। अशोचनीय। शोक के अयोग्य।

अशोभन–वि० मन्द। कुदृश्य। दुर्दर्शन। अश्री।

अशोभनीय–वि० कुत्सित आकार। बुरा।

अशोभा–संज्ञा पुं० अनगढ़। कुरूप। बुरा।

अशौच–संज्ञा पुं० [वि० अशुचि] १ अशुद्धता। अपवित्रता। २. हिंदू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या संतान होने पर कुछ दिन मानी जाती है।

अशौर्य–संज्ञा पुं० भीरुता। अविक्रम। अशूरत्व।

अश्मंतक–संज्ञा पुं० १. घास-विशेष जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे। २. ढकना। आच्छादन। ३. चूल्हा। अँगीठी। ४. दीप का ढक्कन।

अश्म–संज्ञा पुं० १. पत्थर। पहाड़। २. बादल।

अश्मक–संज्ञा पुं० दक्षिण का एक प्रदेश जो

प्राचीन समय में इसी नाम से पुकारा जाता था। त्रावंकोर।

अश्मकुट–संज्ञा पुं० १. वानप्रस्थ-विशेष जो केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे। २. संग-तराश (देशज-संतरास) पत्थर काटनेवाला।

अश्मज–संज्ञा पुं० शिलाजीत। लोह। पत्थर से उत्पन्न वस्तु।

अश्मदारण–संज्ञा पुं० पत्थर काटनेवाला अस्त्र।

अश्मरी–संज्ञा स्त्री० पथरी नामक रोग-विशेष। मूत्रकृच्छ्र रोग।

अश्रद्धा–संज्ञा स्त्री० [वि० अश्रद्धेय] १. श्रद्धा का न होना। २. अभक्ति। ३. घृणा। घिन। ४. अविश्वास।

अश्रद्धेय–वि० घृण्य। घृणा के योग्य। अनादरणीय।

अश्रय–संज्ञा पुं० राक्षस। निशाचर।

अश्रांत–वि० श्रान्तिहीन। जो थका-माँदा न हो।

क्रि० वि० अनवरत। विश्रामरहित। निरंतर। लगातार।

अश्रान्ति–संज्ञा स्त्री० अविश्राम। अनवरत।

अश्राद्ध–वि० प्रेतकर्म-रहित।

अश्राव्य–वि० सुनने के अयोग्य। अश्रोतव्य।

अश्रि–संज्ञा स्त्री० १. धार। पैना। तीखा। तीक्ष्ण। २. कोना।

अश्रु–संज्ञा पुं० नेत्रजल। आँसू।

अश्रुत–वि० १. अनाकर्णित। २. जो सुना न हो। जिसने कुछ देखा-सुना न हो। ३. गुरु से न पढ़ा हुआ। ४. अपढ़। मूर्ख।

अश्रुतपूर्व–वि० १. जो पहले न सुना गया हो। २. अनोखा। विलक्षण। अद्भुत।

अश्रुपात–संज्ञा पुं० रुदन। रोना। आँसू गिराना।

अश्रेयस–वि० निर्गुण। अधम। अमंगल।

अश्रेष्ठ–वि० बुरा। साधारण। उत्तम नहीं।

अश्लिष्ट–वि० जो जुड़ा या मिला न हो। असंबद्ध। श्लेषशून्य।

अश्लील–वि० १. भद्दा। फूहड़। लज्जाजनक। २. नीच। अधम।

संज्ञा पुं०–घृणा अथवा लज्जासूचक बात। काव्यगत दोष। ग्राम्य भाषा।

अश्लीलता–संज्ञा स्त्री० भद्दापन। लज्जा का उल्लंघन। फूहड़पन। (काव्य में एक दोष)

अश्लेष–संज्ञा पुं० १. श्लेषरहित। २. अप्रणय। ३. असख्य। ४. अप्रीति। ५. श्लेष-भिन्न। ६. अपरिहास।

अश्लेषा–संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से नवाँ। इस नक्षत्र में ५ तारे हैं।

अश्लेषाभव–संज्ञा पुं० केतुग्रह।

अश्व–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. शतरंज का एक मोहरा। ३. सात (७) संख्या। ४. एक नायक (कामशास्त्र)।

अश्वकर्ण–संज्ञा पुं० १. लता-शाल। २. एक प्रकार का शालवृक्ष। ३. घोड़े का कान।

अश्वगंधा–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। असगंध।

अश्वगति–संज्ञा पुं० १. छंद-विशेष। २. एक चित्रकाव्य।

अश्वतर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अश्वतरी] १. खच्चर। २. नागराज।

अश्वत्थ–संज्ञा पुं० १. वृक्षविशेष। पीपल। २. चलद्रुम।

अश्वत्थामा–संज्ञा पुं० १. द्रोणाचार्य के पुत्र। २. पाण्डव-पक्षीय मालवराज इन्द्रवर्मा का हाथी।

अश्वपति–संज्ञा पुं० १. रिसालदार। २. घुड़सवार। ३. घोड़ों का मालिक। ४. केकय देश के राजकुमारों की उपाधि। ५. भरतजी के मामा।

अश्वपाल–संज्ञा पुं० साईस। घोड़े की देख-भाल करनेवाला।

अश्वमेध–संज्ञा पुं० चक्रवर्ती राजाओं का एक यज्ञ, जिसमें घोड़े को भूमंडल में घूमने के लिए छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था।

अश्ववार–संज्ञा पुं० अश्वारोही। घुड़सवार।

अश्ववैद्य–संज्ञा पुं० अश्व-चिकित्सक।

अश्वशाला–संज्ञा स्त्री० अस्तबल। तबेला। अश्वगृह। घुड़साल। वह स्थान जहाँ घोड़े रहें।

अश्वशिक्षक–संज्ञा पुं० चाबुक सवार।
अश्वसेन–संज्ञा पुं० तक्षक का पुत्र। नाग-विशेष। सनत्कुमार।
अश्वसेवक–संज्ञा पुं० साईस।
अश्वारूढ़–संज्ञा पुं० असवार। घुड़चढ़ा।
अश्वारोहण–संज्ञा पुं० [वि० अश्वारोही] घोड़े की सवारी।
अश्वारोही–वि० १. घोड़े का सवार। २. घोड़े पर चढ़ा हुआ।
अश्विनी–संज्ञा स्त्री० १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की स्त्री।
अश्विनीकुमार–संज्ञा पुं० त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।
असी–संज्ञा पुं० संख्या-विशेष। ८०।
अषाढ़–संज्ञा पुं० १. दे० "आषाढ़" मास। २. व्रतपलाशदण्ड।
अष्ट–वि० [पुं०] आठ की संख्या।
अष्टक–संज्ञा पुं० १. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक हों। २. आठ की पूर्ति। ३. आठ वस्तुओं का संग्रह। ४. पाणिनि की अष्टाध्यायी का ज्ञाता।
अष्टकमल–संज्ञा पुं० हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक के आठ कमल।
अष्टकर्ण–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। प्रजापति। विधि।
अष्टका–संज्ञा स्त्री० १. अष्टमी के दिन का कृत्य। अष्टकायाग। २. अष्टमी। ३. अगहन, पूस, माघ तथा फागुन मासों के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि।
अष्टकुल–संज्ञा पुं० पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।
अष्टकृष्ण–संज्ञा पुं० वल्लभ कुल के मतानुसार आठ कृष्ण या कृष्ण-मूर्त्तियाँ—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।
अष्टद्रव्य–संज्ञा पुं० हवन में काम आनेवाले आठ द्रव्य—अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी।
अष्टधाती–वि० १. जो अष्ट-धातुओं से बना हो। २. उपद्रवी। उत्पाती। ३. मजबूत। दृढ़। ४. वर्णसंकर।
अष्टधातु–संज्ञा स्त्री० सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा आठ धातुएँ।
अष्टपदी–संज्ञा स्त्री० गीत-विशेष जिसमें आठ पद होते हैं।
अष्टपाद–संज्ञा पुं० १. शार्दूल। शरभ। २. मकड़ी। लूता।
अष्टप्रकृति–संज्ञा स्त्री० राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी। यथा—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक और प्रतिनिधि।
अष्टप्रहर–संज्ञा पुं० आठ प्रहर। आठ याम।
अष्टभुजा–संज्ञा स्त्री० देवी-विशेष। दुर्गा।
अष्टम–वि० आठवाँ।
अष्टमंगल–संज्ञा पुं० १. आठ मंगलद्रव्य—सिंह, वृष, नाग, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक। २. आठ शुभ लक्षणों से युक्त घोड़ा।
अष्टमी–संज्ञा स्त्री० जिस दिन चन्द्रमा की आठवीं कला की क्रिया हो। शुक्ल या कृष्ण-पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टमूर्ति–संज्ञा पुं० १. शिव की आठ मूर्त्तियाँ—शर्व्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव। अथवा पंच महाभूत, सूर्य, चंद्र तथा यजमान (कालिदास)। २. शिव।
अष्टवर्ग–संज्ञा पुं० १. आठ ओषधियों का समाहार—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २. ज्योतिष का गोचर-विशेष। ३. राज्य के ऋषि, वस्ति, दुर्ग, गोना, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य-संस्थापन का समूह।
अष्टवसु–संज्ञा पुं० देव-विशेष। आप। ध्रुव। सोम। धव। अनिल। प्रत्यूष। प्रभास।
अष्टसिद्धि–संज्ञा स्त्री० योग की आठ सिद्धियाँ यथा—अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।

अष्टांग—संज्ञा पुं० [वि० अष्टांगी] १. योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। २. आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण। ३. आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है।
वि० १. अठपहल। २. आठ अवयवोंवाला।

अष्टांगार्घ्य—संज्ञा पुं० आठ द्रव्यों से संयुक्त पूजा की सामग्री-विशेष।

अष्टाक्षर—संज्ञा पुं० मंत्र जिसमें आठ अक्षर हों।
वि० आठ अक्षरोंवाला।

अष्टादश—वि० संख्या-विशेष। अठारह।

अष्टादशांग—अठारह औषधियों के मिलने से बनी हुई पाचन की गोलियाँ।

अष्टादशधान्य—संज्ञा पुं० अठारह प्रकार के अन्न।

अष्टादशपुराण—संज्ञा पुं० अठारह पुराण।

अष्टादशविद्या—संज्ञा स्त्री० अठारह विद्या।

अष्टादशस्मृतिकार—संज्ञा पुं० स्मृतियों के बनानेवाले आर्यों के धर्मशास्त्रकार।

अष्टादशोपचार—संज्ञा पुं० पूजा की अठारह सामग्रियाँ यथा—आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, तर्पण, अनुलेपन, नमस्कार, विसर्जन।

अष्टादशोपपुराण—संज्ञा पुं० पुराण-विशेष। गौण पुराण।

अष्टाध्यायी—संज्ञा पुं० पाणिनिकृत व्याकरण का ग्रंथ, जिसमें आठ अध्याय हैं।

अष्टापद—संज्ञा पुं० १. सोना। स्वर्ण। २. मकड़ी ३. सिंह। शेर। ४. कैलाश।

अष्टावक्र—संज्ञा पुं० १. टेढ़े-मेढ़े अंगों का मनुष्य। (संस्कृत व्याकरण से 'अष्टवक्र' शुद्ध है।) २. ऋषि-विशेष।

अष्टास्त्र—संज्ञा पुं० अठकोण।

अष्टि—संज्ञा स्त्री० बीज। गुठली। अठुली।

अष्ठीला—संज्ञा स्त्री० रोग-विशेष जिसमें पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है।

असंक—वि० दे० "अशक"।

असंक्रांति मास—संज्ञा पुं० मलमास। अधिक-मास।

असंख्य—वि० बेशुमार। अनगिनत। बहुत। अगणनीय। संख्यारहित। अपरिमित।

असंख्यात—वि० असंख्य। अगणित। अपरिमित।

असंख्येय—वि० अगणनीय। जिसकी संख्या न गिनी जा सके।

असंग—वि० १. एकाकी। अकेला। २. निर्लिप्त। किसी से वास्ता न रखनेवाला। ३. अलग। जुदा। पृथक्। ४. विरक्त।

असंगत—वि० १. अयुक्त। जो ठीक न हो। २. नामुनासिब। अनुचित। ३. अयोग्य। मिथ्या।

असंगति—संज्ञा स्त्री० १. बेतरतीबी। बेमेल होने का भाव। २. अनुपयुक्तता। ना-मुनासिबत। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें कारण कहीं बताया जाय और कार्य्य कहीं।

असंग्रह—संज्ञा पुं० संचयहीन। एकत्रित नहीं।

असंत—वि० दुष्ट। खल।

असंतुष्ट—वि० [संज्ञा असंतुष्टि] १. जो संतुष्ट न हो। सम्यक् तुष्टि-रहित। २. जिसका मन न भरा हो। अतृप्त। ३. नाराज। अप्रसन्न।

असंतुष्टि—संज्ञा स्त्री० दे० "असंतोष"। अतृप्ति।

असंतोष—संज्ञा पुं० [वि० असंतोषी] १. अधैर्य। संतोष का न होना। २. अतृप्ति। ३. अपरितोष। ४. अप्रसन्नता।

असंबद्ध—वि० १. अलग। पृथक्। २. अनमिल। जो मेल में न हो। बे-मेल। अंड-बंड। जैसे, असंबद्ध प्रलाप।

असंबाधा—संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त-विशेष।

असंभव—वि० १. अनहोना। जो हो न सके। ना-मुमकिन। २. अचरज।
संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असंभव था।

असंभार—वि० १. जो सँभाला न जा सके। २. बहुत। अपार। बड़ा।

असंभावना–संज्ञा स्त्री० अनहोनापन। संभावना का न होना।

असंभावित–वि० जिसका अनुमान न हो।

असंभाव्य–वि० अनहोना, जिसकी संभावना न हो।

असंभाष्य–वि० १. जो कहा न जा सके। २. बुरा। जिससे बात-चीत करना उचित न हो।

असंमत–वि० अमेल। अस्वीकार। अनभिमत। सम्मति-रहित।

असंयुक्त–पुं० असंलग्न। अमिलित। पृथक्।

असंयत–वि० १. संयमहीन। २. अनियमित। ३. खुला (जैसे द्वार)।

असंयोग–वि० निश्चय। निस्सन्देह। संशय-रहित।

संज्ञा पुं० अनमेल। भिन्न।

असंलग्न–वि० अमिल। असंगत।

असंस्कृत–वि० १. अपरिमार्जित। बिना सुधारा हुआ। २. व्रात्य। जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो। ३. अनलंकृत। ४. असभ्य (जैसे भाषा)।

अस*†–वि० [सं० ईदृश] १. ऐसा। इस प्रकार का। २. समान। तुल्य। ३. इस चाल का।

असकत–संज्ञा स्त्री० आलस्य। उँघास।

असकताना–क्रि० अ० अलसाना। आलसी बनना।

असकती–वि० आलसी। शिथिल। ढीला-ढाला।

असकन्ना–संज्ञा पुं० औजार-विशेष जिससे तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ की जाती है।

असकृत्–अव्य० पुनः पुनः। बार बार।

असगंध–संज्ञा पुं० अश्वगंधा। एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम में आती है। औषध-विशेष।

असगुन–संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"। बुरा शकुन।

असज्जन–वि० १. दुष्ट। खल। २. कुपात्र। ३. द्वेषी।

असत्–वि० १. जिसका अस्तित्व न हो। सत्तारहित। २. खराब। बुरा। ३. असाधु। असज्जन। ४. अन्यायी। ५. अधर्मी।

असती–वि० कुलटा। पुंश्चली। जो सती न हो। दुराचारिणी स्त्री।

असत्ता–संज्ञा स्त्री० १. अनस्तित्व। सत्ता का न होना। २. असज्जनता।

असत्य–वि० १. झूठ। मिथ्या। २. अन्याय।

असत्यता–संज्ञा स्त्री० झुठाई। मिथ्यात्व।

असत्यवादी–वि० झूठा मिथ्यावादी।

असफल–संज्ञा स्त्री० दे० "विफल"। जो सफल न हुआ हो। अनुत्तीर्ण। नाकामयाब।

असफलता–संज्ञा स्त्री० दे० "विफलता"।

असबर्ग–संज्ञा पुं० [फा०] खुरासान की लंबी घास-विशेष जिसके फूल रेशम रँगने के काम में आते हैं।

असबाब–संज्ञा पुं० [अ०] सामान। प्रयोजनीय पदार्थ।

असभई†–संज्ञा स्त्री० असभ्यता। अशिष्टता। बेहूदगी।

असभ्य–वि० १. गँवार। अशिष्ट। २. खल। नीच। ३. अपात्र। ४. असामाजिक। ५. अभव्य।

असभ्यता–संज्ञा स्त्री० १. अशिष्टता। गँवारपन। मूढ़त्व, उजड्डपन। २. अभव्यता।

असमंजस–संज्ञा स्त्री० १. दुबिधा। बाधा। आगा-पीछा। २. कठिनाई। अड़चन। ३. असंगत। अनुपयुक्त। ४. अतुल्य। असदृश।

असमंत*–संज्ञा पुं० चूल्हा।

असम–वि० १. जो बराबर न हो। अतुल्य। असदृश। २. ताक। विषम। ३. ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा। ४. काव्यालंकार-विशेष जिसमें उपमान का मिलना असंभव बतलाया जाय।

असमकक्ष–वि० परोक्ष। अगोचर।

असमग्र–१. अपूर्ण। अनिखिल। अधूरा। २. अल्प।

असमय–संज्ञा पुं० १. बुरा समय। विपत्ति का समय। २. अकाल। दुर्भिक्ष। क्रि० वि० कुअवसर। कुबेला। बे-मौका।

असमर्थ–वि० १. अशक्त। सामर्थ्यहीन। क्षीण। दुर्बल। २. अयोग्य।

असमवायि-कारण—संज्ञा पुं० न्यायदर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो। जैसे—१. घट के प्रति दो कपालों का संयोग। २. वैशेषिक मतानुसार वह कारण जिसका कर्म से नित्य संबंध न हो और आकस्मिक संबंध हो।

असमशर—संज्ञा पुं० कामदेव।

असमसाहस—संज्ञा पुं० १. दुःसाहस। असमान साहस। २. अतुल्य उत्साह। सामर्थ्य से बाहर उत्साह।

असम्मत—वि० १. विरुद्ध। जो सहमत न हो। २. जिस पर किसी की राय न हो।

असम्मति—संज्ञा स्त्री० [वि० असम्मत] सम्मति का न होना। विरुद्ध मत या राय।

असम्मान—संज्ञा पुं० अपमान। असत्कार।

असमाधि—संज्ञा स्त्री० अचिन्ता। अविवेचन। अविमर्ष।

असमान—वि० जो बराबर न हो। छोटा बड़ा। विषम। विभिन्न।

संज्ञा पुं० दे० "आसमान"।

असमापिका क्रिया—संज्ञा स्त्री० जिस क्रिया से वाक्य पूर्ण न हो। काल-बोधक कृदन्त।

असमाप्त—वि० [संज्ञा असमाप्ति] जो पूरा न हुआ हो। अपूर्ण। अधूरा। समाप्ति-रहित।

असमेध*—संज्ञा पुं० दे० "अश्वमेध"।

असयाना*—वि० १. जो चतुर न हो। भोला। सीधा-सादा। २. मूर्ख। अनाड़ी।

असर—संज्ञा पुं० [अ०] प्रभाव। दबाव।

असरार*—क्रि० वि० निरंतर। बराबर। लगातार।

असल—वि० [अ०] १. खरा। सच्चा। २. श्रेष्ठ। उच्च। ३. शुद्ध। खालिस। मिलावट-रहित। ४. जो झूठा या बनावटी न हो। संज्ञा पुं० १. बुनियाद। जड़। २. मूल धन।

असलियत—संज्ञा स्त्री० १. वास्तविकता। तथ्य। २. जड़। मूल। ३. सार। मूल तत्त्व।

असली—वि० १. वास्तविक। सच्चा। खरा। २. प्रधान। मूल। ३. शुद्ध। बिना मिलावट का।

असवार—संज्ञा पुं० दे० "सवार"। घुड़सवार।

असह*—वि० दे० "असह्य"। जो सहा न जा सके।

असहन—संज्ञा पुं० १. शत्रु। वैरी। २. असह्य। ३. अधीर। ४. उग्र। भयंकर।

असहनशील—वि० [संज्ञा स्त्री० असहनशीलता] १. असहिष्णु। जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। २. तुनक-मिजाज। चिड़चिड़ा।

असहनीय—वि० असह्य। जो सहने योग्य न हो। जो बर्दाश्त न हो सके।

असहयोग—संज्ञा पुं० १. आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रकट करने के लिए उसके कामों से बिलकुल अलग रहना। २. सहयोग में काम न करना।

असहाय—वि० १. निस्सहाय। निराश्रय। २. अनाथ।

असहिष्णु—वि० [संज्ञा असहिष्णुता] १. जो सहन न कर सके। असहनशील। २. चिड़चिड़ा।

असहिष्णुता—संज्ञा स्त्री० असहनशीलता। चिड़चिड़ापन।

असही—वि० ईर्ष्यालु। दूसरे को देखकर जलनेवाला। डाही।

असह्य—वि० १. असहनीय। जो बर्दाश्त न हो सके। सहन करने के अयोग्य। २. कठिन।

असाँच*—वि० झूठ। असत्य।

असा—संज्ञा पुं० १. डंडा। सोंटा। २. चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा। 'आसा'।

असाई—संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"। वर्ष का चौथा महीना।

असाढ़ी—वि० आषाढ़ का। संज्ञा स्त्री० १. खरीफ। वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय। २. आषाढ़ी पूर्णिमा।

असाधारण—वि० असामान्य। जो साधारण न हो।

असाधु–वि० [स्त्री० असाध्वी] १. अधर्मी। पापी। दुष्ट। दुर्जन। २. असज्जन। अशिष्ट।

असाध्य–वि० १. कठिन। जो संभव न हो। दुष्कर। २. न आरोग्य होने के योग्य। जैसे असाध्य रोग। ३. दुष्प्राप्य।

असामयिक–वि० बिना समय का। समय पर न होनेवाला। जो नियत समय पर न हो। बिना अवसर का। अनवसर। बिना ऋतु का (जैसे फूल या फल)।

असामर्थ्य–संज्ञा स्त्री० १. अक्षमता। शक्ति का न होना। २. कमजोरी। निर्बलता।

असामान्य–वि० जो साधारण न हो।

असामी–संज्ञा पुं० [अ० आसामी] १. व्यक्ति। प्राणी। २. वह जिसने लगान पर जोतने के लिए जमींदार से खेत लिया हो। रैयत। काश्तकार। खेत जोतनेवाला। ३. जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। ४. देनदार। मुद्दालेह। ५. अपराधी। ६. वह जिससे किसी प्रकार का स्वार्थ निकालना हो।
संज्ञा स्त्री० जगह। नौकरी।

असार–वि० [संज्ञा असारता] १. निःसार। सार-रहित। २. खाली। शून्य। ३. छूछा। पोला। सूखा। ४. तुच्छ।

असालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कुलीनता। २. सचाई। तत्त्व।

असालतन–क्रि० वि० [अ०] स्वयं। खुद।

असावधान–वि० १. जो सचेत न हो। जो सावधान या सतर्क न हो। २. लापरवाह। बेखबर।

असावधानी–संज्ञा स्त्री० लापरवाही। बेखबरी।

असावरी–संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

असासा–संज्ञा पुं० [अ०] संपत्ति। माल-असबाब।

असि–संज्ञा स्त्री० १. तलवार। २. छुरी। ३. काशी के पास एक नदी।

असित–वि० १. टेढ़ा। कुटिल। दुष्ट। बुरा। २. काला। जो सफेद न हो। ३. शनि। ४. एक पर्वत।

असिद्ध–वि० १. जो सिद्ध न हुआ हो। २. कच्चा। बे-पका। ३. अधूरा। अपूर्ण। ४. व्यर्थ। निष्फल। ५. जो प्रमाणित न हो।

असिद्धि–संज्ञा स्त्री० १. अनिष्पत्ति। अप्राप्ति। २. कच्चापन। ३. अपूर्णता।

असिपत्र वन–संज्ञा पुं० नरक-विशेष।

असिस्टेंट–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) सहायक। मददगार (कर्मचारी)।

असी–संज्ञा स्त्री० नदी-विशेष जो काशी के दक्षिण में गंगा से मिली है।

असीम–वि० १. जिसकी सीमा न हो। २. बहुत। अपरिमित। अनंत। अपार।

असील*–वि० दे० "असल"। १. खरा। सच्चा। २. शील से हीन।

असीस*–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

असीसना–क्रि० स० आशीर्वाद देना।

असु*–संज्ञा पुं० देखो "अश्व"। प्राण। जीवन। साँस।

असुग*–वि० जल्दी चलनेवाला।
संज्ञा पुं० १. वायु। २. तीर। बाण।

असुन्दर–वि० जो सुंदर या खूबसूरत न हो। बदसूरत। कुरूप। भद्दा। जो अच्छा न लगे।

असुर–संज्ञा पुं० १. राक्षस। दानव। दैत्य। २. रात। ३. पुरुष जो नीच वृत्ति का हो। ४. पृथ्वी का निवासी। ५. बादल। ६. सूर्य्य। ७. राहु। ८. एक प्रकार का उन्माद। ९. सुर विरोधी।

असुरसेन–संज्ञा पुं० राक्षस-विशेष। (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा है।)

असुराई–संज्ञा स्त्री० असुरों का-सा काम या व्यवहार। राक्षसता। राक्षसपन। नीचता। खोटाई।

असुरारि–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. देवता।

असुविधा–संज्ञा स्त्री० १. कठिनाई। अड़चन। २. कष्ट।

असुस्थ–वि० सुखस्थिति-रहित। रोगी।

असुस्थता–संज्ञा स्त्री० १. अस्वास्थ्य। २. अस्वच्छन्दता।

असूझ–वि० १. अँधेरा। अंधकारमय। २.

अपार। जिसका वारपार न दिखाई पड़े। बहुत विस्तृत। अदृश्य। ३. विकट। कठिन। जिसके करने का उपाय न सूझे। ४. भूल।

असूत*–वि० अनुत्पन्न। जो उत्पन्न न हुआ हो।

असूया–संज्ञा स्त्री० [वि० असूयक] १. पराये गुण में दोष लगाना। ईर्ष्या। डाह। निन्दा। द्वेष। २. परिवाद। ३. क्रोध। एक संचारी भाव (साहित्य)।

असूर्यपश्या–वि० परदे में रहनेवाली। पर्दा-नशीन। जिसको सूर्य्य भी न देखे।

असूल–संज्ञा पुं० दे० १. "उसूल" और २. "वसूल"।

असृक्–संज्ञा स्त्री० रक्त। रुधिर। लोहू।

असेग*–वि० जो सहने योग्य न हो। असह्य। कठिन।

असेसर–संज्ञा पुं० [अ०] वह व्यक्ति जो जज को फौजदारी के मुकद्दमे में राय देने के लिए चुना जाता है।

असैला*–वि० [स्त्री० असैली] १. अनुचित। शैली के विरुद्ध। २. रीति-नीति के विरुद्ध काम करनेवाला। कुमार्गी।

असों–संज्ञा पुं० यह साल। यह वर्ष। वर्तमान संवत्सर।

असोच–वि० चिन्तारहित। निश्चिन्त। अवि-चारित। बिना सोचा हुआ। अशोच।

असोची–वि० निर्मोही। प्रमादी। सुस्थिर।

असोज* –संज्ञा पुं० आश्विन मास। क्वार का महीना।

असोस*–वि० न सूखनेवाला।

असौंध*†–संज्ञा पुं० बदबू। दुर्गंधि।

अस्क्–संज्ञा पुं० रक्त। खून।

अस्तंगत–वि० १. नष्ट। अस्त को प्राप्त। २. अन्तर्हित। ३. हीन। अवनत।

अस्त–वि० १. तिरोहित। छिपा हुआ। २. अदृश्य। जो न दिखाई पड़े। ३. डूबा हुआ (सूर्य्य, चंद्र आदि)। ४. नष्ट। ध्वस्त। ५. क्षिप्त। ६. अवसान। ७. अन्तर्द्धान। ८. निक्षिप्त। ९. प्रेरित। १०. त्यक्त। ११. मृत। १२. सातवाँ चान्द्र मास।

संज्ञा पुं० १. लोप। २. अदर्शन। ३. मृत्यु। **यौ०**–सूर्य्यास्त। शुक्रास्त। चंद्रास्त।

अस्तबल–संज्ञा पुं० [अ०] घुड़साल। तबेला।

अस्तमन–संज्ञा पुं० [वि० अस्तमित] १. सूर्यादि ग्रहों का अस्त होना। २. अस्त होना।

अस्तमित–वि० १. छिपा हुआ। तिरोहित। २. डूबा हुआ। ३. नष्ट। ४. मरा हुआ।

अस्तर–संज्ञा पुं० [फा०] १. भितल्ला। नीचे की तह या पल्ला। दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। २. चंदन का तेल जिसे आधार बनाकर इत्र बनाये जाते हैं। जमीन। ३. वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती ह। अंतरपट। अँतरौटा।

अस्तरकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सफेदी। कलई। चूने की लिपाई। २. पलस्तर। गचकारी।

अस्तव्यस्त–वि० १.छिन्न-भिन्न। तितर-बितर। उलटा-पुलटा। २. संकीर्ण। ३. विक्षिप्त। आकुल।

अस्ताचल–संज्ञा पुं० पश्चिमाचल। वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य्य का अस्त होना कहा जाता है।

अस्ति–संज्ञा स्त्री० १. सत्ता। भाव। २. वर्तमानता। विद्यमानता।

अस्तित्व–संज्ञा पुं० विद्यमानता। होना। सत्ता का भाव।

अस्तु–अव्य० १. जो भी हो। चाहे जो हो। २. अच्छा। खैर। भला।

अस्तुति–संज्ञा स्त्री० बुराई। निंदा। *संज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति"।

अस्तुरा–संज्ञा पुं० [फा०] उस्तरा। बाल बनाने का छुरा।

अस्तेय–संज्ञा पुं० चोरी का त्याग। चोरी न करना। (धर्म के दस लक्षणों में से एक)।

अस्त्र–संज्ञा पुं० १. हथियार-विशेष जिसे फेंककर शत्रु पर चलावें। जैसे, बाण, शक्ति। २. हथियार जिससे शत्रु के चलाए हथि-यारों की रोक हो। जैसे, ढाल। ३. वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड़ करते हैं। ४. वह हथियार जो मंत्र-द्वारा चलाया

जाय। ५. हथियार। शस्त्र। आयुध। खड्ग। ६. धनुष। ७. किसी पुस्तक को पढ़ने, अग्नि प्रज्वलित करने आदि के पहले पढ़ा जानेवाला मंत्र।

अस्त्रगिरि–संज्ञा पुं० अस्ताचल। चरम पर्वत।

अस्त्र-चिकित्सक–संज्ञा पुं० अस्त्रवैद्य, अस्त्र के द्वारा रोग दूर करनेवाला। जर्राह।

अस्त्रचिकित्सा–संज्ञा स्त्री० चीर-फाड़ की चिकित्सा।

अस्त्रविद्या–संज्ञा स्त्री० अस्त्र चलाने की विद्या। धनुर्वेद।

अस्त्रवेद–संज्ञा पुं० धनुर्वेद।

अस्त्रशाला–संज्ञा स्त्री० अस्त्रागार। वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रक्खे जायँ।

अस्त्रागार–संज्ञा पुं० अस्त्रशाला।

अस्त्री–संज्ञा पुं० [स्त्री० अस्त्रिणी] १. हथियारबंद। २. जो स्त्री न हो। स्त्री-लिंग से भिन्न, अर्थात् पुँलिंग और नपुंसक (व्याकरण)।

अस्थायी–वि० स्थिति-रहित। अगाध। अतलस्पर्श।

अस्थि–संज्ञा स्त्री० १. हड्डी। हाड़। शरीर का पंजर। २. शरीरस्थ धातु-विशेष। ३. गुठली (फल की)।

अस्थिर–वि० १. डावाँडोल। अनिश्चित। अस्थायी। चंचल। चलायमान। २. जिसका कुछ ठीक न हो।
*वि० दे० "स्थिर"।

अस्थिरता–संज्ञा स्त्री० चंचलता। डावाँडोलपन। अस्थिर होने का भाव। अस्थैर्य। अनिश्चय।

अस्थिरमना–संज्ञा पुं० अस्थिरता का भाव। अस्थिरान्तःकरण। चंचल चित्तवाला।

अस्थिसंचय–संज्ञा पुं० अंत्येष्टि संस्कार के अनंतर जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का कर्म।

अस्थूल–वि० १. सूक्ष्म। २. जो स्थूल न हो। ३. कोमल। ४. पतला।
*वि० दे० "स्थूल"।

अस्थैर्य–वि० अनिश्चय। स्थिरताभाव। अधीरता। चंचलता।

अस्नान*–संज्ञा पुं० दे० "स्नान"।

अस्पताल–संज्ञा पुं० [अँग्रे० हास्पिटल] चिकित्सालय। औषधालय।

अस्पृश्य–वि० १. न छूने योग्य। २. नीच या अंत्यज।

अस्फुट–वि० १. अस्पष्ट। २. जटिल। गूढ़। ३. अनिश्चित (संख्या आदि)। ४. अस्पष्ट भाषण (साहित्य)।

अस्मरण–संज्ञा पुं० भूल। विस्मृति।

अस्मिता–संज्ञा स्त्री० १. दृक्, द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग)। २. मोह। अहंकार।

अस्र–संज्ञा पुं० १. कोना। नोक। २. रुधिर। ३. जल। ४. आँसू। ५. केसर। ६. एक देश।

अस्रप–संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. मूल नक्षत्र। वि० रक्त पीनेवाला।

अस्व–संज्ञा पुं० निर्धन। कंगाल। दरिद्री।

अस्वस्थ–वि० १. बीमार। रोगी। २. अनमना। उदास।

अस्वर–संज्ञा पुं० हल् व्यंजन। कुस्वर। निन्दित शब्द। बेस्वर।

अस्वाभाविक–वि० १. प्रकृति-विरुद्ध। जो स्वाभाविक न हो। २. बनावटी। कृत्रिम।

अस्वास्थ्य–संज्ञा पुं० बीमारी। रोग।

अस्वीकार–संज्ञा पुं० [वि० अस्वीकृत] जो स्वीकार न हो। नाहीं। इनकार।

अस्वीकृत–वि० जो स्वीकार न हो। नामंजूर किया हुआ।

अस्सी–वि० ८० की संख्या। दस का अठगुना।

अहं–सर्व० मैं।
संज्ञा पुं० अभिमान। अहंकार।

अहंकार–संज्ञा पुं० [वि० अहंकारी] १. गर्व। घमंड। अभिमान। दम्भ। २. "मैं हूँ" या "मैं करता हूँ" इस प्रकार की भावना। अहंकृति। ३. संसार की सृष्टि के तत्त्वों में तीसरा (सांख्य)।

अहंकारी–वि० [स्त्री० अहंकारिणी] अभिमानी। घमंडी।

अहंता–संज्ञा स्त्री० गर्व। अहंकार।

अहंवाद–संज्ञा पुं० डींग मारना। शेखी हाँकना। अभिमान की भावना का होना।

अह–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. सूर्य। ३. दिन का देवता। ४. दिन।
अव्य० आश्चर्य, खेद या क्लेश आदि का सूचक शब्द।

अहक*–संज्ञा स्त्री० इच्छा।

अहकना–क्रि० अ० प्रबल इच्छा करना। लालसा करना।

अहटाना*–क्रि० अ० पता चलना। आहट लेना। दुखना।
क्रि० स० आहट लेना। टोह लेना।

अहद–संज्ञा पुं० [अ०] वादा। प्रतिज्ञा।

अहथिर†–वि० दे० "स्थिर"।

अहदनामा–संज्ञा पुं० [फा०] १. प्रतिज्ञापत्र। इकरारनामा। २. सुलहनामा।

अहदी–वि० [अ०] १. आलस्ययुक्त। आलसी। आमकची। २. अकर्मण्य। निठल्लू।
संज्ञा पुं० [अ०] अकबर के समय के सिपाही-विशेष, जिनसे बड़ी आवश्यकता के समय काम लिया जाता था और जो सब दिन बैठे खाते थे। (रिजर्व पुलिस के सिपाही)।

अहन्–संज्ञा पुं० दिन।

अहना*†–क्रि० अ० (अब यह क्रिया केवल वर्तमान रूप "अहै" में ही बोली जाती है।)

अहनिसि*–अव्य० दे० "अहर्निश"।

अहमक–वि० [अ०] नादान। बेवकूफ। मूर्ख। सनकी।

अहमेव–संज्ञा पुं० अभिमान। गर्व। घमंड।

अहम्मति–संज्ञा स्त्री० १. गर्व। अहंकार। २. अविद्या।

अहर–संज्ञा पुं० डोवा। पोखरा। अहरा। पानी का गड्ढा।

अहरन–संज्ञा स्त्री० निहाई।

अहरना†–क्रि० स० १. डौलना। २. लकड़ी को छीलकर सुडौल करना।

अहरह–संज्ञा पुं० प्रतिदिन। लगातार। निरन्तर। नित्य। सदा।

अहरा–संज्ञा पुं० १. कंडे का ढेर। २. लोगों के ठहरने का स्थान।

अहर्निश–क्रि० वि० १. अष्ट प्रहर। रात-दिन। २. सदा। नित्य।

अहर्मुख–संज्ञा पुं० प्रातःकाल। सबेरा। भोर। प्रत्यूष।

अहर्षित–वि० अप्रसन्न। मलिन।

अहलकार–संज्ञा पुं० [फा०] १. कर्मचारी। २ कारिंदा।

अहलमद–संज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकद्दमों की मिसिलें रखता तथा अदालत के हुक्म के अनुसार हुक्मनामे जारी करता है।

अहल्या–संज्ञा स्त्री १. गौतम ऋषि की पत्नी। २. अप्सरा-विशेष। ३. जाती भूमि।

अहवान*–संज्ञा पुं० आह्वान। आवाहन। बुलाना।

अहसान–संज्ञा पुं० [अ०] १. उपकार करना। किसी के साथ नेकी करना। २. अनुग्रह। कृपा। ३. कृतज्ञता।

अहह–अव्य० आश्चर्य, खेद, क्लेश, पीड़ा, अप्रसन्नता, या शोक-सूचक एक शब्द।

अहा–अव्य० आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द।

अहाता–संज्ञा पुं० [अ०] १. बाड़ा। हाता। घेरा। २. प्राकार। चहारदीवारी।

अहार*–संज्ञा पुं० दे० "आहार"। १. भोजन। खाना। २. लेई। माँडी।

अहारना*–क्रि० स० १. खाना। भक्षण करना। २. चपकाना। ३. कपड़े में माँड़ी देना। ४. दे० "अहरना"।

अहारी–वि० दे० "आहारी"।
संज्ञा स्त्री० साधुओं के ध्यान में बैठने के समय हाथ टेककर बैठने का साधन।

अहाहा–अव्य० हर्ष-सूचक अव्यय।

अहिंसक–संज्ञा पुं० दे० "अहिंस्र"
वि० हिंसा न करनेवाला।

अहिंसा–संज्ञा स्त्री० किसी को दुःख न देना। किसी जीव को न सताना या न मारना। अनिष्ट करने की अनिच्छा।

अहिंस्र–वि० अहिंसक। जो हिंसा न करे।

अहि–संज्ञा पुं० १. राहु। २. साँप। ३. वंचक। खल। ४. वृत्रासुर। ५. पृथिवी। ६. सूर्य्य। ७. मात्रिक गणों में ठगण। ८. इक्कीस अक्षरों का वृत्त-विशेष। ९. मेघ। १०. जल। ११, पथिक। १२. राँगा। १३. गणित में ८ की संख्या।

अहिगण–संज्ञा पुं० पाँच मात्राओं के गण––ठगण––का सातवाँ भेद।

अहिगति–संज्ञा स्त्री० साँप की चाल। टेढ़ी चाल।

अहिच्छत्र–संज्ञा पुं० प्राचीन दक्षिण पांचाल।

अहिछार–संज्ञा पुं० साँप का विष।

अहित–वि० १. वैरी। शत्रु। २. हानिकारक। विरुद्ध। अपथ्य।
संज्ञा पुं० बुराई। अकल्याण। अनुपकार। अमंगल।

अहितकारी–संज्ञा पुं० अप्रिय कहनेवाला। शत्रु। बुरा चेतनेवाला।

अहितुण्डिक–संज्ञा पुं० सँपेरा। व्यालग्राही। कंजर।

अहितकुलता–संज्ञा पुं० स्वाभाविक शत्रुता।

अहित्व–संज्ञा पुं० शत्रु। दुश्मन। अहित चाहनेवाला।

अहिनाह–संज्ञा पुं० शेषनाग।

अहिनी–संज्ञा स्त्री० सर्पिणी। साँप की स्त्री। साँपिन।

अहिपति–संज्ञा पुं० सर्पराज।

अहिपुच्छ–संज्ञा पुं० इंद्र का शत्रु वृत्र जो दैत्यों का सरदार था।

अहिफेन–संज्ञा पुं० १. अफीम । २. सर्प के मुँह की लार या फेन।

अहिभुक्–संज्ञा पुं० मोर। मयूर।

अहिवर–संज्ञा पुं० दोहे का भेद-विशेष।

अहिवल्ली–संज्ञा स्त्री० नागवल्ली। पान।

अहिवात–संज्ञा पुं० [वि० अहिवाती] सोहाग। स्त्री का सौभाग्य। सधवा होने का चिह्न।

अहिवाती–वि० सौभाग्यवती । सधवा। सोहागिन।

अहिवेल*–संज्ञा स्त्री० पान। नाग-बेल।

अहिसाव*–संज्ञा पुं० साँप का बच्चा। सँपोला।

अहीर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अहीरिन] ग्वाला जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है। अभीर । गोपाल ।

अहीरिन या अहीरिनी–संज्ञा स्त्री० ग्वालिन ।

अहीश–संज्ञा पुं० १. शेषनाग । सर्पराज। २. शेषावतार। शेष के अवतार लक्ष्मण और बलराम रामानुजादि ।

अहुटना*–क्रि० अ० अलग होना। हटना। दूर होना।

अहुटाना*–क्रि० स० भगाना । हटाना। दूर करना।

अहुठ*–वि० साढ़े तीन। तीन और आधा। 'हूँठा'।

अहे–अव्य० संबोधनद्योतक। अहो!

अहेतु–वि० १. जिसका कारण न हो। निमित्त-रहित। २. व्यर्थ । ३. अनुचित या झूठा तर्क (न्याय)। ४. एक अलंकार (साहित्य)।

अहेतुक–वि० दे० "अहेतु"। १. अकारण। २. अनर्थक। ३. तर्कहीन।

अहेर–संज्ञा पुं० १. मृगया। शिकार। २. जंतु-विशेष जिसका शिकार किया जाय।

अहेरिया–संज्ञा पुं० बहेलिया। व्याध। शिकारी।

अहेरी–संज्ञा पुं० १. आखेटक। शिकारी आदमी। २. व्याध।

अहो–अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी संबोधन की तरह और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष या विस्मय, शोक, आश्चर्य और अचम्भा सूचित करने के लिए होता है।

अहोरात्र–संज्ञा पुं० दिन-रात। निरंतर। लगातार।

अहोर बहोर–क्रि० वि० बारबार। फिर-फिर।

अहोरा बहोरा–संज्ञा पुं० १. विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने घर लौट जाती है। हेराफेरी। २ भँवरी।
क्रि० वि०–बार-बार। पुनः पुनः।

आ

आ–हिंदी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

आ–अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, अभिव्याप्ति, ईषत् और अतिक्रमण के अर्थों में होता है। जैसे—(क) सीमा—आसमुद्र=समुद्र तक। आजन्म=जन्म से। (ख) अभिव्याप्ति—आपाताल=पाताल के अंतर्भाग तक। (ग) ईषत् (थोड़ा, कुछ)—आपिंगल=कुछ कुछ पीला। (घ) अतिक्रमण—आकालिक=बेमौसम का। उप० एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में कुछ थोड़ी-सी विशेषता कर देता है; जैसे, आरोहण, आकंपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या' (जाना) 'दा' (देना), तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है, तब उनके अर्थों को उलट देता है; जैसे 'गमन' से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'। १. स्मृति। २. पर्यन्त। तक। ३. वाक्य। ४. अनुकम्पा। ५. समुच्चय। ६. निषिद्ध। ७. सन्धि वर्ण। ८. स्वीकार। ९. कोप। पीड़ा। १०. स्पर्द्धा। ११. तर्जन। १२. चारों ओर। संपूर्णतः—आनील। भी। तक— आकुमार।

आँक–संज्ञा पुं० १. चिह्न। अंक। २. संख्या का चिह्न। ३. अक्षर। ४. गप। गढ़ी हुई बात। ५. अंश। भाग। ६. लकीर। ७. अर्क। मदार। अकौआ। अकवन।

मुहा०—एक ही आँक=दृढ़ बात। निश्चय। पक्की बात।

आँकड़ा–संज्ञा पुं० १. संख्या का चिह्न। अंक। २ पेंच। ३. संख्याओं का जोड़।

आँकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. आँकुशी। २. काँटा। ३. जंजीर।

आँकना–क्रि० स० १. अंकित करना। चिह्नित करना। निशान लगाना। दागना। २. अनुमान करना। अंदाजना। मूल्य लगाना। ठहराना। ३. निरखना। परखना। परीक्षा करना।

आँकर– वि १. बहुत अधिक। २. गहरा। वि० महँगा।

आँकरी–संज्ञा स्त्री० बाण का कण। अंकुश।

आँकुश या आँकुस*–संज्ञा पुं० दे० "अंकुश"। अंकुशी।

आँकू–संज्ञा पुं० आँकनेवाला।

आँख–संज्ञा स्त्री० १. नयन। चक्षु। वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप का ज्ञान होता है। २. दृष्टि। ध्यान। नजर।

मुहा०—आँख आना या उठना=आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना। आँख उठाना=१. देखना। ताकना। २. हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आँख उलट जाना=पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरने के समय)। आँख का तारा=१. बहुत प्यारा व्यक्ति। २. आँख का तिल। आँख की पुतली=१. प्रिय व्यक्ति। प्यारा मनुष्य। २. आँख के भीतर रंगीन भरी झिल्ली का वह भाग जो सफेदी पर की गोल काट में होकर दिखाई पड़ता है। आँख खुलना=१. नींद टूटना। २. पलक खुलना। ३. ज्ञान होना। भ्रम का मिटना। ४. चित्त स्वस्थ होना। तबीअत ठिकाने आना। आँख खोलना=१. देखना। पलक उठाना। २. सावधान करना। चेताना। ३. सुध में होना। स्वस्थ होना। आँख गड़ना=१. आँख दुखना। आँख किरकिराना। २. दृष्टि जमना। टक-टकी बँधना। ३. प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना। आँख चढ़ना=नशे या नींद से पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना। आँख चढ़ाना=क्रोध करना, कुपित होना। आँखें चार करना, चार आँखें करना=सामने आना। देखा-देखी करना। आँख चुराना या छिपाना=१. सामने न होना। २. लज्जा से बराबर न ताकना। आँख चुभना=पसन्द आना। निगाह में बुरा ठहरना। आँख झपकना=१. आँख बंद होना। २. नींद आना। आँखें डब-

डबाना=१. क्रि० अ० आँखों में आँसू भर आना। २. क्रि० स० आँख में आँसू लाना। आँखें तरेरना=क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख दिखाना=क्रोध प्रकट करना। आँख न ठहरना=चकाचौंध होना। आँख निकालना=क्रोध करना। आँख ठण्डी करना=इष्ट मित्रों के मिलने से चित्त की प्रसन्नता। आँख नीची होना=सिर का नीचा होना। लज्जित होना। आँख पथराना=पलक का नियमित रूप से न गिरना और पुतली की गति का मारा जाना (मरने का पूर्व लक्षण)। आँखों पर परदा पड़ना=बुद्धि का नष्ट होना। भ्रम होना। आँख फड़कना=आँख की पलक का बारबार हिलना। (शुभ-अशुभ-सूचक)। आँख फाड़कर देखना=अच्छी तरह आँख खोलकर देखना। आश्चर्य से देखना। आँखें फिर जाना=१. पहले की सी कृपा न रहना। बेमुरौअती आ जाना। २. मन में बुराई आना। आँख फूटना=१. आँख की ज्योति का नष्ट होना। २. कुढ़न होना। बुरा लगना। आँख फेरना=१. मित्रता तोड़ना। २. पहिले की सी कृपा या स्नेह-दृष्टि न रखना। ३. विरुद्ध होना। प्रतिकूल होना। आँख फैलाना=दूर तक देखना। आँख फोड़ना=१. आँखों की ज्योति का नाश करना। २. कोई ऐसा काम करना जिसमें आँख पर जोर पड़े। आँख बन्द होना=१. आँख झपकना। पलक गिरना। २. मृत्यु या मरण होना। आँख बन्द करके या मूँदकर=बिना सब बात देखे, सुने या विचार किए। आँख बचाना=सामना न करना। कतराना। आँखें बिछाना=१. प्रेम से स्वागत करना। २. बाट जोहना। प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना। आँख बदल जाना=पूर्ववत् व्यवहार का न रहना। आँख भौं टेढ़ी करना=क्रुद्ध होना। आँख भर आना=आँख में आँसू आना। आँख भर देखना=तृप्त होकर देखना। खूब अच्छी तरह देखना। इच्छा भर देखना। आँख मारना=१. संकेत करना। सनकारना। २. आँख के इशारे से मना करना। आँख मिलाना=१. आँख सामने करना। बराबर ताकना। २. सामने आना। मुँह दिखाना। प्रेम करना। मित्रता करना। आँखों में खून उतरना=क्रोध से आँखें लाल होना। आँख में गड़ना या चुभना=१. बुरा लगना। २. जँचना। पसंद आना। आँखों में चरबी छाना=मदांध होना। गर्वित होना। आँखों में धूल डालना=धोखा देना। भ्रम में डालना। आँखों में फिरना=स्मृति में बना रहना। ध्यान पर चढ़ना। आँखों में रात काटना=किसी कष्ट, चिंता या व्यग्रता से सारी रात जागते बीतना। आँखों में समाना=हृदय में बसना। चित्त में जमना। किसी पर आँख रखना=१. चौकसी करना। नजर रखना। २. चाह रखना। इच्छा रखना। आँख लगना=१. झपकी आना। नींद लगना। सोना। २. टकटकी लगना। दृष्टि जमाना। (किसी से) आँख लगना=प्रीति होना। प्रेम होना। आँख लड़ना=१. आँख मिलना। देखादेखी होना। २. प्रेम या प्रीति होना। आँख लाल करना=क्रोध-दृष्टि से देखना। आँख से गिरना=मन से उतरना। आँख सेंकना=दर्शन का सुख उठाना। नेत्रानंद लेना। आँखों से लगाकर रखना=बहुत प्रिय करके रखना। बहुत आदर-सत्कार से रखना। आँख होना=१. परख होना। पहचान होना। २. ज्ञान होना। विवेक होना। ३. विवेक। विचार। परख। पहचान। ४. दया-भाव। कृपादृष्टि। ५. संतान। संतति। ६. आँख के आकार का छेद व चिह्न। जैसे—सुई का छेद। आँख बदलना=कृपा न करना, बेमुरौअत होना। किसी की आँख से देखना=किसी के वश में होना। आँख फिरना=१. कृपा नष्ट होना। २. मरण-काल की स्थिति। आँख न खुलना=१. नींद न टूटना। २. यथार्थ स्थिति का ज्ञान न होना। आँख देखना=१. अपमान सहना। २. मुँह देखना। आँख जाना=दृष्टि नष्ट होना। आँख बैठना=दृष्टि नष्ट होना। आँख

न लगना=नींद न आना। चैन न पाना। आँख में उँगली करना=१. कष्ट देना। २. सावधान करना। आँख के आगे अँधेरा छाना=१. मूर्च्छित होना। २. घबरा जाना। आँख से उतरना=मन से उतर जाना, आदर या प्रेम नष्ट हो जाना। आँख पर चढ़ना=१. ध्यान में बसना। २. शत्रुता होना। आँख झपकना=हल्की नींद आना। आँख चूकना=असावधान होना। आँखों पर लेना=प्रेम और आदर से ग्रहण करना। अत्यन्त सत्कार करना।

आँखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

आँखफोड़ टिड्डा–संज्ञा पुं० १. हरे रंग का कीड़ा या फतिंगा विशेष। २. कृतघ्न।

आँखमिचौली, आँखमीचली–संज्ञा स्त्री० लड़कों का खेल-विशेष जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँख मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं जिन्हें उस आँख मूँदनेवाले लड़के को ढूँढ़कर छूना पड़ता है।

आँग*‡–संज्ञा पुं० अंग। भाग। देह। शरीर।

आँगन–संज्ञा पुं० चौक। अजिर। अँगनाई। प्रांगण। घर के भीतर का सहन।

आंगिक–वि० अंग का। अंग-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. चित्त के भाव को प्रकट करनेवाली चेष्टा। जैसे भ्रू-विक्षेप, हाव आदि। २. नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक। ३. रस में कायिक अनुभाव। ४. वाद्य-विशेष।

आंगिरस–संज्ञा पुं० १. अंगिरा के पुत्र बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त्त। २. अंगिरा के गोत्र का पुरुष।
वि० अंगिरा का। अंगिरा-संबंधी।

आंगिवर्त्त*–संज्ञा पुं० दे० "अग्निवर्त्त"।

आँगी*–संज्ञा स्त्री० दे० "अँगिया"।

आँगुरी –संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

आँघी–संज्ञा स्त्री० महीन कपड़े से मढ़ी हुई चलनी।

आँच–संज्ञा स्त्री० १. ताप। गरमी। २. आग की ज्वाला। ३. अग्नि। आग। ४. एक बार पहुँचा हुआ ताप। ५. प्रताप। ६. चोट। आघात। ७. अहित। अनिष्ट। हानि। ८. संकट। विपत्ति। ९. प्रेम। १०. काम-ताप।

मुहा०–आँच खाना=तपना। गरमी पाना। आग पर चढ़ना। आँच दिखाना=आग के सामने रखकर गरम करना।

आँचना*–क्रि० स० तपाना। जलाना।

आँचर*†–संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।

आँचल–संज्ञा पुं० १. पल्ला। छोर। किनारा। धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग। २. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है। ३. साधुओं का अँचला।

मुहा०–आँचल देना=१. बच्चे को दूध पिलाना। २. विवाह की रीति-विशेष। आँचल फाड़ना=बच्चे के जीने के लिए टोटका करना। आँचल में बाँधना=१. प्रतिक्षण पास रखना। २. किसी की कही हुई बात को अच्छी तरह याद रखना। कभी न भूलना। आँचल लेना=आँचल छूकर सत्कार या अभिवादन करना।

आँजन–‡संज्ञा पुं० दे० "अंजन"।

आँजना–क्रि० स० अंजन लगाना।

आंजनेय–संज्ञा पुं० हनुमान्। अंजना के पुत्र।

आँझू–संज्ञा पुं० आँसू। अश्रु।

आँट–संज्ञा स्त्री० १. हथेली में तर्जनी और अँगूठे के नीचे का स्थान। २. दाँव। वश। ३. लाग-डाँट। वैर। ४. गाँठ। गिरह। ऐंठन। ५. पूला। गट्ठा। ६. विरोध। ७. आड़ी।

आँटना*–क्रि० अ० दे० "अँटना"।

आँट-साँट–संज्ञा स्त्री० १. गुप्त अभिसंधि। साजिश। बंदिश। २. मेल-जोल। ३. साझा। हिस्सेदारी।

आँटी–संज्ञा स्त्री० १. पूला। लंबे तृणों का छोटा गट्ठा। २. सूत का लच्छा। ३. लड़कों के खेलने की गुल्ली। ४. टेंट। धोती की गाँठ। मुर्री। ऐंठन। ५. समाना। भरना। पैठना। ६. गुठली।

आँठी–संज्ञा स्त्री० १. दही, मलाई आदि वस्तुओं का लच्छा। २. गाँठ। गिरह। ३. बीज। गुठली।

आँड़–संज्ञा पुं० अंडकोश।

आंडी–संज्ञा स्त्री० गाँठ। कंद।

आँड़ू–वि० जो बधिया न हो। अंडकोशयुक्त

आँत–संज्ञा स्त्री० अंत्र। अँतड़ी। लाद। प्राणियों के पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदा-मार्ग तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है।

मुहा०–आँत उतरना=रोग-विशेष जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अंडकोश में पीड़ा उत्पन्न होती है। आँतों का बल खुलना=पेट भरना। भोजन से तृप्ति होना। आँतें कुलकुलाना या सूखना=भूख के मारे बुरी दशा होना। आँत गले में पड़ना=तंग होना। झगड़े में पड़ना।

आंतर*–संज्ञा पुं० दे० "अंतर"।

आंतरिक–वि० अंतःकरण संबंधी। अंतरस्थ। मनोगत। मानसिक।

आँदू–संज्ञा पुं० १. बेड़ी। लोहे का कड़ा। २. हाथी बाँधने की जंजीर। बाँधने का सीकड़।

आंदोलन–संज्ञा पुं० १. बार-बार हिलना डोलना। झूलन। कंपन। २. हलचल। धूम। इधर उधर जाना। उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। ३. अनुशीलन। कंपन। चलन।

आँध*–संज्ञा स्त्री० १. अँधेरा। अंधकार। धुंध। २. रतौंधी। ३. कष्ट।

आँधना*–क्रि० अ० टूटना। वेग से धावा करना।

आँधरा*–वि० दे० "अंधा"।

आँधारंभ–संज्ञा पुं० १. अंधेरखाता। २. बिना समझा-बूझा आचरण।

आँधी–संज्ञा स्त्री० तूफान। तेज हवा। झक्कड़। बड़े वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठे कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अंधबाव। वि० १. आँधी की तरह तेज। २. चुस्त। चतुर।

आंध्र–संज्ञा पुं० ताप्ती नदी के किनारे का देश।

आँबा हलदी–संज्ञा स्त्री० दे० "आमा हलदी"।

आँय बाँय–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात। प्रलाप। अनाप-शनाप। अंडबंड।

आँव–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना सफेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

आँवठ–संज्ञा पुं० धोती का छोर। किनारा।

आँवड़ना*–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

आँवड़ा† –वि० गहरा।

आँवरा–संज्ञा पुं० आँवला। धात्री फल।

आँवल–संज्ञा पुं० खेंड़ी। जेरी। साम। झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं।

आँवला–संज्ञा पुं० पेड़-विशेष जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।

आँवलासार गंधक–संज्ञा स्त्री० खूब साफ की हुई गंधक जो पारदृश्य होती है।

आँवाँ–संज्ञा पुं० मिट्टी के बरतन पकाने का गड्ढा।

मुहा०–आँवा का आँवा बिगड़ना=किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।

आँश–संज्ञा स्त्री० रेशा। सूत।

आंशिक–वि० १. अंश-संबंधी। अंश-विषयक। विभागी। हिस्सेदार। २. प्रतापी। तेजस्वी।

आंशुकजल–संज्ञा पुं० वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय (वैद्यक)।

आँस–संज्ञा स्त्री० १. संवेदना। २. दर्द। ३. सूत। सुतली। डोरी। ४. रेशा। संज्ञा पुं० १. दे० "आँसू"। २. वाद्य के तार आदि पर आघात के बाद देर तक शब्द की स्थिति (संगीत)।

आँसी†–संज्ञा स्त्री० १. बैना। मिठाई जो इष्ट मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है। २. भाजी।

आँसू–संज्ञा पुं० अश्रु। वह जल जो आँखों से शोक, पीड़ा आदि के कारण निकलता है।

मुहा०–आँसू गिराना या ढालना=रोना। आँसू पीकर रह जाना=भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। आँसू पुंछना=आश्वासन मिलना। ढारस बँधना। आँसू पोंछना=

ढारस बँधाना। दिलासा देना। आँसू से मुँह धोना=बहुत रोना।

आँहड़–संज्ञा पुं० बरतन।

आँहाँ–अव्य० अस्वीकार या निषेध-सूचक एक शब्द। नहीं।

आः–अव्य० कष्टसूचक शब्द। खेदोक्ति।

आइंदा–वि० [फा०] भविष्य। आनेवाला। आगंतुक। आगामी।

संज्ञा पुं० भविष्यकाल।

क्रि० वि० आगे। भविष्य में।

आइना–संज्ञा पुं० दे० "आईना"। दर्पण।

आइसक्रीम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार की कुलफी मलाई।

आई–संज्ञा स्त्री० मृत्यु। मौत। दे० "आइ"। १. आयु। वय। अवस्था। २. आकार।

आईन–संज्ञा पुं० [फा०] १. नियम। कायदा। २. राजनियम। कानून। ३. व्यवस्था। विधि।

आईना–संज्ञा पुं० [फा०] १. दर्पण। शीशा। आरसी।

मुहा०–आईना होना=स्पष्ट होना। आईने में मुँह देखना=अपनी योग्यता को जाँचना। २. किवाड़ का दिलहा।

आईनाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. झाड़-फानूस आदि की सजावट। २. फर्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।

आईनासाज़–संज्ञा पुं० [फा०] आईना बनानेवाला।

आईनासाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] काँच की चद्दर के टुकड़े पर कलई करने का काम।

आईनी–वि० [फा०] राजनियम के अनुकूल। कानूनी।

आउ–संज्ञा पुं० दे० "आयु"।

आउबाउ*†–संज्ञा पुं० अंडबंड बात। असंबद्ध प्रलाप।

आउस–संज्ञा पुं० धान का भेद-विशेष। भदई। ओसहन।

आकंपन–संज्ञा पुं० काँपना। थरथराहट। थोड़ी-सी कँपकँपी।

आक–संज्ञा पुं० अकौआ। मदार।

आकट–संज्ञा पुं० खानि। खजाना।

आ-कटि–क्रि० वि० कमर तक।

आकड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "आक"।

आकबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] परलोक। मरने के पीछे की अवस्था।

आकबाक–संज्ञा पुं० ऊटपटाँग बात। अक-बक। अंडबंड बात।

आकर–संज्ञा पुं० १. खान। २. उत्पत्ति-स्थान। खजाना। भांडार। ३. भेद। जाति। ४. तलवार चलाने का भेद-विशेष। ५. मूल। ६. समूह। ७. श्रेष्ठ। ८. बाहुल्य। ९. बहुतायत। आधुनिक खानदेश।

आकर-भाषा–संज्ञा स्त्री० वह मूल प्राचीन भाषा जिससे किसी नई भाषा के लिए आवश्यकतानुसार नये नये शब्द लिये जायँ।

आकरिक–संज्ञा पुं० खान खोदनेवाला।

आकरी–संज्ञा स्त्री० खान खोदने का काम।

आकर्ण–वि० जो कान तक फैला हुआ हो।

आकर्ण चक्षु–संज्ञा पुं० कर्णपर्यंत विस्तृत चक्षु। दीर्घ नयन। विशाल नेत्र।

आकर्ष–संज्ञा पुं० १. खिंचाव। एक जगह के पदार्थ का बल से दूसरी जगह जाना। २. चौपड़। बिसात। ३. पासे का खेल। ४. इंद्रिय। ५. धनुष चलाने का अभ्यास। ६. कसौटी। ७. चुंबक। ८. आँकुशी। ९. झुकाना, चढ़ाना (धनुष आदि)। १०. फँसाने का चारा (पक्षी आदि के लिए)।

आकर्षक–वि० १. आकर्षण करनेवाला। खींचनेवाला। २. शिला-विशेष। चुम्बक पत्थर।

आकर्षण–संज्ञा पुं० [वि० आकर्षित, आकृष्ट] १. खिंचाव। २. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना। ३. एक प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आ जाता है (तंत्र)। ४. झुकाना। चढ़ाना (धनुष आदि)। ५. फल आदि तोड़ने के लिए सिरे पर टेढ़ी लकड़ी।

आकर्षणशक्ति–संज्ञा स्त्री० भौतिक पदार्थों की शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षना*–क्रि० स० खींचना। दे० "आकर्षण"
आकर्षित–वि० खींचा हुआ।
आकलन–संज्ञा पुं० [वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। लेना। २. संग्रह। संचय। इकट्ठा करना। ३. गिनती करना। ४. अनुष्ठान। संपादन। ५. अनुसंधान। बन्धन। बटोरना। जाँच।
आकला–वि० खटखटिया। उतावला। उच्छृङ्खल।
आकलित–संज्ञा पुं० १. बद्ध। पकड़ा हुआ। २. कृत। ३. परिसंख्यात। ४. अनुष्ठित।
आकली†–संज्ञा स्त्री० व्याकुलता। आकुलता। बेचैनी।
आकस्मिक–वि० १. अचानक होनेवाला। सहसा होनेवाला। २. जो बिना कारण के हो।
आकांक्षक–वि० दे० "आकांक्षी"। आकांक्षा रखनेवाला।
आकांक्षा–संज्ञा स्त्री० १. वांछा। चाह। इच्छा। अभिलाषा। २. अपेक्षा। ३. अनुसंधान। खोज। ४. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिए एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना (न्याय)।
आकांक्षित–वि० १. अभिलषित। इच्छित। वांछित। २. अपेक्षित।
आकांक्षी–वि० [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छुक। इच्छा करनेवाला।
आकार–संज्ञा पुं० १. आकृति। स्वरूप। सूरत। २. डील-डौल। ३. बनावट। संघटन। ४. संकेत। इंगित। निशान। चिह्न। ५. चेष्टा। ६. 'आ' वर्ण। ७. बुलावा। ८. चेहरे की बनावट।
आकारगुप्ति–संज्ञा स्त्री० भय, हर्ष आदि से उत्पन्न अंगविकार को छिपाना।
आकारगोपन–संज्ञा पुं० भय, हर्ष आदि सूचक भावों को छिपाना।
आकारतः–अव्य० स्वरूपतः। सदृश। आकृति से।
आकारांत–संज्ञा पुं० वे शब्द जिनके अन्त में दीर्घ 'आ' हो।
आकारादि–वि० जिस शब्द का आद्यक्षर आकार हो।
आकाल–संज्ञा पुं० अकाल। दुर्भिक्ष। दुःसमय। महँगी।
आकालिक–वि० असामयिक। असमय में उत्पन्न। अकाल-संभव।
आकारी*–वि० [स्त्री० आकारिणी] बुलानेवाला। आह्वान करनेवाला।
आकाश–संज्ञा पुं० १. गगन। शून्य। अंबर। व्योम। अंतरिक्ष। आसमान। २. वह स्थान जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो (पंचभूतों में से एक)। ३. अभ्रक। अबरक।
मुहा०–आकाश छूना या चूमना=बहुत ऊँचा होना। आकाश-पाताल एक करना=१. भारी उद्योग करना। २. आंदोलन करना। हलचल करना। आकाश-पाताल का अंतर=बड़ा अंतर। बहुत फर्क। आकाश से बात करना=बहुत ऊँचा होना।
आकाशकुसुम–संज्ञा पुं० १. खपुष्प। आकाश का फूल। २. असंभव या अनहोनी बात।
आकाशगंगा–संज्ञा स्त्री० १. स्वर्ग-गंगा। बहुत से छोटे-छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है। आकाशजनेऊ। डहर। २. मंदाकिनी। पुराणानुसार आकाश की गंगा।
आकाशग–वि० आकाशगामी। आकाशचर।
आकाशगामी–वि० खेचर। आकाश में चलनेवाला।
आकाशचारी–वि० आकाशगामी। आकाश में फिरनेवाला।
संज्ञा पुं० १. नक्षत्र। सूर्यादि ग्रह। २. वायु। ३. देवता। ४. पक्षी।
आकाश-जल–संज्ञा पुं० वर्षा का जल। ओस।
आकाशदीप–संज्ञा पुं० वह दीपक जो कार्तिक में हिंदू लोग कंडील में रखकर एक ऊँचे बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाते हैं। आकाशदीपक।
आकाशदीया–संज्ञा पुं० दे० "आकाशदीप"।
आकाशधुरी–संज्ञा स्त्री० आकाशध्रुव। खगोल का ध्रुव।
आकाशनीम–संज्ञा स्त्री० नीम का बाँदा।
आकाशपुष्प–संज्ञा पुं० १. आकाशकुसुम। आकाश का फूल २. असंभव वस्तु। अनहोनी बातें।
आकाशबेल–संज्ञा स्त्री० "अमरबेल" लता-विशेष।

आकाशभाषित—संज्ञा पुं० आकाशवाणी का उत्तर। नाटक में पात्र का ऊपर की ओर देखकर स्वयं कुछ प्रश्न करना और फिर उसका उत्तर देना। अदृश्य व्यक्ति की बात सुनने या उससे कहने की मुद्रा प्रकट करना (नाटच)।

आकाशमंडल—संज्ञा पुं० खगोल।

आकाशमुखी—संज्ञा पुं० साधु-विशेष जो आकाश की ओर मुँह करके तप करते हैं।

आकाशलोचन—संज्ञा पुं० मानमंदिर। आबजरवेटरी। वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है।

आकाशवाणी—संज्ञा स्त्री० १. देववाणी। वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें। २. रेडियो।

आकाशविद्या—संज्ञा स्त्री० वायु निरूपण करने की विद्या।

आकाशवृत्ति—संज्ञा स्त्री० १. ऐसी आमदनी जो बँधी न हो। अनिश्चित जीविका। २. निराश्रय। दरिद्र।

आकाशी—संज्ञा स्त्री० वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिए तानी जाती है।

आकाशीय—वि० १. आकाश का। आकाश-संबंधी। २. आकाश में होने या रहनेवाला। ३. आकस्मिक। दैवागत।

आकिंचन—संज्ञा पुं० १. दरिद्रता। अकिंचनता। २. प्रयास। ३. यन्त्र।

आकिल—वि० [अ०] बुद्धिमान्।

आकिलखानी—रंग-विशेष जो कालापन लिये लाल होता है।

आकीर्ण—वि० १. व्याप्त। भरा हुआ। पूर्ण। २. विस्तारित। ३. संकीर्ण। संकुल। ४. समाकुल।

आकुंचन—संज्ञा पुं० १. संकोचन। सिकुड़ना। सिमटना। २. वक्रता। ३. न्यायमत के पंच प्रकार के कर्मों में से एक कर्म।

आकुंचित—वि० १. सिमटा हुआ। सिकुड़ा हुआ। २. टेढ़ा। तिरछा। ३. कुटिल।

आकुंठन—संज्ञा पुं० [वि० आकुंठित] १. गुठला या कुंद होना। २. लज्जा।

आकुंठित—वि० लज्जित। अवाक्।

आकुल—वि० [संज्ञा आकुलता] १. उद्विग्न। व्यग्र। घबराया हुआ। २. विह्वल। कातर। ३. संकुल। व्याप्त। ४. व्यस्त। ५. आर्त। ६. पूर्ण। आकीर्ण।

आकुलता—संज्ञा स्त्री० [वि० आकुलित] १. व्याकुलता। घबराहट। २. व्याप्ति।

आकुलित—वि० दे० "आकुल"। १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. कातर। व्याप्त। ३. व्यस्तचित्त।

आकूत—संज्ञा पुं० अभिप्राय। मतलब।

आकूति—संज्ञा स्त्री० १. मनु की तीन कन्याओं में से एक। २. उत्साह। ३. सदाचार।

आकृति—संज्ञा स्त्री० अवयव। १.डीलडौल। शरीर। आकार। बनावट। ढाँचा। गढ़न। २. रूप। मूर्ति। ३. मुख। ४. मुख का भाव। चेष्टा। ५. २२ अक्षरों की वर्णवृत्ति-विशेष। ६. नमूना। ७. २२वीं संख्या। ८. किसी नियम से बद्ध शब्दों का एक नमूना (व्याकरण)।

आकृष्ट—वि० आकर्षित। खींचा हुआ।

आक्रंद—संज्ञा पुं० १. रोदन। २. भयंकर युद्ध। ३. आह्वान।

आक्रंदन—संज्ञा पुं० १. रोना। २. चिल्लाना।

आक्रम *—संज्ञा पुं० दे० "पराक्रम"। १. आक्रमण। चढ़ाई। २. अतिक्रम। ३. क्रान्ति।

आक्रमण—संज्ञा पुं० १. चढ़ाई। बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करना। २. आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना। ३. घेरना। छेकना। ४. निंदा। आक्षेप।

आक्रमित—वि० [स्त्री० आक्रमिता] जिस पर आक्रमण किया गया हो। जिस पर चढ़ाई की गई हो।

आक्रमिता—संज्ञा स्त्री० वह प्रौढ़ा नायिका जो मनसा, वाचा, कर्मणा अपने मित्र को वश करे।

आक्रांत—वि० १. जिस पर आक्रमण या चढ़ाई हो। २. आवृत। घिरा हुआ। ३. विवश। वशीभूत। पराजित। ४. आकीर्ण। व्याप्त। ५ दबा हुआ। क्षुभित।

आक्रीड़—संज्ञा पुं० क्रीड़ा करने का स्थान।

केलिकानन। उपवन। बाग। विहार। दे० "क्रीड़ा।" राजमहल के समीप का बाग।
आक्रीड़न–संज्ञा पुं० मृगया। शिकार। आखेट।
आक्रोश–संज्ञा पुं० १. गाली देना। कोसना। शाप देना। २. आक्षेप। ३. राग। ४. क्रोध। कोप।
आक्रोशन–संज्ञा पुं० अभिशाप। कटूक्ति। भर्त्सना। अभिसंपात।
आक्लान्त–वि० श्रान्त। अवसन्न। खिन्न।
आक्षिप्त–वि० १. गिराया हुआ। फेंका हुआ। २. निंदित। ३. दूषित। ४. पकड़ा हुआ। जीता हुआ। ५. लटकाया हुआ। ६. निर्दिष्ट। प्रसंग में कथित। ७. अपमानित। ८. ललकारा हुआ। ९. अन्यमनस्क।
आक्षेप–संज्ञा पुं० १. गिराना। फेंकना। २. दोष लगाना। अपवाद लगाना। ३. ताना। कटूक्ति। ४. वातरोग-विशेष जिसमें अंग में कँपकँपी होती है। ५. ध्वनि। ६. व्यंग्य।
आक्षेपक–वि० [स्त्री० आक्षेपिका] १. फेंकनेवाला। २. खींचनेवाला। ३. निंदा करनेवाला। आक्षेप करनेवाला।
आखंड–वि० समुदाय। खण्डरहित। सम्पूर्ण।
आखंडल–संज्ञा पुं० इन्द्र। सहस्राक्ष। शचीपति। देवराज।
आखत*–संज्ञा पुं० १. अक्षत। बिना टूटा चावल। २. चंदन या केसर में रँगा चावल जो मूर्ति या दूल्हा-दुलहिन के माथे में लगाया जाता है। ३. नेग-विशेष जो कमीनों या नेगियों को दिया जाता है।
आखता–वि० [फा०] पुंस्त्वहीन। जिसके अंडकोश चीरकर निकाल लिये गये हों। बधिया किया हुआ (घोड़ा)।
आखन–क्रि० वि० प्रति क्षण। हर घड़ी।
आखना–क्रि० स० कहना। चाहना। ताकना। देखना।
आखर*–संज्ञा पुं० अक्षर।
आखा–संज्ञा पुं० १. झीने कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी। २. बोरा। गठिया। वि० कुल। पूरा। समूचा।
आखात–संज्ञा पुं० देवखात। झील। देवनिर्मित जलाशय।
आखा तीज–संज्ञा स्त्री० वैशाख सुदी तीज। (स्त्रियों-द्वारा बट का पूजन और दान)।
आखार–संज्ञा पुं० [फा०] १. जानवरों के खाने से बची हुई घास या चारा। २. निकम्मी वस्तु। ३. कूड़ा-करकट।
वि० १. बेकाम। निकम्मा। २. रद्दी। सड़ा-गला। ३. मैला-कुचैला।
आखिर–वि० [फा०] पीछे का। अंतिम। संज्ञा पुं० १. अंत। २. परिणाम। फल। क्रि० वि० अंत में। अंत को।
आखिरकार–क्रि० वि० [फा०] अंत में।
आखिरी–वि० [फा०] पिछला। अंतिम।
आखु–संज्ञा पुं० १. चूहा। २. देवताल। देवताड़। ३. सूअर। चोर।
आखुपाषाण–संज्ञा पुं० १. चुंबक पत्थर। २ संखिया।
आखेट–संज्ञा पुं० अहेर। मृगया। शिकार।
आखेटक–संज्ञा पुं० शिकार। शिकारी। वि० १. अहेरी। बहेलिया। २. अन्वेषित। ३. भयानक।
आखेटी–संज्ञा पुं० [स्त्री० आखेटिनी] शिकारी।
आख्या–संज्ञा स्त्री० १. नाम। संज्ञा। अभिधान। २. यश। कीर्ति। ३. व्याख्या। ४. संख्याओं का जोड़। ५. आकार-प्रकार।
आख्यात–वि० १. विख्यात। प्रसिद्ध। २. कथित। उक्त। ३. राजवंश के लोगों का वृत्तांत। ४. व्याकरण का धातु प्रकरण।
आख्याति–संज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्धि। ख्याति। २. कथन। प्रकटीकरण। ३. नाम। ४. किसी वस्तु का पूरा यथार्थ वृत्तांत प्रकाशित करना।
आख्यान–संज्ञा पुं० १. कहानी। कथा। वृत्तांत। बयान। २. वर्णन। नाम। संज्ञा। इतिहास ३. उपन्यास के नौ भेदों मे से एक। कथा व जिसे स्वयं कवि ही कहे। ४. भूतपूर्व घटना का कथन (नाट्यशास्त्र)।
आख्यानक–संज्ञा पुं० १. आख्यान। वर्णन। वृत्तांत। २. कथा। कहानी। ३. कथा-

मक । पूर्व वृत्तांत । ४. उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवज्रा को मिलाकर बना छंद-विशेष ।

आख्यानिकी—संज्ञा स्त्री० दंडक वृत्त का भेद विशेष ।

आख्यायिका—संज्ञा स्त्री० १. कथा । कहानी । इतिहास । उपन्यास । उपकथा । २. शिक्षाप्रद कल्पित कथा । ३. एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र अपने-अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ-कुछ कहते हैं ।

आगंतुक—वि० १. आगमनशील । जो आवे । अतिथि । २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय । ३. अनित्य । अस्थायी । ४. मुख्य रोग की दशा में अन्य तत्संबद्ध रोग (वैद्यक) ।

आगन्तुक ज्वर—संज्ञा पुं० पीड़ा-विशेष । आकस्मिक ज्वर । धातु-प्रकोप के बिना ज्वर ।

आग—संज्ञा स्त्री० १. अग्नि । वसुंदर । आगी । तेज और प्रकाश का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा जाता है । २. ताप । जलन । गरमी । ३. कामाग्नि । ४. प्रेम । वात्सल्य । ५. ईर्ष्या । डाह ।

वि० १. बहुत गरम । जलता हुआ । २. जो गुण में उष्ण हो ।

मुहा०—आगबबूला (बगूला) होना या बनना=क्रोध के आवेश में होना । अत्यंत कुपित होना । आग बरसना=बहुत गरमी पड़ना । आग बरसाना=शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना । आग लगना=१. आग से किसी वस्तु का जलना । २. क्रोध उत्पन्न होना । कुढ़न होना । ३. महँगी फैलना । गिरानी होना । आग लगे=बुरा हो । नाश हो । (स्त्री०) आग लगाना=१. आग से किसी वस्तु को जलाना । २. गरमी करना । जलन पैदा करना । ३. उद्वेग बढ़ाना । जोश बढ़ाना । भड़काना । ४. क्रोध उत्पन्न करना । ५. चुगली खाना । ६. बिगाड़ना । नष्ट करना । आग होना=१. बहुत गर्म होना । २. क्रुद्ध होना । रोष में भरना । पानी में आग लगाना=१. अनहोनी बातें कहना । २. असंभव कार्य करना । ३. लड़ाई की बात न हो, वहाँ भी लड़ाई लगा देना । पेट की आग=भूख । आग उठाना=झगड़ा करना । आग का पुतला=महाक्रोधी । आग खाना, अंगार हगना=जैसी करनी वैसी भरनी । आग देना=शव-संस्कार । आग पानी का वैर=स्वाभाविक शत्रुता । आग में पानी डालना=झगड़ा निपटाना । आग लगाकर तमाशा देखना=दूसरों को लड़वाकर स्वयं प्रसन्न होना ।

आगत—वि० [स्त्री० आगता] आया हुआ । उपस्थित । प्राप्त । पहुँचा । आयात ।

आगतपतिका—संज्ञा स्त्री० नायिका-विशेष जिसका पति परदेश से लौटा हो ।

आगत-स्वागत—संज्ञा पुं० आव-भगत । आये हुए व्यक्ति का आदर । सत्कार ।

आगम—संज्ञा पुं० १. आगमन । अवाई । २. आनेवाला समय । भविष्य काल । ३. होनहार । ४. उत्पत्ति । ५. पुनः आगमन । ६. बहाव (द्रव का) । ७. निकलना (रुधिर आदि) । ८. वैध कब्जा । परंपरा-प्राप्त वस्तु । ९. संगम । समागम । १०. आय । ११. व्याकरण में किसी शब्दसाधन में वह अर्थहीन वर्ण जो बाहर से लाया जाय । १२. वेद । १३. शब्द-प्रमाण । १४. शास्त्र । १५. तंत्र-शास्त्र । १६. नीति । नीतिशास्त्र । वि० आनेवाला ।

मुहा०—आगम करना=ठिकाना करना । उपक्रम बाँधना । लाभ का डौल करना । उपाय रचना । आगम जनाना=होनहार की सूचना देना । आगम बाँधना=आनेवाली बात का निश्चय करना ।

आगमजानी—वि० होनहार का जाननेवाला ।

आगमज्ञ—वि० वेदज्ञ । तंत्रवेत्ता । भाग्य का ज्ञाता ।

आगमज्ञानी—वि० भविष्य का जाननेवाला ।

आगमन—संज्ञा पुं० १. आना । २. प्राप्ति । लाभ । आय । ३. पहुँचना । उपस्थित होना ।

आगमवाणी—संज्ञा स्त्री० भविष्यवाणी ।

आगमविद्या—संज्ञा स्त्री० वेदविद्या ।

आगमसोची–वि० अग्रसोची। दूरदर्शी।
आगमी–संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
आगमोक्त–वि० तंत्रशास्त्र-विहित कर्म। शास्त्रोक्त तांत्रिक उपासना।
आगर–संज्ञा पुं० [स्त्री० आगरी] १. आकर। खान। २. समूह। ढेर। ३. निधि। कोष। खजाना। ४. वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है।
संज्ञा पुं० १. गृह। घर। २. छप्पर। छाजन। वि० १. बढ़कर। श्रेष्ठ। उत्तम। २. चतुर। कुशल। दक्ष। जानकार। नागर। सयाना। ३. पूर्ण।
आगरी–संज्ञा पुं० लोनिया। नमक बनानेवाला पुरुष।
संज्ञा स्त्री० कुशल। चतुर। दक्ष।
आगल–संज्ञा पुं० अगरी। ब्योंड़ा।
क्रि० वि० आगे। सामने। वि० अगला।
आगलांत–वि० गले तक। कंठ पर्यंत।
आगला*–क्रि० वि० दे० "अगला"।
आगवन*–संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।
आगा–संज्ञा पुं० १. अगाड़ी। किसी चीज के आगे का भाग। २. शरीर का अगला भाग। ३. वक्षःस्थल। छाती। ४. मुँह। मुख। ५. ललाट। माथा। ६. लिंगेंद्रिय। ७. अँगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। ८. हरावल। सेना या फौज का अगला भाग। ९. घर के सामनेका मैदान। १०. आगड़ा। ११. भविष्य। आगे आनेवाला समय। १२. स्वामी। सरदार। १३. काबुली। अफगान।
आगाड़ी–संज्ञा स्त्री० घोड़े की गर्दन की रस्सी।
आगान*–संज्ञा पुं० प्रसंग। आख्यान। वृत्तान्त। बात।
आगा-पीछा–संज्ञा पुं० १. दुविधा। हिचक। सोच-विचार। २. परिणाम। ३ शरीर का अगला और पिछला भाग।
मुहा०–आगा-पीछा करना=दुविधा में पड़ना। संशय में पड़ना। हिचकना।
आगामि, आगामी–वि० [स्त्री० आगामिनी] भावी। होनहार। आनेवाला।
आगार–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। गृह। २. खजाना। ३. जगह। स्थान।
आगाह–वि० [फा०] जानकार।
संज्ञा पुं० होनहार। आगम।
आगाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] जानकारी। पहले से मालूम होना।
आगि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।
आगिल*–वि० दे० "अगला"। १. होनहार। भविष्यत्। २. अग्रसर। अग्रगामी।
आगी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।
आगुल्फ–वि० गुल्फ पर्यंत। टिहुना तक।
आगू†–क्रि० वि० दे० "आगे"। सामने। सम्मुख। अगाऊ।
आगे–क्रि० वि० १. और बढ़कर। और दूर पर। 'पीछे' का उलटा। २. समक्ष। सामने। ३. जीते जी। जीवन-काल में। ४. इसके पश्चात्। ५. भविष्य में। ६. अनंतर। पश्चात्। ७. पहले। पूर्व। ८. अतिरिक्त। अधिक। ९. गोद में। लालन-पालन में। जैसे, उसके आगे एक लड़का है।
मुहा०—आगे आना=१. सामने आना। २. सामने पड़ना। मिलना। ३. सामना करना। भिड़ना। ४. घटित होना। घटना। आगे करना=१. उपस्थित करना। प्रस्तुत करना। २. अगुआ बनाना। मुखिया बनाना। आगे को=आगे। भविष्य में। आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य में। इसके बाद। आगे निकलना=बढ़ जाना। आगे का कदम पीछे पड़ना=अवनति होना। पीछे हटना। आगे पीछे=१. एक के पीछे एक। एक के बाद दूसरा। क्रम से। २. आस-पास। किसी के आगे पीछे होना=किसी के वश में किसी प्राणी का होना। आगे से=१. सामने से। २. आइंदा से। भविष्य में। ३. पहले से। पूर्व से। बहुत दिनों से। आगे से लेना=अभ्यर्थना करना। आगे होना=१. आगे बढ़ना। अग्रसर होना। २. बढ़ जाना। ३. सामने आना। ४. मुकाबला करना। भिड़ना। ५. मुखिया बनना।
आगौन*–संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।

आग्नीध्र—संज्ञा पुं० १. यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २. वह यजमान जो साग्निक हो या अग्निहोत्र करता हो। ३. यज्ञमंडप। होता का गृह। ४. धन के द्वारा वरण किया जानेवाला ऋत्विक्।

आग्नेय—वि० [स्त्री० आग्नेयी] १. अग्नि का। अग्नि संबंधी। २. जिनका देवता अग्नि हो। ३. अग्नि से उत्पन्न। ४. अगस्त्य मुनि। पाचक। ५. संबंधीय। ६. जिससे आग निकले। जलानेवाला। संज्ञा पुं० १. सोना। सुवर्ण। २. रुधिर। खून। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय। ५. दीपन औषध। ६. ज्वालामुखी पर्वत। ७. प्रतिपदा। ८. दक्षिण का देश-विशेष जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी। ९. वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे, जैसे बारूद। १०. ब्राह्मण। ११. अग्निकोण। दक्षिण-पूर्व का कोण। यौ०—आग्नेयस्नान=भस्म पोतना।

आग्नेयगिरि—संज्ञा पुं० धधकनेवाले पर्वत। ज्वालामुखी।

आग्नेयास्त्र—संज्ञा पुं० अग्निबाण। बन्दूक। प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।

आग्नेयी—वि० १. अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २. पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा। ३. अग्नि की स्त्री स्वाहा।

आग्रह—संज्ञा पुं० १. अनुरोध। हठ। २. परायणता। तत्परता। ३. बल। ४. आवेश। ५. कृपा। ६. प्रेम। ७. अतिशय यत्न। ८. प्रयास। ९. अनुग्रह। आसक्ति। १०. आक्रमण। ११. ग्रहण। १२. उपकार। १३. साहस।

आग्रहायण—संज्ञा पुं० १. मार्गशीर्ष मास। अगहन। २. मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रहायणेष्टि—संज्ञा स्त्री० नवान्न भक्षण। नूतन अन्न का प्रारंभ।

आग्रही—वि० हठी। जिद्दी।

आघ*—संज्ञा पुं० मूल्य। कीमत।

आघात—संज्ञा पुं० १. धक्का। ठोकर। २. प्रहार। मार। चोट। पीड़ा। आक्रमण। ३. वध-स्थान। बूचड़खाना। ४. हनन। वध। ५. कोप। ६. अपक्षय।

आघार—संज्ञा पुं० मंत्र-विशेष से अग्नि को घृत प्रदान करना।

आघूर्ण—वि० १. हिलता हुआ। २. घूमता हुआ। फिरता हुआ। लड़खड़ाता हुआ।

आघूर्णन—संज्ञा पुं० चक्र के समान घूमना। फिरना। चक्कर खाना।

आघूर्णित—वि० चकराया हुआ। इधर उधर फिरता हुआ। घूमता हुआ। घुमाया हुआ।

आघोषण—संज्ञा पुं० प्रचारण। प्रकाशकरण। घोषणा करना। मुनादी करना।

आघ्राण—संज्ञा पुं० [वि० आघ्रात, आघ्रेय] १. सूँघना। बास लेना। २. तृप्ति। अघाना।

आघ्राणार्ह—वि० सुगन्ध लेने के उपयुक्त। सूंघने योग्य।

आघ्रात—वि० सूँघा हुआ।

आघ्रेय—वि० सूँघने के योग्य।

आचंभित—वि० १. हठात्। दैवात्। अकस्मात्। २. अद्भुत। अचरज।

आचका—वि० १. अगणित। २. अकस्मात्। हठात्।

आचमन—संज्ञा पुं० [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २. पूजा या धर्म्म-संबंधी कर्म्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।

आचमनी—संज्ञा स्त्री० एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं। चमचिया।

आचरज*—संज्ञा पुं० दे० "अचरज"। आश्चर्य। अचंभा।

आचरण—संज्ञा पुं० [वि० आचरणीय, आचरित] १. अनुष्ठान। २. आचार-शुद्धि। सफाई ३. व्यवहार। रीति। बर्त्ताव। चाल-चलन। ४. लक्षण। चिह्न। ५. लौकिक कर्म। ६. रथ। पुराने जमाने की बैल-गाड़ी। ७. अभ्यास।

आचरणीय—वि० आचार के योग्य। व्यवहार के योग्य।

आचरन*—संज्ञा पुं० दे० "आचरण"।

आचरना*–क्रि० अ० आचरण करना। व्यवहार करना।
आचर्य–वि० आचरणीय। कर्त्तव्य। करणीय।
आचरित–वि० व्यवहृत। किया हुआ।
आचातुर्य–संज्ञा पुं० अनाड़ीपना। अनिपुणता।
आचार–संज्ञा पुं० १. रहन-सहन। व्यवहार। चलन। २. चरित्र। ३. शील। ४. शुद्धि। ५. परंपरा। रीति।
आचारज*–संज्ञा पुं० दे० "आचार्य्य"।
आचारजी*–संज्ञा स्त्री० पुरोहिताई। आचार्य्य होने का भाव।
आचारवर्जित–वि० आचाररहित। अनाचारी। परंपरा के विरुद्ध, अतः वर्जित।
आचारवान्–वि० [स्त्री० आचारवती] शुद्ध आचार का। पवित्रता से रहनेवाला। अच्छे आचरणवाला।
आचार-विचार–संज्ञा पुं० शौच। आचार और विचार। रहने की शुद्धता।
आचार-विरुद्ध–वि० व्यवहार विरुद्ध। कुरीति।
आचारी–वि० [स्त्री० आचारिणी] चरित्रवान्। आचारवान्।
संज्ञा पुं० रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।
आचार्य्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० आचार्य्याणी] १. गुरु। उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला। २. वेद पढ़ानेवाला। ३. पुरोहित। ४. यज्ञ के समय कर्मोपदेशक। ५. ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य्य। ६. अध्यापक। ७. वेद का भाष्य करनेवाला।
विशेष—स्वयं आचार्य्य का काम करनेवाली अर्थात् अध्यापन करनवाली स्त्री आचार्य्या कहलाती है। आचार्य्य की पत्नी को, जो पढ़ाती न हो, आचार्य्याणी कहते हैं।
आचार्यमिश्र–वि० आर्य। पूजनीय। गुरु।
आचार्या–संज्ञा स्त्री० मंत्रों की व्याख्या करनेवाली। उपदेशदात्री।
आचिंत्य–वि० सब प्रकार से चिंतन करने योग्य। पूर्ण रूप से विचारणीय।
संज्ञा पुं० ईश्वर जो चिन्तन में नहीं आ सकता।
आचोट–संज्ञा स्त्री० १. आघात। क्षत-विक्षत घाव। २. अनाकृष्ट। बिना जोती भूमि।
आच्छन्न–वि० १. आवृत। ढका हुआ। आच्छादित। २. छिपा हुआ। ३. व्याप्त। ४. रक्षित। ५. वस्त्र से ढँका।
आच्छादक–संज्ञा पुं० १. जो ढँके। ढाँकनेवाला। गोपनकारी। २. रक्षा करनेवाला। बचानेवाला।
आच्छादन–संज्ञा पुं० [वि० आच्छादित, आच्छन्न] १. कपड़ा। वस्त्र। परिधान। २. ढकना। ३. छाजन। छवाई। ४. ढीला, लंबा अँगरखा। अवा-कवा। ५. पलँग-पोश। ६. लँगोट। ७ धोती।
आच्छादित–वि० १. आवृत। ढका हुआ। २. तिरोहित। छिपा हुआ।
आच्छाद्य–वि० आच्छादनीय। आवृत करने के योग्य। ढकने के योग्य।
आच्छिन्न–वि० छेदना। काटना। कर्तन।
आच्छादन–संज्ञा पुं० शिकार। आखेट।
आछत†*–क्रि० वि० १. रहते हुए। होते हुए। विद्यमानता में। सामने। २. सिवाय। अतिरिक्त। छोड़कर।
आछना*–क्रि० अ० १. होना। २. विद्यमान होना। रहना।
आछी–संज्ञा स्त्री० अच्छी। उत्तम। सुघर। बढ़िया। नीकी। भली।
आछे*–क्रि० वि० अच्छी तरह।
आछेप*–संज्ञा पुं० दे० "आक्षेप"।
आंजन–संज्ञा पुं० काजल। सुरमा। अंजन।
आज–क्रि० वि० १. जो दिन बीत रहा है, उसमें। वर्त्तमान दिन में। २. वर्त्तमान समय में। इन दिनों। ३. अब। अद्य। अभी। ४. गिद्ध-विशेष। ५. राजा अज के पुत्र।
वि० बकरी से उत्पन्न या उससे संबद्ध।
आज-कल–क्रि० वि० वर्त्तमान दिनों में। इस समय।
मुहा०—आजकल करना=टाल-मटोल करना। हीला हवाला करना। आजकल लगना=अब तब लगना। मरण-काल निकट आना।
आजगव–संज्ञा पुं० शिवजी का धनुष। पिनाक।

आजन्म–क्रि० वि० जन्म भर। जीवन भर। उम्र भर। जन्म से लेकर।
आजमाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] जाँच। परख। परीक्षा।
आजमाना–क्रि० स० [फा० आज़माइश] परीक्षा करना। जाँचना। परखना।
आजमूदा–वि० [फा० आज़मूदः] आजमाया हुआ। परीक्षित।
आजला–संज्ञा पुं० पसर। दो हाथ भर। अंजलि।
आजा–संज्ञा पुं० [स्त्री० आजी] बाप का बाप। पितामह। दादा।
आजागुरु–संज्ञा पुं० गुरु का गुरु।
आजाद–वि० [फा०] [संज्ञा आजादी, आजादगी] १. स्वतंत्र। स्वाधीन। छूटा हुआ। जो बद्ध न हो। बरी। २. बेफिक्र। लापरवाह। ३. बन्धन-मुक्त। ४. निर्भय। निडर। ५. स्पष्टवक्ता। ६. उद्धत। ७. सूफी-संप्रदाय के फकीर जो स्वतंत्र विचार के होते हैं।
आजादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्वाधीनता। स्वतंत्रता। २. छुटकारा।
आजानु–वि० घुटने या जाँघ तक लंबा।
आजानुबाहु–वि० जिसके हाथ घुटने तक पहुँचें। जिसके बाहु जानु तक लंबे हों (वीरों का लक्षण)।
आजार–संज्ञा पुं० [फा०] १. रोग। २. दु:ख। कष्ट।
आजि–संज्ञा स्त्री० १. युद्ध। लड़ाई। संग्राम। रण। २. आक्षेप। आक्रोश। ३. गमन। गति। ४. समान भूमि।
आजिज–वि० [अ०] १. विनीत। दीन। २. तंग।
आजिजी–संज्ञा स्त्री० [अ०] दीनता।
आजी–संज्ञा स्त्री० दादी। पितामही। पिता की माता।
आजीव–संज्ञा पुं० जीविका। जीवनोपाय। वृत्ति। बन्धान।
आजीवन–क्रि० वि० जीवन-पर्य्यंत। जब तक जीवित रहे।
आजीविका–संज्ञा स्त्री० वृत्ति।
आजीवी–वि० उपजीवी। उपजीवक।
आजु–संज्ञा पुं० आज। वर्तमान दिन।
आजू–संज्ञा स्त्री० बिना वेतन के काम करनेवाला। बेगारी। अवैतनिक। अवेतन।
आज्ञप्त–वि० अनुमति प्राप्त। आदेशित। निदेशित।
आज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० १. आदेश। निदेश। आज्ञा। २. विधि।
आज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. आदेश। बड़ों का छोटों को किसी काम के लिए कहना। २. अनुमति। निदेश। शासन।
आज्ञाकारी–वि० [स्त्री० आज्ञाकारिणी] १. आज्ञा माननेवाला। २. दास। सेवक।
आज्ञाचक्र–संज्ञा पुं० षट्चक्रों में से छठवाँ चक्र (योग)।
आज्ञातिक्रम–संज्ञा पुं० आदेशातिक्रम। आज्ञा का उल्लंघन।
आज्ञादायक–संज्ञा पुं० आदेशकर्त्ता। अनुमतिकारी।
आज्ञानुवर्तन–संज्ञा पुं० आज्ञा के अनुसार चलना।
आज्ञापक–वि० [स्त्री० आज्ञापिका] १. स्वामी। प्रभु। २. आज्ञा देनेवाला।
आज्ञापत्र–संज्ञा पुं० वह लेख जिसके अनुसार किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय। आदेशलिपि। निदेशलिखित।
आज्ञापन–संज्ञा पुं० [वि० आज्ञापित] १. सूचित करना। बतलाना। २. आदेश करना।
आज्ञाप्रतिघात–संज्ञा पुं० स्वामिद्रोह। राजशासनत्याग।
आज्ञापालक–वि० [स्त्री० आज्ञापालिका] १. आज्ञाकारी। आज्ञा का पालन करनेवाला। २. दास। सेवक।
आज्ञापित–वि० जिसके लिए आज्ञा दी गई हो। आदेशित।
आज्ञापालन–संज्ञा पुं० आज्ञा के अनुसार काम करना।
आज्ञाभंग–संज्ञा पुं० आज्ञा का उल्लंघन करना।
आज्ञावर्ती–वि० आज्ञा के वश। आज्ञावह। आज्ञाधीन।

आज्य—संज्ञा पुं० १. आहुति दी जानेवाली वस्तुएँ। हवि। २. घी। घृत। ३. दही। ४. दूध।

आज्यप—संज्ञा पुं० १. पितृशोक विशेष। २.घृत-भोजी।

आटना—क्रि० स० दबाना। तोपना।

आटा—संज्ञा पुं० १. पिसान। चून। किसी अन्न का चूर्ण। सूजी। २. बुकनी। किसी वस्तु का चूर्ण।

मुहा०—आटे दाल का भाव मालूम होना=संसार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे दाल की फिक्र=जीविका की चिंता।

आटोप—संज्ञा पुं० १. आच्छादन। फैलाव। २. आडंबर। विभव। ३. दर्प। गर्व। अहंकार। ४. वायुजन्य उदर शब्द।

आठ—वि० चार का दूना। ८। अष्ट।

मुहा०—आठ आठ आँसू रोना=बहुत अधिक विलाप करना। आठों गाँठ कुम्मैत=१. सर्व-गुण-संपन्न। २. चतुर। ३. धूर्त्त। छँटा हुआ। आठों पहर=दिन-रात।

आठपहर—संज्ञा पुं० दिन रात। आठ याम।

आठवाँ—वि० किसी वस्तु या संख्या का आठ हिस्से का अंश। जिसका स्थान आठ पर हो। सातवें के बाद। अष्टम।

आडंबर—संज्ञा पुं० [वि० आडंबरी] १. ढोंग। ऊपरी बनावट। तड़क-भड़क। टीम-टाम। २. गंभीर शब्द। ३. तुरही का शब्द। ४. हाथी की चिग्घाड़। ५. तंबू। ६. आच्छादन। ७. पटह। बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है। ८. प्रसन्नता। ९. पलक।

आडम्बरी—वि० ढोंगी। आडंबर करनेवाला। ऊपरी बनावट रखनेवाला।

आड़—संज्ञा स्त्री० १. ओट। ओझल। २. शरण। रक्षा। आश्रय। सहारा। ३. रोक। ४. टेक। थूनी। ५. लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। ६. स्त्रियों के मस्तक पर का तिलक। ७. टीका। माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

संज्ञा पुं० बिच्छू या भिड़ आदि का डंक।

आड़न—संज्ञा स्त्री० ढाल।

आड़बंद—संज्ञा पुं० लँगोटी।

आड़ना—क्रि० स० १. मना करना। न करने देना। रोकना। छेंकना। २. बाँधना। ३. गहने रखना। गिरवी या रेहन रखना।

आड़ा—संज्ञा पुं० १. एक धारीदार कपड़ा। २. लट्ठा। शहतीर।

वि० १. आँखों के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर को या बाईं ओर से दाहिनी ओर को गया हुआ। २. वार से पार तक रखा हुआ।

मुहा०—आड़े आना=१. बाधक होना। रुकावट डालना। २. कठिन समय में सहायक होना। आड़े हाथों लेना=किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

आड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "आरी"। १. तबला, मृदंग आदि बजाने का ढंग विशेष। २. चमार की छुट्टी। ३. ओर। ४. सहायक। अपने पक्ष का।

वि०—१. रक्षक। २. स्वर-विशेष।

आड़ू—संज्ञा पुं० फल-**विशेष** जिसका **स्वाद** खटमिट्ठा होता है।

आड़े आना—क्रि० बचाव करना। बाधक होना। बाधा डालना। काम आना।

आढ़—संज्ञा पुं० चार प्रस्थ अर्थात् चार सेर की तौल।

*संज्ञा स्त्री० १. ओट। पनाह। परदा। *†२. बीच। अंतर। ३. नागा।

वि० दक्ष। कुशल।

आढ़क—संज्ञा पुं० १. चार सेर की तौल। २. इतना अन्न नापने का काठ का एक बरतन। ३. अरहर।

आढ़त—संज्ञा स्त्री० १. वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो। २. किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय। ३. वह धन जो इस प्रकार बिक्री कराने के बदले में मिलता है। ४. **अड्डा**। ५. माल का चालान।

आढ़तिया—संज्ञा पुं० दे० "अढ़तिया"।

आढ्य—वि० १. पूर्ण। संपन्न। युक्त। २.

विशिष्ट। ३. धनवान। ४. अन्वित। गुणाढ्य।

आणक–संज्ञा पुं० आना। एक रुपए का सोलहवाँ भाग।

आणि–संज्ञा पुं० कोण। अस्ति। सीमा।

आतंक–संज्ञा पुं० १. रोब। प्रताप। दबदबा। २. भय। डर। शंका। ३. रोग। पीड़ा।

आतत–वि० आरोपित। विस्तारित।

आततायी–संज्ञा पुं० [स्त्री० आततायिनी] १. सतानेवाला। २. आग लगानेवाला। ३. विष देनेवाला। ४. वधोद्यत शस्त्रधारी। हत्यारा। ५. जमीन, धन या स्त्री हरनेवाला। ६. अनिष्टकारी। ७. महापापी। ८. डाकू।

आतप–संज्ञा पुं० १. घाम। धूप। २. उष्णता। गर्मी। ३. सूर्य्य का प्रकाश।

आतपत्र या **आतपत्रक**–संज्ञा पुं० छाता। छत्र। धूप से बचानेवाला।

आतपन–संज्ञा पुं० शिव का नाम।

आतपात्यय–संज्ञा पुं० धूप का अभाव। सूर्य की किरणों का नाश।

आतपाभाव–संज्ञा पुं० छाया। धूप का अभाव।

आतपी–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
वि० धूप संबंधी। धूप का।

आतपोदक–संज्ञा पुं० मृगतृष्णा। मरीचिका।

आतम–वि० दे० "आत्म"।

आतमा–संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा"।

आतर–संज्ञा पुं० १. अन्तर। बीच। २. उतराई।

आतर्पण–संज्ञा पुं० १. पीडन। २. तृप्ति। ३. मंगलालेपन।

आतश–संज्ञा स्त्री० [फा०] अग्नि। आग। आगी।

आतशक–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आतशकी] उपदंश। गर्मी। फिरंग रोग।

आतशखाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह स्थान जहाँ कमरा गर्म करने के लिए आग रखते हैं। २. वह स्थान जहाँ पारसियों की अग्नि स्थापित हो।

आतशदान–संज्ञा पुं० [फा०] अँगीठी।

आतशपरस्त–संज्ञा पुं० [फा०] १. अग्निपूजक। अग्नि की पूजा करनेवाला। २. पारसी।

आतशबाज–संज्ञा पुं० आतशबाजी के खिलौने और सामान बनानेवाला।

आतशबाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अग्नि-क्रीड़ा। बारूद के बने हुए खिलौने जो जलाने से कई आकार और रंग-बिरंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं। २. बारूद के बने हुए खिलौनों के जलने का दृश्य।

आतशी–वि० [फा०] १. अग्नि-उत्पादक। २. अग्नि-संबंधी। ३. जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के।

आता–संज्ञा पुं० अत्ता। फल-विशेष। सीताफल। शरीफा।

आतापी–संज्ञा पुं० १. असुर-विशेष जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था। २. चील पक्षी।

आतायी–वि० धूर्त। शठ।
संज्ञा पुं०–पक्षी विशेष। चील।

आतायीपन–संज्ञा पुं० धूर्तता। शठता। खलता।

आतिथेय–वि० १. अतिथि की सेवा करनेवाला। अतिथि-पूजक। २. अतिथि सेवा की सामग्री। अभ्यागत का सम्मान करनेवाला।

आतिथ्य–संज्ञा पुं० अतिथि-सत्कार। अतिथि-सेवा। मेहमानदारी। पहुनाई।

आतिदेशिक–वि० अतिदेश प्राप्त। दूसरे प्रकार से उपस्थित।

आतिश–संज्ञा स्त्री० दे० "आतश"। आग। अग्नि।

आतिशय्य–संज्ञा पुं० आधिक्य। अतिशय होने का भाव। बहुतायत।

आतीपाती–संज्ञा स्त्री० बच्चों का एक खेल जिसे हाथ पर हाथ रखकर खेलते हैं। पहाड़वा।

आतुर–वि० [संज्ञा आतुरता] १. घबराया हुआ। व्यग्र। व्याकुल। उतावला। अस्थिर। २. उद्विग्न। अधीर। बेचैन। ३. दुःख। ४. उत्सुक। ५. रोगी। ६. पीड़ित। ७. कातर।

क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

आतुरता–संज्ञा स्त्री० १. व्याकुलता। बेचैनी घबराहट। २. शीघ्रता। जल्दी।

आतुरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "आतुरता" व्यग्रता। उतावलापन।

आतुरसंन्यास–संज्ञा पुं० मरने के कुछ पहले धारण कराया जानेवाला संन्यास।

आतुरी*–संज्ञा स्त्री० १. व्याकुलता। घबराहट। २. शीघ्रता।

आतू–संज्ञा स्त्री० गुरुवायन। पण्डितायन।

आतोद्य–वि० वाद्य। वीणा। मुरज। वंशी का शब्द। चतुर्विध वाद्य।

आत्त–वि० गृहीत। प्राप्त। पकड़ लिया गया।

आत्तगन्ध–वि० १. गृहीत गन्ध। २. हृतदर्प। अभिभूत। पराजित।

आत्तगर्व–वि० खण्डित गर्व। अहंकार चूर्ण। भग्नदर्प।

आत्म–वि० १. अपना। स्वीय। निज का। २. जीव।

आत्मक–वि० [स्त्री० आत्मिका] सहित। युक्त (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

आत्मकार्य–संज्ञा पुं० अपना काम। गोपनीय कार्य।

आत्मगत–वि० अपने में आया या लगा हुआ। स्वगत।

आत्मगरिमा–संज्ञा स्त्री० आत्मश्लाघा। दर्प। अहंकार।

आत्मग्राही–वि० स्वार्थपर। स्वार्थी। आत्मम्भरि।

आत्मगौरव–संज्ञा पुं० अपने गौरव, बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान।

आत्मघात–संज्ञा पुं० अपने हाथों अपने को मार डालने का काम। आत्महत्या। स्वयं मरण।

आत्मघातक, आत्मघाती–वि० आत्महत्या करनेवाला।

आत्मज–संज्ञा पुं० [स्त्री० आत्मजा] १. लड़का। पुत्र। सन्तान। २. कामदेव।

आत्मजन्मा–संज्ञा पुं० १. पुत्र। सन्तान। २. ईश्वर। ३. कामदेव।

आत्मजा–संज्ञा स्त्री० १. कन्या। पुत्री। दुहिता। २. बुद्धि।

आत्मज्ञ–संज्ञा पुं० अपने को पहचाननेवाला। जिसे निज स्वरूप का ज्ञान हो।

आत्मज्ञान–संज्ञा पुं० १. जीवात्मा और परमात्मा के विषय का ज्ञान। २. ब्रह्मविषयक ज्ञान। ३. ब्रह्म का साक्षात्कार। ४. स्वानुभव।

आत्मज्ञानी–संज्ञा पुं० आत्मा और परमात्मा के संबंध का ज्ञाता।

आत्मतत्त्व–संज्ञा पुं० ब्रह्मतत्त्व। आत्मयाथार्थ्य।

आत्मता–संज्ञा स्त्री० बन्धुता। प्रणय। सद्भाव। प्रेम। प्रीति।

आत्मतुष्टि–संज्ञा स्त्री० जो आत्मज्ञान से उत्पन्न हो। संतोष या आनंद।

आत्मत्याग–संज्ञा पुं० दूसरों की भलाई के लिए अपना स्वार्थ छोड़ना।

आत्मनिवेदन–संज्ञा पुं० आत्मसमर्पण। अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना। (नवधा भक्ति में)

आत्मनीय–संज्ञा पुं० १. पुत्र। २. साला। ३. विदूषक।

आत्मनेपद–संज्ञा पुं० क्रिया का चिह्न-विशेष।

आत्मप्रशंसा–संज्ञा स्त्री० अपने मुँह से अपनी बड़ाई।

आत्मबोध–संज्ञा पुं० दे० "आत्मज्ञान"।

आत्मभरित–वि० अपने पर निर्भर रहनेवाला। आत्मावलंबी या स्वावलम्बी।

आत्मभरितता–संज्ञा पुं० अपने ऊपर निर्भर रहने का भाव। आत्मविश्वास। स्वालम्बी।

आत्मभू–वि० १. आप ही आप उत्पन्न। २. अपने शरीर से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. कामदेव। ३. पुत्र। ४. विष्णु। ५. शिव।

आत्मयोनि–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कामदेव।

आत्मरक्षा–संज्ञा स्त्री० आत्मत्राण। अपनी रक्षा य बचाव।

आत्मरत–वि० [संज्ञा आत्मरति] जिसे आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान हो गया हो।

आत्मरति–संज्ञा स्त्री० ब्रह्मज्ञान।
आत्मलाभ–संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति। २. स्वलाभ। स्वार्थ।
आत्मवंचक–संज्ञा पुं० १. कृपण। २. पापी। ३. नास्तिक।
आत्मवत्–वि० आत्मसदृश। अपने समान।
आत्मवश–वि० स्वाधीन। स्ववश। स्व-प्रधान।
आत्मवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही सबसे बढ़कर माना जाता है। अध्यात्मवाद।
आत्मवादी–संज्ञा पुं० आत्मवाद के सिद्धान्त का अनुयायी या उसे मुख्य माननेवाला।
आत्मविक्रय–संज्ञा पुं० [वि० आत्मविक्रयी] अपने आपको बेच डालना।
आत्मविक्रेता–संज्ञा पुं० अपने को बेचनेवाला। वह जो अपने आपको बेचकर दास बना हो।
आत्मविद्–संज्ञा पुं० आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को पहचाननेवाला। ब्रह्मविद्।
आत्मविद्या–संज्ञा स्त्री० १. ब्रह्मविद्या। अध्यात्म-विद्या। वह विद्या जिसमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। २. मिस्मरिज्म।
आत्मविश्वास–संज्ञा स्त्री० अपने ऊपर भरोसा। स्वयं अपने पर विश्वास।
आत्मविस्मृति–संज्ञा स्त्री० अपना ध्यान न रखना। अपने को भूल जाना।
आत्मश्लाघा–संज्ञा स्त्री० [वि० आत्म-श्लाघी] अपने मुँह अपनी प्रशंसा या बड़ाई। घमंड।
आत्मश्लाघी–वि० अपनी प्रशंसा आप करने-वाला।
आत्मसंयम–संज्ञा पुं० इच्छाओं को रोकना। अपने मन को वश में करना।
आत्मसम्मान–संज्ञा पुं० दे० "आत्मगौरव"। अपनी प्रतिष्ठा या इज्जत।
आत्मसात्–वि० अपने अधीन। स्वहस्तगत।
मुहा०–आत्मसात करना=हजम कर जाना। हड़प जाना।
आत्मसिद्धि–संज्ञा स्त्री० मोक्ष।
आत्महत्या–संज्ञा स्त्री० आत्मघात। अपने आपको मार डालना। स्ववध।
आत्महा संज्ञा पुं० अपने को मारनेवाला। आत्मघाती। अपने प्रयत्न से मृत।
आत्महिंसा–संज्ञा स्त्री० आत्महत्या।
आत्मा–संज्ञा स्त्री० [वि० आत्मिक, आत्मीय] १. द्रष्टा। मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करनेवाली सत्ता। जीव। जीवात्मा। चैतन्य। २. मन। चित्त। ३. हृदय। ४. यत्न। ५. धृति। ६. बुद्धि ७. ब्रह्म। ८. पुत्र। ९. अर्क। १०. हुताशन। ११. वायु। १२. अग्नि। १३. सूर्य्य। १४. देह। १५. स्वभाव। धर्म्म।
मुहा०–आत्मा ठंडी होना=१. संतोष होना। प्रसन्नता होना। तुष्टि होना। तृप्ति होना। २. भूख मिटना। ३. पेट भरना।
आत्मानंद–संज्ञा पुं० १. आत्मा में लीन होने का सुख। २. आत्मा का ज्ञान।
आत्माभिमत–वि० आत्मसम्मत। अपना मतानुयायी।
आत्माभिमान–संज्ञा पुं० [वि० आत्मा-भिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या मान-अप-मान का ध्यान।
आत्माराम–संज्ञा पुं० १. जीव। २. ब्रह्म। ३. आत्मज्ञान से तृप्त योगी। ४. तोता। सुग्गा (प्यार का शब्द)।
आत्मावलंबी–संज्ञा पुं० जो सब काम अपने बल पर करे। आत्मनिर्भर।
आत्मिक–वि० [स्त्री० आत्मिका] १. आत्मा-संबंधी। २. मानसिक। मन का। ३. अपना। ४. प्यारा।
आत्मीय–वि० [स्त्री० आत्मीया] अपना। स्वकीय। निज का।
संज्ञा पुं० १. संबंधी। स्वजन। २. अन्तरंग। आत्मजन।
आत्मीयता–संज्ञा स्त्री० १. अपनापन। स्नेह-संबंध। २. मैत्री। ३. प्रणय। ४. बन्धुता। ५. सद्भाव। ६. हृद्यता। ७. अन्तरंगता।
आत्मोत्कर्ष–संज्ञा पुं० अपनी श्रेष्ठता। अपनी प्रभुता। अपनी बड़ाई।
आत्मोत्सर्ग–संज्ञा पुं० दूसरे के हित के लिए अपना उत्सर्ग करना।
आत्मोद्धार–संज्ञा पुं० १. मोक्ष। अपनी

आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना या ब्रह्म में मिलाना। २. अपना उद्धार या छुटकारा।

आत्मोद्भवा–संज्ञा स्त्री० कन्या। पुत्री। आत्मजा।

आत्मोन्नति–संज्ञा स्त्री० आत्मा की उन्नति। अपनी बढ़ती। अपनी उन्नति।

आत्यंतिक–वि० [स्त्री० आत्यंतिकी] अतिशय। विस्तार। प्रचुर। अधिक।

आत्रेय–वि० १. अत्रिसंबंधी। २. अत्रि गोत्र-वाला।

संज्ञा पुं० १. अत्रि के पुत्र दत्त, चंद्रमा, दुर्वासा। २. आत्रेयी नदी के तट का देश, जो दीनाजपुर जिले के अंतर्गत है। ३. शरीरस्थ रस। ४. धातु।

आत्रेयी–संज्ञा स्त्री० १. एक तपस्विनी जो वेदांत में बड़ी निष्णात थी। २. नदी विशेष।

आथना–क्रि० अ० १. होना। २. अस्त होना (अस्तमन)।

आथर्वण–संज्ञा पुं० १. वह ब्राह्मण जो अथर्ववेद जानता हो। २. अथर्व-वेदविहित कर्म। ३. अथर्व समूह।

आथि*–संज्ञा स्त्री० १ स्थिरता। २. पूँजी। जमा।

आदत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकृति। स्वभाव। २. अभ्यास। बान। टेव।

आदम–संज्ञा पुं० [अ०] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।

आदमक़द–वि० आदमी की उँचाई के बराबर (चित्र, मूर्ति या और कोई चीज)।

आदमज़ाद–संज्ञा पुं० १. मनुष्य। २. आदम की संतान।

आदमियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनुष्यत्व। मानवता। २. सभ्यता।

आदमी–संज्ञा पुं० [अ०] १. मनुष्य। मानव जाति। नर। २. आदम की संतान। ३. सेवक। नौकर। दास।

मुहा०–आदमी बनना=सभ्यता सीखना। अच्छा व्यवहार सीखना।

आदअन्त–वि० आरंभ से समाप्ति पर्यंत। आदि से अन्त तक।

आदर–संज्ञा पुं० १. सत्कार। सम्मान। प्रतिष्ठा। २. आस्था। ३. मर्यादा।

आदरणीय–वि० १. मान्य। माननीय। २. आदर योग्य।

आदरना–क्रि० स० सम्मान करना। मानना। आदर करना।

आदर भाव–संज्ञा पुं० मान। प्रतिष्ठा। सम्मान।

आदर्श–संज्ञा पुं० १. दर्पण। शीशा। आईना। २. व्याख्या। टीका। ३. वह जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय। ४. निदर्श। ५. प्रति-पुस्तक। ६. मूल पुस्तक। ७. चिह्न। ८. पूर्णता। पूर्णत्व।

आदा–संज्ञा पुं० मूल-विशेष। अदरख। अद्रक।

आदान–संज्ञा पुं० १. ग्रहण। लेना। स्वीकार। २. रोग लक्षण।

आदान-प्रदान–संज्ञा पुं० लेन-देन। त्याग-ग्रहण। लेना-देना।

आदाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. नियम। २. आन। लिहाज। ३. नमस्कार।

आदि–वि० १. पहला। प्रथम। प्रारंभ का। २. नितांत। बिलकुल।

संज्ञा पुं० १. मूल कारण। उत्पत्ति-स्थान। आरंभ। २. ईश्वर। ३. आकार।

अव्य० वगैरह। आदिक। इत्यादि। (इस शब्द से यह सूचित होता है कि इसी प्रकार और भी समझो।)

आदिक–अव्य० वगैरह। पहले से। इत्यादि। और सब। आदि।

आदिकवि–संज्ञा पुं० वाल्मीकि मुनि।

आदि कारण–संज्ञा पुं० मूल कारण। पहला कारण। पूर्व निमित्त। जैसे, ईश्वर या प्रकृति। निदान।

आदित–संज्ञा पुं० दे० "आदित्य"।

आदितेय–वि० अदिति के पुत्र। देवगण।

आदित्य–संज्ञा पुं० १. देवता। २. अदिति के पुत्र। ३. इन्द्र। ४. सूर्य्य। ५. वसु। ६. वामन। ७. विश्वेदेवा। ८. बारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ९. अर्क

वृक्ष। अकौआ का पेड़। १०. वामनवेषी विष्णु। ११. सातवाँ चांद्र मास।

आदित्य-मंडल–संज्ञा पुं० सूर्यमण्डल । सूर्य-लोक ।

आदित्यवार–संज्ञा पुं० रविवार। सूर्य्यवार। एतवार ।

आदित्यसूनु–संज्ञा पुं० १. सुग्रीव वानर। २. यम। ३. शनैश्चर। ४. सावर्णि मनु। ५. वैवस्वत मनु। ६. कर्ण।

आदिदेव–संज्ञा पुं० नारायण। विष्णु।

आदिपुरुष–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. वंश या कुल का प्रथम ज्ञात पुरुष।

आदिम–वि० प्रथम। पहला।

आदिराज–संज्ञा पुं० सर्वप्रथम राजा। पृथु-राज।

आदिल–वि० [फा०] न्यायी। न्यायवान्।

आदिवराह–संज्ञा पुं० विष्णु का वराह अवतार।

आदिविपुला–संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का भेद-विशेष।

आदिशूर–संज्ञा पुं० राजा विशेष। वीरसेन।

आदिष्ट–वि० जिसे आदेश मिला हो। आदेशित। आज्ञप्त। अनुमत। कथित।

आदी–वि० [अ०] अभ्यस्त।

†संज्ञा स्त्री० अदरक।

आदृत–वि० सम्मानित। जिसका आदर किया गया हो।

आदेय–वि० जो लेने योग्य हो।

आदेश–संज्ञा पुं० [वि० आदेशक, आदिष्ट] १. आज्ञा। २. उपदेश। ३. प्रणाम। नमस्कार। (साधु)। ४. ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ५. अक्षर-परिवर्तन। व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। ६. प्रकृति और प्रत्यय को मिलानेवाले कार्य।

आदेशी–संज्ञा पुं० १. आज्ञापक। आज्ञाकारक। २. गणक। ३. दैवज्ञ।

आदेष्टा–संज्ञा पुं० १. पुरोहित। २. याजक। आज्ञाकारक। आदेशकर्त्ता।

आदेस–संज्ञा पुं० दे० "आदेश"।

आदौ–अ० प्रथम। आगे। आदि।

आद्यंत–क्रि० वि० आदि-अंत। आदि से अंत तक। प्रथम और अंत। आद्योपान्त।

आद्य–वि० १. प्रथम। पहला। २. भोजनीय द्रव्य। ३. अन्न।

आद्या–संज्ञा स्त्री० १. दस महाविद्याओं में से एक। २. दुर्गा।

आद्योपांत–क्रि० वि० समस्त। संपूर्ण। प्रारंभ से अंत तक।

आद्रा–संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"। नक्षत्र-विशेष।

आध–वि० आधा। दो बराबर भागों में से एक। (यौगिक में)।

यौ०–एक आध=थोड़े से। चंद।

आधा–वि० ० [स्त्री० आधी] दो बराबर हिस्सों में से एक। अर्द्ध।

मुहा०–आधो आध=दो बराबर भागों में। बराबर भाग। आधा तीतर आधा बटेर=कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का। बेजोड़। बेमेल। अंडबंड। आधा होना=दुबला होना। आधे आध= दो बराबर हिस्सों में बँटा हुआ। आधी बात=जरा सी भी अपमानसूचक बात।

आधाकपाली–संज्ञा पुं० आधासीसी। शिरोरोग-विशेष।

आधान–संज्ञा पुं० १. स्थापन। धारण। रखना। २. बंधक रखना। ३. गर्भाधान। गर्भ-धारण। ४. स्थापित द्रव्य। ५. यज्ञ में अग्नि-प्रज्वलन। ६. अग्निहोत्र।

आधानिक–संज्ञा पुं० गर्भाधान संस्कार।

आधार–संज्ञा पुं० १. अवलंब। आश्रय। सहारा। २. व्याकरण में अधिकरण कारक। ३. थाला। आलबाल। ४. आहार। पात्र। ५. नींव। मूल। ६. मूला-धार। योगशास्त्र में एक चक्र। ७. आश्रय देनेवाला। पालन करनेवाला।

यौ०–प्राणाधार=परम प्रिय। जिसके आधार पर प्राण हों।

आधारित–वि० किसी के आधार पर ठहरा हुआ। अवलंबित। निर्भर।

आधारी–वि० [स्त्री० आधारिणी] १. सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला।

२. साधुओं की टेक की या अड्डे के आकार की एक प्रकार की लकड़ी।
आधासीसी–संज्ञा स्त्री० आधे सिर की पीड़ा। रोग-विशेष। अधकपाली।
आधि–संज्ञा स्त्री० १. चिंता। २. मानसिक व्यथा। ३. बंधक। रेहन। ४. व्यसन। ५. प्रत्याशा। ६. आधार। ७. स्थान। ८. नींव। ९. केराया। १०. उपाधि (जैसे 'राजा')। ११. द्वितीय विवाह करने पर प्रथम पत्नी को प्रदत्त धन या भूमि आदि।
आधिक*–वि० आधा। क्रि० वि० थोड़ा। आधे के लगभग।
आधिकारिक–संज्ञा पुं० १. दृश्य काव्य में मूल-कथावस्तु। २. सर्वोच्च शासक। ३. प्रधान व्यक्ति या वस्तु से संबद्ध। ४. किसी विशिष्ट विभाग या प्रकरण या परिच्छेद के अंतर्गत स्थित।
आधिक्य–संज्ञा पुं० अधिकता। अधिकत्व। अतिशय। बहुतायत।
आधिदैविक–वि० १. देवताकृत। (दुःख) देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवप्रयुक्त। दैवाधीन। २. बुद्धि-संबंधी।
आधिपत्य–संज्ञा पुं० ऐश्वर्य। अधिकार। प्रभुत्व। स्वामित्व।
आधिभौतिक–वि० जो भूतों या तत्त्वों के संबंध से उत्पन्न हो। व्याघ्र, सर्पादि जीवों के द्वारा कृत। जीवों या शरीरधारियों-द्वारा प्राप्त (दुःख)।
आधिवेदनिक–वि० द्वितीय विवाह के समय प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन।
आधीन*–वि० दे० "आधीन" १. वश। आज्ञाकारी। स्वाधिकारयुक्त। वशवर्ती। २. नम्र।
आधीनता–संज्ञा स्त्री० अधीनता। वशवर्ती।
आधी रात–संज्ञा स्त्री० वह समय, जब रात का पहला आधा भाग बीत जाय।
आधुनिक–वि० १. आज-कल का। वर्त्तमान समय का। २. नवीन। नया। साम्प्रतिक।
आधेय–संज्ञा पुं० १. किसी सहारे पर टिकी हुई चीज। २. रखने योग्य। ठहराने योग्य। ३. गिरों रखने योग्य।
आधूक–वि० चालित। व्याकुल। कंपित। ईषत्कंपित।
आधेआध–संज्ञा पुं० आधीआध। आधे का आधा। अर्द्धार्द्ध।
आधेक–संज्ञा पुं० अर्द्धभाग। तुल्य दो भागों का एक भाग।
वि० जो आधार पर स्थित हो।
आधोरण–संज्ञा पुं० हस्तिपक। महावत। हाथीवान। फीलवान।
आध्मात–वि० १. शब्दित। २. अग्नि-संयोगान्वित। दग्ध।
संज्ञा पुं० १. वातरोग-विशेष। २. युद्ध। ३. संयत।
आध्मान–संज्ञा पुं० वायुरोग। वायु से पेट फूलना।
आध्यात्मिक–वि० १. आत्माश्रित। आत्मा-संबंधी। २. ब्रह्म और जीव-संबंधी। ३. मनसंबंधी।
आध्यान–संज्ञा पुं० १. ध्यान। चिन्ता। स्मरण। २. दुर्भावना। अनुशोचना। ३. उत्कण्ठापूर्वक स्मरण।
आध्वनीन–संज्ञा पुं० १. पथिक। पान्थ। २. पाथेय। मार्ग-व्यय।
आनंतर्य–संज्ञा पुं० १. पश्चाद्भाव। शेष। २. अनंतरार्थ। ३. नैकट्य। सन्निकर्ष।
आनंत्य–संज्ञा पुं० अपरिसीमता। असंख्यता। अत्यधिकता। बहुत ही।
आनंद–संज्ञा पुं० [वि० आनंदित, आनंदी। प्रसन्नता। हर्ष। ह्लाद। सुख।
यौ०–आनंदमंगल।
आनंदकर–वि० सुखजनक। आह्लादकर।
आनंदकानन–संज्ञा पुं० १. आनंददायक वन। २. काशी का नाम।
आनंद गिरि–संज्ञा पुं० एक दार्शनिक पण्डित।
आनंदचित्त–वि० हर्ष से प्रफुल्लचित्त।
आनंदना*–क्रि० अ० प्रसन्न होना। आनन्दित होना।
आनंदपट–संज्ञा पुं० नई विवाहिता स्त्री का

वस्त्र, विशेषतः सुहागरात को पहना जानेवाला।

आनंदपूर्ण–वि० आनंद से भरा हुआ। अधिक आनंद।

आनंदप्रभव–संज्ञा पुं० रेत। वीर्य। शुक्र।

आनंद-बधाई–संज्ञा स्त्री० १. मंगल-अवसर। २. मंगल-उत्सव।

आनंदवन–संज्ञा पुं० काशी नगरी।

आनंदमत्ता–संज्ञा स्त्री० दे० "आनंदसम्मोहिता"।

आनंदमय कोष–संज्ञा पुं० १. कोष-विशेष। २. सत्व। ३. प्रधान ज्ञान। ४. कारण। ५. शरीर। ६. सुषुप्ति।

आनंदवर्द्धन–संज्ञा पुं० काश्मीर-निवासी प्रसिद्ध कवि और अलंकारशास्त्री।

वि० आनंद बढ़ानेवाला।

आनंदशय्या–संज्ञा स्त्री० नवोढ़ा-शयन।

आनंदसम्मोहिता–संज्ञा स्त्री० वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यंत निमग्न होने के कारण आपा भूल जाय।

आनंदार्णव–संज्ञा पुं० सुख-समुद्र। आह्लाद-सागर।

आनंदाश्रु–संज्ञा पुं० हर्ष। आह्लाद।

आनंदि–संज्ञा पुं० हर्ष। आह्लाद। सुख।

आनंदित–वि० १. प्रसन्न। हर्षित। सुखी। आनंदयुक्त। हर्षान्वित। २. हृष्ट।

आनंदी–वि० १. प्रसन्न। हर्षित। २. प्रसन्न रहनेवाला।

आनंददुंदुभि–संज्ञा पुं० १. बृहद् भेरी। बड़ा नगाड़ा। २. कृष्ण के पिता वसुदेव।

आन–संज्ञा स्त्री० १. शपथ।/सौगंद। प्रतिज्ञा। कसम। २. मर्य्यादा। ३. दुहाई। विजय-घोषणा।। ४. ढंग। ५. क्षण। पल। ६. भिन्न। ७. अकड़। ऐंठ। ठसक। ८. अदब। लिहाज। ९. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। १० उछ्वास।

[मु०–आन की आन में=शीघ्र ही। चटपट। फौरन।

वि० दूसरा। और। अन्य।

[क्रि]० स०–लाकर।

आनक–संज्ञा पुं० १. डंका। भेरी। पटह। दुंदुभी। २. गरजता हुआ बादल। ३. मृदंग। ढक्का। ४. नाक से साँस लेना।

आनत–क्रि० स० लाता है। ले आता है। लाते ही।

वि० अवनत। झुका हुआ। नम्र।

आनद्ध–वि० १. बद्ध। मिलित। जोड़ा हुआ। मढ़ा हुआ। २. कल्पमात्र। ३. वेश-रचना आदि। ४. कसा हुआ तैयार।

संज्ञा पुं० वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो। जैसे—ढोल, मृदंग आदि।

आनन–संज्ञा पुं० १. मुँह। मुख। २. चेहरा। मुखड़ा। वदन।

आनन फानन–क्रि० वि० [अ०] तुरंत। अतिशीघ्र। झटपट।

आनना–क्रि० स० लाना।

आनबान–संज्ञा स्त्री० १. ठाट-बाट। सजधज। तड़क-भड़क। सजावट। बनावट। २. ठसक। अदा।

आनयन–संज्ञा पुं० १. लाना। ले आना। २. उपनयन-संस्कार। ३. स्थानांतरनयन।

आन-तान–संज्ञा स्त्री० १. ठसक। जिद। अड़। २. शेखी। बे सिर पैर की बात।

आनरेरी–वि० [अंग्रे०] अवैतनिक। जो प्रतिष्ठा के लिए बिना वेतन के काम करे। जैसे—आनरेरी मजिस्ट्रेट। आनरेरी सेक्रेटरी।

आनरेबुल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] माननीय। प्रतिष्ठित। मान्य। (राज्य या केन्द्र के मंत्रियों, विधान सभाओं के सदस्यों तथा उच्च-न्यायालयों के न्यायाधीशों आदि की उपाधि)

आनर्त्त–संज्ञा पुं० [वि० आनर्त्तक] १. द्वारका। २. आनर्त देश का रहनेवाला। ३. नाचघर। नृत्यशाला। ४. युद्ध।

आनर्तित–वि० १. कंपित। २. नृत्य-विशेष।

आनवी–क्रि० स० ले आओ। ले आइये। लेते आइये।

आनहु–क्रि० स० लाओ।

आना–संज्ञा पुं० १. एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा। चार पैसा। एक आना। २. किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।

क्रि० अ० १. पास आना। आगमन करना। वक्ता के स्थान की ओर चलना या उस पर प्राप्त होना। २. जाकर लौटना। ३. समय प्रारंभ होना। ४. फूलना-फलना। फल-फूल लगना। ५. किसी भाव का उठना। जैसे—आनंद आना।
मुहा०—आए दिन=प्रतिदिन। रोज-रोज। आता-जाता=आने-जानेवाला। पथिक। बटोही। आ धमकना=एकबारगी आ पहुँचना। आ पड़ना=१. आक्रमण करना। (अनिष्ट घटना का) घटित होना। २. सहसा गिरना। एकबारगी गिरना। आया-गया=१. अतिथि। अभ्यागत। २. विस्मृत। उपेक्षणीय। आ रहना=गिर पड़ना। आ लेना=१. पास पहुँच जाना। पकड़ लेना। २. टूट पड़ना। आक्रमण करना। (किसी की) आ बनना=लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। किसी को कुछ आना=किसी को कुछ ज्ञान होना। (किसी वस्तु) में आना=१. ऊपर से ठीक या जमकर बैठना। २. समाना। भीतर अटना।
आनाकानी—संज्ञा स्त्री० १. टाल-मटूल। हीलाहवाला। २. सुनी-अनसुनी करने का कार्य्य। न ध्यान देने का कार्य्य। ३. कानाफूसी।
आना जाना—क्रि० स० आवागमन। यातायात।
आनाह—संज्ञा पुं० १. मलमूत्र रुकने से पेट फूलना। २. मूत्र न होना। रुक जाना। ३. लंबाई। ४. कोष्ठबद्धता। कब्ज।
आनि—संज्ञा स्त्री० दे० "आन"।
क्रि० स० लाकर। ले आकर।
आनिहों—क्रि० स० लाऊँगा।
आनीत—वि० आनयनकरण। ले आना।
आनुगत्य—संज्ञा पुं० अनुगत होने की क्रिया या भाव। अनुकरण।
आनुपूर्व—संज्ञा पुं० क्रमिक। अनुक्रम। पर्याय। ढब।
आनुपूर्वी—वि० १. एक के बाद दूसरा। क्रमानुसार। २. परिपाटी। अनुक्रम।
आनुमानिक—वि० १. अनुमान-सिद्ध। २. काल्पनिक।
आनुवंशिक—वि० वंशानुक्रमिक। जो किसी वंश में बराबर होता आया हो।
आनुश्रविक या आनुश्राविक—वि० जिसको परंपरा से सुनते चले आए हों।
आनुषंगिक या आनुसंगिक—वि० गौण। अ-प्रधान। प्रासंगिक। साथ-साथ होनेवाला। जिसका साधन किसी दूसरे प्रधान कार्य्य को करते समय बहुत थोड़े प्रयास में हो जाय।
आन्वीक्षिकी—संज्ञा स्त्री० १. तर्कविद्या। न्याय-शास्त्र। २. आत्म-विद्या।
आप—सर्व० १. स्वयं। खुद। (तीनों पुरुषों में) २. "तुम" और "वे" के स्थान में आदरार्थक प्रयोग। ३. भगवान्। ईश्वर। परमेश्वर।
संज्ञा पुं० जल। पानी।
यौ०—आपकाज=अपना काम। जैसे—आपकाज महाकाज। आपकाजी=स्वार्थी। मतलबी। आपबीती=घटना जो अपने ऊपर बीत चुकी हो। आपरूप=स्वयं। आप।
मुहा०—आप आपकी पड़ना=अपने-अपने काम में फँसना। अपनी-अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना। आप आपको=अलग-अलग। न्यारे-न्यारे। आपको भूलना=१. किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना। २. मदांध होना। घमंड में चूर होना। आप से=स्वयं। खुद। आप से आप=स्वयं। खुद ब-खुद। आप ही=स्वयं। आपमें आप। आप ही आप=१. बिना किसी और की प्रेरणा के। आप से आप। २. मन ही मन में। किसी को संबोधन करके नहीं। स्वगत।
आपकाज—वि० स्वार्थी। आपकाजी।
आपगा—संज्ञा स्त्री० नदी।
आपज्जनक—वि० विपदजनक। अनिष्टकारी।
आपण—संज्ञा पुं० पण्य। विक्रयशाला। दूकान। हाट। बाजार।
आपणिक—संज्ञा पुं० वणिक। व्यवसायी। दूकानदार।
आपत्काल—संज्ञा पुं० १. दुर्दिन। विपत्ति। २. कुसमय। दुष्काल।
आपत्य—वि० अपत्य या संतान-संबंधी। औलाद का।
आपत्ति—संज्ञा स्त्री० १. विघ्न। दुःख। क्लेश।

२. संकट। विपत्ति। ३. कष्ट का समय। ४. जीविका-कष्ट। ५. दोषारोपण। ६. उज्र। एतराज।

आपद्–संज्ञा स्त्री० १. विपत्ति। विपद। आपत्ति। २. कष्ट। विघ्न। दुःख।

आपदा–संज्ञा स्त्री० १. क्लेश। दुःख। २. विपत्ति। कष्ट।

आपद्ग्रस्त, आपदाग्रस्त–वि० विपन्न। आपत्ति में फँसा हुआ।

आपद्धर्म–संज्ञा पुं० १. वह धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिए हो। २. किसी वर्ण के लिए वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनोपाय न होने की अवस्था में ही हो। जैसे, ब्राह्मण के लिए वाणिज्य। (स्मृति)

आपन, आपना*–सर्व० दे० "अपना"। निज का।

आपनिक–संज्ञा पुं० १. पन्नग। २. पन्ना। मरकत। ३. इन्द्र। ४. नील मणि। ५. देश-विशेष।

आपन्न–वि० १. दुःखी। आपद्ग्रस्त। २. प्राप्त। जैसे, संकटापन्न। ३. अभागा। ४. प्रविष्ट। घुसा हुआ। ५. लब्ध। ६. लाभ में प्राप्त।

आपन्ननाश–संज्ञा पुं० आपदनाश। विपत्ति-नाश।

आपन्नसत्वा–संज्ञा स्त्री० गर्भवती।

आपमित्यक–संज्ञा पुं० विनिमय-प्राप्त। बदला किया हुआ। गृहीत द्रव्य।

आपया*–संज्ञा स्त्री० नदी।

आपरेशन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] फोड़ा-आदि की चीरफाड़। अस्त्र-चिकित्सा।

आपरूप–वि० मूर्तिमान्। साक्षात्। अपने रूप से युक्त। (महापुरुषों के लिए) ईश्वर। सर्व० साक्षात् आप। आप महापुरुष। हजरत (व्यंग्य)।

आपस–संज्ञा स्त्री० १. नाता। संबंध। भाई-चारा। जैसे—आपसवालों में, आपस के लोग। २. एक दूसरे का संबंध। एक दूसरे का साथ। (केवल संबंध और अधिकरण कारक में)

मुहा०–आपस का=१. इष्ट-मित्र या भाई-बंधु के बीच का। २. परस्पर का। एक दूसरे का। आपस में=परस्पर। एक दूसरे के साथ।

यौ०–आपसदारी=परस्पर का व्यवहार। भाईचारा।

आपसा–संज्ञा स्त्री० आप-समान। अपने-जैसा।

आपसी–वि० आपस का। पारस्परिक।

आपस्तंब–संज्ञा पुं० [वि० आपस्तंबीय] १. ऋषि-विशेष जो कृष्णयजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक थे। २. आपस्तंब शाखा के कल्प-सूत्रकार जिनके बनाये तीन सूत्र-ग्रंथ हैं। ३. स्मृतिकार-विशेष।

आपा–संज्ञा पुं० १. आप ही। अपना अस्तित्व। अपनी सत्ता। २. अपनी वास्तविकता। ३. अहंकार। गर्व। घमंड। ४. सुध-बुध। होश-हवास।

संज्ञा स्त्री०। बड़ी बहिन। (मुसल०)

मुहा०–आपा खोना=१. अहंकार त्यागना। नम्र होना। २. अपना गौरव छोड़ना। मर्य्यादा नष्ट करना। आपा तजना=१. आत्मभाव का त्याग। अपनी सत्ता को भूलना। २. निरभिमान होना। अहंकार छोड़ना। ३. मरना। प्राण छोड़ना। आपे में आना= होश-हवास में होना। चेत में होना। आपे में न रहना=१. आपे से बाहर होना। अपने ऊपर वश न रखना। बेकाबू होना। २. घबराना। ३. अत्यंत क्रोध में होना। आपे से बाहर होना=क्रोध और हर्ष आदि के आवेश में सुध-बुध खोना। क्षुब्ध होना। उद्विग्न होना। घबराना।

आपाक–संज्ञा पुं० आँवा। पजावा।

आपात–संज्ञा पुं० १. किसी घटना का अचानक हो जाना। २. पतन। गिराव। ३. आरंभ। ४. अंत।

आपाततः–क्रि० वि० १. अचानक। अकस्मात्। २. अंत को। ३. सम्प्रति। इस समय के समान।

आपातलिका–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छन्द।

आपादपर्यन्त–अव्य० पैर से लेकर सिर तक।

आपादमस्तक–संज्ञा पुं० सिर से चरणावधि। सिर से पैर पर्यन्त।

आपाधापी–संज्ञा स्त्री० १. अपनी-अपनी धुन। अपनी-अपनी चिंता। २. लाग-डाँट। खींच-तान।

आपान–संज्ञा पुं० शराबियों की मंडली। शराब पीने का स्थान। मतवालों का झुण्ड। मद्यप। मतवाला।

आपापंथी–वि० कुमार्ग पर चलनेवाला।

आपामर-साधारण–संज्ञा पुं० सर्वसाधारण। अन्य मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य।

आपिञ्जर–संज्ञा पुं० स्वर्ण। हेम। कनक। कांचन।

आपी*–संज्ञा पुं० पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।

आपीड़–संज्ञा पुं० १. सिर पर पहनने की चीज़; जैसे—पगड़ी, सिरपेंच, इत्यादि। शेखर। शिरोमाला। मुकुट। कलँगी। २. पिंगल में विषम वृत्त-विशेष। ३. आश्लेष, आलिंगन। ४. भींचना।

आपीन–संज्ञा पुं० १. गोस्तन। ईषत्स्थूल। गौ का थन। २. कठोर। मोटा। बड़ा।

आपु*†–सर्व० दे० "आप", "अपना"।

आपुन*†–सर्व० दे० "आप", "अपना"।

आपुस*†–संज्ञा पुं० दे० "आपस"। परस्पर।

आपूरना*–क्रि० अ० भरना।

आपूर्ति–संज्ञा स्त्री० ईषत्पूरण। सम्यक् पूरण।

आपेक्षिक–वि० १. अपेक्षा रखनेवाला। सापक्ष। २. निर्भर रहनेवाला। दूसरी वस्तु के सहारे पर रहनेवाला।

आपोशन–संज्ञा पुं० कर्म-विशेष। भोजन के पूर्व का आचमन।

आपृच्छा–संज्ञा स्त्री० आभाषण। आलाप। जिज्ञासा। प्रश्न।

आप्त–वि० १. प्राप्त। लब्ध। (यौगिक में) सत्य। सच्चा। बन्धु। अभ्रान्त। विश्वासित। किसी भी कारण से कभी झूठ न बोलनेवाला। २. दक्ष। कुशल। ३. विषय को ठीक तौर से जाननेवाला। ४. प्रामाणिक। संज्ञा पुं० १. ऋषि। २. शब्द-प्रमाण। ३. भाग का लब्ध।

आप्तकाम–वि० पूर्णकाम। जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो गई हों।

आप्तकारी–संज्ञा पुं० विश्वासी। विश्वस्त व्यक्ति।

आप्तगर्व–वि० आत्माहंकार। दंभ-विशिष्ट। दांभिक।

आप्तग्राही–संज्ञा पुं० स्वार्थपर। आत्मम्भरि। लोभी।

आप्तवर्ग–संज्ञा पुं० आत्मीय। स्वजन। माननीय। मित्र।

आप्तसार–संज्ञा पुं० आत्मरक्षण। स्वशरीर-गोपन।

आप्ति–संज्ञा स्त्री० लाभ। प्राप्ति।

आप्तोक्ति–संज्ञा स्त्री० सिद्धान्त-वाक्य। आप्तवचन। विश्वस्त व्यक्ति का कथन।

आप्यायन–संज्ञा पुं० [वि० आप्यायित] १. वर्धन। वृद्धि। २. तर्पण। तृप्ति। ३. मृत धातु को जगाना या जीवित करना। ४. एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना। पौष्टिक औषध।

आप्यायित–वि० १. तृप्त। प्रीत। सन्तुष्ट। आनन्दित। तर। २. बढ़ा हुआ। दूसरे रूप में बदला हुआ।

आप्रच्छन–संज्ञा पुं० आने या जाने के समय मित्रों में परस्पर कुशल-प्रश्न-जनित आनन्द।

आप्लव–संज्ञा पुं० स्नान। अवगाहन। जलमय। सर्वत्र डुबाव।

आप्लवव्रती–संज्ञा पुं० स्नातक ब्राह्मण।

आप्लावन–संज्ञा पुं० [वि० आप्लावित] बोरना। डुबाना। जल का छिड़काव।

आप्लुत–संज्ञा पुं० स्नान। स्नातक। वि० कृतस्नान। निहितावगाहन। सिक्त। भीगा।

आप्लुतव्रती–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मचर्य त्यागकर जो गृहस्थ आश्रम अवलम्बन करते हैं। स्नातक ब्राह्मण। २. समाप्त-वेदाध्ययन। ३. स्नानशील।

आफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बला। विपत्ति। आपत्ति। २. दुःख। कष्ट। ३. मुसीबत का दिन।

मुहा०–आफत उठाना=१. दुःख सहना। विपत्ति भोगना। २. ऊधम मचाना। हलचल मचाना। आफत का परकाला=१. पटु। किसी काम को बड़ी तेजी से करनेवाला। कुशल। २. घोर उद्योगी। आकाश-पाताल एक करनेवाला। ३. उपद्रवी। हलचल मचानेवाला। आफत खड़ी करना=विपद् उपस्थित करना। आफत ढाना=१. ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना। २. दुःख पहुँचाना। अनहोनी बात कहना। आफत मचाना=१. दंगा करना। हलचल करना। २. गुल-गपाड़ा करना। ३. जल्दी मचाना। उतावली करना। आफत लाना=१. विपद् उपस्थित करना। २. झंझट पैदा करना। बखेड़ा खड़ा करना।

आफ़ताब–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आफताबी] सूर्य्य।

आफ़ताबा–संज्ञा पुं० [फा०] हाथ-मुँह धुलाने का एक प्रकार का गड़ुआ।

आफ़ताबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार की आतशबाजी। २. पान के आकार का पंखा जिस पर सूर्य्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि में झंडे के साथ चलता है। ३. ओसारी। दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान।

वि० [फा०] १. गोल। २. सूर्य्य-संबंधी। यौ०–आफताबी गुलकंद=वह गुलकंद जो धूप में तैयार किया जाय।

३. निर्भर रहनेवाला। दूसरी वस्तु के सहारे पर रहनेवाला।

आफू–संज्ञा स्त्री० १, अफीम। २. अमल। ३. अहिफेन।

आब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आभा। कांति। चमक। तड़क-भड़क। २. शोभा। रौनक। छवि। ३. उत्कर्ष। ४. महिमा। प्रतिष्ठा। ५. गुण।

संज्ञा पुं० पानी। जल।

आबकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हौली। शराबखाना। कलवरिया। वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो। भट्ठी। २. मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला सरकारी मुहकमा।

आबख़ोरा–संज्ञा पुं० [फा०] १. गिलास। पानी पीने का बरतन। २. कटोरा। प्याला।

आबजोश–संज्ञा पुं० [फा०] मुनक्का जो गरम पानी के साथ उबाला गया हो।

आबटना*–संज्ञा पुं० १. उथल-पुथल। अस्थिरता। हलचल। २. ऊहापोह। संकल्प-विकल्प।

आबताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] चमक-दमक। तड़क-भड़क। द्युति। छवि। कान्ति। छटा।

आबदस्त–संज्ञा पुं० [फा०] सौंचना। मल-त्याग के पीछे गुदेन्द्रिय को धोना। पानी छूना। पानी का स्पर्श करना।

आबदाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. अन्न-जल। अन्न-पानी। २. रहने का संयोग। ३. दाना-पानी। जीविका।

मुहा०—आब दाना उठना=जीविका न रहना। संयोग टलना।

आबदार–वि० [फा०] द्युतिमान्। कांतिमान्। चमकीला।

संज्ञा पुं० वह आदमी जो पुरानी तोपों में सुंबा और पानी का पुचारा देता है।

आबदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] कांति। चमक।

आबदोज–वि० [फा०] पानी में डूबा हुआ। पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाला। (जहाज या नाव)।

संज्ञा पुं० दे० "पनडुब्बी।"

आबद्ध–वि० १. बंधनयुक्त। बँधा हुआ। २. कैद।

आबनूस–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आबनूसी] पेड़-विशेष जिसके हीरे की लकड़ी बहुत काली होती है।

मुहा०—आबनूस का कुंदा=बिलकुल काला मनुष्य।

आबनूसी–वि० [फा०] १. गहरा काला। आबनूस के समान काला। २. आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिंचाई।

आबदानी–संज्ञा स्त्री० दे० "अबादानी"।

आबरवाँ–संज्ञा स्त्री० [फा०] बहुत महीन मलमल-विशेष।

आबरू–संज्ञा स्त्री० [फा०] मान। प्रतिष्ठा। बड़प्पन।

आबला–संज्ञा पुं० [फा०] छाला। फुटका। फफोला।

आबहवा–संज्ञा स्त्री० [फा०] जलवायु। सरदी-गरमी। स्वास्थ्य-आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति।

आबाद–वि० [फा०] १. स्थित। बसा हुआ। २. कुशलपूर्वक। प्रसन्न। ३. उपजाऊ। जोतने-बोने योग्य (जमीन)।

आबादकार–संज्ञा पुं० [फा०] वे काश्तकार जो जंगल काटकर आबाद हुए हों।

आबादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जनस्थान। बस्ती। २. जनसंख्या। ३. वह भूमि जिस पर खेती हो।

आबू–संज्ञा पुं० आबू नामक पहाड़।

आबी–वि० [फा०] १. पानी का। पानी-संबंधी। २. पानी में रहनेवाला। ३. फीका। रंग में हलका। ४. पानी के रंग का। हलका नीला या आस्मानी। ५. जल के किनारे रहनेवाला।
संज्ञा पुं० समुद्र-लवण। साँभर नमक।
संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें किसी प्रकार की आबपाशी होती हो। (खाकी के विरुद्ध।)

आब्दिक–वि० वार्षिक। सालाना।

आभ–संज्ञा स्त्री० १. शोभा। कान्ति। २. पानी।

आभरण–संज्ञा पुं० [वि० आभरित] १. अलंकार। गहना। आभूषण। इनकी गणना १२—(१) नूपुर। (२) किंकिणी। (३) चूड़ी। (४) अँगूठी। (५) कंकण। (६) विजायठ। (७) हार। (८) कंठश्री। (९) बेसर। (१०) बिरिया। (११) टीका। (१२) सीसफूल। (२.) पालन। पोषण।

आभरन*–संज्ञा पुं० दे० "आभरण"।

आभा–संज्ञा स्त्री० १. चमक। प्रभा। शोभा। द्युति। दमक। कांति। दीप्ति। २. झलक। प्रतिबिंब। छाया। ३. प्रकाश। ज्योति। आलोक। उज्ज्वलता। भड़क। वर्ण, रंग।

आभार–संज्ञा पुं० १. बोझ। २. गृहस्थी का बोझ। गृह-प्रबंध की देख-भाल की जिम्मेदारी। ३. वर्णवृत्त-विशेष। ४. उपकार।

आभारी–वि० उपकृत। उपकार माननेवाला।

आभाष–संज्ञा पुं० १. भूमिका। अनुष्ठान। उपक्रमणिका। २ प्रबन्ध। संभाष।

आभाषण–संज्ञा पुं० आलापन। कथन। संभाषण।

आभास–संज्ञा पुं० १. प्रतिबिंब। झलक। छाया। २. संकेत। पता। ३. मिथ्या ज्ञान। जैसे—रस्सी में सर्प का। ४. अवास्तविक। वह जिसमें असल की कुछ झलक भर हो। जैसे, रसाभास। हेत्वाभास। सदृश। ५. अभिप्राय। ६. दीप्तिदोष। ७. अवतरणिका। ८. वह तर्क जो वस्तुतः ठीक न हो। (न्याय)

आभासीन–वि० आभास रूप में दिखाई देनेवाला।

आभास्वर–संज्ञा पु० चौसठ संख्यक गण। देवता विशेष।

आभिचारक–संज्ञा पु० हिंसा कर्म का प्रयोग करनेवाला। अभिचारकर्ता। (तंत्र)

आभिजात्य–संज्ञा पु० १. वंश-सम्बन्धी। कुलीनता। कुल-सम्स्कार। २. सदृश। ३. पाण्डित्य। ४. अच्छे घराने के लक्षण और अगुण।

आभिधानिक–वि० कोशवेत्ता। अभिधान में प्रसिद्ध। अभिधानोक्त।

आभिमुख्य–संज्ञा पु० संबोधन। अभिमुखकरण। संमुखीनत्व। सम्मुखता। सामना।

आभीर–संज्ञा पु० [स्त्री० आभीरी] १. गोप। अहीर। ग्वाल। २. देश-विशेष। ३. ११ मात्राओं का छंद-विशेष ४. राग-विशेष। ५. भील। ब्राह्मण के औरस से अंबष्ठा जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति-विशेष।

आभीरपल्लि या पल्ली–संज्ञा स्त्री० गोपग्राम। गोष्ठ घोष। आभीरी। ग्वालिनी।

आभीरी—संज्ञा स्त्री० १. अबीरी। एक संकर रागिनी। २. प्राकृत का एक भेद। ३. गोप या अहीर की स्त्री। ४. गोप या अहीरों की भाषा।

आभूषण—संज्ञा पुं० [वि० आभूषित] अलंकार। भूषण। गहना। आभरण।

आभूखन*—संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।

आभोग—संज्ञा पुं० १. रूप में कोई कसर न रहना। २. पूर्ण लक्षण। किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। ३. किसी पद्य के बीच में कवि के नाम का उल्लेख। ४. आनंद-प्राप्ति। ५. खाद्य पदार्थ। ६. पद आदि के पदों का एक अंश (संगीत)।

आभ्यंतर—वि० अंतरंग। भीतरी। अन्दर का।

आभ्यंतरिक—वि० अंतरंग। भीतरी।

आभ्यासिक—वि० श्रुतिधर। अभ्यासकर्त्ता। अभ्यास से उत्पन्न।

आभ्युदयिक—वि० १. अभ्युदय। २. मंगल। ३. सौभाग्यवान या कल्याण संबन्धी। शुभान्वित।

संज्ञा पुं० नांदीमुख श्राद्ध। उन्नति से संबद्ध।

आमंत्रण—संज्ञा पुं० [वि० आमंत्रित] १. संबोधन। बुलाना। आह्वान। २. न्योता। निमंत्रण।

आमंत्रित—वि० १. आहूत। न्योता दिया हुआ। निमंत्रित। २. बुलाया हुआ।

आम—संज्ञा पुं० १. रसाल। एक बड़ा पेड़ जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान फल है। २. इस पेड़ का फल।

यौ०—अमचूर। अमहर।

वि० अपक्व। कच्चा। असिद्ध।

संज्ञा पुं० १. आँव। खाये हुए अन्न का कच्चा, न पचा हुआ मल जो सफेद और लसीला होता है। २. वह रोग जिसमें आँव गिरती है

वि० [अ०] १. साधारण। मामूली। २. जनता। जन-साधारण। ३. विख्यात। प्रसिद्ध। (वस्तु या बात) ४. उत्तम। ५. कोमल। ६. छिलके सहित अन्न।

यौ०—आम खास=महलों के भीतर का वह भाग जहाँ राजा या बादशाह बैठते हैं। दरबार आम=वह राजसभा जिसमें सब लोग जा सकें।

आमगन्धि—संज्ञा पुं० गंधयुक्त। चिता का धूम प्रभृति दुर्गन्ध। कच्चे मांस जैसी गंध से युक्त पदार्थ।

आमचूर—संज्ञा पुं० आम का सूखा चूर्ण। आम की खटाई।

आमड़ा—संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़े बेर के बराबर होते हैं।

आमद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आगमन। आना।

यौ०—आमदरफ्त=आवागमन। आना-जाना। २. आय। आमदनी।

आमदनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आनेवाला धन। आय। प्राप्ति। २. व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। आयात। आमद।

आमन—संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें साल में एक ही फसल हो। जाड़े में होनेवाला धान।

आमनाय—संज्ञा पुं० दे० "आम्नाय"। अभ्यास। परम्परा।

आमना सामना—संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात।

आमने सामने—क्रि० वि० एक दूसरे के समक्ष।

आमय—संज्ञा पुं० १. पीड़ा। व्याधि। रोग। बीमारी। २. अपच। कोष्ठबद्धता। कब्ज। ३. एक पौधा जिससे औषध बनती है।

आमयावी—वि० रोगी। पीड़ित।

आमरक्त—संज्ञा पुं० उदर रोग विशेष। अतिसार। उदर रोग, लाल मल निकलने की पीड़ा।

आमरक्तातिसार—संज्ञा पुं० रोग जिसमें आँव गिरती है।

आमरख*—संज्ञा पुं० दे० "आमर्ष"।

आमरखना*—क्रि० अ० दुःख-पूर्वक क्रोध करना। क्रुद्ध होना।

आमरण—क्रि० वि० जीवन पर्यंत। मृत्यु-समय तक।

आमरस—संज्ञा पुं० दे० "अमरस"।

आमर्दन—संज्ञा पुं० [वि० आमर्दित] १.

पीसना या रगड़ना। २. जोर से मलना। ३. भींचना। ४. बलपूर्वक दबाना।

आमर्श–संज्ञा पुं० १. परामर्श। सलाह। २. विवेचन। सुचिन्ता। ३. समानता। ४. मिटा देना।

आमर्ष–संज्ञा पुं० १. क्रोध। रोष। २. असहनशीलता। ३. एक संचारी भाव। (साहित्य) ४. राग।

आमलक–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० आमलकी] आँवला। आमला। धात्रीफल।

आमलकी–संज्ञा स्त्री० आंवली। छोटी जाति का आँवला।

आमला–संज्ञा पुं० दे० "आँवला"। फल-विशेष। धात्रीफल।

आमवात–संज्ञा पुं० रोग-विशेष जिसमें आँव गिरती है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।

आमशूल–संज्ञा पुं० रोग-विशेष। वायु गोले का दर्द। वायुशूल।

आमातिसार–संज्ञा पुं० आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।

आमात्य–संज्ञा पुं० दे० "अमात्य"। प्रधान-मंत्री।

आमादगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] तत्परता। तैयारी।

आमादा–वि० [फा०] तैयार। सन्नद्ध। तत्पर। उद्यत। उतारू।

आमान्न–संज्ञा पुं० कच्चा और बिना पकाया हुआ अन्न। रसद।

आमाल–संज्ञा पुं० [अ०] कर्म। करनी।

आमालनामा–संज्ञा पुं० [अ०] वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चाल-चलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमाशय–संज्ञा पुं० शरीर के भीतर पाचन-यंत्र। पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाये हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमाहल्दी–संज्ञा स्त्री० पौधा विशेष जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह और गंध में कचूर की तरह होती है।

आमिख–संज्ञा पुं० दे० "आमिष"।

आमिल–संज्ञा पुं० [अ०] १. कर्तव्य-परायण। २. काम करनेवाला। ३. कर्मचारी। ४. अधिकारी। ५. सयाना। ओझा। ६. पहुँचा हुआ साधु। सिद्ध।
वि० खट्टा अम्ल।

आमिष–संज्ञा पुं० १. मांस। गोश्त। २. भोग्य वस्तु। ३. लोभ। लालच। ४. लाभ। ५. काम के गुण। ६. रूप। ७. भोजन। ८. घूँस। ९. शव।

आमिषप्रिय–वि० १. जिसे मांस प्यारा हो। २. बाज पक्षी। कंक पक्षी। ३. राक्षस।

आमिषभुक्–संज्ञा पुं० मांसभोक्ता। मांसाशी। राक्षस।

आमिषाशी–वि० [स्त्री० आमिषाशिनी] १. मांसभक्षक। जो मांस खाता हो। २. राक्षस

आमी–संज्ञा स्त्री० १. अँबिया। छोटा कच्चा आम। २. पहाड़ी पेड़ विशेष। ३. जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी बाल।

आमुख–संज्ञा पुं० नाटक की प्रस्तावना। भूमिका (पुस्तक आदि की)। प्रारंभ।

आमूल–संज्ञा पुं० मूल पर्यंत। पहले से। जड़ तक। करणावधि।

आमृष्ट–वि० मर्दित। उच्छेदित। अपमानित। स्पृष्ट।

आमेजना*–क्रि० स० [फा० आमेज] सानना। मिलाना। एक करना।

आमोख्ता–संज्ञा पुं० [फा०] पढ़े हुए पाठ की आवृत्ति। उद्धरणी।

आमोद–संज्ञा पुं० [वि० आमोदित आमोदी] १. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। २. मनोरंजन। ३. अति दूरगामी गन्ध। ४. सौरभ। ५. बहुत अच्छी और उग्र गंध।

आमोद-प्रमोद–संज्ञा पुं० १. भोग-विलास। २. आनंद-मंगल। आराम। चैन। हँसी-खुशी।

आमोदित–वि० १. प्रसन्न। २. आनंदित। ३. जी बहला हुआ। दिल लगा हुआ। ४. सुगंधित।

आमोदी–वि० १. प्रसन्न रहनेवाला। २. मुख को सुगन्धित करनेवाली वस्तु।

आम्नाय–संज्ञा पुं० १. परंपरा। २. अभ्यास। ३. सम्प्रदाय। ४. तंत्र। ५. कुल। वंश।
यौ०–अक्षराम्नाय =वर्णमाला। कुलाम्नाय=

कुल की रीति। कुलपरंपरा। ६. वेद आदि का पाठ और अभ्यास। ७. वेद। निगम। ८. उपदेश।

आम्बर–संज्ञा स्त्री० कहरुवा। बनावटी मूँगा।

आम्र–संज्ञा पुं० १. रसाल। आम का पेड़ या फल। २. सहकार।

आम्रकूट–संज्ञा पुं० अमर-कंटक पर्वत।

आम्राई–संज्ञा स्त्री० आम का बाग। अमराई।

आम्रेडन–संज्ञा पुं० एक ही बात का पुनः पुनः कथन। पुनरुक्ति।

आयँतो पायँतो–संज्ञा स्त्री० सिरहाना। पायताना।

आय–संज्ञा स्त्री० उपार्जन। लाभ। प्राप्ति। धनागम। आमदनी।

यौ०–आयव्यय=आमदनी और खर्च।

संज्ञा पुं० १. आगमन। राज-कर। २. ग्यारहवाँ चांद्र मास। ३. पासा। गोटी। ४. चौथी संख्या। ५. एक धार्मिक विधि। ६. अंतःपुर का रक्षक।

आयत–वि० दीर्घ। विशाल। विस्तृत। लंबा-चौड़ा।

संज्ञा स्त्री० [अ०] इंजील या कुरान का वाक्य।

आयतन–संज्ञा पुं० १. घर। स्थान। २. ठहरने की जगह। ३. देवताओं की वंदना की जगह। मंदिर। ४. यज्ञस्थान। ५. ज्ञान के संचार का स्थान। ५. बैठने का साधन। ६. आधार। ७. यज्ञीय अग्नि का स्थान। ८. वेदी। ९. गृह बनाने के लिए भूमि। १०. रोग का कारण। ११. पंचेंद्रिय और मन (बौद्धदर्शन)। १२. पंचेंद्रिय और मन के विषय (बौद्धदर्शन)।

आयत्त–वि० १. अधीन। वश में। २. उद्योगी। ३. सावधान।

आयति–संज्ञा स्त्री० उत्तरकाल। भविष्यकाल।

आयत्ति–संज्ञा स्त्री० १. परवशता। अधीनता। २. शक्ति। अधिकार। ३. सीमा। घेरा। ४. भविष्य। ५. लंबाई। ६. शान। ७. सदाचरण।

आयद–वि० [अ०] १. लगाया हुआ। आरोपित। २. घटता हुआ। घटित।

आयंदा–वि० १. आगन्तुक। २. आगामी। भविष्य।

आयस–संज्ञा पुं० [वि० आयसी] १. लोहे का कवच। २. लोहा। ३. लोहे का। धातु का। ४. एक सुषिर वाद्य।

आयसी–वि० लोहे का बना हुआ।

संज्ञा पुं० कवच। जिरहबख्तर।

आयसु*–संज्ञा स्त्री० १. आज्ञा। २. प्रेरणा।

आया–क्रि० अ० आना का भूतकालिक रूप।

संज्ञा स्त्री० [पुर्त०] अँगरेजों के बच्चों को दूध पिलाने और उनकी रक्षा करनेवाली स्त्री। धात्री। धाय।

अव्य० [फा०] क्या। कि। (व्रज० 'कैधों' के समान) जैसे, आया तुम जाओगे या नहीं।

आयात–संज्ञा पुं० १. आगत। देश में बाहर से आया हुआ सामान। उपस्थित।

आयाम–संज्ञा पुं० १. विस्तार। लंबाई। २. नियमित करने की क्रिया। नियमन। जैसे, प्राणायाम।

आयास–संज्ञा पुं० १. श्रम। २. परिश्रम। मेहनत। प्रयास। यत्न। ३. क्लेश। व्यायाम।

आयु–संज्ञा स्त्री० जीवन-समय। वय। उम्र। जिंदगी।

मुहा०–आयु घटाना=आयु कम होना।

आयुध–संज्ञा पुं० १. शस्त्र। हथियार। अस्त्र। २. धनुष। ३. गहना बनाने का सोना।

आयुधागार–संज्ञा पुं० अस्त्रगृह।

आयुधिक–वि० अस्त्रजीवी। शस्त्राजीव।

अस्त्रधारी।

आयुधीय–वि० अस्त्रधारी। शस्त्राजीव।

आयुर्दल–संज्ञा पुं० जीवन-काल। उम्र।

आयुर्वेद–संज्ञा पुं० [वि० आयुर्वेदीय] चिकित्सा-शास्त्र। वैद्य-विद्या। आयु-संबंधी शास्त्र।

आयुर्वेदी–वि० आयुर्वेदज्ञ। वैद्य।

आयुष्कर–वि० परमायुजनक। आयुष्य। आयुवर्द्धक। आयुवृद्धिकारक।

आयुष्काम–वि० दीर्घजीवी। आयुप्रार्थी।

आयुष्टोम–संज्ञा पुं० यज्ञ-विशेष। आयुवृद्धि-यज्ञ।

आयुष्मान्–वि० [स्त्री०आयुष्मती] ७. दीर्घायु।

दीर्घजीवी। चिरजीवी। २. ज्योतिष के सप्तविंशति योगों में तीसरा योग विशेष।

आयुष्य–संज्ञा पुं० १. उम्र। आयु। २. आयु का हितकारक। आयुवर्द्धक।

आयोगव–संज्ञा पुं० वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति। (स्मृति)। विशेष–आयोगव की जीविका बढ़ईगीरी है।

आयोजन–संज्ञा पुं० [स्त्री० आयोजना, वि० आयोजित] १. नियुक्ति। किसी कार्य में लगाना। २. प्रबंध। तैयारी। ३. सामान। सामग्री। ४. उद्योग।

आयोजना–संज्ञा स्त्री० दे० "आयोजन"।

आयोधन–संज्ञा पुं० युद्ध। रण। संग्राम।

आरंभ–संज्ञा पुं० १. प्रारंभ। किसी कार्य्य की प्रथमावस्था का संपादन। उत्थान। अनुष्ठान। २. किसी वस्तु का प्रारंभ। ३. उपक्रम। ४. उत्पत्ति।

आरंभना–क्रि० अ० प्रारंभ होना। क्रि० स० आरंभ करना।

आर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कच्चा लोहा। २. अंकुश। ३. मंगल। ४. शनैश्चर। ५. लुहार। ६. चमार। ७. ताँबा। ८. पीतल। ९. कोना। जैसे द्वादशार चक्र। १०. किनारा। ११. पहियेका आरा। १२. हरताल।

संज्ञा स्त्री० १. लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है। पैनी। अनी। २. नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३. बिच्छू, भिड़ या मधु-मक्खी आदि का डंक।

संज्ञा स्त्री० १. । सुतारी। चमड़ा छेदने का सुआ या टेकुआ। २. राँपी।

संज्ञा पुं० हठ। जिद। संज्ञा स्त्री० [अ०] १. घृणा। तिरस्कार। २. वैर। अदावत। ३. लज्जा। ४. छिद्र। पोल। ५. एक वृक्ष।

आरक्त–वि० १. लाल। २. ललाई लिए हुए।

आरग्वध–संज्ञा पु० अमिलतास। वृक्ष विशेष।

आरचा–संज्ञा स्त्री० १. मूर्त्ति। प्रतिमा। २. अर्चा। पूजा।

आरज*–वि० दे० "आर्य्य"। बड़ा। श्रेष्ठ। पूज्य। महाराज।

आरजा–संज्ञा पुं० [अ०] बीमारी। रोग।

आरज़ू–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. विनती। अनुनय। विनय। २. इच्छा। वांछा।

आरण्य–वि० वन। जंगल का। वन में उत्पन्न। जंगली जानवर।

आरण्यक–वि० [स्त्री० आरण्यकी] वन या जंगल का।

संज्ञा पुं० १. वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिए उपयोगी उपदेश है। २. जंगली। जंगल का निवासी।

आरत*–वि० दे० "आर्त्त"। व्याकुल। अत्यंत दुखी। दुख का दबोचा हुआ। अति पीड़ित।

आरता–संज्ञा पुं० दूल्हे की आरती। विवाह की एक रीति विशेष।

आरति–संज्ञा स्त्री० १. विरक्ति। २. दे० "आर्त्ति"। ३. देवता को दीप दिखाना। दीप-दर्शावन। नीराजन। ४. निवृत्ति।

आरती–संज्ञा स्त्री० १. किसी के सामने दीपक को घुमाना। नीराजन। (षोडशोपचार पूजन में) २. वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३. वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।

आरन*–संज्ञा पुं० अरण्य। कानन। जंगल। वन।

आर-पार–संज्ञा पुं० यह किनारा और वह किनारा। यह छोर और वह छोर।

क्रि० वि० एक किनारे से दूसरे किनारे तक। जैसे, आर-पार जाना, आर-पार छेद होना।

आरबल, आरबला–संज्ञा पुं० दे० "आयुर्बल"।

आरब्ध–वि० उपक्रान्त। आरंभ किया हुआ।

आरभटी–संज्ञा स्त्री० १. नाटक में वृत्ति-विशेष का नाम जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है, और जिसका व्यवहार इंद्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रौद्र, भयानक और वीभत्स रस आदि में होता है। २. उग्र भावों की चेष्टा।

आरव–संज्ञा पुं० १. शब्द। २. आहट। ३. आवाज। कड़कड़ाहट। ४. बादल की गरज। ५. चिल्लाहट। क्रंदन।

आरखी*–वि० ऋषिसंबंधी। आर्ष।
आरस*–संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।
संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।
आरसी–संज्ञा स्त्री० १. दर्पण। शीशा। आईना। २. शीशा जड़ा कटोरीदार छल्ला, जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं। आर्सी।
आरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० आरी] १. लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी चीरी जाती है। २. सुतारी। चमड़ा सीने का सूजा।
संज्ञा पुं० लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है। करांत। दरांत। ककच। चर्म और काष्ठभेदक अस्त्र।
आराइश–संज्ञा स्त्री० (फा०) सजावट।
यौ०–आराइशी सामान=कमरे की सजावट का सामान, जैसे मेज, कुर्सी आदि।
आराकश–संज्ञा पुं० (फा०) आरा चलानेवाला। लकड़ी चीरनेवाला।
आराज़ी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खेत। २. भूमि। जमीन।
आराति या आराती–संज्ञा पुं० विपक्षी। शत्रु। वैरी। अरि। रिपु। दुश्मन।
आरात्–अव्य० १. दूर। २. निकट। समीप।
आरात्रिक–संज्ञा पुं० १. आरती। नीराजन। २. नीराजन-पात्र। ३. आरति-प्रदीप।
आराधक–वि० [स्त्री० आराधिका] पूजक। सेवक। अर्चक। पुजारी। उपासक। पूजा करनेवाला।
आराधन–संज्ञा पुं० [वि० आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य] १. सेवा। परिचर्या। २. साधना। पूजा। उपासना। ३. प्रसन्न करना। तोषण।
आराधना–संज्ञा स्त्री० १. सेवा। पूजा। उपासना। २. शुश्रूषा।
*क्रि० स० १. पूजा या उपासना करना। २. प्रसन्न करना। संतुष्ट करना।
आराधनीय–वि० आराधना करने योग्य। पूज्य। उपास्य।
आराधित–वि० जिसकी पूजा या आराधना की जाय। उपासित। पूजित।
आराध्य–वि० आराधना के योग्य। पूज्य। उपास्य। सेवनीय।
आराम–संज्ञा पुं० बाग। उपवन।
संज्ञा पुं० [फा०] १. सुख। चैन। २. स्वास्थ्य। सेहत। ३. विश्राम। थकावट मिटाना। दम लेना। आरोग्य। पीड़ा की शान्ति।
मुहा०–आराम करना=सोना। आराम में होना=सोना। आराम लेना=विश्राम करना। आराम से=फुरसत में। धीरे-धीरे।
वि० [फा०] स्वस्थ। चंगा।
आरामकुरसी–संज्ञा स्त्री० [फा०+अ०] कुरसी जिस पर आराम से बैठा जा सके।
आराम-तलब–वि० [फा०] १. सुकुमार। सुख चाहनेवाला। २. आलसी। सुस्त।
आरामगाह–संज्ञा पुं० [फा०] शयनागार। सोने की जगह। आराम करने की जगह।
आरास्ता–वि० [फा०] सजा हुआ।
आरि*–संज्ञा स्त्री० आड़। हठ। टेक।
आरिया–स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी जो चौमासे में उत्पन्न होती है।
आरी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा आरा। लकड़ी चीरने का लोहे का एक अस्त्र। २. अंकुशी। ३. जूता सीने का सूजा। ४. आर। ५. कोर। अवँठ।
आरुँधना–क्रि० स० गला दबाना। श्वास रोकना।
आरुण्य–संज्ञा पुं० 'अरुण' का भाव। अरुणता। लाली।
आरूढ़–वि० १. असवार। चढ़ा हुआ। २. स्थिर। दृढ़। किसी बात पर जमा हुआ। ३. तत्पर। सन्नद्ध। कटिबद्ध। ४. वृक्ष-आदि पर चढ़ा हुआ।
आरूढ़यौवना–संज्ञा स्त्री० नायिका-विशेष। मध्या नायिका के चार भेदों में से एक।
आरो*–संज्ञा पुं० दे० "आरव"।

आरोग–वि० १. रोगरहित। नीरोग। २. सुखी।
आरोगना*–क्रि० स० खाना। भोजन करना।
आरोग्य–वि० स्वस्थ। रोग-रहित। रोग-हीनता। रोगाभाव। अनामय।
आरोग्यता–संज्ञा स्त्री० स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती।
आरोधना*–क्रि० स० अड़चन में डालना। रोकना। छेंकना।
आरोप–संज्ञा पु० १. मढ़ना। लगाना। जैसे, दोषारोप। २. रोपना। एक जगह से दूसरी जगह लगाना (वृक्ष)। बैठाना। ३. कपना। ४. एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना। ५. एक वस्तु में दूसरी वस्तु के धर्म की कल्पना (साहित्य)। ६. बनावट।
आरोपण–संज्ञा पुं० [वि० आरोपित, आरोप्य] १. मढ़ना। लगाना। स्थापन। चढ़ाव। चढ़ाना। २. रोपना। पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। बैठाना। ३. किसी वस्तु में स्थित गुण को दूसरी वस्तु में मानना। ४. मिथ्या-ज्ञान। ५. ज्या। प्रत्यंचा। ६. समर्पण। सौंपना।
आरोपना–क्रि० स० १. मढ़ना। लगाना। २. स्थापित करना।
आरोपित–वि० मढ़ा हुआ। कृतारोपण। लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ।
आरोह–संज्ञा पुं० [वि० आरोही] १. चढ़ाव। ऊपर की ओर गमन। २. चढ़ाई। आक्रमण। ३. सवारी। घोड़े, हाथी आदि पर चढ़ना। ४. वेदांत में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५. कारण से कार्य्य का होना या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति। जैसे—बीज से अंकुर। ६. क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। विकास। आविर्भाव। (आधुनिक) ७. नितंब। ८. स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचे स्वरों का आयोजन (संगीत)। ९. सवार। १०. ढेर। ११. पर्वत। १२. वृद्धि। १३. कमर। कटि। १४. लंबाई। १५. एक माप। १६. अभिमान।
आरोहण–संज्ञा पुं० [वि० आरोहित] १. चढ़ना। सवार होना। उत्थान। चढ़ाव। नीचे से ऊपर जाना। २. अंकुर निकलना। ३. स्वरों का क्रमिक चढ़ाव (संगीत)। ४. गाड़ी, सवारी। ५. लकड़ी की सीढ़ी। ६. नृत्त या नृत्य के लिए सज्जित मंच, रंगशाला। ७. नये पत्ते निकलना। किसलयोद्गम। ८. एक नाप।
आरोही–वि० [स्त्री० आरोहिणी] ऊपर जानेवाला। चढ़नेवाला।
संज्ञा पुं० १. उत्तरोत्तर चढ़ते जानेवाले स्वर (संगीत)। २. सवार।
आर्जव–संज्ञा पुं० १. नम्रता। विनय। सारल्य। सरलता। सुगमता। २. सीधापन। ऋजुता। ३. व्यवहार की सरलता। ईमानदारी। स्पष्टवादिता। ४. लगन।
आर्त्त–वि० १. कातर। दुखी। २. पीड़ित। चोट खाया हुआ। ३. अस्वस्थ।
आर्त्तता–संज्ञा स्त्री० १. क्लेश। दुःख। २. पीड़ा।
आर्त्तनाद–संज्ञा पुं० १. कातर स्वर। दुःख-सूचक शब्द। २. क्लेशजन्य चीत्कार। पीड़ा में निकली हुई ध्वनि।
आर्त्तव–वि० [स्त्री० आर्त्तवी] १. मौसमी। ऋतु में उत्पन्न। सामयिक। २. स्त्री का रज। ३. ऋतु-समूह। ४. वर्षा का विभाग-विशेष। ५. पुष्प। फूल। ६. मादा के मस्त होने पर मद-स्राव।
आर्त्तस्वर–संज्ञा पुं० आर्त्तनाद। दुःख-सूचक शब्द।
आर्त्विज्य–संज्ञा पुं० ऋत्विज का कर्म। पौरोहित्य। पुरोहित का कर्म।
आर्थिक–वि० रुपये-पैसे का। धन-संबंधी। माली।
आर्थी–संज्ञा स्त्री० दे० "कैतवापह्नुति"।
आर्द्र–वि० १. सजल वस्तु, सीला। भींगा। गीला। २. सरस। कोमल। भावुक।
आर्द्रक–संज्ञा पुं० अदरक। अद्रक। अदरख।

आर्द्रा–वि० [संज्ञा आर्द्रता] १. गीला। तर। ओदा। २. लथपथ। सना।
संज्ञा स्त्री० १. सत्ताइस नक्षत्रों में से छठा। २. वह समय जब सूर्य्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है। आषाढ़ के प्रारंभ का समय। ३. ग्यारह अक्षरों की वर्ण-वृत्ति-विशेष। ४. अदरक।

आर्द्रा लुब्धक–संज्ञा पुं० केतु।

आर्द्रावीर–संज्ञा पुं० वाममार्गी।

आर्द्राशनि–संज्ञा स्त्री० बिजली। एक अस्त्र।

आर्य्य–वि० [स्त्री० आर्य्या] १. बड़ा। पूज्य। श्रेष्ठ। उत्तम। २. मान्य। वृद्ध। ३. उच्च कुल में उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ पुरुष। उच्च कुलीन। २. संसार में बहुत पहले सभ्यता प्राप्त करने वाली जाति विशेष। आर्यावर्त्त का निवासी। ३. स्वधर्म-रत। द्विजाति का सदस्य। ४. प्रभु। स्वामी। ५. मित्र।

आर्य्यक्षेमीश्वर–संज्ञा पुं० संस्कृत का एक कवि।

आर्यत्व–संज्ञा पुं० आर्य्य या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने का भाव। आर्यपन।

आर्य्यपुत्र–संज्ञा पुं० १. पति को पुकारने का संबोधन (प्राचीन)। २. पति। स्वामी। ३. गुरु-पुत्र।

आर्य्यभट्ट–संज्ञा पुं० विख्यात भारतीय ज्योतिर्वेत्ता विद्वान्।

आर्य्यमिश्र–वि० १. गौरवान्वित। २. मान्य, पूज्य।

आर्य्यसमाज–संज्ञा पुं० स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित धार्मिक समाज।

आर्य्या–संज्ञा स्त्री० १. सास। २. पार्वती। ३. पितामही। दादी। ४. अर्द्ध-मात्रिक छंद-विशेष।

आर्य्यागीत–संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का भेद-विशेष।

आर्य्यावर्त–संज्ञा पुं० १. आर्यों का निवास-स्थान। २. उत्तरीय भारत। ३. हिमालय और विंध्याचल के बीच की भूमि।

आर्ष–वि० १. ऋषि-प्रणीत। ऋषिकृत। २. ऋषि-संबंधी। ३. ऋषि-सेवित। ४. वैदिक।

आर्ष प्रयोग–संज्ञा पुं० व्याकरण विरुद्ध वे प्रयोग, जो ऋषियों ने किये हों। उन पर व्याकरण के नियम लागू नहीं होते और सर्व-साधारण उनका प्रयोग नहीं कर सकता।

आर्ष विवाह–संज्ञा पुं० विवाह का वह भेद, जिसमें कन्या का पिता वर से दो बैल बदले में लेकर कन्या देता था।

आलंकारिक–वि० १. अलंकारयुक्त। २. अलंकार-संबंधी। ३. जो अलंकार जानता हो। कविजनोचित (भाषा)। ४. बनावटी।

आलंग–संज्ञा पुं० घोड़ियों की मस्ती।

आलंब–संज्ञा पुं० १. सहारा। आश्रय। अवलंब। २. शरण। गति। ३. उपजीव्य।

आलंबन–संज्ञा [पुं० वि० आलंबित] १. आश्रय। अवलंब। सहारा। २. जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है। वह जिसके प्रति किसी भाव का उदय हो। जैसे, शृंगार रस में नायक और नायिका। हास्य रस में मूर्ख (साहित्य)। ३. कारण। साधन। ४. बौद्ध मत में किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान। ५. नींव। ६. मौन होकर की जानेवाली प्रार्थना या स्तुति। ७. पंचेंद्रियों के विषय (रूप, रस आदि)।

आलंभ–संज्ञा पुं० १. पकड़ना। मिलना। छूना। २. वध। मारण।

आल–संज्ञा पुं० १. हरताल। २. जहरीले जानवरों का जहर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।
संज्ञा स्त्री० १. पौधा-विशेष जिसकी जड़ और छाल से लाल रंग निकलता है। २. इस पौधे से बना हुआ रंग। हरिद्रा-वर्ण। पीतवर्ण।
संज्ञा पुं० बखेड़ा। झंझट।
संज्ञा पुं० १. गीलापन। तरी। २. आसू।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेटी की संतति।
यौ०–आल-औलाद=बाल-बच्चे।
२. कुल। वंश। खानदान।

आलकस†–संज्ञा पुं० दे० सुस्ती। "आलस्य"।

आल-जाल–वि० व्यर्थ का। ऊटपटांग।

आलथी पालथी–संज्ञा स्त्री० १. पालथी मारकर बैठना। २. आसन-विशेष।

आलन्न—संज्ञा पुं० १. पाक-विशेष। २. अलौना। लवण-रहित।
आलना—संज्ञा पुं० घोंसला। खुंता। खोंता।
आलपीन—संज्ञा स्त्री० [पुर्त० आलफिनेट] एक घुंडीदार बहुत छोटी सूई जिससे कागज आदि के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।
आलम—संज्ञा पुं० [अ०] १. जन-समूह। २. संसार। दुनिया। ३. दशा। अवस्था।
आलमारी—संज्ञा स्त्री० दे० "अलमारी"।
आलय—संज्ञा पुं० १. गृह। गेह। घर। मकान। २. स्थान। ३. धर्मशाला। पांथ-निवास।
आलवाल—संज्ञा पुं० १. अवाल। थाला। कियारी। २. आँवला। ३. जलाधार। ४. गमला।
आलस—वि० ढील। काहिली। आलसी। सुस्ती।
*†संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।
आलसी—वि० काहिल। आलस्ययुक्त।
आलस्य—संज्ञा पुं० १. सुस्ती। काहिली। तन्द्रा। २. मन्दता।
आलस्यत्याग—संज्ञा पुं० जृम्भण। जँभाई। गात्रभंग।
आला—संज्ञा पुं० ताक। ताखा। वि० [अ०] उत्तम। श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० [अ०] हथियार।
*†वि० ओदा। गीला।
आलाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] मल। गंदी वस्तु। गलीज।
आलान—संज्ञा पुं० १. हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या जंजीर। २. बेड़ी। रस्सी। ३. बंधन।
आलाप—संज्ञा पुं० [वि० आलापक, आलापित] १. पक्षियों की चह-चह। २. प्रश्न। ३. पाठ (जैनदर्शन)। ४. बात-चीत। संभाषण। कथोपकथन। ५. राग व्यक्त करने के लिए स्वर-प्रस्तार, स्वर-विस्तार। एक मूर्च्छना-विशेष (संगीत)। ६. कुशल। ७. जिज्ञासा।
आलापक—वि० १. आलाप या षड्जादि स्वरों का विस्तारक (संगीत)। २. बात-चीत करनेवाला।
आलापचारी—संज्ञा स्त्री० षड्ज आदि स्वरों का नियमबद्ध विस्तार (संगीत)।
आलापना—क्रि० स० स्वर खींचना। गाना। षड्जादि स्वरों का विस्तार करना।
आलापिनी—संज्ञा स्त्री० १. बंसी। बाँसुरी। मुरली। २. आलाप करनेवाली। बातचीत करनेवाली।
आलापी—वि० [स्त्री० आलापिनी] १. गानेवाला। आलापनेवाला। २. बोलनेवाला।
आलाबु—संज्ञा स्त्री० लौकी। तुम्बी। कद्दू।
आलारासी—वि० लापरवाह। बेफिक्र।
आलिंगन—संज्ञा पुं० [वि० आलिंगित] १. भेंटना। गले में लगाना। २. परिरंभण। अंगमिलन।
आलिंगना*—क्रि० स० गले लगाना। भेंटना। लपटना।
आलि—संज्ञा स्त्री० १. सहचारिणी। सखी। सहेली। सजनी। २. भ्रमरी। ३. बिच्छू। वृश्चिक। ४. अवली। पंक्ति। ५. मधु-मक्खी। ६. खाई। ७. वंश। कुल। पवित्र। ८. वयस्या। ९. सेतु।
आलिखित—वि० चित्रित। लिखित। अंकित।
आलिम—वि० [अ०] पंडित। विद्वान्।
आली—संज्ञा स्त्री० १. सहेली। सखी। सहचरी। २. पंक्ति। लकीर। ३ वृश्चिक।
*†—वि० भीगी हुई।
वि० [अ०] श्रेष्ठ। उच्च।
आलीजाह—वि० बहुत ऊँचे पदवाला। उच्चपदस्थ ऊँचे दर्जे का। ऊँची मर्यादावाला।
आलीशान—वि० [अ०] १. विशाल। भव्य। २. भड़कीला। चमकीला। ३. शानदार।
आलीढ़—संज्ञा पुं० बाण छोड़ने के समय का आसन-विशेष। बायाँ पैर पीछे की ओर और दाहिना पैर सामने रख कर बैठना।
वि०—भक्षित। खादित। अशित। भुक्त। लेहित।
आलुलायित—वि० बन्धन-रहित। जो बाँधा हुआ न हो।
आलू—संज्ञा पुं० कंद-विशेष।

आलूचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. पेड़-विशेष जिसका फल पंजाब इत्यादि में बहुत खाया जाता है। २. भोटिया। बदाम। गर्दालू।

आलूबुखारा–संज्ञा पुं० [फा०] आलूचा नामक वृक्ष का सूखा फल।

आलेख–संज्ञा पुं० लिपि। लिखावट।

आलेखन–संज्ञा पुं० लिखना। लिखाई। चित्र अंकित करना।

आलेख्य–संज्ञा पुं० चित्र। तसवीर। लिपि।

यौ०–आलेख्य विद्या=चित्रकारी।

वि० जो लिखने योग्य हो। चित्रपट।

आलेप–संज्ञा पुं० मलहम। लेप। लेपनीय द्रव्य।

आलोक–संज्ञा पुं० [वि० आलोक्य] १. चांदनी। उजाला। प्रकाश। २. दीप्ति। चमक। ज्योति। ३. दर्शन। ४. प्रशंसा। प्रशंसामय भाषा। ५. परिच्छेद। ६. चापलूसी।

आलोकन–संज्ञा पुं० दर्शन। देखना। प्रकाश डालना। चमकाना। दिखलाना।

आलोकित–वि० जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो। चमकता हुआ।

आलोचक–वि० [स्त्री० आलोचिका] १. आलोचना करनेवाला। २. देखनेवाला।

आलोचन–संज्ञा पुं० १. विवेचन। गुण-दोष का विचार। २. दर्शन। जाँच। ३. चर्चा। अनुशीलन। ४. आन्दोलन।

आलोचना–संज्ञा स्त्री० [वि० आलोचित] विवेचना। विचार। किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार।

आलोचित–वि० अनुशीलित। विवेचित। जिसके गुण-दोष का विचार किया गया हो।

आलोच्य–वि० आलोचनीय। विचारणीय। विवेचनीय।

आलोड़न–संज्ञा पुं० [वि०आलोड़ित] १. विलोना। हिलोरना। मथना। २. विचार।

आलोड़ना*–क्रि० स० १. हिलोरना। मथना। २. ऊहापोहकरना। ३. खूब सोचना-विचारना।

आलोल–वि० चंचल। अति चंचल।

आल्हा–संज्ञा पुं० १. वीर छंद। ३१ मात्राओं का छंद-विशेष। २. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३. बहुत लंबा-चौड़ा वर्णन। ४. कविता-विशेष। ५. ग्रन्थ-विशेष।

मुहा०–आल्हा गाना=किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहना। अपना हाल सुनाना।

आव*–संज्ञा स्त्री० उम्र। आयु।

क्रि०–आता है। आवे, आता।

आवक–संज्ञा पुं० १. बीमा। २. झोंकी सहना। ३. उत्तर-दायित्व।

आवज, आवझ–संज्ञा पुं० ताशा नाम का बाजा।

आवन*–संज्ञा पुं० आना। आगमन।

आवना–क्रि० अ० पहुँचना। आना।

आवनी–संज्ञा स्त्री० अवाई। निकट आना। आगामी।

आवनेहारा–वि० अवैया। आवनहार।

आवनो–क्रि० अ० आना। उपस्थित होना।

आवभगत–संज्ञा स्त्री० मान। आदर-सत्कार।

आवभाव–संज्ञा स्त्री० आदर। मान्य।

आवरण–संज्ञा पुं० १. ढकना। आच्छादन। २. बेठन। वह वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटी हो। ३. पर्दा। ४. दीवार इत्यादि का घेरा। ५. ढाल। ६. चलाए हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र। ७. मानसिक अंधता (जैन दर्शन)।

आवरणपत्र–संज्ञा पुं० पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिए लगा रहनेवाला कागज।

आवर्जन–संज्ञा पुं० [वि० आवर्जित] १. छोड़ देना। परित्याग। २. फेंकना। ३. मना करना। रोकना।

आवर्जना–संज्ञा स्त्री० दे० "आवर्जन"।

आवर्त्त–संज्ञा पुं० १. पानी का भँवर। २. पानी न बरसानेवाले बादल। ३. राजावर्त्त। रत्न-विशेष। लाजवर्द। ४. चिंता। सोच-विचार।

वि० मुड़ा हुआ। घूमा हुआ। चक्र। फेर। घुमाव।

आवर्त्तन–संज्ञा पुं० [वि० आवर्त्तनीय, आवर्त्तित] १. घुमाव। फिराव। चक्कर देना। २. हिलाना। मथना।

आवर्दा–वि० [फा०] १. कृपापात्र। २. लाया हुआ।

आवलि–संज्ञा स्त्री० १. पाँति। पंक्ति। २. श्रेणी।

आवली–संज्ञा स्त्री० १. श्रेणी। पंक्ति। २. वह विधि जिससे बिस्वे की उपज का अनुमान किया जाता है।

आवश्यक–वि० १. जरूरी। सापेक्ष्य। जिसे अवश्य होना चाहिए। २. प्रयोजनीय। जिसके बिना काम न चले। ३. निश्चित। ४. उचित।

आवश्यकता–संज्ञा स्त्री० १. अपेक्षा। जरूरत। २. प्रयोजन। मतलब।

आवश्यकीय–वि० आवश्यक। जरूरी।

आवसथ–संज्ञा पुं० १. गृह। भवन। गेह। २. यज्ञ-विशेष।

आवह–संज्ञा पुं० सप्त वायु के अंतर्गत वायु-विशेष। भूवायु।

आवहमान–वि० क्रमागत। पूर्वापर। क्रमिक। परंपरागत।

आवाँ–संज्ञा पुं० मिट्टी के बरतन पकाने का कुम्हार का गड्ढा।

आवा–क्रि० अ० आया। आ गया।

आवागमन–संज्ञा पुं० १. बार-बार मरना और जन्म लेना। २. आना-जाना।
यौ०–आवागमन से रहित=मुक्त।

आवागवन*†–संज्ञा पुं० दे० "आवागमन"।

आवाज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ध्वनि। नाद। शब्द। २. बोली। ३. स्वर। वाणी।
मुहा०–आवाज उठाना=विरुद्ध कहना। आवाज देना=जोर से पुकारना। आवाज बैठना=गला बैठना। कफ के कारण स्वर का साफ न निकलना। आवाज भारी होना=कफ के कारण कंठ का स्वर विकृत होना।

आवाज़ा–संज्ञा पुं० [फा०] व्यंग्य। ताना। बोली-ठोली।

आवाजाही†–संज्ञा स्त्री० नित्य गमन। आना-जाना।

आवारगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] लुचपन। आवारापन।

आवारजा–संज्ञा पुं० [फा०] जमा-खर्च की किताब।

आवारा–वि० [फा०] १. निकम्मा। इधर-उधर फिरनेवाला। २. बेठौर ठिकाने का। उठल्लू। ३. गुण्डा। लुच्चा। बदमाश।

आवारागर्द–वि० [फा०] उठल्लू। निकम्मा। इधर-उधर घूमनेवाला।

आवरागर्दी–संज्ञा पुं० इधर-उधर घूमना। निकम्मापन।

आवारापना–संज्ञा पुं० आवारा होने का भाव। शोहदापन।

आवास–संज्ञा पुं० १. निवास-स्थान। रहने की जगह। २. घर। मकान। गृह। धाम।

आवाहन–संज्ञा पुं० १. मंत्र-द्वारा किसी देवता को बुलाने का काम। २. आदर से बुलाना। ३. निमंत्रित करना। बुलाना। ४. पूजा का एक अंग।

आविद्ध–वि० १. भेदा हुआ। छिदा हुआ। २. फँसा हुआ। ३. फेंका हुआ।
संज्ञा पुं० १. तलवार के ३२ हाथों में से एक। २. घायल। ३. नियुक्त। ४. झूठा। तत्त्वहीन। निःसार। ५. लटकता हुआ। ६. मूर्ख।

आविर्भाव–संज्ञा पुं० [वि० आविर्भूत] १. उत्पत्ति। २. प्रकाश। प्राकट्य। ३. संचार। आवेश। ४. प्रत्यक्षता। प्रकटता।

आविर्भूत–वि० १. प्रादुर्भूत। उत्पन्न। २. प्रकाशित।

आविष्कर्त्ता–वि० जो आविष्कार करे।

आविष्कार–संज्ञा पुं० [वि० आविष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] १. कोई ऐसी वस्तु तैयार करना जिसके बनाने की युक्ति पहले किसी को न मालूम रही हो। किसी बात का पहले-पहल पता लगाना। २. प्रकाश। प्राकट्य।

आविष्कारक–वि० दे० "आविष्कर्त्ता"।

आविष्कृत–वि० १. प्रकाशित। २. जिसका पता लगाया गया हो।

आविष्क्रिया–संज्ञा स्त्री० दे० "आविष्कार"।

आविष्ट–वि० १. आवेशयुक्त। २. मनोयोगी। लीन। किसी की धुन में लग जाना।

आवृत—वि० १. ढका हुआ। आच्छादित। छिपा हुआ। २. वेष्टित। लपेटा या घिरा हुआ।

आवृत्ति—संज्ञा स्त्री० १. बार-बार अभ्यास करना। २. पढ़ना। ३. उद्धरणी।

आवेग—संज्ञा पुं० १. उमंग। चित्त की प्रबल वृत्ति। मन की झोंक। जोश। २. घबराहट। रस के संचारी भावों में से एक। अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता।

आवेदक—वि० निवेदक।

आवेदन—संज्ञा पुं० [वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] १. निवेदन। प्रार्थनापत्र। २. मनोगत भाव का प्रकाश-करण। ३. ज्ञापन।

आवेदनपत्र—संज्ञा पुं० प्रार्थनापत्र।

आवेद्य—वि० निवेदन करने योग्य।

आवेश—संज्ञा पुं० १. चित्त की प्रेरणा। झोंक। वेग। जोश। २. प्रवेश। ३. व्याप्ति। संचार। दौरा। ४. भूत-प्रेत की बाधा। ५. मृगी रोग। ६. उदय। ७. अहंकार-विशेष।

आवेशन—संज्ञा पुं० १. प्रवेश। २. शिल्पशाला। कारखाना।

आवेष्टन—संज्ञा पुं० [वि० आवेष्टित] १. छिपाने या ढकने का काम। २. छिपाने, लपेटने या ढँकने की वस्तु।

आवो—क्रि० म० आओ। आगे बुलाना।

आशंकनीय—वि० १. आशंका के योग्य। भयस्थान। २. भयावह।

आशंका—संज्ञा स्त्री० [वि० आशंकित] १. आतंक। भय। डर। २. संदेह। शक। संशय। ३. अनिष्ट की भावना। ४. त्रास।

आशंकित—वि० शंकित। भयभीत।

आशंसा—संज्ञा स्त्री० १. आशा। इच्छा। अभिलाषा। कामना। २. सम्भावना। संदेह। शक। ३. प्रशंसा। तारीफ। ४. प्रार्थना। ५. अनुमान। आदर-सत्कार।

आशंसित—वि० प्रार्थित। अभिलषित। कथित। आकांक्षित

आशना—संज्ञा उभ० [फ़ा] १. प्रेमी। चाहने वाला। २. परिचित।

आशनाई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. संबंध। परिचय। जान-पहचान। २. प्रीति। प्रेम। दोस्ती। ३. अनुचित संबंध।

आशय—संज्ञा पुं० १. तात्पर्य्य। अभिप्राय। २. इच्छा। वासना। ३. उद्देश्य। नीयत। ४. आधार। आश्रय। ५. गड्ढा। खात। ६. शय्या। ७. स्थान। सराय। ८. शरीर की शिरा। ९. उदर। हृदय। आत्मा। मन। विचार। १०. अर्थ। ११. पहिले किये कर्मों का फल। १२. आनंद। १३. पुण्य। १४. पाप। १५. भाग्य। १६. कंजूस। १७. जायदाद।

आशा—संज्ञा स्त्री० १. जो प्राप्त न हो उसे पाने की इच्छा और थोड़ा-बहुत निश्चय। उम्मीद। २. इच्छित वस्तु की प्राप्ति के थोड़े-बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष। ३. दिशा। ४. दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ५. आश्रय। भरोसा। आसरा।

आशातीत—वि० आशा से अधिक। बहुत अधिक।

आशाभंग—संज्ञा पुं० नैराश्य। भरोसा टूटना। नाउम्मेदी।

आशिक़—संज्ञा पुं० [अ०] अनुरक्त पुरुष। आसक्त। जो प्रेम करे।

आशिक़ाना—वि० आशिकों का-सा। प्रेमपूर्ण।

आशिक़ी—संज्ञा स्त्री० प्रेम का व्यवहार। आशिक होना। आसक्ति।

आशिष—संज्ञा स्त्री० १. आशीर्वाद। आसीस। २. अलंकार-विशेष, जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिए प्रार्थना होती है।

आशिषाक्षेप—संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें दूसरे का हित दिखलाते हुए ऐसी बातों के करने की शिक्षा दी जाती है जिनमें वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो। (केशव)।

आशी—वि० [स्त्री० आशिनी] भक्षक। खानेवाला।

आशीर्वचन—संज्ञा पुं० शुभजनक वाक्य। कल्याण-वाक्य।

आशीर्वाद—संज्ञा पुं० आसीस। आशीर्वचन।

कल्याण या मंगलकामनासूचक वाक्य। आशिष। दुआ।

आशीविष—संज्ञा पुं० सर्प। अहि। भुजंग। साँप।

आशीस—संज्ञा स्त्री० १. आशीर्वाद। २. वर। ३. शुभाशंसा। मंगल-प्रार्थना।

आशु—क्रि० वि० १. शीघ्र। द्रुत। तुरन्त। झटपट। २. वर्षाकाल में उत्पन्न होनेवाला एक धान्य। ३. घोड़ा।

आशु कवि—संज्ञा पुं० वह कवि जो उसी क्षण कविता कर सके।

आशुग—संज्ञा पुं० १. जल्दी चलनेवाला। शीघ्रगामी। २. मन। बाण। शर। तीर। ३. वायु।

आशुतोष—वि० शीघ्र संतुष्ट या प्रसन्न होनेवाला।

संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

आश्चर्य्य—संज्ञा पुं० [वि० आश्चर्य्यित] १. मनोविकार जो किसी नई, साधारण या अनोखी बात को देखने-सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है। अचंभा। विस्मय। २. रस के नौ स्थायी भावों में से एक। ३. अपूर्व। अद्भुत। चमत्कार। विचित्र। अलौकिक।

आश्चर्य्यान्वित—वि० चमत्कृत। विस्मित।

आश्चर्य्यित—वि० चकित। विस्मित।

आश्रम—संज्ञा पुं० [वि० आश्रमी] १. वन। तपोवन। ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान। २. मठ। साधु-संत के रहने की जगह। ३. स्मृति में कही हुई हिंदुओं के जीवन की चार अवस्थाएँ—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास। ४. विश्रामस्थान। ठहरने की जगह। ५. पाठशाला। कालेज।

आश्रमगुरु—संज्ञा पुं० १. कुलाचार्य। कुलपति। २. ब्राह्मण।

आश्रमधर्म—संज्ञा पुं० आश्रम के लिए शास्त्र-कथित आचार और नियम।

आश्रमभ्रष्ट—वि० आश्रम-विरुद्ध चलने-वाला।

आश्रमी—वि० १. आश्रम में रहनेवाला। २. ब्रह्मचर्य्यादि चार आश्रमों में से किसी को धारण करनेवाला। ३. आश्रम-युक्त। ४. आश्रम-संबंधी।

आश्रय—संज्ञा पुं० [वि० आश्रयी, आश्रित] १. सहारा। आधार। अवलंब। २. वह वस्तु जिसके सहारे पर कोई वस्तु हो। आधार-वस्तु। ३. शरण। ४. भरोसा। सहारा। अव-लम्बन। जीवन-निर्वाह का हेतु। ५. घर। मकान। ६. रक्षा का स्थान। ७. अधिकार। ८. स्वीकृति। ९. बहाना। १०. संबंध। ११. मूल।

आश्रयण—संज्ञा पुं० आश्रय। शरण। अवस्थान।

आश्रयणीय—वि० आश्रय के योग्य। आश्रयोप-युक्त।

आश्रयभूत—वि० अवलम्बभूत। शरण्य। भरोसागीर।

आश्रयस्थान—संज्ञा पुं० सहारे का ठौर। आश्रय का स्थान।

आश्रयी—वि० आश्रय लेनेवाला। सहारा पाने-वाला।

आश्रित—वि० १. भरोसे पर रहनेवाला। अधीन। कृताश्रय। २. सहारे पर टिका हुआ। ३. सेवक। वश्य। वशीभूत। ४. शरणागत।

आश्रित स्वत्व—संज्ञा पुं० भृत्य का अधिकार। अधीन का अधिकार।

आश्लेष—संज्ञा पुं० आलिंगन। मिलन। जुड़ना। लगाव।

आश्लेषण—संज्ञा पुं० मिलावट। मेल।

आश्लेषा—संज्ञा पुं० श्लेषा नाम का नक्षत्र।

आश्वस्त—वि० जिसे आश्वासन मिला हो। जिसे तसल्ली दी गई हो। आशायुक्त।

आश्वास, आश्वासन—संज्ञा पुं० [वि० आश्वा-सनीय, आश्वासित, आश्वास्य] सांत्वना। दिलासा। तसल्ली।

आश्वासित—वि० अनुनीत। आश्वस्त। दिलासा दिया हुआ।

आश्लिष्ट—वि० आलिंगित। सटा हुआ। चिपटा हुआ। लपटा हुआ।

आश्विन—संज्ञा पुं० वह महीना जिसकी पूर्णिमा

अश्विनी नक्षत्र में पड़। क्वार का महीना। असोज ।

आषाढ़–संज्ञा पुं० १. असाढ़ । २. ब्रह्मचारी का पलाश का दंड ।

आषाढ़भू या भव–संज्ञा पुं० मंगल ग्रह। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ा–संज्ञा पुं० उत्तराषाढ़ा और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ी–संज्ञा स्त्री० गुरुपूजा। आषाढ़ मास की पूर्णिमा ।

आसंग–संज्ञा पुं० १. संग। साथ। २. संसर्ग। संसृष्टि। संबंध। लगाव। ३. आसक्ति। अनुराग ।

आसंदी–संज्ञा स्त्री० खटोली। कुरसी। काठ की छोटी चौकी।

आस–संज्ञा स्त्री० १. आशा। २. कामना। लालसा। ३. आसरा। आधार। सहारा। भरोसा।

आसकत–संज्ञा स्त्री० [वि० आसकती; क्रि० आसकताना] आलस्य।

आसकती–वि० दे० "आलसी"। सुस्त।

आसक्त–वि० १. अनुरक्त। लीन। मग्न। लिप्त। २. मुग्ध। मोहित। लुब्ध।

आसक्ति–संज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति। लिप्तता। २. चाह। प्रेम। लगन। मोह। ३. लोभ। ४. न्याय शास्त्र के मत से पदों का अत्यन्त सन्निधान। ५. संगम। ६. अव्यवहित। ७. पदोच्चारण। ८. समीपता। ९. यह शब्दबोध का एक हेतु है।

[आ]सते*–क्रि० वि० [फा० आहिस्त:] धीरे-धीरे।

[आस]त्ति–संज्ञा स्त्री० १. निकटता। सामीप्य। २. अर्थ-बोध के लिए एक दूसरे से संबंध रखनेवाले दो पदों या शब्दों का बिना व्यवधान के, पास-पास रहना।

आसन–संज्ञा पुं० १.बैठक। स्थिति। बैठने की दशा। कामशास्त्र के ८४ आसन। २. पीठ। पीढ़ा। चौकी। वह वस्तु जिस पर बैठें। ३. निवास। डेरा। ठिकाना। ४. योगियों के ८४ आसन। ५. चूतड़। ६. हाथी का कंधा जिस पर महावत बैठता है। ७. सेना का शत्रु के सामने डटे रहना।

मुहा०–आसन तले आना=अधीन होना। अनुगत होना। आसन उखड़ना=अपनी जगह से हिल जाना। घोड़े की पीठ पर रान न जमना। आसन कसना=अंगों को तोड़-मरोड़-कर बैठना। आसन छोड़ना=उठ जाना (आदरार्थ)। आसन जमना=जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे, उसी स्थान पर उसी रीति से स्थिर रहना। बैठने में स्थिर भाव आना। आसन डिगना या डोलना=१. बैठने में स्थिर भाव न रहना। २. मन डोलना। चित्त चलायमान होना। आसन डिगाना= १. जगह से विचलित करना। २. चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। आसन देना=सत्कारार्थ बैठने के लिए कोई वस्तु रख देना या बतला देना ।

आसना*–क्रि० अ० १. बैठना। २. होना।

आसनी–संज्ञा स्त्री० छोटा बिछौना। छोटा आसन ।

आसन्न–वि० १. पास। समीपस्थ। निकट आया हुआ। २. प्राप्त। ३. उपस्थित। ४. अवसान। ५. शप ।

आसन्नकाल–संज्ञा पुं० अन्तिम काल। मृत्यु का समय ।

आसन्नभूत–संज्ञा पुं० १. भूतकाल जो वर्तमान से मिला हुआ हो। २. भूत-कालिक क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता और वर्त्तमान से उसकी समीपता पाई जाय। जैसे—मैं रहा हूँ।

आसपास–क्रि० वि० अगल-बगल। इधर-उधर । चारों ओर। निकट।

आसमान–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आसमानी] १. गगन। आकाश। २. देवलोक। स्वर्ग।

मुहा०–आसमान के तारे तोड़ना=कोई कठिन या असंभव कार्य करना। आसमान टूट पड़ना=वज्रपात होना। किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। आसमान पर उड़ना=१. इतराना। गर्व करना। २.

बहुत ऊँचे-ऊँचे संकल्प बाँधना। आसमान पर चढ़ना=गर्व करना। आसमान पर चढ़ाना=१. अत्यंत प्रशंसा करना। २. अत्यंत प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना। आसमान में थिगली लगाना=विकट कार्य्य करना। आसमान सिर पर उठाना=१. उपद्रव मचाना। ऊधम मचाना। २. हलचल मचाना। खूब आन्दोलन करना। दिमाग आसमान पर होना=बहुत घमंड होना।

आसमानी–वि० [फा०] १. आकाशीय। आकाश-संबंधी। आसमान का। २. ऊपर का। हलका नीला। आकाश के रंग का। ३. ईश्वरीय। दैवी।
संज्ञा स्त्री० ताड़ी। ताड़ के पेड़ से निकाला हुआ मद्य।

आसमुद्र–क्रि० वि० समुद्र के तट तक। समुद्र-पर्यंत।

आसरना*–क्रि० स० आश्रय या सहारा लेना।

आसरा–संज्ञा पुं० १. अवलंब। आधार। सहारा। २. भरण-पोषण की आशा। भरोसा। ३. किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४. आश्रयदाता। जीवन या कार्य्य-निर्वाह का हेतु। सहायक। ५. शरण। ६. प्रतीक्षा। प्रत्याशा। ७. आश्रम।

आसव–संज्ञा पुं० १. मद्य। शराब। मदिरा। २. द्रव्यों का खमीर छानकर बनाई हुई औषधि। ३. मधु। मद। ४. अर्क।

आसव-वृक्ष–संज्ञा पुं० ताल वृक्ष। ताड़।

आसवी–संज्ञा पुं० शराब पीनेवाला। शराबी। मद्यप।
वि० आसव-सम्बन्धी।

आसा–संज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।
संज्ञा पुं० [अ० असा] सोने या चाँदी का डंडा जिसे केवल सजावट के लिए राजा-महाराजाओं अथवा बारात और जुलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं।
यौ०—आसा-सोंटा। आसा-बल्लम।

आसाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] सुख। चैन। आराम।

आसादन–संज्ञा पुं० प्रापण। लाभकरण। मिलन।

आसादित–वि० प्राप्त। लब्ध। मिलित। भक्षित।

आसान–वि० [फा०] सरल। सुगम। सहज।

आसानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० आसान] सुगमता। सरलता। सुबीता।

आसाम–संज्ञा पुं० भारत का एक प्रान्त जो बंगाल के निकट है। इसका प्राचीन नाम कामरूप है।

आसामी–वि० आसाम प्रान्त का निवासी।
संज्ञा पुं० देनदार। काश्तकार। अभियुक्त। दे० "असामी।"

आसार–संज्ञा पुं० [अ०] लक्षण। चिह्न।

आसावरी–संज्ञा स्त्री० श्री राग की रागिनी-विशेष।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर।

आसावसन–वि० नग्न। दिगम्बर। नंगा।

आसिख*–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"। आशीर्वाद।

आसिद्ध–वि० अवरुद्ध। बन्दीभूत। बंधुआ। बन्दी।

आसिधार–संज्ञा पु० युवा और युवती का एक स्थान में अविकृत चित्त से अवस्थान रूप व्रत।

आसिन–संज्ञा पुं० दे० "आश्विन"।

आसी*–वि० दे० "आशी"।

आसीन–वि० आसन जमाए हुए। उपविष्ट। बैठा हुआ। विराजमान।

आसीर्–संज्ञा स्त्री० दे० १. "आशिष"। २. उसीस। ३. तकिया।

आसु*–क्रि० वि० दे० "आशु"।

आसुर–वि० असुर-संबंधी।
यौ०—आसुर-विवाह=विवाह-विशेष जो कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर हो।
संज्ञा पुं० दे० "असुर"।

आसुरी–वि० राक्षसी। असुरों का।
यौ०—आसुरी चिकित्सा=चीर-फाड़। शस्त्र-चिकित्सा। आसुरी माया=चक्कर में डालनेवाली राक्षसी चाल।
संज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री।

आसूदा–वि०[फा०] [संज्ञा आसूदगी] १. तृप्त। संतुष्ट। २. भरा-पूरा। संपन्न।

आसेचनक–वि० प्रियदर्शन। जिसको देखने से तृप्ति नहीं होती।

आसेब–संज्ञा पुं०[फा०] [वि० आसेबी] भूत-प्रेत की बाधा।

आसोज†–संज्ञा पुं० क्वार का महीना। आश्विन मास।

आसौं*–क्रि० वि० इस साल। इस वर्ष।

आस्कन्दित–वि० घोड़ों की गति-विशेष। तिरस्कृत।

आस्कत–संज्ञा स्त्री० आलस्य। ढीलापन। शिथिलता।

आस्कती–वि० आलसी। ढीला। ठंडा। सुस्त।

आस्तर–संज्ञा पुं० १. हाथी की झूल। २. उत्तम। आसन। ३. शय्या।

आस्तरण–संज्ञा पुं० १. शय्या। बिछौना। बिस्तर। २. दुपट्टा।

आस्तव–संज्ञा पुं० १. उबलते हुए चावल का फेन। २. पनाला। ३. कष्ट। पीड़ा। ४ इन्द्रियद्वार।

आस्तिक–वि० १. जो वेद, ईश्वर और परलोक इत्यादि पर विश्वास करे। २. ईश्वरवादी। ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला।

आस्तिकता–संज्ञा स्त्री० ईश्वर, वेद और परलोक में विश्वास।

आस्तीक–संज्ञा पुं० ऋषि-विशेष जिन्होंने जनमेजय के सर्पसत्र में तक्षक के प्राण बचाये थे।

आस्तीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँही। पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढँकता है। अंगा।

मुहा०–आस्तीन का साँप=मित्र होकर शत्रुता करनेवाला।

आस्था–संज्ञा स्त्री० १. श्रद्धा। पूज्य बुद्धि। २. बैठक। सभा। ३. अपेक्षा। आलंबन। अवलंब। ४. आदर। ५. विश्वास। आशा। ६. स्थिति। रहन।

आस्थान–संज्ञा पुं० १. बैठक। बैठने की जगह। २. सभा। दरबार। ३. आश्रम। ४. समाज। सभा-स्थान।

आस्पद–संज्ञा पुं० १. स्थान। २. काम। कार्य्य।३. प्रतिष्ठा। पद। ४. अल्ल। कुल। जाति। वंश। ५. निवास-स्थान। ६. शान। ७. अधिकार। प्रभुता।

आस्फालन–संज्ञा पुं० १. अपने आप अपनी बड़ाई। आत्मश्लाघा। गर्व। घमंड। अहंकार। २. संघर्ष। शब्द करना।

आस्फालित–वि० १. ताड़ित। २. गर्वित। ३. कम्पित।

आस्फोटन–संज्ञा पुं० १. प्रफुल्ल होना। विकास। प्रकाश। २. ताल ठोंकना।

आस्य–संज्ञा पुं० मुखमण्डल। चेहरा। आनन। मुख। मुँह।

आस्यदेश–संज्ञा पुं० मुख।

आस्वाद–संज्ञा पुं० १. स्वाद। रस। रसानुभव। आनंद। २. रुचि। चस्का।

आस्वादन–संज्ञा पुं०[वि०आस्वादनीय, आस्वादित] रसानुभव। स्वाद ग्रहण। चखना। स्वाद लेना।

आस्वादक–संज्ञा पुं० स्वाद लेनेवाला। जायका लेनेवाला।

आस्वादु–वि० सुरस। मिष्ट। स्वादिष्ट। स्वादी। सुस्वादु।

आह–अव्य० पीड़ा। शोक। हानि। कष्ट। दुःख, खेद और ग्लानि-सूचक अव्यय। संज्ञा स्त्री० कराहना। दुःख या क्लेश-सूचक शब्द। उसास। ठंडी साँस।

मुहा०–आह पड़ना=शाप पड़ना। किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। आह भरना=ठंडी साँस खींचना। आह लेना=दुःख देकर कल्पाना। सताना।

*संज्ञा पुं० १. साहस। हियाव। २. बल।

आहट–संज्ञा स्त्री० १. चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होनेवाला शब्द। आने का शब्द। पाँव की चाप। खटका। २. वह शब्द जिससे किसी स्थान पर किसी के रहने का अनुमान हो। ३. पता। टोह। सुराग।

आहत–वि० १. घायल। चोट खाया हुआ। २. गुण्य। जिस संख्या को गुणित करें।

३. व्याघात-दोष-युक्त (वाक्य) ४, पुराना। ५. कंपित। ६. बंधनयुक्त। ७. पिसा। अत्यंत दबा हुआ। नष्ट। ८. पिटा हुआ (नगारा आदि)। ९. कुंद (चाकू आदि)। १०. कथित। पुनरुक्त।

यौ०–हताहत=मारे हुए और जख्मी। संज्ञा पुं० १. नगारा। २. कोरा कपड़ा।

आहन–संज्ञा पुं० [फा०] लोहा।

आहर*–संज्ञा पुं० १. काल। २. समय। लड़ाई। युद्ध।

आहर-जाहर–संज्ञा स्त्री० आना-जाना।

आहरण–संज्ञा पुं० [वि० आहरणीय, आहृत] १. हर लेना। छीनना। २. किसी पदार्थ को स्थानांतरित करना। ३. लेना। ग्रहण। ४. लूटना-खसोटना।

आहरन–संज्ञा पुं० सुनारों और लोहारों की निहाई।

आहर्तव्य–वि० ग्रहणीय। ले आने लायक। ग्रहण करने के योग्य।

आहर्त्ता–वि० आनेता। आनयन वा उपार्जन-कर्ता। ले आनेवाला।

आहव–संज्ञा पुं० १. रण। युद्ध। २. यज्ञ। याग।

आहवन–संज्ञा पुं० यज्ञ या होम करना।

आहवनीय–संज्ञा पुं० १. यज्ञ की अग्नि-विशेष। २. कर्मकाण्ड की तीन अग्नियों में से एक।

आहाँ–संज्ञा स्त्री० १. घोषणा। दुहाई। हाँक। २. बुलावा। पुकार।

आहा–अव्य० खेद। आक्षेप। आश्चर्य्य और हर्ष-सूचक अव्यय।

आहार–संज्ञा पुं० १. खाना। भोजन। २. खाने की वस्तु। भक्षण।

आहारक–संज्ञा पुं० आहरणकारी। संग्राहक।

आहार-विहार–संज्ञा पुं० रहन-सहन। खाना-पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार।

आहारी–वि० [स्त्री० आहारिणी] भक्षक। खानेवाला।

आहार्य्य–वि० १. गृहीत। ग्रहण किया हुआ। पकड़ा हुआ। २. खाने योग्य। ३. बनावटी। कल्पित। ४. वेशभूषा। नेपथ्य। वेष-द्वारा अंग-संस्कार।

संज्ञा पुं० चार प्रकार के अनुभवों में चौथा। नायक और नायिका का परस्पर एक दूसरे का वेष धारण करना।

आहार्य्य-शोभा–संज्ञा स्त्री० कृत्रिम शोभा। चित्र अथवा भूषण-आदि के द्वारा बनाई शोभा।

आहार्य्याभिनय–संज्ञा पुं० नाटक में वेषभूषा का विशिष्ट विधान, नियम। (नाट्यशास्त्र)।

आहाव–संज्ञा पुं० १. क्षुद्र जलाशय। २. चहबच्चा। ३. युद्ध-आह्वान। ४. आमंत्रण।

आहि–क्रि० अ० 'आमना' का वर्त्तमान-कालिक रूप। है।

आहित–वि० १. स्थापित। रक्खा हुआ। २. धरोहर या गिरों रक्खा हुआ। ३. न्यस्त। ४. अर्पित।

संज्ञा पुं० १. पंद्रह प्रकार के दासों में से एक, जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रहकर उसे पटाता हो। २. बन्धक। गिरवी रखा हुआ माल।

आहिताग्नि–संज्ञा पुं० साग्निक। अग्निहोत्री।

आहितुण्डिक–संज्ञा पुं० व्यालग्राही। साँप पकड़नेवाला। मँदेरा।

आहिस्ता–क्रि० वि० [फा०] १. शनैः शनैः। २. धीरे से। धीरे-धीरे।

आही–क्रि० अ०। है।

आहुक–संज्ञा पुं० राजा-विशेष।

आहुत–संज्ञा पुं० १. अतिथि-सत्कार। २. भूतयज्ञ। ३. बलिवैश्वदेव।

आहुति–संज्ञा स्त्री० १. होम। हवन। देवयज्ञ। मंत्र पढ़कर देवता के लिए द्रव्य को अग्नि में डालना। २. हवन में डालने की सामग्री। ३. होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञकुंड में डाली जाय। ४. शाकल्य।

आहूत–वि० निमंत्रित। बुलाया हुआ। आमंत्रित।

आहृत–वि० १. अर्जित। २. आनीत। लाया हुआ।

आहे–क्रि० अ० है। 'आमना' का वर्त्तमान-कालिक रूप।

आहो–अव्य० १. विकल्प। २. प्रश्न। ३. सन्देह। ४. विचार।

आहोपुरुषिका–संज्ञा स्त्री० अहमिका, आत्म-श्लाघा।

आहोस्वित–अव्य० विकल्प। प्रश्न। जिज्ञासा।

आह्निक–वि० दैनिक। नित्य-क्रिया। दिन-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. भोजन-प्रकरण। २. समूह। ३. ग्रन्थ-भाग।

आह्ला–संज्ञा पुं० जलार्णव।

आह्लाद–संज्ञा पुं० [वि० आह्लादक, आह्लादित] तुष्टि। आनंद। प्रसन्नता। हर्ष।

आह्लादजनक–वि० हर्षजनक। तुष्टिकर। आनन्दवर्धक।

आह्लादित–वि० आनन्दित। हर्षयुक्त। प्रसन्न।

आह्वय–संज्ञा पुं० १. संज्ञा। नाम। २. प्राणिद्यूत। ३. तीतर, बटेर, मेढ़े आदि जीवों की लड़ाई की बाजी।

आह्वान–संज्ञा पुं० १. पुकार। बुलाना। निमंत्रण। बुलावा। २. राजा की ओर से बुलावे का पत्र। सम्मन। तलब-नामा। ३. यज्ञ में मंत्र-द्वारा देवताओं को बुलाना। आवाहन। ललकार। अदालत-आदि में उपस्थित होने का सूचना-पत्र।

इ

इ–हिन्दी-वर्णमाला में स्वर का तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालु है। इसका दीर्घ रूप ई है।

अव्य०–१. भेद। २. क्रोधित। ३. अपाकरण। ४. अनुकंपा। ५. खेद। ६. कोप। ७. संताप। दुःख। ८. भावना।

संज्ञा पुं०–१. कामदेव। २. गणेश।

इंक–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] स्याही। रोशनाई।

इंग–संज्ञा पुं० १. संकेत। इशारा। २. चलना। हिलना। ३. हाथी का दाँत।

इंगन–संज्ञा पुं० संकेत। इशारा।

इंगनी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे० मैंगनीज] धातु का मोर्चा-विशेष जो काँच या शीशे का हरापन दूर करने के काम में आता है।

इंगला–संज्ञा स्त्री० इड़ा नामक नाड़ी। यह शरीर के वाम भाग में होती है। (हठयोग)।

इँगलिश–वि० [अंग्रे०] इँगलैंड-सम्बन्धी। अँगरेजी।

संज्ञा स्त्री० अँगरेजी-भाषा।

इँगलिस्तान–संज्ञा पुं० इँगलैंड। अँगरेजों का देश।

इँगलैंड–संज्ञा पुं० यूरोप के एक द्वीप का नाम।

इंगित–संज्ञा पुं० संकेत। भाव। अभिप्राय को किसी चेष्टा-द्वारा प्रकट करना। चेष्टा।

वि० १. चलित। हिलता हुआ। २. संकेत किया हुआ।

इंगुदी–संज्ञा स्त्री० १. हिंगोट का पेड़। २. मालकँगनी। ज्योतिष्मती वृक्ष। ३. व्रण-विरोपण।

इंगुर†*–संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"। सिंदूर का एक भेद।

इंगरौटी–संज्ञा स्त्री० सिंधोरा। सौभाग्यवती स्त्रियों की ईंगुर या सिंदूर रखने की डिबिया।

इंच–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। तस्सू।

इँचना*–क्रि० अ० दे० "खिंचना"।

इंचार्ज–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह जिस पर किसी कार्य या विभाग का सारा भार हो।

इंजन–संज्ञा पुं० [अंग्रे० एंजिन] १. भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र। २. पेंच। कल। ३. रेल में वह गाड़ी जो भाप के जोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर–संज्ञा पुं० [अंग्रे० एंजीनियर] १. कलों का बनाने या चलानेवाला। यंत्र की विद्या जाननेवाला। २. विश्वकर्मा। शिल्प-विद्या में निपुण। ३. वह अधिकारी जिसके निरीक्षण में सरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।

इंजील–संज्ञा स्त्री० [यू०] ईसाइयों की धर्म-पुस्तक-विशेष।

इंडहर–संज्ञा पुं० उर्द की दाल से बना हुआ एक प्रकार का सालन।

इंडरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "इंडुआ"।

इंडुवा–संज्ञा पुं० उँड़री। गेंडुरी। कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी, जिसे बोझ उठाते समय सिर के ऊपर रख लेते हैं।

इंतक़ाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. मृत्यु। मौत। २. किसी संपत्ति का एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतखाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. पटवारी के खाते की नकल। चुनाव। २. निर्वाचन। पसंद।

इंतज़ाम–संज्ञा पुं० [अ०] व्यवस्था। प्रबंध।

इंतज़ार–संज्ञा पुं० [अ०] प्रतीक्षा।

इंतहा–संज्ञा स्त्री० [अ० इन्तिहा] चरम-सीमा। अंत। समाप्ति। परिणाम। फल।

इंदव–संज्ञा पुं० छंद-विशेष।

इंदिरा–संज्ञा स्त्री० १. कमला। रमा। लक्ष्मी। २. शोभा। दीप्ति।

इंदिरामन्दिर–संज्ञा पुं० नीलोत्पल। नील कमल।

इंदिरालय–संज्ञा पुं० पद्म। पंकज।

इंदिरावर–संज्ञा पुं० विष्णु। नारायण।

इंदीवर–संज्ञा पुं० १. कमल। २. नील-कमल। ३. नीलोत्पल।

इंदु–संज्ञा पुं० १. शशि। चंद्रमा। २. एक की संख्या। ३. कपूर।

इंदुकला–संज्ञा स्त्री० इंदुलेखा। चन्द्रलेखा। चन्द्रकला।

इंदुकान्त–संज्ञा पुं० मणि-विशेष। चन्द्रकान्त मणि।

इंदुकान्ता–संज्ञा स्त्री० रात्रि। निशा। यामिनी।

इंदुभृत्–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

इंदुमणि–संज्ञा पुं० दे० "चंद्रकान्त मणि।"

इंदुमती–संज्ञा स्त्री० १. चन्द्रयुक्ता रात्रि। पूर्णमासी। २. अयोध्या के राजा अज की स्त्री।

इंदुर–संज्ञा पुं० मूस। चूहा। मूषिक।

इंदुवदना–संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त-विशेष। वि० विधुमुखी। चंद्रमुखी।

इंदुव्रत–संज्ञा पुं० चान्द्रायण व्रत।

इंदूर–संज्ञा पुं० चूहा।

इंद्र–वि० १. प्रतापी। एश्वर्यवान्। विभूति-संपन्न। २. बड़ा। श्रेष्ठ। जैसे, नरेन्द्र। संज्ञा पुं० १. वैदिक देवता-विशेष जिसका स्थान आकाश है और जो पानी बरसाता है। २. देवताओं का राजा। ३. सूर्य्य। बारह आदित्यों में से एक। ४. बिजली। ५. स्वामी। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र। ७. चौदह की संख्या। ८. छप्पय छंद के भेदों में से एक। ९. प्राण। जीव। १०. दाहिनी आँख की पुतली।

यौ०–इंद्र का अखाड़ा=१. इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। २. बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच-रंग होता हो। इंद्र की परी=१. बहुत सुंदरी स्त्री। २. अप्सरा।

इंद्रकुंजर–संज्ञा पुं० इंद्र का हाथी। ऐरावत।

इंद्रकील–संज्ञा पुं० मन्दर पर्वत। मंदराचल।

इंद्रगोप–संज्ञा पुं० १. बीरबहूटी नामक कीड़ा। २. खद्योत। जुगनू।

इंद्रजव–संज्ञा पुं० १. कौरैया का बीज। २. कुड़ा।

इंद्रजाल–संज्ञा पुं० [वि० इंद्रजालिक] १. नटविद्या। फरफंद। माया। तिलस्म। जादूगरी। २. धोखा। छल। कपट।

इंद्रजालिक या इंद्रजाली–वि० [स्त्री० इंद्रजालिनी] मायावी। जादूगर। बाजीगर। इंद्रजाल करनेवाला।

इंद्रजित्–वि० इंद्र को जीतनेवाला। संज्ञा पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रजीत–संज्ञा पुं० दे० "इंद्रजित्"।

इंद्रतुल्य–वि० १. इन्द्र के समान। २. सर्वश्रेष्ठ। ३. अधिपति।

इंद्रत्व–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग का असाधारण धर्म। २. राजत्व-प्राधान्य।

इंद्रदमन–संज्ञा पुं० १. मेघनाद का नाम-विशेष। २. बाढ़ के समय नदी के जल का किसी निश्चित देवमूर्ति, कुंड, ताल अथवा वट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है। ३. योग-विशेष।

इंद्रधनुष–संज्ञा पुं० सात रंगों का अर्द्धवृत्त जो वर्षा-काल में सूर्य्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में दिखलाई पड़ता है। शक्रधनु।

इंद्रनील–संज्ञा पुं० नीलमणि। नीलम।

इंद्रनीलक–संज्ञा पुं० पन्नग। मरकत। पन्ना।

इंद्रप्रस्थ–संज्ञा पुं० नगर-विशेष जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था। हरिप्रस्थ। शक्रप्रस्थ।

इंद्रयव–संज्ञा पुं० औषधि-विशेष।
इंद्रलोक–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
इंद्रवंशा–संज्ञा पुं० १२ वर्णों का वृत्त-विशेष।
इंद्रवज्रा–संज्ञा पुं० वर्ण-वृत्त-विशेष।
इंद्रवधू–संज्ञा स्त्री० भृंगकीट। बीर-बहूटी।
इंद्राणी–संज्ञा स्त्री० १. शची। इंद्र की पत्नी। २. बड़ी इलायची। ३. इंद्रायण। ४. दुर्गा देवी। ५. मातृका-विशेष। बाईं आँख की पुतली।
इन्द्रानुज–संज्ञा पुं० विष्णु। नारायण।
इंद्रायन या **इंद्रायण**–संज्ञा पुं० १. इनारू। लता विशेष जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़वा होता है। २. औषधि-विशेष।
इंद्रायुध–संज्ञा पुं० १. इन्द्रधनु। २. वज्र।
इंद्रावरज–संज्ञा पुं० नारायण। विष्णु।
इंद्रासन–संज्ञा पुं० १. राजसिंहासन। २. इंद्र का सिंहासन। ३. ऐरावत।
इंद्रिय–संज्ञा स्त्री० १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। २. ज्ञान-साधन। ३. शरीर के वे अवयव, जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। पदार्थों के रूप, रस, गंध आदि के अनुभव में सहायक अंग, जो पाँच हैं—चक्षु, श्रोत्र, रसना, नासिका और त्वचा। ज्ञानेन्द्रिय। ४. वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न-भिन्न कर्म किये जाते हैं और जो पाँच हैं—वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ। कर्मेन्द्रिय। ५. लिंगेंद्रिय। ६. पाँच की संख्या। ७. अन्तरिन्द्रिय–यथा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार।
इंद्रियगण–संज्ञा पुं० इंद्रिय-समूह। एकादश इन्द्रिय।
इंद्रियगोचर–वि० इंद्रियों का विषय। ज्ञान-गम्य। ज्ञानपथवर्ती।
इंद्रियग्राह्य–वि० ज्ञानगम्य विषय—शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि।
इंद्रियजित्–वि० जो विषयों में न फँसे। जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो।
इंद्रियदोष–संज्ञा पुं० कामादि दोष। कामुकता। लंपटता।
इंद्रियनिग्रह–संज्ञा पुं० इंद्रियों पर संयम रखना।
इंद्रियविषय–संज्ञा पुं० इंद्रियग्राह्य। इंद्रिय-गोचर।
इंद्रियागोचर–वि० इंद्रियों से अगोचर। जो इंद्रियों से न जाना जाय।
इंद्रियार्थ–संज्ञा पुं० इंद्रियजन्य ज्ञान का विषय—रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श आदि।
इंद्रीजुलाब–संज्ञा पुं० वे ओषधियाँ, जिनसे पेशाब अधिक आता है।
इंसाफ–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुंसिफ] १. न्याय। २. निर्णय।
इकंग*–वि० दे० "एकांग"। १. एक ओर का शरीर। २. आधा अंग। एक शरीर। अर्द्धांग। शरीर का अर्ध भाग। ३. एक ओर का। एक तरफ का। एक पक्ष।
इकंत*–वि० दे० "एकांत"।
इक*–वि० दे० "एक"। एक का दूसरा रूप।
इक आक–क्रि० वि०–निश्चय। स्थिर।
इकइस–वि० संख्या-विशेष; २१।
इकछतराज–संज्ञा पुं० एकछत्र राजा। चक्रवर्ती राज्य। समस्त संसार का राज्य। प्रति-द्वन्द्वी-रहित राज्य।
इकजोर*–क्रि० वि० एक साथ। इकट्ठा।
इकटक–संज्ञा पुं० एक ताक। एकटकी। निस्पन्द नेत्र से देखना।
इकट्ठा–वि० एकत्रित। जमा।
इकठौर–संज्ञा पुं० एकट्ठा। समूह।
इकतर*–वि० दे० "एकत्र"।
इकतरा–संज्ञा पुं० एक दिन का नागा करके आनेवाला ज्वर।
इकता*–संज्ञा स्त्री० दे० "एकता"।
इकताई*–संज्ञा स्त्री० [फा० यकता] १. एकता। एक होने का भाव। २. अभेद। ३. अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या आदत। एकांत-सेविता। ४. अद्वितीयता।
इकतान*–वि० १. एक-सा। एक-रस। २. स्थिर। ३. अनन्य।
इकतार–वि० १. समान। बराबर। २. एकरस। क्रि० वि० लगातार।

इकतारा–संज्ञा पुं० १. तानपूरे के ढंग का बाजा-विशेष जिसमें केवल एक ही तार रहता है। २. हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा-विशेष।

इकतीस–वि० तीस और एक। संज्ञा पुं० इकतीस का अंक। ३१। तीस और एक की संख्या।

इकत्र*–क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

इकबाल–संज्ञा पुं० दे० "एकबाल"।

इकराम–संज्ञा पुं० [अ०] १. पुरस्कार। पारितोषिक। इनाम। २. आदर।

इक़रार–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिज्ञा। ठहराव। २. कोई काम करने की हाँमी भरना या वादा करना।

इकला*–वि० दे० "अकेला"।

इकलाई–संज्ञा स्त्री० १. अकेलापन। २. एक पाट का महीन दुपट्टा, चादर या धोती।

इकलौता–संज्ञा पुं० १. माँ-बाप का अकेला लड़का। २. एक ही। केवल। ३. एक होने से अधिक प्रीति-पात्र।

इकल्ला–†वि० १. एक पर्त्त का। एकहरा। २. अकेला।

इकसंग–वि० एक साथ।

इकसठ–वि० ६१। साठ और एक। संज्ञा पुं० वह अंक जिसमे साठ और एक का बोध हो।

इकसर*–वि० १. एक-सा। २. सदृश। बराबर। ३. एकाकी। अकेला।

इकसार–वि० बराबर। सरीखा। समान।

इकसूत –वि० एकत्र। एक साथ। इकट्ठा।

इकहरा–वि० दे० एक पर्त का। "एकहरा"।

इकहाई*–क्रि० वि० १. एक साथ। तुरंत। २. अचानक। एकाएक।

इकांत*–वि० दे० "एकांत"।

इकैठ*–वि० इकट्ठा।

इकौंज–संज्ञा स्त्री० काक-वंध्या। एक संतान वाली स्त्री।

इकौसी–वि० अकेला वास। एकान्त वास।

इकौसो*–वि० एकांत।

इक्का–वि० १. अकेला। एकाकी। २. अनुपम। अनूठा। अद्वितीय। बेजोड़। ३. उत्तम। संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की कान की बाली जिसमें एक मोती होता है। २. लड़ाई में अकेला लड़नेवाला योद्धा। ३. झुंड छोड़कर अलग हो जानेवाला पशु। ४. एक प्रकार की दो पहियों की घोड़ा-गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। इलाहाबादी इक्का। पटनाहा इक्का। ५. एक बूटी-वाला ताश का पत्ता।

इक्का-दुक्का–वि० एक या दो। अकेला-दुकेला।

इक्की–संज्ञा स्त्री० ताश का एक बूटीवाला पत्ता। एक बैल की गाड़ी।

इक्कीस–वि० २१। बीस और एक। संज्ञा पुं० बीस और एक की संख्या।

इक्यावन–वि० ५१। पचास और एक। संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या।

इक्यासी–वि० अस्सी और एक। संज्ञा पुं० ८१। अस्सी और एक की संख्या।

इक्षु–संज्ञा पुं० १. ईख, या ऊख। गन्ना। २. केतारी। गाँड़ा।

इक्षुकाण्ड–संज्ञा पुं० इक्षु-वृक्ष। काँस। मूँज। रामशर।

इक्षुप्रमेह–संज्ञा पुं० मूत्र-संबंधी रोग-विशेष। मधुमेह।

इक्षुमती–संज्ञा स्त्री० कुरुक्षेत्र के पास बहने-वाली एक नदी।

इक्षुरस–संज्ञा पुं० ईख का रस। राब।

इक्षुरसोद–संज्ञा पुं० इक्षु-रस का समुद्र।

इक्षुसार–संज्ञा पुं० गुड़। खाँड़।

इक्ष्वाकु–संज्ञा पुं० १. सूर्य्यवंश का प्रधान राजा-विशेष। २. कड़ुवी लौकी। ३. वैवस्वत मनु का पुत्र। ४. काशी का राजा।

इक्ष्वालिका–संज्ञा स्त्री० १. नरकट। नरकुल। सरपत। २. मूँज। काँसा।

इखद*–वि० दे० "ईषत्"।

इखराज–संज्ञा पुं० [अ०] खर्च। निकास।

इखलास–संज्ञा पुं० [अ०] १. मित्रता। मेल-मिलाप। २. भक्ति। प्रेम। प्रीति।

इखु*–संज्ञा पुं० दे० "इषु"।

इख्तलाफ–संज्ञा पुं० [अ०] विरोध। बिगाड़। अनबन।

इख्तियार–संज्ञा पुं० [अ०] १. अधिकार। २. सामर्थ्य। ३. प्रभुत्व। ४. अधिकार-क्षेत्र।

इच्छना*–क्रि० स० चाहना। इच्छा करना।

इच्छा–संज्ञा स्त्री० [वि० इच्छित, इच्छुक] मनोरथ। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह। वांछा। आकांक्षा। स्पृहा।

इच्छाचारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० इच्छाचारिणी] मनमौजी। अपने मन का। स्वतंत्र। मन के अनुसार घूमने या करनेवाला।

इच्छान्वित–वि० इच्छुक। सस्पृह। अभिलाषी। स्वेच्छुक। वासना-विशिष्ट।

इच्छाभेदी–संज्ञा स्त्री० विरेचनवटी।

इच्छाभोजन–संज्ञा पुं० १. मनमाना भोजन। २. जिन-जिन वस्तुओं की इच्छा हो, उनको खाना।

इच्छावती–संज्ञा स्त्री० इच्छायुक्त स्त्री। अभिलाषिणी रमणी।

इच्छित–वि० वांछित। चाहा हुआ। ईप्सित। मन के अनुसार।

इच्छु*–संज्ञा पुं० दे० "इक्षु"। वि० इच्छुक। चाहनेवाला। (यौगिक में)

इच्छुक–वि० अभिलाषी। आकांक्षी। चाहनेवाला।

इछन–संज्ञा पुं० आँख। नेत्र। नयन। दृष्टि। देखना।

इजमाल–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इजमाली] १. समष्टि। कुल। २. साझा। किसी वस्तु पर कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व।

इजमाली–वि० [अ०] संयुक्त। साझे का।

इजराईल–संज्ञा पुं० प्राण लेनेवाला फरिश्ता। यमराज।

इजराय–संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यवहार। उपयोग। २. प्रचार करना। जारी करना। **यौ०**–इजराय डिगरी=डिगरी का अमल-दरामद होना।

इजलास–संज्ञा पुं० [अ०] १. बैठक। २. वह जगह जहाँ अधिकारी बैठकर मुकद्दमे का न्याय करता है। न्यायालय। अदालत। कोर्ट। कचहरी।

इज़हार–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रकट करना। जाहिर करना। प्रकाशन। २. साक्षी। अदालत के सामने बयान। गवाही।

इजाज़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आज्ञा। २. सम्मति। मंजूरी। परवानगी।

इज़ाफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वृद्धि। बढ़ती। २. बचत। व्यय से बचा हुआ धन।

इज़ार–संज्ञा स्त्री० [अ०] पायजामा।

इज़ारबंद–संज्ञा पुं० [फा०] नारा। सूती या रेशमी जालीदार बँधना जो पायजामे या लहँगे के नेफे में उसे कमर में बाँधने के लिए पड़ा रहता है।

इजारदार, इजारेदार–वि० [फा०] ठेकेदार। अधिकारी। जो किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर ले।

इजारा–संज्ञा पुं० [अ०] १. ठेका। २. किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर देना। ३. किराया। अधिकार। स्वत्व।

इज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] सम्मान। आदर। प्रतिष्ठा। मान। मर्यादा।

मुहा०–इज्जत उतारना=मर्यादा नष्ट करना। इज्जत रखना=प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

इज्जतदार–वि० [फा०] प्रतिष्ठावाला। प्रतिष्ठित।

इज्य–वि० बृहस्पति। देवाचार्य। गुरु। शिक्षक। पूज्य।

इज्या–संज्ञा स्त्री० यज्ञ। दान। याग। पूजा। अर्चा। अष्टविध धर्म का प्रथम धर्म।

इज्याशील–संज्ञा पुं० बार-बार यज्ञ करने-वाला। याजक। यज्ञकारी।

इठलाना–क्रि० अ० १. ठसक दिखाना। इतराना। गर्व-सूचक चेष्टा करना। २. मटकना। ३. नखरा करना। ४. छकाने के लिए जान-बूझकर अनजान बनना।

इठलाहट–संज्ञा स्त्री० ठसक। इठलाने का भाव।

इठाई*–संज्ञा स्त्री० १. रुचि। प्रीति। चाह। २. मित्रता।

इड़ा–संज्ञा स्त्री० शरीर के दक्षिण भाग यानी बाईं ओर की नाड़ी। १. भूमि। पृथिवी। २. गाय। ३. स्तुति। ४. वाणी।

५. हवि। अन्न। ६. नभदेवता। ७. अंबिका। दुर्गा। ८. पार्वती। सरस्वती। ९. कश्यप ऋषि की पत्नी, जो दक्ष की एक पुत्री थीं। वैवस्वत मनु की पुत्री। १०. स्वर्ग। ११. आशुगमन। १२. हठयोग की साधना में कथित बाईं ओर की नाड़ी।

इडुरी–संज्ञा स्त्री० एेंड़री। गेंड़री। बीड़ा।

इत†–क्रि० वि० १. इस ओर। यहाँ। इधर। २. इस तरफ।

इतः–अव्य० नियम। पंचमी विभक्ति का अर्थ। विभाग। यहाँ से। इस हेतु।

इतःपर–वि० इसके बाद। इसके अनन्तर। इस पर।

इतना–वि० अवधि का बोधक। परिच्छेदक। इस मात्रा का। इस तरह।

मुहा०—इतने में=इसी बीच में।

इतनों*†–वि० दे० "इतना"।

इतमाम*†–संज्ञा पुं० [अ० इहतिमाम] प्रबंध। बंदोबस्त।

इतमीनान–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इतमीनानी] भरोसा। विश्वास। संतोष।

इतर–वि० १. भिन्न। दूसरा। अपर। और। अन्य। २. नीच। अधम। ३. सामान्य। साधारण।

संज्ञा पुं० दे० "अतर"।

इतरलोक–संज्ञा पुं० दूसरा लोक। परलोक।

इतरविशेष–संज्ञा पुं० अन्य से भिन्न। विभिन्नता। प्रभेद।

इतराजी*–संज्ञा स्त्री० [अ० एतराज] विरोध। नाराजी। बिगाड़।

इतराना–क्रि० अ० १. गर्व करना। २. इठलाना। ठसक दिखाना। ३. मचलना।

इतराया–क्रि० अ० चोचला दिखाया। ठसक दिखाई। मचला।

इतराहट*–संज्ञा स्त्री० गर्व। घमंड। अदा दिखाना। इठलाने का भाव।

इतरेतर–क्रि० वि० १. परस्पर। आपस में। २. अन्यान्य।

इतरेतराभाव–संज्ञा पुं० अन्योन्याभाव। न्यायशास्त्रानुसार एक के गुणों का दूसरे में न होना।

इतरेतराश्रय–संज्ञा पुं० तर्क में एक प्रकार का दोष जो वहाँ होता है जहाँ दो वस्तुओं की सिद्धि परस्पर निर्भर होती है। (न्याय)

इतरेद्युः–अ० दूसरे दिन। अन्य दिन।

इतरौंहाँ*–वि० इतराना। सूचित करनेवाला। जिससे इतराने का भाव प्रकट हो।

इतवार–संज्ञा पुं० रविवार। शनि और सोमवार के बीच का दिन। आदित्यवार।

इतस्ततः–क्रि० वि० अत्र-तत्र। चारों ओर। इधर-उधर।

इताअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञापालन।

इताति*–संज्ञा स्त्री० दे० "इताअत"।

इति–अव्य० समाप्तिसूचक अव्यय।

संज्ञा स्त्री० पूर्णता। समाप्ति। इतना।

यौ०–इतिश्री=समाप्ति। अंत।

इतिकर्त्तव्य–वि० कर्म का अंग। उचित-कर्त्तव्य।

इतिकर्त्तव्यता–संज्ञा स्त्री० १. किसी काम के करने की विधि। २. परिपाटी।

इतिकथा–संज्ञा स्त्री० अर्थशून्य वाक्य। अनपयुक्त बात।

इतिवृत्त–संज्ञा पुं० कहानी। पुरानी कथा। पुरावृत्त।

इतिहास–संज्ञा पुं० वृत्तान्त। पुरावृत्त। उपाख्यान। प्राचीन कथा। व्यतीत घटनाओं और उनमें संबंधित पुरुषों का काल-क्रम से वर्णन।

इतेक†–वि० इतना। इतना ही।

इतो*–वि० [स्त्री० इती] इतना। इस मात्रा का।

इती–अव्य० १. इतना नियम। २. अवधि।

इत्तफ़ाक़–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इत्तफाकिया; क्रि० वि० इत्तफाकन] १. संयोग। अवसर। मौका। २ मेल। मिलाप। ३. एका। सहमति।

मुहा०–इत्तफाक पड़ना=संयोग उपस्थित होना। मौका पड़ना=इत्तफाक से=संयोगवश।

इत्तफ़ाक़न–क्रि० वि० संयोग से। अकस्मात्।

इत्तफ़ाक़िया–क्रि० वि० आकस्मिक।

इत्तला–संज्ञा स्त्री० [अ० इत्तलाअ] १. सूचना। खबर। २. जानकारी।
यौ०–इत्तलानामा=सूचनापत्र।
इत्तहाम–संज्ञा पुं० [अ०] झूठा दोष। तोहमत।
इत्ता, इत्तो*–वि० दे० "इतो"। इतना।
इत्ती–वि० इतना।
इत्थं–क्रि० वि० ऐसे। यों। इस तरह। इस प्रकार। ऐसा।
इत्थंभूत–वि० ऐसा।
इत्थमेव–वि० ऐसा ही।
क्रि० वि० इसी प्रकार मे।
इत्यादि–अव्य० १. आदि। इसी प्रकार अन्य। प्रभृति। २. इससे लेकर और सब। वगैरह।
इत्यादिक–वि० ऐसे ही और दूसरे। इसी प्रकार के अन्य और। आदि।
इत्र–संज्ञा पुं० दे० "अतर"।
इत्रदान–संज्ञा पुं० इत्र रखने का पात्र।
इत्रीफल–संज्ञा पुं० शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह। औषध-विशेष।
इदम्–सर्व० यह। यही। पुरोवर्त्ती।
इधर–क्रि० वि० यहाँ। इस ओर। इस स्थान पर।
मुहा०–इधर-उधर=१. इतस्ततः। यहाँ-वहाँ। २. आस-पास। ३. चारों ओर। सब ओर। इधर-उधर करना=१. हीला-हवाला करना। टाल-मटल करना। २. क्रम भंग करना। उलट-पुल्ट करना। ३. तितर-बितर करना। ४. हटाना। भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना। इधर-उधर की बात=१. सुनी-सुनाई बात। अफवाह। २. बेठिकाने की बात। असंबद्ध बात। इधर की उधर करना या लगाना=झगड़ा लगाना। चुगलखोरी करना। इधर की दुनिया उधर होना=अनहोनी बात का होना। इधर-उधर में रहना=व्यर्थ समय खोना। इधर-उधर होना=१. बिगड़ना। उलट-पुलट होना। २. तितर-बितर होना। भाग जाना।
न–सर्व० 'इस' का बहुवचन।
संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. समर्थ। ३. राजा। ४. पति। ५. ईश्वर। प्रभु। ६. हस्त नक्षत्र। ७. १२ की संख्या। वि० सामर्थ्यवान। समर्थ।
इनकम–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] आमदनी। आय।
इनकम-टैक्स–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] आमदनी पर लगनेवाला कर।
इनकार–संज्ञा पुं० [अ०] अस्वीकार। 'इकरार' का उलटा।
इनफ्लुएंजा–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सर्दी के कारण होनेवाला एक प्रकार का बुखार।
इनसान–संज्ञा पुं० [अ०] मनुष्य। आदमी।
इनसानियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मानवता। मनुष्यत्व। आदमियत। २. सज्जनता। भलमनसी। ३. बुद्धि। शऊर।
इनाम–संज्ञा पुं० [अ० इनआम] उपहार। पुरस्कार।
यौ०–इनाम-इकराम=इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।
इनायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुग्रह। दया। कृपा। २. एहसान।
मुहा०–इनायत करना=कृपा करके देना।
इनारा†–संज्ञा पुं० दे० "इँदारा"। कूप। पक्का कुआँ।
इने-गिने–वि० कुछ। थोड़े से। कतिपय। चुने-चुनाए।
इन्ह*†–सर्व० दे० "इन"।
इप्सु–वि० ईप्सित। इच्छुक। लोभी।
इफरात–संज्ञा स्त्री० [अ०] बहुतायत। अधिकता।
इबरानी–वि० [अ०] यहूदी। जाति-विशेष का आदमी।
संज्ञा स्त्री० फिलस्तीन देश की प्राचीन भाषा।
इबादत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पूजा।
इबारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० इबारती] १ लेख। पाठ। २. लेखन-शैली।
इमदाद–संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।
इमन–संज्ञा स्त्री १. स्वर का मिलन। २. रागिनी-विशेष।
इमन कल्यान–संज्ञा स्त्री रागिनी विशेष।
इमरती–संज्ञा स्त्री० मिठाई-विशेष।
इमली–संज्ञा स्त्री० एक बड़ा पेड़ और उसका

फल। इसकी गूदेदार लंबी फलियाँ खटाई की तरह खाई जाती हैं।

इमाम—संज्ञा पुं० [अ०] १. अगुआ। २. जो मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करावे। ३. अली के बेटों की उपाधि।

इमामदस्ता—संज्ञा पुं० लोहे या पीतल का खल और बट्टा।

इमामबाड़ा—संज्ञा पुं० शीया मुसलमानों के ताजिया रखने और उसे दफनाने का हाता।

इमारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] भवन। बड़ा और पक्का मकान।

इमि*—क्रि० वि० ऐसे। यों। इस प्रकार।

इम्तहान—संज्ञा पुं० [अ०] परीक्षा। जाँच।

इम्रती—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

इम्ली—संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष। फल-विशेष। तिन्तिड़ी। कुचिया। अमली।

इयत्ता—संज्ञा स्त्री० सीमा। हद।

इरशाद—संज्ञा पुं० [अ०] आज्ञा। हुक्म।

इरषा*—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्ष्या"।

इरा—संज्ञा स्त्री० १. कश्यप की स्त्री, जिससे बृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। २. पृथ्वी। भूमि। ३. वाणी। ४. भाषा। ५. जल। ६. सरस्वती। कोई भी पेय। दक्ष की एक पुत्री।

इराक़—संज्ञा पुं० अरब का एक देश।

इराक़ी—वि० [अ०] इराक देश का। इराक देश-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० घोड़ों की जाति-विशेष।

इरादा—संज्ञा पुं० [अ०] संकल्प। विचार। निश्चित की हुई बात।

इरावान—संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. मेघ। ३. राजा। ४. अर्जुन-पुत्र।

इर्द-गिर्द—क्रि० वि० १. इधर-उधर। २. चारों ओर। ३. आस-पास।

इर्षना*—संज्ञा स्त्री० प्रबल इच्छा।

इलज़ाम—संज्ञा पुं० [अ०] १. अभियोग। दोषारोपण। कलंक। अपराध। २. दोष।

इलविला—संज्ञा स्त्री० कुबेर की माता। विश्वश्रवा मुनि की पत्नी।

इलशा—संज्ञा पुं० हिलसा नामक मत्स्य-विशेष।

इलहाम—संज्ञा पुं० [अ०] आकाशवाणी। ईश्वर का शब्द। देववाणी।

इला—संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. वाणी। सरस्वती। ३. पार्वती। ४. गो। ५. वैवस्वत मनु की कन्या। ६. प्रवाह।

इलाक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. रियासत। २. कई मौजों की जमींदारी। ३. संसर्ग। संबंध।

इलाज—संज्ञा पुं० [अ०] १. चिकित्सा। २. औषध। दवा। ३. युक्ति। उपाय।

इलाम*—संज्ञा पुं० [अ० ऐलान] १. आज्ञा। २. इत्तलानामा।

इलायची—संज्ञा स्त्री० एला। तीक्ष्ण सुगंध वाले फल-विशेष के बीज जो मुँह सुगंधित करने के लिए खाए जाते हैं।

इलायचीदाना—संज्ञा पुं० १. चीनी में पागा हुआ इलायची या पोस्ते का दाना। २. इलायची का बीज।

इलावर्त*—संज्ञा पुं० दे० जम्बुद्वीप के नव वर्षान्तर्गत वर्ष-विशेष।

इलावृत—संज्ञा पुं० जम्बूद्वीप के नौ वर्षों में से एक।

इलाही—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर।
वि० दैवी। ईश्वरीय।

इलाही गज़—संज्ञा पुं० [अ०] अकबर-द्वारा प्रचलित गज जो ४१ अंगुल (३३$\frac{3}{4}$ इंच) का होता है और मकान-आदि में नापने के काम में आता है।

इलज़ाम—संज्ञा पुं० [अ०] दोषारोपण। आरोप। अपराध लगाना।

इल्तिजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] निवेदन।

इल्म—संज्ञा पुं० गुण। ज्ञान। विद्या।

इल्लत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बखेड़ा। झंझट। २. रोग। बीमारी। ३. अपराध। दोष।

इल्ला—संज्ञा पुं० छोटी कड़ी फुंसी जो चमड़े के ऊपर निकलती है। मस्सा। मांस-वृद्धि।

इल्ली—संज्ञा स्त्री० चींटी के बच्चों का रूप-विशेष जो अंडे से निकलते ही होता है।

इल्वल—संज्ञा पुं० १. एक दैत्य विशेष का नाम। २. मछली-विशेष।

इल्वला—संज्ञा पुं० मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर के ५ तारों का नाम।

इव–अव्य० १. सदृश। सरीखा। जैसे। समान। नाईं। तरह। २. उपमावाचक शब्द।

इशारा–संज्ञा पुं० अ०] १. संकेत। सैन। २. गुप्त प्रेरणा। ३. सूक्ष्म आधार। ४. संक्षिप्त कथन।

इश्तहार–संज्ञा पुं० [अ०] सूचना। विज्ञापन।

इश्तियालक–संज्ञा स्त्री० [अ०] उत्तेजना। बढ़ावा।

इषण*–संज्ञा स्त्री० दे० "एषणा"।

इषीका–संज्ञा स्त्री० बाण। तीर।

इषु–संज्ञा पुं० १. बाण। शर। तीर। २. काण्ड। ३. पाँचवीं संख्या।

इषुधि या धी–संज्ञा पुं० तूण। बाणाधार। तरकस।

इषुमान–वि० तीरंदाज। बाण चलानेवाला।

इषूपल–संज्ञा पुं० दुर्ग के द्वार पर की तोप जो कंकड़-पत्थर फेंकती है।

इष्ट–वि० १. वांछित। अभिलषित। प्रिय। आशंसित। २. पूजित।

संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्रादि शुभ कर्म्म। संस्कार। २. इष्टदेव। कुलदेव। ३. अधिकार। वश। देवता की छाया या कृपा। ४. मित्र।

इष्टका–संज्ञा स्त्री० ईंट।

इष्टता–संज्ञा स्त्री० इष्ट का भाव।

इष्टदेव, इष्टदेवता–संज्ञा पुं० उपास्य देवता। आराध्य देव। पूज्य देवता।

इष्टापत्ति–संज्ञा स्त्री० वादी के कथन में दिखाई हुई ऐसी आपत्ति जो वादी को अभीष्ट हो। जिससे वादी ही का कथन पुष्ट हो

इष्टापूर्त–संज्ञा पु० लोकोपकारार्थ यज्ञ करना तथा तालाब और कूप-आदि खोदवाना।

इष्टालाप–संज्ञा पुं० अभिलषित या प्रिय कथापकथन।

इष्टि–संज्ञा स्त्री० १. अभिलाषा। इच्छा। २. यज्ञ। याग।

इष्य–संज्ञा पुं० वसन्त ऋतु।

इष्वास–संज्ञा पुं० धनुष। कार्मुक। शरासन।

इस–सर्व० 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप। जैसे, इसको।

इसपंज–संज्ञा पुं० [अंग्रे० स्पंज] समुद्र में एक प्रकार के अत्यंत छोटे कीड़ों के योग से बना हुआ मुलायम रूई की तरह का सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है। मुर्दा बादल।

इसपात–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पक्का लोहा। फौलादी लोहा।

इसबगोल–संज्ञा पुं० [फा०] फारस की झाड़ी या पौधा-विशेष जिसके गोल बीज हकीमी दवा के काम आते हैं।

इसराज–संज्ञा पुं० सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

इसरायल–संज्ञा पुं० यहूदियों का देश जो फिलस्तीन (पैलेस्टाइन) का एक भाग है। यहूदियों ने यहाँ अपना एक पृथक् राज्य कायम कर लिया है।

इसरार–संज्ञा पुं० [अ०] जिद। बार-बार कहना या जोर देना। अनुरोध।

इसलाम–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इसलामिया] मुसलमानों का धर्म।

इसलाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] सुधार। संशोधन।

इसाई–वि० क्रिस्तान। ईसाई।

इसारत*–संज्ञा स्त्री० [अ० इशारा] संकेत।

इसे–सर्व० इसको। 'यह' का कर्म कारक और सम्प्रदान कारक का रूप।

इस्तमरारी–वि० [अ०] नित्य। अविच्छिन्न। अपरिवर्तनशील। सब दिन रहनेवाला।

यौ०–इस्तमरारी बंदोबस्त=जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदा के लिए निश्चित कर दी जाती है।

इस्तिंजा–संज्ञा पुं० [अ०] पेशाब करने के पश्चात् मिट्टी के ढेले से इन्द्रिय की शुद्धि।

इस्तिरी–संज्ञा स्त्री० कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरजियों का औजार।

इस्तीफा–संज्ञा पुं० [अ० इस्तैफा] त्यागपत्र। नौकरी छोड़ने का प्रार्थना-पत्र। किसी पद या संस्था की सदस्यता आदि से अलग होने का पत्र।

इस्तेमाल–संज्ञा पुं० [अ०] व्यवहार। प्रयोग। उपयोग।

इस्त्रि या इस्त्री–संज्ञा स्त्री० कपड़ा चिकनानेका यंत्र, जिससे धोबी कपड़े पर कलफ करते हैं।

इस्थिर–वि० स्थिर। निश्चल। अचंचल।

इस्पात–संज्ञा पुं० पक्का लोहा। खेड़ी। परिष्कृत लौह।

इस्म–संज्ञा पुं० नाम। संज्ञा।

इस्मशरीफ–संज्ञा पुं० शुभ नाम।

इस्म-नवीसी–संज्ञा स्त्री० लोगों के नाम लिखना या लिखाना। अदालत में अपने गवाहों की सूची पेश करना।

इह–क्रि० वि० १. इस काल में। यहाँ। इस जगह। इस लोक में। २. यह सब। इन सब ने। इन्होंने।

इहकाल–संज्ञा पुं० यह काल। यह समय।

इहलीला–संज्ञा स्त्री० इस लोक की लीला या जीवन। जिंदगी।

इहलोक–संज्ञा पुं० यहाँ का लोक। संसार।

इहवाँ–क्रि० वि० यहीं। इस स्थान पर।

इहाँ†–क्रि० वि० दे० "यहाँ"। इस स्थान पर। इस जगह।

ईहि–क्रि० वि० यहाँ। इसमें। इस जगह।

ई–हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर। 'इ' का दीर्घ रूप, जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

संज्ञा पुं०–कन्दर्प। कामदेव।

*सर्व० [ई=निकट का संकेत] यह।

अव्य० जोर देने का शब्द। ही। विषाद। अनुकम्पा। क्रोध। दुःख। भावना। प्रत्यक्ष। सन्निधि।

ईंगुर–संज्ञा पुं० गंधक और पारे से घटित खनिज पदार्थ-विशेष जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुन्दर होती है। सिंगरफ। सिंदूर का भेद।

ईंचना–क्रि० स० दे० "खींचना"।

ईंट–संज्ञा स्त्री० १. ईंटा। साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार उठाई जाती है। २. ताश का रंग-विशेष। ३. धातु का चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा।

मुहा०–ईंट से ईंट बजना=किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वंस होना। ईंट से ईंट बजाना=किसी नगर या घर को ध्वस्त करना। ईंट चुनना=जोड़ाई करना। दीवार उठाने के लिए ईंट पर ईंट बैठाना। डेढ़ या ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना=जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना। ईंट-पत्थर=कुछ नहीं।

ईंटा–संज्ञा पुं० दे० "ईंट"।

ईंडरी–संज्ञा स्त्री० गेंडुरी। कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे बोझ-आदि उठाते समय सिर पर रख लेते हैं।

ईंधन–संज्ञा पुं० जलावन। जलाने की लकड़ी या कंडा। जरनी।

ईकार–संज्ञा पुं० अक्षर-विशेष। ई वर्ण।

ईक्ष–संज्ञा स्त्री० दर्शन। ईक्षण। देखना।

ईक्षक–संज्ञा पुं० अवलोकनकर्त्ता। दर्शक।

ईक्षण–संज्ञा पुं० [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य] १. देखना। दर्शन। २. चक्षु। आँख। ३. दृष्टि। ४. विचार। जाँच। विवेचन।

ईक्षण-श्रवा–संज्ञा पुं० सर्प। चक्षुश्रवा।

ईक्षित–वि० इष्ट। अवलोकित। देखा हुआ।

ईख–संज्ञा स्त्री० गन्ना। ऊख।

ईखना*–क्रि० स० देखना।

ईछन*–संज्ञा पुं० आँख।

ईछना*–क्रि० स० चाहना। इच्छा करना।

ईछा*–संज्ञा स्त्री० "इच्छा"।

ईजाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] आविष्कार। किसी नई चीज का निर्माण।

ईठ*–संज्ञा पुं० १. इष्ट। वांछित। चाहा हुआ। २. मित्र। सखा।

ईठना*–क्रि० स० इच्छा करना।

ईठा–संज्ञा स्त्री० १. स्तुति। स्तव। प्रतिष्ठा। प्रशंसा। २. गुण-कथन। नाड़ी-विशेष।
ईठि–संज्ञा स्त्री० १. प्रीति। २. मित्रता। ३. यत्न। चेष्टा।
ईठी–संज्ञा स्त्री० भाला। बरछा। इष्ट, मित्र। वांछित।
ईठी दाडू–संज्ञा पुं० चौगान खेलने का दंड।
ईडा–संज्ञा स्त्री० स्तुति। प्रशंसा। इड़ा नाम की एक नाड़ी।
ईडित–वि० १. प्रशंसित। जिसकी प्रशंसा की गई हो। २. इच्छित। ३. काम्य।
ईढ़*–संज्ञा स्त्री० १. कुढ़न। २. हठ।
ईतर*–वि० १. ढीठ। शोख। गुस्ताख। २. इतरानेवाला।
वि० निम्न श्रेणी का।
ईति–संज्ञा स्त्री० १. खेती को हानि पहुँचानवाले उपद्रव जो छः प्रकार के हैं—(क) अतिवृष्टि। (ख) अनावृष्टि। (ग) टिड्डी पड़ना। (घ) चूहे लगना। (ङ) पक्षियों की अधिकता। (च) दूसरे राजा की चढ़ाई। २. विघ्न। बाधा। ३. दुःख। पीड़ा। आपदा। ४. अंडा। ५. प्रवास।
ईथर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. समस्त शून्य स्थल में व्याप्त रहनवाला सूक्ष्म और लचीला द्रव्य-विशेष। आकाशद्रव्य। २. रासायनिक द्रव-पदार्थ जो अल्कोहल और गंधक के तेजाब से बनता है।
ईद–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का त्योहार-विशेष जो रोजा खतम होने पर होता है।
यौ०–ईदगाह=वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद के दिन इकट्ठे होकर नमाज पढ़ते हैं।
ईदुआ–संज्ञा पुं० उठकना। टेकना।
ईदृक्–वि० ईदृश। एतत् सदृश। इसके समान। इस प्रकार।
ईदृक्ष–वि० इस प्रकार।
ईदृश–क्रि० वि० [स्त्री० ईदृशी] इस प्रकार। इस तरह। ऐसे। इस रीति से। ईदृक्।
वि० ऐसा। इस प्रकार का।
ईप्सा–संज्ञा स्त्री० [वि० ईप्सित, ईप्सु] चाह। अभिलाषा। इच्छा।

ईप्सित–वि० वांछित। अभीष्ट।
ईप्सु–वि० चाहनेवाला।
ईबी-सीबी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] आनन्द या पीड़ा के समय मुँह से निकलनेवाला सिसकारी या 'सी-सी' का शब्द।
ईमान–संज्ञा पुं० [अ०] १. चित्त की सद्वृत्ति। २. अच्छी नीयत। ३. सत्य। ४. धर्म। ५. धर्म-विश्वास।
ईमानदार–वि० [फा०] १. सच्चा। २. जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा हो। ३. विश्वासपात्र। ४. सत्य का पक्षपाती। ५. विश्वास रखनेवाला।
ईरखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
ईरान–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० ईरानी] फारस देश।
ईरानी–संज्ञा पुं० ईरान देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० ईरान देश की भाषा।
वि० ईरान का। ईरान-सम्बन्धी।
ईर्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० ईर्षालु, ईर्षित, ईर्षु] १. डाह। दूसरे का उत्कर्ष न सहन होने की वृत्ति। जलन। कुढ़न। द्वेष। २. परश्री-कातरता। दूसरे के गुण देखकर उनमें उससे बढ़ जाने की इच्छा।
ईर्षालु–वि० दूसरे की बढ़ती देखकर जलने-वाला। द्वेषयुक्त। ईर्षा करनेवाला।
ईर्षी–संज्ञा पुं० द्रोही। द्वेषी। दूसरे की अभिवृद्धि से जलनेवाला।
ईर्ष्या–संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"। द्वेष।
ईर्ष्यान्वित–वि० १. ईर्ष्याकारी। २. हिंसक।
ईर्ष्यावान्–वि० १. ईर्ष्यान्वित। २. हिंसक।
ईवनिंग-पार्टी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] सन्ध्या-समय दी जानेवाली जलपान की दावत। सांध्य भोज।
ईश–संज्ञा पुं० [स्त्री० ईशा, ईशी] १. प्रभु। स्वामी। ईश्वर। परमेश्वर। २. ऐश्वर्य-शाली। ३. राजा। ४. शिव। महादेव। ५. आर्द्रा नक्षत्र। ६. ग्यारह की संख्या। ७. एक उपनिषद्। ८. पारा। ९. ईशान कोण के अधिपति। १०. कुबेर। ११. पति।
ईशता–संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व। स्वामित्व।
ईश-सखा–संज्ञा पुं० कुबेर। धनपति।

ईशा—संज्ञा पुं० एश्वर्य ।
संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।
ईशान—संज्ञा पुं० [स्त्री० ईशानी] १. अधिपति । २. महादेव । ३. ग्यारह की संख्या । ४. ग्यारह रुद्रों में से एक । ५. पूरब और उत्तर के बीच का कोना । ६. शमी-वृक्ष । ७. शिव की अष्टविध मूर्तियों के अन्तर्गत सूर्य-मूर्ति । ८. विष्णु । ९. दीप्ति ।
ईशान कोण—संज्ञा पुं० उत्तर-पूर्व के मध्य का कोण ।
ईशानी—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । भगवती । ईश्वरी । २. शमी-वृक्ष ।
ईशिता—संज्ञा स्त्री० सिद्धि-विशेष जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है ।
वि० प्रधानता । महत्त्व ।
ईशित्व—संज्ञा पुं० दे० "ईशिता" । सिद्धि-विशेष । प्रभुत्व । आधिपत्य ।
ईश्वर—संज्ञा पुं० [स्त्री० ईश्वरी] १. प्रभु । अधिपति । स्वामी । २. भगवान् । क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक् पुरुष-विशेष । परमेश्वर । ३. समर्थ । ४. शिव । ५. धनी । राजा । ६. पति । ७. ग्यारहवीं संख्या ।
ईश्वरकृत—संज्ञा पुं० ईश्वर-रचित ।
ईश्वरता—संज्ञा स्त्री० ईश्वर का गुण । धर्म या भाव । ईश्वरपन । प्रभुता ।
ईश्वर-निषेध—संज्ञा पुं० नास्तिकता ।
ईश्वर-निष्ठ—वि० ईश्वरभक्त । ईश्वर-परायण । आस्तिक ।
ईश्वर-प्रणिधान—संज्ञा पुं० ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति । योगशास्त्र के पाँच नियमों में से अंतिम ।
ईश्वर-साधन—संज्ञा पुं० १. मुक्ति-साधन । २. योग-साधन ।
ईश्वरा—संज्ञा स्त्री० दुर्गा । लक्ष्मी । सरस्वती । आदि-शक्ति ।
ईश्वराराधन—संज्ञा पुं० परमेश्वर की उपासना । ईश्वर-सेवा ।
ईश्वरी—संज्ञा स्त्री० परदेवता । दुर्गा । भगवती । आद्याशक्ति । महारानी ।
ईश्वरीय—वि० १. ईश्वर का । २. ईश्वर-[illegible] । ३. दैवी ।
ईश्वरोपासक—संज्ञा पुं० परमेश्वर की आराधना करनेवाला । आस्तिक ।
ईश्वरोपासना—संज्ञा स्त्री० परमेश्वर का भजन । ईश्वर की आराधना ।
ईषण—संज्ञा पुं० १. देखना । दृष्टि । २. नेत्र ।
ईषणा—संज्ञा स्त्री० लालसा । वासना । चाह । इच्छा ।
ईषत्—वि० कुछ । थोड़ा । अल्प । किंचित् ।
ईषत्-कर—संज्ञा पुं० अत्यल्प । किंचित् । लेश ।
ईषत्-पाण्डु—संज्ञा पुं० धूसर वर्ण ।
ईषत्-रक्त—संज्ञा पुं० १. लोहित वर्ण । २. अव्यक्त राग ।
ईषत्-वक्र—वि० थोड़ा टेढ़ा ।
ईषत्स्पृष्ट—संज्ञा पुं० वह वर्ण जिसके उच्चारण में तालु, मूर्द्धा और दंत को जिह्वा तथा दाँत ओष्ठ को कम स्पर्श करता है । ('य', 'र', 'ल', 'व' ईषत्स्पृष्ट वर्ण हैं ।) (व्याकरण) ।
ईषत्-हास—संज्ञा पुं० किंचित् हास्य । अत्यल्प मुख-विकास । स्मित । मुस्कान ।
ईषद्—वि० दे० "ईषत्" । अल्प ।
ईषन्—क्रि० स० देखना ।
ईषना*—संज्ञा स्त्री० प्रबल इच्छा ।
ईस*—संज्ञा पुं० दे० "ईश" ।
ईसन*—संज्ञा पुं० ईशान कोण ।
ईसबगोल—संज्ञा पुं० एक प्रकार की दवा दे० "इसबगोल" ।
ईसर*—संज्ञा पुं० ऐश्वर्य ।
ईसरगोल—संज्ञा पुं० दे० "इसबगोल" ।
ईसवी—वि० [फा०] ईसा से संबंध रखनेवाला ।
यौ०—ईसवी सन् । ईसा मसीह के जन्म-काल से चला हुआ संवत् । अँगरेजी वर्ष ।
ईसा—संज्ञा पुं० [अ०] ईसा मसीह जिन्होंने ईसाई धर्म चलाया । ये यहूदी जाति में फिलस्तीन के नाजरथ नामक गाँव में पैदा हुए थे । ईसवी सन् इन्हीं के जन्म से चलाया गया है ।
ईसाई—वि० [फा०] जो ईसा को माने और उनके बताए धर्म पर चले ।
ईस्वी—वि० ईसा के जन्मकाल से आरंभ हुआ संवत् ।

ईहग–संज्ञा पुं० कवि (डिंगल भाषा में)।
ईहा–संज्ञा स्त्री० [वि० ईहित] १. यत्न। चेष्टा। उपाय। उद्योग। २. वांछा। इच्छा। ३. लालच। लोभ। प्रार्थना।
ईहामृग–संज्ञा पुं० १. रूपक का भेद-विशेष, जिसमें चार अंक होते हैं। २. तृष्णा-मृग। ३. कुत्तों के समान छोटा धूसर वर्ण का जन्तु। मृग। ४. भेड़िया।
ईहावृक–संज्ञा पुं० लकड़बग्घा।
ईहित–वि० इच्छित। वांछित।

उ

उ–हिंदी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। प्रजापति। २. शिव। ३. नर
*अव्य० भी। १. संबोधन। रोषोक्ति। नियोग। पादपूरण। प्रश्न। अंगीकार। २. क्षीण स्वर मे उत्तर देना।
उअना*–क्रि० अ० दे० "उगना"। उदय होना।
उअहिं–क्रि० अ० उगते हैं। उदय होते हैं। निकलते हैं।
उआ–वि० उदय हुआ।
उआना*–क्रि० स० दे० "उगाना"।
*क्रि० स० किसी के मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना।
उऋण–वि० जो ऋण से मुक्त हो गया हो। ऋणमुक्त। कर्ज से फारकती पाना।
उए–क्रि० अ० उगे। निकले। उदय हुए। देख पड़े। प्रकाशित हुए।
उँ–अव्य० एक प्रायः अव्यक्त शब्द जो प्रश्न, अवज्ञा या क्रोध सूचित करने के लिए व्यवहृत होता है।
उँगली–संज्ञा स्त्री० अँगुली। हथेली के ऊपरी सिरे से निकले हुए पाँच अवयव जो भिंडी के आकार के होते हैं। ये वस्तुओं को पकड़ते हैं और इनके सिरों पर स्पर्शज्ञान की शक्ति होती है। उँगलियों के नाम क्रमशः अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका हैं।
मुहा०–(किसी की ओर) उँगली उठना=(किसी का) लोगों की निंदा का पात्र होना। बदनाम होना। (किसी की ओर) उँगली उठाना=१. दोषी बताना। निंदा का लक्ष्य बनाना। बदनामी करना। २. हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। टेढ़ी नजर से देखना। उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना=थोड़ा-सा बढ़ावा पाकर अधिक प्राप्ति के लिए आगे बढ़ना। उँगलियों पर नचाना=१. मनचाहा कराना। २. अपनी इच्छा के अनुसार ले चलना। कानों में उँगली देना=किसी बात से उदासीन होकर उसकी चर्चा से बचना। पाँचों उँगलियाँ घी में होना=लाभ ही लाभ होना।
उँघाई–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ", "औंघाई"।
उंचन–संज्ञा स्त्री० अदवान। अदवायन। खाट के बुने हुए भाग को कसकर तानने की रस्सी।
उंचना–क्रि० स० अदवायन कसना।
उँचाना*–क्रि० स० उठाना। ऊँचा करना।
उँचाव*†–संज्ञा पुं० उँचाई।
उँचास*†–संज्ञा पुं० दे० "उँचाई"।
उंछ–संज्ञा स्त्री० सीला बीनना। खेतिहर के ले जाने के बाद खेत में पड़े हुए अन्न के दानों को खाने के लिए बीनना या उठाना।
उंछवृत्ति–संज्ञा स्त्री० खेत में गिरे हुए दानों को बीनकर जीवन-निर्वाह करने का काम।
उंछशिल–संज्ञा पुं० खेत में त्यक्त अन्न का संग्रह।
उंछशील–वि० १. उंछजीवी उंछवृत्ति से जीविका निर्वाह करनेवाला। अति सामान्य कर्म से जीविका निर्वाह करनेवाला। २. मुनि। ऋषि।
उंछित–वि० त्यक्त। वर्जित।
उंझलित–वि० छोड़ा हुआ। डाला हुआ।
उंडेलना–क्रि० स० ढालना। तरल वस्तु को दूसरे बर्तन में डालना। तरल वस्तु को फेंकना या गिराना।
उंबुर–संज्ञा पुं० चूहा।

मुहा० १. आग उगलना=बड़े जोर से क्रोध प्रकट करना। २. बहुत तेज धूप और उसका उत्ताप होना। जहर उगलना=कटु वचन कहना। निंदा या बुराई करना। ऐसी बात मुँह से निकालना जो दूसरे को बहुत बुरी लगे या हानि पहुँचावे।

उगलवाना–क्रि० स० दे० "उगलाना"।

उगलाना–क्रि० स० १. दोष को स्वीकार कराना। २. हड़पे हुए माल को निकलवाना। ३. मुख से निकलवाना।

उगसाना*–क्रि० स० दे० "उकसाना"।

उगसारना*–क्रि० स० कहना। प्रकट करना। बयान करना।

उगाना–क्रि० स० १. अन्न या और किसी वनस्पति को उत्पन्न या पैदा करना। किसी बीज को बोकर सिंचाई आदि से उसके अंकुर का निकालना। २. प्रकट करना। प्रत्यक्ष करना। सामने या ऊपर लाना।

उगार, उगाल*–संज्ञा पुं० १. थूक। खखार। पीक। २. सीठी।

उगालदान–संज्ञा पुं० पीकदान। थूकने का बरतन। थुकना।

उगाहना–क्रि० स० १. वसूल करना। २. नियमित कर, शुल्क या दक्षिणा आदि को निर्धारित समय या उसके बाद लोगों से लेना।

उगाही–संज्ञा स्त्री० १. वसूली। २. रुपया-पैसा अथवा अन्न आदि को वसूल करने का काम। इस प्रकार एकत्रित किया हुआ धन या अन्न।

उगलना या उगिलना–क्रि० स० कै करना। उलटी करना। स्वीकार करना।

उगिलवाना या उगिलाना*–क्रि० स० कै कराना। किसी गुप्त बात को प्रकट कराना, अपराध स्वीकार करवाना।

उग्गाहा–संज्ञा स्त्री० आर्य्या-छंद का भेद-विशेष।

उग्र–वि० शक्तिशाली। भयंकर। उत्कट। प्रचंड। तीक्ष्ण।

संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव की वायु-मूर्ति। २. सूर्य्य। ३. वत्सनाग या बच्छनाग। जहर। ४. केरल देश। ५. क्षत्रिय पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न एक संकर-जाति। ६. क्रोधी। ७. कठिन।

उग्रगन्ध–संज्ञा पुं० १. लहसन। २. हींग। ३. कायफल।

वि० उत्कट गन्ध-युक्त। तीक्ष्ण गन्ध।

उग्रचण्डा–संज्ञा स्त्री० भगवती की मूर्ति-विशेष।

उग्रता–संज्ञा स्त्री० प्रचंडता। कठोरता। भयंकरता।

उग्रतारा–संज्ञा स्त्री० भगवती की मूर्त्ति-विशेष। मातंगिनी।

उग्रसेन–संज्ञा पुं० यदुवंशी राजा। आहुक का पुत्र और कंस का पिता। मथुरा का राजा।

उग्रस्वभाव–वि० कठोर-चित्त। कठिन-हृदय।

उग्रा–संज्ञा स्त्री० अजवायन। अजमोदा। वच। नकछिकनी।

उघटना–क्रि० अ० १. दबी या भूली हुई बात की फिर से चर्चा चलाना। २. अपने बहुत पुराने और भूले हुए उपकार या दूसरे के पुराने अपराध को बार-बार कहना। ३. किसी की निंदा या ताने के रूप में बुराई करते-करते उसके पूर्वजों की भी बुराई करने लगना। ४. ताल देना। सम पर तान तोड़ना।

उघटवाना–क्रि० स० एहसान जताना। ताना देना। एहसान को दूसरे के द्वारा कहलाना।

उघटा–वि० उघटनेवाला। दूसरे पर किए हुए उपकार को बार-बार कहनेवाला। जो एहसान जतावे।

संज्ञा पुं० उघटने का काम।

उघटा-पेची–संज्ञा स्त्री० १. एहसान। २. उलाहना देना।

उघड़ना–क्रि० अ० १. पर्दा हटना। खुलना। आवरण का हटना। २. नंगा होना। ३. प्रकाशित होना। प्रकट होना। व्यक्त होना। ४. भंडा फूटना।

उघरहिं–क्रि० अ० खुलते हैं। खुल जाते हैं। स्पष्ट हो जाते हैं। नंगे हो जाते हैं।

उघरारा*†–वि० [स्त्री० उघरारी] खुला हुआ।

उघरे—क्रि० अ० खुले। प्रकट हुए। प्रकाशित हुए। खुले हुए।

उघाड़ना*—क्रि० स० १. खोलना। ऊपर की चादर या आवरण को हटाना। २. आवरण-रहित करना। (आवृत के संबंध में)। किसी वस्तु या बात का प्रकट करना या खोलना। ३. प्रकट करना। प्रकाशित करना। ४. नंगा करना। ५. भंडा फोड़ना। गुप्त बात को खोलना।

उघाड़ा—वि० खुला हुआ। जिसके ऊपर कोई आवरण न हो।

उघाड़ू—संज्ञा पुं० प्रकाशक। उघाड़नहारा।

उघारना*—क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।

उघारी—वि० खुली हुई। नंगी। स्पष्ट। प्रकट।

उच—अव्य० उच्च। उन्नत। बड़ा।

उचकन—संज्ञा पुं० ईंट-पत्थर, काठ आदि का वह टुकड़ा जिसे किसी चीज को ऊँचा करने के लिए उसके नीचे रख देते हैं।

उचकना—क्रि० अ० १. ऊपर उठना। उभड़ना। कूदना। उछलना। २. पंजों के बल एँड़ी उठाकर खड़ा होना, जिससे इस मुद्रा में खड़ा होनेवाला व्यक्ति कुछ ऊँचा हो जाय।
क्रि० स० लपककर छीनना। उछलकर लेना।

उचकाना—क्रि० स० ऊपर करना। उठाना।

उचक्का—संज्ञा पुं० [स्त्री० उचक्की] १. ठग। गँठकटा। उचककर चीज छीन या उठाकर भागनेवाला व्यक्ति। २. बदमाश। ३. चोर। ४. छली।

उचटना—क्रि० अ० १. उचड़ना। जमी हुई वस्तु का उखड़ना। जमा या चिपका न रहना। २. छूटना। अलग होना। ३. भड़कना। बिचकना। ४. विरक्त होना। उदास होना। ५. बिछलना। ६. बिखरना। ७. (मन) न लगना। ध्यान न लगना।

उचटाना*—क्रि० स० १. नोचना। उचाड़ना। २. छुड़ाना। अलग करना। ३. उदासीन करना। ४. भड़काना।

उचड़ना—क्रि० अ० १. जाना। भागना। किसी स्थान से हटना या अलग होना। २. लगी हुई चीज का अलग होना।

उचना*—क्रि० अ० १. उचकना। ऊँचा होना। २. उठना।
क्रि० स० उठाना। ऊँचा करना।

उचरंग—संज्ञा पुं० पतंग। पतिंगा। भुनगा। उछलने, फुदकने या उड़नेवाला।

उचरना—क्रि० स० उच्चारण करना। कहना। बोलना। (धार्मिक ग्रंथों का) पाठ करना।
क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना।
*—क्रि० अ० दे० "उचड़ना"। धीरे-धीरे चलना। शकुन-विशेष।

उचलना—क्रि० स० बिलगाना। अलग करना।

उचा—क्रि० वि० उठाय। ऊँचा कर। उभार कर।

उचाट—संज्ञा पुं० उदासीनता। किसी काम या वस्तु से चित्त उखड़ जाना। मन का न लगना। विरक्ति।

उचाटन—संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"।

उचाटना—क्रि० स० जी हटाना। विरक्त करना। अलग करना। उच्चाटन करना।

उचाटी*—संज्ञा स्त्री० विरक्ति। उदासीनता। मन न लगने की अवस्था।

उचाड़्—वि० १. उखड़ा हुआ। उचरा। हटा। उचटा हुआ। २. व्यग्र चित्त।

उचाड़ना—क्रि० स० १. उखाड़ना। २. नोचना। लगी या सटी हुई चीजों को एक दूसरे से अलग करना।

उचाना*†—क्रि० स० १. उठाना। २. नीचे से ऊपर को उठाना। ऊँचा करना।

उचापत—संज्ञा पुं० दूकानदार के यहाँ से चीज बराबर उधार लेते रहना।

उचार*—संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।

उचारना*—क्रि० स० मुँह से शब्द निकालना। कहना। उच्चारण करना।
क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।

उचिंत—वि० (वह दी हुई रकम) जिसका हसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो।

उचित—वि० [संज्ञा औचित्य] १. जो ठीक हो। योग्य। मुनासिब। धर्म, न्याय या नियमानुकूल। २. न्यस्त। विदित। ३. परिचित। ४. न्याय। ५. स्वीकार्य।

उघेलना†–क्रि० स० दे० "उकेलना"। उधेरना। अलग करना।

उचोट–संज्ञा पुं० ठोकर। ठेस। चोट।

उचौंहां*–वि० [स्त्री० उँचौंहीं] जो ऊँचा उठा हो।

उच्च–वि० १. ऊँचा। २. बड़ा। श्रेष्ठ। उन्नत। ३. ऊर्ध्व। प्राश। तुंग। उत्तुंग। उच्छ्रित। ऊँचा। गंभीर।

उच्चतम–वि० जो सबसे ऊँचा हो। सबसे श्रेष्ठ।

उच्चतरु–संज्ञा पुं० नारिकेल वृक्ष।
वि०–ऊँचा वृक्ष।

उच्चता–संज्ञा स्त्री० १. बड़प्पन। २. उँचाई। ३. श्रेष्ठता। उत्तमता। बड़ाई। ४. ऊँचा होने का गुण।

उच्चभाषी–वि० जोर से बोलनेवाला। कटुवक्ता। उग्रवक्ता।

उच्चमना–वि० महाशय। सदन्तःकरण। ऊँचे और पवित्र विचार का।

उच्चरण–संज्ञा पुं० [वि० उच्चरणीय, उच्चरित] कंठ, तालु, जिह्वा आदि मुख के भागों से शब्द निकलना।

उच्चरना –क्रि० स० बोलना। उच्चारण करना।

उच्चरित–वि० जिसका उच्चारण हुआ हो। जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो।

उच्च-शिक्षा–संज्ञा स्त्री० उन्नत शिक्षा।

उच्चस्वर–संज्ञा पुं० बड़ा शब्द। दूरव्यापी स्वर।

उच्चाकांक्षा–संज्ञा स्त्री० बड़ी या ऊँची अभिलाषा। महत्त्वाकांक्षा।

उच्चाट–संज्ञा पुं० १. अनमनापन। उदास। २. अरुचि। जिसके द्वारा मन उखड़ जाय। उखाड़ने या नोचने की क्रिया। ३. एक तांत्रिक प्रयोग।

उच्चाटन–संज्ञा[वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित] १. विश्लेषण। एक दूसरे से सटी हुई चीजों को अलग करना। २. नोचना। उखाड़ना। ३. किसी के मन को कहीं से हटाना। (तंत्र के छः प्रयोगों में से एक)। ४. उदासीनता। अनमनापन।

उच्चार–संज्ञा पुं० १. बोलना। कथन। मुँह से शब्द निकालना। किसी कर्मकांड में मंत्रों या श्लोकों का उच्च स्वर से पाठ। यथा—शाखोच्चार। २. विष्ठा। मल। मूत्र। पुरीष।

उच्चारण–संज्ञा पुं० [वि० उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य्य, उच्चार्य्यमाण] १. कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि मुख के अंगों के द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और स्पष्ट ध्वनि निकालना। मुँह से सार्थक शब्द निकालना। शब्द-प्रयोग। २. वर्णों या शब्दों का बोलना। ३. कथन। उल्लेख।

उच्चारणीय–वि० कथनीय। उच्चारण करने योग्य।

उच्चारना*–क्रि० स० (शब्द) बोलना। कहना।

उच्चारित–वि० कथित। जिसका उच्चारण किया गया हो। उक्त। अभिहित।

उच्चार्य्य–वि० कहने लायक। उच्चारण के योग्य।

उच्चाशा–संज्ञा स्त्री० बड़ी या ऊँची आशा। महत्त्वाकांक्षा।

उच्चैः–अव्य० १. उर्ध्व। ऊपर। ऊँचा। २. बड़ा।

उच्चैःशब्द–संज्ञा पुं० उच्च स्वर। चीत्कार। चिल्लाहट।

उच्चैःश्रवा–संज्ञा पुं० खड़े कान और सात मुँह का, समुद्र-मंथन के समय निकला हुआ, सफेद घोड़ा।
वि० बहरा। ऊँचा सुननेवाला।

उच्छन्न–वि० लुप्त। दबा हुआ। गुप्त। छिपा हुआ। प्रच्छन्न।

उच्छरना-क्रि० अ० उछरना। निकलना (जैसे पित्ती उच्छरी है।)

उच्छलन–संज्ञा पुं० [वि० उच्छलित] ऊपर उठने या उछलन की क्रिया। उछाल।

उच्छलना*–क्रि० अ० दे० "उछलना"। उछाल मारना।

उच्छव*–संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।

उच्छाव*–संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"। उमंग। धूमधाम।

उच्छास–संज्ञा पुं० १. श्वास। उसाँस। २. आशा। ३. प्रकरण।

उच्छाह*–संज्ञा पुं० दे० "उछाह"। उत्साह। चित्त की उमंग।

उच्छिन या उच्छिन्न–वि० १. छिन्न-भिन्न। २. उखाड़ा हुआ। ३. टूटा हुआ। खंडित। कटा हुआ। ४. नष्ट।

उच्छिन्नता–संज्ञा स्त्री० नाश। खण्डन।

उच्छिष्ट–वि० १. जूठा। किसी के खाने से बचा हुआ। २. त्यक्त।।३. दूसरे के द्वारा व्यवहृत।

संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शहद।

उच्छिष्ट भोजन–संज्ञा पुं० जूठा भोजन। किसी के खाने से बचा हुआ खाना।

उच्छू–संज्ञा स्त्री० १. खाँसी-विशष जो, गले में पानी-आदि रुकने से होने लगती है। २. सुनसुनी।

उच्छृंखल–वि० १. स्वेच्छाचारी। निरंकुश। मनमाना काम करनेवाला। २. क्रमविहीन। ३. अबाध। अनियंत्रित। ४. अनर्गल। अंडबंड। ५. शृंखला-हीन, छुटा, खुला (हाथी आदि)।

उच्छेद, उच्छेदन–संज्ञा पुं० १. उखाड़-पछाड़। खंडन। उन्मूलन। उत्पाटन। २. विनाश।

उच्छो–संज्ञा पुं० उच्छव। प्रसन्नता का प्रकाश। आनन्द। उछाह। यज्ञ। पूजा। अर्चा।

उच्छ्राय–संज्ञा पुं० पर्वत, वृक्ष-आदि की उच्चता। उच्च परिमाण।

उच्छ्रित–वि० उन्नत। उच्च। ऊँचा। बढ़ा हुआ।

उच्छ्वसित–वि० १. साँस-द्वारा निकाला हुआ। २. प्रफुल्लित। ३. विकसित। ४. फूला या उठा हुआ। ५. जीवित। ६. साँस। ७. ढीला। बंधन-हीन। ग्रंथि-हीन। ८. अत्यधिक। ९. विभक्त। बँटा हुआ।

उच्छ्वास–संज्ञा पुं० [वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासित, उच्छ्वासी] १. जोर से ली या निकाली हुई श्वास या साँस। २. उसास। ऊपर को खींची हुई साँस। ३. मनोवेगों के कारण ली हुई लंबी साँस। ४. प्रकरण। परिच्छेद। ५. झरोखा। हवा-दान।

उछंग*–संज्ञा पुं० १. उत्संग। कनिया। गोद। २. हृदय। अंक।

उछकना–क्रि० अ० नशा उतरना। सचेत होना।

उछरना*†–क्रि० अ० दे० "उछलना"।

उछल-कूद–संज्ञा स्त्री० १. खेल-कूद। २. चंचलता। अधीरता। हलचल। उपद्रव।

उछलना–क्रि० अ० १. कूदना। उछाल मारना। २. वेग से झटके के साथ जल में डुबकी मारने या डूब जाने के बाद जल के ऊपर उठ आना। ३. बहुत प्रसन्न होना। ४. चिह्न पड़ना। उपटना। रोग में दानों या चकत्तों या शीतला के चिह्नों का स्पष्ट दिखाई पड़ना। उभड़ना। ५. उतराना। तरना।

मुहा०–पित्त उछलना=अभिमान करना।

उछलवाना–क्रि० स० उछलने में लगाना। किसी वस्तु को ऊपर फेंकवाना।

उछलाना–क्रि० स० किसी वस्तु को ऊपर फेंकना या फेंकवाना।

उछाँटना–क्रि० स० उचाटना। उदासीन या विरक्त करना।

*क्रि० स० चुनना, छाँटना।

उछाड़–संज्ञा पुं० १. वमन। २. रद्द।

उछारना*–क्रि० स० दे० "उछालना"।

उछाल–संज्ञा स्त्री० १. एकाएक ऊपर उठने की क्रिया। २. कुदान। चौकड़ी। फलाँग। ३. अधिकतम उँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल कर पहुँची हो या पहुँच सकती हो। ४. उलटी। कै। ५. पानी का छींटा ६. दबाव (नीचे से)।

उछालना–क्रि० स० १. ऊपर फेंक कर लोकना। ऊपर की ओर फेंकना। उचकाना। २. प्रकट या प्रकाशित करना। नदी या तालाब में हाथ से पानी का ऊपर या आस-पास फेंकना।

मुहा०–पगड़ी उछालना=अपमान, निंदा या उपहास करना।

उछाला–संज्ञा पुं० १. उबाल। २. जोश।

३. कै। उलटी। ४. 'उछालने' की भूतकालिक क्रिया।

उछाह*–संज्ञा पुं० [वि० उछाही] १. उत्सव। २. उमंग। उत्साह। हर्ष। ३. इच्छा, जिसमें हर्ष हो और काम करने की प्रेरणा हो। ४. जैन लोगों की रथ-यात्रा।

उछाही*†–वि० उत्साही। उत्साहयुक्त। उत्सव या हर्ष मनानेवाला।

उछीनना*–क्रि० स० नष्ट-भ्रष्ट करना। उखाड़ना।

उछीर*–संज्ञा पुं० १. अवकाश। २. स्थान। ३. छेद।

उजट–संज्ञा पुं० झोंपड़ा। तृणों से बना गृह।

उजड़–वि० उतावला। अप्रवीण। उच्छृंखल। चौगान। शून्य। पटपर। जनशून्य स्थान।

उजड़ना–क्रि० अ० [वि० उजाड़] १. उखड़ना-पुखड़ना। नष्ट होना। ध्वस्त होना। २. तितर-बितर होना। गिर-पड़ जाना।

मुहा०–गाँव उजड़ना=किसी स्थान में आबादी का न रहना। घर उजड़ना=घर के प्राणियों का मर जाना या कुपूतों का बाहुल्य होना। खेत उजड़ना=लगी लगाई खेती का नष्ट हो जाना।

उजड़वाना–क्रि० स० [प्रे० रूप] किसी को उजाड़ने में लगाना।

उजड़ा–वि० उजड़ा हुआ। विनष्ट। निकम्मा।

उजड्ड–वि० १. गँवार। मूर्ख। ग्राम्य। असभ्य। अशिष्ट। २. उद्दंड। ३. निरंकुश।

उजड्डपन–संज्ञा पुं० अशिष्टता। असभ्यता। उद्दंडता। बेहूदापन। गँवारपन।

उजबक–संज्ञा पुं० [तु०] १. तातारियों की जाति-विशेष। २. घास-विशेष।
वि० उजड्ड। मूर्ख। अनारी।

उजयार–संज्ञा पुं० उजेला। प्रकाश। चाँदनी। रोशनी।

उजरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किराया। भाड़ा। २. मजूरी।

उजरना*–क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

उजरा*–वि० दे० "उजला"।

उजराना*–क्रि० स० साफ करना या कराना। धोना। सफेद करना। स्वच्छ करना।
क्रि० अ० सफेद या साफ होना।

उजरे–क्रि० वि० उजड़े। वीरान होने से नष्ट हुए। वि० साफ। सफेद। उजले।

उजलत–संज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता। जल्दी।

उजलवाना–क्रि० स० गहने, बर्तन या अस्त्र आदि को साफ करवा के उन्हें चमकवाना।

उजला–वि० [स्त्री० उजली] १. श्वेत। सफेद। २. उज्ज्वल। स्वच्छ। साफ। ३. निर्मल। शुद्ध।

उजवाना–क्रि० स० ढलवाना। उझालना।

उजागर–वि० [स्त्री० उजागरी] १. जगमगाता हुआ। प्रकाशित। चमकीला। २. विख्यात। प्रसिद्ध। ३. यशस्वी।

उजाड़–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जो उजड़ गया है। खँड़हर। २. सूनी जगह। निर्जन स्थान। ३. बियाबान। जंगल।
वि० १. उच्छिन्न। गिरा-पड़ा। २. जो आबाद न हो। निर्जन।

उजाड़-खंड–अत्यन्त उजड़ी हुई अवस्था का स्थान।

उजाड़ना–क्रि० स० १. नष्ट करना। ध्वस्त करना। २. उच्छिन्न करना। चौपट या नष्ट करना। ३. निर्जन कर देना। ४. निर्दयतापूर्वक नष्ट करना।

उजान–संज्ञा पुं० नदी का चढ़ाव। भाटा का उलटा—ज्वार।

उजारि–क्रि० वि० उजाड़कर। नाश करके। मिटाकर।

उजारी–संज्ञा स्त्री० १. नए अन्न के ढेर में से देवता के निमित्त अन्न निकालना। २. शुक्ल-पक्ष की रात।

उजालना–क्रि० स० १. धातु की वस्तुओं को साफ करना। चमकाना। निखारना। २. प्रकट करना। प्रकाशित करना। ३. दीपक जलाना।

उजाला–संज्ञा पुं० [स्त्री० उजाली] १. सूर्य-चन्द्रमा आदि ग्रहों के कारण उत्पन्न नैसर्गिक प्रकाश। चमक। २. अपने वंश

में श्रेष्ठ व्यक्ति। वि० [स्त्री० उजली] प्रकाशवान्। 'अँधेरा' का उलटा।
मुहा०—उजाला होना=भोर होना। घर या वंश का उजाला=वंश की कीर्ति बढ़ानेवाला।
उजाली—संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
उजास—संज्ञा पुं० १. चमक। २. द्युति। ३. उजाला। प्रकाश।
उजासना—क्रि० अ० प्रकाशित होना। चमकना। क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।
उजियर*—वि० दे० "उजला"।
उजियार*—संज्ञा पुं० दे० "उजला"।
उजियारना—क्रि० स० १. दीपक जलाना। २. प्रकट या प्रकाशित करना।
उजियारा*—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"। प्रकाश। चाँदनी।
उजियारी—संज्ञा स्त्री० चाँदनी। सफ़ेदी। श्वेतता।
उजियाला—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उजीता—वि० प्रकाशमान।
संज्ञा पुं० प्रकाश।
उजीर*†—संज्ञा पुं० दे० "वजीर"।
उजेर*—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उजेरा (व्रज—उजेरो)—संज्ञा पुं० उजाला।
उजेला—संज्ञा पुं० चाँदनी। प्रकाश।
वि० प्रकाशवान यथा उजेला पाख।
उज्जर†*—वि० दे० "उज्ज्वल"।
उज्जल—उज्ज्वल।
उज्जयिनी—संज्ञा स्त्री० उज्जैन। अवन्ती। मालवा देश की पुरानी राजधानी जो सिप्रा नदी के तट पर है और जिसकी गिनती सप्तपुरियों में है।
उज्जैन—संज्ञा पुं० "उज्जयिनी" का संक्षिप्त और प्रचलित रूप।
उज्र—संज्ञा पुं० [अ०] १. आपत्ति। २. किसी बात का नियमानुसार विरोध करना या विरोध में वक्तव्य देना।
उज्रदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी ऐसे मामले में विरोध करना, जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चाहता हो। वादी के कथन पर या न्यायाधीश के पूछने पर नियमानुसार मौखिक या लिखित विरोधी वक्तव्य देना। २. न्यायाधीश की किसी आज्ञा पर नियमानुसार आपत्ति।
उजृम्भित—वि० प्रफुल्ल। विकसित। प्रस्फुटित।
संज्ञा पुं० चेष्टा। अन्वेषण।
उज्ज्वल—वि० [संज्ञा उज्ज्वलता] १. स्वच्छ। शुभ्र। निर्मल। शुद्ध। २. प्रकाशमान। ३. बेदाग। ४. सफेद। सुन्दर। दीप्त। ५. सोना। ६. प्रेम। प्रेम का आवेग।
उज्ज्वलता—संज्ञा स्त्री० १. चमक। कांति। २. निर्मलता। ३. शुद्धता। ४. सफेदी।
उज्ज्वलन—संज्ञा पुं० [वि० उज्ज्वलित] १. प्रकाश। चमक। २. जलना। ३. स्वच्छ करने का काम। चमकना। ४. उद्दीपन। अग्नि। सोना।
उज्ज्वला—संज्ञा स्त्री० बारह अक्षरों की वृत्तिविशेष। जगती छंद का एक भेद।
उझकना*—क्रि० अ० छिपकर ताकना या देखना। ताकना। झाँकना।
उझकून—संज्ञा पुं० ओट। ठेंगन। उचकन।
उझरना—क्रि० अ० ऊपर की ओर उठना। नीचे गिरना। रिसना।
उझलना—क्रि० स० १. उँडेलना। किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से गिराना। ढालना। २. रिक्त करना।
*क्रि० अ० १. उमड़ना। २. बढ़ना।
उझिला—भूनी हुई सरसों जो उबटन के काम में आती है।
वि० कम गहरा। छिछला।
उटकन—वि० संकेत। इंगित। प्रसंग। प्रस्ताव।
उटंकित—वि० संकेतित। चिह्नित। उल्लेखित। उत्थापित।
उटंगन—संज्ञा पुं० एक घास-विशेष जिसका साग खाया जाता है। चौपतिया। सुसना। गुठुवा। एक नदी का नाम।
उट—संज्ञा पुं० तृण। तिनका। ऊर्ष। पत्ता।
उटंग—संज्ञा पुं० वह कपड़ा जो पहनने में छोटा हो।
उटकना*—क्रि० स० १. अनुमान करना। २.

छिटकना। ३. छेड़ने पर बिगड़ना या क्रुद्ध होना।

उटक्करलस–वि० अविवेचक। उतावला।

उटज–संज्ञा पुं० पर्णशाला। झोपड़ी। पत्तों से बना घर।

उट्ठी–संज्ञा स्त्री० खेल में या लाग-डाँट में बुरी तरह हार मानना।

मुहा०–उट्ठी बोलना=हार की स्वीकारोक्ति।

उठँगन–संज्ञा पुं० १. आधार। आश्रय। आड़। टेक। चाँड़। 'लकड़ी, बाँस या बल्ली, जो किसी वस्तु को सहारा देने के लिए लगाई जाय। २. बैठने में पीठ को सहारा दे वाली वस्तु।

उठँगना–क्रि० अ० १. टेक लेना। किसी वस्तु का शरीर को सहारा देना। २. आधा लेटना।

उठँगाना–क्रि० स० १. भिड़ाना। २. (किवाड़) भेड़ना। किवाड़ लगाना या किसी वस्तु को खड़ा रखने के लिए उसमें किसी अन्य वस्तु का सहारा या टेक देना।

उठना–क्रि० अ० १. लेटी हुई स्थिति से बैठी हुई स्थिति में, और बैठी हुई स्थिति से खड़े होने की स्थिति में आना। ऊँचा होना। २. जागना। जाग जाना। नींद छोड़ना। ३. ऊँचे की ओर बढ़ना। ४. मर जाना। ५. खर्च हो जाना; जैसे रुपया उठना। ६. किसी विचार या वस्तु (जैसे पीड़ा) का उत्पन्न या पैदा होना। ७. प्रकट होना। जैसे घटा या फोड़ा उठना। ८. स्पष्ट होना। जैसे अक्षर उठना। ९. बंद या समाप्त होना। जैसे किसी प्रथा, दूकान या हाट का उठना। १०. जानवरों का जोड़ा खाने के योग्य अवस्था में आना। ११. मैदे में खमीर तैयार होना। सड़ना। १२. किराये पर लग जाना। १३. खड़ा होना। क्रमशः ऊँचा होना। १४. उद्यत या तैयार होना। १५. खड़ा होना।

मुहा०–हूक उठना=तीव्र वेदना के साथ किसी का या किसी के अभाव का सहसा स्मरण। उठना-बैठना=साथ-संग। उठते-बैठते=हर समय। उठती जवानी=आरंभिक जवानी या यौवनावस्था।

उठल्लू–वि० १. आवारा। बेकार घूमनेवाला। २. अस्थिर। चपल। चंचल। ३. किसी एक जगह पर स्थिर न रहनेवाला।

मुहा०–उठल्लू चूल्हा=निकम्मा। बेकार घूमनेवाला व्यक्ति।

उठवाना–क्रि० स० दूसरे से उठाने का काम कराना।

उठा–क्रि० अ० १. उभरा। २. खड़ा हुआ। ३. निकला। ४. जमा। ५. उत्पन्न हुआ।

उठाईगीर उठाईगीरा–वि० १. उचक्का। चाई। २. बिना सेंध लगाए या किसी अस्त्र का प्रयोग किये लोगों की आँख बचाकर दूसरे के माल को लेकर चम्पत होनेवाला व्यक्ति। निम्न श्रेणी का चोर।

उठान–संज्ञा स्त्री० १. उठने की क्रिया। उन्नति। वृद्धि। उदय। २. बढ़ने का ढंग। बाढ़। वृद्धि-क्रम।

उठाना–क्रि० स० १. नीचे से ऊपर ले जाना। २. बेंड़ी स्थिति से खड़ी स्थिति में करना। जैसे, लेटे हुए प्राणी को बैठाना। ३. कुछ काल तक ऊपर लिये रहना। ४. धारण करना। ५. जगाना। ६. निकालना। ७. उत्पन्न करना। ८. आरम्भ करना। छेड़ना। जैसे–बात उठाना। ९. तैयार या उद्यत करना। १०. मकान या दीवार आदि बनाना। ११. किसी दूकान या कारखाने को बंद करना। १२. किसी प्रथा का तोड़ना। १३. लगाना। खर्च करना। १४. झेलना। सहन करना। १५. किराये पर देना। १६. अनुभव करना। १७. शिरोधार्य करना। मानना। १८. किसी वस्तु को हाथ में लेकर शपथ लेना। १९. अलग करना।

मुहा०––उठा रखना=बाकी रखना। कसर छोड़ना। पूरा प्रयत्न न करना।

उठा देना–दूर करना। भाड़े पर देना।

उठाव–संज्ञा पुं० दे० "उठान"।

उठौआ–वि० दे० "उठौवा"। जिसका कोई स्थान निर्दिष्ट न हो। जो चल हो, हटाया या बढ़ाया जा सके (उठौआ पैखाना)।

उठौनी—संज्ञा स्त्री० १. उठाने का काम। २. उठाने की मजदूरी। ३. अगौहा। दादनी। वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिए पेशगी दिया जाय। ४. उधार का लेन-देन। ५. लगन-धरौआ। छोटी जातियों में वर की ओर से कन्या के घर विवाह दृढ़ करने के लिए भेजा जानेवाला द्रव्य। ६. वह धन या अन्न जो संकट पड़ने पर किसी देवता की पूजा के उद्देश से अलग रखा जाय। ७. रीति-विशेष जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर मृतक के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते हैं और पुरुषों को पगड़ी बाँधते हैं।

उठौवा—वि० १. उठाया जानेवाला। २. अनिश्चित स्थानवाला।

उड़*—संज्ञा पुं० दे० "उड़ु"।

उड़ंकू—वि० १. उड़ैया। जो उड़ सके। उड़नेवाला। २. डोलनेवाला। चलने-फिरनेवाला।

उड़चलना—क्रि० अ० अकड़ना। इतराना।

उड़ती—संज्ञा पुं० १. अस्थिर। अनिश्चित। अप्रामाणिक। २. अमूलक। ३. जनश्रुति।

उड़न—संज्ञा स्त्री० उड़ान। उड़ने की क्रिया।

उड़नखटोला—संज्ञा पुं० विमान। उड़नेवाला खटोला।

उड़नछू—वि० चंपत। गायब।

उड़नझाँई—संज्ञा स्त्री० चकमा। बहाली। बुत्ता।

उड़नफल—संज्ञा पुं० वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति पैदा हो।

उड़ना—क्रि० अ० १. पक्षियों आदि का आकाश में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. आकाश-गमन। आकाश-मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३. हवा में ऊपर उठना। जैसे—गुड्डी उड़ रही है। ४. इधर-उधर हो जाना। छितराना। फैलना। ५. हवा में फैलना। जैसे—छींटा उड़ना। ६. फहराना। फरफराना। जैसे—पताका उड़ना। ७. भागना। तेज चलना। ८. कटकर दूर जा पड़ना। झटके के साथ अलग होना। ९. अलग होना। उधड़ना। छितराना। १०. खर्च होना। ११. लापता होना। गायब होना। १२. किसी भोग्य वस्तु का भोगना। १३. आमोद-प्रमोद की वस्तु का काम में आना। १४. रंग आदि का फीका होना। धीमा पड़ना। १५. भुलावा देना। बातों में बहलाना। चकमा देना। १६. लगना। किसी पर मार पड़ना। १७. घोड़े का चौफाल कूदना। १८. कूदना। फलाँग मारना (कुश्ती)।

क्रि० स० कूदकर पार करना। फलाँग मारकर किसी वस्तु को लाँघना।

मुहा०—उड़ चलना=१. तेज दौड़ना या भागना। २. शोभित होना। ३. स्वादिष्ठ बनना। मजेदार होना। ४. कुमार्ग स्वीकार करना। ५. गर्व करना। उड़ती खबर=किंवदन्ती। उड़कर खाना=१. उड़-उड़कर काटना। २. बुरा या अप्रिय लगना।

उड़नी—वि० फैलनी। जैसे चेचक या हैजे की बीमारी। छूतवाली।

उड़प—संज्ञा पुं० नृत्य का एक भेद। दे० 'उड़ुप'

उड़व—संज्ञा पुं० रागों की जाति-विशेष। वह राग जिसमें केवल पाँच स्वर लगें।

उड़वाना—क्रि० स० उड़ाने में लगाना।

उड़सना—क्रि० अ० १. चारपाई या बिस्तर उठाना। २. नष्ट होना। भंग होना।

उड़ाऊ—वि० १. जो उड़ सके। उड़नेवाला। २. अपव्ययी। ३. लुटाऊ। खर्चीला।

उड़ाक, उड़ाका, उड़ाकू—वि० १. उड़नेवाला। जो उड़ सके। २. ले भागनेवाला। अपहरणकर्त्ता।

उड़ान—संज्ञा स्त्री० १. उड़ने का काम। कुदान। २. छलाँग। ३. उतनी दूरी जितनी एक दौड़ में तय कर सकें। *४ गट्टा। कलाई। पहुँचा। ५. पक्षियों की चाल।

उड़ाना—क्रि० स० १. किसी उड़नेवाली वस्तु या जीवों को उड़ने में लगाना। २. हवा में फैलाना; जैसे—धूल उड़ाना। ३. काटकर दूर फेंकना। झटके के साथ अलग करना। ४.

हटाना। दूर करना। ५. चुराना। हजम करना। ६. खर्च करना। लुटाना। बरबाद करना। ७. नष्ट करना। मिटाना। ८. चट करना। खाने-पीने की चीज को खूब खाना-पीना। ९. भोग्य वस्तु को भोगना। १०. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। ११. चरका या भुलावा देना। बात टालना। १२. प्रहार करना। मारना। लगाना। १३. झूठा अपराध लगाना। १४. किसी विद्या को उसके आचार्य्य से छिपाकर सीख लेना।

उड़ाना-पुड़ाना–१. लुटाना । २. गँवाना । ३. अपव्यय करना । ४. नाश करना।

उड़ायक*–वि० जो उड़ावे।

उड़ावहिं–क्रि० स० १. उड़ाते हैं। २. भगाते हैं। ३. नाश करते हैं।

उड़ास*–संज्ञा स्त्री० १. वास-स्थान। २. महल।

उड़ासना–क्रि० स० १. बिस्तर उठाना। बिछौने को समेटना।*† २. उजाड़ना। किसी चीज को तहस-नहस करना। ३. बैठने या सोने में बाधा डालना।

उड़ाहीं–क्रि० अ० उड़ते हैं। उड़ जाते हैं

उड़िया–वि० उड़ीसावासी।

उड़ियाना–संज्ञा पुं० २२ मात्राओं का छंद-विशेष।

उड़िस–संज्ञा पुं० खटमल। खटकीरा।

उड़ी–संज्ञा स्त्री० कलाबाजी। एक प्रकार की कसरत।

उड़ीसा–संज्ञा पुं० भारत का एक राज्य या प्रदेश। उत्कल देश।

उड़ेरना, उड़ेलना–क्रि० स० दे० "उंडेलना" एक बर्तन से दूसरे बर्तन में डालना।

उड़ेनी*–संज्ञा स्त्री० जुगनू।

उड़ौंहाँ–वि० उड़नेवाला।

उडंबर–संज्ञा पुं० ऊमर। गूलर।

उड–संज्ञा स्त्री० १. पक्षी । २. नक्षत्र। ३. पानी। ४. मल्लाह। केवट।

उडगण–संज्ञा पुं० नक्षत्रगण । तारे।

उडु–संज्ञा पुं० नक्षत्र। राशि।

उडुप–संज्ञा पुं० १. आधा चंद्रमा (जो नाव जैसा लगता है)। २. नाव। ३. घड़नई या घंडई। ४. बड़ा गरुड़। ५. भिलावाँ। नृत्य-विशेष।

उडुराज–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

उडुपथ–संज्ञा पुं० आकाश। गगन।

उडुपति–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

उडुस–संज्ञा पुं० खटकीरा। खटमल।

उड्डयन–संज्ञा पुं० उड़ना।

उड्डयन-विभाग–संज्ञा पुं० राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे हवाई जहाजों तथा हवाई यातायात आदि की व्यवस्था हो।

उड्डस–संज्ञा पुं० खटमल। खटकीरा। उड़िस।

उड्डीन–संज्ञा पुं० उड़ना। परवाज होना। पक्षियों के उड़ने का एक प्रकार-विशेष।

उड्डीयमान–वि० [स्त्री० उड्डीयमती] १. आकाशगामी। उड़नेवाला। नभचर। २. उड़ता हुआ।

उढ़कना–क्रि० अ० १. सहारा लेना। टेक लगाना। औंधाना। भिड़ाना। २. रुकना। ठहरना।

उढ़काना–क्रि० स० भिड़ाना। किसी के सहारे खड़ा करना।

उढ़ना–संज्ञा पुं० कपड़ा-लत्ता। ओढ़नी।

उढ़रना–†क्रि० अ० विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ भाग जाना।

उढ़री–संज्ञा स्त्री० उपपत्नी। रखेली स्त्री। सुरैतिन।

उढ़ाना–क्रि० स० दे० "ओढ़ाना"। आच्छादन करना। ढँकना। पहिनाना।

उढ़ारना–क्रि० स० दूसरे की स्त्री को भगा ले जाना।

उढ़ावनी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ओढ़नी"।

उढ़ेलना–क्रि० स० १. ढालना। २. उलझना।

उढ़ैया–संज्ञा पुं० उढ़ानेवाला। ढँकनेवाला।

उतंक–संज्ञा पुं० १. ऋषि-विशेष जो वेद-मुनि के शिष्य थे। २. ऋषि-विशेष जो गौतम के शिष्य थे।
वि०* ऊँचा।

उतंग*–वि० १. ऊँचा। २. बलंद । उच्च। श्रेष्ठ।

उतंत*–वि० पैदा । उत्पन्न।

उत*–क्रि० वि० उस ओर । वहाँ। उधर। उस तरफ।

उतथ्य–संज्ञा पुं० मुनि-विशेष। अंगिरा का पुत्र।

उतथ्यानुज–संज्ञा पुं० बृहस्पति।
उतन*–क्रि० वि० उस ओर।
उतना–वि० १. उतना ही। उस मात्रा का। उत्ता। परिमाण-विशेष। २. उस कदर।
उतपानना*–क्रि० स० पैदा करना। उपजाना। क्रि० अ० उत्पन्न होना।
उतमंग*–संज्ञा पुं० सिर।
उतर*–संज्ञा पुं० दे० "उत्तर"।
उतरन–संज्ञा स्त्री० पहने हुए पुराने कपड़े।
उतरन-पुतरन–संज्ञा स्त्री० पहिने हुए फटे-पुराने वस्त्र।
उतरना–क्रि० अ० १. ऊँचे स्थान से नीचे आना। २. अवनति पर होना। कम होना। ढलना। ३. शरीर में किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४. कांति या स्वर का फीका पड़ना। उदास होना। ५. वर्ष. मास या नक्षत्र-विशेष का समाप्त होना। ६. उद्वेग या उग्र प्रभाव का दूर होना। ७. थोड़ा-थोड़ा किया जानेवाला काम पूरा होना। जैसे मोजा उतरना। ८. भाव का कम होना। ९. ऐसी वस्तु का बनना या तैयार होना जो खराद या साँचे पर चढ़ाकर बनाई जाय। १०. भर आना। संचारित होना। जैसे—थन में दूध उतरना। ११. बच्चों का मरना। १२. नकल होना। खिंचना। अंकित होना। १३. टिकना। ठहरना। डेरा करना। १४. भभके में खिंचकर तैयार होना। १५. अवतार लेना। जन्म लेना। १६. उखड़ना। १७. पहनी हुई वस्तु का अलग होना। १८. तौल में पूरा होना। १९. किसी बाजे की कसन का ढीला होना जिससे उसका स्वर विकृत हो जाता है। २०. सफाई के साथ कटना। २१. वसूल होना। आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों ओर घुमाया जाना। २२. अधिक पक जाना। स्वाद बिगड़ जाना। जैसे—आम उतर गया है। मुहा०—उतरकर=निम्न श्रेणी का। घट-कर। नीचे दरजे का। चित्त से उतरना=१. भूल जाना। २. अप्रिय लगना। नीचा जँचना। चेहरा उतरना=मुख मलिन होना। मुख पर उदासी छाना।
क्रि० स० १. नदी, नाले या पुल का पार करना। २. किनारे पहुँचना।
उतरवाना–क्रि० स० उतारने का काम करना और कराना।
–वि० उत्तर दिशा के देश का वासी।
क्रि० अ० १. उतरते हैं। नीचे आते हैं। २. ठहरते हैं। विश्राम करते हैं।
उतराई–संज्ञा स्त्री० १. नदी के पार उतारने का कर। २. ढालू जमीन। उत्तर दिशा से आनेवाली हवा। ३. ऊपर से नीचे आने की क्रिया।
उतराना–क्रि० अ० १. पानी की सतह पर तैरना। पानी के ऊपर आना। २. उबलना। ३. हर जगह दिखाई देना। प्रकट होना। क्रि० अ० "उतारना" क्रिया प्रे० रूप।
उतरायल–वि० किसी के द्वारा पहनकर उतारा हुआ कपड़ा।
उतराव–संज्ञा पुं० उतार। ढाल।
उतराहौं†–क्रि० वि० उत्तर की ओर।
उतला–वि० उतावला। व्यस्त। व्याकुल। व्यग्र।
उतलाना†*–क्रि० अ० जल्दी करना।
उतान–वि० चित। सीधा। पीठ को जमीन पर लगाए हुए।
उताना–वि० १. छिछला। २. उलटा। औंधा। विपरीत।
उतायल*–वि० शीघ्रता।
उतायली–संज्ञा स्त्री० दे० "उतावली"।
उतार–संज्ञा पुं० १. ढाल। २. उतरने का काम। ३. क्रमशः नीचे की ओर झुकना। ४. उतरने योग्य जगह। ५. किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना। ६. कमी। घटाव। ७. हिलान। नदी में हल-कर पार करने योग्य स्थान। ८. समुद्र का भाटा। ९. न्योछावर। उतारा। १०. परि-हार। वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का दोष दूर हो। ११. निकृष्ट। उतारन।
उतारन–संज्ञा स्त्री० १. पहना हुआ। पुराना। २. निछावर। ३. निकृष्ट वस्तु।
उतारना–क्रि० स० १. ऊँचे स्थान से नीचे

स्थान में लाना। २. (चित्र) खींचना। प्रतिरूप बनाना। ३. नकल करना। ४. लगी या लिपटी हुई वस्तु को अलग करना। उधेड़ना। ५. पहनी हुई चीज को अलग करना। ६. टिकाना। ठहराना। ७. उतारा करना। किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमाकर भूत-प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। ८. निछावर करना। ९. वसूल करना। १०. किसी उग्र प्रभाव को मिटाना। ११. पीना। घूँटना। १२. मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जानेवाली वस्तु को तैयार करना। १३. बाजे-आदि की कसन को ढीला करना। १४. भभके से खींचकर तैयार करना या खौलते पानी में किसी वस्तु का सार निकालना। १५. नशा दूर करना। १६. वजन में पूरा करना। १७. पार्ट अदा करना। १८. पूरियाँ बनाना।

उतारा–संज्ञा पुं० १. डेरा डालने या टिकने का काम। २. पड़ाव। उतरने की जगह। ३. नदी पार करने की क्रिया।
संज्ञा पुं० १. उतारे की वस्तु या सामग्री। २. प्रेत-बाधा या रोग की शांति के लिए किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना।

उतारि–क्रि० स० उतारकर। गिराकर। नीचे रखकर। पदच्युत कर।

उतारू–वि० तैयार। उद्यत।

उताल*–क्रि० वि० जल्दी। शीघ्र।
संज्ञा पुं० ढीठा। ऊँचा।
संज्ञा स्त्री० शीघ्रता।

उताली*–संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता। जल्दी। २. उतावली।
क्रि० वि० जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक।

उतावल*–क्रि० वि० शीघ्रता से। जल्दी जल्दी।

उतावला–वि० [स्त्री० उतावली] १. जल्दबाज। जल्दी मचानेवाला। २. व्यग्र। घबराया हुआ। ३. भड़भड़िया।

उतावली–संज्ञा स्त्री० १. जल्दबाजी। शीघ्रता। २. चंचलता। ३. व्यग्रता। ४. फुर्तीलापन।

उताहल–क्रि० वि० जल्दी से।

उतृण–वि० १. उऋण। ऋण से मुक्त। २. जिसने उपकार का बदला चुका दिया हो।

उत*–क्रि० वि० उधर। वहाँ।

उत्कंठ–वि० जिसे उत्कंठा हो। दे० "उत्कंठित"।

उत्कंठा–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्कंठित] १. तीव्र अभिलाषा। प्रबल इच्छा। २. रस में संचारी भाव-विशेष। ३. किसी काम के करने में देर न सहकर उसे चटपट करने की इच्छा। ४. अन्यमनस्कता,। ५. व्याकुलता। औत्सुक्य। उद्वेग। विशेष चाह। पूर्णेच्छा।

उत्कंठित–वि० १. चाव से भरा हुआ। उत्सुक। व्याकुल। लालायित। २. उद्विग्न।

उत्कंठिता–संज्ञा स्त्री० संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका-विशेष। उद्विग्ना। उत्का। चिन्तान्विता।

उत्क–वि० १. उन्मना। अन्यमनस्क। २. उद्विग्न। ३. इच्छुक। उत्कण्ठित।

उत्का–नायिका जो प्रिय के संकेत स्थान पर न आने से तर्क-वितर्क करती हो।

उत्कट–वि० १. विकट। तीव्र। उग्र। विषम। कठिन। दुस्सह। कठोर। अधिक। दुःसाध्य। २. मत्त। नशे में चूर। पागल। अभिमानी। ३. हाथी का मद बहना।

उत्कर्ण–वि० [संज्ञा स्त्री० उत्कर्णता] जो सुनने के लिए कान खड़ा करे।

उत्कर्ष–संज्ञा पुं० १. प्रशंसा। २. उत्तमता। श्रेष्ठता। ३. समृद्धि। उन्नति। ४. उग्रता। जोर।
वि० १. अत्यधिक। श्रेष्ठ। २. अतिशयोक्तिपूर्ण। ३. आकर्षक। आत्मप्रशंसी।

उत्कर्षता–संज्ञा स्त्री० १. उत्तमता। बड़ाई। २. श्रेष्ठता। ३. अधिकता। बहुतायत। ४. समृद्धि।

उत्कल–संज्ञा पुं० उड़ीसा देश।

उत्कलिका–संज्ञा स्त्री० १. उत्कंठा। मन का उद्वेग। व्याकुलता। तरंग। लहर। २. फूल की कली। ३. बड़े-बड़े समासवाला गद्य।

उत्कलित—वि० १. तरंगों से युक्त। लहराता हुआ। २. खिला हुआ। ३. उत्कंठित। उद्विग्न। अनमना।
उत्कीर्ण—वि० १. लिखा हुआ। २. खुदा हुआ। ३. क्षत। छिदा हुआ।
उत्कुण—संज्ञा पुं० १. खटकीरा। खटमल। २. जूं। बालों का कीड़ा।
उत्कृति—संज्ञा स्त्री० १. २६ की संख्या। २. २६ वर्णों के वृत्तों का नाम।
उत्कृष्ट—वि० १. श्रेष्ठ। उत्तम। सर्वोत्तम। २. अतिशय। ३. प्रकृष्ट। आकृष्ट। खिंचा हुआ।
उत्कृष्टता—संज्ञा स्त्री० १. उत्तमता। श्रेष्ठता। बड़प्पन। २. अच्छापन।
उत्कोच—संज्ञा पुं० घूंस।
उत्क्रान्त—वि० जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण किया गया हो। ऊपर की ओर चढ़नेवाला। उत्पन्न।
उत्क्रांति—संज्ञा स्त्री० १. मृत्यु। मरण। २. क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर झुकाव।
उत्क्रोश—संज्ञा पुं० १. पक्षी-विशेष। कुररी। टिट्टिभि। राजपक्षी। २. चिल्लाहट।
उत्खनन—संज्ञा पुं० खोदने की क्रिया। खोदाई।
उत्खात—वि० उन्मूलित। उत्पाटित। उखाड़ा हुआ।
संज्ञा पुं० छिद्र। गह्वर।
उत्खाता—वि० खोदनेवाला।
उतंग*—वि० दे० "उत्तुंग"। ऊँचा। बुलन्द।
उतंस*—संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"। १. कर्णपूर। कनफूल। कर्णाभरण। २. शेखर। शिरोभूषण। आभूषण।
उत*—संज्ञा पुं० १. संदेह। २. भ्रम। ३. आश्चर्य।
उत्तप्त—वि० १. खूब तपा हुआ। तप्त। उष्ण। दग्ध। २. पीड़ित। दुःखी। संतप्त। ३. चिन्तित।
उत्तप्तता—संज्ञा स्त्री० उष्णता। सन्ताप।
उत्तम—वि० [स्त्री० उत्तमा] १. श्रेष्ठ। सबसे अच्छा। भद्र। उत्कृष्ट। २. प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० १. नायक-भेद। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र। ३. प्रथम।
उत्तमतया—क्रि० वि० भली भाँति। अच्छी तरह।
उत्तमता—संज्ञा स्त्री० १. उत्कृष्टता। श्रेष्ठता। २. उत्कर्ष। ३. सौन्दर्य। ४.भलाई।
उत्तमत्व—संज्ञा पुं० अच्छापन। उत्कृष्टता।
उत्तमपद—संज्ञा पुं० श्रेष्ठपद। उच्चपद।
उत्तमपुरुष—संज्ञा पुं० सर्वनाम-विशेष जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है। जैसे "मैं", "हम"।
उत्तमर्ण—संज्ञा पुं० महाजन। जो ऋण दे।
उत्तमश्लोक—वि० यशस्वी। कीर्तिशाली।
संज्ञा पुं० यश। कीर्ति।
उत्तम संग्रह—संज्ञा पुं० सम्यक् संग्रह। एकान्त में परस्त्री का आलिंगन। बातचीत।
उत्तम साहस—संज्ञा पुं० १. अतिशय साहस। २. दुःसाहस। ३. दण्ड-विशेष।
उत्तमा—संज्ञा स्त्री० उत्कृष्टा नारी। श्रेष्ठा।
उत्तमांग—संज्ञा पुं० मस्तक। सिर। मुण्ड।
उत्तमा दूती—संज्ञा स्त्री० दूती-विशेष जो नायक या नायिका को किसी न किसी तरह समझा-बुझाकर मना लावे।
उत्तमा नायिका—संज्ञा स्त्री० स्वकीया नायिका-विशेष, जो पति के प्रतिकूल होने पर भी अनुकूल रहे।
उत्तमोत्तम—वि० अतिश्रेष्ठ। परमोत्कृष्ट। अच्छे से अच्छा।
उत्तमौजा—वि० उत्तम तेज या बलवाला।
संज्ञा पुं० १. युधामन्यु का भाई। २. मनु के दस पुत्रों में से एक।
उत्तर—संज्ञा पुं० १. उदीची। दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। २. प्रतिवचन। किसी प्रश्न या बात को सुनकर उसके समाधान के लिए कही हुई बात। जवाब। पलटा। समाधान। ३. बहाना। मिस। हीला। बनाया हुआ जवाब। ४. बदला। प्रतिकार। ५. काव्यालंकार-विशेष जिसमें उत्तर सुनकर प्रश्न का अनुमान किया जाता है। ६. एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही में उत्तर होता है अथवा बहुत-से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।

वि० १. बाद का। पिछला। २. ऊपर का ३. श्रेष्ठ। उत्तम।
क्रि० वि० १. पीछे । बाद। पश्चात्। अनन्तर। २. श्रेष्ठ। ३. भविष्य। ४. फल। नतीजा।

उत्तरकाल—संज्ञा पुं० भविष्यत् काल। आगामी समय।

उत्तर काशी—संज्ञा स्त्री० हरिद्वार के उत्तर का स्थान-विशेष।

उत्तर कुरु—संज्ञा पुं० जम्बुद्वीप के नव वर्षों में से एक वर्ष।

उत्तर-कोशल या कोशला—संज्ञा पुं० १. अवध। अयोध्या के आस-पास का देश। २.अयोध्या नगरी।

उत्तरक्रिया—संज्ञा स्त्री० १. सांवत्सरिक श्राद्ध आदि पितृ-कर्म। अंत्येष्टि-क्रिया। २. प्रतिवचन-दान।

उत्तरच्छद—संज्ञा पुं० आच्छादन-वस्त्र। पलँगपोश।

उत्तरदाता—संज्ञा पुं० [स्त्री० उत्तरदात्री] १. उत्तरदायी। वह जिससे किसी कार्य के बनने-बिगड़ने पर पूछ-ताछ की जाय। जवाबदेह। जिम्मेदार। २. अधिकारी जिस पर कार्य-भार हो।

उत्तरदायित्व—संज्ञा पुं० १. जिम्मेदारी। २. जवाबदेही।

उत्तरदायी—वि० [स्त्री० उत्तरदायिनी] उत्तर देनेवाला। जवाबदेह। जिम्मेदार।

उत्तरपक्ष—संज्ञा पुं० शास्त्रार्थ में सिद्धांत-विशेष जिससे पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन या समाधान हो। विचार-विशेष। जवाब की दलील।

उत्तरपथ—संज्ञा पुं० देवयान। वह मार्ग, जिस पर पुण्यात्मा जीव मरने के बाद जाता है।

उत्तरपद—संज्ञा पुं० किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द।

उत्तर-प्रत्युत्तर—संज्ञा पुं० वाद-विवाद। तर्क।

उत्तर-फाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० नक्षत्र-विशेष। बारहवाँ नक्षत्र।

उत्तरभाद्रपद—संज्ञा पुं० छब्बीसवाँ नक्षत्र।

उत्तरमीमांसा—संज्ञा स्त्री० वेदांत-दर्शन (वेद के द्वितीय भाग अर्थात् ज्ञान-कांड का विवेचक दर्शन)।

उत्तरा—संज्ञा स्त्री० अभिमन्यु की स्त्री। परीक्षित की माता। उत्तर दिशा।

उत्तराखंड—संज्ञा पुं० भारतवर्ष का उत्तरी भाग जो हिमालय के पास है।

उत्तराधिकार—संज्ञा पुं० किसी के मरने के उपरान्त उसकी संपत्ति का स्वत्व। वरासत।

उत्तराधिकारी—संज्ञा पुं० [स्त्री० उत्तराधिकारिणी] वह जो किसी की मृत्यु होने पर उसकी संपत्ति का अधिकारी हो। वारिस।

उत्तराभास—संज्ञा पुं० झूठा उत्तर। अंडबंड जवाब (स्मृति)।

उत्तरायण—संज्ञा पुं० १. वह छः महीने का समय, जिसके बीच सूर्य्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है। २. माघ से लेकर छः महीना। ३. मकर-रेखा से उत्तर कर्क-रेखा की ओर सूर्य्य की गति। ४. देवताओं का दिन।

उत्तरार्द्ध—संज्ञा पुं० पीछे का अर्द्ध भाग। पिछला आधा।

उत्तराषाढ़ा—संज्ञा स्त्री० इक्कीसवाँ नक्षत्र।

उत्तराहा—वि० उत्तर दिशा का।

उत्तरीय—संज्ञा पुं० ओढ़ना। दुपट्टा। चद्दर। वि० १. ऊपरवाला। ऊपर का। २. उत्तर दिशा-संबंधी। उत्तर दिशा का।

उत्तरोत्तर—क्रि० वि० १. एक के बाद एक। एक के पीछे दूसरा। क्रमशः। लगातार। बराबर। २. आगे-आगे।

उत्ता—वि० दे० "उतना"।

उत्तान—वि० चित। सीधा। पीठ को जमीन पर लगाये हुए। उन्मुख। ऊर्ध्वमुख।

उत्तानपात्र—संज्ञा पुं० तावा। रोटी सेंकने का पात्र।

उत्तानपाद—संज्ञा पुं० राजा-विशेष जो स्वायंभुव मनु के पुत्र और ध्रुव के पिता थे।

उत्तानशय—वि० १. बहुत छोटा लड़का। २. चित्त सोनेवाला।

उत्ताप—संज्ञा पुं० [वि० उत्तप्त, उत्तापि] १ तपन। गर्मी। उष्णता। २. कष्ट। पीड़ा। वेदना। ३. सन्ताप। शोक। दुःख। ४. क्षोभ।

उत्ताल–वि० १. उत्कट। २. महत्। श्रेष्ठ। ३. भयानक। ४. त्वरित।
उत्तिष्ठमान–वि० उत्थानशील। वर्द्धनशील। वर्द्धमान।
उत्तीर्ण–वि० १. जो पार चला गया हो। २. पारंगत। ३. मुक्त। ४. परीक्षा में कृत-कार्य्य। ५. उपनीत।
उत्तुंग–वि० उच्च। उन्नत। बहुत ऊँचा। उर्ध्व। वृद्धिगत (जैसे लहर)।
उत्तू–संज्ञा पुं० [फा०] १. औजार-विशेष जिसे गरम करके कपड़े पर बेल-बूटों या चुनट के निशान डालते हैं। २. बेल-बूटे का काम। ३. तह जमाना। चुनना। पर्त लगाना।
मुहा०–उत्तू करना=बहुत मारना। शिथिल करना।
वि० नशे में चूर। बदहवास।
उत्तेजक–वि० १. प्रेरक। उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला। २. वेगों को तेज करनेवाला।
उत्तेजन–संज्ञा पुं० दे० "उत्तेजना"।
उत्तेजना–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १. बढ़ावा। प्रेरणा। प्रोत्साहन। २. वेगों को तीव्र करने का काम।
उत्तेजित–वि० १. प्रेरित। पुनः-पुनः आदेशित। २. उत्तेजना से भरा हुआ। तीक्ष्ण किया हुआ (चाकू आदि)।
उत्तोलन–संज्ञा पुं० १. तानना। २. ऊँचा करना। ३. तौलना।
उत्थवना*–क्रि० स० प्रारंभ करना। अनुष्ठान करना।
उत्थान–संज्ञा पुं० १. उठने का काम। २. उठान। ३. आरंभ। ४. समृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ५. आँगन। ६. सेना।
उत्थान एकादशी–संज्ञा स्त्री० देवठान एकादशी। कार्त्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।
उत्थापन–संज्ञा पुं० १. तानना। २. ऊपर उठाना। ३. हिलाना। ४. जगाना। प्रश्न का उत्तर (गणित)।
उत्थित–वि० १. उत्पन्न। २. उठा हुआ।
उत्थितांगुलि–संज्ञा स्त्री० १. अँगुली फैलाया हुआ पंजा। २. थप्पड़।
उत्पतन–संज्ञा पुं० अर्ध्वगमन। ऊपर उड़ना। पक्षी का उड़ना।
उत्पति–संज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।
उत्पतित–वि० ऊपर गया हुआ। उर्ध्व गमन किया हुआ।
उत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्पन्न] १. जन्म। उद्भव। २. उद्गम। ३. सृष्टि। ४. प्रारंभ।
उत्पत्तिशाली–वि० १. जन्म-विशिष्ट। २. जो उत्पन्न होता है।
उत्पथ–संज्ञा पुं० १. कुमार्ग। २. कुमार्गगमन।
उत्पन्न–वि० [स्त्री० उत्पन्ना] १. पैदा। जन्मा हुआ। २. निकला हुआ। अंकुरित।
उत्पन्ना–संज्ञा स्त्री० अगहन बदी एकादशी का नाम।
उत्पल–संज्ञा पुं० १. कमल। नील कमल। २. नरक-विशेष।
वि० बिना मांस का, मांस-हीन।
उत्पाटन–संज्ञा पुं० [वि० उत्पाटित] १. उखाड़ना। उन्मूलन। २. ऊधम। खोटाई। शैतानी। बदमाशी।
उत्पात–संज्ञा १. उपद्रव। कष्ट पहुँचानेवाली आकस्मिक घटना। २. हलचल। अशांति। ३. ऊधम। अन्धेर। दंगा। शरारत। दुष्टता।
उत्पातग्रस्त–वि० उपद्रव-युक्त।
उत्पाती–संज्ञा पुं० [स्त्री० उत्पातिन] उत्पात करनेवाला। उपद्रवी। नटखट। शरारती।
उत्पादक–वि० [स्त्री० उत्पादिका] जनक। उत्पत्तिकर्त्ता। उत्पन्न करनेवाला।
उत्पादन–संज्ञा पुं० [वि० उत्पादित] उपजाना। उत्पन्न करना। जनन। पैदा करना।
उत्पादिका–संज्ञा स्त्री० १. जननी। माता। २. प्रत्येक पदार्थ में एक प्रकार की शक्ति जिसे उत्पादिका-शक्ति कहते हैं।
उत्पीड़न–संज्ञा पुं० [वि० उत्पीड़ित] १. सताना। क्लेश पहुँचाना। २. दबाना।
उत्प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्प्रेक्ष्य] १. आरोप। उद्भावना। २. अर्थालंकार-

वि———————————————
विशेष जिसमें भेद-ज्ञान-पूर्वक उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है। जैसे, "मुख मानो चंद्रमा है।" ३. सादृश्य। ४. अनुमान। ५. उपमा। ६. ढील। ७. अनवधान।

उत्प्रेक्षोपमा–संज्ञा स्त्री० अर्थालंकार-विशेष जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का बहुतों में पाया जाना वर्णित होता है। (केशव)।

उत्प्लवन–संज्ञा पुं० कूदना। लाँघना।

उत्फाल–संज्ञा पुं० लाँघना। कूदना।

उत्फुल्ल–वि० १. प्रफुल्ल। विकसित। खिला हुआ। २. आनन्दित। खुला हुआ। फूला हुआ। ३. चित। उत्तान।

उत्यक्त–वि० १. वर्जित। २. परित्यक्त। छोड़ा हुआ।

उत्संग–संज्ञा पुं० १. अंक। गोद। क्रोड़। अंग। कोला। २. बीच। मध्य भाग। ३. ऊपर का भाग। वि० विरक्त। निर्लिप्त।

उत्सन्न–वि० १. हत। नष्ट। २. उत्थित। उत्पतित।

उत्सर्ग–संज्ञा पुं० [वि० उत्सर्गी, औत्सर्गीय, उत्सर्ग्य] १. विसर्जन। त्याग। छोड़ना। २. समाप्ति। ३. न्योछावर। दान। साधारण नियम (व्याकरण)।

उत्सर्ग-पत्र–संज्ञा पुं० १. दानपत्र। २. कार्य-त्यागपत्र।

उत्सर्जन–संज्ञा पुं० [वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट] १. उत्सर्ग। छोड़ना। त्याग। २. दान। वितरण। ३. वैदिक कर्म-विशेष।

उत्सर्पण–संज्ञा पुं० १. चढ़ाव। ऊपर चढ़ना। २. लाँघना। उल्लंघन। ३. पास जाना।

उत्सर्पिणी– संज्ञा स्त्री० काल की वह अवस्था जिसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श इन चारों की क्रम से वृद्धि होती है (जैन)।

उत्सव–संज्ञा पुं० १. धूम-धाम। उच्छव। उछाह। मंगल-कार्य्य। २. मंगल-समय। पर्व। त्योहार। ३. विहार। आनंद। ४. यज्ञ। पूजा, अर्चा आदि।

उत्सव-जनक–वि० आह्लादजनक। प्रमोद-जनक। आनन्दकारी।

उत्सादन–संज्ञा पुं० १. उच्छेदकरण। २. विनाश। छिन्न-भिन्न करना।

उत्सादित–वि० १. विनाशित। छिन्न-भिन्न कृत। २. निर्मलीकृत शरीर।

उत्सारक–संज्ञा पुं० द्वारपाल। चोबदार। हटाने-वाला।

उत्सारण–संज्ञा पुं० दूरीकरण। दूसरे स्थान में भेजना। हटाना।

उत्साह–संज्ञा पुं० [वि० उत्साहित, उत्साही] १. उमंग। जोश। हौसला। २. साहस। (वीर-रस का स्थायी भाव) ३. अध्य-वसाय। ४. उद्योग। उद्यम।

उत्साहवर्द्धन–संज्ञा पुं० उद्यम-वृद्धि।

उत्साहशील–वि० उद्योगी। उद्यमी।

उत्साहान्वित–वि० उत्साहयुक्त। उद्यमी।

उत्साहित–वि० उत्साहशाली। प्राप्तोत्साह।

उत्साही–वि० उत्साह से भरा हुआ। हौसलेवाला।

उत्सुक–वि० १. बहुत इच्छुक। उत्कंठित। २. चाही हुई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में लगा हुआ।

उत्सुकता–संज्ञा स्त्री० १. किसी कार्य में देरी न सहकर उसमें लगना। (एक संचारी भाव)। २. इच्छा। आकुलता।

उत्सूर–संज्ञा पुं० सन्ध्या-काल। शाम।

उत्सृष्ट–वि० छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। त्यक्त।

उत्सेध–१. बढ़ती। वृद्धि। उन्नति। २. ऊँचाई। ३. सूजन।
वि० ऊँचा। श्रेष्ठ। उत्तम।

उथपना*–क्रि० स० १. उखाड़ना। उजाड़ना। नष्ट करना। २.उठाना।

उथलना–क्रि० अ० १. डाँवाडोल होना। डगमगाना। चलायमान होना। २. उलटना। औंधना। उलट-पुलट होना। ३. पानी का कम या उथला होना।
क्रि० स० इधर-उधर करना। नीचे-ऊपर करना।

उथल-पुथल–संज्ञा स्त्री० नीचे-ऊपर। उलट-पुलट। विपर्य्यय। क्रम-भंग।
वि० अंड का बंड। उलट-पुलट। इधर का उधर।

उथला–वि० छिछला। कम गहरा।

उदंत–वि० १. पोपला। २. तुण्ड। (चौपायों के लिए) अदंत। बिना दाँत के।
संज्ञा पुं० वार्त्ता, समाचार, खबर, वृत्तांत।
उद्–उप० उपसर्ग-विशेष जो शब्दों के पहले लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता उत्पन्न करता है–ऊपर; जैसे–उद्गमन। अतिक्रमण; जैसे–उत्तीर्ण। उत्कर्ष; जैसे–उद्बोधन। प्राबल्य; जैसे–उद्वेग। प्राधान्य; जैसे–उद्देश। अभाव; जैसे–उत्पथ। प्रकाश; जैसे–उच्चारण। दोष; जैसे–उन्मार्ग।
उदक–संज्ञा पुं० सलिल। जल। पानी।
उदकक्रिया–संज्ञा स्त्री० जलतर्पण-क्रिया। तिलांजलि।
उदकना*–क्रि० अ० कूदना।
उदकपरीक्षा–संज्ञा स्त्री० प्राचीन समय की शपथ का भेद-विशेष, जिसमें शपथ लेनेवाले को अपने वचन की सचाई प्रमाणित करने के लिए जल में एक निर्दिष्ट समय तक डूबना पड़ता था।
उदक्य–वि० अपवित्र। अशुचि।
संज्ञा पुं० पानी में होनेवाला धान।
उदक्या–संज्ञा स्त्री० रजस्वला (स्त्री)।
उदगयन–संज्ञा पुं० उत्तरायण।
उदगद्रि–संज्ञा स्त्री० हिमालय पहाड़।
वि० उच्च। ऊँचा।
उदगरना†–क्रि० अ० १. बाहर होना। निकलना। २. उभड़ना। ३. प्रकट होना।
उदगर्गल–संज्ञा पुं० विद्या-विशेष जिससे स्थान, विशेष में कितने हाथ की दूरी पर जल है, इसका ज्ञान प्राप्त हो।
उदगार*–संज्ञा पुं० दे० "उद्गार"।
उदगारना*–क्रि० स० १. बाहर निकालना या फेंकना। २. उत्तेजित करना। भड़काना। उभाड़ना।
उदगारी*–वि० उगलनेवाला। बाहर निकलनेवाला।
उदग्र–वि० उच्च। ऊँचा। विशाल। बड़ा। उद्दंड। विकट। तीव्र। तेज।
उदग्ग–*वि० १. उन्नत। ऊँचा। २. उग्र। प्रचंड। ३. उद्धत।
उदघटना–क्रि० स० उदय होना। प्रकट होना। निकलना।
उदघाटना–क्रि० स० १. प्रकट या प्रकाशित करना। २. खोलना।
उदघाटी–क्रि० स० १. खोली। उघारी। २. प्रकाशित की।
संज्ञा स्त्री० उदयाचल पर्वत की घाटी।
उदथ*–संज्ञा पुं० सूर्य।
उदधि–संज्ञा पुं० १. जलधि। समुद्र। २. मेघ। ३. घड़ा।
उदधिमेखला–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। भूमि।
उदधिसुत–संज्ञा पुं० १. अमृत। २. चंद्रमा। ३. कमल। ४. शंख। ५. पदार्थ जो समुद्र से उत्पन्न हो।
उदधिसुता–संज्ञा स्त्री० १. सीप। २. लक्ष्मी।
उदन्वान्–संज्ञा पुं० समुद्र। पयोधि। वारिनिधि।
उदपान–संज्ञा पुं० १. कूप के समीप का गड्ढा। २. कमण्डलु।
उदबस*–वि० १. सूना। उजाड़। २. जो एक स्थान पर न रहता हो। खानाबदोश।
उदबासना–क्रि० स० १. उजाड़ना। २. रहने में विघ्न-बाधा डालना। भगा देना। ३. तंग करके स्थान से हटाना।
उदबेग–संज्ञा पुं० उद्वेग।
उदभव–संज्ञा पुं० "उद्भव"।
वि० पागल।
उदमदना*–क्रि० अ० पागल या उन्मत्त होना।
उदमाद–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।
उदमादी–वि० पागल। दे० "उन्मत्त"।
उदमानना*–क्रि० अ० उन्मत्त होना। पागल होना।
उदय–संज्ञा पुं० [वि० उदित] १. निकलना। प्रकट होना (विशेषतः ग्रहों के लिए)। २. ऊपर आना। ३. उन्नति। बढ़ती। वृद्धि। ४. धनलाभ। ५. उत्पत्ति। प्रादुर्भाव। उपज। ६. उद्गम-स्थान। उदयाचल। ७. प्राची। ८. दीप्ति।
मुहा०–उदय से अस्त तक=सारी पृथ्वी में। पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक।
उदयकाल–संज्ञा पुं० १. प्रभातकाल। २. सर्प-विशेष।
उदयगिरि–संज्ञा पुं० उदयाचल पर्वत।
उदयन–संज्ञा पुं० १. प्रकाश होना। ऊर्ध्वगमन।

२. अगस्त्य मुनि। ३. एक राजा जिनकी राजधानी प्रयाग के पास कौशाम्बी थी। इनकी रानी का नाम वासवदत्ता था, वत्सराज और उदयन दोनों नाम से ये प्रसिद्ध हैं। ४. १२वीं शताब्दी के प्रसिद्ध दार्शनिक पांडव उदयनाचार्य, जिनकी कन्या लीलावती उस समय विख्यात पंडिता थी।

उदयना*–क्रि० अ० उदय होना।

उदयाचल–संज्ञा पुं० उदयगिरि। पुराणानुसार पूर्व दिशा का पर्वत-विशेष जहाँ से सूर्य्य निकलता है।

उदयातिथि–संज्ञा स्त्री० वह तिथि जो सूर्योदय-काल में हो।

उदयाद्रि–संज्ञा पुं० उदयाचल। पूर्वपर्वत।

उदयास्त–संज्ञा पुं० १. प्रभात से सन्ध्या-पर्यन्त। २. उदय से अस्त लों। ३. पूर्व से पश्चिम तक।

उदरंभर, उदरंभरि–संज्ञा पुं० केवल अपना पेट भरनेवाला। पेटू। स्वार्थी।

उदर–संज्ञा पुं० १. जठर। पेट। २. भीतर का भाग। ३. पेटा। कसी वस्तु के बीच का भाग। मध्य। गर्भ।

उदर-ज्वाला–संज्ञा स्त्री० भूख। जठराग्नि।

उदरना*–क्रि० अ० दे० "ओदरना"।

उदरभंग–वि० १. अतिसार। २. पेट की

उदररस–संज्ञा पुं० उदरस्थित पाचक रस।

उदररोग–संज्ञा पुं० जठर व्याधि-विशेष। पेट की पीड़ा।

उदरवृद्धि–संज्ञा स्त्री० जलोदर रोग। जलंधर।

उदरसर्वस्व–वि० उदरपरायण। पेटू। स्वार्थी।

उदराग्नि–वि० जठरानल। पचाने की शक्ति।

उदरामय–संज्ञा पुं० उदररोग। पेट की पीड़ा। उदरभंग। अतिसार।

उदरावर्त–संज्ञा पुं० नाभि।

उदरिण–वि० तोंदवाला।

उदरिणी–संज्ञा स्त्री० गर्भिणी। द्विजीवा। दुपस्था।

उदरिल–वि० उदरिण। तोंदीला।

उदरी–वि० उदरिण। उदरिल। तोंदीला। तोंदवाला।

उदवत–वि० निकलता हुआ। उगता हुआ।

उदवना–क्रि० अ० दे० "उगना"। प्रकट होना। निकलना।

उदवेग–संज्ञा पुं० "उद्वेग"।

उदसन–क्रि० अ० १. उजड़ना। २. अंडबंड होना। क्रमभंग होना। तितर-बितर होना।

उदसना*–वि० दे० "उदसन"।

उदात्त–वि० १. ऊँचे स्वर से उच्चरित। २. कृपालु। दयावान्। ३. उदार। दाता। ४. बड़ा। महान्। श्रेष्ठ। ५. विशद। स्पष्ट। ६. योग्य। समर्थ।

संज्ञा पुं० १. वेद के स्वर के उच्चारण का भेद-विशेष जिसमें तालु-आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है। २. उदात्त स्वर। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन खूब बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है। ४. दान। ५. नायक-विशेष। ६. मनोहर। ७. उपहार। ८. बड़ा नगारा। ९. आलंकारिक भाषण। १०. प्रिय, इष्ट, प्रेमपात्र।

उदाता–वि० १. दाता। २. उदार।

उदान–संज्ञा पुं० १. प्राण-वायु का भेद-विशेष जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छींक आती है। २. उदरावर्त। ३. नाभि। ४. सर्प-विशेष।

उदायन*–संज्ञा पुं० बगीचा। बाग।

उदार–वि० [संज्ञा उदारता] १. ऊँचे दिल का। २. श्रेष्ठ। बड़ा। ३. सीधा। सरल। ४. दानशील। दाता। महात्मा। एक अलंकार-विशेष (साहित्य)।

उदारचरित–वि० शीलवान्। उदार चरित्र-वाला।

उदारचेता–वि० उदार चित्तवाला।

उदारता–संज्ञा स्त्री० १. उच्च विचार रखना। २. दानशीलता। ३. सरलता। ४. वदान्यता।

उदारत्व–संज्ञा पुं० दातृत्व। दानशीलता।

उदारना–क्रि० स० १. दे० "ओदारना"। २. चीरना। फाड़ना। तोड़ना। ३. गिराना।

उदाराशय–वि० जिसके विचार और उद्देश्य ऊँचे हों। उदार आशयवाला। महात्मा। महापुरुष।

उदावर्त–संज्ञा पुं० गुदग्रह। काँच। गुदा का रोग-विशेष जिसमें काँच निकल आती है और मल-मूत्र रुक जाता है।

उदास–वि० १. जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो। विरक्त। २. सर्वस्वत्यागी। दु:खी। सुस्त। ३. तटस्थ। झगड़े से अलग।

उदासना–क्रि० अ० उदास होना। चित्त न लगना।
क्रि० स० उजाड़ना। तितर-बितर करना।

उदासी–संज्ञा पुं० १. त्यागी पुरुष। विरक्त पुरुष। २. एकान्तवासी। संन्यासी। ३. नानकशाही साधुओं का भेद-विशेष।
संज्ञा स्त्री० १. दु:ख। २. खिन्नता।

उदासीन–वि० [स्त्री० उदासीना; संज्ञा उदासीनता] १. जिसका चित्त हट गया हो। २. झगड़े-बखेड़े से विरक्त। ३. निसंग। ४. रूखा। उपेक्षायुक्त। प्रेमशून्य। ममतारहित। ५. निष्पक्ष। तटस्थ। ६. संन्यासी। समदर्शी।

उदासीनता–संज्ञा स्त्री० १. त्याग। २. निर्द्वन्द्वता। निरपेक्षता। ३. उदासी। खिन्नता। ४. विरक्ति।

उदासीबाजा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का भोंपा बाजा।

उदाहर–वि० धुँधला रंग। भूरा।

उदाहरण–संज्ञा पुं० १. निदर्शन। उपमा। दृष्टांत। मिसाल। २. न्याय में तर्क के पाँच अवयवों में से तीसरा।

उदाहृत–वि० दृष्टान्त दिया हुआ। उत्प्रेक्षित। उक्त। कथित।

उदियाना*–क्रि० अ० उद्विग्न होना। घबराना।

उदित–वि० [स्त्री० उदिता] १. निकला हुआ। जो उदय हुआ हो। २. प्रकाशित। प्रकट। जाहिर। ३. स्वच्छ। उज्ज्वल। ४. प्रसन्न। प्रफुल्लित। ५. कथित।

उदितयौवना–संज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका। वह कन्या जिसने यौवन में पदार्पण किया हो।

उदीची–संज्ञा स्त्री० उत्तर दिशा।

उदीच्य–वि० १. उत्तर दिशा का। २. उत्तर का रहनेवाला। ३. शरावती नदी के पश्चिमोत्तर देश।
संज्ञा पुं० वैताली छंद का भेद-विशेष।

उदीयमान–वि० [स्त्री० उदीयमाना] जिसका उदय हो रहा हो। उठता हुआ। उमड़ता हुआ।

उदीरण–संज्ञा पुं० कथन। उच्चारण। वाक्य।

उदीरित–वि० १. उच्चारित। २. उक्त। कथित।

उदुंबर–संज्ञा पुं० [वि० औदुंबर] १. गूलर। २. नपुंसक। ३. ड्योढ़ी। देहली। ४. कोढ़-विशेष। डूमर।

उदूखल–संज्ञा पुं० उलूखल। ओखली। गूगल।

उदूलहुक्मी–संज्ञा स्त्री० [फा०] आज्ञा का उल्लंघन करना। आज्ञा न मानना।

उदेग*–संज्ञा पुं० दे० "उद्वेग"।

उदो*–संज्ञा पुं० दे० "उदय"।

उदोत*–संज्ञा पुं० प्रकाश। वि० १. दीप्त। प्रकाशित। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. शुभ्र।

उदोती*–वि० [स्त्री० उदोतिनी] प्रकाशक। जो प्रकाश करे।

उदौ*–संज्ञा पुं० दे० "उदय"।

उद्गत–वि० १. निकला हुआ। उत्पन्न। प्रकट। जाहिर। २. उदित। उत्थित। फैला हुआ। व्याप्त। वर्धित।

उद्गम–संज्ञा पुं० १. आविर्भाव। उदय। २. निकास। मखरज। उत्पत्ति का स्थान। उद्भव-स्थान। ३. नदी के निकलने का स्थान।

उद्गमन–संज्ञा पुं० ऊर्ध्वगमन। ऊपर जाना। प्रकट होना।

उद्गाता–संज्ञा पुं० १. सामवेदज्ञ। सामवेद गायक। २. यज्ञ में चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है।

उद्गाथा–संज्ञा स्त्री० आर्या-छंद का भेद-विशेष।

उद्गार–संज्ञा पुं० [वि० उद्गारी, उद्गारित] १. किसी की गुप्त बातों को प्रकट करना। २. बहुत दिनों से मन में रखी हुई बात एकबारगी कहना। ३. उबाल। उफान। ४. उलटी। कै। ५. डकार। ६. थूक। कफ। ७. आधिक्य। बाढ़। ८. घोर शब्द। गर्जन।

उद्गारी–वि० [स्त्री० उद्गारिणी] १. प्रकट करनेवाला। २. जो उगले। बाहर निकालनेवाला।

उद्गीत–वि० ऊँचे स्वर से गाया हुआ।

उद्गीति–संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का एक भेद।

उद्गीथ–संज्ञा पुं० सामवेद का एक अंश। प्रणव। ओंकार। सामगान।

उद्ग्रीव–वि० १. जो गर्दन ऊपर उठाये हो। २. उत्सुक।

उद्घाट–संज्ञा पुं० चौकी, जहाँ किसी राज्य की ओर से माल खोलकर उसकी जाँच की जाय। क्रि० सं० छुटकारा दिलाना।

उद्घाटन–संज्ञा पुं० [वि० उद्घाटक, उद्घाटनीय, उद्घाटित] १. प्रकाशित करना। प्रकट करना। २. खोलना। उघाड़ना। ३. कुएँ से जल निकालने के लिए रज्जु-सहित घट।

उद्घात–संज्ञा पुं० १. उपक्रम। आरंभ। २. आघात। ठोकर। धक्का।

उद्घातक–वि० [स्त्री० उद्घातिका] १. धक्का या ठोकर लगानेवाला। २. प्रारंभ करनेवाला।

संज्ञा पुं० नाटक में प्रस्तावना का भेद-विशेष जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र प्रवेश करता है या नेपथ्य में कुछ कहता है।

उद्दंड–वि० [संज्ञा उद्दंडता] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भी भय न हो। अक्खड़। प्रचंड। उद्धत। १. निडर। २. उजड्ड।

उद्दंत–वि० बृहद्दन्त। दंतुला। आगे निकला हुआ दाँत। बड़दन्ता।

उद्दंश–संज्ञा पुं० मसा। मशक। डाँस। मच्छर।

उद्दाम–वि० १. स्वतंत्र। बंधनरहित। २. उग्र। निरंकुश। उद्दंड। बे-कहा। ३. गंभीर। महान्। ४. असाधारण। ५. अभिमानी। ६. विशद। बड़ा। उन्नत। संज्ञा पुं० १. वरुण। २. दंडक वृत्त-विशेष।

उद्दालक–संज्ञा पुं० १. प्राचीन आर्य ऋषि। २. व्रत-विशेष।

उद्दिष्ट–वि० १. सांकेतिक। दिखाया हुआ। इंगित किया हुआ। २. अभिप्रेत। लक्ष्य। ३. सम्मत। ४. मनस्थ।

संज्ञा पुं० पिंगल में वह क्रिया जिससे यह बतलाया जाता है कि दिया हुआ छंद मात्रा-प्रस्तार का कौन-सा भेद है।

उद्दीपक–वि० [स्त्री० उद्दीपिका] १. उकसाने या उत्तेजित करनेवाला। जो उभाड़नेवाला हो। २. व्यक्तकारी। ३. प्रकाश-कर्त्ता।

उद्दीपन–संज्ञा पुं० [वि० उद्दीपनीय, उद्दीपित, उद्दीप्त, उद्दीप्य] १. उभाड़ना। बढ़ाना। जगाना। तापन। प्रकाशन। उत्तेजित करने की क्रिया। २. काव्य में वे विभाग जो रस को उत्तजित करते हैं। जैसे, ऋतु, पवन आदि। ३. उत्तेजित या उद्दीपन करनेवाला पदार्थ।

उद्दीप्त–वि० जिसका उद्दीपन हुआ हो। उत्तेजित। उभड़ा, बढ़ा या जागा हुआ। प्रज्ज्वलित।

उद्देश या उद्देश्य–संज्ञा पुं० [वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित] १. लक्ष्य। इष्ट। प्रयोजन। २. अभिलाषा। अभिप्राय। चाह। मंशा। ३. हेतु। कारण। ४. अनुसंधान। अन्वेषण। ५. न्याय में प्रतिज्ञा। ६. वह वस्तु जिस पर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय। अभिप्रेत अर्थ। ७. वह जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। विशेष्य। विधेय का उलटा। ८. विचार। वि० इष्ट। लक्ष्य।

उद्ध*–क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।

उद्धत–वि० [संज्ञा औद्धत्य] १. अविनीत। उग्र। धृष्ट। प्रचंड। अक्खड़। २.प्रगल्भ। ३. कुचाली। दुरन्त। ४. अभिमानी।

संज्ञा पुं० चार मात्राओं का छंद-विशेष।

उद्धतपन–संज्ञा पुं० १.उग्रता। २. उजड्डपन।

उद्धरण–संज्ञा पुं० [वि० उद्धरणीय, उद्धृत] १. ऊपर उठना। २. मुक्त होना। फँसे हुए को निकालना। ३. उद्धार। मुक्ति। त्राण। बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना। ४. पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिए बार-बार पढ़ना। ५. उन्मूलन।

६. किसी लेख के किसी अंश को दूसरे लेख में ज्यों का त्यों रखना।

उद्धरणी–संज्ञा स्त्री॰ आवृत्ति। पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिए बार-बार पढ़ना।

उद्धरना*–क्रि॰ स॰ उबारना। उद्धार करना।

क्रि॰ अ॰ छूटना। बचना।

उद्धव–संज्ञा पुं॰ १. कृष्ण के सखा-विशेष। २. आमोद-प्रमोद। उत्सव। ३. यज्ञ की अग्नि।

उद्धार–संज्ञा पुं॰ १. मुक्ति। छुटकारा। २. उन्नति-सुधार। दुरुस्ती। ३. कर्ज से छुटकारा या बचाव। ४. वह ऋण, जिस पर ब्याज न लगे। ५. रक्षण।

उद्धारना*–क्रि॰ स॰ छुटकारा देना या उद्धार करना।

उद्ध्वस्त–वि॰ जो टूटा-फूटा हो। ध्वस्त। नष्टप्राय।

उद्धृत–वि॰ १. अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ। उद्धारित। २. उगला हुआ। ३. ऊपर उठाया हुआ। ४. रक्षित।

उद्बुद्ध–वि॰ १. विकसित। खिला हुआ। २. चैतन्य। प्रबुद्ध। ज्ञानी। ३. जाग्रत। जागा हुआ।

उद्बुद्धा–संज्ञा स्त्री॰ परकीया नायिका जो स्वेच्छा से उपपति से प्रेम करती हो।

वि॰–जगी हुई। चैतन्य। सतर्क। खिली हुई।

उद्बोध–संज्ञा पुं॰ अल्प ज्ञान।

उद्बोधक–वि॰ [स्त्री॰ उद्बोधिका] १. बोधक। चेतानेवाला। २. प्रकट, सूचित या प्रकाशित करनेवाला। ३. उकसाने या उत्तेजित करनेवाला। ४. जगानेवाला।

उद्बोधन–संज्ञा पुं॰ [वि॰ उद्बोधनीय, उद्बोधित] १. ज्ञान। चेत। ज्ञापन। २. जगाना। ३. उत्तेजित करना। ४. बोध कराना। चेताना।

उद्बोधित–संज्ञा स्त्री॰ परकीया नायिका-विशेष जो उपपति के चतुराई-द्वारा प्रकट किये हुए प्रेम को समझकर प्रेम करे।

वि॰–जगाई हुई। खिलाई हुई। समझाई हुई।

उद्भट–वि॰ [संज्ञा उद्भटता] १. प्रचंड। प्रबल। २. उच्चाशय। उदार। महात्मा। अनुपम वीर।

उद्भव–संज्ञा पुं॰ [वि॰उद्भूत] १. प्रादुर्भाव। उत्पत्ति। जन्म। २. बढ़ती। वृद्धि।

उद्भावन–संज्ञा स्त्री॰ १. उत्पत्ति। २. कल्पना। मन की उपज। ३. प्रकाश।

उद्भास–संज्ञा पुं॰ [वि॰ उद्भासनीय, उद्भासित, उद्भासुर] १. दीप्ति। प्रकाश। आभा। २. प्रतीति। हृदय में किसी बात का उदय। विश्वास।

उद्भासित–वि॰ १. उत्तेजित। प्रदीप्त। २. प्रकट। प्रकाशित। ३. विदित। ज्ञात।

उद्भिज–संज्ञा पुं॰ दे॰ "उद्भिज"।

वि॰ भूमि को फोड़कर उगनेवाले।

उद्भिज्ज–संज्ञा पुं॰ वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। पेड़-पौधे। वनस्पति।

उद्भिद–संज्ञा पुं॰ दे॰ "उद्भिज्ज"। वृक्ष, लता आदि।

वि॰ अंकुरित या प्रफुल्लित होना।

उद्भिद् विद्या–संज्ञा स्त्री॰ वृक्ष आदि रोपने की विद्या। माली का काम।

उद्भिन्न–वि॰ १. भेदित। विद्ध। फोड़ा हुआ। २. उत्पन्न।

उद्भूत–वि॰ निकला हुआ। उत्पन्न। उदित। प्रकट।

संज्ञा स्त्री॰ उत्पत्ति। उन्नति। विभूति।

उद्भूत रूप–संज्ञा पुं॰ दृष्टिगोचर होने योग्य रूप।

उद्भेद–संज्ञा पुं॰ १. फोड़कर निकलना। (पौधों के समान)। २. उद्घाटन। प्रकाशन। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें कौशल से छिपाई हुई किसी बात का किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित होना कहा जाय।

उद्भेदन–संज्ञा पुं॰ १. फोड़ना। तोड़ना। २. छेदकर पार जाना। फोड़कर निकलना।

उद्भ्रम–संज्ञा पुं॰ विभ्रम। बुद्धि का विनाश। उद्वेग। व्याकुलता। घबराहट। ऊपर की ओर भ्रमण करना।

उद्भ्रांत–वि॰ १. चक्कर मारता हुआ।

घूमता हुआ। २. भ्रम में पड़ा हुआ। भूला या भटका हुआ। ३. चकित।
संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।
उद्यत–वि० १. प्रस्तुत। तत्पर। उतारू। मुस्तैद। २. उठाया या ताना हुआ।
उद्यम–संज्ञा पुं० [वि० उद्यमी, उद्यत] १. प्रयास। २. प्रयत्न। ३. उद्योग। ४. परिश्रम। अध्यवसाय। ५. उत्साह। ६. चेष्टा। ७. काम-धंधा। रोजगार।
उद्यमी–वि० १. उद्योगी। प्रयत्नशील। उद्यम करनेवाला २. उत्साही। ३. सतर्क।
उद्यान–संज्ञा पुं० १. उपवन। बगीचा। क्रीड़ावन। २. आराम।
उद्यापन–संज्ञा पुं० किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला हवन आदि।
उद्युक्त–वि० १. यत्नवान्। उद्योग में लगा हुआ। तत्पर। २. परिश्रमी। ३. उत्साहान्वित।
उद्योग–संज्ञा पुं० [वि० उद्योगी, उद्युक्त] १. प्रयत्न। प्रयास। अध्यवसाय। २. उपाय। मेहनत। ३. काम-धंधा। उद्यम।
उद्योगी–वि० [स्त्री० उद्योगिनी] १. उत्साही। २. उद्योग करनेवाला। परिश्रमी।
उद्योत–संज्ञा पुं० १. प्रकाश। आलोक। उजाला २. आभा। चमक।
उद्र–संज्ञा पुं० ऊदबिलाव। जल की बिल्ली।
उद्रिक्त–वि० १. स्फुट। २. स्पष्ट। ३. परिवृद्ध। बढ़ा हुआ।
उद्रेक–संज्ञा पुं० [वि० उद्रिक्त] १. उत्थान। बढ़ती। वृद्धि। अधिकता। ३. काव्यालंकार-विशेष, जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ जाना वर्णन किया जाता है। ४. प्रकाश। ५. उपक्रम। आरंभ।
उद्बन्धन–संज्ञा पुं० १. ऊपर बाँधना। ऊपर टाँगना। २. गले में रस्सी लगाना। फाँसी देना।
उद्बन्धनमृत–वि० १. गले में रस्सी डालकर मरा हुआ। २. फाँसी पाया हुआ।
उद्वर्तन–संज्ञा पुं० शरीर में तेल, चन्दन या उबटन आदि मलना। उबटन। बटना।
उद्वह–संज्ञा पुं० [स्त्री० उद्वहा] १. सात वायुओं में से एक जो तृतीय स्कंध पर है। २. बेटा। पुत्र। जैसे, रघूद्वह।
उद्वहन–संज्ञा पुं० १. उठना। २. ऊपर खिंचना। ३. विवाह।
उद्वासन–संज्ञा पुं० [वि० उद्वासनीय, उद्वासक, उद्वासित, उद्वास्य] १. भगाना। खदेड़ना। स्थान छुड़ाना। २. उजाड़ना। नष्ट करना। ३. वासस्थान नष्ट करना। ४. वध। मारना
उद्वाह–संज्ञा पुं० विवाह। परिणय। दारक्रिया।
उद्वाहन–संज्ञा पुं० [वि० उद्वाहनीय उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह्य] १. विवाह। २. उठाना। ऊपर ले जाना। ३. हटाना। ले जाना।
उद्वाहोपयुक्त–वि० १. विवाह के उपयुक्त। परिणय-योग्य। २. वयस्क।
उद्विग्न–वि० १. आकुल। उद्वेगयुक्त। घबड़ाया हुआ। व्यग्र। २. भीत।
उद्विग्नता–संज्ञा स्त्री० १. व्यग्रता। २. आकुलता। घबड़ाहट। ३. डर। भीति।
उद्विग्नमना–वि० उद्विग्न-चित्त। घबड़ाया हुआ।
उद्वेग–संज्ञा पुं० [वि० उद्विग्न] १. घबड़ाहट। (संचारी भावों में से एक) २. आवेश। मनोवेग। चित्त की चिन्ता। तीव्र वृत्ति। जोश। ३. झोंक। ४. विरहजन्य दुःख। धावक। हरकारा। दूत।
उद्वेगकर–वि० चिन्ताजनक। व्याकुलतावर्द्धक।
उद्वेगी–वि० १. उद्विग्न। घबड़ाया हुआ। २. उत्कंठित। ३. भावनायुक्त।
उद्वेजक–संज्ञा पुं० उद्विग्न करनेवाला। घबरानेवाला या परेशान करनेवाला।
उद्वेजन–संज्ञा पुं० उद्विग्न करना। व्याकुल करना। घबड़ाहट पैदा करना।
उद्वेल–संज्ञा पुं० किसी पात्र में चीज का बहुत भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना। छलकना। छलछलाना। ऊपर को फेंकना।
उद्वेलित–वि० छलकता हुआ। आलोड़ित। डावाँडोल। उछाला हुआ। ऊपर फेंका हुआ।
उधड़ना–क्रि० अ० १. उखड़ना। खुलना।

२. उजड़ना। ३. सिला, जमा या लगा न रहना।

उधर–क्रि० वि० वहाँ। उस स्थान पर। उस ओर। दूसरी तरफ।

उधरना*–क्रि० अ० मुक्त होना। २. दे० "उधड़ना"।

क्रि० स० उद्धार करना। मुक्त करना।

उधराना–क्रि० अ० १. हवा के कारण फैलना। तितर-बितर होना। २. उपद्रव करना।

उधरे–वि० १. प्रकाशित। २. खुले हुए। ३. फटे।

उधार–संज्ञा पुं० ऋण।

मुहा०–उधार खाए बैठना=१. किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। २. प्रत्येक समय तैयार रहना।

२. मँगनी। किसी एक की वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के लिए जाना। *३. उद्धार। छुटकारा। मुक्ति।

उधारक*–वि० दे० "उद्धारक"।

उधारना–क्रि० स० १. मुक्त करना। उद्धार करना। २. तारना। पार करना। ३. बचाना।

उधारी*–वि० [स्त्री० उद्धारिणी] उद्धार करनेवाला।

संज्ञा पुं० जो उधार दिया जाय। ऋण।

उधेड़–संज्ञा स्त्री० उधेड़ने की क्रिया या भाव।

उधेड़ना–क्रि० स० १. उचाड़ना। मिली हुई पर्तों को अलग-अलग करना। २. सिलाई तोड़ना। टाँका खोलना। ३. सुलझाना। ४. छितराना। बिखराना।

उधेड़-बुन–संज्ञा स्त्री० १. युक्ति बाँधना। २. ऊहा-पोह। सोच-विचार।

उनत*–वि० जो झुका हो।

उनइस–संज्ञा स्त्री० संख्या-विशेष। १९। दस और नौ।

उनका–संज्ञा पुं० [अ०] कल्पित पक्षी-विशेष जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा है।

उनचास–वि० एक कम पचास।

संज्ञा पुं० ४९। चालीस और नौ की संख्या।

उनतीस–वि० बीस और नौ। २९।

संज्ञा पुं० बीस और नौ की संख्या।

उनदा*–वि० दे० "उनींदा"।

उनदौहाँ–वि० दे० "उनींदा"।

उनमद–वि० उन्मत्त। मद से भरा। मदमत्त।

उनमना*–वि० दे० "अनमना"।

उनमाथना*–क्रि० स० दे० "उन्मथन" [वि० उन्माथी] विलोड़ना। मथना।

उनमाथी*–वि० विलोड़नेवाला। मथनेवाला।

उनमान*–संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"। १. नाप। तौल। परिमाण। २. थाह। ३. सामर्थ्य। शक्ति।

वि० सदृश। तुल्य। समान। बराबर।

उनमानना–क्रि० स० अनुमान करना। अंदाज लागना।

उनमुना*–वि० [स्त्री० उनमुनी] अनमना। चुपचाप। मौन।

उनमूलना*–क्रि० स० दे० "उन्मूलन" उखाड़ना। किसी स्थान से अलग करना।

उनमेख*–संज्ञा पुं० १. फूल खिलना। २. आँख का खुलना। ३. प्रकाश। उजाला।

उनमेखना*–क्रि० स० दे० "उन्मेष" १. उन्मीलित होना। आँख का खुलना। २. खिलना। विकसित होना (फूल आदि का)।

उनरना*–क्रि० अ० १. उभड़ना। उठना। २. कूद-कूदकर चलना।

उनवना*–क्रि० अ० १. लटकना। झुकना। २. छाना। ३. घिर आना। ४. ऊपर पड़ना। टूटना।

उनसठ*–वि० पचास और नौ। ५९। एक कम साठ।

संज्ञा पुं० पचास और नौ की संख्या या अंक।

उनहत्तर–वि० साठ और नौ। ६९।

संज्ञा पुं० साठ और नौ की संख्या या अंक।

उनहानि–संज्ञा स्त्री० तुलना। समता। बराबरी।

उनहार–वि० समान। सदृश।

उनहारि*–संज्ञा स्त्री० १. समानता। सादृश्य। एकरूपता। २. बराबरी।

उनाना*–क्रि० स० १. झुकाना। २. लगाना।

क्रि० अ० आज्ञा मानना।

उनिद्र–वि० १. प्रफुल्ल। विकसित। प्रकाशित। २. निद्रारहित।

उनींद–संज्ञा स्त्री० कच्ची नींद। अधूरी निद्रा।

उनींदा–वि० [स्त्री० उनींदी] १. नींद से भरा हुआ। ऊँघता हुआ। आलस्य-युक्त।

उन्नइस*–वि० दे० "उन्नीस"।

उन्नत-नाभि–वि० उच्च नाभियुक्त। फूली नाभिवाला।

उन्नतानत–वि० १. उच्च नीच स्थान आदि। २. ऊबड़-खाबड़।

उन्नत–वि० १. ऊपर उठा हुआ। ऊँचा। २. बढ़ा हुआ। ३. समृद्ध। ४. श्रेष्ठ। ५. उत्तम। ६. लंबा।

उन्नति–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ाव। २. ऊँचाई। ३. बढ़ती। वृद्धि। समृद्धि। ४. उच्चता। ५. उदय।

उन्नतोदर–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसका वृत्तखंड ऊपर को उठा हो। २. चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल।
वि० बड़े पेटवाला। तुंदिल।

उन्नमित–वि० उत्तोलित। ऊपर उठाया गया।

उन्नयन–वि० ऊर्ध्वप्रयाण। उत्तोलन। ऊपर ले जाना।

उन्नाब–संज्ञा पुं० [अ०] बेर-विशेष जो हकीमी नुसखों में पड़ता है।

उन्नाबी–वि० [अ० उन्नाब] १. कालापन लिये हुए लाल। २. उन्नाब के रंग का।

उन्नायक–वि० [स्त्री० उन्नायिका] १. बढ़ानेवाला। २. ऊँचा या उन्नत करनेवाला।

उन्नासी–वि० एक कम अस्सी। ७९।
संज्ञा पुं० सत्तर और नौ की संख्या या अंक।

उन्निद्र–वि० १. खिला हुआ। विकसित। २. निद्रारहित। जैसे—उन्निद्र-रोग। ३. जिसे नींद न आई हो।

उन्नीस–वि० दस और नौ।
संज्ञा पुं० १९। दस और नौ की संख्या या अंक।
मुहा०—उन्नीस बिस्वे=अधिकांश। प्रायः। अधिकतर। उन्नीस होना=१. मात्रा में कुछ कम होना। थोड़ा घटना। २. गुण में घटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर) उन्नीस-बीस होना=एक का दूसरी से कुछ अच्छा होना।

उन्मत्त–वि० [संज्ञा उन्मत्तता] १. मदांध। मतवाला। २. पागल। बावला। ३. बेसुध। जो आपे में न हो।

उन्मत्तता–संज्ञा स्त्री० पागलपन। मतवालापन।

उन्मद–वि० बावला। पागल। उन्मादयुक्त। प्रमादी। सिड़ी। उन्मत्त।
सं० उन्माद। पागलपन।

उन्मना–वि० उत्कंठित-चित्त। चिन्तित। व्याकुल। चंचल।

उन्मनी–संज्ञा स्त्री० हठयोग में नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना।

उन्माद–संज्ञा पुं० [वि० उन्मादक, उन्मादी] १. पागलपन। रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्य्यक्रम बिगड़ जाता है। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. संचारी भावों में से एक जिसमें वियोग के कारण प्रलाप का वर्णन होता है।

उन्मादक–वि० १. पागल करनेवाला। उन्मत्त कर देनेवाला। २. जो नशा करता हो।

उन्मादन–संज्ञा पुं० १. उन्मत्त या मतवाला करने का काम। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मादी–वि० [स्त्री० उन्मादिनी] उन्माद रोग-युक्त। विक्षिप्त। पागल।

उन्मादी क्षेत्र–संज्ञा पुं० वायुग्रस्त। पागल।

उन्मान–संज्ञा पुं० परिमाण। तौल। नाप।

उन्मार्ग–संज्ञा पुं० [वि० उन्मार्गी] १. कुमार्ग। २. बुरा ढंग।

उन्मिषित–वि० प्रफुल्ल। विकसित। फूला हुआ। खुला हुआ।

उन्मीलन–संज्ञा पुं० [वि० उन्मीलक, उन्मीलनीय, उन्मीलित] १. खुलना (नेत्र का)। उन्मेष। २. खिलना। विकसित होना। ३. प्रकाश।

उन्मीलना*–क्रि० स० खोलना।

उन्मीलित–वि० प्रस्फुटित। खुला हुआ।

संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें दो वस्तुओं में इतना अधिक सादृश्य कहा जाय कि केवल एक बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े।

उन्मुक्त–वि० जिसके बन्धन खुल गये हों। खुला हुआ। बन्धन-रहित। उदार।

उन्मुख–वि० [स्त्री० उन्मुखा] १. मुंह ऊपर किये २. तत्पर । उद्यत। तैयार। ३. उत्सुक। उत्कंठित।

उन्मूलक–वि० जड़ से नष्ट करनेवाला । नाश करनेवाला।

उन्मूलन–संज्ञा पुं० वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] १. समूल नष्ट करना । मटियामेट करना। २. जड़ से उखाड़ना। ३. ऊपर खींचना।

उन्मूलना–क्रि० स० जड़ से उखाड़ फेंकना।

उन्मेष–संज्ञा पुं० [वि० उन्मिषित] १. खुलना (आँख का)। २. खिलना। विकास। ३. थोड़ा प्रकाश। ४. ज्ञान। बुद्धि। ५. पलक।

उन्मोचन–संज्ञा पुं० परित्याग करना।

उन्हारा–संज्ञा पुं० १. डील-डौल। २. रूप।

उपंग–संज्ञा पुं० १. बाजा-विशेष। नसतरंग नामक बाजा। २. उद्धव के पिता का नाम।

उप–उप० उपसर्ग-विशेष। यह जिन शब्दों के पहले लगता है, उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है, समीपता। जैसे—उपकूल, उपनयन। सामर्थ्य। (वास्तव में आधिक्य); जैसे–उपकार। गौणता या न्यूनता; जैसे–उपमंत्री, उपसभापति। व्याप्ति; जैसे—उपकीर्ण। पास जाना; जैसे उपगमन। ऊपर; जैसे—उपशीर्ष। पास का; जैसे—उपकनिष्ठिका। अधीन; जैसे—उपदास। प्रायः; जैसे–उपदश। छोटा; जैसे—उपेंद्र।

उपकंठ–वि० निकट। समीप। गले के पास। संज्ञा पुं० १. ग्राम के समीप। २. अश्वों की गति-विशेष।

उपकथा–संज्ञा स्त्री० १. आख्यायिका। कहानी। कल्पित कथा। २. पुराण।

उपकरण–संज्ञा पुं० १. सामान। सामग्री। साधक वस्तु। २. राजाओं के छत्र, चँवर आदि राजचिह्न। ३. भोजन के लिए व्यंजन-आदि। ४. अप्रधान द्रव्य। ५. परिच्छेद।

उपकरना*–क्रि० स० उपकार या भलाई करना।

उपकर्ता–संज्ञा पुं० दे० "उपकारक"।

उपकार–संज्ञा पुं० १. भलाई। नेकी। २. लाभ।

उपकारक–वि० [स्त्री० उपकारिका] १. उपकार या भलाई करनेवाला। २. सहायता करनेवाला।

उपकारिका–वि० उपकार करनेवाली। संज्ञा स्त्री० १. राजभवन। २. तंबू।

उपकारिता–संज्ञा स्त्री० उपकार। भलाई।

उपकारी–वि० [स्त्री० उपकारिणी] १. उपकार या भलाई करनेवाला। २. सहायक। ३. लाभ पहुँचानेवाला।

उपकारेच्छु–वि० १. उपकार करने का अभिलाषी। २. दाता।

उपकार्य–वि० १. उपकारोचित। २. जिसका उपकार किया जाय।

उपकार्या–संज्ञा स्त्री० १. राजसदन। राजगृह। २. अन्न रखनेका स्थान। ३. गोला। तंबू। राजा का तंबू।

उपकुर्वाण–संज्ञा पुं० १. कुछ दिन के लिए ब्रह्मचारी। २. ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् जो गृहस्थ होते हैं।

उपकूप–संज्ञा पुं० कूप के समीप का जलाशय, जो पशुओं के जल पीने के लिए बनाया जाता है।

उपकूल–संज्ञा पुं० नदी, तालाब आदि का किनारा।

उपकृत–वि० १. कृतोपकार। जिसके साथ उपकार किया गया हो। २. कृतज्ञ।

उपकृति–संज्ञा स्त्री० उपकार।

उपक्रम–संज्ञा पुं० १. अनुष्ठान। कार्य्यारंभ की पहली अवस्था। उठान। २. किसी काम को आरंभ करने के पहले का आयोजन। उद्योग। तैयारी। ३. भूमिका।

उपक्रमणिका–संज्ञा स्त्री० विषय-सूची जो पुस्तक के आरंभ में दी जाती है।

उपक्रान्त–वि० १. आरंभ किया हुआ। २. प्रस्तुत।

उपक्रोश—संज्ञा पुं० निन्दा। कुत्सा। भर्त्सना। गर्हण।

उपक्षेप—संज्ञा पुं० १. अभिनय के आरंभ में नाटक के सार का पूर्व कथन। २. आक्षेप।

उपखान*—संज्ञा पुं० दे० "उपाख्यान"। कथा। इतिहास।

उपगत—वि० १. प्राप्त। २. उपस्थित। जाना हुआ। ज्ञात। ३. स्वीकृत।

उपगति—संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। २. प्राप्ति। स्वीकार।

उपगमन—संज्ञा पुं० १. आगमन। निकट गमन। २. योग। ३. प्रीति। ४. अंगीकार।

उपगीत—संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का भेद-विशेष।

उपगुरु—संज्ञा पुं० छोटा अध्यापक। अप्रधान गुरु। उपदेशक। शिक्षा-गुरु।

उपगूहन—संज्ञा पुं० आलिंगन। अँकवार।

उपग्रह—संज्ञा पुं० १. छोटा ग्रह। अप्रधान ग्रह। २. राहु और केतु। ३. वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है। जैसे—पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा है। ४. कैदी। बँधुआ। ५. जेल। कैद। ६. गिरफ्तारी।

उपघात—संज्ञा पुं० १. नाश करने का काम। २. अशक्ति। इंद्रियों का अपने-अपने काम में असमर्थ होना। ३. रोग। पीड़ा। व्याधि। ४. पाँच पातकों का समूह—उपपातक, जातिभ्रंशीकरण, संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलिनीकरण। (स्मृति) ५. आघात।

उपचय—संज्ञा पुं० १. बढ़ती। वृद्धि। उन्नति। २. जमा करना। संचय।

उपचरित—संज्ञा पुं० १. उपासित। सेवित। आराधित। २. लक्षण से जाना हुआ।

उपचर्या—संज्ञा स्त्री० सेवा-शुश्रूषा। चिकित्सा। इलाज। रोगों का उपशम, प्रतिकार।

उपचार—संज्ञा पुं० १. चिकित्सा। दवा। २. व्यवहार। उपाय। विधान। प्रयोग। ३. सेवा। तीमारदारी। ४. धर्म्मानुष्ठान। ५. पूजन के अंग या विधान जो प्रधानतः सोलह माने गये हैं। जैसे, षोडशोपचार। ६. घूस। रिश्वत। ७. खुशामद। ८. संधि-विशेष जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है। जैसे, निःछल से निश्छल।

उपचारक—वि० [स्त्री० उपचारिका] १. चिकित्सा करनेवाला। २. जो उपचार या सेवा करे। ३. विधान करनेवाला।

उपचारछल—संज्ञा पुं० वादी के कहे वाक्य में उसके अभिप्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दोष निकालना।

उपचारना—क्रि० स० काम में लाना। व्यवहार में लाना। २. विधान करना।

उपचारात्—क्रि० वि० केवल व्यवहार दिखावे या रसम अदा करने के रूप में।

उपचारी—वि० [स्त्री० उपचारिणी] दवा करनेवाला। उपचार करनेवाला।

उपचित—वि० समृद्ध। वर्द्धित। संचित। इकट्ठा।

उपचित्र—संज्ञा पुं० वर्णार्द्ध समवृत्त-विशेष।

उपचित्रा—संज्ञा स्त्री० छंद-विशेष जिसमें १६ मात्राएँ होती हैं।

उपज—संज्ञा स्त्री० १. पैदावार। उत्पत्ति। जैसे, खेत की उपज। २. सूझ। नई उक्ति। उद्भावना। ३. मनगढ़ंत बात। ४. गाने में राग की सुंदरता के लिए बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी प्रतिभा से उसमें मिला देना। प्रतिभा से उत्पन्न तान तोड़ना (संगीत)।

उपजत—संज्ञा पुं० उपार्जित। घटित। उत्पन्न।

उपजना—क्रि० अ० १. पैदा होना। उगना। उत्पन्न होना। २. अंकुर होना। ३. बढ़ना।

उपजहिं—क्रि० अ० उपजते हैं। उत्पन्न होते हैं। उगते हैं।

उपजाऊ—वि० उर्वर भूमि जिसमें अच्छी उपज हो।

उपजाति—संज्ञा स्त्री० वृत्त-विशेष, जो इंद्रवंशा और वंशस्थ तथा इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बनते हैं।

उपजाना—क्रि० स० १. पैदा करना। उत्पन्न करना। २. सिरजना।

उपजिह्वा—संज्ञा स्त्री० छोटी जीभ।

उपजीवन—संज्ञा पुं० [वि० उपजीवी, उपजीवक] १. जीविका। २. निर्वाह के लिए दूसरे का सहारा।

उपजीविका—संज्ञा स्त्री० जीविका। अवलम्ब।

उपजीवी—वि० [स्त्री० उपजीविनी] १. आश्रयी। दूसरे के सहारे पर निर्वाह करनेवाला। २. अनुगत।

उपज्ञा—संज्ञा स्त्री० १. आद्य ज्ञान। प्रथम ज्ञान। २. उपदेश के बिना ईश्वरदत्त प्रथम ज्ञान।

उपटन—संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।
संज्ञा पुं० १. चिह्न। निशान। जो आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाय। सॉंट। २. अंक।

उपटना—क्रि० अ० १. निशान पड़ना। आघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना। २. उखड़ना। अलग होना।

उपटा—संज्ञा पुं० पानी की बाढ़। ठोकर।

उपटाना*—क्रि० स० उबटन लगवाना।
क्रि० स० १. उखाड़ना। २. उखड़वाना।

उपटारना*—क्रि० स० १. हटाना। २. उठाना। ३. उच्चाटन करना।

उपड़ना—क्रि० अ० १. अंकित होना। २. उपटना। ३. उखड़ना।

उपढौकन—संज्ञा पुं० पारितोषिक द्रव्य। उपहार। भेंट।

उपतंत्र—संज्ञा पुं० १. यामलआदि तंत्रशास्त्र। २. सूक्ष्म सूत्र।

उपतप्त—वि० संतापित। दुःखित। खेदित।

उपतारा—संज्ञा स्त्री० क्षुद्र नक्षत्र। नेत्रगोलक।

उपत्यका—संज्ञा स्त्री० तराई भूमि जो पर्वत के पास हो।

उपदंश—संज्ञा पुं० १. गरमी। सुजाक। आतशक। फिरंग रोग। २. रोग-विशेष जिसमें दाँत या नाखून लगने के कारण लिंगेंद्रिय पर घाव हो जाता है। ३. चाट। गजक। ४. मद्यपान। ५. सर्पदंश।

उपदल—संज्ञा पुं० मुकुल। पत्ता। पान। पुष्पदल। फूल की पत्ती।

उपदर्शक—संज्ञा पुं० द्वारपाल। प्रहरी।

उपदा—संज्ञा स्त्री० उपढौकन। भेंट। उपायन। दर्शन।

उपदिशा—संज्ञा स्त्री० १. कोण। विदिशा। २. वह दिशा जो दो दिशाओं के बीच में हो।

उपदिष्ट—वि० १. उपदेश-प्राप्त। जिसे उपदेश दिया गया हो। २. ज्ञापित। जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो।

उपदेवता—संज्ञा पुं० भूत। प्रेत। छोटे देवता-विशेष।

उपदेश—संज्ञा पुं० १. शिक्षा। सीख। नसीहत। हित की बात का कथन। २. दीक्षा। गुरु-मंत्र।

उपदेशक—संज्ञा पुं० [स्त्री० उपदेशिका] जो उपदेश करे। शिक्षा देनेवाला। गुरु, शिक्षक।

उपदेशकारी—संज्ञा पुं० १. शिक्षक। २. उपदेश करनेवाला।

उपदेश्य—वि० १. उपदेश के अधिकारी। उपदेश के योग्य। २. सिखाने योग्य (बात)।

उपदेष्टा—संज्ञा पुं० [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश देनेवाला। शिक्षागुरु। शिक्षक। आचार्य।

उपदेसना—क्रि० स० उपदेश करना।

उपद्रव—संज्ञा पुं० [वि० उपद्रवी] १. विप्लव। विद्रोह। ऊधम। अन्याय। झगड़ा। २. किसी रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार। ३. कोई दुःखद घटना। ४. राष्ट्रीय व्याधि या कष्ट। (अकाल, प्लेग, ग्रहण आदि)।

उपद्रवी—वि० नटखट। उपद्रव करनेवाला। ऊधम मचानेवाला।

उपद्वीप—संज्ञा पुं० छोटा द्वीप। जल-मध्यवर्ती स्थान।

उपधर्म—संज्ञा पुं० पाखण्ड। पाप। नास्तिकता।

उपधरना*—क्रि० अ० अपनाना। स्वीकार करना।

उपधा—संज्ञा स्त्री० १. कपट। छल। २. उपाधि। ३. व्याकरण में वह अक्षर जो किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले हो। ४. बहाना। ५. शर्त। ६. जालसाजी।

उपधातु—संज्ञा स्त्री० १. धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती हैं अथवा खानों से निकलती हैं। जैसे, काँसा, सोनामुखी। तूतिया। २. शरीर के भीतर रस से बने पसीना, चर्बी आदि।

उपधान—संज्ञा पुं० [वि० उपधृत] १. ठहराना या ऊपर रखना। २. सहारे की वस्तु। ३. उसीसा। तकिया। सिरहना। ४. लगाव। ५. प्रेम। ६. दया। ७. विष। ८. विशेषता। ९. ढक्कन।

उपधायक—वि० जन्मदाता। स्थापनकर्त्ता।

उपनना—क्रि० अ० उत्पन्न होना।

उपनय—संज्ञा पुं० १. पास ले जाना। २. उपनयन-संस्कार। ३. बालक को गुरु के पास ले जाना। ४. कोई उदाहरण देकर उसके धर्म को साध्य में घटाना (तर्क-शास्त्र)।

उपनयन—संज्ञा पुं० [वि० उपनीत, उपनेता, उपनेतव्य] १. यज्ञोपवीत-संस्कार। जनेऊ पहनने के समय का कर्म। २. पास ले जाना।

उपनागरिका—संज्ञा स्त्री० अलंकार में वृत्ति-अनुप्रास का भेद-विशेष जिसमें कर्ण-मधुर वर्ण आते हैं।

उपनाना*—क्रि० स० उत्पन्न या पैदा करना।

उपनाम—संज्ञा पुं० १. उपाधि। पदवी। अल्ल। २. दूसरा नाम। ३. प्रचलित नाम।

उपनायक—संज्ञा पुं० नाटकों में प्रधान नायक का सहायक या सहयोगी।

उपनिधि—संज्ञा स्त्री० थाती। धरोहर। अमानत।

उपनिविष्ट—वि० जो अन्य स्थान से आकर बस गया हो।

उपनिवेश—संज्ञा पुं० १. दूसरे स्थान से आए हुए लोगों की बस्ती। कालोनी। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना।

उपनिषद्—संज्ञा स्त्री० १. पास बैठना। २. ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के पास बैठना। ३. वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है। वेद का शिरोभाग। ४. धर्म। ५. निर्जन स्थान। ६. तत्त्व-ज्ञान। ब्रह्मविद्या। वेदरहस्य।

उपनिषध—संज्ञा स्त्री० दे० "उपनिषद्"।

उपनीत—वि० १. लाया हुआ। २. जिसका उपनयन-संस्कार हो गया हो। ३. निकट-प्राप्त। उपस्थित। समीपागत। उपवीती।

उपनेता—संज्ञा पुं० [स्त्री० उपनेत्री] १. लाने या पहुँचानेवाला। २. जो उपनयन-संस्कार करावे। आचार्य्य। गुरु।

उपनेत्र—संज्ञा पुं० १. चश्मा। २. नेत्रों का सहायक।

उपन्ना—संज्ञा पुं० उपरना। ओढ़ने का दुपट्टा।

उपन्यस्त—वि० निक्षिप्त। न्यासीकृत। धरोहर रक्खा हुआ।

उपन्यास—संज्ञा पुं० [वि० उपन्यस्त] १. प्रस्तावना। कहानी। गद्यकाव्य-विशेष। २. बधान। वाक्य का उपक्रम। ३. कल्पित आख्यायिका। कथा। नावेल [अंग्रे०]।

उपपति—संज्ञा पुं० १. नायक-विशेष। २. वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे। यार। गुप्तपति। जार।

उपपत्ति—संज्ञा स्त्री० १. सिद्धि। युक्ति। हेतु। समाधान। घटना। प्राप्ति। २. हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। ३. चरितार्थ होना। मेल मिलना। सगति।

उपपत्तिसम—संज्ञा पुं० एक प्रकार का खडन, जहाँ किसी वस्तु में विरुद्ध धर्मों का वर्णन किया जाय। जैसे, शब्द अनित्य है, क्योंकि वह उत्पाद्य है। वह नित्य भी है (तर्कशास्त्र)।

उपपत्नी—संज्ञा स्त्री० १. सुरैतिन। २. पर-स्त्री। ३. रखनी।

उपपन्न—वि० १. जो शरण में आया हो। जो पास आया हो। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३. पहुँचा हुआ। ४. संपन्न। युक्त। ५. उपयुक्त। उचित।

उपपातक—संज्ञा पुं० छोटा पाप। जैसे, पर-स्त्रीगमन। पंच महापातकों से भिन्न पाप।

उपपादन—संज्ञा पुं० [वि० उपपादित, उपपन्न, उपपादनीय, उपपाद्य] १. सिद्ध करना। युक्ति देकर समाधान करना। साबित करना। ठहराना। २. संपादन। कार्य्य को पूरा करना।

उपपुराण—संज्ञा पुं० १८ मुख्य पुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण। ये भी संख्या में १८ हैं। इनके नाम हैं—१. सानत्कुमार। २. नारसिंह ३. भांड। ४. शिवधर्म। ५. दौर्वा। सिंह ६. नारदीय ७. कापिल। ८. वामन। ९. औशन। १०. ब्रह्मांड। ११. वारुण। १२. कालिका। १३. माहेश्वर १४. शांब। १५. सौर। १६. पाराशर। १७. मारीच तथा १८. भार्गव।

उपभुक्त—वि० १. जो काम में लाया गया हो। २. जूठा। उच्छिष्ट। ३. अधिकृत।

उपभोक्ता—वि० [स्त्री० उपभोक्त्री] उपभोग करनेवाला। काम में लानेवाला।

उपभोग–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के व्यवहार का आनंद लेना। २. आस्वादन। ३ विलास। ४. व्यवहार में लाना। बर्तना। ५. सुख का सामान।

उपभोग्य–वि० उपभोग या व्यवहार करने योग्य।

उपमंत्री–संज्ञा पुं० प्रधान मंत्री के नीचे रहनेवाला मंत्री।

उपमर्द–संज्ञा पुं० दे० "उपमर्दन"।

उपमर्दन–संज्ञा पुं० (वि० उपमर्दित, उपमर्द्य) बुरी तरह से दबाना या रौंदना। उपेक्षा और तिरस्कार करना।

उपमा–संज्ञा स्त्री० १. तुलना। मिलान। जोड़। किसी वस्तु, व्यापार या गुण को दूसरी वस्तु, व्यापार या गुण के समान बतलाना। २. अर्थालंकार-विशेष जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है।

उपमाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपमात्री] १ जो उपमा दे। उपमा करनेवाला। चित्रकार।
संज्ञा स्त्री० १. धाय। धात्री। दूध पिलानेवाली दाई। २. माता के समान।

उपमान–संज्ञा पुं० १. प्रमाण-विशेष। वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय॥ वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बतलाई जाय। २. २३ मात्राओं का छंद-विशेष।

उपमाना*–क्रि० स० उपमा देना।

उपमित–वि० उत्प्रेक्षित। संभावित। जिसकी उपमा दी गई हो।
संज्ञा पुं० कर्मधारय के अंतर्गत समास-विशेष जो दो शब्दों के बीच के उपमावाचक शब्द का लोप करके बनता है। जैसे—पुरुष-सिंह।

उपमिति–संज्ञा स्त्री० ज्ञान जो उपमा या सादृश्य से होता है। समानता। सादृश्य।

उपमेय–वि० १. जिसकी उपमा दी जाय। २. सम तुल्य। दृष्टान्त। योग्य। ३. वर्ण्य। वर्णनीय।

उपमेयोपमा–संज्ञा स्त्री० उपमा अलंकार विशेष, जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय।

उपयना–क्रि० अ० १. चला जाना। न रह जाना। २. उड़ जाना।

उपयम–संज्ञा पुं० १. विवाह। २. संयम।

उपयुक्त–वि० उचित। योग्य। मुनासिब। वाजिब।

उपयुक्तता–संज्ञा स्त्री० यथार्थता। औचित्य। ठीक उतरने या होने का भाव।

उपयोग–संज्ञा पुं० [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १. प्रयोग। व्यवहार। काम। २. योग्यता। ३. लाभ। ४. प्रयोजन। ५. आवश्यकता।

उपयोगिता–संज्ञा स्त्री० फलसाधनता। काम में आने की योग्यता। लाभ-कारिता।

उपयोगितावाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त जिसमें वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है।

उपयोगी–वि० [स्त्री० उपयोगिनी] १. प्रयोजनीय। काम में आनेवाला। २. लाभकारी। ३. अनुकूल। उपयुक्त।

उपर–वि० ऊँचा।

उपरक्त–वि० १. विपन्न। पीड़ाग्रस्त। २. रँगा हुआ। ३. गरम किया। तपाया हुआ।
संज्ञा पुं० राहुग्रस्त

उपरत–वि० १. उदासीन। विरक्त। २. शान्त। समाप्त। ३. मृत।

उपरति–संज्ञा स्त्री० १. त्याग। विषय से विराग। विरति। २. उदासी। ३. मौत। मृत्यु। ४. ऐंद्रिय सुखों से विरक्ति (वेदांत)।

उपरत्न–संज्ञा पुं० थोड़े मूल्य के या घटिया रत्न। जैसे, सीप, मरकत-मणि।

उपरना–संज्ञा पुं० दुपट्टा। उत्तरीय। चद्दर।
क्रि० अ० उखड़ना।

उपरफट, उपरफट्टू–वि० १. नियमित के अतिरिक्त। ऊपरी। २. व्यर्थ का। बे ठिकाने का।

उपरवार–संज्ञा पुं० बाँगर जमीन। नदी के किनारे के ऊपर की जमीन।

उपरस–संज्ञा पुं० १. वैद्यक में पारे के समान गुण करनेवाले पदार्थ। जैसे, गंधक। २. गौण भावना। ३. गौण स्वाद।

उपरांत—क्रि० वि० पश्चात्। अनंतर। बाद। पीछे।
उपराग—संज्ञा पुं० १. रंग। २. किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। ३. वासना। विषय में अनुरक्ति। व्यसन। ४. परिवाद। निन्दा। ५. त्याग। उदासीनता। विराग। विश्राम। ६. चंद्र या सूर्य्य-ग्रहण।
उपरा-चढ़ी—संज्ञा स्त्री० १. स्पर्द्धा। प्रतिद्वंद्विता। २. चढ़ा-ऊपरी।
उपराज—संज्ञा पुं० वाइसराय। गवर्नर-जनरल। राजप्रतिनिधि।
*संज्ञा स्त्री० दे० "उपज"।
उपराजना*—क्रि० स० १. पैदा या उत्पन्न करना। २. बनाना। रचना। ३. कमाना। उपार्जन करना।
उपराजा—संज्ञा पुं० छोटे राजा। युवराज। क्रि० स० १. उगाया। उपजाया। उत्पन्न किया। पैदा किया। २. बनाया। रचा।
उपराना—क्रि० अ० १. उतराना। ऊपर आना। २. प्रकट होना।
क्रि० स० उठाना। ऊपर करना।
उपराम—संज्ञा पुं० १. निवृत्ति। विरति। २. विराम। ३. आराम।
उपराला*—संज्ञा पुं० १. सहायता। रक्षा। पक्ष-ग्रहण। २. सहायक। साथी।
उपरावटा*—वि० गर्व से सिर ऊँचा करने वाला। अभिमानी। गर्वयुक्त।
उपराहना*—क्रि० अ० प्रशंसा या बड़ाई करना।
उपराही—क्रि० वि० दे० "ऊपर"।
वि० श्रेष्ठ। बढ़कर। उत्तम।
उपरि—क्रि० वि० ऊपर।
उपरिवृष्टि—संज्ञा स्त्री० १. तुन्छ देवता की दृष्टि। २. वायु का प्रकोप।
उपरिष्टात्—अ० ऊपर। ऊर्ध्व।
उपरिस्थ—वि० ऊर्ध्वस्थित। ऊपर का।
उपरी—वि० ऊपर का।
संज्ञा पुं० १. जोते खेत के ऊपर की मिट्टी। २. भूमि से उखाड़ी गई मिट्टी। ३. उपली। ४. कंडी। ५ छाता।
उपरी-उपरा—संज्ञा पुं० १. चढ़ा-ऊपरी। २. प्रतिद्वंद्विता।
उपरुद्ध—वि० रक्षित। प्रतिरुद्ध।
उपरूपक—संज्ञा पुं० छोटा नाटक जिसके १८ भेद हैं।
उपरैना*—संज्ञा पुं० दे० "उपरना"।
उपरैनी—संज्ञा स्त्री० ओढ़नी।
उपरोक्त—वि० जो ऊपर या पहले कहा गया हो। (शुद्ध रूप "उपर्युक्त")
उपरोध—संज्ञा पुं० १. आड़। अटकाव। बाधा। रोक। रुकावट। २. ढकना। आच्छादन। ३. आदर। सम्मान।
उपरोधक—संज्ञा पुं० १. बाधा डालनेवाला। रोकनेवाला। २. भीतर की कोठरी।
उपरोहित—संज्ञा पुं० कुलगुरु। पुरोधा। पुरोहित।
उपरौटा—संज्ञा पुं० (किसी वस्तु के) ऊपर का पल्ला या ढकना।
उपर्ना—संज्ञा पुं० "उपरना"। दुपट्टा। उत्तरीय।
उपर्युक्त—वि० पहले या ऊपर कहा हुआ।
उपर्य्युपरि—अ० ऊपर-ऊपर। ऊपर के ऊपर।
उपल—संज्ञा पुं० १. ओला। २. पत्थर। ३ बादल। मेघ। ४. रत्न। ५. चीनी। ६. बालू। ७. लोढ़ा (यज्ञीय)।
उपलक्ष—संज्ञा पुं० १. संकेत। चिह्न। २. दृष्टि। ३. उद्देश्य।
उपलक्षक—वि० जो अनुमान कर ले। ताड़ने वाला।
संज्ञा पुं० वह शब्द जो उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की और वस्तुओं का भी बोध करावे (साहित्य)।
उपलक्षण—संज्ञा पुं० [वि० उपलक्षक, उपलक्षित] १. संकेत। चिह्न। बोध करानेवाला। २. शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी की कोटि की और-और वस्तुओं का भी बोध होता है। ३. दृष्टान्त। ४. अन्यार्थबोधक।
उपलक्ष्य—संज्ञा पुं० १. चिह्न। संकेत। २. उद्देश्य। दृष्टि।

यौ०–उपलक्ष्य में=विचार से। दृष्टि से।
उपलब्ध–वि० १. प्राप्त। पाया हुआ। २. ज्ञात। जाना हुआ।
उपलब्धार्थी–संज्ञा स्त्री० आख्यायिका। उपकथा।
उपलब्धि–संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। २. मति। बुद्धि। ३. अनुभव। ४. ज्ञान।
उपला–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपली] उपरी। कंडा। गोहरा।
उपलेप–संज्ञा पुं० १. लीपना। लेप लगाना। २. लेप करने की वस्तु।
उपलेपन–संज्ञा पुं० [वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त] लेप लगाने या लीपने का काम।
उपल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपल्ली] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, तह या पर्त्त।
उपवन–संज्ञा पुं० १. बाग। फुलवारी। २. छोटा वन। ३. आराम।
उपवना–क्रि० अ० १. लुप्त होना। २. निकलना। उदय होना।
उपवर्ह–संज्ञा पुं० तकिया। वालिश। उपधान।
उपवर्हण–संज्ञा पुं० दे० "उपवर्ह"।
उपवसथ–संज्ञा पुं० १. सोम यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का विधान है। २. गाँव या बस्ती।
उपवास–संज्ञा पुं० १. लंघन। अनाहार। भोजन का छूटना। २. वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता।
उपवासी–वि० [स्त्री० उपवासिनी] व्रती। उपवास करनेवाला।
उपविद्य–संज्ञा पुं० नाटक-चेटक आदि। शिल्पी।
उपविद्या–संज्ञा स्त्री० शिल्प आदि विज्ञान शास्त्र। ब्रह्म-विद्या के अतिरिक्त विद्या।
उपविष–संज्ञा पुं० साधारण या हलका विष। जैसे अफीम या धतूरा।
उपविष्ट–वि० आसीन। आसनस्थ। बैठा हुआ।
उपवीत–संज्ञा पुं० [वि० उपवीती] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. उपनयन। ३. यज्ञोपवीत।
उपवेद–संज्ञा पुं० धनुर्वेद, आयुर्वेद आदि विद्याएँ जिन्हें वेदों से निकली हुई समझा जाता है। जैसे आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है।
उपवेष्टन–संज्ञा पुं० १. लपेटना। वसना। २. बस्ता। ३. जामा।
उपवेशन–संज्ञा पुं० [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. जमना। २. बैठना। ३. स्थित होना।
उपशम–संज्ञा पुं० १. इंद्रिय-निग्रह। वासनाओं को दबाना। २. शांति। निवृत्ति। ३. बदला। प्रतिकार। ४. निवारण का उपाय। इलाज।
उपशमन–संज्ञा पुं० [वि० उपशमनीय, उपशमित, उपशाम्य] १. दबाना। दमन करना। २. शांत रखना। ३. निवारण। उपाय से दूर करना।
उपशय–संज्ञा पुं० शिकार के आस-पास या उसके मार्ग में शिकारी के छिपकर बैठने का गढ़ा या आड़। २. निदान-पंचक के अन्तर्गत रोगज्ञापक अनुमान।
उपशल्य–संज्ञा पुं० १. ग्रामान्त। ग्राम की सीमा। २. भाला। ३. पर्वत के पास की भूमि।
उपशाला–संज्ञा स्त्री० मकान के पास का उठने-बैठने के लिए दालान या छोटा कमरा। बैठक।
उपशिष्य–संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य। चेले का चेला।
उपश्रुत–वि० १. प्रतिश्रुत। २. वाग्दत्त। ३. अंगीकृत। स्वीकृत।
उपसंपादक–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपसंपादिका] काम करनेवाले प्रधान व्यक्ति का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में काम करनेवाला। पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकीय विभाग में काम करनेवाला सम्पादक का सहायक। सहायक-सम्पादक।
उपसंहार–संज्ञा पुं० १. परिहार। २. हरण। ३. समाप्ति। शेष। ४. निराकरण। ५. नाश। ६. किसी पुस्तक के अंत का अध्याय जिसमें उसका उद्देश्य या परिणाम या निष्कर्ष संक्षेप में बतलाया गया हो। ७. सारांश। ८. मीमांसा। ९. व्यतीत। १० संग्रह। ११. अंत। मृत्यु। १२. पास लाना।

उपस–संज्ञा स्त्री० बदबू। दुर्गंध।

उपसत्ति–संज्ञा स्त्री० १. उपासना। सेवा। २. विनयपूर्वक गुरु के समीप गमन।

उपसना†–क्रि० अ० १. दुर्गंधित होना। २. सड़ना। ३. पचना। ४. घड़े से रस्सी अलग करना।

उपसर्ग–संज्ञा पुं० १. वह निपात या शब्द या अव्यय जो किसी संज्ञा या धातु के पहले लगता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। जैसे, अनु, अव, उप, उद् इत्यादि। २. अशकुन। ३. दैवी उत्पात। ४. रोग, कष्ट। ५. ग्रहण (सूर्य, चंद्र का)।

उपसर्जन–संज्ञा पुं० १. ढालना। २. उपद्रव। ३. गौण वस्तु। ४. त्याग।

उपसर्पण–संज्ञा पुं० १. उपास। २. अवगमन। ३. अनुवृत्ति।

उपसागर–संज्ञा पुं० खाड़ी। छोटा समुद्र। समुद्र का एक भाग।

उपसाना–क्रि० स० सड़ाना। बासी करना।

उपसुन्द–संज्ञा पुं० सुं नाम के दैत्य का छोटा भाई (पुराण)।

उपसेचन–संज्ञा पुं० १. पानी छिड़कना। पानी से सींचना या भिगोना। २. रसा। गीली चीज।

उपस्त्री–संज्ञा स्त्री० रखेली। उपपत्नी।

उपस्थ–संज्ञा पुं० १. पेड़। २. नीचे या मध्य का भाग। ३. गोद। ४. पुरुष-चिह्न। लिंग। ५. स्त्री-चिह्न। भग। ६. नितंब। ७.

ग० निकट बैठा हुआ। सुरक्षित स्थान।

उपस्थनिग्रह–संज्ञा पुं० जितेन्द्रियत्व। काम-दमन।

उपस्थल या उपस्थली–संज्ञा पुं० चूतड़। कूल्हा। पेड़।

उपस्थाता–संज्ञा पुं० भृत्य। सेवक।

उपस्थान–संज्ञा पुं० [वि० उपस्थानीय, उपस्थित] १. पास या सामने आना। २. अभ्यर्थना या पूजा के लिए पास आना। ३. पूजा का स्थान। ४. समाज। सभा। ५. खड़े होकर स्तुति या वंदना करना।

उपस्थापन–संज्ञा पुं० उपस्थितिकरण। निकट-आनयन।

उपस्थित–वि० १. पास बैठा हुआ। आगत सामने या पास आया हुआ। वर्तमान। विद्यमान। २. याद। ध्यान में आया हुआ। ३. स्वच्छ। ४. दौवारिक, द्वारपाल।

यौ० उपस्थित कवि–संज्ञा पुं० शीघ्र कवि। आशुकवि।

उपस्थित,वक्ता–संज्ञा पुं० सद्वक्ता। वचन-पटु।

उपस्थिता–संज्ञा स्त्री० वर्ण-वृत्ति-विशेष।

उपस्थिति–संज्ञा स्त्री० १. विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी। २. निकट होना। ३. प्राप्ति। स्मरण-शक्ति, स्मरण रखने की शक्ति।

उपस्वत्व–संज्ञा पुं० भूमि या किसी संपत्ति की आय का अधिकार या हक।

उपहत–वि० १. क्षत। नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ। २. दूषित। बिगाड़ा हुआ। ३. संकट में पड़ा हुआ। शक्ति-हीन। ४. छितराया हुआ। ५. ढका हुआ।

उपहसित (हास)–संज्ञा पुं० हासके छः भेदों में से चौथा, जिसमें हँसते समय सिर हिले।

उपहार–संज्ञा पुं० १. भेंट। नजर। सौगात। नजराना। २. पाशुपतों की उपासना के छः नियम—हसित, गीत, नृत्य, हुडुक्कार, नमस्कार और जप।

उपहास–संज्ञा पुं० [वि० उपहास्य] १. हँसी-मजाक। दिल्लगी। २. बुराई। निंदा। ३. बेइज्जती। असम्मान।

उपहासास्पद–वि० १. उपहास या हँसी उड़ाने के योग्य। २. बुरा। निंदनीय। खराब।

उपहासी–संज्ञा स्त्री० १. हँसी। ठट्ठा। २. निन्दा। अनादर।

उपहास्य–वि० दे० "उपहासास्पद"। हँसी के योग्य।

उपहित–वि० स्थापित।

उपही*–संज्ञा पुं० अपरिचित,विदेशी या बाहरी मनुष्य।

उपहृत–वि० आनीत। दत्त।

उपांग–संज्ञा पुं० १. अवयव। किसी अंग का कोई भाग। क्षुद्र भाग। २. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु की पूर्त्ति हो। जैसे—वेद के

उपांग। ३. टीका। तिलक। ४. नगाड़े जैसा एक वाद्य।

उपांत—संज्ञा पुं० [वि० उपांत्य] १. छोर या सिरे के समीप का भाग। अन्तिम। २. प्रदेश भाग। आस-पास का हिस्सा। ३. छोटा किनारा। ४. निकट। समीप। पास।

उपांत्य—वि० अंतिम से पहले का। अंतवाले के समीपवाला।

उपाइ—क्रि० स० उपजाई। गढ़ी। बनाई। रची।

उपाउ*—संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।

उपाऊ—संज्ञा पुं० उपाय। यत्न।

उपाकर्म—संज्ञा पुं० १. आरंभ। २. वर्षाकाल के बाद वेद प्रारंभ करने का समय। विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन। ३. संस्कार-विशेष। (यज्ञोपवीत-संस्कार)

उपाख्यान—संज्ञा पुं० १. प्राचीन कथा। २. किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा। ३. वृतांत। ४. आख्यान। ५. इतिहास।

उपाटना*—क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उपाड़ना—क्रि० स० उखाड़ना। नोचना।

उपात्त—वि० गृहीत। प्राप्त।

उपाति*—संज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।

उपादान—संज्ञा पुं० १. पाना। प्राप्ति। २. स्वीकार। ग्रहण। ३. ज्ञान। परिचय। बोध। ३. विषयों से इंद्रियों की निवृत्ति। प्रत्याहार। ४. वह कारण जो स्वयं कार्य्य-रूप में परिणत हो जाय। सामग्री जिससे कोई वस्तु तैयार हो। ५. सांख्य की चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही बात से पूरे फल की आशा करके और प्रयत्न छोड़ देता है। ६. न्यायमत में समवायीकरण। ७. विषयों की ओर इन्द्रियों का जाना।

उपादेय—वि० १. लेने योग्य। ग्रहण करने योग्य। २. उत्कृष्ट। श्रेष्ठ। उत्तम। ३. विधेय कर्म।

उपाधि—संज्ञा स्त्री० १. कपट। छल। २. वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे। ३. उपद्रव। अन्याय। उत्पात। ४. धर्मचिंता। कर्त्तव्य का विचार। ५. प्रतिष्ठासूचक पद।

उपाधि—संज्ञा पुं० १. छल। २. चिह्न। ३. उपनाम। अल्ल। पदवी।

उपाधिधारी—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जिसे उपाधि या खिताब मिला हो।

उपाधी—वि० [स्त्री० उपाधिनी] १. अन्यायी। उपद्रवी। उत्पात करनेवाला। २. अधर्मी।

उपाध्याय—संज्ञा पुं० [स्त्री० उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १. अध्यापक। शिक्षक। गुरु। २. वेद-वेदांग का पढ़ानेवाला। ३. एक प्रकार का ब्राह्मणों का भेद-विशेष।

उपाध्याया—संज्ञा स्त्री० गुरुआनी। अध्यापिका।

उपाध्यायानी—संज्ञा स्त्री० गुरुपत्नी। उपाध्याय की स्त्री।

उपाध्यायी—संज्ञा स्त्री० १. गुरुपत्नी। उपाध्याय की स्त्री। २. अध्यापिका। शिक्षिका।

उपानत्—संज्ञा स्त्री० उपानह। पादुका। जूती।

उपानह—संज्ञा पुं० पादुका। जूता। पनही।

उपाना*—क्रि० स० १. उत्पन्न करना। २. सोचना।

उपाय—संज्ञा पुं० [वि० उपायी, उपेय] १. पास या निकट आना। २. साधन। युक्ति। वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचें। ३. राजनीति में शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—साम, भेद, दंड, और दान। ४. शृंगार के दो साधन, साम और दाम। ५. चेष्टा। ६. प्रतीकार।

उपायन—संज्ञा पुं० १. उपहार। भेंट। २. व्रत की प्रतिष्ठा। ३. समीप गमन। ४. गुरु के पास जाना।

उपाया—क्रि० स० "उपराग"। १. सूर्य-चन्द्र ग्रहण। २. परिवाद। ३. व्यसन। ४. यंत्रणा। ५. निन्दा।

उपायी—वि० १. उपाय करनेवाला। यत्नी। २. उपार्जक। ३. खोजी। सन्धानी।

उपारना*—क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उपारी—क्रि० स० उखाड़ी। नोच ली।

उपार्जन—संज्ञा पुं० [वि० उपार्जनीय,

उपार्जित] कमाना। लाभ करना। अर्जन। २. एकत्रित करना।
उपार्जित–वि० कमाया हुआ। प्राप्त किया हुआ। संगृहीत। इकट्ठा किया हुआ।
उपालंभ–संज्ञा पुं० [वि० उपालब्ध] १. उलाहना। २. निंदा। ३. शिकायत।
उपालंभन–संज्ञा पुं० [वि० उपालंभनीय, उपालंभित, उपालंभ्य, उपालब्ध] १. निंदा करना। २. उलाहना देना।
उपाव*†–संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।
उपास*†–संज्ञा पुं० दे० "उपवास"। अनाहार।
उपासक–वि० [स्त्री० उपासिका] १.आराधक। २. भक्त। ३. पूजा या आराधना करनेवाला। ४. शूद्र।
उपासन–संज्ञा पुं० १. शुश्रूषा। सेवा। २. आराधना। ३. धनुर्विद्या।
उपासना–संज्ञा स्त्री० १. पूजा। आराधना। २. परिचर्य्या। टहल। ३. पास बैठने की क्रिया। *क्रि० स० भजना। उपासना या पूजा करना। सेवा करना।
क्रि० अ० १. निराहार रहना।उपवास करना। भूखा रहाना।
उपासनीय वि० १. पूजनीय। सेवा करने योग्य। २. आराधनीय।
उपासा–वि० [स्त्री० उपासिनी] १. सेवक। भक्त। उपासना करनेवाला। २. जिसने भोजन न किया हो।
उपासी–वि० दे० "उपासा"।
उपास्य–वि० सेव्य। पूजा के योग्य। आराध्य।
उपेंद्र–संज्ञा पुं० १. वामन या विष्णु भगवान्। २. इंद्र के छोटे भाई।
उपेंद्रवज्रा–संज्ञा स्त्री० ग्यारह वर्णों की वृत्ति-विशेष।
उपेक्षण–संज्ञा पुं० [वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य] १. उदासीन होना। विरक्त होना। २. किनारा खींचना। ३. घृणा या तिरस्कार करना।
उपेक्षा–संज्ञा स्त्री० १. उदासीनता। विरक्ति। २. लापरवाही। ३. घृणा। तिरस्कार। अनादर। ४. अस्वीकार। ५. त्याग।
उपेक्षित–वि० तिरस्कृत। जिसकी उपेक्षा की गई हो। निंदित।
उपेक्ष्य–वि० जो उपेक्षा के योग्य हो।
उपेत–वि० संयुक्त। मिला हुआ। एकत्रित। २. समागत। प्राप्त। ३. आसन्न। ४. बीता हुआ। गत।
उपैन*–वि० [स्त्री० उपैनी] खुला हुआ। नग्न। क्रि० अ० १. लुप्त हो जाना। २.उड़ना।
उपोद्घात–संज्ञा पुं० १. प्रस्तावना। भूमिका। पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य। २. विरुद्ध तर्क या उदाहरण (न्याय)।
उपोषण–संज्ञा पुं० [वि० उपोषणीय, उपोषित, उपोष्य] निराहार व्रत। उपवास।
उपोसथ–संज्ञा पुं० निराहार व्रत। उपवास। (जैन, बौद्ध)
उफ़–अव्य० अफसोस। आह। ओह।
उफड़ना*–क्रि० अ० १. उफान खाना। उबलना। २. जोश खाना।
उफनना*–क्रि० अ० १. उबलकर उठना। (दूध आदि का)। २. उमड़ना। ३. जोश खाना।
उफनाना–क्रि० अ० १. उबलना। २. उमड़ना।
उफान–संज्ञा पुं० उबाल। गरमी पाकर फेन के साथ ऊपर उठना।
उफान–संज्ञा स्त्री० दे० फाल। लम्बा डग।
उबकना–क्रि० अ० १. उलटी करना। वमन करना। २. रद्द करना।
उबका–संज्ञा पुं० वमन। कै।
क्रि०–वमन की। कै की।
उबकाई†*–[संज्ञा स्त्री०] १. मतली। २. उछाँट। उछाल।
उबट*–संज्ञा पुं० विकट मार्ग। बुरा रास्ता। वि० ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।
उबटन–संज्ञा पुं० उपटन। शरीर पर मलने के लिए सरसों, तिल और चिरौंजी आदि का लेप। बटना। २. मंजन।
उबटना–क्रि० अ० उबटन लगाना।
उबटि–क्रि० अ० उबटन लगाकर।
उबना*–क्रि० अ० १. दे० "उगना"। २. दे० "उबना"।
उबर–क्रि० अ० १. बचकर। शेष रहकर। २. बढ़कर।

उबरण–संज्ञा पुं० १. उद्वर्तन। २. बचाव। ३. आड़।
उबरना–क्रि० अ० १. उद्धार होना। मुक्ति पाना। छूटना। २. शेष या बाकी बचना
उबरा–वि० १. बचा हुआ। २. फालतू।
उबलना–क्रि० अ० १. उफनना। खलबलाना २. पकना। ३. वेग से निकलना। उमड़ना।
उबसना–क्रि० अ० १. सड़ना। २. गलना। ३. पचना।
उबहन–संज्ञा स्त्री० कुए से पानी खींचने की रस्सी।
उबहना*–क्रि० स० १. हथियार म्यान से बाहर निकालना। शस्त्र उठाना। २. पानी फेंकना या उलीचना। ३. उभरना। ऊपर की ओर उठना।
क्रि० स० जोतना।
वि० नग्न। बिना जूते का।
उबांत*†–संज्ञा स्त्री० कै। उलटी।
उबाना–क्रि० अ० १. बोना। रोपना। लगाना। २. तंग करना।
वि० बिना जूतों का। नंगे पैर।
उबार–संज्ञा पुं० १. उद्धार। छुटकारा। २. निस्तार। ३. ओहार।
उबारना–क्रि० स० १. मुक्त करना। उद्धार करना। छुड़ाना। २. बचाना। ३. राखना।
उबाल–संज्ञा पुं० १. उफान। आँच पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। २. जोश। उद्वेग। ३. क्षोभ।
उबालना–क्रि० स० १. खौलना। चुराना। जोश देना। २. उसीजना। उसेबना। राँधना। पानीके साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना।
उबासी–संज्ञा स्त्री० जँभाई।
उबाहना*–क्रि० स० दे० "उबहना"।
उबीठना–क्रि० स० अरुचि होना। जी भर जानें पर अच्छा न लगना।
क्रि० अ० घबराना। ऊबना।
उबीधना*–क्रि० अ० १. उलझना। फँसना। २. गड़ना। धँसना।
उबीधा–वि० [स्त्री० उबीधी] १. धँसा या गड़ा हुआ। २. झाड़-झंखाड़वाला। काँटों से भरा हुआ।
उबेना*†–वि० बिना जूते का। नंगे पैर।
उबेरना*–क्रि० स० दे० "उबारना"।
उबेहना–क्रि० स० १. वैठाना। २. पिरोना। ३. जड़ना।
उभ–संज्ञा पुं० १. ऊर्ध्व। ऊपर। २. द्वि। दो।
उभइ–वि० उभय। दोनों।
उभक–संज्ञा पुं० रीछ। भालू।
उभड़ना–क्रि० अ० १. फूलना। उकसना। किसी सतह का आस-पास की सतह से कुछ ऊँचा होना। २. उठना। ऊपर निकलना। जैसे अंकुर उभड़ना। ३. उत्पन्न या पैदा होना। ४. प्रकाशित होना। खुलना। ५. बढ़ना। अधिक प्रवल होना। ६. जवानी पर आना। ७. चल देना या हट जाना। ८. गाय-भैंस आदि का मस्त होना।
उभना*–क्रि० अ० दे० "उभड़ना"। उठना।
उभय–वि० दोनों। युगल।
उभयतः–क्रि० वि० दोनों ओर से। पार्श्वतः।
उभयतोमुख–वि० जिसके दोनों ओर मुँह हों।
यौ०—उभयतोमुखी गौ=ब्याती हुई गाय जिसके गर्भ से बच्चे का मुंह बाहर निकल आया हो। (इसके दान का बड़ा माहात्म्य लिखा है।)
उभयत्र–अव्य० दोनों स्थानों में। दोनों तरफ।
उभयविपुला–संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का भेद-विशेष।
उभरना*†–क्रि० अ० दे० "उभड़ना"। अहंकार करना। शेखी करना। उठना। बढ़ना। उतरना। निकलना। निकल आना।
उभराई–संज्ञा पुं० १. इतराई। २. फुलाहट।
उभराना–क्रि० बहुत भराना। छकाना।
उभरौहा*–वि० उभरा हुआ। उभार पर आया हुआ।
उभाड़–संज्ञा पुं० १. उठान। ऊँचाई। ऊँचापन। २. वृद्धि। ३. ओज।
उभाड़ना–क्रि० स० १. उत्तेजित करना। बहकाना। उकसाना। २. भारी वस्तु को धीरे-धीरे उठाना।
उभाड़दार–वि० १. उभरा हुआ। २. भड़कीला।
उभाना*–क्रि० अ० दे० "अभुआना"। उठाना। खड़ा करना। उत्थित करना। ऊपर उठाना।

उभार–संज्ञा पुं० गुमड़ा। फुलावट। उठाव।
उभारना–क्रि० फुलाना। उसकाना। उत्तेजित करना।
उभिटना*–क्रि० अ० [देश०] १. भिटकना ठिठकना। २. सहारा लेना। ३. हिचकना।
उभै*–वि० दे० "उभय"।
उभौ–वि० दो। दोनों। आपस में।
उमंग–संज्ञा स्त्री० १. उल्लास। चित्त का उभाड़। सुखदायक मनोवेग। लहर। मौज। आनन्दाधिक्य। २. उभाड़। ३. अधिकता। ४. पूर्णता।
उमंगना –क्रि० अ० दे० "उमगना"। आनन्द से आगे जाना। उत्साहपूर्वक आगे बढ़ना। उत्साह में भरना।
उमंगी–वि० उच्चपदाभिलाषी।
उमँड़ना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। उभरना। परिवृद्ध होना। बढ़कर रहना। वेग से बहना।
उमग*–संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।
उमगत–वि० प्रसन्न होते हुए।
उमगन*–संज्ञा स्त्री० दे० "उमग"।
उमगना–क्रि० अ० १. उमड़ना। उभड़ना। २. भरकर ऊपर उठना। हुलसना। उल्लास में होना।
उमगाना–क्रि० स० उमंग पैदा करना। हुलसाना। प्रफुल्लित करना या प्रोत्साहित करना। उभाड़ना।
उमचना*–क्रि० अ० १. हुमचना। किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिए कूदना। २. चौकन्ना होना। सचेत या सजग होना।
उमड़–संज्ञा स्त्री० १. बढ़ाव। भराव। बाढ़। २. घिराव। ३. धावा।
उमड़ना–क्रि० अ० १. उभरना। तरल वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना। उतराकर बह चलना। २. उठकर फैलना। ३. छाना। ४. घेरना। जैसे—बादल उमड़ना
यौ०—उमड़ना-घुमड़ना=घूम-घूमकर फैलना या छाना। (बादल)
५. जोश में आना। आवेश में भरना।
उमड़ाना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
क्रि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक रूप।

उमदना*–क्रि० अ० १. मतवाला होना। उमंग में भरना। २. उमड़ना। ३. उमगना।
उमदा–वि० दे० "उम्दा"।
उमदाना*–क्रि० अ० १. मस्त या मतवाला होना। २. आवेश या उमंग में आना।
उमरा–संज्ञा स्त्री० [अ० उम्र] १. आयु। अवस्था। वय। २. जीवनकाल।
उमरती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बाजा।
उमरा–संज्ञा पुं० [अ०] अमीर का बहुवचन। प्रतिष्ठित लोग। सरदार।
उमराव*–संज्ञा पुं० दे० "उमरा"।
उमरी–संज्ञा स्त्री० वह पौधा जिसे जलाकर सज्जीखार तैयार किया जाता है।
उमस–संज्ञा स्त्री० वर्षा-काल में वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है। वर्षा होने पर हवा न चलने से होनेवाली गर्मी।
उमहना*–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। उभड़ना। उठना।
उमहाना*–क्रि० स० दे० उमाहना।
उमा–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। शिव की स्त्री। २. दुर्गा। भगवती। ३. हलदी। हरिद्रा। ४. अलसी। अतसी। ५. आभा। प्रकाश। शांति। रात्रि। ६. कीर्ति।
उमाकना*–क्रि० अ० १. नष्ट करना। २. खोदकर फेंक देना। उखाड़ना।
उमाकिनी*–वि० स्त्री० १. उखाड़नेवाली। २. खोदकर फेंक देनेवाली।
उमाचना*†–क्रि० स० १. उभाड़ना। ऊपर उठाना। २. निकालना।
उमाद*–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।
उमाधव–संज्ञा पुं० महादेव।
उमापति–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
उमासुत–संज्ञा पुं० कार्तिकेय। गणेश।
उमाह–संज्ञा पुं० १. उमंग। उत्साह। जोश। २. चित्त का उदगार।
उमाहना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
क्रि० स० उमगाना। उमड़ाना।
उमाहल–वि० उत्साहित। उमंग से भरा हुआ।
उमेठन–संज्ञा स्त्री० १. बल। पेंच। २. मरोड़। ३. ऐंठन।

उमेठना–क्रि० स० मरोड़ना। ऐंठना।
उमेठवाँ–वि० १. पेंचदार। ऐंठनदार। २. घुमावदार।
उमेड़ना*–क्रि० स० दे० "उमेठना"।
उमेलना*–क्रि० स० १. प्रकट करना। २. वर्णन करना। ३. खोलना।
उमेश–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।
उम्दगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अच्छापन। २. भलापन। ३. खूबी।
उम्दा–वि० [अ०] उत्तम। बढ़िया। अच्छा।
उम्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. समाज। किसी मत के अनुयायियों की मंडली। २. समिति। ३. संतान। (परिहास) ४. अनुयायी। पैरोकार।
उम्मी–संज्ञा स्त्री० जौ-गेहूँ की हरे दाने की बाल।
उम्मीद, उम्मेद–संज्ञा स्त्री० [फा०] आशा। आसरा। भरोसा।
उम्मेदवार–संज्ञा पुं० [फा०] १. जो आशा या भरोसा रक्खे। २. काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ्तर में बिना वेतन काम करनेवाला मनुष्य। ३. किसी पद के चुनाव के लिए खड़ा होनेवाला आदमी।
उम्मेदवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आशा। भरोसा। २. आसरा। २. काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना वेतन कार्य करना। ३. गर्भावस्था।
उम्र–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वय। अवस्था। आयु। उमर। २. जीवनकाल।
उयेउ–क्रि० अ० १. उगा। उदय हुआ। निकला। २. देख पड़ा। ३. प्रकाशित हुआ।
उर–संज्ञा पुं० १. हृदय। २. वक्षस्थल। छाती। ३. मन। चित्त।
उरकना*–क्रि० अ० दे० "रुकना"।
उरक्षत–संज्ञा पुं० १. फुफ्फुस की पीड़ा। २. छाती का घाव। ३. हृदय की व्याधि। भयंकर कष्ट (लक्षणा)।
उरग–संज्ञा पुं० साँप। अहि। नाग। भुजंग।
उरगना*–क्रि० स० १. स्वीकार करना। २. सहना। ३. जोगवना।
उरगाद–संज्ञा पुं० सर्पभक्षक। गरुड़। विष्णु का वाहन।
उरगारि–संज्ञा पुं० गरुड़। नागरिपु। वैनतेय। सर्पों को रखनेवाला। सर्प-शत्रु।
उरगिनी*–संज्ञा स्त्री० साँपिन। सर्पिणी।
उरज, उरजात*–संज्ञा पुं० दे० "उरोज"। कुच। स्तन। पयोधर।
उरझना*–क्रि० अ० दे० "उलझना"। अटकना। लगना। आसक्त होना।
उरण–संज्ञा पुं० १. मेढ़ा। भेड़ा। २. युरेनस नाम का ग्रह।
उरद–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० उरदी] माष। पौधा-विशेष जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है।
उरध*–क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।
उरधारना–क्रि० स० दे० "उधेड़ना"।
उरबसी–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वशी"। १. अतिप्रिय। हृदय में वास करनेवाली। २. एक गहना।
उरबा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी"।
उरमना*†–क्रि० अ० लटकना।
उरमाना*–क्रि० स० लटकाना।
उरमाल*–संज्ञा पुं० [फा० रूमाल] रूमाल।
उरमिला*–संज्ञा स्त्री० १. उर्मिला। लक्ष्मण जी की स्त्री का नाम। २. एक छंद-विशेष।
उरमी*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "ऊर्मि"। लहर। २. दुख। पीड़ा। कष्ट।
उरविज*–संज्ञा पुं० मंगल। भौम।
उरविजा–संज्ञा स्त्री० भूमिसुता। पृथ्वी से उत्पन्न। जानकी। सीता।
उररी–अ० स्वीकार। अंगीकार।
उररीकार–संज्ञा पुं० स्वीकार।
उररीकृत–वि० स्वीकृत।
उरला–वि० पिछला। बाद का। उत्तर। वि० १. विरला। २. निराला।
उरस–वि० नीरस। फीका।
संज्ञा पुं० १. वक्षस्थल। छाती। २. चित्त। हृदय।
उरसना–क्रि० अ० उथल-पुथल या ऊपर-नीचे करना।

उरसिज–संज्ञा पुं० स्तन।
उरस्त्राण–संज्ञा पुं० वक्षस्त्राण। कवच।
उरहना*–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"। शिकायत।
उरा*–संज्ञा स्त्री० पृथिवी। भूमि।
उराय–संज्ञा पुं० दे० "उराव"।
उरारा*–वि० बहुत बड़ा। विस्तृत। विशाल।
उराव–संज्ञा पुं० १. उमंग। उत्साह। चाव। हौसला। २. चाह।
उराहना–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
उरिण, उरिन–वि० दे० "उऋण"। ऋण से मुक्त।
उरु–वि० १. लंबा-चौड़ा। विस्तीर्ण। २. बड़ा। विशाल। ३. श्रेष्ठ।
*संज्ञा पुं० जाँघ। जंघा।
उरुवा*–संज्ञा पुं० रुरुआ। उल्लू की जाति का पक्षी-विशेष।
उरूज–संज्ञा पुं० [अ०] १. वृद्धि। बढ़ती।
उरे*†–क्रि० वि० १. दूर। २. आगे। परे।
उरेखना*–क्रि० स० दे० "अवरेखना"।
उरेब–संज्ञा स्त्री० १. वंचना। २. उलझावा।
उरेह– संज्ञा पुं० चित्रकारी। नक्काशी।
उरेहना–क्रि० स० १. रचना। लिखना खींचना। (चित्र) रँगना। २. लगाना।
उरोज–संज्ञा पुं० पयोधर। स्तन। कुच।
उर्ज्जित–वि० वर्द्धित। उन्नत। उत्सृष्ट।
उर्ण–संज्ञा स्त्री० भेड़ आदि का रोम। ऊन।
उर्द–संज्ञा पुं० दे० "उरद"। १. माष। २. कलाई।
उर्दपर्णी–संज्ञा स्त्री० बन-उरदी। माषापर्णी।
उर्दाबेगनी–संज्ञा स्त्री० अन्तःपुर-रक्षिका। रनवास की पहरुई।
उर्दू–संज्ञा स्त्री० [तु०] वह हिंदी जिसमें अरबी-फारसी के शब्द अधिक हों और जो फारसी लिपि में लिखी जाय।
उर्दू बाजार–संज्ञा पुं० १. छावनी का बाजार। २. वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।
उर्ध*–वि० ऊर्ध्व।
उर्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] उपनाम। पुकारने का नाम। चलतू नाम।
उर्मि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।
उर्मिला–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मणजी की पत्नी जो सीताजी की छोटी बहिन थीं।
उर्वर–वि० शस्य-युक्त स्थान। उपजाऊ भूमि।
उर्वरा–संज्ञा स्त्री० १. उपजाऊ भूमि। २. भूमि। पृथ्वी। ३. अप्सरा-विशेष।
वि० स्त्री० उपजाऊ (भूमि)
उर्वसी–संज्ञा स्त्री० अप्सरा-विशेष।
उर्विजा*–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वीजा"।
उर्वी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरती।
उर्वीजा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी से उत्पन्न, सीता।
उर्वीधर–संज्ञा पुं० १. पर्वत। २. शेषनाग।
उर्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि। २. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का काम।
उलंग*–वि० वस्त्र-रहित। नंगा। दिगंबर।
उलंघन*–संज्ञा पुं० दे० "उल्लंघन"।
उलंघना, उलँघना*–क्रि० स० १. उल्लंघन करना। नाँघना। डाँकना। २. अवज्ञा करना। न मानना। ३. टालना।
उलका*–संज्ञा स्त्री० दे० "उल्का"।
उलचना–क्रि० स० दे० "उलीचना"। छानना। पसाना। सुखाना।
उलछना*†–क्रि० स० १. हाथ से फैलाना। बिखरना। २. उलीचना।
उलछारना*†–क्रि० स० दे० "उछालना"।
उलझन–संज्ञा स्त्री० १. गाँठ। गिरह। २. अटकाव। फँसान। ३. विघ्न। बाधा। ४. चक्कर। समस्या। पेंच। फेर। ५. चिंता। व्यग्रता।
उलझना–क्रि० अ० १. फँसना। जैसे काँटे में उलझना। ('उलझना' का उलटा 'सुलझना' है।) २. चक्कर या लपेट में पड़ना। फँस जाना। ३. काम में लिप्त या लीन होना। ४. लिपटना। ५. झगड़ा करना। लड़ना-झगड़ना। ६. कठिनाई या अड़चन में पड़ना। ७. रुकना। अटकना। ८. टेढ़ा होना। बल खाना।

उलझाना–क्रि० स० १. फँसाना। २. लिप्त रखना। लगाए रखना। ३. टेढ़ा करना।
*क्रि० अ० फँसना। उलझना।

उलझाव–संज्ञा पुं० १. झगड़ा। बखेड़ा। २. अटकाव। फँसान। ३. फेर। चक्कर।

उलझौहाँ–वि० उलझन पैदा करनेवाला। १. अटकानेवाला। फँसानेवाला। २. लुभानेवाला।

उलटना–क्रि० अ० १. औंधा होना। पलटना। ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना। २. घूमना। पीछे मुड़ना। पलटना। ३. टूट पड़ना। उमड़ना। ४. गड़बड़ होना। अस्त-व्यस्त होना। ५. विरुद्ध होना। उलटा होना। विपरीत होना। ६. क्रुद्ध होना। चिढ़ना। ७. नष्ट होना। ८. अचेत या बेसुध होना। ९. गिरना। १०. इतराना। गर्व करना। ११. चौपायों का एक बार जोड़ा खाने पर गर्भ धारण न करना।
क्रि० स० १. औंधा करना। नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे करना। फेरना। पलटना। २. औंधा गिराना। ३. गिरा देना। पटकना। ४. लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर चढ़ाना। ५. अस्तव्यस्त या अंडबंड करना। ६. उलटा करना। और का और करना। ७. उत्तर-प्रत्युत्तर करना। बात दोहराना। ८. उखाड़ डालना। खोदकर फेंकना। ९. बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिए खेत जोतना। १०. अचेत करना। ११. कै करना। उलटी करना। १२. अच्छी तरह ढालना। उँडेलना। १३. नष्ट करना। १४. बार-बार कहना। रटना।

उलट-पलट (पुलट)–संज्ञा स्त्री० अदल-बदल। अव्यवस्था। गडबड़ी। नीचे-ऊपर।

उलट-फेर–संज्ञा पुं० १. परिवर्त्तन। हेर-फर। अदल-बदल। २. जीवन की अच्छी-बुरी दशा।

उलटा–वि० [स्त्री० उलटी] पलटा।
मुहा०—उलटी साँस चलना=दम उखड़ना। साँस का जल्दी-जल्दी बाहर निकलना। (मरने का लक्षण)। उलटी साँस लेना=मरने के निकट होना। जल्दी-जल्दी साँस खींचना। उलटे मुँह गिरना=दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना। २. इधर का उधर। क्रम-विरुद्ध। फेरा हुआ। उलटा फिरना या लौटना=तुरंत पलटना। उलटी गंगा बहना=अनहोनी बात होना। उलटी माला फेरना=अहित चाहना। बुरा मनाना। उलटे छुरे से मूँड़ना=झँसना। उल्लू बनाकर काम निकालना। उलटे पाँव फिरना=तुरंत लौटना। ३. कालक्रम में जो आगे का पीछे और पीछे का आगे हो। जो समय से आगे-पीछे हो। ४. विपरीत। विरुद्ध। ५. अयुक्त। अंडबंड। अनुचित। उलटा जमाना=वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय। उलटा-सीधा=अव्यवस्थित। बिना क्रम का अंडबंड। उलटी खोपड़ी का=गँवार। मूर्ख। उलटी-सीधी सुनाना=भला-बुरा कहना। खरी-खोटी सुनाना। फटकारना।
क्रि० वि० १. विरुद्ध क्रम से। अंडबंड। २. अवांछित। जैसा होना चाहिए, उससे और ही प्रकार से।
संज्ञा पुं० बेसन से बननेवाला पकवान-विशेष।

उलटाना*–क्रि० स० लौटाना। पीछे फेरना। पलटाना। २. कुछ का कुछ करना या कहना। अन्यथा कहना या करना। ३. दूसरे पक्ष में करना। फेरना। ४. उलटा करना।

उलटा-पलटा (पुलटा)–वि० पलटना। अंडबंड। अक्रम। बेतरतीब।

उलटा-पलटी–संज्ञा स्त्री० हेर-फेर। फेरफार। अदल-बदल।

उलटाव–संज्ञा पुं० चक्कर। फेर। घुमाव।

उलटी–संज्ञा स्त्री० १. कै। वमन। २. कलाबाजी।

उलटी सरसों–संज्ञा स्त्री० सरसों-विशेष जिसकी कलियों का मुँह नीचे होता है। यह जादू, टोने के काम में आती है। टेरो।

उलटे–क्रि० वि० १. बेठिकाने। विरुद्ध क्रम से। २. विरुद्ध न्याय से। विपरीत व्यवस्थानुसार।

उलथना*–क्रि० अ० उलटना। ऊपर-नीचे होना। उथल-पुथल होना। लहराना। डुलना। क्रि० स० उलट-पुलट करना। ऊपर-नीचे करना।

उलथा–संज्ञा पुं० १. नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना। २. कलैया। कलाबाजी। ३. उलटा। उड़ी। कलाबाजी के साथ पानी में कूदना। ४. करवट बदलना। (चौपायों के लिए) ५. अनुवाद। भाषान्तरकरण। ६. अनुकरण। ७. रागिनी-विशेष।

उलद*–संज्ञा स्त्री० झड़ी। वर्षण।

उलदना*–क्रि० स० उलटना। ढालना। उँडेलना।
क्रि० अ० जोर से बरसना।

उलना–संज्ञा पुं० पलटना। औंधाना। विपरीत करना। दोहराना। मोड़ना। नीचे-ऊपर करना।

उलमना*–क्रि० अ० झुकना। लटकना।

उलरना*–क्रि० अ० १. लेटना। शयन करना। २. उछलना। कूदना। ३. नीचे-ऊपर होना। ४. झपटना।

उललना*–क्रि० अ० १. उतरना। २. ढलना। ढरकना। ३. इधर-उधर होना।

उलसना*–क्रि० अ० सोहना। शोभित होना।

उलहना–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"। निन्दा। दोष। उपालंभ। गिला।
क्रि० अ० १. निकलना। उभड़ना २. प्रस्फुटित होना। ३. उमड़ना। हुलसना। ४. फूलना। ५. उगना।

मुहा०–उलहना देना=१. उपालंभ करना। शिकायत करना। २. निन्दा करना। ३. पुकारना।

उलाँघना†*–क्रि० अ० १. लाँघना। फाँदना। डाँकना। २. न मानना। अवज्ञा करना। ३. पहले पहल घोड़े पर चढ़ना। (चाबुक-सवार)

उलाटना†–क्रि० अ० दे० "उलटना"।

उलार–वि० जिसका पिछला भाग भारी हो। जो पीछे की ओर झुका हो। जिसके पीछे की ओर बोझ अधिक हो। (गाड़ी)।

उलारना†–क्रि० स० नीचे-ऊपर फेंकना। उछालना।
क्रि० स० दे० "ओलारना"।

उलाहना–संज्ञा पुं० १. उपालंभ। शिकायत। किसी की भूल या अपराध को उसे दुःखपूर्वक जताना। गिला। २. किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना। शिकायत। ३. निन्दा।
†*क्रि० स० १. निंदा करना। उलाहना देना। २. अपराध लगाना। दोष देना।

उलीचना–क्रि० स० १. हाथ या बरतन से पानी उछालकर दूसरी ओर डालना। २. उँडेलना। फेंकना।

उलूक–संज्ञा पुं० उल्लू चिड़िया। घुग्घू। २. इंद्र। ३. कणाद मुनि का एक नाम। ४. दुर्योधन का दूत-विशेष।

यौ०—उलूकदर्शन=वैशेषिक-दर्शन।
संज्ञा पुं० लुक। लौ।

उलूखल–संज्ञा पुं० १. ओखली। ओखरी। २ खरल। खल। ३. गुग्गुल।

उलूपी–संज्ञा स्त्री० नागकन्या। अर्जुन की पत्नी।

उलेटा–संज्ञा पुं० पराठा। परतदार मोटी पूरी। पलटा।

उलेड़ना*–क्रि० स० १. ढालना। २. उड़ेलना। ३. ढरकाना।

उलेल*–संज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद। २. उमंग। जोश। तेजी। ३. बाढ़।
वि० लापरवाह। अल्हड़।

उल्का–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। तेज। २. लुआठा। लुक। ३. मशाल। दस्ती। ४. दीया। ५. चमकीले पिंड-विशेष जो कभी-कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर को वेग से जाते हुए अथवा पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनके गिरने को "तारा टूटना" कहते हैं। अग्निपिण्ड। लूका।

उल्कापात–संज्ञा पुं० १. तारा टूटना। लूक गिरना। २. विघ्न। उत्पात। ३. आश्चर्य। ४. अशुभसूचक चिह्न।

उल्कापाती–वि० [स्त्री० उल्कापातिनी] उपद्रव करनेवाला। उत्पाती।

उल्कामुख–संज्ञा पुं० [स्त्री० उल्कामुखी] १. गीदड़। २. अगिया-बैताल। प्रेत-विशेष जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है। ३. शिवजी का एक नाम।

उल्फत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रेम।

उल्था–संज्ञा पुं० अनुवाद। भाषांतर।

उल्मुक–संज्ञा पुं० लूका। कोयला। अंगारा।

उल्लंघन–संज्ञा पुं० १. न मानना। पालन न करना। अवज्ञा करना। २. फाँदना। लाँघना। डाँकना। ३. अतिक्रमण।

उल्लंघना*–क्रि० स० दे० "उलंघना"।

उल्लसन–संज्ञा पुं०[वि० उल्लसित,उल्लासी] १. हर्ष करना। प्रसन्न होना। खुशी मनाना। २. रोमांच।

उल्लसित–वि० [स्त्री० उल्लासिता) प्रसन्न। खुश।

उल्लाप्य–संज्ञा पुं० १. उपरूपक का भेद-विशेष। २. सात प्रकार के गीतों में से एक।

उल्लाल–संज्ञा पुं० मात्रिक अर्द्धसम छंद-विशेष।

उल्लाला–संज्ञा पुं० मात्रिक छंद-विशेष।

उल्लास–संज्ञा पुं० [वि० उल्लासक, उल्लसित] १. चमक। झलक। प्रकाश। २. प्रसन्नता। हर्ष। आनंद। हुलास। ३. पर्व। ग्रंथ का एक भाग। ४. अलंकार-विशेष। जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना दिखलाया जाता है।

उल्लासक–वि० [स्त्री० उल्लासिका] आनंदी। आनंद करनेवाला। मौजी।

उल्लासन–संज्ञा पुं० १. प्रकाशित या प्रकट करना। २. प्रसन्न होना। हर्षित होना।

उल्लासना–क्रि० स० १. प्रकट करना। २. प्रसन्न करना।

उल्लासी–वि० [स्त्री० उल्लासिनी] आनंदी।

उल्लिखित–वि० १. उत्कीर्ण। खोदा हुआ। २. छीला या खरादा हुआ। ३. उपर्युक्त ऊपर लिखा हुआ। ४. चित्रित। खींचा हुआ। ५. लिखित।

उल्लू–संज्ञा पुं० १. घुग्घू। पक्षी-विशेष। खूसट। २. मूर्ख। बेवकूफ। गँवार। उजड्ड। मुहा०—कहीं उल्लू बोलना=उजाड़ होना। उल्लू बनाना=मूर्ख बनाना। उल्लू उड़ाना=मूर्खता के काम में समय बिताना।

उल्लूपन–संज्ञा पुं० मूर्खता। गँवारपन। उजड्डपन।

उल्लेख–संज्ञा पुं० १. चर्चा। वर्णन। जिक्र। कथन। २. लिखना। लेख। ३. प्रसंग। ४. चित्र खींचना। ५. काव्यालंकार-विशेष जिसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में वर्णन किया जाय।

उल्लेखन–संज्ञा पुं० १. लिखना। २. चित्र खींचना। ३. वमन। ४. खनन। ५. कथन। उच्चारण।

उल्लेखित–वि० १. प्रस्तावित। २. कथित। उक्त। कहा हुआ।

उल्लेखनीय–वि० १. जिसका उल्लेख किया जा सके। ,२. लिखने योग्य।

उल्लोच–संज्ञा पुं० चँदोवा। चंद्रातप।

उल्लोल–संज्ञा पुं० महातरंग। कल्लोल। बड़ी भारी लहर। हिलोर।

उल्व–संज्ञा पुं० संज्ञा १. गर्भाशय। २. आँवल। झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है। अँवरी। ३. ढक्कन। आवरण।

उल्वण–संज्ञा पुं० १. गर्भविष्टन। जाली। २. जरायु। वशिष्ठ का एक पुत्र।
वि० १. प्रचंड। तीव्र। २. विचित्र। ३. नृत्य में हस्तमुद्रा-विशेष। ४. अतिरिक्त। अधिक। फालतू। अतिमात्र।

उवना*–क्रि० अ० दे० "उगना"।

उशबा–संज्ञा पुं० [अ०] पेड़-विशेष जिसकी जड़ रक्तशोधक होती है।

उशना–संज्ञा पुं० १. शुक्राचार्य। २. भार्गव। ३. दैत्यगुरु।

उशीनर–संज्ञा पुं० १. देश-विशेष। २. चन्द्रवंशीय राजा-विशेष।

उशीर–संज्ञा पुं० खस। गाँड़र की जड़।

उषा–संज्ञा स्त्री० १. सबेरा तड़का। प्रभात। ब्राह्मवेला। २. अरुणोदय की ललाई। ३. बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को ब्याही गई थी। ४. गौ। ५. रात्रि। ६. प्रज्ज्वलित। झुलसानेवाला।

उषाकाल–संज्ञा पुं० प्रत्यूष। प्रभात। भोर। तड़का।

उषापति—संज्ञा पुं० अनिरुद्ध। कामदेव का पुत्र।
उषित—संज्ञा पुं० १. दग्ध। २. त्वरित। ३. स्थित। ४. आश्रित।
उष्ट्र—संज्ञा पुं० ऊँट।
उष्ण—वि० १. गरम। तप्त। २. तासीर में गरम। ३. तेज। फुरतीला।
संज्ञा पुं० १. ग्रीष्म ऋतु। २. प्याज। ३. नरक-विशेष।
उष्णक—संज्ञा पुं० १. बुखार। ज्वर। २. सूर्य्य। वि० १. तप्त। गरम। २. ज्वरयुक्त। ३. तेज। ४. फुरतीला। सुपारी। पुंगीफल।
उष्ण कटिबन्ध—संज्ञा पुं० पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।
उष्णता—संज्ञा स्त्री० ताप। गरमी। उमस।
उष्णत्व—संज्ञा पुं० गरमी।
उष्णनदी—संज्ञा पुं० वैतरणी नदी। यमराज के द्वार पर तपी हुई नदी।
उष्णवाष्प—संज्ञा पुं० १. स्वेद। पसीना। २. भाप।
उष्णवीर्य—संज्ञा पुं० तीक्ष्ण। तेज-युक्त द्रव्य। रुक्ष। उग्र।
उष्णरश्मि—संज्ञा पुं० १. दिवाकर। सूर्य। २. तप्त किरणें।
उष्णिक्—संज्ञा पुं० छंद-विशेष।
उष्णीष—संज्ञा पुं० १. पाग। पगड़ी। साफा। २. मुकुट। ताज। ३. टोपी। ४. शिरोवेष्टन वस्त्र।
उष्म—संज्ञा पुं० १. उष्णता। गरमी। ताप। २. ग्रीष्म-ऋतु। ३. धूप।
उष्मज—संज्ञा पुं० छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि से पैदा होते हैं। जैसे, जूँ, खटमल, मच्छर। भाप से उत्पन्न।
उष्मा—संज्ञा स्त्री० १. गरमी। ताप। २. क्रोध। ३. धूप।
उसकन—संज्ञा पुं० उबसन। बरतन माँजने का जूना।
उसकना†—क्रि० अ० दे० "उकसना"।
उसकाना†*—क्रि० स० दे० "उकसाना"। उत्तेजित करना।
उसनना—क्रि० स० १. आटा-गूँधना २. मलकर मिलाना।
उसनाना—क्रि० स० उबलवाना। पकवाना।
उसनीस*—संज्ञा पुं० दे० "उष्णीश"।
उसम†—संज्ञा पुं० [अ० वसमा] १. उबटन। बटना। २. लेप करने की वस्तु।
उसरना—क्रि० अ० १. दूर या अलग होना। हटना। २. गुजरना। बीतना। ३. विस्मृत होना। भूल जाना। ४. तैयार होना। पूरा होना।
उसलना*—क्रि० अ० दे० "उसरना"।
उसल-पुसल—वि० व्याकुल। घबराया। हड़बड़ाया।
उससना*—क्रि० स० रटना। खिसकना। टलना।
क्रि० स० साँस लेना।
उसाँस*—संज्ञा पुं० दे० "उसास"।
उसारना*—क्रि० स० १. उखाड़ना। २. टालना। हटाना। ३. तैयार करना। बनाकर खड़ा करना। ४. किसी के ऊपर या सामने घुमाना।
उसारा†—संज्ञा पुं० दे० "ओसारा"। दालान। बरामदा। बरोठा।
उसालना*—क्रि० स० १. उसारना। २ उखाड़ना। ३. हटाना। टालना। ४. भगाना।
उसास—संज्ञा स्त्री० १. लंबी साँस। २. पवन। प्राण वायु। ३. श्वास। साँस। ४. ठंडी साँस। दुःख या शोकसूचक श्वास।
उसासी—संज्ञा स्त्री० अवकाश। दम लेने की फुरसत। छुट्टी।
उसिनना—क्रि० स० दे० "उसनना"। आटा भिगोकर रोटी बनाने योग्य गूँथना।
उसीजना—क्रि० अ० पकना। झुलसना।
उसीर—संज्ञा पुं० दे० "उशीर"।
उसीसा—संज्ञा पुं० १. तकिया। २. सिरहाना।
उसूल—संज्ञा पुं० [अ०] सिद्धांत।
उसेना—क्रि० स० १. उबालना। २. पसाना।
उसेवना—क्रि० स० पसाना। गारना। २. छानना।

उस्काना–क्रि० स० उकसाना। उभारना।
उस्तरा–संज्ञा पुं० दे० "उस्तुरा"। १. छुरा। २. सेंतमेंत। बिना मोल।
उस्ताद–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० उस्तानी] गुरु। अध्यापक। शिक्षक। उस्तादजी वेश्याओं के नृत्य-गान का शिक्षक वि० १. धूर्त। चालाक। छल करनेवाला २. निपुण। प्रवीण। दक्ष। चतुर।
उस्तादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गुरुआई अध्यापक की वृत्ति। २. चतुराई। दक्षता निपुणता। ३. विज्ञता। ४. धूर्तता चालाकी।
उस्ताना–क्रि० स० जलाना। सुलगाना।
उस्तानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गुरु की पत्नी। २. शिक्षिका। ३. ठगिन। चालाक स्त्री।
उस्तुरा–संज्ञा पुं० [फा०] छुरा। अस्तुरा।
उस्र–संज्ञा पुं० १. वृष। साँड़। २. किरण। चमक। दीप्ति। ३. गौ। ४. सूर्य। ५. दिन।
उस्रधन्वा–संज्ञा पुं० इन्द्र।
उस्वास–संज्ञा पुं० दे० "उसाँस"।
उहदा–संज्ञा पुं० दे० "ओहदा"। पद। स्थान।
उहदादार–संज्ञा पुं० अधिकारी। अफसर।
उहरना–संज्ञा पुं० बैठना। दबाना। थिराना।
उहवाँ†–क्रि० वि० दे० "वहाँ"।
उहाँ–क्रि० वि० "दे० वहाँ"।
उहार–संज्ञा पुं० १. उधार। २. खोल। पट। पर्दा।
उहिया–संज्ञा पुं० १. कनफटा। २. योगियों के पहनने का धातु का कड़ा।
उही†–सर्व० दे० "वही"
उहूल–संज्ञा स्त्री० तरंग। लहर। उमंग।

ऊ

ऊ–हिंदी-वर्णमाला का छठा अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
ऊ–संज्ञा पुं० १. महादेव। २. चंद्रमा। ३. ब्रह्मा। ४. वाक्यारंभ। ५. रक्षा ६. प्रश्न-वाक्य। ७. बन्धन। ८. मोक्ष। ९. प्रधान।
*†–अव्य० भी।
*†–सर्व० वह।
ऊँग–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ"।
ऊँगा–संज्ञा पुं० अपामार्ग चिचड़ा। अज्जाझार।
ऊँघ–संज्ञा स्त्री० झपकी। उँघाई। निंदास। अर्द्ध-निद्रा।
ऊँघन–संज्ञा स्त्री० झपकी
ऊँघना–क्रि० अ० झपकी लेना। निद्राग्रस्त होना। नींद में झूमना।
ऊँघाई–संज्ञा स्त्री० उँघास। नींद। ऊँघ।
ऊँच*–वि० दे० "ऊँचा"। श्रेष्ठ। ऊपर की श्रेणीवाला।
यौ०–ऊँच-नीच=१. छोटा-बड़ा। २. छोटी जाति का और बड़ी जाति का। ३. लाभ और हानि,। अच्छा और बुरा।
ऊँचकानी–संज्ञा पुं० बहरापन।
ऊँचा–वि० [स्त्री० ऊँची] १. उन्नत। उच्च। बड़ा। उठा हुआ। २. लंबा। ३. जो बहुत नीचे तक न गया हो। जिसका लटकाव कम हो। जैसे, ऊँचा कुरता। ४. महान्। श्रेष्ठ। ५. जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।
मुहा०—ऊँचा-नीचा=१. ऊबड़-खाबड़। जो समथल न हो। २. हानि-लाभ। भला-बुरा।
ऊँचा-नीचा या ऊँची नीची सुनाना=भला-बुरा कहना। खोटी-खरी सुनाना।
ऊँचा सुनना=कम सुनना। केवल जोर की आवाज सुनना।
ऊँचा बोलनेवाला–वि० घमंडी। अभिमानी।
ऊँचाई–संज्ञा स्त्री० १. उच्चता। ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उचान। बलंदी। २. श्रेष्ठता। बड़ाई। गौरव।
ऊँचे*–क्रि० वि० १. ऊपर की ओर। ऊँचे पर। २. जोर से (शब्द करना)।
मुहा०—ऊँचे-नीचे पैर पड़ना=बुरे काम में फँसना। ऊँचे बोल का बोल नीचा=अहं-कारियों की अन्तिम पराजय। बुरा परिणाम।

ऊँछ—संज्ञा पुं० राग-विशेष।

ऊँछना—क्रि० अ० केश झारना। कंघी करना।

ऊँट—संज्ञा पुं० [स्त्री० ऊँटनी] उष्ट्र। चौपाया-विशेष, जो बोझ लादने और सवारी के काम में आता है।

ऊँट-कटारा—संज्ञा पुं० १. जमीन पर फैलनेवाली कँटीली झाड़ी-विशेष। २. ऊँट का भोजन-विशेष। भरभाड़। ऊँटकटाई।

ऊँटनी—संज्ञा स्त्री० साँड़िनी।

ऊँटवान—संज्ञा पुं० जो ऊँट चलावे।

ऊँड़ा*†—संज्ञा पुं० १. वह बरतन-विशेष जिसमें धन रखकर जमीन में गाड़ते हैं। २. तहखाना। चहबच्चा।

वि० गंभीर। गहरा।

ऊँदर†—संज्ञा पुं० चूहा। मूस।

ऊँहूँ—अव्य० [अनु०] नहीं। कभी नहीं। हर्गिज नहीं (उत्तर में)। निषेध-सूचक अव्यय।

ऊअना*†—क्रि० अ० निकलना। उगना। उदय होना।

ऊआबाई—वि० व्यर्थ। अंडबंड। निरर्थक।

ऊक*—संज्ञा पुं० १. टूटता हुआ तारा। उल्का। लुआठ। २. तपन। ताप। ३. जलन। दाह।

संज्ञा स्त्री० भूल। गलती। चूक।

ऊकना*†—क्रि० अ० १. चूकना। लक्ष्य पर न पहुँचना। खाली जाना। २. भूल या गलती करना।

क्रि० स० १. उपेक्षा करना। २. छोड़ देना। ३. भूल जाना। ४. भस्म करना। जलाना।

ऊख—संज्ञा पुं० गन्ना। ईख।

*संज्ञा पुं० ऊमस। गरमी। ताप।

वि० गरमी से व्याकुल। तपा हुआ।

ऊखम—संज्ञा पुं० दे० "उष्म"। गर्मी। ताप। उष्णता।

ऊखल—संज्ञा पुं० ओखली। काँड़ी। काठ या पत्थर का बरतन-विशेष जिसमें धान आदि को भूसी अलग करने के लिए मूसल से कूटते हैं।

ऊगना—क्रि० अ० दे० "उगना"।

ऊगरा—संज्ञा पुं० केवल उबला हुआ।

ऊज*—संज्ञा पुं० १. उत्पात। उपद्रव। ऊधम। २. अंधेर।

ऊजड़—वि० दे० "उजाड़"।

ऊजर*—वि० दे० "उजला"। साफ। उजाड़।

ऊजरा*—वि० दे० "उजला"। साफ।

ऊजा—वि० दे० "उजला"। साफ।

ऊटक-नाटक—संज्ञा पुं० व्यर्थ का काम। इधर-उधर का काम। अंडबंड काम करना। जैसा हो, वैसा काम।

ऊटना*—क्रि० अ० १. उत्साह से भरना। उमंग में आना। २. सोच-विचार या तर्क-वितर्क करना।

ऊट-पटाँग—वि० १. बेढंगा। बेमेल। २. व्यर्थ। निरर्थक। वाहियात। ३. अटपट। टेढ़ा-मेढ़ा।

ऊड़ना*—क्रि० स० दे० "ऊढ़ना"।

ऊड़ा—संज्ञा पुं० १. घाटा। कमी। अकाल। २. गिरानी। तेजी। ३. लोप। नाश।

ऊड़ी—संज्ञा स्त्री० डुब्बी। गोता।

ऊढ़—वि० [स्त्री० ऊढ़ा] जिसका विवाह हो गया हो। विवाहित।

ऊढ़ना—क्रि० अ० १. सोच-विचार करना। २. तर्क करना। ३. ब्याहना। विवाह करना।

ऊढ़ा—संज्ञा स्त्री० १. विवाहिता स्त्री। २. वह ब्याही स्त्री जो पर-पुरुष से प्रेम करे (साहित्य)।

ऊत—वि० १. जिसके पुत्र न हो। निःसंतान। निपूता। २. मूर्ख। उजड्ड।

संज्ञा पुं० वह जो मरने पर पुत्र न होने से पिंड-आदि न पाकर भूत होता है।

ऊतर*—संज्ञा पुं० दे० १. "उत्तर"। २. दे० "बहाना"।

ऊतला*—वि० उतावला १. चंचल। २. वेगवान्।

ऊतिम*†—वि० दे० "उत्तम"।

ऊद—संज्ञा पुं० [अ०] १. लकड़ी। अगर का पेड़। २. जलजन्तु-विशेष। ३. ऊदबिलाव।

ऊदबत्ती—संज्ञा स्त्री० धूपबत्ती।

ऊदबिलाव—संज्ञा पुं० नेवले की तरह उससे बड़ा जंतु-विशेष, जो जल और स्थल दोनों में रहता है।

ऊदल—संज्ञा पुं० [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] १. महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामंतों में से एक वीर। २. एक वृक्ष-विशेष।

ऊदा—वि० [अ० ऊद अथवा फा० कबूद] ललाई लिये हुए काले रंग का। खैरा। भूरा। बैंगनी।

संज्ञा पुं० ऊदे रंग का घोड़ा। धुँधला रंग।

ऊधम—संज्ञा पुं० उत्पात। धूम। झगड़ा। हुल्लड़।

ऊधमी—वि० [स्त्री० ऊधमिन] उपद्रवी। जो ऊधम करे। उत्पात करनेवाला।

ऊधो—संज्ञा पुं० दे० "उद्धव"। श्रीकृष्ण का मित्र और भक्त।

ऊन—संज्ञा पुं० १. भेड़-बकरी आदि का रोयाँ जिससे कंबल और गरम कपड़े बनते हैं। २. स्त्रियों के व्यवहार के लिए एक प्रकार की छोटी तलवार।

वि० [स्त्री० ऊनी] १. कम। न्यून। थोड़ा। २. छोटा। ३. तुच्छ। हीन। नाचीज। ४. उदास। सुस्त।

ऊनता—संज्ञा स्त्री० न्यूनता। कमी।

ऊना—वि० १. न्यून। थोड़ा। २. हीन। तुच्छ। नाचीज। ३. उदास। सुस्त। दुखी।

संज्ञा पुं० दु:ख। खेद। रंज।

ऊनी—वि० थोड़ा। कम। न्यून।

संज्ञा स्त्री० उदासी। खेद।

वि० (प्रत्य०) ऊन का बना हुआ कपड़ा आदि।

*संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।

ऊपर—क्रि० वि० [वि० ऊपरी] १. ऊँची जगह। ऊँचाई पर। २. आकाश की ओर। ३. आधार या सहारे पर। ४. उच्च कोटि में। ऊँची श्रेणी में। ५. पहले (लेख में)। ६. अधिक। बहुत। ७. प्रत्यक्ष। प्रकट में। देखने में। ८. तट या किनारे पर। ९. सिवा। परे। १०. प्रतिकूल।

मुहा०—ऊपर-ऊपर=गुप्त रीति से। चुपके से। ऊपर की आमदनी=१. वह प्राप्ति जो नियत द्वार से न हो। २. इधर-उधर से फटकारी हुई रकम। ऊपर-तले= १. नीचे-ऊपर। २. क्रमश:। एक के पीछे एक। आगे-पीछे। ऊपर तले के=वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहिन न हुई हो। ऊपर लेना=किसी कार्य्य का भार लेना। जिम्मे लेना। हाथ में लेना। ऊपर से= १. ऊँचे से। २. इसके सिवा। ३. वेतन से अधिक। घूस या रिश्वत के रूप में। ४. दिखाने के लिए। प्रत्यक्ष में।

ऊपरी—वि० १. ऊपर का। २. विदेशी। बाहरी। ३. दिखावटी। ४. बँधे हुए के सिवा।

ऊब—संज्ञा स्त्री० उद्वेग। घबराहट। अधिक समय तक एक ही अवस्था में रहने से चित्त की व्याकुलता।

संज्ञा स्त्री० उमंग। उत्साह। जोश।

ऊबट—संज्ञा पुं० कठिन मार्ग। टेढ़ा रास्ता।

वि० ऊबड़-खाबड़। अगम्य। ऊँचा-नीचा।

ऊबड़-खाबड़—वि० [अनु०] जो समथल न हो। ऊँचा-नीचा।

ऊबना—क्रि० अ० अकुलाना। उकताना। घबराना।

ऊभ*—वि० १. उभरा हुआ। उठा हुआ। २. ऊँचा।

संज्ञा स्त्री० १. घबराहट व्याकुलता। २. तपन। उमस। गरमी। ३. उत्साह। उमंग। हौसला।

ऊभना*—क्रि० अ० उठना।

ऊमक*—संज्ञा स्त्री० १. वेग। २. उठान। ३. झोंक।

ऊमना*—क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

ऊमर—संज्ञा पुं० उदुम्बर। गूलर।

ऊयी—संज्ञा स्त्री० १. बाँबी। २. वाल्मीक। ३. कीट।

ऊरज—वि० संज्ञा पुं० दे० "ऊर्ज"।

ऊरध*—वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊरु—संज्ञा पुं० जाँघ। जानु। जंघा।

ऊरुस्तंभ—संज्ञा पुं० वात का रोग-विशेष जिसमें पैर जकड़ जाते हैं। पैरों का गठिया।

ऊर्ज—वि० बली। शक्तिशाली।

संज्ञा पुं० [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी] १. शक्ति। बल। २. कार्त्तिक का महीना। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें सहायकों के घटने पर भी अहंकार न छोड़ने का वर्णन होता है।

ऊर्जस्वल–वि० १. अत्यन्त बली। २. उग्र। दे० "ऊर्जस्वी"।

ऊर्जस्वित–वि० ऊपर की ओर चढ़ा हुआ। बहुत बढ़ा हुआ।

ऊर्जस्वी–वि० १. शक्तिमान्। बलवान्। २. ऐश्वर्यवान्। ३. प्रतापी। पराक्रमी। संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भाव का अथवा भाव का अंग हो।

ऊर्जित–वि० (स्त्री० ऊर्जिता) दे० "ऊर्ज"।

ऊर्ण–संज्ञा पुं० ऊन। भेड़ या बकरी के बाल।

ऊर्णनाभ–संज्ञा पुं० १. मकड़ी। २. रेशम का कीड़ा।

ऊर्णा–संज्ञा पुं० १. भेड़ी के रोम। २. चित्ररथ गंधर्व की स्त्री का नाम। ३. ऊनी डोरा। ४. मकड़ी का जाला।

ऊर्ध्व–क्रि० वि० ऊपर। वि० १. ऊँचा। २. खड़ा। ३. उच्च। उन्नत। ४. तुंग। लम्बा।

ऊर्ध्वगति–संज्ञा स्त्री० छुटकारा। मुक्ति। मोक्ष।

ऊर्ध्वगामी–वि० १. ऊपर को जानेवाला। २. निर्वाण-प्राप्त। ३. पुण्यात्मा।

ऊर्ध्वचरण–संज्ञा पुं० सिर के बल खड़े होकर तप करनेवाले तपस्वी-विशेष।

ऊर्ध्वजानु–वि० ऊपरी जंघा।

ऊर्ध्वतिक्त–संज्ञा पुं० चिरायता।

ऊर्ध्वदेव–संज्ञा पुं० विष्णु। नारायण।

ऊर्ध्वद्वार–संज्ञा पुं० ब्रह्मरंध्र।

ऊर्ध्वपाद–संज्ञा पुं० जीव-विशेष। शरभ।

ऊर्ध्वपुंड्र–संज्ञा पुं० वैष्णवी या खड़ा तिलक।

ऊर्ध्वबाहु–संज्ञा पुं० १. बाहु ऊपर की ओर उठाए रहनेवाले एक प्रकार के तपस्वी। २. उन्नतहस्त। ३. व्रत-विशेष।

ऊर्ध्वरेखा–संज्ञा स्त्री० १. पुराणानुसार राम-कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरणचिह्नों में से एक। २. हाथ या पैर में रेखा-विशेष। शुभसूचक रेखा (सामुद्रिक)।

ऊर्ध्वरेता–वि० ब्रह्मचारी। कामत्यागी। जो अपने वीर्य्य को गिरने न दे। संज्ञा पुं० १. महादेव। २. भीष्म पितामह। ३. मुनि-विशेष। ४. सनकादि। ५. हनुमान्। ६. संन्यासी।

ऊर्ध्वलोक–संज्ञा पुं० १. आकाश। शून्य। २. देवलोक। स्वर्ग। वैकुंठ।

ऊर्ध्वश्वास–संज्ञा पुं० १. श्वास की कमी। २. उसाँस। ऊपर को चढ़ती हुई साँस। ३. दमा। ऊर्ध्ववायु। ४. मरने के समय जोर की, रुक-रुक कर चलनेवाली साँस।

ऊर्ध्वस्थ–वि० १. उच्चस्थ। २. उपस्थित।

ऊर्ध–क्रि० वि०, वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊर्ध्व–क्रि० वि०, वि० दे० "उद्ध्र्व"

ऊर्मि [**ऊर्मी**]–संज्ञा स्त्री० १. लहर। तरंग। २. वेदना। दुःख। पीड़ा। ३. छः की संख्या ४. शिकन। कपड़े की सिकुड़न। ५. गति। ६. शक्ति। ७. तीव्रता। ८. पंक्ति। रेखा। कतार।

ऊर्मिमाला–संज्ञा स्त्री० १. तरंग। २. समूह।

ऊर्मिमाली–संज्ञा पुं० समुद्र।

उर्मिल–वि० जिसमें लहरें उठती हों। तरंगित।

उर्मी–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।

ऊर्वशी–संज्ञा स्त्री० "उरवसी"। अप्सरा-विशेष

ऊल-जलूल–वि० १. अंडबंड। असंबद्ध। जिसका सिर-पैर न हो। २. मूर्ख। अनाड़ी। नासमझ। ३. अशिष्ट। असभ्य।

ऊलना*–क्रि० अ० दे० "उछलना"।

ऊलूवा–संज्ञा पुं० तृण-विशेष।

ऊषण–संज्ञा पुं० काली मिर्च।

ऊषर–संज्ञा पुं० क्षार भूमि। खारी भूमि।

ऊषा–संज्ञा स्त्री० १. सवेरा। २. अरुणोदय पौ फटने की लाली। "उषा"। ३. बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध से ब्याही गई थी।

ऊषाकाल–संज्ञा पुं० तड़का। सवेरा।

ऊष्म–संज्ञा पुं० १. गरमी। २. गरमी का मौसिम। ३. भाप। वि० गरम।

ऊष्म वर्ण–संज्ञा पुं० "श, ष, स, ह" अक्षर (व्याकरण)।

ऊष्मा–संज्ञा स्त्री० १. गरमी का समय ग्रीष्म काल। २. गरमी। तपन। ३. भाप

ऊसड़–वि० फीका।

ऊसन–संज्ञा पुं० तरमिरा। पौधा-विशेष, जिससे जलाने का तेल निकाला जाता है।

ऊसर–संज्ञा पुं० बंजर भूमि। वह पृथ्वी जिसमें रेह अधिक हो और कुछ पैदा न हो।

ऊह–अव्य० १. ओह। क्लेश या दुःख-सूचक शब्द। २. विस्मय-सूचक शब्द।

संज्ञा पुं० १. विचार। अनुमान। २. तर्क। ३. किंवदंती। ४. परीक्षा। जाँच। ५. फल। निष्पत्ति। सार।

ऊहा–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊह"।

ऊहापोह–संज्ञा पुं० सोच-विचार। तर्क-वितर्क।

ऋ

ऋ–एक स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ अक्षर है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। संज्ञा स्त्री० १. अदिति। देवमाता। २. । निंदा। परिहास। ३. वाक्य। ४.

संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. गणेश।

ऋक्–संज्ञा स्त्री० वेदमंत्र। ऋचा।
संज्ञा पुं० दे० "ऋग्वेद"।

ऋक्थ–संज्ञा पुं० १. धन। सम्पत्ति। २. सुवर्ण। ३. पितृधन। ४. हिस्सा।

ऋक्ष–संज्ञा पुं० [स्त्री० ऋक्षी] १. रीछ। भालू। २. नक्षत्र। तारा। ३. मेष, वृष आदि राशियाँ। ४. भिलावाँ। ५. रैवतक पर्वत का एक अंश। ६. शौनक वृक्ष।
वि० अत्यंत श्रेष्ठ।

ऋक्षजिह्व–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कोढ़।

ऋक्षपति–संज्ञा पुं० १. जांबवान। २. चंद्रमा।

ऋक्षवान्–संज्ञा पुं० ऋक्ष पर्वत, यह नर्मदा के किनारे से गुजरात तक फैला है।

ऋक्षेश–संज्ञा पुं० चन्द्र। शशधर।

ऋग्वेद–संज्ञा पुं० चार वेदों में से एक वेद।

ऋग्वेदी–वि० ऋग्वेद का ज्ञाता या पढ़नेवाला।

ऋचा–संज्ञा स्त्री० १. स्तोत्र। २. वेदमंत्र। ३. कंडिका।

ऋचीक–संज्ञा पुं० जमदग्नि के पिता।

ऋच्छ–संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"। रीछ।

ऋच्छरा–संज्ञा स्त्री० वेश्या।

ऋजीष–संज्ञा पुं० १. सोमलता की सीठी या फोक। २. लोहे का तसला।

ऋजु–वि० [स्त्री० ऋज्वी] १. सीधा। जो टेढ़ा न हो। २. सुगम। सरल। सहज। ३. सज्जन। सरल चित्त का। ४. अनुकूल। ५. प्रसन्न।

ऋजुकाय–संज्ञा पुं० कश्यप मुनि।
वि० सीधा शरीर। सीधी रेखा व भुजा।

ऋजुता–संज्ञा स्त्री० १. सज्जनता। सीधापन। २. सरलता। सुगमता।

ऋजुभुज-क्षेत्र–संज्ञा पुं० वह क्षेत्र जो कई सीधी रेखाओं से घिरा हो।

ऋजु-स्वभाव–संज्ञा पुं० सरलान्तःकरण। सदन्तःकरण-विशिष्ट। सरल, सीधा। अकपट।

ऋण–संज्ञा पुं० [वि० ऋणी] उधार। कर्ज।
मुहा०–ऋण उतरना=कर्ज अदा होना। ऋण चढ़ाना=रुपया उधार लेना। ऋण पटाना=उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना।

ऋण ग्रहण–संज्ञा पुं० उधार लेना। कर्जा लेना।

ऋण-दाता–वि० महाजन। ऋण देनेवाला।

ऋणपत्र–संज्ञा पुं० ऋणग्रहण-सूचक पत्र।

ऋणमत्कुण–संज्ञा पुं० जामिन। प्रतिभू।

ऋणमुक्त–वि० उधाररहित। ऋण-परिशोधित।

ऋणमुक्तिपत्र–संज्ञा पुं० ऋण-परिशोध-सूचक पत्र।

ऋणमार–संज्ञा पुं० जो कर्जा नहीं चुकाता।

ऋणमार्गण–संज्ञा पुं० प्रतिभू। जमानतदार।

ऋणार्ण–संज्ञा पुं० एक कर्जा अदा करने को जो दूसरा कर्जा काढ़ा जाय।

ऋणापनयन–संज्ञा पुं० ऋणशोधन। उधार चुकाना। कर्जा दे देना।

ऋणिक–संज्ञा पुं० कर्जदार।

ऋणिया—संज्ञा पुं० ऋणी। धारता।
ऋणी—वि० १. देनदार। ऋण लेनेवाला। कर्जदार। अधमर्ण। २. उपकृत। उपकार माननेवाला। अनुगृहीत।
ऋत—संज्ञा पुं० १. सत्य। यथार्थ। २. वृत्ति-विशेष। उञ्छ वृत्ति के द्वारा निर्वाह। ३. जल। ४. मोक्ष।
वि० १. दीप्त। २. पूजित।
ऋतधामा—संज्ञा पुं० विष्णु। नारायण।
ऋतपर्ण—संज्ञा पुं० अयोध्या के राजा-विशेष।
ऋतवेय—संज्ञा पुं० छोटा। यज्ञ-विशेष।
ऋति—संज्ञा स्त्री० १. निन्दा। २. स्पर्धा। ३. मार्ग। ४. गति। ५. मंगल।
ऋतु—संज्ञा स्त्री० १. मौसम। प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो-दो महीनों के विभाग जो ६ हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। २. रजोदर्शन के उपरांत वह समय जिसमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य होती हैं।
ऋतुकान्त—संज्ञा पुं० वसंत ऋतु।
ऋतुच्चर्या—संज्ञा स्त्री० ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।
ऋतुमती—वि० स्त्री० १. मासिकधर्मयुक्ता। रजस्वला। पुष्पवती। २. जिस (स्त्री) के रजोदर्शन के उपरांत के १६ दिन बीत गये हों और वह गर्भाधान के योग्य हो।
ऋतुराज—संज्ञा पुं० वसंत ऋतु।
ऋतुवती—वि० स्त्री० दे० "ऋतुमती"।
ऋतुस्नाता—संज्ञा स्त्री० रजोदर्शन के अनन्तर चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री।
ऋतुस्नान—संज्ञा पुं० [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।
ऋत्विज—संज्ञा पुं० यज्ञ की क्रिया सांगोपांग पूर्ण करानेवाला व्यक्ति। भिन्न-भिन्न यज्ञों में इनकी संख्या भिन्न-भिन्न होती है। महत्त्व के क्रम से इनके ये नाम हैं—ब्रह्मा, अध्वर्य्यु, होता, उद्गाता आदि।
ऋद्ध—वि० धनाढ्य। समृद्ध। संपन्न। भरा हुआ।
ऋद्धि—संज्ञा स्त्री० १. ओषधि। लता-विशेष जिसका कंद दवा के काम में आता है। २. बढ़ती। समृद्धि। उन्नति। ३. धन। सम्पत्ति। ४. आर्य्या छंद का भेद-विशेष। ५. विरिजा। ६. कुबेर की पत्नी। ७. अलौकिक विभूति। शक्ति।
ऋद्धि-सिद्धि—संज्ञा स्त्री० समृद्धि और सफलता, जो गणेशजी की दासियाँ मानी जाती हैं।
ऋनिया—वि० ऋणी। कर्जदार।
ऋनी—वि० दे० "ऋणी"।
ऋभु—संज्ञा पुं० १. देवता। २. गणदेवता-विशेष। ३. बढ़ई। गाड़ी बनानेवाला।
वि० चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।
ऋभुक्ष—संज्ञा पुं० १. इन्द्र। २. स्वर्ग। ३. वज्र।
ऋभुक्षा—संज्ञा स्त्री० इन्द्राणी। शची।
ऋषभ—संज्ञा पुं० १. बैल। २. श्रेष्ठतावाचक शब्द। ३. राम की सेना का बंदर-विशेष। ४. बैल के आकार का दक्षिण का पर्वत-विशेष। ५. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ६. जड़ी-विशेष जो हिमालय पर मिलती है।
ऋषभदेव—संज्ञा पुं० राजा नाभि के पुत्र जिनकी गणना विष्णु के चौबीस अवतारों में है।
ऋषभध्वज—संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
ऋषभी—संज्ञा स्त्री० पुरुष के रंगरूपवाली स्त्री।
ऋषि—संज्ञा पुं० १. मंत्र-द्रष्टा। वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। २. आध्यात्मिक और भौतिक तत्त्वों का साक्षात्कार करनेवाला। मुनि। तपस्वी।
यौ०—ऋषिऋण=ऋषियों के प्रति कर्त्तव्य। वेद के पठन-पाठन से इससे उद्धार होता है।
ऋषिक—संज्ञा पुं० दक्षिण का एक देश।
ऋषित्व—संज्ञा पुं० ऋषि होने की अवस्था या भाव। ऋषिता।
ऋषिराज—संज्ञा पुं० प्रधान ऋषि।
ऋषीक—संज्ञा पुं० ऋषि का पुत्र।
ऋषीश—संज्ञा पुं० ऋषियों में प्रधान।
ऋष्य—संज्ञा पुं० मृग-विशेष। चितकबरा मृग।
ऋष्यकेतु—संज्ञा पुं० अनिरुद्ध। उषापति।
ऋष्यप्रोक्ता—संज्ञा स्त्री० सतावर।
ऋष्यमूक—संज्ञा पुं० दक्षिण का पर्वत-विशेष।
ऋष्यशृंग—संज्ञा पुं० ऋषि-विशेष, जो विभांडक ऋषि के पुत्र थे।

ॠ

ॠ–१. एक स्वर जो वर्णमाला का आठवाँ अक्षर है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसका प्रयोग संस्कृत में ही होता है। २. देवमाता ३. शव। ४. असुर। ५. दिति। ६. भय।

ऌ—ॡ

ऌ-ॡ–हिन्दी-वर्ण माला के नवें और दशवें स्वर हैं। इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इनका प्रयोग केवल संस्कृत में होता है, हिन्दी में नहीं।

ए

ए–१. संस्कृत-वर्णमाला का ग्यारहवाँ और हिन्दी-वर्णमाला का आठवाँ अक्षर (स्वर वर्ण) है। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है। २. विष्णु।
अव्य० सम्बोधन-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग पुकारकर बुलाने के लिए होता है।सर्व० यह।

ऍच-पेंच–संज्ञा पुं० १. उलझन। अटकाव। उलझाव। २. घुमाव। ३. टेढ़ी चाल। ४. घात। गूढ़ उक्ति।

एंजिन–संज्ञा पुं० दे० "इंजन"।

ऍड़ा-बेंड़ा–वि० उलटा-सीधा। टेढ़ा-मेढ़ा। अंडबंड।

ऍड़ी–संज्ञा स्त्री० १. रेशम का कीड़ा जो अंडी के पत्ते खाता है। २. इस कीड़े का रेशम। ३. मूँगा। ४. अंडी।
संज्ञा स्त्री० दे० "एड़ी"।

ऍड़ुआ–संज्ञा पुं० [स्त्री० ऍड़ुई] गद्दी जिसे सिर पर रखकर बोझ उठाते हैं। बिड़आ। गेंड़री।

एकंग–वि० अकेला।

एकंगा–वि० [स्त्री० एकंगी] एक ओर का।

एकंडिया–वि० एक अंडे का।
संज्ञा पुं० १. एक अण्डकोषवाला बैल या घोड़ा। २. एक-पुतिया लहसुन।

एकंत*–वि० दे० "एकांत"।

एक–वि० १. एकाइयों में सबसे पहली और छोटी संख्या। २. अनोखा। अद्वितीय। अनुपम। प्रथम। मुख्य। अन्य। केवल। ३. अनिश्चित। कोई। ४. तुल्य। समान। एक ही प्रकार का।

मुहा०—एक अंक या आँक=१. एक ही बात। पक्की बात। निश्चय। २. एक बार। एक-आध=कम। थोड़ा। इक्का-दुक्का। एक या आधा। एक आँख से देखना=समान भाव रखना। एक आँख न भाना=बिलकुल अच्छा न लगना। एक-एक=१. हर एक। प्रत्येक। भिन्न-भिन्न। सब। २. पृथक्-पृथक् अलग-अलग। एक-एक करके=एक के पीछे दूसरा। धीरे-धीरे। एक-कलम=सब। बिलकुल। एक की दस सुनाना=थोड़े से अपराध के लिए अधिक दंड देना। अपनी और किसी की जान एक करना=१. मारना और मर जाना। २. किसी की और अपनी एक सी दशा करना। एकटक=१. स्थिर दृष्टि से। अनिमेष। नजर गड़ाकर। २. लगातार देखते हुए। एकताक=समान। तुल्य। बराबर। एकतार=१. समान। बराबर। एक ही रूप-रंग का। २. समभाव से। लगातार। बराबर। एक तो=पहली बात तो यह कि। पहले तो। एक-दम=१. बिना रुके। निरंतर।

२. तुरंत। उसी समय। ३. एक साथ। एक बारगी। एक-दिल=१. एक ही विचार का। अभिन्न-हृदय। २. खूब मिला-जुला। एक दूसरे का, को, पर, में, से = परस्पर। एक न एक=एक नहीं तो दूसरा, एक या दूसरा। एक न चलना=कोई उपाय सफल न होना। एक पेट के=सहोदर (भाई)। एक ही माँ से उत्पन्न। एक-ब-एक=अचानक। एकाएक। एक बात=१. दृढ़ प्रतिज्ञा। २. ठीक बात। सच्ची बात। एक सा= बराबर। समान। एक से एक=एक से एक बढ़कर। एक स्वर से कहना या बोलना= एक मत होकर कहना। एक होना=१. मिलना-जुलना। मेल करना। २. तद्रूप होना। उसी के समान होना।

एकक–वि० १. अकेला। २. असहाय। ३. निराला।

एककाल–वि० समान समय। एक समय।

एक-कालीन–वि० १. समकाल में उत्पन्न। २. एक समय का। ३. एक ही बार का।

एकगाछी–संज्ञा स्त्री० नाव-विशेष जो एक लंबी लकड़ी को सुखाकर बनाई जाती है।

एक-चक्र–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. सूर्य्य का रथ।

वि० चक्रवर्ती।

एकचक्रा–संज्ञा स्त्री० प्राचीन नगरी जो आरा के पास बतलाई जाती है (महाभारत)।

एकचर–वि० अकेला चलनेवाला। इक्का।

एकचित्त–वि० एकान्ती। एक मन। अनन्य-मना:।

एकच्छत्र या एकछत्र–वि० पूर्ण प्रभुत्व का, बिना और किसी के आधिपत्य का (राज्य)। जिसमें कहीं और किसी का राज्य या अधिकार न हो। अकंटक।

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।

संज्ञा पुं० वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है।

एकज–संज्ञा पुं० १. शूद्र। जो द्विज न हो। २. राजा।

वि० एक ही।

एकजद्दी–वि० [फा०] सपिंड या सगोत्र। जो एक ही पूर्वज की सन्तान हों।

एकजन्मा–संज्ञा पुं० १. राजा। २. शूद्र।

एकजाई–संज्ञा स्त्री० सकृत-प्रसूता। पहि-लौठी।

वि० इकट्ठा।

एकटक–संज्ञा पुं० एक तार से देखना। सतृष्ण दृष्टि।

एकट्ठा–वि० एक स्थान में संग्रह किया गया।

एकड़–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पृथ्वी की एक माप-विशेष, जो १$\frac{3}{5}$ बीघे के बराबर होती है।

एकडाल–संज्ञा पुं० वह छुरा या कटार जिसका फल और बेंट एक ही लोहे का हो।

वि० एक सा। एक समान। बराबर।

एकतंत्र–संज्ञा पुं० दे० "एकच्छत्र"।

एकतंत्री–वि० १. एक प्रभु के वशवर्ती। २. एकतंत्रयुक्त। ३. एकमतावलंबी।

एकत*–क्रि० वि० दे० "एकत्र"। एक स्थान में। इकट्ठा।

एकतः–क्रि० वि० एक ओर से। एक तरफ से।

एकतरफा–वि० [फा०] १. एक पक्ष का। एक ओर का। २. पक्षपातग्रस्त। जिसमें पक्षपात किया गया हो। ३. एक पार्श्व का। एकरुखा।

मुहा०–एकतरफा डिगरी=वह डिगरी जो मुद्दालैह के हाजिर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो।

एकतरा–संज्ञा पुं० अँतरिया ज्वर। तिजारी।

एकतहो–संज्ञा पुं० एक जगह।

संज्ञा स्त्री० मिरजई।

एकता–संज्ञा स्त्री० १. मेल। ऐक्य। अनन्यता. २. बराबरी। समानता। ३. एकाई। ४। मिलान।

वि० [फा०] अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम।

एकतान–वि० १. लीन। तन्मय। एकाग्र-चित्त। २. मिलकर एक। ३. बराबर तान। एक स्वर।

एकतारा–संज्ञा पुं० एक तार का बाजा-विशेष।

एकताल–संज्ञा पुं० समन्वित ताल। समताल।

एकतालीस–वि० गिनती में चालीस और एक। संज्ञा पुं० ४१ की संख्या का सूचक अंक। ४१।

एकतीर्थी–संज्ञा पुं० सतीर्थ। गुरुभाई।
एकतीस–वि० तीस और एक।
संज्ञा पुं० ३१ की संख्या का बोधक अंक।
एकतुंबी–संज्ञा स्त्री० तानपूरा। तम्बूरा।
एकत्र–क्रि० वि० इकट्ठा। एक स्थान में। एक जगह।
एकत्रा–संज्ञा पुं० कुल जोड़। इकट्ठा।
एकत्रित–वि० दे० "एकत्र"। इकट्ठा हुआ। संगृहीत।
एकत्व–संज्ञा पुं० एक होने का भाव। एकता। एक ही तरह का या बिलकुल एक सा होना। पूरी समानता।
एकदंत–संज्ञा पुं० गणेश।
एकदा–क्रि० वि० एक समय। एक बार। किसी समय।
एकदिक–वि० एक देश। एक भाग। समदेश।
एकदेशस्थ–वि० एकदेशी। समदेशीय।
एक-देशीय–वि० जो सर्वत्र न घटे। जो एक ही अवसर या स्थल के लिए हो। एक देश का।
एक-देह–संज्ञा पुं० १. बुधग्रह। २. एक शरीर। अभिन्न गोत्र, वंश।
एकधा–अव्य० केवल। एक बार। एक प्रकार।
एकन या एकन्ह–एक ने। किसी ने। एक को। किसी को।
एकनयन–वि० एक आँखवाला। काना। एकाक्ष।
संज्ञा पुं० १. कौवा। २. कुबेर।
एकनिष्ठ–वि० एक में ही निष्ठा रखनेवाला। जो एक ही पर श्रद्धा रखे।
एकन्नी–संज्ञा स्त्री० १. चार पैसे के मूल्य का एक सिक्का। २. निकल धातु का एक आने मूल्य का सिक्का।
एकपक्षीय–वि० एक ओर का। एक पक्ष का। एकतरफा।
एकपट्टा–संज्ञा पुं० ओढ़नी। पिछौरी।
एकपत्नी–संज्ञा स्त्री० पतिव्रता। सती साध्वी।
एकपत्नी-व्रत–वि० जो एक ही स्त्री से विवाह या प्रेम-संबंध रक्खे।
संज्ञा पुं० एक ही पत्नी रखने का नियम।
एक-परामर्श–संज्ञा पुं० एकतंत्र। एकमत।
एकपलिया–संज्ञा पुं० घर जिसमें बड़ेर न हो।
एकपाश–संज्ञा पुं० एक पार्श्व। एक तरफ।
एकप्रभुत्व–संज्ञा पुं० एकराजत्व। एकाधिपत्य।
एकबारगी–क्रि० वि० [फा०] १. एक ही बार में। एक साथ। २. एक समय में। ३. अचानक। अकस्मात्। ४. सारा। सब। बिलकुल।
एकबाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. सौभाग्य। भाग्य। २. प्रताप। ऐश्वर्य। तेज। ३. स्वीकारोक्ति। स्वीकार।
एकभुक्त–वि० रात-दिन में केवल एक बार भोजन करनेवाला।
एकमत–वि० जिनका समान मत हो। एक राय के।
एकमात्रिक–वि० जिसमें एक मात्रा हो। एक मात्रा का।
एकमुखी या एकमुँहा–वि० जिसके एक मुख हो।
यौ०–एकमुखी रुद्राक्ष=वह रुद्राक्ष जिसमें फाँकवाली लकीर एक ही हो।
एकयोनि–वि० सहोदर। एक माँ के।
एकरंग–वि० १. एक-सा। समान। बराबर। तुल्य। २. कपट-शून्य। शुद्ध हृदयवाला। ३. जो चारों ओर समान हो।
एकरदन–संज्ञा पुं० गणेश।
एकरस–वि० समान। बराबर। एक ढंग का।
एकरार–संज्ञा पुं० [अ०] १. स्वीकार। स्वीकृति। २. प्रतिज्ञा। वादा। वचन।
यौ०—एकरारनामा=प्रतिज्ञापत्र। वह पत्र जिसमें दो या अधिक पुरुष परस्पर कोई प्रतिज्ञा करें।
एकरूप–वि० १. एक ही रंग-ढंग का। समान आकृतिवाला। २. समभाव। एक सा। ३. कोरा। ज्यों का त्यों। वैसा ही।
एकरूपता–संज्ञा स्त्री० सादृश्य। समानता। एकता।
एकल*–वि० अकेला। अनुपम। बेजोड़।
एकलव्य–संज्ञा पुं० निषादराज हरधनु का पुत्र और द्रोणाचार्य का शिष्य।

एकला*†–वि० दे० १. "अकेला"। एकाकी। २. सहायहीन। ३. निराला।
एकलाई–संज्ञा पुं० ओढ़नी। एकपट्टा। उत्तरीय वसन। चादर। एक तरह की धोती।
एकलिंग–संज्ञा पुं० शिव का नाम-विशेष जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के प्रधान कुलदेव हैं।
एकलौता या एकलौटा–वि० [स्त्री० एकलौती] अकेला। अपने माँ-बाप का एक ही (लड़का)। जिसके कोई भाई-बहन न हों।
एकवचन–संज्ञा पुं० एक का बोधक। व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो।
एकवाँज–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसके एक ही बच्चा हुआ हो। काकवंध्या।
एकवाक्यता–संज्ञा स्त्री० एकमत। लोगों के मत का एक हो जाना।
एकवेणी–वि० १. जिसका पति प्रवासी हो। वियोगिनी। २. विधवा।
एकशफ–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. एक खुर के पशु।
एकसंग–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. एक साथ। ३. सहवास।
एकसंगी–संज्ञा पुं० साथी। सहवासी। संगी। मित्र जो सुख-दुख में साथ दे।
एकसठ–वि० साठ और एक।
संज्ञा पुं० एकसठ की संख्या का अंक। ६१।
एकसर*†–वि० १. एक पल्ले का। २. अकेला।
वि० [फा०] सम्पूर्ण। बिलकुल। एक लड़ का (हार, माला आदि)।
एकसाँ–वि० [फा०] १. बराबर। समान। २. समथल।
एकसार–वि० समान। एकरसा। एकसा।
एकहत्तर–वि० सत्तर और एक।
संज्ञा पुं० सत्तर और एक की संख्या का अंक। ७१।
एकहत्था–वि० १. जो एक ही के हाथ में हो (काम या व्यवसाय)। २. जिसके एक ही हाथ हो।
एकहरा–वि० [स्त्री० एकहरी] १. एक परत का। जैसे एकहरा अंगा। २. एक लड़ी का। ३. पतला। झीना। महीन।
यौ०–एकहरा बदन=दुबला-पतला शरीर।
एकहायन–वि० एक वर्ष का। जिसको उत्पन्न हुए एक वर्ष हुआ हो।
एकांग–वि० जिसे एक ही अंग हो। एक अंग का।
संज्ञा पुं० १. बुधग्रह। २. चन्दन।
एका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। भगवती।
संज्ञा पुं० एक। एकता। ऐक्य। अभिसंधि। मेल। एकोद्देश्य। सम्मति। सहमति।
एकाई–संज्ञा स्त्री० १. एक का भाव या मान। एकता। २. वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से और दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। ३. अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान। ४. उस स्थान पर लिखा जानेवाला अंक। ५. अनन्य। वही। अभिन्न। तुल्य। समान।
एकाएक–क्रि० वि० सहसा। अचानक।
एकाएकी†*–क्रि० वि० दे० "एकाएक"। अचानक। सहसा।
वि० अकेला। निर्जन।
एकांगी–वि० १. एक पक्ष का। एक ओर का। २. जिद्दी। हठी।
एकांत–वि० १. अत्यंत। बिलकुल। नितांत। २. अकेला। अलग। निर्जन। सूना। ३. भिन्न।
संज्ञा पुं० १. निराला। २. निर्जन स्थान।
एकांत कैवल्य–संज्ञा पुं० मुक्ति का भेद-विशेष।
एकांतर–संज्ञा स्त्री० निर्जनता। अकेलापन। तनहाई।
एकांतरकोण–संज्ञा पुं० एक ओर का कोना।
एकांतवास–संज्ञा पुं० [वि० एकांतवासी] सबसे न्यारा रहना। निर्जन स्थान में रहना।
एकांतवासी–वि० निर्जन स्थान में रहनेवाला।
एकांतस्वरूप–वि० निर्लिप्त। असंग।
एकांतिक–वि० एकदेशीय। जो एक ही स्थान के लिए हो। जो सर्वत्र न हो।
एकांती–संज्ञा पुं० भक्त जो भगवत्प्रेम को केवल अपने अन्तःकरण में ही रखता है, अन्य से प्रकट नहीं करता फिरता।

एकाकार–संज्ञा पुं० एकमय होना। मिल-मिलाकर एक होने की दशा।
वि० समान। एक आकार का। एकरूप। सदृश। एकधर्म। भेद-रहित। एका-चार।

एकाकिन्ह–संज्ञा पुं० अकेलों को। असहायों को।

एकाकी–वि०[स्त्री० एकाकिनी] १. अकेला। २. केवल एक। ३. सहाय-रहित।

एकाकीपन*–संज्ञा पुं० अकेलापन।

एकाक्ष–वि० काना। एक आँखवाला।
यौ०—एकाक्ष रुद्राक्ष=एकमुखी रुद्राक्ष।
संज्ञा पुं० १. शुक्राचार्य। २. कौआ।

एकाक्षर–संज्ञा पुं० मंत्र-विशेष।
वि० एक अक्षरवाला।

एकाक्षरी–वि० १. एक अक्षर। २. एक अक्षर का मंत्र-विशेष जिसमें एक ही अक्षर हो।
यौ०—एकाक्षरी कोश=वह कोश जिसमें एक-एक अक्षर के अर्थ दिए हों। जैसे, "अ" से वासुदेव, "इ" से कामदेव इत्यादि।

एकाग्र–वि० [संज्ञा एकाग्रता] १. एकमना। मनोयोगी। एकचित्त। २. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्रचित्त–वि० स्थिरचित्त। जिसका ध्यान बँधा हो।

एकाग्रता–संज्ञा स्त्री० अचंचलता। चित्त का स्थिर होना। विशेष सावधानी से ध्यान।

एकातपत्र–वि० सार्वभौम। महाराज। चक्रवर्ती। एकच्छत्र।

एकात्मवाद–संज्ञा पुं० यह सिद्धान्त कि संसार के समस्त प्राणियों और वस्तुओं में एक ही आत्मा व्याप्त है।

एकात्मता–संज्ञा स्त्री० १. अभेद। एकता। अभिन्नता। एकस्वरूपता। २. मिलमिलाकर एक होना।
संज्ञा पुं० एक प्राण। एक देह। अभिन्न।

एकादश–वि० ग्यारह। ११ का अंक।

एकादशाह–संज्ञा पुं० मृत्यु के पश्चात् ग्यारहवें दिन का काम (हिंदू-धर्मशास्त्र)।

एकादशी–संज्ञा स्त्री० प्रत्येक मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, जो व्रत का दिन है। हरिवासर।

एकादिक्रम–वि० अनुक्रम। क्रमानुरूप। क्रमिक।

एकाधिकार–संज्ञा पुं० दे० "एकाधिपत्य।"

एकाधिपति–संज्ञा पुं० चक्रवर्ती राजा। सम्राट्।

एकाधिपत्य–संज्ञा पुं० पूर्ण प्रभुत्व। एकमात्र अधिकार।

एकायन–वि० १. एकमति। २. एकमार्ग। ३. एक विषयासक्तचित्त। ४. एक स्थान।

एकार–संज्ञा पुं० ए अक्षर। एकादश स्वर-वर्ण।

एकारान्त–जिसके अन्त में ए हो।

एकार्णव–संज्ञा पुं० एकाकार। एक समुद्र।

एकार्थ–वि० समानार्थ। तुल्य तात्पर्य वाला।

एकार्थक–वि० समान अर्थ-बोधक। समानार्थक। पर्यायवाची।

एकावली–संज्ञा स्त्री० १. अलंकार-विशेष जिसमें पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण-भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाय। २. छंद-विशेष। पंकज-वाटिका। ३. हार जो एक लड़ी का हो। एक पंक्ति। कतार।

एकाश्रित–वि० अनन्यगतिक। एक के ही आश्रित।

एकाह–वि० जो एक दिन में पूरा हो। जैसे—एकाह पाठ।
संज्ञा पुं० १. एक दिन। २. केवल एक ही दिन जीनेवाला कीट।

एकाहिक–वि० एक दिन-साध्य। एक दिन में ही उत्पन्न होनेवाला।

एकीकरण–संज्ञा पुं० [वि० एकीकृत] १. मिलावट। २. गड्डबड्ड करना।

एकीकृत–वि० मिलाया हुआ। मिश्रित।

एकीभाव–संज्ञा पुं० मिलना। मिलाना। एकट्ठा या एकत्र होना।

एकीभूत–वि० मिश्रित। मिला हुआ।

एकेंद्रिय–संज्ञा पुं० १. सांख्य के अनुसार उचित और अनुचित दोनों प्रकार के विषयों से इंद्रियों को हटाकर उन्हें मन में लीन करनेवाला साधक। २. वह जीव जिसके केवल एक ही इंद्रिय अर्थात् त्वचा-मात्र होती है। जैसे–जोंक, केंचुआ।

एकेला—वि० एकाकी। अकेला।
एकैक—वि० प्रत्येक। एक-एक करके, एक के बाद एक।
एकोतरसौ—वि० १०१। सौ और एक। एक सौ एक।
एकोतरा—वि० एक दिन छोड़कर आनेवाला। संज्ञा पुं० एक रुपया सैकड़ा ब्याज।
एकोद्दिष्ट—(श्राद्ध)—संज्ञा पुं० श्राद्ध-विशेष जो एक के उद्देश्य से किया जाता है और उसमें पहले मृत पितरों को पिंड नहीं दिया जाता।
एकौ—वि० एक भी। कोई भी। अनिर्धारित व्यक्ति।
एकौझा*†—वि० एकाकी। अकेला।
एकौतना—क्रि० १. धान-गेहूँ में उस पत्ते का निकलना जिसके गाभा से बाल निकलती है। २. गरभाना।
एक्का—वि० १. अकेला। २. जो एक से संबंध रखे। ३. एकवाला।
यौ०—एक्का-दुक्का=अकेला-दुकेला। संज्ञा पुं० १. वह पशु या पक्षी जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो। २. दो पहिए की गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है। इक्का। ३. वह सिपाही जो अकेले ही बड़े-बड़े काम कर सकता हो। ४. एक्की। ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो।
एक्कावान—संज्ञा पुं० जो एक्का हाँकने का काम करता हो। एक्कावाला।
एक्कावानी—संज्ञा स्त्री० एक्का हाँकने का काम।
एक्की—संज्ञा स्त्री० १. एक्का। ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। २. वह बैलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय।
एक्यानबे—वि० नब्बे और एक। ९१। संज्ञा पुं० नब्बे और एक की संख्या का अंक।
एक्यावन—वि० पचास और एक। ५१। संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या का अंक।
एक्यासी—वि० अस्सी और एक। ८१। संज्ञा पुं० अस्सी और एक की संख्या का अंक।
एखनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मांस का रसा या शोरबा।
एजेंट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] प्रतिनिधि। किसी की ओर से काम करनेवाला प्रतिनिधि। मुख्तार।
एजेन्सी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] आढ़त। किसी की ओर से व्यापार करना और उसके एवज में अपना हिस्सा (कमीशन) लेना।
एड़—संज्ञा स्त्री० एड़ी। संज्ञा पुं० १. घोड़े को चलाने का काँटा। २. चरण का पश्चात् भाग।
मुहा०—एड़ करना=१. एड़ लगाना। २. चल देना। रवाना होना। एड़ देना या लगाना=१. लात मारना। २. घोड़े को आगे बढ़ाने के लिए एक एड़ से मारना। ३. उत्तेजित करना। उसकाना। ४. बाधा डालना।
एड़क—संज्ञा पुं० भेड़ा। मेढ़ा। मेष।
एडमूक—वि० गूँगा-बहरा (दोनों)
एडिटर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सम्पादक। दैनिक समाचार-पत्र, साप्ताहिक, मासिक-पत्रिका आदि का सम्पादक।
एडिशन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] किसी पुस्तक का किसी बार छपना। संस्करण। किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका का संस्करण। आवृत्ति।
एड्रेस—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. पता। नाम। घर। निवासस्थान का पता। २. अभिनन्दन-पत्र। मानपत्र।
[illegible]क—संज्ञा पुं० समाधि।
[illegible]ी—संज्ञा स्त्री० पैर का पिछला भाग। एड़।
मुहा०—एड़ घिसना या रगड़ना=१. एड़ी को मल-मलकर धोना। २. बहुत दिनों से कष्ट में या बीमार रहना। एड़ी से चोटी तक=सिर से पैर तक।
एण—संज्ञा पुं० कस्तूरी-मृग।
एतकाद—संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास।
एतत्काल—संज्ञा पुं० उपस्थित काल। इस समय। सम्प्रति।
एतत्कालीन—संज्ञा पुं० इस कालवर्ती। आधुनिक।
एतत् या एतद्—सर्व० यह। पुरोवर्ती। सम्मुखस्थित।
एतदर्थ—अव्य० इसलिए। अतएव। इस कारण।
एतद्देशीय—वि० इस देश से संबंध रखनेवाला। इस स्थान का। इस देश का।

एतना–वि० इतना।
एतबार–संज्ञा पुं० [अ०] प्रतीति। विश्वास।
एतराज–संज्ञा पुं० [अ०] आपत्ति। विरोध।
एतवार–संज्ञा पुं० दे० "इतवार"।
एता*†–वि० [स्त्री० एती] इतना। इतनी मात्रा का।
एतादृक्–वि० ऐसा। ऐसा ही। एतादृश।
एतादृश–वि० ऐसा। इसके जैसा। इस प्रकार का। ऐसा।
एतावत्–अव्य० इतना ही। यहाँ तक।
एतावता–अव्य० इस कारण। इस हेतु। इसलिए।
एतावन्मात्र–अ० इतना ही। यही। केवल।
एतिक*–वि० इतनी। इतना। इतना ही।
एतिहात–संज्ञा स्त्री० दे० "एहतियात"।
एनस–संज्ञा पुं० पाप। अपराध।
एनी–संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा वृक्ष, जो दक्षिण के पश्चिमी घाट में पाया जाता है।
एमन–संज्ञा पुं० सात स्वरों का या संपूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)
एरंड–संज्ञा पुं० अरण्डी। रेंड़ी। रेंड़।
एरंड खरबूजा–संज्ञा पुं० पपीता।
एरंड सफेद–संज्ञा पुं० मोगली। बागबरेंडा।
एरंडी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की झाड़ी, जिसे तुंगा, आमी और दरेंगड़ी कहते हैं।
एराक–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० एराकी] अरब का प्रदेश-विशेष जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।
एराकी–वि० [फा०] एराक का।
संज्ञा पुं० नस्ल। एराक देश की नस्ल का घोड़ा।
एराफेर या एराफेरी–संज्ञा पुं० हेराफेरी। सट्टा-बट्टा।
एरी–संज्ञा स्त्री० सम्बोधन-सूचक शब्द।
एलक–संज्ञा पुं० १. चलनी, जिसमें मैदा या महीन आटा छाना जाता है। २. भेड़ा। ३. जंगली बकरी।
एलची–संज्ञा पुं० [तु०] राजदूत। जो एक राज्य का संदेशा लेकर दूसरे राज्य में जाता है। दूत।
एला–संज्ञा स्त्री० इलायची।
एलुवा या एलूवा–संज्ञा पुं० [अँग्रे० एलो] औषधि-विशेष। मुसब्बर।
अव्य० ऐसे ही और। इसी प्रकार और।
एव–अव्य० १. ही। २. भी। ऐसा। इस प्रकार का। निश्चय करके ऐसा। मात्र। केवल।
एवं–क्रि० वि० इसी प्रकार। ऐसा ही। अंगीकार।
एवज–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिफल। प्रतिकार। २. बदला। परिवर्त्तन। ३. स्थानापन्न पुरुष। दूसरे की जगह पर कुछ काल तक के लिए काम करनेवाला।
एवजी–संज्ञा स्त्री० [अ० एवज] स्थानापन्न पुरुष। दूसरे की जगह पर कुछ समय के लिए काम करनेवाला आदमी।
एवमस्तु–अव्य० ऐसा ही हो।
एषण–संज्ञा स्त्री० इच्छा। अभिलाषा।
एह*–सर्व० यह।
वि० यह।
एहतियात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सावधानी। होशियारी। २. चौकसी। ३. बचाव। परहेज।
एहसान–संज्ञा पुं० [अ०] उपकार। कृतज्ञता।
एहसानमंद–वि० [अ०] कृतज्ञ। उपकार माननेवाला। उपकृत।
एहि–सर्व० "एह" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है। इसको।
एहु या एहू–सर्व० यह भी। और भी। यही।
एहो–अव्य० संबोधन-शब्द। हे। ए। अरे। हो।

ऐ

ऐ–हिन्दी-वर्णमाला का नवाँ और संस्कृत-वर्ण-माला का बारहवाँ अक्षर (स्वरवर्ण) है। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालु है।
संज्ञा पुं० १. शिव। महेश्वर। २. आमंत्रण। आह्वान। ३ स्मरणार्थ।
अव्य० संबोधन-विशेष।

ऐं–अव्य० १. अव्यय-विशेष जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात को फिर से कहलाने के लिए किया जाता है। २. आश्चर्य-सूचक अव्यय।

ऐंच–संज्ञा पुं० १. संकोच। २. खैंच। खिंचाव।

ऐंचना–क्रि० स० १. ईंचना। तानना। खींचना। २. दूसरे का ऋण अपने ऊपर लेना। ओढ़ना।

ऐंचा–संज्ञा पुं० १. दे० "ऐंचाताना"। २ दे० 'अंकुडा'।

ऐंचाताना–वि० भेंगा। जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिंचती हो।

ऐंचातानी–संज्ञा स्त्री० खींचातानी। खींचा-खींची। अपने-अपने पक्ष का आग्रह।

ऐंछना*–क्रि० स० १. साफ करना। झाड़ना। २. ऊँछना। (बालों में) कंघी करना।

ऐंठ–संज्ञा स्त्री० १. अकड़। ठसक। २. घमंड। गर्व। ३. द्वेष। कुटिल भाव। दुर्भाव। विरोध। ४. मरोड़। गाँठ। ५. लपेटा। पेंच। बल।

ऐंठन–संज्ञा स्त्री० १. घुमाव। लपेट। पेंच। मरोड़। बल। २. खिंचाव। अकड़ाव। तनाव।

ऐंठना–क्रि० स० १. घुमाना। बटना। मरोड़ना। बल देना। २. झाँसना। दबाव डालकर या धोखा देकर लेना।

क्रि० अ० १. बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २. खिंचना। अकड़ना। ३. मरना। ४. अकड़ दिखाना। गर्व करना। ५. उल्टी-सीधी बातें करना। टर्राना।

ऐंठवाना–क्रि० स० [ऐंठना का प्रे० रूप] ऐंठने का काम दूसरे से कराना।

ऐंठा–संज्ञा पुं० रस्सी बटने का एक पेंच। वि० मरोड़ा।

ऐंड बेंड–वि० टेढ़ा।

ऐंडरी–संज्ञा स्त्री० गेंडुरी। बीड़ा।

ऐंड़–संज्ञा पुं० १. गर्व। ऐंठ। ठसक। २. पानी का भँवर।

वि० १. निकम्मा। २. नष्ट।

ऐंड़दार–वि० १. ठसकवाला। घमंडी। २. बाँका। शानदार। तिरछा।

ऐंड़ना–क्रि० अ० १. ऐंठना। बल खाना। २. अँगड़ाई लेना। अँगड़ाना। ३. गर्व या घमंड करना।

क्रि० स० १. बल देना। ऐंठना। २. बदन तोड़ना।

ऐंड़ा–वि० [स्त्री० ऐंड़ी] ऐंठा हुआ। टेढ़ा।

मुहा०—अंग ऐंड़ा करना=ऐंठ दिखाना।

ऐंड़ाना–क्रि० अ० १. बदन तोड़ना। अँग-ड़ाना। अँगड़ाई लेना। २. अकड़ दिखाना। इठलाना।

ऐंद्रजालिक–वि० मायावी। इंद्रजाल करनेवाला। मायावान। बाजीगर।

ऐंद्री–संज्ञा स्त्री० १. शची। इंद्राणी। २. इंद्रवारुणी। ३. दुर्गा। ४. इलायची।

ऐक्य–संज्ञा पुं० १. एकता का भाव। एकत्व। २. मेल। एका। एकता। समानता।

ऐकमत्य–संज्ञा पुं० एकमत होने का भाव।

ऐगुन*†–संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।

ऐच्छिक–वि० इच्छानुसार। स्वेच्छाधीन। इच्छापूर्वक। वैकल्पिक।

ऐजन–अव्य० [अ०] तथैव। तथा। वही।

ऐत*–वि० दे० "इतना"।

ऐतरेय–संज्ञा पुं० १. ऋग्वेद का एक ब्राह्मण। २. आरण्यक-विशेष।

ऐतिहासिक–वि० १. इतिहास से संबंध रखनेवाला। इतिहास-संबंधी। जो इतिहास में हो। २. इतिहास का जाननेवाला। इतना प्रसिद्ध या महत्त्वपूर्ण जिसका वर्णन इतिहास में हो।

ऐतिहासिकता–संज्ञा स्त्री० ऐतिहासिक होने का भाव।

ऐतिह्य–संज्ञा पुं० पौराणिक। १. इतिहास-प्रसिद्ध प्रवाद कथा। यह प्रमाण कि बहुत दिनों से ऐसा सुनते आए हैं। २. परंपरा। क्रमागत।

ऐन–संज्ञा पुं०। "अयन"। घर। मकान। स्थान।

वि० [अ०] १. उपयुक्त। ठीक। सटीक। ज्यों का त्यों। २. पूरा-पूरा। बिलकुल।

ऐनक–संज्ञा स्त्री० [अ० ऐन=आँख] उपचक्षु। चश्मा।

ऐना—संज्ञा पुं० दर्पण। आइना।
ऐनि—संज्ञा पुं० सूर्यपुत्र।
ऐणिक—संज्ञा पुं० काले हरिण मारनेवाला।
ऐपन—संज्ञा पुं० हल्दी के साथ भिगोया हुआ पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं। भिगोया चावल जो हल्दी के साथ पिसा हो (थापा या तिलक के लिए)।
ऐब—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ऐबी] १. खोट। दोष। २. बुराई। अवगुण। कलंक। त्रुटि।
ऐबजोई—संज्ञा स्त्री० दूसरों के दोष देखना या ढूँढ़ना।
ऐबारा—संज्ञा पुं० भेड़-बकरियों का बाड़ा।
ऐबी—वि० [अ०] १. दुष्कर्मी। बुरा। खोटा। २. नटखट। दुष्ट। शैतान। ३. जिसका कोई अंग विकृत हो। विकलांग, विशेषतः काना।
ऐया†—संज्ञा स्त्री० १. दादी। पिता या माता की माँ २. बड़ी-बूढ़ी स्त्री।३. सास।
ऐयाम—संज्ञा पुं० [अ०] दिन। समय। जमाना। मौसिम।
ऐयार—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० ऐयारा] १. धूर्त्त। चालाक। चलता-पुर्जा। उस्ताद। २. छली। धोखेबाज।
ऐयारी—संज्ञा स्त्री० [अ०] चालाकी। धूर्त्तता। कपटता।
ऐयाश—वि० [अ०] [संज्ञा ऐयाशी] १. बहुत भोग-विलास या आराम करनेवाला। विषयासक्त। विषयी। २. लंपट। इंद्रिय-लोलुप।
ऐयाशी—संज्ञा स्त्री० [अ०] भोग-विलास। विषयासक्ति।
ऐरा-गैरा—वि० [अ० गैर] १. पराया। बेगाना। अजनबी (आदमी)। २. साधारण। हीन। तुच्छ।
ऐराक—संज्ञा पुं० दे० "एराक"।
ऐरापति*—संज्ञा पुं० दे० "ऐरावत"। इन्द्र का हाथी।
ऐरावण—संज्ञा पुं० १. ऐरावत हाथी। २. रावण के एक पुत्र का नाम।
ऐरावत—संज्ञा पुं० [स्त्री० ऐरावती] १. इंद्र का हाथी, जो पूर्व दिशा का दिग्गज है। २. बिजली से चमकता हुआ बादल। ३. बिजली। ४. इंद्रधनुष। ५. एक नाग का नाम। ६. नारंगी। ७. सूर्य का एक रूप। ८. बड़हर।
ऐरावती—संज्ञा स्त्री० १. ऐरावत हाथी की हथिनी। २. बिजली। ३. रावी नदी। ४. एक पौधे का नाम।
ऐरेय—संज्ञा पुं० मद्य-विशेष।
ऐल—संज्ञा पुं० इला का पुत्र पुरूरवा।
*संज्ञा पुं० १. बाढ़। बूड़ा। २. खाद्य की अधिकता, बहुतायत। ३. कोलाहल। ४. मंगल ग्रह।
ऐश—संज्ञा पुं० [अ०] १. चैन। आराम। २. भोग-विलास।
ऐशानी—वि० ईशानकोण-सम्बन्धी।
ऐशू—संज्ञा पुं० चौपाये जानवरों का एक रोग-विशेष जिसमें वे पागुर नहीं करते।
ऐश्वर्य—संज्ञा पुं० १. विभव। संपदा। गौरव। महिमा। महत्त्व। विभूति। धनसंपत्ति। २. अणिमादिक सिद्धियाँ। ३. आधिपत्य। प्रभुत्व। अलौकिक संपत्ति।
ऐश्वर्य्यवान्—वि० [स्त्री० ऐश्वर्यवती] प्रताप-शाली। वैभवशाली। भाग्यवान्। संपत्तिवान्। संपन्न।
ऐश्वर्यशाली—वि० भाग्यवान्। प्रारब्धी।
ऐषम—अव्य० वर्तमान संवत्सर। एसों। इस साल।
ऐस†—वि० दे० "ऐसा"।
ऐसा—वि० [स्त्री० ऐसी] इस तरह का। इसके समान। इस ढंग का।
मुहा०—ऐसा-तैसा या ऐसा-वैसा=साधारण। तुच्छ।
ऐसीक—संज्ञा पुं० १. त्वष्टादेव का मंत्र पढ़कर चलाया जानेवाला शस्त्र-विशेष। २. महाभारत का एक पर्व।
वि० बेंत का बना।
ऐसे—क्रि० वि० इस ढंग से। इस प्रकार से।
ऐसेहि—अव्य० इसी प्रकार से। इसी तरह से।
ऐहिक—वि० सांसारिक। भौतिक। दुनियाबी।

ओ

ओ–हिंदी-वर्णमाला का दसवाँ और संस्कृत-वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर (स्वर-वर्ण) जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु।
अव्य० १. एक संबोधन-विस्मय या आश्चर्य-सूचक शब्द। ओह। आह। २. एक स्मरण-सूचक शब्द। करुणा। स्मृति।

ओं–अव्य० १. हाँ। अच्छा। तथास्तु। स्वीकृतिसूचक शब्द। २. परब्रह्म-वाचक शब्द जो प्रणव मंत्र कहलाता है। ३. वेद-मंत्रों के पहले लिखा या उच्चारित होनेवाला वर्ण।

ओंइछना–क्रि० स० निछावर करना। वारना।

ओंकाना–क्रि० अ० हट या फिर जाना (मन का)। दे० "ओकना"।

ओंकार–संज्ञा पुं० १. परमात्मा का सूचक "ओं" शब्द। २. प्रणव। ३. आद्य बीजमंत्र। प्रारंभ। ४. सोहन चिड़िया।

ओंगना–क्रि० स० गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना जिससे पहिया आसानी से घूमे।

ओंठ–संज्ञा पुं० ओठ। अधर। मुँह की बाहरी उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं।
मुहा०—ओंठ चबाना=क्रोध और दुःख प्रकट करना। ओंठ चाटना=किसी वस्तु को खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओठों पर जीभ फेरना। ओंठ फड़कना=क्रोध के कारण ओंठ काँपना। ओंठ काटना=क्रोध के कारण दाँतों से ओंठ दबाना। ओंठ काट कर रह जाना=निष्फल क्रोध करना। जिस पर क्रोध हो, उस पर वश न चलना।

ओंड़ा*–वि० १. गहरा। २. गम्भीर।
संज्ञा पुं० १. गढ़ा। गड्ढा। २. सेंध जो चोरों ने खोदी हो।

ओंधा–संज्ञा पुं० औंधा। उलटा।

ओआ–संज्ञा पुं० हाथी फँसाने का गड्ढा।

ओक–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। निवास-स्थान। २. ठिकाना। आश्रय। ३. नक्षत्रों का समूह। ग्रह-समूह।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] उलटी।
संज्ञा पुं० अंजलि।

ओकना–क्रि० अ० [अनु०] १. उलटी करना। २. भैंस की तरह चिल्लाना। रेंकना। ३. ओक अर्थात् अंजलि से पीना।

ओकपति–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. सूर्य्य।

ओकाई–संज्ञा स्त्री० वमन। कै। उलटी।

ओकारांत–वि० जिसके अंत में "ओ" हो। जैसे, फोटो।

ओखद–संज्ञा पुं० दे० "औषध"।

ओखली–संज्ञा स्त्री० उलूखल। ऊखल।
मुहा०—ओखली में सिर देना=कष्ट सहने पर उतारू होना।

ओखा*–संज्ञा पुं० बहाना। हीला। मिस।
वि० १. रूखा-सूखा। २. विकट। कठिन। ३. टेढ़ा। ४. खोटा। जो शुद्ध न हो। 'चोखा' का उलटा। ५. विरल। झीना।

ओग*–संज्ञा पुं० चंदा। कर।

ओगरा–संज्ञा पुं० खिचड़ी। पथ्य-विशेष।

ओघ–संज्ञा पुं० १. ढेर। समूह। राशि। २. किसी वस्तु का घनत्व। ३. धारा। बहाव। ४. "काल पाके सब काम आप ही हो जायगा" इस प्रकार संतोष। काल-तुष्टि (सांख्य)। ५. बाढ़। ६. द्रुत लय (संगीत)। ७. अविच्छिन्न परंपरा।

ओछा–वि० १. तुच्छ। क्षुद्र। नीच। जो गंभीर न हो। छिछोरा। २. छिछला। कम गहरा। ३. हलका। जोर का नहीं। ४. उतावला। ५. कम। छोटा।

ओछाई–संज्ञा स्त्री० दे० "ओछापन"।

ओछापन–संज्ञा पुं० क्षुद्रता। नीचता। छिछोरापन। तुच्छता।

ओज–संज्ञा पुं० १. दीप्ति। बल। प्रताप। तेज। २. प्रकाश। उजाला। चमक। दीप्ति। ३. कविता का गुण-विशेष जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो। ४. शरीर के भीतर के रसों का सार-भाग। विषम, ताक (जैसे १, ३, ५, ७ आदि)। ६. जल।

ओजना–क्रि० स० अपने ऊपर लेना। सहना।
ओजस्विता–संज्ञा स्त्री० प्रताप। तेज। कांति। दीप्ति। प्रभाव।
ओजस्वी–वि० [स्त्री० ओजस्विनी] प्रतापी। प्रभावशाली। शक्तिमान्। बली। तेजस्वी।
ओझ–संज्ञा पुं० १. पेट। पेट की थैली। २. आँत।
ओझर–संज्ञा पुं० पेट।
ओझल–संज्ञा पुं० ओट। आड़। छिपाव। परदा। टट्टी। एकान्त।
मुहा०–ओझल होना=दिखाई न पड़ना। ओझल करना=छिपाना। परदा करना।
ओझा–संज्ञा पुं० १. सरयूपारीण, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की पदवी-विशेष। २. जो भूत-प्रेत झाड़ता हो। सयाना। टोनहा। ३. मंत्री। तांत्रिक। ४. उपाध्याय।
ओझाई–संज्ञा स्त्री० झाड़फूंक। भूत-प्रेत झाड़ने का काम।
ओट–संज्ञा स्त्री० १. व्यवधान। आड़। छिपाव। बचाव। रोक, जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े। २. आड़ करनेवाली चीज। ३. शरण। रक्षा।
मुहा०—ओट में=बहाने से। हीले से। आँखों की ओट होना=छिपना, सामने से हटना। तिल की ओट पहाड़ होना=छोटी सी चीज का बचाव करने से बड़ी से बड़ी कठिनाई से बचना। ओट करना=बचाना, आड़ करना।
ओटना–क्रि० स० १. कपास को चरखी में दबाकर रूई और बिनौलों को अलग करना। २. अपनी ही बात कहते जाना।
क्रि० स० १. अपने ऊपर सहना। २. आड़ करना। ३. रेतना।
ओटनी, ओटी–संज्ञा स्त्री० बेलनी। कपास ओटने की चरखी।
ओटा–संज्ञा पुं० आड़ा। लुकाव। परदे की दीवाल।
ओठँगना†–क्रि० अ० १. किसी वस्तु से टिककर बैठना। सहारा लेकर बैठना। टेक लगाना। २. कमर सीधी करना। थोड़ा आराम करना।

फा० १६

ओठँगाना†–क्रि० स० १. भिड़ाना। सहारे से टिकाना। २. किवाड़ या दरवाजा बंद करना।
ओठ–संज्ञा पुं० ओष्ठ। ओंठ। होंठ। अधर।
ओड़न†*–संज्ञा पुं० १. ओड़ने की वस्तु। वार बचाने की वस्तु। २. फरी। ढाल।
ओड़न खाँड़े–संज्ञा पुं० पटेबाज। ढाल-तलवार।
ओड़ना–क्रि० स० १. ऊपर लेना। रोकना। वारण करना। २. (कुछ लेने के लिए) पसारना। फैलाना। ३. झेलना। सहना।
ओड़व–संज्ञा पुं० रागों की जाति-विशेष। राग-विशेष, जिसमें पाँच ही स्वर हों।
ओड़ा–संज्ञा पुं० १. दे० "ओंड़ा"। २. दौरा। बड़ा टोकरा। खाँचा। ३. घाटा। कमी। टोटा।
ओड़्र–संज्ञा पुं० १. उड़ीसा देश। २. उड़ीसा देश का निवासी।
ओढ़ना–क्रि० स० १. पहनाना। शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से ढकना। २. अपने ऊपर या जिम्मे लेना।
संज्ञा पुं० ओढ़ने का वस्त्र (रजाई, पट्टू, लोई आदि।)
ओढ़नी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। उपरैनी।
ओढ़र*†–संज्ञा पुं० बहाना।
ओढ़ाना–क्रि० स० कपड़े से ढाँकना।
ओत–संज्ञा स्त्री० १. आराम। चैन।† २. आलस्य। ३. बचत। किफायत। ४. लाभ। प्राप्ति।
संज्ञा पुं० ताने का सूत।
वि० बुना या गुथा हुआ।
ओत-प्रोत–वि० सम्मिलित। बिलकुल मिला-जुला। इस प्रकार मिला हुआ कि उसका अलग करना असंभव-सा हो।
संज्ञा पुं० ताना-बाना। आड़ा-सीधा बुना या सिला हुआ।
ओता*–वि० दे० "उत्ता"। उतना।
ओतु–संज्ञा स्त्री० बिल्ली। बिलाई।
ओद–संज्ञा पुं० तरी। नमी। सील।
वि० गीला। नम। तर।
ओदन–संज्ञा पुं० पका हुआ चावल। भात।

ओबनी–संज्ञा पुं० बरियारी। बीजबन्ध।
ओबर–संज्ञा पुं० दे० "उदर"।
ओदरना†–क्रि० अ० १. फटना। विदीर्ण होना। २. नष्ट या छिन्न-भिन्न होना।
ओदा–वि० गीला। भींगा। भींजा। आर्द्र।
ओदारना†–क्रि० स० १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. नष्ट या छिन्न-भिन्न करना।
ओधे–संज्ञा पुं० १. लगे हुए। २. अधिकारी। ३. भीतरिया। ४. वल्लभ-संप्रदाय में ठाकुर जी की रसोई बनानेवाले को भी कहते हैं।
ओनंत*–वि० झुका हुआ। अनुन्नत।
ओनचन–संज्ञा स्त्री० अदवायन। चारपाई के पायताने की ओर बुनावट को खींचकर कड़ा रखने के काम में लाई जानेवाली रस्सी।
ओनचना–क्रि० स० अदवायन कसना या खींचना।
ओनमड–वि० बली।
ओनवना†*–क्रि० अ० दे० "उनवना"।
ओना†–संज्ञा पुं० निकास। तालाबों आदि में पानी के निकलने का रास्ता।
ओनामासी–संज्ञा स्त्री० १. प्रारंभ। २. अक्षरारंभ।
ओप–संज्ञा स्त्री० १. आभा। कांति। शोभा। दीप्ति। चमचमाहट। २. पालिश। माँजा। घोंट। ३. सुन्दरता।
ओपची–संज्ञा पुं० कवचधारी योद्धा। अस्त्रधारी वीर। रक्षक योद्धा।
ओपना–क्रि० स० साफ करना। चमकाना। पालिश करना। माँजना।
क्रि० अ० चमकना। झलकना। चमचमाना।
ओपनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।
ओपनी*–सं० स्त्री० माँजने की वस्तु। रगड़कर चमक लाने की कोई चीज। बट्टी। यशव या अकीक पत्थर का टुकड़ा जिससे रगड़कर सोना या चाँदी चमकाते हैं।
ओफ–अव्य० ओह। पीड़ा, खेद, शोक, दुःख और आश्चर्य्यसूचक शब्द।
ओबरी*–संज्ञा स्त्री० छोटा घर।
ओम्–संज्ञा पुं० ओंकार। प्रणव मंत्र।
ओर–संज्ञा स्त्री० १. किसी नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार जिसे दाहिना, बाँया, ऊपर, नीचे आदि शब्दों से निश्चित करते हैं। दिशा। २. पक्ष। पार्श्व।
संज्ञा पुं० १. छोर। सिरा। किनारा। २. अलग। ३. पार। सीमा। ४. प्रारंभ। आदि।
मुहा०–ओर निभाना या निबाहना=अंत तक अपना कर्त्तव्य पूरा करना।
ओरमना–क्रि० अ० लटकना। सहारा लेना।
ओरमा–संज्ञा पुं० एकहरी सिलाई।
ओरहना–संज्ञा पुं० उलहना। शिकायत। उपालंभ।
ओरहा–संज्ञा पुं० दे० "होरहा"।
ओरान†–क्रि० अ० समाप्त होना। चुकना। शेष न रहना।
ओराहन याओरहना†–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"
ओर या ओरी†–संज्ञा स्त्री० ओलती।
अव्य० स्त्रियों को सम्बोधन के लिए शब्द।
ओरेहा–संज्ञा पुं० निर्माण। सृष्टि। रचना। चित्रकारी।
ओलदेज, ओलंदेजा–वि० [हालैंड देश] हालैंड देश-संबंधी। हालैंड देश का निवासी।
ओलंबा, ओलंभ–संज्ञा पुं० उलाहना। शिकायत।
ओल–संज्ञा पुं० जिमीकंद। सूरन।
वि० गीला। मनौती।
संज्ञा स्त्री० १. ओट। आड़। २. गोंद। ३. शरण। ४. किसी वस्तु या प्राणी का किसी के पास जमानत में उस समय तक रहना, जब तक उसका कर्ज अदा न कर दिया जाय। जमानत। ५. दूसरे के पास जमानत में रहनेवाली वस्तु या व्यक्ति। ६. बहाना।
ओलती–संज्ञा स्त्री० ओरी। ढालुवाँ छप्पर का नीचे की ओर का किनारा, जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है।
ओलना–क्रि० स० १. परदा करना। आड़ या ओट में करना। २. रोकना। ३. सहना। ऊपर लेना।
क्रि० स० घुसाना।
ओला–संज्ञा पुं० १. पत्थर। बरफ के टुकड़े जो पानी के साथ आसमान से गिरते हैं। बिनौली। २. मिस्री का लड्डू। ३. ओट। परदा। आड़। ४. गुप्त बात। भेद। रहस्य।

वि० ओले के ऐसा ठंढा। बहुत ठंढा।
ओलियाना–क्रि० स० १. गोद में भरना। २. घुसाना। ठूँसना। डालना।
ओली–संज्ञा स्त्री० १. गोद। २. पल्ला। अंचल। ३. झोली।
मुहा०–ओली ओड़ना=आँचल फैलाकर कुछ माँगना।
ओलौना–संज्ञा पुं० उदाहरण। तुलना।
ओवरकोट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जाड़े में पहनने का एक प्रकार का बड़ा ऊनी कोट।
ओषधि–संज्ञा स्त्री० १. वनस्पति। तृण। घास। दवा के काम आनेवाली जड़ी-बूटी। २. पौधे जो एक बार फलकर सूख जाते हैं।
ओषधिपति, ओषधीश–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।
ओष्ठ–संज्ञा पुं० अधर। होंठ। ओंठ। रदच्छद। दन्तच्छद।
ओष्ठी–संज्ञा स्त्री० बिंबाफल। कुंदरू।
ओष्ठ्य–वि० १. जिसका उच्चारण ओंठ से हो। २. ओंठ-संबंधी।
यौ०–ओष्ठ्यवर्ण उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।
ओस–संज्ञा स्त्री० हवा में मिली हुई भाप जो रात की ठंढ से जलबिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है। शीत। पाला। शबनम।
मुहा०–ओस पड़ना या पड़ जाना=१. कुम्हलाना। मुर्झाना। २. उमंग बुझ जाना। जोश न रहना। ३. लज्जित होना। शरमाना।
ओसर–संज्ञा स्त्री० बिना ब्याई हुई जवान गाय। कलोर। जवान गौ।
ओसरा–संज्ञा पुं० १. बारी। पारी। २. दाँव।
ओसरी–संज्ञा पुं० "ओसरा"।
ओसाई†–संज्ञा स्त्री० १. ओसने का काम। अन्न को भूसे से अलगाने की क्रिया। २. ओसाने के काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।
ओसाना–क्रि० स० बरसाना। डाली देना। दाँए हुए गल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग-अलग हो जाता है।
ओसार–संज्ञा पुं० विस्तार। चौड़ाई। फैलाव।
ओसारा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० ओसारी] १. बरामदा। दालान। २. ओसारे की छाजन। सायबान।
ओसीसा–संज्ञा पुं० सिरहना। तकिया।
ओह–अव्य० दुःख, आश्चर्य्य या लापरवाही का सूचक शब्द।
ओहट*–संज्ञा स्त्री० दे० "ओट"।
ओहदा–संज्ञा पुं० [अ०] स्थान। पद।
ओहदेदार–संज्ञा पुं० [फा०] अधिकारी। पदाधिकारी। अफसर।
ओहर–संज्ञा स्त्री० ओट। ओझल।
ओहरना–क्रि० अ० कम होना। घटना।
ओहरी–संज्ञा स्त्री० थकावट। शिथिलता।
ओहा–संज्ञा पुं० गाय का थन।
ओहार–संज्ञा पुं० परदा। रथ, गाड़ी या पालकी आदि के ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा।
ओहि–सर्व० उसको। उसे।
ओहो–अव्य० १. आनंद-सूचक शब्द। २. आश्चर्य्य-सूचक शब्द।

औ

औ–हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ और संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ अक्षर (स्वर-वर्ण)। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ और ओ के संयोग से बना है।
*अव्य० दे० "और"। १. आह्वान। सम्बोधन। २. विरोध। ३. निर्णय।
संज्ञा पुं० अनन्त। निस्वन।
औं–अव्य० शूद्रों का प्रणव।
औंगा–वि० मूक। गूँगा। वाक्-हीन। वाणीहीन
औंगी–संज्ञा स्त्री० मौन। चुप्पी। गूँगापन। गाड़ी की धुरी में दिये जानेवाले तेल का पात्र।
औंगना–क्रि० स० गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल आदि लगाकर चिकना करना।
औंघना, औंघाना†–क्रि० अ० झपकना। ऊँघना। निद्राग्रस्त होना।
औंघाई†–संज्ञा स्त्री० झपकी। ऊँघ। हलकी नींद।
औंचित*–वि० निश्चित। बेखबर।
औंजन*†–क्रि० अ० १. ऊबना। २.

व्याकुल होना। घबड़ाना। अकुलाना।
क्रि० स० १. उँड़ेलना। ढालना। डालना। २. लेना।
औंठ–संज्ञा स्त्री० छोर। उठा या उभड़ा हुआ किनारा। बारी।
औंड़*–संज्ञा पुं० मजदूर। मिट्टी खोदने या उठानेवाला। बेलदार।
औंड़ा–वि० [स्त्री० औंड़ी] १. अथाह। गहरा। गंभीर। २. उठा या उभड़ा हुआ।
औंदना*†–क्रि० अ० १. उन्मत्त होना। बेसुध होना। मतवाला होना। २. घबड़ाना। व्याकुल होना। अकुलाना।
औंदाना–क्रि० अ० घबड़ाना। ऊबना। व्याकुल होना।
औंधना–क्रि० अ० पलट जाना। उलट जाना। उलटा होना।
क्रि० स० उलटना।
औंधा–वि० (स्त्री० औंधी) १. उलटा। जिसका मुंह नीचे की ओर हो। २. पट। पेट के बल लेटा हुआ। ३. नीचा।
मुहा०–औंधी खोपड़ी का=जड़। मूर्ख। औंधी समझ=जड़बुद्धि। उलटी समझ। औंधे मुंह गिरना=बुरी तरह धोखा खाना।
संज्ञा पुं० उलटा या चिलड़ा नाम का पकवान।
औंरा–संज्ञा पुं० १. आँवला। आमलकी। २. मिस्री का लड्डू।
औंला–संज्ञा पुं० १. धात्रीफल। आमलकी। आँवला। २. मिस्री का लड्डू।
औंलासार–संज्ञा पुं० गन्धक-विशेष।
औंधाना–क्रि० स० १. उलटा करना। उलट देना। मुँह नीचे की ओर करना (बरतन)। २. लटकाना। नीचा करना।
औकन–संज्ञा स्त्री० राशि। ढेर।
औकात–संज्ञा पुं० [अ० वक्त का बहु०] समय।
संज्ञा स्त्री०। १. समय। वक्त। २. हस्ती। हैसियत। बिसात। बिसारत। वित्त।
औकारान्त–वि० ऐसे शब्द जिनके अन्त में औकार हो।
औखद या औषद–संज्ञा पुं० औषध। दवा।
औखा–संज्ञा पुं० गाय का चमड़ा या चरसा।
औगत*–संज्ञा स्त्री० दुर्गति। दुर्दशा।
वि० दे० "अवगत"।
औगाहना–क्रि० अ० अवगाहना।
औगी–संज्ञा स्त्री० १. चाबुक। रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। २. बैल हाँकने की छड़ी। पैना। जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है।
औगुण या औगुन†*–संज्ञा पुं० दे० "अवगुण" दोष। खोट। कलंक।
औगुणी या औगुनी–वि० गुणहीन। निर्गुणी। मूर्ख।
औघट*–वि० दे० "अवघट"। अगम्य। दुर्गम। कठिन। बुरा। खराब।
औघड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० औघड़िन] १. अघोरी। अघोर मत का पुरुष। २. सोच-विचारकर काम न करनेवाला। मौजी।
वि० १. उलटा-पलटा। अंडबंड। २. अपशकुन। ३. वह व्यक्ति जिसे खान-पान में कुछ भी विचार न हो। गलीज। गंदा।
औघर–वि० १. अनगढ़। अटपट। अंडबंड। 'सुघर' का प्रतिकूल। असुन्दर। २. अनोखा। विलक्षण। अद्भुत।
औचक–क्रि० वि० एकाएक। सहसा। अचानक। हठात्। अकस्मात्।
औचट–संज्ञा स्त्री० संकट। कठिनता। अंडस।
क्रि० वि० १. अचानक। सहसा। २. अनजान में। भूल से।
औचित्य–संज्ञा पुं० उपयुक्तता। उचित का भाव। युक्तता।
औछ–संज्ञा पुं० दारुहल्दी की जड़।
औजार–संज्ञा पुं० [अ०] १. लोहार, बढ़ई आदि कारीगरों के काम करने के यंत्र। २. हथियार। राछ।
औझड़, औझर–क्रि० वि० लगातार। निरंतर। सदैव।
संज्ञा पुं० ठल। धक्का। खोंच।
औटन–संज्ञा पुं० जलाव। उबाल। ताप।
औटना–क्रि० स० १. खौलाना।* दूध या

किसी पतली चीज को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना। २. व्यर्थ घूमना।
क्रि० अ० किसी तरल वस्तु का आँच या गरमी खाकर गाढ़ा होना।
औटाना–क्रि० स० दे० "औटना"।
औठपाव–संज्ञा पुं० दे० "अठपाव"।
औडुलोमि–संज्ञा पुं० एक दार्शनिक ऋषि।
औढर–वि० जिस ओर मन में आवे, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मनमौजी। अटपटी। ढार। बेसमझी की ढरन। बिना प्यार की प्रसन्नता।
औतरना*–क्रि० अ० दे० "अवतरना"।
औतार*–संज्ञा पुं० दे० "अवतार"।
औत्कर्ष्य–संज्ञा पुं० श्रेष्ठता। उत्तमता।
औत्तमि–संज्ञा पुं० १४ मनुओं में तीसरे मनु।
औत्तानपादी–संज्ञा पुं० उत्तानपाद के पुत्र। प्रसिद्ध भक्त ध्रुव।
औत्तापिक–वि० उत्ताप-सम्बन्धी।
औत्पत्तिक–वि० उत्पत्ति-सम्बन्धी।
औत्सुक्य–संज्ञा पुं० उत्सुकता। अभिलाषा। भावना।
औथरा*–वि० दे० "उथला"। छिछला। कम गहरा।
औदनिक–वि० १. सूपकार। २. पाचक। ३. रन्धनकर्त्ता। रसोइया।
औदरिक–वि० १. पेट-संबंधी २. पेटू। बहुत खानेवाला। पेटार्थी। लालची। जलोदर का रोगी।
औदसा†*–संज्ञा स्त्री० दे० "अवदशा"।
औदात–वि० अवदात। श्वेत। गौर। शुक्ल। सफेद। धौला।
औदान–संज्ञा पुं० घलुवा। सेंत का।
औदार्य–संज्ञा पुं० १. उदारता। २. सात्विक नायक का गुण-विशेष। ३. महत्त्व। श्रेष्ठत्व। सरलता। दातृत्व।
औदास्य–संज्ञा पुं० उदासीनता। वैराग्य। अनिच्छा। मनोमालिन्य।
औदीच्य–संज्ञा पुं० गुजराती ब्राह्मणों की जाति-विशेष।
वि० उत्तर दिशा का।
औदुम्बर–वि० १. उदुंबर या गूलर का बना हुआ। २. जो ताँबे का बना हो।
संज्ञा पुं० १. गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। २. मुनि-विशेष।
औद्दालिक–संज्ञा पुं० १. दीमक और बिल्ली आदि की बाँबी के कीड़ों का बिल। चेप। २. मधु। तीर्थ-विशेष।
औद्धत्य–संज्ञा पुं० १. उग्रता। अक्खड़पन। उजड्डपन। २. ढिठाई। धृष्टता।
औद्योगिक–वि० उद्योग-संबंधी।
औद्वाहिक–वि० विवाह-संबन्धी धन। विवाह में प्राप्त धन।
औध*–संज्ञा पुं० दे० "अवध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
औधारना–क्रि० स० दे० "अवधारना"।
औधि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
औनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।
औनिप*–संज्ञा पुं० दे० "अवनिप"। राजा।
औना-पौना–वि० थोड़ा-बहुत। आधा-तीहा। अपूर्ण। न्यूनाधिक। घटी-बढ़ी।
क्रि० वि० कमती-बढ़ती पर।
मुहा० औने-पौने करना=जितना दाम मिले उतने पर बेच डालना।
औपचारिक–वि० १. उपचार-संबंधी। २. जो वास्तविक न हो। जो केवल कहने-सुनने के लिए हो। व्यावहारिक।
औपनिवेशिक–वि० १. उपनिवेशों की तरह। २. उपनिवेश-संबंधी।
औपनिवेशिक स्वराज्य–संज्ञा पुं० (डोमिनियन स्टेट्स) एक प्रकार का विदेशी राज्य जिसमें शासित जनता को कुछ खास अधिकार प्राप्त होते हैं। कुछ खास अधिकारों से युक्त एक प्रकार का स्वराज्य जो ब्रिटिश साम्राज्य में आस्ट्रेलिया और कनाडा आदि उपनिवेशों को प्राप्त है।
औपनिषदिक–वि० १. उपनिषद्-संबंधी। २. उपनिषद् के समान।
औपन्यासिक–वि० १. उपन्यास-संबंधी। उपन्यास-विषयक। २. जो उपन्यास में वर्णन करने योग्य हो। ३. अनोखा। अद्भुत।
संज्ञा पुं० उपन्यास लिखनेवाला।

औपपत्तिक–वि० १. वर्त्तमान। प्रस्तुत। २. उपयुक्त। ३. तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।

औपपत्तिक शरीर–संज्ञा पुं० देवलोक और नरक के जीवों का नैसर्गिक या सहज शरीर। लिंग-शरीर।

औपयिक–वि० उपयुक्त। योग्य।

औपसर्गिक–वि० प्र, अप्, सम् आदि। उपसर्ग-संबंधी।

औबर–वि० बुरा या कठिन मार्ग। औघट। दुर्गम।

औम*–संज्ञा स्त्री० अवम तिथि। सूर्योदय के समय की वह तिथि, जिसकी गणना नहीं होती, जिसका मान नहीं होता।

और–अव्य० संयोजक शब्द-विशेष। यह दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है। औ। फिर। विशेष। वाक्यान्तरच्छेदक।
वि० १. अन्य। दूसरा। २. भिन्न। ३. अधिक। ज्यादा।

मुहा०–और का और=कुछ का कुछ। विपरीत। अंडबंड। और एक=दूसरा कोई। और कोई। और ही=बिलकुल दूसरा। अत्यन्त भिन्न। और क्या=हाँ। ऐसा ही है। (उत्तर में) उत्साहवर्द्धक वाक्य। और तो और=दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य की बात नहीं। और ही कुछ होना=विलक्षण होना। सबसे निराला होना। और तो क्या=और बातों का तो जिक्र ही क्या।

औरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्त्री। २. नारी। महिला।

औरस–संज्ञा पुं० १२ प्रकार के पुत्रों में सबसे श्रेष्ठ। स्वपुत्र। धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।
वि० जो अपनी विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो।

औरसना*–क्रि० अ० १. रुष्ट होना। २. अनखाना। ३. विरस होना।

औरस्य–संज्ञा पुं० औरस पुत्र। स्वपुत्र।
वि० हृदय-संबंधी।

औरेब–संज्ञा पुं० १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट। ३. उलझन। पेंच। ४. चाल की बात। पेंच की बात। गोल-मोल बात। व्यर्थ की बात।

और्ध्वदैहिक–वि० प्रेत-क्रिया। अग्नि-संस्कार आदि। अन्त्येष्टि-क्रिया। श्राद्ध।

और्व–संज्ञा पुं० १. बड़वानल। २. नमक। ३. पुराणों के मतानुसार भूगोल का दक्षिण-भाग जहाँ सब नरक हैं। ४. मुनि-विशेष। भृगुवंशीय-ऋषि।

और्वश्य–संज्ञा पुं० १. वसिष्ठ। २. अगस्त्य। ३. उर्वशी का पुत्र।

औलना–क्रि० अ० जलना। गरम होना। गरमी पड़ना।

औलाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संतति। संतान। २. वंश-परम्परा।

औला-मौला–वि० मनमौजी। मस्त।

औलिया–संज्ञा पुं० [अ०, वली का बहु०] पहुँचे हुए फकीर। मुसलमान मत के सिद्ध।

औवल–वि० [अ०] १. प्रथम। पहला। २. प्रधान। मुख्य। ३. सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० आरंभ।

औशि*–क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

औषध–संज्ञा पुं० स्त्री० दवा। ओषधि। रोग दूर करनेवाली वस्तु। भेषज।

औषधालय–संज्ञा पुं० वैद्यगृह। दवाखाना। चिकित्सा-गृह।

औसत–संज्ञा पुं० [अ०] सामान्य। बराबर का परता। समष्टि का सम-विभाग।
वि० माध्यमिक। साधारण। बीच का।

औसना†–क्रि० अ० १. उमसना। गरमी पड़ना। २. खाने की चीजों का बासी होकर सड़ना। ३. गरमी से घबड़ाना। ४. पचना।

औसर*–संज्ञा पुं० दे० "अवसर"। अवकाश। छुट्टी।

औसान–संज्ञा पुं० १. समाप्ति। अंत। २. परिणाम। ३. सुध-बुध। चेतना। बोध। होश-हवास। २. साहस।

औसेर–संज्ञा पुं० चिन्ता। खटका।

औहत–संज्ञा स्त्री० १. अपमृत्यु। २. दुर्गति। दुर्दशा।

क

क—हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं। (सं० पुं०) ब्रह्मा। विष्णु। यम। गरुड़। सूर्य। कामदेव। अग्नि। दीप्ति। वायु। मोर। राजा। आत्मा। मन। शरीर। समय। काल। धन। शब्द। राजा। प्रजापति। दक्ष। ग्रन्थि। गाँठ।

कं—संज्ञा पुं० १. जल। २. अग्नि। ३. काम। ४. सोना। ५. मस्तक। शिर। मुख।

कंक—संज्ञा पुं० [स्त्री० कंका, कंकी] १. सफेद चील। काँक। २. बड़ा आम विशेष। ३. यम। ४. क्षत्रिय। ५. युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट के यहाँ अज्ञातवास में रहे थे।

कंकड़—संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी] [वि० कँकड़ीला] १. पत्थर का छोटा टुकड़ा। २. चिकनी मिट्टी और चूने से बने रोड़े जो सड़क बनाने के काम में आते हैं। ३. अंकड़ा। किसी चीज़ का वह टुकड़ा जो आसानी से न पिस सके। ४. चिलम में रखने का मिट्टी आदि का टुकड़ा।

कंकड़ीला—वि० [स्त्री० कंकड़ीली] जिसमें कंकड़ हों। कंकड़ मिला हुआ। कंकड़-युक्त।

कंकण—संज्ञा पुं० १. कलाई का गहना विशेष। वलय। कड़ा। कंगन। २. विवाह के समय हाथ में पहनाया जानेवाला धागा।

कंकपत्र—सं० पुं० बाण-विशेष। एक प्रकार का बाण जिसमें कंक या गिद्ध के पर बँधे रहते हैं। गिद्ध के आकार का तीर।

कंकर—संज्ञा पुं० दे० 'कंकड़'। काँकर। रोड़ा। पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े।

कंकरीट—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे० कांक्रीट] १. छर्रा। बजरी। चूना, कंकड़, बालू इत्यादि से मिलकर बना हुआ गच बनाने का मसाला। २. छोटी छोटी कंकड़ी जिससे सड़क बनती और सुधारी जाती है।

कंकाल—संज्ञा पुं० अस्थि-पंजर। ठठरी।

कंकालमाला—संज्ञा स्त्री० हाड़ों की माला।

कंकालमाली—संज्ञा पुं० अस्थिमय माला पहननेवाला। महादेव। भैरव।

कंकालिनी—संज्ञा स्त्री० डाकिनी, डायन। दुर्गा। उग्र और दुष्ट स्वभाव की स्त्री। कर्कशा।

कंकेला—वि० पथरीला। किरकिरा। बलुवा।

कंकोल—संज्ञा पुं० शीतलचीनी के वृक्ष का भेद विशेष, जिसके फल शीतलचीनी से बड़े और कड़े होते हैं।

कँखवारी—संज्ञा स्त्री० कँखौरी। काँख में होनेवाली फुड़िया।

कँखौरी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "कँखवारी"। २. काँख।

कंगन—संज्ञा पुं० १. कंकण। २. सिखों का सिर पर बाँधा जानेवाला लोहे का चक्र।

कँगना—संज्ञा पुं० [स्त्री० कँगनी] १. दे० "कंकण"। २. कंकण बाँधते समय गाया जानेवाला गीत।

कँगनी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा कंगन। २. ककनी। छत के नीचे दीवार में उभड़ी हुई लकीर। कगर। कार्निस। ३. गोल चक्कर जिसके बाहरी किनारे पर दाँत या नुकीले कँगूरे हों।

संज्ञा स्त्री० अन्न-विशेष जिसके चावल खाए जाते हैं। टाँगुन। काकुन।

कंगरोड़—सं० पुं० रीढ़। पक्षी-विशेष।

कंगार—सं० पुं० भार वहन करनेवाला।

कंगला—वि० दे० "कंगाल"।

कंगाल—वि० १. भुक्खड़। दीन। दुःखी। २. दरिद्र। निर्धन।

कंगाली—संज्ञा स्त्री० निर्धनता। दरिद्रता। दीनता।

कंगूड़ी—संज्ञा स्त्री० कान का निचला भाग।

कंगूरा—संज्ञा पुं० (वि० कँगूरेदार) १. चोटी। शिखर। २. क़िले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ से सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं। बुर्ज़। ३. कँगूरे के आकार का छोटा रवा। (गहनों में) ४. उच्च प्रदेश।

कंघा—संज्ञा पुं० (स्त्री० अल्पा० कंघी) १. केशमार्जनी । लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई वस्तु-विशेष जिससे सिर के बाल झाड़े या साफ़ किए जाते हैं। २. जुलाहों का अस्त्र-विशेष जिससे वे करघे में भरनी के तागों को कसते हैं । बौला । बय।

कंघी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा कंघा । २. जुलाहों का कंघी नामक अस्त्र। ३. पौधा-विशेष जिसकी जड़, पत्ती आदि दवा के काम में आती है। अतिबला।

मुहा०—कंघी चोटी—बनाव-सिंगार ।

कँघेरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० कँघेरिन] जो कंघा बनाता हो।

कंचन—संज्ञा पुं० १. सुवर्ण। सोना । २. संपत्ति। धन । ३. धतूरा । ४. कचनार विशेष । रक्त कांचन । ५. (स्त्री० कंचनी) एक जाति का नाम जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्या का काम करती हैं ।

वि० १. स्वस्थ। नीरोग। २. स्वच्छ।

मुहा०—कंचन बरसना—(किसी स्थान का) समृद्धि और शोभा से युक्त होना।

कंचनक—संज्ञा पुं० कचनार। मैनफल।

कंचनी—संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। पतुरिया। २. कंचन जाति की स्त्री। ३. सुवर्ण की पुतली।

कंचु—स्त्री० चोली। अँगिया।

कंचुक—संज्ञा पुं० (स्त्री० कंचुकी) १. चपकन । जामा । अचकन । २. अँगिया। चोली। ३. कवच। ४. वस्त्र। ५. केंचुल।

कंचुकी—संज्ञा स्त्री० अँगिया। चोली। संज्ञा पुं० १. अंतःपुर-रक्षक । रनिवास के दास-दासियों का अध्यक्ष। २. द्वारपाल। ३. सर्प।

कंचुरि*—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचुल", "केंचली"।

कँचेरा—संज्ञा पुं० (स्त्री० कँचेरिन) जो काँच का काम करता हो।

कंज—संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा । २. कमल। ३. चरण की एक रेखा। कमल। पद्म। ४. केश। सिर के बाल। ५. अमृत।

कंजई—वि० खाकी। कंजे के रंग का। धूएँ के रंग का।

संज्ञा पुं० १. कंजई रंग की आँखवाला घोड़ा। २. खाकी रंग।

कंजड़—संज्ञा पुं० (स्त्री० कंजड़िन) १. घूमनेवाली जाति-विशेष। २. रस्सी बटने, सिरकी बनाने का काम करनेवाली एक जाति।

कंजा—संज्ञा पुं० करंजुवा। एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली के दाने दवा के काम में आते हैं।

वि० (स्त्री० कंजी) १. गहरे खाकी रंग का। कंजे के रंग का। २. कंजी या भूरी आँखवाला।

कंजावलि—संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त-विशेष।

कंजिया—संज्ञा स्त्री० आँखों की अंजनी।

कंजियाना—क्रि० अ० अंगारों का ठंडा पड़ना। काला पड़ना। आँखों का कंजा होना।

कंजूस—वि० (संज्ञा कंजूसी) जो धन का भोग न करे। लालची। सूम। कृपण।

कंजूसी—संज्ञा स्त्री० कृपणता।

कंटक—संज्ञा पुं० [वि० कंटकित] १. काँटा। २. सूई की नोक। ३. क्षुद्र शत्रु । ४. बाधा। विघ्न। बखेड़ा। झंझट। ५. बाधक। ६. रोमांच। ७. कवच। ८. दोष। ९. नाखून। १०. तेज़ दर्द। ११. बाँस। १२. कारखाना। १३. दोष, त्रुटि। १४. गाँव की सीमा।

कंटकद्रुम—संज्ञा पुं० ः वृक्ष। शाल्मली वृक्ष।

कंटकफल—संज्ञा पुं० पनस । कटहर । सिंघाड़े ।

कंटकभुक्—संज्ञा पुं० ऊँट।

कंटकमय—वि० काँटे से भरा। बहुत काँटे वाला।

कंटकलता—संज्ञा स्त्री० खीरा। फल-विशेष।

कंटकारी—संज्ञा स्त्री० १. भटकटैया। २. सेमल। ३. कटाई। कटेरी।

कंटकित—वि० १. पुलकित। २. रोमांचित। ३. काँटेदार। जिसमें काँटे हों।

कंटकी–वि० काँटेदार। संज्ञा स्त्री० भटकटैया।

कंटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे० डिकैंटर] क़राबा। शीशे की बनी हुई सुंदर सुराही जिसमें शराब और सुगंध आदि रखे जाते हैं।

कंटाइन–संज्ञा स्त्री० १. डाइन। चुड़ैल। २. लड़ाकी स्त्री। कर्कशा स्त्री।

कंटाय–संज्ञा स्त्री० कँटीला पेड़-विशेष जिसकी लकड़ी के यज्ञ-पात्र बनते हैं।

कंटार–वि० १. खुरदरा। २. कटीला। कंटकमय।

कँटिया–संज्ञा स्त्री० १. काँटी। छोटी कील। २. मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी। आँकड़ी। ३. अंकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ४. सिर का आभूषण-विशेष।

कँटीला–वि० (स्त्री० कँटीली) जिसमें काँटे हों। काँटेदार।

कंटोप–संज्ञा पुं० टोपी-विशेष जिससे सिर और कान ढके रहते हैं।

कंठ–संज्ञा पुं० [वि० कंठ्य] १. गला। टटुआ। गटई। २. घाँटी। गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और आवाज़ निकलती है।

मुहा०—कंठ फूटना—१. वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना। २. मुँह से शब्द निकलना। ३. युवावस्था आरंभ होने पर आवाज़ का बदलना। घाँटी फूटना। कंठ करना या रखना—ज़बानी याद करना या रखना। कंठ लगाना–गले लगाना, आलिंगन करना। ४. स्वर। शब्द। आवाज़। ५. हँसली। तोते, पंडुक आदि के गले की रेखा। ६. तट। किनारा।

कंठगत–वि० जो गले में हो। गले में आया हुआ। गले में अटका हुआ।

मुहा०—प्राण कंठगत होना—मृत्यु का निकट आना। प्राण निकलने पर होना।

कंठतालव्य–वि० (वर्ण) जिनका उच्चारण कंठ और तालु-स्थानों से मिलकर हो। 'ए' और 'ऐ' वर्ण। (व्याकरण)

कंठपाशक–हाथी के गले में बाँधने की रस्सी।

कंठभूषा–संज्ञा स्त्री० कंठाभरण।

कंठमाला–संज्ञा स्त्री० १. गले का रोग-विशेष जिसमें रोगी के गले में लगातार छोटी छोटी फुड़ियाँ निकलती हैं।
२. गले में पहनने की माला।

कँठला–संज्ञा स्त्री० माला। कंठी। गण्डा। गले का आभूषण।

कंठस्थ–वि० १. कंठगत। गले में अटका हुआ। २. मुखस्थ। कंठाग्र।

कंठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कंठी] १. गले का आभूषण-विशेष जिसमें बड़े बड़े मनके होते हैं। २. वह भिन्न भिन्न रंगों की रेखा जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारों ओर निकल आती है। हँसली। ३. कुरते या अंगरखे का वह अर्धचंद्राकार भाग जो गले पर रहता है। ४. बड़े दाने की माला।

कंठागत–वि० शरीरत्याग के उद्योगी। मरणोद्यत।

कंठाग्र–वि० कंठस्थ। ज़बानी। मुखाग्र।

कंठिधारी—संज्ञा पुं० वैरागी। भगत। कंठी पहननेवाला।

कंठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कंठा का अल्पा० रूप] १. छोटी गुरियों की माला। २. तुलसी आदि की मनियों की कंठी जिसे वैष्णव गले में बाँधते हैं।

मुहा०–कंठी देना या बाँधना—चेला बनाना – कंठी लेना—१. वैष्णव या भक्त होना। २. मद्य-मांस छोड़ना। ३. हँसली। कंठी। ४. तोते आदि पक्षियों के गले की रेखा।

कंठीरव–संज्ञा पुं० सिंह। व्याघ्र। शेर।

कंठौष्ठ्य–वि० जो एक साथ कंठ और ओंठ के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ' वर्ण। (व्याकरण)

कंठ्य–वि० १. गले से पैदा हुआ। २. जिसका उच्चारण कंठ से हो। ३. गले या स्वर के लिए लाभदायक।
संज्ञा पुं० १. वह वर्ण जिनका उच्चारण कंठ से होता है। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग। २. गले के लिए उपकारी औषध।

कंडरा–संज्ञा स्त्री० रक्त की मोटी नाड़ी। (वैद्यक)

कंडा—संज्ञा पुं० १. उपली। सूखा गोबर जो ईंधन के काम में आता है।
मुहा०—कंडा होना—१. दुर्बल हो जाना। सूखना। २. मर जाना। ३. लंबे आकार का सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है। उपला। उपरी। गोहरी। ४. सूखा मल। सुद्दा। गोटा।

कंडाल—संज्ञा पुं० १. तुरही। नरसिंहा। तूरी। २. पानी रखने का बड़ा गहरा बर्तन जो लोहे या पीतल आदि का बना रहता है।

कंडी—संज्ञा स्त्री० १. उपली। छोटा कंडा। २. सूखा मल। गोटा।

कंडील—संज्ञा स्त्री० [अ० कंदील] मिट्टी, अबरक़ या काग़ज़ की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।

कंडु—संज्ञा स्त्री० खाज। खुजली।

कंडुपुष्पी—संज्ञा स्त्री० शंखाहुली। . औषध-विशेष।

कंडू—संज्ञा पुं० रोग-विशेष। खुजलाहट। खुजली। खाज।

कंडूघ्न—संज्ञा पुं० पवाँर औषध।

कंडूति—संज्ञा स्त्री० कंडूपन। खुजलाहट। खाज होना।

कंडेरा—संज्ञा पुं० १. कांडकार। २. वाण वनानेवाली जाति। ३. धुनियाँ।

कंडोल—संज्ञा पुं० बाँस का बना अन्न रखने का पात्र।

कंडौरा—संज्ञा पुं० कंडा पाथने या रखने की जगह।

कंत*—संज्ञा पुं० दे० "कांत"। १. स्वामी। प्रियतम। प्रिय। २. ईश्वर।

कंथा—संज्ञा स्त्री० पुराने वस्त्र से बना ओढ़ना। कथरी। गुदड़ी।

कंथी—संज्ञा पुं० १. जोगी। २. साधु। ३. गुदड़ी लपेटनेवाला।

कंद—संज्ञा पुं० १. जड़-विशेष जो गूदेदार और बिना रेशे की हो; जैसे सूरन, शकरकंद इत्यादि। २. बादल। ३. सूरन। ४. तेरह अक्षरों का वर्णवृत्त-विशेष। ५. छप्पय के ७१ भेदों में से एक।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] मिसरी। जमाई हुई चीनी। ६. सूजन। शोथ। ७. योनिरोग-विशेष।

कंदमूल—संज्ञा पुं० मुनि-भोजन-विशेष। जड़ पदार्थ।

कंदन—संज्ञा पुं० ध्वंस। नाश।

कंदरा—संज्ञा स्त्री० १. खोह। पर्वत की सुरंग। गुफा। गुहा। २. चांडालों की वीणा।

कंदरान—संज्ञा पुं० पर्कटी वृक्ष। अखरोट वृक्ष। पाकर का पेड़।

कंदराल—संज्ञा पुं० पाकर। हिंगोट। पर्कटी।

कंदर्प—संज्ञा पुं० कामदेव। संगीतशास्त्र में ११ दुतालों में से एक ताल।

कंदल—संज्ञा पुं० १. उपराग। २. नवीन अंकुर। ३. विवाद। कलह। झगड़ा। लड़ाई। ४. सोना। ५. कपाल।

कंदलकंद—संज्ञा पुं० ज़िमीकंद। सूरन। मूल-विशेष।

कंदला—संज्ञा पुं० १. पासा। रैनी। गुल्ली। चाँदी का वह लंबा छड़ या गुल्ली जिससे तार बनाया जाता है। २. सोने या चाँदी का पतला तार।

कंदलित—वि० प्रस्फुटित। अंकुरित। अंकुर-प्राप्त।

कंदसार—संज्ञा पुं० १. मृग। हरिण। कुरंग। २. नंदन वन।

कंदा—संज्ञा पुं० १. दे० "कंद"। २. शकर-कंद। गंजी।†३. अरुई। घुइयाँ।

कंदासी—संज्ञा स्त्री० १. पुष्प और औषध विशेष। २. प्रियवासा।

कंदील—संज्ञा स्त्री० दे० "कंडील"।

कंदु—संज्ञा पुं० १. कड़ा ताँबा। २. साँकल। ३. कड़ी बेड़ी।

कंदुक—संज्ञा पुं० १. गेंद। २. गोल तकिया। गेंडुआ। गल-तकिया। ३. पुंगी-फल। सुपारी। ४. वर्णवृत्त-विशेष।

कँदैला—वि० मैला। गँदला।

कँदोरा—संज्ञा पुं० करधनी। कमर में पहनने का तागा-विशेष।

कंध*—संज्ञा पुं० १. शाखा। डाली। २. दे० "कंधा"।

कंधनी—संज्ञा स्त्री० १. करधनी। २. मेखला।

कंधर–संज्ञा पुं० १. गरदन । २. मेघ । बादल । ३. मोथा । मुस्ता ।

कंधा–संज्ञा पुं० १. बाहुमूल । २. स्कंध । मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है । ३. मोढ़ा ।

कंधार–संज्ञा पुं० १. अफ़ग़ानिस्तान के एक नगर का नाम । कंदहार । गांधार । २. कहार । ३. मल्लाह । पार लगानेवाला । कर्णधार ।

कंधारी–वि० कंधार का । जो कंधार देश में पैदा हुआ हो ।
संज्ञा पुं० घोड़े की जाति-विशेष ।

कंधावर–संज्ञा स्त्री० १. जूए का वह भाग जो बैल के कंधे के ऊपर रहता है । २. वह चद्दर या दुपट्टा जो कंधे पर डाला जाता है ।

कंधि–संज्ञा पुं० १. समुद्र । २. मेघ ।

कंधियाना–क्रि० स० १. कांध पर रखना । २. कंधे का बल देना । कंधे का सहारा देना ।

कँधेला–संज्ञा पुं० स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर रहता है ।

कँधेली–संज्ञा स्त्री० जीन, खोगीर गद्दी, वह वस्तु जो बैलों की पीठ पर रखी जाती है और उस पर बनिये अन्न लादते हैं ।

कँधैया–संज्ञा पुं० कन्हैया, श्रीकृष्ण का नाम ।

कंप–संज्ञा पुं० १. कँपकँपी । थरथराहट । काँपना (सात्त्विक अनुभावों में से एक) । २. मनोवेगों के अतिरेक से स्नायु के ऊपर नियंत्रण कम या ढीला होने के कारण शरीर या शरीर के अंगों का हिलना । ३. रोग जैसे मलेरिया या शीत के कारण शरीर का हिलना ।
संज्ञा पुं० [अंग्रे० कैंप] पड़ाव । छावनी ।

कँपकँपी–संज्ञा स्त्री० १. थर्राहट । संचलन । काँपना । २. शरीर में एक सिरे से दूसरे सिरे तक सहसा हिलने का वेग ।

कंपज्वर–संज्ञा पुं० कंपसहित ज्वर । जूड़ी ।

कंपन–संज्ञा पुं० (वि० कंपित) कँपकँपी । थरथराहट । भूचाल, भूडोल ।

कँपना–क्रि० अ० १. काँपना । हिलना । डोलना । २. डर जाना । भयभीत होना ।

कंपमान–वि० दे० "कंपायमान" । काँपता हुआ ।

कंपवायु–संज्ञा पुं० रोग-विशेष । शरीर की अवशता ।

कंपा–संज्ञा पुं० चिड़ियों को फँसाने के लिए बाँस की तीलियाँ जिनमें लासा लगाया जाता है ।

कँपाना–क्रि० स० (कँपना का प्रे०) १. हिलाना । २. डर दिखाना । कंप उत्पन्न करना ।

कंपायमान–वि० जो हिल रहा हो । भीत, डरा हुआ ।

कंपास–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. परकार । २. यंत्र-विशेष जिससे दिशाओं का बोध होता है ।

कंपित–वि० १. चंचल । काँपता हुआ । २. डरा हुआ । भीत । हिला हुआ ।

कंपू–संज्ञा पुं० (अंग्रे० कैम्प) १. छावनी । फ़ौज के रहने या ठहरने का स्थान । जन-स्थान । २. पड़ाव । डेरा । खेमा ।

कंबल–संज्ञा पुं० [स्त्री० कमली] १. ऊन का मोटा ओढ़ने का कपड़ा । २. एक बरसाती कीड़ा-विशेष । कमला । एक मृग-विशेष । जल । इस नाम का एक नाग ।

कंबु, कंबुक–संज्ञा पुं० १. शंख । २. गला । ३. शंख की चूड़ी । ४. घोंघा । ५. हाथी । ६. गले में पड़नेवाली तीन शुभ रेखाएँ (सामुद्रिक) ।

कंबुग्रीव–वि० शंख के समान कंठवाला ।

कंबोज–संज्ञा पुं० (वि० कांबोज) १ अफ़ग़ा-निस्तान के एक भाग का पुराना नाम जो गांधार के पास था । २. कंबोज का निवासी । ३. कंबोज का राजा । ४. हाथी विशेष । ५. घोंघा ।

कँवल–संज्ञा पुं० दे० "कमल" ।

कँवलगट्टा–संज्ञा पुं० कमल का बीज ।

कंस–संज्ञा पुं० १. मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र जो श्रीकृष्ण का मामा था । २. काँसा । ३. काँसे का बना हुआ बर्तन आदि ।

४. कटोरा। प्याला। ५. सुराही। ६. मँजीरा। झाँझ।

कंसकार–संज्ञा पुं० ब्राह्मण के औरस तथा वेश्या के गर्भ से उत्पन्न जाति-विशेष। कंसारी। कंसेरा। बर्तन बेचनेवाला।

कंसताल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा। झाँझ।

कई–वि० अनेक। एक से अधिक। बहुत से।

कएक–कुछ, थोड़ा। एकाध। अल्प।

ककई–संज्ञा स्त्री० कंघी। ककही।

ककड़ी–संज्ञा स्त्री० ज़मीन पर फैलनेवाली बेल-विशेष जिसमें लंबे-लंबे फल लगते हैं। ककरी। एक प्रकार का फल।

ककना–संज्ञा पुं० कंगन। गहना-विशेष।

ककनी–स्त्री० पहुँची। कंकण। स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना।

ककनू–संज्ञा पुं० दे० "कुकनू"।

ककराली–स्त्री० कँखौरी। बग़ल का फोड़ा।

ककरेजा–संज्ञा पुं० बैजनी रंग। बैजनी।

ककरोंदा–संज्ञा पुं० औषध का छोटा पौधा-विशेष।

ककवा–संज्ञा पुं० कंघा।

ककहरा–संज्ञा पुं० 'क' से 'ह' तक वर्णमाला। बारहखड़ी। वर्णमाला।

ककही–संज्ञा स्त्री० १. कंघी। २. चौवगला। ३. लाल रंग का कपास-विशेष।

ककुत्स्थ–संज्ञा पुं० इक्ष्वाकु राजा का पौत्र। पुरञ्जय।

ककुद्–संज्ञा पुं० १. डिल्ला। बैल के कंधे का कुब्बड़। श्रेष्ठ। २. राज-चिह्न। ३. पर्वत-विशेष। ४. शिखा। प्रधान। पर्वत की चोटी।

ककुभ–संज्ञा पुं० १. अर्जुन का पेड़। २. राग-विशेष। ३. छंद-विशेष। ४. दिशा। ५. एक पर्वत। ६. वीणा का दंड। वह लंबी लकड़ी, जिसपर तुंबी लगती है। प्रसेवक। ७. वीणा-दंड का वह ऊपरी हिस्सा, जो पीछे की ओर कुछ मुड़ा या झुका रहता है। ८. वीणा के ऊपरी भाग में वीणा-दंड के पीछे लगाई हुई और चमड़े से मढ़ी तुंबी, जिसके कारण ध्वनि और झंकार अधिक गूंजती है (नीचे एक एक तुंबी अवश्य रहती है)।

ककुभा–संज्ञा स्त्री० दिशा।

ककोड़ा–संज्ञा पुं० दे० "खेखसा"।

ककोरना–क्रि० स० खरोंचना। खोदना। उखाड़ना। मोड़ना। सिकोड़ना।

कक्कड़–संज्ञा पुं० १. सूखी या सेंकी हुई तमाखू का चूर जिसे छोटी चिलम पर चढ़ाकर पीते हैं। २. खत्रियों की एक अल्ल।

कक्का–संज्ञा पुं० दुंदुभि। नगाड़ा। दे० "काका"।

कक्ष–संज्ञा पुं० १. पट्टी, कमरपेटी। कमरा। २. काछ। लाँग। कछौटा। ३. कछार। कच्छ। ४. जंगल। ५. कास। ६. घास। सूखी घास। ७. भूमि। द्वार। ८. सूखा वन। ९. कमरा। घर। कोठरी। १०. कखरवार। काँख का फोड़ा। ११. दोष। पाप। १२. किनारी, ज़री की किनारी। श्रेणी। १३. पटुका। कमरबंद। १४. सेना के अगल बग़ल का भाग। १५. तराज़ू की रस्सी। १६. छिपने का स्थान। १७. एक लता-विशेष। १८. भैंसा।

कक्षा–संज्ञा स्त्री० १. ग्रह का भ्रमण-मार्ग। २. परिधि। ३. समता। बराबरी। तुलना। ४. श्रेणी। कोटि। ५. देहली। डचोढ़ी। ६. काँख, बग़ल। ७. काँख का फोड़ा, कखवार। ८. कछौटा। काँछ। ९. किसी घर की दीवार या पाख। घेरा। १०. वह कमरा जहाँ सर्वसाधारण न जा सके। ११. अनुहार। १२. तर्क में उत्तर, विरोध।

कखरी–संज्ञा पुं० काँख। कोख। बग़ल।

कखौरी†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "काँख"। २. कखरवार। काँख का फोड़ा।

कगर–संज्ञा पुं० १. छोर। शेष। नदी का ऊँचा किनारा। २. बाढ़। बारी। ३. डाँड़। मेंड़। ४. कँगनी। छत या छाजन के नीचे दीवार में रीढ़-सी उभड़ी हुई लकीर। कार्निस।

क्रि० वि० १. छोर पर, किनारे पर। २. पास, समीप, निकट। पार्श्व।

कगार या कगारा–संज्ञा पुं० १. नदी का करारा। २. ऊँचा किनारा। ३. टीला।

कच–संज्ञा पुं० १. केश। बाल। २. ज़ख्म के ऊपर की सूखी पपड़ी। ३. झुंड। ४. बादल। ५. बृहस्पति का पुत्र। ६. अँगरखे का पल्ला। ७. घाव का दाग़। ८. मल्ल विद्या का एक दाँव। संज्ञा पुं० १. धँसने या चुभने का शब्द। २. कुचले जाने का शब्द।
वि० सुगंधवाला। 'कच्चा' का अल्पा० रूप जिसका व्यवहार समास में होता है; जैसे, कचलहू।

कचक†–संज्ञा स्त्री० १. कुचल जाने की चोट। वह चोट जो दबने से लगे। २. कस-कस। ३. किरकिर।

कचकच–संज्ञा स्त्री० (अनु०) झगड़ा। बकवाद। झकझक किचकिच। व्यर्थ कोलाहल।

कचकचाना–क्रि० अ० १. दाँत पीसना। २. कचकच शब्द करना। ३. खूब ज़ोर लगाना।

कचकड़–संज्ञा पुं० कछुआ का खोपड़ा।

कचकना–क्रि० अ० १. मुकरना। फिरना। २. दबना। ३. ठेस लगना।

कचका–संज्ञा पुं० कछुआ का छिलका।

कचकेला–संज्ञा पुं० कच्चा केला। अपक्व कदली।

कचकैया–संज्ञा पुं० धक्का। ठोकर। ठेस।

कचकोल–संज्ञा पुं० [फा० कशकोल] कपाल। कासा। दरियाई नारियल का बना भिक्षा-पात्र।

कचदिला–वि० १. जिसमें कष्ट, पीड़ा आदि सहने का या विपत्ति में पड़ने का साहस न हो। २. कच्चे दिल का।

कचनार–संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ विशेष जिसमें सुंदर फूल लगते हैं।

कचपच–संज्ञा पुं० १. थोड़े से स्थान में बहुत सी चीज़ों या लोगों का भर जाना। गुत्थम-गुत्था। गिचपिच। २. दे० "कचकच"। ३. कृत्तिका नामक तारों का समूह।
वि० १. सघन। घना। २. निविड़।

कचपची–संज्ञा स्त्री० १. कृत्तिका नक्षत्र। २. चमकीले बुंदे जिन्हें स्त्रियाँ माथे या कपोल पर चिपकाती हैं।

कचपेंदिया–वि० १. ओछा। अस्थिर विचार वाला। जिसकी पेंदी कमज़ोर हो। २. अविश्वस्त। बात का कच्चा।

कचमच–संज्ञा स्त्री० १. गुत्थम-गुत्था। २. बकबक। ३. सघन।

कचर-कचर–संज्ञा पुं० [अनु०] १. कच-कच। कच्चे फल खाने का शब्द। २. वितंडा। बकवाद।

कचरकूट–संज्ञा पुं० १. खूब मारना। पीटना। २. पेट भर भोजन।

कचर-पचर–संज्ञा पुं० गिचपिच।

कचरना*–क्रि० स० १. रौंदना। पैर से कुचलना। २. अधिक खाना।

कचरा–संज्ञा पुं० १. ककड़ी। कच्चा खरबूज़ा। फूट का कच्चा फल। २. रद्दी चीज़ कूड़ा-करकट। ३. उरद या चने की पीठी। ४. समुद्र का सेवार।

कचरी–संज्ञा स्त्री० १. ककड़ी की जाति की बेल-विशेष जिसके फल खाए जाते हैं। पेहँटा। २. कचरी के फल के तले हुए टुकड़े। ३. कचरी या कच्चे पेहँटे के सुखाए हुए टुकड़े। ४. छिलकेदार दाल। ५. काटकर सुखाए हुए फल मूल आदि जो तरकारी के लिए रखे जाते हैं। ६. फल सहित चने की टहनियाँ।

कचला–संज्ञा स्त्री० १. गीली मिट्टी। २. चहला। कीचड़।

कचलोंदा–संज्ञा पुं० लोई। कच्चे आटे की पेड़ी।

कचलोन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नमक जो काँच की भट्ठियों में जमे क्षार से बनता है। काला नमक।

कचलोहिया–संज्ञा स्त्री० मटिया लोहा। कच्चा लोहा।

कचलोहू—संज्ञा पुं० घाव का पानी। पंछा या पानी जो ज़ख्म से थोड़ा थोड़ा निकलता है।

कचवना—क्रि० स० स्वतंत्रतापूर्वक खाना। निश्चिन्त भाव से भोजन करना।

कचवाँसी—संज्ञा स्त्री० बीघे का आठ हज़ारवाँ भाग। २० कचवाँसी की १ बिसवाँसी।

कचहरी—संज्ञा स्त्री० १. गोष्ठी। सभा। समाज। जमावड़ा। २. राजसभा। दरबार। ३. न्यायालय। अदालत। ४. दफ़्तर। ५. विचार-स्थान।

कचाई—संज्ञा स्त्री० १. कच्चापन। २. अजीर्ण। अपच। ३. अनुभवहीनता।

कचाना‡—क्रि० अ० १. साहस का न रहना। पीछे हटना। हिम्मत हारना। २. भयभीत होना। डरना।

कचायँध—संज्ञा स्त्री० कच्चेपन की महक।

कचारना†—क्रि० स० कपड़ा धोना।

कचाल—संज्ञा पुं० झगड़ा। विवाद। कलह।

कचालू—संज्ञा पुं० १. बंडा। घुइयाँ। एक प्रकार की अरुई। २. एक चाट-विशेष। एक प्रकार से मसाला डालकर बनाए हुए आलू।

कचिया—संज्ञा पुं० दे० "काचलवण"। हँसवा। दाँती।

कचियाना—क्रि० हिचकना। सहमना। हतोत्साह होना।

कचियाहट—संज्ञा स्त्री० कच्चापन।

कचीची*—संज्ञा स्त्री० दाढ़। जबड़ा।

मुहा०—कचीची बँधना=दाँत बैंठना। दाँती लगना (मरने का लक्षण)।

कचूमर—संज्ञा पुं० १. कुचला। २. कुचलकर बनाया हुआ अचार। ३. कुचली हुई वस्तु।

मुहा०—कचूमर करना या निकालना=१. चूर चूर करना। कुचलना। खूब कूटना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। खूब पीटना।

कचूर—संज्ञा पुं० नर-कचूर। हल्दी की जाति का पौधा-विशेष जिसकी जड़ में कपूर की सी कड़ी महक होती है।

कचोना—क्रि० स० धँसाना। चुभाना। कच्चा करना। साहसहीन करना, भीत करना, सहमाना। कमज़ोर करना।

कचेरा—संज्ञा पुं० जाति-विशेष।

कचोटना—क्रि० अ० मन में पीड़ा का अनुभव करना।

कचोरा*†—संज्ञा पुं० [स्त्री० कचोरी] प्याला। कटोरा।

कचौड़ी, कचौरी—संज्ञा स्त्री० उड़द आदि की पीठी भरकर बनाई गई पूड़ी।

कच्चा—वि० १. अपक्व। जो पका न हो। २. जो आँच पर पका न हो। जैसे—कच्चा घड़ा। ३. अपरिपुष्ट। जो पुष्ट न हुआ हो। ४. जिसके तैयार होने में कसर हो। ५. अदृढ़। निर्बल। ६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो।

मुहा०—कच्चा जी या दिल=विचलित होनेवाला या धैर्य्यच्युत होनेवाला चित्त। कच्चा करना=भयभीत करना। डराना।

कच्चा करना=१. झूठा साबित करना। अप्रामाणिक ठहराना। २. लज्जित करना। कच्चा पड़ना=३. अप्रामाणिक या झूठा ठहरना। ४. सिटपिटाना। संकुचित होना। कच्ची पक्की=उलटी-सीधी। भली बुरी। गाली। दुर्वचन। कच्ची बात=अश्लील बात। लज्जाजनक बात। ५. जो प्रामाणिक तौल या माप से कम हो। जैसे, कच्चा सेर। ६. कच्ची या गीली मिट्टी का बना हुआ। ७. अपटु। अनाड़ी। अपरिपक्व। मूर्ख।

संज्ञा पुं० १. दूर दूर पर पड़ा हुआ तागे का वह डोभ जिस पर दरजी बखिया करते हैं। २. ढाँचा। ढड्ढा। ३. मसविदा। ४. दाढ़। जबड़ा। ५. कच्चा पैसा। बहुत छोटा ताँबे का सिक्का जिसका चलन सब जगह न हो। कच्ची बात=प्रमाणहीन कच्चा काम=अनुचित।

कच्चा चिट्ठा—संज्ञा पुं० १. छिपी बात,

रहस्य। गुप्त भेद। २. वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय।

कच्चा माल—संज्ञा पुं० सामग्री। वह द्रव्य जिससे चीज़ें बनती हों। जैसे, रुई, सिल।

कच्चा हाथ—संज्ञा पुं० अनभ्यस्त हाथ। वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो।
वि०—अनुभवहीन।

कच्ची—वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग।
संज्ञा स्त्री० दे० "कच्ची रसोई"।

कच्ची चीनी—संज्ञा स्त्री० चीनी जो ख़ूब साफ़ न की गई हो। देशी चीनी।

कच्ची बही—संज्ञा स्त्री० वह वही जिसमें कच्चा हिसाब लिखा हो। कच्ची रोकड़।

कच्ची रसोई—संज्ञा स्त्री० केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। सिद्धान्न। अन्न जो दूध या घी में न पकाया गया हो। जैसे, रोटी, दाल, भात। वह भोजन जो पर-जाति के व्यक्ति के छूने से अशुद्ध माना जाय।

कच्ची सड़क—संज्ञा स्त्री० वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो। मिट्टी पीटकर बनी सड़क।

कच्ची सिलाई—संज्ञा स्त्री० दूर-दूर पर पड़ा हुआ डोभ या टाँका और लंगर। कोका।

कच्चू—संज्ञा पुं० अरुई। घुइयाँ। बंडा। कंद-विशेष।

कच्चे पक्के दिन—संज्ञा पुं० १. दो ऋतुओं की संधि के दिन। २. चार या पाँच महीने का गर्भ-काल।

कच्चे बच्चे—संज्ञा पुं० बहुत छोटे छोटे बाल-बच्चे।

कच्छ—संज्ञा पुं० १. जलप्राय देश। अनूप देश। एक तरह की नाव। दलदली भूमि। २. कछार। नदी आदि के किनारे की भूमि। ३. छप्पय का भेद-विशेष। [वि० कच्छी] ४. गुजरात के समीप एक प्रदेश। ५. इस देश का घोड़ा। ६. धोती की लाँग।
*संज्ञा पुं० कछुआ।

कच्छप—संज्ञा पुं० [स्त्री० कच्छपी] १. कछुआ। २. विष्णु के २४ अवतारों में से एक। ३. कुबेर की नौ निधियों में से एक। कुश्ती का एक दाँव। ४. दोहे का भेद-विशेष। ५. मदिरा खींचने का एक यंत्र। ६. तुन का वृक्ष। ७. एक नाग। ८. विश्वा-मित्र का एक पुत्र। ९. तालू का रोग-विशेष।

कच्छपी—संज्ञा स्त्री० १. कछुई। कच्छप की स्त्री। २. सरस्वती की वीणा।

कच्छा—संज्ञा पुं० १. लाँग। २. कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा बेड़ा। ३. दो पतवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं। (ब्रज)—श्रेणी, कोटि।

कच्छी—वि० १. कच्छ देशवासी। २. कच्छ देश में उत्पन्न।
संज्ञा पुं० घोड़े की जाति-विशेष।

कच्छू†—संज्ञा पुं० कछुआ।

कछ—संज्ञा पुं० कच्छप। नितम्ब। काँछ।

कछना या कछनी—संज्ञा स्त्री० १. धोती जो घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी जाय। २. वह वस्तु जिससे कोई चीज़ काछी जाय। ३. छोटी धोती।

कछलम्पट—वि० १. अजितेन्द्रिय। २. लुच्चा।

कछवाहा—संज्ञा पुं० राजपूतों की जाति-विशेष।

कछान, कछाना—संज्ञा पुं० घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।

कछार—संज्ञा पुं० १. समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि। खादर। २. दियारा। तराई। नदी-नालों के किनारे की ऊँची-नीची भूमि।

कछारना—क्रि० स० १. छाँटना। २. धोना। ३. अँवासना।

कछु*—वि० दे० "कुछ"। थोड़ा। एकाध, किंचित्।

कछुआ—संज्ञा पुं० [स्त्री० कछुई] जल-जंतु विशेष जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक—†वि० कुछ। थोड़ा सा। कुछ एक।

कछुवा—संज्ञा पुं० कूर्म। कच्छप। कमठ।

कछोटा, कछौटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कछोटी] १. कछनी । २. स्त्रियों के धोती पहनने का ढंग-विशेष जिसमें पीछे लाँग खोंसी जाती है ।

कछौटी–संज्ञा स्त्री० लँगोटी । कौपीन । कछनी ।

कज–संज्ञा पुं० [फा०] १. दोष । ऐब । २. टेढ़ापन । वक्रता । ३. कंज । कमल ।

कजक–संज्ञा पुं० हाथी का अंकुश ।

कजफहम–वि० [फा०] हर बात का उल्टा अर्थ लगानेवाला । दुर्बुद्धि ।

कजरा†–संज्ञा पुं० १. दे० "काजल" । २. बैल जिसकी आँखें काली हों ।

कजराई*–संज्ञा स्त्री० कालिमा, कालापन ।

कजरारा–वि० [स्त्री कजरारी] १. अंजन-युक्त । काजलवाला । जिसमें काजल लगा हो । २. स्याह । काजल के समान काला ।

कजरी–संज्ञा स्त्री० कजली । बरसाती गीत-विशेष ।
वि० काले रंग की ।

कजरौटा†–संज्ञा पुं० दे० "कजलौटा" । काजल रखने का पात्र ।

कजला–वि० १. काला २. काजल लगाए । ३. खरबूजे की एक जाति जो जौनपुर में उत्पन्न होती है ।

कजलाना–क्रि० अ० १. काला पड़ना । २. आग का बुझना या धुआँ देना ।
क्रि० स० आँजना । काजल लगाना ।

कजली–संज्ञा स्त्री० १. कालिख । २. साथ पिसे पारे और गंधक की बुकनी । ३. रस फूँकने में धातु का वह अंश जो आँच से उड़कर पात्र में लग जाता है । ४. गन्ने की जाति-विशेष । ५. वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो । ६. बरसाती त्योहार-विशेष । ७. गीत-विशेष जो बरसात में गाया जाता है । 'कजरी' ।

कजलौटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कजलौटी] कजरौटा, काजल रखने की डिबिया ।

क़ज़ा–संज्ञा स्त्री० माड़ । काँजी ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु । मौत ।

कजाक*–संज्ञा पुं० [तु० दे० कज्जाक] डाकू । लुटेरा ।

कजाकी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. लूट-मार । लुटेरापन । २. धोखेबाज़ी । छल-कपट ।

कजावा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] ऊँट की काठी ।

क़जिया–संज्ञा पुं० [अ०] साधारण बात पर झगड़ा । लड़ाई ।

कजी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. टेढ़ाई । टेढ़ा-पन । २. दोष । ऐब । ३. कसर । कमी ।

कज्जल–संज्ञा पुं० [वि० कज्जलित] १. अंजन । २. काजल । मसि, स्याही । ३. सुरमा । ४. दीप की कालिख । ५. बादल । ६. छंद-विशेष ।

कज्जाक–संज्ञा पुं० [तु०] डाकू । लुटेरा ।

कट–संज्ञा पुं० १. नितंब २. पतला तख्ता । ३. गंडस्थल । ४. हाथी का गंडस्थल । ५. नरकट । अतिरेक, आधिक्य । नरसल । ६. दरमा । नरकट की चटाई । ७. टट्टी । ८. खस, सरकंडा आदि घास । ९. शव । १०. तिरछी दृष्टि । ११. शर्त, करार, समय । १२. घास की बनी टट्टी । घास की अँटिया । १३. फूलों की धूल, पराग । १४. शिव, महादेव । १५. श्मशान । १६. पासा फेंकना । १७. अरथी । १८. काला रंग-विशेष । १९. 'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है । जैसे, कटखना कुत्ता ।

कटक–संज्ञा पुं० १. सिपाहियों की टुकड़ी । दल । सेना । फ़ौज । वलय । मेखला-चक्र । २. समुद्री नमक । ३. पहिया । ४. कंकड़ । ५. सेना के रहने का स्थान । ६. कड़ा । कंकण । ७. संग्रह, संपादन । ८. राज-शिविर । ९. पर्वत का मध्य भाग । १०. घाटी, करारा । कड़ियों के बीच का ज़ोड़ । ११. सथरी । गोदरी । घास-फूस की चटाई । १२. हाथी के दाँतों पर जड़े हुए पीतल आदि के बंद या सामी । रस्सी, डोरी । १३. समूह । १४. उड़ीसा की राजधानी ।

कटकई*–संज्ञा स्त्री० कटक । सेना-दल । लश्कर । फ़ौज ।

कटकट–संज्ञा स्त्री० (अनु०) १. दाँतों के

बजने का शब्द। २. लड़ाई-झगड़ा। **यौ०**–दाँता-कटकट=बेकार बहस। तुच्छ बातों पर झगड़ा, बहस, तर्क।

कटकटाना–क्रि० अ० १. किसी चीज़ को ऐसे हिलाना कि कट-कट शब्द हो। २. क्रुद्ध होकर दाँत पीसना।

कटकना–संज्ञा पुं० १. बाँधनू। २. ढाँचा। ३. उपाय।

कटकाई*–संज्ञा स्त्री० १. सेना। फ़ौज। २. दल। झुण्ड।

कटकी–वि० १. कटक नगर की बनी हुई वस्तु। २. पर्वत। शैल। पहाड़।

कटखना–वि० कटहा। काट खानेवाला। संज्ञा पुं० १. चाल। युक्ति। २. हथकंडा।

कटघरा–संज्ञा पुं० १. कटहरा। कठरा। लकड़ी का घेरा। कठघरा। काठ का वह घेरा जिसमें जँगला लगा हो। २. बड़ा पिंजड़ा।

कटड़ा–संज्ञा पुं० पँड़वा, भैंस का बच्चा।

कटती–संज्ञा स्त्री० बिक्री। खपत। कटौती।

कटन–संज्ञा पुं० काट। कतरन। कटने का ढंग।

कटना–क्रि० अ० १. कट जाना। किसी धारदार चीज की दाब से दो टुकड़े होना। २. पिसना। ३. किसी भाग का अलग हो जाना। ४. किसी धारदार चीज़ से घाव होना। ५. कतरा या ब्योंता जाना। ६. लड़ाई में मरना। ७. नष्ट होना। छीजना। ८. समय का बीतना। ९. रास्ता समाप्त होना। १०. खिसक जाना। धोखा देकर साथ छोड़ देना। ११. झेंपना। लज्जित होना। १२. ईर्ष्या करना, डाह करना, जलना। १३. मोहित या आसक्त होना। १४. खपना। बिकना। १५. प्राप्ति या आय होना। जैसे—माल कटना। १६. मिटना। खारिज होना। क़लम की लकीर से किसी लिखावट का रद होना। १७. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का पूरा पूरा भाग लगना।

मुहा०—**कटती कहना=मर्मभेदी बात कहना। चुभनेवाली बात कहना।**

कट मरना=युद्ध में अंत तक लड़कर मरना। विवाद में अंत तक लड़ना, वश भर हार न मानना।

कटनांस*–संज्ञा पुं० नीलकंठ। चाष पक्षी।

कटनि*–संज्ञा स्त्री० १. काट। २. आसक्ति। प्रीति। ३. रीझ।

कटनी–संज्ञा स्त्री० १. दराती। काटने का अस्त्र। २. कटाई करने का काम।

कटफल–संज्ञा पुं० कायफल। कैफल।

कटर†–संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार की बड़ी नाव-विशेष जो चरखियों के सहारे चलती है। २. छोटी नाव। पनसुइया।

कटरा–संज्ञा पुं० १. छोटा चौकोर बाज़ार। चौक। हाट। २. निकास। ३. शहर का बीच। ४. भैंस का नर बच्चा। पड़वा।

कटवाँ–वि० कटा हुआ। जो काटकर बनाया गया हो।

कटसरैया–संज्ञा स्त्री० एक काँटेदार पौधा।

कटहर–*संज्ञा पुं० दे० "कटहल"।

कटहरा–संज्ञा पुं० दे० "कटघरा"। काठ का बड़ा पिंजड़ा।

कटहल–संज्ञा पुं० १. इस पेड़ का फल जो खाया जाता है। २. एक पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं।

कटहा*–वि० [स्त्री० कटही] कटखना। काट खानेवाला।

कटा*–संज्ञा पुं० १. वध। हत्या। क़त्ल-आम। २. मार-काट।

कटाइक*–वि० काटनेवाला।

कटाई–संज्ञा स्त्री० १. फ़सल काटने का काम। २. काटने का काम। ३. फ़सल आदि काटने की मजदूरी।

कटाकट–संज्ञा पुं० १. कटकट शब्द। २. लड़ाई। युद्ध।

कटाकटी–संज्ञा स्त्री० शत्रुता मार-काट।

कटाक्ष–संज्ञा पुं० १. व्यंग। आक्षेप। २. भावयुक्त दृष्टि। तिरछी चितवन। तिरछी नज़र। ३. आँख का संकेत।

कटाग्नि–संज्ञा स्त्री० मृत्यु-दंड के अपराधी

के गले और शरीर में घास बाँधकर लगाई हुई आग (धर्मशास्त्र)।
कटाछनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कटाकटी"।
कटान–संज्ञा स्त्री० १. काटने की क्रिया, भाव या ढंग। २. घट जाना। ३. पैना।
कटाना–क्रि० स० [काटना का प्रे० रूप] दूसरे से काटने का काम कराना।
कटायक*–वि० काटनेवाला। जो काटे।
कटार–संज्ञा स्त्री० १. बड़ा छुरा। बालिश्त भर का तिकोना और दुधारा हथियार। २. कटारी। खंजर।
कटाल–संज्ञा पुं० ज्वार (भाटा)। समुद्र का बढ़ना।
कटाव–संज्ञा पुं० १. काटछाँट। कतर-ब्योंत। २. काट। ३. काटकर बनाए हुए बेल-बूटे। ४. नदी का किनारा। नदी के वेग से ढहता भू भाग।
कटावदार–वि० कोई वस्तु जिस पर खोद या काटकर चित्र या बेल-बूटे बनाए गए हों।
कटावन†–संज्ञा पुं० १. कटाई का काम। २. कतरन। किसी वस्तु का कटा हुआ टुकड़ा। काटने की मजूरी।
कटास–संज्ञा पुं० एक तरह का बनबिलाव। खीखर। कटार।
संज्ञा स्त्री० काटने की तीव्र इच्छा।
कटाह–संज्ञा पुं० १. कड़ाह। बड़ी कड़ाही। २. नरक। खाट, शय्या। ३. कछुए की खोपड़ी। ४. कूप, कुआँ। अनाज ओसाने की टोकरी। ५. झोंपड़ी। ६. भैंस जिसके सींग निकल ही रहे हों। ७. ऊँचा टीला। ढूह।
कटि–संज्ञा स्त्री० १. कमर। शरीर का वह भाग जो पेट और पीठ के नीचे पड़ता है। नितंब। २. हाथी का गंडस्थल। मंदिर का प्रवेशद्वार।
कटिजेब–संज्ञा स्त्री० करधनी। किंकिणी।
कटितट–संज्ञा पुं० कटिदेश। नितम्ब।
कटिदेश–संज्ञा पुं० शरीर का मध्यावयव। कमर।
कटिबंध–संज्ञा पुं० १. गरमी-सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक। २. कमरबंद।
कटिबद्ध–वि० तत्पर। तैयार। उद्यत।
कटिया–संज्ञा स्त्री० १. सन का बना हुआ वस्त्र-विशेष। २. रत्नों के नगों को काट-छाँट कर सुडौल करनेवाला कारीगर। ३. कुटी। ४. गाय-बैल का कटा हुआ चारा। ५. लोहे की कील, मेख।
कटियाना–क्रि० अ० कंटकित होना। रोओं का खड़ा हो जाना।
कटिवस्त्र–संज्ञा स्त्री० धोती।
कटिसूत्र–संज्ञा पुं० मेखला। सूत की करधनी। कमर में पहनने का डोरा।
कँटीला–वि० [स्त्री० कँटीली] १. तीक्ष्ण। चोखा। नुकीला। २. काँटेदार।
संज्ञा पुं० १. पौधाविशेष। २. काट करने-वाला। ३. तीव्र प्रभाव डालनेवाला।
कटु–वि० १. मधुर, अम्ल आदि छः रसों में से एक। चरपरा। कड़ुआ। २. मत्सर, तीक्ष्ण। तीव्र गंधवाला। ३. अनिष्ट। अप्रिय। बुरा लगनेवाला। ४. काव्य में रस के विरुद्ध वर्णों की योजना।
कटुआ–संज्ञा पुं० १. मुसलमान। २. नहरों के बंबे। ३. काले रंग का एक कीड़ा।
कटुक–वि० कड़ुआ। तिक्त। तीखा।
कटुकी–संज्ञा स्त्री० कुटकी नामक औषध।
कटुग्रंथि–संज्ञा स्त्री० पिपरामूल। औषध-विशेष।
कटुता–संज्ञा स्त्री० १. कड़ुवापन। २. वैमनस्य। तीक्ष्णता। रूक्षता।
कटुत्कट–संज्ञा स्त्री० सोठी।
कटुत्व–संज्ञा पुं० कड़वापन। कटुता।
कटुभद्र–संज्ञा स्त्री० सोठी।
कटुभी–संज्ञा स्त्री० मालकांगुनी।
कटुरोहिणी–संज्ञा स्त्री० कुटुकी। औषध।
कटूक्ति–संज्ञा स्त्री० अप्रिय या बुरी लगने वाली बात। व्यंग।
कटूसा–संज्ञा स्त्री० फूहड़ाई। दुर्वचन।
कटेरी–संज्ञा स्त्री० भटकटैया। कटेरी चंपा।

कटेहर—संज्ञा पुं० १. खोंपा। २. हल की लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है।

कटैया†—संज्ञा पुं० १. भटकटैया का पेड़। २. जो काट डाले। काटनेवाला।

कटैला—संज्ञा पुं० एक क़ीमती पत्थर।

कटोरदान—संज्ञा पुं० एक ढक्कनदार बरतन।

कटोरा—संज्ञा पुं० बेला। खुले मुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेंदी का एक छोटा बरतन।

कटोरी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा कटोरा। प्याली। बेलिया। २. तलवार की मूठ का गोल भाग। ३. अँगिया का वह भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं। ४. फूल के सींके का चौड़ा सिरा जिस पर दल रहते हैं।

कटोल—संज्ञा पुं० १. चाण्डाल। २. फल-विशेष।

कटौती—संज्ञा स्त्री० कपड़े की कोठी आदि में ख़रीद की रक़म में से कुछ बँधा हक़ या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लिया जाना। जैसे, काशी के रेशमी वस्त्र-व्यवसायी, कारीगरों से वस्त्र ख़रीदकर, दाम देते समय रुपये में दो पैसा काट लेते हैं। यह कटौती 'मंदिल' कही जाती है और बड़े गणेश मंदिर में भेज दी जाती है। यह ध्यान में रखने की बात है कि काशी में उक्त कटौती देनेवाले कारीगर मुसलमान हैं।

कट्टर—वि० १. कटहा। काट खानेवाला। २. अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहनेवाला। अंधविश्वासी। ३. दुराग्रह करनेवाला, हठी।

कट्टहा—संज्ञा पुं० महापात्र। महाब्राह्मण। कट्टिया।

कट्टा—वि० १. हट्टा-कट्टा। मोटा-ताज़ा। २. बली। बलवान्।
संज्ञा पुं० जबड़ा। कच्चा।
मुहा०—कट्टे लगाना=किसी के कारण अपनी वस्तु का नष्ट होना या दूसरे के हाथ लगाना।

कट्ठा—संज्ञा पुं० १. ज़मीन की एक नाप जो पाँच हाथ चार अंगुल की होती है। २. बिसवा। ३. मोटा या ख़राब गेहूँ।

कठंदर—संज्ञा पुं० काष्ठोदर। रोग-विशेष। पेट का कड़ापन।

कठ—संज्ञा पुं० १. एक ऋषि। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्। ३. कृष्ण यजुर्वेद की शाखा-विशेष।
संज्ञा पुं० १. (केवल समस्त पदों में) काठ। लकड़ी। जैसे, कठपुतली, कठ-कीली। २. (समस्त पदों में फल आदि के लिए) जंगली। निकृष्ट जाति का। जैसे, कठकेला, कठजामन।
यौ०—कठ-बाप=सौतेला बाप। कठ-माता सौतेली माँ।

कठकेला—संज्ञा पुं० केला-विशेष जिसका फल रूखा और फीका होता है। एक तरह का निकृष्ट केला।

कठघरा—संज्ञा पुं० कटहरा। घेरा। बेड़ा। काठ की बनी हुई चारदिवारी।

कठताल—संज्ञा पुं० दे० "करताल"।

कठपुतली—संज्ञा स्त्री० १. काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार या रस्सी के द्वारा नचाते हैं। २. वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे, दूसरे के वश में हो। ३. नितांत अनभिज्ञ। मूर्ख।

कठड़ा—संज्ञा पुं० १. कटहरा। कठघरा। २. काठ का बड़ा संदूक़। ३. कठौना। काठ का बड़ा बर्तन।

कठफोड़वा—संज्ञा पुं० ख़ाकी रंग की चिड़िया-विशेष जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है।

कठबंधन—संज्ञा पुं० अँदुआ। हाथी के पैर में डाली जानेवाली काठ की बेड़ी।

कठबाप—संज्ञा पुं० सौतेला बाप।

कठबिरुकी—संज्ञा स्त्री० भेक। ऊखरसाँड़ा।

कठमलिया—संज्ञा पुं० १. वैष्णव जो काठ की माला या कंठी पहने। २. बनावटी साधु। झूठा संत। दिखाने के लिए कंठी पहनने-वाला।

कठमस्त—वि० १. व्यभिचारी। २. संड-मुसंड।

कठमस्ती—संज्ञा स्त्री० मस्ती। मुसंडापन।

कठरा—संज्ञा पुं० (स्त्री० कठरी) १. दे०

"कठहरा" या "कठघरा"। २. काठ का बड़ा संदूक़। ३. कठौता। काठ का बरतन। ४. चहबच्चा।

कठला–संज्ञा पुं० "कठुला"। बच्चों को पहनाई जानेवाली माला-विशेष।

कठवत–संज्ञा स्त्री० दे० कठौता।

कठवता–संज्ञा स्त्री० कठौता। काठ का बर्तन-विशेष।

कठवल्ली–संज्ञा पुं० कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा का उपनिषद्-विशेष।

कठशाखा–संज्ञा स्त्री० ऋग्वेद का एक भाग।

कठहँसी–संज्ञा स्त्री० शुष्क हास्य। बिना कारण हास्य। बिना उमंग की हँसी।

कठारी–संज्ञा स्त्री० काठ का बना कमंडलु।

कठिन–वि० १. कड़ा। दृढ़। सख्त। २. कर्कश। कठोर। ३. निष्ठुर, दुष्कर। दु:साध्य। ४. मुश्किल। तीव्र (जैसे पीड़ा)। ५. कड़ाही या पाक का कोई भी पात्र।

कठिनता–संज्ञा स्त्री० १. कड़ाई। कड़ापन। कठोरता। निष्ठुरता। २. दुरूहता। कठिनाई। दु:साध्यता। ३. निर्दयता। ४. दृढ़ता।

कठिनपृष्ठक–संज्ञा पुं० कूर्म। कच्छप। कछुआ।

कठिनाई–संज्ञा स्त्री० १. कठोरता। २. दु:साध्यता। ३. क्लिष्टता।

कठिनिका–संज्ञा स्त्री० खड़िया मिट्टी। कठिनी।

कठिनी–संज्ञा स्त्री० खड़िया मिट्टी। छुई। बहँगी।

कठिया–वि० जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो। जैसे कठिया बादाम।
संज्ञा स्त्री० १. कठौती। काठ का छोटा पात्र। फाँदा। २. काठ की माला। ३. जाला।

कठियाना–क्रि० अ० "कठुवाना"। सूखकर कड़ा हो जाना।

कठिल्ल–संज्ञा पुं० करेला।

कठिहार–वि० काढ़ने या निकालनेवाला। उद्धार करनेवाला। "कठला"।

कठुला–संज्ञा पुं० "कठला"। गले में पहनने का आभूषण-विशेष।

कठुवाना–क्रि० अ० १.सूखकर काठ की तरह कड़ा होना। २. बिलकुल सूख जाना। ३. ठंढ से हाथ-पैर ठिठुरना।

कठूमर–संज्ञा पुं० जंगली गूलर।

कठेठ, कठेठा†–वि० [स्त्री० कठेठी] १. दृढ़। कठोर। कठिन। सख्त। २. अप्रिय। कटु। ३. अधिक बलवाला। तगड़ा।

कठोदर–संज्ञा पुं० पेट की एक बीमारी।

कठोपनिषत्–संज्ञा पुं० १. पुस्तक-विशेष। २. दशोपनिषत् में एक उपनिषत्।

कठोर–वि० १. कठिन। दृढ़। कड़ा। २. तीक्ष्ण, तेज, बेधक। ३. निष्ठुर। निर्दय। निठुर। ४. पूर्ण, संपूर्ण (जैसे चंद्रमा)।

कठोरता–संज्ञा स्त्री० १. कड़ाई। २. निर्दयता।

कठोरताई, कठोरपन–संज्ञा पुं० १. कठोरता। कड़ापन। २. दृढ़ता। ३. निष्ठुरता। निर्दयता।

कठोरा–वि० दे० 'कठोर'।

कठोलिया–संज्ञा स्त्री० १. काठ का पात्र। २. काठ का बना हुआ।

कठौता–संज्ञा पुं० [स्त्री० कठौती] काठ का बड़ा और चौड़ा बरतन-विशेष।

कड़–संज्ञा पुं० कुसुम या उसका बीज। (डिंगल भाषा में कमर। बर्र।)

कड़क–संज्ञा स्त्री० १. कठोर शब्द। कड़ाका। धड़ाका। कड़कड़ाहट का शब्द। २. तड़प। दपट। ३. वज्र। गाज। ४. घोड़े की सरपट चाल-विशेष। ५. रुक रुककर होनेवाला दर्द। कसक। ६. रुक रुककर और जलन के साथ पेशाब उतरनेवाला रोग।
मुहा०–कड़ककर=१. गर्जन के साथ। २. साभिमान।

कड़कच–संज्ञा पुं० नमक। लवण। क्षार।

कड़कड़–संज्ञा पुं० १. दो वस्तुओं के रगड़ने का शब्द। २. घोर शब्द। ३. कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।

कड़कड़ाता–वि० [स्त्री० कड़कड़ाती] १. कड़ाके का। बहुत तेज़। २. घोर। प्रचंड। ३. कड़कड़ शब्द करता हुआ।

कड़कड़ाना–क्रि० अ० १. कड़कड़ शब्द होना। २. 'कड़कड़' शब्द के साथ टूटना। ३. घी, तेल आदि का आँच पर बहुत तपकर कड़कड़ बोलना।
क्रि० स० १. कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना। २. घी, तेल आदि को खूब तपाना।

कड़कड़ाहट–संज्ञा स्त्री० गरज। घोर नाद। कड़कड़ शब्द।

कड़कना–क्रि० अ० १. कड़कड़ शब्द होना। २. टूटना। ३. चिटकने का शब्द होना। ४. डाँटना। दपेटना। ५. चिटकना। फटना। ६. दरकना।

कड़कनाल–संज्ञा स्त्री० चौड़े मुँह की तोप।

कड़क बिजली–संज्ञा स्त्री० १. ताटंक। कान का गहना-विशेष। चाँदबाला। २. तोड़ेदार बंदूक़।

कड़खा–संज्ञा पुं० लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।

कड़खैत–संज्ञा पुं० १. चारण। भाट। २. कड़खा गानेवाला।

कड़बड़ा–वि० जिसके कुछ बाल सफ़ेद हो गए हों।

कड़बी–संज्ञा स्त्री० वि० तीखी। कटु। ज्वार का पेड़ जिसके भुट्टे काट लिये गए हों और जो चारे के लिए छोड़ा हो।

कड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कड़ी] १. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा। २. किसी धातु का छल्ला या कुंडा। ३. कबूतर-विशेष।
वि० १. कठोर। कठिन। जो दबाने से जल्दी न दबे। दृढ़। ठोस। २. रूखा। नीरस। जिसकी प्रकृति कोमल न हो। ३. उग्र। ४. कसा हुआ। चुस्त। ५. जो गीला न हो। ६. कम गीला। ७. तगड़ा। हृष्ट-पुष्ट। दृढ़। प्रचंड। ८. ज़ोर का। तेज़। ९. सहने या झेलनेवाला। धीर। १०. दुःसाध्य। दुष्कर। कठिन। ११. तीव्र प्रभाव डालनेवाला। १२. असह्य। अप्रिय। १३. कर्कश।

कड़ाई–संज्ञा स्त्री० कड़ापन। कठोरता। सख़्ती।

कड़ाका–संज्ञा पुं० १. धड़ाका। किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। २. व्रत उपवास। ३. लंघन। फ़ाक़ा।
मुहा०–कड़ाके का=ज़ोर का। तेज़।

कड़ाबीन–संज्ञा स्त्री० [तु० कराबीन] १. छोटी बंदूक़। २. चौड़े मुँह की बंदूक़।

कड़ाह, कड़ाहा–संज्ञा पुं० बड़ी कड़ाही।

कड़ाही–संज्ञा स्त्री० छोटा कड़ाहा।

कड़ियल†–वि० कड़ा।

कड़िहार–संज्ञा पुं० १. कर्णधार। २. मल्लाह। केवट। माँझी।

कड़ी–संज्ञा स्त्री० १. ज़ंजीर या साँकल की लड़ी का एक छल्ला। २. लगाम। ३. छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने या लटकाने को हो। ४. गीत का पद-विशेष। ५. छोटी धरन।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा—कठिन] अंडस। संकट। दुःख। विपत्ति।

कड़ीदार–वि० छल्ले या कड़ीदार।

कड़ुआ–वि० [स्त्री० कड़ुई] १. स्वाद में तीव्र और बुरा। कटु। तीता जैसे—नीम या चिरायता। २. जो भला न हो। बुरा। अप्रिय। ३. अक्खड़। तीखी प्रकृति का। क्रोधी। ४. कठिन। विकट। टेढ़ा।
मुहा०–कड़ुआ करना=१. धन लगाकर नष्ट कर देना। २. रुपए लगाना। ३. कुछ दाम खड़ा करना। कड़ुआ मुँह=वह मुँह जिससे अप्रिय शब्द निकलें। कड़ुआ होना=बुरा बनना। बिगाड़ कर लेना। कड़ुआ बोलना—अप्रिय बात कहना। कड़ुए कसैले दिन=१. कष्ट के दिन। बुरे दिन। २. दो-रसे दिन जिनमें रोग फैलता है। कड़ुआ घूंट=कठिन कार्य। कड़ुआ तेल=संज्ञा पुं० सरसों का तेल।

कड़ुआना–क्रि० अ० १. कड़ुआ लगना। २. स्वाद बिगड़ जाना। ३. खीझना। ४. बिगड़ना। ५. आँख में किरकिरी पड़ने की तरह दर्द होना।

कड़ुआहट–संज्ञा स्त्री० कड़ुआपन।
कड़ू–वि० कड़ुआ।
कड़ोर–संज्ञा पुं० करोड़। संख्या-विशेष। सौ लाख।
कढ़ना–क्रि० अ० १. उठना। निकलना। २. खिंचना। बाहर आना। ३. उदय होना। बढ़ना। ४. (प्रतिद्वंद्विता में) आगे निकल जाना। ५. स्त्री का दूसरे पुरुष के साथ भाग जाना।
क्रि० अ० दूध का औटाने पर गाढ़ा होना।
कढ़लाना*†–क्रि० स० १. घसीटना। २. घसीटकर बाहर करना।
कढ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. दे० "कड़ाही"। २. कढ़ने का काम।
कढ़ाना, कढ़वाना–क्रि० स० बाहर कराना। निकलवाना।
कढ़ाव–संज्ञा पुं० १. निकास। २. बेलबूटों का उभार। ३. बेलबूटे या कशीदे का काम।
कढ़ी–संज्ञा स्त्री० सालन-विशेष जो बेसन से बनाया जाता है।
मुहा०–कढ़ी का सा उबाल=शीघ्र ही कम हो जानेवाला उत्साह।
कढ़ुआ–वि० १. उधार। ऋण। २. निकाला हुआ। जातिच्युत।
कढ़ैया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"।
†संज्ञा पुं० १. निकालनेवाला। २. बचाने या उद्धार करनेवाला।
कढ़ोरना*–क्रि० स० घसीटना। खींचना।
कण–संज्ञा पुं० १. किनका। रवा। ज़र्रा। अति सूक्ष्म टुकड़ा। २. कना। चावल का बारीक टुकड़ा। ३. भिक्षा। ४. अन्न का दाना। ५. बूँद। ६. चिनगारी। ७. रत्न की किरण। ८. अणु।
कणजीरा–संज्ञा पुं० सफ़ेद जीरा।
कणभक्षक या भोजी–संज्ञा पुं० १. कणभोजी। २. कणाद मुनि। ३. पक्षी-विशेष।
कणा–संज्ञा पुं० पीपल। कण। दाना।
कणामात्र–संज्ञा पुं० एक बिन्दु। किंचिन्मात्र। बहुत थोड़ा।
कणाद–संज्ञा पुं० उलूक मुनि। वैशेषिक शास्त्र-कार।
कणिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटा भाग। किनका। टुकड़ा। २. बिन्दु। ३. चावल का टुकड़ा।
कणिश–संज्ञा पुं० गेहूँ आदि अनाज की बाल।
कणी–संज्ञा स्त्री० १. छिटक। २. भाग। ३. बहुत पतला टुकड़ा।
कण्व–संज्ञा पुं० १. एक मंत्रकार ऋषि। २. एक कश्यप गोत्रीय ऋषि जिन्होंने शकुंतला को पाला था। ३. पाप।
क़त–संज्ञा पुं० [अ०] लेखनी के अग्र भाग की काट।
†*अव्य० क्यों। कहाँ। क्योंकर। कैसा। किसलिए। काहे को।
कतई–अव्य० [अ०] एकदम। बिलकुल।
कतक–संज्ञा पुं० १. रीठा। २. निर्मली। वाल्मीकि रामायण के एक टीकाकार।
कतनई–संज्ञा स्त्री० कताई।
कतना–क्रि० अ० काता जाना।
संज्ञा कातने का अस्त्र।
कतनी–संज्ञा स्त्री० सूत कातने की टिकरी।
कतन्नी–संज्ञा स्त्री० कैंची। कतरनी।
कतरन–संज्ञा स्त्री० काटन-छाँटन। काग़ज़ या कपड़े आदि के छोटे रद्दी टुकड़े। काट-छाँट के पीछे बचे हुए टुकड़े।
कतरना–क्रि० स० कैंची या किसी अस्त्र से काटना।
कतरनी–संज्ञा स्त्री० १. अस्त्र-विशेष जिससे बाल, कपड़े आदि काटे जाते हैं। कैंची। मिकराज। २. काती। धातुओं की चद्दर आदि काटने का, सँड़सी के आकार का एक औजार।
कतरब्योंत–संज्ञा स्त्री० १. काट-छाँट। २. हेरफेर, इधर का उधर करना। उलट-फेर। ३. सोच-विचार। उधेड़बुन। ४. दूसरे के सौदे-सुलुफ में से कुछ रकम अपने लिए बचा लेना। ५. ढंग। ढर्रा। ६. युक्ति। जोड़तोड़।
कतरवाना–क्रि० स० दे० "कतराना"। दूसरे से कतराने का काम कराना।
कतरा–संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। कटा हुआ भाग। २. खंड।

संज्ञा पुं० [अ०] बिंदु। बूँद।
कतराई–संज्ञा स्त्री० १. कतरने की मजदूरी। २. कतरने का काम।
कतराना–संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु या व्यक्ति की आँख बचाकर निकल जाना। २. आँख छिपाना।
क्रि० स० [हिं० कतरना का प्रे० रूप] १. कटवाना। कटाना। २. छँटवाना।
कतरी–संज्ञा स्त्री० १. कातर। २. कोल्हू का पाट जिस पर बैठकर बैलों को हाँका जाता है। ३. जमी हुई मिठाई का टुकड़ा। ४. हाथ में पहनने का पीतल का एक गहना।
कतल–संज्ञा पुं० दे० 'क़त्ल'। हत्या। वध।
कतली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० क़तरा] मिठाई आदि का टुकड़ा। वर्फी।
कतवाना–क्रि० स० [कातना का प्रे० रूप] दूसरे से कातने का काम कराना।
कतवार–संज्ञा पुं० घास-फूस। कूड़ा-करकट।
यौ०–कतवारखाना=कूड़ा फेंकने का स्थान।
*†संज्ञा पुं० जो कातने का काम करे।
कतहुँ, कतहूँ*†–अव्य० कहीं भी। कहीं। किसी स्थान पर। किसी जगह।
कता–संज्ञा स्त्री० [अ० कतअ] १. आकृति। बनावट। आकार। २. ढंग। ३. कपड़े की कतर-ब्योंत या काट-छाँट।
कताई–संज्ञा स्त्री० १. कातने की मजदूरी। २. कातने का काम।
कतान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अलसी की छाल का बना बढ़िया कपड़ा। २. एक रेशमी कपड़ा।
कताना–क्रि० स० [कातना का प्रे० रूप] कतवाना। किसी दूसरे से कातने का काम लेना।
क़तार–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. श्रेणी। २. पाँति। पंक्ति। ३. झुंड। समूह।
कतारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कतारी] लाल रंग का मोटा गन्ना।
कतारी*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "कतार"। २. ईख की एक जाति।
कतिक*†–वि० १. कितना। २. अनेक। बहुत।
कतिपय–वि० १. थोड़े से। २. कई एक। कितने ही।
कतीरा–संज्ञा पुं० गुलू नामक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम में आता है।
कतुवा–संज्ञा पुं० १. तकुआ। २. सूजा।
कतौना–संज्ञा स्त्री० १. कोई काम करने के लिए देर तक बैठे रहना। २. कातने का काम या मजदूरी।
कत्तल–संज्ञा पुं० कटा हुआ टुकड़ा। पत्थर की गढ़ाई में निकले पत्थर के छोटे टुकड़े।
कत्ता–संज्ञा पुं० १. बाँस चीरने का एक अस्त्र। २. छोटी टेढ़ी तलवार। बाँसा। बाँका।
कत्तान–संज्ञा पुं० छुरा। कटार।
कत्ती–संज्ञा स्त्री० १. छुरी। कटारी। चाक़ू। २. छोटी तलवार। ३. सोनारों की कतरनी। ४. ऐसी पगड़ी जो बत्ती के समान बटकर बाँधी जाती है।
कत्थ–संज्ञा पुं० लोहे की स्याही।
कत्थई–वि० खैर के रंग का।
संज्ञा खैरा रंग।
कत्थक–संज्ञा पुं० १. एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है। २. नृत्य का एक भेद।
कत्था–संज्ञा पुं० १. खैर। खदिर। २. खैर का पेड़।
कत्ल–संज्ञा पुं० (अ०) वध। हत्या। तलवार से गर्दन काटना।
कत्लेआम–संज्ञा पुं० (अ०) सर्वसाधारण की हत्या। सर्वसंहार।
कथंचन–अव्य० किसी प्रकार।
कथंचित्–अव्य० किसी प्रकार।
क्रि० वि० किसी प्रकार।
कथक–संज्ञा पुं० १. कथावाचक। २. पौराणिक। पुराण का पाठ करनेवाला। ३. कत्थक। पेशेवर कहानी कहनेवाला। ४. प्रधान अभिनेता। नांदी-पाठक।
कथकीकर–संज्ञा पुं० कत्था या खैर का वृक्ष।
कथक्कड़–संज्ञा पुं० १. बहुत कथा या किस्सा कहनेवाला। २. कहानियों का प्रेमी।

कथन–संज्ञा पुं० १. बोल। २. उच्चारण। ३. विवरण। ४. उक्ति। बात।
कथना*–क्रि० स० १. बोलना। कहना। २. निंदा या बुराई करना।
कथनी*–संज्ञा स्त्री० १. बात। २. बकवाद। झगड़ा।
कथनीय–वि० वक्तव्य। कहने योग्य। वर्णनीय।
कथरी–संज्ञा स्त्री० गुदड़ी। पुराने चिथड़ों का बिछावन।
कथा–संज्ञा स्त्री० १. बात। वह जो कहा जाय। २. इतिहास। ३. धर्म-विषयक व्याख्यान। ४. चर्चा। प्रसंग। वर्णन। समाचार। हाल। ५. झगड़ा। वाद-विवाद। कहा-सुनी।
कथानक–संज्ञा पुं० १. कथा। २. कहानी। छोटी कथा। कहानी का विषय। प्रतिपाद्य वस्तु। ३. प्लाट।
कथाप्रबंध–संज्ञा पुं० आख्यायिका। कहानी। क़िस्सा। गल्प।
कथाप्रसंग–संज्ञा पुं० १. कथोपकथन। बात-चीत। २. सँपेरा। मदारी। ३. विषवैद्य।
कथाप्राण–वि० १. नाटक। २. वक्ता। कथक।
कथामुख–संज्ञा पुं० आख्यान या कथा की प्रस्तावना।
कथावस्तु–संज्ञा स्त्री० उपन्यास या कहानी का ढाँचा। प्लाट।
कथावार्ता–संज्ञा स्त्री० संभाषण। आलाप। अनेक प्रकार की बात-चीत।
कथित–वि० जो कहा गया हो। कहा हुआ।
कथितव्य–वि० कथनीय। कहने के योग्य।
कथीर–संज्ञा पुं० राँगा।
कथोद्घात–संज्ञा पुं० १. कथा का प्रारंभ। २. (नाटक में) सूत्रधार की अंतिम बात दुहराते हुए प्रथम पात्र का रंगभूमि में प्रवेश।
कथोपकथन–संज्ञा पुं० वाद-विवाद। बात-चीत।
कथ्य–वि० कहने योग्य। कथनीय। साधारण बोलचाल की भाषा में प्रचलित। जो कहा जाता हो। कहलानेवाला।
कदंब–संज्ञा पुं० १. कदम। एक प्रसिद्ध वृक्ष २. समूह। ढेर। झुंड। ३. तीर, बाण। ४. एक खनिज पदार्थ।
कद–संज्ञा स्त्री० [अ० कद्द] [वि० कद्दी] १. शत्रुता। द्वेष। २. हठ। ३. बुरा, खराब जैसे कदन्न, कदक्षर, कदश्व, कदाकार।
क़द–संज्ञा पुं० [अ०] १. डीलडौल। २. ऊँचाई (प्राणियों के लिए)।
यौ०–क़द्दे आदम=मानव शरीर के बराबर ऊँचा, पुरुष-प्रमाण।
कदध्व*–संज्ञा पुं० बुरा मार्ग, कुपथ, खराब रास्ता, बुरी सड़क।
कदन–संज्ञा पुं० १. मृत्यु। नाश। मरण। २. मारना। वध। हिंसा। ३. लड़ाई। संग्राम। युद्ध। ४. दुःख। ५. पाप।
कदन्न–संज्ञा पुं० बुरा या अपवित्र अन्न। जैसे, कोदो।
कदम–संज्ञा पुं० १. कदंब। सदाबहार। एक बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं। २. एक घास।
क़दम–संज्ञा पुं० [अ०] १. पाँव। पैर। २. धूल या कीचड़ में बना हुआ पैर का चिह्न।
मुहा०–क़दम उठाना=उन्नति करना। क़दम चूमना=१. बहुत आदर करना। क़दम छूना। प्रणाम करना। २. शपथ लेना। क़दम बढ़ाना या क़दम आगे बढ़ाना=१. तेज़ चलना। २. उन्नति करना। क़दम रखना=आना। प्रवेश करना। क़दम जमना=दृढ़ होना, जमना। क़दम उखड़ना=पराजय होना। उत्साह नष्ट होना। क़दम पर क़दम रखना=१. पीछे पीछे चलना। २. अनुकरण करना। ३. चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अंतर। फाल। पग। ४. घोड़े की वह चाल जिसमें दौड़ने पर भी उसका शरीर नहीं हिलता। चार क़दम पर=पास

ही । क़दम क़दम पर=लगातार, निरंतर ।

क़दमबाज़–वि० [अ०] क़दम की चाल चलनेवाला (घोड़ा) ।

क़दर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मात्रा । मान । २. प्रतिष्ठा । बड़ाई । मान । ३. टाँकी । ४. सफ़ेद कत्था । ५. गोखरू । ६. अंकुश । ७. आरा ।

कदरई*–संज्ञा स्त्री० कायरता । भीरुता ।

कदरज–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पापी । वि० दे० "कदर्य्य" ।

कदरदान–वि० [फ़ा०] गुणग्राही । कदर करनेवाला ।

क़दरदानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गुणग्राहकता ।

कदरमस*–संज्ञा स्त्री० झगड़ा । लड़ाई । मार-पीट ।

कदराई–संज्ञा स्त्री० भय । कायरता । भीरुता ।

कदराना*–क्रि० अ० डरना । भीत होना । कायर होना ।

कदरो–संज्ञा स्त्री० एक पक्षी जो डील-डौल में मैना के समान होता है ।

कदर्थ–संज्ञा पुं० निरर्थक वस्तु । कूड़ा-करकट । वि० बुरा । कुत्सित ।

कदर्थना–संज्ञा स्त्री० [वि० कदर्थित] बुरी दशा । दुर्गति ।

कदर्थित–वि० दुर्गति-प्राप्त । जिसकी दुर्दशा की गई हो । उपेक्षित । अस्वीकृत ।

कदर्य–वि० [संज्ञा कदर्यता] १. सूम । कंजूस । मक्खीचूस । २. मंद । ३. तुच्छ, क्षुद्र । निंदित । अपकृष्ट ।

कदली–संज्ञा स्त्री० १. केला । २. पेड़-विशेष जिसकी लकड़ी जहाज बनाने में काम आती है । ३. हरिण-विशेष ।

कदा–क्रि० वि० किस समय । कभी । कब ।

मुहा०–यदा कदा=कभी कभी । जब तब ।

कदाकार–वि० भद्दा । कुरूप । बुरे आकार का । बदसूरत ।

कदाकृति–वि० कुत्सित आकृति ।

कदाख्य–वि० बदनाम ।

कदाच*–क्रि० वि० १. शायद । कदाचित् । २. कभी । किसी समय ।

कदाचन–क्रि० वि० किसी समय । कभी ।

कदाचार–संज्ञा पुं० [वि० कदाचारी] कुच-लन । बुरा आचरण । बदचलनी । निंदित कर्म ।

कदाचित्–क्रि० वि० १. शायद । कभी । किसी समय । २. क्या जाने ।

कदापि–क्रि० वि० कभी भी । किसी समय भी । हर्गिज़ ।

कदी–वि० [अ० कद्द] हठ करनेवाला ।

क़दीम–वि० [अ०] प्राचीन । पुराना ।

कदीमा–संज्ञा पुं० शावल । लोहाँगी ।

क़दीमी–वि० [अ० क़दीम] पुराना । बहुत दिनों का । आदिम ।

कदुष्ण–वि० थोड़ा गर्म । गुनगुना । शीर-गर्म ।

कदूरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मनमोटाव । कीना ।

कद्दावर–वि० [फ़ा०] बड़े डील-डौल का ।

कद्दी–वि० दे० "कदी" ।

कद्रु–संज्ञा पुं० धूम्रवर्ण । स्त्री० नागमाता का नाम । कश्यप मुनि की स्त्री ।

कद्रुज–संज्ञा पुं० साँप । सर्प ।

कद्रुपुत्र–संज्ञा पुं० सर्प । भुजंग ।

कद्रुसुत–संज्ञा पुं० नाग । सर्प ।

कद्दू–संज्ञा पुं० [फ़ा० कदू] लौकी । घिया । काशीफल । कुम्हड़ा ।

कद्दूकश–संज्ञा पुं० [फ़ा०] लोहे या पीतल आदि की छेददार चौकी जिस पर कद्दू आदि को रगड़कर उसे रेतते हैं ।

कद्दूदाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मल के साथ गिरनेवाले पेट के भीतर के छोटे छोटे सफ़ेद कीड़े ।

कधी–क्रि० वि० दे० "कभी" । किसी समय ।

कन–संज्ञा पुं० १. अणु । बूँद । बहुत छोटा टुकड़ा । जर्रा । २. अनाज का टुकड़ा । ३. अन्न का एक दाना । ४. प्रसाद । ५. जूठन । ६. भिक्षान्न । भीख । ७. चावलों की धूल । कना । ८. बालू या रेत के कण ।

९. शारीरिक शक्ति। १०. वह स्वर, जिसके पहले और बाद के स्वर का उच्चारण कर, उसी पर विश्रांति हो। जैसे, नि सा रे सा। यहाँ 'सा' कन है (संगीत)।

यौ०—'कान' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों में आता है। जैसे—कनरसिया, कनपटी।

कनई†—संज्ञा स्त्री० १. नई शाखा। कनखा। २. कोंपल। कल्ला।
†संज्ञा स्त्री० गीली मिट्टी।

कनअंगुली—संज्ञा स्त्री० छिगुनी। छँगुलिया। सबसे छोटी अँगुली।

कनउड़*—वि० दे० "कनौड़ा"।

कनक—संज्ञा पुं० १. सुवर्ण। सोना। २. धतूरा। ३. ढाक। पलाश। टेसू। ४. खजूर। ५. नागकेसर। ६. छप्पय छंद का भेद। ७. आटा। ८. गेहूँ।

कनककली—संज्ञा पुं० कनफूल, कान में पहनने का फूल या कली के आकार का एक गहना।

कनककशिपु—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

कनकक्षार—संज्ञा पुं० सुहागा।

कनकचंपक-कनकचंपा—संज्ञा पुं० कनियारी। मध्यम आकार का पेड़-विशेष। कर्णि-कार।

कनकटा—वि० १. कर्णरहित। बूचा। जिसका कान कटा हो। २. कान काट लेनेवाला।

कन-कना—वि० सहारे से टूटनेवाला। 'चीमड़' का उलटा।

कनकना—वि० [स्त्री० कनकनी] १. कन-कनाहट उत्पन्न करनेवाला। २. चुनचुनाने-वाला। ३. अप्रिय। अरुचिकर। चिड़-चिड़ा। जो अच्छा न लगे।

कनकनाना—क्रि० अ० [संज्ञा कनकनाहट] १. चुनचुनाना। सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के छूने से अंगों में चुनचुनाहट होना। २. चुनचुनाहट या कनकनाहट पैदा करना। गला काटना। ३. अच्छा न लगना। नागवार मालूम होना।

क्रि० अ० १. सचेत होना। चौकन्ना होना। २. रोमांचित होना।

कनकनाहट—संज्ञा स्त्री० कनकनी। कनकनाने का भाव।

कनकफल—संज्ञा पुं० १. जमालगोटा। २. धतूरे का फल।

कनकाचल—संज्ञा पुं० १. सुमेरु पर्वत। २. सोने का पर्वत। ३. अस्तगिरि। ४. दान-विशेष।

कनकानी—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की जाति-विशेष।

कनकी—संज्ञा स्त्री० १. किनकी। चावल के टूटे हुए छोटे टुकड़े। २. छोटा कण।

कनकूत—संज्ञा पुं० खेत में खड़ी फ़सल की उपज का अनुमान।

कनकौवा—संज्ञा पुं० बड़ी पतंग। गुड्डी।

कनखजूरा—संज्ञा पुं० ज़हरीला कीड़ा-विशेष, जिसके बहुत से पैर होते हैं। गोजर। कांतर।

कनखा†—संज्ञा पुं० कोपल।

कनखियाना—क्रि० स० १. तिरछी नजर या कनखी से देखना। २. आँख से संकेत करना।

कनखी—संज्ञा स्त्री० १. दूसरों की दृष्टि बचा-कर देखना। २. पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर ताकने की मुद्रा। आँख का संकेत, कटाक्ष।

मुहा०—कनखी मारना=आँख से मना करना या संकेत करना।

कनखैया*†—संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"।

कनखोदनी—संज्ञा स्त्री० सलाई जिससे कान का मैल निकालते हैं।

कनगुरिया—संज्ञा स्त्री० छिगुनियाँ। छिगुनी। सबसे छोटी उँगली।

कनछेदन—संज्ञा पुं० हिंदुओं का संस्कार विशेष जिसमें बच्चों का कान छेदा जाता है।

कनटोप—संज्ञा पुं० कानों को ढकनेवाली टोपी। बड़ी टोपी जिससे कान भी ढँके जा सकें।

कनतूतुर—संज्ञा पुं० छोटी जाति का जहरीला मेढक।

कनधार*—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

कनपटी–संज्ञा स्त्री० आँख और कान के बीच की जगह।

कनपेड़ा–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिल्टी निकल आती है।

कनफटा–संज्ञा पुं० योगी जो कानों में बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं; ये गोरखनाथ के अनुयायी होते हैं।

कनफुँकवा–संज्ञा पुं० कान फूँकनेवाला, दीक्षा देनेवाला। मंत्रगुरु (उपहास)।

कनफुँका–वि० [स्त्री० कनफुँकी] १. दीक्षा देनेवाला। २. दीक्षा लेनेवाला। ३. जो कान फूँके।

कनफुसकी–†संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कनफूल–संज्ञा पुं० कर्णफूल। कान का आभूषण।

कनमनाना–क्रि० अ० १. सोए हुए प्राणी का सचेष्ट होना या हिलना-डोलना। किसी बात के विरोध में कुछ कहना या चेष्टा करना। २. आनाकानी करना। ३. ध्यान देना।

कनमैलिया–संज्ञा पुं० जो कान का मैल निकालता है।

कनरस–संज्ञा पुं० १. आनंद जो गाना-बजाना सुनने से प्राप्त होता है। २. गाना-बजाना या बात सुनने का व्यसन।

कनरसिया–संज्ञा पुं० गाना-बजाना सुनने का व्यसनी या शौकीन। गीतज्ञ। बातचीत सुनने का इच्छुक।

कनल–संज्ञा पुं० भिलावा।

कनवई–संज्ञा स्त्री० छटाँक।

कनवा–वि० काना। एक आँखवाला।

कनवाई–संज्ञा स्त्री० कर्णवेध। कान छेदना।

कनसलाई–संज्ञा स्त्री० कनखजूरे की तरह का कीड़ा। कान खोदने की सलाई।

कनसार–संज्ञा पुं० जो ताम्रपत्र पर लेख खोदता हो।

कनसाल–संज्ञा पुं० चारपाई के पायों के छेद जिनमें पाटी लगती हैं।

कनसुई–संज्ञा स्त्री० टोह। आहट।
मुहा०–कनसुई या कनसुइयाँ लेना=१. भेद लेना। २. छिपकर किसी की बात सुनना।

कनस्तर–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) टीन का चौखूँटा पीपा।

कनहा–संज्ञा पुं० अन्न की जाँच करनेवाला।

कनहार*–संज्ञा पुं० १. कर्णधार। मल्लाह। २. पतवार।

कना–संज्ञा पुं० दे० "कन"।

कनाउड़ा*–वि० दे० "कनौड़ा"।

कनागत–संज्ञा पुं० १. श्राद्ध के दिन। २. पितृपक्ष।

क़नात–संज्ञा स्त्री० [तु०] वह मोटा कपड़ा जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं। तम्बू आदि।

कनारी–संज्ञा स्त्री० १. भाषा-विशेष जो मद्रास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश में बोली जाती है। २. कनारा प्रदेश का रहनेवाला।

कनावड़ा*–संज्ञा पुं० दे० "कनौड़ा"।

कनिआरी–संज्ञा स्त्री० कनक-चंपा का पेड़।

कनिक–संज्ञा स्त्री० गेहूँ का पिसान। आटा।

कनिका*–संज्ञा पुं० दे० "कणिका"।

कनिगर*–संज्ञा पुं० १. नाम की लाज रखनेवाला। २. जो अपनी मर्यादा का ध्यान रखे।

कनियाँ*–संज्ञा स्त्री० गोद। कोरा। उछंग।

कनियाना–क्रि० अ० १. बचाव करना। कतराना। आँख बचाकर निकल जाना। २. कन्नी खाना। पतंग का किसी ओर झुक जाना।
†क्रि० अ० गोद या कनिया लेना। गोद में उठाना।

कनियार–संज्ञा पुं० कनकचंपा।

कनियाहट–संज्ञा स्त्री० १. भड़क। २. संकोच।

कनिष्ठ–वि० [स्त्री० कनिष्ठा] १. सबसे छोटा। बहुत छोटा। २. जो पीछे पैदा हुआ हो। ३. आयु में छोटा। अनुज। ४. निकृष्ट। हीन। ५. कुएँ में ढीली हुई बालटी या डोल।

कनिष्ठा–वि० स्त्री० १. सबसे छोटी। बहुत छोटी। २. हीन। नीच। निकृष्ट।
संज्ञा स्त्री० १. दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी स्त्री। पीछे की विवाहिता स्त्री। २. दो स्त्रियों में वह, जिस पर पति का प्रेम कम हो (नायिका-भेद)। ३. छिगुनी। छोटी उँगली। कानी उँगली।

कनिष्ठिका–संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा। छिगुनी। सबसे छोटी उँगली। कानी उँगली।

कनिहा–संज्ञा पुं० १. घुना। २. प्रतिहिंसक।

कनी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। २. हीरे का बिलकुल छोटा टुकड़ा। ३. किनकी। चावल के छोटे छोटे टुकड़े। ४. चावल का मध्य भाग जो कभी कभी नहीं गलता। ५. बूँद। ६. करुणा। ७. छोर। ८. सिरा।
मुहा०–कनी खाना या चाटना=हीरे की कनी निगलकर मरना। कनी मरना=अभिमान एकदम नष्ट होना। कनी न मरना=अभिमान शेष रहना।

कनीनिका–संज्ञा स्त्री० १. तारा। २. आँख की पुतली। ३. कुमारी, कन्या। ४. छोटी अँगुली।

कनीयान–वि० १. कनिष्ठ। अनुज। छोटा। २. अति युवा। अत्यल्प।

कने†–क्रि० वि० १. समीप। पास। निकट। २. ओर। ३. साथ। संग। ४. अधिकार में।

कनेकौ–क्रि० वि० तनिक भी। जरा भी।

कनेक्शन–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) लगाव। संबंध।

कनेठा†–वि० १. काना। २. ऐंचा-ताना। भेंगा।

कनेठी–संज्ञा स्त्री० १. कान ऐंठना। २. कान मरोड़ने की सज़ा। गोशमाली।

कनेर–संज्ञा पुं० १. वृक्ष विशेष जिसमें लाल या पीले सुंदर फूल लगते हैं। २. करवीर। ३. हस्तिवेश्या।

कनेरकनैया–संज्ञा पुं० कर्णवेधन। कनछेदौनी।

कनेरिया–वि० कालापन लिये लाल। कनेर के फल के रंग का।

कनेवा–संज्ञा पुं० चारपाई का टेढ़ापन।

कनूका–संज्ञा पुं० अनाज का दाना। कनका।
कनोखी। वि० दे० कनखी। तिरछी (आँख या दृष्टि)।

कनौज–संज्ञा पुं० एक नगर।

कनौजिया–वि० १. जिसके पूर्वज कन्नौज के रहे हों। २. कन्नौज का रहनेवाला।
संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

कनौड़ा–वि० १. काना। २. अपंग। खोंड़ा। जिसका कोई अंग खंडित हो। विकलांग। ३. लज्जित। ४. कलंकित। निंदित। ५. संकुचित।
संज्ञा पुं० १. खरीदा हुआ गुलाम। क्रीत दास। २. कृतज्ञ मनुष्य। एहसानमंद आदमी। ३. तुच्छ मनुष्य। नीच आदमी।

कनौती–संज्ञा स्त्री० १. पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। २. कानों के उठाने या उठाए रखने का ढंग। ३. बाली जो कान में पहनी जाती है।
मुहा०–कनौती उठाना=सजग होना।

कन्ना–संज्ञा पुं० [स्त्री० कन्नी] १. पतंग में बाँधा जानेवाला डोरा जिससे वह इधर उधर न झुके। २. कोर। किनारा। ओंठ। ३. चावल का कन। ४. वनस्पति का वह रोग जिससे उसकी लकड़ी तथा फल आदि में कीड़े लग जाते हैं।

कन्नी–संज्ञा स्त्री० १. पतंग या कनकौवे के दोनों ओर के किनारे। २. पतंग की कन्नी में बाँधी जानेवाली धज्जी जो इसलिए बाँधी जाती है कि वह सीधी उड़े। ३. कोर। किनारा। हाशिया।
संज्ञा पुं० राजगीरों का करनी नामक औजार।
मुहा०–कन्नी कटना—संबंध टूटना, जीविका छूटना।

कन्यका–संज्ञा स्त्री० १. कन्या। क्वारी लड़की। २. बेटी। पुत्री।

कन्या–संज्ञा स्त्री० १. लड़की जो अविवाहिता हो। क्वारी लड़की। कुमारी। २. बेटी। पुत्री। ३. छठी राशि। ४. घीक्वार। ५. बड़ी इलायची। ६. एक वर्णवृत्त। ७. बाँझ ककोरी। ८. बाराही कंद। ९. दुर्गा का एक नाम।

यौ०—पंचकन्या=पुराणों के अनुसार वे पाँच स्त्रियाँ जो बहुत पवित्र मानी गई हैं—अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी। वास्तव में पाठ 'पंचकंना' है। इसका अर्थ इन पाँचों स्त्रियों से है। 'पंचकन्या' शुद्ध पाठ नहीं है।

कन्याकाल—संज्ञा पुं० १. कन्या की दश वर्ष की अवस्था। २. रजोदर्शन की पूर्वावस्था।

कन्याकुमारी—संज्ञा स्त्री० रासकुमारी अंतरीप।

कन्यागत—वि० कन्यानिष्ठ। कन्याराशि-स्थित।

कन्यादाता—संज्ञा पुं० विवाह में कन्यादान करने का अधिकारी। कन्याराशि या कन्याराशी। वि०—सुस्त, अकुशल, ढीलाढाला (मनुष्य)।

कन्यादान—संज्ञा पुं० विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

कन्याधन—संज्ञा पुं० वह स्त्री-धन जो उसे कन्या-अवस्था में मिले।

कन्यापति—संज्ञा पुं० १. जामाता। २. उपपति। ३. व्यभिचारी।

कन्याभाव—संज्ञा पुं० कुमारिकापन। कुमारीत्व।

कन्यारासी—वि० १. जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्याराशि में हो। २. सत्यानाशी। चौपट। ३. निकम्मी वस्तु। ४. लज्जित। सलज्ज।

कन्यावानी—संज्ञा स्त्री० वर्षा जो कन्या के सूर्य्य के समय हो।

कन्हरीया—संज्ञा पुं० कण्डारी। माँझी। कर्णधार। मल्लाह।

कन्हाई—संज्ञा स्त्री० कनहाई। खेत कूतना। संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का प्यार से बुलाने का नाम।

कन्हैया—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. अत्यंत प्रिय आदमी। प्रिय व्यक्ति। ३. बहुत सुंदर लड़का।

वि० विलासी। स्त्री-लंपट।

मुहा०—कन्हैया होना=विलास-मग्न होना। अपने वक्त के कन्हैया=अपने समय के प्रसिद्ध विलासी।

कपकपी—संज्ञा स्त्री० थरथरी। फुरफुरी।

कपट—संज्ञा पुं० [वि० कपटी] १. छल। दंभ। धोखा। स्वार्थ साधन के लिए हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। २. छिपाव। दुराव।

कपटता—संज्ञा स्त्री० धूर्तता। शठता।

कपटना—क्रि० स० १. छाँटना। काटकर अलग करना। खोंटना। २. काटकर अलग निकालना। ३. किसी चीज में से बचाकर ले लेना।

कपटभू—संज्ञा स्त्री० माया की भूमि। जादू की धरती। माया से उत्पन्न भूमि। माया-जनित भूभाग।

कपटवेशधारी—संज्ञा पुं० छल वेशधारी। प्रतारक। धोखा देनेवाला। ठग।

कपटी—वि० छली। धोखेबाज़। धूर्त्त। जो कपट रखता हो। बहुरूपिया। छद्मवेशी। संज्ञा स्त्री० अँजुली भर, एक नाप।

कपड़कोट—संज्ञा पुं० खीमा। तम्बू। डेरा।

कपड़छन, कपड़छान—संज्ञा पुं० पिसे हुए चूर्ण को कपड़े में छानने का काम।

कपड़द्वार—संज्ञा पुं० वस्त्रागार। कपड़े रखने का स्थान। तोशाखाना।

कपड़धूलि—संज्ञा स्त्री० एक महीन रेशमी कपड़ा। करेब।

कपड़मिट्टी—संज्ञा स्त्री० धातु या औषध फूँकने के पात्र पर गीली मिट्टी और कपड़ा लपेटने की क्रिया (वैद्यक)। कपड़ौटी। गिल-हिकमत।

कपड़विण—संज्ञा पुं० दरजी। रफूगर।

कपड़ा—संज्ञा पुं० १. वस्त्र। पट। लत्ता। रुई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बुना हुआ शरीर का आच्छादन। २. पहनावा। पोशाक।

मुहा०—कपड़ों से होना=रजस्वला होना। मासिक धर्म से होना (स्त्री का)।

यौ०=कपड़ा लत्ता=पहनने का सामान।

कपड़ौटी—संज्ञा स्त्री० दे० "कपड़मिट्टी।"

कपरिया—संज्ञा पुं० नीच जाति-विशेष।

कपर्द, कपर्दक—संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दिका] १. शिव का जटाजूट। २. कौड़ी। ३. वराटिका।

कपर्दिका—संज्ञा स्त्री० कौड़ी।

कपर्दिनी—संज्ञा स्त्री० शिवा। भवानी। दुर्गा।

कपर्दी—संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दिनी] १. महादेव। शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक।

कपाट—संज्ञा पुं० १. द्वार। पट। किवाड़। देहरी। २. आवरण।

कपाटबद्ध—संज्ञा पुं० चित्रकाव्य-विशेष, जिसके अक्षरों को एक निश्चित क्रम से लिखने से किवाड़ों का चित्र बन जाय।

कपार—*†संज्ञा पुं० दे० "कपाल"।

कपाल—संज्ञा पुं० [वि० कपाली, कपालिका] १. खोपड़ी। खोपड़ा। २. भाल। ललाट। मस्तक। ३. प्याला, तश्तरी। ४. पुराने समय में घड़ा बनाने के लिए उसके नीचे और ऊपर के दो भाग अलग अलग बनाकर उन्हें जोड़ और पीटकर एक कर देते थे। इन भागों को कपाल कहते थे। ५.एक प्रकार की अत्यंत छोटी चौकोर ईंटें, जिन पर जौ के आटे का गोल पिंड रखकर पकाया जाता था और तब उसका हवन किया जाता था। (यज्ञ)। ६. ढक्कन, आवरण। ७. कछुए की खाल। ८. खाली अंडा। ९. एक तरह का कुष्ठ। १०. दोनों पक्षों की समान शर्त्तों पर संधि। ११. एक तंत्र-विशेष। १२. भाग्य। अदृष्ट। १३. खपड़ा। खर्पर। खप्पर। १४. मिट्टी का भिक्षा-पात्र विशेष।

कपालक्रिया—संज्ञा स्त्री० १. एक मृतक-संस्कार जिसमें आधे जले शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं (धर्म-शास्त्र)। २. समाप्ति, अंत (लाक्षणिक) जैसे, चलो, आज मित्रता की कपालक्रिया ही कर दें।

कपाल-मोचन—संज्ञा पुं० काशी का तालाव-विशेष। एक तीर्थ।

कपालभृत—संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

कपालिका—संज्ञा स्त्री० खोपड़ी। १. रण-चंडी। काली। २. दन्तरोग-विशेष। ३. कापालिक धर्म की अनुयायिनी।

कपालिनी—संज्ञा स्त्री० कपालधारिणी। भगवती। दुर्गा।

कपाली—संज्ञा पुं० [स्त्री० कपालिनी] १. भैरव। २. महादेव। शिव। ३. जो ठीकरा लेकर भीख माँगे। ४. वर्ण-संकर जाति-विशेष। कपरिया। ५. द्वार के ऊपर का काठ।

कपास—संज्ञा स्त्री० [वि० कपासी] पौधा-विशेष जिसके ढेंढ़ से रूई निकलती है।

कपासी—वि० जो कपास के फूल के रंग का हो। बहुत हलके पीले रंग का।
संज्ञा पुं० बहुत हलका पीला रंग।

कपिंजल—संज्ञा पुं० १. पपीहा। चातक। २. गौरा पक्षी। ३. भरुही। भरदूल। ४. तीतर। ५. मुनि-विशेष।

कपि—संज्ञा पुं० १. बंदर। २. हाथी। ३. कंजा। करंज। ४. सूर्य्य। ५. औषध-विशेष। ६. यंत्र-विशेष। ७. विष्णु। ८. कृष्णा।
वि०—भूरे रंग का, कपिश।

कपिकुंजर—संज्ञा पुं० बानरों का राजा।

कपिकच्छु—संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष। केवाँच।

कपिकेतु—संज्ञा पुं० अर्जुन।

कपिखेल*—संज्ञा पुं० दे० "कपिकच्छु"।

कपित्थ—संज्ञा पुं० कैथ का वृक्ष या फल।

कपिध्वज—संज्ञा पुं० अर्जुन। जिसके झंडे पर महावीरजी हों या उनकी मूर्ति या चिह्न हो।

कपिप्रिय—संज्ञा पुं० कैथा।

कपिरथ—संज्ञा पुं० १. श्रीरामचन्द्र। २. अर्जुन।

कपिल—वि० १. सफ़ेद। २. मटमैला। भूरा। तामड़े रंग का।
संज्ञा पुं० १. आग। अग्नि। २. कुत्ता। ३. चूहा। ४. बन्दर। ५. शिलाजीत। ६. शिव। महादेव। ७. सूर्य्य। ८. विष्णु। ९. मुनि-विशेष जो सांख्य-शास्त्र के आदि-प्रवर्तक माने जाते हैं।

कपि-लता—संज्ञा स्त्री० केवाँच।

कपिलता–संज्ञा स्त्री० १. पीलापन । २. भूरापन । ३. सफ़ेदी । ४. ललाई ।

कपिलधारा–संज्ञा स्त्री० १. गंगा । २. तीर्थ-विशेष । ३. काशी और गया का एक स्थान ।

कपिलवस्तु–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था ।

कपिला–वि० १. सफ़ेद, मटमैले या भूरे रंग की । २. सफ़ेद दाग़ वाली । ३. भोली भाली । सीधी सादी ।
संज्ञा स्त्री० १. सीधी गाय । २. सफ़ेद रंग की गाय । ३. पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी । ४. दक्ष की एक कन्या । ५. जोंक । ६. चींटी । ७. मध्यप्रदेश की एक नदी ।

कपिलागम–संज्ञा पुं० सांख्य शास्त्र ।

कपिश–वि० १. मटमैला । काला और पीला रंग लिये भूरे रंग का । २. पीला-भूरा । ३. लाल-भूरा । ४. बादामी रंग ।
संज्ञा पुं० धूप । शिव । सूर्य ।

कपिशा–संज्ञा स्त्री० १. मद्य-विशेष । २. नदी-विशेष । क़साई । ३. कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे ।

कपीश–संज्ञा पुं० बन्दरों का राजा । जैसे सुग्रीव, हनुमान, आदि ।

कपीश्वर–संज्ञा पुं० सुग्रीव । बानरों का राजा ।

कपुत्र–संज्ञा पुं० कपूत । कुबुद्धि पुत्र ।

कपूत–संज्ञा पुं० कुपुत्र । बुरे आचरण का पुत्र ।

कपूती–संज्ञा स्त्री० १. नालायकी का आचरण । जो पुत्र के योग्य न हो । २. दुष्ट पुत्रवाली माता ।
वि० अयोग्यता ।

कपूर–संज्ञा पुं० कर्पूर । काफ़ूर । एक सफेद रंग का द्रव्य ।

कपूरकचरी–संज्ञा स्त्री० बेल-विशेष जिसकी जड़ में सुगंध रहती है । सितरुती ।

कपूरी–वि० १. जो कपूर से बना हो । २. हलके पीले रंग का । ३. सफेद रंग का ।
संज्ञा पुं० १. कुछ हलका पीला रंग । २. एक तरह की कड़ुआहट । ३. पत्र-विशेष ।

कपोत–संज्ञा पुं० [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १. कबूतर । २. परेवा । ३. चिड़िया । ४. भूरे रंग का कच्चा सुरमा ।

कपोतपालिका–संज्ञा स्त्री० काठ का बना हुआ कबूतरों के रहने का स्थान । चिड़िया-खाना ।

कपोतवंका–संज्ञा स्त्री० ब्राह्मी बूटी ।

कपोतवर्णी–संज्ञा स्त्री० छोटी इलायची ।

कपोतवृत्ति–संज्ञा स्त्री० आकाश-वृत्ति । रोज़ कमाना रोज़ खाना ।

कपोतव्रत–संज्ञा पुं० चुपचाप किसी का अत्याचार सहना । कष्ट सहकर आह न करना ।

कपोतसार–संज्ञा पुं० सुरमा (धातु) ।

कपोतांजन–संज्ञा पुं० सुरमा (धातु) ।

कपोतारि–संज्ञा पुं० बाज पक्षी ।

कपोताक्ष–संज्ञा पुं० नद-विशेष ।

कपोतिका, कपोती–संज्ञा स्त्री० १. कबूतरी । २. कुमरी । ३. पेंडुकी । ४. मूली ।
वि० धूमले रंग का । कपोत के रंग का ।

कपोल–संज्ञा पुं० गाल । गंडस्थल ।

कपोल-कल्पना–संज्ञा स्त्री० मन से बनाई हुई बात । मनगढ़ंत या बनावटी बात । गप्प ।

कपोल-कल्पित–वि० मिथ्या । झूठ । बनावटी ।

कपोलगेंदुआ–संज्ञा पुं० गलसुई, गल-तकिया । गाल के नीचे रखने का तकिया ।

कप्पास–संज्ञा पुं० १. कमल । २. बन्दर का चूतड़ ।
वि० लाल । रक्त वर्ण ।

कफ–संज्ञा पुं० १. खखार । बलग़म । वह गाढ़ी लसीली और अंठेदार वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह से निकलती है । श्लेष्मा । २. वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर की धातु-विशेष ।

कफघ्न–वि० कफनाशक । श्लेष्मानाशक ।

कफ़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] फेन । झाग । [अ०] क़मीज़ या कुर्ते की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं ।

कफ़न–संज्ञा पुं० [अ०] मुर्दा लपेटने का कपड़ा ।
मुहा०—कफ़न को कौड़ी न होना या रहना=अत्यंत दरिद्र होना। कफ़न को कौड़ी न रखना=जो कमाना, वह सब खा लेना ।
कफ़नखसोट–वि० सूम। कंजूस। मक्खी-चूस। अत्यंत लोभी।
कफ़नखसोटी–संज्ञा स्त्री० १. श्मशान पर लिया जानेवाला कर जो मुर्दे का कफ़न फाड़कर लेते हैं। २. इधर उधर से अच्छे या बुरे ढंग से धन इकट्ठा करने की वृत्ति। ३. कंजूसी।
कफ़नाना–क्रि० स० गाड़ने या जलाने के लिए मुर्दे को कफ़न में लपेटना।
कफ़नी–संज्ञा स्त्री० १. वह कपड़ा जो शव के गले में डालते हैं। २. साधुओं के पहनने की मेखला।
कफ़स–संज्ञा पुं० [अ०] १. पक्षी पालने का पिंजड़ा २. पिंजरा। दरबा। काबुक। ३. बंदीगृह। जेल। ४. बहुत तंग जगह।
कफवर्द्धक–वि० १. कफ बढ़ानेवाला। २. तगर वृक्ष।
कफारि–संज्ञा पुं० शुण्ठी। सोंठ।
कफोणी–संज्ञा पुं० कोहनी।
कबंध–संज्ञा पुं० १. कंडाल। पीपा। २. मेघ। बादल। ३. उदर। पेट। ४. पानी। जल। ५. रुंड। बिना सिर का धड़। ६. राक्षस-विशेष जिसे राम ने जीता ही भूमि में गाड़ दिया था। ७. राहु। उदय और अस्त के समय सूर्य को ढक लेनेवाले बादल।
कब–क्रि० वि० १. किस समय? (प्रश्न-सूचक)। २. नहीं। कभी नहीं।
मुहा०—कब का, कब के, कब से=देर से। विलंब से। कब नहीं।=सदैव। बराबर।
कबलों–क्रि० वि० कितनी देर तक।
कबड्डी–संज्ञा स्त्री० १. लड़कों का खेल विशेष जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं। २. कंपा। काँपा।
कबर–संज्ञा स्त्री० दे० "क़ब्र"।
कबरा–वि० [स्त्री० कबरी] चितकबरा। सफ़ेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दाग़वाला। चितला। अबलक़। कर्बुर।
क़बरिस्तान–संज्ञा पुं० दे० "क़ब्रिस्तान"।
क़बल–अव्य० [अ०] पहले। पेश्तर।
कबहूँ–अव्य० कभी भी। किसी समय भी।
क़बा–संज्ञा पुं० [अ०] लंबा ढीला पहनावा-विशेष।
कबाड़–संज्ञा पुं० [वि० कबाड़ी] अंगड़ खंगड़। रद्दी चीज़। जो वस्तु काम की न हो।
कबाड़ा–संज्ञा पुं० १. बखेड़ा। व्यर्थ बात। झंझट। २. गड़बड़। उपद्रव।
कबाड़िया–संज्ञा पुं० १. वह आदमी जो टूटी-फूटी, सड़ी-गली चीज़ें बेचने का काम करे। २. जो तुच्छ व्यवसाय करे। ३. झगड़ा करनेवाला आदमी।
कबाड़ी–संज्ञा पुं० वि० दे० "कबाड़िया"। १. अंगड़-खंगड़। २. तुच्छ व्यवसाय। ३. अंड-बंड काम।
कबाब–संज्ञा पुं० [अ०] भूना हुआ मांस।
कबाबचीनी–संज्ञा स्त्री० १. झाड़ी जो मिर्च की जाति की और लिपटनेवाली होती है। इसके गोल फल खाने में कड़ुए और ठंढे मालूम होते हैं। २. कबाबचीनी का गोल दाना या फल।
कबाबी–वि० [अ०] १. कबाब खाने या बेचनेवाला। २. मांस खानेवाला।
कबार–संज्ञा पुं० १. व्यवसाय। व्यापार। २. दे० "कबाड़"।
कबारना†–क्रि० स० [देश०] उखाड़ना। अलग करना।
कबारू–संज्ञा पुं० काम। उद्यम। गुण। झंझट। हुनर।
कबाला–संज्ञा पुं० [अ०] वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई संपत्ति दूसरे के अधिकार में चली जाय। जैसे—बयनामा।
कबाहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई।

खोट। खराबी। २. अड़चन। कठिनाई। परेशानी।

कबित्त–संज्ञा पुं० १. हिन्दी भाषा का एक छंद। २. कविता (निज कबित्त केहि लाग न नीका)

कबीर–संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. अश्लील गीत या पद-विशेष जो होली में गाया जाता है।

वि० बड़ा। श्रेष्ठ। महान्।

कबीरपंथी–वि० कबीर का अनुयायी। कबीर के संप्रदाय का।

कबीला–संज्ञा स्त्री० [अ०] पत्नी। स्त्री।

कबुलवाना, कबुलाना–क्रि० स० [हिं० कबूलना का प्रे० रूप] मनवाना। क़बूल कराना। स्वीकार करवाना। भेद खुलवाना।

कबूतर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कबूतरी] कपोत। झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का प्रसिद्ध पक्षी।

कबूतरखाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] दरबा जिसमें पालतू कबूतर रक्खे जाते हैं।

कबूतरबाज़–वि० [फ़ा०] जिसमें कबूतर पालने और उड़ाने की लत हो।

क़बूल–संज्ञा पुं० [अ०] स्वीकार। अंगीकार।

कबूलना–क्रि० स० १. स्वीकार करना। सकारना। २. प्रकट करना। ३. गुप्त बात बता देना।

क़बूलियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे।

कबूली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चने की दाल की खिचड़ी।

वि० मानी हुई। स्वीकार की हुई।

क्रि०–स्वीकार की। बतलाई।

क़ब्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. पकड़। ग्रहण। २. दस्त का साफ़ न होना। मलावरोध।

क़ब्ज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. दस्ता। मूँठ। २. किवाड़ या संदूक़ में जड़ने के लिए लोहे या पीतल के बने चौखूँटे टुकड़े। पकड़। नर-मादगी। ३. अधिकार। वश। अख़्तियार। दख़ल।

मुहा०–क़ब्ज़े पर हाथ डालना=तलवार खींचने के लिए मूँठ पर हाथ ले जाना।

क़ब्ज़ादार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० संज्ञा क़ब्ज़ादारी] १. वह अधिकारी जिसका क़ब्ज़ा हो। २. दख़ीलकार असामी।

वि० जिसमें क़ब्ज़ा लगा हो।

क़ब्ज़ियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पाचनशक्ति का ठीक न होना। मलावरोध।

क़ब्र–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुर्दे गाड़ने का गड्ढा। २. ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जानेवाला चबूतरा।

मुहा०–क़ब्र में पैर या पाँव लटकाना=मृत्यु के समीप होना। मरने के करीब होना।

क़ब्रिस्तान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुर्दे गाड़ने का स्थान।

कभी–क्रि० वि० किसी समय।

मुहा०–कभी का=बहुत देर से। कभी न कभी=आगे चलकर अवश्य किसी अवसर पर।

कभू*–क्रि० वि० दे० "कभी"।

कमंगर–संज्ञा पुं० [फ़ा० कमानगर] १. कमान बनानेवाला। २. उखड़ी हुई हड्डी को बैठानेवाला। ३. चितेरा। मुसौवर।

†वि० निपुण। दक्ष। कुशल।

कमंगरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० कमानगर] १. कमान बनाने का पेशा या हुनर। २. हड्डी बैठाने का काम। ३. मुसौवरी।

कमंडल–संज्ञा पुं० दे० "कमंडलु"। करवा। कठारी।

कमंडली–वि० १. वैरागी। साधु। २. पाखंड करनेवाला।

कमंडलु–संज्ञा पुं० १. संन्यासियों का करवा। कठारी। जलपात्र, जो मुख्यतः मिट्टी और काठ का हो। २. पाकर का पेड़।

कमंद*–संज्ञा पुं० दे० "कबंध"।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. फंदा। पाश। वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु आदि फँसाए जाते हैं। २. फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम–वि० [फ़ा०] १. थोड़ा। कम। न्यून। २. बुरा। जैसे—कमबख़्त।
मुहा०–कम से कम=अधिक नहीं तो इतना अवश्य। और नहीं तो इतना अवश्य। क्रि० वि० बहुधा नहीं। प्राय: नहीं। अधिकांश नहीं।

कमअसल–वि० १. वर्णसंकर। २. दोगला। ३. जो उत्तम न हो।

कमख़ाब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] ऐसा रेशमी कपड़ा जिसपर कलाबत्तू के बेल-बूटे बने होते हैं।

कमची–संज्ञा स्त्री० १. पतली लचीली टहनी। २. लचकदार पतली छड़ी। ३. लकड़ी आदि की पतली पट्टी। ४. तीली।

कमच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "कामाख्या"। गोहाटी की एक देवी का नाम।

कमज़ोर–वि० [फ़ा०] बलरहित। शक्तिहीन।

कमज़ोरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दुर्बलता। शक्ति का अभाव।

कमठ–संज्ञा पुं० [स्त्री० कमठी] १. कछुआ। २. साधुओं का तुंबा। ३. बाँस। ४. सलई का वृक्ष। ५. एक दैत्य। ६ एक प्राचीन बाजा।

कमठा–संज्ञा पुं० धनुष। कमान।

कमठी–संज्ञा स्त्री० १. कछुई। कच्छपी। २. पट्टी। बाँस की पतली लचीली खपाची। ३. धनुही।

कमती–संज्ञा स्त्री० कमी। न्यूनता। वि० थोड़ा। कम।

कमना*‡–क्रि० अ० घटना, थोड़ा या कम होना।

कमनी, कमनीय–वि० १. मनोहर। रम्य। सुंदर। २. जिसके लिए कामना की जाय।

कमनैत–संज्ञा पुं० कमान से तीर चलानेवाला।

कमनैती–संज्ञा स्त्री० धनुर्विद्या। तीर-कमान चलाने की विद्या।

कमबख़्त–वि० [फ़ा०] अभागा। बुरे भाग्य वाला।

कमबख़्ती–संज्ञा स्त्री० दुर्भाग्य। बदनसीबी।

कमर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. कटि। शरीर का मध्य भाग। २. किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग। जैसे—कोल्हू की कमर। ३. लपेट। अँगरखे या सलूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है।
मुहा०–कमर कसना या बाँधना=१. उद्यत होना। तैयार होना। २. चलने की तैयारी करना। कमर टटना=उत्साह का न रहना। निराश होना। कमर खोलना=विरत होना। विश्राम करना।

कमरकस–संज्ञा पुं० ढाक का गोंद। चिनिया गोंद। कमरबंद। कमर कसने की पेटी।

कमरकोट, कमरकोटा–संज्ञा पुं० १. वह दीवार जो रक्षा के लिए बनाई गई हो। २.छोटी दीवार जो क़िलों और चहार-दीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और छेद होते हैं।

कमरख–संज्ञा स्त्री० १. एक पेड़ जिसके फाँकवाले लंबे लंबे खट्टे फल होते हैं। कमरंग। कर्मरंग। २. इस पेड़ का फल। ३. वस्त्र-विशेष।

कमरखी–वि० जिसमें कमरख के समान उभड़ी हुई फाँकें हों।

कमरटूटा–वि० कुब्जा। कुण्डा।

कमरबन्द–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कमर बाँधने का लंबा कपड़ा। पटका। २.पेटी। ३. नाड़ा। इजारबंद।
वि० कमर कसे, तैयार। तत्पर।

कमरबल्ला–संज्ञा पुं० १. खपड़े की छाजन में वह लकड़ी जो तड़क के ऊपर और कोरी के नीचे लगाई जाती है। २. कमरबस्ता। ३. कमरकोटा।

कमरा–संज्ञा पुं० [लै० कैमेरा] १. कोठरी। २. फोटोग्राफी का एक औजार।
*संज्ञा पुं० दे० "कंबल"।

कमरिया–संज्ञा पुं० [फ़ा० कमर] १. हाथी-विशेष जो डील-डौल में छोटा पर बहुत जबरदस्त होता है। बौना हाथी।

२. कमर। ३. रोग विशेष। ४. चरखी की लकड़ी-विशेष।

कमरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

कमल–संज्ञा पुं० १. पानी का एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिए प्रसिद्ध है। २. क्लोमा। कमल के आकार का मांस-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। ३. कमल का फूल। पद्म। ४. ताँबा। ५. पानी, जल। ६. [स्त्री० कमली] मृग-विशेष। ७. डेला। आँख का कोया। ८. सारस। ९. फूल। धरन। योनि के भीतर कमलाकार एक गाँठ। १०. छः मात्राओं का छंद-विशेष। ११. छप्पय के ७१ भेदों में से एक। १२. काँच का एक प्रकार का गिलास जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है। १३. पित्त रोग-विशेष जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं। कमला। पीलू। काँवर। १४. मूत्राशय। मसाना।

कमलगट्टा–संज्ञा पुं० पद्मबीज। कमल का बीज।

कमलज–संज्ञा पुं० १. जो कमल से उत्पन्न हुआ हो। २. ब्रह्मा।

कमलनयन–वि० [स्त्री० कमलनयनी] कमल के समान बड़े और सुंदर नेत्रवाला।
संज्ञा पुं० १. राम। २. विष्णु। ३. कृष्ण।

कमलनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु।

कमलनाल–संज्ञा स्त्री० मृणाल। कमल की डंडी।

कमलबंध–संज्ञा पुं० चक्रकाव्य-विशेष।

कमलबाई–संज्ञा स्त्री० रोग-विशेष जिसमें शरीर, विशेषकर आँखें पीली पड़ जाती हैं। कमल रोग।

कमलभव–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

कमलयोनि–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

कमला–संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. सुंदरी, श्रेष्ठ स्त्री। ३. ऐश्वर्य। धन। ४. संतरा। बड़ी नारंगी। ५. तिरहुत की एक नदी।
संज्ञा पुं० १. रोएँदार कीड़ा जिसके छू जाने से शरीर में खुजलाहट होती है। सूँड़ी। झाँझाँ। २. ढोला। अनाज या सड़े फल आदि में पड़नेवाला लंबा सफ़ेद रंग का कीड़ा।

कमलाकर–संज्ञा पुं० १. छप्पय का भेद। २. तालाब।

कमलाक्ष–संज्ञा पुं० १. कमल का बीज। २. दे० "कमलनयन"। कमलगट्टा। पद्म-नेत्र।

कमलापति–संज्ञा पुं० विष्णु।

कमलालया–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

कमलावती–संज्ञा स्त्री० पद्मावती छंद-विशेष।

कमलासन–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. पद्मासन।

कमलासना–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी। सरस्वती।

कमलिनी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा कमल। २. कुमुदिनी। ३. वह तालाब जिसमें कमल हों।

कमली–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० छोटा कंबल। छंद-विशेष।

कमवाना–क्रि० स० [कमाना का प्रे० रूप] दूसरे से कमाने का काम करवाना।

कमसिन–वि० [फ़ा०] [संज्ञा कमसिनी] छोटी अवस्था का। कम उम्र का।

कमसिनी–संज्ञा स्त्री० लड़कपन। कम उम्र।

कमाई–संज्ञा स्त्री० १. अर्जित द्रव्य। कमाया हुआ धन। २. कमाने का काम। ३. उद्यम। धंधा। व्यवसाय।

कमाऊ–वि० उद्यमी। परिश्रमी। कमाने-वाला।

कमाच–संज्ञा पुं० रेशमी कपड़ा-विशेष।

कमाची–संज्ञा स्त्री० १. दे० "कमची"। २. तीली जो कमान की तरह झुकी हो।

कमान–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धनुष। कमठा। २. त्योरी चढ़ना। क्रोध या गुस्से में होना। ३. मेहराब। ४. इंद्रधनुष। ५. बंदूक़। तोप।
संज्ञा स्त्री० [अंग्रे० कमांड] १. आज्ञा। २. फ़ौजी काम की आज्ञा। ३. फ़ौजी नौकरी।

मुहा०–कमान चढ़ना=१. दौरदौरा होना।

कमान पर जाना=लड़ाई पर जाना। कमान बोलना=नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना। कमान होना=१. क्रोध से ऐंठ जाना। २. वृद्धावस्था के कारण शरीर झुक जाना।

कमानगर–संज्ञा पुं० दे० "कमंगर"।

कमानचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सारंगी बजाने की छड़ी। २. छोटी कमान। ३. डाट। मेहराब।

कमाना–क्रि० स० १. काम-काज करके रुपया पैदा करना। २. निर्मल करना। साफ़ करना। ३. ठीक करना। ४. सेवा संबंधी छोटे छोटे काम करना। जैसे—पाखाना कमाना (उठाना)। ५. कर्म संचय करना। जैसे—पाप कमाना।

यौ०–कमाई हुई हड्डी या देह=कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर। कमाया साँप=वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिये गए हों।

क्रि० अ० १. मेहनत मजदूरी करना। २. कसब करना। खर्ची कमाना।

†क्रि० स० घटाना। कम करना।

कमानिया–संज्ञा पुं० धनुष-बाण चलानेवाला। वि० धन्वाकार। घुमावदार। मेहराबदार।

कमानी–संज्ञा स्त्री० [वि० कमानीदार] १. लोहे की तीली, तार अथवा इसी प्रकार की और कोई लचीली वस्तु जो दाब पड़ने से दब जाय और फिर अपनी जगह पर आ जाय। २. लोहे की लचीली तीली। ३. चमड़े की पेटी-विशेष जिसे आँत उतरनेवाले रोगी कमर में लगाते हैं।

यौ०–बाल-कमानी=घड़ी की एक बहुत पतली कमानी जिसके सहारे चक्कर घूमता है।

कमानीदार–वि० जिसमें कमानी लगी हो। कमानीवाला।

मुहा०–कमानी ढीली होना=मुख्य अवलंब न रहना। सुस्त होना। ज़ोर घटना।

कमाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. पूर्णता। २. कुशलता। निपुणता। ३. अनोखा या अद्भुत काम। ४. कारीगरी। ५. कबीरदास के पुत्र का नाम।

वि० १. संपूर्ण। सब। २. सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम। ३. अत्यधिक। अत्यंत।

कमालियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पूर्ण होने का भाव। पूरापन। २. चतुराई। निपुणता। कुशलता।

कमासुत–वि० १. जो कमाई करता हो। २. उद्यमी। श्रमी।

कमी–संज्ञा स्त्री० १. घटती। अल्पता। कोताही। २. हानि।

कमीज़–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पहनने का कपड़ा जिसमें कली और चौबग़ले नहीं होते।

कमीना–वि० [फ़ा०] [स्त्री० कमीनी] नीच। क्षुद्र। ओछा। बुरी प्रकृतिवाला।

कमीनापन–संज्ञा पुं० क्षुद्रता। नीचता।

कमीला–संज्ञा पुं० छोटा पेड़-विशेष जिसके फलों पर की लाल धूल रेशम रँगने के काम में आती है।

कमेरा–संज्ञा पुं० १. परिश्रम या काम करनेवाला। २. मज़दूर। ३. नौकर। ४. सहायक।

कमेला–संज्ञा पुं० पशु मारने का स्थान। वध-स्थान। क़साईखाना।

कमेहरा–संज्ञा पुं० कसकुट की चूड़ियाँ ढालने का साँचा।

कमोदिक—संज्ञा पुं० कामोद (राग) का गवैया।

कमोदिन, कमोदिनी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"। कमल-विशेष।

कमोरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कमोरी, कमोरिया] मिट्टी का बरतन-विशेष। घड़ा। मटका। गगरा। कछरा।

कम्यूनिज्म–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) दे० 'साम्यवाद'। वह शासन-पद्धति जिसमें सब सम्पत्ति राज्य-सरकार के क़ब्ज़े में होती है और व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं रहती। राज्य का प्रत्येक नागरिक एक समान होता है।

कम्यूनिस्ट–वि० दे० "साम्यवादी"। साम्यवाद या कम्यूनिज्म के सिद्धान्त का अनुयायी।

कम्यूनीक–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) सरकारी सूचना या विवरणपत्र।

कयपती–संज्ञा स्त्री० सदाबहार वृक्ष-विशेष जिसकी पत्तियों से कपूर की तरह उड़नेवाला सुगंधित तेल निकाला जाता है।

कयरी–संज्ञा स्त्री० टिकोरा। अंबिया।

कया*–संज्ञा स्त्री० दे० "काया"। देह। शरीर।

क़याम–संज्ञा पुं० [अ०] १. ठहरने की जगह। विश्राम-स्थान। २. पड़ाव। ठहराव। ३. निश्चय। स्थिरता। ठौर-ठिकाना।

क़यामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के मत से सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। लेखे का अंतिम दिन। २. खलबली। हलचल। ३. प्रलय।

क़यास–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० क़यासी] १. अनुमान। भान। अटकल। २. ध्यान। ३. सोच-विचार।

करंक–संज्ञा पुं० १. खोपड़ी। मस्तक। २. कमंडलु। ३. नारियल की खोपड़ी। ४ ठठरी। पंजर। ५. एक तरह की ईख। ६. शरीर की कोई भी हड्डी।

करंग–संज्ञा पुं० पंजर। पाँसुरी। हड्डी।

करंज–संज्ञा पुं० १. कंजा। २. छोटा जंगली वृक्ष-विशेष। ३. एक तरह की आतिशबाज़ी।

संज्ञा पुं० [फ़ा० कुलंग सं० कलिंग] मुर्ग़ा।

करंजा–संज्ञा पुं० दे० "कंजा"।

करंजुवा–संज्ञा पुं० दे० "करंज"।

संज्ञा पुं० [देश०] अंकुर-विशेष जो बाँस या ऊख में होते और उनको हानि पहुँचाते हैं। घमोई।

वि० खाकी। करंज के रंग का।

संज्ञा पुं० खाकी रंग। करंज की तरह का रंग।

करंड–संज्ञा पुं० १. एक तरह की बत्तक। २. शहद का छत्ता। ३. तलवार। ४. कौवा। ५. डेला। बाँस की ढक्कनदार टोकरी।

संज्ञा पुं० हथियार तेज़ करने का कुरुल पत्थर।

करंतीना–संज्ञा पुं० [अंग्रे० क्वारंटाइन] वह स्थान-विशेष जहाँ ऐसे लोग कुछ समय तक रखे जाते हैं, जो किसी छूत की बीमारी की जगह से आते हैं।

कर–संज्ञा पुं० १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. सूर्य्य या चंद्रमा की किरण। केकड़े के पैर। दो की संख्या। ४. पत्थर। ओला। ५. राजस्व। मालगुज़ारी। महसूल। ६. युक्ति। छल। पाखंड। हस्त नक्षत्र।

*†–प्रत्य० संबंध कारक का चिह्न। का। क्रि० करके। करना।

करई–संज्ञा स्त्री० कुल्लड़। चुक्कड़।

करक–संज्ञा पुं० १. करवा। कमंडलु। ठठरी, नारियल का खोपड़ा। २. अनार। दाड़िम। ३. पलास। ४. कचनार। ५. मौलसिरी। बकुल। ६. करील का पेड़।

संज्ञा स्त्री० १. कसक। ठहर-ठहरकर होनेवाली पीड़ा। चिनक। २. रुक-रुककर और जलन के साथ पेशाब होने का रोग।

करकच–संज्ञा पुं० समुद्री नमक।

करकचि–संज्ञा पुं० १. किचकिचाहट। हल्ला-गुल्ला। २. अपुष्ट। ३. कोमल।

करकट–संज्ञा पुं० कूड़ा। कतवार। झाड़न। बहारन।

यौ०–कूड़ा-करकट।

करकना–क्रि० अ० दे० "कड़कना"। कसकना। रह-रहकर दर्द होना।

*वि० [स्त्री० करकरी] खुरखुरा। गड़ने वाला।

करकर–संज्ञा पुं० समुद्री नमक। एक प्रकार की आवाज़।

करकरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का सारस। करकरिया पक्षी।

वि० खुरखुरा।

करकराहट–संज्ञा स्त्री० १. खुरखुराहट। कड़ापन। २. पीड़ा जो आँख में किरकिरी पड़ने की तरह हो।

करकस*–वि० दे० "कर्कश"।

करका–संज्ञा स्त्री० १. ओला। २. पत्थर पड़ना, ओले गिरना। उपलवृष्टि।
करकाना–क्रि० स० लचकाना। मुरकाना।
करख–संज्ञा पुं० १. खैंच। खिंचाव। २. हठ। ३. अधिक द्रव्य। ४. माप-विशेष।
करखना*–क्रि० अ० जोश में आना। उत्तेजित होना।
करखा–संज्ञा पुं० १. दे० "कड़खा"। २. छंद-विशेष। ३. लाग, डाँट। उत्तेजना। बढ़ावा। ताव। दे० "कालिख"।
करगत–वि० हाथ लगा हुआ। प्राप्त। संज्ञा पुं० हस्तनक्षत्र-स्थित चंद्रमा।
करगता–संज्ञा स्त्री० करधनी। कटिबंधन।
करगल–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गिद्ध। २. तीर।
करगह–संज्ञा पुं० [फ़ा० कारगाह] १. कपड़ा बुनने का यंत्र। २. वह नीची जगह जिसमें पैर लटकाकर जुलाहे बैठते और कपड़ा बुनते हैं।
करगहना–संज्ञा पुं० भरेठा। लकड़ी या पत्थर जिसे खिड़की या दरवाज़ा बनाने में चौखटे के ऊपर रखकर आगे जोड़ाई करते हैं।
करग्रह–संज्ञा पुं० परिणय। ब्याह। हाथ पकड़ना।
करघा–संज्ञा पुं० दे० "करगह"। हाथ से कपड़ा बिनने का यंत्र-विशेष।
करचंग–संज्ञा पुं० १. डफ। २. ताल देने का बाजा-विशेष।
करछा–संज्ञा पुं० [स्त्री० करछी] बड़ी कलछी।
करछाल–संज्ञा स्त्री० १. छलाँग। उछाल। २. कुदान।
करछी–संज्ञा स्त्री० दे० "कलछी"। "करछी"
करछुल, करछुली–दे० "कलछी"।
करज–संज्ञा पुं० १. वि० हाथ से उत्पन्न। नख। नाखून। २. उँगली। ३ नख नामक सुगंधित द्रव्य-विशेष। ४. करंज। ५. कंजा।
करजोड़ी–संज्ञा स्त्री० हत्थाजोड़ी। औषध-विशेष।
करट–संज्ञा पुं० १. कौआ। २. गिरगिट। ३. हाथी की कनपटी। ४. एक तरह का नगाड़ा। ५. निकृष्ट पेशे का मनुष्य। ६. एक तरह का अंत्येष्टि संस्कार।
करटक–संज्ञा पुं० १. कौआ। २. कुसुम का पौधा।
करटी–संज्ञा पुं० १. हाथी। २. राँगा। संज्ञा स्त्री० काक-पत्नी।
करण–संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह (तीसरा) कारक जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसका चिह्न 'से' है। २. अस्त्र। हथियार। ३. इंद्रिय। ४. देह। ५. कार्य्य। क्रिया। ६. स्थान। ७. कारण। हेतु। ८. ज्योतिष में तिथियों का विभाग-विशेष। ९. करणीगत संख्या। वह संख्या जिसका पूरा पूरा वर्गमूल न निकल सके। १०. निर्माण। ११. साधन। १२. योगियों का आसन-भेद।
*संज्ञा पुं० दे० "करण"।
करणी–संज्ञा स्त्री० १. खुरपी। राँपी। २. गणितशास्त्र में वह राशि जिसका मूल निश्चित न हो।
करणीय–वि० कर्तव्य कर्म। करने योग्य।
करतब–संज्ञा पुं० [वि० करतबी] १. कर्त्तव्य। काम। कार्य। २. गुण। कला। ३. जादू। करामात।
करतबी–वि० १. पुरुषार्थी। काम करनेवाला। २. कुशल, दक्ष। गुणी। चतुर। ३. जादूगर। बाजीगर। करामात दिखानेवाला।
करतरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्त्तरी"।
करतल–संज्ञा पुं० [स्त्री० करतली] १. हथेली। हाथ की गदोरी। २. गणों का रूप-विशेष (छंदशास्त्र)।
करतली–संज्ञा स्त्री० १. ताली बजाने की क्रिया। हथेलियों का शब्द। ताली २. हथेली।
करता–संज्ञा पुं० दे० "कर्त्ता"।
†संज्ञा पुं० १. वृत्त-विशेष। २. वह दूरी जहाँ तक बंदूक की गोली जाती है।
करतार–संज्ञा पुं० कर्त्तार। विधाता। ईश्वर।

†संज्ञा पुं० दे० "करताल"। स्वामी। मालिक।

करतारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "करताली"। थपोड़ी। ताल।
वि० ईश्वरीय।

करताल–संज्ञा पुं० १. ताली बजाना। दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। २. लकड़ी, काँसे आदि का बाजा विशेष जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाया जाता है। ३. झाँझ। कठताल।

करताली–संज्ञा स्त्री० ताली। थपोड़ी। हथेली बजाने का शब्द।

करतूत–संज्ञा पुं० १. करनी। कर्म। २. गुण। कला। (बुरे अर्थ में, व्यंग में)

करतूति, करतूती–संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत"। करनी। काम।

करतोया–संज्ञा स्त्री० नदी-विशेष।

करद–वि० १. जो कर देता हो। कर-दाता, अधीन। २. सहारा देनेवाला।

करदपत्र–संज्ञा पुं० पट्टा। राजस्व-सूचक पत्र।

करदा–संज्ञा पुं० १. कूड़ा-करकट जो बिक्री की वस्तु में मिला रहता है। २. अन्न आदि मोल लेते समय उसमें मिली धूल आदि का अनुमान द्वारा काटा हुआ दाम। ३. घड़ा। ४. कटौती। बट्टा।

करदायी–वि० मालगुज़ार। कर देनेवाले।

करधनी–संज्ञा स्त्री० [किंकिणी] कमर में पहनने का आभूषण-विशेष।

करधर–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।

करधृत–वि० हस्तधृत। हाथ से पकड़ा हुआ। हाथ में लिया हुआ।

करन*–संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"। कान।

करनधार*–संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"। मल्लाह।

करनफूल–संज्ञा पुं० कनफूल, कान का गहना विशेष। काँप। तरौना।

करनबेध–संज्ञा पुं० कर्णवेध। कनछेदन। कान छेदने का संस्कार।

करना–संज्ञा पुं० १. सुदर्शन पौधा विशेष जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। २. बिजौरे की तरह का बड़ा नीबू-विशेष।
*संज्ञा पुं० काम। करतूत। करनी।
क्रि० स० १. किसी क्रिया को करना। निबटाना। समाप्त करना। भुगतना। संपादित करना। २. रचना। ३. पकाकर तैयार करना। राँधना। ४. पहुँचाना। ले जाना। ५. पति या पत्नी रूप से ग्रहण करना। ६. व्यवसाय प्रारंभ करना। ७. भाड़े पर सवारी लेना। सवारी ठहराना। ८. रोशनी बुझाना। ९. बनाना। एक रूप से दूसरे रूप में लाना। १०. कोई पद देना। ११. किसी वस्तु को पोतना। जैसे, रंग करना।

करनाई–संज्ञा स्त्री० तुरही। बाजा-विशेष।

करनाटक–संज्ञा पुं० कर्णाटक। मद्रास प्रांत का भाग-विशेष।

करनाटकी–संज्ञा पुं० १. करनाटक प्रदेश का रहनेवाला। २. कलाबाज़। ३. इंद्रजाली। जादूगर।

करनाल–संज्ञा पुं० १. सिंघा या नरसिंहा। धूतू। भोंपा। २. बड़ा ढोल। ३. तोप-विशेष। ४. पंजाब का एक ज़िला।

करनी–संज्ञा स्त्री० १. पूर्वकृत कर्म। करतूत। २. मृतक-संस्कार। अंत्येष्टि कर्म। ३. कन्नी। दीवार पर पन्ना या गारा लगाने का औज़ार।

करपत्र–संज्ञा पुं० करांत। आरा। नरक-विशेष।

करपर*–संज्ञा स्त्री० प्याला। खोपड़ी। कछुए की खोल। शस्त्र-विशेष। (वि० कंजूस।)

करपरी–संज्ञा स्त्री० पीठी की बरी।

करपलई–संज्ञा स्त्री० दे० "करपल्लवी"।

करपल्लवी–संज्ञा स्त्री० वह विद्या जिसमें उँगलियों के संकेत से बातें की जाती हैं।

कर-पिचकी–संज्ञा स्त्री० दोनों हथेलियों को मिलाकर, उनकी सहायता से पिचकारी की तरह जल किसी पर फेंकना। एक तरह की जल-क्रीड़ा।

करपीड़न–संज्ञा पुं० पाणिग्रहण। विवाह।

करपुर–संज्ञा पुं० हथेलियों का संपुट। कुछ

उठी और मिलाई हुई हथेलियों से बना आकार।

करपृष्ठ–संज्ञा पुं० हथेली का पृष्ठ भाग।

करबरना–क्रि० अ० १. चहकना। कलरव करना। २. कुलबुलाना।

करबला–संज्ञा पुं० [अ०] १. अरब में एक उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गए थे। २. ताज़िए दफ़नाने की जगह। ३. निर्जल स्थान। ४. निर्जन स्थान।

करबाल–संज्ञा पुं० तलवार। खड्ग। असि।

करबालिका–संज्ञा स्त्री० छुरी। कटारी।

करबी–संज्ञा स्त्री० नारी। डाँठी। जुआर अथवा बाजरे की डाँठी। पशुभक्ष्य तृण।

करबूस–संज्ञा पुं० हथियार लटकाने के लिए घोड़े के चारजामे या ज़ीन में टँगी हुई रस्सी या तसमा।

करबोटी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का पक्षी।

करभ–संज्ञा पुं० १. करपृष्ठ। हाथ का पिछला भाग। २. हाथी का बच्चा। हाथी की सूँड़। ३. ऊँट का बच्चा। ४. हाथ का कलाई से उँगलियों तक का भाग। ५. वह गायक जो गाते समय माथा सिकोड़े। ६. दीवाल। ७. नख नामक सुगंधित वस्तु। ८. कमर। कटि। ९. दोहे के सातवें भेद का नाम।

करभीर–संज्ञा पुं० सिंह। मृगराज।

करभोरु–संज्ञा पुं० जंघा जो हाथी की सूँड़ के समान हो।

वि० सुंदर जाँघवाली।

करम–संज्ञा पुं० १. धंधा। कर्म। काम। २. भाग्य। कर्म का फल।

यौ०–करम-भोग=वह दुःख जो कर्मफल से मिले।

मुहा०–करम फूटना=भाग्य मंद होना।

यौ०–करमरेख=वह बात जो भाग्य में लिखी हो।

संज्ञा पुं० [अ०] कृपा। अनुकंपा।

करमकल्ला–संज्ञा पुं० गोभी-विशेष जिसमें केवल कोमल पत्ते होते हैं। बंद-गोभी। पातगोभी।

करमचन्द*‡–संज्ञा पुं० १. काम। कर्म। २. काम न करनेवाला। काम बिगाड़नेवाला (व्यंग)।

करमट्ठा*–वि० कृपण। मक्खीचूस। कंजूस।

करमठ*†–वि० १. कर्मप्रिय। कर्मनिष्ठ। २. कर्म करनेवाला। यज्ञादि करानेवाला। कर्मकाण्डी।

करमनाशा–संज्ञा स्त्री० नदी-विशेष।

करमाला–संज्ञा स्त्री० उँगलियों से जप करने की छोटी माला। सुमिरनी। वे दस पोर जिन पर अँगूठे से गिनती करते हुए जप किया जाता है।

संज्ञा पुं० अमलतास।

करमाली–संज्ञा पुं० भास्कर। सूर्य।

करमी–वि० १. कर्मनिष्ठ, परिश्रमी, कर्मठ। २. यज्ञादि करानेवाला कर्मकांडी। कर्म करनेवाला।

करमुखा*–वि० [स्त्री० करमुखी] जिसका मुँह काला हो। कलंकी।

करमुँहा–वि० १. काले मुँहवाला। २. कलंकी। ३. दोषयुक्त।

करयेती–संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की एक उपासिका ब्राह्मण-कन्या।

करर–संज्ञा पुं० [देश०] १. विषैला कीड़ा-विशेष जिसके शरीर में बहुत-सी गाँठें होती हैं। २. घोड़े का भेद-विशेष। ३. (एक प्रकार का) जंगली पुष्प।

कररना, करराना*–क्रि० अ० [अनु०] १. कर्कश, रूक्ष शब्द करना। २. चरमर करके टूटना।

कररुह–संज्ञा पुं० नख। नाखून।

करल*–संज्ञा पुं० कड़ाही।

करवट–संज्ञा स्त्री० पार्श्व के बल या हाथ के सहारे लेटने की स्थिति।

मुहा०–करवट बदलना या लेना=१. दूसरे पार्श्व के बल लेटना। २. पलटा खाना। और का और हो जाना। करवट खाना या होना=फिर जाना। उलट जाना। करवट न लेना=सन्नाटा खींचना। कर्त्तव्य का ध्यान न रखना। करवटें बदलना=तड़पना। बिस्तर पर बेचैन रहना। व्याकुल होना।

संज्ञा पुं० १. आरा। करवत। २. प्राचीन काल के काशी के वे आरे या चक्र, जिन पर गिरकर तथा कटकर लोग स्वर्ग की इच्छा से प्राण देते थे। ३. पंसवाड़ा। ४. पाँजर। ५. पार्श्व। ६. परिवर्तन।

करवत–संज्ञा पुं० आरा।

करवर*†–संज्ञा स्त्री० संकट। विपत्ति। मुसीबत।

करवरे–संज्ञा पुं० विपत्ति। अदृष्ट। होनहार।

करवा–संज्ञा पुं० बधना। मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

करवा चौथ–संज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्ण चतुर्थी। स्त्रियों के व्रत का विशेष दिन।

करवानक–संज्ञा पुं० गौरैया। चिड़ा।

करवाना–क्रि० स० [करना का प्रे० रूप] दूसरे को करने में लगाना।

करवार*–संज्ञा स्त्री० तलवार। खड्ग।

करवाल–संज्ञा पुं० १. तलवार। २. नाखून। नख।

करवाली–संज्ञा स्त्री० करौली। छोटी तलवार।

करवीर–संज्ञा पुं० अँगूठा। १. कनेर का पेड़। २. श्मशान। ३. खड्ग। तलवार। ४. चेदि देश का एक नगर।

करवैया†*–वि० करनेवाला।

करशाला–संज्ञा स्त्री० चुंगीघर। महसूलघर।

करश्मा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] अद्‌भुत व्यापार। चमत्कार। आश्चर्यजनक कार्य।

करष–संज्ञा पुं० १. खिंचाव। तनाव। २. मनमोटाव। द्रोह। ३. ताव। युद्ध का उत्साह।

करषना*–क्रि० स० १. खींचना। तानना। २. घसीटना। ३. सुखाना। सोख लेना। ४. बुलाना। निमंत्रित करना। ५. समेटना। ६. आकर्षण करना।

करषा–संज्ञा पुं० १. ईर्ष्या। वैर। २. क्रोध। ३. कालिमा। ४. उत्तेजना। ५. बढ़ावा।

करसंपुट–संज्ञा पुं० मिली हुई हथेलियों से बना आकार, अंजलि, अँजुली।

करसना*–क्रि० स० दे० "करषना"।

करसायर, करसायल–संज्ञा पुं० काला हिरन। काला मृग।

करसी–संज्ञा स्त्री० १. उपला। कंडा या उसका टुकड़ा। २. जंगली गोइठा।

करहंस–संज्ञा पुं० वर्ण-वृत्त-विशेष।

करह*–संज्ञा पुं० ऊँट। उष्ट्र। संज्ञा पुं० (फूल की) कली।

करहार–संज्ञा पुं० मैनफल।

करहारक–संज्ञा पुं० मैनफल। औषध-विशेष।

करहा–संज्ञा पुं० कड़हा। कटि। कमर।

करहाट, करहाटक–संज्ञा पुं० कमल की जड़। भसींड़। कमल का छत्ता।

करांकुल–संज्ञा पुं० कूंज। पानी के किनारे की बड़ी चिड़िया-विशेष।

करात–संज्ञा पुं० आरा। करपत्र। क्रकच।

कराती–वि० आरे से चीरनेवाला। लकड़ी काटनेवाला।

करा*–संज्ञा स्त्री० दे० "कला"।
वि० १. कड़ा। २. कठिन। ३. सोटा। ४. झूठा।

कराइत–संज्ञा पुं० काला साँप जिसमें विष अधिक होता है।

कराई–संज्ञा स्त्री० भूसी (दालों आदि की)। *संज्ञा स्त्री० श्यामता। कालापन। करने या कराने का भाव।

करात–संज्ञा पुं० तौल-विशेष जो चार जौ के बराबर होती है और सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम में आती है।

कराना–क्रि० स० [करना का प्रे० रूप] करने में लगाना। करवाना।

कराबा–संज्ञा पुं० [अ०] शीशे या चीनी मिट्टी का बरतन-विशेष।

करामात–संज्ञा स्त्री० ['करामत' का बहु०] आश्चर्यजनक कार्य। चमत्कार। अद्‌भुत व्यापार।

करामाती–वि० १. अद्‌भुत कर्म करनेवाला। २. सिद्ध।

करार–संज्ञा पुं० १. ठहराव। शर्त। स्थिरता। २. धैर्य्य। संतोष। धीरज। ३. चैन। आराम। ४. प्रतिज्ञा। वादा। ५. किनारा।

करौत–संज्ञा पुं० (स्त्री० करौती) आरा जिससे लकड़ी चीरते हैं।
संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। सुरैतिन, उपपत्नी।
करौता–संज्ञा पुं० दे० "करौत"।
संज्ञा पुं० क़राबा। काँच का बड़ा बरतन या शीशी।
करौती–संज्ञा स्त्री० आरी। लकड़ी चीरने का अस्त्र।
संज्ञा स्त्री० १. क़राबा। शीशे का छोटा पात्र। २. काँच की भट्टी।
करौला*–संज्ञा पुं० शिकार या हँकवा करनेवाला।
करौली–संज्ञा स्त्री० सीधी छुरी विशेष।
कर्कंधु–संज्ञा पुं० बेर का पेड़। बदरी वृक्ष।
कर्क–संज्ञा पुं० १. चौथी राशि। २. केकड़ा। ३. सफ़ेद घोड़ा। ४. काकड़ासींगी। ५. शीशा। दर्पण। ६. आग। अग्नि। ७. घड़ा। ८. कात्यायन सूत्र के एक भाष्यकार। ९. सुराही। १०. चाचा। पितृव्य। ११. सौंदर्य। १२. रत्न-विशेष।
वि० श्वेत। सफेद। उत्तम। श्रेष्ठ।
कर्कट–संज्ञा पुं० (स्त्री० कर्कटी, कर्कटा) १. कर्क राशि। २. केकड़ा। ३. करकरा। ४. तराजू का वह हिस्सा जहाँ रस्सी बँधती है। ५. सारस विशेष। ६. करकटिया। ७. घीआ। लौकी। ८. सँड़सा। ९. कमल की मोटी जड़। १०. वृत्त की त्रिज्या। ११. नृत्य-विशेष। १२. तुंबी। १३. ज्वर-विशेष। १४. हस्त-मुद्रा विशेष (नाटयशास्त्र)।
कर्कटी–संज्ञा स्त्री० १. कछुई। २. तरुई। ३. ककड़ी। ४. सुराही। ५. सेमर का फल। ६. सर्प। साँप। ७. काकड़ासिंगी।
कर्कर–संज्ञा पुं० १. कुरज पत्थर जिसके चूर्ण की सान बनती है। २. हड्डी। ३. हथौड़ा। ४. कंकड़। ५. चूना। ६. खजूर-विशेष।
वि० खुरखुरा। दर्पण। दृढ़। कड़ा। करारा। कड़ा।
कर्कश–संज्ञा पुं० १. ईख। ऊख। २. कमीले का पेड़। ३. तलवार। खड्ग।
वि० १. निर्दय। २. कड़ा। कठोर। जैसे कर्कश स्वर। ३. काँटेदार। खुरखुरा। ४. तीव्र। तेज़। प्रचंड। ५. अधिक। ६. क्रूर।
कर्कशता–संज्ञा स्त्री० १. कड़ापन। २. कठोरता। ३. खुरखुरापन।
कर्कशा–वि० स्त्री० १. लड़नेवाली। झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी। २. कलहप्रिय। ३. कटु वचन बोलनेवाली।
कर्कोट–संज्ञा पुं० १. बेल का वृक्ष। २. ककोड़ा। खेखसा। इस नाम का एक नाग।
कच्चूर या कर्च्चूर–संज्ञा पुं० १. सुवर्ण। सोना। २. कर्पूर। ३. कचूर। नरकचूर। ४. वृक्ष-विशेष।
कर्छनी–संज्ञा स्त्री० १. करोचनी। २. खुर्चन। ३. भोजन बनाने का एक बर्तन।
कर्छा–संज्ञा पुं० कर्छुल।
कर्छाल–संज्ञा स्त्री० कुलाँच। कूद। चौकड़ी।
कर्छुल–संज्ञा स्त्री० कर्छी। करछुली।
क़र्ज़, क़र्ज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] उधार। ऋण।
मुहा०–क़र्ज़ उतारना=क़र्ज़ चुकाना। क़र्ज़खाना=१. क़र्ज़ लेना। २. वश में होना। उपकृत होना।
क़र्ज़दार–वि० [फ़ा०] ऋणी। उधार लेनेवाला।
कर्ण–संज्ञा पुं० १. कान। २. कुंती का ज्येष्ठ पुत्र। ३. अंगराज। राधेय। ४. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा। ५. नाव की पतवार। ६. चार मात्रावाले गण (पिंगल)।
मुहा०–कर्ण का पहरा=प्रभातकाल। दान-पुण्य का समय।
कर्णकंडू–संज्ञा पुं० कर्णरोग-विशेष। कान की खुजलाहट।
कर्णकटु–वि० १. जो कान को बुरा लगे। जो सुनने में कर्कश हो। २. काव्य का दोष-विशेष।
कर्णकुसुम–संज्ञा पुं० कान में पहनने का एक गहना। कर्णफूल। कनफूल।
कर्णकुहर–संज्ञा पुं० कान का छेद। गोलक।

कर्णगोचर—संज्ञा पुं० कान से सुनाई देना। किसी बात को सुन लेना। श्रवण-ज्ञान।
कर्णधार—संज्ञा पुं० १. नाविक। माँझी। मल्लाह। २. चढ़नदार।
कर्णनाद—संज्ञा पुं० कान में सुनाई पड़नेवाली गूँज। कान को बंद करने पर सुनाई पड़ने-वाला शब्द।
कर्णपाली—संज्ञा स्त्री० कान की लौंग। कान की बाली।
कर्णपिशाची—संज्ञा स्त्री० यक्षिणी-विशेष जो सिद्ध होने पर साधक को भूत, वर्त्तमान तथा भविष्य की बातें बताती है।
कर्णफूल—संज्ञा पुं० दे० 'कनफूल'।
कर्णभूषण—संज्ञा पुं० कान में पहनने का एक गहना। दे० कनफूल।
कर्णमल—संज्ञा पुं० कनपेड़ा रोग-विशेष। कान की जड़।
कर्णमूल—संज्ञा पुं० कान का मैल।
कर्णवेध—संज्ञा पुं० कनछेदन। कान छेदने का संस्कार।
कर्णवेष्टन—संज्ञा पुं० कुण्डल। कान में पहनने का आभूषण।
कर्णाकर्णी—संज्ञा स्त्री० कानाकानी। शोहरत। प्रसिद्धि।
कर्णाट—संज्ञा पुं० १. दक्षिण का देश-विशेष। २. संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत)।
कर्णाटक—संज्ञा पुं० दे० "कर्णाट"।
कर्णाटी—संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण जाति की एक रागिनी। २. कर्णाट देश की भाषा। ३. कर्णाट देश की स्त्री। ४. शब्दालंकार की वृत्ति-विशेष जिसमें कवर्ग के ही अक्षर आते हैं।
कर्णानुज—संज्ञा पुं० कर्ण का छोटा भाई। राजा युधिष्ठिर।
कर्णाभरण—संज्ञा पुं० कर्णालंकार। 'कनफूल'।
कर्णिका—संज्ञा स्त्री० १. कान का कर्णफूल। २. हाथ के बीच की उँगली। ३. कमल का छत्ता। ४. हाथी की सूँड़ का सिरा। ५. लेखनी। क़लम। ६. सफ़ेद गुलाब। ७. सेवती। ८. डंठल। ९. कार्निस (दीवाल की)। १०. खड़िया। ११. छोटी कूँची। ब्रुश। १२. कुटनी।
कर्णिकाचल—संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
कर्णिकार—संज्ञा पुं० कनकचंपा या कनियारी का वृक्ष।
कर्णी—संज्ञा पुं० तीर। बाण।
कर्णीरथ—संज्ञा पुं० पालकी।
कर्णीसुत—संज्ञा पुं० कंसराज। इस नाम का धूर्त्तविद्या तथा चौरशास्त्र का एक आचार्य।
कर्त्तन—संज्ञा पुं० कतरन, काटन-छाँटन। वि०१. काटना। कतरना। २. कातना (सूत इत्यादि)।
कर्त्तनी—संज्ञा स्त्री० कत्तरी। कतरनी। क़ैंची।
कर्त्तरिका—संज्ञा स्त्री० १. क़ैंची। २. काटने का अस्त्र-विशेष। छुरी।
कर्त्तरी—संज्ञा स्त्री० १. क़ैंची। कतरनी। २. काती (सुनारों की)। ३. ताल देने का बाजा विशेष। ४. छोटी तलवार। कटारी। ५. नृत्य-विशेष।
कर्त्तव्य—वि० करणीय। उपयुक्त। उचित। करने के योग्य।
संज्ञा पुं० करने योग्य कार्य्य। धर्म।
यौ०—कर्त्तव्याकर्त्तव्य—करने और न करने योग्य कर्म। उचित और अनुचित कर्म।
कर्त्तव्यता—संज्ञा स्त्री० १. उपयुक्तता। कर्त्तव्य का भाव।
यौ०—इतिकर्त्तव्यता=उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा। दौड़ की हद।
कर्त्तव्यमूढ़—वि० १. जो यह न समझे कि क्या करना चाहिए। २. भौंचक्का।
कर्त्ता—संज्ञा पुं० (स्त्री० कर्त्री) १. जो करे। करनेवाला। काम करनेवाला। २. बनाने या रचनेवाला। ३. प्रभु। स्वामी। ईश्वर। ४. पहला कारक जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है। ५. अधिकारी। अधिपति।
कर्त्तार—संज्ञा पुं० सृजनहार। करनेवाला। सृष्टिकर्ता। ईश्वर।
कर्त्तित—वि० १. काटा हुआ। छिन्न। खण्डित। २. काता हुआ सूत।

कर्त्तृक–वि० संपादित । किया हुआ । बनाया हुआ । साध्य ।
संज्ञा पुं० १. कारक । २. साधक । ३. कार्य ।

कर्त्तृकर्मभाव–संज्ञा पुं० कर्त्ता और कर्म का संबंध ।

कर्त्तृत्व–संज्ञा पुं० १. कर्त्ता का भाव या धर्म । २. प्रभुता । स्वामित्व । ३. अधिकार ।

कर्त्तृप्रधान–वि० जिस वाक्य में कर्त्ता क्रिया के अनुसार हो । जिस वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता हो ।

कर्त्तृवाचक या कर्त्तृवाची–वि० जो कर्त्ता का बोध करावे । (व्या०) कर्त्ता कारक को बतानेवाली क्रिया ।

कर्त्तृवाच्य क्रिया–संज्ञा स्त्री० वह क्रिया जो कर्त्ता का बोध प्रधान रूप से करावे; जैसे—खाना, पीना, मारना ।

कर्दम–संज्ञा पुं० १. कीच । कीचड़ । पाँक । चहला । २. पाप । ३. मांस । ४. छाया । ५. स्वायंभुव मन्वंतर के प्रजा-पति । एक तरह का चावल विशेष ।

कर्नेता–संज्ञा पुं० (देश०) रंग के अनुसार घोड़े का भेद-विशेष ।

कर्पट–संज्ञा पुं० लत्ता । गूदड़ । चेंप या टुकड़े लगकर सिला हुआ वस्त्र ।

कर्पटी–संज्ञा पुं० (स्त्री० कर्पटिनी) भिखारी । जो चिथड़े-गुदड़े पहनता है ।

कर्पर–संज्ञा पुं० १. खप्पर । २. खोपड़ी । कपाल । ३. शस्त्र-विशेष । ४. प्याला । ५. कछुवे की खोपड़ी । ६. गूलर । ७. चोर-विशेष । ८. कड़ाह ।

कर्परी–संज्ञा स्त्री० खपरिया ।

कर्पास–संज्ञा पुं० बाँगा । कपास । बिनौले सहित रुई ।

कर्पासी–संज्ञा पुं० १. कपड़ा । २. वस्त्र । ३. सूत या सूती कपड़ा ।

कर्पूर–संज्ञा पुं० कपूर । चंद्रमा ।

कर्बुर–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण । सोना । २. धतूरा । ३. पाप । ४. जल । ५. जड़हन धान । ६. राक्षस । ७. कचूर ।
वि० चितकबरा । रंग-बिरंगा ।

कर्बुरा–संज्ञा स्त्री० वनतुलसी । कृष्ण तुलसी ।

कर्म–संज्ञा पुं० १. कार्य । क्रिया । वह जो किया जाय । काम । करनी । २. यज्ञ-याग आदि कर्म (मीमांसा) । ३. व्याकरण में दूसरा कारक । वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े । ४. वह कार्य या क्रिया जिसका करना कर्त्तव्य हो । जैसे—ब्राह्मणों के षट्कर्म । ५. प्रयोजन । ६. व्यवहार । ७. प्रारब्ध । भाग्य । ८. मृतक-संस्कार । क्रिया-कर्म । ९. लग्न से दशवाँ लग्न ।

कर्मकर–संज्ञा पुं० दे० "कर्मकार" । मज़दूर । भृत्य । नौकर । समस्त काम करनेवाला ।

कर्मकांड–संज्ञा पुं० १. यज्ञादि धर्म-संबंधी कृत्य । २. वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो । ३. संस्कार-विशेष ।

कर्मकांडी–संज्ञा पुं० जो धर्म-संबंधी काम करावे ।

कर्मकार–संज्ञा पुं० १. लोहार । सुनार । वर्णसंकर जाति । कमकर । २. जो लोहे या सोने का काम बनावे । ३. सेवक । नौकर । ४. बैल । ५. बेगार ।

कर्मकारक–संज्ञा पुं० दूसरा कारक । जिसको कर्ता के व्यापार से लाभ पहुँचे ।

कर्मक्षेत्र–संज्ञा पुं० १. काम करने की जगह । २. भारतवर्ष ।

कर्मचारी–संज्ञा पुं० १. जो काम करे । २. अधिकारी जिसके अधीन राज्य-प्रबंध या और कोई कार्य्य हो । अफ़सर ।

कर्मच्युत–वि० १. कर्मभ्रष्ट । २. पदच्युत ।

कर्मठ–वि० १. कार्यपटु । कर्मकुशल । २. कर्मनिष्ठ ।
संज्ञा पुं० कर्मकांडी । अग्निहोत्र, संध्या आदि नित्य-कर्मों को विधिपूर्वक करनेवाला व्यक्ति ।

कर्मणा–क्रि० वि० कर्म-द्वारा । कर्म से ।

कर्मण्य–वि० उद्योगी । प्रयत्नशील । कर्मठ ।

कर्मण्यता–संज्ञा स्त्री० १. कार्य्य-कुशलता । २. तत्परता ।

कर्मधारय समास–संज्ञा पुं० समास-विशेष जिसमें विशेषण और विशेष्य का अधिकरण समान हो; जैसे—कचलहू ।

कर्मनाशा–संज्ञा स्त्री० नदी-विशेष जो चौसा के पास गंगा में मिलती है। कहते हैं कि उसके स्पर्श से मनुष्य के धर्म नष्ट हो जाते हैं।

कर्मनिपुणाई–संज्ञा स्त्री० कर्मकुशलता। काम करने की चतुराई।

कर्मनिष्ठ–वि० क्रियावान्। धार्मिक कर्म करनेवाला।

कर्मपथ–संज्ञा पुं० १. कर्ममार्ग। २. वेद की रीति। ३. अपना उद्देश्य।

कर्मप्रधान–संज्ञा पुं० जहाँ कर्म की प्रधानता हो।

कर्मफल–संज्ञा पुं० कर्मों का फल। कर्मविपाक। सुख-दुख। करनी का फल।

कर्मभू–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मक्षेत्र"।

कर्मभूमि–संज्ञा स्त्री० १. आर्यावर्त। भारतवर्ष। २. जहाँ कर्म करने से विशेष फल हो।

कर्मभोग–संज्ञा पुं० १. पूर्व जन्म के कर्मों का फल। २. कर्मफल। ३. प्रारब्ध का भोग।

कर्ममास–संज्ञा पुं० ३० सौर दिनों का महीना। सावन महीना।

कर्ममूल–संज्ञा पुं० १. कर्मों की जड़। २. कर्म की पहली अवस्था। ३. कुश।

कर्मयुग–संज्ञा पुं० कलियुग। चौथा युग। शेषयुग।

कर्मयोग–संज्ञा पुं० १. शास्त्र-विहित कर्म्म जिससे चित्त शुद्ध हो। २. फल की इच्छा न रखकर उचित कर्म करते रहना।

कर्मरंग–संज्ञा पुं० कमरख। फूल विशेष।

कर्मरेख–संज्ञा स्त्री० कर्म की रेखा। भाग्य का लिखा। प्रारब्ध का लेख।

कर्मवाचक या कर्मवाच्य क्रिया–संज्ञा स्त्री० कर्मप्रधान क्रिया।

कर्मवाद–संज्ञा पुं० १. कर्मयोग। २. मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान है।

कर्मवादी–संज्ञा पुं० मीमांसक। कर्मकांड को समझनेवाला।

२–वि० कर्म को ही सब कुछ माननेवाला। कर्मनिष्ठ।

कर्मविपाक–संज्ञा पुं० १. दुख-सुख। पूर्व जन्म के किए हुए कर्मों का फल। २. कर्मफल बतानेवाले एक ग्रंथ का नाम।

कर्मशील–संज्ञा पुं० १. कर्तव्य समझकर काम करनेवाला। कर्मवान्। २. उद्योगी। यत्नवान्। परिश्रमी। ३. उत्साही।

कर्मशूर–संज्ञा पुं० उद्योगी। कर्मठ। कर्मनिपुण। वह जो साहस और दृढ़ता के साथ कर्म करे।

कर्मसंन्यास–संज्ञा पुं० १. निष्काम कर्म का व्रत। २. कर्म का त्याग। ३. कर्म के फल का त्याग।

कर्मसंन्यासी–संज्ञा पुं० कर्मत्यागी।

कर्मसचिव–संज्ञा पुं० १. काम करने के योग्य। २. मंत्री। अमात्य। दीवान।

कर्मसमाधि–संज्ञा स्त्री० कामों से विरक्ति। किसी काम को न करना।

कर्मसाक्षी–वि० जिसके सम्मुख कोई काम हुआ हो।

संज्ञा पुं० प्राणियों के कर्मों को देखनेवाले देवता जैसे—सूर्य, चंद्र, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, काल, यम, आकाश।

कर्मसाधन–संज्ञा पुं० कार्य-संपादन। कर्म सिद्ध करने का उद्योग।

कर्मस्थान–संज्ञा पुं० ज्योतिष-मतानुसार जन्मकुंडली में दशम स्थान।

कर्महीन–वि० १. जिससे अच्छा काम न हो। २. भाग्यहीन। अभागा।

कर्मीधर्मी–वि० जपतपिया। भाग्यवान। स्वधर्मनिष्ठ। स्वकर्मनिरत।

कर्मार–संज्ञा पुं० १. कर्मकार। २. लौहकार। ३. वंश। ४. बाँस। ५. कमरख। ६. फल-विशेष।

कर्मिष्ठ–वि० १. काम करनेवाला। कर्मकांडी। कर्मप्रवीण। २. दे० "कर्मनिष्ठ"। क्रियावान्। वैदिक कर्म करनेवाला।

कर्मी–वि० [स्त्री० कर्मिणी] १. कर्मनिष्ठ। कर्म करनेवाला। कर्मसंसक्त। कामकाजू। २. फल की आकांक्षा से यज्ञादि कर्म करनेवाला। शुभकर्मयुक्त। ३. भाग्यवान्।

कर्मेन्द्रिय–संज्ञा स्त्री० अंग जिससे कर्म किया

जावे। ये पाँच हैं—हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।

कर्रा–वि० १. कड़ा। कठोर। २. कठिन। संज्ञा पुं० जुलाहों का यंत्र-विशेष।

कर्राना*†–क्रि० अ० १. कड़ा होना। कठोर होना। २. अड़ जाना।

कर्ष–संज्ञा पुं० १. सोलह माशे की माप विशेष। २. खिंचाव। घसीटना। ३. पुराना सिक्का। ४. जोताई (खेती)। ५. तत्त्व। जोश। ६. (लकीर आदि) खींचना। ७. विरोध।

कर्षक–संज्ञा पुं० १. खींचनेवाला। २. किसान।

कर्षण–संज्ञा पुं० [वि० कर्षित, कर्षक, कर्षणीय, कर्ष्य] १. खींचना। २. जोतना। ३. कृषिकर्म। ४. खरोंचकर लकीर डालना।

कर्षणी–संज्ञा स्त्री० खिरनी का वृक्ष। अँकुशी। वंशी। आकर्षणी। लगाम। रास।

कर्षणीय–वि० १. कर्षण करने योग्य। खींचने योग्य। २. जोतने योग्य खेत।

कर्षना*–क्रि० स० खींचना।

कर्षफला–संज्ञा स्त्री० आमलकी वृक्ष। बहेड़ा।

कर्षा–संज्ञा स्त्री० १. ईर्ष्या। २. उत्साह। ३. विरोध। ४. क्रोध।

कर्हिचित्–अव्य० १. किसी काल। किसी समय। कभी। २. अनियमित काल में, अनिर्दिष्ट काल में।

कलंक–संज्ञा पुं० १. अपयश। दुष्कीर्ति। अपवाद। २. चंद्रमा पर का काला दाग़। ३. कालिख। ४. लांछन। बदनामी। ५. अपराध। ऐब। दोष। ६. दाग़। धब्बा। चिह्न।

कलंकित–वि० दोषी। अपयशी। जिसे कलंक लगा हो। लांछित। चिह्नित।

कलंकिनी–संज्ञा स्त्री० दोषी, पापी या अपराधिनी स्त्री।

कलंकी–वि० [स्त्री० कलंकिनी] पापी। जिसे कलंक लगा हो। अपराधी। दोषी। ‡संज्ञा पुं० कलियुगी अवतार।

कलगा–संज्ञा पुं० [तु० कलगी] १. मरसे की जाति का पौधा विशेष। २. मुर्ग़केश। ३. जटाधारी।

कलंगा–संज्ञा पुं० दे० "कलगा"।

कलँगी–संज्ञा स्त्री० 'मुर्ग़केश'।

कलंज–संज्ञा पुं० १. तम्बाकू का पौधा। २. हिरन। ३. एक चिड़िया। ४. पक्षी का मांस। ५. दस पल का तौल।

कलंदर–संज्ञा पुं० १. मुसलमान साधु-विशेष जो संसार से विरक्त होते हैं। २. मदारी। रीछ और बंदर नचानेवाला। ३. दे० "कलंदरा"। ४. वर्णसंकर जाति-विशेष।

कलंदरा–संज्ञा पुं० १. गुद्दड़। २. रेशमी कपड़ा-विशेष।

कलंब–संज्ञा पुं० १. शर। २. कदंब। ३. शाक का डंठल।

कलंबिका–संज्ञा स्त्री० मन्या। गले के पीछे की नाड़ी।

कल–संज्ञा पुं० १. गंभीर और मधुर शब्द। अव्यक्त मधुर ध्वनि। जैसे—कोयल की कूक। २. वीर्य्य। ३. ज्ञान। ४. अंकुर
वि० १. गूंगा। २. धीमा। ३. निर्बल ४. अपक्व। ५. प्रिय। मधुर। ६. सुंदर
संज्ञा स्त्री० १. आरोग्य। तंदुरुस्ती २. सुख। आराम। चैन। ३. तुष्टि। संतोष
क्रि० वि० १. आनेवाला दिन। आगामी दूसरा दिन। २. दिन जो बीत गया हो। ३. भविष्य में।

मुहा०–कल से=१. चैन से। † २. धीरे धीरे। शनैः शनैः। कल का=थोड़े समय का। कल ऐंठना=किसी के चित्त को किसी ओर बदलना।

संज्ञा स्त्री० १. बल। ओर। पहलू। २. अवयव। अंग। पुरज़ा। ३. ढंग। युक्ति। ४. यंत्र। मशीन।

यौ०–कलदार=(यंत्र से बना हुआ) रुपया। ५. पेंच। पुर्ज़ा। ६. बंदूक़ का घोड़ा या चाप।

वि० "काला" शब्द का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—कलमुंहा।

क़लई–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. राँगा। २.

मुलम्मा। राँगे का पतला लेप। ३. लेप जो रंग चढ़ाने या चमकाने के लिए किसी वस्तु पर किया जाता है। ४. तड़क-भड़क। बाहरी चमक-दमक। ५. भेद। ६. सफ़ेदी। चूने का लेप।

मुहा०–क़लई खुलना=असली भेद खुलना। वास्तविक रूप का प्रकट होना। क़लई न लगना=युक्ति न चलना। क़लई खोलना=छिपा रहस्य या भेद प्रकट करना।

क़लईगर–संज्ञा पुं० बरतनों पर क़लई करनेवाला।

क़लईदार–वि० [फ़ा०] क़लईयुक्त। राँगे का लेप चढ़ा हुआ।

कलकंठ–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलकंठी] १. कोयल। कोकिल। २. हंस। ३. कबूतर। परेवा।
वि० जो मधुर शब्द बोलता हो। जिसका गला मीठा हो। मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलक–संज्ञा पुं० १. बेकली। बेचैनी। चिंता। घबराहट। २. दुःख। खेद। रंज।
संज्ञा पुं० दे० "कल्क"।

कलकना*–क्रि० अ० चीत्कार करना या चिल्लाना।

कलकल–संज्ञा पुं० तरंगों का धीमा शब्द। १. अस्फुट शब्द। झरने आदि का जल गिरने का शब्द। २. कोलाहल।
संज्ञा स्त्री० वाद-विवाद। झगड़ा।

कलकानि†–संज्ञा स्त्री० चिंता। कठिनाई। हैरानी। दुःख। परेशानी।

कलक्टर–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) ज़िले का सबसे बड़ा हाकिम। ज़िला-मजिस्ट्रेट।

कलकूजिका–वि० मीठे बोल बोलनेवाली। मधुर ध्वनि करनेवाली। कामोत्तेजक स्त्री।

कलगी–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. चूड़ा। सुंदर चिड़ियों के पंख जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं। २. मोती या सोने का सिर का गहना-विशेष। ३. पक्षियों के सिर पर की चोटी। ४. भवन या इमारत की चोटी। कँगूरा। ५. लावनी का ढंग विशेष।

कलचुरि–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का प्राचीन राजवंश विशेष।

कलछा–संज्ञा पुं० बड़ा चम्मच। बड़ी कलछी।

कलछी–संज्ञा स्त्री० चमचा। बड़ी डाँड़ी का चम्मच।

कलजहँवा–वि० कलूटा। कलछाँह।

कलजिन–वि० द्वेषी। पापी। अपराधी। स्त्री० कलंकिनी।

कलजिब्भा–वि० [स्त्री० कलजिब्भी] १. काली जीभवाला। २. जिसकी अशुभ वाणी प्रायः ठीक निकले।

कलजीहा–वि० दे० "कलजिब्भा"।

कलझँवाँ–वि० साँवला। काला।

कलत्र–संज्ञा पुं० १. भार्या। स्त्री। पत्नी। २. नितंब। ३. क़िला। दुर्ग।

कलत्रलाभ–संज्ञा पुं० पत्नीलाभ। भार्या-प्राप्ति। विवाह।

कलदार–वि० पेंचदार। जिसमें कल लगी हो।
संज्ञा पुं० सरकारी रुपया।

कलधूत–संज्ञा पुं० चाँदी।

कलधौत–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. चाँदी। ३. मधुर शब्द।

कलध्वनि–संज्ञा पुं० १. कबूतर। २. कोयल। ३. अव्यक्त मधुर शब्द।

कलन–संज्ञा पुं० [वि० कलित] १. बनाना। पैदा करना। २. धारण या ग्रहण करना। ३. संबंध। लगाव। ४. आचरण। ५. गणित की क्रिया। जैसे—संकलन, व्यवकलन। ६. ग्रहण। ७. कौर। ग्रास। ८. गर्भ की प्रथम स्थिति; स्त्री के गर्भ-धारण के बाद गर्भ का प्रथम रूप।

कलना–संज्ञा पुं० धारण या ग्रहण करना। विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना। गणना। विचार। लेनदेन। व्यवहार।
क्रि० कष्ट देना। दुख या पीड़ा पहुँचाना। कष्ट सहना। दुःख या पीड़ा सहना।

कलप–संज्ञा पुं० १. कलफ़। २. खिज़ाब। ३. दे० "कल्प"।

कलपतरु–दे० "कल्पतरु"।

कलपना–क्रि० अ० १. बिलखना। विलाप करना। *२. कल्पना करना।
क्रि० स० छाँटना। काटना।
*संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पना"।

कलपाना–क्रि० स० जी दुखाना। दुःखी करना। कुढ़ाना।

कलपित–वि० "कल्पित"। मिथ्या। बनावटी। कृत्रिम।

कलफ–संज्ञा पुं० १. माँड़ी। पतली लेई जिसे धोबी कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिए लगाते हैं। २. झाईं। चेहरे का काला धब्बा।

कलबल–संज्ञा पुं० छल-कपट। उपाय। युक्ति। दाँव-पेंच।
सं० पुं० [अनु०] शोर-गुल।
वि० अस्पष्ट (स्वर)।

कलबूत–संज्ञा पुं० १. साँचा। ढाँचा। २. फ़रमा। लकड़ी का वह ढाँचा जिस पर चढ़ाकर जूता सिया जाता है। ३. गुंबदनुमा ढाँचा जिस पर रखकर टोपी या पगड़ी आदि बनाई जाती है। गोलंबर। क़ालिब। ४. मेहराब के पक्का होने तक उसके सहारे के लिए भरी हुई ईंटें आदि; डाँट।

कलभ–संज्ञा पुं० करभ। १. हाथी या उसका बच्चा। २. ऊँट का बच्चा। ३. धतूरा।

क़लम–संज्ञा पुं० स्त्री० [अ०] कलम। १. लेखनी। अग्रभाग में बारीक कटा हुआ लकड़ी का टुकड़ा जिसे स्याही में डुबाकर लिखते हैं। २. पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में लगाने के लिए काटी जाय। ३. साठी धान। जड़हन धान। ४. कनपटियों के पास के बाल। ५. चित्र बनाने या रंग भरने की बालों की कूची। ६. शीशे का लंबा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ७. रवा। शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा लंबा टुकड़ा। ८. वह अस्त्र जिससे महीन चीज़ काटी, खोदी या नक़ाशी जाय।
मुहा०–क़लम चलना=लिखाई होना। क़लम चलाना=लिखना। क़लम तोड़ना=अनूठी उक्ति लिखना। लिखने की हद कर देना। क़लम करना=काटना-छाँटना।

क़लम-क़साई–संज्ञा पुं० थोड़ा लिख-पढ़कर लोगों को हानि पहुँचानेवाला।

क़लमकार–संज्ञा पुं० चित्रकार। रंग भरनेवाला। क़लम की दस्तकारी करनेवाला।

क़लमकारी–संज्ञा स्त्री० वह काम जो क़लम से किया जावे। जैसे—नक़्क़ाशी।

कलमख*–संज्ञा पुं० दे० "कल्मष"।

क़लमतराश–संज्ञा पुं० चाकू। क़लम बनाने की छुरी।

क़लमदान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] क़लम, दावात आदि रखने का डिब्बा-विशेष।

कलमना*–क्रि० स० दो टुकड़े करना। काटना।

कलमलना या कलमलाना*–क्रि० अ० १. कुलबुलाना। दबने के कारण अंगों का हिलना-डोलना। छटपटाना। २. चंचलता प्रकट करना।

कलमा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वाक्य। २. बात। ३. मुसलमानी धर्म का मूल मंत्र वाक्य।
मुहा०–कलमा पढ़ना=१. मुसलमान होना। २. याद करना। ३. भक्त होना।

कलमी–वि० [फ़ा०] १. लिखित। लिखा हुआ। लिपिबद्ध। २. जिसमें क़लम या रवा हो। जैसे, क़लमी शोरा। ३. जो क़लम लगाने से उत्पन्न हुआ हो। जैसे, क़लमी आम।

कलमुँहा–वि० १. कलंकित। दोषी। लांछित। २. काले मुँहवाला। ३. अभागा। (गाली)

कलरव–संज्ञा पुं० १. मधुर शब्द। २. जनसमूह का शब्द। ३. कोकिल। ४. कबूतर।

कलल–संज्ञा पुं० गर्भाशय में गर्भ की अवस्था। गर्भ को आच्छादित करनेवाला चर्म। जरायु।

कलवरिया–संज्ञा स्त्री० मद्य की दूकान। कलवार की दूकान।

कलवार–संज्ञा पुं० शराब बनाने और बेचने-

वाली एक जाति । शुण्डी । कलाल । कलार ।

कलविंक—संज्ञा पुं० १. चटक । गौरैया । दाग, धब्बा । २. सफ़ेद चँवर । ३. तरबूज़ ।

कलश—संज्ञा पुं० १. गगरा । घड़ा । २. मंदिरों या मकानों पर का कँगूरा । ३. मंदिर आदि का शिखर । ४. द्रोण या ८ सेर के बराबर का एक नाप । ५. सिरा । चोटी । ६. प्रधान अंग । ७. उत्कृष्ट, जैसे—रघुकुल-कलश । ८. मंथन-पात्र । मथानी ।

कलशी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा कलसा । गगरी । २. मंदिर का छोटा कँगूरा ।

कलस—संज्ञा पुं० १. दे० "कलश" । २. परिमाण-विशेष । ३. मंदिर आदि का कँगूरा ।

कलसा—संज्ञा पुं० १. घड़ा । पानी रखने का बरतन । गगरा । २. चूड़ा । मंदिर का शिखर ।

कलसी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा घड़ा या गगरा । २. छोटा शिखर । छोटा कँगूरा ।

कलहंतरित, कलहंतरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "कलहांतरिता" । वह नायिका जो पति से झगड़ा या उसका अनादर कर पछतावे ।

कलहंस—संज्ञा पुं० १. राजहंस । २. हंस । ३. परमात्मा । ४. श्रेष्ठ राजा । ५. ब्रह्मा । ६. वर्णवृत्त-विशेष । ७. क्षत्रियों की शाखा-विशेष ।

कलह—संज्ञा पुं० [वि० कलहकारी, कलही] १. झगड़ा । विवाद । लड़ाई । द्वन्द्व । २. विरोध । ३. तलवार की म्यान । ४. रास्ता । ५. धोखा, छल । ६. घातक अस्त्रों के बिना युद्ध । ७. मारपीट ।

कलहकारी—वि० [स्त्री० कलहकारिणी] विवादी । झगड़ा करनेवाला ।

कलहप्रिय—संज्ञा पुं० देवर्षि नारद । वि० [स्त्री० कलहप्रिया] विवाद-प्रिय । जिसे लड़ाई भली लगे । झगड़ालू । लड़ाका ।

कलहांतरिता—संज्ञा स्त्री० नायक या पति का अपमान करके पीछे पश्चात्ताप करनेवाली स्त्री ।

कलहारा—वि० लड़ाका । कलहप्रिय । झगड़ालू ।

कलहारी*—वि० स्त्री० लड़ाकी । झगड़ालू । कलह करनेवाली । कर्कशा ।

कलही—वि० [स्त्री० कलहिनी] १. नखरा करनेवाली स्त्री । २. झगड़ालू । लड़ाका ।

कलाँ—वि० [फ़ा०] बड़ा । दीर्घाकार ।

कला—संज्ञा स्त्री० १. भाग । अंश । सोलहवाँ हिस्सा । २. सूर्य्य का बारहवाँ भाग । ३. चंद्रमा का सोलहवाँ भाग । ४. अग्नि-मंडल के दस भागों में से एक । ५. समय का एक विभाग जो १ मिनट ८ सेकेंड का होता है । ६. वृत्त का १८०० वाँ भाग । राशि-चक्र के एक अंश का ६०वाँ भाग । ७. राशि के तीसवें अंश का ६०वाँ भाग । ८. चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार शरीर की मांस, रक्त आदि सात धातुएँ । ९. छंदःशास्त्र या पिंगल में 'मात्रा' । १०. मनुष्य के शरीर के १६ आध्यात्मिक विभाग, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ, पाँच प्राण और मन । ११. किसी कार्य्य को भली भाँति करने का कौशल । गुण । दक्षता । हुनर । कामशास्त्र के अनुसार ६४ कलाएँ । १२. जीभ । जिह्वा । १३. व्याज, सूद । १४. मासिकधर्म, स्त्री का रज । १५. विभूति । १६. प्रभा । शोभा । छटा । १७. तेज । १८. खेल । कौतुक । लीला । †१९. छल । कपट । धोखा । २०. युक्ति । ढंग । २१. नटों की वह कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है । कलैया । ढेकली २२. यंत्र । पेंच । २३. वर्णवृत्त विशेष कोई भी ललित कला । २४. अज्ञान २५. धीमी और मीठी आवाज । २६. नाव

कलाई—संज्ञा स्त्री० १. मणिबंध । गट्टा प्रकोष्ठ । हाथ का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है । २. हाथी के गले में बाँधने का कलावा । ३. सूत का लच्छा । करछा । कुकरी ।

कलाकंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] खोए और मिसरी या शक्कर की बरफ़ी।
कलाकर–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. वृक्ष-विशेष।
कलाकार–संज्ञा पुं० कलापूर्ण कार्य करनेवाला जैसे चित्रकार तथा शिल्पकार आदि।
कलाकौशल–संज्ञा पुं० १. किसी कला की निपुणता। गुण। हुनर। दस्तकारी। कारीगरी। २. शिल्प।
कलादा*–संज्ञा पुं० कलावा। किलावा। हाथी की गर्दन पर महावत के बैठने का स्थान।
कलाधर–संज्ञा पुं० १. शशि। चंद्रमा। २. दंडक छंद का भेद। ३. शिव। ४. कलाविज्ञ।
कलाना–क्रि० स० भूनना। अकोरना।
कलानाथ–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. गन्धर्व विशेष।
कलानिधि–संज्ञा पुं० शशि। चंद्रमा। इंदु
कलाप–संज्ञा पुं० १. झुंड। समूह जैसे—क्रिया-कलाप। २. मोर की पूंछ ३. तूण। तरकश। ४. मुट्ठा। पूला ५. कमरबंद। पेटी। करधनी। ६. चंद्रमा ७. कलावा। ८. चतुर व्यक्ति। ९. हाथी के गले की रस्सी। १०. कातंत्र व्याकरण ११. व्यापार। १२. आभरण। भूषण १३. ग्राम-विशेष। १४. वेद-शाखा १५. अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र। १६. रागिनी-विशेष।
कलापक–संज्ञा पुं० १. समूह। मुट्ठा। २. पूला। ३. हाथी के गले का रस्सा। ४ मयूर। ५. चार श्लोकों का समूह। ६. कविताओं के अर्थ करने की रीति। ७. मोती की माला। ८. तिलक। संप्रदाय का ज्ञापक तिलक।
कलापट्टी–संज्ञा स्त्री० जहाज़ों की पटरियों की संधियों को सन आदि से बन्द करने की क्रिया।
कलापिन–संज्ञा स्त्री० १. मोरनी। २. रात्रि। ३. नागरमोथा।
कलापिनी–संज्ञा स्त्री० १. रात। रात्रि। २. मोरनी। मयूरी। ३. चंद्रमा।
कलापी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलापिनी] १. मोर, मयूर। २. कोकिल। ३. बरगद का वृक्ष। ४. वैशम्पायन का एक शिष्य। वि० १. तूणीर बाँधे हुए। तरकशबंद। २. झुंड में रहनेवाला।
कलापूर्ण–संज्ञा पुं० पूर्णिमा का चन्द्रमा। प्रसिद्ध शिल्पी।
कलाबत्तू–संज्ञा पुं० [तु० कलाबतून] [वि० कलाबतूनी] १. सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय। २. सोने-चाँदी के कलाबत्तू का बना हुआ पतला फ़ीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है
कलाबाज़–वि० नट। कलाबाज़ी करनेवाला
कलाबाज़ी–संज्ञा स्त्री० कलैया। सिर नीचे करके उलट जाना। ढेकली
कलाभृत्–संज्ञा पुं० शशि। चंद्रमा
कलाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. उक्ति। वाक्य २. कथन। बातचीत। ३. प्रतिज्ञा। वादा ४. आपत्ति। एतराज़।
कलामुख–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
कलार–संज्ञा पुं० दे० "कलवार"। शुण्डी।
कलारिन–संज्ञा स्त्री० कलवार की स्त्री। कलवारिन।
कलाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलाली] कलार। कलवार। मद्य बेचनेवाला।
कलावंत–संज्ञा पुं० १. नट। कलाबाज़ी करनेवाला। २. गवैया। संगीत में निपुण।
वि० कलाओं को जाननवाला। कथक।
कलावती–वि० १. जिसमें कला हो। २. शोभायुक्त। छविवाली।
कलावा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलाई] १. सूत का लच्छा (जो तकले पर लिपटा रहता है)। २. लाल पीले सूत के तागों का लच्छा जिसे विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ या घड़ों पर बाँधते हैं। ३. हाथी की गरदन।
कलावान्—वि० [स्त्री० कलावती] गुणवान्। कला-कुशल। चतुर।

कलिंग–संज्ञा पुं० १. कुलंग। मटमैले रंग का पक्षी-विशेष। २. कुटज। कुरैया। ३. सिरिस का पेड़। ४. इंद्रजौ। ५. तरबूज़। ६. पाकर का पेड़। ७. कलिंगड़ा राग। ८. समुद्रतटस्थ देश-विशेष जिसका विस्तार गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था।
वि० कलिंग देश का।

कलिंगड़ा–संज्ञा पुं० १. राग-विशेष जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है। २. कलिंग देश का वासी।

कलिंजर–संज्ञा पुं० दे० "कालिंजर"। एक प्राचीन पर्वत जो बुन्देलखंड के अन्तर्गत करवी के पास कालिंजर नाम से प्रसिद्ध है।

कलिंद–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. बहेड़ा। ३. पर्वत-विशेष जिससे यमुना नदी निकली है।

कलिंदजा–संज्ञा स्त्री० यमुना नदी।

कलिंदी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कालिंदी"। यमुना।

कलि–संज्ञा पुं० १. बहेड़े का बीज या फल। २. विवाद। झगड़ा। कलह। ३. पाप। ४. कलियुग। ५. छंद में टगण का भेद-विशेष। ६. वाण। तीर। ७. वीर। सूरमा। ८. क्लेश। दुःख। ९. युद्ध। संग्राम। १०. शिव का नाम।
वि० काला। श्याम।

कलिका–संज्ञा स्त्री० १. कली। फूल जो खिला न हो। २. वीणा का मूल, नीचे का भाग। ३. कोंपल। ४. प्राचीन काल का बाजा। छंद-विशेष। ५. कलौंजी। ६. मुहूर्त्त। ७. अंश।

कलिकाल–संज्ञा पुं० कलियुग।

कलित–वि० १. विभक्त। वियुक्त। पृथक्कृत। २. ज्ञात। विदित। ख्यात। ३. अव्यक्त रूप से उक्त। ४. गृहीत। प्राप्त। ५. सजाया हुआ। रचित। बनाया हुआ। सुसज्जित। ६. सुंदर। रुचिर। मनोहर। ७. मधुर।

कलिमल–संज्ञा पुं० कलिकाल के कर्म। पाप। कलुष।

कलिमल सरि–संज्ञा स्त्री० कर्मनासा नदी।

कलिया–संज्ञा पुं० मांस जो भूनकर रसेदार बनाया जाय।

कलियाना–क्रि० अ० १. फूलना। कली लेना। कलियों से युक्त होना। २. चिड़ियों के नये पंख निकलना।

कलियारी–संज्ञा स्त्री० पौधा-विशेष जिसकी जड़ में विष रहता है।

कलियुग–संज्ञा पुं० वर्त्तमान युग। कलिकाल।

कलियुगी–वि० १. कुप्रवृत्तिवाला। दुराचारी। बुरा। २. कलियुग का।

कलियुगाद्या–संज्ञा स्त्री० माघ की पूर्णिमा जिससे कलियुग का आरंभ हुआ था।

कलिल–संज्ञा पुं० पंक। कीचड़। चहला। दलदल।
वि० भरा। ढका। मिला हुआ। मिश्रित। दुर्गम। अभेद्य। घना। ढेर।

कलिवर्ज्य–वि० वह कृत्य जिसे करना कलियुग में वर्जित हो। जैसे अश्वमेध या देवर से पुत्रोत्पत्ति कराना।

कलिहारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी"।

कली–संज्ञा स्त्री० १. बोंड़ी। बिना खिला फूल। कलिका। मुँह-बँधा फूल। २. वह कपड़ा जो कुर्ते, अँगरखे आदि में लगाकर कलीदार कुर्त्ता बनता है। ३. चिड़ियों का नया निकला हुआ पर। ४. हुक्के का नीचे का भाग।
संज्ञा स्त्री० पत्थर या सीप आदि का फुका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनता है। जैसे—कली का चूना।
मुहा०–दिल की कली खिलना=आनंदित होना। चित्त प्रसन्न होना।

कलींदा–संज्ञा पुं० तरबूज।

कलोट–*†वि० काला-कलूटा।

कलीरा–संज्ञा पुं० [देश०] कौड़ियों और छुहारों की माला, जो कुछ जातियों में विवाह आदि में दी जाती है।

क़लील–संज्ञा पुं० [अ०] कम। थोड़ा।

कलीसिया–संज्ञा पुं० [यू० इकलिसिया] ईसाइयों या यहूदियों की धर्ममंडली।

कलुवा बीर–संज्ञा पुं० एक निकृष्ट देवता

जिसकी दुहाई साबर मंत्रों में दी जाती है।

कलुष–संज्ञा पुं० [वि० कलुषित, कलुषी] १. एक तरह का सर्प। २. पाप। दोष। ३. मलिनता। मैल। ४. क्रोध।

वि० [स्त्री० कलुषा, कलुषी] १. मलिन। मैला। गँदला। २. अयोग्य। समताहीन। ३. पापी। दोषी। ४. निंदित। ५. कर्कश (जैसे शब्द)।

कलुषाई–संज्ञा स्त्री० १. चित्त का विकार। २. बुद्धि की मलिनता।

कलुषित–वि० १. दूषित। २. पातकी। ३. मलिन। मैला। ४. दुःखित। ५. पापी। ६. क्षुभित। ७. काला।

कलुषी–वि० १. पापिनी। दोषी। २. गंदी। मलिन। मैली।

वि० १. मैला। मलिन। गंदा। २. दोषी। पापी।

कलूटा–वि० [स्त्री० कलूटी] १. काला। काले रंग का। २. कुरूप।

कलेऊ–संज्ञा पुं० दे० "कलेवा"। प्रातःकाल का जलपान।

कलेजा–संज्ञा पुं० १. आँत-विशेष। प्राणियों का वह अवयव जो छाती के भीतर बाईं ओर होता है और जिससे नाड़ियों के सहारे शरीर में रक्त का संचार होता है। २. हृदय। दिल। ३. वक्षःस्थल। छाती। ४. उत्साह। ५. हृदय की दृढ़ता। ६. साहस। जीवट। हिम्मत।

मुहा०–१ कलेजा उलटना=१.उलटी करते करते जी घबराना। २. होश का न रहना। कलेजा काँपना=अनुताप करना। दूसरे की उन्नति न सहना। डर लगना। जी दहलना। ३. कलेजा जलाना=दुःख देना। ४. कलेजा टूक टूक होना=शोक से हृदय विदीर्ण होना। ५. कलेजा ठंढा करना=संतोष देना। तुष्ट करना। अभिलाषा की पूर्ति करना। ६.कलेजा थामकर बैठ या रह जाना=शोक के वेग को दबाकर रह जाना। मन मसोसकर रह जाना। ७. कलेजा धक धक करना=भय से घबड़ाना ८. कलेजा धड़कना=१. भय से व्याकुल होना। डर से जी काँपना। २. चित्त में चिंता होना। जी में खटका होना। ९. कलेजा निकालकर रखना=सर्वस्व दे देना। अत्यंत प्रिय वस्तु समर्पण करना। १०. कलेजा पक जाना=दुःख सहते सहते तंग आ जाना। ११. पत्थर का कलेजा=१. दुःख सहने में समर्थ हृदय। कड़ा जी। २. कठोर चित्त। १२. कलेजा पत्थर का करना=भारी दुःख झेलने के लिए चित्त को दबाना।१३. कलेजा फटना=किसी के दुःख को देखकर मन में अत्यंत कष्ट होना। अधिक दुःख से व्याकुल होना। १४. कलेजा बाँसों, बल्लियों या हाथों उछलना=१. आनंद से चित्त प्रफुल्लित होना। २. भय या आशंका से जी धक-धक करना। १५. कलेजा बैठ जाना=हतोत्साह होना। १६. कलेजा मुँह को या मुँह तक आना=१. व्याकुलता होना। जी घबराना। जी उकताना। २. संताप या दुख होना। दुःख से घबड़ाना। १७. कलेजा हिलना=अत्यंत भय होना। कलेजा काँपना। १८. कलेजे पर साँप लोटना=किसी बात के स्मरण से एकबारगी शोक छा जाना। अनुतप्त होना। १९. कलेजे से लगाना=आलिंगन करना। छाती या गले से लगाना। अत्यंत प्रेम करना। २०. कलेजे पर पत्थर रखना=दुःख को जैसे तैसे सह लेना। २१. कलेजे में डाल रखना=बहुत चाहना। किसी बात को छिपा रखना। २२. कलेजा होना=साहस होना; धीरता या साहस का आधिक्य होना। जैसे, तुम्हारा ही कलेजा है कि सह लिया।

कलेजी–संज्ञा स्त्री० कलेजे का मांस (बकरे आदि का।)

कलेवर–संज्ञा पुं० १. देह। चोला। शरीर। अंग। काया। २. ढाँचा। ३. मोटा, स्वस्थ होना। ४. मूर्त्ति पर के सिंदूर आदि के लेप का पुराना चप्पड़ उतरना।

मुहा०–कलेवर बदलना=१. एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना। २. रूप-

परिवर्तन। ३. जगन्नाथजी की पुरानी मूर्त्ति के स्थान पर नई मूर्त्ति का स्थापित होना।

कलेवा—संज्ञा पुं० १. प्रातःकाल का जलपान। हलका भोजन जो सबेरे बासी मुँह किया जाता है। नहारी। २. पाथेय। संबल। वह भोजन जो यात्री घर से चलते समय बाँध लेते हैं। ३. विवाह की रीति-विशेष जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है। ४. खिचड़ी। ५. बासी।

मुहा०—कलेवा करना = खा जाना। निगल जाना। मार डालना।

कलेस*—संज्ञा पुं० दे० "क्लेश"। दुख। कष्ट। आपत्ति। विवाद।

कलैया—संज्ञा स्त्री० कलाबाजी। सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया।

कलोर—संज्ञा स्त्री० ओसर। जवान गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।

कलोल—संज्ञा पुं० कल्लोल। विनोद। खेल-कूद। आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। केलि।

कलोलना*—क्रि० अ० विनोद करना। क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

कलोलिनी—संज्ञा स्त्री० १. "कल्लोलिनी"। २. प्रवाह से बहनेवाली नदी। ३. तरंगिणी। ४. खेलनेवाली नदी।

कलौंजी—संज्ञा स्त्री० १. पौधा-विशेष। २. इसकी फलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम में आते हैं। मँगरैला। ३. तरकारी-विशेष। मरगल। ४. औषध-विशेष। ५. कच्चे आम की भाजी।

कलौंस—वि० श्यामता या कालापन लिये हुए। सियाही-मायल।

संज्ञा पुं० १. कालापन। २. कलंक।

कल्क—संज्ञा पुं० १. बुकनी। चूर्ण। २. गूदा। ३. पीठी। ४. पाखंड। दंभ। ५. मूर्खता। शठता। ६. कीट। ७. पाप। ८. मल। विष्ठा। ९. अवलेह। गीली या भिगोई हुई ओषधियों को पीसकर बनाई हुई चटनी। १०. बहेड़ा। ११. कान का मैल।

वि० पापी। बुरा।

कल्कफल—संज्ञा पुं० अनार।

कल्कि या कल्की—संज्ञा पुं० विष्णु का दसवाँ अवतार, जो संभल (मुरादाबाद) में किसी कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।

वि० पापी। अपराधी।

कल्प—संज्ञा पुं० १. उपाय। विधान। विधि। २. कृत्य। जैसे, प्रथम कल्प। ३. वेद के प्रधान छः अंगों में से एक जिसमें यज्ञादि के करने का विधान है। कर्मकांड। ४. प्रातःकाल। ५. रोग दूर करने का उपाय या युक्ति। जैसे, केश-कल्प, काया-कल्प (वैद्यक)। ६. विभाग। प्रकरण। ७. काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२००००००० वर्ष होते हैं। ८. प्रलय। ९. अभिप्राय। १०. शास्त्र-विशेष।

वि० समान। तुल्य। बराबर। जैसे, देवकल्प। योग्य। उचित।

कल्पक—संज्ञा पुं० १. कचूर। २. नाई।

वि० १. रचनेवाला। २. कल्पना करनेवाला। तर्कशास्त्री। ३. काटनेवाला।

कल्पकार—संज्ञा पुं० धर्म-शास्त्र का रचयिता।

कल्पतरु—संज्ञा पुं० १. कल्पवृक्ष। देवतरु। २. दाता।

कल्पद्रुम—संज्ञा पुं० १. कल्पवृक्ष। २. अभिलषित फल देनेवाला।

कल्पना—संज्ञा स्त्री० १. सजावट। रचना। बनावट। २. शक्ति-विशेष जो मन में ऐसी बातें या दृश्य उपस्थित करे जिन्हें नेत्रों से न देखा हो। उद्भावना। अनुमान। ३. अध्यारोप। किसी वस्तु में अन्य वस्तु का आरोप। ४. मान लेना। ५. सोची हुई या मनगढ़ंत बात। ६. आकार, शक्ल।

कल्पपादप—संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।

कल्पलता—संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पवृक्ष"।

कल्पवास—संज्ञा पुं० माघ मास भर गंगा या किसी पवित्र नदी के तट पर धर्माचरण के लिए रहना।

कल्पवृक्ष–संज्ञा पुं० १. 'कल्पतरु'। देवलोक का एक वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है। २. गोरख इमली। सब पेड़ों से बड़ा और दीर्घजीवी एक वृक्ष।

कल्पसूत्र–संज्ञा पुं० १. वैदिक कर्मकांड का ग्रंथ। वे ग्रंथ जिनमें यज्ञादि का विधान हो।

कल्पांत–संज्ञा पुं० युगांत। प्रलय। संहार-काल। ब्रह्मा का दिनावसान।

कल्पांत स्थायी–वि० नित्य। स्थायी। अक्षय।

कल्पित–वि० १. रचित। जिसकी कल्पना की गई हो। २. मनमाना। मिथ्या प्रकाशित। मनगढ़ंत। ३. आरोपित। फ़र्ज़ी। ४. सुसज्जित। ५. नियमित। ६. युद्ध के लिए सज्जित हाथी। ७. बनावटी। कृत्रिम। नकली।

कल्मष–संज्ञा पुं० १. अधर्म। पाप। २. मैल। मल। † ३. अपराध। ४. मवाद। पीब। ५. नरक-विशेष।
वि० काले धब्बोंवाला।

कल्माष–वि० १. चितकबरा। रंगबिरंगा। २. चित्रवर्ण। ३. काला। ४. एक तरह का चावल। ५. मृग-विशेष। ६. धव्वा, दाग।

कल्य–संज्ञा पुं० १. प्रातःकाल। सबेरा। भोर। २. मधु। शराब। ३. आनेवाला या व्यतीत दिन।
वि० स्वस्थ। रोग-हीन। चतुर। तत्पर। तैयार। उचित। उपदेशयुक्त। बहरा एवं गूंगा व्यक्ति।

कल्यपाल–संज्ञा पुं० कलवार। शराब बेचने या बनानेवाला।

कल्या–संज्ञा स्त्री० कलोर। बरदाने के योग्य बछिया। प्रशंसा। शुभेच्छा। मद्य-विशेष।

कल्याण–संज्ञा पुं० स्वर्ग। १. कुशल। मंगल। शुभ। भलाई। २. स्वर्ण। सोना। ३. राग-विशेष।
वि० [स्त्री० कल्याणी] उत्तम। सुंदर। लाभकर। भला। अच्छा।

कल्याणभार्य–संज्ञा पुं० वह पुरुष जो बार बार विवाह करे किंतु उसकी स्त्री मर मर,जाय।

कल्याणवर्मन्–संज्ञा पुं० वराहमिहिर के समकालीन एक प्रसिद्ध ज्योतिषी।

कल्याणी–वि० १. जो कल्याण करे। २. सुंदरी।
संज्ञा स्त्री० १. गाय। २. माषपर्णी ३. एक रागिनी।

कल्यान*†–संज्ञा पुं० दे० "कल्याण"।

कल्ल–वि० बधिर। बहिरा।

कल्लर–संज्ञा पुं० १. रेह। २. नोनी मिट्टी। ३. ऊसर। बंजर। ४. क्षार।

कल्लाँच–वि० [तु० क़ल्लाच] १. बदमाश। लुच्चा। गुंडा। शोहदा। २. दरिद्र। निर्धन। कंगाल।

कल्ला–संज्ञा पुं० १. किल्ला। अंकुर। २. नवीन हरी टहनी। ३. लंप का सिरा जिसमें बत्ती जलती है। बर्नर।
संज्ञा पुं० [फा०] १. जबड़ा। गाल के भीतर का अंश। २. घेटुआ। जबड़े के नीचे गले तक का स्थान।

कल्लातोड़–वि० १. प्रबल। मुँहतोड़। २. बराबर का। जोड़-तोड़ का।

कल्लादराज़–वि० [फा०] [संज्ञा कल्लादराज़ी] जो बढ़-बढ़कर बातें करे। मुँहजोर।

कल्लाना– क्रि० अ० जलन पड़ना। त्वचा के ऊपर ही ऊपर जलन के साथ पीड़ा का अनुभव।
संज्ञा स्त्री० जलन। दहन।

कल्लापरवर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का भुंजा चबेना।

कल्लोल–संज्ञा पुं० १. तरंग। पानी की बड़ी लहर। २. अतिहर्ष की हिलोर। ३. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद। ४. शत्रु।
वि० शत्रुभाववाला।

कल्लोलिनी–संज्ञा स्त्री० धारा के साथ बहने वाली नदी। धारा। नदी।

कल्ह†–क्रि० वि० दे० "कल"।

कल्हण–संज्ञा पुं० कश्मीरनिवासी एक संस्कृत कवि जिन्होंने राजतरंगिणी की रचना की है। इनका समय ११४८ ई० निश्चित किया गया है।

कलहरना*–क्रि० अ० भुनना। कड़ाही में तला जाना।

कलहारना†–क्रि० स० कड़ाही में तलना या भूनना। क्रि० अ० १. चिल्लाना। २. दु:ख से कराहना।

कवच–संज्ञा पुं० [वि० कवची] १. लोहे की कड़ियों के जाल का निर्मित पहनावा जिसे योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे। जिरह-बखतर। सन्नाह। सँजोया। २. आवरण। ३. छाल। छिलका। ४. तंत्रशास्त्र का अंग-विशेष जिसमें मंत्रों द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा की जाती है। ५. रक्षा-मंत्र लिखा हुआ तावीज विशेष। ६. डंका। बड़ा नगाड़ा जो युद्ध में बजता है। पटह। ७. वर्म।

कवन–अव्य० कौन।

कवर–संज्ञा पुं० कौर। ग्रास। निवाला।

संज्ञा पुं० [स्त्री० कवरी] १. गुच्छा। २. केशपाश।

कवरी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के सिर की चोटी। जूड़ा।

कवर्ग–संज्ञा पुं० [वि० कवर्गीय] क से ङ तक के अक्षर।

कवल–संज्ञा पुं० १. कौर। ग्रास। गस्सा। निवाला। उतनी वस्तु जितनी एक बार में खाने या पीने के लिए मुँह में ली जाय। २. कुल्ली।

संज्ञा पुं० [स्त्री० कवली] १. पक्षी-विशेष। २. घोड़े की जाति-विशेष।

कवलित–वि० एक कौर में खाया या पिया हुआ। ग्रस्त। खाया हुआ। भक्षित।

मुहा०–कालकवलित=मृत। मर गया।

कवलीकृत–वि० अधीनीकृत। ग्रस्त। भुक्त।

कवष–संज्ञा पुं० १. ढाल। २. एक ऋषि का नाम।

क़वाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. शीरा। चाशनी। २. पकाकर शहद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस। किवाम।

क़वायद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. व्यवस्था। नियम। २. व्याकरण। ३. सेना के युद्ध करने के नियम। ४. सैनिकों के युद्ध-नियमों का अभ्यास। परेड।

कवि–संज्ञा पुं० १ काव्य की रचना करनेवाला। जो कविता करे। २. ब्रह्मा। ३. शुक्राचार्य। ४. सूर्य्य। ५. ऋषि। ६. बुद्धिमान्। प्रज्ञायुक्त। विचारक। ७. अग्नि। ८. गायक। ९. वरुण। १०. सोम। ११. चतुर योद्धा। १२. लगाम। १३. पंडित। १४. उल्लू।

कविक–संज्ञा स्त्री० लगाम। केवड़ा।

कविका–संज्ञा स्त्री० १. लगाम। २. केवड़ा। ३. कवई मछली।

कविता–संज्ञा स्त्री० दूसरे के सुख-दु:ख का पाठक को अनुभव करा देनेवाला पद्य या गद्य। काव्य। कवित्त। श्लोक। छंद। पद्य।

कविताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "कविता"। पद्य-रचना। काव्य करने का गुण। कवित्व।

कवित्त–संज्ञा पुं० १. काव्य। कविता। २. वृत्त-विशेष जिसमें ३१ अक्षर होते हैं।

कवित्व–संज्ञा पुं० १. कविता करने की शक्ति। २. काव्य का गुण।

कविनासा*–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।

कविराज–संज्ञा पुं० १. भाट। २. श्रेष्ठ कवि। ३. बंगाली वैद्यों की उपाधि।

कविराय–संज्ञा पुं० दे० "कविराज"।

कविलास*–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग २. कैलास।

कविशेखर–वि० महान् कवि।

कवेला–संज्ञा पुं० कौए का बच्चा।

कव्य–संज्ञा पुं० पिंड, पितृ-यज्ञादि के योग्य अन्न या द्रव्य।

वि० बुद्धिमान्।

कव्यवाह–संज्ञा पुं० अग्नि-विशेष जिसमें पितृयज्ञ की आहुति दी जाती है।

कश–संज्ञा पुं० [स्त्री० कशा] चाबुक।

संज्ञा० पुं० [फा०] १. आकर्षण। खिंचाव। **यौ०**–कश-मकश। २. फूँक। हुक्के या चिलम का दम।

कशकोल–संज्ञा पुं० दे० "कजकोल"।

कशमकश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. धक्कम-धक्का। भीड़। २. ऐंचातानी। खींचा-

तानी । ३. आगा-पीछा । ४. सोच-विचार।

कशा—संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष । कचनार।
संज्ञा स्त्री० १. रस्सी । २. कोड़ा। चाबुक। ३. लगाम। ४. मुख, चेहरा।

कशाघात—संज्ञा पुं० चाबुक का प्रहार । कोड़ा मारना।

कशार्ह—वि० कशाघात के योग्य । कोड़ा मारने के उपयुक्त । अपराधी । दोषी ।

कशिपु—संज्ञा पुं० १. तकिया। २. बिछौना। ३. अन्न । ४. भात । ५. आसन । ६. तकिये की खोली। ७. वस्त्र।

कशिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] खिंचाव । आकर्षण।

कशीदा—संज्ञा पुं० [फा०] कपड़े आदि पर बेल-बूटे।

कशेरू—संज्ञा पुं० कंद-विशेष। तृणकंद।

कश्चित्—वि० कोई । कोई-एक । सर्व० कोई (व्यक्ति)।

कश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नाव। नौका। २. पान, मिठाई या वायना बाँटने का बर्तन विशेष। ३. शतरंज का एक मोहरा।

कश्मल—संज्ञा पुं० (स्त्री० कश्मला) १. मन की कमजोरी । पाप । मोह ।
वि० पापी । अपवित्र । मलिन ।

कश्मीर—संज्ञा पुं० 'काश्मीर'। पंजाब के उत्तर का पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य्य और उर्वरता के लिए प्रसिद्ध है।

कश्मीरज—संज्ञा पुं० कश्मीर में उत्पन्न केसर। कुंकुम।

कश्मीरी—वि० १. कश्मीर में उत्पन्न। २. संज्ञा स्त्री० कश्मीर की भाषा।
संज्ञा पुं० [स्त्री० कश्मीरिन] १. कश्मीर का निवासी। २. कश्मीर का घोड़ा।

कश्य—वि० १. कोड़ा मारने योग्य । २. दमन करने योग्य । ३. घोड़े का तंग । ४. शराब।

कश्यप—संज्ञा पुं० १. वैदिककालीन ऋषि-विशेष २. एक प्रजापति। ३. कच्छप। कछुआ। मत्स्य-विशेष । ४. देवता। ५. दानव। ६. सप्तर्षि मंडल का एक तारा।

कश्यपमेरु—संज्ञा पुं०—पर्वत और देश विशेष। काश्मीर।

कष—संज्ञा पुं० १. कसौटी (पत्थर)। २. सान। ३. जाँच । परीक्षा। चाबुक।

कषण—संज्ञा पुं० १. परख। परीक्षा। जाँच। २. खींचना । आकर्षण ३. तर्ज्जन।

कषा—संज्ञा स्त्री० दे० "कशा"। कोड़ा। चाबुक।

कषाय—वि० १. कसैला। बाकठ (छः रसों में से एक)। २. सुगंधित। ३. रँगा हुआ। रंगीन। ४. गेरू के रंग का। गैरिक।
संज्ञा पुं० १. कसैली वस्तु। २. क्वाथ। गोंद। ३. काढ़ा। गाढ़ा रस। ४. कलियुग। ५. लाल, ललौंहा। ६. सर्प-विशेष। ७. क्रोध। लोभ आदि विकार (जैन)।

कष्ट—संज्ञा पुं० १. विपद। क्लेश। पीड़ा। २. आपत्ति। संकट। मुसीबत। ३. कृच्छ्र। वि० १. बुरा। खराब। २. दूर की, सहज नहीं, जैसे कष्टकल्पना।

कष्टकर—वि० कष्टदायक। पीड़ा देनेवाला।

कष्टकल्पना—संज्ञा स्त्री० १. निष्प्रयोजन कल्पना। २. दुख की कल्पना करना। ३. बहुत खींच खाँच की और कठिनता से ठीक घटनेवाली युक्ति।

कष्टसाध्य—वि० कठिन। कठिनाई से होने वाला। कठिनता से अच्छा होनेवाला रोग (आयुर्वेद)।

कष्टित—वि० दुखित। पीड़ित। कष्टयुक्त।

कष्टी—संज्ञा स्त्री० प्रसव वेदना से दुखी स्त्री। पीड़ित। दुःखी।

कस—संज्ञा पुं० १. जाँच। परीक्षा। कसौटी। २. तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है।
संज्ञा पुं० १. बल। अधिकार। जोर। २. वश। काबू। ३. 'कसाव' का संक्षिप्त रूप ४. निकाला हुआ अर्क। ५. तत्त्व। सार वश में रखना। ६. अवरोध रोक। रुकावट।

मुहा०—कस का=जिस पर अपना वश हो कस में करना या रखना=अधीन रखना

*†–क्रि० वि० १. क्यों। २. कैसे। ३. किसलिए।

कसक–संज्ञा स्त्री० १. टीस। हलका या मीठा दर्द। पीड़ा। दुख। साल। २. वैर। बहुत दिन का मन में रखा हुआ द्वेष। ३. अभिलाषा। हौसला। अरमान। ४. सहानुभूति।

मुहा०–कसक निकालना=वैर का बदला लेना।

कसकना–क्रि० अ० पीड़ा होना। दर्द करना। सालना। टीसना।

कसकसा–वि० १. किरकिरापन। ककरीलापन। २. स्वादरहित।

कसकुट–संज्ञा पुं० मिश्रित धातु-विशेष जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग मिलाकर बनाई जाती है। काँसा। भरत।

कसन–संज्ञा स्त्री० १. कसने की रस्सी। २. घोड़े का तंग। ३. कसने की क्रिया या ढंग।

संज्ञा स्त्री० दुःख। कष्ट। क्लेश।

कसना–क्रि० स० १. बाँधना। २. बंधन को दृढ़ करने के लिए डोरी आदि को खींचना। ३. बंधन को खींचकर बँधी हुई वस्तु को अधिक दबाना। ४. पुर्जों को दृढ़ करके बैठाना। ५. साज रखकर सवारी के लिए तैयार करना। ६. ठूँसकर भरना।

मुहा०–कसकर=१. जोर से। बलपूर्वक। २. पूरा पूरा। बहुत अधिक। कसा=पूरा पूरा। बहुत अधिक। जैसे—कसा दाम। ३. जकड़कर बाँधना। जकड़ना। कसा कसाया=चलने के लिए बिलकुल तैयार।

क्रि० अ० १. जकड़ जाना। बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय। २. किसी लपेटने या पहनने की वस्तु का छोटा होना। ३. बँधना। ४. साज रखकर सवारी का तैयार होना। ५. अधिक भर जाना।

क्रि० स० १. परखने के लिए सोने आदि धातुओं को कसौटी पर घिसना। २. परीक्षा करना। कसौटी पर जाँचना। ३. परखना। जाँचना। आजमाना। ४. तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ५. दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना। ६. कष्ट पहुँचाना। क्लेश देना।

कसनी–संज्ञा स्त्री० १. बाँधने की रस्सी २. बेठन। ३. गिलाफ। ४. कंचुकी अँगिया। चोली ५. कसौटी। परीक्षा जाँच। परख।

कसब–संज्ञा पुं० [अ०] १. श्रम। परिश्रम मेहनत। २. व्यवसाय। पेशा। धन्धा ३. वेश्यावृत्ति।

कसबल–संज्ञा पुं० १. बल। शक्ति। २. साहस। हिम्मत।

कसबा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० कसबाती] गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।

कसबिन, कसबी–संज्ञा स्त्री० १. व्यभिचारिणी स्त्री। २. वेश्या। पतुरिया। रंडी।

क़सम–संज्ञा स्त्री० [अ०] शपथ। **सौगंध**।

मुहा०–कसम उतारना=१. शपथ को हटा लेना या प्रभाव दूर करना। २. किसी काम को नाममात्र के लिए करना। कसम देना, दिलाना या रखाना=किसी को किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। कसम लेना=प्रतिज्ञा कराना। कसम खिलाना। कसम खाने को=नाम मात्र के लिए।

कसमसाना–क्रि० अ० १. दबकर हिलना-डोलना। कुलबुलाना। खलबलाना। २. उकताकर हिलना-डोलना ३. घबराना। बेचैन या व्याकुल होना। ४. सोचना-विचारना। ५. आगा-पीछा करना। ६. हिचकना

कसमसाहट–संज्ञा स्त्री० १. घबराहट बेचैनी। २. कुलबुलाहट। हिलाव। डोलाव

कसर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। घटी। न्यूनता। २. वैर। द्वेष। मनमोटाव। ३. टोटा। हानि। घाटा। ४. खोट। ५. दोष। विकार। ६. किसी वस्तु में कमी, जो सूखने या उसमें से कूड़ा-करकट निकलने से हो जाती है।

मुहा०–कसर निकालना=बदला लेना।

कसरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० कसरती] व्यायाम। दंड, बैठक आदि परिश्रम का कार्य। मेहनत।
संज्ञा स्त्री [अ०] अधिकता। बहुतायत।
कसरती–वि० १. व्यायाम करनेवाला। २. जो कसरत से पुष्ट और बलवान् बना हो।
कसवाना–क्रि० स० कसने का काम दूसरे से कराना। कसाना। जोर से बँधवाना।
कसहँड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कसहँडी] काँसे का एक प्रकार का बड़ा बर्त्तन।
कसा–वि० १. संकुचित। संकीर्ण। २. बँधा

क़साई–संज्ञा पुं० [अ० क़स्साब] [स्त्री० क़साइन] १. बूचड़। २. घातक। वधिक।
वि० निष्ठुर। निर्दय।
कसाना–क्रि० अ० स्वाद में कसैला हो जाना। काँसे आदि धातु के योग से खट्टी चीज का खराब हो जाना।
क्रि० स० दे० "कसवाना।"
कसार–संज्ञा पुं० पँजीरी। चीनी मिला भुना आटा या सूजी।
कसाला–संज्ञा पुं० १. कष्ट। २. श्रम। कठिन परिश्रम। मेहनत।
कसाव–संज्ञा पुं० कसैलापन।
वि० कसे जाने का भाव।
कसावट–संज्ञा स्त्री० खिचाव। कसने का भाव। तनाव।
कसी–संज्ञा स्त्री० भूमि नापने की रस्सी-विशेष।
कसीटना*–क्रि० स० दे० "कसना"।
कसीदा–संज्ञा पुं० दे० "कशीदा"। कपड़े पर सुईकारी। बेलबूटे काढ़ना।
क़सीदा–संज्ञा पुं० उर्दू या फारसी भाषा की एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति या निंदा की जाती है।
कसीस–संज्ञा पुं० लोहे का एक प्रकार जो खानों में मिलता है।
कसूँभा–वि० १. लाल। २. टेसू या कुसुंभ के रंग का।

कसून–संज्ञा पुं० कंजी आँख वाला घोड़ा।
क़सूर–संज्ञा पुं० [अ०] दोष। अपराध ऐब।
क़सूरमंद, क़सूरवार–वि० [फा०] अपराधी। दोषी।
कसेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कसेरिन] ठठेरा। काँसे, फूल आदि के बरतन ढालने और बेचनेवाला।
कसेरू–संज्ञा पुं० मोथे की मीठी गँठीली जड़।
कसैया–संज्ञा पुं० १. कसनेवाला। जो जकड़कर बाँधे। परखनेवाला। जाँचनेवाला। २. परखैया।
कसैला–वि० (स्त्री० कसैली) कषाय स्वाद का। जिसमें कसाव हो। जैसे आँवला, हड़ आदि।
कसैली†–संज्ञा स्त्री० १. सुपारी। २. कसैली वस्तु।
कसोरा–संज्ञा पुं० १. मिट्टी का प्याला। २. कटोरा।
कसौंदी–संज्ञा स्त्री० पौधा-विशेष। कसौंजा।
कसौटी–संज्ञा स्त्री० १. काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। निकष। २. जाँच। परख।
कस्टम–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) प्रथा। रवाज। आयात और निर्यात पर लगनेवाला कर।
कस्तुरा–संज्ञा स्त्री० शंख सहित एक प्रकार की मछली।
कस्तूर–संज्ञा पुं० कस्तूरी-मृग।
कस्तूरा–संज्ञा पुं० १. कस्तूरी-मृग। २. लोमड़ी की तरह का पशु-विशेष।
संज्ञा पुं० [देश०] १. मोती की सीप। २. औषध जो पोर्टब्लेयर की चट्टानों से खुरचकर एकत्र की जाती है और बहुत बलकारक होती है।
कस्तूरिका–संज्ञा स्त्री० कस्तूरी।
कस्तूरिया–संज्ञा पुं० कस्तूरी मृग।
वि० १. कस्तूरीवाला। जिसमें कस्तूरी मिली हो। २. जो कस्तूरी के रंग का हो। मुश्की।
कस्तूरी–संज्ञा स्त्री० १. मृग की नाभि से

निकलनेवाला सुगंधित द्रव्य। २. मृगमद। औषधि-विशेष।

कस्तूरी मृग–संज्ञा पुं० अति ठंढे पहाड़ी प्रदेशों में होनेवाला हिरन-विशेष जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कहँ*–प्रत्य० कर्म और संप्रदान का चिह्न, 'को'। के लिए। (अवधी)

*क्रि० वि० दे० "कहाँ"।

कहकहा–संज्ञा पुं० ठठाकर हँसना। अट्टहास।

कहगिल–संज्ञा स्त्री० मिट्टी का गारा जो दीवार में लगाया जाता है।

क़हत–संज्ञा पुं० [अ०] अकाल। दुर्भिक्ष।

यौ०—कहतसाली=दुर्भिक्ष का समय।

कहतूत या कहतूती–संज्ञा स्त्री० कथा आख्यायिका। कहावत। लोकोक्ति। कहनूत

कहन–संज्ञा स्त्री० १. उक्ति। कथन। २ वचन। बात। ३. कहावत। ४. कविता

कहना–क्रि० स० १. वर्णन करना बोलना। उच्चारण करना। २. खोलना प्रकट करना। प्रकाशित करना। बताना ३. सूचना देना। ४. नाम रखना। ५. पुकारना। ६. समझाना-बुझाना। मनाना। ७. कविता करना।

संज्ञा पुं० १. कथन। २. आज्ञा। ३. अनुरोध।

मुहा०–कह-बदकर=१. प्रतिज्ञा करके। २. दृढ़ संकल्प करके। ३. ललकारकर। दावे के साथ। कहना सुनना=बात-चीत करना। कहने को=१. नाम-मात्र को। २. भविष्य में स्मरण के लिए। कहने की बात=झूठ बात। वह बात जो वास्तव में न हो। कहना-सुनना=समझाना।

कहनाउत*–संज्ञा स्त्री० दे० "कहनावत"।

कहनावत–संज्ञा स्त्री० १. कहावत। २. बात। कथन। ३. दृष्टान्त। ४. लोकोक्ति।

कहनूत†–संज्ञा स्त्री० बात। कहावत।

क़हर–संज्ञा पुं० [अ०] विपत्ति। संकट वि० [अ० क़हहार] १. अपार। २. भयंकर। ३. घोर।

कहरना†–क्रि० अ० दे० "कराहना"। आह भरना। चीख मारना। चिल्लाना। काँखना।

कहरवा–संज्ञा पुं० १. दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है। २. आठ मात्राओं का ताल। ३. कहरवा ताल पर होनेवाला नृत्य।

कहरुबा–संज्ञा पुं० गोंद विशेष जिसे कपड़े आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके के पास रखें, तो उसे चुंबक की तरह पकड़ लेता है।

कहल*†–संज्ञा पुं० १. औंस। २. ऊमस। ३. ताप। ४. कष्ट।

कहलना*–क्रि० अ० १. आकुल होना। कसमसाना। २. दहलना। ३. गरमी या ऊमस से व्याकुल होना।

कहलवाना–क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहलाना–क्रि० स० [कहना का प्रे० रूप] १. बुलवाना। जतलाना। २. पुकारा जाना। ३. संदेश भेजना।

क्रि० अ० गरमी या ऊमस से व्याकुल या शिथिल होना।

कहवा–संज्ञा पुं० [अ०] वृक्ष-विशेष का बीज जिसका चूरा चाय की तरह पिया जाता है।

कहवैया*–वि० कहनेवाला।

कहाँ–क्रि० वि० १. किधर? किस जगह? किस स्थान पर? २. कब तक। ३. कितनी दूर तक। ४. कितनी देर तक।

मुहा०–कहाँ का=१. न जाने कहाँ का। बड़ा भारी। असाधारण। २. कहीं का नहीं। नहीं है। कहाँ का कहाँ=बहुत दूर। कहाँ की बात=यह बात ठीक नहीं है। कहाँ यह, कहाँ वह=इनमें बड़ा अंतर है। कहाँ से=व्यर्थ। क्यों? नाहक।

कहाँ तक—अधिकरण प्रश्नवाची अव्यय।

कहा*†–संज्ञा पुं० १. आज्ञा। २. उपदेश। ३. कथन। बात।

क्रि० वि० कैसे? किस तरह?

*†सर्व० क्या। (ब्रज)

कहाकही–संज्ञा स्त्री० दे० १. कहासुनी। २. उक्ति-प्रत्युक्ति। ३. झगड़ा।

कहानी–संज्ञा स्त्री० १. आख्यायिका। कथा। किस्सा। २. काल्पनिक बात। गढ़ी बात। ३. कहावत। ४. वर्णन।
यौ०–रामकहानी=लंबा-चौड़ा वृत्तांत।

कहार–संज्ञा पुं० जाति-विशेष जो पानी भरती और डोली उठाती है। धीवर।

कहावत–संज्ञा स्त्री० १. कहनूत। लोकोक्ति। उक्ति। अनुभव की बात जो संक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही गई हो। २. कही हुई बात। कथा। वार्ता। दृष्टान्त।

कहा-सुना–संज्ञा पुं० भूल-चूक। अनुचित कथन। अनुचित व्यवहार। जैसे—कहा-सुना माफ करो।

कहा-सुनी–संज्ञा स्त्री० १. वाद-विवाद। २. झगड़ा।

कहिया*†–क्रि० वि० कब? किस दिन?

कहीं–क्रि० वि० १. किसी अनिश्चित स्थान में। ऐसी जगह जिसका निश्चय न हो। २. (प्रश्न रूप में और निषेधार्थक) नहीं। कभी नहीं। ३. कदाचित्। ४. यदि। अगर (आशंका और इच्छा-सूचक)। ५. अत्यधिक। बहुत बढ़कर।
मुहा०–कहीं और=अन्यत्र। दूसरी जगह। कहीं का=१. न जाने कहाँ का। २. बड़ा भारी। कहीं का न रहना या होना=दो पक्षों में से किसी पक्ष के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना। कहीं न कहीं=किसी स्थान पर अवश्य।

कहुँ*–क्रि० वि० दे० "कहीं"। किसी ठौर।

कहूँ*–क्रि० वि० दे० "कहीं।" कहता हूँ। अव्य० किसी स्थान पर।

काँइयाँ–वि० चालाक। धूर्त। फरेबी।

काँई*–अव्य० क्यों? किसलिए?

काँकर*†–संज्ञा पुं० दे० "कंकड़"।

काँकरी*†–संज्ञा स्त्री० छोटा कंकड़।
मुहा०–काँकरी चुनना=चिंता या वियोग के दु:ख से किसी काम में मन न लगना।

कांक्षनीय–वि० जिसके लिए इच्छा की जा सके। चाहने योग्य।

कांक्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० कांक्षित] आकांक्षा। इच्छा। अभिलाषा। चाह। मनोरथ।

कांक्षी–वि० [स्त्री० कांक्षिणी] अभिलाषी। चाहनेवाला। इच्छा करनेवाला।

काँख–संज्ञा स्त्री० १. बगल। कक्ष। बाहु-मूल के नीचे की ओर का गड्ढा। २. पाँजर। ओर।

काँखना–क्रि० अ० १. आह भरना। कहरना। कूल्हना। २. मल या मूत्र को निकालने के लिए पेट की वायु को दबाना।

काँखासोती–संज्ञा स्त्री० दाहिनी बगल के नीचे से लाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालने का ढंग विशेष।

काँगड़ा–संज्ञा पुं० पंजाब प्रांत का पहाड़ी प्रदेश-विशेष, जहाँ का ज्वालामुखी पर्वत ज्वालामुखी देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

काँगड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटी अँगीठी-विशेष जिसे जाड़े में कश्मीरी गले में लटकाए रहते हैं।

काँगन–संज्ञा पुं० कंकड़। कँगना। हाथ की कलाई में पहनने का स्त्रियों का भूषण-विशेष। कुकुनी।

काँगनी–संज्ञा स्त्री० "काँगन"।

काँग्नी–संज्ञा स्त्री० धूनी। अँगीठी। आग रखने का बर्तन।

काँच–संज्ञा स्त्री० १. लाँग। धोती का वह छोर जिसे दोनों जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसते हैं। २. गुदाचक्र। गुदेंद्रिय के भीतर का भाग।
संज्ञा पुं० १. एक मिश्र धातु जो बालू और रेह या खारी मिट्टी को गलाने से बनती और पारदर्शक होती है। शीशा। दर्पण २. रोग-विशेष। ३. स्वच्छ मृत्तिका-विशेष। ४. स्फटिक।
मुहा०–काँच निकलना=आघात या श्रम से बुरी दशा होना।

काँचक–संज्ञा पुं० पाषाण-विशेष। स्फटिक। काँच।

कांचन–संज्ञा पुं० [वि० कांचनीय] १. सोना। हेम। २. कचनार। ३. चम्पा।

४. नागकेसर। ५. धतूरा। ६. पद्म। ७. केशर। ८. धन।
वि० सोने का बना।

कांचनक–संज्ञा पुं० धातु-विशेष। हरताल।

कांचन-कदली–संज्ञा पुं० सुवर्णकदली। चम्पा। केला।

कांचनगिरि–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।

कांचनचंगा–संज्ञा पुं० हिमालय की एक चोटी।

कांचनवप्र–संज्ञा पुं० सुवर्ण पर्वत। सुमेरु।

कांचनपुष्पिका–संज्ञा स्त्री० मुसली। औषध-विशेष।

कांचनमय–वि० १. कनकमय। २. सोने का।

कांचनाचल–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।

कांचनार–संज्ञा पुं० कचनार का वृक्ष।

कांचनी–संज्ञा स्त्री० हरिद्रा। हल्दी।

काँचरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "काँचली"।

काँचली*–संज्ञा स्त्री० १. साँप की केंचुली। २. अँगिया। चोली। कंचुकी। जनानी कुरती।

कांचा*–वि० दे० "कच्चा"। असिद्ध। अपक्व।

कांचि*–संज्ञा स्त्री० मेखला। चन्द्रहार। करधनी। मध्यभाग।

कांची–संज्ञा स्त्री० १. करधनी। मेखला। २. क्षुद्रघंटिका। ३ गोटा। ४. पट्ठा। ५. घुँघुची। गुंजा। ६. हिंदुओं की सात पवित्र पुरियों में से एक।

कांचीपद–संज्ञा पुं० जघन। नितम्ब।

कांचीपुरी–संज्ञा स्त्री० कांजीवरम्।

कांजिक–संज्ञा पुं० बासी भात से निकाला हुआ जल। माँड़। पसाया जल।

कांजी–संज्ञा स्त्री० १. खट्टा रस जो पिसी हुई राई आदि को घोलकर रखने से बनता है। २. छाछ। मट्ठे या दही का पानी। ३. माँड़ विशेष।

कांजीहाउस–संज्ञा पुं० सरकारी मवेशीखाना जिसमें लावारिस पशु बंद किए जाते हैं। दे० 'कानी हाउस।'

काँट*–संज्ञा पुं० दे० "काँटा"।

काँटा–संज्ञा पुं० [वि० कँटीला] १. वृक्षों आदि का कंटक। शूल। शाल। २. वह काँटा जो मोर, तीतर आदि पक्षियों के नरों के पंजे पर निकलता है। खाँग। ३. वह काँटा जो मैना आदि पक्षियों के गले में रोग के रूप में निकलता है। ४. छोटी छोटी नुकीली और खुरखुरी फुंसियाँ जो जीभ में निकलती हैं। ५. [स्त्री० काँटी] लोहे की बड़ी कील। ६. कँटिया। मछली पकड़ने की झुकी हुई नोकदार अँकुड़ी। ७. लोहे की अँकुड़ियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरे बर्तन निकालते हैं। ८. सूई या कील की तरह की नुकीली वस्तु। जैसे, साही का काँटा। ९. तराजू की डाँड़ी पर वह सूई जिससे दोनों पलड़ों के बराबर होने की सूचना मिलती है। १०. लोहे की वह तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा होता है। ११. छोटी तराजू। १२. लौंग। नाक में पहनने की कील। १३. बालों में लगाने का क्लिप। १४. पंजे के आकार का धातु का बना हुआ एक औजार जिससे अँगरेज खाना खाते हैं। १५. घड़ी की सूई। १६. गणित में गुणनफल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया-विशेष।

मुहा०–काँटा निकलना=१. बाधा या कष्ट का मिटना। २. खटका या चिन्ता मिटना। रास्ते में काँटे बिछाना=विघ्न या बाधा डालना। काँटे बोना=१. अनिष्ट करना। बुराई करना। २. अड़चन डालना। ऊधम मचाना। काँटा सा खटकना=बुरा लगना। दुःखदायी होना। काँटा होना=बहुत दुबला होना। काँटों में घसीटना=किसी की इतनी प्रशंसा या आदर करना जिसके वह योग्य न हो। काँटों पर लोटना=दुःख से तड़पना। बेचैन होना। काँटे की तौल=न कम, न बेश। ठीक ठीक। काँटे में तुलना=महँगा होना।

काँटी–संज्ञा स्त्री० १. कील। छोटा काँटा। २. वह छोटी तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा लगा हो। ३. बेड़ी। ४. अँकुड़ी। झुकी हुई छोटी कील।

कांठा*—संज्ञा पुं० १. उपकंठ। गला। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रेखा। ३. पार्श्व। समीप। बगल। ४. तट। किनारा।

कांड—संज्ञा पुं० १. पोर। गाँडा। गेंडा। बाँस या ईख आदि का दो गाँठों के बीच का अंश। २. खंड। ३. शर। सरकंडा। ४. डाली। शाखा। डंठल। ५. गुच्छा। ६. किसी कार्य्य या विषय का विभाग। जैसे—कर्म्मकांड। ७. किसी ग्रंथ का वह विभाग जिसमें एक पूरा प्रसंग हो। अध्याय। प्रकरण। ८. वृंद। समूह। ९. व्यापार। १०. दण्ड। ११. अवसर। १२. प्रस्ताव। १३. वृक्ष के तने का वह भाग, जहाँ से शाखाएँ फूटती हैं। १४. तीर। बाण। १५. हाथ या पैर की लंबी हड्डी।

कांडकार—संज्ञा पुं० बाण बनानेवाला।

कांडग्रह—संज्ञा पुं० प्रकरण-ज्ञान।

कांड़ना*†—क्रि० स० १. कुचलना। रौंदना। २. कूटना। चावल से भूसी या तुष अलग करना। ३. पीटना। अच्छी तरह मारना।

कांडपट—संज्ञा पुं० यवनिका। पर्दा।

कांडपृष्ठ—संज्ञा पुं० १. शस्त्र से जीनेवाला। २. व्याध।

कांडरुहा—संज्ञा पुं० कटुकी वृक्ष।

कांडर्षि—संज्ञा पुं० वेद के कांड [कर्म, ज्ञान, उपासना] पर विचार करनेवाला ऋषि; जैसे—जैमिनि।

काँड़ी—संज्ञा स्त्री० १. लकड़ी का बड़ा डंडा। २. बाँस या लकड़ी का कुछ पतला सीधा लट्ठा, जो छप्पर या छत के सहारे के लिए लगाया जाता है। । थुनिया। ३. अरहर का सूखा डंठल। ४. अवली। **मुहा०**—काँड़ी कफन=मुरदे की अरथी का सामान।

कांत—संज्ञा पुं० १. स्वामी। प्रिय पति। २. चंद्रमा। ३. श्रीकृष्णचंद्र। ४. शिव। ५. विष्णु। ६. कार्त्तिकेय। ७. वसंत ऋतु। ८. कुंकुम। ९. कांतसार। बढ़िया लोहा विशेष। १०. उपपति, जार। वि०—प्रिय। सुंदर।

कांतलौह—संज्ञा पुं० शुद्ध किया हुआ लोहा। लौहभस्म।

कांतसार—संज्ञा पुं० लौह-विशेष। कांत लोहा।

कांता—संज्ञा स्त्री० १. नारी। प्रिया। सुंदरी स्त्री। २. पत्नी। भार्य्या। ३. उपपत्नी, रक्षिता। ४. पृथ्वी। ५. चार मात्रा का छंद-विशेष।

कांतार—संज्ञा पुं० १. डरावना या भयानक स्थान। २. दुर्भेद्य और गहन वन। ३. ईख विशेष। ४. छेद। ५. बाँस। ६. दुर्गम पथ।

कांताह्वा—संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। प्रियंगु।

कांताशक्ति—संज्ञा स्त्री० माधुर्य्य भाव। भक्ति का भेद-विशेष जिसमें भक्त ईश्वर को अपना पति मानकर उसकी भक्ति करता है।

कांति—संज्ञा स्त्री० १. आभा। प्रकाश। दीप्ति। तेज। २. सौंदर्य्य। शोभा। छटा। छवि। ३. चंद्रमा की एक कला। ४. चंद्रमा की एक स्त्री का नाम। ५. आर्य्या छंद का भेद-विशेष। ६. लक्ष्मी का एक नाम। दुर्गा।

कांतिदायक—वि० १. शोभादायक। २. दीप्ति-कारक।

कांतिपाषाण—संज्ञा पुं० चुम्बक पत्थर।

कांतिमान—वि० [स्त्री० कान्तिमती] कान्ति-वाला। दीप्तियुक्त। चन्द्रमा। कामदेव।

काँथरि, काँथरी—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

काँदना*—क्रि० अ० रोना। चिल्लाना।

काँदव—संज्ञा पुं० पंक। कीचड़।

काँदा—संज्ञा पुं० १. गुल्म-विशेष जिसमें प्याज की तरह गाँठ पड़ती है। मूल-विशेष। पलांडु। अरवी २. प्याज। ३. दे० "काँदो"।

काँदू—संज्ञा पुं० जाति-विशेष। भड़भूजा। हलवाई। चीनी का हाँड़ा।

काँदो*†—संज्ञा पुं० कर्दम। कीचड़। पंक। कीच।

काँध*†–संज्ञा पुं० दे० "कंधा"।
काँधना*–क्रि० वि० १. सँभालना। सिर पर उठाना। २. मचाना। ठानना। ३. स्वीकार करना। मानना। अंगीकार करना। ४. भार लेना। ५. उपकृत करना।
काँधा–संज्ञा पुं० कन्धा। स्कन्ध।
मुहा०–काँधा देना=१. सहायता करना। कार्य बँटा लेना। २. शव की अरथी उठाना।
काँप–संज्ञा स्त्री० १. बाँस आदि की लचीली पतली तीली। २. पतंग या कनकौवे की धनुष की तरह झुकी हुई तीली। ३. हाथी का दाँत। ४. सूअर का खाँग। ५. कान में पहनने का गहना-विशेष। ६. दुख। ७. दबाव। ८. व्याकुलता।
मुहा०–काँप चढ़ाना=दुखित करना। व्याकुल करना। दबाना।
काँपना–क्रि० अ० हिलना। थरथराना। थर्राना। डर से काँपना। कंपित होना।
काँपा–क्रि० १. डरा। २. थर्राया।
कांबोज–वि० १. कंबोज देश का। २. कंबोज देश के घोड़े। ३. म्लेच्छ जाति-विशेष।
काँय काँय, काँव काँव–संज्ञा पुं० १. व्यर्थ की चिल्लाहट। २. कौवे का शब्द।
काँवर–संज्ञा स्त्री० बहँगी।
काँवरा–वि० व्याकुल। घबराया हुआ।
काँवरिया–संज्ञा पुं० कामारथी। तीर्थयात्री जो काँवर लेकर चले।
काँवारथी–संज्ञा पुं० कामना से काँवर लेकर जानेवाला तीर्थयात्री।
काँस–संज्ञा पुं० १. लंबी घास-विशेष। २. धातु-विशेष।
काँसा–संज्ञा पुं० [वि० काँसी] कसकुट। ताँबे और जस्ते के संयोग से बनी धातु-विशेष। भरत।
संज्ञा पुं० [फा० काँसा] भीख माँगने का पात्र, ठीकरा या खप्पर।
काँसागर–संज्ञा पुं० जो काँसे का काम करता है। कसेरा।

कांस्य–संज्ञा पुं० कसकुट। काँसा। घंटा। वाद्य-विशेष। कटोरा।
वि०–काँसे का बना।
कांस्यकार–संज्ञा पुं० कसेरा। कँसारी।
का–प्रत्य० संबंध या षष्ठी का चिह्न; जैसे—राम का घोड़ा।
काई–संज्ञा स्त्री० १. जल या सीड़ में होनेवाली महीन घास या सूक्ष्म वनस्पति-जाल। शैवाल। कीट। २. ताँबे इत्यादि पर जमनेवाला मुर्चा। ३. मैल। मल।
मुहा०–काई छुड़ाना=१. मैल दूर करना। २. दुःख-दारिद्रय दूर करना। काई सा फट जाना=छँट जाना। तितर-बितर हो जाना।
काऊ*†–क्रि० वि० कभी। कबहूँ।
सर्व० १. कोई। २. कुछ। ३. किसी ने। ४. किसी से।
काउन्सिल–सं० स्त्री० (अंग्रे०) कुछ खास विषयों पर विचार करनेवाली सभा या समिति। परिषद्।
काक–संज्ञा पुं० काग। वायस। कौआ।
संज्ञा पुं० [अंग्रे० कार्क] नर्म लकड़ी-विशेष जिसकी डाट बोतलों में लगाई जाती है। काग।
काक-गोलक–संज्ञा पुं० कौवे की आँख की पुतली जो कहा जाता है कि एक ही होती है और दोनों आँखों में घूमती है।
काकजंघा–संज्ञा स्त्री० १. मसी का पौधा। चकसेनी। औषध-विशेष। २. गुंजा। घुंघची ३. एक प्रकार की मूली। ४. मुगौन या मुगवन नाम की लता।
काकटम्बपुष्पी–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। महामुंडी।
काकड़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चमड़ा।
काकड़ासींगी–संज्ञा स्त्री० कर्कटशृंगी। काकड़ा नामक पेड़ में लगी हुई एक प्रकार की लाही जो दवा के काम आती है।
काकतालीय–वि० संयोगवश होनेवाला। अकस्मात् किसी कार्य का होना।
यौ०–काकतालीय न्याय। (कोई कौआ ताल के पेड़ पर बैठा। बैठते ही

ताल का फल उस पर गिरा और कौआ मर गया)

काकतिक्त—संज्ञा स्त्री० काकजंघा।

काकदंत—संज्ञा पुं० १. अद्भुत बात। २. असंभव बात।

काकपक्ष—संज्ञा पुं० कुल्ला। बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों के ऊपर रहते हैं। जुल्फ।

काकपच्छ*—संज्ञा पुं० दे० "काकपक्ष"।

काकपद—संज्ञा पुं० १. चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिए पंक्ति के नीचे बनाया जाता है। २. रत्नों में एक प्रकार का अशुभ लक्षण। ३. कोई चीज बनाने के लिए कल्पित पूर्वरूप। ढाँचा।

काकपदी—संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष।

काकबंध्या—संज्ञा स्त्री० स्त्री जिसके केवल एक संतति हुई हो।

काकबलि—संज्ञा स्त्री० कागौर। श्राद्ध के समय कौओं को दिये जानेवाले भोजन का अंश।

काकभुशुंड या काकभुशुंडि—संज्ञा पुं० ब्राह्मण-विशेष (कहते हैं कि उनका मुँह काक के समान था) जो लोमश के शाप से कौआ हो गए थे और राम के बड़े भक्त थे।

काकरेजा—संज्ञा पुं० कपड़ा जो काकरेजी रंग-का हो।

काकरेजी—संज्ञा पुं० [फा०] कोकची। रंग-विशेष जो लाल और काले के मेल से बनता है।

वि० काकरेजी रंग का।

काकली—संज्ञा० स्त्री १. मंद मधुर ध्वनि। कल-नाद। २. साठी धान। ३. एक वाद्य यंत्र। ४. सेंध लगाने की सबरी।

काका—संज्ञा पुं० [स्त्री० काकी] चाचा। बाप का भाई।

संज्ञा स्त्री०—कौए का शब्द।

काका कौआ—संज्ञा पुं० दे० "काकातूआ"। पक्षी-विशेष।

काकाक्षिगोलक न्याय—संज्ञा पुं० एक शब्द या वाक्य को अदल-बदलकर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना।

काकातूआ—संज्ञा पुं० [मला०] बड़ा तोता-विशेष जिसके सिर पर टेढ़ी चोटी होती है।

काकिणी या काकिनी—संज्ञा स्त्री० १. घुँघची। गुंजा। २. माशे का चौथाई भाग। ३. पण का चतुर्थ भाग जो २० कौड़ियों का होता है। ४. छदाम। ५. कौड़ी।

काकी—संज्ञा स्त्री० १. काका या चाचा की स्त्री। २. कौए की मादा।

संज्ञा स्त्री० चची। चाची।

काकु—संज्ञा पुं० १. टेढ़ी बोली। छिपी हुई चुटीली बात। व्यंग्य। ताना। २. वक्रोक्ति का एक भेद (काव्य)।

काकूक्ति—संज्ञा स्त्री० कातरोक्ति। व्यंग्य कथन।

काकुत्स्थ—संज्ञा पुं० १. श्रीरामचन्द्र। २. ककुत्स्थ वंशोद्भव एक राजा।

काकुल—संज्ञा पुं० [फा०] कुल्ले। जुल्फें। कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल।

काकोदर—संज्ञा पुं० १. भुजंग। सर्प। फणी। साँप। २. कौए का पेट।

काकोल—संज्ञा पुं० १. नरक-विशेष। २. एक प्रकार की विषैली धातु।

काकोली—संज्ञा स्त्री० सतावर की तरह की औषध-विशेष जो अब प्राप्य नहीं है।

काकोलूकिका—संज्ञा स्त्री० काक और उल्लू के समान शत्रुता। अधिक शत्रुता।

काख—संज्ञा स्त्री० काँख। कक्ष। पार्श्व।

काखअलाई—संज्ञा स्त्री० कँखौरी। पार्श्व व्रण। काँख का घाव।

काग—संज्ञा पुं० कौआ।

संज्ञा पुं० [अंग्रे० कार्क] १. स्पेन, पुर्तगाल तथा अफ्रिका के उत्तरीय भागों में होने-वाला वृक्ष-विशेष। २. बोतल या शीशी की डाट जो इस वृक्ष की छाल से बनती है। ३. गले के भीतर की घंटी।

वि०—चतुर, चंट, काँइयाँ।

कागज—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० कागजी]

१. पत्र। सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ पत्र। २. प्रमाणपत्र। लिखा हुआ प्रामाणिक लेख। दस्तावेज़ ३. प्रामिसरी नोट। ४. समाचारपत्र। अख़बार।
यौ०–कागज़ पत्र=१. लिखे हुए कागज़। २. प्रामाणिक लेख। ३. दस्तावेज़।
मुहा०–कागज़ काला करना या रँगना=यों ही कुछ लिखना। कागज़ की नाव=न टिकनेवाली चीज़। नाशवान या क्षण-भंगुर वस्तु। कागज़ी घोड़े दौड़ाना=लिखा-पढ़ी करना।
कागज़ात–संज्ञा पुं० कागज़ का बहुवचन। कागज़-पत्र इत्यादि।
कागज़ी–वि० १. जो कागज़ का बना हुआ हो। २. लिखित। लिखा हुआ। ३. जिसका छिलका कागज़ की तरह पतला हो। जैसे–कागज़ी बादाम।
मुहा०–कागज़ी घोड़े दौड़ाना=केवल लिखा-पढ़ी करते रहना।
कागद–†संज्ञा पुं० दे० "कागज़"।
कागभुसुंड–संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडि"।
कागर–*संज्ञा पुं० दे० "कागज़"। चिड़ियों के वे मुलायम पर जो झड़ जाते हैं।
कागरी–*वि० तुच्छ।
कागाबासी–संज्ञा स्त्री० १. प्रातःकाल छानी जानेवाली भाँग। २. मोती-विशेष जो साँवले रंग का होता है।
कागारोल–संज्ञा पुं० हल्ला-गुल्ला। हुल्लड़। शोर।
कागासुर–संज्ञा पुं० दैत्य-विशेष।
कागौर–संज्ञा पुं० दे० "काकबलि"।
काचरी–संज्ञा स्त्री० १. केंचुली। २. सूखी सेंध। ३. कचरी।
काच लवण–संज्ञा पुं० कचिया नोन। काला नमक।
काचा–वि० १. कच्चा। २. भीरु। कायर।
काची*–संज्ञा स्त्री० १. दूध रखने की हाँड़ी। २. हलुआ जो तीखुर, सिंघाड़े आदि से बनता है।
काचो–वि० १. असार। २. मिथ्या।
काछ–संज्ञा पुं० १. पेड़ू और जाँघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान। २. लाँग। धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है। ३. समीप। ४. नदी का किनारा। ५. अभिनय के लिए नटों का वेश।
मुहा०–काछ काछना=वेष बनाना।
काछना–क्रि० स० १. काँछ बाँधना। कमर में लपेटे वस्त्र के सामने लटकते भाग को जंघों पर से पीछे ले जाकर कसकर बाँधना। २. बटोरना। ३. अलग करना। ४. बनाना। सँवारना।
क्रि० स० तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना।
काछनी–संज्ञा स्त्री० १. कछनी। कसकर ऊँची पहनी हुई धोती जिसकी दो लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं। २. घाघरे की तरह का चुन्नटदार आधी जंघा तक का पहनावा-विशेष।
काछा–संज्ञा पुं० "काछनी"।
काछिन–संज्ञा स्त्री० काछी की स्त्री।
काछी–संज्ञा पुं० १. मुराव। २. तरकारी बोने और बेचनेवाला आदमी। ३. जाति-विशेष।
काछे–क्रि० वि० समीप। निकट। पास।
क्रि० पहने हुए। बनाए हुए। बनाने से
काज–संज्ञा पुं० १. काम। कर्म। कार्य २. व्यवसाय। धंधा। ३. अर्थ। प्रयोजन। मतलब। उद्देश्य। ४. विवाह
संज्ञा पुं० [अ० कायजा] बटन का घर वह छेद जिसमें बटन लगाया जाता है
मुहा०–के काज=के हेतु। किसलिए निमित्त।
यौ०–काम-काज=कामों की अधिकता। विवाह या अंत्येष्टि के क्रिया-कलाप।
काजर†–संज्ञा पुं० दे० १. "काजल"। कज्जल। २. अंजन। ३. सुरमा।
काजरी*–संज्ञा स्त्री० गाय जिसकी आँखों पर काला घेरा हो।
काजल–संज्ञा पुं० दीपक के धुएँ के जमने से लगी हुई कालिख। आँखों

५. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश। ६. मदिरा का एक भेद। वि० कदंब संबंधी।

कादम्बरी–संज्ञा स्त्री० १. कोयल। कोकिल। २. वाणी। सरस्वती। ३. मदिरा। मद्य। शराब। ४. बाणभट्ट की लिखी एक प्रसिद्ध आख्यायिका। ग्रंथ-विशेष। ५. मैना।

कादंबिनी–संज्ञा स्त्री० मेघमाला। मेघश्रेणी। मेघसमूह।

कादर–वि० १. डरपोक। भीरु। २. सुस्त। ३. नामर्द। ४. अधीर। घबराया हुआ। व्याकुल।

कादरता–संज्ञा स्त्री० १. भय। डर। २. व्याकुलता।

कादिरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] चोली-विशेष। सीनाबंद।

कान–संज्ञा पुं० १. कर्ण। इंद्रिय-विशेष जिससे शब्द का ज्ञान होता है। सुनने की इंद्रिय। श्रवण। श्रुति। श्रोत्र। २. श्रवण-शक्ति। सुनने की शक्ति। ३. लकड़ी का एक टुकड़ा जो कूँड़ अधिक चौड़ी करने के लिए हल के अगले भाग में बाँध दिया जाता है। कन्ना। ४. चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। ५. सोने का एक गहना जो कान में पहना जाता है। ६. तराजू का पसंगा। ७. किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े। ८. पियाली। तोप या बंदूक में वह स्थान जहाँ रंजक रखी और बत्ती दी जाती है। रंजकदानी। ९. (नाव की) पतवार। संज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।

मुहा०–कान उठाना=१. आहट लेना। सुनने के लिए तैयार होना। २. सचेत या सजग होना। चौकन्ना होना। कान उमेठना या पकड़ना=१. दंड देने के हेतु किसी का कान उमेठना, भर्त्सना करना। २. किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना। कान करना=ध्यान देना। सुनना। कान काटना=बढ़कर होना। मात करना। कान का कच्चा=बिना सोचे-समझे किसी के कहने पर विश्वास कर लेनेवाला। कान खड़े करना=सचेत करना। होशियार करना। कान खड़े होना=सावधान होना, सजग होना। कान खाना या खा जाना=बहुत शोरगुल करना। बहुत बातें करना। कान गरम करना या कर देना=कान उमेठना। कान-पूँछ दबाकर चला जाना=चुपचाप चला जाना। कान देना या धरना=ध्यान देना। ध्यान से सुनना। कान खोल देना=सावधान करना, सजग करना। सावधानी रखना। कान पकड़ना=१. कान उमेठना। दण्ड देना। २. अपनी भूल या छोटाई मानना। (किसी बात से) कान पकड़ना=पछतावे के साथ किसी बात के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना। कान पर जूँ न रेंगना=कुछ भी परवा न होना। कुछ भी ध्यान न होना। कान पर रखना=स्मरण रखना। उत्सुक रहना। कान फुँकवाना=गुरुमंत्र लेना। दीक्षा लेना। कान फूँकना=चेला बनाना। दीक्षा देना। कान भरना=किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना। खयाल खराब करना। कान मलना=दे० "कान उमेठना"। ताड़ना देना। सजा देना। कान में तेल डाले बैठना=बात सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना। कान में डाल देना=सुना देना। कानोंकान खबर न होना=जरा भी खबर न होना। किसी के सुनने में न आना। कानों पर हाथ धरना या रखना=किसी बात के करने से एकबारगी इनकार करना। अस्वीकार करना, नहीं मानना। कान झुकाना=सुनने की अभिलाषा। कान दबाकर चलना=भाग जाना। किसी बात का उत्तर दिए बिना या निबटारा किए बिना चले जाना। कान लगाना=ध्यान देना। कान में उँगली देकर रहना=उदासीन होना। कान न हिलाना=कुछ उत्तर न देना। उपेक्षा की दृष्टि से देखना। कान फूटना=बहरा होना, किसी की न कानों को दुख पहुँचाना। कान =बड़ा शब्द, भयानक ध्वनि करना।

कानड़ा–वि० १. काना। एक आँखवाला। २. राग-विशेष।

कानन–संज्ञा पुं० १. अरण्य । जंगल । वन । २, घर । ३. कान का बहुवचन । ४. ब्रह्मा का मुँह।

काना–वि० [स्त्री० कानी] एक आँखवाला। एकाक्ष ।

वि० कन्ना। वे फल आदि जिनका कुछ भाग कीड़ों ने खा डाला हो।

संज्ञा पुं० १. 'आ' की मात्रा जो किसी अक्षर के आगे लगाई जाती है और जिसका रूप (ा) है। २. पाँसे पर की बिंदी या चिह्न। जैसे, तीन काने।

वि० तिरछा। टेढ़ा। जिसका कोई कोना या भाग निकला हो।

कानाकानी–संज्ञा स्त्री० मंत्रणा । कानाफूसी। चर्चा। अफवाह।

कानाफूसी–संज्ञा स्त्री० कान के पास मुँह रखकर धीरे से कही जानेवाली बात।

कानाबाती–संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कानि–संज्ञा स्त्री० १. लोकलज्जा। मान। शर्म। २. मर्यादा का ध्यान। ३. संकोच। लिहाज। ४. खान।

कानी–वि० स्त्री० १. जिसके एक आँख हो। २. हेठी। जिसकी एक आँख फूटी हो।

मुहा०–कानी कौड़ी=फूटी या झंझी कौड़ी।

वि० स्त्री सबसे छोटी (उँगली)। जैसे कानी उँगली।

कानीन–संज्ञा पुं० १. कुमारी कन्या से उत्पन्न। अविवाहिता-गर्भज। २. कर्ण और व्यास।

कानीहाउस–संज्ञा पुं० [अंग्रे० काइन हाउस] वह स्थान जहाँ किसी की हानि करनेवाले या लावारिस पशु बंद किए जाते हैं।

क़ानून–संज्ञा पुं० [अ०, यू० केनान] [वि० क़ानूनी] राजनियम। विधि। आईन।

मुहा०–क़ानून छाँटना=कानूनी बहस करना। कुतर्क करना। हुज्जत करना।

क़ानूनगो–संज्ञा पुं० माल महकमे का कर्मचारी विशेष, जो पटवारियों के कागजों की जाँच करता है।

क़ानूनदाँ–संज्ञा पुं० विधिज्ञ। जो कानून जानता हो।

क़ानूनिया–वि० १. कानून जाननेवाला। २. हुज्जती। ३. प्रत्येक काम में दोष निकालनेवाला।

क़ानूनी–वि० १. कानून जाननेवाला। २. अदालती। कानून-संबंधी। ३. जो कानून के अनुसार हो। नियमानुकूल। ४. तर्क या तकरार करनेवाला। हुज्जती।

कानोंकान–वि० गुप्त रूप से।

मुहा०–कानोंकान कहना=छिपे तौर पर जताना।

कान्यकुब्ज–संज्ञा पुं० १. प्राचीन समय का प्रांत विशेष, जो वर्त्तमान कन्नौज के आस-पास था। २. इस देश का ब्राह्मण। ३. इस देश का निवासी। ४. कनौजिया।

कान्ह*–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा–संज्ञा पुं० राग-विशेष।

कापट्य–संज्ञा पुं० १. कपटता। छल। २. शठता। धूर्तता। ३. प्रतारण।

कापड़ी–संज्ञा पुं० काठियावाड़ प्रांत में बसनेवाली जाति-विशेष।

कापथ–संज्ञा पुं० १. कुपथ। बुरा रास्ता। २. दुर्गम रास्ता।

कापर*–संज्ञा पुं० दे० "कपड़ा"।

कापाल–संज्ञा पुं० १. प्राचीन अस्त्र-विशेष। २. वायविडंग। ३. एक प्रकार की सुलह या संधि।

वि० अस्थियों से बना। अस्थि-संबंधी।

कापालिक–संज्ञा पुं० १. शैव मत के वाममार्गी साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिये रहते और मद्य-मांसादि खाते हैं। २. वर्णसंकर जाति-विशेष। ३. वाममार्गी। ४. कोढ़ का एक भेद।

वि० दयाहीन। निर्घृण। कठोर।

कापाली–संज्ञा पुं० [स्त्री० कापालिनी] १. शिव। महादेव। २. वर्णसंकर विशेष। वाममार्गी साधु। दे० 'कापालिक'।

कापिल–वि० १. कपिल-संबंधी। २. कपिल का। ३. भूरा।

संज्ञा पुं० १. सांख्य दर्शन। २. कपिल के दर्शन को माननेवाला। ३. भूरा रंग।

कापी–संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) लिखने की कोरे कागजों की पुस्तक। प्रति। जिल्द।

कापीराइट–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) कानून के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन या अनुवाद का वह अधिकार, जो उसके ग्रंथकार या प्रकाशक को प्राप्त होता है।

कापुरुष–संज्ञा पुं० १. कायर। डरपोक। भीरु। २. निंदित। ३. कुत्सित पुरुष। ४. निकम्मा।

कापुरुषत्व–संज्ञा पुं० कायरता। नीचता।

काफ़िया–संज्ञा पुं० [अ०] अंत्यानुप्रास। तुक। सज।

यौ०–काफ़ियाबंदी=तुकबंदी। तुक जोड़ना।

मुहा०–काफ़िया तंग करना=नाकों दम करना। बहुत हैरान करना।

काफ़िर–वि० [अ०] १. मुसलमानों के मत से, उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २. नास्तिक। ईश्वर को न माननेवाला। ३. निर्दय। कठोर। निष्ठुर। बेदर्द। ४. बुरा। दुष्ट। ५. काफिर देश का रहनेवाला।

संज्ञा पुं० [अ०] [वि० काफ़िरी] देश विशेष का नाम जो अफ्रिका में है।

क़ाफ़िला–संज्ञा पुं० [अ०] यात्रियों का समूह।

काफ़ी–संज्ञा पुं० इस नाम का एक ठाट तथा राग (संगीत)।

वि० [अ०] पूर्ण। आवश्यक। पर्य्याप्त। पूरा। (अंग्रे०) कहवा।

काफीहाउस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] होटल या ऐसा स्थान जहाँ काफी, आइस्क्रीम और चाय, आदि बिकती हो, और लोग जमकर गपसड़ाका किया करें।

काफ़ूर–संज्ञा पुं० [वि० काफूरी] कपूर। ा०–काफ़ूर होना=भाग जाना। चंपत। गायब होना। लुप्त होना।

काफ़ूरी–वि० १. काफूर के रंग का। २. काफूर का।

संज्ञा पुं० हलका रंग-विशेष जिसमें हरेपन की झलक रहती है।

काब–संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकाबी।

काबर–वि० चितकबरा। जिसमें कई रंग हों।

काबा–संज्ञा पुं० अरब के मक्का शहर का स्थान-विशेष, जहाँ मुसलमान हज या तीर्थ-यात्रा के लिए जाते हैं।

क़ाबिज़–वि० [अ०] १. अधिकारी। अधिकार प्राप्त। २. मल का अवरोधक। दस्त रोकनेवाला।

क़ाबिल–वि० [अ०] [संज्ञा क़ाबिलीयत] १. योग्य। लायक। २. पंडित। विद्वान्। ३. चतुर।

क़ाबिलीयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। लियाकत। २. विद्वत्ता। पांडित्य। ३. चतुराई।

काबिस–संज्ञा पुं० रंग-विशेष जिससे मिट्टी के कच्चे बर्तन रँगकर पकाए जाते हैं।

काबुक–संज्ञा स्त्री० [फा०] कबूतरों का दरबा।

काबुल–संज्ञा पुं० [वि० काबुली] १. नदी-विशेष जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंध नदी में गिरती है। २. अफगानिस्तान की राजधानी।

काबुली–वि० काबुल का।

संज्ञा पुं० काबुल का निवासी।

क़ाबू–संज्ञा पुं० [तु०] वश। शक्ति। अधिकार। बल। चारा।

काम–संज्ञा पुं० [वि० कामुक, कामी] १. मनोरथ। इच्छा। २. कामदेव। ३. महादेव। ४. इंद्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति [कामशास्त्र] ५. सहवास या मैथुन की इच्छा। वासना ६. चार पदार्थों में से एक। ७. अभिलाषा ८. व्यापार। वह जो किया जाय। काम काज। ९. कठिन शक्ति या कौशल का कार्य्य। १०. अर्थ। प्रयोजन। मतलब तात्पर्य। ११. सरोकार। गरज। वास्ता १२. व्यवहार। उपयोग। १३. व्यवसाय कारबार। रोजगार। १४. रचना। कारीगरी। बनावट। १५. बेलबूटा या नक्काशी। १६. बधावा। १७. सुंदर। १८. विषय।

मुहा०–काम आना=१. लड़ाई में मारा जाना। २. व्यवहार में आना। काम

करना=१. प्रभाव डालना। असर डालना। २. फल उत्पन्न करना। काम चलना= काम जारी रहना। काम चलाना=१. काम निकालना। २. क्रिया का संपादन होना। काम तमाम करना=१. काम समाप्त करना। २. मार डालना। जान लेना। काम होना=१. प्राण जाना। मरना। २. अत्यंत कष्ट पहुँचना। काम रखता है=बड़ा कठिन कार्य्य है। कठिन बात है। काम निकलना=१ उद्देश्य पूरा होना। प्रयोजन सिद्ध होना। इच्छा पूर्ण करना। मतलब गँठना। २. आवश्यकता पूरी होना। कार्य्य निर्वाह होना। काम पड़ना= आवश्यकता होना। किसी के काम पड़ना= किसी से पाला पड़ना। किसी तरह का व्यवहार या संबंध होना। काम से काम रखना= अपने प्रयोजन का ध्यान रखना। व्यर्थ बातों में न पड़ना। काम आना= १. उपयोगी होना। व्यवहार में आना। २. सहारा देना। हाथ बटाना। सहायक होना। काम का=व्यवहार योग्य। उपयोगी (वस्तु)। काम देना=लाभकारी सिद्ध होना। व्यवहार में आना। उपयोगी होना। काम में लाना=बर्तना। व्यवहार में लाना।

कामकला–संज्ञा स्त्री० १. मैथुन। २. रति। कामदेव की स्त्री। ३. चंद्रमा की सोलह कला।

कामकाज–संज्ञा पुं० कामधंधा। कारोबार।

कामकाजी–वि० काम में फँसा रहनेवाला। काम करनेवाला। परिश्रमी। उद्योग-धंधे में रहनेवाला।

कामकेलि–संज्ञा स्त्री० सुरत। रमण क्रिया।

कामग–संज्ञा पुं० अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। दुराचारी। लंपट।

कामगार–संज्ञा पुं० दे० "कामदार"।

कामचर–वि० इच्छानुसार घूमने फिरनेवाला।

काम-चलाऊ–वि० १. जिससे किसी प्रकार का काम चल सके। २. जो बहुत से अंशों में काम दे जाय। ३. कुछ कुछ उपयोगी।

कामचारी–वि० १. इच्छानुसार विचरनेवाला। स्वतंत्र। २. मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। ३. उच्छृंखल। ४. कामुक।

कामचोर–वि० अकर्मण्य। आलसी। काम से जी चुरानेवाला।

कामज–वि० जो वासना से उत्पन्न हो।

कामजित्–वि० जो काम को जीते।
संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. कार्त्तिकेय। ३. जिन देव।

कामज्वर–संज्ञा पुं० ज्वर-विशेष जो स्त्रियों और पुरुषों को, अपना अभिलषित, प्रिय या प्रियतमा न मिलने से हो जाता है।

कामड़िया–संज्ञा पुं० चमार साधु, जो रामदेव के मत के अनुयायी हैं।

कामतरु–संज्ञा पुं० दे० "कल्पवृक्ष"।

कामता*–संज्ञा पुं० चित्रकूट।

कामद–वि० [स्त्री० कामदा] कामना या मनोरथ पूरा करनेवाला। जो इच्छानुसार फल दे।

कामंदक–संज्ञा पुं० एक भारतीय नैतिक विद्वान् का नाम।

कामद गाई–संज्ञा स्त्री० "कामधेनु"।

कामद मणि–संज्ञा पुं० चिंतामणि।

कामदहन–संज्ञा पुं० १. शिव। २. कामदेव को जलानेवाले।

कामदा–संज्ञा स्त्री० १. कामधेनु। २. दश अक्षरों की वर्णवृत्ति-विशेष।

कामदानी–संज्ञा स्त्री० कलाबत्तू। बादले के तार या सलमे-सितारे से बनाया हुआ बेल-बूटा।

कामदार–संज्ञा पुं० कारिंदा। प्रबंध करनेवाला। अमला।
वि० जिस पर बेल-बूटे कढ़े हों या बने हों। जैसे, कामदार टोपी।

कामदुघा–संज्ञा स्त्री० "कामधेनु"।

कामदुहा–संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु।"

कामदूती–संज्ञा स्त्री० वसंत ऋतु। कुंभी।

कामदेव—संज्ञा पुं० १. प्रेम के देवता-स्त्री जो पुरुष में परस्पर आकर्षण और संयोग की प्रेरणा देते हैं। मदन। २. वीर्य्य। ३. संभोग की इच्छा।

काम-धाम—संज्ञा पुं० धंधा। काम-काज। व्यापार। रोजगार।

कामधुक्—*—संज्ञा स्त्री० कामधेनु।

कामधेनु—संज्ञा स्त्री० १. सब मनोरथों को पूरा करनेवाली गाय। पुराणानुसार स्वर्ग की एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय, वही मिलता है। सुरभि। २. वशिष्ठ की शवला या नंदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनका विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

कामना—संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। वांछा। मनोरथ। २. वासना।

कामपत्नी—संज्ञा स्त्री० रति। कामदेव की स्त्री।

कामपाल—संज्ञा पुं० १. बलदेव। बलराम। २. महादेव।

कामपीड़ित—वि० १. कामासक्त। २. काम से दुखी।

कामबाण—संज्ञा पुं० कामदेव के पाँच बाण—मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण। बाणों को लाल कमल, अशोक, आम की मंजरी, चमेली और नील कमल का भी माना जाता है।

कामभक्ष—वि० १. इच्छानुसार भोजन करने-वाला। २. भक्ष्याभक्ष्य विचाररहित।

कामयाब—वि० [फा०] १. जिसका काम निकल गया हो या सिद्ध हो गया हो। २. सफल। उत्तीर्ण। कृतकार्य्य।

कामयाबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सफलता।

कामरिपु—संज्ञा पुं० [कामदेव के शत्रु] महा-देव। शिव।

कामरी*—संज्ञा स्त्री० कंबल। लोई। कमरी। कमली।

कामरुचि—संज्ञा स्त्री० अस्त्र-विशेष जिससे अन्य अस्त्रों को व्यर्थ करते थे।

कामरू—संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।

कामरूप—संज्ञा पुं० १. आसाम का जिला-विशेष जहाँ कामाख्या देवी का मंदिर है। २. प्राचीन अस्त्र-विशेष जिससे शत्रु के अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे। ३. २६ मात्राओं का एक छंद। ४. देवता।
वि० १. जो मनमाना रूप बनावे। २. सुंदर। ३. स्वेच्छाचारी।

कामरूपी—वि० विद्याधर। बहुरूपिया।

कामल—संज्ञा पुं० कमल का रोग। पीलिया। पांडुरोग।

कामला—संज्ञा पुं० दे० "कामल"। पाण्डु रोग।

कामली*—संज्ञा स्त्री० कमली।

कामलोल—वि० चंचल। चलचित्त।

कामवती—संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो काम या संभोग की वासना रखे। विलासिनी।

कामवान्—वि० [स्त्री० कामवती] जो काम या संभोग की इच्छा करे।

कामशर—संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"। मदन-बाण।

कामशास्त्र—संज्ञा पुं० विद्या-विशेष या ग्रंथ जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर आकर्षण आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।

कामसखा—संज्ञा पुं० वसंत ऋतु।

कामांध—वि० काम के वशीभूत, कामवासना के जोश में जिसे भले-बुरे का ज्ञान न हो। विवेकभ्रष्ट।

कामा—संज्ञा स्त्री० वृत्ति-विशेष जिसमें दो गुरु होते हैं।

कामाक्षी—संज्ञा स्त्री० तंत्र के अनुसार देवी की मूर्त्ति-विशेष।

कामाक्ष्या या कामाख्या—संज्ञा स्त्री० १. देवी का एक पीठ-स्थान। देवी-विशेष। २. कामरूप।

कामातुर—वि० काम के वेग से तप्त। समागम की इच्छा से उद्विग्न। कामार्त। काम से पीड़ित। कामुक।

कामात्मा—वि० कामुक। लम्पट। व्यभि-चारी।

कामाधिकार—संज्ञा पुं० १. प्रेम की उत्पत्ति। २. स्वेच्छाधीन ३. काम का अधिकारी।

कामाधिष्ठ—वि० कामाभिभूत। कामवश।

कामानुज—वि० क्रोध।

कामायुद्ध—संज्ञा पुं० १. कामदेव का श्रायुद्ध। २. कामदेव के बाण। ३. श्राम।
कामायनी—संज्ञा स्त्री० १. वैवस्वत मनु की पत्नी श्रद्धा का नाम। २. हिन्दी का एक काव्यग्रंथ।
कामाख्य—संज्ञा पुं० मनोहर वन। उत्तम वगीचा।
कामारथी†—संज्ञा पुं० दे० "काँवारथी"।
कामारि—संज्ञा पुं० काम के शत्रु। शिव। महादेव।
कामार्थी—संज्ञा पुं० १. कामरिया। २. गंगा-जलिया।
कामावशायिता—संज्ञा स्त्री० सत्यसंकल्पता। योगियों की श्राठ सिद्धियों या ऐश्वर्यों में से एक।
कामासक्त—वि० कामातुर। काम से पीड़ित।
कामिका—संज्ञा स्त्री० श्रावण कृष्ण की एकादशी का नाम।
कामिनी—संज्ञा स्त्री० १. कामवती स्त्री। २. भीरु स्त्री। ३. सुंदरी स्त्री। युवती। ४. मदिरा। शराब ५. दारुहल्दी। ६. पेड़ों का बाँदा। ७. मालकोष, एक रागिनी। ८. काष्ठ-विशेष।
कामिनीमोहन—संज्ञा पुं० स्रग्विणी छंद का एक नाम।
कामिल—वि० [श्र०] १. पूर्ण। पूरा। समूचा। कुल। २. योग्य। व्युत्पन्न।
कामी—वि० [स्त्री० कामिनी] १. विषयी। कामुक। २. कामना रखनेवाला। इच्छुक। कामातुर।
संज्ञा पुं० १. चकवा। २. कबूतर। ३. सारस ४. चिड़ा। ५. चंद्रमा। ६. काकड़ासिंगी। ७. विष्णु का एक नाम। ८. शिव।
कामुक—वि० [स्त्री० कामुका] १. चाहनेवाला। इच्छा करनेवाला। २. [स्त्री० कामुकी] कामी। विषयी। कामासक्त। ३. लंपट। कामातुर।
संज्ञा पुं० धनुष। कबूतर-विशेष।
कामेश्वरी—संज्ञा स्त्री० १. तंत्र के श्रनुसार भैरवी-विशेष। २. कामाख्या की एक मूर्त्ति (पाँच मूर्त्तियों में से)।
कामोद—संज्ञा पुं० राग-विशेष।
कामोदा—संज्ञा स्त्री० रागिणी-विशेष।
कामोद्दीपक—वि० काम को बढ़ानेवाला जिससे मनुष्य को सहवास की इच्छा श्रधिक हो।
कामोद्दीपन—संज्ञा पुं० सहवास की इच्छा का बढ़ावा।
काम्य—वि० १. इच्छित। जिसकी इच्छा हो। कामनायुक्त। २. जिससे कामना की सिद्धि हो। ३. कमनीय। सुन्दर।
संज्ञा पुं० १. किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जानेवाला यज्ञ या कर्म जैसे—पुत्रेष्टि। २. श्रभिलाषा का विषय।
काम्य कर्म—संज्ञा पुं० इच्छित फलसिद्धि के लिए धर्मकार्य।
काम्यत्व—संज्ञा पुं० श्राकांक्षा। श्रभिलाषा।
काम्यदान—संज्ञा पुं० १. कामना सहित दान। नैमित्तिक दान। २. किसी पर्व-विशेष में दान।
काम्येष्टि—संज्ञा स्त्री० कामना की सिद्धि के लिए किया जानेवाला यज्ञ।
काय—वि० प्रजापति-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. देह। शरीर। बदन। तन। वपु। २. प्रजापति तीर्थ। ३. कनिष्ठा उँगली की नीचे की पोर (स्मृति)। ४. प्रजापति का हवि। ५ प्राजापत्य विवाह। ६. पूंजी। मूलधन। ७. संघ। समुदाय। ८. मूर्ति।
कायक—वि० १. शरीर-संबंधी। शारीरिक। २. जीव।
कायक्लेश—संज्ञा पुं० शरीर-संबंधी दुख। देह का कष्ट।
कायचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० शारीरिक रोगों की चिकित्सा।
कायजा—संज्ञा पुं० घोड़े की लगाम की डोरी जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं।
क़ायदा—संज्ञा पुं० १. नियम। विधान। २. रीति। ढंग। ३. चाल। दस्तूर। विधि। ४. व्यवस्था। क्रम।
कायफल—संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष जिसकी छाल दवा के काम में श्राती है। श्रौषध-विशेष।

क़ायम–वि० [अ०] १. स्थिर। ठहरा हुआ। उपस्थित। २. निर्धारित। ३. स्थापित। निश्चित।

क़ायम-मुक़ाम–वि० [अ०] बदले में उपस्थित। स्थानापन्न। एवजी।

कायर–वि० १. भीरु। डरपोक। २. आलसी।

कायरता–संज्ञा स्त्री० भीरुता। डरपोकपन। दब्बूपन।

क़ायल–वि० [अ०] माननेवाला। जो तर्क-वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। कबूल करनेवाला।

कायली–संज्ञा स्त्री० मथानी। ग्लानि। लज्जा। कायल। हार माना हुआ। तर्क में परास्त होने की क्रिया या भाव।

यौ०–कायली-माकूली=तर्क करना और तर्क-सिद्ध बात मान लेना।

कायव्यूह–संज्ञा पुं० १. शरीर में वात, पित्त, कफ आदि धातुओं के स्थान और विभाग का शास्त्रोक्त क्रम। २. योगियों की अपने कर्मों के भोग के लिए चित्त में एक अपने ही समान पुरुष की कल्पना (योगशास्त्र)। ३. सैनिकों का घेरा।

कायस्थ–वि० जो शरीर में स्थित रहे। संज्ञा पुं० १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. जाति-विशेष।

कायस्था–संज्ञा स्त्री० १. हरीतकी। धात्रीवृक्ष। आँवला। २. छोटी-बड़ी इलायची। ३. तुलसी। ४. काकोली।

काया–संज्ञा स्त्री० शरीर। देह। तन।

मुहा०–काया पलट जाना=रूपांतर हो जाना। और से और हो जाना। नए रूप की प्राप्ति होना।

कायाकल्प–संज्ञा पुं० औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः सबल करने की क्रिया (आयुर्वेद)।

काया-पलट–संज्ञा स्त्री० १. भारी हेर-फेर। बहुत बड़ा परिवर्तन। २. एक शरीर या रूप का दूसरे शरीर या रूप में बदलना। और ही रंग-रूप होना।

कायिक–वि० १. शरीर-संबंधी। दैहिक। शारीरिक। २. शरीर से किया हुआ या उत्पन्न। जैसे, कायिक पाप। ३. संघ संबंधी (बौद्ध)।

कायोढज–संज्ञा पुं० प्राजापत्य विवाह से उत्पन्न पुत्र।

कारंड, कारंडव–संज्ञा पुं० हंस या बत्तख की एक जाति।

कारंधमी–संज्ञा पुं० रसायनी। कीमियागर।

कार–संज्ञा पुं० १. क्रिया। कार्य्य। यत्न। व्यापार। उपाय। कामकाज करनेवाला। जैसे—उपकार, स्वीकार। २. बनानेवाला। करनेवाला। कर्ता। रचनेवाला। जैसे, कुंभकार, ग्रंथकार। ३. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के बाद लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे—चकार, लकार। ४. एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है। जैसे—चीत्कार।
संज्ञा पुं० [फा०] कार्य्य। काम [अंग्रे०] मोटर गाड़ी।
* वि० दे० "काला"।

कारक–वि० [स्त्री० कारिका] करनेवाला। जैसे हानिकारक, सुखकारक।
संज्ञा पुं० संज्ञा या सर्वनाम शब्द का वह रूप जिसके द्वारा वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है (व्याकरण)।

कारकदीपक–संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें अनेक क्रियाओं का अन्वय एक ही कर्त्ता से होता है (साहित्य)।

कारकुन–संज्ञा पुं० [फा०] १. इंतजाम करनेवाला। प्रबंधकर्त्ता। २. कारिंदा।

कारख़ाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु बनाई जाती है। कार्यालय। २. कारबार। व्यवसाय। ३. घटना। दृश्य। मामला। ४. क्रिया।

कारगर–वि० [फा०] १. प्रभावोत्पादक। असर करनेवाला। २. उपयोगी।

कारगुज़ार–वि० [फा०] [संज्ञा कारगुजारी]

अपना कर्त्तव्य भली भाँति पूरा करनेवाला। कर्तव्यनिष्ठ।

कारगुजारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कर्त्तव्य-पालन। भली भाँति आज्ञा पर ध्यान देकर काम करना। २. कार्य्यपटुता। चतुराई। कौशल। ३. कर्मण्यता।

कारचोब–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० कारचोबी] १. अड्डा। लकड़ी का चौकठा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम किया जाता है। २. जरदोज। जरदोजी या कसीदे का काम करनेवाला।

कारचोबी–वि० [फा०] जरदोजी का।
संज्ञा स्त्री० [फा०] जरदोजी। गुलकारी। वस्त्र-विशेष जिस पर चाँदी-सोने के तारों द्वारा बेल-बूटे बनाए गए हों।

कारज–*†संज्ञा पुं० दे० १. "कार्य्य"। काम। कर्म। काज। २. कारबार। धन्धा।

कारटा*–संज्ञा पुं० कौआ।

कारण–संज्ञा पुं० १. लिए। हेतु। वजह। किसी बात की उत्पत्ति का मूल। २. हेतु। निमित्त। प्रत्यय। प्रयोजन। निदान। वह जिससे दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति हो। ३. आदि। ४. कर्म। ५. साधन। ६. प्रमाण।

कारण-करण–संज्ञा पुं० कारण का कारण। परमेश्वर। संसार की सृष्टि करनेवाला।

कारणगुण–संज्ञा पुं० हेतु के गुण। कारण के धर्म।

कारणमाला–संज्ञा स्त्री० १. हेतुओं की श्रेणी। परंपरा। २. अर्थालंकार, जिसमें कोई कार्य्य आगे वर्णित अन्य कार्य्य का कारण बताया जाता है। कारण-समूह। ३. घटना।

कारणवादी–संज्ञा पुं० निवेदक। अभियोग उपस्थित करनेवाला। फरयादी।

कारणवारि–संज्ञा पुं० सृष्टि उत्पन्न करनेवाला जल। सृष्टि के प्रथम का जल।

कारणविशिष्ट–वि० युक्तिसिद्ध। उचित।

कारणशरीर–संज्ञा पुं० सत्वप्रधान। आनन्दमय कोष। शरीरगत वह मूल चैतन्य जो अविद्या या माया कहा जाता है और जो शुद्ध होकर ईश्वर संज्ञा प्राप्त करता है (वेदांत)।

कारणीभूत–वि० मूल कारण। हेतुभूत।

कारतूस–संज्ञा पुं० [पुर्त्त० कार्टूश] बंदूकों में भरकर चलानेवाली बारूद की गोली।

कारन*–संज्ञा पुं० दे० "कारण"।
संज्ञा* स्त्री० कूक। रोने का आर्त्त स्वर। करुण स्वर।

कारनिस–संज्ञा स्त्री० [अ०] कगर। दीवार की कँगनी।

कारनी–संज्ञा पुं० १. प्रेरणा करनेवाला। प्रेरक। २. भेदक। भेद करानेवाला। जो बुद्धि पलटे।

कारपरदाज–वि० [फा०] १. प्रतिनिधि। काम करनेवाला। कारकुन। २. प्रबंध-कर्त्ता। कारिंदा।

कारपरदाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दूसरे की ओर से प्रबंध करने का कार्य। २. कार्य्य करने की तत्परता।

कारबार–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० कारबारी] व्यवसाय। काम-धन्धा। काम-काज। वाणिज्य। व्यापार। पेशा।

कारबारी–वि० [फा०] व्यवसायी। काम-काजी।
संज्ञा० पुं० कारिंदा। कारकुन।

काररवाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कृत्य। काम। करतूत २. विवरण। ३. कार्य्य-तत्परता। कर्मण्यता। ४. चाल। गुप्त प्रयत्न।

कारवाँ–संज्ञा पुं० [फा०] यात्रियों का समूह।

कारवल्ली या कारवेल्ल–संज्ञा स्त्री० कटु-फल। करेला। तरकारी-विशेष।

कारवी–संज्ञा स्त्री० १. मयूरशिखा। २. रुद्र-जटा। ३. अजमोद। कलौंजी। औषध-विशेष।

कारसाज–वि० [फा०] [संज्ञा कारसाजी] बिगड़े काम को बनानेवाला। जो काम पूरा करने की युक्ति निकाले।

कारसाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. काम पूरा करने का ढंग या युक्ति। २. कपट-प्रयत्न। गुप्त कार्रवाई। ३. चालबाजी।

कारस्तानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कार-रवाई। कारसाजी। २. चालाकी। गुप्त काररवाई।

कारा–संज्ञा स्त्री० १. स्वाधीनता-नाश बंधन। कैद। २. कष्ट। पीड़ा। क्लेश वि० *† दे० "काला"। सोने का काम बनानेवाली स्त्री। एक तरह की चिड़िया

कारागार, कारागृह–संज्ञा पुं० १. बंदीगृह कैद। खाना जेलखाना। २. अवरोधनस्थान

कारावास–संज्ञा पुं० बंदीगृह। कैद। जेल

कारिंदा–संज्ञा पुं० [फा०] कर्मचारी। दूसरे की ओर से काम करनेवाला। गुमाश्ता। कारकुन।

कारिका–संज्ञा स्त्री० १. किसी सूत्र की श्लोकबद्ध संक्षिप्त व्याख्या। २. नटी। नट की स्त्री। नर्तकी। ३. व्यापार। ४. कष्ट। पीड़ा। ५. ब्याज। सूद।

कारिख–संज्ञा स्त्री० दे० "कालिख"। १. स्याही। श्यामता। २. कलंक। दोष।

कारित–वि० कराया हुआ।
संज्ञा पुं० कानून की दर से अधिक ब्याज या सूद।

कारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कारिणी] १. बनाने या करनेवाला। २. नट। ३. वृक्ष-विशेष। कार्यकर्ता।
वि० [फा०] १. घातक। २. मर्मभेदी। ३. काली। ४. श्यामा। ५. यथार्थ। ६. भरपूर।

कारीगर–संज्ञा पुं० [फा०] शिल्पी। धातु, लकड़ी, पत्थर इत्यादि से सुंदर वस्तुओं की रचना करनेवाला। शिल्पकार।
वि० हाथ से काम बनाने में कुशल। गुणी। निपुण। हुनरमंद।

कारीगरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. निर्माणकला। अच्छे काम बनाने की कला। २. मनोहर रचना। सुंदर बना हुआ काम। शिल्पकारी।

कारबारी–वि० [फा०] काम-धंधेवाला। कामकाजी।

कारु–संज्ञा पुं० शिल्पी। कारीगर। दस्त-कार।

कारुकर–संज्ञा पुं० १. विश्वकर्मा। शिल्पी। शिल्पकार। २. निर्माता। ३. सुवर्ण-कार।

कारुकारि–संज्ञा पुं० कारीगरी। हुनर।

कारुणिक, कारुणीक–वि० दयालु। कृपालु। करुणायुक्त।

कारुण्य–संज्ञा पुं० कृपा। करुणा का भाव। दया। कृपा।

कारूँ–संज्ञा पुं० [अ०] हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था; पर खैरात नहीं करता था।
यौ०–कारूँ का खजाना=अनंत संपत्ति।

कारूनी–संज्ञा स्त्री० घोड़ों की जाति-विशेष।

कारूरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. मूत्र। पेशाब। २. मूत्र रखने की कच्ची या फुंकनी शीशी।

कारौंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "कालौंछ"।

कारो–वि० काला। स्याह।

कारोबार–संज्ञा पुं० दे० "कारबार"। व्यवसाय। व्यापार। काम-काज।

कार्कश्य–संज्ञा पुं० कठोरता। कठिनता। कर्कशता। परुषता। नीरसता। क्रूरता।

कार्ड–सं० पुं० [अंग्रे०] मोटे कागज का तख्ता। ऐसे कागज का टुकड़ा जिस पर समाचार या पता आदि लिखा जाता है।

कार्त्तवीर्य–संज्ञा पुं० हैहय। कृतवीर्य का पुत्र, सहस्रार्जुन।

कार्त्तिक–संज्ञा पुं० एक मास का नाम जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है। शरद ऋतु का दूसरा महीना।

कार्त्तान्तिक–संज्ञा पुं० ज्योतिर्वेत्ता। ज्योतिः-शास्त्रज्ञ। दैवज्ञ। ज्योतिषी।

कार्त्तिकेय–संज्ञा पुं० महादेवजी के ज्येष्ठ पुत्र। कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न स्कन्द। षडानन।

कार्पण्य–संज्ञा पुं० १. कंजूसी। कृपणता। कम खर्च करना। २. दीनता।

कार्पास—संज्ञा पुं० १. कपास। रुई। २. सूती कपड़ा।

कार्मण—संज्ञा पुं० १. मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग। २. कर्मदक्ष। ३. कर्मठ। ४. मूलकर्म।

कार्मना—संज्ञा पुं० १. तंत्र। मंत्र। २. कृत्या। मंत्र-तंत्र का प्रयोग।

कार्मिक—वि० विचित्र वस्त्र। जड़ाऊ वस्त्र। कारचोबी के कपड़े। वह वस्त्र जिसकी बुनावट में ही शंख, चक्र, स्वस्तिक आदि के चिह्न बनाए गए हों।

कार्मुक—संज्ञा पुं० १. धनुष। २. चाप। परिध का एक भाग। ३. बाँस। ४. इंद्र-धनुष। ५. बकायन। ६. सफेद खैर। ७. नवीं राशि। धन राशि। ८. कर्म सम्पादन करनेवाला।

कार्मुकभृत्—संज्ञा पुं० धनुर्धारी। धानुष्क। वीर। योद्धा।

कार्य—संज्ञा पुं० १. कर्म। काम। कृत्य। २. धंधा। व्यापार। ३. हेतु। प्रयोजन। वह जो कारण का विकार हो अथवा जिसे लक्ष्य करके कर्त्ता क्रिया करे। ४. परिणाम। फल। ५. जन्म-कुंडली का दसवाँ स्थान। ६. मुकदमा।

कार्यकर्त्ता—संज्ञा पुं० १. कर्मचारी। काम करनेवाला। जो काम करता हो। २. नौकर।

कार्यकलाप—संज्ञा पुं० कार्य-समूह। अनेक कार्य। कार्याधिक्य।

कार्यकार—संज्ञा पुं० कर्मचारी। उपकारक। सहायक।

कार्यकारक—संज्ञा पुं० कार्यकर्त्ता। कार्य-संपादन करनेवाला।

कार्य-कारण-भाव—संज्ञा पुं० कार्यकारण का संबंध।

कार्यकुशल—वि० १. कर्मठ। २. कार्यदक्ष। ३. चतुरता से काम करनेवाला।

कार्यक्षम—वि० कार्य करने योग्य। कृती। क्षमतावान्।

[कार्यत]ः—अव्य० १. यथार्थ रूप से। २. निश्चित रूप से। ३. क्रिया के रूप से।

कार्यदक्ष—वि० कर्म में निपुण। कर्मठ। कर्मकुशल।

कार्यनिष्ठ—वि० काम में लगा हुआ। कार्यासक्त। कामकाजी।

कार्यपटु—वि० कार्यदक्ष। कर्मकुशल।

कार्यवाही—संज्ञा स्त्री० काररवाई।

कार्यविवरण—संज्ञा पुं० कार्यों का वर्णन।

कार्यसम—संज्ञा पुं० शास्त्रार्थ में एक आपत्ति या दोष जिससे यह दिखलाया जाता है कि कोई फल ऐसी वस्तु से भी हो सकता है, जिससे वह न होना चाहिए। (न्यायशास्त्र)।

कार्यहन्ता—संज्ञा पुं० प्रतिबंधक। बाधक। कार्यनाशक।

कार्याधिकारी—संज्ञा पुं० प्रतिनिधि कर्मचारी। वह जिसके सुपुर्द किसी कार्य्य का प्रबंध आदि हो।

कार्याधिष्ठाता—संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ। २. सेठ। ३. कार्यासक्त। ४. व्यापारलग्न।

कार्याधीश—संज्ञा पुं० १. कार्य्याध्यक्ष। २. स्वामी। प्रभु।

कार्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० कार्य का अधिकारी। अफसर। मुख्य कार्य्यकर्त्ता।

कार्यान्वित—वि० कार्य्य में लगा हुआ। कार्य्य के रूप में किया हुआ। कार्य्य के रूप में परिणत।

कार्यार्थी—वि० जो कार्य की सिद्धि चाहे। जिसका कोई प्रयोजन हो।

कार्यालय—संज्ञा पुं० काम करने का स्थान। दफ्तर। कारखाना।

कार्रवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई"।

कार्श्य—संज्ञा स्त्री० क्षीणता। कृशता। दुर्बलता।

कार्षाक—संज्ञा पुं० कृषक। किसान। खेतिहर।

कालंजर—संज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम। २. वाममार्गियों का बड़ा महन्त।

काल—संज्ञा पुं० १. समय। वह संबंध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है। बेला। २. मृत्यु। मरण। अंतिम काल। नाश का समय। ३. यमदूत। यमराज। ४. उपयुक्त समय।

नियत समय। अवसर। ५. महँगी। अकाल। दुर्भिक्ष। ६. शनि। ७. ऋतु। ८. भाग्य। आगामी या व्यतीत दिन। शिव का नाम-विशेष। महाकाल। ९. साँप। सर्प। १०. मृत्युकारक जन्तु या द्रव्य।
मुहा०—काल पाकर=कुछ दिनों के उपरांत। काल काटना=समय नष्ट करना। खाली बैठे रहना। काल गँवाना=उचित समय पर काम न करना।
वि० काले रंग का। काला।
*क्रि० वि० दे० "कल"।

कालकंठ—संज्ञा पुं० १. नीलकंठ। महादेव। शिव। २. मयूर। मोर। खंजन। खिड्रिच।

कालक—संज्ञा पुं० १. तेंतीस प्रकार के केतुओं में से एक। २. आँख की पुतली। ३. बीज गणित की दूसरी अव्यक्त राशि। ४. पानी का साँप। ५. देश-विशेष। ६. यकृत। ७. लकड़ी में घुन का छेद। ८. किसी संवाद-पत्र का स्तंभ।
वि०—गहरा नीला। काला।

कालका—संज्ञा स्त्री० दक्ष प्रजापति की वह कन्या, जो कश्यप को ब्याही गई थी। काला धब्बा। जंग (धातु पर)। सोने का खोट। लीवर। बरफ। हिम। कोहरा। सर्प-विशेष। दुर्गा। चार वर्ष की कन्या।
वि०—कालिमा। कालापन।

कालकील—संज्ञा स्त्री० १. घबड़ाहट। २. हड़-बड़ी। ३. कोलाहल।

कालकूट—संज्ञा पुं० १. काला बच्छनाग। एक तरह का अत्यंत भयंकर विष। हलाहल। जहर। २. सींगिया की जाति के पौधे विशेष की जड़ जिस पर चित्तियाँ होती हैं।

कालकेतु—संज्ञा पुं० राक्षस-विशेष।

कालकेय—संज्ञा पुं० राक्षस-विशेष।

कालकोठरी—संज्ञा स्त्री० १. जेलखाने की बहुत छोटी और अँधेरी कोठरी। २. अँधेरी छोटी कोठरी।

कालक्रम—संज्ञा पुं० समयानुसार। समय का विभाग।

कालक्षेप—संज्ञा पुं० १. समय काटना। २. निर्वाह। गुजर-बसर।

कालख—संज्ञा पुं० लहसुन। तिल। मसा।

कालगडेत—संज्ञा पुं० काले गंडे या चित्तियों-वाला जहरीला सर्प।

कालचक्र—संज्ञा पुं० १. समय का परिवर्तन। २. अस्त्र-विशेष।

कालज्ञ—संज्ञा पुं० १. जो समय के हेरफेर को जानता हो। समयज्ञाता। २. समयानुसार काम करनेवाला। ३. ज्योतिषी।

कालज्ञान—संज्ञा पुं० १. स्थिति और अवस्था का ज्ञान। २. मृत्यु का समय जान लेना।

कालतुष्टि—संज्ञा स्त्री० सांख्य में एक तुष्टि। यह सोचकर संतोष कर लेना कि जब समय आ जायगा, तब यह बात अपने आप हो जायगी।

कालदंड—संज्ञा पुं० यमराज का दंड, उनका अस्त्र।

कालधर्म—संज्ञा पुं० १. मरण। मृत्यु। अवसान। विनाश। २. वह व्यापार जो किसी विशेष समय पर स्वतः हो। समय के अनुसार धर्म।

कालनाभ—संज्ञा पुं० हिरण्याक्ष का एक पुत्र।

कालनिर्यास—संज्ञा पुं० सुगन्धित द्रव्य-विशेष। गूगुल।

कालनिशा—संज्ञा स्त्री० १. दिवाली की रात। २. अँधेरी डरावनी रात। ३. प्रलय की रात्रि। ४. मरण समय की रात।

कालनेमि—संज्ञा पुं० १. राक्षस-विशेष जो रावण का मामा था। २. दानव-विशेष जिसने देवताओं को हराकर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था। ३. कपटी मुनि।

कालपर्णी—संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। काला निसोत।

कालप्रभात—संज्ञा पुं० शरद ऋतु। शरत्काल।

काल-पालक—संज्ञा पुं० १. समय की उपेक्षा करनेवाला। २. गूढ़ नीतिज्ञ।

कालपाश, कालपास—संज्ञा पुं० १. वह नियम जिसके कारण भूत-प्रेत कुछ समय तक के लिए कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते। २. मृत्यु-पाश। यमपाश। यमराज का बंधन। मरण-रज्जु।

कालपुरुष—संज्ञा पुं० १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल। यमराज के अनुचर। यमराज। शुभाशुभ जानने के लिए कल्पित द्वादश राशियों का पुरुषाकार।

कालबंजर—संज्ञा पुं० वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो।

कालबूत—संज्ञा पुं० १. छैना। वह कच्चा भराव जिस पर महराब बनाई जाती है। २. चमारों का वह काठ का साँचा जिस पर चढ़ाकर जूते सिये जाते हैं।

कालबेला—संज्ञा स्त्री० अयोग्य काल। किसी काम को करने के लिए निन्दित समय।

कालबेलिया—संज्ञा पुं० सर्प का विष उतारनेवाला। विषवैद्य।

कालभैरव—संज्ञा पुं० १. शिव के अंश से उत्पन्न। २. महादेव का एक गण। ३. ब्रह्मज्ञानशून्य।

कालम—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) स्तंभ।

कालमा—संज्ञा पुं० संशय। सन्देह। दुविधा। खटका।

कालमूल—संज्ञा पुं० लाल चित्रक। औषध-विशेष।

कालमेषिका—संज्ञा स्त्री० मजीठ। बाकुची। औषध-विशेष।

कालमेषी—संज्ञा स्त्री० मजीठ। काला निसोत।

काल-यवन—संज्ञा पुं० यवनों का राजा जिसने जरासंध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी (पुराण)।

कालयापन—संज्ञा पुं० समय बिताना। कालक्षेप। दिन व्यतीत करना। गुजारा करना।

कालर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] गले में बाँधने का पट्टा। कोट या कमीज की वह पट्टी, जो गले के चारों ओर रहती है। कुत्तों आदि के गले में बाँधने का पट्टा।

कालरा—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) विसूचिका रोग। हैजा।

कालराति*—संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि"।

कालरात्रि—संज्ञा स्त्री० १. अँधेरी और डरावनी रात। २. प्रलय की रात। ब्रह्मा की रात्रि जिसमें सारी सृष्टि लय हो जाती है, केवल नारायण ही रहते हैं। ३. मृत्यु की रात्रि। ४. दिवाली की अमावस्या। ५. दुर्गा की मूर्ति-विशेष। भगवती का नाम। ६. सब प्राणियों का नाश करनेवाली यमराज की बहिन। ७. मनुष्य की आयु में वह रात जो सतहत्तरवें वर्ष के सातवें महीने के सातवें दिन पड़ती है।

कालवाचक, कालवाची—वि० समय-बोधक। जिसके द्वारा समय जाना जाय।

कालविपाक—संज्ञा पुं० किसी काम के होने का समय पूरा होना।

कालशाक—संज्ञा पुं० पटुआ साग। सरफोंका।

कालसर्प—संज्ञा पुं० वह साँप जिसके काटने से आदमी मर जाय।

कालसार—संज्ञा पुं० तेंदू का पेड़। मृग-विशेष।

कालसूत्र—संज्ञा पुं० नरक-विशेष।

कालसूर्य—संज्ञा पुं० प्रलय काल का सूर्य।

कालस्कंध—संज्ञा पुं० तमाल वृक्ष। तिन्दुक वृक्ष।

कालस्वरूप—वि० १. मृत्यु के समान भयंकर। २. घातक। हिंसक।

कालांतक—संज्ञा पुं० यमराज। धर्मराज।

काला—वि० [स्त्री० काली] १. स्याह। काले वर्ण का। काजल या कोयले के रंग का। २. कलुषित। बुरा। ३. प्रचंड। भारी। **मुहा०**—(अपना) मुँह काला करना=१. पाप या कुकर्म करना। २. अनुचित सहगमन करना। व्यभिचार करना। ३. किसी बुरे आदमी का दूर होना। (दूसरे का) मुँह काला करना=१. किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति को अलग करना। व्यर्थ की झंझट मिटाना। २. कलंक या बदनामी का कारण होना। काला

मुँह होना या मुँह काला होना=कलंकित होना। बदनाम होना। काले कोसों=बहुत दूर। लज्जित होना। मुँह में कालिख लगाना।
संज्ञा पुं० काला साँप। काला नाग।

काला-कलूटा–वि० बिलकुल काले रंग का। बहुत काला। अत्यन्त श्याम (मनुष्य)।

कालाक्षरी–वि० १. काले अक्षर मात्र का अर्थ बता देनेवाला। २. अत्यंत विद्वान्। प्रकांड पण्डित। ३. जिसे काले अक्षर और काले रंग में भेद न मालूम हो। अत्यंत मूर्ख। लंठ। ४. वह शिष्य जिसने पढ़ना आरंभ ही किया हो।

कालाग्नि–संज्ञा पुं० १. प्रलय काल की आग। कालानल। संहारकारक अग्नि। २. प्रलयाग्नि के अधिष्ठाता रुद्र।

कालागुरु–संज्ञा पुं० १. सुगन्धित द्रव्य-विशेष। २. कृष्णवर्ण सुगन्धित काष्ठ।

काला चोर–संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा चोर। २. बहुत बुरा आदमी। ३. अपरिचित मनुष्य।

काला जीरा–संज्ञा पुं० १. स्याह जीरा। २. मीठा जीरा। ३. पर्वत जीरा।

कालातीत–वि० जिसका समय व्यतीत हो गया हो।
संज्ञा पुं० १. पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से वह जिसमें अर्थ देश एवं काल से संबद्ध दोष से युक्त होता है और इस कारण असत् ठहरता है। २. बाध-विशेष जिसमें साध्य के आधार में साध्य का अभाव निश्चित रहता है (न्यायशास्त्र)।

काला दाना–संज्ञा पुं० १. लता-विशेष जिससे काले दाने निकलते हैं। २. इस लता का बीज या दाना जो बहुत रेचक होता है।

काला नमक–संज्ञा पुं० सोंचर। सज्जी के योग से बना हुआ एक तरह का पाचक लवण।

काला नाग–संज्ञा पुं० १. काला सर्प। विषधर सर्प। २. बहुत बुरा आदमी। कुटिल मनुष्य।

कालाप–वि० कलाप व्याकरण जाननेवाला।

काला पहाड़–संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा और डरावना। दुस्तर (वस्तु)। २. मुर्शिदाबाद के नवाब दाऊद का सेनापति जो बड़ा क्रूर और कट्टर मुसलमान था। ३. बहलोल लोदी का एक भानजा जो सिकंदर लोदी से लड़ा था।

काला पान–सं० पुं० ताश की बूटियों का वह रंग जो 'हुकुम' कहलाता है।

काला पानी–संज्ञा पुं० १. बंगाल की खाड़ी में स्थान-विशेष जहाँ का पानी बिलकुल काला दिखाई पड़ता है। २. अंदमान और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-निकाले के बंदी भेजे जाते थे। ३. देशनिकाले का दंड। ४. मदिरा। शराब।

काला भुजंग–वि० बिलकुल काला। काला-कलूटा।

कालायस–संज्ञा पुं० लौह-विशेष। इस्पात लोहा।

कालास्त्र–संज्ञा पुं० बाण-विशेष जिसके प्रहार से ऐसा समझा जाता है कि शत्रु का नाश अवश्य ही हो जायगा।

कालिंग–वि० कलिंग देश का।
संज्ञा पुं० १. कलिंग देश का रहनेवाला। २. कलिंग देश का राजा। ३. हाथी। ४. तरबूज। ५. साँप। सर्प। ६. एक तरह का खीरा। ७. एक तरह का लोहा।

कालिंजर–संज्ञा पुं० पर्वत-विशेष जो बाँदा से ३० मील पूर्व की ओर है।

कालिंदी–संज्ञा स्त्री० १. यमुना नदी, जो कलिंद पर्वत से निकली है। २. कृष्ण की एक स्त्री।

कालि*–क्रि० वि० दे० "कल"।

कालिक–वि० १. समयोचित। समय-संबंधी। सामयिक। २. जिसका कोई समय नियत हो।
संज्ञा पुं० १. नाक्षत्र मास। २. काला चन्दन। ३. क्रौंच पक्षी।

कालिका–संज्ञा स्त्री० १. चंडिका। काली। देवी की एक मूर्त्ति। २. कालिमा। कालापन। कालिख। ३. घटा। मेघ। बादल।

४. बिछुआ नामक पौधा। ५. शराब। मदिरा। ६. मसि। स्याही। ७. रणचंडी। ८. आँख की काली पुतली। ९. जटा-माँसी। १०. काकोली। ११. शृगाली। १२. कौवे की मादा। १३. एक प्रकार की हर। १४. एक नदी। १५. दक्ष की एक बेटी। १६. कुहरा। १७. हलकी झड़ी। १८. बिच्छू। १९. सिर मलने की काली मिट्टी। २०. चार वर्ष की कन्या।

कालिकापुराण—संज्ञा पुं० उपपुराण-विशेष जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य आदि का वर्णन है।

कालिख—संज्ञा स्त्री० १. धुएँ की जमी हुई काली राख। २. कलौंछ। ३. स्याही।

मुहा०—मुँह में कालिख लगना=अपयश की वजह से मुँह दिखलाने योग्य न रहना।

कालिख्या—संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष। किन्दवाली नामक एक वृक्ष।

कालिदास—संज्ञा पुं० संस्कृत के प्रसिद्ध महा-कवि।

कालिब—संज्ञा पुं० [अ०] १. टोपियाँ ठीक करने का टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा। २. देह। शरीर।

कालिमा—संज्ञा स्त्री० १. कृष्णता। कालापन। २. कालिख। कलौंछ। ३. मलिनता। ४. अँधेरा। ५. दोष। लांछन। ६. कलंक। ७. मालिन्य।

कालियंक—संज्ञा पुं० मलय चन्दन।

कालिय—संज्ञा पुं० सर्प-विशेष जिसे कृष्ण ने वश में किया था। काली नाग।

काली—संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। चंडी। कालिका। २. गिरिजा। दुर्गा। ३. दस महाविद्याओं में पहली महाविद्या। ४. आद्या। ५. प्रकृति। ६. शान्तनु राजा की पत्नी। ७. हिमालय की एक नदी। ८. अग्निदेव की सप्त जिह्वाओं में से प्रथम। वि० काले रंग की। श्यामवर्ण।

काली घटा—संज्ञा स्त्री० घने काले बादलों का झुंड। कादंबिनी।

काली ज़बान—संज्ञा स्त्री० वह जीभ जिससे कही हुई अशुभ बातें सत्य हुआ करें।

काली जीरी—संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष जो एक पेड़ की बोंड़ी के झालदार बीज होते हैं।

कालीदह—संज्ञा पुं० वृन्दावन में यमुना का एक कुंड या दह जिसमें कालिया नाग रहा करता था।

कालीन—वि० कालसंबंधी। जैसे—तत्कालीन, पूर्वकालीन, अल्पकालीन। समयागत। सामयिक। चिरकालिक। बहुत पुराना। अति वृद्ध।

क़ालीन—संज्ञा पुं० [अ०] गलीचा। मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेलबूटे बने रहते हैं।

काली मिर्च—संज्ञा स्त्री० गोल मिर्च।

काली शीतला—संज्ञा स्त्री० वह शीतला या चेचक विशेष जिसमें काले दाने निकलते हैं।

कालेश्वर—संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव। २. मृत्यु को जीत लेनेवाला योगी।

कालौंछ—संज्ञा स्त्री० १. कालापन। कालिख। २. स्याही। ३. धुएँ की कालिख।

काल्पनिक—संज्ञा पुं० जो कल्पना करे। वि० १. कल्पित। मनगढ़ंत। कल्पना से उत्पन्न। मिथ्या। २. आरोपित। कृत्रिम। अस्वाभाविक।

काल्पनिकता—संज्ञा स्त्री० कृत्रिमता। बनावटी-पन।

काल्ह†—क्रि० वि० दे० "कल"।

कावा—संज्ञा पुं० [फा०] १. घोड़े को घेरे में चक्कर देने की क्रिया। चक्कर देना। २. घोड़ा फिराना।

मुहा०—कावा काटना—१. वृत्त में दौड़ना। चक्कर खाना। २. आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना=चक्कर देना। ३. घोड़े को चाल सिखाना। ४. काठियावाड़ में एक लुटेरी जाति जिसने अर्जुन और श्रीकृष्ण की रानियों को लूटा था।

काव्य—संज्ञा पुं० १. कविता। रसयुक्त काव्य। वह गद्य या पद्य जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो जाय। २. कविता की पुस्तक। काव्य का ग्रंथ। ३. रोला छंद का भेद।

काव्यचोर–संज्ञा पुं० दूसरे की कविता का भाव या पद चुरानेवाला।

काव्यत्व–संज्ञा पुं० १. काव्य का धर्म। २. काव्य का विशेष लक्षण। ३. काव्य का स्वरूप।

काव्यलिंग–संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य या पद के अर्थ द्वारा पुष्ट किया जाय (साहित्य)।

काव्या–संज्ञा स्त्री० १. पूतना। २. बुद्धि।

काश–संज्ञा पुं० १. एक तरह की घास। काँस। २. खाँसी। श्वास का रोग। ३. एक प्रकार का चूहा। ४. मुनि-विशेष। अव्य (तु०) ईश्वर करे, ऐसा हो जाय। अगर ऐसा होता।

काशघ्नी–संज्ञा स्त्री० भारंगी औषध।

काशि–संज्ञा पुं० सूर्य। रवि। दिवाकर।

काशिका–वि० १. प्रकाश करनेवाली। २. प्रदीप्त। प्रकाशित।
संज्ञा स्त्री० १.काशीपुरी। बनारस। २. जयादित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनीय व्याकरण पर वृत्ति।

काशिकाप्रिय–संज्ञा पुं०विश्वनाथ।

काशिराज–संज्ञा पुं० १. काशी का राजा। दिवोदास। २. धन्वन्तरि। ३. विश्वनाथ।

काशी–संज्ञा स्त्री० शिवपुरी। वाराणसी। वि० काशरोगी। दीप्तिमान। तेजोमय।

काशी-करवट–संज्ञा पुं० काशीस्थ तीर्थस्थान-विशेष, जहाँ प्राचीन काल में लोग एक आरे पर गिरकर तथा कटकर मर जाना बहुत पुण्य का काम समझते थे।

काशीफल–संज्ञा पुं० कुम्हड़ा।

काशीनाथ–संज्ञा पुं० शिव। विश्वेश्वर।

काशीश–संज्ञा पुं० उपधातु-विशेष। कसीस। हीराकस।

काश्त–संज्ञा स्त्री० [फा] १. कृषि। खेती। २. जमींदार को एक नियत वार्षिक लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का अधिकार।

काश्तकार–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कृषक। खेतिहर। किसान। २. जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर स्वत्व प्राप्त करने-वाला।

काश्तकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खेती-बारी। किसानी। २. अधिकार।

काश्मरी–संज्ञा स्त्री० गंभारी का वृक्ष।

काश्मीर–संज्ञा पुं० १. देश-विशेष। दे० "कश्मीर"। २. कश्मीर का निवासी। ३. केसर। ४. पुष्करमूल। ५. सुहागा।

काश्मीरज–संज्ञा पुं० औषध-विशेष। कूट। काश्मीर में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ। कुंकुम। केसर।

काश्मीरा–संज्ञा पुं० १. मोटा ऊनी कपड़ा विशेष। २. एक प्रकार का अंगूर।

काश्मीरी–वि० १. कश्मीर देश का रहने-वाला। २. कश्मीर संबंधी।

काश्यप–वि० कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का। कश्यप-संबंधी। कणाद मुनि। मृग-विशेष। गोत्र-विशेष।

काश्यपमेरु–संज्ञा पुं० १. कश्यप मुनि का वास-स्थान। २. पर्वत-विशेष। ३. काश्मीर देश।

काश्यपि–संज्ञा पुं० १. अरुण। २. सूर्य का सारथी।

काश्यपी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरित्री। प्रजा।

काषाय–वि० १. गेरुआ। २. कसैले स्वादवाला।

काष्ठ–संज्ञा पुं० १. काठ। लकड़ी। २. ईंधन। ३. दारु। ४. लंबाई जानने का एक नाप।

काष्ठा–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। अवधि। हद। २. उत्कर्ष। उच्चतम चोटी या ऊँचाई। ३. स्थिति। ४. चंद्रमा की एक कला। ५. अठारह पल का समय या एक कला का ३०वाँ भाग। ६. ओर। दिशा। ७. दौड़ लगाने का स्थान। ८. घुड़दौड़ का मैदान।

काष्ठी–संज्ञा स्त्री० फिटकिरी।

कास–संज्ञा पुं० १. खाँसी। श्वास का रोग। २. काँस। सरपत। सरहरी। एक प्रकार की घास।

कासनी–संज्ञा स्त्री०[फा०] १. पौधा-विशेष जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २. कासनी का बीज नीला रंग विशेष जो कासनी के फूल के रंग की तरह होता है।

कासबी–संज्ञा पुं० ताँती। कपड़ा बिननेवाला। तन्तुवाय। जुलहा। कोरी।
कासा–संज्ञा पुं० [फा०] १. कटोरा। प्याला। २. भोजन। आहार। ३. फ़कीर के रखने का दरियाई नारियल का बरतन।
कासार–संज्ञा पुं० १. छोटा सरोवर। छोटा ताल। तालाब। २. २० रगण का दंडक वृत्त-विशेष। ३. दे० "कसार"। पँजीरी।
क़ासिद–संज्ञा पुं० [अ०] सँदेशा ले जाने-वाला। हरकारा। पत्रवाहक।
कासी–(काशी) संज्ञा स्त्री० १. एक पुरी का नाम। २. आनन्दवन। ३. अविभक्त क्षेत्र।
काहिल–वि० [अ०] सुस्त। आलसी। आलस्ययुक्त।
काहिली–संज्ञा स्त्री० [अ०] आलस्य। सुस्ती।
काही–वि० कालापन लिये हुए हरा। घास के रंग का।
काहु–*सर्व० दे० "काहू"।
काहू–सर्व० किसी। कोई। किसी को।
संज्ञा पुं० [फा०] गोभी की तरह का पौधा विशेष जिसके बीज ओषधि के काम आते हैं।
काहे*–क्रि० वि० क्यों? किसलिए? किस प्रयोजन से?
यौ०–काहे को=किसलिए? क्यों?
किंकर–संज्ञा पुं० [स्त्री० किंकरी] १. दास। भृत्य। नौकर। सेवक। चाकर। २. राक्षसों की जाति-विशेष।
किंकरत्व–संज्ञा पुं० १. दासत्व। २. अधीनता।
किंकरी–संज्ञा स्त्री० दासी।
किंकर्त्तव्य-विमूढ़–वि० १. हक्का-बक्का। भौंचक्का। घबराया हुआ। व्याकुल। आकुल। २. जिसे यह न सूझे कि अब क्या करना चाहिए।
किंकिणी–संज्ञा स्त्री० १. क्षुद्रघंटिका। २. कटि का आभरण। करधनी। जेहर। कमरकस।
किंगरी–संज्ञा स्त्री० छोटी सारंगी जिसे बजा-कर जोगी भीख माँगते हैं। छोटा चिकारा।
किंच–अव्य० और भी। दूसरा भी। वाक्या-न्तर-द्योतक।
किंचन–संज्ञा पुं० कम या थोड़ी वस्तु।
किंचित्–वि० अल्प। कुछ। थोड़ा।
यौ०–किंचिन्मात्र–थोड़ा भी। थोड़ा ही। ईषत्। क्रि० वि० कुछ। थोड़ा। स्वल्प। बहुत थोड़ा।
किंजल्क–संज्ञा पुं० १. सिफाकन्द। कमल का केशर। २. कमल। ३. कमल का पराग। ४. फूल का रज। ५. नागकेशर।
वि० कमल के केशर के रंग की तरह।
किंतु–अव्य० १. लेकिन। पर। परंतु। २. बल्कि। वरन्।
किंतुवादी–वि० १. दूसरों से कही हुई बात को काटनेवाला। २. जो औरों की न सुने।
किंपच–वि० अदाता। कृपण। सूम।
किंपुरुष–संज्ञा पुं० १. किन्नर। २. वर्णसंकर। दोगला। ३. प्राचीन काल की मनुष्य-जाति-विशेष। ४. विद्याधर। ५. स्वर्गीय गायक।
वि० कुत्सित पुरुष। निन्दित मनुष्य। दुराचारी।
किंभूत–वि० किस प्रकार। कैसा।
मुहा०–किंभूत किमाकार=१. कुत्सित आकृति-विशिष्ट। २. अनभिज्ञता।
किंवदंती–संज्ञा स्त्री० १. जनश्रुति। अफ़-वाह। उड़ती खबर। २. जनरव।
किंवा–अव्य० अथवा। या तो।
किंशुक–संज्ञा पुं० १. ढाक। पलाश। टेसू। २. तुन का पेड़।
कि–सर्व० १. किस प्रकार? क्या? २. क्यों, किसलिए।
अव्य० १. एक संयोजक शब्द जो पूर्वकथित बात को पूरा करता है या उसमें कुछ जोड़ता है। २. तत्क्षण। इतने में। ३. या। अथवा।
किकियाना–क्रि० अ० १. रोना। चिल्लाना। पुकारना। २. कीं कीं या कें कें शब्द करना। ३. दुहाई देना। ज़ोर से आवाज़ देना।
किचकिच–संज्ञा स्त्री० १. बकवाद। व्यर्थ का वाद-विवाद। चें-चें। व्यर्थ कोलाहल। २. कच-पच। ३. झगड़ा। ४. एक पक्षी का शब्द।

किचकिचाना–क्रि० अ० १. पूरा बल लगाने के लिए दाँत पर दाँत रखकर दबाना। २. क्रोध के वश होना। अधीर होना। ३. दाँत पर दाँत रखकर दबाना। [क्रोध से] दाँत पीसना।

किचकिचाहट–संज्ञा स्त्री० किचकिचाने का भाव।

किचकिची–संज्ञा स्त्री० किचकिचाहट। दाँत पीसने की अवस्था या स्थिति।

किचड़ाना–क्रि० अ० (आँख का) कीचड़ से भरना। आँख का रोग-विशेष।

किचपिचाना–क्रि० अ० गड़बड़ाना। मन की दुविधा में पड़ना। किसी प्रकार का कर्तव्य स्थिर नहीं करना।

किछु*†–वि० दे० "कुछ"।

किटकिट–संज्ञा स्त्री० १. वादविवाद। २. किचकिच।

किटकिटाना–क्रि० अ० १. किचकिचाना। २. क्रोध से दाँत पीसना।

किटकिना–संज्ञा पुं० १. चाल। चालाकी। २. वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठीके की चीज़ का ठेका दूसरे असामियों को देता है।

किटकिनादार–संज्ञा पुं० किसी वस्तु को ठेकेदार से ठेके पर लेनेवाला पुरुष।

किटि–संज्ञा पुं० शूकर। सुअर। वराह।

किटिभ–संज्ञा पुं० जूँ। केशकीट। खटमल।

किट्ट–संज्ञा पुं० १. मैल। २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल। ३. मल। विष्ठा। वीट।

किट्ट-वर्जित–संज्ञा पुं० वीर्य। शरीर की सर्वश्रेष्ठ धातु।

वि० मलरहित। शुद्ध। स्वच्छ।

किड़किड़–संज्ञा पुं० दाँतों की रगड़ से उत्पन्न शब्द।

किड़किड़ाना–क्रि० अ० अतिशय होना। क्रोध के आवेग से दाँत पीसना

किड़किड़ी–संज्ञा स्त्री० दाँती बजना।

मुहा०–किड़किड़ी होना=अपमान होना।

किण्व–संज्ञा पुं० १. मदिरा। २. बीज जिससे मद्य में मादकता उत्पन्न होती है। खमीर उठाने का साधन।

कित*†–क्रि० वि० १. किधर। कहाँ। किस ओर। २. ओर। तरफ़।

कितक–*†वि०, क्रि० वि० कितना। किस हद तक।

कितना–वि० [स्त्री० कितनी] १. किस परिमाण, मात्रा या संख्या का? (प्रश्नवाचक)। २. बहुत। अधिक। क्रि० वि० १. कहाँ तक? किस परिमाण या मात्रा में? २. अधिक। बहुत ज़्यादा। **मुहा०**–कितना ही=बहुत अधिक। प्रचुर परिमाण।

कितव–संज्ञा पुं० १. छली। धूर्त। वंचक। प्रतारक। २. जुआरी। ३. दुष्ट। ४. पागल। ५. धतूरा। ६. गोरोचन।

क़िता–संज्ञा पुं० [अ०] १. ब्योंत। सिलाई के लिए कपड़े की काट-छाँट। २. चाल। ढंग। ३. संख्या। ४. विस्तार का एक भाग। ५. प्रांगण। प्रदेश। भूभाग।

किताब–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० किताबी] १. ग्रंथ। पुस्तक। २. बही। रजिस्टर। **मुहा०**–किताबी कीड़ा=वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो। किताबी चेहरा=लंबी आकृतिवाला चेहरा। किताब चाटना=बहुत अधिक पढ़ना, पुस्तक को रट डालना।

किताबी–वि० [अ० किताब] १. किताब के आकार का। २. किताब में लिखा हुआ।

कितिक*†–वि० दे० "कितक", "कितना"। किस प्रकार।

कितेक*†–वि० १. कितना। २. असंख्य। प्रचुर। बहुत। कितना ही।

कितै*†–अव्य० दे० "कित"। कहाँ। किधर। किस ओर।

कितो*†–वि० [स्त्री० किती] कितना। क्रि० वि० कितना।

कित्ता–वि० कितना।

कित्ति*–संज्ञा स्त्री० यश। कीर्त्ति।

किदारा–संज्ञा स्त्री० रागिनी विशेष (यह गरमी के दिनों में आधी रात को गाई जाती है)।

किधर–क्रि० वि० कहाँ? किस ओर? किस तरफ़?

किधौं*–अव्य० या । अथवा । या तो । न जाने । मानो । कि ।

किन–सर्व० 'किस' का बहुवचन ।
क्रि० वि० चाहे । क्यों न । किसने । कौन । किसको ।
संज्ञा पुं० चिह्न ।

किनका–संज्ञा पुं० [स्त्री० किनकी] १. चावल आदि की खुद्दी । २. अन्न का टूटा हुआ दाना ।
सर्व० किसका ।

किनवानी–संज्ञा स्त्री० छोटी छोटी बूँदों की झड़ी । फुहार । फुही ।

किनवैया–संज्ञा पुं० ग्राहक । खरीदनेवाला ।

किनहा†–वि० (फल) जिसमें कीड़े पड़ गए हों । कन्ना ।

किनारदार–वि० (कपड़ा) किनारीवाला । जिसमें किनारा बना हो ।

किनारा–संज्ञा पुं० [फा०] १. किसी वस्तु का अंतिम भाग । छोर । लंबाई के बल की कोर । २. तीर । नदी या तालाब आदि का तट । ३. प्रांत । भाग । लंबाई चौड़ाईवाली वस्तु के चारों ओर का वह भाग, जहाँ उसके विस्तार का अंत होता हो । ४. [स्त्री० किनारी] कपड़े आदि में किनारे पर का वह भाग, जो भिन्न रंग या बनावट का होता है । हाशिया । गोट । कोर । ५. किसी ऐसी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो । ६. पार्श्व । बग़ल । ७. समीप ।
मुहा०–किनारे लगना=[किसी कार्य्य का] समाप्ति पर पहुँचना । पूर्ण होना । किनारा करना या खींचना=दूर होना । अलग होना । धोखा देना । विश्वासघात करना । हटना । किनारे न जाना=अलग रहना । बचना । किनारे बैठना, रहना या होना=अलग होना । छोड़कर दूर हटना ।
यौ०–किनारे किनारे=छोर या तट की सीध, रेखा या पंक्ति में ।

किनारी–संज्ञा स्त्री० गोट । मगजी । सुनहला या रुपहला पतला गोटा, जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है । कोर । अंत । छोर ।

किनारे–क्रि० वि० १. तट पर । २. कोर या बाढ़ पर । ३. पृथक् । अलग ।

किन्नर–संज्ञा पुं० [स्त्री० किन्नरी] १. देवता-विशेष जिनका मुख घोड़े के समान होता है और धड़ मनुष्य के समान । २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति-विशेष । ३. जैन-विशेष ।

किन्नरी–संज्ञा स्त्री० १. किन्नर की स्त्री । २. किन्नर जाति की स्त्री । विद्याधरी । ३. वीणा-विशेष । ४. सारंगी । किंगरी । ५. स्वर्गिक वेश्या । ६. अप्सरा ।

किन्नरेश्वर–संज्ञा पुं० कुबेर । यक्षपति । देवताओं के कोषाध्यक्ष ।

किफ़ायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. यथेष्ट होने का भाव । २. बचत । ३. मितव्यय । कमखर्ची । थोड़े में काम चलाना ।

किफ़ायती–वि० मितव्ययी । कम खर्च करनेवाला । हाथ रोककर खर्च करनेवाला ।

क़िबला–संज्ञा पुं० [अ०] १. मक्का । २. पश्चिम दिशा, जिस ओर मुख करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं । ३. बाप । पिता । ४. पूज्य व्यक्ति ।

क़िबलानुमा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] यंत्र-विशेष जो पश्चिम दिशा बतलाता है । इसका व्यवहार जहाज़ों पर अरब के मल्लाह करते थे ।

किम्–वि०, सर्व० १. क्या ? २. कौन सा ? क्यों ? कैसा ? क्योंकर ? किस प्रकार ?
यौ०–किमपि=कोई भी । कुछ भी । जो कुछ । यत्किंचित् ।

किमरिक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना सफ़ेद कपड़ा ।

किमर्थ–अव्य० किसलिए ? क्यों ? किस निमित्त से ? किस प्रयोजन से ?

किमाँच–संज्ञा पुं० खजुहाँ । कौंच का वृक्ष और फल विशेष । किवाँच ।

किमाम–संज्ञा पुं० [अ० किवाम] शरबत जो शहद के समान गाढ़ा किया गया हो । खमीर । तंबाकू का तरल तथा गाढ़ा एक रूप ।

किमाश–संज्ञा पुं० [अ०] १. ढंग। तर्ज़। २. गंजीफ़े का रंग-विशेष। ताज।

किमि*–क्रि० वि० किस तरह ? कैसे ? किस प्रकार ? क्योंकर ? किस भाँति ? किस उपाय से ?

किमुत–संज्ञा पुं० प्रश्न। वितर्क। विकल्प। संभावना।

किम्मत‡–संज्ञा स्त्री० युक्ति। उपाय। होशियारी। पराक्रम। प्रभाव।

कियत्–वि० कितना परिमाण। कितना।

कियारी–संज्ञा स्त्री० १. लकीर। थेंवला। क्यारी। खेतों या बग़ीचों में थोड़े थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें पौधे लगाए जाते हैं। २. खेतों के वे विभाग, जो सिंचाई के लिए नालियों के द्वारा बनाये जाते हैं। ३. बड़ा कड़ाह जिसमें समुद्र का पानी नमक बैठने के लिए भरा जाता है।

कियाह–संज्ञा पुं० घोड़ा जो लाल रंग का हो।

किरंटा–संज्ञा पुं० [अंग्रे० क्रिश्चियन] केरानी (तुच्छ) छोटे दरजे का क्रिस्तान।

किरका–संज्ञा पुं० कंकड़। किरकिरी। छोटा टुकड़ा।

किरकिट, किरकिटी–संज्ञा स्त्री० आँख में की कणिका। छोटी लकड़ी। किरकिरी। कणिका।

किरकिरा–वि० कँकरीला। रेतीला। कंकड़दार। जिसमें महीन और कड़े रवे हों।

मुहा०–किरकिरा हो जाना=रंग में भंग हो जाना। आनद में बाधा पड़ना।

किरकिराना–क्रि० अ० १. किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना। २. दे० "किटकिटाना"। ३. अखरना। खटकना।

किरकिराहट–संज्ञा स्त्री० [प्रत्य०] १. आँख में किरकिरी पड़ जाने की तरह की पीड़ा। २. किटकिटापन। कंकरीलापन। ३. दाँत के नीचे कँकरीली वस्तु आ जाने का शब्द।

किरकिरी–संज्ञा स्त्री० १. धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है। २. अपमान। बेइज़्ज़ती। हेठी।

मुहा०–किरकिरी होना=अपमान होना। लज्जित होने का अवसर आना।

किरकिल–संज्ञा पुं० गिरगिट। *संज्ञा स्त्री० दे० "कृकल"।

किरच–संज्ञा स्त्री० १. सीधी तलवार विशेष जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। खड्ग-विशेष। २. छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे काँच आदि का)। खपाच। फाँस।

किरण–संज्ञा स्त्री० १. किरन। रश्मि। २. सूर्य का तेज। ३. प्रकाशमान पदार्थों का तेज। ४. धूल। धूल का महीन कण। ५. डोरा। ६. केतु-विशेष। सूर्य। ७. मयूख।

किरणमाली–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

किरन–संज्ञा स्त्री० १. किरण। रश्मि। ज्योति की अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य, चंद्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई पड़ती हैं। २. कलाबतून या बादले की बनी झालर।

मुहा०–किरन फूटना=सूर्योदय होना।

किरपान*–संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"।

किरमाल*†–संज्ञा पुं० खड्ग। तलवार।

किरमिच–संज्ञा पुं० [अंग्रे० कैनवस] महीन टाट सा मोटा विलायती कपड़ा-विशेष जिससे जूते, परदे, बैग आदि बनते हैं।

किरमिज–संज्ञा पुं० [वि० किरमिजी] १. रंग-विशेष। हिरमजी। दे० "किरिमदाना"। २. मटमैलापन लिये करौंदिया रंग का घोड़ा।

किरमिजी–वि० किरमिज के रंग का। हिरमिजी। मटमैलापन लिये हुए करौंदिया।

किरराना–क्रि० अ० [अनु०] १. क्रोध के कारण दाँत पीसना। २. किर्रकिर्र शब्द करना।

किरवारा*†–संज्ञा पुं० अमलतास।

किराँची–संज्ञा स्त्री० १. माल-गाड़ी का डब्बा। २. बैलगाड़ी विशेष जिस पर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है।

किरात–संज्ञा पुं० [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] १. भील। निषाद। प्राचीन जंगली जाति-विशेष। २. हिमालय के पूर्वीय भाग तथा उसके आस-पास के

देश का प्राचीन नाम। ३. चिरायता। ४. साईस। ५. बौना।
क़िरात–संज्ञा स्त्री० [अ० केरात] चार जौ के बराबर जवाहरात की तौल-विशेष।
किरातक–संज्ञा पुं० चिरायता, औषध-विशेष।
किरातपति–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
किरातार्जुनीय–संज्ञा पुं० कवि भारविकृत १८ सर्गों का एक काव्य।
किरान–क्रि० वि० [अ०] पास। निकट।
किराना–संज्ञा पुं० दे० "केराना"। वस्तु-विशेष। अन्न आदि। मसाला आदि।
क्रि० स० दे० "केराना"।
किरानी–संज्ञा पुं० दे० "केरानी"।
किराया–संज्ञा पुं० [अ०] भाड़ा। किसी की वस्तु के प्रयोग के बदले में उसके मालिक को दिया जानेवाला रुपया।
किरायेदार–संज्ञा पुं० किसी मूल्य पर किसी दूसरे की वस्तु कुछ समय तक काम में लानेवाला।
किरावल–संज्ञा पुं० [तु० करावल] १. युद्ध का मैदान ठीक करने के लिए आगे जानेवाली सेना। २. बंदूक़ से शिकार करनेवाला।
किरासन–संज्ञा पुं० [अंग्रे० कैरोसिन] मिट्टी या केरोसिन का तेल।
किरिच–संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"। टुकड़ा। खण्ड। एक प्रकार का शस्त्र-विशेष।
किरिन†–संज्ञा स्त्री० दे० "किरण"।
किरिम–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।
किरिमदाना–संज्ञा पुं० किरमिज कीड़ा जो लाख की तरह थूहर के पेड़ में लगता है और सुखाकर रँगने के काम में आता है।
किरिया*†–संज्ञा स्त्री० १. शपथ। सौगंध। क़सम। २. काम। कर्त्तव्य। ३. मृतकर्म। मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म।
यौ०–किरिया-करम=मृतकर्म। क्रियाकर्म।
किरीट–संज्ञा पुं० १. शिरोभूषण-विशेष जो माथे में बाँधा जाता था। कलँगी। तुर्रा। २. आठ भगण का एक वर्ण-वृत्त या सवैया विशेष। ३. मुकुट। ताज। ४. राजाओं की पगड़ी या टोपी।
किरीटी–संज्ञा पुं० १. किरीट या मुकुट पहननेवाला। राजा। २. अर्जुन का एक नाम। ३. इंद्र।
किरोलना–क्रि० स० खुरचना। करोदना।
किरौ–संज्ञा पुं० १. किड़हा दाँत। २. टूटा दाँत।
किरौना–संज्ञा पुं० कीड़ा। कीट।
किर्च*–संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"। १. काँस। २. खड्ग। ३. खपाच। ४. अस्त्र-विशेष। ५. राजाओं की पगड़ी या टोपी। ६. वर्ण-वृत्त विशेष।
किर्मिज–संज्ञा पुं० १. किरमिजी रंग। दे० "किरिमदाना"। २. किरमिजी रंग का घोड़ा।
किर्मीर–संज्ञा पुं० राक्षस-विशेष।
किल–अव्य० १. निश्चय। अवश्य। सचमुच। २. दृढ़। स्थिर।
किलक–संज्ञा स्त्री० १. किलकने या हर्ष-ध्वनि करने की क्रिया। २. किलकार। हर्षध्वनि ३. चटक-मटक। ४. प्रभा। दीप्ति। ५. प्रकाश।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० किलक] नरकट-विशेष जिसकी क़लम वनती है।
किलकना–क्रि० अ० हर्षध्वनि करना। चिल्लाकर हँसना। किलकारी मारना।
किलकार–संज्ञा स्त्री० आनंदसूचक ऊँचा शब्द। हर्षध्वनि। किलकारी।
किलकारना–क्रि० अ० खुशी से चहकना। हर्षध्वनि करना।
किलकारी–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।
मुहा०–किलकारी मारना=प्रसन्नता के साथ ज़ोर से हँसना। प्रसन्नता प्रकट करते समय उछलना-कूदना। हँसी-खुशी।
किलकिंचित्–संज्ञा पुं० संयोग शृंगार के ११ हावों में से एक भाव, जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है।
किलकिला–संज्ञा स्त्री० १. किलकारी। हर्षध्वनि। आनंद-सूचक शब्द। २. बानरों की एक प्रकार की बोली।
संज्ञा पुं० मछली खानेवाली छोटी चिड़िया विशेष।
संज्ञा पुं० [अनु०] समुद्र का वह भाग जहाँ लहरों से भयंकर शब्द होता हो।

किलकिलाना–क्रि० अ० १. हर्षध्वनि करना। आनंद-सूचक शब्द करना। २. वाद-विवाद करना। ३. चिल्लाना। झगड़ा करना। हल्लागुल्ला करना। ४. गर्जन करना। गुर्राना।

किलकिलाहट–संज्ञा स्त्री० १. गर्जन का शब्द। २. बानरों का एक प्रकार का शब्द। ३. किलकिलाने का भाव या शब्द।

किलना–क्रि० अ० १. कीला जाना। कीलन होना। २. अधिकार या वश में किया जाना। ३. गति का रुकना या अवरोध होना।

किलनी–संज्ञा स्त्री० पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला कीड़ा। किल्ली। कुत्ते का जुँवा। किलौनी।

किलबिलाना–क्रि० अ० दे० "कुलबुलाना"।

किलवाँक–संज्ञा पुं० [देश०] काबुल देश का घोड़ा-विशेष।

किलवाना–क्रि० स० [किलना का प्रे० रूप] १. जादू या टोना करवाना। २. तंत्र या मंत्र द्वारा भूत-प्रेत के प्रभाव को रोकवा देना। ३. कील लगवाना या जड़वाना।

किलवारी†–संज्ञा स्त्री० १. छोटा डाँड़ा। २. कन्ना। पतवार।

किलहँटा–संज्ञा पुं० सिरोही पक्षी-विशेष।

क़िला–संज्ञा पुं० [अ०] दुर्ग। गढ़। कोट। युद्ध के अवसर पर बचाव का एक सुदृढ़ स्थान।

यौ०–क़िलेदार=दुर्गपति। गढ़पति।

मुहा०–क़िला बाँधना=युद्ध या बचाव की तैयारी करना। क़िला फ़तह करना=जीतना। सफलतापूर्वक काम समाप्त करना। क़िला तोड़ना=हराना, परास्त करना।

किलाना–क्रि० स० दे० "किलवाना"।

क़िलाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. व्यूह-रचना। २. दुर्ग-निर्माण।

किलावा–संज्ञा पुं० हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा जिसमें अपना पैर फँसाकर महावत उस पर बैठता है।

किलिक–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह का नरकट जिसकी क़लम बनती है।

क़िलेदार–संज्ञा पुं० क़िले का प्रधान अधिकारी। दुर्गपति। गढ़पति। क़िले का रक्षक।

क़िलेदारी–संज्ञा स्त्री० क़िले की रक्षा करने का कार्य। दुर्ग की पहरेदारी या रखवाली।

किलोल†–संज्ञा पुं० दे० "कलोल"। "कल्लोल"।

किल्लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. घटती। कमी। न्यूनता। २. तंगी। संकोच। ३. झगड़ा। परेशानी।

किल्ला–संज्ञा पुं० खूँटा। बहुत बड़ी कील या मेख। डंठल।

किल्ली–संज्ञा स्त्री० १. "गुल्ली"। २. कील। खूँटी। मेख। ३. सिटकिनी। अर्गल। बेंड़ा। बिल्ली। ४. किसी कल या पेंच की मुठिया जिसे घुमाने से वह चले।

मुहा०–किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना=किसी का वश किसी पर होना। किसी की चाल किसी के हाथ में होना। किल्ली घुमाना या ऐंठना=युक्ति लगाना। दाँव चलाना। किल्ली गाड़ना=१. डेरा डालना। रह जाना। २. अपनी स्थिति दृढ़ करना।

किल्विष–संज्ञा पुं० १. दोष। पाप। अपराध। २. रोग। ३. अशुभ। अनिष्ट।

किल्विषी–वि० १. अपराधी। २. अधर्मी। पापी। ३. रोगी।

किवाँच–संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।

किवाड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० किवाड़ी] द्वार के पल्ले। लकड़ी का पल्ला जो द्वार बंद करने के लिए चौखट में जड़ा रहता है। पट। कपाट।

मुहा०–किवाड़ देना=द्वार बंद करना। किवाड़ खोलना=मार्ग प्रशस्त करना, सुलभ करना।

किशमिश–संज्ञा स्त्री० [वि० किशमिशी] सुखाया हुआ छोटा अंगूर।

किशमिशी–वि० [फा०] १. किशमिश के रंग की तरह। २. जिसमें किशमिश पड़ा हो।
संज्ञा पुं० अमौआ रंग-विशेष।

किशलय–संज्ञा पुं० कोंपल। कल्ला। नया निकला हुआ पत्ता। फूलों की पंखुड़ियाँ। कोमल पत्ता।

किशोर–संज्ञा पुं० [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. बेटा। पुत्र।

किशोरी–संज्ञा स्त्री० १. कुमारी। अविवाहिता युवती। २. युवती स्त्री।

किश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शह। शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना। २. हिस्सों में कर्ज अदा करना।
मुहा०–किश्त लगना=फेर में पड़ना। किश्त देना=फेर में डालना। किश्त खाना=फेर में पड़ जाना।

किश्ती–संज्ञा स्त्री० १. नौका। नाव। २. एक तरह की छिछली थाली या तश्तरी। ३. हाथी। शतरंज का मोहरा-विशेष।

किश्तीनुमा–वि० नाव की तरह। नाव के आकार का। धनुष के आकार का।

किष्किंध–संज्ञा पुं० प्राचीन प्रांत-विशेष जो मैसूर के आसपास था।

किष्किंधा–संज्ञा स्त्री० १. किष्किंध पर्वत-श्रेणी। २. किष्किंधा पर्वत की गुफा। ३. बालि की राजधानी का नाम।

किस–सर्व० 'कौन' और 'क्या' का वह रूप, जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। कौन? किसको? किसी को।

किसनई–संज्ञा स्त्री० खेती-बारी। किसान का काम।

किसब*–संज्ञा पुं० दे० "कसब"।

किसबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] उस्तरे, कैंची आदि रखने का नाई का थैला।

किसमत–संज्ञा स्त्री० दे० "क़िस्मत"। भाग्य। अदृष्ट। नसीब।

किसमिस–संज्ञा स्त्री० मेवा-विशेष।

किसमिसी–वि० रंग-विशेष।

किसमी*–संज्ञा पुं० [अ० कसंबी] कुली। मज़दूर। श्रमजीवी।

किसलय–संज्ञा पुं० दे० "किशलय"।

किसान–संज्ञा पुं० कृषक। कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।

किसानी–संज्ञा स्त्री० कृषि। कृषिकर्म। खेती। किसान का काम।

किसी–सर्व०, वि० "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—किसी ने। किसी को। किसको? किसका?

किसे–सर्व० किसको।

क़िस्त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कई बार करके ऋण देने या चुकाने का ढंग। भाग या हिस्सों में देना। २. ऋण का वह भाग जो निश्चित समय पर दिया जाय।

क़िस्तबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया थोड़ा-थोड़ा करके अदा करने का ढंग।

क़िस्तवार–क्रि० वि० [फा०] १. किस्त करके। किस्त के ढंग से। २. किस्त पर।

किस्ती–संज्ञा स्त्री० "किश्ती"। पनसुइया। नौका।

क़िस्म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भेद। प्रकार। २. भाँति। तरह। ३. जाति। श्रेणी। ४. ढंग। चाल।

क़िस्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भाग्य। प्रारब्ध। तक़दीर। करम। २. कमिश्नरी। किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई ज़िले हों।
मुहा०–क़िस्मत आज़माना=किसी कार्य को प्रारंभ कर यह देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। क़िस्मत चमकना या जागना=बहुत भाग्यवान् होना। भाग्य प्रबल होना। क़िस्मत फूटना=भाग्य बहुत मंद हो जाना।

क़िस्मतवर–वि० [फा०] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।

क़िस्सा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कथा। कहानी। उपाख्यान। २. समाचार। वृत्तान्त। हाल। ३. कांड। ४. झगड़ा। तकरार।

क़िस्साकोताह–क्रि० वि० [फ़ा०] सारांश यह कि। तात्पर्य यह कि। मतलब यह कि।
किस्साख्वाँ–संज्ञा पुं० [फ़ा०] किस्से-कहानियाँ सुनाने का काम करनेवाला।
किस्साख्वानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कहानियाँ सुनाने का काम।
किस्सागो–संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० किस्साख्वाँ।
किहुनी–संज्ञा स्त्री० कुहनी। ठिहुँनी।
की–प्रत्य० हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप। करी। कर दी। कर डाली।
क्रि० स० हिं० "करना" के भूतकालिक रूप "किया" का स्त्री०।
कीक–संज्ञा पुं० [अनु०] चीत्कार। चीख। चिल्लाहट।
कीकट–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. मगध देश का वैदिक नाम। ३. [स्त्री० कीकटी] प्राचीन काल की अनार्य्य जाति-विशेष, जो कीकट देश में बसती थी।
वि० १. कृपण। २. दरिद्र। ३. पापी।
कीकड़–संज्ञा पुं० बबूल। कँटीला पेड़। "कीकर"।
कीकना–क्रि० अ० [अनु०] चीत्कार करना। की-की करके चिल्लाना।
कीकर–संज्ञा पुं० कँटीला पेड़। बबूल।
कीका–संज्ञा पुं० घोड़ा।
कीकान–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. पश्चिमोत्तर का देश-विशेष जो घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था। ३. इस देश का घोड़ा।
कीच–संज्ञा पुं० पंक। काँदा। चहला। कीचड़।
कीचक–संज्ञा पुं० १. राजा विराट का साला। २. केकयराज का पुत्र। ३. पोला बाँस जिसके छेद से निकलती हुई वायु शब्द करती है।
कीचड़–संज्ञा पुं० १. पंक। पानी मिली हुई धूल या मिट्टी। "कीच"। २. आँख से निकलनेवाला सफ़ेद मैल।
कीट–संज्ञा पुं० कीड़ा। मकोड़ा। रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु। वृश्चिक राशि।
संज्ञा स्त्री० मल। जमी हुई मैल।
कीटघ्न–संज्ञा पुं० गन्धक। औषध-विशेष।
कीटभृङ्ग–संज्ञा पुं० एक तरह का भौंरा किसी भी कीट को घेरकर, गुंजन करता हुआ, उसके चारों ओर चक्कर लगाता है। वह कीट भी धीरे-धीरे वैसा ही गुंजन आरंभ करता है और सदा वैसा ही शब्द करता है। किसी के रंग में किसी के रँग जाने पर "कीटभृङ्ग" न्याय कहा जाता है।
कीटमणि–संज्ञा स्त्री० जुगनू।
कीड़ा–संज्ञा पुं० १. मकोड़ा। उड़ने या रेंगनेवाला छोटा जंतु। २. सूक्ष्म कीट। कृमि। पिलुआ। ३. जूँ, खटमल आदि। ४. साँप। सर्प।
मुहा०–कीड़े काटना=चंचलता होना। जी उकताना। कीड़े पड़ना=१. (वस्तु में) कीड़े पैदा होना। २. ऐब होना। दोष होना।
कीड़ी–संज्ञा स्त्री० १. चींटी। पिपीलिका। २. छोटा कीड़ा।
कीतनक–संज्ञा पुं० मुलहठी। जेठी मधु।
कीदृक्–वि० किस प्रकार का? कैसा?
कीदृश्–वि० कैसा? किस प्रकार का?
कीनना‡–क्रि० स० मोल लेना। क्रय करना। खरीदना।
कीना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वैर। द्वेष।
क्रि०–किया। पूर्ण क्रिया।
कीप–संज्ञा स्त्री० [अ० कीफ] छुच्छी। चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में लगाकर द्रव पदार्थ ढालते हैं कि बाहर न गिरे।
क़ीमत–संज्ञा स्त्री० मूल्य। दाम।
क़ीमती–वि० बहुमूल्य। अधिक मूल्य या दाम का।
कीमा–संज्ञा पुं० [अ०] गोश्त जो बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हो। कुट्टी किया हुआ मांस।
कीमिया–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. रसायन। २. रासायनिक क्रिया।
कीमियागर–संज्ञा पुं० १. जो रसायन बनावे। २. रासायनिक परिवर्त्तन में प्रवीण।
कीमुख़्त–संज्ञा पुं० [अ०] गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर–संज्ञा पुं० १. शुक । सुग्गा । तोता २. कश्मीर देश । ३. बहेलिया । व्याध ४. कश्मीर देश का रहनेवाला । ५. मांस

कीरति, कीरती–संज्ञा स्त्री० दे० "कीर्त्ति"

कीरा–संज्ञा पुं० "कीड़ा" । साँप । सर्प

कीर्ण–वि० बिखरा हुआ । फैला हुआ व्याप्त । छाया हुआ । आच्छन्न ।

कीर्त्तन–संज्ञा पुं० १. भजन और कथा आदि । २. गुणगान । ३. कथन । यशवर्णन ।

कीर्त्तनिया–संज्ञा पुं० १. कीर्त्तन करनेवाला । २. भजन और कथा सुननेवाला । ३. गाने से उपार्जन कर जीनेवाला । गायक । कथक ।

कीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० १. यश । २. ख्याति । बड़ाई । नेकनामी । पुण्य । ३. सत्क्रिया । ४. सत्कार । ५. राधा की माता का नाम । ६. आर्या छंद का भेद-विशेष । ७. दशाक्षरी और एकादशाक्षरी वृत्त-विशेष । ८. स्मरण करने योग्य काम । ९. प्रसाद ।

कीर्त्तित–वि० कथित । ख्याति । उक्त । प्रसिद्ध । कहा हुआ ।

कीर्त्तिकर–वि० ख्याति करनेवाले कर्म ।

कीर्त्तिपताका–वि० सत्कर्म की प्रसिद्धि । यश का चिह्न ।

कीर्त्तिप्रिय–वि० यश चाहनेवाला । कीर्त्ति-कामी ।

कीर्त्तिमान् या **वान्**–वि० १. यशस्वी । २. कीर्त्ति-विशिष्ट । ३. विख्यात । प्रसिद्ध ।

कीर्त्तिशेष–संज्ञा पुं० १. मरण । २. यश की समाप्ति । ३. दुष्कर्म के द्वारा सुकर्म का दब जाना ।

कीर्त्तिस्तंभ–संज्ञा पुं० १. किसी की कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिए बनाया गया स्तंभ । २. कीर्त्ति स्थायी करनेवाला काम या वस्तु ।

कील–संज्ञा स्त्री० १. काँटा । लोहे या काठ की मेख । परेग । खूँटी । २. वह मूढ़ गर्भ जो योनि में अटक जाता है । ३. तिनका । तृण । ४. नाक का छोटा आभूषण-विशेष । लौंग । ५. मुहाँसे की मांस-कील । ६. जाँते के बीचोंबीच का खूँटा । ७. । कुँभार के चाक घूमने की खूँटी ।

कीलक–संज्ञा पुं० १. कील । खूँटी । २. तंत्र के अनुसार देवता-विशेष । ३. परेग । ४. मंत्र जिससे किसी अन्य मंत्र की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय । ५. मंत्र का मध्य भाग । ६. ६० वर्षों में से एक वर्ष का नाम । ७. केतु-विशेष । ८. रोक । ९. किवाड़ की किल्ली । १०. स्तोत्र-विशेष ।

कीलन–संज्ञा पुं० १. रुकावट । बंधन । रोक । २. मंत्र को कीलने का काम ।

कीलना–क्रि० स० १. कील लगाना । मेख जड़ना । २. मंत्र फूंकना । ३. कील ठोककर मुँह बन्द करना (तोप आदि का) । ४. किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना । साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके । ५. वश में करना । अधीन करना । ६. रुकावट डालना ।

कीला–संज्ञा पुं० १. बड़ी कील । २. लोहे की खूँटी ।

कीलाक्षर–संज्ञा पुं० बाबुल की एक अति प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कील के आकार के होते थे ।

कीलाल–संज्ञा पुं० १. अमृत । २. मधु । ३. जल । ४. रक्त । ५. पशु ।

कीलालधि–संज्ञा पुं० समुद्र । सागर ।

कीलित–वि० १. कील जड़ी हुई । २. कीला हुआ । मंत्र से स्तंभित । ३. बन्द । वशीकृत ।

कीली–संज्ञा स्त्री० १. किसी चक्र के बीचों-बीच के छेद में पड़ी हुई वह कील जिस पर वह चक्र घूमता है ।

†२. दे० "कील" और "किल्ली" ।

कीश–संज्ञा पुं० १. मर्कट । कपि । लंगूर । बंदर । वानर । २. सूर्य्य । ३. चिड़िया ।

यौ०–कीशध्वज=अर्जुन ।

वि०—नंगा। विवस्त्र।
कौशपर्णी—संज्ञा स्त्री० अपामार्ग। चिरचिरा।
कोश—संज्ञा पुं० [फा०] गर्भ की थैली। थैली। खीसा। जरायुज। बन्दर।
कुँअर—संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँअरि] १. पुत्र। लड़का। बालक। २. राजकुमार। राजपुत्र।
कुँअर-बिलास—संज्ञा पुं० धान या चावल-विशेष।
कुँअरेटा†*—संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँअरेटी] बालक। लड़का।
कुआँ—संज्ञा पुं० "कूप"।
कुँआरा—वि० [स्त्री कुँआरी] अविवाहित।
कुँई—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।
कुंकड़—क्रि० वि० १. एक में एक संकुचित। २. इकट्ठा।
कुंगड़ा—वि० बलवान्। सण्ड-मुसण्ड। स्वास्थ्ययुक्त।
कुंकुम—संज्ञा पुं० १. कुंकुमा। २. रोरी। रोली जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं। ३. केसर। ज़ाफ़रान। ४. सुगन्ध।
कुंकुमा—संज्ञा पुं० झिल्ली की कुप्पी या लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में दूसरों पर मारते हैं।
कुंचकी—संज्ञा स्त्री० "कंचुकी"। चोली। अँगिया। काचली। झूला।
कुंचन—संज्ञा पुं० सिमटना। सिकुड़ने या बटुरने की क्रिया।
कुंचि—संज्ञा स्त्री० अंजलि।
कुंचिका—संज्ञा स्त्री० कुंजी। ताली।
कुंचित—वि० १. घुँघरवाले। छल्लेदार [बाल]। २. टेढ़ा। घूमा हुआ।
कुंची—संज्ञा स्त्री० "कुंजी"। ताली।
कुंज—संज्ञा पुं० स्थान-विशेष जो वृक्ष लता आदि से मंडप की तरह ढका हो।
संज्ञा पुं० [फा० कुंज=कोना] दुशाले के कोनों पर बनाए जानेवाले बूटे।
संज्ञा स्त्री० १. लताच्छादित उद्यान का स्थान। २. तंग जगह।
कुंजक*—संज्ञा पुं० कंचुकी। डेवढ़ी पर का वह चोबदार, जो अंतःपुर में आता जाता हो। ख्वाजःसरा।
कुंजकुटीर—संज्ञा स्त्री० कुंजगृह। घर जो लताओं से घिरा हो।
कुंजगली—संज्ञा स्त्री० १. पतली तंग गली। २. बग़ीचों के बीच में लताओं से ढँका हुआ मार्ग।
कुँजड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] एक मुसलमान जाति जो तरकारी, फल वगैरह बेचती है।
कुंजर—संज्ञा पुं० [स्त्री० कुंजरा, कुंजरी] १. हाथी। २. केश। बाल। ३. अंजना के पिता और हनुमान के नाना का नाम। ४. छप्पय का इक्कीसवाँ भेद। ५. पाँच मात्राओं के छंदों के प्रस्तार में पहला प्रस्तार। ६. आठ की संख्या। ७. पौराणिक वृद्ध। ८. शुक पक्षी। ९. हस्त नक्षत्र। १०. पीपल। ११. बलवान्। १२. एक नाग का नाम। १३. देश-विशेष। १४. पर्वत-विशेष।
मुहा०—कुंजरो वा नरो वा, कुंजरो नरो=हाथी या मनुष्य। श्वेत या कृष्ण। अनिश्चित या दुबधा की बात।
वि० उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे पुरुष-कुंजर।
कुंजरारि—संज्ञा पुं० सिंह। शेर।
कुंजविहारी—संज्ञा पुं० कृष्ण भगवान्।
वि० कुंज में विहार करनेवाला।
कुंजिका—संज्ञा स्त्री० काला जीरा।
कुंजित—वि० कुंजों से युक्त। लता-मंडपों वाला।
कुंजी—संज्ञा स्त्री० १. चाबी। चाभी। ताली। २. टीका। वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक के अर्थ आदि लिखे हों।
मुहा०—(किसी की) कुंजी हाथ में होना=किसी का अधिकार होना।
कुंठ—वि० १. गुठला। कुंद। जो तीक्ष्ण या चोखा न हो। २. मूर्ख। मन्दबुद्धि।
कुंठित—वि० १. कुंद। गुठला। जिसकी धार तेज न हो। २. मंद। ३. निकम्मा। बेकाम।
कुंड—संज्ञा पुं० १. कुंडा। चौड़े मुँह का गहरा बर्तन-विशेष। २. प्राचीन समय का

अनाज नापने का मान-विशेष। ३. बहुत छोटा तालाब। ४. पृथिवी में खोदा हुआ गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ पात्र जिसमें होम आदि करते हैं। ५. बटलोई। ६. ऐसी स्त्री का जारज लड़का जिसका पति जीता हो। ७. लोहे का टोप। ८. गट्ठा। पूला। ९. कूंड। खोद। १०. हौदा।

कुंडरा—संज्ञा पुं० मटका। कुंडा।

कुंडल—संज्ञा पुं० १. सोने, चाँदी आदि का कान का आभूषण-विशेष। मुरकी। बाली। २. गोरखनाथ के अनुयायी कनफटों का कान का आभूषण-विशेष। ३. कोई मंडलाकार गहना। जैसे—कड़ा, चूड़ा आदि। ४. मेखला। मेंड़री। लोहे का वह गोल मँडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है। ५. रस्सी आदि का गोल फंदा। ६. कुहरे या बदली में चंद्रमा या सूर्य के किनारे दिखाई पड़नेवाला मंडल। ७. किसी लंबी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति। मंडल। फेंटी। ८. बाईस मात्राओं का छंद-विशेष। ९. छंद में वह मात्रिक गुण जिसमें दो मात्राएँ हों, पर एक ही अक्षर हो।

कुंडलाकार—वि० कुंडली के रूप या आकार का। गोल। मंडलाकार।

कुंडलिका—संज्ञा स्त्री० १. कुंडलिया छंद। २. मंडलाकार रेखा।

कुंडलिनी—संज्ञा स्त्री० १. जलेबी या इमरती नाम की मिठाई। २. तंत्र और उसके अनुयायी हठयोग के अनुसार एक कल्पित वस्तु, जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गई है।

कुंडलिया—संज्ञा स्त्री० मात्रिक छंद-विशेष जो एक रोला और दोहे को मिलाने से बनता है।

कुंडली—संज्ञा स्त्री० १. जलेबी। २. कचनार। ३. कुंडलिनी। ४. गुडुचि। गिलोय। ५. जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला चक्रविशेष जिसमें बारह घर होते हैं। ६. गेंडुरी। इँडुवा। ७. साँप के बैठने की मुद्रा।

संज्ञा पुं० १. सर्प। साँप। २. वरुण। ३. विष्णु। ४. मोर।

कुंडलीकृत—संज्ञा पुं० १. साँप। २. वरुण। ३. मयूर। ४. चित्तल। ५. हिरन। ६. विष्णु। ७. कुंडलधारी।

कुंडा—संज्ञा पुं० बड़ा मटका। कछरा। मिट्टी का चौड़े मुंह का एक बड़ा गहरा बरतन।

संज्ञा पुं० दरवाज़े की चौखट में लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें जंजीर या साँकल लगाई जाती है।

कुंडिन—संज्ञा पुं० १. एक मुनि का नाम। २. नगर-विशेष। विदर्भ नगर।

कुंडिनपुर—संज्ञा पुं० विदर्भ देश का प्राचीन नगर-विशेष।

कुंडी—संज्ञा स्त्री० पत्थर या मिट्टी का छोटा बर्तन-विशेष जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं।

संज्ञा स्त्री० १. किवाड़ में लगी हुई साँकल। २. जंजीर की कड़ी।

कुंत—संज्ञा पुं० १. कुंती का पिता। राजा-विशेष। २. गवेधुक। कौड़िल्ला। ३. बरछी। भाला। ४. जूं। ५. क्रूर भाव। ६. अनख। ७. पानी। ८. पवन।

कुंतल—संज्ञा पुं० १. केश। सिर के बाल। शिखा। २. जौ। ३. चुक्कड़। प्याला। ४. हल। ५. देश-विशेष जो कोंकण और बरार के बीच में था। ६. बहुरूपिया। वेष बदलनेवाला पुरुष। ७. सूत्रधार। ८. राग-विशेष। ९. श्रीराम की सेना का एक बानर।

कुंतलवर्द्धन—संज्ञा पुं० १. भृंगराज वृक्ष। भृंगरिया। २. भंगरैया। भृंगराज।

कुंता—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती"।

कुंतिभोज—संज्ञा पुं० कुंती या पृथा को गोद लेनेवाला राजा विशेष।

कुंती—संज्ञा स्त्री० पृथा। युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता।

संज्ञा स्त्री० भाला। बरछी।

कुंथना—क्रि० अ० पीटा या मारा जाना।

कुंद—संज्ञा पुं० १. जुही की तरह का पौधा-

विशेष जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। २. कमल। ३. कनेर का पेड़। ४. कुन्द का फूल। ५. कुंदुर नाम का गोंद। पर्वत-विशेष। ६. नौ की संख्या। ७. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ८. विष्णु। ९. खराद।
वि० [फा०] १. गुठला। कुंठित। २. मंद। स्तब्ध।
यौ०–कुंदजेहन=मंदबुद्धि।
कुंदन–संज्ञा पुं० १. शुद्ध सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िए नगीने जड़ते हैं। २. शुद्ध सोना।
वि० १. कुंदन के समान चोखा। शुद्ध। खालिस। स्वच्छ। उत्तम। बढ़िया। २. जिसे कोई रोग न हो। नीरोग।
कुंदरू–संज्ञा पुं० बिंबा। बेल-विशेष जिसमें चार पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं, जिनकी तरकारी होती है।
कुंदलता–संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्ति-विशेष जिसमें छब्बीस अक्षर होते हैं।
कुंदा–संज्ञा पुं० १. लकड़ी का बड़ा, मोटा टुकड़ा। लक्कड़। २. बंदूक़ का चौड़ा पिछला भाग। ३. निहठा। लकड़ी का वह टुकड़ा, जिस पर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते, कुंदीगर कपड़े पर कुंदी करते और किसान घास काटते हैं। निष्ठा। ४. मूठ। दस्ता। बेंट। ५. काठ। वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोके जाते हैं। ६. कपड़ों की कुंदी करने की लकड़ी की बड़ी मुंगरी।
संज्ञा पुं० १. पक्षी का पर। डैना। २. कुश्ती का पेंच-विशेष।
संज्ञा पुं० खोवा। मावा। भुना हुआ दूध।
कुंदी–संज्ञा स्त्री० १. कपड़ों की सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिए उसे मोगरी से कूटने की क्रिया। २. ठोंकपीट। खूब मारना। ३. अच्छी तरह मरम्मत।
कुंदीगर–संज्ञा पुं० जो कुंदी करे।
कुंदुर–संज्ञा पुं० दवा के काम आनेवाला पीला गोंद विशेष।
कुँदेरना–क्रि० स० खरादना। कुरेदना। खुरचना।
कुँदेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँदेरी] कुनेरा। खरादनेवाला।
कुंभ–संज्ञा पुं० १. घट। कलश। मिट्टी का घड़ा। २. ज्योतिष में दसवीं राशि। ३. हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग। ४. प्राणायाम के तीन भागों में से एक। कुंभक। ५. दो द्रोण या ६४ सेर का प्राचीन मान या तौल विशेष। ६. गुग्गुल। ७. वेश्यापति। ८. एक राजा का नाम। ९. प्रति बारहवें वर्ष पड़नेवाला पर्व विशेष। १०. प्रह्लाद का पुत्र एक दैत्य।
कुंभक–संज्ञा पुं० प्राणायाम का अंग-विशेष जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोकते हैं।
कुंभकर्ण–संज्ञा पुं० रावण का भाई एक राक्षस।
कुंभकार–संज्ञा पुं० १. जाति-विशेष। २. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुँभार ३. मुर्गा।
कुंभकारी–संज्ञा स्त्री० कुँभारिन। कुलथी। मैनसिल।
कुंभज, कुंभजात–संज्ञा पुं० १. जो घड़े से उत्पन्न हुआ हो। २. वशिष्ठ। ३. अगस्त्य मुनि। ४. द्रोणाचार्य।
कुंभवीर्य–संज्ञा पुं० रीठा।
कुंभसंभव–संज्ञा पुं० १. अगस्त्य मुनि। २. वशिष्ठ। ३. द्रोणाचार्य।
कुंभा–संज्ञा पुं० १. छोटा घड़ा। २. राजा-विशेष। ३. वेश्या।
कुंभिका–संज्ञा स्त्री० १. कुंभी। २. वेश्या। ३. जलकुंभी। ४. कायफल। ५. आँख की फुड़िया। बिलनी। ६. परवल की लता। ७. शूक रोग। ८. एक प्रकार का तृण।
कुंभिनी–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। भूमि। २. जमालगोटा।
कुँभिलाना*–क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"।
कुंभी–संज्ञा पुं० १. मगर। २. हाथी। ३. जहरीला कीड़ा विशेष। ४. गुग्गुल। ५. बच्चों को क्लेश देनेवाला एक राक्षस।
संज्ञा स्त्री० १. छोटा घड़ा। २. दंती

का पेड़। दाँती। ३. कायफल का पेड़। ४. जलाशयों में होनेवाली एक वनस्पति। जलकुंभी। ५. नरक-विशेष। कुंभीपाक नरक। ६. मछली-विशेष।

कुंभीधान्य–संज्ञा पुं० घड़ा भर अनाज जिसे कोई गृहस्थ या परिवार छः दिन खा सके।

कुंभीधान्यक–संज्ञा पुं० अन्न संचित करनेवाला व्यक्ति।

कुंभीनस–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुंभीनसी] १. एक प्रकार का विषैला सर्प। २. रावण।

कुंभीपाक–संज्ञा पुं० १. नरक-विशेष जिसमें पापियों को उस प्रकार जलाया जाता है जैसे आँवाँ में मिट्टी के बर्तन। २. बटलोई में बना हुआ सामान। ३. सन्निपात विशेष जिसमें नाक से काला खून जाता है।

कुंभीर–संज्ञा पुं० एक भयंकर बड़ी मछली। शार्क।

कुंभीरक–संज्ञा पुं० चोर। घड़ियाल।

कुंभीरुणा–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। निसोत।

कुंवर–संज्ञा पुं० १. पुत्र। लड़का। २. राजकुमार। राजा का लड़का।

कुंवरि–संज्ञा स्त्री० १. राजकन्या। २. लड़की।

कुंवरेटा–संज्ञा पुं० छोटा लड़का।

कुंवारा–वि० अविवाहित। जिसका ब्याह न हुआ हो।

कुंवारी–संज्ञा स्त्री० अविवाहिता कन्या। कुमारी।

कु–एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में नीचता, न्यूनता, अल्पता या निन्दा आदि का अर्थ उत्पन्न करता है। नीच, कुत्सित आदि अर्थ का बोध करानेवाला उपसर्ग।

कुआँ–संज्ञा पुं० पानी निकालने के लिए जमीन में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप। **मुहा०**–(किसी के लिए) कुआँ खोदना=हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कुआँ खोदना=जीविका का प्रबन्ध करना। कुएँ में गिरना=विपत्ति में पड़ना। कुएँ में बाँस पड़ना=बहुत खोज होना। कुएँ में भाँग पड़ना=सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना।

फा० २२

कुआर–संज्ञा पुं० आश्विन। भादों के बाद का महीना।

कुइयाँ–संज्ञा स्त्री० छोटा कुआँ। कठकुइयाँ =वह छोटा कुआँ जो काठ से बँधा हो।

कुईं–संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी।

कुकटी–संज्ञा स्त्री० एक विशेष प्रकार का कपास, जो रेशम की तरह चिकना और गुलाबी रंग का होता है।

कुकड़ना–क्रि० अ० सिकुड़कर कड़ा हो जाना।

कुकड़ी–संज्ञा स्त्री० कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, खुखड़ी।

कुकनू–संज्ञा पुं० फारसी साहित्य में हुमा नामक कल्पित पक्षी।

कुकर–सं० पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार का कटोरदान जिसमें दाल-चावल, तरकारी एक साथ पकाई जाती है।

कुकरी*–संज्ञा स्त्री० वन-मुर्गी।

कुकरौंधा–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा जिससे कड़ी गंध निकलती है।

कुकर्म–संज्ञा पुं० अधर्म। बुरा या नीच काम। दुराचार। पाप।

कुकर्मी–वि० दुराचारी। बुरा काम करनेवाला पापी।

कुकुभ–संज्ञा पुं० १. मात्रिक छंद का नाम। २. एक प्राचीन पर्वत। ३. दिशा।

कुकुर–संज्ञा पुं० कुत्ता। यदुवंशी क्षत्रियों की जाति-विशेष। १. एक प्राचीन प्रदेश। २. सर्प-विशेष।

कुकुरखाँसी–संज्ञा स्त्री० सूखी खाँसी।

कुकुरदंत–संज्ञा पुं० एक दाँत पर निकलनेवाला दूसरा टेढ़ा दाँत।

कुकुरदंता–वि० टेढ़े और आगे निकले हुए दाँतोंवाला।

कुकुरमुत्ता–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की खुमी या छोटा पौधा जिससे बुरी गंध निकलती है। २. छत्रांक।

कुकुरमक्खी या कुकुरमाछी–संज्ञा स्त्री० मक्खी-विशेष जो पशुओं के चिपट जाती है।

कुकुरी–संज्ञा स्त्री० कुतिया।

कुकरौंछी–संज्ञा स्त्री० कुकुरमाछी ।

कुकुही*†–संज्ञा स्त्री० १. वनमुर्ग़ी । भुकुड़ी । २. काले दाग जो बाजरे की बाली पर लगते हैं ।

कुक्कट या कुक्कुट–संज्ञा पुं० १. मुर्ग़ा । २. लूक । ३. चिनगारी । ४. जटाधारी पौधा । ५. ताम्रचूड़ ।

कुक्कुटक–संज्ञा पुं० १. वर्णसंकर जाति-विशेष । २. वनमुर्गी ।

कुक्कुट नाड़ी–संज्ञा स्त्री० नली या यंत्र जिससे भरे बर्तन का जल खाली बर्तन में जाय ।

कुक्कुटपाद–संज्ञा पुं० पर्वत जिसे अब कुर्किहार कहते हैं और जो गया से आठ कोस उत्तर-पूर्व की ओर है ।

कुक्कुटव्रत–संज्ञा पुं० भाद्र शुक्ला सप्तमी को किया जानेवाला व्रत-विशेष ।

कुक्कुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुक्कुरी] १. श्वान । कुत्ता । २. यदुवंशियों की जाति-विशेष । कुकुर । ३. मुनि-विशेष ।

कुकाठ–संज्ञा पुं० बुरी लकड़ी । सड़ी-घुनी लकड़ी ।

कुक्रिया–संज्ञा स्त्री० दुष्कर्म । बुरा काम । बुरा आचरण ।

कुक्ष–संज्ञा पुं० उदर । पेट ।

कुक्षि–संज्ञा स्त्री० १. पेट । २. कोख़ । ३. किसी चीज़ के मध्य का भाग । संज्ञा पुं० १. दानव-विशेष । २. राजा बलि । ३. प्राचीन देश-विशेष ।

कुक्षी–संज्ञा स्त्री० १. कोख । २. गुह्यस्थान । ३. संतति । ४. तलवार की म्यान ।

कुखेत–संज्ञा पुं० बुरी जगह । कुठाँव ।

कुख्यात–वि० बदनाम । अपयशी । निंदित ।

कुख्याति–संज्ञा स्त्री० बदनामी । अपयश । निंदा । बुराई ।

कुगति–संज्ञा स्त्री० बुरी गति । दुर्गति । दुर्दशा ।

कुग्रह–संज्ञा पुं० बुरे ग्रह । दुखदायी ग्रह । अशुभ ग्रह ।

कुग्राम–संज्ञा पुं० १. निन्दित गाँव । २. जिस गाँव में अधिक बुरे लोग रहते हों ।

कुगहीन*†–संज्ञा स्त्री० हठ । अनुचित आग्रह । जिद ।

कुघाट–वि० बेडौल । कुरूप ।

कुघात–संज्ञा पुं० १. कुसमय में मारना । २. मर्मस्थान में मारना । ३. छल-कपट । बुरा दाँव ।

कुच–संज्ञा पुं० १. उरोज । २. स्तन ।

कुचकुचवा–संज्ञा पुं० उल्लू ।

कुचकुड्मल–संज्ञा पुं० स्तन के ऊपर का भाग । थन का मुँह । बौंड़ी ।

कुचकुचाना–क्रि० स० १. कोंचना । बार बार कोंचना । तंग करना । २. कुचलना ।

कुचंदन–संज्ञा पुं० लाल चन्दन । रक्त चन्दन । बिना सुगन्धि का चन्दन ।

कुचन–संज्ञा पुं० १. कुकिआना । २. तह करना । ३. कुच का बहुवचन ।

कुचना*–क्रि० अ० सिमटना । सिकुड़ना ।

कुचक्र–संज्ञा पुं० षड्यंत्र । दूसरों को हानि पहुँचानेवाला गुप्त प्रयत्न ।

कुचक्री–संज्ञा पुं० षड्यंत्र करनेवाला । कुटिल चाल चलकर दूसरों को हानि पहुँचानेवाला ।

कुचर–संज्ञा पुं० १. आवारा । बुरे स्थानों में घूमनेवाला । २. बुरा काम करनेवाला । ३. निन्दक ।

कुचलना–क्रि० स० १. मसलना । २. रौंदना । चूर करना । बुरी तरह दबाना । पीस देना । **मुहा०**–सिर कुचलना=पराजित करना ।

कुचला–संज्ञा पुं० औषध के लिए उपयोगी वृक्ष-विशेष का विषैला बीज । वि० १. जिसका कपड़ा मैला हो । मैले कपड़ेवाला । २. मैला । गंदा ।

कुचली–संज्ञा स्त्री० कीला । सीता दाँत । वे दाँत जो डाढ़ों और राजदंत के बीच में होते हैं ।

कुचाग्र–संज्ञा पुं० स्तन का अग्र भाग । भिटनी । भेटुला ।

कुचाल–संज्ञा स्त्री० १. कुमार्ग । बुरा आचरण । २. दुष्टता । बदमाशी । ३. कुरीति । कुटेव ।

कुचाली—संज्ञा पुं० १. बुरे चाल-चलनवाला। २. दुष्ट। ३. उपद्रवी।
कुचाह*—संज्ञा स्त्री० १. अनिच्छा। २. अशुभ बात। ३. बुरी खबर। ४. प्रेम-रहित। ५. कपट स्नेह। ६. अमंगल।
कुचि या कुची—स्त्री० १. बुहारी। बढ़नी। झाड़ू। शोधनी। २. कुची जिससे दीवार पर सफ़ेदी पोती जाती है।
कुचिया—संज्ञा स्त्री० १. उड़द की पिट्ठी की छोटी छोटी टिकिया। २. लोलकी। कान के नीचे का कोमल भाग।
कुचिलना—क्रि० दे० "कुचलना"।
कुचील*†—वि० मलिन। मैले वस्त्र धारण करनेवाला। मैला-कुचैला।
कुचेला—वि० १. मलिन। २. गुदड़ी। ३. बुरा शिष्य।
कुचेष्ट—वि० बुरी चेष्टावाला। जिसकी इच्छाएँ बुरी हों। बुरी भावनाओं से युक्त।
कुचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [वि० कुचेष्ट] १. कुप्रयत्न। बुरी चेष्टा। हानि पहुँचाने का प्रयत्न। बुरी चाल। २. चेहरे का बुरा भाव।
कुचैन*—संज्ञा स्त्री० १. दुःख। व्याकुलता। २. परेशानी। कष्ट।
वि० बेचैन। व्याकुल।
कुचोद्य—संज्ञा पुं० कुत्सित प्रश्न। कुतर्क।
कुच्छित*—वि० दे० "कुत्सित"।
कुछ—वि० थोड़ा सा। थोड़ी मात्रा या संख्या में। ज़रा। अल्प।
सर्व० १. कोई (वस्तु)। २. सार वस्तु। काम की वस्तु। ३. प्रसिद्ध या गण्य मान्य मनुष्य।
मुहा०—कुछ एक=थोड़ा सा। कुछ कुछ=थोड़ा। कुछ ऐसा=असाधारण। विलक्षण। कुछ न कुछ=थोड़ा बहुत। कम या अधिक। कुछ से कुछ या कुछ का कुछ=और का और। उलटा-पलटी। कुछ कहना=बिगड़ना। कड़ी बात कहना। कुछ कर देना=जादू-टोना कर देना। (किसी को) कुछ हो जाना=कोई रोग या भूत-प्रेत लगना। कुछ हो=जो कुछ भी हो। चाहे जो हो। कुछ लगाना=(अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना। गर्व करना। कुछ हो जाना=नाम पैदा करना।
कुजंत्र*—संज्ञा पुं० १. अभिचार। बुरा यंत्र। २. टोटका। टोना।
कुज—संज्ञा पुं० १. मंगल ग्रह। २. मंगलवार। ३. वृक्ष। पेड़। ४. नरकासुर जो पृथ्वी का पुत्र माना जाता था।
कुजन—संज्ञा पुं० दुष्ट व्यक्ति। दुष्ट।
कुजलीवन—संज्ञा पुं० कुंजरवन। हाथियों का वन। जिस वन में अधिक हाथी हों।
कुजा—संज्ञा स्त्री० १. सीता, जानकी। २. कात्यायनी का एक नाम।
कुजाति—संज्ञा स्त्री० १. अपनी जाति से निकाला हुआ। २. नीच या बुरी जाति। अधम जाति।
संज्ञा पुं० १. नीच पुरुष। बुरी जाति का आदमी। २. पतित या अधम पुरुष।
वि० जातिच्युत। पतित।
कुजोग*†—संज्ञा पुं० १. बुरा मेल। अशुभ संयोग। कुसंग। २. बुरा अवसर। बुरा समय।
कुजोगी*—वि० जो संयम से न रहे। असंयमी। दुराचारी।
कुट—संज्ञा पुं० [स्त्री० कुटी] १. गृह। घर। २. कलश। ३. गढ़। कोट। ४. समूह। ५. शिखर। ६. सांकेतिक शब्द। ७. पर्वत तोड़नेवाली हथौड़ी। ८. छोटा टुकड़ा। कूटा हुआ टुकड़ा। जैसे, तिलकुट।
संज्ञा स्त्री० एक बड़ी मोटी झाड़ी, जिसकी जड़ सुगंधित होती है।
कुटका—संज्ञा पुं० छोटा टुकड़ा।
कुटकी—संज्ञा स्त्री० १. एक पहाड़ी पौधा, जिसकी जड़ की गोल गाँठ की औषध बनती है। २. जड़ी-विशेष। ३. मसाला। ४. उड़नेवाला छोटा कीड़ा, जो कुत्ते, बिल्ली आदि के रोयों में रहता है।
†संज्ञा स्त्री० चेना। कँगनी।

कुटकुट–संज्ञा पुं० सिंघाड़ा।

कुटज–संज्ञा पुं० १. कुरैया। २. अगस्त्य मुनि। ३. इन्द्रयव। ४. द्रोणाचार्य। ५. पुष्प-विशेष।

कुटत‡–संज्ञा स्त्री० १. कुटाई। कूटने का भाव। २. मार।

कुटनई–संज्ञा स्त्री० १. कुटाई। कुटने का गुण। २. कूटने-पीसने का काम।

कुटनपन–संज्ञा पुं० १. दूती-कर्म। कुटनी का काम। २. वैमनस्य पैदा कराना।

कुटंत–संज्ञा पुं० कुटाई। प्रहार।

कुटनहारी–संज्ञा स्त्री० कूटनेवाली स्त्री।

कुटना–संज्ञा पुं० १. दूत। दाल। स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला। २. चुगलखोर। दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला। ३. भंड। भंडुवा।
संज्ञा पुं० कूटने का अस्त्र।
क्रि० अ० १. कूटा जाना। २. खण्ड खण्ड करना। तोड़ना।

कुटनाना–क्रि० स० १. फुसलाना। बहकाना। २. किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्ग पर ले जाना।

कुटनापन–संज्ञा पुं० दे० 'कुटनपन'।

कुटनापा–संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन"।

कुटनी–संज्ञा स्त्री० १. दूती। स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने का कार्य करनेवाली स्त्री। २. दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली। ३. सन्देश ले जानेवाली।

कुटवाना–क्रि० स० कूटने का कार्य दूसरे से करवाना।

कुटाई–संज्ञा स्त्री० १. कूटने की मजदूरी। २. कूटने का काम।

कुटास–संज्ञा स्त्री० मार-पीट की इच्छा।

कुटिया–संज्ञा स्त्री० १. झोंपड़ी। एकान्त स्थान में मिट्टी-फूस आदि का बना हुआ छोटा घर। २. पशुओं का चारा।

कुटिल–वि० टेढ़ा। वक्र। क्रूर। दुष्ट। धोखेबाज। दगाबाज। कपटी। छली। खोटा। घुँघराला। छल्लेदार। टेढ़ा-मेढ़ा। सर्पाकार।
संज्ञा पुं० शठ। खल। चुगलखोर। पीलापन लिये सफेद रंग और लाल आँखों वाला। १४ अक्षरों का एक छन्द। एक धातु। तगर का फूल।

कुटिलता–संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ापन। २. खोटाई। छल। कपट। शठता। क्रूरता।

कुटिलांतःकरण–वि० १. कपटी। खल। २. मन में बुरी भावना रखनेवाला।

कुटिलपन–संज्ञा पुं० दे० "कुटिलता"।

कुटिला–संज्ञा स्त्री० १. प्राचीन लिपि-विशेष। २. सरस्वती नदी। ३. एक प्रकार की सुगन्धि। ४. तगर पौधा-विशेष।

कुटिलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता"। छल। कपट। टेढ़ापन। चुगलखोरी। क्रूरता।

कुटिहा–वि० मजाक उड़ानेवाला। व्यंग्य की हँसी करनेवाला।

कुटी–संज्ञा स्त्री० १. तृण से बना हुआ छोटा घर। पर्णशाला। २. झोपड़ी। कुटिया। ३. पशुओं का चारा। ४. मुरा नामक गंध द्रव्य। ५. श्वेत कुटज।

कुटीचक–संज्ञा पुं० १. चार प्रकार के संन्यासियों में पहला। त्रिदंडी संन्यासी। २. पुत्र के अन्न पर जीवित रहनेवाला।

कुटीचर–संज्ञा पुं० दे० "कुटीचक"। १. कपटी। छली। २. कुटिल। ३. चुगलखोर। ४. यति। संन्यास की अवस्था।

कुटीर–संज्ञा पुं० झोपड़ी। कुटिया। कुटी।

कुटुंब–संज्ञा पुं० परिवार। अपने घर वालों का समुदाय। कुनबा। खानदान।

कुटुंबी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुटुंबिनी] १. परिवारवाला। २. खानदान के लोग। संबंधी। नातेदार।

कुटुम*†–संज्ञा पुं० दे० "कुटुंब"। परिवार।

कुटेक–संज्ञा स्त्री० बुरा हठ। किसी बात पर अनुचित रूप से अड़ जाना।

कुटौनी–संज्ञा स्त्री० धान कूटने की मजदूरी।

कुटेव–संज्ञा स्त्री० बुरी बान। बुरी आदत।

कुट्टमित–संज्ञा पुं० १. प्रेमालाप करते समय स्त्रियों का नकारात्मक हावभाव। २. स्त्रियों के ललित हाव-भाव का नाम, जिसमें वे संयोग के समय मिथ्या दुख प्रकट करती हैं।

कुट्टा–संज्ञा पुं० १. पर कटे हुए कबूतर। २. पक्षी फँसाने के लिए जाल में छोड़ा हुआ पंछी।

कुट्टी–संज्ञा स्त्री० पशुओं का चारा। चारा काटना। गँड़ासे से बारीक कटा हुआ चारा। कूटा और सड़ाया हुआ रद्दी कागज। लड़कों द्वारा आपस में मित्रता या, दांतों पर नाखून लगाकर या अन्य ढंग से, एक संकेत और उस समय उच्चारण किया जानेवाला शब्द। मैत्री-भंग। पर-कटा कबूतर।

कुठला–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुठली] १. अनाज रखने के लिए मिट्टी का बड़ा बरतन। २. चूने की भट्टी।

कुठाउँ–संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव"।

कुठाँव*†–संज्ञा स्त्री० बुरा स्थान। बुरी जगह।

मुहा०—कुठाँव मारना—शरीर के किसी ऐसे स्थान पर चोट करना जहाँ बहुत पीड़ा हो।

कुठाट–संज्ञा पुं० १. बुरा सामान। बुरा साज। २. बुरा प्रबंध। ३. बुरा आयोजन। बुरा काम करने की तैयारी या चेष्टा।

कुठार–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुठारी] १. कुल्हाड़ी। २. परशु। फरसा। ३ नाश करनेवाला। विनाशक।

कुठाराघात–संज्ञा पुं० १. कुल्हाड़ी या फरसे से आघात। २. गहरी चोट। ३. अत्यधिक हानि।

कुठारी–संज्ञा स्त्री० १. कुल्हाड़ी। टाँगी। २. नाश करनेवाला। ३. अनाज संचित करने का स्थान।

कुठाली–संज्ञा स्त्री० सोना-चाँदी गलाने वाली मिट्टी।

कुठाहर*–संज्ञा पुं० १. कुठौर। कुठाँव। बुरा स्थान। मर्म स्थान। २. असमय। बेमौक़ा।

कुठौर–संज्ञा पुं० १. बुरे स्थान पर। कुठाँव। २. बे-मौक़ा। बुरी जगह।

कुड़–संज्ञा पुं० कुट नामक एक औषध।

कुड़कना–दे० "कुड़कुड़ाना"। कुड़ककर बोलना। डपटकर बोलना। डपटना।

कुड़कुड़ाना–क्रि० अ० १. मन ही मन कुढ़ना। कुड़बुड़ाना। कुड़कुड़ करना। २. घूरना। गुर्राना।

कुड़कुड़ी–संज्ञा स्त्री० भूख या अपच से पेट में होनेवाली गुड़गुड़ी।

मुहा०—कुड़कुड़ी होना—किसी बात को जानने के लिए व्याकुल होना।

कुड़बुड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन खीझना या कुढ़ना। कुड़कुड़ाना।

कुड़ल–संज्ञा स्त्री० खून की कमी या ठंढक लगने से शरीर में एंठन की पीड़ा।

कुड़व–संज्ञा पुं० १. अनाज नापने का एक पुराना नाप, जो चार अंगुल चौड़ा और चार अंगुल गहरा होता था। २. एक सेर का पाँचवाँ भाग।

कुड़ा–संज्ञा पुं० इंद्रजौ का वृक्ष।

कुड़क–संज्ञा स्त्री० १. अंडा न देनेवाली मुर्गी। २. बेकार। व्यर्थ। खाली।

कुडौल–वि० भद्दा। बेढंगा। बेतरतीब। जिसका डीलडौल ठीक न हो।

कुढंग–संज्ञा पुं० बुरा ढंग। बुरी चाल। बुरी रीति। अशिष्ट व्यवहार।

वि० १. बेढंगा। बुरे ढंग का। भद्दा २. बुरा।

कुढंगा–वि० १. असभ्य। उजड्ड। गँवार। २. भद्दा। बेढंगा।

कुढंगी–वि० बुरे चालचलन का। दुराचारी। बिना ढंगवाला।

कुढ़न–संज्ञा स्त्री० १. चिढ़। २. खीझ। ३. मन में क्रोध या दुख।

कुढ़ना–क्रि० अ० १. मन ही मन खीझना। भीतर ही भीतर क्रोध करना। चिढ़ना। बुरा मानना। २. डाह या ईर्ष्या करना। ३. मसोसना। भीतर ही भीतर दुखी होना। ४. दूसरे की उन्नति से दुखी होना।

कुढब–वि० १. बुरे ढंग का। २. कठिन।

कुढ़ाना–क्रि० स० १. चिढ़ना। खिझाना। क्रोध या गुस्सा दिलाना। २. दुःखी करना। कलपाना।

कुण–संज्ञा पुं० १. चील। २. शिशु। बच्चा। ३. नाभि का मैल।

कुणप–संज्ञा पुं० १. लाश। शव। २. राँगा। ३. बरछा। ४. गोंदी। इंगुदी।
वि०–लाश की तरह दुर्गन्ध। तिरस्कार की भावना के लिए प्रयुक्त शब्द।

कुणपाशी–संज्ञा पुं० १. मुर्दा खानेवाला जन्तु। २. मुर्दा खानेवाला एक प्रेत।

कुतका–संज्ञा पुं० १. गतका। २. सोंटा। मोटा डंडा। ३. भाँग घोटने का सोंटा या डंडा।

कुतना–क्रि० अ० कूता जाना। कूतने का कार्य होना। मूल्यांकन, अन्दाज लगाना।

कुतनु–वि० कुत्सित शरीर।
संज्ञा पुं० कुबेर। यक्षराज।

कुतप–संज्ञा पुं० १. दिन का आठवाँ मुहूर्त्त। २. श्राद्ध की आवश्यक वस्तुएँ, जैसे कुश, तिल आदि। ३. ब्राह्मण। ४. सूर्य्य। ५. अग्नि। ६. अतिथि। ७. भाँजा। ८. चमड़े की कुप्पी।

कुतपकाल–संज्ञा पुं० गरमी का समय। मध्याह्न काल।

कुतरना–क्रि० स० १. दाँत से काटना। २. छोटे-छोटे टुकड़े करना।

कुतरु–संज्ञा पुं० १. काटनेवाला। २. पिल्ला। कुत्ते का बच्चा।

कुतर्क–संज्ञा पुं० बुरा तर्क। असंगत वाद-विवाद करना। वितंडा। बेढंगी दलील।

कुतर्की–संज्ञा पुं० बकवादी। व्यर्थ बहस करनेवाला। वितंडावादी। हुज्जती।

कुतल–संज्ञा पुं० पृथ्वीतल। भूतल।

कुतवार–संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"। कूतनेवाला। अनुमान करनेवाला।

कुतवाल†–संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतार–संज्ञा पुं० १. असुविधा। २. अंडस।

कुतिया–संज्ञा स्त्री० कूकरी। कुत्ती। कुत्ते की मादा।

कुतुक–संज्ञा पुं० उत्सुकता। कुतूहल। आनन्द।

कुतुब–संज्ञा पुं० ध्रुवतारा।
(अ०) किताब का बहुवचन।
यौ०–किताबखाना=पुस्तकालय।

क़ुतुबनुमा–संज्ञा पुं० दिशासूचक यंत्र। एक प्रकार का यंत्र जिसमें सुइयों के घूमने से दिशा का ज्ञान होता है।

कुतूहल–संज्ञा पुं० [वि० कुतूहली] १. जानने की प्रबल इच्छा। २. उत्सुकता। वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो। ३. कौतुक। ४. क्रीड़ा। ५. खिलवाड़। ६. आश्चर्य्य। अचंभा। ७. आमोद।

कुतूहली–१. उत्सुक। उत्कंठा रखनेवाला। २. खिलवाड़ी। कौतुकी। ३. अपूर्व। अद्भुत।

कुतृण–संज्ञा पुं० बुरी घास।

कुत्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुत्ती] १. श्वान। कूकुर। २. घास विशेष, जिसकी बालें कपड़ों में लिपट जाती हैं। लपटौवाँ। ३. यंत्र का पुरजा, जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है। ४. बिल्ली। लकड़ी का एक छोटा चौकोर टुकड़ा जिसे नीचे गिरा देने पर दरवाजा बन्द हो जाता है। ५. बंदूक का घोड़ा। ६. नीच व्यक्ति। क्षुद्र मनुष्य।
यौ०—कुत्ते-खसी=व्यर्थ और नीच कार्य।
मुहा०—क्या कुत्ते ने काटा है?=क्या पागल हुए हैं? कुत्ते की मौत मरना=बहुत बुरी तरह से मरना। कुत्ते का दिमाग होना या कुत्ते का भेजा खाना=बहुत अधिक बक-वाद करना।

कुत्र–अव्यय० कहाँ? किस स्थान पर?

कुत्सन–संज्ञा पुं० भर्त्सन। ग्लानिकरण। निन्दा।

कुत्सा–संज्ञा स्त्री० १. निंदा। बुराई। २. अवज्ञा। ३. अपमान।

कुत्साजनक–संज्ञा पुं० १. निन्दा करानेवाला। २. घृणोत्पादक। ग्लानिकर।

कुत्सित–वि० १. बहुत ही बुरा। अधम। नीच। गर्हित। घृणित। २. खराब।

कुथ—संज्ञा पुं० १. हाथी पर का बिछावन। हाथी की झूल। २. रथ का पर्दा। ३. प्रातःकाल स्नान करनेवाला ब्राह्मण।
कुथरी, कुथली—संज्ञा स्त्री० झोली। कोथली।
कुदकना—क्रि० अ० दे० "कूदना"। फाँदना। फुदकना। उछलना।
कुदक्का†—संज्ञा पुं० १. उछल-कूद। २. कूद-फाँद। ३. अँगूठा।
कुदरत—संज्ञा स्त्री० दैवी शक्ति। २. माया। प्रकृति। ईश्वरीय लीला। ४. कारीगरी।
कुदरती—वि० [अ०] १. प्राकृतिक। २. स्वाभाविक। ३. ईश्वरीय। दैवी।
कुदरना—क्रि० अ० फाँदना। कूदना। उछलना।
कुदरा—संज्ञा पुं० कुदारी। कुदाली। मिट्टी खोदने का औजार।
कुदर्शन—वि० १. कुरूप बदसूरत। २. बुरा दर्शन।
कुदलाना*—क्रि० अ० उछलना। कूदना। कूदते हुए चलना।
कुदाँव—संज्ञा पुं० १. कुघात। अनुचित या बुरा दाँव। २. विश्वासघात। धोखा। दगा। †३. संकट की स्थिति। बुरी स्थिति। औचट। ४. बुरा स्थान। ५. विकट स्थान। ६. मर्मस्थान।
कुदाई*—संज्ञा पुं० कूदने का काम। वि० १. छली। कपटी। धोखेबाज। बुरे ढंग से दाँव-घात करनेवाला। २. विश्वास-घाती।
कुदान—संज्ञा पुं० १. बुरा दान (लेनेवाले के लिए) जैसे—शय्यादान। २. कुपात्र को दान।
संज्ञा स्त्री० १. कूदने की क्रिया या भाव। २. बहुत पहुँचकर कहना। उतनी दूरी जितनी दूरी एक बार कूदने में पार की जाय।
कुदाना—क्रि० स० कूदने के लिए प्रेरित करना। कुदवाना। लँघवाना।
कुदाम*—संज्ञा पुं० खोटा रुपया। खोटा सिक्का।
कुदारी—संज्ञा स्त्री० कुदाल। मिट्टी खोदने का औजार। कुदार।
कुदाल—संज्ञा स्त्री० [स्त्री० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का औजार।
कुदाव—संज्ञा स्त्री० कूदने की क्रिया।
कुदिन—संज्ञा पुं० १. बुरे दिन। दुर्दिन। दुख के दिन। आपत्तिकाल। २. मावन दिन। ३. वह दिन जिसमें ऋतु-विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।
कुदिष्टि*—संज्ञा स्त्री० दे० "कुदृष्टि"।
कुदृश्य—वि० कुरूप। बुरा दृश्य। बद-सूरत।
कुदृष्टि—संज्ञा स्त्री० पाप दृष्टि। बुरी नज़र। बुरे विचार से देखना। अनभल चाहना। किसी की बुराई चाहना।
कुदेव—संज्ञा पुं० १. भूमिदेव। ब्राह्मण। भूदेव। भूसुर। २. असुर। राक्षस। दैत्य।
कुदेश—संज्ञा पुं० बुरा देश। गङ्गारहित देश।
कुद्रव—संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान, कोदो।
कुधर—संज्ञा पुं० १. पहाड़। शैल। २. शेषनाग।
कुधातु—संज्ञा स्त्री० १. लोहा। २. बुरी धातु।
कुधारा—संज्ञा स्त्री० दुर्व्यवहार। कुरीति। असभ्य व्यवहार।
कुनकुना—वि० गुनगुना। थोड़ा गरम।
कुनख—संज्ञा पुं० १. रोग-विशेष। २. गन्दे नाखूनवाला।
कुनखी—संज्ञा पुं० १. बुरे नाखूनवाला। २. चिपटे नखवाला।
कुनना—क्रि० स० बरतन आदि खरादना। खरोंचना।
कुनप—संज्ञा पुं० दे० "कुणप"।
कुनबा—संज्ञा पुं० कुटुंब। परिवार। घराना।
कुनबी—संज्ञा पुं० खेती करनेवाली हिन्दुओं की एक जाति। कुरमी। गृहस्थ।
कुनवा—संज्ञा पुं० खरादी। बर्तन आदि खरादनेवाला।
कुनह—संज्ञा स्त्री० [वि० कुनही] १. वैमनस्य। मनोमालिन्य। २. पुराना द्वेष या वैर। मनमुटाव।

कुनही–वि० द्वेष करनेवाला।

कुनाई–संज्ञा स्त्री० १. बुरादा। २. खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी। ३. खरादने या खुरचने पर निकलनेवाली बुकनी।

कुनाम–संज्ञा पुं० अपयश। बदनामी।

कुनारी–संज्ञा स्त्री० बदचलन स्त्री। दुराचारिणी स्त्री।

कुनाल–संज्ञा पुं० महाराजा अशोक के पुत्र। दे० "कुणाल"।

कुनीति–संज्ञा स्त्री० १. अन्याय। २. अनुचित व्यवहार। ३. बुरी नीति।

कुनैन–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। मलेरिया रोग की विशेष दवा। सिंकोना नामक पेड़ की छाल का सत, जो अँगरेजी चिकित्सा में ज्वर के लिए अत्यंत उपकारी माना जाता है।

कुन्तल–संज्ञा पुं० १. बाल। केश। शिखा। २. हैदराबाद राज्य के दक्षिण पश्चिम का भाग किसी समय कुन्तल देश था। ३. प्याला। ४. जौ। ५. सुगन्धवाला। ६. बहुरूपिया। ७. राम-सेना का एक बानर।

कुन्तीभोज–संज्ञा पुं० एक राजा का नाम। ये निःसन्तान थे इसी से शूरसेन की कन्या पृथा को गोद लिया। इसी कारण पृथा का कुन्ती नाम हुआ।

कुन्द–संज्ञा पुं० कुन्द का फूल। एक प्रकार का सफेद फूल।

कुन्दन–संज्ञा पुं० सोने का पतला पत्तर जो नगीनों के जोड़ने में काम आता है।

कुपंथ–संज्ञा पुं० १. खराब रास्ता। २. कुचाल। निषिद्ध आचरण। ३. कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय। बुरा मत।

कुपंथी–वि० [हिं० कुपंथ] दुराचारी। बुरे चाल-चलनवाला। दुर्व्यवहार करनेवाला। पापी। कुमार्गी।

कुपढ़–वि० जो पढ़ा न हो। अशिक्षित। अनपढ़। मूर्ख।

कुपत्थी–वि० असंयमी।

कुपथ–संज्ञा पुं० १. कुमार्ग। विपथ। २. दुराचारी। पापात्मा। पापी। ३. बुरी चाल। दुर्व्यवहार। निषिद्ध आचरण।

यौ०–कुपथगामी=निषिद्ध आचरणवाला। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भोजन।

कुपथ्य–संज्ञा पुं० स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाला आहार-विहार। बद-परहेजी। अपथ्य।

कुपरामर्श–संज्ञा पुं० बुरी सलाह। कुमन्त्रणा। खराब राय।

कुपाठ–संज्ञा पुं० बुरी सलाह। बुरा पाठ। बुरी शिक्षा।

कुपात्र–वि० १. अयोग्य। नालायक़। अनुपयुक्त। २. अनधिकारी। जिसे दान देना शास्त्रों से निषिद्ध हो।

कुपित–वि० क्रोधित। क्रुद्ध। नाराज़। कोपयुक्त।

कुपुटना–क्रि० स० चुटकी में फूल या साग आदि तोड़ना।

कुपुत्र–संज्ञा पुं० कपूत। दुष्ट पुत्र। बुरे चाल-चलनवाला बेटा।

कुपुरुष–संज्ञा पुं० निकृष्ट मनुष्य। नीच व्यक्ति। समाज से निकाला गया पुरुष।

कुपूत–संज्ञा पुं० कुपुत्र। कपूत। दुराचारी पुत्र।

कुप्पा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुप्पी] घी, तेल आदि रखने के लिए चमड़े का बना हुआ बर्तन। चर्मभांड।

मुहा०–कुप्पा होना या हो जाना=१. फूल जाना। २. मोटा होना। ३. मुँह फुलाना। रूठना। गुस्सा होना।

कुप्पी–संज्ञा स्त्री० छोटा कुप्पा।

कुप्रबन्ध–संज्ञा पुं० खराब इन्तजाम। दोषपूर्ण व्यवस्था। बुरा प्रबन्ध।

कुफर*†–संज्ञा पुं० दे० "कुफ़्र"।

कुफेन*–संज्ञा स्त्री० काबुल नदी का प्राचीन नाम।

कुफ़्र–संज्ञा पुं० इस्लाम धर्म के विरुद्ध मत या विचार।

कुब–संज्ञा पुं० कूबड़। कुब्ज। पीठ पर का डील।

कुबजा–संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या "कुबरी"।

कुबड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुबड़ी] जिसकी पीठ झुक गई हो या जिसकी पीठ पर कूबड़ हो।

वि० १. झुका हुआ । २. झुकी पीठ-वाला ।

कुबड़ी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "कुबरी" । झुकी पीठवाली । २. दे० "कुब्जा" । टेढ़ी मूठ की छड़ी ।

कुबत*†–संज्ञा स्त्री० १. निंदा । २. बुरी बात । निकृष्ट वार्ता । ३. बुरी चाल ।

कुबरी–संज्ञा स्त्री० १. "कुबड़ी" । एक कुब्जा । कंस की कुबड़ी दासी जो कृष्ण से प्रेम करती थी । २. टेढ़ी मूट की छड़ी ।

कुबाक*–संज्ञा पुं० दे० "कुवाक्य" ।

कुबानि–संज्ञा स्त्री० बुरी आदत । बुरी लत । कुटेव ।

कुबुद्धि–वि० मूर्ख । दुर्बुद्धि । खोटी बुद्धि वाला ।

संज्ञा स्त्री० १. मूर्खता । २. कुमंत्रणा ।

कुबेर–संज्ञा पुं० दे० 'कुवेर' ।

कुबेला–संज्ञा स्त्री० कुसमय । बुरा समय ।

कुब्ज–वि० [स्त्री० कुब्जा] १. कुबड़ा । जिसकी पीठ झुकी हो । २. अपामार्ग । ३. लटजीरा । संज्ञा पुं० एक प्रकार का वायु रोग जिसमें छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है ।

कुब्जक–संज्ञा पुं० मालती ।

कुब्जा– संज्ञा स्त्री० कुबड़ी स्त्री । श्री कृष्ण से प्रेम करनेवाली कंस की एक कुबड़ी दासी ।

कुब्जिका–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा का नाम । २. आठ वर्ष की लड़की ।

कुब्बा–संज्ञा पुं० दे० "कूबड़" ।

कुभा–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी की छाया । २. काबुल नदी का वैदिक नाम जिस पर काबुल देश का नामकरण हुआ । ३. क्षीण दीप्ति ।

कुभार्या–संज्ञा स्त्री० झगड़ालू पत्नी । कलह करनेवाली स्त्री ।

कुभाव–संज्ञा पुं० बुरा विचार । कुदृष्टि । कुत्सित उद्देश्य ।

कुभृत–संज्ञा पुं० १. दुष्ट नौकर । २. शेषनाग । ३. पहाड़ । ४. सात की संख्या ।

कुमंठी*–संज्ञा स्त्री० पतली लचीली डाल ।

कुमंडल–संज्ञा पुं० १. दुष्ट मनुष्यों का गिरोह । २. धरामंडल । ३. पृथ्वीमंडल ।

कुमंत्रणा–संज्ञा स्त्री० बुरी राय । बुरा परामर्श । अधम सम्मति ।

कुमंत्री–संज्ञा पुं० हानिकारक राय देनेवाला । बुरी सलाह देनेवाला ।

कुमक–संज्ञा स्त्री० १. पक्षपात । तरफ़दारी । २. सहायता । मदद । दे० कुमुक ।

कुमकी–वि० कुमक से संबंध रखनेवाला । संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में मदद देनेवाली सिखाई हुई हथिनी ।

कुमकुम–संज्ञा पुं० १. कुमकुमा । २. केसर ।

कुमकुमा–संज्ञा पुं० १. लाख का बना हुआ गोल या चिपटा लट्टू जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली खेलते हैं । २. एक प्रकार का छोटे मुँह का लोटा । ३. काँच के बने हुए छोटे गोले ।

कुमति–संज्ञा स्त्री० अल्पबुद्धि । दुर्बुद्धि ।

कुमद–संज्ञा पुं० १. घमंड । २. दुरभिमान । ३. खोटी बुद्धि । ४ दे० 'कुमुद' । एक प्रकार का कमल ।

कुमदिनि–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' । रात को खिलनेवाला कमल ।

कुमरिया–संज्ञा पुं० हाथियों की जाति-विशेष ।

कुमरी–संज्ञा स्त्री० पंडुक की जाति का पक्षी ।

कुमला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा पेड़ ।

कुमाच–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच" । एक प्रकार की रोटी । गंजीफ़े के पत्ते के एक रंग को भी कुमाच कहते हैं ।

कुमार–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुमारी] १. पाँच वर्ष का बालक । २. युवराज । ३. पुत्र । बेटा । ४. सिंधु नद । ५. कार्तिकेय । ६. खरा या शुद्ध सोना । ७. सुग्गा । तोता । ८. सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि ऋषिगण जो सदैव बालक के रूप में ही रहते हैं । ९. युवावस्था या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष । १०. ग्रह-विशेष जिसका प्रभाव बालकों पर पड़ता है । ११. मंगल ग्रह ।

अगल बगल सहारे के लिए पटरी लगी रहती है। २. चबूतरा जिसके ऊपर मकान बनाए जाते हैं। ३. पुश्त। पीढ़ी।
यौ०–आराम-कुरसी=आदमी के लेटने लायक एक लम्बी कुर्सी।

कुरसीनामा–संज्ञा पुं० वंशावली। लिखी हुई वंश-परंपरा। वंशवृक्ष।

कुरा–संज्ञा पुं० पुराने ज़ख्म में पड़ जानेवाली गाँठ। संज्ञा पुं० कटसरैया।

कुराइ*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुराय"।

कुराई– संज्ञा स्त्री० १. कुराह। विषम पथ। २. बुरा राजा।

क़ुरान–संज्ञा पुं० मुसल्मानों का धर्मग्रंथ जो अरबी भाषा में है।

कुराय*–संज्ञा स्त्री० गड्ढा। पानी से पोली ज़मीन।
संज्ञा पुं० १. बुरा राजा। २. बुरी सम्मति।

कुराह–संज्ञा स्त्री० [वि० कुराही] १. बुरा मार्ग। कुमार्ग। २. बरी चाल। ३. खोटा आचरण।

कुराही–वि० कुमार्गी। बुरी चाल चलने-वाला। दुराचारी।
संज्ञा स्त्री० दुराचार। बद-चलनी।

कुरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुटिया'।

कुरियाल–संज्ञा स्त्री० खुश होकर चिड़ियों का पंख खुजलाना।
मुहा०–कुरियाल में आना=१. चिड़ियों का प्रसन्न होना। २. मौज में आना।

कुरिल–संज्ञा पुं० १. वंश। घराना। २. चमार।

कुरी–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का छोटा धुस या टीला। २. अरहर की फली।
*संज्ञा स्त्री० जाति। वंश। घराना। टुकड़ा। खंड।

कुरीति–संज्ञा स्त्री० १. कुप्रथा। बुरी रीति। कुचाल। २. दुर्व्यवहार।

कुरीर–संज्ञा स्त्री० १. मठी। मढ़ी। २. रतिक्रिया। मैथुन।

कुरु–संज्ञा पुं० १. वैदिक आर्य्यों का एक वंश। २. हिमालय के उत्तर-दक्षिण स्थित एक प्राचीन प्रदेश, जिसमें पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे। ३. पुरुष जो कुरु के वंश में उत्पन्न हुआ हो। ४. पृथ्वी के नवखण्डों में से एक खंड। ५. कर्ता। ६. भरत।

कुरुई–संज्ञा स्त्री० मौनी। बाँस या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया या टोकरी।

कुरुकेतु–संज्ञा पुं० दुर्योधन। युधिष्ठिर। परीक्षित।

कुरुक्षेत्र–संज्ञा पुं० कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई का मैदान जो दिल्ली के पास है।

कुरुख–वि० जिसका रुख अच्छा न हो। जिसका चेहरा उदास हो। क्रुद्ध।

कुरुचि–संज्ञा स्त्री० १. बुरी प्रवृत्ति। २. बुरी वासना। नीच कार्य की इच्छा। ३. अजीर्ण।

कुरुजांगल–संज्ञा पुं० पांचाल देश के पश्चिम का एक प्राचीन देश।

कुरुबक–संज्ञा पुं० एक औषध। कुरवक।

कुरुम*–संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।

कुरुल–संज्ञा पुं० बालों का गुच्छा, विशेषकर ललाट पर का।

कुरुपति, कुरुराय–संज्ञा पुं० कुरुराज। दुर्योधन। युधिष्ठिर।

कुरुवंश–संज्ञा पुं० राजा कुरु का वंश।

कुरुविंद–संज्ञा पुं० १. काच लवण। २. मोथा। ३. दर्पण। ४. उरद।

कुरूप–वि० [स्त्री० कुरूपा] बुरी आकृति का। बदसूरत। बेडौल। बेढंगा। कुडौल।

कुरूपता–संज्ञा स्त्री० बदसूरती। जो सुन्दर न हो।

कुरेदना–क्रि० स० १. खरोचना। खुरचना। २. एकत्रित वस्तुओं को इधर-उधर करना।

कुरेर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कुलेल"।

कुरेलना–क्रि० स० दे० "कुरेदना"।

कुरैया–संज्ञा स्त्री० सुन्दर फूलोंवाला जंगली वृक्ष-विशेष, जिसके बीज को "इंद्र जौ" कहते हैं।

कुरौना*‡– क्रि० स० एक ही स्थान पर एकत्रित करना। ढेर लगाना। कूड़ा लगाना।

क़ुर्क़–वि० अदालत की आज्ञा से जब्त।

क़ुर्क़-अमीन–संज्ञा पुं० अदालत की आज्ञा से क़ुर्क़ी करनेवाला सरकारी कर्मचारी।

क़ुर्क़ी–संज्ञा स्त्री० सरकार द्वारा किसी ऋण, जुरमाने या कर आदि की वसूली में जायदाद का ज़ब्त किया जाना।
कुर्कुट–संज्ञा पुं० कूड़ा-करकट। झाड़न-बुहारन।
कुर्कुटी–संज्ञा पुं० सेमर का पेड़।
कुर्छाल–संज्ञा स्त्री० कूद। कुलाँच। चौकड़ी।
कुर्ता–संज्ञा पुं० दे० 'कुरता'।
कुर्ती–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुरती'।
क़ुर्बानी–संज्ञा स्त्री० दे० 'कुरबानी'।
कुर्ब्बा–संज्ञा पुं० कुब्ज। कूबड़।
कुर्मी–संज्ञा पुं० दे० "कुनबी"। हिन्दुओं की एक जाति, जो खेती या नौकरी करती है।
कुर्मुक–संज्ञा पुं० सुपारी। डली।
कुर्याल–संज्ञा पुं० १. सुख। आराम। २. जिसे कोई चिन्ता न हो।
मुहा०–कुर्याल में गुलेल लगाना=निराश होना। सुख के समय दुख।
कुर्रम–संज्ञा पुं० वेश्याओं का दलाल। भँडुआ।
कुर्रा या कुर्री–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पटरा। सुहागा। हेंगा। २. गोल टिकिया। ३. हड्डी। ४. चाबुक।
कुर्री–संज्ञा स्त्री० १. कोमल हड्डी। २. उपअस्थि।
कुर्सी–संज्ञा पुं० दे० 'कुरमी'।
कुलंग–संज्ञा पुं० १. मुर्ग़ा। २. कुक्कुट। ३. लाल सिर और मटमैले रंग के शरीरवाला एक पक्षी।
कुलञ्जन–संज्ञा पुं० १. पान की जड़। २. एक औषध।
कुल–संज्ञा पुं० १. वंश। घराना। गोत्र। स्वजातीय समूह। खानदान। २. जाति। वर्ण। ३. समूह। समुदाय। झुंड। ४. घर। मकान। ५. वाममार्ग।
वि० [अ०] समस्त। सब। सारा। पूरा।
यौ०–कुल जमा=१. सब मिलाकर। २. केवल। मात्र।
कुल-कंटक–संज्ञा पुं० कुपुत्र। बुरा लड़का।
कुल-कन्या–संज्ञा स्त्री० अच्छे कुल की लड़की।
कुलकना–क्रि० अ० गद्‌गद होना। खुशी से उछलना।
कुलकर्म–संज्ञा पुं० परंपरा का व्यवहार। कुलाचार। कुलक्रिया। कुलधर्म।
कुलकलंक–संज्ञा पुं० अपने कुल को कलंकित करनेवाला। अपने वंश की कीर्ति बिगाड़नेवाला।
कुलकानि–संज्ञा स्त्री० वंश की मर्यादा। कुल की लाज। खानदान की प्रतिष्ठा।
कुलकुला–संज्ञा पुं० कुल्ला। कुलकुची।
कुलकुलाना–क्रि० अ० कुलकुल ध्वनि उत्पन्न करना।
मुहा०–आँतें कुलकुलाना=क्षुधा या भूख लगना।
कुलकुली–संज्ञा स्त्री० १. खुजली। २. चुलबुली।
कुलकेतु–संज्ञा पुं० अपने वंश में ध्वजा के समान। अपने कुल की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला। खानदान की इज्जत बढ़ानेवाला।
कुलक्षण–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुलक्षणी] १. बुरा लक्षण। २. बदचलनी। बुरा आचरण।
वि० [स्त्री० कुलक्षणा] बुरे लक्षण या आचारवाला। दुराचारी।
कुलज्ञ–संज्ञा पुं० १. राय। भाट। २. वंश का आचार्य।
कुलघाती–वि० कुलनाश करनेवाला।
कुलचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मूलधन। पूँजी।
कुलच्छन–संज्ञा पुं० दे० "कुलक्षण"। अशुभ लक्षणवाला।
कुलच्छनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुलक्षणी"।
कुलज–वि० कुलीन। श्रेष्ठ वंश का। उत्तम वंश में उत्पन्न व्यक्ति।
कुलट–वि० पुं० [स्त्री० कुलटा] १. कई स्त्रियों से प्रेम करनेवाला। व्यभिचारी। बदचलन। २. औरस के अतिरिक्त अन्य प्रकार का पुत्र। जैसे, दत्तक। ३. अच्छी नस्ल का घोड़ा।
कुलटा–वि० स्त्री० दुराचारिणी। व्यभिचारिणी स्त्री। अनेक पुरुषों से प्रेम करनेवाली।
संज्ञा स्त्री० परपुरुषों से प्रेम करनेवाली। परकीया नायिका।

कुलतारण या कुलतारन–वि० [स्त्री० कुल-तारनी] १. सुपुत्र। २. खानदान को तारनेवाला।
कुलथी–संज्ञा स्त्री० १. एक मोटा अनाज। २. एक प्रकार की कलाई।
कुलदेव–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुलदेवी] कुलदेवता। कुल में परम्परा से पूजे जानेवाले देवता।
कुलदेवता–संज्ञा पुं० दे० "कुलदेव"।
कुलद्रोही–वि० १. वंश-परम्परा के विरुद्ध काम करनेवाला। २. खानदान का दुश्मन। ३. कुमार्गी।
कुलधर्म–संज्ञा पुं० परम्परा से चला आता हुआ कुल का कर्त्तव्य। कुल का व्यवहार। कुल का आचरण। कुल की परिपाटी।
कुलधन्य–वि० अपने कुल को धन्य करने वाला। कुल का नाम उज्ज्वल करनेवाला या प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला।
कुलना–क्रि० अ० पीड़ा या कष्ट होना। दर्द होना। टीस होना। कसकना।
कुलनाश–संज्ञा पुं० १. कुल का अन्त होना। २. जातिवहिष्कृत। ३. कुलभ्रष्ट।
कुलपति–संज्ञा पुं० १. घर का स्वामी। २. परिवार का प्रधान। ३. आधुनिक विश्वविद्यालयों के चान्सलर। ४. शिक्षा के साथ विद्यार्थियों का भरण-पोषण करनेवाला शिक्षक। ५. हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा देनेवाले ऋषि।
कुलपूजक–संज्ञा पुं० पुरोहित। कुलदेव।
कुलपूज्य–वि० कुल का पूज्य। जिसकी पूजा वंश-परंपरा से होती चली आई हो।
कुलफ*†–संज्ञा पुं० ताला।
कुलफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] चिंता। मानसिक कष्ट।
कुलफा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग। बड़ी जाति की अमलोनी।
कुलफी–संज्ञा स्त्री० १. पेंच। २. बर्फ में जमा हुआ दूध-मलाई या कोई शर्बत। ३. छोटा ताला।
कुलबुल–संज्ञा पुं० कुलबुलाहट। चुलबुलाहट। हिलने-डुलने की आहट, विशेषकर छोटे छोटे जीवों की।
कुलबुलाना–क्रि० अ० १. छोटे छोटे जीवों का एक साथ कलमलाना, इधर-उधर रेंगना। २. व्याकुल होना। ३. चंचल होना। ४. खुजलाना। ५. चुलबुलाना।
कुलबुलाहट–संज्ञा स्त्री० छोटे-छोटे जीवों का चलना-फिरना।
कुलबोड़–वि० कुलनाशक। घरघालू।
कुलबोरन†–वि० कुल की मर्यादा नष्ट करनेवाला। खानदान में धब्बा लगानेवाला।
कुलवंत–वि० श्रेष्ठ। कुलीन। अच्छे वंश का।
कुलवधू–संज्ञा स्त्री० कुलवंती स्त्री। अच्छे वंश की पतिव्रता स्त्री। मर्यादा से रहनेवाली स्त्री। पतोहू।
कुलवान्–वि० अच्छे वंश का। कुलीन।
'**कुलसंस्कार**–सं० पुं० अपने वंश के वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरण तक आवश्यक हों। कुलीनों के लक्षण और गुण।
कुलह–संज्ञा स्त्री० १. कुलाह। टोपी। सिर पर पहनने का एक कपड़ा। २. अँधियारी। ३. शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन।
कुलहा*†संज्ञा पुं० दे० "कुलह"।
कुलही–संज्ञा स्त्री० बच्चों के सिर पर पहनाने की टोपी। एक प्रकार की टोपी। कनटोप।
कुलांगना–संज्ञा स्त्री० कुलीन स्त्री। अच्छे वंश की स्त्री।
कुलांगार–संज्ञा पुं० जो वंश का नाश करे। सत्यानाश करनेवाला।
कुलाँच, कुलाँट*संज्ञा स्त्री० कूदना-फाँदना। छलाँग। उछाल। चौकड़ी।
कुलाचल–संज्ञा पुं० दे० "कुलपर्वत"।
कुलाचार–संज्ञा पुं० १. वंशधर्म। परिवार की रीति। २. तान्त्रिक रीति। खानदान का रस्मरिवाज।
कुलाचार्य्य–संज्ञा पुं० पुरोहित। कुलगुरु।
कुलाधि–सं० स्त्री० पाप।
कुलाबा–संज्ञा पुं० १. पायजा। २. मोरी। ३. लोहे का जमुरका जो किवाड़ को बाजू से जकड़े रहता है।

कुलाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुलाली] १. वनमुर्ग़ा। कुम्हार। मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुंभकार। २. उल्लू। ३. जंगली मुर्ग़ा।

कुलाह–संज्ञा पुं० भूरे रंग का घोड़ा। एक प्रकार की टोपी (मुसलमानी)। कुलह।

कुलाहल*–संज्ञा पुं० दे० १. "कोलाहल"। शोरगुल। २. कुतूहल।

कुलिंग–संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. एक प्रकार का चूहा। ३. छोटी चिड़िया-गौरैया। ४. गौरा। चिड़ा।

कुलिक–संज्ञा पुं० १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. उत्तम वंश में उत्पन्न होनेवाला पुरुष। ३. कुल का प्रधान व्यक्ति।

कुलिश–संज्ञा पुं० १. इन्द्र का वज्र। २. हीरा। ३. बिजली। ४. राम, कृष्णादि के चरणों का एक चिह्न। ५. कुठार।

कुलिशधर–संज्ञा पुं० इन्द्र। वज्र धारण करनेवाला।

क़ुली–संज्ञा पुं० [तु०] १. मज़दूर। २. बोझ ढोनेवाला।

यौ०–कुली कबाड़ी=१. छोटी जाति के लोग। २. निम्न स्तर के व्यक्ति।

कुलीन–वि० १. अच्छे कुल या वंश में उत्पन्न। अच्छे घराने का। २. शुद्ध। पवित्र। खानदानी।

कुलुफ‡–संज्ञा पुं० ताला।

कुलू–संज्ञा पुं० काँगड़े के पास का एक प्राचीन देश।

कुलूत–संज्ञा पुं० कुलू देश।

कुलेल–संज्ञा स्त्री० खेलकूद। खुशी में उछल-कूद। क्रीड़ा। कल्लोल। आमोद-प्रमोद।

कुलेलना*–क्रि० अ० आमोद-प्रमोद या क्रीड़ा करना। हँसी-खुशी में समय बिताना।

कुल्मा–संज्ञा पुं० १. नहर। छोटी नदी। २. कुलवती स्त्री।

कुल्माष–संज्ञा पुं० कुलथी। माष। उर्द। धान-विशेष। वह अन्न जिसमें दो भाग हों। दो दालवाले अन्न।

कुल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुल्ली] १. मुँह साफ करने के लिए मुँह में पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा। कुल्ली। २. घोड़े का रंग-विशेष जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है। ३. इस रंग का घोड़ा। ४. जुल्फ़। ५. काकुल।

कुल्ली–संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।

कुल्हड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा। चुक्कड़। करई। भोलुआ। भरुका।

कुल्हाड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुल्हाड़ी] कुठार। बड़ी कुल्हाड़ी। अस्त्र-विशेष। पेड़ या लकड़ी काटने का एक औजार।

कुल्हाड़ी–संज्ञा स्त्री० १. कुटारी। छोटा कुल्हाड़ा। टाँगी। २. बसूला।

कुल्हिया–संज्ञा स्त्री० चुक्कड़। छोटा पुरवा या कुल्हड़।

मुहा०–कुल्हिया में गुड़ फोड़ना=इस ढंग से कार्य करना जिसमें किसी को मालूम न हो।

कुवलय–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुवलयिनी] १. कोका। नीली कोई। २. नील कमल। नीलोफर। ३. सफेद कमल। ४. पृथ्वी-मंडल। ५. असुर-विशेष।

कुवलयापीड़–संज्ञा पुं० १. कंस का एक हाथी जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २. हस्तिरूपी एक दैत्य।

कुवलयाश्व–संज्ञा पुं० १. ऋतुध्वज राजा। २. धुंधुमार राजा। एक राजा का नाम जो महाराजा श्रावस्त का पौत्र और बृहदश्व का पुत्र था। ३. ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिए, सूर्य्य द्वारा पृथ्वी पर भेजा हुआ एक घोड़ा।

कुवाच्य या कुवाक्य–वि० १. जिसे न कहा जा सके। २. बुरा। गंदा।

संज्ञा पुं० १. दुर्वचन। गाली। २. कठोर वाक्य।

कुवादी–वि० १. दुष्ट। २. मुँहफट।

कुवार–संज्ञा पुं० [वि० कुवारी] असोज। कुआँर। आश्विन का महीना।

कुवारी—संज्ञा स्त्री० १. आश्विन में होनेवाला एक प्रकार का धान। २. कुमारी ।

कुविंद—संज्ञा पुं० कपड़ा बनानेवाला । जुलाहा।

कुविदु—संज्ञा पुं० १. अधम पुत्र। २. दुष्ट का पुत्र।

कुविक्रम—संज्ञा पुं० १. अत्याचार। २. उपद्रव। ३. शठता।

कुविक्रमी—वि० १. उपद्रवी। २. दुर्जन। बदमाश। शठ।

कुविचार—संज्ञा पुं० नीच विचार। बुरा विचार।

कुविचारी—वि० [स्त्री० कुविचारिणी] बुरे विचार रखनेवाला। बुरी भावनाओं-वाला।

कुविहंग—संज्ञा पुं० १. अधम पक्षी। २. बाज पक्षी।

कुवृत्ति—संज्ञा स्त्री० १. निकृष्ट व्यापार। नीच कर्म। २. गर्हित वासना।

कुवेर—संज्ञा पुं० १. धन के देवता। हिन्दुओं के एक देवता, जो इन्द्र और देवताओं के खजांची माने जाते हैं। २. यक्षराज। किन्नर देश के राजा ।

कुश—संज्ञा पुं० [स्त्री० , कुशा, कुशी] १. काँस की तरह की घास-विशेष, जिसका उपयोग यज्ञ में होता था। २. पानी। जल । ३. श्रीरामचन्द्रजी के एक पुत्र। ४. दे० "कुशद्वीप"। ५. हल की फाल। कुसी। ६. कुली । ७. काल।

कुशकंडिका—संज्ञा स्त्री० १. हवन करने-वाला, जो दाहिने हाथ में कुश लेकर वेदी पर रेखा खींचता है। २. होम के लिए अग्नि का संस्कार करने की विधि।

कुशकेतु—संज्ञा पुं० राजा जनक के भाई का नाम।

कुशद्वीप—संज्ञा पुं० सात द्वीपों में से घृत-समुद्र से घिरा हुआ एक द्वीप।

कुशध्वज—संज्ञा पुं० सीरध्वज। राजा जनक के छोटे भाई। इनकी कन्याएँ भरत और शत्रुघ्न को व्याही थीं।

कुशनाभ—संज्ञा पुं० १. महाराज कुश का पुत्र। २. ब्रह्मा के पराक्रमी पुत्र कुश के चार पुत्रों में से एक।

कुशमुद्रिका—संज्ञा स्त्री० १. कुश की पैंती। २. कुश की अँगूठी।

कुशल—वि० १. निपुण। चतुर । दक्ष। प्रवीण । २. उत्तम । श्रेष्ठ। अच्छा। ३. भलाई । कल्याण। ४. पुण्यशील। ५. मंगल । ६. पुण्य।

कुशल-क्षेम—संज्ञा पुं० कुशल-मंगल । राज़ी-ख़ुशी।

कुशलता—संज्ञा स्त्री० १. चतुराई। चालाकी। २. निपुणता। योग्यता। प्रवीणता। दक्षता।

कुशलाई, कुशलात*—संज्ञा स्त्री० मंगल। कल्याण। ख़ैरियत ।

कुशस्थली—संज्ञा स्त्री० द्वारका। श्रीकृष्ण की पुरी।

कुशा—संज्ञा स्त्री० १. कुश । २. एक प्रकार की रस्सी । ३. मीठा नीबू।
वि०—नुकीला, तेज।

कुशाग्र—वि० तीव्र । तेज़। कुश की नोक की तरह नुकीला। जैसे—कुशाग्रबुद्धि। तेज़ बुद्धिवाला।

कुशादा—वि० [फा०] १. विस्तृत। २. लंबी-चौड़ी खुली हुई जमीन। ३. खुला हुआ।

कुशावर्त—संज्ञा पुं० १. हरिद्वार के एक तीर्थ का नाम। २. एक ऋषि का नाम।

कुशाश्व—संज्ञा पुं० इक्ष्वाकुवंशी एक राजा।

कुशासन—संज्ञा पुं० बुरा शासन-प्रबन्ध। खराब हुकूमत। अन्याय तथा अत्याचार-पूर्ण शासन। कुश का आसन। बैठने के लिए कुश की चटाई। बुरा शासन।

कुशिक—संज्ञा पुं० १. एक ऋषि। २. एक प्राचीन आर्यवंश। ३. एक राजा जो विश्वामित्र के पितामह और गाधि के पिता थे। ४. हल का फाल। ५. तेल की तलछट। ६. साखू।

कुशिक्षा—संज्ञा स्त्री० खराब पढ़ाई। हानि-कारी शिक्षा ।

कुशी—संज्ञा पुं० १. कुशवाला। २. वाल्मीकि ऋषि। ३. धात।

कुशीद—संज्ञा पुं० दे० "कुसीद"।

कुशीनार—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध का साल वृक्ष के नीचे निर्वाण हुआ था।

कुशील—वि० पापी। दुराचारी। दुष्ट स्वभाव। सुशील का उल्टा।

कुशीलव—संज्ञा पुं० १. कवि। चारण। २. नट। नाटक खेलनेवाला। ३. कथक। श्रीरामचन्द्र के दोनों पुत्र। ४. गवैया। ५. वाल्मीकि ऋषि।

कुशूलधान्यक—संज्ञा पुं० ऐसा गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक के लिए खाने का अनाज संचित हो।

कुशूला—संज्ञा स्त्री० १. देहरी। २. कुठिली। अनाज रखने के लिए मिट्टी का बड़ा बर्तन।

कुशेशय—संज्ञा पुं० १. कमल। २. सारस पक्षी। कनकचन्दा।

कुशेशयकर—संज्ञा पुं० सूर्य।

कुशोदक—संज्ञा पुं० कुश के साथ जल। तर्पण।

कुश्ता—संज्ञा पुं० एक रासायनिक भस्म।

कुश्ती—संज्ञा स्त्री० १. मल्ल-युद्ध। २. दो व्यक्तियों का आपस में शारीरिक बल-प्रयोग।

मुहा०—कुश्ती मारना=कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना। कुश्ती खाना=कुश्ती में हार जाना।

कुश्तीबाज—वि० पहलवान। कुश्ती लड़नेवाला।

कुषीद—संज्ञा पुं० १. वृत्ति। जीविका। २. सूद पर ऋण देना।

वि०—१. जड़। इच्छाहीन। २. कठोर।

कुष्ठ—संज्ञा पुं० १. कोढ़। २. कूट नामक एक औषध। ३. एक प्रकार की लता। ४. कुड़ा नामक वृक्ष।

कुष्ठकृन्तन—संज्ञा पुं० पँवर।

कुष्ठनाशिनी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बेल जिससे कुष्ठ रोग छूटता है। सोमराजी। सोमराज नामक लता।

कुष्ठसूक्ष्म—संज्ञा पुं० किरवाली। एक प्रकार की औषध।

कुष्ठी—संज्ञा पुं० कोढ़ी। जिसे कोढ़ का रोग हुआ हो।

कुष्मांड—संज्ञा पुं० कुम्हड़ा।

कुसंग—संज्ञा पुं० दे० "कुसंगति"। बुरे व्यक्तियों का साथ।

कुसंगति—संज्ञा स्त्री० बुरे लोगों का साथ।

कुसंस्कार—संज्ञा पुं० बुरी वासना। बुरे संस्कार। मन में बुरे विचार पैदा होना।

कुसगुन—संज्ञा पुं० अपशकुन। असगुन। अशुभ लक्षण।

कुसमउ—पुं० १. बुरे दिनों में। २. आपत्ति का सामान।

कुसमय—संज्ञा पुं० १. बुरे दिन। २. निश्चित समय से आगे या पीछे। ३. अनुपयुक्त अवसर। समय जो किसी काम के लिए ठीक न हो। ४. दुःख के दिन। संकट-काल।

कुसल*†—वि० दे० "कुशल"।

कुसलई*—संज्ञा स्त्री० कुशलता। कौशल। दक्षता। निपुणता। चतुराई।

कुसलाई*—संज्ञा स्त्री० १. निपुणता। कुशलता। २. कुशल-क्षेम का समाचार। खैरियत।

कुसलात*—संज्ञा स्त्री दे० "कुशलात"।

कुसली*—वि० दे० "कुशली"

† संज्ञा पुं० १. आम की गुठली। २. पिराक। गोझा।

कुसवारी—संज्ञा पुं० १. रेशम का कोया। २. रेशम का कीड़ा।

कुसाइत—संज्ञा स्त्री० १. बुरा समय। २. खराब साइत। ३. बुरा मुहूर्त। ४. कुसमय। ५. अनुपयुक्त समय। ६. बेमौका।

कुसी—संज्ञा पुं० हल का फाल।

कुसीद—संज्ञा पुं० [वि० कुसीदिक] १. ब्याज। सूद। २. वृद्धि। ३. ब्याज पर दिया हुआ धन।

कुसीदकि—वि० सूद पर रुपए देनेवाला। सेठ-साहूकार।

कुसीदपथ—संज्ञा पुं० ब्याज पर रुपए लगाना।

कुसुंब—संज्ञा पुं० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी से गाड़ियाँ आदि बनती हैं।

कुसुंभ—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का फूल। बर्रे। २. कुसुम। ३. केसर।

कुसुंभा—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रंग।

२. अफ़ीम और भाँग को मिलाकर बनाया हुआ एक प्रकार का नशा।
संज्ञा स्त्री० आषाढ़ शुक्ल छठ।
कुसुंभी–वि० लाल। कुसुम के रंग का
कुसुम–संज्ञा पुं० [वि० कुसुमित] १. फूल। पुष्प। २. छोटे छोटे वाक्यों का गद्य ३. आँख की एक बीमारी। ४. रजोदर्शन। मासिक धर्म। ५. रज। ६. छंद में ठगण का छठा भेद। ७. लाल फूल जिससे कपड़ा रँगा जाता है।
संज्ञा पुं० दे० "कुसुंब"।
संज्ञा पुं० पीले फूलोंवाला पौधा-विशेष। बर्रे।
कुसुमपुर–संज्ञा पुं० पाटलिपुत्र। पटना नगर का पुराना नाम।
कुसुमबाण–संज्ञा पुं० कामदेव। मदन।
कुसुमविचित्रा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का
कुसुमस्तवक–संज्ञा पुं० १. फूलों का गुच्छा। २. एक प्रकार का छंद।
कुसुमशर–संज्ञा पुं० मदन। कामदेव।
कुसुमांजन–संज्ञा पुं० जस्ते का भस्म।
कुसुमांजलि–संज्ञा स्त्री० १. पुष्पांजलि। हाथ की अंजलि में फूल लेकर देवता पर चढ़ाना। २. न्याय-शास्त्र का एक ग्रन्थ।
कुसुमाकर–संज्ञा पुं० १. वसंत। २. एक प्रकार का छप्पय।
कुसुमायुध–संज्ञा पुं० मदन। कामदेव। (फूलों का अस्त्र)
कुसुमावलि–संज्ञा स्त्री० फूलों का समूह। फूलों का गुच्छा।
कुसुमासव–संज्ञा पुं० फूलों का रस। मकरन्द। शहद। मधु।
कुसुमित–वि० प्रफुल्लित। खिला हुआ। जिसमें फूल लगे हों।
कुसूत–संज्ञा पुं० १. खराब सूत। २. बुरा प्रबन्ध। ३. कुब्योंत।
कुसूर–संज्ञा पुं० [अ०] अपराध। चूक। गलती।
कुसेसय–संज्ञा पुं० दे० "कुशेशय"।
कुस्वप्न–संज्ञा पुं० १. दुःस्वप्न। बुरा सपना। २. अनिष्ट दर्शन।
कुह–संज्ञा पुं० कुबेर।
कुहक–संज्ञा पुं० १. धोखा। माया। २. जाल। ३. चालबाज़। ४. धूर्त। ५. इंद्रजाल जाननेवाला। मायावी। ६. मेंढक। ७. मक्कार। कुटिल। ८. मुर्ग़े की बाँग।
कुहकना–क्रि० अ० पीकना। कूकना। पक्षियों का सुरीला स्वर।
कुहकिनी–वि० कुहकनेवाली।
संज्ञा पुं० कोयल।
कुहना*–क्रि० स० बुरी तरह से मारना। खूब पीटना।
कुहनी–संज्ञा स्त्री० बाँह के जोड़ की हड्डी।
कुहप–संज्ञा पुं० रजनीचर। राक्षस। असुर।
कुहर–संज्ञा पुं० १. बिल। गुहा। छेद। सूराख। २. गले का छेद। ३. कान के बीच का भाग। ४. कंठ का शब्द।
कुहरा–संज्ञा पुं० वायु में जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो जाड़े के दिनों में सबेरे के समय धुएँ के समान छाया रहता है। कोहरा। कुहासा। तुहिन।
कुहराम–संज्ञा पुं० [अ०] रोना-पीटना। हलचल। हाहाकार। विलाप।
कुहवर या कोहबर-(भोजपुरी) संज्ञा पुं० १. विवाह के पश्चात् दूलह-दुलहिन के बैठने के लिए सजाया हुआ घर। २. स्थान-विशेष।
कुहाना*†–क्रि० अ० रूठना। नाराज़ होना। क्रुद्ध होना।
कुहासा†–संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।
कुही–संज्ञा स्त्री० बाज पक्षी। एक शिकारी चिड़िया। कुहर।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति। टाँगन।
कुहु–संज्ञा स्त्री० १. अमावस्या। २. जिस अमावस्या को चन्द्रमा नहीं दिखलाई देता। ३. कोकिल की बोली।
कुहुक–संज्ञा पुं० १. पीक। पक्षियों की

सुरीली आवाज़। २. कोयल की मीठी बोली।

कुहुकना–क्रि० अ० पक्षियों की मधुर बोली।

कुहुकबान–संज्ञा पुं० बाण जिसे चलाते समय एक प्रकार का शब्द निकलता है।

कुहू–संज्ञा स्त्री० १. मोर या कोयल की बोली। २. अमावस्या, जिसमें चंद्रमा बिलकुल दिखलाई न दे।

कूँच–संज्ञा स्त्री० १. मोटी नस जो एँड़ी के ऊपर या टखने के नीचे होती है। २. स्त्री। ३. बीज विशेष। ४. जुलाहे का ब्रुश।

कूँचना*–क्रि० स० दे० "कुचलना"।

कूँचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कूँची] १. झाड़ू। २. बुहारी। ३. कलई आदि पोतने की कूँची।

कूँची–संज्ञा स्त्री० १. बुहारी। बढ़नी। छोटी झाड़ू। २. कूटी हुई मूंज का लच्छा जिससे चीजें साफ करते या उन पर रंग फेरते हैं। ३. तूलिका। रंग भरने की क़लम। ४. तृण की तूलिका।

कूँजड़ी–संज्ञा स्त्री० कुँजड़ा की स्त्री। तरकारी बेचनेवाली स्त्री।

कूँड़–संज्ञा पु० १. लोहे की टोपी। २. कुएँ से पानी खींचने के लिए लोहे या मिट्टी का गहरा बर्त्तन। ३. खेत में हल जोतने से बननेवाली नाली। ४. कुंड।

कूँड़ा†–संज्ञा पुं० नाद के आकार का मिट्टी का बड़ा गहरा बर्त्तन जिसमें अनाज आदि रखा जाता है।

कूँड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पथरी। पत्थर का बर्तन। २. छोटी नाँद। ३. कोल्हू का गड्ढा।

कूँथना*†–क्रि० अ० १. काँखना। दुःख या परिश्रम में मुँह से अस्पष्ट शब्द निकलना। कहरना। २. कबूतरों का गुटुरगूँ करना। क्रि० स० पीटना। मारना।

कूई–संज्ञा स्त्री० १. कुमुदिनी। २. जल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके फूल चाँदनी रात में खिलते हैं।

कूक–संज्ञा स्त्री० १. पतली सुरीली आवाज। मीठी आवाज। २. रेल की सीटी की आवाज। ३. मोर या कोयल की बोली।

कूकना–क्रि० अ० मोर या कोयल का बोलना। मीठी बोली बोलना। किलकारी। घड़ी, बाजे आदि कमानीदार यंत्रों में कमानी कसने के लिए चाभी भरना। मारना। हर्षध्वनि करना।

क्रि० स० चिल्लाना। बोलना। आह मारना।

कूकर–†संज्ञा पुं० श्वान। कुत्ता।

कूकर-कौर–संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। कुत्ते के आगे दिया जानेवाला जूठा भोजन। २. निकृष्ट वस्तु। ३. तिरस्कार के साथ दी जानेवाली वस्तु।

कूकरनिंदिया–संज्ञा स्त्री० कुत्ते की नींद के समान नींद।

कूकरलेंड़–संज्ञा पुं० १. कुत्तों का मैथुन। २. व्यर्थ की भीड़।

कूकस–संज्ञा पुं० अनाज की भूसी।

कूका–संज्ञा पु० सिक्खों का पंथ-विशेष।

कूकू–संज्ञा स्त्री० कबूतर की बोली।

कूच–संज्ञा पुं० प्रस्थान। रवानगी। यात्रा। प्रयाण।

मुहा०–कूच कर जाना=मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना=होशहवास गुम हो जाना। कूच बोलना=प्रस्थान करना।

कूचा–संज्ञा पुं० १. गली। छोटा मार्ग। २. दे० "कूँचा"।

कूचिका–संज्ञा स्त्री० १. तूलिका। २. कूची।

कूचिया–संज्ञा स्त्री० १. इमली। २. कान-पट्टी।

कूची–संज्ञा स्त्री० दे० 'कूंची'।

कूज–संज्ञा स्त्री० ध्वनि। पक्षी की आवाज।

कूजन–संज्ञा पुं० [वि० कूजित] पक्षियों की सुरीली बोली।

कूजना–क्रि० अ० मीठी और सुरीली बोली बोलना।

कूजा–संज्ञा पुं० १. कुल्हड़। मिट्टी का पुरवा। २. मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिसरी।

कूजित–वि० १. पक्षी की आवाज। २. जो बोला या कहा गया हो। ३. गूँजा हुआ।

कूट–संज्ञा पुं० १. पर्वत की ऊँची चोटी या शिखर। जैसे-हेमकूट। २. अनाज आदि की ढेरी। ३. सींग। ४. धोखा। छल। ५. सड़ा हुआ। ६. गूढ़ भेद। गुप्त रहस्य। ७. झूठ। मिथ्या। जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो। जैसे, सूर के कूट पद। ८. श्लेषयुक्त। ९. समूह। १०. काग़ज़। ११. हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो।

वि० १. झूठा। मिथ्यावादी। २. धोखा देनेवाला। ३. कृत्रिम। बनावटी। नक़ली। ४. श्रेष्ठ। प्रधान। मुख्य।

संज्ञा स्त्री० १. कुट नामक एक औषध। २. कूटना या पीटना।

क्रि० स० कुचलकर। कूटकर।

कूटकर्म–संज्ञा पुं० छल। कपट। धोखा।

कूटकर्मा–वि० कपटी। धोखेबाज।

कूटता–संज्ञा स्त्री० १. कठिनता। कठिनाई। २. कुटिलता। ३. कपट। छल।

कूटना–क्रि० स० १. कुचलना। काँड़ना। किसी चीज़ को तोड़ने के लिए उस पर बार-बार प्रहार करना। जैसे, धान कूटना। २. मारना। पीटना। ३. दाँत निकालना। सिल या चक्की आदि में टाँकी से छोटे छोटे गड्ढे करना।

मुहा०–कूट कूटकर भरना=१. ठसाठस भरना। खूब कसकर भरना।

कूटनीति–संज्ञा स्त्री० १. राजनीति के दाँवपेंच। २. दाँव-पेंच की नीति या चाल। छिपी हुई चाल।

कूटपाश–संज्ञा पुं० चिड़िया फँसाने का फंदा।

कूटयुद्ध–संज्ञा पुं० धोखेबाजी की लड़ाई। चाल चलकर लड़नेवाली लड़ाई। शत्रु को धोखा देकर लड़ी जानेवाली लड़ाई।

कूटयोजना–संज्ञा स्त्री० षड्यंत्र। भीतरी चालबाजी।

कूटलेख–संज्ञा पुं० १. झूठा या बनावटी लेख। २. जाली दस्तावेज।

कूटलेखक–संज्ञा पुं० जाली दस्तावेज बनानेवाला।

कूटसाक्षी–संज्ञा पुं० झूठा गवाह। असत्य प्रमाण देनेवाला।

कूटस्थ–वि० १. जिसका नाश न हो। अविनाशी। २. अचल। अटल। ३. गुप्त। छिपा हुआ। ४. आत्मा। परमात्मा (सांख्यमतानुसार)।

कूटार्थ–संज्ञा पुं० गूढ़ अर्थ।

कूटी–संज्ञा स्त्री० व्यंगवचन।

क्रि० स० कुचली। कुचल डाली।

कूटू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पौधा जिसके फल का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है।

कूड़ा–संज्ञा पुं० १. झाड़न। बुहारन। कर-कट। जमीन पर पड़ी हुई गर्द। २. बेकार चीज। कतवार।

कूड़ाखाना–संज्ञा पुं० कूड़ा फेंकने की जगह। कतवारखाना। जहाँ कूड़ा इकट्ठा होता है।

कूड़ि–संज्ञा स्त्री० १. युद्ध में प्रयोग की जाने वाली लोहे की टोपी। २. अथरी। ३. कूँड़ी।

कूढ़–संज्ञा पुं० बोने का एक ढंग, जिसमें हल की गड़ारी में बीज डाला जाता है। छींटा का उलटा।

वि० मूर्ख। अज्ञानी। बेवकूफ।

कूढ़मग्ज़–वि० मंदबुद्धि। कुदजेहन। बुद्धि-हीन। मूर्ख।

कूत–संज्ञा स्त्री० १. अटकल। परख। अन्दाज़। वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान। २. दे० "कनकूत"।

कूतना–क्रि० स० १. अनुमान करना। अंदाज़ लगाना। २. परखना दे० "कनकूत"।

कूद–संज्ञा स्त्री० कूदने की क्रिया।

यौ०–कूदफाँद=उछलकूद। कूदने या उछलने की क्रिया।

कूदना–क्रि० अ० १. उछलना। दोनों पैरों को पृथ्वी पर से बलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना। फाँदना। २. जान-बूझकर ऊपर से नीचे की ओर गिरना। ३. हस्तक्षेप करना। बीच में दखल देना। ४. क्रम-भंग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। ५. अत्यंत प्रसन्न होना। उत्साहित होना। दे०

"उछलना" ६. बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी मारना।
मुहा०–किसी के बल पर कूदना=किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़बढ़कर बोलना। क्रि० स० लाँघ जाना। उल्लंघन कर जाना।
कूनी–संज्ञा स्त्री० हत्था। करछी। करछुल।
कूप–संज्ञा पुं० १. कुआँ। इनारा। २. गहरा गड्ढा। ३. छेद। सूराख। ४. नदी के मध्यस्थ पर्वत या वृक्ष।
कूपमंडूक–संज्ञा पुं० १. कुएँ का मेढ़क। २. अल्पज्ञ। अपना स्थान छोड़कर बाहर न जानेवाला व्यक्ति। ३. जिसका ज्ञान संकुचित हो। ४. संकीर्ण विचार रखनेवाला व्यक्ति।
कूपार–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।
कूबड़–संज्ञा पुं० पीठ या किसी अंग पर हड्डी या मांस का उठ आना। पीठ का टेढ़ापन। पीठ का झुकना।
कूबरी–संज्ञा स्त्री० दे० १. "कुबरी"। कंस की दासी। २. काठ या बाँस की झुकी हुई लकड़ी।
कूर–वि० १. कठोर। निर्दय। २. भयावना। ३. मनहूस। ४. दुष्ट। ५. अकर्मण्य। नीच। निकम्मा। ६. गँवार। ७. कपटी। ८. टेढ़ा।
कूरता–संज्ञा स्त्री० १. निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। २. मूर्खता। जड़ता। ३. कायरता। ४ बुराई। खोटापन। ५. क्रूरता।
कूरन–संज्ञा पु० कूर्म। कच्छप। कछुआ।
कूरपन–संज्ञा पुं० दे० "कूरता"।
कूरम*–संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।
कूरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कूरी] १. अंश। भाग। हिस्सा। २. ढेर। राशि। समूह।
कूर्च–संज्ञा पुं० १. भौंहों के बीच का स्थान। २. मोर का पंख। ३. अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग। ४. पाखंड। ५. कूँची ६. मस्तक।
कूर्चिका–संज्ञा स्त्री० १. कूँची। २. कुंजी। ३. कली। ४. सुई।
कूर्म–संज्ञा पुं० १. कछुआ। कच्छप। २. प्रजापति का अवतार-विशेष। ३. पृथिवी। ४. एक प्रकार की हवा। ५. ऋषि-विशेष। ६. नाभिचक्र के पास की एक नाड़ी। ७. विष्णु का दूसरा अवतार।
कूर्मचक्र–संज्ञा पुं० १. कृषि संबंधी एक प्रकार का चक्र। २. पूजा की एक सामग्री।
कूर्मपुराण–संज्ञा पुं० १८ पुराणों में से एक पुराण।
कूर्मपृष्ठ–संज्ञा पुं० कछुवे की पीठ।
कूर्मराज–संज्ञा पुं० भगवान् का एक अवतार (कच्छप अवतार)। कच्छपराज।
कूल–संज्ञा पुं० १. नदी या तालाब का किनारा। तीर। २. पास। समीप। ३. नहर। ४. सेना के पीछे का भाग। ५. तालाब।
कूलक–संज्ञा पुं० बनावटी पहाड़।
कूलद्रुम–संज्ञा पु० नदी के किनारे के पेड़।
कूलिनी–संज्ञा स्त्री० नदी।
कूल्हा–संज्ञा पुं० पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।
क़ूवत–संज्ञा स्त्री० बल। शक्ति। ताक़त। सामर्थ्य।
कूवर–संज्ञा पु० १. युगंधर। रथ का वह भाग जहाँ जुआ बाँधा जाता है। हरसा। २. रथ में जहाँ रथ हाँकनेवाला बैठता है, उस स्थान को कूवर कहते हैं। ३. कुबड़ा।
कूष्मांड–संज्ञा पुं० १. पेठा। २. कुम्हड़ा। ३. वैदिक काल के ऋषि-विशेष। ४. गणदेवता-विशेष। ५. शिव के पिशाचगण। ६. बाणासुर के मुख्य मंत्री।
कूष्मांडा–संज्ञा स्त्री० एक देवी। भगवती।
कूह*–संज्ञा स्त्री० १. हाथी या अन्य बड़े बड़े पशुओं का चिग्घाड़। हाथी का चिक्कार। २. चिल्लाहट। चीख।
कृकर या कृकल–संज्ञा पुं० १. छींक लानेवाली मस्तक की हवा। २. शिव। ३. चबैना। ४. एक पक्षी। ५. कनेर का पेड़।
कृकलास–संज्ञा पुं० सरट। गिरगिट।
कृकवाक–संज्ञा पुं० मयूर। मोर।
कृकवाकध्वज–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय। षड़ानन।

कृकाट, कृकाटक–संज्ञा पुं० १. गले को जोड़नेवाला रीढ़ का एक भाग। २. गले का जोड़।

कृच्छ्र–संज्ञा पुं० १. पीड़ा। कष्ट। दुःख २. तपस्या। ३. दुःख दूर करने और सन्तान आदि के लिए एक व्रत। ४. एक प्रकार का रोग (मूत्रकृच्छ्र रोग) वि० कष्टसाध्य। कठिन।

कृच्छ्रगत–वि० १. पीड़ित। दुःखी। रोगी। २. पापी।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र–संज्ञा पुं० प्रायश्चित्त करने के लिए एक व्रत।

कृत–वि० १. किया हुआ। २. रचित। बनाया हुआ। ३. एक प्रकार का पाँसा। ४. कथित।
संज्ञा पुं० १. सतयुग। २. कुछ निश्चित समय तक सेवा करने की प्रतिज्ञा करनेवाला नौकर। ३. चार की संख्या।

कृतक–वि० १. काल्पनिक। २. कृत्रिम। नकली। मनगढ़ंत।

कृतकर्मा–वि० प्रवीण। निपुण। दक्ष। कार्य-कुशल। चतुर। शिक्षित।

कृतकार्य–वि० १. सफल-मनोरथ। सफल। जिसका कार्य हो चुका हो। २. चरितार्थ। संपादित कार्य। ३. जिसका मतलब हो चुका हो।

कृतकृत्य–वि० कृतकार्य। कृतार्थ। सफल-मनोरथ। जिसका काम पूरा हो चुका हो। पूर्णकाम।

कृतघ्न–वि० [संज्ञा कृतघ्नता] अकृतज्ञ। नमकहराम। उपकार न माननेवाला। अकृतज्ञ।

कृतघ्नता–संज्ञा स्त्री० अकृतज्ञता। उपकार को न मानने का भाव। अकृतज्ञता। नमकहरामी। एहसान न मानना।

कृतघ्नताई–संज्ञा स्त्री० भलाई करनेवाले के प्रति बुराई। अकृतज्ञता। नमकहरामी।

कृतघ्नी†*–वि० दे० "कृतघ्न"।

कृतज्ञ–वि० १. उपकार या भलाई को माननेवाला। एहसान माननेवाला। २. आभारी। नमकहलाल।

कृतज्ञता–संज्ञा स्त्री० एहसान मानना। १. किए गए उपकार को मानना। २. नमक-हलाली। ३. आभार।

कृतयुग–संज्ञा पुं० १. सतयुग। २. उन्नति का समय।

कृतवर्मा–संज्ञा पुं० यदुवंशी राजा कनक का पुत्र।

कृतविद्य–वि० १. पंडित। किसी विद्या को जाननेवाला। जानकार। २. शास्त्रज्ञ। शास्त्रदक्ष।

कृतवीर्य–संज्ञा पुं० एक यदुवंशी राजा।

कृतांजलि–वि० जिसने हाथ जोड़ लिये हों।

कृतांत–संज्ञा पुं० १. अंत करनेवाला। २. पूर्व जन्म के कर्म्मों का फल। शुभाशुभ। पाप। ३. यमराज। धर्मराज। ४. काल। मृत्यु। ५. देवता। ६. पाप। ७. दो की संख्या। ८. सिद्धान्त। ९. शनिवार। १०. भरणी नक्षत्र।

कृताकृत–संज्ञा पुं० १. अधूरा कार्य। २. कार्य तथा कारण। ३. अपक्व हव्य किया हुआ तथा न किया हुआ। ४. सोना चाँदी।

कृतात्मा–संज्ञा पुं० १. महात्मा। ज्ञानी। २. शुद्ध आचरण करनेवाला। पुण्यात्मा।

कृतात्यय–संज्ञा पुं० १. सांख्य दर्शन में भोग द्वारा कर्मों का नाश। २. करने या न करने योग्य कार्य।

कृतार्थ–वि० १. कृतकृत्य। जिसका काम पूरा हो चुका हो। २. संतुष्ट। ३. निहाल।

कृति–संज्ञा स्त्री० १. कार्य बनाना। रचना करना। २. करतूत। करनी। आचरण। ३. जादू। इंद्रजाल। ४. आघात। हत्या। ५. वर्गसंख्या। दो समान अंकों का घात। (गणित)। ६. बीस की संख्या। ७. उपकार। ८. करण। ९. छंदविशेष। १०. कटारी। ११. इंद्रजाल करनेवाली डाइन।

कृती–वि० १. निपुण। चतुर। २. योग्य। कुशल। पुण्यात्मा। ३. विशेषज्ञ। ४. दक्ष। विद्वान्। ५. साधु। सत्पुरुष।

कृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. हिरन का चमड़ा।

२. भोजपत्र। ३. खाल। चमड़ा। ४. चमड़े की रस्सी। ५. कृत्तिका नक्षत्र।

कृत्तिका–संज्ञा स्त्री० १. एक नक्षत्र-विशेष। २. छकड़ा गाड़ी।

कृत्तिवास–संज्ञा पुं० शिवजी की एक पदवी। महादेव। चर्मधारी।

कृत्य–संज्ञा पुं० १. उचित कर्म। २. कर्त्तव्य। वेद-विहित कार्य्य। जैसे—यज्ञ, संस्कार। ३. भूत, प्रेत, यक्षादि जिनका पूजन अभिचार के लिए होता है। ४. कोई भी काम।

कृत्यका–संज्ञा स्त्री० डाकिनी। हत्या आदि भयानक काम करनेवाली जादूगरनी।

कृत्या–संज्ञा स्त्री० १. एक देवी विशेष जिस पर किसी का नाश करने या जादू आदि सीखने के लिए बलिदान चढ़ाया जाता है। २. शत्रु का नाश कराने के लिए मंत्रों से उत्पन्न की गई एक राक्षसी। दुष्टा या कर्कशा स्त्री। अभिचार। ३. अभिचारिणी।

कृत्रिम–वि० १. बनावटी। जाली। जो असली न हो। नकली। २. हिन्दू शास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक। अनाथ बालक जिसे किसी ने पाल-पोसकर अपना पुत्र बनाया हो।

संज्ञा पुं० कचिया नोन। रसौन।

कृदंत–संज्ञा पुं० कृत प्रत्यय से बने हुए शब्द।

कृप–संज्ञा पुं० कृपाचार्य, वैदिक काल के एक राजर्षि।

कृपण–वि० [संज्ञा स्त्री० कृपणता] १. सूम। कंजूस। २. नीच। मक्खीचूस।

कृपणता–संज्ञा स्त्री० कंजूसी।

कृपनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "कृपणता"।

कृपया–क्रि० वि० कृपापूर्वक। अनुग्रहपूर्वक। दयापूर्वक। मेहरबानी करके।

कृपा–संज्ञा स्त्री० [वि० कृपालु] १. अनुग्रह। दया। निःस्वार्थ भाव से दूसरे की भलाई करना। २. क्षमा। माफ़ी।

कृपाचार्य–संज्ञा पुं० द्रोणाचार्य के साले।

कृपाण–संज्ञा पुं० १. तलवार। २. छोटी तलवार जिसे सिक्ख लोग रखते हैं। ३. कटार। ४. छन्द-विशेष।

कृपाणिका–संज्ञा स्त्री० कटारी। छोटी तलवार।

कृपापात्र–संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जिस पर कृपा की जावे। कृपा का अधिकारी। २. कृपा करने योग्य।

कृपायतन–संज्ञा पुं० बहुत दयालु। अत्यंत कृपालु।

कृपाल*†–वि० दे० "कृपालु"।

कृपालु–वि० दयालु। कृपा करनेवाला।

कृपिण*†–वि० दे० "कृपण"। कंजूस।

कृमि–संज्ञा पुं० [वि० कृमिल] १. छोटा कीड़ा। २. लाह।

कृमिघ्न–संज्ञा पुं० कीड़ों को नाश करने की एक दवा। बायबिडंग।

कृमिज–वि० जो कीड़ों से उत्पन्न हो। संज्ञा पुं० [स्त्री० कृमिजा] १. रेशम। २. किरमिजी। ३. अगर।

कृमिजंघा–संज्ञा पुं० काला अगरु।

कृमिरोग–संज्ञा पुं० पेट की एक तरह की बीमारी।

कृमिल–वि० कीड़ों से भरा। कीटयुक्त।

कृमिला–संज्ञा स्त्री० बहुत सन्तान पैदा करनेवाली स्त्री।

कृश–वि० १. क्षीण। दुबला-पतला। २. अल्प। ३. दुर्बल। अस्वस्थ। ४. सूक्ष्म।

कृशता–संज्ञा स्त्री० १. दुर्बलता। दुबलापन। २. कमी। अस्वस्थता। क्षीणता।

कृशर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कृशरा] १. खिचड़ी। २. तिल या मटर और चावल की खिचड़ी। ३. केसारी। मटर। दुबिया।

कृशांगी–वि० दुबली-पतली स्त्री। तन्वंगी।

कृशाक्षि–वि० मन्ददृष्टिवाला।

कृशानु–संज्ञा पुं० आग। अग्नि। चीत। औषध।

कृशाश्व–संज्ञा पुं० १. एक मुनि। २. एक प्राचीन राजा।

कृशित–वि० दुर्बल। दुबला-पतला। कृश। अस्वस्थ।

कृशोदरी–वि० जिसकी पतली कमर हो (स्त्री)।

कृषक–संज्ञा पुं० १. किसान। २. काश्तकार। ३. हल का फाल।

कृषाण–संज्ञा पुं० किसान। खेतिहर।

कृषि–संज्ञा स्त्री० [वि० कृष्य] १. खेती का काम। काश्त। किसानी। २. वैश्यवृत्ति।

कृषिकर्म–संज्ञा पुं० १. खेती का काम। २. हल चलाना।

कृषिजीवी–वि० खेती करके जीविका पैदा करनेवाला। कृषक। किसान।

कृषीवल–संज्ञा पुं० किसान। कृषिजीवी।

कृष्ण–वि० १. काला। श्याम। २. नीला या ग्रासमानी।
संज्ञा पुं० [स्त्री० कृष्णा] १. वसुदेव और देवकी के पुत्र। विष्णु के ग्राठवें अवतार। २. एक राक्षस जिसे इंद्र ने मारा था। ३. मंत्रद्रष्टा ऋषि-विशेष। ४. एक उपनिषद्। ५. छप्पय छंद का भेद-विशेष। ६. वेदव्यास। ७. चार अक्षरों का एक वृत्त। ८. कोयल। ९. अर्जुन। १०. कदम का वृक्ष। ११. कौग्रा। १२ कलियुग। १३. ग्रँधेरा पक्ष। १४. चंद्रमा का धब्बा।

कृष्णकर्मा–संज्ञा पुं० १. नीच काम करनेवाला। २. पापाचारयुक्त। ३. ग्रपराधी। पापी।

कृष्णगंधा–संज्ञा स्त्री० सहिजन का वृक्ष।

कृष्णचंद्र–संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण"।

कृष्णचतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० कृष्णपक्ष की चतुर्दशी। भूत चतुर्दशी।

कृष्णजीरा–संज्ञा पुं० काला जीरा। कलौंजी।

कृष्णता–संज्ञा स्त्री० १. कृष्णवर्ण। काला-पन। श्याम रंग। २. घुंघची।

कृष्णतुलसी–संज्ञा स्त्री० काली तुलसी।

कृष्णद्वैपायन–संज्ञा पुं० पराशर के पुत्र वेदव्यास।

कृष्णपक्ष–संज्ञा पुं० महीने के वह १५ दिन जिनमें चन्द्रमा की कलाग्रों का क्रमश: ह्रास होता है। ग्रँधेरा पाख।

कृष्णफला–संज्ञा स्त्री० वाकुची। करौंदा।

कृष्णभद्रा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की ग्रौषध। कुटकी।

कृष्णभूमि–संज्ञा स्त्री० काले रंग की मिट्टी का देश।

कृष्णमय–वि० कृष्ण में लीन। कृष्ण के रंग में रँग जाना।

कृष्णमित्र–संज्ञा पुं० प्रबोध-चन्द्रोदय नाटक के रचयिता।

कृष्णलोह–संज्ञा पुं० चुम्बक पत्थर। एक प्रकार का मणि।

कृष्णवक्त्र–संज्ञा पुं० १. काले मुँहवाला बानर। २. लंगूर।

कृष्णवर्त्मा–संज्ञा पुं० १. ग्रग्नि। २. वैश्वानर। ३. चित्रक वृक्ष।

कृष्णवानर–संज्ञा पुं० काला बानर। कृष्ण के रंग का बन्दर।

कृष्णवृत्तिका–संज्ञा स्त्री० कंभारी नामक एक ग्रौषध।

कृष्णसखा–संज्ञा पुं० ग्रर्जुन। कृष्ण के सखा या मित्र।

कृष्णसर्प–संज्ञा पुं० काला साँप।

कृष्णसार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का काला हिरन। यज्ञ में चढ़ाया जानेवाला मृग।

कृष्णसारंग–संज्ञा पुं० कृष्ण के रंग का हिरन

कृष्णसार–संज्ञा पुं० १. काला हिरन करसायल। २. थूहर। सेंहुड़।

कृष्णा–संज्ञा स्त्री० १. द्रौपदी। २. पिप्पली पीपल। ३. दक्षिण भारत की एक नदी ४. काली दाख। ५. काली (देवी) ६. ग्रग्नि की सात जिह्वाग्रों में से एक ७. काला जीरा। ८. काले पत्ते की तुलसी। काले रंग की स्त्री। ९. यमुना। १०. काली सरसों।

कृष्णाग्रज–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के बड़े भाई। बलदेव। बलराम।

कृष्णागुरु–संज्ञा पुं० काला ग्रगरु।

कृष्णाचल–संज्ञा पुं० काला पहाड़। रैवतक नामक पर्वत, जो जूनागढ़ के पास है।

कृष्णाजिन–संज्ञा पुं० कृष्णसार मृग का चर्म। काला मृगचर्म।

कृष्णाफल–संज्ञा पुं० कालीमिर्च।

कृष्णाभिसारिका–संज्ञा स्त्री० अँधेरी रात में अपने प्रेमी से निश्चित स्थान पर मिलने के लिए जानेवाली नायिका।

कृष्णाश्रित–वि० कृष्ण के भक्त। वैष्णव।

कृष्णार्पण–संज्ञा पुं० निष्काम कर्म। अपने कर्मफल श्रीकृष्ण को अर्पण करना। बिना फल की इच्छा के कार्य करना।

कृष्णाष्टमी–संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण का जन्म-दिवस, जो भादों के कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि को पड़ता है। जन्माष्टमी।

कृष्णापकुल्या–स्त्री० औषध-विशेष। पीपरी।

कृष्य–वि० खेती करने योग्य भूमि।

कृसर–संज्ञा स्त्री० खिचड़ी।

क्लृप्त–वि० १. रचित। २. निर्मित। ३. स्थिर किया हुआ।

क्लृप्तकेश–वि० जटाधारी।

कें कें–संज्ञा स्त्री० कष्ट में या चोट लगने पर चिड़ियों और कुत्तों आदि के चिल्लाने का शब्द। कर्कश चिड़ियों का शब्द। झगड़ा, विरोध या असंतोषसूचक शब्द। **मुहा०**–कें कें करना=व्यर्थ चिल्लाना। बकवाद करना। शोर करना।

केंओड़ा–संज्ञा पु० दे० 'केवड़ा'। एक प्रकार का फूल।

केंकड़ा–संज्ञा पु० दे० 'केकड़ा'।

केंचली–संज्ञा स्त्री० सर्प आदि के शरीर पर का झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है।

केंचुआ–संज्ञा पुं० १. केंचुवा। २. एक बरसाती कीड़ा।

केंचुली–संज्ञा स्त्री० दे० "केंचली"।

केन्द्र–संज्ञा पुं० १. मध्यबिन्दु। २. गोलाकार परिधि का मध्य स्थान। गोल वस्तु का मध्य स्थान। मुख्य या प्रधान स्थान। बीच का स्थान। ३. रहने का स्थान। ४. नाभि। ५. लग्न का चौथा, पाँचवाँ और दसवाँ स्थान।

केन्द्रित–क्रि० वि० केन्द्र में किया हुआ। एकत्र। एक जगह लाया हुआ। केन्द्र में इकट्ठा किया हुआ।

केन्द्री–वि० केन्द्र में स्थित।

केन्द्रीभूत–वि० एकत्रित। इकट्ठा किया हुआ। संकुचित।

केन्द्रीकरण–संज्ञा पुं० कुछ चीजों, शक्तियों या अधिकारों को एक केन्द्र में लाने का काम।

केन्द्रीय–संज्ञा पुं० केन्द्र से सम्बन्धित। केन्द्र का।

केन्द्रीय सरकार–संज्ञा स्त्री० भारत सरकार।

के–प्रत्य० १. संबंधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप। जैसे-राम के घोड़े। २. सम्बन्धवाचक प्रत्यय, जैसे—राम के घोड़े पर।
†सर्व० कौन? कौन का छोटा रूप। (अवधी) प्रश्नवाचक।

केउ†–सर्व० कोई।

केकड़ा–संज्ञा पुं० पानी का एक कीड़ा जिसकी आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं।

केकय–संज्ञा पुं० १. उत्तर भारत का एक प्राचीन देश, जो अब कश्मीर के अन्तर्गत है। २. [स्त्री० केकयी] केकय देश का राजा या रहनेवाला। ३. कैकेयी के पिता।

केकयी–संज्ञा स्त्री० दे० "कैकेयी"।

केकर–वि० १. ऐंचा। २. भेंगा। ३. वक्र। टेढ़ा। ४. किसका।

केका–संज्ञा स्त्री० मोर की बोली।

केकी–संज्ञा पुं० मयूर। मोर। शिखी।

केचित्–सर्व० कोई-कोई।

केड़ा–संज्ञा पुं० १. कोपल। नया पौधा या अंकुर। २. नव-युवक।

केत–संज्ञा पुं० १. रहने की जगह। २. गृह। ३. आबादी। ४. धन। ५. इच्छा, काम, उद्देश्य। ६. निमंत्रण। ७. ध्वजा, चिह्न। ८. केतु। ९. क्रीड़ा। १० कोड़ा। ११. ज्ञान।

केतक–संज्ञा पुं० केवड़ा। क्रि० वि० १. कितने। २. बहुत कुछ। बहुत। ३. किस मात्रा में। कितना।

केतकर*–संज्ञा स्त्री० दे० "केतकी"।

केतकी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का काँटेदार सुगंधित पौधा। २. केवड़े का वृक्ष। ३. केवड़े के फूल।

केतन–संज्ञा पुं० १. निमंत्रण । बुलावा । २. चिह्न । ३. ध्वजा । ४. दृश्य स्थान । ५. जगह । रहने की जगह । ६. कोई अनिवार्य कार्य ।

केता*†–क्रि० वि० कितना ।

केतिक*†–क्रि० वि० कितना । किस तरह ।

केतु–संज्ञा पुं० १. ज्ञान । प्रकाश की किरण । २. चिह्न । निशान । ३. चमक । प्रकाश । ४. राहु का शरीर । ५. ध्वजा । पताका । ६. प्रधान नेता । अगुवा । प्रतिष्ठित व्यक्ति । ७. एक राक्षस का कबंध । ८. एक ग्रह (फलित ज्योतिष)। पुच्छल तारा । ९. पापग्रह । १० उत्पात चिह्न । ११. दान-विशेष । १२. दुश्मन, वैरी । १३. दिन का समय ज्ञान ।

केतुतारा–संज्ञा स्त्री० धूमकेतु । अशुभसूचक तारा । पुच्छल तारा ।

केतुमती–संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णार्द्ध समवृत्त (छन्द) । २. रावण की नानी अर्थात् सुमाली राक्षस की पत्नी ।

केतुमान–वि० १. तेजस्वी । तेजवान् । २. बुद्धिमान् । ३. ध्वजावाला ।

केतुमाल–संज्ञा पुं० जम्बु द्वीप के नवखंडों में से एक खंड ।

केतुवृक्ष–संज्ञा पुं० पुराणों के अनुसार मेरु पर्वत पर के वृक्षों का नाम । ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और बरगद ।

केते–क्रि० वि० कितने ? कै ?

केतो*–क्रि०वि० [स्त्री० केती] कितना ?

केदली†–संज्ञा पुं० दे० १. "कदली" । रंभा । २. एक बार फूलनेवाला केला । पेड़ ।

केदार–संज्ञा पुं० १. ऐसा खेत जिसमें धान बोया या रोपा जाता हो । २. सिंचाई के लिए खेतों की क्यारी । ३. वृक्ष के नीचे का थाला । थाँवला । ४. पर्वत । ५. दे० "केदारनाथ" । शिव । ६. मेघराज का चतुर्थ पुत्र ।

केदारखंड–संज्ञा पुं० खंड-विशेष । स्कन्द पुराण के अन्तर्गत एक भाग या खंड ।

केदारनाथ–संज्ञा पुं० १. हिमालय का एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग स्थापित है । २. महादेवजी ।

केन–संज्ञा पुं० एक उपनिषद् ।
सर्व० किसने ?

केबिन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छोटा कमरा या घर । जहाज में अफसरों या यात्रियों के रहने की कोठरी ।

केमद्रुम–संज्ञा पुं० जन्मकाल का ग्रह । एक प्रकार का योग । दरिद्रयोग ।

केमिस्ट्री–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रसायन-शास्त्र या रसायन विद्या ।
(इनआर्गनिक केमिस्ट्री=धातु इत्यादि सम्बन्धी रसायन शास्त्र ।
आर्गनिक केमिस्ट्री=जीव-सम्बन्धी रसायन शास्त्र ।)

केयूर–संज्ञा पुं० १. भुजबंद । बाजूबंद । २.अंगद । ३. बाँह में पहनने का एक गहना । बिजायठ ।

केयूरी–वि० केयूरधारी । जो केयूर पहने हो ।

केर†–प्रत्य० [स्त्री० केरी] संबंधसूचक विभक्ति । का । की । के (अवधी) ।

केरल–संज्ञा पुं० (स्त्री० केरली) १. किनारा । दक्षिण भारत का एक प्रदेश (मलावार) । २. केरल देश के निवासी । ३. एक प्रकार का फलित ज्योतिष ।

केरा–संज्ञा पुं० १. केला । २. केला का वृक्ष । कदली ।

केराना†–संज्ञा पुं० नमक, मसाला, हलदी आदि चीजें जो पंसारियों के यहाँ मिलती हैं । क्रि० स० सूप में अन्न के दाने अलग करना ।

केरानी–संज्ञा पुं० १. किरंटा । वह जिसके माता-पिता में से कोई एक योरोपियन और दूसरा हिन्दुस्तानी हो । यूरेशियन ईसाई । २. क्लर्क । दफ्तर में लिखने-पढ़ने का काम करनेवाला मुंशी ।

केराव†–संज्ञा पुं० मटर ।

केरि*–प्रत्य० दे० "केरी" ।
संज्ञा स्त्री० दे० "केलि" ।

केरी*–प्रत्य० की । "के" विभक्ति का स्त्रीलिंग रूप ।
संज्ञा स्त्री० अँबिया । आम का छोटा कच्चा फल ।

केरोसिन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मिट्टी का तेल। किरासन का तेल।

केला–संज्ञा पुं० एक फल। कदली का वृक्ष। इस पेड़ के पत्ते गज सवा गज लम्बे और फल लम्बे, गूदेदार और मीठे होते हैं।

केलि–संज्ञा स्त्री० १. खेल। क्रीड़ा। २. मैथुन। रति। विहार। ३. हँसी। परिहास। ठट्ठा। दिल्लगी। ४. पृथ्वी।

केलिक–संज्ञा पुं० अशोक वृक्ष।

केलिकला–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती की वीणा। २. समागम। रति।

केलिकिल–संज्ञा पुं० शिव का एक अनुचर। नाटक का विदूषक।

संज्ञा स्त्री० कामदेव की स्त्री।

केलिगृह–संज्ञा पुं० १. नाटक खेलने का स्थान। नाट्यगृह। रंगशाला। २. आमोद-प्रमोद करने का स्थान।

केली–संज्ञा स्त्री० १. सुख-शयन। २. आनंद। ३. सुख। ४. क्रीड़ा। खेल।

केवका–संज्ञा पुं० प्रसूता स्त्रियों को दिया जानेवाला मसाला।

केवट–संज्ञा पुं० नाव चलानेवाली जाति। धीमर। मछुआ। मल्लाह।

केवटी दाल–संज्ञा स्त्री० दो या दो से अधिक चीजों की मिली हुई दाल।

केवटी मोथा–संज्ञा पुं० सुगंधित मोथा विशेष।

केवड़ई–वि० एक प्रकार का रंग। हलका पीला, हरा और सफेद मिला हुआ रंग। केवड़ई रंग।

केवड़ा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का फूल। २. एक प्रकार का इत्र। ३. इसके फूल का सुगंधित जल।

केवल–वि० १. अकेला। एकमात्र। एकाकी। २. शुद्ध। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. असहाय।

क्रि वि० मात्र। सिर्फ़।

संज्ञा पुं० १. विशुद्ध ज्ञान। २. असाधारण। ३. पूर्ण। ४. एक तरह का ज्ञान। ५. पवित्र। ६. निर्णीत। ७. स्वार्थी। ८. अनोखा।

केवलात्मा–संज्ञा पुं० शुद्ध स्वभाव का व्यक्ति।

केवली–संज्ञा पुं० १. केवल-ज्ञानी। २. मुक्ति पाने योग्य साधु। ३. एकाकी। ४. ग्रन्थ विशेष। ५. जैनियों की मुक्ति। ६. जन्मपत्री।

केवलव्यतिरेकी–संज्ञा पुं० प्रत्यक्ष कार्य को देखकर कारण का अनुमान। जैसे, नदी का चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनुमान।

केवलान्वयी–संज्ञा पुं० कारण से कार्य का अनुमान। जैसे, बादल देखकर पानी बरसने का अनुमान।

केवाँच–संज्ञा स्त्री० दे० "**कौंच**"।

केवा–संज्ञा पुं० १. केवड़ा। केतकी। २. कमल। ३. बहाना। मिस। टालमटूल। आनाकानी। संकोच।

केवाड़†, केवाड़ा–संज्ञा पुं० दे० "किवाड़"। द्वार। कपाट। दरवाजा।

केवान–संज्ञा पुं० दे० "केवा"।

केश–संज्ञा पुं० १. किरण। रश्मि। २. संसार। ३. वरुण। ४. सूर्य्य। ५. विष्णु। ६. बाल। ७. रोम। ८. लोम। ९. ब्रह्मा की एक शक्ति। १०. सिर के बाल। बालों का गुच्छा। ११. एक सुगन्धि।

केशकर्म–संज्ञा पुं० १. केश-विन्यास। बाल सँवारने या गूँथने की कला। २. केशांत नामक संस्कार-विशेष।

केशकलाप–संज्ञा पुं० बालों का समूह। चोटी। जूड़ा।

केशग्रह–संज्ञा पुं० केशाकर्षण। केश पकड़कर खींचना।

केशपाश–संज्ञा पुं० बालों की लट। काकुल। बालों का समूह।

केशमार्ज्जनी–संज्ञा स्त्री० कंघी। ककही।

केशरंजन–संज्ञा पुं० भँगरैया। एक पौधा। एक प्रकार का वृक्ष।

केशर–संज्ञा पुं० दे० "केसर"। १. फूलों की पंखुड़ियाँ। २. सिंह और घोड़ों की गरदन पर के बाल।

केशराज—संज्ञा पुं० १. भुजंगा। पक्षी-विशेष। २. भृंगराज। भँगरैया।

केशरिया—संज्ञा पुं० १. पीला रंग-विशेष। २. केसरिया। ३. युद्ध के समय का एक पहनावा जिसे राजपूत पहनते थे। इसे पहनकर युद्ध से लौट नहीं सकते थे, भले ही मर जायँ। ४. केसर का रंग।

केशरी—संज्ञा पुं० दे० "केसरी"। १. सिंह। मृगराज। २. एक बानर। हनुमानजी के पिता।

केशव—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। ३. विष्णु के २४ मूर्तिभेदों में से एक। ४. परमेश्वर। ब्रह्म।

केशविन्यास—संज्ञा पुं० १. चोटी बनाना। २. बाल सँवारना। ३. बालों को सजाना।

केशांत—संज्ञा पुं० १. मुंडन। २. गोदान कर्म। ३. यज्ञोपवीत के समय सिर के बाल मूँडने का संस्कार।

केशाकेशी—संज्ञा पुं० बाल पकड़कर लड़ना। झोंटाझोंटी।

केशि—संज्ञा पुं० १. एक राक्षस जिसको कृष्ण ने मारा था। २. दूसरा राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था। ३. बालों-वाला व्यक्ति। ४. श्रीकृष्ण की एक उपाधि।

केशिनी—संज्ञा स्त्री० १. सुंदर और लम्बे बालोंवाली स्त्री। २. अप्सरा-विशेष। ३. पार्वती की एक सहचरी। ४. राजा सगर की रानी। ५. रावण की माता कैकसी का एक नाम। ६. एक प्राचीन नगरी। ७. दमयंती की एक दूती।

केशी—संज्ञा पुं० [स्त्री० केशिनी] १. पुराने युग में घर का मालिक। २. राजा कंस का अनुचर एक राक्षस जिसने रूप बदलकर वृन्दावन में गौओं को मारना शुरू किया तब श्रीकृष्ण ने उसकी हत्या की। ३. केवाँच। ४. घोड़ा। ५. सिंह।
वि० १. उत्तम केशयुक्त। २. किरण या प्रकाशवाला।

केस—संज्ञा पुं० दे० "केश"।
संज्ञा पुं० (अंग्रे०) १. चीज रखने की जगह, जैसे-सूटकेस। २. दुर्घटना। ३. मुक़दमा।

केसर—संज्ञा पुं० १. सुगंध के लिए प्रसिद्ध एक पौधा। २. कुंकुम। ३. ज़ाफ़रान। ४. अयाल। घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल। ५. नागकेसर। ६. स्वर्ग। ७. मौलसिरी। बकुल।

केसरिया—वि० १. पीला। केसर के रंग का। ज़र्द। २. केसर मिला हुआ। ३. राजपूतों का केसरिया बाना, जो युद्ध के समय पहना जाता था।

केसरी—संज्ञा पुं० १. सिंह। २. घोड़ा। ३. हनुमान्‌जी के पिता का नाम। ४. नागकेसर। ५. पुन्नाग।

केसारी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मटर। दुबिया मटर।

केसू—संज्ञा पुं० दे० 'टेसू'।

केहरि या केहरी*—संज्ञा पुं० १. सिंह। शेर। २. एक बानर का नाम। ३. घोड़ा।

केहा—संज्ञा पुं० मयूर। मोर।

केहि*†—वि० किसे। किसको। (अवधी)

केहूँ*—क्रि० वि० किसी भाँति। किसी तरह। किसी प्रकार।

केहू†—सर्व० कोई।

कैंकर्य—संज्ञा पुं० १. "किंकर" का भाव। किंकरता। सेवा। नौकरी। दासत्व। २. नवधा भक्ति का एक अंग।

कैंचली—संज्ञा स्त्री० केंचुल। साँप के शरीर का झिल्लीदार चमड़ा।

कैंचा—वि० भेंगा। ऐंचाताना।
संज्ञा पुं० बड़ी क़ैंची।

क़ैंची—संज्ञा स्त्री० कतरनी। काटने का एक औजार।

कैंड़ा—संज्ञा पुं० १. मान। पैमाना। २. नक़शा ठीक करने का एक यंत्र। ३. ढंग। चाल। तर्ज़। ४. काट-छाँट। ५. चालाकी। ६. धूर्तता।

कै†—वि० कितना। कितने।
*अव्य० या। अथवा। वा।
संज्ञा स्त्री० उलटी। वमन।

कैकस—संज्ञा पुं० राक्षस। दैत्य। असुर।

कैकसी–संज्ञा स्त्री० एक राक्षसी। रावण की माता।

कैकेयी–संज्ञा स्त्री० १. कैकय गोत्र में उत्पन्न होनेवाली स्त्री। २. राजा दशरथ की रानी, जिसने रामचन्द्रजी को वनवास दिलाया।

कैटभ–संज्ञा पुं० एक राक्षस।

कैटभारि–संज्ञा पुं० नारायण। विष्णु।

कैटभेश्वरी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। भगवती।

कैत–संज्ञा पुं० एक प्रकार का फल। कैथा।
संज्ञा स्त्री० ओर। तरफ़।

कैतक–संज्ञा पुं० केवड़े के फूल। केतकी-पुष्प।

कैतव–संज्ञा पुं० १. कपट। छल। धोखा। २. जुआ। ३. एक मणि। ४. धतूरा। ५. लहसुनियाँ। ६. मूंगा।
वि० १. धूर्त। शठ। २. छली। धोखेबाज़। ३. जुआ खेलनेवाला।

कैतववाद–संज्ञा पुं० १. छलना। ठगना। प्रवंचना। २. एक औषध। चिरायता।

कैतवापह्नुति–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का काव्य-अलंकार। २. अपह्नुति अलंकार का एक भेद, जिसमें किसी बहाने से कोई बात छिपाई जाय।

कैतून–संज्ञा स्त्री० कपड़ों में लगाई जानेवाली एक बारीक लैस।

कैथ, कैथा–संज्ञा पुं० कँटीला वृक्ष-विशेष। इस वृक्ष के फल।

कैथी–संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन लिपि जिसमें अक्षरों के ऊपर रेखा नहीं दी जाती। मुँडिया अक्षर।

क़ैद–संज्ञा स्त्री० १. रोक। अवरोध। बंधन। २. कारावास। ऐसे बंद स्थान में रखा जाना जहाँ से बाहर आने की अनुमति न हो। जेल में बंद रहना। ३. किसी तरह की शर्त, प्रतिबंध, जिसके पूरे होने पर ही कोई बात हो।
मुहा०–क़ैद काटना=क़ैद में दिन बिताना।

क़ैदक–संज्ञा स्त्री० कागज़ आदि रखने के लिए कागज़ की पट्टी।

क़ैदख़ाना–संज्ञा पुं० [अ०] कारागार। बंदीगृह। जेलख़ाना। क़ैदियों के रखने की जगह।

क़ैद-तनहाई–संज्ञा स्त्री० कालकोठरी। छोटी कोठरी में क़ैदी को अकेले रखने की सज़ा।

क़ैदमहज़–संज्ञा स्त्री० १. ऐसी सज़ा जिसमें क़ैदी को कोई काम या मेहनत न करनी पड़े। २. सादी क़ैद।

क़ैदसख़्त–संज्ञा स्त्री० कड़ी क़ैद। ऐसी सज़ा जिसमें क़ैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े।

क़ैदी–संज्ञा पुं० [अ०] १. बंदी। २. बँधुवा। क़ैद की सजा पानेवाला व्यक्ति।

कैधों–*†अव्य० या। वा। अथवा। मानो कि।

कैफ़–संज्ञा पुं० [अ०] मद। नशा।

कैफ़ियत–संज्ञा स्त्री० १. विवरण। ब्योरा। २. समाचार। वर्णन। हाल। ३. खुशी या आश्चर्य उत्पन्न करनेवाली घटना।
मुहा०–कैफियत तलब करना=कारण पूछना। नियमानुसार विवरण माँगना।

कैफ़ी–वि० १.मतवाला। २. नशेबाज़। नशे में डूबा हुआ।

कैबर–संज्ञा स्त्री० तीर का फल या नोक।

कैबा‡–संज्ञा स्त्री० १. बहुत बार। २. कितनी बार।

कैमुतिक न्याय–संज्ञा पुं० अनायास सिद्धि। एक प्रकार का न्यायसिद्धान्त या उक्ति जिससे यह दिखाया जाय कि जब उतना बड़ा काम हो गया तब यह क्या है?

कैयट–संज्ञा पुं० व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार।

कैर–संज्ञा पुं० करील। काँटेदार एक पौधा।

कैरव–संज्ञा पुं० [स्त्री० कैरवी] १. सफ़ेद कमल। २. कुमुद। ३. ज्वारी। ४. शत्रु।

कैरवाली–संज्ञा स्त्री० कैरवों का समूह।

कैरवि–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

कैरवी–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।

कैरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कैरी] १. भूरा (रंग)। २. ललामी लिये हुए सफेदी। ३. सोकना। सोकन। ऐसा बैल जिसके सफ़ेद रोओं के अंदर से चमड़े की ललाई झलकती हो।
वि० १. कंजा। जिसकी आँखें भूरी हों। २. कैरे रंग का।

कैल–संज्ञा पुं० १. अंकुर। २. कोंपल। ३.

गाभा। ४. एक प्रकार का बैलों का वर्ण। ५. मटमैला रंग।
कैलेंडर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दे० 'दिनपत्र'।
कैलास–संज्ञा पुं० १. शिवलोक। २. हिमालय की एक चोटी जहाँ शिवजी का निवास माना जाता है।
यौ०–कैलासनाथ। कैलासपति। शिव। कैलासवास=मृत्यु। मरण।
कैवर्त–संज्ञा पुं० मल्लाह। कर्णधार। केवट।
कैवर्त्तमुस्तक–संज्ञा पुं० केवटी मोथा।
कैवल्य–संज्ञा पुं० १. शुद्धता। पवित्रता। बिना मोह-माया का। २. निर्लिप्तता। ३. एकता। ४. मुक्ति। परित्राण। ५. उपनिषद्-विशेष।
कैशिक–संज्ञा स्त्री० बालों की लट।
वि० बड़े-बड़े बालोंवाला।
कैशिकी–संज्ञा स्त्री० नाटक की मुख्य चार वृत्तियों में से एक वृत्ति जिसमें नृत्य-गीत तथा भोग-विलास आदि होते हैं।
कैसर–संज्ञा पुं० [लै०] सम्राट्। जर्मन सम्राट् की उपाधि। शाहंशाह। बादशाह।
कैसा–वि० [स्त्री० कैसी] १. किस तरह का? किस ढंग का? २. किस रूप या गुण का? ३. (निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किसी प्रकार का नहीं। जैसे—जब हम उस मकान में रहते नहीं, तब किराया कैसा? समान। ४. सदृश। ऐसा।
कैसे–क्रि० वि० १. किस ढंग से? किस तरह से? २. किस हेतु? किस लिए? क्यों?
कैसो*†–वि० दे० "कैसा"।
कोंई*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुंई"।
कोंकण–संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २. कोंकण देश का रहनेवाला। ३. शस्त्र-विशेष।
कोंचना–क्रि० स० गड़ाना। धँसाना। चुभाना। गोदना। बींधना। तंग करना।
कोंचा–संज्ञा पुं० दे० "क्रौंच"।
संज्ञा पुं० बहेलियों की लंबी छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने का लासा लगाते हैं।
कोंछना–क्रि० स० दे० "कोंछियाना"।
कोंछियाना–क्रि० स० साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है।
क्रि० स० अंचल के कोने में कोई चीज भरकर कमर में खोंस लेना।
कोंढ़ा–संज्ञा पुं० १. धातु का कड़ा या छल्ला जिसमें कोई जंजीर अटकाई जाय। २. कुंडा। ३. कूष्मांड।
वि० जिसमें कोंढ़ा लगा हो। जैसे, कोंढ़ा रुपया।
कोंथना–क्रि० अ० दे० "कुंथना"।
कोंपर–संज्ञा पुं० दे० कोंपल। अंकुर।
कोंपल†–संज्ञा स्त्री० अंकुर। कल्ला। नई और मुलायम पत्ती। कनखा।
कोंवर*†–वि० १. नरम। मुलायम। २. कोमल।
कोंहड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "कुम्हड़ा"।
कोंहड़ौरी†–संज्ञा स्त्री० कुम्हड़े या पेठे की बरी।
को*–सर्व० कौन?
प्रत्य० कर्म और संप्रदान की विभक्ति। जैसे—साँप को मारो।
कोआ–संज्ञा पुं० १. रेशम के कीड़े का घर। कुसियारी। २. कोलैंदा। महुए का पका फल। गोलैंदा। ३. कटहल के पके हुए बीजकोष। ४. दे० "कोया"।
कोइरी–संज्ञा पुं० काछी। हिंदुओं की एक जाति जो साग, तरकारी आदि बोती या बेचती है।
संज्ञा स्त्री० दे० "कोईलारी"।
कोई–अव्य० अनिश्चित। कई में से एक।
कोऊ–अव्य० कोई मनुष्य। अनिश्चित व्यक्ति। "कोई"।
कोक–संज्ञा पुं० १. चकवा। २. बघेरा। ३. जंगली भेड़िया। ४. संगीत का एक भेद। ५. मेढक। ६. 'कोकशास्त्र' के रचयिता।
कोकई–वि० गुलाबी लिये हुए नीला रंग।
कोककला–संज्ञा स्त्री० कोकशास्त्र संबंधी ज्ञान। संभोग संबंधी विद्या। रति-विद्या।
कोकदेव–संज्ञा पुं० कोकशास्त्र के रचयिता।
कोकनद–संज्ञा पुं० १. लाल कुमद। २. लाल कमल।

कोंकनी—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंग। वि० १. घटिया। रद्दी। २. छोटा। नन्हा।

कोकशास्त्र—संज्ञा पुं० कामशास्त्र। कोक द्वारा बनाया हुआ रतिशास्त्र।

कोका—संज्ञा पुं० दक्षिणी अमेरिका का वृक्ष-विशेष, जिसकी सुखाई हुई पत्तियाँ चाय या क़हवे की भाँति स्फूर्तिदायक समझी जाती हैं।
संज्ञा पुं० स्त्री० १. धायभाई। २. चकवा। चकई। ३. फरिया। ४. कंबल। ५. एक प्रकार का वस्त्र।
संज्ञा स्त्री० दे० "कोकाबेली"।

कोकाबेरी, कोकाबेली—संज्ञा स्त्री० नीली कुमुदिनी।

कोकाह—संज्ञा पुं० श्वेत रंग का घोड़ा।

कोकिल—संज्ञा स्त्री० १. पिक। कोयल। २. नीलम की छाया। ३. एक प्रकार का छप्पय।

कोकिला—संज्ञा स्त्री० दे० कोकिल।

कोकिलावास—संज्ञा पुं० आम का पेड़।

कोकी—संज्ञा स्त्री० चकई। मादा चकवा।

कोकीन, कोकेन—संज्ञा स्त्री० कोका नामक पेड़ की पत्तियों से तैयार की हुई औषध, जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

कोको—संज्ञा स्त्री० १. कौआ की आवाज़। २. लड़कों को बहकाने का शब्द।

कोख—संज्ञा स्त्री० १. पेट। उदर। २. गर्भाशय। ३. दोनों बगल का स्थान। पार्श्व। कुक्षि।
मुहा०—कोख उजड़ जाना=१. गर्भ गिर जाना। २. संतान नष्ट होना। कोख बंद होना=बाँझ होना। कोख, या कोख माँग से भरी-पूरी रहना=बालक या बालक और पति का सुख देखते रहना। (आसीस)।

कोखबंद—वि० बाँझ। संतानहीन।

कोगी—संज्ञा पुं० झुंड में रहनेवाला कुत्तों से मिलता-जुलता एक शिकारी जानवर।

कोच—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुर्सी। २. चार पहियोंवाली घोड़ागाड़ी।

कोकची—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंग।

कोचबकस—संज्ञा पुं० घोड़ा-गाड़ी आदि में वह स्थान, जहाँ हाँकनेवाला बैठता है।

कोचवान—संज्ञा पुं० घोड़ा-गाड़ी हाँकनेवाला।

कोचा—संज्ञा पुं० १. तलवार, कटार आदि का घाव। २. लगनेवाली बात। ताना।

कोचीन—संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रदेश।

कोछा, कोछी—संज्ञा स्त्री० गोदी। ऐसी झोली या झलना जिसमें बच्चों को डुलाया जाय।

कोजागर—संज्ञा पुं० आश्विन मास की पूर्णिमा का महोत्सव।

कोट—संज्ञा पुं० १. गढ़। दुर्ग। क़िला। २. प्राचीर। शहर-पनाह। ३. राजप्रासाद। महल। ४. समूह। झुंड।
संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक अंग्रेजी पहनावा।

कोटपाल—संज्ञा पुं० १. दुर्ग का रक्षक। २. क़िले की रखवाली करनेवाला। ३. क़िलेदार।

कोटर—संज्ञा पुं० १. खोहड़। पेड़ का खोखला भाग। २. दुर्गरक्षा के लिए लगाया जानेवाला कृत्रिम वन। खोढ़रा।

कोटवारण—संज्ञा पुं० चारदिवारी। प्राचीर।

कोटवी—संज्ञा स्त्री० नग्न स्त्री। बिना वस्त्र पहनी हुई स्त्री।

कोटा—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. किसी वस्तु की निर्धारित मात्रा। दुकानदार या लाइसेंसवालों को मिलनेवाला निर्धारित सामान। सरकार द्वारा नियंत्रित (कंट्रोल) वस्तु से कार्ड आदि पर मिलनेवाला सामान, जैसे कपड़े या चीनी का कोटा। २. राजपूताने की एक रियासत, जो अब राजस्थान संघ में है। ३. इसी रियासत का एक नगर।

कोटि—संज्ञा स्त्री० १. शस्त्रों का अगला नुकीला भाग। २. धनुष का सिरा। ३. वर्ग। श्रेणी। ४. विभाग, राज्य, जाति। ५. विवाद का पूर्वपक्ष। ६. उत्तमता।

उत्कृष्टता। ७. समूह। जत्था। ८. पतला भाग। ९. पूर्वपक्ष। १०. किसी ९० अंश के चाप के दो भागों में से एक। ११. अर्धचन्द्र का सिरा।
वि० करोड़। सौ लाख।

कोटिक–वि० १. करोड़ों। २. अपार। अधिक। असंख्य।

कोटिर–संज्ञा पुं० १. जटा। २. मुकुट।

कोटिशः–क्रि० वि० अनेक प्रकार से। कई ढंग से। हर तरह से।
वि० अनेकानेक। अपार।

कोटीश–वि० करोड़पती। महाधनी।

कोट्याधीश–वि० "करोड़पती"।

कोटू–संज्ञा पुं० दे० "कूटू"।

कोठ†–वि० कुंठित। (दाँत) खट्टापन, ऐसी खटाई जिससे कोई वस्तु न खाई जा सके।

कोठर–संज्ञा पुं० "कोटर"।

कोठरी–संज्ञा स्त्री० छोटा कमरा। चारों ओर से घिरी हुई छोटी जगह।

कोठा–संज्ञा पुं० १. चौड़ा कमरा। बड़ी कोठरी। २. भंडार। ३. मकान का ऊपरी हिस्सा। ४. पेट। उदर। ५. घर। खाना। ६. गर्भाशय। धरन। ७. शरीर या मस्तिष्क का भीतरी भाग। ८. किसी एक अंक का पहाड़ा, जो एक खाने में लिखा जाता है।
यौ०–कोठेवाली=वेश्या।
मुहा०–कोठा बिगड़ना=अपच आदि रोग होना। कोठा साफ़ होना=साफ़ दस्त होना।

कोठार–संज्ञा पुं० अनाज आदि रखने का भंडार।

कोठारी–संज्ञा पुं० भंडारी। भंडार का प्रबंध करनेवाला।

कोठिला–संज्ञा पुं० दे० "कुठला"।

कोठी–संज्ञा स्त्री० १. हवेली। बड़ा पक्का मकान। २. बँगला। ३. महाजनी घर, जहाँ लेनदेन होता है। बड़ी दूकान। ४. अनाज रखने का कुठला। ५. बच्चेदानी। गर्भाशय। ६. ईंट या पत्थर की वह जोड़ाई जो कुएँ की दीवार या पुल के खंभे में पानी के भीतर की ज़मीन तक होती है। ७. बाँसों का समूह, जो एक साथ उगते हैं।

कोठीवाल–संज्ञा पुं० १. साहूकार। महाजन। २. बड़ा व्यापारी। ३. महाजनी अक्षर। ४. कोठीवाला। ५. मुड़िया।

कोठीवाली–संज्ञा स्त्री० १. साहूकारी। २. कोठी चलाने का काम। ३. कोठीवाल अक्षर।

कोड़ना–क्रि० स० १. गोड़ना। खेत की मिट्टी खोदना। २. खोदना।

कोड़ा–संज्ञा पुं० १. चाबुक। जानवरों को चलाने के लिए सूत या चमड़े से बँधा हुआ छोटा डंडा। साँटा। दुर्रा। २. उत्तेजक बात। ३. दिल को चुभनेवाली बात। ४. चेतावनी।
मुहा०–कोड़ा करना=वश में करना। क़ाबू में करना।

कोड़ाई–संज्ञा स्त्री० कोड़ने की क्रिया या मज़दूरी।

कोड़ी–संज्ञा स्त्री० बीसी। बीस की संख्या।

कोढ़–संज्ञा पुं० कुष्टरोग। रक्त और त्वचा संबंधी एक बीमारी।
मुहा०–कोढ़ चूना या टपकना=कोढ़ के कारण अंगों का गल-गलकर गिरना। कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज=दुःख पर दुःख।

कोढ़ी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कोढ़िन] कुष्ठरोगी। जिसे कोढ़ रोग हुआ हो।

कोण–संज्ञा पुं० १. कोना। एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर, जो मिलकर एक न हो जाती हों। घर का एक कोना। २. अस्त्रों का अगला भाग। गोशा। ३. विदिशा। दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण चार हैं—अग्नि, नैर्ऋत्य, ईशान और वायव्य। ४. वीणा आदि बजाने का साधन। ५. कमानी। ६. गज। ७. मंगलग्रह। ८. शनिग्रह।

कोत*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुवत"।

कोतल–संज्ञा पुं० १. राजा की सवारी का घोड़ा। २. सजा-सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो। जलूसी घोड़ा।

कोतवाल–संज्ञा पुं० १. नगरपाल । पुलिस का एक विशेष कर्म्मचारी । २. पुलिस का डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट जिसके ज़िम्मे शहर का प्रबन्ध हो ।

कोतवाली–संज्ञा स्त्री० १. कोतवाल का काम या उसका पद । २. पुलिस के कोतवाल का कार्य्यालय ।

कोता*†–वि० [स्त्री० कोती] १. कम । अल्प । २. छोटा ।

कोताह–वि० १. छोटा । २. कम ।

कोताही–संज्ञा स्त्री० १. कमी । त्रुटि । २. टालमटोल ।

कोति*–संज्ञा स्त्री० दे० "कोद" ।

कोथमीर–संज्ञा पुं० १. कच्ची धनियाँ । २. धनियाँ की हरी पत्ती ।

कोथला–संज्ञा पुं० १. पेट । २. बड़ा थैला ।

कोथली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लम्बी थैली, जिसमें रुपया-पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं । हिमयानी ।

कोदंड–संज्ञा पुं० १. कमान । धनुष । २. भौंह । ३. एक देश का नाम । ४. एक प्रकार की बेल ।

कोद*†–संज्ञा स्त्री० १. ओर । दिशा । तरफ़ । २. पक्ष । ३. कोना ।

कोदों, कोदो–संज्ञा पुं० १. अन्न-विशेष । २. एक प्रकार का धान ।

मुहा०–कोदो देकर पढ़ना या सीखना= १. मुफ़्त शिक्षा पाना । २. सस्ती शिक्षा पाना । ३. अध्यापक से बेगार में पढ़ना । ४. अपूर्ण शिक्षा । छाती पर कोदो दलना= किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना, जो उसे बहुत बुरा लगे ।

कोद्रव्य–संज्ञा पुं० "कोदों" ।

कोध*–संज्ञा स्त्री० दे० "कोद" ।

कोन, कोना–संज्ञा पुं० १. खूंट । २. कोण ।

मुहा०–कोना कुथरा=१. कोण । २. किनारा । छोर । गोशा ।

कोनिया–संज्ञा स्त्री० पटनी । दीवार के कोने पर चीज़ें रखने के लिए बैठाई हुई पटरी या पटिया ।

कोप–संज्ञा पुं० [वि० कुपित] १. क्रोध । गुस्सा । २. रागद्वेष ।

कोपन–वि० [स्त्री० कोपना] कोप करनेवाला । क्रोधी । गुस्सेवर ।

कोपना*–क्रि० अ० कोप करना । क्रोध करना । क्रुद्ध होना । नाराज़ होना । रूठना ।

कोपभवन–संज्ञा पुं० ऐसा घर जिसमें कोई मनुष्य रूठकर जा रहे ।

कोपर या कोपल–संज्ञा पुं० १. कल्ला । वृक्ष आदि की नई मुलायम पत्ती । २. कटोरा । ३. कटोरी । ४. तर्पण करने का पात्र । ५. नवीन दल । ६. फूलों की पंखुड़ियाँ ।

कोपांध–वि० अत्यन्त क्रुद्ध । क्रोध में अन्धा या बावला ।

कोपान्वित–वि० क्रोधित । क्रुद्ध ।

कोपि–सर्व० कोई । कोई भी ।

कोपित–वि० क्रोधित ।

कोपी–वि० क्रोधी । क्रोध करनेवाला ।

कोपीन–संज्ञा पुं० दे० "कौपीन" । लँगोटी ।

कोफ़्ता–संज्ञा पुं० कूटे हुए मांस का बना हुआ एक तरह का कबाब ।

कोबिद–संज्ञा पुं० देखिए 'कोविद' ।

कोबी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की तरकारी । गोभी । छत्राक ।

कोमल–वि० १. मुलायम । नरम । २. कच्चा । ३. सुकुमार । नाज़ुक । ४. सुंदर । मनोहर । ५. स्वर का एक भेद । मीठा, (संगीत) खूबसूरत ।

कोमलता–संज्ञा स्त्री० १. मृदुता । मृदुलता । सुकुमारता । नरमी । २. मधुरता ।

कोमलताई–संज्ञा स्त्री० मृदुलता । कोमलता ।

कोमला–संज्ञा स्त्री० कोमल और प्रसादगुण-युक्त अक्षर-योजना या वृत्ति ।

कोय–सर्व० कोई ।

कोयर–संज्ञा पुं० सब्ज़ी । सागपात । तरकारी ।

कोयल–संज्ञा स्त्री० कोकिल ।

कोयला–संज्ञा पुं० १. जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो काला होता है । २.

एक खनिज पदार्थ जो जलाने के काम में आता है। ३. खीरा। ४. कोला।

कोया—संज्ञा पुं० १. आँख का कोना। २. आँख का ढेला।
संज्ञा पुं० कटहल का बीजकोश।

कोरंगी—संज्ञा स्त्री० छोटी इलायची।

कोर—संज्ञा स्त्री० किनारा। छोर। कगर।

कोरक—संज्ञा पुं० १. मुकुल। कली। २. फूल की कटोरी। फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। ३. मृणाल। कमल की नाल या डंडी। ४. अविकसित पुष्प। ५. शीतल चीनी। ६. कली के समान कोई भी वस्तु।

कोर-कसर—संज्ञा स्त्री० १. दोष और त्रुटि। ऐब और कमी। २. कमी-बेशी।

कोरना—क्रि० स० कोड़ना। खोदना। खरोचना। कुतरना।

कोरमा—संज्ञा पुं० शोरबा रहित, भुना हुआ मांस।

कोरहन—संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

कोरा—वि० [स्त्री० कोरी] १. नवीन। नया। अछूता। जो काम में न आया हो। २. (मिट्टी का बरतन या कपड़ा) जो धोया न गया हो। ३. सादा। जिस पर कुछ भी न लिखा हो। ४. आपत्ति या दोष से बचा हुआ। बेदाग़। ५. रहित। वंचित। विहीन। खाली। ६. धनहीन। ७. जड़। मूर्ख। अपढ़। अकिंचन। ८. केवल। सिर्फ़। ऊख के खेत की सिंचाई।
मुहा०—कोरी धार या बाढ़=हथियार की धार जिस पर अभी सान रखी गई हो। कोरा जवाब=स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार। साफ़ इनकार। कोरे रहना=निराश होना। मनोरथ पूरा न होना।
संज्ञा पुं० १. बिना किनारे की रेशमी धोती। २. उछंग। गोद।

कोरापन—संज्ञा पुं० १. अछूतापन। २. नवीनता।

कोरि—वि० दे० "कोटि"।
अ० खुरचकर। गोदकर।

कोरी—संज्ञा पुं० [स्त्री० कोरिन] १. कपड़ा बुननेवाली एक जाति २. हिन्दू जुलाहा।
वि० सादी। नवीन।

कोर्ट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अदालत। न्यायालय। कचहरी।

कोल—संज्ञा पुं० १. शूकर। सूअर। २. गोद। ३. बेर। बदरीफल। ४. तोले भर की तौल। ५. काली मिर्च। ६. दक्षिण भारत का एक प्राचीन राज्य। ७. एक जंगली जाति। ८. खाली। ९. खाल। १०. सँकरी गली। ११. पहाड़ियाँ। १२. चित्रक। १३. शनिग्रह। १४. कोरा।

कोलना—क्रि० स० खोदकर बीच में पोला करना।

कोला—संज्ञा पुं० दे० "कोल"।

कोलाहल—संज्ञा पुं० कलरव। शोरगुल। मनुष्यों या जानवरों की अस्पष्ट जोर की आवाज।

कोली—संज्ञा स्त्री० गोद।
संज्ञा पुं० १. कोरी। हिन्दू जुलाहा। २. कपड़े बनानेवाली एक छोटी जाति। ३. छोटी गली। ४. तन्तुवाय।

कोलियाना—क्रि० स० गोद में लेना।

कोल्हू—संज्ञा पुं० चरखी। तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र।
मुहा०—कोल्हू का बैल=बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना=बहुत अधिक कष्ट देना।

कोविद—वि० [स्त्री० कोविदा] विद्वान्। पंडित। ज्ञानी। अनुभवी। कवि। निपुण।

कोविदार—संज्ञा पुं० कचनार। एक प्रकार का वृक्ष।

कोश—संज्ञा पुं० १. तरल पदार्थ रखने का बर्त्तन। बाल्टी। प्याला। बक्स। खोल। २. अंडा। अंड। गोलक। ३. फूलों की बँधी कली। ४. गाड़ी का डिब्बा। ५. पंचपात्र नामक पूजा का बरतन। ६. तलवार, कटार आदि की म्यान। ७. खोल। आवरण। ८. वेदांत में निरूपित अन्नमय आदि पाँच आवरण जो

प्राणियों में होते हैं। ९. थैली। १०. एकत्रित धन। ११. अभिधान। वह ग्रंथ जिसमें शब्दार्थ दिये गये हों। १२. समूह। राशि। झुंड। १३. अंडकोश। १४. रेशम का कोया। कुसियारी। १५. कटहल आदि फलों का कोया। १६. भण्डार। खजाना।

कोशकार—संज्ञा पुं० १. शब्दकोश बनानेवाला। अर्थ-सहित शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करनेवाला। २. जो म्यान बनाए। ३. रेशम का कीड़ा।

कोशकीट—संज्ञा पुं० रेशम का कीड़ा।

कोशपाल—संज्ञा पुं० १. खजाने की रक्षा करनेवाला। खजांची। कोषाध्यक्ष। २. कुबेर की एक पदवी।

कोशल या कोशला—संज्ञा पुं० १. अयोध्या नगरी। २. सरयू नदी के किनारे स्थित उत्तर भारत का एक देश। ३. सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी। अयोध्या नगरी।

कोशलपुरी—संज्ञा स्त्री० अयोध्या।

कोशलाधीश—संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र। कोशल के राजा।

कोशलावृद्धि—संज्ञा स्त्री० १. अंडकोश-वृद्धि का रोग। २. धन की बढ़ती।

कोशवृद्धि—संज्ञा स्त्री० अंडकोश बढ़ने की बीमारी।

कोशांड—संज्ञा पुं० अंडकोश।

कोशांबी—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशांबी"।

कोशागार—संज्ञा पुं० धन रखने का स्थान। खजाना।

कोशाधिपति—संज्ञा पुं० खजांची। कोषाध्यक्ष।

कोशिश—संज्ञा स्त्री० उपाय। प्रयत्न। चेष्टा।

कोष—संज्ञा पुं० खजाना। धन एकत्रित करने का स्थान।

कोषाध्यक्ष—संज्ञा पुं० १. खजांची। २. जमा धन का हिसाब-किताब रखनेवाला अधिकारी। ३. भंडारी।

कोष्ठ—संज्ञा पुं० १. भीतरी हिस्सा। उदर का मध्य भाग। पेट का भीतरी भाग। शरीर का कोई भीतरी भाग। जैसे—पक्वाशय, गर्भाशय आदि। २. घर का भीतरी भाग। कोठा। ३. गोला। ४. भंडार। कोश। ५. खाना। ६. चहारदीवारी। ७. अन्न एकत्रित करने का स्थान। खजाना।

कोष्ठक—संज्ञा पुं० १. खाना। कोठा। किसी वस्तु से घिरा स्थान। २. सारिणी। किसी तरह का चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों। ३. लिखने में एक तरह के चिह्नों का जोड़ा जिसके अंदर कुछ लिखा जाय। जैसे [], {}, ()।

कोष्ठबद्ध—संज्ञा पुं० १. मलावरोध। कब्ज। २. पेट की बीमारी।

कोष्ठागार—संज्ञा पुं० भंडार। कोष। खजाना।

कोष्ठी—संज्ञा स्त्री० १. जन्मपत्री। २. कुंडली।

कोस—संज्ञा पुं० दो मील की दूरी। दूरी की एक नाप।

मुहा०—कोसों या काले कोसों=बहुत दूर। कोसों दूर रहना=अलग रहना।

कोसना—क्रि० स० शाप देना। बातों से दुखी करना। गालियाँ देना।

मुहा०—पानी पी-पीकर कोसना=बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना=शाप और गाली देना।

कोसा—संज्ञा पुं० [स्त्री० कोसिया] १. एक प्रकार का रेशम। २. छीमी। फली। ३. मिट्टी का बड़ा दीया। कसोरा।

कोसा-काटी—संज्ञा स्त्री० शाप। गाली। बददुआ।

कोसिला‡—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।

कोसी—संज्ञा स्त्री० एक नदी। कौशिकी।

कोहँड़ौरी—संज्ञा स्त्री० उर्द की पीठी और कुम्हड़े के गूदे से बनाई हुई बरी। कुम्हड़ौरी।

कोह—संज्ञा पुं० [फा०] १. शैल। पहाड़। पर्वत। २. कोप। रोष। क्रोध। गुस्सा। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

कोहनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुहनी"। बाँह के बीच की गाँठ।

कोहनूर–संज्ञा पुं० मुगल कालीन भारत का प्रसिद्ध हीरा।

कोहबर–संज्ञा पुं० १. देवगृह। ऐसा घर जिसमें विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं। २. कौतुकगृह। ३. विवाह के बाद वरवधू के बैठने के लिए सजा हुआ घर।

कोहरा–संज्ञा पुं० कुहासा। कुहरा।

कोहल–संज्ञा पुं० १. मुनि-विशेष। २. नाट्यशास्त्र के प्रथम प्रणेता। ३. प्राकृत व्याकरण के एक विशेषज्ञ। ४. संगीत विषय के एक लेखक। ५. एक प्रकार का मादक द्रव्य। ६. अस्पष्ट बोली।

कोहान–संज्ञा पुं० ऊँट की पीठ पर का कूबड़ या डिल्ला।

कोहाना–*†क्रि० अ० १. रूठना। मान करना। २. नाराज होना। ३. क्रोध करना। गुस्सा होना। ४. खिसियाना।

कोहाब–संज्ञा पुं० १. क्रोध। कोप। २. रूठना। मान करना।

कोहिस्तान–संज्ञा पुं० पहाड़ी प्रदेश।

कोही–वि० क्रोधी। क्रोध करनेवाला। वि० [फा०] पहाड़ी।

कौंच–संज्ञा स्त्री० केवाँच। एक प्रकार की बेल-विशेष। कपिकच्छु।

कौंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

कौंतय–संज्ञा पुं० १. कुंती के पुत्र। २. अर्जुन का पेड़।

कौंता–संज्ञा स्त्री० कुन्ती। पाण्डवों की माता।

कौंती–संज्ञा पुं० कुन्तधारी। भाला धारण करनेवाला।

कौंतेय–संज्ञा पुं० १. कुन्ती के पुत्र। २. पाण्डव। ३. अर्जुन।

कौंध–संज्ञा स्त्री० १. बिजली की चमक। २. प्रकाश। दीप्ति। ३. प्रताप।

कौंधना–क्रि० अ० बिजली का चमकना।

कौंधा–संज्ञा स्त्री० १. बिजली। विद्युत्। २. चमक।

कौंधनी–संज्ञा स्त्री० करधनी।

कौंला–संज्ञा पुं० १. मीठा नीबू। नारंगी। २. कमला।

कौ–विभक्ति (कर्म कारक) को।

कौआ–संज्ञा पुं० दे० "कौवा"। काग। काक।

कौआना†–क्रि० अ० १. अचानक बड़बड़ करना। २. सोते में बर्राना। ३. भौंचक्का होना। चकपकाना।

कौटिल्य–संज्ञा पुं० १. कपट। कुटिलता। चालाकी। २. चाणक्य का एक नाम।

कौटुंबिक–वि० १. कुटुंब-संबंधी। कुटुम्ब का। २. परिवार-संबंधी।

कौड़ा–संज्ञा पुं० १. शंख-विशेष। बड़ी कौड़ी। २. जाड़े के दिनों में तापने के लिए जलाई हुई आग। अलाव।

कौंडिन्य–संज्ञा पुं० कुण्डिन मुनि का पुत्र। विष्णुगुप्त। चाणक्य।

कौड़िया–वि० १. कुछ स्याही लिये हुए सफ़ेद। २. कौड़ी के रंग का। संज्ञा पुं० किलकिला पक्षी।

कौड़ियाला–वि० हलका नीला रंग जिसमें गुलाबी की कुछ झलक हो। कौड़ी के रंग का। कोकई।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रंग। २. कंजूस धनाढ्य। ३. एक प्रकार का विषैला सर्प। ४. पौधा-विशेष जिसमें छोटे-छोटे फूल लगते हैं। ५. कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला। ६. सरयू नदी।

कौड़ियाही–संज्ञा स्त्री० मजदूरी की रीति-विशेष जिसमें प्रतिखेप कुछ कौड़ियाँ दी जाती हैं।

कौड़िल्ला–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष जो मछली खाता है। किलकिला।

कौड़ी–संज्ञा स्त्री० १. घोंघे की जाति का एक समुद्री जीव। वराटिका। कर्पादिका। २. धन। द्रव्य। ३. कमाई। रुपया-पैसा। ४. वह कर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओं से लेता है। ५. आँख का डेला। ६. छाती के नीचे बीचोंबीच की वह छोटी हड्डी जिस पर सबसे नीचे की दोनों पसलियाँ मिलती हैं। ७. कटार की नोक। ८. जंघे, काँख या गले की गिल्टी।

मुहा०—कौड़ी काम का नहीं=निकृष्ट। निकम्मा। कौड़ी का, या, दो कौड़ी का=१. तुच्छ। निकम्मा। जिसका कुछ मूल्य न हो। २. निकृष्ट। बुरा। खराब। कौड़ी के तीन तीन होना=१. बहुत सस्ता होना। २. तुच्छ होना। ना-चीज होना। बेकदर होना। कौड़ी कौड़ी अदा करना, चुकाना या भरना=सारा ऋण चुका देना। कुल बेबाक कर देना। कौड़ी कौड़ी जोड़ना=बहुत थोड़ा-थोड़ा करके धन एकत्र करना। बड़े कष्ट से रुपया बटोरना। कौड़ी भर=जरा सा। बहुत थोड़ा सा। कानी या झंझी कौड़ी=१. टूटी या फूटी कौड़ी। २. बहुत थोड़ा धन। चित्ती कौड़ी=वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें हों। (इसका व्यवहार जुए में होता है)

कौणप—संज्ञा पुं० १. राक्षस। दैत्य। २. अधर्मी। पापी। ३. निशाचर।

कौतिग*‡—संज्ञा पुं० दे० "कौतुक"।

कौतुक—संज्ञा पुं० [वि० कौतुकी] १. कुतूहल। २. अचंभा। आश्चर्य। ३. परिहास। विनोद। दिल्लगी। ४. उत्सव। खेल-तमाशा। खेलकूद। ५. आनंद। प्रसन्नता। हर्ष।

कौतुकिया—संज्ञा पुं० १. खिलवाड़ करने वाला। २. खिलाड़ी। नट। ३. विवाह-संबंध करानेवाला, नाऊ या पुरोहित।

कौतुकी—वि० १. खिलवाड़ करनेवाला। परिहास करनेवाला। विनोदशील। २. विवाह संबंध करानेवाला। ३. खेल-तमाशा करानेवाला। ४. हर्षाभिलाषी। ५. रसिक।

कौतूहल—संज्ञा पुं० दे० "कुतूहल"। १. आश्चर्य। २. विस्मय। ३. हर्ष। ४. कौतुक।

कौथ—वि० १. कौनसी तिथि? कौन तारीख? २. कैसा संबंध? कैसा प्रयोजन?

कौथा†वि० १. गिनती में किस स्थान या संख्या का। २. किस संख्या का?

कौन—सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम।

मुहा०—कौन सा=कौन, कैसा? कौन होना=१. क्या अधिकार रखना? २. क्या मतलब रखना? ३. संबंध या रिश्ते में क्या लगना?

कौनप—संज्ञा पुं० दे० "कौणप"।

कौप—वि० कूपोदक। कूप संबंधी जल।

कौपीन—संज्ञा पुं० १. संन्यासियों के पहनने की लँगोटी। चीर। काछा। २. शरीर के वे अंग जो कौपीन से ढक जायँ। ३. पाप। अनुचित कर्म।

क़ौम—संज्ञा स्त्री० जाति। वर्ण।

कौमार—संज्ञा पुं० [स्त्री० कौमारी] १. कुमार अवस्था। पाँच वर्ष तक की शैशवावस्था। २. कुमार। ३. १६ वर्ष तक की अविवाहित अवस्था।

कौमारभृत्य—संज्ञा पुं० धाय का काम। बच्चों के लालन-पालन और चिकित्सा आदि की विद्या।

कौमारी—संज्ञा स्त्री० १. सात मातृकाओं में से एक। २. किसी पुरुष की पहली स्त्री। ३. कार्तिक की शक्ति। ४. पार्वती। ५. वाराही कन्द।

क़ौमी—वि० जातीय। जाति का। जाति-संबंधी।

कौमुदी—संज्ञा स्त्री० १. ज्योत्स्ना। चन्द्रिका। चाँदनी। जुन्हैया। २. कार्त्तिकी पूर्णिमा। ३. आश्विनी पूर्णिमा। ४. कोंई। कुमुदिनी। ५. संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

कौमोदी, कौमोदकी—संज्ञा स्त्री० विष्णु की गदा का नाम। श्रीकृष्ण की गदा।

कौर—संज्ञा पुं० १. कवल। मुँह में भोजन डालना। ग्रास। गस्सा। २. चक्की में पीसने के लिए एक बार में डाला जाने वाला अनाज।

मुहा०—मुँह का कौर छीनना=देखते देखते किसी दूसरे का हिस्सा ले लेना।

कौरना†—क्रि० स० १. सेंकना। २. थोड़ा भूनना। ३. गरम करना।

कौरव—संज्ञा पुं० [स्त्री० कौरवी] १. कुरुदेश का निवासी। २. कुरु राजा की संतान। कुरु-वंशज।

वि० [स्त्री० कौरवी] कुरु-संबंधी।

कौरवपति—संज्ञा पुं० दुर्योधन।

कौरव्य—संज्ञा पुं० १. कुरुराज का वंश। २. मुनि-विशेष। ३. महाभारत में वर्णित एक नगर।

कौरा—संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। २. द्वार का वह भाग जिससे दरवाजा खुला रहने पर किवाड़ चिपटे रहते हैं।

कौरी—संज्ञा स्त्री० १. अँकवार। गोद। २. आलिंगन। ३. कोना।

कौलंज—संज्ञा पुं० वायसूल। पसलियों के नीचे का दर्द।

कौल—संज्ञा पुं० १. जो अच्छे वंश में पैदा हुआ हो। कुलीन। अच्छे खानदान का। २. ब्रह्म-ज्ञानी। ३. वाममार्गी।

संज्ञा पुं० ग्रास। कौर। कवल।

क़ौल—संज्ञा पुं० १. कथन। उक्ति। २. वाक्य। ३. प्रण। प्रतिज्ञा। वादा।

यौ०—कौल करार=दृढ़ प्रतिज्ञा।

कौलटेय—संज्ञा० पुं० कुलटा का पुत्र।

कौलव—संज्ञा पुं० एकादश करणों का तीसरा करण।

कौलिक—वि० कुल की परंपरा के अनुसार। संज्ञा पुं० १. पाखंडी। २. शाक्त मत का अनुयायी। ३. तांती। तंतुवाय।

कौली—संज्ञा स्त्री० गोदी।

कौलेय—संज्ञा पुं० कुत्ता। कूकुर।

कौलेली—संज्ञा पुं० गन्धक।

कौवा—संज्ञा पुं० (स्त्री० कौवी) १. काला पक्षी-विशेष। काक। कौवा। काग। २. काइयाँ। बहुत धूर्त मनुष्य। ३. बँडेरी के सहारे के लिए लगाई जानेवाली लकड़ी। कौहा। बहुवाँ। ४. घाँटी। गले के अंदर, तालू के बीच का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा। ५. लंगर। ललरी। ६. मछली-विशेष जिसका मुंह बगले की चोंच की तरह होता है।

यौ०—कौवा गुहार या कौवा रोर=१. बहुत अधिक बकबक। २. गहरा शोरगुल।

कौवाठोंठी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता जिसके फूल नीले और सफेद रंग के तथा आकार कौवे की चोंच की तरह होता है। काकतुंडी। काकनासा।

क़ौवाल—संज्ञा पुं० जो कौवाली गाना गाता हो।

क़ौवाली—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गाना। २. इस धुन में गाई जानेवाली गजल। ३. कौवालों का धंधा।

कौवेर—संज्ञा पुं० १. कुबेर संबंधी। २. कूट नामक औषध। ३. उत्तर दिशा।

कौवेरी—संज्ञा स्त्री० १. उत्तर दिशा। २. कुबेर की शक्ति।

कौशल—संज्ञा पुं० १. दक्षता। हुनर। कार्य करने का गुण। निपुणता। चतुराई। २. मंगल। ३. कोशल देश का रहने-वाला।

कौशली—संज्ञा स्त्री० जुहार। कुशल प्रश्न।

कौशलेय—संज्ञा पुं० रामचंद्र।

कौशल्या—संज्ञा स्त्री० १. कौशल राज्य की कन्या, दशरथ की पटरानी, रामचन्द्र की माता। २. पुरुराज की पत्नी। ३. धृत-राष्ट्र की पत्नी। ४. पंचमुखी आरती।

कौशांबी—संज्ञा स्त्री० भारत की एक अति प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। वत्सपट्टन।

कौशिक—संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. कौशिक वंश में उत्पन्न। ३. विश्वामित्र। ४. कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ५. कोशकार। ६. कोषाध्यक्ष। ७. शृंगार रस। ८. रेशमी वस्त्र ९. उपपुराण-विशेष। १०. हनुमत् के मत से ६ रागों में से एक। ११. उल्लू। १२. नेवला। १३. गुप्त धन को जाननेवाला। १४. शिव।

कौशिकी—संज्ञा स्त्री० १. चंडिका। २. राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री। ३. काव्य या नाटक में सरल वर्णवृत्ति जिसमें करुण, हास्य और शृंगार रस हो। ४. एक रागिनी। ५. बिहार की कुशी नदी का पुराना नाम। ६. दुर्गा का एक नाम। ७. एक प्रकार की नाटयशैली।

कौशिल्य—संज्ञा पुं० एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

कौशेय–वि० १. रेशमी । रेशम का । २. पीतांबर । पटवस्त्र ।
कौषिकी–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशिकी" ।
कौषीतकी–संज्ञा स्त्री० १. ऋग्वेद की शाखा-विशेष । २. ऋग्वेद के अंतर्गत ब्राह्मण और उपनिषद्-विशेष ।
कौसल*–संज्ञा पुं० दे० "कौशल" ।
कौसिक*–संज्ञा पुं० दे० "कौशिक" ।
कौसिला*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या" ।
कौसुंभ–संज्ञा पुं० १ वनकुसुम । २. एक प्रकार का कोमल शाक ।
कौस्तुभ–संज्ञा पुं० १. पुराण के अनुसार समुद्र-मंथन से निकला हुआ मणि, जिसे विष्णु भगवान् अपने वक्षःस्थल पर पहने रहते हैं । २. एक प्रकार का तेल । ३. अंगुलियों को जोड़ने का एक तरीका ।
क्या–सर्व० प्रश्नवाचक शब्द, विशेषण । कौन वस्तु या बात ?
मुहा०—क्या कहना है या क्या खूब !—प्रशंसासूचक वाक्य । वाह-वा ! धन्य ! बहुत अच्छा है ! क्या कुछ, क्या क्या कुछ=बहुत कुछ । सब कुछ । क्या चीज़ है !=१. नाचीज़ है । तुच्छ है । २. बहुत अच्छी चीज है । क्या जाता है !=कुछ हानि नहीं । क्या नुक़सान होता है ? क्या जानें !=कुछ नहीं जानते । ज्ञात नहीं । मालूम नहीं । क्या पड़ी है ?=क्या आवश्यकता है ? और क्या=हाँ ऐसा ही है । हाँ इसी प्रकार ।
वि० १. कितना ? किस क़दर ? २. बहुत अधिक । ३. अनोखा । अपूर्व । ४. कैसा उत्तम ! बहुत अच्छा ।
क्रि० वि० क्यों ? किस लिए ?
अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द ।
क्यारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी" । मेंड़ । उपवन । खेत का विभाग ।
क्यों–क्रि० वि० १. किस कारण ? किस लिए ? कारण की जिज्ञासा करने का शब्द । *२. किस प्रकार ? किस भाँति ?
यौ० क्योंकि=इसलिए कि । इस कारण कि ।
मुहा०–क्योंकर=कैसे ? किस प्रकार ? क्यों नहीं !=१. हाँ ऐसा ही है । ठीक कहते हो । निःसंदेह । अवश्य, बेशक । २. हाँ । जरूर । ३. कभी नहीं । मैं ऐसा नहीं कर सकता ।
क्रंदन–संज्ञा पुं० १. रोना । विलाप । २. चिल्ला-चिल्लाकर रोना । ३. आँसू गिराना । ४. ललकारना ।
क्रंदनकारी–वि० विलाप करनेवाला ।
क्रकच–संज्ञा पुं० १. ज्योतिष में अशुभ योग-विशेष । २. करील का वृक्ष कर-पत्र । ३. आरा । करवत । ४. नरक-विशेष । ५. गणित की एक विशेष क्रिया ।
क्रतु–संज्ञा पुं० १. संकल्प । निश्चय । २. अभिलाषा । इच्छा । ३. प्रज्ञा । विवेक । ४. जीव । ५. इंद्रिय । ६. यज्ञ, विशेषतः अश्वमेध । ७. विष्णु । ८. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से हैं । ९. आषाढ़ मास । १०. कृष्ण के एक पुत्र का नाम । ११. प्लक्ष द्वीप की एक नदी ।
यौ०–क्रतुपति=विष्णु क्रतुफल=यज्ञ का फल, स्वर्ग आदि ।
क्रतुद्वेषी–संज्ञा पुं० १. असुर । दानव । दैत्य । २. नास्तिक ।
क्रतुध्वंसी–संज्ञा पुं० (दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करनेवाले) शिव । महादेव ।
क्रतुपशु–संज्ञा पुं० घोड़ा ।
क्रतुपुरुष–संज्ञा पुं० नारायण । विष्णु ।
क्रतुभुज–संज्ञा पुं० देवता । देव ।
क्रतुविक्रयी–संज्ञा पुं० धन लेकर यज्ञ का फल बेचनेवाला ।
क्रतुमाली–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष । किरवाली ।
क्रथन–संज्ञा पुं० १. सफेद चन्दन । ऊँट ।
क्रम–संज्ञा पुं० १. पैर रखने या डग भरने की क्रिया । २. परिपाटी, शैली । पूर्वापर-संबंधी व्यवस्था । तरतीब । सिलसिला । ३. काम ठीक से धीरे-धीरे करने की प्रणाली ।
मुहा०–क्रम-क्रम करके=शनैः-शनैः । धीरे-

धीरे। क्रम से, क्रम-क्रम से=धीरे-धीरे। ४. वेद-पाठ की एक रीति। ५. वैदिक विधान। किसी काम के पीछे कौन कार्य करना चाहिए, इसकी व्यवस्था। कल्प। ६. काव्यालंकार-विशेष। ७. अनुक्रम। ८. भाँति ९. शक्ति। १० आक्रमण। ११. चलन। रीति।
*संज्ञा पुं० दे० "कर्म"।

क्रमण–संज्ञा पुं० १. पैर। २. पाँव। ३. पारे के जो अठारह संस्कार हैं, उनमें से एक।

क्रमनासा*–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।

क्रमभंग–संज्ञा पुं० १. नियम के विरुद्ध। २. विधिहीनता। ३. साहित्य का एक दोष।

क्रमयोग–संज्ञा पुं० विधि-नियोग।

क्रमशः–क्रि० वि० १. क्रम से। सिलसिलेवार। २. धीरे-धीरे। थोड़ा-थोड़ा करके। शनैः-शनैः।

क्रमसंन्यास–संज्ञा पुं० वह संन्यास जो क्रम से ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जाता है।

क्रमागत–वि० १. क्रम से किसी रूप को प्राप्त। २. परंपरागत। जो सदा से होता आया हो। ३. क्रमान्वय।

क्रमात्–क्रि० वि० क्रम या सिलसिले से। यथाक्रम। क्रम-क्रम से। धीरे-धीरे।

क्रमानुकूल*–क्रमानुसार–वि०, क्रि० वि० क्रम से। श्रेणी के अनुसार। नियमानुसार। सिलसिलेवार। तरतीब से।

क्रमानुयायी*–वि० १. क्रम के अनुसार। २. व्यवस्थित। एक के बाद एक। ३. नियमानुकूल।

क्रमान्वय–वि० "क्रमानुयायी"।

क्रमिक–क्रि० वि० १. क्रम से। क्रमागत। २. परंपरागत। ३. क्रमशः।

क्रमुक–संज्ञा पुं० १. सुपारी। २. कसैली। ३. नागरमोथा। ४. कपास का फल। ५. पठानी लोध।

क्रमेल, क्रमेलक–संज्ञा पुं० ऊँट।

क्रय–संज्ञा पुं० मोल लेना। खरीदने का काम। खरीदना।

यौ०–क्रय-विक्रय=व्यापार। खरीदना और बेचना।

क्रयक्रीत–वि० खरीदा हुआ। मोल लिया हुआ।

क्रयणीय–वि० खरीदने लायक। मोल लेने योग्य। क्रेय।

क्रयिक–संज्ञा पुं० क्रेता। मोल लेनेवाला। खरीदार।

क्रयी–संज्ञा पुं० क्रय करनेवाला। खरीदनेवाला।

क्रय्य–वि० जो बिके। बेचने के लिए रखी हुई वस्तु। जो वस्तु बेचने के लिए हो।

क्रव्य–संज्ञा पुं० मांस। गोश्त।

क्रव्याद–संज्ञा पुं० १. मांस-भक्षक जीव। २. मांसाहारी। चिता की आग। ३. मांस खानेवाला जीव।

क्रांत–वि० १. दबा या ढका हुआ। २. ग्रस्त। जिस पर आक्रमण हुआ हो। ३. आगे बढ़ा हुआ। जैसे—सीमाक्रांत। ४. दबाया गया।

क्रांतदर्शी–संज्ञा पुं० सब जाननेवाला। ईश्वर।

क्रांति–संज्ञा स्त्री० १. गति। आगे बढ़ना। २. खगोल के बीच में एक कल्पित रेखा। ३. फेरफार। उलटफेर। ४. भारी परिवर्त्तन। अपक्रम। जैसे–राज्य-क्रांति। ५. आक्रमण। ६. उपद्रव। अत्याचार। ७. सूर्य का मार्ग। ८. दीप्ति। प्रकाश।

क्रांतिमंडल–संज्ञा पुं० १. वह वृत्त जिसपर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है। २. राशिचक्र।

क्रांतिवृत्त–संज्ञा पुं० सूर्यपथ। सूर्य का मार्ग।

क्राइस्ट–संज्ञा पुं० ईसा मसीह।

क्रिकेट–संज्ञा पुं० गेंद-बल्ले का एक अंग्रेजी खेल।

क्रिचयन*†–संज्ञा पुं० चांद्रायण व्रत-विशेष।

क्रिमि–संज्ञा पुं० दे० १. "कृमि"। २. पेट का एक रोग। कीड़ी।

क्रिमिजा–संज्ञा स्त्री० लाख। लाह।

क्रिय–संज्ञा स्त्री० मेष राशि।

क्रियमाण–वि० १. किया जानेवाला। ऐसा कार्य जो किया जा रहा हो। २. वर्त्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा। ३. प्रारब्ध कर्म। चार प्रकार के कर्मों का एक भेद।

क्रिया–संज्ञा स्त्री० १. कर्म। किसी काम का होना या किया जाना। २. चेष्टा। प्रयत्न। ३. गति। ४. अनुष्ठान। ५. आरंभ। ६. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय। जैसे—आना, मारना। ७. व्यवहार। ८. शौच आदि कर्म। नित्यकर्म। ९. श्राद्ध-आदि कर्म। १०. शपथ। ११. उपाय। १२. विधि। १३. उपचार। चिकित्सा।

यौ०–क्रिया-कर्म=अंत्येष्टि-क्रिया।

क्रियाकांड–संज्ञा पुं० कर्मकांड।

क्रियाकार–संज्ञा पुं० काम करनेवाला।

क्रियाकर्त्तकी–कार्य करनेवाला।

क्रियाकलाप–१. किसी प्रकार का कार्य। २. किसी कार्य के सब अंग।

क्रियाचतुर–संज्ञा पुं० १. क्रिया, काम या घात में चतुर नायक। २. शृंगार रस में नायक का एक भेद।

क्रियातिपत्ति–संज्ञा स्त्री० काव्यालंकार-विशेष जिसमें प्रकृति से भिन्न, कल्पना करके, किसी विषय का वर्णन किया जाय। अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद।

क्रियात्मक–वि० कार्य के रूप में किया हुआ। करके दिखलाया गया।

क्रियानिष्ठ–वि० १. कर्मशील। २. संध्या, तर्पण-आदि नित्य कर्म करनेवाला।

क्रियान्वित–वि० कर्मान्वित।

क्रियापटु–वि० चतुर। प्राज्ञ। दक्ष। विदग्ध।

क्रियापथ–चिकित्सा-विधि। औषध प्रयोग करने का ढंग।

क्रियापर–वि० १. कर्मठ। २. सुकर्मा। ३. पटु।

क्रियापाद–संज्ञा पुं० १. चतुष्पाद। २. व्यवहार का तीसरा पाद। ३. साक्षियों का शपथ करना।

क्रियायोग–संज्ञा पुं० १. योग दर्शन के अनुसार दैनिक पूजन इत्यादि। २. कार्य-कौशल।

क्रियारूप–संज्ञा पुं० धातुरूप, आख्यात।

क्रियार्थ–संज्ञा पुं० वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि-वाक्य।

क्रियालोप–संज्ञा पुं० कर्म में विरक्ति। कर्म-निवृत्ति।

क्रियावसन्त–वि० पराजित।

क्रियावान्–वि० १. कर्मठ। कर्म में लगा हुआ। कर्मनिष्ठ। कार्य करनेवाला। २. कर्म में नियुक्त।

क्रियाविदग्धा–संज्ञा स्त्री० नायक पर किसी क्रिया-द्वारा अपना भाव प्रकट करनेवाली नायिका।

क्रिया-विशेषण–संज्ञा पुं० अव्यय शब्द। व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव का बोध हो। जैसे–कैसे, धीरे, क्रमशः, अचानक इत्यादि।

क्रिस्तान–संज्ञा पुं० ईसाई धर्म माननेवाला।

क्रिस्तानी–वि० १. ईसाई-मत के अनुसार। २. ईसाइयों का।

क्रीट*†–संज्ञा पुं० दे० "किरीट"। मुकुट। सिर पर धारण किया जाने वाला गहना।

क्रीडनक–संज्ञा पुं० १. खेल। २. खेलने की वस्तु।

क्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० १. आमोद-प्रमोद। खेल-कूद। २. कौतुक। ३. एक प्रकार का छंद।

क्रीड़ामृग–संज्ञा पुं० खेल के पशु। बानर आदि।

क्रीड़ावन–संज्ञा पुं० प्रमोदवन। केलिकानन।

क्रीड़ित–वि० क्रीड़ा किया गया। क्रीड़ा के काम में आया हुआ। जिससे क्रीड़ा की जाय।

क्रीड़ाचक्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का छंद। २. अत्यन्त प्रसन्न करनेवाला।

क्रीत–वि० १. मोल लिया हुआ। २. खरीदा गया।

संज्ञा पुं० १. दे० "क्रीतक"। २. मोल लिया हुआ दास।

क्रीतक–संज्ञा पुं० माता-पिता को धन देकर उनसे मोल लिया गया पुत्र।
क्रीतपुत्र–संज्ञा पुं० बारह प्रकार के पुत्रों में से एक।
क्रुद्ध–वि० क्रोधित । क्रोध में भरा हुआ।
क्रुमुक–संज्ञा पुं० सुपारी । पूंगीफल।
क्रुश्वा–संज्ञा पुं० शृगाल । सियार।
क्रूर–वि० (स्त्री० क्रूरा) १. परद्रोही। दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाला । २. निर्दय। नृशंस, जंगली, अशुभ, आहत, खूनी, शक्तिशाली, गरम, तेज। ३. तीक्ष्ण। तेज। ४. कठिन ।
संज्ञा पुं० प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम, और एकादश राशि, मति, लाल कनेर, बाज पक्षी, सफेद चील, रवि, मंगल, शनि, राहु, केतु। (संस्कृत क्रूर के अर्थ में।)
क्रूरकर्मा–संज्ञा पुं० १. क्रूर काम करनेवाला। भयंकर कार्य करनेवाला। २. सूरजमुखी। ३. तितलौकी की बेल।
वि० दुरात्मा।
क्रूरगंध–संज्ञा पुं० १. तीखा गंध। २. गन्धक।
क्रूरग्रह–संज्ञा पुं० १. रवि। २. मंगल। ३. शनि । ४. राहु। ५. केतु। ६. विषम राशि।
क्रूरता–संज्ञा स्त्री० १. कठोरता। निष्ठुरता। निर्दयता । २. दुष्टता।
क्रूरलोचन–संज्ञा पुं० १. शनिग्रह । २. शनैश्चर। निर्मोही आँखें।
क्रूरस्वर–संज्ञा पुं० १. कर्कश ध्वनियुक्त । २. भयंकर शब्द।
क्रूराकार–संज्ञा पुं० १. रावण। २. भयंकर आकार।
क्रूराचार–वि० भयानक । नृशंस । निष्ठुर।
क्रूरात्मा–वि० दुष्ट स्वभाववाला।
क्रूस–ईसाइयों का धर्म-चिह्न जो उस शूली का सूचक है जिस पर ईसा मसीह चढ़ाये गये थे।
क्रेतव्य–वि० क्रेय वस्तु । खरीदने योग्य। वस्तु मोल लेने योग्य।
क्रेता–संज्ञा पुं० क्रय करनेवाला। मोल लेनेवाला । खरीददार।
क्रेय–वि० खरीदने योग्य।
क्रोड़–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के मध्य में। आलिंगन में। दोनों बाँहों के बीच का भाग। २. अँकवार । गोद। वक्षःस्थल । ३. पेड़ का खोड़रा।
क्रोड़पत्र–संज्ञा पुं० १. नत्थी किया हुआ पत्र। २. एक पत्र के बाद उसके साथ ही दूसरा पत्र। ३. अतिरिक्त पत्र। दान-पत्र का परिशिष्ट या उसके साथ नत्थी किया हुआ पत्र। ४. जमीमा। ५. परिशिष्ट, पूरक।
क्रोध–संज्ञा पु० १. कोप। रोष। गुस्सा। अमर्ष। चित्त का उग्र भाव, जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। महाभारत में वर्णित एक दानव। २. ब्रह्मा के भौंह से उत्पन्न। ३. साठ संवत्सरों में उनसठवाँ संवत्सर। बृहस्पति के साठ वर्ष के चक्र का ५९ वाँ।
क्रोधज–संज्ञा पुं० मोह।
क्रोधन–संज्ञा पु० १. क्रोधी । क्रोधयुक्त। २. कौशिक के एक पुत्र का नाम। ३. अयुत के पुत्र और देवातिथि के पिता का नाम । ४. एक संवत्सर का नाम।
क्रोध-मूर्च्छित–वि० अतिकोपी । क्रोध से मूर्च्छित। गुस्से में बेहोश।
क्रोधांध–वि० क्रोध से अंधा।
क्रोधातुर–वि० क्रोधी।
क्रोधित–वि० क्रुद्ध । कुपित। नाराज।
क्रोधी–वि० [स्त्री० क्रोधिनी] १. क्रोध करनेवाला, क्रोधयुक्त । गुस्सावर। २. रागी।
क्रोश–संज्ञा पुं० १. कोस। २ मील। चीख। चिल्लाना, शोर।
क्रोष्टा–संज्ञा पुं० शृगाल। सियार। गीदड़।
क्रौंच–संज्ञा पुं० १. वक पक्षी। २. हिमालय का एक पर्वत। ३. एक राक्षस। ४. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक । ५. अस्त्र-विशेष । ६. वर्णवृत्ति-विशेष । ७. एक राक्षस का नाम।
क्रौर्य–संज्ञा पुं० क्रूरता । निष्ठुरता।
क्लब–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) आमोद-प्रमोद या

सार्वजनिक विषयों पर विचार के लिए बनी संस्था या समिति।

क्लर्क–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) कार्यालय का मुंशी। दफ्तर का बाबू।

क्वण–संज्ञा पुं० घुंघरू का शब्द। वीणा की झंकार।

क्लांतमना–वि० १. विषादयुक्त । २. उद्विग्नचित्त । ३. निरुत्साह।

क्लांतवदन–वि० उदास चेहरेवाला। थका हुआ।

क्लांत–थका हुआ। श्रांत। थका-माँदा।

क्लांति–संज्ञा स्त्री १. परिश्रम। २. थकावट। श्रम । श्रांति।

क्लांतिकर–वि० श्रमजनक। श्रांतिकर। थकावट उत्पन्न करनेवाला।

क्लांतिच्छिद–वि० विश्राम । स्वास्थ्य।

क्लिन्न–वि० आर्द्र। भीगा। सजल। गीला। मैला।

क्लिप–संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) कागज या बालों आदि को दबाने की कमानी।

क्लिशित–वि० दे० क्लेशित। १. क्लेशयुक्त। दुःखी। पीड़ित। २. क्लिष्ट।

क्लिश्यमान–वि० पीड़ित । दुखी।

क्लिष्टकर्मा–संज्ञा पुं० १. कठोर कर्म करनेवाला। २. पीड़ित।

क्लिष्ट–वि० १. दुःख से पीडित। दुखी। क्लेशयुक्त। २. कठिन, पूर्वापर-विरुद्ध (वाक्य)। ३. कठिनता से सिद्ध होने वाला। घायल। बुरी दशा में। पुराना। जल्दी समझ में न आनेवाला।

क्लिष्टता–संज्ञा स्त्री० १. क्लिष्ट का भाव। २. कठिनाई। ३. आपत्ति।

क्लिष्टत्व–संज्ञा पुं० १. क्लिष्टता। क्लिष्ट का भाव। २. कठिनाई। ३. काव्य का वह दोष जिससे भाव समझ में न आवे।

क्लीब–वि० १. नपुंसक। नामर्द। २. कायर। डरपोक। ३. पुरुषार्थ-हीन। ४. निर्बल। हिजड़ा।

क्लीवता–संज्ञा स्त्री० नपुंसक-भाव। दुर्बलता। पुरुषत्व का अभाव।

क्लीवत्व–संज्ञा पुं० नपुंसकता । नामर्दी।

क्लेद–संज्ञा पुं० १. आर्द्रता । गीलापन। ओदापन । २. पसीना। ३. मैल। क्रि० घाव बहना, सड़ना।

क्लेदक–संज्ञा पुं० १. पसीना पैदा करने वाला। २. शरीर में कफ़-विशेष, जिससे पसीना बनता है। ३. शरीर की दस प्रकार की अग्नियों में से एक। ४. राल की अधिकता।

क्लेदन–संज्ञा पुं० १. पसीना लाने की क्रिया। २. एक प्रकार का कफ़।

क्लेदित–वि० १. भींगा हुआ। आर्द्र। २. पसीने से भीगा हुआ।

क्लेश–संज्ञा पुं० १. यंत्रणा। दुःख। कष्ट। २. वेदना। व्यथा। ३. झगड़ा। लड़ाई। ४. उत्पात ५. भय।

क्लेशकर–वि० दुःखदायक। कष्टदायक। दुख देनेवाला।

क्लेशद–वि० दुःखकर। दुख देनेवाला।

क्लेशवान्–वि० १. आपत्तिग्रस्त। २. आपन्न। ३. दुर्गत। जिस पर दुख पड़े।

क्लेशापह–वि० क्लेश या दुख दूर करनेवाला। सान्त्वना या आश्वासन देनेवाला।

क्लेशित–वि० दुःखित । पीड़ित। जिसे क्लेश हो।

क्लैव्य–संज्ञा पुं० नपुंसकता। १. क्लीवता। २ दुर्बलता। ३. अनुत्साह। ४. मानसिक निर्बलता।

क्लोम–संज्ञा पुं० फुप्फुस। दाहिनी ओर का फेफड़ा।

क्लोरोफार्म–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) बेहोश करने की एक दवा।

क्वचित्–क्रि० वि० शायद ही कोई। बहुत कम। कोई ही। कुछ नहीं। कभी।

क्वण–संज्ञा पुं०. १. ध्वनि। २. वीणा आदि का शब्द।

क्वणित–वि० १. शब्द या गुंजार करता हुआ। २. बजता हुआ।

क्वाथ–संज्ञा पुं० काढ़ा। पानी में उबालकर ओषधियों का निकाला हुआ गाढ़ा रस। जोशाँदा। निर्यास।

क्वार—संज्ञा पुं० आश्विन महीना ।

क्वारपन—संज्ञा पुं० अविवाहित अवस्था । क्वारापन । क्वारा होने का भाव । कुमारपन ।

क्वारा—संज्ञा पुं०, वि० [स्त्री० क्वारी] अविवाहित । कुआरा ।

क्वारापन—संज्ञा पुं० दे० "क्वारपन" ।

क्वारेंटाइन—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) वह स्थान जहाँ बाहर से आये हुए लोग इसलिए कुछ समय तक रोक रखे जाते हैं कि उनके द्वारा कोई संक्रामक रोग देश में न फैले ।

यौ०—क्वारेंटाइन लीव—ऐसे सरकारी कर्मचारियों को, जिनको या जिनके घर में किसी को छूत की बीमारी हो, जबरदस्ती कुछ दिनों की छुट्टी देना ।

क्षंतव्य—वि० क्षम्म । क्षमा करने के योग्य ।

क्षई—स्त्री० क्षयरोग । कफ और खून के मुँह से निकलने की बीमारी—सूखी खांसी ।

क्षण—संज्ञा पुं० [वि० क्षणिक] १. लहमा । छन । काल या समय का सबसे छोटा भाग । पल का चतुर्थांश । २. काल । ३. अवसर । मौका । ४. समय । ५. पर्व का दिन । उत्सव ।

मुहा०—क्षण-मात्र=थोड़ी देर ।

क्षणद— संज्ञा पुं० १. जल । २. ज्योतिषी । ३. रतौंधिया । ४. जिसे रात में न दिखे ।

क्षणदांध—वि० १. रात के अन्धे । २.प्राणी-विशेष । ३. उल्लू ।

क्षणदा—संज्ञा स्त्री० रात्रि । निशा ।

क्षणदाकार—संज्ञा पुं० चन्द्रमा ।

क्षणद्युति—संज्ञा स्त्री० विद्युत । चपला । बिजली ।

क्षणध्वंसी—वि० अतिशय स्थिर । क्षणमात्र ही में नष्ट होनेवाला ।

क्षणप्रभा—संज्ञा स्त्री० चपला । बिजली ।

क्षणभंगुर—वि० अनित्य । विनाशी या क्षण भर में नष्ट होनेवाला ।

क्षणप्रति—अ० सतत । अनवरत । बराबर ।

क्षणरुचि—संज्ञा स्त्री० १. बिजली । २. चमक । प्रकाश ।

क्षणिक—वि० क्षणभंगुर । क्षण भर रहने-वाला । अनित्य ।

क्षणिका—संज्ञा स्त्री० बिजली ।

क्षणिकवाद—संज्ञा पुं० बौद्धों का सिद्धान्त-विशेष जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाली मानी जाती है ।

क्षणिनी—संज्ञा स्त्री० रात । निशा ।

क्षणेक—क्रि० वि० क्षण भर । बहुत थोड़ी देर तक ।

क्षत—वि० घाव लगा हुआ । जिसे चोट लगी हो, आहत । घायल ।

संज्ञा पुं० १. घाव । चोट । जख्म । २. व्रण । फोड़ा । ३. हानि या आघात पहुँचाना । ४. काटना । मारना ।

क्षतघ्नी—संज्ञा स्त्री० लाख । लाह ।

क्षतज—वि० १. क्षत से पैदा हुआ जैसे—क्षतज शोथ । २. घाव से उत्पन्न । लाल । सुर्ख ।

संज्ञा पुं० १. रुधिर । रक्त । खून । शोणित । लोहू । २. वह प्यास जो शरीर में घाव लगने पर लगती है ।

क्षतयोनि—वि० जिस स्त्री का पुरुष के साथ समागम हो चुका हो ।

क्षतरानी—संज्ञा स्त्री० क्षत्रियानी ।

क्षत-विक्षत—वि० बहुत चुटीला । जिसे बहुत चोटें लगी हों । घायल लहू-लुहान ।

क्षतव्रण—संज्ञा पुं० वह स्थान जो कटने या चोट लगने के बाद पक गया हो ।

क्षतव्रत—वि० नष्ट व्रत । जो व्रत भंग हो गया हो ।

क्षता—संज्ञा स्त्री० विवाह से पूर्व किसी पुरुष से अनुचित संबंधवाली कन्या ।

क्षति—संज्ञा स्त्री० १. हानि । २. अपकार अनिष्ट । ३. नाश । क्षय । अपचय । नुकसान । चोट । बरबादी । अवनति ।

क्षत्ता—संज्ञा पुं० १. सारथि । २. दरवान । ३. मछली । ४. शूद्र के औरस से क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न । ५ जाति-विशेष ।

६. दासी-पुत्र। ७ नियोग करनवाला पुरुष।
क्षत्र—संज्ञा पुं० १. बल। २. राष्ट्र। गण। राज्य। प्रदेश। ३. शरीर। शक्ति। ४. धन। प्रभुत्व। ५. जल। शासन-परिषद्।
क्षत्रकर्म—संज्ञा पुं० क्षत्रिय के योग्य कर्म।
क्षत्रधर्म—संज्ञा पुं० क्षत्रियों का धर्म। यथा—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजा-पालन करना आदि।
क्षत्रधारी—संज्ञा पुं० राजा। भूपाल।
क्षत्रप—संज्ञा पुं० ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि-विशेष, जो भारत के शक राजाओं ने ग्रहण की थी। एक प्रदेश का राज्यपाल (गवर्नर)।
क्षत्रपति—संज्ञा पुं० नृप। राजा।
क्षत्रबन्धु—संज्ञा पुं० १. सैनिक श्रेणी का व्यक्ति। २. निन्दित क्षत्रिय। ३. जो जन्म से क्षत्री, पर कर्म से क्षत्रिय नहीं।
क्षत्रयोग—संज्ञा पुं० १. ज्योतिष में राजयोग। २. राजघरानों का सम्बन्ध।
क्षत्रवेद—संज्ञा पुं० धनुर्वेद। क्षत्रियों का दिया हुआ सैन्य-शास्त्र।
क्षत्रांतक—संज्ञा पुं० परशुराम।
क्षत्रिन—स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री।
क्षत्रिय—संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी] १. क्षत्री। हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना था। २. राजा।
क्षत्रिया—संज्ञा स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री।
क्षत्रियाणी—संज्ञा स्त्री० क्षत्रिय-पत्नी। क्षत्रिय स्त्री जाति।
क्षत्री—संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय"।
क्षपणक—वि० १. निर्लज्ज। २. उन्मत्त। संज्ञा पुं० १. दिगंबर। यती। नंगा रहनेवाला जैन यती। २. बौद्ध संन्यासी। ३. बुद्ध-विशेष। ४. राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न।
क्षपा—संज्ञा स्त्री० १. रजनी। रात। रात्रि। २. हल्दी।
क्षपांत—संज्ञा पुं० प्रातःकाल। सवेरा। भोर।
क्षपाकर—संज्ञा पुं० १. शशि। चंद्रमा। २. कपूर।
क्षपाचर—संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षपाचरी] दैत्य। निशाचर। राक्षस।
क्षपानाथ—संज्ञा पुं० शशि। चंद्रमा। कलाधर।
क्षम—वि० १. योग्य। समर्थ। सशक्त। २. उपयुक्त। (यौगिक में) जैसे-कार्य्यक्षम। संज्ञा पुं० बल। शक्ति।
क्षमणीय—वि० क्षम्य। क्षमा करने योग्य।
क्षमता—संज्ञा स्त्री० १. योग्यता। २. शक्ति। सामर्थ्य।
क्षमना*—क्रि० स० १. क्षमा करना। २. सहना।
क्षमा—संज्ञा स्त्री० १. दया। कृपा। २. सहन करने की शक्ति-विशेष। सहनशीलता। सहिष्णुता। ३. एक की संख्या। ४. पृथ्वी। ५. दुर्गा। ६. दक्ष की एक कन्या। ७. तेरह वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति। ८. रात्रि। ९. राधिका की एक सखी।
क्षमापन—संज्ञा पुं० क्षमा करना। दोष-मुक्त करना। दयालुता। सहनशीलता।
क्षमालु—वि० क्षमावान्। क्षमाशील। क्षमा करनेवाला।
क्षमावान्—वि० [स्त्री० क्षमावती] १. क्षमा करनेवाला। २. सहनशील। ग़मखोर। ३. दयालु। ४. धैर्यशील। ५. सहिष्णु।
क्षमाशील—वि० १. क्षमावान्। जिस व्यक्ति में क्षमा करने का गुण हो। २. शांत-प्रकृति।
क्षमितव्य—वि० क्षमा करने योग्य। क्षम्य।
क्षमिता—वि० क्षमाशील। सहिष्णु। क्षंतव्य।
क्षमी—वि० १. क्षमाशील। क्षमावान्। २. शांत-प्रकृति।
वि० सशक्त। समर्थ।
क्षम्य—वि० क्षमा करने योग्य।
क्षय—संज्ञा पुं० १. क्रमशः घटना या नष्ट होना। २. सृष्टि का अन्त। कल्पान्त। ३. विनाश। ४. ह्रास। ५. अपचय।

६. प्रलय। ७. नाश। ८. घर। रहने का स्थान। मकान ९. क्षयी। यक्ष्मा नामक रोग। १०. अंत। ११. समाप्ति। १२. ज्योतिष विद्या के अनुसार मास-विशेष। १३. बृहस्पति के ६० वर्ष के चक्र का अन्तिम संवत्सर।

क्षयकाल–संज्ञा पुं० प्रलयकाल।

क्षयकास–संज्ञा पुं० राजरोग। यक्ष्मा।

क्षयथु–संज्ञा पुं० खाँसी।

क्षयपक्ष–संज्ञा पुं० कृष्णपक्ष।

क्षयमास–संज्ञा पुं० मलमास।

क्षयिष्णु–वि० जो क्षय या नष्ट हो।

क्षयी–वि० १. क्षय या नष्ट होनेवाला। २. जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो।
संज्ञा पुं० चंद्रमा। शशि।
संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें फेफड़ा खराब हो जाता है और सारा शरीर धीरे-धीरे गलने लगता है। यक्ष्मा। तपेदिक़।

क्षय्य–वि० क्षय होने के योग्य।

क्षर–वि० नष्ट होनेवाला। नाशवान्।
संज्ञा पुं० १. मेघ। २. जल। ३. शरीर। ४. जीवात्मा। ५. अज्ञान।

क्षरण–संज्ञा पुं० १. रसना। टपकना। चूना। २. झड़ना। ३. छूटना। ४. नाश होना या क्षय होना।

क्षांत–वि० [स्त्री० क्षांता] १. क्षमा करने-वाला। २. सहनशील। ३. संतोषी। ४. धीर।

क्षांति–संज्ञा स्त्री० १. सहनशीलता। २. क्षमा। ३. शक्ति रहने पर भी किसी की बुराई न करना।

क्षात्र–वि० क्षत्रियों का। क्षत्रिय-संबंधी।
संज्ञा पुं० क्षत्रियपन। क्षत्रियत्व।

क्षाम–वि० १. क्षीण। दुबला-पतला। कृश। निर्बल।
यौ०–क्षामोदरी=पतली कमरवाली (स्त्री)। २. दुर्बल। कमजोर। ३. अल्प। कम। थोड़ा।

क्षामकंठ–वि० १. सूखा कंठ। २. मन्द शब्द।

क्षार–संज्ञा पुं० १. खार। समुद्री लवण। २. नोन। नमक। ३. सज्जी। ४. सुहागा। ५. शोरा। ६. काँच। ७. राख। भस्म। ८. गुड़।
वि० १. खारा। २. क्षरणशील।

क्षारपत्र–संज्ञा पुं० बथुआ। शाक-विशेष।

क्षारभूमि–संज्ञा स्त्री० खारी भूमि। ऊसर खेत।

क्षारमृत्तिका–संज्ञा स्त्री० खारी मिट्टी।

क्षारलवण–संज्ञा पुं० खारी। नमक।

क्षारश्रेष्ठ–संज्ञा पुं० ढाकवृक्ष। पलास।

क्षारसिन्धु–संज्ञा पुं० लवण-समुद्र।

क्षालन–संज्ञा पुं० धोना। स्वच्छ करना। प्रक्षालन।

क्षालित–वि० धुला हुआ।

क्षिति–संज्ञा स्त्री० १. भूमि। पृथिवी। धरती। २. जगह। वासस्थान। ३. क्षय। ४. गोरोचन। ५. प्रलय-काल।

क्षितिज–संज्ञा पुं० १. मंगल ग्रह। २. केंचुआ। ३. नरकासुर। ४. पेड़। वृक्ष। ५. जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले दिखाई पड़ते हैं। ६. धातु, उपधातु आदि जो पृथ्वी से निकलती हैं। ७. वृक्ष।

क्षितिनाथ–संज्ञा पुं० १. राजा। २. शासक। ३. रक्षक। पृथ्वी के स्वामी। पृथ्वी की रक्षा करनेवाले।

क्षितिपाल–संज्ञा पुं० राजा। नृपति। पृथ्वी की रक्षा करनेवाले।

क्षितिमंडन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। आदर्श पुरुष।

क्षितीश–संज्ञा पुं० राजा। नरेश। पृथ्वी-पाल।

क्षितीश्वर–संज्ञा पुं० १. प्रभु। स्वामी। २. पृथ्वी के मालिक। महीश।

क्षिप्त–वि० १. फेंका हुआ। २. फैलाई गई। त्यक्त। ३. हटाया या निकाला गया। गिराई गई। ४. भेजा गया। ५. विकीर्ण। ६. अपमानित। ७. पतित। ८. वात रोग से ग्रस्त। ९. चंचल। १०. पागल। ११. चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक (योग)।

क्षिप्र–क्रि० वि० १. शीघ्र। जल्दी। २.

तुरंत। तत्काल। उसी समय। अविलंब। वि० १. तेज़। जल्द। २. चंचल। ३. उतावला।

क्षिप्रहस्त–वि० फुर्तीला। शीघ्र या तेज़ काम करनेवाला।

क्षीण–वि० १. निर्बल। दुर्बल। कृश। दुबला-पतला। २. सूक्ष्म। ३. घटा हुआ। ४. जो कम हो गया हो।

क्षीणचन्द्र–संज्ञा पुं० कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चंद्रमा।

क्षीणता–संज्ञा स्त्री० १. निर्बलता। कमज़ोरी। २. दुबलापन। ३. सूक्ष्मता। ४. कमी। ५. हानि।

क्षीणांग–वि० दुर्बल अंग।

क्षीर–संज्ञा पुं० १. दूध। २. तरल पदार्थ। ३. पानी। ४. पेड़ों का रस। ५. खीर। **यौ०**–क्षीरसार=मक्खन।

क्षीरकंठ–संज्ञा पुं० बच्चा। दुधमुहाँ बालक।

क्षीरकाकोली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की जड़ी।

क्षीरघृत–संज्ञा पुं० मक्खन।

क्षीरज–संज्ञा पुं० १. शशि। चंद्रमा। २. कमल। ३. शंख। ४. दही। ५. समुद्र-मंथन से निकला हुआ अमृत। ६. शेषनाग। ७. एक मणि। ८. समुद्र का नमक।

क्षीरजा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी। रमा।

क्षीरधि–संज्ञा पुं० दूध का समुद्र।

क्षीरनिधि–संज्ञा पुं० दूध का सागर।

क्षीरनीर–संज्ञा पुं० १. अभेद भाव। २. गाढ़ मैत्री। पानी और दूध। दूध की तरह पानी। दूध-पानी का सम्मिश्रण।

क्षीरव्रत–संज्ञा पुं० १. केवल दूध पीकर रहने का व्रत।

क्षीरसमुद्र–संज्ञा पुं० दूध का समुद्र। क्षीरसागर।

क्षीरसागर–संज्ञा पुं० पुराण के मत से सात समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है।

क्षीरस्वामी–संज्ञा पुं० अमरकोश की टीका लिखनेवाले संस्कृत के प्रसिद्ध कवि।

क्षीरिणी–संज्ञा स्त्री० १. खिरनी। २. क्षीरकाकोली

क्षीरी–स्त्री० १. वृक्ष और फल-विशेष। २. थन।

क्षीरोद–संज्ञा पुं० दूध का समुद्र। **यौ०**–क्षीरोद-तनया=लक्ष्मी।

क्षीरोदतनया–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी। रमा। कमला।

क्षुण्ण–वि० १. पीसा हुआ। २. दलित। ३. दुखित। सन्तापयुक्त। ४. टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। चूर्ण किया हुआ। ५. वश में किया गया। हराया गया। ६. खंडित। ७. अनुसरण किया गया। ८. उल्लंघन किया हुआ। ९. अभ्यस्त। कुशल।

क्षुत्–संज्ञा स्त्री० क्षुधा। भूख। छींक।

क्षुत्पिपासा–संज्ञा स्त्री० भूख-प्यास।

क्षुद्र–वि० १. कृपण। कंजूस। २. नीच। अधम। ३. थोड़ा। ४. छोटा। ५. खोटा। ६. दरिद्र।
संज्ञा पुं० चावल के छोटे टुकड़े।

क्षुद्रघंटिका–संज्ञा स्त्री० १. घुँघरू। २. घुँघरूदार करधनी।

क्षुद्रता–संज्ञा स्त्री० १. अधमता। नीचता। कमीनापन। २. ओछापन। ३. अल्पता।

क्षुद्रप्रकृति–वि० नीच प्रकृति का। ओछे या खोटे स्वभाववाला।

क्षुद्रबुद्धि–वि० १. नीच बुद्धि। दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। २. मूर्ख। नासमझ।

क्षुद्रा–संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। २. नीच स्त्री। ३. अमलोनी। लोनी। ४. मधुमक्खी। ५. जटामासी। ६. बालछड़। ७. कौड़ियाला। ८. हिचकी। ९. झगड़ालू स्त्री। १०. ऐसी स्त्री जिसका कोई अंग खराब हो गया हो।

क्षुद्रावली–संज्ञा स्त्री० क्षुद्रघंटिका। करधनी।

क्षुद्राशय–वि० कमीना। नीच-प्रकृति। "महाशय" का उलटा।

क्षुधा–संज्ञा स्त्री० [वि० क्षुधित, क्षुधालु] भूख। भोजन करने की इच्छा।

क्षुधातुर–वि० भूख से पीड़ित । भूखा । भूख से व्याकुल ।
क्षुधालु–वि० भुक्खड़ ।
क्षुधावंत–वि० दे० "क्षुधावान्" । अत्यन्त भूखा ।
क्षुधावान्–वि० [स्त्री० क्षुधावती] भूखा । जिसे भूख लगी हो ।
क्षुधित–वि० भूखा । भूख से पीड़ित ।
क्षुप–संज्ञा पुं० १. पौधा । झाड़ी । कँटीला वृक्ष । २. रतिबंध । ३. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
क्षुब्ध–वि० १. अधीर । चंचल । बेचैन । परेशान । २. भयभीत । डरा हुआ । ३. क्रुद्ध ।
क्षुभित–वि० क्षुब्ध ।
क्षुर–संज्ञा पुं० १. छुरा । उस्तरा । २. पशुओं के पाँव का खुर । ३. मूंज । क्रि० स० काटना । लकीर खींचना । खरोंचना ।
क्षुरक–संज्ञा पुं० गोखरू । एक प्रकार का वृक्ष ।
क्षुरधार–संज्ञा पुं० १. नरक-विशेष । २. एक प्रकार का बाण । ३. उस्तरा की तरह तेज धार का ।
क्षुरप्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बहुत तेज बाण । २. खुरपा ।
क्षुरिका–संज्ञा स्त्री० १. चाकू । छूरी । २. पालकी का शाक ।
क्षुरी–संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षुरिनी] १. नाई । २. खुरवाला पशु ।
संज्ञा स्त्री० छुरी । चाकू ।
क्षुल्लक–संज्ञा पुं० कौड़ी ।
वि० नीच । क्षुद्र ।
क्षेत्र–संज्ञा पुं० १. खेत । २. समतल भूमि । ३. स्थान । प्रदेश । ४. पुण्य भूमि । तीर्थ-स्थान । ५. स्त्री । ६. अंतःकरण । ७. बदन । शरीर । ८. रेखाओं से घिरा हुआ स्थान । ९. राशि । १०. सिद्ध-स्थान । ११. द्रव्य । १२. प्रकृति । १३. गृह । १४. नगर ।
क्षेत्रगणित–संज्ञा पुं० गणित-विशेष जिसमें क्षेत्रों के नापने और उनका क्षेत्रफल निका- लने की विधि बताई जावे । रेखा-गणित ।
क्षेत्रज–वि० जो खेत से पैदा हो । संज्ञा पुं० १. हिंदुओं के १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । २. अपनी पत्नी से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र ।
क्षेत्रदेवता–संज्ञा पुं० १. खेतों के अधिष्ठाता । २. देवता ।
क्षेत्रज्ञ–संज्ञा पुं० १. परमात्मा । २. जीवात्मा । ३. खेतिहर । किसान । वि० ज्ञाता । जानकार । चतुर । कुशल । दक्ष ।
क्षेत्रपति–संज्ञा पुं० १. किसान । खेतिहर । २. परमात्मा । ३. जीवात्मा ।
क्षेत्रपाल–संज्ञा पुं० १. क्षेत्ररक्षक । किसान । खेत की रखवाली करनेवाला । २. भैरव-विशेष । ३. द्वारपाल । ४. किसी जगह का प्रधान प्रबंधकर्त्ता । भूमिया । ५. देवता-विशेष ।
क्षेत्रफल–संज्ञा पुं० किसी स्थान का वर्गात्मक परिणाम । रक़बा ।
क्षेत्रवित–संज्ञा पुं० कृषिशास्त्र के विशेषज्ञ ।
क्षेत्रविद्–संज्ञा पुं० जीवात्मा ।
क्षेत्राजीव–वि० कृषक ।
क्षेत्राधिप–संज्ञा पुं० १. खेत के अधिष्ठाता देवता मेघ आदि । २. बारह राशियों के स्वामी । ३. खेत का स्वामी । ४. ज़मींदार ।
क्षेत्री–संज्ञा पुं० १. खेत का स्वामी । २. किसान । खेतिहर । ३. नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति । स्वामी ।
क्षेप–संज्ञा पुं० १. फेंकना । त्याग । २. घात । ठोकर । ३. अक्षांश । शर । ४. निंदा । बुराई । बदनामी ।
क्रि० स० व्यतीत करना । गुज़ारना । जैसे—कालक्षेप । ५. दूरी ।
क्षेपक–वि० १. फेंकनेवाला । त्यागी । क्षेप-कारक । २. मिश्रित । मिलाया हुआ । ३. बुरा । निंदनीय ।
संज्ञा पुं० १. ग्रंथों में मिलाए गए अशुद्ध अंश । २. उपकथाओं का भाग ।

३. निन्दनीय भाग।
क्षेपण–संज्ञा पुं० १. गिराना। २. फेंकना। ३. व्यतीत करना। ४. अपवाद।
क्षेपणी–संज्ञा स्त्री० नाव का डंडा और बल्ली।
क्षेम–संज्ञा पुं० १. सुरक्षा। २. प्राप्त वस्तु की रक्षा।
यौ०–योग-क्षेम। १. भलाई। २. मंगल। कुशल। ३. आनंद। सुख। ४. अभ्युदय। ५. मुक्ति। ६. धर्मशासन के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र।
क्षेमकर–वि० शुभकर, मंगलकर।
क्षेमकरी–संज्ञा स्त्री० १. एक पक्षी। २. एक देवी। ३. कुशल करनेवाली।
क्षेमकर्ण–संज्ञा पुं० अर्जुन का पुत्र, जनमेजय का सखा।
क्षेमकुशल–संज्ञा पुं० आरोग्य मंगल।
क्षेमकृत–वि० कल्याणकारक। मंगलकर्ता।
क्षेमेन्द्र–संज्ञा पुं० काश्मीर के एक प्रसिद्ध कवि। इनका समय ११वीं शताब्दी निश्चित हुआ है।
क्षेण्य–संज्ञा पुं० क्षीण भाव।
क्षोणि–संज्ञा स्त्री० १. एक की संख्या। २. पृथ्वी।
क्षोणिग–वि० क्षितिग।
संज्ञा पुं० मंगल।
क्षोणिदेव–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण। २. भूसुर।
क्षोणिप–संज्ञा पुं० राजा। नृप।
क्षोणी–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणि"। पृथ्वी। भूमि।
क्षोणीपति–संज्ञा पुं० नरेश। राजा।
क्षोद–संज्ञा स्त्री० बुकनी। चूर्ण। चूर्ण करने की क्रिया।
क्षोभ–संज्ञा पुं० [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १. खलबली। २. घबराहट। व्याकुलता। ३. डर। भय। ४. रंज। शोक। ५. क्रोध। ६. पश्चात्। ७. मोह।
क्षोभण–वि० क्षोभक। खलबली पैदा करनेवाला।
संज्ञा पुं० काम के पाँच बाणों में से एक।
क्षोभित–*वि० १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. विचलित। ३. चलायमान। ४. भयभीत। डरा हुआ। ५. क्रुद्ध। ६. संजीदा। दुखी।
क्षोभी–वि० चंचल। उद्वेगशील। व्याकुल।
क्षोम–संज्ञा पुं० दे० "क्षौम"।
क्षौणि, क्षौणी–संज्ञा स्त्री० १. एक की संख्या। दे० क्षोणि। २. पृथ्वी।
क्षौद्र–संज्ञा पुं० १. क्षुद्रता। नीच भाव। २. शहद। छोटी मक्खी का मधु। ३. जल। ४. चंपा का पेड़। ५. एक वर्ण-संकर जाति। ६. धूल।
क्षौद्रग–वि० मधु से उत्पन्न पदार्थ।
क्षौम–संज्ञा पुं० १. वस्त्र। पटवस्त्र। कपड़ा। २. सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। ३. अंडी। ४. घर या अटारी के ऊपर बना कोठा। अटा।
क्षौर–संज्ञा पुं० मुंडन। हजामत। बाल बनाना।
क्षौरक या क्षौरिक–संज्ञा पुं० १. नाई। हज्जाम। २. छुरा।
क्ष्मा–संज्ञा स्त्री० १. धरती। पृथ्वी। २. एक की संख्या।
क्ष्मातल–संज्ञा पुं० धरातल। भूतल। पृथ्वीतल।
क्ष्माभुक्–संज्ञा पुं० राजा। भूमि का भोग करनेवाला।
क्ष्माभृत्–संज्ञा पुं० १. राजा। नरेश। २. पर्वत। पहाड़।
क्ष्वेड़–संज्ञा पुं० टेढ़ा। कुटिल। झुका हुआ। कपटी। जिसके पास पहुँच न हो सके। १. अव्यक्त शब्द या ध्वनि। २. विष। जहर। ३. ध्वनि। शब्द। कान में भन-भनाहट का शब्द।
वि० १. युद्ध-घोष। २. एक प्रकार का पौधा।
वि० शेर की गुर्राहट।

ख

ख–हिंदी वर्णमाला में कवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है।
संज्ञा पुं० १. गड्ढा २. शून्य या खाली स्थान। ३. छेद। बिल। ४. निर्गम। निकास। ५. गले की नाली जिससे प्राणवायु आती-जाती है। ६. इंद्रिय। ७. तीर का घाव। ८. कुआँ। ९. आकाश। १०. स्वर्ग। ११. कर्म। १२. मुँह। मुख। १३. बिंदु। १४. शब्द। १५. ब्रह्म। १६. देवलोक। १७. सुख।

खं–संज्ञा पुं० १. शून्य स्थान। खाली जगह। २. आकाश। ३. छिद्र। बिल। ४. इंद्रिय। ५. निकलने का मार्ग या रास्ता। ६. स्वर्ग। ७. शून्य। बिंदु। ८. ब्रह्मा। ९. सुख। १०. निर्वाण। मोक्ष।

खख–वि० १. छूछा। खाली। २. वीरान। उजाड़।

खँखरा†–संज्ञा पुं० चावल आदि पकाने का ताँबे का बड़ा देग।
वि० १. बहुत से छेदवाला बर्तन। २. झीना। जिसकी बनावट घनी न हो।

खंग–संज्ञा पुं० १. तलवार। वध करने की लम्बी तलवार। २. गैंडा। ३. चोर। ४. तांत्रिक मुद्रा-विशेष।

खँगना†–क्रि० अ० कम होना। घटना। संज्ञा पुं० न्यूनता। अल्पता।

खंगर–संज्ञा पुं० १. झामा। २. लोहे का मैल। ३. लोहचून।

खंगार–संज्ञा पुं० बुन्देलखण्ड की एक जाति।

खँगहा–वि० जिसे खाँग या निकले हुए दाँत हों। संज्ञा पुं० गैंडा।

खँगालना–क्रि० स० १. थोड़ा धोना। २. बर्तन साफ करना। ३. खाली कर देना। सब कुछ उड़ा ले जाना। ४. अवाँसना।

खँगी–संज्ञा स्त्री० घटी। कमी। न्यूनता।

खँगैल–वि० दँतैला। बड़े बड़े दाँतवाला। जिसके खाँग या दाँत निकले हों।

खँघारना–क्रि० स० दे० "खँगालना"।

खँचना†–क्रि० अ० जोड़ना। सटाना। रेखा खींचना। चिह्न करना। निशान पड़ना।

खँचाना†–क्रि० स० १. चिह्न बनाना। अंकित करना। २. जल्दी-जल्दी लिखना। ३. दे० "खींचना"।

खँचिया–संज्ञा स्त्री० दे० "खाँची"। टोकरी।

खंज†–संज्ञा पुं० १. रोग-विशेष जिसमें मनुष्य का पैर जकड़ जाता है। २. लँगड़ा। लूला। पंगु।
संज्ञा स्त्री० विकल गति।
*संज्ञा पुं० खंजन पक्षी।

खंजता–संज्ञा स्त्री० चरण का अभाव। पंगुता। लूलापन।

खँजड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "खँजरी"।

खंजन–संज्ञा पुं० १. शरत् से लेकर शीतकाल तक दिखाई देनेवाला प्रसिद्ध पक्षी। ममोला। खँड़रिच। खंजरीट। खड़ेचा। २. खँड़रिच के रंग का घोड़ा।

खंजर–संज्ञा पुं० कटार।

खँजरी–संज्ञा स्त्री० १. डफली की तरह का छोटा बाजा। २. धारीदार कपड़ा। ३. रंगीन कपड़ों की लहरिएदार धारी।

खंजरीट या खंजरीर–संज्ञा पुं० खंजन पक्षी।

खंजा–संज्ञा स्त्री० एक विशेष वर्णवृत्त।

खंड–संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। भाग। हिस्सा। २. देश। ३. वर्ष। ४. नौ की संख्या। ५. गणित में समीकरण की एक क्रिया। ६. चीनी। खाँड़। ७. दिशा। दिक्। ८. काला नमक। ९. खाँड़ा।
वि० १. खंडित। अपूर्ण। २. लघु। छोटा।

खंडकथा–संज्ञा स्त्री० कथा या उपन्यास का एक भेद। कथा का एक भेद जिसमें चार प्रकार के विरह का वर्णन रहता है, जिसमें करुण रस की प्रधानता रहती है और कथा पूरी होने के पहले ही ग्रंथ समाप्त हो जाता है।

खंडकाव्य–संज्ञा पुं० छोटा प्रबंधकाव्य जिसमें काव्य के समस्त लक्षण न पाये जायें। जैसे—'मेघदूत।'

खंडखंड–वि० टुकड़ा-टुकड़ा।

खंडन–संज्ञा पुं० [वि० खंडनीय, खंडित] १. भंजन। तोड़ने-फोड़ने की क्रिया। छेदन।

२. बात काटना। किसी बात को ग़लत सिद्ध करना। मंडन का उलटा। निराकरण करना। ३. दूषण।

खंडना*—क्रि० स० १. तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना। २. दोष देना। ३. बात काटना।

खंडनी—संज्ञा स्त्री० कर। मालगुज़ारी की किस्त।

खंडनीय—वि० खंडन करने योग्य। तोड़ने योग्य।

खंडपरशु—संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. परशुराम। ३. विष्णु।

खंडपाल—संज्ञा पुं० हलवाई।

खंडपूरी—संज्ञा स्त्री० भरी हुई मीठी पूरी।

खंडप्रलय—संज्ञा पुं० १. एक चतुर्युगी बीत जाने पर होनेवाला प्रलय। छोटा प्रलय। २. किसी देश या खण्ड का नाश। ३. महाकलह।

खँडबरा—संज्ञा पुं० मीठा बड़ा (पकवान)।

खंडर—संज्ञा पुं० १. उजाड़। वीरान। २. गड़हा। गढ़ा। ३. खँडहर। टूटे-फूटे मकान। ४. कतवारखाना।

खंडरना—वि० १. टुकड़े-टुकड़े करना। २. खंडन करना। बात काटना।

खँडरा—संज्ञा पुं० बेसन का चौकोर बड़ा।

खँडरिच—संज्ञा पुं० खंजन पक्षी।

खंडला—संज्ञा पुं० टुकड़ा।

खँडवानी—संज्ञा स्त्री० १. शरबत। खाँड़ का रस। २. कन्या पक्षवालों की ओर से बरातियों को जलपान आदि भेजने की क्रिया।

खंडशः—अव्य० खंड-खंड। टुकड़ा-टुकड़ा।

खँड़साल—संज्ञा स्त्री० कारखाना जहाँ खाँड़ या शक्कर बनाई जाती है। खँड़सार।

खँड़हर—संज्ञा पुं० १. टूटे-फूटे मकान का बचा हुआ भाग। भग्नावशेष। २. प्राचीन भवन का अवशेष।

खंडित—वि० १. भग्न। टूटा हुआ। २. अपूर्ण। ३. काटा गया।

खंडिता—संज्ञा स्त्री० १. नायिका का एक भेद, जिसका नायक रात को किसी दूसरी नायिका के पास रहकर सबेरे उसके पास आवे। त्यक्ता। २. नष्ट। दुःखित। टुकड़े-टुकड़े किया गया। निराश।

खँडिया—संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा।

खँडौरा†—संज्ञा पुं० १. ओला। २. मिसरी का लड्डू।

खंतरा—संज्ञा पुं० १. दरार। २. खोंडरा। ३. कोना। ४. अँतरा।

खंता†—संज्ञा पुं० [स्त्री० खंती] १. फावड़ा। २. कुदाल। ३. वह गड़हा जिसमें से मिट्टी निकाली गई हो।

खंदक—संज्ञा स्त्री० १. बड़ा गड्ढा। २. शहर या किले के चारों ओर की खाई।

खंदा*†—संज्ञा पुं० खोदने का काम करनेवाला।

खँधवाना—क्रि० स० खाली करवाना।

खँधार*†—संज्ञा पुं० १. छावनी। स्कंधावार। २. खेमा। डेरा। सरदार। सामंत राजा।

खँधियाना†—क्रि० स० १. खाली करना। २. बाहर निकालना।

खंबा—संज्ञा पुं० स्तंभ। खम्भा। थाँभा।

खंभ—संज्ञा पुं० दे० "खंभा"।

खंभा—संज्ञा पुं० [स्त्री० खँभिया] १. स्तंभ। पत्थर या काठ का लंबा खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है २. पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा

खँभार*†—संज्ञा पुं० १. खटका। चिंता अंदेशा। २. व्याकुलता। घबराहट ३. भय। डर। ४. शोक।

खँभिया—संज्ञा स्त्री० छोटा पतला खंभा

खई*†—संज्ञा स्त्री० १. क्षय। २. युद्ध लड़ाई। ३. झगड़ा। तकरार। ४. मुर्चा। जंग। ५. मैल।

खकार—संज्ञा पुं० दे० "खखार"।

खक्खा—संज्ञा पुं० १. अट्टहास। जोर की हँसी। २. कहकहा। ३. बड़ा और ऊँचा हाथी। ४. अनुभवी पुरुष।

खखार—संज्ञा पुं० कफ। गाढ़ा थूक जो खखारने से निकले।

खखारना—क्रि० अ० १. थूक या कफ बाहर करने के लिए गले से शब्दसहित वायु निकालना। कफ निकालना। २. दूसरे का

ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने को शब्द-विशेष करना।

खखेटना*–क्रि० स० १. भगाना। पीछा करना। २. दबाना। ३. घायल करना।

खखेटा–संज्ञा पुं० १. छिद्र। छेद। २. शंका। खटका।

खखोरना–क्रि० स० १. खुरचना। २. खोदना ३. छिपकर कोई अज्ञात वस्तु तलाश करना।

खग–संज्ञा पुं० १. पक्षी। चिड़िया। २. आकाशगामी। ३. बाण। तीर। ४. गंधर्व। ५. देवता। ६. ग्रह। तारा। ७. बादल। ८. चंद्रमा। ९. सूर्य्य। १०. वायु।

खगकेतु–संज्ञा पुं० १. गरुड़ध्वज। २. श्रीविष्णु।

खगना*†–क्रि० अ० १. चुभना। धँसना। २. मन या चित्त में बैठना। ३. लग जाना। लिप्त होना। ४. चिह्नित हो जाना। उपट आना। ५. अटक रहना। अड़ जाना।

खगनाथ, खगनायक–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. गरुड़।

खगनाह–संज्ञा पुं० गरुड़। पक्षिराज।

खगपति–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. सूर्य्य। ३. गरुड़।

खगमाला–संज्ञा स्त्री० पक्षियों का समूह।

खगहा–संज्ञा पुं० १. पक्षिराज। २. गैंड़ा। ३. बाज। ४. व्याध।

खगारना–क्रि० स० धोना, खंगालना। केवल पानी से धोना।

खगेन्द्र–संज्ञा पुं० पक्षिराज। गरुड़।

खगेश–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. पक्षियों का स्वामी।

खगोल–संज्ञा पुं० १. खगोलविद्या। २. आकाशमंडल।

खगोलविद्या–संज्ञा स्त्री० ज्योतिष। आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान करानेवाला विद्या।

खग्ग*–संज्ञा पुं० तलवार। खाँड़ा। खड्ग।

खग्रास–संज्ञा पुं० ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य्य या चंद्र का सारा मंडल ढँक जाय। पूर्ण ग्रहण।

खघड़–संज्ञा पुं० १. खोपड़ी। कपाल। २. साधुओं का पात्र-विशेष।

खचन–संज्ञा पुं० [वि० खचित] १. अंकित करने या होने की क्रिया। २. जड़ने या बाँधने की क्रिया।

खचना*–क्रि० अ० १. अंकित होना। २. जड़ा जाना। ३. अटक जाना। फँसना। ४. रम जाना। ५. अड़ जाना।

क्रि० स० १. जड़ना। २. अंकित करना। ३. सम्मिलित करना। ४. जोड़ना। ५. सटाना। ६. रेखा खींचना।

खचर–संज्ञा पुं० १. मेघ। २. सूर्य्य। ३. नक्षत्र। ४. ग्रह। ५. पक्षी। ६. वायु। ७. बाण। ८. तीर। ९. ताल या रूपक-विशेष। १०. राक्षस।

वि० आकाशगामी।

खचरा–वि० १. दोगला। वर्णसंकर। २. पाजी। दुष्ट। ३. व्यर्थ।

खचा–वि० १. खींचा हुआ। २. जड़ाऊ। जड़ा हुआ।

खचाखच–क्रि० वि० ठसाठस। बहुत भरा हुआ।

खचित–वि० १. चित्रित। खींचा हुआ। २. जड़ित। जड़ाऊ। ३. निर्मित। जड़ा हुआ।

खचिया–संज्ञा स्त्री० दे० खँचिया या खाँची। टोकरी। झौआ।

खचोना–संज्ञा स्त्री० लकीर। रेखा।

खच्चर–संज्ञा पुं० गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु।

खज*–वि० भक्ष्य। खाने के योग्य।

खजरा–वि० १. मिला हुआ। मिलावटी। २. मगरा। ३. बँडेरी। छप्पर के बीच का उठा हुआ भाग।

खजला–संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।

खजानची–संज्ञा पुं० कोषाध्यक्ष। खजाने का अधिकारी। रोकड़िया।

खजाना–संज्ञा पुं० १. धनागार। २. राजस्व।

धन संग्रह करने का स्थान। ३. कोषागार। ४. कोष।

खजुआ†–संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।

खजुरा–संज्ञा पुं० स्त्रियों के सिर की चोटी गूँथने की डोरी।

खजुली†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "खुजली"। खाज। २. छोटा खाजा।

खजूर–संज्ञा पुं० स्त्री० १. खर्जूर। ताड़ की जाति का वृक्ष-विशेष, जिसके फल खाए जाते हैं। छुहारे का एक भेद। २. मिठाई-विशेष।

खजूरा–संज्ञा पुं० गोजर। खनखजूरा। कनतर।

खजूरी–वि० १. खजूर का। खजूर-संबंधी। २. खजूर के आकार का। ३. तीन लड़ों में गूँथा हुआ।

खज्योति–संज्ञा पुं० आकाश का प्रकाश। आकाश की ज्योति।

खट–संज्ञा स्त्री० १. खाट। २. कफ। ३. अंधा कुआँ। ४. घूसा। ५. कुल्हाड़ी। ६. ठोंकने-पीटने की आवाज़। ७. छः। ८. दो चीज़ों के टकराने या किसी कड़ी चीज़ के टूटने से उत्पन्न शब्द।

मुहा०–खट से=तुरन्त। तत्काल।

खटक–संज्ञा स्त्री० सन्देह। चिंता। खटका। शंका। संशय।

खटकना–क्रि० अ० १. टकराने या टूटने का सा शब्द होना। 'खटखट' शब्द होना। २. रह-रहकर पीड़ा होना। ३. खलना। बुरा मालूम होना। ४. उचटना। विरक्त होना। ५. डरना। ६. अनिष्ट की भावना या आशंका होना। ७. परस्पर झगड़ा होना। ८. ठीक न जान पड़ना। ९. मन में चिंता या शंका पैदा करना।

खटका–संज्ञा पुं० १. 'खटखट' शब्द। टकराने या पीटने का सा शब्द। २. भय। डर। ३. आशंका। सन्देह। ४. चिंता। फिक्र। ५. पेंच या कमानी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई वस्तु खुलती या बंद होती हो। ६. बिल्ली। किवाड़ की सिटकिनी। ७. पेड़ में बँधा बाँस का टुकड़ा, जिसे हिलाकर चिड़िया उड़ाते हैं। ८. पेंच। कील।

खटकाना–क्रि० स० १. ठोंकना। 'खटखट' शब्द करना। हिलाना या बजाना। २. शंका उत्पन्न करना। ३. ठुकराना। ४. चलना।

खटकीड़ा या खटकीरा–संज्ञा पुं० दे० "खटमल"।

खटखट–संज्ञा स्त्री० १. ठोंकने-पीटने का शब्द। २. झगड़ा। लड़ाई। रार। बखेड़ा। ३. झंझट। झमेला।

खटखटाना–क्रि० स० खड़खड़ाना। 'खटखट' शब्द करना। ठकठकाना।

खटछप्पर–संज्ञा पुं० १. खाट का एक भेद। २. शय्या।

खटना–क्रि० स० धन कमाना।

क्रि० अ० १. काम-धंधे में लगना। २. चलना। ३. ठहरना। टिक रहना।

खटपट–संज्ञा स्त्री० १. विरोध। अनबन। २. झगड़ा। लड़ाई। ३. ठोंकने-पीटने आदि का शब्द।

खटपटिया–वि० झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू। बखेड़िया।

संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ।

खटपद–संज्ञा पुं० दे० "षट्पद"।

खटपाटी–संज्ञा स्त्री० १. खाट की पाटी। खटपाटी लेना। २. हठ दिखाने को स्त्रियों का काम-धन्धा, खाना-पीना आदि छोड़ देना।

खटबुना–संज्ञा पुं० खटबुनवा। चारपाई बुननेवाला।

खटमल–संज्ञा पुं० खटकीड़ा। कीड़ा-विशेष जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में रहता है। मत्कुण।

खटमिट्ठा–वि० खट्टा और मीठा जिसमें दोनों स्वाद हों।

खटमुख–संज्ञा पुं० दे० "षट्मुख"।

खटराग–संज्ञा पुं० १. दे० "षट्राग"। २. बखेड़ा। झंझट। ३. झगड़ा। ४. व्यर्थ और अनावश्यक चीजें। ५. अनमेल। ६. विरोध।

खटला–संज्ञा पुं० १. परिवार। २. बाड़ा। ३. स्त्रियों के कानों के वे छेद जिनमेंवे बालियाँ पहनती हैं।
खटवाट–संज्ञा स्त्री० दे० "खटपाटी"।
खटाई–संज्ञा स्त्री० १. खट्टी चीज। २. खट्टापन। तुरशी।
मुहा०–खटाई में डालना=कुछ निर्णय न करना। दुबिधा में डालना।
खटाका–संज्ञा पुं० जोर से 'खट' शब्द। धड़ाका।
खटाखट–संज्ञा पुं० ठोंकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द।
क्रि० वि० १. जल्दी-जल्दी। बिना रुके। २. खटखट शब्द के साथ।
खटाना–क्रि० अ० खट्टा होना। किसी वस्तु में खट्टापन आ जाना।
क्रि० अ० १. निभना। निर्वाह होना। गुजारा होना। २. जाँच में पूरा उतरना। ३. ठहरना।
खटापटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट"। अनबन। विरोध। वैर। झगड़ा। लड़ाई।
खटाव–संज्ञा पुं० १. निर्वाह। गुजर। २. नाव बाँधने का खूँटा।
खटास–संज्ञा पुं० बिल्ली की जाति का जन्तु-विशेष। गन्धबिलाव।
संज्ञा स्त्री० खटाई। खट्टापन। तुरशी।
खटिक–संज्ञा पुं० [स्त्री० खटकिन] १. छोटी जाति-विशेष। २. बहेलिया।
खटिका–संज्ञा स्त्री० लड़कों के लिखने की खड़ी। सेलखड़ी।
खटिया–संज्ञा स्त्री० खटोली। चारपाई। खाट। शय्या।
खटेटी†–वि० बिना बिछौने की खाट।
खटोलना–संज्ञा पुं० दे० "खटोला"।
खटोला–संज्ञा पुं० [स्त्री० खटोली] १. छोटी खाट। २. पालना। ३. मंझा।
खट्टा–वि० अम्ल। कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का। खटाई लिये हुए।
मुहा०–जी खट्टा होना=चित्त अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना।
संज्ञा पुं० नीबू की जाति का बहुत खट्टा फल। गलगल।
खट्टा मीठा–वि० दे० "खटमिट्ठा"।
खट्टी†–संज्ञा स्त्री० १. खट्टा नीबू। २. खट्टी वस्तु।
खट्टु–संज्ञा पुं० १. बनिहार। २. मजूर। ३. चाकर।
खट्टू–संज्ञा पुं० कमानेवाला।
खट्वांग–संज्ञा पुं० १. चारपाई का पाया या पाटी आदि। २. शिव का अस्त्र-विशेष। ३. वह पात्र जिसमें प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगी जाती है। ४. सूर्यवंशी एक राजा। ५. तांत्रिक मुद्रा-विशेष।
खट्वा–संज्ञा स्त्री० खाट। खटिया। पलँग।
खड़ंजा–संज्ञा पुं० ईंटों की खड़ी चुनाई। (ऐसी जोड़ाई फर्श पर होती है।)
खड़–संज्ञा स्त्री० पयाल। तृण। खर।
खड़क–संज्ञा स्त्री० १. दे० "खटक"। २. गोशाला। गोष्ठ। गौ के रहने का स्थान।
खड़कना–क्रि० अ० दे० "खटकना"। झन-झनाना। बजाना। अव्यक्त ध्वनि।
खड़खड़ा–संज्ञा पुं० १. दे० "खटखटा"। २. काठ का ढाँचा-विशेष, जिसमें जोतकर गाड़ी के लिए घोड़े सधाए जाते हैं।
खड़खड़ाना–क्रि० अ० खड़खड़ ध्वनि करना। वस्तुओं के परस्पर टकराने से उत्पन्न ध्वनि-विशेष। ठकठकाना।
क्रि० स० कई वस्तुओं को परस्पर टकराना।
खड़खड़िया–संज्ञा स्त्री० डोली। पालकी। पीनस। खड़खड़ शब्द करनेवाली गाड़ी। टूटी-फूटी पुरानी गाड़ी।
खड़खड़िया गाड़ी–पुरानी या टूटी फूटी गाड़ी।
खड़ग*–संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।
खड्ग–संज्ञा पुं० १. तलवार। खाँड़ा। २. गेंडा। ३. चोर। ४. तांत्रिक मुद्रा-विशेष।
खड्गकोश–संज्ञा पुं० म्यान। तलवार, कटार आदि रखने का कोश।
खड्गपत्र–संज्ञा पुं० यमपुरी का एक वृक्ष जिसमें तलवार के से पत्ते होते हैं।
खड्गी–संज्ञा पुं० १. खड्ग रखनेवाला। खड्गधारी। २. गेंडा।
खड्ड, खड्डा–संज्ञा पुं० गढ़ा। गड्ढा।

संज्ञा पुं० गैंडा।
खड़जी–संज्ञा पुं० दे० "खड़गी"।
खड़बड़–संज्ञा स्त्री० १. खटपट । खटखट शब्द । २. हलचल । ३. उलट-फेर।
खड़बड़ाना–क्रि० अ० १. घबराना । २. चौंकना। ३. तितर-बितर होना । बे-तरतीब होना।
क्रि० स० १. किसी चीज को उलट-पुलटकर "खड़बड़" शब्द उत्पन्न करना । २. घबरा देना । ३. उलट-फेर करना ।
खड़बड़ाहट–संज्ञा स्त्री० खड़बड़ाने का भाव।
खड़बड़ी–संज्ञा स्त्री० १. हलचल। २. गड़बड़ी। उलट-फेर।
खड़बीड़ा–वि० ऊँचा-नीचा।
खड़बीहड़†–वि० दे० "खड़बिड़ा"। ऊबड़-खाबड़।
खड़मंडल–संज्ञा पुं० गड़बड़।
खड़लीच–संज्ञा पुं० खँड़रिच। खंजन।
खड़सान–संज्ञा पुं० शान । पत्थर-विशेष । अस्त्र तेज करने का पत्थर।
खड़ा–वि० [स्त्री० खड़ी] १. ऊपर को उठा हुआ। सीधा। जैसे—झंडा खड़ा करना । २. स्थिर। ठहरा या टिका हुआ। ३. दंडायमान। पृथ्वी पर पैर रखकर टाँगों को सीधा करके अपने शरीर को ऊँचा किए रहना । ४. सन्नद्ध। उद्यत । ५. उपस्थित । प्रस्तुत । तैयार। ६. (घर, दीवार आदि) निर्मित। स्थापित । उठा हुआ । ७. आरंभ । ८. बिना पका। कच्चा। ९. जो उखाड़ा या काटा न गया हो। जैसे—खड़ी फसल। १०. पूरा। समूचा। सब।
मुहा०–खड़े खड़े=तुरंत । झटपट । खड़ा जवाब=तुरंत इनकार करना । खड़ा होना =मदद करना। सहायता देना।
खड़ाऊँ–संज्ञा स्त्री० पादुका। पैर के आकार का काठ का टुकड़ा, जिसमें अँगूठा और अँगुली अटकाने के लिए खूँटी बनी रहती है और जो पैर में पहनी जाती है।
खड़ाका–संज्ञा पुं० खटका।
खड़िया–संज्ञा स्त्री०एक तरह की सफेद मिट्टी। खरिया। दुधिया मिट्टी। दे० "खड़िया"।
खड़ी–संज्ञा स्त्री० सफेद मिट्टी।
वि० दंडायमान।
खड़ीबोली–संज्ञा स्त्री० मेरठ के आसपास बोली जानेवाली पश्चिमी हिन्दी बोली, जिसका उपयोग आज की साहित्यिक हिन्दी में होता है।
खड़ुआ–संज्ञा पुं० वलय । कड़ा ।
खड़ैचड़–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष । खंजरीट। खंजन।
खत–संज्ञा पुं० घाव। जख्म।
ख़त–संज्ञा पुं० [अ०] १. चिट्ठी। पत्र। २. लकीर । रेखा । ३. लिखावट । ४. दाढ़ी के बाल । हजामत।
खतखोट†–संज्ञा स्त्री० खुरंड। घाव के ऊपर जमी हुई पपड़ी।
ख़तना–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी। लिंग के अगले भाग का ऊपरी चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म। सुन्नत।
ख़तम–वि० पूर्ण । इति। समाप्त। अन्त।
मुहा०–खतम करना—मार डालना।
ख़तमी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा।
ख़तर, ख़तरा–संज्ञा पुं० १. भय । डर । २. आशंका । ३. खौफ । सन्देह ।
खतरानी–संज्ञा स्त्री० खत्री जाति की स्त्री।
खतरेटा–संज्ञा पुं० दे० "खत्री"।
ख़ता–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दोष । अपराध । कसूर । २. भूल । गलती । ३. धोखा।
खतान–संज्ञा स्त्री० जमाखर्च की खतौनी। लेखा। हिसाब।
ख़तावार–वि० अपराधी। दोषी। भूल करनेवाला।
खतियाना–क्रि० स० आय-व्यय आदि को खाते में अलग-अलग मद में लिखना। हिसाब लिखना।
खतियौनी–संज्ञा स्त्री० १. खाता । अलग-अलग हिसाबवाली बही। २. खतियाने का काम।
खत्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० खत्ती] १. अन्न रखने की जगह। २. अन्न रखने का गड्ढा।
ख़त्म–वि० दे० "खतम"।

खत्री–संज्ञा पुं० [स्त्री० खतरानी] हिंदुओं की जाति-विशेष। पंजाब की रहनेवाली एक व्यापारी जाति।

खदंग–संज्ञा पुं० तीर।

खदखदाना, खदबदाना–क्रि० अ० १. उबलना। २. उबलने का शब्द। खद्बद् करना।

खदरा†–संज्ञा पुं० गड्ढा।
वि० रद्दी। निकम्मा।

खदान–संज्ञा स्त्री० खान। किसी वस्तु के निकालने के लिए खोदा जानेवाला गड्ढा।

खदिर–संज्ञा पुं० १. कत्था। २. कत्थे या खैर का पेड़। ३. इंद्र। ४. चंद्रमा।

खदेड़–संज्ञा पुं० दौड़। पीछा करना।

खदेड़ना, खदेरना–क्रि० स० १. दूर करना। २. दौड़ाना। भगाना। पीछा करना।

खद्दड़, खद्दर–संज्ञा पुं० खादी। गाढ़ा। हाथ से काते हुए सूत का बुना कपड़ा।

खद्योत–संज्ञा पुं० १. जुगनू। २. सूर्य्य। ३. पटबीजना।

खन–*†–संज्ञा पुं० १. क्षण। समय। २. तुरन्त। ३. (मकान का) खंड। भाग।

खनक–संज्ञा पुं० १. जमीन खोदनेवाला। २. भूतत्त्व-शास्त्र जाननेवाला। ३. मूसा। चूहा। ४. सेंध लगानेवाला।
संज्ञा स्त्री० टकराने या बजने का शब्द।

खनकना–क्रि० अ० १. खनखनाना। बजना। खनखन शब्द करना। ठनठन ध्वनि होना। २. टकराने का शब्द होना।

खनकाना–क्रि० स० १. बजाना (रुपया थाली आदि)। २. खनखन शब्द करना।

खनखनाना–क्रि० अ० खनकना।
क्रि० स० खनकाना। बजाना।

खनन–संज्ञा पुं० १. नष्ट करना। २. खान खोदना। ३. गढ़ा खोदना। ४. गोड़ना।

खनना*†–क्रि० स० १. खनन करना। खोदना। २. गोड़ना। कोड़ना।

खनवाना, खनाना–क्रि० स० खनने का काम दूसरों से कराना।

खनहन–वि० १. हलका। पतला। दुबला। २. सुन्दर।

खना–संज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध ज्योतिःशास्त्र-विदुषी स्त्री। यह विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक रत्न वराहमिहिर की स्त्री थी।

खनि–संज्ञा स्त्री० आकर। खान। धातुओं का उत्पत्ति-स्थान।
वि० खोदकर। खोद करके।

खनिज–वि० खान का। खान से खोदकर निकाला हुआ।

खनित्र–संज्ञा पुं० खोदने का अस्त्र। दे० 'खन्ता'। गैंती।

खनोना*†–क्रि० स० दे० "खनना"।

खपची–संज्ञा स्त्री० १. कमाची। कमठी। बाँस की पतली पटरी। २. बाँस की पतली तीली।

खपटा–संज्ञा पुं० ठीकरा। खपरा। खपरे का टुकड़ा।

खपड़ा–संज्ञा पुं० १. खपरैल। २. खप्पर। भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। ३. कछुए की पीठ। ४. ठीकरा। मिट्टी के टूटे बरतन का टुकड़ा। गेहूँ का एक कीड़ा। ५. चौड़े फलवाला तीर।

खपड़ी–संज्ञा स्त्री० १. हँडिया। २. दे० "खोपड़ी"।

खपड़ैल–संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल"।

खपत, खपती–संज्ञा स्त्री० १. माल की बिक्री। माल इस्तेमाल होना। २. समाई। गुंजाइश।

खपना–क्रि० अ० [संज्ञा खपत] १. बिक्री होना। २. काम में आना। लगना। ३. चल जाना। ४. निभना। गुजारा होना। ५. नष्ट होना। ६. परेशान होना। ७. घटना। कम होना।

खपरा–संज्ञा पुं० दे० "खपड़ा"।

खपरिया–संज्ञा स्त्री० १. एक खनिज पदार्थ। दर्विका। रसक। २. कीट-विशेष।

खपरी–संज्ञा स्त्री० घड़ा आदि का फूटा भाग। छोटा खपरा।

खपरैल–संज्ञा स्त्री० खपड़े से छाई हुई छत। खपड़ैल।

खपाँच, खपाँची–संज्ञा स्त्री० काठ या बाँस का टुकड़ा।

खपाना–क्रि० स० १. किसी प्रकार काम में लाना। २. नष्ट करना। ३. निभाना। निर्वाह करना। ४. समाप्त करना। ५. तंग करना।

मुहा०–माथा या सिर खपाना=सोचते सोचते हैरान होना। सिर-पच्ची करना।

खपुर–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. पुराणानुसार आकाश का एक नगर। ३. राजा हरिश्चंद्र की पुरी जो आकाश में स्थित मानी जाती है। ४. सुपारी का पेड़। ५. आकाश। ६. भद्रमोथा। ७. बघनखा।

खपुष्प–संज्ञा पुं० १. आकाश-कुसुम। २. अनहोनी घटना। असंभव कार्य। वि० अप्रसिद्ध। मिथ्या।

खप्पर–संज्ञा पुं० १. तसले के आकार का पात्र। २. काली देवी के रुधिर पीने का पात्र। ३. कपाल। खोपड़ी। ४. भिक्षापात्र।

मुहा०–खप्पर भरना=खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी पर चढ़ाना।

ख़फ़गी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. क्रोध।

ख़फ़ा–वि० [अ०] १. अप्रसन्न। नाराज़। २. रुष्ट। क्रुद्ध।

ख़फ़ीफ़–वि० [अ०] १. हलका। २. छोटा। कम। थोड़ा। ३. क्षुद्र।

ख़बर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संवाद। समाचार। वृत्तांत। हाल। २. ज्ञान। सूचना। जानकारी। ३. सँदेशा। ४. सुधि। संज्ञा। ५. पता। खोज।

मुहा०–खबर उड़ना=चर्चा फैलना। अफवाह फैलना। खबर लेना=१. सहायता करना। २. सज़ा देना।

ख़बरगीर–वि० [संज्ञा खबरगीरी] देख-भाल करनेवाला। संरक्षक। भेदिया। जासूस।

ख़बरगीरी–संज्ञा स्त्री० रखवाली। देखभाल।

ख़बरदार–वि० [फ़ा०] सावधान। सजग। होशियार।

ख़बरदारी–संज्ञा स्त्री० सावधानी। चौकसी। होशियारी।

ख़बरनवीस–संज्ञा पुं० खबर लिखकर भेजनेवाला। संवाददाता। समाचार-लेखक। राजाओं आदि के पास समाचार लिखकर भेजनेवाला।

खबीस–संज्ञा पुं० १. कंजूस। २. निकम्मा। ३. मूर्ख। ४. भूतप्रेत। दुष्टात्मा।

ख़ब्त–संज्ञा पुं० (अ०) [वि० खब्ती] सनक। झक्क।

ख़ब्ती–वि० १. मनकी। २. पागल। झक्की।

खब्बा–वि० बायाँहत्था। डेढ़हत्था।

खंभरना–*†–क्रि० स० १. मिलाना। २. उथल-पुथल मचाना।

खभाच–संज्ञा स्त्री० रागिनी-विशेष।

खभार–संज्ञा पुं० १. क्षोभ। २. मोह। ३. हलचल। ४. खड़बड़।

खभारू–संज्ञा पुं० १. पेट की जलन। २. घबराहट। हड़बड़ाहट।

ख़म–संज्ञा पुं० झुकाव। टेढ़ापन। गाने के बीच का विश्राम।

मुहा०–खम खाना=१. मुड़ना। झुकना। दबना। २. हारना। खम ठोकना=१. लड़ने के लिए ताल ठोकना। २. दृढ़ता दिखलाना। खम ठोककर=दृढ़ता या निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

ख़मदम–संज्ञा पुं० साहस। पुरुषार्थ। हिम्मत।

ख़मसा–संज्ञा पुं० गजल-विशेष।

खमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

खमियाजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बुरे काम का परिणाम। फलभोग। २. अँगड़ाई।

ख़मीर–संज्ञा पुं० १. माया। २. गूँधकर उठाया हुआ आटा। ३. प्रकृति। स्वभाव। ४. शीरा जो तंबाकू में डाला जाता है।

ख़मीरा–वि० पुं० [स्त्री० खमीरी] १. शीरे में पकाकर बनाई हुई औषध। जैसे—खमीरा वनफ़शा। २. खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाया हुआ।

खमीलन–संज्ञा पुं० थकावट। क्लान्ति। अवसाद। श्रान्ति।

ख़मोश–वि० दे० "खामोश"।

खम्माच–संज्ञा स्त्री० रागिनी-विशेष, जो रात के दूसरे पहर में गाई जाती है।

खयानत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चोरी या बेईमानी। २. धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना। ग़बन।

खयाल—संज्ञा पुं० दे० "ख्याल"। ध्यान। याद। स्मरण।

खरंजा—संज्ञा पुं० १. पटाव। २. पक्का बनाया हुआ। ३. पक्की सड़क। ४. ईंटों का समूह।

खर—संज्ञा पुं० १. गधा। २. खच्चर। ३. कौवा। ४. बगला। ५. राक्षस-विशेष जो शूर्पनखा का भाई था। ६. तिनका। तृण। घास। ७. साठ संवत्सरों में से एक। ८. छप्पय छंद का भेद-विशेष। वि० १. कड़ा। सख्त। २. उत्तम। तीक्ष्ण। तेज। ३. हानिकर। ४. अशुभ। जैसे—खर मास। ५. तेज धार का।

खरक—संज्ञा पुं० १. बाड़ा। चौपायों को रखने के लिए लकड़ियाँ गाड़कर बनाया हुआ घेरा। डाँढा। २. गोशाला। ३. पशुओं के चरने का स्थान। ४. बाँसों की फट्टियों का केवाड़। टट्टर। संज्ञा स्त्री० दे० "खड़क"।

खरकना—क्रि० अ० १. दे० "खड़कना"। २. फाँस चुभने का सा दर्द होना। ३. सरकना। चल देना। खसकना। ४. धमकाना। भगाना। ५. गिरना।

खरका—संज्ञा पुं० तिनका। दे० "खरक"। मुहा०—खरका करना=भोजन के उपरांत तिनके से खोदकर दाँत साफ करना।

खरखर या खरखरा—१. खुरखुरा। जो समतल न हो। खरहरा। दरदरा। २. तेज। शीघ्र।

खरखशा—संज्ञा पुं० [फा०] १. झगड़ा। लड़ाई। २. डर। भय। ३. आशंका। खटका। ४. बखेड़ा। झंझट।

खरखौकी*—संज्ञा स्त्री० अग्नि।

खरग—संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।

खरगोश—संज्ञा पुं० [फा०] खरहा।

खरच—संज्ञा पुं० दे० "खर्च"।

खरचना—क्रि० स० १. व्यय करना। खर्च करना। २. प्रयोग करना। व्यवहार में लाना।

खरचा—संज्ञा पुं० दे० १. "खरका"। २. दे० "खर्चा"। व्यय।

खरछरा—वि० खड़बड़। अड़बड़। दरदरा।

खरतल—†वि० १. खरा २. स्पष्टवादी। ३. शुद्ध हृदयवाला। ४. स्पष्ट। साफ। ५. उग्र। प्रचंड।

खरता—वि० तीक्ष्ण। बहुत तेज।

खरतुआ—संज्ञा पुं० बथुए की तरह की एक घास।

खरदनी—संज्ञा स्त्री० खरादने का औजार।

खरदुक—संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्राचीन पहनावा।

खरदूषण—संज्ञा पुं० १. खर और दूषण नामक राक्षस, जो रावण के भाई थे। २. धतूरा।

खरधार—संज्ञा पुं० तेज धारवाला अस्त्र।

खरपत्र—संज्ञा पुं० सुगन्धित पौधा। मरुवा।

खरपा—संज्ञा पुं० १. खड़ाऊँ। २. स्त्रियों के पहनने का जूता। ३. चौबगला।

खरब—संज्ञा पुं० सौ अरब की संख्या।

खरबूजा—संज्ञा पुं० गोल फल जो गर्मियों में होता है।

खरभर†—संज्ञा पुं० १. हलचल। गड़बड़। खलबली। उथलपुथल २. शोरगुल। ३. क्षोभ। ४. अवसाद।

खरभरना—क्रि० अ० क्षुब्ध होना। घबराना।

खरभराना—क्रि० अ० १. खरभर शब्द करना। २. हलचल मचाना। ३. शोर करना। ४. घबड़ाना। व्याकुल होना। ५. गड़बड़ करना।

खरमस्ती—संज्ञा स्त्री० पाजीपन। दुष्टता। शरारत।

खरमास—संज्ञा पुं० दे० "खरवाँस"।

खरमिटाव†—संज्ञा पुं० १. जलपान। २. खुजलाहट दूर करना।

खरयष्टिका—संज्ञा स्त्री० खिरहरी। औषध-विशेष।

खरल—संज्ञा पुं० १. खल। २. औषध कूटने के लिए पत्थर का पात्र।

खरवाँस—संज्ञा पुं० पूस और चैत का महीना।

वह महीना जिसमें मांगलिक कार्य करना वर्जित हो, जैसे पूस और चैत का महीना।
खरवा–संज्ञा पुं० १. जूती। २. पैर के तलवा उँगलियों के बीच की फटी हुई सफेद दरार।
खरसा–संज्ञा पुं० पकवान-विशेष।
खरसान–संज्ञा स्त्री० एक सान जिस पर हथियार तेज किए जाते हैं।
खरहरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खरहरी] १. झँखरा। अरहर के डंठलों से बना हुआ झाड़ू। २. घोड़े के रोएँ साफ करने के लिए दाँतीदार कंघी। ऊंघा।
खरहरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मेवा।
खरहा–संज्ञा पुं० खरगोश।
खरहारना–क्रि० स० बुहारना। झाड़ना। बटोरना।
खरहिन्द–संज्ञा स्त्री० जली घास। दुर्गन्ध।
खरही–संज्ञा स्त्री० १. टाल। ढेर। राशि। २. खरगोश की मादा।
खरा–वि० १. चोखा। तेज। तीखा। २. उत्तम। बढ़िया। अच्छा। विशुद्ध। बिना मिलावट का। ३. करारा। सेंककर कड़ा किया हुआ। ४. श्रेष्ठ। ५. कड़ा। ६. छल-कपट से रहित। नकद (दाम)। ७. सच्चा। ८. स्पष्ट-वक्ता। ९. (बात के लिए) सच्चा। यथातथ्य। १०. अधिक। ज्यादा। ११. पैना। १२. गरम।
खराई–संज्ञा स्त्री० १. खरापन। "खरा" का भाव। २. सत्यता। सचाई। ३. उत्तम। ४. सबेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन आदि न मिलने के कारण तबीअत खराब होना।
खराद–संज्ञा पुं० यंत्र-विशेष, जिस पर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की वस्तुएँ चिकनी और सुडौल की जाती हैं।
संज्ञा स्त्री० १. बनावट। गढ़न। २. खरादने का भाव या क्रिया।
खरादना–क्रि० स० १. काट-छाँटकर बनाना। २. खराद पर चढ़ाकर वस्तु को साफ़ और सुडौल करना।
खरादी–संज्ञा पुं० खरादने का काम करनेवाला।
खरापन–संज्ञा पुं० १. खरा का भाव। २. निर्भयता। ३. सचाई। सत्यता।
खराब–वि० [अ०] १. बुरा। निकृष्ट। तुच्छ। २. नीच। हीन। ३. दुर्दशाग्रस्त। ४. पतित।
खराबी–संज्ञा स्त्री० [फा०]१. अवगुण। दोष। बुराई। २. बुरी अवस्था। दुर्दशा।
खरायँध–संज्ञा स्त्री० क्षार या मूत्र की सी दुर्गंध।
खरारि या **खरारी**–संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान्। २. रामचंद्र। ३. कृष्णचंद्र। ४. खर दैत्य के शत्रु। दुष्टों के नाश करनेवाले।
खरांशु–संज्ञा पुं० सूर्य।
खराश–संज्ञा स्त्री० [फा०] खरोंच।
खरिक–संज्ञा पुं० १. गोशाला। २. सड़क। ३. ऊख जो खरीफ की फसल के बाद बोई जाय।
खरिया–संज्ञा स्त्री० १. पाँसी। घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी से बनी हुई जाली। २. झोली। ३. दे० "खड़िया"।
खरियाना–क्रि० स० १. थैले में भरना। झोली में डालना। २. ले लेना। ३. झोली में से गिराना।
खरिहान–संज्ञा पुं० दे० "खलियान"।
खरी†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "खड़िया"। २. गर्धी। ३. दे० "खली"।
वि० उत्तम। अच्छी। चोखी। भली।
खरीता–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० खरीती] थैली। जेब। खीसा। बड़ा लिफाफा।
खरीद–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. क्रय। मोल लेना। २. मोल ली हुई वस्तु।
खरीदना–क्रि० स० क्रय करना। मोल लेना।
खरीदार–संज्ञा पुं० १. ग्राहक। मोल लेनेवाला। २. चाहनेवाला। इच्छुक। क्रय करनेवाला।
खरीफ़–संज्ञा स्त्री० फसल-विशेष जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय।

खरे–वि० उत्तम। अच्छे। चोखे। खड़े।
संज्ञा० पुं० श्रीवास्तव कायस्थों के दो भेदों में से एक ('खरे' और 'दूसरे' ये दो भेद हैं)।
खरोंच–संज्ञा स्त्री० खराश। छिलने का चिह्न।
खरोंचना–क्रि० स० १. छीलना। खुरचना। करोना। २. खसोटना। बकोटना।
खरोट–संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।
खरोटना–क्रि० स० नाखून गड़ाकर शरीर में घाव करना। दे० "खरोंचना"।
खरोष्ट्री, खरोष्ठी–संज्ञा स्त्री० प्राचीन लिपि-विशेष, जो फारसी की तरह दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गांधार लिपि।
खरौंट–संज्ञा स्त्री० दे० "खरौंच"।
खरौंहा–वि० कुछ खारापन लिये हुए। कुछ नमकीन।
खर्च–संज्ञा पुं० १. व्यय। किसी काम में किसी वस्तु का लगना। खपत। २. किसी काम में लगाया जानेवाला धन।
खर्चा–संज्ञा पुं० दे० "खर्च"। व्यय।
खर्चीला–वि० आवश्यकता से अधिक व्यय करनेवाला। बहुत खर्च करनेवाला।
खर्ज–संज्ञा पुं० षड्ज। राग स्थान-विशेष।
खर्जूर, खजूर–संज्ञा पुं० १. खजूर। छुहारा। २. हरताल। ३. चाँदी। ४. बिच्छू।
खर्जूरिका–संज्ञा स्त्री० पिण्डी खर्जूर। पिण्ड खजूर।
खर्जूरी–संज्ञा स्त्री० मूसली। औषध-विशेष।
खर्पर–संज्ञा पुं० १. रुधिरपान करने का काली देवी का पात्र। २. खप्पर। खोपड़ी। ३. खपरिया नामक उपधातु। ४. भिक्षापात्र।
खर्व–वि० १. जिसका अंग भग्न या अपूर्ण हो। २. लघु। छोटा। नाटा। ३. क्षुद्र। ह्रस्व। ४. बौना। वामन।
संज्ञा पुं० १. खरब। सौ अरब की संख्या। २. कुबेर की नौ निधियों में से एक।
खर्राच†वि० दे० "खर्चीला"।
खर्रा–संज्ञा पुं० १. लंबा कागज जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो। २. पाण्डुलिपि। मसविदा। ३. टट्टर। ४. खरखरा। ५. पीठ पर छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलने का रोग-विशेष। ६. खसरा।
खर्राटा–संज्ञा पुं० १. सोते समय नाक से निकलनेवाला शब्द। २. शीघ्रता। ३. गाढ़ी नींद।
मुहा०—खर्राटा भरना, मारना या लेना=निश्चिन्त होकर सोना।
खर्वट–संज्ञा पुं० चार सौ गाँवों के बीच बसा हुआ गाँव।
खलंगा–संज्ञा पुं० उपवन। रमणीय स्थान। मनोहर वन।
खल–वि० १. दुष्ट। दुर्जन। २. नीच। अधम। ३. क्रूर।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. धतूरा। ३. तमाल का पेड़। ४. पृथ्वी। ५. खलियान। ६. खरल। ७. स्थान।
खलक–संज्ञा पुं० [अ०] १. सृष्टि के प्राणी या जीव। २. संसार। दुनिया। जगत्।
खलक़त–संज्ञा स्त्री० सृष्टि। समूह। भीड़।
खलकथा–संज्ञा स्त्री० १. धूर्तों की कथा। २. चापलूसी की बात।
खलखल–संज्ञा स्त्री० १. खलबल। २. खड़बड़। ३. नदी के वेग में जल की ध्वनि।
खलड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० १. "खाल"। २. चमड़ी। ३. छाल।
खलता–संज्ञा स्त्री० १. नीचता। दुष्टता। २. धूर्तता। ३. क्रूरता।
खलना–क्रि० अ० १. अप्रिय होना। २. बुरा लगना। ३. कष्टदायी होना।
खलबल–संज्ञा स्त्री० १. हलचल। २. कुलबुलाहट। हल्ला। ३. शोरगुल। ४. कुतूहल। ५. उत्सुकता। ६. अधीरता।
खलबलाना–क्रि० अ० १. उफनना। खौलना। २. खलबल शब्द करना। ३. ऊपर उठना। ४. हिलना डोलना। ५. विचलित होना। ६. परेशान होना।
खलबली–संज्ञा स्त्री० १. हलचल। २. भय से घबड़ाहट। व्याकुलता। परेशानी। बेचैनी।
खलल–संज्ञा पुं० [अ०] रुकावट। बाधा। रोक।

खला–संज्ञा स्त्री० दुष्ट स्त्री। वेश्या।
खलाई†–संज्ञा स्त्री० दुष्टता। कुटिलता। नीचता।
खलाना*†–क्रि० स० १. खाली करना। २. पिचकाना। फूली हुई सतह को नीचे की ओर धँसाना। ३. गड्ढा करना।
खलार–संज्ञा स्त्री० नीची भूमि।
खलारि–संज्ञा पुं० १. नारायण। विष्णु। २. सज्जन।
खलारु–दे० "खलार"।
खलास–वि० १. मुक्त। छूटा हुआ। २. गिरा हुआ। च्युत। ३. समाप्त। खतम।
खलासी–संज्ञा स्त्री० छुट्टी। छुटकारा। संज्ञा पुं० [देश०] कुली। पोर्टर। जहाज पर का नौकर। माल ढोनेवाला।
खलाल–संज्ञा पुं० [अ०] दाँत खोदने का खरका।
खलित*–वि० १. चंचल। चलायमान। २. गिरा हुआ।
खलियान–संज्ञा पुं० १. ऐसी जगह जहाँ फसल काटकर रखी और साफ की जाती है। २. ढेर। राशि। ३. खता।
खलियाना–क्रि० स० १. चमड़ा अलग करना। २. खाल उतारना। छीलना। ३. उधेड़ना। †क्रि० स० रिक्त करना। खाली करना।
ख़लिश–संज्ञा स्त्री० पीड़ा। कसक।
खलिहान–संज्ञा पुं० दे० "खलियान"।
खली–संज्ञा स्त्री० [फा०] तेल निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी। संज्ञा स्त्री० १. खल। नीच। अधम। २. सरसों, तिल आदि का तैलरहित चूर्ण।
खलीन–संज्ञा पुं० कविका। लगाम।
खलीता–संज्ञा पुं० १. दे० "खरीता"। २. पत्र। थैली। चिट्ठी-पत्री।
ख़लीफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. अधिकारी। अध्यक्ष। २. वृद्ध व्यक्ति। ३. खुर्राट। ४. नाई। ५. खानसामा ६. दर्जी।
खलु–अव्य० क्रि० वि० १. शब्दालंकार। २. प्रार्थना। ३. प्रश्न। ४. निषेध। ५. नियम। ६. निश्चय। ७. निःसन्देह। संशयरहित।
खलेल–संज्ञा पुं० १. गढ़ा। २. फुलेल में खली आदि का बचा हुआ अंश।
खल्लड़–संज्ञा पुं० १. औषध कूटने का खल। २. चमड़ा। ३. चमड़े की मशक या थैला।
खल्व–संज्ञा पुं० १. सिर के बाल झड़नेवाली बीमारी। २. गंज।
खल्वाट–संज्ञा पुं० गंज रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं। वि० गंजा। जिसके सिर के बाल झड़ गए हों।
खवा–संज्ञा पुं० स्कंध। कंधा। भुज-मूल।
खवाना*†–क्रि० स० दे० "खिलाना"। भोजन कराना।
ख़वास–संज्ञा पुं० [स्त्री० ख़वासिन] राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार या सेवक।
ख़वासी–संज्ञा स्त्री० १. ख़वास का काम। २. नौकरी। चाकरी। ३. हाथी के हौदे या गाड़ी आदि में पीछे की जगह, जहाँ ख़वास बैठता है।
खवैया–संज्ञा पुं० खानेवाला।
खस या खश–संज्ञा पुं० १. भारत के उत्तर की ओर स्थित प्राचीन देश-विशेष। २. इस प्रदेश में रहनेवाली प्राचीन जाति-विशेष। ३. एक प्रकार का सुगन्धित तृण।
खसकंत†–संज्ञा स्त्री० खसकने का काम। चम्पत होना। गुम होना। भाग जाना।
खसकना–क्रि० अ० १. सरकना। धीरे-धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. नीचे आना। ३. हटना। ४. भाग जाना। ५. गायब हो जाना।
खसकाना–क्रि० स० १. हटाना। २. गुप्त रूप से कोई चीज़ हटाना। ३. सरकाना। बढ़ाना।
खसखस–संज्ञा स्त्री० पोस्ते का दाना। उशीर। खस।
खसखसा–वि० भुरभुरा।

संज्ञा, वि० १. गला सूखना। २ गले की सुरसुराहट।
खसखाना–संज्ञा पुं० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।
खसखास–संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस"।
खसखासी–वि० नीलापन लिये सफेद रंग। पोस्ते के फूल के रंग का।
खसटा–संज्ञा पुं० १. घाटा। २. खूँटी। ३. खुजली।
खसना*–क्रि० अ० खसकना। गिरना। अपने स्थान से हटना। धँसना। नीचे आना।
खसम–संज्ञा पुं० [अ०] १. पति। २. स्वामी।
खसरा–संज्ञा पुं० १. हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा। २. पटवारी का कागज-विशेष जिसमें प्रत्येक खेत का नंबर, रकबा आदि लिखा रहता है। ३. बरी। ४. खर्रा। ५. छोटी चेचक।
संज्ञा पुं० खुजली-विशेष।
खसलत–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वभाव। आदत।
खसाना–क्रि० स० गिराना। नीचे की ओर ढकेलना या फेंकना।
खसिया–वि० १. बधिया। जिसके अंडकोष निकाल लिए गए हों। २. नपुंसक। हिजड़ा। ३. बकरा।
खसी–संज्ञा पुं० बकरा।
वि० सरकी। नीचे आई। गिरी।
खसीस–वि० कृपण। कंजूस। सूम।
खसोट–संज्ञा स्त्री० १. उखाड़ने या नोचनेवाला। २. छीननेवाला।
खसोटना–क्रि० स० १. नोचना। उखाड़ना। २. छीनना। बलपूर्वक लेना।
खसोटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट"।
खस्ता–वि० १. भुरभुरा। जल्दी टूटनेवाला। २. ताजा।
खस्फटिक–संज्ञा पुं० १. काँच। २. सूर्यमणि। आकाश की मणि।
खस्सी–संज्ञा पुं० [अ०] बकरा।
वि० १. नपुंसक। हिजड़ा। २. बधिया।
खहर–संज्ञा पुं० गणित में वह राशि जिसका हर शून्य हो।
खाँ–संज्ञा पुं० दे० "खान"।
खाँखर†–वि० १. खोखला। २. जिसमें बहुत छेद हों। सूराखदार। ३. जिसकी बनावट दूर-दूर पर हो।
खाँग†–संज्ञा पुं० १. नोकीली वस्तु। २. कंटक। काँटा। ३. तीतर, मुर्ग़ आदि पक्षियों के पैरों में निकलनेवाला काँटा। ४. गैंडे के मुँह पर का सींग। ५. बड़ा दाँत।
†संज्ञा स्त्री० कमी। त्रुटि।
खाँगड़–वि० १. शस्त्रधारी। २. कँटीला।
खाँगना†–क्रि० अ० १. कम होना। घटना। २. लग जाना।
खाँगड़, खाँगड़ा–वि० १. खाँगवाला। जिसके खाँग हो। २. बलवान्। ३. शस्त्रधारी। ४. उद्दंड। अक्खड़।
खाँगी†–संज्ञा स्त्री० त्रुटि। कमी। घाटा।
खाँच†–संज्ञा स्त्री० १. संधि। २. जोड़। ३. खींचकर बनाया हुआ निशान। ४. गठन। खचन। ५. कीचड़। काँदा।
खाँचना*†–क्रि० स० [वि० खँचैया] १. चिह्न बनाना। अंकित करना। २. खींचना। ३. जल्दी-जल्दी लिखना।
खाँचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खाँची] झाबा। टोकरा।
खाँजा–संज्ञा पुं० काठ का बड़ा पात्र।
खाँड़–संज्ञा स्त्री० कच्ची शक्कर। कच्ची चीनी।
खाँड़ना–क्रि० स० १. तोड़ना। २. चबाना। ३. कूचना। ४. छाँटना। कूटना। कूटकर अनाज साफ करना।
खांडर–संज्ञा पुं० टुकड़ा।
खांडव–संज्ञा पुं० वन-विशेष। इन्द्र का वन।
खाँड़ा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अस्त्र। खड्ग-विशेष। २. टुकड़ा। भाग।
खाँधना*–क्रि० स० खाना।
खाँभ*†–संज्ञा पुं० खंभा। खंभ।
खाँवाँ–संज्ञा पुं० चौड़ी खाई।
खाँसना–क्रि० अ० १. कफ को कंठ से बाहर निकालना। २. किसी अटकी हुई वस्तु को गले से बाहर निकालना।

खाँसी–संज्ञा स्त्री० १. खोखी। २. खाँसने का शब्द। ३. अधिक खाँसने का रोग।

खाई–संज्ञा स्त्री० १. महल या दुर्ग की रक्षा के लिए चारों ओर खोदी गई नहर। २. खंदक। ३. नाला।

खाऊ–वि० १. पेटू। बहुत खानेवाला। २. खा जानेवाला। ३. आलसी।

खाक–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी। धूल। राख २. अकिंचन। तुच्छ। कुछ नहीं जैसे–वे खाक पढ़ते-लिखते हैं।

मुहा०—(कहीं पर) खाक उड़ना=उजाड़ होना। बरबादी होना। खाक उड़ाना या छानना=मारा-मारा फिरना। खाक में मिलना=बरबाद होना। बिगड़ना।

खाकसार–वि० [फा०] धूल में मिला हुआ। तुच्छ। अकिंचन। अतिदीन। सेवक। संज्ञा पुं० भारत में मुसलमानों का एक राजनीतिक दल, जिसका हरेक सदस्य 'फावड़ा' लेकर चलता है। अंग्रेज़ी शासन-काल में यह दल मुसलमानों की ओर से आन्दोलन कर रहा था।

खाकसारी–संज्ञा पुं० नम्रता। दीनता।

खाकसीर–संज्ञा स्त्री० एक औषध। खूबकलाँ।

खाका–संज्ञा पुं० १. नक़शा। रूपरेखा। मानचित्र। २. ढाँचा।

मुहा०—खाका उड़ाना=हँसी उड़ाना।

खाकी–वि० [फा०] १. मिट्टी से बना हुआ २. भूरा। मिट्टी के रंग का। ३. बिना सींची हुई भूमि।
संज्ञा पुं० मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय।

खाँग–संज्ञा पुं० गैंडे के सींग।

खाज–संज्ञा स्त्री० खुजली रोग।

मुहा०—कोढ़ की खाज=कष्ट को बढ़ानेवाला दूसरा कष्ट।

खाजा–संज्ञा पुं० मैदे और चीनी की बनी एक मिठाई।

खाजी*–संज्ञा स्त्री० खाने की वस्तु।

मुहा०—खाजी खाना=मुँह की खाना। बुरी तरह असफल होना।

खाट–संज्ञा स्त्री० खटिया। चारपाई। पलँगड़ी।

खाड़*–संज्ञा पुं० गड्ढा।

खाड़ी–संज्ञा स्त्री० समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो।

खात–संज्ञा पुं० १. खोदाई। खोदना। २. तालाब। पोखर। कुआँ। ३. गड्ढा। ४. खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा। गोबर।

खातक–संज्ञा पुं० ऋणी। कर्जदार।

खातमा–संज्ञा पुं० १. मृत्यु। २. अंत। समाप्ति।

खाता–संज्ञा पुं० १. बखार। २. अन्न रखने का गड्ढा। ३. बही। व्योरेवार हिसाब।

मुहा०—खाता खोलना=१. नया व्यवहार करना। २. विभाग। मद।

खातिर–संज्ञा स्त्री० सम्मान। आदर।
†अव्य० लिए। कारण। वास्ते।

खातिरख्वाह–अव्य०, क्रि० वि० जैसा चाहिए, वैसा। इच्छानुसार।

खातिरजमा–संज्ञा स्त्री० १. संतोष। इतमीनान। तसल्ली। २. विश्वास।

खातिरदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सम्मान। सत्कार। २. आदर। आवभगत।

खातिरी–संज्ञा स्त्री० १. आदर। सम्मान। आवभगत। २. संतोष। तसल्ली। इतमीनान।

खाती–संज्ञा स्त्री० १. खोदी हुई भूमि। २. बढ़ई। ३. खंती। जमीन खोदनेवाली जाति-विशेष। खतिया।

खाद–संज्ञा स्त्री० पाँस। गोबर-कूड़ा इत्यादि पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिए डाला जाता है।

खादक–वि० १. भक्षक। खानेवाला। खवैया। २. ऋणी। कर्जदार।

खादन–संज्ञा पुं० [वि० खाद्य, खादनीय] भोजन। भक्षण। खाना।

खादर–संज्ञा पुं० कछार। नीची जमीन। बाँगर का उलटा।

खादिम–संज्ञा पुं० सेवक। दास। नौकर।

खादी–वि० १. भक्षक। खानेवाला। २. शत्रु का नाश करनेवाला। ३. कँटीला।

४. छिद्रान्वेषी। ५. दूषित। बुरा। दोष निकालनेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. खाद्य। २. खद्दर। हाथ से काते हुए सूत से बना कपड़ा। कवच।
खाबुक–वि० हिंसक। हिंसात्मक प्रवृत्ति-वाला। हिंसालु।
खाद्य–वि० खाने योग्य।
संज्ञा पुं० खाने की वस्तु। भोजन। खाने योग्य वस्तु।
खाधु*†–संज्ञा पुं० खाने योग्य वस्तु।
खाधुक*–वि० खानेवाला।
खान–संज्ञा पुं० १. भोजन। २. खाने की क्रिया। ३. भोजन की सामग्री। ४. भोजन करने का ढंग। ५. पठानों की उपाधि-विशेष। ६. सरदार।
संज्ञा स्त्री० १. खानि। वह जगह जहाँ से धातु पत्थर आदि खोदकर निकाले जायँ। २. खजाना। जहाँ किसी वस्तु का ढेर लगा हो।
खानक–संज्ञा पुं० १. खान खोदनेवाला। २. बेलदार। ३. राज।
खानकाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमान फकीरों के रहने का स्थान।
खानखर–संज्ञा पुं० सुरंग। खोह।
खानखाना–संज्ञा पुं० १. मुगल सरदारों की एक उपाधि। २. सरदारों का सरदार।
खानगी–वि० [फा०] घरेलू। अपना। आपस का।
संज्ञा स्त्री० तुच्छ वेश्या। पतुरिया।
खानदान–संज्ञा पुं० [फा०] कुल। वंश।
खानदानी–वि० १. कुलीन। ऊँचे वंश का। अच्छे कुल का। २. पैतृक। वंश-परं-परागत। पुश्तैनी।
खान-पान–संज्ञा पुं० १. खाने-पीने का व्यवहार। २. खाना-पीना। ३. खाने-पीने का संबंध।
खानबहादुर–संज्ञा पुं० अंग्रेजी शासन-काल में वफादारी के लिए मुसलमानों को दिया जानेवाला एक खिताब।
खानसामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] अंग्रेजों या मुसलमानों का रसोइया।
खाना–क्रि० स० १. भोजन करना। २. आहार। ३. परेशान करना। कष्ट देना। ४. डसना। विषैले कीड़ों का काटना। ५. नष्ट करना या बरबाद करना। ६. हटा देना। उड़ा देना। ७. हड़प जाना। ८. बेईमानी से रुपया पैदा करना। ९. घूस लेना। १० चोट सहना। सहन करना।
मुहा०–खाता-कमाता=खाने-पीने भर को कमानेवाला। खाना कमाना=काम-धंधा करके जीविका पैदा करना। खा-पका जाना या डालना=उड़ा डालना। खर्च कर डालना। खाना न पचना=जी न मानना। चैन न पड़ना। खा जाना=भक्षण करना। खा जाना या कच्चा खा जाना=प्राण ले लेना। मार डालना। खाने दौड़ना=क्रुद्ध होना। चिड़चिड़ाना।
मुँह की खाना=१. नीचा देखना। २. हार जाना। पराजित होना।
ख़ाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. गृह। मकान। घर। जैसे–डाकखाना, दवाखाना। २. भोजन। आहार। ३. किसी चीज के रखने का घर या बाक्स। ४. विभाग। घर। कोठा। ५. कोष्ठक।
ख़ाना-ख़राब–वि० [फा०] जिसका घर-बार तक न रह गया हो। दुर्दशाग्रस्त। चौपट। आवारा।
ख़ानातलाशी–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को पाने के लिए घर के भीतर छान-बीन करना, विशेषकर पुलिस द्वारा।
ख़ानापूरी–संज्ञा स्त्री० १. यथास्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। २. नक़शा भरना।
ख़ानाबदोश–वि० [फा०] १. बिना घरबार का। बिना घर के। २. गृहविहीन।
खानि–संज्ञा स्त्री० १. दे० "खान"। आकर। २. ओर। तरफ़। ३. ढंग। प्रकार। ४. उत्पत्ति-स्थान।
खानिक*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "खानि"। खान संबंधी।
खाप–संज्ञा स्त्री० १. तलवार की खोल। म्यान। २. कोष।

खाब*‡–संज्ञा पुं० दे० "ख्वाब"।
खाबड़–संज्ञा पुं० ऊँच-नीच। अड़बड़।
ख़ाम–वि० [फ़ा०] कच्चा। जो पका न हो। जिसमें कमी रह गई हो। घटा हुआ। दोषपूर्ण। जिसमें कुछ गलती हो।
ख़ाम-खयाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्यर्थ या बिना आधार का विचार। मनगढ़न्त।
ख़ामख़ाह, ख़ामख़ाही–क्रि० वि० दे० "ख्वाहमख्वाह"।
खामना–क्रि० स० किसी पात्र का मुँह बंद करना।
ख़ामोश–वि० [फा०] मौन। चुप।
ख़ामोशी–संज्ञा स्त्री० मौन। चुप्पी।
ख़ामी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कच्चापन। गलती। त्रुटि। दोष।
खार–संज्ञा पुं० १. दे० "क्षार"। २. लोनी। लोना। ३. सज्जी मिट्टी। ४. एक प्रकार का पौधा। ५. राख। धूल। रेह।
ख़ार–संज्ञा पुं० [फा०] १. कंटक। काँटा। २. फाँस। खाँग। ३. जलन। डाह। ईर्ष्या।
मुहा०–खार खाना=डाह करना। जलना।
खारक या **खारका**–संज्ञा पुं० छुहारा।
खारा–वि० [स्त्री० खारी] नमक के स्वाद का।
संज्ञा पुं० १. एक तरह का कपड़ा। २. खाँचा। झाबा।
ख़ारिज–वि० [अ०] १. नामंजूर। अस्वीकृत। बाहर निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. भिन्न। अलग।
ख़ारिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] खुजली। खाज। वि०–जिसमें खार हो। क्षार-युक्त।
खारुआ-खारुवा–संज्ञा पुं० १. रंग-विशेष। २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा, जो इस रंग में रँगा हो।
खाल–संज्ञा स्त्री० १. चर्म। शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ी। त्वचा। २. अधौड़ी। आधा चरसा। ३. मृत शरीर। ४. धौंकनी। भाथी। ५. नीची भूमि। ६. खाड़ी। ७. खाली जगह। अवकाश। ८. गहराई।

मुहा०–खाल उधेड़ना या खींचना=कड़ा दंड देना। बहुत मारना-पीटना।
ख़ालसा–वि० १. जिस पर केवल एक का अधिकार हो। २. सरकारी। राज्य का।
मुहा०–खालसा करना=१. जब्त करना। २. नष्ट करना।
संज्ञा पुं० सिक्खों की बिरादरी या पंच-मंडली-विशेष।
खाला–वि० [स्त्री० खाली] १. नीचा। २. निम्न।
संज्ञा स्त्री० [अ०] मौसी। माता की बहिन।
मुहा०–खाला जी का घर=सरल काम। ऐसा घर जिसे अपना समझा जाय।
ख़ालिस–वि० [अ०] शुद्ध। जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो, बेमेल।
ख़ाली–वि० [अ०] १. रिक्त। रीता। जिसके भीतर कुछ भी न हो। २. जिसके भीतर की जगह न भरी हो। जिसमें कोई वस्तु न हो। ३. जिस पर कुछ न हो। विहीन। रहित। ४. जिसे कुछ काम न हो। बेकार। ५. जिसका काम न हो। ६. निष्फल। व्यर्थ।
मुहा०–हाथ खाली होना=निर्धन होना। हाथ में रुपया-पैसा न होना। खाली पेट=बिना कुछ अन्न खाए हुए।
मुहा०–निशाना या वार खाली जाना=लक्ष्य पर न पहुँचना। बात खाली जाना या पड़ना=कहने के अनुसार कोई बात न होना।
क्रि० वि० केवल। सिर्फ।
खालू–संज्ञा पुं० मौसा।
ख़ाविंद–संज्ञा पुं० [फा०] १. पति। २. स्वामी। मालिक।
ख़ास–वि० [अ०] १. प्रधान। मुख्य। विशेष। २. अपना। ३. प्रिय। ४. स्वयं। खुद। ५. ठीक। ६. ठेठ। विशुद्ध।
मुहा०–खासकर=प्रधानतः। विशेषतः।
ख़ासक़लम–संज्ञा पुं० अपना मुंशी। प्राइवेट सेक्रेटरी।

ख़ासगी–वि० [अ०] १. निज का । २. राजा या स्वामी आदि का ।

ख़ासबरदार–संज्ञा पुं० [फा०] राजा की सवारी के आगे-आगे चलनेवाला सिपाही ।

ख़ासा–संज्ञा पुं० [अ०] १. राजभोग । राजा का भोजन । २. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी । ३. एक प्रकार का सूती कपड़ा । वि० पुं० [स्त्री० खासी] १. उत्तम । अच्छा । भला । बढ़िया । २. स्वस्थ । नीरोग । तंदुरुस्त । ३. सुडौल । ४. मध्यम श्रेणी का । ५. सुंदर । ६. सर्वांग-पूर्ण । भरपूर ।

ख़ासियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकृति । आदत । २. स्वभाव । ३. विशेष गुण । अच्छाई । सिफत ।

ख़ाहिश–संज्ञा स्त्री० दे० "ख्वाहिश" ।

खिंचना–क्रि० अ० १. बाहर निकल जाना । २. घसीटा जाना । ३. तनना । ४. प्रवृत्त होना । ५. किसी ओर बढ़ना । आकर्षित होना । सोखा जाना । ६. खपना । ७. चुसना । ८. शराब आदि तैयार होना । ९. गुण या तत्त्व का निकाला जाना । १०. चित्रित होना । ११. रुकना । १२. माल खपना । १३. मन-मुटाव हो जाना । **मुहा०**–पीड़ा या दर्द खिंचना=(औषध आदि से) दर्द दूर होना । हाथ खिंचना= न देना ।

खिंचवाना–क्रि० स० खींचने का काम दूसरे से कराना ।

खिंचाई–संज्ञा स्त्री० १. खींचने का काम । २. खींचने की मजदूरी ।

खिंचाना–क्रि० स० दे० "खिंचवाना" ।

खिंचाव–संज्ञा पुं० "खिंचना" का भाव । तनाव ।

खिजमत*–संज्ञा स्त्री० दे० खिदमत ।

खिंडाना†–क्रि० स० छितराना या बिख-राना ।

खिचड़वार–संज्ञा पुं० मकर-संक्रांति ।

खिचड़ी–संज्ञा स्त्री० १. एक में मिलाकर पकाया हुआ दाल और चावल । २. विवाह की रस्म-विशेष । ३. एक ही में मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदार्थ । ४. मकर-संक्रांति । **मुहा०**–खिचड़ी पकाना=गुप्त भाव से कोई सलाह करना । ढाई चावल की खिचड़ी पकाना=सबकी सम्मति के विरुद्ध या सबसे अलग होकर कोई काम करना । वि० १. गड़बड़ । २. मिला-जुला ।

खिजड़ी–संज्ञा स्त्री० १. योगी का आसन । २. योगी की खटिया ।

खिजलाना–क्रि० अ० झुँझलाना । चिढ़ना । क्रि० स० चिढ़ाना । गुस्सा होना । खिजाना । क्रुद्ध करना ।

खिज़ाँ–संज्ञा स्त्री० [फा०] पतझड़ । पेड़ों के पत्ते झड़ने के दिन । हेमंत ऋतु । अवनति या पतन के दिन ।

खिजाना–क्रि० स० "खिजलाना" । क्रुद्ध करना । चिढ़ाना ।

ख़िज़ाब–संज्ञा पुं० [अ०] केश-कल्प । सफेद बालों को काला करने की दवा ।

खिझ*–संज्ञा स्त्री० दे० "खीझ", "खीज" । क्रोध । खिसियाहट । गुस्सा ।

खिझना–क्रि० अ० दे० "खीजना" ।

खिझलाना या खिझाना–क्रि० स० १. चिढ़ाना । २. तंग करना ।

खिड़कना–क्रि० अ० दे० खिसकना ।

खिड़की–संज्ञा स्त्री० छोटा दरवाजा । झरोखा । गवाक्ष ।

ख़िताब–संज्ञा पुं० [अ०] उपाधि । पदवी ।

ख़ित्ता–संज्ञा पुं० [अ०] देश । प्रांत । भाग या हिस्सा ।

ख़िदमत–संज्ञा स्त्री० [फा०] सेवा । नौकरी । टहल ।

ख़िदमतगार–संज्ञा पुं० [फा०] सेवक । नौकरी करनेवाला । टहलुवा । नौकर ।

ख़िदमतगारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] "खिदमत" ।

ख़िदमती–वि० [फा०] १. अधिक सेवा करने-वाला । २. जो सेवा के बदले में प्राप्त हुआ हो । ३. सेवा-सम्बन्धी ।

खिन*†–संज्ञा पुं० दे० "क्षण" ।

खिन्न–वि० १. चिंतित । उदास । २. दुःखित ।

दुखी। दुखिया। ३. अप्रसन्न। नाराज़। ४. असहाय।

खिपना*—क्रि० अ० १. निमग्न होना। तल्लीन होना। २. खपना। लग जाना या लगना।

खियाना†—क्रि० अ० रगड़ से घिस जाना। †क्रि० स० दे० "खिलाना"।

खिरनी—संज्ञा स्त्री० खिन्नी। फल-विशेष।

ख़िराज—संज्ञा पुं० [अ०] कर। राजस्व। माल-गुजारी।

खिररना*—क्रि० स० अनाज छानना। खुरचना।

खिरेंटी—संज्ञा स्त्री० बीजबंद। बलवान। बरियारा।

खिरौरा—संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई।

खिल—संज्ञा पुं० आगल। अर्गल। धन्नी।

ख़िलअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] राजा की ओर से किसी को सम्मान-सूचनार्थ दिया जानेवाला वस्त्र आदि।

ख़िलक़त—संज्ञा स्त्री० [अ०] संसार। सृष्टि। दुनियाँ।

खिलकौरी†—संज्ञा स्त्री० खिलवाड़। खेल।

खिलखिलाना—क्रि० अ० ठठाकर हँसना। जोर से हँसना।

खिलना—क्रि० अ० १. विकसित होना। कली से फूल होना। फूलना। २. सुन्दर लगना। ३. प्रसन्न होना। ४. बीच से फट जाना। ५. अलग-अलग हो जाना।

ख़िलवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] निर्जन स्थान। एकांत।

ख़िलवतख़ाना—संज्ञा पुं० गुप्त सलाह करने का स्थान।

खिलवाड़—संज्ञा पुं० दे० "खेलवाड़"। खेल। तमाशा।

खिलवाना—क्रि० स० दूसरे से भोजन कराना। दे० "खेलवाना"।

खिलाई—संज्ञा स्त्री० १. खिलाने का काम। २. दाई या नौकरानी जो बच्चों को खेलाती हो।

खिलाड़ी—संज्ञा पुं० [स्त्री० खिलाड़िनी] १. खेलनेवाला। २. जादूगर। ३. कुश्ती लड़ने, पटा-बनेठी खेलनेवाला। वि० चंचल। आवारा। उच्छृंखल।

खिलाना—क्रि० स० किसी को खेल में लगाना।

क्रि० स० १. भोजन कराना। २. विकसित करना। फुलाना।

ख़िलाफ़—वि० [अ०] विपरीत। विरुद्ध। उलटा।

खिलैया—संज्ञा पुं० खेल करनेवाला। खिलाड़ी।

खिलौना—संज्ञा पुं० १. खेलने की वस्तु। २. कोई वस्तु जिससे बालक खेलते हैं।

खिल्ली—संज्ञा स्त्री० हँसी। ठठोली। परिहास। दिल्लगी। मजाक।

यौ०—खिल्लीबाज=दिल्लगीबाज।

†संज्ञा स्त्री० १. पान का बीड़ा। गिलौरी। २. काँटा। कील।

खिल्लो—संज्ञा स्त्री० अधिक हँसनेवाली स्त्री।

खिसकना—क्रि० अ० दे० "खसकना"। चम्पत होना। भाग जाना। ले भागना।

खिसकाना—क्रि० स० हटाना। भगाना। सर-काना।

खिसना—क्रि० अ० १. नम्र होना। २. झुकना। ३. शरणागत होना।

खिसलना—क्रि० अ० सरकना। फिसलना। गिरना।

खिसलहा—वि० चिकना।

खिसलाहट—संज्ञा स्त्री० खीझ। क्रोध।

खिसाना*†—क्रि० अ० दे० १. 'खिसियाना'। २. हटाना। टालना। ३. क्रुद्ध होना।

खिसारा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] हानि। घाटा। नुकसान।

खिसियाना—क्रि० अ० १. लज्जित होना। लजाना। शरमाना। २. गुस्सा होना। क्रुद्ध होना। ३. चिड़चिड़ाना।

खिसियानी—संज्ञा स्त्री० १. हारी हुई। २. लजाई हुई।

खिसियाहट—संज्ञा स्त्री० क्रोध। खीस। खीज।

खिसी*†—संज्ञा स्त्री० १. लज्जा। शरम। २. धृष्टता। ढिठाई।

खिसौहाँ*—वि० १. लज्जित-सा। २. कुढ़ा या रिसाया-सा। क्रुद्ध-सा।

खींच–संज्ञा स्त्री० १. खींचने का भाव। २. अप्रसन्नता।

खींच-तान–संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे को खींचना, मनमुटाव। २. खींचाखींची। किसी शब्द या वाक्य का अन्यथा अर्थ करना।

खींचना–क्रि० स० १. बाहर निकालना। २. घसीटना। ३. तानना। बलपूर्वक अपनी ओर बढ़ाना। ४. किसी वस्तु को पकड़ कर अपनी ओर लाना। ५. आकर्षित करना। ६. किसी ओर ले जाना। ७. सोखना। ८. चूसना। ९. शराब आदि बनाना। १०. किसी वस्तु के गुण या तत्त्व को निकाल लेना। ११. चित्रित करना। कलम फेरकर लकीर आदि डालना। लिखना। १२. रोक रखना। १३. टानना। ऐंचना। कसना।
मुहा०–चित्र खींचना=मोहित करना। हाथ खींचना=न देना या काम बंद करना।

खींचाखींची, खींचातानी–संज्ञा स्त्री० दे० "खींचतान"।

खीज–संज्ञा स्त्री० १. झुंझलाहट। खीजने का भाव। २. चिढ़नेवाली बात। क्रोध।

खीजना–क्रि० अ० झुंझलाना। दुखी और क्रुद्ध होना।

खीझ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "खीज"। झुंझलाहट।

खीझना–*‡क्रि० अ० दे० "खीजना"।

खीन*†–वि० दुर्बल। क्षीण। उदास।

खीर–संज्ञा स्त्री० १. क्षीर। दूध में पकाया हुआ चावल। *२. दूध।
मुहा०–खीर चटाना=बच्चे को पहले पहल अन्न खिलाना।

खीर-मोहन–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बंगाली मिठाई।

खीरा–संज्ञा पुं० ककड़ी की तरह का फल-विशेष।

खीरी–संज्ञा स्त्री० १. चौपायों के थन के ऊपर का हिस्सा जिसमें दूध रहता है। बाख। भैंस आदि का ऐन। २. मेवा-विशेष। पिस्ता। ३. खिरनी।

खील–संज्ञा स्त्री० धान का लावा। मङ्गलार्थ लावा। दे० "कील"।

खीला–‡संज्ञा पुं० कील। काँटा। मेख।

खीली–संज्ञा स्त्री० खिल्ली। पान का बीड़ा।

खीवन, खीवनि–संज्ञा स्त्री० मस्ती। मतवालापन।

खीस–*†वि० नष्ट। बरबाद।
संज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता। नाराजगी। क्रोध। २. गुस्सा। ३. लज्जा। शरम। ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत।

खीसना–क्रि० अ० १. क्रोध करना। २. खीस निकालना।

खीसा–संज्ञा पुं० [फा०] १. थैली। थैला। २. जेब। पाकेट। खलीता।

खीह–संज्ञा स्त्री० रेह। सज्जी मिट्टी।

खुंटकढ़वा–संज्ञा पुं० कान का मैल निकालनेवाला।

खुंदलना–वि० कुचलना। रौंदना। पैर से मारना।

खुंदाना–क्रि० स० (घोड़ा) कुदाना।

खुंदी–संज्ञा स्त्री० दे० "खूंद"।

खुआर*–वि० दे० "ख्वार"। खराब। अप्रतिष्ठित। आपद्ग्रस्त।

खुआरी–संज्ञा स्त्री० नाश। खराब। बरबादी।

खुखला–संज्ञा पुं० वृक्ष का छिद्र। खोखर।

खुख या खुक्ख–वि० १. छूंछा। खाली। जिसके पास कुछ न हो। २. दीन। कंगाल।

खुखड़ी–संज्ञा स्त्री० १. कुकड़ी। तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन। २. नैपाली छुरी।

खुगीर–संज्ञा पुं० १. नमदा। घोड़ों के चारजामे के नीचे लगाया जानेवाला एक ऊनी कपड़ा। २. जीन। चारजामा।
मुहा०–खुगीर की भरती=अनावश्यक और व्यर्थ संग्रह।

खुचर, खुचुर–संज्ञा स्त्री० झूठमूठ अवगुण दिखलाना। व्यर्थ दोष निकालना।

खुजलाना–क्रि० स० खुजली मिटाने के लिए नाखून रगड़ना।
क्रि० अ० किसी अंग में खुजली मालूम होना। चुल-चुलाना।
खुजलाहट–संज्ञा स्त्री० १. खुजली। २. सुरसुरी।
खुजली–संज्ञा स्त्री० १. खुजलाहट। सुरसुरी। २. खाज, रोग-विशेष जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है। कंडू।
खुज्झा–संज्ञा पुं० १. मैल। २. तलछट। ३. फल आदि का रेशेदार हिस्सा।
खुटक*†–संज्ञा स्त्री० दे० १. चिंता। खटका। आशंका। २. सन्देह। भ्रम। शंका। अंदेशा।
खुटकना–क्रि० स० १. खोंटना। २. किसी वस्तु को ऊपर से तोड़ना। ३. कुतरना। ४. सन्देह करना।
खुटका–संज्ञा पुं० दे० "खटका।"
खुटचाल*–संज्ञा स्त्री० १. दुष्टता। नीचता। २. बुरा चाल-चलन। ३. उत्पात। उपद्रव।
खुटचाली*–वि० १. दुराचारी। बुरी चाल चलनेवाला। बदचलन। २. दुष्ट। पाजी।
खुटना*†–क्रि० अ० खुलना। समाप्त होना।
खुटपन, खुटपना–संज्ञा पुं० दोष। खोटापन। बुराई। बदमाशी।
खुटाई–संज्ञा स्त्री० खोटापन। १. दुष्टता। बदमाशी। २. नीचता।
खुटाना†–क्रि० अ० १. क्षीण होना। २. खुटना। ३. समाप्त होना। नष्ट होना। ४. बराबर करना। समान करना।
खुटिला–संज्ञा पुं० कान का गहना-विशेष। जैसे कर्णफूल।
खुट्टी†–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई। २. पूंजी। ३. रोकड़। मूलधन। बच्चों की आपस की लड़ाई।
खुद्ठी–संज्ञा स्त्री० घाव पर जमी हुई पपड़ी।
खुडला–संज्ञा पुं० पक्षियों के रहने का स्थान। बेहड़।
खुड़ुआ†–संज्ञा पुं० दे० "घोघी"।
खुड्डी, खुड्ढी–संज्ञा स्त्री० १. पाखाने में पैर रखने के पायदान। २. पाखाना फिरने का गड्ढा।
खुतबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रशंसा। तारीफ। २. घोषणा।
मुहा०–किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना=नए राजा के सिंहासनासीन होने की घोषणा।
खुत्थ–संज्ञा पुं० पेड़ के ऊपर का भाग।
खुत्थी, खुथा*†–संज्ञा स्त्री० १. खूंथी। खूंटी। पौधों का वह भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी पर गड़ा रह जाता है। २. धरोहर। थाती। अमानत। ३. बसनी। पतली लंबी थैली जिसमें रुपया भरकर कमर में बाँधते हैं। हिमयानी। ४. धन। दौलत।
ख़ुद–अव्य० [फ़ा०] आप। स्वयं।
मुहा०–खुद ब खुद=आपसे आप। बिना किसी दूसरे की सहायता के।
ख़ुदकाश्त–संज्ञा स्त्री० भूमि के स्वामी द्वारा स्वयं जोती-बोई जानेवाली भूमि।
ख़ुदकुशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आत्महत्या।
ख़ुदग़रज़–वि० १. स्वार्थी। अपना काम निकालनेवाला। २. मतलबी।
ख़ुदग़रज़ी–संज्ञा स्त्री० स्वार्थ। अपना मतलब।
खुदना–क्रि० अ० खुदाई होना। खोदा जाना।
ख़ुदमुख़्तार–वि० स्वच्छंद। जो स्वयं मालिक हो। जिस पर किसी का नियंत्रण न हो।
खुदरा–संज्ञा पुं० १. फुटकर चीज। २. छोटी और साधारण वस्तु।
खुदवाई–संज्ञा स्त्री० खुदवाने का काम या मजदूरी।
खुदवाना–क्रि० स० खोदने का काम कराना।
ख़ुदा–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. भगवान्। ३. परमात्मा।
ख़ुदाई–संज्ञा स्त्री० १. सृष्टि। २. ईश्वर का चमत्कार।
खुदाई–संज्ञा स्त्री० खोदने का काम, या मजदूरी।
ख़ुदावंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. ईश्वर।

२. स्वामी । अन्नदाता । ३. श्रीमान् । हुजूर । जनाब ।

खुदाव—संज्ञा पुं० खुदाई । खोदकर बनाए हुए बेलबूटे । नक्काशी ।

खुदी—संज्ञा पुं० १. अहंकार । २. गर्व । ३. शेखी ।

खुद्दी—संज्ञा स्त्री० चावल आदि के छोटे-छोटे टुकड़े ।

खुनखुना—संज्ञा पुं० झुनझुना । एक प्रकार का खिलौना ।

खुनस—संज्ञा स्त्री० [वि० खुनसी] क्रोध । रोष । रिस । अनख ।

खुनसाना†—क्रि० अ० १. क्रोध करना । २. डाह रखना । खिसाना ।

खुनसी—वि० क्रोधी । रिसहा । जल्दी क्रुद्ध होनेवाला ।

खुफ़िया—वि० छिपा हुआ । गुप्त ।

खुफ़िया पुलिस—संज्ञा स्त्री० भेदिया । गुप्त पुलिस । जासूस ।

खुबना—क्रि० स० १. चुभना । बिंधना । पैठना । २. प्रभाव जमाना ।

खुबारू—वि० १. बिगड़ा हुआ । २. नष्ट ।

खुभना—क्रि० स० घुसना । चुभना । बिंधना । धँसना

खुभी—संज्ञा स्त्री० कान में पहनने की लौंग । कान का गहना ।

खुमान—वि० दीर्घजीवी । अधिक उम्रवाला । (आशीर्वाद) चिरंजीव ।

खुमार—संज्ञा पुं० दे० "खुमारी ।"

खुमारी—संज्ञा स्त्री० १. नशा उतरने के समय की हलकी थकावट । २. रात भर जागने की थकावट । ३. हलका नशा ।

खुमी—संज्ञा स्त्री० १. फल-फूल से रहित पृथ्वी से निकलनेवाला एक पौधा, जैसे ढिंगरी, कुकुर-मुत्ता आदि । २. हाथी के दाँत पर चढ़ानेवाला धातु का छल्ला । ३. दाँतों में लगवाने की सोने की कील ।

खुरंड—संज्ञा स्त्री० खूंटी । सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी ।

खुर—संज्ञा पुं० १. चौपायों के पैर की कड़ी टाप । २. चौपायों के पैर का नाखून ।

खुरक†—संज्ञा स्त्री० खटका । चिन्ता । अंदेशा ।

खुरखुर—संज्ञा स्त्री० १. किसी कड़ी चीज के रगड़ने की आवाज । २. छोटे जानवरों का शब्द जैसे विलायती चूहा । ३. घरघर का शब्द । ४. गले में कफ आदि रुक जाने से साँस लेते समय का शब्द ।

खुरखुरा—वि० जो समतल न हो । खुरदरा ।

खुरखुराना—क्रि० अ० १. गले में कफ के कारण घरघराहट होना । २. खुरखुरा मालूम होना ।

खुरखुराहट—संज्ञा स्त्री० १. साँस लेते समय गले का शब्द । २. खुरदरापन ।

खुरचन—संज्ञा स्त्री० खुरचकर निकाली जानेवाली वस्तु । १. दूध की बनी हुई मथुरा की विशेष मिठाई । २. कड़ाही में चिपकी हुई चीज जो खुरचकर निकाली जाय ।

खुरचना—क्रि० अ० करोचना । छीलना । उखेड़ना । खुरचकर निकालना ।

खुरचनी—संज्ञा स्त्री० खुरचने का औजार ।

खुरचाल—संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल" ।

खुरजी—संज्ञा स्त्री० १. बड़ा थैला । २. घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का झोला ।

खुरतार†—संज्ञा स्त्री० सुम का आघात । टाप या खुर की चोट ।

खुरपका—संज्ञा पुं० जानवरों की एक बीमारी जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाने निकल आते हैं ।

खुरपा—संज्ञा पुं० (स्त्री० खुरपी) घास छीलने का औजार । बड़ी खुरपी ।

खुरमा—संज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकार की मिठाई । १. छोहारा । २. खजूर ।

खुरहर—संज्ञा पुं० खुर का चिह्न । खुर से बना रास्ता ।

खुराक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खाना । भोजन । २. एक बार का भोजन ।

खुराकी—संज्ञा स्त्री० खाने के लिए दिया जानेवाला धन या सामग्री ।
वि० अधिक खानेवाला ।

खुराफ़ात–संज्ञा स्त्री० १. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। २. गाली-गलौज।
खुरी–संज्ञा स्त्री० टाप का चिह्न।
खुरुक*–संज्ञा पुं० दे० "खुरक"।
खुर्द–वि० [फा०] छोटा। लघु।
खुर्दबीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] सूक्ष्मदर्शक यंत्र। यंत्र-विशेष जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी दिखाई देती है।
खुर्द-बुर्द–क्रि० वि० (फा०) नष्ट-भ्रष्ट।
खुर्दा–संज्ञा पुं० (फा०) छोटी-मोटी चीज।
खुर्राट–वि० १. चालाक। घाघ। २. वृद्ध। बूढ़ा। अनुभवी। तजरुबेकार।
खुलना–क्रि० अ० १. प्रकट होना, रुकावट दूर होना। पर्दा हटना। बन्द न रहना। जैसे–किवाड़ खुलना। २. फटना। ३. बादलों का तितर-बितर होना। ४. बिखरना। ५. बाँध या जोड़ टूटना। ६. जारी होना। ७. सड़क, नहर आदि तैयार होना। ८. कार्य आरंभ होना। ९. किसी सवारी का रवाना हो जाना। १०. किसी गूढ़ बात का प्रकट होना। ११. भेद बताना। मन की बात कहना। १२. सुन्दर लगना। सजना।
मुहा०–खुलकर=बिना रुकावट के। खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान=सबके सामने। छिपाकर नहीं। खुलता रंग=सोहावना रंग।
खुलवाना–क्रि० स० १. दूसरे से खोलने का काम कराना। २. छुड़वाना। ३. मुक्त कराना।
खुला–वि० १. बिना रोकटोक का। बंधन-रहित। २. मुक्त। ३. स्पष्ट। प्रकट। जो छिपा न हो। जाहिर।
खुलासा–संज्ञा पुं० [अ०] सारांश।
वि० १. स्पष्ट। साफ-साफ (संक्षेप में)। २. बिना रुकावट के। ३. खुला हुआ।
खुल्लमखुल्ला–क्रि० वि० १. सबके सामने। निडर भाव से। २. खुलेआम।
खुश–वि० [फा०] १. प्रसन्न। मगन। २. अच्छा।
खुशक़िस्मत–वि० [फा०] भाग्यशाली। भाग्यवान्। अच्छे भाग्यवाला।
खुशखबरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शुभ संदेश। २. अच्छी खबर। ३. ऐसा समाचार जिसे सुनकर मन खुश हो जाय।
खुशदिल–वि० [फा०] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २. स्वभाव का अच्छा।
खुशनसीब–वि० [फा०] भाग्यशाली। भाग्यवान्।
खुशबू–संज्ञा स्त्री० अच्छी महक। सुगंधि।
खुशबूदार–वि० [फा०] जिसमें अच्छी महक आती हो। सुगन्धित।
खुशमिज़ाज–वि० [फा०] सदा प्रसन्न रहनेवाला। हँसमुख।
खुशमिज़ाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मन का सदा प्रसन्न रहना। कुशल समाचार। खैरियत।
खुशहाल–वि० [फा०] १. सुखी। २. संपन्न। ३. परिपूर्ण।
खुशामद–संज्ञा स्त्री० [फा०] चापलूसी। खुश करने के लिए झूठी बड़ाई।
खुशामदी–वि० [फा०] १. खुशामद करनेवाला। चापलूस। २. खुशामद चाहनेवाला।
खुशामदी टट्टू–संज्ञा पुं० खुशामद या चापलूसी करनेवाला।
खुशाल, खुस्याल*–वि० दे० प्रसन्न। खुशहाल। खुश। सुखी। सम्पन्न। आनंदित।
खुशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. प्रसन्नता। २. आनंद।
खुश्क–वि० [फा०] जो गीला या तर न हो। सूखा। नीरस। जिसमें सरसता न हो। रूखे स्वभाव का।
खुश्की–संज्ञा स्त्री० १. नीरसता। रूखापन। शुष्कता। २. स्थल या भूमि। स्थलमार्ग।
खुसिया–संज्ञा पुं० अंडकोश।
खुसुर-फुसुर–वि० कानाकानी। कानाफूसी।
खूँखार–वि० १. डरावना। भयंकर। २. निर्दय। क्रूर। ३. खून पीनेवाला।
खूँच–संज्ञा स्त्री० नाड़ी-विशेष। जंघे की नाड़ी।
खूँट–संज्ञा पुं० १. कोना। छोर। २. भाग। हिस्सा। ३. ओर। तरफ।
संज्ञा स्त्री० कान का मैल।

खूंटना—क्रि० स० १. पूछ-ताछ करना। २. तोड़ना। नोंचना। ३. छेड़-छाड़ करना। ४. कम होना। ५. दे० "खोंटना"।
खूंटला—संज्ञा पुं० ग्रौषध-विशेष।
खूंटा—संज्ञा पुं० १. थम्भा। खम्भा। २. जमीन में गड़ी लकड़ी जिससे पशु बाँधते हैं।
खूंटी—संज्ञा स्त्री० १. खड़ी रहनेवाली ग्ररहर ग्रादि पौधों की जड़। २. जमीन में गड़ी हुई छोटी लकड़ी का टुकड़ा। ३. बालों के नए निकले हुए कड़े ग्रंकुर। ४. ग्रंटी। गुल्ली। ५. मेख के ग्राकार की लकड़ी या लोहा। ६. सीमा। हद।
खूंद—संज्ञा स्त्री० थोड़ी जगह में घोड़े का इधर-उधर पैर पटकते या चलते रहना।
खूंदना†—क्रि० ग्र० १. कुचलना। २. खोदना। ३. पैरों से रौंदकर खराब करना। ४. उछल-कूद करना। ५. पैर उठा-उठाकर जल्दी-जल्दी भूमि पर पटकना।
खूझा—संज्ञा पुं० १. उलझा हुग्रा रेशेदार लच्छा। २. फल का रेशेदार भाग।
खूटना*†—क्रि० ग्र० १. तोड़ना। उखाड़ना। २. उधेड़ना। नोंचना। ३. रुक जाना। बंद हो जाना। ४. समाप्त होना।
क्रि० स० १. छेड़ना। २. रोक-टोक करना।
खूद, खदड़, खूदर†—संज्ञा पुं० मैल। किसी वस्तु को छान लेने या साफ कर लेने पर बचा हुग्रा रद्दी भाग। तलछट।
खूदराना—क्रि० ग्र० दुल्की चलना।
खून—संज्ञा पुं० १. रुधिर। रक्त। २. मार डालना। ३. हत्या। वध। कतल।
मुहा०—खून उबलना या खौलना=क्रोध से शरीर लाल होना। गुस्सा चढ़ना। खून का प्यासा=वध का इच्छुक। खून सिर पर चढ़ना या सवार होना=किसी को मार डालने या ग्रनिष्ट करने पर तैयार होना। खून पीना=१. सताना। २. बहुत तंग करना।
खूनखराबा या खूनखराबी—संज्ञा पुं० मार-काट।
खूनी—वि० [फा०] १. मार डालनेवाला। हत्यारा। २. ग्रत्याचारी। क्रूर।
खूबसूरत—वि० [फा०] रूपवान्। सुंदर।
खूबसूरती—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुंदरता।
खूबानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का पहाड़ी फल।
खूबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. भलाई। २. ग्रच्छाई। ३. विशेषता। गुण।
खूमना—क्रि० ग्र० १. पुराना होना। २. ग्रजीर्ण होना।
खूसा—संज्ञा पुं० उल्लू।
वि० मनहूस। ग्राशिक़।
खूसट—संज्ञा पुं० उल्लू।
वि० १. नीरस। २. मनहूस।
खृष्टीय—वि० १. ईसासंबंधी। २. ईसाई।
खेकसा, खेखसा—संज्ञा पुं० १. परवल के ग्राकार का रोएँदार फल या तरकारी-विशेष। ककोड़ा। २. चिह्न। ३. पहिचान। लक्षण।
खेचर—संज्ञा पुं० १. ग्राकाशगामी। २. ग्राकाश में चलनेवाला। तारागण। ३. सूर्य-चंद्र ग्रादि ग्रह। ४. देवता। ५. वायु। ६. पक्षी। ७. विमान। ८. मेघ। बादल। ९. राक्षस। १०. भूत-प्रेत। ११. पारा। १२. कसीस। १३. शिव। १४. विद्याधर।
खेचरी गुटिका—संज्ञा स्त्री० योगसिद्ध गोली-विशेष, जिसको मुँह में रखने से ग्राकाश में उड़ने की शक्ति ग्रा जाती है (तंत्र)।
खेचरी मुद्रा—संज्ञा स्त्री० योगसाधन की एक मुद्रा-विशेष।
संज्ञा पुं० १. ग्रह। २. ग्रहेर। ३. नक्षत्र। ४. ढाल। ५. कफ। ६. लाठी। ७. चमड़ा ८. तृण। ९. घोड़ा। १०. खेरा।
खेटक—संज्ञा पुं० १. गाँव। खेड़ा। २. बलदेवजी की गदा। ३. सितारा।
*संज्ञा पुं० १. मृगया। शिकार। २. ग्रस्त्र-विशेष। ३. ढाल। तारा।
खेटकी—संज्ञा पुं० १. भड़ेरिया। भड्डरी। भड्डर। २. शिकारी। वधिक। हत्यारा।
खेड़ा†—संज्ञा पुं० पुरवा। छोटा गाँव। ग्राम।
खेड़ी—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का लोहा। कान्तिसार। इस्पात। २. मांसखंड जो

बच्चों की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।

खेड़ी—संज्ञा स्त्री० गर्भावरण। झिल्ली।

खेत—संज्ञा पुं० १. पवित्र भूमि। जोतने-बोने योग्य भूमि। २. योनि। ३. उदय के समय चंद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना। ४. खेत में खड़ी फसल। ५. पशुओं आदि के उत्पन्न होने का स्थान। ६. लड़ाई का मैदान। समर-भूमि। ७. तलवार का फल।

मुहा०—खेत करना=भूमि बराबर करना। खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना। खेत छोड़ना=युद्ध से भाग जाना। खेत रखना=संग्राम जीतना।

खेतल—संज्ञा पुं० आकाश-मण्डल।

खेतिहर—संज्ञा पुं० कृषक। किसान। खेती करनेवाला।

खेती—संज्ञा स्त्री० १. कृषि। खेत में अनाज बोने का काम। २. खेत में बोई हुई फसल। किसानी।

खेतीबारी—संज्ञा स्त्री० कृषि-कर्म। खेती आदि का काम। किसानी।

खेद—संज्ञा पुं० [वि० खिन्न] १. दुःख। अप्रसन्नता। रंज। शोक। २. पश्चात्ताप। मनस्ताप।

खेदना†—क्रि० स० १. खदेड़ना। जबरदस्ती हटाना। भगाना। २. शिकार का पीछा करना। हाँकना।

खेदा—संज्ञा पुं० १. किसी जंगली पशु को मारने या पकड़ने के लिए घेरकर किसी उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। २. आखेट। शिकार।

खेदान्वित—वि० दुखी। खेदयुक्त। शोकान्वित।

खेदित—वि० १. पीड़ित। दुःखित। २. सताया गया।

खेना—क्रि० स० १. नाव चलाना। २. समय व्यतीत करना या काटना।

खेप—संज्ञा स्त्री० १. लदान। एक बार का बोझ। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

मुहा०—खेप हारना=हानि उठाना। कै खेप=कितनी बार।

खेपना—क्रि० स० काटना। बिताना। गुजारना। ले जाना। ढोना।

खेम*—संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"। कुशल।

खेमटा—संज्ञा पुं० १. बारह मात्राओं का ताल-विशेष। २. इस ताल पर होनेवाला नाच या गाना।

खेमा—संज्ञा पुं० [अ०] कनात। तंबू। डेरा। शिविर।

खेर—संज्ञा पुं० महाराष्ट्रियों की एक अल्ल।

खेरा—संज्ञा पुं० ऊजड़ गाँव। डीह। छोटी बस्ती।

खेरी—संज्ञा स्त्री० बंगाल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का गेहूँ। पक्षी-विशेष।

खेल—संज्ञा पुं० १. क्रीड़ा। कौतुक। मनोरंजन। विनोद। मन बहलाने या व्यायाम के लिए कोई मनोरंजक कार्य। २. मामूली काम। ३. बात। मामला। ४. विचित्र लीला। कोई अद्भुत बात। अभिनय। तमाशा। स्वाँग।

मुहा०—खेल खेलाना=बहुत तंग करना। खेल करना या समझना=तुच्छ समझना। खेल बिगड़ना=बना-बनाया काम खराब हो जाना।

खेलक*—संज्ञा पुं० खेलाड़ी। खेलनेवाला।

खेलना—क्रि० अ० [प्रे० खेलाना] १. क्रीड़ा करना। मन बहलाने या व्यायाम के लिए खेल-कूद करना। २. विहार करना। ३. भूत-प्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ-पैर आदि हिलाना। ४. विचरना। चलना। बढ़ना।

मुहा०—जान या जी पर खेलना=१. जान की परवाह न करना। २. नाटक या अभिनय करना। खेलना-खाना=मजे में दिन बिताना। सुखपूर्वक रहना।

खेलवाड़—संज्ञा पुं० १. खेल। क्रीड़ा। तमाशा। २. मनबहलाव। ३. दिल्लगी।

खेलवाड़ी—वि० १. खिलाड़ी। बहुत खेलनेवाला। २. विनोदप्रिय।

खेलाड़ी—वि० १. खेलनेवाला। २. विनोदी। विनोदप्रिय।

संज्ञा पुं० १. खेलनेवाला व्यक्ति। २. ईश्वर। ३. तमाशा करनेवाला।

खेलाना—क्रि० स० १. खिलवाना। किसी दूसरे को खेल में लगाना। २. खेल में शामिल करना। ३. बहलाना। उलझाए रखना। लगाए रहना।

खेलार*†—संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।

खेवक*—संज्ञा पुं० मल्लाह। केवट। नाव खेनेवाला। माँझी। कर्णधार।

खेवट—संज्ञा पुं० पटवारी का कागज-विशेष जिसमें मालगुजारी आदि का विवरण रहता है।

खेवटदार—संज्ञा पुं० हिस्सेदार। पट्टीदार।

खेवा—संज्ञा पुं० १. नाव से नदी पार करने का काम। २. नाव का किराया। नाव की उतराई। ३. काल। समय। बार। दफा। नौका।

खेवाई—संज्ञा स्त्री० १. नाव खेने का काम या मजदूरी। २. नाव की डाँड़ बाँधनेवाली रस्सी।

खेस—संज्ञा पुं० मोटे सूत की लंबी चादर। एक तरह का कपड़ा।

खेसारी—संज्ञा स्त्री० एक तरह का मटर। लतरी। एक अनाज।

खेह—संज्ञा स्त्री० धूल। खाक। राख।

मुहा०—खेह खाना=१. विपत्ति में पड़ना। २. धूल फाँकना। समय बरबाद करना।

खैचना—क्रि० स० दे० "खींचना"।

खैंचातानी—संज्ञा स्त्री० झगड़ा। विद्वेष। लड़ाई।

खैर—संज्ञा पुं० १. कथ, कत्था। २. पक्षी-विशेष।

संज्ञा स्त्री० भलाई। कुशल। क्षेम।

अव्य० १. कुछ चिंता नहीं। उपेक्षा-सूचक अव्यय। कोई बात नहीं। २. अच्छा। अस्तु।

खैरआफियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] कुशल-क्षेम। कुशल-मंगल।

खैरख्वाह—वि० [फा० संज्ञा खैरख्वाही] शुभ-चिंतक। भलाई चाहनेवाला।

खैरभैर—संज्ञा पुं० होहल्ला। हलचल।

खैरा—वि० १. कत्थई। खैर के रंग का। २. भूरा रंग।

संज्ञा पुं० मछली-विशेष।

खैरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] दान-पुण्य। मुफ्त में दी हुई वस्तु।

खैरियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. राजी-खुशी। कुशल-मंगल। २. कल्याण। भलाई।

खैला—संज्ञा स्त्री० मथानी।

संज्ञा पुं० दोहान। बछड़ा। नया बैल।

खोंइचा—संज्ञा पुं० स्त्रियों की धोती का आँचल। पल्ला। खूँट।

खोंखना—क्रि० अ० १. काँखना। २. खाँसना। ३. खखारना।

खोंखी—संज्ञा स्त्री० खाँसी।

खोंगाह—संज्ञा पुं० पीलापन लिये सफेद रंग का घोड़ा।

खोंच—संज्ञा स्त्री० १. खरोंट। छेद होना। किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात। २. काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।

खोंचा—संज्ञा पुं० १. बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस। २. चीरा। ३. भराव। ४. ठेस।

खोंची—संज्ञा स्त्री० भिक्षा। भीख। अन्न, फल, तरकारी आदि का वह थोड़ा-सा भाग जो धर्मार्थ भिखमंगों और छोटी सेवाओं के लिए इतर जनों को दिया जाता है।

खोंट—संज्ञा स्त्री० १. कान का मैल। खोंटने या नोचने का काम। २. खरोंट। नोचने का दाग।

खोंटना—क्रि० स० किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना।

खोंडर—संज्ञा पुं० पेड़ का भीतरी पोला भाग। कोटर।

खोंडल—संज्ञा पुं० पेड़ का भीतरी पोला भाग।

वि० पोपला। बिना दाँत का।

खोंड़ा—वि० १. जिसके आगे के दो तीन दाँत टूटे हों। पेड़ का पोला भाग। २. जिसका कोई अंग भंग हो।

खोंड़ी—वि० अंगभंग। जिसका कोई अंग टूटा हो।

खोंतल—संज्ञा पुं० खोंता।

खोंता–संज्ञा पुं० नीड़। चिड़ियों का घोंसला।
खोंप–संज्ञा पुं० सिलाई का टाँका। सिलाई के दूर-दूर टाँकों के गोभे।
खोंपना–क्रि० स० गड़ाना।
खोंपा–संज्ञा पुं० १. गाँठ। २. ताख। ३. जूड़ा। ४. अन्न रखने के लिए फूस का घर। ५. भूसा रखने का छप्पर। छाजन का कोना। हल की वह लकड़ी जिसमें फल लगा रहता है।
खोंसना–क्रि० स० अटकाना, ठाँसना, भरना, घुसेड़ना।
खोग्रा†–संज्ञा पुं० दे० "खोया"। मावा-विशेष।
खोग्राना–क्रि० अ० १. हार जाना। २. ठगा जाना। ३. भूल जाना। ४. भुलवाना।
खोई–संज्ञा स्त्री० १. छोई। रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े। २. कंबल की घोंघी। ३. धान की खील। लाई।
क्रि० स० खो दी। नष्ट कर दी।
खोखला–वि० पोला। जो खाली हो।
खोखा–संज्ञा पुं० वह कागज जिसपर हुंडी लिखी जाती है। वह हुंडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।
खोगीर–संज्ञा पुं० दे० "खुगीर"।
खोज–संज्ञा स्त्री० १. यत्न। ढूँढ़ना, अनुसन्धान, तलाश। २. चिह्न। पता। निशान। ३. पहिए की लीक अथवा पैर आदि का चिह्न।
खोजना–क्रि० स० ढूंढ़ना। पता लगाना। तलाश करना।
खोजवाना–क्रि० स० ढुंढ़वाना। पता लगवाना।
खोजा–संज्ञा पुं० [फा० ख्वाजा] १. हिजड़ा। नपुंसक व्यक्ति। जनखा। गुजरात में मुसलमानों की एक जाति। २. सेवक। मुसलमानी हरमों के नौकर जो नपुंसक होते थे। ३. माननीय व्यक्ति। ४. सरदार।
खोट–संज्ञा स्त्री० १. अवगुण। दोष। ऐब। बुराई। २. कमी। ३. हानि। ४. बट्टा। निकृष्ट धातु की मिलावट।
खोटा–वि० [स्त्री० खोटी] १. बुरा। जिसमें कोई ऐब हो। "खरा" का उलटा। दुर्गुण। २. नीच। पापी। दुराचारी। **मुहा०**-खोटी-खरी सुनाना=डाँटना। फटकारना।
खोटाई–संज्ञा स्त्री० १. अवगुण। बुराई। दुष्टता २. कपट। छल। ३. खोटापन। नीचता। ४. दोष। ऐब।
खोटापन–संज्ञा पुं० दे० खोटाई। खोटा होने का भाव।
खोड़–संज्ञा स्त्री० भूत-प्रेत आदि की बाधा।
खोड़रा–संज्ञा पुं० पुराने पेड़ में खोखला भाग।
खोद–संज्ञा पुं० १. कूँड़। शिरस्त्राण। लोहे का टोप। २. चोंच। खुदाव। ३. झोंक। कटा हुआ। खोदा हुआ।
खोदना–क्रि० स० १. गड्ढा करना। कोड़ना। खनना। २. गोड़ना। ३. नक्काशी करना। ४. खोद कर गिराना। ५. छेड़ना। छेड़छाड़ करना। ६. गड़ाना। उँगली आदि से दबाना। ७. उभाड़ना। उत्तेजित करना। उसकाना।
खोदबिनोद†–संज्ञा स्त्री० १. जाँच-पड़ताल। छान-बीन। पूछ-ताछ। २. छेड-छाड़।
खोदर–वि० १. खड़बड़। ऊँचा-नीचा। अड़-बड़। २. दौड़।
खोदवाना–क्रि० स० दूसरे से खोदने का काम करवाना। "खुदवाना"।
खोदाई–संज्ञा स्त्री० खोदने का काम या मजदूरी।
खोना–क्रि० स० १. खो देना। गँवाना। २. नष्ट करना। बिगाड़ना। खराब करना। ३. भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ देना। गवाँ देना।
क्रि० अ० पास की वस्तु का निकल जाना। भूल से कहीं कोई वस्तु छूट जाना।
खोन्चा–संज्ञा पुं० १. बड़ी परात या थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं। २. उसमें रखी हुई सामग्री।
खोप–संज्ञा पुं० खोंच। छेद। छिद्र। छोर।

खोपड़ा–संज्ञा पुं० १. कपाल। सिर की हड्डी। २. गरी का गोला। ३. सिर। ४. नारियल।

खोपड़ी–संज्ञा स्त्री० १. कपाल। सिर की हड्डी। २. सिर।

मुहा०—अंधी या औंधी खोपड़ी का=नासमझ। मूर्ख। खोपड़ी चाट जाना=बकबाद करना, बातें करके परेशान करना। खोपड़ी गंजी होना=मार से सिर के बाल झड़ जाना।

खोपरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खोपरी] नारियल की गरी। फल-विशेष। श्रीफल। गोला। बड़ा सिर।

खोपा–संज्ञा पुं० १. मकान का कोना जो किसी रास्ते की ओर पड़े। २. छप्पर का कोना। ३. स्त्रियों की गुथी चोटी। ४. वेणी। जूड़ा। ५. गरी का गोला। ६. मल, मैल।

खोबार–संज्ञा पुं० सुअरों के रहने का घर।

खोभार†—संज्ञा पुं० कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा।

खोम–संज्ञा पुं० समूह। झुंड।

खोय*–संज्ञा स्त्री० स्वभाव, टेव। आदत।

खोया†–संज्ञा पुं० १. मावा। खोवा। आँच पर इतना गाढ़ा दूध जिसकी पिंडी बाँध सकें। २. नारियल का गोला। ३. चूड़ा। क्रि० स० खो दिया।

खोर–संज्ञा स्त्री० १. सँकरी गली। २. नाँद। जिसमें चौपायों को चारा दिया जाय। ३. नहान। स्नान।

खोरना†–क्रि० अ० नहाना।

खोरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खोरिया] १. बेला। कटोरा। २. पानी पीने का एक बरतन विशेष। आबखोरा। †*वि० लँगड़ा।

खोराक–संज्ञा पुं० दे० "खुराक"।

खोरि*–संज्ञा स्त्री० तंग गली। सँकरा रास्ता। संज्ञा स्त्री० १. दोष। २. दुर्गुण। बुराई।

खोरिया–संज्ञा स्त्री० १. छोटा कटोरा। २. एक उत्सव जो स्त्रियाँ लड़कों के विवाहोत्सव के अवसर पर करती हैं। सिर पर लगाने की चमकीली बूँदी।

खोल–संज्ञा पुं० १. गिलाफ। खोखला। म्यान। आवरण। २. कीड़ों का ऊपरी चमड़ा जिसे समय-समय पर वे बदला करते हैं। ३. मोटी चादर। दोहर, रजाई। शरीर।

खोलड़ा–संज्ञा पुं० १. कोटर। खोखला। खोह। २. गड़हा।

खोलना–क्रि० स० १. रोकनेवाली वस्तु को हटाना। जैसे—किवाड़ खोलना। २. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु को हटा देना। ३. बँधी हुई वस्तु को मुक्त करना। ४. छोड़ देना। ५. किसी क्रम को चलाना। ६. सड़क, नहर, आदि तैयार करना। ७. कार्य प्रारंभ करना। ८. गूढ़ बात को प्रकट कर देना। ९. फैलाना। १०. उधेड़ना।

खोली–संज्ञा स्त्री० १. आवरण। खोल। गिलाफ। जैसे—तकिए की खोली। २. म्यान। ३. नलिका।

खोवा–संज्ञा पुं० दे० "खोया"।

खोह–संज्ञा स्त्री० गुफा। गुहा। 'कंदरा'।

खोही—संज्ञा स्त्री० घोंघी। पत्तों की छतरी। घुग्घी।

खौं–संज्ञा स्त्री० १. गड्ढा। २. अन्न रखने के लिए गहरा गड्ढा।

खौंड़ा—संज्ञा पुं० गड़हा।

खौंचा–संज्ञा पुं० साढ़े छः का पहाड़ा।

खौड–संज्ञा पुं० तिलक, दे० "खौर"।

खौफ़–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० खौफनाक] भय। डर।

खौफनाक—वि० डरावना। भयानक।

खौर–संज्ञा स्त्री० चन्दन का तिलक। १. टीका। २. स्त्रियों का सिर का गहना-विशेष।

खौरना–क्रि० स० टीका लगाना। चंदन।

खौरहा†–वि० [स्त्री० खौरही] १. जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। गंजा। २. जिसे खुजली का रोग हो। (पशु)

खौरा–संज्ञा पुं० बड़ी खुजली का रोग। पशुओं का रोग-विशेष।

खौलना–क्रि० अ० १. उबलना। २. बहुत गरम होना। ३. जोश खाना।

मुहा०—खून खौलना। क्रोध के कारण जोश में आना।
खौलाना—क्रि० स० गरम करना। उबालना।
ख्यात—वि० १. प्रसिद्ध। प्रतिष्ठित। २. यशस्वी।
ख्यातव्य—वि० प्रशंसायोग्य।
ख्याति—संज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्ध। २. प्रतिष्ठा। नाम। यश। कीर्ति।
ख्यातिघ्न—वि० १. बदनाम करनेवाला। २. अपवादी।
ख्यातिमत्व—संज्ञा पुं० प्रतिष्ठा।
ख्यात्यापन्न—वि० कीर्तिमान्। यशस्वी। प्रतिष्ठित।
ख्यापन—संज्ञा पुं० १. प्रकाश। २. विज्ञापन। ३. प्रसिद्ध होना।
ख्याल—संज्ञा पुं० [अ० वि० ख्याली] १. ध्यान। २. विचार। ३. स्मृति। स्मरण। याद। ४. कौतुक, स्वांग। ५. भाव। सम्मति। ६. आदर। ७. गाना-विशेष। ८. खेल। क्रीड़ा। ९. एक प्रकार की लावनी

मुहा०—ख्याल रखना=ध्यान रखना। देख-भाल करना। किसी के ख्याल पड़ना=किसी को दिक करने पर उतारू होना। ख्याल से उतारना=याद न रहना। भूल जाना।
ख्याली—वि० १. कल्पित। फर्जी। २. खेल, कौतुक करनेवाला। ३. कौतुकी। वहमी। सनकी।

मुहा०—ख्याली पुलाव पकाना—मनमानी सोचना। असंभव बातें सोचना।
खिष्टान—संज्ञा पुं० ईसाई।
खिष्टीय—वि० १. ईसाई धर्म-संबंधी। २. ईसाई।
ख्रीष्ट—संज्ञा पुं० [वि० ख्रीष्टीय] ईसा मसीह। क्राइस्ट।
ख्वाजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वामी। मालिक। २. सरदार। ३. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फकीर। ४. रनिवास का नपुंसक नौकर।
ख्वाब—संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वप्न। २. कल्पित बातें। अनहोनी बातें।
ख्वार—वि० [फा०] [संज्ञा ख्वारी] १. सत्यानाश। नष्ट। २. बुरा। खराब। ३. अनादृत। बिना आदर भाव के। तिरस्कृत।
ख्वारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] खराबी। दुर्दशा। सत्यानाश।
ख्वाह—अव्य० अथवा। या। या तो।
यौ०—ख्वाह-म-ख्वाह=१. जबरदस्ती। चाहे कोई चाहे या न चाहे। २. जरूर। अवश्य।
ख्वाहिश—संज्ञा स्त्री० [वि० ख्वाहिशमंद] अभिलाषा। इच्छा। आकांक्षा। चाह।
ख्वाही—स्त्री० १. नाश। बर्बादी। २. अपमान।

ग

ग—व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ है। इसलिए यह कंठ्य कहलाता है।
संज्ञा पुं० गीत। गंधर्व। गणेश। गुरु मात्रा। गानेवाला। जानेवाला।
गंग—संज्ञा पुं० १. मात्रिक छंद-विशेष। २. हिन्दी के एक कवि का नाम।
संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।
गंग-बरार—संज्ञा पुं० वह भूमि जो किसी नदी की धारा के हटने से निकल आती है।
गंग-शिकस्त—संज्ञा पुं० वह भूमि जिसे कोई नदी काट ले गई हो।
गंगा—संज्ञा स्त्री० भारत की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी जो पवित्र मानी जाती है। जाह्नवी। भागीरथी।
गंगागति—संज्ञा स्त्री० मृत्यु।
गंगा-जमनी—वि० १. मिला-जुला। २. दोरंगा। ३. सोने-चाँदी, पीतल-ताँबे आदि दो धातुओं का बना हुआ। ४. काला-उजला। स्याह-सफ़ेद।
गंगाजल—संज्ञा पुं० १. गंगा का पानी। २. बारीक कपड़ा।

गंगाजली—संज्ञा स्त्री० १. गंगाजल भरने का पात्र। २. धातु की सुराही।

गंगाद्वार—संज्ञा पुं० हरद्वार।

गंगाधर—संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. समुद्र। ३. संस्कृत के एक कवि।

गंगाप्राप्ति—संज्ञा पुं० गंगालाभ। मृत्यु।

गंगापुत्र—संज्ञा पुं० १. भीष्म। २. गंगा नदी के किनारे यात्रियों के स्नान का प्रबन्ध करने तथा दान लेनेवाले ब्राह्मण-विशेष। ३. वर्णसंकर।

गंगा-यात्रा—संज्ञा स्त्री० १. मृत्यु। २. मरणासन्न मनुष्य का गंगा के तट पर मरने के लिए गमन।

गंगाल—संज्ञा पुं० कंडाल। पानी रखने का बड़ा बर्तन।

गंगाला—संज्ञा पुं० वह भूमि जहाँ तक गंगा पहुँचती है। कछार।

गंगालाभ—संज्ञा पुं० मृत्यु। गंगा की प्राप्ति यानी मृत्यु।

गंगासागर—संज्ञा पुं० १. जहाँ गंगा सागर में गिरती है उस स्थान को गंगासागर कहते हैं। हिन्दुओं के लिए यह एक तीर्थ स्थान है। २. बड़ी टोंटीदार झारी। ३. एक तरह की जनानी धोती।

गंगासुत—संज्ञा पुं० १. भीष्म। २. कार्त्तिकेय।

गंगास्नायी—संज्ञा पुं० गंगास्नान करनेवाला।

गंगीभूत—वि० पवित्र। पावन।

गँगेरन—संज्ञा स्त्री० नागबला। पौधा-विशेष।

गंगोक*—संज्ञा पुं० दे० "गंगोदक"।

गंगोदक—संज्ञा पुं० १. गंगाजल। २. वर्ण-वृत्त-विशेष।

गंगौटी—संज्ञा स्त्री० गंगा के किनारे की मिट्टी।

गंज—संज्ञा पुं० १. सिर के बाल उड़ने का रोग। २. खल्वाट। ३. बालखोरा। सिर में छोटी-छोटी फुनसियों का रोग। संज्ञा स्त्री० १. कोष। खजाना। २. ढेर। राशि। अटाला। ३. गोला। हाट। बाजार। गल्ले की मंडी ४. झुंड। समूह।

गंजन—संज्ञा पुं० १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. नाश। ३. कष्ट। पीड़ा।

गंजना—क्रि० स० १. तिरस्कार करना। २. निरादर करना। ३. नाश करना। चूर-चूर करना। संज्ञा स्त्री० १. वेदना। पीड़ा। दुःख। २. ग्लानि-सूचक वाक्य। वि० जिसको गंज रोग हो।

गँजाना—क्रि० स० दे० "गाँजना"। गाँजने का काम दूसरे से कराना।

गंजा—संज्ञा पुं० १. जिसके सिर में बाल न हों। गांजा। २. मद्यगृह।

गंजित—वि० १. लांछित। अपमानित। कलंकित। दुःखी। २. पीड़ित।

गंजी—संज्ञा स्त्री० १. समूह। ढेर। गाँज। †२. कंदा। शकरकंद। ३. बनियायन। संज्ञा पुं० दे० "गँजेड़ी"।

गंजीफ़ा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी—वि० गाँजा पीनेवाला।

गँठकटा—संज्ञा पुं० १. चोर। २. गिरहकट।

गँठजोड़ा, गँठबंधन—संज्ञा पुं० विवाह की रीति-विशेष जिसमें वर और वधू के वस्त्रों के छोर को परस्पर बाँध देते हैं।

गंड—संज्ञा पुं० १. गाल। कपोल। २. कनपटी। ३. फोड़ा। ४. गले में पहनने का गंडा। ५. गोल चिह्न या लकीर। दाग। निशान। ६. गराड़ी। गेंडा। ७. नाटक का एक अंग। ८. गाँठ। ९. जिसमें अचानक प्रश्नोत्तर हों। १०. गजकुंभ।

गंडक—संज्ञा पुं० १. गले में पहनने का जंतर या गंडा। २. गेंडा। ३. गाँठ। ४. चिह्न। ५. गंडकी नदी का तटस्थ देश तथा वहाँ के रहनेवाले।

गंडकी—संज्ञा स्त्री० उत्तर-भारत की नदी-विशेष।

गंडमाला—संज्ञा स्त्री० गले में छोटी-छोटी फुड़ियाँ निकलने का एक रोग। कंठमाला। गलगंड।

गंडमूर्ख—वि० भारी बेवकूफ। वज्र मूर्ख।

गंडशैल—संज्ञा पुं० पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर। छोटा पहाड़।

गंडस्थल–संज्ञा पुं० १. गाल। कपोल। २. कनपटी।
गंडांत–संज्ञा पुं० ज्योतिष मतानुसार योग-विशेष।
गंडा–संज्ञा पुं० १. गाँठ। २. रोग या भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिए गले में पहनने का जंतर। ३. गिनने में चार की संख्या। ४. आड़ी लकीरों की पंक्ति। ५. कंठा। हँसली। तोते आदि चिड़ियों के गले की रंगीन धारी। सूत।
मुहा०—गंडा-तावीज़=टोटका। मंत्र-यंत्र।
गँड़ासा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गँड़ासी] चौपायों का चारा काटने का अस्त्र-विशेष।
गंडीर–संज्ञा पुं० १. सेहुँड़ वृक्ष। २. गन्ना। ऊख।
गंडूल–वि० प्रफुल्ल। विकसित।
गंडूष–संज्ञा स्त्री० १. पानी का कुल्ला। २. हाथी की सूँड़ की नोक। ३. हाथ के अँगूठे का गढ़ा।
गँडेरी–संज्ञा स्त्री० गन्ने का छोटा टुकड़ा।
गंतव्य–वि० जाने योग्य। सुगम। जाने का स्थान। गमनशील।
गंता—वि० जानेवाला।
गंदगी–संज्ञा स्त्री० १. मैलापन। २. अशुद्धता। अपवित्रता। ३. मैला, मल। गलीज।
गंदना–संज्ञा पुं० १. एक मसाला। २. कंद-मूल-विशेष।
गँदला–वि० मैला-कुचैला। गंदा।
गंदा–वि० [स्त्री० गंदी] १. मैला। २. अशुद्ध। नापाक। ३. घृणित। घिनौना।
गंदुम–संज्ञा पुं० [फा०] गेहूँ।
गंदुमी–वि० गेंहूँ के रंग का।
गंध–संज्ञा स्त्री० १. सौरभ। २. अच्छी महक। सुगन्ध, सुबास। ३. शरीर में लगाने लायक सुगन्धि। ४. लेश। अणु-मात्र। ५. आमोद। ६. प्रणय। ७. संस्कार। ८. संबंध।
गंधक–संज्ञा स्त्री० [वि० गंधकी] खनिज पदार्थ-विशेष।
गंधकारिणी–संज्ञा स्त्री० लजारू। औषध-विशेष। लाजवन्ती।
गंधकी–वि० १. हलका पीला। २. गंधक के रंग का।
गंधगर्भ–संज्ञा पुं० बेलवृक्ष।
गंधद्रव्य–वि० सुगंधित वस्तु। खुशबूदार चीज।
गंधद्विप–संज्ञा पुं० उत्तम हाथी।
गंधपत्र–संज्ञा पुं० १. सफेद तुलसी। २. नारंगी। ३. मरुवा। ४. बेल।
गंधप्रिय–वि० घ्राणलुब्ध। गंधग्राही।
गंधबिलाव–संज्ञा पुं० नेवले की तरह का एक जन्तु।
गंधमार्जार–संज्ञा पुं० गंधबिलाव।
गंधमादन–संज्ञा पुं० १. पुराण-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष। २. भौंरा। ३. बानर सेनापति।
गंधराज–संज्ञा पुं० १. चन्दन। २. सुगंधित फूल।
गंधवणिक्–संज्ञा पुं० १. वर्णसंकर। २. जाति-विशेष। ३. अत्तार।
गंधवह–संज्ञा पुं० वायु। पवन। चन्दन। वि० गंध ले जाने या पहुँचानेवाला। सुगंधित। खुशबूदार।
गंधवाह–संज्ञा पुं० पवन। कस्तुरिया हरिन। नाक।
गंधसार–संज्ञा पुं० चन्दन। श्रीखंड।
गंधर्व–संज्ञा पुं० १. एक देवता जो गान-विद्या में निपुण कहे जाते हैं। स्वर्ग के गायक। यक्ष। गायकों के देवता। विद्याधर। २. घोड़ा। ३. मृग। ४. प्रेत। वह आत्मा जिसने एक शरीर छोड़कर दूसरा ग्रहण किया हो। ५. जाति-विशेष जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं। ६. विधवा स्त्री का दूसरा पति। ७. सूर्य। ८. पवित्र आत्मा। ऋषि।
गंधर्वनगर–संज्ञा पुं० १. गंधर्वों का निवास-स्थान। आकाश। २. अलका। ३. भ्रम। मिथ्या ज्ञान। ४. चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है। ५. संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों के बीच फैली हुई लाली। कल्पित नगर। मृग-मरीचिका।

गंधर्वविद्या—संज्ञा स्त्री० संगीत-विद्या। नाच-गान की विद्या। गीत-वाद्य-नृत्य।

गंधर्वविवाह—संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और वधू बिना किसी को सूचना दिये, इच्छानुसार, गुप्त रूप से विवाह कर लेते हैं। जैसे दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह।

गंधर्ववेद—संज्ञा पुं० संगीत-शास्त्र, जो चार उपवेदों में से एक है।

गंधर्वा—संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

गंधर्विन—संज्ञा स्त्री० गंधर्व जाति की स्त्री।

गंधर्वी—संज्ञा स्त्री० गंधर्व की स्त्री। गंधर्व-संबंधी।

गंधा—वि० गंधवाली [यौगिक शब्दों के अंत में जैसे रजनीगंधा]।

गंधान—संज्ञा पुं० सुवर्ण। सोना।

गंधाना—क्रि० स० गंध देना। दुर्गंध करना। बसाना। बदबू करना।

गंधाधिराज—संज्ञा पुं० चंद्रस। चीर नामक वृक्ष का गोंद।

गंधार—संज्ञा पुं० दे० "गांधार"। कंधार। एक रागिनी। तीसरा स्वर।

गंधारी—संज्ञा स्त्री० १. "गान्धारी"। २. पार्वती की एक सखी का नाम। ३. जवासा। ४. गाँजा। ५. बाँये नेत्र से निकलनेवाला श्वास।

गंधाशन—संज्ञा पुं० वायु।

गंधाश्मा—संज्ञा पुं० गंधक, उपधातु-विशेष।

गंधि—संज्ञा स्त्री० गंध। वास। गंधक।

गंधिका—संज्ञा स्त्री० आहूबेर। गंधक।

गंधिपर्ण—संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष, जिसके पत्तों में गंध हो। छतिवन वृक्ष।

गंधिया—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बदबूदार कीड़ा। एक तरह की घास।

गंधिलुब्ध—वि० सुगंध-लोलुप। सुगंध के

गंधी—संज्ञा पुं० [स्त्री० गंधिनी, गंधिन] १. अत्तार। सुगंधित तेल और इत्र आदि बेचनेवाला। २. गँधिया घास। ३. गाँधी। ४. गँधिया कीड़ा।

गंधीला—वि० बुरी गंधवाला। बदबूदार मैला। गँदला।

गंभारी—संज्ञा स्त्री० काश्मरी। वृक्ष विशेष।

गंभीर—वि० १. गहरा। अगाध। गंभीर २. घना। गहन। ३. गूढ़। जटिल जिसका अर्थ समझना कठिन हो। ४ शांत। सौम्य। ५. घोर। भारी।

गंभीर-वेदी—संज्ञा पुं० मत्त हाथी जो महावत की आज्ञा न माने।

गम्मत—संज्ञा स्त्री० विनोद। मौज। बहार। हँसी-दिल्लगी।

गँव†—संज्ञा स्त्री० १. घात। २. दाँव। ३. प्रयोजन। मतलब। ४. अवसर। ५. उपाय। ढंग। युक्ति।

मुहा०—गँवँ से=ढंग से। युक्ति से। *†धीरे से। चुपके से।

गँवई—संज्ञा स्त्री० [वि० गँवइयाँ] १. गाँव। देहात। २. गाँव की बस्ती।

गँवर-मसला—संज्ञा पुं० गँवारों की उक्ति या कहावत।

गँवाऊ—वि० खोनेवाला। नाश करनेवाला।

गँवाना—क्रि० स० १. काटना। बिताना। २. खोना। ३. बेकार करना। ४. भूलना।

गँवार—वि० [स्त्री० गँवारिन]। १. गँवारू। ग्रामीण। देहाती। गाँव का रहनेवाला। २. असभ्य। ३. मूर्ख। ४. अनाड़ी। ५. अशिक्षित।

गँवारी—संज्ञा स्त्री० १. देहातीपन। गँवार-पन। २. बेवकूफी। मूर्खता। ३. गँवार स्त्री।

वि० १. गँवार की तरह। २. भद्दा।

गँवारू—वि० दे० "गँवारी"।

गँवी—संज्ञा स्त्री० दे० 'गँवई'। गाँव। ग्राम। देहात।

गँस*—संज्ञा पुं० १. गाँठ। २. वैर। द्वेष। ३. मन में चुभनेवाली बात। ताना। चुटकी।

संज्ञा स्त्री० तीर की नोक।

गँसना*†—क्रि० स० १. जकड़ना। अच्छी

तरह कसना । गाँठना । २. कसकर बाँधना या भरना ।

गँसीला–वि० [स्त्री० गँसीली] चुभनेवाला । तीर के समान नोकदार ।

गइया–संज्ञा स्त्री० गाय । गऊ ।

गई–क्रि० स० गमन किया । जाती रही । चली गई ।

गई करना*–क्रि० अ० जाने देना । छोड़ देना । बचा जाना ।

गई-बहोर–वि० १. खोई हुई वस्तु को पुनः देनेवाला । २. बिगड़े हुए काम को बनानेवाला ।

गऊ–संज्ञा स्त्री० गौ । गाय ।

गकार–संज्ञा पुं० कवर्ग का तीसरा वर्ण, ग अक्षर ।

गगन–संज्ञा पुं० १. व्योम । आकाश । २. शून्य स्थान । ३. छप्पय छन्द का भेद-विशेष ।

गगन-कुसुम–संज्ञा पुं० १. असंभव कार्य । २. मिथ्या । ३. आकाश का फूल ।

गगन-गामी–वि० आकाश में चलनेवाला । नक्षत्र आदि ।

गगनचर–संज्ञा पुं० पक्षी । चिड़िया । वि० आकाश में चलनेवाला ।

गगनचारी–वि० आकाश में चलनेवाला । आकाशगामी ।
संज्ञा पुं० पक्षी ।

गगनचुम्बी–वि० आकाश को छूनेवाला । बहुत ही ऊँचा । इतना ऊँचा मानों आकाश को छूता हो ।

गगनधूल–संज्ञा स्त्री० १. एक तरह का कुकुरमुत्ता-विशेष । २. केतकी के फूल की धूल । ३. पृथ्वी से निकलनेवाला बिना फल-फूल का एक पौधा ।

गगनभेड़–संज्ञा स्त्री० गिद्ध । गीध । हड-गीला ।

गगनभेदी–वि० १. बहुत ऊँचा । आकाश को भेदने (छेदने) वाला । २. आकाश तक पहुँचनेवाला ।

गगनमंडल–संज्ञा पुं० आकाशमंडल । खगोल ।

गगनस्पर्शी–वि० आकाश को छू लेनेवाला । बहुत ऊँचा ।

गगनानंग–संज्ञा पुं० पचीस मात्राओं का मात्रिक छन्द-विशेष ।

गगनवाटिका–संज्ञा स्त्री० आकाश की वाटिका (असंभव बात) ।

गगरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गगरी] कलसा । धातु का बड़ा घड़ा ।

गच–संज्ञा पुं० १. धँसने का शब्द । २. चूना सुरखी का मसाला, जिससे जमीन पक्की की जाती है । ३. पक्का फर्श ।
वि० स्थूल । मोटा ।

गचकारी–संज्ञा स्त्री० १. चूने, सुरखी का काम । २. गच का काम ।

गचगीर–संज्ञा पुं० गच बनानेवाला ।

गचना*–क्रि० स० १. दे० "गाँसना" । २. कसकर भरना ।

गचपच–संज्ञा स्त्री० भीड़भाड़ । गोलमाल । उलट-पलट ।

गच्छ–संज्ञा पुं० १. स्थान । २. बौद्धों का स्थान । ३. मठ-विशेष ।

गछना‡*–क्रि० अ० जाना । चलना ।
क्रि० स० १. निबाहना । चलाना । २. अपने ऊपर लेना ।

गज–संज्ञा पुं० [स्त्री० गजी] १. हाथी । २. राक्षस-विशेष । ३. राम की सेना का एक बन्दर । ४. आठ की संख्या । ५. धातु आदि फूँकने के लिए गढ़ा ।

गज–संज्ञा पुं० १. नापने का एक माप जो दो हाथ लंबा होता है । इसमें ३६ इंच या तीन फुट होते हैं । २. पुराने ढर्रे की बन्दूक में बारूद भरने का छड़ । ३. तीर-विशेष ।

गज-इलाही–संज्ञा पुं० ४१ अंगुल का अकबरी गज ।

गजक–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक तरह की मिठाई । २. जलपान । तिलपपड़ी ।

गजंद*–संज्ञा पुं० दे० "गयंद" ।

गजकुंभ–संज्ञा पुं० हाथी का सिर ।

गजगति–संज्ञा स्त्री० १. हाथी की तरह मंद चाल । २. वर्णवृत्त-विशेष ।

गजगमन–संज्ञा पुं० हाथी की तरह मंद चाल ।

गजगामिनी–वि० हाथी की तरह धीरे-धीरे चलनेवाली स्त्री ।

गजगाह—संज्ञा पुं० १. हाथी की झूल। २. अड़बड़ में पड़ जाना।
गजगौन*—संज्ञा पुं० हाथी की-सी मंद चाल।
गजगौनी—वि० गजगामिनी।
गजगौहर—संज्ञा पुं० दे० "गज-मुक्ता"।
गजचर्म—संज्ञा पुं० हाथी का चमड़ा। रोग-विशेष जिसमें मनुष्य के शरीर का चर्म मोटा हो जाता है।
गजचिर्मिटी—संज्ञा स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गजट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सरकारी विज्ञप्ति जिसमें शासन-संबंधी सूचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं, जैसे सरकारी अधिकारियों की नियुक्ति, छुट्टी, तबादला तथा अन्य आवश्यक सूचनाएँ।
गजदंत—संज्ञा पुं० १. हाथी का दाँत। २. दीवार में गड़ी खूँटी। ३. दाँतों के ऊपर जो दाँत निकला हो। ४. गणेशजी का नाम।
गजदंती—वि० हाथी-दाँत का बना हुआ।
गजदान—संज्ञा पुं० हाथी के मस्तक से निकला जल। हाथी का मद।
गजनवी—वि० गजनी-नगर (अफगानिस्तान) का रहनेवाला।
गजना*—क्रि० अ० दे० गाजना।
गजनाल—संज्ञा स्त्री० बड़ी तोप जो हाथियों से खींची जाती है।
गजनी—संज्ञा पुं० अफगानिस्तान का एक नगर।
गजपति—संज्ञा पुं० हाथियों के यूथ का स्वामी। राजा। वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों।
गजपाटल—संज्ञा पुं० कज्जल। काजल। सुरमा।
गजपाल—संज्ञा पुं० हाथीवान। महावत।
गजपिप्पली—संज्ञा स्त्री० १. पौधा-विशेष जिसकी मंजरी औषध के काम आती है। २. गजपीपर। पीपर-विशेष।
गजपीपल—संज्ञा स्त्री० दे० "गजपिप्पली"।
गजपुंगव—संज्ञा पुं० मुख्य गज। प्रधान हाथी।
गजपुट—संज्ञा पुं० १. औषध पकाने के लिए एक प्रकार का गढ़ा। २. धातु फूंकने के लिए गढ़ा।
ग़जब—संज्ञा पुं० [अ०] १. क्रोध। गुस्सा। आफत। विपत्ति। २. अंधेर। अन्याय। जुल्म। अद्भुत बात।
मुहा०—ग़ज़ब का=अद्भुत। विचित्र।
गजबाँक, गजबाग—संज्ञा पुं० हाथी का अंकुश।
गजबुसा—संज्ञा पुं० कदली। केला।
गजमुक्ता—संज्ञा स्त्री० हाथी के मस्तक से निकलनेवाला प्रसिद्ध मोती।
गजमुख—संज्ञा पुं० १. गणेश। गजानन। २. जिसका मुँह हाथी के मुँह की तरह हो।
गजमोचन—संज्ञा पुं० विष्णु भगवान्। हाथी को ग्राह से उबारनेवाले।
गजमोती—संज्ञा पुं० दे० "गजमुक्ता"।
गजयूथ—संज्ञा पुं० हाथियों का समूह।
गजर—संज्ञा पुं० १. मूल-विशेष, गाजर। २. पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द। ३. पारा। ४. प्रातःकाल का घंटा। चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार जल्दी-जल्दी फिर घंटा बजना।
मुहा०—गजरदम—सबेरे। तड़के।
गजर-बजर—संज्ञा पुं० गिचपिच। घालमेल। गिचपिच वस्तु।
गजरा—संज्ञा पुं० १. फूलों का हार। २. कलाई में पहना जानेवाला गहना-विशेष। ३. एक तरह का रेशमी वस्त्र। ४. गाजर के पत्ते।
गजराज—संज्ञा पुं० बड़ा हाथी। हाथियों का राजा (ऐरावत)।
ग़ज़ल—संज्ञा स्त्री० [फा०] फारसी और उर्दू का एक छन्द, जिसमें शृंगार रस की प्रधानता हो।
गजवदन—संज्ञा पुं० गणेश। जिसका मुँह हाथी के मुँह की तरह हो। गजमुख।
गजवान—संज्ञा पुं० हाथीवान। महावत।
गजा—संज्ञा पुं० १. खुर्मा। २. खजूर। ३. एक तरह की मिठाई। ४. नगाड़ा बजाने का डंडा।
गजाग्रणी—संज्ञा पुं० बड़ा हाथी। ऐरावत।
गजशाला—संज्ञा स्त्री० १. हाथी बाँधने का घर। २. फीलखाना। ३. हथिसाल।
गजाधर—संज्ञा पुं० दे० "गदाधर"।
गजाध्यक्ष—संज्ञा पुं० हाथी का स्वामी। गजाधिपति।

गजानन—संज्ञा पुं० गजवदन। गणेश।

गजारि—संज्ञा पुं० १. सिंह। मृगराज। २. वृक्ष-विशेष।

गजाशन—संज्ञा पुं० पीपल का पेड़।

गजास्य—संज्ञा पुं० लम्बोदर। गणेश।

गजाह्वय—संज्ञा पुं० नगर-विशेष। हस्तिनापुर।

गजी—संज्ञा स्त्री० मोटा देशी कपड़ा-विशेष। गाढ़ा।

संज्ञा स्त्री० हथिनी।

गजेन्द्र—संज्ञा पुं० १. ऐरावत। गजराज। २. दिग्गज।

गज्झ†—संज्ञा पुं० १. गाज। २. तरल पदार्थ। ३. बुलबुलों का समूह। ४. राशि, ढेर, गाँज। ५. कोष, खज़ाना। ६. धन। सम्पत्ति।

गझ—संज्ञा पुं० जीता हुआ धन।

गझिन†—वि० १. सघन। निविड़। २. मोटा, गाढ़ा। ठस बुनावट का।

गटई—संज्ञा स्त्री० गर्दन। गला। कंठ।

गटकना—क्रि० स० १. निगलना। २. दबा लेना। हड़पना।

गटकीला—वि० गटकने या निगलनेवाला।

गटगट—संज्ञा पुं० खाते या पीते समय गले से उत्पन्न शब्द। निगलने का शब्द।

गटपट—संज्ञा स्त्री० १. उलट-पुलट। २. प्रसंग। ३. एकत्रित। ४. मिलावट। ५. घनिष्ठता।

गटरमाला—संज्ञा स्त्री० बड़े दानों की माला।

गटागट—वि० धड़ाधड़। बराबर। लगातार।

गटापारचा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का गोंद।

गटी—संज्ञा स्त्री० समूह। राशि।

गट्ट—संज्ञा पुं० "गटगट"। निगलते समय गले का शब्द।

गट्टा—संज्ञा पुं० १. कलाई। हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। २. गाँठ। ३. पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। ४. बीज। ५. मिठाई-विशेष।

गट्ठर—संज्ञा पुं० बड़ी गठरी।

गट्ठा—संज्ञा पुं० (स्त्री० गट्ठी, गठिया) १. भार। गट्ठर। २. बड़ी गठरी। ३. बुकचा। ४. प्याज या लहसुन की गाँठ।

गठकटा—वि० १. चाँई। २. गिरहकट।

गठन—संज्ञा स्त्री० रचना। बनावट।

गठना—क्रि० अ० १. जुड़ना। २. मिलना। ३. मोटी सिलाई होना। परस्पर मिल जाना। ४. बुनावट का दृढ़ होना। ५. किसी षडयंत्र में सहमत या सम्मिलित होना। ६. परस्पर प्रेमी बनना। ७. दाँव पर चढ़ना। ८. अनुकूल होना। ९. भली भाँति बनाया जाना। १०. विषय होना। संभोग होना। ११. अधिक मेल होना।

यौ०—गठा बदन=हृष्टपुष्ट शरीर।

गठबंधन—संज्ञा पुं० गठजोड़ा। वर-वधू के वस्त्रों के छोर को बाँधना।

गठर—संज्ञा पुं० बड़ी गाँठ। गठीला।

गठरी—संज्ञा स्त्री० १. गट्ठर। बोझ। भार। बाँधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। बुकची। २. सम्पत्ति।

मुहा०—गठरी मारना—ठगना। अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना।

गठवाँसी—संज्ञा स्त्री० बिस्वांसी। बिस्वे का बीसवाँ अंश।

गठवाना—क्रि० स० १. गठाना। गठवाना। सिलवाना। २. जुड़वाना ३. बँधवाना। जूता सिलाना।

गठाना—क्रि० स० "गठवाना"।

गठाव—संज्ञा पुं० दे० "गठन"।

गठित—वि० रचित। गठा हुआ।

गठिबंध*—संज्ञा पुं० दे० "गठबंधन"।

गठिया—संज्ञा स्त्री० १. ग्रन्थि। गाँठ। २. लादने का थैला। ३. बड़ी गठरी। ४. रोग-विशेष जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना†—क्रि० स० १. गाँठ में बाँधना। २. बाँधना। ३. गाँठ लगाना।

गठिवन—संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष।

गठिहा—वि० गाँठोंवाला। ग्रन्थियुक्त।

गठीला—वि० अधिक गाँठवाला। १. हट्टा-

कट्टा। हृष्ट-पुष्ट। गठा हुआ। सुडौल। २. दृढ़। मज़बूत।

गठौत, गठौती—संज्ञा स्त्री० १. मेल-जोल। २. मिलकर पक्की की हुई बात। ३. अभिसंधि।

गड़ंग†—संज्ञा पुं० (वि० गडंगिया) १. घमंड। डींग। शेखी। २. अपनी बड़ाई।

गड़ंत—संज्ञा पुं० १. गंडा। टोना। २. एक खेल का नाम। टोटके के लिए गाड़ी जानेवाली वस्तु।

गड़—संज्ञा पुं० १. आड़। ओट। २. चहारदीवारी। घेरा। ३. गड्ढा। ४. खाई।

गड़क—संज्ञा पुं० एक प्रकार की मछली।

गड़कना—क्रि० अ० डूबना। दे० गरजना।

गड़गड़—संज्ञा स्त्री० १. बादल गरजने या गाड़ी आदि चलने का शब्द। २. गड़गड़ शब्द करना, जैसे पेट में।

गड़गड़ा—संज्ञा पुं० एक तरह का हुक्का।

गड़गड़ाना—क्रि० अ० गरजना। कड़कना। क्रि० स० गड़गड़ शब्द करना। मेघ या नगाड़े की आवाज।

गड़गड़ाहट—संज्ञा स्त्री० गर्जन। कड़क। गड़गड़। गुड़गुड़ाने का शब्द।

गड़गड़ी—संज्ञा स्त्री० नगाड़ा।

गड़गूदर—संज्ञा पुं० चिथड़ा। फटा-पुराना कपड़ा।

गड़दार—संज्ञा पुं० हाथी के साथ भाला लेकर चलनेवाला नौकर।

गड़न—संज्ञा पुं० १. धसान। २. दलदल। ३. मूर्ति। ४. आकार।

गड़ना—क्रि० अ० १. छिदना। चुभना। धँसना। २. खुरखुरा लगना। शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचना। ३. दुखना। दर्द करना। ४. आँख या पेट का दर्द। ५. नीचे दब जाना। ६. घुसना। पैठना। ७. डट जाना। जमना। स्थिर होना। ८. आसक्त होना।

मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना=पुरानी बात उठाना। गड़ जाना=लज्जित होना। झेंपना।

गड़प—संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के सहसा जल में गिरने का शब्द।

गड़पना—क्रि० स० १. खा लेना। निगलना। २. पचा लेना। हजम करना। ३. अनुचित अधिकार करना।

गड़प्पा—संज्ञा पुं० १. धोखे की जगह। २. गहरा गड्ढा।

गड़बड़—वि० १. गोल-मोल। अव्यवस्थित। २. ऊँचा-नीचा। गट-पट। उलट-पुलट। ३. अस्त-व्यस्त। ४. अंडबंड।

संज्ञा पुं० १. अव्यवस्था। क्रमभंग। २. कु-प्रबंध। ३. उपद्रव। खलबली। ४. आपत्ति।

गड़बड़-घोटाला—संज्ञा पुं० गोलमाल। घपलेबाजी। धाँधली। भ्रष्टाचार।

गड़बड़झाला—संज्ञा पुं० भूलभुलैया। गोलमाल। अव्यवस्था।

गड़बड़ाना—क्रि० अ० १. चक्कर में पड़ना। गड़बड़ी में पड़ना। २. अव्यवस्थित होना। ३. बिगड़ना।

क्रि० स० १. गड़बड़ी में डालना। चक्कर में डालना। २. भुलवाना। ३. खराब करना। बिगाड़ना।

गड़बड़ाहट—संज्ञा स्त्री० खलबली। भय। डर। अनियमित। अनिश्चित।

गड़बड़िया—वि० १. गड़बड़ करनेवाला। २. उपद्रवी। ३. बिगाड़नेवाला।

गड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "गड़बड़"।

गड़रिया—संज्ञा पुं० [स्त्री० गड़ेरिन] भेड़ पालनेवाली जाति-विशेष, भेड़िहारा।

गड़हा—संज्ञा पुं० [स्त्री० गड़ही] दे० "गड्ढा"।

गड़ा—संज्ञा पुं० १. राशि। ढेर। २. समूह।

गड़ाना—क्रि० स० चुभाना। धँसाना। ('गाड़ना' का प्रे० रूप) गाड़ने का काम कराना।

गड़ायत*—वि० १. गड़नेवाला। २. चुभनेवाला।

गड़ारी—संज्ञा स्त्री० १. मंडलाकार रेखा। गोल लकीर। २. घेरा। आड़ी धारियाँ। घिरनी। गोल चरखी जिस पर रस्सी चढ़ाकर कुएँ से पानी खींचते हैं।

गड़ारीदार—वि० १. घेरदार। २. धारीदार।

गड़ासा—संज्ञा पुं० दे० "गँड़ासा"।
गड़ियार—वि० १. निर्लज्ज। घमण्डी। २. हठी। ३. आलसी।
गड़ुआ—संज्ञा पुं० टोंटीदार लोटा। हथहर। कलश।
गड़ुई—संज्ञा स्त्री० झारी। टोंटीदार छोटा बरतन।
गड़ुवा—संज्ञा पुं० टोंटीदार लोटा। तमहा। गड़ुवा।
गड़ेरिया—संज्ञा पुं० दे० "गड़रिया"।
गड़ोना—क्रि० स० १. दे० "गड़ाना"। २. एक तरह का पान।
गड्ड—संज्ञा पुं० [स्त्री० गड्डी] १. बहुत वस्तुओं का मेल। तह पर तह। २. समूह। ३. एक ही वस्तु का ढेर। ४. गड्ढा।
गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—संज्ञा पुं० घालमेल। घपला।
वि० अंडबंड। बिना क्रम के।
गड्डरिक—संज्ञा पुं० गड़ेरिया।
वि० १. भेड़-संबंधी। २. भेड़ की तरह।
गड्डाम—वि० नीच। दुष्ट। बदमाश। लम्पट।
गड्डालिका—संज्ञा स्त्री० १. देखा-देखी कार्य में प्रवृत्ति होना। बिना सोचे-समझे काम करना। २. भेड़िया धसान।
गड्डी—संज्ञा स्त्री० दे० "गड्डु"। समूह।
गड्ढ—संज्ञा पुं० १. गड़हा। पृथ्वी में गहरा स्थान। २. गहराई।
मुहा०—किसी के लिए गड्ढा खोदना=बुराई करना। किसी को हानि पहुँचाने के लिए प्रयत्न करना।
गढ़ंत—वि० गढ़ी हुई। बनावटी। कल्पित (बात)।
गढ़—संज्ञा पुं० [स्त्री० गढ़ी] १. कोट। किला। दुर्ग। २. राजमहल।
मुहा०—गढ़ जीतना या तोड़ना=१. बहुत कठिन काम करना। २. किला जीतना।
गढ़न—संज्ञा स्त्री० रचना। बनावट। गठन। आकृति।
गढ़ना—क्रि० स० १. सुघटित करना। रचना। काट-छाँटकर बनाना। २. सुडौल करना। ३. बात बनाना। ४. पीटना। मारना। ठोंकना।
गढ़पति—संज्ञा पुं० १. किलेदार। २. राजा। ३. सरदार।
गढ़वई, गढ़वै*—संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।
गढ़वार—वि० मोटा। स्थूल। गाढ़ा।
गढ़वाल—संज्ञा पुं० १. किले का रक्षक। २. गढ़वाला। ३. जिसके अधिकार में गढ़ हो। ४. उत्तर-प्रदेश का एक जिला।
गढ़ा—संज्ञा पुं० गड्ढा। गर्त।
गढ़ाई—संज्ञा स्त्री० १. गढ़ने की मजदूरी। जैसे गहने की बनवाई। २. गढ़ने का काम या भाव।
गढ़ाना—क्रि० स० गढ़वाना। गढ़ाने का काम कराना।
क्रि० अ० खलना। दुखदायी मालूम होना।
गढ़िया—संज्ञा पुं० १. गढ़नेवाला। २. भाला। बरछी। बल्लम।
गढ़ी—संज्ञा स्त्री० गढ़। छोटा किला।
गढ़ीश—संज्ञा पुं० गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी।
गढ़ेला—संज्ञा पुं० गड़हा। खंड़हर।
वि० गड़ा हुआ।
गढ़ैया—वि० १. गढ़नेवाला। २. छोटा तालाब। तलैया।
गढ़ोई*†—संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।
गण—संज्ञा पुं० १. झुंड। समूह। जत्था। २. जाति। श्रेणी। ३. छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह जिसमें लघु, गुरु के क्रम के अनुसार गण आठ माने गए हैं। ४. सेना का वह भाग जिसमें तीन गुल्म हों। ५. व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान रूप-भेद हों, जैसे भ्वादिगण। ६. दूत। सेवक। अनुचर। सेवा करनेवाले। संग-साथ रहनेवाले। धर्म या दर्शन में एक सम्प्रदाय। गणेश जी की एक पदवी। ७. शिव के अनुचर। ८. अनुचरों का दल।
गणक—संज्ञा पुं० १. गणना करनेवाला। ज्योतिषी। २. प्राचीन भारत का एक

प्रकार का प्रजातंत्र। ऐसा राज्य जिसमें जनता के चुने हुए प्रतिनिधि शासन करें। दे० "गणराज्य।"

गणता–संज्ञा स्त्री० १. षडयंत्र में मिलना । २. समूह या वर्ग-विशेष में होना । ३. किसी दल में होना या दलबन्दी में फँसना। ४. वर्गीकरण। ५. पक्षपात। ६. टोली। धूर्त-मण्डली।

गणदेवता–संज्ञा पुं० देवताओं का समूह जो एक साथ प्रकट होते हैं। देवता । जैसे—विश्वेदेवा, रुद्र। मिले हुए अनेक देवता।

गणन–संज्ञा पुं० [वि० गणनीय, गणित, गण्य] १. गिनती। २. गिनना।

गणना–संज्ञा स्त्री० १. संख्या । गिनती । २. लेखा । हिसाब । ३. तुलना, मान, प्रशंसा। एक अलंकार जिसमें एक ही अंक बार-बार आवे। स्पृहा, गरज ।

गणनाथ या गणनायक–संज्ञा पुं० गणेश। गणों के मालिक । शिवजी । गजानन ।

गणनीय–वि० गिनने योग्य।

गणप–संज्ञा पुं० गणेश।

गणपति–संज्ञा पुं० १. शिव। इन्द्र। ब्रह्मा। एक प्रसिद्ध गणितज्ञ। २. गणेश । किसी जाति, संस्था या सेना का नेता।

गणपाठ–संज्ञा पुं० ग्रन्थ-विशेष। शब्द-समूह जो व्याकरण के एक नियम के अन्तर्गत हो।

गणराऊ–संज्ञा पुं० गणराज। गणनाथ।

गणराज्य–संज्ञा पुं० जनता के प्रतिनिधियों-द्वारा शासित पूर्ण स्वतंत्र राज्य। प्रतिनिधि-सत्तात्मक राज्य। गणतंत्र। प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्रात्मक राज्य। कई लोकतंत्रों का संघ-राज्य।

गणाधिप–संज्ञा पुं० १. गजानन। गणेश । २. साधुओं का अधिपति या महंत।

गणाध्यक्ष–संज्ञा पुं० १. गणेश। २. शिव।

गणिका–संज्ञा स्त्री० १. वेश्या । नाचने-गाने-वाली। २. हथिनी। ३. एक प्रकार का फूल। एक प्रकार की सुगन्धि।

गणित–संज्ञा पुं० १. अंक-विद्या। मात्रा, संख्या और परिमाण आदि का शास्त्र। २. हिसाब। वि० गिना हुआ।

गणितकार–संज्ञा पुं० ज्योतिर्वेत्ता। अंकवेत्ता। गणितज्ञ।

गणितज्ञ–वि० १. गणित-शास्त्र का ज्ञाता। २. ज्योतिषी।

गणेश–संज्ञा पुं० हिंदुओं के प्रधान देवता जिनका सारा शरीर मनुष्य का-सा है, पर सिर हाथी का-सा है। विघ्नों को नाश करने-वाले देवता। इसीसे प्रत्येक कार्य के प्रारंभ में आपकी आराधना की जाती है। पार्वती और शिवजी के पुत्र। लम्बोदर । गजानन।

गणेश-क्रिया–संज्ञा स्त्री० योगाभ्यास की एक क्रिया।

गणेश-चतुर्थी–संज्ञा स्त्री० भादों, माघ और फागुन की शुक्ला चतुर्थी।

गणेशभूषण-संज्ञा पुं० सिंदूर।

गण्य–वि० १. गण्यमान्य । प्रतिष्ठित गणनीय । माननीय । २. गिनने योग्य

यौ०–गण्य-मान्य=प्रतिष्ठित ।

गत–वि० १. बीता हुआ । गया हुआ २. नष्ट । मरा हुआ । हत । ३. हीन संज्ञा स्त्री० १. दशा। अवस्था। २. वेष रूप । रंग । ३. सुगति । उपयोग काम में लाना। दुर्दशा। दुर्गति। नाश ४. संगीत की लय, ताल-सुर का मिलान ५. नृत्य में शरीर की विशेष मुद्रा ६. नाचने का ठाठ। ७. निकृष्ट । ८. मुक्त । ९. लीन । १०. प्राप्त।

मुहा०–गत बनाना=दुर्दशा करना।

गतक्लम–वि० विश्रान्त, श्रमरहित । उत्सा-हित ।

गतका–संज्ञा पुं० १. लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है । २. फरी और गतके से खेला जानेवाला खेल।

गतत्रप–वि० निर्लज्ज। लज्जारहित।

गतप्रभ–वि० प्रभाहीन। निष्प्रभ।

गतवित्त–वि० १. गतविभव । २. निर्धन दरिद्र।

गतांक–वि० जिसमें सत्पुरुषोचित कोई चिह्न न हो। गया-बीता । निकम्मा ।

संज्ञा पुं० समाचार-पत्र का पिछला अंक।

गतागत—संज्ञा पुं० १. गमनागमन। आवागमन। आना-जाना। २. जन्म-मरण। ३. पक्षियों की गति-विशेष।

गताधि—वि० सुखी।

गतानुगतिक—वि० १. अनुकरण करनेवाला। पुराने उदाहरण को देखकर उसका अनुसरण करनेवाला। अनुकारी। २. पिछलग्गू।

गतायु:—वि० व्यतीत-आयु। जीवन का अवसान-काल। मरणासन्न। मुमूर्षु।

गति—संज्ञा स्त्री० १. गमन। जाने की क्रिया। यात्रा। चाल। २. स्पंदन। हिलने-डुलने की क्रिया। हरकत। ३. अवस्था। दशा। हालत। ४. वेष। रूप-रंग। ५. प्रवेश। पहुँच। पैठ। ६. अंतिम उपाय। ७. दौड़। तदबीर। ८. अवलंब। सहारा। ९. शरण। १०. चेष्टा। प्रयत्न। ११. माया। लीला। १२. रीति। ढंग। १३. मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की दशा। १४. मुक्ति। मोक्ष। १५. लड़नेवालों के पैर की चाल। पैंतरा। १६. सितार आदि के वादन की क्रिया। १७. ग्रहों की चाल। १८. विधान।

गतिक्रिया—संज्ञा स्त्री० १. विलम्ब। २. काल-क्षेप। ३. शिथिलता।

गतिविहीन—वि० १. गतिहीन। २. गमन-शक्ति-रहित। जिसमें चलने की शक्ति न हो।

गत्ता—संज्ञा पुं० कुट। कागज के कई परतों को साँटकर बनाई हुई दफ्ती।

गत्ताल-खाता—संज्ञा पुं० बट्टाखाता। डूबे हुए धन का हिसाब।

गथ*†—संज्ञा पुं० १. मूल धन। पूँजी। जमा। २. माल। ३. झुंड।

गथना*—क्रि० स० १. आपस में गूँथना। २. बात बनाना। बात गढ़ना।

गद—संज्ञा पुं० १. विष। २. रोग। व्याधि। ३. श्रीकृष्णचंद्र के एक छोटे भाई का नाम। किसी गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु के आघात का शब्द। ४. असुर-विशेष। ५. श्रीरामचंद्र की सेना का एक बन्दर।

गदका†—संज्ञा पुं० दे० "गतका"। पटा। दण्ड-विशेष।

गदकारा—वि० [स्त्री० गदकारी] गुल-गुला। गुदगुदा। मुलायम और दब जाने-वाला।

गदकारी—वि० रोग उत्पन्न करनेवाला।

गदगद*—वि० दे० "गद्‌गद"।

गदगदा—वि० मोटा। स्थूल। तोंदवाला।

गदना*—क्रि० स० कहना।

ग़दर—संज्ञा पुं० [अ०] १. हलचल। २. उपद्रव। ३. विद्रोह। ४. विप्लव। ५. बलवा। ६. बगावत।

गदराना—क्रि० अ० १. (फल आदि का) पकने पर होना। २. जवानी में अंगों का भरना। ३. आँख में कीचड़ आदि का आना।

गदशत्रु—संज्ञा पुं० १. वैद्य। २. औषध।

गदहपचीसी—संज्ञा स्त्री० १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है।

गदहपन—संज्ञा पुं० मूर्खता। बेवकूफी। नासमझी।

गदहपूरना—संज्ञा स्त्री० पौधा-विशेष। एक तरह की बूटी। औषध-विशेष।

गदह-लोटना—संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ गदहा लोटा हो।

गदहहेंचू—संज्ञा पुं० लड़कों का एक खेल।

गदहा—संज्ञा पुं० [स्त्री० गदही] १. वैद्य। चिकित्सक। रोग हरनेवाला। २. गधा। गर्दभ। ३. मूर्ख। नासमझ। बेवकूफ। **मुहा०**—गदहे पर चढ़ाना=बहुत बेइज्जत या बदनाम करना। गदहे का हल चलना=बरबाद हो जाना। बिलकुल उजड़ जाना।

गदहिला†—संज्ञा पुं० वह गदहा जिस पर ईंटें या मिट्टी लादते हैं।

गदहिया—संज्ञा स्त्री० गदही।

गदा—संज्ञा स्त्री० प्राचीन अस्त्र-विशेष जिसमें एक छोटे डंडे के छोर पर भारी लट्टू रहता था।

संज्ञा पुं० १. दरिद्र। २. फकीर। भिख-मंगा।

गदाई–वि० १. तुच्छ । क्षुद्र । नीच । २. बेकार। रद्दी।

गदाधर–संज्ञा पुं० १. विष्णु । नारायण । २. श्रीकृष्ण।

गदायुध–संज्ञा पुं० गदा का अस्त्र । यष्टि । लाठी । गदा।

गदायुद्ध–संज्ञा पुं० ऐसा युद्ध जिसमें केवल गदा अस्त्र का प्रयोग होता था।

गदारि–संज्ञा पुं० रोगशत्रु । रोगनाशक वैद्य ।

गदाला–संज्ञा पुं० हाथी पर का गद्दा। मिट्टी खोदने का औजार-विशेष।

गदाग्रज–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण । विष्णु भगवान् ।

गदित–वि० उक्त । कथित । कहा हुआ।

गदी–संज्ञा पुं० विष्णु। नारायण।
वि० १. गदा-विशिष्ट । २. रोगयुक्त । रोगी।

गदेला–संज्ञा पुं० १. गद्दा। २. मोटा बिछौना। रूईदार बिछौना । ३. शिशु । बच्चा । माँ का दूध पीनेवाला बच्चा । ४. गोदी का बच्चा।

गदोरी†–संज्ञा स्त्री० हथेली। हाथ के नीचे का भाग ।

गद्गद–वि० १. प्रसन्न । २. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण। ३. पुलकित।

गद्द–संज्ञा पुं० १. मुलायम जगह पर किसी चीज़ के गिरने का शब्द । २. अजीर्ण, अपच । किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचने-वाली चीज के कारण पेट का भारी-पन ।

गद्दर–वि० १. अधपका। जो अच्छी तरह पका न हो। कुछ पका हुआ । २. गदरा। मोटा गद्दा ।

गद्दा–संज्ञा पुं० १. तोशक । गदेला। रुई, आदि का मोटा और गुदगुदा बिछौना। २. मुलायम चीजों का बोझ ।

गद्दी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा गद्दा। २. घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने का कपड़ा। ३. व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। ४. सिंहासन। ५. राज्य-शासक के बैठने का स्थान। ऊँचा पद। ६. किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य्य की शिष्य-परंपरा। ७. हाथ या पैर की हथेली । ८. सिंहासन पर बैठना । उत्तराधिकारी होना।
मुहा०–गद्दी पर बैठना=राज्य पाना।

गद्दीनशीन–वि० १. गद्दी पर बैठा हुआ। सिंहासनारूढ़ । २. जिसे राज मिला हो। उत्तराधिकारी ।

गद्दीनशीनी–संज्ञा स्त्री० राजगद्दी पर बैठने का समारोह । राज्यारोहण ।

गद्य–संज्ञा पुं० १. छन्दरहित वाक्य । वच-निका। २. जो गाया न जा सके। ३. पद्य का उल्टा। ४. संगीत में एक राग। ५. कहने योग्य और बोलने योग्य।

गद्यशैली–संज्ञा स्त्री० गद्य लिखने का तरीका या कौशल ।

गद्यता–वि० १. अरसिकता । २. गद्य का गुण ।

गधा–संज्ञा पुं० दे० "गदहा" ।

गन*–संज्ञा पुं० दे० "गण" ।

गनक–संज्ञा पुं० दे० "गणक" ।

गनगन–संज्ञा स्त्री० काँपने या रोमांच की दशा।

गनगनाना–क्रि० अ० शीत आदि से रोमांच होना या काँपना ।

गनगौर–संज्ञा स्त्री० चैत्र शुक्ल तृतीया। इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनन†–क्रि० स० दे० "गिनना" ।

गनना–संज्ञा स्त्री० १. गणना । २. गिनना। ३. विवाह में वरवधू का ग्रह-योग देखना ।

गनाना*–क्रि स० दे० "गिनना" ।
क्रि० अ० गिना जाना।

गनियारी–संज्ञा स्त्री० छोटी अरनी । पौधा-विशेष ।

ग़नी–वि० १. [अ०] धनवान् । २. शत्रु ।

ग़नीम–संज्ञा पुं० [अ०] १. डाकू । लुटेरा। २. शत्रु । वैरी ।

ग़नीमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लूट का माल। २. मुफ्त का माल । वह माल जो बिना परिश्रम मिले । ३. संतोष की

बात। ४. बड़ी बात। ५. धन्यवाद देने योग्य बात।

गन्ना–संज्ञा पुं० ऊख। ईख।

गन्य–वि० "गण्य"। गिनने योग्य।

गप–संज्ञा स्त्री० [वि० गप्पी] १. ऐसी बात जिसकी सत्यता में सन्देह है। २. मन बहलाने की बात। ३. कहानी। बकवाद। ४. मिथ्या संवाद। झूठी खबर। अफवाह ५. डींग। बड़ाई की जानेवाली झूठी बात।

संज्ञा पुं० १. झट से निकलने का शब्द। २. भक्षण। निगलना या खाना।

यौ०–गपागप=झटपट। जल्दी-जल्दी। गपशप=इधर-उधर की बातें।

गपकना–क्रि० स० चटपट निगलना। जल्दी खाना।

गपड़–संज्ञा पुं० १. मिलावट। २. व्यर्थ। निरर्थक।

गपड़चौथ–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात। व्यर्थ की गोष्ठी।

वि० अंड-बंड। लीप-पोत। अज्ञात। अनिश्चित। अव्यवस्थित।

गपना*–क्रि० स० बकना। गप मारना।

गपोड़, गपोड़ा, गपोड़ी–संज्ञा पुं० मिथ्या बात। कपोल-कल्पना। गप।

वि० गप्पी। डींग हाँकनेवाला।

गप्प–संज्ञा स्त्री० दे० "गप"।

गप्पा–संज्ञा पुं० छल। धोखा। कपट।

गप्पी–वि० वाचाल। बकवादी। बातुल। गप हाँकनेवाला। बात बढ़ाकर कहनेवाला।

गफ्फा–संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा ग्रास या कौर। २. लाभ।

गफ–वि० १. ठस। घना। २. गाढ़ा। ३. घनी बुनावट का।

ग़फ़लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. असावधानी। लापरवाही। बेसुध। २. भ्रम। ३. चूक। भूल।

ग़बन–संज्ञा पुं० [अ०] धरोहर हड़पना। किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को हड़प लेना। खयानत।

गबरू–वि० १. जवान। युवा। पट्ठा। २. सीधा। भोला-भाला।

†संज्ञा पुं० पति। दूल्हा।

गबरून–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

गब्बर–वि० १. अहंकारी। घमंडी। २. जल्दी काम न करनेवाला या बात का जल्दी उत्तर न देनेवाला। मंद। ३. बहुमूल्य। कीमती। ४. धनी। मालदार।

गभस्ति–संज्ञा पुं० १. किरण। रश्मि। २. प्रकाश। ३. सूर्य्य। ४. बाँह। हाथ।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री स्वाहा।

गभस्तिमत्–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. पाताल-विशेष। तलातल।

गभस्तिमान्–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. द्वीप-विशेष। ३. पाताल-विशेष।

गभीर*–वि० १. दे० "गंभीर"। २. गहरा। अथाह। अगाध। ३. सूक्ष्म।

गभीरता–संज्ञा स्त्री० अगाधता। गम्भीरता। गहराई।

गभीरत्व–संज्ञा पुं० गंभीरता, निम्नता।

गभुआर–वि० १. बालकों के जन्म के बाल। २. जिसके सिर के जन्म के बाल न कटे हों। जिसका मुंडन न हुआ हो। ३. अनजान। नादान। ४. घुँघराले बाल।

गम–संज्ञा स्त्री० १. (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश। पहुँच। २. गुजर। ३. सहवास। ४. रास्ता।

ग़म–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुःख। रंज। शोक। अफसोस। २. चिंता। फिक्र। सोच।

मुहा०–गम खाना=छोड़ देना। क्षमा करना। ध्यान न देना।

गमक–संज्ञा पुं० १. जानेवाला। २. सूचक। बतलानेवाला।

संज्ञा स्त्री० १. राग का स्वर-विशेष। २. सुगंध, महक। ३. तबले की गंभीर आवाज।

गमकना–क्रि० अ० महकना। सुगंधि देना।

गमकीला–वि० सुगन्धित। सुवासित। गमकदार। महकनेवाला।

ग़मख़ोर–वि० [फा०] सहनशील। गम खानेवाला। दुख या शोक सहनेवाला।

ग़मख़ोरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सहनशीलता।
ग़मगीन–वि० [फा०] दुखी। उदास।
गमत–संज्ञा पुं० १. मार्ग। रास्ता। २. व्यवसाय।
गमन–संज्ञा पुं० [वि० गम्य] १. जाना। चलना। प्रस्थान। विदाई। २. यात्रा करना। ३. चाल, गति, संभोग। जैसे—वेश्यागमन। ४. विसर्जन। ५. रास्ता। राह।
गमना*–क्रि० अ० चलना। जाना। सोच या रंज करना।
गमला–संज्ञा पुं० १. पौधे लगाने का बरतन। २. पाखाना फिरने का बरतन। 'कमोड'।
गमाना*–क्रि० स० दे० "गँवाना"। खोना।
गमार–वि० गँवार। देहाती।
ग़मी–संज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु। शोक की दशा। अफसोस करने की हालत। वह शोक जो किसी के मरने पर उसके सम्बन्धी करते हैं।
गम्मत–संज्ञा स्त्री० विनोद। हँसी-मजाक।
गम्य–वि० १. गमन-योग्य। जाने योग्य। २. पाने योग्य। ३. भोग्य। ४. साध्य। ५. शक्य। योग्य।
गयंद*–संज्ञा पुं० बड़ा हाथी। गजेन्द्र।
गय–संज्ञा पुं० १. मकान। घर। २. आकाश। ३. प्राण। ४. धन। ५. पुत्र। सन्तान। ६. असुर-विशेष। ७. एक राजा का नाम। ८. एक बानर का नाम। ९. बिहार में गया नामक तीर्थ।
गयनाल–संज्ञा स्त्री० दे० "गजनाल"।
गयशिर–संज्ञा पुं० १. आकाश। अंतरिक्ष। २. गया के पास का पर्वत-विशेष।
गया–संज्ञा पुं० १. गया में होनेवाला पिंडदान। २. बिहार या मगध का एक तीर्थ-स्थान जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं।
क्रि० अ० नष्ट। निकृष्ट। 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप।
मुहा०—गया-गुजरा या गया-बीता=बुरी दशा में।
गयाबाल–संज्ञा पुं० गया तीर्थ का पंडा।
गयासुर–संज्ञा पुं० एक राक्षस।
गर–संज्ञा पुं० १. बीमारी। रोग। २. वत्सनाग नामक विष से भेद। ३. विष। जहर। ४. एकादश करणों में का एक करण। ५. कंठ। गला।
प्रत्य० (किसी काम को) बनाने या करनेवाला। जैसे—बाजीगर, कलईगर।
गरक–वि० [अ०] १. डूबा हुआ। २. निमग्न। ३. नष्ट। बरबाद।
ग़रक़ाब–वि० [फा०] पानी में डूबा हुआ।
ग़रक़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. डूबना। २. बाढ़। अत्यधिक वर्षा। ३. नीची भूमि। खलार। ४. पानी के नीचे की भूमि।
गरगज–संज्ञा पुं० १. ढूह या टीला जहाँ से शत्रु की सेना का पता लगाया जाता है। २. किले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज जिस पर तोपें रहती हैं। ३. फाँसी की टिकठी। ४. तख्तों से बनी हुई नाव की छत।
वि० विशाल। बहुत बड़ा।
गरगरा–संज्ञा पुं० घिरनी। गराडी। घड़ारी (भोजपुरी)।
गरगराना–क्रि० अ० १. गर्जना। जोर से बोलना। २. शोर करना।
गरगरी–संज्ञा स्त्री० देवदाली। देवताड़। देवदारु वृक्ष।
गरगाब–वि० दे० "ग़रक़ाब"।
गरघ्न–वि० १. विष नाश करनेवाला। २. रोग-नाशक।
गरज–संज्ञा स्त्री० १. घोर नाद। बहुत गंभीर शब्द। गर्जन। २. बादल या सिंह का शब्द। ३. चिंघाड़।
ग़रज़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रयोजन। मतलब। आशय। २. कार्य। ३. आवश्यकता। जरूरत। ४. इच्छा। चाह।
अव्य० निदान। अंततोगत्वा। आखिरकार। सारांश यह कि। मतलब यह कि।
गरजना–क्रि० अ० घड़घड़ाना।
संज्ञा पुं० १. बहुत जोर की आवाज। २. गम्भीर और तुमुल शब्द। जैसे—बादल का गरजना। ३. तड़कन। मोती का चटकना। फूटना। ४. मेघ या सिंह का नाद।

वि० गरजनेवाला
गरजमंद–वि० [फा० ग़रज़मंदी] १. जिसे आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २. चाहनेवाला। इच्छुक। "गरजू"।
गरजी–वि० [फा०] दे० "गरजमंद"।
गरजू†–वि० दे० "गरजमंद"।
गरट्ट–संज्ञा पुं० झुंड। समूह।
गरद–संज्ञा स्त्री० दे० "गर्द"। धूल। रज। वि० विषदाता।
गरदन–संज्ञा स्त्री० १. ग्रीवा। गला। कंठ। धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। २. बरतन आदि का ऊपरी भाग।
मुहा०–गरदन उठाना=विद्रोह करना। विरोध करना। गरदन काटना=१. धड़ से सिर अलग करना। मार डालना। २. बुराई करना। हानि पहुँचाना। गरदन पर=ऊपर। भार। गर्दन मारना=मार डालना। सिर काटना। गरदन में हाथ देना या डालना=गरदनियाँ देना। गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना।
गरदना†–संज्ञा पुं० १. ऐसी चपत या थप्पड़ जो गरदन पर लगे। २. मोटी गरदन।
गरदनियाँ–संज्ञा स्त्री० १. गर्दन पर हाथ लगाकर धक्का देना। किसी को किसी स्थान से गरदन पकड़कर निकालना। रद्दा। २. अर्द्धचन्द्र।
गरदनी–संज्ञा स्त्री० गरदनियाँ। रद्दा। कुरते का गला। गले में पहनने की हँसली। घोड़े की गरदन और पीठ पर रखने का कपड़ा। कारनिस। कँगनी।
गरदा–संज्ञा पुं० धूल। धूर। मिट्टी। गर्द।
गरदान–वि० जो घूम-फिरकर एक ही स्थान पर आवे।
संज्ञा पुं० १. शब्दों का रूप-साधन। २. कबूतर जो घूम-फिरकर सदा अपने स्थान पर चला आवे।
गरदानना–क्रि० स० १. शब्दों का रूप साधना। २. उद्धरण देना। बार-बार कहना। ३. समझना। मानना। गिनना।
गरना*†–क्रि० अ० १. दे० "गलना"। २. दे० "गड़ना"।
क्रि० अ० निचुड़ना।
गरनाल–संज्ञा स्त्री० घननाल। घननाद। बहुत चौड़े मुँह की तोप।
गरब*†–संज्ञा पुं० दे० "गर्व"। घमंड। अभिमान।
गरब-गहेला–वि० गर्बीला। जो घमंड करता हो।
गरबना, गरबाना*†–क्रि० अ० गर्व करना। अभिमान करना।
गरबीला–वि० घमंडी। अभिमानी। गर्व करनेवाला।
गरभ–संज्ञा पुं० दे० "गर्भ"।
गरभाना–क्रि० अ० १. दे० गर्भ से होना। गर्भिणी होना। २. धान, गेहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।
गरम–वि० १. जलता हुआ। गर्म। उष्ण। ताजा। तप्त। २. उग्र। तीक्ष्ण। ३. खरा। ४. क्रुद्ध। ५. प्रबल। प्रचंड। तेज़। ज़ोर शोर का। ६. जिसके व्यवहार या सेवन से गरमी बढ़े।
यौ०–गरम कपड़ा—शरीर को गरम रखनेवाला कपड़ा। ऊनी कपड़ा। गरम मसाला—धनियाँ, लौंग, बड़ी इलायची, जीरा, मिर्च इत्यादि मसाले। ५. उत्साहपूर्ण। जोश से भरा।
मुहा०–मिजाज गरम होना=१. क्रोध आना। २. पागल होना। गरम होना=३. क्रुद्ध होना। आवेश में आना।
गरमाई–संज्ञा स्त्री० दे० "गरमी"। ताप।
गरमागरम–वि० बिलकुल गरम। ताजा।
गरमागरमी–संज्ञा स्त्री० १. कहा-सुनी। २. झगड़ा। ३. जोश। मुस्तैदी।
गरमाना–क्रि० अ० १. उष्ण होना। गरम होना। २. जोश में आना। ३. झल्लाना। आवेश में आना। क्रोध करना।
†क्रि० स० गरम करना। औटाना। तपाना।
गरमाहट–संज्ञा स्त्री० उष्णता। गरमी।
गरमी या गर्मी–संज्ञा स्त्री० १. उष्णता। ताप। २. जलन। ३. उग्रता। तेजी। प्रचंडता। ४. क्रोध। आवेश। गुस्सा।

उमंग । ५. रोग-विशेष । ६. ग्रीष्म ऋतु । कड़ी धूप के दिन ।

मुहा०–गरमी निकालना=१. घमंड तोड़ना। २. गर्व दूर करना ।

गरमीदाना–संज्ञा पुं० अम्हौरी। पित्ती।

गररा*–संज्ञा पुं० दे० "गर्रा"।

गरराना–क्रि० अ० गंभीर गरजना । भीषण ध्वनि करना।

गरल–संज्ञा पुं० १. विष । जहर । २. घास का पूला । ३. साँप का जहर ।

गरलारि–वि० मरकत मणि । पन्ना ।

गरव्रत–संज्ञा पुं० मोर।

गरवा–वि० १. भारी। बोझ। २. घोर। ३. प्रतिष्ठित।

गरवापन–संज्ञा पुं० १. बोझाई। २. मान्यता। भारीपन।

गरहन*†–संज्ञा पुं० दे० "ग्रहण"। काली तुलसी।

गरहर–संज्ञा पुं० नटखट चौपायों के गले में लटकाया जानेवाला काठ।

गराँव–संज्ञा पुं० चौपायों के गले में बाँधी जानेवाली दोहरी रस्सी।

गराड़ी–संज्ञा स्त्री० १. चरखी। २. गिर्री। टकुवा । रस्सी बटने का यंत्र । साँट । रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी लकीर। काठ या लोहे की गोलाकार वस्तु जिस पर रस्सी डालकर कुएँ से पानी खींचते हैं। घड़ारी। घिरनी।

गराना*–क्रि० स० दे० "गलाना"। १. गारना। २. गारने का काम करना।

गरारा–वि० १. गर्वयुक्त । २. प्रचंड । प्रबल । बलवान् । ३. बहुत बड़ा थैला । ४. पायजामे की ढीली मोहरी।
संज्ञा पुं० १. पानी से गला साफ करने के लिए कुल्ली। २. कुल्ली करने की दवा।

गरास*–संज्ञा पुं० दे० "ग्रास"।

गरासना*–क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

गरिमा–संज्ञा स्त्री० १. भारीपन। गुरुत्व। बोझ । २. महत्त्व । महिमा । बड़ाई । गौरव । ३. अहंकार । गर्व । दंभ । ४. आत्मश्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि ।

गरिमान्वित–वि० दांभिक । अभिमानी । गरिमा से भरा हुआ।

गरियाना†–क्रि० स० गाली देना । अपशब्द कहना।

गरियार–वि० सुस्त । मट्ठर । बोदा (चौपाया) ।

गरिष्ठ–वि० बहुत भारी । जल्दी न पचनेवाला।

गरी–संज्ञा स्त्री० १. नारियल के फल के भीतर का मुलायम खाने योग्य खोपरा। गोला । २. गिरी । मींगी । बीज के अंदर की गूदी ।

ग़रीब–वि० [अ०] १. नम्र। २. हीन। ३. निर्धन। दरिद्र । दीन। कंगाल ।

ग़रीबनिवाज–वि० [फ़ा०] दयालु। दीनों पर दया करनेवाला।

ग़रीबपरवर–वि० [फ़ा०] निर्धनों का भरण-पोषण करनेवाला। गरीबों को पालनेवाला।

गरीबाना–क्रि० वि० गरीबों का सा।

गरीबामऊ–वि० १. भला बुरा। २. गरीब के योग्य।

ग़रीबी–संज्ञा स्त्री० १. दीनता। अधीनता। २. नम्रता । ३. दरिद्रता । निर्धनता । कंगाली। मोहताजी ।

गरीयस्–वि० [स्त्री० गरीयसी] १. बड़ा भारी । २. प्रबल । महान्।

गरीयान्–वि० गरिष्ठ । बहुत भारी।

गरु, गरुआ*†–वि० [स्त्री० गरुई] भारी । वजनी ।

गरुअई–संज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई"।

गरुआई–संज्ञा स्त्री० १. गुरुता। २. भारीपन ।

गरुआना†–क्रि० अ० भारी होना।

गरुड़–संज्ञा पुं० १. बहुतों के मत से उकाब पक्षी। २. विष्णु के वाहन और पक्षियों के राजा । वैनतेय । गरुत्मान् । †३. पँड़वा ढेक । सफ़ेद रंग का बड़ा जल-पक्षी। ४. सेना की व्यूह-रचना-विशेष । ५. छप्पय छंद का भेद-विशेष।

गरुड़गामी–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु।

गरुड़ध्वज–संज्ञा पुं० नारायण । विष्णु ।
गरुड़पुराण–संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक पुराण ।
गरुड़यान–संज्ञा पुं० विष्णु ।
गरुड़रुत–संज्ञा पुं० सोलह अक्षरों का वर्णवृत्त-विशेष ।
गरुड़व्यूह–संज्ञा पुं० रणस्थल में सेना एकत्रित करने का एक ढंग ।
गरुड़ाग्रज–संज्ञा पुं० अरुण । सूर्य-सारथि ।
गरुड़ासन–संज्ञा पुं० १. गरुड़ पर का आसन । २. विष्णु ।
गरुत्–संज्ञा पुं० पक्ष । पाँख । पर ।
गरुत्मान–संज्ञा पुं० गरुड़ ।
गरुता–संज्ञा स्त्री० भारीपन । गुरुता । गौरव । बड़ाई ।
गरुवा–वि० भारी । बोझिल ।
गरुवाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई" । भारीपन ।
गरू–वि० वजनी । भारी । बोझिल ।
ग़रूर–संज्ञा पुं० [अ०] गर्व । घमंड । अभिमान ।
ग़रूरी†–वि० [अ०] घमंडी । अभिमानी । संज्ञा स्त्री० घमंड । अभिमान । गर्व ।
गरेबान–संज्ञा पुं० [फा०] कुरते आदि कपड़े में गले पर का भाग । कालर ।
गरेरना–क्रि० स० घेरना ।
गरैया†–संज्ञा स्त्री० गराँव । बैलों या घोड़ों के गले में डाली जानेवाली रस्सी ।
गरोह–संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० "गिरोह" । झुंड । समूह ।
गर्ग–संज्ञा पुं० १. गर्गसंहिता तथा ज्योतिष के कई ग्रन्थों के रचयिता एक वैदिक ऋषि । इनके पुत्र का गार्ग्य और कन्या का गार्गी नाम था । २. सांड बैल । ३. पर्वत-विशेष । ४. बिच्छू । ५. केंचुआ ।
गर्गज–संज्ञा पुं० शिखर ।
गर्गया–संज्ञा स्त्री० पक्षी-विशेष । गौरैया ।
गर्गरी–संज्ञा स्त्री० १. माठा । २. दहेड़ी । गगरी । ३. मथानी ।
गर्ज–संज्ञा स्त्री० दे० "गरज" । नाद । ध्वनि । आवाज ।
गर्जन–संज्ञा पुं० १. गंभीर नाद । भीषण ध्वनि । गरज । २. मेघनाद । सिंहनाद । गंभीर नाद । ३. सर्पध्वनि । ४. क्रुद्ध वीर की ध्वनि । ५. युद्ध ।
यौ०–गर्जन-तर्जन=१. डाँट-डपट । २. तड़प ।
गर्जना–क्रि० अ० दे० "गरजना" । दहाड़ना ।
गर्त्त–संज्ञा पुं० १. गड़हा । गड्ढा । २. दरार । ३. रथ । ४. घर । ५. जलाशय । ६. एक नरक का नाम । ७. उत्तर भारत का एक देश, जो इस समय पटियाला के उत्तर में है ।
गर्द–संज्ञा स्त्री० राख । धूल ।
यौ०–गर्द-गुबार=धूल-मिट्टी ।
गर्दखोर–वि० गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न होनेवाला । संज्ञा पुं० पाँव पोंछने का टाट । खाकी रंग ।
गर्दन–संज्ञा स्त्री० गरदन । गला ।
गर्दभ–संज्ञा पुं० गदहा । गधा ।
गर्दभी–संज्ञा स्त्री० १. गधी । २. क्षुद्र रोग-विशेष । ३. एक तरह का खेल । सफेद कंटकारी । ४. एक प्रकार की लता ।
गर्दिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. घुमाव । परेशानी । चक्कर । २. संकट । आपत्ति ।
गर्द्ध–संज्ञा पुं० लिप्सा । स्पृहा । पाकर ।
गर्भ–संज्ञा पुं० १. भ्रूण । पेट के अंदर का बच्चा । हमल । २. गर्भाशय । स्त्री के पेट के अंदर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है । ३. मध्य । अन्तर । भीतर का हिस्सा । छेद । ४. अग्नि । ५. अन्न ।
मुहा०–गर्भ गिरना=गर्भपात । पेट का बच्चा नुकसान होना ।
गर्भकंटक–संज्ञा पुं० कटहल ।
गर्भकाल–संज्ञा पुं० गर्भधारण के लिए उपयुक्त समय । ऋतुकाल ।
गर्भकेसर–संज्ञा पुं० फूलों के पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं ।
गर्भगृह–संज्ञा पुं० १. मकान के बीच की कोठरी । २. आँगन । घर का मध्य भाग । ३. मंदिर में वह कोठरी जिसमें प्रतिमा रखी जाती है । ४. सूतिकागृह । सौर ।

गर्भघातिनी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का वृक्ष। २. गर्भनाश करनेवाली स्त्री।
गर्भच्युत–वि० १. गर्भ से पतित। २. अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न।
गर्भज–वि० गर्भजात। क्षेत्रज पुत्र-विशेष।
गर्भदास–संज्ञा पुं० दासीपुत्र। जन्म से ही दास। गर्भ से ही पराधीन।
गर्भधारिणी–संज्ञा स्त्री० १. जननी। माता। २. गर्भवती।
गर्भनाल–संज्ञा स्त्री० फूलों के अंदर की पतली नाल।
गर्भपात–संज्ञा पुं० पेट में से बच्चे का नुकसान होना। पेट गिरना। गर्भनाश।
गर्भवती–वि० स्त्री० गर्भिणी। गाभिन। जिसके पेट में बच्चा हो।
गर्भसंधि–संज्ञा स्त्री० नाटक में पाँच प्रकार की संधियों में से एक।
गर्भस्थ–वि० जो गर्भ में हो।
गर्भस्राव–संज्ञा पुं० चार महीने के अंदर का गर्भपात।
गर्भांक–संज्ञा पुं० १. नाटक के भीतर किसी नाटक का दृश्य। २. नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य।
गर्भागार–संज्ञा पुं० १. गृह के मध्य का स्थान। वासगृह। २. सूतिकागृह। प्रसवगृह।
गर्भाधान–संज्ञा पुं० १. गर्भ में आने के समय का प्रथम संस्कार। विशेष क्रिया। २. गर्भ-धारण। गर्भ की स्थिति।
गर्भाशय–संज्ञा पुं० स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।
गर्भाष्टम–संज्ञा पुं० गर्भ होने से आठवाँ मास या आठवाँ वर्ष।
गर्भिणी–वि० जिसे गर्भ हो। गर्भवती।
गर्भित–वि० १. गर्भस्थित। गर्भयुक्त। २. पूर्ण। भरा हुआ। ३. काव्य का एक दोष।
गर्रा–वि० लाख के रंग का।
संज्ञा पुं० १. लाही रंग। २. घोड़े का रंग-विशेष। ३. लाही रंग का घोड़ा। ४. लाही रंग का कबूतर। ५. रुहेलखंड की एक नदी।
गर्व–संज्ञा पुं० अभिमान। अहंकार। घमंड।
गर्वजनक–वि० घमंड उत्पन्न करनेवाला। अहंकारजनक।
गर्वान्वित–वि० अहंकारी। घमंडी। दंभी।
गर्वाना*–क्रि० अ० घमंड या गर्व करना।
गर्वित–वि० गर्वयुक्त। अहंकारमय। अहंकार से भरा हुआ।
गर्विता–संज्ञा स्त्री० नायिका-विशेष जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।
गर्विष्ठ–वि० अभिमानी। घमंडी।
गर्वी–वि० अहंकारी। घमंडी।
गर्वीला–वि० [स्त्री० गर्वीली] घमंड से भरा हुआ। अभिमानी। घमंडी। अहंकारी।
गर्हण–संज्ञा पुं० शिकायत। निंदा। दोष देना। छोड़ने योग्य। त्याज्य।
गर्हणीय–वि० १. निंदनीय। बुरा। २. तिरस्कार के योग्य।
गर्हा–संज्ञा स्त्री० १. तिरस्कार। बुराई। २. अपवाद। निन्दा।
गर्हित–वि० निंदित। दूषित। बुरा। तिरस्कृत। जिसकी निन्दा की जाय।
गर्ह्य–वि० गर्हणीय। अधम। नीच। निन्दनीय।
गर्ह्यवादी–वि० निकृष्टवादी। अपभाषी। दुर्वचन-वक्ता।
गर्ह्यवृत्ति–संज्ञा स्त्री० अधम जीविका।
गलंडा–संज्ञा पुं० पुकार। गुहार।
गलंदा–वि० कटुभाषी। दुर्मुख।
गल–संज्ञा पुं० १. कंठ। गला। २. एक मछली। ३. प्राचीन बाजा-विशेष।
गलकंबल–संज्ञा पुं० झालर। लहर। गाय के गले के नीचे लटकती खाल।
गलका–संज्ञा पुं० १. पीड़ा। २. रोग-विशेष। एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक। ३. गलका माता।
गलगंज–संज्ञा पुं० कोलाहल। हल्ला। शोर-गुल।
गलगर्जना–क्रि० अ० शोरगुल करना। हल्ला करना।
गलगंड–संज्ञा पुं० घेघा। रोग-विशेष, जिसमें गला सूजकर लटक आता है। गंडमाला। कंठमाला।

गलगल—संज्ञा स्त्री० १. एक चिड़िया। सिर-गांटी। गलगलिया। २. चकोतरा। बड़ा नीबू-विशेष।
गलगला—वि० भींगा हुआ। तर।
गलगाजना—क्रि० अ० १. व्यर्थ की बात करना। गाल बजाना। २. बढ़बढ़कर बातें करना।
गलगुच्छा—संज्ञा पुं० गलमुच्छा। गालों तक मोंछ।
गलगुथना—वि० मोटा। जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों।
गलग्रह—संज्ञा पुं० १. मछली का काँटा। कठिनाई से दूर होनेवाली आपत्ति। २. श्वास का रुक जाना। ३. अनध्याय तिथि-विशेष।
गलछुट—संज्ञा स्त्री० दे० "गलफड़ा"।
गलजँदड़ा—संज्ञा पुं० १. गले का हार। २. कभी पिंड न छोड़नेवाला। ३. चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए गले में लटकती हुई कपड़े की पट्टी।
गलझंप—संज्ञा पुं० हाथी के गले में पहनाने की लोहे की जंजीर।
गलतंस—संज्ञा स्त्री० १. निःसन्तान व्यक्ति। २. निःसन्तान व्यक्ति की सम्पत्ति। लावारिस जायदाद।
ग़लत—वि० [अ०, संज्ञा गलती] १. अशुद्ध। २. भ्रम। ३. असत्य। भूल। त्रुटि।
गलतकिया—संज्ञा पुं० छोटा, गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है।
गलतनी—संज्ञा स्त्री० गलबंधन। गले का बँधना।
ग़लत-फ़हमी—संज्ञा स्त्री० [अ०] भ्रम। कुछ का कुछ समझना।
गलतान—वि० लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ। संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपड़ा।
ग़लती—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भूल। अशुद्धि। त्रुटि। २. भूल-चूक।
गलथना—संज्ञा पुं० बकरियों की गरदन में दोनों ओर लटकनेवाली थैलियाँ।
गलथैली—संज्ञा स्त्री० बंदरों के गाल के नीचे की थैली, जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गलन—संज्ञा पुं० १. पतन। गिरना। २. गलना। पिघलना। घुलना। सड़ना।
गलना—क्रि० अ० १. घुलना। पिघलना। २. नरम होना। शरीर का दुर्बल होना। ३. शीत से ठिठुरना। ४. निष्फल होना। नष्ट होना। बेकाम होना। ५. पुराना होना।
गलफटाकी—संज्ञा स्त्री० १. बड़ाई। २. घमंड। ३. अपने मुँह अपनी प्रशंसा। शेखी।
गलफड़ा—संज्ञा पुं० १. जल-जंतुओं के शरीर का वह भाग जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। २. गाल का चमड़ा। ३. कपोल। जबड़ा। गाल।
गलफाँसी—संज्ञा स्त्री० १. गले की फाँसी। २. दुखदायी वस्तु या कार्य। जंजाल। झंझट।
गलबंदनी—संज्ञा पुं० गले में पहनने का एक गहना।
गलबल—संज्ञा पुं० खलबली। गड़बड़ी। कोलाहल।
गलबहियाँ—संज्ञा स्त्री० १. परस्पर कंधे पर हाथ रखकर चलना। २. आलिंगन करने का ढंग। परस्पर गले में बाँह डालना।
गलबाँह—संज्ञा स्त्री० आलिंगन।
गलबाँही—संज्ञा स्त्री० आलिंगन। गले में बाँह डालना।
गलभंग—वि० स्वरबद्ध। बैठा हुआ कंठ।
गलमुँदरी—संज्ञा स्त्री० १. गलमुद्रा। शिवजी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा। २. गाल बजाना।
गलमुच्छा—संज्ञा पुं० गलगुच्छा। गालों पर के बढ़े हुए बाल।
गलमुद्रा—संज्ञा स्त्री० दे० "गलमुँदरी"।
गलवाना—क्रि० स० ['गलना' का प्रे० रूप] दूसरे से गलाने का कार्य कराना।
गलशुंडी—संज्ञा स्त्री० १. गले की जीभ। जीभ की जड़ के पास जीभ के आकार का मांस का छोटा टुकड़ा। छोटी जबान या जीभ। कौआ। जीभी। २. रोग-विशेष जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है।

गलसुआ—संज्ञा पुं० रोग-विशेष, जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज आता है।

गलसुई—संज्ञा स्त्री० दे० "गलतकिया"। छोटा तकिया। सिरहाना।

गलस्तन—संज्ञा पुं० गलथना। बकरियों के गले के नीचे की दो छोटी पतली थैलियाँ जो थन की तरह होती हैं।

गलस्तनी—संज्ञा स्त्री० बकरी।

गलहंड—संज्ञा पुं० गलगाड़। गलरोग। घेघा।

गलही—संज्ञा स्त्री० नाव के आगे का उठा हुआ भाग।

गला—संज्ञा पुं० १. गरदन। कंठ। शरीर का वह अंग, जो सिर को धड़ से जोड़ता है। २. गले की नाली जिससे शब्द निकलता और भोजन भीतर जाता है। ३. कंठस्वर। गले का स्वर। ४. अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग। गरेबान। ५. चिमनी का कल्ला। ६. बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग।

मुहा०—गला काटना=१. धड़ से सिर अलग करना। जान से मार डालना। २. बहुत हानि पहुँचाना। ३. तरकारी आदि से उत्पन्न गले के अंदर एक प्रकार की जलन और चुनचुनाहट। कनकनाना। गला घुटना=दम रुकना। अच्छी तरह साँस न लिया जाना। गला घोंटना=१. टेंटुआ दबाना। गले को ऐसा दबाना कि साँस रुकने से प्राणान्त हो जाय। २. जबरदस्ती करना। ३. मार डालना। गला दबाकर मार डालना। गला छूटना=छुटकारा मिलना। पीछा छूटना। गला पड़ना=भारी शब्द होना। गला घनघनाना। गला फाँसना=फाँसी देना। गला बैठना=शब्द का भारी होना। एक प्रकार का रोग जिसमें गले से ठीक वाणी नहीं निकलती। गला दबाना=अनुचित दबाव डालना। गला फाड़ना=इतना चिल्लाना कि गला दुखने लगे। गला रेतना=दे० "गला काटना"। गले का हार=१. अत्यंत प्रिय। इतना प्यारा (व्यक्ति या वस्तु) कि पास से कभी जुदा न किय जाय। चिरसहचर। २. पीछा न छोड़ने वाला। (बात) गले के नीचे उतरन या गले उतरना=(बात) मन में बैठना ध्यान में आना। जी में जँचना। गले पड़ना=न चाहने पर भी मिलना। इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना। गले पड़ी=अनिच्छापूर्वक किसी काम को करना। (दूसरे के) गले बाँधना या मढ़ना=दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। जबरदस्ती देना। गले लगाना=१. मिलना। भेंटना। आलिंगन करना। २. दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना।

गलाना—क्रि० स० १. ठोस वस्तु को पिघलाना। द्रव करना। घुलाना। किसी वस्तु को गीला या द्रव करना। नरम या मुलायम करना। पुलपुला करना। २. (रुपया) व्यय या खर्च करना। ३. धीरे-धीरे लुप्त करना।

गलानि†*—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गलाव—संज्ञा पुं० पिघलना। बहाव। द्रव।

गलासी—संज्ञा पुं० पशु बाँधने की रस्सी। पगहा।

गलित—वि० १. पतित। गिरा हुआ। २. गला हुआ। द्रवीभूत। सड़ियल। ३. पुराना, जीर्ण-शीर्ण। खंडित। ४. च्युत। चुआ हुआ। ५. अधिक पका हुआ। ६. नष्ट-भ्रष्ट।

गलित कुष्ठ—संज्ञा पुं० एक तरह का कोढ़ जिसमें अंग गल-गलकर गिरने लगते हैं।

गलितयौवना—संज्ञा स्त्री० ऐसी स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

गलियाना—क्रि० स० १. गाली देना। बुरा कहना। अभिशाप देना। २. भोजन कर पर भी और भोजन कराना। गले में

गलियारा—संज्ञा पुं० गली की तरह छोटा तंग रास्ता। छोटी गली। पैंड़ा
संज्ञा स्त्री० गलियारी।

गली–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मार्ग । तंग रास्ता । खोरी । कूचा । २. महल्ला । ३. महाल ।
मुहा०–गली-गली मारे-मारे फिरना= १. इधर-उधर व्यर्थ भटकना या घूमना । २. जीविका के लिए इधर से उधर भटकना । सब जगह दिखाई पड़ना ।

गलीचा–संज्ञा पुं० [फा०] कालीन । मोटा बना हुआ बिछौना जिस पर रंग-बिरंग के बेल-बूटे बने रहते हैं ।

गलीज–वि० [अ०] १. मैला । गँदला । २. अशुद्ध । अपवित्र । नापाक ।
संज्ञा पुं० १. गंदी वस्तु । कूड़ा-करकट । गंदगी । मैला । २. पाखाना । मल ।

गलीत*–वि० दे० "गलीज" । मैला-कुचैला ।

गलेफ–संज्ञा स्त्री० दोहर । दुहरा ओढ़ने का चदरा ।

गलेबाज–वि० अच्छा गानेवाला ।

गलेबाजी–संज्ञा स्त्री० १. अच्छा गाना । गले का कौशल यानी राग अलापने का कौशल दिखाना । २. बहुत बढ़-बढ़कर बातें बनाना । डींग ।

गलौआ–संज्ञा पुं० १. गाल । २. बन्दरों के गालों के अन्दर की थैली ।

गल्प–संज्ञा स्त्री० १. गप्प । २. डींग । शेखी । ३. छोटी कहानी । उपकथा । कहानी । आख्यायिका । कल्पित कथा ।

गल्ला–संज्ञा पुं० शोर । हल्ला । दल । झुंड । (चौपायों के लिए)

ग़ल्ला–संज्ञा पुं० [अ०] १. फसल । पैदावार । २. अनाज । अन्न । ३. दूकान पर मिलनेवाला अनाज । गोलक । आँटी । अन्नराशि ।

गल्लाना–संज्ञा पुं० कुल्ली का काढ़ा ।

गवँ–संज्ञा स्त्री० १. घात । मौका । मतलब हल होने या काम निकलने का अवसर । दाँव । २. प्रयोजन । मतलब ।
मुहा०–गवँ से=१. घात । मौका देखकर । २. धीरे से । ३. चुपचाप ।

गवन–संज्ञा पुं० १. गमन । प्रस्थान । प्रयाण । चलना । जाना । गति । २. वधू का पहले पहल पति के घर जाना । गौना ।

गवनचार–संज्ञा पुं० वर के घर वधू के जाने की रीति ।

गवनना*–क्रि० अ० जाना ।

गवना–संज्ञा पुं० दे० "गौना" । द्विरागमन ।

गवय–संज्ञा पुं० १. नीलगाय । २. छंद-विशेष ।

गवर्नमेण्ट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] राज्य । सरकार । राजकीय शासक-मंडली । शासन-पद्धति ।

गवर्नर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] किसी प्रान्त या क्षेत्र का शासक । राज्यपाल ।

गवाक्ष–संज्ञा पुं० १. छोटी खिड़की । गौखा । झरोखा । मोखा । २. एक बानर का नाम ।

गवाख*–संज्ञा पुं० दे० "गवाक्ष" ।

गँवाना–क्रि० स० खोना ।

गवामयन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञ ।

गवारा–वि० [फा०] १. अनुकूल । पसंद । २. बरदाश्त करने लायक । सह्य । अंगीकार । स्वीकार ।

गवाशन–संज्ञा पुं० चर्मकार । चंडाल । म्लेच्छ । कसाई ।

गवास–संज्ञा पुं० कसाई । दे० "गवाशन" ।
संज्ञा स्त्री० गाने की इच्छा ।
क्रि० अ० लगना ।

गवासा–संज्ञा पुं० १. गोभक्षक । २. कसाई ।

गवाह–संज्ञा पुं० [फा०] १. साक्षी । साखी । वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो । किसी घटना को अपनी आँखों देखनेवाला । २. किसी विषय में जानकारी रखनेवाला ।

गवाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गवाह का बयान । २. साक्षी का बयान । ३. विवाद-ग्रस्त विषय की जानकारी रखनेवाले व्यक्ति का बयान ।

गवीश–संज्ञा पुं० गोस्वामी । विष्णु । साँड ।

गवेजा–संज्ञा पुं० १. गप । २. बातचीत ।

गवेधु, गवेधुक–संज्ञा पुं० १. गँगेरुआ । २. तण । धान्य-विशेष । एक तरह की

घास जिसे चौपाये खाते हैं। कसेई। कौडिल्ला।

गवेरुक—संज्ञा पुं० गेरू।

गवेल†—वि० १. देहाती। २. गँवार।

गवेषण—संज्ञा स्त्री० छानबीन। खोज। अन्वेषण।

गवेषी—वि० [स्त्री० गवेषिणी] खोज करनेवाला। ढूंढ़नेवाला। अन्वेषण करनेवाला।

गवैहा—वि० गाँव का रहनेवाला, गँवार। देहाती। ग्रामीण।

गवैया—वि० गायक। गानेवाला।

गव्य—वि० गो से उत्पन्न। जो गाय से प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी, गोबर आदि।

संज्ञा पुं० १. पंचगव्य। गौ के पाँच पदार्थ—दूध, दही, गोमूत्र, गोमय, गोघृत। २. गायों का झुंड।

गव्यूति—संज्ञा स्त्री० दो हजार धनुष की दूरी। दो कोस। चार मील।

ग़श—संज्ञा पुं० [अ०] मूर्च्छा। अचेतनता। बेहोशी।

मुहा०—ग़श खाना=बेहोश होना।

गश्त—संज्ञा पुं० [फ़ा० वि० गश्ती] १. भ्रमण। घूमना। फिरना। टहलना। दौरा। चक्कर। २. पहरे के लिए किसी स्थान के चारों ओर या गली-कूचों आदि में घूमना। गिरदावरी।

गश्ती—वि० घूमने-फिरनेवाला। घूमनेवाला। भ्रमणशील।

संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।

गसना—क्रि० स० १. गाँठना। बाँधना। २. जकड़ना। ठसना।

गसीला—वि० [स्त्री० गसीली] १. गूँथा हुआ। जकड़ा हुआ। गठा हुआ। २. गफ। (कपड़ा आदि) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों।

गस्तान—संज्ञा स्त्री० कुलटा स्त्री। व्यभिचारिणी नारी।

गस्सा—संज्ञा पुं० कवल। ग्रास। कौर।

गह—संज्ञा स्त्री० १. पकड़ना या पकड़ने का भाव। पकड़। २. हथियार आदि पकड़ने की जगह। मूठ। दस्ता। बेंट। हत्था। हथकड़ा।

मुहा०—गह बैठना=मूठ पर हाथ भरपूर जमना।

गहक—संज्ञा स्त्री० मस्ती। उन्मत्तता।

गहकना—क्रि० अ० १. लालायित होना। लालसा से पूर्ण होना। ललकना। २. लपकना। ३. उमंग से भरना।

गहगड्ड—वि० भारी। गहरा। घोर (नशे के लिए)।

गहगह*—वि० प्रसन्नतापूर्ण। प्रफुल्लित। उमंग से भरा हुआ। सर्वत्र प्रसन्नता। चारों ओर खुशी।

क्रि० वि० धूमधाम के साथ। धमाधम (बाजे के लिए)।

गहगहा—वि० १. प्रफुल्लित। उमंग और आनंद से भरा हुआ। २. धूमधामवाला।

गहगहाना—क्रि० अ० १. बहुत प्रसन्न होना। आनंद से फूलना। २. पौधों का लहलहाना। ३. लहकना।

गहगहे—क्रि० वि० १. बड़ी प्रफुल्लता के साथ। २. बड़े हर्ष के साथ। ३. धूमधाम के साथ।

गहड़ोरना—क्रि० स० पानी को मैला या गँदला करना।

गहन—वि० १. अथाह। गंभीर। गहरा। २. दुर्गम। दुर्भेद्य। घना। ३. दुरूह। कठिन। ४. घना। निविड़।

संज्ञा पुं० १. थाह। गहराई। २. दुर्गम स्थान। ३. वन में गुप्त स्थान। कुंज। ४. ग्रहण। ५. दोष। कलंक। ६. कष्ट। विपत्ति। दुःख। ७. बंधक। रेहन। ८. जल।

संज्ञा स्त्री० १. पकड़। पकड़ने का भाव। २. टेक। हठ। जिद।

गहनता—संज्ञा स्त्री० दे० "गहन"। दुर्गम या गम्भीर होने का भाव।

गहना—संज्ञा पुं० धरोहर। १. आभूषण। जेवर। २. बंधक। रेहन।

क्रि० स० १. पकड़ना। २. धरना। ३. ग्रहण करना।

संज्ञा स्त्री० १. सन। २. पलास। ३. काली पत्ती।

गहनि*—संज्ञा स्त्री० १. टेक। हठ। जिद। २. पकड़।
गहबर†*—वि० १. दुर्गम। सघन। विषम। २. आवेग से भरा हुआ। ३. उद्विग्न। व्याकुल। ४. बेसुध। ध्यानमग्न।
गहबरना—क्रि० अ० १. आवेग से भरना। २. व्याकुल होना। घबराना। उद्विग्न होना।
गहर—संज्ञा स्त्री० विलंब। देर।
संज्ञा पुं० गूढ़। दुर्गम। कठिन।
गहरना—क्रि० अ० विलंब करना। देर लगाना। १. उलझना। झगड़ना। २. कुढ़ना। चिढ़ना। नाराज होना।
गहरवार—संज्ञा पुं० क्षत्रिय-वंश-विशेष।
गहरा—वि० [स्त्री० गहरी] १. गंभीर। निम्न। जिसकी थाह बहुत नीचे हो। अगाध। २. बहुत अधिक। घोर। ज्यादा। ३. जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ४. दृढ़। भारी कठिन। मजबूत। ५. गाढ़ा। जो हलका या पतला न हो। मालदार आदमी।
मुहा०—गहरा पेट=ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले। ऐसा पेट जिसमें सब बातें पच जायँ। गहरा असामी=१. बड़ा आदमी। २. गहरे लोग=धूर्त। चतुर लोग। उस्ताद। गहरा हाथ=३. हथियार का भरपूर वार। भारी रकम प्राप्त करना। गहरी घुटना या छनना=१. खूब गाढ़ी भंग घुटना या पिसना। २. गाढ़ी मित्रता होना।
गहराई—संज्ञा स्त्री० गहरापन। गहरा भाव।
गहराना†—क्रि० अ० गहरा होना। गम्भीर होना। दे० "गहरना"। गहरा करना।
गहराव†—संज्ञा पुं० गहराई। गहरापन।
गहरु*—संज्ञा स्त्री० दे० "गहर"। ढील। देर। विलम्ब। अरसा।
गहलौत—संज्ञा पुं० क्षत्रियों का वंश-विशेष।
गहवा—संज्ञा पुं० १. चिमटा। २. सँडासी। ३. पकड़ने की वस्तु।
गहवाना—क्रि० स० [गहना का प्रे०] पकड़ाना। पकड़ने का काम कराना। पकड़वाना।
गहवारा—संज्ञा पुं० झूला। हिंडोला। पालना।
गहाई*†—संज्ञा स्त्री० पकड़। गहने (पकड़ने) का भाव।
गहागड्ड—वि० दे० "गहगड्ड"।
गहाना—क्रि० स० [गहना का प्रे०] पकड़ाना। धराना।
गहीला—वि० [स्त्री० गहीली] १. अभिमानी। गर्वीला, गर्वयुक्त। घमंडी। २. पागल।
गहु—संज्ञा पुं० छोटा रास्ता।
गहुआ—संज्ञा पुं० एक तरह की सँडसी।
गहेजुआ†—संज्ञा पुं० छछूंदर।
गहिला या गहेला—वि० [स्त्री० गहेली] १. हठी। जिद्दी। २. अभिमानी। ३. घमंडी। पागल। ४. अनजान। गँवार। मूर्ख।
गहैया—वि० १. ग्रहण करनेवाला। पकड़नेवाला। २. स्वीकार करनेवाला। अंगीकार करनेवाला।
गह्वर—संज्ञा पुं० १. अंधकारमय और गूढ़ स्थान। २. खोह। गर्त। बिल (जमीन में छेद)। ३. गुहा, गुफा, कंदरा। ४. विषम स्थान, दुर्भेद्य स्थान। ५. लतागृह। निकुंज। ६. झाड़ी। ७. जंगल। वन।
वि० १. दुर्गम। विषम। २. गुप्त।
गाँऊँ—संज्ञा पुं० गाँव। ग्राम। पुर।
गांकर—संज्ञा स्त्री० बाटी। लिट्टी।
गांग—वि० गंगा का। गंगा-संबंधी।
संज्ञा पुं० दे० गांगेय। भीष्म। सोना। कार्त्तिकेय। धतूरा। वर्षा का जल। लंबा तालाब। हेलसा मछली।
गांगट—संज्ञा पुं० केकड़ा।
गांगेय—संज्ञा पुं० १. भीष्म। २. कार्त्तिकेय। गंगापुत्र। ३. सोना। ४. कसेरू। ५. धतूरा। ६. हेलसा मछली। ७. एक तरह की घास की जड़।
गांज—संज्ञा पुं० ढेर। राशि।
गांजना—क्रि० स० १. एकत्र करना। राशि लगाना। ढेर करना। २. बटोरना।

गाँजा–संज्ञा पुं० भाँग की तरह एक नशीली वस्तु और उसका पौधा।

गाँठ–संज्ञा स्त्री० [वि० गँठीली] १. ग्रंथि गिरह। बन्धन। जोड़। सन्धि। २. आँचल या चद्दर के छोर में कोई वस्तु रखकर लगाई हुई गाँठ। ३. गठरी। बोरा। ४. शरीर के जोड़। बंद। जैसे—पैर की गाँठ। ५. ईख, बाँस आदि में थोड़े-थोड़े अंतर पर कुछ उभरा हुआ मंडल। पोर। पर्व। ६. गट्ठा। घास का बँधा हुआ बोझ। ७. गाँठ के आकार की जड़। गुत्थी। गिलटी। मोटरी।

मुहा०–मन या हृदय की गाँठ खोलना–गाँठ खोलना=खर्च करना।=१. मन की बात कहना। जी खोलकर कोई बात कहना। २. अपनी भीतरी इच्छा प्रकट करना। ३. लालसा पूरी करना। हौंसला निकालना। मन में गाँठ पड़ना=मनमुटाव होना। गाँठ का खोना=अपनी हानि करना। गाँठ कतरना या काटना=जेब काटना, गाँठ से रुपया निकालना। गाँठ उखड़ना=जोड़ खुल जाना। हड्डी या नस का बिचलना। गाँठ का=अपनी आमदनी का। पास का। गाँठ का पूरा=धनी। मालदार। गाँठ जोड़ना=विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के पल्ले को एक में बाँधना। गँठजोड़ा करना। (कोई बात) गाँठ में बाँधना=स्मरण रखना। अच्छी तरह याद रखना। सदा ध्यान में रखना। गाँठ से=पास से। अपने पास से।

गाँठगोभी–संज्ञा स्त्री० एक तरह की गोभी। जिसकी जड़ में बड़ी गाँठ होती है।

गाँठदार–वि० १. गठीला। २. जिसमें बहुत गाँठें हों।

गाँठना–क्रि० स० १. गाँठ लगाना। बाँधकर मिलाना। बाँधना। २. गथना। फटी हुई चीजों को टाँकना या उनमें चकती लगाना। मरम्मत करना। ३. जोड़ना। मिलाना। ४. तरतीब देना। ५. वश में करना। ६. अनुकूल करना। अपनी ओर मिलाना। पक्ष में करना। ७. वार को रोकना। ८. अपना अधिकार जमाना।

मुहा०–मतलब गाँठना=काम निकालना।

गाँड़र–संज्ञा स्त्री० गंडदूर्वा। मूँज की तरह की एक घास।

वि० १. गहरा। २. गड़हे का।

गाँडा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गँडी] १. किसी पेड़, पौधे या डंठल का छोटा कटा खंड। जैसे—ईख का गाँडा। २. गँडेरी। ईख का छोटा कटा टुकड़ा।

गांडीव–संज्ञा पुं० अर्जुन के धनुष का नाम।

गांडीवी–संज्ञा पुं० गांडीव धनुष धारण करनेवाला। अर्जुन।

गांडीवधर–संज्ञा पुं० अर्जुन।

गाँती–संज्ञा स्त्री० दे० "गाती"।

गाँथना*–क्रि० स० १. गूँथना। २. बनाना। गूँधना। ३. मोटी सिलाई करना। पिरोना। ४. भीत उठाना।

गांधर्व–वि० १. गंधर्वसंबंधी। २. गंधर्व जाति का। ३. गंधर्व देशोत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. गंधर्व-विद्या। गंधर्व-वेद। सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर आदि का वर्णन है। २. गान-विद्या। संगीत-शास्त्र। ३. आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से प्रेमपूर्वक मिलकर पति-पत्नीवत् रहते हैं।

गांधर्व-विद्या–संज्ञा स्त्री० संगीत-शास्त्र।

गांधर्व-विवाह–संज्ञा पुं० केवल वर-कन्या की इच्छा से विवाह।

गांधर्ववेद–संज्ञा पुं० १. संगीत-शास्त्र। २. सामवेद का उपवेद।

गांधार–संज्ञा पुं० [स्त्री० गांधारी] १. सिंधु नद के पश्चिम का देश। २. गांधार देश का निवासी। ३. संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर। ४. सिन्दूर।

गांधारराज–संज्ञा पुं० शकुनि। दुर्योधन के मामा।

गांधारी–संज्ञा स्त्री० १. गांधार देश की

स्त्री या राजकन्या। २. धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता का नाम। ३. जैनियों का देवता-विशेष। ४. गाँजा। ५. मादक द्रव्य-विशेष।

गांधिक—संज्ञा पुं० सुगन्धित द्रव्य-व्यवहारी। अत्तार। कीड़ा।

गांधी—संज्ञा स्त्री० १. हरे रंग का छोटा कीड़ा-विशेष। २. घास-विशेष। ३. गंधी। †४. हींग। ५. गुजराती वैश्यों की जाति-विशेष।

गांभीर्य्य—संज्ञा पुं० १. गहराई। २. गंभीरता। ३. स्थिरता। अचंचलता। ४. धीरता। शांति का भाव। ५. गूढ़ता। गुरुता।

गाँव—संज्ञा पुं० छोटी बस्ती। खेड़ा। पुरवा। ऐसी जगह जहाँ पर बहुत से किसानों के घर हों।

गाँस—संज्ञा स्त्री० १. बंधन। रोक-टोक। २. द्वेष। वैर। ईर्ष्या। ३. रहस्य। हृदय की गुप्त बात। भेद की बात। ४. गाँठ। गठन। फंदा। ५. तीर या बर्छी का फल। ६. अधिकार। वश। शासन। ७. कठिनता। संकट। अड़चन। ८. देख-रेख। निगरानी।

गाँसना—क्रि० स० १. गूँथना। पिरोना। २. छेदना। चुभोना। सालना। ३. छिद्र बन्द करना। ताने में कसना, जिससे बुनावट ठस हो। ४. दबोचना। पकड़ में करना। ५. वश में रखना। शासन में रखना। ६. भरना। ठूँसना।

मुहा०—बात को गाँसकर रखना=हृदय में जमाना। मन में बैठाकर रखना।

गाँसी—संज्ञा स्त्री० १. तीर या हथियार की नोक। बरछी आदि का फल। २. धार। ३. गाँठ। गिरह। ४. कपट। छलछंद। ५. तीक्ष्णता। ६. मनोमालिन्य।

गाई—संज्ञा स्त्री० गाय। गौ।

गाऊघप्प—वि० खुर्चाली।

गागर, गागरी—संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी"। कलसी। घट। घड़ा।

गाच—संज्ञा स्त्री० बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा-विशेष, जिस पर रेशमी बेल-बूटे बने रहते हैं। फुलवर।

गाछ—संज्ञा पुं० छोटा पेड़-पौधा।

गाछमिर्च—संज्ञा पुं० लाल मिर्च।

गाज—संज्ञा स्त्री० १. गरज। गर्जन। शोर। २. बिजली गिरने की आवाज। काँच की चूड़ी। ३. वज्र। बिजली।

संज्ञा पुं० फेन। झाग।

मुहा०—किसी पर गाज पड़ना=आफत आना। नाश होना।

गाजना—क्रि० अ० १. शब्द करना। हुंकार करना। गरजना। चिल्लाना। २. प्रसन्न होना। खुश होना।

मुहा०—गल-गाजना=हर्षित होना।

गाजर—संज्ञा स्त्री० पौधा-विशेष। गजरा। गृंजन।

मुहा०—गाजर-मूली समझना=तुच्छ समझना।

गाजा—संज्ञा पुं० मुंह पर मलने का रोगन-विशेष।

गाजा-बाजा—संज्ञा पुं० अनेक प्रकार के बाजे। सर्वांग-पूर्ण उत्सव।

गाजी—संज्ञा पुं० [अ०] १. धर्म के लिए विधर्मियों से युद्ध करनेवाला मुसलमान योद्धा। २. योद्धा। बहादुर। वीर।

गाड़—संज्ञा स्त्री० १. गड्ढा। गड़हा। २. अनाज रखने के लिए गड्ढा। ३. भगाड़। कुएँ की ढाल।

गाडतोप—संज्ञा स्त्री० मिट्टी देना। कब्र देना। अश्लील या निन्दित बात को छिपाना। गाड़कर छिपाना।

गाड़ना—क्रि० स० १. तोपना। गड्ढा खोदकर किसी चीज को उसमें रखकर ऊपर से मिट्टी डाल देना। जमीन के अंदर दफनाना। २. जमाना। किसी चीज को पृथ्वी में धँसाना। ३. छिपाना। गुप्त रखना।

गाडर†—संज्ञा स्त्री० १. भेड़। मेष। २. सरसों।

गाड़रू—संज्ञा पुं० १. गारुड़ि। २. सर्प का विष झाड़ने का मंत्र।

वि० सर्प का विष उतारनेवाला।

गाड़ा*†–संज्ञा पुं० गाड़ी। छकड़ा। १. खाई (युद्ध आदि में)। गढ़ा। २. दाँव। टोटका का गड़न्त।

गाड़ी–संज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल-असबाब या आदमियों को पहुँचाने के लिए यान। शकट। रथ। हरकड़ा।

गाड़ीखाना–संज्ञा पुं० गाड़ियों के रखने का स्थान। वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रखी रहती हों।

गाड़ीवान–संज्ञा पुं० १. सारथी। रथवाह। २. गाड़ी हाँकनेवाला। कोचवान।

गाढ़–वि० १. अधिक। बहुत। २. दृढ़। मजबूत। ३. गाढ़ा। घना। जो पतला न हो। ४. कठिन ५. अथाह। गहरा। दुरूह। दुर्गम।

संज्ञा पुं० कष्ट। जंजाल। कठिनाई। आपत्ति। संकट। वेदना।

गाढ़ता–संज्ञा स्त्री० गाढ़ापन।

गाढ़ा–वि० [स्त्री० गाढ़ी] १. जो पतला न हो। २. ठस, मोटा (कपड़े आदि के लिए)। जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ३. गहरा। गूढ़। घनिष्ठ। ४. विकट। बढ़ा-चढ़ा। घोर। कठिन। मोटा। पोढ़ा। घना।

संज्ञा पुं० १. गजी। एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। २. मस्त हाथी।

मुहा०–गाढ़े की कमाई=बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। गाढ़े का साथी या संगी=संकट के समय का मित्र। विपत्ति के समय सहारा देनेवाला। गाढ़े दिन=संकट के दिन।

गाढ़े†*–क्रि० वि० १. अच्छी तरह। २. दृढ़ता से। जोर से।

गाणपत–वि० गणपति-संबंधी।

संज्ञा पुं० गणेश की उपासना करनेवाला सम्प्रदाय-विशेष।

गाणपत्य–संज्ञा पुं० १. गणेश का उपासक। गणेश के भक्त स्मार्त। २. उपासना का एक भेद।

गात–संज्ञा पुं० अंग। शरीर। देह। बदन।

गाता–संज्ञा पुं० पूठा। पिठौता। जिल्द।

वि० गायक। गानकर्त्ता। गानकारक।

गाती–संज्ञा स्त्री० गले में बाँधने का वस्त्र। १. पट्ट। २. चद्दर या अँगोछे को गले से बाँधने का एक ढंग।

गातु–संज्ञा पुं० १. गायक। गवैया। गानेवाला। २. कोकिल। ३. भ्रमर। ४. गन्धर्व। ५. गान। ६. पथिक। ७. पृथिवी।

गात्र–संज्ञा पुं० अंग। देह। शरीर। गात।

गात्रकंडू–संज्ञा स्त्री० शरीर की खुजलाहट।

गात्रवेदना–संज्ञा स्त्री० शरीर की व्यथा। अंगपीड़ा।

गात्रभंगी–संज्ञा स्त्री० शरीर की विकृति। विकार। अंग की बनावट।

गात्रलेपनी–संज्ञा स्त्री० शरीर में लगाने का सुगंधित द्रव्य-विशेष। उबटन।

गात्रसंवाहन–संज्ञा पुं० शरीर दबाना। अंगों की थकावट या पीड़ा निकालना।

गाथ–संज्ञा पुं० प्रशंसा। यश। बड़ाई।

गाथक–वि० १. गायक। गवैया। २. कथक।

गाथना–वि० १. ग्रन्थन करना। गूँथना। २. बनाना।

गाथा–संज्ञा स्त्री० १. स्तुति। गान। पद्य। छंद। २. वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। ३. प्राचीन काल की एक ऐतिहासिक रचना जिसमें बड़े लोगों के दान-यज्ञ आदि का वर्णन होता था। ४. प्राचीन भाषा-विशेष। ५. आर्य्या नाम की वृत्ति। ६. पँवारा। ७. कथा। वृत्तांत। कहानी। ८. पारसियों के धर्म-ग्रंथ का भेद-विशेष।

गाद†–संज्ञा स्त्री० १. काई। तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज। तलछट। २. गाढ़ी चीज। ३. तेल की कीट।

गादड़, गादर†–वि० डरपोक। भीरु। कायर। सुस्त।

संज्ञा पुं० [स्त्री० गादड़ी] सियार। गीदड़।

गादना–वि० १. दृढ़ करना। स्थिर करना। २. दबाना। ठाँसना।

गादर–संज्ञा पुं० राशि। थोक। ढेर। टाल।

वि० १. कायर। डरपोक। भीरु। २. सुस्त।

गाढा–संज्ञा पुं० १. अधपका अन्न। गद्दर। †२. कच्ची फसल। ३. चना। मटर या होरहा। कचरी।

गाढी–संज्ञा स्त्री० १. पकवान-विशेष। २. दे० "गद्दी"। राज्यासन। सिंहासन।

गादीपति–संज्ञा पुं० १. सम्प्रदाय का एक बड़ा महन्त। २. संन्यासी।

गादुर–संज्ञा पुं० चमगीदड़। चमगादुर।

गाध–संज्ञा पुं० १. जगह। स्थान। २. जल के नीचे का स्थल। ३. थाह। ४. नदी का बहाव। कूल। ५. लोभ। अभिलाषा। स्पृहा। लिप्सा।

वि० [स्त्री० गाधा] १. जिसे पार कर सकें। जो बहुत गहरा न हो। छिछला। २. थोड़ा। स्वल्प।

गाधा–संज्ञा स्त्री० गायत्री-स्वरूपा महादेवी।

गाधि–संज्ञा पुं० विश्वामित्र के पिता का नाम।

गाधिज या **गाधिनंदन**–संज्ञा पुं० विश्वामित्र।

गाधिपुर–संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज देश।

गाधिसुवन–संज्ञा पुं० विश्वामित्र मुनि।

गाधेय–संज्ञा पुं० विश्वामित्र।

गान–संज्ञा पुं० [वि० गेय, गेतव्य] १. गाने की क्रिया। २. संगीत। ध्वनि। गाना। ३. गीत। गाने की चीज। ४. बखान। कीर्तन।

गाना–क्रि० स० १. राग अलापना। ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चारण करना। २. मधुर ध्वनि करना। ३. विस्तार के साथ कहना। वर्णन करना। ४. प्रशंसा करना। स्तुति करना।

संज्ञा पुं० १. गान। गाने की क्रिया। २. गीत। गाने की चीज।

मुहा०–अपनी ही गाना=अपना ही हाल कहना। अपनी ही बात कहते जाना।

ग़ाफ़िल–वि० [अ०] [संज्ञा ग़फ़लत] १. बेसुध। लापरवाह। २. आलसी। बेखबर। ३. असावधान।

गाभ–संज्ञा पुं० १. पशुओं का गर्भ। २. दे० "गाभा"। ३. ढेंढा। ४. पेट।

गाभा–संज्ञा पुं० [वि० गाभिन] १. कोंपल। नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता। नया कल्ला। २. केले आदि के डंठल के अंदर का भाग। ३. गुद्दड़। लिहाफ, रज़ाई आदि के अंदर की निकाली हुई पुरानी रूई। ४. खड़ी खेती। कच्चा अनाज। ५. हाथ या पैर की अँगुलियों की संधि।

गाभिन, गाभिनी–वि० स्त्री० जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी (चौपायों के लिए)।

गाम–संज्ञा पुं० गाँव। ग्राम।

गामिनि, गामिनी–संज्ञा स्त्री० गमन करनेवाली। जानेवाली। चलनेवाली।

गामी–वि० [स्त्री० गामिनी] १. गमनशील। चलनेवाला। चालवाला। २. संभोग या गमन करनेवाला।

गामुक–वि० चलनेवाला। गमन करनेवाला।

गाय–संज्ञा स्त्री० १. गौ। धेनु। २. दीन मनुष्य। ३. बहुत सीधा मनुष्य।

गायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० गायकी] गवैया।

गायकी–संज्ञा स्त्री० गानेवाली स्त्री। गान-विद्या का पूरा ज्ञान। गान-विद्या के नियमों के अनुसार ठीक तरह से गाना। गान-विद्या।

गायगोठ–संज्ञा स्त्री० गोशाला। गोष्ठ। गौओं के रहने का स्थान।

गाय-गोरू या **गोरू**–संज्ञा पुं० गैया। चौपाया। जैसे गाय, बैल, भैंस आदि। गो-समूह।

गायताल–संज्ञा पुं० निकृष्ट बैल। रद्दी व निकम्मी चीज़।

वि० निकम्मा। रद्दी।

गायत्री–संज्ञा स्त्री० १. वैदिक छंद-विशेष। २. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू-धर्म में सबसे अधिक महत्त्व का माना जाता है। ३. गंगा। ४. खैर नामक एक वनस्पति। खैर का पेड़। ५. एक देवी का नाम। दुर्गा। वेद-माता। भगवती। ६. छः अक्षरों की वर्णवृत्ति-विशेष।

गायन–संज्ञा पुं० [स्त्री० गायिनी] १. गायक। गानेवाला। गवैया। २. कार्त्ति-

केय। ३. गान। गीत। ४. एक महर्षि का नाम।

गायब–वि० [अ०] अन्तर्धान। लुप्त। गुम। लापता। खो जाना। छिप जाना।

गायबाना–क्रि० वि० पीठ पीछे। अनुपस्थिति में।

गायिनी–संज्ञा स्त्री० १. गानेवाली स्त्री। २. मात्रिक छंद-विशेष।

गार–संज्ञा पुं० [अ०] १. गहरा गड्ढा। २. कंदरा। गुफा।

संज्ञा स्त्री० १. गाली। २. अभिशाप।

गारत–वि० [फा०] मटियामेट। नष्ट। बरबाद।

गारद–संज्ञा स्त्री० १. चौकी। २. सशस्त्र सिपाहियों का समूह। पहरा।

गारना–क्रि० स० १. निचोड़ना। दबाकर पानी या रस निकालना। २. दुहना। ३. पानी के साथ घिसना। जैसे—चंदन गारना। *४. त्यागना। निकालना। *†५. गलाना।

मुहा०–तन या शरीर गारना=१. शरीर गलाना। तप करना। शरीर को कष्ट देना। २. नष्ट या बरबाद करना। मिटाना।

गारा–संज्ञा पुं० ईंटें जोड़ने के लिए मिट्टी या चूने का लेप। गिलावा। पानी से सानी हुई मिट्टी। चहला।

गारी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "गाली"। अपशब्द।

गारुड़–संज्ञा पुं० १. साँप का विष उतारने का मंत्र। विषवैद्य। २. सोना। सुवर्ण। ३. सेना की एक व्यूह-रचना। ४. मरकत मणि। पन्ना। ५. सँपेरा।

वि० गरुड़-संबंधी।

गारुड़िक–संज्ञा पुं० सँपेरा। साँप का विष झाड़नेवाला।

गारुड़ी–संज्ञा पुं० मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला। दे० "गारुड़"।

गारुत्मत्–संज्ञा पुं० १. पन्ना। २. गरुड़ का अस्त्र।

गारो*–संज्ञा पुं० १. अहंकार। गर्व। घमंड। २. बड़प्पन। मान। ३. एक पहाड़ी जाति।

गार्जियन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अभिभावक। संरक्षक। नाबालिग या अल्पवयस्क बालक-बालिकाओं की देखभाल करनेवाला। सरपरस्त।

गार्गी–संज्ञा स्त्री० १. गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री। २. याज्ञवल्क्य ऋषि की एक स्त्री। ३. दुर्गा।

गार्ड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पहरेदार। रक्षक। रेलगाड़ी की देखभाल करने के लिए उसके साथ रहनेवाला अधिकारी।

गार्हपत्याग्नि–संज्ञा स्त्री० १. छः प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि, जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए। २. यज्ञ-सम्बन्धी अग्नि-विशेष।

गार्हस्थ्य–संज्ञा पुं० १. गृहस्थाश्रम। २. गृहस्थ का धर्म। गृहस्थ के कर्त्तव्य। पंच-महायज्ञ। ३. गृहस्थ-संबंधी।

गाल–संज्ञा पुं० १. गंड। कपोल। मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग। २. बकवाद करने की आदत। ३. मुँहजोरी। ४. मध्य। बीच। ५. उतना अन्न जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। ६. कपट। छल।

मुहा०–गाल फुलाना=रूठकर न बोलना। रूठना। रिसाना। गाल बजाना या मारना=बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग मारना। काल के गाल में जाना=मृत्यु के मुख में पड़ना। गाल करना=१. मुँह से अंडबंड निकालना। मुँहजोरी करना। २. बढ़-बढ़कर बातें करना।

गालगूल*†–संज्ञा पुं० गपशप। व्यर्थ बात। अनाप-शनाप। बकवाद।

गालमसूरी–संज्ञा स्त्री० पकवान या मिठाई-विशेष।

गालव–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध ऋषि। २. प्राचीन वैयाकरण-विशेष। ३. स्मृतिकार। ४. लोध का पेड़।

गाला–संज्ञा पुं० १. अंडबंड बकने का

स्वभाव। बड़बड़ाने की आदत। मुँहजोरी। २. कौर। ग्रास। पूनी। धुनी हुई रूई का गोला जो चरखे में कातने के लिए बनाया जाता है। रूई की फली।

मुहा०—रूई का गाला=बहुत उज्ज्वल।

ग़ालिब—वि० [अ०] १. श्रेष्ठ। २. विजयी जीतनेवाला। ३. बढ़ जानेवाला। ४. उर्दू के एक बहुत प्रसिद्ध कवि।

ग़ालिबन—वि० [अ०] सम्भवतः। बहुत सम्भव है कि।

गालिम*—वि० दे० "ग़ालिब"।

गाली—संज्ञा स्त्री० १. दुर्वचन। निंदाजनक या अपशब्द। २. कलंक-सूचक आरोप। ३. दुर्वचन सुनना।

मुहा०—गाली खाना=अपमान सहना। गाली सहना। गाली देना=दुर्वचन कहना।

गाली-गलौज—संज्ञा स्त्री० दुर्वचन। आपस में एक दूसरे को गाली देना। तू-तू, मैं-मैं।

गाली-गुफ़्ता—संज्ञा पुं० दे० "गाली-गलौज"। अपशब्द कहना।

गालना, गाल्हना*†—क्रि० अ० बोलना। बात करना।

गालू—वि० १. व्यर्थ डींग मारनेवाला। गाल बजानेवाला। २. गप्पी। बकवादी। संज्ञा पुं० गाल। टेंट।

गाव—संज्ञा पुं० [फा०] गाय।

गावकुशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] गोवध।

गावघप्पू—संज्ञा पुं० १. चापलूस। फुसलाऊ। २. स्वार्थी।

गावजबान—संज्ञा स्त्री [फा०] फारस देश में होनेवाली बूटी-विशेष।

गावतकिया—संज्ञा पुं० [फा०] मसनद। बड़ा तकिया जिसके सहारे लोग तख्त या फर्श पर बैठते हैं।

गावदी—वि० १. कुंठित बुद्धि का। २. भोला। ३. अबोध। नासमझ। जड़। मूर्ख। अज्ञान। बेवकूफ। ४. उजबक।

गावदुम—वि० [फा०] १. जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। २. ढालुवाँ। चढ़ाव-उतारवाला।

गाह—संज्ञा पुं० १. ग्राहक। गाहक। २. घात। पकड़। ३. मगर। ग्राह। घड़ियाल। ४. कुम्भीर।

वि० गहन। दुर्गम।

गाहक—संज्ञा पुं० १. चाहनेवाला। इच्छुक। २. क्रेता। खरीदार। मोल लेनेवाला। चाहनेवाला। कदर करनेवाला।

मुहा०—जी या प्राण का गाहक=१. प्राण लेनेवाला। मार डालने की ताक में रहनेवाला। २. दिक करनेवाला।

गाहकी—संज्ञा स्त्री० १. बिक्री। २. गाहक। गँहकी (भोजपुरी)। ३. व्यापार।

गाहकताई*—संज्ञा स्त्री० १. चाह। कदरदानी। गुणग्राहकता। गुण या मूल्य पहचानने की शक्ति। २. खरीदने की शक्ति। ग्रहणशक्ति। ग्रहण करने का गुण।

गाहन—संज्ञा पुं० [वि० गाहित] १. स्नान। २. गोता लगाना।

गाहना—क्रि० स० १. थाह लेना। अवगाहन करना। २. अनुमान लगाना। ३. मथना। हलचल मचाना। विलोड़ना। ४. धान आदि के डंठल को झाड़ना जिसमें दाना नीचे झड़ जाय। ओहना। ५. ढूंढ़ना। पकड़ना।

गाहा—संज्ञा स्त्री० १. कथा। गाथा। कहानी। २. चरित्र। वृत्तांत। वर्णन। ३. छंद-विशेष।

गाहिगाहि—क्रि० वि० ढूंढ़-ढूंढ़कर। खोज-खोजकर। टोह लगाकर।

गाही—संज्ञा स्त्री० पाँच की संख्या गिनने का पाँच-पाँच का मान-विशेष।

गाहू—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद (आर्या छंद का एक भेद)।

गिंजना—क्रि० अ० गींजना। हाथ से मलकर खराब करना। मसलना। मींजना। किसी वस्तु (विशेषतः कपड़े) का उलटे-पुलटे जाने के कारण खराब हो जाना।

गिंजाई—संज्ञा स्त्री० बरसाती कीड़ा-विशेष। गींजने का भाव।

गिंदौड़ा, गिंदौरा—संज्ञा पुं० मोटी रोटी के आकार में गलाकर ढाली हुई चीनी।

गिउ*—संज्ञा पुं० कंठ। गला। गरदन।

गिचपिच–वि० १. अस्पष्ट । जो साफ या क्रम से न हो। २. भीड़भाड़।

गिचपिचिया–संज्ञा पुं० १. गिचपिच करनेवाला। २. भीड़भाड़ करनेवाला।

गिचिर-पिचिर–वि० दे० "गिचपिच"।

गिजगिजा–वि० १. छूने में गुलगुला । २. ऐसा गीला जो खाने में अच्छा न लगे।

गिज़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] खाद्य वस्तु । भोजन । खुराक।

गिटकारी–संज्ञा स्त्री० १. गिड़गिड़ी। २. मिट्टी।

गिटकिरी–संज्ञा स्त्री० १. आलाप लेने में विशेष प्रकार से स्वर का कँपना । २. तान लेने में स्वर को धीरे-धीरे ऊँचा करना।

गिटकौरी–संज्ञा स्त्री० पथरी। पत्थर की। पत्थर के टुकड़े।

गिटपिट–संज्ञा स्त्री० निरर्थक शब्द ।

मुहा०–गिटपिट करना=टूटी-फूटी या साधारण अँगरेज़ी भाषा बोलना।

गिट्टक–संज्ञा स्त्री० चुगल । चिलम के नीचे रखने का कंकर।

गिट्टी–संज्ञा स्त्री० १. पत्थर या कंकड़ के छोटे-छोटे टुकड़े। फिरकी। २. ठीकरी। मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३. चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना–क्रि० अ० घिघियाना । विनय करना। अत्यन्त नम्रता से प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट–संज्ञा स्त्री० १. गिड़गिड़ाने का भाव । २. विनय । विनती ।

गिद्ध–संज्ञा पुं० १. गीध । बड़ा मांसाहारी पक्षी-विशेष। २. छप्पय छंद का एक भेद। ३. शकुनि ।

गिद्धराज–संज्ञा पुं० गिद्धों का राजा।

गिनती–संज्ञा स्त्री० १. गणना । संख्या निश्चित करना या गिनना । २. संख्या । ३. गणित। हिसाब। ४. उपस्थिति की जाँच । हाजिरी । ५. एक से सौ तक की अंकमाला।

मुहा०–गिनती में आना या होना=कुछ महत्त्व का समझा जाना । गिनती गिनाने के लिए=नाममात्र के लिए। कहने-सुनने भर को। गिनती के=बहुत थोड़े।

गिनना–क्रि० स० गिनती करना । गणना करना । संख्या निश्चित करना ।

मुहा०–दिन गिनना=१. आशा में समय बिताना । २. किसी प्रकार समय काटना । ३. कुछ महत्त्व का समझना ।

गिनवाना–क्रि० स० दे० "गिनाना"।

गिनाना–क्रि० स० गिनने का काम दूसरे से कराना।

गिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "गिन्नी"।

गिन्नी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. सोने का सिक्का-विशेष। २. एक तरह की विलायती घास।

गिब्बन–संज्ञा पुं० बंदर-विशेष।

गिमटी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का बूटीदार कपड़ा।

गिर–संज्ञा पुं० १. पर्वत । पहाड़ । २. संन्यासियों का एक भेद।

गिरई–संज्ञा स्त्री० एक तरह की मछली।

गिरगिट–संज्ञा पुं० छिपकली की जाति का जंतु-विशेष। गिरगिटान। गिर्दोना। सरट। कृकलास।

मुहा०–गिरगिट की तरह रंग बदलना= बहुत जल्दी अपनी बात बदल देना।

गिरगिरी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का खिलौना।

गिरजा–संज्ञा पुं० दे० "गिरिजा"।

गिरजाघर–संज्ञा पुं० ईसाइयों का मन्दिर।

गिरदा†–संज्ञा पुं० १. घेरा । २. तकिया । गड़ुआ। ३. काठ की थाली। ४. ढाल।

गिरदान†–संज्ञा पुं० गिरगिट।

गिरदावर–संज्ञा पुं० दे० "गिर्दावर"।

गिरधारी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण । पहाड़ को धारण करनेवाले।

गिरना–क्रि० अ० १. पतित होना । ऊपर से नीचे आना। अपने स्थान से नीचे आना। २. झड़ना । खड़ा न रह सकना । ३. किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना। जैसे, गंगा समुद्र में गिरती है। ४. बुरी दशा में होना । ५. तेजी से टूट पड़ना। पाने के लिए लालायित होना। तेजी से आगे बढ़ना । ६. शक्ति या मूल्य आदि का भाव कम होना। ७. अपने स्थान

से हट जाना। ८. किसी रोग का शिकार होना। जैसे, फालिज गिरना। ९. सहसा उपस्थित होना। १०. लड़ाई में मारा जाना।

गिरनार–संज्ञा पुं० १. काठियावाड़ में जूनागढ़ के समीप एक पर्वत। २. इस पर्वत पर जैनियों का तीर्थ-विशेष। ३. रैवतक पर्वत।

गिर पड़ना–क्रि० अ० १. कूद पड़ना। २. झुक पड़ना। ३. फिसल जाना। ४. पतित होना।

मुहा०–गिरते-पड़ते=बहुत कठिनता से। बहुत परिश्रम से।

गिरफ़्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पकड़। २. पकड़ने का कार्य। ३. अपराध या अपराधी का पता लगाने की तरकीब।

गिरफ़्तार–वि० [फ़ा०] १. ग्रस्त। २. कैद किया या पकड़ा गया।

गिरफ़्तारी–संज्ञा स्त्री० गिरफ्तार होने का भाव या क्रिया।

गिरमिट–संज्ञा पुं० बड़ा बरमा। लकड़ी में छेद करने का औजार।

गिरवर–संज्ञा पुं० पहाड़। बड़ा पहाड़।

गिरवान*–संज्ञा पुं० देवता।

गिरवाना–क्रि० स० गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी–वि० [फ़ा०] बंधक। गिरों रखा हुआ। रेहन।

गिरवीदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जिसके पास कोई वस्तु बंधक रक्खी जाय।

गिरह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ग्रंथि। गाँठ। २. जेब। ३. गाँठ। ४. कलाबाजी। कलैया। उलटी। ५. एक गज का सोलहवाँ भाग।

गिरहकट–वि० [फ़ा०] १. जेब का या गाँठ में बँधा हुआ माल चुरा लेनेवाला। २. जेब काटनेवाला।

गिरहबाज़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कलाबाजी करनेवाला कबूतर।

गिराँ–वि० १. महँगा। २. भारी। ३. तेज। ४. अप्रिय।

गिरा–संज्ञा स्त्री० १. जिह्वा। जीभ। २. वाणी की शक्ति। ३. वाणी। कविता। ४. सरस्वती देवी।

वि० गिर पड़ा। फिसल गया।

गिराग्राम–संज्ञा पुं० १. ग्राम-भाषा। गँवारू बोली। २. ऊजड़ ग्राम। नष्ट ग्राम।

गिराना–क्रि० स० १. नीचे ढकेलना। २. पटकना। ३. छलकाना। ४. औंधाना। ५. शक्ति कम कर देना। ६. पतन करना। ७. किसी चीज को उसके स्थान से हटा या निकाल देना। ८. लड़ाई में मार डालना।

गिरानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. महँगी। तेजी। २. अकाल। ३. अभाव। कमी। ४. भारीपन।

गिरापति–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

गिरापितु*–संज्ञा पुं० सरस्वती के पिता। ब्रह्मा।

गिरावट–संज्ञा स्त्री० गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरिन्दा–संज्ञा पुं० गिरीन्द्र। पर्वतराज। हिमालय। सुमेरु।

गिरि–संज्ञा पुं० १. अचल। पर्वत। पहाड़। २. परिव्राजकों की उपाधि-विशेष। ३. एक प्रकार के संन्यासी।

गिरिकंटक–संज्ञा पुं० वज्र। अशनि।

गिरिकद्रक–संज्ञा पुं० १. महानीम। २. बहुत कड़वी।

गिरिकदली–संज्ञा स्त्री० कदली-विशेष। पहाड़ी केला।

गिरिज–संज्ञा पुं० शिलाजीत। पर्वत से उत्पन्न धातु।

गिरिजा–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। भवानी। गौरी। २. गंगा। ३. पर्वत की कन्या।

गिरिजानन्द–संज्ञा पुं० गणेश। कार्त्तिकेय।

गिरिधर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। पर्वत धारण करनेवाले।

गिरिधारन*–संज्ञा पुं० दे० "गिरिधर"।

गिरिधारी–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। गोवर्धन पर्वत धारण करनेवाले या उठानेवाले। २. हनुमान।

गिरिनंदिनी–संज्ञा स्त्री० १. गिरिजा । भवानी । पार्वती । २. नदी । पर्वत की पुत्री । ३. गंगा ।

गिरिनाथ–संज्ञा पुं० १. शंकर । महादेव । शिव । २. हिमालय । पर्वतराज ।

गिरिपथ–संज्ञा पुं० पहाड़ी रास्ता । दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता । दर्रा ।

गिरिराज–संज्ञा पुं० १. पर्वतों का राजा । हिमालय । २. बड़ा पर्वत । ३. सुमेरु । ४. गोवर्द्धन पर्वत ।

गिरिवर–संज्ञा पुं० १. पर्वत-श्रेष्ठ । २. सुमेरु । ३. हिमालय । ४. विन्ध्य ।

गिरिव्रज–संज्ञा पुं० १. जरासंध की राजधानी जिसे राजगृह कहते थे । २. मगध देश की राजधानी ।

गिरिसुत–संज्ञा पुं० मैनाक पर्वत । पर्वत का पुत्र ।

गिरिसुता–संज्ञा स्त्री० पार्वती । गिरिजा । पर्वत की कन्या ।

गिरिसृष्ट–संज्ञा स्त्री० गेरू । उपधातु-विशेष ।

गिरींद्र–संज्ञा पुं० १. हिमालय । २. पर्वत-राज । ३. महादेव । शिव ।

गिरी–संज्ञा स्त्री० भीतर का गूदा ।

गिरीश–संज्ञा पुं० १. शिव । महादेव । शंकर । २. हिमालय । ३. गोवर्द्धन पहाड़ । ४. सुमेरु । ५. कैलाश । ६. पर्वत-राज ।

गिरेबान–संज्ञा पुं० कपड़े का वह भाग जो गरदन के चारों ओर रहता है ।

गिरेवा–संज्ञा पुं० टीला । चढ़ाई का रास्ता ।

गिरेश–संज्ञा पुं० ब्रह्मा । विष्णु ।

गिरैयां†–संज्ञा स्त्री० पतला गेरांव । वि० गिरनेवाला ।

गिरो–वि० बंधक । गिरवी । रैहन ।

गिर्द–अव्य० चारों ओर । आसपास । **यौ०**–इर्द-गिर्द । चारों ओर ।

गिर्दाबर–संज्ञा पुं० [फा०] १. दौरा करने-वाला । २. घूमनेवाला । ३. घूम-घूमकर काम की जाँच करनेवाला ।

गिल–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गारा । २. मिट्टी ।

गिलकार–संज्ञा पुं० [फा०] गारा या पलस्तर लगानेवाला ।

गिलकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] गारा लगाने या पलस्तर करने का काम ।

गिलगिलिया–संज्ञा स्त्री० सिरोही । पक्षी-विशेष ।

गिलगिली–संज्ञा पुं० घोड़े की जाति-विशेष ।

गिलट–संज्ञा पुं० [अंग्रे० गिल्ड] १. चाँदी सी सफेद बहुत हल्की और कम मूल्य की धातु-विशेष । २. सोना चढ़ाने का काम ।

गिलटी–संज्ञा स्त्री० १. ग्रन्थि । सूजन । २. फोड़ा । ३. रोग-विशेष जिसमें संधि-स्थान की गाँठें सूज जाती हैं । शरीर से निकलनेवाली छोटी गोल गाँठ । शरीर के जोड़ के स्थानों में सूजन ।

गिलन–संज्ञा पुं० [वि० गिलित] खाना । भक्षण । निगलना । लीलना ।

गिलना–क्रि० स० १. निगलना । २. प्रकट न होने देना । मन ही मन में रखना ।

गिलबिलाना–क्रि० अ० १. अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना । २. फुसफुसाना ।

गिलम–संज्ञा स्त्री० १. मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना । २. नरम और चिकना ऊनी कालीन ।
वि० कोमल । नरम ।

गिलमिल–संज्ञा पुं० वस्त्र-विशेष ।

गिलहरा–संज्ञा पुं० १. एक तरह का धारीदार कपड़ा । दे० "बेलहरा" । २. पान का डब्बा ।

गिलहरी–संज्ञा स्त्री० गिल्ली । चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँछ का जंतु-विशेष, जो पेड़ों पर रहता है । चखुरा । चिखुरी । रूखी ।

गिला–संज्ञा पुं० [फा०] १. निंदा । शिकायत । २. उलाहना ।

गिलाफ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. खोल । कपड़े की थैली जो तकिए, लिहाफ आदि के ऊपर चढ़ाई जाती है । आच्छादन । २. म्यान । ३. बड़ी रजाई । लिहाफ ।

गिलावा†–संज्ञा पुं० गारा । गीली मिट्टी जिससे ईंट-पत्थर जोड़ते हैं ।

गिलियर–वि० आलसी । शिथिल । ढीला ।

गिलास–संज्ञा पुं० १. पानी पीने का बरतन-विशेष । २. ओलची का वृक्ष ।

गिलिम–संज्ञा स्त्री० दे० "गिलम"।
गिली–संज्ञा स्त्री० दे० "गुल्ली"।
गिलोय–संज्ञा स्त्री० [फा०] गुड़ुच। गुड़ूची। अमृतलता।
गिलोला–संज्ञा पुं० गुलेल से फेंका जानेवाला मिट्टी का छोटा गोला।
गिलौरी–संज्ञा स्त्री० १. पानों का बीड़ा। २. पानदान।
गिलौरीदान–संज्ञा पुं० पानदान। पान रखने का डिब्बा।
गिल्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "गिलटी"।
गिल्ली–संज्ञा स्त्री० १. मकई की ठुड्ढी। २. गिलहरी। ३. गुल्ली।
गींजना–क्रि० स० १. मलना। गन्दा करना। मसलना। २. किसी कोमल पदार्थ, विशेषत: कपड़े आदि को मलकर खराब करना।
गींव–संज्ञा स्त्री० गर्दन।
गी–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती देवी। २. वाणी। बोलने की शक्ति।
गीउ–संज्ञा स्त्री० दे० "गींव"।
गीड़, गीडर–संज्ञा पुं० आँख का कीचड़ या मैल।
गीत–संज्ञा पुं० १. गाने की चीज। गाना। गान। जो गाया जाय। गाने योग्य। २. यश। बड़ाई। कीर्ति।
मुहा०–गीत गाना=प्रशंसा करना। बड़ाई करना। अपना ही गीत गाना=अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना।
गीतवादन–संज्ञा पुं० गान-कीर्तन। गाना-बजाना।
गीतमोदी–संज्ञा पुं० किन्नर। स्वर्गगायक।
गीता–संज्ञा स्त्री० १. भगवद्गीता। २. ज्ञानमय उपदेश। ३. २६ मात्रा का छंद-विशेष। ४. वर्णन। वृत्तांत। कथा। हाल। ५. गान।
गीति–संज्ञा स्त्री० १. गीत। गान। २. आर्या छंद का एक भेद।
गीतिका–संज्ञा स्त्री० १. गाना। गीत। २. एक मात्रिक छंद।
गीतिरूपक–संज्ञा पुं० रूपक-विशेष जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक होता है।
गीदड़–संज्ञा पुं० शृगाल। सियार। जम्बुक।
यौ०–गीदड़-भभकी=मन में डरते हुए ऊपर से दिखावटी क्रोध प्रकट करना।
वि० कायर। डरपोक। बुजदिल।
गीदी–वि० भीरु। डरपोक। कायर।
गीध–संज्ञा पुं० दे० "गिद्ध"।
गीधना†*–क्रि० अ० परचना। एक बार कोई लाभ उठाकर फिर उसकी लालच करना।
गीर–संज्ञा स्त्री० वाणी।
संज्ञा पुं० संन्यासियों का एक वर्ग।
गीर्देवी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती। शारदा। वाग्देवी।
गीर्पति–संज्ञा पुं० १. विद्वान्। २. बृहस्पति।
गीर्वाण–संज्ञा पुं० सुर। अमर। देवता।
गीर्वाण-कुसुम–संज्ञा पुं० मन्दार-पुष्प। लवंग-पुष्प।
गीर्वाणी–संज्ञा स्त्री० संस्कृत-भाषा।
गीला–वि० [स्त्री० गीली] आर्द्र। ओदा। भीगा हुआ। तर। नम।
गीलापन–संज्ञा पुं० नमी। तरी। गीला होने का भाव।
गीव–संज्ञा स्त्री० गर्दन। दे० "ग्रीवा"।
गीष्पति–संज्ञा पुं० १. देवों के गुरु। देव-गुरु। बृहस्पति। २. पंडित। विद्वान्।
गुंगुआना–क्रि अ० १. धुँआँ देना। २. अच्छी तरह न जलना। ३. गूँ गूँ शब्द करना। गूंगे की तरह बोलना।
गुंचा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कली। २. आमोद-प्रमोद। जश्न। नाच-रंग।
गुंज–संज्ञा स्त्री० १. गुंजार। भौंरों के भनभनाने का शब्द। २. आनंदध्वनि। कलरव। ३. घुँघची। फूलों का गुच्छा।
गुंजन–संज्ञा स्त्री० भनभनाहट। भौंरों का गूँजना। कोमल, मधुर ध्वनि। गुन-गुन करना।
गुंजना–क्रि० अ० १. भौंरों का भनभनाना। २. गुनगुनाना।
गुंजनिकेतन–संज्ञा पुं० मधुकर। भौंरा।
गुंजरना–क्रि० अ० १. भौंरों का गूँजना। गुंजार करना। भनभनाना। २. शब्द करना। ३. गरजना।
गुंजा–संज्ञा स्त्री० १. घुँघची नाम की लता-

विशेष। २. लाल रत्ती। ३. परिमाण-विशेष। फूलों का गुच्छा।
गुंजाइश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. समाने भर को स्थान। अँटने की जगह। २. समाई। ३. सुविधा।
गुंजान—वि० १. सघन। घना। २. गाढ़ा। ३. मोटा।
गुंजायमान—वि० गूँजता या गुंजारता हुआ। गुंजरित।
गुंजार—संज्ञा पुं० १. भनभनाहट। २. भौंरों की गूंज।
गुंजित—वि० जिसमें गुंजार हो। भौंरों आदि के गुंजन से युक्त।
गुंझा—संज्ञा पुं० १. कटीली घास। २. गोझा। गूदा।
वि० १. गुप्त। छिपा हुआ। २. ढीला। शिथिल।
गुंठा—संज्ञा पुं० टाँगना। नाटे कद का घोड़ा-विशेष।
†वि० [दिश०] बौना। नाटा।
गुंडई†—संज्ञा स्त्री० बदमाशी। गुंडापन। गुंडागीरी।
गुंडली—संज्ञा स्त्री० कुंडली। गेंडुरी। फेटा।
गुंडा—वि० १. बदचलन। लम्पट। दुष्ट। निर्लज्ज। दुराचारी। २. बदमाश।
गुंडापन—संज्ञा पुं० गुंडागीरी। बदमाशी।
गुंथना—क्रि० अ० १. उलझना। उलझकर बँधना। २. बाल की लटों आदि को लड़ी के रूप में बाँधना। ३. नत्थी होना। मोटे तौर पर सिलना।
गुंदला—संज्ञा पुं० नागरमोथा।
गुंधना—क्रि० अ० १. माड़ा जाना। २. सानना।
†क्रि० अ० दे० "गुंथना।"
गुंधवाना—क्रि० स० गूँधने का काम दूसरे से करवाना।
गुंधाई—संज्ञा स्त्री० गूँधने की क्रिया या मजदूरी।
गुंधावट—संज्ञा स्त्री० गूँधने या गुंथने का ढंग।
गुंफ—संज्ञा पुं० [वि० गुंफित] १. गुच्छा। २. दाढ़ी। ३. गलमुच्छा। ४. गूँथना। गाँथना। माला गूँथना। ५. स्त्रियों के हाथ का एक अलंकार।
गुंफन—संज्ञा पुं० [वि० गुंफित] गूँथना। उलझाव। फँसाव। एक दूसरे में गूँथा हुआ। गाँथना। एक दूसरे को नत्थी करना।
गुंबज—संज्ञा पुं० ऊँची और गोल छत।
गुंबजदार—वि० जिसके ऊपर गुंबज हो।
गुंबद—संज्ञा पुं० दे० "गुंबज"।
गुंबा—संज्ञा पुं० सिर पर चोट लगने से गोल सूजन। गुलमा।
गुंभी*—संज्ञा स्त्री० गाभ। अंकुर।
गु—संज्ञा पुं० मल। विष्ठा।
गुआ—संज्ञा पुं० १. सुपारी। २. चिकनी सुपारी।
गुआलिन—संज्ञा स्त्री० ग्वालिन। ग्वाला की स्त्री।
गुइयाँ—संज्ञा पुं० साथी। सखा।
संज्ञा स्त्री० सहचरी। सखी।
गुखरू—संज्ञा पुं० गोखरू। गुरखुल।
गुगुलिया—संज्ञा पुं० मदारी।
गुग्गर या **गुग्गुल**—संज्ञा पुं० १. गूगल। काँटेदार वृक्ष-विशेष जिसका गोंद सुगंध के लिए जलाते और दवा के काम में लाते हैं। २. गोंद-विशेष। ३. सलई का वृक्ष जिससे राल या धूप निकलती है।
गुच्ची—संज्ञा स्त्री० गोली या गुल्ली-डंडा खेलने के लिए बनाया गया छोटा गड्ढा।
वि० स्त्री० नन्हीं। बहुत छोटी।
गुच्चीपारा, गुच्चीपाला—संज्ञा पुं० छोटा सा गड्ढा बनाकर कौड़ी या गोली आदि से खेलने का एक खेल।
गुच्छ, गुच्छक—संज्ञा पुं० १. गुच्छा। फूलों का समूह। २. झाड़। ३. मोर की पूँछ। झब्बा। एक तरह का हार। पतली टहनियोंवाला पौधा-विशेष।
गुच्छा—संज्ञा पुं० १. गुच्छा। फूलों का समूह। २. झब्बा। फुँदना। ३. एक में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह। जैसे कुंजियों का गुच्छा।

गुच्छी–संज्ञा स्त्री० १. कंजा। करंज। २. तरकारी-विशेष। ३. रीठा।

गुच्छेदार–वि० झब्बेदार। गुच्छायुक्त। जिसमें गुच्छा हो।

गुज़र–संज्ञा पुं० [फा०] १. निकास। २. निर्वाह। जीवन व्यतीत करना। समय काटना।

गुज़रना–क्रि० अ० [फा०] १. बीतना। समय व्यतीत होना। २. किसी स्थान से होकर जाना या आना। ३. निर्वाह होना। निभना।

मुहा०–किसी पर गुजरना=किसी पर विपत्ति पड़ना। गुजर जाना=मर जाना।

गुज़र-बसर–संज्ञा पुं० [फा०] निर्वाह।

गुजरात–संज्ञा पुं० [वि० गुजराती] दक्षिण-पश्चिम स्थित भारत का एक प्रदेश।

गुजराती–वि० १. गुजरात देश में उत्पन्न। गुजरात का रहनेवाला। २. गुजरात का। गुजरात-सम्बन्धी। ३. एक रोग का नाम।

संज्ञा स्त्री० १. गुजरात देश की भाषा। २. छोटी इलायची।

गुज़रान–संज्ञा पुं० दे० "गुज़र"।

गुजराना‡*–क्रि० स० दे० "गुज़ारना"।

गुजरिया–संज्ञा स्त्री० गोपी। गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन।

गुजरी–संज्ञा स्त्री० १. कलाई में पहनने का एक गहना। २. दे० "गूजरी"।

गुजरेटी–संज्ञा स्त्री० १. गूजरी। ग्वालिन। २. गूजर जाति की कन्या।

गुज़श्ता–वि० [फा०] व्यतीत। बीता हुआ। गत।

गुज़ारना–क्रि० स० १. व्यतीत करना। काटना। बिताना। २. पहुँचाना। ३. पेश करना।

गुज़ारा–संज्ञा पुं० [फा०] १. निर्वाह। २. निर्वाह के लिए दी जानेवाली वृत्ति। ३. कर लेने की जगह।

गुज़ारिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. निवेदन। २. प्रार्थना।

गुजिया–संज्ञा स्त्री० कर्णफूल। कान का एक गहना।

गुज्जरी–संज्ञा स्त्री० १. रागिनी-विशेष। २. गूजरी।

गुझरौट*†–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों की नाभि के आसपास का भाग। २. कपड़े की सिकुड़न। सिलवट। शिकन।

गुझिया–संज्ञा स्त्री० १. पिराक। २. एक तरह की मिठाई। एक पकवान।

गुझौट†*–संज्ञा पुं० दे० "गुझरौट"।

गुटकना–क्रि० अ० कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।

†क्रि० स० खा जाना। निगलना।

गुटका–संज्ञा पुं० १. दे० "गुटिका"। २. छोटी पुस्तक। ३. औषध-विशेष। ४. गुपचुप मिठाई। ५. लट्टू।

गुटरगूँ–संज्ञा स्त्री० कबूतरों की बोली।

गुटिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल वस्तु। गोली। वटिका। औषध की गोली। २. एक तरह का हार। ३. छोटी फुन्सियाँ।

गुट्ट–संज्ञा पुं० मंडली। झुंड। समूह। दल।

गुट्ठल–वि० १. बड़ी गुठलीवाला। ‡२. मूर्ख। जड़। ३. गुठली के समान।

संज्ञा पुं० १. गुलथी। २. गिलटी।

गुट्ठी–संज्ञा स्त्री० मोटी गाँठ।

गुठलाना–क्रि० अ० १. फलों में गुठली होना। २. दाँत का खट्टा होना।

गुठली–संज्ञा स्त्री० १. किसी फल का कड़ा बीज। २. आम का बीज (आम की गुठली)।

गुड़ंबा–संज्ञा पुं० आम और गुड़ से बनी हुई खाने की चीज।

गुड़–संज्ञा पुं० पकाकर जमाया हुआ ऊख का रस, जो बट्टी या भेली के रूप में होता है।

मुहा०–कुल्हिया में गुड़ फूटना=गुप्त रीति से कोई काम या सलाह होना।

गुड़गुड़–संज्ञा पुं० जल में नली आदि के द्वारा हवा फूंकने से उत्पन्न शब्द। जैसे हुक्के में।

गुड़गुड़ाना–क्रि० अ० गुड़गुड़ शब्द होना या करना।

क्रि० स० [अनु०] हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट–संज्ञा स्त्री० गुड़गुड़ शब्द होने का भाव।

गुड़गुड़ी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का हुक्का। पेचवान। फरशी।
गुड़च–संज्ञा स्त्री० गुरुच।
गुड़धनिया–संज्ञा स्त्री० भूने हुए गेहूँ और गुड़ के लड्डू।
गुड़धानी–संज्ञा स्त्री० भूने हुए गेहूँ और गुड़ के लड्डू। दे० "गुड़धनिया।"
गुड़रू–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष। गड़ुरी।
गुड़हर–संज्ञा पुं० अड़हुल का पेड़ या फूल।
गुड़हल–संज्ञा पुं० दे० "गुड़हर"।
गुड़ाकू–संज्ञा पुं० गुड़ मिला हुआ पीने का तम्बाकू।
गुड़ाकेश–संज्ञा पुं० १. शंकर। शिव। महादेव। २. अर्जुन।
गुड़ाना–क्रि० स० खुदवाना।
गुड़िया–संज्ञा स्त्री० कपड़े की बनी हुई पुतली या खिलौना जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।
मुहा०—गुड़ियों का खेल=सरल कार्य।
गुड़ी–संज्ञा स्त्री० १. गुड्डी। चंग। पतंग। कनकौवा। २. गाँठ। द्वेष। ३. गुड़िया।
गुड्डा–संज्ञा पुं० १. गुड्डवा। २. कपड़े का बना हुआ पुतला।
मुहा०—गुड्डा बाँधना=निंदा करना। बदनाम करना। बड़ी पतंग।
गुड्डी–संज्ञा स्त्री० १. चंग। पतंग। कनकौवा। २. घुटने की हड्डी। ३. छोटा हुक्का।
गुडूची–संज्ञा स्त्री० गिलोय। गुरुच। औषध-विशेष।
गुढ़ना–क्रि० अ० छिपना। गूढ़ अर्थ समझना। जैसे पढ़ना-गुढ़ना।
गुढ़ा–संज्ञा पुं० १. गुप्त स्थान। छिपने की जगह। २. मवास।
गुण–संज्ञा पुं० [वि० गुणी] १. धर्म। २. प्रकृति के तीन भाव—सत्त्व, रज, और तम। ३. प्रवीणता। निपुणता। ४. असर। प्रभाव। ५. कोई कला या विद्या। हुनर। ६. राजनीति के अनुसार दूसरे राष्ट्रों से व्यवहार की ६ रीतियाँ। यथा—सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय। ७. विशेषण। ८. सद्विद्या। ९. शुक्ल, कृष्ण, रक्त, पीत आदि। १०. शील, सद्वृत्ति। अच्छा स्वभाव। ११. फल। १२. तीन की संख्या। १३. प्रकृति। १४. व्याकरण में 'अ', 'ए' और 'ओ'। १५. रस्सी या तागा। सूत। डोरा। १६. धनुष की प्रत्यंचा। प्रत्य० प्रत्यय-विशेष जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे द्विगुण, चतुर्गुण।
मुहा०—गुण गाना=प्रशंसा करना। तारीफ करना। गुण मानना=एहसान मानना। कृतज्ञ होना।
गुणक–संज्ञा पुं० किसी अंक से गुणा करने का अंक।
गुणकथन–संज्ञा पुं० स्तुति। प्रशंसा करना। यशोगान।
गुणकर–वि० लाभदायक।
गुणकारक–वि० लाभ पहुँचानेवाला। लाभदायक। फायदा करनेवाला।
गुणकारी–वि० लाभदायक। फायदा पहुँचानेवाला।
गुणगान–संज्ञा पुं० स्तुति। प्रशंसा।
गुणगौरी–संज्ञा स्त्री० १. सोहागिन स्त्री। २. पतिव्रता स्त्री। ३. स्त्रियों का व्रत-विशेष।
गुणग्राम–संज्ञा पुं० जिसमें बहुत से गुण हों। गुणों का समूह। गुणागार।
गुणग्राहक–संज्ञा पुं० गुणी व्यक्तियों का आदर करनेवाला। कदरदान।
गुणग्राही–वि० दे० "गुणग्राहक"।
गुणज्ञ–वि० १. गुण का पारखी। गुण पहचाननेवाला। २. गुणी। निपुण। पंडित।
गुणदर्शी–वि० सारग्राही। गुण का पारखी।
गुणदाता–वि० शिक्षक। गुरु।
गुणधर्म–संज्ञा पुं० १. उत्तम पदार्थ। २. सार-पदार्थ।
गुणन–संज्ञा पुं० [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित] १. गुणा करना। २. अंगवृद्धि करना। ३. रटना। उद्धरणी करना। ४. मनन करना। ५. सोचना। विचारना। ६.

गिनना। तखमीना करना। ७. गुण का बहुवचन।
गुणनफल–संज्ञा पुं० वह संख्या या अंक जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे। गुणनफल।
गुणना–क्रि० स० गुणा करना।
गुणनिधि–वि० गुणों का समुद्र या खजाना।
गुणवंत–वि०[स्त्री० गुणवंती] दे० "गुणवान्"। गुणी। प्रवीण।
गुणवाचक–वि० जो गुण प्रकट करे। विशेषण-विशेष।
यौ० गुणवाचक संज्ञा=व्याकरण में वह संज्ञा जिससे गुण सूचित हो।
गुणवान्–वि० [स्त्री० गुणवती] १. निपुण। २. विद्वान्। गुणवाला। गुणी।
गुणांक–संज्ञा पुं० गुणा करने का अंक।
गुणा–संज्ञा पुं० गणित की एक क्रिया। जरब देना।
गुणाकर–संज्ञा पुं० जिसमें बहुत से गुण हों। गुणों का समुद्र। गुणनिधि।
गुणागुण–संज्ञा पुं० गुण-दोष। भला-बुरा।
गुणाढ्य–वि० १. गुणी। गुणपूर्ण। २. संस्कृत का एक कवि।
गुणातीत–वि० १. निर्गुण। २. परब्रह्म। गुणों से परे।
गुणानुवाद–संज्ञा पुं० प्रशंसा। बड़ाई। गुण-कथन।
गुणित–वि० १. पूरित। २. गुणा किया हुआ।
गुणिता–संज्ञा स्त्री० गुणयुक्त। गुणी।
गुणी–वि० गुणशील। पंडित। निपुण। गुणवाला। जिसमें कोई गुण हो।
संज्ञा पुं० १. कला-कुशल पुरुष, कलानिपुण। हुनरवाला। २. झाड़-फूंक करनेवाला। ओझा।
गुणीकृत–वि० १. गुणा किया हुआ। २. पूरित।
गुणीभूत–वि० अप्रधान।
गुणीभूत व्यंग्य–संज्ञा पुं० काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो।
गुणेश्वर–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. चित्रकूट पर्वत।
गुणोत्कर्ष–संज्ञा पुं० १. गुण की प्रधानता। २. गुण की सुन्दरता। ३. गुणव्याख्या।
गुणोत्कीर्तन–संज्ञा पुं० गुणगान। स्तुति। यशोगान।'
गुणौघ–संज्ञा पुं० गुणसमूह।
गुण्य–संज्ञा पुं० गुणा किया जानेवाला अंक।
गुत्थमगुत्था–संज्ञा पुं० १. भिड़ंत। हाथा-पाई। २. लड़ाई। उलझाव।
गुत्थी–संज्ञा स्त्री० गिरह। उलझन। गाँठ।
गुथना–क्रि० अ० १. गाँथा जाना। एक लड़ी या गुच्छे में गाँथना। २. एक का दूसरे के साथ लड़ने के लिए लिपट जाना। ३. भद्दी सिलाई होना। टाँका लगना।
गुथवाना–क्रि० स० [गूथना का प्रे०] गूथने का कार्य दूसरे से कराना।
गुथुवां–वि० जो गुंथकर बनाया गया हो।
गुदकार, गुदकारा–वि० १. जिसमें गूदा हो। गूदेदार। २. गुदगुदा। ३. मोटा।
गुदगुदा– वि० १. मुलायम। २. गूदेदार। ३. कोमल। ४. पुष्ट। ५. मोटा।
गुदगुदाना–क्रि० अ० १. हँसाने के लिए सहलाना। २. किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना। ३. चुलबुलाना। विनोद या मन-बहलाव के लिए छेड़ना।
गुदगुदी–संज्ञा स्त्री० १. चुलबुली। शरीर के किसी अंग आदि के छूने पर सुरसुराहट। २. उल्लास। उमंग। ३. उत्कंठा। शौक।
गुदड़ी–संज्ञा स्त्री० कथरी। फटे-पुराने कपड़े। कंथा।
मुहा०–गुदड़ी में लाल=निम्न या तुच्छ वस्तुओं में उत्तम।
गुदड़ी बाजार–संज्ञा पुं० [फा०] फटे पुराने कपड़े या टूटी-फूटी चीजें बिकने का बाजार।
गुदना–संज्ञा पुं० दे० "गोदना"।
क्रि० अ० धँसना। चुभना।
गुदभ्रंश–संज्ञा पुं० काँच निकलने का रोग-विशेष।
गुदरना*‡–क्रि० अ० जानना। कटना। बीतना। गुजरना।

क्रि० स० निवेदन करना। पेश करना।

गुदरानना*‡–क्रि० स० १. सामने रखना। पेश करना। २. निवेदन करना।

गुदरिया–संज्ञा स्त्री० दे० "गुदड़ी"।
संज्ञा पुं० एक तरह का नीबू।

गुदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "गुदड़ी"।

गुदरैन*†–संज्ञा स्त्री० १. पढ़ा हुआ पाठ सही-सही सुनाना। २. परीक्षा। इम्तहान।

गुदांकुर–संज्ञा पुं० बवासीर। गुदा से खून निकलने की बीमारी।

गुदा–संज्ञा स्त्री० मलद्वार।

गुदाना–क्रि० स० गुदवाना। गोदने का काम दूसरे से कराना।

गुदाम–संज्ञा पुं० गोला। वस्तुओं का भण्डार। जहाँ बहुत सी वस्तुएँ रखी जायँ।

गुदार†–वि० जिसमें गूदा हो। गूदेदार।

गुदारा*†–संज्ञा पुं० १. उतारा। २. दे० "गुजारा"। ३. नदी पार करनेवाली नौका। खेवा नाव। ४. घटहा।

गुद्दा–संज्ञा पुं० १. अन्तःसार। २. सारभाग। ३. गूदा। ४. पेड़ की मोटी डाल।

गुद्दी†–संज्ञा पुं० १. फल के बीच का गूदा। मग्ज। २. सिर का पिछला भाग। ३. ग्रीवा। ४. हथेली का मांस। ५. नाव बनाने का स्थान।

गुन†*–संज्ञा पुं० दे० १. "गुण"। २. स्वभाव। विशेषण। ३. फल। ४. कला। ५. रस्सी।

गुनगुना–वि० दे० "कुनकुना"। थोड़ा गरम।

गुनगाहक–वि० गुणग्राहक। गुण का आदर करनेवाला।

गुनगुनाना–क्रि० अ० १. गुनगुन शब्द करना। २. अस्पष्ट स्वर में गाना। ३. नाक में बोलना।

गुनद–वि० गुणदायक। लाभकर।

गुनना–क्रि० स० १. गुणा करना। २. रटना। उद्धरणी करना। ३. गिनना। ४. सोचना। विचारना। चिंतन करना।

गुनहगार–वि० १. अपराधी। २. दोषी। ३. पापी।

गुनही†–संज्ञा पुं० दे० "गुनहगार"।

गुना–संज्ञा पुं० १. दे० गुणा (गणित)। २. प्रत्यय-विशेष जो किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार और होना बतलाता है। जैसे—पाँचगुना।

गुनानि–संज्ञा स्त्री० मानसिक कल्पना। अभिलाषा।

गुनाह–संज्ञा पुं० [फा०] १. अपराध। दोष। २. पाप। ३. बुरा या अनुचित काम।

गुनिया†–संज्ञा पुं० गुणवाला। गुणवान्।

गुनी–वि० संज्ञा पुं० दे० "गुणी"।

गुनाही–संज्ञा पुं० दे० "गुनहगार"।

गुप–वि० १. दे० "घुप"। २. मूर्च्छावस्था। ३. निविड़। ४. अन्धकार। ५. गुप्त। छिपा हुआ। ६. रक्षा करनेवाला।

गुपचुप–क्रि० वि० छिपाकर। चुपचाप।
संज्ञा पुं० मिठाई-विशेष।

गुपाल–संज्ञा पुं० दे० "गोपाल"।

गुपुत*–वि० दे० "गुप्त"।

गुप्त–वि० १. गूढ़। जिसके जानने में कठिनाई हो। २. छिपा हुआ, पोशीदा। ३. कृतरक्षण। रक्षित।
संज्ञा पुं० १. वैश्यों की एक पदवी। २. प्राचीन राजवंश।

गुप्तगति–संज्ञा पुं० चर। दूत। वार्ताहारी। दूत। सन्देसी।

गुप्तचर–संज्ञा पुं० भेदिया। चुपचाप भेद लेनेवाला दूत। जासूस। खुफिया।

गुप्तदान–संज्ञा पुं० छिपाकर दिया हुआ दान। वह दान जो प्रकट न हो।

गुप्तवेश–संज्ञा पुं० छली। कपटी।

गुप्तांग–संज्ञा पुं० शरीर के गुप्त अंग।

गुप्ता–संज्ञा स्त्री० १. प्रेम छिपाने का उद्योग करनेवाली नायिका। २. रखैली।

गुप्तार–संज्ञा पुं० छिपना। लुकना। लुकाव।

गुप्ति–संज्ञा स्त्री० १. छिपाने की क्रिया। २. बचाव। ३. रक्षा करने की क्रिया या साधन। ४. जेल। कारागार। कैदखाना। ५. सतह में छेद करना। ६. अहिंसा आदि योग के अंग। ७. गुफा।

गुप्ती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छड़ी जिसमें छोटी तलवार छिपी रहती है।

गुप्तोत्प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद।

गुफना—संज्ञा पुं० घुमाकर पत्थर फेंकने की एक प्रकार की गुलेल। गोफन।

गुफा—संज्ञा स्त्री० गुहा। कंदरा। खोह। बिल। गह्वर। जमीन या पहाड़ के अन्दर गहरा गड्ढा।

गुफ्तगू—संज्ञा स्त्री० [फा०] बातचीत।

गुबरैला—संज्ञा पुं० छोटा कीड़ा-विशेष।

गुबार—संज्ञा पुं० [अ०] १. धूल। गर्द। २. मन में दबाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि।

गुब्बारा—संज्ञा पुं० थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाते हैं। हवा भरकर आकाश में उड़ाने का कागज का थैला।

गुम—संज्ञा पुं० १. छिपा हुआ। गुप्त। २. खोया हुआ।

गुमटा—संज्ञा पुं० १. गुलमी। सिर पर चोट लगने से गोल सूजन। गुमड़ा। २. बड़ा फोड़ा। ३. कपास को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा।

गुमटी—संज्ञा स्त्री० १. मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की सबसे ऊपर उठी हुई छत। २. गुम्मट। ३. लाट। ४. कलस। ५. शिखर। ६. छोटी कोठरी। ७. वस्त्र-विशेष।

गुमड़ी—संज्ञा स्त्री० छोटी फुड़िया।

गुमना†—क्रि० अ० गायब होना। गुम होना। खो जाना।

गुमनाम—वि० [फा०] १. अज्ञात। २. अप्रसिद्ध। ३. जिसमें नाम न दिया हो।

गुमर—संज्ञा पुं० १. गर्व। अभिमान। घमंड। शेखी। २. गुबार। मन में छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि। ३. कानाफूसी। धीरे-धीरे की बातचीत।

गुमराह—वि० [फा०] बुरे रास्ते पर चलनेवाला। कुमार्गी। दुराचारी। भूला-भटका। नास्तिक।

स्त्री० [फा०] बुरा रास्ता।

। कुपंथ। नास्तिकता। भूल। भ्रम।

गुमसना—क्रि० अ० पानी बरसने से पहले या बाद में बहुत गर्मी पड़ना। ऊमस। दुर्गन्ध होना। सड़ना।

गुमसा—वि० सड़ा-गला।

गुमान—संज्ञा पुं० घमंड। अहंकार। अनुमान।

गुमाना†—क्रि० स० दे० "गँवाना"।

गुमानी—वि० घमंडी। अभिमानी। संस्कृत और हिन्दी के एक कवि जो कुमायूं-प्रदेश के रहनेवाले थे। गरूर करनेवाला।

गुमाश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] कारिंदा। कारकुन। एजेंट। बड़े व्यापारी की ओर से खरीदने और बेचने पर नियुक्त मनुष्य।

गुम्मट—संज्ञा पुं० गुंबद। दे० "गुमटा"।

गुम्मा—वि० न बोलनेवाला। चुप्पा। संज्ञा स्त्री० बड़ी ईंट।

गुर—संज्ञा पुं० १. मूलमंत्र। भेद। युक्ति। वह साधन या क्रिया जिसके करते ही कोई काम तुरंत हो जाय। २. तीन की संख्या। †संज्ञा पुं० दे० "गुरु"।

गुरगा—संज्ञा पुं० [स्त्री० गुरगी] १. चेला। शिष्य। अनुचर। २. नौकर। टहलुआ। ३. भेदिया। गुप्तचर। जासूस।

गुरगाबी—संज्ञा पुं० मुंडा जूता। बिना फीतेवाला स्लीपर।

गुरच—संज्ञा स्त्री० गिलोय। गुड़ची।

गुरचों†—संज्ञा स्त्री० बट। बल। सिकुड़न।

गुरचों—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कानाफूसी। परस्पर धीरे-धीरे बातें करना।

गुरजना—क्रि० अ० घुड़कना। गर्जन करना।

गुरदा—संज्ञा पुं० १. मूत्रपिंड। कमर और पीठ के बीच का अंग। २. साहस। हिम्मत। ३. छोटी टोपी-विशेष।

गुरमुख—वि० गुरु से मंत्र लेनेवाला। दीक्षित।

गुरम्मर†—संज्ञा पुं० मीठे आमों का वृक्ष।

गुरवी—वि० घमंडी। भारी।

गुराई—संज्ञा स्त्री० दे० "गोरापन"।

गुराव—संज्ञा पुं० गँड़ासा।

गुरिद†*—संज्ञा पुं० गदा।

गुरिया—संज्ञा स्त्री० १. मनिया। २. माला के दाने। ३. चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ४. माँस की बोटी।

गुरु—वि० १. महान्। २. बड़ा। ३. भारी।

४. वजनी । कठिनाई से पकने या पचनेवाला । गरिष्ठ (खाद्य) । ५. महत्त्वपूर्ण । ६. कठिन । ७. ग्रादरणीय । ८. सर्वोत्तम । ९. प्यारा । १०. घमंडी वक्ता । ११. ग्रपने से बड़ा । ग्रादर-योग्य व्यक्ति । १२. धर्मशिक्षक ।

संज्ञा पुं० [स्त्री० गुरुग्रानी] १. बृहस्पति नामक ग्रह । २. देवताग्रों के ग्राचार्य, बृहस्पति । ३. ग्राचार्य । यज्ञोपवीत-संस्कार में गायत्री-मंत्र का उपदेष्टा । ४. पुष्य नक्षत्र । ५. शिक्षक । ६. किसी मंत्र का उपदेष्टा । ७. दो मात्राग्रोंवाला ग्रक्षर (पिंगल) । ८. विष्णु । ९. ब्रह्मा । १०. शिव । ११. पुरोहित । १२. ग्रन्नदाता । १३. संरक्षक ।

गुरुग्राइन, गुरुग्रानी–संज्ञा स्त्री० १. शिक्षिका । शिक्षा देनेवाली स्त्री । २. गुरु की स्त्री ।

गुरुग्राई–संज्ञा स्त्री० १. गुरु का कार्य । २. गुरु का धर्म । ३. धूर्तता । चालाकी ।

गुरुकार्य–संज्ञा पुं० १. ग्रावश्यक कार्य । २. कठिन कार्य । फलदायक कार्य ।

गुरुकुल–संज्ञा पुं० गुरु, ग्राचार्य या शिक्षक के रहने की जगह, जहाँ वह विद्यार्थियों को ग्रपने साथ रखकर शिक्षा देता हो ।

गुरुच–संज्ञा स्त्री० गिलोय । दवा के काम में ग्रानेवाली एक मोटी बेल-विशेष । ग्रौषध-विशेष ।

गुरुजन–संज्ञा पुं० माननीय । बड़े लोग । माता-पिता, ग्राचार्य ग्रादि ।

गुरुतर–वि० १. बहुत बड़ा । बहुत भारी । २. माननीय ।

गुरुतल्पग–वि० १. सौतेली माँ के साथ संबंध करनेवाला । २. गुरु की स्त्री हरनेवाला ।

गुरुतल्पव्रत–संज्ञा पुं० गुरुपत्नीहरण का प्रायश्चित्त ।

गुरुता–संज्ञा स्त्री० भारीपन । भार । गुरुत्व । बड़प्पन । महत्त्व । गौरव ।

गुरुताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता" ।

गुरुत्व–संज्ञा पुं० १. भार । भारीपन । बोझ । वजन । २. गौरव । महत्त्व । बड़प्पन ।

गुरुत्वकेंद्र–संज्ञा पुं० किसी पदार्थ में वह बिंदु जिस पर समस्त वस्तु का भार हो ।

गुरुत्वाकर्षण–संज्ञा पुं० वह ग्राकर्षण-शक्ति जिसके द्वारा भारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं ।

गुरुदक्षिणा–संज्ञा स्त्री० गुरु की भेंट । विद्या पढ़ने पर गुरु को दी गई दक्षिणा ।

गुरुदशा–संज्ञा स्त्री० बृहस्पति की दशा ।

गुरुदार–संज्ञा स्त्री० गुरु की स्त्री । वेदाध्यापक ग्रथवा मंत्रदाता की स्त्री ।

गुरुदेव–संज्ञा पुं० १. ग्रभीष्ट देव । २. पिता । ३. ग्राचार्य ।

गुरुदैवत–संज्ञा पुं० पुष्य नक्षत्र ।

गुरुद्वारा–संज्ञा पुं० १. सिक्खों का मंदिर । २. ग्राचार्य या गुरु के रहने का स्थान ।

गुरुपत्नी–संज्ञा स्त्री० गुरु की स्त्री ।

गुरुपाक–वि० दुष्पच । जो देर से पचे ।

गुरुपाप–वि० बड़ा पाप । महापाप ।

गुरुप्रमोद–संज्ञा पुं० ग्रतिशय ग्रानन्द । ग्रत्यन्त हर्ष ।

गुरुभाई–संज्ञा पुं० एक ही गुरु के शिष्य ।

गुरुमंत्र–संज्ञा पुं० इष्ट मंत्र । दीक्षा में प्राप्त मंत्र ।

गुरुमुख–वि० दीक्षित । जिसने गुरु से मंत्र लिया हो ।

मुहा०–गुरुमुख होना=मंत्र लेना । चेला होना । गुरु करना ।

गुरुमुखी–संज्ञा स्त्री० पंजाब में प्रचलित एक लिपि ।

गुरुलघु–वि० १. मान्य-ग्रमान्य । २. प्रधान-ग्रप्रधान । ३. ह्रस्व-दीर्घ ।

गुरुवाइन–संज्ञा स्त्री० १. गुरुपत्नी । २. माता ।

गुरुवार–संज्ञा पुं० बृहस्पति । बृहस्पति का दिन । बीफै ।

गुरुशुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० गुरुसेवा । गुरु की ग्राराधना ।

गुरुसेवा–संज्ञा स्त्री० गुरुपूजा ।

गुरू–संज्ञा पुं० ग्रध्यापक । गुरु । ग्राचार्य । शिक्षक ।

यौ०—गुरू-घंटाल=बड़ा भारी चालाक। धूर्त।

गुरूपदिष्ट—वि० गुरु से प्राप्त शिक्षा या उपदेश।

गुरूपदेश—संज्ञा पुं० गुरु से प्राप्त शिक्षा।

गुरेरना†—क्रि० स० घूरना। आँखें फाड़कर देखना।

गुरेरा*—संज्ञा पुं० दे० "गुलेला"।

गुर्गरी—संज्ञा स्त्री० कम्पज्वर। जूड़ी।

गुर्गा—संज्ञा पुं० १. बासन माँजनेवाला। २. भृत्य। ३. भेदिया।

गुर्गाबी—संज्ञा स्त्री० मुंडा जूता।

गुर्ज—संज्ञा पुं० [फा०] १. गदा। २. सोंटा। ३. दे० "बुर्ज"।

यौ०—गुर्जबर्दार—गदाधारी सैनिक।

गुर्जर—संज्ञा पुं० १. गूजर जाति-विशेष। २. गुजरात देश का रहनेवाला। ३. गुजरात देश।

गुर्जरी—संज्ञा स्त्री० १. रागिनी-विशेष। २. गुजरात देश की स्त्री।

गुर्राना—क्रि० अ० १. क्रोध या अभिमान में कर्कश स्वर से बोलना। २. डराने के लिए घुर-घुर शब्द करना।

गुर्री—संज्ञा स्त्री० भुने हुए जौ।

गुर्वंगना—संज्ञा स्त्री० १. गुरुपत्नी। २. माता। ३. सौतेली माँ। ४. माननीय स्त्री।

गुर्वादित्य—संज्ञा पुं० योग-विशेष। सूर्य और बृहस्पति के एक राशिस्थ होने पर यह योग होता है जिसमें विवाह आदि मंगलकार्य नहीं होते।

गुर्विणी—वि० गर्भिणी। गर्भवती।

गुर्वी—वि० १. गर्भवती। २. भारी। बड़ी। गौरववाली। प्रधान। मुख्य।

संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठ या बड़ी स्त्री। गुरु की पत्नी।

गुल—संज्ञा पुं० [फा०] १. पुष्प। फूल। २. गुलाब का फूल। ३. वह गड्ढा जो गालों में हँसने आदि के समय पड़ता है। ४. पशुओं के शरीर में फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। ५. दीपक में बत्ती का जला हुआ अंश। ६. छाप। शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिह्न, दाग। ७. जट्ठा। तमाकू का जला हुआ अंश। ८. किसी चीज पर बना हुआ भिन्न रंग का कोई गोल निशान। ९. जलता हुआ कोयला। कनपटी। १०. आग। ११. आँख का डेला। १२. अंगारा। १३. सुन्दरी स्त्री। १४. हलवाई का भट्ठा।

मुहा०—गुल खिलना=१. बखेड़ा खड़ा होना। २. विचित्र घटना होना। (चिराग) गुल करना=बुझाना।

गुल—संज्ञा पुं० [फा०] हल्ला। शोर।

गुलअब्बास—संज्ञा पुं० [फा०] गुलाबाँस। पौधा-विशेष जिसमें बरसात के दिनों में लाल या पीले रंग के फूल लगते हैं।

गुलकंद—संज्ञा पुं० [फा०] औषध-विशेष। मिस्री या चीनी में मिली हुई गुलाब के फूलों की पँखरियाँ जिसका प्रयोग औषध के रूप में होता है।

गुलकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेल-बूटे का काम।

गुलकेश—संज्ञा पुं० [फा०] जटाधारी। पौधा-विशेष।

गुलखैरू—संज्ञा पुं० [फा०] पौधा-विशेष जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं।

गुलगपाड़ा—संज्ञा पुं० [अ०] हल्ला। शोर।

गुलगुल—वि० कोमल। नरम। मुलायम।

गुलगुला—संज्ञा पुं० १. मीठा पकवान-विशेष। २. गंडस्थल। कनपटी।

वि० मुलायम। कोमल।

गुलगुलाना†—क्रि० स० १. नरम करना। २. मुलायम करना। ३. गुदगुदाना।

गुलगोथना—संज्ञा पुं० नाटा मोटा आदमी जिसके गाल आदि अंग खूब फूले हों।

गुलचा—संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक गालों पर लगाई गई हलकी चपत।

गुलचाना, गुलचियाना†*—क्रि० स० गुलचा मारना।

गुलछर्रा—संज्ञा पुं० मौज करना। चैन की वंशी बजाना। भोग-विलास में मस्त।

गुलज़ार–संज्ञा पुं० [फा०] बगीचा। बाग। वाटिका।
वि० आनंद और शोभायुक्त। हरा-भरा।

गुलझटी–संज्ञा स्त्री० १. सिकुड़न। शिकन। २. उलझन की गाँठ।

गुलथी–संज्ञा स्त्री० पिंड या गाँठ।

गुलदस्ता–संज्ञा पुं० [फा०] सुन्दर फूलों का गुच्छा।

गुलदाउदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] छोटा पौधा-विशेष जो सुन्दर गुच्छेदार फूलों के लिए लगाया जाता है।

गुलदान–संज्ञा पुं० [फा०] गुलदस्ता रखने का बरतन।

गुलदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का कशीदा। २. एक तरह का सफेद कबूतर।
वि० दे० "फूलदार।"

गुलदुपहरिया–संज्ञा पुं० [फा०] पौधा-विशेष जिसमें गहरे लाल रंग के सुन्दर फूल लगते हैं।

गुलनार–संज्ञा पुं० [फा०] १. अनार का फूल। २. गहरा लाल रंग।

गुलबकावली–संज्ञा स्त्री० [फा०] पौधा-विशेष जिसके फूल सुंदर, सफेद और सुगंधित होते हैं।

गुलबदन–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का धारीदार रेशमी कपड़ा। गुलाब के फूल की तरह जिसका शरीर सुन्दर हो। कोमल। नाजुक।

गुलमेंहदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह के फूल का पौधा।

गुलमेख़–संज्ञा स्त्री० [फा०] फुलिया। गोल सिरेवाली कील।

गुललाला–संज्ञा पुं० [फा०] १. पौधा-विशेष। २. इस पौधे का फूल।

गुलशन–संज्ञा पुं० [फा०] बाग़। वाटिका। बगीचा।

गुलशब्बो–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह का छोटा पौधा। सुगंधिराज। रजनीगंधा। सुगंधरा।

गुलहज़ारा–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का गुललाला (पौधा)।

गुलाब–संज्ञा पुं० १. एक कँटीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं। २. गुलाबजल। ३. इत्र। ४. पाटलपुष्प।

गुलाबजल–संज्ञा पुं० गुलाब का सुगन्धित जल।

गुलाबजामुन–संज्ञा पुं० १. एक मिठाई। २. एक वृक्ष जिसका फल स्वादिष्ट होता है।

गुलाबपाश–संज्ञा पुं० [फा०] गुलाबजल भरकर छिड़कने का पात्र-विशेष।

गुलाबबाड़ी–संज्ञा स्त्री० गुलाब के फूलों से सजाया जानेवाला उत्सव।

गुलाबा–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बरतन।

गुलाबी–वि० १. गुलाब के रंग की तरह। २. गुलाबजल से सुगन्धित। ३. गुलाब-संबंधी। ४. हलका। थोड़ा या कम।
संज्ञा पुं० हलका लाल रंग।

गुलाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. मोल लिया हुआ दास। खरीदा हुआ नौकर। २. नौकर।

गुलामी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दासत्व। २. परतंत्रता। पराधीनता। ३. सेवा। नौकरी।

गुलाल–संज्ञा पुं० [फा०] लाल बुकनी जिससे हिंदू लोग होली खेलते हैं। अबीर। रंग-विशेष।

गुलाला–संज्ञा पुं० दे० "गुललाला"।

गुलिक–संज्ञा पुं० मोती की माला के दाने।

गुलिया–संज्ञा स्त्री० सिर के पीछे का भाग।

गुलियाना–क्रि० स० बाँस के चोंगे में भरकर कोई तरल पदार्थ पशुओं को पिलाना।

गुलिस्ताँ–संज्ञा पुं० [फा०] वाटिका। बाग।

गुली–संज्ञा स्त्री० १. गुल्ली। २. बाजरे की भूसी।

गुलू–संज्ञा पुं० एक वृक्ष।

गुलूबंद–संज्ञा पुं० १. ऊनी या सूती चौड़ी पट्टी जिसे सिर या गले में लपेटते हैं। २. गले का गहना।

गुलेंदा–संज्ञा पुं० महुए का फल।

गुलेनार–संज्ञा पुं० दे० "गुलनार"।

गुलेल–संज्ञा स्त्री० एक तरह की कमान जिस पर मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेलची–संज्ञा पुं० गुलेल चलानेवाला।

गुलेला—संज्ञा पुं० १. गुलेल । २. गुलेल से चलाई जानेवाली मिट्टी की गोलियाँ ।
गुलौर—संज्ञा पुं० रस पकाने के भट्ठे का स्थान ।
गुल्फ—संज्ञा पुं० ऐंड़ी के ऊपर की गाँठ । फीली ।
गुल्म—संज्ञा पुं० १. ऐसा पौधा जिसकी जड़ से कई डंठल निकले हों । जैसे, ईख आदि । २. सेना की एक टुकड़ी । ३. एक रोग । प्लीहा । ४. वृक्षों का समूह । ५. सघन झाड़ी । ६. क़िला । छोटा दुर्ग । ७. गाँव की पुलिस चौकी ।
गुल्मशूल—संज्ञा पुं० रोग-विशेष ।
गुल्लक—संज्ञा स्त्री० धन जमा करने के लिए मिट्टी या काठ का छोटा पात्र । दे० "गोलक" ।
गुल्लर—संज्ञा पुं० गूलर ।
गुल्ला—संज्ञा पुं० १. मिट्टी की गोली जिसे गुलेल से फेंकते हैं । २. हल्ला । शोर । ३. दे० "गुलेल" ।
गुल्लाला—संज्ञा पुं० एक तरह का लाल फूल ।
गुल्ली—संज्ञा स्त्री० १. फल की गुठली । २. महुए की गुठली । लकड़ी का छोटा लम्बा टुकड़ा जिससे लड़के गुल्ली-डंडा खेलते हैं । ३. किसी वस्तु का लम्बा छोटा टुकड़ा जिसका पेटा गोल हो । ४. छत्ते में वह जगह जहाँ मधु होता है । ५. केवड़े का फूल ६. ऊख की गंडेरी ७. एक औजार ।
गुल्ली-डंडा—संज्ञा पुं० लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल, जो एक गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है ।
गुवा—संज्ञा पुं० सुपारी । पूगीफल ।
गुवाक—संज्ञा पुं० १. सुपारी । २. सुपारी का वृक्ष ।
गुवाल—संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल" ।
गुवालिन—संज्ञा स्त्री० अहीरिन । गोप की स्त्री ।
गुविंद*—संज्ञा पुं० दे० "गोविंद" ।
गुवैया—संज्ञा स्त्री० सखी-सहेली ।
गुसाँई*—संज्ञा पुं० दे० "गोसाँई" ।
गुसा*†—संज्ञा पुं० दे० "गुस्सा" ।
गुस्ताख़—वि० [फ़ा०] धृष्ट । अशिष्ट । बड़ों से संकोच या उनका आदर न करनेवाला ।
गुस्ताख़ी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अशिष्टता । धृष्टता । ढिठाई । बेअदबी ।
गुस्ल—संज्ञा पुं० [अ०] स्नान । नहाना ।
गुस्लख़ाना—संज्ञा पुं० [अ०] स्नान करने का स्थान । स्नानागार । नहाने का घर ।
गुस्सा—संज्ञा पुं० [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] कोप । क्रोध ।
मुहा०—गुस्सा उतरना या निकलना=क्रोध शान्त होना । (किसी पर) गुस्सा उतारना =क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना । क्रोध शान्त करना । गुस्सा चढ़ना=क्रोध होना ।
गुस्सैल—वि० [अ०] जल्दी क्रोध करनेवाला । गुस्सावर ।
गुह—संज्ञा पुं० १. कार्त्तिकेय । शिव । २. घोड़ा । अश्व । ३. निषाद जाति का राजा जो श्री रामचन्द्र का मित्र था । ४. विष्णु का एक नाम । ५. हृदय । ६. गुफा । छिपने का स्थान ७. मैला । विष्ठा ।
गुहक—संज्ञा पुं० शृंगवेरपुर का निषाद (अनार्य) राजा जिसकी सहायता से श्रीराम ने गंगा पार की थी ।
गुहना†—क्रि० स० दे० "गूँथना" ।
गुहर—वि० गुप्त । छिपा । ढका ।
गुहराना†—क्रि० स० १. पुकारना । चिल्लाकर बुलाना । २. बुलाना ।
गुहवाना—क्रि० स० [गुहना का प्रे०] गुँथवाना । गुहने का काम कराना ।
गुहषष्ठी—संज्ञा स्त्री० अगहन मास की शुक्ला षष्ठी ।
गुहांजनी—संज्ञा स्त्री० बिलनी । गुहेरी । आँख की पलक पर होनेवाली फुड़िया ।
गुहा—संज्ञा स्त्री० खोह । गुफा । कंदरा ।
गुहाई । संज्ञा स्त्री० गुहने का काम या मजदूरी ।
गुहागृह—संज्ञा पुं० कन्दरा । गर्त । गुफा ।
गुहार—संज्ञा स्त्री० पुकार । रक्षा करने या सहायता के लिए पुकार । दोहाई ।

गुहारी–वि० गुहार करनेवाला। पुकारनेवाला।

गुहाशय–संज्ञा पुं० १. गुफा में रहनेवाला। २. विष्णु। ३. व्याघ्र। ४. सिंह। जीव। ५. परमात्मा। ६. हृदय।

गुहिल–संज्ञा पुं० १. धन। २. वित्त। ३ विभव। ४. निधि। ५. मेवाड़ के प्रथम राज्य-संस्थापक का नाम।

गुहेरा–संज्ञा पुं० एक कीड़ा। गोह। बिसखपरा।

गुहेरी–संज्ञा स्त्री० आँख की पलक की फुंसी। बिलनी।

गुह्य–वि० १. छिपा हुआ। गुप्त। पोशीदा। २. छिपाने योग्य। गोपनीय। ३. गूढ़। संज्ञा पुं० १. छल। कपट। २. दंभ। ३. गोपनीय अंग ४. विष्णु। ५. शिव। परमात्मा। ६. संभोग। मैथुन। ७. गुदा। ८. गुप्त बात। ६. स्त्री या पुरुष का चिह्न, योनि या लिंग।

गुह्यक–संज्ञा पुं० १. कुबेर के खजानों की रक्षा करनेवाले यक्ष। २. देवियोनि-विशेष। कुबेर के अनुचर।

गुह्यकेश्वर–संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. यक्षराज।

गुह्यपति–संज्ञा पुं० कुबेर।

गूंगा–वि० [स्त्री० गूंगी] मूक। जो बोल न सके। जिसे वाणी न हो। मौन। शब्द-रहित।

मुहा०—गूंगे का गुड़=ऐसी बात जिसका अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके।

गूंज–संज्ञा स्त्री० १. गुंजार। भौंरों के गूंजने का शब्द। २. लट्टू की कील। ३. कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार। ४. प्रतिध्वनि। कलरव। आनन्द-ध्वनि।

गूंजना–क्रि० अ० १. गुंजारना। मधुर ध्वनि करना। भिनभिनाना। २. शब्द से व्याप्त होना। प्रतिध्वनित होना।

गूंथना–क्रि० स० दे० "गूंधना"। गुहना। पिरोना।

गूंदना–क्रि० स० १. सानना। २. मांड़ना। एकत्रित करना। ३. गोला बनाना।

गूंदनी–संज्ञा स्त्री० गुंदेला। वृक्ष-विशेष। गोंदा।

गूंदा–संज्ञा पुं० अन्तःसार।

गूंधन–संज्ञा पुं० १. लोई। २. पेड़ा।

गूंधना–क्रि० स० १. मांड़ना। मसलना। गूंदना। २. पिरोना। गूंथना। ३. सानना।

गू–संज्ञा पुं० गुह। मल। विष्ठा।

गूगल या गूगुल–संज्ञा पुं० १. गोंद-विशेष। २. सुगन्धित द्रव्य।

गूगला–संज्ञा स्त्री० घोंघा। सीप।

गूजर–संज्ञा पुं० [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] १. ग्वाला। एक जाति। २. जाट।

गूजरी–संज्ञा स्त्री० १. ग्वालिन। गूजर जाति की स्त्री। २. पैर में पहनने का एक आभूषण। ३. रागिनी-विशेष।

गूझा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गुझिया] १. गोझा। २. गूदा। ३. फलों के भीतर का रेशा। ४. एक पकवान।

गूढ़–वि० १. गुप्त। छिपा हुआ। २. सार-गर्भित। गंभीर। जिसमें बहुत मतलब छिपा हो। ३. कठिन। जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे। गुह्य। ४. अप्रकाश्य। ५. सूक्ष्म। ६. निर्जन स्थान। एकान्त।

गूढ़गेह*–संज्ञा पुं० दे० "यज्ञशाला"।

गूढ़चार–संज्ञा पुं० १. गूढ़ पुरुष। २. गोइन्दा।

गूढ़ज–संज्ञा पुं० जारज पुत्र। पर पुरुष से उत्पन्न पुत्र।

गूढ़ता–संज्ञा स्त्री० १. छिपाव। पोशीदगी। २. कठिनाई।

गूढ़पत्र–संज्ञा पुं० १. करवीर वृक्ष। करील। २. नागफनी।

गूढ़पथ–संज्ञा पुं० १. अन्तःकरण। २. चित्र।

गूढ़पाद–संज्ञा पुं० सर्प। भुजंग। साँप।

गूढ़पुरुष–संज्ञा पुं० जासूस। गुप्तचर। चर। दूत।

गूढ़भाषित–संज्ञा पुं० १. गूढ़वाद। २. गुप्त विज्ञापन।

गूढ़ार्थ–वि० कठिन अर्थ।

गूढ़ोक्ति–संज्ञा स्त्री० एक अलंकार जिसमें

कोई गुप्त बात, जिसके प्रति कही जानेवाली हो उसके प्रति न कहकर किसी दूसरे के प्रति कही जाय।

गूढ़ोत्तर—संज्ञा पुं० काव्यालंकार-विशेष जिसमें प्रश्न का उत्तर कोई गूढ़ अभिप्राय लिये हुए दिया जाता है।

गूथ—संज्ञा पुं० सूत की लड़ी।

गूथना—क्रि० स० १. पिरोना। गूंथना। तागना। गाथना। २. सुई-तागे से टाँकना।

गूदड़—संज्ञा पुं० [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।

गूदड़ी—संज्ञा स्त्री० १. रजाई। २. सूजनी।

गूदा—संज्ञा पुं० [स्त्री० गूदी] १. फल के भीतर का अंश। २. अन्तःसार। सार भाग। ३. भेजा। मग्ज। ४. गिरी। मींगी।

गूदिया—वि० लोभी। इच्छुक।

गून—संज्ञा स्त्री० नाव खींचने की रस्सी।

गूमड़ा—संज्ञा पुं० सूजना। गिलटी। फोड़ा।

गूमड़ी—संज्ञा स्त्री० गाँठ। ग्रन्थि।

गूमा—संज्ञा पुं० छोटा पौधा-विशेष।

गूलर—संज्ञा पुं० एक बड़ा वृक्ष। उदुंबर। ऊमर।

मुहा०—गूलर का फूल=दुर्लभ वस्तु। वह जो कभी देखने में न आवे।

गूह—संज्ञा पुं० मल। गलीज। विष्ठा। मैला।

गूहड़िया—संज्ञा पुं० घूरा। कूड़ा। कतवार। गोबर।

गृंजन—संज्ञा पुं० १. गाजर। २. लहसुन। ३. प्याज।

गृधु—वि० [संज्ञा गृधुता] लालची। लोभी।

गृध्र—संज्ञा पुं० गिद्ध। गीध। पक्षी-विशेष।

गृध्रा—वि० मरभुखा। लोभी। लालची।

गृष्टि—संज्ञा स्त्री० १. एक बार की ब्याई गौ। २. लता-विशेष। ३. बराही कन्द।

गृह—संज्ञा पुं० [वि० गृही] १. भवन। घर। मकान। निवास-स्थान। २. वंश। कुटुंब।

गृहकन्या—संज्ञा स्त्री० घृतकुमारी (औषध)। कुँवारी लड़की।

गृहकर्म—संज्ञा पुं० गृहसंबंधी कार्य। घर का काम।

गृहगोधिका—संज्ञा स्त्री० बिसतुइया। छिपकली।

गृहछिद्र—संज्ञा पुं० १. गृहदोष। गृहकलंक। २. घर की गुप्त बातें।

गृहजात—संज्ञा पुं० दासी से उत्पन्न दास।

गृहतटी—संज्ञा स्त्री० १. गली। २. बीथी। ३. घर के बाहर का चबूतरा।

गृहदास—संज्ञा पुं० नौकर। घर का नौकर।

गृहदाहक—संज्ञा पुं० १. आततायी। २. घर में आग लगानेवाला। गृहनाशक।

गृहनिर्माता—संज्ञा पुं० घर बनानेवाला।

गृहप, गृहपति—संज्ञा पुं० [स्त्री० गृहपत्नी] १. घर का स्वामी। घर का मालिक। २. अग्नि।

गृहपशु—संज्ञा पुं० कुत्ता। पालतू जानवर।

गृहपालक—संज्ञा पुं० १. कूकुर। २. गृहरक्षक। घर की रक्षा करनेवाला।

गृहभंग—संज्ञा पुं० १. गृहभेदक। २. प्रवास।

गृहभेदी—वि० १. अपने घर की गुप्त बात बतानेवाला। २. दूत। ३. सूचक।

गृहमंत्री—संज्ञा पुं० राज्य का वह मंत्री, जो राज्य की भीतरी बातों की व्यवस्था करता है। (अंग्रे० होम-मिनिस्टर)

गृहमणि—संज्ञा पुं० दीपक। घर को प्रकाशित करनेवाला।

गृहमेधी—संज्ञा पुं० गृही। गृहपति। घरवाला।

गृहमृग—संज्ञा पुं० कुत्ता।

गृहमंत्रालय—संज्ञा पुं० दे० "गृहविभाग"।

गृहयुद्ध—संज्ञा पुं० १. किसी देश के भीतर ही आपस में होनेवाली लड़ाई या युद्ध। २. घर के भीतर का झगड़ा।

गृहवाटिका—संज्ञा स्त्री० घर के समीप का बगीचा।

गृहवासी—वि० घर में रहनेवाला।

गृहविच्छेद—संज्ञा पुं० कुटुम्ब-कलह। परिवार के साथ विवाद।

गृहविभाग—संज्ञा पुं० राज्य का वह विभाग या महकमा जिसके द्वारा राज्य की भीतरी बातों की व्यवस्था हो।

गृहसचिव–संज्ञा पुं० । राज्य के गृहविभाग का प्रधान अधिकारी जो मंत्रिपद पर न हो । (अंग्रे० होम-सेक्रेटरी)

गृहस्थ–संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जो ब्रह्मचर्य के उपरांत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहे । २. बालबच्चोंवाला आदमी । घर-बारवाला । ३. संसारी । †४. वह व्यक्ति जिसके यहाँ खेती होती हो ।

गृहस्थता–संज्ञा स्त्री० गृह-व्यापार । गृहस्थ का धर्म ।

गृहस्थाश्रम–संज्ञा पुं० चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम, जिसमें लोग विवाह करके घर का काम-काज देखते हैं ।

गृहस्थी–संज्ञा स्त्री० १. गृहस्थ का कर्त्तव्य । २. गृहस्थाश्रम । ३. गृह-व्यवस्था । घर-बार । ४. कुटुंब, परिवार आदि । ५. घर का सामान । माल-असबाब । †६. खेती-बारी ।

गृहागत–संज्ञा पुं० आगन्तुक । अतिथि । पाहुन । मेहमान ।

गृहार्थ–वि० घर के लिए । गृह के निमित्त ।

गृहिणी–संज्ञा स्त्री० १. भार्य्या । स्त्री । पत्नी २. घर की मालकिन ।

गृही–संज्ञा पुं० [स्त्री० गृहिणी] १. गृह-स्वामी । घर का मालिक । २. गृहस्थ । गृहस्थाश्रमी ।

गृहीत–वि० ग्रहण किया हुआ । स्वीकृत । लिया हुआ । पकड़ा या रखा हुआ । आश्रित ।

गृह्य–वि० १. गृह-संबंधी । घरेलू । २. गृहासक्त । ३. गृहस्थों के कर्त्तव्य-कर्म । ४. कर्मोपदेशक शास्त्र-विशेष । ५. ग्रहण करने योग्य । ६. जिसे प्रसन्न या आकर्षित किया जाय ।

गृह्यग्रन्थ–संज्ञा पुं० धर्मसंहिता । कर्मकांड-ग्रन्थ ।

गृह्यसूत्र–संज्ञा पुं० वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं । शास्त्र । स्मृति ।

गृह्याग्नि–संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्र की अग्नि । २. गृहसंबंधी अग्नि ।

गेंगरा–संज्ञा पुं० केंकड़ा । कर्कट ।

गेंड़†–संज्ञा पुं० १. अगौरा । ऊख के ऊपर का पत्ता । २. अहाता । घेरा ।

गेंड़ना–क्रि० स० १. अन्न रखने के लिए गेंड़ बनाना । २. गोंठना । घेरना । ३. खेतों को मेंड़ से घेरना ।

गेंड़ली–संज्ञा स्त्री० फेंटा । कुंडल । घेरा । जैसे-साँप की गेंडली ।

गेंड़ा–संज्ञा पुं० १. गन्ना । ईख । २. अगौरा । ईख के ऊपर के पत्ते । ३. एक जंगली जानवर । ४. पत्थर की निहाई ।

गेंड़ुआ†–संज्ञा पुं० १. सिरहाना । तकिया । २. टोंटीदार लोटा । ३. बड़ा गेंद ।

गेंड़ुरी–संज्ञा स्त्री० १. इँडुरी । बिड़वा । सिर पर घड़ा आदि रखने के लिए रस्सी का बना हुआ मेंडरा । २. कुंडली । फेंटा । ३. साँपों का कुंडलाकार बैठना ।

गेंद–संज्ञा पुं० १. गेंदा । खेलने के लिए एक गोल वस्तु ।

गेंद-तड़ी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का खेल जिसमें लड़के एक दूसरे को गेंद से मारते हैं ।

गेंदा–संज्ञा पुं० १. पीले रंग का एक फूल और उसका पौधा । २. गेंद ।

गेंदी–संज्ञा स्त्री० खेलने की गोली ।

गेंदुक*–संज्ञा पुं० गेंद ।

गेंदुवा–संज्ञा पुं० गेंड़ुआ । उसीसा । (तकिया) गोल तकिया ।

गेगली–वि० बोदली । फूहर । कुरूप स्त्री ।

गेंड़ना–क्रि० स० १. घेरना । २. चारों ओर घूमना । परिक्रमा करना ।

गेदरा–संज्ञा पुं० १. भोंदू । २. अबोध । ३. अज्ञान ।

गेदा–संज्ञा पुं० पंखहीन चिड़िया । बच्चा ।

गेय–वि० गाने-योग्य । गाने-लायक ।

गेया–संज्ञा पुं० खंड । अंश ।

गेरना‡–क्रि० स० १. नीचे डालना । गिराना । २. डालना । ३. ढालना । उँडेलना ।

गेराँव–संज्ञा पुं० चौपायों के गले का बंधन ।

गेरुआ–वि० १. मटमैलापन लिये लाल रंग का । गेरू के रंग का । २. गैरिक । गेरू में रँगा हुआ । भगवा । जोगिया ।

गेरुई—संज्ञा स्त्री० चैत की फसल को नष्ट करनेवाला एक रोग। गेहूँ के पौधों का एक रोग।
गेरू—संज्ञा स्त्री० लाल कड़ी मिट्टी-विशेष जो खानों से निकलती है। गैरिक। गिरमाटी।
गेह—संज्ञा पुं० भवन। मकान। घर।
गेहनी*—संज्ञा स्त्री० गृहिणी। घरवाली।
गेहशूर—संज्ञा पुं० १. गृहप्रिय। गृहासक्त। २. घर ही में वीरता दिखानेवाला।
गेही*—संज्ञा पुं० गृही। गृहस्थ।
गेहुँअन—संज्ञा पुं० एक अत्यंत विषधर सर्प।
गेहुँआ या **गेहुँवा**—वि० गेहूँ-वर्ण। गेहूँ के रंग का। बादामी।
गेहूँ—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध अनाज जिसे पीस करके रोटी बनाते हैं। गोधूम।
गैंड़ा—संज्ञा पुं० एक जन्तु। गेंडा।
गैंती—संज्ञा स्त्री० कुदाल। मिट्टी खोदने का अस्त्र-विशेष।
गैन* या **गैना**—संज्ञा पुं० १. मार्ग। गैल। २. नाटा बैल।
*संज्ञा पुं० दे० "गगन"।
गैनी—संज्ञा स्त्री० दे०"खंता"।
वि० चलनेवाली।
ग़ैब—संज्ञा पुं० [अ०] जो सामने न हो। परोक्ष।
गैबर*—संज्ञा पुं० १. बड़ा हाथी। २. एक प्रकार की चिड़िया।
ग़ैबी—वि० [अ० ग़ैब] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. अज्ञात। अजनबी।
गैयर*—संज्ञा पुं० हाथी।
गैया—संज्ञा स्त्री० गो। गाय। धेनु।
ग़ैर—वि० [अ०] १. दूसरा। अन्य। २. अपने कुटुंब या अपने समाज से बाहर का (व्यक्ति)। पराया। अजनबी। ३. निषेध-वाचक शब्द। जैसे—ग़ैरमुमकिन, ग़ैरहाज़िर।
ग़ैर—संज्ञा स्त्री० [अ०] अंधेर। अत्याचार।
ग़ैरजिम्मेदार—वि०[अ०] अपनी जिम्मेदारी न समझनेवाला।
ग़ैरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] हया। लज्जा।
ग़ैरमनक़ूला—वि० [अ०] स्थिर। अचल।
ग़ैरमामूली—वि० [अ०] असाधारण।
ग़ैरमिसिल—वि० [अ०] अनुचित। बे सिलसले।
ग़ैरमुनासिब—वि० [अ०] अनुचित।
ग़ैरमुमकिन—वि० [अ०] असंभव। नामुमकिन।
ग़ैरवाजिब—वि० [अ०] अनुचित। अयोग्य।
ग़ैरसरकारी—वि० [अ०] जो सरकारी न हो।
ग़ैरहाज़िर—वि० [अ०] अनुपस्थित।
ग़ैरहाज़िरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति।
गैरा—संज्ञा पुं० १. घास का पूला। २. आँटी। ३. मुट्ठा।
गैरिक—संज्ञा पुं० १. सोना। २. गेरू।
गैरेय—संज्ञा पुं० शिलाजीत।
गैल—संज्ञा स्त्री० राह। मार्ग। रास्ता। गली। पथ।
गैहरी—संज्ञा स्त्री० दण्ड। रोकने का दण्ड। अर्गल। बेंड़ा।
गो—संज्ञा स्त्री० १. गैया। गाय। गऊ। २. वृष राशि। ३. किरण। ४. बोलने की शक्ति। वाणी। वचन। ५. इन्द्रिय। ६. सरस्वती। ७. बिजली। ८. दृष्टि। आँखें। ९. पृथ्वी। जमीन। १०. माता। जननी। ११. दिशा। १२. जीभ। जबान। १३. ऋषभ नामक औषध-विशेष।
संज्ञा पुं० १. नंदी नामक शिवगण। २. बैल। ३. सूर्य। ४. घोड़ा। ५. बाण। तीर। ६. चन्द्रमा। ७. आकाश। ८. स्वर्ग। ९. गवैया। १०. जल। ११. वज्र। १२. शब्द। १३. प्रशंसक। १४. नौ का अंक। १५. शरीर के रोम।
अव्य० यद्यपि।
यौ०—गोकि—यद्यपि। गो।
प्रत्य०—कहनेवाला। (यौ० में)
गोआल—संज्ञा पुं० गोपाल। गोप। अहीर।
गोइ—संज्ञा पुं० दे० "गोय"।
क्रि० वि० छिपकर।
गोइंठा†—संज्ञा पुं० कंडा। उपला। ईंधन के लिए सुखाया हुआ गोबर। गोहरा।
गोइंदा—संज्ञा पुं० [फा०] गुप्तचर। जासूस। गुप्त भेदिया।
गोइयाँ—संज्ञा पुं०, स्त्री० सहचर। साथी।

गोई–संज्ञा स्त्री० वि० गोइयाँ। छिपाई। छिपाई हुई।
गोऊ*†–वि० छिपानेवाला। चुरानेवाला।
गोंठ–संज्ञा स्त्री० मुर्री। धोती की लपेट जो कमर पर रहती है।
गोंठना–क्रि० स० १. किसी वस्तु की नोक या कोर गुठली कर देना। २. गोभे या पुवे की कोर को मोड़-मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना। ३. चारों ओर से घेरना।
गोंठा–संज्ञा पुं० उपला। उपरी। कंडा। गोहरा।
गोंड़–संज्ञा पुं० असभ्य जाति-विशेष जो मध्यप्रदेश में पाई जाती है।
गोंडरा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० गोंडरी] १. लोहे का मँडरा जिस पर मोट का चरसा लटकता है। २. गोल घेरा। ३. मँड़रा। कुंडल के आकार की वस्तु।
गोंड़ा–संज्ञा पुं० १. घेरा हुआ स्थान। बाड़ा (विशेषकर चौपायों के लिए)। २. गाँव। खेड़ा। पुरवा।
गोंद–संज्ञा पुं० चेंप। पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव। लासा। निर्यास।
यौ०—गोंददानी=वह बरतन जिसमें गोंद भिगोकर रखा रहे।
गोंदपँजीरी–संज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्रियों को खिलाई जानेवाली गोंद मिली हुई पँजीरी।
गोंदरी–संज्ञा स्त्री० १. पानी में होनेवाली घास-विशेष। २. इस घास की बनी हुई चटाई।
गोंदा–संज्ञा पुं० पक्षी के खाने की लोई जिससे पक्षी फँसाये जाते हैं। लभेरा, लसोड़ा।
गोंदी–संज्ञा स्त्री० १. मौलसिरी की तरह का एक वृक्ष। २. हिंगोट। इंगुदी।
गोंहुवन–संज्ञा पुं० सर्प-विशेष, लाल रंग का सर्प।
गोकर्ण–संज्ञा पुं० १. हिन्दुओं का शैव क्षेत्र-विशेष जो मलाबार में है। २. इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति। एक तीर्थ-स्थान जहाँ के प्रधान देवता शिव हैं। ३. परिमाण-विशेष। एक पसर। ४. मृग-विशेष। ५. खच्चर। ६. अश्वतर। ७. सर्प-विशेष। ८. गण देवता-विशेष। ९. पर्वत-विशेष। १०. गाय का कान। ११. बालिश्त। वि० गऊ के से लंबे कानवाला।
गोकर्णी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता।
गोकुल–संज्ञा पुं० १. गौओं का झुंड। गो-समूह। २. गोशाला। ३. ब्रज में मथुरा के पास का एक गाँव, जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बाल्य-काल व्यतीत किया था।
गोकुलेश–संज्ञा पुं० गोकुल के अधिपति। श्रीकृष्णचन्द्र।
गोकोस–संज्ञा पुं० १. छोटा कोस। २. उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े।
गोक्षुर–संज्ञा पुं० दे० १. "गोखरू"। २. गाय का खुर।
गोखरू–संज्ञा पुं० १. कँटीला वृक्ष। २. धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिए उनके रास्ते में फैला दिये जाते हैं। ३. एक आभूषण। ४. गोटे-आदि से गुथा हुआ एक साज। ५. औषध-विशेष।
गोखा–संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।
गोखुर–संज्ञा पुं० १. गाय का खुर। २. एक पौधा।
गोग्रास–संज्ञा पुं० भोजन या श्राद्धादि के आरंभ में गौ के लिए निकाला गया भाग।
गोचना–संज्ञा पुं० गेहूँ और चना का मिश्रण। क्रि० स० १. धरना। २. पकड़ लेना। ३. पानी में डुबाना।
गोचर–संज्ञा पुं० १. वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों से हो। चरी। प्रत्यक्ष। सम्मुख। सामने। जन्मराशि से लेकर कतिपय राशियों के नाम। २. चरागाह। गौओं के चरने का स्थान।
गोचर्म–संज्ञा पुं० गौ का चमड़ा।
गोचा–क्रि० स० १. दबाना। २. धोखा देना।
मुहा०–गोचा-गोची=१. धोखे पर धोखा।

२. दबाव पर दबाव । ३. बलात्कार से धोखा देना ।
गोचारण–संज्ञा पुं० गोपालन। गौ को चराना।
गोछ–संज्ञा पुं० १. मूँछ। २. गोंछ । ३. गौंछा।
गोज–संज्ञा पुं० [फा०] पाद। अपान वायु।
गोजई–संज्ञा पुं० मिश्रित अन्न। गेहूँ और जौ।
गोजर–संज्ञा पुं० एक कीड़ा । बूढ़ा बैल ।
गोजल–संज्ञा पुं० गोमूत्र ।
गोजिका–संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष। एक प्रकार का पौधा ।
गोजिह्वा–संज्ञा स्त्री० गोभी । कोबी ।
गोजी–संज्ञा स्त्री० १. गौ हाँकने की लकड़ी। २. लट्ठ । बड़ी लाठी ।
गोझनवट†–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों की साड़ी का अंचल। पल्ला ।
गोझा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गोझिया गुझिया] १. पिराक। गुझिया नामक पकवान । २. गुज्झा । एक प्रकार की कँटीली घास । ३. जेब । खलीता ।
गोट–संज्ञा स्त्री० १. मगजी। किसी कपड़े के किनारे पर लगाई जानेवाली पट्टी। २. भोज। जातीय भोजन । ३. गोष्ठी । मंडली । ४. गोटी । चौपड़ का मोहरा । ५. किसी तरह का किनारा ।
गोटा–संज्ञा पुं० १. चाँदी, सोने या रेशम आदि का बना हुआ फीता । २. किनारा, किनारी, कोर । ३. धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी। छोटे टुकड़ों में कतरी और एक में मिली हुई इलायची, सुपारी खरबूजे और बादाम की गिरी। ४. कंडी। सुद्दा । ५. सूखा हुआ मल ।
गोटी–संज्ञा स्त्री० १. कंकड़-पत्थर आदि का छोटा टुकड़ा । चेचक । शीतला । छाले । २. चौपड़ खेलने का मोहरा । नरद । ३. गोटियों का एक खेल । ४. लाभ की तैयारी । आमदनी या लाभ । **मुहा०**–गोटी जमना या बैठना=१. युक्ति सफल होना। २. आमदनी या लाभ होना।
गोठ–संज्ञा स्त्री० १. गोशाला । गोस्थान । २. गोष्ठी । सभा । श्राद्ध । ३. सैर-सपाटा। ४. समूह। ५. छिपी बातचीत। ६. मित्रता। दोस्ती ।
गोठी–संज्ञा स्त्री० चेचक । सीतला । रोग-विशेष।
गोड़†–संज्ञा पुं० पैर । पाद । पाँव । टाँग ।
गोड़इत–संज्ञा पुं० गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार ।
गोड़ना–क्रि० स० मिट्टी खोदना। खोदना। खुरचना । कोड़ना ।
गोड़ा†–संज्ञा पुं० पलँग आदि का पाया ।
गोड़ाई–संज्ञा स्त्री० गोड़ने की क्रिया या मजदूरी।
गोड़ाना–क्रि० स० गोड़ने का काम दूसरे से कराना ।
गोड़ापाई–संज्ञा स्त्री० बार-बार आना-जाना।
गोड़ारी†–संज्ञा स्त्री० १. पलँग आदि का वह भाग जिधर पैर रहता है । पैताना । २. जूता ।
गोड़िया–संज्ञा पुं० छोटा पैर ।
संज्ञा स्त्री० जाति-विशेष । कहार ।
गोड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पत्नी। स्त्री। २. संगीत की एक रागिनी । मधुरता ।
गोण–संज्ञा पुं० आखा, अन्न रखने का थैला । बोरा ।
गोणी–संज्ञा स्त्री० १. टाट का दोहरा बोरा। थैला। २. एक पुरानी माप। फटे-पुराने कपड़े।
गोत–संज्ञा पुं० १. कुल । वंश । जाति । खानदान । २. समूह ।
गोतम–संज्ञा पुं० एक ऋषि। न्याय-दर्शन के रचयिता ।
गोतमान्वय–संज्ञा पुं० शाक्यमुनि। बुद्धदेव ।
गोतमी–संज्ञा स्त्री० गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या। दुर्गा, कण्व मुनि की बहन ।
गोता–संज्ञा पुं० [अ०] १. जल में डुबकी लगाना। डुब्बी । २. गोत्र, वंश, कुल । **मुहा०**–गोता खाना=धोखे में आना । गोता मारना= डुबकी लगाना। डूबना। अनुपस्थित या गायब हो जाना ।
गोताखोर–संज्ञा पुं० [अ०] डुबकी लगानेवाला। डुबकी मारनेवाला ।

गोतिया–वि० दे० "गोती" । कुटुम्बी, संबंधी, जातिभाई । एक गोत्र का ।

गोती–वि० अपने गोत्र का । गोत्रज । वंशज । भाई-बन्धु । कुटुम्बी ।

गोतीत–वि० इन्द्रियों से परे । इन्द्रियातीत । इन्द्रियों से न जानने योग्य ।

गोत्र–संज्ञा पुं० १. संतति । संतान । २. नाम । ३. क्षेत्र । रास्ता । मार्ग । ४. राजा का छत्र । ५. समूह । जत्था । गरोह । ६. बन्धु । भाई । ७. एक प्रकार का जाति-विभाग । ८. वंश । कुल । खानदान । ९. कुल या वंश की संज्ञा जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होती है । १०. आदि-पुरुष । ११. पर्वत । पहाड़ ।

गोत्रज–वि० १. गोत्र में उत्पन्न । जाति । वंशीय । २. पर्वतीय धातु ।

गोत्रधन–संज्ञा पुं० पैतृक धन । पिता का धन ।

गोत्रशत्रु–संज्ञा पुं० १. इन्द्र । शक्र । २. कुलांगार । खानदान का दुश्मन ।

गोदंत–संज्ञा पुं० हरताल । पीले रंग की एक धातु ।

गोदंती–संज्ञा स्त्री० १. कच्ची या सफेद हरताल । २. एक रत्न ।

गोद–संज्ञा स्त्री० १. अँकवार । क्रोड़ । उत्संग । कोरा । २. अंचल । गोदी । **मुहा०**–गोद का=छोटा बालक । बच्चा । गोद बैठना=दत्तक बनना । गोद पसार-कर=अत्यंत अधीनता से । गोद भरना= १. सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में नारियल आदि पदार्थ देना । २. संतान होना ।

गोदनशीन–संज्ञा पुं० वह जिसे किसी ने गोद लिया हो । दत्तक ।

गोदनशीनी–संज्ञा स्त्री० गोद लिये जाने का समारोह । दत्तक होना ।

गोदनहारी–संज्ञा स्त्री० गोदना गोदनेवाली स्त्री ।

गोदना–क्रि० स० १. चुभाना, गड़ाना । २. किसी कार्य के लिए बार-बार जोर देना । ३. चुभती या लगती हुई बात कहना । ताना देना । शरीर पर तिल के आकार आदि का चिह्न बनाना ।

गोदा–संज्ञा पुं० बड़, पीपर या पाकर के पक्के फल ।
संज्ञा स्त्री० १. गोदावरी नदी । २. गोदा अम्मा । श्री रंगनाथ की पत्नी ।

गोदान–संज्ञा पुं० १. गाय का दान देना । २. केशांत संस्कार ।

गोदाम–संज्ञा पुं० माल-असबाब रखने बड़ा घर ।

गोदावरी–संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी ।

गोदी–संज्ञा स्त्री० दे० "गोद" । १. अँकवार । गोद, २. सूजन । पैर का मोटा होना । ३. दत्तक पुत्र लेना ।
मुहा०–गोदी पसारना=माँगना, लेना, याचना करना । गोदी लेना=दत्तक बनाना । पालना । पोसना ।

गोदोहन–संज्ञा पुं० गाय दुहना । गाय से दूध निकालना ।

गोदोहनी–संज्ञा स्त्री० गोदोहन-पात्र । दुधेड़ी । दोहनी । धूँचा ।

गोध–संज्ञा स्त्री० गोह ।

गोधन–संज्ञा पुं० १. गौओं का समूह । गौओं का झुंड । २. गौ रूपी संपत्ति । ३. एक प्रकार का तीर । ४. दीवाली के दूसरे दिन की एक पूजा । ५. गोवर्द्धन पर्वत ।

गोधा–संज्ञा स्त्री० १. गोह नामक जंतु । २. हाथ की कलाई पर बाँधने का चमड़ा ।

गोधिका–संज्ञा स्त्री० गोह । जलजन्तु-विशेष ।

गोधूम–संज्ञा पुं० १. गेहूँ । २. नारंगी-विशेष । ३. औषध ।

गोधूलि, गोधूली–संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ने के कारण धुंधली छा जाय । संध्या का समय ।

गोधेनु–संज्ञा स्त्री० दुधार गाय । दुग्धवती गौ । दूध देनेवाली गाय ।

गोधौरा–संज्ञा स्त्री० सायंकाल । संध्या समय ।

गोन–संज्ञा स्त्री० १. टाट, कंबल, चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा, जिसमें सामान भरकर बैलों की पीठ पर लादते हैं । २.

साधारण बोरा। खास। ३. नाव खींचने के लिए मस्तूल में बाँधी जानेवाली रस्सी।
गोनर्द–संज्ञा पुं० १. नागरमोथा। २. सारस पक्षी। ३. एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था। ४. शिवजी की एक उपाधि।
गोनर्दीय–संज्ञा पुं० पतञ्जलि मुनि, व्याकरण-महाभाष्यकार।
वि० गोनर्द देश का। गोनर्द देश-संबंधी।
गोनस–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का साँप। २. मणि-विशेष।
गोना*–क्रि० स० छिपाना।
गोनिया–संज्ञा स्त्री० एक औजार।
संज्ञा पुं० स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला।
गोनी–संज्ञा स्त्री० १. टाट का थैला। बोरा। २. पटुआ। सन। पाट।
गोप–संज्ञा पुं० १. गौ की रक्षा करनेवाला। २. ग्वाला। अहीर। ३. गोशाला का अध्यक्ष या प्रबन्ध करनेवाला। ४. भूपति। राजा। ५. गाँव का मुखिया। ६. गले में पहनने का एक आभूषण। ७. एक कीड़ा।
गोपक–संज्ञा पुं० कई गाँवों का मालिक।
गोपकन्या–संज्ञा स्त्री० अहीरिन। अहीर की लड़की।
गोपति–संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. श्रीकृष्ण। ४. राजा। ५. सूर्य। ६. साँड़। वृष। बैल। ७. गोरक्षक। ग्वाल। गोप। अहीर।
गोपद–संज्ञा पुं० गाय के खुर का जमीन पर बना हुआ चिह्न। गौओं के रहने का स्थान। गौशाला।
गोपदी–वि० गाय के खुर के समान। बहुत छोटा।
गोपन–संज्ञा पुं० १. छिपाव। दुराव। २. छिपाना। ३. रक्षा। रक्षण। ४. तेज-पात।
गोपना*†–क्रि० स० छिपाना।
गोपनाई–वि० छिपाने योग्य। गोप्य। गुह्य।
गोपनीय–वि० छिपाने के लायक। गोप्य।
गोपपल्ली–संज्ञा स्त्री० गोपों का वासस्थान।
गोपर–वि० गोतीत। इन्द्रियों से परे।
गोपांगना–संज्ञा स्त्री० गोप (अहीर) जाति की स्त्री।
गोपा–संज्ञा स्त्री० १. गाय पालनेवाली, अहीरिन। ग्वालिन। २. श्यामा-लता। ३. महात्मा बुद्ध की स्त्री का नाम।
गोपाल–संज्ञा पुं० १. गौ का पालन-पोषण करनेवाला। २. अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण। ४. एक छंद।
गोपालक–संज्ञा पुं० गोप। अहीर। ग्वाला। गाय को पालनेवाला।
गोपाल-तापन, गोपालतापनीय–संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।
गोपालय–संज्ञा पुं० गोपगृह। ग्वालों का घर। व्रज।
गोपाष्टमी–संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ला अष्टमी। इस दिन गाय की पूजा की जाती है।
गोपिका–संज्ञा स्त्री० १. गोप की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन। ग्वालिन।
गोपित–वि० १. जिसकी रक्षा या पालन किया गया हो। पालित। २. गुप्त। अप्रकाशित।
गोपी–संज्ञा स्त्री० १. ग्वालिनी। गोपपत्नी। २. श्रीकृष्ण की प्रेमिका व्रज की गोप-जातीय स्त्रियाँ।
गोपीचंदन–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पीली मिट्टी।
गोपीनाथ–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। गोपियों के स्वामी।
गोपुच्छ–संज्ञा पुं० १. गौ की पूँछ। २. एक प्रकार का गावदुमा हार।
गोपुत्र–संज्ञा पुं० कर्ण।
गोपुर–संज्ञा पुं० १. नगर का द्वार। शहर का फाटक। २. किले का फाटक। पुर-द्वार। ३. फाटक। दरवाजा। ४. स्वर्ग। ५. मन्दिर का फाटक।
गोपेन्द्र–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. गोपों में श्रेष्ठ। नंद। गोपों के स्वामी।
गोप्ता–संज्ञा पुं० रक्षा करनेवाला। रक्षक। पालक। छिपानेवाला।

गोप्य–वि० गोपनीय। छिपने या छिपाने योग्य। रक्षणीय। गुप्त रखने योग्य।
गोप्रकांड–संज्ञा पुं० उत्तम गाय। श्रेष्ठ गाय।
गोप्रवेश–संज्ञा पुं० गोधूली।
गोफ–संज्ञा पुं० १. दासीपुत्र। दास। २. गोपियों का समूह। ३. दिखाई देने में बाधा डालनेवाला। गुम्फन।
वि० गुप्त रखने लायक।
गोफन, गोफना–संज्ञा पुं० छींके के आकार का एक जाल जिससे ढेले आदि भरकर चलाते हैं। ढेलवाँस। फन्नी। भिन्दिपाल। गुफना।
संज्ञा स्त्री० जखम की पट्टी।
गोफा–संज्ञा पुं० १. नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता। २. एक हाथ की उँगलियों का दूसरे हाथ की उँगलियों के अन्तर में उठना। ३. सघन। गुम्फन।
गोफिया–संज्ञा पुं० दे० "गोफन"।
गोबर–संज्ञा पुं० गाय की विष्ठा। गौ का मल।
गोबरगणेश–वि० १. मूर्ख। बेवकूफ़। २. भद्दा। बदसूरत। ३. अकर्मण्य। आलसी।
गोबरी–संज्ञा स्त्री० १. कंडा। उपला। २. गोबर की लिपाई। गोमय-लेपन।
गोबरैला, गोबरौंदा–संज्ञा पुं० दे० "गुबरैला"।
गोभिल–संज्ञा पुं० सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
गोभी–संज्ञा स्त्री० १. गोजिया। बनगोभी। २. एक प्रकार का शाक। ३. कली। अंकुर। नई शाखा। कोबी। ४. गोजिह्वा।
गोमंत–संज्ञा पुं० पर्वत-विशेष। एक पहाड़ का नाम। २. गोआ, पोर्तगाली उपनिवेश।
गोमका–संज्ञा पुं० कुम्हड़ा। कोहड़ा।
गोमती–संज्ञा स्त्री० १. एक नदी। वाशिष्ठी। २. एक देवी। ३. ग्यारह मात्राओं का एक छंद। ४. वैदिक मन्त्र-विशेष।
गोमय–संज्ञा पुं० गोबर।
गोमक्षिका–संज्ञा स्त्री० डंस। डाँस।
गोमायु–संज्ञा पुं० शृगाल। सियार। गीदड़।
गोमिथुन–संज्ञा पुं० दो गौ। गौ की जोड़ी।
गोमुख–संज्ञा पुं० १. गौ का मुँह। २. सेंध। सुरंग। ३. नाक नाम का जलजन्तु। ४. योगासन। ५. टेढ़ा-मेढ़ा घर। ६. एक यक्ष। ७. इन्द्रपुत्र। जयन्त के सारथी का नाम। ८. वह शंख जिसका आकार गौ के मुंह के समान होता है। ९. नरसिंहा नाम का बाजा। १०. दे० "गोमुखी"।
मुहा०–गोमुख नाहर या व्याघ्र=देखने में बहुत ही सीधा, पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी व्यक्ति।
गोमुखी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जपमाली। जपगुथली २. गंगोत्तरी। गंगा के निकलने का स्थान जिसका आकार गाय के मुँह की तरह है।
गोमूढ़–वि० गौ के समान मूर्ख। अतिशय अज्ञान। अबोध।
गोमूत्र–संज्ञा पुं० गोमूत। गौ का मूत।
गोमूत्रिका–संज्ञा स्त्री० १. तृण-विशेष। २. एक बन्ध का नाम। ३. काव्य का एक भेद।
गोमेद, गोमेदक–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध मणि। राहुरत्न। २. गौलोचन। ३. शीतल चीनी, कबाब चीनी। पीले रंग का गौ के मस्तक स्थित पदार्थ-विशेष।
गोमेध–संज्ञा पुं० एक यज्ञ जिसमें गाय की बलि चढ़ाई जाती थी।
गोय–संज्ञा पुं० [फ़ा०] गेंद।
गोया–क्रि० वि० [फ़ा०] मानो।
गोर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वह गड्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाय। कब्र। समाधि-स्थान। २. गौर। ३. फरसा।
†वि० दे० "गोरा"।
गोरक्ष–वि० गोपाल। गौ रखनेवाला।
गोरक्षनाथ–संज्ञा पुं० गोरखनाथ।
गोरखइमली–संज्ञा स्त्री० एक बहुत बड़ा पेड़। कल्पवृक्ष।
गोरखधंधा–संज्ञा पुं० १. गोरखपन्थी साधुओं का एक प्रकार का डंडा। २. कोई ऐसा कार्य जिसमें झगड़ा या उलझन हो। झगड़ा। पेच।
गोरखनाथ–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध हठयोगी सिद्ध महात्मा, गोरखपंथ के प्रवर्तक।

गोरखपंथी–वि० गोरखनाथ के अनुयायी। हठयोग की साधना करनेवाले।
गोरखमुंडी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घास। एक औषध।
गोरखा–संज्ञा पुं० नैपाल की एक जाति।
गोरज–संज्ञा पुं० गौ के खुरों से उड़ी हुई धूल।
गोरटा*–वि० [स्त्री० गोरटी] गोरे रंग वाला। गोरा।
गोरमदायन–संज्ञा पुं० इन्द्रधनुष।
गोरस–संज्ञा पुं० १. दूध। दुग्ध। २. दधि। दही। मठा। ३. इंद्रियों का सुख।
गोरसा–संज्ञा पुं० गाय के दूध से पला हुआ बच्चा।
गोरसी–संज्ञा स्त्री० दूध गरम करने की अँगीठी।
गोरा–वि० गौर वर्ण। सफेद और स्वच्छ वर्णवाला। उजला। जिसके शरीर का चमड़ा सफेद हो।
संज्ञा पुं० योरप का निवासी। फिरंगी पलटन का जवान।
गोराई*†–संज्ञा स्त्री० १. गौर वर्ण। गोरपन। २. सुन्दरता।
गोरिल्ला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा बन्दर।
गोरी–संज्ञा स्त्री० सुन्दर और गौरवर्ण की स्त्री। रूपवती स्त्री।
गोरुत–संज्ञा पुं० दो कोस।
गोरू–संज्ञा पुं० सींगवाला पशु। चौपाया। मवेशी।
गोरोचन या **गोरोचना**–संज्ञा पुं० १. एक औषध। २. गाय के हृदय और मस्तक पर स्थित पित्त। ३. पीले और नारंगी रंग से मिली हुई सुपारी।
गोलंदाज–संज्ञा पुं० [फा०] तोप में गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।
गोलंबर–संज्ञा पुं० १. गुंबद। २. गुंबद के आकार का कोई गोल ऊँचा पदार्थ। ३. गोलाई।
गोल–वि० १. जिसका घेरा या परिधि वृत्ताकार हो। चक्र के आकार का। वृत्ताकार। २. गोलाकार। गेंद आदि के आकार का।
संज्ञा पुं० १. मंडलाकार क्षेत्र। वृत्त। २. गोलाकार पिंड। गोला। ३. मंडली। झुंड। ४. वर्णसंकर। विधवा का जारज पुत्र। ५. एक औषध। मदन-वृक्ष। मैनफल। ६. एक देश। ७. अस्पष्ट। ८. एक सुगंधित द्रव्य। ९. एक राशि।
मुहा०–गोल-गोल=१. स्थूल रूप से। मोटे हिसाब से २. अस्पष्ट रूप से। गोल बात=ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो।
गोलक–संज्ञा पुं० १. गोलोक। २. गोल पिंड। ३. विधवा का जारज पुत्र। ४. मिट्टी का बड़ा कुंडा। ५. आँख का डेला। ६. आँख की पुतली। ७. गुंबद। ८. धन जमा करने का छोटा संदूक या थैली। ९. गल्ला। गुल्लक। १०. इत्र। ११. किसी कार्य्य-विशेष के लिए संग्रह किया हुआ धन। फंड। १२. इन्द्रियों का स्थान।
गोलगप्पा–संज्ञा पुं० छोटी तथा फूली हुई फुलकी।
गोलचला–संज्ञा पुं गोलंदाज। तोपची।
गोलमाल–संज्ञा पुं० गड़बड़ी। घपला। धाँधलेबाजी। अव्यवस्था।
गोल मिर्च–संज्ञा स्त्री० काली मिर्च।
गोलयंत्र–संज्ञा पुं० ग्रहों, नक्षत्रों की गति आदि जानने का यंत्र-विशेष।
गोलयोग–संज्ञा पुं० १. ज्योतिष में एक बुरा योग। २. गड़बड़। गोलमाल।
गोलांगूल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बन्दर, जिसकी पूँछ गाय की सी होती है।
गोला–संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। जैसे—लोहे का गोला। २. तोप का बमगोला। ३. वायु-गोला। ४. जंगली कबूतर। ५. नारियल का पिंड। गरी का गोला। ६. बाजार या मंडी, जहाँ अनाज या किराने की दूकानें हों। ७. लकड़ी का लम्बा लट्ठा जो छाजन आदि में काम आता है। कड़ी। बल्ला। ८. गोल लपेटी हुई पिंडी। ९. गेंद। १०. घेरा। मंडल। ११. वृक्ष।
गोलाई–संज्ञा स्त्री० गोलापन।

गोलाकार, गोलाकृति–वि० जो गोल हो। गोल। जिसकी बनावट गोल हो।
गोलाध्याय–संज्ञा पुं० ज्योतिषविद्या। ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम।
गोलार–संज्ञा पुं० गोलाई। हेरफेर।
गोलार्द्ध–संज्ञा पुं० पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है।
गोली–संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोलाकार वस्तु। बटिया। २. औषध की वटिका। बटी। ३. काँच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे बालक खेलते हैं। ४. गोली का खेल। बन्दूक की गोली।
मुहा०—गोली मारना=बन्दूक चलाना। ध्यान न देना।
गोलोक–संज्ञा पुं० कृष्ण का निवासस्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है। वैकुण्ठ। स्वर्ग।
गोलोक-प्राप्ति–संज्ञा स्त्री० स्वर्गवास। मुक्ति।
गोलोकवासी–संज्ञा पुं० भगवान्। श्रीकृष्ण।
गोलोमा–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष।
गोवना*–क्रि० स० दे० "गोना"। छिपाना।
गोवर्द्धन–संज्ञा पुं० वृन्दावन का एक पवित्र पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया था।
गोवर्द्धनधारी–संज्ञा पुं० गोवर्द्धन पर्वत को धारण करनेवाला, श्रीकृष्ण।
गोवशा–संज्ञा स्त्री० बन्ध्या गौ। बहिला गाय।
गोविंद–संज्ञा पुं० १. परब्रह्म। श्रीकृष्ण। २. वेदांतवेत्ता। तत्त्वज्ञ। ३ बृहस्पति। ४. विश्व को जाननेवाला। ५. शंकराचार्य के गुरु का नाम। ६. सिक्खों के दस गुरुओं में से एक।
गोश–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सुनने की इंद्रिय। कान।
गोशमाली–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. कान उमेठना। २. ताड़ना। कड़ी चेतावनी।
गोशवारा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गोंद। २. कान का बाला। कुंडल। ३. बड़ा मोती जो सीप में अकेला हो। ४. कलाबत्तू से बुना हुआ पगड़ी का आँचल। ५. तुर्रा। कलँगी। सिर-पेच। ६. जोड़। मीजान। ७. संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का आय-व्यय अलग-अलग दिखलाया गया हो।
गोशा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कोना। २. एकांत स्थान। ३. तरफ़। दिशा। ओर। ४. कमान की दोनों नोकें। धनुषकोटि।
गोशाला–संज्ञा स्त्री० गौओं के रहने का स्थान।
गोश्त–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मांस।
गोष्ठ–संज्ञा पुं० १. गोशाला। बाड़ा। २. परामर्श। सलाह। ३. दल। मंडली। ४. एक श्राद्ध।
गोष्ठविहार–संज्ञा पुं० गौ चराने के समय श्रीकृष्ण की केलि।
गोष्ठी–संज्ञा स्त्री० १. थोड़े से लोगों की बैठकी। छोटी सभा। २. परिवार। कुटुम्ब। ३. मंडली। वार्त्तालाप। बातचीत। ४. परामर्श। सलाह। ५. एक ही अंक का एक रूपक (नाटक)।
गोष्पद–संज्ञा पुं० गौ के रहने का स्थान। गौ के खुर का प्रमाण।
गोसमावल–संज्ञा पुं० दे० "गोशवारा"।
गोसाईं–संज्ञा पुं० १. गुरु। २. ईश्वर। ३. संन्यासियों का एक भेद। ४. महन्त। साधु। अतीत। ५. मालिक। प्रभु। स्वामी। ६. जितेन्द्रिय।
गोसैयाँ–†संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।
गोस्तन–संज्ञा पुं० १. गाय का थन। २. गुच्छ। घौद। ३. स्तवक।
गोस्तनी–संज्ञा पुं० द्राक्षा। दाख। अंगूर।
गोस्थान–संज्ञा पुं० गोष्ठ। गोठ। गोकुल। गोशाला।
गोस्वामी–संज्ञा पुं० १. जितेन्द्रिय। २. वैष्णव-संप्रदाय के आचार्य। गोपति। गो-रक्षक।
गोह–संज्ञा स्त्री० एक जल-जन्तु।
गोहन*–संज्ञा पुं० १. संग रहनेवाला। साथी। २. संग। साथ।
गोहरा–संज्ञा पुं० सुखाया हुआ गोबर। कंडा। उपला।
गोहराना†–क्रि० स० पुकारना। बुलाना। आवाज देना।

गोहरी–संज्ञा स्त्री० उपरी । कंडा । छरना ।

गोहार–संज्ञा स्त्री० १. पुकार । दुहाई । सहायता के लिए चिल्लाना । २. हल्ला-गुल्ला । शोर । गुल-गपाड़ा ।

गोहारी†–संज्ञा स्त्री० दे० "गोहार" ।

गोही*†–संज्ञा स्त्री० १. दुराव । छिपाव । २. छिपी हुई बात । गुप्त वार्ता । ३. गाँठ । गुठली ।

गौं–संज्ञा स्त्री० १. सुयोग । मौका । घात । सुभीता । दाँव । २. प्रयोजन । ३. ढंग । ढब । तरीका । ४. पार्श्व । पक्ष ।

यौ०–गौं-घात=उपयुक्त अवसर । मतलब । गरज । अर्थ ।

मुहा०–गौं का यार=मतलबी । स्वार्थी । गौं निकलना=काम निकलना । स्वार्थ-सिद्ध होना । गौं पड़ना=गरज होना ।

गौंखा–संज्ञा पुं० ताक । आला । गोखा ।

गौ–संज्ञा स्त्री० गाय । गैया । धेनु ।

गौख†–संज्ञा स्त्री० १. छोटी खिड़की । झरोखा । २. गवाक्ष ।

गौखा†–संज्ञा पुं० १. दे० "गौख" । २. गाय का चमड़ा ।

गौग़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. शोर । गुल-गपाड़ा । हल्ला । २. अफवाह । जनश्रुति । किंवदन्ती ।

गौचरी–संज्ञा स्त्री० गाय चराने का कर ।

गौछई–संज्ञा स्त्री० अंकुर । कैरी । फुनगी ।

गौड़–संज्ञा पुं० १. बंगाल का एक प्राचीन पूर्वीय भाग । २. गौड़ देश का वासी । ३. ब्राह्मणों की एक उपजाति । ४. कायस्थों का एक भेद । ५. गौड़ मल्लार । एक राग ।

गौड़पाद–संज्ञा पुं० शंकराचार्य के गुरु के गुरु ।

गौड़मल्लार–संज्ञा पुं० एक राग ।

गौड़सारंग–संज्ञा पुं० एक राग ।

गौड़ा–संज्ञा पुं० १. उड़ीसा । २. कहार ।

गौड़िया†–वि० १. गौड़ देश का । गौड़ देश-संबंधी । २. महाप्रभु चैतन्यके अनुयायी ।

गौड़ी–संज्ञा स्त्री० १. गुड़ से बनी मदिरा । २. काव्य में एक रीति या वृत्ति । ३. एक रागिनी ।

गौड़ेश्वर–संज्ञा पुं० कृष्ण चैतन्य स्वामी । गौरांग प्रभु ।

गौण–वि० १. अप्रधान । साधारण । २. सहायक । संचारी । अधीन । गौणीवृत्ति-द्वारा अर्थ का बोध ।

गौणकाल–संज्ञा पुं० अप्रधान काल ।

गौणी–वि० अप्रधान । साधारण ।

संज्ञा स्त्री० एक लक्षण जिसमें किसी एक वस्तु का गुण दूसरे में आरोपित किया जाय ।

गौतम–संज्ञा पुं० १. गोतम ऋषि के वंशज ऋषि । २. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य ऋषि । ३. बुद्धदेव का दूसरा नाम । ४. सप्तर्षि-मंडल में से एक । ५. अहल्या के पति । ६. पर्वत का नाम जिससे गोदावरी निकलती है ।

गौतमी–संज्ञा स्त्री० १. गौतम ऋषि की स्त्री, अहल्या । २. कृपाचार्य की स्त्री । ३. गोदावरी नदी । ४. दुर्गा । ५. गौतम की बनाई हुई स्मृति ।

गौदुमा–वि० दे० "गावदुम" ।

गौन†–संज्ञा पुं० दे० "गमन" ।

गौनहाई†–वि० जिस स्त्री का गौना हाल में हुआ हो ।

गौनहार–संज्ञा स्त्री० १. दुलहिन के साथ ससुराल जानेवाली स्त्री । २. दे० "गौनहारी" । गौने के बराती ।

गौनहारिन, गौनहारी–संज्ञा स्त्री० गाने का पेशा करनेवाली स्त्री ।

गौना–संज्ञा पुं० विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वर वधू को अपने साथ घर ले आता है । द्विरागमन ।

गौर–वि० १. गोरा । २. श्वेत । उज्ज्वल । सफेद । सुंदर ।

संज्ञा पुं० १. लाल रंग । २. पीला रंग । ३. चंद्रमा । ४. सोना । ५. केसर । ६. गौड़ । ७. धव वृक्ष । ८. माप-विशेष । ९. पर्वत-विशेष । १०. कपूर । पार्वती ।

ग़ौर–संज्ञा पुं० [अ०] १. सोच-विचार । चिंतन । २. खयाल । ध्यान ।

गोरता–संज्ञा स्त्री० १. गोराई। गोरापन। २. सफेदी।
गौरव–संज्ञा पुं० १. बड़प्पन। प्रभाव। महत्त्व। २. गुरुता। भारीपन। ३. सम्मान। आदर। इज्जत। ४. उत्कर्ष। ५. अभ्युत्थान। ६. प्रभाव। ७. मर्यादा। ८. भार। ९. रुकाव। १०. प्रतिष्ठा। यश। बड़ाई।
गौरवजनक–वि० मर्यादाजनक। सम्मान-सूचक।
गौरवान्वित–वि० गौरवयुक्त। गौरव या महिमा से युक्त। प्रतिष्ठित। सम्मानित। मान्य। पूज्य।
गौरवित–वि० दे० "गौरवान्वित"।
गौरवी–वि० [स्त्री० गौरविनी] दे० "गौरवान्वित"। अभिमानी।
गौरांग–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. चैतन्य महाप्रभु।
वि० १. श्वेतवर्ण। सुन्दर। २. पीतवर्ण। ३. योरोपियन। गोरे अंगवाला।
गौरा–संज्ञा स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। दुर्गा। ३. हल्दी। ४. पक्षी-विशेष।
गौरिका–संज्ञा स्त्री० आठ वर्ष की कन्या।
गौरिया–संज्ञा स्त्री० १. एक पक्षी। २. मिट्टी का छोटा हुक्का। ३. चटक। ४. गौरा। ५. एक प्रकार का कपड़ा।
गौरिला–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरती।
गौरी–संज्ञा स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। उमा। ३. आठ वर्ष की कन्या। ४. हल्दी। ५. तुलसी। ६. गोरोचन। ७. सफेद रंग की गाय। ८. सफेद दूब। ९. गंगा नदी। १०. पृथिवी। ११. वरुण की स्त्री। १२. बुद्ध की एक शक्ति का नाम। १३. जटामाँसी। १४. रागिनी-विशेष।
गौरीचन्दन–संज्ञा पुं० लाल चन्दन।
गौरीज–संज्ञा पुं० १. कार्तिकेय। २. गणेश। ३. अभ्रक। अबरक।
गौरीपति–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
गौरीपुत्र–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय। गणेश।
गौरीशंकर–संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव। २. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।
गौरीश–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
गौरैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया"।
गौल्मिक–संज्ञा पुं० एक गुल्म या ३० सैनिकों का नायक।
गौहर–संज्ञा पुं० मोती।
गौशाला–संज्ञा स्त्री० गायों के रहने का स्थान या घर। गोष्ठ।
ग्यान†–संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान"।
ग्यारस–संज्ञा स्त्री० एकादशी तिथि। व्रत-विशेष।
ग्यारह–वि० दस और एक।
संज्ञा पुं० दस और एक की सूचक संख्या। ११।
ग्यारहवाँ–वि० ग्यारहवीं संख्या का। ग्यारह स्थान का।
ग्रंथ–संज्ञा पुं० १. पुस्तक। किताब। २. गाँठ देना या लगाना। ३. धन। ४. प्रबंध। शास्त्र। ५. अनुष्टुप छंद। श्लोक।
ग्रंथक–संज्ञा पुं० १. निर्माणकर्त्ता। पुस्तक के रचयिता। २. निबन्धकार। माला का सूत्र।
ग्रंथकर्त्ता, ग्रंथकार–संज्ञा पुं० ग्रंथ की रचना करनेवाला।
ग्रंथचुंबक–संज्ञा पुं० जो ग्रंथ को केवल साधारण रूप से पढ़े हो। अल्पज्ञ।
ग्रंथचुंबन–संज्ञा पुं० किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना।
ग्रंथन–संज्ञा पुं० १. गोंद लगाकर जोड़ना। २. जोड़ना। ३. गूँथना। ४. गुम्फन। ५. निर्माण।
ग्रंथसंधि–संज्ञा स्त्री० ग्रंथ का विभाग। जैसे—सर्ग, अध्याय आदि।
ग्रंथ साहब–संज्ञा पुं० सिक्खों की धर्म-पुस्तक।
ग्रंथि–संज्ञा स्त्री० १. गाँठ। २. बंधन। ३. मायाजाल। ४. एक रोग। ५. कुटिलता। ६. आलू। ७. भद्रमोथा।
ग्रंथिक–संज्ञा पुं० १. दैवज्ञ। गणक। २. सहदेव

नामक पांडव । ३. पीपरामूल । ४. करीर । ५. गुग्गुल । गठिवन ।

ग्रंथित–वि० १. गूँथा हुआ । ग्रथित । २. गाँठ दिया हुआ । जिसमें गाँठ लगी हो । ३. रचित । निर्मित ।

ग्रंथिपर्णी–संज्ञा स्त्री० गाँड़र । दूब ।

ग्रंथिबंधन–संज्ञा पुं० विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गाँठ देकर बाँधना । गँठबंधन ।

ग्रंथिमान–संज्ञा पुं० १. हरसिंगार । २. जड़ । ३. हड़जोड़ औषध, जिससे टूटी हड्डी जुड़ जाती है ।

ग्रंथिल–वि० गाँठदार । गँठीला ।

संज्ञा पुं० १. अदरख । आदी । २. कांकई वृक्ष । ३. करील । ४. आलू ।

ग्रथित–वि० गाँठ देकर बाँधा हुआ । एक में गुथा या पिरोया हुआ ।

ग्रसन–संज्ञा पुं० १. भोजन करना । भक्षण । निगलना । २. पकड़ । ग्रहण । ३. ग्रास । ४. आक्रमण ।

ग्रसना–क्रि० स० १. पकड़ना । २. सताना ।

ग्रसित–वि० दे० "ग्रस्त" ।

ग्रस्त–वि० १. पकड़ा हुआ । २. पीड़ित । ३. खाया हुआ । आच्छादित । आक्रान्त ।

ग्रस्तास्त–संज्ञा पुं० ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य का अस्त होना ।

ग्रस्तोदय–संज्ञा पुं० ग्रहण लगने पर चन्द्रमा या सूर्य का उदय होना ।

ग्रह–संज्ञा पुं० १. सूर्य आदि नवग्रह । २. नौ की संख्या । ३. ग्रहण करना । लेना । ४. अनुग्रह । कृपा । ५. चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण । ६. राहु । ७. छोटे बच्चों के रोग । ८. निर्बन्ध । ९. आग्रह । १०. हठ । ११. अध्यवसाय ।

मुहा०–अच्छे ग्रह होना=अच्छा समय होना । फलित के अनुसार शुभ या अनुकूल ग्रह होना । बुरे ग्रह होना=ग्रहों का प्रतिकूल होना ।

†वि० दुख देनेवाला ।

ग्रहकल्लोल–संज्ञा पुं० आठवाँ ग्रह । राहु ।

ग्रहण–संज्ञा पुं० १. जब सूर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्रमा के आ जाने से सूर्य का कुछ या सम्पूर्ण भाग नहीं दिखलाई पड़ता, तो उसे सूर्यग्रहण कहते हैं । जब चन्द्रमा और सूर्य के बीच पृथ्वी के आ जाने से सूर्य की किरणें चन्द्रमा तक नहीं पहुँच पातीं और उसका कुछ या सम्पूर्ण प्रकाश हीन हो जाता है तब उसे चन्द्र-ग्रहण कहते हैं । २. सूर्य या चन्द्रमा के कुछ या सम्पूर्ण भाग का अदृश्य हो जाना । ३. स्वीकार । मंजूरी । ४. लेना, उपलब्धि, प्राप्ति ।

ग्रहणांत–संज्ञा पुं० ग्रहण की समाप्ति । मोक्ष । उग्रह ।

ग्रहणी–संज्ञा स्त्री० अतिसार रोग । संग्रहणी ।

ग्रहणीय–वि० ग्रहण करने योग्य । ग्राह्य ।

ग्रहदशा–संज्ञा स्त्री० १. ग्रहों की स्थिति । २. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था । ३. अभाग्य ।

ग्रहपति–संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. शनि । ३. आक का पेड़ ।

ग्रहवेध–संज्ञा पुं० ग्रह की स्थिति आदि का जानना ।

ग्रहस्थापन–संज्ञा पुं० नवग्रहों की स्थापना । पूजा-विशेष ।

ग्रहीत–वि० पकड़ा हुआ ।

ग्रहीता–वि० ग्रहणकर्त्ता । ग्राहक । पकड़ा हुआ ।

ग्रांडील–वि० ऊँचे कद का । बहुत बड़ा या ऊँचा । विशालकाय ।

ग्राम–संज्ञा पुं० १. गाँव । २. मनुष्यों के रहने का स्थान । बस्ती । आबादी । जनपद । ३. समूह । ढेर । ४. शिव । ५. क्रम से सात स्वरों का समूह । सप्तक (संगीत) ।

ग्रामकुक्कुट–संज्ञा पुं० पालतू मुर्गा ।

ग्रामणी–संज्ञा पुं० १. गाँव का मुखिया, मालिक । २. प्रधान । अगुवा । ३. विष्णु । ४. मंडल । ५. नापित । ६. यक्ष । ७. नील का पेड़ ।

संज्ञा स्त्री० वेश्या ।

ग्रामदेवता–संज्ञा पुं० १. किसी एक गाँव

में पूजा जानेवाला देवता। २. गाँव की रक्षा करनेवाला देवता।

ग्रामयाजक—संज्ञा पुं० गाँव का पुरोहित।

ग्रामवासी—संज्ञा पुं० गाँव का रहनेवाला।

ग्रामिक—वि० ग्राम्य। देहाती। गाँव का।

ग्रामीण—वि० देहाती। गँवार। ग्रामवासी। संज्ञा पुं० गाँव में उत्पन्न।

ग्रामपंच—संज्ञा पुं० गाँव के झगड़े मिटानेवाले। गाँव के मुखिया।

ग्रामेश—संज्ञा पुं० गाँव का मालिक, जमींदार।

ग्राम्य—वि० १. गाँव से संबंध रखनेवाला। ग्रामीण। २. मूर्ख। मूढ़। ३. प्राकृत। असली। ४. छल-कपट-रहित। संज्ञा पुं० १. काव्य में भद्दे या गँवारू शब्द आने का दोष। २. अश्लील शब्द या वाक्य। ३. मैथुन। स्त्री-प्रसंग। ४. राशि। ५. गधा, घोड़ा, खच्चर, बैल पशु जो गाँवों में पाले जाते हैं।

ग्राम्यदेवता—संज्ञा पुं० ग्रामरक्षक। देवता।

ग्राम्यधर्म—संज्ञा पुं० मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

ग्राव—संज्ञा पुं० पर्वत। पत्थर। ओला। बिनौरी।

ग्रास—संज्ञा पुं० १. मुंह में जितना भोजन एक बार में डाला जाय। गस्सा। कौर। निवाला। २. पकड़ने की क्रिया। पकड़। ३. ग्रहण लगना।

ग्रासक—वि० १. पकड़नेवाला। २. भक्षक। निगलनेवाला। ३. छिपाने या दबानेवाला। रोकनेवाला।

ग्रासना—क्रि० स० दे० "ग्रसना"। १. रोकना, घेरना। २. दबाना। छिपाना ३. भक्षण करना।

ग्रासाच्छादन—संज्ञा पुं० अन्न-वस्त्र। रोटी-कपड़ा।

ग्राह—संज्ञा पुं० १. मगर। घड़ियाल। नक्र। २. ग्रहण। ३. उपराग। ४. पकड़ना। लेना।

ग्राहक—संज्ञा पुं० १. ग्रहण करनेवाला। २. मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला। खरीदार। ३. लेने या पाने की इच्छा रखनेवाला। चाहनेवाला। ४. एक औषध। ५. सँपेरा।

ग्राही—संज्ञा पुं० [स्त्री० ग्राहिणी] १. वह जो ग्रहण करे। स्वीकार करनेवाला। २. मल रोकनेवाला पदार्थ। ३. कैथा।

ग्राह्य—वि० १. लेने योग्य। २. स्वीकार करने योग्य। ३. जानने योग्य।

ग्रीवा—संज्ञा स्त्री० गर्दन। कंठ। गले के नीचे का भाग।

ग्रीवाभरण—संज्ञा पुं० कंठभूषण। कंठा।

ग्रीषम*†—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

ग्रीष्म—संज्ञा स्त्री० १. गरमी की ऋतु। गरमी। जेठ असाढ़ का समय। २. उष्ण। गरम।

ग्रीष्मकाल—संज्ञा पुं० निदाघ। गरमी के दिन।

ग्रैवेय—संज्ञा पुं० कंठभूषण। गले का गहना।

ग्लपित—वि० अवसन्न। थका हुआ। श्रांत। थकावट।

ग्लह—संज्ञा पुं० जुए की बाजी। पण। दाँव।

ग्लान—वि० रोग-द्वारा दुर्बल शरीर। रोगी। खिन्न। कमजोर।

ग्लानि—संज्ञा स्त्री० १. मानसिक शिथिलता। अनुत्साह। खेद। २. श्रांति। निन्दा। मानसिक व्यथा। खिन्नता।

ग्वार—संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है। कौरी। खुरथी।

ग्वारनट, ग्वारनेट—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा—संज्ञा पुं० घीकुआँर।

ग्वारफली—संज्ञा स्त्री० ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

ग्वारी—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्वार"।

ग्वाल—संज्ञा पुं० १. अहीर। २. एक छंद का नाम।

ग्वाला—संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"। अहीर। गोप।

ग्वालिन—संज्ञा स्त्री० १. ग्वाले की स्त्री।

ग्वाल जाति की स्त्री। २. गोपी। ग्वार। ३. एक बरसाती कीड़ा। गिंजाई। घिनौरी।

ग्वैंठना†*–क्रि० स० मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना।

ग्वैंडा†*–संज्ञा पुं० दे० "गोइँड़"। समीप। निकट। आसपास। नगर के समीप।

ग्वैंडे–अव्य० पास। समीप। निकट।

ग्लौ–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. शशि। ३. विष्णु। कपूर।

घ

घ–हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन। इसका उच्चारण जिह्वा-मूल या कण्ठ से होता है।
संज्ञा पुं० १. घंटा। घर्घर शब्द। २. मेघ। ३. धूप।

घँघरा, घँघरी–संज्ञा स्त्री० लहँगा। साया। स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र।

घँघराघोर–संज्ञा पुं० भ्रष्टाचार।

घँघोरना या घँघोलना–क्रि० स० १. हिलाकर घोलना। २. पानी को हिलाकर मैला करना। कलुषित करना। कछारना। गँदला करना।

घँच–संज्ञा पुं० गला। कंठ। ग्रीवा।

घंट–संज्ञा पुं० १. घड़ा। २. जलपात्र जो श्राद्ध-कर्म में पीपल में बाँधा जाता है। दे० "घंटा"।

घंटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० घंटी] १. बाजा। घड़ियाल। २. दिन-रात का चौबीसवाँ भाग। साठ मिनट का समय। ३. समयसूचक ध्वनि।

घंटाघर–संज्ञा पुं० ऊँचे स्तम्भ पर लगी हुई बड़ी घड़ी जो दूर से दिखाई तथा सुनाई देती है। वह घड़ी जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

घंटापथ–संज्ञा पुं० गाँव का प्रधान मार्ग।

घंटालि–संज्ञा स्त्री० छोटा घंटा। वृक्ष-विशेष।

घंटिका–संज्ञा स्त्री० १. एक बहुत छोटा घंटा। २. घुंघुरू। ३. तालु के ऊपर की छोटी जीभ। घाँटी। लोला।

घंटी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी लोटिया। बहुत छोटा घंटा। २. घंटी बजने का शब्द। ३. घुंघुरू। चौरासी। ४. गले की हड्डी की गुरिया। ५. गले के अंदर मांस की छोटी पिंडी जो जीभ के पास लटकती रहती है। कौआ।

घंटू–संज्ञा पुं० १. हाथी का घंटा। २. प्रताप। ३. उत्ताप। ४. घंटीमाला।

घंटेश्वर–संज्ञा पुं० देवता-विशेष। शिव का एक अनुचर (घटोत्कर्ण)। मंगल का पुत्र।

घई*–संज्ञा स्त्री० १. गंभीर भँवर। पानी का चक्कर। २. थूनी। टेक।
वि० जिसकी थाह न लग सके। बहुत गहरा। अथाह।

घघरा–संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

घचाघच–संज्ञा पुं० १. नरम वस्तु में धारदार वस्तु के धँसने का शब्द। २. ठसाठस। अत्यन्त संकीर्ण। लबालब भरा हुआ।

घटंत–संज्ञा स्त्री० ह्रास। हीनता। उतार। न्यूनता। कमी। अल्पता।

घट–संज्ञा पुं० १. घड़ा। कुंभ। जलपात्र। कलस। २. परिमाण-विशेष। ३. अन्तःकरण। मन। ४. पिंड। शरीर।
वि० घटा हुआ। कम।
मुहा०–घट में बसना या बैठना=मन में बसना। ध्यान पर चढ़ा रहना। घट-घट व्यापी=अन्तर्यामी।

घटक–संज्ञा पुं० १. घड़ा। २. बीच में पड़नेवाला। दलाल। मध्यस्थ। योजक। कुटना। दूत। विवाह-संबंध तय करानेवाला। ३. चतुर व्यक्ति। ४. चारण।

घटकता–संज्ञा स्त्री० १. मध्यस्थता। २. दौत्य। ३. कुटनापन।

घटकर्ण–*संज्ञा पुं० दे० "कुंभकर्ण"।

घटकर्पर—राजा विक्रमादित्य की सभा के एक सभापंडित।

घटका—संज्ञा पुं० मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक-रुककर घरघराहट के साथ निकलती है। कफ छेंकने की अवस्था। घर्रा।

घटज—संज्ञा पुं० कुंभज ऋषि। अगस्त्य मुनि।

घटती—संज्ञा स्त्री० १. कमी। अवनति। न्यूनता। २. घाटा। हीनता। अप्रतिष्ठा।

घटदासी—संज्ञा स्त्री० कुटनी। दूती। मेल करानेवाली।

घटन—संज्ञा पुं० [वि० घटनीय, घटित] १. गढ़ा जाना। २. प्रयत्न। उपस्थित होना। जो हो रहा हो। ३. कोई घटना होना।

घटना—क्रि० अ० १. उपस्थित होना। होना। २. अद्‌भुत कार्य। विलक्षण दृश्य। योजन। मिलन। ३. ठीक उतरना। सटीक बैठना। ४. कम होना। न्यून होना। क्षीण होना।

संज्ञा स्त्री० कोई बात जो हो जाय। वाकया। वारदात।

घटनीय—वि० संभाव्य। योग्य। होने योग्य।

घटबढ़—संज्ञा स्त्री० कमी-बेशी। न्यूनाधिकता।

घटयोनि—संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि। कुंभज।

घटवाई—संज्ञा पुं० घाट का कर लेनेवाला। संज्ञा स्त्री० कम कराना।

घटवाना—क्रि० स० घटाने का काम कराना। कम कराना।

घटवार, घटवारिया, घटवालिया—संज्ञा पुं० १. घाटवाला। घाटिया। घाट का देवता। २. घाट का महसूल लेनेवाला। ३. मल्लाह। केवट। ४. घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण।

घटसंभव—संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि।

घट-स्थापन—संज्ञा पुं० १. किसी मंगल-कार्य या पूजन आदि के पूर्व जलभरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन। (इस दिन से देवी की पूजा का आरंभ होता है।)

घटहा—संज्ञा पुं० १. घाट का ठेका लेनेवाला। २. नदी के इस पार से उस पार जानेवाली नियत नाव। ३. अपराधी। दोषी।

घटा—संज्ञा स्त्री० १. मेघ। बादल। मेघमाला। बादलों का समूह। उमड़े हुए बादल। २. भीड़।

क्रि० अ० कम हुआ। घट गया।

घटाई*—संज्ञा स्त्री० हीनता। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। कमी।

घटाकाश—संज्ञा पुं० घड़ों के अंदर की खाली जगह। सर्वत्र।

घटाटोप—संज्ञा पुं० १. आकाश में बादलों की चारों ओर से ऐसी घटा जिससे एकदम अन्धकार हो जाय। गहरी बदली। अत्यन्त अन्धकार। २. गाड़ी या बहली को ढक लेनेवाला ओहार। यवनिका। ३. दम्भ। अभिमान।

घटाना—क्रि० स० १. कम करना। २. बाकी निकालना। काटना। ३. अपमान करना।

घटाव—संज्ञा पुं० १. उतार। न्यूनता। कमी। २. अवनति। ३. नदी की बाढ़ की कमी।

घटावना‡*—क्रि० स० दे० "घटाना"।

घटिक—संज्ञा पुं० घंटा पूरा होने पर घंटा बजानेवाला व्यक्ति।

घटिका—संज्ञा स्त्री० १. छोटा घड़ा या नाँद। २. घटी यंत्र। घड़ी। ३. मुहूर्त। दण्ड। गुल्फ। २४ मिनट का समय। ४. ऐंड़ी के ऊपर का भाग।

घटित—वि० १. जो हो चुका हो। जो घटना हो चुकी हो। बना हुआ। रचा हुआ। रचित। २. संयुक्त।

घटिया—वि० १. खराब। सस्ता। 'बढ़िया' का उलटा। २. तुच्छ। निकृष्ट। ३. कम दाम की वस्तु।

घटियाई—संज्ञा स्त्री० नीचता।

घटिहा—वि० १. घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २. चालाक। मक्कार।

३. धोखेबाज। बेईमान। ४. व्यभिचारी। लंपट । ५. दुष्ट । दे० "घटिया" ।

घटी–संज्ञा स्त्री० १. २४ मिनट का समय। घड़ी। मुहूर्त्त। २. समयसूचक यंत्र, घड़ी। ३. घाटा । कमी । न्यूनता । ४. हानि । क्षति। नुकसान।

घटीकार–संज्ञा पुं० घड़ी बनानेवाला । घड़ीसाज । कुम्हार।

घटीयंत्र–संज्ञा पुं० १. समयसूचक यंत्र । घड़ी । २. जल निकालने का यंत्र।

घटूका*–संज्ञा पुं० दे० "घटोत्कच"।

घटोत्कच–संज्ञा पुं० हिडिंबा से उत्पन्न भीम का पुत्र । राक्षस-विशेष । महाभारत के रणक्षेत्र में इसने पाण्डवों की ओर से युद्ध किया था। कर्ण ने इन्द्रप्रदत्त शक्ति से इसका वध किया था।

घट्ठा–संज्ञा पुं० चाम का वह भाग जो काम करने या रगड़ लगने से मोटा हो गया हो।

घड़घड़ाना–क्रि० अ० गड़गड़ या घड़घड़ शब्द करना। गड़गड़ाना। गरजना। तड़कना।

घड़घड़ाहट–संज्ञा स्त्री० घड़घड़ शब्द होना।

घड़त–संज्ञा स्त्री० बनावट। साँचा। आकृति। डील।

घड़नई, घरनई या घन्नई–संज्ञा स्त्री० दे० "घड़नैल"।

घड़ना–क्रि० स० दे० "गढ़ना"। बनाना। निर्माण करना।

घड़नैल–संज्ञा स्त्री० बाँस या लकड़ियों में घड़े बाँधकर बनाया हुआ बेड़ा जिससे छोटी-छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़ा–संज्ञा पुं० मिट्टी का बरतन। जलपात्र। बड़ी गगरी। गगरा। कलस। घट।

मुहा०—घड़ों पानी पड़ जाना=अत्यंत लज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।

घड़ाना–क्रि० स० दे० "गढ़ाना"।

घड़िया–संज्ञा स्त्री० १. कुल्हिया। मिट्टी का बरतन जिसमें सोनार सोना-चाँदी गलाते हैं। २. मिट्टी का छोटा प्याला। ३. शहद का छत्ता। ४. गर्भाशय। ५. पानी के रहँट की छोटी-छोटी ठिलियाँ।

घड़ियाल–संज्ञा पुं० १. पानी का एक खूंखार जानवर। मगर। ग्राह। २. पूजा के समय बजाया जानेवाला घंटा।

मुहा०–घड़ियाली आँसू बहाना=दिखावटी अफसोस या सहानुभूति। केवल दिखाने के लिए बातें बनाना।

घड़ियाली—संज्ञा पुं० घंटा बजाने या बनानेवाला।

वि० घड़ियाल से संबंधित।

घड़ी–संज्ञा स्त्री० १. दिन-रात का ३२वाँ भाग। २४ मिनट का समय। साठ पल। २. समय। काल। ३. अवसर। उपयुक्त समय। ४. समय-सूचक यंत्र।

मुहा०—घड़ी-घड़ी=बार-बार। थोड़ी-थोड़ी देर पर। घड़ी गिनना=१. उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। २. मरने के निकट होना। घड़ी में तोला घड़ी में माशा=अव्यवस्थित चित्त। जिसकी चित्तवृत्ति क्षण-क्षण में बदलती रहे।

घड़ीदिया–संज्ञा पुं० वह घड़ा और दिया जो किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

घड़ीसाज–संज्ञा पुं० घड़ी मरम्मत करनेवाला।

घड़ोंचा या घड़ौंची–संज्ञा स्त्री० पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई। लटकन। पलहँड़ा।

घतिया–संज्ञा पुं० घात करनेवाला। धोखा देनेवाला। घातक। नृशंस। क्रूरकर्मा। हत्यारा।

घतियाना–क्रि० स० १. अपनी घात या दाँव में लाना। २. चुराना। छिपाना।

घन–संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. हथौड़ा। ३. समूह। झुंड। ४. कपूर। ५. घंटा। घड़ियाल। ६. वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणन करने से प्राप्त हो। ७. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार। ८. ताल देने का बाजा। ९. पिंड। शरीर।

वि० १. घना। २. गठा हुआ। ठोस। ३. दृढ़। मजबूत। ४. बहुत अधिक।

५. सजातीय। ६. मोटा। ७. निबिड़। गाढ़। अविरल।
घनक—संज्ञा स्त्री० गड़गड़ाहट। गरज।
घनकना—क्रि० अ० गरजना।
घनकाल—संज्ञा पुं० वर्षा-ऋतु।
घनकोदंड—संज्ञा पुं० इन्द्रधनुष।
घनगरज—संज्ञा स्त्री० १. बादल के गरजने की ध्वनि। मेघ-गर्जन। २. एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है। ३. ढिंगरी। एक तोप का नाम।
घनगोलक—संज्ञा पुं० सोना और चाँदी का मिलान।
घनघन—संज्ञा पुं० १. सैवंदा। सदा। २. एक प्रकार का शब्द।
घनघनाना—क्रि० स० घन-घन शब्द करना।
घनघनाहट—संज्ञा स्त्री० घन-घन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि।
घनघेरा—संज्ञा पुं० घँघरा। लहँगा।
घनघोर—संज्ञा पुं० १. बादल की गरज। २. घनघनाहट। लगातार बहुत जोर की आवाज। भीषण ध्वनि।
वि० १. बहुत घना। गहरा। २. भीषण।
यौ०—घनघोर-घटा=बड़ी गहरी काली घटा।
घनचक्कर—संज्ञा पुं० १. मूर्ख। बेवकूफ। मूढ़। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला। आवारा। निठल्ला।
घनज्वाला—संज्ञा स्त्री० विद्युत्। बिजुली।
घनता—संज्ञा स्त्री० ठोसपन। गाढ़ापन। सघनता।
घनताल—संज्ञा पुं० १. पपीहा। २. करताल।
घनतोल—संज्ञा पुं० पपीहा।
घनत्व—संज्ञा पुं० १. घना होने का भाव। घनापन। सघनता। २. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव। ठोसपन।
घनध्वनि—संज्ञा पुं० मेघगर्जन। बादलों की गड़-गड़ाहट।
घननाद—संज्ञा पुं० १. मेघ का शब्द। २. रावण का पुत्र। मेघनाद। इन्द्रजित।
घननिहार—संज्ञा पुं० तुषार-राशि। तुषार। पाला। बर्फ।
घनफल—संज्ञा पुं० १. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल। २. वह गुणनफल जो किसी संख्या को उस संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।
घनबान—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाण जिससे बादल छा जाते थे।
घनबेल—वि० जिसमें बेलबूटे हों। बेलबूटेदार।
घनमूल—संज्ञा पुं० गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक। जैसे—२७ का घनमूल ३ होगा।
घनरस—संज्ञा पुं० १. कपूर। २. पानी। ३. हाथियों का एक रोग।
घनवर्धन—संज्ञा पुं० धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना।
घनवर्धनीयता—संज्ञा पुं० धातुओं आदि का वह गुण जिससे वे पीटने पर बढ़ती हैं।
घनवाह—संज्ञा पुं० हवा।
घनवाही—संज्ञा स्त्री० घन से कूटने का काम। घन चलानेवाले के खड़ा होने का गड्ढा।
घनश्याम—संज्ञा पुं० १. काला बादल। २. श्रीकृष्ण। ३. रामचन्द्र।
घनसमय—संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु।
घनसार—संज्ञा पुं० कपूर।
घना—वि० [स्त्री० घनी] १. सघन। गुंजान। २. घनिष्ठ। गहरा। निकट का। ३. बहुत। अधिक। प्रचुर।
घनाक्षरी—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद। कवित्त। मनहर छन्द।
घनात्मक—वि० १. जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) बराबर हो। २. जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।
घनानंद—संज्ञा पुं० हिन्दी के एक सुप्रसिद्ध कवि, जिन्हें आनन्दघन भी कहते हैं।
घनाली—संज्ञा स्त्री० बादलों की पंक्ति या समूह।
घनासन—संज्ञा पुं० भैंसा। महिष।
घनाह्व—संज्ञा पुं० औषध-विशेष। नागरमोथा।
घनिष्ठ—वि० १. गाढ़ा। घना। २. निकटस्थ। नजदीकी।

घने–वि० बहुत से । अनेक ।
घनेरा*†–वि० [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक । अतिशय ।
घन्नई–संज्ञा स्त्री० घड़ों को लकड़ियों में बाँधकर बनाया गया बेड़ा जिसमें छोटी नदियाँ पार की जाती हैं ।
घपचिआना–क्रि० अ० घबड़ाना ।
घपची–संज्ञा स्त्री० दोनों हाथों की मजबूत पकड़ या गठन ।
घपला–संज्ञा पुं० ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे को अलग करना कठिन हो । गड़बड़ । गोलमाल ।
घपुआ–वि० मूर्ख । उल्लू ।
घबड़ाना–क्रि० अ० दे० "घबराना" ।
घबराना–क्रि० अ० १. व्याकुल होना । हड़बड़ाना । उद्विग्न होना । २. किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ होना । ३. उतावला होना । जल्दी मचाना । ४. जी न लगना । उचाट होना । क्रि० स० १. व्याकुल करना । अधीर करना । २. गड़बड़ी डालना । ३. हैरान करना । ४. उचाट करना ।
घबड़ाहट या घबराहट–संज्ञा स्त्री० १. व्याकुलता । अधीरता । उद्विग्नता । उद्वेग । २. किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता । ३. उतावली । ४. अशान्ति ।
घबरी–संज्ञा स्त्री० गुच्छा । स्तवक । फूलों का गुच्छा ।
घमंड–संज्ञा पुं० १. अभिमान । अहंकार । २. जोर ।
घमंडी–वि० [स्त्री० घमंडिन] अहंकारी । अभिमानी ।
घमकना–क्रि० अ० घमघम शब्द होना । †क्रि० स० घूँसा मारना ।
घमका–संज्ञा पुं० गदा या घूँसे का शब्द । चोट लगने का शब्द ।
घमखोर–वि० घाम खानेवाला । जिसमें धूप सहने की शक्ति हो ।
घमघमाना–क्रि० अ० घम-घम शब्द होना । क्रि० स० घूँसा मारना ।
घमर–संज्ञा पुं० नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द । गंभीर ध्वनि ।
घमरौल–संज्ञा स्त्री० कोलाहल । भीड़भाड़ ।
घमस–संज्ञा स्त्री० निर्वात । वायुरहित । ऊमस ।
घमसान–संज्ञा पुं० भयंकर युद्ध । गहरी लड़ाई ।
घमाका–संज्ञा पुं० १. भारी आवाज । २. 'घम' की आवाज । ३. भारी आघात का शब्द ।
घमाघम–संज्ञा स्त्री० १. तड़ातड़ घमघम की ध्वनि । २. अधिक धूप । धूप ही धूप । क्रि० वि० घम-घम शब्द के साथ ।
घमाघमी–संज्ञा स्त्री० मारपीट । क्रि० वि० घमघम शब्द के साथ ।
घमाना†–क्रि अ० घाम लेना । धूप में बैठना ।
घमायल–वि० घाम में पका हुआ ।
घमासान–संज्ञा पुं० दे० "घमसान" ।
घमोई या घमोर–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का काँटेदार पौधा । भड़भाँड़ ।
घमोय–संज्ञा स्त्री० कँटीले पत्तों का एक पौधा । भँड़भाँड़ ।
घमौरी–संज्ञा स्त्री० अम्भौरी । अँधौरी ।
घर–संज्ञा पुं० [वि० घराऊ, घरू, घरेलू] १. निवासस्थान । मकान । गृह । २. पति । स्वामी । ३. जन्मस्थान । जन्म-भूमि । स्वदेश । ४. स्त्री । पत्नी । ५. घराना । कुल । वंश । खानदान । ६. कार्य्यालय । कारखाना । ७. कोठरी । कमरा । ८. घिरा हुआ स्थान । खाना रखने की जगह । कोठा । ९. किसी वस्तु के सामने का स्थान । १०. छोटा गड्ढा । ११. छेद । बिल । १२. मूल कारण । उत्पन्न करने वाला १३. गृहस्थी ।
मुहा०—घर करना=१. बसना । रहना । निवास करना । २. स्थान निकालना । ३. घुसना । धँसना । चित्त, मन या आँख में घर करना=अत्यंत प्रिय होना । घर जाना=घर पर किसी आपत्ति का पड़ना, उजड़ना, बिगड़ना । घर का=१. निज का अपना । २. आपस का । सम्बन्धी या आत्मीय । घर का न घाट का=१.जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो ।

२. निकम्मा। बेकाम। घर के बाढ़े=घर ही में बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला। घर के घर रहना=न हानि उठाना न लाभ। बराबर रहना। घरबाट=१. रंग-ढंग। चाल-ढाल। २. ढंग। ढब। प्रकृति। घर डुबोना=घर में कलह उत्पन्न करना, दूसरे का या अपना घर नष्ट करना। ३. ठौर-ठिकाना। घर-द्वार। स्थिति। घर घालना=१. घर बिगाड़ना। परिवार में अशांति उत्पन्न करना। २. कुल में कलंक लगाना। ३. मोहित करके वश में करना। उपपत्नी करना। घर में रख लेना। गृह-नाश करना। घर फोड़ना=परिवार में झगड़ा लगाना। घर बसना=१. घर आबाद होना। २. घर में धन-धान्य होना। ३. घर में स्त्री या बहू आना। ब्याह होना। घर बैठे=बिना कुछ काम किए। बिना हाथ-पैर डुलाए। बिना परिश्रम (किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना=किसी के घर पत्नीभाव से जाना। किसी को पति बनाना। घर से=पास से। पल्ले से। घर बैठ जाना=निश्चिन्त होना। घर का टूटना=नष्ट होना। घर चलाना=गृह का प्रबंध करना। घर होना=स्त्री-पुरुष में आपस का प्रणय होना।

घरऊ—वि० घरेलू। घर-संबंधी। घर का।

घरघराना—क्रि० अ० घर-घर शब्द निकलना।

घरघाल—वि० दे० "घरघालन"।

घरघालन—वि० [स्त्री० घरघालिनी] १. घर बिगाड़नेवाला। २. कुल में कलंक लगानेवाला।

घरजाया—संज्ञा पुं० घर का गुलाम।

घरद्वार—संज्ञा पुं० दे० "घरबार"। रहने की जगह। गृहस्थी। घर की सम्पत्ति।

घरनई—संज्ञा स्त्री० १. एक तरह का गोल छोटा खिलौना जिसे लड़के खेलते हैं। चौफड़ा। २. बेड़ा। दे० "घन्नई"।

घरना—क्रि० स० गढ़ना। बनाना। घिसना।

घरनाल—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पुरानी तोप।

घरनी—संज्ञा स्त्री० घरवाली। भार्य्या। गृहिणी। स्त्री। पत्नी।

घरफोरी—संज्ञा स्त्री० परिवार में फूट पैदा करनेवाली।

घरबराव—संज्ञा पुं० १. घर का अटाला। २. चीज। वस्तु।

घरबसा—संज्ञा पुं० [स्त्री० घरबसी] उपपति जिसको घर में रख लिया जाय।

घरबार—संज्ञा पुं० १. रहने का स्थान। ठौर-ठिकाना। २. घर का जंजाल। गृहस्थी। कुटुंब। परिवार। ३. अपनी सम्पत्ति।

घरबारी—संज्ञा पुं० १. बालबच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुंबी। २. माथुर ब्राह्मणों की एक जाति।

घररा—संज्ञा पुं० खरखराहट। दुःख। पीड़ा।

घरराटा—संज्ञा पुं० ध्वनि-विशेष।

घरवात*†—संज्ञा स्त्री० घर का सामान। गृहस्थी।

घरवाला—संज्ञा पुं० [स्त्री० घरवाली] १. घर का मालिक। गृहस्वामी। २. पति। स्वामी।

घरसा*—संज्ञा पुं० रगड़ा।

घरहाई*†—संज्ञा स्त्री० १. घर में विरोध करानेवाली स्त्री। २. अपकीर्ति फैलानेवाली।

घराऊ—वि० १. घरेलू। घर का। गृहस्थी-संबंधी। २. आपस का।

घराती—संज्ञा पुं० विवाह में कन्या-पक्ष के लोग।

घराना—संज्ञा पुं० खानदान। वंश। कुल। कुटुंब।

घरामी—संज्ञा पुं० छवैया। घर छानेवाला।

घरिक या घरीक*†—क्रि० वि० एक घड़ी। घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरिया—संज्ञा स्त्री० दे० "घड़िया"। मिट्टी की बनी छोटी कटोरी जिसमें सुनार सोना-चाँदी गलाते हैं।

घरी—संज्ञा स्त्री० १. तह। परत। लपेट। चुनट। २. एक नियत समय। घड़ी।

घरू—वि० जिसका संबंध घर-गृहस्थी से हो। घर का। घरेलू।

घरेला–वि० घर का पोसा, घर में उत्पन्न, घर-संबंधी। घर का।
घरेलू–वि० १. पालतू। पालू। २. घर का। निज का। ३. घर का बना हुआ।
घरैया†–वि० घर या कुटुंब का। अत्यंत घनिष्ठ।
घरो*–संज्ञा पुं० दे० "घड़ा"।
घरौंदा, घरौंधा–संज्ञा पुं० १. कागज, मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर जिससे छोटे बच्चे खेलते हैं। २. छोटा घर।
घर्घर–संज्ञा पुं० घरघर शब्द। एक बाजा। चक्की आदि का शब्द।
घर्म–संज्ञा पुं० घाम। धूप। गरमी। स्वेद। पसीना।
घर्मद्युति–संज्ञा पुं० दिवाकर। सूर्य।
घर्मबिन्दु–संज्ञा पु० पसीने की बूंद।
घर्माक्त–वि० पसीने से भींगा हुआ।
घर्रा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अंजन। २. गले की घरघराहट।
घर्राटा–संज्ञा पुं० दे० "खर्राटा"।
घर्षण–संज्ञा पुं० रगड़। घिस्सा। मर्दन।
घर्षित–वि० रगड़ खाया हुआ। रगड़ा हुआ। घिसा हुआ।
घलना या घालना–क्रि० अ० १. छूटकर गिर पड़ना। २. चढ़े हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट पड़ना। हथियार चल जाना। ३. मारपीट हो जाना। ४. डालना। फेंकना। ५. उजाड़ना। पटकना। बिगाड़ना। ६. तोप दागना।
घलाघल, घलाघली–संज्ञा स्त्री० मार-पीट। आघात-प्रतिघात।
घलुआ† **या घलुवा**–संज्ञा पुं० घेलौना। घाल। रूंग। सेंत का। बिना दाम का। वह अधिक वस्तु जो खरीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी जाय।
घवरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "घौद"। घौर। गुच्छा। समूह।
क्रि० अ० एकत्र होकर।
घसना–क्रि० स० रगड़। घर्षण करना। घिसना।
घसखुदा–संज्ञा पुं० १. घास खोदनेवाला। २. अनाड़ी। मूर्ख।
घसिटना–क्रि० अ० घसीटा जाना।
घसियारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० घसियारी या घसियारिन] घास बेचनेवाला। घास छीलनेवाला।
घसीट–संज्ञा स्त्री० १. जल्दी-जल्दी लिखना। २. जल्दी की लिखावट। ३. घसीटने का भाव।
घसीटना–क्रि० स० १. किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई जाय। २. जल्दी-जल्दी लिखना। ३. किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।
घसीला–वि० अधिक घासवाला। हरियाली।
घस्मर–वि० पेटू। खाऊ।
घस्र–संज्ञा पुं० दिन। दिवस। प्रहर।
घस्रा–संज्ञा पुं० हिंसक। नृशंस। क्रूर।
घहनाना*†–क्रि० अ० घंटे आदि की ध्वनि निकालना। घहराना।
घहरना–क्रि० अ० गरजने का-सा शब्द करना। गंभीर ध्वनि निकालना।
घहराना–क्रि० अ० गरजने का-सा शब्द करना। गंभीर शब्द करना। चिग्घाड़ना।
घहरानि‡–संज्ञा स्त्री० गंभीर ध्वनि। तुमुल शब्द। गरज।
घहरारा†*–संज्ञा पुं० घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज।
वि० घोर शब्द करनेवाला।
घां*†–संज्ञा स्त्री० १. दिशा। दिक्। २. ओर। तरफ।
घांघरा–संज्ञा पुं० दे० "घाँघरा"। लहँगा। एक नदी का नाम।
घांटी†–संज्ञा स्त्री० १. गले के अन्दर की घंटी। कौवा। २. गला। टेंटुवा।
घांटो–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।
घांह†*–संज्ञा पुं० तरफ। ओर।
घाइल†*–वि० दे० "घायल"।
घाई†*–संज्ञा स्त्री० १. ओर। तरफ। २. बार। दफा। ३. भँवर। ४. अंगुलियों के बीच की जगह। अंटी। ५. घात। दाँव। मौका। ६. चोट। आघात। वार। प्रहार। ७. धोखा। चालबाजी।

घाईन–संज्ञा स्त्री० पाला। बार। बेर। ओसरी।

घाउ या घाऊ–संज्ञा पुं० घाव। चोट। क्षत। व्रण। फोड़ा।

घाऊघप–वि० १. चुपचाप माल हजम करनेवाला। हड़पनेवाला। खानेवाला। २. अपना मतलब निकालनेवाला।

घाघ–संज्ञा पुं० १. चतुर और अनुभवी व्यक्ति। २. चालाक। खुर्राट। ३. पक्षी-विशेष। ४. एक कवि जिसकी कहावतें प्रसिद्ध हैं।

घाघरा–संज्ञा पुं० (स्त्री० घाघरी) चुननदार और घेरदार पहनावा। लहँगा। संज्ञा स्त्री० सरयू नदी।

घाघस–संज्ञा पुं० एक पक्षी-विशेष।

घाट–संज्ञा पुं० १. नदी या किसी जलाशय का तट, जहाँ लोग पानी भरते, नहाते-धोते या नाव पर चढ़ते हैं। २. नई दुलहिन का लहँगा। ३. चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ४. पहाड़। ५. ओर। तरफ। दिशा। ६. रंग-ढंग। चाल-ढाल। डौल। ढब। तौर-तरीका। रूप। ७. तलवार की धार। ८. आकृति। बनावट। ९. जौ की लरी। १०. अँगिया का गला।
†संज्ञा पुं० १. धोखा। छल। २. बुराई। ३. अपराध। ४. दोष।
वि० कम। थोड़ा। अल्प।
मुहा०—घाट-घाट का पानी पीना=१. चारों ओर देश-देशांतर में घूमकर अनुभव प्राप्त करना। २. इधर-उधर मारे-मारे फिरना।

घाटवाल–संज्ञा पुं० १. घाटिया। गंगापुत्र। नदी के तट पर स्नान करनेवालों से दान लेनेवाला। २. घाट की रखवाली करनेवाला।

घाटा–संज्ञा पुं० घटी। हानि। नुकसान।

घाटारोह†*–संज्ञा पुं० घाट रोकना। घाट से जाने न देना। घटबंदी।

घाटि*†–वि० कम। न्यून। घटकर। संज्ञा स्त्री० नीच कर्म। पाप। नीचता। घटियाई।

घाटिया–संज्ञा पुं० घाटवाल। गंगापुत्र। घाट पर दान लेनेवाला।

घाटी–संज्ञा स्त्री० पर्वतों के बीच का सकरा मार्ग। दर्रा।

घात–संज्ञा पुं० (वि० घाती) १. प्रहार। चोट। मार। धक्का। आघात २. वध। हत्या। ३. अहित। बुराई ४. गुणनफल। संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य करने के लिए अनुकूल स्थिति। दाँव। सुयोग। २. अवसर। ३. दाँव-पेंच। चाल। छल। चालबाजी। ४. रंग-ढंग। तौर-तरीका।
मुहा०—घात पर चढ़ाना या घात में आना =अपना काम पूरा करना। घात करना= प्रतिज्ञा भ्रष्ट होना। कहे काम को पूरा न करना। अवसर पर धोखा देना। दाँव पर चढ़ना। घात लगना=मौका मिलना। घात लगाना=युक्ति भिड़ाना। घात में=ताक में।

घातक–संज्ञा पुं० १. हत्यारा। २. हिंसक। वधिक। मार डालनेवाला।

घातकी–संज्ञा पुं० दे० "घातक"।

घातिनी–वि० मारनेवाली। वध करनेवाली। हत्यारिन। क्रूर स्त्री।

घातिया या घाती–वि० [स्त्री० घातिनी] १. घातक। संहारक। २. नाश करनेवाला। ३. छली। कपटी।

घात्य–वि० हनन योग्य। मारने योग्य।

घान–संज्ञा पुं० १. कोल्हू या चक्की आदि में पीसने के लिए एक बार में जितना डाला जाय या चक्की में पीसा जाय। उतनी वस्तु जितनी एक बार में पकाई जाय। २. प्रहार। चोट।

घाना†*–क्रि० स० मारना।

घानी–संज्ञा स्त्री० दे० "घान"। समूह।

घाबरा–वि० व्याकुल। उद्विग्न। अस्थिर-चित्त। घबराया हुआ।

घाम†–संज्ञा पुं० धूप। गरमी। ताप। पसीना।

घामड़–वि० मूर्ख। भोंदू। सीधा।

घाय†*–संज्ञा पुं० दे० "घाव"।

घायक–वि० घायल करनेवाला। घातक।

घायल–वि० जिसको चोट लगी हो। जख्मी। आहत।

घाल†–संज्ञा पुं० दे० "घलुआ"। संज्ञा स्त्री० बुराई। हानि। अपकार। **मुहा०**—घाल न गिनना=तुच्छ समझना।
घालक–संज्ञा पुं० (स्त्री० घालिका) मारने या नाश करनेवाला। घातक।
घालन–संज्ञा पुं० हनन। वध करना। मारना।
घालना†–क्रि० स० १. डालना। रखना। २. फेंकना। चलाना। छोड़ना। ३. बिगाड़ना। उजाड़ना। नाश करना। ४. मार डालना। ५. पटकना। ६. तोप दागना। तोप का गोला छोड़ना।
घालमेल–संज्ञा पुं० मिलावट। गड्डबड्ड। पंचमेल। खिचड़ी। विभिन्न वस्तुओं की एक में मिलावट।
घाव–संज्ञा पुं० जख्म। चोट। आघात। फोड़ा। **मुहा०**—घाव पर नमक छिड़कना=दुःख के समय और दुःख देना। शोक पर शोक उत्पन्न करना। घाव पूजना या भरना=घाव का अच्छा होना।
घाव-पत्ता–संज्ञा पुं० एक लता जिसके पान के-से पत्ते घाव, फोड़े आदि पर लगाए जाते हैं।
घावरिया†*–संज्ञा पुं० घावों की चिकित्सा करनेवाला।
घास–संज्ञा स्त्री० तृण। चारा। खर। फूस। यौ०–घास-पात या घास-फूस=१. तृण और वनस्पति। २. खर-पतवार। कूड़ा-कर्कट। व्यर्थ पदार्थ। **मुहा०**–घास काटना, खोदना या छीलना—१. तुच्छ काम करना। २. व्यर्थ काम करना।
घासी, घासू–वि० घासवाला। घसियारा।
घाह*†–संज्ञा स्त्री० दे० "घाई"।
घिग्घी–संज्ञा स्त्री० डरने पर मुंह से स्पष्ट शब्द का न निकलना। **मुहा०**–घिग्घी बँध जाना—भय से बोली बन्द हो जाना। अस्फुट बोलना।
घिघियाना–क्रि० अ० १. करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना। †२. चिल्लाना। अनुनय-विनय करना।
घिचपिच–संज्ञा स्त्री० १. एक में एक मिला या सटा हुआ जिससे गन्दा मालूम हो। स्थान की कमी। सँकरापन। २. थोड़े स्थान में बहुत-सी वस्तुओं का समूह। वि० अस्पष्ट। गन्दा। घना। पास-पास। गिचपिच।
घिन–संज्ञा स्त्री० घृणा। गंदी चीज देखकर जी मचलाने की-सी अवस्था। अरुचि। बीभत्सता।
घिनाना–क्रि० अ० घृणा करना। नफरत करना।
घिनावना–वि० दे० "घिनौना"।
घिनौना†–वि० (स्त्री० घिनौनी) जिसे देखने से घिन लगे। घृणित। बुरा। घृणाजनक।
घिनौरी–संज्ञा स्त्री० बरसाती कीट।
घिन्नी–संज्ञा स्त्री० दे० "घिरनी"।
घिया–संज्ञा स्त्री० एक तरकारी। कद्दू, लौकी।
घियाकश–संज्ञा पुं० दे० "कद्दूकश"।
घियातोरी–संज्ञा स्त्री० घिया तरोई। नेनुवा।
घिरत–संज्ञा पुं० घी। घृत।
घिरना–क्रि० अ० १. चारों ओर से घिर जाना। घेरे में आना। २. रुकना। फँस जाना। परवश होना। ३. मेघों का उमड़ना।
घिरनी–संज्ञा स्त्री० १. गराड़ी। चरखी। २. चक्कर। फेरा। ३. रस्सी बटने की चरखी। **मुहा०**–घिरनी खाना=घूम जाना, चक्कर खाना।
घिराना–क्रि० स० घेरा करवाना। बेड़ा बनाना। हदबंदी करना।
घिराई–संज्ञा स्त्री० १. घेरने की क्रिया। २. पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।
घिराव–संज्ञा पुं० १. घेरने या घिर जाने की क्रिया। २. घेरा।
घिरौना–क्रि० स० रगड़ना। घिसना।
घिर्राना†–क्रि० स० १. घसीटना। २. गिड़गिड़ाना।
घिव–संज्ञा पुं० घी।
घिसघिस–संज्ञा स्त्री० १. कार्य में शिथि-

लता। अनावश्यक विलंब। अतत्परता। गड़बड़ी। २. व्यर्थ की देर। अनिश्चय।
घिसना—क्रि० स० १. मेहनत करना। २. रगड़ना। मलना। ३. खियाना।
क्रि० अ० रगड़ खाकर कम होना।
घिसपिस†—संज्ञा स्त्री० १. दे० घिसघिस। २. मेल-जोल।
घिसवाना—क्रि० स० घिसने का काम कराना। रगड़वाना।
घिसाई—संज्ञा स्त्री० घिसने की क्रिया या मजदूरी।
घिसाना—क्रि०स०रगड़ाना। दे० "घिसवाना"।
घिसाव—संज्ञा पुं० रगड़। घर्षण। खियाव।
घिसावट—संज्ञा स्त्री० रगड़। घिसान। रगड़ाहट।
घिसियाना—क्रि० स० घसीटना।
घिस्सा—संज्ञा पुं० १. रगड़ा। २. धक्का। ठोकर। ३. आघात जो पहलवान अपनी कुहनी और कलाई की हड्डी से देते हैं। कुंदा। रद्दा। ४. बालकों का एक प्रकार का खेल। बहकावा।
घी—संज्ञा पुं० मक्खन। घृत। घीव। सर्पि।
मुहा०—घी के दिए जलना=१. इच्छा पूरी होना। मनोरथ सफल होना। २. आनंद-मंगल होना। उत्सव होना। (किसी की) पाँचों उँगलियाँ घी में होना=खूब आराम-चैन करना। बहुत अधिक लाभ उठाना।
घीकुंवार—संज्ञा पुं० एक पौधे का नाम। घृतकुमारी। घीक्वार। औषध-विशेष।
घुंइयाँ—संज्ञा स्त्री० अरवी या अरुई।
घुंगची या घुंघची—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बेल जिसके लाल बीज होते हैं। गुंजा। लाल-रत्ती।
घुंघनी—संज्ञा स्त्री० तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।
घुंघरारे†*—वि० दे० "घुंघराले"।
घुंघराले—वि० (स्त्री० घुंघराली) टेढ़े और बल खाए हुए (बाल)। छल्लेदार।
घुंघरू—संज्ञा पुं० १. किसी धातु की बनी हुई गोल पोली गुरिया जिसके भीतर 'घन-घन' बजने के लिए कंकड़ भर देते हैं। २. ऐसी गुरियों की लड़ी। घौरासी। मंजीर। ३. पैर का गहना। ४. गले का 'घुर-घुर' शब्द जो मरते समय कफ छेंकने के कारण निकलता है। घटका। घटुका।
घुंघुवारे—वि० दे० "घुंघराले"।
घुंडी—संज्ञा स्त्री० १. बटन। २. गोल गाँठ।
घुग्घी—संज्ञा स्त्री० धूप, वर्षा और शीत से बचने के लिए ओढ़ने का कम्बल या बोरा आदि। घोघी। खुडुआ।
घुग्घू—संज्ञा पुं० उल्लू पक्षी।
घुघुआ—संज्ञा पुं० दे० "घुग्घू"। स्वयं चित लेटकर बालकों को घुटनों पर रखकर खिलाने की क्रिया।
घुघुआना—क्रि० अ० १. उल्लू पक्षी का बोलना। २. बिल्ली का गुर्राना।
घुटकना—क्रि० स० १. घूंट-घूंट करके पीना। २. निगल जाना।
घुटकी—संज्ञा स्त्री० घोंटनेवाली नली।
घुटना—संज्ञा पुं० पाँव के बीच का जोड़।
क्रि० अ० १. साँस का भीतर दब जाना, रुकना। फँसना। २. उलझकर कड़ा होना। ३. बंधन दृढ़ होना। ४. घिसकर चिकना होना। ५. घनिष्ठता होना। मेल-जोल होना। ६. घिसकर चिकना होना। पीसा जाना। मेल-जोल होना।
मुहा०—घुट-घुटकर मरना=दम तोड़ते हुए मरना। घुटा हुआ=चालाक। धूर्त।
घुटन्ना—संज्ञा पुं० घुटनों तक का पायजामा। जाँघिया।
घुटरू—संज्ञा पुं० घुटना।
घुटवाना—क्रि० स० १. घोटने का काम करना। २. बाल मुँड़ाना।
घुटाई—संज्ञा स्त्री० घोटने या रगड़ने का कार्य। चिकनाहट। गढ़ाई।
मुहा०—घुटाई करना=पाठ रटना। मेहनत करना। रगड़ना या पीसना।
घुटाना—क्रि० स० घोटने का काम दूसरे से कराना। बाल मुँड़ाना। चिकना कराना। मुण्डन कराना।

घुटी या घुट्टी—संज्ञा स्त्री० पाचन के लिए छोटे बच्चों की एक दवा।
घुटुरुअन—क्रि० वि० घुटनों के बल।
घुड़कना—क्रि० स० डपटना। कड़ककर बोलना। डाँटना। दबाना। धमकाना। रोब जमाना।
घुड़की—संज्ञा स्त्री० १. क्रोध में डराने के लिए जोर से कही गई बातें। डाँट-डपट। फटकार। धमकी। भभकी। झिड़की। २. घुड़कना। तिरस्कार।
यौ०—बँदरघुड़की=झूठमूठ डर दिखाना।
घुड़चढ़ा—संज्ञा पुं० सवार। अश्वारोही। घोड़े पर चढ़नेवाला।
घुड़चढ़ी—संज्ञा स्त्री० १. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। २ एक प्रकार की तोप। घुड़नाल।
घुड़दौड़—संज्ञा स्त्री० १. घोड़ों की दौड़। २. घोड़ों की दौड़ में जुए का खेल। ३. घोड़े दौड़ाने का स्थान।
घुड़नाल—संज्ञा स्त्री० घोड़ों पर ले जानेवाली एक प्रकार की तोप।
घुड़बहल—संज्ञा स्त्री० घोड़ागाड़ी। जिस रथ में घोड़े जुतते हों।
घुड़मुंहा—वि० घोड़े के समान मुंहवाला। किन्नर-विशेष।
घुड़सवार—संज्ञा पुं० घोड़े पर चढ़नेवाला। घोड़े की सवारी करनेवाला। अश्वारोही।
घुड़साल—संज्ञा स्त्री० घोड़ों के बँधने का स्थान। अस्तबल।
घुड़िया—संज्ञा स्त्री० छोटी घोड़ी।
घुण—संज्ञा पुं० दे० "घुन"। कीट-विशेष।
घुणाक्षर—संज्ञा पुं० लकड़ी या पुस्तक आदि में घुन के चलने से बने हुए अक्षर।
घुणाक्षर-न्याय—संज्ञा पुं० ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय, जिस प्रकार घुनों के खाते-खाते लकड़ी में अक्षर-से बन जाते हैं। अकस्मात् सिद्धि। बिना प्रयत्न या परिश्रम के प्राप्ति।
घुन—संज्ञा पुं० अनाज, लकड़ी आदि में लगनेवाला एक छोटा कीड़ा।

मुहा०—घुन लगना=१. घुन का अनाज या लकड़ी को खाना। २. अंदर ही अंदर किसी वस्तु का क्षीण होना।
घुनघुना—संज्ञा पुं० दे० "झुनझुना"।
घुनना—क्रि० अ० घुन लगना। लकड़ी या अनाज में घुन लगना।
घुना—वि० घुना हुआ। खोखला। पोला। घुन का खाया हुआ।
घुनिया—वि० दे० "घुन्ना"।
घुन्ना—वि० [स्त्री० घुन्नी] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही में रक्खे। चुप्पा।
घुप—वि० बहुत अँधेरा। प्रगाढ़ अंधकार।
घुमक्कड़—वि० बहुत घूमनेवाला।
घुमघुमा—संज्ञा पुं० घुमाव। टालना। घूम-फिरकर एक ही स्थान पर पहुँचना।
घुमघुमाना—क्रि० स० घुमाना-फिराना। बात बदलना। बात उलटना।
घुमटा—संज्ञा पुं० सिर का चक्कर। घुमरी। मूर्च्छा।
घुमड़—संज्ञा स्त्री० बरसनेवाले बादलों का घिर आना।
घुमरना—क्रि० अ० १. बादलों का छाना। २. मेघों का इकट्ठा होना। छा जाना। ३. दुर्दिन होना।
घुमराना—क्रि० अ० १. घोर शब्द करना। २. दे० "घुमड़ना"। †३. घूमना।
घुमरना—क्रि० अ० दे० "घुमरना"।
घुमरी—संज्ञा स्त्री० १. चक्कर। घुर्नी। एक रोग। मूर्च्छा। २. परिक्रमा।
घुमाना—क्रि० स० १. चक्कर देना। २. इधर-उधर बहकाना। टहलाना। सैर कराना। ३. किसी विषय की ओर लगाना। प्रवृत्त करना। ४. धोखा देते रहना।
घुमाव—संज्ञा पुं० १. घूमने या घुमाने का भाव। २. फेर.। चक्कर। ३. रास्ते का मोड़।
मुहा०—घुमाव-फिराव की बात=दाँव-पेंच की बात। हेर-फेर की बात।
घुमावदार—वि० जिसमें कुछ घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।

घुम्मरना*–क्रि० अ० दे० "घुमरना"।
घुरघुरा–संज्ञा पुं० झींगुर। एक प्रकार का रोग।
घुरघुराना–क्रि० अ० घुरघुर शब्द होना। ऐसा शब्द निकालना।
घुरना*–क्रि० अ० दे० "घुलना"। घुर-घुर शब्द करना। बजना। खर्राटा मारना।
घुरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "घुमरी"।
घुरबिनिया–संज्ञा स्त्री० कूड़े-कर्कट में से बीन-बीन कर टूटी-फूटी चीजें इकट्ठी करना।
घुरका–संज्ञा पुं० भीमसेन का एक पुत्र। घटोत्कच।
घुर्मित–क्रि० वि० घूमता हुआ।
घुलना–क्रि० अ० १. तरल पदार्थ में मिल जाना। दिल मिल जाना। २. पिघलना। सड़ना। गलना। ३. पककर पिलपिला होना। दूर्बल होना। ४. रोग आदि से शरीर क्षीण होना। दुर्बल होना। ५. समय व्यतीत होना।
मुहा०–घुल-घुलकर बातें करना=खूब मिल-जुलकर बातें करना। घुल-घुलकर काँटा होना=बहुत दुबला हो जाना। घुल-घुलकर मरना=बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना।
घुलमिल–वि० मिलकर एक होना। घुल गया। पक गया।
घुलवाना–क्रि० स० १. गलवाना। द्रवित कराना। २. आँख में सुरमा लगवाना। किसी तरल पदार्थ में मिलाना। हल कराना।
घुलाऊ–वि० घुलने या पिघलानेवाला। गलाने-योग्य। सड़ने योग्य।
घुलाना–क्रि० स० १. गलाना। पिघलाना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. मुंह में रखकर धीरे-धीरे रस चूसना। चुभलाना। ४. गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना। ५. सड़ाना। ६. समय व्यतीत करना।
घुलावट–संज्ञा स्त्री० मिलावट। गल जाना। घुलकर मिल जाना। घुलने का भाव।
घुवा–संज्ञा पुं० सेमर की रुई।
घुसड़ना†–क्रि० अ० दे० "घुसना"।
घुसना–क्रि० अ० १. अंदर पैठना। प्रवेश करना। भीतर जाना। २. धँसना। चुभना। गड़ना। ३. बलात् प्रवेश करना।
घुसपैठ–संज्ञा स्त्री० पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई। आना-जाना।
घुसाना–क्रि० स० १. भीतर घुसेड़ना। पैठाना। २. चुभाना। धँसाना। डालना। गाड़ना। लगाना।
घुसेड़ना–क्रि० स० दे० "घुसाना"।
घुस्की–संज्ञा स्त्री० कुलटा। दुराचारिणी। व्यभिचारिणी स्त्री।
घुसृण–संज्ञा पुं० कुंकुम। गन्ध। द्रव्य-विशेष।
घूँघट–संज्ञा पुं० १. वस्त्र का वह भाग जिससे स्त्रियाँ अपना मुँह ढकती हैं। २. परदा। ओट।
घूँघर–संज्ञा पुं० घुँघराले बालों की मरोड़।
घूँघरवाले–वि० छल्लेदार। कुंचित। झब-रीले (बाल)।
घूँट–संज्ञा पुं० एक बार में पीने-योग्य पानी आदि। चुस्की।
घूँटना–क्रि० स० द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना। पीना।
घूँटी–संज्ञा स्त्री० १. बालकों की एक औषध। २. बालकों को औषध देने की मात्रा। ३. घूंट का लघु रूप।
मुहा०–जनम घूंटी=वह घूंटी जो बच्चे को उसका पेट साफ करने के लिए जन्म के दूसरे दिन दी जाती है।
घूँस–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा चूहा।
घूँसा–संज्ञा पुं० १. बँधी हुई मुट्ठी। मुक्का। मूका। मुष्टिका। धमाका। २. बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार।
घूआ–संज्ञा पुं० १. काँस और मूंज की तरह का एक फूल। २. एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।
घूगस†–संज्ञा पुं० ऊँचा बुर्ज।
घूघ–संज्ञा स्त्री० लोहे या पीतल की बनी टोपी।
घूम–संज्ञा स्त्री० घूमने का भाव।
संज्ञा पुं० घुमाव। घेर। फेर। चक्कर।

घूमना–क्रि० अ० १. चक्कर खाना। २. सैर करना। टहलना। ३. देशांतर में भ्रमण करना। ४. उद्योग करना। मँड़राना। चक्कर काटना। ५. किसी ओर को मुड़ना। ६. वापस आना या जाना। लौटना। *† ७. उन्मत्त होना। मतवाला होना।
यौ०–फिरना घूमना=सफर करना।
मुहा०–घूम पड़ना=सहसा क्रुद्ध हो जाना।
घूरना–क्रि० अ० १. बार-बार देखना। २. क्रोध से आँखें दिखाना। चारों ओर घूरना। ताकना। † ३. घूमना।
घूरा–संज्ञा पुं० १. कूड़ा-करकट का ढेर। २. कतवारखाना।
घूरिया–संज्ञा पुं० दे० "घूरा"।
घूर्णन–संज्ञा पुं० १. भ्रमण। चाक के समान घूमना। २. भ्रम। भ्रान्ति। ३. घेरा। ४. सिर हिलाना।
घूर्णित–वि० भ्रमित। घुमाया गया।
घूस–संज्ञा स्त्री० अपना काम कराने के लिए किसी दूसरे को छिपाकर दिया गया द्रव्य आदि। रिश्वत। उत्कोच। लाँच।
यौ०–घूसखोर=घूस खानेवाला।
घृणा–संज्ञा स्त्री० घिन। नफरत। जुगुप्सा। ग्लानि। अवज्ञा। अत्यन्त अवहेला।
घृणार्ह–वि० गर्हित। कुत्सित। घृणा के योग्य।
घृणास्पद–वि० घृणाकर। घिनौना।
घृणित–वि० १. घृणा करने योग्य। निन्दित। २. जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो। कुत्सित। अवज्ञात।
घृण्य–वि० तिरस्कार के योग्य। गर्ह्य। गर्हणीय।
घृत–संज्ञा पुं० घी।
घृतकुमारी–संज्ञा स्त्री० घीकुँवार।
घृताक्त–वि० घृत-सिंचित। घी में डुबोया हुआ।
घृताची–संज्ञा स्त्री० स्वर्ग की एक अप्सरा।
घृष्ट–वि० घर्षित। पिसा हुआ।
घृष्टि–संज्ञा पुं० १. घिसना। मारना। २. शूकर। सुअर।
संज्ञा स्त्री० एक औषध।
घेंघा–संज्ञा पुं० दे० "घेघा"।
घेंट†–संज्ञा पुं० गला, गर्दन।
घेंटा–संज्ञा पुं० शूकर का बच्चा।
घेघा–संज्ञा पुं० १. गला २. गले का एक रोग जिसमें गला फूलकर बाहर लटकने लगता है। घेघुआ। गलगंड रोग।
घेतल या घेतला–संज्ञा पुं० जूती-विशेष।
घेपना–क्रि० स० मिलाना। मिश्रण करना।
घेर–संज्ञा पुं० १. चारों ओर का फैलाव। मंडल। घेरा। २. परिधि।
घेरघार–संज्ञा स्त्री० १. चारों ओर से घेरना। २. चारों ओर का घेरा या फैलाव। विस्तार। ३. धरपकड़। ४. खुशामद। विनती।
घेरना–क्रि० स० १. चारों ओर से छेंकना या रोकना। २. बाँधना। ३. आक्रांत करना। छेंकना। ४. चौपायों को चराना। ५. अपने अधिकार में रखना। ६. खुशामद करना।
घेरा–संज्ञा पुं० १. चारों ओर की सीमा। या फैलाव। परिधि। २. परिधि का मान। ३. चहारदीवारी। ४. घिरा हुआ स्थान। हाता। मंडल। वृत्त। ५. सेना का चारों ओर से घेर लेना। ६. आक्रमण।
घेलवा–संज्ञा पुं० घलुआ। रूँक।
घेलर–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई। गुपचुप।
घैया–संज्ञा पुं० १. ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। २. थन से छूटती हुई दूध की धार जो मुँह रोपकर पी जाय।
संज्ञा स्त्री० ओर। तरफ।
घैर, घैरु, घैरो†*–संज्ञा पु० १. बदनामी। अपयश। निन्दा। २. चुगली। गुप्त शिकायत।
घोंघा–संज्ञा पुं० [स्त्री० घोंघी] १. शंख की तरह का एक कीड़ा। शंबुक। सीप। २. खोखला।
वि० १. जिसमें कुछ सार न हो। २. मूर्ख।
घोंटना–क्रि० स० घूँटना। जल्दी से एक बार में पी जाना। हजम करना। दे० "घोटना"।

घोंपना–क्रि० स० धँसाना । चुभाना । गड़ाना ।

घोंसला–संज्ञा पुं० पक्षियों के रहने का स्थान । नीड़ । खोता ।

घोंसुआ†*–संज्ञा पुं० दे० "घोंसला" ।

घोखना–क्रि० स० पाठ को बार-बार दुहराना । कंठाग्र करने के लिए बार-बार पढ़ना । रटना । घोटना ।

घोघी†–संज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी" । जेब । थैली ।

घोट, घोटक–संज्ञा पुं० घोड़ा । अश्व ।

घोटना–क्रि० स० १. चिकना या चमकीला करने या बारीक पीसने के लिए बार-बार रगड़ना । २. बट्टे आदि से रगड़कर परस्पर मिलाना । हल करना । ३. अभ्यास करना । मश्क करना । कंठस्थ करना । ४. परिश्रम करना । ५. मरोड़ना । ६. पीसना । ७. मूँड़ना । ८. भंग घोटना । ९. डाँटना । फटकारना । १०. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय ।
संज्ञा पुं० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औजार ।

घोटनी–संज्ञा स्त्री० लुढ़िया । लोढ़ा । घोटना ।

घोटवाना–क्रि० स० घोटने का काम दूसरे से कराना ।

घोटा–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिससे घोटा जाय । २. पीसने का लोढ़ा । कपड़े पर चमक पैदा करने की वस्तु । ३. रगड़ा । घुटाई ।

घोटाई–संज्ञा स्त्री० पाठ को कंठस्थ करना । खूब मेहनत से पढ़ाई करना । घोटने का काम या मजदूरी ।

घोटाला–संज्ञा पुं० घपला । गड़बड़ ।

घोटू–संज्ञा पुं० घोटनेवाला । घोटने का औजार । घुटना ।
वि० सीधा । नम्र ।

घोड़साल–संज्ञा स्त्री० दे० "घुड़साल" ।

घोड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० घोड़ी] १. चार पैरों का एक प्रसिद्ध पशु जो सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम में आता है । अश्व । घोटक । तुरंग । २. वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बंदूक में गोली चलती है । ३. भार सँभालने के लिए दीवार में लगाया जानेवाला टोटा । ४. शतरंज का एक मोहरा ।
मुहा०–घोड़ा उठाना=घोड़े को तेज दौड़ाना । घोड़ा कसना=घोड़े पर सवारी के लिए जीन या चारजामा कसना । घोड़ा डालना =किसी ओर वेग से घोड़ा बढ़ाना । घोड़ा निकालना=घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना । घोड़ा फेंकना= वेग से घोड़ा दौड़ाना । घोड़ा बेच कर सोना =खूब निश्चिन्त होकर सोना ।

घोड़ागाड़ी–संज्ञा स्त्री० घोड़े के द्वारा चलाई जानेवाली गाड़ी ।

घोड़ानस–संज्ञा स्त्री० एड़ी के पास की मोटी नस ।

घोड़िया–संज्ञा स्त्री० १. छोटी घोड़ी । २. दीवार में गड़ी हुई खूँटी । ३. छज्जे का भार सँभालनेवाली टोटी ।

घोड़ी–संज्ञा स्त्री० १. घोड़े की मादा । २. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़ी पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है । ३. विवाह के गीत । ४. एक औजार । ५. दो बाँसों के बीच बँधी हुई रस्सी जिस पर धोबी कपड़े सुखाते हैं ।

घोया–संज्ञा पुं० १. ओढ़ने की एक चीज । २. गुप्त स्थान ।

घोर–वि० १. भयंकर । भयानक । डरावना । २. सघन । घना । दुर्गम । ३. कठिन । कड़ा । ४. गहरा । गाढ़ा । ५. बुरा । ६. बहुत ज्यादा ।
संज्ञा स्त्री० शब्द । गर्जन । ध्वनि ।

घोरतर–वि० अत्यन्त । भयानक । डरावना ।

घोरना*–क्रि० अ० भारी शब्द करना । गरजना ।

घोरिला*†–संज्ञा पुं० लड़कों के खेलने का घोड़ा ।

घोल–संज्ञा पुं० घोलकर बनाई गई वस्तु ।

घोलबही–संज्ञा पुं० मट्ठा ।

घोलघुमाव–संज्ञा पुं० टाल-मटूल । बनावट । कृत्रिमता ।

सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि।

घोलना–क्रि० स० घोरना। हिलाकर मिलाना। हल करना।

घोला–वि० गँदला। गाढ़ा घोला हुआ।

घोष–संज्ञा पुं० १. अहीरों की बस्ती। २. अहीर। ३. गोशाला। ४. तट। किनारा। ५. शब्द। आवाज। नाद। ताल का एक भेद। ६. गरजने का शब्द। ७. शब्दों के उच्चारण में एक प्रयत्न। ८. ईशान कोण का एक देश। ९. बंगाली कायस्थों की एक जाति।

घोषणा–संज्ञा स्त्री० १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। ढिंढोरा। विज्ञापन। राजाज्ञा आदि का प्रचार। मुनादी। डुग्गी। २. गर्जन। ध्वनि। शब्द। आवाज। **यौ०**–घोषणापत्र=विज्ञप्ति। वह पत्र जिसमें लिखी हो। विज्ञापन।

घोषणीय–वि० प्रचारित करने योग्य। प्रकाशित करने योग्य।

घोसी–संज्ञा पुं० (मुसलमान) अहीर। ग्वाल।

घौद–संज्ञा पुं० फलों का गुच्छा। गौद। स्तवक।

घौदा–संज्ञा पुं० चुटैल।

घौर–संज्ञा पुं० "घौद"।

घ्राण–संज्ञा स्त्री० [वि० घ्रेय] १. नाक। नासिका। २. सूँघने की शक्ति। ३. सुगंध।

घ्राण तर्पण–संज्ञा पुं० सुगंधि। सौरभ।

घ्राणेन्द्रिय–संज्ञा पुं० नासिका। नाक। सुगंध लेनेवाली इन्द्रिय।

घ्रात–वि० गंध लिया हुआ (ग्रहीतगंध)।

घ्रायक–वि० गंध। ग्राहक। सूँघनेवाला।

ङ

ङ–व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान कंठ तथा नासिका है। इससे कोई शब्द प्रारम्भ नहीं होता। संज्ञा पुं० १. सूँघने की शक्ति। २. गंध। सुगंध। ३. भैरव। ४. शिव। ५. विषय-वासना। इच्छा। स्पृहा।

च

च–व्यंजन वर्ण का छठा और चवर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है। संज्ञा पुं० १. कछुआ। २. सूर्य। ३. चंद्रमा। ४. चोर। ५. दुष्ट। ६. कपूर। अव्य समुच्चय। पक्षान्तर। पादपूरण। समाहार। अन्योन्यार्थ अव्यय। अवधारण। हेतु। और। पुनः। भी। शोक-सूचक ध्वनि।

चंक–वि० १. समस्त। पूरा। समूचा। सारा। २. एक उत्सव।

चंक्रमण–संज्ञा पुं० बहुत घूमना। टहलना। बार-बार भ्रमण। चक्कर लगाना।

चंग–संज्ञा स्त्री० १. पतंग। गुड्डी। २. मन। चित्त। ३. एक तरह का बाजा। सितार का चढ़ा हुआ सुर। ४. एक रंग। ५. एक प्रकार का जौ। ६. एक तरह की शराब। ७. शुद्ध। पवित्र।
वि० १. कुशल। चतुर। दक्ष। पटु। २. नीरोग। स्वस्थ। ३. सुन्दर।
मुहा०–दे० चंग चढ़ना या उमहना=बढ़ी-चढ़ी बात होना। शेखी बघारना। चंग पर चढ़ाना=१. इधर-उधर की बात कहकर अपने अनुकूल करना। २. मिजाज बढ़ा देना।

चँगना*–क्रि० स० कसना। खींचना। तानना। तंग करना।

चंगा–वि० [स्त्री० चंगी] १. स्वस्थ। नीरोग। २. निर्मल। शुद्ध। पवित्र। सदाचारी। ३. योग्य। ४. मूल्यवान्।

मुहा०—मन चंगा तो कठौती में गंगा=जिसका मन पवित्र है, उसके लिए घर में ही गंगा है।

चंगुल—संज्ञा पुं० चिड़ियों या पशुओं का पंजा।

मुहा०—चंगुल में फँसना=वश या पकड़ में आना। काबू में होना।

चंगेर—वि० उत्तम। श्रेष्ठ। सरस। चोखा। बढ़िया।

चँगेर, चँगेरी—संज्ञा स्त्री० १. बाँस की डलिया। २. छोटी टोकरी। ३. फूल रखने की डलिया।

चँगेली—संज्ञा स्त्री० दे० "चँगेरी"।

चंच*—संज्ञा पुं० चोंच।

चंचनाना—क्रि० अ० चिल्लाना। चनचन करना। बकना।

चंचनाहट—संज्ञा स्त्री० दे० "चुनचुनाहट"।

चंचरी—संज्ञा स्त्री० १. भँवरी। भ्रमरी। २. चाँचरि। होली में गाने का एक गीत। ३. एक वर्णवृत्त छंद। चंचली। ४. हरि-प्रिया छंद। ५. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

चंचरीक—संज्ञा पुं० [स्त्री० चंचरीकी] भ्रमर। भौंरा। मधुकर। अलि।

चंचरीकावली—संज्ञा स्त्री० तेरह मात्राओं का एक वर्ण-वृत्त-विशेष।

चंचल—वि० [स्त्री० चंचला] १. चपल। चलायमान। अस्थिर। हिलता-डोलता। २. अधीर। अव्यवस्थित। एकाग्र न रहनेवाला। ३. उद्विग्न। घबराया हुआ। ४. नटखट। चुलबुला। ५. हवा। ६. रसिक। कामुक।

चंचलता—संज्ञा स्त्री० १. चपलता। अस्थि-रता। २. शरारत।

चंचलताई*—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचला—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. बिजली। विद्युत्। चपला। ३. एक वर्णवृत्त।

चंचलाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"। १. धृष्टता २. उद्दण्डता।

चंचलाना—क्रि० अ० चंचल होना। अस्थिर होना।

चंचलाहट—संज्ञा स्त्री० अस्थिरता। चपलता।

चंचा—संज्ञा स्त्री० नरकट की चटाई।

चंचु—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का शाक। चेंच। २. रेंड़ का पेड़। ३. मृग। हिरन। संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच।

चंचोरना—क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।

चंट—वि० १. चालाक। २. धूर्त। छँटा हुआ।

चंड—वि० [स्त्री० चंडा] १. बलवान्। २. तेज। तीक्ष्ण। उग्र। प्रखर। प्रबल। प्रचंड। तेजस्वी। ३. कठोर।. कठिन। विकट। ४. उद्धत। क्रोधी। गुस्सावर। भयानक।

संज्ञा पुं० १. ताप। गर्मी। २. एक यम-दूत। ३. एक दैत्य जिसके मारने से भगवती का चण्डिका नाम पड़ा है। ४. कार्त्तिकेय। ५. इमली का वृक्ष। ६. शिव का एक गण।

चंडकर—संज्ञा पुं० सूर्य।

चंडकौशिक—संज्ञा पुं० विश्वामित्र का नाम।

चंडता—संज्ञा स्त्री० १. उग्रता। कठोरता। प्रबलता। २. बल। प्रताप।

चंड-मुंड—संज्ञा पुं० दो राक्षसों के नाम।

चंडरसा—संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त छंद।

चंडवृष्टिप्रपात—संज्ञा पुं० एक समवृत्त छंद।

चंडांशु—संज्ञा पुं० १. दिनकर। किरण। सूर्य। २. कठिन।

चँड़ाई*—संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता। जल्दी। २. प्रबलता। जबरदस्ती। ऊधम। अत्याचार।

चंडा—संज्ञा स्त्री० १. नायिका-विशेष। २. सुगंध। द्रव्य-विशेष। श्वेत दूर्वा। एक नदी का नाम।

चंडातक—संज्ञा पुं० पहनने का वस्त्र। कंचुकी। चोली। लहँगा।

चंडाल—संज्ञा पुं० [स्त्री० चंडालिन, चंडा-लिनी] चांडाल। अन्त्यज। शूद्र। वर्ण-संकर जाति। नीच। अधम। पतित।

चंडालिका—संज्ञा स्त्री० १. चंडी। दुर्गा। पार्वती। २. एक प्रकार की वीणा। ३. एक औषध।

चंडालिनी—संज्ञा स्त्री० १. चंडाल की स्त्री। २. दुष्टा स्त्री। पापिनी स्त्री। ३. एक प्रकार का दोहा छंद (दूषित)।

चंडावल–संज्ञा पुं० १. बहादुर सिपाही। २. संतरी। चौकीदार ३. सेना के पीछे का भाग।

चंडिका–संज्ञा स्त्री० १. कर्कशा या लड़ाकी स्त्री। २. गायत्री देवी। ३. दुर्गा देवी। वि० १. कर्कशा। उग्र शक्ति। २. एक योगिनी। ३. सात वर्ष की कुमारी।

चंडी–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा २. कर्कशा और उग्र स्त्री। ३. तेरह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

चंडीकुसुम–संज्ञा पुं० लाल कनैर का फूल।

चंडीमंडप–संज्ञा पुं० भगवती की पूजा का स्थान। देवीगृह।

चंडु–संज्ञा पुं० १. छोटा चूहा। २. मर्कट। छोटा बन्दर।

चंडू–संज्ञा पुं० अफीम की तरह का एक मादक पदार्थ।

चंडूखाना–संज्ञा पुं० चंडू पीने का घर।
मुहा०–चंडूखाने की गप=झूठी अफवाह। बिलकुल झूठी बात।

चंडूबाज–संज्ञा पुं० चंडू पीनेवाला। नशेबाज।

चंडूल–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष।

चंडोल–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की पालकी। २. डोला।

चंद–संज्ञा पुं० १. दे० "चन्द्रमा"। २. हिंदी के प्रसिद्ध प्राचीन कवि जो दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा में थे।
वि० थोड़ा। कुछ।

चंदक–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। कपूर। चाँदनी। २. चाँद नाम की मछली। ३. नथ में पान के आकार की बनावट। ४. माथे पर पहनने का एक अर्द्धचंद्राकार गहना।

चंदन–संज्ञा पुं० १. एक सुगंधित पेड़। रक्तचन्दन। मलयागिर। २. गन्धसार। श्रीखंड। संदल। ३. सुगन्धित लेप। ४. धवल। श्वेत। ५. पवित्र। ६. राम की सेना का एक बानर। ७. बड़ा तोता। ८. तिलक या टीके का चिह्न। ९. छप्पय छंद का एक भेद।

चंदनगिरि–संज्ञा पुं० मलयाचल। मलय-पर्वत, जिस पर चन्दन के वृक्ष होते हैं।

चंदनहार–संज्ञा पुं० दे० "चन्द्रहार"।

चंदना–संज्ञा पुं० तोता। सुआ।

चँदनौता–संज्ञा पुं० लहँगा-विशेष।

चंदबान–संज्ञा पुं० दे० "चंद्रबाण"।

चँदराना†–क्रि० स० जानबूझकर अनजान बनना। बहकाना। बहलाना।

चँदला–वि० १. जिसके सिर पर बाल न हों। २. गंजा।

चँदवा–संज्ञा पुं० १. छोटा मंडप। चँदोवा। २. गोल चाँदनी। ३. चकती। ४. मोरपंख की चन्द्रिका। ५. मछली पकड़ने की मोटी जाली। ६. छोटी मच्छरदानी।

चंदा–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. दान। सहायता। ३. पत्र आदि का वार्षिक मूल्य। ४. उगाही। ५. शुल्क। कर।

चंदिका–संज्ञा स्त्री० दे० 'चाँदनी"।

चंदिनि, चंदिनी–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।

चँदिया–संज्ञा स्त्री० १. खोपड़ी। २. सिर का मध्य भाग। ३. छोटी रोटी।

चंदिर–संज्ञा पुं० १. चंद्र। चंद्रमा। २. कपूर। ३. हाथी।

चँदेरी–संज्ञा स्त्री० १. चेदि-देश की राजधानी। २. एक प्राचीन नगर।

चँदेरीपति–संज्ञा पुं० १. चन्देरी का राजा। २. शिशुपाल।

चंदेल–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक जाति। चन्देल क्षत्रिय जाति का एक व्यक्ति।

चंद्र–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. मृगशिरा नक्षत्र। ३. मोर की पूंछ की चंद्रिका। ४. कपूर। ५. जल। ६. सोना। सुवर्ण। ७. पौराणिक भूगोल के १८ उपद्वीपों में से एक। ८. सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जानेवाली बिंदी। ९. पिंगल में टगण का एक भेद। १०. हीरा। ११. कोई आनंददायक वस्तु। ज्योतिष का एक ग्रह।
वि० १. आनंददायक। २. सुंदर।

चंद्रक–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. चन्द्रमा का-सा घेरा। ३. चाँदनी। ४. मोर की

पूँछ की चंद्रिका । ५. सफेद मिर्च । ६. नाखून । ७. कपूर ।

चंद्रला—संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की किरण । २. चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश । ३. एक वर्णवृत्त छंद । ४. माथे का एक गहना । ५. एक प्रकार की मिठाई । ६. संगीत का एक ताल । ७. स्त्रियों के पहनने का काले रंग का कपड़ा । ८. छोटा ढोल ।

चंद्रकांत—संज्ञा पुं० १. चन्दन । २. कुमुद । ३. एक राग । ४. एक प्रसिद्ध मणि ।

चंद्रकांता—संज्ञा स्त्री० १. रात्रि । रात । २. चन्द्रमा की स्त्री । ३. वर्णवृत्त-विशेष ।

चंद्रकुंड—संज्ञा पुं० १. कामरूप का एक प्रसिद्ध तीर्थ । २. सरोवर ।

चंद्रगुप्त—संज्ञा पुं० १. मगध देश का प्रथम मौर्यवंशी राजा । २. गुप्तवंश का एक प्रसिद्ध राजा ।

चंद्रग्रहण—संज्ञा पुं० चंद्रमा का ग्रहण । चंद्रमा के ऊपर पृथ्वी की छाया ।

चंद्रचूड़—संज्ञा पुं० महादेव । शिव । शंकर । जिसके सिर पर चन्द्रमा हो, अर्थात् शिव ।

चंद्रज—संज्ञा पुं० चंद्रमा से उत्पन्न । बुध ।

चंद्रजात—संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चन्द्रद्युति—संज्ञा स्त्री० चंदन । चंद्रमा की किरण ।

चंद्रधनु—संज्ञा पुं० चंद्रमा का प्रकाश पड़ने से दिखाई पड़नेवाला इंद्रधनुष ।

चंद्रधर—संज्ञा पुं० शिव । शंकर । महादेव । चंद्रमा को धारण करनेवाला ।

चंद्रपुष्पा—संज्ञा स्त्री० १. सफेद भटकटैया । २. चाँदनी ।

चंद्रप्रभ—वि० कांतिमान् ।

चंद्रप्रभा—संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी । चंद्रमा की ज्योति । चंद्रिका । ज्योत्स्ना । २. एक अप्सरा । ३. एक देवी । ४. एक देशी औषध । ५. चंद्रहास नाम की मदिरा । ६. एक रत्न । ७. कचूर । ८. बकुची ।

चंद्रबन्धु—संज्ञा पुं० कुमुद ।

चंद्रबाण—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाण जिसका फल अर्द्ध-चंद्राकार होता था ।

चंद्रबिंदु—संज्ञा पुं० अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी ।

चंद्रबिंब—संज्ञा पुं० चंद्रमंडल । चंद्रमा की परछाईं । गोल, चंद्राकार ।

चंद्रभस्म—संज्ञा पुं० कपूर ।

चंद्रभा—संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा का प्रकाश । २. सफेद भटकटैया ।

चंद्रभागा—संज्ञा स्त्री० पंजाब की चनाब नदी । नदी-विशेष ।

चंद्रभाल—संज्ञा पुं० महादेव । शिव । मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले ।

चंद्रभूति—संज्ञा स्त्री० चाँदी ।

चंद्रभूषण—संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

चंद्रमंडल—संज्ञा पुं० चंद्रबिंब । चंद्रमा की परिधि ।

चंद्रमणि—संज्ञा पुं० १. चंद्रकांत मणि । २. उल्लाला छंद ।

चंद्रमल्लिका—संज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष । २. लता-विशेष । ३. इलायची ।

चंद्रमस्—संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

चंद्रमा—संज्ञा पुं० १. चंद्र । चाँद । शशि । २. कपूर ।

चंद्रमाललाम—संज्ञा पुं० शंकर । महादेव ।

चंद्रमाला—संज्ञा स्त्री० एक छंद-विशेष, जिसमें २८ मात्राएँ होती हैं ।

चंद्रमुखी—संज्ञा स्त्री० चद्रमा के समान मुँहवाली । सुन्दरी । सुमुखी ।

चंद्रमौलि—संज्ञा पुं० महादेव । शिव ।

चंद्ररेखा, चंद्रलेखा—संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की किरण । २. चंद्रमा की कला । ३. एक वर्णवृत्त-विशेष । ४. द्वितीया का चंद्रमा ।

चंद्ररेणु—संज्ञा पुं० काव्यचौर, शब्दचौर ।

चंद्रलोक—संज्ञा पुं० १. आकाश । चंद्रमंडल । २. इस नाम का एक स्वर्ग ।

चंद्रलौह—संज्ञा पुं० चाँदी । रूपा । रजत ।

चंद्रवंश—संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश । चंद्रवंशीय राजाओं का कुल ।

चन्द्रवधूटी—संज्ञा स्त्री० वीरबहूटी ।

चंद्रवल्ली—संज्ञा स्त्री० १. पसरन । २. माधवी लता ।

चंद्रवर्त्म–संज्ञा पुं० वर्णवृत्त-विशेष।
चंद्रव्रत–संज्ञा पुं० प्रायश्चित्त-विशेष। व्रत-विशेष।
चंद्रवार–संज्ञा पुं० सोमवार।
चंद्रवेष–संज्ञा पुं० शिवजी।
चंद्रशाला–संज्ञा स्त्री० चाँदनी। चंद्रमा का प्रकाश। घर के ऊपर की कोठरी। अटारी। अट्टालिका।
चंद्रशिखा–चंद्रशृंग। चंद्रमा की कला का अग्रभाग।
चंद्रशेखर–संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव। २. पर्वत-विशेष। ३. पुराण का एक प्रसिद्ध नगर। ४. शंकराचार्य का एक शिष्य। ५. एक प्रकार का ध्रुपद गाना।
चंद्रसिता–संज्ञा स्त्री० कपूर।
चंद्रहार–संज्ञा पुं० अलंकार-विशेष। गले में पहनने की माला। नौलखा हार। एक प्रकार का हार।
चंद्रहास–संज्ञा पुं० १. रावण की तलवार। २. खड्ग। तलवार।
चंद्रा–वि० गंजा।
संज्ञा स्त्री० १. इलायची। २. मरने के समय की अवस्था जब टकटकी बँध जाती है। प्राणान्त के समय की मूर्च्छा। ३. चंद्रमा का प्रकाश। ४. चँदोवा। वितान। ५. एक वनस्पति का नाम। ६. चतुर।
चंद्रातप–संज्ञा पुं० १. चंद्रिका। चाँदनी। चंद्रमा का प्रकाश। २. चँदोवा। वितान।
चंद्रापीड़–संज्ञा पुं० शिवजी।
चंद्रार्क–संज्ञा पुं० चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बननेवाली एक मिश्रित धातु।
चंद्रावर्ता–संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त छंद।
चंद्रिका–संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी। चकोर। २. मोर की पूँछ पर का गोल चिह्न। ३. इलायची। ४. जूही या चमेली। ५. एक देवी। ६. एक मछली। एक वर्ण-वृत्त। ७. माथे पर का एक भूषण। बेंदी। बेंदा। ८. कनफोड़ा। ९. घास। १०. मेथी। ११. चंसुर। १२. संस्कृत-व्याकरण का एक ग्रंथ।
चंद्रिकाभिसारिका–संज्ञा स्त्री० चाँदनी में अपने प्रेमी से मिलनेवाली नायिका। शुक्लाभिसारिका।
चंद्रोदय–संज्ञा पुं० १. वैद्यक में एक रस। २. चंद्रमा का उदय। ३. चँदोवा। वितान।
चंद्रोपल–संज्ञा पुं० चंद्रकांत मणि। एक मणि।
चंपई–वि० १. पीले रंग का। २. चंपा के फूल के रंग का।
चंपक–संज्ञा पुं० १. चंपा। २. एक गंधर्व का नाम। ३. एक रंग। ४. एक छंद-विशेष। ५. चंपा केला। ६. संगीत का एक राग।
चंपकमाला–संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त-विशेष।
चंपत–वि० ले भागना। गायब। भाग जाना।
चँपना–क्रि० अ० १. उपकार से दबना। २. लज्जित होना।
चंपा–संज्ञा पुं० १. चंपा नाम का एक फूल। फूल का पेड़। प्राचीन अंगदेश की राजधानी जहाँ पांडवों के समय में कर्ण राज्य करता था। २. अंगदेश की सीमा पर की एक नदी। ३. एक प्रकार का मीठा केला। एक समवृत्त मात्रिक छंद। ४. घोड़े की जाति-विशेष। ५. रेशम का कीड़ा।
चंपाकली–संज्ञा स्त्री० गले में पहनने का एक हार। स्त्रियों का एक गहना।
चंपारण्य–संज्ञा पुं० बिहार प्रान्त का एक स्थान जिसे आजकल चम्पारन कहते हैं। चम्पा नगरी के पास का वन।
चंपू–संज्ञा पुं० गद्यपद्यमय काव्यग्रंथ।
चंबल–संज्ञा स्त्री० १. एक नदी। २. नालों के किनारे की लकड़ी जिससे सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाते हैं।
संज्ञा पुं० १. पानी की बाढ़। २. खप्पर। ३. चिलम का सरपोश।
चंबली–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह का छोटा प्याला।
चंबु–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धान। २. किसी धातु का छोटे मुँह का सुराहीनुमा बरतन। छोटा लोटा।
चंबेलिया–वि० दे० "चमेलिया"।
चंबेली–संज्ञा स्त्री० दे० "चमेली"।

चँवर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चँवरी] १. मोरपंख या सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा, जो राजाओं या देवमूर्त्तियों के सिर पर डुलाया जाता है। २. चमर। ३. झालर। फुँदना। ४. घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कलंगी।

मुहा०–चँवर ढलना=ऊपर चँवर हिलाया जाना।

चँवरढार–संज्ञा पुं० चँवर डुलानेवाला सेवक।

चंसुर–संज्ञा पुं० पौधा-विशेष। शाक-विशेष।

चइ–अव्य० हाथी हाँकने का इशारा।

चइत–संज्ञा पुं० चैत्र मास।

चउक–संज्ञा पुं० चौका। वेदी।

चउकी–संज्ञा स्त्री० चौकी। सिपाहियों का नाका।

चउतरा–संज्ञा पुं० चबूतरा।

चउर–संज्ञा पुं० चमर। मोरछल। राजचिह्न-विशेष। चौंर। चँवर।

चउरा–संज्ञा पुं० १. चावल का चबैना। २. ग्रामदेवता आदि का चबूतरा।

चउहट्ट*–संज्ञा पुं० दे० "चौहट्ट"। चौरास्ता।

चक–संज्ञा पुं० १. चक्रवाक या चकवा पक्षी। अपने अधिकार की भूमि। २. चक्र नामक अस्त्र। ३. क्रय-विक्रय-स्थान। खेतों की सीमा का भेद। पट्टी। ४. चक्का। पहिया। ५. छोटा गाँव। खेड़ा। पट्टी। पुरवा। ६. किसी बात की निरंतर अधिकता। ७. अधिकार। दखल। ८. चकई नामक खिलौना। ९. चाँप। १०. पकड़। ११. छेद।

वि० भरपूर। अधिक। ज्यादा।

वि० चकपकाया हुआ। भ्रांत।

चकई–संज्ञा स्त्री० १. मादा चकवा। २. घिरनी या गड़ारी के आकार का खिलौना-

चकचका–वि० गहरा, उज्ज्वल। स्वच्छ। निर्मल। प्रकाशमय। दीप्तिमान।

चकचकाना–क्रि० अ० १. भींग जाना। २. रस-रस कर ऊपर आना। ३. किसी तरल पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना।

चकचकी–संज्ञा स्त्री० करताल नाम का बाजा।

चकचाना*†–क्रि० अ० चकाचौंध लगना।

चकचाल*–संज्ञा पुं० चक्कर। फेरा। भ्रमण।

चकचाव†*–संज्ञा पुं० चकाचौंध।

चकचून–वि० १. चकनाचूर। पिसा हुआ। चूर्ण किया हुआ। २. तल्लीन। निमग्न। ३. मस्त। ४. भरपूर।

चकचौंध–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चकचौंधना–क्रि० अ० अधिक प्रकाश के सामने आँख का तिलमिलाना। चकाचौंध होना। क्रि० स० चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंधी–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चकचौंह*–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चकचौहना–क्रि० स० चाहभरी दृष्टि से देखना।

चकचौहा–वि० देखने योग्य। सुन्दर।

चकछुंदी–संज्ञा स्त्री० छछुन्दरि।

चकड़वा–संज्ञा पुं० चकल्लस। मस्ती।

चकडोर–संज्ञा स्त्री० १. जुलाहों की एक डोरी। २. चकई नामके खिलौने की डोरी।

चकती–संज्ञा स्त्री० १. दाग। कपड़े आदि का गोल छोटा टुकड़ा। पट्टी। २. थिगली। फाँक। पैवन्द।

मुहा०–बादल में चकती लगाना=अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता–संज्ञा पुं० १. शरीर के ऊपर का दाग। २. खुजलाने आदि के कारण चमड़े का सूजना। ददोरा। ३. दाँतों से काटने का चिह्न।

चकना*–क्रि० अ० १. चकित होना। चकपकाना। भौचक्का होना। २. चौंकना।

चकनाचूर–वि० १. चूर-चूर। खंड-खंड। २. बहुत थका हुआ।

चकपक–वि० चकित। स्तम्भित।

चकपक-चकबक–वि० चकित। स्तंभित।

चकपकाना–क्रि० अ० आश्चर्य से इधर-उधर देखना। भौचक्का होना। चौंकना।

चकफेरी–संज्ञा स्त्री० भँवरी। परिक्रमा।

चकबंदी–संज्ञा स्त्री० जमीन की हदबंदी। भूमि का सीमा-निर्धारण।

चकबस्त–संज्ञा पुं० १. जमीन की हदबंदी। २. किश्तवार।
चकमक–संज्ञा पुं० [तु०] एक प्रकार का पत्थर जिससे आग निकलती है।
चकमा–संज्ञा पुं० १. भुलावा। धोखा। २. हानि। नुकसान।
चकर†*–संज्ञा पुं० १. चकवा। चक्रवाक पक्षी। २. चक्र।
चकरखा–संज्ञा पुं० १. फेर। चक्कर। असमंजस। २. बखेड़ा।
मुहा०–चकरखा मचाना=धूमधाम करना। दौड़धूप करना।
चकरा*–संज्ञा पुं० दाल का बड़ा। पानी का भँवर।
वि० चौड़ा। विस्तृत।
यौ०–चौड़ा-चकरा।
चकराना–क्रि० अ० १. चक्कर खाना। सिर घूमना। २. चकित होना। घबराना।
क्रि० स० आश्चर्य में डालना।
चकरानी–संज्ञा स्त्री० नौकरानी। दासी। मजूरिन।
चकरी–संज्ञा स्त्री० १. चकई नाम का खिलौना। चक्की का पाट। २. चक्की।
वि० चक्की के समान घूमनेवाला। चंचल। अस्थिर।
चकल–संज्ञा पुं० किसी पौधे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाने के लिए मिट्टी समेत उखाड़ना।
चकलई या **चकलाई**–संज्ञा स्त्री० चौड़ाई। चकलाई। फैलाव। विस्तार।
चकला–संज्ञा पुं० १. तिवाई। पत्थर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेली जाती है। चौका। २. चक्की। ३. इलाका। जिला। सूबा। प्रांत। ४. व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा। वेश्यालय।
वि० [स्त्री० चकली] १. चौड़ा। २. पाट और सूत से बना कपड़ा।
चकलाना–क्रि० स० चौड़ा करना। फैलाना।
चकली–संज्ञा स्त्री० १. गड़ारी। गिर्री। २. छोटा चकला। होरसा।
चकलावार या **चकलेदार**–संज्ञा पुं० रक्षक। कर संग्रह करनेवाला। शासक।
चकवँड़–संज्ञा पुं० एक बरसाती पौधा। पवाँर।
चकवा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चकई] चक्रवाक पक्षी जिसके संबंध में जनश्रुति है कि रात को चकवी से अलग हो जाता है। सुरखाब। हंस।
चकवाना†*–क्रि० अ० चकपकाना।
चकवाह*–संज्ञा पुं० दे० "चकवा"।
चकहा†*–संज्ञा पुं० पहिया। दे० "चका"।
चका†*–संज्ञा पुं० पहिया। चक्र। चक्का। चाक। कुम्हार का चाक। रोटी बेलने का चकला।
चकाचक–वि० तराबोर।
क्रि० वि० खूब। भरपूर।
चकाचौंध–संज्ञा स्त्री० अधिक प्रकाश के सामने आँखों की तिलमिलाहट। तिलमिली।
चकाना*–क्रि० अ० दे० १. "चकित"। २. दे० "चकपकाना"।
चकाबू–संज्ञा पुं० १. चक्रव्यूह युद्ध के समय सैनिकों को रणक्षेत्र में ढंग-विशेष से खड़ा करना। २. भूलभुलैयाँ।
चकावी–संज्ञा स्त्री० भैंसिया दाद।
चकित–वि० आश्चर्य से अकचकाया हुआ। विस्मित। भौचक्का। हक्काबक्का। हैरान। दंग। आश्चर्यान्वित।
चकितवंत–वि० भ्रान्त। आश्चर्ययुक्त। भौंचक्का।
चकिताई*–संज्ञा स्त्री० चकित होने की क्रिया या भाव। आश्चर्य।
चकुरी–संज्ञा स्त्री० हाँडी।
चकुला†*–संज्ञा पुं० चिड़िया का बच्चा।
चकृत*–वि० दे० "चकित"। विस्मित। आश्चर्यान्वित।
चकेरा–वि० बड़ी आँखवाला।
चकोटना–क्रि० स० चुटकी काटना। नोचना।
चकोतरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा नीबू।
चकोर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चकोरी] १. एक पक्षी जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला प्रसिद्ध है। २. पहाड़ी तीतर। ३. वर्णवृत्त-विशेष।

चकोरी–संज्ञा स्त्री० मादा चकोर।

चकोह†–संज्ञा पुं० भँवर।

चकौंड़–संज्ञा पुं० १. चकौदा। एक प्रकार का पौधा जिससे दाद छूट जाती है। २. चकाचौंध।

चकौंध*–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चक्क–संज्ञा पुं० १. चक्रवाक। चकवा। २. कुम्हार का चाक ३. पहिया। चक्कर। चक्र। ४. दिशा।

चक्कर–संज्ञा पुं० १. अस्त्र-विशेष। २. गोल वस्तु। मंडलाकार। गोल या मंडलाकार घेरा। मंडल। ३. चाक। ४. चारों ओर घूमना। परिक्रमण। फेरा। ५. चलने में अधिक घुमाव या दूरी। फेर। ६. हैरानी। असमंजस। ७. पेंच। जटिलता। दुरूहता। ८. सिर घूमना। घुमरी। घुमटा। ९. भँवर। जंजाल। **मुहा०**–चक्कर काटना=परिक्रमा करना। मँडराना। चक्कर खाना =१. घूमना। २. घुमाव-फिराव के साथ जाना। ३. भटकना। भ्रांत होना। हैरान होना। मूर्च्छा। किसी के चक्कर में आना या पड़ना=किसी के धोखे में आना।

चक्कवइ*–वि० दे० "चक्रवर्ती"।

चक्कवै–संज्ञा पुं० चक्रवर्ती राजा।

चक्कस–संज्ञा पुं० चिड़ियों का अड्डा।

चक्का–संज्ञा पुं० १. पहिया। २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ३. बड़ा टुकड़ा। थक्कड़। ईंट-पत्थर या कंकड़ का ढेर जो माप के लिए क्रम से लगाया गया हो।

चक्कान–वि० गाढ़ा। गोल निशानी। घड़ा।

चक्की–संज्ञा स्त्री० १. आटा पीसने का यंत्र। जाँता। पाट। २. पैर के घुटने की गोल हड्डी। ३. बिजली। **मुहा०**–चक्की पीसना=कड़ा परिश्रम करना।

चक्कीरहा–संज्ञा पुं० चक्की को खुरदरी करनेवाला।

चक्कू–संज्ञा स्त्री० छुरी। चाकू।

चक्खी–संज्ञा स्त्री० खाने की स्वादिष्ट और चटपटी चीज। चाट। बटेरों की चुगाई।

चक्र–संज्ञा पुं० १. कुम्हार का चाक। २. पहिया। गोलाकार। ३. तगर का फूल। ४. तेल पेरने का कोल्हू। ५. चक्की। ६. हस्तरेखा-विशेष। ७. लोहे के एक अस्त्र का नाम। पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ८. धोखा। जाल। ९. भँवर। १०. बवंडर। ११. समूह। समुदाय। मंडली। १२. एक प्रकार का व्यूह या सेना की स्थिति। १३. मंडल। प्रदेश। राज्य। १४. एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रांत भूमि। १५. चक्रवाक पक्षी। चकवा। १६. योग के अनुसार शरीरस्थ। पद्म। १७. फेरा। घुमाव। भ्रमण। चक्कर। १८. दिशा। प्रान्त। १९. एक प्रकार का छंद।

चक्रगोसा–संज्ञा पुं० राज्यरक्षक। सेनापति।

चक्रतीर्थ–संज्ञा पुं० १. दक्षिण का एक तीर्थ-स्थान। २. नैमिषारण्य का एक कुंड।

चक्रदंती–संज्ञा स्त्री० जमालगोटा। दंती-वृक्ष।

चक्रदंष्ट्र–संज्ञा पुं० सूअर।

चक्रधर–वि० चक्र धारण करनेवाला। संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान्। २. श्रीकृष्ण। ३. बाजीगर। इंद्रजाल करनेवाला। ४. कई ग्रामों या नगरों का स्वामी। ५. संगीत का एक राग। ६. सर्प। ७. पानी का एक जन्तु। ८. सर्वोपरि राजा। चक्रवर्त्ती।

चक्रधारी–संज्ञा पुं० दे० चक्रधर।

चक्रपाणि–संज्ञा पुं० विष्णु भगवान्। चक्र धारण करनेवाले। श्रीकृष्ण।

चक्रपाद–संज्ञा पुं० १. रथ। गाड़ी। २. हाथी।

चक्रपाल–संज्ञा पुं० १. चक्र धारण करनेवाला। श्रीकृष्ण। २. गोलाई। ३. राग का भेद। ४. चकलेदार।

चक्रपूजा–संज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा।

चक्रबंध–संज्ञा पुं० चक्र के आकार का एक चित्र-काव्य।

चक्रबंधु–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

चक्रभेदनी–संज्ञा स्त्री० रात्रि।

चक्रमंडल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नृत्य।

चक्रमंडली–संज्ञा पुं० अजगर सर्प।

चक्रमर्द—संज्ञा पुं० एक नाग का नाम।

चक्रपूजा—संज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा-विधि।

चक्रमुद्रा—संज्ञा स्त्री० १. गोल आकार का सिक्का। २. गोलाकार चिह्न। ३. चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जिन्हें वैष्णव भक्त अपने बाहु तथा और अंगों पर छपाते हैं। ४. तांत्रिकों का पूजा करने का एक ढंग, जिससे हाथ की अंगुलियों की एक मुद्रा बनाते हैं।

चक्रलक्षण—संज्ञा स्त्री० गुरुच। अमृतलता।

चक्रवत्—अव्य० चक्राकार अस्त्र। चक्र के समान।

चक्रवर्ती—वि० [स्त्री० चक्रवर्त्तिनी] १. राजाओं का राजा। समुद्र पर्यन्त राज्य करने-वाला। विश्व-सम्राट्। सार्वभौम सम्राट्। २. इस नाम का एक समवृत्त वर्णभेद छंद। संज्ञा पुं० १. बथुआ का साग। २. एक वनस्पति-विशेष (जटामासी)।

चक्रवाक—संज्ञा पुं० चकवा-पक्षी।

यौ०—चक्रवाकबंधु=सूर्य्य।

चक्रवात—संज्ञा पुं० १. बवंडर। भीषण आँधी। तूफान। २. वेग से चक्कर खाती हुई वायु।

चक्रवाल—संज्ञा पुं० १. पुराणों में वर्णित दिन और रात को अलग करनेवाली पर्वत-माला जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई मानी जाती है। परिधि। घेरा। गोलाकार। मंडलाकार। २. समूह। जन-समाज।

चक्रवृद्धि—संज्ञा स्त्री० सूद दर सूद। ब्याज पर ब्याज।

चक्रव्यूह—संज्ञा पुं० युद्ध में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति-विशेष। महाभारत में कौरवों ने चक्रव्यूह रचकर अभिमन्यु को मारा था।

चक्रांक—संज्ञा पुं० चक्र का चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगवाते हैं।

चक्रांकित—वि० जिसने अपने बाहु पर चक्र का चिह्न लगवाया हो। वैष्णव-सम्प्रदाय के अनुयायी ऐसा चिह्न लगाते हैं।

चक्रांग—संज्ञा पुं० १. हंस। २. रथ। ३. चकवा।

चक्रांगी—संज्ञा स्त्री० १. हंसिनी। २. कुटकी। ३. गाड़ी। ४. एक शाक। ५. मजीठ। ६. चक्रवाक पक्षी।

चक्रा—संज्ञा स्त्री० समूह। गिरोह। टोली।

चक्राकार—वि० गोलाकार। घेरा।

चक्रायुध—संज्ञा पुं० विष्णु। जिसका हथियार चक्र हो।

चक्रित*—वि० दे० "विस्मित"। "चकित"।

चक्री—संज्ञा पुं० १. चक्र धारण करनेवाला। २. विष्णु। ३. गाँव का पंडित या पुरोहित। ४. सर्प। ५. चक्रवाक पक्षी। ६. कुम्हार। ७. तेली। ८. जासूस। मुखबिर। चर। ९. चक्रवर्ती राजा। किलेदार। १०. मंत्री। ११. ब्रह्मर्षि। १२. आकाश में कल्पित गोलाकार मंडल। १३. एक वर्णसंकर जाति। १४. चक्रमर्द। चकवँड़।

चक्रेला—वि० गोलाकार। चक्राकार। गोल। वर्तुल।

चक्षण—संज्ञा स्त्री० १. कथन। २. अनुग्रह। ३. गजक। चाट।

चक्षम—संज्ञा पुं० उपाध्याय। बृहस्पति।

चक्षुःश्रवा—संज्ञा पुं० साँप।

चक्षु—संज्ञा पुं० १. नयन। नेत्र। आँख। २. एक नदी जिसे आजकल आक्सस कहते हैं। वंक्षु-नद।

चक्षुरिंद्रिय—संज्ञा स्त्री० नेत्र। आँख।

चक्षुष्पति—संज्ञा पुं० सूर्य।

चक्षुष्य—वि० १. आँखों से उत्पन्न। नेत्रों के लिए लाभदायक (औषध आदि)। २. सुंदर। मनोहर। ३. नेत्र-संबंधी। संज्ञा पुं० १. खपरिया। २. सुरमा। केतकी।

चख*—संज्ञा पुं० नेत्र। आँख। [फा०] झगड़ा। तकरार। कलह।

यौ०—चख-चख—तकरार। कहा-सुनी।

चखन—संज्ञा पुं० आँख। चक्षु।

चखना—क्रि० स० स्वाद लेना।

चखाचखी—संज्ञा स्त्री० झगड़ा। प्रतिस्पर्द्धा। लाग-डाँट। विरोध। कहा-सुनी।

चखाना—क्रि० स० खिलाना। स्वाद दिलाना।

यौ०—मजा चखाना=बदला लेना।

चखिया—वि० झगड़ालू । चखनेवाला । चटोर ।

चखु*—संज्ञा पुं० दे० "चक्षु" । नेत्र ।

चखोड़ा†*—संज्ञा पुं० दिठौना । डिठौना ।

चगड़—वि० होशियार । चालाक । चंट । चतुर ।

चग़ताई—संज्ञा पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताईखाँ से चला था ।

चचा—संज्ञा पुं० [स्त्री० चची] बाप का भाई । काका । ताऊ । पितृव्य ।

चचिया—वि० संबंध में चचा के बराबर का संबंध रखनेवाला ।

यौ०—चचिया ससुर=पति या पत्नी का चाचा ।

चचींडा†—संज्ञा पुं० एक तरकारी ।

चचीर—संज्ञा पुं० रेखा । लकीर ।

चचुलाई—संज्ञा स्त्री० चचेड़ा । तरकारी-विशेष ।

चचेरा—वि० चाचा-संबंधी । चाचा से उत्पन्न । चाचाजाद । जैसे—चचेरा भाई ।

चचोड़ना या **चचोरना**—क्रि० स० निचोड़ना । दबाकर चूसना । दाँत से दबाकर खींचना या चूसना ।

चट—क्रि० वि० झट । तुरंत । शीघ्र । जल्दी ।

*†संज्ञा पुं० १. दाग । धब्बा । २. घाव या चकत्ता ।

संज्ञा स्त्री० १. किसी के टूटने का शब्द । २. उँगलियों के चटकाने का शब्द ।

वि० खाया हुआ ।

मुहा०—चट रोटी पट दाल=कार्य्य तुरन्त पूरा होना । चट कर जाना या चट करना= १. सब खा जाना । २. दूसरे की वस्तु हड़प जाना ।

चटक—संज्ञा पुं० [स्त्री० चटका] गौरा पक्षी । गौरैया । चिड़ा ।

संज्ञा स्त्री० चटकीलापन । चमक-दमक । कांति । घड़ाका । कड़क । शोभा । सौन्दर्य ।

†वि० चटकीला । चमकीला । तेजी । फुरती ।

क्रि० वि० चटपट । शीघ्रतापूर्वक ।

वि० चटपटा । अच्छा स्वाद । चटकारा ।

चटकदार—वि० दे० "चटकीला" । भड़कीला ।

चटकना—क्रि० अ० १. तड़कना । 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना । कड़कना । २. कोयले, गँठीली लकड़ी आदि का जलते समय चट-चट करना । ३. चिड़चिड़ाना । झुँझलाना । ४. गरज पड़ना । ५. स्थान स्थान पर फटना । दरार पड़ना । ६. कलियों का फूटना या खिलना । प्रस्फुटित होना । ७. अनबन होना । खटकना ।

संज्ञा पुं० तमाचा । थप्पड़ ।

चटकनी—संज्ञा स्त्री० कुंडी । सिटकनी ।

चटक-मटक—संज्ञा स्त्री० सजधज । शृंगार । चमक-दमक । बनाव-सिंगार । हाव-भाव । नाज-नखरा ।

चटका†—संज्ञा पुं० १. तीव्र इच्छा । २. शीघ्रता । ३. टाटा । ४. चट्टी । ५. भाँग । ६. गौरैया पक्षी ।

चटकाना—क्रि० स० १. तोड़ना । २. चटचट शब्द निकालना । ३. उँगलियाँ फोड़ना । ४. अलग करना । दूर करना । ५. चिढ़ाना । कुपित करना ।

मुहा०—जूतियाँ चटकाना=जूता घसीटते हुए फिरना । मारा-मारा फिरना ।

चटकारा—वि० १. चमकीला । चटकीला । २. चंचल । चपल । तेज । ३. स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द ।

चटकाली—संज्ञा स्त्री० गौरैया चिड़ियों की पंक्ति ।

चटकीला—वि० [स्त्री० चटकीली] १. चमकदार । खुलता । भड़कीला । २. चमकीला । सुन्दर । मनोहर । ३. आभायुक्त । ४. चरपरा । चटपटा । मजेदार ।

चटकोरा—संज्ञा पुं० छोटे बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में लेकर चुभलाते हैं ।

चटखना—क्रि० स० संज्ञा पुं० दे० "चटकना" ।

चट-चट—संज्ञा स्त्री० चटकने की आवाज । चट-चट की ध्वनि ।

चटचटाना—क्रि० अ० १. टूटने या फूटने का शब्द । २. किसी वस्तु का चटचट शब्द करते हुए जलना ।

चटचटिया—वि० चंचल। उतावला। हड़बड़िया।
चटचेटक—संज्ञा पुं० इन्द्रजाल। जादू।
चटना—संज्ञा पुं० चटोरा। पेटू।
चटनी—संज्ञा स्त्री० १. चटपटी वस्तु। २. चाटने की वस्तु। अवलेह।
चटपट—क्रि० वि० तुरंत। जल्दी। शीघ्र।
चटपटा—वि० [स्त्री० चटपटी] चाट। चरपरा। स्वादपूर्ण। मजेदार।
चटपटाना—क्रि० स० व्याकुल होना। फड़फड़ाना।
क्रि० अ० जल्दी करना। हड़बड़ाना।
चटपटाहट—संज्ञा स्त्री० व्याकुलता। शीघ्रता।
चटपटी—संज्ञा स्त्री० [वि० चटपटिया] १. चंचल। २. घबराहट। व्यग्रता। ३. आतुरता। उतावली। शीघ्रता।
चटर-चटर—संज्ञा स्त्री० चटपट शब्द। विशेषकर 'चट्टी' पहनकर चलने से उत्पन्न शब्द।
चटवाना—क्रि० स० दे० "चटाना"।
चटशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"। पाठशाला। मकतब।
चटसार—*संज्ञा स्त्री० बच्चों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मकतब।
चटाई—संज्ञा स्त्री० फूस, सींक, आदि का बिछावन। तृण की आसनी। माथरी।
संज्ञा स्त्री० चाटने की क्रिया।
चटाक—संज्ञा पुं० १. दे० "चटाका"। लकड़ी टूटने का शब्द। २. दाग। चकत्ता।
चटाका—संज्ञा पुं० किसी कड़ी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द।
[illegible]ऽ—संज्ञा पुं० लगातार। शीघ्रता से। जल्दी से।
[illegible]ना—क्रि० स० १. चाटने का काम कराना। २. थोड़ा-थोड़ा खिलाना। ३. घूस देना। रिश्वत देना। ४. छुरी, तलवार आदि पर सान रखवाना।
[illegible]ी—संज्ञा स्त्री० जल्दी। शीघ्रता।
[illegible]न—संज्ञा पुं० अन्नप्राशन। बच्चे को [illegible]ले पहल अन्न खिलाना।
[illegible]*—क्रि० वि० शीघ्र। चटपट। जल्दी।

चटियल—वि० पथरीली। बंजर। वह भूमि, जो उपजाऊ न हो।
चटिया—संज्ञा पुं० विद्यार्थी। शिष्य। छात्र। चेला।
वि० चाटनेवाला।
चटी—संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार।"
संज्ञा स्त्री० दे० "चट्टी"। १. पड़ाव। विश्राम-स्थान। २. पाठशाला।
वि० १. चपल। चंचल। चालाक। २. मनोहर। सुन्दर।
चटु—संज्ञा पुं० १. खुशामद। २. उदर। ३. यतियों का एक आसन।
वि० सुन्दर। मनोहर।
चटुला—संज्ञा स्त्री० बिजली।
संज्ञा पुं० बाल काढ़ने का एक ढंग।
चटोर या चटोरा—वि० [स्त्री० चटोरी] १. लोभी। लोलुप। २. स्वादलोलुप। जिसे अच्छी चीजें खाने की लत हो।
चटोरापन—संज्ञा पुं० स्वादलोलुपता। अच्छी चीजें खाने का व्यसन।
चट्ट†—वि० १. चाट-पोंछकर खाया हुआ। २. समाप्त। नष्ट। गायब। लुप्त।
क्रि० वि० तुरन्त।
चट्टा—संज्ञा पुं० १. पथरीली जमीन। चटियल मैदान। २. दाग। ३. विद्यार्थी। ४. चटाई। ५. खुला मैदान। ६. पाठशाला का विद्यार्थी। शिष्य।
चट्टान—संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि। शिलाखंड।
चट्टा-बट्टा—संज्ञा पुं० १. काठ का एक खिलौना। अनुयायी। चेला। २. गोले और गोलियाँ जिन्हें बाजीगर एक थैली में से निकालकर तमाशा दिखाते हैं।
मुहा०—एक ही थैली के चट्टे-बट्टे=एक ही चाल-चलन के यार-दोस्त। एक ही मेल के मनुष्य। चट्टे-बट्टे लगाना=इधर की उधर लगाकर लड़ाई कराना।
चट्टी—संज्ञा स्त्री० १. टिकान। पड़ाव। चटका। २. हानि। ३. एँड़ी की ओर खुला हुआ जूता। स्लिपर।
चट्टू—वि० स्वादलोलुप। चटोर।
संज्ञा पुं० पत्थर का बड़ा खरल।

चड़—संज्ञा पुं० टूटने का शब्द। दुराग्रह। हठ।

चड़चड़—संज्ञा पुं० चटचट। टेंटें। बकबक।

चड़चड़ाना—क्रि० अ० फटना। तड़कना। टूटना-फूटना।

चड़पड़ाना—क्रि० अ० फूटना। फटना।

चड़बड़—संज्ञा पुं० बड़बड़। बकबक।

चड़बड़िया—संज्ञा पुं० बक्की। बकवादी। गप्पी।

चड्ढी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का खेल जिसमें लड़के एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर चलते हैं।

चढ़त—संज्ञा स्त्री० किसी देवता को चढ़ाई हुई वस्तु। देवता की भेंट।

चढ़ती—संज्ञा स्त्री० लाभ। वृद्धि।

चढ़ना—क्रि० अ० १. नीचे से ऊपर को जाना। २. ऊपर उठना। ३. ऊँचाई पर जाना। उन्नति करना। आरोहण। ४. बाढ़ आना। ५. धावा करना। चढ़ाई करना। ६. मँहगा होना। भाव का बढ़ना। ७. सुरऊँचा होना। ८. धारा या बहाव के विरुद्ध चलना। ९. सितार आदि का तार कस जाना। १०. तनना। ११. किसी देवता, आदि को भेंट दिया जाना। १२. सवारी पर बैठना। सवार होना। १३. वर्ष, मास, आदि का आरम्भ होना। १४. ऋण होना। कर्ज होना। १५. बही आदि पर लिखा जाना। टँकना। दर्ज होना। १६. किसी मादक वस्तु का प्रभाव होना। १७. चूल्हे पर रखा जाना।

मुहा०—चढ़ बनना=सुयोग मिलना। नस चढ़ना=नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना।

चढ़नी—संज्ञा स्त्री० लड़ाई की तैयारी। शत्रु पर चढ़ाई करना।

चढ़वाना—क्रि० स० चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़वैया—संज्ञा पुं० स्वार। अश्वारोही। चढ़नेवाला।

चढ़ाई—संज्ञा स्त्री० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३. धावा। आक्रमण।

चढ़ा-उतरी—संज्ञा स्त्री० चढ़ना-उतरना। बार-बार चढ़ने-उतरने की क्रिया।

चढ़ा-ऊपरी—संज्ञा स्त्री० होड़। लाग-डाँट। एक दूसरे के आगे बढ़ने का प्रयत्न। प्रतिद्वन्द्विता।

चढ़ाचढ़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"। प्रतिद्वन्द्विता।

चढ़ाना—क्रि० स० १. "चढ़ना" का प्रेरणार्थक रूप। २. चढ़ने में सहायता देना। ऊपर उठाना। बाजों का कसना। ३. अर्पित करना। ४. पी जाना।

चढ़ाव—संज्ञा पुं० १. चढ़ने का भाव। २. बढ़ने का भाव। वृद्धि। बाढ़। चढ़ने की क्रिया। उठाव। ज्वर आना। ३. दे० "चढ़ावा"। ४. नदी के 'बहाव का' उलटा।

यौ०—चढ़ाव-उतार=ऊँचा-नीचा स्थान। किसी मोटी वस्तु का क्रमशः पतली होना। गावदुम आकृति।

चढ़ावा—संज्ञा पुं० १. वर-पक्ष की ओर से दुलहिन को विवाह के अवसर पर दी गई सामग्री। २. किसी देवता को अर्पित की जानेवाली वस्तु। पूजा। ३. दम। बढ़ावा

मुहा०—चढ़ावा-बढ़ावा देना=उत्साह बढ़ाना। उत्तेजित करना।

चढ़ैत—संज्ञा पुं० चढ़वैया। चढ़नेवाला। अभिमान में चूर।

चढ़ैता—संज्ञा पुं० दूसरों के घोड़े फेरनेवाला।

चणक—संज्ञा पुं० १. चना। २. एक ऋषि। ३. एक प्रकार की माप। ४. चाणक्य के पिता।

चतुरंग—संज्ञा पुं० १. गाने की एक पद्धति। गाना-विशेष। २. सेना के चार अंग (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल)। ३. चतुरंगिणी सेना। ४. शतरंज।

चतुरंगिणी—वि० जिस में चार अंग हों (सेना)।

चतुरंगुल—वि० चार अंगुल का। संज्ञा पुं० अमलतास।

चतुर—वि० १. होशियार। दक्ष। निपुण।

चालाक । २. वक्रगामी । टेढ़ी चाल चलनेवाला ।
संज्ञा पुं० श्रृंगार रस में नायक-विशेष ।
चतुरई–संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई" । चतुरता । चालाकी ।
चतुरता–संज्ञा स्त्री० चालाकी । प्रवीणता । चतुराई । होशियारी ।
चतुरपन–संज्ञा पुं० दे० "चतुरता" । चतुराई ।
चतुरस्र–वि० चौखूंटा । चौकोर । एक प्रकार का नाट्यगृह । चौरस आकार का । चतुष्कोण ।
चतुरा–संज्ञा स्त्री० सयानी । दक्षा । प्रवीणा ।
चतुराई–संज्ञा स्त्री० निपुणता । दक्षता । चालाकी । होशियारी ।
चतुरानन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा । चार मुखवाला ।
चतुरास–संज्ञा स्त्री० चारों ओर । चहुँओर ।
चतुरासी–वि० ८४ संख्या ।
चतुरिन्द्रिय–संज्ञा पुं० चार इन्द्रियोंवाले जीव (स्पर्श, घ्राण, रसना, नेत्र) । जैसे—मक्खी, भौंरे, साँप आदि ।
चतुरुपवेद–संज्ञा पुं० चार उपवेद, गन्धर्व-वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, धर्मशास्त्र ।
चतुर्गुण–वि० चौगुना । जिसमें चार गुण हों ।
चतुर्थ–वि० चौथा ।
चतुर्थांश–संज्ञा पुं० चौथाई भाग ।
चतुर्थावस्था–संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा ।
चतुर्थाश्रम–संज्ञा पुं० चौथा आश्रम । संन्यास ।
चतुर्थी–संज्ञा स्त्री० १. विवाह के चौथे दिन होनेवाली रस्म । २. चौथ । किसी पक्ष की चौथी तिथि ।
चतुर्दश–वि० चार और दस की संख्या । १४ ।
चतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० चौदस । किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि ।
चतुर्दिक–संज्ञा पुं० चारों दिशाएँ ।
क्रि० वि० चारों ओर ।
चतुर्भुज–वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण । विष्णु । २. वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों । चार भुजाओंवाला । जिसके चार भुजाएँ हों ।

चतुर्भुजा या **चतुर्भुजी**–संज्ञा स्त्री० १. चार भुजावाली देवी । भगवती । २. गायत्री-रूपधारिणी महाशक्ति ।
चतुर्भोजन–संज्ञा पुं० चार प्रकार का (भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य) भोजन ।
चतुर्मास–संज्ञा पुं० दे० "चातुर्मास" । चौमासा ।
चतुर्मुख–संज्ञा पुं० चतुरानन । ब्रह्मा ।
वि० (स्त्री० चतुर्मुखी) जिसके चार मुख हों ।
क्रि० वि० चारों तरफ ।
चतुर्मुक्ति–संज्ञा स्त्री० चार प्रकार की मुक्ति । सायुज्य, सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य ।
चतुर्युगी–संज्ञा स्त्री० ४३,२०,००० वर्ष का समय इसमें चारों युग होते हैं । चौकड़ी । चौजुगी । (सत्ययुग, द्वापर युग, त्रेता युग और कलियुग ।)
चतुर्योनि–संज्ञा स्त्री० चार प्रकार से उत्पन्न जीव । स्वेदज, अंडज, उद्भिज और जरायुज ।
चतुर्वर्ग–संज्ञा पुं० चार वर्ग । मानव जीवन के चार उद्देश्य । अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।
चतुर्वर्ण–संज्ञा पुं० चार वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
चतुर्विध–वि० चार प्रकार, चार तरह ।
चतुर्वेद–संज्ञा पुं० १. चारों वेद । २. भगवान् । परमेश्वर । ईश्वर ।
चतुर्वेदी–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक उपजाति । चारों वेदों का ज्ञाता या पंडित । चारों वेद जाननेवाला ।
चतुर्व्यूह–संज्ञा पुं० १. चिकित्सा-शास्त्र । २. योगशास्त्र । ३. चार मनुष्यों या पदार्थों का समूह । ४. चार व्यूह धारण करनेवाले-विष्णु ।
चतुर्होत्र–संज्ञा पुं० परमेश्वर । विष्णु ।
चतुष्क–संज्ञा पुं० चार खम्भों का मण्डप । चौराहा जहाँ चार मार्ग मिलते हों । चार का समूह । चतुष्टय । चार भाग ।
चतुष्कल–वि० जिसमें चार कलाएँ हों । चार मात्राओंवाला ।
चतुष्कोण–वि० जिसमें चार कोने हों । चौकोर । चौकोना । चौरस ।

चतुष्टय–संज्ञा पुं० १. चार वस्तुओं का समूह। २. चार की संख्या।
चतुष्पथ–संज्ञा पुं० चौक। चौराहा।
चतुष्पद–संज्ञा पुं० चौपाया।
वि० चार पदोंवाला।
चतुष्पदधर्म–संज्ञा पुं० चार अंगों से युक्त धर्म। विद्या, सत्य, तपस्या, दान से युक्त।
चतुष्पदा–संज्ञा स्त्री० छंद-विशेष।
चतुष्पदी–संज्ञा स्त्री० १. चार पदों का गीत। २. चार पाँववाली ३. चौपाई छंद जिसमें १५ मात्राएँ हों।
चत्वर–संज्ञा पुं० १. चौरास्ता। चौमुहानी। २. वेदी। चबूतरा। ३. यज्ञस्थान।
चदरा–संज्ञा पुं० दे० "चद्दर"। चादर।
चदिर–संज्ञा पुं० १. कपूर। २. चन्द्रमा। ३. हाथी। ४. साँप।
चद्दर–संज्ञा स्त्री० १. चादर। २. किसी धातु का चौकोर पत्तर। ३. नदी आदि की सतह जो चादर के समान दिखाई देती है।
चनकना†–क्रि० अ० दे० "चटकना"।
चनखना–क्रि० अ० चिढ़ना। चिटकना। नाराज होना।
चना–संज्ञा पुं० एक अनाज। बूंट।
मुहा०–नाकों चने चबवाना=बहुत तंग करना। बहुत हैरान करना। लोहे का चना=अत्यंत कठिन काम। दुस्साध्य कार्य।
चपकन–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का वस्त्र। अँगरखा। २. संदूक आदि की लोहे या पीतल की साज। छोटी कील।
चपकना–क्रि० अ० दे० "चिपकना।"
चपकाना–क्रि० स० सटाना। मिलाना। जोड़ना।
चपकुलिश–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. बहुत भीड़। स्थानाभाव। २. कठिन स्थिति। फेर। कठिनाई। अंडस। झंझट।
चपटना†–क्रि० अ० दे० "चिपकना"। चपकना। लपटना। चपटा होना।
चपटा†–वि० दे० "चिपटा"। सपाट। बराबर। धँसा हुआ।
चपटी–संज्ञा स्त्री० १. बैठी वस्तु। २. मिली हुई स्त्रियाँ ३. कुत्ते का जुआँ (किलनी)। ४. ताली। ५. योनि। ६. चिमटी।
चपड़चपड़–संज्ञा पुं० श्वान के खाने का शब्द।
चपड़गट्टू–वि० दे० "चपरगट्टू"।
चपड़ना–क्रि० स० ठोंक या पीटकर चपटा करना।
चपड़ा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की लाख। २. लाल रंग का एक कीड़ा।
चपड़ाऊ–वि० निर्लज्ज। ढीठ। धृष्ट।
चपड़ाना–क्रि० अ० खोटा करना। बहकाना। चपटा करना।
चपड़ी–संज्ञा स्त्री० गोबरी। कंडी। तल्ली। पटिया।
चपत–संज्ञा पुं० १. थप्पड़। तमाचा। २. धक्का। हानि। नुकसान।
चपना–क्रि० अ० १. कुचलना। कुचल जाना। दब जाना। अधीन होना। मसल जाना। २. लज्जा से गड़ जाना। लज्जित होना।
चपनी–संज्ञा स्त्री० १. कटोरी। छिछला कटोरा। २. एक प्रकार का कमंडल। ३. चक्की। ४. घुटने की हड्डी। ५. ढक्कन। ६. छाप।
चपरगट्टू–वि० चौपट करनेवाला। १. विनाशी। सत्यानाशी। चौपटा। २. अभागा। आफत का मारा। ३. गुत्थम-गुत्था। उलझा हुआ।
चपरना†*–क्रि० स० दे० "चुपड़ना"। १. परस्पर मिलाना। २. भाग जाना। ३. किसी गीली वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैलाकर लगाना।
चपरा–अव्य० दे० "चपड़ा"। शीघ्र। अचानक। झूठा।
चपरास–संज्ञा स्त्री० चपरासियों का चिह्न। बैज।
चपरासी–संज्ञा पुं० चपरास पहननेवाला नौकर। प्यादा। अरदली।
चपरि–अव्य० १. शीघ्र। तुरन्त। २. दबकर। घुसकर। भूमि से मिलकर।
चपल–वि० १. स्थिर न रहनेवाला। चंचल। चुलबुला। २. उतावला। जल्दबाज। ३. चालाक। ४. धृष्ट। ५. पारा। ६. चातक।

७. मछली । ८. पत्थर-विशेष । ९. सुगन्धित द्रव्य-विशेष । १०. राई । ११. एक प्रकार का चूहा । १२. घोड़ा ।

चपलता—संज्ञा स्त्री० १. चंचलता । तेजी । जल्दी । २. धृष्टता । ढिठाई ।

चपला—संज्ञा स्त्री० १. बिजली। २. लक्ष्मी। चंचला । ३. एक छंद । ४. व्यभिचारिणी । वेश्या । ५. जीभ । जिह्वा । ६. मद्य । ७. भांग । विजया । ८. पीपर । ९. प्राचीन समय की एक नाव ।
वि० फुरतीली । तेज । चंचला ।

चपलाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता" ।

चपलाना*—क्रि० अ० चलना । हिलना । डोलना ।
क्रि० स० चलाना । हिलाना ।

चपली†—संज्ञा स्त्री० जूती ।

चपाती—संज्ञा स्त्री० पतली रोटी ।

चपाना—क्रि० स० १. दबाना । दबवाना । २. लज्जित करना । छिपाना । शर्मिंदा करना । थापना । रस्सी जोड़ना ।

चपेट—संज्ञा स्त्री० १. झोंका । धक्का । आघात । २. तमाचा । ३. दबाव । ४. संकट । ५. हानि ।

चपेटना—क्रि० स० १. दबाना । दबोचना । २. भगाना । ३. फटकार बताना । डाँटना ।

चपेटा—संज्ञा पुं० दे० "चपेट" ।

चपेरना—संज्ञा पुं० दबाना । चापना ।

चप्पड़—संज्ञा पुं० दे० "चिप्पड़" ।

चप्पन—संज्ञा पुं० १. छिछला कटोरा । २. ढक्कन ।

ा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का जूता ।

ा—संज्ञा पुं० १. चतुर्थांश । चौथा भाग । २. चार अंगुल जगह । चार अंगुलियों का निशान । ४. थोड़ी जगह ।

ी—संज्ञा स्त्री० धीरे-धीरे हाथ-पैर दबाना। चरण-सेवा ।

प्पू—संज्ञा पुं० एक प्रकार का डाँड़ । किल-री । नाव का डाँड़ खेनेवाला ।

ल—संज्ञा स्त्री० चारों ओर दलदल से रा हुआ द्वीप ।

चबलाई—संज्ञा स्त्री० चबलाना । दाँतों से पीसना ।

चबलाना—क्रि० स० १. चबाना । कुचलना । पीसना । २. चबाने का काम कराना ।

चबाई—संज्ञा स्त्री० चबाने की क्रिया या भाव ।
संज्ञा पुं० दे० "चबाई" ।

चबाना—क्रि० स० १. दाँतों से कुचलना । जुगालना । † २. दाँत से काटना । दरदराना। मुहा०—चबा चबाकर बातें करना=एक-एक शब्द धीरे-धीरे बोलना । चबे को चबाना= किए हुए काम को फिर-फिर करना । पिष्ट-पेषण करना ।

चबूतरा—संज्ञा पुं० १. चौरस ऊँची जगह । चौतरा ।

चबेना—संज्ञा पुं० भुना हुआ अनाज । चर्वण । भूँजा ।

चबेनी—संज्ञा स्त्री० जलपान । जलखवा ।

चव्य—संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष । चाव ।

चभक—संज्ञा पुं० डंक । काँटा । पानी में किसी वस्तु के गिरने की आवाज ।

चभाना—क्रि० स० खिलाना । भोजन कराना ।

चभोरना—क्रि० स० १. डुबोना । गोता देना । २. तर करना ।

चमक—संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश । २. कांति । दीप्ति । आभा । ३. कमर आदि का अचानक दर्द (चिलक) । लचक ।

चमक-दमक—संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति । आभा । २. तड़क-भड़क ।

चमकदार—वि० जिसमें चमक हो। चमकीला।

चमकना—क्रि० अ० १. जगमगाना । २. कांतियुक्त होना । दमकना । ३. उन्नति करना । ४. जोर पर होना । बढ़ना । ५. मटकना । उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव बताना । ६. कमर आदि में एकाएक दर्द होना । लचक आना ।

चमकाना—क्रि० स० १. चमकीला करना । झलकाना । २. उज्ज्वल करना । साफ करना । ३. भड़काना । ४. चिढ़ाना । खिझाना । ५. भाव बताने के लिए उँगली आदि हिलाना । मटकाना ।

चमकारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "चमक"।
वि० चमकीली।
चमकी–संज्ञा स्त्री० कारचोबी में रुपहले या सुनहले तारों के टुकड़े। चमकदार छड़ी। भड़कीली।
चमकीला–वि० [स्त्री० चमकीली] १. चमकदार। चमकनेवाला। २. भड़कीला। शानदार।
चमकौवल–संज्ञा स्त्री० १. चमकाने की क्रिया। २. मटकाने की क्रिया।
चमक्को–संज्ञा स्त्री० १. मटकनेवाली स्त्री। चंचल और निर्लज्ज स्त्री। २. कुलटा स्त्री। ३. झगड़ालू स्त्री।
चमगादुर या चमगादड़–संज्ञा पुं० १. उड़नेवाला जन्तु, जिसे दिन में दिखाई नहीं देता। २. गादुर।
चमगुदड़ी–संज्ञा स्त्री० रात में उड़नेवाली चिड़िया।
चमचड़क–संज्ञा पुं० क्षीण। दुर्बल। भँकरा।
चमचम–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बँगला मिठाई।
क्रि० वि० दे० "चमाचम"।
चमचमाना–क्रि० अ० चमकना। प्रकाशमान होना। दमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमक लाना।
चमचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चमची] चम्मच। एक प्रकार की छोटी कलछी।
चमजूई–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की किलनी (जुआँ)। २. पीछा न छोड़नेवाली वस्तु।
चमड़ा–संज्ञा पुं० १. शरीर का ऊपरी आवरण। चर्म। त्वचा। २. मृत जानवरों के शरीर पर से उतारा हुआ चर्म, जिससे जूते बेग आदि चीजें बनती हैं। खाल। **मुहा०**–चमड़ा उधेड़ना या खींचना=१. चमड़े को शरीर से अलग करना। २. बहुत मार मारना। ३. छाल।
चमड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चमड़ा"।
चमत्कार–संज्ञा पुं० [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १. आश्चर्य्य। विस्मय। २. विचित्र घटना। ३. अनूठापन। विचित्रता।
चमत्कारी–वि० [स्त्री० चमत्कारिणी] १. जिसमें विलक्षणता हो। अद्भुत। २. चमत्कार दिखानेवाला।
चमत्कृत–वि० आश्चर्यान्वित। विस्मित।
चमन–संज्ञा पुं० १. हरी क्यारी। २. फुलवारी। छोटा बगीचा।
चमर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चमरी] १. सुरागाय। २. सुरागाय की पूँछ का बना चँवर। चामर। एक दैत्य का नाम। एक मृग। कृष्णसार।
चमरख–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का खट्टा फल। २. रहटा की सामग्री। ३. चरखे में लगाने की चकती। ४. दुबली-पतली स्त्री।
चमरशिखा–संज्ञा स्त्री० घोड़ों की कलगी।
चमरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चमर"।
चमरू–संज्ञा पुं० चमड़ा। खाल।
चमरौधा–संज्ञा पुं० दे० "चमौवा"। चमड़े का बना हुआ।
चमला–संज्ञा पुं० [स्त्री० चमली] भीख मांगने का पात्र।
चमस–संज्ञा पुं० [स्त्री० चमसी] १. चम्मच के आकार का यज्ञपात्र। २. कलछा। चम्मच।
चमाऊ*–संज्ञा पुं० चँवर। खड़ाऊँ। चरणपादुका।
चमाचम–क्रि० उज्ज्वल कांति के सहित। झलक के साथ। झलकते हुए। चमकते हुए।
चमार–संज्ञा पुं० [स्त्री० चमारिन] एक जाति जो चमड़े का काम करती है।
चमारी–संज्ञा स्त्री० १. चमार की स्त्री। २. चमार का काम।
चमू–संज्ञा स्त्री० १. सेना। फौज। २. नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।
चमूकन–संज्ञा पुं० किलनी। पशुओं का जुआँ।
चमेटा–संज्ञा पुं० थप्पड़। चपेटा।
चमेली–संज्ञा स्त्री० १. एक सुगंधित फूल। २. इस फूल का पौधा।

चमोटा—संज्ञा पुं० मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर रगड़कर नाई छूरे की धार तेज करते हैं ।
चमोटी—संज्ञा स्त्री० १. चाबुक । कोड़ा । २. पतली छड़ी । कमची । बेंत । ३. चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार तेज करते हैं ।
चमौवा—संज्ञा पुं० चमड़े का भद्दा जूता । चमरौधा ।
चम्मच—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी ।
चम्पक—संज्ञा पुं० चम्पा का फूल । एक सुगन्धित पुष्प ।
चम्पककलिका—संज्ञा स्त्री० चम्पा की कली ।
चम्पत—वि० गायब होना । ले भागना । अदृश्य ।
मुहा०—चम्पत होना=भाग जाना । छिप जाना । ले भागना ।
चम्पल—संज्ञा स्त्री० पीतरंग । पीतवर्ण । पीले रंग मे रँगा हुआ ।
चम्पा—संज्ञा स्त्री० १. अंग देश की राजधानी । भागलपुर का प्रदेश । कर्णपुरी । चम्पारन । २. एक प्रकार का मीठा केला । ३. एक जाति का घोड़ा । ४. रेशम का कीड़ा । ५. एक फूल और उस फूल के वृक्ष का नाम ।
चम्पाकली—संज्ञा स्त्री० गले में पहनने का एक गहना ।
चम्पावती—संज्ञा स्त्री० नगरी-विशेष । चम्पा नामक नगरी ।
चम्पू—संज्ञा स्त्री० काव्य-विशेष । गद्य-पद्यमय काव्य ।
चम्बल—संज्ञा पुं० चमला । तुम्बा । एक नदी का नाम ।
चम्बा—संज्ञा पुं० जलपात्र-विशेष । टोंटीदार पात्र । पूजा के काम मे आनेवाला पात्र-विशेष ।
चम्बेली—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुगन्धित पुष्प ।
—संज्ञा पुं० १. समूह । ढेर । राशि । २. धुस्स । टीला । ढूह । ३. गढ़ । किला । ४. कोट । चहारदीवारी । प्राचीर । ५. नींव । ६. चबूतरा । ७. चौकी । ऊँचा आसन । ८. यज्ञ की अग्नि । ९. दे० "चयन" । संस्कार-विशेष ।
चयन—संज्ञा पुं० १. संग्रह । संचय । २. चुनने का कार्य्य । चुनाई । ३. यज्ञ के लिए अग्नि का संस्कार । ४. क्रम से लगाना या चुनना ।
*†दे० "चैन" । आनन्द । कुशल ।
चर—संज्ञा पुं० १. भेद का पता लगाने के लिए राजा द्वारा नियुक्त दूत । २. दूत । कासिद । ३. चलनेवाला । जैसे—अनुचर । ४. खंजन पक्षी । ५. कौड़ी । कपर्दिका । ६. मंगल । भौम । ७ नदियों के किनारे या संगम-स्थान पर बहकर आई हुई मिट्टी से बनी हुई भूमि (डेल्टा) । ८. दलदल । कीचड़ । ९. नदियों के बीच में बालू का टापू । रेता । वि० १. आपसे आप चलनेवाला । जंगम । २. एक स्थान पर न ठहरनेवाला । अस्थिर । ३. खानेवाला ।
चरई—संज्ञा स्त्री० जानवरों के चारा खाने या पानी पीने का गड्ढा । २. मिनार आदि की खूँटी ।
चरक—संज्ञा पुं० १. कोढ़ । २. दूत । ३. गुप्तचर । जासूस । ४. वैद्यक के एक प्रधान आचार्य्य । ५. वैद्यक का चरक-संहिता ग्रन्थ । ६. मुसाफिर । पथिक । ७. दे० "चटक" । ८. एक वनस्पति । ९. भिक्षु । सन्यासी । १०. यजुर्वेद की एक शाखा । ११. मंगल-कार्य । १२. शरीर के ऊपर चक्र या त्रिशूल धारण करने की क्रिया । १३. एक प्रकार की मछली ।
चरक-संहिता—संज्ञा स्त्री० चरक द्वारा रचित वैद्यक-ग्रन्थ ।
चरकटा—संज्ञा पुं० चारा काटकर लानेवाला आदमी ।
चरका—संज्ञा पुं० कोढ़ । श्वेत कुष्ठ । १. हलका घाव । जख्म । २. दागने का चिह्न । ३. हानि । ४. धोखा । छल ।
चरख—संज्ञा पुं० १. चक्र । २. खराद । ३. सूत कातने का चरखा । ४. कुम्हार का चाक । ५. ढेलवाँस । ६. वह गाड़ी

जिसपर तोप चढ़ी रहती है। चरखी। ७. एक शिकारी चिड़िया।

चरखपूजा–संज्ञा स्त्री० चैत की संक्रांति को होनेवाली शिव-भक्तों की पूजा।

चरखा–संज्ञा पुं० [फा०] १. घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। २. सूत कातने का यन्त्र। रहट। ३. कुएँ से पानी निकालने का रहट। ४. सूत लपेटने की गराड़ी। चरखी। ५. गराड़ी। घिरनी। ६. बड़ा या बेडौल पहिया। ७. गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकालते हैं। खड़खड़िया। ८. झगड़े-बखेड़े या झंझट का काम। बुढ़ापे के कारण शिथिल अंगवाला व्यक्ति।

चरखी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पहिए की तरह घूमनेवाली वस्तु। २. छोटा चरखा। ३. कपास ओटने की चरखी। बेलनी। ओटनी। ४. सूत लपेटने की फिरकी। ५. कुएँ से पानी खींचने आदि की गराड़ी। घिरनी। ६. एक प्रकार की आतिशबाजी।

चरग†–संज्ञा पुं० १. बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया। चरख। २. लकड़बग्घा नामक जंतु।

चरचना–क्रि० स० १. शरीर में चंदन आदि का लगाना। २. लेपना। ३. भाँपना। अनुमान करना। पूजा करना।

चरचराना–क्रि० अ० १. चरचर शब्द के साथ टूटना या जलना। चटकना। २. घाव आदि का तनना और दर्द करना। चर्राना। क्रुद्ध होना।

चरचा–संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा"।

चरचारी*–संज्ञा पुं० १. चर्चा चलानेवाला। २. निंदक।

चरजना*–क्रि० अ० १. बहकाना। भुलावा देना। २. अनुमान करना। अंदाज लगाना।

चरण–संज्ञा पुं० १. पग। पैर। पाँव। कदम। २. बड़ों का सान्निध्य। बड़ों का संग। ३. किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद। ४. किसी चीज का चौथाई भाग। ५. मूल। जड़। ६. गोत्र। ७. क्रम। ८. आचार। ९. घूमने का स्थान। १०. किरण। ११. अनुष्ठान। १२. गमन। जाना। १३. भक्षण। चरने का काम।

चरण-कमल–संज्ञा पुं० कोमल चरण। कमल के समान चरण।

चरणगुप्त–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चित्र-काव्य।

चरणचिह्न–संज्ञा पुं० १. पैरों के तलुए की रेखा। २. पैर का निशान। पत्थर का बनाया हुआ चरण के आकार का चिह्न।

चरणतल–संज्ञा पुं० पैर का तलुआ।

चरणदासी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। पत्नी। २. जूता। पनही।

चरणपादुका–संज्ञा स्त्री० १. खड़ाऊँ। चरणचिह्न। २. पत्थर आदि का बना हुआ चरण के आकार का पूजनीय चिह्न।

चरणपीठ–संज्ञा पुं० चरणपादुका।

चरणसेवा–संज्ञा स्त्री० १. पैर दबाना। २. बड़ों की सेवा।

चरणामृत–संज्ञा पुं० १. वह पानी जिसमें किसी महात्मा या बड़े के चरण धोए गए हों। चरणोदक।

चरणारविन्द–संज्ञा पुं० चरणकमल। पादपद्म।

चरणोदक–संज्ञा पुं० दे० "चरणामृत"। चरण धोया हुआ जल।

चरणोपान्त–संज्ञा पुं० चरण के समीप।

चरता–संज्ञा स्त्री० १. चर होने या चलने का भाव। २. पृथ्वी।

चरती–संज्ञा पुं० व्रत के दिन उपवास न करनेवाला।

चरन–संज्ञा पुं० दे० "चरण"।

चरना–क्रि० स० पशुओं का घास, चारा आदि खाना। घूमना-फिरना।

संज्ञा पुं० १. पैर। चरण। २. काछा। ३. सोनारों का एक औजार।

चरनि†–संज्ञा स्त्री० चाल। गति।

चरनी–संज्ञा स्त्री० १. स्थान। चबूतरा। २. चरी। पशुओं का आहार, घास, चारा आदि। चरागाह। ३. नाँद जिसमें पशुओं को खाने के लिए चारा दिया जाता है।

चरन्नी–संज्ञा स्त्री० चार आने का सिक्का। चौअन्नी।
चरपट–संज्ञा पुं० १. चपत। तमाचा। थप्पड़। २. चाई। उचक्का। ३. एक छंद। चर्पट।
चरपरा–वि० [स्त्री० चरपरी] स्वाद में तीक्ष्ण। तीता। स्वादिष्ट। फुर्तीला। साहसी।
चरपराना–संज्ञा पुं० परपराना। वेदना मालूम होना। जलन।
चरपराहट–संज्ञा स्त्री० १. स्वाद की तीक्ष्णता। २. घाव आदि की जलन। ३. परपराहट। झाल।
चरपरिया–वि० मनचला। सुन्दर। मुघर।
चरफर–संज्ञा पुं० दक्षता। निपुणता। फुर्ती। चतुराई।
चरफरा–वि० दक्ष। निपुण।
चरफराना†*–क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
चरब–वि० चालाक। तेज। तीखा।
चरबन–संज्ञा पुं० दे० "चबैना"।
चरबांक, चरबाक–वि० १. चतुर। चालाक। २. धृष्ट। शोख। निडर।
चरबा–संज्ञा पुं० प्रतिमूर्त्ति। नकल। खाका।
चरबाना–क्रि० स० ढोल पर चमड़ा चढ़ाना।
चरबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] प्राणियों के शरीर का तेल जैसा चिकना गाढ़ा पदार्थ। मेद। वसा। पीव।
मुहा०–चरबी चढ़ना=मोटा होना। चरबी छाना=१. बहुत मोटा हो जाना। २. मदांध होना।
चरम–वि० अंतिम। सबसे बढ़ा हुआ। चोटी का। पराकाष्ठा।
संज्ञा पुं० चमड़ा।
चरमर–संज्ञा पुं० चीमड़ वस्तु। किसी वस्तु के दबने या मुड़ने पर 'चरमर' का शब्द जैसे जूता या चारपाई।
चरमराना–क्रि० अ० चरमर शब्द होना। क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना।
चरमवाती†*–संज्ञा स्त्री० दे० "चर्मण्वती"।
चरवाई–संज्ञा स्त्री० १. चराने का काम। २. चराने की मजदूरी।
चरवाना–क्रि० स० चराने का काम दूसरे से कराना।
चरवाहा–संज्ञा पुं० गाय-भैंस आदि चरानेवाला।
चरवाही–संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई"।
चरवैया–संज्ञा पुं० १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।
चरस–संज्ञा पुं० १. मादक द्रव्य-विशेष। गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद, जिसका धुआँ नशे के लिए चिलम पर पीते हैं। २. भैंस या बैल आदि के चमड़े का वह बहुत बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिए पानी निकाला जाता है। चरसा। पुर। मोट। ३. भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म। आसाम प्रदेश में होनेवाला एक पक्षी। वन-मोर। ४. अनुराग। आसक्ति। प्रीति। ५. अहंकार। ६. व्यसन। ७. चसका। लत।
चरसा–संज्ञा पुं० १. पशुओं की खाल। चमड़ा। २. चमड़े का बना हुआ बड़ा थैला। ३. चरस। मोट।
चरसी–संज्ञा पुं० १. चरस-द्वारा खेत सींचनेवाला। २. चरस पीनेवाला।
चराई–संज्ञा स्त्री० १. चरने का काम। २. चराने का काम या मजदूरी।
चराक–संज्ञा पुं० १. चरानेवाला। चरवाहा। २. एक प्रकार का पक्षी।
चरागाह–संज्ञा पुं० वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों। चरनी। चरी।
चराचर–वि० १. चर और अचर। चल और अचल। जड़ और चेतन। २. जगत्। संसार। ३. आकाश। नभोमण्डल।
चराना–क्रि० स० १. पशुओं को चारा खिलाने के लिए खेतों या मैदानों में ले जाना। २. बातों में बहलाना।
चराव–संज्ञा पुं० चराने योग्य भूमि।
चरावर†*–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात। बकवाद।
चरि–संज्ञा पुं० पशु। चौपाये।
चरिंदा–संज्ञा पुं० [फा०] चरनेवाला जीव। पशु। हैवान।

चरित–संज्ञा पुं० १. रहन-सहन। व्यवहार। आचरण। २. काम। करनी। करतूत। कृत्य। ३. किसी के जीवन की विशेष घटनाओं या कार्यों आदि का वर्णन। जीवन-चरित। जीवनी। कथा-वार्त्ता। वृत्तान्त।

चरितनायक–संज्ञा पुं० वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।

चरितार्थ–वि० १. सिद्ध-प्रयोजन। जिसके उद्देश्य या अभिप्राय की प्राप्ति हो चुकी हो। कृतकृत्य। कृतार्थ। २. जो ठीक-ठीक घटे।

चरित्तर–संज्ञा पुं० १. धूर्त्तता की चाल। २. नखरेबाजी। नकल।

चरित्र–संज्ञा पुं० १. स्वभाव। २. आचरण। कार्य्य। ३. करनी। करतूत। ४. चरित।

चरित्रबन्धक–संज्ञा पुं० भाट। कवि। ग्रंथकार। चरित्रलेखक।

चरित्रनायक–संज्ञा पुं० दे० "चरितनायक"।

चरित्रवान्–वि० [स्त्री० चरित्रवती] अच्छे चरित्रवाला। उत्तम आचरणवाला।

चरी–संज्ञा स्त्री० १. पशुओं के चरने की जमीन। २. पशुओं के खाने-योग्य करबी।

चरु–संज्ञा पुं० १. हवन या यज्ञ का अन्न। होम की वस्तु। २. वह पात्र जिसमें उक्त अन्न पकाया जाय। ३. पशुओं के चरने की जमीन। ४. यज्ञ। मेघ। बादल।

चरुआ–संज्ञा पुं० मिट्टी का चौड़े मुँह का बर्त्तन।

चरखला‡–संज्ञा पुं० सूत कातने का चरखा।

चरू–संज्ञा पुं० चरु।
संज्ञा स्त्री० चरी।

चरुपात्र–संज्ञा पुं० वह पात्र जिसमें हविष्यान्न रखा या पकाया जाय।

चरेर–वि० दे० "चरेरा"।

चरेरा–वि० [स्त्री० चरेरी] १. कड़ा और खुरदुरा। २. कर्कश।
संज्ञा पुं० एक पेड़।

चरेरू–संज्ञा पुं० चिड़िया।

चरैया†–संज्ञा पुं० १. चरानेवाला। २. चरनेवाला।

चरोखर या **चरौवा**–संज्ञा पुं० चरी।

चर्खकश–संज्ञा पुं० [फा०] खराद चलानेवाला।

चर्ख–संज्ञा पुं० [फा०] चरखा।

चर्च–संज्ञा पुं० गिरजा। ईसाइयों का मन्दिर।

चर्चक–संज्ञा पुं० चर्चा करनेवाला।

चर्चन–संज्ञा पुं० १. चर्चा। २. लेपन।

चर्चरिका–संज्ञा स्त्री० नाटक में वह गान जो किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिका-पात होने पर होता है। आनन्द। उत्सव।

चर्चरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गाना जो वसंत में गाया जाता है। फाग। चाँचर। २. होली की धूमधाम या हुल्लड़। ३. एक वर्णवृत्त। ४. करतल-ध्वनि। ताली बजाने का शब्द। ५. चर्चरिका। ६. आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। उत्सव।

चर्चा–संज्ञा स्त्री० १. जिक्र। वर्णन। बयान। २. वार्त्तालाप। बातचीत। ३. किंवदंती। अफवाह। ४. लेपन। पोतना। ५. गायत्री-रूपा महादेवी। दुर्गा।

चर्चिक–वि० वेद आदि जाननेवाला।

चर्चिका–संज्ञा स्त्री० १. चर्चा। जिक्र। २. दुर्गा। एक प्रकार की सेम।

चर्चित–वि० १. सुगन्धित। २. निरूपित। वर्णित। ३. लेप किया हुआ। चन्दन से लेप करना। ४. जिसकी चर्चा हो।

चर्पट–संज्ञा पु० १. चपत। थप्पड़। २. हाथ की खुली हुई हथेली।

चर्पटी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी रोटी।

चर्परा–वि० चरपरा।

चर्बण–संज्ञा पुं० दे० "चर्वण"।

चर्बी–दे० "चरबी"।

चर्भट–संज्ञा पुं० ककड़ी।

चर्भटी–संज्ञा स्त्री० १. चर्चा। चर्चरी। २. गीत। आनन्द।

चर्म–संज्ञा पुं० १. चमड़ा २. चाम । खाल ढाल ।

चर्मकशा, चर्मकषा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य । चमरखा ।

चर्मकार–संज्ञा पुं० [स्त्री० चर्मकारी] चमड़े का काम करनेवाली जाति । चमार ।

चर्मकील–संज्ञा स्त्री० १. बवासीर । २. एक प्रकार का रोग । न्यच्छ ।

चर्मचक्षु–संज्ञा पुं० साधारण चक्षु । नेत्र । ज्ञान-चक्षु का उलटा ।

चर्मज–संज्ञा पुं० १. रोम । केश । २. खून । ३. पशम । ऊन ।

चर्मण्वती–संज्ञा स्त्री० १. चंबल नदी । २. केले का पेड़ ।

चर्मदंड–संज्ञा पुं० चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक ।

चर्मदृष्टि–संज्ञा स्त्री० साधारण दृष्टि । आँख । ज्ञानदृष्टि का उलटा ।

चर्मपात्र–संज्ञा पुं० चमड़े का डोल । पानी रखने या भरने के लिए चमड़े का बरतन ।

चर्मपादुका–संज्ञा स्त्री० चमड़े का जूता ।

चर्मपुटक–संज्ञा पुं० चमड़े का बना हुआ एक तरह का बरतन । कुप्पी जिसमें तेल आदि रखते हैं ।

चर्ममुंडा–संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

चर्मवसन–संज्ञा पुं० चमड़ा पहननेवाले । शिव ।

चर्मसार–संज्ञा पुं० खाने के पदार्थों से बननेवाला रस ।

चर्मी–वि० ढाल रखनेवाला । चर्मधारी । ढाल-वाला ।

चर्या या **चर्य्या**–संज्ञा स्त्री० १. आचरण । काम-काज । २. जो किया जाय । ३. आचार । चालचलन । ४. वृत्ति । जीविका । ५. सेवा । ६. चलना । ७. गमन । ८. भक्षण ।

यौ०—दिनचर्य्या=दिन में किए जानेवाले कार्य्यों का क्रम या विवरण ।

चर्राना–क्रि० अ० १. चर-चर शब्द करना । २. पीड़ा होना । ३. अंग में तनाव होना । ४. बलवती इच्छा होना ।

चर्री–संज्ञा स्त्री० लगती हुई व्यंगपूर्ण बात । चुटीली बात ।

चर्वण–संज्ञा पुं० १. चबाना । २. चबाने-वाली वस्तु । चबैना । ३. दाँतों से चूर किया हुआ या पीसा हुआ ।

चर्वित–वि० चबाया हुआ ।

चर्वितचर्वण–संज्ञा पुं० कही हुई बात या किए हुए काम को फिर से कहना या करना ।

चर्व्य–वि० चबाने योग्य । जो चबाकर खाया जाय ।

चल–वि० चलता हुआ । चलायमान । गति । नश्वर । अस्थायी । चंचल । अस्थिर ।

संज्ञा पुं० १. पारा । २. दोहा छंद का एक भेद । ३. शिव । ४. विष्णु । ५. दोष । चूक । धोखा । ६. नृत्य की एक चेष्टा ।

चलकना–क्रि० अ० दे० "चमकना" । चिल-कना ।

चलकर्ण–संज्ञा पुं० हाथी ।

चलकेतु–संज्ञा पुं० पुच्छल तारा ।

चलचंचु–संज्ञा पुं० चकोर ।

चलचलाव–संज्ञा पुं० १. प्रस्थान । यात्रा । चलाचली । २. मृत्यु ।

चलचित्र–संज्ञा पुं० सिनेमा । वे चित्र जो पर्दे पर सजीव प्राणियों की तरह चलते-फिरते और बोलते दिखाई देते हैं ।

चलचूक–संज्ञा स्त्री० धोखा । छल । कपट ।

चलता–वि० [स्त्री० चलती] १. चलता हुआ । २. जिसका क्रमभंग न हुआ हो । जो बराबर जारी हो । ३. प्रचलित । ४. काम करने योग्य, जो अशक्त न हो । ५. चालाक ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़, जिसमें बेल के-से फल लगते हैं ।

संज्ञा स्त्री० चलने का भाव । चंचलता । अस्थिरता ।

मुहा०–चलता करना=१. हटाना । भगाना । भेजना । २. किसी प्रकार निपटाना । चलता बनना=चल देना ।

चलता खाता–संज्ञा पुं० बैंक आदि का वह

खाता जिसमें हर समय लेन-देन हो सकता है। (अंग्रे०—करेण्ट एकाउण्ट) ऐसा हिसाब जिसमें लेन-देन चलता रहे।

चलती—संज्ञा स्त्री० मान-मर्यादा। प्रभाव। अधिकार।

चलतू—वि० आबाद। चलता हुआ। जोती-बोई जानेवाली भूमि।

चलदल—संज्ञा पुं० पीपल का वृक्ष।

चलन—संज्ञा पुं० १. चलने का भाव। गति। चाल। २. रिवाज। प्रथा। रस्म। रीति। ३. व्यवहार। उपयोग। प्रचार। ४. गति। भ्रमण। कम्पन। संज्ञा स्त्री० ज्योतिष में विषुवत् की उस समय की गति, जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

चलन-कलन—संज्ञा पुं० ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिन-रात के घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनबरी—संज्ञा पुं० प्याऊ। पौसला।

चलनसार—वि० १. जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २. जो अधिक दिनों तक काम में लाया जा सके। टिकाऊ।

चलना—क्रि० अ० १. जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २. निभना। ३. बहना। ४. बढ़ना। ५. अग्रसर होना। किसी युक्ति का काम में आना। ६. आरंभ होना। छिड़ना। ७. जारी रहना। क्रम या परंपरा का निर्वाह होना। ८. बराबर काम देना। टिकना। ठहरना। ९. लेन-देन के काम में आना। १०. प्रयुक्त होना। काम में लाया जाना। ११. प्रचलित होना। तीर, गोली आदि का छूटना। १२. लड़ाई-झगड़ा होना। विरोध होना। १३. पढ़ा जाना। कारगर होना। वश चलना। १४. आचरण करना। व्यवहार करना। १५. निगला जाना। खाया जाना।

क्रि० स० शतरंज आदि खेलों में किसी मोहरे को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना; अथवा ताश आदि खेलों में किसी पत्ते को सब खेलनेवालों के सामने रखना।

संज्ञा पुं० बड़ी चलनी। हलवाइयों का एक औजार।

मुहा०—पेट चलना=१. दस्त आना। २. निर्वाह होना। गुजर होना। मन चलना=इच्छा होना। लालसा होना। चल बसना=मर जाना। अपने चलते=भरसक। यथा-शक्ति।

चलनि*—संज्ञा स्त्री० दे० "चलन"।

चलनी†—संज्ञा स्त्री० १. "छलनी"। आटा चालने का बर्तन। २. रस्म। रिवाज। ३. स्त्रियों के पहनने का घाँघरा। लहँगा।

चलनौस—संज्ञा पुं० चोकर। चालन।

चलपत्र—संज्ञा पुं० पीपल का वृक्ष। चलदल।

चलपूंजी—संज्ञा स्त्री० चलधन। रुपया पैसा। सोना। चल-सम्पत्ति।

चलफेर—संज्ञा पुं० घूमघाम। गति। चलना।

चलवाना—क्रि० स० चलाने का काम कराना।

चलविचल—वि० १. अव्यवस्थित। २. व्यतिक्रम। संज्ञा स्त्री० नियम या क्रम का उल्लंघन।

चलवैया†—संज्ञा पुं० चलनेवाला।

चला—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. पृथ्वी। ३. बिजली। ४. पीपल।

क्रि० अ० चल निकला। गया। चल पड़ा। प्रचलित हुआ।

चलाऊ—वि० टिकाऊ। मजबूत। बहुत घूमनेवाला। जो बहुत दिनों तक चले।

चलाक—वि० चालाक। चलाँक। चतुर। होशियार।

चलाका†*—संज्ञा स्त्री० बिजली। विद्युत्।

चलाकी—संज्ञा स्त्री० चालाकी। होशियारी।

चलाचल*—संज्ञा स्त्री० १. चलाचली। २. गति। चाल।

वि० चंचल। चपल।

चलाचली—संज्ञा स्त्री० १. चलने के समय की घबराहट। त्वारवी। शीघ्रता। २ बहुत से लोगों का प्रस्थान। ३. चलने की तैयारी या समय।

वि० जो चलने के लिए तैयार हो।

मुहा०—चलाचली की बेला=मरने की घड़ी। संसार से चलने की घड़ी।

चलान—संज्ञा स्त्री० १. भेजने या भेजे जाने

की क्रिया । २. अपराधी को न्याय के लिए न्यायालय में भेजना । ३. माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना । ४. भेजा या आया हुआ माल । ५. वह कागज जिसमें किसी की सूचना के लिए भेजी हुई चीजों की सूची आदि हो । रवन्ना ।

चलानदार–संज्ञा पुं० माल की चलान के साथ जानेवाला व्यक्ति ।

चलाना–क्रि० स० १. चलने के लिए प्रेरित करना । २. गति देना । हिलाना-डुलाना । ३. निभाना । ४. प्रवाहित करना । बहाना । ५. वृद्धि करना । उन्नति करना । ६. किसी कार्य्य को अग्रसर करना । ७. आरंभ करना । छेड़ना । ८. जारी रखना । ९. बराबर काम में लाना । टिकाना । १०. व्यवहार में लाना । लेन-देन के काम में लाना । ११. प्रचलित करना । प्रचार करना । १२. व्यवहृत करना । प्रयुक्त करना १३. तीर, गोली आदि छोड़ना । १४. किसी चीज से मारना । १५. किसी व्यवसाय की वृद्धि करना । **मुहा०**–किसी की चलाना=किसी के बारे में कुछ कहना । मुँह चलाना=खाना । भक्षण करना । हाथ चलाना=मारने के लिए हाथ उठाना । मारना-पीटना ।

चलायमान–वि० १. चलनेवाला । २. चंचल । ३. गतिशील । अस्थायी ।

चलाव†–संज्ञा पुं० १. चलने का भाव । चलन । चाल । रीति । व्यवहार । २. यात्रा ।

चलावा–संज्ञा पुं० १. रीति । रस्म । रवाज । २. आचरण । चालचलन । ३. द्विरागमन । गौना । मुकलावा । ४. एक प्रकार का उतारा जो प्रायः गाँवों में भयंकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है ।

चलित–वि० १. अस्थिर । चलायमान । २. चलता हुआ । व्यवहारी । व्यावहारिक । संज्ञा पुं० नृत्य की एक चेष्टा ।

चलितव्य–वि० चलने योग्य । चलने लायक ।

चलित्री–संज्ञा स्त्री० रसिक । चंचल ।

चले–क्रि० अ० चल निकले । जाने लगे । प्रचलित ।

चलेन्द्रिय–संज्ञा पुं० इन्द्रियों में आसक्त । इन्द्रियाधीन ।

चलौना–संज्ञा पुं० चरखा चलाने का डण्डा । कलछा ।

चल्ली–संज्ञा स्त्री० कुकड़ी ।

चलैया†–संज्ञा पुं० चलनेवाला ।

चवन्नी–संज्ञा स्त्री० चार आने का सिक्का ।

चवर–संज्ञा पुं० दे० "चवँर" ।

चवर्ग–संज्ञा पुं० [वि० चवर्गीय] च से ञ तक के अक्षरों का समूह ।

चवल–संज्ञा पुं० लोबिया । एक प्रकार की तरकारी ।

चवाई–संज्ञा पुं० [स्त्री० चवाइन] बद-नामी फैलानेवाला । निंदक । चुगलखोर ।

चवाव–संज्ञा पुं० १. चर्चा । प्रवाद । अफ-वाह । २. बदनामी । निन्दा । चुगुल-खोरी ।

चव्य–संज्ञा पुं० एक औषध ।

चश्म–संज्ञा स्त्री० [फा०] नेत्र । आँख ।

चश्मदीद–वि० आँखों से देखा हुआ । **यौ०**–चश्मदीद गवाह=वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे ।

चश्मा–संज्ञा पुं० [फा०]१. आँखों पर पहना जानेवाला शीशा । ऐनक । २. पानी का सोता । स्रोत ।

चष*–संज्ञा पुं० आँख । नेत्र ।

चषक–संज्ञा पुं० १. मद्य पीने का पात्र । मधुपात्र । जाम । २. मधु । शहद ।

चषचोल*–संज्ञा पुं० आँख की पलक ।

चषण–संज्ञा पुं० १. भोजन । २. वध करना । नाश करना ।

चषणि–संज्ञा स्त्री० १. मच्छीं । दुर्बलता । २. हत्या । ३. मदान्धता ।

चषाल–संज्ञा पुं० १. यज्ञ के खंभे के ऊपर छाया हुआ एक प्रकार का काठ । २. मधुस्थान । मधुकोष ।

चस–संज्ञा स्त्री० १. अवकाश । २. पकड़ । ३. अति भाव । ४. प्रेम । ५. किनारेदार

चांद्र–वि० चंद्रमा-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. चांद्रायण व्रत। २. चंद्रकांत मणि। ३. अदरख।
चांद्रक—संज्ञा पुं० सोंठ।
चांद्रमस–वि० चंद्रमा-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० मृगशिरा नक्षत्र।
चांद्र मास–संज्ञा पुं० उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय।
चांद्रायण–संज्ञा पुं० १. महीने भर का एक कठिन व्रत। २. एक मात्रिक छंद। ३. वैदिक समय का एक प्राचीन देश।
चांद्री—संज्ञा स्त्री० १. चन्द्रमा की स्त्री। चाँदनी। २. सफेद भटकटैया।
वि० चंद्रमा-सम्बन्धी।
चाँप–संज्ञा स्त्री० १. दब जाने का भाव। दबाव। २. रेल-पेल। धक्का। ३. पैर की आहट। ४. बंदूक का वह पुरजा जिसके द्वारा कुंदे से नली जुड़ी रहती है। अंकुश। सोने की कील।
†*संज्ञा पुं० चंपा का फूल।
चाँपना–क्रि० स० दबाना।
चाँयँ-चाँयँ–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बकवाद। बकबक। लड़कों का शोर-गुल।
चाइ, चाउ*–संज्ञा पुं० दे० "चाव"।
चाउर—संज्ञा पुं० चावल।
चाक–संज्ञा पुं० १. कुम्हार का चक्र जिस पर वह मिट्टी के बर्तन बनाता है। कुलाल-चक्र। २. पहिया। ३. कुएँ से पानी खींचने की चरखी। गराड़ी। घिरनी। ४. थापा। ५. मंडलाकार चिह्न की रेखा। ६. दरार। चीड़।
वि० १. दृढ़। मजबूत। पुष्ट। २. हृष्ट-पुष्ट। तंदुरुस्त।
यौ०—चाक-चौबंद–१. हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। २. चुस्त। चालाक। फुरतीला। तत्पर।
चाकचक–वि० चारों ओर से सुरक्षित। दृढ़। मजबूत।
चाकचक्य–संज्ञा स्त्री० १. चमक-दमक। चमचमाहट। उज्ज्वलता। २. शोभा। सुंदरता।
चाकना–क्रि० स० १. सीमा बाँधने के लिए कोई चिह्न लगाना। हद खींचना। २. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना। ३. पहचान के लिए चिह्न लगाना।
चाकर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चाकरानी] दास। भृत्य। सेवक। नौकर।
चाकरी–संज्ञा स्त्री० सेवा। नौकरी।
चाकल†—वि० चकला।
चाकसू–संज्ञा पुं० १. वनकुलथी। २. निर्मली।
चाका—संज्ञा पुं० चाक।
चाकी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की"। जाँता। बिजली। वज्र।
चाकू–संज्ञा पुं० छुरी। **चक्कू**।
चाक्रायण—वि० चक्र ऋषि के वंशज जिनका उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद् में है।
चाक्रिक–संज्ञा पुं० १. चारण। २. तेली। ३. गाड़ीवान। ४. कुम्हार। ५. सहचर।
वि० चक्र-सम्बन्धी।
चाक्षुष–वि० १. नेत्र-सम्बन्धी। २. नेत्रों से बोधगम्य। चक्षुर्ग्राह्य।
संज्ञा पुं० १. छठे मनु का नाम। २. छठा मन्वन्तर।
चाखना–क्रि० स० दे० "चखना"।
चाचर, चाचरि–संज्ञा स्त्री० १. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। चर्चरी राग। २. होली में होनेवाले खेल-तमाशे। होली की धमार। ३. उपद्रव। दंगा। हलचल। हल्ला-गुल्ला।
चाचरी–संज्ञा स्त्री० योग की एक मुद्रा।
चाचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चाची] काका। पितृव्य। पिता के भ्राता।
चाट–संज्ञा स्त्री० १. स्वाद लेने की इच्छा। २. चाह। चस्का। शौक। लालसा। ३. प्रबल इच्छा। लत। आदत। ४. चरपरी और नमकीन खाने की चीजें। गजक।
चाटक–संज्ञा पुं० १. मण्डली। २. विद्या। ३. इन्द्रजाल।
चाटकी–वि० ऐन्द्रजालिक। नाटक-विद्या जाननेवाला।

चाटना–क्रि० स० १. जीभ लगाकर खाना। २. चट कर जाना। ३. किसी वस्तु पर जीभ फेरना।

यौ०—चूमना-चाटना=प्यार करना।

चाटा–संज्ञा पु० नाँद।

चाटु–संज्ञा पु० १. प्रिय बात। प्रशंसा। २. खुशामद। चापलूसी।

चाटुकार–संज्ञा पु० खुशामद करनेवाला। चापलूस। खुशामदी।

चाटुकारी–संज्ञा स्त्री० झूठी प्रशंसा। खुशामद।

चाटुपटु–संज्ञा पु० १. खुशामदी। चापलूसी करने में निपुण। २. विदूषक। मसखरा। भाँड।

चाटुवादी–वि० प्रशंसक। चापलूस। खुशामदी।

चाड़*–संज्ञा स्त्री० १. सहारा। आश्रय। २. आवश्यकता। प्रयोजन। ३. चाँट। ४. ढेकली। ५. दबाव।

चाड़िका—वि० चाँडिला।

चाड़ी—संज्ञा स्त्री० पीठ पीछे निन्दा। चुगली।

चाढ़ा*†–संज्ञा पु०[स्त्री० चाढ़ी]प्यारा। प्रिय।

चाणक–संज्ञा पु० १. एक मुनि। २. गोत्र-विशेष। ३. उत्तेजक बात।

चाणक्य–संज्ञा पु० राजनीति के आचार्य्य जो पाटलिपुत्र के सम्राट् चंद्रगुप्त के मंत्री थे और कौटिल्य नाम से भी प्रसिद्ध हैं। ये चणक-गोत्र में उत्पन्न हुए थे, इसलिए इन्हें चाणक्य कहते थे। इनका असली नाम विष्णुगुप्त था। इन्होंने 'अर्थशास्त्र' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी।

चाणूर–संज्ञा पु० राजा कंस का एक दानव योद्धा, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

चातक–संज्ञा पु० [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।

चातर†–संज्ञा पु० १. षड्यंत्र। २. दक्ष नायक।

वि०। चतुर। प्रवीण।

चातुर—वि० चापलूस। चतुर। चालाक। धूर्त। संज्ञा पु० १. गोल तकिया। मसनद। २. कुशल। ३. चार। चौथा। ४. चार पहियों की गाड़ी।

चातुराश्रम्य–संज्ञा पु० ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, और संन्यास। इन चार आश्रमों का धर्म।

चातुरिक—संज्ञा पु० सारथी।

चातुरी–संज्ञा स्त्री० १. चतुरता। चतुराई। व्यवहार-दक्षता। २. चालाकी।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक–संज्ञा पु० १. चार पदार्थ —अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। २. वैद्यक में चार ओषधियों का समूह।

चातुर्मासिक–वि० चार महीने में होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि)।

चातुर्मास्य–संज्ञा पु० १. चार महीने में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। २. चार महीने का एक व्रत। ३. चार महीने का।

चातुर्य्य–संज्ञा पु० चालाकी। चतुराई। चतुरता।

चातुर्वर्ण्य—संज्ञा पु० १. चारों वर्ण, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के चारों वर्ण। चारों वर्णों के धर्म या कर्त्तव्य। २. कौशल।

चातुर्वेद्य–संज्ञा पु० चारों वेदों के ज्ञाता। चतुर्वेदज्ञ।

चात्वाल–संज्ञा पु० १. गर्त। गढ़ा। २. अग्निहोत्र की सामग्री।

चातृक या चात्रिक*†–संज्ञा पु० दे० "चातक"।

चादर–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बिछाने या ओढ़ने का वस्त्र। २. हलका ओढ़ना। चौड़ा दुपट्टा। ३. किसी धातु का पत्तर। चद्दर। ४. पानी की समतल और चौड़ी धार।

चादरा–संज्ञा पु० बड़ी चादर। मर्दानी चादर।

चानक*–क्रि० वि० दे० "अचानक"। सहसा।

चानस–संज्ञा पु० १. तकरार। २. तास का एक खेल।

चाप–संज्ञा स्त्री० १. धनुष। कमान। २. असर। ३. छाप। ४. अंकुश। ५. सत्ता। ६. इन्द्रधनुष। ७. गणित में आधा वृत्त क्षेत्र। ८. वृत्त की परिधि का कोई भाग। ९. धन राशि। १०. दबाव। ११. पैर की आहट।

चापकर्ण—संज्ञा पुं० धनुष का रोदा। धनुष की प्रत्यंचा।

चापट—वि० १. दे० "चापड़"। २. चिपटा हुआ। दबाया या कुचला हुआ। ३. बराबर। ४. समतल। ५. बर्बाद। चौपट।

चापड़—वि० १. चिपटा। जो दबकर चिपटा हो गया हो। २. चौपट। उजाड़। ३. बराबर। संज्ञा स्त्री० चोकर। भूसी।

चापना†—क्रि० स० दबाना। मोड़ना। संज्ञा पु० दबाना।

चापलता—संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"। ढिठाई।

चापलूस—वि० [फा०] खुशामदी। चाटुकार। झूठी प्रशंसा करनेवाला।

चापलूसी—संज्ञा स्त्री० खुशामद। चाटुकारी।

चापल्य—संज्ञा पुं० चपलता। अधीरता। जल्दबाजी।

चापी—संज्ञा पु० १. शिव। २. धन राशि (ज्योतिष)। ३. धनुष धारण करनेवाला। ४. दबाना। छिपाना।

चाब—संज्ञा स्त्री० १. एक पौधा जो औषध के काम में आता है। २. इस पौधे का फल। ३. चौखूंटी डाढ़। चौभड़। ४. बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

चाबना—क्रि० स० १. चबाना। २. खूब भोजन करना। खाना।

चाबी—संज्ञा स्त्री० कुंजी। ताली।

चाबुक—संज्ञा पुं० १. कोड़ा। हंटर २. जोश दिलानेवाली बात।

चाबुकसवार—संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा स्त्री० चाबुकसवारी] घोड़े को चलना सिखानेवाला।

चाभना—क्रि० स० खाना। रस चूसना।

चाभी—संज्ञा स्त्री० दे० "चाबी"।

चाम—संज्ञा पुं० चमड़ा। खाल।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=अपनी चलती में अन्याय करना। अंधेर करना।

चामर—संज्ञा पुं० १. चौंर। चवर। चौंरी। २. मोरछल। ३. एक वर्णवृत्त।

चामर पाटना—क्रि० स० दाँतों से होंठ काटना। दाँत कटकटाना।

चामरिक—संज्ञा पु० चँवर डुलानेवाला।

चामरी—संज्ञा स्त्री० सुरा गाय।

चामीकर—संज्ञा पं० १. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा। वि० स्वर्णमय। सुनहरा।

चामुंडा—संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी। काली। चंड-मुंड नामक दो सेनापति दैत्यों का वध करनेवाली। योगिनी।

चाम्पेय—संज्ञा पुं० १. चम्पा। चम्पा का फूल। २. नागकेसर।

चाय—संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ पीने की प्रथा अब प्रायः सर्वत्र है।

यौ०—चाय-पानी=जलपान।

*संज्ञा पुं० दे० १. "चाव"। २. संचय। समूह। ३. हर्ष। ४. स्वाद। ५. चाहता।

चायक*—संज्ञा पुं० १. चाहनेवाला। २. चुननेवाला।

चार—वि० १. गिनती में तीन से एक अधिक। २. कई एक। बहुत से। ३. थोड़ा-बहुत कुछ। संज्ञा पु० चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४। [वि० चरित, चारी] १. गति। चाल। गमन। २. बंधन। कारागार। ३. गुप्त दूत। चर। जासूस। ४. दास। सेवक। ५. चिरौंजी का पेड़। ६. कृत्रिम विष। ७. अचार। ८. आचार। रीति। रस्म।

मुहा०—चार आँखें होना=नजर से नजर मिलना। देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। चार चाँद लगना=१. चौगुनी प्रतिष्ठा होना। २. चौगुनी शोभा होना। सौंदर्य्य बढ़ना। (स्त्री०) चारों फूटना=चारों आँखें (दो हृदय की, दो ऊपर की) फूटना।

चार आइना—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का कवच या बख्तर।

चारक—संज्ञा पुं० १. चरवाहा। चलानेवाला। २. चाल। ३. साईस। ४. साथी। ५. सवार। ६. घूमनेवाला ब्राह्मण। ७. मनुष्य। ८. कारागार। ९. जासूस। १०. चिरौंजी का पेड़।

चार काने–संज्ञा पुं० चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का कपड़ा।

चारजामा–संज्ञा पुं० [फा०] जीन। पलान [घोड़े की जीन]। काठी।

चारण–संज्ञा पुं० १. वंश की कीर्ति गानेवाला। भाट। वंदीजन। २. राजपूताने की एक जाति। ३. भ्रमणकारी।

चारदीवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. घेरा। हाता। २. शहर-पनाह। प्राचीर।

चारना*†–क्रि० स० चराना।

चार ना चार–क्रि० वि० [फा०] मजबूरन। लाचार होकर।

चारपाई–संज्ञा स्त्री० छोटा पलँग। खाट। खटिया।

मुहा०—चारपाई धरना, पकड़ना या लेना =इतना बीमार होना कि चारपाई से न उठ सके। अत्यंत रुग्ण होना। चारपाई से लगना=बीमारी के कारण उठ न सकना।

चारपाया–संज्ञा पुं० चौपाया। जानवर। पशु।

चारबाग़–संज्ञा पुं० १. [फा०] चौखूँटा बगीचा। २. चार बराबर खानों में से बँटा हुआ रुमाल।

चारवा–संज्ञा पुं० पशु।

चारवायु–संज्ञा स्त्री० लू।

चारयारी–संज्ञा स्त्री० १. चार मित्रों की मंडली। २. मुसलमानों में सुन्नी-सम्प्रदाय की एक मंडली। ३. चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है।

चार सौ बीस–संज्ञा पुं० धोखा देना। धोखा देकर किसी का माल हड़प लेना। धोखेबाज आदमी। धूर्त्त। भारतीय दण्डविधान की एक धारा जिसके अनुसार धोखा देना दंडनीय अपराध है।

मुहा०—बड़ा चार सौ बीस है या पक्का चार सौ बीस है=बहुत बड़ा धोखेबाज आदमी है। धोखा देकर दूसरों को ठगनेवाला।

चार सौ-बीसिया–वि० चार सौ बीस (दफा) का अपराध करनेवाला। दूसरों को धोखा देकर ठगनेवाला। धोखेबाज। धूर्त्त।

चारा–संज्ञा पुं० १. पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंठल आदि। २. आटा या कोई वस्तु जिसे लगाकर मछली फँसाते हैं। ३. उपाय। तदबीर।

चाराजोई–संज्ञा स्त्री० [फा०] नालिश। फरियाद।

चारि–वि० चार।

चारिणी–वि० आचरण करनेवाली। चलनेवाली।

चारित–वि० चलाया हुआ। खींचा हुआ। अर्क निकाला हुआ।

चारित्र–संज्ञा पुं० १. आचार। २. चाल-चलन। व्यवहार। स्वभाव। ३. संन्यास (जैन)।

चारित्रविनय–संज्ञा पुं० शिष्टाचार। नम्रता।

चारित्रा–संज्ञा स्त्री० इमली।

चारित्र्य–संज्ञा पुं० चरित्र।

चारी–वि० [स्त्री० चारिणी] १. चलनेवाला। २. आचरण करनेवाला।

संज्ञा पुं० १. पदाति सैन्य। पैदल सिपाही। २. संचारी भाव।

संज्ञा स्त्री० नाच का एक अंग।

चारु–वि० सुंदर। मनोहर।

संज्ञा पुं० केसर।

चारुक–संज्ञा पुं० सरपत के बीज।

चारुकेशरी–संज्ञा पुं० १. नागरमोथा। २. सेवती का फूल।

चारुता–संज्ञा स्त्री० सुंदरता। शोभा।

चारुनेत्र–संज्ञा पुं० हरिण। सुन्दर नेत्रोंवाला।

चारुपर्णी–संज्ञा स्त्री० एक ओषधि।

चारुफला–संज्ञा स्त्री० दाख। अंगूर। किसमिस।

चारुबाहु–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारुविक्रम–वि० १. बलवान्। बली। २. मनोहर। ३. गति-विशिष्ट।

चारुमती–संज्ञा स्त्री० १. श्रीकृष्णजी की एक कन्या का नाम। २. बुद्धिमती।

चारुलोचन–वि० सुन्दर नेत्रोंवाला।
संज्ञा पुं० मृग। हरिण।
चारुशिला–संज्ञा स्त्री० मणि-विशेष। हीरा।
चारुशील–वि० सुन्दर स्वभाववाला। अच्छे स्वभाव का। सुरूप।
चारुहासिनी–वि० सुंदर हँसनेवाली। मनोहर मुस्कानवाली।
संज्ञा स्त्री० वैताली छंद का एक भेद।
चारोली–संज्ञा पुं० गुठली।
चारेक्षण–संज्ञा पुं० राजनीतिज्ञ। राज-मंत्री।
चार्वङ्गी–संज्ञा स्त्री० सुन्दरी। नारी। सुरूपा।
चार्वाक–संज्ञा पुं० १. एक अनीश्वरवादी या नास्तिक तार्किक। २. नास्तिकवाद के प्रवर्तक ऋषि। ३. एक दार्शनिक मत जो स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर को नहीं मानता। इसका दूसरा नाम है लोकायत दर्शन।
चाल–संज्ञा स्त्री० १. गति। गमन। चलने की क्रिया। २. चलने का ढंग। ३. आचरण। व्यवहार। ४. बनावट। गढ़न। ५. रीति। रवाज। रस्म। प्रथा। परिपाटी। ६. गमन-मुहूर्त्त। ७. युक्ति। तदबीर। ढव। ८. कपट। छल। धूर्त्तता। ९. ढंग। १०. शतरंज, ताश आदि के खेल में गोटी या पत्ते को दाँव पर डालने की क्रिया। ११. हलचल। धूम। आन्दोलन। १२. हिलने-डोलने का शब्द। आहट। खटका। १३. छप्पर। १४. संगीत में स्वर का आरोह-अवरोह। १५. एक पक्षी।
चालक–वि० चलानेवाला। संचालक।
संज्ञा पु० १. धूर्त्त। छली। चाल चलनेवाला। २. नटखट हाथी। ३. नाच में भाव बताने की क्रिया। ४. होशियार कारीगर। मिस्त्री।
चालचलन–संज्ञा पुं० आचरण। व्यवहार। चरित्र।
चालढाल–संज्ञा स्त्री० १. आचरण। व्यवहार। २. तौर-तरीका।
चालन–संज्ञा पुं० १. चलाने की क्रिया। २. चलने की क्रिया। गति। ३. भूसी या चोकर। छालन।
चालनहार–संज्ञा पुं० चलानेवाला। चलनेवाला।
चालना*†–क्रि० स० १. चलाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। ३. कार्य निर्वाह करना। ४. बात उठाना। प्रसंग छेड़ना। ५. छानना। आटा चालना। फटकना।
क्रि० अ० चलना।
चालनी–संज्ञा स्त्री० चलनी। छलनी।
चालबाज–वि० धूर्त्त। छली।
चालबाजी–संज्ञा स्त्री० धूर्तता। चालाकी।
चाला–संज्ञा पुं० १. प्रस्थान। कूच। रवानगी। २. नई बहू का पहले-पहल मायके से ससुराल या ससुराल से मायके जाना। ३. यात्रा का मुहूर्त्त।
चालाक–वि० १. [फा०] व्यवहार-कुशल। चतुर। दक्ष। २. धूर्त्त। चालबाज।
चालाकी–संज्ञा स्त्री० १. चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। २. धूर्त्तता। चालबाजी। ३. युक्ति।
चालान–संज्ञा पुं० १. बीजक। रवन्ना। भेजा हुआ माल या रुपया या उसका ब्योरेवार हिसाब। २. पुलिस-द्वारा अभियुक्तों या मुजरिमों का विचार के लिए अदालत में भेजा जाना।
चालानदार–संज्ञा पुं० १. चालान करनेवाला। २. जिसके पास चालान का कागज हो।
चालानबही–संज्ञा पुं० वह बही जिसमें बाहर से आनेवाले या बाहर जानेवाले माल का ब्योरा लिखा हो।
चालिया–वि० दे० "चालबाज"।
चाली–वि० १. चालिया। धूर्त्त। चालबाज। २. चंचल। नटखट।
चालीस–वि० जो गिनती में बीस और बीस हो। ४०।
संज्ञा पुं० बीस और बीस की संख्या या अंक।
चालीसवाँ–वि० १. चालीस संख्या का। २.

मुसलमानों का मृतक-उत्सव-विशेष चहल्लुम।

चालीसा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चालीसी] १. चालीस वस्तुओं का समूह। २. चालीस दिन का समय। चिल्ला। ३. चालीस वर्ष की आयुवाला। चालीस पद का काव्य, जैसे हनुमान-चालीसा।

चाल्ह–संज्ञा स्त्री० चल्हवा मछली।

चावँ-चावँ–संज्ञा पुं० दे० "चाँयँ-चाँयँ"।

चाव–संज्ञा पुं० १. प्रबल इच्छा। अभिलाषा। लालसा। अरमान। २. प्रेम। अनुराग। चाह। ३. शौक। उत्कंठा। ४. लाड़-प्यार। दुलार। ५. उमंग। उत्साह। ६. नीलकण्ठ पक्षी।

चावड़ी–संज्ञा स्त्री० चट्टी।

चावर–संज्ञा पुं० चावल। रत्ती का आठवाँ भाग। छोटे-छोटे दाने।

चावल–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध अन्न। तंडुल। २. पकाया चावल। भात। ३. एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल।

चास–संज्ञा पुं० खेती। कृषि। जोताई।

चासना–क्रि० अ० जोतना।

चासनी या **चाशिनी**–संज्ञा स्त्री० १. चीनी या गुड़ का रस। २. चसका। मजा। ३. नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिए सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है।

चाष–संज्ञा पुं० १. नीलकंठ पक्षी। २. चाहा पक्षी। ३. आँख।

चासा–संज्ञा पुं० १. हलवाहा। हल जोतनेवाला। २. किसान। खेतिहर।

चाह–संज्ञा स्त्री० १. चाव। इच्छा। अभिलाषा। २. प्रेम। प्रीति। ३. पूछ। आदर। ४. माँग। आवश्यकता।
*संज्ञा स्त्री० खबर। समाचार।

चाहक*–संज्ञा पुं० चाहनेवाला। प्रेम करनेवाला।

चाहत–संज्ञा स्त्री० चाह। इच्छा। प्रेम।

चाहना–क्रि० स० १. इच्छा करना। अभिलाषा करना। २. प्रेम करना। प्यार करना। ३. माँगना। ४. प्रयत्न करना। कोशिश करना। *५. देखना। ६. ढूंढ़ना
संज्ञा स्त्री० चाह। जरूरत।

चाहा–संज्ञा पुं० १. बगले की तरह का एक जल-पक्षी। २. ऐच्छित।

चाहाचाही–संज्ञा स्त्री० परस्पर प्रीति। अन्योन्य मैत्री।

चाहि*–अव्य० १. अपेक्षाकृत (अधिक)। बनिस्बत। २. चाहकर। देखकर। इच्छा से। लालसा से। प्रेम से।

चाहित–वि० इच्छित। अभिलषित।

चाहिता–संज्ञा स्त्री० चाही गई स्त्री।

चाहिए–अव्य० उचित है। उपयुक्त है। मुनासिब है।

चाही–वि०, स्त्री० चहेती। प्यारी। जो चाही जाय।
वि० [फा०] कुआँ-सम्बन्धी। कुएँ के पानी से सींची जानेवाली भूमि।

चाहे–अव्य० १. अथवा। किंवा। वा। या। इच्छा हो। २. यदि जी चाहे तो। जैसा जी चाहे। ३. होनेवाला हो।

चिआँ–संज्ञा पुं० चिंचा। इमली का बीज।

चिउँटा–संज्ञा पुं० एक कीड़ा जो मीठा पसन्द करता है।

चिउटी–संज्ञा स्त्री० चींटी।
मुहा०—चिउँटी की चाल=बहुत सुस्ती से काम करना। मंद गति। चिउंटी के पर निकलना=ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो जाय। मरने पर होना।

चिंगट–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मछली। दे० "चिंगड़ा"।

चिंगड़ी या **चिगड़ी**–संज्ञा पुं० १. झींगा मछली। २. एक तरह का कीड़ा। पतिंगा।

चिंगना–संज्ञा पुं० किसी चिड़िया का छोटा बच्चा। मुर्गी का बच्चा। शिशु। छोटा बच्चा।

चिंगनी–संज्ञा स्त्री० मुर्गी का बच्चा।

चिंगा–संज्ञा पुं० मुर्गी का बच्चा।

चिंगारी–संज्ञा स्त्री० चिनगारी।

चिंगुरना–क्रि० अ० नसों का सिकुड़ना।

चिंगुरा—संज्ञा पुं० १. नसों की सिकुड़न। २. एक प्रकार का बगुला।
चिंगुला—संज्ञा पुं० १. बच्चा। बालक। २. किसी पक्षी का बच्चा।
चिंघाड़—संज्ञा स्त्री० खूब जोर की चिल्लाहट। चीख मारने का शब्द। हाथी का जोर से बोलना।
चिंघाड़ना—क्रि० अ० जोर से चिल्लाना। चीखना। हाथी का जोर से बोलना या चिल्लाना।
चिंचा—संज्ञा स्त्री० इमली। इमली का चिआँ।
चिंचाटक—संज्ञा पुं० एक तरह का साग।
चिंचाम्ल—संज्ञा पुं० एक तरह का साग।
चिंचिनी*—संज्ञा स्त्री० इमली का पेड़ या उसका फल।
चिंची—संज्ञा स्त्री० गुंजा। घुँघची।
चिंचोटक—संज्ञा पुं० दे० "चिंचाटक"।
चिंजा*†—संज्ञा पुं० लड़का। बेटा।
चिंजी—संज्ञा स्त्री० कन्या। बेटी।
चिंत—संज्ञा स्त्री० दे० 'चिंता'।
चिंतक—वि० चिंतन करनेवाला। ध्यान रखनेवाला। सोचनेवाला।
चिंतन—संज्ञा पुं० ध्यान। विचार। मनन। विवेचना। बार बार याद करना।
चिंतना*—क्रि० स० सोचना। ध्यान करना। मनन करना।
संज्ञा स्त्री० ध्यान। स्मरण। सोच। चिंता।
चिंतनीय—वि० चिंता करने योग्य। ध्यान करने योग्य। मनन या विचार करने योग्य। संदिग्ध।
चिंतवन*—संज्ञा पुं० दे० "चिंतन"।
चिंता—संज्ञा स्त्री० १. ध्यान। भावना। २. सोच। फिक्र। चिन्तन। चिन्ता की मुद्रा। ध्यान-मग्नता। सोच की अवस्था।
चिन्ताकुल या चिन्तातुर—वि० व्याकुल। चिन्तित। उद्विग्न या चिन्ता से व्याकुल।
चिन्तान्वित—वि० चिन्तायुक्त। उदास।
चिन्तातुर—वि० भावना-युक्त। चिन्तित।
चिंतामणि—संज्ञा पुं० १. एक कल्पित रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है। २. ब्रह्मा। ३. परमेश्वर। ४. सरस्वती का मंत्र। ५. यात्रा का एक योग। कंठ में चिन्तामणि। ६. भँवरीवाला घोड़ा। ७. वैद्यक का एक रस-विशेष।
चिंतावेश्म—संज्ञा पुं० मंत्रणागृह। गोष्ठीगृह। सलाह-मशविरा करने का कमरा या घर।
चिंतित—वि० जिसे चिंता हो। चिंता-युक्त। फिक्रमंद। सोची।
चिंतौड़ी—संज्ञा स्त्री० इमली।
चिंत्य—वि० १. विचारणीय। विचार करने योग्य। २. संदिग्ध।
चिंदी—संज्ञा स्त्री० टुकड़ा। कपड़े का टुकड़ा।
मुहा०—चिंदी की चिंदी निकालना=अत्यंत तुच्छ भूल निकालना। कुतर्क करना।
चिंपा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कीड़ा।
चिंपांजी—संज्ञा पुं० एक प्रकार का वन-मानुस।
चिउड़ा या चिउरा—संज्ञा पुं० चूरा। चिवड़ा।
चिउली—संज्ञा स्त्री० १. चिकनी सुपारी। २. एक जंगली पेड़। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
चिक—संज्ञा स्त्री० बाँस का बना हुआ परदा। चिलमन।
संज्ञा पुं० १. कसाई। २. कमर का दर्द। चमक। चिलक। झटका।
चिकट—वि० १. मैला-कुचैला। २. लसीला। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
चिकटना—क्रि० अ० जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।
चिकटा—वि० १. दे० "चिकट"। २. वस्त्र-विशेष। टसर का कपड़ा।
चिकठा—संज्ञा पुं० तेली। तेल बनानेवाली जाति।
चिकन—संज्ञा पुं० महीन सूती कपड़ा।
चिकनकारी—संज्ञा स्त्री० चिकन बनाने का काम।
चिकनगर—संज्ञा पुं० चिकन का काम करने-वाला। साफ-सुथरा काम करनेवाला।
चिकना—वि० [स्त्री० चिकनी] १. जो खुर-दुरा न हो। साफ-सुथरा। २. सँवारा

हुआ। सुंदर। ३. लप्पो-चप्पो करनेवाला। चाटुकार। खुशामदी। ४. स्नेही। प्रेमी।
संज्ञा पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ।
मुहा०–चिकना घड़ा=निर्लज्ज। बेहया। चिकनी-चुपड़ी बातें=बनावटी स्नेह से भरी बातें। कृत्रिम मधुर भाषण।

चिकनाई–संज्ञा स्त्री० १. चिकनापन। चिकनाहट। २. स्निग्धता। सरसता।

चिकनाना–क्रि० स० १. चिकना करना। स्निग्ध करना। २. साफ करना। सँवारना। क्रि० अ० १. चिकना होना। २. स्निग्ध होना। ३. चरबी से युक्त होना। हृष्ट-पुष्ट होना। मोटाना। ४. स्नेह-युक्त होना।

चिकनापन–संज्ञा पुं० चिकना होने का भाव। चिकनाई। चिकनाहट।

चिकनावट–संज्ञा स्त्री० चिकनापन।

चिकनाहट–संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन"।

चिकनिया–वि० छैला। शौकीन। बाँका। बना-ठना।

चिकनी–वि० स्त्री० दे० "चिकना"।

चिकनी सुपारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकनी मिट्टी–संज्ञा स्त्री० काली, पीली या सफेद रंग की मिट्टी।

चिकरना–क्रि० अ० चीत्कार करना। चिघाड़ना। चीखना। चिल्लाना।

चिकवा†–संज्ञा पुं० मांस बेचनेवाला कसाई। बूचड़। एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चिकार–संज्ञा पुं० चीत्कार। चिल्लाहट। कोलाहल।

चिकारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चिकारी] १. सारंगी की तरह का एक बाजा। २. हिरन की जाति का एक जानवर। ३. चीख। डरावना शब्द।

चिकारी–संज्ञा स्त्री० १. ममा। २. फूहड़पन।

चिकलना–क्रि० स० मसलना। पीसना। चबाना। चूर करना।

चिकवा–संज्ञा पुं० कसाई। मांस बेचनेवाला। बूचर या बूचड़।

चिकित्सक–संज्ञा पुं० रोग दूर करनेवाला। वैद्य।

चिकित्सा–संज्ञा स्त्री० [वि० चिकित्सक, चिकित्स्य] १. रोग दूर करना। इलाज। २. वैद्यकर्म। वैदकी। औषध करना।

चिकित्सालय–संज्ञा पुं० अस्पताल। रोगियों की दवा करने का स्थान। औषधालय। दवाखाना। शफाखाना।

चिकित्सा शास्त्र–चिकित्सा करने की विद्या या शास्त्र।

चिकित्सु–संज्ञा पुं० वैद्य। आयुर्वेद-विद्या।

चिकिल–संज्ञा पुं० कीचड़।

चिकीर्ष–संज्ञा पुं० अभिलाषी।

चिकीर्षा–संज्ञा स्त्री० अभिलाषा।

चिकीर्षित–वि० अभिलषित। चाहा हुआ। इष्ट। अभिप्रेत।

चिकुटी*–संज्ञा स्त्री० चिकोटी। चुटकी।

चिकुर–संज्ञा पुं० १. केश। बाल। कुन्तल। २. पर्वत। ३. साँप आदि रेंगनेवाले जंतु। ४. छछूँदर। ५. गिलहरी। ६. वृक्ष-विशेष। ७. पक्षी-विशेष। वि० चंचल।

चिकुला–संज्ञा पुं० चिड़िया का बच्चा।

चिकोटी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चुटकी"।

चिकोर–वि० १. चंचल। चपल। तरल। २. चिपटी नाकवाला।

चिकोरना–क्रि० स० चोंच से बिखेरना। चोंचियाना। खरखोरना।

चिक्क–संज्ञा पुं० छछूँदर। बकरी। अजा। छाग।

चिक्कट–संज्ञा पुं० कीट। तेलहा। मैल। वि० मैला-कुचैला। गंदा।

चिक्कण–वि० चिकना।
संज्ञा पुं० १. सुपारी। २. हड़। ३. कुछ तेज आँच (आग)।

चिक्कणा या **चिक्कणी**–संज्ञा स्त्री० १. सुपारी। २. हड़।

चिक्कन–वि० चिकना।

चिक्कना–वि० चिकना। फिसलनदार।

चिक्कनी–संज्ञा स्त्री० दक्खिनी सुपारी।

चिक्करना–क्रि० अ० चीत्कार करना। जोर से चिघाड़ना। चिल्लाना।

चिक्कस–संज्ञा पुं० १. पक्षियों के बैठने का कृत्रिम अड्डा। २. जौ का आटा। ३. तेल और हल्दी मिला हुआ जव का आटा।

चिक्कहा–संज्ञा पुं० कसाई। चिकवा।

चिक्का–संज्ञा पुं० सुपारी। चक्का। चूहा।

चिक्कार–संज्ञा पुं० चीत्कार। चिग्घाड़। चिल्लाहट।

चिक्किर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का चूहा। २. गिलहरी।

चिखर–संज्ञा पुं० चने की भूमी। चने का छिलका।

चिखुरन–संज्ञा पुं० निराकर खेत से निकाली गई घास।

चिखुरना–क्रि० स० जोते हुए खेत में से घास निकालना।

चिखुरा–संज्ञा पु० गिलहरी।

चिखुराई–संज्ञा स्त्री० चिखुरन की मजदूरी या काम।

चिखुरी–संज्ञा स्त्री० गिलहरी।

चिखौना–संज्ञा पुं० स्वाद लेने की क्रिया। चखने की वस्तु।

चिचड़ा–संज्ञा पुं० १. एक पौधा जो दवा के काम में आता है। अपामार्ग। ओंगा। अंझाझार। लटजीरा। २. दे० "चिचड़ी"।

चिचड़ी–संज्ञा स्त्री० एक कीड़ा जो चौपायों के शरीर में चिमटा रहता है और उनका खून पीता है। किलनी। किल्ली।

चिचान*–संज्ञा पुं० बाज पक्षी।

चिचिंडा–संज्ञा पु० दे० "चचींड़ा"। तरकारी-विशेष।

चिचियाना–क्रि० अ० चिल्लाना। चीखना।

चिचियाहट†–संज्ञा स्त्री० चिल्लाहट।

चिचिनी–संज्ञा स्त्री० इमली का पेड़ या फल।

चिचुकना–क्रि० अ० दे० "चुचुकना"।

चिचेंडा–संज्ञा पुं० तरकारी-विशेष। चचीड़ा।

चिचोड़ना†–क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।

चिजारा–संज्ञा पुं० कारीगर। राज।

चिट–संज्ञा स्त्री० टुकड़ा। १. कागज या कपड़े का टुकड़ा। २. पुरजा। रुक्का। छोटा पत्र।

चिटकना–क्रि० अ० १. फटना। २. लकड़ी का जलते समय 'चिटचिट' शब्द करना। ३. चिढ़ना। दरकना।

चिटकाना–क्रि० स० १. किसी सूखी हुई चीज को तोड़ना या तड़काना। २. खिझाना। चिढ़ाना।

चिटका–संज्ञा पुं० १. चिता। २. क्रुद्ध हुआ। कुपित।

चिटकारा–संज्ञा पुं० १. चिह्न। दाग। छींटा। २. पङ्क।

चिटनवीस–संज्ञा पुं० लेखक। मुहर्रिर। कारिंदा।

चिटकी–संज्ञा स्त्री० धूप। घाम। ताप। गर्मी।

चिट्टा–वि० सफेद। श्वेत।
संज्ञा पुं० झूठा बढ़ावा।

चिट्ठा–संज्ञा पुं० १. हिसाब की बही। खाता। लेखा। २. वह कागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब जाँचकर नफा-नुकसान दिखाया जाता है। फर्द ३। किसी रकम की सिलसिलेवार फेहरिस्त। सूची। ४. मजदूरी या तनख्वाह के रूप में दिया जानेवाला रुपया। ५. खर्च की फेहरिस्त।

मुहा०–कच्चा चिट्ठा=ऐसा सविस्तर वृत्तांत जिसमें कोई बात छिपाई न गई हो।

चिट्ठी–संज्ञा स्त्री० पत्र। खत।

चिट्ठी-पत्री–संज्ञा स्त्री० १. पत्र। खत। २. पत्र-व्यवहार।

चिट्ठीरसाँ–संज्ञा पुं० डाक बाँटनेवाला। डाकिया।

चिड्डा–संज्ञा पुं० गौरैया।

चिड़–संज्ञा पु० चिढ़। कुढ़न। क्रोध। अरुचि।

चिड़चिड़ा–संज्ञा पु० दे० "चिचड़ा"। एक पक्षी।
वि० शीघ्र चिढ़नेवाला। तुनुकमिजाज।

चिड़चिड़ाना–क्रि० अ० १. जलने में चिड़-चिड़ शब्द होना। २. सूखकर जगह-जगह

से फटना। दरकना। ३. चिढ़ना। बिगड़ना। झुँझलाना।

चिड़वा—संज्ञा पुं० चिउड़ा। चिउरा।

चिड़ा—संज्ञा पुं० गौरा पक्षी। गौरैया का नर।

चिड़ारा—संज्ञा पुं० डवरी।

चिड़िया—संज्ञा स्त्री० १. पक्षी। पंछी। २. चिड़िया के आकार का। ३. ताश का एक रंग।

मुहा०—चिड़िया का दूध=अप्राप्य वस्तु। सोने की चिड़िया=धन देनेवाला असामी।

चिड़ियाखाना—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिए रखे जाते हैं।

चिड़िहार†*—संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

चिड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिड़ीमार—संज्ञा पुं० चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया।

चिढ़—संज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता। कुढ़न। नफरत। घृणा।

चिढ़ना—क्रि० अ० १. अप्रसन्न होना। नाराज होना। झल्लाना। कुढ़ना। २. द्वेष रखना। बुरा मानना।

चिढ़ाना—क्रि० स० १. अप्रसन्न करना। नाराज करना। खिझाना। कुढ़ाना। २. किसी को कुढ़ाने के लिए मुँह बनाना, या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना। ३. उपहास करना।

चित्—संज्ञा स्त्री० चेतना। ज्ञान।
संज्ञा पुं० अग्नि चुननेवाला।

चित—संज्ञा पुं० १. चित्त। मन। अन्तःकरण। २. सुध। स्मरण। ३. चितवन। दृष्टि।
वि० पीठ के बल पड़ा हुआ। "पट" का उलटा। ढका हुआ।

मुहा०—चित करना=उलटना। उतान गिराना। जीतना। हराना। पराजित करना। चित देना=ध्यान देना। मन लगाना।

चितकबरा—वि० [स्त्री० चितकबरी] किसी एक रंग पर दूसरे रंग के दागवाला। रंग-बिरंगा। कबरा। चितला।

चितचाय—वि० अभीष्ट। मनभावना।

चितचेता—वि० मनमाना। जँचना। पसन्द आना।
क्रि० अ० सावधान हुआ। चौकन्ना हुआ।

चितचोर—संज्ञा पुं० चित्त को चुरानेवाला। प्यारा। प्रिय।

चितभंग—संज्ञा पुं० १. ध्यान न लगना। उचाट। उदासी। २. होश का ठिकाने न रहना। मति-भ्रम।

चितना—क्रि० स० रँगा जाना। देखना। अवलोकन करना।

चितरना*—क्रि० स० चित्रित करना। चित्र बनाना। रँगना।

चितरोख—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया। चितरखा।

चितला—वि० कबरा। चितकबरा। रंग-बिरंगा।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का खरबूजा। २. एक प्रकार की बड़ी मछली।

चितवन—संज्ञा स्त्री० दृष्टि। कटाक्ष। नजर। अवलोकन। देखना।

चितवना†*—क्रि० स० देखना। दर्शन करना।

चितवाना—क्रि० स० दिखाना।

चिता—संज्ञा स्त्री० लकड़ियों का ढेर, जिस पर मुर्दा जलाया जाता है।

चिताना—क्रि० स० १. सावधान करना। २. जताना। याद दिलाना। ३. आत्म-बोध कराना। ४. (आग) जलाना। सुलगाना।

चिताभूमि—संज्ञा पुं० श्मशान। मरघट।

चितावनी—संज्ञा स्त्री० दे० "चेतावनी"। १. सावधान करने की क्रिया। २. सावधान करने के लिए कही गई बात।

चिताशायी—वि० मुर्दा। मरा हुआ।

चिति—संज्ञा स्त्री० १. चिता। २. समूह। ढेर। ३. चुनाई। ४. चैतन्य। ५. दुर्गा। अग्नि का एक संस्कार।

चितेरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० चितेरिन] चित्र-कार। चित्र बनानेवाला।

चितौन—संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

चितौना—क्रि० स० चितवना। देखना।

चितौनि–संज्ञा स्त्री० चितवन। अवलोकन।

चितौनी–संज्ञा स्त्री० चितावनी।

चित्कार–संज्ञा पुं० दे० "चीत्कार"।

चित्त–संज्ञा पुं० १. अंतःकरण का एक भेद। २. अंतःकरण। जी। मन।
मुहा०–चित्त चढ़ना=दे० "चित्त पर चढ़ना"। चित्त चुराना=मन मोहना। मोहित करना। चित देना=ध्यान देना। मन लगाना। चित्त पर चढ़ना=१. मन में बसना। बार-बार ध्यान में आना। २. स्मरण होना। याद पड़ना। चित्त बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। चित्त में धँसना, जमना या बैठना=१. हृदय में दृढ़ होना। मन में धँसना। २. समझ में आना। असर करना। चित्त से उतरना=१. ध्यान में न रहना। भूल जाना। २. दृष्टि से गिरना।

चित्तगर्भ–वि० सुन्दर।

चित्तज–संज्ञा पुं० कामदेव।

चित्तभूमि–संज्ञा स्त्री० योग में चित्त की अवस्थाएँ जो पाँच हैं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।

चित्तविक्षेप–संज्ञा पुं० चित्त की चंचल या अस्थिरता। उद्विग्नता। व्याकुलता।

चित्तविभ्रम–संज्ञा पुं० १. भ्रांति। भ्रम। भौंचक्कापन। २. उन्माद।

चित्तवृत्ति–संज्ञा स्त्री० चित्त की गति। चित्त की अवस्था।

चित्तल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मृग।

चित्ता–संज्ञा पुं० औषध। पौधा-विशेष।

चित्ती–संज्ञा स्त्री० १. छोटा दाग या चिह्न। धब्बा। बुँदकी। २. कौड़ी जिससे जुए के दाँव फेंकते हैं। टैयाँ। ३. एक प्रकार का साँप।

चित्तोद्वेग–संज्ञा पुं० व्याकुलता। चित्त का उद्वेग। विरक्ति। परेशानी।

चित्तोन्नति–संज्ञा स्त्री० गर्व। अभिमान। अहंकार।

चित्तौर–संज्ञा पुं० मेवाड़ की प्राचीन राजधानी। राजपूताने का इतिहास-प्रसिद्ध नगर और गढ़।

चित्र–संज्ञा पुं० [वि० चित्रित] १. तिलक। २. तसवीर। ३. काव्य का एक भेद जिसमें व्यंग की प्रधानता नहीं रहती। अलंकार। ४. काव्य में एक प्रकार की रचना, जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, खड्ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं। इसे चित्र-काव्य कहते हैं। ५. एक वर्णवृत्त। ६. आकाश। ७. एक प्रकार का कोढ़। ८. चित्रगुप्त। ९. चीते का पेड़। चित्रक।
वि० १. अद्भुत। विचित्र। २. चितकबरा। ३. रंग-बिरंगा।
मुहा०–चित्र उतारना=१. चित्र बनाना। तसवीर खींचना। २. वर्णन द्वारा दृश्य उपस्थित करना।

चित्रक–संज्ञा पुं० १. तिलक। २. चीते का पेड़। ३. चीता। बाघ। ४. चिरायता। ५. रेंड़ का पेड़। ६. मुचकुन्द का पेड़। ७. चित्रकार।

चित्रकण्ठ–संज्ञा पुं० कबूतर। परेवा।

चित्रकन्दक–संज्ञा पुं० जिमीकन्द।

चित्रकर–संज्ञा पुं० १. चित्र बनानेवाला। २. तिनिश का पेड़।

चित्रकर्मा–संज्ञा पुं० १. विचित्र काम करनेवाला चित्रकार। २. तिनिश वृक्ष।

चित्रकला–संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्रकार–संज्ञा पुं० चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी–संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की कला। चित्रकार का काम।

चित्रकाय–संज्ञा पुं० चीता। बाघ। शेर।

चित्रकाव्य–संज्ञा पुं० एक प्रकार का काव्य। दे० "चित्र"।

चित्रकूट–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध पर्वत, जहाँ वनवास के समय राम और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था। २. चित्तौर।

चित्रगंध–संज्ञा पुं० हरताल।

चित्रगुप्त–संज्ञा पुं० चौदह यमराजों में से एक, जो प्राणियों के पाप और पुण्य का

लेखा रखते हैं। यमराज के मन्त्री और कायस्थों के आदि-पुरुष। पुराणों में इनके विषय में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अंग से हुई है। ब्रह्मा की आज्ञा से इनकी कायस्थ जाति निश्चित हुई। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को इनकी पूजा होती है।

चित्रजल्प—संज्ञा पुं० वह भावपूर्ण वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर एक दूसरे से कहते हैं।

चित्रदेवी—संज्ञा स्त्री० इन्द्रा। वारुणी।

चित्रना*—क्रि० स० चित्रित करना। तसवीर बनाना।

चित्रपक्ष—संज्ञा पुं० तीतर नाम का पक्षी।

चित्रपट—संज्ञा पुं० १. जिस वस्तु पर चित्र बनाया जाय। चित्राधार। २. सिनेमा का फिल्म। ३. छींट।

चित्रपर्णी—संज्ञा पुं० कनफोड़ा। मजीठ। जलपिप्पली। द्रोणपुष्पी।

चित्रपदा—संज्ञा स्त्री० एक छंद।

चित्रफला—संज्ञा स्त्री० १. ककड़ी। २. बैंगन ३. भटकटैया। ४. एक प्रकार की मछली ५. एक प्रकार की लता। महेंद्र वारुणी

चित्रभानु—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. सूर्य्य ३. चीते का पेड़। ४. अर्क। ५. भैरव ६. अश्विनीकुमार।

चित्रभेषज—संज्ञा पुं० एक औषध।

चित्रमद—संज्ञा पुं० नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरह-सूचक भाव दिखाना।

चित्रमृग—संज्ञा पुं० एक प्रकार का चित्तीदार हिरन। चीतल।

चित्रयोग—संज्ञा पुं० बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला।

चित्रयोधी—वि० योद्धा।
संज्ञा पुं० अर्जुन।

चित्ररथ—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. एक गंधर्व का नाम जिसके पास कई रंगों का रथ था।

चित्रला—वि० रंग-बिरंगा।

चित्रलिखित—वि० चित्र में लिखा हुआ। निश्चेष्ट। चेष्टाहीन।

चित्रलेखा—संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त। २. चित्र बनाने की कलम या कूँची। ३. अप्सरा-विशेष।

चित्रलेखन—संज्ञा पुं० सुन्दर लिखावट। चित्रकारी।

चित्रलेखनी—संज्ञा स्त्री० तसवीर बनाने की कूँची।

चित्रलेखी—संज्ञा स्त्री० तसवीर बनाने की कूँची।

चित्रलोचना—संज्ञा स्त्री० मैना। सारिका।

चित्रविचित्र—वि० १. रंग-बिरंगा। बहुरंगी। २. बेल-बूटेदार। नक्काशीदार।

चित्रविद्या—संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या।

चित्रवीर्य्य—वि० अद्भुत बलवान्।
संज्ञा पुं० लाल रेंड़।

चित्रशाला—संज्ञा स्त्री० १. चित्र बनाने का स्थान। २. वह घर जहाँ चित्र रखे हों या रंग-बिरंगी सजावट हो।

चित्रसारी—संज्ञा स्त्री० चित्रों से सजा हुआ कमरा। रंगमहल।

चित्रस्थ—वि० चित्र में अंकित किया हुआ। चित्र में अंकित व्यक्ति की तरह निर्जीव।

चित्रहस्त—संज्ञा पुं० वार का एक हाथ। हथियार चलाने का एक हाथ।

चित्रांग—वि० जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हों।
संज्ञा पुं० १. चित्रक। चीता। २. एक प्रकार का सर्प। चीतल। ३. ईंगुर। हरताल।

चित्रांगद—संज्ञा पुं० १. महाराज शान्तनु के पुत्र और भीष्म पितामह के सौतेले भाई। २. गंधर्व। विद्याधर।

चित्रांगदा—संज्ञा स्त्री० अर्जुन की स्त्री जो मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या थी।

चित्रा—संज्ञा स्त्री० १. एक नक्षत्र। २. ककड़ी। ३. दंती नामक वृक्ष। ४. दूब-विशेष। ५. मजीठ। ६. बायबिडंग। ७. अजवाइन। ८. संगीत में एक रागिनी। ९. एक वर्णवृत्ति।

एक नाड़ी । १०. श्रीकृष्ण की एक सखी का नाम । व्रजांगना । ११. एक नदी । १२. समुद्र । अप्सरा-विशेष । १३. चितकबरी गाय । १४. माया । मोह । अविद्या ।

चित्राक्षी—संज्ञा स्त्री० सारिका ।

चित्राटीर—संज्ञा पुं० चन्द्रमा ।

चित्राधार—संज्ञा पुं० चित्र-संग्रह । वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्रों का संग्रह हो ।

चित्रिणी—संज्ञा स्त्री० कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक ।

चित्रित—वि० १. चित्र में खींचा हुआ । चित्र द्वारा दिखाया हुआ । २. जिस पर चित्र बने हों ।

चित्रेश—संज्ञा पुं० चन्द्रमा ।

चित्रोत्तर—संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है ।

चिथड़ा—संज्ञा पुं० फटा-पुराना कपड़ा । गूदड़ । लत्ता ।

चिथड़िया—वि० गूदड़िया । चिरकुटिया । चिथड़ेवाला ।

चिथाड़ना—क्रि० स० १. चीरना । फाड़ना । लथाड़ना । २. अपमानित करना ।

चिद्—संज्ञा पुं० चैतन्य । सजीव । जीवधारी ।

चिदाकाश—संज्ञा पुं० १. चैतन्य । २. आकाश । ३. ब्रह्म । परमात्मा ।

चिदात्मा—संज्ञा पुं० ब्रह्म । ज्ञानमय आत्मा । चैतन्यस्वरूप परब्रह्म ।

चिदानंद—संज्ञा पुं० ब्रह्म । चैतन्य और आनन्दमय परमात्मा ।

चिदाभास—संज्ञा पुं० १. चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का आभास या प्रतिबिम्ब जो अंतःकरण पर पड़ता है । २. जीवात्मा । ३. ज्ञान । ४. ज्ञान का प्रकाश ।

चिद्रूप—संज्ञा पुं० ज्ञानमय या ज्ञानस्वरूप परमात्मा । ईश्वर ।

चिद्विलास—संज्ञा पुं० चैतन्यस्वरूप ईश्वर की माया ।

चिन—संज्ञा पुं० एक पेड़ ।

चिनक—संज्ञा स्त्री० जलन सहित दर्द । चुनचुनाहट । दे० "चिनग" ।

चिनग—जलन । मूत्र-नली की जलन और पीड़ा ।

चिनगना—क्रि० अ० १. टीसना । २. जलन होना । ३. चिल्लाना ।

चिनगारी—संज्ञा स्त्री० दहकती हुई आग में से फूट-फूटकर उड़नेवाला कण । अग्निकण । स्फुलिङ्ग ।

मुहा०—आँखों से चिनगारी छूटना=क्रोध से आँखें लाल होना ।

चिनगी—संज्ञा स्त्री० १. अग्निकण । चिनगारी । २. नटखट लड़का ।

चिनचिनाना—क्रि० अ० चिल्लाना । चीखना ।

चिनाना—क्रि० स० चुनवाना । जोड़ाई करना ।

चिनिया—वि० १. चीनी का बना हुआ । चीनी के रंग का । सफेद । २. चीन देश का । ३. छोटा, जैसे-चिनिया केला आदि ।

चिनिया केला—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा केला ।

चिनिया बदाम—संज्ञा पुं० "मूँगफली" ।

चिन्मय—वि० ज्ञानमय । चैतन्यमय । संज्ञा पुं० परमात्मा । परमेश्वर ।

चिन्ह*‡—संज्ञा पुं० दे० "चिह्न" । लक्षण । पहचान । अंक । पताका ।

चिन्हवाना†—क्रि० स० दे० "चिह्नाना" । पहचनवाना । लक्षण । पहचान कराना । बताना ।

चिन्हाना†—क्रि० स० पहचनवाना । परिचित कराना ।

चिन्हानी—संज्ञा स्त्री० १. निशानी । पहचान । लक्षण । २. स्मारक । यादगार । ३. रेखा । धारी । लकीर ।

चिन्हार†—वि० अपनी जान-पहचान का । परिचित ।

चिन्हारी†—संज्ञा स्त्री० जान-पहचान । परिचय ।

चिपकना—क्रि० अ० दो वस्तुओं का परस्पर

जुड़ना। चिपक जाना। सट जाना। चिमटना। लिपटना।

चिपकाना–क्रि० स० १. दो वस्तुओं को सटाना। चिमटाना। चस्पाँ करना। २. लिपटाना।

चिपचिप–संज्ञा पुं० वह शब्द जो किसी लसदार चीज को छूने से होता है।

चिपचिपा–वि० लसदार। लसीला। सटनेवाला।

चिपचिपाना–क्रि० अ० लसदार मालूम होना। लसलसाना।

चिपचिपाहट–संज्ञा स्त्री० लसीलापन।

चिपटना–क्रि० अ० लिपटना। सटना। चिपकना।

चिपटा–वि० जिसकी सतह दबी हुई हो। बैठा या धँसा हुआ। चपटा। सटा हुआ। लिपटा।

चिपटाना–क्रि० स० लिपटाना। आलिंगन करना।

चिपटी–वि० दे० "चिपटा"। १. धँसा हुआ। २. एक प्रकार की बाली।

चिपड़ा या चिपड़ाहा–वि० कीचड़ भरी आँख। जिसकी आँख में कीचड़ हो।

चिपड़ी, चिपरी‡–संज्ञा स्त्री० गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े। उपली।

चिप्पक–वि० छिछला।
संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष।

चिप्पड़–संज्ञा पुं० १. छोटा चिपटा टुकड़ा। २. सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छाल पपड़ी।

चिप्पा–संज्ञा पुं० पैबन्द। जोड़।

चिप्पी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। २. उपली। गोहँठी। ३. पैबन्द। थिगरी। ४. सीधा तौलने का बटखरा। ५. सीधा।

चिबावला–संज्ञा पुं० लड़कपन।

चिबिल्ला–वि० नटखट। चिलबिला। चंचल।

चिबुक–संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष। मुचकुन्द का वृक्ष। ठोड़ी। ओठ के नीचे का भाग।

चिमगादड़–दे० "चमगादड़"।

चिमचिमा–संज्ञा पुं० तेल का मैल। तेलछट। जमा हुआ तेल।

चिमटना–क्रि० अ० १. चिपकना। सटना। २. आलिंगन करना। लिपटना। ३. गुथना। ४. पीछा न छोड़ना। पिंड न छोड़ना।

चिमटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चिमटी] लोहे की दो लंबी और लचीली पट्टियों का बना हुआ एक औजार। चिमटा।

चिमटाना–क्रि० स० १. चिपकाना। सटाना। २. लिपटाना।

चिमटी–संज्ञा स्त्री० बहुत छोटा चिमटा।

चिमड़ा–वि० चीमड़। कड़ा।

चिमड़ी–संज्ञा स्त्री० सूखी हुई। शुष्क। कड़ी।

चिमनी–संज्ञा स्त्री० १. लम्प या लालटेन का शीशा। २. मकान में धुआँ बाहर निकलने का छेद।

चिमोटी–संज्ञा स्त्री० छोटा चिमटा। एक औजार।

चिरंजीव या चिरंजीवी–वि० १. चिरंजीवी। २. आशीर्वाद का शब्द। दीर्घायु हो।

चिरंटी–संज्ञा स्त्री० युवती।

चिरंतन–वि० पुराना। पुरातन। हमेशा बना रहनेवाला। सदैव वर्तमान रहनेवाला। चिरकालीन। शाश्वत।

चिर–वि० दीर्घकाल। बहुत दिनों तक रहनेवाला। सदा। सब समय।
क्रि० वि० बहुत दिनों तक। सदैव वर्त्तमान।
संज्ञा पुं० एक औषध।

चिरई–संज्ञा स्त्री० "चिड़िया"।

चिरकना–क्रि० अ० थोड़ा-थोड़ा मल निकलना।

चिरकाल–संज्ञा पुं० दीर्घकाल। बहुत समय। सदा। सब समय।

चिरकालिक–वि० बहुत दिनों का। प्राचीन। पुराना।

चिरकालीन–वि० सदा बना रहनेवाला। दे० "चिरन्तन"।

चिरकीन–वि० गंदा। मैला।

चिरकुट–संज्ञा पुं० फटा पुराना कपड़ा। चिथड़ा। गूदड़।

चिरचिटा–संज्ञा पुं० चिचड़ा। अपामार्ग। एक प्रकार की घास।

चिरचिरा–वि० चिड़चिड़ा ।
संज्ञा पुं० चिचड़ा ।
चिरजीवक–संज्ञा पुं० १. दीर्घजीवी । २. एक वृक्ष ।
चिरजीवन–संज्ञा पुं० सदा बना रहनेवाला जीवन । अमर जीवन ।
चिरजीवी–वि० १. बहुत दिनों तक जीने वाला । २. अमर ।
संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. कौवा । ३. मार्कंडेय ऋषि । ४. अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गए हैं । ५. वृक्ष । सेमर ।
चिरना–क्रि० अ० १. फटना । सीध में कटना । २. लकीर के रूप में घाव होना ।
संज्ञा पुं० चीरने का औजार । कुम्हारों का धारदार लोहा जिससे नरिया चीरते हैं ।
चिरनिद्रा–संज्ञा स्त्री० मृत्यु । मौत । हमेशा के लिए नींद यानी मृत्यु ।
चिरपुष्प–संज्ञा पुं० मौलसिरी । वकुल ।
चिरबत्ती–वि० टुकड़ा । चिथड़ा ।
चिरमिटी–संज्ञा स्त्री० गुंजा । घुंघची ।
चिरवाई–संज्ञा स्त्री० चिरवाने का कार्य या मजदूरी । पानी बरसने पर खेतों की पहली जोताई ।
चिरवाना–क्रि० स० चीरने का काम कराना । फड़वाना ।
चिरस्थायी–वि० बहुत दिनों तक रहनेवाला ।
चिरस्मरणीय–वि० १. बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य । २. पूजनीय ।
चिरहटा†–संज्ञा पुं० चिड़ीमार । बहेलिया ।
चिराई–संज्ञा स्त्री० चीरने की क्रिया या मजदूरी ।
चिराक–संज्ञा पुं० दीपक । दीया । दे० "चिराग" ।
चिराग–संज्ञा पुं० [फा०] दीपक । दीआ ।
मुहा०–चिराग तले अँधेरा=१. जहाँ जिस वस्तु की आशा न की जाय वहाँ उसका प्राप्त होना जैसे प्रकाश के साथ अँधेरा । २. न्याय के साथ अन्याय—जैसे मन्दिर में अधर्म ।
चिरागदान–संज्ञा पुं० [फा०] दीयट । शमादान ।
चिरागी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी पवित्र स्थान पर चिराग आदि जलाने का खर्च । मजार पर चढ़ाई जानेवाली भेंट ।
वि० जहाँ चिराग या दिया जले । जैसे चिरागी मौजा—वह गांव जहाँ आबादी हो ।
चिराटिका–संज्ञा स्त्री० चिरायता ।
चिरातन–वि० पुराना । पुरातन ।
चिराद–संज्ञा पुं० मांस भूनने की गंध ।
चिराना–क्रि० स० चीरने का काम दूसरे से कराना । फड़वाना ।
वि० १. पुराना । २. जीर्ण ।
चिरायँध–संज्ञा स्त्री० चमड़े या मांस आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गंध ।
चिरायता–संज्ञा पुं० एक पौधा जो दवा के काम में आता है ।
चिरायु–वि० बहुत दिनों तक जीनेवाला । दीर्घायु । देवता ।
चिरारी–संज्ञा स्त्री० दे० "चिरौंजी" ।
चिरिया†*–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया" ।
चिरिहार–संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार" ।
चिरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया" ।
चिरु–संज्ञा पुं० बाहु और कंधे का जोड़ । मोढ़ा ।
चिरैया–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया" । वर्षा का नक्षत्र ।
चिरौंजी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सूखा फल या मेवा । पियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी ।
चिरौरी–संज्ञा स्त्री० विनती । प्रार्थना । अनुनय । खुशामद ।
चिर्भटी–संज्ञा स्त्री० ककड़ी ।
चिर्री–संज्ञा स्त्री० वज्र । बिजली ।
चिण–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष । चील ।
चिलक–संज्ञा स्त्री० १. आभा । कांति । द्युति । २. रह-रहकर उठनेवाला दर्द । टीस । चमक ।
चिलकना–क्रि० अ० १. चमचमाना । २. रह-रहकर दर्द उठना ।

चिलका—संज्ञा पुं० भारत के पूर्वी तट पर एक झील ।
चिलकाना†—क्रि० स० चमकाना । झलकाना ।
चिलकी—संज्ञा पुं० चमकता हुआ नया रुपया ।
चिलग़ोज़ा—संज्ञा पुं० (फा०) एक प्रकार का मेवा ।
चिलचिल—संज्ञा पुं० अबरक । भोड़ल ।
चिलचिलाना—क्रि० अ० शोर मचाना ।
चिलड़ा—संज्ञा पुं० एक पकवान ।
चिलता—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कवच ।
चिलबिल—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा जंगली पेड़ । एक तरह का बरसाती पौधा जो तालों में होता है ।
चिलबिला, या **चिलबिल्ला**—वि० [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल । नटखट ।
चिलम—संज्ञा स्त्री० मिट्टी का बरतन जिसमें तम्बाकू रखकर हुक्का पीते हैं ।
चिलमची—संज्ञा स्त्री० हाथ आदि धोने का देग के आकार का बरतन ।
चिलमबरदार—संज्ञा पुं० हुक्का पिलानेवाला । चिलम भरनेवाला नौकर ।
चिलमबरदारी—संज्ञा स्त्री० चिलम भरना । चिलम पिलाना । चिलम पिलानेवाले का काम ।
चिलमन या चिलवन—संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँस की तीलियों का परदा । चिक ।
चिलमिलिका—संज्ञा पुं० १. गले में पहनने की एक प्रकार की माला । २. जुगनू । ३. बिजली ।
चिलवाँस—संज्ञा पुं० चिड़िया फँसाने का फंदा ।
चिलहला—वि० पंकिल । कीचड़-युक्त । किचड़ाहा ।
चिलहोरना—क्रि० स० खोंचना । ठोकराना ।
चिलिक—संज्ञा स्त्री० मोंच । दर्द । चिलक ।
चिल्लड़—संज्ञा पुं० जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफेद कीड़ा ।
चिल्लपों—संज्ञा स्त्री० चिल्लाना । शोर-गुल । पुकार । दुहाई ।
चिल्लवाना—क्रि० स० चिल्लाने में दूसरों को प्रवृत्त करना ।
चिल्ला—संज्ञा पुं० १. चालीस दिन का समय । २. चालीस दिन का मुसलमानी व्रत । ३. एक जंगली पेड़ । ४. उड़द या मूँग आदि की रोटी । चीला । उलटा । ५. धनुष की डोरी । प्रत्यंचा । ६. पगड़ी का छोर जिसमें कलाबत्तू का काम रहता है ।
मुहा०—चिल्ले का जाड़ा=बहुत कड़ी सरदी ।
चिल्लाना—क्रि० अ० जोर से बोलना । शोर करना । हल्ला करना ।
चिल्लाहट—संज्ञा स्त्री० १. चिल्लाने का भाव । २. हल्ला । शोर । चीत्कार ।
चिल्लिका—संज्ञा स्त्री० १. दोनों भौंहों के बीच का स्थान । २. बथुआ का साग ।
चिल्ली—संज्ञा स्त्री० १. झिल्ली (कीड़ा) । २. बिजली । ३. मूर्ख । ४. बथुआ का साग । ५. चील ।
चिल्ही—संज्ञा स्त्री० चील ।
चिवि—संज्ञा स्त्री० दे० "चिबुक" ।
चिविट—संज्ञा पुं० चिउड़ा ।
चिहिकना—क्रि० अ० सनसनाना । खुशी में चिड़ियों का चहकना । कलरव करना ।
चिहुँटना*—क्रि० स० १. चुटकी काटना । २. चिपटना । लिपटना ।
मुहा०—चित्त चिहुँटना—मर्म स्पर्श करना । चित्त में चुभना ।
चिहुँटनी—संज्ञा स्त्री० गुंजार ।
चिहुँटी—संज्ञा स्त्री० चुटकी ।
चिहुर*—संज्ञा पुं० बाल । केश । चिकुर ।
चिह्न—संज्ञा पुं० १. निशान । २. पताका । ३. दाग । धब्बा ।
चिह्नित—वि० चिह्न किया हुआ । जिसपर चिह्न हो ।
चीं, चींचीं—संज्ञा स्त्री० पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द ।
चीं-चपड़—संज्ञा स्त्री० विरोध में कुछ बोलना ।
चींटा—संज्ञा पुं० दे० 'चिउँटा' ।
चींटी—संज्ञा स्त्री० चिउंटी ।
चींथना—क्रि० स० फाड़ना । चिथड़ा करना ।
चीक—संज्ञा स्त्री० १. चीत्कार २. चिल्लाहट । संज्ञा पुं० कसाई । कीचड़ ।
चीकट—संज्ञा पुं० १. तेल की मैल । तल-

छट । २. लसार मिट्टी । एक प्रकार का कपड़ा ।
वि० बहुत मैला ।

चीकड़–संज्ञा पुं० कीचड़ ।

चीकन–वि० चिकना ।

चीकना–क्रि० अ० १. पीड़ा या कष्ट के कारण जोर से चिल्लाना । २. बहुत जोर से बोलना ।

चीकर–संज्ञा पुं० कुएँ के ऊपर बना हुआ स्थान।

चीख–संज्ञा स्त्री० चीत्कार । चिल्लाहट ।

चीखना–क्रि० स० चिल्लाना । चखना । स्वाद लेना ।

चीखर, चीखल–संज्ञा पुं० कीचड़ ।

चीखुर–संज्ञा पुं० गिलहरी ।

चीज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पदार्थ । वस्तु । २. आभूषण । गहना । ३. गीत । ४. अद्भुत या महत्त्व की वस्तु ।

चीठ–संज्ञा स्त्री० मैला । मैल ।

चीठा–संज्ञा पुं० दे० "चिट्ठा" ।

चीठी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी" ।

चीड़–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का देशी लोहा । २. एक वृक्ष । इस वृक्ष की लकड़ी ।

चीड़ा–संज्ञा पुं० दे० "चीढ़" ।

चीढ़–संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधाबिरोजा और ताड़पीन तेल निकलता है ।

चीत*–संज्ञा पुं० १. मन । चित्त । २. चित्रा नक्षत्र । ३. सीसा धातु ।

चीतना–क्रि० स० (वि० चीता) १. सोचना । विचारना । २. स्मरण करना । चाहना । तसवीर या बेल-बूटे चित्रित करना ।

चीतर–संज्ञा पुं० दे० "चीतल" ।

चीतल–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं । २. एक प्रकार का चित्तीदार साँप ।

चीता–संज्ञा पुं० १ एक प्रसिद्ध हिंसक पशु । २. एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ औषध के काम में आती है । ३. होश । चेतना । चित्त ।
वि० विचारा हुआ ।

चीत्कार–संज्ञा पुं० चिल्लाहट । हल्ला । शोर ।

चीथड़ा–संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा" ।

चीथना–क्रि० स० टुकड़े-टुकड़े करना । फाड़ना ।

चीन–संज्ञा पुं० १. झंडी । पताका । २. सीसा । ३. तागा । सूत । ४. रेशमी कपड़ा । ५. एक प्रकार का हिरन । ६. साँवाँ । अन्न-विशेष । ७. भारत के उत्तर-पूर्व स्थित एक प्रसिद्ध देश । ८. चिह्न । ९. नाग ।

चीनना†–क्रि० स० पहचानना ।

चीनांशुक–संज्ञा पुं० १. रेशमी वस्त्र । २. चीन देश का बना हुआ वस्त्र-विशेष ।

चीना–संज्ञा पुं० १. चीन देशवासी । २. एक तरह का साँवाँ । चेना । ३. चीनी कपूर ।
वि० चीन देश का ।

चीनाक–संज्ञा पुं० एक तरह का कपूर (चीनी कपूर) ।

चीना बदाम–संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली ।"

चीनिया–वि० १. चीन देश का । २. छोटा । ३. दे० "चिनिया" ।

चीनी–संज्ञा स्त्री० शक्कर ।
वि० चीन देश का ।

चीनी कपूर–संज्ञा पुं० एक तरह का कपूर ।

चीनी मिट्टी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सफेद मिट्टी ।

चीन्ह†–संज्ञा पुं० दे० "चिह्न" ।

चीन्हना–क्रि० स० पहचानना ।

चीन्हा–क्रि० स० पहचाना ।
संज्ञा पुं० चिह्न । निशान ।

चीप–संज्ञा स्त्री० १. लकड़ी का टुकड़ा । चाव । रसदार । रस । २. एक बार फावड़ा चलाने से निकली हुई मिट्टी ।

चीपड़–संज्ञा पुं० आँख का कीचड़ । आँख की मैल ।

चीमड़–वि० जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे ।

चीयाँ–संज्ञा पुं० दे० "चियाँ" ।

चीर–संज्ञा पुं० १. कपड़ा (साड़ी)। २. पेड़ की छाल। ३ चिथड़ा। ४. गौ का थन। ५. साधुओं के पहनने का कपड़ा। ६. धूप का पेड़।
संज्ञा स्त्री० १. चीरने की क्रिया। २. चीरकर बनाया हुआ शिगाफ या दरार। ३. एक पक्षी। ४. चार लड़ियोंवाली मोतियों की माला। ५. सीसा धातु।

चीर-चरम‡*–संज्ञा पुं० बाघंबर। मृगचर्म। मृगछाला। चीरचर्म।

चीरना–क्रि० स० फाड़ना। टुकड़े-टुकड़े करना।

चीरफाड़–संज्ञा स्त्री० १. चीरने-फाड़ने का काम। २. शल्य-चिकित्सा।

चीरवासा–संज्ञा पुं० शिव।

चीरा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का लहरिए-दार रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है। २. गाँव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर। ३. चीरकर बनाया हुआ घाव।

चीराबंद–संज्ञा पुं० चीरा बाँधनेवाला।
वि० कुमारी।

चीरिका–संज्ञा स्त्री० झींगुर। झिल्ली।

चीरी†*–संज्ञा पुं० १. चिड़िया। २. झींगुर। ३. एक मछली। ४. चीढ़।

चीरैता–संज्ञा पुं० दे० "चिरायता"। औषध-विशेष।

चीर्ण–वि० फटा हुआ। विदीर्ण।

चीर्णपर्ण–संज्ञा पुं० १. पुराने पत्ते। २. निम्ब वृक्ष।

चील–संज्ञा स्त्री० एक बड़ी चिड़िया।

चीलर–संज्ञा पुं० जूँ के आकार का एक सफेद कीड़ा, जो गंदे कपड़ों में होता है। चीलड़।

चीलवा–संज्ञा पुं० पकवान।

चीला–संज्ञा पुं० एक तरह का पकवान।

चील्ह–संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

चील्हक–संज्ञा पुं० झिल्ली।

चील्ही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का तंत्रोपचार जो बालकों के [illegible]र्थ स्त्रियाँ करती हैं।

चीवर–संज्ञा पुं० १. कौपीन। संन्यासियों का वस्त्र। २. बौद्ध संन्यासियों के पहनने का वस्त्र।

चीवरी–संज्ञा पुं० १. बौद्ध भिक्षुक। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

चीस–संज्ञा स्त्री० टीस। कसक।

चीह–संज्ञा स्त्री० चीत्कार।

चुँगना–क्रि० स० दे० "चुगना"।

चुंगल–संज्ञा पुं० १. चंगुल। २. पंजा।
मुहा०–चंगुल में फँसना=वश में आना।

चुँगना या **चुँगवाना**–क्रि० स० चिड़ियों को दान खिलाना।

चुंगी–संज्ञा स्त्री० १. चुटकी भर चीज। २. महसूल।

चुंगीघर–संज्ञा पुं० जहाँ चुंगी वसूल की जाती है।

चुँधाना–क्रि० स० चुमाना।

चुंच–संज्ञा पुं० चोंच।

चुंचक–संज्ञा पुं० भेंड़। मेष।

चुंचु–संज्ञा पुं० छछूँदर।

चुंटली–संज्ञा स्त्री० घुंघची।

चुंटा–संज्ञा स्त्री० कूप।

चुंडा–संज्ञा पुं० कूआँ। कूप।

चुंडित*–वि० चुटियावाला। चुंडीवाला।

चुंडी–संज्ञा स्त्री० दूती।

चुंदरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा।

चुंदी–संज्ञा स्त्री० १. शिखा। चुटैया। २. कुटनी। दूती।

चुँधलाना–क्रि० अ० चौंधना। चकाचौंध होना।

चुंधा–वि० (स्त्री० चुंधी) १. जिसे सुझाई न पड़े। २. छोटी आँखोंवाला।

चुँधियाना–क्रि० अ० दे० "चुँधलाना"। आँखों का तिलमिलाना।

चुंबक–संज्ञा पुं० १. चुंबन करनेवाला। २. कामुक। कामी। ३. धूर्त्त। ४. ग्रंथों को केवल इधर-उधर उलटनेवाला। ५. एक प्रकार की धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है। ६. फाँस।

चुंबकत्व–संज्ञा पुं० चुंबक पत्थर का वह गुण जिससे वह लोहे को अपनी तरफ खींचता है।

चुंबन–संज्ञा पुं० चुम्मा। बोसा।
चुंबना–क्रि० स० चूमना। छूना।
चुंबित–वि० १. चूमा हुआ। २. स्पर्श किया हुआ।
चुंबी–वि० चूमनेवाला।
चुअना*–क्रि० अ० टपकना। चूना।
चुआ–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का गेहूँ। २. एक सुगंधित द्रव। ३. बाँट के स्थान पर रखा जानेवाला कंकड़-पत्थर। ४. माठ।
चुआई–संज्ञा स्त्री० चुआने या टपकाने की क्रिया।
चुआन–संज्ञा स्त्री० १. चूना। क्षरण। २. नहर। ३. जल निकलने की भूमि। ४. खाई।
चुआना–क्रि० स० १. टपकाना। बूँद-बूँद गिराना। *२. चुपड़ना। रसमय करना। भबके से अर्क उतारना।
चुक़ंदर–संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह की एक तरकारी।
चुक–संज्ञा पुं० दे० "चूक"।
चुकचुकाना–क्रि० अ० १. किसी द्रव पदार्थ का छेदों से होकर बाहर आना। २. पसीजना।
चुकटा या **चुकटी**–संज्ञा पुं० दे० "चुटकी"।
चुकता–वि० बेबाक। निःशेष। अदा। कर्ज या उधार की पूरी अदायगी।
चुकती–वि० दे० "चुकता"।
चुकना–क्रि० अ० १. समाप्त होना। २. बेबाक होना। अदा होना। चुकता होना। ३. निपटारा। *४. चूकना। भूल करना। त्रुटि करना। ५. *व्यर्थ होना।
चुकवाना–क्रि० स० बेबाक कराना। दिलाना। चुकता कराना।
चुकाई–संज्ञा स्त्री० चुकाने या चुकता होने का भाव।
चुकाना–क्रि० स० १. अदा करना। बेबाक करना। २. निबटाना।
चुकिया–संज्ञा स्त्री० कुल्हिया।
चुकौता–संज्ञा पुं० ऋण की चुकाई। निपटाना।
चुक्कड़–संज्ञा पुं० पुरवा।
चुक्क–संज्ञा पुं० भूल।
चुक्कार–संज्ञा पुं० गर्जन। खूब जोर से शब्द करना।
चुक्की–संज्ञा स्त्री० धोखा। धूर्तता।
चुक्ती–संज्ञा स्त्री० १. नियम। निरूपण। २. परिणाम। ३. चुकती।
चुक्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की खटाई। चूक। खट्टा रस। २. एक साग।
चुक्षा–संज्ञा स्त्री० हिंसा।
चुखाना–क्रि० स० दुहते समय बछड़े को दूध पिलाना। चखाना।
चुग़द–संज्ञा पुं० [फा०] १. उल्लू पक्षी। २. मूर्ख। बेवकूफ।
चुगना–क्रि० स० चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना। बिनना।
चुग़ल–संज्ञा पुं० पीठ पीछे शिकायत करनेवाला।
चुग़लख़ोर–संज्ञा पुं० [फा०] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला। लुतरा।
चुग़लख़ोरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] चुगली करने का काम।
चुगलाना–क्रि० स० मुँह में लेकर धीरे-धीरे आस्वादन करना। चुभलाना।
चुग़ली–संज्ञा स्त्री० [फा०] पीठ पीछे शिकायत।
चुगा–संज्ञा पुं० चिड़ियों का चारा। चोगा।
चुगाई–संज्ञा स्त्री० चुगने या चुगाने की क्रिया।
चुगाना–क्रि० स० चिड़ियों को दाना या चारा डालना।
चुगुल*†–संज्ञा पुं० दे० "चुग़ल"।
चुग्गा–संज्ञा पुं० चोगा।
चुग्घी–संज्ञा स्त्री० चाट।
चुचकारना–क्रि० स० चुमकारना। पुचकारना।
चुचकारी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चुचकारने की क्रिया।
चुचकना† या **चुपुकना**–क्रि० अ० १. सूखना। २. ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ।
चुचाना–क्रि० अ० चूना। टपकाना। निचोड़ना।
चुचुआना–क्रि० अ० चूना। टपकना।

चुचुक–संज्ञा पुं० कुचाग्र भाग । स्तन का अगला भाग ।

चुटक†–संज्ञा पुं० कोड़ा । चाबुक । संज्ञा स्त्री० चुटकी ।

चुटकना–क्रि० स० १. कोड़ा या चाबुक मारना । २. चुटकी से तोड़ना । ३. साँप काटना ।

चुटका–संज्ञा पुं० १. बड़ी चुटकी । २. चुटकी भर आटा ।

चुटकी–संज्ञा स्त्री० १. अँगूठे या उँगली से किसी वस्तु को पकड़ना या दबाना । २. थोड़ा आटा । ३. चुटकी बजने का शब्द । ४. अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दबाने या पीड़ित करने की क्रिया । ५. एक प्रकार का गोटा । ६. पंचकश । ७. एक गहना । **मुहा०**—चुटकी बजाना=अँगूठे और बीच की उँगली से शब्द निकालना । चुटकी बजाते=चटपट । देखते-देखते । बात की बात में । चुटकी भर=बहुत थोड़ा । जरा सा । चुटकियों में=बहुत शीघ्र । चटपट । चुटकियों में उड़ाना=अत्यंत तुच्छ या सहज समझना । कुछ न समझना । चुटकी माँगना=भिक्षा माँगना । चुटकी भरना=चुभती बात कहना । चुटकी लेना =१. हँसी उड़ाना । दिल्लगी उड़ाना । २. चुभती या लगती हुई बात कहना ।

चुटकुला या **चुटकला**–संज्ञा पुं० १. मजेदार बात । विनोदपूर्ण बात । २. लटका । चमत्कारपूर्ण उक्ति । **मुहा०**–चुटकुला छोड़ना=१. दिल्लगी की बात करना । २. कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय ।

चुटला–संज्ञा पुं० एक गहना । वेणी । वि० चुटीला ।

चुटफुट†–संज्ञा स्त्री० फुटकर वस्तु । छुट-फुट ।

चुटाना–क्रि० अ० चोट खाना । घायल होना ।

चुटिया–संज्ञा स्त्री० शिखा । चुंदी ।

चुटीलना–क्रि० स० चोट करना । चोट पहुँचाना ।

चुटियाना–क्रि० स० २. चोट करना ।

चुटीला–वि० १. घायल । आहत । क्षत-विक्षत । २. भड़कदार । बढ़िया । संज्ञा पुं० पतली चोटी । मेंढी ।

चुटैल–वि० १. जिसे चोट लगी हो । ‡२. चोट करनेवाला ।

चुड़िया–संज्ञा पुं० चूड़ी ।

चुड़िहारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ी बेचनेवाला या बनानेवाला ।

चुड़वा–संज्ञा पुं० चीउड़ा । चर्वण ।

चुड़ैल–संज्ञा स्त्री० १. डायन । प्रेतनी । पिशाचिनी । २. कुरूपा स्त्री ३. क्रूर स्वभाव की स्त्री । दुष्टा ।

चुन–संज्ञा पुं० चूरा । आटा ।

चुनचुना–वि० जिसके छूने या खाने से चुनचुनाहट हो । संज्ञा पुं० महीन सफेद कीड़े ।

चुनचुनाना–क्रि० अ० १. कुछ जलन लिये हुए चुभने की-सी पीड़ा होना । २. खुजलाहट । ३. चींचीं करना । ठिनकना ।

चुनचुनाहट–संज्ञा स्त्री० शरीर पर कुछ जलन लिये चुभने की-सी पीड़ा ।

चुनचुनी–संज्ञा स्त्री० खुजलाहट । एक कीड़ा ।

चुनट या **चुनत**–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनन" ।

चुनन–संज्ञा स्त्री० कपड़े, कागज आदि पर की सिकुड़न । सिलवट । शिकन । चुनट । तह । परत ।

चुनना–क्रि० स० १. छाँट-छाँटकर अलग करना । २. पसन्द करके लेना । बीनना । ३. तरतीब से लगाना । सजाना । ४. जोड़ाई करना । दीवार उठाना । ५. कपड़े में चुनन या शिकन डालना । **मुहा०**—दीवार में चुनना—किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईंटों की जोड़ करना ।

चुनरी–संज्ञा स्त्री० बुँदकीदार रंगीन वस्त्र । साड़ी । चुँदरी ।

चुनवाँ–संज्ञा पुं० १. लड़का । २. शिष्य । वि० बढ़िया ।

चुनवाना–क्रि० स० दे० "चुनाना" ।

चुनाई–संज्ञा स्त्री० १. चुनने की क्रिया ।

२. दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग। ३. चुनने की मजदूरी।
चुनाना–क्रि० स० १. चुनने का काम दूसरे से कराना। २. बिनवाना। ३. ईंटें जुड़वाना। ४. ढाँपना या तोपना।
चुनाव–संज्ञा पुं० १. चुनने या चुने जाने की क्रिया। २. बहुतों में से कुछ को किसी कार्य के लिए चुनना।
चुनावट–संज्ञा स्त्री० चुनट। तह। परत।
चुनिंदा–वि० १. चुना हुआ। छँटा हुआ। २. बढ़िया।
चुनी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुन्नी"।
चुनैटी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनौटी"।
चुनौटी–संज्ञा स्त्री० चूना रखने की डिबिया।
चुनौती–संज्ञा स्त्री० १. उत्तेजना। बढ़ावा। चिट्टा। २. युद्ध के लिए आह्वान। ललकार। प्रचार।
चुन्नट या चुन्नत–संज्ञा दे० "चुनट"।
चुन्नी–संज्ञा स्त्री० १. बहुत छोटा नग। २. अनाज का चूर। ३. लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े। कुनाई। ४. चमकी। सितारा। ५. ओढ़नी।
चुप–वि० १. खामोश। शब्द-रहित। अनबोल। अवाक्। २ शान्तभाव से। चंचलता-रहित। ३. निरुद्योग। प्रयत्नहीन।
संज्ञा स्त्री० मौनावलंबन। न बोलना।
चुपका–वि० [स्त्री० चुपकी] मौन। खामोश।
मुहा०–चुपके से=१. बिना कुछ कहे-सुने। २. गुप्त रूप से। धीरे से।
चुपकी–संज्ञा स्त्री० खामोशी। चुप्पी।
चुपचाप–क्रि० वि० १. खामोशी के साथ। शान्त भाव से। २. छिपे-छिपे। गुप्त रीति से। ३. बिना विरोध में कुछ कहे। बिना चीं-चपड़ के।
चुपड़ना–क्रि० स० १. किसी गीली वस्तु का लेप करना। पोतना। जैसे—रोटी में घी चुपड़ना। २. दोष छिपाना। ३. चिकनी-चुपड़ी कहना। चापलूसी करना।
चुपाना†*–क्रि० अ० चुप हो रहना। बोलना।
चुप्पा–वि० [स्त्री० चुप्पी] बहुत कम बोलनेवाला। घुन्ना।
चुप्पी–संज्ञा स्त्री० मौन। खामोशी।
चुबलना–क्रि० स० धीरे-धीरे स्वाद लेना। दे० "चुभलाना"।
चुभकना–क्रि० अ० गोता खाना। बार-बार डुबकी लेना।
चुभकाना–क्रि० स० पानी में गोता देना।
चुभकी–संज्ञा स्त्री० गोता। डुबकी।
चुभना–क्रि० अ० १. गड़ना। धँसना। बिधना। २. हृदय में खटकना। मन में व्यथा उत्पन्न करना। ३. मन में बैठना।
चुभलाना–क्रि० स० मुँह में किसी वस्तु को रखकर धीरे-धीरे आस्वादन करना। चुबलाना।
चुभाना, चुभोना–क्रि० स० धँसाना। गड़ाना।
चुमकार–संज्ञा स्त्री० पुचकार। चुमकार का शब्द। आश्वासन देना। दुलार।
चुमकारना–क्रि० स० प्यार दिखाने के लिए चूमने का-सा शब्द निकालना। पुचकारना। दुलारना।
चुमाना–क्रि० स० १. किसी दूसरे का चुम्मा दिलवाना। २. विवाह की एक रीति।
चुम्बक–संज्ञा पुं० दे० "चुंबक"।
चुम्मक–संज्ञा पुं० दे० "चुंबक"।
चुम्बा–संज्ञा पुं० दे० "चुम्मा"।
चुम्बित–वि० चूमा हुआ।
चुम्मा†–संज्ञा पुं० चूमा। चुंबन। होंठ से होंठ छूना।
चुर–संज्ञा पुं० बाघ आदि के रहने का स्थान। माँद। बैठक।
*वि० बहुत। अधिक। प्रचुर। मुड़ने या टूटने का शब्द।
चुरकना–क्रि० अ० १. चहकना। चहचहाना। चीं-चीं करना (व्यंग्य या तिरस्कार)। †२. चटकना। टूटना। चूर होना।
चुरकी†–संज्ञा स्त्री० शिखा। चुटिया। चिकुर।
चुरकुट, चुरकुस–वि० चकनाचूर। चूर-चूर। बुकनी।

चुरगना–क्रि० अ० बोलना।
चुरचुरा–वि० जो खरा होने के कारण जरा-सा दबाने पर चुरचुर शब्द करके टूट जाए।
चुरचुराना–क्रि० अ० चुरचुर शब्द करना।
क्रि० स० चूरचूर करना। चुरचुर शब्द उत्पन्न करना।
चुरट–संज्ञा पुं० दे० "चुरुट"।
चुरना†–क्रि० अ० १. आँच पर किसी वस्तु का पकना। सीझना। २. आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।
चुरमुर–संज्ञा पुं० खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।
चुरमुरा–वि० जो दबाने पर चुर-चुर शब्द करके टूट जाय। चुर-चुर करनेवाला। चुरचुरा।
चुरमुराना–क्रि० अ० चुरमुर शब्द करके टूटना।
क्रि० स० १. चुरमुर शब्द करके तोड़ना। २. खरी चीज चबाना।
चुरवाना–क्रि० स० १. पकाने का काम कराना। २. दे० "चोरवाना"।
चुरस–संज्ञा स्त्री० चुनट।
चुरा†*–संज्ञा पुं० दे० "चूरा"। बुरादा।
चुराई–संज्ञा स्त्री० १. चुराने की क्रिया। २. पकाने का कार्य।
चुराना–क्रि० स० १. चोरी करना। २. लोगों की दृष्टि से बचाना। छिपाना। काम करने में कसर करना। ३. पकाना। सिझाना।
मुहा०–चित्त चुराना=मन मोहित करना। आँख चुराना=नजर बचाना। सामने मुँह न करना।
चुरिहारा–संज्ञा पुं० दे० "चुड़िहारा"।
चुरी†*–संज्ञा स्त्री० चूड़ी।
चुरु†*–संज्ञा पुं० दे० "चुल्लू"।
चुरुगना–क्रि० अ० बड़बड़ाना। बकना।
चुरुट–संज्ञा पुं० सिगार। तम्बाकू के पत्ते या उसके चूर की मोटी वत्ती जिसे लोग जलाकर पीते हैं।
चुल–संज्ञा स्त्री० किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट।
चुलकना–क्रि० अ० बिलबिलाना। चुलचुल करना। खुजाना।
चुलचुल–संज्ञा पुं० चंचलता। चपलता।
चुलचुलाना–क्रि० अ० १. खुजलाहट होना। २. दे० "चुलबुलाना"।
चुलचुलाहट–संज्ञा स्त्री० दे० "चुल"।
चुलचुली–संज्ञा स्त्री० चुल। खुजलाहट।
चुलबुल–संज्ञा स्त्री० चपलता। चुलबुलाहट।
चुलबुला–वि० [स्त्री० चुलबुली] १. चंचल। चपल। २. नटखट।
चुलबुलाना–क्रि० अ० १. चुलबुल करना। २. चंचल होना। चपलता करना। स्थिर न बैठना।
चुलबुलापन–संज्ञा पुं० चंचलता। चपलता। शोखी।
चुलबुलाहट–संज्ञा स्त्री० चंचलता।
चुलबुलिया–वि० चुलबुल। चंचल।
चुलहाई–वि० कामी। लम्पट। व्यभिचारी।
चुलहारा–वि० कामातुर।
चुलाना–क्रि० स० दे० "चुवाना"। टपकाना। गिराना।
चुलाव–संज्ञा पुं० १. चुलाने का भाव। २. पुलाव (मांस-रहित)।
चुल्ला–संज्ञा पुं० काँच का छोटा छल्ला।
वि० चिलबिला।
चुलियाला–संज्ञा पुं० एक मात्रिक छंद।
चुलुक–संज्ञा पुं० भारी दलदल। कीचड़। चुल्लू।
चुल्ला, चुल्ली–वि० चुलबुला। पाजी। शरारती।
संज्ञा पुं० काँच का छोटा छल्ला।
चुल्लू–संज्ञा पुं० गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें।
मुहा०–चुल्लू भर पानी में डूब मरो=मुँह न दिखाओ। लज्जा के मारे मर जाओ।
चुवना*–क्रि० अ० दे० "चूना"।
चुवाना–क्रि० स० बूँद-बूँद करके गिराना। टपकाना।

चुसकी–संज्ञा स्त्री० १. ओंठ से लगाकर थोड़ा-थोड़ा पीना। सुड़क। घूँट। दम। २. मद्य पीने का पात्र।
चुसना–क्रि० अ० १. चूसा जाना। २. निचुड़ जाना। ३. सारहीन होना।
चुसनी–संज्ञा स्त्री० १. बच्चों का एक खिलौना। २. दूध पिलाने की शीशी।
चुसाना–क्रि० स० चूसने का काम दूसरे से कराना।
चुसवाना–क्रि० स० दे० "चुसाना"।
चुस्त–वि० १. कसा हुआ। जो ढीला न हो। २. जिसमें आलस्य न हो। फुरतीला।
चुस्ती–संज्ञा स्त्री० १. फुरती। तेजी। २. कसावट। तंगी। ३. दृढ़ता।
चुस्सी–संज्ञा स्त्री० किसी फल का रस।
चुहँटी–संज्ञा स्त्री० चुटकी।
चुहचुहा–वि० [स्त्री० चुहचुही] १. चुहचुहाता हुआ। मनोहर। चटकीला। गहरा रँगा हुआ। २. रसीला।
चुहचुहाता–वि० रसीला। सरस। रँगीला। मजेदार।
चुहचुहाना–क्रि० अ० १. रस टपकना। चटकीला लगना। २. चिड़ियों का बोलना। चहचहाना।
चुहचुही–संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया। फुलचुही।
चुहटना–क्रि० स० रौंदना। कुचलना।
चुहड़ा–संज्ञा पुं० भंगी।
चुहना–क्रि० स० चूसना।
चुहल–संज्ञा स्त्री० हँसी। ठठोली। मनोरंजन।
चुहलबाज़–वि० मसखरा। दिल्लगीबाज।
चुहलबाज़ी–संज्ञा स्त्री० दिल्लगी। मसखरापन।
चुहला–संज्ञा पुं० [स्त्री० चुहली] दे० "चुहलबाज"। हँसोड़।
चुहाबंती–संज्ञा स्त्री० एक गहना।
चुहिया–संज्ञा स्त्री० चूहा की मादा। छोटा चूहा।
चुहिल–वि० रमणीक।
चुहुँटना†*–क्रि० स० दे० "चिमटना"।
चुहुँटनी–संज्ञा स्त्री० दे० "चिरमिटी"।
चुहुकना–क्रि० स० चूसना।
चूँ–संज्ञा पुं० १. छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २. चूँ शब्द।
मुहा०—चूँ करना=१. कुछ कहना। २. प्रतिवाद करना। विरोध में कुछ कहना।
चूँकि–क्रि० वि० [फा०] क्योंकि। इसलिए कि।
चूंचूं–संज्ञा पुं० चिड़ियों का चूंचूं शब्द।
चूँदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।
चूँदी–संज्ञा स्त्री० दूती।
चूक–संज्ञा स्त्री० १. भूल। त्रुटि। अपराध। गलती। २. भ्रम। कसूर।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की खटाई का सत। २. एक खट्टा पदार्थ।
वि० बहुत खट्टा।
चूकना–क्रि० अ० १. भूल करना। गलती करना। २. सुअवसर खो देना।
चूका–संज्ञा पुं० एक खट्टा साग।
वि० भूला। भ्रान्त।
चूची–संज्ञा स्त्री० स्तन। कुच।
चूचुक–संज्ञा पुं० स्तन का अगला भाग। चूची।
चूजा–संज्ञा पुं० [फा०] मुर्गी का बच्चा।
चूड़ या **चूड़क**–संज्ञा पुं० १. छोटा कुआँ। २. पर्वत, मकान या खम्भे का ऊपरी भाग। ३. चोटी। ४. कलंगी। ५. शिखा। ६. आभरण-विशेष। ७. सोना या चाँदी की चूड़ी जिसे विधवा पहनती हैं। ८. हाथी के दाँतों में पहनाने की चूड़ी। ९. खाट की पाटी का सिरा।
चूड़ांत–वि० चरम सीमा।
क्रि० वि० अत्यन्त। बहुत अधिक।
चूड़ा–संज्ञा स्त्री० १. चोटी। शिखा। चुरकी। २. मोर के सिर पर की चोटी। ३. कुआँ। ४. गुंजा। घुँघची। ५. बाँह में पहनने का एक अलंकार। ६. चूड़ाकरण नाम का एक संस्कार।
संज्ञा पुं० १. कंकड़। कड़ा। वलय। २. हाथी दाँत की चूड़ियाँ।
चूड़ाकरण–संज्ञा पुं० मुंडन। बच्चे के पहले

पहले सिर के बाल मुड़वाकर चोटी रखवाने का संस्कार।
चूड़ाकर्म–संज्ञा पुं० दे० "चूड़ाकरण"।
चूड़ाभरण–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक तरह का बाल बनाने का तरीका। केशों की सजावट। स्त्रियों के बालों की चोटी का गहना।
चूड़ामणि–संज्ञा पुं० १. सिर में पहनने का एक गहना। शीशफूल। 'बीज'। २. सर्वोत्कृष्ट। श्रेष्ठ। ३. प्रधान। मुखिया। ४. घुँघची। गुंजा।
चूड़ी–संज्ञा स्त्री० १. हाथ में पहनने का एक गहना। २. मण्डलाकार पदार्थ।
मुहा०—चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना=पति के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना=स्त्रियों का वेष धारण करना (व्यंग और हास्य)।
चूड़ीदार–वि० जिसमें चूड़ी या छल्ले पड़े हों।
यौ०—चूड़ीदार पायजामा=एक प्रकार का चुस्त पायजामा।
चूड़ो–संज्ञा पुं० भंगी।
चूत–संज्ञा पुं० आम का पेड़।
संज्ञा स्त्री० योनि। भग।
चूतड़–संज्ञा पुं० पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग। नितंब।
चूतिया–संज्ञा पुं० मूर्ख। बेवकूफ।
यौ०–चूतिया-चक्कर=वि० चूतिया।
चूतियापन्थी–संज्ञा स्त्री० मूर्खता। बेवकूफी।
चून–संज्ञा पुं० १. आटा। पिसान। खाद्य पदार्थ। २. एक क्षारभस्म। चूना।
चूनर, चूनरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।
चूना–संज्ञा पुं० कंकड़, पत्थर आदि पदार्थों को जलाकर बनाया गया चूर्ण, जो मकान बनाने या पोतने के काम में आता है।
क्रि० अ० १. टपकना। २. किसी चीज का ऊपर से नीचे गिरना। ३. द्रव पदार्थ का बूँद-बूँद गिरना।
यौ०–चूना लगाना=हानि पहुँचाना। लज्जित करना। धोखा देना।
चूनादानी–संज्ञा स्त्री० चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।
चूनी†–संज्ञा स्त्री० अन्नकण। २. चुन्नी।
चूभ–संज्ञा पुं० टीस। व्यथा। दर्द। पीड़ा।
चूमना–क्रि० स० चुम्मा लेना। बोसा लेना।
चूमा–संज्ञा पु० चुंबन। चुम्मा।
चूमाचाटी–संज्ञा स्त्री० चूम और चाटकर प्रेम दिखाने की क्रिया।
चूर–संज्ञा पुं० चूर्ण। किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे टुकड़े। बुकनी।
वि० १. तन्मय। निमग्न। तल्लीन। २. मदमस्त।
यौ०–चूरचूर=टूक टूक। खण्ड-खण्ड। चूर रहना=मग्न रहना। मस्त रहना। अतिशय आसक्त। मद में चूर। चूर करना=टुकड़े टुकड़े करना। चूर होना=आसक्त होना। मग्न होना।
चूरन–संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण"।
चूरना†*–क्रि० स० १. चूर करना। टुकड़े-टुकड़े करना। २. तोड़ना।
चूरमा–संज्ञा पुं० रोटी, बाटी या पूरी को चूर-चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। मलीदा।
चूरमूर–संज्ञा पुं० खूँटियाँ जो जौ या गेहूँ कट जाने पर खेत में रह जाती हैं।
चूरा–संज्ञा पुं० चिउड़ा। चिवड़ा। चूर्ण। बुरादा। भुरभुर।
चूरी–संज्ञा स्त्री० १. घी चुपड़ी हुई रोटी (चूरमा)। चूड़। २. स्त्रियों का गहना-विशेष। चूर। चूरा।
चूर्ण–संज्ञा पु० १. चूर। पीसा हुआ। रेणु। धूल। रेत। चूना। बुकनी। २. पाचक औषधों का बारीक सफूफ। चूरन।
वि० तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट।
चूर्णक–संज्ञा पुं० १. सत्तू। सतुआ। २. धान। ३. समासहीन शब्दमय गद्य।
चूर्णकुंतल–संज्ञा पुं० लट। अलक। जुल्फ।

चूर्णकार–वि० १. चूना बनानेवाला । २. वर्णसंकर जाति-विशेष ।
चूर्णा–संज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक भेद ।
चूर्णिका–संज्ञा स्त्री० १. पशु । २. सतुआ । चूरन । ३. गद्य का एक भेद । ४. संक्षेप । ५. फुटकल बातें ।
चूर्णित–वि० चूर्ण किया हुआ ।
चूल–संज्ञा पुं० शिखा । चोटी ।
संज्ञा स्त्री० किवाड़ बन्द करने की लकड़ी का जोड़ । पाटी का नुकीला भाग जो कसा रहता है ।
चूलक या **चूलिका**–संज्ञा स्त्री० १. नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना । २. हाथी के कान का मैल । ३. हाथी की कनपटी का ऊपरी भाग ।
चूलदान–संज्ञा पुं० रसोईघर ।
चूलिक–संज्ञा स्त्री० लुचुई ।
चूल्हा–संज्ञा पुं० मिट्टी या लोहे की बनी हुई वस्तु जिसमें आग रखकर रसोई बनाते हैं । अँगीठी ।
मुहा०–चूल्हा जलना=भोजन बनना । चूल्हा फूँकना=भोजन पकाना । चूल्हे में जाय=नष्ट-भ्रष्ट हो ।
चूल्ही-संज्ञा स्त्री० छोटा चूल्हा ।
चूषण–संज्ञा पु० चूसने की क्रिया ।
चूष्य–वि० चूसने के योग्य ।
चूसना–क्रि० स० १. खींचखींचकर पीना । २. किसी चीज का सार भाग ले लेना । ३. रस खींच लेना । चचोड़ना ।
चूसनी–संज्ञा स्त्री० चूसनेवाली वस्तु या जिस वस्तु से चूसा जाय ।
चूहड़ या **चूहड़ा**–संज्ञा पुं० [स्त्री० चूहड़ी] भंगी । मेहतर । चांडाल ।
चूहना–क्रि० स० चूनना ।
चूहर–संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा" ।
चूहा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चुहिया] मूसा । मूषिक ।
चूहादंती–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची ।
चूहादान–संज्ञा पुं० [स्त्री० चूहेदानी] चूहों को फँसाने का पिंजड़ा ।

चें–संज्ञा स्त्री० चिड़ियों के बोलने का शब्द । चें चें ।
चेंच–संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग ।
यौ०–चेंचपेंच–घिचपिच । शोरगुल । चेंच-पड़=स्पष्ट न कहना ।
चेंगड़ा†–संज्ञा पुं० बच्चा ।
चेंगा–संज्ञा पुं० बालक ।
संज्ञा स्त्री० मछली ।
चेंची–संज्ञा स्त्री० सुई रखने का घर ।
चें चें–संज्ञा स्त्री० १. चिड़ियां या बच्चों के बोलने का शब्द । चीं-चीं । २. व्यर्थ की बकवाद । बकबक ।
चेंटी–संज्ञा स्त्री० चींटी ।
चेंटुआ†–संज्ञा पु० चिड़िया का बच्चा ।
चेंडा–संज्ञा पुं० छोटा बच्चा ।
चेंधी–संज्ञा स्त्री० चकती ।
चेंप–संज्ञा पुं० गोंद । लासा । चिपकनेवाली वस्तु । लसलसा ।
चें पें–संज्ञा स्त्री० १. असंतोष प्रकट करना । २. बच्चों का शोरगुल । ३. बकबक ।
चेंफ–संज्ञा पुं० ऊख का छिलका ।
चेक–संज्ञा पु० [अंग्रे०] १. हुंडी । बैंक से रुपया निकालने का छपा हुआ कागज जिस पर रुपया जमा करनेवालों को अपना हस्ताक्षर करना पड़ता है । २. चारखाना ।
चेकितान–संज्ञा पुं० १. महादेव । २. एक बहुत बड़ा ज्ञानी ।
चेचक–संज्ञा स्त्री० शीतला या माता नामक रोग ।
चेचकरू–संज्ञा पुं० [फा०] वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों ।
चेजा–संज्ञा पुं० छेद ।
चेट–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेटी या चेटिका] १. दास । सेवक । नौकर । चेला । २. पति । खाविंद । ३. नायक और नायिका को मिलानेवाला । भँड़ुवा । ४ नाटक में विदूषक) । ५. एक मछली ।
चेटक–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेटकी] १. सेवक । दास । नौकर । २. चटक-मटक । ३. दूत । ४. जादू या इन्द्रजाल की विद्या । ५. नायक-विशेष । उपपति । ६. भाँड़ों का

तमाशा। ७. छोकरा। ८. चेला। ९. चसका १०. जल्दी। ११. चालाकी। १२.। चिता। १३. व्याधि। १४. लत। टेव।

चेटकनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "चेटक"।

चेटका*–संज्ञा स्त्री० चिता। मरघट। श्मशान।

चेटकी–संज्ञा पुं० १. जादूगर। २. कौतुक करनेवाला। कौतुकी।

संज्ञा स्त्री० उपपत्नी। दासी।

चेटिका–संज्ञा स्त्री० दे० "चेटी"। दासी। नायिका-विशेष।

चेटिकी–संज्ञा स्त्री० दे० "चेटी"। दासी।

चेटिया–संज्ञा पुं० चेला। शिष्य।

चेटी–संज्ञा स्त्री० दासी।

चेड़क या **चेड़ा**–संज्ञा पुं० दास। भृत्य। चेला।

चेत्–अव्य० १. यदि। अगर। २. शायद। कदाचित्।

चेत–संज्ञा पुं० १. चित्त की वृत्ति। चेतना। होश। २. ज्ञान। बोध। ३. सावधानी। ४. स्मरण। सुध।

चेतक–संज्ञा पुं० १. राणा प्रताप के घोड़े का नाम। २. चेतन। चैतन्य। ३. सूचना लानेवाला।

चेतन–वि० जिसमें चेतना हो।

संज्ञा पुं० १. आत्मा। जीव। २. मनुष्य। ३. प्राणी। जीवधारी। ४. परमेश्वर। ५. बुद्धि। ६. सजग। चतुर।

चेतनता–संज्ञा स्त्री० चेतन का धर्म। चैतन्य। सज्ञानता। ज्ञान होना।

चेतनत्व–संज्ञा पुं० चैतन्य। चेतनता।

चेतना–संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। २. ज्ञान। ३. स्मृति। याद। ४. चेतनता। चैतन्य। संज्ञा। होश।

क्रि० अ० १. संज्ञा में होना। होश में आना। २. सावधान होना। चौकस होना।

क्रि० स० विचारना। समझना।

चेतन्य–वि० दे० "चैतन्य"।

चेता–संज्ञा पुं० मन। चित्त।

वि० सावधान हुआ। चैतन्य हुआ। सजग चित्तवाला, जैसे दृढ़चेता (यौगिक शब्दों के अंत में प्रयुक्त)।

चेतावनी–संज्ञा स्त्री० सतर्क होने की सूचना। सावधान करने के लिए कही गई बात।

चेतिका†*–संज्ञा स्त्री० चिता।

चेत्य–वि० जानने योग्य। स्तुति करने योग्य।

चेदि–संज्ञा पुं० १. प्राचीन भारत का एक देश। २. इस देश का राजा। ३. इस देश का निवासी।

चेदिराज–संज्ञा पुं० शिशुपाल।

चेन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] जंजीर।

चेनवाँ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अन्न।

चेना–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अन्न। २. एक प्रकार का साग। ३. चीनी कपूर।

चेप–संज्ञा पुं० १. चिपचिपा या लसदार रस। २. चिड़ियों को फँसाने का लासा। चाव। ३. उत्साह।

चेपदार–वि० जिसमें चेप या लस हो। चिपचिपा।

चेपना–क्रि० स० चिपकाना।

चेय–वि० संग्रह करने योग्य। चुनने योग्य।

चेर, चेरा†*–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेरी] १. नौकर। सेवक। २. चेला। शिष्य।

चेराई†*–संज्ञा स्त्री० दासत्व। नौकरी। गुलामी।

चेरी†*–संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री०।

चेल–संज्ञा पुं० कपड़ा। वस्त्र।

चेलकाई†–संज्ञा स्त्री० चेलहाई। शिष्यता।

चेलहाई†–संज्ञा स्त्री० चेलों का समूह। शिष्यवर्ग। शिष्यता।

चेला–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेलिन, चेली] १. शिष्य। २. शागिर्द।

चेल्हवा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।

चेवली–संज्ञा स्त्री० रेशमी वस्त्र-विशेष।

चेष्टा–संज्ञा स्त्री० १. शरीर के अंगों की गति। २. अंगों की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रकट हो। ३. उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य। काम। ५. श्रम। परिश्रम। ६. इच्छा। कामना।

चेष्टानाश–संज्ञा पुं० प्रलय।

चेस्टर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जाड़े में पहनने का एक तरह का बड़ा कोट ।

चेहरई–वि० हलका गुलाबी रंग ।
संज्ञा स्त्री० चित्र या मूर्ति आदि में चेहरे की रंगत ।

चेहरा–संज्ञा पुं० [फा०] १. मुखड़ा । वदन । २. किसी चीज का अगला भाग । ३. मुँह पर पहनने की कोई मुखाकृति, जैसे लीला या स्वाँग आदि में देवता, राक्षस या पशु की आकृति ।
यौ०–चेहराशाही=वह सिक्का जिस पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो । प्रचलित सिक्का ।
मुहा०–चेहरा उतरना=लज्जा, शोक, चिंता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना । चेहरा होना=फौज में नाम लिखा जाना ।

चेहलुम–संज्ञा पुं० मुहर्रम के चालीसवें दिन मुसलमानों द्वारा मनाई जानेवाली रस्म ।

चैंटी†–संज्ञा स्त्री० चिउटी । चींटी ।

चैंटा–संज्ञा पुं० चिउटा । चींटा ।

चै*–संज्ञा पुं० दे० "चय" । समूह ।

चैत–संज्ञा पुं० फागुन के बाद का महीना । चैत्र । वर्ष का प्रथम मास । चैती फसल ।

चैतन्य–संज्ञा पुं० १. जीवात्मा । २. ज्ञान । चेतना । ३. ब्रह्म । ४. परमेश्वर । ५. प्रकृति । ६. एक प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा जो सन् १४८५ ई० में बंगाल में उत्पन्न हुए थे । ७. सावधान । सचेत ।

चैता–संज्ञा पुं० १. एक पक्षी । २. चैत महीने में गाया जानेवाला राग-विशेष ।

चैती–संज्ञा स्त्री० १. चैत में काटी जानेवाली फसल । रबी । २. चैत में गाया जानेवाला गाना ।
वि० चैत-संबंधी । चैत का ।

चैत्य–संज्ञा पुं० १. मकान । घर । २. मंदिर । देवालय । ३. यज्ञशाला । ४. ग्रामदेवता की वेदी या चबूतरा । ५. किसी देवी-देवता का चबूतरा । ६. बुद्ध की मूर्त्ति । ७. अश्वत्थ का पेड़ । ८. बौद्ध संन्यासी या भिक्षुक । ९. बौद्ध संन्यासियों का मठ । विहार । १०. चिता । ११. बेल का पेड़ । १२. पीपल ।

चैत्यमुख–संज्ञा पुं० कमण्डल ।

चैत्यविहार–संज्ञा पुं० बौद्धों का मठ ।

चैत्यस्थान–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बुद्धदेव की मूर्ति स्थापित हो ।

चैत्र–संज्ञा पुं० १. संवत् का प्रथम मास । चैत । २. बौद्ध भिक्षु । ३. यज्ञ-भूमि । ४. देवालय । मंदिर । ५. किन्नरों के एक पर्वत का नाम ।

चैत्रक–संज्ञा पुं० चैत्र मास ।

चैत्ररथ–संज्ञा पुं० कुबेर का उद्यान ।

चैत्रसखा–संज्ञा पुं० मदन ।

चैत्रावली–संज्ञा स्त्री० १. चैत्रशुक्ला त्रयोदशी । २. चैत्र की पूर्णिमा ।

चैत्री–संज्ञा स्त्री० चैत की पूर्णिमा ।

चैदिक–वि० चेदि देश का ।

चैद्य–संज्ञा पुं० शिशुपाल । चेदि देश का राजा ।

चैन–संज्ञा पुं० आराम । सुख ।
मुहा०–चैन उड़ाना=आराम करना । चैन पड़ना=शांति मिलना । सुख मिलना ।

चैपला–संज्ञा पुं० एक तरह की चिड़िया ।

चैराही–वि० हलका गुलाबी रंग ।

चैल–संज्ञा पुं० कपड़ा । वस्त्र ।

चैला–संज्ञा पुं० [स्त्री० चैली] चीरी हुई लकड़ी । जलाने के काम में आनेवाली लकड़ी । जलावन ।

चोंक–संज्ञा स्त्री० चुंबन का चिह्न ।

चोंकना–क्रि० अ० १. चोभना । गोभना । गड़ाना । २. चौंकना । अचम्भित होना ।

चोंगला–संज्ञा पुं० चंगेली । बाँस की नली जिसमें कागज आदि रखा जाता है ।

चोंगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चोंगी] बाँस, टीन आदि की बनी हुई नली जिसमें कागज आदि लपेटकर रखा जाता है ।

चोंघना*†–क्रि० स० दे० "चुगना" ।

चोंच–संज्ञा स्त्री० १. पक्षियों के मुँह का अगलाभाग । २. मुँह (व्यंग्य) ।
मुहा०–दो दो चोंचें होना=कहा-सुनी होना । कुछ लड़ाई-झगड़ा होना ।

चोंचला या चोचला–संज्ञा पुं० हँसी-दिल्लगी। नखरा। हावभाव।

चोंटला–संज्ञा पुं० चुटीला। चँवरी। बाल गूँथने की डोरी, जिससे चोटी बाँधते हैं।

चोंडा–संज्ञा पुं० सिर। छोटा कच्चा कुआँ।

चोंड़ा†–संज्ञा पुं० स्त्रियों के सिर के बाल। जूड़ा।

चोंथ–संज्ञा पुं० उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।

चोंथना†–क्रि० स० बुरी तरह नोचना।

चोंधर–वि० १. जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। २. मूर्ख।

चोन्धला–वि० जिसे कम दिखाई दे। तिरमिरा। चुँधला। अंधा।

चोन्धलाना–क्रि० अ० चुँधलाना।

चोन्धी–संज्ञा स्त्री० धुंध। धुँधलाई। धुँधलापन।

चोंप–संज्ञा पुं० १. उत्साह। इच्छा। २. सोने का एक गहना।

चोआ–संज्ञा पुं० १. एक सुगंधित द्रव पदार्थ। २. बाँट की जगह रखा जानेवाला कंकड़ या पत्थर। माठ।

चोआड़–संज्ञा पुं० १. पहाड़ी जाति-विशेष। २. पहाड़ी डाकू।

चोई–संज्ञा स्त्री० १. धोई हुई दाल का छिलका। २. पककर गिरा हुआ फल।

चोक–संज्ञा पुं० एक जड़।

चोकर–संज्ञा पुं० भूसी। आटा छानने के बाद बचा हुआ छिलका। असार।

चोका–संज्ञा पुं० १. चूसने की क्रिया या भाव। २. चूसने की वस्तु।

चोख*†–संज्ञा स्त्री० तेजी। तेज।

चोखना†–क्रि० स० चखना। चूसकर पीना।

चोखनी*–संज्ञा पुं० चूसकर पीने की क्रिया।

चोखरा–संज्ञा पुं० चूहा।

चोखा–वि० (स्त्री० चोखी) १. जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। शुद्ध। उत्तम। २. सच्चा और ईमानदार। खरा। ३. तेज धारवाला। तीक्ष्ण। पैना।
संज्ञा पुं० उबाले या भूने हुए बैंगन आलू आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मलकर तैयार किया हुआ सालन। भरता।

चोखाई–संज्ञा स्त्री० खराई। शुद्धता। तीक्ष्णता। चुसाई।

चोगा–संज्ञा पुं० १. पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा। २. चारा।

चोच–संज्ञा पुं० १. दे० "चोंच"। २. छाल। चवड़ा। ३. तेजपत्ता। ४. दालचीनी। ५. नारियल। ६. केला।

चोचला–संज्ञा पुं० १. हाव-भाव। २. नखरा। नाज।

चोज–संज्ञा पुं० १. मनोविनोद के लिए चमत्कारपूर्ण उक्ति। सुभाषित। २. हँसी-ठट्ठा। व्यंग्यपूर्ण उपहास।

चोट–संज्ञा स्त्री० १. आघात। प्रहार। घाव। जख्म। २. वार। आक्रमण। ३. किसी हिंसक पशु का आक्रमण। हमला। ४. मानसिक व्यथा। ५. किसी के अनिष्ट के लिए चली हुई चाल। ६. बौछार। ताना। ७. विश्वासघात। धोखा। दगा। ८. बार। दफा। मरतबा।
मुहा०–चोट खाना=मार खाना। आहत होना। हानि उठाना। चूक जाना। चोट पर चोट=दुख पर दुख। एक विपत्ति पर दूसरी विपत्ति।
यौ०–चोट चपेट=घाव। जख्म।

चोटइल–वि० घायल। चोट करनेवाला।

चोटहा–संज्ञा पुं० चोट खाया हुआ। चुटैल। जिस पर चोट का निशान हो।

चोटा–संज्ञा पुं० १. राब का पसेव जो छानने से निकलता है। २. बट्टा। चोआ। ३. गुड़ का मैल। ४. सूद।

चोटार†–वि० चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना†–क्रि० अ० चोट करना।

चोटियाना–क्रि० स० १. चोट मारना। घायल करना। २. चोटी पकड़ना। वश में करना।

चोटी–संज्ञा स्त्री० १. सिर के मध्य में कुछ

चौंराना*–क्रि० स० १. चँवर डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ू देना।
चौंरी–संज्ञा स्त्री० १. पूंछ के बालों का गुच्छा। छोटा चँवर। २. चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। ३. सफेद पूँछवाली गाय।
चौंसर–संज्ञा पुं० १. पासों से खेला जानेवाला एक खेल। एक प्रकार का जुआ। २. फूलों की माला।
चौंह–संज्ञा पुं० गलफड़ा।
चौ–वि० चार (संख्या)। (केवल यौगिक में) जैसे, चौपहल।
संज्ञा पुं० मोती तौलने का एक मान।
चौअन–वि० पचास से चार अधिक।
संज्ञा पुं० ५४ की संख्या।
चौआ–संज्ञा पुं० १. चार अंगुल का माप। २. ताश का एक पत्ता जिस पर चार बूँटियाँ हों। ३. चौपाया।
चौआई–संज्ञा पुं० १. चारों ओर से बहनेवाली हवा। २. अफवाह। धूमधाम की चर्चा।
चौआना†*–क्रि० अ० १. चकपकाना। चकित होना। २. चौकन्ना होना। घबरा जाना।
चौक–संज्ञा पुं० १. चौकोर भूमि। २. आँगन। सहन। ३. चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४. मंगल अवसरों पर पूजन के लिए आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। ५. नगर के बीच का बड़ा बाजार। ६. चौराहा। चौमुहानी। ७. चौसर खेलने का कपड़ा। बिसात। ८. सामने के चार दाँतों की पंक्ति।
चौकठ–संज्ञा पुं० चौखट। द्वार पर के फाटक का ढाँचा। देहली।
चौकठा–संज्ञा पुं० चौखटा। चौकोर बनी हुई वस्तु।
चौकड़ा–संज्ञा पुं० कान में पहनने की बालियाँ जिनमें दो-दो मोती हों। एक प्रकार का आभूषण।
चौकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद। हिरन की दौड़। उछाल। कुदान। छलाँग। कुलाँच। २. चार आदमियों का गुट्ट। मंडली। ३. एक प्रकार का गहना। ४. चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५. पलथी।
संज्ञा स्त्री० १. चार घोड़ों की गाड़ी। एक प्रकार की बनावट।
मुहा०–चौकड़ी भूल जाना=बुद्धि का काम न करना। मिटपिटा जाना। घबरा जाना।
चौकन्ना–वि० १. सावधान। होशियार। चौकस। २. चौंका हुआ। आशंकित।
चौकल–संज्ञा पुं० चार मात्राओं का समूह।
चौकस–वि० १. सावधान। सचेत। होशियार। २. ठीक। दुरुस्त। पूरा।
चौकसाई*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "चौकसी"।
चौकसी–संज्ञा स्त्री० सावधानी। होशियारी। निगरानी। सतर्कता।
चौका–संज्ञा पुं० १. पत्थर का चौकोर टुकड़ा। चौखूँटी सिल। २. काठ या पत्थर का पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं। चकला। चौकोर भूमि। ३. सामने के चार दाँतों की पंक्ति। ४. सिर का एक गहना। सीस-फूल। ५. लिपा-पुता स्थान जहाँ रसोई बनाते या खाते हैं। ६. मिट्टी या गोबर का लेप जो सफाई के लिए किसी स्थान पर किया जाय। ७. एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह। जैसे—मोतियों का चौका। ८. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
मुहा०–चौका लगाना=१. लीप-पोतकर बराबर करना। २. सत्यानाश करना।
यौ०–चौक पूरना=वेदी बनाना। वेदी पर बेल-बूटे बनाना। चौक भरना=मंगल कार्यों में वेदी बनाना।
चौकी–संज्ञा स्त्री० १. चौकोनी काठ की बनी हुई वस्तु। २. छोटा तख्त। ३. मंदिर में मंडप के खंभों के ऊपर का घेरा। ४. पड़ाव। ठहरने की जगह। अड्डा। ५. वह स्थान जहाँ आसपास की रक्षा के लिए थोड़े से सिपाही रहते हैं। ६. पहरा। खबरदारी। रखवाली। ७. भेंट या पूजा। ८. गले में पहनने का एक गहना। पटरी। ९. रोटी बेलने का छोटा चकला।

चौकीदार–संज्ञा पुं० १. पहरेदार । २. गोंड़ैत । रखवाली करनेवाला ।
चौकीदारी–संज्ञा स्त्री० १. पहरा देने का काम । रखवाली । खबरदारी । २. चौकीदार का पद । ३. वह चंदा या कर जो चौकीदार रखने के लिए लिया जाय । ४. चौकीदार की मजदूरी या तनखाह ।
चौकी मारना–क्रि० स० महसूल न देना ।
चौकोन–वि० जिसके चार कोने हों ।
चौकोना–वि० दे० "चौकोर" ।
चौकोर–वि० जिसके चार कोने हों । चौखूँटा । चतुष्कोण ।
चौखंड–संज्ञा पुं० १. चार मंजिला मकान । २. वह मकान जिसमें चार खंड हों । ३. जिसके चार भाग हों ।
चौखट–संज्ञा स्त्री० १. लकड़ियों का वह ढाँचा, जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं । २. देहली । डेहरी । चौकठ ।
चौखटा–संज्ञा पुं० चार लकड़ियों का ढाँचा । फ्रेम ।
चौखना–वि० चार खंड का । चार मंजिला ।
चौखा–संज्ञा पुं० जहाँ पर गाँवों की सीमा मिलती हो ।
चौखानि–संज्ञा स्त्री० अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज चार प्रकार के जीव ।
चौखूँट–संज्ञा पुं० १. चारों दिशाएँ । २. भूमंडल ।
क्रि० वि० चारों ओर । चौकोर ।
चौखूँटा–वि० दे० "चौकोर" ।
चौगड़ा–संज्ञा पुं० खरहा । १. खरगोश । २. मिट्टी का खिलौना । ३. बड़ी इलायची । ४. चार खानों का बरतन ।
चौगड्डा–संज्ञा पुं० चार वस्तुओं का समूह । चौहद्दा । जहाँ चार गाँवों की सीमा मिले ।
चौगान–संज्ञा पुं० १. मैदान । चौगान । खेलने का मैदान । २. एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं । ३. नगाड़ा बजाने की लकड़ी ।
चौगानी–संज्ञा स्त्री० हुक्के की नली । निगाली । सटक ।
चौगिर्द–क्रि० वि० चारों ओर । चारों तरफ । चतुर्दिक् ।
चौगुन–वि० चतुर्गुण । दे० "चौगुना" ।
चौगुना या चारगुना–वि० [स्त्री० चौगुनी] चार बार । चार गुना ।
चौगोड़ा–वि० चार पैरवाला ।
संज्ञा पुं० खरहा ।
चौगोड़िया–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की ऊँची चौकी । २. बाँस की तीलियों का बना हुआ ढाँचा ।
चौगोशिया–वि० [फा०] चार कोनेवाला ।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी ।
संज्ञा पुं० तुरकी घोड़ा ।
चौघड़–संज्ञा पुं० दाढ़ का चौड़ा और चिपटा दाँत ।
चौघड़ा–संज्ञा पुं० १. बड़ी इलायची । २. चार खानों का बरतन । ३. पत्ते की खोंगी जिसमें चार बीड़े पान हों । ४. एक खिलौना ।
चौघड़ी–संज्ञा स्त्री० चार तह या परतवाली ।
चौघर†–वि० घोड़ों की एक चाल । चौफाल । सरपट ।
चौघोड़ी*†–संज्ञा स्त्री० चार घोड़ों की गाड़ी । चौकड़ी ।
चौचंद*†–संज्ञा पुं० अपवाद । बदनामी की चर्चा । निंदा ।
चौचंदहाई*–वि० बदनामी करनेवाली ।
चौज–संज्ञा पुं० हँसी-दिल्लगी । हँसानेवाली बात ।
चौजुगी–संज्ञा स्त्री० चार युगों का काल ।
चौड़–संज्ञा पुं० चूड़ाकरण संस्कार ।
वि० चौपट । सत्यानाश ।
चौड़ा–वि० [स्त्री० चौड़ी] फैला हुआ । लम्बा का उलटा ।
चौड़ाई–संज्ञा स्त्री० चौड़ापन । फैलाव । अर्ज । विस्तार ।
चौड़ान–संज्ञा स्त्री० दे० "चौड़ाई" ।
चौड़ाना–क्रि० स० फैलाना । चौड़ा करना ।
चौडोल–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बाजा । दे० २. "चंडोल" । विशेष प्रकार की पालकी । ३. चौपालिया ।

चौतनियाँ–संज्ञा स्त्री० दे० "चौतनी"। चोली।
चौतनी–संज्ञा स्त्री० चौगोलिया टोपी।
चौतरका–संज्ञा पुं० तम्बू। कनात।
चौतरा†–संज्ञा पुं० दे० "चबूतरा"।
चौतहीं–संज्ञा स्त्री० १. एक मोटा कपड़ा। २. चार तह का बिछौना।
चौतारा–संज्ञा पुं० एक बाजा।
वि० जिसमें तार हों।
चौताल–संज्ञा पुं० १. मृदंग का एक ताल। २. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। ३. रागिनी-विशेष।
चौताला–वि० चार तालवाला।
चौतुका–वि० जिसमें चार तुक हों।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद, जिसके चारों चरणों की तुक मिली होती है।
चौथ–संज्ञा स्त्री० १. पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी। २. चतुर्थांश। चौथाई भाग। ३. मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था।
*†वि० चौथा।
मुहा०–चौथ का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चंद्रमा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले, तो उसे झूठा कलंक लगता है।
चौथपन*–संज्ञा पुं० बुढ़ापा।
चौथा–वि० क्रम में चार के स्थान पर पड़नेवाला।
संज्ञा पुं० मृतक के घर होनेवाली एक रीति।
चौथाई–संज्ञा पुं० चौथा भाग। चतुर्थांश। चहारुम।
चौथिया–संज्ञा पुं० १. वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे। २. चौथाई का हकदार।
चौथी–संज्ञा स्त्री० १. विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं। २. फसल की वह बाँट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है। चौथा भाग।
चौथैया–संज्ञा पुं० चौथाई।
संज्ञा स्त्री० छोटी नाप।
चौदंत–वि० चार दाँत का बच्चा। पशुओं की अवस्था-विशेष। बली। हृष्ट-पुष्ट।
चौदंता–वि० १. चार दाँतोंवाला। श्याम देश का हाथी जिसके चार दाँत होते हैं। २. उग्र। उद्दंड। बदमाश। ३. दे० "चौरदंत"।
चौदंती–संज्ञा स्त्री० धृष्टता।
चौदस–संज्ञा स्त्री० पक्ष का चौदहवाँ दिन। चतुर्दशी।
चौदह–संज्ञा पुं० दस और चार की संख्या। १४। चतुर्दश।
वि० चौदहवाँ। गिनती में चौदह (दस और चार)।
चौदनिया या **चौदानी**–संज्ञा स्त्री० कान का एक गहना।
चौधर–वि० बलवान्। बली। हृष्ट-पुष्ट
चौधराई–संज्ञा स्त्री० १. चौधरी का काम २. चौधरी का पद। ३. नेतृत्व। अगुआपन
चौधरात–संज्ञा स्त्री० दे० "चौधराना"
चौधराना–संज्ञा पुं० चौधरी का काम चौधरी का पद। चौधरी की मजदूरी या वेतन।
चौधरी–संज्ञा पुं० किसी समाज का मुखिया या प्रधान। अगुआ। सरपञ्च।
चौपई–संज्ञा स्त्री० १. एक छंद का नाम। २. होली के दिन घूम-घूमकर गाना गानेवाली मंडली।
चौपखा–संज्ञा स्त्री० चहारदीवारी।
चौपग–संज्ञा पुं० चौपाया।
चौपट–वि० चारों ओर से खुला हुआ। अरक्षित।
वि० नष्ट। बरबाद। सत्यानाश।
मुहा०–चौपट करना=बरबाद करना। नष्ट करना। उजाड़ना।
चौपटहा–वि० चौपट करनेवाला। सर्वनाशी।
चौपटा–वि० चौपट करनेवाला। सत्यानाशी
चौपटानन्द–वि० मूर्ख।
चौपटिया–वि० चार पैरवाली गाड़ी।
चौपड़–संज्ञा स्त्री० दे० "चौसर"। पासों का एक खेल।
चौपत†–संज्ञा स्त्री० कपड़े की तह।

चौपतिया या चौपत्ती–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की घास। २. एक साग। ३. छोटी पुस्तक। छोटी कापी। हथवही। ४. कसीदे की चार पत्तियोंवाली बूटी।

चौपथ–संज्ञा पुं० चौराहा। एक पत्थर।

चौपद*†–संज्ञा पुं० दे० "चौपाया"।

चौपदा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छन्द।

चौपल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पत्थर।

चौपहरा–वि० चार पहर का।

चौपहल या **चौपहला**–वि० चौपाला। चारों ओर से समान वस्तु। जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो। वर्गात्मक।

चौपहला–संज्ञा पुं० एक प्रकार की खुली पालकी।

चौपहलू–वि० चौपहल।

चौपाई–संज्ञा स्त्री० १. १६ मात्राओं का एक छंद। †२. चारपाई। खाट।

चौपाड़–संज्ञा पुं० दे० "चौपाल"। बैठका।

चौपाया–संज्ञा पुं० चार पैरोंवाला पशु। गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

चौपाल–संज्ञा पुं० १. बैठक। २. दालान। खुला हुआ बैठने का स्थान, जो ऊपर से छाया हो। ३. घर के सामने का छायादार चबूतरा। ४. एक प्रकार की पालकी।

चौपाला–संज्ञा पुं० पालकी। चौडोला।

चौपुरा–संज्ञा पुं० वह कुआँ जिस पर चार पुरवट या मोट एक साथ चलें।

चौपैया–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का छंद। †२. चारपाई। खाट। ३. चार पहियोंवाली ऊटगाड़ी।

चौफला–वि० जिसमें चार फल या धारदार लोहे हों।

चौफेर–क्रि० वि० चारों ओर। चारों तरफ।

चौफेरी–संज्ञा पुं० चारों ओर घूमना।
क्रि० वि० चारों ओर।

चौबंदी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का चुस्त अंगा। २. बगलबंदी।

चौबंसा–संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त।

चौबगला–संज्ञा पुं० कुर्ते, मिरजई या अंगे आदि के बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग।
वि० चारों ओर का।

चौबगली–संज्ञा स्त्री० बगलबंदी।

चौबच्चा–संज्ञा पुं० चौकोना गढ़ा। कृत्रिम कुण्ड।

चौबर–वि० बहादुर। मजबूत।

चौबरसी–संज्ञा स्त्री० श्राद्ध जो चौथे वर्ष किया जाय।

चौबाइ† या **चौबाई**–संज्ञा स्त्री० १. चारों ओर से बहनेवाली हवा। २. अफवाह। किंवदंती। उड़ती खबर।

चौबाइन–संज्ञा स्त्री० चौबे की स्त्री।

चौबार या चौबारा–संज्ञा पुं० १. कोठे के ऊपर की खुली कोठरी। २. खुली हुई बैठक। ३. चार दरवाजे का दालान।
क्रि० वि० चौथी दफा। चौथी बार।

चौबीस–वि० बीस और चार।
संज्ञा पुं० बीस से चार अधिक की संख्या।

चौबे–संज्ञा पुं० [स्त्री० चौबाइन] १. चारों वेदों का ज्ञाता। २. माथुर ब्राह्मण। मथुरा के पुजारियों के लिए प्रयुक्त शब्द। मथुरा का पंडा। ३. ब्राह्मणों की एक शाखा। चतुर्वेदी।

चौबोला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मात्रिक छंद।

चौभड़–संज्ञा स्त्री० चौघड़। दाढ़। वह दाँत जिससे खाद्य पदार्थ चबाया या कुचला जाता है।

चौमंज़िला–वि० चार खंडोंवाला (मकान आदि)। चार मंजिलवाला।

चौमासिया–वि० चार महीने का। वर्षा के चार महीनों में होनेवाले।
संज्ञा पुं० चार माशे का बाट।

चौमहला–दे० "चौमंजिला"।

चौमार्ग–संज्ञा पुं० चौराहा। चौरास्ता।

चौमासा–संज्ञा पुं० १. वर्षा काल के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन। चातुर्मास। २. वर्षा ऋतु सम्बन्धी कविता या गीत।

चौमासी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गाना। दे० "चौमासा"।

चौमुख–क्रि० वि० चारों ओर। चारों

तरफ़। चौमुहा। चार मुँहवाला। ऐसा मकान जिसमें चारों ओर द्वार हों। चार बत्तियों का दिया।

चौमुखा–वि० चारों ओर। चार मुँह-वाला।

चौमुखी–संज्ञा स्त्री० १. चार मुँहवाली। २. चार मुखवाली दुर्गा।

चौमेखा–वि० चार मेखोंवाला।
संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का दंड या सजा।

चौमुहानी–संज्ञा स्त्री० चौराहा। चौरास्ता।

चौरंग–संज्ञा पुं० तलवार चलाने का एक ढंग।
वि० तलवार के वार से कटा हुआ। चार रंगवाला। दाँव-पेंच।

चौरंगा–वि० [स्त्री० चौरंगी] चार रंगों का। जिसमें चार रंग हों।

चौर–संज्ञा पुं० १. चोरी करनेवाला। चोर। २. एक प्रकार की लता। ३. गढ़ा जिसमें बरसात का पानी इकट्ठा हो। ४. एक गंध द्रव्य।

चौरस–वि० जो ऊँचा-नीचा न हो। समतल। बराबर।
संज्ञा पुं० १. एक वर्णवृत्त। २. ठठेरों का एक औजार।

चौरसाना–क्रि० स० बराबर करना। चौरस करना।

चौरसाई–संज्ञा स्त्री० समता। बराबरी।

चौरसी–संज्ञा स्त्री० १. एक गहना। २. चौरस करने का एक औजार। ३. अन्न रखने का कोठा।

चौरस्ता–संज्ञा पुं० दे० "चौराहा"।

चौरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चौरी] १. चबूतरा। वेदी। २. किसी ग्रामदेवता, सती, मृत महात्मा, भूत, प्रेत आदि का स्थान, जहाँ वेदी या चबूतरा बना हो। †३. चौपाल। ४. लोबिया (एक तरकारी)। बोड़ा।

चौराई–संज्ञा स्त्री० चौलाई नाम का शाक।

चौरानबे–वि० नब्बे से चार अधिक।
संज्ञा पुं० नब्बे से चार अधिक की संख्या। ९४।

चौरासी–वि० अस्सी से चार अधिक।
संज्ञा पुं० १. अस्सी से चार अधिक की संख्या। ८४। २. चौरासी लक्ष योनि। ३. पत्थर काटने की टाँकी।

चौराहा–संज्ञा पुं० चौरास्ता। चौमुहानी।

चौरी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा चबूतरा। २. चार वार धोई गई लाख। एक औषध। ३. चमरी। घोड़ों के बालों का बना हुआ। छोटा चँवर-विशेष।

चौरेठा–संज्ञा पुं० पानी के साथ पीसा हुआ चावल।

चौर्य–संज्ञा पुं० चोरी।

चौर्यकर्म–संज्ञा पुं० चोरी।

चौलकर्म–संज्ञा पुं० मुंडन।

चौलड़ा–वि० चार लड़वाला। चार लड़की माला।

चौला–संज्ञा पुं० लोबिया। बोड़ा। बोरो।
एक प्रकार का शाक।

चौलाई–संज्ञा स्त्री० चौराई का साग।

चौलुक्य–संज्ञा पुं० दे० 'चालुक्य"। सोलंकी वंशी एक राजर्षि।

चौवन–वि० पचास से चार अधिक।
संज्ञा पुं० पचास से चार अधिक की संख्या। ५४।

चौवर–वि० साहसी। बलवान्। उद्योगी। चार तहवाला।

चौवा†–संज्ञा पुं० १. हाथ की चार अंगुलियों का समूह। २. चार अंगुल की माप। ३. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों। एक सुगंधित पदार्थ।
संज्ञा पुं० दे० "चौपाया"।

चौवाई–संज्ञा स्त्री० चारों ओर से बहनेवाली हवा। आँधी। अन्धड़।

चौवार–संज्ञा पुं० सार्वजनिक स्थान जहाँ लोग एकत्रित होते हैं। पंचायती घर। सर्वसाधारण की बैठक (सभा)।

चौवालिस–वि० चालीस से चार अधिक।
संज्ञा पुं० चालीस से चार अधिक की संख्या।

चौस–संज्ञा पुं० १. आटा। मैदा। पिसान। चूर। २. चार बार जोता हुआ खेत।

चौसर–संज्ञा पुं० १. एक खेल। चौपड़। २. इस खेल की बिसात।
संज्ञा पुं० १. चार लड़ों का हार। २. एक मात्रिक छंद।

चौसठ–वि० साठ से चार अधिक की संख्या। ६४।

चौहट्ट–संज्ञा पुं० दे० "चौहट्टा"।

चौहट्टा–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौक बाजार। २. चौमुहानी। चौरस्ता।

चौहड़–संज्ञा पुं० जबड़ा।

चौहत्तर–वि० सत्तर और चार।
संज्ञा पुं० सत्तर से चार अधिक की संख्या। ७४।

चौहद्दी–संज्ञा स्त्री० चारों ओर की सीमा।

चौहरा–वि० १. चार तहवाला। चार परतवाला। २. चौगुना। ३. जिसमें पान के बीड़े लपेटे हों। ४. चौघड़ा।

चौहान–संज्ञा पुं० राजपूतों की एक प्रसिद्ध जाति जिनके प्रथम राजा चतुर्वाहु और अन्तिम पृथ्वीराज थे।

चौहें–क्रि० वि० चारों ओर।

च्यवन–संज्ञा पुं० १. चूना। झरना। टपकना। २. एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश–संज्ञा पुं० आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह (चाटने की औषध)।

च्युत–वि० १. गिरा हुआ। टपका हुआ। २. भ्रष्ट। ३. अपने स्थान से हटा हुआ। ४. विमुख। पराङ्मुख।

च्युति–संज्ञा स्त्री० १. गिरना। स्खलन। पतन। २. झड़ना। उपयुक्त स्थान से हटना। ३. चूक। कर्तव्य-विमुखता। ४. गुदाद्वार। ५. अभाव। कमी। ६. भग। योनि।

च्यूड़ा–संज्ञा पुं० चिउड़ा या चूरा।

छ

छ-हिंदी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण और चवर्ग का दूसरा व्यंजन। इसके उच्चारण का स्थान तालु है।
संज्ञा पुं० १. काटना। २. ढाँकना। ३. घर। ४. खंड। टुकड़ा।
वि० साफ। चंचल।

छंग–संज्ञा पुं० गोद।

छंगा–वि० छः उँगुलियोंवाला। छांगुर।

छँगुनिया–संज्ञा स्त्री० पंजे की सबसे छोटी उँगली।

छँगुलिया या छँगुली–संज्ञा स्त्री० कनिष्ठिका।

छंगू–वि० छः उँगुलियोंवाला।

छँछोरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पकवान।

छछुंदर या छछूंदर–संज्ञा स्त्री० चूहे जैसा एक जंतु। कहते हैं कि इसे रात में ही दिखाई देता है, दिन में नहीं।

छँटना–क्रि० अ० १. अलग होना। छिन्न होना। २. बिछुड़ना। ३. समूह से अलग होना। ४. चुना जाना। ५. साफ होना। मैल निकालना। ६. घटना। न्यून होना। दुबला होना।
मुहा०–छँटा हुआ=१. चुना हुआ। २. चालाक। चतुर। धूर्त।

छँटवा–वि० निकृष्ट। अलग किया हुआ। निकाला हुआ।

छँटवाना–क्रि० स० १. कटवाना। २. चुनवाना। ३. छिलवाना।

छँटाई–संज्ञा स्त्री० छाँटने का काम, या मजदूरी। चुनाई। चुनने की क्रिया।

छँटाना–क्रि० स० दे० "छँटवाना"।

छँटाव–संज्ञा पुं० छाँटना। छाँटने का भाव या क्रिया।

छँड़ना*–क्रि० स० १. छोड़ना। त्यागना। २. अन्न को ओखली में डालकर कूटना। छाँटना।
क्रि० अ० कै करना।

छँड़ाना*†–क्रि० स० छीनना। छुड़ाकर ले लेना।

छँडुआ–वि० जो छोड़ दिया गया हो। त्यागा हुआ। छूटा।

छँडौती–संज्ञा स्त्री० छुट्टी। छोड़ना। छूट। अवकाश। मुक्त। देवता के लिए छोड़ा हुआ।

छंद–संज्ञा पुं० १. अक्षरों की गणना के अनुसार वेदों के वाक्यों का भेद। २. वेद। ३. पद्य। ४. पद्य बंध। ५. वह विद्या जिसमें छंदों का लक्षण आदि का विचार हो। छन्दशास्त्र। ६. अभिलाषा। इच्छा। ७. स्वेच्छाचार। ८. बंधन। गाँठ। ९. जाल। संघात। समूह। १०. कपट। छल। ११. चाल। युक्ति। १२. रंगढंग। १३. ढक्कन। १४. अभिप्राय। मतलब। १५. एकान्त। १६. हाथ का एक आभूषण।

यौ०–छल छंद=कपट। धोखेबाजी।

छंदक–वि० १. रक्षक। २. छली।

छंदगति–संज्ञा स्त्री० छन्द बनाने की रीति। छन्दों की चाल या प्रवाह।

छंदना–क्रि० अ० पैरों में रस्सी लगाकर बाँधा जाना। उलझना। बँधना।

छंदबंद–संज्ञा पुं० छलबल। कपट।

छंदानुवर्त्ती–वि० आज्ञापालक। आज्ञानुसारी। आज्ञानुवर्त्ती।

छंदी–वि० कपटी।

छंदोग–संज्ञा पुं० सामवेदी। यज्ञादि के समय वेद पाठ करनेवाला ब्राह्मण। सामग।

छंदोबद्ध–वि० श्लोकबद्ध। जो पद्य के रूप में हो। पद्यात्मक।

छंदोभंग–संज्ञा पुं० छंद-रचनाका एक दोष। दोषपूर्ण छंद-रचना।

छः–गिनती में पाँच से एक अधिक।
संज्ञा पुं० वह संख्या जो पाँच से एक अधिक हो। इस संख्या का सूचक अंक ६।

छई–संज्ञा स्त्री० १. क्षयी। राजरोग। तपेदिक। २. नाव का छप्पर। ३. गद्दी।

छकड़ा–संज्ञा पुं० बोझ लादने की गाड़ी। सग्गड़। बैलगाड़ी। टूटी-फूटी गाड़ी।
वि० टूटा-फूटा।

छकड़ाना–क्रि० अ० चौंधियाना। घबराना। चकराना।
क्रि० स० बकरी का गर्भसंस्कार कराना।

छकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. छः का समूह। २. वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हों।

छकना–क्रि० अ० १. खा-पीकर अघाना। तृप्त होना। २. मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना। ३. चकराना। अचंभे में आना। हैरान होना।

छकाई–संज्ञा स्त्री० खवाई। तृप्ति। सन्तोष।

छकाछक–वि० तृप्त। सन्तुष्ट। अघाया। नशे में चूर।

छकाना–क्रि० स० १. तृप्त करना। खिला पिलाकर तृप्त करना। २. मद्य आदि से उन्मत्त करना। ३. अचंभे में डालना। हैरान करना।

छकीला–वि० छका हुआ। तृप्त। मस्त। मत्त।

छक्कड़–संज्ञा पुं० १. पेटू। खानेवाला। २. तमाचा। थप्पड़। ३. नुकसान। ४. चोट। ठोकर।

छक्का–संज्ञा पुं० १. छः का समूह। २. जिस समूह में छः हों। जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी फेंकने से छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें। ३. जुवा। ४. वह ताश जिसमें छः बूटियाँ हों। ५. होश-हवास। सुध। संज्ञा।

मुहा०–छक्के छूटना=१. होश-हवास जाता रहना। बुद्धि का काम न करना। २. हिम्मत हारना। साहस छूटना। छक्का-पंजा=चालबाजी।

छग–संज्ञा पुं० १. बकरा। २. भेंड़ा।

छगड़ा–संज्ञा पुं० बकरा।

छगण–संज्ञा पुं० कंडा।

छगन–संज्ञा पुं० १. एक छोटी मछली। २. छोटा बच्चा। प्रिय बालक।
वि० बच्चों के लिए प्यार का एक शब्द।

छगुनी–संज्ञा स्त्री० १. कनिष्ठिका। कानी उँगली। २. चसनी। छनना। ३. छः गुना।

छगरी–संज्ञा स्त्री० छोटी बकरी।

छगल–संज्ञा पुं० बकरा।

छछिग्रा, छछिया–संज्ञा स्त्री० छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र।

छछूँदर–संज्ञा पुं० १. चूहे जैसा एक जंतु। २. एक प्रकार का यंत्र या तावीज। ३. एक आतिशबाजी।

छज–वि०। झाड़-पात। घना जंगल।

छजना–क्रि० अ० १. शोभा देना। सजना। अच्छा लगना। २. ठीक जँचना।

छज्जा–संज्ञा पुं० १. छाजन या छत का वह भाग, जो दीवार के बाहर निकला रहता है। २. कोठे का वह भाग, जो दीवार के बाहर निकला रहता है। ३. बरामदा। उभारा। ४. खम्भों के ऊपर की पटरी।

छटकना–क्रि० अ० १. किसी वस्तु का पकड़ से वेग के साथ बाहर निकल जाना। सटकना। २. दूर दूर रहना। ३. बहक जाना। ४. कूदना।

छटकाना–क्रि० अ० १. छुड़ाना। २. झटका देकर बंधन से छुड़ाना। ३. बल-पूर्वक अलग करना।

छटना–क्रि० अ० देखो "छँटना"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार की चलनी।

छटपट–संज्ञा पुं० छटपटाने की क्रिया।

छटपटाना–क्रि० अ० १. बंधन या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटकारना। तड़फड़ाना। २. बेचैन होना। ३. किसी वस्तु के लिए व्याकुल होना।

छटपटी–संज्ञा स्त्री० १. घबराहट। बेचैनी। २. आकुलता। उत्कंठा।

छटवाँ–वि० निकृष्ट। अलग किया हुआ। चुना हुआ।

छटहा–वि० चिड़चिड़ा। विलक्षण स्वभाव का। बदमाश।

छटाँक–संज्ञा स्त्री० एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है। कनवाँ। पाँच तोला।

छटा–संज्ञा स्त्री० १. कान्ति। प्रभा। प्रकाश। झलक। २. शोभा। सौंदर्य। ३. बिजली। ४. समूह। ५. शब्दचातुरी। चालाकी।

छटाना–क्रि० स० छटवाना। अलग करवाना। चुनवाना। बनवाना।

छटे–संज्ञा पुं० १. चुने हुए। बने हुए। अलग हुए। २. चतुर। चालाक।

छटैल–वि० छँटा हुआ। चालाक। धूर्त।

छट्ठ या छठ–संज्ञा स्त्री० पक्ष की छठी तिथि। षष्ठी।

छठा–वि० (स्त्री० छठी) छठवाँ। जो गिनती में ६ हो।

छट्ठी या छठी–संज्ञा स्त्री० १. जन्म से छठे दिन का संस्कार। छठवीं। षष्ठी। २. व्रत-विशेष। तिथि-विशेष।
मुहा०–छठी का दूध याद आना=सब सुख भूल जाना। बहुत हैरान होना।

छठे–वि० छठवें। षष्ठ। छठवाँ।

छड़–संज्ञा स्त्री० धातु या लकड़ी आदि का पतला टुकड़ा। लोहे का सींकचा।

छड़ना–क्रि०स० अनाज को ओखली में कूटकर साफ करना। छाँटना। चावल छाँटना।

छड़ा–संज्ञा पुं० पैर में पहनने का एक गहना। लच्छा।
वि० अकेला।

छड़ाना–क्रि० स० चावल साफ करवाना। भूसी अलग करवाना। छिलका छोड़ाना।

छड़िया–संज्ञा पुं० १. दरबान। पहरेदार। आसाबरदार। कंचुकि। राजा का परि-चायक। २. तंग गली।

छड़ियाना–क्रि० स० छड़ी मारना। छड़ी के समान करना।

छड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पतली लकड़ी। बेंत। डण्डा। हाथ में रखने का पतला डण्डा। २. छड़ी के आकार की वस्तु जो फूलों से बनाई जाती है। गुलछड़ी। फूलछड़ी। ३. झंडी जिसे मुसलमान पीरों की मजार पर चढ़ाते हैं।
वि० अकेली।

छड़ी-बरदार–संज्ञा पुं० चोबदार।

छड़ीला या छरीला–संज्ञा पुं० १. एक तरह का पौधा। जटामाँसी। २. कुम्हार की मिट्टी।
वि० अकेला।

छत–संज्ञा स्त्री० १. छाज। पाटन। गच। पटान। घर के ऊपर का खुला

स्थान । २. ऊपर का खुला हुआ कोठा । ३. वितान । निशान । चाँदनी ।
*संज्ञा पुं० घाव । जख्म । निशान ।
*क्रि० वि० जिसका अस्तित्व हो । होना ।
छतगीर, छतगीरी–संज्ञा स्त्री० ऊपर तानी हुई चाँदनी
छतना*–संज्ञा पुं० छाता । छत्ता । छत्र ।
छतनार†–वि० (स्त्री० छतनारी) छाते की तरह फैला हुआ । दूर तक फैला हुआ । विस्तृत । छायादार (पेड़) ।
छतरी–संज्ञा स्त्री० १. छाता । एक प्रकार का बड़ा छाता, जिसके सहारे सैनिक लोग उड़ते हुए हवाईजहाज पर से जमीन पर उतरते हैं । २. मंडप । समाधि के स्थान पर बना हुआ छज्जेदार मंडप । ३. कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की फट्टियों का टट्टर । खुमी । ४. कुकुरमुत्ता ।
यौ०–छतरी फौज=छतरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरनेवाली सेना ।
छतिया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "छाती" ।
छतियाना–क्रि० स० छाती से लगाना ।
छतिवन–संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष । सप्तपर्णी ।
छतीसा या **छत्तीसा**–वि० छत्तीस (स्त्री० छतीसी) १. चतुर । सयाना । चालाक । २. धूर्त ।
पुं० १. छत्तीस । २. नाई ।
छत्तीसापन–संज्ञा पुं० धूर्तता । चालाकी ।
छतौना–संज्ञा पुं० छत्ता । कुकुरमुत्ता । खुमी ।
छत्ता या **छत्तर**‡–संज्ञा पुं० १. "छत्र" । एक स्थान पर एकत्रित अन्न । अन्नराशि । गोला । ढेर । २. सत्र । ३. छत्ता ।
छत्ता–संज्ञा पुं० †१. छाता । छतरी । २. छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो । ३. मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर । ४. छाते की तरह दूर तक फैली हुई वस्तु । छतनारी चीज । चकत्ता । ५. कमल का बीजकोश ।
छत्तीस–वि० तीस से ६ अधिक । ३६ ।
छत्तीसी–संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी । दुराचारिणी । छिनाल ।
छत्र–संज्ञा पुं० १. छाता । छतरी । २. राजाओं का छाता-विशेष जो राजचिह्नों में समझा जाता है । ३. खुमी । कुकुरमुत्ता ।
यौ०–छत्रछाँह, छत्रच्छाया—रक्षा । शरण ।
छत्रक–संज्ञा पुं० १. खुमी । कुकुरमुत्ता । छाता । २. तृण-विशेष । ३. मंदिर । मंडप । देवमंदिर । ४. शहद का छत्ता ।
छत्रधर–संज्ञा पुं० १. छत्रपति । राजा । महा-राजा । छत्र धारण करनेवाला । २. वह जो राजाओं पर छत्र लगाता हो ।
छत्रधारी–वि० राजा । छत्र धारण करने-वाला । जैसे, छत्रधारी राजा ।
छत्रपति–संज्ञा पुं० राजा । तिलकधारी राजा । स्वाधीन राज्य ।
छत्रभंग–संज्ञा पुं० १. राजनाश । नृपनाश । २. राजनाशक ज्योतिष का एक योग । ३. वैधव्य । ४. अराजकता ।
छत्रबन्धु–संज्ञा पुं० नीच कुल का क्षत्रिय । क्षत्रिय के समान ।
छत्रा–संज्ञा स्त्री० १. धनिया । २. धरती का फूल । ३. खुमी । ४. मजीठ । ५. सोवा ।
छत्राक–संज्ञा पुं० १. एक औषध । २. कुकुरमुत्ता । खुमी ।
छत्री–वि० छत्रयुक्त ।
संज्ञा पुं० † दे० "क्षत्रिय" । १. वीरजाति । राजपूत । २. छोटा छत्ता । ३. मृतकों का एक प्रकार का स्मारक जो पुरानी प्रथा के अनुसार हिन्दुओं में भी अभी प्रचलित है । ४. नाई । नापित ।
छत्वर–संज्ञा पुं० १. घर । गृह । २. कुन्ज । लताच्छादित गृह ।
छद–संज्ञा पुं० १. ढकना । आवरण । २. पक्ष । पंख । ३. पत्ता । पत्र । ४. गठिवन । ५. तमालवृक्ष । एक औषध । ६. चाल । रीति ।
छदन–संज्ञा पुं० १. आवरण । ढक्कन । २. पत्र । पत्ता । ३. तमालवृक्ष । ४. तेज-पत्ता । ५. गंठिवन । ६. खोल । गिलाफ ।
छदाम–संज्ञा पुं० पैसे का चौथाई भाग । दो दमड़ी ।
छद्म–संज्ञा पुं० १. छिपाव । गोपन । २.

व्याज । बहाना । हीला । ३. छल । कपट । जैसे—छद्मतापस=कपटी मुनि ।

छद्मवेश—संज्ञा पुं० (वि० छद्मवेशी) बदला हुआ वेश । कृत्रिम वेश ।

छद्मिका—संज्ञा स्त्री० १. मजीठ । २. गुडची ।

छद्मी—वि० (स्त्री० छद्मिनी) १. बनावटी । २. छली । कपटी । बहुरूपिया ।

छन—संज्ञा पुं० दे० "क्षण" ।

छनक—संज्ञा पुं० १. छन छन करने का शब्द । झनझनाहट । झनकार । २. एक क्षण । संज्ञा स्त्री० किसी आशंका से चौंककर भागने की क्रिया । भड़क ।

छनकना—क्रि० अ० किसी तप्त धातु या खौलते हुए घी आदि में किसी वस्तु के पड़ने से छनछन शब्द होना । छनछन शब्द करना । चौकन्ना होकर भागना ।

छनकमनक—संज्ञा स्त्री० १. गहनों की झंकार । २. सजधज । ३. ठसक । ४. दे० "छगन-मगन" ।

छनकाना—क्रि० स० १. छनछन शब्द करना । २. गरम करना । ३. चौंकाना । चौकन्ना करना । भड़काना ।

छनछनाना—क्रि० अ० १. किसी तपी हुई धातु या खौलते हुए घी, तेल आदि में किसी वस्तु के पड़ने से छन-छन शब्द होना । २. झनझनाना । झनकार होना । ३. चोट आदि की टीस या पीड़ा ।

क्रि० स० १. छन-छन का शब्द उत्पन्न करना । २. झनकार करना ।

छनछबि*—संज्ञा स्त्री० बिजली ।

छनदा*—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षणदा" । रात ।

छनना—क्रि० अ० १. छोटे-छोटे छिद्रों से होकर किसी पदार्थ का आना । निचुड़ना । साफ होना । २. कोई नशा पीना । ३. छलनी हो जाना । ४. बिंध जाना । अनेक स्थानों पर चोट खाना । ५. छान-बीन होना । ६. कड़ाह में पूरी, पकवान आदि बनना ।

संज्ञा पुं० छानने का कपड़ा ।

मुहा०—गहरी छनना=१. खूब मेल-जोल होना । गाढ़ी मैत्री होना । २. लड़ाई होना ।

छनाक—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के टूटने का शब्द । २. गरम ।

छनाका—संज्ञा पुं० १. शीघ्र जल जाना । पानी या दूध आदि में शीघ्र जलना । २. खनाना । ठनाका । रुपयों के बजने का शब्द ।

छनाना—क्रि० स० किसी दूसरे से छानने का काम कराना । नशा पिलाना ।

छनिक*—वि० दे० "क्षणिक" ।

संज्ञा पुं० १. क्षण भर । क्षणिक विचार-वाला । २. अव्यवस्थित । उचक्का ।

छन्न—संज्ञा पुं० १. किसी तपी हुई चीज़ पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द । २. ठनकार । गुप्त स्थान । ३. छनकार । ४. नष्ट । ५. उन्मत्त । ६. गूढ़ । गुप्त रहस्य । ७. एकांत । छिपा हुआ ।

वि० ढका हुआ । गायब ।

छन्ना—संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय ।

छन्नी—संज्ञा स्त्री० छोटा छनना । भूषण-विशेष ।

छन्नू—वि० छाननेवाला ।

छप—संज्ञा स्त्री० १. पानी में गिरने का शब्द । २. पानी के छींटों के जोर से पड़ने का शब्द ।

छपई—संज्ञा स्त्री० छः पद का छन्द । छः कड़ी का छन्द । छप्पय । छः पैरवाला ।

छपकना—क्रि० स० तलवार से काटना । छिन्न-भिन्न करना । काटना ।

छपकली—संज्ञा स्त्री० दे० "छिपकली" । बिसतुइया । जंतु-विशेष ।

छपका—संज्ञा पुं० १. सिर में पहनने का एक गहना । २. पानी का भरपूर छींटा । ३. पानी में हाथ-पैर मारने की क्रिया ।

छपकी—संज्ञा स्त्री० एक जन्तु का नाम जो छछिपकर प्रहार करता है ।

पछपाना—क्रि० अ० पानी पर कोई वस्तु पटककर छपछप शब्द करना ।

क्रि० स० पानी में छपछप शब्द उत्पन्न करना । पानी में हाथ-पैर चलाना ।

छपटी—संज्ञा स्त्री० लकड़ी का छोटा टुकड़ा ।

वि० पतला । छोटा टुकड़ा ।
छपद–संज्ञा पुं० भौंरा । षट्पद ।
छपन‡–वि० गुप्त । गायब ।
संज्ञा पुं० नाश । संहार ।
छपना–क्रि० अ० १. मुद्रित होना । छापा जाना । चिह्न या दाब पड़ना । २. चिह्नित होना । अंकित होना । ३. शीतला का टीका लगवाना ।
†क्रि० अ० दे० "छिपना" ।
छपरखट, छपरखाट–संज्ञा स्त्री० मसहरीदार पलंग ।
छपरा–संज्ञा पुं० १. छप्पर । २. बिहार राज्य का एक जिला ।
छपरिया–संज्ञा स्त्री० छोटा छप्पर ।
छपरी*†–संज्ञा स्त्री० झोपड़ी ।
छपवाना–क्रि० स० दे० "छपाना" ।
छपा*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षपा" । रात । निशा ।
छपाई–संज्ञा स्त्री० १. छापने का काम । मुद्रण । अंकन । २. छापने का ढंग । ३. छापने की मजदूरी ।
छपाकर–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा । २. कपूर ।
छपाका–संज्ञा पुं० १. पानी पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द । २. जोर से उछाला हुआ पानी का छींटा ।
छपाना–क्रि० स० छापने का काम दूसरे से कराना । मुद्रित कराना । अंकित कराना ।
*क्रि० स० दे० "छिपाना" ।
छप्पन–वि० पचास और ६ । ५६ की संख्या ।
छप्पय–संज्ञा पुं० एक मात्रिक छंद जिसमें छः चरण होते हैं ।
छप्पर–संज्ञा पुं० १. फूस आदि की छाजन, जो मकान के ऊपर छाई जाती है । छाजन । छान । २. छोटा ताल या गड्ढा । पोखर । **मुहा०**—छप्पर पर रखना=छोड़ देना । चर्चा न करना । जिक्र न करना । छप्पर फाड़कर देना=अनायास देना । अकस्मात् देना ।
छप्परबन्द– वि० छप्पर बनानेवाला या बाँधनेवाला । छप्पर या झोपड़ा में रहनेवाला ।
छब–संज्ञा स्त्री० ढब । रूप । शोभा । डौल । आकृति । सौन्दर्य ।
छबड़ा–संज्ञा पुं० खाँचा ।
छबतखती*–संज्ञा स्त्री० शरीर की सुंदर बनावट ।
छबि–संज्ञा स्त्री० दे० "छवि" ।
छबीला–वि० (स्त्री० छबीली) १. शोभायुक्त । सुंदर । २. रसिक । रसिया ।
छबुंदा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जहरीला कीड़ा ।
छब्बीस–वि० बीस और ६ । २६ की संख्या ।
छम–संज्ञा स्त्री० १. घुंघरू बजने का शब्द । २. पानी बरसने का शब्द ।
*संज्ञा पुं० दे० "क्षम" । १. समर्थ । २. क्षमा करो ।
छमक–संज्ञा स्त्री० ठसक ।
छमकर–संज्ञा पुं० कपटी । व्यभिचारी । दुराचारी ।
छमकना–क्रि० अ० १. घुँघरू आदि बजाते हुए हिलना-डोलना । २. गहनों की झनकार करना । ३. छमछम शब्द करना । ४. ठसक दिखाना ।
छमछम या **छमाछम**–संज्ञा स्त्री० १. नूपुर, पायल, घुँघरू आदि के बजने का शब्द । २. पानी बरसने का शब्द । शब्द-विशेष ।
क्रि० वि० छमछम शब्द के साथ ।
छमछमाना–क्रि० अ० १. छमछम शब्द करना । २. चमचमाना । झमकना । शोभित होना ।
छमना†–क्रि० स० क्षमा करना ।
छमण्ड–संज्ञा पुं० निराधार । निरवलम्ब । अनाथ ।
छमा†–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा" ।
छमासी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "छमाही" । मृत्यु के ६ महीने बाद किया जानेवाला श्राद्ध । २. छः माशे की तौल या बटखरा ।
छमाही–संज्ञा स्त्री० छः महीने का । हर छः महीने पर होनेवाला ।
छमुख–संज्ञा पुं० षडानन । कार्त्तिकेय ।
छमिच्छत–संज्ञा स्त्री० १. इशारा । संकेत । चिह्न । २. समस्या ।

छय*–संज्ञा पुं० दे० "क्षय"।
छयना*–क्रि० अ० क्षय को प्राप्त होना। छीजना। नष्ट होना।
छर–संज्ञा पुं० दे० "छल"।
संज्ञा पुं० दे० "क्षर"। जटामाँसी।
छरकना*–क्रि० अ० दे० "छलकना"। छर-छर करना।
छरछबि–संज्ञा स्त्री० १. पोखरा। २. शौचस्थान। पखाना।
छरछर–संज्ञा पुं० १. कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। २. पतली लचीली छड़ी के लगाने का शब्द। सटसट।
छरछराना–क्रि० अ० शरीर के घाव या कटे हुए स्थान पर क्षार-युक्त वस्तु लगने से पीड़ा होना।
छरना–क्रि० अ० १. चकचकाना। चुचुवाना। २. चूना। टपकना।
†*क्रि० स० १. छलना। धोखा देना। ठगना। २. मोहित करना।
छरभार†*–संज्ञा पुं० १. प्रबंध या कार्य का बोझ। कार्यभार। २. झंझट। बखेड़ा।
छरस–संज्ञा पुं० छः रस। षट्रस।
छरहरा–वि० (स्त्री० छरहरी) १. क्षीणांग। सुबुक। हलका। २. तेज। फुरतीला। चालाक।
छरहरापन–संज्ञा पुं० चुस्ती। फुर्तीलापन। चालाकी। दुबलापन।
छरा–संज्ञा पुं० १. छड़ा। २. लर। लड़ी। ३. रस्सी। ४. नारा। इजारबंद। नीवी।
छरिन्दा–वि० अकेला।
छरी†*–संज्ञा स्त्री० वि० १. दे० "छड़ी"। २. दे० "छली"।
छरीदा–वि० अकेला। ऐसा यात्री जिसके पास बोझ या असबाब न हो।
छरीला–संज्ञा पुं० काई की तरह का एक पौधा। पथरफूल। बुढ़ना।
छरे–वि० छँटे, चुने हुए, अलग किए हुए।
छरोरा–संज्ञा पुं० खरोंच।
छर्दन–संज्ञा पुं० वमन। कै करना। छाँट। उलटी।
छर्दायन–संज्ञा पुं० खीरा। ककरी।
छर्दि–संज्ञा स्त्री० वमन। कै। उलटी।
छर्रा–संज्ञा पुं० १. छोटी कंकड़ी। २. छोटी गोली जो बंदूक में चलाई जाती है।
छल–संज्ञा पुं० १. धोखा। २. बहाना। ३. धूर्तता। बंचना। ठगपन। ४. कपट।
छलक, छलकन–संज्ञा स्त्री० छलकने की क्रिया या भाव।
छलकना–क्रि० अ० १. किसी तरल चीज का बरतन से उछलकर बाहर गिरना। २. उमड़ना। बाहर होना।
छलकाना–क्रि० स० किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को बाहर उछालना। ढलकाना।
छलकारी–वि० छल करनेवाला। धूर्त्त। धोखेबाज।
छलछंद–संज्ञा पुं० [वि० छलछंद] कपट का जाल। चालबाजी।
छलछलना–क्रि० अ० कूदना। फाँदना। उछलना। छलाँग मारना।
छलछलाना–क्रि० अ० १. छल-छल शब्द होना। २. पानी आदि थोड़ा थोड़ा करके गिरना। ३. जल से पूर्ण होना।
छलछिद्र–संज्ञा पुं० कपट-व्यवहार। धूर्त्तता। धोखेबाजी।
छलछिद्री–संज्ञा पुं० कपटी। धोखेबाज। छली।
छलबल–संज्ञा पुं० कपट। धोखा। शठता।
छलविनय–संज्ञा पुं० धोखा देने के लिए बड़ाई।
छलना–क्रि० स० धोखा देना। भुलावे में डालना।
संज्ञा स्त्री० धोखा। छल।
छलनी–संज्ञा स्त्री० आटा आदि चालने का छेदयुक्त पात्र। चलनी।
मुहा०–छलनी हो जाना=किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना। कलेजा छलनी होना=दुःख सहते-सहते हृदय जर्जर हो जाना।
छलहाई*–वि० स्त्री० छली। कपटी। चालबाज।
छलाँग–संज्ञा स्त्री० कुदान। फाँद। फलाँग। चौकड़ी।

मुहा०–छलाँग भरना=उछलना। चौकड़ी भरना। आनन्द में उछलना। हर्षित होना।
छलाँगना–क्रि० अ० कूदना। चौकड़ी भरना।
छला*†–संज्ञा पुं० दे० "छल्ला"। आभा। चमक।
छलाई*–संज्ञा स्त्री० छल का भाव। कपट।
छलाना–क्रि० स० [छलना का प्रे०] धोखा दिलाना।
छलावा–संज्ञा पुं० १. भूत-प्रेत आदि की छाया। २. वह प्रकाश या लुक जो दलदलों या जंगलों में रह-रहकर दिखाई पड़ता और गायब हो जाता है। अगियाबैताल। उल्का-मुख प्रेत। ३. चपल। चंचल। शोख। ४. इंद्रजाल। जादू।
छलिया–वि० छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।
छली–वि० दे० "छलिया"। कपटी।
छल्ला–संज्ञा पुं० १. मुंदरी। अँगूठी। २. कोई मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।
छल्ली–संज्ञा स्त्री० १. लता। २. छाल। ३. संतति।
छल्लेदार–वि० जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों।
छवड़ा–संज्ञा पुं० बाँस आदि बेचने की टोकरी। खोंपा।
छवना†–संज्ञा पुं० [स्त्री० छवनी] १. बच्चा। २. शावक।
छवा*†–संज्ञा पुं० शावक। किसी पशु का बच्चा। बछड़ा।
संज्ञा पुं० एँड़ी।
छवाई–संज्ञा स्त्री० छाने का काम या मजदूरी।
छवाना–क्रि० स० [छाना का प्रे०] छाने का काम दूसरे से कराना।
छवि–संज्ञा स्त्री० [वि० छबीला] १. शोभा। सौंदर्य। २. कांति। प्रभा।
छयवा–संज्ञा पुं० छप्पर छाने या बनानेवाला। ठाठ बनानेवाला।
छहर छहर–संज्ञा पुं० शब्द-विशेष। अधिक वृष्टि होने का शब्द।
छह–वि० छः की संख्या।
छहरना*–क्रि० अ० छितराना।
छहराना*–क्रि० अ० छितराना। बिखराना। चारों ओर फैलाना।
क्रि० स० बिखराना। छितराना।
छहरीला†–वि० [छरहरा] [स्त्री० छहरीली] छितरानेवाला। बिखरनेवाला। चुस्त।
छहियाँ‡–संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।
छाँ–संज्ञा स्त्री० छाया। छाँह।
छाँई–संज्ञा स्त्री० मुँह पर का लहसन। रोग-विशेष जिससे मुँह का चमड़ा काला हो जाता है।
छाँक–संज्ञा पुं० टुकड़ा।
छाँगना–क्रि० स० १. काटना। २. डाल, टहनी आदि काटकर अलग करना।
छाँगुर–संज्ञा पुं० वह मनुष्य जिसके पंजे में छः उँगलियाँ हों।
छाँछ–संज्ञा स्त्री० छाछ। मट्ठा।
छाँट–संज्ञा स्त्री० १. छाँटने या काटने का ढंग। २. कतरना। ३. अलग की हुई निकम्मी वस्तु।
†संज्ञा स्त्री० वमन। कै।
मुहा०–छाँट करना=कै करना। छाँट लेना =चुन लेना।
छाँट छिड़का–संज्ञा पुं० बहुत हलकी वर्षा। बूँदाबाँदी।
छाँटन–संज्ञा स्त्री० १. काटकूट। २. झटकना। साफ करना। ३. चुनना। अलग कराना। ४. उलटी या कै करना। ५. टुकड़ा। छिलका।
छाँटना–क्रि० स० १. छिन्न करना। काटकर अलग करना। २. किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३. अनाज में से कन या भूसी अलग करना। ४. चुनना या पृथक् करना। ५. दूर करना। हटाना। ६. साफ करना। ७. छोटा या संक्षिप्त करना। ८. अलग या दूर रखना।
छाँड़ना–*†क्रि० स० दे० "छोड़ना"।
छाँद–संज्ञा स्त्री० चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी। नोई। पगहा। जाल।

छाँदना–क्रि० स० १. बाँधना। जकड़ना। कसना। रोकना। २. घोड़े या गधे के पिछले पैरों को एक दूसरे से सटाकर बाँध देना।

छाँदस्–संज्ञा पुं० वेदपाठी। वेदसम्बन्धी। रट्टू। मूर्ख।

छाँदा–संज्ञा पुं० भाग। अंश। खण्ड। टुकड़ा। हिस्सा।

छांदोग्य–संज्ञा पुं० १. एक उपनिषद्। २. वह भोजन जो ज्योनार आदि से अपने घर लाया जाय। परोसा।

छाँवँ–संज्ञा स्त्री० देखो "छाँह"।

छाँवड़ा या **छाँयडा**–संज्ञा पुं० [स्त्री० छाँवड़ी, छौंड़ी] १. जानवर का बच्चा। २. छोटा बच्चा। बालक।

छाँस–संज्ञा स्त्री० कूड़ा-करकट।

छाँह–संज्ञा स्त्री० १. जहाँ धूप न हो। छाया। २. ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३. बचाव या निर्वाह का स्थान। शरण। संरक्षा। ४. परछाईं। ५. प्रतिबिंब।

मुहा०–छाँह न छूने देना=पास न फटकने देना। निकट तक न आने देना। छाँह बचाना=दूर दूर रहना। पास न जाना।

छाँहगीर=संज्ञा पुं० छत्र। १. राजछत्र। २. दर्पण। आइना।

छाँहा–संज्ञा स्त्री० छाया। परछाईं। प्रतिबिम्ब।

छाँही–संज्ञा स्त्री० छाँह। परछाहीं।

छाई–संज्ञा स्त्री० राख। खाद।

क्रि०अ० –छा गई। फैल गई।

छाक–संज्ञा स्त्री० १. तृप्ति। इच्छापूर्ति। २. जलपान। कलेवा। ३. नशा। मस्ती। ४. गर्व। अहंकार। आडम्बर। ५. छटा। ६. रीति। ७. दुर्गंध।

छाकना†*–क्रि० अ० १. तृप्त होना। अघाना। २. नशा पीकर मस्त होना। ३. चकित होना। ४. साफ करना। मल दूर करना।

छाके–संज्ञा पुं० १. मतवाले। उन्मत्त। पियक्कड़। २. हैरान। ३. तन्मय। ४. तृप्त। अघाया हुआ।

छाग–संज्ञा पुं० [स्त्री० छागी] बकरा। बकरी का मांस या दूध।

छागवाहन–संज्ञा पुं० अग्नि। अग्निदेवता।

छागभोजी–वि० १. मांसाहारी। बकरा खानेवाला। २. भेड़िया।

छागमुख–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय का बकरे ऐसा छठवाँ मुख। कार्त्तिकेय का एक गण।

छागरथ–संज्ञा पुं० अग्नि।

छागन–संज्ञा पुं० उपले की आग।

छागर–संज्ञा स्त्री० बकरी।

छागल–संज्ञा पुं० १. बकरा। २. बकरे की खाल की बनी हुई चीज।

संज्ञा स्त्री० पैर का एक गहना। झाँझन।

छागल गोत्री–वि० व्यभिचारी।

छाछ या **छाछी**–संज्ञा स्त्री० मट्ठा। मही। तक्र।

छाछठ–संज्ञा पुं० संख्या-विशेष। ६६।

छाज–संज्ञा पुं० १. अनाज फटकने का बरतन। सूप। २. छाजन। छप्पर। ३. छज्जा। ४. शोभा। ५. मार्ग।

छाजन–संज्ञा पुं० आच्छादन। वस्त्र। कपड़ा।

संज्ञा स्त्री० १. छप्पर। २. छाने का काम या ढंग। छवाई। ३. एक चर्मरोग।

यौ०–भोजन-छाजन=खाना-कपड़ा।

छाजना–क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा देना। अच्छा लगना। फबना। सुशोभित होना।

छाजा*†–संज्ञा पुं० १. दे० "छज्जा"। २. शोभा। शोभित। ३. मार्ग। ४. छाँद।

छाड़–संज्ञा पुं० १. छोड़ा हुआ। त्यागकर। तज कर। २. नदी का छोड़ा हुआ स्थान। ३. भिन्न। बिना।

छाड़ना–क्रि० अ० कै करना।

छाड़े–क्रि० स० छोड़े हुए। त्यक्त।

छात*–संज्ञा पुं० दे० "छाता"। आधार। छत्र।

वि० दुर्बल। खिन्न।

छाता–संज्ञा पुं० १. छतरी। आतपत्र। मेंह, धूप आदि से बचने के लिए कपड़े का

बना हुआ आच्छादन। २. मधुमक्खियों का छत्ता। ३. विशाल वक्षःस्थल। पहलवानों की छाती। ४. खुमी।

छाती–संज्ञा स्त्री० १. सीना। वक्षःस्थल। २. स्तन। कुच। ३. हिम्मत। साहस।
मुहा०–छाती पत्थर की करना=भारी दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना। छाती पर मूँग या कोदों दलना=किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे। छाती पर पत्थर रखना=दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना। छाती पर साँप लोटना=१. दुःख से कलेजा दहल जाना। मानसिक व्यथा होना। २. ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना। जलन होना। छाती पीटना=दुःख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। अत्यंत संताप होना। चिन्ता से घबराना। छाती से लगाना=आलिंगन करना। गले लगाना। वज्र की छाती=ऐसा कठोर हृदय जो दुःख सह सके। छाती जलना=१. अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन मालूम होना। २. शोक से हृदय व्यथित होना। संताप होना। ३. डाह होना। जलन होना। छाती जुड़ाना या छाती ठंडी करना=चित्त शांत और प्रफुल्लित करना। मन की अभिलाषा पूर्ण करना। छाती धड़कना=खटके या डर से कलेजा जल्दी जल्दी उछलना। जी दहलना। छाती ठोंकना=प्रतिज्ञा करना। साहस दिखाना। छाती खोलकर मिलना=प्रेम से मिलना। उत्साह से मिलना। छाती भर=छाती के बराबर ऊँचा।

छात्र–संज्ञा पुं० १. विद्यार्थी। शिक्षार्थी। शिष्य। चेला। २. मधु। मधुमक्षिका।

छात्रक–संज्ञा पुं० दे० "छात्र"।

छात्रगंड–संज्ञा पुं० तीक्ष्ण बुद्धिवाला विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० विद्या अर्जन के निमित्त विद्यार्थी को दिया जानेवाला धन (पारितोषिक या सहायता के रूपमें)।

छात्रा–संज्ञा स्त्री० विद्यार्थिनी। शिष्या।

छात्रालय–संज्ञा पुं० विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंग हाउस। छात्रावास।

छादन–संज्ञा पुं० १. छाने या ढकने का कार्य। २. वह जिससे छाया या ढाँका जाय। आवरण। आच्छादन। ३. छिपाव। ४. ढाँकने का काम। ५. एक वृक्ष।

छादान–संज्ञा पुं० जल रखने का पात्र-विशेष। मशक।

छादित–वि० ढका हुआ। आच्छादित।

छाद्मिक–संज्ञा पुं० वेष बदलनेवाला। बहुरूपिया। मक्कार। ढोंगी।

छान–संज्ञा स्त्री० छप्पर।

छानना–क्रि० स० १. छानकर साफ करना। २. छाँटना। ३. जाँचना। देख-भाल करना। ४. ढूँढ़ना। अनुसंधान करना। ५. भेदकर पार करना। ६. नशा पीना।
क्रि० स० दे० "छादना"।
मुहा० छान मारना=खोजना। ढूँढ़ना।

छानबीन–संज्ञा स्त्री० १. अनुसंधान। जाँच-पड़ताल। खोज। २. पूर्ण विवेचना। विस्तृत विचार।

छानवे–वि० नब्बे और छः। ९६।

छानस–संज्ञा स्त्री० भूसी। चोकर। अन्न की भुस्सी।

छाना–क्रि० स० १. ढकना। आच्छादित करना। पाटना। २. पानी, धूप आदि से बचाव के लिए कोई वस्तु तानना या फैलाना।
क्रि० अ० १. फैलना। पसरना। बिछ जाना। २. डेरा डालना। रहना।
मुहा०–छा जाना=ढक जाना। घिर जाना। फैलना। पट जाना।

छानी–संज्ञा स्त्री० छाजन। झोपड़ी की छाजन।

छाप–संज्ञा स्त्री० १. मुहर का चिह्न। २. धार्मिक चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अंगों पर अंकित कराते हैं। ३. वह अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदा हुआ ठप्पा रहता है। ४. कवियों का उपनाम। ५. अँगूठे का चिह्न। दाग। ६. मुद्रण। छपाई। ७. नकल करना। ८. बाँट का चिह्न-विशेष।

छापना–क्रि० स० ठप्पे से निशान डालना। मोहर लगाना। अंकित करना। मुद्रण करना। मुद्रित करना।
छापा–संज्ञा पुं० १. साँचा। ठप्पा। २ मुहर। मुद्रा। ३. ठप्पे या मुहर का चिह्न या अक्षर। ४. पंजे का चिह्न। ५. अचानक आक्रमण। धावा। डाका। **मुहा०**–छापा मारना=धावा करना। डाका डालना। मोहर लगाना या विशेष चिह्न अंकित करना।
छापाखाना–संज्ञा पुं० मुद्रणालय। प्रेस।
छाबड़ी–संज्ञा स्त्री० खोनचा। वह वस्तु जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं।
छाबड़ीवाला–संज्ञा पुं० छावड़ी या खोनचे में रखकर खाने-पीने की चीजें बेचनेवाला।
छाम–वि० दे० "क्षाम"।
छामोदरी*–वि० दे० "क्षामोदरी"।
छायल–संज्ञा पुं० स्त्रियों का एक पहनावा।
छायांक–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
छाया–संज्ञा स्त्री० १. छाँह। साया। धूप-रहित स्थान। २. परछाईं। ३. प्रति-बिंब। अक्स। ४. तद्रूप वस्तु। प्रति-कृति। ५. अनुकरण। नकल। ६. सूर्य्य की एक पत्नी। ७. कांति। दीप्ति। ८. शरण। रक्षा। ९. अंधकार। १०. आर्य्या छंद का एक भेद।
छायाकृति–संज्ञा पुं० अक्षरशः भाषान्तर न होने पर भाव लेकर की गई रचना। भावानुवाद।
छायाकाव्य–संज्ञा पुं० किसी काव्य के आधार पर रचित काव्य।
छायाग्राह–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. दर्पण।
छायाग्राही–संज्ञा पुं० आकर्षक। आकर्षण करनेवाला।
छायाग्राहिणी–संज्ञा स्त्री० १. एक राक्षसी जिसने समुद्र फाँदते हुए हनुमानजी की छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था। २. छाया ग्रहण करनेवाली स्त्री।
छायाचित्र–संज्ञा पुं० फोटो। पर्दे पर किसी वस्तु की छाया से बना हुआ चित्र।
छायादान–संज्ञा पुं० एक प्रकार का दान। घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाईं देखकर दिया जानेवाला दान।
छायानट–संज्ञा पुं० एक रागिनी।
छायानाथ–संज्ञा पुं० सूर्य।
छायानुवाद–संज्ञा पुं० भावानुवाद।
छायापात–संज्ञा पुं० छाया द्वारा समय मालूम करना।
छायापथ–संज्ञा पुं० १. आकाशगंगा। २. देवपथ। आकाश।
छायापुरुष–संज्ञा पुं० आकाश में देखी गई पुरुष की छाया। हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति, जो आकाश की ओर बहुत देर तक स्थिर दृष्टि रखने से दिखाई पड़ती है।
छायाभ–वि० छाया से युक्त। जिस पर छाया पड़ी हो।
छायामण्डप–संज्ञा पुं० छायायुक्त स्थान। विवाह के लिए बनाया हुआ मण्डप।
छायामित्र–संज्ञा पुं० छाता। छत्र। आतपत्र।
छायावाद–संज्ञा पुं० १. वह सिद्धान्त जिसके अनुसार जगत् में किसी अज्ञात सत्ता की छाया या उसका आभास मिलता है। २. आधुनिक हिन्दी काव्य की वह प्रवृत्ति, जो इस सिद्धान्त से अनुप्राणित हो। ३. आधुनिक रहस्यवाद।
छायासुत–संज्ञा पुं० ग्रह-विशेष। शनैश्चर।
छार–संज्ञा पुं० १. क्षार। भस्म। राख। खाक। २. नमक। ३. खारी पदार्थ। ४. धूल। रेणु। **यौ०**–छार खार करना=नष्ट भ्रष्ट करना।
छारछबीला–संज्ञा पुं० सुगन्धित वस्तु-विशेष। जल का सुगन्धित सेवार।
छारी–संज्ञा पुं० १. क्षारी। भस्म करनेवाला। दाहक। २. महादेव। रुद्र।
छारू–संज्ञा पुं० निनावाँ। रोग-विशेष, जिसमें मुँह पक जाता है।
छाल–संज्ञा स्त्री० छिलका। पेड़ की त्वचा। चर्म। एक मिठाई। वल्कल।

छालटी–संज्ञा स्त्री० छाल या सन का बना हुआ वस्त्र ।
छालना–क्रि० अ० १. छानना । २. छलनी की तरह छिद्रमय करना ।
छाला–संज्ञा पुं० १. छाल या चमड़ा । जिल्द । जैसे—मृगछाला । २. फफोला । फोड़ा । फुन्सी । घाव ।
छालिया या छाली–संज्ञा स्त्री० १. सुपारी । कटी हुई सुपारी के टुकड़े । २. कूँडे में से दही निकालने की छोटी कटोरी ।
छावना–क्रि० स० छाना । पाटना । छप्पर बनाना । छाया करना ।
छावनी–संज्ञा स्त्री० १. डेरा । पड़ाव । २. छाने या पाटने का कार्य । ३. सेना के ठहरने का स्थान । सैन्य-शिविर ।
छावरा–संज्ञा पुं० दे० "छौना" ।
छावा–संज्ञा पुं० १. शावक । बच्चा । २. पुत्र । बेटा । ३. जवान हाथी ।
वि० छाया गया । आच्छादित ।
छासठ–वि० ६६ की संख्या ।
छिउकी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की छोटी चींटी । २. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा । ३. चिकोटी ।
छिंछ–संज्ञा स्त्री० छींटा । धार ।
छिड़ाना–क्रि० स० जबरदस्ती ले लेना । छीनना ।
छि–अव्य० घृणा या तिरस्कारसूचक शब्द ।
छिउला–संज्ञा पुं० ढाक । पलाश ।
छिकुनी–संज्ञा स्त्री० छड़ी । कमाची । बाँस का छोटा टुकड़ा ।
छिक्का–संज्ञा स्त्री० छींक ।
छिक्किका–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसे सूँघने से छींक आए ।
छिकनी–संज्ञा स्त्री० नाकछिकनी घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती है ।
छिकरा–संज्ञा पुं० हिरन की तरह का एक जानवर ।
छिंगुनी, छिंगुनिया या छिंगुली–संज्ञा स्त्री० हाथ की सबसे छोटी उँगली । कनिष्ठिका ।
छिछला–वि० [स्त्री० छिछली] (पानी की सतह) जो गहरी न हो । उथला ।
छिछड़ा–संज्ञा पुं० दे० "छीछड़ा" । १. चमड़ा । निकृष्ट मांस । २. मल की थैली ।
छिच्छ*–संज्ञा स्त्री० दे० "छिंछ" । बूंद ।
छिछकारना–क्रि० स० दे० "छिड़कना" ।
छिछयाना या छिछियाना–क्रि० स० १. मारे मारे फिरना । २. निन्दा करना । घृणा करना ।
छिछोरपन, छिछोरापन–संज्ञा पुं० छिछोरा होने का भाव । क्षुद्रता । ओछापन । नीचता ।
छिछोरा–वि० (स्त्री० छिछोरी) क्षुद्र । ओछा । अविश्वासी । नीच ।
छिजना–क्रि० अ० घटना ।
छिजाना–क्रि० स० नष्ट होने देना । छीजने देना या छीजने का काम कराना ।
क्रि० अ० दे० "छीजना" ।
छिटकना–क्रि० अ० छितराना । चारों ओर बिखरना । क्रि० स० प्रकाश की किरणों का चारों ओर फैलना ।
छिटकनी–संज्ञा स्त्री० सिटकनी । विलियाँ ।
छिटका–संज्ञा पुं० परदा । आड़ ।
छिटकाना–क्रि० स० चारों ओर फैलाना । बिखराना ।
छिटकी–संज्ञा स्त्री० फैली हुई । खिली हुई ।
छिटकुनी–संज्ञा स्त्री० पतली छड़ी ।
छिटनी–संज्ञा स्त्री० डलिया ।
छिटफुट–वि० बिखरा हुआ । इधर-उधर पड़ा हुआ ।
छिटवा–संज्ञा पुं० बाँस की फट्टियों का टोकरा ।
छिड़कना–क्रि० स० पानी आदि के छींटे डालना । भिगाना ।
छिड़कवाना–क्रि० स० छिड़कने का काम दूसरे से कराना ।
छिड़का–संज्ञा पुं० दे० "छिड़काव" ।
छिड़काई–संज्ञा स्त्री० १. छिड़कने की क्रिया या भाव । छिड़काव । २. छिड़कने की मजदूरी ।
छिड़काव–संज्ञा पुं० पानी आदि छिड़कने की क्रिया ।
छिड़ना–क्रि० अ० आरंभ होना । शुरू होना ।

छितनी–संज्ञा स्त्री० छोटी टोकरी। डलिया। चंगेली।

छितनिया–संज्ञा स्त्री० दे० "छितनी"।

छितरना–क्रि० अ० तितर बितर होना। बिखर जाना। फैल जाना।

छितर बितर–क्रि० वि० फैले हुए। तितर बितर।

छितराना–क्रि० अ० तितर-बितर होना। बिखरना।
क्रि० स० १. बिखराना। छींटना। २. दूर दूर करना।

छिति*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षिति"। धरती। पृथ्वी। भूमि।

छितिकंत–संज्ञा पुं० राजा।

छितिपाल–संज्ञा पुं० राजा।

छितिरुह–संज्ञा पुं० पेड़। वृक्ष।

छितीस–संज्ञा पुं० राजा।

छित्वर–वि० वैरी। धूर्त।

छितीश*–संज्ञा पुं० दे० "क्षितीश"। पृथ्वी का स्वामी। राजा।

छिदना–क्रि० अ० १. भिदना। छेदयुक्त होना। २. घायल होना। जख्मी होना। ३. चुभना। गड़ना। ४. रुकावट डालना। रोकना।
संज्ञा पुं० फलदान। वरिच्छा। मँगनी।

छिदाना–क्रि० स० १. छेद करना। २. चुभवाना।

छिदनी–संज्ञा स्त्री० अस्त्र-विशेष जिससे छेद किया जाता है।

छिदरा–वि० छितराया हुआ। विरल। छेददार। जर्जर।

छिदवाना–क्रि० स० छेद करवाना।

छिद्र–संज्ञा पुं० १. छेद। विवर। बिल। रन्ध्र। सूराख। २. छोप। ३. ऐब। ४. अवकाश। ५. दोष। त्रुटि। ६. अवसर। ७. आकाश। ८. नाक-कान के छेद। ९. नौ की संख्या।

छिद्रात्मा–वि० कुटिल।

छिद्रानुसन्धान–संज्ञा पुं० दोष ढूँढ़ना। ऐब निकालना।

छिद्रान्वेषण–संज्ञा पुं० दोष ढूँढ़ना। नुक्स या ऐब निकालना।

छिद्रान्वेषी–वि० (स्त्री० छिद्रान्वेषिणी) दोष ढूँढ़नेवाला।

छिन*–संज्ञा पुं० दे० "क्षण"। अल्प समय। पल।
मुहा०–छिन छिन=प्रति क्षण। पल-पल। छिन भर में=एक पल में। बहुत ही शीघ्र।

छिनक*–क्रि० वि० एक क्षण। दम भर। थोड़ी देर।

छिनकना–क्रि० स० १. नाक का मल निकालना। २. भड़ककर भागना। ३. (बन्दूक का) रंजक चाट जाना।

छिनछबि*–संज्ञा स्त्री० बिजली।

छिनाना–क्रि० अ० छीन लिया जाना। हरण होना।
क्रि० स० पत्थर को छेनी से काटना।

छिनरा–वि० लम्पट।

छिनवाना–क्रि० स० [छीनना का प्रे०] छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना–क्रि० स० दे० "छिनवाना"। छीनना। हरण करना।

छिनाल, छिनार–वि० व्यभिचारिणी। कुलटा। परपुरुषगामिनी।

छिनाला–संज्ञा पुं० अनुचित संसर्ग। व्यभिचार।

छिनेक–संज्ञा पुं० क्षणैक, एक क्षण। एक पल।

छिन्न–वि० जो कटकर अलग हो गया हो। खंडित।

छिन्न-भिन्न–वि० खंडित। टूटा-फूटा। नष्ट-भ्रष्ट। तितर-बितर।

छिन्नधन्वा–संज्ञा पुं० रणस्थल में जिसका धनुष टूट गया हो।

छिन्ननासिका–वि० नकटा। जिसकी नाक कटी हो।

छिन्नमस्तक–वि० कबन्ध। मस्तकहीन।

छिन्नमस्ता–संज्ञा स्त्री० एक देवी जो दस महाविद्याओं में छठवीं हैं।

छिप–संज्ञा पुं० मछली पकड़ने का यंत्र।

छिपकली–संज्ञा स्त्री० गृहगोधिका। बिस्तुइया।

छिपका–संज्ञा स्त्री० १. चुपका। गुप्त। २. छिड़काव। सिंचाव।

छिपना–क्रि० अ० ओट में होना। ऐसी स्थिति में होना जहाँ दिखाई न पड़े।
मुहा०–छिपा रुस्तम=अप्रसिद्ध गुणी। जो अपने गुण में पूरा हो पर प्रसिद्ध न हो। गुप्त गुंडा।

छिपाछिपी–क्रि० वि० चुपचाप।

छिपाना–क्रि० स० [संज्ञा छिपाव] १. आवरण या ओट में करना। दृष्टि से ओझल करना। २. प्रकट न करना। गुप्त रखना।

छिपाव–संज्ञा पुं० छिपाने का भाव। गोपन। दुराव। लुकाव।

छिपी–संज्ञा पुं० १. छिद्र बन्द करने की लकड़ी। काग। २. छोटी थाली।

छिप्र*–क्रि० वि० दे० "क्षिप्र"।

छिप्रोद्भवा–संज्ञा स्त्री० अमृतलता। गुरुच।

छिबड़ा–संज्ञा पुं० छावड़ा।

छिबड़ी–संज्ञा स्त्री० डोली। खाँचा। छोटी टोकरी।

छिमा*‡–संज्ञा स्त्री १. दे० "क्षमा"। २. ममता। ३. धीरज।

छिया–संज्ञा स्त्री० १. घृणित वस्तु। घिनौनी चीज। २. मल। गलीज। ३. छोकरी। लड़की।
वि० मैला। घृणित।
मुहा०–छिया छरद करना=छी छी करना। घृणित समझना।

छियाज–संज्ञा पुं० कटुआँ ब्याज।

छिरकना–क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

छिरहटा–संज्ञा पुं० एक तरह की छोटी बेल।

छिरहा–वि० हठी।

छिरेटा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की छोटी बेल। पाताल-गारुड़ी।

छिलका–संज्ञा पुं० वल्कल। छाल। फल आदि के ऊपर की छाल। बकला।

छिलछिला–वि० छिछला।

छिलना–क्रि० अ० रगड़ना। घिसना। चमड़ा छिल जाना। छिलका अलग होना। खरोंच लगना। गले में खुजली होना।

छिलाना–क्रि० स० कटवाना। रगड़वाना। छाल उतरवाना।
क्रि० अ० कट जाना या खरोंच लग जाना।

छिलैया–वि० छीलनेवाला। रगड़नेवाला।

छिलौरी–संज्ञा स्त्री० रोग-विशेष। मोटी अँगुली पर का घाव। घिनही।

छिल्लड़–संज्ञा पुं० भूसी।

छिहाई–संज्ञा स्त्री० मरघट। चिता। छिहाने का काम या छिहाना।

छिहना या **छिहाना**–क्रि० स० ढेर लगाना। एकत्रित करना।

छिहरना–क्रि० अ० छितरना। बिखरना।

छिहानी–संज्ञा पुं० मरघट। श्मशान।

छी‡–अव्य० कुत्सितवाचक अव्यय। घृणा-सूचक शब्द। धिक्कारार्थ अव्यय। गंदा। अपवित्र।
मुहा०–छी छी करना=अरुचि या घृणा प्रकट करना। घिनाना।

छींक–संज्ञा स्त्री० नाक और मुँह से शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का झोंका।

छींकना–क्रि० अ० नाक से वेग के साथ वायु निकालना।

छींका–संज्ञा पुं० रस्सी या लोहे के पतले तारों की बनी एक प्रकार की जाली, जिसे ऊपर टाँगकर दूध-घी रखते हैं। सिकहर। दे० "छीका"।

छींट–संज्ञा स्त्री० १. पानी की बूँद। जल-कण। सीकर। २. एक प्रकार का कपड़ा, जिस पर रंग-बिरंग के बेल-बूटे छपे हों।

छींटना–क्रि० स० दे० "छितराना"। बिखराना।

छींटा या **छीटा**–संज्ञा पुं० १. द्रव पदार्थ की बूँद। जलकण। सीकर। २. हलकी वृष्टि। ३. बूँद का चिह्न। ४. छोटा दाग। ५. मदक या चंडू की एक मात्रा। ६. व्यंगपूर्ण उक्ति।

छींदा–संज्ञा स्त्री० फली।

छीउल–संज्ञा पुं० ढाक।

छीका–संज्ञा पुं० १. रस्सियों या पतले तारों की जाली जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर लटकाई जाती हैं। सिकहर। २.

जालीदार खिड़की या झरोखा । ३. बैलों के मुँह पर लगाया जानेवाला रस्सियों का जाल । ४. झूला ।

छीछड़ा–संज्ञा पुं० रद्दी मांस । अभक्ष्य मांस । मल की थैली ।

छीछा-लेदर–संज्ञा स्त्री० दुर्दशा । दुर्गति । खराबी ।

छीज–संज्ञा स्त्री० घाटा । कमी ।

छीजना–क्रि० अ० क्षीण होना । घटना । कम होना ।

छीजै–क्रि० अ० घटे । कम हो । क्षीण हो ।

छीटा–संज्ञा पुं० खाँचा । चिलमन ।

छीटि*–संज्ञा स्त्री० १. हानि । घाटा । २. बुराई ।

छीतना–क्रि० स० डंक मारना । कूटना ।

छीति–संज्ञा स्त्री० बुराई । घाटा ।

छीती छान–वि० छिन्न-भिन्न । तितर-बितर ।

छीदा–वि० जो घना न हो ।

छीन–वि० दे० "क्षीण" । शिथिल । दुर्बल ।

छीनता–संज्ञा स्त्री० क्षीणता ।

छीनना–क्रि० स० १. दूसरे की वस्तु जबरदस्ती ले लेना । हरण करना । २. कूटना । रेहना । ३. काटकर अलग करना । ४. चक्की आदि को छेनी से खुरदरा करना ।

छीना†–क्रि० स० दे० "छूना" ।
संज्ञा पुं० एक साँचा ।

छीना-झपटी–संज्ञा स्त्री० बलपूर्वक किसी वस्तु को छीन लेना ।

छीप–वि० तेज । वेगवान् ।
संज्ञा स्त्री० १. छाप । चिह्न । दाग । २. सेहुआँ नामक रोग । ३. मछली मारने की बंसी ।

छीपना–क्रि० स० १. कपड़ा छापना । छीट बनाना । २. मछली को बंसी द्वारा खींचकर बाहर फेंकना ।

छीपा–संज्ञा पुं० १. थाली । २. कपड़े पर बेलबूटा छापनेवाला ।

छीपी–संज्ञा पुं० (स्त्री० छीपिन) कपड़े पर बेलबूटे या छींट छापनेवाला ।

छीबर–संज्ञा स्त्री० मोटी छींट ।

छीमी†–संज्ञा स्त्री० १. फली । २. छिलका । छाल ।

छीर–संज्ञा पुं० दे० "क्षीर" ।
संज्ञा स्त्री० कपड़े का वह किनारा, जहाँ लंबाई समाप्त हो । छोर ।

छीरज–संज्ञा पुं० दही ।

छीरप*–संज्ञा पुं० दूध पीता बच्चा ।

छीरसागर–संज्ञा पुं० दूध का समुद्र ।

छीलन–संज्ञा स्त्री० कतरन । छाँटना ।

छीलना–क्रि० अ० १. छिलका या छाल उतारना । २. जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना ।

छीलर–संज्ञा पुं० छिछला गड्ढा । तलैया ।

छुँगना–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी ।

छुआना–क्रि० स० दे० "छुलाना" ।

छुआछूत–संज्ञा स्त्री० १. अपवित्र या अछूत को छूने की क्रिया । अस्पृश्य स्पर्श । २. छूत-छात का विचार ।

छुई-मुई–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूते ही मुर्झा जाती हैं । लज्जालु । लज्जावंती ।

छुगुनू–संज्ञा पुं० दे० "घुँघरू" ।

छुच्छा–वि० देखो "छूछा" ।

छुच्छी–संज्ञा स्त्री० १. पतली नली । २. नाक की कील । लौंग ।

छुछकारना–क्रि० स० ललकारना । डाँटना । फटकारना ।

छुछली–संज्ञा स्त्री० विनोद । कलोल ।

छुछुआना–क्रि० अ० व्यर्थ इधर-उधर घूमना ।

छुछुंदर–संज्ञा पुं० दे० "छछूंदर" ।

छुछु-मछली–संज्ञा स्त्री० अंडे से फूटा हुआ मेढक का बच्चा जिसका रूप मछली का-सा होता है ।

छुट*–अव्य० १. छोड़कर । सिवाय । २. अतिरिक्त । छोटा ।

छुटकाना–क्रि० स० १. छोड़ना । अलग करना । २. साथ न लेना । ३. मुक्त करना । छुटकारा देना ।

छुटकारा–संज्ञा पुं० बंधन आदि से छूटने

का भाव या क्रिया। मुक्ति। रिहाई। निस्तार। उद्धार।

छुटखेलना—क्रि० अ० मनमानी करना। बदनामी। गुंडई।

छुटखेला—वि० उच्छृंखल। गुंडा। लुच्चा।

छुटखेली—संज्ञा स्त्री० व्यभिचार। लुचपन।

छुटना*—क्रि० अ० दे० "छूटना"।

छुटपन†—संज्ञा पुं० १. छोटाई। लघुता। २. बचपन। छोटापन।

छुटाना†—क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छुटापा—संज्ञा पुं० छुटाई। छुटपन। लघुता

छुट्टा—वि० (स्त्री० छुट्टी) १. जो बँधा न हो। २. एकाकी। अकेला। निहत्था।

छुट्टी—संज्ञा स्त्री० १. मुक्ति। रिहाई छुटकारा। २. विश्राम। अवकाश। फुरसत ३. काम बंद रहने का दिन। तातील ४. चलने की अनुमति। जाने की आज्ञा

छुटे—क्रि० वि० छूट गये। बाकी बचे अलग हुए।

छुड़वाना—क्रि० स० [छोड़ना का प्रे०] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छुड़ाना—क्रि० स० १. बंधन से रहित करना। २. दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३. कार्य्य या नौकरी से हटाना। बरखास्त करना। ४. किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना। (छोड़ना का प्रे०) छोड़ने का काम कराना।

छुड़ावा—संज्ञा पुं० मुक्ति। छुटकारा।

छुड़ौती—संज्ञा स्त्री० छूट। छुड़ाने का मूल्य। दाम। कर। महमूल।

छुत्*—संज्ञा स्त्री० भूख।

छुतिहर—संज्ञा पुं० नीच जाति का व्यक्ति। कुपत्र। अशुद्ध बरतन या घड़ा।

छुतिहरा—वि० अशुद्ध। अपवित्र।

छुतिहा—वि० १. छूतवाला। जो छूने योग्य न हो। अस्पृश्य। २. कलंकित। दूषित। निकृष्ट।

छुद्र—संज्ञा पुं० दे० "क्षुद्र"। छोटा। अधम। नीच। अल्प। थोड़ा-सा।

छुद्रघंटिका—संज्ञा स्त्री० करधनी। मेखला।

छुद्रमेखला—संज्ञा स्त्री० करधनी।

छुद्रा—संज्ञा स्त्री० क्षुद्रा। नीच स्त्री। कुलटा। वेश्या।

छुद्रावलि*—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुद्रघंटिका"।

छुधा—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।

छुनछुनाना—क्रि० अ० 'छुनछुन' करना।

छुप—संज्ञा पुं० स्पर्श। वायु।
वि० चंचल।

छुपना—क्रि० अ० दे० "छिपना"।

छुपाना—क्रि० स० दे० छिपाना।

छुपा—वि० छिपा। गुप्त। अप्रकट।
संज्ञा स्त्री० पौधा-विशेष।

छुभित*—वि० क्षुभित १. विचलित। चंचल-चित्त। २. घबराया हुआ।

छुभिराना*—क्रि० अ० क्षुब्ध होना। चंचल होना।

छुर—संज्ञा पुं० क्षुर। छुरा छुरी। उस्तरा।

छुरधार—संज्ञा स्त्री० क्षुरधार छुरे की धार। पतली पैनी धार।

छुरहटी—संज्ञा स्त्री० नाई की पेटी।

छुरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० छुरी] बाल मूड़ने का हथियार। उस्तरा।

छुरिका—संज्ञा स्त्री० छुरी। चक्कू।

छुरित—संज्ञा पुं० १. नृत्य का एक भेद। २. बिजली की चमक।
वि० खुदा हुआ।

छुरी—संज्ञा स्त्री० १. लोहे का तेज धार वाला हथियार। २. चाकू। चक्कू।

छुलकना—क्रि० अ० छलककर गिरना। कष्ट से मूत्र का थोड़ा थोड़ा निकलना।

छुलछुलाना—क्रि० अ० १. रुक-रुककर गिरना। २. थोड़ा थोड़ा पेशाब करना।

छुलाना—क्रि० स० छूना का प्रेरणार्थक रूप। स्पर्श कराना।

छुवाना†—क्रि० स० दे० "छुलाना"।

छुहना*—क्रि० अ० १. छू जाना। २. रँगा जाना। लिपना।
क्रि० स० दे० "छूना"

छुहाना—क्रि० स० साफ करना। चूना करना। सफेदी करना।

छुहारा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का खजूर। खजूर के समान एक पेड़ और उसका फल। खुरमा। २. पिंडखजूर।
छुहावट-संज्ञा स्त्री० स्पर्श। छूत।
छुही-संज्ञा स्त्री० खरिया।
छूँछ-वि० खाली। निर्धन।
छूँछा-वि० [स्त्री० छूँछी] १. खाली। रीता। रिक्त। जैसे—छूँछा घड़ा। २. जिसमें कुछ तत्त्व न हो। निःसार। ३. निर्धन। गरीब।
छू-संज्ञा पुं० मंत्र पढ़कर फूँकने का शब्द।
मुहा०—छू मंतर होना=चटपट दूर होना। गायब होना।
छुई-संज्ञा स्त्री० दुधिया मिट्टी। खड़िया मिट्टी।
छूछ या **छुछा**-संज्ञा पुं० खाली। रिक्त। शून्य।
छूछी या **छुछी**-संज्ञा स्त्री० कुत्सित। नीच। शून्य। रिक्त।
छूछू-वि० मूर्ख।
संज्ञा स्त्री० दाई।
छूट-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। मुक्ति। २. अवकाश। फुरसत। अपवाद। ३. बाकी रुपया छोड़ देना। छुड़ौती। ४. किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। ५. स्वतंत्रता। आजादी। ६. तलाक। ७. गाली-गलौज।
छूटना-क्रि० अ० १. अलग होना। दूर होना। २. बंधन से मुक्त होना। छुटकारा पाना। ३. प्रस्थान करना। रवाना होना। ४. बिछुड़ना। ५. पीछे रह जाना। ६. किसी नियम या परंपरा का भंग होना। जैसे, व्रत छूटना। ७. वेग के साथ निकलना। जैसे, तीर छुटना। ८. शेष रहना। बाकी रहना। ९. भूल से कोई कार्य न किया जाना। १०. बरखास्त होना। ११. रोजी या जीविका का न रह जाना।
मुहा०—शरीर छूटना=मृत्यु होना। नाड़ी छूटना=नाड़ी का चलना बंद हो जाना।
छूत-संज्ञा स्त्री० १. छूने का भाव। संसर्ग। २. रोग-संचारक वस्तु का स्पर्श। अस्पृश्य का संसर्ग। ३. अपवित्र वस्तु के छूने का दोष। ४. अशुद्धता।
यौ०—छूत का रोग=वह रोग जो किसी रोगी से छू जाने से हो।
छूना-क्रि० अ० स्पर्श होना।
क्रि० स० १. स्पर्श करना। २. हाथ रखना। †३. दान के लिए किसी वस्तु को स्पर्श करना। ४. दौड़ की बाजी में किसी को पकड़ना। ५. पोतना।
मुहा०—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।
छूरा-संज्ञा पुं० छुरा।
छूरी-संज्ञा स्त्री० छुरी।
छेंकना-क्रि० स० १. स्थान घेरना। जगह लेना। २. रोकना। जाने न देना। ३. लकीरों से घेरना। ४. काटना। मिटाना। टुकड़े-टुकड़े करना।
छेंकवैया-संज्ञा पुं० रोकनेवाला।
छेंकाव-संज्ञा पुं० रुकाव। अटकाव।
छेंक-संज्ञा पुं० १. छेद। सूराख। २. कटाव। विभाग। ३. पालतू पशु या पक्षी।
छेकानुप्रास-संज्ञा पुं० (एक काव्यालंकार) वह अनुप्रास जिसमें वर्णों का सादृश्य एक ही बार हो।
छेकापह्नुति-संज्ञा स्त्री० एक काव्यालंकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खंडन किया जाता है।
छेकोक्ति-संज्ञा स्त्री० (काव्यालंकार-विशेष) अर्थान्तर-गर्भित उक्ति। व्यंग्य।
छेटा†-संज्ञा स्त्री० बाधा। रोक।
छेड़-संज्ञा स्त्री० १. तंग करने की क्रिया। २. चुटकी। ३. चिढ़ानेवाली बात। ४. रगड़ा। झगड़ा।
यौ०—छेड़खानी=छेड़छाड़। छेड़छाड़=चिढ़ानेवाली बात।
छेड़ना-क्रि० स० १. चिढ़ाना। २. तंग करना। ३. चुटकी लेना। ४. कोई बात या कार्य्य आरंभ करना। ५. बजाने के लिए बाजे में हाथ लगाना।
छेड़वाना-क्रि० स० 'छेड़ना' का प्रे०। छेड़ने का काम दूसरे से कराना।
छेत्र*†-संज्ञा पुं० दे० "क्षेत्र"।
छेद-संज्ञा पुं० १. सूराख। छिद्र। छेदन। काटने का काम। २. नाश। ध्वंस।

३. छेदन करनेवाला। ४. गणित में भाजक। ५. रंध्र। ६. बिल। खोखला विवर। ७. दोष। ऐब।

छेदक–वि० १. छेदने या काटनेवाला। २. नाश करनेवाला। ३. विभाजक।

छेदन–संज्ञा पुं० १. छेदने या काटने का काम। चीर-फाड़। २. नाश। ध्वंस। ३ काटने या छेदने का अस्त्र।

छेदना–क्रि० स० १. छेद करना। २. क्षत करना। घाव करना। †३. काटना। छिन्न करना।

छेदा–संज्ञा पुं० घुन।

छेना–संज्ञा पुं० फटे हुए दूध का खोया। पनीर।

क्रि० स० कुल्हाड़ी आदि से काटना।

छेनी–संज्ञा स्त्री० रुखानी। पत्थर या लोहा काटने का अस्त्र। टाँकी।

छेम या छेमा*‡–संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"। आनन्द-मंगल। कुशल।

छेमकरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षेमकरी"। मंगलदायक। एक पक्षी का नाम।

छेमराड–संज्ञा पुं० बिना माँ-बाप का पुत्र। अनाथ।

छेरना–क्रि० अ० पतला दस्त होना। अपच रोग होना। बारबार शौच जाना।

छेरी–संज्ञा स्त्री० बकरी।

छेव–संज्ञा पुं० १. जख्म। चोट। कुदाली आदि का एक बार का कटाव। †२. आनेवाली आपत्ति।

संज्ञा स्त्री० दे० "टेव"।

मुहा०—छल छेव=कपट व्यवहार।

छेवना–संज्ञा स्त्री० ताड़ी।

क्रि० स० १. काटना। छिन्न करना। २. चिह्न लगाना। ३. फेंकना। ४. मिलाना।

मुहा०–जी पर छेवना=जी पर खेलना। जान संकट में डालना।

छेवनी–संज्ञा स्त्री० टांकी। रुखानी।

छेवर–संज्ञा पुं० छिलका। त्वचा। चमड़े की तह।

छेवा–संज्ञा पुं० घाव। किसी अस्त्र से चिह्न करना। सीमा जानने के लिए लकीर बनाना।

छेह–संज्ञा पुं० १. दे० "छेव"। २. खंडन। नाश।

*संज्ञा स्त्री० दे० "खेह"। राख। मिट्टी। छाया।

वि० १. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। २. न्यून। कम।

छेहर–संज्ञा स्त्री० छाया। साया।

छैं†–वि० दे० "छः"। षट्। ६ संख्या।

*संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

छैना–क्रि० अ० छीजना। कम होना। नष्ट होना। क्षीण होना।

संज्ञा पुं० करताल या जोड़ी की तरह का एक बाजा।

छैया†*–संज्ञा पुं० बच्चा। बालक। छोकरा।

छैल*–संज्ञा पुं० दे० "छैला"। बाँका। बनाठना।

छैल-चिकनियाँ–संज्ञा पुं० शौकीन। बना-ठना आदमी।

छैल-छबीला–संज्ञा पुं० १. रँगीला। बना-ठना युवक। बाँका। २. छरीला नाम का एक पौधा।

छैला–संज्ञा पुं० बना-ठना आदमी। सजीला। बाँका। शौकीन। शोहदा।

छौंक–संज्ञा पुं० तरकारी या दाल आदि का छौंका जाना। बघार डालना।

छौंकन–संज्ञा पुं० बघार के मसाले। बघार।

छौंकर–संज्ञा पुं० शमी नामक वृक्ष।

छौंचला–संज्ञा पुं० प्रेम। प्यार। चोचला।

छौंछा–संज्ञा स्त्री० बड़ी सुई। सुई की खोल।

छौंड़ा*–संज्ञा पुं० दही मथने की मथानी।

छो–संज्ञा पुं० क्षोभ। कृपा। प्रेम।

छोआ–संज्ञा पुं० चीनी बनाने के लिए गुड़ से जो मैल निकाला जाता है।

छोई–संज्ञा स्त्री० दे० "खोई"। गन्ने का चूसा हुआ भाग। सीठी। निस्सार वस्तु।

छोकड़ा या **छोकरा**–संज्ञा पुं० [स्त्री० छोकड़ी] लड़का। बालक। लौंडा।

छोकड़ापन–संज्ञा पुं० १. लड़कपन। २. छिछोरापन।

छोकड़ी या **छोकरी**–संज्ञा स्त्री० कन्या। लड़की। पुत्री।
छोकरा–संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा"।
छोकला–संज्ञा पुं० छिलका। छाल।
छोछो–संज्ञा स्त्री० गोदी।
छोट–वि० छोटा।
छोटपन–संज्ञा पुं० छुटपन।
छोटा–वि० (स्त्री० छोटी) १. डील-डौल में कम। विस्तार में कम। २. जो अवस्था में कम हो। थोड़ी उम्र का। ३. जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो। ४. तुच्छ। सामान्य। ५. ओछा। क्षुद्र।
यौ०—छोटा-मोटा=साधारण।
छोटाई–संज्ञा स्त्री० १. छोटापन। लघुता। २. नीचता।
छोटापन–संज्ञा १. छोटा होने का भाव। छोटाई। लघुता। २. बचपन। लड़कपन।
छोटी इलायची–संज्ञा स्त्री० सफेद या गुजराती इलायची।
छोटी हाजिरी–संज्ञा स्त्री० योरोपियनों का प्रातःकाल का जलपान।
छोड़ना–क्रि० स० १. अलग करना। २. चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना। ३. बंधन आदि से मुक्त करना। छुटकारा देना। ४. अपराध क्षमा करना। ५. न लेना। ६. प्राप्य धन न लेना। ७. परित्याग करना। देना। पास न रखना। ८. पड़ा रहने देना। न उठाना या लेना। ९. प्रस्थान कराना। चलाना। १०. चलाना या फेंकना। ११. किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना। १२. हाथ में लिये हुए कार्य को त्याग देना। १३. किसी रोग या व्याधि का दूर होना। १४. वेग के साथ बाहर निकालना। १५. ऐसी वस्तु का चलाना जिसमें से कोई वस्तु वेग से बाहर निकले। १६. बचाना। शेष रखना। १७. भूल से कोई काम न करना। १८. ऊपर से गिराना।
मुहा०—किसी पर किसी को छोड़ना=किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिए उसके पीछे किसी को लगा देना।
मुहा०—छोड़कर=अतिरिक्त। सिवाय।
छोड़वाना–क्रि० स० (छोड़ना का प्रे०) छोड़ने का काम दूसरे से कराना।
छोड़ा–संज्ञा पुं० छुड़ाव। छुटकारा। मुक्ति।
छोड़ाना–क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।
छोड़ौती–संज्ञा स्त्री० छुटकारे का दाम। उतराई।
छोनिप*–संज्ञा पुं० दे० "क्षोणिप"। भूपति। राजा।
छोनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी"। पृथ्वी। धरती। भूमि।
छोप–संज्ञा पुं० १. मोटा लेप। २. लेप चढ़ाने का कार्य। रंग भरना। ३. आघात। वार। प्रहार। ४. छिपाव। बचाव।
छोपना–क्रि० स० १. गाढ़ा लेप करना। २. गीली मिट्टी आदि का लोंदा ऊपर रखना या फैलाना। थोपना। ३. दबाकर चढ़ बैठना। ग्रसना। ४. आच्छादित करना। ढकना। छेंकना। ५. किसी बुरी बात को छिपाना। परदा डालना। ६. वार या चोट से बचाना।
छोभ–संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ"।
छोभना*–क्रि० अ० करुणा, शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना। क्षुब्ध होना।
छोभित*–वि० दे० "क्षोभित"।
छोम*–वि० १. चिकना। २. कोमल।
छोर–संज्ञा पुं० १. किनारा। सीमा। २. विस्तार की सीमा। ३. नोक।
यौ०—ओर छोर—आदि अंत।
छोरना†–क्रि० स० १. खोलना। २. बंधन से मुक्त करना। ३. हरण करना। छीनना।
छोरा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० छोरी] छोकरा। लड़का।
छोरा-छोरी†–संज्ञा स्त्री० छीन-खसोट। छीना-छीनी।
छोल–संज्ञा स्त्री० खरोंच।
छोलदारी–संज्ञा स्त्री० खेमा। छोटा तम्बू।
छोलना†–क्रि० स० छीलना।

छोला—संज्ञा पुं० १. चना। २. कटी घास। ३. ईख को काटकर छीलनेवाला।
छोलनी—संज्ञा स्त्री० खुर्पी। घास छीलने का अस्त्र।
छोह—संज्ञा पुं० १. ममता। प्रेम। स्नेह। २. दया।
छोहना*—क्रि० अ० १. विचलित, चंचल या क्षुब्ध होना। २. प्रेम या दया करना।
छोहरा†*—संज्ञा पुं० दे० "छोरा"। छोकरा।
छोहरी—संज्ञा स्त्री० छोकरी।
छोहाना*—क्रि० अ० १. मुहब्बत करना। प्रेम दिखाना। २. दया करना।
छोहारा—संज्ञा पुं० छुहारा।
छोहिनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।
छोही*†—वि० ममता रखनेवाला। प्रेमी। स्नेही। अनुरागी।
छोहू—संज्ञा पुं० प्यार। प्रीति। स्नेह।
छौंक—संज्ञा स्त्री० बघार। तड़का।
छौंकन—संज्ञा पुं० बघार। छौंक।
छौंकना—क्रि० स० बघारना। हींग, जीरा, मिर्चा आदि से मिले हुए गर्म घी को दाल आदि में डालना। तड़का देना। मसाले मिले हुए गर्म घी या तेल में कच्ची तरकारी भूनने के लिए डालना।
छौंडा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० छौंडी] लड़का। बच्चा। कम उम्र का नौकर। लड़का नौकर। अनाज रखने का गड्ढा या खत्ता।
छौकन—संज्ञा पुं० छीना-झपटी।
छौकना†—क्रि० स० जानवर का कूदना या झपटना।
छौकल—संज्ञा पुं० छीनाझपटी करना।
छौना—संज्ञा पुं० [स्त्री० छौनी] पशु का बच्चा। जैसे—मृग-छौना।
छौर—संज्ञा पुं० **क्षौर**। मुण्डन। बाल बनवाना। मुँड़वाना।
छौरा—संज्ञा पुं० ज्वार, बाजरा या कपास आदि के पौधों का डंठल।
छौलदारी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छोटा खेमा। छोटा तंबू।
छौलिया—वि० रसिक। विलासी। प्रसन्न।
छौवाना*—क्रि० स० दे० **"छुआना"**।

ज

ज—हिंदी वर्णमाला का आठवाँ व्यंजन, जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है। इसका उच्चारण तालु से होता है।
संज्ञा पुं० १. मृत्युंजय। २. जन्म। ३. पिता। ४. विष्णु। ५. विष। ६. मुक्ति। ७. छंद-शास्त्रानुसार एक गण जिसके आदि और अंत के वर्ण लघु और मध्य का गुरु होता है। (।ऽ।)।
वि० १. वेगवान्। तेज। २. जीतनेवाला।
प्रत्य० किसी शब्द के साथ संयुक्त होने पर उत्पत्ति अर्थ का वाचक होता है। जैसे—देशज।
जंग—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] (वि० जंगी) लड़ाई। युद्ध। समर।
संज्ञा पुं० लोहे का मुरचा।
जंगजू—वि० युद्ध करनेवाला। लड़ाकू। योद्धा।
जंगम—वि० १. चलने-फिरनेवाला। २. चल। जैसे—जंगम संपत्ति।
जंगरैत—वि० मेहनती।
जंगल—संज्ञा पुं० (वि० जंगली) १. वन। २. वह भूभाग जिसमें प्राकृतिक रूप से झाड़ियाँ, पेड़ आदि उत्पन्न हो गए हों।
जँगला—संज्ञा पुं० १. खिड़की जिसमें छड़ लगी हो। २. दुपट्टे के किनारे पर लगा हुआ बेलबूटा। ३. एक राग।
जंगली—वि० १. जंगल-संबंधी। २. बिना लगाए उगनेवाला पौधा। ३. जंगल में रहनेवाला। वनैला।
जंगार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] (वि० जंगारी) ताँबे का कसाव। तूतिया।
जंगारी या जंगाली—वि० नीले रंग का।
जंगाल—संज्ञा पुं० दे० "जंगार"।
जंगी—वि० [फ़ा०] १. लड़ाई से संबंध

रखनेवाला। जैसे, जंगी जहाज । २. फौजी। सेना-संबंधी । ३. बहुत बड़ा। दीर्घकाय । ४. वीर। लड़ाका ।

जंगुल–संज्ञा पुं० जहर । विष।

जंघा–संज्ञा स्त्री० १. पिंडली । २. जाँघ। रान । ऊरु।

जंघार–संज्ञा स्त्री० जाँघ का फोड़ा।

जंघारि–संज्ञा पुं० विश्वामित्र मुनि।

जंघाल–संज्ञा पुं० १. दूत । २. मृग की एक जाति। ३. (संस्कृत में) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

जंघिया–संज्ञा पुं० जंघा पर पहनने का वस्त्र। कटिपट। कसरत करने के लिए पहनने का वस्त्र।

जँचना–क्रि० अ० १. जाँचा जाना। देखा-भाला जाना। २. जाँच में पूरा उतरना। ३. जान पड़ना ।

जँचा–वि० १. जाँचा हुआ । सुपरीक्षित। २. अचूक।

जंजल†*–वि०पुराना और कमजोर। बेकाम।

जंजाल–संज्ञा पुं० १. प्रपंच । झंझट। बखेड़ा। २. बंधन। फँसाव। उलझन। ३. पानी का भँवर। ४. एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक। ५. बड़े मुँह की तोप । ६. बड़ा जाल।

जंजाली–वि० झगड़ालू। बखेड़िया। फसादी।

जंजीर–संज्ञा स्त्री० (वि० जंजीरी) १. बेड़ी। २. साँकल । कड़ियों की लड़ी। ३. किवाड़ की कुंडी। सिकड़ी।

जंजीरा–संज्ञा पुं० लहरिया। एक प्रकार की सिलाई।

जंतर–संज्ञा पुं० १. कल। औजार। यंत्र । २. तांत्रिक यंत्र। ३. चौकोर या लंबी तावीज जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है। ४. कठुला।

जंतर-मंतर–संज्ञा पुं० १. यंत्र-मंत्र । टोना-टोटका । जादू-टोना । २. मानमंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते हैं। वेधशाला।

जंतरा, जंत्रा–संज्ञा पुं० गाड़ी के ढाँचे पर तानी जानेवाली रस्सी।

जंतरी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा जंता जिसमें सोनार तार बढ़ाते हैं। २. पत्रा। तिथि-पत्र। पञ्चांग। ३. जादूगर। भानमती। ४. बाजा बजानेवाला।

जँतसर–संज्ञा पुं० वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।

जँतसार–संज्ञा स्त्री० जाँता गाड़ने का स्थान।

जंता–संज्ञा पुं० [स्त्री० जंती, जंतरी] १. यंत्र । औजार । जैसे—जंताघर। २. तार खींचने का औजार।
वि० दंड देनेवाला । शासन करनेवाला।

जंती–संज्ञा स्त्री० १. छोटा जंता। जंतरी। २. माता । मा।

जंतु–संज्ञा पुं० जन्म लेनेवाला जीव। प्राणी । जानवर।
यौ०–जीवजंतु=प्राणी । जानवर।

जंतुघ्न–वि० जंतुनाशक । कृमिघ्न।
संज्ञा पुं० हींग।

जंतुघ्नी–संज्ञा स्त्री० बायविडंग।

जंत्र–संज्ञा पुं० १. ताला । २. कल। औजार । ३. तांत्रिक यंत्र।

जंत्रना*–क्रि० स० ताले के भीतर बंद करना। जकड़बंद करना ।
संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।

जंत्र-मंत्र–संज्ञा पुं० दे० "जंतर-मंतर।

जंत्रित–वि० १. दे० "यंत्रित"। २. बंद। बँधा हुआ।

जंत्री–संज्ञा पुं० बाजा। बजानेवाला।
वि० बाँधनेवाला।
संज्ञा स्त्री० पञ्चांग।

जंद–संज्ञा पुं० [फा०] १. पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ। २. वह भाषा जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है।

जंदरा–संज्ञा पुं० १. यंत्र । कल। २. जाँता। †३. ताला।

जंपना*–क्रि० स० बोलना । कहना।

जंबाल–संज्ञा पुं० १. कीचड़ । २. सेवार। काई। ३. केवड़ा।

जंबीर–संज्ञा पुं० १. जँबीरी नीबू। २. मरुवा । बन-तुलसी।

जंबीरी नीबू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खट्टा नीबू ।
जंबु–संज्ञा पुं० जामुन ।
जंबुक–संज्ञा पुं० १. बड़ा जामुन । वृक्ष-विशेष । फरेंदा । २. केवड़ा । ३. शृगाल । गीदड़ ।
जंबुद्वीप–संज्ञा पुं० पुराणों के अनुसार सात द्वीपों में से एक जिसमें भारतवर्ष है ।
जंबुमत्–संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्" ।
जंबू–संज्ञा पुं० जामुन ।
वि० बहुत ऊँचा ।
जंबूर–संज्ञा पुं० [फा०] १. जंबूरा । जमुरका । २. तोप की चर्ख । ३. पुरानी छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी । जंबूरक ।
जंबूरक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छोटी तोप । २. तोप की चर्ख । ३. भँवरकली ।
जंबूरची–संज्ञा पुं० १. तोपची । २. सिपाही ।
जंबूरा–संज्ञा पुं० १. चर्ख जिस पर तोप चढ़ाई जाती है । २. भँवरकली । ३. सुनारों का बारीक काम करने का एक औजार ।
जंभ–संज्ञा पुं० १. दाढ़ । चौभड़ । २. जँबड़ा । ३. एक दैत्य । ४. जँबीरी नीबू । ५. जँभाई । ६. भक्षण । ७. हँसली ।
जंभक–संज्ञा पुं० १. शिव । २. जंबीरी नीबू ।
वि० १. हिंसक । २. कामुक । ३. जँभाई लेनेवाला ।
जंभका–संज्ञा स्त्री० जँभाई ।
जँभाई–संज्ञा स्त्री० आलस्य या थकावट के कारण मुँह से दूषित वायु निकालने के लिए मुँह का स्वतः खुल जाना । उबासी । जमुहाई ।
जँभाना–क्रि० अ० जँभाई लेना ।
जँभारि–संज्ञा पुं० १. इंद्र । २. अग्नि । ३. वज्र । ४. विष्णु ।
जई–संज्ञा स्त्री० १. जौ की जाति का एक अन्न । २. जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य के रूप में ब्राह्मण, पुरोहित भेंट करते हैं । ३. अंकुर । ४. फूलवाले फलों की बतिया । जैसे—कुम्हड़े की जई ।
*वि० दे० "जयी" ।
जईफ़–वि० [अ०] बुड्ढा । वृद्ध ।
जईफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बुढ़ापा । वृद्धावस्था ।
जकंद*–संज्ञा स्त्री० [फा०] छलाँग । चौकड़ी । उछाल ।
जकंदना*†–क्रि० अ० १. कूदना । उछलना । २. टूट पड़ना ।
जक–संज्ञा पुं० १. धन-रक्षक यक्ष । २. कंजूस आदमी ।
संज्ञा स्त्री० (वि० झक्की) १. जिद्द । हठ । अड़ । २. धुन । रट ।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हार । पराजय । २. हानि । घाटा । ३. पराभव । लज्जा ।
जकड़–संज्ञा स्त्री० जकड़ने का भाव । कसकर बाँधना ।
मुहा०–जकड़बंद करना=१. खूब कसकर बाँधना । २. पूरी तरह अपने अधिकार में करना ।
जकड़ना–क्रि० स० कसकर बाँधना । कसना । †क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगों का हिलने-डुलने के योग्य न रह जाना । अकड़न ।
जकड़बन्द–संज्ञा पुं० १. रोग-विशेष । वायु-जनित रोग । २. कुश्ती का पेच ।
जकना†*–क्रि० अ० १. भौंचक्का होना । चकपकाना । २. झक में बोलना ।
जकात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दान । खैरात । २. कर । महसूल (यातायात सम्बन्धी कर) ।
जकाती–संज्ञा पुं० दे० "जगाती" । महसूल लगानेवाला । कर उगाहने का काम ।
जकित†*–वि० चकित । स्तंभित ।
जकुट–संज्ञा पुं० १. कुत्ता । २. बैंगन का फूल । ३. मलयाचल पर्वत ।
जक्की–संज्ञा स्त्री० बुलबुल की एक जाति ।
जक्त–संज्ञा पुं० १. जगत । संसार । दुनिया । २. साधु । यति ।
जखनी–संज्ञा स्त्री० यक्षिणी ।
जखम–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. फोडा । घाव । २. चोट ।
मुहा०–जखम ताजा या हरा हो आना=

बीते हुए कष्ट का फिर लौट आना या उसकी याद आना।
जख़मी–वि० जिसे जखम लगा हो। घायल।
जख़ीरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की चीजों का संग्रह हो कोष।खजाना। २. संग्रह। ढेर। समूह ३. पौधे, बीज आदि की विक्री का स्थान
जख़्म–संज्ञा पुं० दे० "जखम"। घाव। फोड़ा
जखेड़ा–संज्ञा पुं० बखेड़ा। समूह। जखीरा
जग–संज्ञा पुं० १. संसार। विश्व। दुनिया २. संसार के लोग। जन-समुदाय। लोक
जगच्चक्षु–संज्ञा पुं० सूर्य।
जगजगा†–वि० चमकीला। प्रकाशित। संज्ञा पुं० पन्नी। पीतरका मुलम्मा।
जगजगाना†–क्रि० अ० चमकना। जगमगाना।
जगजगाहट–संज्ञा स्त्री० चमक। प्रकाश। चमक-दमक।
जगजागी–संज्ञा स्त्री० प्रख्यात। प्रसिद्ध। संसार में विदित।
जगजीवन–संज्ञा पुं० १. जगत् का आधार। जगत् का प्राण। ईश्वर। २. वायु। ३. जल। ४. मेघ।
जगजोनि–संज्ञा पुं० दे० "जगद्योनि"। ब्रह्मा।
जगड्वाल–संज्ञा पुं० आडम्बर। व्यर्थ का आयोजन।
जगण–संज्ञा पुं० पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि और अंत के लघु होते हैं (।ऽ।)। जैसे-महेश।
जगत्–संज्ञा पुं० १. वायु। २. महादेव। ३. जंगम। ४. विश्व। संसार।
जगत–संज्ञा स्त्री० कुएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा।
संज्ञा पुं० दे० "जगत्"।
जगत्कर्त्ता–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। सृष्टिकर्त्ता। परमात्मा।
जगत्प्राण–संज्ञा पुं० वायु। अनिल।
जगत्साक्षी–वि० सूर्य।
जगतसेठ–संज्ञा पुं० १. एक उपाधि जो उस महाजन को दी जाती थी, जो राज्य को ऋण देता था, राज्य का एक प्रकार का खजानची होता था और कभी-कभी उसे मुद्रा ढालने का भी अधिकार दिया जाता था। २. इतिहास-प्रसिद्ध मुर्शिदाबाद निवासी सेठ जिनका नाम फतेहचन्द था। सन् १७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने इनको जगत्सेठ की उपाधि दी थी। आप सेठ अमीचन्द के पूर्वज थे। इनके परिवार के कई लोगों को यह उपाधि मिली।
जगती–संज्ञा स्त्री० १. संसार। भुवन। २. पृथ्वी। ३. एक वैदिक छंद।
जगदंतक–संज्ञा पुं० मृत्यु।
जगदंबा, जगदंबिका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
जगदादि–संज्ञा पुं० जगत्।
जगदाधार–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। अनन्त। संसार का अवलम्ब। २. शेषनाग। ३. वायु।
जगदानन्द–संज्ञा पुं० ईश्वर।
जगदायु–संज्ञा पुं० वायु।
जगदीश–संज्ञा पुं० १. जगत् का स्वामी। परमेश्वर। २. विष्णु। ३. जगन्नाथ।
जगदीश्वर–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
जगदीश्वरी–संज्ञा स्त्री० भगवती। लक्ष्मी।
जगद्गुरु–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. शिव। ३. नारद। ४. अत्यंत पूज्य पुरुष। शंकर, रामानुज आदि आचार्यों द्वारा स्थापित गद्दियों के गद्दीधरों की उपाधि।
जगद्गौरी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। मनसा देवी।
जगद्धाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० जगद्धात्री] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महादेव।
जगद्धात्री–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा की एक मूर्त्ति। २. सरस्वती।
जगद्बल–संज्ञा पुं० वायु।
जगद्योनि–संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४. परमेश्वर। ५. पृथ्वी।
जगद्वहा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
जगद्वंद्य–वि० जिसकी वंदना सारा संसार करे। संसार में पूज्य या श्रेष्ठ।
जगना–क्रि० अ० १. नींद से उठना। निद्रा त्याग करना। २. सचेत होना। सावधान होना। ३. देवी-देवता या भूत-प्रेत

आदि का अधिक प्रभाव दिखाना। ४. उत्तेजित होना । ५. (आग का) जलना। दहकना । ६. जगमगाना। चमकना।
जगन्नाथ–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. विष्णु। ३. विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है।
जगन्निवास–संज्ञा पुं० ईश्वर । विष्णु।
जगन्नियंता–संज्ञा पुं० परमात्मा । ईश्वर।
जगन्मय–संज्ञा पुं० विष्णु।
जगन्माता–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । दुर्गा।
जगन्मोहिनी–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. महामाया।
जगबंद*–वि० दे० "जगद्वंद्य"।
जगमग, जगमगा–वि० १. प्रकाशित । २. चमकीला । चमकदार।
जगमगाना–क्रि० अ० खूब चमकना । झलकना। दमकना।
जगमगाहट–संज्ञा स्त्री० जगमगाने का भाव। चमक।
जगद्माता–संज्ञा स्त्री० जगत की माता। देवी । दुर्गा । लक्ष्मी। सरस्वती।
जगर मगर–वि० दे० "जगमग"।
जगरा–संज्ञा स्त्री० खजूर की खांड।
जगल–संज्ञा पुं० १. शराब की सीठी। २. मदन वृक्ष। ३. कवच। ४. गोमय। गोबर। ५. एक प्रकार की मुरा।
वि० चालाक।
जगवलुमा–संज्ञा स्त्री० वेश्या । पतुरिया।
जगवाना–क्रि० स० जगाने का काम दूसरे से कराना।
जगह–संज्ञा स्त्री० १. स्थान। स्थल। भूमि। २. मौका । अवसर। ३. पद। ओहदा । नौकरी।
जगहर–संज्ञा पुं० जागरण । निद्रात्याग। जगना।
जगाज्योति–संज्ञा स्त्री० जगजगाहट । सदैव प्रकाशित रहनेवाला अखण्ड दीप।
जगात†–संज्ञा पुं० [अ०] १. दान। खैरात। २. महसूल । कर। जकात।
जगाती†–संज्ञा पुं० १. कर वसूल करनेवाला। २. कर उगाहने का काम।
जगाना–क्रि० स० १. सोते से उठाना। २. सचेत करना। होश दिलाना। बोध कराना। †३. आग को तेज करना। †४. यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना। जैसे—मंत्र जगाना।
जगार†–संज्ञा स्त्री० जागरण। एक साथ कई व्यक्तियों का जाग उठना।
जगावहु–क्रि० स० जगाओ। उठाओ। जागृत करो।
जगी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का पक्षी।
जगीला†–वि० जागने के कारण अलसाया हुआ । उनींदा।
जगुरि–संज्ञा पुं० जंगम । जग।
जग्मि–संज्ञा पुं० वायु।
वि० जो चलता हो।
जगेसर–संज्ञा पुं० यज्ञेश्वर । यज्ञ पुरुष। यज्ञस्वामी । विष्णु।
जघन–संज्ञा पुं० १. कटि के नीचे का भाग। पेड़ू । २. नितंब। चूतड़।
जघनचपला–संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का एक भेद।
जघन्य–वि० १. अंतिम । २. गर्हित । त्याज्य । कुत्सित ३. नीच। निकृष्ट।
संज्ञा पुं० १. शूद्र । २. नीच जाति।
जचना–क्रि० अ० दे० "जँचना"। १. उचित प्रतीत होना। पसन्द होना। २. अच्छाई बुराई मालूम करना । परीक्षित होना।
जचाना–क्रि० स० परीक्षा कराना। पहचनवाना। अनुसन्धान करना।
जच्चा–संज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्री। वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा हुआ हो।
यौ०–जच्चाखाना=सूतिकागृह । सौरी।
जच्चा बच्चा–प्रसूता स्त्री और नवजात शिशु।
जच्छ‡–संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।
जज–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मुकदमों का फैसला करनेवाला अधिकारी । न्यायाधीश । निर्णय करनेवाला।
जजी–संज्ञा स्त्री० जज का पद या काम। जज की कचहरी।
जजमान–संज्ञा पुं० दे० "यजमान"।

जज्ञोपवीत–संज्ञा पुं० दे० "यज्ञोपवीत"।
जजाति–संज्ञा पुं० दे० "ययाति"।
जज़िया–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान शासकों द्वारा मुसलमानों के अलावा अन्य धर्मवालों पर लगाया जानेवाला एक कर।
जज़ीरा–[फ़ा०] संज्ञा पुं० टापू। द्वीप।
जझर–संज्ञा पुं० लोहे की चद्दर का तिकोना टुकड़ा।
जट–संज्ञा पुं० एक तरह का गोदना। जटा। मिले हुए बाल।
जटना–क्रि० स० धोखा देकर कुछ लेना। ठगना।
*क्रि० स० जड़ना।
जटल–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ और झूठ बात। गप्प। बकवास।
जटला–संज्ञा पुं० समूह। समुदाय। भीड़। बैठक।
जटा–संज्ञा स्त्री० १. एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े-बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते हैं। २. जड़ के पतले-पतले सूत। झकरा। ३. एक साथ बहुत से रेशे आदि। ४. शाखा। ५. जटामासी नामक औषध। शतावरि। ६. जूट। पाट। ७. कौंछ। केवाँच। ८. वेदपाठ का एक भेद।
जटाजूट–संज्ञा पुं० १. बहुत से लंबे बालों का समूह। २. शिव की जटा।
जटाज्वाल–संज्ञा पुं० महादेव का तीसरा नेत्र। दीपक। प्रदीप्त।
जटाटंक–संज्ञा पुं० महेश। महादेव। रुद्र।
जटाधर–संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. योगी। साधु।
जटाधारी–वि० जो जटा रखे हो।
संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. एक पौधा।
जटाना–क्रि० स० जटने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० अ० ठगा जाना।
जटामाली–संज्ञा पुं० शिव। जटाधर।
जटामासी–संज्ञा स्त्री० एक सुगन्धित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है। औषध-विशेष। बालछड़। बालूचर।
जटाबल्ली–संज्ञा स्त्री० १. महादेव की जटा। २. एक औषध।
जटायु–संज्ञा पुं० १. रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध। २. गुग्गुल।
जटाल–वि० जटायुक्त। जटाधारी।
संज्ञा पुं० १. बरगद। २. मोरवा। ३. कचूर। ४. गुग्गल।
जटाला–संज्ञा स्त्री० जटावाली। जटामासी। छड़।
जटासुर–संज्ञा पुं० एक राक्षस।
जटित–वि० जड़ा हुआ। जड़ाऊ।
जटिया–वि० जटायुक्त। जटाधारी।
जटिल–वि० १. अत्यंत कठिन। दुरूह। दुर्बोध। पेचीदा। २. जटावाला। जटा-धारी। ३. क्रूर। दुष्ट।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मचारी। २. जटामासी। ३. शिव। ४. सिंह।
जटिलता–संज्ञा स्त्री० जटिल होने का भाव कठिनाई। दुरूहता। पेचीदापन।
जटिला–संज्ञा स्त्री० १. पीपल। २. बच। ३. जटामासी। ४. ब्रह्मचारिणी।
जटी–संज्ञा पुं० १. वटवृक्ष। बरगद का पेड़। २. शिवजी। महादेव।
जटुल–संज्ञा स्त्री० तिल। मसा। लहसुन। शरीर में का काला चिह्न।
जठर–संज्ञा पुं० १. पेट। २. एक उदर-रोग। ३. शरीर।
वि० १. वृद्ध। बूढ़ा। २. कठिन।
जठराग्नि–संज्ञा स्त्री० पेट की अग्नि। पेट की गरमी जिससे अन्न पचता है। क्षुधा। बुभुक्षा।
जठरा–वि० मज़बूत। दृढ़। कठोर।
जठरागि–संज्ञा स्त्री० पेट की आग। जठ-राग्नि।
जड़–वि० १. मूढ़। मूर्ख। मूक। अनजान। अचेतन। स्तब्ध। २. सुन्न। शीत से ठिठुरा हुआ। ३. बहरा।
संज्ञा पुं० १. सीसा। २. पानी। ३. पर्वत। ४. वृक्ष।
संज्ञा स्त्री० १. मूल। पेड़ या पौधों का वह भाग जो ज़मीन के भीतर रहता है। सोर।

२. आधार। नींव। बुनियाद। कारण।
जड़क्रिय—वि० सुस्त। आलसी। निरुत्साही।
जड़जन्तु—वि० मूढ़ जीव। मूर्ख जीव। निर्बोध पशु-पक्षी आदि।
जड़ता—संज्ञा स्त्री० १. मूर्खता। बेवकूफी। २. अचेतनता। स्तब्धता। सुन्न होने का भाव। चेष्टा न करने का भाव। ३. काव्य में एक संचारी भाव।
जड़ताई—संज्ञा स्त्री० दे० "जड़ता"।
जड़त्व—संज्ञा पुं० १. चेतना का विपरीत भाव। अचेतन। स्वयं हिल डोल या किसी प्रकार की चेष्टा न कर सकने का भाव। २. मूर्खता।
जड़बुद्धि—वि० अज्ञान। निर्बोध। मूर्ख। मूढ़।
जड़मति—वि० मूर्ख। निर्बुद्धि।
जड़न—संज्ञा पुं० गहने जड़ने का काम। गहनों में मोती पत्थर आदि जड़ना।
जड़ना—क्रि० स० १. एक चीज को दूसरी चीज में बैठाना। पच्ची करना। २. ठोंककर बैठाना। जैसे—नाल जड़ना। ३. प्रहार करना। ४. चुगली खाना।
मुहा०—जड़ से पेड़ उखाड़ना=समूल नष्ट करना। मूलसमेत उखाड़ना।
जड़बट—संज्ञा स्त्री० १. खुत्थ। ठूठ। २. बरगद की जड़।
जड़भरत—संज्ञा पुं० १. अंगिरस-गोत्री एक ब्राह्मण जो मूर्ख की तरह रहते थे। २. शालग्राम स्थान के भरत नामक राजा जो संन्यास लेकर किसी वन में रहते थे। एक दिन उन्होंने गंगा के किनारे एक मृग शिशु को देखा। दयावश उसे अपने आश्रम ले गए। उससे बहुत प्रेम करने लगे। उसी का स्मरण करते करते उनकी मृत्यु हो गई। मृगयोनि में उनका जन्म हुआ। अपने पूर्व आश्रम में जाकर सूखी घास आदि से इन्होंने अपना जीवन बिताया। दूसरे जन्म में यह ब्राह्मण हुए। सांसारिक विषयों में न फँसने के लिए यह उन्मत्त रहने लगे। अपनी विद्या या बुद्धि का परिचय यह किसी को न देते थे। अतएव लोग इन्हें मूर्ख समझते थे।
जड़वाना—क्रि० स० जड़ने का काम दूसरे से कराना।
जड़हन—संज्ञा पुं० अगहनिया धान। कार्तिक में कटनेवाला धान। शालि।
जड़ाई—संज्ञा स्त्री० १. जड़ने का काम या मजदूरी। २. पच्चीकारी।
जड़ाऊ—वि० जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों। जड़ा हुआ। पच्चीकारी किया हुआ।
जड़ाना—क्रि० स० दे० "जड़वाना"। †क्रि० अ० शीत लगना।
जड़ाव—संज्ञा पुं० १. जड़ने का काम। पच्चीकारी। २. जड़ाऊ काम।
जड़ावट—संज्ञा स्त्री० जड़ने का काम या उसका भाव।
जड़ावर—संज्ञा पुं० जाड़े के कपड़े। गरम कपड़े।
जड़ित*—वि० १. जड़ा हुआ। २. जिसमें नग आदि जड़े हों।
जड़िनी—संज्ञा स्त्री० जड़ स्त्री। दुष्टा।
जड़िया—संज्ञा स्त्री० अचेतनता। जड़ता। सुन्न या अचेतन होने का भाव।
संज्ञा पुं० नगों के जड़ने का काम करनेवाला। कुंदनसाज। सुनार की एक जाति।
जड़ी—संज्ञा स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम लाई जाए। बिरई। बूटी। जड़। जड़ी हुई।
यौ०—जड़ी-बूटी=जंगली ओषधि।
जड़ीभूत—वि० स्तम्भित। चकित। सुन्न। जो बिलकुल जड़ के समान हो गया हो।
जड़ीला—वि० जड़दार।
जड़ुआ—वि० दे० "जड़ाऊ"। एक तरह का गहना।
जड़ैया†—संज्ञा स्त्री० जूड़ी बुखार।
जत†*—वि० १. जितना। जिस मात्रा का। २. चाल। रीति। ३. आकृति। डौल।
जतन*†—संज्ञा पुं० दे० "यत्न"। उपाय। उद्योग।

जतनी–संज्ञा पुं० १. यत्न करनेवाला। उद्योगी। २. चतुर। चालाक।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की रस्सी।
जतलाना–क्रि० स० दे० "जताना"।
जताना–क्रि० स० १. ज्ञात कराना। बतलाना। २. पहले से सूचना देना।
जतारा–संज्ञा पुं० वंश।
जती–संज्ञा पुं० दे० "यति"। संयासी।
जतु–संज्ञा पुं० १. वृक्ष से निकलनेवाला रस। गोंद। २. लाख। लाह। ३. शिला-जीत।
जतुक–संज्ञा पुं० १. हींग। २. लाख। लाह। ३. शरीर के चमड़े पर का दाग जो जन्म से ही होता है (लहसुन)। जटुल।
जतुका–संज्ञा स्त्री० १. पहाड़ी लता। २. चमगादड़।
जतुगृह–संज्ञा पुं० लाक्षागृह। लाह का घर जिसमें दुर्योधन ने पाण्डवों को बन्द कराकर आग लगवा दी थी।
जत्रु–संज्ञा पुं० गले के ऊपरी भाग की हड्डी। हँसली। कन्धे की जड़।
जतुरस–संज्ञा पुं० महावर। अलक्तक। आलता।
जतू–संज्ञा स्त्री० १. एक पक्षी। २. लाख का बना हुआ रंग।
जतेक†*–क्रि० वि० जितना। जिस मात्रा का।
जत्था–संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। गरोह। २. वर्ग। फिरका।
जथा*–क्रि० वि० दे० "यथा"।
संज्ञा पुं० दे० "जत्था"।
संज्ञा स्त्री० पूँजी। धन।
जथार्थ–क्रि० वि० दे० "यथार्थ"।
जथोचित–क्रि० वि० दे० "यथोचित"।
जद†*–क्रि० वि० जब। जब कभी।
अव्य० यदि। अगर।
जदपि–†*क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।
जदवार–संज्ञा स्त्री० निर्विषी। एक प्रकार की घास।
जदीद–वि० नया।
जदु–संज्ञा पुं० यदु। यादव। चंद्रवंशीय क्षत्रिय।
जदुनाथ, जदुनायक–संज्ञा पुं० यदुनाथ। यदुनायक। श्रीकृष्ण।
जदुपति–संज्ञा पुं० दे० "यदुपति"। श्रीकृष्ण।
जदुपुर–संज्ञा पुं० दे० "यदुपुर"। मथुरा नगरी।
जदुवंशी–संज्ञा पुं० दे० "यदुवंशी"। यादव। यदु-कुल के।
जदुराइ या **जदुराई**–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। यादवपति।
जदुराज–संज्ञा पुं० दे० "यदुराज"। श्रीकृष्ण।
जदुराय, जदुवर, जदुवीर–संज्ञा पुं० यदुराय। यदुवर। यदुवीर। श्रीकृष्ण।
जद्द†*–वि० ज्यादा।
वि० प्रचंड। प्रबल।
जद्दपि†*–क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।
जन–संज्ञा पुं० १. मनुष्य। व्यक्ति। लोक। दुनिया के लोग। जनता। २. प्रजा। ३. गँवार। देहाती। ४. अनुयायी। अनुचर। दास। ५. समूह। समुदाय। ६. भवन। ७. मजदूरी। ८. सात लोकों में से पाँचवाँ लोक। ९. एक राक्षस का नाम।
जनक–संज्ञा पुं० १. जन्मदाता। उत्पादक। २. पिता। ३. मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि। ४. सीता के पिता।
जनकजा–संज्ञा स्त्री० सीता।
जनकतनया–संज्ञा स्त्री० जनक की कन्या। सीता।
जनकता–संज्ञा स्त्री० जनक होने का भाव।
जनकनंदिनी–संज्ञा स्त्री० जनक की पुत्री सीता।
जनकपुर–संज्ञा पुं० मिथिला की प्राचीन राजधानी।
जनकांगजा–संज्ञा स्त्री० सीता।
जनकारी–संज्ञा स्त्री० अलक्तक। महावर।
जनकौर–संज्ञा पुं० १. जनकपुर। २. जनक राजा के सम्बन्धी और कुटुम्बी।
जनखा–वि० [फा०] १. नामर्द। २. हिजड़ा। नपुंसक।
जनगो–संज्ञा पुं० मछली।
जनघर–संज्ञा पुं० मंडप।

जनङ्गम—संज्ञा पुं० चाण्डाल । अधम जाति ।
जनचक्षु—संज्ञा पुं० सूर्य्य ।
जनचर्चा—संज्ञा स्त्री० अफवाह । जनश्रुति ।
जनता—संज्ञा स्त्री० १. जन-समूह । सर्व-साधारण । २. जनन का भाव ।
जनधा—संज्ञा पुं० अग्नि ।
जनन—संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति । उद्भव । २. जन्म । ३. आविर्भाव । ४. तंत्र के अनुसार मंत्रों के दस संस्कारों में से पहला । ५. यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार । ६. वंश । कुल । ७. पिता । ८. परमेश्वर ।
जनना—क्रि० स० १. जन्म देना । पैदा करना । २. प्रसव करना ।
जनन शौच—संज्ञा पुं० बालक उत्पन्न होने का सूतक ।
जननि—संज्ञा स्त्री० माँ । माता । अम्मा ।
जननी—संज्ञा स्त्री० १. जन्म देनेवाली । माता । २. कृपा । ३. जनी गंधद्रव्य । ४. कुटकी । ५. जूही । ६. मजीठ । ७. जटामासी । ८. पपड़ी । ९.अलता । १० पपरिका ।११ चमगादड़ ।
जननेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० लिंग या योनि । स्त्री या पुरुष के सन्तान उत्पन्न करनेवाले अवयव ।
जनपति—संज्ञा पुं० राजा । नृप ।
जनपद—संज्ञा पुं० देश । प्रान्त । प्रदेश । जनस्थान । मनुष्यों के रहने का स्थान ।
जनप्रवाद—सं० पुं० लोकनिन्दा । अफवाह । किंवदंती ।
जनप्रिय—संज्ञा पुं० १. शिव । २. लोकरुचि के अनुकूल । लोकप्रिय । जनता को प्रिय ।
जनम—संज्ञा पुं० दे० "जन्म" । उत्पत्ति ।
जनमघूंटी—संज्ञा स्त्री० बच्चों को जन्म के समय से ही दी जानेवाली घूंटी ।
जनमपत्री—संज्ञा स्त्री० जन्मकुण्डली ।
जनमना—क्रि० अ० उत्पन्न होना । जन्म लेना ।
जनमाना—क्रि० स० प्रसव कराना । उत्पन्न कराना ।
जनमर्यादा—संज्ञा स्त्री० लौकिक आचार ।
जनमेजय—संज्ञा पुं० १. राजा परीक्षित के पुत्र, जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था । २. एक प्रसिद्ध नाग ।
जनयिता—संज्ञा पुं० पिता । जन्मदाता ।
जनयित्री—संज्ञा स्त्री० माता । जननी ।
जनरल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] फौज में सबसे ऊँची पदवी । फौज का सेनापति ।
वि० साधारण । आम ।
यौ०—जनरल कौंसिल=साधारण परिषद् । जनरल मैनेजर=प्रधान व्यवस्थापक ।
जनरव—संज्ञा पुं० अफवाह । जनश्रुति । लोकापवाद ।
जनवरी—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अंग्रेजी वर्ष का पहला महीना ।
जनवाद—संज्ञा पुं० संवाद । समाचार । अफवाह । जनश्रुति ।
जनवाना—क्रि० स० प्रसव कराना । सूचित करवाना ।
जनवास—संज्ञा पुं० सभा । मनुष्यों के रहने का स्थान । नगर । ग्राम । बारातियों के ठहरने का स्थान ।
जनवासा—संज्ञा पुं० बारातियों के ठहरने का स्थान ।
जनश्रुति—संज्ञा स्त्री० किंवदंती । अफवाह ।
जनहाई—अव्य० प्रत्येक मनुष्य । प्रति मनुष्य । मनुष्य सहित ।
जना—संज्ञा पुं० जन । मनुष्य ।
क्रि० स० पैदा किया ।
जनाई—संज्ञा स्त्री० १. जनानेवाली स्त्री । दाई । २. दाई की मजदूरी । ३. जताकर । सूचितकर
जनाचार—संज्ञा पुं० लोक-प्रचलित रीति या रिवाज ।
जनाजा—संज्ञा पुं० लाश । अरथी ।
जनातिग—संज्ञा पुं० मनुष्य से अधिक । मनुष्य की शक्ति के बाहर ।
जनाधिनाथ—संज्ञा पुं० १. राजा । २. विष्णु ।
जनानखाना—संज्ञा पुं० स्त्रियों के रहने का स्थान
जनाना—वि० [फा०] [स्त्री० जनानी] १. स्त्रियों का । स्त्री-संबंधी । २. स्त्री ।
जनानापन—संज्ञा पुं० मेहरापन । स्त्रियों की तरह रहन-सहन ।

जनान्तिक–संज्ञा पुं० अप्रकाशित या गुप्त संवाद। नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा।
जनाब–संज्ञा पुं० महाशय। माननीय। आदरसूचक सम्बोधन।
जनार्दन–संज्ञा पुं० विष्णु। श्रीकृष्ण।
जनावर–संज्ञा पुं० पशु। जानवर।
वि० मूर्ख।
जनाश्रय–संज्ञा पुं० मनुष्यों के रुकने का स्थान। धर्मशाला। सराय। घर। मकान।
जनि–संज्ञा स्त्री० १. नारी। स्त्री। २. माता। ३. पुत्रवधू। ४. जन्म। उत्पत्ति। ५. जन्मभूमि। ६. पत्नी। ७. एक गंध द्रव्य।
अव्य० न, नहीं, मत।
जनिका–संज्ञा स्त्री० पहेली। छेकोक्ति। दो अर्थ कहनेवाले शब्द।
जनित–वि० उत्पन्न हुआ। जन्मा हुआ
जनिता–संज्ञा पुं० पैदा करनेवाला। पिता
जनित्र–संज्ञा पुं० जन्मभूमि। उत्पत्तिस्थान
जनियाँ–वि० प्रेयसी। प्यारी। प्राण-प्यारी
जनी–संज्ञा स्त्री० १. दासी। अनुचरी २. स्त्री। ३. माता। ४. कन्या। पुत्री ५. एक गंध-द्रव्य।
वि० उत्पन्न या पैदा की हुई।
जनु–क्रि० वि० मानो (उत्प्रेक्षावाचक)। जैसे यथा, जिस तरह, जिस भाँति।
संज्ञा पुं० उत्पत्ति। जन्म।
जनुक–अव्य० मानो। जानो, (उपमा-वाचक)।
जनून–संज्ञा पुं० उन्माद। पागलपन।
जनेऊ†–संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत। यज्ञसूत्र। ब्रह्मसूत्र। २. यज्ञोपवीत-संस्कार।
जनेत–संज्ञा स्त्री० वरयात्रा। बरात।
जनेव–संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ"।
जनेश–संज्ञा पुं० राजा। नृपति।
जनेषु–संज्ञा पुं० मनुष्यों में। जन-समाज में।
जनैया–वि० जाननेवाला। जानकार। जन्म देनेवाला।
जनोदाहरण–संज्ञा पुं० यश। गौरव। कीर्ति। प्रतिष्ठा।

जनौं‡–क्रि० वि० मानो। गोया।
जन्तर–संज्ञा पुं० तान्त्रिक यंत्र। कल। औजार।
जन्तर-मन्तर–संज्ञा पुं० १. जादू। टोना। यंत्र मंत्र। २. मानमन्दिर। ३. वेध-शाला।
जन्ता–संज्ञा पुं० १. तार खींचने का यंत्र। २. बालक जनने की क्रिया।
जन्ताघर–संज्ञा पुं० वह घर जिसमें बच्चा पैदा हो। सौरी।
जन्तु–संज्ञा पुं० प्राणी। जीव। पशु।
जन्त्र–संज्ञा पुं० दे० "यंत्र"।
जन्नत–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वर्ग। बहिश्त।
जन्म–संज्ञा पुं० १. गर्भ में से निकलकर जीवन धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश। २. अस्तित्व में आना। आविर्भाव। ३. जीवन। जिंदगी। ४. आयु। जीवन-काल। जैसे—जन्मभर।
मुहा०—जन्म लेना=पैदा होना। जन्म हारना=१. व्यर्थ जन्म खोना। २. दूसरे का दास होकर रहना।
जन्मकुंडली–संज्ञा स्त्री० लग्न पत्री। ज्यो-तिष के अनुसार जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति बतानेवाला चक्र या पत्र (फलित ज्योतिष)।
जन्मकृत–संज्ञा पुं० पिता।
जन्मतिथि–संज्ञा स्त्री० दे० "जन्मदिन"। वर्षगाँठ। सालगिरह।
जन्मदिन–संज्ञा पुं० जन्म का दिन। वर्ष-गाँठ।
जन्मना–क्रि० अ० १. जन्म लेना। पैदा होना। २. अस्तित्व में आना।
जन्मपत्र–संज्ञा पुं० दे० "जन्मपत्री"।
जन्मपत्री–संज्ञा स्त्री० वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति आदि का ब्योरा रहता है। जन्मकुण्डली। लग्नपत्री।
जन्मभूमि–संज्ञा स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो। स्वदेश। उत्पत्तिस्थान।

जन्मसिद्ध—वि० जन्म ही से प्राप्त । जन्ममात्र से प्राप्त । जिसकी सिद्धि जन्म से ही हो ।

जन्मस्थान—संज्ञा पुं० जन्मभूमि । स्वदेश ।

जन्मांतर—संज्ञा पुं० दूसरा जन्म ।

जन्मा—संज्ञा पुं० वह जिसका जन्म हो (समास के अन्त में) ।
वि० जो पैदा हुआ हो । उत्पन्न ।

जन्माना—क्रि० स० उत्पन्न करना । जन्म देना ।

जन्मान्ध—वि० जन्म से ही अन्धा । पैदायशी अन्धा ।

जन्माष्टमी—संज्ञा स्त्री० भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था ।

जन्मोत्सव—संज्ञा पुं० किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव । वर्षगाँठ । जन्मदिन का उत्सव ।

जन्य—संज्ञा पुं० १. साधारण मनुष्य । जनसाधारण । २. किंवदंती । अफवाह । ३. राष्ट्र । किसी एक देश के वासी । ४. लड़ाई । युद्ध । ५. पुत्र । बेटा । ६. दामाद । ७. पिता । ८. जन्म ।
वि० १. जन-संबंधी । २. किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला । ३. राष्ट्रीय । जातीय । ४. जो उत्पन्न हुआ हो । उद्भूत ।

जन्या—संज्ञा स्त्री० वधू । प्रीति ।

जन्यु—संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. ब्रह्मा । ३. प्राणी । ४. जन्म । उत्पत्ति । ५. सप्तर्षियों में से एक ।

जप—संज्ञा पुं० १. किसी मंत्र या वाक्य का बारबार पाठ करना । मंत्रोच्चारण । २. पूजा आदि में मंत्र का पाठ । ३. नामस्मरण ।

जपकारी—संज्ञा पुं० जप करनेवाला । जापक ।

जप-तप—संज्ञा पुं० संध्या, पूजा, जप और पाठ आदि । पूजा-पाठ ।

जपन—संज्ञा पुं० जप । नाम का स्मरण ।

जपना—क्रि० स० १. किसी मंत्र या शब्द को बार-बार कहना या रटना । २. संध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय मंत्रोच्चारण । ३. खा जाना । ले लेना ।

जपनी—संज्ञा स्त्री० १. माला । २. गोमुखी । गुप्ती ।

जपनीय—वि० जप करने योग्य ।

जपन्ता—वि० जप करनेवाला । जापक ।

जपमाला—संज्ञा स्त्री० जप करने की माला । सुमिरनी । १०८ दाने की माला ।

जपयम—संज्ञा पुं० जप की साधना । (वाचिक, उपांशु और मानसिक ये जप के तीन प्रकार हैं ।)

जपा—संज्ञा स्त्री० जवा । अड़हुल ।
संज्ञा पुं० जपनेवाला ।

जपि या जपी—वि० जप करनेवाला ।

जपी तपी—वि० पूजक । तपस्वी । भजनानन्दी ।

जफ़ा—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सख्ती । जुल्म ।

जफ़ील—संज्ञा स्त्री० १. सीटी का शब्द । २. सीटी ।

जब—क्रि० वि० जिस समय । जिस वक्त । यदा ।
मुहा०—जब जब=कभी । जिस जिस समय । जब तब=कभी-कभी । जब देखो तब=सदा । सर्वदा । हमेशा । जब न तब=बिना समय के । जब लग=जब तक । जब लौं । जिस समय तक ।

जबड़ा—संज्ञा पुं० मुँह में ऊपर नीचे की हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें जड़ी रहती हैं । कल्ला ।

जबदना—क्रि० अ० भर जाना । सुन न पड़ना । कान का जबदना ।

जबर—वि० १. बलवान् । बली । ताकतवर । २. दृढ़ । मजबूत ।

जबरई—संज्ञा स्त्री० अन्याय । सख्ती । ज्यादती । बरजोरी । जबरदस्ती ।

जबरदस्त—वि० १. बलवान् । बली । शक्तिशाली । २. दृढ़ । मजबूत ।

जबरदस्ती—संज्ञा स्त्री० अत्याचार । सीनाजोरी । ज्यादती । अन्याय ।
क्रि० वि० बलपूर्वक । दबाव डालकर ।

जबरन्–क्रि० वि० बलात् । जबरदस्ती । बलपूर्वक ।
जबरा–वि० बलवान् । बली ।
संज्ञा पुं० [अंग्रे० जेबरा] घोड़े और गदहे के मध्य का एक जंगली जानवर जो दक्षिण अफ्रीका में पाया जाता है।
जबह, जिबह–संज्ञा पुं० [अ०] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया । हिंसा । प्राण लेना ।
जबान–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जीभ । जिह्वा । २. बात । बोल । ३. प्रतिज्ञा । वादा । कौल । ४. भाषा । बोल-चाल ।
मुहा०–जबान खींचना=धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिए कठोर दंड देना । जबान पकड़ना=बोलने न देना। कहने से रोकना। जबान पर आना=मुँह से निकलना । जबान में लगाम न होना=सोच-समझकर न बोलना । जबान हिलाना=मुँह से शब्द निकालना । दबी जबान से बोलना । अस्पष्ट रूप से बोलना । साफ साफ न कहना । **यौ०**–बर-जबान=कंठस्थ । उपस्थित । बेजबान=बहुत सीधा ।
जबानदराज–वि०[फ़ा०] [संज्ञा जबानदराज़ी] धृष्टतापूर्वक अनुचित बातें करनेवाला।
जबानबंदी–संज्ञा स्त्री० लिखा हुआ इजहार (गवाह का बयान) । चुप्पी ।
जबानी–वि० १. जो केवल जबान से कहा जाय, किया न जाय । मौखिक । २. जो लिखित न हो। मुँह से कहा हुआ।
जबाला–संज्ञा स्त्री० जाबाल ऋषि की माता ।
जबून–वि० [तु०] बुरा । खराब ।
जब्त–संज्ञा पुं० [अ०] १. राज्य द्वारा किया हुआ कब्जा । जायदाद छीनना या किसी वस्तु को कब्जे में करना । २. अपनाया हुआ ।
जब्ती–संज्ञा स्त्री० जब्त होने की क्रिया ।
जब्र–संज्ञा पुं० [अ०] ज्यादती । सख्ती ।
जभन–संज्ञा पुं० मैथुन ।
जभा–संज्ञा पुं० जबड़ा । चौहड़ ।
जभाई–संज्ञा स्त्री० जम्हाई ।
जभी–क्रि० वि० जिस समय ही । ज्योंही ।
जभीरी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा नीबू ।
जम–संज्ञा पुं० यम । यमराज ।
जमई–वि० जमा-सम्बन्धी ।
जमकना–क्रि० अ० जम जाना । सख्त होना । क्रि० अ० चमकना ।
जमकाना–क्रि० स० बैठाना । सख्त करना ।
जमकात, जमकातर†*–संज्ञा पुं० पानी का भँवर ।
संज्ञा स्त्री० १. यम का छुरा । २. खाँड़ा ।
जमघंट–संज्ञा पुं० दे० "यमघंट" ।
जमघट–संज्ञा पुं० भीड़ । जमावड़ा । ठट्ट ।
जमज–वि० यमज । जुड़वाँ ।
जमडाढ़–संज्ञा स्त्री० कटारी की तरह का एक हथियार ।
जमजम–अव्य० सदा । निरन्तर । रह-रहकर ।
जमदग्नि–संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि, जो परशुराम के पिता थे ।
जमदीया–संज्ञा पुं० यमदीपक जो कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को यम के नाम पर घर के बाहर निकाल दिया जाता है ।
जमदुतिया–संज्ञा स्त्री० यमद्वितीया । भैया-दूज । कार्त्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया ।
जमदूत–संज्ञा पुं० यमदूत । मृत्यु के दूत ।
जमधर–संज्ञा पुं० दे० "जमडाढ़" । कटार । विछुआ । अस्त्र-विशेष ।
जमन*–संज्ञा पुं० दे० "यवन" ।
जमना–क्रि० अ० १. तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना । जैसे—बरफ़ जमना । २. दृढ़तापूर्वक बैठना । ३. स्थिर होना । निश्चल होना । ४. एकत्र होना । इकट्ठा होना । ५. पूरा-पूरा अभ्यास होना । ६. कोई कार्य उत्तमता से होना । जैसे—खेल जमना । ७. किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना । ८. उपजना । उत्पन्न होना ।
जमनौता–संज्ञा पुं० वह रकम जो जमानत के बदले दी जाय ।
जमराज–दे० "यमराज" ।
जमरूद–संज्ञा पुं० एक तरह का फल ।
जमवट–संज्ञा स्त्री० कुएँ की नीव में रखी जानेवाली पहिए के आकार की लकड़ी ।

जमहाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जम्हाई"।
जमहाना–संज्ञा स्त्री० जमहाई लेना।
जमहूर–संज्ञा पुं० [अ०] लोकतंत्र। प्रजातंत्र। जनसमूह।
जमहूरियत या **जमहूरी**–वि० लोकतंत्र या प्रजातंत्र सम्बन्धी।
जमा–वि० [अ०] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २. सब मिलाकर। ३. जो धरोहर के रूप में या किसी खाते में रखा गया हो।
संज्ञा स्त्री० १. मूलधन। पूँजी। २. धन। रुपया-पैसा। ३. भूमि-कर। मालगुजारी। लगान। ४. जोड़ (गणित)।
जमाई–संज्ञा पुं० दामाद। जँवाई। जामाता। संज्ञा स्त्री० जमने या जमाने की क्रिया या भाव।
जमाखर्च–संज्ञा पुं० आय और व्यय।
जमात–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यों का समूह। गरोह या जत्था। २. कक्षा। श्रेणी। दरजा।
जमादार–संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा जमादारी] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान। मुखिया। रखवाली करनेवाला। अधिकारी।
जमानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी वस्तु या व्यक्ति की जिम्मेदारी जो कागज लिखाकर या कुछ रुपया जमा करके ली जाती है।
जमानतदार–वि० जमानत लेनेवाला।
जमानतनामा–संज्ञा पुं० जमानत करने के समय लिखा जानेवाला कागज।
जमाना–क्रि० स० १. दे० "जमना"। जमना का प्रेरणार्थक रूप, जैसे किसी तरल पदार्थ को गाढ़ा करना। २. किसी संस्था या व्यवसाय को चलाने योग्य बनाना। ३. चोट मारना। ४. अभ्यास करना।
जमाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. समय। काल। युग। २. बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३. प्रताप या सौभाग्य का समय। ४. दुनिया। संसार। जगत्।
जमानासाज–वि० [फा०] जो लोगों का रंग-ढंग देखकर व्यवहार करता हो।
जमाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पटवारी का एक कागज जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं।
जमामार–वि० दूसरों का धन ले लेनेवाला।
जमालगोटा–संज्ञा पुं० एक पौधे का बीज जो अत्यंत रेचक होता है। एक औषध। जयपाल। दंतीफल।
जमाव–संज्ञा पुं० १. इकट्ठा होना। भीड़। समूह। समुदाय। २. जमने या जमाने का भाव।
जमावट–संज्ञा स्त्री० जमने का भाव। संज्ञा पुं० जुड़ाई। बन्धान। संघटन।
जमावड़ा–संज्ञा पुं० जमघट। बहुत से लोगों का समूह। भीड़।
जमींकंद–संज्ञा पुं० एक तरह का कंद। सूरन। ओल।
जमींदार–संज्ञा पुं०[फा०] जमीन का मालिक। भूमि का स्वामी।
जमींदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जमींदार की जमीन। जमीन का लगान वसूल करने की एक व्यवस्था, जिसके अनुसार जमीन का मालिक सरकार को जमीन का निश्चित लगान दे और दूसरों को वही जमीन खेती के लिए देकर उससे ज्यादा लगान वसूल करे। एक प्रकार की भूमिव्यवस्था। २. जमींदार का हक।
जमींदोज–वि० तोड़-फोड़कर नष्ट किया हुआ। जो तोड़ फोड़कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो। ध्वस्त। विनष्ट।
जमीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पृथ्वी। भूमि। धरती। स्थान। २. सम्पत्ति। ३. सतह। ४. भूमिका। आयोजन।
मुहा०–जमीन आसमान एक करना=बहुत बड़े बड़े उपाय करना। जमीन आसमान का फरक=बहुत अधिक अंतर। बहुत बड़ा फरक। जमीन देखना=१. गिर पड़ना। २. नीचा देखना।
जमीमा–संज्ञा पुं० क्रोड़पत्र।
जमुआ–संज्ञा पुं० जामुन।
जमुकना†–क्रि० अ० पास-पास होना। सटना।

जमुना–संज्ञा स्त्री० यमुना नदी।
जमुनिया–वि० जामुन के रंग का।
जमुरी–संज्ञा स्त्री० सँडसी।
जमुर्रद–संज्ञा पुं० पन्ना (रत्न)।
जमुवाँ–संज्ञा पुं० जामुनी।
जमुहाना†–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जमूरक, जमूरा†–संज्ञा पुं० एक प्रकार की छोटी तोप।
जमोग†–संज्ञा पुं० तसदीक कराने की क्रिया। लेन-देन की एक रीति।
जमोगना†–क्रि० स० १. हिसाब-किताब की जाँच करना। २. दूसरे को भार सौंपना। सहेजना। ३. तसदीक कराना। ४. बात की जाँच कराना। ५. जमानत देना।
जमौआ–वि० जमाकर बनाया हुआ।
जम्मू–संज्ञा पुं० काश्मीर का एक भाग। काश्मीर की शीतकाल की राजधानी। जम्बू नगर।
जम्माई–संज्ञा स्त्री० जँभाई।
जम्हाना–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जयंत–वि० [स्त्री० जयंती] १. विजयी। २. बहुरूपिया।
संज्ञा पुं० १. रुद्र। २. इंद्र के पुत्र उपेंद्र का नाम। ३. स्कंद। कार्त्तिकेय।
जयंती–संज्ञा स्त्री० १. विजय करनेवाली। विजयिनी। २. ध्वजा। पताका। ३. हलदी। ४. दुर्गा। ५. पार्वती। ६. किसी महान् पुरुष की जन्म-तिथि पर होनेवाला उत्सव। वर्षगाँठ का उत्सव। ७. एक बड़ा पेड़। जैंत या जैंता। ८. बैजंती का पौधा। ९. जौ के छोटे पौधे जिन्हें विजयादशमी के दिन ब्राह्मण यजमानों को भेंट करते हैं।
जय–संज्ञा स्त्री० १. शत्रु की हार। विपक्षियों का पराभव। जीत। विजय। २. विष्णु के द्वारपाल का नाम। ३. महाभारत का पूर्व नाम। ४. जयंती। जैंत का पेड़। ५. लाभ।
मुहा०–जय मनाना=विजय की कामना करना। समृद्धि चाहना।
जयकरी–संज्ञा स्त्री० चौपाई छंद।

वि० विजया।
जयजयकार–संज्ञा पुं० किसी की जय मनाने का शब्द। विजय प्राप्ति का आशीर्वाद।
जयजीव*–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है—जय हो और जिओ।
जयति–अव्य० जय हो।
जयदेव–संज्ञा पुं० गीतगोविन्द नामक गीत-काव्य के रचयिता और संस्कृत के प्रसिद्ध भक्त कवि, जो १२वीं शताब्दी में बंगाल में हुए थे।
जयद्रथ–संज्ञा पुं० सिंधु देश का राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था।
जयध्वज–संज्ञा पुं० विजय का झण्डा। जयपताका।
जयना*†–क्रि अ० जीतना।
जयपत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जो पराजित पुरुष अपनी पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है। विजय-पत्र।
जयपताका–संज्ञा स्त्री० विजय का झण्डा।
जयपाल–संज्ञा पुं० १. जमालगोटा। २. विष्णु। ३. एक प्रसिद्ध हिन्दू राजा। राजा अनंगपाल के पिता और पुत्र दोनों का नाम जयपाल था।
जयमंगल–संज्ञा पुं० राजा की सवारी का हाथी। विजय के बाद सवार होने का हाथी।
जयमाल–संज्ञा स्त्री० १. विजय के बाद विजयी को पहनाई जानेवाली माला। २. वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती थी। कन्या द्वारा वर के गले में डाली जानेवाली माला।
जयमाला–संज्ञा स्त्री० दे० "जयमाल"।
जयवन्त–संज्ञा पुं० जय करनेवाला। विजयी।
जयवंती–संज्ञा स्त्री० १. जीतनेवाली। जय करनेवाली। २. अग्नि की सप्तजिह्वाओं में से एक।
जयश्री–संज्ञा स्त्री० १. विजय। २. एक रागिनी।
जयस्तंभ–संज्ञा पुं० विजय का स्मारक स्तंभ या धरहरा।
जया–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. पार्वती।

३. हरी दूब । ४. अरणी वृक्ष । ५. जैंत का पेड़ । ६. हड़ । हरीतकी । ७. पताका । ८. गुड़हल का फूल ।
वि० जय दिलानेवाली । जयकारिणी ।

जयी–वि० विजयी । जयशील ।

जर*–संज्ञा पुं० नाश होने की क्रिया । जरा । वृद्धावस्था ।

ज़र–संज्ञा पुं० [फा०] १. सोना । स्वर्ण । २. धन । दौलत । रुपया ।

जरई–संज्ञा स्त्री० धान के वे बीज जिनमें अंकुर निकल आए हों।

जरकटी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

ज़रकस, ज़रकसी*–वि० [फा०] जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।

ज़रख़ेज़–वि० [फा०] उपजाऊ । उर्वरा (ज़मीन) ।

जरठ–संज्ञा पुं० १. कर्कश । कठिन । २. वृद्ध । बुड्ढा । ३. जीर्ण । पुराना ।

जरण–संज्ञा पुं० १. हींग । २. काला नमक । ३. जीरा । ४. जीर्ण । ५. कसौंजा । ६. बुढ़ापा । ७. एक तरह का ग्रहण । ८. कुष्ठ रोग की औषध ।

जरणा–संज्ञा स्त्री० १. काला जीरा । २. प्रशंसा । ३. मुक्ति । ४. बुढ़ापा ।

ज़रतार*–संज्ञा पुं० [फा०] सोने या चाँदी आदि का तार । जरी ।

जरती–संज्ञा स्त्री० वृद्धा । बुड्ढी ।

जरतुश्त–संज्ञा पुं० दे० "ज़रदुश्त" ।

जरतुआ–वि० द्वेषी । दूसरों से जलनेवाला । ईर्ष्या करनेवाला।

जरत्–वि० [स्त्री० जरती] १. बुड्ढा । वृद्ध । २. पुराना । बहुत दिनों का।

जरत्कारु–संज्ञा पुं० एक ऋषि।

ज़रद–वि० जर्द । पीला । पीत ।

जरद्गव–संज्ञा पुं० बूढ़ा बैल।

ज़रदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. पान में खाने की तंबाकू । २. एक भोज्य पदार्थ । ३. पीले रंग का घोड़ा।

ज़रदालू–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का मेवा । खुबानी ।

ज़रदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पीलापन । २. अंडे के भीतर का पीला द्रव।

ज़रदुश्त–संज्ञा पुं० [फा०] फारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य ।

ज़रदोज़–संज्ञा पुं० [फा०] कपड़ों पर सलमा-सितारे का काम करनेवाला।

ज़रदोज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमे-सितारे आदि से की जाती है।

जरन†*–संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।

जरनल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सामयिक पत्र पत्रिका।

जर्नलिस्ट–संज्ञा पुं० [अँग्रे०] पत्रकार । पत्र-पत्रिका का सम्पादन-कार्य करनेवाला।

जरना†*–क्रि० अ० दे० "जलना"।
क्रि० स० दे० "जड़ना"।

जरनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "जलना" ।

ज़रब–संज्ञा स्त्री० १. आघात । चोट । २. गुणा । ३. कपड़े पर छपी बेल । ४. तबले की थाप ।
मुहा०–जरब देना=गुणा करना । चोट करना । घायल करना । पीटना ।

ज़रबफ़्त–संज्ञा पुं० [फा०] रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।

ज़रबाफ़ी–वि० [फा०] जिस पर जरबाफ का काम बना हो।
संज्ञा स्त्री० जरदोजी।

जरबीला*†–वि० भड़कीला।

जरमन, जर्मन–संज्ञा पुं० जर्मनी देश का निवासी। जर्मनी की भाषा।
वि० जर्मनी का।

जरमन सिलवर–संज्ञा पुं० एक सफेद और चमकीली धातु।

ज़रर–संज्ञा पुं० [फा०] १. हानि। नुकसान। क्षति । २. आघात । चोट ।

जरवारा*–वि० धनी । सम्पन्न ।

जरांकुश–संज्ञा पुं० यज्ञकुश । मूंज की तरह एक सुगंधित घास।

जरांश–संज्ञा पुं० ज्वरांश। ज्वर का भाव । साधारण ज्वर।

जरा—संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा । वृद्धावस्था ।
ज़रा—वि० [अ०] थोड़ा । कम । किंचित् । क्रि० वि० थोड़ा । कम ।
जराअत—संज्ञा स्त्री० खेती-बारी ।
जराग्रस्त—वि० बुड्ढा । वृद्ध ।
जरात—संज्ञा स्त्री० खेती । किसानी ।
जरातपेशा—संज्ञा पुं० खेतिहर । खेतीबारी से जीविका निर्वाह करनेवाला ।
जरातुर—वि० १. जीर्ण । दुर्बल । रोगग्रस्त । २. वृद्ध ।
जराद—संज्ञा पुं० टिड्डी ।
जराना*—क्रि० स० दे० "जलाना" ।
जरायम—संज्ञा पुं० जुर्म का बहुवचन ।
जरायम-पेशा—संज्ञा पुं० चोर । डाका डालकर या अपराध करके जीवन निर्वाह करनेवाला । इस पेशे पर जीवन निर्वाह करनेवाली जाति ।
जरायु—संज्ञा पुं० १. वह झिल्ली, जिसमें बच्चा बँधा हुआ उत्पन्न होता है । आँवल । उल्व । २. गर्भाशय । ३. एक वृक्ष ।
जरायुज—संज्ञा पुं० गर्भजात । गर्भ से उत्पन्न प्राणी । पिंडज का एक भेद ।
जराव*†—वि० दे० "जड़ाऊ" ।
जरावस्था—संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा । वृद्धावस्था ।
जरासंध—संज्ञा पुं० मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा ।
जराह या जर्राह—संज्ञा पुं० शल्यचिकित्सा । चीर फाड़कर घाव की दवा करनेवाला ।
ज़रिया—संज्ञा पुं० १. [अ०] संबंध । लगाव । द्वारा । २. हेतु । कारण । सबब । ३. दे० "जड़िया" ।
जरी—वि० वृद्ध । बुड्ढा ।
ज़री—संज्ञा पुं० [फा०] १. सुनहले तारों से बुना हुआ कपड़ा । कारचोबी । २. कामदानी । सोने का तारों आदि का काम ।
जरीब—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है ।
जरीबाना या जरीमाना—संज्ञा पुं० जुर्माना । अर्थदण्ड ।
जरूथ—संज्ञा पुं० १. मांस । २. कटुभाषी ।
ज़रूर—क्रि० वि० अवश्य । निःसन्देह ।
ज़रूरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] आवश्यकता । प्रयोजन ।
ज़रूरी—वि० [फा०] १. जिसके बिना काम न चले । २. जो अवश्य होना चाहिए । आवश्यक ।
जरौट†*—वि० जड़ाऊ ।
ज़र्क़ बर्क़—वि० [फा०] तड़क-भड़कवाला । भड़कीला । चमकीला । भड़कदार ।
जर्जर—वि० १. जीर्ण । जो पुराना होने के कारण बेकाम हो गया हो । २. टूटा-फूटा । खंडित । ३. वृद्ध । बुड्ढा ।
जर्जरित—वि० दे० "जर्जर" ।
जर्जरी—संज्ञा स्त्री० लहसन । तिल ।
जर्जरीका—वि० १. बहुछिद्रयुक्त । झाँझर । २. ऊबड़-खाबड़ । ३. जर्जर । जीर्ण ।
जर्ण—संज्ञा पुं० १.चन्द्रमा । २. वृक्ष । ३. जीर्ण ।
जर्त्त—संज्ञा पुं० १. हाथी । २. योनि ।
जर्त्तिल—संज्ञा पुं० बनैला तिल ।
ज़र्द—वि० [फा०] पीला । पीत ।
ज़र्दा—दे० "जरदा" । पीला रंग । खाने की तम्बाकू ।
ज़र्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] पीलापन ।
जर्री—संज्ञा स्त्री० पीतवर्ण । पीलापन ।
ज़र्रा—संज्ञा पुं० [अ०] १. अणु । कण । २. बहुत छोटा टुकड़ा ।
जर्रार—वि० [अ०] बहादुर । बलिष्ठ ।
जर्राह—संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा जर्राही] फोड़ों आदि को चीरकर चिकित्सा करनेवाला । शल्यचिकित्सक ।
जलंधर—संज्ञा पुं० १. एक पौराणिक राक्षस । २. "जलोदर" रोग । ३. योग का एक बंध ।
जलंबल—संज्ञा पुं० १. नदी । २. अंजन ।
जल—संज्ञा पुं० १. पानी । २. उशीर । खस । ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र ।
जल-अलि—संज्ञा पुं० एक काला कीड़ा जो पानी पर तैरा करता है । पानी का भौंरा ।
जलकंटक—संज्ञा पुं० कुंभी । सिंघाड़ा ।
जलकंद—संज्ञा पुं० काँदा । केला ।
जलक—संज्ञा पुं० १. शंख । २. कौड़ी ।
जलकपि—संज्ञा पुं० सूँस । जलजन्तु-विशेष ।
जलकमल—संज्ञा पुं० कमल । पद्म । उत्पल ।

जलकरंक–संज्ञा पुं० १. नारियल। २. शंख। ३. कमल। ४. जललता । ५. घोंघा। कौड़ी। ६. मेघ। तरंग। ७. बराटिका।
जलकर–संज्ञा पुं० जल में उत्पन्न होनेवाले पदार्थ। जैसे—मछली, सिंघाड़ा आदि।
जलक्रिया–संज्ञा स्त्री० देवता के लिए जल प्रदान। तर्पण।
जलक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० वह क्रीड़ा जो जलाशय में की जाय। जल-विहार।
जलकल–संज्ञा स्त्री० पानी देनेवाली कल। आग बुझानेवाली दमकल।
जलकल-विभाग–संज्ञा स्त्री० नगर में घरों में नल या कल द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग।
जलकल्मष–संज्ञा पुं० १. जल का विष। २. समुद्र-मंथन से उत्पन्न विष।
जलकसक–संज्ञा पुं० १. कीचड़। २. सेवार।
जलकाक–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष।
जलकामा–संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष ।
जलकिरार–संज्ञा पुं० रेशमी वस्त्र-विशेष ।
जलकिराट–संज्ञा पुं० एक हिंस्र जलजन्तु ।
जलकुक्कुट–संज्ञा पुं० जलमुर्गा। जल-पक्षी ।
जलकूपी–संज्ञा पुं० १. पोखरा। तालाब। २. भँवर। गढ़ा। कूप।
जलकूर्म–संज्ञा पुं० जलजन्तु।
जलकेतु–संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा में उदय होनेवाला तारा।
जलखानि–संज्ञा पुं० १. मेघ । २. नदी । ३. समुद्र । जलराशि।
जलखावा†–संज्ञा पुं० जलपान । कलेवा ।
जलगर्द–संज्ञा पुं० पानी में रहनेवाला साँप।
जलगुल्म–संज्ञा पुं० १. कछुआ। २. वह देश जिसमें जल की कमी हो। ३. पानी का भँवर। ४. तालाब।
जलघड़ी–संज्ञा स्त्री० समय जानने का एक प्राचीन यंत्र ।
जलघुमर–संज्ञा पुं० जल का भँवर ।
जलचर–संज्ञा पुं० [स्त्री० जलचरी] पानी में रहनेवाले जंतु।
जलचर-केतु–संज्ञा पुं० कामदेव। मीनध्वज । कामदेव की ध्वजा पर मछली का निशान है, इसीसे उनको जलचर-केतु, मीनध्वज आदि कहते हैं।
जलचरी–संज्ञा स्त्री० मछली । जल में चलनेवाली।
जलचारी–संज्ञा पुं० दे० "जलचर"। मछली।
जलछत्र–संज्ञा पुं० पनशाल । प्याउ। जहाँ पथिकों को पानी पिलाया जाता है।
जलजंतु–संज्ञा पुं० जल में रहनेवाला जीव ।
जलजंतुका–संज्ञा स्त्री० जोंक।
जलज–वि० जो जल में उत्पन्न हो।
संज्ञा पुं० १. कमल । २. शंख । ३. मछली । ४. जल-जंतु । ५. मोती । नमक।
जलजन्य–संज्ञा पुं० कमल ।
जलजला–वि० [फा०] क्रोधी। पिलपिल ।
संज्ञा पुं० [फा०] भूकंप ।
जलजलाना–क्रि० अ० झुँझलाना। रिसाना । क्रोध करना।
जलजात–वि० जलज। जो जल में उत्पन्न हो।
संज्ञा पुं० पद्म। कमल।
जलजामुन–संज्ञा पुं० एक तरह का जामुन।
जल-डमरूमध्य–संज्ञा पुं० दो समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला जलमार्ग ।
जलडिम्ब–संज्ञा पुं० सीप । घोंघा।
जलतरंग–संज्ञा पुं० १. एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर बजाया जाता है। २. लहर । ऊर्मि।
जलतरण–संज्ञा पुं० तैरना । नाव या जहाज से पार जाना । नाव या जहाज चलाने की क्रिया।
जलतरोई–संज्ञा स्त्री० मछली ।
जलत्र–संज्ञा पुं० जल से बचानेवाला । छाता।
जलत्रास–संज्ञा पुं० पानी से भय । वह भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के काटनेपर उत्पन्न होता है। जलातंक।
जलथंभ–संज्ञा पुं० दे० "जलस्तंभ"।
जलद–वि० जल देनेवाला ।
संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. मोथा। ३. कपूर।
जलदागम–संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु का आगमन

या प्रारंभ। आकाश में बादलों का घिरना। वर्षाकाल। पावस ऋतु।

जलदेव–संज्ञा पुं० वरुण। जल के देवता।

जलदेवता–संज्ञा पुं० दे० "जलदेव"।

जलदोष–संज्ञा पुं० पानी की विकृति से रोग। अण्डकोष वृद्धि। पानी लगना। जल-विकार।

जलधर–संज्ञा पुं० १. बादल। २. समुद्र।

जलधरी–संज्ञा स्त्री० वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है। जलहरी।

जलधारा–संज्ञा स्त्री० १. पानी का प्रवाह। पानी की धार। २. झरना। सोता।

जलधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।

जलधिगा–संज्ञा स्त्री० १. नदी। २. लक्ष्मी।

जलन–संज्ञा स्त्री० १. जलने की पीड़ा या दुःख। दाह। २. ईर्ष्या। डाह।

जलनकुल–संज्ञा पुं० ऊदबिलाव।

जलना–क्रि० अ० १. दग्ध होना। बलना। २. भस्म होना। ३. संतप्त होना। झुलसना। ४. ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना।

मुहा०–जले पर नमक छिड़कना=दुःखी को और दुःख देना। जली-कटी या जली-भुनी बात=लगती हुई बात। कटु बात जो द्वेष या क्रोध आदि के कारण कही जाए। जलीकटी सुनाना=डाह या क्रोध से कड़वी बातें कहना।

जलनिधि–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. चार की संख्या।

जलनिर्गम–संज्ञा पुं० जल निकलने का मार्ग।

जलपक–संज्ञा पुं० गप्पी। वाचाल।

जलपक्षी–संज्ञा पुं० जल के समीप रहनेवाला पक्षी।

जलपति–संज्ञा पुं० वरुण। समुद्र। सागर।

जलपथ–संज्ञा पुं० नहर।

जलपना–क्रि० अ० लम्बी-चौड़ी बातें करना। बकवाद करना।

जलपाटल–संज्ञा पुं० काजल।

जलपात्र–संज्ञा पुं० जल रखने का बरतन। घड़ा। लोटा।

जलपान–संज्ञा पुं० थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जलपीपल–संज्ञा स्त्री० पीपल के आकार की एक प्रकार की ओषध।

जलप्रदान–संज्ञा पुं० तर्पण।

जलप्रपात–संज्ञा पुं० किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना। झरना।

जलप्रवाह–संज्ञा पुं० १. पानी का बहाव। २. नदी में बहा देने की क्रिया। ३. किसी वस्तु या शव को नदी में बहा देना।

जलप्रिय–संज्ञा पुं० १. चातक। २. मछली।

जलप्लावन–संज्ञा पुं० १. पानी की बाढ़ जिससे भूमि जल में डूब जाए। २. एक प्रकार का प्रलय।

जलबंध या जलबंधु–संज्ञा पुं० मछली।

जलबंधक–संज्ञा पुं० बाँध।

जलबिंब–संज्ञा पुं० पानी का बुलबुला।

जलबिड़ाल–संज्ञा पुं० ऊदबिलाव।

जलबुद्बुद–संज्ञा पुं० बुलबुला।

जलभँवरा–संज्ञा पुं० एक छोटा काला कीड़ा जो नदी तालाब में पानी पर दौड़ता रहता है।

जलभू–संज्ञा पुं० १. जल चौलाई। २. मेघ। ३. कपूर।

जलभूषण–संज्ञा स्त्री० जलप्राय प्रदेश। संज्ञा पुं० हवा।

जलमल–संज्ञा पुं० फेन।

जलमसि–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कपूर। २. बादल।

जलमानुष–संज्ञा पुं० एक कल्पित जलजन्तु जिसकी नाभि से ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के ऐसा होता है।

जलमार्जार–संज्ञा पुं० ऊदबिलाव।

जलमूर्ति–संज्ञा पुं० शिव।

जलयंत्र–संज्ञा पुं०। फव्वारा। जलघड़ी।

जलयात्रा–संज्ञा पुं० एक उत्सव।

जलयान–संज्ञा पुं० जल की सवारी। जहाज।

जलरज्ज–संज्ञा पुं० बक। बकुला।

जलरंड–संज्ञा पुं० १. साँप। २. पानी की बूँद। ३. भँवर।

जलरस–संज्ञा पुं० नमक।

जलराशि–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. कुंभ, मकर और मीन राशियाँ।

जलरुह्—संज्ञा पुं० कमल।
जललता—संज्ञा स्त्री० तरंग। लहर।
जलवर्त—संज्ञा पुं० दे० "जलावर्त्त"।
जलवाना—क्रि० स० जलाने का काम दूसरे से कराना।
जलवाह्—संज्ञा पुं० मेघ।
जलशय, जलशयन—संज्ञा पुं० विष्णु।
जलशायी—संज्ञा पुं० विष्णु।
जलशूकर—संज्ञा पुं० एक जलजन्तु। कुंभीर।
जलसंस्कार—संज्ञा पुं० १. स्नान करना। २. पखारना। ३. शव को जल में बहा देना।
जलसा—संज्ञा पुं० [अ०] १. आनंद या उत्सव का समारोह। २. सभा-समिति आदि का अधिवेशन। बैठक।
जलसूचि—संज्ञा पुं० १. जोंक। २. बड़ा कछुआ। ३. कौआ। ४. कौआ नाम की मछली। ५. सिघाड़ा। ६. एक प्रकार का पौधा। शिशुमार।
जलसूत—संज्ञा स्त्री० जलजन्तु-विशेष। नहरवाँ।
जलसेना—संज्ञा स्त्री० समुद्र में लड़नेवाली फौज।
जलसेनी—संज्ञा स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी, जिस दिन विष्णु भगवान् शयन करते हैं।
जलस्तम्भ—संज्ञा पुं० एक दैवी घटना जिसमें समुद्र के ऊपर एक मोटा स्तंभ-सा बन जाता है। सूँड़ी।
जलस्तम्भन—संज्ञा पुं० मंत्रादि से जल की गति का अवरोध करना। पानी बाँधना।
जलहर—वि० पानी से भरा हुआ। जलमय या जलयुक्त।
संज्ञा पुं० जलाशय।
जलहरण—संज्ञा पुं० बत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति या दंडक।
जलहरी—संज्ञा स्त्री० १. अर्घा जिसमें शिव लिंग स्थापित किया जाता है। २. मिट्टी का जल भरा घड़ा, जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर गर्मियों में टाँगा जाता है।
जलहार—संज्ञा पुं० पनिहारा। पानी भरनेवाला।
जलाक—संज्ञा स्त्री० पेट की ज्वाला। लू।
जलाकर—संज्ञा पुं० समुद्र, झील, नदी आदि जलाशय।
जलाका—संज्ञा पुं० जोंक।
जलाखु—संज्ञा पुं० जलजन्तु-विशेष। ऊद-बिलाव।
जलाञ्चल—संज्ञा पुं० झरना। नाला। स्रोत।
जलांजलि—संज्ञा स्त्री० पानीभरी अंजुली। पितरों या मृतक के लिए दी जानेवाली जल से भरी हुई अंजुली।
जलाजल—संज्ञा पुं० गोटे आदि की झालर। झलाझल।
जलातंक—संज्ञा पुं० दे० "जलत्रास"।
जलातन—वि० १. क्रोधी। बिगड़ैल। बद-मिजाज। २. ईर्ष्यालु।
जलाद—संज्ञा पुं० दे० जल्लाद। कसाई। मृत्युदंड पाए हुए अभियुक्तों को फाँसी देनेवाला।
जलाधार—संज्ञा पुं० जलाशय, तालाब आदि।
जलाधिप—संज्ञा पुं० वरुण।
जलाना—क्रि० स० १. प्रज्वलित करना। भस्म करना। २. झुलसाना। ३. ईर्ष्या उत्पन्न करना।
जलापा—संज्ञा पुं० ईर्ष्या की जलन। द्वेष। दाह।
जलार्णव—संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु।
जलाल—संज्ञा पुं० [अ०] १. तेज। प्रकाश। २. प्रभाव। आतंक।
जलालुका—संज्ञा स्त्री० जोंक।
जलाव—संज्ञा पुं० खमीर।
जलावतन—वि० [अ०] निर्वासित। अपने देश से निकाला गया।
जलावतनी—संज्ञा स्त्री० देशनिकाला। देश से निर्वासित होना।
जलावन—संज्ञा पुं० १. ईंधन। जलाने की लकड़ी आदि। २. किसी वस्तु का जलने वाला अंश।
जलावर्त्त—संज्ञा पुं० १. पानी का भँवर। २. एक प्रकार का मेघ। ३. जल से भरे हुए बादल।
जलाशय—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पानी जमा हो। जैसे तालाब, झील आदि।

जलाहल–वि० जलमय ।
जलिका–संज्ञा पुं० जोंक ।
जलिया–संज्ञा पुं० धीवर । मछलीमार ।
जलील–वि० [अ०] १. तुच्छ । बेकदर । २. अपमानित ।
जलूक, जलूका–संज्ञा स्त्री० जोंक । जलाका ।
जलूस–संज्ञा पुं० [अ०] किसी अवसर पर बहुत से लोगों का परिक्रमा करना । उत्सव-यात्रा ।
जलेबा–संज्ञा पुं० बड़ी जलेबी ।
जलेबी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई । २. गोल घेरा । कुंडली । लपेट । ३. एक प्रकार की आतशबाजी ।
जलेश–संज्ञा पुं० १. वरुण । २. समुद्र । ३. जलाधिपति ।
जलेशय–संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. मछली ।
जलेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "जलेश" । वरुण । समुद्र । जलपति ।
जलोच्छ्वास–संज्ञा पुं० जल की तरंग । लहर ।
जलोत्सर्ग–संज्ञा पुं० पुराणों के अनुसार तालाब, कुएँ आदि का विवाह ।
जलोदर–संज्ञा पुं० पेट की एक बीमारी जिसमें पेट में पानी जमा होने से पेट फूल जाता है ।
जलौका–संज्ञा स्त्री० जोंक ।
जल्द–क्रि० वि० [अ०] [संज्ञा जल्दी] १. शीघ्र । चटपट । २. तेजी से । अविलम्ब ।
जल्दबाज–वि० [फा०] [संज्ञा जल्दबाजी] जो किसी काम में बहुत जल्दी करता है ।
जल्दी–संज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता । फुरती ।
†क्रि० वि० दे० "जल्द" ।
जल्प–संज्ञा पुं० १. कथन । कहना । २. बकवाद । व्यर्थ की बात । प्रलाप । ३. न्याय के १६ पदार्थों में से एक । ४. शास्त्रार्थ ।
जल्पक–वि० बकवादी । वाचाल ।
जल्पन–संज्ञा पुं० १. बकवाद । प्रलाप । व्यर्थ की बात । २. डींग ।
जल्पना–क्रि० अ० बकवाद करना । डींग मारना । सीटना ।
जल्पाक–संज्ञा पुं० बहुत बोलनेवाला ।
जल्पित–वि० उक्त । कथित । मिथ्या ।
जल्ला–संज्ञा पुं० ताल । हौज ।
जल्लाद–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्राणदंड पाए हुए अपराधियों को फाँसी देनेवाला । घातक । २. क्रूर व्यक्ति । कसाई ।
जव–संज्ञा पुं० १. वेग । २. जौ । यव ।
जवन–वि० वेगवान ।
संज्ञा पुं० १. वेग । २. एक सैनिक । ३. घोड़ा । ४. यवन ।
जवनिका–संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका" । पर्दा ।
जवनी–संज्ञा स्त्री० १. तेजी । २. अजवायन ।
जवस–संज्ञा पुं० घास ।
जवाँमर्द–वि० [संज्ञा जवाँमर्दी] शूरवीर । बहादुर ।
जवा–संज्ञा स्त्री० दे० "जपा" ।
†संज्ञा पुं० १. जौक । २. अन्न-विशेष । ३. लहसुन का दाना ।
जवाई†–संज्ञा स्त्री० जाने की क्रिया । गमन ।
जवाखार–संज्ञा पुं० यवक्षार । एक नमक, जो जौ के क्षार से बनता है ।
जवादि–संज्ञा पुं० एक सुगन्धित द्रव्य, जो गंधबिलाव के शरीर से निकलता है । गौरासार ।
जवान–वि० [फा०] १. युवा । तरुण । २. वीर । बहादुर ।
†संज्ञा पुं० १. पुरुष । २. सिपाही ।
जवानी–संज्ञा स्त्री० १. यौवन । तरुणाई । २. अजवायन ।
मुहा०–जवानी उतरना या ढलना=उमर ढलना । बुढ़ापा आना । जवानी चढ़ना=यौवन का आगमन होना ।
जवाब–संज्ञा पुं० १. उत्तर । २. बदला । ३. मुकाबले की चीज । जोड़ । ४. नौकरी से हटाने की आज्ञा । मौकूफी ।
जवाबतलब–वि० जिसके सम्बन्ध में जवाब माँगा गया हो ।
जवाबदावा–संज्ञा पुं० [अ०] वह उत्तर जो वादी के वाद-पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है ।
जवाबदेह–वि० [फा०] उत्तरदाता । जिम्मेदार ।

जवाबदेही–संज्ञा स्त्री० जिम्मेदारी । उत्तर-दायित्व । अदालत में प्रतिवादी द्वारा वादी के वादपत्र का लिखित उत्तर।

जवाब-सवाल–संज्ञा पुं० प्रश्नोत्तर । वाद-विवाद।

जवाबी–वि० [फा०] जवाब का । जिसका जवाब देना हो।

जवार*–संज्ञा पुं० १. दे० "जवाल" । बुरे दिन । झंझट । २. आसपास का प्रदेश ।

संज्ञा स्त्री० जुआर।

जवारा–संज्ञा पुं० १. जौ के हरे अंकुर । जई । २. भुट्टा। अन्न-विशेष।

जवाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. अवनति । उतार । २. जंजाल। आफत।

जवाला–संज्ञा पुं० गोजई । बेझड़ । मिला हुआ जव और गेहूँ।

जवास, जवासा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कँटीला पौधा।

जवाहर–संज्ञा पुं० रत्न । मणि ।

जवाहरलाल नेहरू–संज्ञा पुं० सन् १९४७ के बाद स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री, जिन्होंने देश की आजादी प्राप्त करने में प्रमुख भाग लिया । महात्मा गांधी के बाद भारत के सर्वमान्य नेता। जीवन में नौ बार जेल गये और चार बार कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। जन्मतिथि १४ नवम्बर सन् १८८९। आपके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू भी देश के एक महान् नेता थे।

जवाहरात–संज्ञा पुं० [अ०] रत्न-समूह।

जवाहिर–संज्ञा पुं० दे० "जवाहर"।

जवाहिर जाकेट–संज्ञा पुं० सदरी। एक तरह का पहनावा जिसे पंडित जवाहरलाल नेहरू अधिक पहनते हैं। इसीलिए इसका नाम जवाहिर-जाकेट पड़ गया।

जवी–वि० वेगवान।

संज्ञा पुं० १. घोड़ा । २. ऊंट ।

जवैया†–वि० जानेवाला। गमनशील।

जशन–संज्ञा पुं० [फा०] १. उत्सव। जलसा। २. आनंद। हर्ष।

जस*‡–क्रि० वि० जैसा।

†संज्ञा पुं० दे० "यश"।

जसद–संज्ञा पुं० जस्ता।

जसुमति–संज्ञा स्त्री० कृष्ण की माता यशोदा।

जसोदा–संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

जसोवै*–संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

जस्तई–वि० खाकी।

जस्ता–संज्ञा पुं० एक धातु।

जहँ–क्रि० वि० दे० "जहाँ"।

जहँड़ना, जहँड़ाना†–क्रि० अ० १. घाटा उठाना। २. धोखे में आना।

जहकना–क्रि० स० कुढ़ना । चिढ़ना ।

जहतिया†–संज्ञा पुं० कर या लगान वसूल करनेवाला।

जहत्स्वार्था–संज्ञा स्त्री० वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोड़े हुए हों । लक्षण-लक्षणा। अप्रसि-द्धार्थ । गौणार्थ।

जहद-जहल्लक्षणा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा (शब्दशक्ति) जिसमें वक्ता के शब्दों के कई भावों में से केवल एक भाव ग्रहण किया जाता है।

जहदना–क्रि० अ० १. कीचड़ होना । २. थक जाना।

जहदा–संज्ञा पुं० दलदल । पङ्क।

जहना*†–क्रि० अ० १. त्यागना। छोड़ना। २. नाश करना।

जहन्नुम–संज्ञा पुं० [अ०] नरक। दोजख ।

मुहा०–जहन्नुम में जाय=चूल्हे में जाय । हमसे कोई सम्बन्ध नहीं।

जहमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। मुसी-बत । आफत । २. झंझट । बखेड़ा ।

जहर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विष। गरल। २. अप्रिय बात या कार्य ।

वि० १. घातक । मार डालनेवाला । २. बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला।

मुहा०–जहर उगलना=मर्मभेदी या कटु बात कहना । जहर का घूंट पीना=किसी अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। जहर का बुझाया हुआ= बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट । जहर करना या कर देना=बहुत अधिक

अप्रिय या असह्य कर देना। जहर लगना=बहुत अप्रिय जान पड़ना।
जहरबाद–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का विषैला फोड़ा।
जहरमोहरा–संज्ञा पुं० एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है।
जहरीला–वि० जिसमें जहर हो। विषैला।
जहल्लक्षणा–संज्ञा स्त्री० दे० "जहत्स्वार्था"।
जहाँ–अव्य० जिस स्थान पर। जिस जगह। संज्ञा पुं० संसार।
मुहा०–जहाँ का तहाँ=जिस जगह पर हो, उसी जगह पर। जहाँ तहाँ=१. इधर-उधर। २. सब जगह। सब स्थानों पर।
जहाँगीरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार की चूड़ी।
जहाँदीदा–वि० [फ़ा०] जिसने संसार को देखकर उसका अनुभव किया हो। अनुभवी। तजरुबेकार।
जहाँपनाह–संज्ञा पुं० [फा०] संसार का रक्षक (बादशाहों का संबोधन)।
जेँहि–सर्व० जेहि। जिसे। जिसको।
क्रि० स० छोड़ो।
जहीं–अव्य० जहाँ भी। जिसी किसी स्थान में।
जहाज–संज्ञा पुं० [अ०] भाप से चलनेवाली बड़ी नाव। जलपोत। जलयान।
मुहा०–जहाज का कौवा या काग=दे० "जहाजी कौआ"।
जहाजी–वि० जहाज से संबंध रखनेवाला।
यौ०–जहाजी कौआ=१. वह कौआ जो किसी जहाज के छूटने के समय उस पर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़-उड़कर फिर उसी जहाज पर आता है। २. ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो।
जहान–संज्ञा पुं० [फा०] संसार। लोक। जगत्।
जहानक–संज्ञा पुं० प्रलय।
जहालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] अज्ञान। मूर्खता।
जहिया*†–क्रि० वि० जिस समय। जब।
जहीं*‡–अव्य०। जहाँ ही। जिस स्थान पर।
अव्य दे० "ज्यों ही"।
जहीन–वि० [अ०] बुद्धिमान्। समझदार।
जहु–संज्ञा पुं० सन्तान।
जहूर–संज्ञा पुं० प्रकाश।
जहूरा–संज्ञा पुं० ठाठ।
जहेज–संज्ञा पुं० [अ०] वह धन-संपत्ति, जो विवाह में कन्यापक्ष की ओर से वर को दी जाती है। दहेज।
जह्नु–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. एक राजर्षि। जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तब इन्होंने गंगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।
जह्नुतनया–संज्ञा स्त्री० गंगा। भागीरथी। दे० "जह्नु"।
जह्नुनंदनी–संज्ञा स्त्री० गंगा। भागीरथी।
जह्नुसप्तमी–संज्ञा स्त्री० वैशाख शुक्ल सप्तमी।
जाँगड़ा–संज्ञा पुं० भाट। बंदी।
जाँगर–संज्ञा पुं० १. शरीर का बल। बूता। २. देह। हाथ-पैर। जाँघ।
जांगल–संज्ञा पुं० १. तीतर। २. मांस। ३. ऊसर देश। वह देश जहाँ पानी कम बरसता हो।
वि० जंगल-संबंधी। जंगली।
जांगली–संज्ञा स्त्री० कौंछ।
जाँगलू–वि० गँवार। जंगली।
जाँगुल–संज्ञा पुं० तरोई। जंगुल।
जाँगुलि, जाँगुलिक–संज्ञा पुं० साँप पकड़नेवाला।
जाँघ–संज्ञा स्त्री० घुटने और कमर के बीच का अंग। ऊरु। जंघा।
जाँघल–संज्ञा पुं० बड़ा बगुला। पक्षी-विशेष।
जाँघा–संज्ञा पुं० १. हल। २. कुएँ की गड़ारी रखने का खम्भा। एक प्रकार का धुरा।
जाँघिक–संज्ञा पुं० १. ऊँट। २. जिसकी जीविका दौड़ने से चलती हो। ३. एक प्रकार का मृग।
जाँघिया–संज्ञा पुं० घुटने तक का एक पहनावा। काछा।

जाँघिल—संज्ञा पुं० १. एक चिड़िया। २. वह बैल जिसका पैर चलने में लच खाता हो। वि० जिसका पैर चलने में लच जाता हो।
जाँच—संज्ञा स्त्री० १. जाँचने की क्रिया। परीक्षा। परख। २. गवेषणा। तहकीकात। खोज।
जाँचक*†—संज्ञा पुं० दे० "जाचक"।
जाँचना—क्रि० स० १. परखना। परीक्षा करना। †२. प्रार्थना करना। माँगना।
जाँजरा*†—वि० दे० "जर्जर"।
जाँत, जाँता—संज्ञा पुं० १. आटा पीसने की चक्की। २. जाँता।
जांतव—वि० जंतु सम्बन्धी। जीव-जन्तुओं का। जीव-जन्तुओं से उत्पन्न या मिलनेवाला।
जाँता—संज्ञा पुं० ज़मीन में गाड़कर आटा पीसने की चक्की।
जाँब*†—संज्ञा पुं० दे० "जामुन"।
जांबवंत—संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।
जांबवती—संज्ञा स्त्री० जांबवान् की कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था।
जांबवान्—संज्ञा पुं० सुग्रीव का मंत्री। एक भालू, जो राम की सेना में लड़ा था।
जाँबवि—संज्ञा पुं० बज्र।
जांबुवान—संज्ञा पुं० दे० "जांववान्"।
जांबु—संज्ञा पुं० जम्बूद्वीप।
जांबूनद—संज्ञा पुं० १. सोना। २. धतूरा।
जाँवर*†—संज्ञा पुं० गमन। जाना। प्रस्थान।
जा—संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. देवरानी। देवर की स्त्री।
वि० उत्पन्न। संभूत। [फा०] मुनासिब।
*†—सर्व० जो। जिस।
क्रि० अ० जाओ। दूर हो।
जाइ*†—वि० दे० "जाय"। वृथा।
जाई—संज्ञा स्त्री० १. बेटी। पुत्री। २. चमेली।
जाउर—संज्ञा स्त्री० खीर। दूधभात।
जाक—संज्ञा पुं० यक्ष। एक तरह की देवयोनि।
जाकट, जाकेट—संज्ञा स्त्री० [अँग्रे०] सदरी। बिना बाँह का कमर तक का एक पहनावा।
जाकड़—संज्ञा पुं० माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा। पक्का का उलटा।
जाकड़बही—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बही।
जाखन—संज्ञा स्त्री० कुएँ की नींव में दिया जानेवाला पहिया। जम्बट। नेवार।
जाखिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।
जाग—संज्ञा पुं० यज्ञ। होम।
‡संज्ञा स्त्री० १. जगह। स्थान। २. जागने की क्रिया। जागरण। ३. कौवा (फ़ारसी)। ४. काले रंग का कबूतर। ५. जहाज़ का भांडार। ६. रक्षक।
जागती जोति या ज्योति—संज्ञा स्त्री० किसी देवता, विशेषतः देवी की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार।
जागना—क्रि० अ० १. सोकर उठना। नींद त्यागना। २. जाग्रत अवस्था में होना। ३. सजग होना। सावधान होना। ४. उदित होना। चमक उठना। ५. समृद्ध होना। बढ़-चढ़कर होना। ६. प्रसिद्ध होना। विख्यात होना। जोर-शोर से उठना। ७. प्रज्वलित होना। जलना। **मुहा०**—जागता=१. प्रत्यक्ष। साक्षात्। २. प्रकाशित। भासमान।
जागबलिक†*—संज्ञा पुं० दे० "याज्ञवल्क्य"।
जागर—संज्ञा पुं० कवच। जागने की क्रिया। अंतःकरण की एक प्रकार की अवस्था। होश।
जागरण—संज्ञा पुं० १. निद्रा का अभाव। जागना। निद्रात्याग। २. किसी पर्व के उपलक्ष में सारी रात जागना।
जागरित—संज्ञा पुं० १. नींद का न होना। जागरण। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहे।
जागरूक—संज्ञा पुं० सजग। सचेत। सावधान। कार्यतत्पर। जाग्रत। चैतन्य।
जागरूप—वि० स्पष्ट। जो बिल्कुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।
जागर्त्ति—संज्ञा स्त्री० १. जागरण। जागृति। २. चेतनता।

जागाबन्दी–संज्ञा स्त्री० १. हदबन्दी। सीमा-निर्देश। २. नींद। ऊँघ।
जागी‡*–संज्ञा पुं० भाट।
जागीर–संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य की ओर से प्राप्त भूमि। सरकार से मिला तअल्लुक़ा।
जागीरदार–संज्ञा पुं० [फा०] वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक।
जाग्रत–वि० १. जो जागता हो। २. वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान हो। चैतन्यावस्था।
जाग्रति–संज्ञा स्त्री० जागरण। चेतनता। जागने की क्रिया।
जागृवि–संज्ञा पुं० १. राजा। २.आग।
जाचक†*–संज्ञा पुं० याचक। १. माँगने-वाला। २. भीख माँगनेवाला। भिख-मंगा।
जाचकता†*–संज्ञा स्त्री० १. याचकत्व। माँगने का भाव। २. भीख माँगने की क्रिया। भिखमंगी।
जाचना†*–क्रि० स० याचना। माँगना।
जाच्यमान–वि० प्रार्थ्यमान। माँगने योग्य।
जाजक–संज्ञा पुं० याजक। पुरोहित। यज्ञ करानेवाला।
जाजम–संज्ञा पुं० बिछौना। जाजिम। गलीचा। बेलबूटेदार बड़ी चादर।
जाजरा†*–वि० जर्जर। जीर्ण।
जाजरी–संज्ञा पुं० बहेलिया
जाजरूर–संज्ञा पुं० पाखाना टट्टी। शौच करने का स्थान।
जाजल–संज्ञा पुं० अथर्ववेद की एक शाखा का नाम।
जाजलि–संज्ञा पुं० अथर्ववेदज्ञ गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।
जाजिम–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. बिछाने की छपी हुई चादर। २. गलीचा।
जाज्वल्य–वि० प्रज्वलित। प्रकाशयुक्त।
जाज्वल्यमान–वि० १. प्रज्वलित। दीप्तिमान्। २. तेजस्वी। तेजवान्।
जाट–संज्ञा पुं० भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति। राजपूतों का एक अवान्तर भेद।
जाठ–संज्ञा पुं० लट्ठा। १. बड़ा लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ी के बीच में पड़ा रहता है। २. तालाब के बीच में गड़ा हुआ लट्ठा।
जाठर–संज्ञा पुं० जठर। पेट। जठराग्नि। भूख।
वि० जठर सम्बन्धी। जठर से उत्पन्न।
जाड़–संज्ञा पुं० १. जाड़ा। २. मसूड़ों की जड़।
वि० बहुत अधिक।
जाड़ा–संज्ञा पुं० १. वह ऋतु जिसमें बहुत ठंढक पड़ती है। शीतकाल। २. सरदी। शीत। पाला। ठंढ।
जाड़ी–संज्ञा स्त्री० दन्तपंक्ति। दाँतों की कतार।
वि० मोटी। स्थूल।
जाड्य–संज्ञा पुं० जड़ता।
जात–संज्ञा पुं० १. जन्म। २. पुत्र। बेटा। ३. जीव। प्राणी।
वि० १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। २. व्यक्त। प्रकट। ३. प्रशस्त। अच्छा। ४. जिसने जन्म लिया हो। पैदा। जैसे—नवजात।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।
ज़ात–संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर। देह। दे० "जाति"।
जातक–संज्ञा पुं० १. बच्चा। २. बत्तख। ३. भिक्षु। ४. फलित ज्योतिष का एक भेद। ५. वे बौद्ध कथाएँ जिनमें महात्मा बुद्धदेव के पूर्व जन्मों की बातें हैं। बौद्ध ग्रंथ।
जातकर्म्म–संज्ञा पुं० हिन्दुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।
जातना*–संज्ञा स्त्री० दे० "यातना"।
जात पाँत–संज्ञा स्त्री० जाति। बिरादरी।
जातरूप–संज्ञा पुं० १. सोना। २. धतूरा।
जातवेद–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. सूर्य्य। ३. अग्नि। ४. एक वृक्ष। चीते का पेड़।
जाता–संज्ञा स्त्री० कन्या। पुत्री।
वि० उत्पन्न।
जातान्ध–वि० जन्म से अन्धा। जन्मान्ध।
जातापत्या–संज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्री। जिस स्त्री को बच्चा पैदा हुआ हो।
जाति–संज्ञा स्त्री० १. जन्म। पैदाइश।

२. समाज का विभाग। ३. धर्म, वंश-परंपरा या निवासस्थान आदि के अनुसार मनुष्य-समाज का विभाग। ४. कोटि। वर्ग। ५. साधारण सत्ता। ६. वर्ण। ७. कुल। वंश। ८. गोत्र। ९. मात्रिक छंद। १०. ग्राम। ११. चमेली। १२. जायफल।
जातिकोश–संज्ञा पुं० जावित्री।
जातिच्युत–वि० जाति से गिरा या निकाला हुआ। जाति-बहिष्कृत।
जाति पाँति–संज्ञा स्त्री० जाति या पंक्ति। वर्ण और उसके उपविभाग।
जातिवैर–संज्ञा पुं० स्वाभाविक वैर। जैसे नकुल और सर्प का।
जातिभ्रंश–संज्ञा पुं० जाति-विनाश।
जातिभ्रष्ट–वि० दे० "जातिच्युत"।
जातिसंकर–संज्ञा पुं० दोगला। वर्णसंकर।
जाती–संज्ञा स्त्री० १. चमेली की जाति का एक फूल। जायफल। २. छोटा आँवला। ३. मालती।
जाती–वि० [अ०] १. व्यक्तिगत। २. अपना। निज का।
जातीय–वि० जाति-संबंधी।
जातीयता–संज्ञा स्त्री० जाति की ममता।
जातु–अव्य० कदाचित्।
जातुक–संज्ञा पुं० हींग।
जातुज–संज्ञा पुं० गर्भवती स्त्री की इच्छा।
जातुधान–संज्ञा पुं० राक्षस। असुर।
जातू–संज्ञा पुं० वज्र।
जातेष्टि–संज्ञा पुं० पुत्र उत्पन्न होने का योग। जातकर्म का एक अंग।
जात्य–वि० कुलीन। सुंदर। श्रेष्ठ।
जात्रा–संज्ञा स्त्री० दे० "यात्रा"।
जादव*†–संज्ञा पुं० दे० "यादव"।
जादवपति*†–संज्ञा पुं० यादवपति। श्रीकृष्णचंद्र।
जादसपति*†–संज्ञा पुं० जल-जंतुओं का स्वामी, वरुण।
जादू–संज्ञा पुं० १. आश्चर्य्यजनक कृत्य। इंद्रजाल। तिलस्म। अद्भुत खेल या कृत्य। २. टोना। टोटका। ३. दूसरे को मोहित करने की शक्ति। मोहिनी।
जादूगर–संज्ञा पुं० [स्त्री० जादूगरनी] जादू करनेवाला।
जादूगरी–संज्ञा स्त्री० जादू करने की क्रिया। जादूगर का काम।
जादौ*†–संज्ञा पुं० दे० "यादव"। यदुवंशी।
जादौराय*†–संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचंद्र।
जान–संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। जानकारी। २. खयाल। अनुमान। ३. दे० "यान"। सवारी। ४. प्राण। जीव। प्राणवायु। दम। ५. बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य। ६. सार। तत्त्व। ७. अच्छा या सुन्दर करनेवाली वस्तु। शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। वि० सुजान। जानकार। चतुर।
मुहा०–जान के लाले पड़ना=प्राण बचना कठिन दिखाई देना। प्राण जाने की नौबत। जान पहचान=परिचय। जान को जान न समझना=अत्यन्त अधिक कष्ट या परिश्रम सहना। जान खाना=तंग करना। बारबार घेरकर दिक करना। जान छुड़ाना या बचाना=१. प्राण बचाना। २. किसी झंझट से छुटकारा पाना। संकट टालना। (किसी पर) जान जाना=किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना। जान जोखों=प्राणहानि की आशंका। प्राण जाने का डर। जान निकलना=१. प्राण निकलना। मरना। २. भय के मारे प्राण सूखना। जान पर खेलना=प्राणों को भय में डालना। जान को जोखों में डालना। जान से जाना=प्राण खोना। मरना। जाना आना=शोभा बढ़ना।
जानकार–वि० [संज्ञा जानकारी] १. जाननेवाला। अभिज्ञ। २. विज्ञ। चतुर।
जानकी–संज्ञा स्त्री० जनक की पुत्री। सीता।
जानकी-जानि–संज्ञा पुं० श्री रामचंद्र।
जानकी-जीवन–संज्ञा पुं० श्री रामचंद्र।
जानकीनाथ–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।
जानदार–वि० जिसमें जान हो। सजीव। जीवधारी।
जाननहार*–संज्ञा पुं० समझनेवाला। जानकार। जाननेवाला।
जानना–क्रि० स० १. ज्ञान प्राप्त करना।

पहचानना। मालूम करना। २. सूचना पाना। खबर रखना। ३. अनुमान करना। सोचना।

जानपद–संज्ञा पुं० १. जनपद-संबंधी वस्तु। २. जनपद का निवासी। लोक। मनुष्य। ३. देश। ४. मालगुजारी।

जानपना*†–संज्ञा पुं० बुद्धिमत्ता। चतुराई। जानकारी।

जानपनी*–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमानी। चतुराई।

जानमनि*–संज्ञा पुं० ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बड़ा ज्ञानी पुरुष।

जानराय–संज्ञा पुं० जानकारों में श्रेष्ठ। बड़ा बुद्धिमान्।

जानवर–संज्ञा पुं० [फा०] १. प्राणी। जीव। २. पशु। जंतु। हैवान।

जानशीन–संज्ञा पुं० [फा०] उत्तराधिकारी।

जानहार–वि० जाननेवाला। जवैया। गमनशील।

जानहु–अव्य० मानो।

जाना–क्रि० अ० १. गमन करना। बढ़ना। २. हटना। प्रस्थान करना। ३. अलग होना। दूर होना। ४. हाथ या अधिकार से निकलना। ५. खो जाना। गायब होना। गुम होना। ६. बीतना। गुजरना। ७. नष्ट होना। ८. बहना। जारी होना। *†क्रि० स० उत्पन्न करना। जन्म देना। पैदा करना।

मुहा०—जाने दो=१. क्षमा करो। २. चर्चा छोड़ो। प्रसंग छोड़ो। किसी बात पर जाना=किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना। गया घर=दुर्दशाप्राप्त घराना। गया-बीता =१. दुर्दशा प्राप्त। २. निकृष्ट।

जानि–संज्ञा स्त्री० स्त्री। भार्या। *वि० ज्ञानी। जानकार।

जानिब–संज्ञा स्त्री० (अ०) तरफ। ओर।

यौ०—जानिबदार=पक्षपाती। तरफदार।

जानी–वि० [फा०] जान से संबंध रखनेवाला। संज्ञा स्त्री० प्राणप्यारी।

यौ०—जानी दुश्मन=जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त=दिली दोस्त।

जानु–संज्ञा पुं० जाँघ और पिंडली के मध्य का भाग। घुटना। जाँघ। रान।

जानुपाणि–क्रि० वि० घुटरुवों। पैयाँ पैयाँ। घुटनों और हाथों के बल (जैसे बच्चे चलते हैं)।

जानुफलक–संज्ञा पुं० खुटिया। मोटा घुटना। पटरे के समान जानु।

जानो–अव्य० मानो। जैसे।

जाप–संज्ञा पुं० १. मंत्र की विधिपूर्वक आवृत्ति। जप। नाम आदि जपने की क्रिया। २. जपने की थैली या माला।

जापक–संज्ञा पुं० जप करनेवाला।

जापा–संज्ञा पुं० सौरी। प्रसूतिका-गृह।

जापी–संज्ञा पुं० दे० "जापक"।

जाफ†–संज्ञा पुं० [अ०] १. बेहोशी। २. घुमरी। ३. मूर्च्छा। थकावट।

जाफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] भोज। दावत।

जाफ़रान–संज्ञा पुं० [अ०] केसर।

जाबाल–संज्ञा पुं० एक मुनि जिनकी माता का नाम जबाला था।

जाबालि–संज्ञा पुं० कश्यप-वंशीय एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु थे।

जाबिर–वि० ज्यादती या जब्र करनेवाला। प्रचंड। अत्याचार करनेवाला।

जाब्ता–संज्ञा पुं० [अ०] नियम। कायदा। व्यवस्था। कानून।

यौ०—जाब्ता दीवानी=सर्वसाधारण के परस्पर आर्थिक और साम्पत्तिक व्यवहार से संबंध रखनेवाला कानून। जाब्ता फौजदारी=दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला कानून।

जाम–संज्ञा पुं० याम। पहर। प्रहर। चार घड़ी। ७½ घड़ी या तीन घंटे का समय। "जामुन"। [फा०] प्याला। कटोरा।

जामगी–संज्ञा पुं० बंदूक़ या तोप का फलीता।

जामदग्न्य–संज्ञा पुं० जमदग्नि के पुत्र (परशुराम)।

जामदानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।

जामन–संज्ञा पुं० १. वह थोड़ा सा दही या

खट्टा पदार्थ जिसे दूध में डालकर दही जमाते हैं। २. जामुन।
जामना—क्रि० अ० दे० "जमना"।
जामनी—वि० दे० "यावनी"।
जामवंत—संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।
जामा—संज्ञा पुं० [फा०] १. पहनावा। घेर-दार अंगा। कपड़ा। वस्त्र। २. चुननदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा।
मुहा०—जामे से बाहर होना=आपे से बाहर होना। अत्यंत क्रोध करना।
जामाता या **जामातु**—संज्ञा पुं० जामातृ। दामाद। जमाई। कन्या का पति।
जामि—संज्ञा स्त्री० बहिन। लड़की। पुत्रवधू। अपने सम्बन्ध या गोत्र की स्त्री।
जामिक*—संज्ञा पुं० पहरुआ। पहरा देने-वाला। रक्षक। यामिक।
जामिन, जामिनदार—संज्ञा पुं० जमानत करनेवाला। जिम्मेदार। प्रतिभू।
जामिनी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "यामिनी"। रात। रात्रि। २. यवनों की भाषा।
संज्ञा स्त्री० दे० "जमानत"।
जामुन—संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़ और उसके फल जो बैंगनी या काले होते हैं।
जामुनी—वि० जामुन के रंग का। बैंगनी या काला।
जामेय—संज्ञा पुं० भांजा।
जामेवार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रकार का दुशाला जिसकी सारी जमीन पर बूटे रहते हैं। २. इसी प्रकार की छींट।
जाय*†—अव्य० वृथा। निष्फल।
वि० उचित। वाजिब। ठीक।
जायक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० जायक़े-दार] खाने-पीने की चीजों का मजा। स्वाद।
जायक़ेदार—वि० स्वादिष्ट। मजेदार।
जायचा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जन्मपत्री।
जायज़—वि० [अ०] उचित। मुनासिब।
जायजा—संज्ञा पुं० [अ०] १. जाँच। पड़ताल। २. हाजिरी। गिनती।
जायद—वि० [फा०] ज्यादा। अधिक। अतिरिक्त बढ़ा हुआ।
जायदाद—संज्ञा स्त्री० [फा०] संपत्ति। भूमि या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो।
जायनमाज़—संज्ञा स्त्री० [फा०] छोटी दरी या बिछौना जिस पर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मुसल्ला।
जायपत्री—संज्ञा स्त्री० दे० "जावित्री"।
जायफल—संज्ञा पुं० अखरोट की तरह का लेकिन उससे छोटा एक सुगन्धित फल जिसका व्यवहार औषध और मसाले आदि में होता है।
जायल—वि० जिसका नाश हो गया हो। विनष्ट। बर्बाद।
जायसी—वि० १. रायबरेली जिले के जायस नगर का रहनेवाला। २. हिन्दी के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि जिनका पूरा नाम मलिक मुहम्मद जायसी था। इनका 'पद्मावत' हिन्दी का प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ है।
जाया—संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री। पत्नी।
वि० (फा०) खराब। नष्ट।
जायाजीव—संज्ञा पुं० १. नट। चारण। २. वेश्या-पति।
जायानुजीवी—संज्ञा पुं० स्त्री की कमाई खाने-वाला। नट। वेश्यापति।
जायापति—संज्ञा पुं० दम्पती। नरनारी। स्त्री-पुरुष।
जायु—संज्ञा पुं० दवा।
वि० जीतनेवाला।
जाये—क्रि० स० उत्पन्न किएहुए।
संज्ञा पुं० सन्तान। बेटा। पुत्र।
जार—संज्ञा पुं० पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष। उपपति। यार। आशना।
वि० नाश करनेवाला।
ज़ार—संज्ञा पुं० रूस के भूतपूर्व सम्राटों की उपाधि।
जारकर्म्म—संज्ञा पुं० व्यभिचार।
जारगर्भ—संज्ञा पुं० उपपति का गर्भ।
जारज—संज्ञा पुं० किसी स्त्री की वह संतान जो उसके उपपति से उत्पन्न हुई हो।
जारज योग—संज्ञा पुं० फलित ज्योतिष में

एक योग जिससे यह सिद्धान्त निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के जार या उपपति के वीर्य्य से उत्पन्न है।
जारण–संज्ञा पुं० जलाना। भस्म करना।
जारन†–संज्ञा पुं० १. ईंधन। २. जलाने की क्रिया या भाव।
जारना†–क्रि० स० दे० "जलाना"।
जारिणी–संज्ञा स्त्री० दुश्चरित्रा स्त्री। बदचलन औरत। व्यभिचारिणी स्त्री।
जारा–क्रि० स० जलाया हुआ। भस्म किया। संज्ञा पुं० यार। उपपति।
जारी–वि० [अ०] १. बहता हुआ। प्रवाहित। २. चलता हुआ। प्रचलित। संज्ञा स्त्री० पर-स्त्री-गमन। छिनाला।
जारोब–संज्ञा स्त्री० झाड़ू। बढ़नी।
जालंधरी विद्या–संज्ञा स्त्री० मायिक विद्या। माया। इंद्रजाल।
जालंध्र–संज्ञा पुं० झरोखे की जाली।
जाल–संज्ञा पुं० १. तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियां और चिड़ियों आदि को पकड़ने में होता है। २. एकमें बुने हुए या गुथे हुए बहुत से तारों अथवा रेशों का समूह। ३. किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति। ४. मकड़ी का जाला। ५. समूह। ६. इंद्रजाल। ७. एक प्रकार की तोप। ८. फ़रेब। धोखा। झूठी कारवाई। ९. अहंकार। १०. खार। ११. कदम का पेड़। १२. फूल की कली।
जालक–संज्ञा पुं० १. जाल। २. कली। ३. समूह। ४. झरोखा। ५. एक आभूषण। ६. केला। ७. घोंसला। ८. अभिमान।
जालदार–वि० जिसमें जाल की तरह पास पास बहुत से छेद हों।
जालपाद–संज्ञा पुं० हंस।
जालरंध्र–संज्ञा पुं० झरोखा।
जालसाज–संज्ञा पुं० [अ०] धोखेबाज। वह जो दूसरों को धोखा देने के लिए किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करे।
जालसाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] धोखा या जाल करने का काम। दगाबाजी।
जाला–संज्ञा पुं० १. मकड़ी का जाल या फाँद। २. आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है। ३. घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। ४. पानी रखने का एक बर्तन।
जालाक्ष–संज्ञा पुं० झरोखा।
जालिक–संज्ञा पुं० १. जाल बुननेवाला। धीवर। मछुवा। २. बाज़ीगर। ३. मकड़ी। ४. मच्छीमार।
जालिका–संज्ञा स्त्री० १. जाली। फंदा। २. समूह। दल। ३. कवच। ४. मकड़ी। ५. लोहा। ६. विधवा स्त्री।
ज़ालिम–वि० [अ०] ज़ुल्म करनेवाला। अत्याचारी।
जालिया–वि० जालसाज। धोखा देनेवाला। जालसाजी करनेवाला।
जाली–संज्ञा स्त्री० १. जाल करनेवाला। धोखा देनेवाला। २. लकड़ी, पत्थर आदि में बना हुआ छोटे छोटे छेदों का समूह। ३. कसीदे का एक प्रकार का काम। ४. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद ही छेद होते हैं। ५. कच्चे आम के अंदर गुठली के ऊपर का तंतु-समूह। ६. एक तरह की नाव। ७. धीवर। झंझरी। झरोखा। वि० नक़ली। बनावटी।
जाल्य–संज्ञा पुं० शिव।
जावक*†–संज्ञा पुं० पैरों में लगाने का लाल रंग। महावर। अलक्तक।
जावका–संज्ञा स्त्री० लौंग। लौंग का फूल।
जावन*†–संज्ञा पुं० दे० "जामन"।
जावनी–संज्ञा स्त्री० अजवाइन।
जावर†–संज्ञा पुं० एक प्रकार की खीर।
जावा–संज्ञा पुं० हिन्दमहासागर का एक उपद्वीप।
जावित्री–संज्ञा स्त्री० जायफल के ऊपर का छिलका, जो औषध के काम में आता है।
जाषनी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।
जासु†*–वि० जिसका।
जासूस–संज्ञा पुं० [अ०] गुप्तचर। गुप्त रूप से किसी बात, विशेषतः अपराध आदि का पता लगानेवाला। भेदिया। मुख़बिर।

जासूसी–संज्ञा स्त्री० गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना। जासूस का काम करना।

जाह–संज्ञा पुं० १. घबड़ाहट। २. आपत्ति। कसमस।

जाहि–सर्व० जिसको। जिस किसी को। जिसे।

जाहिर–वि० [अ०] १. जो सबके सामने हो। प्रकट। स्पष्ट। प्रकाशित। खुला हुआ। २. विदित। जाना हुआ।

जाहिरदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] केवल दिखावे के लिए किया गया कार्य।

जाहिरा–क्रि० वि० [अ०] देखने में। प्रकट रूप में। प्रत्यक्ष में।

जाहिल–वि० १. मूर्ख। अज्ञान। नासमझ। २. अनपढ़। विद्याहीन।

जाही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुगंधित फूल।

जाह्नवी–संज्ञा स्त्री० जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा।

जिंक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जस्ते का खार।

जिंगनी, जिंगिनी–संज्ञा स्त्री० जिगिन का पेड़।

जिंद–संज्ञा पुं० [अ०] भूत। प्रेत। जिन।

जिंदगानी–संज्ञा स्त्री० जीवन। जिंदगी।

जिंदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जीवन। २. जीवन-काल। आयु।

मुहा०—जिंदगी के दिन पूरे करना=१. दिन काटना। जीवन बिताना। आसन्न मृत्यु होना।

जिंदा–वि० [फा०] जीवित। जीता हुआ।

जिंदादिल–वि० [संज्ञा जिंदादिली] खुश-मिजाज। विनोदप्रिय। दिल्लगीबाज।

जिंवाना–क्रि० स० दे० "जिमाना"। भोजन कराना।

जिंस–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. प्रकार। किस्म। भाँति। २. चीज। वस्तु। द्रव्य। ३. सामग्री। सामान। ४. अनाज। गल्ला। रसद।

जिंसवार–संज्ञा पुं० [फा०] पटवारियों का वह कागज जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।

जिआना†*–क्रि० स० दे० "जिलाना"।

जिउ†–संज्ञा पुं० दे० "जीव"।

जिउका†–संज्ञा स्त्री० दे० "जीविका"।

जिउकिया–संज्ञा पुं० १. जीविका करनेवाला। रोजगारी। २. पहाड़ी लोग जो जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।

जिउतिया–संज्ञा स्त्री० दे० "जिताष्टमी"। पुत्रवती स्त्रियों का एक व्रत।

जिक्र–संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। प्रसंग।

जिगजिगिया–वि० चापलूस। खुशामदी।

जिगजिगी–संज्ञा स्त्री० खुशामद। अनुनय।

जिगना–संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष।

जिगीषा–संज्ञा स्त्री० जीतने की इच्छा। उद्योग। प्रयत्न। व्यवसाय।

जिगीषु–वि० जीतने की इच्छा करनेवाला। उद्योगी।

जिगर–संज्ञा पुं० [फा०] १. कलेजा। साहस। हिम्मत। २. सत्त। सार।

जिगरा–संज्ञा पुं० साहस। हिम्मत। जीवट।

जिगरी–वि० [फा०] १. दिली। भीतरी। २. अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्न-हृदय।

जिघत्सा–संज्ञा स्त्री० भोजन करने की इच्छा।

जिघत्सु–वि० भोजन की इच्छा करनेवाला। भूखा। क्षुधित।

जिघांसु–वि० वध की इच्छा करनेवाला। घातक। नृशंस। क्रूर।

जिघासा–संज्ञा स्त्री० क्षुधा। भूख। भोजन करने की इच्छा।

जिच, जिच्च–संज्ञा स्त्री० १. मजबूरी। गतिरोध। २. पा में वह अवस्था जब दोनों पक्ष अपनी बात पर अड़े रहें और समझौते का मार्ग दिखाई न दे। ३. शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो।

वि० विवश। मजबूर। तंग।

जिजीविषु–वि० जीने की इच्छा करनेवाला।

जिज्ञासा–संज्ञा स्त्री० १. जानने की इच्छा। ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा। २. पूछ-ताछ। प्रश्न। तहकीकात।

जिज्ञासु–वि० जानने की इच्छा रखनेवाला। ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक। अन्वेषक।
जिठाई–संज्ञा स्त्री० जेठापन। बड़ापन।
जिठानी–संज्ञा स्त्री० जेठानी। पति के बड़े भाई की स्त्री।
जित्–वि० जीतनेवाला। जेता।
जित–वि० जीता हुआ।
संज्ञा पुं० जीत। विजय।
*†–क्रि० वि० जिधर। जिस ओर।
जितना–क्रि० वि० [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा का। जिस परिमाण का। जिस मात्रा में। जिस परिमाण में।
जितयोनि–संज्ञा पुं० हिरन। मृग। हरिण।
जितरा–संज्ञा पुं० वह हलवाहा जिसे काम की मजदूरी न देकर खेत जोतने के लिए हल-बैल देते हैं।
जितवना*†–क्रि० स० दे० "जताना"।
जितवाना–क्रि० स० दे० "जिताना"।
जितवार†–वि० जीतनेवाला।
जितवैया†–वि० जीतनेवाला।
जितशत्रु–संज्ञा पुं० शत्रु पर विजय पानेवाला। विजयी।
जिता–संज्ञा पुं० हूँड़। वह पारस्परिक सहायता जो किसान एक दूसरे की जोताई-बुआई में किया करते हैं।
जितात्मा–वि० जितेन्द्रिय। जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो।
जिताना–क्रि० स० [जीतना का प्रे०] जीतने में सहायता करना।
जितामित्र–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. विजयी। जिसने शत्रु जीत लिया है।
जिताहार–संज्ञा पुं० जिसने आहार (भोजन) पर विजय प्राप्त कर ली हो।
जिताष्टमी–संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक व्रत जिसे पुत्रवती स्त्रियाँ आश्विन कृष्णाष्टमी के दिन करती हैं। जिउतिया।
जितेंद्रिय या **जितेंद्री**–वि० १. जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। २. शांत।
जिते*–वि० जितने (संख्या-सूचक)।

फा० ३८

जितै*–क्रि० वि० जिधर। जिस ओर।
जितैया–वि० जीतनेवाला।
जितो*†–क्रि० वि० जितना(परिमाण-सूचक)। जिस मात्रा में। जितना।
जित्वर–वि० जीतनेवाला। विजयी।
जित्वरी–संज्ञा पुं० काशी का एक प्राचीन नाम।
जिद–संज्ञा स्त्री० [अ०] (वि० ज़िद्दी) हठ। अड़। दुराग्रह।
ज़िद्दी–वि० [फ़ा०] १. जिद करनेवाला। हठी। २. दूसरे की बात न माननेवाला। दुराग्रही।
जिधर–क्रि० वि० जिस ओर। जहाँ।
जिन–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. सूर्य्य। ३. बुद्ध। ४. जैनों के तीर्थंकर। ५. भूत-प्रेत।
सर्व० "जिस" का बहु०।
जिना–संज्ञा पुं० [अ०] व्यभिचार।
जिनाकार–वि० [फा०] [संज्ञा जिनकारी] व्यभिचारी।
जिना बिल्जब्र–संज्ञा पुं० [अ०] किसी स्त्री के साथ उसकी सम्मति के विरुद्ध बलात् सम्भोग करना। बलात्कार।
जिना–अव्य० मत। नहीं।
जिनिस–संज्ञा स्त्री० दे० "जिंस"।
जिन्ह†*–सर्व० दे० "जिन"।
जिब्भा, जिभ्या–संज्ञा स्त्री० दे० "जिह्वा"।
जिभला–वि० चटोरा।
जिमनास्टिक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार की अंग्रेजी कसरत। जैसे डंडे पर कसरत करना आदि।
जिमाना–क्रि० स० जीमना। खाना। खिलाना। भोजन कराना।
जिमि*–क्रि० वि० जिस प्रकार से। जैसे। यथा। ज्यों।
जिमींदार–संज्ञा पुं० दे० "जमींदार"।
जिमीकन्द–संज्ञा पुं० सूरन।
जिम्मा–संज्ञा पुं० [अ०] १. भार-ग्रहण। २. सपुर्दगी। देख-रेख। संरक्षा।
मुहा०–किसी के जिम्मे रुपया आना, निकलना या होना=किसी के ऊपर रुपया ऋण-स्वरूप होना। देना ठहरना।

ज़िम्मावार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो किसी बात के लिए ज़िम्मा ले । जवाबदेह । उत्तरदायी ।

ज़िम्मावारी–संज्ञा स्त्री० १. किसी बात के करने का भार । उत्तरदायित्व । जावबदेही । २. सपुर्दगी । रक्षा ।

ज़िम्मेदार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िम्मावार" ।

ज़िम्मेवार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िम्मावार" ।

जिय†–संज्ञा पुं० जीव । मन । चित्त ।

जियन–संज्ञा पुं० जीवन ।

जियबधा–संज्ञा पुं० दे० "जल्लाद" ।

जियरा*‡–संज्ञा पुं० जीव । प्राण ।

ज़ियान–संज्ञा पुं० [अ०] १. घाटा । हानि । नुकसान । २. बर्बाद । नष्ट ।

जियाना†*–क्रि० स० १. मिलाना । जीवित रखना । २. पालना ।

ज़ियाफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आतिथ्य । मेहमानदारी । २. भोज । दावत ।

ज़ियारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दर्शन । २. तीर्थ-दर्शन ।

मुहा०–ज़ियारत लगना=भीड़ लगना ।

जियारी†*–संज्ञा स्त्री० १. जीवन । जिंदगी । २. जीविका । ३. साहस । जीवट ।

जिरगा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. झुंड । गरोह । २. मंडली । दल ।

जिरह–संज्ञा स्त्री० १. हुज्जत । २. ऐसी पूछ-ताछ, जो सत्यता की जाँच के लिए की जाए ।

ज़िरह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कवच । वर्म । बख्तर ।

यौ०–ज़िरह-पोश=जो कवच पहने हो ।

ज़िरही–वि० जो ज़िरहबख्तर पहने हुए हो । कवचधारी ।

ज़िराअत–संज्ञा स्त्री० खेती ।

जिराफ़ा–संज्ञा पुं० दे० "जुराफा" ।

ज़िला–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चमक-दमक । २. माँजकर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का कार्य ।

संज्ञा पुं० १. किसी प्रांत का वह भाग जो एक कलक्टर के प्रबंध में हो । २. किसी इलाके का विभाग या अंश ।

मुहा०–जिला देना=चमकाना । सिकली करना ।

यौ०–जिलाकार=सिकलीगर ।

ज़िलादार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह कर्मचारी जिसे जमींदार अपने इलाके के किसी भाग में लगान वसूल करने के लिए नियुक्त करता है । २. जो नहर, अफीम आदि संबंधी किसी हलके में काम करने के लिए नियुक्त कर्मचारी हो ।

ज़िलाधीश–संज्ञा पुं० इस शब्द का प्रयोग चल निकला है, पर उर्दू और हिन्दी शब्द के मिश्रण के कारण इसे अशुद्ध मानते हैं । शुद्ध शब्द ज़िला मजिस्ट्रेट है । दे० "ज़िला मजिस्ट्रेट" ।

ज़िला मजिस्ट्रेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ज़िले का सबसे बड़ा अधिकारी । कलक्टर । डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट । डिप्टी कमिश्नर ।

जिलाना–क्रि० स० १. जीवन देना । ज़िंदा करना । जीवित करना । †२. पालना । पोसना । ३. मरने से बचाना । प्राण-रक्षा करना ।

जिलासाज़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] हथियारों आदि पर चमक चढ़ानेवाला । सिकलीगर ।

जिलाह*–संज्ञा पुं० जल्लाद । अत्याचारी ।

ज़िलेदार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िलादार" ।

जिल्द–संज्ञा स्त्री० [अ०] (वि० जिल्दी) १. खाल । चमड़ा । २. ऊपर का चमड़ा । त्वचा । ३. किसी किताब के ऊपर लगाई जानेवाली दफ्ती । ४. पुस्तक की एक प्रति । ५. पुस्तक का वह भाग, जो पृथक् सिला हो । खंड । भाग ।

जिल्दगर–संज्ञा पुं० जिल्द बाँधनेवाला । दफ्तरी ।

जिल्दबंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो । जिल्द बाँधनेवाला ।

जिल्दसाज़–संज्ञा पुं० दे० "जिल्दबंद" ।

ज़िल्लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनादर । अपमान । तिरस्कार । बेइज्जती । २. दुर्गति । दुर्दशा ।

मुहा०–ज़िल्लत उठाना या पाना=१. अपमानित होना । २. तुच्छ ठहरना ।

जिव†–संज्ञा पुं० दे० "जीव"।
जिवनमूरी या जिवनमूरि–संज्ञा स्त्री० संजीवनी औषध। जिलानेवाली बूटी।
जिवाना–क्रि० स० १. दे० "जिलाना"। २. दे० "जिमाना"।
जिष्णु–वि० हमेशा जीतनेवाला। विजयी।
संज्ञा पुं० १. इन्द्र। २. सूर्य। ३. अर्जुन। ४. विष्णु। ५. कृष्ण।
जिस–वि० विभक्तियुक्त 'जो' का एक रूप। जैसे—जिस पुरुष ने।
सर्व० 'जो' का वह रूप, जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
जिस्ता–संज्ञा पुं० १. दे० "जस्ता"। ‡२. दे० "दस्ता"।
जिस्म–संज्ञा पुं० शरीर। देह।
जिह*†–संज्ञा स्त्री० धनुष का चिल्ला। रोदा। ज्या।
जिहन–संज्ञा पुं० [अ०] समझ। बुद्धि।
मुहा०–जिहन खुलना=बुद्धि का विकास होना। जिहन लड़ाना=खूब सोचना।
जिहाद–संज्ञा पुं० मजहबी लड़ाई। मुसलमानों का धार्मिक युद्ध। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियों से अपने धर्म्म के प्रचार आदि के लिए करते थे।
जिहालत–संज्ञा स्त्री० निरक्षरता। मूर्खता।
जिहासा–संज्ञा स्त्री० त्यागने की इच्छा।
जिहीर्षा–संज्ञा स्त्री० हरण करने की इच्छा।
जिह्म–वि० १. दुष्ट। कपटी। २. वक्र। टेढ़ा। ३. खिन्न। अप्रसन्न।
संज्ञा पुं० १. तगर का फूल। २. अधर्म।
जिह्वा–संज्ञा स्त्री० जीभ। जबान।
जिह्वाग्र–संज्ञा पुं० जीभ की नोक।
मुहा०–जिह्वाग्र करना=कंठस्थ करना। जबानी याद करना।
जिह्वामूल–संज्ञा पुं० जीभ की जड़ या पिछला स्थान।
जिह्वामूलीय–वि० १. वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो। २. जिह्वा के मूलस्थान से सम्बद्ध।
जींगन†–संज्ञा पुं० जुगनू।
जी–संज्ञा पुं० १. जीव। प्राण। २. मन। दिल। तबीअत। चित्त। ३. हिम्मत। दम। जीवट। ४. संकल्प। विचार। इच्छा। चाह।
अव्य० एक सम्मानसूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है, अथवा किसी प्रश्न या सम्बोधन के उत्तर में प्रयुक्त होता है।
मुहा०–जी अच्छा होना=चित्त स्वस्थ होना। नीरोग होना। किसी पर जी आना=किसी से प्रेम होना। जी उचटना=चित्त न लगना। मन हटना। जी उड़ जाना=भय, आशंका आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। जी करना=१.हिम्मत करना। साहस करना। २. इच्छा होना। जी का बुखार निकलना=क्रोध, शोक, दुःख आदि के वेग को शांत करना। (किसी के) जी को जी समझना=किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना=मन फिर जाना या विरक्त होना। घृणा होना। जी खोलकर=१. बिना किसी संकोच के। बेधड़क। २. जितना जी चाहे। यथेष्ट। जी चलना=जी चाहना। इच्छा होना। जी चुराना=हीला-हवाली करना। किसी काम से भागना। जी छोटा करना=१. मन उदास करना। २. उदारता छोड़ना। कंजूसी करना। जी टँगा रहना या होना=चिंतित रहना। जी डूबना=चित्त स्थिर न रहना। चित्त व्याकुल होना। जी दुखना=चित्त को कष्ट पहुँचना। जी देना=१. प्राण देना। मरना। २. अत्यंत प्रेम करना। जी धँसा जाना=दे० "जी बैठा जाना"। जी धड़कना=भय या आशंका से चित्त स्थिर न रहना। कलेजा धक-धक करना। जी निढाल होना=चित्त का स्थिर न रहना। चित्त ठिकाने न रहना। जी पर आ बनना=प्राण बचाना कठिन हो जाना। जी पर खेलना=जान को आफत में डालना। जी बहलना=चित्त का आनंदपूर्वक लीन होना। मनोरंजन होना। जी बिगड़ना=जी मचलाना। कै

करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना=किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना। किसी के प्रति घृणा या क्रोध करना। जी भरना=चित्त संतुष्ट होना। तृप्ति होना। दूसरे का संदेह दूर करना। खटका मिटाना। जी भरकर=मनमाना। यथेष्ट। जी भर आना=चित्त में दुःख या करुणा का उद्रेक होना। दुःख या दया उमड़ना। जी मचलाना या मतलाना=उलटी या कै करने की इच्छा होना। जी में आना=चित्त में विचार उत्पन्न होना। चाहना। स्मरण होना। जी में जी आना=आपत्ति से छुटकारा पाना। (किसी का) जी रखना=मन रखना। इच्छा पूरी करना। जी लगना=मन का किसी विषय में योग देना। चित्त प्रवृत्त होना। (किसी से) जी लगना=किसी से प्रेम होना। जी से=जी लगाकर। ध्यान देकर। जी से उतर जाना=दृष्टि से गिर जाना। भला न जँचना। जी से जाना=मर जाना।

जीअ, जीउ*–संज्ञा पुं० दे० "जी", "जीव"।

जीअन*–संज्ञा पुं० दे० "जीवन"। जिन्दगी।

जीगन–संज्ञा पुं० दे० "जुगनू"।

जीजा–संज्ञा पुं० बड़ी बहिन का पति। बड़ा बहनोई।

जीजी–संज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन।

जीत–संज्ञा स्त्री० १. जय। विजय। फतह। विपक्षी के विरुद्ध सफलता। २. किसी ऐसे कार्य्य में सफलता, जिसमें दो या अधिक प्रतिद्वन्द्वी हों। ३. लाभ।

जीतना–क्रि० स० १. विपक्षी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। विजय प्राप्त करना। २. किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त करना जिसमें दो या अधिक प्रतिद्वन्द्वी हों।

जीता–वि० प्राणधारी। चेतन। १. जीवित। जो मरा न हो। २. तौल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।

जीन*–वि० १. जर्जर। कटा-फटा। २. वृद्ध। बुड्ढा।

जीन–संज्ञा पुं० [फा०] १. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। काठी। २. पलान। कजावा। ३. एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा।

जीनपोश–संज्ञा पुं० [फा०] जीन के ऊपर का कपड़ा।

जीनसवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े पर जीन रखकर सवार होने का कार्य।

जीना–क्रि० अ० १. जीवित रहना। जिंदा रहना। २. प्रसन्न होना। प्रफुल्लित होना। संज्ञा पुं० [फा०] सीढ़ी।

मुहा०–जीता-जागता=जीवित और सचेत। भला चंगा। जीती मक्खी निगलना=जान बूझकर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना। जीते जी मर जाना=जीवन में ही मृत्यु से बढ़कर कष्ट भोगना। जीना भारी हो जाना=जीवन का आनंद जाता रहना।

जीभ–संज्ञा स्त्री० जिह्वा। मुँह के भीतर रहनेवाली लंबे चिपटे मांस-पिंड की वह इंद्रिय जिससे रसों का अनुभव और शब्दों का उच्चारण होता है। जबान। रसना।

मुहा०–जीभ चलना=भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने के लिए इच्छा। चटोरेपन की इच्छा होना। जीभ निकालना=जीभ खींचना। जीभ उखाड़ लेना। जीभ पकड़ना=बोलने न देना। बोलने से रोकना। जीभ बंद करना=बोलना बंद करना। जीभ हिलाना=मुँह से कुछ बोलना। छोटी जीभ=गलशुंडी। किसी की जीभ के नीचे जीभ होना=किसी का अपनी कही हुई बात को बदल जाना।

जीभा–संज्ञा पुं० १. जीभ के आकार की कोई वस्तु; जैसे—निब। २. पशुओं का एक रोग।

जीभी–संज्ञा स्त्री० १. जीभ साफ करने की वस्तु। २. निब। जीभ साफ करने की क्रिया। ३. छोटी जीभ। गलशुंडी।

जीमना–क्रि० स० भोजन करना। खाना।

जीमार–वि० घातक। नृशंस। मारनेवाला।

जीमूत–संज्ञा पुं० १. पर्वत। २. बादल। ३. इंद्र। ४. सूर्य। ५. शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम। ६. एक प्रकार का

छन्द । ७. पोषण करनेवाला । ८. एक लता । ९. मोथा । नागरमोथा । १०. विराट की सभा का एक पहलवान।

जीमूतवाहन–संज्ञा पुं० १. इंद्र । २. प्रसिद्ध भारतीय विद्वान् जिन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया था । आप ११वीं शती के प्रथम भाग में उत्पन्न हुए थे । ३. शालिवाहन राजा का पुत्र ।

जीमूतवाही–संज्ञा पुं० धुवाँ।

जीय–संज्ञा पुं० दे० "जी"।

जीयट–संज्ञा पुं० दे० "जीवट"।

जीयदान–संज्ञा पुं० जीवनदान । प्राणदान ।

जीर–संज्ञा पुं० १. जीरा । २. केसर । ३. खड्ग । तलवार । [फा० जिरह] कवच ।

*वि० जीर्ण। पुराना।

जीरक–संज्ञा पुं० १. जीरा। मसाला-विशेष । २. वणिक्।

जीरण*–वि० दे० "जीर्ण" । जीरा ।

जीरा–संज्ञा पुं० १. दो हाथ ऊँचा एक पौधा, जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं। इसके दो मुख्य भेद हैं—सफेद और काला । २. फूलों का केसर ।

जीरी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अगहनी धान ।

जीर्ण–वि० १. वृद्ध । बुढ़ापे से जर्जर । २. टूटा फूटा और पुराना । बहुत दिनों का। ३. परिपक्व । पचा हुआ।

यौ०–जीर्ण शीर्ण=फटा पुराना ।

जीर्ण ज्वर–संज्ञा पुं० पुराना बुखार ।

जीर्णता–संज्ञा स्त्री० १. बुढ़ापा । २. पुरानापन। दुर्बलता ।

जीर्णा–वि० बुढ़िया ।

संज्ञा स्त्री० कालीजीरी।

जीर्णोद्धार–संज्ञा पुं० फटी पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार । मरम्मत।

जील–संज्ञा स्त्री० १. धीमा स्वर। मध्यम स्वर। २. सारंगी आदि का तार।

जीला†*–वि० [स्त्री० जीली] १. झीना । पतला। २. महीन।

जीवंजीव–संज्ञा पुं० चकोर।

जीवंत–वि० जीता-जागता।

संज्ञा पुं० १. प्राण । २. औषध ।

जीवंतिका–संज्ञा स्त्री० १. गुरुच। एक लता। २. एक हड़। ३. शमी।

जीवंती–संज्ञा स्त्री० १. एक लता जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं। २. एक लता जिसके फूलों में मीठा मधु या मकरंद होता है। ३. एक प्रकार की बढ़िया पीली हड़ । ४. बाँदा । ५. गुडूची ।

जीव–संज्ञा पुं० १. प्राणियों का चेतन तत्त्व। जीवात्मा। आत्मा। २. प्राण । जीवन। जान। ३. प्राणी। जीवधारी। ४. विष्णु। ५. बृहस्पति । ६. अश्लेषा नक्षत्र ।

यौ०–जीवजंतु=१. जानवर । प्राणी। २. कीड़ा-मकोड़ा।

जीवक–संज्ञा पुं० १. जीनेवाला । प्राण धारण करनेवाला । २. क्षपणक । ३. सँपेरा । ४. सेवक । ५. ब्याज लेकर जीविका चलानेवाला। सूदखोर। ६. एक वृक्ष। ७. एक जड़ी।

जीवट–संज्ञा पुं० साहस। हिम्मत। दृढ़ता।

जीवड़ा–संज्ञा पुं० प्राणी। जन्तु। जानवर।

जीवथ–संज्ञा पुं० १. प्राण । २. कूर्म । ३. मयूर । ४. मेघ ।

वि० १. चिरंजीवी। २. धार्मिक।

जीवद–संज्ञा पुं० १. जीवनदाता। वैद्य। २. जीवंती। ३. शत्रु।

जीवदान–संज्ञा पुं० शत्रु या अपराधी को प्राणदान । प्राणरक्षा । अभयदान ।

जीवधन–संज्ञा पुं० दे० "जीवनधन"। जीवों या पशुओं के रूप में सम्पत्ति ।

जीवधारी–संज्ञा पुं० प्राणी। जानवर।

जीवन–संज्ञा पुं० [वि० जीवित] १. जीवित रहने की अवस्था । जन्म और मृत्यु के बीच का काल। जिंदगी। २. जीवित रहने का भाव। प्राण-धारण। ३. जीवित रखनेवाली वस्तु । ४. परमप्रिय । प्यारा । ५. जीविका। ६. पानी। ७. वायु । ८. ईश्वर। ९. पुत्र । १०. मज्जा । ११. मक्खन। १२. गंगा । १३. प्राणाधार।

जीवन-चरित–संज्ञा पुं० जीवन में किए हुए कार्यों आदि का वर्णन। वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन का वृत्तान्त हो।
जीवनधन–संज्ञा पुं० १. जीवन का सर्वस्व। सबसे प्रिय। २. प्राणाधार। प्राणप्रिय।
जीवनबूटी–संज्ञा स्त्री० एक जड़ी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिला सकती है। संजीवनी।
जीवनमूरि–संज्ञा स्त्री० १. जीवनबूटी। २. अत्यंत प्रिय। प्राणप्रिय।
जीवन्मृत–संज्ञा पुं० जीते जी मरा। जीवित रहने पर भी मृत के समान।
जीवनवृत्त–संज्ञा पुं० दे० "जीवनचरित"।
जीवनवृत्तान्त–संज्ञा पुं० दे० जीवनचरित्र। किसी की जीवनी का वर्णन।
जीवनवृत्ति–संज्ञा स्त्री० रोजी। जीविका।
जीवना†*–क्रि० अ० दे० "जीना"।
जीवनी–संज्ञा स्त्री० जीवन भर का वृत्तांत। जीवनचरित।
जीवनीय–वि० जीवनप्रद। बरतने योग्य। संज्ञा पुं० १. जल। २. जयंतीवृक्ष।
जीवनोपाय–संज्ञा पुं० जीविका।
जीवनौषध–संज्ञा पुं० १. वह औषध जिससे मरे हुए भी जीवित हो जायँ। जीवन की रक्षा करनेवाली। २. उपजीविका। रक्षा-वृत्ति।
जीवन्त–वि० जीवित। सचेत।
जीवन्ती–संज्ञा पुं० संजीवन बूटी। जीवन बचानेवाली औषध।
जीवन्मुक्त–वि० जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सांसारिक मायाबंधन से छूट गया हो।
जीवन्मृत–वि० जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।
जीवपत्री–संज्ञा स्त्री० देखो "जीवन्ती"।
जीवप्रभा–संज्ञा स्त्री० आत्मा।
जीवपुत्रक–संज्ञा पुं० १. पुत्र। २. जीववृक्ष। इंगुदी का वृक्ष।
जीवमन्दिर–संज्ञा पुं० शरीर। देह। तन।
जीवयोनि–संज्ञा स्त्री० जीव-जंतु।
जीवरा*‡–संज्ञा पुं० जीव। प्राण।
जीवरि‡–संज्ञा पुं० जीवन। प्राण-धारण की शक्ति।
जीवलोक–संज्ञा पुं० भूलोक। पृथ्वी।
जीववृत्ति–संज्ञा स्त्री० पशु पालने का व्यवसाय। जीव का गुण तथा व्यापार।
जीवशाक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का शाक।
जीवसाधन–संज्ञा पुं० अन्न। धान। जीवन निर्वाह करने का उपाय।
जीवस्थान–संज्ञा पुं० मर्मस्थान। हृदय।
जीवहत्या, जीवहिंसा–संज्ञा स्त्री० जीवों का वध। जान से मारना। हत्या।
जीवा–संज्ञा पुं० १. धनुष की डोरी। २. भूमि। ३. जीविका। ४. ज्या। ५. जीवंती औषध-विशेष।
जीवाजून†–संज्ञा पुं० पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जीव।
जीवाणु–संज्ञा पुं० जीव-युक्त अणु [अत्यन्त सूक्ष्म कीड़े] जो अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।
जीवात्मा–संज्ञा पुं० जीव। आत्मा। प्राण।
जीवान्तक–संज्ञा पुं० जीवोंकी हत्या करने वाला। प्राण लेनेवाला। घातक। क्रूर। बहेलिया।
जीवाधार–संज्ञा पुं० हृदय। जीवन का आधार।
जीविका–संज्ञा स्त्री० भरण-पोषण का साधन वह व्यापार जिससे जीवन का निर्वाह हो रोजी। वृत्ति।
जीवित–वि० जीता हुआ। जिंदा। चेतन
जीवितेश–संज्ञा पुं० १. प्राणनाथ। स्वामी पति। २. यम। ३. इंद्र। ४. सूर्य ५. इड़ा और पिंगला नाड़ी।
जीवी–वि० १. जीनेवाला। प्राणधारी। २. जीविका करनेवाला। जैसे—श्रमजीवी।
जीवेश–संज्ञा पुं० परमात्मा।
जीह या **जीहा***–संज्ञा स्त्री० दे० "जीभ"। जिह्वा।
जुंबिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति। हरकत। हिलना-डोलना।
मुहा०–जुंबिश खाना=हिलना-डोलना।

जु*–वि०, क्रि० वि० दे० "जो"। संज्ञा पुं० "जू"।
जुआँ–संज्ञा स्त्री० दे० "जूँ"। एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
जुआ–संज्ञा पुं० १. द्यूत। बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल। २. छलकपट। ३. चक्की की मूठ। ४. बैलों के कंधे पर रखी जानेवाली लकड़ी।
जुआचोर–संज्ञा पुं० धोखेबाज। ठग। वंचक।
जुआठा–संज्ञा पुं० लकड़ी का वह ढाँचा, जो बैलों के कंधों पर रखा जाता है।
जुआर–संज्ञा पुं० ज्वार।
जुआर-भाटा–संज्ञा पुं० समुद्र के जल का उतार-चढ़ाव।
जुआरा–संज्ञा पुं० एक जोड़ी बैल। उतनी ज़मीन जितनी कि एक जोड़ी बैल जोत सकें।
जुआरि–संज्ञा स्त्री० अन्न-विशेष। अगहन में होनेवाला एक प्रकार का अन्न।
जुआरी–संज्ञा पुं० जुआ खेलनेवाला।
जुइना–संज्ञा पुं० घास या फूस की बनी रस्सी।
जुई–संज्ञा स्त्री० एक कीड़ा। छोटी जुआँ।
जुकाम–संज्ञा पुं० सरदी से होनेवाली एक बीमारी, जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है। सरदी।
मुहा०–मेंढकी को जुकाम होना=किसी छोटे मनुष्य का कोई बड़ा काम करना।
जुग–संज्ञा पुं० १. युग। २. जोड़ा। युग्म। ३. चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर में इकट्ठा होना। ४. पुश्त। पीढ़ी।
जुगजुगाना–क्रि० अ० १. मंद ज्योति से चमकना। टिमटिमाना। २. उभरना।
जुगत–संज्ञा स्त्री० १. युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २. व्यवहार-कुशलता। चतुराई। हथकंडा।
जुगती–संज्ञा पुं० अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने या लगानेवाला। चतुर। चालाक। संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।
जुगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।
जुगनू–संज्ञा पुं० १. एक बरसाती कीड़ा, जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।
जुगल–वि० दे० "युगल"।
जुगवना–क्रि० स० १. संचित रखना। एकत्र करना। २. हिफ़ाजत से रखना।
जुगाना†–क्रि० स० दे० "जुगवना"।
जुगानुजुग–क्रि० वि० युगानुयुग। कई वर्ष।
जुगार†–संज्ञा स्त्री० दे० जुगाली।
जुगालना–क्रि० अ० चौपायों का पागुर करना।
जुगाली–संज्ञा स्त्री० पागुर। रोमंथ। चर्वित चर्वण।
जुगुत–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"। युक्ति।
जुगुप्सक–वि० निन्दा करनेवाला। निन्दक।
जुगुप्सा–संज्ञा स्त्री० [वि० जुगुप्सित] १. घृणा। २. निंदा। बुराई। ३. तिरस्कार।
जुज़वी–वि० [फ़ा०] १. बहुतों में से कोई एक। बहुत कम। २. बहुत छोटे अंश का।
जुज्झ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।
जुझवाना*†–क्रि० स० लड़ा देना।
जुझाऊ–वि० लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध-संबंधी।
जुझार†*–वि० १. लड़ाका। वीर। २. युद्ध। लड़ाई।
जुट–संज्ञा स्त्री० १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। गुट। २. जत्था। दल।
जुटना–क्रि० अ० १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। संबद्ध होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५. कार्य में सम्मिलित होना। ६. मिलना।
जुटली–वि० जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।
जुटाना–क्रि० स० जुटना का सकर्मक रूप। एकत्र करना। मिलाना। जोड़ना। जमा करना। सटाना।

जुटाव—संज्ञा पुं० जुटने या इकट्ठा होने की क्रिया या भाव । जमावड़ा ।

जुट्टी—संज्ञा स्त्री० १. घास या टहनियों का छोटा पूला । अँटिया । जूरी । २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं । ३. तले-ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह । गड्डी । ४. एक पकवान ।
वि० जुटी या मिली हुई ।

जुठारना—क्रि० स० खाने-पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना । जूठा करना । उच्छिष्ट करना ।

जुठिहारा—संज्ञा पुं० [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला ।

जुडीशल—वि० [अंग्रे०] न्याय सम्बन्धी । दीवानी या फौजदारी सम्बन्धी ।

जुड़ना—क्रि० अ० १. सट जाना । संबद्ध होना । संयुक्त होना । २. संभोग करना । प्रसंग करना । †३. इकट्ठा होना । ४. एकत्र होना । किसी कार्य में योग देने के लिए उपस्थित होना । ५. प्राप्त होना । ६. दे० "जुतना" ।

जुड़पित्ती—संज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं ।

जुड़वाँ—वि० गर्भ-काल से ही एक में सटे हुए । जुड़े हुए । यमल । जैसे—जुड़वाँ बच्चे ।
संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो या अधिक बच्चे ।

जुड़वाना†—क्रि० स० १. ठंढा करना । २. शांत करना । सुखी करना ।
क्रि० स० दे० "जोड़वाना" ।

जुड़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई" ।

जुड़ाना†—क्रि० अ० १. ठंढा होना । २. शांत होना । तृप्त होना ।
क्रि० स० १. ठंढा करना । २. शांत और संतुष्ट करना । तृप्त करना ।

जुड़ावना†—क्रि० स० दे० "जुड़ाना" ।

जुत*—वि० दे० "युक्त" ।

जुतना—क्रि० अ० १. बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना । नधना । २. किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना । ३. हल से जोता जाना ।

जुतवाना—क्रि० स० दूसरे से जोतने का काम कराना ।

जुताई—संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई" ।

जुतियाना—क्रि० स० १. जूता मारना । जूते लगाना । २. अत्यंत निरादर करना ।

जुतियौअल—संज्ञा स्त्री० आपस में जूतों से मारपीट ।

जुत्थ*—संज्ञा पुं० दे० "यूथ" ।

जुदा—वि० [फा०] १. पृथक् । अलग । २. भिन्न ।

जुदाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] जुदा होने का भाव । बिछोह । वियोग ।

जुद्ध*—संज्ञा पुं० दे० "युद्ध" ।

जुन*—संज्ञा पुं० दे० "जून" । समय । कारण । अवसर ।

जुन्हरी—संज्ञा स्त्री० ज्वार (अन्न) ।

जुन्हाई—संज्ञा स्त्री० "ज्योत्स्ना" । १. चाँदनी । चंद्रिका । २. चंद्रमा ।

जुन्हैया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई" ।

जुबली—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] किसी बड़ी घटना का स्मारक । महोत्सव । जयन्ती ।

जुबान—संज्ञा स्त्री० दे० "जबान" । जीभ । बोली ।

जुबानी—वि० जबानी । मौखिक ।

जुमना—संज्ञा पुं० खेत में खाद डालने की क्रिया-विशेष ।

जुमला—वि० [फा०] सब । कुल ।
संज्ञा पुं० पूरा वाक्य ।

जुमा—संज्ञा पुं० [अ०] शुक्रवार ।

जुमिल—संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा ।

जुमुकना—क्रि० अ० पास आ जाना । इकट्ठा होना ।

जुमेरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] बृहस्पतिवार ।

जुरअत—संज्ञा स्त्री० [फा०] साहस । हिम्मत ।

जुरझुरी—संज्ञा स्त्री० १. ज्वरांश । हरारत । २. ज्वर के आदि की कँपकँपी ।

जुरना*†—क्रि० स० दे० "जुड़ना" ।

जुरमाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह दंड जिसके

अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े। अर्थ-दंड। धन-दंड।
जुराफा–संज्ञा पुं० अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती हैं।
जुर्म–संज्ञा पुं० [अ०] अपराध। वह कार्य जिसके लिए दंड देने का नियम हो।
जुल–संज्ञा पुं० धोखा। बढ़ावा।
जुलाब–संज्ञा पुं० [फा०] १. रेचन। दस्त। २. रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।
जुलाहा–संज्ञा पुं० १. कपड़ा बुननेवाला। तंतुकार। तंतुवाय। २. पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।
जुल्फ़–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिर के लंबे बाल। पट्टा। कुल्ला।
जुल्फ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुल्फ़"।
जुल्म–संज्ञा पुं० [अ०] अत्याचार। अन्याय। **मुहा०**–जुल्म टूटना=आफत आ पड़ना। जुल्म ढाना=१. अत्याचार करना। २. कोई अद्भुत काम करना।
जुलूस–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी उत्सव का समारोह। २. उत्सव और समारोह की यात्रा। धूमधाम की सवारी।
जुल्लाब–संज्ञा पुं० दे० "जुलाब"।
जुवती–संज्ञा स्त्री० दे० "युवती"।
जुवराज–संज्ञा पुं० दे० "युवराज"।
जुवा–संज्ञा पुं० दे० "युवा"।
जुवार–संज्ञा पुं० अन्न-विशेष। जुन्हरी।
जुवारी–संज्ञा पुं० जुआरी। छली। कपटी।
जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश। खोज।
जुहाना†–क्रि० स० एकत्र करना। संचित करना।
जुहार–संज्ञा स्त्री० युद्धार्थ यात्रा की विदाई। युद्ध-अभिवादन। क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम। सलाम।
जुहारना–क्रि० स० १. सहायता माँगना। २. एहसान लेना।
जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।
जुहोता–संज्ञा पुं० आहुति देनेवाला।
जुहू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञपात्र। पूर्व दिशा।

जूँ–संज्ञा स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा। **मुहा०**–कानों पर जूँ रेंगना=स्थिति का ज्ञान होना। होश होना।
जू–अव्य० एक आदर-सूचक शब्द जो नाम के अन्त में जोड़ा जाता है। जी।
संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. वायु। ३. बैल या घोड़े के मस्तक पर का टीका।
जूआ–संज्ञा पुं० १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी, जो बैलों के कंधों पर रहती है। †२. जुआठा। ३. चक्की फिराने की लकड़ी। ४. वह खेल जिसमें हारनेवाला जीतनेवाले को कुछ धन देता है। जुआ। द्यूत।
जूआठ–संज्ञा पुं० बैलों के कन्धे पर रखी जानेवाली लकड़ी जिसमें हल बाँधकर खेत जोतते हैं।
जूजू–संज्ञा पुं० एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं। हाऊ।
जूझ*–संज्ञा स्त्री० लड़ाई।
जूझना†*–क्रि० अ० १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।
जूट–संज्ञा पुं० १. पटसन। जूड़ा। २. लट। जटा।
जूठ–संज्ञा पुं० खाए हुए भोजन का शेष। दे० "जूठन"।
जूठन–संज्ञा स्त्री० १. वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो। उच्छिष्ट भोजन। २. सन्त, महात्मा आदि मान्यों का जूठा। भुक्त पदार्थ।
जूठा–वि० [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] १. किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। २. जिसे किसी ने भोग करके अपवित्र कर दिया हो। भुक्त।
संज्ञा पुं० दे० "जूठन"।
जूड़–वि० शीतल।
संज्ञा पुं० जूड़ा।
जूड़ा–संज्ञा पुं० १. [स्त्रियों के] सिर के बँधे हुए बाल। खोपा। २. चोटी। ३. मूँज आदि का पूला। मुंजारी। ४. घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी। ५. बच्चों का एक रोग।

जूड़ी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का ज्वर। जाड़ा देकर बुखार आना। शीतज्वर।

जूता—संज्ञा पुं० पैर में पहनने के लिए चमड़े आदि का ढाँचा। पनही। पादत्राण। उपानह।

मुहा०—(किसी का) जूता उठाना=१.किसी का दासत्व करना। २. खुशामद करना। चापलूसी करना। जूता उछलना या चलना=मारपीट होना। झगड़ा होना। जूता खाना=१. जूतों की मार खाना। २. बुरा-भला सुनना। तिरस्कृत होना। जूते से खबर लेना या बात करना=जूते से मारना। जूतों दाल बँटना=आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।

जूताखोर—वि० निर्लज्ज। बेहया। जूते खानेवाला। मार या गाली की परवाह न करनेवाला।

जूती—संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का जूता।

जूती पैजार—संज्ञा स्त्री० १. जूतों की मार-पीट। २. लड़ाई-झगड़ा।

जूथ*—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"। समूह।

जून†—संज्ञा पुं० १. समय। काल। २. तृण। घास। ३ अंग्रेजी वर्ष का छठवाँ मास।

जूना—संज्ञा पुं० घास या फूस की बनी रस्सी। गेंडुरी।

जूनियर—वि० [अंग्रे०] छोटा। उम्र या पद में छोटा।

जूप—संज्ञा पुं० दे० "यूप"। १. जूआ। द्यूत। २. विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू परस्पर जूआ खेलते हैं। पासा।

जूपी—वि० जुआरी।

जूमना*†—क्रि० अ० इकट्ठा होना। जमा होना। एकत्र होना।

जूर*—संज्ञा पुं० जोड़। संचय।

जूरना*—क्रि० स० दे० "जोड़ना"।

जूरा—संज्ञा पु० दे० "जूड़ा"।

जूरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. फौजदारी के मुकदमों में न्यायाधीश को राय देने के लिए नियुक्त पंच। २. घास या पत्तों का छोटा पूला। जुट्टी। ३. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ४. एक प्रकार का पकवान। ५. समूह। झुण्ड। ६. एक प्रकार का पौधा।

जूर्णि—संज्ञा स्त्री० १. वेग। २. देह। ३. ब्रह्मा। ४. क्रोध।

वि० १. तेज। २. वेगवान। ३. द्रवित। ४. ताप देनेवाला। ५. स्तुति करने में कुशल।

जूलाई—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] अंग्रेजी साल का सातवाँ महीना।

जूष—संज्ञा पुं० झोल। दे० "जूस"।

जूस—संज्ञा पुं० १. उबाली हुई चीज का रस। निचोड़। रोगियों के लिए पथ्य, जैसे पकी हुई दाल का पानी आदि। २. सम संख्या। युग्म संख्या।

जूस ताक—संज्ञा पुं० एक प्रकार का जूआ जिसमें कौड़ियाँ हाथ में लेकर पूछा जाता है कि ये जूस हैं या ताक।

जूसी—संज्ञा स्त्री० खाँड़ का पसेव। चोटा।

जूह*—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

जूहर*—संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।

जूही—संज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष। २. एक प्रकार की आतशबाजी। एक कीड़ा।

जृंभ—संज्ञा पुं० [स्त्री० जृंभा। वि० जृंभक] १. जँभाई। २. आलस्य।

जृंभक—वि० जँभाई लेनेवाला।

संज्ञा पुं० १. रुद्रगणों में से एक। २. एक अस्त्र जिसके चलाने से शत्रु जँभाई लेने लगते थे, या सो जाते थे।

जृंभण—संज्ञा पुं० जँभाई लेना।

जृंभा, जृम्भिका—संज्ञा स्त्री० १. जँभाई। २. आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता। ३. एक शक्ति का नाम।

जृंभित—वि० १. चेष्टा किया हुआ। २. स्फुटित। प्रवृद्ध।

संज्ञा पुं० १. रंभा। २. स्फुरण। ३. स्त्रियों की इच्छा।

जेंना—क्रि० स० दे० "जेंवना"।

जेंवन—संज्ञा पुं० भोजन।

जेंवना—क्रि० स० खाना। भोजन करना।

जेंवाना†–क्रि० स० खिलाना। भोजन कराना।
जे*†–सर्व० 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ*†–सर्व० दे० "जो"।
जेट–संज्ञा पुं० राशि। ढेर। समूह। मिट्टी के बर्त्तनों का समूह, जिसमें वे एक दूसरे के ऊपर रखे हों।
जेटी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल चढ़ाया या उतारा जाता है।
जेठ–संज्ञा पुं० [स्त्री० जेठानी] १. ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है। ज्येष्ठ। २. पति का बड़ा भाई। भसुर।
वि० अग्रज। बड़ा।
जेठरा†–वि० दे० "जेठ"। प्रथम उत्पन्न पुत्र। पहलौठा। ज्येष्ठ। बड़ा। अग्रज।
जेठा–वि० [स्त्री० जेठी] १. अग्रज। बड़ा। २. सबसे अच्छा।
जेठाई–संज्ञा स्त्री० बड़ाई। जेठापन।
जेठानी–संज्ञा स्त्री० जेठ (पति के बड़े भाई) की स्त्री।
जेठी–वि० जेठ संबंधी। जेठ का। बड़ी।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कपास।
संज्ञा पुं० एक तरह का धान।
जेठीमधु–संज्ञा स्त्री० यष्टिमधु। मुलेठी। औषध-विशेष।
जेठौत, जेठौता‡–संज्ञा पुं० [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र।
जेता–संज्ञा पुं० १. जीतनेवाला। विजयी। २. विष्णु।
वि० दे० "जितना"।
जेतिक*†–क्रि० वि० जितना।
जेते*†–वि० जितने।
जेतो*†–क्रि० वि० जितना।
जेन्यावसु–संज्ञा पुं० अग्नि। इंद्र।
जेब–संज्ञा पुं० [फा०] पहनने के कपड़े में लगी हुई थैली। खीसा। पाकेट।
जेबकट–संज्ञा पुं० जेब काटनेवाला। गिरह-कट। चोर। पाकेटमार।
जेबखर्च–संज्ञा पुं० [फा०] ऊपरी या निज का खर्च। निज के खर्च के लिए धन।
जेबघड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है। जेबी घड़ी।
जेबरा–संज्ञा पुं० दक्षिण अफ्रीका का घोड़े की तरह एक जानवर, जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं।
जेबी–वि० [फा०] १. जो जेब में रखा जा सके। २. बहुत छोटा।
जेय–वि० जीतने योग्य।
जेर–संज्ञा स्त्री० वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है। आँवल।
वि० [संज्ञा ज़ेरबारी] १. परास्त। पराजित। २. आपद्ग्रस्त।
संज्ञा पुं० एक वृक्ष।
ज़ेरपाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों की जूती।
ज़ेरबार–वि० [फा०] १. जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो। २. जिसकी बहुत हानि हुई हो।
ज़ेरबारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना। तंगी। २. हैरानी। परेशानी।
जेरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "ज़ेर"। २. वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ इत्यादि हटाने के लिए रखते हैं।
जेल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. कारागार। बंदीगृह। वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी आदि रखे जाते हैं। २. जंजाल। हैरानी या परेशानी का काम।
जेलखाना–संज्ञा पुं० कारागार।
जेलर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जेल का अधिकारी।
जेलाटिन या **जेलाटीन**–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मांस, हड्डी और खाल से निकलनेवाला सरेस की तरह का एक पदार्थ।
जेवड़ा–संज्ञा पुं० रस्सा। डोर।
जेवना–क्रि० स० दे० "जीमना"। भोजन करना।
जेवनार–संज्ञा स्त्री० १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज। २. रसोई। भोजन।
जेवर–संज्ञा पुं० [फा०] गहना। आभूषण।
जेवरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी।

जेष्ठ–संज्ञा पुं० १. जेठ। पति का बड़ा भाई। २. ज्येष्ठ महीना।
जेष्ठा–संज्ञा स्त्री० ज्येष्ठा नक्षत्र-विशेष।
जेह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कमान की डोरी में वह स्थान, जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध में निशाना रहता है। चिल्ला। २. दीवार में नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभड़ा हुआ लेप। ३. प्रतीक्षा। तलाश। खोज। ४. नजर। दृष्टि।
जेहन–संज्ञा पुं० [अ०][वि० ज़हीन] बुद्धि। धारणाशक्ति।
जेहर*–संज्ञा स्त्री० पाजेब। एक गहना।
जेहल–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहलखाना‡–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहि*–सर्व० १. जिसको। २. जिससे।
जै–संज्ञा स्त्री० दे० "जय"।
†–वि० जितने। जिस तरह।
जैत†*–संज्ञा स्त्री० विजय।
संज्ञा पुं० १. एक पेड़। २. रागिनी-विशेष।
जैतपत्र*–संज्ञा पुं० जयपत्र।
जैतवार*†–संज्ञा पुं० जीतनेवाला। विजयी। विजेता।
जैतून–संज्ञा पुं० एक ऊँचा पेड़। इसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं।
जैत्र–संज्ञा पुं० १. विजयी। २. पारा। ओषधि।
जैन–संज्ञा पुं० १. भारत का एक धर्म-संप्रदाय, जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है। २. जैनी।
जैनी–संज्ञा पुं० जैन-मतावलंबी।
जैनु†*–संज्ञा पुं० भोजन।
जैबो†–क्रि० अ० दे० "जाना"।
जैमिनि–संज्ञा पुं० पूर्वमीमांसा-दर्शनशास्त्र के रचयिता एक ऋषि।
जैयद–वि० १. बड़ा भारी। बहुत बड़ा। २. बहुत धनी।
जैल–संज्ञा पुं० [फा०] नीचे का हिस्सा। पंक्ति। इलाक़ा।
जैलदार–संज्ञा पुं० [अ०] वह अधिकारी जिसके अधिकार में कई गाँवों का प्रबंध हो।
जैवात्रिक–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. कपूर।
जैसा–वि० [स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार। जिस रूप-रंग या गुण का। यथा। २. समान। सदृश। तुल्य।
क्रि० वि० जितना। जिस परिमाण में।
मुहा०–जैसे का तैसा=ज्यों का त्यों। जैसा पहले था, वैसा ही। जैसा चाहिए=उपयुक्त।
जैसे–क्रि० वि० जिस प्रकार से। जिस ढंग से।
मुहा०–जैसे तैसे=किसी प्रकार। बड़ी कठिनता से।
जैसो†–वि०, क्रि० वि० दे० "जैसा"।
जों†*–क्रि० वि० दे० "ज्यों"।
जोंक–संज्ञा स्त्री० १. पानी का एक कीड़ा, जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है। २. वह मनुष्य जो अपना काम निकालने के लिए बेतरह पीछे पड़ जाय।
जोंकी–संज्ञा स्त्री० लोहे का वह काँटा जो दो तख्तों को जोड़ता है। दे० "जोंक"।
जोंधरी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी मकई। २. बाजरा।
जोंधैया–संज्ञा स्त्री० ज्योत्स्ना। चाँदनी। चंद्रिका।
जो–सर्व० एक संबंधवाचक सर्वनाम।
*अव्य० यदि। अगर।
जोअना*†–क्रि० स० दे० "जोवना"।
जोइ*†–संज्ञा स्त्री० जोरू। पत्नी। स्त्री।
†सर्व० "जो"।
जोइसी*–संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।
जोउ–सर्व० दे० "जो"।
जोख-संज्ञा स्त्री० तौल। वजन।
जोखना–क्रि० स० १. तौलना। वजन करना। २. जाँचना।
जोखा–संज्ञा पुं० लेखा। हिसाब।
जोखाई–संज्ञा स्त्री० तौलने का काम या उसकी मजदूरी।
जोखिम–संज्ञा स्त्री० १. अनिष्ट या विपत्ति की आशंका। २. झोंकी। विपत्ति लानेवाली वस्तु।
मुहा०–जोखिम उठाना या सहना=ऐसा काम करना जिसमें अनिष्ट की आशंका

हो। जान जोखिम होना=मरने का भय होना।

जोखों–संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम"।

जोगंधर–संज्ञा पुं० योगंधर। एक युक्ति जिसके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।

जोग–संज्ञा पुं० दे० "योग"।
वि० दे० "योग्य"।

जोगड़ा–संज्ञा पुं० बना हुआ योगी। पाखंडी।

जोगमाया–संज्ञा स्त्री० भगवान् की एक शक्ति।

जोगवना–क्रि० स० १. यत्न से रखना। २. संचित करना। एकत्र करना। ३. लिहाज रखना। आदर करना। ४. जाने देना। ख्याल न करना। ५. पूरा करना।

जोगा–संज्ञा पुं० अफीम छानने के बाद बचा हुआ मैल।

जोगानल–संज्ञा स्त्री० योगानल। योग से उत्पन्न आग।

जोगिन–संज्ञा स्त्री० [योगिनी] १. जोगी की स्त्री। २. साधुनी। ३. पिशाचिनी।

जोगिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "योगिनी"। जोगिन।

जोगिया–वि० १. जोगी-संबंधी। जोगी का। २. गेरू के रंग में रँगा हुआ। गैरिक। संन्यासियों के कपड़े का रंग।

जोगींद्र*†–संज्ञा पुं० दे० "योगींद्र"। १. बड़ा योगी। २. शिव।

जोगी–संज्ञा पुं० दे० "योगी"। १. योग करने-वाला। २. एक प्रकार के भिक्षुक, जो सारंगी पर गाते फिरते हैं।

जोगीड़ा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का चलता गाना। २. गाने बजाने-वालों का एक छोटा समाज।

जोगेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "योगेश्वर"। १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. सिद्ध योगी।

जोजन*–संज्ञा पुं० दे० "योजन"।

जोट*–संज्ञा पुं० जोड़ी। साथी।

जोटा*†–संज्ञा पुं० जोड़ा।

जोटिंग–संज्ञा पुं० शिव।

जोटी*†–संज्ञा स्त्री० १. जोड़ी। युग्मक। २. बराबरी का। समान।

जोड़–संज्ञा पुं० १. कई संख्याओं का योग। जोड़ने की क्रिया। २. वह संख्या जो कई संख्याओं को जोड़ने से निकले। मीजान। ३. वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिले हों। ४. वह टुकड़ा जो किसी चीज में जोड़ा जाय। ५. संधि-स्थान। दो वस्तुओं के मिलने के स्थान का चिह्न। ६. शरीर के दो अवयवों का संधि-स्थान। गाँठ। ७. मेल-मिलाप। ८. एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम में आनेवाली दो चीजें। जोड़ा। ९. बराबरी। समानता। १०. वह जो बराबरी का हो। जोड़ा। ११. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। १२. छल। दाँव।
यौ०–जोड़-तोड़ १. दाँव-पेंच। छल-कपट। २. युक्ति-विशेष। ढंग।

जोड़ती†–संज्ञा स्त्री० गणित में कई संख्याओं का योग। जोड़। हिसाब। गिनती।

जोड़न–संज्ञा स्त्री० वह पदार्थ जो दही जमाने के लिए दूध में डाला जाता है। जावन। जामन।

जोड़ना–क्रि० स० १. मिलाना। सम्बद्ध करना। २. सटाना। गाँठ लगाना। सामग्री को क्रम से रखना। ३. एकत्र करना। ४. इकट्ठा करना। ५. धन बटोरना। कई संख्याओं का योग-फल निकालना। ६. वाक्यों या पदों आदि की योजना करना। ७. प्रज्वलित करना। ८. संबंध स्थापित करना।

जोड़ला–वि० दे० "जोड़वाँ"।

जोड़वाँ–वि० एक ही गर्भ से साथ उत्पन्न होनेवाले दो बच्चे। यमज।

जोड़वाना–क्रि० स० [जोड़ना का प्रे०] जोड़ने का काम दूसरे से कराना।

जोड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० जोड़ी] १. दो समान पदार्थ। एक ही-सी दो चीजें। २. स्त्री और पुरुष या नर और मादा। ३. जूते। उपानह। ४. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। ५. वह जो बराबरी का हो। जोड़।

जोड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. वस्तुओं को

जोड़ने की क्रिया या भाव । २. जोड़ने की मजदूरी ।

जोड़ी–संज्ञा स्त्री० १. दो समान वस्तुएँ। जोड़ा । २. दो घोड़ों या दो बैलों की गाड़ी । ३. दोनों मुगदर जिनसे कसरत करते हैं । ४. मँजीरा ।

जोड़ू–संज्ञा स्त्री० जोरू । पत्नी ।

जोत–संज्ञा स्त्री० १. असामी को जोतने के लिए दी गई भूमि । २. चमड़े का तस्मा या रस्सी जिसका सिरा जोते जाने-वाले जानवरों के गले में और दूसरा उस चीज में बँधा रहता है, जिसमें वे जोते जाते हैं । ३. तराजू के पल्लों में बँधी हुई रस्सी । दे० "ज्योति" ।

जोतना–क्रि० स० १. गाड़ी आदि को चलाने के लिए उसके आगे घोड़े, बैल आदि पशु बाँधना । २. किसी को जबरदस्ती किसी काम में लगाना । ३. हल चलाना । हल से खेत को बोने योग्य बनाना ।

जोता–संज्ञा पुं० १. जुआठे में बँधी हुई रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है । २. बहुत बड़ी शहतीर । ३. खेत जोतनेवाला ।

जोताई–संज्ञा स्त्री० १. जोतने का काम या भाव । २. जोतने की मजदूरी ।

जोतार–संज्ञा पुं० हरवाहा । हलवाहा । जोतने-वाला ।

जोतिहा–संज्ञा पुं० खेत जोतनेवाला असामी ।

जोति, जोती–संज्ञा स्त्री० १. घी का दीपक जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है । २. दे० "ज्योति" । ३. जोतने-बोने योग्य भूमि ।

जोधन–संज्ञा पुं० आयोधन । संग्राम । संज्ञा स्त्री० जुए की रस्सी ।

जोधा*†–संज्ञा पुं० दे० "योद्धा" ।

जोनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "योनि" ।

जोन्ह, जोन्हाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई" । चाँदनी ।

जोन्हरी या **जोनरी**–संज्ञा स्त्री० ज्वार ।

जोपै*–प्रत्य० १. यदि । अगर । २. यद्यपि ।

जोफ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. बुढ़ापा । वृद्धावस्था । २. निर्बलता । कमजोरी ।

जोबन–संज्ञा पुं० यौवन । युवावस्था । १. जवानी । २. स्तन । छाती । ३. सुंदरता । खूबसूरती । ४. रौनक । बहार ।

जोम–संज्ञा पुं० [अ०] १. उमंग । उत्साह । २. जोश । आवेग । ३. अभिमान ।

जोय*–संज्ञा स्त्री० जोरू । स्त्री । सर्व० पुं० जो । जिस ।

जोयना*–क्रि० स० बालना । जलाना । क्रि० स० ढूँढ़ना ।

जोयसी*†–संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी" ।

ज़ोर–संज्ञा पुं० [फा०] १. बल । शक्ति । २. प्रबलता । तेजी । बढ़ती । ३. अधिकार । काबू । ४. वेग । आवेश । ५. भरोसा । सहारा । ६. परिश्रम । मेहनत । ७. व्यायाम ।

मुहा०–(किसी बात पर) ज़ोर देना । किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बतलाना । [किसी बात के लिए] ज़ोर देना=किसी बात के लिए आग्रह करना । ज़ोर मारना या लगाना=१. बल का प्रयोग करना । २. बहुत प्रयत्न करना । ज़ोरों पर होना=१. पूरे बल पर होना । बहुत तेज होना । २. खूब उन्नत होना । ज़ोरों पर=बड़े वेग से । तेजी से । किसी के ज़ोर पर कूदना=किसी को अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना ।

यौ०–ज़ोर-ज़ुल्म=अत्याचार ।

ज़ोरदार–वि० [फा०] जिसमें बहुत ज़ोर हो । ज़ोरवाला ।

जोरना†–क्रि० स० दे० "जोड़ना" ।

ज़ोरशोर–संज्ञा पुं० [फा०] बहुत अधिक ज़ोर ।

जोराजोरी†*–संज्ञा स्त्री० जबरदस्ती । क्रि० वि० जबरदस्ती से । बलपूर्वक ।

ज़ोरावर–वि० [फा०] [संज्ञा ज़ोरावरी] बलवान् । ताकतवर ।

जोरी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी" । जबरदस्ती ।

जोरू–संज्ञा स्त्री० स्त्री । पत्नी ।

जोलाहल†*–संज्ञा स्त्री० ज्वाला। अग्नि। आग।

जोली†*–संज्ञा स्त्री० बराबरी।

जोवना*–क्रि० स० प्रतीक्षा करना। १. जोहना। २. ढूंढ़ना। तलाश करना। ३. आसरा देखना।

जोश–संज्ञा पुं० आवेश। १. चित्त की तीव्र वृत्ति। मनोवेग। २. आँच या गरमी के कारण उबलना। उफान। उबाल।

मुहा०—जोश खाना=उबलना। आवेश में आना। जोश देना=पानी के साथ उबालना। बढ़ावा देना। खून का जोश=प्रेम का वह वेग, जो अपने वंश के किसी मनुष्य के लिए हो।

जोशन–संज्ञा पुं० [फा०] १. भुजाओं पर पहनने का एक गहना। २. जिरह-बख्तर। कवच।

जोशाँदा–संज्ञा पुं० [फा०]पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि। क्वाथ। काढ़ा।

जोशीला–वि० [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो। आवेगपूर्ण।

जोष–संज्ञा स्त्री० स्त्री। नारी। दे० "जोख"।

संज्ञा पुं० १. प्रेम। २. सुख। ३. सेवा।

जोषक–संज्ञा स्त्री० सेवक।

जोषा–संज्ञा स्त्री० नारी। स्त्री।

जोषिता–संज्ञा स्त्री० स्त्री। नारी।

जोषी–संज्ञा पुं० १. गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति। २. ज्योतिषी।

जोह†*–संज्ञा स्त्री० १. खोज। तलाश। २. इंतजार। प्रतीक्षा। ३. कृपा-दृष्टि।

जोहन*†–संज्ञा स्त्री० १. देखने या जोहने की क्रिया। २. तलाश। ३. प्रतीक्षा। इंतजार।

जोहना–क्रि० स० १. ढूंढ़ना। पता लगाना। २. प्रतीक्षा करना।

जोहार–संज्ञा स्त्री० अभिवादन। वंदन। प्रणाम।

संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।

जोहारना–क्रि० अ० जोहार या अभिवादन करना। नमस्कार करना।

जोही–वि० खोजनेवाला।

जौं–अव्य० यदि। जो।

क्रि० वि० दे० "ज्यों"।

यौ०–जौलौं–जब तक।

जौंकना–क्रि० स० डाँटना। फटकारना। बड़बड़ाना।

जौंरे–क्रि० वि० निकट। पास।

जौंराभौंरा–संज्ञा पुं० १. भुइँधर। भुइँहरा। किले या महलों का तहखाना। २. दो बालकों का जोड़ा।

जौ–संज्ञा पुं० (यव) १. अन्न-विशेष। २. छः राई (खरदल) के बराबर एक तौल।

†अव्य० यदि। अगर।

*†क्रि० वि० जब।

जौख–संज्ञा पुं० १. झुंड। समूह। जत्था। २. फ़ौज। सेना। ३. पक्षियों की श्रेणी।

जौजा–संज्ञा स्त्री० जोरू।

जौधिक–संज्ञा पुं० तलवार या खड्ग के ३२ हाथों में से एक। (तलवार चलाने की एक विधि)।

जौतुक–संज्ञा पुं० दहेज।

जौन†*–सर्व० जो। जिस।

वि० जो।

जौनाल–संज्ञा पुं० रबी का खेत।

जौपै*†–अव्य० अगर। यदि।

जौरा–संज्ञा पुं० वह अन्न जो गृहस्थ लोग नाई-बारी को काम की मजदूरी में देते हैं।

जौहर–संज्ञा पुं० १. रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २. सार वस्तु। सारांश। तत्त्व। ३. हथियार की ओप। ४. विशेषता। उत्तमता। खूबी। ५. राजपूतों में युद्ध-समय की एक प्रथा जिसके अनुसार उनकी स्त्रियाँ चिता में जल जाती थीं। ६. वह चिता जो दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिए बनाई जाती थी। ७. आत्महत्या।

जौहरी–संज्ञा पुं० [फा०] १. रत्न परखने या बेचनेवाला। रत्न-विक्रेता। २. किसी वस्तु के गुण-दोष की पहचान रखनेवाला। पारखी। गुणग्राहक।

ज्ञ–संज्ञा पुं० १. ज और ञ के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। २. ज्ञान। बोध। ३. ज्ञानी। जाननेवाला—जैसे शास्त्रज्ञ। ४. ब्रह्मा। ५. मंगल ग्रह। ६. शास्त्रानुसार निर्विकार पुरुष।

ज्ञप्त–वि० जाना हुआ।

ज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० १. जानकारी। २. बुद्धि।

ज्ञा–संज्ञा स्त्री० जानकारी।

ज्ञात–वि० जाना हुआ। विदित।

ज्ञात-यौवना–संज्ञा स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे यौवन का ज्ञान हो।

ज्ञातव्य–वि० जो जाना जा सके। ज्ञेय। बोधगम्य।

ज्ञातसार–अव्य० विदित। मालूम।

ज्ञात-सिद्धान्त–संज्ञा पुं० शास्त्रतत्त्वज्ञ। शास्त्र का यथार्थ मर्म जाननेवाला।

ज्ञाता–वि० (स्त्री० ज्ञात्री) ज्ञान रखनेवाला। जानकार। जाननेवाला।

ज्ञाति–संज्ञा पुं० १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य। गोती। २. भाई-बंधु।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

ज्ञातृत्व–संज्ञा पुं० जानकारी।

ज्ञान–संज्ञा पुं० १. आत्मानुभूति। बुद्धि बोध। जानकारी। प्रतीति। चेतनता। समझ। २. यथार्थ या सम्यक् ज्ञान। तत्त्वज्ञान।
मुहा०—ज्ञान छाँटना=अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना। अपनी विद्या या जानकारी जताने के लिए लंबी-चौड़ी बातें करना।

ज्ञानकांड–संज्ञा पुं० वेद का एक कांड जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है। जैसे—उपनिषद्।

ज्ञानगम्य–संज्ञा पुं० जो जाना जा सके। ज्ञेय।

ज्ञानगोचर–वि० दे० "ज्ञानगम्य"।

ज्ञानद–वि० ज्ञान देनेवाला। हितैषी। ज्ञानदाता।

ज्ञानदाता–संज्ञा पुं० गुरु।

ज्ञानदीपक–संज्ञा पुं० ज्ञान का प्रकाश। जिससे अज्ञान दूर हो।

ज्ञानमार्ग–संज्ञा पुं० निवृत्तिमार्ग। ज्ञानाभ्यास। ज्ञान द्वारा मोक्षप्राप्ति का साधन।

ज्ञानयोग–संज्ञा पुं० ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन।

ज्ञानवान्–वि० ज्ञानी। जिसे ज्ञान प्राप्त हो।

ज्ञानवापी–संज्ञा स्त्री० काशी का एक तीर्थ स्थान। कहते हैं कि मुसलमानों के पहले आक्रमण में जब काशी के मन्दिरों को तोड़-फोड़कर भारत का धन लूटा जा रहा था, उस समय विश्वनाथजी मन्दिर छोड़कर एक कुएँ में कूद गए थे। विश्वनाथ जी के मन्दिर के निकट ही इसका स्मारक है।

ज्ञानवृद्ध–वि० जिसकी जानकारी अधिक हो।

ज्ञानविहीन–वि० ज्ञानरहित। अज्ञान। मूढ़। मूर्ख।

ज्ञानी–वि० १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान् जानकार। २. आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञानेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। यथा—आँख, कान, नाक, जीभ और स्पर्शेन्द्रिय।

ज्ञापक–वि० जतानेवाला। सूचक।

ज्ञापन–संज्ञा पुं० [वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य] जताने या बताने का कार्य्य।

ज्ञापित–वि० जताया हुआ। सूचित।

ज्ञेय–वि० १. जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।

ज्या–संज्ञा स्त्री० १. धनुष की डोरी। २. एक प्रकार की रेखा, जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो। वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से उस व्यास पर लम्ब रूप से गिरी हो, जो चाप के दूसरे सिरे से होकर गया हो। ३. माता।

ज्याघोष–संज्ञा पुं० धनुष की टंकार। धनुष का शब्द।

ज्यादती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अधिकता। बहुतायत। २. अत्याचार। जबरदस्ती। जुल्म।

ज्यादा–वि० [फा०] अधिक। बहुत।
ज्याफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दावत। भोज। २. मेहमानी। आतिथ्य।
ज्यामिति–संज्ञा स्त्री० वह गणित-विद्या जिससे भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण आदि का विचार किया जाता है। क्षेत्र-गणित। रेखागणित।
ज्यारना†*–क्रि० अ० दे० "जिलाना"।
ज्यावना†*–क्रि० स० दे० "जिलाना"।
ूँ†–अव्य० दे० "ज्यों"। जैसे।
5–वि० १. बड़ा। श्रेष्ठ। २. वृद्ध। बड़ा भाई।
संज्ञा पुं० १. जेठ का महीना। २. परमेश्वर।
ज्येष्ठता–संज्ञा स्त्री० १. ज्येष्ठ होने का भाव। बड़ाई। २. श्रेष्ठता।
ज्येष्ठा–संज्ञा स्त्री० १. एक नक्षत्र (अठारहवाँ नक्षत्र) २. वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। ३. छिपकली। ४. मध्यमा उँगली। गंगा।
वि० बड़ी।
ज्येष्ठाश्रम–संज्ञा पुं० गार्हस्थ्य। गृहस्थ आश्रम।
ज्येष्ठाश्रमी–संज्ञा पुं० गृहस्थ। गृहस्थाश्रमी।
ज्यों*–क्रि० वि० १. जिस प्रकार। जैसे। जिस ढंग से। २. जिस क्षण। जैसे ही। **मुहा०**—ज्यों त्यों=किसी न किसी प्रकार। ज्यों ज्यों= १. जिस क्रम से। २. जिस मात्रा से। जितना। ज्यों का त्यों=वैसा ही। अपरिवर्त्तित। यथार्थ। ठीक।
ज्योतिःशास्त्र—संज्ञा पुं० ज्योतिष।
ज्योतिःशिखा–संज्ञा स्त्री० विषम वर्णवृत्तों का एक भेद जिसके पहले दल में ३२ लघु और दूसरे दल में १६ गुरु होते हैं।
ज्योति–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। उजाला। द्युति। २. लपट। लौ। ३. अग्नि। ४. सूर्य्य। ५. नक्षत्र। ६. आँख की पुतली के मध्य का बिंदु। ७. दृष्टि। ८. विष्णु। ९. परमात्मा।
ज्योतिक–संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।

ज्योतित–वि० ज्योति से भरा हुआ। प्रकाशमान। उजला।
ज्योतिरिंगण–संज्ञा पुं० जुगनू। खद्योत।
ज्योतिर्गण–संज्ञा पुं० आकाशस्थित सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि का समुदाय।
ज्योतिर्मय–वि० प्रकाशमय। जगमगाता हुआ।
ज्योतिर्मान–वि० दे० "ज्योतिर्मय"।
ज्योतिर्लिंग–संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव। २. भारतवर्ष में प्रतिष्ठित शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।
ज्योतिर्लोक–संज्ञा पुं० १. ध्रुवलोक। २. ध्रुवलोक के अधिपति। परमेश्वर।
ज्योतिर्विद्–संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
ज्योतिर्विद्या–संज्ञा स्त्री० ज्योतिष।
ज्योतिश्चक्र–संज्ञा पुं० नक्षत्रों और राशियों का मंडल।
ज्योतिष–संज्ञा पुं० १. वह विद्या जिससे ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। २. अस्त्रों का एक संहार या रोक।
ज्योतिषी–संज्ञा पुं० ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य। ज्योतिर्विद्। दैवज्ञ। गणक।
ज्योतिष्क–संज्ञा पुं० १. ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। २. मेथी। ३. चित्रक वृक्ष। चीता। ४. गनियारी।
ज्योतिष्टोम–संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञ।
ज्योतिष्पथ–संज्ञा पुं० आकाश।
ज्योतिष्पुंज–संज्ञा पुं० नक्षत्र-समूह।
ज्योतिष्मती–संज्ञा स्त्री० १. मालकँगनी लता-विशेष। २. रात्रि। प्रकाशयुक्त रात्रि
ज्योतिष्मान्–वि० प्रकाशयुक्त। तेजस्वी संज्ञा पुं० सूर्य। लक्षद्वीप का एक पर्वत
ज्योत्स्ना–संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा का प्रकाश चाँदनी। २. चाँदनी रात। ३. सौंफ ४. सफेद फूल की तरोई।
ज्योनार–संज्ञा स्त्री० १. पका हुआ भोजन। रसोई। २. भोज। दावत। ज्याफत।
ज्योरा–संज्ञा पुं० नाई-बारी आदि काम करनेवालों को दिया जानेवाला अनाज।
ज्योरी†–संज्ञा स्त्री० रस्सी।

ज्योहत, ज्योहर*†–संज्ञा पुं० आत्महत्या। जौहर।

ज्यौं–अव्य० जो। यदि।

ज्यौतिष–वि० ज्योतिष-संबंधी।

ज्वर–संज्ञा पुं० शरीर की वह गरमी जो अस्वस्थता प्रकट करे। ताप। बुखार।

ज्वरांकुश–संज्ञा पुं० १. ज्वर की एक औषध। २. एक सुगंधित घास।

ज्वरा–संज्ञा पुं० मृत्यु।

ज्वरार्त्त–वि० ज्वरपीड़ित। जिसे बुखार लगा हो।

ज्वरित–वि० जिसे ज्वर हो।

ज्वल–संज्ञा पुं० ज्वाला। लपट। अग्नि। रोशनी।

ज्वलंत–वि० १. प्रकाशमान्। दीप्त। २. अत्यंत स्पष्ट। जैसे ज्वलंत उदाहरण—अत्यन्त स्पष्ट उदाहरण।

ज्वलन–संज्ञा पुं० १. जलने का कार्य या भाव। जलन। दाह। २. अग्नि। आग। ३. लपट। ज्वाला।

ज्वलित–वि० १. जला हुआ। २. चमकता या झलकता हुआ। उज्ज्वल।

ज्वान†–वि० दे० "जवान"।

ज्वार–संज्ञा स्त्री० १. अन्न-विशेष। २. समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव। लहर की उठान। भाटा का उलटा।

ज्वार-भाटा–संज्ञा पुं० समुद्र के जल का चढ़ाव-उतार या लहर का बढ़ना और घटना। इसके चढ़ने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं।

ज्वाल–संज्ञा पुं० लौ। लपट।

ज्वाला–संज्ञा स्त्री० १. अग्निशिखा। लपट। २. विष आदि की गरमी। ३. गरमी। ताप। जलन।

ज्वालादेवी–संज्ञा स्त्री० शारदा पीठ में स्थित एक देवी। इनका स्थान काँगड़ा जिले में है।

ज्वालामुखी–संज्ञा स्त्री० १. जिस स्थान से ज्वाला निकलती हो। २. काँगड़ा ज़िला में एक पीठस्थान। ३. महाविद्या-विशेष। ४. देश-विशेष। ५. सूरजमुखी।

ज्वालामुखी पर्वत–संज्ञा पुं० वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय-समय पर निकला करते हैं।

झ

झ–हिंदी व्यंजन वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान तालू है।
संज्ञा पुं० १. झंझावात। वर्षा मिली हुई तेज आँधी। २. बृहस्पति। ३. दैत्य-राज। ४. ध्वनि।

झंकना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झंकार–संज्ञा स्त्री० १. झनझन शब्द। झनकार। २. झींगुर आदि छोटे जानवरों के बोलने का शब्द।

झंकारना–क्रि० स० "झनझन" शब्द उत्पन्न करना।
क्रि० अ० "झनझन" शब्द होना।

झंकृत–वि० जिसमें झंकार हुई हो या हो रही हो

झंकृति–संज्ञा स्त्री० झंकार।

झंखना–क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झंखाड़–संज्ञा पुं० १. घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा। २. वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गए हों। ३. व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह।

झँगा–संज्ञा पुं० दे० "झगा"। पहनने का एक वस्त्र।

झँगुलिया, झँगुली या झँगूली*†–संज्ञा स्त्री० पहनने का वस्त्र। बच्चों के पहनने का ढीला कुरता।

झँझ–संज्ञा पुं० १. "झाँझ"। एक गहना। २. एक बाजा।

झंझट–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ का झगड़ा। टंटा बखेड़ा। प्रपंच। (वि० झंझटी=झगड़ालू।)

झंझनाना–क्रि० अ० झनझन शब्द होना। झंकारना।
क्रि० स० झनझन शब्द करना।
झंझर–संज्ञा स्त्री० दे० "झज्झर"।
झँझरा–वि० (स्त्री० झंझरी) जालीदार ढकना जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों।
झँझरी–संज्ञा स्त्री० १. किसी चीज़ में बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। जाली। २. दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जालीदार खिड़की। ३. आग उठाने या रखने का झरना या झँझरीदार बरतन।
झंझा–संज्ञा पुं० १. वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। २. तेज आँधी। तेज आँधी या वर्षा की आवाज।
झंझानिल–संज्ञा पुं० आँधी।
झंझावात–संज्ञा पुं० दे० "झंझा"। बहुत जोर की आँधी। तूफान।
झंझी–संज्ञा स्त्री० फूटी कौड़ी।
झँझोड़ना–क्रि० स० १. झकझोरना। २. झटका देना।
झंडा–संज्ञा पुं० [स्त्री० झंडी] पताका निशान। ध्वजा।
मुहा०–झंडा खड़ा करना=१. सैनिक आदि एकत्र करने के लिए झंडा स्थापित करके संकेत करना। २. आडंबर करना। झंडा गाड़ना या फहराना=१. किसी स्थान, विशेषतः नगर या किले आदि पर अपना अधिकार करके उसके चिह्न-स्वरूप झंडा स्थापित करना। २. पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमाना।
झंडी–संज्ञा स्त्री० छोटा झंडा।
झँडूला–वि० १. वह बालक जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो। २. मुंडन संस्कार से पहले के बाल। ३. घनी पत्तियोंवाला। सघन वृक्ष।
झंप–संज्ञा पुं० १. उछाल। फलांग। २. घोड़ों के गले का एक आभूषण।
मुहा०–झंप देना=कूदना।
झँपकना–क्रि० अ० ऊँघना। झपटना। डरना। झेंपना।
झँपना–क्रि० अ० १. ढँकना। छिपना। आड़ में होना। २. उछलना। कूदना। लपकना। ३. टूट पड़ना। ४. झेंपना। लज्जित होना।
झँपरी–संज्ञा स्त्री० पालकी को ढाँकने की खोली। ओहार।
झंपान–संज्ञा पुं० पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली। झप्पान।
झँपोला–संज्ञा पुं० [स्त्री० झँपोली या झँपोलिया] झाँपा या झावा। छाबड़ा।
झंब–संज्ञा पुं० गुच्छा।
झँवकार*†–वि० झाँवले रंग का। काला।
झँवरना–क्रि० अ० १. कुछ काला पड़ना। २. कुम्हलाना। फीका पड़ना।
झँवा–संज्ञा पुं० दे० "झाँवा"।
झँवाना–क्रि० अ० १. झाँवे के रंग का हो जाना। कुछ काला पड़ जाना। झाँवर होना। २. अग्नि का मंद हो जाना। ३. घट जाना। ४. कुम्हलाना। मुरझाना। ५. झाँवे से रगड़ा जाना।
क्रि० स० १. झाँवे के रंग का कर देना। कुछ काला कर देना। २. आग ठंढी करना। ३. घटाना। ४. कुम्हला देना। मुरझा देना। ५. झाँवे से रगड़ना या रगड़वाना।
झँसना–क्रि० स० १. सिर या तलुए आदि में कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से उसे बारबार रगड़ना। ३. किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।
झई–संज्ञा स्त्री० दे० "झाईं"। छाया। प्रतिबिम्ब।
झउआ‡–संज्ञा पुं० दे० "झाबा"। टोकरा। खाँचा।
झक–संज्ञा स्त्री० सनक। धुन। दे० "झख"। वि० चमकीला। साफ।
झकझक–संज्ञा स्त्री० १. व्यर्थ की हुज्जत। फजूल तकरार। २. बकबक।
झकझका–वि० चमकीला।
झकझकाहट–संज्ञा स्त्री० चमक।
झकझेलना–क्रि० स० दे० "झकझोरना"।
झकझोर–संज्ञा पुं० झटका। वि० झोंकेदार। तेज।

झकझोरना–क्रि० स० किसी चीज को पकड़कर खूब हिलाना। झटका देना।
झकझोरा–संज्ञा पुं० झटका। धक्का।
झकना†–क्रि० अ० १. बकवाद करना। व्यर्थ की बातें करना। २. क्रोध में आकर अनुचित वचन कहना।
झका*–वि० चमकीला। साफ।
झकाझक–वि० साफ और चमकता हुआ। झलाझल। उज्ज्वल। चमकीला।
झकुराना†–क्रि० अ० झूमना।
क्रि० स० झूमने में प्रवृत्त करना।
झकोर*†–संज्ञा पुं० हवा का झोंका। झटका। झोंका।
झकोरना–क्रि० अ० झोंका मारना। हिलाना। कँपाना।
झकोरा–संज्ञा पुं० हवा का झोंका।
झकोल*†–संज्ञा पुं० दे० "झकोर"।
झकोलना–क्रि० अ० दे० झकोरना।
झक्क–वि० साफ और चमकता हुआ।
संज्ञा स्त्री० झक।
झक्कड़–संज्ञा पुं० तेज आँधी। अन्धड़। वि० दे० "झक्की"।
झक्की–वि० १. बहुत बकबक करनेवाला। २. जो अपनी धुन के सामने किसी की न सुने। सनकी।
झखना*†–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झख–संज्ञा स्त्री० झीखने का भाव या क्रिया। **मुहा०**–झख मारना= व्यर्थ समय नष्ट करना।
झखकेतु–संज्ञा पुं० कामदेव।
झखना*–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झखी*–संज्ञा स्त्री० मछली।
झगड़ना–क्रि० अ० लड़ना। कलह करना। विवाद करना। झगड़ा करना।
झगड़ा–संज्ञा पुं० लड़ाई। हुज्जत। तकरार। वैर। विरोध।
झगड़ालू–वि० जो बात-बात में झगड़ा करता हो। कलहप्रिय। लड़ाका।
झगड़ी*–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।
झगर–संज्ञा पुं० एक प्रकार की चिड़िया।
झगरा*†–संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।
झगराऊ*†–वि० दे० "झगड़ालू"।
झगरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।
झगला*†–संज्ञा पुं० दे० "झगा"।
झगा–संज्ञा पुं० छोटे बच्चों का ढीला कुरता। अंगा। जामा। कुरता-विशेष।
झगला, झगुली या **झगुलिया***†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।
झज्झर–संज्ञा स्त्री० सुराही। जल ठंडा रखने के लिए मिट्टी का एक प्रकार का बरतन।
झज्झरी–संज्ञा स्त्री० जाली। जालीदार झरोखा।
झज्झी–संज्ञा स्त्री० फूटी कौड़ी। झंझी।
झझक–संज्ञा स्त्री० १. झिझकने का भाव। भड़क। २. झुँझलाहट। ३. अप्रिय गंध। ४. सनक।
झझकन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झझक"।
झझकना–क्रि० अ० १. ठिठकना। बिदकना। चमकना। भड़कना। २. झुँझलाना। खिजलाना। ३. चौंक पड़ना।
झझकाना–क्रि० स० १. भड़काना। २. चौंका देना।
झझकारना–क्रि० स० १. डपटना। डाँटना। २. दुरदुराना। ३. तुच्छ समझना।
झट–क्रि० वि० तुरंत। उसी समय। अति शीघ्र।
झटकना–क्रि० स० १. झटका देना। २. जोर से हिलाना। झोंका देना। ३. चालाकी से या जबरदस्ती किसी की चीज लेना। ऐंठना।
क्रि० अ० रोग या दुःख से क्षीण होना।
मुहा०–झटककर=झोंके से। तेजी से।
झटका–संज्ञा पुं० १. झटकने की क्रिया। हलका धक्का। झोंका। २. एक प्रकार का पशुवध जिसमें पशु हथियार के एक ही आघात से काट डाला जाता है। ३. आघात।
झटकारना–क्रि० स० दे० "झटकना"।
झटपट–अव्य० अति शीघ्र। तुरंत। फौरन
झटिति*–क्रि० वि० १. झट। चटपट २. बिना समझे-बूझे।

झड़—संज्ञा स्त्री० १. दे० "झड़ी"। छोटी बूंदों की वर्षा। लगातार वर्षा। २. आँच। ३. ताले के भीतर का खटका।

झड़कना—क्रि० स० दे० झिड़कना। तिरस्कार-पूर्वक कोई बात कहना।

झड़झड़ाना—क्रि० स० दे० झिड़कना।

झड़न—संज्ञा स्त्री० १. झड़ी हुई चीज। २. झड़ने की क्रिया या भाव।

झड़ना—क्रि० अ० १. गिरना। २. टपकना। टूटकर गिरना। ३. साफ किया जाना।

झड़प—संज्ञा स्त्री० १. मुठभेड़। हाथापाई। लड़ाई। २. क्रोध। ३. आवेश।

झड़पना—क्रि० अ० १. डाँटना। डपटना। अचानक चोट करना या आक्रमण करना। वेग से किसी पर गिरना। २. लड़ना। झगड़ना। ३. जबरदस्ती किसी से कुछ छीन लेना। झटकना।

झड़पाझड़पी—संज्ञा स्त्री० हाथापाई। डपटा-डपटी।

झड़बेर या **झड़बेरी**—संज्ञा स्त्री० जंगली बेर।

झड़वाना—क्रि० स० [झाड़ना का प्रे०] झाड़ने का काम दूसरे से कराना। साफ कराना।

झड़ाझड़—क्रि० वि० लगातार।

झड़ी—संज्ञा स्त्री० १. लगातार वृष्टि। २. छोटी बूंदों की वर्षा। ३. लगातार बहुत सी बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना। ४. झड़ने की क्रिया। ५. ताले के भीतर का खटका।

झन—संज्ञा स्त्री० झनकार की ध्वनि।

झनक—संज्ञा स्त्री० झनझन शब्द।

झनकना—क्रि० अ० १. झनकार का शब्द करना। २. क्रोध आदि में हाथ-पैर पटकना। ३. दे० "झींखना"।

झनकवात—संज्ञा स्त्री० घोड़ों की एक बीमारी।

झनकार—संज्ञा स्त्री० १. झनझनाहट का शब्द। २. झींगुर का शब्द।

झनझनाना—क्रि० अ० झनझन शब्द होना। क्रि० स० झनझन शब्द उत्पन्न करना।

झनस—संज्ञा पुं० एक प्रकार का पुराना बाजा।

झनाझन—संज्ञा स्त्री० झंकार। झनझन शब्द। क्रि० वि० झनझन शब्द सहित।

झनिया—वि० दे० "झीना"।

झन्नाहट—संज्ञा स्त्री० झनकार। झनझना-हट।

झप—क्रि० वि० जल्दी से। तुरंत।

झपक—संज्ञा स्त्री० १. पलक गिरने भर का समय। बहुत थोड़ा समय। २. पलक का गिरना। ३. हलकी नींद। झपकी। ४. लज्जा। शर्म।

झपकना—क्रि० अ० १. पलक का गिरना। २. झपकी लेना। ऊँघना। ३. झपटना। ४. झेंपना। लज्जित होना।

झपकाना—क्रि० स० पलकों को बारबार बंद करना।

झपकी—संज्ञा स्त्री० १. हलकी नींद। २. आँख झपकने की क्रिया। ३. धोखा। चकमा। बहकावा।

झपकौंहा*†—वि० [स्त्री० झपकौंही] १. नींद से भरा हुआ (नेत्र)। झपकता हुआ। २. मस्त। नशे में चूर।

झपट—संज्ञा स्त्री० १. झपटने की क्रिया या भाव। २. वेग से आगे बढ़ना।

मुहा०—झपट लेना=छीन लेना। जबर-दस्ती छीनना।

झपटना—क्रि० अ० आगे बढ़ना। लपकना। प्रहार करने के लिए वेग से बढ़ना। टूटना। छीनना।

झपटान—संज्ञा स्त्री० झपटने की क्रिया या भाव। झपट।

झपटाना—क्रि० स० [झपटना का प्रे०] किसी को झपटने में प्रवृत्त करना।

झपट्टा†—संज्ञा पुं० दे० "झपट"।

झपताल—संज्ञा पुं० संगीत का एक ताल।

झपना—क्रि० अ० १. पलकों का गिरना या मुंदना। २. आँखें झपकना। ३. झुकना। ४. झेंपना। लज्जित होना।

झपनी—संज्ञा स्त्री० ढकना।

झपस—संज्ञा स्त्री० गुंजान होने का भाव।

झपसना–क्रि० अ० लता या पेड़ की डालियों का खूब घना होकर फैलना।
झपाका–संज्ञा पुं० शीघ्रता। बहुत जल्दी। क्रि० वि० जल्दी से। झप से।
झपाझपी–संज्ञा स्त्री० हड़बड़ी। शीघ्रता।
झपाट–संज्ञा स्त्री० स्फूर्ति। शीघ्र। तुरन्त।
झपाटा–संज्ञा पुं० चपेट। आक्रमण। पंजे से हमला करना या वार करना।
झपाना–क्रि० स० १. मूँदना। बंद करना (आँखों या पलकों का)। २. झुकाना।
झपास–संज्ञा स्त्री० १. झींसी। छोटी छोटी बूंदें। झड़ी। २. ठगाई। धूर्तता। संज्ञा पुं० धूर्त्त। ठग। धोखेबाज।
झपासिया–वि० छली। कपटी।
झपित–वि० १. झपा हुआ। मुँदा हुआ। २. जिसमें नींद भरी हो। उनींदा। ३. लज्जित।
झपेट–संज्ञा स्त्री० दे० "झपट"। चपेट।
झपेटना–क्रि० स० आक्रमण करके दबा लेना। छोप लेना। दबोचना।
झपेटा†–संज्ञा पुं० १. चपेट। झपट। २. भूत-प्रेतादिकृत बाधा। ३. आक्रमण।
झपोला–संज्ञा पुं० छावड़ा। एक तरह की बड़ी टोकरी जिसके ऊपर ढक्कन हो।
झपोली–संज्ञा स्त्री० झाबा।
झप्पान–संज्ञा पुं० दे० "झंपान"।
झबरीला या **झबरा**–वि० [स्त्री० झबरी] बहुत लंबे लंबे बिखरे हुए बालोंवाला।
झबरैरा†*–वि० दे० "झबरीला"।
झबा–संज्ञा पुं० दे० "झब्बा"। गुच्छा।
झबार, झबारि†–संज्ञा स्त्री० टंटा। बखेड़ा।
झबिया†–संज्ञा स्त्री० १. छोटा झब्बा। छोटा फुँदना। २. स्त्रियों का एक गहना।
झबुआ–वि० झबरा। बड़े-बड़े बालोंवाला।
झबूकना†–क्रि० अ० चमकना। चौंकना।
झब्बा–संज्ञा पुं० १. फुँदना। लटकन। २. गुच्छा। स्तवक।
झम–संज्ञा पुं० भोक्ता। भोजनकर्त्ता।
झमक–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। उजेला। २. झमझम शब्द। ३. नखरे की चाल।
झमकदार–संज्ञा पुं० चटक। चमकीला।
झमकना–क्रि० अ० १. चमकना। दमकना। २. झपकना। ३. झमझम शब्द होना। झनकार होना। ४. लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना। ५. अकड़ दिखलाना। ६. झमझम शब्द करना। ७. झनकार करते हुए नाचना।
झमकाना–क्रि० स० १. चमकाना। चमक पैदा करना। २. आभूषण या हथियार आदि बजाना या चमकाना।
झमकारा–वि० बरसनेवाला (बादल)।
झमकी–संज्ञा स्त्री० झमक। झलक। चमक।
झमकीला–वि० चमकीला। चंचल।
झमझम–संज्ञा स्त्री० १. घुंघरुओं आदि के बजने का झमझम शब्द। छमछम। २. पानी बरसने का शब्द। वि० चमकता हुआ। क्रि० वि० १. झमझम शब्द के साथ। २. चमक-दमक के साथ। झमाझम। ३. लगातार। एक के बाद एक।
झमना–क्रि० अ० झुकना। दबना।
झमाका–संज्ञा पुं० वर्षा की झड़ी। १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २. ठसक। नखरा।
झमाझम–क्रि० वि० १. दमक के साथ। २. झमझम शब्द सहित। ३. लगातार।
झमाट–संज्ञा पुं० झुरमुट।
झमाना–क्रि० अ० छाना। घेरना। क्रि० अ० दे० "झँवाना"। एकत्र करना।
झमूरा–संज्ञा पुं० बालोंवाला पशु। कोई प्यारा बच्चा। वह बच्चा जो ढीले-ढाले कपड़े पहने हो।
झमेला–संज्ञा पुं० १. बखेड़ा। झंझट। २. भीड़भाड़।
झमेलिया–संज्ञा पुं० झमेला करनेवाला। झगड़ालू।
झर–संज्ञा स्त्री० १. पानी गिरने का स्थान। निर्झर। २. झरना। सोता। स्रोत। ३. समूह। ४. तेजी। वेग। ५. झड़ी। लगातार वर्षा। ६. * ताप।
झरकना*–क्रि० अ० १. दे० "झलकना"। २. दे० "झिड़कना"।

झरझर–संज्ञा स्त्री० जल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।
संज्ञा पुं० सुराही।
झरझराना–क्रि० स० झरझर शब्द के साथ. गिराना। झाड़ देना।
क्रि० अ० झरझर शब्द उत्पन्न करना। झरझर शब्द के साथ जलना।
झरन–संज्ञा स्त्री० १. झरने की क्रिया। २. वह जो कुछ झरकर निकला हो।
झरना†*–क्रि० अ० १. दे० "झड़ना"। २. ऊँची जगह से निर्झर का गिरना।
संज्ञा पुं० १. ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जल-प्रवाह। निर्झर। २. एक प्रकार की छलनी, जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है। ३. लंबी डाँड़ी की छेददार चिपटी करछी। पौना।
वि० झरनेवाला। जो झरता हो।
झरनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झरन"।
झरप†*–संज्ञा स्त्री० १. झोंका। झकोर। २. वेग। तेजी। ३. टेक। ४. चिक। चिलमन। परदा। ५. दे० "झड़प"।
झरपना*†–क्रि० अ० १. झोंका देना। बौछार मारना। २. दे० "झड़पना"।
झरपेटा–संज्ञा पुं० झपट।
झरबेर–संज्ञा पुं० जंगली बेर।
झरसना–क्रि० अ० झुलसना, सूखना।
झरहर*–वि० दे० "झँझरा"।
झरहरना–क्रि० अ० झरझर शब्द करना।
झरहराना–क्रि० अ० हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना।
क्रि० स० झटकना। झाड़ना। पेड़ की डाल हिलाना।
झराझर–क्रि० वि० १. झरझर शब्द सहित। २. लगातार। ३. वेग सहित।
झरी–संज्ञा स्त्री० १. पानी का झरना। स्रोत। चश्मा। २. वह किराया या कर जो किसी बाजार या सट्टी में जाकर सौदा बेचनेवालों से प्रतिदिन लिया जाता है। ३. दे० "झड़ी"। लगातार वर्षा।
झरोखा–संज्ञा पुं० झँझरी। गवाक्ष। हवा या रोशनी के लिए दीवारों में बनी हुई झँझरीदार छोटी खिड़की।
झर्झर–संज्ञा पुं० १. कलियुग। २. झाँझ। एक बाजा।
झर्झरी–संज्ञा पुं० शिव।
संज्ञा स्त्री० झाँझ। खँजरी। डफली। बाजा-विशेष।
झर्झरीक–संज्ञा पुं० देश। शरीर। चित्र।
झल–संज्ञा पुं० १. दाह। जलन। आँच। २. उत्कट इच्छा। उग्र कामना। ३. क्रोध। गुस्सा। ४. समूह।
झलक–संज्ञा स्त्री० १. चमक। दमक। आभा। २. आकृति का आभास। प्रति-बिंब।
झलकदार–वि० चमकीला।
झलकना–क्रि० अ० १. चमकना। दमकना। उज्ज्वल होना। २. कुछ कुछ प्रकट होना। आभास होना।
झलका–संज्ञा पुं० शरीर में पड़ा हुआ छाला। फफोला।
झलकाना–क्रि० स० १. चमकाना। दम-काना। २. दिखलाना। कुछ आभास देना।
झलकार–संज्ञा पुं० जलन। झलक। आभा।
झलकी–संज्ञा स्त्री० कटाक्ष। दृष्टि। झाँवली।
झलझल–संज्ञा स्त्री० चमक। दमक। तेज। तीक्ष्ण।
क्रि० वि० चमकता हुआ।
झलझलाना–क्रि० अ० चमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमचमाना।
झलझलाहट–संज्ञा स्त्री० चमक। दमक।
झलना–क्रि० स० हिलाना-डुलाना। पंखा करना या हाँकना। हवा करने के लिए कोई चीज हिलाना।
क्रि० अ० १. इधर-उधर हिलना। †२. शेखी बघारना। डींग हाँकना। ३. दे० "झेलना"।
झलमल–संज्ञा पुं० १. हलकी रोशनी। अँधेरे में थोड़ा प्रकाश। २. चमक-दमक।
क्रि० वि० दे० "झलमल"।
झलमला–वि० चमकीला।
झलमलाना–क्रि० अ० १. रह-रहकर

चमकना। चमचमाना। २. प्रकाश का हिलना-डोलना।
क्रि० स० किसी ज्योति या लौ को हिलाना-डुलाना।

झलरा†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पकवान। झालर।

झलराना*†–क्रि० अ० बढ़ना। फैलकर छाना।

झलवाना–क्रि० स० झलने या झालने का काम दूसरे से कराना।

झला*†–संज्ञा पुं० १. हलकी वर्षा। २. झालर, तोरण या बंदनवार आदि। ३. पंखा। ४. समूह।
संज्ञा स्त्री० धूप।

झलाझल–वि० खूब चमचमाता हुआ। चमाचम।

झलाझली–वि० चमकदार। चमकीला।
संज्ञा स्त्री० झलाझल का भाव।

झलाना–क्रि० अ० १. साफ करना। २. टाँका लगवाना। किसी वस्तु को राँगे आदि से जुड़वाना।

झलाबोर–संज्ञा पुं० १. कारचोबी। एक प्रकार की आतिशबाजी। २. काँटा। झाड़ी। ३. चमक।
वि० चमकीला। चमकदार।

झलामल†–संज्ञा स्त्री० चमक। दमक।
वि० चमकीला।

झल्ल–संज्ञा स्त्री० पागलपन। सनक।
संज्ञा पुं० विदूषक। एक बाजा। लपट।

झल्लकंठ–संज्ञा पुं० कबूतर। परेवा।

झल्लक–संज्ञा पुं० झाँझ। मजीरा।

झल्ला–संज्ञा पुं० १. बड़ा टोकरा। २. वर्षा। ३. बौछार। †४. पागल। मूर्ख ५. बड़ा टोकरा।

झल्लाना–क्रि० अ० चिढ़ना। खीजना।
क्रि० स० चिढ़ाना। खिझाना।

झल्लिका–संज्ञा० स्त्री० १. तौलिया। २. शरीर का मैल। ३. तेज।

झष–संज्ञा पुं० १. मछली। २. मकर। मगर। ३. ताप। गरमी। ४. वन। ५. मीन राशि। ६. दे० "झख"।

झषकेतु, झषकेतन–संज्ञा पुं० कामदेव।

झषनिकेतन–संज्ञा पुं० समुद्र। जलाशय।

झषाङ्क–संज्ञा पुं० अनिरुद्ध। श्रीकृष्ण का पौत्र। कामदेव का दूसरा रूप।

झषाशन–संज्ञा पुं० १. मत्स्यभोजी। २. सूँस। जलजन्तु-विशेष।

झहनना*–क्रि० अ० १. झन्नाटे या सन्नाटे में आना। २. रोएँ खड़े होना। ३. झन-झन शब्द होना।

झहरना*–क्रि० अ० १. झरझर शब्द करना। २. शिथिल पड़ना। ढीला होना।
क्रि० स० झिड़कना। झल्लाना।

झहनाना–क्रि० स० १. झहनना का सकर्मक रूप। २. झनकार करना।

झहराना–क्रि० अ० १. शिथिल होकर या झरझर शब्द के साथ गिरना। २. झल्लाना। खिजलाना। ३. हिलाना।

झाँई–संज्ञा स्त्री० १. परछाई। प्रतिबिम्ब। छाया। झलक। २. अंधकार। अँधेरा। ३. धोखा। छल। ४. प्रतिशब्द। प्रति-ध्वनि। ५. एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्त-विकार से मनुष्यों के शरीर पर पड़ जाते हैं।
मुहा०—झाँईं बताना=धोखा देना।

झाँक–संज्ञा स्त्री० झाँकने की क्रिया या भाव।

झाँकड़ या झाँकर–संज्ञा पुं० काँटेदार झाड़ी। करील के सूखे झाड़।

झाँकना–क्रि० अ० १. छिपकर देखना। ओट से देखना। २. इधर-उधर झुककर देखना।

झाँकनी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "झाँकी"।

झाँका–संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।

झाँकी–संज्ञा स्त्री० १. झाँकने की क्रिया या भाव। दर्शन। अवलोकन। २. दृश्य। ३. झरोखा।

झाँख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हिरन। एक वन्य पशु। बारहसिंघा।

झाँखना*†–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झाँखर–संज्ञा पुं० दे० "झंखाड़"।

झाँगला–वि० ढीला-ढाला कपड़ा।

झाँगा‡–संज्ञा पुं० दे० "झगा"।

झाँझ—संज्ञा स्त्री० १. मजीरा। झाल। एक प्रकार का बाजा। २. क्रोध। गुस्सा। ३. पाजीपन। शरारत। सूखा कुआं या तालाब। ४. दे० "झाँझन"।

झाँझट—संज्ञा स्त्री० झगड़ा। कलह। विरोध। टंटा।

झाँझड़ी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "झाँझन"। झाँझ।

झाँझन—संज्ञा स्त्री० पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैंजनी। पायल।

झाँझर*†—संज्ञा स्त्री० १. झाँझन। पैंजनी। २. छलनी।

वि० १. पुराना। जर्जर। २. छेदवाला।

झाँझरी—संज्ञा स्त्री० १. झाँझ बाजा। झाल। २. झाँझन नामक गहना। ३. बहुत छेदवाली कलछी। झरना।

झाँझा—संज्ञा पुं० झींगुर। कीड़ा-विशेष।

झाँझिया—वि० क्रोधी। रिसहा।

संज्ञा पुं० झाँझ बजानेवाला।

झाँझी—संज्ञा स्त्री० खेल-विशेष।

मुहा०—झाँझी कौड़ी=फूटी कौड़ी। कुछ नहीं। निरर्थक।

झाँट—संज्ञा पुं० १. गुप्तांग के ऊपर के बाल। पशम। २. अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

झाँप—संज्ञा स्त्री० १. नींद। झपकी। २. पर्दा। चिक। ३. ढक्कन। टट्टर। टट्टी।

संज्ञा पुं० उछल-कूद।

झाँपना—क्रि० स० १. ढाँकना। आड़ म करना। २. झेंपना। लजाना। शरमाना।

झाँपों—संज्ञा स्त्री० १. छिनाल स्त्री। २. धोबिन।

झाँपी†—संज्ञा स्त्री० १. ढाँकने की टोकरी। २. मूंज की पिटारी। ३. झपकी।

झाँवना—क्रि० स० झाँवें से रगड़कर (हाथ पैर आदि) धोना।

झाँवर† या झाँवरा—वि० १. कुछ काला। २. मलिन। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. शिथिल। मंद। सुस्त।

झाँवली—संज्ञा स्त्री० १. झलक। २. आँख की कनखी।

झाँवाँ—संज्ञा पुं० अधिक पकने से जली हुई ईंट का टुकड़ा जिससे रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।

झाँसना—क्रि० स० धोखा देना। ठगना।

झाँसा—संज्ञा पुं० बहकाने की क्रिया। फुस-लावा। धोखा-धड़ी।

यौ०—झाँसा-पट्टी=धोखा-धड़ी।

झाँसू—वि० फुसलानेवाला। ठग। धूर्त।

झा—संज्ञा पुं० उपाध्याय। मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाऊ—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा झाड़।

झाग—संज्ञा पुं० फेन। गाज।

झागड़*†—संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।

झाझा—संज्ञा पुं० गाँजा। भाँग।

झाट—संज्ञा पुं० निकुञ्ज। लता आदि से घिरा हुआ स्थान।

झाटा—संज्ञा स्त्री० भुंइआवला। जूही।

झाड़—संज्ञा पुं० १. कँटीला सघन पेड़। २. एक तरह की आतिशबाजी। ३. झाड़ के आकार का रोशनी करने का सामान। ४. गुच्छा। ५. झटका।

संज्ञा स्त्री० १. झाड़ने की क्रिया। २. फटकार। डाँट-डपट। ३. मंत्र से झाड़ने की क्रिया।

यौ०—झाड़-फ़ानूस=शीशे के झाड़, हंडी, गिलास आदि। झाड़ फूंक=मंत्र से झाड़ने की क्रिया। मंत्रोपचार।

झाड़खंड—संज्ञा पुं० जंगल। निर्जन वन।

झाड़-झंखाड़—संज्ञा पुं० १. काँटेदार झाड़ियों का समूह। २. निकम्मी चीजें। ३. बीहड़ वन। वीरान जंगल।

झाड़दार—वि० १. सघन। घना। २. कँटीला। काँटेदार। ३. एक प्रकार का कसीदा।

झाड़न—संज्ञा स्त्री० १. बुहारन। कूड़ा। वह जो झाड़ने पर निकले। २. वह कपड़ा जिससे कोई चीज साफ की जाए। साफ करने का कपड़ा।

झाड़ना—क्रि० स० १. निकालना। दूर करना। हटाना। २. अपनी योग्यता दिखाने के लिए गढ़कर बातें करना। गर्द साफ करना। झाड़ू लगाना। बुहा-रना। कपड़े साफ़ करना। झटका देना

फटकारना। ३. बल या युक्ति-पूर्वक किसी से धन ऐंठना। ४. रोग या प्रेत-बाधा आदि दूर करने के लिए किसी को मंत्र आदि से फूंकना।

झाड़फूंक–संज्ञा स्त्री० भूत-प्रेत आदि की बाधाओं अथवा रोगों को दूर करने के लिए मंत्र आदि पढ़कर झाड़ना फूंकना।

झाड़बुहार–संज्ञा स्त्री० झाड़ना और बुहारना। सफाई।

झाड़ा–संज्ञा पुं० १. झाड़फूंक। २. तलाशी। ३. मल। गुह। मैला। ४. पाखाना। **मुहा०**—झाड़ा झपटा लेना=ढूंढ़ना। तलाशी लेना। झाड़ा देना=तलाशी देना। झाड़े झपटे जाना=मल त्याग करने जाना। पाखाने जाना।

झाड़ी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा झाड़। २. छोटा और घना वन। सघन छोटा वृक्ष।

झाड़ीदार–वि० कँटीला। झाड़ी से युक्त।

झाड़ू–संज्ञा स्त्री० १. कूंचा। बोहारी। सोहनी। सम्मार्जिनी। २. पुच्छल तारा। केतु। **मुहा०**—झाड़ू फिरना=कुछ न रहना। झाड़ू मारना=घृणा या निरादर करना। **यौ०**—झाड़ूकश=संज्ञा पुं० मेहतर। भंगी।

झाड़ूबरदार–वि० झाड़ू देनेवाला।

झापड़–संज्ञा पुं० थप्पड़। तमाचा।

झापा–संज्ञा पुं० टोकरी। बड़ी टोकरी। दौरी।

झाबर–संज्ञा पुं० १. दे० "झाबा"। २. दलदल। पंकिल भूमि।

झाबा–संज्ञा पुं० १. टोकरा। खाँचा। २. दे० "झब्बा"। ३. चमड़े का एक पात्र जिससे तेल या घी नापते हैं। कुप्पा कुप्पी। ४. सेव आदि बनाने के लिए छेददार बड़ा कलछा।

झाबी–संज्ञा स्त्री० टोकरी।

झाम†*–संज्ञा पुं० १. झब्बा। गुच्छा। २. घुड़की। डाँट। डपट। ३. धोखा। छल। ४. कुएँ से मिट्टी निकालने का यंत्र-विशेष।

झामर–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों का एक गहना। झूमर। २. सिल्ली। पथरी। अस्त्र तेज करने का पत्थर।

झामा–संज्ञा झांवा। पक्की ईंट।

झामी†–संज्ञा पुं० धोखेबाज। चालाक।

झायँ झायँ–संज्ञा स्त्री० १. झनकार। झन्‌झन्‌ शब्द। २. किसी सुनसान स्थान में होनेवाला शब्द। हवा का शब्द।

झावँ झावँ–संज्ञा स्त्री० १. बकवाद। बक-बक। २. हुज्जत। तकरार।

झावर*–वि० मलिन। उदास। शोक या लज्जा के कारण उतरा हुआ चेहरा। साँवले रंग का।

झार*†–वि० १. एकमात्र। निपट। केवल। २. कुल। सब। समस्त। संज्ञा पुं० समूह। झुंड। संज्ञा स्त्री० १. दाह। जलन। २. ईर्ष्या। डाह। ३. ज्वाला। लपट। आँच। ४. चरपरापन। झाल।

झारखंड–संज्ञा पुं० एक पहाड़ जो वैद्यनाथ से होता हुआ जगन्नाथपुरी तक चला गया है।

झारना–क्रि० स० १. बाल साफ करने के लिए कंघी करना। २. छाँटना। अलग करना। ३. दे० "झाड़ना"।

झारा–संज्ञा पुं० झरना। सूप।

झारी–संज्ञा स्त्री० १. समूह। २. झाड़ी। ३. जलपात्र। सुराही। कमण्डलु।

झाल–संज्ञा पुं० १. झाँझ नामक बाजा। २. झालने की क्रिया या भाव। टूटे बर्त्तनों को जोड़ना। ३. बड़ा टोकरा। संज्ञा स्त्री० १. चरपराहट। तीतापन। २. तरंग। लहर। ३. कामेच्छा। जलन। ४. दे० "झार"। पानी की झड़ी। लगातार वर्षा।

झालड़–संज्ञा स्त्री० पूजा के समय बजाया जानेवाला घड़ियाल। झालर।

झालना–क्रि० स० १. धातु की फूटी चीजों को जोड़ना। २. चिकना करना। पालिश करना। साफ करना।

झालर–संज्ञा स्त्री० १. शोभा के लिए लगाया गया किनारा। २. झालड़। ३. जाली

दार किनारा। गोट। ४. झाँझ। ५. एक प्रकार का पकवान-झलरा।

झालरदार—वि० जिसमें झालर लगी हो।

झालरना—क्रि० अ० दे० "झलराना"।

झालरा—संज्ञा पुं० १. हार। २. झरना।

झाला—संज्ञा पुं० १. राजपूतों की एक जाति। २. सितार या बीन की सुन्दर झंकार।

झालि†—संज्ञा स्त्री० पानी की झड़ी।

झावुक—संज्ञा पुं० झाऊ।

झाबा—संज्ञा पुं० झाँका। झाँपा। बड़ा जालीदार टोकरा।

झिंगवा—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।

झिंगुली*†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

झिंगाक—संज्ञा पुं० तोरई।

झिंझिया—संज्ञा स्त्री० छेदोंवाला वह घड़ा जिसमें दीया बालकर कुवार के महीने में लड़कियाँ घुमाती हैं।

झिंझोटी—संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

झिंझी—संज्ञा स्त्री० झिल्ली।

झिकाना—क्रि० स० भड़काना। चौंकाना।

झिझक—संज्ञा स्त्री० चौंक। भय। हिचक। डर। भड़क।

झिझकना—क्रि० अ० दे० "झझकना"।

झिझकारना—क्रि० स० १. दे० "झझकारना"। डाँटना। डपटना। २. दे० "झटकना"

झिझकी—संज्ञा स्त्री० भड़क। चौंक। डर।

झिड़कना—क्रि० स० १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक कोई बात कहना। २. अलग फेंक देना। झटकना।

झिटका†—संज्ञा पुं० दे० "झटक"। कंकड़ या टूटा-फूटा मिट्टी का टुकड़ा।

झिड़की—संज्ञा स्त्री० वह बात जो झिड़ककर कही जाय। डाँट। फटकार।

झिनवा—संज्ञा पुं० महीन चावल का धान।

झिपना—क्रि० अ० दे० "झेंपना"।

झिपाना—क्रि० स० लज्जित करना। शर्मिंदा करना।

झिनहड्डा—वि० दुर्बल। पतली हड्डीवाला।

झिनझिनी—संज्ञा स्त्री० सनसनी। झनझनी। किसी अंग की नस दब जाने से एक प्रकार की सनसनी होना।

झिरझिर—संज्ञा पुं० १. मन्द प्रवाह। धीरे धीरे बहना। २. हलकी वर्षा।

झिरझिरा—वि० झँझरा। झीना। पतला। बारीक (कपड़ा)।

झिरना*—क्रि० अ० दे० "झरना"। संज्ञा पुं० छेद। सूराख। झरना।

झिराना—क्रि० अ० दे० "झुराना"।

झिरी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा छेद। वह गड्ढा जिसमें पानी इकट्ठा हो। २. तुषार। पाला। ३. पानी का छोटा सोता।

झिलँगा—संज्ञा पुं० ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो। पुरानी खाट। संज्ञा पुं० दे० "झींगा"।

झिलना—क्रि० अ० १. बलपूर्वक प्रवेश करना। धँसना। घुसना। २. तृप्त होना। अघा जाना। ३. मग्न होना। तल्लीन होना। ४. झेला जाना। सहा जाना। संज्ञा पुं० झींगुर।

झिलम—संज्ञा स्त्री० कवच। जिरह-बख्तर। युद्ध में शरीर की रक्षा के लिए लोहे का पहनावा। युद्ध में सिर और मुँह पर पहनने की लोहे की टोपी।

झिलमिल—संज्ञा स्त्री० १. हिलता हुआ प्रकाश। २. रह-रहकर प्रकाश के घटने-बढ़ने की क्रिया। ३. एक प्रकार का बारीक कपड़ा। ४. युद्ध में पहनने का लोहे का कवच। झिलम। वि० रह-रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला—वि० १. जो गाढ़ा न हो। झँझरा। झीना। २. चमकता हुआ। ३. अस्पष्ट।

झिलमिलाना—क्रि० अ० १. रह-रहकर चमकना। २. प्रकाश का हिलना। क्रि० स० १. किसी चमकदार वस्तु को इस प्रकार हिलाना कि वह रह-रहकर चमके। २. हिलाना।

झिलमिली—संज्ञा स्त्री० १. बहुत सी आड़ी पटरियों का ढाँचा, जो किवाड़ों आदि में

प्रकाश या वायु आने के लिए जड़ा रहता है। खड़खड़िया । २. चिक । चिलमन।

झिलाना–क्रि० स० दूसरे को झेलने के लिए मजबूर करना ।. दूसरे को झेलाना।

झिल्लड़–वि० पतला और झँझरा (कपड़ा)। जो गाढ़ा न हो।

झिल्लिका–संज्ञा स्त्री० झींगुर। कीट-विशेष।

झिल्ली–संज्ञा पुं० झींगुर।

संज्ञा स्त्री० ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े। महीन पर्दा या जाला। पतली चमड़ी की तह।

झींकना–क्रि० अ० दे० "झींखना"। पछताना।

झींका–संज्ञा पुं० उतना अन्न जितना एक बार चक्की में डाला जाता है।

झींख–संज्ञा पुं० कुढ़न। झींखने का भाव।

झींखना–क्रि० अ० १. पछताना। कुढ़ना। खीजना । २. दुखड़ा रोना ।

संज्ञा पुं० १. झींखने की क्रिया या भाव। २. दुःख का वर्णन । दुखड़ा ।

झींगट–संज्ञा पुं० मल्लाह । केवट । दास । धीवर। माझी।

झींगा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मछली। २. एक प्रकार का धान।

झींगुर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज झीं-झीं होती है। झिल्ली।

झींसी–संज्ञा स्त्री० छोटी-छोटी बूंदों की वर्षा। फुहार।

झीखना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झीन–वि० झीना । पतला ।

झीना–वि० १. बहुत महीन । बारीक । पतला । २. जिसमें बहुत से छेद हों। ३. दुबला। दुर्बल।

झीरका–संज्ञा स्त्री० झींगुर । कीट ।

झील–संज्ञा स्त्री० १. बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय । २. बहुत बड़ा तालाब । ताल।

झीलर–संज्ञा पुं० छोटी झील।

झीवर–संज्ञा पुं० धीवर । मल्लाह।

झुँझलाना–क्रि० अ० खिझलाना । चिड़चिड़ाना।

झुंड–संज्ञा पुं० समूह । वृन्द । गरोह ।

झुंडी–संज्ञा स्त्री० १. खूंटी । २. झाड़ी । ३. गुच्छा । ४. साधुओं का एक दल-विशेष।

झुकना–क्रि० अ० १. नीचे की ओर लटकना। निहुरना। नवना। २. किसी पदार्थ का किसी ओर मुड़ना । ३. लचना । ४. प्रवृत्त होना । दत्त-चित्त होना । ५. नम्र होना । विनीत होना । ६. लज्जा से अवनत होना । ७. अभिवादन करना। ८. क्रुद्ध होना।

मुहा०–झुक-झुक पड़ना=नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खड़ा न रह सकना।

झुकमुख†–संज्ञा पुं० दे० "झुटपुटा"।

झुकराना–क्रि० अ० झोंका खाना।

झुकवाना–क्रि० स० झुकाने का काम दूसरे से कराना।

झुकाना–क्रि० स० १. किसी खड़ी चीज को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुराना। नवाना। २. किसी पदार्थ को किसी ओर घुमाना । ३. प्रवृत्त करना । ४. विनीत बनाना । ५. नीचा दिखाना।

झुकामुखी–संज्ञा स्त्री० दे० "झुटपुटा"।

झुकाव–संज्ञा पुं० १. किसी ओर लटकने, प्रवृत्त होने या झुकने की क्रिया या भाव। २. ढाल । उतार । ३. मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति ।

झुकावट–संज्ञा स्त्री० दे० "झुकाव" ।

झुटपुटा–संज्ञा पुं० ऐसा समय जब कि कुछ अन्धकार और कुछ प्रकाश हो। झुकमुख।

झुटुंग–वि० झोंटेवाला। जटावाला।

झुठलाना–क्रि० स० १. झूठा ठहराना । झूठा बनाना । २. झूठ कहकर धोखा देना।

मुहा०–मुँह झुठलाना=नाम मात्र भोजन करना । कुछ खाना ।

झुठाई*†–संज्ञा स्त्री० झूठ का भाव । झूठापन। असत्यता।

झुठाना–क्रि० स० झूठा ठहराना।

झुनक–संज्ञा पुं० नूपुर का शब्द।
झुनकना–क्रि० अ० झुनझुन शब्द करना।
झुनका–संज्ञा पुं० धोखा।
झुनकार‡–वि० [स्त्री० झुनकारी] पतला। महीन। बारीक।
झुनझुन–संज्ञा पुं० नूपुर आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना–संज्ञा पुं० बच्चों का एक प्रकार का खिलौना, जिसे हिलाने से झुन-झुन शब्द होता है। घुनघुना।
झुनझुनाना–क्रि० अ० झुन-झुन शब्द होना। क्रि० स० झुन-झुन शब्द उत्पन्न करना।
झुनझुनी–संज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट। नूपुर। घुँघरू।
झुपरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंपड़ी"।
झुप्पा–संज्ञा पुं० झब्बा।
झुबझुबी–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक गहना।
झुमका–संज्ञा पुं० १. कान का एक गहना। कर्णफूल। २. एक पौधा। ३. फल-विशेष।
झुमाना–क्रि० स० किसी को झूमने में प्रवृत्त करना। धीरे धीरे हिलाना।
झुरकुट–वि० सूखा। कृश।
झुरकुटिया–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लोहा। वि० कृश। दुर्बल।
झुरकुन–संज्ञा पुं० चूर।
झुरझुरी–संज्ञा स्त्री० कँपकँपी।
झुरना–क्रि० स० १. सूखना। दे० "झुराना"। २. बहुत अधिक दुःखी होना या शोक करना। ३. दुर्बल होना। घुलना। मुरझाना। कुम्हलाना।
झुरमुट–संज्ञा पुं० १. पत्तों की आड़। झाड़। २. समूह। मंडली।
झुरवन–संज्ञा पुं० किसी वस्तु के सूखने पर उसमें से निकला हुआ अंश।
झुरवाना–क्रि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना।
झुरसना*†–क्रि० अ० दे० "झुलसना"।
झुराना†–क्रि० स० सुखाना। कुम्हलाना। क्रि० अ० १. सूखना। २. दुःख या भय से घबरा जाना। ३. दुबला होना। सूखना। मुरझाना।
झुरावन†–संज्ञा पुं० सूखने के कारण कम होनेवाला अंश।
झुरियाना–क्रि० स० बीनना। सोहना। निराना। खेत की घास निकाल देना। झोली में भरना।
झुर्री–संज्ञा स्त्री० शरीर की त्वचा की सिकुड़न। सिलवट। शिकन।
झुलना†–संज्ञा पुं० दे० "झूला"। वि० झूलनेवाला। क्रि० अ० हिलना। लटकना। हिंडोले पर चढ़कर हिलना।
झुलनी–संज्ञा स्त्री० १. नाक में पहनने का एक प्रकार का गहना। नथुनी। २. दे० "झूमर"।
झुलझुली–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।
झुलमुला†–वि० दे० "झिलमिल"।
झुलसन–संज्ञा स्त्री० झुलसने की क्रिया या भाव। शरीर झुलसानेवाली गरमी।
झुलसना–क्रि० अ० १. थोड़ा जल जाना। झौंसना। २. अधिक गरमी के कारण सूखकर काला पड़ जाना। मुरझा जाना। भुनना। क्रि० स० १. अंशतः जलाना कि रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. अधजला कर देना।
झलसवाना–क्रि० स० [झुलसना का प्रे०] झुलसने का काम दूसरे से कराना।
झुलसाना–क्रि० स० १. दे० "झुलसना"। २. दे० "झुलसवाना।"
झुलाना–क्रि० स० १. हिंडोला डुलाना। हिलाना। लटकाना। २. किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। ३. किसी को बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना।
झुलावना*†–क्रि० स० दे० "झुलाना"।
झुल्ला–संज्ञा स्त्री० एक तरह की कुरती। दे० "झूला"।
झुहिरना†–क्रि० स० लदना। लादा जाना।

झूँक*†–संज्ञा पुं० दे० "झोंका"। संज्ञा स्त्री० दे० "झोंक"।
झूँकटी–संज्ञा स्त्री० छोटी झाड़ी।
झूँकना†–क्रि० स० १. दे० "झोंकना"। २. दे० "झखना"।
झूँखना*†–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झूँझ–संज्ञा पुं० घोंसला। खोंता। पक्षियों के रहने का स्थान।
झूँझल–संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझलाहट"।
झूँटर–संज्ञा स्त्री० दोफसली भूमि। जिस खेत में दो फसलें बोई जाती हों।
झूँसना†–क्रि० अ० और स० दे० "झुलसना"। ठगना।
झूँका*†–संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।
झूझना–क्रि० अ० दे० "जूझना"।
झूठ–संज्ञा पुं० मिथ्या। असत्य।
मुहा०–झूठ सच कहना या लगाना=झूठी निंदा करना। शिकायत करना।
झूठमूठ–क्रि० वि० सरासर झूठ। बिलकुल झूठ। यों ही। व्यर्थ। बिना किसी वास्तविक आधार के। बिना किसी कारण के।
झूठा–वि० १. मिथ्या। असत्य। २. झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी। ३. बनावटी। नकली।
वि० दे० "जूठा"। खाए हुए भोजन का बचा हुआ अंश।
झूठों–क्रि० वि० १. झूठ-मूठ। यों ही। २. नाममात्र के लिए।
झूना†–वि० १. दे० "झीना"। २. सूखा नारियल का फल। ३. महीन कपड़ा। ४. चूल्हे में आग जलाना।
झूम–संज्ञा स्त्री० १. झूमने की क्रिया या भाव। २. ऊँघ। झपकी।
झूमक–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का गीत। झूमर। २. इस गीत के साथ होनेवाला नृत्य। ३. गुच्छा। ४. मोतियों का गुच्छा। ५. झुमका। कर्णफूल।
संज्ञा स्त्री० भीड़। समूह।
वि० हिलनेवाला। झूमनेवाला।
झूमकसाड़ी–संज्ञा स्त्री० झालरदार साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हों।
झूमका–संज्ञा पुं० १. दे० "झुमका"। २. दे० "झूमक"।
झूमड़–संज्ञा पुं० दे० "झूमर"।
झूमड़-झामड़–संज्ञा पुं० ढकोसला। झूठा प्रपंच।
झूमना–क्रि० अ० १. हिलना। डोलना। झोंके खाना। २. ऊँघना। मस्ती या मद में झूलना।
झूमर–संज्ञा पुं० १. पहनने का एक प्रकार का गहना। २. झूमर नाम का गीत। ३. इस गीत के साथ होनेवाला नाच। ४. झूमरा नामक ताल। ५. काठ का एक खिलौना।
झूर‡–वि० १. सूखा। चुरमुरा। २. खाली। ३. व्यर्थ।
संज्ञा स्त्री० १. जलन। डाह। २. दुःख। परिताप। ३. जूठा।
झूरना–क्रि० सं० सूखना। दुर्बल होना। मुरझाना।
झूरा‡–वि० १. सूखा। खुश्क। मुरझाया। २. खाली।
संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव। अकाल पड़ना। महँगी होना। २. न्यूनता। कमी।
झूरें‡–क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। झूठमूठ।
वि० दे० "झूर"।
झूल–संज्ञा स्त्री० ओहार। १. बैल, घोड़े आदि पशुओं के ओढ़ने का वस्त्र। हाथी का ओहार। चौपायों की पीठ पर डाला जानेवाला वस्त्र। सवारी का पर्दा २. ढीला ढाला वस्त्र। * ३. दे० "झूला"
झूलन–संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु का एक उत्सव हिंडोला।
झूलना–क्रि० अ० १. डोलना। हिलना लटकना। २. झूले पर बैठकर पेंग लेना किसी कार्य के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना।
वि० झूलनेवाला। जो झूलता हो।
संज्ञा पुं० १. छन्द-विशेष। २. हिंडोला। झूला।

झूलरि–संज्ञा स्त्री० झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला–संज्ञा पुं० १. रस्सी के सहारे बँधा हुआ पाट जिस पर झूलते हैं। हिंडोला। २. पलना। ३. स्त्रियों की कुरती। ४. झटका। झोंका।

झेंपना, झेपना–क्रि० अ० शरमाना। लजाना।

झेर*†–संज्ञा स्त्री० १. विलंब। देर। २. बखेड़ा। झगड़ा।

झेरना*‡–क्रि० स० झेलना। सहना। क्रि० स० शुरू करना। आरम्भ करना।

झेरा–संज्ञा पुं० झंझट। बखेड़ा।

झेल–संज्ञा स्त्री० १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया। २. हलका धक्का या हिलोरा। ३. झेलने की क्रिया या भाव। ४. विलंब। देर।

झेलना–क्रि० स० १. ऊपर लेना। सहना २. तैरने में हाथ-पैर से पानी हटाना ३. पानी में पैठना। हेलना। ४. ठेलना ढकेलना। बचाना। ५. ग्रहण करना मानना।

झोंक–संज्ञा स्त्री० १. झुकाव। प्रवृत्ति २. बोझ। भार। ३. वेग। तेजी ४. किसी काम का धूमधाम से उठाना ५. ठाट। सजावट। ६. आघात ७. पानी की हिलोर। ८. दे० "झोंका"

यौ०–नोक झोंक=प्रतिद्वंद्विता। विरोध

झोंकना–क्रि० स० १. किसी वस्तु को आग में फेंकना। झटके के साथ फेंकना। ढकेलना। ठेलना। २. बहुत खर्च करना। ३. आपत्ति, दुःख या भय के स्थान में कर देना। ४. बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना। ५. बिना विचारे दोष आदि मढ़ना।

मुहा०–भाड़ झोंकना=१. मूर्खतापूर्ण या असफल तथा निरर्थक उद्योग। २. तुच्छ कार्य करना।

झोंकवाना–क्रि० स० [झोंकना का प्रे०] झोंकने का काम दूसरे से कराना।

झोंकवा–संज्ञा पुं० भाड़ में पत्ते झोंकनेवाला मनुष्य।

झोंका–संज्ञा पुं० १. झटका। धक्का। रेला। झपट्टा। २. हवा का झटका। ३. हवा का बहाव। झकोरा। ४. पानी का हिलोरा। ५. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया। ६. ठाठ। सजावट।

झोंकाई–संज्ञा स्त्री० झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकी–संज्ञा स्त्री० १. उत्तरदायित्व। जवाबदेही। भार। बोझ। २. अनिष्ट या हानि की आशंका। जोखिम।

झोंझ–संज्ञा स्त्री० १. खोंता। घोंसला। २. कुछ पक्षियों (जैसे, ढेक, गीध) के गले की थैली या लटकता हुआ मांस। ३. खुजली। सुरसुराहट। ४. फलों का घौद। केले का घौद। एक गुच्छे में लगे हुए बहुत से फल।

झोंझल–संज्ञा स्त्री० झुँझलाहट। क्रोध। कुढ़न।

झोंझा–संज्ञा पुं० बड़े पेटवाला। तोंदवाला।

झोंट–संज्ञा पुं० झाड़ी।

झोंटा–संज्ञा पुं० १. बड़े-बड़े बालों का समूह। लट। जटा। २. वस्तुओं का समूह जो एक बार हाथ में आ सके। जुट्टा। झोंका। पेंग।

झोंटियाना–क्रि० स० बाल पकड़कर खींचना। झोंटा खींचना। झोंटा पकड़कर मारना।

झोंटी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंटा"।

झोंपड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० झोंपड़ी] कुटी। फूस से छाया हुआ मिट्टी का घर।

मुहा०–अंधा झोंपड़ा=पेट। उदर।

झोंपड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा झोंपड़ा। कुटिया।

झोंपा–संज्ञा पुं० १. झब्बा। गुच्छा। फलों या फूलों का गुच्छा। २. घेरा। परिधि।

झोंटिंग–संज्ञा पुं० झोंटेवाला। जिसके सिर पर बड़े बड़े बाल हों। भूत, प्रेत या पिशाच आदि।

क्रि० स० धक्का देकर, झोंटा या बाल पकड़कर खींचना।

झोर–संज्ञा पुं० कढ़ी। झोल।
संज्ञा स्त्री० झोली।

झोरई†–वि० रसेदार।

संज्ञा पुं० रसेदार तरकारी।

झोरना†–क्रि० स० १. झटका देकर हिलाना। २. झटका देकर तोड़ना। ३. इकट्ठा करना। एकत्र करना।

झोरा–संज्ञा पुं० फलों या फूलों का गुच्छा।

झोरी*†–संज्ञा स्त्री० १. झोली। २. पेट। झोझर। ओझर। ३. रोटी-विशेष।

झोल–संज्ञा पुं० १. तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। शोरबा। २. कढ़ी। कढ़ी आदि की तरह पकाई हुई पतली लेई। ३. माँड़। ४. धातु पर का मुलम्मा। ढीला-ढाला कपड़ा। कपड़े की सिकुड़न या झूल। ५. पल्ला। आँचल। ६. परदा। ओट। आड़। ७. गलती। भूल। ८. वह थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे रहते हैं। गर्भ। ९. राख। भस्म। खाक। १०. दाह। जलन। वि० १. ढीला। २. निकम्मा। खराब। बुरा।

झोलझाल–संज्ञा पुं० १. ढीला-ढाला। २. चर-परा रसा।

झोलदार–वि० १. जिसमें रसा हो। रसे-दार। २. जिस पर मुलम्मा किया हो। ३. झोल-संबंधी ४. ढीला-ढाला।

झोलना–क्रि० स० जलाना।

झोला†–संज्ञा पुं० [स्त्री० झोली] १. कपड़े की बड़ी थैली। थैला। २. ढीला-ढाला गिलाफ। खोली। ३. साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ४. वात का एक रोग। पाला या लू लगने का रोग। लकवा। ५. झटका। आघात। धक्का। ६. बाधा। आपत्ति। ७. संकेत। इशारा। ८. पाल की रस्सी। झोंका। ९. झकोरा। १०. हिलोर।

झोली–संज्ञा स्त्री० १. छोटा झोला। थैली। धोकरी। २. घास बाँधने का जाल। ३. मोट। चरसा। पुर। ४. खलिहान में अनाज ओसाने का कपड़ा। ५. कुश्ती का एक पेच। ६. राख। भस्म। मुहा०–झोली बुझाना=सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना।

झौंद–संज्ञा पुं० पेट। उदर।

झौंर*–संज्ञा पुं० १. झुंड। समूह। २. फूलों, पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा। ३. एक प्रकार का गहना। झब्बा। ४. पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह। कुंज।

झौंरना–क्रि० अ० १. गूंजना। गुंजार करना। २. दे० "झौरना"।

झौंरा–वि० साँवला। झाँवर। काला। कृष्ण वर्ण। २. गुच्छा। झब्बा।

झौंराना*–क्रि० अ० १. इधर-उधर हिलना। झूमना। २. झाँवले रंग का हो जाना। काला पड़ जाना। ३. मुरझाना। कुम्ह-लाना।

झौंसना–क्रि० स० दे० "झुलसना"। जलाना।

झौर–संज्ञा पुं० १. झगड़ा। लड़ाई। बखेड़ा। हुज्जत। तकरार। ३. डाँट-फटकार। कहा-सुनी।

झौरना–क्रि० स० छोप लेना। दबा लेना। झपटकर पकड़ना।

झौरा–संज्ञा पुं० झंझट।

झौरी–संज्ञा स्त्री० खेत की घास।

झौरे–क्रि० वि० १. समीप। पास। निकट। २. साथ। संग।

झौवा‡–संज्ञा पुं० खँचिया। टोकरी।

झौहाना–क्रि० अ० १. गुर्राना। क्रोध करना। २. चिड़चिड़ाना। फुसकारना। ३. अनायास गिरना।

ञ

ञ–हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है। इसका प्रयोग सानुनासिक के रूप में चवर्ग के साथ होता है।

ट–हिंदी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।
संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. गान। ३. रुद्र। ४. अंकुश। ५. वृद्धावस्था। बुढ़ापा। ६. नारियल का खोपड़ा। ७. वामन। ८. चौथाई भाग। ६. शब्द। नाद। ध्वनि।

टंक–संज्ञा पुं० १. सिक्का। २. चार माशे की एक तौल। ३. २१$\frac{1}{8}$ रत्ती की मोती की तौल। ४. टाँकी। छेनी। ५. कुल्हाड़ी। ६. कुदाल। ७. तलवार। फरसा। ८. टाँग। ९. क्रोध। १०. अभिमान। ११. सुहागा। १२. कोष। १३. म्यान। १४. पर्वत का खड्ड। १५. पत्थर का काटा हुआ टुकड़ा।

टंकक–संज्ञा पुं० रुपया।

टंककशाला–संज्ञा स्त्री० टकसाल।

टंकटीक–संज्ञा पुं० शिव।

टंकण–संज्ञा पुं० १. सुहागा। २. टाँके से जोड़ लगाने का काम। ३. घोड़े की एक जाति। ४. एक प्राचीन देश।

टँकना–क्रि० अ० १. टाँका जाना। सिलना। २. लिखा जाना। दर्ज किया जाना। ३. सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना। रेता जाना।

टँकवाना–क्रि० स० दे० "टँकाना"।

टंकशाला–संज्ञा स्त्री० टकसाल।

टंका–संज्ञा पुं० १. ताँबे का एक पुराना सिक्का। एक तोले की तौल। २. एक तरह का गन्ना।
संज्ञा स्त्री० जंघा।

टँकाई–संज्ञा स्त्री० टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टंकानक–संज्ञा पुं० शहतूत।

टँकाना–क्रि० स० १. टाँकों से जोड़वाना या सिलवाना। २. सिल, जाँता, चक्की आदि को खुरदुरा कराना। कुटाना। ३. सिक्कों की जाँच कराना या परखवाना।

टंकार–संज्ञा स्त्री० १. टन-टन शब्द। २. धनुष की कसी हुई डोरी पर बाण रखकर खींचने से उत्पन्न ध्वनि। ३. धातु-खंड पर आघात लगने का ठनठन शब्द। ठनाका। ४. आश्चर्य। विस्मय। ५. कीर्ति।

टंकारना–क्रि० स० धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना। चिल्ला खींचकर बजाना।

टंकी–संज्ञा स्त्री० पानी भरने का बनाया हुआ छोटा-सा कुंड या बड़ा बरतन। चौबच्चा। टाँका।

टंकोर–संज्ञा पुं० दे० "टंकार"।

टंकोरना–क्रि० स० दे० "टंकारना"।

टंकौरी–संज्ञा स्त्री० काँटा।

टंग–संज्ञा पुं० टाँग।

टँगड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "टाँग"।

टँगना–क्रि० अ० १. लटकना। २. फाँसी पर चढ़ना या लटकना।
संज्ञा पुं० कपड़े आदि टाँगने की रस्सी। अलगनी।

टँगा–संज्ञा पुं० मूंज।

टँगारी†–संज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी।

टंच‡–वि० १. सूम। कंजूस। कृपण। २. कठोर-हृदय। निष्ठुर। तैयार। मुस्तैद।

टंट-घंट–संज्ञा पुं० १. घड़ी-घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच। २. काठ-कबाड़।

टंटा–संज्ञा पुं० १. लंबी-चौड़ी प्रक्रिया। आडंबर। खटराग। २. उपद्रव। दंगा। फसाद। ३. झगड़ा।

टई–संज्ञा स्त्री० दे० "टही"।

टक–संज्ञा स्त्री० १. ऐसा ताकना जिसमें बड़ी देर तक पलक न गिरे। २. स्थिर दृष्टि। ३. तराजू का पलड़ा।
मुहा०–टक बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना। टकटक देखना=बिना पलक गिराए लगातार कुछ काल तक देखते रहना। टक लगाना=आसरा देखते रहना।

टकटका*†–संज्ञा पुं० [स्त्री० टकटकी] स्थिर दृष्टि। टकटकी।
वि० स्थिर या बँधी हुई दृष्टि।

टकटकाना†–क्रि० स० १. एकटक ताकना।

स्थिर दृष्टि से देखना । २. टकटक शब्द उत्पन्न करना ।

टकटकी–संज्ञा स्त्री० बिना पलक गिराए देर तक देखना । अनिमेष या स्थिर दृष्टि ।
मुहा०–टकटकी बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना ।

टकटोना, टकटोरना†–क्रि० स० १. टटोलना २. ढूंढ़ना ।

टकटोलना–क्रि० स० दे० "टटोलना" । ढूंढ़ना ।

टकटोहन–संज्ञा पुं० टटोलकर देखने की क्रिया । स्पर्श ।

टकटोहना*–क्रि० स० दे० "टटोलना" ।

टकराना–क्रि० अ० १. जोर से भिड़ना । धक्का या ठोकर लेना । २. मारा-मारा फिरना ।
क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी पर जोर से मारना । जोर से भिड़ाना । पटकना ।

टकवाना–क्रि० स० जुड़वाना । सिलाना ।

टकसाल–संज्ञा स्त्री० १. मुद्रालय । वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं । टकशाला । २. असल चीज ।
मुहा०–टकसाल बाहर=१. सिक्का जिसका चलन न हो । खोटा । खराब । २. अशिक्षित । अनपढ़ । मूर्ख । ३. जिसका प्रयोग शिष्ट न माना जाय ।

टकसाली–वि० १. टकसाल का । टकसाल संबंधी । २. खरा । चोखा । ३. विद्वानों द्वारा मान्य । प्रमाणित । सर्व-सम्मत । जैसे टकसाली भाषा । ४. ऊँचा हुआ । पक्का ।
संज्ञा पुं० टकसाल का कर्मचारी ।

टका–संज्ञा पुं० १. रुपया । २. ताँबे का एक सिक्का, जो दो पैसे के बराबर होता है । अधन्ना । दो पैसे । ३. धन । द्रव्य । रुपया-पैसा । ४. एक तौल ।
मुहा०–टका सा जवाब देना=साफ इनकार करना । कोरा जवाब देना । टका सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित हो जाना । टके गज की चाल=मोटी चाल । थोड़े खर्च में निर्वाह ।

टकासी–संज्ञा स्त्री० टके या दो पैसे फी रुपए का सूद ।

टकी–संज्ञा स्त्री० ताक । प्रतीक्षा । ठुक्की । किसी की ताक में छिपना । लुकाव ।

टकुआ–संज्ञा पुं० चरखे में का तकला जिस पर सूत काता जाता है । तकला । छेद करने का यंत्र ।

टकुली–संज्ञा स्त्री० एक औजार । चपोट सिरीस ।

टकैत–वि० धनी । संपन्न ।

टकोर–संज्ञा स्त्री० १. हलकी चोट । प्रहार । आघात । ठेस । थपेड़ । २. नगाड़े पर का आघात । ३. डंके या नगाड़े की आवाज । ४. धनुष की डोरी खींचने का शब्द । टंकार । ५. गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर सेंकना । सेंक ६. झाल । परपराहट । चमक ।

टकोरना–क्रि० स० १. हलका आघात पहुँचाना । ठोकर लगाना । २. डंके आदि पर चोट लगाना । सेंकना । बजाना

टकोरा–संज्ञा पुं० १. छोटा आम । अंबिया २. नौबत की आवाज ।

टकौना–संज्ञा पुं० टका । दो पैसे ।

टकौरी–संज्ञा स्त्री० छोटा तौलने का काँटा

टक्कर–संज्ञा स्त्री० १. धक्का । ठोकर । २ मुकाबला । मुठभेड़ । लड़ाई । ३. घाटा हानि ।
मुहा०–टक्कर खाना = भिड़ना । १. ठोकर खाना । मुकाबला करना । २. मारा मारा फिरना । टक्कर का=बराबरी का समान । टक्कर लेना=वार सहना । चोट सहना । टक्कर मारना=ठोकर मारना धक्का लगाना । मुकाबला करना । निष्फल प्रयत्न करना । माथा मारना । टक्कर लड़ाना=दूसरे के सिर पर सिर मारकर लड़ना ।

टखना–संज्ञा पुं० एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ । गुल्फी ।

टगण–संज्ञा पुं० मात्रिक गणों का एक भेद

टगर–संज्ञा पुं० १. सुहागा । २. क्रीड़ा विलास । ३. तगर का वृक्ष ।

टघरना†—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।
टचटच—क्रि० वि० धाँय धाँय। धक धक। चिनगारियों से उत्पन्न शब्द।
टटका—वि० हाल का। ताजा। नया। कोरा।
टटड़ी या टटरी—संज्ञा स्त्री० १. ठठरी। ठट्टी। २. घेरा। मेंड़। ३. थाला। ४. खोपड़ी।
टटपूंजिया या टुटपूँजिया—वि० थोड़ी पूंजी-वाला। निर्धन व्यवसायी। थोड़े रुपयोंवाला व्यापारी।
टटल बटल†—वि० अंडबंड। ऊटपटाँग।
टटवानी—संज्ञा स्त्री० छोटी छोटी। टटुई।
टटिया—संज्ञा स्त्री० टट्टी। टट्टर।
टटियाना—क्रि० अ० सूख जाना।
टटीबा—संज्ञा पुं० घिरनी। चक्कर।
टटीहरी—संज्ञा स्त्री० पक्षी-विशेष।
टटुआ—संज्ञा पुं० छोटा घोड़ा।
टटुई—संज्ञा स्त्री० टटवानी। छोटा घोड़ा।
टटोरना†—क्रि० स० दे० "टटोलना"।
टटोल—संज्ञा स्त्री० टटोलने का भाव या क्रिया। गूढ़ स्पर्श।
टटोलना—क्रि० स० १. छूना। स्पर्श करना। हाथों से ढूँढ़ना। खोजना। २. किसी के हृदय का भाव जानना। थाह लेना। ३. जाँच करना। परखना।
टटोहना*—क्रि० स० दे० "टटोलना"।
टट्टड़—संज्ञा पुं० टट्टर।
टट्टर—संज्ञा पुं० बाँस की फट्टियों आदि का पल्ला। ओट के लिए दरवाजे आदि में लगाने की टट्टी।
टट्टरा या टट्टरी—संज्ञा पुं० १. ढोल या नगाड़े का शब्द। २. चुहलबाजी। ३. डींग। लम्बी-चौड़ी बात।
टट्टा—संज्ञा पुं० १. टट्टर। बड़ी टट्टी। २. अंडकोष।
टट्टी—संज्ञा स्त्री० १. टट्टर। २. चिक। चिलमन। ३. पतली दीवार। ४. पाखाना। ५. बाँस की फट्टियों का टट्टर जिस पर बेलें आदि चढ़ाई जाती हैं।
मुहा०—टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना=१. किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना। २. छिपाकर बुरा काम करना। धोखे की टट्टी=ऐसी वस्तु या बात जिसके कारण लोग धोखा खाकर हानि उठावें।
टट्टू—संज्ञा पुं० छोटे कद का घोड़ा। टाँगन। टटुआ।
मुहा०—भाड़े का टट्टू=रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी।
टन—संज्ञा स्त्री० झनकार। धनुष या घंटे से उत्पन्न ध्वनि। टनकार।
संज्ञा पुं० एक अंग्रेजी तौल (२८ मन=एक टन)
टनकना—क्रि० अ० १. टनटन बजना। २. सिर में दर्द होना।
टनटन—संज्ञा स्त्री० घंटा बजने का शब्द।
टनटनाना—क्रि० स० "टन-टन" करना। घंटा बजाना।
क्रि० अ० टनटन बजना।
टनमन—संज्ञा पुं० दे० "टोना"।
वि० दे० "टनमना"।
टनमना—वि० स्वस्थ। चंगा। 'अनमना' का उलटा।
टना—संज्ञा पुं० योनि। भग।
टनाका†—संज्ञा पुं० घंटा बजने का शब्द। वि० बहुत कड़ा। बहुत कड़ी (धूप)।
टनाटन—संज्ञा स्त्री० लगातार होनेवाला टनटन शब्द।
टनाना—क्रि० स० फैलाना। खींचकर बांधना। कसकर बाँधना।
टप—संज्ञा पुं० १. खुली गाड़ियों में लगा हुआ ओहार या सायबान (फिटन या टमटम का)। कलंदरा। २. लटकानेवाले लंप के ऊपर की छतरी। ३. पानी रखने का बड़ा बरतन। टाँका। ४. एक औजार। ५. कान में पहनने का अंग्रेजी ढंग का फूल।
संज्ञा स्त्री० १. बूंद बूंद टपकने का शब्द। २. किसी वस्तु के ऊपर से सहसा गिर पड़ने का शब्द।
टपक—संज्ञा स्त्री० १. टपकने का भाव।

२. रुक-रुककर होनेवाला दर्द। ३. बूंद बूंद गिरने का शब्द।
टपकना–क्रि० अ० १. बूंद-बूंद गिरना। चूना। रसना। २. फल का पेड़ से गिरना। ३. ऊपर से सहसा गिरना। ४. कोई भाव अधिक प्रकट होना। झलकना। ५. घाव आदि के कारण रह-रहकर दर्द करना। चिलकना। टीस मारना। ६. फिसलना। ढल पड़ना।
टपका–संज्ञा पुं० १. बूंद बूंद गिरने का भाव। २. टपकी हुई वस्तु। रसाव। ३. पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। ४. रह-रहकर उठनेवाला दर्द। टीस।
टपका टपकी–संज्ञा स्त्री० १. बूंदाबूंदी। वर्षा की हलकी झड़ी। फुहार। २. फलों का लगातार गिरना।
वि० भूला-भटका।
टपकाना–क्रि० स० चुआना। थोड़ा-थोड़ा करके गिराना। रंग आदि निकालना। छानना। निकालना।
टपना–क्रि० अ० १. बिना कुछ खाए पीए पड़ा रहना। २. व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। ३. कूदना। लाँघना।
टपरना–क्रि० स० टाँकी की चोट से पत्थर की सतह खुरदरी करना। जमीन या दीवार पर नया मसाला लगाने से पहले उसे थोड़ा-थोड़ा खोदना या तोड़ना।
टपरा–संज्ञा पुं० झोंपड़ा। छप्पर।
टपाटप–क्रि० वि० १. लगातार टपटप शब्द के साथ या बूंद-बूंद करके (गिरना)। २. शीघ्रता से। जल्दी जल्दी।
टपाना–क्रि० स० १. बिना खिलाए पिलाए पड़ा रहने देना। २. व्यर्थ आसरे में रखना। ३. फँदाना। कुदवाना।
टप्पर†–संज्ञा पुं० दे० "छप्पर"।
टप्पा–संज्ञा पुं० १. पड़ाव। २. उछाल। कूद। फलाँग। ३. नियत दूरी। ४. दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला मैदान। ५. जमीन का छोटा हिस्सा। ६. अंतर। बीच। फर्क। ७. एक प्रकार का चलता गाना। ८. मोटी मोटी सीवन। ९. हुक या काँटा। १०. डाकखाना।
टब्बर–संज्ञा पुं० परिवार। कुल। वंश। कुटुम्ब।
टब–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. पानी रखने के लिए बड़ा बरतन। २. एक प्रकार का लंप।
टमक–संज्ञा स्त्री० पीड़ा। यातना। वेदना। कष्ट। टीस। ध्वनि-विशेष। पानी में गिरने का शब्द।
टमकना–क्रि० अ० टीस होना। घाव या दर्द। गिरना। टपकना।
टमकी–संज्ञा स्त्री० डुगडुगिया।
टमटम–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी।
टमटी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बरतन।
टमाटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे० टोमैटो] एक प्रकार का फल जिसे विलायती बैंगन कहते हैं। एक फल जिसे तरकारी के रूप में प्रयोग करते हैं।
टर–संज्ञा स्त्री० १. कर्कश या अप्रिय शब्द। कड़ुवी बोली। २. बकवाद ३. मेंढक की बोली। ४. ऐंठ। अकड़। ५. हठ। जिद।
मुहा०–टर टर करना या लगाना=ढिठाई से बोलते जाना। बकबक करना। बकवाद करना।
टरकना–क्रि० अ० १. खिसकना। २. हट जाना। कर्कश स्वर से बोलना।
टरकाना–क्रि० स० १. हटाना। खिसकाना। २. टाल देना। चलता करना धता बताना।
टरकी–संज्ञा पुं० [तु०] एक तरह क मुर्गा।
टरकुल–वि० बहुत मामूली और निकम्मा
टरटराना–क्रि० अ० १. बकबक करना २. ढिठाई से बोलना।
टरना†–क्रि० स० दे० "टलना"।
टर्रा–वि० १. कठोर स्वर से उत्तर दे वाला। बकवाद करनेवाला। २. धृष्ट कटुवादी।

टर्राना—क्रि० अ० ढिठाई से बोलना। बक-बक करना।
टर्रापन—संज्ञा पुं० बातचीत में अविनीत भाव। कटुवादिता।
टर्रू—संज्ञा पुं० मेढक।
टलना—क्रि० अ० १. हटना। दूर होना। खिसकना। भाग जाना। २. मिटना। ३. आज्ञा न मानना। उल्लंघित होना। ४. समय व्यतीत होना। बीतना।
मुहा०—अपनी बात से टलना=प्रतिज्ञा पूरी न करना। मुकरना।
टलप—संज्ञा स्त्री० छाँट। टुकड़ा। कतरन।
टलमलाना—क्रि० अ० दे० अ० "डगमगाना"। स्थिति का अनिश्चित होना।
टलहा†—वि० खोटा। खराब।
टलाटली—संज्ञा स्त्री० बहाना। टालमटोल। हीलाहवाला।
टलाना—क्रि० स० दे० "हटाना"। सरका देना। छिपाना।
टल्ला—संज्ञा पुं० धक्का।
टल्लेनवीसी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिल्लेनवीसी"। टालमटोल। निठल्लापन। बहानेबाजी।
टवर्ग—संज्ञा पुं० ट ठ ड ढ ण, टकारादि पाँच अक्षर।
टवाई—संज्ञा स्त्री० व्यर्थ घूमना। आवारगी।
टस—संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के खिसकने या सरकने का शब्द।
मुहा०—टस से मस न होना=१. किसी भारी चीज का कुछ भी न खिसकना। २. कहने सुनने का कुछ भी प्रभाव अनुभव न करना।
टसक—संज्ञा स्त्री० रह-रहकर उठनेवाली पीड़ा। कसक। टीस।
टसकना—क्रि० अ० १. जगह से हटना। खिसकना। २. रह-रहकर दर्द करना। टीस मारना। ३. प्रभावित होना। बात मानने को उद्यत होना।
टसकाना—क्रि० स० हटाना। हिलाना। सरकाना। खिसकाना।
टसर—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
टसुआ—संज्ञा पुं० आँसू।
टहक—संज्ञा पुं० चसक।
टहकना—क्रि० अ० दे० "दुखना"। रह-रहकर दर्द करना। पिघलना।
टहकाना—क्रि० स० गरम करना। अग्नि से पिघलाना।
टहटहा—वि० ताजा। टटका। नवीन। मनोहर।
टहना—संज्ञा पुं० वृक्ष की डाल। शाखा।
टहनी—संज्ञा स्त्री० वृक्ष की पतली शाखा। डाली।
टहल—संज्ञा स्त्री० १. सेवा। शुश्रूषा। खिदमत। २. नौकरी-चाकरी। काम-धंधा।
यौ०—टहल टई या टहल टकोर=सेवा।
टहलना—क्रि० अ० १. धीरे-धीरे चलना। मंद गति से चलना। २. जी बहलाने के लिए धीरे-धीरे चलना या घूमना। हवा खाना। सैर करना।
मुहा०—टहल जाना=सरक जाना।
टहलनी—संज्ञा स्त्री० १. दासी। मजदूरनी। २. चिराग की बत्ती उकसानेवाली लकड़ी।
टहलाना—क्रि० स० १. धीरे धीरे चलाना। २. सैर कराना। घुमाना। फिराना। ३. दूर करना।
टहलुआ—संज्ञा पुं० [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक। नौकर।
टहुआटारी—संज्ञा स्त्री० चुगुलखोरी।
टहलुई—संज्ञा स्त्री० १. दासी। नौकरानी। २. चिराग की बत्ती उकसानेवाली लड़की।
टहलू—संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"।
टहीं—संज्ञा स्त्री० युक्ति। मतलब निकालने की घात। जोड़-तोड़। प्रयोजन-सिद्धि का ढंग।
टहूका—संज्ञा पुं० पहेली। चुटकुला।
टहोका—संज्ञा पुं० हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।
मुहा०—टहोका देना=झटकना। ढकेलना। टहोका खाना=धक्का खाना। ठोकर सहना।
टाँक—संज्ञा स्त्री० १. चार माशे की एक तौल। बटखरा। २. कूत। आँक। अंदाज। ३. लिखावट। लेखन। ४. कलम

की नोक। ५. सिलाई । सीवन। एक प्रकार की सिलाई।

टाँकना–क्रि० स० १. सिलाई करके जोड़ना। सीना। २. सीकर अटकाना। ३. जोड़ना। ४. सिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदुरा करना। रेहना। ५. रेती तेज करना । ६. याद रखने के लिए लिखना। दर्ज करना । †७. दाखिल करना। ८. चट कर जाना। खाना । उड़ा जाना । ९. मार लेना । अनुचित रूप से ले लेना।

टाँकर–संज्ञा पुं० लम्पट। बदमाश । गुंडा। उच्छृंखल।

टाँका–संज्ञा पुं० १. जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा । २. सिलाई । सीवन । ३. टँकी हुई चकती । थिगली । चिप्पी । ४. शरीर पर के घाव की सिलाई । ५. धातुओं को जोड़ने का मसाला।
संज्ञा स्त्री० १. पत्थर काटने की चौड़ी छेनी । २. पानी एकत्र रखने का छोटा-सा कुंड । हौज । चहबच्चा । ३. पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

टाँकी–संज्ञा स्त्री० १. पत्थर गढ़ने का औजार । छेनी । २. काटकर बनाया हुआ छेद। छोटा टाँका।

टाँग–संज्ञा स्त्री० पैर।
मुहा०–टाँग अड़ाना=१. बिना अधिकार के किसी काम में हस्तक्षेप करना । फजूल दखल देना । २. विघ्न डालना । टाँग तले से (या नीचे से) निकलना=हार मानना । पराजित होना। टाँग पसारकर सोना=निश्चित सोना।

टाँगन–संज्ञा पुं० छोटा घोड़ा । टट्टू।

टाँगना–क्रि० स० १. लटकाना। २. फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी। २. बड़ी कुल्हाड़ी।

टाँगी‡–संज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी।

टाँच–संज्ञा स्त्री० १. दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात। भाँजी। २. सिलाई। टाँका। ३. टँकी हुई चकती। थिगली। ४. हठीला। हठी। टेढ़ा । ५. पेंच । दबाव ।

टाँचना–क्रि० स० १. टाँकना । सीना । २. काटना। तराशना।

टाँट†–संज्ञा पुं० खोपड़ी । कपाल । सिर के बीच का भाग।

टाँठ, टाँठा–वि० १. करारा । कठोर । कड़ा । २. बली । तगड़ा । ३. उद्योगी।

टाँड़–संज्ञा स्त्री० १. लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं। परछत्ती। २. मञ्च, मचान जिस पर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं। ३. कंकरीली मिट्टी। ४. बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना । टँड़िया ।
संज्ञा पुं० टाल । समूह । घरों की पंक्ति। टाँड़ा।

टाँड़ा–संज्ञा पुं० १. अन्न आदि व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड जिसे व्यापारी लेकर चलते हैं। वरदी । २. बिक्री के माल का खेप। एक बार उठाने का बोझ। ३. बनजारों का झुंड । ४. कुटुंब । परिवार । ५. एक कीड़ा।

टाँड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

टाँय टाँय–संज्ञा स्त्री० १. कर्कश शब्द । टें टें। २. बकवाद।
मुहा०–टाँय टाँय फिस=बकवाद बहुत, पर फल कुछ भी नहीं। बहुत जोरशोर दिखाना पर करना कुछ नहीं।

टाँस–संज्ञा स्त्री० नसों की सिकुड़न या तनाव।

टाँसना–क्रि० स० टाँचना।

टाइप–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छापने के लिए बना हुआ धातु का अक्षर।
क्रि० स० टाइप करना। छापना। टाइपराइटर मशीन से छापना।

टाइपराइटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अक्षर छापने का एक यंत्र।

टाइपिस्ट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] टाइप करनेवाला।

टाइम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] समय।

टाइमटेबुल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] समय का विवरणपत्र । वह पुस्तक जिसमें रेलगाड़ियों के आने-जाने का समय तथा अन्य विवरण दिए रहते हैं।

टाइमपीस–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] मेज या

आलमारी आदि पर रखने की एक प्रकार की छोटी घड़ी।
टाट–संज्ञा पुं० १. सन या पटुए का बुना हुआ मोटा कपड़ा। २. महाजनी गद्दी। ३. बिरादरी।
मुहा०–टाट में पाट की बखिया=चीज तो भद्दी और सस्ती, पर उसमें लगी हुई सामग्री बढ़िया और बहुमूल्य। बेमेल का साज। टाट उलटना=दिवाला निकालना।
टाटर–संज्ञा पुं० १. टट्टर। टट्टी। २. सिर की हड्डी। खोपड़ी। कपाल।
टाटिक, टाटी*–संज्ञा स्त्री० दे० "टट्टी"।
टाड़–संज्ञा स्त्री० दे० "टाँड"।
टान–संज्ञा स्त्री० तनाव।
टानना–क्रि० स० दे० "तानना"। खींचना। फैलाना। कड़ा करना।
टाप–संज्ञा स्त्री० १. घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग, जो जमीन पर पड़ता है। सुम। २. घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द। ३. मछली पकड़ने का झाबा। ४. मुरगियों के बंद करने का झाबा।
टापना–क्रि० अ० १. घोड़ों का पैर पटकना। २. किसी वस्तु के लिए हैरान होना। बेकार इधर उधर घूमना। टक्कर मारना। ३. बिना दानापानी के समय बिताना। ४. पछताना। ५. उछलना। कूदना।
क्रि० स० कूदना। फाँदना।
क्रि० अ० दे० "टपना"।
टापा–संज्ञा पुं० १. उजाड़ मैदान। २. उछाल। ३. टोकरा।. झाबा। बड़ा दौरा।
टापू–संज्ञा पुं० १. स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो। द्वीप। †२. टप्पा। टापा।
टाबर†–संज्ञा पुं० १. बालक। लड़का। २. परिवार।
संज्ञा स्त्री० तालाब। ताल।
टामक†–संज्ञा पुं० डिमडिमी।
टामन–संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।
टामी–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] साधारण ब्रिटिश सैनिक। वे अंग्रेज जिनके पिता का ठीक पता न मालूम हो।
टार–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. लौंडा। ३. कुटना। भँडुआ। ४. ढेर।
क्रि० वि०टारकर। हटाकर। उल्लंघन कर।
टारना†–क्रि० स० दे० "टालना"।
टाल–संज्ञा स्त्री० १. ऊँचा ढेर। भारी राशि। अटाला। गंज। २. बैलगाड़ी के पहिए का किनारा। ३. लकड़ी, भुस आदि की बड़ी दूकान। ४. टालने का भाव। टालमटोल।
संज्ञा पुं० स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला। कुटना। भँडुआ।
टालटल–संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।
टालना–क्रि० स० १. हटाना। खिसकाना। सरकाना। २. दूर करना। भगा देना। ३. मिटाना। न रहने देना। ४. स्थगित करना। मुलतवी करना। ५. समय बिताना। ६. आदेश या अनुरोध न मानना। ७. बहाना करके पीछा छुड़ाना। हीला-हवाली करना। ८. झूठा वादा करना। ९. धता बताना। टरकाना। १०. पलटना। फेरना। ११. इधर-उधर हिलाना। गति देना।
टालमटूल–संज्ञा स्त्री० बहाना।
टालमटोल–संज्ञा स्त्री० बहाना। टालमटूल।
टाला–वि० आधा।
संज्ञा पुं० छल। कपट। धोखा।
मुहा०–टालाबाल बताना=टालना। टालमटोल करना।
टाली–संज्ञा स्त्री० १. गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी। २. चंचल जवान गाय या बछिया।
टाहली†–संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"। सेवक।
टिंड–संज्ञा स्त्री० एक बेल जिसके गोल फलों की तरकारी होती है।
टिकट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कहीं आने-जाने या कोई काम करने के लिए अधिकारपत्र जिसके लिए मूल्य देना पड़े।
टिकटिकी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।
टिकठी–संज्ञा स्त्री० १. तीन तिरछी खड़ी

की हुई लकड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेंत या कोड़े लगाये जाते हैं या फाँसी दी जाती है। २. तिपाई। ३. वह रत्थी जिस पर शव ले जाते हैं।

टिकड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० टिकड़ी] १. कोई चिपटा गोल टुकड़ा। २. आँच पर सेंकी हुई रोटी। बाटी। अंगाकड़ी।

टिकना—क्रि० अ० १. कुछ काल तक के लिए रहना। ठहरना। २. घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना। ३. कुछ दिनों तक काम देना। ४. स्थित रहना। अड़ा रहना।

टिकरी†—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का पकवान। २. टिकिया।

टिकली—संज्ञा स्त्री० १. छोटी टिकिया। २. छोटी बिंदी। सितारा। चमकी।

टिकस—संज्ञा पुं० [अंग्रे० टैक्स] महसूल। टिकट।

टिकाई†—संज्ञा स्त्री० टिकने का भाव।

टिकाऊ—वि० टिकनेवाला। अधिक दिनों तक काम देनेवाला। ठहराऊ। मजबूत।

टिकान—संज्ञा स्त्री० १. टिकने या ठहरने का भाव। २. पड़ाव। चट्टी।

टिकाना—क्रि० स० १. रहने के लिए जगह देना। २. ठहराना। †३. बोझ उठाने में सहायता देना। सहारा देना।

टिकाव—संज्ञा पुं० १. ठहरने का स्थान। टिकने का स्थान। ठहराव। २. स्थिति। स्थिरता। स्थायित्व। ३. पड़ाव।

टिकासर—संज्ञा पुं० टिकने का स्थान। ठहरने की जगह।

टिकासा—वि० टिकनेवाला। पथिक। राही। बटोही।

टिकिया—संज्ञा स्त्री० १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। जैसे दवा की टिकिया। २. कोयले की बुकनी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिससे चिलम पर आग सुलगाते हैं। ३. एक गोल मिठाई।

टिकुरा—संज्ञा पुं० टीला। भीटा।

टिकुरी—संज्ञा स्त्री० टिकली।

टिकुली—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।

टिकैत—संज्ञा पुं० १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २. अधिष्ठाता। ३. सरदार।

टिकोरा†—संज्ञा पुं० आम का छोटा कच्चा फल।

टिक्कड़—संज्ञा पुं० १. बड़ी टिकिया। २. मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी।

टिक्का—संज्ञा पुं० दे० "टीका"।

टिक्की—संज्ञा स्त्री० १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। टिकिया। २. बाटी। ३. माथे पर की बिंदी। ४. ताश की बूटी। ५. पैवन्द। ६. प्रदेश।

टिघलना—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टिटकारना—क्रि० स० [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' कहकर हाँकना।

टिटिनिका—संज्ञा स्त्री० १. जोंक। २. एक प्रकार का पेड़।

टिटिह, टिटिहा—संज्ञा पुं० टिटिहरी चिड़िया का नर।

टिटिहरी—संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया। कुररी।

।—संज्ञा पुं० [स्त्री० टिट्टिभी] १. टिटि-। कुररी। २. टिड्डी।

टिड्डा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा परदार कीड़ा। पतिंगा।

टिड्डी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा, जो पेड़-पौधों तथा फसल को बड़ी हानि पहुँचाता है। यह लाखों की संख्या में बड़ा भारी दल बाँधकर चलता है।

टिड्डीदल—संज्ञा पुं० टिड्डियों का दल या समूह।

टिढ़बिड़ंगा—वि० टेढ़ा-मेढ़ा।

टिपका*†—संज्ञा पुं० बूँद। दाग। टीका। अँगुली आदि से कोई चिह्न लगाना।

टिप-टिप—संज्ञा स्त्री० टपकने का शब्द। बूँद-बूँद करके गिरने का शब्द।

टिपवाना—क्रि० स० टीपने का काम दूसरे से कराना। पिटवाना। चँपवाना।

टिपारा—संज्ञा पुं० मुकुट के आकार की एक टोपी।

टिप्पणी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।

टिप्पन–संज्ञा पुं० १. टीका । व्याख्या । २. जन्मकुंडली । जन्मपत्री ।

टिप्पनी–संज्ञा स्त्री० १. स्पष्टीकरण । अर्थ सूचित करनेवाला विवरण । किसी विषय का भावार्थ । किसी पर अपना मत प्रकाशित करना । २. टीका । व्याख्या ।

टिप्पस–संज्ञा स्त्री० पहुँच । युक्ति । काम निकालने का तरीका । प्रयोजन साधने का ढंग ।

टिफिन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दोपहर का भोजन या जलपान । कार्यालयों में कर्मचारियों और मजदूरों को इस समय कुछ समय के लिए छुट्टी दे दी जाती है ।

टिफिनकैरियर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] भोजन रखकर ले जाने का एक तरह का बरतन जिसमें कई कटोरे होते हैं । कटोरदान ।

टिबरी–संज्ञा स्त्री० पर्वत की छोटी चोटी ।

टिभाना–क्रि० स० लालच देना । ललचाना । प्रतिदिन की थोड़ी-सी वृत्ति देना ।

टिभाव–संज्ञा पुं० दिन की थोड़ी-सी जीविका । लालचमात्र की वृत्ति ।

टिमकी–संज्ञा स्त्री० १. बच्चों का पेट । २. एक बरतन ।

टिमटिमाना–क्रि० अ० १. (दीपक का) मंद-मंद जलना । क्षीण प्रकाश देना । २. बुझने पर हो-हो कर के जलना । झिलमिलाना । ३. मरने के निकट होना ।

टिमक–संज्ञा स्त्री० ठसक । नाज-नखरा । हावभाव ।

टिमा–संज्ञा पुं० लड़का ।

टिम्मा–वि० नाटा । बौना ।

टिर–संज्ञा स्त्री० दे० "टर" ।

टिरफिस–संज्ञा स्त्री० बात न मानने की ढिठाई । चीं-चपड़ । विरोध ।

टिर्राना–क्रि० अ० दे० "टर्राना" ।

टिलटिलाना–क्रि० स० १. चिढ़ाना । छेड़ना । २. दब आना ।

टिलवा–संज्ञा पुं० चापलूस आदमी ।

टिलिया–संज्ञा पुं० मुर्गी का बच्चा । छोटी मुर्गी ।

टिल्ला–संज्ञा पुं० धक्का । चोट । दे० "टीला" ।

टिल्लेनवीसी–संज्ञा स्त्री० १. निठल्लापन । २. हीला-हवाली । बहाना । ३. कुटनापन ।

टिसुआ†–संज्ञा पुं० आँसू ।

टिहरा–संज्ञा पुं० छोटा गाँव । छोटी बस्ती ।

टिहरी–संज्ञा स्त्री० छोटी बस्ती । गँवई ।

टिहुकना–क्रि० अ० चौंकना । ठिठकना ।

टिहुनी†–संज्ञा स्त्री० १. घुटना । २. कोहनी ।

टिहूक–संज्ञा स्त्री० चौंकने की क्रिया या भाव । चौंक । झझक ।

टींड़सी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड" ।

टीक–संज्ञा स्त्री० १. एक गहना । २. चुटिया ।

टीकना–क्रि० स० १. टीका या तिलक लगाना । २. चिह्न या रेखा बनाना ।

टीका–संज्ञा पुं० १. चन्दन, रोली आदि से मस्तक आदि पर लगाया जानेवाला चिह्न । तिलक । २. विवाह की एक रीति जिसमें कन्यापक्षवाले वर के माथे में तिलक लगाकर द्रव्य आदि भेंट करते हैं । ३. दोनों भौंहों के बीच माथे का मध्य भाग । ४. (किसी समुदाय का) शिरोमणि । श्रेष्ठ पुरुष । ५. राजसिंहासन या गद्दी पर बैठने का कृत्य । राजतिलक । ६. राज्य का उत्तराधिकारी । युवराज । ७. आधिपत्य का चिह्न । ८. एक गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं । ९. धब्बा । दाग । चिह्न । १०. सुइयों से शरीर में औषध प्रविष्ट करने का कार्य । प्लेग या चेचक आदि का टीका ।

संज्ञा स्त्री० किसी पद या ग्रंथ का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ । व्याख्या । टिप्पणी ।

टीकाकार–संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का अर्थ लिखनेवाला । व्याख्याकार ।

टीकी–संज्ञा स्त्री० टिकिया । टिकुली ।

टीकैत–वि० टीका-विशिष्ट । अभिषिक्त । जिसे तिलक लगा हो । नाथद्वारे के गोस्वामी जी की पदवी ।

टीटली–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष ।

टीड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी" । शलभ । पतंग ।

टीन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. राँगा। २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर। ३. इस चद्दर का बना डिब्बा।

टीप—संज्ञा स्त्री० १. दबाने या ठोकने की क्रिया या भाव। दबाव। दाब। २. गच कूटने का काम। ३. टंकार। घोर शब्द। ४. गाने में जोर की तान। ५. स्मरण के लिए किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया। टाँक लेने का काम। ६. दस्तावेज। ७. जन्मपत्री। कुंडली। वि० सबसे अच्छा।

टीपटाप—संज्ञा स्त्री० सजधज। दिखावट। आडम्बर। दीवाल आदि की जहाँ-तहाँ मरम्मत।

टीपन—संज्ञा स्त्री० १. जन्मपत्री। २. गाँठ।

टीपना—क्रि० स० १. दबाना। चाँपना। मसकना। २. धीरे-धीरे ठोकना। टटोलना। हाथ से छूकर ढूंढ़ना। ३. निचोड़ना। ४. बिन्दी लगाना। ५. ऊँचे स्वर से गाना। ६. लिखना। ७. टाँकना।

टीबा—संज्ञा पुं० टीला। भीटा।

टीमटाम—संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार। ठाट-बाट। सजधज। तड़क-भड़क।

टील—संज्ञा स्त्री० १. छोटी मुर्गी। २. टिलिया।

टीला—संज्ञा पुं० १. ऊँची भूमि। ढूह। भीटा। २. मिट्टी का ऊँचा ढेर। ३. छोटी पहाड़ी।

टीस—संज्ञा स्त्री० रह-रहकर उठनेवाला दर्द। कसक। पीड़ा।

टीसना—क्रि० अ० रह-रहकर दर्द उठना। कसक होना। पीड़ा होना।

टुंच—वि० तुच्छ।

टुंटा, टुंडा—वि० [स्त्री० टुंडी] १. जिसकी डाल या टहनी आदि कट गई हो। ठूँठा। २. जिसका हाथ कट गया हो। लूला। लुंजा।

टुंडियाना—क्रि० स० पीठ पर हाथ बाँधना। मुश्क कसना। मुश्क चढ़ाना।

टुंडी—संज्ञा स्त्री० १. नाभि। २. भुजा। वि० लूली।

टुइयाँ—संज्ञा स्त्री० तोता। सुग्गा। वि० नाटा। बौना।

टुक—वि० थोड़ा। जरा।

टुकड़गदा—संज्ञा पुं० भिखारी। मँगता। वि० १. तुच्छ। २. दरिद्र। कंगाल।

टुकड़गदाई—संज्ञा पुं० दे० "टुकड़गदा"। टुकड़ा माँगने का काम।

टुकड़तोड़—संज्ञा पुं० दूसरे का दिया हुआ टुकड़ा खाकर रहनेवाला आदमी।

टुकड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० टुकड़ी] १. किसी वस्तु का वह भाग, जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो। खंड। २. विभक्त अंश। भाग। ३. रोटी का तोड़ा हुआ अंश। **मुहा०**—(दूसरे का) टुकड़ा तोड़ना=दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। टुकड़ा माँगना=भीख माँगना। टुकड़ा-सा जवाब देना=झट और स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। कोरा जवाब देना।

टुकड़ी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। खंड। २. समुदाय। मंडली। दल। जत्था। ३. सेना का एक अंश।

टुघलाना—क्रि० अ० चुभलाना। जुगाली करना।

टुच्चा—वि० तुच्छ। ओछा। लम्पट। लुच्चा।

टुटका—संज्ञा पुं० टोटका।

टुटपुँजिया—वि० जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो। बहुत थोड़े धनवाला।

टुटरूँ—संज्ञा पुं० छोटी पंडुकी।

टुटरूँटूँ—संज्ञा स्त्री० पंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द। वि० १. अकेला। २. दुबला-पतला।

टुनकी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कीड़।

टुनगा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० टुनगी] हनी का अगला भाग।

टुनाका—संज्ञा स्त्री० मुसली।

टुपकना†—क्रि० अ० १. धीरे से काटना या डंक मारना। २. चुगली खाना।

टुर्रा—संज्ञा पुं० डली। रवा। कण।

टुलकना—क्रि० अ० ढुलकना।

टूँगना—क्रि० स० थोड़ा-सा काटकर खाना। कुतरना।

टूँड़—संज्ञा पुं० [स्त्री० टूँड़ी] १. कीड़ों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २. जौ, गेहूँ आदि की बाल में दाने के सिरे पर निकला हुआ नुकीला भाग। ३. सींग।

टूँड़ी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा तूँड़। २. ढोंढ़ी। नाभि। ३. किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

टूक†—संज्ञा पुं० टुकड़ा। खंड।

टूकर†—संज्ञा दे० "टुकड़ा"।

टूका—संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। खंड। २. रोटी का चौथाई भाग। ३. भिक्षा। भीख।

टूट†—संज्ञा स्त्री० १. खंड। टूटन। टुकड़ा। २. टूटने का भाव। ३. लिखावट में वह भूल से छूटा हुआ शब्द या वाक्य, जो पीछे से किनारे पर लिखते हैं। ४. भूल। त्रुटि।

†संज्ञा पुं० टोटा। घाटा। नुकसान। हानि।

टूटना—क्रि० अ० १. टुकड़े-टुकड़े होना। खंडित होना। भग्न होना। २. किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३. लगातार चलनेवाली वस्तु का रुक जाना। सिलसिला बंद होना। ४. किसी ओर एकबारगी वेग से जाना। ५. अकस्मात् प्राप्त होना। पिल पड़ना। ६. एकबारगी धावा करना। ७. अनायास कहीं से आ जाना। ८. पृथक् होना। ९. अलग होना। संबंध छूटना। लगाव न रह जाना। १०. दुर्बल होना। क्षीण होना। ११. धनहीन होना। १२. चलता न रहना। १३. युद्ध में किले का ले लिया जाना। १४. घाटा होना। १५. शरीर में ऐंठन या तनाव के साथ पीड़ा होना।

मुहा०—टूट टूटकर बरसना=मूसलधार बरसना।

टूटा—वि० १. खंडित। भग्न। २. दुबला। कमजोर। ३. निर्धन।

संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

मुहा०—टूटी फूटी बात या बोली=१. असंबद्ध वाक्य। २. अस्पष्ट वाक्य।

टूटाफटा—वि० नष्टभ्रष्ट।

टूठना*—क्रि० अ० संतुष्ट होना। प्रसन्न होना।

टूठनि*—संज्ञा स्त्री० संतोष। तुष्टि।

टूना—संज्ञा स्त्री० टोना।

टूम—संज्ञा स्त्री० १. चतुर मनुष्य। २. धक्का। ३. गहना। आभूषण। ४. ताना। व्यंग्य। ५. थोड़ी बात। चुटकिला। ६. छतरी।

मुहा०—टूमटाम=१. गहना पाता। वस्त्राभूषण। २. बनाव-सिंगार।

टूमटाम—संज्ञा स्त्री० थोड़ी पूँजी। अल्प मूलधन। कुछ थोड़ी बात।

टूमना†—क्रि० स० १. धक्का देना। झटका देना। २. ताना मारना।

टूरनामेंट— संज्ञा पुं० [अंग्रे०] खेलों की प्रतियोगिता।

टूसा—संज्ञा पुं० १. सूत। २. पाकर का फूल। ३. टुकड़ा।

टूसी—संज्ञा स्त्री० कली।

टें—संज्ञा स्त्री० तोते की बोली।

मुहा०—टें टें=व्यर्थ की बकवाद। हुज्जत। टें होना या बोलना=चटपट मर जाना।

टेंगना, टेंगरा—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।

टेंघुना—संज्ञा पुं० घुटना।

टेंचन—संज्ञा पुं० खंभा। सहारा। छप्पर आदि को सहारने का बाँस।

टेंट—संज्ञा स्त्री० १. धोती की वह ऐंठन जो कमर पर पड़ती है। मुर्री। २. कपास की ढोंढ़। ३. दे० "टेंटर"। ४. पशुओं के शरीर का घाव। ५. आँखों का ढेंढर। बेईमानी। धोखेबाजी।

टेंटर—संज्ञा पुं० रोग या चोट के कारण आँख के डेले पर का उभरा हुआ मांस। ढेंढर।

टेंटा—संज्ञा पुं० १. उच्छृंखल बातें। हठयुक्त बातें। बकवाद। व्यर्थ कथन। २. फुलझरी।

टेंटी—संज्ञा स्त्री० करील। करील का फूल। संज्ञा पुं० व्यर्थ झगड़ा करनेवाला। हुज्जती।

टेंटुवा—संज्ञा पुं० १. गला। २. अँगूठा।

टेंटें—संज्ञा स्त्री० १. तोते की बोली। २. व्यर्थ की बकवाद।

टेंड—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

टेंडसी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

टेउकी—संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिए उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।

टेक—संज्ञा स्त्री० १. वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिए नीचे से लगाई जाती है। चाँड़। थूनी। २. सहारा। आश्रय। अवलंब। ३. बैठने का स्थान। ४. ऊँचा टीला। ५. मन में ठानी हुई बात। हठ। जिद। ६. बान। आदत। ७. गीत का पहला पद। स्थायी।

मुहा०—टेक निभना या रहना=प्रतिज्ञा पूरी होना। टेक पकड़ना या गहना=हठ करना।

टेकड़ी—संज्ञा स्त्री० टीला।

टेकन—संज्ञा पुं० रोक। सहारा। आड़। थूनी। गिरने से रोकने के लिए लगाई जानेवाली चीज।

टेकना—क्रि० स० १. सहारे के लिए किसी वस्तु को शरीर के साथ भिड़ाना। सहारा लेना। २. ठहराना या रखना। ३. सहारे के लिए पकड़ना। हाथ का सहारा लेना। *†४. हठ करना। ५. बीच में रोकना या पकड़ना।

मुहा०—माथा टेकना=प्रणाम करना।

टेकनी—संज्ञा स्त्री० दे० "टेकन"। गिरने से रोकने के लिए लगाई जानेवाली चीज।

टेकरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० टेकरी] टीला। छोटी पहाड़ी।

टेकला†*—संज्ञा स्त्री० धुन। रट।

टेकान—संज्ञा स्त्री० १. गिरनेवाली छत आदि को सँभालने के लिए उसके नीचे खड़ी की हुई लकड़ी। टेक। चाँड़। अवलम्ब। २. आड़।

टेकाना—क्रि० स० १. उठाकर ले जाने में सहारा देने के लिए थामना। २. उठने-बैठने में सहारा देना।

टेकानी—संज्ञा स्त्री० किल्ली।

टेकी—संज्ञा पुं० १. दृढ़प्रतिज्ञ। २. हठी। जिद्दी।

टेकुआ—संज्ञा पुं० चरखे का तकला।

टेकुरा—संज्ञा पुं० पान। ताम्बूल।

टेकुरी—संज्ञा स्त्री० १. सूत कातने या रस्सी बटने का सूआ। २. चमारों का सूआ जिससे वे तागा खींचते हैं।

टेघरना†—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टेटका—संज्ञा पुं० कान का एक गहना। †वि० दे० "टेढ़ा"।

टेड़ा—संज्ञा पुं० पेंडी। एक प्रकार का चरखा।

टेढ़—संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ापन। वक्रता। तिरछापन। २. नटखटी। उजड्डपन। वि० टेढ़ा।

टेढ़बिडंगा—वि० टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़ा—वि० [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर-उधर झुका हो। जो सीधा न हो। वक्र। कुटिल। २. तिरछा। ३. कठिन। मुश्किल। पेचीला। ४. उद्धत। उजड्ड।

मुहा०—टेढ़ी खीर=मुश्किल काम। टेढ़ा पड़ना या होना=१. उग्र रूप धारण करना। बिगड़ना। २. अकड़ना। टेढ़ी-सीधी सुनाना=भला-बुरा कहना

टेढ़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० 'टेढ़ापन'।

टेढ़ापन—संज्ञा पुं० टेढ़ा होने का भाव। वक्रता। बाँकापन।

टेढ़े—क्रि० वि० घुमाव-फिराव के साथ।

मुहा०—टेढ़े टेढ़े जाना=इतराना।

टेना—क्रि० स० १. हथियार को तेज करने के लिए पत्थर आदि पर रगड़ना। हथियार पर धार रखना। हथियार तेज करना। २. मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिए ऐंठना।

टेनिस—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार का अंग्रेजी खेल, जो हाथ में छोटे बल्ले लेकर गेंद से

खेला जाता है। दोनों पक्ष के खिलाड़ियों के बीच में एक जाल लगा रहता है जिसे पार करके गेंद फेंकनी पड़ती है।

टेनी–संज्ञा स्त्री० छोटी अँगुली । छोटी लठिया। छिकुनी।

टेबिल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मेज।

टेम–संज्ञा स्त्री० दीप-शिखा। लालटेन की लौ। बत्ती का जला हुआ अंश। टाइम [अंग्रे०] का अपभ्रंश। समय।

टेर–संज्ञा स्त्री० १. गाने में ऊँचा स्वर। तान। लय। टीप। २. बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार। हाँक। गुहार।

टेरना–क्रि० स० १. ऊँचे स्वर से गाना। तान लगाना। २. पुकारना । पूरा करना।

टेरी–संज्ञा स्त्री० शाखा। टहनी। पतली डाल।

टेलिग्राफ–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] तार जिसके द्वारा खबरें भेजी जाती हैं।

टेलिग्राम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] तार से भेजी हुई खबर। तार।

टेलिप्रिंटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] भेजी हुई खबरें अपने आप छापकर देनेवाली मशीन। इसका प्रयोग संवाद-समितियाँ करती हैं और यह अखबारों के कार्यालयों में लगा रहता है।

टेलिफोन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह यंत्र जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है।

टेलिविजन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दूर की चीजों (नृत्य वार्तालाप आदि) का चित्र पर्दे पर देखने का बिजली का यंत्र।

टेलिस्कोप–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दूरबीन। वह यंत्र जिससे दूर की वस्तु नजदीक और बड़ी दिखाई पड़े। दूरदर्शक यंत्र।

टेव–संज्ञा स्त्री० १. आदत। बान। स्वभाव। चाल। २. हठ। जिद्द।

टेवकी–संज्ञा स्त्री० १. खम्भा। थम्भा। थूनी। सहारा। २. नाव का सबसे ऊपर का छोटा पाल।

टेवना–क्रि० स० दे० "टेना"।

टेवा–संज्ञा पुं० १. जन्मपत्री। जन्मकुंडली। २. लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, घड़ी आदि लिखी रहती है।

टेवैया–संज्ञा पुं० टेनेवाला । तेज करने वाला। चोखा करनेवाला।

टेसुआ–संज्ञा पुं० दे० "टेसू"।

टेसू–संज्ञा पुं० १. पलाश। किंशुक। ढाक। २. एक उत्सव।

टैंक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. लोहे की एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिस पर तोपें लगी रहती हैं। २. तालाब। पानी का हौज या खजाना।

टैक्स–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कर। महसूल। **यौ०**–इन्कमटैक्स=आमदनी पर लगनेवाला कर। आय-कर। सेल्सटैक्स=बिक्री कर।

टैयाँ–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिपटी छोटी कौड़ी। चित्ती।

टोंका‡–संज्ञा पुं० १. छोर । सिरा । किनारा । २. नोक । कोना । जमीन जो नदी में कुछ दूर चली गई हो।

टोंचना–क्रि० स० चुभाना।

टोंट–संज्ञा स्त्री० चोंच।

टोंटरी–संज्ञा स्त्री० टोंटी।

टोंटा–संज्ञा पुं० १. कारतूस । २. बाँस के छोटे टुकड़े। ठूठा । ३. पानी आदि ढालने के लिए बरतन में लगी हुई नली। तुलतुली ।

टोंटी–संज्ञा स्त्री० १. जलपात्र-विशेष जिसमें टोंटी लगी हो। २. नाली। पनाला। मोरी। तुलतुली। ३. पशुओं का थूथन।

टोक†–संज्ञा स्त्री० उच्चारण किया हुआ अक्षर। छोटा वाक्य। १. टोकने की क्रिया या भाव। २. बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर।

यौ०–टोक-टाक=प्रश्न आदि द्वारा बाधा। रोक-टोक=मनाही। निषेध।

टोकना–क्रि० स० १. यात्रा के लिए जाते समय किसी से कुछ पूछना। २. किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछ-ताछ करना। ३. नजर लगाना। बुरी दृष्टि से देखना।

संज्ञा पुं० [स्त्री० टोकनी] १. टोकरा। डला। २. एक प्रकार का हंडा।
टोकनी–संज्ञा स्त्री० डलिया।
टोकरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० टोकरी] छाबड़ा। डला। झाबा। खाँचा। दौरा।
टोकरी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा टोकरा। २. झपोली। छोटी दौरी।
टोका–संज्ञा स्त्री० रुकावट। रोक।
यौ०–टोकटाक=छेड़छाड़। टोकाटोकी=पूछताछ। छेड़छाड़।
टोकारा–संज्ञा पुं० वह बात जो किसी को कुछ स्मरण दिलाने के लिए कही जाय। संकेत का शब्द।
टोटका–संज्ञा पुं० कोई बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिए कार्य, जो दैवी शक्ति आदि पर विश्वास करके किया जाय। टोना। यंत्र-मंत्र। लटका।
मुहा०–टोटका करने आना=आकर तुरंत चला जाना।
टोटकेहाई–संज्ञा स्त्री० टोटका, टोना या जादू करनेवाली।
टोटल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जोड़। योग।
टोटा–संज्ञा पुं० १. बचा या कटा हुआ टुकड़ा। २. कारतूस। ३. घाटा। हानि। ४. कमी। अभाव।
टोड़ी–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] नीच और तुच्छ प्रकृति का व्यक्ति। नीच और खुशामदी।
यौ०–टोड़ी बच्चा–सरकारी अफसरों का खुशामदी।
संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।
टोनहा–वि० [स्त्री० टोनही] टोना या जादू करनेवाला।
टोनहाया–संज्ञा पुं० [स्त्री० टोनहाई] टोना या जादू करनेवाला मनुष्य।
टोना–संज्ञा पुं० १. मंत्र-तंत्र का प्रयोग। जादू। २. विवाह का एक प्रकार का गीत।
†क्रि० स० हाथ से टटोलना। छूना।
टोप–संज्ञा पुं० १. बड़ी टोपी। २. लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। ३. खोद। कूँड़। ४. खोल। गिलाफ। ५. बूंद। कतरा।
टोपा–संज्ञा पुं० १. बड़ी टोपी। †टोकरा। २. टाँका। डोभ।
टोपी–संज्ञा स्त्री० १. सिर पर का पहनावा। २. धातु का गोल गहरा ढक्कन जिसका प्रयोग बन्दूक चलाने में करते हैं। बन्दूक का पड़ाका। ३. वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है।
टोभ–संज्ञा पुं० टाँका। तोपा।
टोया–संज्ञा पुं० गड्ढा।
टोर†–संज्ञा पुं० कटारी। कटार।
टोरना†–क्रि० स० तोड़ना।
मुहा०–आँख टोरना=लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना।
टोर्रा–संज्ञा पुं० १. अरहर का छिलके सहित खड़ा दाना। २. रवा।
टोल–संज्ञा स्त्री० १. मंडली। जत्था। झुंड। दल। २. चटसार। पाठशाला।
टोला–संज्ञा पुं० [स्त्री० टोलिका] १. आदमियों की बड़ी बस्ती का एक भाग। मुहल्ला। २. पत्थर या ईंट का टुकड़ा। रोड़ा।
टोली–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मुहल्ला। बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। झुंड। जत्था। मंडली। ३. पत्थर की चौकोर पटिया। सिल। ४. एक प्रकार का बाँस। नाल।
टोवना†–क्रि० स० दे० "टोना"।
टोह–संज्ञा स्त्री० १. टटोल। तलाश। खोज। ढूंढ़। २. खबर। देख-भाल।
टोहना–क्रि० स० खोजना। तलाश करना। छूना।
टोहाटाई–संज्ञा स्त्री० खोज। तलाश। देख-भाल।
टोहिया–वि० जासूस। टोह लेनेवाला। पता लगानेवाला।
टोही–संज्ञा स्त्री० पता लगानेवाला।
ट्रंक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] लोहे का संदूक।
ट्रंककाल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक शहर से दूसरे शहर को किया गया टेलीफोन। टेलीफोन द्वारा अपने नगर से दूसरे नगर में किसी व्यक्ति से बातचीत।

ट्राम–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की गाड़ी जो लोहे की पटरियों पर बिजली द्वारा सड़कों पर चलती है।
ट्रेडमार्क–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] व्यापारी लोगों का एक प्रकार का चिह्न।
ट्रेन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] रेलगाड़ी।
ट्रैक्टर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] खेत जोतने की मशीन या यंत्र जिससे कई हजार बीघे खेत आसानी से थोड़े समय में ही जोते जा सकते हैं।
टौरना–क्रि० स० जाँच करना। परखना। थाह लेना। पता लगाना।
टौंस–संज्ञा स्त्री० एक नदी का नाम। इसका दूसरा नाम तमसा है।

ठ

ठ–व्यंजन का बारहवाँ अक्षर जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है। इसलिए इसे मूर्द्धन्य कहते हैं।
ठ–संज्ञा पुं० १. शिव। २. महाध्वनि। ३. चंद्रमंडल। सूर्यमंडल। ४. शून्य। ५. प्रतिमा। ६. देवता। ७. इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य वस्तु। ८. जनसमूह। ९. गोचर।
ठंठ–वि० ठूँठा। सूखा (पेड़)।
ठंठार–वि० खाली। रीता।
ठंढ–संज्ञा स्त्री० शीत। सरदी। ठंड।
ठंढई–संज्ञा स्त्री० दे० "ठंढाई"।
ठंढक–संज्ञा स्त्री० १. शीत। सरदी। जाड़ा। २. तरी। ३. संतोष। तृप्ति। प्रसन्नता। तसल्ली। शान्ति। ४. किसी उपद्रव या फैले हुए रोग आदि की शांति।
ठंढा–वि० [स्त्री० ठंढी] १. सर्द। शीतल। २. जो जलता या दहकता न हो। बुझा हुआ। ३. जिसमें आवेश न हो। शांत। ४. धीर। शांत। गंभीर। ५. जिसमें उत्साह या उमंग न हो। सुस्त। उदासीन। ६. जो कोई अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। विरोध न करनेवाला। ७. तृप्त। प्रसन्न। खुश। ८. निश्चेष्ट। जड़। ९. मृत। मरा हुआ।
मुहा०–ठंढी साँस=दुःख से भरी साँस। शोकोच्छ्वास। आह। ठंढा करना=१. क्रोध शांत करना। २. शोक कम करना। तसल्ली देना। ठंढे ठंढे=१. बिना विरोध या प्रतिवाद किए। चुपचाप। २. हँसी खुशी से। ठंढा रखना=आराम-चैन से रखना। ठंढा होना=मर जाना। ताजिया ठंढा करना=ताजिया दफन करना। (किसी पवित्र या प्रिय वस्तु को) ठंढा करना=फेंकना या तोड़ना-फोड़ना।
ठंढाई–संज्ञा स्त्री० ठंडा शर्बत, जिसके पीने से शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है। सौंफ, बादाम, गुलाब की पत्ती, खरबूजे की मींगी आदि को पीसकर इसे बनाते हैं।
ठई–संज्ञा स्त्री० ठहराई। निश्चित की हुई।
ठक–संज्ञा स्त्री० ठोंकने का शब्द। दो वस्तुओं के टकराने का शब्द।
वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौंचक्का।
ठक-ठक–संज्ञा स्त्री० बखेड़ा। टंटा। झंझट। शब्द-विशेष। ठोंकने या लकड़ी आदि काटने का शब्द।
ठकठकाना–क्रि० स० १. खटखटाना। २. ठोंकना-पीटना। ३. विरोध करना।
ठकठकिया–वि० तकरार करनेवाला। हुज्जती। झगड़ालू।
ठकठेला–संज्ञा पुं० धक्काधक्की। झगड़ा। टंटा। बखेड़ा।
ठकठौआ, ठकठौवा–संज्ञा स्त्री० १. छोटी नाव। डोंगी। २. करताल। ३. करताल बजाकर भिक्षा माँगना।
ठकुरई–संज्ञा स्त्री० दे० "ठकुराई"।
ठकुरसुहाती–संज्ञा स्त्री० लल्लोचप्पो। खुशामद। मुँहदेखी बात।
ठकुराइत–संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व। ठकुराई।
ठकुराइन–संज्ञा स्त्री० १. ठाकुर की स्त्री।

स्वामिनी। २. क्षत्रिय की स्त्री। क्षत्राणी। ३. नाई की स्त्री। नाइन।
ठकुराई—संज्ञा स्त्री० १. सरदारी। प्रभुत्व। २. ठाकुर का अधिकार। ३. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो। रियासत। ४. बड़प्पन। महत्त्व।
ठकुरानी—संज्ञा स्त्री० १. ठाकुर या ज़मींदार की स्त्री। २. रानी। ३. मालिकिन। स्वामिनी।
ठकुरायत—संज्ञा स्त्री० १. आधिपत्य। प्रभुत्व। २. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधीन हो। रियासत।
ठकोरी—संज्ञा स्त्री० १. सहारा देने की एक लकड़ी जिसे साधु या पहाड़ी मजदूर अपने साथ रखते हैं। २. बैरागिन। जोगिन।
ठक्कर—संज्ञा स्त्री० दे० "टक्कर"।
ठग—संज्ञा पुं० [स्त्री० ठगनी, ठगिन] १. वह लुटेरा जो छल और धूर्त्तता से माल लूटता हो। २. छली। धूर्त्त। धोखेबाज।
ठगई†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"। धोखा।
ठगण—संज्ञा पुं० ५ मात्राओं का एक गण।
ठगना—क्रि० स० १. धोखा देकर माल लूटना। २. धोखा देना। छल करना। ३. सौदा बेचने में बेईमानी करना।
†क्रि० अ० १. धोखा खाना। २. चक्कर में आना। चकित होना।
मुहा०—ठगा सा=आश्चर्य से स्तब्ध। चकित। भौंचक्का।
ठगनी—संज्ञा स्त्री० १. ठग की स्त्री या ठगनेवाली स्त्री। २. कुटनी।
ठगपना—संज्ञा पुं० १. ठगने का भाव या काम। २. धूर्त्तता। छल। चालाकी।
ठगमूरी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नशीली जड़ी-बूटी, जिसे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटने के लिए खिलाते थे।
मुहा०—ठगमूरी खाना=मतवाला होना।
ठगमोदक—संज्ञा पुं० दे० "ठगलाड़ू"।
ठगलाड़ू—संज्ञा पुं० ठगों का लड्डू जिसमें नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी।
मुहा०—ठगलाड़ू खाना=मतवाला होना। बेसुध होना।
ठगवाना—क्रि० स० [ठगना का प्रे०] दूसरे से धोखा दिलवाना।
ठगविद्या—संज्ञा स्त्री० धूर्त्तता। धोखेबाजी।
ठगहारी—संज्ञा स्त्री० ठगाई।
ठगाई—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगी"।
ठगाना†—क्रि० अ० धोखे में आकर हानि सहना। ठगा जाना।
ठगाही†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"। ठगी।
ठगिन, ठगिनी—संज्ञा स्त्री० १. धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री। २. ठग की स्त्री।
ठगिया—संज्ञा पुं० ठग। कपटी। धोखा देनेवाला। धोखेबाज।
ठगी—संज्ञा स्त्री० १. धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव। २. धूर्त्तता। धोखेबाजी। चालबाजी।
ठगोरी—संज्ञा स्त्री० १. सुध-बुध भुलानेवाली शक्ति। २. टोना। जादू। मोहिनी। माया। ३. धोखाधड़ी। ठगपना। ठगाई।
ठचरा—संज्ञा पुं० झगड़ा। कलह। वैर-विरोध। टंटा। बखेड़ा।
ठट—संज्ञा पुं० १. दल। मंडली। भीड़-भाड़। झुंड। समूह। २. बनाव। रचना। सजावट।
ठटकीला—वि० सजा हुआ। ठाठदार।
ठटना—क्रि० स० १. ठहरना। निश्चित करना। २. सजाना। सज्जित करना आरंभ करना। (राग) छेड़ना।
क्रि० अ० १. खड़ा रहना। अड़ना डटना। २. सजना। सुसज्जित होना।
ठटनि—संज्ञा स्त्री० बनाव। रचना।
ठटरी—संज्ञा स्त्री० १. हड्डियों का ढाँचा अस्थिपंजर। २. घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। ३. खरिया। ४. किसी वस्तु का ढाँचा। ५. मुरदा उठाने की रथी अरथी।
ठटु†—संज्ञा पुं० बनाव। रचना।
ठट्ट—संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठट्टर–संज्ञा पुं० दे० "ठठरी"। ठठ। चाल। मकान। खपरैल से छाने के लिए बाँस के टट्टर। मचान पर रखने के लिए बाँस का बना हुआ ठाठ।

ठट्टी–संज्ञा स्त्री० ठटरी। पंजर।

ठट्टा–संज्ञा पुं० हँसी। दिल्लगी।

यौ०–ठट्ठेबाज=दिल्लगीबाज।

मुहा०–ठट्टा उड़ाना=उपहास करना।

ठठ–संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठठई*–संज्ञा स्त्री० दे० "ठट्टा"।

ठठक–संज्ञा स्त्री० १. अटकाव। रोक। २. भौंचक्क। भयभीत।

ठठकना†*–क्रि० अ० १. सहसा रुक जाना। ठिठकना। २. स्तंभित हो जाना। ठक रह जाना। डर जाना। ठिठकना।

ठठना†–क्रि० अ० दे० "ठटना"।

ठठेरा–संज्ञा पुं० दे० "ठट्टर"।

ठठरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।

ठठाई–क्रि० वि० १. मारपीटकर। मार मारकर। २. अति प्रसन्नता से।

ठठाना–क्रि० स० मारना। पीटना। ठोंकना।

क्रि० अ० जोर से हँसना।

ठठिरिन†–संज्ञा स्त्री० ठठेरे की स्त्री।

ठठुकना–क्रि० अ० रुकना।

ठठेर-मंजारिका–संज्ञा स्त्री० ठठेरे की बिल्ली जो ठकठक शब्द से न डरे।

ठठेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] बर्तन बनानेवाला। कसेरा।

मुहा०–ठठेरे ठठेरे बदलाई=जैसे के साथ तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली=ठठेरे की बिल्ली, ऐसा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न चौंके न घबराय।

ठठेरी–संज्ञा स्त्री० १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम।

यौ०–ठठेरी बाजार=कसेरों का बाजार।

ठठोल–संज्ञा पुं० १. दिल्लगीबाज। मसखरा। विनोदप्रिय। २. दे० "ठठोली"।

ठठोली–संज्ञा स्त्री० हँसी। दिल्लगी।

ठड़ा†–वि० खड़ा।

ठड्डा–संज्ञा पुं० १. रीढ़। २. गुड्डी के बीच की लकड़ी। मुढ़ा।

ठड़ा†–वि० खड़ा।

ठन–संज्ञा स्त्री० धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक–संज्ञा स्त्री० १. ध्वनि। बाजे का शब्द। जैसे मृदंग, तबला आदि। २. टीस। चसक।

ठनकना–क्रि० अ० १. ठन ठन शब्द करना। २. टीस मारना। चसकना। रह-रहकर दर्द होना। ३. सिर दर्द करना। ४. किसी कार्य को अपने लिए हानिकारक समझना।

मुहा०–माथा ठनकना=गहरा खटका पैदा होना।

ठनकाना–क्रि० स० किसी धातुखंड या बाजे पर आघात करके शब्द निकालना। बजाना।

ठनकार–संज्ञा स्त्री० ठनठन शब्द। रुपये के बजने का शब्द।

ठनगन–संज्ञा पुं० १.मंगल अवसरों पर नेग पाने के लिए हठ। २. किसी वस्तु के लिए बालकों का मचलना।

ठनठन गोपाल–संज्ञा पुं० १. छूँछी और निःसार वस्तु। २. निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना–क्रि० स० ठनठन शब्द निकालना बजाना।

क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना।

ठनना–क्रि० अ० १. (किसी कार्य का) तत्परता के साथ आरम्भ होना। अनुष्ठित होना। छिड़ना। २. (मन में) ठहरना। पक्का होना। ३. लगना। जमना। ४. उद्यत होना। मुस्तैद होना।

ठनाठन–क्रि० वि० ठनठन शब्द के साथ। झनकार के साथ।

ठनाका–संज्ञा पुं० ठनठन शब्द। ठनकार।

ठपका†–संज्ञा पुं० धक्का। ठेस। ठोकर।

ठप्पा–संज्ञा पुं० १. मुहर। मोहर। २. लकड़ी, धातु आदि का खंड जिस पर कोई आकृति, नाम, या बेलबूटे आदि इस प्रकार खुदे हों कि उस पर रंग या स्याही आदि लगाकर दूसरी वस्तु पर दबाने से उसकी छाप उतर आवे। ३. साँचे के द्वारा बनाया हुआ

बेल-बूटा आदि । छाप । नकश । ४. एक प्रकार का गोटा।

ठमक—संज्ञा स्त्री० १. चलते-चलते ठहर जाने का भाव । रुकावट । २. चलने की ठसक। लचक।

ठमकना—क्रि० अ० १. चलते-चलते ठहर जाना । ठिठकना । रुकना । ठहरना । २. मटकते हुए चलना।

ठमकाना, ठमकारना—क्रि० स० चलते-चलते रोकना। ठहराना।

ठयना—क्रि० स० १. दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करना। ठानना। २. कर चुकना। पूरी तरह से करना। ३. मन में ठहराना। निश्चित करना। ४. स्थापित करना । बैठाना । ठहराना । ५. लगाना । प्रयोग करना।

क्रि० अ० दे० "ठनना"। १. स्थित होना। बैठना । जमना । २. प्रयुक्त होना । लगना।

ठरना—क्रि० अ० १. सरदी से अकड़ना या सुन्न होना । २. बहुत अधिक ठंड पड़ना।

ठर्रा—संज्ञा पुं० १. देशी शराब। महुए की शराब। २. बहुत मोटा सूत । ३. अधपक्की ईंट।

ठवना—क्रि० स० दे० "ठयना"।

ठवनि या ठवनी—संज्ञा स्त्री० १. बैठक । २. बैठने या खड़े होने का ढंग। आसन। मुद्रा। ३. चाल । गति ।

ठवर—संज्ञा पुं० ठौर। स्थान।

ठस—वि० १. ठोस । कड़ा । २. जिसकी बुनावट घनी हो । गफ । ३. दृढ़ । मजबूत। ४. भारी। ५जनी। ५. सुस्त। आलसी । ६. (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७. कृपण । कंजूस।

ठसक—संज्ञा स्त्री० १. अकड़ । नखरा । २. दर्प। शान।

ठसकदार—वि० १. घमंडी । अभिमानी । २. शानदार। तड़क-भड़कवाला।

ठसका—संज्ञा पुं० १ सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले । २. ठोकर । धक्का ।

ठसाठस—क्रि० वि० ठूँसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा—संज्ञा पुं० १. अभिमानपूर्ण हाव-भाव। ठसक । २. घमंड । अहंकार । ३. ठाट-बाट। शान।

ठहक—संज्ञा स्त्री० नगाड़े का शब्द।

ठहना—क्रि० अ० १. घोड़ों का हिनहिनाना। २. घनघनाना। घंटे का बजना। ३. बनाना । सँवारना।

ठहर†—संज्ञा पुं० १. स्थान। जगह। २. रसोई का स्थान । चौका। ३. लिपाई-पोताई।

ठहरना—क्रि० अ० १. रुकना। थमना। २. डेरा डालना। टिकना। विश्राम करना। ३. एक स्थान पर बना रहना। स्थिर रहना। ४. नीचे न गिरना। अड़ा रहना। ५. नष्ट न होना। बना रहना। ६. कुछ दिन काम देने लायक रहना । ७. घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना। थिराना। ८. धीरज रखना। ९. प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। १०. निश्चित होना। पक्का होना।

मुहा०—मन ठहरना=चित्त की आकुलता दूर होना। किसी बात का ठहरना=किसी बात का संकल्प होना। ठहरा=है। जैसे, वह अपने संबंधी ठहरे।

ठहराई—संज्ञा स्त्री० १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कब्जा। अधिकार।

ठहराऊ—वि० टिकाऊ। दृढ़। मजबूत।

ठहराना—क्रि० स० १. चलने से रोकना गति बंद करना। २. डेरा देना। टिकाना ३. अड़ाना । टिकाना। ४. इधर-उध न जाने देना। ५. किसी होते हुए का को रोकना। ६. पक्का करना। त करना।

ठहराव—संज्ञा पुं० १. ठहरने का भाव स्थिरता। २. निश्चय। निर्धारण।

ठहरौनी—संज्ञा स्त्री० विवाह में दहेज आ के लेन-देन का करार।

ठहाका†—संज्ञा पुं० जोर की हँसी। अट्टही

ठँहिया—संज्ञा स्त्री० स्थान।
ठाँ—संज्ञा स्त्री०, पुं० १. दे० "ठाँव"। ठाँय। २. बंदूक छूटने की आवाज।
ठाँई†—संज्ञा स्त्री० १. स्थान। जगह। २. तईं। प्रति। ३. समीप। पास। निकट। ४. स्थायी।
ठाउँ—संज्ञा पुं० स्थान। ठाँव। ठौर। अवसर।
ठाँठ—वि० १. जो सूखकर बिना रस का हो गया हो। नीरस। २. (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।
ठायँ—संज्ञा पुं०, स्त्री० १. स्थान। जगह। २. समीप। निकट। पास। ३. बंदूक छूटने का शब्द।
ठायँ ठायँ—संज्ञा स्त्री० १. बंदूक छूटने का शब्द। †२. झगड़ा।
ठाँव—संज्ञा पुं०, स्त्री० स्थान। जगह। ठिकाना।
ठाँसना—क्रि० स० १. जोर से घुसाना। दबादबाकर भरना। २. रोकना। मना करना।
क्रि० अ० जोर से खाँसना।
ठाकुर—संज्ञा पुं० [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १. देवता। देव-मूर्ति। २. ईश्वर। भगवान्। ३. पूज्य व्यक्ति। ४. नायक। मुखिया। सरदार। ५. जमींदार। ६. क्षत्रियों की उपाधि। ७. मालिक। स्वामी। ८. नाइयों की उपाधि। मैथिल ब्राह्मणों की उपाधि।
ठाकुरद्वारा—संज्ञा पुं० मंदिर। देवालय। देवस्थान।
ठाकुरबाड़ी—संज्ञा स्त्री० देवालय। मंदिर।
ठाकुरसेवा—संज्ञा स्त्री० १. देवता का पूजन। २. मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई संपत्ति।
ठाकुरी—संज्ञा स्त्री० स्वामित्व। आधिपत्य। शासन।
ठाट—संज्ञा पुं० १. लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। २. ढाँचा। ढडढा। पंजार। ३. वेश-विन्यास। शृङ्गार सजावट। ४. आडम्बर। ऊपरी तड़क-भड़क। दिखावट। ५. ढंग। शैली। प्रकार। तर्ज। ६. आयोजन। तैयारी। ७. सामान। सामग्री। ८. युक्ति। ढंग। उपाय। ९. समूह। झुंड। †१०. बहुतायत। अधिकता।
मुहा०—ठाट बदलना=१. वेश बदलना। २. झूठमूठ अधिकार या बड़प्पन जताना। रंग बाँधना।
ठाटना*†—क्रि० स० १. निर्मित करना। रचना। बनाना। २. अनुष्ठान या आयोजन करना। ठानना। ३. सजाना। सँवारना।
ठाटबाट—संज्ञा पुं० १. सजावट। सजधज। २. तड़क-भड़क। आडंबर।
ठाटर—संज्ञा पुं० १. ठाट। टट्टर। टट्टी। २. ठठरी। पंजर। ३. ढाँचा। ४. कबूतर आदि के बैठने की छतरी। ५. ठाटबाट। बनाव। सिंगार। सजावट।
ठाटी†—संज्ञा स्त्री० ठट। समूह।
ठाठ†—संज्ञा पुं० दे० "ठाट"।
ठाड़ा—वि० खड़ा। सीधा। लंबायमान।
ठाढ़ या ठाढ़ा†*—वि० १. खड़ा। २. समूचा। साबित। ३. उत्पन्न। पैदा।
वि० हट्टा कट्टा। हृष्ट-पुष्ट।
मुहा०—ठाढ़ा देना=ठहराना। टिकाना। ठाढ़ा ठाढ़ी=बहुत शीघ्र। शीघ्रता से। खड़े-खड़े।
ठादर†—संज्ञा पुं० झगड़ा। मुठभेड़।
ठान—संज्ञा स्त्री० १. कार्य्य का आयोजन। काम का छिड़ना। अनुष्ठान। समारम्भ। २. छेड़ा हुआ काम। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का इरादा। ४. अंदाज़। ५. चेष्टा। मुद्रा।
ठानना†—क्रि० स० १. तत्परता के साथ कार्य्य आरंभ करना। छेड़ना। २. पक्का करना। ठहराना।
ठाना*†—क्रि० स० १. ठानना। २. निश्चित करना। पक्का करना। ३. स्थापित करना। रखना। ४. प्रारम्भ किया। ठहराया। निश्चय किया। विचार किया। प्रतिज्ञा की।
ठाम†*—संज्ञा पुं०, स्त्री० १. ठाँव। स्थान।

जगह। ठिकाना। २. संचालन का ढंग। ३. मुद्रा। ४. अन्दाज।

ठार—संज्ञा पुं० १. बहुत जाड़ा। अत्यधिक सरदी। २. पाला। हिम।

ठाल—संज्ञा स्त्री० दे० "ठाला"।

ठाला—संज्ञा पुं० १. रोजगार का न रहना। बेकारी। २. आमदनी का न होना। वि० जिसे कुछ काम-धंधा न हो। निठल्ला। बेकार।

ठाली—वि० जिसे कुछ काम-धंधा न हो। निठल्ला। बेकाम। खाली।

ठावना*—क्रि० स० दे० "ठाना"।

ठाहर या **ठाहरू**†—संज्ञा पुं० १. स्थान। जगह। २. रहने या टिकने का स्थान। डेरा।

ठिंगना—वि० [स्त्री० ठिंगनी] छोटे डील का। नाटा।

ठिक—संज्ञा स्त्री० १. स्थान या अवसर-विशेष। २. थिगली। चकती।

ठिकठौर—संज्ञा स्त्री० टिकनेवाली जगह।

ठिकठेना†*—संज्ञा पुं० ठीक-ठाक। प्रबंध। आयोजन।

ठिकना†—क्रि० अ० दे० "ठहरना"। रुकना।

ठिकरा—संज्ञा पुं० दे० "ठीकरा"।

ठिकान या **ठिकाना**—संज्ञा पुं० १. स्थान। जगह। ठौर। २. रहने या ठहरने की जगह। निवास-स्थान। ३. निर्वाह या आश्रय का स्थान। ४. निश्चित अस्तित्व। स्थिरता। ठहराव। ५. प्रबंध। आयोजन। बंदोबस्त। ६. अंत। हद।

†क्रि० स० ठहराना।

मुहा०—ठिकाने आना=१. अपने स्थान पर पहुँचना। २. बहुत सोच-विचार के उपरांत यथार्थ बात करना या समझना। ठिकाने की बात=१. ठीक या प्रामाणिक बात। २. समझदारी की बात। ठिकाने पहुँचाना या लगाना=१. ठीक जगह पर पहुँचाना। २. नष्ट कर देना। न रहने देना। ३. मार डालना।

ठिकानेदार—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जिसे रियासत की ओर से ठिकाना (जागीर) मिला हो।

ठिठक—संज्ञा स्त्री० आश्चर्य में होना। भयभीत होना। अचम्भित होना।

ठिठकना—क्रि० अ० १. चलते-चलते एकबारगी रुक जाना। २. स्तंभित होना। ठक रह जाना।

ठिठरना—क्रि० अ० सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिठुरना†—क्रि० अ० दे० "ठिठरना"।

ठिनकना—क्रि० अ० बच्चों का बीच में रुक-रुककर रोना। ठुनकना। सिसक-सिसककर रोना।

ठिया—संज्ञा पुं० जगह। ठिकाना। हद। सीमा। हद का पत्थर या खम्भा। कारीगरों के काम करने का स्थान।

ठिर—संज्ञा स्त्री० पाला। कड़ी सर्दी।

ठिरना—क्रि० स० जाड़े से ठिठुरना। जमना। जम जाना। पाला लगना। एकत्रित होना।

क्रि० अ० बहुत जाड़ा पड़ना।

ठिलना—क्रि० अ० १. ठेला जाना। ढकेला जाना। २. बलपूर्वक बढ़ना। घुसना। धँसना।

ठिलाठिल†—क्रि० वि० एक पर एक गिरते हुए। धक्कमधक्का करते हुए।

ठिलिया—संज्ञा स्त्री० छोटा घड़ा। गगरी। मटकी।

ठिलुआ—वि० ठलुआ। निठल्ला। निकम्मा।

ठिल्ला†—संज्ञा पुं० [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली] गगरी। बड़ा घड़ा।

ठीहारी—संज्ञा स्त्री० ठहराव। निश्चय।

ठीक—वि० १. जैसा हो, वैसा। यथार्थ। सच। प्रामाणिक। २. उपयुक्त। उचित। मुनासिब। योग्य। ३. शुद्ध। सही। ४. दुरुस्त। अच्छा। ५. जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६. सीधा। सुष्ठु। ७. जिसमें कुछ फर्क न पड़े। निर्दिष्ट। ८. ठहराया हुआ। निश्चित। स्थिर। पक्का।

क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे। उचित रीति से।

संज्ञा पुं० १. पक्की बात। निश्चय। ठिकाना। २. निश्चित प्रबंध। पक्का

आयोजन। ठहराव। निश्चय। ३. जोड़। मीजान। योग।

ठीक ठाक—संज्ञा पुं० १. निश्चित प्रबंध। बंदोबस्त। आयोजन। २. निश्चय। ठहराव। पक्की बात।

ठीकरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० ठीकरी] १. मिट्टी के बर्तन का फूटा टुकड़ा। कंकड़। सिटकी। २. पुराना या टूटा-फूटा बरतन। ३. भिक्षापात्र।

ठीकरी—संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। कंकड़। २. तुच्छ वस्तु।

ठीका—संज्ञा पुं० १. कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। २. आमदनी की वस्तु को कुछ काल के लिए इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता जाय। पट्टा। इजारा।

ठीकेदार—संज्ञा पुं० ठीका लेनेवाला।

ठीलना†—क्रि० स० दे० "ठेलना"।

ठीवन*—संज्ञा पुं० थूक। खखार।

ठीहँ—संज्ञा स्त्री० घोड़ों की हिनहिनाहट।

ठीहा—संज्ञा पुं० १. जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा, जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. कुंदा। ३. बैठने के लिए कुछ ऊँचा किया हुआ स्थान। गद्दी। ४. हद। सीमा।

टुंठ—संज्ञा पुं० १. सूखा हुआ पेड़। २. कटे हुए हाथवाला जीव। लूला।

ठुकना—क्रि० अ० १. ठोंका जाना। पिटना। २. धँसना। गड़ना। ३. मार खाना। मारा जाना। ४. हानि होना। नुकसान होना। ५. पैर में बेड़ी पहनना। कैद होना।

ठुकराना—क्रि० स० १. ठोकर लगाना। लात मारना। २. तुच्छ समझकर दूर हटाना।

ठुकवाना—क्रि० स० [ठोकना का प्रे०] ठोकने का काम कराना। पिटवाना।

ठुड्डी—संज्ञा स्त्री० होंठ के नीचे का भाग। चिबुक। ठोड़ी। वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। बिना लावा का चबेना।

ठुनुक—संज्ञा स्त्री० सिसक। ठिनक। धीरे धीरे रोना।

ठुनुकना या ठनकना—क्रि० स० सिसकना। ठिनकना। धीरे-धीरे रोना।

क्रि० अ० धीरे से अँगुली से ठोंक या मार देना।

ठुनठुन—संज्ञा पुं० एक प्रकार के बाजे के बजने का शब्द। बच्चों के रुक-रुककर रोने का शब्द।

ठुमक—वि० उमंग के कारण थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलने की चाल। ऐंठ के साथ चलना। ठिठक लिये हुए चाल।

ठुमकना—क्रि० अ० १. ठसकभरी चाल चलना। २. बच्चों का उमंग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। ३. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघरू बजें।

ठुमका†—वि० नाटा। ठिंगना।

संज्ञा पुं० झटका।

ठुमकी—संज्ञा स्त्री० १. थपकी २. ठिठक। रुकावट। ३. छोटी खरी पूरी।

वि० नाटी। छोटे डील की।

ठुमरी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत।

ठुर्री—संज्ञा स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।

ठुसकना—क्रि० अ० १. ठुसकी मारना। धीरे धीरे रोना। २. एक न एक अड़ंगा लगाना। दूसरों की बात में टोकना। ३. पादना।

ठुसकी—संज्ञा स्त्री० धीरे धीरे रोना। शब्द-रहित पाद।

ठुसना—क्रि० अ० कसकर भरा जाना।

ठुसाना—क्रि० स० १. कसकर भरवाना। २. खूब पेटभर खिलाना। ठुसवाना।

ठूँग—संज्ञा स्त्री० १. चोंच। ठोर। २. चोंच से मारने की क्रिया।

ठूँठ—संज्ञा पुं० १. ऐसा पेड़ जिसकी डाल पत्तियाँ न हों। सूखा पेड़। २. कटा हुआ हाथ। ठुंड।

ठूँठा–वि० १. बिना पत्तियों और टहनियों का पेड़। सूखा पेड़ । २. बिना हाथ का। लूला।
ठूँसना–क्रि० स० दे० "ठूँसना"।
ठूसना–क्रि० स० १. खूब कसकर भरना। २. घुसेड़ना। घुसाना। ३. खूब पेट भर कर खाना।
ठेंगना–वि० [स्त्री० ठेंगनी] छोटे डील का। नाटा। छोटा।
ठेंगा–संज्ञा पुं० १. अँगूठा । लाठी। २. सोंटा। डंडा।
मुहा०—ठेंगा बजाना=लाठी चलाना। मारपीट करना।
ठेंठी–संज्ञा स्त्री० १. कान की मैल। २. कान के छेद में उसे मूँदने के लिए लगाई हुई रुई आदि की डाट। ३. काग।
ठेंपी–सज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"। डाट। काग। बोतल आदि बन्द करने का ढक्कन।
ठेक–संज्ञा स्त्री० १. टेक। टेकनी। सहारा। अवलम्ब। २. अन्न से भरा हुआ बोरा। ३. पच्चड़। ४. पेंदा। तल। ५. घोड़ों की एक चाल। ६. छड़ी या लाठी की सामी।
ठेकना–क्रि० स० १. सहारा लेना। आश्रय लेना। टेकना। २. टिकना। ठहरना।
ठेका–संज्ञा पुं० १. सहारे की वस्तु। टेक। २. ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३. तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय। [कौवाली ताल] ४. तबले में बाँया। ५. ठोकर। धक्का । ठीका।
ठेकाई–संज्ञा स्त्री० कपड़ों की छपाई में काले हाशिए की छपाई।
ठेकी–संज्ञा स्त्री० टेक। सहारा।
ठेगना*–क्रि० स० १. टेकना। सहारा लेना। २. रोकना। मना करना।
ठेघा*–संज्ञा पुं० टेक। चाँड़।
ठठ–वि० १. निपट । निरा। बिलकुल। जिसमें कुछ मेल जोल न हो। खालिस। ३. शुद्ध। निर्मल। निर्लिप्त। ४. आरंभ। संज्ञा स्त्री० सीधी-सादी बोली।
ठेपी–संज्ञा स्त्री० डाट। काग। ठेंठी।
मुहा०—ठेपी मुहँ में देना=चुपचाप रहना। कुछ भी न बोलना।
ठेलना–क्रि० स० धक्का देकर आगे बढ़ाना। रेलना। ढकेलना।
ठेला–संज्ञा पुं० १. धक्का । आघात। टक्कर। २. एक प्रकार की माल लादने की गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं। ३. भीड़भाड़। धक्कम-धक्का।
ठेलाठेल–संज्ञा स्त्री० धक्कम-धक्का। रेलपेल।
ठेलाठेली–संज्ञा पुं० धक्कम-धक्का। रेलपेल।
ठेस–संज्ञा स्त्री० ठोकर। आघात । चोट।
ठेसना–क्रि० स० ठूसना।
ठेसरा–संज्ञा पुं० नाक-भौं सिकोड़नेवाला। गर्वीला। अभिमानी।
ठेहरी–संज्ञा स्त्री० दरवाजों के पल्लों के नीचे की लकड़ी, जिस पर किवाड़ों की चूल घूमती है।
ठेन†*–संज्ञा स्त्री० जगह। स्थान।
ठैयाँ–संज्ञा स्त्री० जगह। स्थान।
ठोंक–संज्ञा स्त्री० ठोंकने की क्रिया या भाव। प्रहार। आघात।
ठोंकना–क्रि० स० १. मारना। प्रहार करना। पीटना। २. मारना-पीटना । ३. चोट लगाकर धँसाना। गाड़ना। ४. (नालिश आदि) दाखिल करना। दायर करना। ५. बेड़ियों से जकड़ना। ६. थपथपाना। ७. हाथ से मारकर बजाना।
मुहा०–ठोंकना बजाना=जाँचना। परखना।
ठोंग–संज्ञा स्त्री० १. चोंच या उसकी मार। २. उँगली की ठोकर।
ठोंगना–क्रि० स० चोंच मारना। उँगली से ठोकर मारना।
ठोंगा–संज्ञा पुं० कागज का बना हुआ एक प्रकार का दोना या पात्र।
ठोंगाना–क्रि० स० दे० "ठोंगना"।
ठोंठ–संज्ञा स्त्री० चोंच। पक्षियों का ओठ।
ठोंठी–संज्ञा स्त्री० चने के दाने का कोश। पोस्ता की ठोंठी।
ठो†–अव्य० संख्याबोधक शब्द। संख्या। अदद। (पूरबी)

ठोकर–संज्ञा स्त्री० १. आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर आदि से पैर में लगे। ठेस। २. वह पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता हो। ३. वह कड़ा आघात जो पैर या जूते के पंजे से किया जाय। ४. कड़ा आघात। धक्का। ५. जूते का अगला भाग।

मुहा०—ठोकर खाना=१. किसी भूल के कारण दुःख सहना। २. धोखे में आना। चूक जाना। ३. दुर्गति सहना। कष्ट सहना। ठोकर लेना=ठोकर खाना।

ठोट–वि० मूर्ख। गावदी।

ठोठरा†–वि० खाली। पोपला।

ठोड़ी–संज्ञा स्त्री० होंठ के नीचे का भाग। ठुड्डी। चिबुक। दाढ़ी।

ठोढ़ी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठोड़ी"।

ठोप–संज्ञा पुं० बूंद।

ठोर–संज्ञा पुं० १. चोंच। चंचु। २. एक प्रकार का पकवान।

ठोल–संज्ञा स्त्री० १. दे० "ठोर"। २. चीनी में पगी मोटी सी पूरी।

ठोला–संज्ञा पुं० १. कुल्हिया। २. चिड़ियों को खिलाने का बर्तन। ३. छोटे-छोटे बर्त्तन। ४. अँगुलियों की गाँठ।

ठोली–संज्ञा स्त्री० १. ठठोली। २. दुराचारिणी या रखेली स्त्री।

ठोस–वि० १. जो पोला या खोखला न हो। २. दृढ़। मजबूत।

संज्ञा पुं० कुढ़न। डाह।

ठोसा–संज्ञा पुं० अंगूठा।

ठोहना*†–क्रि० स० पता लगाना। खोजना।

ठोहर–संज्ञा पुं० अकाल। तेजी। महँगी।

ठौनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ठवनि"। स्थिति। स्थान।

ठौर–संज्ञा पुं० १. जगह। स्थान। ठाँव। ठिकाना। २. मौका। अवसर।

मुहा०—ठौर कुठौर=१. बुरे ठिकाने। अनुपयुक्त स्थान पर। २. बेमौका। बिना अवसर। ठौर न आना=समीप न आना। ठौर रखना=मार डालना। ठौर रहना=१. जहाँ का तहाँ पड़ रहना। २. मर जाना।

ड

ड–व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. भय। डर। ३. शब्द। ध्वनि। नाद। ४. बड़वानल।

डंक–संज्ञा पुं० १. बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों का जहरीला काँटा। २. कलम की जीभ। निब।

डंकना–क्रि० अ० भयानक शब्द करना। गरजना।

डंका–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नगाड़ा।

मुहा०—डंके की चोट पर कहना=खुल्लमखुल्ला कहना। सबको सुनाकर कहना।

डंकिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।

डंकियाना–क्रि० स० डंक मारना।

डंकीला–वि० डंकवाला।

डंकोरी–संज्ञा स्त्री० ततैया।

डंगर–संज्ञा पुं० चौपाया। गाय, बैल, भैंस आदि।

डंगरा–संज्ञा पुं० खरबूजा।

डँगरी–संज्ञा स्त्री० १. लंबी ककड़ी। २. चुड़ैल। डाइन।

डंगवारा–संज्ञा पुं० किसानों में हल-बैल आदि की पारस्परिक सहायता।

डंगू ज्वर–संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

डँटैया–संज्ञा पुं० डाँटनेवाला। घुड़कनेवाला। धमकानेवाला।

डंठरी–संज्ञा स्त्री० दे० "डंठल"।

डंठल–संज्ञा पुं० छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंठी†–संज्ञा स्त्री० डंठल।

डंड–संज्ञा पुं० १. डंडा। सोंटा। २. बाहुदंड। बाँह। ३. हाथ-पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की कसरत। ४. दंड। सजा। ५. अर्थदण्ड। जुरमाना। ६. घाटा। हानि। नुकसान। ७. घड़ी। दंड।

डंडपेल—संज्ञा पुं० १. कसरती। पहलवान। २. बलवान् आदमी।

डंडवत्—संज्ञा पुं० दे० "दंडवत्"।

डँड़वारा—संज्ञा पुं० [स्त्री० डँड़वारी] वह कम ऊँची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिए उठाई जाय। थोड़ी ऊँची चहारदीवारी।

डँड़वी†*—संज्ञा पुं० दंड या राजकर देनेवाला। करद।

डंडा—संज्ञा पुं० १. मोटी छड़ी। सोंटा। लाठी। २. चहारदीवारी। डाँड़। डँड़वारा।

डंडाकरन*—संज्ञा पुं० दे० "दंडक वन"।

डंडा-डोली—संज्ञा स्त्री० लड़कों का एक खेल।

डंडाल—संज्ञा पुं० नगाड़ा।

डँड़िया—संज्ञा स्त्री० १. वह साड़ी जिसके बीच में गोटे टाँककर लकीरें बनी हों। छड़ीदार साड़ी। २. गेहूँ के पौधे की सींक, जिसमें बाल रहती है।
संज्ञा पुं० कर उगाहनेवाला।

डंडियाना—क्रि० स० सीकर जोड़ना।

डंडी—संज्ञा स्त्री० १. पतली छड़ी। २. किसी वस्तु का वह लंबा पतला भाग, जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३. तराजू की लकड़ी जिसमें पलड़े बाँधे जाते हैं। डाँड़ी। ४. लंबा डंठल जिसमें फूल या फल लगा होता है। नाल। ५. आरसी नाम के गहने का वह छल्ला, जो उँगली में पड़ा रहता है। ६. झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी। ७. दंड धारण करनेवाला संन्यासी। दंडी।
*वि० चुगलखोर।

डँड़ोरना—क्रि० स० ढूँढ़ना। खोजना।

डंबर—संज्ञा पुं० १. आडंबर। ढकोसला। २. विस्तार। ३. एक प्रकार का चँदवा।
यौ०—मेघडंबर=बड़ा शामियाना। दल-बादल। अंबर-डंबर=संध्या के समय आकाश में दिखाई देनवाली लाली।

डंबेल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कसरत करने का एक यंत्र।

डँवरुआ—संज्ञा पुं० वात का एक रोग। गठिया।

डँवाँडोल—वि० दे० "डाँवाँडोल"।

डंस—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बड़ा मच्छर। डाँस। २. वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो।

डँसना—क्रि० स० दे० "डसना"।

डक—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

डकई—संज्ञा पुं० केले की एक जाति।

डकराना—क्रि० अ० बैल या भैंसे का बोलना।

डकार—संज्ञा पुं० १. मुँह से निकले हुए शब्द के साथ वायु का उद्गार। भोजन-तृप्ति का सूचक। २. बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।
मुहा०—डकार न लेना=किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना। डकार जाना। खा जाना। पचा जाना। किसी से कुछ लेकर देने की इच्छा न करना।

डकारना—क्रि० अ० १. पेट की वायु को मुँह से निकालना। डकार लेना। हड़प लेना। २. किसी का माल ले लेना। हजम करना। पचा जाना। ३. बाघ, सिंह आदि का गरजना। दहाड़ना।

डकैत—संज्ञा पुं० १. डाका मारनेवाला। डाकू। लुटेरा। किसी पर आक्रमण करके उसकी चीजें छीन लेनेवाला। २. डकैतों का दल। डाकुओं का गिरोह।

डकैती—संज्ञा स्त्री० डाका। डाका मारने का काम। हमला करके माल छीन लेना।

डग—संज्ञा पुं० १. एक स्थान से पैर उठाकर दूसरे स्थान पर रखना। फाल। कदम। २. उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े। पैंड़।
मुहा०—डग देना=चलने में आगे की ओर पैर रखना। डग भरना या मारना=कदम बढ़ाना। लंबे पैर बढ़ाना।

डगडगाना—क्रि० अ० इधर से उधर हिलना। हिलना। हिलते-डुलते चलना। लड़खड़ाना। विचलित होना।

डगडोलना—क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डगडौर–वि० दे० "डाँवाँडोल"।

डगण–संज्ञा पुं० पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना†*–क्रि० अ० १. हिलना। टसकना। खसकना। जगह छोड़ना। २. चूकना। भूल करना। डिगना। ३. डगमगाना। लड़खड़ाना।

डगमग–वि० लड़खड़ाता हुआ। डावाँडोल। काँपनेवाला। चंचल। अस्थिर।

डगमगाना–क्रि० अ० १. कभी इधर, कभी उधर झुकना। लड़खड़ाना। थरथराना। २. विचलित होना। दृढ़ न रहना।

डगर–संज्ञा स्त्री० मार्ग। रास्ता। पथ। पैंड़ा।

डगरना*†–क्रि० अ० १. 'चलना। रास्ता लेना। २. फिसल जाना। लुढ़क जाना। ३. रास्ते-रास्ते घूमना।

डगरा†–संज्ञा पुं० १. रास्ता। मार्ग। २. बाँस का बना हुआ टोकरा। डलरा। छाबड़ा।

डगा†–संज्ञा पुं० नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब। डागा। डुगडुगी बजाने का डंडा।

डगाना–क्रि० स० दे० "डिगाना"।

डग्गा–संज्ञा पुं० दुर्बल घोड़ा। केवल अस्थि-पंजर-युक्त घोड़ा।

डट–संज्ञा पुं० निशाना।

डटना–क्रि० अ० १. जमकर खड़ा होना। अड़ना। ठहरा रहना। २. लग जाना। उद्यत रहना। डट जाना। ३. छू जाना। *†४. देखना।

डटाना–क्रि० स० १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना। सटाना। भिड़ाना। २. जमाना। खड़ा करना।

डटाई–संज्ञा स्त्री० डटाने की मजदूरी। डटाने का काम।

डटैया–वि० डटानेवाला। उद्यत। प्रस्तुत।

डट्टा–संज्ञा पुं० १. हुक्के का नैचा। २. डाट। काग। ३. बड़ी मेख। ४. साँचा।

डड्ढार*†–वि० १. बड़ी दाढ़ीवाला। २. वीर। बहादुर। ३. साहसी।

डढ़न*–संज्ञा स्त्री० जलन।

डढ़ना*–क्रि० अ० जलना।

डढ़मुंडा–वि० दाढ़ी-रहित। जिसकी दाढ़ी मूँड़ दी गई हो।

डढ़ार, डढ़ारा–वि० १. वह, जिसके डाढ़ें हों। २. वह, जिसके दाढ़ी हो।

डढ़ियल–वि० दाढ़ीवाला। लम्बी दाढ़ीवाला।

डढ़ना*–क्रि० स० जलाना।

डढ़्योरा*–वि० दाढ़ीवाला।

डढ़ुआ या डढ़ोई–वि० १. जला हुआ। दग्ध। भस्मीभूत। २. तेल-विशेष जो जलाकर निकाला जाता है। ३. यंत्र द्वारा पाताल से निकाला हुआ तेल।

डपट–संज्ञा स्त्री० १. डाँट। झिड़की। घुड़की। २. घोड़े की तेज चाल। सरपट।

डपटना–क्रि० स० क्रोध में जोर से बोलना। डाँटना। तेजी से जाना।

डपोरशंख, डपोरसंख–संज्ञा पुं० १. मूर्ख। जो कहे बहुत, पर कर कुछ न सके। डींग मारनेवाला। २. बड़े डील-डौल का, पर मूर्ख।

डप्पू–वि० बहुत मोटा। बहुत बड़ा।

डफ–संज्ञा पुं० १. चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा। बड़ी खंजरी। डफला। २. लावनीबाजों का बाजा। चंग।

डफला–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

डफली–संज्ञा स्त्री० छोटा डफ। खंजरी। मुहा०–अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग=जितने लोग, उतनी राय।

डफार–संज्ञा स्त्री० [अनु०] जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिग्घाड़।

डफारना†–क्रि० अ० [अनु०] जोर से रोना या चिल्लाना। दहाड़ मारना।

डफाली–संज्ञा पुं० १. डफला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला। खंजरी पर चमड़ा चढ़ानेवाला। २. डफ बजाकर भीख माँगने-वाला। एक श्रेणी का मुसलमान फकीर।

डफोरना†–क्रि० अ० [अनु०] हाँक देना। ललकारना। गरजना। चिल्लाना।

डब–संज्ञा पुं० १. जेब। थैला। कुप्पा बनाने का चमड़ा। २. बल। सामर्थ्य। शक्ति।

डबकना–क्रि० अ० [अनु०] १. टपकना। टीस मारना। २. जगमगाना। चमकना। शोभित होना। ३. लँगड़ाकर चलना।

डबका–संज्ञा पुं० १. मोटा। स्थूल। २. ताजा। कुएँ का ताजा जल।

डबकौंहाँ–वि० [स्त्री० डबकौंहीं] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ। गीला।
डबगर–संज्ञा पुं० चर्मकार। मोची। चमड़ा साफ करनेवाला। चमड़ा कमानेवाला।
डबडबाना–क्रि० अ० [अनु०] आँसू से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।
डबरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० डबरी] छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा रहे। गन्दे जल का छोटा तालाब। गड़हा। गँवई का छोटा तालाब, जिसमें भैंस या सुअर पानी गन्दा कर देते हैं। कुंड। हौज।
डबरिया–वि० लतरहत्था। बायाँ हत्था। बाएँ हाथ से काम करनेवाला।
डबल–वि० [अंग्रे०] दोहरा।
संज्ञा पुं० भारतीय राज्य का पैसा।
डबल रोटी–संज्ञा स्त्री० पावरोटी।
डबला–संज्ञा पुं० कुल्हड़।
डबस–संज्ञा पुं० १. रक्षण। चिन्ता। व्यवस्था। २. तैयारी। ३. जलयात्रा के उपयुक्त वस्तुओं का भाण्डार।
डबा–संज्ञा पुं० डब्बा। पानी का गड्ढा।
डबिया–संज्ञा स्त्री० छोटा डब्बा।
डबी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "डब्बी"।
डबुलिया–संज्ञा स्त्री० कुल्हिया।
डबोना–क्रि० स० दे० "डुबाना"। १. गोता देना। २. उजाड़ना। नष्ट-भ्रष्ट करना। ३. बिगाड़ना।
डब्बा–संज्ञा पुं० १. ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २. रेलगाड़ी में की एक गाड़ी।
डब्बी–संज्ञा स्त्री० छोटा डब्बा।
डब्बू या डबुआ–संज्ञा पुं० व्यंजन (दाल या तरकारी आदि) परोसने का एक प्रकार का कटोरा।
डभकना†–क्रि० अ० [अनु०] १. पानी में डूबना-उतराना। २. आँखों में जल भर आना। आँख डबडबाना।
डभाका–संज्ञा पुं० कुएँ का ताजा पानी। भुना हुआ मटर।
डभकौरी–संज्ञा स्त्री० उरद की दाल की बरी। डूभकी।
डभकौहाँ–वि० डभकनेवाला। डभका हुआ। आँसू-भरे नेत्र।
डम–संज्ञा पुं० डोम।
डमर–संज्ञा पुं० १. भगेड़। डर से भागना। २. राजा को अपने समान अन्य राजा का भय। ३. संघर्ष।
डमरू–संज्ञा पुं० १. चमड़ा मढ़ा एक बाजा। २. डमरू के आकार की कोई वस्तु। ३. ३२ लघु वर्णों का एक दंडक वृत्त।
डमरूमध्य–संज्ञा पुं० भूमि का वह पतला भाग जो दो टापुओं को मिलाता हो।
यौ०–जल-डमरूमध्य=जल का वह पतला भाग, जो जल के दो बड़े-बड़े भागों को मिलाता हो।
डमरू-यंत्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार का यंत्र या पात्र-विशेष जिसमें औषध तैयार की जाती है।
डम्फ–संज्ञा पुं० खंजरी के आकार का एक प्रकार का बाजा।
डयन–संज्ञा पुं० उड़ान। उड़ना। चिड़ियों की चाल।
डर–संज्ञा पुं० हानि की आशंका से उत्पन्न होनेवाला मनोवेग। भय। भीति। खौफ। त्रास। आशंका। अनिष्ट की संभावना।
डरना–क्रि० अ० १. अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। खौफ करना। २. आशंका करना। अंदेशा करना।
डरपना†–क्रि० अ० दे० "डरना"।
डरपाना†–क्रि० स० दे० "डराना"।
डरपोक–वि० बहुत डरनेवाला। भीरु। कायर।
डरवाना–क्रि० स० दे० "डराना"।
डराडरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "डर"।
डराना–क्रि० स० डर दिखाना। भयभीत करना। खौफ दिलाना।
डरावना–वि० जिससे डर लगे। भयानक। भयंकर।
डरावा–संज्ञा पुं० १. डराने के लिए कही हुई बात। २. चिड़ियों को डराने की एक क्रिया। वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया

उड़ाने के लिए बँधी रहती और खटखट शब्द करती है। खटखटा। धड़का।
डराहुक–वि० डरपोक।
डरिया–संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।
डरीला–वि० डालवाला। शाखायुक्त। टहनीदार।
डरैला‡–वि० डरावना।
डरौना–वि० डराऊ। डरावना। भयानक।
डल–संज्ञा पुं० टुकड़ा। खंड।
संज्ञा स्त्री० झील।
डलना–क्रि० अ० डाला जाना। पड़ना।
डलवाना–क्रि० स० 'डालने' का काम दूसरे से कराना।
डला–संज्ञा पुं० [स्त्री० डली] १. टुकड़ा। खंड। २. बाँस, बेंत आदि का बना हुआ बरतन। टोकरा। दौरा।
डलिया–संज्ञा स्त्री० छोटी टोकरी। बाँस की बनी फूल रखने की छोटी टोकरी। दौरी।
डली–संज्ञा स्त्री० १. सुपारी। २. छोटा टुकड़ा। छोटा ढेला। खंड। डलिया।
डस–संज्ञा स्त्री० १. तराजू की रस्सी। २. सूत की डोरी। सूत। ३. मदिरा-विशेष। ४. छीर।
क्रि० स० डसना। डंक मारना।
डसन–संज्ञा स्त्री० डसने की क्रिया, भाव या ढंग।
डसना–क्रि० स० १. विषवाले कीड़े का दाँत से काटना। २. डंक मारना।
डसाना–क्रि० स० [डसना का प्रे०] १. कटवाना। डसवाना। २. बिस्तरा बिछाना।
डसौना–संज्ञा पुं० डसाने की वस्तु। बिछौना। बिस्तर।
डहक–संज्ञा पुं० गुफा। कन्दरा। खोह। छिपने की जगह।
डहकना–क्रि० स० १. छल करना। धोखा देना। ठगना। जटना। २. ललचाकर न देना।
क्रि० अ० १. बिलखना। विलाप करना। २. दहाड़ मारना। *३. छितराना। फैलना।
डहकाना–क्रि० स० १. कष्ट देना। सताना। २. खोना। गँवाना। नष्ट करना। ३. धोखे से किसी की चीज ले लेना। ठगना। ४. कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर न देना। निराश करना। निराश होना।
क्रि० अ० धोखे में आकर पास का कुछ खोना। ठगा जाना।
डहडहा–वि० [अनु०] [स्त्री० डहडही] १. जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा-भरा। लहलहा। ताजा। २. प्रसन्न। प्रफुल्लित। ३. तुरंत का। ताजा।
डहडहाट†*–संज्ञा स्त्री० १. हरापन। ताजगी। २. प्रफुल्लता। प्रसन्नता। खुशी।
डहडहाना–क्रि० अ० १. पेड़-पौधे का हरा-भरा या ताजा होना। २. प्रसन्न होना। आनंदित होना।
डहन–संज्ञा पुं० १. पर। पंख। डैना। २. जलन। दाह। द्वेष।
डहना–क्रि० अ० १. जलना। भस्म होना। २. द्वेष करना। बुरा मानना।
क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःख पहुँचाना।
डहर†–संज्ञा स्त्री० १. डगर। रास्ता। मार्ग। पथ। २. कुठला। अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।
डहरना–क्रि० अ० चलना। टहलना।
डहराना†–क्रि० स० चलाना। दौड़ना। टहलाना।
डहार–संज्ञा पुं० डाहने या तंग करनेवाला।
डहरिया–संज्ञा स्त्री० १. रास्ता। मार्ग। पगडंडी। २. दे० "डहर"।
डाँक–संज्ञा स्त्री० १. ताँबे या चाँदी का बहुत पतला पत्तर। †२. कै। वमन। उलटी।
संज्ञा पुं० १. दे० "डंका"। २. दे० "डंक"।
डाँकना†–क्रि० स० १. कूदकर पार करना। फाँदना। २. वमन करना। कै करना।
डाँग–संज्ञा पुं० जंगल। पहाड़ के ऊपर की भूमि। ऊँची चोटी। शिखर। कूद। फलाँग। लट्ठ। डंका।
डाँगर–वि० १. गाय, भैंस आदि पशु। चौपाया। २. एक नीच जाति।
वि० १. बहुत दुबला-पतला। २. मूर्ख।

डाँट–संज्ञा स्त्री० १. शासन। अधिकार। २. वश। दबाव। ३. घुड़की। डपट। **यौ०**––डाँट-डपट=डाँट-फटकार। अपराधी को सावधान करने के लिए ताड़ना।

डाँटना–क्रि० स० क्रोध-पूर्वक जोर से बोलना। घुड़कना। डपटना।

डाँठ†–संज्ञा पुं० डंठल।

डाँठल–संज्ञा स्त्री० डण्डी। डाँठ।

डाँठी–संज्ञा स्त्री० डण्डा। डाली। डाँठ। डण्डी।

डाँड़–संज्ञा पुं० १. डंडा। २. गदका। ३. नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. सीधी लकीर। ५. ऊँची मेंड़। ६. छोटा भीटा या टीला। ७. सीमा। हद। ८. अर्थ-दंड। जुरमाना। ९. नुकसान का बदला। हरजाना। १०. रीढ़। पीठ की हड्डी। पेट के नीचे का भाग जहाँ धोती आदि बाँधते हैं।

डाँड़ना–क्रि० अ० अर्थ-दंड देना। जुरमाना करना। बदला लेना। दण्ड देना।

डाँड़ा–संज्ञा पुं० १. छड़। डंडा। २. गतका। ३. नाव खेने का डाँड़। ४. हद। सीमा। मेंड़।

डाँड़ा-मेड़ा–संज्ञा पुं० १. परस्पर अत्यंत सामीप्य। लगाव। २. अनबन। झगड़ा।

डाँड़ी–संज्ञा स्त्री० १. लंबी पतली लकड़ी। २. लंबा हत्था या दस्ता। ३. तराजू की डंडी। ४. पतली शाखा। टहनी। ५. हिंडोले में वे चार सीधी लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें, जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती है। ६. डाँड़ खेनेवाला आदमी। माँझी। खेवैया। ७. सीधी लकीर। रेखा। ८. लीक। मर्यादा। ९. चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०. डंडे में बँधी हुई झप्पान। पालकी। ११. सुस्त आदमी।

डाँवरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डाँवरू†–संज्ञा पुं० बाघ का बच्चा। छोटा बच्चा।

डाँवाँडोल–वि० एक स्थिति में न रहनेवाला। चंचल। अस्थिर।

डाँस–संज्ञा पुं० १. बड़ा मच्छड़। दंश। २. एक प्रकार की मक्खी।

डाइन–संज्ञा स्त्री० १. भूतनी। चुड़ैल। २. वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हों। टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाक–संज्ञा पुं० १. घोड़े आदि के बदलने का विश्राम-स्थान। चौकी। २. सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमें एक-एक टिकान पर बराबर घोड़े आदि बदले जाते हों। ३. नीलाम की बोली। ४. राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने-जाने की व्यवस्था। ५. डाकखाने से प्राप्त चिट्ठी आदि।
संज्ञा स्त्री० वमन। कै।
मुहा०––डाक बैठाना या लगना=शीघ्र यात्रा के लिए स्थान-स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना।
यौ०––डाक चौकी=मार्ग में वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े या हरकारे बदले जायँ।

डाकखाना–संज्ञा पुं० वह सरकारी दफ्तर जहाँ से चिट्ठियाँ और तार आदि भेजे तथा बाँटे जाते हैं। डाकघर।

डाकगाड़ी–संज्ञा स्त्री० डाक ले जानेवाली रेलगाड़ी। तेज चलनेवाली रेलगाड़ी।

डाकघर–संज्ञा पुं० दे० "डाकखाना"।

डाकना–क्रि० अ० कै करना।
क्रि० स० फाँदना। लाँघना।

डाक बँगला–सरकार की ओर से यात्रियों और दौरा करते समय सरकारी कर्मचारियों के ठहरने के लिए निर्मित मकान।

डाक महसूल–संज्ञा पुं० वह व्यय जो डाक-द्वारा किसी माल को भेजने या मँगाने में लगे।

डाकर–संज्ञा पुं० तालाबों की सूखी मिट्टी।

डाकव्यय–संज्ञा पुं० दे० "डाक महसूल"। डाक का खर्च।

डाका–संज्ञा पुं० डकैती। चोरों का धावा। जबरदस्ती किसी का माल छीन लेना। धावा मारकर लूटना।

डाकाजनी–संज्ञा स्त्री० डाका मारने का काम। आक्रमण करके सम्पत्ति छीन लेना।

डाकिन–संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।

डाकिनी–संज्ञा स्त्री० डाइन। चुड़ैल।

डाकिया–संज्ञा पुं० डाक ले जानेवाला। चिट्ठीरसा। पोस्टमैन।
डाकी–वि० खाऊ। पेटू। बहुत खानेवाला।
डाकू–संज्ञा पुं० डकैत। डाका डालनेवाला। लुटेरा।
डाक्टर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. चिकित्सक। अंगरेजी ढंग से दवा करनेवाला। २. किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान् या पंडित।
डाक्टरी–संज्ञा पुं० डाक्टर का काम, पद या पदवी।
डाक्टरेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विश्वविद्यालयों-द्वारा किसी विषय के बड़े विद्वान् को प्रदान की जानेवाली उपाधि।
डाकोर–संज्ञा पुं० ठाकुर। विष्णु भगवान् (गुजरात)।
डागा–संज्ञा पुं० नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब।
डागुर–संज्ञा पुं० जाटों की एक जाति।
डाट–संज्ञा स्त्री० १. बोझ को ठहराने या वस्तु को खड़ी रखने के लिए लगाई गई वस्तु। टेक। चाँड़। २. छेद बंद करने की वस्तु। ३. बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। ठेंठी। काग। गट्टा। ४. मेहराव को रोक रखने के लिए ईंटों आदि की भरती।
संज्ञा पुं० दे० "डाँट"।
डाटना–क्रि० स० १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर दबाना। भिड़ाकर ठेलना। २. टेकना। चाँड़ लगाना। ३. छेद या मुँह बंद करना। ४. कसकर या ठूँसकर भरना। ५. खूब पेट भर खाना। ६. मिलाना। भिड़ाना।
डाढ़–संज्ञा स्त्री० चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़।
डाढ़ना†*–क्रि० स० जलाना।
डाढ़ा–संज्ञा स्त्री० १. दावानल। वन की आग। २. आग। ३. ताप। दाह। जलन।
डाढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. ठोड़ी। ठुड्डी। २. ठुड्डी और गाल के बाल। दाढ़ी।
डाब–संज्ञा स्त्री० नारियल का कच्चा फल। परतला। जिसमें तलवार लटकाई जाती है। डाभ। कुश।
डाबक–वि० ताजा।
डाबर–संज्ञा पुं० १. नीची जमीन जहाँ पानी ठहरा रहे। २. गड़ही। पोखरी। तलैया। ३. हाथ धोने का पात्र। चिलमची। ४. मैला पानी।
डाबा–संज्ञा पुं० दे० "डब्बा"।
डाभ–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कुश। २. कुश। ३. आम की मंजरी या मौर। ४. कच्चा नारियल।
डामर–संज्ञा पुं० १. एक तंत्र। २. हलचल। धूम। ३. आडंबर। ठाटबाट। ४. चमत्कार। ५. साल वृक्ष का गोंद। राल। ६. एक प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है।
डामल–संज्ञा स्त्री० १. उम्र भर के लिए कैद। २. 'देशनिकाला' का दंड।
डामाडोल–वि० अस्थिर। चंचल।
डायन–संज्ञा स्त्री० १. डाकिनी। पिशाचिनी। चुड़ैल। २. कुरूपा स्त्री।
डायनमो–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बिजली पैदा करने का इंजन।
डायरी–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रोजनामचा। प्रति-दिन का कार्य-विवरण या दिनचर्य्या लिखने की पुस्तक।
डायल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] घड़ी का ढाँचा।
डार*†–संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।
संज्ञा स्त्री० डलिया। चंगेली।
डारना†*–क्रि० स० दे० "डालना"।
डाल–संज्ञा स्त्री० १. शाखा। डाली। २. फानूस जलाने के लिए दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी। ३. तलवार का फल। ४. डलिया। चँगेरी। ५. कपड़ा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है।
डालना–क्रि० स० १. नीचे गिराना। छोड़ना। फेंकना। २. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना। ३. रखना या मिलाना। ४. प्रविष्ट करना। घुसाना। ५. खोज-खबर न लेना। भुला देना। ६. अंकित करना। चिह्नित करना।

७. फैलाकर रखना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनना। ९. जिम्मे करना। भार देना। १०. गर्भपात करना (चौपायों के लिए)। ११. कै करना। उलटी करना। १२. (स्त्री को) पत्नी की तरह रखना। १३. लगाना। उपयोग करना। १४. घटित करना। मचाना। १५. बिछाना।

मुहा०—डाल रखना=१. रख छोड़ना। २. रोक रखना। देर लगाना। झुलाना।

डालर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अमेरिका का एक सिक्का।

डालिम—संज्ञा पुं० दाड़िम। अनार का फल।

डाली—संज्ञा स्त्री० १. डलिया। चँगेरी। २. फल, फूल, मेवे जो डलिया में सजाकर किसी के पास सम्मानार्थ भेजे जाते हैं। संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डावरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० डावरी] लड़का। बेटा।

डासन†—संज्ञा पुं० बिछावन। बिछौना। बिस्तर।

डासना†—क्रि० स० बिछाना। डालना। फैलाना।*†डसना।

डासनी—संज्ञा स्त्री० चारपाई।

डाह—संज्ञा स्त्री० जलन। ईर्ष्या।

डाहना—क्रि० स० जलाना। सताना। तंग करना।

डाही—वि० डाह या ईर्ष्या करनेवाला।

डिंगर—संज्ञा पुं० १. मोटा आदमी। २. दुष्ट। बदमाश। ३. दास। गुलाम। ४. वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँध दिया जाता है।

डिंगल—वि० नीच। दूषित।

संज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा, जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं।

डिंडिम—संज्ञा पुं० डुगडुगी। डुग्गी। ढिंढोरा।

डिंडिमघोष—संज्ञा पुं० १. डुग्गी या ढिंढोरा से उत्पन्न आवाज। २. चारों ओर दिखावटी प्रचार। पाखण्ड।

डिंब—संज्ञा पुं० १. वावैला। हलचल। २. दंगा। लड़ाई। ३. अंडा। ४. पाखंड। फेफड़ा। ५. प्लीहा। पिलही। ६. कीड़े का छोटा बच्चा।

डिंभ—संज्ञा पुं० १. छोटा बच्चा। २. मूर्ख। ३. आडंबर। पाखंड। ४. अभिमान। घमंड। ५. दे० "डिंब"।

डिक्टेटर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अधिनायक। तानाशाह। पूर्ण-अधिकार-प्राप्त निरंकुश शासन करनेवाला अधिकारी।

डिक्शनरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] शब्द-कोश। वह ग्रन्थ जिसमें शब्दों के अर्थ दिए गए हों।

डिगना—क्रि० अ० हिलना। जगह छोड़ना। टलना। खसकना। किसी बात पर स्थिर न रहना। विचलित होना।

डिगरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. अंश। जैसे, तापमान का अंश। २. विश्वविद्यालय की उपाधि। ३. अदालत का फैसला जिसके द्वारा किसी पक्ष को कोई हक या किसी सम्पत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिगरीदार—संज्ञा पुं० वह जिसके पक्ष में अदालत ने डिगरी दी हो।

डिगलाना—क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डिगाना—क्रि० स० १. जगह से टालना। सरकाना। खसकाना। २. बात पर स्थिर न रखना। विचलित करना।

डिग्गी—संज्ञा स्त्री० १. तालाब। २. हिम्मत। साहस।

डिजाइन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] तर्ज। ढंग। तरह। किस्म। प्रकार।

डिठार, डिठियार†—वि० जिसे सुझाई दे।

डिठौना—संज्ञा पुं० काजल का टीका जो लड़कों को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं।

डिढ़ाना—क्रि० स० मजबूत करना। पक्का करना। निश्चित करना।

डिढ़्या†—संज्ञा स्त्री० बड़ी लालसा। कामना। तृष्णा।

डिपार्टमेण्ट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विभाग। मुहकमा।

डिपो—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] गोदाम। भांडार।

डिप्टी—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सहायक। सहकारी।

डिप्टी कलक्टर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जिला मजिस्ट्रेट के अधीन उसके सहायक अधिकारी, जो

प्रायः एक तहसील का शासन-प्रबन्ध तथा मुकदमों का फैसला करते हैं। हाकिम-परगना।

डिप्लोमा–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सनद। आवश्यक योग्यता प्राप्त करने पर मिलनेवाला लिखित प्रमाणपत्र।

डिबिया–संज्ञा स्त्री० छोटा ढक्कनदार बरतन। छोटा डिब्बा या संपुट।

डिब्बा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन। संपुट। २. रेलगाड़ी की एक गाड़ी। ३. बच्चों की पसली के दर्द की बीमारी। पलई।

डिभगना–क्रि० स० मोहित करना। छलना। डहकना।

डिभरी–संज्ञा स्त्री० दे० "डिबरी"। मिट्टी या टीन का बहुत छोटा पात्र, जिसमें तेल से बत्ती जलाकर रोशनी करते हैं।

डिम–संज्ञा पुं० १. नाटक का एक भेद जिसमें माया, इंद्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश होता है। २. संग्राम। ३. प्रलय।

डिमडिमी–संज्ञा स्त्री० डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा।

डिल्ला–संज्ञा पुं० १. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है। २. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। तिलका। तिल्ला। तिल्लाना। ३. बैलों के कंधे पर उठा हुआ कूबड़। कुब्जा। ककुत्थ।

डिसमिस–वि० [अंग्रे०] अस्वीकृत। नामंजूर। खारिज। बरखास्त। नौकरी से हटाया हुआ।

डींग–संज्ञा स्त्री० शेखी। सिट्ट।

डीक–संज्ञा स्त्री० जाला।

डीकरी–संज्ञा स्त्री० बेटी।

डीठ–संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। नजर। निगाह। २. देखने की शक्ति। ३. ज्ञान। समझ।

डीठना*†–क्रि० अ० दिखाई देना। दृष्टि में आना।

क्रि० स० १. दिखाना। २. नजर लगाना।

डीठबंध–संज्ञा पुं० १. नजरबंदी। इंद्रजाल। २. इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

डीठिमूठि*†–संज्ञा स्त्री० नजर। टोना। जादू।

डीन–संज्ञा स्त्री० उड़ान। चिड़ियों की उड़ान। संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विश्वविद्यालय में किसी विभाग का अध्यक्ष।

डीबुआ†–संज्ञा पुं० पैसा।

डील–संज्ञा पुं० १. शरीर की ऊँचाई। कद। २. उठान।

यौ०—डील-डौल=१. देह की लंबाई-चौड़ाई। २. शरीर का ढाँचा। आकार। काठी। ३. शरीर। जिस्म। देह। ४. व्यक्ति। प्राणी। मनुष्य।

डीला–संज्ञा पुं० ढेला। मिट्टी का टुकड़ा।

डीह–संज्ञा पुं० १. आबादी। बस्ती। २. उजड़े हुए गाँव का टीला। ३. ग्राम-देवता।

डुंग†–संज्ञा पुं० १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा। पहाड़ी।

डुंड†–संज्ञा पुं० पेड़ों की सूखी डाल। ठूँठ।

डुंडल–संज्ञा पुं० छोटा उल्लू।

डुक–संज्ञा पुं० मुक्का। घूँसा।

डुकियाना–क्रि० स० घूँसा लगाना।

डुगडुगी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा। डौंडी। डुग्गी।

डुग्गी–संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।

डुपटना†–क्रि० स० (कपड़ा) चुनना। चुनियाना।

डुबकनी–संज्ञा स्त्री० पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली नाव। पनडुब्बी।

डुबकी–संज्ञा स्त्री० १. पानी में डूबना। डुब्बी। गोता। बुड़की। २. पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

डुबाना–क्रि० स० १. पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना। गोता देना। २. चौपट या नष्ट करना।

मुहा०—नाम डुबाना=नाम को कलंकित करना। मर्यादा खोना। लुटिया डुबाना=महत्त्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना।

डुबाव–संज्ञा पुं० पानी की डूबने भर की गहराई।

डुबोना†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डुब्बा–संज्ञा पुं० दे० "पनडुब्बा"।

डुब्बी–संज्ञा स्त्री० दे० "डुबकी"।
डुभकौरी–संज्ञा स्त्री० पीठी की बिना तली बरी
डुलना*†–क्रि० अ० दे० "डोलना"।
डुलाना–क्रि० स० १. हिलाना। चलाना। २. हटाना। भगाना। ३. फिराना। घुमाना। टहलाना।
डूँगर–संज्ञा पुं० १. टीला। भीटा। ढूह। २. छोटी पहाड़ी।
डूँगा–संज्ञा पुं० १. चम्मच। २. डोंगा। ३. रस्से का गोल लच्छा।
डूबना–क्रि० अ० १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ के भीतर समाना। गोता खाना। २. सूर्य्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३. चौपट होना। बरबाद होना। ४. किसी व्यवसाय में लगाया हुआ या किसी को दिया हुआ धन नष्ट होना। ५. चिंतन में मग्न होना। ६. लीन होना। तन्मय होना।
मुहा०–डूब मरना=शरम के मारे मुँह न दिखाना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना=दे० "डूब मरना"। डूबना-उतराना=चिंता में पड़ जाना। जी डूबना=१. चित्त व्याकुल होना। २. बेहोश होना। नाम डूबना=प्रतिष्ठा नष्ट होना।
डुब्बी–संज्ञा स्त्री० डुबकी।
डेंड़सी–संज्ञा स्त्री० ककड़ी की तरह की एक तरकारी। टिंड। टिंडसी।
डेग–संज्ञा पुं० १. दे० "देग"। २. दे० "डग"।
डेगची–संज्ञा स्त्री० दे० "देगची"।
डेड़हा†–संज्ञा पुं० पानी में रहनेवाला साँप।
डेढ़–वि० एक पूरा और उसका आधा। जो गिनती में १½ हो।
मुहा०–डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना=खरेपन या अक्खड़पन के कारण सबसे अलग काम करना। डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना=अपनी राय सबसे अलग रखना।
डेढ़ा–वि० दे० 'डेवढ़ा"।
संज्ञा पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।
डेपुटेशन–संज्ञा पु० [अंग्रे०] प्रतिनिधि-मंडल, जो किसी की ओर से किसी के पास प्रार्थना करने या वार्त्ता करने के लिए भेजा जाय।
डेबरा–वि० बाएँ हाथ से काम करनेवाला।
डेबरी–संज्ञा स्त्री० डिब्बी। डिभरी।
डेमरेज–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बन्दरगाह या रेल के मालगोदाम मे निश्चित अवधि के बाद पड़े रहनेवाले माल का अतिरिक्त किराया, जो माल छुड़ानेवाले को देना पड़ता है।
डेरा–संज्ञा पुं० १. थोड़े दिनों के लिए घर से बाहर रहना। पड़ाव। २. ठहरने या रहने के लिए फैलाया हुआ सामान। ३. ठहरने का स्थान। ४. छावनी। खेमा। तंबू। शामियाना। ५. नाचने-गानेवालों का दल। मंडली। ६. मकान। घर।
*†वि० बायाँ। सव्य।
मुहा०–डेरा डालना=सामान फैलाकर टिकना। ठहरना। डेरा पड़ना=टिकान होना।
डेराना†–क्रि० अ० दे० "डरना"।
डेल–संज्ञा पु० उल्लू पक्षी। रोड़ा ढेला। पक्षियों को बंद करने का डला।
डेला–संज्ञा पुं० १. आँख का सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली होती है। आँख का कोया। २. रोड़ा।
डेलिगेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] प्रतिनिधि।
डेलिगेशन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] प्रतिनिधि-मंडल। शिष्ट-मंडल।
डेली†–संज्ञा स्त्री० डलिया। बाँस की झाँपी। [अंग्रे०] नित्य। प्रतिदिन।
डेवढ़†–वि० डेढ़गुना। डेवढ़ा।
संज्ञा स्त्री० सिलसिला। क्रम। तार।
डेवढ़ा–वि० संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ा"।
डेवढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योढ़ी"।
डोंड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २. उभरा हुआ मुँह। टोंटी।
डेहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दहलीज"।
डैना–संज्ञा पुं० चिड़ियों का पंख-समूह। पक्ष। पर। बाजू।
डोंगर–संज्ञा पुं० पहाड़ी। टीला।
डोंगा–संज्ञा पुं० १. बिना पाल की नाव। २. बड़ी नाव।

डोंगी—संज्ञा स्त्री० छोटी नाव।

डोंड़ा—संज्ञा पुं० १. बड़ी इलायची। २. टोंटा। कारतूस।

डोई—संज्ञा स्त्री० काठ की डाँड़ी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते हैं।

डोकरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० डोकरी] १. अशक्त और वृद्ध मनुष्य। २. पिता।

डोकिया, डोकी—संज्ञा स्त्री० काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल, बटना आदि रखते हैं।

डोडो—संज्ञा पुं० बत्तख के बराबर एक चिड़िया जो अब नहीं मिलती।

डोब, डोबा—संज्ञा पुं० डुबाने का भाव। गोता। डुबकी।

डोम—संज्ञा पुं० [स्त्री० डोमिन या डोमनी] १. एक अस्पृश्य नीच जाति। श्मशान पर शव को आग देना और सूप-डले आदि बेचना इनका काम है। २. ढाढ़ी। मीरासी।

डोमकौआ—संज्ञा पुं० बड़ा और बहुत काला कौआ।

डोमड़ा—संज्ञा पुं० दे० "डोम"।

डोमनी—संज्ञा स्त्री० १. डोम-जाति की स्त्री। २. ढाढ़ी या मीरासी की स्त्री।

डोमिन—संज्ञा स्त्री० १. डोम-जाति की स्त्री। २. ढाढ़ी या मीरासियों की स्त्री।

डोर—संज्ञा स्त्री० रस्सी।

मुहा०—डोर पर लगाना=प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना। ढब पर लाना।

डोरा—संज्ञा पुं० १. तागा। धागा। २. धारी। लकीर। ३. आँखों की महीन लाल नसें, जो नशा या उमंग की दशा में दिखाई पड़ती हैं। ४. तलवार की धार। ५. तपे घी की धार। ६. एक प्रकार की करछी। ७. स्नेहसूत्र। प्रेम का बंधन। ८. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे। सुराग। ९. काजल या सुरमे की रेखा।

मुहा०—डोरा डालना=प्रेमसूत्र में बद्ध करना। परचाना।

डोरिया—संज्ञा पुं० १. वह कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूत की लंबी धारियाँ बनी हों। २. एक प्रकार का बगला।

डोरियाना†—क्रि० स० पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना।

डोरिहार*—संज्ञा पुं० [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा।

डोरी—संज्ञा स्त्री० १. रस्सी। रज्जु। २. पाश। बंधन। ३. डाँड़ीदार कटोरा या कलछा। ४. डोरा।

मुहा०—डोरी ढीली छोड़ना=देख-रेख कम करना। चौकसी कम करना।

डोरे*—क्रि० वि० साथ लिये हुए। साथ-साथ। संग-संग।

डोल—संज्ञा पुं० १. लोहे का एक गोल बरतन। २. हिंडोला। झूला। ३. डोली। पालकी। ४. हलचल।

वि० चंचल।

डोलची—संज्ञा स्त्री० छोटा डोल।

डोलडाल—संज्ञा पुं० १. चलना-फिरना। २. पाखाने जाना।

डोलना—क्रि० स० १. चलायमान होना। गति में होना। २. चलना-फिरना। ३. हटना। दूर होना। ४. (चित्त) विचलित होना। डिगना।

डोला—संज्ञा पुं० [स्त्री० डोली] १. स्त्रियों के बैठने की एक बंद सवारी जिसे कहार ढोते हैं। मियाना। २. झूले का झोंका। पेंग।

मुहा०—डोला देना=१. किसी राजा या सरदार को भेंट के रूप में अपनी बेटी देना। २. अपनी बेटी को वर के घर पर ले जाकर ब्याहना।

डोलाना—क्रि० स० १. हिलाना। चलाना। २. दूर करना। भगाना। हटाना।

डोली—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं। पालकी।

डोही—संज्ञा स्त्री० दे० "डोई"।

डौंड़ी—संज्ञा स्त्री० १. ढिंढोरा। डुगडुगिया। २. घोषणा। मुनादी।

मुहा०—डौंड़ी देना=१. मुनादी करना। २. सबसे कहते फिरना। डौंड़ी बजना=१. घोषणा होना। २. जयजयकार होना।

डौंरू—संज्ञा पुं० दे० "डमरू"।

डौआ—संज्ञा पुं० काठ का चमचा।

डौल–संज्ञा पुं० १. ढाँचा। ढड्ढा। २. बनावट का ढंग। रचना-प्रकार। ढब। ३. तरह। प्रकार। ४. युक्ति। उपाय। ५. रंग-ढंग। लक्षण। सामान।

मुहा०–डौल पर लाना=१. काट-छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना। २. अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना। डौल बाँधना या लगाना=उपाय करना। युक्ति बैठाना।

डौलियाना†–क्रि० स० १. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २. गढ़कर दुरुस्त करना।

ड्योढ़ा–वि० डेढ़गुना।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा, जिसमें अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।

ड्योढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. फाटक। चौखट। दरवाजा। २. वह बाहरी कोठरी, जो मकान में घुसने के पहले पड़ती है। पौरी।

ड्योढ़ीदार–संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ीवान"।

ड्योढ़ीवान–संज्ञा पुं० ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार। द्वारपाल। दरबान।

ड्राइंग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] लकीरों से चित्र अथवा आकृति आदि बनाने की विद्या।

ड्राइवर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मोटर, रेल आदि गाड़ी चलानेवाला।

ड्राम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] द्रव पदार्थ को नापने की एक अँगरेजी तौल, जो तीन माशे के लगभग होती है।

ड्रामा–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] नाटक।

ड्रेस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पहनने के कपड़े। पोशाक। पहनावा। लिबास।

ड्रिल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] कवायद।

ढ

ढ–हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसलिए इसे मूर्द्धन्य कहते हैं।

संज्ञा पुं० १. बड़ा ढोल। २. कुत्ता। कुत्ते की पूँछ। ३. साँप। ४. ध्वनि। नाद।

ढँकन–संज्ञा पुं० ढक्कन।

ढँकना–क्रि० स० छिपाना।

संज्ञा पुं० ढक्कन।

ढंख*†–संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

ढंग–संज्ञा पुं० १. प्रणाली। शैली। ढब। रीति। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३. रचना। बनावट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय। तदबीर। ५. चाल-ढाल। आचरण। व्यवहार। ६. बहाना। हीला। पाखंड। ७. लक्षण। आभास। आसार। ८. दशा। अवस्था। स्थिति।

मुहा०–ढंग पर लाना या चढ़ना=अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना या होना।

यौ०–रंग-ढंग=लक्षण। आसार।

ढँगलाना†–क्रि० स० लुढ़काना।

ढंगी–वि० चालबाज। चतुर। चालाक।

ढँढोर–संज्ञा पुं० आग की लपट। ज्वाला। लौ।

ढँढोरची–संज्ञा पुं० ढँढोरा या मुनादी फेरने-वाला।

ढँढोरना†–क्रि० स० दे० "ढूँढ़ना"।

ढँढोरा–संज्ञा पुं० १. घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डौंड़ी। २. वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय। मुनादी।

ढँढोरिया–संज्ञा पुं० ढँढोरा पीटने या फेरने-वाला। मुनादी करनेवाला।

ढँपना–क्रि० अ० दे० "ढकना"।

ढई–संज्ञा स्त्री० किसी के यहाँ किसी काम से पहुँचना और जब तक काम न हो जाय, तब तक वहाँ से न हटना। धरना देना।

ढकना–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढकनी] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

क्रि० अ० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना। छिपना।

क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

ढकनिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "ढकनी"।

ढकनी–संज्ञा स्त्री० ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। मिट्टी का बहुत छोटा बरतन।

ढका*†–संज्ञा पुं० १. बड़ा ढोल। २. तीन सेर का बाट। ३. धक्का। टक्कर।

ढकिल*†–संज्ञा स्त्री० वेग के साथ धावा। चढ़ाई। आक्रमण।

ढकेलना–क्रि० स० १. धक्के से गिरना। ठेलकर आगे की ओर गिराना। २. धक्के से हटाना। ठेलकर सरकाना।

ढकोसना–क्रि० स० एकबारगी बहुत-सा पीना।

ढकोसला–संज्ञा पुं० १. कपट का व्यवहार। २. पाखंड। ढोंग। आडंबर।

ढक्कन–संज्ञा पुं० ढाँकने की वस्तु। ढकना।

ढक्का–संज्ञा स्त्री० बड़ा ढोल।

ढगण–संज्ञा पुं० एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

ढचर–संज्ञा पुं० १. टंटा। बखेड़ा। २. आडंबर। ढकोसला।

ढट्ठा–संज्ञा पुं० डाट। ठेंपी।

ढट्ठी–संज्ञा स्त्री० डाढ़ी बाँधने की पट्टी। डाट।

ढड्ढा–वि० बहुत बड़ा और बेढंगा।
संज्ञा पुं० १. ढाँचा। २. झूठा ठाट-बाट। आडंबर।

ढप–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

ढपढपाना–क्रि० स० ढोल बजाना। बिना ताल के ढोलक बजाना। ढपढप की आवाज करना।

ढपना–संज्ञा पुं० ढाकने की वस्तु। ढक्कन।
क्रि० अ० ढका होना।

ढप्पू–वि० बहुत बड़ा। बुड्ढा।

ढफ‡–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

ढब–संज्ञा पुं० १. ढंग। रीति। तौर। तरीका। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३. बनावट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय। तदबीर। ५. प्रकृति। आदत। बान।
मुहा०—ढब पर चढ़ना=किसी का ऐसी अवस्था में होना जिससे कुछ मतलब निकले। ढब पर लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उससे कुछ अर्थ सिद्ध हो।

ढरकना†–क्रि० अ० १. पानी आदि तरल पदार्थ का नीचे गिरना। ढलना। २. लेटना। ३. नीचे की ओर जाना।

ढरका–संज्ञा पुं० बाँस की नली जिससे चौपायों को दवा पिलाते हैं।

ढरकाना†–क्रि० स० पानी आदि को नीचे गिराना। गिराकर बहाना।

ढरकी–संज्ञा स्त्री० जुलाहों का एक औजार जिससे वे लोग बाने का सूत फेंकते हैं।

ढरना†*–क्रि० अ० दे० "ढलना"।

ढरनि–संज्ञा स्त्री० १. गिरने की क्रिया। पतन। २. हिलने-डोलने की क्रिया। गति। ३. चित्त की दयालुता। प्रवृत्ति। झुकाव। ४. करुणा। कृपालुता।

ढरहरना*†–क्रि० अ० खसकना। सरकना। ढलना। झुकना।

ढरहरा–वि० ढालू।

ढरहरी†–संज्ञा स्त्री० पकौड़ी।

ढराना–क्रि० स० १. दे० "ढलाना"। २. दे० "ढरकाना"।

ढरारा–वि० [स्त्री० ढरारी] १. गिरकर बह जानेवाला। २. लुढ़कनेवाला। ३. शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला।

ढर्रा–संज्ञा पुं० १. मार्ग। रास्ता। पथ। २. शैली। ढंग। तरीका। ३. युक्ति। उपाय। तदबीर। ४. आचरण-पद्धति। चाल-चलन।

ढलकना–क्रि० अ० १. द्रव पदार्थ का नीचे गिर जाना। ढलना। २. लुढ़कना।

ढलका–संज्ञा पुं० वह रोग जिसमें आँख से पानी बहा करता है।
वि० १. चौंधना। २. छलका।

ढलकाना–क्रि० स० १. द्रव पदार्थ को नीचे गिराना। २. लुढ़काना।

ढलना–क्रि० अ० १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर सरक जाना। ढरकना। बहना। २. बीतना। गुजरना। ३. उँडेला जाना। ४. लुढ़कना। ५. लहर खाकर इधर-उधर डोलना। लहराना। ६. किसी ओर आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। अनुरक्त होना। ७. प्रसन्न होना। रीझना। ८. साँचे में ढालकर बनाया जाना। ढाला जाना।
मुहा०–साँचे में ढला=बहुत सुन्दर। दिन ढलना=संध्या होना। सूरज या चाँद ढलना=सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना।

ढलमलाना–क्रि० अ० चंचल होना। डगमगाना। काँपना। अस्थिर होना।

ढलवाँ–वि० जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो।

ढलवाना–क्रि० स० [ढालना का प्रे०] ढालने का काम दूसरे से कराना।

ढलाई–संज्ञा स्त्री० १. ढालने का भाव या काम। २. ढालने की मजदूरी।

ढलाना–क्रि० स० दे० "ढलवाना"।

ढलुआ–वि० ढालुवाँ। ढालू। लुढ़काव। उतार। नीचा। ढाला हुआ।

ढलैत–संज्ञा पुं० ढाल रखनेवाला सिपाही या योद्धा। ढाल-तलवार बाँधनेवाला वीर या साहसी योद्धा।

ढवरी*†–संज्ञा स्त्री० धुन। ढोरी। लौ। लगन। रट।

ढहना–क्रि० अ० १. मकान आदि का गिर पड़ना। ध्वस्त होना। २. नष्ट होना। मिट जाना। टूटकर गिर पड़ना।

ढहरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "डेहरी"। मिट्टी का मटका।

ढहवाना–क्रि० स० ढहाने का काम कराना। गिरवाना।

ढहाना–क्रि० स० दीवार, मकान आदि गिराना। ध्वस्त करना।

ढाँकना–क्रि० स० छिपाना। ढाँपना। ओट में करना।

ढाँचा–संज्ञा पुं० १. साँचा। चौखटा। ठट्टर। डौल। २. पंजर। ठटरी। ३. गढ़न। बनावट। ४. प्रकार। भाँति। तरह।

ढाँपना–क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

ढाँसना–क्रि० अ० सूखी खाँसी खाँसना।

ढाँसा–संज्ञा पुं० १. दोष। कलंक। अपवाद। २. खाँसी।

ढाँसी–संज्ञा स्त्री० सूखी खाँसी।

ढाई–वि० दो और आधा।

ढाक–संज्ञा पुं० पलाश का पेड़। एक प्रकार का बाजा जो साँप का विष उतारने के काम में आता है।

मुहा०—ढाक के तीन पात=सदा बुरी परिस्थिति में। कभी भरा-पूरा नहीं।

ढाका–संज्ञा पुं० बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर जो अब पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी है।

ढाकापाटन–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बूटीदार मलमल (ढाके की मलमल)।

ढाटा या ढाठा–संज्ञा पुं० डाढ़ी बाँधने की पट्टी। बड़ा साफा। एक प्रकार की बड़ी पगड़ी जिसे राजपूताने के लोग बाँधते हैं।

ढाठी–संज्ञा स्त्री० घोड़े का मुँह बाँधने की रस्सी। मुँह-बँधना। घोड़े के मुँह पर बाँधा जानेवाला फंदा।

ढाड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चिग्घाड़। गरज। दहाड़ (बाघ, सिंह आदि की)। २. चिल्लाहट।

मुहा०—ढाड़ मारना=चिल्लाकर रोना।

ढाढ़ना†–क्रि० स० दे० "दाढ़ना"।

ढाढ़स–संज्ञा पुं० १. धैर्य। आश्वासन। तसल्ली। २. दृढ़ता। साहस। हिम्मत।

ढाढ़ी–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढाढ़िन] एक प्रकार के मुसलमान गवैए। जाति-विशेष। गाने-बजाने का व्यवसाय करनेवाली एक नीच जाति।

ढाढ़ी लीला–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का खेल। भगवान् कृष्ण की बाल-लीला का अभिनय।

ढाना–क्रि० स० दीवार, मकान आदि को गिराना। ध्वस्त करना।

ढापना–क्रि० स० ढकना।

ढाबर†–वि० मिट्टी मिला हुआ। मटमैला। गँदला (पानी)।

ढाबा–संज्ञा पुं० १. ओसारा। ओरी। ओलती। २. रोटी-दाल आदि की दूकान।

ढामक–संज्ञा पुं० ढोल आदि का शब्द।

ढार*–संज्ञा स्त्री० १. ढाल। उतार। २. पथ। मार्ग। प्रणाली। ३. ढाँचा। रचना।

ढारना†–क्रि० स० दे० "ढालना"। नीचे गिराना।

ढारस–संज्ञा पुं० दे० "ढाढ़स"।

ढाल–संज्ञा स्त्री० १. तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र। चर्म। आड़। फलक। २. वह स्थान जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो। ढलाऊ। उतार। ३. ढंग। प्रकार। तौर। तरीका। झुकाव।

ढालना–क्रि० स० १. किसी द्रव पदार्थ को नीचे बहाना। गिराना। उँडेलना। २. शराब पीना। ३. बेचना। ४. ताना छोड़ना। व्यंग्य करना। ५. साँचे में ढालकर कोई चीज बनाना।

ढालवाँ–वि० [स्त्री० ढालवीं] जो बराबर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल हो।

ढालुवाँ–वि० दे० "ढालवाँ"।

ढालू–वि० दे० "ढालवाँ"।

ढास†–संज्ञा पुं० लुटेरा। डाकू। विश्वासघातक।

ढासना–संज्ञा पुं० १. वह ऊँची वस्तु जिस पर बैठने में पीठ टिक सके। सहारा। टेक। २. तकिया।

क्रि० अ० खाँसना।

ढाहना†–क्रि० स० दे० "ढाना"। गिराना। नष्ट करना।

ढिंढोरना–क्रि० स० १. मथना। बिलोड़ना। २. हाथ डालकर ढूँढ़ना। खोजना।

ढिंढोरा–संज्ञा पुं० १. वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है। मुनादी पीटने का ढोल। डुगडुगिया। २. वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय। घोषणा। मुनादी।

ढिग–क्रि० वि० पास। निकट।

संज्ञा स्त्री० १. पास। सामीप्य। २. तट। किनारा। छोर।

ढिठाई–संज्ञा स्त्री० १. धृष्टता। गुस्ताखी। २. निर्लज्जता। ३. अनुचित साहस।

ढिबरी–संज्ञा स्त्री० मिट्टी या टीन की डिबिया जिसमें मिट्टी के तेल से बत्ती जलाते हैं। कसे जानेवाले पेच के सिरे पर का लोहे का छल्ला। पेच की रोक। बालटू।

ढिमका–सर्व० [स्त्री० ढिमकी] अमुक। फलाँ। फलाना।

ढिमढिमी–संज्ञा पुं० डमरू, खंजरी आदि बाजों का शब्द।

ढिलाई–संज्ञा स्त्री० १. ढीला होने का भाव। २. शिथिलता। सुस्ती। ढीलने की क्रिया या भाव। छूट। कड़ाई न करना।

ढिलाना–क्रि० स० १. ढीलने का काम कराना। २. ढीला कराना। *†ढीला करना।

ढिल्लड़–वि० आलसी। सुस्त। शिथिल। अकर्मण्य। निकम्मा।

ढिसरना*–क्रि० अ० १. फिसलना। सरकना। २. प्रवृत्त होना। झुकना।

ढींगर†–संज्ञा पुं० १. हट्टा-कट्टा आदमी। २. पति या उपपति।

ढींढ़ा†–संज्ञा पुं० १. निकला हुआ पेट। २. गर्भ। हमल।

ढीच†–संज्ञा पुं० कूबड़।

ढीट–संज्ञा स्त्री० रेखा। लकीर।

ढीटौना*–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

ढीठ–वि० १. बड़ों का संकोच या डर न रखनेवाला। धृष्ट। गुस्ताख। शोख। २. निडर। बेधड़क। साहसी।

ढीठता*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ढिठाई"।

ढीठा–संज्ञा पुं० धृष्ट। मगरा।

ढीठ्यो–संज्ञा पुं० दे० "ढीठ"।

ढीम†–संज्ञा पुं० १. पत्थर का बड़ा टुकड़ा या ढोंका। २. मिट्टी की पिंडी।

ढील–संज्ञा स्त्री० १. शिथिलता। आलस्य। सुस्ती। देरी। विलम्ब। २. बंधन को ढीला करने का भाव।

संज्ञा पुं० बालों का कीड़ा। जूँ।

ढीलना–क्रि० स० १. कसा या तना हुआ न रखना। ढीला करना। २. बंधन-मुक्त करना। छोड़ देना। ३. (रस्सी आदि) इस प्रकार छोड़ना जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय।

ढीला–वि० १. जो कसा या तना हुआ न हो। २. जो दृढ़ता से बँधा या लगा हुआ न हो। ३. जो खूब कसकर पकड़े हुए न हो। ४. जो गाढ़ा न हो। बहुत गीला। ५. जो अपने संकल्प पर अड़ा न रहे। ६. धीमा। शांत। नरम। ७. मंद। सुस्त। शिथिल। आलसी।

मुहा०—ढीली आँख=मद-भरी चितवन।

ढीलापन–संज्ञा पुं० ढीला होने का भाव। शिथिलता।

ढुंढ†–संज्ञा पुं० उचक्का। ठग

ढुंढपाणि*–संज्ञा पुं० "दंडपाणि"। दंडपाणि भैरव। शिवजी के एक गण।

ढुंढवाना–क्रि० स० ढूँढ़ने का काम कराना। तलाश करना।

ढुंढा–संज्ञा स्त्री० एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की बहिन थी।

ढुंढि–संज्ञा पुं० गणेशजी।

ढुंढिराज–संज्ञा पुं० गणेश।

ढुंढी–संज्ञा स्त्री० बाँह। मुश्क। मुहा०–ढुंढियाँ चढ़ाना=मुश्कें बाँधना।

ढुकना–क्रि० अ० १. घुसना। प्रवेश करना। २. भीतर जाना। झुकना। छिपना। ३. कोई बात सुनने या देखने के लिए आड़ में छिपना।

ढुक्की–संज्ञा स्त्री० पीछा करना। छिपकर देखना। ताक में रहना।

ढुच्च–संज्ञा पुं० घूँसा।

ढुटौना–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा।"

ढुनमुनिया†–संज्ञा स्त्री० लुढ़कने की क्रिया या भाव। बच्चों का एक खेल जिसमें बच्चे लुढ़कते हैं।

ढुरकना†–क्रि० अ० १. फिसलकर गिरना। लुढ़कना। खिसकना। २. झुकना।

ढुरना–क्रि० अ० १. गिरकर बहना। ढुरकना। २. कभी इधर कभी उधर होना। डगमगाना। डोलना। ३. नखरे से चलना। नाचना। ४. कबूतर की गति। ५. लहराना। ६. लुढ़कना। फिसल पड़ना। ७. प्रवृत्त होना। झुकना। ८. अनुकूल होना। प्रसन्न होना।

ढुरहुरी–संज्ञा स्त्री० १. लुढ़कने की क्रिया या भाव। २. पगडंडी।

ढुराना–क्रि० स० १. गिराकर बहाना। ढरकाना। २. इधर-उधर हिलाना। लहराना। ३. लुढ़काना। हुलकाना।

ढुर्री–संज्ञा स्त्री० पगडंडी।

ढुलकना–क्रि० अ० ऊपर-नीचे चक्कर खाते हुए गिरना। लुढ़कना। ढंगलाना।

ढुलकाना–क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

ढुलना–क्रि० अ० १. गिरकर बहना। लुढ़कना। २. प्रवृत्त होना। झुकना। ३. प्रसन्न होना। कृपालु होना। ४. इधर से उधर हिलना। लहराना।

ढुलवाई–संज्ञा स्त्री० ढोने का काम, या मजदूरी। ढुलाने की क्रिया, या मजदूरी।

ढुलवाना–क्रि० स० ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलाई–संज्ञा स्त्री० ढुलाने की मजदूरी। ढुलवाई।

ढुलाना–क्रि० स० १. गिराकर बहाना। ढरकाना। ढालना। २. नीचे ढालना। गिराना। ३. लुढ़काना। ढँगलाना। ४. प्रवृत्त करना। झुकाना। ५. अनुकूल करना। प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६. इधर-उधर ढुलाना। ७. चलाना। फिराना। ८. फेरना। पोतना। ढोने का काम कराना।

ढूँढ़–संज्ञा स्त्री० खोज। तलाश।

ढूँढ़ना–क्रि० स० खोजना। तलाश करना।

ढूआ–संज्ञा पुं० मेड़। मिट्टी का छोटा बाँध। वृक्षों की जड़ में डाले हुए पानी को रोकने के लिए घेरा।

ढूसर–संज्ञा पुं० जाति-विशेष। वैश्यों की एक जाति।

ढूह, ढूहा†–संज्ञा पुं० १. ढेर। स्तूप। अटाला। २. टीला। भीटा।

ढेंक–संज्ञा स्त्री० पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया। सारस पक्षी।

ढेंकली–संज्ञा स्त्री० १. सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। २. धान कूटने का लकड़ी का एक यंत्र। धन-कुट्टी। ढेंकी। ३. कलाबाजी। कलैया।

ढेंकी–संज्ञा स्त्री० अनाज कूटने की ढेंकली।

ढेंडी–संज्ञा स्त्री० कान का एक प्रकार का गहना। ढेबिया। फली। फलियाँ।

ढेंढ़†–संज्ञा पुं० १. कौवा। २. एक नीच जाति। ३. मूर्ख। मूढ़। कपास आदि का डोंडा। ढोंढ।

ढेंढर–संज्ञा पुं० आँख के डेले का निकला हुआ विकृत मांस। आँख की फूली। टेंटर।

ढेंढ़वा–संज्ञा पुं० लंगूर।

ढेंढ़ा, ढेंढ़–संज्ञा पुं० गर्भ। लम्बोदर। बड़ा पेट। लम्बी नाभि। पेट का मध्य भाग।

ढेंपुनी या ढेंप–संज्ञा स्त्री० १. पत्ते या फल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है।

ढेंप। २. दाने की तरह उभरी हुई नोक। ठोंठ। ३. कुचाग्र।

ढेउआ†–संज्ञा पुं० पैसा।

ढेऊ–संज्ञा पुं० तरंग। वीचि। लहर।

ढेड़स–संज्ञा स्त्री० डेड़सी।

ढेबरी–संज्ञा स्त्री० ढिबरी।

ढेबुक†–संज्ञा पुं० पैसा।

ढेबुवा†–संज्ञा पुं० पैसा।

ढेर–संज्ञा पुं० नीचे-ऊपर रखी हुई बहुत-सी वस्तुओं का ऊपर उठा हुआ समूह। राशि। अटाला। अंबार।

वि० बहुत। अधिक। ज्यादा।

मुहा०—ढेर करना=मार डालना। ढेर हो रहना या जाना=१. गिरकर मर जाना। २. थककर चूर हो जाना।

ढेरना–संज्ञा पुं० रस्सी या सूत बटने की फिरकी।

ढेरा–संज्ञा पुं० १. सुतली बटने की फिरकी। २. मोट के मुँह पर का घेरा। ३. चिह्न-विशेष।

ढेरी–संज्ञा स्त्री० ढेर। राशि।

ढेलवाँस–संज्ञा स्त्री० रस्सी का वह फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं। गोफना।

ढेला–संज्ञा पुं० १. ईंट, कंकड़ या मिट्टी आदि का टुकड़ा। चक्का। २. टुकड़ा खंड। ३. एक प्रकार का धान।

ढेला चौथ–संज्ञा स्त्री० भादों शुक्ल की चौथ (लोग इस दिन दूसरों के घर पर ढेले फेंकते हैं)।

ढेंया–संज्ञा स्त्री० १. ढाई सेर तौलने का बटखरा। २. ढाईगुने का पहाड़ा। अढ़ैया।

ढोंकना–क्रि० स० पीना।

ढोंका–संज्ञा पुं० १. चार सौ पान। २. पत्थर का अनगढ़ टुकड़ा।

ढोंग–संज्ञा पुं० ढकोसला। पाखंड।

ढोंगबाजी–संज्ञा स्त्री० पाखंड। आडंबर।

ढोंगी–वि० पाखंडी। ढकोसलेबाज।

ढोंटा–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"। पुत्र।

ढोंड–संज्ञा स्त्री० ढेठी। फली। बीज-कोष।

ढोंढ़–संज्ञा पुं० १. कपास, पोस्ते आदि का डोंडा। २. कली।

ढोंढी–संज्ञा स्त्री० नाभि।

ढोटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढोटी] १. पुत्र। बेटा। २. लड़का।

ढोटी–संज्ञा स्त्री० १. लड़की। २. पुत्री।

ढोटौना‡–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"। पुत्र। बेटा।

ढोना–क्रि० स० १. बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २. उठा ले जाना। ३. निर्वाह करना।

ढोर–संज्ञा पुं० गाय, बैल, भैंस आदि पशु। चौपाया। मवेशी।

ढोरना*†–क्रि० स० १. ढरकाना। ढालना। २. लुढ़काना।

ढोरी–संज्ञा स्त्री० १. ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। २. रट। धुन। लौ। लगन।

ढोल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा, जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है।

मुहा०—ढोल पीटना या बजाना=चारों ओर कहते या जताते फिरना।

ढोलक–संज्ञा स्त्री० छोटा ढोल।

ढोलकिया–संज्ञा पुं० ढोलक बजानेवाला। ढोलक बजाने में निपुण।

ढोलकी–संज्ञा स्त्री० छोटा ढोल। ढोलक।

ढोलन–संज्ञा पुं० प्रियतम। रसिक। रसिया।

ढोलना–संज्ञा पुं० १. पालना। २. ढोलक के आकार का छोटा जंतर। ३. ढोलक के आकार का बड़ा बेलन जिससे सड़क पीटते हैं।

† क्रि० स० १. ढरकाना। ढालना। २. डुलाना।

ढोलनी–संज्ञा स्त्री० बच्चों का झूला। पालना।

ढोला–संज्ञा पुं० १. मूर्ख। २. एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है। ३. हद का निशान। ४. पिंड। शरीर। देह। ५. प्यारा। प्रियतम। पति। ६. एक प्रकार का गीत।

ढोलिन, ढोलिना–संज्ञा स्त्री० ढोला जाति की स्त्री। इस जाति के लोग मारवाड़ में अधिक पाए जाते हैं। इनका धन्धा गाना-बजाना है।

ढोलिनी–संज्ञा स्त्री० ढोल बजानेवाली स्त्री। डफालिन।

ढोलिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।

ढोली–संज्ञा स्त्री० १. २०० पानों की गड्डी। २. हँसी। ठठोली। ३. ढोल बजानेवाला। ढोलकिया। जाति-विशेष।

ढोलैत–संज्ञा पुं० ढोलवाला। ढोल बजानेवाला। ढोलकिया।

ढोव–संज्ञा पुं० वह वस्तु जो मंगल अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं। डाली। नजर।

ढोवा–संज्ञा पुं० १. ढोने की क्रिया या मजदूरी। २. दे० "ढोव"।

ढोहना*–क्रि० स० १. दे० "ढोना"। २. दे० "ढूँढ़ना"।

ढौंकना–क्रि० स० पीना।

ढौकन–संज्ञा पुं० घूस। उत्कोच। डाली। नजर। किसी प्रकार का लोभ दिखाकर अपने मतलब का काम कराने का उपाय।

ढौंचा–संज्ञा पुं० साढ़े चार। साढ़े चार गुना अधिक। साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना–क्रि० अ० आनंद-ध्वनि करना। हर्ष प्रकट करने के लिए अव्यक्त ध्वनि-विशेष।

ढौरी*†–संज्ञा स्त्री० लगन। रट। धुन। ताप। दाह। दहक। ढुर्री।

ण

ण–हिंदी वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। यह सानुनासिक कहलाता है।
संज्ञा पुं० १. बुद्ध। २. आभूषण। ३. निर्णय। ४. ज्ञान। ५. शिवजी का एक नाम। ६. दान। पानी का घर। ७. दे० "णगण"।
वि० गुण-शून्य।

णगण–संज्ञा पुं० दो मात्राओं का एक गण।

त

त–हिंदी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।
संज्ञा पुं० १. नाव। २. पुण्य। ३. चोर। ४. झूठ। ५. दुम। पूँछ। ६. गोद। ७. म्लेच्छ। ८. गर्भ। ९. रत्न। १०. बुद्ध। ११. अमृत। १२. शठ।
*†–क्रि० वि० तो।

तं–संज्ञा स्त्री० १. नाव। २. पुण्य।

तंक–संज्ञा पुं० टाकी। डर। प्रिय-वियोग का दुःख।

तंग–संज्ञा पुं० [फा०] घोड़ों की जीन कसने का तस्मा। कसन।
वि० १. कसा। दृढ़। २. दिक। विकल। हैरान। ३. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ४. चुस्त। छोटा।
मुहा०–तंग आना या होना=घबरा जाना। परेशान होना। दुःखी होना। तंग करना=सताना। दुःख देना। हाथ तंग होना=धनहीन होना।

तंगदस्त–वि० [फा०] १. कंजूस। २. गरीब। निर्धन।

तंगदस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] गरीबी। निर्धनता।

तंगदिल–वि० [फा०] कंजूस। कृपण।

तंगहाल–वि० [फा०] १. निर्धन। गरीब। २. विपद्ग्रस्त। बीमार।

तंगा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पेड़। २. अधन्ना।

तंगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तंग या सँकरे होने का भाव। संकीर्णता। संकोच। २. दुःख। तकलीफ। ३. निर्धनता। गरीबी। ४. कमी।

तंजेब–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।

तंड–संज्ञा पुं० नृत्य। नाच।

तंडव–संज्ञा पुं० दे० "तांडव"।

तंडुल–संज्ञा पुं० चावल।

तंत*†–संज्ञा पुं० १. दे० "तंतु"। २. दे० "तत्व"। ३. वह बाजा जिसमें बजाने के

लिए तार लगे हों। जैसे, सितार या सारंगी। ४. क्रिया। ५. तंत्र-शास्त्र। ६. इच्छा। कामना। अधीनता। ७. दे० "तंत्र"। ८. परिवार। ९. प्रबन्ध। व्यवस्था। १०. सुख-सिद्धि। ११. तुरन्त। शीघ्र। १२. सन्तान। १३. औषध। १४. उपाय।
संज्ञा स्त्री० आतुरता।
वि० जो तौल में ठीक हो।

तंतरी*†–संज्ञा पुं० तारयुक्त बाजा बजानेवाला।

तंति–संज्ञा स्त्री० गौ। गाय।
संज्ञा पुं० तन्तुवाय। कपड़ा बिननेवाली एक जाति।

तंतु–संज्ञा पुं० १. सूत। डोरा। तागा। २. ग्राह। ३. संतान। बाल-बच्चे। ४. विस्तार। फैलाव। ५. यज्ञ की परंपरा। ६. वंश-परंपरा। ७. ताँत। ८. मकड़ी का जाला।

तंतुक–संज्ञा पुं० सरसों।
संज्ञा स्त्री० नाड़ी।

तन्तुकीट–संज्ञा पुं० १. रेशम का कीड़ा। २. कपड़ों का कीट।

तन्तुनिर्यास–संज्ञा पुं० तालवृक्ष।

तंतुवादक–संज्ञा पुं० बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला। तंत्री।

तंतुवाय–संज्ञा पुं० कपड़े बुननेवाला। ताँती।

तन्तुशाला–संज्ञा स्त्री० कपड़ा बुनने का घर। ताँतघर।

तंत्र–संज्ञा पुं० १. तंतु। ताँत। सूत। २. जुलाहा। ३. कपड़ा। वस्त्र। ४. कुटुंब का भरण-पोषण। ५. निश्चित सिद्धांत। प्रमाण। ६. औषध। दवा। झाड़ने-फूँकने का मंत्र। ७. कार्य्य। कारण। ८. राज-कर्मचारी। राज्य का प्रबंध। ९. सेना। फौज। १०. मकान। धन। संपत्ति। ११. अधिकार। पद। १२. अधीनता। पर-वश्यता। १३. कुल। खानदान। १४. श्रेणी। दल। १५. उद्देश्य। १६. शपथ। १७. हिंदुओं का उपासना-संबंधी एक शास्त्र।

तंत्रण–संज्ञा पुं० शासन या प्रबंध आदि करने का काम।

तंत्रसंस्था–संज्ञा पुं० शासन-संस्था।

तंत्री–संज्ञा स्त्री० १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. गुरुच। ३. शरीर की नस। ४. रस्सी। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। वीणा। ६. तंत्रशास्त्री। तंत्रशास्त्र का जाननेवाला। ७. शरीर की नाड़ियाँ। नाड़ी-भेद।
संज्ञा पुं० गवैया। बाजा बजानेवाला।
वि० आलसी। अधीन।

तंदरा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तंद्रा।"

तंदुरुस्त–वि० [फा०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। नीरोग। स्वस्थ।

तंदुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नीरोग होने की अवस्था या भाव। २. स्वास्थ्य।

तंदुल*†–संज्ञा पुं० दे० "तंडुल"।

तंदूर–संज्ञा पुं० भट्ठी की तरह बना हुआ एक मिट्टी का पात्र।

तँदूरी–वि० तंदूर में बना हुआ।

तंदेही–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. परिश्रम। मेहनत। २. प्रयत्न। कोशिश। ३. चेतावनी। ताकीद।

तंद्रा–संज्ञा स्त्री० १. वह अवस्था जिसमें नींद मालूम पड़ने के कारण मनुष्य कुछ-कुछ सो जाय। उँघाई। ऊँघ। २. हलकी नींद। झपकी।

तंद्रालु–वि० १. जिसे नींद आती हो। निद्रातुर। श्रान्त। २. शिथिल।

तन्द्री–संज्ञा स्त्री० अत्यन्त परिश्रम करने से इन्द्रियों के शिथिल होने की अवस्था।

तंबा–संज्ञा पुं० [फा०] १. गाय। २. चौड़ी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा।

तंबाकू–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते का व्यवहार लोग अनेक प्रकार से नशे के लिए करते हैं। सुरती। खैनी तमाखू। २. इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर पीते हैं।

तंबिका–संज्ञा स्त्री० गौ।

तंबिया–संज्ञा पुं० ताँबे का छोटा बरतन। ताँबे का छोटा हंडा या तसला।

तंबियाना–क्रि० अ० १. ताँबे के रंग का

होना। २. ताँबे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गंध आ जाना।

तंबीह–संज्ञा स्त्री० १. नसीहत। शिक्षा। २. ताकीद।

तंबू–संज्ञा पुं० कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा घर। खेमा। डेरा। शिविर। शामियाना।

तंबूरची–संज्ञा पुं० तंबूरा बजानेवाला।

तंबूरा–संज्ञा पुं० बीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।

तंबूल*†–संज्ञा पुं० दे० "तांबूल"।

तंबोल–संज्ञा पुं० १. दे० "तांबूल"। २. दे० "तमोल"। एक पेड़। ३. वह टीका जो बारात के समय वर को दिया जाता है।

तंबोलिन–संज्ञा स्त्री० पान बेचनेवाली स्त्री।

तँबोली–संज्ञा पुं० पान बेचनेवाला। बरई।

तंभ, तंभन*–संज्ञा पुं० शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव।

तँवार–संज्ञा स्त्री० हरारत।

तअज्जुब–संज्ञा पुं० [अ०] आश्चर्य्य। विस्मय। अचंभा।

तअल्लुक–संज्ञा पुं० [अ०] संबंध। रिश्ता। लगाव।

तअल्लुका–संज्ञा पुं० [अ० "तअल्लुकः"] बड़ा इलाका। बहुत से गाँवों की जमींदारी।

तअल्लुकादार–संज्ञा पुं० [अ०] इलाकेदार। तअल्लुके का मालिक।

तअल्लुकादारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] तअल्लुकदार का पद या उसकी जमींदारी।

तअस्सुब–संज्ञा पुं० [अ०] धर्म या जाति-संबंधी पक्षपात। साम्प्रदायिक पक्षपात। कट्टरपन।

तइसा†–वि० दे० "वैसा"।

तइँ*–प्रत्य० से। प्रति। को।
अव्य० लिए। वास्ते।

तईं–अव्य० १. तक। पर्यन्त। अवधि। सीमा। २. लिए। वास्ते।
संज्ञा स्त्री० ताक। दृष्टि।

तई–संज्ञा स्त्री० लोहे की छिछली कड़ाही।

तउ*†–अव्य० १. दे० "तब"। २. दे० "त्यों"।

तऊ*†–अव्य० तो भी। तथापि। तिस पर भी।

तऊँ–अव्य० तथापि। तो भी। तदपि।

तक–अव्य० एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है। पर्य्यन्त।
संज्ञा स्त्री० दे० "टक"। १. दृष्टि। ताक। २. तराजू। तखड़ी।
यौ०-तक-तक=पशु आदि हाँकने का शब्द।

तकदमा–संज्ञा पुं० [अ०] किसी चीज की तैयारी का वह हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय। तखमीना। अंदाज।

तकदीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

तकदीरवर–वि० [अ०] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।

तकना*†–क्रि० अ० १. देखना। निहारना। अवलोकन करना। २. शरण लेना। पनाह लेना।

तकमा†–संज्ञा पुं० १. दे० "तमगा"। २. दे० "तुकमा"।

तकमील–संज्ञा स्त्री० [अ०] होने की क्रिया या भाव। पूर्णता।

तकरार–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी बात को बार-बार कहना। २. हुज्जत। विवाद। झगड़ा। टंटा।

तकरीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बातचीत। २. वक्तृता। भाषण।

तकला–संज्ञा पुं० १. सूत कातने का यंत्र। टेकुआ। २. रस्सी बनाने की टिकुरी।

तकली–संज्ञा स्त्री० सूत कातने का एक छोटा यंत्र जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा-सा तकला लगा रहता है। छोटा तकला। चर्खी।

तकलीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कष्ट। क्लेश। दुःख। २. विपत्ति। मुसीबत।

तकल्लुफ़–संज्ञा [अ०] शिष्टाचार। दिखावटी नम्रता या आवभगत।

तकवाहा–संज्ञा पुं० ताकनेवाला। रक्षक। चौकीदार। पहरेवाला।

तकवाही–संज्ञा स्त्री० चौकीदारी। पहरा देना। रखवाली।

तक़सीम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाँटने की

क्रिया। बँटाई। बँटवारा। २. गणित में भाग देने की क्रिया। भाग।

तकसीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] दोष। अपराध। कसूर। भूल।

तकाई–संज्ञा स्त्री० ताकने की क्रिया या भाव। रखवाली। रखवाली करने की मजदूरी।

तक़ाज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो। तगादा। २. ऐसा काम करने के लिए कहना जिसके लिए वचन मिल चुका हो। ३. उत्तेजना। प्रेरणा।

तकाना–क्रि० स० दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

तक़ावी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो सरकार की ओर से गरीब खेतिहरों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिए कर्ज दिया जाय।

तकिया–संज्ञा पुं० १. [फा०] रुई आदि से भरा हुआ कपड़े का थैला, जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। बालिश। २. रोक या सहारे के लिए लगाई जानेवाली पत्थर की पटिया। मुतक्का। ३. विश्राम करने का स्थान। ४. आश्रय। सहारा। आसरा। ५. वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फकीर रहता हो।

तकिया-कलाम–संज्ञा पुं० दे० "सखुन-तकिया"।

तकुआ–संज्ञा पुं० दे० "तकला"। सूत कातने की लोहे की सूई जो चर्खे में लगाई जाती है।

तक्र–संज्ञा पुं० मट्ठा। छाछ।

तक्ष–संज्ञा पुं० १. रामचन्द्र के भाई भरत का बड़ा पुत्र। २. कर्तन। काटना। ३. चमड़ा। चर्म। ४. चित्रा नक्षत्र। ५. रुद्र का एक नाम।

तक्षक–संज्ञा पुं० १. एक नाग जिसने राजा परीक्षित को काटा था। २. आज-कल के विद्वानों के अनुसार भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति। इनका जातीय चिह्न सर्प था। ३. साँप। सर्प। ४. विश्वकर्मा। ५. सूत्रधार। ६. एक संकर जाति। ७. बढ़ई। लकड़ी काटनेवाला। ८. वृक्ष-विशेष।

तक्षण–संज्ञा पुं० लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ बनाना।

तक्षशिला–संज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। यह प्राचीन नगरी भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी। हाल में इसके अवशेष रावलपिंडी (पंजाब) के पास जमीन खोदकर निकाले गए हैं। जनमेजय ने यहीं सर्प-यज्ञ किया था।

तखड़ी या तखरी–संज्ञा स्त्री० पलड़ा। तराजू। अन्न आदि तौलने का तराजू।

तख़फ़ीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] कमी।

तख़मीनन्–क्रि० वि० [अ०] अंदाज से। अनुमान से।

तख़मीना–संज्ञा पुं० [अ०] अंदाज। अनुमान।

तख़्त–संज्ञा पुं० [फा०] १. राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २. तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।

तख़्त-ताऊस–संज्ञा पुं० [फा०] मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

तख़्तनशीन–वि० [फा०] जो राजसिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ़।

तख़्तपोश–संज्ञा पुं० [फा०] १. तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २. चौकी।

तख़्तबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] तख्तों की बनी हुई दीवार।

तख़्ता–संज्ञा पुं० [फा०] १. लकड़ी का लंबा-चौड़ा और चौकोर टुकड़ा। बड़ा पटरा। पल्ला। २. लकड़ी की बड़ी चौकी। तख्त। ३. अरथी। टिखटी। ४. कागज का ताव। ५. बाग की क्यारी।

मुहा०—तख्ता उलटना=बना-बनाया काम बिगाड़ना। तख्ता हो जाना=अकड़ जाना।

तख़्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छोटा तख्ता। २. काठ की पटरी जिस पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं। पटिया।

तख़ल्लुस–संज्ञा पुं० [अ०] उपनाम। कवि का उपनाम (दूसरा नाम) जो वह अपनी कविता में रखता है।

तगड़ा–वि० [स्त्री० तगड़ी] १. बलवान्। मजबूत। २. खूब हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

तगण–संज्ञा पुं० तीन वर्णों का वह समूह जिसमें पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण होता है (पिंगल)।
तगना–क्रि० अ० सीना। सिलाई करना। तागा जाना।
तगदमा–संज्ञा पुं० दे० "तकदमा"। तखमीना।
तगमा–संज्ञा पुं० दे० "तमग़ा"।
तगर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती है और औषध के काम में आती है। मदन। वृक्ष। मरुआ-वृक्ष। २. एक प्रकार का फूल।
तगला–संज्ञा पुं० दे० "तकला"।
तगा*†–संज्ञा पुं० दे० "तागा"।
तगाई–संज्ञा स्त्री० तागने का काम या मजदूरी। सिलाई।
तगाड़ा–संज्ञा पुं० तसला जिसमें चूना-गारा रखते हैं।
तगादा–संज्ञा पुं० दे० "तक़ाज़ा"। माँग।
तगाना–क्रि० स० तागने का काम कराना। सिलवाना।
तगार, तगारी–संज्ञा स्त्री० १. उखली गाड़ने का गड्ढा। २. चूना, गारा इत्यादि ढोने का तसला। ३. वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय। ४. हलवाइयों की नाँद।
तगीर*–संज्ञा पुं० [अ०] बदलने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन।
तगीरी–संज्ञा स्त्री० परिवर्त्तन।
तचना†–क्रि० अ० दे० "तपना"।
तचा†–संज्ञा स्त्री० त्वचा। चमड़ा। खाल।
तचाना–क्रि० स० १. तपाना। तप्त करना। २. संतप्त या दुःखी करना।
तच्छिन*–क्रि० वि० तत्क्षण। उसी समय। तत्काल।
तज–संज्ञा पुं० १. तेजपात का वृक्ष। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम में आती है। ३. छोड़। छोड़ दे। त्याग। सिवा।
तज़किरा–संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। जिक्र।
तजन*†–संज्ञा पुं० १. तजने की क्रिया या भाव। त्याग। परित्याग। २. कोड़ा। चाबुक।
तजना–क्रि० स० छोड़ना। त्यागना।
तजरबा या **तजुरबा**–संज्ञा पुं० [अ०] अनुभव।
तजरबाकार या **तजुरबेकार**–संज्ञा पुं० जिसने तजरबा किया हो। अनुभवी।
तजवीज़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. फैसला। निर्णय। २. सम्मति। राय। ३. बंदोबस्त।
तज्ञ–वि० १. तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २. ज्ञानी।
तटंक–संज्ञा पुं० दे० "ताटंक"।
तट–संज्ञा पुं० १. क्षेत्र। खेत। २. प्रदेश। ३. तीर। किनारा। कूल।
क्रि० वि० समीप। पास। निकट।
तटका–वि० दे० "टटका"।
तटनी*–संज्ञा स्त्री०‡ (तटवाली)‡ नदी।
तटस्थ–वि० १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. निकट रहनेवाला। ३. अलग रहनवाला। जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे। उदासीन। निरपेक्ष।
तटिनी–संज्ञा स्त्री० नदी।
तटी–संज्ञा स्त्री० १. तीर। २. नदी। ३. तराई।
तड़–संज्ञा पुं० १. पक्ष। २. स्थल। ३. थप्पड़। ४. एक ही जाति या समाज के उपभेद। ५. कोई चीज पटकने से उत्पन्न होनवाला शब्द। ६. आमदनी की सूरत (दलाल)। ७. गिरोह। जत्था। टोली। ८. गिरने या टूटने आदि का अव्यक्त शब्द।
यौ०–तड़तड़=लकड़ी आदि के टूटने का शब्द। तड़बन्दी=दलबन्दी। एक जाति के कुछ लोगों का गिरोह।
तड़क–संज्ञा स्त्री० १. तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण किसी चीज पर पड़ा हुआ चिह्न। चाट। चटक। ३. एक लकड़ी जिससे छाजन होती है।
तड़कना–क्रि० अ० १. 'तड़' शब्द के साथ टूटना। चटकना। कड़कना। २. किसी चीज का सूखने आदि के कारण फट जाना। ३. जोर का शब्द करना। ४. बिगड़ना। तड़पना। झुँझलाना। ५. उछलना। कूदना। ६. छौंकना। तड़का देना। बघारना।

तड़क-भड़क–संज्ञा स्त्री० ठाट-बाट। सज-धज।
तड़का–संज्ञा पुं० १. सबेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।
तड़काना–क्रि० स० १. इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २. जोर का शब्द उत्पन्न करना। ३. क्रोध दिलाना।
तड़क्का†–क्रि० वि० दे० "तड़ाका"।
तड़के–अ० सबेरे। प्रातःकाल।
तड़तड़ाना–क्रि० अ० तड़-तड़ शब्द होना। क्रि० स० १. तड़-तड़ शब्द उत्पन्न करना। २. झिड़कना। क्रोधित होना।
तड़प–संज्ञा स्त्री० १. तड़पने की क्रिया या भाव। २. चमक। भड़क।
तड़पना–क्रि० अ० १. अधिक वेदना के कारण व्याकुल होना। छटपटाना। तलमलाना। २. जोर का शब्द करना। गरजना।
तड़पाना–क्रि० स० दूसरे को तड़पने में प्रवृत्त करना। व्याकुल करना। दुख देना।
तड़फ–संज्ञा स्त्री० व्याकुलता। घबराहट। उद्विग्नता। अधिक दुख से अधीरता।
तड़फड़ाना–क्रि० अ० तड़पना। व्याकुल होना।
तड़फड़ाहट–संज्ञा स्त्री० छटपटाहट। व्याकुलता। धुकधुकी। बेचैनी।
तड़फड़ी–संज्ञा स्त्री० छटपटी। धुकधुकी। बेचैनी। घबराहट।
तड़फना–क्रि० अ० दे० "तड़पना"। तड़फड़ाना। व्याकुल होना। छटपटाना।
तड़बंदी–संज्ञा स्त्री० समाज या बिरादरी में अलग-अलग तड़ या विभाग बनना।
तड़ा–संज्ञा पुं० टापू। उपद्वीप। दोआब।
तड़ाक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. तड़ाके का शब्द। क्रि० वि० 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के सहित। २. जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। चटपट। तुरंत। ३. भड़कीला। चटकीला। चमकदार।
यौ०—तड़ाक-पड़ाक=चटपट। तुरंत।
तड़ाका–संज्ञा पुं० [अनु०] १. "तड़" शब्द। २. मारने या टूटने की ध्वनि।
क्रि० वि० चटपट।
तड़ाग–संज्ञा पुं० तालाब। सरोवर। जलाशय। पुष्कर।
तड़ातड़–क्रि० वि० तड़-तड़ शब्द के साथ।
तड़ाड़ा–संज्ञा पुं० जल की तीव्र धारा। तरेड़ा। तिरखा।
तड़ाना–क्रि० स० किसी दूसरे को ताड़ने में प्रवृत्त करना। भँपाना।
तड़ावा–संज्ञा पुं० १. अभिमान। ऊपरी दिखावा। तड़क-भड़क। २. धोखा। छल।
तड़ित्–संज्ञा स्त्री० बिजली।
तड़िता–संज्ञा स्त्री० बिजली।
तड़ित्पति–संज्ञा पुं० बादल। मेघ।
तड़ी–संज्ञा स्त्री० १. चपत। धौल। २. धोखा। छल (दलाल)। ३. बहाना। हीला।
तत्–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म। परमात्मा। २. वायु। हवा।
सर्व० उस। जैसे—तत्काल, तत्क्षण।
तत–संज्ञा पुं० १. वायु। २. विस्तार। ३. पिता। ४. पुत्र। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। जैसे—सारंगी, सितार आदि।
*†–वि० तपा हुआ। गरम।
*†–संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।
ततताथेई–संज्ञा स्त्री० नृत्य का शब्द। नाच के बोल।
ततबाउ*†–संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।
ततसार*†–संज्ञा स्त्री० आँच देने या तपाने की जगह। तप्तशाला।
तताई*†–संज्ञा स्त्री० गरमी।
ततारना–क्रि० स० १. गरम जल से धोना। २. धार देकर धोना।
तति–संज्ञा स्त्री० १. श्रेणी। पंक्ति। ताँता। २. समूह। ३. विस्तार।
ततुबाऊ*†–संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।
ततेड़ा–संज्ञा पुं० पानी आदि गरम करने का स्थान। पानी गरम करने का पात्र। हंडा।
ततैया–संज्ञा स्त्री० १. बर्रे। भिड़। २. लाल मिर्चा।
वि० तेज। बहुत चरपरी।
तत्काल–क्रि० वि० तुरंत। फौरन।
तत्कालीन–वि० उस समय का।
तत्क्षण–क्रि० वि० उसी समय। तुरंत। फौरन।

तस*†–संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।
तसा*–वि० तप्त। गरम। उष्ण।
तत्तो थंबो–संज्ञा पुं० १. दम-दिलासा। बहलावा। २. लड़ते हुए आदमियों को समझाकर शान्त करना। बीच-बचाव।
तत्त्व–संज्ञा पुं० १. वास्तविक स्थिति। यथार्थता। असलियत। २. जगत् का मूल कारण। सांख्य में २५ तत्त्व माने गए हैं। ३. पंचभूत। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। ४. परमात्मा। ब्रह्म। ५. सार वस्तु। सारांश।
तत्त्वज्ञ–संज्ञा पुं० १. तत्त्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २. दार्शनिक।
तत्त्वज्ञान–संज्ञा पुं० ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्मज्ञान।
तत्त्वज्ञानी–संज्ञा पुं० दे० "तत्त्वज्ञ"।
तत्त्वता–संज्ञा स्त्री० १. तत्त्व होने का भाव या गुण। २. यथार्थता।
तत्त्वदर्शी–संज्ञा पुं० दे० "तत्त्वज्ञ"। ज्ञानी। जो तत्त्व जानता हो।
तत्त्वदृष्टि–संज्ञा स्त्री० ज्ञानचक्षु। दिव्य-दृष्टि।
तत्त्ववाद–संज्ञा पुं० दर्शनशास्त्र-संबंधी विचार।
तत्त्ववादी–संज्ञा पुं० १. तत्त्ववाद का ज्ञाता और समर्थक। २. यथार्थ और स्पष्ट बात करनेवाला।
तत्त्वविद्–संज्ञा पुं० तत्त्ववेत्ता। ब्रह्मज्ञानी। परमेश्वर।
तत्त्वविद्या–संज्ञा स्त्री० दर्शनशास्त्र।
तत्त्ववेत्ता–संज्ञा पुं० १. तत्त्वज्ञ। ज्ञानी। २. दार्शनिक।
तत्त्वशास्त्र–संज्ञा पुं० दे० "दर्शनशास्त्र"।
तत्त्वावधान–संज्ञा पुं० संरक्षण। जाँच-पड़ताल। देख-रेख। निरीक्षण।
तत्थ†–वि० मुख्य। प्रधान।
संज्ञा पुं० १. तथ्य। सत्य। तत्त्व। २. शक्ति। बल।
तत्पर–वि० [संज्ञा तत्परता] १. उद्यत। मुस्तैद। सन्नद्ध। २. निपुण। ३. चतुर।
तत्परता–संज्ञा स्त्री० १. सन्नद्धता। मुस्तैदी। २. दक्षता। निपुणता। ३. होशियारी।
तत्पुरुष–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. एक रुद्र का नाम। ३. एक प्रकार का समास। जैसे––जलचर।
तत्र–क्रि० वि० उस जगह। वहाँ।
तत्सम–संज्ञा पुं० संस्कृत शब्द जिसका व्यवहार भाषा में उसके शुद्ध रूप में या ज्यों का त्यों हो।
तथा–अव्य० १. और। वा। २. इसी तरह। ऐसे ही।
संज्ञा पुं० १. सत्य। २. निश्चय। ३. सीमा।
यौ०––तथास्तु=ऐसा ही हो। एवमस्तु।
तथाकथित–वि० कहा जानेवाला। जो कहा जाय पर जिसके सम्बन्ध में कोई प्रमाण न हो।
तथागत–संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध। भगवान् बुद्ध का एक नाम।
तथापि–अव्य० तो भी। तब भी।
तथोक्त–वि० दे० "तथाकथित"।
तथैव–अव्य० वैसा ही। उसी प्रकार।
तथ्य–संज्ञा पुं० सचाई। यथार्थता।
तथ्यभाषी–वि० खरा। यथार्थ कहनेवाला।
तद्–वि० वह। सो (यौगिक में)।
†क्रि० वि० उस समय। तब।
तदंतर, तदनंतर–क्रि० वि० उसके पीछे। उसके बाद। उसके उपरान्त।
तदनुरूप–वि० उसी के रूप का। उसी के समान।
तदनुसार–वि० उसके मुताबिक। उसके अनुकूल।
तदपि–अव्य० तो भी। तथापि।
तदबीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] अभीष्ट सिद्ध करने का साधन। उपाय। युक्ति। तरकीब।
तदा–क्रि० वि० उस समय। तब।
तदाकार–वि० १. वैसा ही। उसी आकार का। तद्रूप। २. तन्मय।
तदारुक–संज्ञा पुं० [अ०] १. भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध में जाँच। २. दुर्घटना को रोकने के लिए पहले से किया हुआ प्रबंध। पेशबंदी। ३. सजा। दंड।

तदीय–सर्व० उससे संबंध रखनेवाला। उसका।

तदुपरांत–क्रि० वि० उसके पीछे। उसके बाद।

तद्गत–वि० १. उससे संबंध रखनेवाला। २. उसके अंतर्गत। उसमें व्याप्त।

तद्गुण–संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग करके समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है।

तद्धन–संज्ञा पुं० १. वही धन। उतना ही धन। २. कृपण। कंजूस।

तद्धित–संज्ञा पुं० प्रत्यय-विशेष जिसे संज्ञा के अन्त में लगाकर शब्द बनाते हैं। जैसे—'शत्रु' से 'शत्रुता'।

तद्भव–संज्ञा पुं० संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्त्तित हो गया हो। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप। जैसे—'अश्रु' का 'आँसू'।

तद्रूप–वि० समान। सदृश।

तद्रूपता–संज्ञा स्त्री० सादृश्य। समानता।

तद्वत्–वि० उसी के जैसा। उसके समान। ज्यों का त्यों।

तन–संज्ञा पुं० तनु। शरीर। देह। गात। क्रि० वि० तरफ। ओर।
*वि० दे० "तनिक"।
मुहा०—तन को लगना=१. हृदय पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। २. (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। तन देना=ध्यान देना। मन लगाना। तन-मन मारना=इंद्रियों को वश में रखना।

तनक–वि० थोड़ा। तनिक। अंश। टुकड़ा। छोटा। जरा-सा। कुछ।

तनकीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जाँच। खोज। तहकीकात। २. अदालत का किसी मुकदमे की उन बातों का पता लगाना जिनका फैसला होना जरूरी हो। मुकदमे में विचारणीय विषय। निर्णय के विषय।

तनखाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वेतन। तलब।

तनगना†*–क्रि० अ० दे० "तिनकना"। झल्लाना। बिगड़ना।

तनजेब–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।

तनज्जुल–वि० पदच्युत। पद से गिराया हुआ। उन्नत का उलटा। अवनत। उतारा या घटाया हुआ।

तनज्जुली–संज्ञा स्त्री० [फा०] अवनति। पद से गिरना। कमी। ह्रास।

तनतनाना–क्रि० अ० १. शान दिखाना। २. क्रोध करना।

तनत्राण–संज्ञा पुं० दे० "तनुत्राण"। कवच।

तनदेही–संज्ञा स्त्री० १. मुस्तैदी। सावधानी। चौकसी। हिफाजत। बचाव। २. परिश्रम। प्रयत्न।

तनधर–संज्ञा पुं० दे० "तनुधारी"। शरीरधारी। देहधारी।

तनना–क्रि० अ० १. फैलना। खिंचना। गर्मी आदि के कारण किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ना। २. आकर्षित होना। ३. अकड़कर सीधा खड़ा होना। ४. कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदासीन होना। ऐंठना।

तनपात–संज्ञा पुं० दे० "तनुपात"। मृत्यु

तनमय–वि० दे० "तन्मय"।

तनय–संज्ञा पुं० बेटा। पुत्र।

तनया–संज्ञा स्त्री० बेटी। पुत्री।

तनराग–संज्ञा पुं० दे० "तनुराग"।

तनरुह*†–संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।

तनवाना–क्रि० स० तानने का काम दूसरे से कराना। तनाना।

तनसीख–संज्ञा स्त्री० [अ०] रद्द करना। मंसूखी।

तनसुख–संज्ञा पुं० तंजेब-जैसा एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

तनहा–वि० [फा०] जिसके संग कोई न हो। अकेला। एकाकी।
क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले।

तनहाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तनहा होने की दशा या भाव। अकेलापन। २. एकांत।

तना–संज्ञा पुं० [फा०] पेड़ का धड़। मंदल। क्रि० वि० ओर। तरफ।
तनाई–संज्ञा स्त्री० तनाव। तानने (चारपाई बिनने आदि) की क्रिया या मजदूरी।
तनाकु*†–क्रि० वि० दे० "तनिक"।
तनाज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बखेड़ा। झगड़ा। २. शत्रुता। वैर।
तनाना–क्रि० स० दे० "तनवाना"।
तनाब†–संज्ञा स्त्री० खेमे की रस्सी।
तनाव–संज्ञा पुं० १. तनने का भाव या क्रिया। २. रस्सी। डोरी।
तनि, तनिक–वि० १. थोड़ा। कम। २. छोटा। क्रि० वि० जरा। टुक।
तनिया†–संज्ञा स्त्री० १. शरीर का दुबलापन कृशता। २. लँगोटी। कौपीन। ३. कछनी। जाँघिया। ४. चोली।
तनी–संज्ञा स्त्री० १. डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे आदि में उनका पल्ला बाँधने के लिए लगाया जाता है। बंद। बंधन। २. दे० "तनिया"।
†क्रि० वि० दे० "तनिक"।
तनु–वि० १. दुबला-पतला। २. थोड़ा। कम। ३. कोमल। नाजुक। ४. सुंदर। बढ़िया। संज्ञा स्त्री० १. शरीर। देह। बदन। २. चमड़ा। खाल। जन्मकुण्डली में जन्मस्थान। ३. स्त्री। औरत।
तनुक*†–क्रि० वि० दे० "तनिक"। संज्ञा पुं० दे० "तनु"।
तनुकूप–संज्ञा पुं० रोमछिद्र।
तनुज–संज्ञा पुं० बेटा। पुत्र।
तनुजा–संज्ञा स्त्री० लड़की। बेटी।
तनुता–संज्ञा स्त्री० १. लघुता। सूक्ष्मता। छोटाई। २. दुर्बलता। दुबलापन।
तनुत्व–संज्ञा पुं० क्षीणत्व। सूक्ष्मत्व। छोटाई।
तनुत्राण–संज्ञा पुं० कवच। बखतर।
तनुत्याग–संज्ञा पुं० मृत्यु। देहत्याग। मरण।
तनुधारी–वि० शरीर धारण करनेवाला।
तनुमध्या–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का वर्णवृत्त। २. क्षीण कटि की स्त्री। पतली कमरवाली स्त्री।
तनुरस–संज्ञा पुं० पसीना।
तनुराग–संज्ञा पुं० सुगंधित उबटन। केसर, चंदन आदि मिला हुआ बटना।
तनुरुह–संज्ञा पुं० रोम।
तनुवात–संज्ञा पुं० एक प्रकार के नरक का नाम।
तनुव्रण–संज्ञा पुं० छोटा घाव। वल्मीक रोग।
तनुसर–संज्ञा पुं० पसीना।
तनू–संज्ञा पुं० १. पुत्र। २. शरीर। ३. गाय। ४. प्रजापति।
तनूज*–संज्ञा पुं० दे० "तनुज"। पुत्र।
तनूजा–संज्ञा स्त्री० लड़की। बेटी। कन्या।
तनूनप–संज्ञा पुं० घी।
तनूनपात्–संज्ञा पुं० १. अग्नि। वह्नि। २. घी। अंचल के प्रजापति के प्रपौत्र का नाम।
तनूभृत्–संज्ञा पुं० मनुष्य। देही। देहधारी।
त ूर–संज्ञा पुं० तंदूर।
तनूरुह–संज्ञा पुं० १. लोम। रोम। २. पंख। ३. पुत्र।
तनेना–वि० [स्त्री० तनेनी] १. खिंचा हुआ। २. टेढ़ा। तिरछा। क्रुद्ध। नाराज।
तनै*–संज्ञा पुं० दे० "तनय"।
तनैना–संज्ञा पुं० दे० तनेना।
तनैया*†–संज्ञा स्त्री० बेटी।
तनोज*–संज्ञा पुं० १. रोम। लोम। रोआँ। २. लड़का। बेटा।
तनोरुह*–संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"। रोंगटे। रोम।
तन्नाना–क्रि० अ० अकड़ना। ऐंठना। अकड़ दिखाना। मिजाज गरम करना।
तन्नी–संज्ञा स्त्री० १. वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले लटकते हैं। जोती। २. एक अंकुसी।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरनी"।
तन्मय–वि० जो किसी काम में बहुत मग्न हो। लवलीन। लगा हुआ। दत्तचित्त।
तन्मयता–संज्ञा स्त्री० एकाग्रता। लीनता। लगन।
तन्मात्र–संज्ञा पुं० १. केवल। वही। एक। २. सांख्य के अनुसार पंचभूतों का अविशेष

मूल। ये संख्या में पाँच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

तन्वंगी–संज्ञा स्त्री० दुबले-पतले अंगोंवाली। दुबली-पतली स्त्री।

तन्वी–संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त।
वि० कोमल अंगोंवाली। दुबली-पतली। कृशांगी। कामिनी।

तप–संज्ञा पुं० १. पूजा। आराधन। तपस्या। शरीर या इंद्रिय को वश में रखने का उपाय। नियम। २. अग्नि। ताप। गरमी। ग्रीष्म ऋतु। ३. माघ महीने का नाम। ४. बुखार। ज्वर।

तपकना*–क्रि० अ० १. धड़कना। उछलना। २. दे० "टपकना"।

तपती–संज्ञा स्त्री० सूर्य की कन्या। सूर्य-पत्नी छाया के गर्भ से उत्पन्न।

तपन–संज्ञा पुं० तपने की क्रिया या भाव। १. ताप। जलन। आँच। दाह। २. एक नरक। ३. सूर्य। सूर्यकांत मणि। ४. सूरज-मुखी। ५. ग्रीष्म। गरमी। ६. अग्नि। ७. धूप। ८. नायिका या नायक के वियोग में हाव-भाव-विशेष। ९. आक। अरनी का पेड़। १०. मदार। ११. भेलावाँ का पेड़।
संज्ञा स्त्री० ताप। गरमी।

तपना–क्रि० अ० १. अधिक गर्मी आदि के कारण खूब गरम होना। तप्त होना। २. संतप्त होना। कष्ट सहना। ३. गरमी या ताप फैलाना। ४. प्रभुत्व या प्रताप दिखलाना। तेजस्वी होना। आतंक फैलाना। ५. तपस्या करना। तप करना। ६. बुरे कामों में अंधाधुंध खर्च करना।

तपनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तपन"।

तपनी†–संज्ञा स्त्री० १. वह स्थान जहाँ बैठकर आग तापते हों। कौड़ा। अलाव। २. तपस्या। तप। ३. गोदावरी नदी।

तपनीय–संज्ञा पुं० तपाने योग्य। सोना।

तपलोक–संज्ञा पुं० तपोलोक। स्वर्ग-विशेष। ऊपर के सात लोकों में से छठाँ लोक।

तपश्चरण–संज्ञा पुं० तप। तपस्या। दे० "तपश्चर्य्या"।

तपश्चर्य्या–संज्ञा स्त्री० तपस्या।

तपस–संज्ञा पुं० १. दे० "तपस्या"। २. चन्द्रमा। ३. सूर्य। ४. शिशिर ऋतु। ऊपर का लोक। ५. पक्षी।

तपसा–संज्ञा स्त्री० १. तपस्या। तप। तपस्या से। तप के द्वारा। कष्ट से। आराधना से। २. तापती नदी।

तपसाली–संज्ञा पुं० तपस्वी। तप करनेवाला।

तपसी–संज्ञा पुं० तपस्वी। तपस्या करनेवाला। योगी।

तपसी मछली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।

तपस्क–संज्ञा पुं० तपस्वी। योगी।

तपस्य–संज्ञा पुं० १. तप। तपस्या। २. फागुन का महीना। ३. अर्जुन। ४. कुंद पुष्प। ५. मनु के दस पुत्रों में से एक।

तपस्या–संज्ञा स्त्री० १. तप। व्रतचर्या। साधना। योग-साधन। ईश्वर-भजन। २. फाल्गुन मास। ३. तपसी मछली।

तपस्विता–संज्ञा स्त्री० तपस्वी होने की अवस्था या भाव।

तपस्विनी–संज्ञा स्त्री० १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री। ३. पतिव्रता या सती स्त्री।

तपस्वी–संज्ञा पुं० [स्त्री० तपस्विनी] १. तपस्या करनेवाला। ऋषि-मुनि। २. दीन। दया करने योग्य। ३. मछली-विशेष ४. घीकुआर।

तपा–संज्ञा पुं० तपस्वी। पूजक। आराधक। वि० तप में मग्न।

तपाक–संज्ञा पुं० [फा०] १. आवेश। जोश। २. वेग। तेजी।

तपाना–क्रि० स० १. गरम करना। तप्त करना। २. दुःख देना।

तपात्यय–संज्ञा पुं० वर्षाकाल।

तपावंत–संज्ञा पुं० तपस्या करनेवाला। तपस्वी।

तपास–संज्ञा पुं० अन्वेषण। अनुसन्धान। खोज। ढूँढ़।

तपित*†–वि० तपा हुआ। गरम। तप्त।

तपिया*–संज्ञा पुं० दे० "तपस्वी"।

तपिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] गरमी। तपन।
तपी—संज्ञा पुं० १. तपस्वी। तपस्या करनेवाला। आत्मसंयमी। ऋषिमुनि। २. सूर्य।
तपु—संज्ञा पुं० १. आग। २. सूर्य। ३. शत्रु। वि० तप्त। गरम। तपानेवाला।
तपेदिक़—संज्ञा पुं० [फा०] राजयक्ष्मा। क्षयी रोग। थाइसिस (अंग्रे०)।
तपेश्वर या तपेश्वरी—संज्ञा पुं० तपस्वी। तपस्या करनेवाला।
तपोजा—संज्ञा स्त्री० पानी। जल।
तपोधन—संज्ञा पुं० १. ऋषि-मुनि, जिनका तपस्या ही धन है। २. तपस्वी। मरुआ दौना का पौधा।
तपोधर्म—संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपोनिधि—संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपोनिष्ठ—संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपोबल—संज्ञा पुं० तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि—संज्ञा स्त्री० तप करने का स्थान। तपोवन।
तपोमय—संज्ञा पुं० परमेश्वर।
तपोमूर्ति—संज्ञा पुं० तपस्वी। परमेश्वर। तपस्या की मूर्त्ति। महातपस्वी।
तपोरति—संज्ञा पुं० तपस्वी। जिसकी रति तप में हो।
तपोराशि—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा तपस्वी। जिसकी तपस्या अधिक काल तक की हो।
तपोलोक—संज्ञा पुं० पुराणों में वर्णित ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक। स्वर्ग।
तपोवन—संज्ञा पुं० तपस्वियों का आश्रम। तपस्वियों के रहने या तपस्या करने का स्थान। तपोभूमि।
तपोवृद्ध—वि० जो तपस्या-द्वारा श्रेष्ठ हो।
तपौनी—संज्ञा स्त्री० १. ठगों की एक रस्म। २. अलाव। ३. तप।
तप्त—वि० १. तपाया या तपा हुआ। गरम। उष्ण। २. दुःखित। पीड़ित। संतप्त।
तप्तकुंड—संज्ञा पुं० गरम पानी का सोता या कुंड।
तप्तकुम्भ—संज्ञा पुं० १. नरक-विशेष। २. तपा हुआ घड़ा।
तप्तकृच्छ्र—संज्ञा पुं० व्रत-विशेष जो प्रायश्चित्त-स्वरूप किया जाता है।
तप्तबालुक—संज्ञा पुं० १. नरक-विशेष। २. जो तपी बालुका से बना हो।
तप्तमाष—संज्ञा पुं० एक प्रकार की परीक्षा जिससे अपराध आदि के संबंध में किसी के कथन की सत्यता जानी जाती थी।
तप्तमुद्रा—संज्ञा स्त्री० शंख, चक्रादि के छापे जो तपाकर वैष्णव लोग अपने अंगों पर दाग लेते हैं।
तप्प*†—संज्ञा पुं० दे० "तप"।
तप्य—संज्ञा पुं० शिव। वि० तपने या तपाने योग्य।
तफ़तीश—संज्ञा स्त्री० जाँच-पड़ताल। तहकीकात (विशेषकर पुलिस-द्वारा)।
तफ़रक़ा—संज्ञा स्त्री० जुदाई। वियोग। अंतर। फर्क। दूरी।
तफ़रीक़—संज्ञा स्त्री० [अ०] अन्तर। फर्क। विभाग। बटवारा। बाकी। गणित में घटाने की क्रिया।
तफ़रीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खुशी। प्रसन्नता। २. दिल्लगी। हँसी। ठट्ठा। ३. हवाखोरी। सैर।
तफ़सील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विस्तृत वर्णन। क्रम से वर्णन। ब्योरा। २. टीका। तशरीह। ३. कैफियत।
तफ़ावत—संज्ञा पुं० [अ०] १. अंतर। फर्क। २. दूरी। फासिला।
तब—अव्य० १. उस समय। उस वक्त। २. इस कारण। इस वजह से।
तबक़—संज्ञा पुं० [अ०] १ लोक। तल। २. परत। तह। ३. चाँदी-सोने का पतला वरक। ४. चौड़ी और छिछली थाली।
तबक़गर—संज्ञा पुं० [अ०] सोने-चाँदी के तबक बनानेवाला। तबकिया।
तबक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. खंड। विभाग। २. तह। परत। ३. लोक। तल। ४. आदमियों का समूह। दल।
तबक़िया—संज्ञा पुं० दे० "तबक़गर"।
तबदील—वि० [अ०] [संज्ञा तबदीली] जो बदला गया हो। परिवर्त्तित।

तबदीली, तब्दीली—संज्ञा स्त्री० [अ०] बदली। परिवर्त्तन। हेर-फेर।
तबर—संज्ञा पुं० [फा०] १. कुल्हाड़ी। २. कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।
तबल—संज्ञा पुं० [फा०] १. बड़ा ढोल। २. नगाड़ा। डंका।
तबलची—संज्ञा पुं० [अ०] तबला बजानेवाला। तबलिया।
तबला—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रसिद्ध बाजा।
तबलिया—संज्ञा पुं० दे० "तबलची"।
तबलीग—संज्ञा पुं० [अ०] दूसरों को अपने धर्म में मिलाना। धर्म का प्रचार करना।
तबाक—संज्ञा पुं० [अ०] बड़ा थाल। परात।
तबादला—संज्ञा पुं० बदली। बदला जाना। परिवर्त्तन। किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। स्थान-परिवर्त्तन।
तबाशीर—संज्ञा पुं० वंसलोचन।
तबाह—वि० [फा० | संज्ञा तबाही] नष्ट। बरबाद।
तबाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] नाश। बरबादी।
तबीअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चित्त। मन। जी। २. बुद्धि। समझ। ज्ञान।
मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना=(किसी पर) प्रेम होना। आशिक होना। तबीअत फड़क उठना=चित्त का उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना। तबीअत लगना=१. मन में अनुराग उत्पन्न होना। २. ध्यान लगा रहना।
तबीअतदार—वि० १. समझदार। २. भावुक। रसिक।
तबीब—संज्ञा पुं० [अ०] वैद्य। हकीम।
तभी—अव्य० १. उसी समय। उसी वक्त। २. इसी कारण। इसी वजह से।
तमंचा—संज्ञा पुं० [फा०] १. पिस्तौल। २. वह लंबा पत्थर जो दरवाजों की बगल में लगाया जाता है।
तम—संज्ञा पुं० १. अंधकार। अँधेरा। २. राहु। ३. बराह। सूअर। ४. पाप। ५. क्रोध। ६. अज्ञान। ७. कालिख। कालिमा। ८ नरक। ९. मोह। १० तमोगुण।
तमक—संज्ञा पुं० १. जोश। उद्वेग। २. तेजी। तीव्रता। ३. क्रोध।
तमकना—क्रि० अ० [अनु०] १. क्रोध के कारण आवेश में आना। क्रोध में उछल पड़ना। २. दे० "तमतमाना"।
तमगा—संज्ञा पुं० [तु०] पदक।
तमचर—संज्ञा पुं० १. राक्षस। निशचर। २. उल्लू।
तमचुर—संज्ञा पुं० मुरगा। कुक्कुट।
तमचोर*†—संज्ञा पुं० दे० "तमचुर"।
तमतमाना—क्रि० अ० अधिक धूप या क्रोध से चेहरा लाल होना। अधिक क्रोध करना। लाल होना। दमकना।
तमतमाहट—संज्ञा स्त्री० तमतमाने का भाव।
तमन्ना—संज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। चाह। अभिलाषा। ख्वाहिश।
तमलेट—संज्ञा पुं० लोहे का बरतन।
तमस—संज्ञा पुं० १. अंधकार। २. अज्ञान का अंधकार। तमोगुण। नगर। कुआँ। राहु। नरक-विशेष। ३. पाप। ४. तमसा नदी (टौंस)।
तमसा—संज्ञा स्त्री० एक नदी का नाम जिसे टौंस भी कहते हैं।
तमस्वती—संज्ञा स्त्री० रात।
तमस्विनी—संज्ञा स्त्री० १. रात। अँधेरी रात। २. हल्दी।
तमस्सुक—संज्ञा पुं० [अ०] वह कागज जो ऋण लेनेवाला ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर महाजन को देता है। दस्तावेज। ऋणपत्र।
तमस्तति—संज्ञा स्त्री० अन्धकार-समूह। घोर अन्धकार।
तमहीद—संज्ञा स्त्री० [अ०] भूमिका।
तमा—संज्ञा पुं० राहु।
संज्ञा स्त्री० रात। रजनी। *लोभ।
तमाई—संज्ञा स्त्री० जोतने के पूर्व खेत साफ करना।
तमाकू—संज्ञा पुं० दे० "तम्बाकू"।
तमाखू†—संज्ञा पुं० दे० "तम्बाकू"।
तमाचा—संज्ञा पुं० थप्पड़। झापड़।

तमाच्छन्न–वि० अंधकार से घिरा हुआ। अंधकारपूर्ण।
तमाच्छादित–वि० दे० "तमाच्छन्न"।
तमादी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वादे का समय व्यतीत हो जाना। अवधि समाप्त हो जाना। मुद्दत या मियाद गुजर जाना।
तमाम–वि० [अ०] १. पूरा। संपूर्ण। कुल। २. समाप्त। खतम।
तमामी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा।
तमारि–संज्ञा पुं० सूर्य। तम नाश करनेवाला। संज्ञा स्त्री० दे० "तँवार"।
तमाल–संज्ञा पुं० १. बहुत ऊँचा और सुन्दर वृक्ष-विशेष। काली पत्तियों वाला वृक्ष। मोरपंख। २. तेजपत्ता। ३. काला खैर।
तमाशबीन–संज्ञा पुं० १. [अ०] तमाशा देखनेवाला। २. ऐयाश।
तमाशा–संज्ञा पुं० [अ०] १. मनोरंजक दृश्य। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २. अनोखी बात।
तमाशाई–संज्ञा पुं० तमाशा देखनेवाला।
तमि–संज्ञा पुं० रात। मोह।
तमिचर–संज्ञा पुं० दे० "तमीचर"।
तमिस्र–संज्ञा पुं० १. अंधकार। अँधेरा। २. क्रोध। गुस्सा। ३. एक नरक का नाम।
तमिस्रा–संज्ञा स्त्री० रात। अन्धकारमय रात्रि। कृष्णपक्ष की अँधेरी रात।
तमी–संज्ञा स्त्री० रात। हल्दी।
तमीचर–संज्ञा पुं० राक्षस। निशाचर। चोर। व्यभिचारी। लम्पट।
तमीज़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भले और बुरे को पहचानने की शक्ति। विवेक। २. पहचान। ३. बुद्धि। ४. अदब। शिष्टता।
तमीश–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
तमोगुण–संज्ञा पुं० प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो निकृष्ट माना गया है। मोह, क्रोध आदि उत्पन्न करनेवाला गुण-विशेष।
तमोगुणी–वि० तमोगुणी वृत्तिवाला। अभिमानी। अधम प्रकृतिवाला।
तमोघ्न–संज्ञा पुं० १. तम नाश करनेवाला। २. अग्नि। ३. चंद्रमा। ४. सूर्य्य। ५. बुद्ध। ६. विष्णु। ७. शिव। ८. ज्ञान। ९. दीपक। दीआ।
वि० जिससे अँधेरा दूर हो।
तमोज्योति–संज्ञा पुं० खद्योत। जुगनू।
तमोनुद–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. सूर्य। ५. अज्ञाननाशक गुरु।
तमोमय–वि० १. तमोगुणयुक्त। २. अज्ञानी। ३. क्रोधी।
संज्ञा पुं० राहु।
तमोर*†–संज्ञा पुं० १. पान। ताम्बूल। २. एक रस्म (विवाह का तमोर बाँटना।)
तमोरि–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
तमोरी*†–संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।
तमोल*†–संज्ञा पुं० १. पान का बीड़ा। २. दे० "तंबोल"।
तमोलिन–संज्ञा स्त्री० तंबोलिन। पान बेचनेवाली स्त्री। तमोली की स्त्री।
तमोली–संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"। पान का व्यवसाय करनेवाला।
तमोहर–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. सूर्य्य। ३. अग्नि। आग। ४. ज्ञान।
वि० १. अंधकार दूर करनेवाला। २. अज्ञान दूर करनेवाला।
तय–वि० [अ०] १. निश्चित। ठहराया हुआ। मुकर्रर। २. निबटाया हुआ। निर्णीत।
तयना*†–क्रि० अ० दे० "तपना"। बहुत गरम होना। दुःखी होना।
तयार‡*–वि० दे० "तैयार"।
तयारी–संज्ञा स्त्री० दे० "तैयारी'।"
तरंग–संज्ञा स्त्री० १ पानी की लहर। हिलोर। मौज। २. संगीत में स्वरों का चढ़ाव-उतार। स्वरलहरी। ३. चित्त की उमंग। मन की मौज।
तरंगक–संज्ञा पुं० हिलोर।
तरंगवती–संज्ञा स्त्री० नदी।
तरंगायित–वि० जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। तरंगों की तरह का। लहरियादार। लहरदार।
तरंगिणी–संज्ञा स्त्री० नदी।
वि० स्त्री० तरंगवाली।

तरंगित–वि० लहराता हुआ। नीचे-ऊपर उठता हुआ।
तरंगी–वि० [स्त्री० तरंगिणी] १. तरंग-युक्त। जिसमें लहर हो। २. मनमौजी।
तर–वि० [फा०] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। २. शीतल। ठंढा। ३. हरा। ४. मालदार। †क्रि० वि० तले। नीचे। एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुण में) सूचित करता है। जैसे—अधिकतर, श्रेष्ठतर। विशेष। बहुत। संज्ञा पुं० १. पार करने की क्रिया। २. अग्नि। ३. वृक्ष। ४. पथ। ५. गति। ६. नाव की उतराई।
तरई†–संज्ञा स्त्री० नक्षत्र।
तरक–संज्ञा स्त्री० दे० "तड़क"। वह शब्द जो पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरंभ का शब्द सूचित करने के लिए लिखा जाता है।
संज्ञा पुं० १. सोच-विचार। तर्क। २. सुंदर उक्ति।
तरक करना–क्रि० अ० अलग करना।
तरकना†*–क्रि० अ० दे० १. "तड़कना"। २. तर्क करना। सोच-विचार करना। ३. उछलना। कूदना। झपटना।
तरकश, तरकस–संज्ञा पुं० [फा०] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।
तरकशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] छोटा तरकस। तूणीर।
तरका–संज्ञा पुं० [अ०] वह जायदाद जो किसी मृत व्यक्ति के वारिस को मिले।
तरकारी–संज्ञा स्त्री० १. भाजी। सब्जी। २. खाने के लिए पकाया हुआ फल-फूल, पत्ता आदि। शाक।
तरकी–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक गहना।
तरकीब–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल। २. बनावट। रचना। ३. युक्ति। उपाय। ढंग।
तरकुल–संज्ञा पुं० ताड़ का पेड़।
तरकुली–संज्ञा स्त्री० दे० "तरकी"।
तरक्की–संज्ञा स्त्री० [अ०] वृद्धि। उन्नति।
तरखा†–संज्ञा पुं० जल का तेज बहाव।
तरखान–संज्ञा पुं० बढ़ई।
तरछट–संज्ञा स्त्री० तलछट। गाद। तरल वस्तु का नीचे जमा मैल।
तरछाना*†–क्रि० अ० तिरछी आँख से इशारा करना। इंगित करना।
तरजना–क्रि० अ० १. ताड़न करना। डाँटना। डपटना। २. भला-बुरा कहना। बिगड़ना।
तरजनी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "तर्जनी"। २. भय। डर।
तरजीला–वि० क्रोधपूर्ण। उग्र। प्रचंड।
तरजीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अच्छा समझना।
तरजुई†–संज्ञा स्त्री० छोटी तराजू।
तरजुमा–संज्ञा पुं० [अ०] अनुवाद। भाषांतर। उल्था।
तरण–संज्ञा पुं० १. तरना। तैरना। पार करना। २. बेड़ा। ३. उद्धार। ४. स्वर्ग।
तरणि–संज्ञा पुं० १. नदी आदि पार करना। २. निस्तार। उद्धार। ३. सूर्य। ४. मदार का वृक्ष। ५. किरण।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरणी"। नौका।
तरणिजा–संज्ञा स्त्री० १. सूर्य की कन्या, यमुना। २. एक वर्ण-वृत्त।
तरणितनूजा–संज्ञा स्त्री० सूर्य की पुत्री, यमुना।
तरणिरत्न–संज्ञा पुं० मणि। सूर्यकान्त मणि।
तरणिसुत–संज्ञा पुं० १. सूर्य का पुत्र। २. यम। ३. शनि। ४. कर्ण।
तरणी–संज्ञा स्त्री० नौका। नाव।
तरतराना*–क्रि० अ० तड़-तड़ शब्द करना। तड़तड़ाना।
तरतीब–संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं का अपने ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।
तरदीद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रद्द करने की क्रिया। मंसूखी। २. खंडन। प्रत्युत्तर।
तरद्दुद–संज्ञा पुं० [अ०] सोच। अंदेशा। चिंता। परेशानी।
तरन*–संज्ञा पुं० दे० "तरण"।
संज्ञा पुं० दे० "तरौना"।

तरनतार–संज्ञा पुं० निस्तार। मोक्ष। मुक्ति।
तरनतारन–संज्ञा पुं० १. उद्धार। मोक्ष। २. भवसागर से पार करनेवाला।
तरना–क्रि० स० पार करना।
क्रि० अ० १. मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना। २. दे० "तलना"।
तरनि–संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।
तरनी–संज्ञा स्त्री० नाव। नौका।
तरपत–संज्ञा पुं० सुविधा। आराम।
तरपन–संज्ञा पुं० १. दे० "तर्पण"। २. तृप्ति। मन की प्रसन्नता।
तरपना–क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
तरपर–क्रि० वि० १. नीचे-ऊपर। २. एक के पीछे दूसरा।
तरफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ओर। दिशा। २. अलंग। ३. किनारा। पार्श्व। बगल। ४. पक्ष।
तरफ़दार–वि० [संज्ञा तरफदारी] पक्षपाती। हिमायती। समर्थक।
तरफराना–क्रि० अ० दे० "तड़फड़ाना"।
तर-बतर–वि० [फा०] भींगा हुआ। सराबोर।
तरबूज़–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बेल और उसका बड़ा गोल फल। हिनवाना।
तरमीम–संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन।
तरराना†–क्रि० अ० ऐंठना। मरोड़ना।
तरल–वि० १. जो ठोस न हो। चंचल। २. क्षणभंगुर। ३. बहनेवाला। द्रव। ४. चमकीला। ५. अस्थिर। ६. तीक्ष्ण।
संज्ञा पुं० १. हार। २. हीरा। ३. लोहा। ४. तल। ५. घोड़ा।
तरलता–संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. द्रवत्व।
तरलनयन–संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त।
तरला–संज्ञा स्त्री० १. जौ का माँड़। २. मदिरा। ३. शहद की मक्खी।
संज्ञा पुं० छाजन का बाँस।
तरलाई*–संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। चपलता। २. द्रवत्व।
तरवन–संज्ञा पुं० १. कान में पहनने का एक गहना। २. कर्णफूल।
तरवर–संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।
तरवरिया*–वि० तलवार चलानेवाला।
तरवा–संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।
तरवाना–क्रि० अ० बैलों का लँगड़ाना। क्रि० स० तारने की प्रेरणा करना।
तरवार†–संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"। संज्ञा पुं० दे० "तरवर"।
तरस्–संज्ञा पुं० १. वेग। बल। २. वानर। ३. रोग। तट।
तरस–संज्ञा पुं० दया। रहम।
मुहा०––(किसी पर) तरस खाना=दया करना। रहम करना।
तरसना–क्रि० अ० १. बहुत चाहना। किसी वस्तु को न पाकर बेचैन रहना। दिखाने की इच्छा रहते हुए भी दया न दिखा सकना।
तरसाना–क्रि० स० १. कोई वस्तु न देकर उसके लिए बेचैन करना। २. व्यर्थ ललचाना। ३. आशा उत्पन्न करके उसे पूरी न करना।
तरसौंहा*–वि० तरसनेवाला।
तरह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भाँति। किस्म। २. ढाँचा। डौल। बनावट। रूप-रंग। ३. तर्ज़। प्रणाली। रीति। ४. युक्ति। उपाय। ५. हाल। दशा। अवस्था।
मुहा०––तरह देना=खयाल न करना। बचा जाना। जाने देना।
तरहदार–वि० [फा०] [संज्ञा तरहदारी] १. सुंदर बनावट का। २. शौकीन।
तरहर†–क्रि० वि० तले। नीचे।
वि० १. नीचे का। २. निकृष्ट। बुरा।
तरहुँड़*–क्रि० वि० दे० "तरहर"।
तरहेल†–वि० १. अधीन। २. वश में आया हुआ। पराजित।
तराई–संज्ञा स्त्री० १. पहाड़ या नदी आदि के पास की तरी या सीड़वाली भूमि। पहाड़ के नीचे का मैदान। २. पहाड़ की घाटी। ३. मूँज। ४. तारा।
तराज़ू–संज्ञा पुं० [फा०] तौलने का यंत्र। तुला।
तराना–संज्ञा पुं० [फा०] चलता गाना। बढ़िया गीत।
क्रि० स० पार कराना। उद्धार करना। बचाना।

तराप*†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बंदूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द।
तरापा†–संज्ञा पुं० हाहाकार। कुहराम। त्राहि-त्राहि।
तराबोर–वि० खूब भींगा हुआ। सराबोर।
तरामीरा–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।
तरारा–संज्ञा पुं० १. उछाल। छलाँग। कुलाँच। २. पानी की लगातार गिरने वाली धारा।
तरावट–संज्ञा स्त्री० १. ठंडक। शीतलता। २. शरीर की गरमी शांत करनेवाला आहार आदि। ३. स्निग्ध भोजन। शीतल पदार्थ। ४. ताजापन।
तराश–संज्ञा स्त्री० [फा०] काट। काट-छाँट। बनावट। रचना-प्रकार। ढंग।
तराश-खराश–संज्ञा स्त्री० [फा०] काट-छाँट।
तराशना–क्रि० स० [फा०] काटना। कतरना।
तरि–संज्ञा स्त्री० नौका। कपड़े का छोर। किनारा।
तरिक–संज्ञा पुं० १. बेड़ा। २. उतराई लेने वाला। केवट।
तरिका†–संज्ञा पुं० १. नाव। २. कान का एक गहना। तरकी। तरौना।
तरिता*–संज्ञा स्त्री० १. बिजली। २. भाँग। गाँजा। ३.तर्जनी उँगली।
तरियाना†–क्रि० स० १. तह में बैठा देना। २. ढाँकना। छिपाना। लेवा लगाना। क्रि० अ० तले बैठ जाना। तह में जमना।
तरिवन–संज्ञा पुं० १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।
तरिवर*–संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।
तरिहँत†–क्रि० वि० नीचे। तले।
तरी–संज्ञा स्त्री० १. नाव। नौका। २. गीलापन। आर्द्रता। ठंडक। शीतलता। ३. वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा रहता हो। कछार। तराई। तरहटी। ४. कान का एक गहना। तरिवन। कर्णफूल। ५. धुआँ। ६. दामन। ७. जूते का तला।
तरीक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. ढंग। विधि। रीति। २. चाल। व्यवहार। ३. उपाय।
तरीब–संज्ञा पुं० १. नौका। २. बेड़ा। स्वर्ग। ३. समुद्र। ४. व्यवसाय। ५. सूखा गोबर।
तरु–संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।
तरुआ–संज्ञा पुं० भुजिया चावल। तलवा।
तरुण–वि० १. युवा। जवान। २. नया। संज्ञा पुं० १. बड़ा जीरा। २. मोतिया। ३. रेंड।
तरुणज्वर–संज्ञा पुं० सात दिन के भीतर का ज्वर। नवीन ज्वर।
तरुणसूर्य्य–संज्ञा पुं० मध्याह्न का सूर्य।
तरुणाई*–संज्ञा स्त्री० यौवन। युवावस्था। जवानी।
तरुणाना*–क्रि० अ० युवावस्था में प्रवेश करना। जवानी पर आना।
तरुणी–संज्ञा स्त्री० १. युवती। जवान स्त्री। नवयौवना। २. मोतिया। ३. मेघराग की एक रागिनी। ४. दंती नामक वृक्ष-विशेष। ५. पुष्प-विशेष। ६. सेवती का फूल। ७. चीड़ा नामक गंध द्रव्य। ८. जमाल-गोटा।
तरुन*†–संज्ञा पुं० दे० "तरुण"।
तरुनई, तरुनाई*–संज्ञा स्त्री० तरुणावस्था।
तरुनापा*–संज्ञा पुं० दे० "तरुनाई"।
तरुनाँही*–संज्ञा स्त्री० पेड़ की शाखा। डाल।
तरुराग–संज्ञा पुं० नया कोमल पत्ता। किस-लय।
तरुराज–संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष। पेड़ों का राजा।
तरेंदा–संज्ञा पुं० बेड़ा।
तरे†–क्रि० वि० नीचे। तले।
तरेटी–संज्ञा स्त्री० तराई।
तरेरना–क्रि० स० क्रोधपूर्वक देखना। त्योरी चढ़ाना। आँख दिखाना।
तरैया‡–संज्ञा स्त्री० तारा। नक्षत्र। वि० तरनेवाला। तारनेवाला।
तरोंचा–संज्ञा पुं० जुए के नीचे की लकड़ी।
तरोंडा–संज्ञा पुं० हलवाहे आदि मजदूरों को देने के लिए अलग निकाला हुआ अनाज।
तरोई–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तरोवर*–संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"। पेड़।
तरौंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "तलछट"।

तरौंछी—संज्ञा स्त्री० जुलाहे के हत्थे के नीचे की लकड़ी।
तरौंस*—संज्ञा पुं० तट। तीर। किनारा।
तरौना—संज्ञा पुं० १. कान में पहनने का एक गहना। तरकी। २. कर्णफूल।
तर्क—संज्ञा पुं० १. युक्ति। विवाद। विवेचना। दलील। बहस। चमत्कार-पूर्ण उक्ति। २. व्यंग्य। ३. ताना। त्याग। छोड़ना।
तर्कक—संज्ञा पुं० १. याचक। २. तर्क करनेवाला।
तर्कण—संज्ञा पुं० बहस करने का कार्य।
तर्कणा—संज्ञा स्त्री० विचार। युक्ति। दलील।
तर्कना*†—क्रि० अ० तर्क करना।
तर्क-वितर्क—संज्ञा पुं० १. सोच-विचार। विचार-विमर्श। २. वाद-विवाद। बहस।
तर्कश—संज्ञा पुं० तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।
तर्कशास्त्र—संज्ञा पुं० १. सिद्धान्तों के खंडन-मंडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २. न्यायशास्त्र।
तर्काभास—संज्ञा पुं० त्रुटिपूर्ण तर्क। ऐसा तर्क जो ठीक न हो। कुतर्क।
तर्की—संज्ञा पुं० [स्त्री० तर्किनी] १. तर्क करनेवाला। विवेचक। २. न्यायशास्त्र-वेत्ता।
तर्कु—संज्ञा पुं० तकला। टेकुआ।
तर्कुटी—संज्ञा स्त्री० सूत बनाने का यंत्र। टेकुआ। तकला।
तर्कुल—संज्ञा पुं० ताड़ का पेड़।
तर्क्य—वि० जिस पर सोच-विचार करना आवश्यक हो। चिंत्य।
तर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रकार। किस्म। तरह। २. रीति। शैली। ढंग। तरीका। ३. बनावट।
तर्जन—संज्ञा पुं० [वि० तर्जित] १. धमकाने का कार्य्य। भय-प्रदर्शन। २. क्रोध। ३. फटकार। डाँट-डपट।
यौ०—तर्जन-गर्जन=क्रोध-प्रदर्शन।
तर्जुमा—संज्ञा पुं० [अ०] भाषांतर। उल्था। अनुवाद।
तर्णक—संज्ञा पुं० १. शिशु। २. तुरन्त का पैदा हुआ बछड़ा।
तर्तरीक—संज्ञा पुं० नाव।
वि० पार जानेवाला।
तर्पण—संज्ञा पुं० [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १. तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया। २. कर्मकांड की एक क्रिया जिसमें पितरों को तुष्ट करने के लिए हाथ या अरघे से पानी देते हैं।
तर्पित—वि० संतुष्ट किया हुआ।
तर्पी—वि० तर्पण करनेवाला। संतुष्ट करनेवाला।
तरयौना*†—संज्ञा पुं० दे० "तरौना"।
तर्षण—संज्ञा स्त्री० तृषा। प्यास। तृष्णा। अभिलाषा। इच्छा।
तल—संज्ञा पुं० १. नीचे का भाग। पेंदा। जल के नीचे की भूमि। वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। २. पैर का तलवा। ३. हथेली। ४. सतह। छत। पाटन। ५. पाताल-विशेष। ६. नरक-विशेष। ७. स्वभाव। ८. जंगल। ९. गढ़ा। १०. ताड़ का पेड़। ११. आधार। १२. महादेव। १३. मुठिया। कलाई।
तलक‡—अव्य० तक। पर्य्यंत।
संज्ञा पुं० ताल।
तलकर—संज्ञा पुं० वह कर या लगान जो जमींदार ताल की वस्तुओं पर लगाता है।
तलगृह—संज्ञा पुं० तहखाना।
तलघर—संज्ञा पुं० जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। भुइँधरा। तहखाना।
तलछट—संज्ञा स्त्री० तरल पदार्थ के नीचे बैठा हुआ मैल। तलौंछ। गाद।
तलना—क्रि० स० कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।
तलप*—संज्ञा पुं० दे० "तल्प"।
तलपट—वि० बरबाद। चौपट।
तलफ़—वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।
तलफना—क्रि० अ० दे० "तड़पना"। छटपटाना। बेचैन होना।
तलफ़ी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] हानि। बरबादी।
तलब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खोज। तलाश। २. चाह। ३. आवश्यकता। ४. बुलावा। बुलाहट। ५. तनखाह। वेतन।

तलबगार–वि० [फा०] चाहनेवाला।

तलबाना–संज्ञा पुं० [फा०] वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जाता है।

तलबी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुलाहट। २. माँग।

तलबेली–संज्ञा स्त्री० घोर उत्कंठा। आतुरता। बेचैनी।

तलमलाना†–क्रि० अ० दे० "तिलमलाना"।

तलवकार–संज्ञा पुं० १. सामवेद की एक शाखा। २. एक उपनिषद्।

तलवा–संज्ञा पुं० पैर के नीचे की ओर का भाग। पादतल।

मुहा०—तलवे चाटना=बहुत खुशामद करना। तलवे छलनी होना=चलते-चलते शिथिल हो जाना। तलवे धो-धोकर पीना=अत्यंत सेवा-शुश्रूषा करना। तलवों से आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना।

तलवार–संज्ञा स्त्री० लोहे का एक लम्बा धारदार हथियार। असि। कृपाण। खड्ग।

मुहा०–तलवार का खेत=लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। तलवार का पानी=तलवार की आभा या दमक। तलवारों की छाँह में=ऐसे स्थान में जहाँ अपने ऊपर चारों ओर तलवार ही तलवार दिखाई देती हों। रणक्षेत्र में। तलवार खींचना=आघात करने के लिए म्यान से तलवार बाहर करना। तलवार सौंतना=वार करने के लिए तलवार खींचना।

तलहटी–संज्ञा स्त्री० पहाड़ के नीचे की भूमि। तराई।

तला–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के नीचे की सतह। पेंदा। २. जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाक़–संज्ञा पुं० [अ०] पति-पत्नी का विधिपूर्वक संबंध-त्याग। विवाह-विच्छेद।

तलातल–संज्ञा पुं० सात पातालों में से एक।

तलाव†–संज्ञा पुं० ताल। तालाब।

तलाश–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. खोज। ढूँढ-ढाँढ़। २. आवश्यकता। चाह।

तलाशना‡–क्रि० स० [फा०] ढूँढ़ना। खोजना।

तलाशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] खोज। छिपाई हुई वस्तु के लिए खोज।

मुहा०—तलाशी लेना=संदिग्ध मनुष्य के घर आदि की जाँच करना।

तलिन–वि० १. विरला। २. थोड़ा। ३. शुद्ध। ४. दुबला।

संज्ञा स्त्री० सेज। पलँग।

तली–संज्ञा स्त्री० १. नीचे की सतह। पेंदी। २. तलछट। † ३. हथेली या तलवा।

तले–क्रि० वि० नीचे।

मुहा०–तले-ऊपर=१. एक के ऊपर दूसरा। २. उलट-पलट किया हुआ।

तलेटी–संज्ञा स्त्री० १. पेंदी। २. पहाड़ के नीचे की भूमि। तलहटी।

तलैया–संज्ञा स्त्री० छोटा ताल।

तलौंछ–संज्ञा स्त्री० नीचे जमा हुआ मैल आदि। तलछट।

तल्ख–वि० कड़ुआ। कटु।

तल्प–संज्ञा पुं० १. शय्या। पलँग। सेज। २. अट्टालिका। अटारी।

तल्ला–संज्ञा पुं० १. तले की परत। अस्तर। २. ठिग। पास। सामीप्य।

तल्लिका–संज्ञा स्त्री० ताली। कुंजी।

तल्ली–संज्ञा स्त्री० १ तला। तलछट। २ युवती। ३. नौका।

तल्लीन–वि० किसी विषय में लीन। निमग्न। तन्मय।

तल्लीनता–संज्ञा स्त्री० तन्मयता। किसी विषय में लीन होना। एकाग्रता।

तव–सर्व० तुम्हारा।

तवज्जह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ध्यान। ख्याल। २. कृपादृष्टि।

तवना–क्रि० अ० १. तपना। गरम होना। २. ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३. गुस्से से लाल होना। कुढ़ना।

तवा–संज्ञा पुं० १. लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सेंकते हैं। २. मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं।

मुहा०–तवे की बूँद=१. क्षणस्थायी। देर

तक न टिकनेवाला। २. जिससे कुछ भी तृप्ति न हो।

तवाजा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आदर। मान। आव-भगत। २. मेहमानदारी। दावत।

तवाना–वि० [फा०] बली। हृष्ट-पुष्ट।
क्रि० स० १. गरम कराना। २. ढक्कन चिपकाकर बरतन का मुँह बन्द करना।

तवायफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] रंडी। वेश्या।

तवारा–संज्ञा पुं० जलन। दाह। ताप।

तवारीख़–संज्ञा स्त्री० [अ०] इतिहास।

तवालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] झंझट। बखेड़ा।

तविष–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. स्वर्ग। ३. व्यवसाय। ४. शक्ति।
वि० १. बलवान्। २. महत्।

तवेला–संज्ञा पुं० अश्वशाला। घुड़साल। अस्तबल।

तशख़ीस–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहचान। निश्चय। २. मर्ज की पहचान। रोग का निदान।

तशरीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] बुजुर्गी। इज्जत। महत्त्व। बड़प्पन।
मुहा०–तशरीफ रखना=विराजना। बैठना। तशरीफ लाना–पदार्पण करना। आना (आदरसूचक)।

तश्त–संज्ञा पुं० [फा०] परात। बड़ा थाल।

तश्तरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] थाली के आकार का छोटा बरतन। रिकाबी।

तष्ट–वि० कटा हुआ। छीला हुआ। पीटा हुआ।

तष्टा–संज्ञा पुं० १. गढ़नेवाला। २. विश्वकर्मा। ३. ताँबे की छोटी तश्तरी।

तस–वि०, क्रि० वि० तैसा। वैसा।

तसकीन–संज्ञा स्त्री० [अ०] तसल्ली। ढाढ़स। दिलासा।

तसदीक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रमाणों के द्वारा पुष्टि। समर्थन। साक्ष्य। गवाही।

तसदीह*†–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सिर का दर्द। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ।

तसद्दुक़–संज्ञा पुं० [अ०] कुरबानी। निछावर।

तसनीफ़–संज्ञा स्त्री० ग्रंथ आदि की रचना। रचित ग्रंथ।

तसबीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] सुमिरनी। माला।

तसमा–संज्ञा पुं० [फा०] चमड़े का चौड़ा फीता।

तसर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रेशम। २. जुलाहों की ढरकी।

तसला–संज्ञा पुं० [स्त्री० तसली] कटोरे के आकार का बड़ा बरतन।

तसलीम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सलाम। प्रणाम। २. किसी बात की स्वीकृति।

तसल्ली–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सांत्वना। आश्वासन। ढाढ़स। २. धैर्य।

तसवीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] चित्र।
वि० चित्र-सा सुंदर। मनोहर।

तसू–संज्ञा पुं० माप-विशेष जो १⅛ इंच के लगभग होता है।

तस्कर–संज्ञा पुं० १. चोर। २. श्रवण। कान। ३. गंध द्रव्य-विशेष।

तस्करता–संज्ञा स्त्री० चोरी।

तस्करी–संज्ञा स्त्री० १. चोरी। २. चोर की स्त्री। चोर स्त्री।

तस्सू–संज्ञा पुं० दे० "तसू"।

तस्फिया, तसफिया–संज्ञा पुं० झगड़े का निपटारा। फैसला। निर्णय।

तहँ, तहँवा‡–क्रि० वि० दे० "तहाँ"।

तह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. परत। २. किसी वस्तु के नीचे का विस्तार। तल। पेंदा। ३. पानी के नीचे की जमीन। तल। थाह। ४. वरक। झिल्ली।
मुहा०–तह करना या लगाना=किसी फैली हुई वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़कर समेटना। तह तोड़ना=१. झगड़ों को निबटाना। २. कुएँ का सब पानी निकाल देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे। (किसी चीज की) तह देना=१. हलकी परत चढ़ाना। २. हलका रंग चढ़ाना। तह की बात=छिपी हुई बात। गुप्त रहस्य। (किसी बात की) तह तक पहुँचना=यथार्थ रहस्य जान लेना। असली बात समझ जाना।

तहक़ीक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "तहक़ीक़ात"।

तहक़ीक़ात–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी घटना की जाँच। अनुसंधान। जाँच।

तहख़ाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। भुइँधरा। तलगृह।

तहज़ीब–संज्ञा स्त्री० [अ०] सभ्यता। शिष्टाचार।

तहदरज़–वि० [फ़ा०] जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।

तहबाज़ारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बाजार या सट्टी में सौदा बेचनेवालों से लिया जाने वाला कर।

तहमत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कमर में लपेटा हुआ कपड़ा या अँगोछा। लुंगी।

तहरी–संज्ञा स्त्री० मटर की खिचड़ी।

तहरीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखावट। लेख। २. लेखन-शैली। ३. लिखी हुई बात। ४. लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५. लिखाई। लिखने की मजदूरी। ६. गेरू की कच्ची छपाई।

तहरीरी–वि० [फ़ा०] लिखा हुआ। लिखित।

तहलका–संज्ञा पुं० [अ०] १. बरबादी। नाश। २. खलबली। हलचल। ३. मौत। मृत्यु।

तहवील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुपुर्दगी। २. अमानत। ३. खजाना। जमा।

तहवीलदार–संज्ञा पुं० कोषाध्यक्ष। खजानची।

तहस-नहस–वि० बरबाद। नष्ट-भ्रष्ट।

तहसील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वसूली। उगाही। लगान-वसूली की आमदनी। २. लगान-वसूली या शासन-प्रबन्ध के लिए निर्धारित क्षेत्र। जिले का एक भाग। ३. तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी। मालगुजारी जमा करने का सरकारी कार्यालय।

तहसीलदार–संज्ञा पुं० [अ०] १. कर वसूल करनेवाला। २. वह अफसर जो जमींदारों से सरकारी मालगुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमों का फैसला करता है।

तहसीलदारी–संज्ञा स्त्री० १. तहसीलदार का पद। २. मालगुजारी वसूल करने का काम।

तहसीलना–क्रि० स० उगाहना। वसूल करना (कर, लगान, चंदा आदि)।

तहाँ–क्रि० वि० उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

तहाना–क्रि० स० तह करना। लपेटना। चौपरत करना।

तहियाँ†–क्रि० वि० तब। उस समय। उस दिन।

तहियाना†–क्रि० स० दे० "तहाना"।

तहीं†–क्रि० वि० उसी जगह। उसी स्थान पर। वहीं।

ता–प्रत्य० एक भाववाचक प्रत्यय।
अव्य० तक। पर्य्यंत।
सर्व०, वि० उस।

ताँई–क्रि० वि० दे० "ताईं"।

ताँगा–संज्ञा पुं० दे० "टाँगा"। एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

तांडव–संज्ञा पुं० १. शिव का नृत्य। २. पुरुषों का नृत्य। (पुरुषों के नृत्य को तांडव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं।) ३. उद्धत नृत्य।

ताँत–संज्ञा स्त्री० १. चमड़े की रस्सी। २. धनुष की डोरी। ३. डोरी। सूत। ४. सारंगी आदि का तार।

ताँता–संज्ञा पुं० श्रेणी। पंक्ति। कतार।

ताँति†–संज्ञा स्त्री० दे० "ताँत"।

ताँती–संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार। २. बाल-बच्चे। सन्तान।
संज्ञा पुं० जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

तांत्रिक–वि० [स्त्री० तांत्रिकी] तंत्र-संबंधी।
संज्ञा पुं० तंत्रशास्त्र का जाननेवाला। यंत्र-मंत्र आदि करनेवाला।

ताँबा–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध धातु। ताम्र।

ताँबिया–संज्ञा स्त्री० दे० "ताँबी"।

ताँबी–संज्ञा स्त्री० १. चौड़े मुँह का ताँबे का एक छोटा बरतन। २. ताँबे की करछी।

तांबूल–संज्ञा पुं० १. पान या उसका बीड़ा। २. *सुपारी।

ताम्बूलवाहक–संज्ञा पुं० पान खिलानेवाला सेवक।

ताम्बूलिक–संज्ञा पुं० तमोली।

तांबेल–संज्ञा पुं० कछुवा।

ताँबर—संज्ञा स्त्री० ज्वर।

ताँसना†—क्रि० स० १. डाँटना। धमकाना। आँख दिखाना। २. दुखी करना। सताना।

ताईं—अव्य० १. तक। पर्य्यंत। २. पास। समीप। निकट। ३. (किसी के) प्रति। समक्ष। ४. लिए। वास्ते। निमित्त।
वि० दे० "तई"। ताईं।

ताई—संज्ञा स्त्री० १. बाप के बड़े भाई की स्त्री। बड़ी चाची। २. एक प्रकार की छिछली कड़ाही।

ताईत—संज्ञा पुं० तावीज।

ताईद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पक्षपात। तरफदारी। २. अनुमोदन। समर्थन।

ताउ‡—संज्ञा पुं० दे० "ताव"।

ताऊ—संज्ञा पुं० बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।
मुहा०—बछिया के ताऊ=मूर्ख।

ताऊन—संज्ञा पुं० [अ०] प्लेग।

ताऊस—संज्ञा पुं० [अ०] १. मोर। मयूर। २. सारंगी से मिलता-जुलता एक बाजा।
यौ०—तख्त ताऊस=शाहजहाँ का बहुमूल्य रत्नजटित राजसिंहासन, जो मोर के आकार का था।

ताक—संज्ञा स्त्री० १. ताकने की क्रिया। दृष्टि। अवलोकन। २. टकटकी। ३. किसी अवसर की प्रतीक्षा। मौका देखते रहना। घात। ४. खोज। तलाश।
मुहा०—ताक में रहना=मौका देखते रहना। ताक रखना या लगाना=घात में रहना।

ताक़—संज्ञा पुं० [अ०] चीज रखने के लिए दीवार में बना हुआ खाली स्थान। आला। ताखा।
वि० १. ऐसी संख्या जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागों में न बँट सके। विषम। जैसे—तीन, पाँच। २. जिसके जोड़ का दूसरा न हो। अद्वितीय। अनुपम।
मुहा०—ताक पर धरना या रखना=पड़ा रहने देना। काम में न लाना।

ताक-झाँक—संज्ञा स्त्री० १. छिपकर देखने की क्रिया। २. खोज। देखभाल।

ताक़त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जोर। बल। शक्ति। २. सामर्थ्य।

ताक़तवर—वि० [फा०] १. बलवान्। बलिष्ठ। २. शक्तिमान्।

ताकना—क्रि० स० १. सोचना। विचारना। २. देखना। झाँकना। टकटकी लगाना। घूरना। ३. ताड़ना। समझ जाना। ४. पहले से देख रखना। तजवीज करना। ५. रखवाली करना।

ताकि†—अव्य० जिसमें। इसलिए कि। जिससे।
क्रि० स० देखकर। लखकर।

ताकीद—संज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञा या अनुरोध के रूप में कही गई बात। खूब चेताकर कही हुई बात।

ताख—संज्ञा पुं० आला। ताखा।

ताखा—संज्ञा पुं० चीज रखने के लिए दीवार में बना हुआ खाली स्थान। ताख। ताक।

तागड़ी—संज्ञा स्त्री० १. कमर में पहनने का एक गहना। करधनी। किंकिणी। २. कमर में पहनने का रंगीन डोरा। कटिसूत्र।

तागना—क्रि० स० दूर-दूर पर मोटी सिलाई करना।

ताग-पाट—संज्ञा पुं० एक प्रकार का गहना जो विवाह में काम आता है।

तागा—संज्ञा पुं० १. डोरा। धागा। २. प्रति मनुष्य के हिसाब से लगनेवाला कर या महसूल।

ताज—संज्ञा पुं० [अ०] १. राजमुकुट। २. कलगी। ३. दीवार की कँगनी या छज्जा। ४. मकान के सिरे पर शोभा के लिए बनाई गई बुर्जी। ५. गंजीफे के एक रंग का नाम। ६. आगरे का ताजमहल।

ताजक—संज्ञा पुं० १. एक ईरानी जाति। २. ज्योतिष का ग्रंथ-विशेष।

ताज़गी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ताजापन। हरापन। २. प्रफुल्लता। स्वस्थता। ३. नयापन।

ताजदार—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाह।

ताजन—संज्ञा पुं० [फा०] कोड़ा। चाबुक।

ताजपोशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] राजमुकुट

धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

ताजमहल—संज्ञा पुं० [अ०] प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की स्मृति में आगरे में बनवाया था।

ताज़ा—वि० [फा०] [स्त्री० ताजी] १. नया। नवीन। हरा-भरा। टटका। २. (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३. स्वस्थ। प्रफुल्लित। ४. तुरंत का बना।

यौ०—मोटा-ताजा=हृष्ट-पुष्ट।

ताज़िया—संज्ञा पुं० [अ०] मकबरे के आकार का मंडप जो बाँस की कमचियों पर रंगीन कागज आदि से बनाया जाता है। इसमें इमाम हुसेन की कब्र होती है। मुहर्रम में शीया मुसलमान इसकी आराधना कर इसे दफन करते हैं।

ताजी—वि० [फा०] अरब का।

संज्ञा पुं० १. अरब का घोड़ा। २. शिकारी कुत्ता।

ताज़ीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] बड़ों के सामने आदर के लिए उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। सम्मान प्रदर्शन। आदर। अदब।

ताज़ीमी—संज्ञा पुं० प्रतिष्ठित। आदरणीय।

ताजीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] दंड।

वि० ताजीरी।

ताजीरात—संज्ञा पुं० [अ०] दंड-सम्बन्धी कानूनों का संग्रह।

ताजीरात हिन्द—संज्ञा पुं० भारतीय दण्ड-विधान। इसी कानून से भारत में दंड की व्यवस्था होती है।

ताजीरी—वि० दंड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ। जैसे ताजीरी पुलिस।

ताटंक—संज्ञा पुं० १. कान में पहनने का एक गहना। कर्णफूल। तरकी। २. एक प्रकार का छप्पय। ३. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अंत में मगण होता है।

ताटस्थ्य—संज्ञा पुं० १. उदासीनता। २. सन्निकट। सामीप्य।

ताडंक—संज्ञा पुं० कान की तरकी। कर्णफूल।

ताड़—संज्ञा पुं० १. शाखा-रहित एक ऊँचा पेड़। २. ताड़न। प्रहार। ३. शब्द। ध्वनि। ४. अनाज के डंठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी में आ जाय। जुट्टी। ५. हाथ का एक गहना। ६. जान-पहचान। परिचय। ७. समझ। बोध।

ताड़का—संज्ञा स्त्री० एक राक्षसी जिसे श्री रामचंद्र ने मारा था।

ताड़न—संज्ञा पुं० १. मार। प्रहार। आघात। २. डाँट-डपट। घुड़की। ३. शासन। दंड।

ताड़ना—संज्ञा स्त्री० १. प्रहार। मार। २. डाँट-डपट। शासन। दंड। धमकी। ३. उत्पीड़न। कष्ट।

क्रि० स० १. मारना। पीटना। २. डाँटना-डपटना। ३. किसी ऐसी बात को जान लेना, जो छिपाई गई हो। लक्षण से समझ लेना। भाँपना। ४. मार-पीटकर भगाना। हटा देना।

ताड़नीय—वि० ताड़ने योग्य। मारने योग्य। दंड देने योग्य।

ताड़पत्र—संज्ञा पुं० ताड़-वृक्ष का पत्ता।

ताड़ित—वि० १. जिस पर मार पड़ी हो। मार खाया हुआ। २. जो डाँटा गया हो। ३. दंडित। ४. मारकर भगाया हुआ।

ताड़ी—संज्ञा स्त्री० ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मद्य के रूप में होता है।

तात—संज्ञा पुं० १. पिता। २. पूज्य व्यक्ति। गुरु। ३. प्यार का एक शब्द या संबोधन।

†वि० तपा हुआ। गरम। उष्ण।

तातन—संज्ञा पुं० खंजन।

तातल—संज्ञा १. पुं० रोग। २. लोहे का काँटा। ३. पिता के तुल्य सम्बन्धी।

वि० गरम।

ताता†—वि० [स्त्री० ताती] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

ताताथेई—संज्ञा स्त्री० नाचने में ताल देने का शब्द।

ततार—संज्ञा पुं० [फा०] मध्य एशिया का एक देश जो हिन्दुस्तान और फारस के उत्तर में कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर प्रांत तक है।

तातारी—वि० [फा०] तातार देश-संबंधी। तातार देश का।

संज्ञा पुं० तातार देश का निवासी।

तातील—संज्ञा स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक—वि० तत्काल या तुरंत का।

तात्पर्य्य—संज्ञा पुं० अर्थ। आशय। मतलब। अभिप्राय।

तात्त्विक—वि० १. तत्त्व-संबंधी। २. तत्त्व-ज्ञान-युक्त। ३. यथार्थ।

ताथेई—संज्ञा स्त्री० दे० "ताताथेई"।

तादात्म्य—संज्ञा पुं० एक वस्तु का मिलकर दूसरी वस्तु के रूप में हो जाना। अभेद सम्बन्ध।

तादाद—संज्ञा स्त्री० [अ०] संख्या। गिनती।

तादृश—वि० [स्त्री० तादृशी] उसके समान। वैसा।

ताधा—संज्ञा स्त्री० दे० "ताताथेई"।

तान—संज्ञा स्त्री० १. तानने का भाव या क्रिया। खींच। फैलाव। विस्तार। २. लय का विस्तार। आलाप। ३. ज्ञान का विषय। **मुहा०**—तान उड़ाना=गीत गाना। किसी पर तान तोड़ना=किसी पर आक्षेप करना।

तानना—क्रि० स० १. फैलाने के लिए खींचना। खींचकर फैलाना। २. परदे की सी वस्तु को ऊपर फैलाकर बाँधना। ३. एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक ले जाकर बाँधना। ४. मारने के लिए हाथ या कोई हथियार उठाना। ५. हानि पहुँचाने के लिए कोई अड़चन डालना। ६. कैदखाने भेजना।

मुहा०—तानकर=बलपूर्वक। जोर से। तानकर सोना=१. आराम से सोना। २. निश्चिन्त रहना।

तानपूरा—संज्ञा पुं० सितार के आकार का एक बाजा। तंबूरा।

तानबान *—संज्ञा पुं० दे० "ताना-बाना"।

तानसेन—संज्ञा पुं० अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा गवैया। यह पहले ब्राह्मण था, पर पीछे मुसलमान हो गया था।

ताना—संज्ञा पुं० १. कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत। २. दरी या कालीन बुनने का करघा। ३. आक्षेप-वाक्य। बोली-ठोली। व्यंग्य।

क्रि० स० १. ताव देना। तपाना। गरम करना। २. पिघलाना। ३. तपाकर परीक्षा करना। (सोना आदि धातु।) ४. जाँचना। आजमाना। गीली मिट्टी आदि से बरतन का मुँह बंद करना। मूँदना।

ताना-बाना—संज्ञा पुं० कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई के बल फैलाए हुए सूत।

ताना रीरी—संज्ञा स्त्री० साधारण गाना। राग। अलाप।

तानाशाह—संज्ञा पुं० [फा०] १. अपने अधिकारों का मनमाना प्रयोग करनेवाला। २. राज्य का प्रधान जिसके अधीन सारी राज्य-व्यवस्था हो।

तानाशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अधिकारों का मनमाना उपयोग। २. वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।

तानी†—संज्ञा स्त्री० कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत।

तानूर—संज्ञा पुं० भँवर।

तान्त्रिक—संज्ञा पुं० तंत्र-विद्या जाननेवाला।

तान्व—संज्ञा पुं० पुत्र।

ताप—संज्ञा पुं० १. उष्णता। गरमी। २. आँच। लपट। ३. ज्वर। बुखार। ४. कष्ट। दुःख। पीड़ा। ताप तीन प्रकार का माना गया है—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ५. मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख।

तापक—संज्ञा पुं० १. ताप उत्पन्न करनेवाला। २. रजोगुण। ३. ज्वर। बुखार।

तापचालक—संज्ञा पुं० वह पदार्थ, जिसमें ताप

एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच सकता हो, जैसे धातु।

तापचालकता–संज्ञा स्त्री० पदार्थों का वह गुण, जिससे गर्मी या ताप उनके एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचता हो।

तापतिल्ली–संज्ञा स्त्री० पिलही बढ़ने का रोग। प्लीहा रोग।

तापती या **ताप्ती**–संज्ञा स्त्री० १. सूर्य की कन्या तापी। २. एक नदी जो सतपुड़ा पहाड़ से निकलती है।

तापत्रय–संज्ञा पुं० तीन प्रकार के ताप। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापन–संज्ञा पुं० १. ताप देनेवाला। २. सूर्य। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. सूर्य्यकांत मणि। ५. मदार। ६. शत्रु को पीड़ा पहुँचाने की एक विधि (तंत्र)।

तापना–क्रि० अ० आग के सामने गरमाना। देह सेंकना।

क्रि० स० १. गरम करने के लिए जलाना। फूँकना। २. नष्ट करना। तपाना। गरम करना।

तापमान यंत्र–संज्ञा पुं० थरमामीटर। गरमी मापने का एक औजार।

तापस–संज्ञा पुं० [स्त्री० तापसी] १. तप करनेवाला। तपस्वी। योगी। २. बगला। दमनक। ३. तेजपत्ता। तमाल।

तापसतरु, तापसद्रुम–संज्ञा पुं० इंगुदी वृक्ष। हिंगोट।

तापसी–संज्ञा स्त्री० १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री।

तापस्वेद–संज्ञा पुं० गर्मी पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना।

तापहीन–वि० जिसमें गर्मी न हो। दुख या पीड़ा-रहित।

तापा–संज्ञा पुं० मुर्गी का दरबा।

तापिच्छ–संज्ञा पुं० श्याम तमाल का पेड़।

तापित–वि० १. जो तपाया गया हो। २. दु:खित। पीड़ित।

तापी–वि० १. ताप देनेवाला। २. जिसमें ताप हो।

संज्ञा पुं० बुद्धदेव।

संज्ञा स्त्री० १. सूर्य्य की एक कन्या। २. ताप्ती नदी। ३. यमुना नदी।

तापीय या **ताप्य**–संज्ञा पुं० औषध-विशेष।

तापूस–संज्ञा पुं० तमालपत्र। तेजपात।

तापेन्द्र–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

ताफ़्ता–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ताप। गरमी। २. चमक। आभा। ३. मजाल। हिम्मत। सामर्थ्य। ४. धैर्य। सहनशक्ति।

ताबड़तोड़–क्रि० वि० [अनु०] लगातार। बराबर।

ताबा–वि० दे० "ताबे"।

ताबूत–संज्ञा पुं० [अ०] लाश रखकर ले जाने का सन्दूक।

ताबे–वि० [अ०] १. वशीभूत। अधीन। मातहत। २. आज्ञाकारी। हुक्म का पाबंद।

ताबेदार–वि० [संज्ञा ताबेदारी] सेवक। नौकर। आज्ञाकारी। हुक्म का पाबंद।

ताबेदारी–संज्ञा स्त्री० नौकरी।

ताम–संज्ञा पुं० १. दोष। विकार। २. व्याकुलता। बेचैनी। ३. दु:ख। क्लेश। ग्लानि। ४. क्रोध। गुस्सा। ५. अंधकार। अँधेरा।

वि० १. भीषण। डरावना। भयंकर। २. व्याकुल। हैरान।

तामजान–संज्ञा पुं० एक प्रकार की छोटी पालकी।

तामड़ा–वि० ताँबे के रंग का। ललाई लिये हुए भूरा।

तामना–क्रि० स० जोतने के पूर्व खेत की घास उखाड़ना।

तामर–संज्ञा पुं० पानी। घी।

तामरस–संज्ञा पुं० १. कमल। २. सोना। ३. ताँबा। ४. धतूरा। ५. एक वर्णवृत्त।

तामलकी–संज्ञा पुं० १. भूमिका। २. आँवला। एक प्रकार का पौधा।

तामलूक या **ताम्रलिप्ति**–संज्ञा पुं० बंगाल का एक प्राचीन बन्दरगाह, जो मेदिनीपुर जिले में है।

तामलेट—संज्ञा पुं० टीन का गिलास या बरतन।

तामस—वि० तमोगुण से युक्त।
संज्ञा पुं० १. सर्प। साँप। २. खल। ३. उल्लू। ४. क्रोध। गुस्सा। ५. अंधकार। अँधेरा। ६. अज्ञान। मोह।

तामसी—वि० स्त्री० तमोगुणवाली।
संज्ञा स्त्री० १. अँधेरी रात। २. महाकाली। ३. एक प्रकार की माया विद्या।

तामिल—संज्ञा स्त्री० १. दक्षिण भारत की एक जाति। २. तामिल लोगों की भाषा। द्राविड़ भाषा।

तामिस्र—संज्ञा पुं० १. क्रोध। २. द्वेष। ३. अविद्या। ४. अन्धकारमय नरक-विशेष।

तामी—संज्ञा स्त्री० द्रव पदार्थों को नापने का एक बरतन।

तामीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] (बहु० तामीरात)। इमारत बनाने का काम। भवन-निर्माण।

तामीरात मंत्री—संज्ञा पुं० निर्माण-मंत्री। राज्य का वह मंत्री जिसके अधीन सरकारी भवनों, सड़कों आदि का निर्माण कार्य हो।

तामीरात विभाग—संज्ञा पुं० निर्माण विभाग। राज्य का वह विभाग या दफ्तर, जिसके अधीन इमारतों, सडकों आदि वस्तुओं के बनने का कार्य हो।

तामील—संज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञा-पालन।

तामेसरी—संज्ञा स्त्री० ताँबे के रंग का एक रंग।

ताम्र—संज्ञा पुं० ताँबा।

ताम्रक—संज्ञा पुं० ताँबा।

ताम्रकर—संज्ञा पुं० कसेरा। ठठेरा। ताँबे का व्यापार करनेवाला।

ताम्रकर्णी—संज्ञा स्त्री० ताँबे के बरतन बनानेवाला।

ताम्रकूट—संज्ञा पुं० तम्बाकू का पौधा।

ताम्रगर्भ—संज्ञा पुं० तूतिया। नीला थोथा।

ताम्रचूड़—संज्ञा पुं० मुर्गा। कुक्कुट। कुकरौंधा।

ताम्रपत्र—संज्ञा पुं० ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिस पर प्राचीन काल में राजाज्ञा या दानपत्र आदि लिखते थे। ताँबे की चद्दर या उसका टकडा।

ताम्रपर्णी—संज्ञा स्त्री० १. बावली। तालाब। २. मदरास की एक छोटी नदी।

ताम्रयुग—संज्ञा पुं० किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय जब कि वह पहले पहल ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। पुरातत्व के अनुसार यह युग प्रस्तरयुग के बाद और लौह-युग के पहले पड़ता है।

ताम्रलिप्त—संज्ञा पुं० मेदिनीपुर (बंगाल) जिले के तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।

ताय*†—संज्ञा पुं० १. ताप। गरमी। २. जलन। ३. धूप।
सर्व० दे० "ताहि"।

तायदाद‡—संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद"।

तायफ़ा—संज्ञा पुं०, स्त्री० [फ़ा०] १. वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २. वेश्या।

तायना*†—क्रि० स० तपाना। गरम करना।

ताया—संज्ञा पुं० [स्त्री० ताई] पिता का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।
क्रि० स० तपाया हुआ। गर्म किया हुआ।

तार—संज्ञा पुं० १. चाँदी। २. तपी हुई धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। धातु-तंतु। ३. बिजली का तार। टेलिग्राफ। तार से आई हुई खबर। ४. सूत। तागा। ५. बराबर चलता हुआ क्रम। अखंड परंपरा। सिलसिला। ६. सुबीता। व्यवस्था। ठीक माप। कार्य्यसिद्धि का योग। युक्ति। ढब। ७. प्रणव। ओंकार। ८. शिव। ९. विष्णु। १०. नक्षत्र। ११. आँख की पुतली। १२. संगीत में एक सप्तक। एक वर्णवृत्त। ताल। १३. मजीरा। करताल नामक बाजा। १४. तल। सतह। १५. कान का एक गहना। ताटंक। तरौना।
वि० निर्मल। स्वच्छ।
मुहा०-तार तार करना=सूत सूत अलग करना। तार बँधना=सिलसिला जारी होना।

तारक—संज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे कार्त्तिकेय ने मारा था। दे० "तारकासुर"। ५.

'ओं रामाय नमः' यह मंत्र। ६. उद्धार करने-वाला। ७. भवसागर से पार करनेवाला। ८. एक प्रकार का वर्णवृत्त।

तार-कमानी–संज्ञा स्त्री० धनुष के आकार का एक औजार।

तारकश–संज्ञा पुं० धातु का तार खींचनेवाला।

तारका–संज्ञा स्त्री० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख की पुतली। ३. एक प्रकार का छंद। ४. बालि की स्त्री तारा।
*दे० "ताड़का"।

तारकासुर–संज्ञा पुं० एक असुर जिसको मारने के लिए शिव को पार्वती से विवाह करके कार्त्तिकेय को उत्पन्न करना पड़ा था।

तारकिणी–वि० तारों से भरी।
संज्ञा स्त्री० रात।

तारकित–वि० नक्षत्रों से भरा हुआ।

तारकी–वि० तारायुक्त। तारा-सहित।

तारकूट–संज्ञा पुं० चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु।

तारकेश–संज्ञा पुं० चंद्रमा (तारिकाओं के स्वामी)।

तारकेश्वर–संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. इस नाम का तीर्थ-विशेष जो बंगाल में है।

तारकोल–संज्ञा पुं० दे० "अलकतरा"।

तारघर–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से तार की खबर भेजी या प्राप्त की जाय।

तार-घाट–संज्ञा पुं० व्यवस्था। आयोजन। प्रयोजन-सिद्धि का साधन।

तारण–संज्ञा पुं० १. पार उतारने का कार्य २. उद्धार। ३. उद्धार करनेवाला। तारने-वाला। ४. विष्णु।

तारतम्य–संज्ञा पुं० [वि० तारतम्यिक] १. एक दूसरे से कमी-बेशी का हिसाब। न्यूनाधिक्य। २. तरतीब। ३. गुण, परि-माण आदि का परस्पर मिलान।

तारतार–वि० कटा-फटा।

तारतोड़–संज्ञा पुं० कारचोबी (कसीदा) का काम।

तारन–संज्ञा पुं० दे० "तारण"। छत की ढाल।

तारना–क्रि० स० १. पार लगाना। पार करना। २. संसार के क्लेश आदि से छुड़ाना। सद्गति देना।

तारपीन–संज्ञा पुं० [अँग्रे०] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्रायः औषध के का में आता है।

तारबर्की–संज्ञा पुं० बिजली की शक्ति-द्वारा समाचार पहुँचानेवाला तार।

तारल्य–संज्ञा पुं० १. तरल या प्रवाहशील होने का गुण। द्रवत्व। २. चंच-लता।

तारा–संज्ञा पुं० १. नक्षत्र। सितारा। २. आँख की पुतली। ३. भाग्य। किस्मत। ४ दे० "ताला"।
संज्ञा स्त्री० १. दस महाविद्याओं में से एक। २. बृहस्पति की स्त्री। ३. बालि की स्त्री और सुषेण की कन्या।
मुहा०–तारे गिनना=चिंता या प्रतीक्षा में बेचैनी से रात काटना। तारा टूटना=चमकते हुए पिंड का आकाश से पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ना। उल्कापात होना। तारा डूबना=शुक्र का अस्त होना। तारे तोड़ लाना=असाध्य काम करना। तारों की छाँह=बड़े सबेरे। तड़के।

तारागण–संज्ञा पुं० नक्षत्र-समुदाय। नक्षत्रों का समूह।

ताराग्रह–संज्ञा पुं० मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये पाँच ग्रह।

ताराज–संज्ञा पुं० [फा०] १. लूट-पाट। २. नाश। ध्वंस। बरबादी।

ताराधिप–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. शिव। ३. बृहस्पति।

ताराधीश–संज्ञा पुं० दे० "ताराधिप"।

तारापथ–संज्ञा पुं० आकाश।

तारापीड़–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

ताराभ–संज्ञा पुं० नारद।

ताराभ्र–संज्ञा पुं० कपूर।

तारामंडल–संज्ञा पुं० नक्षत्रों का समूह या घेरा।

तारायण–संज्ञा पुं० आकाश।

तारिका*–संज्ञा स्त्री० दे० "तारका"।

तारिणी—वि० तारनवाली। उद्धार करनेवाली।
संज्ञा स्त्री० तारा देवी।

तारी*†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "ताली"। २. दे० "ताड़ी"।

तारीक—वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १. स्याह। काला। २. धुंधला। अँधेरा।

तारीख—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तिथि। दिन। दिवस। २. दिनांक। ३. निश्चित तिथि। किसी कार्य के लिए निश्चित दिन।
मुहा०—तारीख डालना=तारीख मुकर्रर करना। दिन निश्चित करना।

तारीफ़—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. परिचय। २. परिभाषा। ३. वर्णन। विवरण। ४. बखान। प्रशंसा। श्लाघा। ५. विशेषता। गुण।

तारुण्य—संज्ञा पुं० यौवन। जवानी।

तारेश—संज्ञा पुं० चन्द्रमा। ताराओं के ईश या स्वामी।

तार्किक—संज्ञा पुं० १. तर्कशास्त्र का जाननेवाला। २. तत्त्ववेत्ता। दार्शनिक।

तार्क्ष्य—संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. घोड़ा। ३. सर्प। ४. रसांजन। ५. महादेव। ६. सोना। ७. रथ।

ताल—संज्ञा पुं० १. हथेली। २. करतलध्वनि। ३. ताली बजाने का शब्द। नृत्य या संगीत में समय और गति का परिमाण। ४. भुजा या जाँघ ठोकने का शब्द। ५. मँजीरा। झाँझ। ६. चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला। ७. हरताल। ८. ताड़ का पेड़ या फल। ९. ताला। १०. तलवार की मूठ। ११. पिंगल में ढगण का दूसरा भेद। १२. तालाब। पोखरा।
मुहा०—ताल बेताल=१. जिसका ताल ठिकाने से न हो। २. अवसर या बिना अवसर। ताल ठोंकना=लड़ने के लिए ललकारना।

तालक*‡—संज्ञा पुं० दे० १. "तअल्लुक"। २. हरताल। ३. ताला। ४. गोपीचन्दन।

तालकूटा—संज्ञा पुं० झाँझ बजाकर भजन गानेवाला।

तालकेतु—संज्ञा पुं० ताड़ के चिह्न की ध्वजा वाले। १. भीष्म। २. बलराम।

तालजंघ—संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश। २. इस देश का निवासी।

तालध्वज—संज्ञा पुं० दे० "तालकेतु"।

तालपर्णी—संज्ञा स्त्री० १. सौंफ। २. कपूर कचरी। ३. तालमूली। मुसली। ४. सोया नाम का साग।

तालबंद—संज्ञा पुं० वह लेखा जिसमें आमदनी की हर एक मद दिखलाई गई हो।

ताल-बेताल—संज्ञा पुं० दो देवता या यक्ष।

ताल मखाना—संज्ञा पुं० १. एक पौधा। २. दे० "मखाना"।

तालमूली—संज्ञा स्त्री० मुसली।

तालमेल—संज्ञा पुं० १. ताल-सुर का मिलान। २. उपयुक्त योजना। ठीक-ठीक संयोग। ३. उपयुक्त अवसर।

तालरंग—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।

तालरस—संज्ञा पुं० ताड़ के पेड़ का मद्य। ताड़ी।

तालवन—संज्ञा पुं० १. ताड़ के पेड़ों का जंगल। २. व्रज का एक वन।

तालवाही—वि० वह बाजा जिसमें ताल दिया जाय।

तालव्य—वि० १. तालू-संबंधी। २. तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण। जैसे—च, छ, य, श आदि।

तालांक—संज्ञा पुं० १. बलराम। २. एक साग। ३. आरा। ४. पुस्तक। ५. महादेव। ६. शुभ लक्षणवान् पुरुष।

ताला—संज्ञा पुं० दरवाजा या संदूक आदि बन्द रखने के लिए लोहे, पीतल आदि का बना हुआ यंत्र जो बिना कुंजी के नहीं खुलता। कुल्फ।
मुहा०—ताला तोड़ना—किसी दूसरे की वस्तु को चुराने के लिए उसके ताले को तोड़ना।

तालाब—संज्ञा पुं० जलाशय। सरोवर। पोखरा।

तालिक—संज्ञा पुं० १. तमाचा। चपत। फैली हुई हथेली। २. कागज का पुलिंदा। नत्थी।

तालिका—संज्ञा स्त्री० १. ताली। कुंजी। २. नत्थी या तागा जिससे कागज बँधे हों। ३. सूची। फेहरिस्त। ४. मजीठ। ५. मुसली। ६. तमाचा।

तालिब—संज्ञा पुं० [अ०] १. ढूँढ़नेवाला। तलाश करनेवाला। २. चाहनेवाला।

तालिब इल्म—संज्ञा पुं० [अ०] विद्यार्थी।

तालिम*†—संज्ञा स्त्री० बिस्तर।

ताली—संज्ञा स्त्री० १. ताला खोलने या बन्द करने की कील। कुंजी। चाबी। २. ताड़ी। ताड़ का मद्य। ३. तालमूली। मुसली। ४. एक वर्णवृत्त। ५. मेहराब के बीचों-बीच का पत्थर या ईंट। ६. दोनों हथेलियों के बजाने का शब्द। करतल-ध्वनि। ६. छोटा ताल। तलैया। गड़ही।

मुहा०—ताली पीटना या बजाना=हँसी उड़ाना। उपहास करना। एक हाथ से ताली बजाना=अनहोनी बात करना। असम्भव।

तालीम—संज्ञा स्त्री० [अ०] शिक्षा। पढ़ाई। उपदेश। अध्ययन।

तालीशपत्र—संज्ञा पुं० १. एक पेड़। २. एक पौधा। इसकी सूखी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। पनियाँ आँवला।

तालु—संज्ञा पुं० तालू।

तालुका—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुका"। १. तालू की नाड़ी। २. जमींदारी की भूमि। गाँव। कई गाँवों का समूह। बस्ती।

तालू या **तालु**—संज्ञा पुं० १. मुँह के भीतर का ऊपरी भाग। मूर्द्धा। तालुआ। २. घोड़ों का एक ऐब।

मुहा०—तालू में दाँत जमना=बुरे दिन आना। तालू से जीभ न लगना=चुपचाप न रहा जाना। बके जाना।

तालेवर—वि० धनी। मालदार।

ताल्लुक़—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"। सम्बन्ध।

ताल्लुका—संज्ञा पुं० [अ०] बड़ा इलाका। कई गाँवों का समूह।

ताल्लुकेदार—संज्ञा पुं० किसी ताल्लुके का मालिक।

ताव—संज्ञा पुं० १. गरमी। ताप। किसी वस्तु को गरम करने या पकाने के लिए पहुँचाई जानेवाली गरमी। २. अहंकारयुक्त क्रोध। आवेश। ऐंठ। अकड़। शेखी। ३. हड़बड़ी। उतावलापन। शीघ्रता। ४. कागज का तख्ता। ४. परख। परीक्षा। ५. सन्ताप।

मुहा०—(किसी वस्तु में) ताव आना=जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। जोश आना। ताव खाना=आँच पर गरम होना। जोश में आना। ताव देना=आँच पर रखना। गरम करना। ऐंठना। मूँछों पर ताव देना=पराक्रम, बल आदि के घमंड में मूँछों पर हाथ फेरना। ताव दिखाना=अभिमान-युक्त क्रोध प्रकट करना। ताव में आना=अभिमान मिले हुए क्रोध के आवेग में होना। ताव चढ़ना=प्रबल इच्छा होना।

तावत्—क्रि० वि० १. उतनी देर तक। तब तक। २. उतनी दूर तक। वहाँ तक। "यावत्" का संबंधपूरक।

तावना*†—क्रि० स० १. तपाना। गरम करना। २. जलाना। ३. दुःख पहुँचाना।

ताव-भाव—संज्ञा पुं० उपयुक्त अवसर। मौका। परिस्थिति।

वि० थोड़ा-सा। हल्का-सा।

तावर या **तावरी**—संज्ञा स्त्री० १. ताप। दाह। जलन। २. धूप। घाम। ३. बुखार। ज्वर। हरारत। ४. मूर्च्छा। चक्कर।

तावरो*†—संज्ञा पुं० दे० "तावरी"।

तावल†—संज्ञा स्त्री० जल्दी।

तावा—संज्ञा पुं० तवा।

तावान—संज्ञा पुं० [फा०] वह चीज जो नुकसान पूरा करने के लिए दी जाय। दंड। डाँड़।

ताविषी—संज्ञा स्त्री० नदी। देवकन्या। पृथ्वी।

तावीज़—संज्ञा पुं० [अ०] १. यंत्र, मंत्र या कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाय। २. धातु का चौकोर, गोल या अठपहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं। जंतर।

ताश—संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का कपड़ा। जरबफ्त। बूटेदार पट्टू। २. खेल के पत्ते। खेलने के लिए मोटे कागज के टुकड़े जिन पर

रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं। गंजीफा। ताश का खेल। ३. छोटी दफ्ती जिस पर सीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बाजा।

तासीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] असर। प्रभाव।

तासु†*–सर्व० उसका।

तासूँ†–सर्व० दे० "तासों"। उससे।

तासों†*–सर्व० उससे

तास्सुब–संज्ञा पुं० [अ० धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन। पक्षपात।

ताहम–अव्य० [फा०] तो भी। इतना होने पर भी। तथापि।

ताहि*†–सर्व० उसको। उसे।

ताहीं†–अव्य० दे० "ताईं", "तईं"।

तिंतिड़ी, तिंतिड़ीका–संज्ञा स्त्री० इमली।

तिंदु–संज्ञा पुं० तेंदू।

तिंदुक–संज्ञा पुं० दो तोला। तेंदू का पेड़।

तिआ–संज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।

तिआह†–संज्ञा पुं० १. तीसरा विवाह। २. वह पुरुष जिसका तीसरा ब्याह हो रहा हो।

तिकड़म–संज्ञा पुं० चाल। तरकीब। युक्ति।

तिकड़मी–संज्ञा पुं० चाल से अपना काम निकालनेवाला। चालबाज। धूर्त।

तिकड़ा–संज्ञा पुं० एक साथ बुनी हुई तीन धोतियाँ।

तिकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. तीन कड़ियोंवाला। २. चारपाई की वह बुनावट जिसमें तीन रस्सियाँ एक साथ हों।

तिकोन*–वि० दे० "तिकोना"।

तिकोना–वि० त्रिकोण। जिसमें तीन कोने हों। तीन कोनों का।
संज्ञा पुं० समोसा नाम का पकवान।

तिकोनिया–वि० दे० "तिकोना"।

तिक्का†–संज्ञा पुं० [फा०] मांस की बोटी। लोथ।

तिक्की–संज्ञा स्त्री० ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हों।

तिक्ख*–वि० १. तीखा। चोखा। तेज। २. तीव्रबुद्धि। चालाक।

तिक्त–वि० तीता। कड़आ।

तिक्त—संज्ञा पुं० १. चिरायता। २. काला कत्था। ३. इंगुदी। ४. नीम। ५. कुटज।

तिक्तता–संज्ञा स्त्री० तिताई। कड़ुआपन।

तिक्तधातु–संज्ञा स्त्री० शरीर की एक धातु-विशेष। पित्त।

तिक्तिका–संज्ञा स्त्री० १. कुटकी। २. तित-लौकी। कटुतुम्बी।

तिक्ष*†–वि० १. तीक्ष्ण। तेज। २. चोखा। पैना।

तिक्षता*–संज्ञा स्त्री० तेजी। तीखापन।

तिखटी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।

तिखाई–संज्ञा स्त्री० तीखापन।

तिखारना†–क्रि० अ० १. कोई बात पक्की करने के लिए कई बार कहना या कहलाना। तीन बार पूछना या कहना। २. परखना। दो बार जोते हुए खेत को जोतना।

तिखूँटा–वि० जिसमें तीन कोने हों। तिकोना।

तिगुन या **तिगुना**–वि० तीन बार अधिक। तीन गुना।

तिग्म–वि० खरा। तीखा। तीक्ष्ण। तेज। संज्ञा पुं० १. वज्र। २. पिप्पली।

तिग्मता–संज्ञा स्त्री० तीक्ष्णता। तीखापन।

तिग्ममन्यु–संज्ञा पुं० शिवजी। महादेव।

तिग्मांशु–संज्ञा पुं० सूर्य। रवि। भानु।

तिच्छ*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिच्छन*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिजरा–संज्ञा पुं० दे० "तिजारी"। हर तीसरे दिन आनेवाला बुखार।

तिजहरी या **तिजहरिया**–संज्ञा पुं० तीसरा पहर।

तिजारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वाणिज्य। व्यापार। रोजगार। सौदागरी।

तिजारी–संज्ञा स्त्री० हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।

तिजोरी–संज्ञा स्त्री० लोहे का सन्दूक या छोटी अलमारी जिसमें रुपये आदि रखे जाते हैं।

तिड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "तिक्की"।

तिड़ी-बिड़ी†–वि० तितर-बितर। छितराया हुआ।

तित*–क्रि० वि० १. तहाँ। वहाँ। २. उधर। उस ओर।

तितना†–क्रि० वि० दे० "उतना"।
तितर-बितर–वि० १. छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २. अव्यवस्थित। अस्त-व्यस्त।
तितली–संज्ञा स्त्री० १. एक उड़नेवाला रंग-बिरंग का सुंदर कीड़ा जो प्रायः फूलों पर बैठता है। २. एक प्रकार की घास।
तितलौकी†–संज्ञा स्त्री० कटुतुंबी। कड़ुवा कद्दू।
तितारा–संज्ञा पुं० सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं। वि० जिसमें तीन तार हों।
तितिंबा–संज्ञा पुं० १. ढकोसला। २. शेष। ३. परिशिष्ट। उपसंहार।
तितिक्ष–वि० सहनशील।
तितिक्षा–संज्ञा स्त्री० १. सरदी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २. क्षमा। शांति।
तितीर्षा–संज्ञा स्त्री० तरने या तैरने की इच्छा। संसार से मुक्ति पाने की इच्छा।
तितीर्षु–वि० तैरने या तरने की इच्छा रखनेवाला।
तितिम्मा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बचा हुआ भाग। २. परिशिष्ट। उपसंहार।
तिते*†–वि० उतने।
तितेक*†–वि० उतना।
तितै*†–क्रि० वि० १. वहाँ या वहीं। २. उधर।
तितो*†–वि०, क्रि० वि० उतना।
तित्तिरि–संज्ञा पुं० १. तीतर पक्षी। २. यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३. यास्क मुनि के शिष्य जिन्होंने तैत्तिरीय शाखा चलाई थी।
तिथ–संज्ञा पुं० १. वर्षा। २. आग। ३. कामदेव।
तिथि–संज्ञा स्त्री० १. मिति। तारीख। दिनांक। (प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं।) २. पंद्रह की संख्या।
तिथिक्षय–संज्ञा पुं० किसी तिथि का गिनती में न आना। किसी तिथि की हानि (ज्योतिष)।
तिथिपत्र–संज्ञा पुं० पत्रा। पंचांग। जंत्री।
तिदरी–संज्ञा स्त्री० तीन द्वार का दालान या बैठक। वह कोठरी जिसमें तीन खिड़कियाँ या दरवाजे हों।
तिधर†–क्रि० वि० दे० "उधर"।
तिधारा–संज्ञा पुं० १. पौधा-विशेष (सेंहुड़)। तीन धारे का। २. संगम। ३. तीन धारवाला।
तिन†–सर्व० 'तिस' का बहुवचन। संज्ञा पुं० तिनका। तृण।
तिनकना–क्रि० अ० चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। झल्लाना। नाराज होना।
तिनका–संज्ञा पुं० सूखी घास या डाँठी का टुकड़ा। तृण। खर।
मुहा०–तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना=क्षमा या कृपा के लिए दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना=१. संबंध तोड़ना। २. बलैया लेना। तिनके का सहारा=थोड़ा-सा सहारा। तिनके को पहाड़ करना=छोटी बात को बड़ी कर डालना।
तिनगना–क्रि० अ० दे० "तिनकना"।
तिनगरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पकवान।
तिनपहला–वि० जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।
तिनिश या तिनस–संज्ञा पुं० एक पेड़। तिनास। तिनमुना।
तिनुका*†–संज्ञा पुं० दे० "तिनका"।
तिन्ना–संज्ञा पुं० १. एक वर्णवृत्त। २. रोटी के साथ खाने की रसेदार वस्तु। ३. एक प्रकार का धान।
तिन्नी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का धान। २. नीबी। फुफुँदी।
तिन्ह†–सर्व० दे० "तिन"।
तिपति*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।
तिपल्ला–वि० १. जिसमें तीन पल्ले हों। २. जिसमें तीन तागे हों।
तिपाई–संज्ञा स्त्री० १. तीन पायों की चौकी। तिगोड़िया। २. टिकठी।
तिपाड़–संज्ञा पुं० १. तीन पाट जोड़कर बनाया हुआ। २. जिसमें तीन पल्ले हों।
तिबारा–वि० १. तीसरी बार का। २. त्रिगुणित। संज्ञा पुं० १. तीन बार खींचा हुआ मद्य। २. तीन द्वार का घर या कमरा।

तिबासी–वि० तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।
तिब्ब–संज्ञा स्त्री० यूनानी चिकित्साशास्त्र।
तिब्बत–संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत के उत्तर का एक देश।
तिब्बती–वि० तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न। संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा। संज्ञा पुं० तिब्बत का रहनेवाला।
तिमंजिला–वि० [स्त्री० तिमंजिली] तीन खंडों का।
तिमाना–क्रि० स० भिगोना। तर करना।
तिमिंगिल–संज्ञा पुं० १. मछली के आकार का एक बड़ा भारी सामुद्रिक जन्तु। २. एक द्वीप का नाम।
तिमि–संज्ञा पु० १. मछली के आकार का एक बड़ा भारी सामुद्रिक जन्तु। एक बड़ी मछली। २. समुद्र। ३. रतौंधी का रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता
*अव्य० उस प्रकार। वैसे।
तिमित–वि० अचल
तिमिर–संज्ञा पुं० अंधकार। अँधेरा।
तिमिररिपु–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
तिमिष–संज्ञा पुं० १. ककड़ी। फूट। २. पेठा। ३. तरबूज।
तिमिरहर–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. अग्नि। चन्द्रमा।
तिमिरारि–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
तमिरारी*–संज्ञा स्त्री० अंधकार का समूह। अँधेरा।
तिमिरावलि–संज्ञा स्त्री० अंधकार का समूह।
तिमीर–संज्ञा पुं० एक पेड़।
तिमुहानी–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ तीन ओर के मार्ग आकर मिलते हों। त्रिमुहानी। वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ मिली हों।
तिय*–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। औरत। २. पत्नी।
तियला–संज्ञा पुं० स्त्रियों का एक पहनावा।
तिया–संज्ञा पुं० तिक्की। तिड़ी।
*संज्ञा स्त्री० दे० "तिय"। स्त्री।
तिरकना–क्रि० अ० १. फट जाना। तड़कना। २. बाल सफेद होना।
तिरकस–वि० टेढ़ा।
तिरकुटा–संज्ञा पुं० सोंठ, मिर्च, पीपल से बनी हुई औषध।
तिरखा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
तिरखित*–वि० दे० "तृषित"।
तिरखूँटा–वि० जिसमें तीन खूँट या कोने हों। तिकोना।
तिरछई†–संज्ञा स्त्री० तिरछापन।
तिरछा–वि० १. टेढ़ा। बाँका। वक्र। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
यौ०—बाँका-तिरछा=छबीला।
मुहा०—तिरछी चितवन या नजर=कनखियों से देखना। तिरछी बात या वचन=कटु वाक्य। अप्रिय शब्द।
तिरछाई†–संज्ञा स्त्री० तिरछापन।
तिरछाना–क्रि० अ० तिरछा होना।
तिरछापन–संज्ञा पुं० तिरछा होने का भाव।
तिरछौहाँ–वि० जो कुछ तिरछापन लिये हो। कुछ टेढ़ा। कुछ-कुछ तिरछा।
तिरछौहें–क्रि० वि० तिरछेपन के साथ। वक्रता से।
तिरतिराना–क्रि० अ० बूँद-बूँद करके टपकाना।
तिरना–क्रि० अ० १. पानी में न डूबकर सतह के ऊपर रहना। उतराना। २. तैरना। पैरना। ३. पार होना। ४. तरना। मुक्त होना।
तिरनी–संज्ञा स्त्री० १. घाघरी बाँधने की डोरी। नीवी। तिन्नी। २. साड़ी का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है।
तिरप–संज्ञा स्त्री० १. नृत्य में एक प्रकार की गति। २. तिहाई।
तिरपट†–वि० १. तिरछा। टेढ़ा। २. मुश्किल। कठिन।
तिरपटा–वि० ऐंचाताना।
तिरपन–वि० पचास और तीन की संख्या।
तिरपाई–संज्ञा स्त्री० तीन पायों की ऊँची चौकी। स्टूल।
तिरपाल–संज्ञा पुं० १. फूस या सरकंडों का छाजन। मुट्ठा। २. रोगन चढ़ा कनवास या टाट।
तिरपित*‡–वि० दे० "तृप्त"।
तिरपौलिया–संज्ञा पुं० सिंहद्वार। राजमहल

का वह द्वार, जिसमें तीन पौले हों और जो धनुष के आकार का बना हो।
तिरफला–संज्ञा पुं० १. त्रिफला। आँवला, हर्रे और बहेड़ा का मिश्रण। २. तीन फल। ३. तीन फल का अस्त्र।
तिरबेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।
तिरमिरा–संज्ञा पुं० १. शारीरिक दुर्बलता से उत्पन्न नेत्र का एक रोग, जिसमें कभी अँधेरा और कभी अनेक प्रकार के रंग दिखाई पड़ते हैं। २. तेज रोशनी या चमक में नजर का न ठहरना। चकाचौंध।
तिरमिराना–क्रि० अ० तेज रोशनी या चमक के सामने आँखों का झपना। चौंधना। चौंधियाना।
तिरलोक‡–संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।
तिरवाह†–संज्ञा पुं० नदीतट की भूमि। क्रि० वि० तट से। किनारे से।
तिरश्चीन–वि० तिरछा।
तिरशूल‡–संज्ञा पुं० दे० "त्रिशूल"।
तिरसठ–वि० साठ और तीन की एक संख्या।
तिरस्करी–संज्ञा पुं० परदा।
तिरस्कार–संज्ञा पुं० [वि० तिरस्कृत] १. अनादर। अपमान। २. भर्त्सना। फटकार।
तिरस्कृत–वि० १. जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत। अपमानित। २. अनादर-पूर्वक त्याग किया हुआ। ३. अवज्ञात।
तिरहुत–संज्ञा पुं० मिथिला-प्रदेश (बिहार)।
तिरहुतिया–वि० तिरहुत का।
संज्ञा पुं० तिरहुत का रहनेवाला।
संज्ञा स्त्री० तिरहुत की बोली।
तिरानबे–वि० नब्बे और तीन की एक संख्या।
तिराना–क्रि० स० १. लाभ होना। २. पार करना। तैराना। ३. उबारना। निस्तार करना। ४. भयभीत करना।
तिरासी–वि० एक संख्या। अस्सी और तीन की एक संख्या ८३।
तिराहा–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से तीन रास्ते तीन ओर गए हों। तिरमुहानी।
तिरिन‡*–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
तिरिया–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।
यौ०—तिरिया चरित्तर=स्त्रियों की चालाकी या कौशल।
तिरीट–संज्ञा पुं० किरीट। मुकुट।
तिरेंदा–संज्ञा पुं० १. तरेंदा। समुद्र में उथली जगह या जल के भीतर चट्टान के बतलाने के लिए तैरते हुए पीपे। २. मछली मारने की बंसी के काँटे के कुछ ऊपर बँधी हुई एक लकड़ी, जिसके डूबने से मछली फँसने का पता लगता है।
तिरोधान–संज्ञा पुं० अंतर्द्धान। छिपाव। लोप।
तिरोधायक–संज्ञा पुं० आड़ करनेवाला।
तिरोभाव–संज्ञा पुं० अंतर्द्धान। छिपाव।
तिरोभूत–वि० छिपा हुआ। गुप्त। अंतर्हित। गायब। अदृष्ट।
तिरोहित–वि० दे० "तिरोभूत"।
तिरौंछा†–वि० दे० "तिरछा"।
तिर्यक्–वि० तिरछा। टेढ़ा। वक्र।
संज्ञा पुं० प्राणी-विशेष। पशु, पक्षी आदि जीव।
तिर्यक्ता–संज्ञा स्त्री० तिरछापन। वक्रता।
तिर्यग्गति–संज्ञा स्त्री० १. तिरछी या टेढ़ी चाल। २. पशु-योनि की प्राप्ति।
तिर्यग्योनि–संज्ञा स्त्री० पशु, पक्षी आदि जीव।
तिलंगा–संज्ञा पुं० १. अँगरेजी फौज का देशी सिपाही। २. एक प्रकार का कनकौवा।
तिलंगाना–संज्ञा पुं० तैलंग देश।
तिलंगी–वि० तिलंगाने का निवासी।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पतंग।
तिल–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धान्य। इसके दो रंग होते हैं—सफेद और काला। २. बहुत थोड़ा। ३. मत्स्य-विशेष। ४. काले रंग का शरीर पर का छोटा दाग। ५. काली बिंदी के आकार का गोदना। ६. आँख की पुतली के बीचोबीच की गोल बिंदी।
मुहा०—तिल की ओट पहाड़=किसी छोटी बात के भीतर बड़ी भारी बात। तिल का ताड़ करना=किसी छोटी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल-तिल=थोड़ा-थोड़ा। तिल धरने

की जगह न होना=जरा सी भी जगह खाली न रहना। तिल भर=जरा सा। थोड़ा सा।

तिलक—संज्ञा पुं० १. चंदन आदि से मस्तक, बाहु आदि पर लगाया हुआ चिह्न। टीका। २. राज्याभिषेक। राजगद्दी। राजतिलक। ३. विवाह-संबंध स्थिर करने की एक रीति। ४. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका। ५. शिरोमणि। श्रेष्ठ व्यक्ति। ६. पुन्नाग की जाति का एक सुंदर पेड़। मरुवा। ७. एक प्रकार का घोड़ा। ८. क्लोम। तिल्ली जो पेट के भीतर होती है। ९. टीका। किसी ग्रंथ की अर्थसूचक व्याख्या। १०. एक प्रकार का जनाना कुरता। ११. खिलअत। १२. सोंधा नमक।

तिलकना—क्रि० अ० १. गीली मिट्टी का सूखकर स्थान-स्थान पर दरकना या फटना। २. फिसलना।

तिलक-मुद्रा—संज्ञा स्त्री० चंदन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि का छापा जो वैष्णव भक्त लगाते हैं।

तिलकहार—संज्ञा पुं० वे लोग जो कन्या-पक्ष से वर को तिलक चढ़ाने के लिए भेजे जाते हैं।

तिलका—संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त। तिल्ला। तिल्लाना। डिल्ला।

तिलकालक—संज्ञा पुं० देह पर तिल के समान चिह्न। एक रोग।

तिलकुट—संज्ञा पुं० तिल की। एक प्रकार की मिठाई।

तिलखा—संज्ञा पुं० एक चिड़िया।

तिलचटा—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का झींगुर। २. चपड़ा।

तिलचावला या **तिलचावली**—संज्ञा स्त्री० मिला हुआ तिल और चावल। तिल और चावल की खिचड़ी।

वि० कुछ सफेद कुछ काला। काला और सफेद मिला हुआ।

तिलचूरी—संज्ञा स्त्री० तिलकुट। कूटा हुआ तिल।

तिलछना*—क्रि० अ० [अनु०] छटपटाना। बेचैन रहना।

तिलड़ा—वि० तीन लड़ोंवाला।

संज्ञा पुं० एक छेनी।

तिलड़ी—संज्ञा स्त्री० तीन लड़ों की एक माला।

तिलदानी—संज्ञा स्त्री० वह थैली जिसमें दरजी सूई, तागा आदि रखते हैं।

तिलपट्टी—संज्ञा स्त्री० खाँड़ में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ कतरा।

तिलपपड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "तिलपट्टी"।

तिलपर्ण—संज्ञा पुं० १. चंदन। २. सरल का गोंद।

तिलपीड़—संज्ञा पुं० तेली।

तिलपुष्प—संज्ञा पुं० १. तिल का फूल। २. बघनखी। व्याघ्रनख।

तिलभुग्गा—संज्ञा पुं० दे० "तिलकुट"।

तिलबढ़ा—संज्ञा पुं० चौपायों का एक रोग।

तिलमिल—संज्ञा स्त्री० चकाचौंध। तिरमिराहट।

तिलमिलाना—क्रि० अ० दे० "तिरमिराना"।

तिलवट—संज्ञा पुं० तिलपपड़ी।

तिलवा—संज्ञा पुं० तिलों का लड्डू।

तिलस्म—संज्ञा पुं० १. जादू। इंद्रजाल। २. अद्भुत या अलौकिक व्यापार। चमत्कार।

तिलस्मी—वि० तिलस्म-संबंधी।

तिलहन—संज्ञा पुं० सरसों आदि के पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।

तिलहा—वि० १. तेल के समान चिकना। २. तेल में बना या पका हुआ। ३. चिक्कण। ४. तेलिया। ५. तेली।

तिलांजलि—संज्ञा स्त्री० मृतक-संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं। परित्याग।

मुहा०—तिलांजलि देना=बिलकुल त्याग देना। जरा भी संबंध न रखना।

तिला—संज्ञा पुं० १. बाजीकरण के लिए लगाई जानेवाली ओषधि। नपुंसकता दूर करने के लिए एक तेल। २. सोना। ३. पगड़ी का छोर।

तलाई—संज्ञा स्त्री० १. छोटी कड़ाही।

२. वर को तेल चढ़ाने की एक रस्म।

तिलाक–संज्ञा पुं० [अ०] पति-पत्नी का सम्बन्ध-विच्छेद। पति-पत्नी के पारस्परिक नाते का टूटना।

तिलावा–संज्ञा पुं० १. वह कुआँ जिस पर तीन पुर चल सकें। २. पहरेदार का गश्त।

तिलिया–संज्ञा पुं० १. विष-विशेष। २.सरपत।

तिलिस्मी–वि० तिलस्म-सम्बन्धी। जादू का।

तिली†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "तिल"। २. दे० "तिल्ली"।

तिलेदानी–संज्ञा स्त्री० दे० "तिलदानी"।

तिलेगू–संज्ञा स्त्री० दे० "तेलगू"।

तिलोक–संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"। तीन लोक।

तिलोकपति–संज्ञा पुं० त्रिलोकपति। तीनों लोकों का स्वामी। विष्णु।

तिलोकी–संज्ञा पुं० १. त्रिलोकी। २. इक्कीस मात्राओं का एक छंद।

तिलोचन–संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोचन"।

तिलोत्तमा–संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा, जिसे ब्रह्मा ने संसार भर के सब उत्तम पदार्थों में से एक एक तिल अंश लेकर बनाया था। स्वर्ग की एक अप्सरा।

तिलोदक–संज्ञा पुं० दे० "तिलांजलि"। तिल और जल जिससे तर्पण करते हैं।

तिलोरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का पक्षी (तेलिया मैना)। २. दे० "तिलौरी"।

तिलोहरा–संज्ञा पुं० पटसन का रेशा।

तिलौंछना–क्रि० स० तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा–वि० जिसमें तेल का-सा स्वाद या रंग हो।

तिलौदन–संज्ञा पुं० मिला हुआ तिल और ओदन (भात)। तिल और चावल की खिचड़ी।

तिलौरी–संज्ञा स्त्री० उर्द और मूँग की बरी जिसमें तिल भी हो।

तिल्ला–संज्ञा पुं० १. कलाबत्तू आदि का काम। २. कलाबत्तू आदि का काम किया हुआ दुपट्टे या साड़ी आदि का अंचल। दे० "तिलका" (वर्णवृत्त)।

तिल्लार–संज्ञा पुं० एक प्रकार की चिड़िया।

तिल्लाना–संज्ञा पुं० दे० "तराना"।

तिल्ली–संज्ञा स्त्री० १. पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव, जो पसलियों के नीचे बाँई ओर होता है। इसका संबंध पाकाशय से होता है। प्लीहा। पिलही। २. तिल नाम का अन्न। ३. बाँस या लोहे की पतली कमानी।

तिल्व–संज्ञा पुं० लोध।

तिवाड़ी, तिवारी–संज्ञा पुं० दे० "त्रिपाठी"।

तिवास†–संज्ञा पुं० तीन दिन।

तिवी–संज्ञा स्त्री० खेसारी।

तिशना–संज्ञा पुं० [फा०] ताना। व्यंग्य वचन। संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

तिष्–संज्ञा स्त्री० प्यास। तृष्णा। पिपासा।

तिष्टना*–क्रि० स० बनाना। रचना।

तिष्ठना*–क्रि० अ० ठहरना।

तिष्छन*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिस†–सर्व० 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है। **मुहा०**—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था में।

तिसका–सर्व० उसका।

तिसना*–संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

तिसराय–क्रि० वि० तीसरी बार।

तिसरायत–संज्ञा स्त्री० १. तीसरा या गैर होने का भाव। २. मध्यस्थ। वादी और प्रतिवादी से भिन्न। बिचवई।

तिसरैत–संज्ञा पुं० १. झगड़ा करनेवालों से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २. तृतीय भाग का अधिकारी। तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना*–क्रि० अ० प्यासा होना।

तिहत्तर–वि० सत्तर और तीन की एक संख्या।

तिहद्दा–संज्ञा पं० जहाँ तीन हद्दें मिली हों।

तिहरा–वि० दे० "तेहरा"। तिगुना। तीन परत का।

तिहराना–क्रि० स० तीसरी बार करना।

तिहरी–वि० तीन परत की। तिगुनी।

तिहवार–संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"। पर्व।
तिहवारी–संज्ञा स्त्री० त्योहारी। त्योहार के दिन का नेग।
तिहाई–संज्ञा पुं० तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयांश।
संज्ञा स्त्री० खेत की उपज। फसल।
तिहायत–संज्ञा पुं० दे० "तिसरैत"।
तिहारा, तिहारो*†–सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तिहाव†–संज्ञा पुं० १. क्रोध। कोप। २. बिगाड़। झगड़ा।
तिहि–सर्व० दे० "तेहि"। उसको। उसे।
तिहूं†–वि० तीनों।
तिहैया–संज्ञा पुं० १. तीसरा भाग। तृतीयांश। २. तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।
ती*–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। औरत। २. पत्नी। ३. मनोहरण छंद। ४. भ्रमरावली। ५. नलिनी।
तीक्षण, तीछन*–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीक्ष्ण–वि० १. पैना। तेज धारवाला। २. तेज। प्रखर। तीव्र। ३. उग्र। प्रचंड। तीखा। ४. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ५. जो सुनने में अप्रिय हो। कटु। ६. जो सहन न हो। असह्य। ७. जिसे आलस्य न हो।
संज्ञा पुं० १. गरमी। २. विष। ३. लड़ाई। ४. मौत।
तीक्ष्णकण्टक–संज्ञा पुं० १. धतूरा। २. बबूल। ३. इंगुदी। ४. करीर।
तीक्ष्णकन्द–संज्ञा पुं० प्याज। पलाण्डु।
तीक्ष्णकर्मा–संज्ञा पुं० निपुण। दक्ष। चतुर। कुशल।
तीक्ष्णता–संज्ञा स्त्री० तीक्ष्ण होने का भाव। तीव्रता। तेजी। प्रखरता।
तीक्ष्णदंष्ट्र–संज्ञा पुं० बाघ। व्याघ्र।
वि० तेज दाँतोंवाला।
तीक्ष्णदृष्टि–वि० जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्म-दृष्टि।
तीक्ष्णधार–संज्ञा पुं० खड्ग।
वि० जिसकी धार बहुत तेज हो।
तीक्ष्णबुद्धि–वि० जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो। बुद्धिमान्।
तीक्ष्णांशु–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
तीक्ष्णा–संज्ञा स्त्री० १. जोंक। २. मिर्च। ३. माल कंगनी। ४. वच। ५. केवाँच। ६. ७. एक वृक्ष। एक लता।
तीक्ष्णाग्नि–संज्ञा स्त्री० प्रबल जठराग्नि। अजीर्ण रोग।
तीक्ष्णाग्र–वि० तेज नोकवाला।
तीख*†–वि० दे० "तीखा"।
तीखन*†–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीखा–वि० १. जिसकी धार या नोक बहुत तेज हो। पैना। तीक्ष्ण। २. तेज। तीव्र। प्रखर। ३. उग्र। प्रचंड। ४. उग्र स्वभाव-वाला। ५. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ६. जो सुनने में अप्रिय हो। ७. चोखा। बढ़िया।
तीखुर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का आटा। फलाहार-विशेष। वृक्ष-विशेष का सत।
तीछी–संज्ञा स्त्री० तीखी।
तीज–संज्ञा स्त्री० १. पक्ष की तीसरी तिथि। २. भादों सुदी तीज।
वि० दे० "हरतालिका"।
तीजा–वि० [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय।
संज्ञा पुं० मुसलमानों का मृत्यु के तीसरे दिन का कृत्य-विशेष।
तीजिया–संज्ञा स्त्री० श्रावण शुक्ल तृतीया का पर्व। त्योहार-विशेष। छोटी तीज।
तीजै–वि० तीसरा। तीसरे।
तीत*†–वि० दे० "तीता"।
तीतर–संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष।
तीता–वि० १. तीखा। चरपरा। तिक्त। जैसे—मिर्च। २. कड़ुआ। कटु। ३. भीगा। गीला।
तीतुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।
तीतुल*–संज्ञा पुं० दे० "तीतर"।
तीन–वि० दो और एक की संख्या।
संज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।
मुहा०—तीन-पाँच करना=घुमाव-फिराव या हुज्जत की बात करना। तीन-तेरह करना=तितर-बितर करना। अलग-अलग करना। न तीन में, न तेरह में=जो किसी गिनती में न हो।

तीनि*†–संज्ञा पुं० और वि० दे० "तीन"।
तीमारदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम।
तीय–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।
तीया*–संज्ञा स्त्री० दे० "तीय"।
संज्ञा पुं० दे० "तिक्की" या "तिड़ी"।
तीरंदाज–संज्ञा पुं० [फा०] तीर चलानेवाला।
तीरंदाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] तीर चलाने की विद्या या क्रिया।
तीर–संज्ञा पुं० १. नदी का किनारा। कूल। तट। २. पास। निकट। समीप। ३. बाण। शर। ४. सीसा धातु। ५. राँगा
मुहा०—तीर चलाना या फेंकना=युक्ति भिड़ाना। रंग-ढंग लगाना।
तीरथ–संज्ञा पुं० दे० "तीर्थ"।
तीरभुक्ति–संज्ञा स्त्री० तिरहुत देश।
तीरवर्ती–वि० १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. पास रहनेवाला। पड़ोसी।
तीरस्थ–संज्ञा पुं० तीर पर का। तट-स्थित। किनारे पर का। नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ। मरणासन्न व्यक्ति।
तीरा*†–संज्ञा पुं० दे० "तीर"।
तीर्णा–संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त। २. सती। ३. तिन्न। ४. तरणिजा।
तीर्थंकर–संज्ञा पुं० जैनियों के उपास्य देव। इनकी संख्या २४ है।
तीर्थ–संज्ञा पुं० १. वह पुण्य स्थान जहाँ धर्म-भाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिए जाते हों। २. कोई पवित्र स्थान। ३. शास्त्र। ४. यज्ञ। ५. स्थान। स्थल। ६. उपाय। ७. अवसर। ८. अवतार। ९. उपाध्याय। गुरु। १०. दर्शन। ११. ब्राह्मण। १२. अग्नि। १३. संन्यासियों की एक उपाधि। १४. तारनेवाला। १५. ईश्वर। १६. माता-पिता। १७. हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान। १८. योनि। १९. अतिथि।
तीर्थंक–वि० तीर्थ का ब्राह्मण। पंडा। तीर्थंकर।
तीर्थंकर–संज्ञा पुं० विष्णु।
तीर्थपति–संज्ञा पुं० दे० "तीर्थराज"।
तीर्थदेव–संज्ञा पुं० शिव।
तीर्थयात्रा–संज्ञा स्त्री० पवित्र स्थानों में दर्शन, स्नान आदि के लिए जाना। तीर्थाटन।
तीर्थराज–संज्ञा पुं० तीर्थों में श्रेष्ठ। प्रयाग।
तीर्थसेवी–संज्ञा पुं०, पुण्यक्षेत्र में वास करनेवाले। वानप्रस्थाश्रमी।
तीर्थाटन–संज्ञा पुं० तीर्थयात्रा।
तीर्थिक–संज्ञा पुं० दे० "तीर्थंक।" तीर्थ का।
तीली–संज्ञा स्त्री० १. बड़ा तिनका। सींक। २. धातु आदि का पतला, कड़ा तार।
तीवन†–संज्ञा पुं० १. रसेदार तरकारी। २. पकवान।
तीवर–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. व्याधा। शिकारी। ३. मछुआ। ४. एक वर्णसंकर अंत्यज जाति।
तीव्र–वि० १. अतिशय। अत्यंत। २. तीक्ष्ण। तेज। ३. बहुत गरम। ४. नितान्त। बेहद। ५. कटु। कड़ुवा। तीखा। ६. न सहने योग्य। असह्य। ७. प्रचंड। ८. वेग-युक्त। तेज। ९. कुछ ऊँचा स्वर।
तीव्रता–संज्ञा स्त्री० तीव्र होने का भाव। तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।
तीस–वि० दस का तिगुना। बीस और दस। संज्ञा पुं० दस की तिगुनी संख्या।
यौ०—तीसो दिन या तीस दिन=सदा। हमेशा। तीसमारखाँ=बड़ा बहादुर (व्यंग्य)।
तीसरा–वि० १. तृतीय। क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई संबंध न हो। गैर।
तीसवाँ–संज्ञा पुं० उनतीस के बाद का।
तीसी–संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"। १. अन्न-विशेष। २. फल आदि गिनने का तीस गाहियों का एक मान।
संज्ञा पुं० दे० "तिहाई"।
वि० तीस संख्या से परिमित।
तीहा–संज्ञा पं० १. आश्वासन। तसल्ली। २. तिहाई।
तुंग–वि० १. उन्नत। ऊँचा। २. उग्र। प्रचंड। ३. प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० १. पुन्नाग वृक्ष। २. पर्वत। पहाड़।

३. नारियल। ४. कमल का केसर। ५. शिव। ६. एक वर्णवृत्त।

तुंगता–संज्ञा स्त्री० ऊँचाई।

तुंगनाथ–संज्ञा पुं० हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

तुंगबाहु–संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

तुंगभद्र–संज्ञा पुं० मतवाला हाथी।

तुंगभद्रा–संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।

तुंगिनी–संज्ञा स्त्री० १. रात्रि। २. बन। ३. हल्दी। ४. तुलसी।

तुंगी–संज्ञा स्त्री० १. हल्दी। २. रात्रि। ३. बनतुलसी। बबई।

तुंगीश,–संज्ञा पुं० १. शिवजी। २. सूर्य्य। ३. कृष्ण। ४. चन्द्रमा।

तुंगारण्य–संज्ञा पुं० झाँसी के पास बेतवा के किनारे का एक जंगल।

तुंगारन*†–संज्ञा पुं० दे० "तुंगारण्य"।

तुंज–संज्ञा पुं० बज्र।

तुंड–संज्ञा पुं० १. मुख। मुँह। २. चंचु। चोंच। ३. निकला हुआ मुँह। थूथन। ४. तलवार का अगला हिस्सा। ५. शिव। महादेव।

तुंडि–संज्ञा स्त्री० १. मुँह। २. चोंच। ३. नाभि। ४. बिंबाफल।

तुंडिल–वि० १. तोंदवाला। २. बकवादी। ३. मुँहजोर।

तुंडी–वि० मुँह, चोंच, थूथन या सूँड़वाला। संज्ञा पुं० गणेश।
संज्ञा स्त्री० नाभि। ढोंढ़ी।

तुंद–संज्ञा पुं० १. पट। २. उदर।
वि० [फा०] तेज। प्रचंड। घोर।

तुंदिका–संज्ञा स्त्री० नाभि।

तुंदिल–वि० तोंदवाला। बड़े पेटवाला।

तुंदैला–वि० तोंदवाला। बड़े पेटवाला।

तुंब–संज्ञा पुं० लौकी। तूँबा।

तुंबड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "तूंबड़ी"।

तुंबर*–संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

तुंबा–संज्ञा पं० १. दे० "तूंबा"। २. एक जंगली धान। ३. कड़ुआ कद्दू।

तुंबिका–संज्ञा स्त्री० कड़ुआ कद्दू।

तुंबी–संज्ञा स्त्री० छोटा कड़आ कद्दू। तितलौकी।

तुंबुरु–संज्ञा पुं० १. धनिया। २. एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है। ३. एक गंधर्व।

तुअ*‡–सर्व० दे० "तुव", "तव"। तुम्हारा।

तुअना*†–क्रि० अ० १. चूना। टपकना। २. गिर पड़ना। ३. गर्भपात होना।

तुअर–संज्ञा पुं० अरहर।

तुइ–सर्व० तू।

तुक–संज्ञा स्त्री० १. किसी पद्य या गीत की कोई पंक्ति। कड़ी। २. पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अक्षर-मैत्री। अंत्यानुप्रास। काफिया।
मुहा०–तुक जोड़ना =साधारण कोटि की कविता करना।

तुकबंदी–संज्ञा स्त्री० १. केवल तुक जोड़ने की क्रिया। २. साधारण कोटि की कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।

तुकमा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] घुंडी फँसाने का फंदा। मुद्धी।

तुकांत–संज्ञा पुं० पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अंत्यानुप्रास। काफिया।

तुका–संज्ञा पुं० दे० "तुक्का"।

तुकार–संज्ञा स्त्री० 'तू' का प्रयोग जो अपमानजनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन।

तुकारना–क्रि० स० तू-तू करके या अशिष्ट संबोधन करना।

तुक्कड़–संज्ञा पुं० तुक जोड़नेवाला। साधारण कोटि की कविता करनेवाला।

तुक्कल–संज्ञा स्त्री० बड़ी पतंग।

तुक्का–संज्ञा पुं० १. वह तीर जिसमें गाँसी की जगह घुंडी-सी बनी होती है। गाँसी-रहित तीर। २. टीला। ३. सीधी वस्तु।

तुख–संज्ञा पुं० १. भूसी। छिलका। २. अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखार–संज्ञा पुं० १. दे० "तुषार"। २. हिमालय के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक प्राचीन देश। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। ३. इस देश का निवासी। ४. इस देश का घोड़ा।

तुख्म–संज्ञा पुं० [अ०] बीज।
तुच्छ–वि० १. हीन। क्षुद्र। नाचीज। २. ओछा। नीच। ३. अल्प। थोड़ा।
तुच्छता–संज्ञा स्त्री० १. हीनता। नीचता। २. ओछापन। ३. अल्पता।
तुच्छत्व–संज्ञा पं० दे० "तुच्छता"।
तुच्छातितुच्छ–वि० छोटे से छोटा। अत्यंत हीन। अत्यंत क्षुद्र।
तुजुक–संज्ञा पुं० [तु०] १. शोभा। २. शान। ३. कानून। नियम। ४. आत्म-चरित्र। वे घटनाएँ जिन्हें राज्य स्वयं लिखे।
तुझ–सर्व० 'तू' शब्द का एक रूप जो उसे प्रथमा या षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है। तुम।
तुझे–सर्व० 'तू' का कर्म और संप्रदान रूप। तुझको।
तुट*–वि० लेशमात्र। जरा-सा।
तुट्ठना*–क्रि० स० तुष्ट करना। प्रसन्न करना। राजी करना।
क्रि० अ० तुष्ट होना। प्रसन्न होना।
तुड़वाना–क्रि० स० दे० "तुड़ाना"। तोड़ने का काम कराना।
तुड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. तुड़ाने का काम या भाव। २. तोड़ने का काम या मजदूरी।
तुड़ाना–क्रि० स० १. तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. अलग करना। संबंध न रखना। ३. बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना। भुनाना।
तुड़ुम–संज्ञा पुं० तुरही।
तुतरा*†–वि० दे० "तोतला"।
तुतराना*†–क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।
तुतरौहाँ*†–वि० दे० "तोतला"।
तुतली–वि० तोतली।
तुतलाना–क्रि० अ० शब्दों का अस्पष्ट उच्चारण करना। रुक-रुककर टूटे-फूटे शब्द बोलना।
तुत्थ–संज्ञा पुं० तूतिया। नीला थोथा।
तुदन–संज्ञा पुं० १. व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २. व्यथा। पीड़ा।
तुन–संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।
तुनक–वि० [फा०] दुर्बल। नाजुक। कोमल।
तुनकमिजाज–वि० बात-बात पर बिगड़ने या रूठनेवाला।
तुनकी–संज्ञा स्त्री० एक तरह की खस्ता रोटी।
तुनतुनी–संज्ञा स्त्री० सारंगी।
तुनीर–संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।
तुन्न–संज्ञा पुं० १. तुन वृक्ष। २. फटे कपड़ों का टुकड़ा।
वि० कटा हुआ।
तुन्नवाय–संज्ञा पुं० दर्जी। कपड़ा सीनेवाला।
तुपक–संज्ञा स्त्री० छोटी बंदूक। पिस्तौल।
तुपकिया–संज्ञा० स्त्री० छोटी तुपक।
संज्ञा पुं० बन्दूक चलानेवाला।
तुफंग–संज्ञा स्त्री० १. हवाई बंदूक। २. वह लंबी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलाते हैं।
तुभना–क्रि० अ० स्तब्ध रहना। ठक रह जाना। चकित रह जाना।
तुम–सर्व० 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। वह सर्वनाम, जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिए होता है, जिससे कुछ कहा जाता है।
तुमड़ी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा तूँबा। तुंबी। २. सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा, जिसे सँपेरे बजाते हैं। सँपेरे की वंशी ३. सूखे गोल कद्दू का बनाया हुआ पात्र। साधुओं का जलपात्र। महुवर।
तुमरा–सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तुमल*–संज्ञा पुं०, वि० दे० "तुमुल"।
तुमुर–संज्ञा पुं० दे० "तुमुल"।
तुमुल–संज्ञा पुं० १. शोरगुल। कोलाहल। सेना का कोलाहल। लड़ाई की हलचल। २. सेना की गहरी मुठभेड़।
तुमाना–क्रि० स० रुई धुनाना। तूमने का काम कराना। धुनवाना। तुनवाना।
तुम्ह‡–सर्व० दे० "तुम"।
तुम्हारा–सर्व० 'तुम' का संबंधकारक रूप।
तुम्हें–सर्व० 'तुम' का विभक्ति-युक्त रूप, जो उसे कर्म और संप्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।

तुरंग–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. चित्त। ३. सात की संख्या।
तुरंगक–संज्ञा पुं० बड़ी तोरई।
तुरंगम–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. चित्त। ३. एक छंद। तंग। तुंगा।
वि० जल्दी चलनेवाला।
तुरंगशाला–संज्ञा स्त्री० अस्तबल।
तुरंज–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का नींबू। २. बिजौरा नींबू। खट्टी।
तुरंजबीन–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का मीठा पदार्थ जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमता है। २. नींबू के रस का शरबत।
तुरंत–क्रि० वि० जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फौरन।
तुर–क्रि० वि० शीघ्र।
वि० वेगवान्।
तुरई–संज्ञा स्त्री० एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है। तरोई।
तुरक–संज्ञा पुं० दे० "तुर्क"।
तुरकटा–संज्ञा पुं० मुसलमान (उपेक्षा-सूचक शब्द)।
तुरकाना–संज्ञा पुं० [स्त्री० तुरकानी] १. तुरकों की भाँति या उनका ढंग। २. तुर्कों का देश या बस्ती।
तुरकिन–संज्ञा स्त्री० १. तुर्क जाति की स्त्री। २. मुसलमान की स्त्री।
तुरकी–वि० तुर्क देश का।
संज्ञा स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा।
तुरग–संज्ञा पुं० [स्त्री० तुरगी] १. घोड़ा। २. चित्त।
वि० तेज चलनेवाला।
तुरगी–संज्ञा स्त्री० अश्वगंधा। घोड़ा।
संज्ञा पु० अश्वारोही। घुड़सवार।
तुरत–अव्य० शीघ्र। चटपट।
तुरपन–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सिलाई। बखिया का उलटा।
तुरपना–क्रि० स० टाँकना। टाँका चलाना। सिलाई करना। लुढ़ियाना।
तुरय*–संज्ञा पुं० घोड़ा।
तुरही–संज्ञा स्त्री० फूँककर बजाने का एक बाजा। रणसिंघा।

तुरा*–संज्ञा स्त्री० दे० "त्वरा"। शीघ्रता।
संज्ञा पुं० घोड़ा।
तुराई†*–संज्ञा स्त्री० गद्दा। तोशक।
तुराना*–क्रि० अ० घबराना। आतुर होना। जल्दी करना।
क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।
तुरावती–वि० वेगवाली। झोंक के साथ बहनेवाली।
तुरावान्–वि० वेगवाला।
तुरिया*–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरीय"। चतुर्थ।
तुरी–संज्ञा पुं० सवार। अश्वारोही।
संज्ञा स्त्री० १. कपड़ा बिनने का उपकरण-विशेष। जुलाहों का एक औजार। २. घोड़ी। ३. लगाम। ४. फूलों का गुच्छा। ५. मोतियों की लड़ियों का झब्बा।
वि० वेगवाली।
तुरीय–वि० चतुर्थ। चौथा।
संज्ञा स्त्री० १. वेद में वाणी या वाक् के चार भेदों में द्वितीय। वैखरी। वह अवस्था जब वाणी मुँह में आकर उच्चरित होती है। २. प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अंतिम।
संज्ञा पुं० ब्रह्म। मुक्तावस्था।
तुरीय यंत्र–संज्ञा पुं० सूर्य की गति जानने का यंत्र।
तुरीय वर्ण–संज्ञा पुं० चौथा वर्ण। शूद्र।
तुरुक–संज्ञा पुं० मुसलमान। तुर्किस्तान का वासी।
तुरुप–संज्ञा पुं० ताश का एक खेल।
तुरुष्क–संज्ञा पुं० १. तुर्क जाति। तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य। २. तुर्किस्तान देश। ३. तुर्किस्तान का घोड़ा। ४. गन्धद्रव्य-विशेष। धूप। लोबान। ५. घुड़सवार।
तुरुही–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरही"।
तुरैया–संज्ञा स्त्री० तुरई।
तुर्क–संज्ञा पुं० १. तुर्किस्तान का निवासी। २. टर्की (तुर्की) का रहनेवाला।
तुर्कमान–संज्ञा पुं० [फा०] १. तुर्क जाति का मनुष्य। २. तुर्की घोड़ा।
तुर्की–वि० [फा०] तुर्किस्तान का।
संज्ञा स्त्री० १. तुर्किस्तान की भाषा। २.

तुर्किस्तान का घोड़ा। ३ तुर्कों की सी ऐंठ। अकड़। गर्व।

तुर्य—वि० चौथा।

तुर्य्या—संज्ञा स्त्री० मुक्ति-प्राप्ति का ज्ञान।

तुर्याश्रम—संज्ञा पुं० चतुर्थाश्रम।

तुर्रा—संज्ञा पुं० १. घुँघराले बालों की लट। काकुल। २. कलँगी। ३. टोपी आदि में लगा हुआ फुँदना। फलों की लड़ियों का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ४. पक्षियों के सिर पर निकले हुए परों का गुच्छा। चोटी। शिखा। ५. कोड़ा। चाबुक। ६. जटाधारी।

वि० अनोखा। अद्भुत।

मुहा०—तुर्रा यह कि=उस पर भी इतना और। सबके उपरांत इतना यह भी।

तुर्वसु—संज्ञा पुं० देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का एक पुत्र।

तुर्श—वि० [फा०] खट्टा। अम्ल।

तुर्शी—संज्ञा स्त्री० [फा०] खटाई। अम्लता।

तुल*—वि० दे० "तुल्य"।

तुलना—क्रि० अ० १. तौला जाना। कूतना। २. तौल या मान में बराबर उतरना। तुल्य होना। ३. किसी आधार पर ठहरना। ४. किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे। सधना। ५. नियमित होना। बँधना। ६. गाड़ी के पहिए का औंगा जाना। ७. उद्यत होना।

संज्ञा स्त्री० १. दो या अधिक वस्तुओं के गुण-दोष का विचार। मिलान। २. तारतम्य। ३. सादृश्य। समता। ४. उपमा। तौल। गणना।

तुलनात्मक—वि० जिसमें मिलान या तुलना की गई हो। किसी वस्तु का उसी तरह की एक या अन्य वस्तुओं से मिलान या बराबरी।

तुलवाई—संज्ञा स्त्री० १. तौलने की मजदूरी। २. पहिए को औंगने की मजदूरी।

तुलवाना—क्रि० स० [संज्ञा तुलवाई] १. तौल कराना। वजन कराना। २. गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल आदि दिलाना। औंगवाना।

तुलसी—संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं।

तुलसीदल—संज्ञा पुं० तुलसी के पौधे का पत्ता जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं।

तुलसीदास—संज्ञा पुं० भारत के प्रसिद्ध भक्त तथा हिन्दी के सर्वश्रेठ कवि जिनका 'रामचरितमानस' हिन्दुओं का धर्मग्रंथ बन गया है।

तुलसीपत्र—संज्ञा पु० तुलसी की पत्ती।

तुला—संज्ञा स्त्री० १. सादृश्य। तुलना। उपमा। २. गुरुत्व नापने का यंत्र। तराजू। काँटा। ३. मान। तौल। ४. ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि।

तुलाई—संज्ञा स्त्री० १. रुई से भरा दोहरा कपड़ा, जो ओढ़ने के काम में आता है। दुलाई। २. तौलने का काम या भाव। ३. तौलने की मजदूरी।

तुलाकूट—संज्ञा पुं० १. तौल में कसर। २. डंडी मारनेवाला मनुष्य।

तुलाकोटि—संज्ञा स्त्री० १. तराजू की डंडी के दोनों किनारे। २. तौल-विशेष। ३. बिछिआ। ४. नूपुर। ५. अरब की संख्या।

तुलादान—संज्ञा पुं० एक प्रकार का दान, जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है।

तुलाधार—संज्ञा पुं० १. तुला राशि। २. बनियाँ। वणिक्। ३. तराजू की रस्सी। ४. काशी का रहनेवाला एक वणिक् जिसने महर्षि जाजलि को मोक्ष-धर्म का उपदेश दिया था। ५. काशीनिवासी एक व्याध जो सदा माता-पिता की सेवा में तत्पर रहता था।

तुलाना*—क्रि० अ० १. आ पहुँचना। समीप आना। निकट आना। २. बराबर होना। पूरा उतरना।

क्रि० स० गाड़ी के पहियों की धुरी में तेल आदि दिलाना।

तुला-परीक्षा—संज्ञा स्त्री० अभियुक्तों की एक दिव्य परीक्षा। इसमें अभियुक्त को दो बार तौलते थ और दोनों बार तौल बराबर होने पर निर्दोष मानते थे।

तुलामान—संज्ञा पुं० तौलकर किया जानेवाला मान। बाँट।

तुलायंत्र—संज्ञा पुं० तराजू।

तुल्य–वि० १. समान। बराबर। २. सदृश।
तुल्यता–संज्ञा स्त्री० १. बराबरी। समता। २. सादृश्य।
तुल्ययोगिता–संज्ञा स्त्री० एक अलंकार जिसमें बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म बतलाया जाता है।
तुव–सर्व० दे० "तव"। तुम्हारा।
तुवर–संज्ञा पुं० १. कसैला रस। २. अरहर। एक पौधा।
वि० १. कसैला। २. बिना दाढ़ी-मूँछ का।
तुवि–संज्ञा पुं० तूँबी।
तुष–संज्ञा पुं० १. अन्न का छिलका। भूसी। चोकर। २. अंडे का छिलका।
तुषग्रह–संज्ञा पुं० अग्नि।
तुषानल–संज्ञा पुं० १. घास-फूस की आग। २. ऐसी आग जिसमें प्रायश्चित्त करने के लिए भस्म हुआ जाय।
तुषार–संज्ञा पुं० १. शीत। पाला। २. हिम। बरफ। ३. हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४. तुषार देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा थी।
वि० छूने में बरफ की तरह ठंढा।
तुषारकर–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
तुष्ट–वि० १. तृप्त। २. राजी। ३. प्रसन्न। खुश।
तुष्टता–संज्ञा स्त्री० संतोष। प्रसन्नता।
तुष्टना*–क्रि० अ० प्रसन्न होना।
तुष्टि—संज्ञा स्त्री० १. संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। (सांख्य में नौ प्रकार की तुष्टियाँ मानी गई हैं, चार आध्यात्मिक और पाँच बाह्य।)
तुष्टीकरण–संज्ञा पुं० प्रसन्न रखना। खुश रखना। राजी रखना।
तुष्टीकरण नीति–संज्ञा स्त्री० दूसरे को प्रसन्न रखने की नीति। एक राज्य-द्वारा दूसरे राज्य को खुश रखने की नीति।
तुसी–संज्ञा स्त्री० अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। चोकर।
तुहारा–सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तुहिं–सर्व० तुझको।
तुहिन–संज्ञा पुं० १. पाला। कुहरा। तुषार २. हिम। बरफ। ३. चाँदनी। ४. शीतलता ठंढक।
तुहिनांशु–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
तुहिनाचल–संज्ञा पुं० हिमालय।
तूं–सर्व० दे० "तू"।
तूंगी–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. नाव। नौका।
तूंबड़ा–संज्ञा पुं० तुंबी को खोखला करके बनाया हुआ बरतन।
तूंबा–संज्ञा पुं० १. कड़ुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु लोग अपने साथ रखते हैं। कमंडल। तुंबा।
तूंबी–संज्ञा स्त्री० १. कड़ुआ गोल कद्दू। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन।
तू–सर्व० मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम। जैसे, तू यहाँ से चला जा।
मुहा०—तू-तड़ाक, तू-पुकार, या तू-तू मैं मैं करना=अशिष्ट शब्दों में विवाद करना।
तूख–संज्ञा पुं० तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।
तूटना*–क्रि० अ० दे० "टूटना।"
तूठना*–क्रि० अ० १. संतुष्ट होना। तृप्त होना। २. प्रसन्न होना।
तूण–संज्ञा पु० १. तीर रखने का चोंगा। तरकश। २. निषंग। ३. एक वृत्त-विशेष।
तूणीर–संज्ञा पुं० तूण। तरकश। निषंग।
तूत–संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। शहतूत।
तूतई–संज्ञा स्त्री० करई। करवा। मिट्टी का एक प्रकार का बर्तन।
तूतन–संज्ञा पुं० कतरन। कटाकुटा। रेतन।
तूतिया–संज्ञा पुं० दे० "नीला थोथा"। एक प्रकार का खनिज रासायनिक पदार्थ।
तूती–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी की टोंटीदार घरिया टुइयाँ। २. छोटा तोता। ३. कनेरी नाम की। छोटी सुंदर चिड़िया। ४. मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया, जो बहुत सुंदर बोलती है। ५. मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।
मुहा०—किसी की तूती बोलना=किसी की

खूब चलती होना या प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है=१.भीड़-भाड़ या शोर-गुल में कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती। २. बड़े लोगों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता।

तूदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. राशि। ढेर। २. सीमा का चिह्न। हदबंदी। ३. मिट्टी का वह टीला जिस पर निशाना लगाना सीखा जाता है।

तून–संज्ञा पुं० १. तुन का पेड़। २. तूल नाम का लाल कपड़ा।
*संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

तूना–क्रि० अ० १. दे० "तुअना"। चूना। टपकना। २. गर्भपात होना।

तूनीर–संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

तूफ़ान–संज्ञा पुं० [अ०] १. भीषण आँधी तथा वर्षा का एक साथ होना। २. ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे, तथा इसी प्रकार के और उत्पात हों। आँधी। ३. आपत्ति। आफत। ४. हल्ला-गुल्ला। ५. झगड़ा। बखेड़ा। दंगा। ६. झूठा दोषारोपण। तोहमत।

तूफ़ानी–वि० [फा०] १. बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। फसादी। २. झूठा कलंक लगाने वाला। ३. उग्र। प्रचण्ड।

तूमड़ी–संज्ञा स्त्री० १. तूँबी। २. तूंबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।

तूम-तड़ाक–संज्ञा स्त्री० १. तड़क-भड़क। शान-शौकत। २. ठसक। बनावट।

तूमना–क्रि० स० १. तूनना। रुई धुनना। हाथ से रुई साफ करना। बिनौला निकालना। उधेड़ना। २. धज्जी-धज्जी करना। ३. हाथ से मसलना। ४. रहस्य खोलना।

तूमरी–संज्ञा स्त्री० १. कुम्भीर का कपाल। २. मगर की खोपड़ी।

तूमार–संज्ञा पुं० बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।

तूर–संज्ञा पु० १. नगाड़ा। २. तुरही। दुन्दुभि।

तूरज*–संज्ञा पुं० दे० "तूर्य"। तुरही। दुन्दुभि।

तूरण, तूरन*–क्रि० वि० दे० "तूर्ण"।

तूरान–संज्ञा पुं० [फा०] फारस के उत्तर पूर्व पड़नेवाला मध्य एशिया का सारा भू-भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियों का निवासस्थान है।

तूरानी–वि० [फा०] तूरान देश का।
संज्ञा पुं० तूरान देश का निवासी।

तूर्ण–क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

तूर्य–संज्ञा पुं० नगाड़ा। भेरी। दुन्दुभि। रणवाद्य-विशेष।
वि० तुरीय। चतुर्थ। चार की पूरक संख्या।

तूल–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. शहतूत। ३. कपास, मदार, सेमर आदि के डोंड़े के भीतर का घूआ। बिनौला निकाली हुई रुई। कपास। ४. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। ५. गहरा लाल रंग।
वि० तुल्य। समान।

तूलना–क्रि० स० पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।

तूला–संज्ञा स्त्री० कपास।

तूलिका–संज्ञा स्त्री० चित्रकारों की कूँची। तसवीर बनानेवालों की कलम या कूँची।

तूली–संज्ञा स्त्री० १. नील वृक्ष। २. रंग भरने की कूँची।

तूवर–संज्ञा पुं० १. बिना सींग का बैल। २. बेदाढ़ी का मनुष्य। ३. कसैला रस। ४. अरहर।

तूष्णी–वि० मौन। चुप।
संज्ञा स्त्री० मौन। खामोशी। चुप्पी।

तूस–संज्ञा पुं० १. भूसी। भूसा। २. एक प्रकार का बहुत उत्तम ऊन जिससे दुशाले बनते हैं। पशम। पशमीना। ३. तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल या नमदा।

तूसदान–संज्ञा पुं० कारतूस।

तूसना*–क्रि० स० १. संतुष्ट करना। तृप्त करना। २. प्रसन्न करना।
क्रि० अ० संतुष्ट या तृप्त होना।

तूसा–संज्ञा पुं० भूसी।

तृख–संज्ञा पुं० जायफल।

तृखा–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

तृजग*—वि० दे० "तिर्य्यक्" । टेढ़ा । आड़ा ।

तृन—संज्ञा पुं० तिनका । खर । घास-फूस । मुहा०—तृण गहना या पकड़ना=हीनता प्रकट करना । गिड़गिड़ाना । तृणवत्=अत्यंत तुच्छ । तृण के समान । कुछ भी नहीं । तृण तोड़ना=किसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे नजर से बचाने के लिए उपाय करना । संबंध तोड़ना ।

तृणध्वज—संज्ञा पुं० बाँस ।

तृणधान्य—संज्ञा पुं० १. तिन्नी का चावल । २. सावाँ ।

तृणमय—वि० घास का बना हुआ ।

तृणराज—संज्ञा पुं० नारियल । नारियल का पेड़ । तालवृक्ष ।

तृणशय्या—संज्ञा स्त्री० घास का बिछौना । चटाई ।

तृणावर्त्त—संज्ञा पुं० १. बवंडर । चक्रवात । २. एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मार डाला था ।

तृतीय—वि० तीसरा ।

तृतीयक—संज्ञा पुं० तीसरे दिन आनेवाला ज्वर ।

तृतीय-प्रकृति—संज्ञा स्त्री० नपुंसक । क्लीव । हिजड़ा ।

तृतीयांश—संज्ञा पुं० तीसरा भाग ।

तृतीया—संज्ञा स्त्री० १. प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन । तीज । २. व्याकरण में करण कारक ।

तृतीयाश्रम—संज्ञा पुं० वानप्रस्थाश्रम ।

तृन*—संज्ञा पुं० दे० "तृण" । तिनका ।

तृपति‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति" ।

तृपित‡*—वि० दे० "तृप्त" ।

तृप्त—वि० १. जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो । सतुष्ट । अघाया हुआ । २. प्रसन्न । खुश ।

तृप्ति—संज्ञा स्त्री० १. इच्छा पूरी होने से प्राप्त शांति और आनद । संतोष । २ प्रसन्नता । खुशी ।

तृषा—संज्ञा स्त्री० १. प्यास । २. इच्छा । अभिलाषा । ३. लोभ । लालच ।

तृषाभू—संज्ञा स्त्री० पेट में जल रहने की जगह । क्लोम ।

तृषावंत या **तृषावान्**—वि० प्यासा ।

तृषित—वि० १. प्यासा । २. अभिलाषी । इच्छुक ।

तृष्णा—संज्ञा स्त्री० १. प्यास । २. उत्कट इच्छा । लोभ । लालच ।

तृष्णालु—वि० प्यासा । लालची । लोभी ।

तें*†—प्रत्य० १. से । द्वारा । २. से (अधिक) । ३. (किसी काल या स्थान) से ।

तेंतालीस—वि० चालीस और तीन की संख्या, ४३ ।

तेंतीस—वि० तीस और तीन की संख्या, ३३ ।

तेंदुआ—संज्ञा पुं० चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु ।

तेंदू—संज्ञा पुं० १. एक वृक्ष जिसकी लकड़ी आबनूस के नाम से बिकती है । २. इस पेड़ का फल । इसकी पत्तियों से 'बीड़ी' बनाई जाती है ।

ते—अव्य० दे० "तें" ।
†सर्व० वे । वे लोग ।

तेइस या **तेईस**—वि० बीस और तीन की एक संख्या, २३ ।

तेखना*†—क्रि० अ० बिगड़ना । क्रुद्ध होना । नाराज होना ।

तेग़—संज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार । खड्ग ।

तेगा—संज्ञा पुं० १. खाँड़ा । खग । तलवार । २. दरवाजे को पत्थर, मिट्टी इत्यादि से बंद करने की क्रिया ।

तेज—संज्ञा पुं० १. दीप्ति । कांति । चमक । आभा । २. पराक्रम । जोर । बल । ३. वीर्य । ४. सार भाग । तत्त्व । ५. ताप । गर्मी । ६. पित्त । ७. सोना । ८. तेजी । प्रचंडता । ९. प्रताप । रोब-दाब । १०. सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग-शरीर । ११. पाँच महाभूतों में से तीसरा भूत जिसमें ताप और प्रकाश होता है । अग्नि । १२. मक्खन । १३. मज्जा ।

तेज़—वि० [फा०] १. तीक्ष्ण धार का । पैना । २. शीघ्रगामी । ३. जल्दी काम करनेवाला । फुरतीला । ४. तीक्ष्ण । तीखा । झालदार । ५. महँगा । ६. उग्र । प्रचंड । ७. जल्दी असर करनेवाला । ८. चतुर । बुद्धिमान् । तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

तेजपत्ता–संज्ञा पुं० दालचीनी की जाति का एक पेड़। इसकी पत्तियाँ सुगंधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।

तेजपत्र–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।

तेजपात–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।

तेजवंत–वि० दे० "तेजवान्"।

तेजवान्–वि० १. जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २. वीर्यवान्। ३. बली। ताकतवाला। ४. चमकीला।

तेजस्–संज्ञा पुं० दे० "तेज"।

तेजसी*–वि० तेज-युक्त।

तेजस्कर–संज्ञा पुं० तेज बढ़ानेवाला।

तेजस्व–संज्ञा पुं० महादेव।

तेजस्वत्–वि० तेजस्वी।

तेजस्विता–संज्ञा स्त्री० तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्विनी–संज्ञा स्त्री० [ ]मालकँगनी। वि० प्रताप या तेज से युक्त स्त्री।

तेजस्वी–वि० १. कांतिमान्। तेजयुक्त। जिस में तेज हो। २. प्रतापी। प्रभावशाली।

तेजाब–संज्ञा पुं०[फा०] [वि० तेजाबी] किसी क्षार पदार्थ का अम्ल-सार।

तेजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तेज होने का भाव। २. तीव्रता। प्रबलता। ३. उग्रता। ४. शीघ्रता। जल्दी। ५. महँगी। मंदी का उलटा।

तेजोमंडल–संज्ञा पुं० सूर्य्य, चंद्रमा आदि आकाशीय पिंडों के चारों ओर का मंडल। छटा-मंडल।

तेजोमय–वि० कांति या ज्योतिवाला। प्रकाशमय। तेज से पूर्ण। ज्योतिर्मय।

तेजोरूप–संज्ञा पुं० जो अग्नि या तेज रूप हो। ब्रह्म।

तेजोवान्–संज्ञा पुं० तेजवाला।

तेजोहत–वि० जिसका तेज (कांति, शोभा, चमक या पराक्रम) नष्ट हो गया हो।

तेतना†–वि० दे० "वितना"।

तेता†–वि० [स्त्री० तेती] उतना। उसी कदर। उसी प्रमाण का।

[illegible]*†–वि० उतना।

तेतो*†–वि० दे० "तेता"। उतना।

तेमन–संज्ञा पुं० व्यंजन। पका हुआ भोजन।

तेमरू–संज्ञा पुं० तेंदू।

तेरस–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

तेरह–वि० दस और तीन।
संज्ञा पुं० दस और तीन की संख्या। १३।

तेरहीं–संज्ञा स्त्री० मरने के दिन से तेरहवीं तिथि। जिस दिन पिंडदान और ब्राह्मण-भोजन आदि कराया जाता है।

तेरा–सर्व० [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एकवचन संबंधकारक सर्वनाम। तू का संबंधकारक रूप।

तेरुस–संज्ञा पुं० दे० "त्यौरुस"।
संज्ञा स्त्री० दे० "तेरस"।

तेरो*–सर्व० दे० "तेरा"।

तेल–संज्ञा पुं० १. तैल। वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से निकाला जाता है। स्निग्ध द्रव्य। रोगन। २. विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमें वर और वधू को हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।
मुहा०–तेल उठना या चढ़ना=विवाह से पहले तेल की रस्म पूरी होना।

तेलगू–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत की एक भाषा।

तेलहन–संज्ञा पुं० वे बीज जिनसे तेल निकलता है। जैसे, सरसों।

तेलहा†–वि० १. तेल-युक्त। जिसमें तेल हो। २. तेल-संबंधी।

तेला–संज्ञा पुं० तीन दिन-रात का उपवास।

तेलिन–संज्ञा स्त्री० [तेली का स्त्री०] १. तेली जाति की स्त्री। २. एक बरसाती कीड़ा जिसके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं।

तेलिया–वि० १. तेल की तरह चिकना और चमकीला। २. तेल के-से रंगवाला।
संज्ञा पुं० १. काला, चमकीला रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३. एक प्रकार का बबूल। ४. सींगिया नामक विष।

तेलिया कंद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद। जहाँ यह पैदा होता है, वहाँ की भूमि तेल

से सींची हुई ज्ञान पड़ती है।
तेलिया कुमैत—संज्ञा पुं० घोड़े का एक रंग जो अधिक काला या कुमैत होता है।
तेलिया पखान—संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना पत्थर।
तेलिया सुरंग—संज्ञा पुं० दे० "तेलिया कुमैत"।
तेली—संज्ञा पुं० [स्त्री० तेलिन] हिंदुओं की एक जाति। इस जाति के लोग तेल का व्यवसाय करते हैं।
मुहा०—तेली का बैल=हर समय काम में लगा रहनेवाला व्यक्ति।
तेवन†*—संज्ञा पुं० १. नजरबाग। २. आमोद-प्रमोद का स्थान। क्रीड़ा-स्थल। ३. क्रीड़ा।
तेवर—संज्ञा पुं० १. कुपित दृष्टि। क्रोध-भरी चितवन। २. भौंह। भ्रकुटी।
मुहा०—तेवर चढ़ना=दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध प्रकट हो। तेवर बदलना या बिगड़ना=१. बेमुरौवत हो जाना। २. खफा हो जाना।
तेवरस—संज्ञा पुं० तीसरा वर्ष। तेरुस।
तेवराना—क्रि० अ० भ्रम में पड़ना। सोच में पड़ना। आश्चर्य करना। मूर्च्छित होना।
तेवरी—संज्ञा स्त्री० दृष्टि। त्योरी
तेवाना*†—क्रि० अ० सोचना। चिंता करना।
तेह*†—संज्ञा पुं० १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। घमंड। ताव। ३. तेजी। प्रचंडता।
तेहरा—वि० १. तीन परत किया हुआ। तीन लपेट का। २. जो एक साथ तीन-तीन हों। ३. जो तीसरी बार किया गया हो। ४. तिगुना।
तेहराना—क्रि० स० किसी काम को तीसरी बार करना। तीन परत या लपेट का करना।
तेहवार—संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।
तेह्—संज्ञा पुं० १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार।
तेहि*†—सर्व० उसको। उसे।
तेही—संज्ञा पुं० १. क्रोधी। २. अभिमानी। घमंडी।
तैं†*—क्रि० वि० से।
वि० दे० "तें"।
सर्व० तू।
तैंतीस—वि० तीस और तीन की संख्या। ३३।
तै†—क्रि० वि० उतना। उस भाँति। उस मात्रा का।
संज्ञा पुं० [अ०] १. निबटारा। फैसला। २. पूर्ति। पूरा करना।
वि० १. जिसका निबटारा या फैसला हो चुका हो। २. जो पूरा हो चुका हो।
यौ०—तै-तमाम=अंत। समाप्ति।
तैजस—संज्ञा पुं० १. कोई चमकीला पदार्थ। २. घी। ३. पराक्रमी। ४. भगवान्। ५. वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस तथा रस को धातु में परिणत करती है। ६. मद। अहंकार।
वि० तेज से उत्पन्न। तेज-संबंधी।
तैतिर—संज्ञा पुं० तीतर।
तैत्तिर—संज्ञा पुं० १. तीतर। तीतर पक्षियों का झुंड। २. गैंडा।
तैनात—वि० [अ०, संज्ञा तैनाती] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ। मुकर्रर। नियत। नियुक्त।
तैनाती—संज्ञा स्त्री० नियुक्ति। मुकर्ररी।
तैयार—वि० १. दुरुस्त। ठीक। लैस। २. उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३. प्रस्तुत। उपस्थित। मौजूद। ४. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।
मुहा०—हाथ तैयार होना=कला आदि में हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना।
तैयारी—संज्ञा स्त्री० १. तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २. तत्परता। मुस्तैदी। ३. शरीर की पुष्टता। ४. प्रबंध आदि के संबंध की धूम-धाम। ५. सजावट।
तैयो†—क्रि० वि० दे० "तऊ"। तौभी।
तैरना—क्रि० अ० पैरना। तरना। पार होना। पानी के ऊपर ठहरना। उतराना।
तैराई—संज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया।
तैराक—वि० तैरनेवाला। जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।
तैराना—क्रि० स० १. दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २. घुसाना।
तैलंग—संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। इस देश की भाषा तेलगू कहलाती है।

तैलंगी—संज्ञा पुं० तैलंग-देशवासी।
संज्ञा स्त्री० तैलंग देश की भाषा।
तैल—संज्ञा पुं० दे० "तेल"।
तैलत्व—संज्ञा पुं० तेल का भाव या गुण।
तैलधान्य—संज्ञा पुं० धान्य का एक वर्ग जिसमें राई, सरसों, खस तथा कुसुम आदि के बीज हैं।
तैलयंत्र—संज्ञा पुं० कोल्हू।
तैलाक्त—वि० जिसमें तेल लगा हो।
तैलाटी—संज्ञा स्त्री० बर्रे।
तैलाभ्यंग—संज्ञा पुं० शरीर में तेल मलने की क्रिया। तेल की मालिश।
तैलिक—संज्ञा पुं० तेली।
वि० तेल-सम्बन्धी।
तैली—संज्ञा पुं० तेली।
तैश—संज्ञा पुं० [अ०] आवेश। क्रोध। गुस्सा।
तैष—संज्ञा पुं० पूस का महीना। पौष मास।
तैषी†—संज्ञा स्त्री० पौषी पूर्णमासी। पूस की पूर्णिमा।
तैसा—वि० तादृश। उस प्रकार का।
तैसे—क्रि० वि० दे० "वैसे"।
तों*†—क्रि० वि० दे० "त्यों"। वैसे।
तोंअर*†—संज्ञा पुं० दे० "तोमर"।
तोंद—संज्ञा स्त्री० पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग। पेट का फुलाव।
तोंदल—वि० जिसका पेट आगे को बढ़ा हो। तोंदवाला।
तोंदा—संज्ञा पुं० तालाब आदि से पानी निकालने का मार्ग।
तोंदीला—वि० तोंदवाला।
तो*—सर्व० तेरा।
अव्य० तब। तदा। एक अव्यय। निःसन्देह।
*क्रि० अ० था।
तोइ*†—संज्ञा पुं० पानी। जल।
तोई—संज्ञा स्त्री० मगजी। गोट। कुरते आदि में लगी हुई पट्टी। चादर आदि की गोट।
तोक—संज्ञा पुं० १. शिशु। २. पुत्र।
तोक्म—संज्ञा पुं० १. जौ का नया अंकुर। २. अंकुर। ३. हरा रंग। ४. बादल। ५. कान का मैल।
तोख*†—संज्ञा पुं० दे० "तोष"। सन्तोष।
तोटक—संज्ञा पुं० एक छन्द का नाम जिसके हरेक पद में १२ अक्षर होते हैं।
तोटका—संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।
तोड़—संज्ञा पुं० १. टूट-फूट। खण्डन। भंजन। २. तोड़ने की क्रिया। ३. नदी आदि के जल का तेज बहाव। ४. कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिए किया हुआ दाँव या पेंच। ५. किसी प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। मारक। ६. बार। दफा। ७. झोंक। ८. दही का पानी।
तोड़क—वि० तोड़नेवाला।
तोड़-जोड़—संज्ञा पुं० दाँव-पेंच। चाल। युक्ति।
तोड़ना—क्रि० स० १. टुकड़े करना। २. अलग करना। ३. किसी वस्तु का कोई अंग किसी प्रकार खंडित, भग्न या बेकाम करना। ४. हल जोतना। ५. सेंध लगाना। ६. दुर्बल या अशक्त करना। ७. किसी संघटन, या संस्था आदि को भंग करना। ८. नियम का उल्लंघन करना। प्रतिज्ञा भंग करना। ९. मिटा देना। बना न रहने देना। रुपया भुनाना।
तोड़-फोड़—संज्ञा पुं० तोड़ना-फोड़ना। बर्बाद करना। दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए किसी वस्तु को नष्ट करना। जैसे तोड़-फोड़ की कार्रवाई। जनोपयोगी वस्तुओं को तोड़ना या बर्बाद करना। रेलगाड़ियों को पटरियों से गिराने का या अन्य प्रकार के हानिकारक कार्य।
तोड़वाई—संज्ञा स्त्री० १. तोड़वाने की मजदूरी। २. रुपया भुनाने का दाम। बट्टा।
तोड़वाना—क्रि० स० १. दे० "तुड़वाना"। २. रुपया भुनाना। गहने आदि तोड़वाना। तोड़ने का काम कराना।
तोड़ा—संज्ञा पुं० १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर या सिकरी। पैर का एक गहना। २. रुपये रखने की टाट आदि की थैली। ३. नदी का किनारा। तट। ४. नदी के संगम पर बालू, मिट्टी आदि का मैदान। ५. घाटा। घटी। टोटा। ६. पलीता जिससे पुराना बन्दूक या तोप छोड़ी जाती थी। ७. वह लोहा जिसे चक-

मक पर मारने से आग निकलती है। ८. मिसरी की तरह साफ चीनी। रस्सी का टुकड़ा।

मुहा०—तोड़े उलटना या गिनना=बहु सा द्रव्य देना। तोड़ेदार बंदूक=वह बंदूक जो तोड़ा या पलीता दागकर छोड़ी जाय।

तोड़ाना—क्रि० स० तुड़ाना।

तोण*†—संज्ञा पुं० तरकश। तूणीर।

तोत†—संज्ञा पुं० ढेर। समूह।

तोतई—वि० तोते के रंग का।

संज्ञा पुं० धानी रंग।

तोतला—वि० १. जो तुतलाकर बोले। अस्पष्ट बोलनेवाला। २. जिसमें उच्चारण स्पष्ट न हो।

तोता—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके शरीर का रंग हरा और चोंच लाल होती है। ये आदमियों की बोली की बहुत अच्छी तरह नकल करते हैं, इसलिए लोग इन्हें पालते हैं। २. शुक। कीर। सुआ। सुग्गा।

मुहा०—हाथों के तोते उड़ जाना=बहुत घबरा जाना। सिटपिटा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना=बहुत बे-मुरौवत होना। तोता पालना=किसी दोष, दुर्व्यसन या रोग को जान-बूझकर बढ़ाना।

तोताचश्म—संज्ञा पुं० [फा०] तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला। बे-मुरौवत। कृतघ्न।

तोताचश्मी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेमुरौवती। बेवफाई।

तोती—संज्ञा स्त्री० १. तोते की मादा। २. रखेलिन।

तोदन—संज्ञा पुं० १. चाबुक, कोड़ा, चमोटी आदि। २. व्यथा। ३. पीड़ा। एक पेड़।

तोदरी—संज्ञा पुं० [फा०] फारस में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा कँटीला पेड़, जिसके बीज औषध के काम में आते हैं।

तोप—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाए जाते हैं।

मुहा०—तोप कीलना=तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमें से गोला न चलाया जा सके। तोप की सलामी देना या उतारना=किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्व-पूर्ण घटना के समय बिना गोले के बारूद भरकर तोप छोड़ना या शब्द करना।

तोपखाना—संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो। २. युद्ध के लिए सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह।

तोपची—संज्ञा पुं० तोप चलानेवाला। गोलंदाज।

तोपना†—क्रि० स० ढाँकना। छिपाना।

तोपाई—संज्ञा स्त्री० तोपने की क्रिया या मजदूरी।

तोपा—संज्ञा पुं० एक टाँके में की हुई सिलाई।

तोपास—संज्ञा पुं० झाड़ू देनेवाला। झाड़ू-बरदार।

तोफा†—वि०, संज्ञा पुं० दे० "तोहफा"।

तोबड़ा—संज्ञा पुं० [फा०] चमड़े या टाट आदि की थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े के मुँह में लटका देते हैं।

मुहा०—तोबड़ा चढ़ाना=बोलने से रोकना।

तोबा—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी अनुचित कार्य्य को भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा।

मुहा०—तोबा-तिल्ला करना या मचाना=रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। तोबा बुलवाना=पूर्ण रूप से परास्त करना।

तोम—संज्ञा पुं० समूह। ढेर।

तोमड़ी—संज्ञा स्त्री० तूंबड़ी।

तोमर—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। बरछी। साँग। २. एक प्रकार का छंद। ३. एक प्राचीन देश का नाम। ४. इस देश का निवासी। ५. राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।

तोय—संज्ञा पुं० जल। पानी।

तोयद—संज्ञा पुं० १. बादल। २. घी। ३. नागर मोथा।

तोयधर, तोयधार—संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. मोथा।
तोयधि—संज्ञा पुं० समुद्र।
तोयनिधि—संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।
तोयाधार—संज्ञा पुं० तालाब।
तोयेश—संज्ञा पुं० वरुण।
तोर*†—संज्ञा पुं० दे० "तोड़"। अरहर। *†—वि० दे० "तेरा"।
तोरई—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तोरण—संज्ञा पुं० १. घर या नगर का बाहरी फाटक। बाह्य द्वार। २. वे मालाएं आदि जो सजावट के लिए खंभों और दीवारों में लटकाई जाती हैं। बंदनवार। ३. कन्धरा। कंठी। महादेव।
तोरन*†—संज्ञा पुं० दे० "तोरण"।
तोरना—क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
तोरा*†—सर्व० दे० "तेरा"।
तोराना*†—क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।
तोरावान्*†—वि० [स्त्री० तोरावती] वेगवान्। तेज।
तोरी—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तोल†—संज्ञा स्त्री० दे० "तौल"। संज्ञा पुं० तोला।
तोलन—संज्ञा पुं० १. तौलने की क्रिया। २. उठाने की क्रिया।
तोलना—क्रि० स० दे० "तौलना"।
तोला—संज्ञा पुं० १. बारह माशे की तौल। २. इस तौल का बाट।
तोश—संज्ञा पुं० हिंसा।
तोशक—संज्ञा स्त्री० [तु०] खोल में रूई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। पलंग पर बिछाने का गद्दा।
तोशदान—संज्ञा पुं० [फा०] १. मार्ग के लिए जलपान या दूसरी आवश्यक चीजें रखने का पात्र आदि। २. कारतूस रखने की चमड़े की थैली।
तोशा—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २. साधारण खाने-पीने की चीज।
तोशाखाना—संज्ञा पुं० वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं या अमीरों के बहुमूल्य कपड़े और गहने आदि रक्खे रहते हैं।
तोष—संज्ञा पुं० १. अघाने या मन भरने का भाव। तुष्टि। संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। आनंद।
वि० अल्प। थोड़ा।
तोषक—वि० संतुष्ट करनेवाला।
तोषण—संज्ञा पुं० १. तृप्ति। संतोष। २. संतुष्ट करने की क्रिया या भाव।
तोषना*—क्रि० स० संतुष्ट करना। तृप्त करना। क्रि० अ० संतुष्ट होना। तृप्त होना।
तोषल—संज्ञा पुं० १. कंस के एक असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २. मूसल।
तोषित—वि० १. जिसका तोष हो गया हो। २. संतुष्ट। तृप्त।
तोस*—संज्ञा पुं० दे० "तोष"।
तोसल*†—संज्ञा पुं० दे० "तोषल"।
तोसा—*†संज्ञा पुं० दे० "तोशा"।
तोसागार*†—संज्ञा पुं० दे० "तोशाखाना"।
तोहफा—संज्ञा पुं० [अ०] सौगात। उपहार। वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।
तोहमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] असत्य आरोप। झूठा कलंक।
तोहि—सर्व० तुझको। तुझे।
तौंकना—क्रि० अ० दे० "तौंसना"। झुलस जाना। गर्मी से संतप्त होना।
तौंस†—संज्ञा स्त्री० प्यास जो धूप के कारण लगे।
तौंसना—क्रि० अ० गरमी से झुलस जाना। गरमी से संतप्त होना।
तौंसा—संज्ञा पुं० अधिक ताप। कड़ी गरमी।
तौ†*—क्रि० वि० दे० "तो"। क्रि० अ० था।
तौक़—संज्ञा पुं० [अ०] १. गले में पहनने का एक गहना। २. अपराधी या पागल के गले में पहनाने की पटरी या मँडरा। ३. पक्षियों के गले का प्राकृतिक चिह्न। हँसुली। ४. पट्टा। चपरास। ५. कोई गोल घेरा या पदार्थ।
तौन‡—सर्व० वह। जो।
तौनी—संज्ञा स्त्री० रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।

तौफ़ीक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ईश्वर की कृपा। २. श्रद्धा। सामर्थ्य। ३. शक्ति।

तौबा–संज्ञा स्त्री० दे० "तोबा"।

तौर–संज्ञा पुं० [अ०] १. चाल-ढाल। चाल-चलन। २. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीका। तर्ज। ढंग। ४. प्रकार। भाँति। तरह।

यौ०—तौर-तरीका=चाल-चलन। रीति-रवाज।

तौरात–संज्ञा पुं० दे० "तौरेत"। यहूदियों का प्रधान धर्मग्रंथ।

तौरि*†–संज्ञा स्त्री० घुमेर। घुमरी। चक्कर

तौरेत–संज्ञा पुं० यहूदियों का प्रधान धर्म्म-ग्रंथ।

तौल–संज्ञा पुं० १. तराजू। २. तुलाराशि। संज्ञा स्त्री० १. भार। वजन। २. तौलने की क्रिया या भाव।

तौलना–क्रि० स० १. वजन करना। जोखना। २. साधना। निशाना लगाने के लिए हाथ ठीक करना। ३. मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। औंगना।

तौलवाना†–क्रि० स० तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।

तौला–संज्ञा पुं० १. अनाज तौलनेवाला मनुष्य। २. तंबिया। दूध नापने का बरतन। ३. मिट्टी का कमोरा। ४. महुए की शराब।

तौलाई–संज्ञा स्त्री० तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तौलाना–क्रि० स० तौलने का काम दूसरे से कराना।

तौलिया–संज्ञा स्त्री० शरीर पोछने का वस्त्र। एक प्रकार का अँगोछा।

तौलैया–संज्ञा पुं० अनाज तौलनेवाला।

तौसना†–क्रि० अ० गरमी से बहुत व्याकुल होना।

क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।

तौहीन–संज्ञा स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

तौहीनी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।

त्यक्त–वि० छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।

त्यजन–संज्ञा पुं० [वि० त्यजनीय] छोड़ने का काम। त्याग।

त्यजनीय–वि० त्यागने योग्य। छोड़ने लायक।

त्याग–संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ को छोड़ देना। उत्सर्ग। दान। २. किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३. संबंध या लगाव न रखने की क्रिया। ४. विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।

त्यागना–क्रि० स० छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना।

त्यागपत्र–संज्ञा पुं० १. इस्तीफा। २. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो।

त्यागी–वि० स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।

त्याज्य–वि० त्यागने योग्य।

त्यार†–वि० दे० "तैयार"।

त्यूं†–क्रि० वि० दे० "त्यों"।

त्यों–क्रि० वि० १. उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २. तत्काल। उसी समय।

त्योरुस†–संज्ञा पुं० १. पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २. आगामी तीसरा वर्ष।

त्योरी–संज्ञा स्त्री० चितवन। दृष्टि। निगाह।

मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना=ऐसी दृष्टि जिससे क्रोध प्रकट हो। आँखें चढ़ना। त्योरी में बल पड़ना=त्योरी चढ़ना।

त्योहार–संज्ञा पुं० पर्व-दिन। धार्मिक या जातीय उत्सव मनाने का दिन।

त्योहारी–संज्ञा स्त्री० किसी त्योहार के उपलक्ष में नौकरों आदि को दिया जानेवाला धन।

त्यौं–क्रि० वि० दे० "त्यों"।

त्यौनार–संज्ञा पुं० ढंग। तर्ज।

त्यौर–संज्ञा पुं० दे० "त्यौरी"।

त्यौराना–क्रि० अ० सिर में चक्कर आना।

त्यौरी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्योरी"।

त्यौरुस–संज्ञा पुं० दे० "त्योरुस"।

त्यौहार–संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।

त्यौहारी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्योहारी"।

त्र–त और र् के योग से बना हुआ एक संयुक्त अक्षर। कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय

के स्थान पर इसका प्रयोग होता है, जिसका अर्थ होता है 'एक स्थान पर'। जैसे— सर्वत्र, एकत्र आदि।

त्रपा—संज्ञा स्त्री० [वि० त्रपमान्] १. लज्जा। लाज। शर्म। हया। २. छिनाल स्त्री। व्यभिचारिणी। ३. कीर्त्ति। यश।
वि० लज्जित। शरमिंदा।

त्रपित—वि० लज्जित। सलज्ज।

त्रपिष्ठ—वि० अत्यन्त लज्जित। सलज्ज।

त्रपु—संज्ञा पुं० सीसा। राँगा।

त्रपुल—संज्ञा पुं० राँगा।

त्रपुष—संज्ञा पुं० १. खीरा। २. राँगा।

त्रप्सा—संज्ञा स्त्री० कफ। जमी हुई श्लेष्मा।

त्रय—वि० १. तीन। २. तीसरा।

त्रयी—संज्ञा स्त्री० १. तीन वस्तुओं का समूह। तिगुड्ड। २. दुर्गा। ३. वेदत्रय, ऋग्, यजु, और साम।

त्रयीमय—संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. सूर्य्य।

त्रयीमुख—संज्ञा पुं० ब्राह्मण।

त्रयोदश—वि० तेरह।

त्रयोदशी—संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

त्रष्टा—संज्ञा पुं० १. विश्वकर्मा। गढ़नेवाला। २. दे० "तष्टा"। (तश्तरी)।

त्रस—संज्ञा पुं० १. वन। जंगल। २. जंगम। ३. त्रसरेणु। ४. जैन मतानुसार एक प्रकार का जीव।

त्रसन—संज्ञा पुं० १. भय। डर। २. उद्वेग।

त्रसना*†—क्रि० अ० भय से काँप उठना। डरना।

त्रसरेणु—संज्ञा पुं० सूक्ष्म कण। धूप में चमकता हुआ कण।

त्रसाना*†—क्रि० स० डराना। धमकाना। भय दिखाना।

त्रसित*†—वि० १. भयभीत। डरा हुआ। २. पीड़ित। सताया हुआ।

त्रस्त—वि० १. भयभीत। डरा हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।

त्राटक—संज्ञा पुं० योग की ६ क्रियाओं में अन्तिम क्रिया।

त्राटिका—संज्ञा स्त्री० योग की एक मुद्रा। दे० "त्राटक"।

त्राण—संज्ञा पुं० १. रक्षा। बचाव। हिफाजत। २. रक्षा का साधन। ३. कवच।

त्राता, त्रातार—संज्ञा पुं० रक्षक। बचानेवाला।

त्रायमाण—संज्ञा पुं० १. रक्षित। २. एक लता।
वि० रक्षक। बचानेवाला।

त्रास—संज्ञा पुं० १. डर। भय। शंका। २. कष्ट। हीरा आदि मणियों में एक प्रकार का दोष।

त्रासक—संज्ञा पुं० १. डरानेवाला। भयभीत करनेवाला। २. निवारक। दूर करनेवाला।

त्रासना*†—क्रि० स० डराना। भय दिखाना। कष्ट देना।

त्रासित—वि० दे० "त्रस्त"।

त्राहि—अव्य० बचाओ। रक्षा करो।

त्रिंश—वि० तीसवाँ।

त्रिंशत्—वि० तीस। ३०।

त्रि—वि० तीन। जैसे, त्रिकाल।

त्रिकंट त्रिकंटक—वि० १. जिसमें तीन काँटे हों। २. त्रिशूल। ३. गोखुरु (एक औषध)।

त्रिक—संज्ञा पुं० १. तीन का समूह। २. रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३. कमर। ४. त्रिफला। ५. तिरमुहानी।

त्रिककुद्—संज्ञा पुं० १. त्रिकटु पर्वत। २. विष्णु।
वि० जिसके तीन शृंग हों।

त्रिकट—संज्ञा पुं० दे० "त्रिकटु"।

त्रिकटु, त्रिकटुक—संज्ञा पुं० सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीन कटु वस्तुओं का समूह।

त्रिकांड—संज्ञा पुं० १. अमरकोष का दूसरा नाम। २. निरुक्त का दूसरा नाम।
वि० जिसमें तीन कांड हों।

त्रिकांडी—संज्ञा स्त्री० वह ग्रंथ जिसमें कर्म, उपासना और ज्ञान का वर्णन हो। जैसे वेद।

त्रिकाल—संज्ञा पुं० १. भूत, वर्त्तमान और भविष्य। २. प्रातः, मध्याह्न और सायं।

त्रिकालज्ञ—संज्ञा पुं० सर्वज्ञ। तीनों काल की बात जाननेवाला।

त्रिकालदर्शक–वि० दे० "त्रिकालज्ञ"।
त्रिकालदर्शी–संज्ञा पुं० तीनों कालों की बात जाननेवाला व्यक्ति। त्रिकालज्ञ।
त्रिकुट–संज्ञा पुं० दे० "त्रिकूट"।
त्रिकुटा–संज्ञा पुं० सोंठ, मिर्च और पीपल। तीन वस्तुओं का समूह।
त्रिकुटी–संज्ञा स्त्री० दोनों भौंहों के बीच का स्थान।
त्रिकूट–संज्ञा पुं० १. तीन चोटियोंवाला पहाड़। २. वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है। ३. एक पर्वत। ४. योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला चक्र। ५. सेंधा नमक।
त्रिकोण–संज्ञा पुं० १. तीन कोने का क्षेत्र। त्रिभुज क्षेत्र। २. तीन कोनेवाली वस्तु।
त्रिकोणमिति–संज्ञा स्त्री० त्रिकोण वस्तुओं को मापने की विद्या। गणित का वह विभाग जिसमें त्रिभुज के कोण, वर्ग-विस्तार आदि का मान निकालने की रीति का वर्णन है।
त्रिखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
त्रिगण–संज्ञा पुं० १. त्रिवर्ग। अर्थ, धर्म और काम। २. त्रिफला। ३. त्रिकुटा। ४. बुद्धि, स्थिति और क्षय। ५. सत्व, रज और तम।
त्रिगर्त्त–संज्ञा पुं० उत्तर भारत के उस प्रांत का प्राचीन नाम जिसमें आज-कल जालंधर और काँगड़ा आदि नगर हैं।
त्रिगुण–संज्ञा पुं० सत्व, रज और तम, इन तीनों गुणों का समूह।
वि० तीन गुना। तिगुना।
त्रिगुणात्मक–वि० [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त।
त्रिचक्षु–संज्ञा पुं० महादेव।
त्रिजग*†–संज्ञा पुं० १. पशु तथा कीड़े-मकोड़े। २. तिर्य्यक्। ३. त्रिभुवन। तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिजट–संज्ञा पुं० महादेव।
त्रिजटा–संज्ञा स्त्री० १. विभीषण की बहिन जो अशोकवाटिका में जानकीजी के पास रहा करती थी। २. बेल का पेड़।
त्रिजातक–संज्ञा पुं० इलायची। दालचीनी। तेजपत्ता।
त्रिजामा*†–संज्ञा स्त्री० रात्रि।
त्रिज्या–संज्ञा स्त्री० वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा। व्यास की आधी रेखा।
त्रिणता–संज्ञा स्त्री० धनुष। कार्मुक। कमान।
त्रितय–संज्ञा पुं० धर्म, अर्थ और काम का समूह। तीन की संख्या। ३।
त्रिदंड–संज्ञा पुं० संन्यास आश्रम का चिह्न। बाँस का एक डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बँधी होती हैं।
त्रिदंडी–संज्ञा पुं० संन्यासी। मन, वचन और कर्म को दमन करनेवाला। त्रिदंड धारण करनेवाला संन्यासी।
त्रिदल–संज्ञा पुं० बेल का पत्ता। बिल्वपत्र।
त्रिदश–संज्ञा पुं० १. देवता। २. जीभ।
त्रिदशायुध–संज्ञा पुं० वज्र।
त्रिदशालय–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।
त्रिदशाहार–संज्ञा पुं० अमृत। सुधा। पीयूष।
त्रिदेव–संज्ञा पुं० ब्रह्मा, विष्णु और महेश, ये तीनों देवता।
त्रिदोष–संज्ञा पुं० १. वात, पित्त और कफ, ये तीनों दोष। २. सन्निपात रोग।
त्रिदोषज–वि० तीनों दोषों से उत्पन्न। संज्ञा पुं० सन्निपात रोग।
त्रिदोषना*†–क्रि० अ० १. तीनों दोषों के कोप में पड़ना। २. काम, क्रोध और लोभ के फंदों में पड़ना।
त्रिधा–क्रि० वि० तीन तरह से।
वि० तीन तरह का।
त्रिधाम–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. शिव। ३. अग्नि। ४. मृत्यु। ५. स्वर्ग।
त्रिधारा–संज्ञा स्त्री० १. तीन धारावाला सेंहुड़। तिधारा। २. तीनों लोकों में बहने वाली गंगा।
त्रिन*†–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
त्रिनयन–संज्ञा पुं० महादेव। तीन नेत्रोंवाले।
त्रिनयना–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
त्रिनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु।
त्रिनेत्र–संज्ञा पुं० महादेव।
त्रिपटु–संज्ञा पुं० काँच।
त्रिपथ–संज्ञा पुं० कर्म, ज्ञान और उपासना, इन तीनों मार्गों का समूह।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी–संज्ञा स्त्री० गंगा।

त्रिपद–संज्ञा पुं० १. तिपाई। २. त्रिभुज। ३. तीन पद या चरणवाला।

त्रिपदी–संज्ञा स्त्री० १. हंसपदी। २. तिपाई। ३. गायत्री।

त्रिपाठी–संज्ञा पुं० १. तीन वेदों का जानने-वाला। त्रिवेदी। तिवारी। २. ब्राह्मणों की एक उपजाति।

त्रिपाद–संज्ञा पुं० १. ज्वर। २. परमेश्वर।

त्रिपादिका–संज्ञा स्त्री० तिपाई। हंसपदी।

त्रिपिटक–संज्ञा पुं० भगवान् बुद्ध के उप-देशों का संग्रह जिसे बौद्ध लोग अपना प्रधान धर्मग्रंथ मानते हैं। यह तीन भागों में है—सूत्रपिटक, विनयपिटक और अभि-धम्मपिटक।

त्रिपिताना†–क्रि० अ० तृप्त होना। अघा जाना।

क्रि० स० तृप्त या संतुष्ट करना।

त्रिपुंड्र–संज्ञा पुं० भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक। इसे शैव और शाक्त लोग लगाते हैं।

त्रिपुट–संज्ञा पुं० १. मटर। २. खेसारी। ३. गोखुरू का पेड़। ४. तीर। ५. ताला।

त्रिपुटा–संज्ञा स्त्री० १. बेल का पेड़। २. छोटी या बड़ी इलायची। ३. निसोथ। ४. कनफोड़ा। ५. बेल। ६. मोतिया।

त्रिपुटी–संज्ञा स्त्री० १. निसोथ। २. छोटी इलायची। ३. तीन वस्तुओं का समूह।

त्रिपुर–संज्ञा पुं० १. बाणासुर का एक नाम। २. तीनों लोक।

त्रिपुरदहन–संज्ञा पुं० महादेव।

त्रिपुरा–संज्ञा स्त्री० एक देवी का नाम। कामाख्या देवी की एक मूर्त्ति।

त्रिपुरारि–संज्ञा पुं० शिव। महादेव का एक नाम।

त्रिपुरासुर–संज्ञा पुं० दे० "त्रिपुर"।

त्रिपौलिया–संज्ञा पुं० सिंहद्वार। दे० "तिर-पौलिया।"

त्रिफला–संज्ञा स्त्री० आँवला, हड़ और बहेड़ा का मेल।

त्रिबली या त्रिबलि–संज्ञा स्त्री० वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं। इनकी गणना स्त्री के सौंदर्य में होती है।

त्रिबलीक–संज्ञा पुं० १. वायु। २. मलद्वार। गुदा।

त्रिभंग–वि० जिसमें तीन जगह बल पड़ते हों। तीन जगह से टेढ़ा।

संज्ञा पुं० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें कुछ टेढ़ापन रहता है।

त्रिभंगी–वि० त्रिभंग। तीन जगह से टेढ़ा। संज्ञा पुं० १. एक मात्रिक छंद। २. गणना-त्मक दंडक का एक भेद। ३. ताल का एक मुख्य भेद। एक रागिनी। ४. श्रीकृष्ण की एक मूर्ति जिसमें वे टेढ़े ढंग से खड़े रहते हैं।

त्रिभुज–संज्ञा पुं० तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र।

त्रिभुवन–संज्ञा पुं० तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल। त्रैलोक्य।

त्रिमधु–संज्ञा पुं० १. ऋग्वेद का एक भाग। २. तीन ऋचाओं का वेत्ता। ३. घी, चीनी और शहद।

त्रिमात्रिक–वि० जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत।

त्रिमूर्ति–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव, ये तीनों देवता। २. सूर्य्य।

त्रिया*†–संज्ञा स्त्री० औरत।

यौ०–त्रियाचरित्र=स्त्रियों का छल-कपट।

त्रियामा–संज्ञा स्त्री० रात्रि।

त्रियुग–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. सतयुग, द्वापर और त्रेता, ये तीनों युग।

त्रिलोक–संज्ञा पुं० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल, ये तीनों लोक।

त्रिलोकनाथ–संज्ञा पुं० तीनों लोकों का मालिक। ईश्वर।

त्रिलोकपति–संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोकनाथ"।

त्रिलोकी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिलोक"।

त्रिलोचन–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

त्रिलोचना–संज्ञा स्त्री० श्रीदुर्गा।

त्रिवर्ग–संज्ञा पुं० १. अर्थ, धर्म और काम। २. त्रिफला। ३. त्रिकुटा। ४. वृद्धि, स्थिति

और क्षय। ५. सत्त्व, रज और तम, ये तीनों गुण। ६. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, ये तीनों प्रधान जातियाँ।

त्रिवर्षात्मक—वि० त्रैवार्षिक। तीन वर्ष का तीन साल का।

त्रिविधि—वि० तीन प्रकार का।
क्रि० वि० तीन प्रकार से।

त्रिवृत्त—वि० तिगुना।

त्रिवेणी—संज्ञा स्त्री० १. तीन नदियों का संगम। २. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम-स्थान, जो प्रयाग में है। ३. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना, इन तीनों नाड़ियों का संगम-स्थान (हठयोग)।

त्रिवेद—संज्ञा पुं० ऋक्, यजुः और साम, ये तीनों वेद।

त्रिवेदी—संज्ञा पुं० १. ऋक्, यजुः और साम, इन तीनों वेदों का जाननेवाला। २. ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी।

त्रिवेनी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।

त्रिशंकु—संज्ञा पुं० १. बिल्ली। २. जुगनू। ३. एक पहाड़ का नाम। ४. पपीहा। ५. एक प्रसिद्ध सूर्य्यवंशी राजा, जिसने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध करने के कारण स्वर्ग न पहुँच सका, बीच आकाश में ही रुक गया। ६. एक तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु है जो इंद्र के ढकेलने पर आकाश से गिर रहा था, किन्तु विश्वामित्र ने उसे मार्ग में ही रोक दिया था।

त्रिशक्ति—संज्ञा स्त्री० १. इच्छा, ज्ञान और क्रिया-रूपी तीनों ईश्वरीय शक्तियाँ। २. महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक है। बुद्धितत्त्व। ३. गायत्री। ४. तांत्रिकों की काली, तारा और त्रिपुरा।

त्रिशिख—संज्ञा पुं० १. किरीट। २. बेल का पेड़। ३. त्रिशूल।

त्रिशिर—संज्ञा पुं० १. रावण का एक भाई। २. कुबेर।
वि० जिसके तीन सिर हों।

त्रिशूल—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (महादेव जी का अस्त्र)। २. दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।

त्रिषित*—वि० दे० "तृषित"।

त्रिष्टुप्—संज्ञा पुं० एक वैदिक छंद का नाम।

त्रिसंगम—संज्ञा पुं० १. तीन नदियों का संगम। त्रिवेणी। २. फगुनियाँ।

त्रिसंध्य—संज्ञा पुं० प्रातः, मध्याह्न और सायं, ये तीनों काल।

त्रिसंध्या—संज्ञा स्त्री० प्रातः, मध्याह्न और सायं, ये तीनों संध्याएँ।

त्रिस्थली—संज्ञा स्त्री० काशी, गया और प्रयाग, ये तीन पुण्य-स्थान।

त्रिस्रोता—संज्ञा स्त्री० गंगा।

त्रिबुक—संज्ञा पुं० तीन बाणोंवाला युद्ध।

त्रुटि—संज्ञा स्त्री० १. दोष। कमी। न्यूनता। २. अभाव। क्षति। हानि। ३. भूल-चूक। गलती। अपराध। ४. वचन-भंग। ५. संशय। ६ छोटी इलायची। ७. समय का अत्यन्त सूक्ष्म विभाग।

त्रुटी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रुटि"।

त्रेता—संज्ञा पुं० १. चार युगों में से दूसरा। २. यज्ञ की तीन प्रकार की अग्नियाँ।

त्रेतायुग—संज्ञा पुं० चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का है।

त्रै—वि० तीन।

त्रैकालिक—संज्ञा पुं० तीनों कालों में या सदा होनेवाला।

त्रैगुण्य—संज्ञा पुं० सत्त्व, रज और तम, इन तीनों गुणों का धर्म्म या भाव।

त्रैमातुर—संज्ञा पुं० लक्ष्मण।

त्रैमासिक—वि० हर तीसरे महीने होनेवाला। जो हर तीसरे महीने हो।

त्रैराशिक—संज्ञा पुं० गणित की एक क्रिया, जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

त्रैलोक्य—संज्ञा पुं० १. स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक। २. ब्रह्माण्ड।

त्रैवर्गिक—संज्ञा पुं० धर्म, अर्थ और काम, इन तीनों की साधना का कर्म।

त्रैवर्णिक—संज्ञा पुं० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का धर्म। तीनों वर्णों के लोग।

त्रैवार्षिक–वि० हर तीसरे वर्ष होनेवाला। तीन वर्ष संबंधी।
त्रोटक–संज्ञा पुं० १. नाटक का एक भेद। २. संस्कृत का एक छन्द-विशेष। ३. एक राग।
त्रोटी–संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच। चंचु। ओठ। टोंटी।
त्रोण–संज्ञा पुं० तरकश।
त्र्यंबक–संज्ञा पुं० शिव। महादेव। ग्यारह रुद्रों में से एक।
त्र्यंबका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
त्र्यक्ष–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
त्वक्–संज्ञा पुं० १. छिलका। छाल। २. त्वचा। चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञानेंद्रियों में से एक जो सारे शरीर पर है। ४. दालचीनी।
त्वचा–संज्ञा स्त्री० १. चमड़ा। २. छाल। वल्कल। त्वक् इन्द्रिय। ३. साँप की केंचुली।
त्वदीय–सर्व० तुम्हारा।
त्वरा–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।
त्वरावान्–वि० शीघ्रता करनेवाला। जल्दबाज।
त्वरित–वि० तेज।
क्रि० वि० शीघ्रता से।
त्वाष्ट्र–संज्ञा पुं० १. वृत्रासुर। २. वज्र। ३. चित्रा नक्षत्र।
त्विष–संज्ञा स्त्री० १. शोभा। प्रभा। कान्ति। दीप्ति। छवि। २. वाक्य। ३. व्यवसाय। ४. जिगीषा। जीतने की इच्छा।
त्विषा–संज्ञा स्त्री० दीप्ति। शोभा। प्रभा। किरण।
त्वेष–संज्ञा पुं० उत्साह। उमंग। आवेश। मन का आवेश।

थ

थ–हिंदी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और तवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।
संज्ञा पुं० १. भय-रक्षक। रक्षण। २. मंगल। ३. भय। भयचिह्न। ४. पर्वत। ५. भक्षण। आहार। एक व्याधि या रोग।
थंडिल*–संज्ञा पुं० स्थंडिल। यज्ञ की वेदी।
थंब, थंभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० थंबी] १. खंभा। स्तंभ। २. सहारा। टेक।
थंबी–संज्ञा स्त्री० थूनी।
थंभन–संज्ञा पुं० १. रुकावट। ठहराव। २. दे० "स्तंभन"।
थँभना‡–क्रि० अ० दे० "थमना"। ठहरना, रुकना।
थंभित*–वि० १. रुका या ठहरा हुआ। २. स्थिर। ३. निश्चल (भय या आश्चर्य से)।
थइ–संज्ञा स्त्री० १. जगह। २. ढेर। अटाला। ३. राशि।
थक–संज्ञा पुं० १. थोक। चक्का। चक्कान। २. गाँव की सरहद। ग्रामसीमा। ३. ढेर। राशि।
थकन–संज्ञा स्त्री० दे० "थकान।"
थकना–क्रि० अ० १. परिश्रम करते-करते हार जाना। शिथिल होना। क्लांत होना। २. ऊब जाना। हैरान हो जाना। ३. बुढ़ापे से अशक्त होना। ४. ढीला होना या रुक जाना। ५. मोहित होना। मुग्ध होना।
थकान–संज्ञा स्त्री० थकने का भाव। थकावट। शिथिलता।
थकाना–क्रि० स० श्रांत या शिथिल करना।
थका-माँदा–वि० परिश्रम करते-करते अशक्त। श्रांत। श्रमित।
थकावट, थकाहट–संज्ञा स्त्री० थकने का भाव। शिथिलता।
थकित–वि० १. थका हुआ। श्रांत। शिथिल। २. मोहित। मुग्ध।
थकौहाँ†–वि० [स्त्री० थकौहीं] कुछ थका हुआ। थका-माँदा। शिथिल।
थक्का–संज्ञा पुं० [स्त्री० थक्की, थकिया] गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। जमा हुआ पदार्थ। थोक। जमावट।
थगित–वि० १. ठहरा हुआ। रुका हुआ। २. शिथिल। ढीला। ३. मंद।
थति†*–संज्ञा स्त्री० दे० "थाती"।
थड़ा–संज्ञा पुं० बैठने की जगह। दूकान की गद्दी।
थन–संज्ञा पुं० गाय, भैंस, बकरी आदि का स्तन। चौपायों की चूची।
थनी–संज्ञा स्त्री० स्तन के आकार की दो

थैलियाँ जो बकरियों के गले के नीचे लटकती हैं। गल-थना।

थनेला—संज्ञा पुं० स्तन का घाव। स्तन पर का घाव। गुबरैले जाति का कीड़ा।

थनैत—संज्ञा पुं० १. गाँव का मुखिया। २. वह आदमी जो जमींदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करे।

थपक—संज्ञा पुं० दे० "थपकी"। थाप। ठोक। चुमकार।

थपकना—क्रि० स० १. शरीर पर धीरे-धीरे हाथ से ठोंकना। २. धीरे-धीरे ठोंकना। ३. पुचकारना।

थपकी—संज्ञा स्त्री० १. शरीर पर हाथ से धीरे-धीरे ठोंकने की क्रिया। २. मुँगरी। धोबियों का मुँगरा।

थपड़ी—संज्ञा स्त्री० ताली।

थपथपी—संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।

थपन*—संज्ञा पुं० ठहरने या जमाने का काम। स्थापन।

थपना*—क्रि० स० स्थापित करना। बैठाना। जमाना। धीरे-धीरे ठोंकना।

क्रि० अ० स्थापित होना। जमना। थापी।

थपाना*—क्रि० अ० स्थापित करना।

थपड़ना—क्रि० स० थपेड़ा लगाना। थप्पड़ लगाना।

थपेड़ा—संज्ञा पुं० १. थप्पड़। २. आघात। धक्का। टक्कर।

थपोड़ी—संज्ञा स्त्री० ताली। दोनों हथेलियां को टकराकर उत्पन्न की गई ध्वनि। करतल-ध्वनि।

थप्पड़—संज्ञा पुं० १. हथेली से किया हुआ आघात। तमाचा। झापड़। २. आघात। धक्का।

थमकारी*—वि० स्तंभन करनेवाला। रोकनेवाला।

थमना—क्रि० अ० १. चलता न रहना। रुकना। ठहरना। २. जारी न रहना। बंद हो जाना। ३. धीरज धरना। ठहरा रहना।

थर—संज्ञा स्त्री० तह। परत।

संज्ञा पुं० १. दे० "थल"। २. बाघ की माँद।

थरकना†*—क्रि० अ० डर से काँपना। थर्राना।

थरकौहाँ—वि० काँपता या हिलता हुआ।

थरथर—संज्ञा स्त्री० भय से कम्पन। डर से काँपने की मुद्रा।

क्रि० वि० काँपने की मुद्रा से।

थरथराना—क्रि० अ० १. डर से काँपना। २. काँपना।

थरथराहट—संज्ञा स्त्री० भय से उत्पन्न कम्पन।

थरथरी—संज्ञा स्त्री० कँपकँपी।

थरना—क्रि० स० हथौड़ी से किसी धातु पर चोट लगाना।

संज्ञा पुं० सुनारों का आभूषणों पर नक्कासी करने का एक औजार।

थरमामीटर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] शरीर का ताप नापने का यंत्र। तापमापक यंत्र।

थरहराना—क्रि० अ० थरथराना।

थरहरी संज्ञा स्त्री० डर के कारण होनेवाली कँपकँपी।

थरी—संज्ञा स्त्री० शेर आदि जानवरों की माँद। गुफा।

थरू*—संज्ञा पुं० दे० "स्थल"। जगह।

थर्राना—क्रि० अ० डर के मारे काँपना। दहलना।

थल—संज्ञा पुं० १. स्थान। जगह। २. भूमि। वह जमीन जिस पर पानी न हो। सूखी धरती। ३. थल का मार्ग। ४. ऊंची धरती। रेगिस्तान। ५. बाघ की माँद। चुर।

थलकना—क्रि० अ० १. कसा न होने के कारण ऊपर-नीचे हिलना। २. मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना।

थलचर—संज्ञा पुं० पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।

थलज—संज्ञा पुं० गुलाब।

थलथल—वि० मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।

थलथलाना—क्रि० अ० मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना।

थलरुह*—वि० धरती पर उत्पन्न होनेवाले जंतु, वृक्ष आदि।

थलिया—संज्ञा स्त्री० थाली।

थली—संज्ञा स्त्री० १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का तल। ३. ठहरने या बैठने की जगह। बैठक। ४. बालू का मैदान। परती। टीला।

थवई–संज्ञा पुं० मकान बनानेवाला कारीगर। राज। मेमार।

थहना*–क्रि० स० थाह लेना।

थहराना†–क्रि० अ० काँपना।

थहाना–क्रि० स० १. गहराई का पता लगाना। थाह लेना। २. पता लगाना।

थांग–संज्ञा स्त्री० १. चोरों या डाकुओं का गुप्त स्थान। २. खोज। पता। सुराग।

थांगी–संज्ञा पुं० १. चोरी का माल मोल लेने या अपने पास रखनेवाला। २. चोरों का भेदिया। ३. जासूस। ४. चोरों के गोल का सरदार।

थांवला–संज्ञा पुं० थाला। वह घेरा जिसमें कोई पौधा लगा हो। आलबाल।

था–क्रि० अ० 'है' शब्द का भूतकालिक रूप। रहा।

थाई–वि० स्थायी।

संज्ञा पुं० बैठने की जगह। ध्रुवपद। स्थायी।

थाक–संज्ञा पुं० १. गाँव की सीमा। २. ढेर। समूह। राशि।

थाकना†–क्रि० अ० दे० "थकना"।

थात*–वि० जो बैठा या ठहरा हो। स्थित।

थाति–संज्ञा स्त्री० १. स्थिरता। ठहराव। टिकान। रहन। २. दे० "थाती"।

थाती–संज्ञा स्त्री० धरोहर। अमानत। १. समय पर काम आने के लिए रखी हुई वस्तु। २. जमा। पूँजी।

थान–संज्ञा पुं० १. जगह। ठौर। ठिकाना। २. डेरा। निवासस्थान। ३. किसी देवी या देवता का स्थान। ४. चौपायों के बाँधने का स्थान। ५. कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा। कपड़े का थान। ६. संख्या। अदद।

थाना–संज्ञा पुं० १. टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. पुलिस की चौकी। कोतवाली।

थानेत–संज्ञा पुं० १. किसी स्थान का स्वामी। २. ग्राम-देवता। दे० "थानैत"।

थानेदार–संज्ञा पुं० पुलिस के थाने का प्रधान या अफसर।

थानेदारी–संज्ञा स्त्री० थानेदार का पद या कार्य।

थानैत–संज्ञा पुं० १. किसी चौकी या अड्डे का मालिक। २. किसी स्थान का देवता। ग्राम-देवता।

थाप–संज्ञा स्त्री० १. तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात। थपकी। ठोंक। २. थप्पड़। तमाचा। ३. निशान। छाप। ४. स्थिति। जमाव। ५. प्रतिष्ठा। मर्य्यादा। धाक। ६. मान। कदर। प्रमाण। ७. पंचायत। ८. शपथ। सौगंध। कसम।

थापन–संज्ञा पुं० "स्थापन"। १. स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया। २. किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना। रखना।

थापना–क्रि० स० १. स्थापित करना। जमाना। बैठाना। २. किसी गीली वस्तु को हाथ या साँचे से पीटकर कुछ बनाना। गोबर पाथना। ऊपली बनाना। थपथपाना। संज्ञा स्त्री० १. स्थापन। प्रतिष्ठा। २. नवरात्र में दुर्गा-पूजा के लिए घट-स्थापना।

थापड़, थापर*–संज्ञा पुं० दे० "थप्पड़"।

थापा–संज्ञा पुं० १. पंजे का छापा। २. खलियान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी या गोबर से डाला हुआ चिह्न। चौकी। ३. वह साँचा जिसमें रंग पोतकर या गीली वस्तु आदि डालकर कोई चिह्न अंकित किया जाए। छापा। ४. ढेर। राशि।

थापी–संज्ञा स्त्री० चिपटी मुँगरी जिससे गच पीटते हैं। काठ का चिपटे और चौड़े सिरे का डंडा। थापने का शब्द।

थाम–संज्ञा पुं० १. खंभा। स्तंभ। २. मस्तूल। संज्ञा स्त्री० थामने की क्रिया या ढंग। पकड़।

थामना–क्रि० स० १. रोकना। गति अवरुद्ध करना। २. गिरने, न देना। ३. ग्रहण करना। हाथ में लेना। पकड़ना। ४. सहारा देना। मदद देना। सँभालना। ५. अपने ऊपर कार्य्य का भार लेना।

थायी*–वि० दे० "स्थायी"।

थाल–संज्ञा पुं० बड़ी थाली।

थाला–संज्ञा पुं० वह घेरा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है। थावँला। आलबाल।

थाली–संज्ञा स्त्री० छिछला बरतन जिसमें भोजन करते हैं। बड़ी तश्तरी।

मुहा०—थाली का बैंगन=लाभ और हानि देखकर कभी इस पक्ष में, कभी उस पक्ष में होनेवाला।

थावर*–वि० दे० "स्थावर।"
थाह–संज्ञा स्त्री० १. नदी आदि की नीचे की भूमि। गहराई का अंत या हद। २. कम गहरा पानी जिसकी थाह मिल सके। ३. गहराई का पता। ४. अंत। पार। सीमा।
थाहना–क्रि० स० थाह लेना। गहराई का पता लगाना। अंदाज लेना। पता लगाना।
थाहरा*†–वि० जिसमें गहरा जल न हो। छिछला।
थिएटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. नाटक करने का स्थान। रंगभूमि। रंग-मंच। २. नाटक। अभिनय।
थिगली–संज्ञा स्त्री० चकती। पैवंद।
मुहा०–बादल में थिगली लगाना=अत्यंत कठिन काम करना।
थित*–वि० स्थित। ठहरा हुआ। स्थापित। रखा हुआ।
थिति–संज्ञा स्त्री० १. ठहराव। स्थायित्व। २. ठहरने का स्थान। ३. रहन। ४. अवस्था। दशा। ५ पृथ्वी।
थियासफी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] ब्रह्मविद्या। सब धर्मों का समन्वय करनेवाला एक सम्प्रदाय जिसे एनी बेसेण्ट ने चलाया था।
थिर–वि० १. स्थिर। ठहरा हुआ। अचल। २. शांत। धीर। ३. स्थायी। दृढ़। टिकाऊ।
थिरक–संज्ञा पुं० नाच में पैरों की चंचल गति।
थिरकना–क्रि० अ० १. नाचने में पैरों को बार-बार उठाना और रखना। २. अंग मटकाकर नाचना।
थिरकौहाँ–वि० थिरकनेवाला।
थिरजीह*–संज्ञा पुं० मछली।
थिरता*–संज्ञा स्त्री० १. स्थिरता। ठहराव। २. स्थायित्व। ३. शांति। धीरता।
थिरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "थिरता"।
थिर-थानी–वि० एक जगह जमकर रहनेवाला।
थिरना–क्रि० अ० १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना बंद होना। २. जल के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना। ३. मैल आदि के नीचे बैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना। नितरना।
थिरा*–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
थिराना–क्रि० स० १. क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना। २. जल को स्थिर करके उसमें घुली हुई वस्तु को नीचे बैठने देना। ३. किसी वस्तु को जल में घोलकर और उसकी मैल आदि को नीचे बैठाकर साफ करना। निथारना।
†क्रि० अ० दे० "थिरना"।
थी–क्रि० अ० 'है' के भूतकाल 'था' का स्त्रीलिंग।
थीता*–संज्ञा पुं० १. स्थिरता। शांति। २. चैन।
थुकाना–क्रि० स० १. दूसरे को थूकने के लिए प्रेरित करना। २. मुँह में ली हुई वस्तु को गिरवाना। उगलवाना। ३. थुड़ी-थुड़ी कराना। निंदा कराना।
थुक्का-फजीहत–संज्ञा स्त्री० १. निंदा और तिरस्कार। थुड़ी-थुड़ी। २. लड़ाई-झगड़ा।
थुड़ी–संज्ञा स्त्री० घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द। धिक्कार। लानत।
मुहा०–थुड़ी-थुड़ी करना=धिक्कारना।
थुथकारना–क्रि० स० थुड़ी-थुड़ी करना। बहुत घृणा प्रकट करना।
थुथना–संज्ञा पुं० [स्त्री० थुथनी] लम्बा निकला हुआ मुँह। दे० "थूथन"।
थुथाना–क्रि० अ० मुँह फुलाना। ओठ लटकाना। नाराज होना।
थुरना–क्रि० स० कूटना। पीटना।
थुरहथ या **थुरहथा**–वि० [स्त्री० थुरहथी] १. जिसके हाथ छोटे हों। जिसकी हथेली में कम चीज आवे। २. किफायत करनेवाला।
थुली–संज्ञा स्त्री० दलिया।
थुवा–संज्ञा पुं० मिट्टी आदि का टीला। मिट्टी का लोंदा।
थू–अव्य० १. थूकने का शब्द। २. घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द। धिक्। छिः।
मुहा०–थू थू करना=धिक्कारना।
थूक–संज्ञा पुं० मुँह से निकलनेवाला लसीला और गाढ़ा रस। कफ। खखार। लार।
थूकना–क्रि० अ० मुँह से थूक निकालना या फेंकना।

क्रि० स० १. मुंह में ली हुई वस्तु को गिराना। उगलना। २. धिक्कारना। निंदा करना। मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना=अत्यंत तुच्छ समझकर ध्यान तक न देना। थूककर चाटना=१. कहकर मुकर जाना। २. किसी दी हुई वस्तु को लौटा लेना। थूक देना=तिरस्कार कर देना।

थूथन—संज्ञा पुं० लंबा निकला हुआ मुंह। जैसे, सूअर या ऊँट का थुथना।

थूथनी—संज्ञा स्त्री० लम्बा निकला हुआ मुंह।

थूथरा—वि० भद्दा।

थून—संज्ञा स्त्री० थूनी। चाँड़। खम्भा।

थूनी—संज्ञा स्त्री० १. खंभा। लकड़ी आदि का गड़ा हुआ बल्ला। स्तंभ। थम। २. वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिए नीचे से लगाया जाय। चाँड़।

थूरना†—क्रि० स० १. कूटना। पीटना। २. मारना। ३. ठूंसना। कसकर भरना।

थूल*—वि० मोटा। भारी। भद्दा।

थूला—वि० [स्त्री० थूली] मोटा। मोटा-ताजा।

थूहड़ या **थूहर**—संज्ञा पुं० एक छोटा कँटीला पेड़ जिसका दूध विषैला होता है और औषध के काम में आता है। सेंहुड़।

थूहा—संज्ञा पुं० ढूह। टीला। अटाला।

थूही—संज्ञा स्त्री० मिट्टी का ढेर।

थेई-थेई—वि० थिरक-थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल। तालसूचक शब्द और मुद्रा।

थेगली—संज्ञा स्त्री० दे० "थिगली"।

थेथर—वि० जो कही हुई बात न माने। डाटने-डपटने पर भी जो न सुधरे। थका हुआ। श्रांत। हैरान। परेशान।

थेवा—संज्ञा पुं० अँगूठी का नगीना। अँगूठी में नगीना जड़ने का स्थान।

थैा—संज्ञा पुं० खेत में मचान के ऊपर का छप्पर।

थैला—संज्ञा पुं० [स्त्री० थैली] १. ... या टाट आदि को सीकर बनाया ... पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर ... कर सकें। बड़ा बटुआ। २. रुपयों से भरा हुआ थैला। तोड़ा।

थैली—संज्ञा स्त्री० १. छोटा थैला। कोश। बटुआ। २. रुपयों से भरी हुई थैली। तोड़ा। मुहा०—थैली खोलना=थैली में से निकालकर रुपया देना।

थैलीदार—संज्ञा पुं० खजाने में से रुपया उठानेवाला व्यक्ति।

थोक—संज्ञा पुं० १. ढेर। राशि। २. समूह। ३. इकट्ठा बेचने की चीज। खुदरा का उलटा। ४. इकट्ठी वस्तु। कुल। मुहा०—थोक करना=इकट्ठा करना। जमा करना।

थोड़ा—वि० [स्त्री० थोड़ी] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो। न्यून। अल्प। कम। जरा सा।

क्रि० वि० अल्प परिमाण में। जरा। तनिक। यौ०—थोड़ा-बहुत=कुछ-कुछ। किसी कदर। मुहा०—थोड़ा ही=नहीं। बिलकुल नहीं।

थोथरा—वि० दे० "थोथा"।

थोथा—वि० [स्त्री० थोथी] १. जिसके भीतर कुछ सार न हो। खोखला। छूँछा। खाली। पोला। २. जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। गुठला। ३. व्यर्थ का। निकम्मा। औषध-विशेष।

थोथी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घास।

थोपना—क्रि० स० १. गीली चीज की मोटी तह जमाना। एकत्रित करना। लेपना। २. मोटा लेप चढ़ाना। ३. मत्थे मढ़ना। लगाना। ४. आक्रमण आदि से रक्षा करना। बचाना। ५. दे० "छोपना"। दे० "थापना"।

थोपी—संज्ञा पुं० चपेट। चपत। धक्का। मुक्का।

थोबड़ा—संज्ञा पुं० जानवरों का थूथन।

थोर, थोरा*†—वि० दे० "थोड़ा"। संज्ञा पुं० केले का गाभा। थूहर।

थोरिक*†—वि० थोड़ा सा। तनिक सा।

थोरी—संज्ञा स्त्री० १. हीन। २. अनार्य जाति विशेष। ३. थोड़ी।

थ्यावल†—संज्ञा पुं० १. स्थिरता। ठहराव। २. धीरता। धैर्य्य।

द

द–हिंदी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन जो त-वर्ग का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दंत है।
संज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड़। २. दाँत। ३. दाता। ४. दान।
संज्ञा स्त्री० १. पत्नी। २. रक्षा। ३. खंडन। संस्करण।

दंग–वि० [फा०] चकित। आश्चर्यान्वित। स्तब्ध।
संज्ञा पुं० १. घबराहट। भय। डर। २. दे० दंगा।

दंगई–वि० १. दंगा करनेवाला। उपद्रवी। झगड़ालू। २. उग्र।

दंगल–संज्ञा पुं० [फा०] १. जोड़ बद कर पहलवानों की कुश्ती जिसमें जीतनेवाले को इनाम आदि मिलता है। २. अखाड़ा। मल्ल-युद्ध का स्थान। ३. जमावड़ा। समूह। जमात। दल। ४. बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दंगली–वि० दंगल-सम्बन्धी। बहुत बड़ा।

दंगा–संज्ञा पुं० [फा०] १. झगड़ा। उपद्रव। २. गुलगपाड़ा। हुल्लड़। शोर-गुल।

दंड–संज्ञा पुं० १. डंडा। सोंटा। लाठी। २. डंडे के आकार की कोई वस्तु। जैसे, भुजदंड, मेरुदंड। ३. एक प्रकार की कसरत जो हाथ-पैर के पंजों के बल औंधे होकर की जाती है। ४. भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ प्रणाम। दंडवत्। ५. किसी अपराध के प्रतिकार में अपराधी को पहुँचाई हुई पीड़ा या हानि। सजा। ६. अर्थदंड। जुर-माना। डाँड़। ७. दमन। शासन। शमन। ८. ध्वजा या पताका का बाँस। ९. तराजू की डंडी। डाँड़ी। १०. किसी वस्तु (जैसे—करछी, चम्मच आदि) की डंडी। ११. लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। १२. (दंड देनेवाले) मय। १३. साठ पल का काल। चौबीस मिनट का समय। घड़ी। १४. मयानी।
मुहा०—दंड भरना = १. जुरमाना देना। २. दूसरे के नुकसान को पूरा करना। दंड भोगना या भुगतना = सजा अपने ऊपर लेना। दंड सहना = नुकसान उठाना। घाटा उठाना।

दंडक–संज्ञा पुं० १. डंडा। २. दंड देनेवाला पुरुष। शासक। ३. वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक, जिसमें गणों का बंधन या नियम होता है; और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है। ४. दंडकारण्य।

दंडकला–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मात्रिक छंद।

दंडकारण्य–संज्ञा पुं० वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था।

दंडदास–संज्ञा पुं० जो दंड का रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो।

दंडधर–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. शासन-कर्ता। ३. संन्यासी।
वि० डंडा रखनेवाला।

दंडधार–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. राजा।

दंडन–संज्ञा पुं० [वि० दंडनीय, दंडित, दंड्य] दंड देने की क्रिया। शासन।

दंडना–क्रि० स० दंड देना। सजा देना।

दंडनायक–संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. दंड-विधान करनेवाला राजा या अधिकारी।

दंडनीति–संज्ञा स्त्री० शासन में दंड-व्यवस्था का सिद्धान्त। शासन में अपराधों के प्रति-कार के लिए दंड-नियम।

दंडनीय–वि० दंड देने योग्य।

दंडपाणि–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. भैरव की एक मूर्त्ति।

दंडप्रणाम–संज्ञा पुं० दंडवत्। सादर अभि-वादन। भूमि पर औंधे लेटकर किया गया प्रणाम। इस प्रकार प्रणाम करने की मुद्रा।

दंडवत्–संज्ञा स्त्री० भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।
दंडविधि–संज्ञा स्त्री० अपराधों के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था।
दंडायमान–वि० डंडे की तरह सीधा खड़ा। खड़ा।
दंडालय–संज्ञा पुं० १. न्यायालय। २. वह स्थान, जहाँ दंड दिया जाय। जेलखाना। ३. एक छंद। दंडकला।
दंडिका–संज्ञा स्त्री० बीस अक्षरों की वर्णवृत्ति।
दंडित–वि० जिसे दंड मिला हो। सजा-यापता।
दंडी–संज्ञा पुं० १. दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। संन्यासी। २. यमराज। ३. राजा। ४. द्वारपाल। ५. शिव। महादेव। ६. संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जिनके बनाए हुए दो ग्रंथ मिलते हैं—'दशकुमारचरित' और 'काव्यादर्श'।
दंडय–वि० दंड पाने योग्य।
दंत–संज्ञा पुं० १. दाँत। २. ३२ की संख्या। ३. पहाड़ की चोटी। ४. कुंज।
दंतक–संज्ञा पुं० १. पहाड़ की चोटी। २. दाँत।
दंतकथा–संज्ञा स्त्री० जनश्रुति। सुनी-सुनाई परंपरागत बात।
दंतच्छद–संज्ञा पुं० ओष्ठ। ओंठ।
दंतधावन–संज्ञा पुं० १. दाँत धोने या साफ करने का काम। दातुन करने की क्रिया। २. दतौन। दातुन।
दंतबीज–संज्ञा पुं० अनार।
दंतमूलीय–वि० जिसका उच्चारण दाँतों के मूल से हो। जैसे तवर्ग।
दँतार–वि० बड़े दाँतोंवाला।
दंताल–संज्ञा पुं० हाथी।
दँतिया–संज्ञा स्त्री० छोटे-छोटे दाँत।
दंती–संज्ञा स्त्री० एक पेड़। यह दो प्रकार का होता है—लघुदंती और बृहत्‌दंती।
दंतुर–संज्ञा पुं० सूअर। हाथी।
वि० जिसके दाँत आगे निकले हों।
दँतुरिया†*–संज्ञा स्त्री० दे० "दँतिया"।
दँतुला–वि० बड़े-बड़े दाँतोंवाला। जिसके दाँत आगे निकले हों।
दंतोष्ठ्य–वि० दाँत और ओठ से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण, जैसे 'व'।
दंत्य–वि० १. दंत-संबंधी। २. जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे तवर्ग।
दंद–संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ या स्थान से निकलती हुई गरमी।
संज्ञा पुं० १. लड़ाई-झगड़ा। उपद्रव। २. शोर-गुल।
दंदा–संज्ञा पुं० [फा०] दाँत।
दंदाना–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दंदानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे आदि की।
क्रि० अ० गरम लगना। गरम होना।
दंदारू–संज्ञा पुं० छाला।
दंदी–वि० झगड़ालू। उपद्रवी।
दंपति, दंपती–संज्ञा पुं० स्त्री-पुरुष का जोड़ा। पति-पत्नी का जोड़ा।
दंपा*–संज्ञा स्त्री० बिजली।
दंभ–संज्ञा पुं० [वि० दंभी] झूठा अभिमान। घमंड। पाखंड। ढकोसला। आडंबर।
दंभी–वि० १. अभिमानी। घमंडी। २. पाखंडी। ढकोसलेबाज।
दंभोलि–संज्ञा पुं० इंद्रास्त्र। वज्र।
दँवरी–संज्ञा स्त्री० अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिए उसे बैलों से रौंदवाने का काम।
दँवारि*–संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।
दंश–संज्ञा पुं० १. वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दंत-क्षत। २. दाँत काटने की क्रिया। दंशन। ३. दाँत। ४. विषैले जंतुओं का डंक। डाँस। ५. वर्म। ६. द्वेष। कटूक्ति।
दंशक–संज्ञा पुं० दाँत से काटनेवाला। डाँस।
दंशन–संज्ञा पुं० [वि० दंशित, दंशी] १. दाँत से काटना। डसना। २. वर्म। बख्तर।
दंशना*–क्रि० स० दाँत से काटना। डसना।
दंष्ट्र–संज्ञा पुं० दाँत।
दंष्ट्रा–संज्ञा स्त्री० डाढ़। बड़ा दाँत।
दंष्ट्रानखविष–संज्ञा पुं० वे जीव-जन्तु जिनके दाँत और नख में विष हो, जैसे बिल्ली, कुत्ता आदि।

दंष्ट्राल–वि० बड़े-बड़े दाँतोंवाला।
संज्ञा पुं० १. सुअर। २. एक राक्षस का नाम।
दंष्ट्री–वि० १. बड़े दाँतोंवाला। २. सर्प। ३. हिंसक पशु। सुअर।
दंस*–संज्ञा पुं० दे० "दंश"।
दइजा‡–संज्ञा पुं० दहेज।
दइत–संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।
दई–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। विधाता। २. दैव-संयोग। अदृष्ट। प्रारब्ध।
मुहा०–दई का घाला=ईश्वर का मारा हुआ। अभागा। कमबख्त। दई-दई=हे दैव, हे दैव! (रक्षा के लिए ईश्वर की पुकार।)
दईमारा या **दइमारा**–वि० [स्त्री० दई-मारी] जिस पर ईश्वर का कोप हो। अभागा। कमबख्त।
दक–संज्ञा पुं० पानी। जल। रस।
दकार–संज्ञा पुं० 'द' अक्षर।
दकियानूस, दकियानूसी–वि० (अ०) बहुत पुराना। प्राचीन। पुराने ख्याल का। पुराने विचार रखनेवाला।
दक़ीक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. बारीक। महीन। २. कठिन।
दक़ीक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कोई बारीक बात। २. युक्ति। उपाय।
मुहा०–कोई दकीका बाकी न रखना=कोई उपाय बाकी न रखना। सब उपाय कर चुकना।
दक्खिन–संज्ञा पुं० [वि० दक्खिनी] १. दे० दक्षिण। वह दिशा जो सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिने हाथ की ओर पड़ती है। दक्षिण दिशा। २. भारत का वह भाग जो दक्षिण में है।
दक्खिनी–वि० १. दक्खिन का। २. जो दक्षिण के देश का हो।
संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी।
दक्ष–वि० १. निपुण। कुशल। चतुर। होशियार। २. दक्षिण। दाहिना।
संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. वृक्ष-विशेष। ३. शिवजी। ४. बल। वीर्य। ५. एक प्रजापति का नाम, जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं। पुराणानुसार शिव की पत्नी सती इन्हीं की कन्या थीं। ५. अत्रि ऋषि। ६. विष्णु।
दक्षकन्या–संज्ञा स्त्री० सती, जो शिव की पत्नी थीं।
दक्षता–संज्ञा स्त्री० निपुणता। योग्यता। कमाल।
दक्षिण–वि० १. बायाँ का उलटा। दाहिना। २. अनुकूल। ३. सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिने हाथ की ओर की दिशा। ४. निपुण। दक्ष। चतुर।
संज्ञा पुं० १. उत्तर के सामने की दिशा। २. वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो। ३. प्रदक्षिण। ४. तंत्रशास्त्र के अनुसार एक आचार या मार्ग।
दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० १. दक्षिण दिशा। २. पूजा आदि शुभ कार्य के समय ब्राह्मणों को दिया जानेवाला दान। ३. भेंट। ४. वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से संबंध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो।
दक्षिणाचल–संज्ञा पुं० मलयाचल। मलय-पर्वत।
दक्षिणाचार–संज्ञा पुं० तांत्रिकों का एक आचार। सदाचार।
दक्षिणापथ–संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिए रास्ते जाते हैं।
दक्षिणायन–वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर। जैसे, दक्षिणायन सूर्य।
संज्ञा पुं० सूर्य्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। २१ जून से २२ दिसंबर तक का छः महीने का समय, जिसमें सूर्य्य कर्क रेखा से दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।
दक्षिणावर्त–वि० जो दाहिनी ओर को घूमा हुआ हो। दक्षिण देश का।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।
दक्षिणावह–संज्ञा स्त्री० दक्षिण से आनेवाली हवा।
दक्षिणीय–वि० १. दक्षिण का। २. जो दक्षिणा का पात्र हो।

दखमा–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

दखल–संज्ञा पुं० [अ०] १. अधिकार। कब्जा। २. हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३. पहुँच। प्रवेश।

दखलदिहानी–संज्ञा स्त्री० अदालत से दखल या कब्जा दिलाने की क्रिया।

दखलनामा–संज्ञा पुं० वह लेखपत्र जिसमें यह लिखा हो कि अमुक खेत या जमीन पर दखल या अधिकार अमुक व्यक्ति को दिया गया।

दखिन–संज्ञा पुं० दे० "दक्षिण"।

दखिनहा†–वि० दक्षिण का। दक्षिणी।

दखील–वि० [अ०] जिसका दखल या कब्जा हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार–संज्ञा पुं० वह असामी, जो किसी जमींदार के खेत या जमीन पर स्थायी रूप से अपना दखल रखता हो।

दगइल‡–वि० जिसमें दाग लगा हो। दगैल। संज्ञा पुं० छली। दगाबाज।

दगड़–संज्ञा पुं० लड़ाई में बजाया जानेवाला बड़ा ढोल।

दगड़ना–क्रि० अ० सच्ची बात का विश्वास न करना।

दगदगा–संज्ञा पुं० [अ०] १. डर। भय। २. संदेह। ३. एक प्रकार की कंडील।

दगदगाना–क्रि० अ० चमकना।

क्रि० स० चमकाना। चमक उत्पन्न करना।

दगदगाहट–संज्ञा स्त्री० चमक-दमक।

दगदगी–संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।

दगध†–संज्ञा पुं० दे० "दाह"।

वि० दे० "दग्ध"।

दगधना*–क्रि० अ० जलना।

क्रि० स० १. जलाना। २. दुःख देना।

दगना–क्रि० अ० १. (बंदूक या तोप आदि का) छूटना। चलना। २. जलना। झुलस जाना। ३. दागा जाना। ४. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना।

क्रि० स० दे० "दागना"।

दगर, दगरा†–संज्ञा पुं० १. देर। विलंब। २. डगर। रास्ता।

दगल–संज्ञा पुं० दे० "दगला"।

दगला–संज्ञा पुं० मोटे वस्त्र का बना हुआ या रुईदार अँगरखा। भारी लबादा।

दगवाना–क्रि० स० दागने का काम दूसरे से कराना।

दगहा–वि० १. दागवाला। २. दाह-कर्म करनेवाला। ३. जो दागा हुआ हो। दग्ध किया हुआ।

दगा–संज्ञा स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा।

दगादार–वि० दे० "दगाबाज"।

दगाबाज–वि० [फा०] धोखा देनेवाला। छली। धोखेबाज। कपटी।

दगाबाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] छल। कपट।

दगैल–वि० १. दागदार। जिसमें दाग हो। २. जिसमें कुछ खोट या दोष हो।

संज्ञा पुं० दगाबाज। छली।

दग्ध–वि० १. जला या जलाया हुआ। २. दुःखित। जिसे कष्ट पहुँचा हो।

दग्धा–संज्ञा स्त्री० १. पश्चिम दिशा। २. विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ तिथियाँ (अशुभ)। ३. कुरु नाम का एक वृक्ष।

दग्धित*–वि० दे० "दग्ध।"

दग्धाक्षर–संज्ञा पुं० पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर, जिनका छंद के आरंभ में रखना वर्जित है।

दचक–संज्ञा स्त्री० धक्का। झटका। दचकने की क्रिया।

दचकना–क्रि० अ० संज्ञा दचका] १. धक्का या ठोकर खाना। २. दब जाना। ३. झटका खाना।

क्रि० स० १. ठोकर या धक्का लगाना। २. दबाना। झटका देना।

दचका–संज्ञा पुं० दे० "दचक"।

दचना–क्रि० अ० [अनु०] गिरना।

दच्छ–संज्ञा पुं० दे० "दक्ष"।

दच्छकुमारी*–संज्ञा स्त्री० दक्ष प्रजापति की कन्या, सती।

दच्छना–संज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।

दच्छसुता–संज्ञा स्त्री० दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन–वि० दे० "दक्षिण"।

दढ़ियल–वि० दाढ़ीवाला। जो दाढ़ी रखे हो।

दतवन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुअन"।

दतिया—संज्ञा स्त्री० १. दाँत का स्त्रीलिंग। छोटा दाँत। २. एक पहाड़ी तीतर।
दतुअन, दतुवन—संज्ञा स्त्री० १. नीम या बबूल आदि की छोटी टहनी जिसकी कूची से दाँत साफ करते हैं। दातुन। २. दाँत साफ करने और मुँह धोने की क्रिया।
दतौन—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।
दत्त—संज्ञा पुं० १. दत्तात्रेय। २. भगवान् का एक अवतार। ३. दान। ४. दत्तक। गोद लिया हुआ पुत्र। बंगाली कायस्थों की एक उपजाति।
वि० दिया हुआ।
यौ०—दत्तविधान = दत्तक पुत्र लेना।
दत्तक—संज्ञा पुं० गोद लिया हुआ लड़का। मुतबन्ना।
दत्तचित्त—वि० जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो। भली भाँति मन लगानेवाला।
दत्तात्मा—संज्ञा पुं० वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।
दत्तात्रेय—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो पुराणानुसार विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने जाते हैं।
दत्तोपनिषद्—संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।
ददा—संज्ञा पुं० दे० "दादा"।
ददन—संज्ञा पुं० दान।
ददरा—संज्ञा पुं० छन्ना।
ददरी क्षेत्र—संज्ञा पुं० भृगुमुनि का स्थान, जहाँ कार्तिक की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह स्थान बलिया नगर के समीप है।
ददिया ससुर—संज्ञा पुं० पत्नी या पति का दादा। श्वशुर का पिता।
ददिहाल—संज्ञा पुं० १. दादा का कुल। २. दादा का घर।
ददोरा—संज्ञा पुं० मच्छड़, बर्रे आदि के काटने या खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर चकत्ती की तरह थोड़ी सी सूजन। चकत्ता।
दद्रु या दद्रू—संज्ञा पुं० दाद रोग।
दध†*—संज्ञा पुं० दे० "दधि"।
दधसार*—संज्ञा पुं० दे० "दधिसार"।
दधि—संज्ञा पुं० १. जमाया हुआ दूध। दही। २. वस्त्र। कपड़ा। ३. समुद्र। सागर।
दधिकाँदो—संज्ञा पुं० जन्माष्टमी के समय होनेवाला एक प्रकार का उत्सव, जिसमें लोग हलदी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेंकते हैं।
दधिका—संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. एक वैदिक देवता।
दधिज—संज्ञा पुं० १. मक्खन। २. चन्द्रमा।
दधिजात—संज्ञा पुं० १. मक्खन। २. समुद्र से उत्पन्न चंद्रमा।
दधिसागर—संज्ञा पुं० पुराणानुसार दही का समुद्र।
दधिसार—संज्ञा पुं० मक्खन।
दधिसुत—संज्ञा पुं० १. कमल। २. मुक्ता। मोती। ३. चंद्रमा। ४. जालंधर दैत्य। ५. विष। जहर। ६ मक्खन। नवनीत।
दधिसुता—संज्ञा स्त्री० सीप।
दधीचि—संज्ञा पुं० एक वैदिक ऋषि जो यास्क के मत से अथर्व के पुत्र थे और इसी लिए दधीचि कहलाते थे। एक बार वृत्रासुर के उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिए दधीचि से उनकी हड्डियाँ माँगीं। दधीचि ने इसके लिए अपने प्राण त्याग दिए। तभी से ये बड़े भारी दानी प्रसिद्ध हैं।
दनदनाना—क्रि० अ० १. दनदन शब्द करना। २. आनंद करना।
दनादन—क्रि० वि० दनदन शब्द के साथ।
दनु—संज्ञा स्त्री० दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी। इसके चालीस पुत्र हुए थे, जो सब दानव कहलाते हैं।
दनुज—संज्ञा पुं० असुर। राक्षस।
दनुजदलनी—संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
दनुजराय—संज्ञा पुं० दानवों का राजा हिरण्यकशिपु।
दनुजेंद्र—संज्ञा पुं० रावण।
दन्न—संज्ञा पुं० [अनु०] "दन्न" शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।
दपटना—क्रि० अ० [संज्ञा दपट] डाँटना। घुड़कना।
दपु—संज्ञा पुं० दर्प। शेखी।

दपेट—संज्ञा स्त्री० दे० "दपट"।

दफ़तर—संज्ञा पुं० दे० "दफ्तर"।

दफ़ती—संज्ञा स्त्री० कागज के कई तख्तों को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता। कुट। वसली।

दफ़न—संज्ञा पुं० [अ०] किसी चीज को विशेषतः मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दफ़नाना—क्रि० स० जमीन में दबाना या गाड़ना।

दफ़ा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बार। बेर। २. किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक नियम की व्यवस्था हो। धारा। वि० दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत। **मुहा०**—दफा लगाना=अभियुक्त पर किसी दफा के नियम को घटाना।

दफ़ादार—संज्ञा पुं० [अ०] फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफ़ीना—संज्ञा पुं० [अ०] गड़ा हुआ धन या खजाना।

दफ़्तर—संज्ञा पुं० [फा०] १. कार्यालय। आफिस। २. लंबी-चौड़ी चिट्ठी। ३. सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।

दफ्तरी—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह कर्मचारी जो दफ्तर के कागज आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खींचता हो। २. किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज। जिल्द-बंद।

दबंग—वि० प्रभावशाली। दबाववाला।

दबक—संज्ञा स्त्री० १. दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २. सिकुड़न।

दबकगर—संज्ञा पुं० दबका (तार) बनानेवाला। दबकैया।

दबकना—क्रि० अ० १. भय के कारण छिपना। २. छिपना।
क्रि० स० धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना।

दबका—संज्ञा पुं० कामदानी का सुनहला तार।

दबकाना—क्रि० स० छिपाना। आड़ में करना। डाँटना।

दबकी—संज्ञा स्त्री० मिट्टी का एक बर्त्तन। दबकने का भाव।

दबकैया—संज्ञा पुं० दे० "दबकगर"।

दबगर—संज्ञा पुं० १. ढाल बनानेवाला। २. चमड़े के कुप्पे बनानेवाला।

दबदबा—संज्ञा पुं० [अ०] रोब-दाब। आतंक। प्रताप।

दबना—क्रि० अ० १. भार के नीचे आना। बोझ के नीचे पड़ना। २. किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना। पीछे हटना। ३. दबाव में पड़कर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना। ४. किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जँचना। ५. किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना। ६. उभड़ न सकना। शांत रहना। ७. अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। ८. ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके। ९. धीमा पड़ना। मंद पड़ना। १०. संकोच करना। झेंपना।
मुहा०—दबी जबान से कहना=साफ-साफ न कहना, बल्कि इस प्रकार कहना जिससे केवल कुछ ध्वनि व्यक्त हो।

दबवाना—क्रि० स० दबाने का काम दूसरे से कराना।

दबाना—क्रि० स० [संज्ञा दाब, दबाव] १. ऊपर से भार रखना। २. किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना। ३. पीछे हटाना। ४. जमीन के नीचे गाड़ना। दफन करना। ५. किसी पर इतना आतंक जमाना कि वह कुछ कह न सके। जोर डालकर विवश करना। ६. दूसरे को मंद या मात कर देना। ७. किसी बात को उठने या फैलने न देना। ८. दमन करना। शांत करना। ९. किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना। १०. झोंक के साथ बढ़कर किसी चीज को पकड़ लेना। ११. ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मनुष्य असहाय, दीन या विवश हो जाय।

दबाव—संज्ञा पुं० १. दबाने की क्रिया। चाँप। २. दबाने का भाव। ३. रोब।

दबीज–वि० १. [फा०] जिसका दल मोटा हो। गाढ़ा। २. संगीन।

दबीर–संज्ञा पुं० [फा०] मुंशी।

दबूसा–संज्ञा पुं० जहाज का कमरा। नाव का पिछला भाग।

दबैल–वि० १. जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २. दब्बू। जो बहुत दबता या डरता हो।

दबोचना–क्रि० स० १. किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। धर दबाना। २. छिपाना।

दबोरना†*–क्रि० स० अपने सामने ठहरने न देना। दबाना।

दभ्र–वि० थोड़ा। कम।

दम–संज्ञा पुं० १. दमन करने के लिए दिया जानेवाला दंड। सजा। २. संयम। इंद्रियों को वश में रखना। ३. कीचड़। ४. घर। ५. पुराणानुसार मरुत राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इंद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ६. बुद्ध का एक नाम। ७. विष्णु। ८. दबाव। ९. नशे आदि के लिए साँस के साथ धुआँ खींचने की क्रिया। १०. साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूंकने की क्रिया। ११. उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल। १२. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता है। जीवनी-शक्ति। प्राण। जान। १३. व्यक्तित्व। १४.खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बंद करके आग पर पकाने की क्रिया। १५. धोखा। छल। फरेब। १६. तलवार या छुरी आदि की धार। १७. साँस। कुवास।

मुहा०—दम अटकना या उखड़ना=साँस रुकना, विशेषत: मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना=१. चुप रह जाना। २. साँस ऊपर चढ़ाना। दम घुटना=हवा की कमी के कारण साँस रुकना। दम घोंटकर मारना=१. गला दबाकर मारना। २. बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना=अंतिम साँस लेना। दम फूलना=१. अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी-जल्दी चलना। हाँफना। २. दमे के रोग का दौरा होना। दम भरना=१. किसी की मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। २. परिश्रम करना। सुस्ताना। ३. बोलना। कुछ कहना। चूँ करना। दम लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना=१. श्वास की गति को रोकना। २. चुप होना। मौन रहना। दम मारना या लगाना=गाँजे आदि को चिलम पर रखकर उसका धुआँ खींचना। दम के दम=क्षण भर। थोड़ी देर। दम पर दम=बहुत थोड़ी-थोड़ी देर पर। दम खुश्क होना = दे० "दम सूखना"। दम नाक में, या नाक में, दम आना=तंग या परेशान होना। दम निकलना=मृत्यु होना। मरना। दम सूखना=बहुत डर के कारण साँस तक न लेना। प्राण सूखना। (किसी का) दम गनीमत होना=(किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होता रहना। दम-झाँसा=छल-कपट। दमदिलासा या दम-पट्टी=वह बात जो केवल फुसलाने के लिए कही जाय। झूठी आशा। दम देना=बहकाना। धोखा देना।

दमक–संज्ञा स्त्री० चमक। चमचमाहट। द्युति। आभा।

दमकना–क्रि० अ० चमकना। चमचमाना।

दमकल–संज्ञा स्त्री० १. वह यंत्र जिससे जल आदि तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर या और किसी ओर फेंका जा सके। २. आग बुझाने का यंत्र। ३. कुएँ से पानी निकालने का यंत्र। पंप।

दमकला–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की पिचकारी जिससे जल या रंग आदि छिड़कते हैं। २ अँगीठी जिसमें कोयला जले।

दमखम–संज्ञा पुं० [फा०] १. दृढ़ता। मजबूती। २. जीवनी-शक्ति। प्राण। ३. तलवार की धार और उसका झुकाव।

दम-चूल्हा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमड़ी–संज्ञा स्त्री० पैसे का आठवाँ भाग। एक चिड़िया।
दमदमा–संज्ञा पुं० [फा०] किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।
दमदार–वि० [फा०] १. दृढ़। मजबूत। २. जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह सके। ३. जिसकी धार तेज हो। चोखा।
दमन–संज्ञा पुं० १. दबाने या रोकने की क्रिया। २. दंड। सजा। कुचलना। ३. इंद्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। दम। ४. विष्णु। ५. महादेव। शिव। ६. एक ऋषि का नाम। दमयती इन्हीं के यहाँ उत्पन्न हुई थी। ७. एक राक्षस।
संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।
दमनक–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का छंद। २. दौना नामक पौधा।
दमनशील–वि० जिसकी प्रकृति दमन करने की हो। दमन करनेवाला।
दमनी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा। संकोच। लज्जा।
दमनीय–वि० १. दमन करने योग्य। जिसका दमन किया जाय। २. जो दबाया जा सके।
दमबाज–वि० दम देनेवाला। फुसलानेवाला। बहाना करनेवाला।
दमबाजी–संज्ञा स्त्री० बहानेबाजी। दम देने का कार्य।
दमयंती–संज्ञा स्त्री० राजा नल की स्त्री जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।
दमा–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनता से निकलता है। साँस।
दमाद–संज्ञा पुं० कन्या का पति। जामाता।
दमानक–संज्ञा स्त्री० तोपों की बाढ़।
दमादम–क्रि० वि० [फा०] दमदम शब्द के साथ। लगातार।
दमाम या दमामा–संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका।
दमारि*†–संज्ञा पुं० जंगल की आग। वन की आग। दावाग्नि।
दमावति–संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।
दमैया*†–वि० दमन करनेवाला।
दयंत‡–संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।
दयनीय–वि० दया करने योग्य। ऐसी हालत, जिसे देखकर दया उत्पन्न हो।
दया–संज्ञा स्त्री० १. सहानुभूति का भाव। दूसरे को कष्ट में देखकर मन में उत्पन्न होनेवाला दुखपूर्ण भाव और उसे दूर करने की इच्छा। करुणा। रहम। २. दक्ष प्रजापति की कन्या, जो धर्म को ब्याही गई थी।
दयादृष्टि–संज्ञा स्त्री० करुणा या अनुग्रह का भाव। मेहरबानी की नजर।
दयानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] सत्यनिष्ठा। ईमान।
दयानतदार–वि० ईमानदार। सच्चा।
दयानतदारी–संज्ञा स्त्री० ईमानदारी। सच्चाई।
दयाना*–क्रि० अ० दयालु होना। कृपालु होना।
दयानिधान–संज्ञा पुं० दया का खजाना। बहुत दयालु।
दयानिधि–संज्ञा पुं० १. बहुत दयालु पुरुष। २. ईश्वर।
दयापात्र–संज्ञा पुं० दया के योग्य।
दयामय–संज्ञा पुं० दयालु। १. दया से पूर्ण। २. ईश्वर।
दयार–संज्ञा पुं० [अ०] प्रांत। प्रदेश।
दयार्द्र–वि० दयापूर्ण। दयालु।
दयाल–वि० दे० "दयालु"।
दयालु–वि० बहुत दया करनेवाला।
दयालुता–संज्ञा स्त्री० दयालु होने का भाव।
दयावंत–वि० दे० "दयालु"।
दयावना*–वि० [स्त्री० दयावनी] दया के योग्य। दीन।
दयावान्–वि० [स्त्री० दयावती] जिसके चित्त में दया हो। दयालु।
दयाशील–वि० दयालु।
दयासागर–संज्ञा पुं० अत्यन्त दयालु पुरुष।
दयित–वि० [स्त्री० दयिता] प्यारा। प्रिय। संज्ञा पुं० पति।
दयिता–संज्ञा स्त्री० पत्नी।
दर–संज्ञा पुं० १. शंख। २. गड्ढा। दरार।

३. गुफा। कंदरा। ४. फाड़ने की क्रिया। विदारण। ५. डर। भय। समूह। दल। द्वार। दरवाजा।

संज्ञा स्त्री० १. भाव। २. प्रमाण। ठीक-ठिकाना। ३. कदर। प्रतिष्ठा। ४. ईख। ऊख।

मुहा०—दर-दर मारा-मारा फिरना= ठोकर खाना। दुर्दशाग्रस्त होकर घूमना। भटकना।

दरक–वि० डरपोक। कायर।

संज्ञा स्त्री० दरकने की क्रिया। चीर। दरार। दराज।

दरकना–क्रि० अ० दाब पड़ने से फटना। चिरना।

दरकच–संज्ञा स्त्री० कुचल जाने से लगने-वाली चोट।

दरका–संज्ञा पुं० १. शिगाफ। दरार। २. वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।

दरकाना–क्रि० स० फाड़ना।

क्रि० अ० फटना।

दरकार–वि० [फा०] आवश्यकता। जरूरत। अपेक्षा।

दर-किनार–क्रि० वि० अलग। अलहदा। एक ओर। दूर।

दरकूच–क्रि० वि० बराबर यात्रा करता हुआ। मंजिल दर मंजिल।

दरख्वास्त–संज्ञा स्त्री० १. प्रार्थना। २. निवेदन। प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र।

दरख्त–संज्ञा पुं० पेड़। वृक्ष।

दरगाह–संज्ञा स्त्री०[फा०]१. चौखट। देहरी। २. दरबार। कचहरी। ३. समाधि-स्थान। मकबरा। मजार।

दर-गुजर–वि०[फा०] १. अलग। वंचित। २. मुआफ। क्षमा-प्राप्त।

दरगुजरना–क्रि० अ० [फा०] छोड़ना। बाज आना। जाने देना।

दरज–संज्ञा स्त्री०। दरार। शिगाफ। दराज।

दरजा–संज्ञा पुं० दे० "दर्जा"।

दरजी–संज्ञा पुं० दे० "दर्जी"।

दरण–संज्ञा पुं० १. दलने या पीसने की क्रिया। २. ध्वंस। विनाश।

दरद–संज्ञा पुं० [फा०] १. दर्द। पीड़ा। व्यथा। २. दया। करुणा।३. काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। ४. एक जाति, जिसका उल्लेख मनुस्मृति, हरिवंश महापुराण आदि में है। ५. ईंगुर।

दर-दर–क्रि० वि० [फा०]द्वार-द्वार। स्थान-स्थान पर। जगह-जगह।

दरदरा–वि० [स्त्री० दरदरी] दानेदार। मोटा पिसा हुआ। जिसके रवे महीन न हों।

दरदराना–क्रि० स० इस प्रकार पीसना या रगड़ना कि मोटे-मोटे रवे या टुकड़े हो जायँ। थोड़ा पीसना।

दरदरी–वि० मोटे रवे की।

संज्ञा० स्त्री० पृथ्वी। जमीन।

दरदवंत, दरदवंद–वि० १. सहानुभूति रखने-वाला। कृपालु। दयालु। २. पीड़ित। दुखी।

दरद्द–संज्ञा पुं० दे० "दरद" या "दर्द"।

दरना†–क्रि० स० १. दरदरा दलना। मोटा चूर्ण करना। २. नष्ट करना।

दरप*‡–संज्ञा पुं० दे० "दर्प"।

दरपन*–संज्ञा पुं० दे० "दर्पण"।

दरपना*–क्रि० अ० १. ताव में आना। क्रोध करना। २. घमंड करना।

दरपनी–संज्ञा स्त्री० मुँह देखने का छोटा शीशा।

दरपरदा–क्रि० वि० चुपचाप। पर्दे की ओट में।

दरपेश–क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने।

दरबंदी–संज्ञा स्त्री० १. अलग-अलग दर या विभाग बनाना। २. चीजों की दर या भाव निश्चित करना।

दरब–संज्ञा पुं० द्रव्य। धन। दौलत।

दरबराना–क्रि० स० १. दरदरा कराना। २. घबड़ा देना। ३. दबाना। दबाव डालना।

दरबा–संज्ञा पुं० [फा०] कबूतरों, मुरगियों आदि के रहने के लिए काठ का खानेदार संदूक।

दरबान–संज्ञा पुं० [फा०] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

दरबार–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दरबारी] १. वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबों के

साथ बैठते हैं। २. राजसभा। कचहरी। ३. महाराज। राजा (रजवाड़ों में)।
मुहा०—दरबार खुलना=दरबार में जाने की आज्ञा मिलना। दरबार बंद होना=दरबार में जाने की रोक होना।
दरबार आम—संज्ञा पुं० वह राजसभा, जिसमें सर्वसाधारण का प्रवेश हो।
दरबार खास—संज्ञा पुं० वह राजसभा जिसमें खास-खास व्यक्ति जा सकें।
दरबारदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के यहाँ बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना।
दरबारी—संज्ञा पुं० [फा०] दरबार में बैठनेवाला आदमी।
वि० दरबार का। दरबार के योग्य।
दरबी—संज्ञा स्त्री० कलछी।
दरभ—संज्ञा पुं० दे० "दर्भ"। बंदर।
दरमा—संज्ञा पुं० बाँस की चटाई।
दरमान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] औषध। दवा।
दरमाहा—संज्ञा पुं० [फा०] मासिक वेतन। महीने की तनख्वाह।
दरमियान—संज्ञा पुं० [फा०] मध्य। बीच। क्रि० वि० बीच में। मध्य में।
दरमियानी—वि० [फा०] बीच का।
संज्ञा पुं० दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।
दरवाजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. द्वार। २. किवाड़। फाटक।
दरवी—संज्ञा स्त्री० १. साँप का फन। २. करछुल। पौना।
यौ०—दरवीकर=साँप।
दरवेश—संज्ञा पुं० [फा०] फकीर। साधु।
दरश—संज्ञा पुं० दर्शन।
दरशन—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।
दरशाना—क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।
दरस—संज्ञा पुं० १. देखा-देखी। दर्शन। दीदार। २. भेंट। मुलाकात। ३. रूप। छवि। सुंदरता।
दरसन—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।
दरसना*—क्रि० अ० दिखाई पड़ना। देखने में आना।
क्रि० स० देखना। लखना।
दरसनिया—संज्ञा पुं० शीतला आदि की शान्ति की पूजा करानेवाला।
दरसनी—संज्ञा स्त्री० १. दर्शन। २. दर्पण। शीशा।
दरसनी हुंडी—संज्ञा स्त्री० वह हुंडी जिसे देखते ही उसके रुपयों का भुगतान हो। वह हुंडी जिसका भुगतान दस दिन या उससे कम समय में होता है।
दरसाना—क्रि० स० १. दिखलाना। २. प्रकट करना। स्पष्ट करना। समझाना।
*†—क्रि० अ० दिखाई पड़ना।
दरसावना—क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दराँती—संज्ञा स्त्री० हँसिया।
दराज—वि० [फा०] बड़ा भारी। दीर्घ।
क्रि० वि० बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री० दरज। दरार। मेज में लगा हुआ खाना।
दरार—संज्ञा स्त्री० वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने पर पड़ जाती है। शिगाफ। दरज।
दरारना—क्रि० अ० फटना। विदीर्ण होना।
दरारा—संज्ञा पुं० धक्का।
दरिंदा—संज्ञा पुं० [फा०] फाड़ खानेवाला जंतु। मांस-भक्षक वन-जतु।
दरिद्र—वि० [स्त्री० दरिद्रा] गरीब। जिसके पास धन न हो। निर्धन। कंगाल।
दरिद्रता—संज्ञा स्त्री० गरीबी। निर्धनता। कंगाली।
दरिद्रनारायण—संज्ञा पुं० गरीबों और दीन-दुखियों के रूप में रहनेवाला भगवान्।
दरिद्री—वि० दे० "दरिद्र"।
दरिया—संज्ञा पुं० [फा०] १. नदी। २. समुद्र। ३. दलिया।
दरियाई—वि० [फा०] १. नदी-संबंधी। २. नदी के निकट का। ३. समुद्र-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की रेशमी साटन।
दरियाई घोड़ा—संज्ञा पुं० गैंड़े की तरह का एक जानवर जो अफ्रीका में नदियों के किनारे रहता है।
दरियाई नारियल—संज्ञा पुं० एक प्रकार का

बड़ा नारियल जिसका पात्र बनाकर संन्यासी या फकीर अपने पास रखते हैं।
दरियादासी—संज्ञा पुं० निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय, जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।
दरिया-दिल—वि० [फा०] [स्त्री० दरिया-दिली] उदार। दानी। फैयाज।
दरियाफ़्त—वि० [फा०] जिसका पता लगा हो। ज्ञात। मालूम।
दरिया-बरार—संज्ञा पुं० [फा०] वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले।
दरियाबुर्द—संज्ञा पुं० [फा०] वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।
दरियाव—संज्ञा पुं० दे० "दरिया"।
दरी—संज्ञा स्त्री० १. गुफा। खोह। कन्दरा। २. पहाड़ के बीच का नीचा स्थान, जहाँ कोई नदी गिरती हो। मोटे सूतों का बुना हुआ बिछौना। शतरंजी।
वि० १. डरपोक। २. विदीर्ण करनेवाला। फाड़नेवाला।
दरीखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारादरी।
दरीचा—संज्ञा पुं० [फा०] स्त्री० दरीची] १. खिड़की। झरोखा। २. खिड़की के पास बैठने की जगह।
दरीबा—संज्ञा पुं० बाजार। पान का बाजार।
दरेग़—संज्ञा पुं० [अ०] कमी। कसर।
दरेरना—क्रि० स० १. रगड़ना। पीसना। २. रगड़ते हुए धक्का देना।
दरेरा—संज्ञा पुं० १. रगड़ा। धक्का। २. बहाव का जोर। तोड़।
दरेस—संज्ञा स्त्री० फूलदार छपा हुआ एक प्रकार का महीन कपड़ा। एक प्रकार की छींट।
वि० तैयार। सजा हुआ। बना-बनाया।
दरेसी—संज्ञा स्त्री० तैयारी। मरम्मत। दुरुस्त करना।
दरैया†—संज्ञा पुं० १. दलनेवाला। जो दले। २. घातक। विनाशक।
दरोग़—संज्ञा पुं० अ०] झूठ। असत्य।
दरोग़हलफ़ी—संज्ञा स्त्री० [अ०] सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना।
दर्ज—संज्ञा स्त्री० दे० "दरज"।
वि० [फा० कागज पर लिखा हुआ।
दर्जन—संज्ञा पं० बारह का समूह। इकट्ठे बारह।
दर्जा—संज्ञा पुं० [अ०] १. क्रम के विचार से निश्चित स्थान। श्रेणी। कोटि। वर्ग। २. कक्षा। ३. पद। ओहदा। ४. किसी वस्तु का क्रम के अनुसार विभाग।
क्रि० वि० गुणित। गुना। खंड।
दर्जी—संज्ञा पुं० [फा०][स्त्री० दर्जिन] १. कपड़ा सीने का व्यवसाय करनेवाला। २. कपड़ा सीनेवाला।
दर्द—संज्ञा पुं० [फा०] १. पीड़ा। व्यथा। २. दुःख। तकलीफ। ३. करुणा। दया।
मुहा०—दर्द खाना=दया करना।
दर्दमंद—वि० [फा०] १. पीड़ित। दुःखी। २ दयावान्।
दर्दी—वि० दे० "दर्दमंद"।
दर्दुर—संज्ञा पुं० १. मेढक। २. बादल। ३. अभ्रक। अबरक।
दर्प—संज्ञा पुं० १. गर्व। घमंड। अहंकार। अभिमान। मान। २. उद्दंडता। ३. दबाव। आतंक। ४. कस्तूरी।
दर्पक—संज्ञा पुं० दर्प करनेवाला पुरुष। कामदेव।
दर्पण—संज्ञा पुं० १. मुंह देखने का शीशा। आइना। आरसी। २. आँख। ३. आदर्श। ४. नमूना। एक पर्वत। ५. संगीत के ताल का एक भेद। उद्दीपन। ६. एक नदी।
दर्पित—वि० दर्प से भरा हुआ। घमंडी। अभिमानी। उद्दंड। अक्खड़।
दर्पी—वि० घमंडी। अभिमानी। दर्प से भरा हुआ।
दर्ब*†—संज्ञा पुं० १. द्रव्य। धन। २. धातु (सोना, चाँदी इत्यादि)।
दर्भ—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कुश। डाभ। २. कुश। ३. कुशासन।
दर्भट—संज्ञा पुं० गुप्त गृह।
दर्भासन—संज्ञा पुं० कुश का बना हुआ बिछावन। कुशासन।
दर्मियान—संज्ञा पुं० [फा०] दे० "दरमियान"।

दर्रा—संज्ञा पुं० पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग। घाटी। दरार।

दर्राना—क्रि० अ० धड़धड़ाना। बेधड़क आगे बढ़ना।

दर्व—संज्ञा पुं० १. हिंसा करनेवाला। हिंसक। २. पंजाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति। ३. इस जाति का उक्त देश।

दर्विका—संज्ञा स्त्री० चमचा। तरकारी आदि चलाने का बर्तन। पात्र-विशेष।

दर्वी—संज्ञा स्त्री० १. करछी। चमचा। २. साँप का फन।

दर्वीकर—संज्ञा पुं० फनवाला साँप। सर्प।

दर्श—संज्ञा पुं० १. दर्शन। अवलोकन। २. अमावास्या तिथि। ३. द्वितीया तिथि। ४. अमावास्या के दिन होनेवाला यज्ञ आदि।

दर्शक—संज्ञा पुं० १. दर्शन करनेवाला। देखनेवाला। निरीक्षक। २. दिखानेवाला। ३ प्रधान। ४ द्वारपाल।

दर्शन—संज्ञा पुं० १. देखना। साक्षात्कार। अवलोकन। २. भेंट। मुलाकात। ३. तत्त्वज्ञान-संबंधी विद्या या शास्त्र, जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत् के नियामक-धर्म और जीवन के अंतिम लक्ष्य आदि का निरूपण होता है। ४. नेत्र। आँख। ५. स्वप्न। ६. बुद्धि। ७. धर्म्म। ८. दर्पण।

दर्शनप्रतिभू—संज्ञा पुं० प्रतिनिधि। जमानतदार। हाजिर-जामिन। वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति-विशेष को समय पर उपस्थित करने का दायित्व अपने ऊपर ले।

दर्शनी हुंडी—संज्ञा स्त्री० दे० "दरसनी हुंडी"।

दर्शनीय—वि० १. देखने योग्य। देखने लायक। २. सुंदर। मनोहर।

दर्शाना—क्रि० स० दे० "दरसाना"।

दर्शित—वि० दिखलाया हुआ।

दर्शी—वि० देखनेवाला।

दल—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के उन दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों, पर जरा सा दबाव पड़ने से अलग हो जायँ। जैसे, दाल के दो दल। २. पौधों का पत्ता। पत्र। ३. तमालपत्र। ४. फूल की पँखड़ी। ५. समूह। झुंड। गरोह। ६. मंडली। गुट्ट। ७. सेना। फौज। ८. स्थूलता। ९. कीचड़। १०. म्यान। ११. कोष। धन। १२. जल में उत्पन्न होनेवाला तृण-विशेष। १३. परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई।

दलक—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गुदड़ी। २. थरथराहट। धमक। ३. रह-रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

दलकन—संज्ञा स्त्री० १. दलकने की क्रिया या भाव। थर्राना। फटना। २. चिर जाना। ३. चौंकना। ४. आघात।

दलकना—क्रि० अ० १. फट जाना। दरार खाना। चिर जाना। २. थर्राना। काँपना। ३. चौंकना। ४. उद्विग्न हो उठना।
क्रि० स० डराना। भयभीत कर देना।

दलकोश—संज्ञा पुं० कुन्द का पेड़।

दलगंजन—वि० सेना को मारनेवाला भारी वीर। संज्ञा पुं० धान-विशेष।

दलथम्भन—संज्ञा पुं० कमखाब बुननेवालों का औजार-विशेष।

दलदल—संज्ञा स्त्री० १. पंक। कीचड़। चहला। २. वह गीली जमीन, जिसमें पैर नीचे को धँसता हो।

मुहा०—दलदल में फँसना=१. मुश्किल या दिक्कत में पड़ना। २. जल्दी खतम या तय न होना। खटाई में पड़ना।

दलदला—वि० [स्त्री०दलदली] जिसमें दलदल हो। दलदलवाला।

दलदार—वि० मोटे दल, परत या तहवाला।

दलन—संज्ञा पुं० वि० दलित] १. मर्दन। टुकड़े-टुकड़े करना। चूर-चूर करना। २. संहार।

दलना—क्रि० स० १. टुकड़े-टुकड़े करना। चूर्ण करना। २. रौंदना। कुचलना। ३. दबाना। मसलना। मींड़ना। ४. चक्की में डालकर अनाज आदि पीसना या दाल के दाने अलग करना। ५. नष्ट करना। ध्वस्त करना। ६. झटके से खंडित करना।

दलनि†—संज्ञा स्त्री० दलने की क्रिया या ढंग।

दलनीय—वि० दलन (कुचलने या नाश) करने योग्य। दमन करने योग्य।

दलपति—संज्ञा पुं० १. मुखिया। अगुआ। सरदार। २. सेनापति

दल-बल—संज्ञा पुं० १ लाव-लश्कर। सेना और उसमें रहनेवाले लोग। फौज। २ साथ रहनेवाले गिरोह।

दल-बादल—संज्ञा पुं० १. बादलों का समूह। २. भारी सेना। ३. बहुत बड़ा शामियाना

दलमलना—क्रि० स० १. मसल डालना। २. रौंदना। कुचलना। ३. नष्ट करना।

दलवाना—क्रि० स० दलना का प्रे०] दलने का काम दूसरे से करवाना।

दलवाल*†—संज्ञा पुं० सेनापति ।

दलवैया—वि० दलन या नाश करनेवाला दलने या चूर्ण करनेवाला।

दलहन—संज्ञा पुं० वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाय। जैसे चना, मूँग, उर्द, अरहर।

दलान†—संज्ञा पुं० दे० "दालान"।

दलाना—क्रि० स० दे० "दलवाना"

दलाल—संज्ञा पुं० [फा०, स्त्री० दलाली] १. सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता देनेवाला व्यक्ति। इस तरह का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २. मध्यस्थ। बिचवई।

दलाली—संज्ञा स्त्री० १. दलाल का काम। २. दलाल को मिलने का हिस्सा या द्रव्य।

दलित—वि० १. रौंदा या कुचला हुआ। २. मसला हुआ। ३. खंडित। ४. नष्ट किया हुआ।

दलिया—संज्ञा पुं० दलकर पिसा हुआ या टुकड़े किया हुआ अनाज।

दली—वि० १. दलवाला। पत्तोंवाला। २. दलित। दली गई। दो टूक की हुई।

दलील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तर्क। युक्ति। २. बहस। वाद-विवाद।

दलेल—संज्ञा स्त्री० सिपाहियों की वह कवायद जो सजा की तरह पर हो।

दलैया—संज्ञा पुं० मारनेवाला। पीसनेवाला।

दवँगरा—संज्ञा पुं० वर्षा के आरम्भ में होनेवाली झड़ी।

दव—संज्ञा पुं० १. वन। जंगल। २. वन में आप से आप लगनेवाली आग। दवाग्नि। ३. अग्नि। आग।

दवन*—संज्ञा पुं० १. नाश। २. दौना पौधा।

दवना*—संज्ञा पुं० दे० "दौना"। क्रि० स० जलना।

दवनी—संज्ञा स्त्री० फसल के डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम। दँवरी। मिसाई।

दवरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि"।

दवा—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. औषध। वह वस्तु, जिससे रोग दूर हो। २. रोग दूर करने का उपाय। उपचार। चिकित्सा। ३. दूर करने की युक्ति। मिटाने का उपाय। ४. दुरुस्त करने की तदबीर। *५. वन में लगनेवाली आग। दवाग्नि। ६. आग।

दवाखाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह जगह, जहाँ दवा मिलती हो। २. औषधालय।

दवागिन*—संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।

दवाग्नि—संज्ञा स्त्री० वन में लगनेवाली आग। दावानल।

दवात—संज्ञा स्त्री० [अ०] लिखने की स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

दवानल—संज्ञा पुं० दे० "दवाग्नि"।

दवामी—वि० [अ०] स्थायी। सदा के लिए।

दवामी बंदोबस्त—संज्ञा पुं० [फा०] जमीन का वह बंदोबस्त, जिसमें सरकारी मालगुजारी एक ही बार सदा के लिए निश्चित हो।

दवारी—संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।

दश—वि० दस। दस की संख्या। १०।

दशकंठ—संज्ञा पुं० रावण। दस मुखवाला। दशानन।

दशकंठजित—संज्ञा पुं० श्री रामचन्द्र। दस मुखवाले रावण को जीतनेवाले श्रीराम।

दशकंधर—संज्ञा पुं० रावण।

दशक—संज्ञा पुं० दस वस्तुओं का समूह। सन्, संवत् आदि में इकाई से दहाई तक के दस वर्ष।

दशकर्म—संज्ञा पुं० १. मरण के दसवें दिन का कृत्य। २. गर्भाधान से लेकर विवाह तक के दस संस्कार (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह)।

दशगात्र—संज्ञा पुं० १. मृतक-संबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है। २. शरीर के दस मुख्य अंग।

दशग्रीव—संज्ञा पुं० रावण। दस गर्दनोंवाला।

दशदिक्—संज्ञा स्त्री० दसों दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य, ऊर्ध्व और अधः।

दशदिक्पाल—संज्ञा पुं० दसों दिशाओं के स्वामी—इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त।

दशधा—वि० दस प्रकार का।
क्रि० वि० दस प्रकार से।

दशन—संज्ञा पुं० १. दाँत। २. कवच। ३. शिखर।

दशनच्छद—संज्ञा पुं० होंठ।

दशनाम—संज्ञा पुं० संन्यासियों के दस भेद—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।

दशनामी—संज्ञा पुं० शंकराचार्य के अनुयायी दस प्रकार के संन्यासी—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती, पुरी। संन्यासियों का एक वर्ग।

दशनावली—संज्ञा स्त्री० दाँतों की पंक्ति।

दशभुजा—संज्ञा स्त्री० दुर्गा। दस बाँहोंवाली।

दशम—वि० दसवाँ। दस संख्या को पूरा करनेवाली संख्या।

दशमलव—संज्ञा पुं० दसवाँ हिस्सा। गणित की एक क्रिया जिसमें दस या उसका कोई घात हो।

दशमहाविद्या—संज्ञा स्त्री० दस प्रकार की देवियाँ, यथा काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी और कमला।

दशमांश—संज्ञा पुं० दसवाँ हिस्सा।

दशमी—संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की दसवीं तिथि।

दशमुख—संज्ञा पुं० रावण।

दशमूल—संज्ञा पुं० औषध-विशेष। दस प्रकार की जड़ों या छालों से बनी हुई औषध।

दशमौलि—संज्ञा पुं० रावण।

दशरथ—संज्ञा पुं० रामचन्द्रजी के पिता, जो इक्ष्वाकु या सूर्यवंश के राजा थे और जिनकी राजधानी अयोध्या थी।

दशशीश*—संज्ञा पुं० रावण।

दशहरा—संज्ञा पुं० १. विजया दशमी। २. ज्येष्ठ शुक्ला दशमी। इसे गंगा-दशहरा भी कहते हैं।

दशांग—संज्ञा पुं० पूजन में जलाने का एक धूप, जो दस सुगंध-द्रव्यों के मेल से बनता है।

दशांगुल—संज्ञा पुं० १ दस अंगुल का परिमाण। २ खरबूजा। डँगरा।

दशांश—संज्ञा पुं० दसवाँ भाग। दसवाँ हिस्सा।

दशा—संज्ञा स्त्री० १. हालत। अवस्था। स्थिति। २. फलित ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह का नियत भोग-काल। ३. साहित्य में रस के अन्तर्गत विरह की दशा।

दशानन—संज्ञा पुं० रावण।

दशावतार—संज्ञा पुं० चारों युगों में विष्णु के दस अवतार।

दशाविपाक—संज्ञा पुं० दुख की अन्तिम अवस्था।

दशार्ण—संज्ञा पुं० १. विंध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण की ओर स्थित एक प्रदेश का प्राचीन नाम। मालवा का पश्चिमी भाग। इसकी राजधानी विदिशा (भेलसा) थी। २. उक्त देश का निवासी या राजा। ३. तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र।

दशार्णा—संज्ञा स्त्री० धसान नदी जो विंध्याचल से निकलकर यमुना में मिलती है।

दशार्ह—संज्ञा पुं० १. बुद्ध। २. देश-विशेष। यदुदेश। ३. यदुदेश के निवासी।

दशाश्व—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

दशाश्वमेध—संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ पर १० अश्वमेध यज्ञ हुए हों। १. काशी के अंतर्गत एक तीर्थ। काशी का एक प्रसिद्ध घाट, जो तीर्थ माना जाता है। २. प्रयाग में त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट।

दशास्य—संज्ञा पुं० दशमुख। रावण।

दशाह—संज्ञा पुं० १. दस दिन। २. मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन।

दस–वि० कई। बहुत से।
संज्ञा पुं० दस संख्या-विशेष। पाँच की दूनी संख्या।

दसखत‡–संज्ञा पुं० दे० "दस्तखत"।

दसन*–संज्ञा पुं० दे० "दशन"।

दसना–क्रि० अ० बिछाया जाना। बिछना। फैलना।
क्रि० स० बिछाना। बिस्तर फैलाना।
संज्ञा पुं० बिछौना। बिस्तर।

दसमाथ*–संज्ञा पुं० रावण।

दसमी–संज्ञा स्त्री० दे० "दशमी"।

दसवाँ–वि० गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला।
संज्ञा पुं० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।

दसा–संज्ञा स्त्री० दे० "दशा"।

दसाना†–क्रि० स० बिछाना। बिस्तर फैलाना।

दसारन–संज्ञा पुं० दे० "दशार्ण"।

दसी–संज्ञा स्त्री० १. कपड़े के छोर का सूत। छीर। २. थान का आँचल।

दसौंधी–संज्ञा पुं० बंदियों या चारणों की एक जाति, जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।

दस्तंदाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप। दखल देना।

दस्त–संज्ञा पुं० [फा०] १. पतला पाखाना। विरेचन। २. हाथ।

दस्तक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथ से खट-खट शब्द करना। खटखटाना। २. बुलाने के लिए दरवाजे की कुंडी खटखटाने की क्रिया। ३. मालगुजारी वसूल करने के लिए गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। ४. माल आदि ले जाने का परवाना। ५. कर। महसूल।

दस्तकार–संज्ञा पुं० [फा०] हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी।

दस्तकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] हाथ की कारीगरी। शिल्प।

दस्तख़त–संज्ञा पुं० [फा०] अपने हाथ का लिखा हुआ अपना नाम। हस्ताक्षर।

दस्तख़ती–वि० जिस पर हस्ताक्षर हो।

दस्तगीर–वि० [संज्ञा दस्तगीरी] सहायक। मददगार।

दस्तबदस्त–क्रि० वि० हाथों हाथ।

दस्त-बरदार–वि० [फा०] किसी वस्तु पर से अपना अधिकार छोड़ देनेवाला।

दस्तबस्ता–संज्ञा पुं० हाथ बाँधकर। करबद्ध।

दस्तयाब–वि० [फा०] हस्तगत। प्राप्त।

दस्तरखान–संज्ञा पुं० [फा०] वह चादर, जिस पर खाना रखा जाता है।

दस्ता–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह जो हाथ में आवे या रहे। २. किसी औजार आदि का वह हिस्सा, जो हाथ से पकड़ा जाता है। मूठ। बेंट। ३. फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ४. सिपाहियों का छोटा दल। गारद। ५. कागज के चौबीस तावों की गड्डी।

दस्ताना–संज्ञा पुं० [फा०] पंजे और हथेली में पहनने का कपड़ा। हाथ का मोजा।

दस्तावर–वि० [फा०] जिससे दस्त आवें। विरेचक।

दस्तावेज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] लेन-देन की लिखा-पढ़ी का कागज। तमस्सुक।

दस्ती–वि० [फा०] हाथ का।
संज्ञा स्त्री० १. हाथ में लेकर चलने की बत्ती। मशाल। २. छोटी मूठ। छोटा बेंट। ३. छोटा कलमदान।

दस्तूर–संज्ञा पुं० [फा०] १. रीति। रस्म। रवाज। चाल। प्रथा। २. नियम। कायदा। विधि। ३. पारसियों का पुरोहित।

दस्तूरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह द्रव्य, जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक के तौर पर पाते हैं।

दस्यु–संज्ञा पुं० १. डाकू। चोर। २. असुर। ३. अनार्य्य। म्लेच्छ। ४. दास।

दस्युता–संज्ञा स्त्री० १. लुटेरापन। डकैती। २. दुष्टता। क्रूर स्वभाव।

दस्युवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. डकैती। लुटेरापन। २. चोरी।

दस्युहन–संज्ञा पुं० इन्द्र।

दस्र–संज्ञा पुं० १. शिशिर। २. अश्विनीकुमार। ३. गदहा। ४. जोड़ा।
वि० दोहरा। हिंसक।

दह—संज्ञा पुं० १. नदी में वह स्थान, जहाँ पानी बहुत गहरा हो। पाल। २. कुंड। हौज।
संज्ञा स्त्री० ज्वाला। लपट।

दहक—संज्ञा स्त्री० १. आग दहकने की क्रिया। धधक। दाह। २. ज्वाला। लपट। ३ लज्जा।

दहकना—क्रि० अ० १. जलना। धधकना भड़कना। २. गरम होना। तपना। ३. क्रोध दिखाना। ४. पछताना। पश्चात्ताप करना।

दहकाना—क्रि० स० १. ऐसा जलाना कि लौ ऊपर उठे। २. धधकाना। ३. भड़काना। क्रोध दिलाना। ४. पछताना। अनुताप करना।

दहड़-दहड़—क्रि० वि० लपट फेंकते हुए धायँ-धायँ।

दहन—संज्ञा पुं० [वि० दहनीय, दह्यमान] १. जलने की क्रिया या भाव। दाह। २. अग्नि। आग। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. तीन की संख्या। ५. एक रुद्र।

दहना—क्रि० अ० १. जलना। भस्म होना २. क्रोध से संतप्त होना। कुढ़ना। ३. धँसना। नीचे बैठना।
क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। कुढ़ाना।
वि० दे० "दहिना"।

दहनि†—संज्ञा स्त्री० जलना। जलन।

दहपट—वि० १. ढाया हुआ। ध्वस्त। चौपट। नष्ट। २. रौंदा हुआ। कुचला हुआ। दलित।

दहपटना—क्रि० स० १. ध्वस्त करना। चौपट करना। नष्ट करना। २. रौंदना। कुचलना।

दहर—संज्ञा पुं० १. छछूँदर। छोटी चुहिया। २. भाई। ३. बालक। ४. नरक। ५. वरुण। ६. नदी में गहरा स्थान। दह। ७. कुंड। हौज। ताल। ८. छोटा। सूक्ष्म। स्वल्प।

दहर-दहर—क्रि० वि० धधकते हुए।

दहरना*—क्रि० अ० दे० "दहलना"।
क्रि० स० दे० "दहलाना"।

दहल—संज्ञा स्त्री० भय से सहसा काँप जाने की क्रिया।

दहलना—क्रि० अ० डर से सहसा काँप जाना। भय से स्तंभित होना। डर से चौंकना।

दहला—संज्ञा पुं० १. ताश का पत्ता, जिसमें दस बूटियाँ हों। २. थाँवला। थाला।

दहलाना—क्रि० स० डर से कँपाना। डराना। भयभीत करना।

दहलीज़—संज्ञा स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट के नीचेवाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है। देहली। डेहरी।

दहशत—संज्ञा स्त्री० [फा०] डर। भय।

दहा—संज्ञा पुं० [फा०] १. मुहर्रम का महीना। २. मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३. ताजिया।

दहाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दस का मान या भाव। २. अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान, जिस पर जो अंक लिखा होता है, उससे उतने ही गुने दस का बोध होता है।

दहाड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. किसी भयंकर जंतु का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की ध्वनि। आर्तनाद।
मुहा०—दहाड़ मारना या दहाड़ मारकर रोना=चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

दहाड़ना—क्रि० अ० [अनु०] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

दहाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. चौड़ा मुँह। द्वार। २. वह स्थान, जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३. मोरी।

दहिना—वि० [स्त्री० दहिनी] बायाँ का उलटा। अपसव्य। दक्षिण भाग।

दहार—संज्ञा पुं० प्रदेश।

दहिजार—संज्ञा पुं० दे० "दाढ़ीजार"।

दहिनावर्त†—वि० "दक्षिणावर्त"।

दहिने—क्रि० वि० दाहिनी ओर को।
यौ०—दहिने होना=अनुकूल होना। प्रसन्न होना। दहिने बाएँ=इधर-उधर। दोनों ओर।

दही—संज्ञा पुं० दधि। जमाया हुआ दूध।

मुहा०—दही-दही करना=किसी चीज को बेचने के लिए लोगों से कहते फिरना।

दहु*—अव्य० १. अथवा। या। किंवा। २. स्यात्। कदाचित्।

दहेंड़ी—संज्ञा स्त्री० दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज—संज्ञा पुं० विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जानेवाला धन और सामग्री आदि। दायजा। यौतुक।

दहेला—वि० [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २. संतप्त। दुःखी। ३. भीगा हुआ। ठिठुरा हुआ।

दाँ—संज्ञा पुं० दफा। बार। बारी।
संज्ञा पुं० [फा०] ज्ञाता। जाननेवाला।

दाँकना—क्रि० अ० गरजना। दहाड़ना।

दाँग—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छः रत्ती की तौल। २. दिशा। तरफ। ओर।
संज्ञा पुं० १. नगाड़ा। डंका। २. टीला। छोटी पहाड़ी।

दाँज†—संज्ञा स्त्री० बराबरी। समता। जोड़। तुलना।

दांडिक—संज्ञा पुं० जल्लाद।

दाँत—संज्ञा पुं० १. मुँह में चबाने के लिए निकली हुई हड्डियाँ। दंत। रद। दशन। २. दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु।
वि० १. दाँत का। दाँत-संबंधी। २. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। ३. जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। संयमी।
मुहा०—दाँतों उँगली काटना=दे० "दाँत तले उँगली दबाना"। दाँत काटी रोटी=अत्यंत घनिष्ठ मित्रता। दाँत खट्टे करना=१. खूब हैरान करना। २. प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में परास्त करना। दाँत चबाना=क्रोध से दाँत पीसना। कोप प्रकट करना। दाँत तले उँगली दबाना=१. अचरज में आना। दंग रहना। २. खेद प्रकट करना। दाँत तोड़ना=परास्त करना। हैरान करना। दाँत पीसना=(क्रोध में) दाँत पर दाँत रखकर जोर लगाना। दाँत किटकिटाना। दाँत बजना=सरदी से दाँत के हिलने या काँपने के कारण दाँत पर दाँत पड़ना। दाँत बैठ जाना=दाँत की ऊपर-नीचेवाली पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। दाँतों में तिनका लेना=दया के लिए बहुत विनती करना। (किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना=१. लेने की गहरी चाह रखना। २. बदला लेने का विचार रखना। (किसी के) तालू में दाँत जमना=बरे दिन आना।

दाँता—संज्ञा पुं० १. दाँत के आकार का कँगूरा। २. रवा। दंदाना।

दाँता-किटकिट—संज्ञा स्त्री० १. कहा-सुनी। झगड़ा। २. गाली-गलौज।

दांति—संज्ञा स्त्री० १. इंद्रिय-निग्रह। इंद्रियों का दमन। २. अधीनता। ३. विनय।

दाँती—संज्ञा स्त्री० १. हँसिया, जिससे घास या फसल काटते हैं। २. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। बत्तीसी। ३. दो पहाड़ों के बीच की सँकरी जगह। दर्रा। ४. काली भिड़।

दाँना—क्रि० स० पक्की फसल के डंठलों को बैलों से इसलिए रौंदवाना, जिसमें डंठल से दाना अलग हो जाय।

दांपत्य—वि० पति-पत्नी-संबंधी। स्त्री-पुरुष का-सा।
संज्ञा पुं० स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार।

दांभिक—वि० १. पाखंडी। धोखेबाज। २. अहंकारी। घमंडी।

दाँय—संज्ञा स्त्री० दे० "दँवरी"।

दाँयाँ—संज्ञा पुं० दाहिना। दे० "दायाँ"।

दाँव—संज्ञा पुं० दे० "दायँ"।

दाँवनी—संज्ञा स्त्री० दे० "दावँनी"।

दाँवरी—संज्ञा स्त्री० दे० "दावँरी"। रस्सी। डोरी।

दाइ*—संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव"।

दाईं—वि० दाहिनी।
संज्ञा स्त्री० बारी। दफा। बार।

दाई—संज्ञा स्त्री० धाय। १. बच्चे की देख-

रेख रखनेवाली दासी। २. प्रसूता के उपचार के लिए नियुक्त स्त्री।
*वि० दे० "दायी"।
मुहा०—दाई से पेट छिपाना=जाननेवाले से कोई बात छिपाना।

दाउ†–संज्ञा पुं० दे० "दाँव"।

दाऊ–संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई। २. कृष्ण के बड़े भाई बलदेव।

दाऊदी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ।

दाक्षायण–वि० १. मोहर। सोना। २. एक यज्ञ। ३. दक्ष प्रजापति के पुत्र आदि। ४. दक्ष-संबंधी।

दाक्षायणी–संज्ञा स्त्री० १. दक्ष की कन्या। २. अश्विनी आदि नक्षत्र। ३. दुर्गा। ४. कश्यप की स्त्री, अदिति। ५. रोहिणी नक्षत्र। ६. जमालगोटा का वृक्ष।

दाक्षिण–संज्ञा पुं० एक तरह का होम।
वि० १. दक्षिण सम्बन्धी। २. दक्षिणा-सम्बन्धी।

दाक्षिणात्य–वि० दक्खिनी। दक्षिण का।
संज्ञा पुं० १. विंध्याचल के दक्षिण का भूभाग। २. दक्षिण देश का निवासी।

दाक्षिण्य–संज्ञा पुं० १. अनुकूलता। प्रसन्नता। २. उदारता। सुशीलता। ३. दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। ४. नाटक में वाक्य या चेष्टा-द्वारा दूसरे के उदासीन चित्त को प्रसन्न करना।
वि० १. दक्षिण का। दक्षिण-संबंधी। २. दक्षिणा-संबंधी।

दाक्ष्य–संज्ञा पुं० चतुरता।

दाख–संज्ञा स्त्री० १. अंगूर। २. मुनक्का। ३. किशमिश।

दाखिल–वि० [फा०] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। पैठा हुआ। २. शरीक। मिला हुआ। ३. पहुँचा हुआ।
मुहा०—दाखिल करना=भर देना। जमा करना।

दाखिल-खारिज–संज्ञा पुं० [फा०] किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उस पर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।

दाखिल-दफ्तर–वि० [फा०] दफ्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ कागज जिस पर कुछ विचार न किया जाय।

दाखिला–संज्ञा पुं० [फा० [१. प्रवेश। पैठ। २. संस्था आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य्य। वह कागज, जिस पर किसी वस्तु के जमा होने की तारीख लिखी हो।

दाग–संज्ञा पु० १. दाह। २. मुर्दा जलाने की क्रिया। ३. जलन। ४. जलने का चिह्न।
मुहा०—दाग देना=मुरदे का क्रिया-कर्म करना।

दाग़–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दागी] १. धब्बा। चित्ती। २. निशान। चिह्न। अंक। ३. फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। ४. कलंक। ऐब। दोष। लांछन। ५. जलने का चिह्न।
मुहा०—सफेद दाग=एक प्रकार का कोढ़, जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं।

दाग़दार–वि० [फा०] जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।

दागना–क्रि० स० १. जलाना। दग्ध करना। २. तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय। ३. फोड़े आदि पर ऐसी तेज दवा लगाना, जिससे वह जल या सूख जाय। ४. भरी हुई बंदूक में बत्ती देना। तोप, बंदूक आदि छोड़ना।
क्रि० स० चिह्न लगाना। अंकित करना।

दागबेल–संज्ञा स्त्री० भूमि पर फावड़े या कुदाल से बनाए हुए चिह्न, जो सड़क बनाने, नींव खोदने आदि के लिए डाले जाते हैं।

दागी–वि० १. जिस पर दाग या धब्बा हो। २. जिस पर सड़ने का चिह्न हो। ३. कलंकित। दोषयुक्त। लांछित। ४. जिसे सजा मिल चुकी हो।

दाघ–संज्ञा पुं० १. गरमी। ताप २. दाह। जलन।

दाज*†–संज्ञा पुं० अँधेरा।

दाजन†*–संज्ञा स्त्री० दे० "दाझन"।

दाझन*–संज्ञा स्त्री० जलन।

दाझना*–क्रि० अ० जलना। संतप्त होना। क्रि० स० जलाना।

दाड़िम–संज्ञा पुं० अनार।

दाढ़–संज्ञा स्त्री० १. जबड़े के भीतर के छोटे चौड़े दाँत। चौभर। २. गरज। दहाड़। ३. चिल्लाहट।

मुहा०–दाढ़ मारकर रोना=खूब चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

दाढ़ना*–क्रि० स० १. जलाना। आग में भस्म करना। २. संतप्त करना। दु:खी करना।

दाढ़ा†–संज्ञा पुं० दे० "दाढ़"। १. वन की आग। दावानल। २. आग। अग्नि। ३. दाह। जलन।

दाढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. चिबुक। २. ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल। श्मश्रु।

दाढ़ीजार–संज्ञा पुं० जली दाढ़ीवाला। स्त्रियों-द्वारा पुरुषों को दी जानेवाली एक गाली।

दात*–संज्ञा पुं० १. दान। २. दे० "दाता"।

दातव्य–वि० देने योग्य।

संज्ञा पुं० १. देने का काम। दान। २. दानशीलता। उदारता।

दाता–संज्ञा पुं० १. देनेवाला। दानशील। २. दानी।

दातार–संज्ञा पुं० दाता। देनेवाला। दानी।

दाती*–संज्ञा स्त्री० देनेवाली।

दातुन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दातृत्व–संज्ञा पुं० दानशीलता। दान करने की शक्ति। देने की प्रवृत्ति।

दातौन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दात्यूह–संज्ञा पुं० १. पपीहा। चातक। २. मेघ। बादल।

दात्री–संज्ञा स्त्री० १. देनेवाली। २. हँसिया। दाँती।

दाद–संज्ञा स्त्री० १. एक चर्मरोग, जिसमें शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड़ जाते हैं, जिनमें बहुत खुजली होती है। दिनाई। [फा०] २. इंसाफ। न्याय। ३. सराहना। प्रशंसा।

मुहा०—दाद चाहना=किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना= प्रशंसा करना। सराहना।

दादनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चुकानेवाली रकम। २. किसी काम के लिए पेशगी दी जानेवाली रकम। अगता।

दादरा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का चलता गाना। २. दो अर्द्ध मात्राओं का एक ताल।

दादा–संज्ञा पुं० स्त्री० दादी] १. पितामह। पिता का पिता। आजा। २. बड़ा भाई। ३. बड़े-बूढ़ों के लिए आदरसूचक शब्द।

दादि*†–संज्ञा स्त्री० [फा०] न्याय। इंसाफ।

दादी–संज्ञा स्त्री० पिता की माता। दादा की स्त्री। आजी।

संज्ञा पुं० दाद चाहनेवाला। न्याय का प्रार्थी। फरियादी।

दादु*†–संज्ञा स्त्री० दाद। दिनाई।

दादुर*–संज्ञा पुं० मेढक।

दादू†–संज्ञा पुं० १. दादा के लिए संबोधन या प्यार का शब्द। २. 'भाई' आदि के समान एक साधारण संबोधन। ३. एक सन्त महात्मा। इनका पूरा नाम दादूदयाल था। इनके नाम पर एक पंथ चला है। ये जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनका जन्म-स्थान अहमदाबाद था। ये अकबर के समय में हुए थे।

दादूदयाल–संज्ञा पुं० दे० "दादू"।

दादूपंथी–संज्ञा पुं० दादू नामक साधु या उनके पंथ का अनुयायी।

दाध*–संज्ञा स्त्री० जलन। दाह।

दाधना*–क्रि० स० जलाना। भस्म करना।

दान–संज्ञा पुं० १. देने का कार्य। २. वह धर्मार्थ कर्म, जिसमें श्रद्धा या दयापूर्वक दूसरे को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३. वह वस्तु, जो दान में दी जाय। ४. कर। महसूल। चुंगी। ५. हाथी का मद। ६. छेदन। ७. शुद्धि।

दानधर्म्म–संज्ञा पुं० दान देने का धर्म्म। दान-पुण्य।

दानपत्र–संज्ञा पुं० वह लेख या पत्र, जिसके द्वारा कोई संपत्ति किसी को प्रदान की जाय।

दानपात्र–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति, जो दान पाने के उपयुक्त हो।

दानलीला–संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण की वह लीला, जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। २. वह ग्रंथ, जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दानव–संज्ञा पुं० [स्त्री० दानवी] असुर। राक्षस। कश्यप के वे पुत्र, जो 'दनु' नाम्नी पत्नी से उत्पन्न हुए थे।

दान-वारि–संज्ञा पुं० हाथी का मद।

दानवी–संज्ञा स्त्री० १. दानव की स्त्री। २. दानव जाति की स्त्री। राक्षसी। वि० दानवों का। दानव-संबंधी।

दानवीर–संज्ञा पुं० जो दान देने में वीर हो। जो दान देने से न हटे। कर्ण की उपाधि। दानवीर कर्ण। अत्यंत दानी।

दानवेंद्र–संज्ञा पुं० राजा बलि। दानवों के राजा।

दानशील–वि० [संज्ञा दानशीलता] दान करनेवाला। दानी।

दाना–संज्ञा पुं० १. अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। २. अनाज। अन्न। ३. सूखा भुना हुआ अन्न। चबेना। ४. छोटा बीज। ५. छोटी गोल वस्तु। जैसे–मोती का दाना। घुँघरू का दाना। ६. माला की गुरिया। मनका। ७. कण। वि० [फा०] बुद्धिमान्। अक्लमंद।

मुहा०–दाने-दाने को तरसना=अन्न का कष्ट सहना। भोजन न पाना। दाने-दाने को मुहताज=अत्यंत दरिद्र।

दानाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] अक्लमंदी।

दानाध्यक्ष–संज्ञा पुं० राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

दाना-पानी–संज्ञा पुं० १. खान-पान। अन्न-जल। २. जीविका। भरण-पोषण।

मुहा०–दाना-पानी छोड़ना=अन्न-जल ग्रहण न करना। उपवास करना।

दानिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] बुद्धि। अक्ल।

दानिशमन्द–वि० बुद्धिमान्। समझदार।

दानी–वि० [स्त्री० दानिनी] उदार। दाता। संज्ञा पुं० दान करनेवाला व्यक्ति। दाता। कर संग्रह करनेवाला। महसूल उगाहनेवाला।

दानेदार–वि० [फा०] जिसमें दाने या रवे हों। रवादार।

दानौ‡*–संज्ञा पुं० दे० "दानव"।

दाप–संज्ञा पुं० १. अहंकार। घमंड। अभिमान। २. शक्ति। बल। जोर। ३. उत्साह। उमंग। ४. रोब। दबदबा। आतंक। ५. क्रोध। ६. जलन। ताप।

दापक–संज्ञा पुं० दबानेवाला।

दापना*–क्रि० स० १. दबाना। दाबना। २. मना करना। रोकना।

दाब–संज्ञा स्त्री० १. दबने या दबाने का भाव। २. भार। बोझ। ३. आतंक। रोब। प्रभाव। शासन।

दाबदार–वि० प्रतापी। आतंक रखनेवाला। रोबदार।

दाबना–क्रि० स० दे० "दबाना"।

दाबा–संज्ञा पुं० कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी मिट्टी में गाड़ना।

दाभ–संज्ञा पुं० कुश। डाभ।

दाम–संज्ञा पुं० १. मूल्य। कीमत। २. रस्सी। रज्जु। ३. माला। हार। लड़ी। ४. समूह। राशि। ५. लोक। विश्व। ६. जाल। फंदा। पाश। ७. पैसे का चौबीसवाँ भाग। ८. धन। रुपया-पैसा। ९. सिक्का। १०. राजनीति की एक चाल, जिसमें शत्रु को धन-द्वारा वश में करते हैं। दाम-नीति।

मुहा०–दाम दाम भर देना=कौड़ी-कौड़ी चुका देना। (ऋण) बाकी न रखना। दाम खड़ा करना=कीमत वसूल करना। दाम चुकाना=१. मूल्य दे देना। २. कीमत ठहराना। मोल-भाव तय करना। दाम भरना=नुकसानी देना। डाँट देना। चाम के दाम चलाना=अधिकार या अवसर पाकर मनमाना अंधेर करना।

दामन–संज्ञा पुं० [फा०] आँचल। अंचल। १. कुरते आदि का निचला भाग। पल्ला। कपड़े का छोर। आश्रय। शरण। अवलम्ब। २. पहाड़ों के नीचे की

दामनगीर–वि० [फा०] पल्ले पड़नेवाला साथ रहनेवाला। दावेदार।
दामनी–संज्ञा स्त्री० रस्सी।
दामरि–संज्ञा स्त्री० रस्सी।
दामरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी। रज्जु।
दामा*–संज्ञा स्त्री० १. दावानल। २. काले रंग की एक चिड़िया।
दामाद–संज्ञा पुं० बेटी का पति। जँवाई। जामाता।
दामिनी–संज्ञा स्त्री० १. बिजली। विद्युत् २. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। बेंदी। बिंदिया। दाँवनी।
दामी–संज्ञा स्त्री० कर। मालगुजारी।
वि० मूल्यवान्। कीमती।
दामोदर–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। ३. एक जैन तीर्थंकर।
दाय*–संज्ञा पुं० १. देने योग्य धन। २. दान या दहेज आदि में दिया जानेवाला धन। ३. पैतृक सम्पत्ति जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो। ४. दान। ५. *दे० "दाव"।
संज्ञा स्त्री० बराबरी। दवंडी। दे० "दाँज"।
दायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० दायिका] देनेवाला। दाता।
दायज, दायजा–संज्ञा पुं० विवाह में वर-पक्ष को दिया जानेवाला धन और सामान आदि। दहेज।
दायभाग–संज्ञा पुं० पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे की एक व्यवस्था या सिद्धान्त जो मिताक्षरा से भिन्न है।
दायम–क्रि० वि० [अ०] सदा। हमेशा।
दायमुल्हब्स–संज्ञा पुं० [अ० जीवन भर के लिए कैद। काले पानी की सजा। आजीवन कारावास।
दायर–वि० [फा०] १. चलता हुआ। २. चलता। जारी।
मुहा०—दायर करना=मुकदमे वगैरह को पेश करना।
दायरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. खंजड़ी। डफली। २. गोल घेरा। कुंडल। ३. वृत्त। ४. कक्षा।
दायाँ–वि० दाहिना।
दाया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दया"।
[फा०] दाई। धाय। धात्री।
दायाद–वि० स्त्री दायादा] जिसे किसी की सम्पत्ति में हिस्सा मिले। दाय का अधिकारी।
संज्ञा पुं० १. हिस्सेदार। २. पुत्र। बेटा। ३. सपिंड कुटुम्बी।
दायादा–संज्ञा स्त्री० कन्या।
दायित्व–संज्ञा पुं० १. देनदार होने का भाव। २. जिम्मेदारी। जवाबदेही।
दायी–वि० [स्त्री० दायिनी] देनेवाला। जैसे—सुखदायी। वरदायी।
दायें–क्रि० वि० दाहिनी ओर को।
मुहा०—दायें होना=अनुकूल या प्रसन्न होना।
दार–संज्ञा स्त्री० पत्नी।
*संज्ञा पुं० दे० "दारु"।
प्रत्य० [फा०] रखनेवाला।
दारक–संज्ञा पुं० [स्त्री० दारिका] १. बच्चा लड़का। २. पुत्र। बेटा।
वि० फाड़नेवाला।
दारकर्म–संज्ञा पुं० विवाह।
दारचीनी–संज्ञा स्त्री० दालचीनी। १. एक प्रकार का तज, जो दक्षिण भारत और सिंहल में होता है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल, जो दवा और मसाले के काम में आती है।
दारण–संज्ञा पुं० [वि० दारित] १. चीरने-फाड़ने का काम। चीर-फाड़। २. चीरने-फाड़ने का औजार। ३. फोड़ा आदि चीरने का काम।
दारद–संज्ञा पुं० १. पारा। २. ईंगुर।
दारना*–क्रि० स० १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. नष्ट करना।
दारपरिग्रह–संज्ञा पुं० विवाह।
दार-मदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. आश्रय। ठहराव। २. कार्य का भार। किसी पर कार्य का निर्भर होना।
दारा–संज्ञा स्त्री० पत्नी। भार्य्या।
दारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दाल"।

दारिउँ*—संज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।
दारिका—संज्ञा स्त्री० १. बालिका। कन्या। २. बेटी। पुत्री।
दारिद*—संज्ञा पुं० दरिद्रता।
दारिद्र*—संज्ञा पुं० दे० "दारिद्रय"।
दारिद्र्य—संज्ञा पुं० दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी
दारी—संज्ञा स्त्री० १. बेवाई। खरुवा। २. युद्ध में जीतकर लाई हुई दासी।
दारीजार—संज्ञा पुं० १. दासी का पति (गाली)। २. दासीपुत्र।
दारु—संज्ञा पुं० १. काठ। लकड़ी। देवदार। २. बढ़ई। कारीगर। ३. पीतल।
वि० देनेवाला।
दारुक—संज्ञा पुं० १. देवदारु। २. श्रीकृष्ण के सारथी का नाम। ३. काठ का पुतला।
दारुजोषित*—संज्ञा स्त्री० दे० "दारुयोषित्"।
दारुण—वि० १. भयंकर। भीषण। घोर। २. कठिन। प्रचंड। विकट।
संज्ञा पु० १. भयानक रस। २. विष्णु। ३. शिव। ४. एक नरक का नाम। ५. राक्षस। ६. एक प्रकार का वृक्ष। चीते का पेड़।
दारुन*—वि० दे० "दारुण"।
दारुपुत्रिका—संज्ञा स्त्री० कठपुतली।
दारुयोषित्—संज्ञा स्त्री० कठपुतली।
दारुहलदी—संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार झाड़। इसकी जड़ और डंठल दवा के काम में आते हैं। दारुहरिद्रा।
दारू—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मद्य। शराब। २. बारूद।
दारों*—संज्ञा पुं० दे० "दारयों"।
दारोगा—संज्ञा पुं० [फा०] १. थानेदार। थाने का पुलिस अधिकारी। देख-भाल रखनेवाला या निगरानी करनेवाला अधिकारी।
दारयों"—संज्ञा पुं० अनार।
दार्व—संज्ञा पुं० एक प्राचीन प्रदेश, जो आधुनिक काश्मीर के अंतर्गत है।
दार्वा—संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। रसोत।
दार्वी—संज्ञा स्त्री० दे० "दारुहलदी।"
दार्शनिक—वि० १. दर्शन जाननेवाला। २. दर्शनशास्त्र-संबंधी।
संज्ञा पुं० तत्वज्ञानी।
दाल—संज्ञा स्त्री० १. दली हुई अरहर, मूँग आदि। २. मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ अन्न, जिसे रोटी आदि के साथ खाते हैं। ३. दाल के आकार की कोई वस्तु। ४. चेचक, फोड़े, फुंसी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है। खुरंड।
मुहा०—दाल गलना=प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल-दलिया=सूखा-रूखा भोजन। गरीबों का-सा खाना। दाल में कुछ काला होना=कुछ खटके या संदेह की बात होना। किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। दाल-रोटी=सादा खाना। साधारण भोजन। जूतियों दाल बाँटना=आपस में खूब लड़ाई-झगड़ा होना।
दालचीनी—संज्ञा स्त्री० दे० "दारचीनी"।
दालमोठ—संज्ञा स्त्री० घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल।
दालान—संज्ञा पुं० [फा०] बरामदा। ओसारा।
दालिम—संज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।
दाल्भि—संज्ञा पुं० इन्द्र।
दावँ—संज्ञा पुं० १. बार। दफा। मरतबा। २. बारी। पारी। ३. अवसर। मौका। संयोग। ४. युक्ति। उपाय। चाल। ५. कुश्ती या लड़ाई जीतने के लिए युक्ति। चाल। पेंच। बंद। ६. छल। कपट। ७. खेल में प्रत्येक खेलाड़ी के खेलने का समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की बारी। चाल। ८. पाँसे, जूए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना, जिससे जीत हो। ९. स्थान। ठौर। जगह।
मुहा०—दावँ करना=घात लगाना। घात में बैठना। दावँ लगाना=अनुकूल संयोग मिलना। मौका मिलना। दावँ लेना=बदला लेना। दावँ पर चढ़ना=इस प्रकार वश में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल ले। दावँ पर रखना या लगाना=रुपया-पैसा या कोई वस्तु बाजी पर लगाना। दावँ देना=खेल में हारने पर नियत दंड भोगना या परिश्रम करना।
दावँना—क्रि० स० दाना और भसा अलग

करने के लिए कटी हुई फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।

दावँनी–संज्ञा स्त्री० माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। बंदी।

दावँरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी। रज्जु।

दाव–संज्ञा पुं० १. वन। जंगल। २. वन की आग। ३. आग। ४. जलन। ताप। ५. एक प्रकार का हथियार।

दावत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भोज। २. खाने का बुलावा। निमंत्रण।

दावन–संज्ञा पुं० १. दमन। नाश। २. हँसिया। ३. एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। खुखड़ी।

दावना–क्रि० स० दे० "दावँना"। दमन करना।

दावनी–संज्ञा स्त्री० १. बिजली। २. माथे पर पहनने का एक गहना।

दावा–संज्ञा स्त्री० वन में लगनेवाली आग। संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य्य। २. स्वत्व। हक। ३. मुकदमा। ४. नालिश। अभियोग। ५. अधिकार। जोर। ६. दृढ़ता। ७. दृढ़तापूर्वक कथन।

दावागीर–संज्ञा पुं० दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

दावाग्नि–संज्ञा स्त्री० दे० "दावानल"।

दावात–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

दावादार–संज्ञा पुं० दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

दावानल–संज्ञा पुं० दावा। वन में लगनेवाली आग।

दाशरथि–संज्ञा पुं० दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि।

दास–संज्ञा पुं० [स्त्री० दासी] १. गुलाम। अपने को दूसरे की सेवा के लिए अर्पित करनेवाला व्यक्ति। सेवक। नौकर। भृत्य। २. शूद्र। ३. धीवर। ४. शूद्रों की एक उपाधि। ५. दस्यु। ६. वृत्रासुर। ७. आत्मज्ञानी। †*दे० "डासन"।

दासता–संज्ञा स्त्री० दास होने का कर्म या भाव। सेवावृत्ति। गुलामी। पराधीनता। परतंत्रता।

दासत्व–संज्ञा पुं० दे० "दासता"। दास होने का भाव।

दासन–संज्ञा पुं० दे० "डासन"।

दासपन–संज्ञा पुं० दे "दासता"।

दासा–संज्ञा पुं० १. हँसुआ। २. ओरी की खूँटी। दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता, जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिस पर चीज-वस्तु भी रख सकें। ३. आँगन के चारों ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ चबूतरा। ४. वह लकड़ी या पत्थर, जो दरवाजे पर दीवार के नीचे रहता है।

दासानुदास–संज्ञा पुं० सेवक का सेवक। अत्यंत तुच्छ सेवक (नम्रता)।

दासी–संज्ञा स्त्री० सेवा करनेवाली स्त्री। नौकरानी। लौंडी।

दासेय–वि० [स्त्री० दासेयी] दास से उत्पन्न। गुलामजादा।

दास्तान–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वृत्तांत। हाल। २. कथा। किस्सा। ३. वर्णन।

दास्य–संज्ञा पुं० १. दासत्व। दासपन। सेवा। २. भक्ति के नौ भेदों में से एक, जिसमें उपास्य देवता को स्वामी और अपने को उनका दास समझते हैं।

दाह–संज्ञा पुं० १. शव जलाने की क्रिया। भस्मीकरण। मुर्दा फूँकने का काम। २. जलन। ताप। ३. शरीर में जलन होने, अधिक प्यास लगने तथा कंठ सूखने का एक रोग। ४. शोक। संताप। अत्यंत दुःख। ५. डाह। ईर्ष्या।

दाहक–संज्ञा पुं० १. जलानेवाला। दाह करनेवाला। अग्नि। २. एक वृक्ष (चित्रक)।

दाहकता–संज्ञा स्त्री० जलने का भाव या गुण।

दाहकर्म†–संज्ञा पुं० शव जलाने का कार्य। मुर्दा फूँकने का काम। अन्त्येष्टि-क्रिया।

दाहक्रिया–संज्ञा स्त्री० मृतक को जलाने का संस्कार। शवदाह-कर्म।

दाहन–संज्ञा पुं० १. जलाने का काम। २. जलवाने या भस्म कराने की क्रिया।

दाहना–क्रि० स० १. भस्म करना। २. जलाना। दुःख पहुँचाना। वि० दे० "दाहिना"।

दाहिना—वि० [स्त्री० दाहिनी] १. बायाँ का उलटा। दक्षिण। अपसव्य। २. दाहिने हाथ की ओर। ३. अनुकूल। प्रसन्न।
मुहा०—दाहिनी लाना=प्रदक्षिणा करना। दाहिना हाथ होना=बड़ा भारी सहायक होना।

दाहिने—क्रि० वि० दाहिने हाथ की ओर। दाहिने हाथ की दिशा में।

दाही—वि० [स्त्री० दाहिनी] जलानेवाला। भस्म करनेवाला।

दाह्य—वि० जलाने लायक।

दिंडी—संज्ञा पुं० उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

दिअली—संज्ञा स्त्री० [दीया का स्त्री०] १. मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरा। २. दे० "दिउली"।

दिआ—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दिआना—क्रि० स० दे० "दिलाना"।

दिउली†—संज्ञा स्त्री० १. सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड। दाल। २. दे० "दिअली"। ३. मछली के ऊपर से छूटनेवाला छिलका। सेहरा।

दिक्—संज्ञा स्त्री० दिशा। ओर।

दिक़—वि० [अ०] १. जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो। दुखी। हैरान। तंग। २. अस्वस्थ। बीमार।
संज्ञा पुं० क्षय रोग। तपेदिक।

दिकदाह—संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।

दिक्क—वि० संज्ञा पुं० दे० "दिक़"।

दिक्कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दिक का भाव। परेशानी। तकलीफ। तंगी। कष्ट। २. कठिनता। मुश्किल।

दिक्कन्या—संज्ञा स्त्री० दिशा-रूपी कन्या। (पुराणों में दसों दिशाएँ ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं)।

दिक्करी—संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिक्कांता—संज्ञा स्त्री० दिक्कन्या।

दिक्चक्र—संज्ञा पुं० आठों दिशाओं का समूह।

दिक्पति—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिक्पाल—संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार दसों दिशाओं के पालन करनेवाले देवता। यथा—पूर्व के इंद्र, दक्षिण के यम आदि। २. चौबीस मात्राओं का एक छंद। उर्दू का रेख्ता।

दिक्शूल—संज्ञा पुं० फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं की यात्रा का निषेध। दिशा-विशेष में जाने का निषिद्ध दिन—शनि और सोमवार पूर्व का, बृहस्पतिवार दक्षिण का, रवि और शुक्रवार पश्चिम का तथा मंगल और बुध उत्तर का दिक्शूल है।

दिक्साधन—संज्ञा पु० दिशाओं का ज्ञान प्राप्त करने की विधि या उपाय।

दिक्सुन्दरी—संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्कन्या"।

दिखना†—क्रि० अ० दिखाई देना। देखने में आना।

दिखराना*—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावना*—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावनी*†—संज्ञा स्त्री० दिखाने का भाव या क्रिया।

दिखलवाई—संज्ञा स्त्री० १. दिखाने के बदले में दिया जानेवाला धन। २. दे० "दिखलाई"।

दिखलवाना—क्रि० स० दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाई—संज्ञा स्त्री० १. दिखलवाने की क्रिया या भाव। २. देखने या दिखलाने के बदले में दिया जानेवाला धन।

दिखलाना—क्रि० स० १. दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। दृष्टिगोचर कराना। दिखाना। २. अनुभव कराना। मालूम कराना। जताना।

दिखलावा—संज्ञा पुं० दे० "दिखावा"।

दिखहार*†—संज्ञा पुं० देखनेवाला।

दिखाई—संज्ञा स्त्री० १. देखने या दिखाने का काम। २. देखने या दिखाने के लिए दिया जानेवाला धन।

दिखाऊ†—वि० १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। ३. दिखौआ। बनावटी।

दिखादिखी—संज्ञा स्त्री० दे० "देखादेखी"।

दिखाना—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखाव—संज्ञा पुं० १. देखने का भाव या क्रिया। २. [illegible]

दिखावटी–वि० दे० "दिखौआ"। बनावटी
दिखावा–संज्ञा पुं० ऊपरी तड़क-भड़क आडंबर।
दिखैया*†–संज्ञा पुं० दिखलाने या देखने-वाला।
दिखौआ–वि० जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। बनावटी।
दिगंगना–संज्ञा स्त्री० दिशा-रूपी स्त्री।
दिगंत–संज्ञा पुं० दिशा का छोर। दिशा का अंत। आकाश का छोर। क्षितिज। सब दिशाएँ। आँख का कोना।
दिगंतर–संज्ञा पुं० दो दिशाओं के बीच का स्थान।
दिगंबर–संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. नंगा रहनेवाला। नंगा रहनेवाला जैन संन्यासी। क्षपणक। ३. अंधकार। तम। वि० नंगा। नग्न।
दिगंबरता–संज्ञा स्त्री० नंगापन।
दिगंश–संज्ञा पुं० क्षितिज-वृत्त का ३६०वाँ अंश।
दिगंश-यंत्र–संज्ञा पुं० वह यंत्र जिससे किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगंश जाना जाय।
दिग्–संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्"।
दिग्दंति*†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।
दिग्पाल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्गज–संज्ञा पुं० पुराणानुसार वे आठों हाथी, जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए स्थापित हैं। इनके नाम ये हैं—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक।
वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।
दिग्घ*†–वि० १. लंबा। २. बड़ा।
दिग्दर्शक यंत्र–संज्ञा पुं० डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र, जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा।
दिग्दर्शन–संज्ञा पुं० १. जो उदाहरण-स्वरूप दिखलाया जाय। नमूना। २. नमूना दिखाने का काम। ३. अभिज्ञता। जान-कारी।
दिग्दाह–संज्ञा पुं० एक दैवी घटना, जिसमें सूर्य्यास्त होने पर भी दिशाएँ लाल और जलती हुई सी दिखलाई पड़ती हैं (अशुभ)।
दिग्देवता–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्ध–संज्ञा पुं० १. तेल। २. अग्नि। ३. प्रबन्ध। ४. जहर में बुझाया हुआ बाण। वि०; १. विषाक्त। २. लिप्त। ३. दीर्घ। लम्बा।
दिग्पट–संज्ञा पुं० १. दिशारूपी वस्त्र। २. नंगा। दिगंबर।
दिग्पति–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्भ्रम–संज्ञा पुं० दिशाओं का भ्रम होना। दिशा भूल जाना।
दिग्मंडल–संज्ञा पुं० दिशाओं का समूह। संपूर्ण दिशाएँ।
दिग्राज–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्वस्त्र–संज्ञा पुं० १. नंगा रहनेवाला जैन यति। नग्न। २. महादेव। शिव।
दिग्वान्–संज्ञा पुं० पहरेदार। चौकीदार।
दिग्वास–संज्ञा पुं० दे० "दिग्वस्त्र"।
दिग्विजय–संज्ञा स्त्री० १. राजाओं का अपनी वीरता तथा महत्त्व स्थापित करने के लिए देश-देशांतरों में अपनी सेना के साथ जाकर विजय प्राप्त करना। देश-देशान्तरों को जीतना। २. अपन गुण, विद्या या बुद्धि आदि के द्वारा देश-देशान्तरों में अपना महत्त्व स्थापित करना।
दिग्विजयी–वि० [स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने दिग्विजय किया हो।
दिग्विभाग–संज्ञा पुं० दिशा। ओर।
दिग्व्यापी–वि० [स्त्री० दिग्व्यापिनी] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।
दिग्शूल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।
दिङ्नाग–संज्ञा पुं० १. दिग्गज। २. एक प्राचीन बौद्ध आचार्य।
दिङ्नारि–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
दिङ्मंडल–संज्ञा पुं० दिशाओं का समूह।
दिच्छित*†–संज्ञा पुं० वि० दे० "दीक्षित"।
दिजराज*†–संज्ञा पुं० दे० "द्विजराज"।
दिठवन–संज्ञा स्त्री० दे० "देवोत्थान"। देवठान एकादशी।
दिठादिठी–संज्ञा स्त्री० दे० "देखा-देखी"।

बिठाना–क्रि० अ० बुरी दृष्टि लगना। क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना।
बिठौना†–संज्ञा पुं० काजल की बिंदी, जो बालकों को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं।
बिढ़*†–वि० दे० "दृढ़"।
बिढ़ाना*†–क्रि० स० १. पक्का करना। मजबूत करना। २. निश्चित करना।
बिढ़ाव*–संज्ञा पुं० दे० "दृढ़ता"।
दिति–संज्ञा स्त्री० १. कश्यप ऋषि की एक स्त्री, जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या और दैत्यों की माता थी। २. दाता। ३. खंडन।
दितिसुत–संज्ञा पुं० दैत्य। राक्षस।
दिदार–संज्ञा पुं० दे० "दीदार"।
दिन–संज्ञा पुं० १. सूर्योदय से लेकर सूर्य्यास्त तक का समय। २. उतना समय, जितने में पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूमती है। आठ पहर या चौबीस घंटे का समय। ३. समय। काल। ४. निश्चित या उपयुक्त समय। ५. वह समय, जिसमें कोई विशेष बात हो। जैसे—गर्भ के दिन, बुरे दिन।
क्रि० वि० सदा। हमेशा।
मुहा०—दिन को तारे दिखाई देना=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। दिन को दिन, रात को रात न जानना या समझना=अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। दिन चढ़ना=सूर्य्योदय होना। दिन छिपना या डूबना=संध्या होना। दिन ढलना=संध्या का समय निकट आना। दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े=बिलकुल दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत अधिक बढ़ना। खूब उन्नति पर होना। दिन निकलना=सूर्य्योदय होना। दिन दिन या दिन पर दिन=नित्यप्रति। सदा। प्रतिदिन। दिन काटना या पूरे करना=निर्वाह करना। समय बिताना। दिन बिगड़ना=बुरे दिन होना। दिन धरना=दिन निश्चित करना। दिन चढ़ना=किसी स्त्री का गर्भवती होना। दिन फिरना=बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना। दिन भरना=बुरे दिन काटना।
यौ०—दिन-रात=सदा। हर वक्त।
दिनअर–संज्ञा पुं० दे० "दिनकर"।
दिनकंत*†–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
दिनकर–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
दिनचर्य्या–संज्ञा स्त्री० दिन भर का कार्य।
दिनदानी*†–संज्ञा पुं० प्रतिदिन दान करनेवाला।
दिननाथ–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
दिनपति–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनपत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें दिन के नाम, तिथियाँ और तारीखें दी हों। कैलेंडर।
दिनमणि–संज्ञा पुं० १. आक। मंदार। २. सूर्य।
दिनमान–संज्ञा पुं० सूर्योदय से लेकर सूर्य्यास्त तक के समय का मान। दिन का प्रमाण।
दिनराइ*–संज्ञा पुं० दे० "दिनराज"।
दिनराज–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
दिनांक–संज्ञा पुं० महीने का कोई भी दिन। तिथि। तारीख। जैसे, दिनांक ९ चैत्र, संवत २००९।
दिनांत–संज्ञा पुं० दिन का अन्त। संध्या।
दिनांध–संज्ञा पुं० वह, जिसे दिन को न सूझे।
दिनाइ†–संज्ञा पुं० दाद नामक रोग।
दिनाई*–संज्ञा स्त्री० कोई ऐसी विषाक्त वस्तु, जिसके खाने से थोड़े ही समय में मृत्यु हो जाय।
दिनार–संज्ञा पुं० दे० "दीनार"।
दिनारू–वि० पुराना।
दिनियर*†–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
दिनेर–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनेश–संज्ञा पु० १. सूर्य। २. दिन के अधिपति ग्रह।
दिनौंधी–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें दिन के समय कम दिखाई देता है।
दिपति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दीप्ति"।

दिपना*–क्रि० अ० प्रकाशमान होना। चमकना।

दिपाना–क्रि० अ० दे० "दिपना"।

दिब*–संज्ञा पुं० दे० "दिव्य"।

दिमाक–संज्ञा पुं० दे० "दिमाग"।

दिमाग़–संज्ञा पुं० [अ०] १. सिर का गूदा। मस्तिष्क। भेजा। २. मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ। ३. अभिमान। घमंड। शेखी।

मुहा०–दिमाग खाना या चाटना=व्यर्थ की बातें कहना। बहुत बकवाद करना। दिमाग खाली करना=ऐसा काम करना, जिसमें मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो। मगजपच्ची करना। दिमाग चढ़ना या आसमान पर होना=बहुत अधिक घमंड होना। दिमाग लड़ाना=बहुत अच्छी तरह विचार करना। खूब सोचना।

दिमागदार–वि० १. बुद्धिमान्। २. अभिमानी। घमंडी।

दिमागी–वि० दे० "दिमागदार"।
वि० दिमाग-संबंधी।

दिमात*†–संज्ञा पुं०, वि० १. दो माताओं-वाला। जिसकी दो माताएँ हों। २. जिसमें दो मात्राएँ हों। दो मात्राओंवाला।

दिमाना*†–वि० दे० "दीवाना"।

दियना‡-संज्ञा पुं० दे० "दीआ"।
क्रि० अ० चमकना।

दियरा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पकवान। २. शिकार खेलने के लिए जलाई गई आग। ३. दे० "दीया"।

दिया–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दियारा–संज्ञा पुं० १. नदी के किनारे की जमीन, जो नदी के हट जाने पर निकल आती है। कछार। खादर। दरिया-बरार। २. प्रदेश। प्रांत।

दियासलाई–संज्ञा स्त्री० दे० "दीयासलाई"।

दिरद*–संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

दिरम–संज्ञा पुं० १. मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का। दिरहम। २. साढ़े तीन माशे की एक तौल।

दिरमान†–संज्ञा पुं० चिकित्सा। इलाज।

दिरमानी–संज्ञा पुं० वैद्य। इलाज करनेवाला। चिकित्सक।

दिरिस*†–संज्ञा पुं० दे० "दृश्य"।

दिल–संज्ञा पुं० १. हृदय। कलेजा। २. मन। चित्त। जी। ३. साहस। दम। ४. प्रवृत्ति। इच्छा।

मुहा०–दिल कड़ा करना=हिम्मत बाँधना। साहस करना। दिल का कँवल खिलना=चित्त प्रसन्न होना। मन में आनंद होना। दिल का गवाही देना=मन में किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना। दिल का बादशाह=१. बहुत बड़ा उदार। २. मनमौजी। दिल के फफोले फोड़ना=भली-बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना। दिल जमना=१. किसी काम में चित्त लगना। ध्यान या जी लगना। २. संतुष्ट होना। जी भरना। दिल ठिकाने होना=मन में शान्ति, संतोष या धैर्य्य होना। चित्त स्थिर होना। दिल देना=आशिक होना। प्रेम करना। दिल बुझना=चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल में फरक आना=सद्‌भाव में अंतर पड़ना। मन-मोटाव होना। दिल से=१. जी लगाकर। अच्छी तरह। ध्यान देकर। २. अपने मन से। अपनी इच्छा से। दिल से दूर करना=भुला देना। विस्मरण करना। ध्यान छोड़ देना। दिल ही दिल में=चुपके-चुपके। मन ही मन। दिल न लगना=मन न लगना।
(शेष मुहावरों के लिए "जी" और "कलेजा" के मुहावरे देखिए।)

दिलगीर–वि० [फा०] [संज्ञा दिलगीरी] १. उदास। २. दुःखी। खिन्न।

दिलचला–वि० १. साहसी। हिम्मतवाला। दिलेर। २. दाता। उदार। दानी। ३. वीर। बहादुर।

दिलचस्प–वि० [फा०] [संज्ञा दिलचस्पी] जिसमें जी लगे। मनोहर। चित्ताकर्षक।

दिलजमई–संज्ञा स्त्री० इतमीनान। तसल्ली।

दिलजला–वि० दुखी। जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो। जिसे मानसिक पीड़ा पहुँची हो।

दिलजोई—संज्ञा स्त्री० किसी का मन रखने के लिए उसे प्रसन्न करना।
दिलदार—वि० [संज्ञा दिलदारी] १. उदार। दाता। २. रसिक। ३. प्रेमी। प्रिय।
दिलपसन्द—वि० [फा०] मन को अच्छा लगनेवाला।
दिलबर—वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।
दिलबस्ता—वि० प्रेमी। आसक्त।
दिलबस्तगी—संज्ञा स्त्री० किसी बात में दिल लगाना। मनोरंजन। मनबहलाव।
दिलरुबा—संज्ञा पुं० [फा०] जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा।
दिलवाना—क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिलहा—संज्ञा पुं० दे० "दिल्ला"।
दिलाना—क्रि० स० दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना।
दिलावर—वि० [फा०] [संज्ञा दिलावरी] १. शूर। बहादुर। २. उत्साही। साहसी।
दिलासा—संज्ञा पुं० तसल्ली। ढाढ़स। आश्वासन। धैर्य्य। दम-बुत्ता।
यौ०—दम-दिलासा=तसल्ली। धैर्य्य।
दिली—वि० १. हृदय या दिल-संबंधी। हार्दिक। २. अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्नहृदय। जिगरी।
दिलीप—संज्ञा पुं० इक्ष्वाकुवंशी एक राजा।
दिलेर—वि० [फा०] [संज्ञा दिलेरी] १. बहादुर। शूर। वीर। २. साहसी।
दिल्लगी—संज्ञा स्त्री० १. दिल लगाने की क्रिया या भाव। २. विनोद की बात। ठट्ठा। ठठोली। मजाक। मखौल।
मुहा०—किसी बात की दिल्लगी उड़ाना=(किसी बात को) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिए उसे हँसी में उड़ा देना। उपहास करना।
दिल्लगीबाज़—संज्ञा पुं० विनोदप्रिय। हंसी-दिल्लगी करनेवाला। मसखरा।
दिल्ला—संज्ञा पुं० १. किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का चौखटा, जो शोभा के लिए जड़ दिया जाता है। २. आईना।
दिव—संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. आकाश। ३. वन। ४. दिन।
दिवराज—संज्ञा पुं० इंद्र।
दिवरानी—संज्ञा स्त्री० दे० "देवरानी"। देवर की पत्नी।
दिवला*—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दिवस—संज्ञा पुं० दिन। रोज।
दिवस-अंध*—संज्ञा पुं० दे० "दिवांध"।
दिवसमुख—संज्ञा पुं० प्रातःकाल। सबेरा।
दिवस्पति—संज्ञा पुं० सूर्य्य।
दिवांध—वि० जिसे दिन में न सूझे। जिसे दिनौंधी हो।
संज्ञा पुं० १. दिनौंधी का रोग। २. उल्लू।
दिवा—संज्ञा पुं० १. दिन। दिवस। २. बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। मालिनी।
दिवाकर—संज्ञा पुं० सूर्य।
दिवाचर—संज्ञा पुं० पक्षी।
दिवाना†—संज्ञा पुं० दे० "दीवाना"।
*‡क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिवानी—संज्ञा स्त्री० दीवान का पद। कचहरी। न्यायालय। जिसमें किसी अधिकार का निर्णय हो।
वि० पगली। उन्मादिनी।
दिवाभिसारिका—संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिए संकेत-स्थान में जाय।
दिवामणि—संज्ञा पुं० सूर्य।
दिवामध्य—संज्ञा पुं० मध्याह्न। दोपहर।
दिवाल—†संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"। दीवाल।
वि० देनेवाला।
दिवाला—संज्ञा पुं० १. पूँजी न रहने के कारण ऋण चुकाने में असमर्थता। टाट उलटना। २. किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना।
मुहा०—दिवाला निकलना=दिवाला होना। दिवाला मारना=दिवालिया बन जाना। ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना।
दिवालिया—वि० जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ न बचा हो।
दिवाली—संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
दिवि—संज्ञा पुं० १. दे० "दिव"। २. नीलकंठ पक्षी।
दिविषत्—संज्ञा पुं० १. देवता। २. स्वर्गवासी।
दिविष्टि—संज्ञा पुं० यज्ञ।

दिविष्ठि–संज्ञा पुं० देवता।
दिवेश–संज्ञा पुं० १. दिग्पाल। २. इन्द्र। देवराज।
दिवैया–वि० देनेवाला। जो देता हो।
दिवौका–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग में रहनेवाला। देवता। २. चातक।
दिवोदास–संज्ञा पुं० चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र, जो काशी के राजा थे और धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं।
दिवोल्का–संज्ञा स्त्री० दिन के समय आकाश से गिरनेवाला पिंड या उल्का।
दिव्य–वि० १. स्वर्गीय। स्वर्ग से संबंध रखनेवाला। २. आकाश से संबंध रखनेवाला। अलौकिक। ३. प्रकाशमान। ४. स्वच्छ या सुंदर।
संज्ञा पुं० १. यव। जौ। २. तत्त्ववेत्ता। ३. तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ४. आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। ५. तीन प्रकार के नायकों में से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायक। जैसे—इंद्र। राम। ६. व्यवहार या न्यायालय में प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा, जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था। ये परीक्षाएँ नौ प्रकार की होती थीं—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंडुल, तप्तमाषक, फूल तथा धर्मज। ७. शपथ, विशेषतः देवताओं आदि की शपथ। सौगंध। कसम।
दिव्यचक्षु–संज्ञा पुं० १. ज्ञानचक्षु। २. अंधा। ३. चश्मा। ऐनक। ४. बन्दर।
दिव्यता–संज्ञा स्त्री० १. दिव्य होने का भाव। २. देवभाव। ३. सुंदरता। उत्तमता।
दिव्यदृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. अलौकिक दृष्टि। २. ज्ञान-दृष्टि।
दिव्यरथ–संज्ञा पुं० देवताओं का विमान।
दिव्यरस–संज्ञा पुं० पारा।
दिव्यस्त्री–संज्ञा स्त्री० अप्सरा।
दिव्यसूरि–संज्ञा पुं० रामानुज-संप्रदाय के बारह आचार्य, जिनके नाम ये हैं—कसार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविंद्र, रामानुज और गोदा देवा या मधुकर कवि।
दिव्यांगना–संज्ञा स्त्री० १. देववधू। २. अप्सरा। अलौकिक स्त्री।
दिव्यांशु–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिव्या–संज्ञा स्त्री० स्वर्गीय या अलौकिक स्त्री। जैसे—पार्वती, सीता आदि। नायिका-विशेष। तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक।
दिव्यादिव्य–संज्ञा पुं० देवतुल्य मनुष्य। अलौकिक मनुष्य। नायक-विशेष।
दिव्यादिव्या–संज्ञा स्त्री० नायिका विशेष। नायिका, जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों। जैसे—दमयंती, उर्वशी आदि।
दिव्यास्त्र–संज्ञा पुं० १. देवताओं का दिया हुआ हथियार। २. मंत्रों-द्वारा चलनेवाला हथियार।
दिव्योदक–संज्ञा पुं० वर्षा का जल। पानी।
दिश्–संज्ञा स्त्री० दिशा। दिक्। ओर। तरफ।
दिशा–संज्ञा स्त्री० १. ओर। तरफ। २. क्षितिज-वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से एक। ये चार विभाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं। प्रत्येक दो दिशाओं के बीच में एक कोण भी होता है।
दिशादाह*†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।
दिशाभ्रम–संज्ञा पुं० दिशाओं के संबंध में भ्रम होना। दिक्भ्रम।
दिशाशूल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।
दिशि–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।
दिष्ट–संज्ञा पुं० १. भाग्य। २. उपदेश। ३. एक प्रकार की हलदी। ४. काल।
दिष्टबंधक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेहन, जिसमें चीज पर रुपए देनेवाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे।
दिष्टि*–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"। उत्सव। भाग्य। उपदेश। प्रसन्नता।
दिसंतर*†–संज्ञा पुं० देशांतर। विदेश। क्रि० वि० बहुत दूर तक।
दिसंबर–संज्ञा पुं० अँगरेजी साल का १२ वाँ और अन्तिम महीना।

दिस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।
दिसना*†–क्रि० अ० दे० "दिखना"।
दिसा–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"। मलत्याग। पैखाना। शौचक्रिया।
दिसावर–संज्ञा पुं० दूसरा देश। परदेस। विदेश।
दिसावरी, दिशावरी–वि० विदेश से आया हुआ। बाहरी माल।।
दिसि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।
दिसिनायक*†–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिसिप*–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिसिराज*–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिसैया*†–वि० १. देखनेवाला। २. दिखानेवाला।
दिस्ता–संज्ञा पुं० दे० "दस्ता"।
दिहंदा–वि० [फा०] दाता। देनेवाला।
दिहरा–संज्ञा पुं० देवालय।
दिहली–संज्ञा स्त्री० दे० "दहलीज"।
दिहाड़ा–संज्ञा पुं० १. दुर्गति। बुरी हालत। २. दिन।
दिहात–संज्ञा स्त्री० दे० "देहात"।
दीआ–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दीक्षक–संज्ञा पुं० १. दीक्षा देनेवाला गुरु। २. शिक्षक।
दीक्षण–संज्ञा पुं० [वि० दीक्षित] दीक्षा देने की क्रिया।
दीक्षांत–संज्ञा पुं० १. शिक्षाकाल समाप्त होने पर छात्रों को दिया जानेवाला उपदेश। २. वह यज्ञ, जो किसी यज्ञ की त्रुटि आदि के दोष की शांति के लिए हो।
दीक्षा–संज्ञा स्त्री० १. गुरुमंत्र। २. गुरु या आचार्य्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश। मंत्र की शिक्षा, जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। ३. उपनयन-संस्कार, जिसमें आचार्य्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है। यजन। यज्ञकर्म।
दीक्षागुरु–संज्ञा पुं० मंत्रोपदेष्टा गुरु।
दीक्षित–वि० जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मंत्र लिया हो।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद।
दीखना–क्रि० अ० दिखाई देना। देखने में आना। दृष्टिगोचर होना।
दीघी–संज्ञा स्त्री० बावली। पोखरा। तालाब।
दीच्छा*–संज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा"।
दीठ–संज्ञा स्त्री० १. देखने की शक्ति। दृष्टि। २. टक। नजर। निगाह। ३. आँख की ज्योति का प्रसार। ४. ऐसी दृष्टि, जिसका प्रभाव बुरा पड़े। नजर। ५. देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ६. परख। पहचान। तमीज। ७. कृपादृष्टि। मिहरबानी की नजर। ८. आशा की दृष्टि। उम्मीद। ९. विचार। संकल्प।
मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना=मंत्र के द्वारा बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। दीठ खा जाना=किसी की बुरी दृष्टि के सामने पड़ जाना। टोक में आना। दीठ जलाना=नजर उतारने के लिए राई-नोन या कपड़ा जलाना।
दीठवंत–वि० जिसे दिखाई दे।
दीठबंद या **दीठबंदी**–संज्ञा स्त्री० इंद्रजाल, जिससे लोगों को और का और दिखाई दे। जादू।
दीद–संज्ञा स्त्री० [फा०] दर्शन।
मुहा०—दीद न शुनीद=न देखा न सुना।
दीदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. दृष्टि। नजर। २. आँख। नेत्र। ३. अनुचित साहस। ढिठाई।
मुहा०—दीदा लगना=जी लगना। ध्यान जमना। दीदे का पानी ढल जाना=निर्लज्ज हो जाना। दीदे निकालना=क्रोध की दृष्टि से देखना। दीदे फाड़कर देखना=अच्छी तरह आँख खोलकर देखना।
दीदार–संज्ञा पुं० [फा०] दर्शन। देखा-देखी।
दीदी–संज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द। बड़ी बहिन।
दीधिति–संज्ञा स्त्री० १. सूर्य्य, चंद्रमा आदि की किरण। २. उँगली।
दीन–वि० १. दरिद्र। गरीब। जिसकी दशा हीन हो। २. दुःखित। कातर। ३. उदास। खिन्न। ४. नम्र। विनीत।
संज्ञा पुं० [अ०] मत। मजहब।
दीनता–संज्ञा स्त्री० १. दरिद्रता। गरीबी। २. नम्रता। विनीत भाव।

दीनताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "दीनता"।
दीनत्व–संज्ञा पुं० दीनता।
दीनदयाल या दीनदयालु–वि० दुखी और गरीब व्यक्तियों पर दया करनेवाला। संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम।
दीनदार–वि० [संज्ञा दीनदारी] अपने धर्म पर विश्वास रखनवाला। धार्मिक।
दीन-दुनिया–संज्ञा स्त्री० लोक और परलोक।
दीनबंधु–संज्ञा पुं० १. दुखियों का सहायक। २. ईश्वर का एक नाम।
दीनानाथ–संज्ञा पुं० १. दीनों का स्वामी या रक्षक। २. ईश्वर।
दीनार–संज्ञा पुं० १. सोने का पुराना सिक्का। स्वर्णमुद्रा। मोहर। सोने का गहना। २. एक तौल।
दीप–संज्ञा पुं० १. दीया। चिराग। २. दस मात्राओं का एक छंद। ३. दे० "द्वीप"।
दीपक–संज्ञा पुं० १. दीया। चिराग। २. एक अर्थालंकार, जहाँ उपमान और उपमेय दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है। ३. संगीत में छः रागों में से दूसरा राग। ४. केसर। कुंकुम।
वि० [स्त्री० दीपिका] १. प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। २. पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला। ३. शरीर में स्फूर्ति लानेवाला। उत्तेजक।
यौ०–कुलदीपक=वंश को उजाला करनेवाला।
दीपकमाला–संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त। २. दीपक अलंकार का एक भेद, जिसमें कई दीपक एक साथ आते हैं।
दीपकवृक्ष–संज्ञा पुं० १. बड़ी दीयट। २. झाड़।
दीपकावृत्ति–संज्ञा स्त्री० दीपक अलंकार का एक भेद।
दीपत*–संज्ञा स्त्री० १. कांति। चमक। प्रभा। २. शोभा। ३. कीर्ति।
दीपदान–संज्ञा पुं० १. किसी देवता के सामने दीपक जलाना, जो पूजन का एक अंग समझा जाता है। २. एक कृत्य, जिसमें मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीए का संकल्प कराया जाता है।
दीपध्वज–संज्ञा पुं० काजल।
दीपन–संज्ञा पुं० [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्ति, दीप्य] १. प्रकाश के लिए जलाने का काम। प्रकाशन। २. भूख को जगाना। ३. उत्तेजन। मंत्र के उन दस संस्कारों में से एक, जिनके बिना मंत्र सिद्ध नहीं होता। वि० दीपन करनेवाला। जठराग्नि-वर्द्धक।
दीपना*–क्रि० अ० प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना।
क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।
दीपमाला–संज्ञा स्त्री० १. जलते हुए दीपों की पंक्ति। २. दीपदान या आरती के लिए जलाई हुई बत्तियों का समूह।
दीपमालिका–संज्ञा स्त्री० १. दीपदान, आरती या शोभा के लिए दीयों की पंक्ति। २. दीवाली।
दीपमाली–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
दीपशिखा–संज्ञा स्त्री० दीपक की लौ। चिराग की लौ। दीपज्वाला। दीये की टेम।
दीपावलि–संज्ञा स्त्री० दे० "दीपमालिका"।
दीपिका–संज्ञा स्त्री० छोटा दीया। एक रागिनी।
वि० उजाला फैलानेवाली।
दीपित–वि० १. प्रकाशित। प्रज्वलित। २. चमकता या जगमगाता हुआ। ३. उत्तेजित।
दीपोत्सव–संज्ञा पुं० दीवाली।
दीप्त–वि० १. प्रकाशित। जलता हुआ। प्रज्वलित। २. जगमगाता हुआ। चमकीला।
दीप्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। उजाला। २. कांति। शोभा। छवि। ३. ज्ञान का प्रकाश।
दीप्तिमान्–वि० [स्त्री० दीप्तिमती] १. दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। २. कांति-युक्त। शोभायुक्त।
दीप्य–वि० जलाया जानेवाला। जो जलाने योग्य हो।
दीप्यमान–वि० चमकता हुआ।
दीबो†–संज्ञा पुं० दे० "देना"।
दीमक–संज्ञा स्त्री० [फा०] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा। यह लकड़ी, कागज

आदि में लगकर उसे खोखला और नष्ट कर देता है। बल्मीक।
दीयट–संज्ञा पुं० दे० "दीवट"।
दीया–संज्ञा पुं० १. चिराग। दीपक। २. बत्ती जलाने का छोटा कसोरा।
मुहा०—दीया ठंढा करना=दीया बुझाना। (किसी के घर का) दीया ठंढा होना=किसी के मरने से कुल में अंधकार छा जाना। दीया बढ़ाना=दीया बुझाना। दीया-बत्ती करना=रोशनी का सामान करना। चिराग जलाना। दीया लेकर ढूँढ़ना=चारों ओर हैरान होकर ढूँढ़ना। बड़ी छान-बीन से खोजना।
दीयासलाई या दियासलाई–संज्ञा स्त्री० लकड़ी की छोटी सलाई या सींक, जिसका एक सिरा, गंधक आदि लगी रहने के कारण, डिब्बी पर लगे रोगन पर रगड़ने से जल उठता है।
दीरघ*–वि० दे० "दीर्घ"।
दीर्घ–वि० [संज्ञा दीर्घता] बड़ा। लंबा। बड़े आकार का।
संज्ञा पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा। जैसे–आ, ई, ऊ।
दीर्घकाय–वि० बड़े डील-डौल का।
दीर्घकाल–वि० बहुत अधिक समय।
दीर्घकालीन–वि० बहुत दिन का। पुराना। प्राचीन।
दीर्घग्रीव–वि० लंबी गरदनवाला।
संज्ञा पुं० ऊँट।
दीर्घजंघा–वि० लम्बी जाँघोंवाला।
संज्ञा पुं० १. सारस पक्षी। २. ऊँट। ३. बगुला।
दीर्घजिह्वा–वि० लम्बी जीभवाला।
संज्ञा पुं० साँप।
दीर्घजीवी–वि० बहुत समय तक जीनेवाला।
दीर्घतमा–संज्ञा पुं० एक जन्मांध ऋषि, जो उतथ्य के पुत्र थे। इन्हों ने अपनी स्त्री के अनुचित व्यवहार से अप्रसन्न होकर यह मर्यादा बाँधी थी कि कोई स्त्री एक के बाद दूसरा पति न कर सकेगी।
दीर्घदर्शी–वि० [संज्ञा दीर्घदर्शिता] दूर तक की बात सोचनेवाला। दूरदर्शी।
दीर्घनिद्रा–संज्ञा स्त्री० मृत्यु। मौत।
दीर्घपुष्पक–संज्ञा पुं० मदार। आक। अकवन।
दीर्घमूलक–संज्ञा पुं० औषध-विशेष। विधारा।
दीर्घरद–वि० बड़े दाँतोंवाला।
संज्ञा पुं० सूअर।
दीर्घरोमा–वि० बड़े-बड़े रोओंवाला।
संज्ञा पुं० भालू।
दीर्घवक्त्र–संज्ञा पुं० हाथी।
दीर्घसूत्रता–संज्ञा स्त्री० प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव।
दीर्घसूत्री–वि० हर एक काम में जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला। सुस्त।
दीर्घस्वर–संज्ञा पुं० दीर्घ या द्विमात्रिक स्वर। देर तक या जोर से उच्चारण होनेवाला स्वर।
दीर्घाकार–वि० विशाल। बहुत बड़ी आकृति का। बड़े डील-डौल का। बृहत् रूप का।
दीर्घायु–वि० बड़ी आयुवाला। बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। चिरंजीवी।
दीर्घास्य–संज्ञा पुं० हाथी।
दीर्घाह्न–संज्ञा पुं० ग्रीष्म।
दीर्घिका–संज्ञा स्त्री० बावली। छोटा जलाशय। छोटा तालाब। तीन सौ धनुष के परिमाण का तालाब।
दीर्ण–वि० फटा हुआ। टूटा हुआ। भग्न। विदीर्ण।
दीवट–संज्ञा स्त्री० दीया रखने के लिए पीतल या लकड़ी का आधार। चिरागदान। दीपकाधार।
दीवला†–संज्ञा पुं० दीया।
दीवा–संज्ञा पुं० दीया।
दीवान–संज्ञा पुं० १. राजसभा। राजाओं के बैठने की जगह। कचहरी। २. राज्य का प्रबंध करनेवाला। मुख्य मंत्री। वजीर। प्रधान। ३. गजलों के संग्रह की पुस्तक।
दीवानआम–संज्ञा पुं० [अ०] १ ऐसा दरबार, जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों। आम दरबार लगने का स्थान।
दीवानखाना–संज्ञा पुं० [फा०] घर का वह बाहरी हिस्सा, जहाँ बड़े आदमी

बैठते और सब लोगों से मिलते हैं। बैठक।

दीवानखास–संज्ञा पुं० १. ऐसी सभा, जिसमें राजा या बादशाह मंत्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है। खास दरबार। २. जहाँ खास दरबार होता हो।

दीवाना–वि० [फा०, स्त्री० दीवानी] पागल।

दीवानापन–संज्ञा पुं० पागलपन। सिड़ीपन। विक्षिप्तता।

दीवानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दीवान का पद। २. वह न्यायालय, जो संपत्ति आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे।

दीवानी अदालत या **दीवानी कचहरी**–वह न्यायालय, जो सम्पत्ति और लेन-देन आदि सम्बन्धी मुकदमों का निर्णय करे।

दीवार–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि का बना हुआ परदा या घेरा। दीवाल। भीत। २. किसी वस्तु का घेरा, जो ऊपर उठा हो।

दीवारगीर–संज्ञा पुं० [फा०] दीया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाल–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

दीवाली–संज्ञा स्त्री० दीपावली। कार्त्तिक की अमावास्या को होनेवाला उत्सव, जिसमें संध्या के समय घर में भीतर-बाहर बहुत से दीपक जलाकर पंक्तियों में रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लोग जुआ भी खेलते हैं।

दीवी†–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवट"।

दीसना–क्रि० अ० दिखाई पड़ना। दृष्टि-गोचर होना।

दीह*–वि० लंबा। बड़ा।

दुंका–संज्ञा पुं० कण।

दुंद–संज्ञा पुं० १. दो मनुष्यों के बीच में होने-वाला युद्ध या झगड़ा। द्वन्द्व। द्वन्द्व युद्ध। मल्लयुद्ध। २. कलह। उत्पात। उपद्रव। ३. जोड़ा। युग्म। ४. दुंदुभि। नगाड़ा।

दुंदुभ–संज्ञा पुं० १. नगारा। २. बार-बार जन्म लेने और मरने का कष्ट।

दुंदुभि–संज्ञा स्त्री० नगाड़ा। धौंसा। संज्ञा पुं० १. बरुण। २. विष। ३. एक राक्षस, जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था।

दुंदुभी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुंदुभि"।

दुंदुह*–संज्ञा पुं० पानी का साँप। डेड़हा।

दुंबा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मेढ़ा, जिसकी दुम चक्की के पाट की तरह गोल और भारी होती है।

दुंबाल–संज्ञा पुं० १. चौड़ी पूँछ। २. नाव की पतवार।

दुःकंत*–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुःख, दुख–संज्ञा पुं० १. सुख का विपरीत भाव। तकलीफ। कष्ट। क्लेश। (सांख्य में दुःख तीन प्रकार के माने गए हैं–आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक)। २. संकट। आपत्ति। विपत्ति। ३. मानसिक कष्ट। खेद। रंज। ४. पीड़ा। व्यथा। दर्द। ५. व्याधि। रोग। बीमारी।

मुहा०—दुःख उठाना, पाना या भोगना=कष्ट सहना। तकलीफ सहना। दुःख देना या पहुँचाना=कष्ट पहुँचाना। दुःख बँटाना=सहानुभूति करना। कष्ट या संकट के समय साथ देना। दुःख भरना=कष्ट या संकट के दिन काटना।

दुःखकर–वि० दुख उत्पन्न करनेवाला।

दुःखत्रय–संज्ञा पुं० तीनों प्रकार के दुखों का समूह। दैहिक, दैविक, भौतिक तीन प्रकार के दुख।

दुःखद, दुःखदाता–वि० दुःख देनेवाला।

दुःखदायक–वि० [स्त्री० दुःखदायिका] दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला।

दुःखदायी–वि० दे० "दुःखदायक"।

दुःखप्रद–संज्ञा पुं० दुःखद।

दुःखमय–वि० क्लेश से भरा हुआ।

दुःखवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त जिसमें सदा संसार और उसकी सब बातें दुखमय मानी जाती हैं।

दुःखवादी–संज्ञा पुं० दुखवाद में विश्वास करनेवाला।

दुःखांत–वि० १. जिसके अंत में दुःख हो।

जिसका अन्त दुखदायी हो। २. जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो। जैसे, दुःखांत नाटक।
संज्ञा पुं० १. दुःख का अंत। क्लेश की समाप्ति। २. दुःख की पराकाष्ठा।
दुःखित–वि० जिसे कष्ट या तकलीफ हो। पीड़ित। क्लेशित।
दुःखिनी–वि० जिस पर दुःख पड़ा हो। दुखिया।
दुःखी–वि० जिसे दुःख हो। जो कष्ट में हो।
दुःशला–संज्ञा स्त्री० गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की कन्या, जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी।
दुःशासन–वि० जिस पर शासन करना कठिन हो।
संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के सौ लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यंत प्रेमपात्र और मंत्री था। यह अत्यंत क्रूर स्वभाव का था। पांडव लोग जब जूए में हार गए थे, तब यही द्रौपदी को पकड़कर सभास्थल में लाया था।
दुःशील–वि० बुरे स्वभाव का।
दुःशीलता–संज्ञा स्त्री० दुष्टता।
दुःसह–वि० जिसका सहन करना कठिन हो। अत्यन्त दुखदायक। असह्य।
दुःसाध्य–वि० १. अति कठिन। २. जिसका करना कठिन हो।
दुःसाहस–संज्ञा पुं० १. व्यर्थ का साहस। २. अनुचित साहस। ढिठाई। धृष्टता।
दुःसाहसी–वि० अनुचित साहस करनेवाला।
दुःस्वप्न–संज्ञा पुं० बुरा सपना।
दुःस्वभाव–संज्ञा पुं० बुरा स्वभाव। दुष्ट प्रकृति का। बदमिजाजी।
वि० दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।
दु–वि० "दो" शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने के काम में आता है। जैसे—दुविधा, दुचित्ता।
दुअन–संज्ञा पुं० दे० "दुवन"। दुर्जन। वैरी। राक्षस।
दुअन्नी–संज्ञा स्त्री० दो आने का सिक्का।
दुआ–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रार्थना। दरखास्त। विनती। याचना। २. आशीर्वाद।
मुहा०–दुआ माँगना=प्रार्थना करना। दुआ लगना=आशीर्वाद पूरा होना।
दुआबा–संज्ञा पुं० [फा०] दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दुआल–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चमड़ा। २. चमड़े का तसमा। ३. रिकाब का तसमा।
दुआली–संज्ञा स्त्री० चमड़े का वह तसमा जिससे कसेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।
दुइ†–वि० दे० "दो"।
दुइज†*–संज्ञा स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज।
संज्ञा पुं० दूज का चाँद। द्वितीया का चंद्रमा।
दुई–संज्ञा स्त्री० अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी। द्वैत। भेद-बुद्धि।
दुऊ*–वि० दे० "दोनों"।
दुकड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० दुकड़ी] १. जोड़ा। २. जिसमें कोई वस्तु दो-दो हो या जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो। ३. एक पैसे का चौथाई भाग। दो दमड़ी। छदाम।
दुकड़ी–वि० जिसमें कोई वस्तु दो-दो हो।
संज्ञा स्त्री० १. चारपाई की बुनावट जिसमें दो-दो बाध एक साथ बुने जाते हैं। २. दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता। दुक्की। ३. दो घोड़ों की बग्घी।
दुकना*–क्रि० अ० छिपना। लुकना।
दुकान–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ बेचने के लिए चीजें रखी हों और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हों।
मुहा०–दुकान बढ़ाना=दुकान बंद करना। दुकान लगाना=१. दुकान का असबाब फैलाकर यथास्थान बिक्री के लिए रखना। २. बहुत सी चीजों को इधर-उधर फैलाकर रख देना।
दुकानदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला। दुकानवाला। २. जीविका के लिए ढोंग रचनेवाला।
दुकानदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुकान या बिक्री-बट्टे का काम। दुकान पर माल बेचने का काम। २. ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम।

दुकाल—संज्ञा पुं० अन्न-कष्ट का समय। अकाल। दुर्भिक्ष।
दुकूल—संज्ञा पुं० १. वस्त्र। कपड़ा। २. सन के रेशे का बना कपड़ा। क्षौम वस्त्र। ३. महीन कपड़ा। बारीक कपड़ा।
दुकूलिनी—संज्ञा स्त्री० नदी।
दुकेला—जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो।
यौ०—अकेला-दुकेला=जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो आदमी हों।
दुकेले—क्रि० वि० किसी के साथ। दूसरे आदमी को साथ लिये हुए।
दुक्कड़—संज्ञा पुं० १. तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २. एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा।
दुक्का—वि० [स्त्री० दुक्की] १. एक साथ दो। जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। २. जो जोड़े में हो। जो एक साथ दो (वस्तु) हों। संज्ञा पुं० दे० "दुक्की"।
यौ०—इक्का-दुक्का=अकेला-दुकेला।
दुक्की—संज्ञा स्त्री० ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ बनी रहती हैं।
दुखंडा—वि० जिसमें दो खंड हों। दो-तल्ला।
दुख—संज्ञा पुं० दे० "दुःख"।
दुखड़ा—संज्ञा पुं० १. दुख का वर्णन। तकलीफ का हाल। २. कष्ट। विपत्ति। मुसीबत।
मुहा०—दुखड़ा रोना=अपने दुःख का वृत्तांत कहना।
दुखद—वि० दे० "दुःखद।"
दुखदाई, दुखदानि*—वि० दे० "दुःखदायी"।
दुखदुंद*—संज्ञा पुं० दुःख का उपद्रव। दुःख और आपत्ति।
दुखना—क्रि० अ० दर्द करना। पीड़ा-युक्त होना।
दुखहाया—वि० दे० "दुःखित"।
दुखाना—क्रि० स० १. पीड़ा देना। कष्ट पहुँचाना। २. किसी घाव इत्यादि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो।
मुहा०—जी दुखाना=मानसिक कष्ट पहुँचाना। मन में दुःख उत्पन्न करना।

दुखारा, दुखारी—वि० दुखी। पीड़ित।
दुखित*—वि० दे० "दुःखित"।
दुखिया—वि० दुखी। रोगी। जिसे किसी प्रकार का दुःख या कष्ट हो।
दुखियारा—वि० [स्त्री० दुखियारी] १. जिसे किसी बात का दुःख हो। दुखिया। २. रोगी।
दुखी—वि० १. जिसे दुःख हो। जो कष्ट या दुःख में हो। २. जिसके दिल में रंज हो। ३. रोगी। बीमार।
दुखौला†—वि० दुखी। दुःख अनुभव करनेवाला। दुःखपूर्ण। दुखदायी।
दुखौहाँ*—वि० [स्त्री० दुखौहीं] दुःखदायी। दुःख देनेवाला।
दुगई—संज्ञा स्त्री० ओसारा। बरामदा।
दुगदुगी—संज्ञा स्त्री० १. धुकधुकी। २. गले में पहनने का एक गहना।
दुगना—वि० [स्त्री० दुगनी] द्विगुण। दूना। किसी वस्तु से उतना और अधिक, जितनी कि वह हो।
दुगड़ा—संज्ञा पुं० १. दुनाली बंदूक। २. दोहरी गोली।
दुगासरा—संज्ञा पुं० किसी दुर्ग के नीचे या चारों ओर बसा हुआ गाँव।
दुगुण*—वि० दे० "द्विगुण"।
दुगुन*†—वि० दे० "दुगना"।
दुग्ग*—संज्ञा पुं० दे० "दुर्ग"।
दुग्ध—वि० १. दुहा हुआ। २. भरा हुआ। संज्ञा पुं० दूध। पय।
दुग्धवती—संज्ञा स्त्री० दूध देनेवाली। गाय।
दुग्धी—संज्ञा स्त्री० दुधिया नाम की घास। दुद्धी।
वि० दूधवाला। जिसमें दूध हो।
दुघड़िया—वि० दो घड़ी का। जैसे—दुघड़िया मुहूर्त।
दुघड़िया मुहूर्त—संज्ञा पुं० दो-दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त। द्विघटिका महूर्त। यह मुहूर्त विशेष आवश्यकता के समय निकाला जाता है।
दुघरी†—संज्ञा स्त्री० दुघड़िया मुहूर्त।
दुचंद—वि० दूना। दुगना।

दुचित*–वि० १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिरचित्त। २. चिंतित।
दुचितई†*–संज्ञा स्त्री० १. चित्त की अस्थिरता। दुविधा। २. खटका। आशंका। चिन्ता।
दुचिताई†*–संज्ञा स्त्री० दे० "दुचितई"।
दुचित्ता–वि० [स्त्री० दुचित्ती] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। दुविधा में रहनेवाला। अस्थिरचित्त। २. संदेह में पड़ा हुआ। ३. जिसके चित्त में खटका हो। चिंतित।
दुज*–संज्ञा पुं० दे० "द्विज"।
दुजन्मा*–संज्ञा पुं० दे० "द्विजन्मा"।
दुजपति*–संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति"।
दुजानू–क्रि० वि० दोनों घुटनों के बल (बैठना)।
दुजीह*–संज्ञा पुं० दे० "द्विजिह्व"।
दुजेश–संज्ञा पुं० दे० "द्विजेश"।
दुटूक–वि० दो टुकड़ों में किया हुआ। खंडित।
मुहा०—दुटूक बात=थोड़े में कही हुई साफ बात। स्पष्ट बात। खरी बात।
दुड़बड़ी†–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बाजा।
दुड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुक्की"।
दुत्–अव्य० [अनु०] १. तिरस्कार का शब्द। तिरस्कार के साथ दूर हटाने के लिए कहा जानेवाला शब्द। दूर हो। २. बच्चों से कहने का प्यार का एक शब्द।
दुतकार–संज्ञा स्त्री० वचन-द्वारा किया हुआ अपमान। तिरस्कार। धिक्कार। फटकार।
दुतकारना–क्रि० स० १. दुत्-दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना। २. तिरस्कार के साथ दूर करना।
दुतरफा, दुतर्फा–वि० [स्त्री० दुतर्फी] दोनों ओर का। जो दोनों ओर हो।
दुतारा–संज्ञा पुं० एक बाजा जिसमें दो तार होते हैं।
दुति–संज्ञा स्त्री० दे० "द्युति"।
दुतिमान*–वि० दे० "द्युतिमान्"।
दुतिय*–वि० दे० "द्वितीय"।
दुतिया–संज्ञा स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि। दूज। द्वितीया।
दुतिवंत*–वि० १. आभायुक्त। चमकीला। २. सुन्दर।
दुतीय*–वि० दे० "द्वितीय"।
दुतीया*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया"।
दुदल–संज्ञा पुं० १. दाल। २. एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। कानफूल। बरन।
दुदलाना†–क्रि० स० दे० "दुतकारना"।
दुदहँड़ी–संज्ञा स्त्री० दूध दुहने का मिट्टी का छोटा बर्त्तन।
दुदामी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था।
दुदिला–वि० १. दुबिधा में पड़ा हुआ। दुचित्ता। २. चिंतित। व्यग्र। घबराया हुआ।
दुद्धी–संज्ञा स्त्री० १. जमीन पर फैलनेवाली एक घास। २. एक छोटा पौधा। ३. खड़िया मिट्टी। ४. एक लता। एक वृक्ष।
दुधमुख*†–वि० दूधपीता। दुधमुहाँ।
दुधमुँहाँ–वि० दे० "दूधमुहाँ"।
दुधहाँड़ी–संज्ञा स्त्री० दूध दुहने या रखने की छोटी मटकी। मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।
दुधाँड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुधहाँड़ी"।
दुधार–वि० १. दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। २. जिसमें दूध हो।
संज्ञा पुं० दे० "दुधारा"
दुधारा–वि० (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का खाँड़ा।
दुधारी–वि० १. दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। २. जिसमें दोनों ओर धार हो। दो धारवाली।
दुधारू†–वि० दे० "दुधार"।
दुधिया–वि० १. दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २. जिसमें दूध होता हो। ३. दूध की तरह सफेद। सफेद रंग का।
संज्ञा स्त्री० १. दुद्धी नाम की घास। २. एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३. खड़िया मिट्टी। ४. एक प्रकार का विष।

दुधिया पत्थर—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २. एक प्रकार का नग या रत्न।

दुधिया विष—संज्ञा पुं० एक विष जिसके पौधे हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विष होता है। तेलिया विष। मीठा जहर।

दुधैल—वि० बहुत दूध देनेवाली। दुधार।

दुनवना†*—क्रि० अ० लचकर प्रायः दोहरा हो जाना।

क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।

दुनाली—वि० दो नलोंवाली। जैसे दुनाली बंदूक।

संज्ञा स्त्री० दुनाली बंदूक। ऐसी बंदूक जिसमें दो-दो गोलियाँ एक साथ भरी जायँ।

दुनिया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संसार। जगत्। २. संसार के लोग। लोक। जनता। ३. संसार का जंजाल। जगत् का प्रपंच।

यौ०—दीन-दुनिया=लोक-परलोक।

मुहा०—दुनिया के परदे पर=सारे संसार में। दुनिया की हवा लगना=सांसारिक अनुभव होना। संसारी विषयों का अनुभव होना। दुनिया भर का=बहुत या बहुत अधिक।

दुनियाई—वि० सांसारिक।

संज्ञा स्त्री० संसार।

दुनियादार—संज्ञा पुं० सांसारिक झंझट में फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ।

वि० १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। २. व्यवहार-कुशल।

दुनियादारी—संज्ञा स्त्री० १. दुनिया का कारबार। गृहस्थी का जंजाल। २. व्यवहार-कुशलता। स्वार्थसाधन। ३. बनावटी व्यवहार।

दुनियावी—वि० सांसारिक। दुनिया या संसार से सम्बन्धित। मोहमाया में लिप्त।

दुनियासाज़—वि० [संज्ञा दुनियासाजी] १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थसाधक। २. चापलूस।

दुनी*—संज्ञा स्त्री० संसार।

दुपटा†*—संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।

दुपट्टा—संज्ञा पुं० [स्त्री० दुपट्टी] १. दो पाटों को जोड़कर बनाया हुआ ओढ़ने का कपड़ा। दो पाट की चद्दर। चादर। २. कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।

मुहा०—दुपट्टा तानकर सोना=निश्चिंत होकर सोना। बेखटके सोना।

दुपट्टी†*—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"।

दुपहर—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दुपहरिया—संज्ञा स्त्री० १. मध्याह्न का समय। दोपहर। २. एक छोटा पौधा।

दुपहरी—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।

दुफसली—वि० वह चीज जो रबी और खरीफ दोनों फसलों में हो। संदिग्ध। अनिश्चित।

दुबधा—संज्ञा स्त्री० १. दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव। अनिश्चय। चित्त की अस्थिरता। २. संशय। संदेह। ३. असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश। ४. खटका। चिंता।

दुबरा†—वि० दे० "दुबला"।

दुबराना*†—क्रि० अ० दुबला होना। शरीर से क्षीण होना।

दुबला—वि० [स्त्री० दुबली] १. कमजोर। दुर्बल। जिसका बदन हलका और पतला हो। क्षीण शरीर का। कृश। २. अशक्त।

दुबलापन—संज्ञा पुं० कृशता। क्षीणता।

दुबारा—क्रि० वि० दे० "दोबारा"।

दुबाला—वि० दे० "दोबाला"।

दुबिध*—संज्ञा पुं० दे० "द्विविध"।

दुबिध, दुबिधा*—संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुबे—संज्ञा पुं० [स्त्री० दुबाइन] ब्राह्मणों का एक भेद। दूबे। द्विवेदी।

दुभाखी—संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।

दुभाषिया—संज्ञा पुं० दो भाषाओं का जाननेवाला ऐसा मनुष्य जो उन भाषाओं के बोलनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे का अभिप्राय समझावे।

दुमंजिला—वि० [फा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो मरातिब का। दोखंडा।

दुम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पूँछ। पुच्छ। २. पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु।

३. पीछे-पीछे लगा रहनेवाला आदमी। पिछलग्गू। ४. किसी काम का सबसे अंतिम थोड़ा-सा अंश।

मुहा०—दुम दबाकर भागना=डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। दुम हिलाना=कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना।

दुमची—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. घोड़े के साज का तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है। २. दोनों नितम्बों के बीच की हड्डी।

दुमदार—वि० [फा०] १. पूँछवाला। २. जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो।

दुमन, दुमना—वि० दुखी। चिंतित।

दुमाता—वि० १. बुरी माता। २. सौतेली माँ।

दुमुहाँ—वि० दे० "दोमुहाँ"।

दुरंगा—वि० १. दो रंगों का। जिसमें दो रंग हों। २. दो तरह का। ३. दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी—वि० स्त्री० दे० "दुरंगा"।

संज्ञा स्त्री० दोहरी चाल। दोनों पक्षों का अवलंबन। द्विविधा।

दुरंत—वि० १. अपार। बड़ा भारी। २. दुर्गम। दुस्तर। कठिन। ३. घोर। प्रचंड। भीषण। ४. जिसका परिणाम बुरा हो। अशुभ। ५. दुष्ट। खल।

दुरंध्रा*—वि० १. दो छिद्रोंवाला। २. आर-पार छेदा हुआ।

दुर्—उप० या अव्यय जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—१. दूषण। (बुरा अर्थ) जैसे—दुरात्मा। २. विपरीत अर्थ का सूचक। जैसे—दुर्बल। ३. दुःख।

दुर—अव्य० तिरस्कार-सूचक एक शब्द। दूर हो।

संज्ञा पुं० [फा०] १. मोती। मुक्ता। २. मोती की लटकन जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं। लोलक। ३. छोटी बाली।

मुहा०—दुर-दुर करना=तिरस्कारपूर्वक हटाना। कुत्ते की तरह भगाना।

दुरजन*—संज्ञा पुं० दे० "दुर्जन"।

दुरजोधन*—संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

दुरतिक्रम—वि० १. जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके। २. प्रबल। ३. जिसका पार पाना कठिन हो। अपार।

दुरत्यय—वि० [स्त्री० दुरत्यया] जिसे पार करना कठिन हो। दुस्तर। कठिन। दे० "दुर्दमनीय"।

दुरथल*—संज्ञा पुं० बुरी जगह।

दुरद*—संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

दुरदाम*—वि० कठिन। कष्टसाध्य।

दुरदाल*—संज्ञा पुं० हाथी।

दुरदुराना—क्रि० स० तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान के साथ भगाना।

दुरधिगम—वि० दुर्बोध। दुष्प्राप्य।

दुरना†*—क्रि० अ० १. छिपना। आँखों के आगे से दूर होना। आड़ में जाना। २. न दिखलाई पड़ना।

दुरपदी‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "द्रौपदी"।

दुरबीन—संज्ञा स्त्री० दे० "दूरबीन"। दूर की चीज देखने का यंत्र जिसमें वह निकट और बड़ी दिखाई पड़े।

दुरभिग्रह—वि० मुश्किल से हाथ आनेवाला। कठिनाई से प्राप्त होनेवाला।

दुरभिसंधि—संज्ञा स्त्री० षड्यंत्र। कुमंत्रणा। साजिश। बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।

दुरभेव†—संज्ञा पुं० बुरा भाव। मनमोटाव। मनोमालिन्य।

दुरमुट—संज्ञा पुं० गदा के आकार का डंडा जो कंकड़ कूटने के काम आता है।

दुरमुस—संज्ञा पुं० दे० "दुरमुट"।

दुरवस्था—संज्ञा स्त्री० १. बुरी दशा। खराब हालत। २. दुःख, कष्ट या दरिद्रता की दशा। हीन दशा।

दुरवाप—वि० दुष्प्राप्य।

दुराउ†*—संज्ञा पुं० दे० "दुराव"। छिपाव। कपट।

दुरागमन—संज्ञा पुं० दे० "द्विरागमन"। गौना।

दुराग्रह—संज्ञा पुं० [वि० दुराग्रही] १. किसी बात पर बुरे ढंग से अड़ना। २. हठ। जिद।

दुराग्रही—वि० हठी। जिद्दी।

दुराचरण—संज्ञा पुं० बुरा चाल-चलन। खोटा व्यवहार।

दुराचार—संज्ञा पुं० [वि० दुराचारी] दुष्ट आचरण। बुरा चाल-चलन। निंदित कर्म।

दुराचारी—वि० बुरे चाल-चलनवाला।

दुराज—संज्ञा पुं० बुरा राज्य। बुरा शासन। १. एक ही स्थान पर दो राजाओं का शासन। २. वह स्थान जहाँ दो राजाओं का राज्य हो।

दुराजी—वि० दो राजाओं का।

दुरात्मा—वि० दुष्टात्मा। खोटा। नीचाशय।

दुरादुरी—संज्ञा स्त्री० छिपाव। गोपन।

मुहा०—दुरादुरी करके=छिपे-छिपे।

दुराधर्ष—वि० जिसका दमन करना कठिन हो। प्रचंड। प्रबल।

संज्ञा पुं० श्री विष्णु।

दुराना—क्रि० अ० १. दूर होना। हटना। टलना। भागना। २. छिपना।

क्रि० स० १. दूर करना। हटाना। २. छोड़ना। त्यागना। ३. छिपाना। गुप्त रखना।

दुराप—वि० दुर्लभ।

दुरालाप—संज्ञा पुं० गाली।

दुराव—संज्ञा पुं० १. छिपाव। भेदभाव। २. कपट। छल। अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव।

दुराशय—संज्ञा पुं० दुष्ट आशय। बुरी नीयत। वि० जिसका मतलब बुरा हो। खोटा।

दुराशा—संज्ञा स्त्री० झूठी उम्मीद। व्यर्थ की आशा। पूरी न होनेवाली आशा।

दुरित—संज्ञा पुं० १. पाप। पातक। २. उपपातक। छोटा पाप।

वि० पापी। पातकी।

दुरियाना—क्रि० स० दूर करना। हटाना। दुरदुराना।

दुरीषणा—संज्ञा स्त्री० शाप।

दुरुखा—वि० दो मुँहवाला। १. जिसके दोनों ओर मुँह हों। २. जिसके दोनों ओर एक ही सा मुँह हो। ३. जिसके दोनों ओर दो रंग हों।

दुरुपयोग—संज्ञा पुं० किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना। बुरा उपयोग।

दुरुस्त—वि० [फा०] १. जो अच्छी दशा में हो। ठीक। जो टूटा-फूटा न हो। २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३. उचित। मुनासिब। ४. यथार्थ।

दुरुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुधार। संशोधन।

दुरूह—वि० जल्दी समझ में न आने योग्य। गूढ़। कठिन।

दुरेफ—संज्ञा पुं० "द्विरेफ"। भौंरा।

दुर्कुल*—संज्ञा पुं० दे० "दुष्कुल"।

दुर्गंध—संज्ञा स्त्री० बुरी गंध। बदबू। कुवास।

दुर्ग—वि० जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुर्गम।

संज्ञा पुं० १. गढ़। कोट। किला। २. एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।

[illegible] १. जसकी बुरी गति हुई हो। दुर्दशा-ग्रस्त। २. दरिद्र।

संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति"।

दुर्गति—संज्ञा स्त्री० बुरी हालत। दुर्दशा। नरक-भोग।

दुर्गपाल—संज्ञा पुं० गढ़ का रक्षक। किलेदार।

दुर्गम—वि० १. जहाँ जाना कठिन हो। २. जिसे जानना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. दुस्तर। कठिन। विकट।

संज्ञा पुं० १. गढ़। दुर्ग। किला। २. विष्णु। ३. वन। ४. संकट का स्थान।

दुर्गमता—संज्ञा स्त्री० दुर्गम होने का भाव।

दुर्गरक्षक—संज्ञा पुं० किलेदार।

दुर्गा—संज्ञा स्त्री० १. आदि शक्ति। देवी। गौरी, काली, भवानी, चंडी, अन्नपूर्णा आदि इन्हीं के नाम और रूप हैं। २. नील का पौधा। ३. अपराजिता। कौवा-ठोंठी। ४. श्यामा पक्षी। ५. नौ वर्ष की कन्या। ६. एक रागिनी।

दुर्गाध्यक्ष—संज्ञा पुं० गढ़ का प्रधान। किलेदार।

दुर्गुण—संज्ञा पुं० दोष। ऐब। बुराई।

दुर्गोत्सव—संज्ञा पुं० दुर्गा-पूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है।

दुर्घट–वि० जिसका होना कठिन हो। कष्ट-साध्य।

दुर्घटना–संज्ञा स्त्री० दुःख की घटना। १. ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो। अशुभ घटना। बुरा संयोग। वारदात। २. विपत्ति। आफत।

दुर्जन–संज्ञा पुं० दुष्ट जन। खोटा आदमी। खल। बदमाश।

दुर्जनता–संज्ञा स्त्री० दुष्टता।

दुर्जय–वि० दे० "दुर्जेय"।

दुर्जय–वि० जिसे जीतना बहुत कठिन हो। जिस पर विजय पाना कठिन हो।

दुर्ज्ञेय–वि० जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।

दुर्दम–वि० दे० "दुर्दमनीय"। प्रचंड। प्रबल।

दुर्दमनीय–वि० १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २. प्रबल। प्रचंड।

दुर्दम्य–वि० दे० "दुर्दमनीय"।

दुर्दर*–वि० दे० "दुर्द्धर"।

दुर्दशा–संज्ञा स्त्री० बुरी दशा। दुर्गति। खराब हालत।

दुर्दान्त–वि० जिसे दबाना बहुत कठिन हो। दुर्दमनीय। प्रबल। भयंकर। भयानक।

दुर्दिन–संज्ञा पुं० १. बुरा दिन। २. दुर्दशा। दुःख और कष्ट का समय। ३. ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन।

दुर्दैव–संज्ञा पुं० १. दुर्भाग्य। बुरी किस्मत। २. बुरे दिनों का फेर।

दुर्द्धर–वि० प्रबल। प्रचंड। जो कठिनाई से पकड़ में आवे।

दुर्द्धर्ष–वि० १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. उग्र। प्रबल। प्रचंड।

दुर्नाम–संज्ञा पुं० १. कुख्याति। बुरा नाम। बदनामी। २. गाली। बुरा वचन। ३. बवासीर। ४. सीप।

दुर्निवार–वि० दे० "दुर्निवार्य्य"।

दुर्निवार्य्य–वि० १. जो जल्दी रोका न जा सके। जिसका निवारण करना कठिन हो। २. जो जल्दी हटाया न जा सके। ३. जिसका होना निश्चित हो।

दुर्नीति–संज्ञा स्त्री० कुनीति। कुचाल। अन्याय। अनुचित आचरण।

दुर्बल–वि० १. बलहीन। अशक्त। कमजोर। २. दुबला-पतला। कृश। क्षीणकाय।

दुर्बलता–संज्ञा स्त्री० १. बल की कमी। कमजोरी। २. कृशता। दुबलापन।

दुर्बोध–वि० जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़। क्लिष्ट। कठिन।

दुर्भर–वि० जो लादा न जा सके। भारी। वजनी।

दुर्भाग्य–संज्ञा पुं० बुरा भाग्य। खोटी किस्मत।

दुर्भाव–संज्ञा पुं० १. बुरा भाव। २. मन-मोटाव। द्वेष। मनोमालिन्य।

दुर्भावना–संज्ञा स्त्री० १. बुरी भावना। २. अंदेशा। खटका। चिंता।

दुर्भिक्ष–संज्ञा पुं० अकाल। ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले।

दुर्भेद–वि० १. जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २. जिसे जल्दी पार न कर सकें।

दुर्भेद्य–वि० दे० "दुर्भेद"।

दुर्मति–संज्ञा स्त्री० बुरी बुद्धि।
वि० १. दुर्बुद्धि। जिसकी समझ ठीक न हो। कमअक्ल। २. खल। दुष्ट।

दुर्मद–वि० घमंडी। मदमत्त।

दुर्मिल–संज्ञा पुं० १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं। २. एक प्रकार का सवैया, जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।

दुर्मुख–वि० १. जिसका मुख बुरा हो। २. अप्रियवादी। कटु भाषी।
संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. शिवजी। ३. एक नाग। ४. राम की सेना का एक बंदर। ५. रामचन्द्रजी का एक गुप्तचर, जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था।

दुर्मुस–संज्ञा पुं० कंकड़ या मिट्टी कूटने का गदा के आकार का एक डंडा।

दुर्योधन–संज्ञा पुं० कुरुवंशी राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र, जो अपने चचेरे भाई पांडवों से द्वेष रखता था। इसी के साथ

जूआ खेलकर युधिष्ठिर अपना सारा राज्य और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार गए और उन्हें सब भाइयों-सहित १२ वर्ष तक वनवास और एक वर्ष तक अज्ञातवास में रहना पड़ा। जब वे अज्ञातवास से लौटे तब दुर्योधन ने उनका राज्य उन्हें नहीं लौटाया। इस कारण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ।

दुर्योनि–वि० नीच कुल का।

दुर्रा–संज्ञा पुं० [फा०] कोड़ा। चाबुक।

दुर्रानी–संज्ञा पुं० [फा०] अफ़गानों की एक उपजाति।

दुर्लंघ्य–वि० जिसे आसानी से लाँघ न सकें।

दुर्लक्ष्य–वि० १. जो कठिनता से दिखाई पड़े। जिसका निशाना लगाना कठिन हो। २. बुरी नीयत।

दुर्लभ–वि० १. दुष्प्राप्य। जिसे पाना सहज न हो। २. अनोखा। बहुत बढ़िया। ३. प्रिय।

दुर्वच–संज्ञा पुं० दे० "दुर्वचन"।

दुर्वचन–संज्ञा पुं० दुर्वाक्य। गाली।

दुर्वह–वि० जिसका वहन करना कठिन हो।

दुर्वाद–संज्ञा पुं० १. निंदा। अपवाद। २. स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।

दुर्वादी–वि० हठी। हुज्जती।

दुर्वासना–संज्ञा स्त्री० बुरी इच्छा।

दुर्वासा–संज्ञा पुं० अत्रि के पुत्र एक ऋषि। ये अत्यंत क्रोधी थे।

दुर्विद–वि० जिसका जानना कठिन हो। दुर्बोध।

दुर्विध–वि० खल। दुष्ट। दरिद्र।

दुर्विनीत–वि० अक्खड़। अशिष्ट। उद्धत।

दुर्विपाक–संज्ञा पुं० १. बुरा परिणाम। २. दुर्घटना। बुरा संयोग।

दुर्विषह–वि० दुःसह।

दुर्वृत्त–वि० दुश्चरित्र। दुराचारी।

दुर्व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० कुप्रबंध। बदइंतजामी।

दुर्व्यवहार–संज्ञा पुं० १. बुरा व्यवहार। बुरा बर्त्ताव। २. दुष्ट आचरण।

दुर्व्यसन–संज्ञा पुं० बरी लत। खराब आदत।

दुर्व्यसनी–वि० बुरी लतवाला।

दुर्हृद–संज्ञा पुं० शत्रु।

दुलकी–संज्ञा स्त्री० घोड़े की एक चाल।

दुलखना–क्रि० स० बार बार कहना या बतलाना।

दुलड़ा–वि० दो लड़ों का।

दुलड़ी–संज्ञा स्त्री० दो लड़ों की माला।

दुलत्ती–संज्ञा स्त्री० घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल–संज्ञा पुं० [अ०] वह मादा खच्चर, जो मिस्र के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी। साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों में इसकी नकल निकालते हैं।

दुलराना*†–क्रि० स० बच्चों को बहलाकर प्यार करना। लाड़-प्यार करना।

दुलरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलड़ी"।

दुलहन–संज्ञा स्त्री० नई ब्याही हुई स्त्री। नवविवाहिता वधू।

दुलहा–संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा"।

दुलहिया, दुलही‡–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"।

दुलहेटा–संज्ञा पुं० लाड़ला बेटा। दुलारा लड़का।

दुलाई–संज्ञा स्त्री० ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रुई भरी हो।

दुलाना*–क्रि० स० दे० "डुलाना"।

दुलार–संज्ञा पुं० लाड़-प्यार। प्रीति। बच्चों के साथ प्यार।

दुलारना–क्रि० स० लाड़-प्यार करना।

दुलारा–वि० [स्त्री० दुलारी] लाड़ला। जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो।

दुलारी–संज्ञा स्त्री० प्यारी बेटी। दुलाई।

दुलीचा, दुलैचा–संज्ञा पुं० दे० "गलीचा।"

दुलोही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

दुव–वि० दो।

दुवन–संज्ञा पुं० १. दुर्जन। बुरा आदमी। २. वैरी। दुश्मन। शत्रु। ३. राक्षस। दैत्य।

दुवाज–संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादस बानी*–वि० १. बारह बानी का। २. आभायुक्त। सूर्य के समान चमकता हुआ। खरा (विशेषतः सोने के लिए)।

दुवार†–संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।

दुवाल–संज्ञा स्त्री० [फा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।

दुवाली–संज्ञा स्त्री० १. रँगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिए घोंटने का औजार। घोंटा। २. चमड़े का परतला या पेटी, जिसमें बंदूक, तलवार आदि लटकाते हैं।

दुविधा†–संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुवो*†–वि० दोनों।

दुशवार–वि० [फा०] [संज्ञा दुशवारी] १. मुश्किल। कठिन। दुरूह। २. दुःसह।

दुशाला–संज्ञा पुं० शाल का जोड़ा। ऊनी बहुमूल्य वस्त्र-विशेष, जो ओढ़ने के काम में आता है और जिसके चारों तरफ फूल-पत्ती कढ़ी रहती है।

दुशासन*–संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।

दुश्चरित–वि० १. बुरे आचरण का। बद-चलन। २. कठिन।

संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।

दुश्चरित्र–वि० [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।

संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।

दुश्चेष्टा–संज्ञा स्त्री० [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।

दुश्मन–संज्ञा पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।

दुश्मनी–संज्ञा स्त्री० वैर। शत्रुता।

दुश्चिंता–संज्ञा स्त्री० बुरी चिंता। बुरी आशंका।

दुष्कर–वि० दुःसाध्य। जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके।

दुष्कर्म–संज्ञा पुं० [वि० दुष्कर्म्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

दुष्कर्मा–वि० कुकर्मी। पापी।

दुष्कर्मी–वि० बुरा काम करनेवाला। दुरा-चारी। पापी।

दुष्काल–संज्ञा पुं० १. कुसमय। बुरा वक्त। २. दुर्भिक्ष। अकाल।

दुष्कीर्ति–संज्ञा स्त्री० बदनामी। अपयश।

दुष्ट–वि० [स्त्री० दुष्टा] १. दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी। २. जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोष-ग्रस्त। ३. पित्त आदि दोष से युक्त।

दुष्टता–संज्ञा स्त्री० १. बुराई। खराबी। २. बदमाशी। ३. नुक्स। ऐब।

दुष्टपना–संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।

दुष्टाचार–संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल। कुकर्म।

दुष्टात्मा–वि० जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। कुटिल। बदमाश। दुष्ट। नीच।

दुष्प्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० बुरी प्रवृत्ति। बुरे कार्य करने की इच्छा।

वि० बुरी या दुष्ट प्रवृत्तिवाला। बद।

दुष्प्राप्य–वि० जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।

दुष्मंत–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुष्यंत–संज्ञा पुं० एक चन्द्रवंशी राजा, जिन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। उन्हीं के संयोग से शकुंतला के गर्भ से भरत-नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था, जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया।

दुसराना*–क्रि० स० दे० "दोहराना"।

दुसरिहा*†–वि० १. साथी। संगी। २. प्रति-द्वंद्वी।

दुसह*–वि० असह्य। जो सहा न जा सके। कठिन।

दुसही†–वि० १. जो कठिनता से सह सके। २. ईर्ष्यालु।

दुसाखा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का शमादान।

दुसाध–संज्ञा पुं० हिंदुओं की एक नीच जाति।

दुसार–संज्ञा पुं० आर पार किया हुआ छेद।

क्रि० वि० आर-पार। एक पार से दूसरे तक।

दुसाल–संज्ञा पुं० आर-पार छेद।

दुसासन†–संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।

दुसूती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटी चादर।

दुसेजा–संज्ञा पुं० बड़ी खाट। पलँग।

दुस्तर–वि० १. जिसे पार करना कठिन हो। २. विकट। कठिन।

दुस्थ–वि० दुखी। दरिद्र।

दुस्थता–संज्ञा स्त्री० दारिद्रय। दुर्भाग्य।
दुस्सह–वि० दे० "दुःसह"।
दुहता–संज्ञा पुं० [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती। दौहित्र।
दुहत्था–वि० [स्त्री० दुहत्थी] दोनों हाथों से किया हुआ। दो मूठवाला।
दुहना–क्रि० स० १. दोहना। स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। २. धन हर लेना। लूटना। ३. निचोड़ना। तत्त्व या सार खींचना।
मुहा०—दुह लेना=सार खींच लेना।
दुहनी–संज्ञा स्त्री० दूध दुहने का छोटा बरतन।
दुहरा–वि० दे० 'दोहरा'।
दुहाई–संज्ञा स्त्री० १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। मुनादी। घोषणा। २. शपथ। कसम। सौगंध। ३. रक्षा के लिए किसी का नाम लेकर चिल्लाना। ४. गाय, भैंस आदि को दुहने का काम। ५. दुहने की मजदूरी।
मुहा०—दुहाई देना=अपने बचाव के लिए किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
दुहाग–संज्ञा पुं० १. दुर्भाग्य। २. रँड़ापा। वैधव्य।
दुहागिन†–संज्ञा स्त्री० सुहागिन का उलटा। विधवा।
दुहागिल–वि० अभागा। अनाथ। अकेला।
दुहागी†–वि० [स्त्री० दुहागिन] अभागा। बदकिस्मत।
दुहाजू–वि० जो पहली स्त्री के मर जाने पर दूसरा विवाह करे।
दुहाना–क्रि० स० दुहने का काम दूसरे से कराना।
दुहावनी–संज्ञा स्त्री० दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।
दुहिता–संज्ञा स्त्री० कन्या। लड़की।
दुहिन*–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
दुहेला–वि० [स्त्री० दुहेली] १. दुःखदायी। दुःसाध्य। कठिन। २. दुःखी।
संज्ञा पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।
दुहोतरा*–वि० दो अधिक। दो ऊपर।
संज्ञा पुं० नाती।

दुह्य–वि० [स्त्री० दुह्या] दुहने योग्य।
दूइज†–संज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।
दूक*–वि० दो-एक। कुछ।
दूकान–संज्ञा पुं० दे० "दुकान"।
दूकानदार–संज्ञा पुं० दे० "दुकानदार"।
दूखना*†–क्रि० स० दोष लगाना। ऐब लगाना।
दूज–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।
मुहा०—दूज का चाँद होना=बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना। कम दर्शन देना।
दूजा*†–वि० दूसरा।
दूत–संज्ञा पुं० [स्त्री० दूती] १. वह जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजा जाय। चर। बसीठ। २. किसी समाचार को पहुँचानेवाला मनुष्य। एक दूसरे तक संदेशा पहुँचानेवाला।
दूतकर्म–संज्ञा पुं० संदेशा पहुँचाने का कार्य। खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।
दूतत्व–संज्ञा पुं० दे० "दूतकर्म"। दूत का काम। दूतता।
दूतमंडल–संज्ञा पुं० किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों (प्रतिनिधियों) का समूह।
दूतर*†–वि० दे० "दुस्तर"।
दूतावास–संज्ञा पुं० दूसरे देश के राजदूत या प्रतिनिधि का कार्यालय तथा रहने का स्थान आदि।
दूतिका, दूती–संज्ञा स्त्री० प्रेमी और प्रेमिका का संदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी। सारिका।
दूती–संज्ञा स्त्री० दे० "दूतिका"।
दूत्य–संज्ञा पुं० दे० "दौत्य"।
दूध–संज्ञा पुं० १. स्तन से निकलनेवाला सफेद रंग का तरल पदार्थ। पय। दुग्ध। क्षीर। गोरस। २. अनाज के हरे बीजों का रस।
मुहा०—दूध उतरना=छातियों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना=ऐसा न्याय करना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। दूध की मक्खी की तरह निकालना या

निकालकर फेंक देना=किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना=अभी तक बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और संतान की वृद्धि हो (आशीर्वाद)। (स्तनों में) दूध भर आना=बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उतर आना।

दूधपिलाई–संज्ञा स्त्री० १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रस्म जिसमें बारात के समय माता वर को दूध पिलाने की-सी मुद्रा करती है।

दूध-पूत–संज्ञा पुं० धन और सन्तान।

दूध-फेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "फेनी"।

दूधभाई–संज्ञा पुं० [संज्ञा स्त्री० दूध-बहन] ऐसे बालक जो एक ही स्त्री का दूध पीकर पले हों, लेकिन दूसरे माता-पिता से उत्पन्न हों।

दूधमुँहा–वि० जो माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा।

दूधाधारी–वि० केवल दूध के आधार पर जीनेवाला। दुग्धाहारी। केवल दूध का आहार करनेवाला।

दूधाभाती–संज्ञा स्त्री० दूध और भात। विवाह की एक रीति।

दूधमुख–वि० छोटा बच्चा। बालक। दूध-मुँहा।

दूधिया–वि० १. दूध के रंग का। सफेद। २. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं। ३. एक प्रकार का पौधा जिसका रस दूध के समान होता है। ४. दूध में छानी हुई भाँग।

दूधी–वि० दूध का। दुधैला।

संज्ञा पुं० १. मोड़ी। २. दुधिया पौधा।

दून–संज्ञा स्त्री० १. दुगने का भाव। २. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय, उसके आधे समय में गाना या बजाना।

संज्ञा पुं० तराई। घाटी।

मुहा०—दून की लेना या हाँकना=बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना। डींग मारना।

दूनर†*–वि० जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दूना–वि० दुगुना। दोहरा। दो बार उतना ही। द्विगुण।

दूनौं*†–वि० दे० "दोनों"।

दूब–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध घास। यह तीन प्रकार की होती है; हरी, सफेद और गाँडर।

वि० दे० "गाँडर"।

दूबदू–क्रि० वि० आमने-सामने। मुकाबले में।

दूबर या **दूबरा***†–वि० दे० "दुबला"। निर्बल। कमजोर। दुबला-पतला।

दूबिया–वि० एक प्रकार का हरा रंग।

दूबे–संज्ञा पुं० दुबे। द्विवेदी। (ब्राह्मणों की एक शाखा)

दूभर–वि० कठिन। मुश्किल।

दूमना†*–क्रि० अ० हिलना।

दूरंदेश–वि० [फा०] [संज्ञा दूरंदेशी] दूर तक की बात विचारनेवाला। दूरदर्शी। अग्रसोची।

दूरंदेशी–संज्ञा स्त्री० दूरदर्शिता। दूर तक की बात सोचना।

दूर–क्रि० वि० देश, काल या संबंध आदि के विचार से बहुत अंतर पर। बहुत फासले पर। पास या निकट का उलटा।

वि० जो दूर या फासले पर हो।

मुहा०—दूर करना=१. जुदा करना। अलग करना। २. न रहने देना। मिटाना। दूर भागना या रहना=बहुत बचना। पास न जाना। दूर होना=१. हट जाना। अलग हो जाना। २. मिट जाना। नष्ट होना। दूर की बात=१. बारीक बात। २. कठिन बात।

दूरगामी–वि० दूर तक चलनेवाला।

दूरता–संज्ञा स्त्री० दे० "दूरत्व"।

दूरत्व–संज्ञा पुं० दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक–वि० दूर तक देखनेवाला। संज्ञा पुं० पंडित।
दूरदराज–वि० [फा०] बहुत दूर।
दूरदर्शक यंत्र–संज्ञा पुं० दूरबीन।
दूरदर्शिता–संज्ञा स्त्री० दूर की बात सोचने का गुण। विवेक। दूरंदेशी।
दूरदर्शी–वि० बहुत दूर तक देखनेवाला। बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला। अग्रशोची। दूरंदेश।
दूरदस्त–वि० [फा०] पहुँच के बाहर। हाथ की पहुँच से दूर।
दूरदृष्टि–संज्ञा स्त्री० दूरदर्शिता। दूरंदेशी।
दूरबीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] दूर की वस्तुओं को देखने का एक यंत्र, जिससे वे स्पष्ट और बड़ी दिखाई देती हैं। दूरवीक्षण यंत्र।
दूरवर्ती–वि० दूर का। जो दूर हो।
दूरवीक्षण–संज्ञा पुं० दे० "दूरबीन"।
दूरवीक्षण यंत्र–संज्ञा पुं० दे० "दूरबीन"।
दूरस्थ–वि० दूर का। दूर पर स्थित।
दूरागत–वि० दूर से आया हुआ।
दूरी–संज्ञा स्त्री० दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। दूरत्व। अंतर। फासला।
दूरीकृत–वि० दूर किया हुआ।
दूर्वा–संज्ञा स्त्री० दूब नाम की घास।
दूर्वाष्टमी–संज्ञा स्त्री० भादों शुक्ल पक्ष की अष्टमी।
दूलह–संज्ञा पुं० दुलहा। वर। नौशा। पति। स्वामी।
दूल्हा–संज्ञा पुं० दे० "दूलह"।
दूष्य–संज्ञा पुं० तम्बू।
दूषक–संज्ञा पुं० १. दोष लगानेवाला। निन्दा करनेवाला। २. दोष उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।
दूषण–संज्ञा पुं० १. अवगुण। दोष। ऐब। बुराई। २. दोष लगाने की क्रिया या भाव। ऐब लगाना। ३. रावण का भाई, एक राक्षस।
दूषणीय–वि० दोष लगाने योग्य। जिसमें ऐब लगाया जा सके।
दूषना*†–क्रि० स० दोष लगाना। कलंकित करना।
दूषित–वि० दोषयुक्त।
दूष्य–वि० १. दोष लगाने योग्य। २. निंदनीय। निंदा करने योग्य। ३. तुच्छ।
दूसना†–क्रि० स० दे० "दूषना"।
दूसर*†–वि० दे० "दूसरा"।
दूसरा–वि० १. पहले के बाद का। द्वितीय। जो क्रम में दो के स्थान पर हो। २. जिसका प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से संबंध न हो। अन्य। अपर।
दूहना–क्रि० स० दे० "दुहना"।
दूहा*†–संज्ञा पुं० दे० "दोहा"।
दृक्–संज्ञा पुं० छिद्र। छेद।
दृक्क्षेप–संज्ञा पुं० देखना। अवलोकन। दृष्टिपात।
दृक्पथ–संज्ञा पुं० दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुँच।
दृक्पात–संज्ञा पुं० दृष्टिपात। अवलोकन।
दृक्शक्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाशरूप। चैतन्य। २. आत्मा।
दृगंचल–संज्ञा पुं० पलक।
दृगंबु–संज्ञा पुं० आँसू। आँखों से निकलनेवाला जल।
दृग*–संज्ञा पुं० १. आँख। २. देखने की शक्ति। दृष्टि। ३. दो की संख्या।
मुहा०—दृग डालना या देना=देखना।
दृगोचर–वि० जो आँखों से दिखाई दे।
दृगमिचाव–संज्ञा पुं० आँख-मिचौनी का खेल।
दृढ़–वि० १. पुष्ट। मजबूत। कड़ा। ठोस। २. बलवान्। बलिष्ठ। हृष्ट-पुष्ट। ३. जो जल्दी नष्ट या विचलित न हो। स्थायी। ४. निश्चित। ध्रुव। पक्का। ५. निडर। ढीठ। कड़े दिल का।
दृढ़कर्मा–वि० अपने कर्म में दृढ़ रहनेवाला।
दृढ़चेता–वि० पक्के विचारोंवाला।
दृढ़ता–संज्ञा स्त्री० १. दृढ़ होने का भाव। दृढ़त्व। २. मजबूती। ३. स्थिरता।
दृढ़त्व–संज्ञा पुं० दृढ़ता।
दृढ़प्रतिज्ञ–वि० जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।
दृढ़व्रत–वि० जो अपने संकल्प या वादे पर स्थिर हो।
दृढ़ांग–वि० जिसके अंग दृढ़ हों। हृष्ट-पुष्ट।

दृढ़ाई†*—संज्ञा स्त्री० दे० "दृढ़ता"। मजबूती।

दृढ़ाना—क्रि० स० दृढ़ करना। पक्का या मजबूत करना।
क्रि० अ० १. मजबूत होना। २. स्थिर या पक्का होना।

दृत—वि० सम्मानित।

दृति—संज्ञा पुं० खाल।

दृप्त—वि० १. जलता हुआ। प्रज्वलित। तेजयुक्त। २. अभिमानी। उग्र। घमंडी।

दृश्—संज्ञा पुं० [वि० दृश्य] १. देखना। दर्शन। २. दिखानेवाला। प्रदर्शक। ३. देखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख। ३. दो की संख्या। ४. ज्ञान।

दृशद्वती—संज्ञा स्त्री० दे० "दृषद्वती"।

दृशा—संज्ञा स्त्री० आँख।

दृशि—संज्ञा स्त्री० प्रकाश। शास्त्र। चेतन पुरुष। दृष्टि।

दृश्य—वि० १. जिसे देख सके। दृग्गोचर। २. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। ३. मनोरम। सुन्दर। ४. जानने योग्य। ज्ञेय।
संज्ञा पुं० १. आँखों के सामने की वस्तु। देखने की वस्तु। २. तमाशा। ३. वह काव्य जो अभिनय-द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय। नाटक। ४. गणित में ज्ञात या दी हुई संख्या।

दृश्यमान—वि० १. जो दिखाई दे रहा हो। २. चमकीला। ३. सुन्दर।

दृषद्वती—संज्ञा स्त्री० एक नदी, जिसका नाम ऋग्वेद में आया है। इसे आजकल घग्घर और राखी कहते हैं।

दृष्ट—वि० १. देखा हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात। प्रकट। ३. प्रत्यक्ष।
संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. साक्षात्कार। ३. प्रत्यक्ष प्रमाण।

दृष्टकूट—संज्ञा पुं० १. पहेली। २. वह कविता, जिसका अर्थ शब्दों के वाच्यार्थ से न समझा जा सके, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से जाना जाए।

दृष्टमान*—वि० व्यक्त। प्रकट।

दृष्टवाद—संज्ञा पुं० वह दार्शनिक सिद्धांत, जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।

दृष्टव्य—वि० देखने योग्य।

दृष्टांत—संज्ञा पुं० १. उदाहरण। उपमा। मिसाल। २. शास्त्र। ३. एक अर्थालंकार, जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब-भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन होता है।

दृष्टार्थ—संज्ञा पुं० १. वह शब्द, जिसका अर्थ स्पष्ट हो। २. वह शब्द, जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो, जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता हो।

दृष्टि—संज्ञा स्त्री० १. देखने की शक्ति। आँख की ज्योति। २. आँख की सीध में होने की स्थिति। नजर। निगाह। ३. देखने के लिए खुली हुई आँख। ४. परख। पहचान। ५. कृपादृष्टि। हित का ध्यान। मिहरबानी की नजर। ६. ध्यान। विचार। अनुमान। ७. उद्देश्य।
मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना=देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से) दृष्टि जोड़ना=आँख मिलाना। साक्षात्कार करना। दृष्टि मिलाना=दे० "दृष्टि जोड़ना"। दृष्टि रखना=देख-रेख में रखना।

दृष्टिकोण—संज्ञा पुं० किसी चीज को देखने या सोचने का कोण या तरीका। मत। विचार।

दृष्टिगत—वि० जो दिखाई पड़ता हो।

दृष्टिगोचर—वि० जो दिखाई पड़े। जो देखने में आ सके।

दृष्टिपथ—संज्ञा पुं० दृष्टि का फैलाव। नजर की पहुँच।

दृष्टिपात—संज्ञा पुं० दृष्टि डालने की क्रिया या भाव। ताकना। देखना।

दृष्टिबंध—संज्ञा पुं० १. दीठबंदी। इंद्रजाल। जादू। २. हाथ की सफाई या चालाकी। हस्त-लाघव।

दृष्टिरोध—संज्ञा पुं० नजर की रोक। आड़। ओट।

दृष्टिवंत—वि० १. दृष्टिवाला। २. ज्ञानी।

दृष्टिवाद—संज्ञा पुं० वह सिद्धांत, जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।

देई—संज्ञा स्त्री० १. देवी। २. स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द।

देख—संज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया या भाव। जैसे, देख-रेख, देख-भाल।

देखन*†—संज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया, भाव या ढंग।

देखनहारा*†—संज्ञा पुं० [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना—क्रि० स० १. किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप-रंग आदि का ज्ञान नेत्रों-द्वारा प्राप्त करना। अवलोकन करना। २. जाँच करना। ३. ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आजमाना। परखना। ५. निगरानी रखना। ताकते रहना। ६. समझना। सोचना। विचारना। ७. अनुभव करना। भोगना। ८. पढ़ना। बाँचना। ९. गुण-दोष का पता लगाना। परीक्षा करना। जाँच करना। १०. ठीक करना।

मुहा०—देखना-सुनना=जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। देखने में=१. बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। २. रूप-रंग में। देखते-देखते=१. आँखों के सामने। २. तुरंत। फौरन। चटपट। देखते रह जाना=हक्का-बक्का रह जाना। चकित हो जाना। देखा जायगा=१. फिर विचार किया जायगा। २. जो कुछ करना होगा, पीछे किया जायगा।

देख-भाल—संज्ञा स्त्री० १. निरीक्षण। जाँच-पड़ताल। निगरानी। २. देखा-देखी। साक्षात्कार।

देखराना*†—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देखरावना*†—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देख-रेख—संज्ञा स्त्री० देख-भाल। निरीक्षण। निगरानी।

देखाऊ—वि० १. जो केवल देखने में सुन्दर हो, काम का न हो। झूठी तड़क-भड़क-वाला। २. जो ऊपर से दिखाने के लिए हो। वास्तविक न हो। बनावटी।

देखा-देखी—संज्ञा स्त्री० आँखों से देखने की दशा या भाव। साक्षात्कार। दर्शन।
क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर। दूसरों के अनुकरण पर।

देखाना*†—क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देखाभाली—संज्ञा स्त्री० दे० "देखभाल"।

देखाव—संज्ञा पुं० १. दृष्टि की सीमा। नजर की पहुँच। २. ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

देखावट—संज्ञा स्त्री० १. रूप-रंग दिखाने की क्रिया या भाव। बनाव। २. ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

देखावना—क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देग—संज्ञा पुं० [फा०] खाना पकाने का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन। ताँबिया।

देगचा—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० देगची] छोटा देग।

देदीप्यमान—वि० अत्यंत प्रकाश-युक्त। चमकता दमकता हुआ।

देन—संज्ञा स्त्री० १. देन की क्रिया या भाव। दान। २. दी हुई चीज। प्रदत्त वस्तु।

देनदार—संज्ञा पुं० ऋणी। कर्जदार।

देन-लेन—संज्ञा पुं० लेने और देने का व्यवहार। देना और लेना।

देनहारा*†—वि० देनेवाला।

देना—क्रि० स० १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना। प्रदान करना। २. सौंपना। हवाले करना। ३. हाथ पर या पास रखना। थमाना। ४. रखना, लगाना या डालना। ५. मारना। प्रहार करना। ६. अनुभव कराना। भोगाना। ७. उत्पन्न करना। निकालना। ८. बंद करना। ९. भिड़ाना। (इस क्रिया का प्रयोग बहुत-सी सकर्मक क्रियाओं के साथ संयोजक क्रिया के रूप में होता है—जैसे गिरा देना, कर देना)
संज्ञा पुं० उधार लिया हुआ रुपया। कर्ज।

देमान‡*—संज्ञा पुं० दे० "दीवान"।

देय—वि० देने योग्य। दातव्य।

देयासी†—वि० झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा।

देर—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नियमित या

आवश्यक से अधिक समय। अतिकाल। विलंब। २. समय। वक्त।

देरी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "देर"।

देव—संज्ञा पुं० [स्त्री० देवी] १. देवता। सुर। २. पूज्य व्यक्ति। ३. बड़ों के लिए एक आदर-सूचक शब्द।

संज्ञा पुं० [फा०] दैत्य। राक्षस।

देवऋण—संज्ञा पुं० देवताओं के लिए कर्त्तव्य, यज्ञादि।

देवऋषि—संज्ञा पुं० देवताओं के लोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज पुलस्त्य आदि ऋषि।

देवकन्या—संज्ञा स्त्री० देवता की पुत्री। देवी।

देवकार्य्य—संज्ञा पुं० देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किया हुआ कर्म। होम, पूजा आदि।

देवकी—संज्ञा स्त्री० वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता का नाम।

देवकीनंदन—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। देवकी के पुत्र।

देवकुसुम—संज्ञा पुं० लवंगलता। लवंग।

देवगज—संज्ञा पुं० ऐरावत। इन्द्र का हाथी।

देवगण—संज्ञा पुं० देवताओं के अलग-अलग समूह। देवताओं का वर्ग।

देवगति—संज्ञा स्त्री० मरने के उपरांत उत्तम गति। स्वर्गलाभ।

देवगायक—संज्ञा पुं० गन्धर्व। देवयोनि-विशेष।

देवगिरा—संज्ञा स्त्री० देववाणी। संस्कृत।

देवगिरि—संज्ञा पुं० १. रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २. दक्षिण का एक प्राचीन नगर, जो आजकल दौलताबाद कहलाता है।

देवगुरु—संज्ञा पुं० देवताओं के गुरु। बृहस्पति। कश्यप।

देवगृह—संज्ञा पुं० मन्दिर।

देवज—वि० देवता से उत्पन्न।

देवट—संज्ञा पुं० कारीगर।

देवठान—संज्ञा पुं० देवोत्थान। कार्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं। दिठवन।

देवतरु—संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष। देवताओं का पेड़। मन्दार वृक्ष। पारिजात।

देवतर्पण—संज्ञा पुं० ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले-लेकर पानी देना।

देवता—संज्ञा पुं० स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी। सुर। अमर।

देवत्र—संज्ञा पुं० देवस्व। देवता को अर्पित धन आदि।

देवत्व—संज्ञा पुं० देवता होने का भाव या धर्म।

देवदत्त—वि० १. देवता का दिया हुआ। २. देवता के निमित्त किया हुआ।

संज्ञा पुं० १. देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। २. शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जिससे जँभाई आती है। ३. अर्जुन के शंख का नाम।

देवदार—संज्ञा पुं० देवदारु। एक बहुत ऊंचा और सीधा पेड़, जिससे एक प्रकार का अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल भी निकलता है।

देवदारु—संज्ञा पुं० दे० "देवदार"।

देवदाली—संज्ञा स्त्री० एक लता, जो देखने में तुरई की बेल से मिलती-जुलती होती है। घघर बेल। बंदाल।

देवदासी—संज्ञा स्त्री० १. मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्त्तकी। २. वेश्या।

देवदीप—संज्ञा पुं० १. आँख। नेत्र। २. किसी देवता के निमित्त जलाया जानेवाला दीपक।

देवदूत—संज्ञा पुं० अग्नि। आग।

देवदूती—संज्ञा स्त्री० स्वर्ग की अप्सरा।

देवदेव—संज्ञा पुं० १. देवताओं के देवता। इंद्र। २. ब्रह्मा। ३. महादेव।

देवद्वेष्टा—संज्ञा पुं० देवशत्रु। नास्तिक। पाखंडी। असुर। दानव। दैत्य।

देवधुनि—संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।

देवन—संज्ञा पुं० १. चौसर। २. गति। ३. जुआ। ४. कमल। ५. परिवेदना। ६. क्रीड़ा। ७. व्यवहार। ८. शोक। ९. स्तुति।

देवनदी—संज्ञा स्त्री० गंगा।

देवना—संज्ञा पुं० खेल।

देवनागरी—संज्ञा स्त्री० भारत की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी, मराठी आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है।

देवपथ—संज्ञा पुं० आकाश। छायापथ।

देवपुरी—संज्ञा स्त्री० इन्द्र की नगरी। अमरावती।

देवब्राह्मण—संज्ञा पुं० पुजारी। पंडा।

देवभाषा—संज्ञा स्त्री० संस्कृत-भाषा।

देवभूमि—संज्ञा स्त्री० स्वर्ग।

देवमंदिर—संज्ञा पुं० वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्त्ति स्थापित हो। देवालय।

देवमणि—संज्ञा पुं० सूर्य।

देवमाता—संज्ञा स्त्री० १. अदिति। २. दाक्षायणी। ३. कश्यप की स्त्री।

देवमाया—संज्ञा स्त्री० परमेश्वर की माया, जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में डालती है। देवताओं की माया।

देवमास—संज्ञा पुं० १. गर्भ का आठवाँ महीना। २. देवों का महीना, जो मनुष्य के तीस वर्ष के बराबर होता है।

देवमुनि—संज्ञा पुं० नारद ऋषि।

देवयजनी—संज्ञा पुं० पृथ्वी।

देवयज्ञ—संज्ञा पुं० होमादि कर्म, जो पंचयज्ञों में से एक है।

देवयान—संज्ञा पुं० उपनिषदों के अनुसार शरीर से अलग होने के उपरांत जीवात्मा के जाने के लिए दो मार्गों में से वह मार्ग जिससे वह ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयानी—संज्ञा स्त्री० शुक्राचार्य की कन्या, जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई और बाद में जिसने राजा ययाति के साथ विवाह किया।

देवयुग—संज्ञा पुं० सतयुग।

देवयोनि—संज्ञा स्त्री० देवताओं के अंतर्गत माने जानेवाले जीवों की सृष्टि। जैसे—अप्सरा, यक्ष, पिशाच आदि।

देवर—संज्ञा पुं० [स्त्री० देवरानी] १. पति का छोटा भाई। २. पति का भाई।

देवरथ—संज्ञा पुं० विमान।

देवरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० देवरी] छोटा-मोटा देवता।

देवराज—संज्ञा पुं० इंद्र। देवताओं के राजा या स्वामी।

देवराज्य—संज्ञा पुं० स्वर्ग।

देवरानी—संज्ञा स्त्री० १. देवर की स्त्री। पति के छोटे भाई की स्त्री। २. देवराज इन्द्र की पत्नी, शची। इंद्राणी।

देवराय—संज्ञा पुं० दे० "देवराज"।

देवर्षि—संज्ञा पुं० नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि देवताओं के ऋषि माने जाते हैं।

देवल—संज्ञा पुं० १. देवता की पूजा से जीविका चलानेवाला। पुजारी। पंडा। २. धार्मिक पुरुष। ३. देवर। ४. नारद मुनि। ५. एक प्रकार का चावल। ६. देवालय। देवमंदिर। ७. एक महर्षि जो असित मुनि के पुत्र और व्यासदेव के शिष्य थे। रम्भा इन पर आसक्त हुई। पर इन्होंने उसका तिरस्कार किया, जिससे चिढ़कर उसने इन्हें कुरूप होने का शाप दे दिया। शाप से देवल अष्टावक्र हो गये।

देवलोक—संज्ञा पुं० स्वर्ग।

देववधू—संज्ञा स्त्री० १. देवता की स्त्री। २. देवी। ३. अप्सरा।

देववाणी—संज्ञा स्त्री० १. संस्कृत-भाषा। २. आकाशवाणी।

देववाहन—संज्ञा पुं० आग।

देवव्रत—संज्ञा पुं० १. भीष्म पितामह। २. एक सामगान।

देवशत्रु—संज्ञा पुं० राक्षस।

देवश्रुत—संज्ञा पुं० ईश्वर।

देवसरि—संज्ञा स्त्री० गंगा।

देवसुनी—संज्ञा स्त्री० देवलोक की कुतिया, सरमा। विशेष—दे० "सरमा"।

देवसभा—संज्ञा स्त्री० १. देवताओं का समाज। २. राजसभा। ३. सुधर्म्मा नामक सभा, जिसे मय ने युधिष्ठिर के लिए बनाया था।

देवसेना—संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की सेना। २. प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। षष्ठी।

देवस्थान—संज्ञा पुं० १. देवताओं के रहने की जगह। २. देवालय। मंदिर। ३. एक ऋषि।

देवहूति—संज्ञा स्त्री० स्वायंभुव मनु की कन्याओं में से एक, जो कर्दम मुनि

को ब्याही थी। सांख्यशास्त्र के कर्त्ता कपिल की माता।

देवांगना—संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। २. अप्सरा।

देवा†—वि० १. देनेवाला। जैसे—पानी-देवा। †२. देनदार। ऋणी। कर्जदार। संज्ञा स्त्री० पटसन। जूट।

देवान†—संज्ञा पुं० १. दरबार। कचहरी। राजसभा। २. अमात्य। मंत्री। वजीर। ३. प्रबंध-कर्त्ता।

देवानां-प्रिय—संज्ञा पुं० १. देवताओं को प्रिय। २. बकरा। ३. मूर्ख।

देवापि—संज्ञा पुं० एक राजा, जो ऋष्टिषेण के पुत्र और शांतनु के बड़े भाई थे।

देवायतन—संज्ञा पुं० स्वर्ग। देवताओं के रहने का स्थान।

देवार्पण—संज्ञा पुं० देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान।

देवाल†—वि० देनेवाला। दाता।

देवालय—संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्त्ति रखी जाय। मंदिर।

देवी—संज्ञा स्त्री० १. देवता की स्त्री। देव-पत्नी। २. आदि-शक्ति दुर्गा। ३. पटरानी। राजा की स्त्री। ४. ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि। ५. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री। ६. महिलाओं को पुकारने का शब्द।

देवीपुराण—संज्ञा पुं० एक उपपुराण जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है।

देवीभागवत—संज्ञा पुं० एक पुराण, जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं। श्रीमद्भागवत के समान, इस पुराण में बारह स्कंध और १८००० श्लोक हैं। अतः इसका निर्णय करना कठिन है कि दोनों में कौन पुराण है और कौन उपपुराण।

देवेंद्र—संज्ञा पुं० इंद्र।

देवेश—संज्ञा पुं० १. देवताओं के स्वामी। इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४. परब्रह्म।

देवैया†—वि० देनवाला।

देवोत्तर—संज्ञा पुं० देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति।

देवोत्थान—संज्ञा पुं० विष्णु का शेषनाग की शय्या पर से उठना, जो कार्त्तिक शुक्ला एकादशी को होता है।

देवोद्यान—संज्ञा पुं० देवताओं के बगीचे, जो चार हैं—नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र।

देश—संज्ञा पुं० १. पृथ्वी का वह विभाग, जिसका कोई अलग नाम हो और जिसके अंतर्गत कई प्रांत, नगर आदि हों। जनपद। २. वह भूभाग, जो एक ही राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अंतर्गत हो। राष्ट्र। ३. स्थान। जगह। ४. शरीर का कोई भाग। अंग।

देशज—वि० देश में उत्पन्न। संज्ञा पुं० ऐसा शब्द जो संस्कृत या उसका अपभ्रंश न हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से उत्पन्न हो गया हो।

देशनिकाला—संज्ञा पुं० देश से निकाल दिए जाने का दंड।

देशभाषा—संज्ञा स्त्री० किसी देश की भाषा।

देशांतर—संज्ञा पुं० १. अन्य देश। विदेश। परदेश। २. भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर-दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। लंबांश।

देशाचार—संज्ञा पुं० देश की चाल का व्यवहार।

देशाटन—संज्ञा पुं० भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा। देश-भ्रमण।

देशावर—संज्ञा पुं० दूसरा देश। परदेश। देसावर।

देशी—वि० १. देश का। देश-संबंधी। २. स्वदेश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

देशीय—वि० दे० "देशी"।

देस—संज्ञा पुं० दे० "देश"।

देसवाल—वि० अपने देश का।

देसावर—संज्ञा पुं० अन्य देश। विदेश। परदेस। देशांतर।

देसी—वि० दे० "देशी"। अपने देश का।

देह–संज्ञा स्त्री० [वि० देही] १. शरीर। तन। बदन। २. शरीर का कोई अंग। ३. जीवन। जिंदगी।
वि० दे० "शरीर"।
संज्ञा पुं० [फा०] गाँव। खेड़ा। मौजा।
मुहा०–देह छूटना=जीवन समाप्त होना। मृत्यु होना। देह छोड़ना=मरना। देह धरना=शरीर धारण करना। जन्म लेना।

देहक़ान–संज्ञा पुं० [फा०] किसान। दे० "दहकान"।

देहज–वि० शरीर से उत्पन्न। देह से पैदा।

देहत्याग–संज्ञा पुं० मृत्यु। मौत।

देहद–संज्ञा पुं० पारा।

देहधारक–संज्ञा पुं० १. शरीर धारण करनेवाला। शरीर की रक्षा करनेवाला। २. हाड़।

देहधारण–संज्ञा पुं० १. शरीररक्षा। जीवन-रक्षा। २. जन्म।

देहधारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० देहधारिणी] शरीर धारण करनेवाला। शरीरी।

देहपात–संज्ञा पुं० मृत्यु। मौत।

देहयात्रा–संज्ञा स्त्री० १. मृत्यु। २. शरीर को जीवित रखने के लिए भोजन आदि निर्वाह।

देहरा–संज्ञा पुं० १. देवालय। देवघर। २. मनुष्य का शरीर। ३. देहरादून नगर। बोलचाल में देहरादून के लिए देहरा का भी प्रयोग होता है।

देहरी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "देहली"।

देहला–संज्ञा स्त्री० मदिरा।

देहली–संज्ञा स्त्री० द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है। दहलीज।

देहलीदीपक–संज्ञा पुं० १. देहली पर रखा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है। २. एक अर्थालंकार, जिसमें किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगाया जाता है।
यौ०—देहलीदीपक-न्याय=देहली पर रखे हुए दोनों ओर प्रकाश फैलानेवाले दीपक के समान दोनों ओर लगनेवाली बात।

देहवंत–वि० शरीरवाला। जिसके देह हो।
संज्ञा पुं० व्यक्ति। प्राणी। शरीरी।

देहवान्–वि० शरीरधारी।

देहांत–संज्ञा पुं० मृत्यु। मौत।

देहान्तर–संज्ञा पुं० १. दूसरा शरीर। २. जन्मान्तर। ३. मृत्यु।

देहात–संज्ञा पुं० गाँव। गँवई। ग्राम।

देहाती–वि० १. गाँव का। २. गाँव में रहनेवाला। ग्रामीण। ३. गँवार।

देहात्मवाद–संज्ञा पुं० शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धान्त।

देही–संज्ञा पुं० आत्मा।

दैउ*†–संज्ञा पुं० दे० "दैव"।

दैत्य–संज्ञा पुं० १. असुर। राक्षस। दिति नाम्नी स्त्री से उत्पन्न कश्यप के पुत्र। २. असाधारण बल का मनुष्य।

दैत्यगुरु–संज्ञा पुं० शुक्राचार्य्य।

दैत्यदेव–संज्ञा पुं० वरुण। दैत्यों के देवता। वायु।

दैत्यमाता–संज्ञा स्त्री० दिति। कश्यप की स्त्री।

दैत्यमेदज–संज्ञा पुं० पृथ्वी।

दैत्यसेना–संज्ञा स्त्री० प्रजापति की कन्या और देवसेना की भगिनी।

दैत्या–संज्ञा स्त्री० १. दैत्य की स्त्री। २. मुर्रा। ३. मदिरा।

दैत्याचार्य–संज्ञा पुं० शुक्राचार्य।

दैत्यारि–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. इन्द्र। ३. दैत्यों के दुश्मन। देवता।

दैनंदिन–वि० नित्य का। प्रतिदिन-सम्बन्धी।
क्रि० वि० १. प्रतिदिन। रोज-रोज। २. दिनों-दिन।
संज्ञा पुं० ब्रह्मा का दैनिक प्रलय-विशेष।

दैनन्दिनप्रलय–संज्ञा पुं० ब्रह्मा का दैनिक प्रलय-विशेष। प्रतिदिन का अपक्षय। प्रतिदिन पदार्थों में होनेवाला परिवर्तन या विकृति।

दैनंदिनी–संज्ञा स्त्री० प्रतिदिन का कार्य-विवरण या दिनचर्य्या लिखने की छोटी कापी या पुस्तक। डायरी। दैनिक।

दैन–वि० दिन-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० दीनता।

दैनिक–वि० १. प्रतिदिन का। रोज-रोज का। २. जो प्रतिदिन हो। नित्य होनेवाला।

३. जो एक दिन में हो। ४. दिन-संबंधी। संज्ञा पुं० प्रतिदिन प्रकाशित होनेवाला समाचार-पत्र। अखबार।
दैनिक पत्र—संज्ञा पुं० प्रतिदिन प्रकाशित होनेवाला समाचार-पत्र। अखबार।
दैनिक वेतन—संज्ञा पुं० एक दिन की मजदूरी या तनखाह।
दैनिकी—संज्ञा स्त्री० एक दिन का वेतन या मजदूरी। प्रतिदिन का कार्यविवरण या दिन-चर्य्या लिखने की पुस्तक। डायरी। वि० प्रतिदिन से सम्बन्धित।
दैन्य—संज्ञा पुं० १. दीनता। निर्धनता। गरीबी। विनीत भाव। २. काव्य का एक संचारी भाव, जिसमें दुःख आदि से चित्त अति नम्र हो जाता है। कातरता।
दैया*‡—संज्ञा पुं० दई। दैव।
अव्य० आश्चर्य, भय या दुःखसूचक शब्द, जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं। हे दई! हे परमेश्वर!
मुहा०—दैयत कै=दई-दई करके। किसी प्रकार। कठिनता से।
दैयागति‡—संज्ञा स्त्री० दैवगति।
दैर्घ्य—संज्ञा पुं० दीर्घता। लंबाई।
दैव—वि० [स्त्री० दैवी] १. देवता-संबंधी। २. देवता के द्वारा होनेवाला।
संज्ञा पुं० १. प्रारब्ध। भाग्य। २. होनेवाली बात। होनी। ३. विधाता। ईश्वर। ४. आकाश। आसमान।
मुहा०—दैव बरसना=पानी बरसना।
दैवगति—संज्ञा स्त्री० १. ईश्वरीय बात। दैवी घटना। २. भाग्य। प्रारब्ध।
दैवज्ञ—संज्ञा पुं० ज्योतिषी। गणक।
दैवतंत्र—वि० भाग्याधीन।
दैवत—वि० देवता-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. देवता की प्रतिमा आदि। २. देवता।
दैवदुर्विपाक—संज्ञा पुं० दुर्भाग्य। भाग्य की खोटाई। दैवदुर्घटना।
दैवयोग—संज्ञा पुं० संयोग। इत्तिफाक।
दैववश—क्रि० वि० संयोग से। दैवयोग से। अकस्मात्।
दैववशात्—क्रि० वि० दे० "दैववश"।
दैववाणी—संज्ञा स्त्री० आकाशवाणी।
दैववादी—संज्ञा पुं० १. भाग्य के भरोसे रहनेवाला। २. आलसी। निरुद्योगी।
दैवविवाह—संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिसमें यज्ञ करनेवाला व्यक्ति ऋत्विज या पुरोहित को अपनी कन्या देता है।
दैवागत—वि० दैवी। आकस्मिक।
दैवात्—क्रि० वि० अकस्मात्। दैवयोग से।
दैविक—वि० १. देवता-संबंधी। देवताओं का। २. देवताओं का किया हुआ।
दैवी—वि० १. देवता-सम्बन्धी। २. देवताओं की की हुई। देवकृत। प्रारब्ध या संयोग से होनेवाली। ३. आकस्मिक। ४. सात्विक।
दैवी गति—संज्ञा स्त्री० १. ईश्वर की की हुई बात। २. भावी। होनहार। अदृष्ट।
दैहिक—वि० १. देह-संबंधी। शारीरिक। २. देह से उत्पन्न।
दोंकना†—क्रि० अ० गुर्राना।
दोंकी—संज्ञा स्त्री० धौंकनी।
दोंचना†—क्रि० स० दबाव में डालना।
दो—वि० एक और एक। दो की संख्या।
मुहा०—दो-एक या दो-चार=कुछ। थोड़े से। दो-चार होना=भेंट होना। मुलाकात होना। आँखें दो-चार होना=सामना होना। दो दिन का=बहुत ही थोड़े समय का।
दो-अमली—संज्ञा स्त्री० [फा०] द्वैध शासन। एक ही जगह दो शासकों द्वारा-शासन। अराजकता।
दो-आतशा, दो-आतिशा—वि० [फा०] जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।
दोआब—संज्ञा पुं० [फा०] दो नदियों के बीच का प्रदेश या जमीन।
दोआबा—संज्ञा पुं० दे० "दोआब"।
दोइ†—संज्ञा पुं०, वि० दो।
दोउ, दोऊ*†—वि० दोनों।
दोक—संज्ञा पुं० बछेड़ा। दो दाँतों का बछेड़ा।
दोख*†—संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

दोखना*†–क्रि० स० दोष लगाना। ऐब लगाना।

दोखी*†–संज्ञा पुं० दे० "दोषी"।

दोगला–संज्ञा पुं० [स्त्री० दोगली] १. वह व्यक्ति, जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न जाति के हों। वर्णसंकर। २. माता के उपपति से उत्पन्न व्यक्ति। जारज। ३. गहरा टोकरा।

दोगा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का लिहाफ का कपड़ा। २. पानी में घोला हुआ चूना, जिससे सफेदी की जाती है।

दोचंद–वि० दुगना। दूना।

दोच–संज्ञा स्त्री० १. दुबधा। असमंजस। २. कष्ट। दुःख। ३. दबाव। दबाए जाने का भाव।

दोचन–संज्ञा स्त्री० १. दुबधा। असमंजस। २. दबाव। ३. कष्ट। दुःख।

दोचना–क्रि० स० कोई काम करने के लिए बहुत जोर देना। दबाव डालना।

दोचित्ता–वि० जिसका चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो। उद्विग्न-चित्त।

दोचित्ती–संज्ञा स्त्री० "दोचित्ता" होने का भाव। चित्त की उद्विग्नता।

दोज‡–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।

दोजख–संज्ञा पुं० [फा०] मुसलमानों के अनुसार नरक।

दोजखी–वि० [फा०] १. दोजख-संबंधी। दोजख का। २. बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।

दोजा–संज्ञा पुं० वह पुरुष, जिसके दो विवाह हुए हों।

दोजानू–क्रि० वि० [फा०] घुटनों के बल। घुटने टेककर।

दोजिया–संज्ञा स्त्री० गर्भवती स्त्री।

दोजीवा–संज्ञा स्त्री० गर्भिणी। द्विजीवा। मुहा०—दो जी से होना=गर्भ रहना। गर्भवती होना।

दोतरफा–वि० [फा०] दोनों तरफ का। दोनों ओर संबंधी।

क्रि० वि० दोनों तरफ। दोनों ओर।

दोतला, दोतल्ला–वि० दो खंड का। दो-मंजिला। जैसे—दोतल्ला मकान।

दोतही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटी दोहरी चादर।

दोतारा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।

दोदना†–क्रि० स० प्रत्यक्ष बात को इनकार करना। प्रत्यक्ष बात को भी न मानना।

दोध–संज्ञा पुं० अहीर।

दोधक–संज्ञा पुं० १. छन्द-विशेष। २. बंधु।

दोधारा–वि० [स्त्री० दोधारी] जिसके दोनों ओर धार हो। दोहरी बाढ़ का।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का थूहर।

दोन–संज्ञा पुं० दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन।

संज्ञा पुं० १. दो नदियों के बीच की जमीन। दोआबा। २. दो नदियों का संगम-स्थान। ३. दो वस्तुओं की संधि या मेल।

दोनला–वि० जिसमें दो नालें हों। जैसे—दोनली बंदूक।

दोनली–वि० दो नलवाली।

दोना–संज्ञा पुं० [स्त्री० दोनी] पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का पात्र।

दोनिया, दोनी†–संज्ञा स्त्री० छोटा दोना।

दोनों–वि० एक और दूसरा। उभय।

दोपलिया†–वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"।

दोपल्ली–वि० जिसमें दो पल्ले हों। दो पल्लेवाला।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी, जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ सिले होते हैं।

दोपहर–संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि सूर्य्य मध्य आकाश में रहता है। मध्याह्न-काल।

दोपहरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दोपीठा–वि० दोनों ओर समान रंग-रूप का। दोरुखा।

दोफ़सली–वि० १. दोनों फसलों के संबंध का। २. जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देन योग्य।

दोबल–संज्ञा पुं० दोष। अपराध।

दोबारा–क्रि० वि० एक बार हो चुकने के उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।

दोमाखिया–संज्ञा पुं० दे० "दुमाखिया"।

दोमंजिला–वि० [फा०] जिसमें दो खंड या मंजिलें हों (मकान)।

दोमट–संज्ञा स्त्री० बालू मिली हुई भूमि। दूमट भूमि।

दोमहला–वि० दे० "दोमंजिला"।

दोमुँहा–वि० १. जिसे दो मुँह हों। २. दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला। कपटी।

दोमुँहा साँप–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का साँप, जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। २. कुटिल। कपटी।

दोय†*–वि०, संज्ञा पुं० १. दे० "दो"। २. दे० "दोनों"।

दोयम–वि० [फा०] दूसरा। द्वितीय। दूसरे नम्बर का।

दोरंगा–वि० १. दो रंग का। जिसमें दो रंग हों। २. जो दोनों ओर लगे या चल सके।

दोरंगी–संज्ञा स्त्री० १. दो रंगे या दो मुँहे होने का भाव। २. छल। कपट।

दोरदंड*†–वि० दे० "दुर्दंड"।

दोरसा–वि० दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। जिसमें दो तरह के रस या स्वाद हों। संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीने का तमाकू। **यौ०**—दोरसे दिन=गर्भावस्था के दिन।

दोराहा–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।

दोरुखा–वि० [फा०] १. जिसके दोनों ओर एक रंग या बेल-बूटे हों। २. दोनों तरफ दो रंग का।

दोल–संज्ञा पुं० १. झूला। हिंडोला। २. डोली। चंडोल।

दोला–संज्ञा स्त्री० १. हिंडोला। झूला। २. डोली या चंडोल।

दोलायंत्र–संज्ञा पुं० वैद्यों का एक यंत्र, जिसकी सहायता से वे ओषधियों के अर्क उतारते हैं।

दोलायमान–वि० हिलता हुआ। झूलता हुआ।

दोलित–वि० [स्त्री० दोलिता] हिलता या झूलता हुआ।

दोशाखा–संज्ञा पुं० [फा०] शमादान या दीवारगीर, जिसमें दो बत्तियाँ हों।

दोष–संज्ञा पुं० १. अवगुण। खराबी। ऐब। नुक्स। २. अभियोग। लांछन। कलंक। ३. अपराध। कसूर। जुर्म। ४. पाप। पातक। ५. शरीर में के वात, पित्त और कफ, जिनके कुपित होने से शरीर में व्याधि उत्पन्न होती है। ६. काव्य के गुण में कमी। यह पाँच प्रकार का होता है—पद-दोष, पदांश-दोष, वाक्य-दोष, अर्थ-दोष और रस-दोष। ७. प्रदोष। संज्ञा पुं० द्वेष। शत्रुता। **मुहा०**—दोष लगाना=किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है। **यौ०**—दोषारोपण=दोष देना या लगाना।

दोषग्राही–संज्ञा स्त्री० दुर्जन।

दोषन*†–संज्ञा पुं० दोष। दूषण। अपराध।

दोषना*†–क्रि० स० दोष लगाना। अपराध लगाना।

दोषारोपण–संज्ञा पुं० दोष या आरोप लगाना। अपराध या जुर्म लगाना।

दोषावह–वि० दोषपूर्ण। जिससे दोष उत्पन्न हो।

दोषिन†–संज्ञा स्त्री० १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री।

दोषी–संज्ञा पुं० १. अपराधी। कसूरवार। २. पापी। अभियुक्त। ३. मुजरिम। ४. जिसमें दोष हो।

दोस*†–संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

दोसदारी*†–संज्ञा स्त्री० मित्रता। दोस्ती।

दोसाला†–वि० दो वर्ष का। दो वर्ष का पुराना।

दोसूती–संज्ञा स्त्री० दोतही या दुसूती नाम की बिछाने की मोटी चादर।

दोस्त–संज्ञा पुं० [फा०] मित्र। स्नेही।

दोस्ताना–संज्ञा पुं० [फा०] १. दोस्ती। मित्रता। २. मित्रता का व्यवहार। वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती–संज्ञा स्त्री० मित्रता। स्नेह।

दोह*†–संज्ञा पुं० दे० "द्रोह"।

दोहगा†–संज्ञा स्त्री० उपपत्नी। रखेलिन।

दोहता–संज्ञा पुं० [स्त्री० दोहती] लड़की का लड़का। नाती। नवासा।

दोहत्था–क्रि० वि० दोनों हाथों से। दोनों हाथों का।
वि० जो दोनों हाथों से हो।

दोहद–संज्ञा स्त्री० १. गर्भवती स्त्री की इच्छा। उकौना। २. गर्भवती स्त्री की मतली इत्यादि। ३. गर्भावस्था। ४. गर्भ का चिह्न। ५. गर्भ। ६. एक प्राचीन विश्वास, जिसके अनुसार सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, लात मारने से अशोक, देखने से तिलक, मधुर गाने से आम और नाचने से कचनार इत्यादि वृक्ष फूलते हैं।
संज्ञा पुं० लालसा। तीव्र इच्छा।

दोहदवती–संज्ञा स्त्री० गर्भवती स्त्री।

दोहन–संज्ञा पुं० १. दुहना। दूध निकालना। २. दोहनी।

दोहना *–क्रि० स० १. दोष लगाना। २. तुच्छ ठहराना।

दोहनी–संज्ञा स्त्री० १. दूध दुहने का बरतन। २. दूध दुहने का काम।

दोहर–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चादर, जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।

दोहरना–क्रि० अ० १. दो बार होना। दूसरी आवृत्ति होना। २. दोहरा होना।
क्रि० स० दोहरा करना।

दोहरा–वि० [स्त्री० दोहरी] १. दुगना। २. दो परत या तह का।
संज्ञा पुं० १. एक ही पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े। कटी हुई सुपारी। २. दोहा नाम का छंद।

दोहराना–क्रि० स० १. किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना।† २. दोहरा करना। किसी कपड़े या कागज आदि की दो तहें करना।

दोहा–संज्ञा पुं० हिन्दी का एक प्रसिद्ध छन्द, जिसमें चार चरण होते हैं। यह ४८ मात्राओं का होता है। प्रथम तथा तृतीय चरण में तेरह-तेरह और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। इस क्रम को उलट देने से सोरठा बन जाता है।

दोहाई–संज्ञा स्त्री० दे० "दुहाई"।

दोहाक, दोहाग*†–संज्ञा पुं० दुर्भाग्य। बदकिस्मती। अभाग्य।

दोहागा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।

दोहित†–संज्ञा पुं० बेटी का बेटा। नाती।

दोही–संज्ञा पुं० दोहे की तरह का एक छंद।
१. दूध दुहनेवाला। २. ग्वाला।

दोह्य–वि० दुहने योग्य।

दौं*–अव्य० या। अथवा। दे० "धौं"।

दौंकना*–क्रि० अ० दे० "दमकना"।

दौंचना**–क्रि० स० १. दबाव डालकर लेना। २. लेने के लिए अड़ना।

दौंरी†–संज्ञा स्त्री० १. कटी हुई फसल के डंठलों से दाना झाड़ने के लिए उस पर घुमाया जानेवाले बैलों का घुमाया जाना। २. वह रस्सी, जिससे बैल बँधे होते हैं। ३. फसल के डंठलों से दाने अलग करने की क्रिया।

दौ*–संज्ञा स्त्री० १. जंगल की आग। २. संताप। जलन। ताप।

दौड़–संज्ञा स्त्री० १. दौड़ने की क्रिया या भाव। धावा। २. वेग से आक्रमण। चढ़ाई। ३. किसी कर्म के लिए परिश्रम करना। प्रयत्न। ४. द्रुतगति। वेग। ५. गति की सीमा। पहुँच। ६. उद्योग या प्रयत्नों की पहुँच। ७. बुद्धि की गति। अकल की पहुँच। ८. विस्तार।
मुहा०–दौड़ मारना या लगाना=१. वेग के साथ जाना। २. दूर तक पहुँचना। लंबी यात्रा करना। मन की दौड़=चित्त की सूझ। कल्पना।

दौड़-धूप–संज्ञा स्त्री० परिश्रम। प्रयत्न। उद्योग।

दौड़ना–क्रि० अ० १. तेज चलना। वेग से चलना। २. सहसा प्रवृत्त होना। झुक पड़ना। ३. किसी प्रयत्न में इधर-उधर फिरना। ४. फैलना। व्याप्त होना। छा जाना।
मुहा०–चढ़ दौड़ना=चढ़ाई करना। आक्रमण करना। दौड़-दौड़कर आना=जल्दी जल्दी या बार-बार आना।

दौड़ादौड़—क्रि० वि० [संज्ञा दौड़ादौड़ी] बिना कहीं रुके हुए। अविश्रांत। बेतहाशा।
दौड़ादौड़ी—संज्ञा स्त्री० १. दौड़धूप। २.आतुरता। हड़बड़ी।
दौड़ान—संज्ञा स्त्री० १. दौड़ने की क्रिया। द्रुतगमन। २. वेग। झोंक। ३. सिलसिला।
दौड़ाना—क्रि० स० १. दौड़ने की क्रिया कराना। २. बार-बार आने-जाने के लिए कहना या विवश करना। ३. फैलाना। पोतना। ४. चलाना। जैसे—कलम दौड़ाना।
दौत्य*—संज्ञा पुं० दूत का काम। दूसरे देश में किसी देश के राजदूत या प्रतिनिधि द्वारा किए जानेवाले कर्त्तव्य। दूतकर्म।
दौन—संज्ञा पुं० दे० "दमन"।
दौना*—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पौधा। २. दे० "दोना"।
*क्रि० स० दमन करना।
दौनागिरि—संज्ञा पुं० दे० "द्रोणगिरि"।
दौर—संज्ञा पुं० [अ०] १. चक्कर। भ्रमण। फेरा। २. दिनों का फेर। कालचक्र। ३. अभ्युदय-काल। बढ़ती का समय। ४. प्रताप। प्रभाव। हुकूमत। ५. बारी। बार-बार होनेवाली बात। पारी। ६. बार। दफा। ७. दे० "दौरा"।
यौ०—दौरदौरा=प्रधानता। प्रबलता।
दौरना*†—क्रि० अ० दे० "दौड़ना"।
दौरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. चक्कर। भ्रमण। २. इधर-उधर घूमने की क्रिया। फेरा। गश्त। ३. जाँच-पड़ताल के लिए भ्रमण करना। ४. सामयिक आगमन। ५. किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना, जो समय-समय पर होता हो। आवर्त्तन।
†संज्ञा पुं० [स्त्री० दौरी] बाँस की फट्टियों या मूँज आदि का टोकरा।
मुहा०—दौरा सुपुर्द करना=फैसले के लिए सेशन-जज के पास भेजना।
दौरात्म्य—संज्ञा पुं० १. दुर्जनता। दुरात्मा का भाव। २. दुष्टता।
दौरान—संज्ञा पुं० [फा०] १. मध्य में। चालू अवस्था के बीच में। दौरा। चक्र। २. दिनों का फेर। ३. फेरा। पारी।
दौराना†*—क्रि० स० दे० "दौड़ाना"।
दौरी—†संज्ञा स्त्री० बाँस या मूँज की छोटी टोकरी। चँगेरी। डलिया।
दौर्जन्य—संज्ञा पुं० दुर्जनता। दुष्टता।
दौर्बल्य—संज्ञा पुं० दुर्बलता। कमजोरी।
दौर्मनस्य—संज्ञा पुं० दुर्जनता।
दौर्य—संज्ञा पुं० दूरी।
दौलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] धन। संपत्ति।
दौलतखाना—संज्ञा पुं० [फा०] निवास-स्थान। घर।
दौलतमंद—वि० [फा०] धनी। संपन्न।
दौवारिक—संज्ञा पुं० द्वारपाल।
दौहार्द—संज्ञा पुं० दुष्ट स्वभाव। दुर्भाव। वैर।
दौहित्र—संज्ञा पुं० [स्त्री० दौहित्री] लड़की का लड़का। नाती।
द्यु—संज्ञा पुं० १. दिन। २. आकाश। ३. स्वर्ग। ४. अग्नि। ५. सूर्य्यलोक।
द्युति—संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति। आभा। चमक। २. शोभा। छवि। ३. कांति। लावण्य। ४. रश्मि। किरण।
द्युतिमंत—वि० दे० "द्युतिमान्"।
द्युतिमा—संज्ञा स्त्री० प्रकाश। तेज।
द्युतिमान्—वि० [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो।
द्युपति—संज्ञा पुं० १ इन्द्र। २ सूर्य।
द्युपथ—संज्ञा पुं० आकाशमार्ग।
द्युमणि—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. मंदार। ३. शोधा हुआ ताँबा।
द्युमत्सेन—संज्ञा पुं० शाल्व देश के एक राजा, जो सत्यवान् के पिता थे।
द्युमान्—वि० चमकीला।
द्युम्न—संज्ञा पुं० १. बल। २. सूर्य। ३. धान। अन्न।
द्युलोक—संज्ञा पुं० स्वर्गलोक।
द्युवन्—संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. सूर्य।
द्यू—वि० जुआड़ी।
द्यूत—संज्ञा पुं० जूआ। वह खेल, जिसमें दाँव बदकर हार-जीत की जाय।
द्यो—संज्ञा स्त्री० १ आकाश। २ स्वर्ग। आठ वसुओं में से एक।

द्योतक–वि० १. प्रकाश करनेवाला। प्रकाशक। २. बतलानेवाला।
द्योतन–संज्ञा पुं० [वि० द्योतित] १. दर्शन। २. प्रकाशित करने या जलाने का काम। ३. दिखाने का काम।
द्योहरा*–संज्ञा पुं० दे० "देवघरा"।
द्यौस*–संज्ञा पुं० दिन।
द्रढ़िमा–संज्ञा पुं० मजबूती। दृढ़ता।
द्रम्म–संज्ञा पुं० एक मुद्रा (लीलावती)।
द्रव–संज्ञा पुं० १. द्रवण। २. बहाव। ३. पलायन। दौड़। ४. वेग। ५. आसव। ६. रस। ७. द्रवत्व।
वि० १. तरल। २. गीला। ३. पिघला हुआ।
द्रवण–संज्ञा पुं० [वि० द्रवित] १. गमन। गति। २. क्षरण। बहाव। ३. पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। ४. चित्त के कोमल होने की भावना।
द्रवणशील–वि० पिघलने या पसीजनेवाला।
द्रवता–संज्ञा स्त्री० दे० "द्रवत्व"।
द्रवत्व–संज्ञा पुं० बहने का भाव। पतला होने का भाव।
द्रवना*–क्रि० अ० १. प्रवाहित होना। बहना। २. पिघलना। ३. पसीजना। दयार्द्र होना।
द्रविड़–संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक देश। २. इस देश का रहनेवाला। ३. ब्राह्मणों का एक वर्ग, जिसके अंतर्गत पाँच विभाग हैं—आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र।
द्रविण–संज्ञा पुं० सोना।
द्रवित–वि० १. पिघला या पसीजा हुआ। २ दया से भरा हुआ। दे० "द्रवीभूत"।
द्रवीभूत–वि० १. जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो। २. पिघला हुआ। पसीजा हुआ ३. दयार्द्र। दयालु।
द्रव्य–संज्ञा पुं० १. वस्तु। पदार्थ। चीज। २. सामान। उपादान। ३ धन। दौलत। वैशेषिक में द्रव्य नौ कहे गए हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। ४. सामग्री।
वि० द्रुम-सम्बन्धी।
द्रव्यवान्–वि० [स्त्री० द्रव्यवती] धनवान्। धनी।
द्रष्टव्य–वि० १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो दिखाया जानेवाला हो।
द्रष्टा–वि० १. देखनेवाला। २. दर्शक। प्रकाशक।
संज्ञा पुं० (सांख्य के अनुसार) पुरुष; (योग के अनसार) आत्मा।
द्रह–संज्ञा पुं० १. झील। २. दह। नदी के भीतर का गड्ढा।
द्राक्षा–संज्ञा स्त्री० दाख। अंगूर।
द्राघिमा–संज्ञा पुं० १. लंबाई। दीर्घता। २. अक्षांश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ, जो भूमध्य रेखा के समानांतर पूर्व-पश्चिम को मानी गई हैं।
द्राण–वि० १. सोया हुआ। २. भगेड़ू।
संज्ञा पुं० १. भागना। २. स्वप्न।
द्राप–संज्ञा पुं० १. कौड़ी। २. आकाश।
वि० १. मूर्ख। २. सुप्त।
द्राव–संज्ञा पुं० १. गमन। २. क्षरण। ३. बहने या पसीजने की क्रिया।
द्रावक–वि० १. पतला करनेवाला। २. बहानेवाला। ३. गलानेवाला। ४. पिघलानेवाला। ५. हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। हृदयग्राही।
द्रावण–संज्ञा पुं० गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।
द्राविड़–वि० [स्त्री० द्राविड़ी] द्रविड़ देशवासी।
द्राविड़ी–वि० द्रविड़-संबंधी।
मुहा०–द्राविड़ी प्राणायाम=घुमाव-फिराव के साथ बात करना।
द्रुत–वि० १. द्रवीभूत। गला हुआ। २. शीघ्रगामी। तेज। ३. भागा हुआ।
संज्ञा पुं० १. वृक्ष। २. बिल्ली। ३. बिच्छू। ताल की एक मात्रा का आधा। बिंदु। ४. व्यंजन। ५. द्रुन।
द्रुतगामी–वि० [स्त्री० द्रुतगामिनी] शीघ्रगामी। तेज चलनेवाला।
द्रुतपद–संज्ञा पुं० बारह अक्षरों का एक छंद।

द्रुतमध्या–संज्ञा स्त्री० एक अर्द्ध-समवृत्ति।

द्रुतविलंबित–संज्ञा पुं० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। सुंदरी।

द्रुति–संज्ञा स्त्री० १. द्रव। २. गति।

द्रुपद–संज्ञा पुं० उत्तर पांचाल के एक राजा, जो महाभारत के युद्ध में मारे गये थे। धृष्टद्युम्न और शिखंडी इनके पुत्र और कृष्णा (द्रौपदी) इनकी कन्या थी।

द्रुम–संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

द्रुमिला–संज्ञा स्त्री० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

द्रुह–संज्ञा पुं० १. पेड़। २. पुत्र।

द्रुह्यु–संज्ञा पुं० १. प्राचीन आर्य्यों का एक वंश या जनसमूह। २. शर्म्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ पुत्र, जिसने ययाति का बुढ़ापा लेना अस्वीकृत किया था।

द्रू–संज्ञा पुं० सोना।

द्रोण–संज्ञा पुं० १. लकड़ी का एक बरतन, जिसमें वैदिक काल में सोम रखा जाता था। २. कठवत। ३. एक प्राचीन माप। ४. पत्तों का दोना। ५. नाव। डोंगा। ६. अरणी की लकड़ी। ७. लकड़ी का रथ। ८. डोम कौआ। काला कौआ। बिच्छू। ९. द्रोणगिरि नाम का पहाड़। १०. दे० "द्रोणाचार्य्य"।

द्रोणकाक–संज्ञा पुं० डोम कौआ। बनैला कौआ।

द्रोणमुख–संज्ञा पुं० चार सौ गाँवों में से सुन्दर गाँव।

द्रोणाचार्य–संज्ञा पुं० पाण्डवों और कौरवों को अस्त्रविद्या की शिक्षा देनेवाले गुरु, जो भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे। इनके पुत्र का नाम अश्वत्थामा था।

द्रोणी–संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता। २. एक पर्वत। ३. एक नदी। ४. डोंगी। ५. छोटा दोना। ६. काठ का प्याला। कठवत। ७. दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ८. दर्रा। ९. द्रोणाचार्य की स्त्री, कृपी। १०. तौल की एक प्राचीन माप।

द्रोन*–संज्ञा पुं० दे० "द्रोण"।

द्रोह–संज्ञा पुं० [स्त्री० द्रोही] दूसरे का अहितचिंतन। वैर। द्वेष।

द्रोही–वि० [स्त्री० द्रोहिणी] द्रोह करनेवाला। बुराई चाहनेवाला। वैरी। दुश्मन।

द्रौपदी–संज्ञा स्त्री० राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा, जो पाँचों पाण्डवों को ब्याही गई थी। जूए में युधिष्ठिर का सर्वस्व जीत लेने पर दुर्योधन ने दुःशासन-द्वारा इसे भरी सभा में बुलवाकर इसका वस्त्र खिंचवाना चाहा था; पर वह वस्त्र न खिंच सका। इसी पर भीम ने बदला चुकाने के लिए दुःशासन के कलेजे का रक्त-पीने की प्रतिज्ञा की और वह कुरुक्षेत्र के युद्ध में पूरी की।

द्वंद–संज्ञा पुं० १. दे० "द्वन्द्व"। दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। द्वंद्वयुद्ध। २. झगड़ा। कलह। बखेड़ा। ३. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। जैसे—राग-द्वेष, सुख-दुःख इत्यादि। ४. जोड़। प्रतिद्वंदी। ५. उलझन। झंझट। जंजाल। ६. कष्ट। दुःख। ७. उपद्रव। झगड़ा। ऊधम। ८ दुबिधा। संशय। ९. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का जोड़ा। १०. गुप्त बात। रहस्य। संज्ञा स्त्री० दुंदुभी।

द्वंदर*–वि० झगड़ालू।

द्वंद्व–संज्ञा पुं० १. दो वस्तुएँ जो एक साथ हों। जोड़ा। युग्म। २. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का जोड़ा। ३. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। ४. गुप्त बात। रहस्य। ५. दो आदमियों की लड़ाई। ६. झगड़ा। बखेड़ा। कलह। ७. एक प्रकार का समास, जिसमें मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है।

द्वन्द्वकारी–वि० झगड़ालू।

द्वन्द्वचर–संज्ञा पुं० चक्रवाक पक्षी। चकवा।

द्वन्द्वज–संज्ञा पुं० १ दो दोषों से उत्पन्न रोग। २ कलह से उत्पन्न। कलहजन्य।

द्वंद्वयुद्ध–संज्ञा पुं० वह लड़ाई, जो दो पुरुषों के बीच में हो। कुश्ती।

द्वय–वि० दो।

द्वयता–संज्ञा स्त्री० दो का भाव । द्वैत । अपनेपन और परायेपन का भाव । भेदभाव ।
द्वाज–संज्ञा पुं० जारज ।
द्वादश–वि० १. जो संख्या में दस और दो हो । बारह । २. बारहवाँ ।
संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक । १२ ।
द्वादशाक्षर–संज्ञा पुं० विष्णु का एक मंत्र जिसमें बारह अक्षर हैं । वह मंत्र यह है— "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" ।
द्वादशाह–संज्ञा पुं० १. बारह दिनों का समुदाय । २. वह श्राद्ध, जो किसी के निमित्त उसके मरने से बारहवें दिन हो ।
द्वादशी–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की बारहवीं तिथि ।
द्वादसबानी*–वि० दे० "बारहबानी" ।
द्वापर–संज्ञा पुं० चार युगों में से तीसरा युग । पुराणों में यह युग ८६४००० वर्ष का माना गया है ।
द्वार–संज्ञा पुं० १. मुख । मुहाना । २. घर में आने-जाने के लिए दीवार में खुला हुआ स्थान । दरवाजा । ३. इंद्रियों के मार्ग या छेद; जैसे— आँख, कान, नाक आदि । ४. उपाय । साधन ।
द्वारका–संज्ञा स्त्री० काठियावाड़-गुजरात की एक प्राचीन नगरी । हिन्दुओं का एक तीर्थ-स्थान । यह सात पुरियों में से एक है । कुशस्थली । द्वारावती ।
द्वारकाधीश–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण । २. कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है ।
द्वारकानाथ–संज्ञा पुं० दे० "द्वारकाधीश" ।
द्वारचार–संज्ञा पुं० दे० "द्वारपूजा ।"
द्वारपाल–संज्ञा पुं० वह, जो दरवाजे पर रक्षा के लिए नियुक्त हो । दरबान ।
द्वारपूजा–संज्ञा स्त्री० विवाह में एक विशेष प्रकार की पूजा, जो कन्यावाले के द्वार पर उस समय की जाती है, जब बारात के साथ प्रथम बार वर आता है ।
द्वारवती–संज्ञा स्त्री० द्वारका ।
द्वारसमुद्र–संज्ञा पुं० दक्षिण का एक पुराना नगर, जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राजधानी थी ।
द्वारा–संज्ञा पुं० १. द्वार । दरवाजा । फाटक । २. मार्ग । राह ।
अव्य० जरिए । साधन से ।
द्वारावती–संज्ञा स्त्री० द्वारका ।
द्वारिका–संज्ञा स्त्री० दे० "द्वारका" ।
द्वारी*–संज्ञा स्त्री० छोटा द्वार । दरवाजा ।
द्वि–वि० दो ।
द्विक–वि० १. जिसमें दो अवयव हों । २. दोहरा ।
द्विकर्मक–वि० (क्रिया) जिसके दो कर्म हों ।
द्विकल–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में दो मात्राओं का समूह ।
द्विगु–संज्ञा पुं० एक प्रकार का समास, जो तत्पुरुष समास के अन्तर्गत है ।
द्विगुण–वि० दुगना । दूना ।
द्विगुणित–वि० १. दो से गुणा किया हुआ । २. दुगना । दूना ।
द्विज–संज्ञा पुं० जिसका जन्म दो बार हुआ हो । १. अंडज प्राणी । २. पक्षी । ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष, जिनको यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार है । ४. ब्राह्मण । ५. चंद्रमा । ६. दाँत ।
द्विजन्मा–वि० जिसका दो बार जन्म हुआ हो ।
संज्ञा पुं० द्विज ।
द्विजपति, द्विजराज–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण । २. चंद्र । ३. कपूर । ४. गरुड़ ।
द्विजाति–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार है । द्विज । २. ब्राह्मण । ३. अंडज । ४. पक्षी । ५. दाँत ।
द्विजिह्व–वि० १. जिसे दो जीभें हों । २. चुगलखोर । ३. खल । दुष्ट ।
संज्ञा पुं० साँप ।
द्विजेंद्र, द्विजेश–संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति" ।
द्वितीय–वि० [स्त्री० द्वितीया] दूसरा ।
द्वितीया–संज्ञा स्त्री० प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि । दूज ।
द्वित्व–संज्ञा पुं० १. दो का भाव । २. दोहरा होने का भाव ।
द्विदल–वि० १. जिसमें दो दल या पिंड हों । २. जिसमें दो पटल हों ।

संज्ञा पुं० वह अन्न, जिसमें दो दल हों। दाल।

द्विधा–क्रि० वि० १. दो प्रकार से। दो तरह से। २. दो खंडों या टुकड़ों में।

द्विपद–वि० जिसके दो पैर हों। जिसमें दो पद या चरण हों।

संज्ञा पुं० दो पैरोंवाला। मनुष्य, पक्षी आदि।

द्विपदराशि–संज्ञा पुं० मिथुन, तुला, कुम्भ और धनु का पूर्व भाग।

द्विपदी–संज्ञा स्त्री० १. वह छंद या वृत्ति, जिसमें दो पद हों। २. दो पदों का गीत। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य, जिसमें दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पंक्तियों में लिखते हैं।

द्विपाद–वि० १. दो पैरोंवाला (पशु)। २. जिसमें दो पद या चरण हों।

संज्ञा पुं० मनुष्य, पक्षी आदि दो पैरों के जीव।

द्विपायी–संज्ञा पुं० हाथी।

द्विपास्य–संज्ञा पुं० गणेशजी।

द्विभाव–संज्ञा पुं० दुराव।

द्विभाषी–संज्ञा पुं० [स्त्री० द्विभाषिणी] वह पुरुष, जो दो भाषाएँ जानता हो। दुभाषिया।

द्विमात्र–संज्ञा पुं० दो मात्राओं का वर्ण।

द्विमुखी–वि० दो मुँहवाली।

संज्ञा स्त्री० वह गाय, जो बच्चा दे रही हो। (ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है।)

द्विरद–संज्ञा पुं० हाथी।

वि० दो दाँतोंवाला।

द्विरसन–वि० [स्त्री० द्विरसना] १. दो जीभों या जबान वाला। २. कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला। ३. चुगलखोर।

संज्ञा पुं० [स्त्री० द्विरसना] साँप। दुमुँहा साँप।

द्विरागमन–संज्ञा पुं० वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना। दोंगा।

द्विराप–संज्ञा पुं० हाथी।

द्विरुक्ति–संज्ञा स्त्री० दो बार कथन।

द्विरेफ–संज्ञा पुं० भ्रमर। भौंरा।

द्विविध–वि० दो प्रकार का।

क्रि० वि० दो प्रकार से।

द्विविधा*–संज्ञा पुं० दुबधा।

द्विवेदी–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक उपजाति। दुबे

द्विशिर–वि० दो सिरोंवाला। जिसके दो सिर हों।

मुहा०—कौन द्विशिर है ?=किसे फालतू सिर है ? किसे अपने मरने का भय नहीं है ?

द्विष, द्विषत्–संज्ञा पुं० शत्रु। वैरी।

द्वींद्रिय–संज्ञा पुं० वह जंतु, जिसके दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप–संज्ञा पुं० १. चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल भाग। टापू। जजीरा। २. पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग, जिनके नाम ये हैं—जंबूद्वीप, लंकाद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वेष–संज्ञा पुं० ईर्ष्या। शत्रुता। वैर। चिढ़।

द्वेषी–वि० [स्त्री० द्वेषिणी] विरोधी। वैरी। चिढ़ रखनेवाला।

द्वेष्टा–वि० दे० "द्वेषी"।

द्वै*†–वि० दो। दोनों।

द्वैज*–संज्ञा स्त्री० द्वितीया। दूज।

द्वैत–संज्ञा पुं० १. दो का भाव। युग्म। युगल। २. अपने और पराए का भाव। भेद। अंतर। ३. दुविधा। भ्रम। ४. अज्ञान।

द्वैतवाद–संज्ञा पुं० १. वह दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर को दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है। वेदांत को छोड़कर शेष पाँचों दर्शन द्वैतवादी माने जाते हैं। २. वह दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

द्वैतवादी–वि० [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैध–संज्ञा पुं० संदेह। संशय। व्यंग्योक्ति। १. विरोध। २. राजनीति के षड्गुणों में से एक, जिसमें मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। ३. आधुनिक राजनीति में वह शासन-प्रणाली, जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों।

द्वैपायन–संज्ञा पुं० १. व्यासजी का एक नाम। २. वह ताल, जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध से भागकर दुर्योधन छिपा था।

द्वैमातुर–वि० जिसकी दो माताएं हों। संज्ञा पुं० १. गणेश। २. जरासंध।

द्वैरथ–संज्ञा पुं० दो रथारोहियों का परस्पर युद्ध।

द्वौ*–वि० १. दोनों। २. दे० "दव"।

द्व्यर्थ–संज्ञा पुं० ऐसा वाक्य या शब्द जिसके दो अर्थ निकलते हों।

द्व्यष्ट–संज्ञा पुं० ताम्र। तांबा।

द्व्यात्मक–संज्ञा पुं० मिथुन, कन्या, धनु, मीन राशि। द्विविध। दो प्रकार।

द्व्याहिक–वि० दो दिन के बाद ही उत्पन्न होनेवाला। दो दिन में जन्म।

ध

ध–देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान दंत है। इसी से इसे दन्त्य वर्ण कहते हैं। संज्ञा पुं० १. धन। २. कुबेर। ३. ब्रह्मा। ४. धर्म।

धंगर–संज्ञा पुं० अहीर।

धंगा–संज्ञा पुं० खाँसी।

धंधक–संज्ञा पुं० १ काम-धंधा। २ आडंबर। जंजाल। बखेड़ा।

वि० परिश्रमी। उद्यमी। धंधावाला। व्यवसायी।

धंधकधोरी–संज्ञा पुं० हर घड़ी काम में लगा रहनेवाला।

धंधरक–संज्ञा पुं० दे० "धंधक"।

धंधला–संज्ञा पुं० १. दगा। धोखा। चकमा। २. ढोंग। छल-छंद। बहाना।

धंधलाना–क्रि० अ० धोखा देना। चकमा देना। छलना।

धंधा–संज्ञा पुं० १. धन या जीविका के लिए उद्योग। काम-काज। २. उद्यम। व्यवसाय। कारबार।

धंधार–संज्ञा स्त्री० ज्वाला। लपट।

वि० १. एकाकी। २. उदास। ३. निठल्ला।

धंधारी–संज्ञा स्त्री० १. गोरखधंधा। २. उदासी। ३. अकेलापन। एकान्त।

धंधोर–संज्ञा पुं० १. होलिका। होली। २. आग की लपट। ज्वाला।

धंवना*–क्रि० स० दे० "धौंकना।"

धंसन–संज्ञा स्त्री० १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. घुसने या पैठने का ढंग। ३. गति। चाल।

धँसना–क्रि० अ० १. घुसना। गड़ना। पैठना। *†२. नीचे खसकना। उतरना। ३. तल के किसी अंश का दबाव आदि पाकर नीचे हो जाना, जिससे गड्ढा-सा पड़ जाय। ३. बैठ जाना।* नष्ट होना।

मुहा०—जी या मन में धँसना=चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। दिल में असर करना।

धँसान–संज्ञा स्त्री० १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. दलदल। कीचड़। ३. ढाल।

धँसाना–क्रि० स० १. नरम चीज में घुसाना। गड़ाना। चुभाना। २. पैठाना। प्रवेश कराना। ३. तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना।

धँसाव–संज्ञा पुं० दलदल। कीचड़। धँसने की क्रिया।

धक–संज्ञा स्त्री० १. हृदय के धड़कने का भाव या शब्द। २. उमंग। उद्वेग। चोप। क्रि० वि० अचानक। एकबारगी।

संज्ञा स्त्री० छोटी जूँ।

मुहा०—जी धकधक करना=भय या उद्वेग से जी धड़कना। जी धक हो जाना=१. डर से जी दहल जाना। २. चौंक उठना।

धकधकाना–क्रि० अ० १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर-जोर से या जल्दी जल्दी चलना।† २. (आग का) दहकना। भभकना।

धकधकाहट–संज्ञा स्त्री० धड़कन। खटका। आशंका।

धकधकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. जी धक-धक करने की क्रिया या भाव। जी की धड़कन। २. धुकधुकी। दुगदुगी। ३. हड़बड़ी। घबराहट।

मुहा०—धुकधुकी धड़कना=अकस्मात् आशंका या खटका होना। छाती धड़कना।
धकपक—संज्ञा स्त्री० धकधकी। जी की धड़कन।
क्रि० वि० दहलते हुए। डरते हुए।
धकपकाना—क्रि० अ० जी में दहलना। दहशत खाना। डरना।
धकपेल*—संज्ञा स्त्री० धक्कमधक्का। रेलापेल।
धका†*—संज्ञा पुं० दे० "धक्का"।
धकाना†—क्रि० स० दहकाना। सुलगाना।
धकारा†—संज्ञा पुं० आशंका। खटका।
धकियाना†—क्रि० स० धक्का देना। ढकेलना।
धकेलना—क्रि० स० दे० "ढकेलना"।
धकैत—वि० धक्कम-धक्का करनेवाला।
धक्कमधक्का—संज्ञा पुं० १. ठेलाठेली। भीड़ में रेलापेल। धकापेल। २. ऐसी भीड़, जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।
धक्का—संज्ञा पुं० १. टक्कर। रेला। झोंका। २. ढकेलने की क्रिया। झोंका। चपेट। ३. ऐसी भारी भीड़, जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों। ४. शोक या दुःख का आघात। संताप। ५. विपत्ति। आफत। ६. हानि। टोटा।
धक्कामुक्की—संज्ञा स्त्री० हाथापाई। मुठभेड़। मारपीट। ऐसी लड़ाई, जिसमें एक दूसरे को ढकेले और घूँसों से मारे।
धगड़बाज—वि० दुश्चरित्र।
धगड़ा—संज्ञा पुं० यार। उपपति।
धगधगना*†—क्रि० अ० धकधकाना। धड़कना।
धगबरी—वि० १. पति की दुलारी। २. कुलटा।
धगा*†—संज्ञा पुं० दे० "धागा"।
धगुला†—संज्ञा पुं० हाथ में पहनने का कड़ा
धचकना†—क्रि० अ० दलदल में फँसना
धचका—संज्ञा पुं० धक्का। झटका।
धज—संज्ञा स्त्री० १. सजावट। बनाव सुन्दर रचना। २. मोहित करनेवाली चाल सुन्दर ढंग। ३. ठसक। नखरा। ४. रूप-रंग शोभा।
यौ०—सजधज=तैयारी। साज-सामान।
धजा—संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।
धजीला—वि० [स्त्री० धजीली] सजीला। सुन्दर।
धज्जी—संज्ञा स्त्री० १. कपड़े, कागज, चमड़े आदि की लंबी पतली पट्टी। २. लोहे की चद्दर या लकड़ी की लंबी पट्टी।
मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना=१. टुकड़े-टुकड़े करना। विदीर्ण करना। २. (किसी की) खूब दुर्गति करना।
धट—संज्ञा पुं० १. तराजू। २. तुलाराशि। ३. तुलापरीक्षा। ४. धर्म।
धटिका—संज्ञा स्त्री० १. एक तौल। पंसेरी। २. चीर। वस्त्र। ३. कौपीन।
धटी—संज्ञा स्त्री० १. कपड़े की धज्जी। २. कौपीन। ३. गोटा। ४. गर्भाधान के बाद स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र।
धड़ंग—वि० नंगा।
धड़—संज्ञा पुं० १. शरीर का मध्यभाग जिसके अंतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं। २. पेड़ का तना।
संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होनेवाला शब्द।
धड़क—संज्ञा स्त्री० १. हृदय का स्पंदन। २. दिल की धड़कन। तड़प। तपाक। ३. भय, आशंका आदि के कारण दिल की बढ़ी हुई धड़कन। जी धक-धक करने की क्रिया। ४. आशंका। खटका। अंदेशा। भय।
यौ०—बे-धड़क=बिना किसी संकोच के।
धड़कन—संज्ञा स्त्री० हृदय का स्पंदन। दिल का धक-धक करना।
धड़कना—क्रि० अ० १. दिल का धक-धक करना। हृदय का स्पंदन २. धड़धड़ शब्द होना।
मुहा०—छाती, जी या दिल धड़कना=भय या आशंका से हृदय का जोर-जोर से और जल्दी-जल्दी चलना।
धड़का—संज्ञा पुं० १. दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने का शब्द। ३. खटका। अंदेशा। भय। ४. चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में रखी जानेवाली काली हाँड़ी या पुतला। धोखा।

धड़काना–क्रि० स० १. जी धक-धक कराना। दिल में धड़क पैदा करना। २. जी दहलाना। डराना। ३. धड़धड़ शब्द उत्पन्न कराना।

धड़धड़ाना–क्रि० अ० धड़-धड़ शब्द करना। भारी चीज के गिरने-पड़ने की-सी आवाज करना।

मुहा०—धड़धड़ाता हुआ=१. धड़-धड़ शब्द और वेग के साथ। २. बिना किसी प्रकार के खटके या संकोच के। बेधड़क।

धड़ल्ला–संज्ञा पुं० धड़ाका। वेग से गिरने या जाने का शब्द। धड़धड़ शब्द।

मुहा०—धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ=१. बिना किसी रुकावट के। झोंक से। २. बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के।

धड़ा–संज्ञा पुं० १. तौलने का बोझ। एक तौल। बाट। बटखरा। २. तराजू।

मुहा०—धड़ा करना=धड़ा बाँधना। कोई वस्तु रखकर तौलने के पहले तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। दोषारोपण करना। कलंक लगाना।

धड़ाक–संज्ञा पुं० किसी चीज के गिरने, छूटने आदि का शब्द।

धड़ाका–संज्ञा पुं० 'धड़-धड़' शब्द। धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।

मुहा०—धड़ाके से=जल्दी से। चटपट।

धड़ाधड़–क्रि० वि० १. लगातार 'धड़-धड़' शब्द के साथ। २. बराबर। जल्दी-जल्दी।

धड़ा-बंदी–संज्ञा स्त्री० १. तौल में धड़ा बाँधना। २. युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक-बल बराबर करना।

धड़ाम–संज्ञा पुं० ऊपर से एक-बारगी कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी–संज्ञा स्त्री० १. एक तौल। २. वह लकीर, जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है। ३. पाँच सौ रुपये की रकम।

धत्–अव्य० [अनु०] दुतकारने का शब्द। तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धत–संज्ञा स्त्री० खराब आदत। कुटेव।

धतकारना–क्रि० स० १. दुतकारना। दुरदुराना। २. धिक्कारना।

धता–वि० जो दूर हो गया हो या किया गया हो। चलता। हटा हुआ।

मुहा०—धता करना या बताना=चलता करना। हटाना। टालना। भगाना।

धतूर–संज्ञा पुं० नरसिंहा नाम का बाजा। तुरही। सिंहा।

धतूरा–संज्ञा पुं० एक पौधा, जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।

मुहा०—धतूरा खाए फिरना=उन्मत्त के समान घूमना।

धत्ता–संज्ञा पुं० एक मात्रिक छंद।

धत्तानंद–संज्ञा पुं० एक छंद, जिसकी प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ और अंत में नगण होता है।

धधक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। आग की भभक। २. आँच। लपट। लौ।

धधकना–क्रि० अ० आग का लपट के साथ जलना। दहकना। भड़कना।

धधकाना–क्रि० स० आग दहकाना। प्रज्वलित करना।

धधाना–क्रि० अ० दे० "धधकाना"।

धनंजय–संज्ञा पुं० १. अग्नि २. चित्रक वृक्ष। चीता। ३. अर्जुन का एक नाम। ४. अर्जुन वृक्ष। ५. विष्णु। ६. शरीर में वर्तमान पाँच वायुओं में से एक।

धन–संज्ञा पुं० १. संपत्ति। द्रव्य। दौलत। रुपया-पैसा, जमीन-जायदाद इत्यादि। २. चौपायों का झुण्ड, जो किसी के पास हो। गाय, भैंस आदि। गोधन। ३. स्नेहपात्र। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। जीवनसर्वस्व। ४. गणित में जोड़ का चिह्न। ५. मूल पूँजी।
*संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री। वधू।
‡वि० दे० "धन्य"।

धनक–संज्ञा पुं० १. धनुष। कमान। २. एक प्रकार की ओढ़नी।

धनकुबेर–संज्ञा पुं० वह, जो धन में कुबेर के समान हो। अत्यंत धनी।

धनतेरस—संज्ञा स्त्री॰ कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस रात को लक्ष्मी की पूजा होती है।
धनद—वि॰ धन देनेवाला। दाता।
संज्ञा पुं॰ १. कुबेर। २. धनपति। ३. वायु। ४. चित्रक वृक्ष।
धनधान्य—संज्ञा पुं॰ धन और अन्न आदि। संपत्ति और सामग्री।
धनधाम—संज्ञा पुं॰ घर-बार और रुपया-पैसा।
धनधारी—संज्ञा पुं॰ १. कुबेर। २. बहुत बड़ा अमीर।
धनपति—संज्ञा पुं॰ कुबेर।
धनवंत—वि॰ दे॰ "धनवान्"।
धनवान्—वि॰ [स्त्री॰ धनवती] जिसके पास धन हो। धनी। दौलतमंद।
धनसार—संज्ञा पुं॰ अनाज भरने की कोठरी।
धनहर—संज्ञा पुं॰ चोर।
धनहीन—वि॰ गरीब। निर्धन। दरिद्र।
धना*—संज्ञा स्त्री॰ युवती। वधू।
धनाढ्य—बहुत धनी। धनवान्। अमीर।
धनाधिप—संज्ञा पुं॰ कुबेर।
धनाश्री—संज्ञा स्त्री॰ एक रागिनी।
धनि*—संज्ञा स्त्री॰ युवती। वधू।
वि॰ दे॰ "धन्य"।
धनिक—वि॰ धनी।
संज्ञा पुं॰ १. धनी मनुष्य। २. पति।
धनिया—संज्ञा पुं॰ एक छोटा पौधा, जिसके सुगंधित फल मसाले के काम में आते हैं।
*संज्ञा स्त्री॰ युवती स्त्री।
धनिष्ठ—वि॰ अमीर। धनी।
धनिष्ठा—संज्ञा स्त्री॰ सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे हैं।
धनी—वि॰ १. जिसके पास धन हो। धनवान्। २. जिसके पास कोई गुण आदि हो।
संज्ञा पुं॰ १. धनवान् पुरुष। मालदार आदमी। २. अधिपति। मालिक। स्वामी। ३. पति। शौहर।
संज्ञा स्त्री॰ युवती स्त्री। वधू।
यौ॰—धनी धोरी=१. धन और मर्यादा-वाला। २. मालिक या रक्षक।
मुहा॰—बात का धनी=बात का सच्चा।

धनु—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धनुष"। चार हाथ की माप। गोल क्षेत्र में आधे से कम अंश का क्षेत्र।
धनुआ—संज्ञा पुं॰ १. धनुष। कमान। २. रूई धुनने की धुनकी।
धनुई†—संज्ञा स्त्री॰ छोटा धनुष।
धनुक—संज्ञा पुं॰ १. दे॰ "धनुष"। २. दे॰ "इन्द्रधनुष"।
धनुकधारी—संज्ञा पुं॰ १. धनुष धारण करने या बाण चलानेवाला। २. दे॰ "धनुर्धारी"।
धनुकबाई—संज्ञा स्त्री॰ लकवे की तरह का एक वायु-रोग।
धनुर्द्धरी, धनुर्धर—संज्ञा पुं॰ धनुष धारण करनेवाला पुरुष। तीरंदाज। कमनैत।
धनुर्धार, धनुर्द्धारी—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धनुर्धर"।
धनुर्यज्ञ—संज्ञा पुं॰ एक यज्ञ, जिसमें धनुष का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा भी होती थी।
धनुर्वात—संज्ञा पुं॰ धनुकबाई रोग।
धनुर्विद्या—संज्ञा स्त्री॰ धनुष चलाने की विद्या।
धनुर्वेद—संज्ञा पुं॰ वह शास्त्र, जिसमें धनुष चलाने की विद्या का निरूपण है। यह यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है।
धनुष—संज्ञा पुं॰ १. तीर फेंकने का वह अस्त्र, जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर और उसके दोनों छोरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया जाता है। चाप। कमान। २. ज्योतिष में धनुराशि। ३. एक लग्न। ४. चार हाथ की एक माप।
धनुस—दे॰ "धनुष"।
धनुहाई*—संज्ञा स्त्री॰ धनुष की लड़ाई।
धनुही†—संज्ञा स्त्री॰ छोटा धनुष। लड़कों के खेलने की कमान।
धनेश—संज्ञा पुं॰ १. विष्णु। २. धन का स्वामी। कुबेर।
धनेस—संज्ञा पुं॰ एक चिड़िया।
धन्ना*—वि॰ दे॰ "धन्य"।
धन्नासेठ—संज्ञा पुं॰ बहुत धनी आदमी। प्रसिद्ध धनाढ्य।

धन्नी–संज्ञा स्त्री० १. गायों और बैलों की एक जाति। २. घोड़े की एक जाति।
धन्य–वि० कृतार्थ। प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। भाग्यवान्। पुण्यवान्। सुकृती। श्रेष्ठ।
धन्यवाद–संज्ञा पुं० १. साधुवाद। शाबाशी। प्रशंसा। २. किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा। कृतज्ञतासूचक शब्द। शुक्रिया।
धन्वंतरि–संज्ञा पुं० देवताओं के वैद्य, जो पुराणानुसार समुद्र-मंथन के समय और सब वस्तुओं के साथ समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।
धन्व–संज्ञा पुं० धनुष। कमान।
धन्वा–संज्ञा पुं० १. धनुष। कमान। २. जलहीन देश। मरुभूमि।
धन्वाकार–वि० धनुष या कमान के आकार का। गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।
धन्वी–वि० १. धनुर्धर। कमनैत। २. निपुण। चतुर।
धप–संज्ञा स्त्री० किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।
संज्ञा पुं० धौल। थप्पड़। तमाचा।
धपना–क्रि० अ० १. जोर से चलना। दौड़ना। २. झपटना। लपकना। ३. मारना। पीटना।
धप्पा–संज्ञा पुं० १. धोखा। छल। चपेट। २. थप्पड़। तमाचा। ३. घाटा। नुकसान।
धबला–संज्ञा पुं० १. ढीला पायजामा। २. स्त्रियों का लहँगा।
धब्बा–संज्ञा पुं० १. दाग। निशान। २ कलंक।
मुहा०—नाम में धब्बा लगाना=कीर्ति को मिटानेवाला काम करना।
धम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।
धमक–संज्ञा स्त्री० १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात का शब्द। २. पैर रखने की आवाज या आहट। ३. आघात आदि से उत्पन्न ध्वनि। ४. आघात। चोट।
धमकना–क्रि० अ० १. 'धम' शब्द के साथ गिरना। धमाका करना। २. जोर से मारना।
मुहा०—आ धमकना=आ पहुँचना।
धमकाना–क्रि० स० १. डराना। भय दिखाना। २. डाँटना। घुड़कना।
धमकी–संज्ञा स्त्री० १. हानि पहुँचाने या भय दिखाने का विचार। डर दिखाने की क्रिया। २. घुड़की। डाँट-डपट।
मुहा०—धमकी में आना=डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।
धमक्का†–संज्ञा पुं० १. आघात। २. एक प्रकार की बंदूक। ३. बंदूक का शब्द।
धमधमाना–क्रि० अ० 'धम धम' शब्द करना।
धमधूसड़ या **धमधूसर**–वि० १. मोटा और भद्दा। तोंदैल। २. मूर्ख।
धमन–संज्ञा पुं० १. नरकट। २. फुँकनी। धौंकनी।
धमनि–संज्ञा स्त्री० दे० "धमनी"।
धमनी–संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर की रक्त आदि का संचार करनेवाली छोटी नली। २. वह नली, जिसमें प्रवेश करके शुद्ध लाल रक्त हृदय के स्पंदन द्वारा सारे शरीर में फैलता रहता है। नाड़ी। नस। ३. हलदी।
धमाका–संज्ञा पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. बंदूक का शब्द। ३. आघात। धक्का। ४. पथरकला बंदूक। ५. हाथी पर लादने की तोप।
धमाचौकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद। उपद्रव। ऊधम। गुलगपाड़ा। २. धींगा-धींगी। मार-पीट।
धमाधम–क्रि० वि० [अनु०] १. लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ। २. लगातार प्रहार-शब्दों के साथ।
संज्ञा स्त्री० १. लगातार गिरने से धम-धम शब्द। २. मारपीट।
धमार–संज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद। उपद्रव। उत्पात। धमाचौकड़ी। २. नटों की उछल-कूद। कलाबाजी।
संज्ञा पुं० होली में गाने का एक गीत।
धमारिया–संज्ञा पुं० १ कलाबाज। नट। २ उपद्रवी। ३ धमार गानेवाला।

धमारी–संज्ञा पुं० १. उपद्रव। उत्पात। २. होली की क्रीड़ा।
वि० उपद्रवी।

धर–वि० १. धारण करनेवाला। ऊपर लेनेवाला। २. ग्रहण करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड़। २. कच्छप (जो पृथ्वी को ऊपर लिये है) ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण। ५. पृथ्वी।
संज्ञा स्त्री० धरने या पकड़ने की क्रिया।
यौ०—धर-पकड़=भागते हुए आदमियों को पकड़ने का कार्य। गिरफ्तारी।

धरक†*–संज्ञा स्त्री० दे० "धड़क"।

धरकना–क्रि० अ० दे० "धड़कना"।

धरणि–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

धरणिधर–संज्ञा पुं० १. पृथ्वी को धारण करनेवाला। २. कच्छप। ३. पर्वत। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. शेषनाग।

धरणी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

धरणीसुता–संज्ञा स्त्री० सीता (पृथ्वी की कन्या)।

धरता–संज्ञा पुं० १. देनदार। ऋणी। कर्जदार। २. कोई कार्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला। धारण करनेवाला।
यौ०—कर्ता-धर्ता=सब कुछ करनेवाला।

धरती–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

धरधर*–संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।
संज्ञा स्त्री० दे० "धड़धड़"।

धरधरा*†–संज्ञा पुं० धड़कन।

धरधराना*†–क्रि० अ० दे० "धड़धड़ाना"।

धरन–संज्ञा स्त्री० १. धरने की क्रिया। २. वह लंबा लट्ठा, जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिए आड़ा रखा जाता है, जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके। कड़ी। धरनी। ३. वह नस, जो गर्भाशय को दृढ़ता से जकड़े रहती है। गर्भाशय का आधार। ४. गर्भाशय। ५. टेक। हठ।
संज्ञा पुं० दे० "धरना"।

धरनहार*–वि० धारण करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० धरती। जमीन।

धरना–क्रि० स० १. पकड़ना। किसी वस्तु को दृढ़ता से हाथ में लेना। ग्रहण करना। रखना। २. स्थापित करना। स्थित करना। ठहराना। ३. पास रखना। ४. धारण करना। देह पर रखना। पहनना। ५. अवलंबन करना। अंगीकार करना। ६. हाथ में लेना। ग्रहण करना। ७. पल्ला पकड़ना। आश्रय ग्रहण करना। ८. किसी स्त्री को रखेली की तरह रखना। ९. गिरवी रखना। रेहन रखना। बंधक रखना।
संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिए किसी के पास अड़कर बैठना और जब तक काम न हो, तब तक अन्न न ग्रहण करना।
मुहा०—धर-पकड़कर=जबरदस्ती। धरा रह जाना=काम न आना।

धरनी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "धरणी"। २. हठ। टेक।

धरम*‡–संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।

धरवाना–क्रि० स० धरने या पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

धरषना*–क्रि० स० दबाना। मर्दन करना।

धरसना–क्रि० अ० १. दब जाना। २. डर जाना। सहम जाना।
क्रि० स० १. दबाना। २. अपमानित करना।

धरसनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "धर्षणी"। कुलटा।

धरहर†–संज्ञा स्त्री० १. गिरफ्तारी। धर-पकड़। २. लड़नेवालों को धर-पकड़कर लड़ाई बंद करने का कार्य्य। बीच-बिचाव। ३. बचाव। रक्षा। ४. धैर्य्य। धीरज।

धरहरना*–क्रि० अ० धड़-धड़ शब्द करना। धड़धड़ाना।

धरहरा–संज्ञा पुं० मीनार। मकान का खंभे की तरह का बहुत ऊँचा भाग, जिस पर चढ़ने के लिए भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों। धौरहर।

धरहरिया †–संज्ञा पुं० बीच-बिचाव करानेवाला। बचानेवाला। रक्षक।

धरा–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। जमीन। संसार। दुनिया। २. एक वर्णवृत्त। ३. तौल की बराबरी। ४. बँटखरा।

धराऊ–वि० १. जो अच्छा होने के कारण

कभी-कभी—केवल विशेष अवसरों पर—व्यवहार में लाया जाय। बहुमूल्य। २. बहुत दिनों का रखा हुआ। पुराना।

धरातल–संज्ञा पुं० १. सतह। पृथ्वी। धरती। २. लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल। रकबा। क्षेत्रफल।

धराधर–संज्ञा पुं० १. शेषनाग। २. पर्वत। ३. विष्णु।

धराधरन *–संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

धराधार–संज्ञा पुं० शेषनाग।

धराधीश–संज्ञा पुं० राजा।

धराना–क्रि० स० १. पकड़ाना। थमाना। २. स्थिर करना। रखाना। ३. स्थिर करना। ठहराना। निश्चित कराना। मुकर्रर कराना।

धरापुत्र–संज्ञा पुं० मंगल ग्रह।

धराशायी–वि० [स्त्री० धराशायिनी] जमीन पर गिरा या पड़ा हुआ।

धरासुर†–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।

धराहर–संज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।

धरित्री–संज्ञा स्त्री० धरती। पृथ्वी।

धरेल या धरेली–संज्ञा स्त्री० रखेली स्त्री। उपपत्नी।

धरैया†–संज्ञा पुं० धरनेवाला।

धरोहर–संज्ञा स्त्री० थाती। अमानत। वह वस्तु या द्रव्य, जो किसी के पास इस विश्वास पर रखा हो कि उसका स्वामी जब माँगेगा, तब वह दे दिया जायगा।

धर्त्ता–संज्ञा पुं० १. धारण करनेवाला। २. किसी का भार अपने ऊपर लेनेवाला। **यौ०**—कर्त्ता-धर्त्ता=जिसे सब कुछ करने-धरने का अधिकार हो। सर्वेसर्वा।

धर्म–संज्ञा पुं० १. कर्त्तव्य। फर्ज। २. प्रकृति। स्वभाव। नित्य-नियम। ३. अलंकार-शास्त्र में वह गुण या वृत्ति, जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो। जैसे—'कमल के ऐसे कोमल और लाल चरण'। इस उदाहरण में कोमलता और ललामी दोनों के साधारण धर्म हैं। ४. कल्याणकारी कर्म। सुकृत। सदाचार। श्रेय। पुण्य। सत्कर्म। ५. ईश्वर, आदि के संबंध में विश्वास और आराधना की प्रणाली-विशेष। उपासना-भेद। मत। संप्रदाय। पंथ। मजहब। ६. नीति। ७. न्याय-व्यवस्था। कायदा। कानून। जैसे—हिंदू-धर्मशास्त्र। ८. विवेक। ईमान।
मुहा०—धर्म कमाना=धर्म करके उसका फल संचित करना। धर्म बिगाड़ना=१. धर्म के विरुद्ध आचरण करना। धर्म भ्रष्ट करना। २. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। धर्म-लगती कहना=ठीक-ठीक कहना। सत्य या उचित बात कहना। धर्म से कहना=सत्य-सत्य कहना।

धर्म-कर्म–संज्ञा पुं० किसी धर्म-ग्रंथ में आवश्यक ठहराया हुआ कार्य। धर्म-द्वारा प्रतिपादित कार्य। शुभकार्य। पुण्य।

धर्मक्षेत्र–संज्ञा पुं० १. कुरुक्षेत्र। २. भारतवर्ष, जो धर्म के संचय के लिए कर्मभूमि माना गया है।

धर्मग्रंथ–संज्ञा पुं० वह पुस्तक, जिसमें आचार-व्यवहार और उपासना आदि के संबंध में शिक्षा हो।

धर्मघड़ी–संज्ञा स्त्री० बड़ी घड़ी, जो ऐसे स्थान पर लगी हो, जिसे सब लोग देख सकें।

धर्मचक्र–संज्ञा पुं० १. बौद्धधर्म का चिह्न। २. बुद्ध की धर्मशिक्षा, जिसका आरंभ सारनाथ (काशी) से हुआ था।

धर्मचर्या–संज्ञा स्त्री० धर्म का आचरण।

धर्मचारी–वि० [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म का आचरण करनेवाला।

धर्मच्युत–वि० अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ।

धर्मज्ञ–वि० १. धर्म्म जाननेवाला। २. धर्मपुत्र युधिष्ठिर।

धर्मतः–क्रि० वि० धर्म के विचार से।

धर्मतः–अव्य० धर्म का ध्यान रखते हुए। सत्य-सत्य।

धर्मध्वज–संज्ञा पुं० १. धर्म का ढोंग रचकर स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य। पाखंडी। २. मिथिला के जनकवंशीय एक राजा का नाम, जो वेद, धर्मशास्त्र आदि के बड़े ज्ञानी थे।

धर्मध्वजी—संज्ञा पुं० पाखंडी। दे० "धर्मध्वज"।
धर्मनिष्ठ—वि० धर्म में जिसकी आस्था हो। धार्मिक। धर्मपरायण।
धर्मनिष्ठा—संज्ञा स्त्री० धर्म में आस्था। धर्म में श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति।
धर्मपत्नी—संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री। वह स्त्री, जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो। धर्म की स्त्री जो दक्ष की कन्या थी।
धर्मपुस्तक—संज्ञा स्त्री० वह पुस्तक, जो किसी धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का मुख्य ग्रंथ।
धर्मबुद्धि—संज्ञा स्त्री० धर्म-अधर्म का विवेक। भले-बुरे का विचार।
धर्मभीरु—वि० धर्म से डरनेवाला। अधर्म करने से बहुत डरनेवाला।
धर्मयुग—संज्ञा पुं० सत्ययुग।
धर्मयुद्ध—संज्ञा पुं० धर्म के कारण होनेवाला युद्ध। वह युद्ध, जिसमें किसी प्रकार का नियम भंग न हो।
धर्मरक्षित—संज्ञा पुं० एक बौद्ध धर्मोपदेशक, जिसे महाराज अशोक ने उत्तरी पश्चिमी सीमान्त देश में उपदेश देने भेजा था।
वि० वह चीज, जिसकी रक्षा धर्म द्वारा की गई हो।
धर्मराइ*—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।
धर्मराज—संज्ञा पुं० १. धर्म का पालन करने-वाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४. न्यायाधीश। न्यायकर्त्ता।
धर्मराय*—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।
धर्मलुप्ता उपमा—संज्ञा स्त्री० वह उपमा, जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समान रूप से पाई जानेवाली बात का कथन न हो।
धर्मवीर—संज्ञा पुं० धर्म-कार्य करने में साहसी व्यक्ति।
धर्मव्याध—संज्ञा पुं० मिथिलापुरी निवासी एक व्याध, जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्त्व समझाया था।
धर्मशाला—संज्ञा स्त्री० १. ठहरने का स्थान, जो धर्म या पुण्य करने के उद्देश्य से बनाया गया हो। २. ऐसी जगह, जहाँ पुण्य के लिए दान दिया जाता हो।
धर्मशास्त्र—संज्ञा पुं० किसी धर्म का वह ग्रंथ, जिसमें समाज के लिए नीति और सदाचार-संबंधी नियम हों। मनु आदि महर्षियों-द्वारा बनाए गए शास्त्र।
धर्मशास्त्री—संज्ञा पुं० धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला पंडित।
धर्मशील—वि० [संज्ञा धर्म्मशीलता] धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला। धार्मिक।
धर्मसभा—संज्ञा स्त्री० न्यायालय। कचहरी। अदालत।
धर्मांशु—संज्ञा पुं० सूर्य्य।
धर्माचार्य—संज्ञा पुं० धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु।
धर्मात्मा—वि० धर्म करनेवाला। धार्मिक।
धर्मांध—वि० [स्त्री० धर्मान्धता] धर्म के नाम पर अंधा होनेवाला या विवेक खोने-वाला। अपने धर्म के नाम पर बुरे से बुरे काम करनेवाला।
धर्माधिकरण—संज्ञा पुं० न्यायालय।
धर्माधिकारी—संज्ञा पुं० १. धर्म-अधर्म की व्यवस्था देनेवाला। विचारक। न्यायाधीश। २. राजा की ओर से धर्मार्थ द्रव्य बाँटने आदि का प्रबंध करनेवाला। दानाध्यक्ष।
धर्माध्यक्ष—संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी"।
धर्मार्थ- क्रि० वि० धर्म या पुण्य के उद्देश्य से। परोपकार के लिए।
धर्मारण्य—संज्ञा पुं० पुण्य स्थान-विशेष। तपोवन। महर्षियों के आश्रम।
धर्मावतार—संज्ञा पुं० १. धर्म का अवतार। साक्षात् धर्मस्वरूप। अत्यंत धर्मात्मा या पुण्यात्मा। २. न्यायाधीश। ३. युधिष्ठिर।
धर्मासन—संज्ञा पुं० न्यायाधीश के बैठने का स्थान। विचार करने का आसन।
धर्मिणी—संज्ञा स्त्री० पत्नी।
वि० धर्म करनेवाली।
धर्मिष्ठ—वि० धार्मिक। पुण्यात्मा।
धर्मी—वि० [स्त्री० धर्म्मिणी] १. धार्मिक।

पुण्यात्मा। धर्म माननेवाला या उसके अनुसार कार्य करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार। गुण या र्म का आश्रय। २. धर्मात्मा मनुष्य।
धर्मोपदेश–संज्ञा पुं० धर्म की शिक्षा।
धर्मोपदेशक–संज्ञा पुं० धर्म का उपदेश देनेवाला।
धर्ष–संज्ञा पुं० १. दे० "धर्षण"। २. धृष्टता। ३. अधीरता। ४. नामर्द। नपुंसक। ५. दबाव। ६. अपमान। ७. सतीत्वहरण।
धर्षक–संज्ञा पुं० धर्षण करनेवाला।
धर्षण–संज्ञा पुं० [वि० धर्षणीय, धर्षित] १. अनादर। अपमान। २. दबोचना। आक्रमण। ३. दबाने या दमन करने का कार्य। ४. असहनशीलता। ५. स्त्री-प्रसंग। रति।
धर्षणा–संज्ञा स्त्री० १. अवज्ञा। अपमान। २. दबाने या हराने का कार्य। ३. सतीत्वहरण। ४. रति।
धर्षणी–संज्ञा स्त्री० कुलटा। व्यभिचारिणी।
धर्षित–वि० पराभूत। पराजित। हारा हुआ।
संज्ञा पुं० मैथुन।
धर्षी–वि० [स्त्री० धर्षिणी] १. धर्षण करनेवाला। २. आक्रमण करनेवाला। दबोचनेवाला। ३. हरानेवाला। ४. नीचा दिखाने या अपमान करनेवाला।
धव–संज्ञा पुं० १. एक जंगली पेड़, जिसके अंगों का ओषधि के रूप में व्यवहार होता है। २. पति। स्वामी। जैसे—माधव। ३. पुरुष। मर्द।
धवनी–संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।
†*वि० सफ़ेद। उजला।
धवर–संज्ञा पुं० एक पक्षी।
वि० उजला।
धवरा†–वि० [स्त्री० धवरी] उजला। सफ़ेद।
धवरी–वि० सफ़ेद।
संज्ञा स्त्री० सफ़ेद रंग की गाय।
धवल–वि० १. श्वेत। उजला। सफ़ेद। २. निर्मल। झकाझक। ३. सुन्दर।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद का एक भेद।
धवलगिरि–संज्ञा पुं० दे० "धवलागिरि"।
धवलता–संज्ञा स्त्री० उजलापन। उज्ज्वलता। सफ़ेदी।
धवलना–क्रि० स० उज्ज्वल करना। चमकाना। प्रकाशित करना।
धवला–वि० सफ़ेद। उजली।
संज्ञा स्त्री० सफ़ेद गाय।
धवलाई*†–संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी। उजलापन।
धवलागिरि–संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़ की एक प्रसिद्ध चोटी।
धवली–संज्ञा स्त्री० सफ़ेद गाय।
धवाना–क्रि० स० दौड़ाना।
धस–संज्ञा पुं० १. प्रवेश। २. डुबकी। गोता।
धसक–संज्ञा स्त्री० १. सूखी खाँसी। ठसक। २. डाह। ईर्ष्या। ३. धसकने की क्रिया या भाव।
धसकना–क्रि० अ० १. नीचे को धँसना या दब जाना। बैठ जाना। २. डाह करना। ईर्ष्या करना। ३. डरना।
धसना*–क्रि० अ० ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना। दब जाना।
‡क्रि० अ० दे० "धँसना"।
धसनि–संज्ञा स्त्री० दे० "धँसनि"।
धसमसाना*†–क्रि० अ० दे० "धँसना"।
धसान–संज्ञा स्त्री० १. दे० "धँसान"। २. बुंदेलखंड की एक नदी।
धसाना–क्रि० स० दे० "धँसाना"।
धाँगड़–संज्ञा पुं० एक हिन्दू जाति, जो खेती या मजदूरी (कुएँ, तालाब आदि खोदने का काम) करती है।
धाँधना–क्रि० स० १. बंद करना। भेड़ना। २. बहुत अधिक खा लेना।
धाँधल–संज्ञा स्त्री० १. धोखा। २. फरेब। दगा। ऊधम। उपद्रव। ३. अन्याय। मनमानी। ४. बहुत जल्दी।
धाँधलपन–संज्ञा पुं० १. धोखेबाजी। दगाबाजी। अन्याय। २. पाजीपन। शरारत।
धाँधली–संज्ञा स्त्री० १. मनमानी। अन्याय। २. धोखेबाजी। दगाबाजी। ३. बहुत अधिक जल्दी। धाँधल।
धाँस–संज्ञा स्त्री० सूखे तंबाकू या मिर्च आदि की तेज गंध।

धांसना–क्रि० अ० ठूंसना। खांसना (पशुओं का)।
धांसी–संज्ञा स्त्री० खांसी।
धा–वि० धारण करनेवाला। धारक।
प्रत्य० = तरह। भांति। जैसे–नवधा भक्ति।
संज्ञा पुं १. ब्रह्मा। २. बृहस्पति। ३. तबले का एक बोल। संगीत में "धैवत" शब्द या स्वर का संकेत। ध।
धाइ, धाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "धाय"। दाई।
धाउ–संज्ञा पुं० नाच का एक भेद।
धाऊ†–संज्ञा पुं० वह आदमी, जो आवश्यक कामों के लिए दौड़ाया जाय। हरकारा।
धाक–संज्ञा स्त्री० रोब। आतंक। प्रभाव। प्रताप।
मुहा०—धाक बँधना = रोब या दबदबा होना। आतंक छाना। धाक बाँधना = रोब जमाना।
धाकर–वि० वर्णसंकर जाति-विशेष। नीच जाति। दोगला।
धाग†–संज्ञा पुं० बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।
धाड़ा†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "डाकू"। २. दे० "दहाड़"। ३. दे० "ढाड़"। ४. डाकुओं का आक्रमण। ५. जत्था। झुंड। गरोह।
धाड़ना–क्रि० अ० दहाड़ना।
धात–संज्ञा स्त्री० दे० "धातु"।
धाता–संज्ञा पुं० १. विधाता। विधि। ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। महादेव। ४. शेषनाग। वि० १. पालनेवाला। पालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला।
धातु–संज्ञा स्त्री० १. खनिज पदार्थ। प्रसिद्ध धातुएँ ये हैं—सोना-चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा और राँगा। २. शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। शुक्र। वीर्य। वैद्यक में शरीरस्थ सात धातुएँ मानी गई हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।
संज्ञा पुं० १. भूत। तत्व। २. शब्द का मूल, जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं। जैसे—संस्कृत में भू, कृ, इत्यादि।
धातुक्षय–संज्ञा पुं० रोग, जिससे शरीर क्षीण हो जाता है।
धातुपुष्ट–वि० वीर्य को गाढ़ा करने की औषधि।
धातुप्रधान–संज्ञा पुं० वीर्य। शुक्र।
धातुमर्म–संज्ञा पुं० कच्ची धातु को साफ करना, जो ६४ कलाओं में है।
धातुवर्द्धक–वि० वीर्य्य को बढ़ानेवाला पदार्थ। वह वस्तु जिसका सेवन करने से वीर्य्य बढ़े।
धातुवाद–संज्ञा पुं० १. रसायन बनाने का काम। २. ताँबे से सोना बनाना। कीमियागरी। ३. चौंसठ कलाओं में से एक, जिसमें कच्ची धातु को साफ करते तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलग-अलग करते हैं।
धात्री–संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. वह स्त्री, जो किसी शिशु को दूध पिलावे और उसका लालन-पालन करे। धाय। दाई। ३. भगवती। ४. गंगा। ५. आँवला। ६. भूमि। पृथ्वी। ७. गाय। ८. आर्य्या छंद का एक भेद।
धात्रीविद्या–संज्ञा स्त्री० बच्चा जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।
धात्रेयी–संज्ञा स्त्री० धाय।
धात्वर्थ–संज्ञा पुं० धातु से निकलनेवाला अर्थ। मूल और पहला अर्थ।
धाधि–संज्ञा स्त्री० ज्वाला।
धान–संज्ञा पुं० अन्न-विशेष। शालि जिसमें से चावल निकलता है।
धानक–संज्ञा पुं० १. धनुष चलानेवाला। धनुर्द्धारी। तीरंदाज। कमनैत। २. रूई धुननेवाला। धुनिया। ३. एक पहाड़ी जाति।
धानकी–संज्ञा पुं० धनुर्द्धर।
धानपान–वि० दुबला-पतला। नाजुक।
धानमाली–संज्ञा पुं० किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।
धाना*†–क्रि० अ० १. तेजी से चलना। दौड़ना। भागना। २. कोशिश करना। प्रयत्न करना।
संज्ञा स्त्री० १. भूना हुआ जौ। २. भूना चावल। ३. धनिया। ४. अन्न का कण। ५. सत्तू। ६. अन्नमात्र।
धानी–संज्ञा स्त्री० १. धारण करनेवाला।

जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २. स्थान। जगह। जैसे—राजधानी। ३. हलका हरा रंग। ४. धनिया। भूना हुआ जौ या गेहूँ। दे० "धान्य"।
वि० हलके हरे रंग का।
धानुक–संज्ञा पुं० दे० "धानक"।
धानुष्क–संज्ञा पुं० दे० "धानक।"
धान्य–संज्ञा पुं० १. एक तौल। २. धनिया। ३. धान। ४. अन्नमात्र। ५. एक प्राचीन अस्त्र।
धाप–संज्ञा पुं० १. दूरी की एक नाप, जो प्रायः एक मील की और कहीं दो मील की मानी जाती है। २. लंबा-चौड़ा मैदान। ३. खेत की नाप।
संज्ञा स्त्री० जी भरना। तृप्ति। संतोष।
धापना*–क्रि० अ० १. संतुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। जी भरना। २. दौड़ना। भागना।
क्रि० स० संतुष्ट करना। तृप्त करना।
धाबा–संज्ञा पुं० १. छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २. कच्ची या पक्की रसोई मिलने का स्थान।
धा-भाई–संज्ञा पुं० दूधभाई।
धाम–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। २. देह। शरीर। ३. बागडोर। लगाम। ४. शोभा। ५. प्रभाव। ६. देवस्थान या पुण्यस्थान। जैसे—चारों धाम आदि। ७. जन्म। ८. विष्णु। ९. ज्योति। १०. ब्रह्म। ११. स्वर्ग।
धामक धूमक–संज्ञा स्त्री० दे० "धूमधाम"।
धामनिधि–संज्ञा पुं० सूर्य।
धामिन–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का साँप। २. एक वृक्ष।
धार्यँ–संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ के जोर से गिरने का शब्द। तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द।
धाय–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिए नियुक्त हो। धात्री। दाई।
संज्ञा पुं० धव का पेड़।
धार–संज्ञा पुं० १. जोर से पानी बरसना। जोर की वर्षा। २. इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल, जो वैद्यक और डाक्टरी में बहुत उपयोगी माना जाता है। ३. ऋण। उधार। कर्ज। ४. प्रांत। प्रदेश।
संज्ञा स्त्री० १. जलधारा। पानी आदि का गिरना या बहना। प्रवाह। २. पानी का सोता। चश्मा। ३. किसी हथियार का तेज सिरा। ४. किनारा। छोर। ५. सेना। फौज। ६. प्रखरता। तीक्ष्णता। ७. किसी प्रकार का आक्रमण। ८. ओर। तरफ। दिशा।
मुहा०—धार चढ़ाना=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना। धार देना=दूध देना। धार निकालना=दूध दुहना। धार मारना=पेशाब करना। धार बाँधना=यंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना।
धारक–वि० १. धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला। ३. ऋण लेनेवाला।
धारण–संज्ञा पुं० १. थामना। २. पहनना। ३. सेवन करना। ४. अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५. ऋण लेना। उधार लेना।
धारणा–संज्ञा स्त्री० १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. वह शक्ति, जिससे कोई बात मन में धारण की जाती है। बुद्धि। अक्ल। समझ। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार। ४. मर्य्यादा। ५. याद। स्मृति। ६. योग में मन की वह स्थिति, जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।
धारणीय–वि० धारण करने योग्य।
धारना*–क्रि० स० १. धारण करना। अपने ऊपर लेना। २. ऋण करना। उधार लेना।
क्रि० स० दे० "ढारना"।
धारांकुर–संज्ञा पुं० १. ओला। घन-उपल। बिनौरी २. एक तरह का गोंद।
धारा–संज्ञा स्त्री० १. रीति। व्यवहार। प्रणाली। २. कानून की दफा या नियम। भारतीय दण्डविधान के नियम। ३. घोड़े की चाल। घोड़े का चलना। ४. पानी आदि का बहाव। प्रवाह। धार। ५. गिरता या बहता हुआ कोई द्रव पदार्थ। ६. पानी का झरना।

सोता। चश्मा। ७. हथियार का तेज सिरा। बाढ़। ८. बहुत अधिक वर्षा। ९. समूह। झुंड। १०. लकीर। रेखा। ११. मालवा की प्राचीन राजधानी।

धाराधर—संज्ञा पुं० बादल।

धारावाहिक—वि० परम्परागत। क्रमागत। अविच्छिन्न। लगातार।

धारावाही—वि० धारा के समान बिना रोक-टोक बढ़ने या चलनेवाला।

धारासभा—संज्ञा स्त्री० दे० '''व्यवस्थापिका सभा''।

धारासम्पात—संज्ञा पुं० अधिक वृष्टि।

धारासार—संज्ञा पुं० भारी वर्षा। मूसलधार वर्षा।

धारि*—संज्ञा स्त्री० १. दे० "धार"। २. समूह। झुंड। ३. एक वर्णवृत्त।

धारिणी—संज्ञा स्त्री० १. धरणी। पृथ्वी। २. सेमर का वृक्ष। ३. देवताओं की १४ स्त्रियाँ शची, गार्गी आदि।

वि० धारण करनेवाली।

धारी—वि० [स्त्री० धारिणी] धारण करनेवाला। जो धारण करे।

संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त।

संज्ञा स्त्री० १. सेना। फौज। २. समूह। झुंड। ३. रेखा। लकीर।

धारीदार—वि० कपड़ा-विशेष, जिसमें लंबी-लंबी धारियाँ या लकीरें हों।

धारोष्ण—संज्ञा पुं० थन से निकला हुआ ताजा दूध, जो प्रायः कुछ गरम होता है और बहुत गुणकारक माना जाता है।

धार्तराष्ट्र—संज्ञा पुं० १. धृतराष्ट्र राजा के पुत्र दुर्योधन आदि। धृतराष्ट्र के वंशज। २. काले पैर और चोंच वाला हंस। कलहंस। ३. एक प्रकार का सर्प।

धार्मिक—वि० १. धर्मशील। धर्मात्मा। पुण्यात्मा। २. धर्म-संबंधी।

धार्मिकता—संज्ञा स्त्री० धार्मिक होने का भाव। धर्मशीलता।

धार्य—वि० ग्राह्य। धारणीय। धारण करने के योग्य।

धावक—संज्ञा पुं० हरकारा। दौड़नेवाला।

धावन—संज्ञा पुं० १. दौड़कर जाना। २. चिट्ठी या संदेश पहुँचानेवाला। दूत। हरकारा। ३. धोने या साफ करने का काम। ४. वह चीज, जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय।

धावना*†—क्रि० अ० जल्दी-जल्दी जाना। दौड़ना। भागना।

धावनि*†—संज्ञा स्त्री० १. जल्दी-जल्दी चलने की क्रिया या भाव। २. धावा। चढ़ाई।

धावनी—संज्ञा स्त्री० दूती। परिचारिका।

धावरी*†—संज्ञा स्त्री० १. सफेद गाय। २. धारी।

वि० सफेद।

धावा—संज्ञा पुं० १. आक्रमण। हमला। चढ़ाई। २. दौड़।

मुहा०—धावा मारना=चढ़ाई करना। आक्रमण करना। छापा मारना। जल्दी-जल्दी चलना।

धावित—वि० दौड़ता या भागता हुआ।

धाह*—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चीख। दुःख का शब्द। जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़।

धाही*†—संज्ञा स्त्री० दे० "धाय"।

धिंग—संज्ञा स्त्री० धींगाधींगी। ऊधम। उपद्रव।

धिंगा†—संज्ञा पुं० १. बदमाश। शरीर २. बेशर्म। निर्लज्ज।

धिंगाई—संज्ञा स्त्री० १. शरारत। ऊधम। बदमाशी। २. बेशर्मी।

धिंगाना—क्रि० स० धींगाधींगी करना। उपद्रव या ऊधम मचाना।

धिआ—संज्ञा स्त्री० दे० "धिय"।

धिआन*‡—संज्ञा पुं० दे० "ध्यान"।

धिआना†*—क्रि० स० दे० "ध्यावना"।

धिक्—अव्य० १. तिरस्कार, अनादर या घृणासूचक शब्द। लानत। फटकार। २. निंदा। शिकायत।

धिकना†—क्रि० अ० गरम होना। तप्त होना।

धिकाना†—क्रि० स० खूब गरम करना। तपाना।

धिक्कार—संज्ञा स्त्री० तिरस्कार, अनादर या घृणासूचक शब्द। फटकार। लानत।

धिक्कारना–क्रि० स० "धिक्" कहकर बहुत तिरस्कार करना। लानत-मलामत करना। फटकारना।

धिक्कारी–वि० धिक्कारा हुआ। धिक्कारने योग्य। अपमानित। निन्दित।

धिग*–अव्य० दे० "धिक्"।

धिय*–संज्ञा स्त्री० १. कन्या। बेटी। २. लड़की। बालिका।

धिरकार†–संज्ञा स्त्री० दे० "धिक्कार"।

धिरवना*†–क्रि० स० धमकाना।

धिराना*†–क्रि० स० डराना। धमकाना। भय दिखाना।

क्रि० अ० १. धीमा होना। मंद पड़ना। २. धैर्य्य धारण करना।

धिषणा–संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। २. स्तुति। ३. पृथ्वी। ४. स्थान।

धींग–संज्ञा पुं० हट्टा-कट्टा व्यक्ति। खूब तन्दुरुस्त।

वि० १. मजबूत। जोरावर। २. शरीर। बदमाश। ३. उपपति। जार। लगुआ।

धींगड़, धींगड़ा†–वि० (स्त्री० धींगड़ी) १. हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट। २. पाजी। बदमाश। दुष्ट। ३. दोगला। वर्णसंकर। ४. जार। उपपति।

धींगरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० धींगरी] १. हट्टा-कट्टा। मुसंड। मोटा-ताजा। २. शठ। बदमाश।

धींगा–संज्ञा पुं० बदमाश। उपद्रवी। पाजी।

धींगाधींगी–संज्ञा स्त्री० १. जबरदस्ती। २. मनमानी कार्रवाई। अनुचित कार्य। शरारत। बदमाशी।

धींगामुश्ती–संज्ञा स्त्री० दे० "धींगाधींगी"।

धींद्रिय–संज्ञा स्त्री० वह इंद्रिय, जिससे किसी बात का ज्ञान हो। जैसे—मन, आँख, कान। ज्ञानेन्द्रिय।

धीवर–संज्ञा पुं० दे० "धीमर"।

धी–संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। अक्ल। २. मन। ३. कर्म्म। ४. दुहिता। लड़की। बेटी।

धीजना–क्रि० स० १. ग्रहण करना। स्वीकार करना। अंगीकार करना। २. धीरज धरना। धैर्य धारण करना। ३. प्रसन्न या संतुष्ट होना।

धीति–संज्ञा स्त्री० १. प्यास। २. तृष्णा। ३. प्रतीति। विश्वास।

धीम*†–वि० दे० "धीमा"।

धीमर–संज्ञा पुं० दे० "धीवर"।

धीमा–वि० [स्त्री० धीमी] १. जिसकी चाल तेज न हो। सुस्त। आलसी। शिथिल। २. धीर। जो उग्र या तीव्र न हो। ३. नीचा स्वर।

धीमान्–संज्ञा पुं० [स्त्री० धीमती] १. बृहस्पति। २. बुद्धिमान् व्यक्ति।

धीय†–संज्ञा स्त्री० दे० "धी"।

धीया–संज्ञा स्त्री० लड़की। दुहिता।

धीर–वि० १. जिसमें धैर्य्य हो। दृढ़ और शांत चित्तवाला। अचंचल। स्थिरमति। २. बलवान्। ताकतवर। ३. गंभीर। विनीत। नम्र। ४. मंद। धीमा।

*†संज्ञा पुं० १. धैर्य्य। धीरज। ढारस। २. संतोष। सब्र।

धीरज†*–संज्ञा पुं० दे० "धैर्य्य"।

धीरता–संज्ञा स्त्री० १. चित्त की स्थिरता। मन की दृढ़ता। धैर्य्य। २. स्थिरता। संतोष। सब्र।

धीरललित–संज्ञा पुं० अति साहसी नायक। इस शब्द का प्रयोग नाटक में किया जाता है।

धीरशांत–संज्ञा पुं० सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् नायक।

धीरा–संज्ञा स्त्री० नायिका-विशेष। मध्या और प्रौढ़ा नायिकाओं का धीरा एक भेद है। मानिनी। प्रगल्भा। वह नायिका, जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकाशित करे।

वि० मंद। धीमा।

संज्ञा पुं० धीरज। धैर्य्य।

धीराधीरा–संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से क्रोध प्रकट करे।

धीरिया–संज्ञा स्त्री० कन्या। दुहिता। बेटी।

धीरे–क्रि० वि० १. आहिस्ते से। धीमी

गति से। २. इस प्रकार, जिसमें कोई सुन या देख न सके। चुपके से ।

धीरोदात्त–संज्ञा पुं० १. नायक-विशेष, जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, साहसी, बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो। २. वीररस-प्रधान नाटक का मुख्य नायक।

धीरोद्धत–संज्ञा पुं० वह नायक जो बहुत साहसी तथा वीर हो और सदा अपने ही गुणों का बखान किया करे ।

*संज्ञा पुं० दे० "धैर्य" ।

धीवर–संज्ञा पुं० [स्त्री० धीवरी] एक जाति, जो प्रायः मछली पकड़ने और बेचने का काम करती है। मछुआ। मल्लाह।

धुंआं–संज्ञा पुं० १. सुलगती या जलती हुई चीजों से निकलकर हवा में मिलनेवाली भाप। २. भारी समूह। ३. घटाटोप। दे० "धुआं।"

धुंई–संज्ञा स्त्री० धूनी ।

कार–संज्ञा स्त्री० जोर का शब्द। गरज। गड़गड़ाहट ।

गार–संज्ञा स्त्री० बघार। तड़का। छौंक।

गारना–क्रि० स० बघारना। छौंकना। तड़का देना।

धुंजा†–वि० धुंधली। मंद दृष्टि।

धुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।

धुंध–संज्ञा स्त्री० १. बहुत अँधेरा। हवा में उड़ती हुई धूल। २. कुहरा। ३. चौंधलाई। आँख का एक रोग, जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती।

धुंधकार–संज्ञा पुं० १. धुंकार। गरज। गड़गड़ाहट। २. अंधकार ।

धुंधमार–संज्ञा पुं० दे० "धुंधुमार" ।

धुंधर†–संज्ञा स्त्री० १. हवा में उड़ती हुई धूल। २. अँधेरा। तारीकी।

धुंधराना–क्रि० अ० दे० "धुंधलाना"।

धुंधला–वि० १. कुछ-कुछ अँधेरा। २. कुछ कुछ काला। धुँएँ के रंग का। ३. जो साफ दिखाई न दे। अस्पष्ट।

धुंधलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंधलापन"।

धुंधलाना–क्रि० अ० धुंधला होना। धुंधला पड़ना ।

धुंधलापन–संज्ञा पुं० १. धुंधले या अस्पष्ट होने का भाव। २. कम दिखाई देने का भाव ।

धुंधु–संज्ञा पुं० एक राक्षस। यह मधु राक्षस का पुत्र था। जब यह साँस लेता था तो उसके साथ धुँआँ और अंगारे निकलते थे और भूकंप होता था।

धुंधुकार–संज्ञा पुं० १. अंधकार। अँधेरा। २. धुंधलापन । ३. नगाड़े का शब्द। धुंकार।

धुंधुमार–संज्ञा पुं० १. राजा त्रिशंकु का पुत्र। २. कुवलयाश्व, जिसने धुंधु नामक राक्षस को मारा था।

धुंधुरि*†–संज्ञा स्त्री० गर्द-गुबार या धुँएँ के कारण होनेवाला अँधेरा ।

धुंधरित–वि० १. धुंधला किया हुआ। धूमिल। २. दृष्टिहीन। धुंधली दृष्टिवाला।

धुंधवाना*†–क्रि० अ० धुआँ देना। धुआँ दे-देकर जलना।

धुंधेरी–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंधुरि"।

धुंधेला–वि० १. छली। कपटी। २. हठी। दुराग्रही ।

धुअ*–संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

धुआँ–संज्ञा पुं० १. सुलगती या जलती हुई चीजों से निकलनेवाली भाप। धूम। २. भारी समूह। घटाटोप। ३. धुर्रा। धज्जी। **मुहा०**—धुएँ का धौरहर–थोड़े ही काल में नष्ट होनेवाली वस्तु या आयोजन। धुएं के बादल उड़ाना–भारी गप हाँकना। धुआँ निकालना या काढ़ना=बढ़-बढ़कर बातें कहना।

धुआँकश–संज्ञा पुं० दे० "धूमपोत"। भाप के जोर से चलनेवाली नाव या जहाज। अगिनबोट। स्टीमर।

धुआँकस–संज्ञा पुं० मकान में बना हुआ वह छेद या नली, जिससे रसोई बनाने का धुआँ बाहर निकलता है।

धुआँधार–वि० १. बड़े जोर का। प्रचंड। घोर। २. धुएँ से भरा। ३. गहरे रंग का। भड़कीला। भव्य। ४. काला। क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत जोर से।

धुआँना–क्रि० अ० अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध बिगड़ जाना।
धुआँयध–वि० धुएँ की तरह महकनेवाला। संज्ञा स्त्री० १. अन्न न पचने के कारण आनेवाली डकार। २. धूम।
धुआँस–संज्ञा स्त्री० दे० "धुवाँस"।
धुकड़-पुकड़–संज्ञा पुं० १. भय आदि से होनेवाली चित्त की अस्थिरता। घबराहट। २. आगा-पीछा। पसोपेश।
धुकधुकी–संज्ञा स्त्री० १. धड़कन। घबराहट। कंप। २. डर। भय। खौफ। ३. गले में पहनने का एक गहना।
धुकना*†–क्रि० अ० १. नीचे की ओर ढलना। झुकना। नवना। २. गिर पड़ना। ३. झपटना। टूट पड़ना।
धुकनी–संज्ञा स्त्री० धूनी। धौंकनी।
धुकान†–संज्ञा स्त्री० घोर शब्द। गड़गड़ाहट का शब्द।
धुकाना*†–क्रि० स० १. झुकाना। नवाना। गिराना। २. ढकेलना। पछाड़ना। पटकना। ३. धूनी देना।
धुकार, धुकारी–संज्ञा स्त्री० नगाड़े का शब्द।
धुक्कना*†–क्रि० अ० दे० "धुकना"।
धुज, धुजा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।
धुजिनी*†–संज्ञा स्त्री० सेना। फौज।
धुड़ंगा*†–वि० जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो।
धुतकार–संज्ञा स्त्री० दे० "दुतकार"।
धुताई †–संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्त्तता"।
धुधुकार–संज्ञा स्त्री० १. धू धू शब्द का शोर। २. घोर शब्द। गरज।
धुधुकारी–संज्ञा स्त्री० दे० "धुधुकार"।
धुन–संज्ञा स्त्री० १. लगन। २. मन की तरंग। मौज। मनोरथ। ३. चसका। ४. सोच-विचार। चिंता। खयाल। ५. गीत गाने का ढंग। गाने का तर्ज। ६. दे० "ध्वनि"।
यौ०–धुन का पक्का=वह जो आरंभ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े।
धुनकना–क्रि० स० दे० "धुनना"।
धुनकी–संज्ञा स्त्री० १. धनुष के आकार का धुनियों का औजार, जिससे वे रूई धुनते हैं। पिंजा। फटका २. लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।
धुनना–क्रि० स० १. धुनकी से रूई साफ करना, जिसमें उसके बिनौले निकल जायँ। २. खूब मारना-पीटना। ३. बार-बार कहना। कहते ही जाना। ४. लगातार कोई काम करते रहना।
धुनवाना–क्रि० स० धुनने का काम दूसरे से कराना।
धुनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वनि"।
धुनियाँ–संज्ञा पुं० रूई धुनने का काम करने वाला। तूमनेवाला। बेहना।
धुनिहाव–संज्ञा पुं० हड्डी की पीड़ा। शरीर की पीड़ा।
धुनी–संज्ञा स्त्री० नदी।
धुनीनाथ–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।
धुनेहा†–संज्ञा पुं० दे० "धुनियाँ"।
धुन्धुमार–संज्ञा पुं० १. गोलमाल। कुहराम। कोलाहल। २. वीर बहूटी ३. गृहधूम।
धुपना†–क्रि० अ० दे० "धुलना"।
धुबला†–संज्ञा पुं० लँहगा। घाँघरा। स्त्रियों के पहनने का सिला हुआ एक वस्त्र, जिसे वे कमर पर कसकर पहनती हैं।
धुमला†–वि० दे० "धूमिल।" संज्ञा पुं० अंधा।
धुमिला–वि० दे० "धूमिल"।
धुमलाई, धुमिलाई–संज्ञा स्त्री० अँधियारा। अंधेरा। धुँधलापन। काला पड़ना। धूमिल होना।
धुमिलाना*–क्रि० अ० धुँधला पड़ना। धूमिल होना। काला पड़ना।
धुमैला–संज्ञा पुं० धुएँ के रंग का। अस्वच्छ।
धुरंधर–वि० १. भार उठानेवाला। २. जो सबमें बहुत बड़ा, भारी या बली हो। ३. श्रेष्ठ। प्रधान नेता। अगुआ। प्रकांड।
धुर–संज्ञा पुं० १. गाड़ी या हल खींचने के समय बैलों के कंधे पर रखा जानेवाला जुवा। २. गाड़ी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। ३. शीर्ष या प्रधान स्थान। ४. भार। बोझ। ५. जमीन की एक माप, जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होती है। बिस्वाँसी आदि। ६. आरम्भ।

७. अन्त। किनारा। छोर। ८. सीमा। हद। ९. मूल। १०. जड़। धुरी। ११. ध्रुव।
वि० पक्का। दृढ़।
अव्य० १. बिलकुल ठीक। सटीक। सीधे। २. एकदम दूर। बिलकुल दूर।
मुहा०—धुर सिर से=बिलकुल शुरू से।

धुरजटी*—संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटी"।

धुरना*†—क्रि० स० १. पीटना। मारना। २. बजाना।

धुरपद—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुपद"।

धुरवा*—संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

धुरव्य—संज्ञा पुं० मेघ। बादल।

धुरसा—संज्ञा पुं० दे० 'धुस्सा।" ऊन की लोई। ऊनी कपड़ा-विशेष।

धुरा—संज्ञा पुं० [संज्ञा स्त्री० धुरी] गाड़ी में लकड़ी या लोहे का डंडा, जिसके चारों ओर पहिया घूमता है।

धुरियाना†—क्रि० स० १. किसी वस्तु पर धूल डालना। २. किसी ऐब को युक्ति से दबा देना।
क्रि० अ० १. किसी चीज का धूल से ढँक जाना। २. ऐब का दबाया जाना।

धुरी—संज्ञा स्त्री० छोटा धुरा। दे० "धुरा।"

धुरीराष्ट्र—संज्ञा पुं० द्वितीय महायुद्ध के समय जर्मनी, इटली और जापान का गुट।

धुरीण—वि० १. बोझ सँभालनेवाला। २. मुख्य। प्रधान। ३. धुरंधर।

धुरेंडी—संज्ञा स्त्री० दे० "धुलेंडी।"

धुर्य्य—संज्ञा पुं० १. श्री विष्णु। २. बैल।
वि० श्रेष्ठ।

धुरेटना*†—क्रि० स० धूल से लपेटना। धूल लगाना।

धुर्रा—संज्ञा पुं० १. किसी चीज का अत्यंत छोटा भाग। कण। जर्रा। धूल। २. छिन्न-भिन्न कर डालना। ३. बहुत अधिक मारना।
मुहा०—धुर्रे उड़ाना=किसी वस्तु के अत्यंत छोटे-छोटे टुकड़े कर डालना।

धुलना—क्रि० अ० साफ किया जाना। धोया जाना।

धुलवाना—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

धुलाई—संज्ञा स्त्री० धोने का काम या धोने की मजदूरी।

धुलाना—क्रि० स० धोने का काम दूसरे से कराना। धुलवाना।

धुलेंडी—संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक त्योहार, जो होली के दूसरे दिन होता है। इस दिन लोग दूसरों पर धूल तथा अबीर-गुलाल डालते हैं।

धुव*†—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

धुवाँ—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

धुवाँस—संज्ञा स्त्री० उरद का आटा, जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है।

धुवाना*—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

धुस्स—संज्ञा पुं० १. मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर। टीला। २. नदी का बाँध। बंद।

धुस्सा—संज्ञा पुं० मोटे ऊन की लोई।

धूँध—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।

धूँधर*—वि० दे० "धुँधला"।

धू*—वि० स्थिर। अचल।
संज्ञा पुं० १. ध्रुव तारा। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र ध्रुव, जो भगवान् का भक्त था। ३. धुरी।

धूआँ—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

धूई—संज्ञा स्त्री० धूनी।

धूकना*—क्रि० अ० दे० "ढुकना"।

धूजट*—संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटि"। शिव।

धूजना—क्रि० अ० हिलना। काँपना।

धूत—वि० १. हिलता या काँपता हुआ। थरथराता हुआ। २. धमकाया गया। ३. त्यक्त। छोड़ा हुआ।
†*वि० धूर्त्त। दगाबाज।

धूतना*—क्रि० स० धूर्त्तता करना। धोखा देना। ठगना।

धूती—संज्ञा स्त्री० एक चिड़िया।

धूधू—संज्ञा पुं० आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।

धूनना*—क्रि० स० किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना। धूनी देना।
क्रि० स० दे० "धुनना"।

धूना—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बड़ा पेड़, जिसका गोंद धूप की तरह जलाया जाता

है। २. आग में जलाने की सुगन्धित वस्तु।

धूनी—संज्ञा स्त्री० १. गुग्गुल, लोबान आदि गंध-द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। धूप। २. वह आग, जिसे साधु लोग ठंड से बचने या तपस्या के लिए जलाते हैं।

मुहा०—धूनी जगाना या लगाना=१. साधुओं का अपने सामने आग जलाना। २. शरीर तपाना। तप करना। ३. साधु होना। विरक्त होना। धूनी रमाना=१. सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना। २. तप करना। साधु या विरक्त हो जाना। धूनी देना=गंध-मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना।

धूप—संज्ञा पुं० पूजा या सुगंध के लिए गंध-द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। सुगंधित धूम।

संज्ञा स्त्री० १. एक गंधद्रव्य, जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है। जैसे—कस्तूरी, अगर की लकड़ी। २. कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई धूप। ३. सूर्य्य का प्रकाश और ताप। घाम।

मुहा०—धूप खाना=ऐसी स्थिति में होना कि धूप ऊपर पड़े। धूप चढ़ना या निकलना=सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना। दिन चढ़ना। धूप दिखाना=धूप में रखना। धूप लगने देना। धूप में बाल या चूँड़ा सफेद करना=बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत-सा भाग बिता देना।

धूपघड़ी—संज्ञा स्त्री० एक यंत्र, जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है। इसमें एक गोल चक्कर के बीच में एक कील होती है। धूप में उसी कील की परछाँही से समय जाना जाता है।

धूपछाँह—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा, जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा।

मुहा०—धूप और छाँह=सुख और दुख।

धूपदान—संज्ञा पुं० धूप या गंधद्रव्य जलाने का पात्र। अगियारी।

धूपदानी—संज्ञा स्त्री० छोटा धूपदान।

धूपना*†—क्रि० अ० धूप देना। गंधद्रव्य जलाना।

क्रि० स० दौड़ना। हैरान होना। जैसे—दौड़ना-धूपना।

धूपबत्ती—संज्ञा स्त्री० मसाला लगी हुई सींक या बत्ती, जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूम—संज्ञा पुं० १. धुआँ। २. अजीर्ण या अपच में उठनेवाली डकार। ३. धूमकेतु। ४. उल्कापात।

संज्ञा स्त्री० १ कोलाहल। रेलपेल। हलचल। उपद्रव। ऊधम। २. ठाट-बाट। समारोह। भारी आयोजन। धूमधाम। ३. शोहरत। प्रसिद्धि।

धूमक धैया—संज्ञा स्त्री० उछलकूद और हल्ला-गुल्ला। उपद्रव। उत्पात।

धूमकेतु—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. पुच्छल तारा। ३. शिव। केतुग्रह।

धूम-धड़क्का—संज्ञा पुं० दे० "धूमधाम"।

धूमधर—संज्ञा पुं० आग।

धूमधाम—संज्ञा स्त्री० भारी तैयारी। ठाट-बाट। समारोह।

धूमपान—संज्ञा पुं० १. तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि पीने का कार्य्य। २. विशेष प्रकार का धुआँ, जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता है।

धूमपोत—संज्ञा पुं० भाप के जोर से चलने वाली नाव या जहाज। स्टीमर।

धूमर*†—वि० दे० "धूमल"।

धूमल, धूमला—वि० [स्त्री० धूमली] १. धूएँ के रंग का। धुँधला। मटमैला। २. मन्दकान्तिवाला।

धूमाभ—वि० धुएँ के रंग का।

धूमावती—संज्ञा स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक देवी। पार्वती।

धूमिल†*—वि० १. धुएँ के रंग का। २. धुँधला।

धूम्र—वि० धुएँ के रंग का।

संज्ञा पुं० १. ललाई लिये काला रंग। २. शिलारस नाम का गंधद्रव्य। ३. एक असुर। ४. शिव। महादेव। ५. मेढ़ा।

धूम्रवर्ण–वि० धुएँ के रंग का।
धूर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।
संज्ञा पुं० एक बिस्वे का बीसवाँ भाग। बिस्वाँसी ।
धूरजटी†*–संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटि"।
धूरधान–संज्ञा पुं० धूल का ढेर। धूलराशि।
धूरधानी–संज्ञा स्त्री० १. धूल की ढेरी। धूल-राशि। २. ध्वंस। विनाश। ३. पथर-कला। बंदूक।
धूरा–संज्ञा पुं० १. धूल। गर्द। २. चूर्ण। बुकनी। चूरा।
मुहा०—धूरा करना या देना=शीत से अंग सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना।
धूरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।
धूर्जटि–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
धूर्त–वि० धोखेबाज। चालबाज। दगाबाज। छली। वंचक।
संज्ञा पुं० साहित्य में शठ नायक का एक भेद।
धूर्तता–संज्ञा स्त्री० चालबाजी। धोखेबाजी। वंचकता। चालाकी।
धूल–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का महीन चूर। रेणु। रज। गर्द। २. धूल के समान तुच्छ वस्तु।
मुहा०–(कहीं) धूल उड़ना=१. बरबादी होना। तबाही आना। २. सन्नाटा होना। रौनक न रहना। (किसी की) धूल उड़ना=१. दोषों और त्रुटियों का उधेड़ा जाना। बदनामी होना। २. उपहास होना। दिल्लगी उडना। किसी की धूल उड़ाना=१. बुराइयों को प्रकट करना। बदनामी करना। २ उपहास करना। हँसी करना। धूल की रस्सी बटना=१. अन-होनी बात के पीछे पड़ना। २. केवल धूर्तता से काम निकालना। धूल चाटना=बहुत विनती करना। (किसी बात पर) धूल डालना=फैलने न देना। दबाना। धूल फाँकना=मारा-मारा फिरना। धूल में मिलना=नष्ट होना। चौपट होना। पैर की धूल=अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति। सिर पर धूल डालना=पछताना। सिर धुनना। धूल समझना=अत्यंत तुच्छ समझना।
धूला–संज्ञा पुं० टुकड़ा। खंड।
धूलि–संज्ञा स्त्री० धूल। गर्द।
धूवाँ–संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।
धूसर–वि० १. धूल के रंग का। खाकी। मटमैला। २. धूल लगा हुआ। जिसमें धूल लिपटी हो। धूल से भरा।
यौ०—धूलि-धूसर=धूल से भरा हुआ।
धूसरा–वि० दे० "धूसर"।
धूसरित–वि० १. धूल से मटमैला हुआ। २. धूल से भरा या सना हुआ।
धूसला–वि० दे० "धूसर"।
धृक, धृग*–अव्य० दे० "धिक्"।
धृत–वि० १. धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. धारण किया हुआ। ग्रहण किया हुआ। ३. स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४. पतित।
धृतराष्ट्र–संज्ञा पुं० १. एक कौरव राजा, जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य्य के पुत्र थे। २. वह, जिसका राज्य दृढ़ हो। ३. वह देश, जो अच्छे राजा के शासन में हो।
धृति–संज्ञा स्त्री० १. मन की दृढ़ता। धैर्य्य। धीरता। २. धरने या पकड़ने की क्रिया। धारणा। ३. स्थिरता। ४. सोलह मातृ-काओं में से एक। ५. अठारह अक्षरों के वृत्तों की संज्ञा। ६. दक्ष की एक कन्या और धर्म की पत्नी।
धृतिमान्–संज्ञा पुं० स्थिरचित्त। धैर्यावलम्बी। धीर।
धृष्ट–वि० [स्त्री० धृष्टा] १. संकोच या लज्जा न करनेवाला। निर्लज्ज। बेहया। २. ढीठ। गुस्ताख। उद्धत। साहित्य में चार प्रकार के नायकों में से एक।
धृष्टता–संज्ञा स्त्री० १. अनुचित साहस। ढिठाई। गुस्ताखी। २. निर्लज्जता। बेहयाई।
धृष्टद्युम्न–संज्ञा पुं० राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई। कुरुक्षेत्र के युद्ध में जब द्रोणाचार्य्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की झूठी खबर सुनकर योग में मग्न हुए, तब इसी ने उनका सिर काटा था। युद्ध की अन्तिम रात को अश्वत्थामा ने पाण्डवों की छावनी में चुपके से घुसकर अपने पितृ-घाती धृष्टद्युम्न को मार डाला था।

धृष्णु—वि० १. धृष्ट। ढीठ। प्रगल्भ। २ साहसी। ३. निर्लज्ज।
धेंगामुष्टि—संज्ञा स्त्री० मुक्का-मुक्की। घुस्सा-घुस्सी। घुस्समघुस्सा।
धेन—संज्ञा स्त्री० दे० "धेनु"।
धेनमुख—संज्ञा पुं० गोमुख नामक बाजा। नरसिंहा।
धेनु—संज्ञा स्त्री० १. गाय। २. वह गाय, जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हों। दुधार गाय।
धेनुक—संज्ञा पुं० एक राक्षस, जिसे कृष्ण के बड़े भाई बलराम ने मारा था।
धेनुमती—संज्ञा स्त्री० एक नदी का नाम। गोमती।
धेय—वि० १. धारण करने योग्य। २. पोषण करने योग्य। पोष्य।
धेर—संज्ञा पुं० एक अनार्य्य जाति।
धेरिया, धेरी—संज्ञा पुं० लड़की। पुत्री।
धेलचा, धेला†—संज्ञा पुं० दे० "अधेला"।
धेली†—संज्ञा स्त्री० अठन्नी। आधा रुपया।
धेंताल†—वि० १. चपल। चंचल। २. उजड्ड। उद्धत।
धैना—संज्ञा स्त्री० १. टेव। आदत। स्वभाव। २. काम-धंधा।
धैर्य्य—संज्ञा पुं० १. संकट, बाधा आदि उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता। धीरता। धीरज। २. उतावला या आतुर न होने का भाव।
धैवत—संज्ञा पुं० संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर, जो मध्यम के बाद का है।
धोंधा—संज्ञा पुं० १. लोंदा। बेडौल पिंड। २. भद्दा।
मुहा०—मिट्टी का धोंधा=१. मूर्ख। ना-समझ। जड़। २. निकम्मा। आलसी।
धोई—संज्ञा स्त्री० छिलका निकाली हुई उरद या मूँग की दाल।
*संज्ञा पुं० राजगीर। थवई।
धोकड़—वि० हट्टा-कट्टा। मुस्टंडा। बलवान्।
धोका—संज्ञा पुं० दे० "धोखा"।
धोखा—संज्ञा पुं० १. छल। कपट। धूर्त्तता। चालाकी। ठगी। दगा। झूठा व्यवहार। २. ३. भूल। भ्रम। मिथ्या-प्रतीति। प्रवंचना। ४. भ्रम में डालने की वस्तु। माया। ५. बेसन का बना हुआ खाने का एक तरह का पदार्थ।
मुहा०—धोखा खाना=ठगा जाना। धोखा देना=१. छलना। २. भ्रम में डालना। ३. भ्रम में डालकर हानि पहुँचाना। धोखे की टट्टी=१. दिखाऊ चीज। २. भ्रम में डालने-वाली चीज। ३. वह पर्दा या टट्टी, जिसकी ओट में शिकारी शिकार खेलते हैं। धोखा खड़ा करना=धोखा देने के लिए आडम्बर करना। धोखे में या धोखे से=जान बूझकर नहीं, भूल से। धोखा उठाना=धोखे में हानि या कष्ट उठाना।
धोखेबाज—वि० धोखा देनेवाला। धूर्त्त। दगाबाज। छली। कपटी।
धोखेबाजी—संज्ञा स्त्री० छल। कपट। धूर्त्तता।
धोटा—संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।
धोती—संज्ञा स्त्री० शरीर ढकने के लिए कमर में लपेटकर पहनने का वस्त्र, जो नव-दस हाथ लम्बा होता है।
मुहा०—धोती ढीली होना=१. डर जाना। २. भयभीत होना। ३. डरकर भागना।
धोना—क्रि० स० १. मैल दूर करना। २. पानी से साफ करना। २. दूर करना। हटाना। मिटाना।
मुहा०—(किसी वस्तु से) हाथ धोना=१. खो देना। गँवा देना। २. वंचित रहना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=सब छोड़कर लग जाना। धो बहाना=न रहने देना।
धोप†*—संज्ञा स्त्री० तलवार। खड्ग।
धोब—संज्ञा पुं० धोए जाने की क्रिया। धुलावट। धुले कपड़े की खेप। एक बार में जितना कपड़ा धुलकर धोबी के यहाँ से आये।
धोबिन—संज्ञा स्त्री० १. धोबी जाति की स्त्री। २. एक जल-पक्षी।
धोबी—संज्ञा पुं० [स्त्री० धोबिन] मैले कपड़ों को धो और साफ करके अपनी जीविका चलानेवाला। कपड़े धोनेवाली जाति। कपड़ा धोनेवाला। रजक।
मुहा०—धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का=व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा आदमी।

धोम—संज्ञा पुं० धूम्र। धुआँ।
धोर—संज्ञा पुं० १. पास। निकटता। २. किनारा। बाढ़।
धोरण—संज्ञा पुं० सवारी। दौड़। सरपट।
धोरी—संज्ञा पुं० १. धुरे को उठानेवाला। भार उठानेवाला। २. बैल। वृषभ। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार। ४. श्रेष्ठ पुरुष। बड़ा आदमी।
धोरे†*—क्रि० वि० पास। निकट।
धोवती—संज्ञा स्त्री० धोती।
धोवन—संज्ञा स्त्री० १. धोने का भाव। साफ करने की क्रिया। २. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।
धोवना*—क्रि० स० दे० "धोना"।
धोवा*—संज्ञा पुं० १. धोवन। २. जल। अर्क।
धोवाना*†—क्रि० स० धुलाना। क्रि० अ० धुलना। धोया जाना।
धोसा—संज्ञा पुं० गुड़ की पण्डी। भेली।
धौं †—अव्य० १. जिज्ञासा और संशय प्रकट करनेवाला एक अव्यय। न जाने। मालूम नहीं। तो। २. संदेहसूचक वाक्यों में पहले लगनेवाला शब्द। कि। या। अथवा। ३. किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्न-वाक्य का आरंभ-सूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। ४. विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के लिए आनेवाला एक शब्द।
धौंक—संज्ञा स्त्री० १. आग दहकाने के लिए धौंकनी को दबाकर निकाली हुई जोर की हवा। आग की लपट की गरमी। २. गरमी, लू या धूप से उत्पन्न ताप। ३. साँस-सम्बन्धी एक बीमारी।
धौंकना—क्रि० स० १. फूंकना। आग दहकाने के लिए भाथी से हवा पहुँचाना। २. ऊपर डालना। भार डालना या सहन कराना। ३. दंड आदि लगाना।
धौंकनी—संज्ञा स्त्री० १. भाथी। २. चमड़े का एक यंत्र, जिससे लोहार और सोनार आदि आग फूंकते हैं।
धौंका†—संज्ञा स्त्री० लू।

फा० ५१

धौंकिया—संज्ञा पुं० १. आग फूंकनेवाला। भाथी चलानेवाला। २. टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करनेवाले भाथी लेकर घूमनेवाले व्यापारी।
धौंकी—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।
धौंज—संज्ञा स्त्री० १. दौड़-धूप। घबराहट। हैरानी। उद्विग्नता। २. विवेचना। परिशीलन।
धौंजन—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंज"।
धौंजना†—क्रि० स० दौड़ना-धूपना। दौड़-धूप करना। पैरों से रौंदना।
धौंताल—वि० १. जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २. फुरतीला। चुस्त। चालाक। ३. साहसी। दृढ़। ४. हट्टा-कट्टा। मजबूत। ५. हेकड़। ६. निपुण। पटु।
धौंधौमार—संज्ञा स्त्री० उतावली। जल्दबाजी। हड़बड़ी।
धौंस—संज्ञा स्त्री० १. डाँट। डपट। धमकी। घुड़की। २. धाक। अधिकार। रोब-दाब। ३. झाँसा-पट्टी। धोखा। छल।
धौंसना—क्रि० स० १. दबाना। दमन करना। २. धमकी या घुड़की देना। डराना। ३. मारना-पीटना।
धौंस-पट्टी—संज्ञा स्त्री० भुलावा। झाँसा-पट्टी। दम-दिलासा।
धौंसा—संज्ञा पुं० १. डंका। बड़ा नगाड़ा। २. सामर्थ्य। शक्ति।
धौंसिया—संज्ञा पुं० १. धौंस से काम चलानेवाला। २. झाँसा-पट्टी देनेवाला। ३. नगारा बजानेवाला।
धौ—संज्ञा पुं० दे० "धव"। वृक्ष-विशेष।
धौत—वि० १. धोया हुआ। साफ। २. उजला। सफेद। ३. नहाया हुआ। संज्ञा पुं० रूपा। चाँदी।
धौति—संज्ञा स्त्री० १. शुद्ध। २. हठयोग की एक क्रिया, जो शरीर को भीतर से शुद्ध करने के लिए की जाती है। ३. आँतें साफ करने की योग की एक क्रिया, जिसमें कपड़े की एक धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं; फिर पानी पीकर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं।

धौतिक्रिया–संज्ञा स्त्री० दे० "धौति।"

धौम्य–संज्ञा पुं० १. एक ऋषि, जो पांडवों के पुरोहित थे। २. महाभारत के अनुसार एक प्रसिद्ध शिवभक्त ऋषि। ३. एक ऋषि, जो तारा-रूप में पश्चिम दिशा में स्थित हैं।

धौरहर*–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।

धौरा–वि० [स्त्री० धौरी] १. श्वेत। सफेद। उजला। २. सफेद रंग का बैल। ३. धौं का पेड़। ४. एक प्रकार का पंडुक।

धौराहर–संज्ञा पुं० धरहरा। मीनार। बुर्ज। ऊँची अटारी।

धौरिय*–संज्ञा पुं० बैल।

धौरी–संज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। कपिला। २. एक प्रकार की चिड़िया।

धौरे–क्रि० वि० दे० "धोरे"।

धौल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चाँटा। थप्पड़। धप्पा। २. नुकसान। हानि। टोटा।
*वि० उजला। सफेद।
संज्ञा पुं० धरहरा। धौराहर।

धौल-धक्का–संज्ञा पुं० आघात। चपेट।

धौल-धप्पड़–संज्ञा पुं० १. मार-पीट। धक्का-मुक्का। २. उपद्रव।

धौलहर*–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।

धौला–वि० [स्त्री० धौली] सफेद। उजला।

धौलाई*–संज्ञा स्त्री० सफेदी। उजलापन।

धौलागिरि–संज्ञा पुं० दे० "धवलगिरि"।

ध्यात–वि० विचारा हुआ। ध्यान किया हुआ। चिंतित।

ध्यातव्य–संज्ञा पुं० ध्यान के योग्य। ध्यान देने योग्य। अत्यन्त प्रिय या उपयोगी।

ध्याता–वि० [स्त्री० ध्यात्री] १. ध्यान करने-वाला। २. विचार करनेवाला।

ध्यान–संज्ञा पुं० १. सोच-विचार। चिंतन। मनन। २. भावना। प्रत्यय। विचार। खयाल। ३. चित्त की ग्रहण-वृत्ति। ४. चेतना की प्रवृत्ति। ५. समझ। बुद्धि। ६. धारणा। स्मृति। याद। ७. चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया। यह योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था है।
मुहा०—ध्यान में डूबना या मग्न होना=कोई बात इस तरह मन में लाना कि और सब बातें भूल जायँ। (किसी के) ध्यान में लगना=किसी का विचार मन में लाकर मग्न होना। ध्यान आना=विचार उत्पन्न होना। ध्यान जमना=विचार स्थिर होना। ध्यान बँधना=लगातार खयाल बना रहना। ध्यान रखना=विचार बनाए रखना। न भूलना। ध्यान लगना=बराबर खयाल बना रहना। ध्यान में न लाना=१. चिंता न करना। परवाह न करना। २. न विचारना। ध्यान जमना=चित्त एकाग्र होना। ध्यान जाना=चित्त का किसी ओर प्रवृत्त होना। ध्यान दिलाना=खयाल कराना या जताना। चेताना। सुझाना। ध्यान देना=गौर करना। ध्यान पर चढ़ना=मन में स्थान कर लेना। चित्त में न हटना। ध्यान बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। खयाल इधर-उधर होना। ध्यान बँधना=किसी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ध्यान लगना=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना। ध्यान आना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान दिलाना=स्मरण कराना। याद दिलाना। ध्यान पर चढ़ना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान रखना=याद रखना। ध्यान से उतरना=भूलना। ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना। चित्त इधर-उधर हो जाना। ध्यान करना=परमात्मचिंतन आदि के लिए चित्त को एकाग्र करके बैठना।

ध्याना*–क्रि० स० १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। सुमरना।

ध्यानी–वि० १. ध्यानयुक्त। समाधिस्थ। २. ध्यान करनेवाला।

ध्येय–वि० १. ध्यान करने योग्य। २. जिसका ध्यान किया जाय।

ध्रुपद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का गीत। एक राग।

ध्रुव–वि० १. सदा एक ही स्थान पर रहने-वाला। स्थिर। अचल। २. सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। नित्य। ३. निश्चित।
संज्ञा पुं० १. आकाश। २. कील। ३. पर्वत।

४. खंभा। थून। ५. वट। बरगद। ६. आठ वसुओं में से एक। ७. ध्रुपद। ८. विष्णु। ९. ध्रुव तारा। १०. पुराणों के अनुसार राजा उत्तानपाद के एक पुत्र, जिनकी माता का नाम सुनीति था। विष्णु भगवान् ने इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर इन्हें वर दिया कि तुम सब लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार-स्वरूप होकर अचल भाव से स्थित रहोगे। तब से ये आकाश में तारे के रूप में प्रायः एक ही स्थान पर स्थित हैं। ११. भूगोल-विद्या में पृथ्वी के वे दोनों सिरे, जिनमें होकर अक्षरेखा गई हुई मानी जाती है। १२. छंदःशास्त्र के अनुसार रगण का अठारहवाँ भेद, जिसमें क्रमशः एक लघु, एक गुरु और तीन लघु होते हैं।

ध्रुवता–संज्ञा स्त्री० १. स्थिरता। अचलता। २. दृढ़ता। पक्कापन। ३. निश्चय।

ध्रुव तारा–संज्ञा पुं० वह तारा, जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर-उधर नहीं होता।

ध्रुवदर्शक–संज्ञा पुं० १. सप्तर्षि-मंडल। २. कुतुबनुमा।

ध्रुवदर्शन–संज्ञा पुं० विवाह-संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य, जिसमें वर-वधू को ध्रुव-तारा दिखाया जाता है।

ध्रुवलोक–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक लोक, जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं।

ध्वंस–संज्ञा पुं० नाश। विनाश।

ध्वंसक–वि० नाश करनेवाला।

ध्वंसन–संज्ञा पुं० [वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त] १. नाश करने की क्रिया। २. नाश होने का भाव। विनाश। क्षय।

ध्वंसावशेष–संज्ञा पुं० किसी चीज के टूट फूट जाने पर उसका बचा हुआ अंश। दे० "भग्नावशेष"। खंडहर।

ध्वंसी–[स्त्री० ध्वंसिनी] नाश करनेवाला। विनाशक।

ध्वज–संज्ञा पुं० दे० "ध्वजा"। १. चिह्न। निशान। २. पताका। झंडा।

ध्वजभंग–संज्ञा पुं० नपुंसकता। पुरुषों की एक बीमारी जिसमें वे नपुंसक हो जाते हैं।

ध्वजा–संज्ञा स्त्री० १. पताका। झंडा। निशान। २. छंदःशास्त्रानुसार ठगण का पहला भेद, जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।

ध्वजिक–वि० पाखंडी।

ध्वजिनी–संज्ञा स्त्री० सेना का एक भेद।

ध्वजी–वि० [स्त्री० ध्वजिनी] १. ध्वजवाला। पताकाधारी। जो झंडा-पताका लिये हो। २. चिह्नवाला। चिह्नयुक्त। संज्ञा पुं० १. पहाड़। २. ब्राह्मण। ३. युद्ध। ४. घोड़ा। ५. साँप। ६. मोर। ७. सीपी।

ध्वनि–संज्ञा स्त्री० १. वह विषय जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो। शब्द। नाद। आवाज। २. शब्द का स्फोट। आवाज की गूंज। लय। ३. वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक हो। ४. आशय। गूढ़ अर्थ। मतलब।

ध्वनित–वि० १. व्यंजित। प्रकट किया हुआ। २. बजाया हुआ। वादित।

ध्वन्य–संज्ञा पुं० व्यंग्यार्थ।

ध्वन्यात्मक–वि० ध्वनि-स्वरूप या ध्वनि-मय। जिसमें व्यंग प्रधान हो (काव्य)।

ध्वन्यार्थ–संज्ञा पुं० वह अर्थ, जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।

ध्वस्त–वि० नष्ट। भ्रष्ट। १. खंडित। टूटा-फूटा। भग्न। २. परास्त। पराजित। च्युत।

ध्वांत–संज्ञा पुं० अंधकार। अँधेरा।

ध्वान्तशत्रु–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. अग्नि। ४. सफेद रंग।

ध्वांतचर–संज्ञा पुं० राक्षस।

न

न—हिन्दी वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ अक्षर । इसका उच्चारण-स्थान दंत है, इसलिए इसे दन्त्य वर्ण कहते हैं।
संज्ञा पुं० १. उपमा। २. रत्न। ३. सोना। ४. बुद्ध। ५. बंध।
अव्य० १. निषेध-वाचक शब्द। नहीं। मत। २. या नहीं। जैसे—तुम वहाँ जाओगे न ? ३. ब्रजभाषा में बहुवचन का चिह्न समझा जाता है।

नंग—संज्ञा पुं० १. नग्नता। नंगापन। नंगे होने का भाव। २. गुप्त अंग।

नंग-धड़ंग—वि० बिलकुल नंगा। वस्त्रहीन। दिगंबर।

नंग-मुनंगा—वि० दे० "नंग-धड़ंग"।

नंगा—वि० १. जो कपड़ा न पहने हो। दिगंबर। विवस्त्र। वस्त्रहीन। २. निर्लज्ज। बेहया। ३. लुच्चा। पाजी। ४. जो किसी तरह ढँका न हो। खुला हुआ।
यौ०—अलिफ नंगा या नंगा मादरजाद= बिलकुल नंगा।

नंगाझोरी—संज्ञा स्त्री दे० "नंगाझोली"।

नंगा-झोली—संज्ञा स्त्री० किसी के पहने हुए कपड़ों आदि को उतरवाकर उसकी तलाशी लेना। कपड़ों की तलाशी।

नंगा-बुच्चा, नंगा-बूचा—वि० कंगाल। जिसके पास कुछ भी न हो। बहुत दरिद्र।

नंगा-लुच्चा—वि० नीच और दुष्ट। बदमाश।

नँगियाना—क्रि० स० १. नंगा करना। शरीर पर वस्त्र न रहने देना। २. सब कुछ छीन लेना।

नंद—संज्ञा पुं० १. गोकुल के गोपों के राजा जिनके यहाँ श्रीकृष्ण ने अपना शैशव व्यतीत किया था। २. महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई। ३. मगध का राजा। इस नाम के नौ राजा पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरूढ़ हुए थे। ४. आनंद। हर्ष। ५. परमेश्वर। ६. पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ७. विष्णु। ८. चार प्रकार की बाँसुरियों में से एक। ९. पिंगल में ढगण के दूसरे भेद का नाम, जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। १०. लड़का। बेटा।

नंदक—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २. राजा नंद, जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहते थे।
वि० १. आनंददायक। २. कुल-पालक। ३. संतोष देनेवाला।

नंदकिशोर—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

नंदकुमार—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

नंदगाँव—संज्ञा पुं० वृन्दावन का एक गाँव, जहाँ नंद रहते थे।

नंदग्राम—संज्ञा पुं० १. नंदीग्राम। २. अयोध्या के समीप का एक गाँव, जहाँ बैठकर राम के वनवास-काल में भरत ने तपस्या की थी। नंदिग्राम।

नंदनंदन—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

नंदनंदिनी—संज्ञा स्त्री० योगमाया।

नंदन—संज्ञा पुं० १. इंद्र का उपवन। २. एक प्रकार का विष। ३. महादेव। शिव। ४. विष्णु। ५. पुत्र। जैसे नंदनंदन। ६. एक प्रकार का अस्त्र। ७. मेघ। बादल। ८. एक वर्णवृत्त।
वि० आनंददायक। प्रसन्न करनेवाला।

नंदन-वन—संज्ञा पुं० इंद्र की वाटिका।

नंदना*—क्रि० अ० आनंदित होना।
संज्ञा स्त्री० लड़की। बेटी।

नंदनी—संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी"।

नंदरानी—संज्ञा स्त्री० नंद की स्त्री यशोदा।

नंदलाल—संज्ञा पुं० नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदा—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. गौरी। ३ एक प्रकार की कामधेनु। ४. एक मातृका या बाल-ग्रह। ५. संपत्ति। संपदा। ६. पति की बहन। ननद। ७. बरवै छंद का एक नाम। ८. प्रसन्नता। तिथि-विशेष। दोनों पक्षों की प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथि।

वि० १. आनंद देनेवाली। २. शुभ।

नंदि–संज्ञा पुं० १. शिव का द्वारपाल बैल। २. आनंद। ३. आनंदमय। ४. परमेश्वर। ५. नंदिकेश्वर। शिव। ६. जुआ का खेल। द्यूतक्रीड़ा।

नंदिकेश्वर–संज्ञा पुं० १. शिव के द्वारपाल बैल का नाम। २. एक उपपुराण, जिसे नंदिपुराण भी कहते हैं।

नंदिघोष–संज्ञा पुं० १. अर्जुन के रथ का नाम। २. बंदीजनों की घोषणा। भाटों की स्तुति। मंगल-घोषणा।

नंदित–वि० आनंदित। सुखी। बजता हुआ।

नंदिन*–संज्ञा स्त्री० पुत्री। लड़की।

नंदिनी–संज्ञा स्त्री० १. पुत्री। बेटी। २. रेणुका नामक गंध-द्रव्य। ३. उमा। ४. गंगा। ५. पति की बहन। ननद। ६. पत्नी। स्त्री। ७. साली। पत्नी की बहिन। ८. दुर्गा। ९. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। १०. कलहंस। ११. सिंहनाद। १२. वसिष्ठ की कामधेनु। राजा दिलीप ने इसी की सेवा से रक्षा की थी और इसी की आराधना करके उन्होंने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था।

नंदिवर्द्धन–संज्ञा पुं० १. शिव। २. पुत्र। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का विमान। ४. मित्र। दोस्त।

वि० आनंद बढ़ानेवाला।

नंदी–संज्ञा पुं० १. शिव के एक प्रकार के गण। शिव का द्वारपाल, बैल। २. शिव के नाम पर दाग कर उत्सर्ग किया हुआ कोई साँड़। ३. वह बैल, जिसके शरीर पर गाँठें हों। ऐसा बैल खेती के काम के लिए अच्छा नहीं होता। ४. विष्णु। ५. धव का पेड़। बरगद का पेड़।

वि० आनंदयुक्त। जो प्रसन्न हो।

नंदीगण–संज्ञा पुं० १. शिव के द्वारपाल, बैल। २. दागकर छोड़ा हुआ बैल। साँड़।

नंदीमुख–संज्ञा पुं० दे० "नांदीमुख"।

नंदीश्वर–संज्ञा पुं० १. शिव। २. शिव का एक गण।

नंदेऊ*†–संज्ञा पुं० दे० "नंदोई"।

नंदोई–संज्ञा पुं० ननद का पति। पति का बहनोई।

नंबर–वि० [अंग्रे०] संख्या। अदद।

संज्ञा पुं० १. गिनती। गणना। २. सामयिक पत्र की कोई संख्या। अंक। ३. कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज।

नंबरदार–संज्ञा पुं० गाँव का वह जमींदार, जो अपनी पट्टी के दूसरे हिस्सेदारों से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता दे।

नंबरवार–क्रि० वि० सिलसिलेवार। एक-एक करके। क्रमशः।

नंबरी–वि० १. नंबरवाला। जिस पर नंबर लगा हो। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

नंबरी गज–संज्ञा पुं० कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज।

नंबरी सेर–संज्ञा पुं० तौलने का सेर, जो भारतीय रुपयों में ८० भर का होता है।

नंस*–वि० नष्ट। बरबाद।

नइहर†–संज्ञा पुं० नैहर। मायका। विवाहिता स्त्री के पिता का घर।

नई*–वि० 'नया' का स्त्री० रूप।

नउंजी†–संज्ञा स्त्री० लीची नामक फल।

नउ*†–वि० १. दे० "नव"। २. दे० "नौ"।

नउआ†–संज्ञा पुं० दे० "नाऊ"।

नउका*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नौका"।

नउत*†–वि० नीचे की ओर झुका हुआ।

नउलि*†–वि० नया।

नओढ़*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नवोढ़ा"।

नककटा–वि० [स्त्री० नककटी] १. जिसकी नाक कटी हो। २. जिसकी बहुत दुर्दशा या बदनामी हुई हो। ३. निर्लज्ज। बेहया।

नककटी–संज्ञा स्त्री० १. बदनामी। २. दुर्दशा। ३. नाक कटने की क्रिया।

नकघिसनी–संज्ञा स्त्री० १. जमीन पर नाक रगड़ने की क्रिया। विनती करना। चिरौरी करना। २. बहुत अधिक दीनता। आजिजी।

नकचढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० नकचढ़ी] चिड़चिड़ा। बद-मिजाज।

नकछिकनी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा, जिसको सूँघने से छींकें आने लगती हैं।

नकटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० नकटी] १. वह,

जिसकी नाक कट गई हो। २. एक प्रकार का गीत, जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं।

वि० १. जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज।

नकतोड़ा–संज्ञा पुं० नाक-भौं चढ़ाकर नखरा करना अथवा कोई बात कहना। हँसोड़। रसिक। धूर्त।

नक़द–संज्ञा पुं० [अ०] वह धन, जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा। रोकड़।

वि० दे० "नगद"।

नक़दी–संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "नक़द"।

नकना*†–क्रि० स० १. उल्लंघन करना। लाँघना। डाँकना। फाँदना। २. चलना। ३. त्यागना। नाक में दम करना।

क्रि० अ० नकियाना। नाक में दम होना। नाकों दम आना। हैरान होना।

नकफूल–संज्ञा पुं० नाक में पहनने की लौंग या कील।

नक़ब–संज्ञा स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध।

नक़बजनी–संज्ञा स्त्री० [अ०] सेंध लगाने की क्रिया।

नकबानी*†–संज्ञा स्त्री० नाक में दम। हैरानी।

नकबेसर–संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने की छोटी नथ। नथुनी।

नकमोती–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का मोती। लटकन।

नक़ल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. असल का प्रतिरूप। अनुकरण। अनुकृति। २. एक के अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का कार्य्य। ३. लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि। ४. किसी के वेष, हाव-भाव या बातचीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण। स्वाँग। ५. हास्यजनक आकृति। ६. हास्य-रस की कोई छोटी-मोटी कहानी। चुटकुला।

नकलनवीस–संज्ञा पुं० वह अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल अदालती कागजों की प्रतिलिपि तैयार करना होता है।

नकलबही–संज्ञा स्त्री० वह बही, जिस पर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है।

नक़ली–वि० [अ०] १. नकल करके बनाया हुआ। बनावटी। कृत्रिम। २. खोटा। जाली। झूठा।

नक़श–संज्ञा पुं० [अ०] १. दे० "नक्श"। २. ताश से खेला जानेवाला एक जुआ।

नकशा–संज्ञा पुं० दे० "नक्शा"।

नकसीर–संज्ञा स्त्री० आप से आप नाक से खून बहना।

मुहा०—नकसीर भी न फूटना=जरा भी तकलीफ या नुकसान न होना।

नकाना †–क्रि० अ० नाक में दम होना। बहुत परेशान होना।

क्रि० स० नकियाना। नाक में दम करना। बहुत परेशान करना।

नकाब–संज्ञा स्त्री० मुँह छिपाने का पर्दा। यह जालीदार महीन कपड़े का बना होता है और इसका प्रयोग मुसलमान स्त्रियाँ करती हैं। घूँघट। चोरों या डाकुओं-द्वारा अपना मुँह ढकने का कपड़ा।

नकाबपोश–वि० चेहरे पर नकाब डाले हुए। नकाब लगाए हुए।

नकार–संज्ञा पुं० १. न या नहीं का बोधक शब्द या वाक्य। नहीं। २. इनकार। अस्वीकृति। ३. "न" अक्षर।

नकारना–क्रि० अ० इनकार करना। अस्वीकृत करना।

नकारा‡–वि० जो किसी काम का न हो। खराब। निकम्मा।

नकाशना†–क्रि० स० धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र आदि बनाना।

नकाशी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक्काशी"।

क्रि० स० बहुत परेशान या तंग करना।

नकियाना†–क्रि० अ० १. नाक से उच्चारण करना। २. बहुत दुखी या परेशान होना।

नकीब–संज्ञा पुं० [अ०] १. चारण। बंदीजन। भाट। २. कड़खा गानेवाला पुरुष। कड़खैत।

नकुल–संज्ञा पुं० १. नेवला (एक जंतु)। २. पांडु राजा के चौथे पुत्र। ३. बेटा। ४. शिवजी। ५. एक बाजा।

वि० बिना खानदान का। कुल-रहित।

नकेल–संज्ञा स्त्री० ऊँट की नाक में

रस्सी, जो लगाम का काम देती है। मुहरा।
मुहा०—किसी की नकेल हाथ में होना= किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना।

नक्का—संज्ञा पुं० सूई का वह छेद, जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका।

नक्कारखाना—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान, जहाँ पर नक्कारा बजता है। नौबतखाना।
मुहा०—नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है=बड़े-बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।

नक्कारची—संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा बजाने वाला।

नक्कारा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नगाड़ा। डंका। नौबत। दुंदुभि।

नक्काल—संज्ञा पुं० [अ०] १. अनुकरण करने वाला। नकल करनेवाला। २. भाँड़।

नक्काश—संज्ञा [अ०] पुं० वह, जो नक्काशी करता हो।

नक्काशी—संज्ञा स्त्री० [वि० नक्काशीदार] १. धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २. इस प्रकार बनाए गए बेल-बूटे।

नक्की—वि० १. पक्का। दृढ़। २. ठीक।

नक्कीपूर—संज्ञा पुं० दे० "नक्कीमठ"।

नक्कीमठ—संज्ञा पुं० जुए का एक खेल, जो कौड़ियों से खेला जाता है।

नक्कू—वि० १. जिसकी नाक बड़ी हो। बदनाम। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला। ३. सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला।

नक्त—संज्ञा पुं० १. बिलकुल संध्या का समय। २. रात। ३. एक प्रकार का व्रत। इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। ४. शिव।
वि० लज्जित।

नक्तचर—संज्ञा पुं० १. शिव। २. राक्षस। ३. उल्लू।

नक्तचारी—संज्ञा पुं० १. उल्लू। २. बिल्ली।
वि० नक्त-व्रत करनेवाला।

नक्ता—संज्ञा स्त्री० १. एक विषैला पौधा। २. रात। ३. हल्दी।

नक्ति—संज्ञा स्त्री० रात।

नक्र—संज्ञा पुं० १. नाक नामक जल-जंतु। २. मगर। ३. घड़ियाल। कुंभीर। ४. नाक। नासिका।

नक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० "नकल"।

नक्श—वि० [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ।
संज्ञा पुं० १. तसवीर। चित्र। २. खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३. मोहर। छाप। ४. तावीज। यंत्र। ५. जादू। टोना। ६. दे० "नकश"।
मुहा०—मन में नक्श करना या कराना= किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना। नक्श बैठना=अधिकार जमना।

नक्शा—संज्ञा पुं० [अ०] १. चित्र। मानचित्र। तसवीर। २. आकृति। शक्ल। ढाँचा। गढ़न। ३. किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४. चाल-ढाल। तर्ज। ढंग। ५. अवस्था। दशा। ६. ऐसा चित्र, जिसमें किसी स्थान की स्थिति आदि दिखाई गई हो।

नक्शानवीस—संज्ञा पुं० नक्शा बनानेवाला।

नक्शाबंद—संज्ञा पुं० साड़ियों आदि के बेल-बूटे के नक्शे या तर्ज तैयार करनेवाला।

नक्शी—वि० जिस पर बेल-बूटे बने हों। नक्काशीदार।

नक्षत्र—संज्ञा पुं० १. तारागण। चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का समूह, जिनकी पहचान के लिए कोई नाम रखा गया हो। ये सब २७ नक्षत्रों में विभक्त हैं। २. जिसका नाश न हो।

नक्षत्रनाथ—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रपथ—संज्ञा पुं० नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्रराज—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रलोक—संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह लोक, जिसमें नक्षत्र हैं। नक्षत्रों का संसार।

नक्षत्रविद्या—संज्ञा स्त्री० ज्योतिषविद्या।

नक्षत्रवृष्टि—संज्ञा स्त्री० तारा टूटना। उल्कापात होना।

नक्षत्री—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. विष्णु।
वि० भाग्यवान्।

नक्षत्रेश–संज्ञा पुं० चन्द्रमा। नक्षत्रों के स्वामी।

नक्षत्रेश्वर–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

नख–संज्ञा पुं० १. हाथ या पैर का नाखून। २. नाखून के आकार का एक प्रसिद्ध गंध-द्रव्य, जो घोंघे की जाति के एक जानवर के मुँह का ऊपरी आवरण होता है। ३. खंड। टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री० १. पतंग उड़ाने के लिए तागा। डोर। २. बटा हुआ महीन रेशम।

नखकर्त्तनि–संज्ञा स्त्री० नहरनी।

नखक्षत–संज्ञा पुं० नाखून के गड़ने के कारण बना हुआ चिह्न। नाखून का निशान।

नखच्छत*†–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।

नखछोलिया*†–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।

नखत, नखतर*‡–संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नखतराज, नखतेस*–संज्ञा पुं० दे० "चंद्रमा"।

नखना–क्रि० अ० उल्लंघन होना। डाँका जाना।
क्रि० स० उल्लंघन करना। पार करना नष्ट करना।

नखरा–संज्ञा पुं० [फा०] १. हावभाव। चोचला। नाज। २. चंचलता। चुलबुलापन।

नखरा-तिल्ला–संज्ञा पुं० नखरा। चोचला।

नखरीला†–वि० नखरा करनेवाला।

नखरेखा–संज्ञा स्त्री० दे० "नखक्षत"।

नखरेबाज–वि० [फा०] [संज्ञा नखरेबाजी] नखरा करनेवाला।

नखबिंदु–संज्ञा पुं० नाखून के ऊपर गोल या चंद्राकार चिह्न, जिसे स्त्रियाँ मेहँदी या महावर से बनाती हैं।

नखरौट–संज्ञा स्त्री० नाखून का निशान।

नखशिख–संज्ञा पुं० १. नख से लेकर शिख तक के सब अंग। २. शरीर के सब अंगों का वर्णन।

नखशूल–संज्ञा पुं० नाखून का एक रोग।

नखांक–संज्ञा पुं० १. नख नामक गंध-द्रव्य। २. नाखून गड़ने का चिह्न।

नखायुध–संज्ञा पुं० १. अपने नाखून को अस्त्र के समान इस्तेमाल करनेवाले जानवर। जैसे, कुत्ता, शेर, चीता। २. नृसिंह।

नखास–संज्ञा पुं० [अ०] वह बाजार, जहाँ पशु, विशेषकर घोड़े बिकते हैं। कोई बाजार।

नखियाना*†–क्रि० स० नाखून गड़ाना।

नखी–संज्ञा पुं० नखधारी। नखवाला। नाखून से आक्रमण करनेवाला जन्तु।
संज्ञा स्त्री० नख-नामक गंधद्रव्य।

नखोटना*†–क्रि० स० नाखून से खरोचना या नोचना।

नग–संज्ञा पुं० १. पहाड़। २. पेड़। ३. सात की संख्या। ४. साँप। ५. सूर्य। ६. दे० "नगीना"। ७. अदद। संख्या।

नगज–संज्ञा पुं० हाथी।
वि० पहाड़ से उत्पन्न।

नगजा–संज्ञा स्त्री० पार्वती।

नगण–संज्ञा पुं० पिंगल में तीन लघु अक्षरों का एक गण।

नगण्य–वि० बहुत ही साधारण या गया-बीता। तुच्छ। इतना कम या गया बीता जिसकी गिनती तक न की जाय।

नगबंती–संज्ञा स्त्री० विभीषण की स्त्री।

नगद–संज्ञा पुं० दे० "नक़द"।

नगधर–संज्ञा पुं० पर्वत धारण करनेवाले। श्रीकृष्ण। गिरधारी।

नगधरन*–संज्ञा पुं० दे० "नगधर"।

नगनंदिनी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।

नगन*†–वि० नग्न। जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।

नगनिका–संज्ञा स्त्री० क्रीड़ावृत्त। जिसमें एक यगण और एक गुरु होता है।

नगनी–संज्ञा स्त्री० १. कन्या। बेटी। छोटी बच्ची, जो नंगी घूमती फिरती है। २. नंगी स्त्री।

नगपति–संज्ञा पुं० १. पहाड़ों के राजा। हिमालय पर्वत। २. चंद्रमा। ३. शिव। ४. सुमेरु।

नगभिद्–संज्ञा पुं० १. एक विशेष प्रकार की लता। २. इन्द्र।

नगर–संज्ञा पुं० शहर। बड़ी बस्ती।

नगरकीर्तन–संज्ञा पुं० नगर की गलियों और सड़कों पर घूम-घूमकर होनेवाला गाना-बजाना या कीर्त्तन।

नगर नारि या नगरनारी–संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी।

नगरनायिका—संज्ञा स्त्री० रंडी। वेश्या।
नगरपाल—संज्ञा पुं० नगर की रक्षा करनेवाला।
नगरपालिका—संज्ञा स्त्री० नगर का प्रबन्ध करनेवाली संस्था, जिसके सदस्य नगर की जनता-द्वारा चुने जाते हैं। म्युनिसिपल्टी।
नगरवासी—संज्ञा पुं० शहर में रहनेवाला। नागरिक।
नगरहा—संज्ञा पुं० नागरिक। शहर का निवासी।
नगराई*†—संज्ञा स्त्री० १. नागरिकता। शहरीपन। २. चतुराई। चालाकी।
नगराध्यक्ष—संज्ञा पुं० दे० "नगरपाल"। नगरपालिका का प्रधान।
नगरी—संज्ञा स्त्री० छोटा शहर। संज्ञा पुं० शहर में रहनेवाला।
नगस्वरूपिणी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छन्द। प्रमाणी। प्रमाणिका।
नगाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "नगारा"।
नगाधिप—संज्ञा पुं० १. हिमालय पर्वत। २. सुमेरु पर्वत।
नगारा—संज्ञा पुं० डुगडुगी की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगाड़ा। डंका। धौंसा।
नगारि—संज्ञा पुं० इंद्र।
नगी—संज्ञा स्त्री० १. रत्न। मणि। नगीना। नग। २. पार्वती। ३. पहाड़ी स्त्री।
नगीच†—क्रि० वि० नजदीक। निकट। पास।
नगीना—संज्ञा पुं० [फा०] रत्न। मणि।
नगीनासाज—संज्ञा पुं० [फा०] नगीना जड़ने या बनानेवाला।
नगेन्द्र—संज्ञा पुं० पहाड़ों के राजा। हिमालय।
नगेश—संज्ञा पुं० दे० "नगेन्द्र"। हिमालय।
नगेसरि*†—संज्ञा पुं० दे० "नागकेशर"।
नगौक—संज्ञा पुं० १. चिड़िया २. कौआ। ३. शेर।
नग्न—वि० १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। वस्त्रहीन। २. जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।
नग्नता—संज्ञा स्त्री० नंगे होने का भाव।
नग्र*†—संज्ञा पुं० दे० "नगर"।
नघना—क्रि० स० लाँघना।
नघाना—क्रि० स० लँघाना।
नचना*†—क्रि० अ० नाचना। वि० १. नाचनेवाला। २. इधर-उधर घूमनेवाला।
नचनि*†—संज्ञा स्त्री० नाच।
नचनिया†—संज्ञा पुं० नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला।
नचनी—वि० १. नाचनेवाली। २. इधर-उधर घूमती रहनेवाली।
नचवाना—क्रि० स० नाच कराना। नचाना।
नचवैया—संज्ञा पुं० नचानेवाला। नाचनेवाला। नर्तक।
नचाना—क्रि० स० १. नचवाना। दूसरे से नाच कराना। नृत्य कराना। २. कोई काम करने के लिए तंग करना। हैरान करना। परेशान करना। व्यर्थ इधर-उधर दौड़ाना। **मुहा०**—नाच नचाना = कोई काम करने के लिए तंग करना। आँखें नचाना = चंचलतापूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर-उधर घुमाना।
नचिकेता—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. वाजश्रवा ऋषि का पुत्र, जिसने ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त किया था।
नचौला—वि० जो नाचता या इधर-उधर घूमता रहे। चंचल।
नचौहाँ*†—वि० चंचल। हर समय नाचनेवाला। सदा नाचता या इधर-उधर घूमता रहनेवाला।
नछत्र—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।
नछत्री*†—वि० भाग्यवान्। भाग्यशाली।
नजदीक—वि० [फा०] निकट। पास। करीब।
नजदीकी—संज्ञा स्त्री० [फा०] पास या निकट होने का भाव। संज्ञा पुं० निकट-सम्बन्धी।
नजम—संज्ञा स्त्री० [फा०] कविता। छंद।
नजर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दृष्टि। निगाह। २. कृपादृष्टि। ३. निगरानी। देख-रेख। ४. ध्यान। खयाल। ५. परख। पहचान। शिनाख्त। ६. भेंट। उपहार। ७. एक रस्म,

जिसमें राजाओं आदि के सामने प्रजावर्ग के या अधीनस्थ लोग नकद रुपया आदि भेंट करते हैं।

मुहा०—नजर आना=दिखाई देना। दिखाई पड़ना। नजर पर चढ़ना=पसंद आ जाना। भला मालूम होना। नजर पड़ना=दिखाई देना। नजर बाँधना=जादू या मंत्र आदि के जोर से किसी को कुछ का कुछ कर दिखाना। नजर उतारना=बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या युक्ति से हटा देना। नजर लगना=बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।

नजर अंदाज—वि० [फा०] जिस पर नजर न पड़ी हो। देखने या ध्यान देने में चूक।

नजरना*—क्रि० अ० १. देखना। २. नजर लगाना।

नजरबंद—वि० वह व्यक्ति, जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय, जहाँ से वह कहीं आ-जा न सके। सरकार-द्वारा इस तरह से दंडित व्यक्ति।

संज्ञा पुं० जादू या इन्द्रजाल आदि का खेल।

नजरबंदी—संज्ञा स्त्री० १. राज्य की ओर दिया गया वह दंड, जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित या नियत स्थान पर रखा जाता है। २. नजरबंद होने की दशा। ३. जादूगरी। बाजीगरी।

नजरबाग—संज्ञा पुं० [अ०] महलों के सामने या चारों ओर का बाग।

नजरसानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] जाँचने के विचार से किसी देखी हुई चीज को फिर से देखना।

नजरहाया—वि० [स्त्री० नजरहाई] नजर लगानेवाला।

नजराननाा†*—क्रि० स० १. भेंट देना। उपहार देना। २. नजर लगाना।

नजराना—संज्ञा पुं० उपहार।

क्रि० अ० नजर लग जाना। बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना।

क्रि० स० नजर लगाना।

नजरि*—संज्ञा स्त्री० दे० "नजर"।

नजला—संज्ञा पुं० [अ०] जुकाम। सरदी।

नजाकत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नाजुक होने का भाव। सुकुमारता। कोमलता। २. नखरा।

नजात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुक्ति। मोक्ष। २. छुटकारा। रिहाई।

नजारा, नज्जारा—संज्ञा पुं० [अ०] १. दृश्य। २. दृष्टि। नजर। ३. लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

नजिकाना*†—क्रि० स० निकट पहुँचना। नजदीक पहुँचना। पास पहुँचना।

नजीक†*—क्रि० वि० दे० "नजदीक"।

नजीर—संज्ञा स्त्री० [अ०] उदाहरण। दृष्टान्त मिसाल। किसी एक मुकदमे का फैसला उसी तरह के दूसरे मुकदमे में पेश करना।

नजूम—संज्ञा पुं० [अ०] ज्योतिष-विद्या।

नजूमी—संज्ञा पुं० [अ०] ज्योतिषी।

नजूल—संज्ञा पुं० [अ०] शहर की वह जमीन, जो सरकार के अधिकार में हो। सरकारी जमीन।

नट—संज्ञा पुं० १. अभिनय करनेवाला। २. एक नीच जाति, जो प्रायः गा-बजाकर और खेल-तमाशे दिखाकर निर्वाह करती है। ३. एक राग।

नटई†—संज्ञा स्त्री० १. गला। गरदन। २. गले की घंटी। घाँटी।

नटखट—वि० ऊधमी। उपद्रवी। चंचल। चालाक। धूर्त।

नटखटी—संज्ञा स्त्री० बदमाशी। शरारत। पाजीपन।

नटन—संज्ञा पुं० नृत्य। नाचना। नाट्य करना।

नटना—क्रि० अ० १. नाट्य करना। २. नाचना। नृत्य करना। ३. कहकर बदल जाना। मुकरना।

क्रि० स० नष्ट करना।

नटनागर—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. नटों में सबसे चतुर। ३ जादूगर।

नटनारायण—संज्ञा पुं० एक राग का नाम।

नटनि*†—संज्ञा स्त्री० १.नृत्य। २.इनकार।

नटनी—संज्ञा स्त्री० १. नट की स्त्री। २. नट जाति की स्त्री।

नटराज—संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

नटवना*–क्रि० स० नाट्य करना। अभिनय करना।

नटवर–संज्ञा पुं० १. नाट्यकला में प्रवीण मनुष्य। २. श्रीकृष्ण।

वि० बहुत चतुर। चालाक।

नटसार*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नाट्यशाला"।

नटसारी*–संज्ञा स्त्री० छोटी नाट्यशाला।

नटसाल–संज्ञा स्त्री० १. काँटे का वह भाग, जो टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २. कसक। पीड़ा।

नटिन–संज्ञा स्त्री० १. नट की स्त्री। नटी। २. जादू-टोना करनेवाली स्त्री।

नटी–संज्ञा स्त्री० १. नट जाति की स्त्री। २. नाचनेवाली स्त्री। नर्तकी। ३. अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।

नटुआ, नटुवा‡–संज्ञा पुं० १. दे० "नट"। २. दे० "नटई"।

नटेश्वर–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

नठना*†–क्रि० अ० नष्ट होना।

क्रि० स० नष्ट करना।

नड़–संज्ञा पुं० १ जाति-विशेष, जो चूड़ी आदि बनाते हैं। चुड़िहार। २ नरकट। नरसल।

नढ़ना†–क्रि० स० १. गूँथना। पिराना। २. बाँधना। कसना।

नत–वि० झुका हुआ। नम्र। विनयी। विनीत।

नतइत–संज्ञा पुं० कुटुम्बी।

नतकुर‡–संज्ञा पुं० बेटी का बेटा। नवासा। दौहित्र।

नतगुल्ला–संज्ञा पुं० घोंघा।

नतपाल–संज्ञा पुं० शरणागत का पालन करनेवाला। प्रणतपाल।

नतर, नतरु*–क्रि० वि० नहीं तो। अन्यथा।

नतांगी–संज्ञा स्त्री० युवती। नारी। सुन्दरी।

नतांश–संज्ञा पुं० ग्रहों की स्थिति निश्चित करनेवाला वृत्त।

नति–संज्ञा स्त्री० १. झुकाव। उतार। २. नमस्कार। प्रणाम। ३. विनय। विनती। ४. नम्रता। खाकसारी।

नतिनी†–संज्ञा स्त्री० लड़की की लड़की नातिन।

नतीजा–संज्ञा पुं० [फा०] परिणाम। फल

नतु–क्रि० वि० नहीं तो।

नतुवा*–अव्य० नहीं तो क्या?

नतैत†–संज्ञा पुं० संबंधी। रिश्तेदार। नातेदार।

नतैती–संज्ञा स्त्री० रिश्तेदारी। नातेदारी। सम्बन्ध।

नत्थ†–संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नत्थी–संज्ञा स्त्री० १. कागज आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही में बाँधना या फँसाना। २. इस प्रकार नाथे हुए कागज आदि। मिस्ल।

नथ–संज्ञा स्त्री० बड़ी नथुनी। नाक का एक गहना।

नथना–संज्ञा पुं० १. नाक का अगला भाग। २. नाक का छेद।

क्रि० अ० १. किसी के साथ नत्थी होना। एक सूत्र में बँधना। २. छिदना। छेदा जाना।

मुहा०––नथना फुलाना=क्रोध करना।

नथनी–संज्ञा स्त्री० १. नाक में पहनने की छोटी नथ। २. बुलाक।

नथिया, नथुनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नद–संज्ञा पुं० बड़ी नदी। ऐसी नदी, जिसका नाम पुल्लिंगवाची हो।

नदना*†–क्रि० अ० १. पशुओं का शब्द करना। रँभाना। बँबाना। २. बजना। शब्द करना।

नदराज–संज्ञा पुं० समुद्र।

नदान †–वि० दे० "नादान"।

नदारद–वि० [फा०] जो मौजूद न हो। गायब। अप्रस्तुत। लुप्त।

नदिया*‡–संज्ञा स्त्री० छोटी नदी।

संज्ञा पुं० १. नन्दी बैल। २. पूर्वी बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर।

नदी–संज्ञा स्त्री० किसी पर्वत या जलाशय आदि से निकलकर हमेशा बहती रहनेवाली जलधारा। दरिया।

नदीकान्त–संज्ञा पुं० नदियों का स्वामी समुद्र।

नदीकान्ता–संज्ञा स्त्री० १. काकजंघा नामक बूटी। २. जामुन का पेड़।

नदीगर्भ–संज्ञा पुं० १. नदी के दो किनारों के बीच का स्थान। २. नदी का तल।

नदीज–संज्ञा पुं० १. सेंधा नमक। २. भीष्म पितामह। ३. अर्जुनवृक्ष।
वि० नदी से उत्पन्न।

नदीधर–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

नदीश–संज्ञा पुं० नदियों के स्वामी। समुद्र।

नदेश–संज्ञा पुं० दे० "नदीश"। समुद्र।

नदोला–संज्ञा पुं० मिट्टी की छोटी नाँद, जिसमें बैल आदि को खिलाया जाता है।

नद्ध–वि० बँधा हुआ। बद्ध।

नधना–क्रि० अ० १. बैल, घोड़े आदि का गाड़ी आदि में जुड़ना। जुतना। २. जुड़ना। सम्बन्ध होना। काम शुरू होना। काम ठनना।

ननकारना*†–क्रि० अ० अस्वीकार करना। नामंजूर करना।

ननँद, ननद–संज्ञा स्त्री० पति की बहिन।

ननदिया या ननदी–संज्ञा स्त्री० ननद। पति की बहिन।

ननदोई–संज्ञा पुं० ननद का पति। पति का बहनोई।

ननसार–संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल"।

ननिया ससुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० ननिया सास] स्त्री या पति का नाना।

ननिहाल–संज्ञा पुं० नाना का घर।

ननु–अव्य० संदेह प्रकट करने तथा वाक्य के आरम्भ में, निश्चय, निःसन्देह, अवश्य, अनुनय, अनुज्ञा की भावना प्रकट करने वाला अव्यय।

ननोई–संज्ञा पुं० जलाशय में होनेवाला एक तरह का जंगली धान। पसही।

नन्हा–वि० [स्त्री० नन्हीं] छोटा।

नन्हाई*–संज्ञा स्त्री० १. छोटापन। छोटाई। २. बदनामी। हेठी।

नन्हैया*‡–वि० दे० "नन्हा"।

नपाई–संज्ञा स्त्री० नापने का काम, या मजदूरी।

नपाक*†–वि० अपवित्र।

नपुंसक–संज्ञा पुं० नामर्द। हिजड़ा। पुरुषत्वहीन।

नपुंसकता–संज्ञा स्त्री० १. नपुंसक होने का भाव। २. नामर्दी। हिजड़ापन।

नपुंसकत्व–संज्ञा पुं० नामर्दी।

नपुत्री*†–वि० दे० "निपुत्री"।

नप्ता–संज्ञा स्त्री० [स्त्री० नप्त्री] नाती या पोता। कन्या का पुत्र। दौहित्र।

नफ़र–संज्ञा पुं० [फा०] १. दास। सेवक। नौकर। २. व्यक्ति।

नफ़रत–संज्ञा स्त्री० [अ०] घिन। घृणा।

नफ़री–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक दिन की मजदूरी या काम।। २. मजदूरी का दिन।

नफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। फायदा।

नफ़ासत–संज्ञा स्त्री० [अ०] नफीस होने का भाव। सफाई। उम्दापन। अच्छाई। सुन्दरता।

नफ़ीरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] तुरही। एक प्रकार का बाजा।

नफ़ीस–वि० [अ०] १. बढ़िया। उम्दा। २. साफ। स्वच्छ। ३. सुंदर।

नबी–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर। रसूल।

नबेड़ना–क्रि० स० १. निपटाना। तय करना (झगड़ा आदि)। सुलझाना। २. चुनना। दे० "निबेरना"।

नबेड़ा–संज्ञा पुं० निपटारा। निर्णय। फैसला।

नब्ज़–संज्ञा स्त्री० [अ०] हाथ की नाड़ी, जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है। नाड़ी।

मुहा०—नब्ज चलना=नाड़ी में गति होना। नब्ज छूटना=नाड़ी की गति रुकना। मृत्यु होना।

नब्बे–वि० जो गिनती में सौ से १० कम हो। संज्ञा पुं० नब्बे की संख्या। ९०।

नभ–संज्ञा पुं० १. पंच तत्त्व में से एक। आकाश। आसमान। गगन। व्योम। २. शून्य स्थान। ३. शून्य। सिफर। ४. सावन या भादों का महीना। ५. आश्रय। आधार। ६. पास। निकट। नजदीक। ७. शिव। ८. जल। ९. मेघ। बादल। १०. वर्षा। ११. चंद्रमा। १२. पक्षी। १३. देवता। १४. सूर्य्य। १५. तारा।

नभग–संज्ञा पुं० १. पक्षी। नभचर। २. देवता। ३. नक्षत्र। ग्रह।

नभगनाथ–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. गरुड़।

नभगामी–संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. बादल। ३.

तारा। ४. सूर्य। ५. चन्द्रमा। ६. देवता।
वि० आकाश में चलनेवाला।
नभगेश—संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा। २. गरुड़।
नभचर—संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. बादल। ३. हवा। ४. देवता। गन्धर्व आदि।
वि० आकाश में चलनेवाला।
नभधुज*—संज्ञा पुं० मेघ।
नभश्चर—संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. बादल। ३. हवा। ४. देवता, गंधर्व और ग्रह आदि।
वि० आकाश में चलनेवाला।
नभसेना—संज्ञा स्त्री० हवाई जहाजों से बम आदि गिराकर लड़ाई करनेवाली फौज। आकाश में विमानों में बैठकर लड़नेवाली सेना।
नभस्थल—संज्ञा पुं० आकाश।
नभस्य—संज्ञा पुं० भाद्रपद। भादों का महीना।
नभस्वान्—संज्ञा पुं० वायु। हवा। पवन।
नभोगति—संज्ञा स्त्री० आकाश-गमन। उड़ना।
नभोधूम—संज्ञा पुं० बादल। मेघ।
नभोमणि—संज्ञा पुं० सूर्य।
नभोवाणी—संज्ञा स्त्री० दे० "रेडियो"।
नम—वि० [संज्ञा नमी] [फा०] भीगा हुआ। गीला। तर। आर्द्र।
संज्ञा पुं० १. नमस्कार। प्रणाम। २. त्याग। ३. अन्न। ४. वज्र। ५. यज्ञ।
नमः—अव्य० नमस्कार। प्रणाम। अभिवादन।
नमक—संज्ञा पुं० [फा०] १. लवण। खाने की चीजों में स्वाद पैदा करने के लिए थोड़ी मात्रा में डाला जानेवाला एक क्षार पदार्थ। २. लावण्य। मनोहरता। सलोनापन (विशेष प्रकार का सौन्दर्य)।
मुहा०—नमक अदा करना=अपने मालिक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। (किसी का) नमक खाना=(किसी का) दिया खाना। नमक-मिर्च मिलाना या लगाना=किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। नमक फूटकर निकलना=नमकहरामी की सजा मिलना। कृतघ्नता का दंड मिलना। कटे पर नमक छिड़कना=किसी दुःखी को और भी दुःख देना।
नमकख्वार—वि० [फा०] नमक खानेवाला। किसी की सहायता पर जीवन-निर्वाह करनेवाला। दे० "नमकहलाल"।
नमकसार—संज्ञा पुं० [फा०] नमक निकालने या बनाने का स्थान।
नमकहराम—संज्ञा पुं० [संज्ञा नमकहरामी] वह, जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे। कृतघ्न। उपकार के बदले अपकार करनेवाला।
नमकहलाल—संज्ञा पुं० [संज्ञा नमकहलाली] स्वामी या अन्नदाता की भलाई या सेवा करनेवाला। स्वामिनिष्ठ। स्वामिभक्त।
नमकीन—वि० १. जिसमें नमक पड़ा हो। जिसमें नमक का स्वाद हो। २. सलोना। सुन्दर।
संज्ञा पुं० नमक पड़ा हुआ एक तरह का पकवान।
नमत—वि० नम्र।
नमदा—संज्ञा पुं० [फा०] जमाया हुआ ऊनी कम्बल।
नमन—संज्ञा पुं० [वि० नमनीय, नमित] १. प्रणाम। नमस्कार २. झुकाव। नत होना।
नमना*†—क्रि० अ० १. झुकना। २. प्रणाम करना। नमस्कार करना।
नमनीय—वि० १. जिसे नमस्कार किया जाय। आदरणीय। पूजनीय। माननीय। २. जो झुकाया जा सके। झुकने योग्य।
नमस्—संज्ञा पुं० झुकना। नमस्कार। अभिवादन।
नमस्कार—संज्ञा पुं० झुककर अभिवादन करना। प्रणाम। सम्मान-प्रदर्शन।
नमस्ते—एक वाक्य, जिसका अर्थ है "आपको नमस्कार है।" नमस्कार।
नमाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना।
नमाजगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] मसजिद में वह स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाय।
नमाजी—संज्ञा पुं० [फा०] १. नमाज पढ़नेवाला। २. वह वस्त्र, जिस पर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है।
नमाना*†—क्रि० स० १. झुकाना। २. दबाकर अपने अधीन करना।

नमित–वि० झुका हुआ। विनम्र। नमस्कार किया हुआ।

नमिस–संज्ञा स्त्री० [फा०] विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।

नमी–संज्ञा स्त्री० [फा० तरी। गोलापन। आर्द्रता।

नमुचि–संज्ञा पुं० १. कामदेव। मदन। २. एक ऋषि। ३. एक दानव, जो पहले इंद्र का सखा था, पर पीछे इंद्र-द्वारा मारा गया था। एक दैत्य, जो शुंभ और निशुंभ का छोटा भाई था।

नमूना–संज्ञा पुं० [फा०] १. किसी पदार्थ का थोड़ा अंश, जिससे उसके गुणदोष का ज्ञान हो। बानगी। २. ढाँचा। ठाट। खाका।

नम्र–वि० १. विनीत। जिसमें नम्रता हो। मिलनसार। २. झुका हुआ।

नम्रता–संज्ञा स्त्री० नम्र होने का भाव। विनय।

नय–संज्ञा पुं० १. नीति। रीति। भाँति। धर्म। न्याय। २. द्यूत-विशेष। ३. नम्रता।
*संज्ञा स्त्री० नदी।
वि० १. औचित्य।

नयकारी*–संज्ञा पुं० १. नाचनेवालों का मुखिया। २. नाचनेवाला। नचनिया। नचवैया।

नयन–संज्ञा पुं० १. चक्षु। नेत्र। आँख। २. ले जाना।

नयनगोचर–वि० आँखों को दिखाई देनेवाला। जो आँखों के सामने हो। प्रत्यक्ष।

नयनपट–संज्ञा पुं० आँख की पलक।

नयना*†–क्रि० अ० १. नम्र होना। २. झुकना। लटकना।
†संज्ञा पुं० आँख। नेत्र।

नयनागर–वि० नीति जाननेवाला। नीतिज्ञ। नीतिनिपुण।

नयनी–संज्ञा स्त्री० आँख की पुतली।
वि० आँखवाली स्त्री। जैसे—मृगनयनी।

नयनू–संज्ञा पुं० १. मक्खन। २. एक प्रकार का मलमल।

नयर*–संज्ञा पुं० दे० "नगर"

नयशील–वि० १. विनीत। नीतिज्ञ।

नया–वि० नवीन। हाल का। नूतन। ताजा। अभिनव। आधुनिक।।
मुहा०—नया करना=कोई नया फल या अनाज, मौसिम में पहले पहल खाना। नया-पुराना करना=१. पुराना हिसाब साफ कर के नया हिसाब चलाना (महाजनी)। २. पुराने को हटाकर उसके स्थान पर नया करना या रखना।

नयापन–संज्ञा पुं० नया होने का भाव। नवीनता।

नयाम–संज्ञा पुं० [फा०] तलवार की म्यान।

नर–संज्ञा पुं० १. मनुष्य। पुरुष। मर्द। आदमी। २. विष्णु। ३. शिव। महादेव। ४. अर्जुन। ५. एक देव-योनि। ६. छाया आदि जानने के लिए खड़े बल गाड़ी गई खूँटी। शंकु। लंब। ७. सेवक। ८. दोहे का एक भेद, जिसमें १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। ९. छप्पय का एक भेद, जिसमें १०. गुरु और १३ लघु होते हैं। ११. दे० "नर-नारायण"। पानी का नल।
वि० पुरुष जाति का प्राणी। मादा का उलटा।

नरकंत*–संज्ञा पुं० राजा।

नरई†–संज्ञा स्त्री० गेहूँ की बाल का डंठल। एक तरह की घास।

नरक–संज्ञा पुं० १. पुराणों और धर्मशास्त्रों आदि के अनुसार वह स्थान, जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिए भेजी जाती है। पाप-भोगस्थान। दोजख। जहन्नम। २. बहुत ही गंदा स्थान। ३. बहुत अधिक पीड़ा का स्थान।

नरकगामी–वि० नरक में जानेवाला।

नरक चतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी, जिस दिन घर का कूड़ा-करकट निकालकर फेंका जाता है।

नरकचूर–संज्ञा पुं० दे० "कचूर"।

नरकट–संज्ञा पुं० बेंत की तरह का एक पौधा। इसके डंठल कलमें, निगालियाँ, दौरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।

नरकासुर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध असुर। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काटा था।

नरकान्तक–संज्ञा पुं० विष्णु। श्रीकृष्ण।

र–संज्ञा पुं० १. प्रेत। पिशाच। २. नरक का रोग। कुष्ठ रोग।

रकी–वि० दे० "नारकी"।

रकेसरी–संज्ञा पुं० नृसिंह। भगवान् का चौथा अवतार।

नरश्रेष्ठ।

र–संज्ञा पु० दे० "नरकेसरी"।

रगिस–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक पौधा, जिसमें सफेद रंग का फूल लगता है। फारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं।

नरतात–संज्ञा पु० १. राजा। २. जनप्रिय नेता।

नरत्राण–संज्ञा पु० राजा।

नरत्व–संज्ञा पुं० नर होने का भाव। पुरुषत्व। पुरुष के लक्षण।

नरद–संज्ञा स्त्री० १. ध्वनि। नाद। २. चौसर खेलने की गोटी। ३. एक पौधा।

नरदन–संज्ञा स्त्री० गरजना। नाद करना।

नरदना–संज्ञा स्त्री० नाद करना। गरजना।

नरदमा या नरदवाँ–संज्ञा पुं० मैले पानी का नल। नाला। मोरी। पनाला।

नरदा–संज्ञा पु० नाला। दे० "नरदवाँ"।

नरदारा–संज्ञा पु० १. जनखा। हिजड़ा। नपुंसक। २. डरपोक। कायर।

नरदेव–संज्ञा पु० १. राजा। नृपति। २. ब्राह्मण।

नरनाथ–संज्ञा पु० राजा।

नर-नारायण–संज्ञा पुं० नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

नरनारी–संज्ञा स्त्री० नर (अर्जुन) की स्त्री. द्रौपदी। पांचाली।

नरनाह*–संज्ञा पु० दे० "नरनाथ"। राजा।

नरनाहर–संज्ञा पु० नृसिंह भगवान्।

नरपति–संज्ञा पु० राजा।

नरपाल–संज्ञा पुं० नृपाल। राजा।

नरपिशाच–संज्ञा पुं० मनुष्य होकर राक्षस के कार्य करनेवाला।

नरपुर-संज्ञा पुं० मनुष्य-लोक। संसार।

नरबदा–संज्ञा स्त्री० दे० "नर्मदा"।

नरभक्षी–संज्ञा पुं० मनुष्य खानेवाला। राक्षस।

नरम–वि० १. [फा०] मुलायम। कोमल। नम्र। २. लचकदार। लचीला। ३. मंदा। ४. धीमा। ५. सुस्त। आलसी। ६. जल्दी पचनेवाला। ७. जिसमें पौरुष का अभाव हो।

नरमट–संज्ञा स्त्री० मुलायम जमीन। नरम मिट्टी।

नरमद–वि० १. सुखद। सुख देनेवाला। २. मसखरा।

नरमा–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की कपास। २. सेमर की रूई। ३. कान के नीचे का भाग। लौल। ४. एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी"।

नरमाना–क्रि० स० १. मुलायम करना। नरम करना। २. शांत करना। धीमा करना। क्रि० अ० १. नरम होना। मुलायम होना। २. शांत होना। ठंढा होना।

नरमी–संज्ञा स्त्री० कोमलता। नरम होने का भाव। मुलायमियत।

नरमेध–संज्ञा पुं० प्राचीन काल में एक प्रकार का यज्ञ, जिसमें मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी या मनुष्य की बलि चढ़ाई जाती थी।

नरलोक–संज्ञा पुं० संसार। मनुष्य-लोक।

नरवा–संज्ञा पुं० एक तरह की चिड़िया।

नरवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "नरई"।

नरवाह, नरवाहन–संज्ञा पुं० मनुष्य-द्वारा खींची जानेवाले या उठाकर ले जानेवाली सवारी। पालकी। तामजान।

नरव्याघ्र–संज्ञा पु० मनुष्यों में श्रेष्ठ। दे० "नरकेसरी"।

नरसल–संज्ञा पुं० दे० "नरकट"।

नरसार–संज्ञा पु० नौसादार।

नरसिंगा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा। तुरही। दे० "नरसिंघा।"

नरसिंघ–संज्ञा पुं० दे० "नृसिंह"।

नरसिंघा–संज्ञा पु० तुरही की तरह का तांबे का एक बड़ा बाजा, जो फूँककर बजाया जाता है।

नरसिंह–संज्ञा पुं० दे० "नृसिंह"।

नरसों–संज्ञा पुं० परसों के बाद का दिन। बीता हुआ या आनेवाला चौथा दिन।

नरहरि–संज्ञा पुं० नृसिंह भगवान्, जो दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं। नरसिंह।

नरहरी–संज्ञा पुं० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है।

नरांतक–संज्ञा पुं० रावण का एक पुत्र, जिसे अंगद ने मारा था।

नराच–संज्ञा पुं० १. तीर। बाण। शर। २. पंचचामर नामक छंद।

नराचिका–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद। वितान वृत्त का एक भेद।

नराज–वि० दे० "नाराज"।

नराजना*–क्रि० स० अप्रसन्न करना। नाराज करना।

क्रि० अ० अप्रसन्न होना। नाराज होना।

नराट*†–संज्ञा पुं० राजा।

नराधिप–संज्ञा पुं० राजा। नरपति।

नरिंद*†–संज्ञा पुं० राजा। नरेंद्र।

नरियर†–संज्ञा पुं० दे० "नारियल"। दे० "नरिया"।

नरिया†–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा। अगल-बगल के खपरों की कोर को ढकनेवाली। इससे मूँद देने पर खपरों की सन्धि में पानी नहीं जाता।

नरियाना‡–क्रि० अ० जोर से चिल्लाना।

नरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नली। नाली। २. स्त्री। नारी। ३. सिझाया हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा। ४. ढरकी के भीतर की नली, जिस पर तार लपेटा रहता है। ५. नार (जुलाहा)। ६. एक घास।

नरई†–संज्ञा स्त्री० छुच्छी।

नरेन्द्र–संज्ञा पुं० १. राजा। नृप। नरेश। २. साँप-बिच्छू आदि के काटने की दवा करनेवाला। विषवैद्य। ३. २८ मात्राओं का एक छंद, जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

नरेली–संज्ञा स्त्री० १. नारियल की खोपड़ी। २. नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

नरेश–संज्ञा पुं० राजा। नृप।

नरोत्तम–संज्ञा पुं० श्रेष्ठ मनुष्य। ईश्वर। श्रीकृष्ण।

नर्त्तक–संज्ञा पुं० [स्त्री० नर्त्तकी] १. नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला। नट। २. चारण। बंदीजन। ३. महादेव। ४. एक प्रकार की संकर जाति।

नर्त्तकी–संज्ञा स्त्री० नाचनेवाली। नटी। वेश्या।

नर्त्तन–संज्ञा पुं० नृत्य। नाच।

नर्त्तना*–क्रि० अ० नाचना।

नर्द–संज्ञा स्त्री० चौसर की गोटी।

नर्दन–संज्ञा स्त्री० भीषण ध्वनि।

नर्दा–संज्ञा पुं० पनाला। नाली।

नर्म–संज्ञा पुं० १. कौतुक। क्रीड़ा। लीला। परिहास। हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। २. हँसी-दिल्लगी करनेवाला। सखा।

वि० दे० "नरम"।

नर्मठ–संज्ञा पुं० १. दिल्लगीबाज। २. उपपति। ३. ठोढ़ी। ४. स्तन।

नर्मद–संज्ञा पुं० दिल्लगीबाज। मसखरा। भाँड़।

वि० आनन्ददायक। सुखदायक।

नर्मदा–संज्ञा स्त्री० मध्यप्रदेश की एक नदी, जो अमरकंटक से निकलकर भड़ौंच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है।

नर्मदेश्वर–संज्ञा पुं० शिव। महादेव। एक प्रकार के अंडाकार शिवलिंग, जो नर्मदा नदी से निकलते हैं।

नर्मद्युति–संज्ञा स्त्री० प्रतिमुख संधि के १३ अंगों में से एक (नाट्य०)।

नर्मसचिव–संज्ञा पुं० विदूषक। मुसाहब। हँसी-मजाक करनेवाला राजा का साथी।

नर्म सुहृद्–संज्ञा पुं० दे० "नर्मसचिव"।

नर्मी–संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी"।

नर्री–संज्ञा स्त्री० १. एक तरह की घास। २. एक तरह का पहाड़ी बाँस।

नल–संज्ञा पुं० १. नरकट। तृण-विशेष २. कमल। ३. निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र, जिनका विवाह विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयंती के साथ हुआ था। (नल और दमयंती की कथा प्रसिद्ध हैं।) ४. राम की सेना का एक बंदर, जिसने समुद्र पर पुल बाँधा था।

[अंग्रे०] १. पानी की कल। घरों में लगा हुआ नल या कल जिससे पानी आता है। २. पोली लंबी चीज। ३. धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लंबा खंड। ४. गंदगी और मैला आदि बहने का मार्ग। पनाला। नाली।

५. पेड़ू के अन्दर की नली, जिससे पेशाब नीचे उतरता है।

नलक–संज्ञा पुं० नली के आकार की हड्डी।

नलका†–संज्ञा स्त्री० नली।

नलकिनी–संज्ञा स्त्री० जंघा।

नलकील–संज्ञा पुं० घुटना।

नलकूप–संज्ञा पुं० ऐसा कुआँ, जिसमें से नल के जरिए पानी निकाला जाता है। [अंग्रे०] ट्यूबवेल।

नलकूबर–संज्ञा पुं० कुबेर के एक पुत्र। कहते हैं कि ये और इनके भाई मणिग्रीव नारद के शाप से यमलार्जुन हुए थे। श्रीकृष्ण ने इन्हें स्पर्श करके शापमुक्त किया था।

नलकोल–संज्ञा पुं० एक तरह का बैल।

नलद–संज्ञा पुं० १. फूलों का रस। मकरन्द। २. उशीर। खस। ३. जटामासी। एक घास।

नलसेतु–संज्ञा पुं० रामेश्वर के निकट समुद्र पर बँधा हुआ पुल, जिसे श्रीरामचन्द्र ने बनवाया था।

नला–संज्ञा पुं० १. पेड़ के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नल। २. हाथ या पैर की नली के आकार की लंबी हड्डी।

नलिका–संज्ञा स्त्री० १. नली। नल के आकार की कोई वस्तु। चोंगा। नाड़ी। २. एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। ३. प्राचीन काल का एक अस्त्र। नाल। ४. तरकश जिसमें तीर रखते हैं।

नलिन–संज्ञा स्त्री० १. कमल। २. पानी। ३. पक्षी-विशेष। सारस पक्षी। ४. नीली कुमुदिनी।

नलिनी–संज्ञा स्त्री० १. कमलिनी। कमल। कुमुदिनी। २. वह देश, जहाँ कमल अधिकता से होते हों। ३. पुराणानुसार गंगा की एक धारा का नाम। ४. नलिका नामक गंध-द्रव्य। ५. नदी। ६. एक वर्णवृत्त। मनहरण। ७. भ्रमरावली।

नलिनीरुह–संज्ञा पुं० १. कमल की नाल। मृणाल। २. ब्रह्मा।

नलिया†–संज्ञा पुं० १. बहेलिया। व्याध। चिड़ी-मार। २. निषाद।

नली–संज्ञा स्त्री० १. नल के आकार की हड्डी। पतला नल। छोटा चोंगा। २. जुलाहों का नाल। लोहे का एक यंत्र, जिसमें सूत रख कर कपड़े बिनते हैं। ३. पैर की पिंडली। ४. गले की घंटी या हड्डी। ५. बंदूक की नली, जिसमें होकर गोली गुजरती है।

नलुआ–संज्ञा पुं० छोटा नल या चोंगा। बाँस का चोंगा।

नल्ली–संज्ञा स्त्री० दे० "नली।"

नवंबर–संज्ञा पुं० अँगरेजी साल का ग्यारहवाँ महीना।

नव–वि० १. नया। नवीन। नूतन। २. नौ की संख्या। आठ और एक।

नवक–संज्ञा पुं० एक ही तरह की नौ चीजों का समूह।

नवकारिका–संज्ञा स्त्री० नवयौवना। नवोढ़ा स्त्री।

नवकालिका–संज्ञा स्त्री० नवयौवना। पहले पहल रजस्वला होनेवाली स्त्री।

नवकुमारी–संज्ञा स्त्री० नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ, जिनमें नौ देवियों की कल्पना की जाती है।

नवखण्ड–संज्ञा पुं० पृथ्वी के नौ भाग। प्राचीन भूगोल-वेत्ताओं ने पृथ्वी को नौ भागों में बाँटा था (भारत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश, रम्य)।

नवग्रह–संज्ञा पुं० फलित ज्योतिष के नौ ग्रह—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।

नवछावरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "न्योछावर"।

नवजात–वि० जो अभी पैदा हुआ हो।

नवतन†*–वि० नया।

नवदंड–संज्ञा पुं० राजाओं के तीन प्रकार के छत्रों में से एक।

नवदल–संज्ञा पुं० कमल का वह पत्ता, जो केसर के पास होता है।

नवदुर्गा–संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार दुर्गा की नौ मूर्तियाँ जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है। यथा—शैलपुत्री, ब्रह्म-चारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्या-यनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवद्वार—संज्ञा पुं० शरीर के नौ मार्ग (दो आँखें, दो कान, नाक के दो छेद, एक मुख, एक गुदा, एक जननेंद्रिय)।

नवद्वीप—संज्ञा पुं० नदिया। पूर्वी बंगाल का एक नगर।

नवधा भक्ति—संज्ञा स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति। यथा—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्म-निवेदन।

नवन*—संज्ञा पुं० "नमन"।

नवना*†—क्रि० अ० १. झुकना। २. नम्र होना।

नवनि†*—संज्ञा स्त्री० १. झुकने की क्रिया या भाव। २. नम्रता। दीनता।

नवनिधि—संज्ञा पुं० कुबेर का खजाना। नौ तरह की निधियाँ। दे० "निधि।"

नवनीत—संज्ञा पुं० मक्खन।

नवपदी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद। चौपाई छंद का एक नाम।

नवप्राशन—संज्ञा पुं० नये फल या अन्न का भोजन।

नवबाला—संज्ञा स्त्री० नवयौवना। युवती।

नववधू—संज्ञा स्त्री० नई बहू। दुलहिन।

नवम—वि० जो गिनती में नौ के स्थान पर हो। नवाँ।

नवमल्लिका—संज्ञा स्त्री० १. चमेली। २. नेवारी।

नवमांश—संज्ञा पुं० नवाँ हिस्सा। एक राशि का नवाँ भाग। नौ भागों में से एक भाग।

नवमालिका—संज्ञा स्त्री० १. नवमालिनी। २. नेवारी का फूल। ३. वर्णवृत्त-विशेष।

नवमालिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "नवमल्लिका।"

नवमी—संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की नवीं तिथि। चन्द्रमा की नवीं कला का समय।

नवयज्ञ—संज्ञा पुं० नये अन्न की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला यज्ञ।

नवयुवक—संज्ञा पुं० [स्त्री० नवयुवती] नौजवान पुरुष। तरुण।

नवयुवा—संज्ञा पुं० दे० "नवयुवक"।

नवयौवना—संज्ञा स्त्री० नौजवान औरत। वह स्त्री, जिसका यौवन प्रारम्भ हो गया हो। युवती। तरुणी।

नवरंग—वि० १. सुन्दर। रूपवान्। २. नए ढंग का। नवेला।

नवरंगी—वि० १. नित्य नए आनंद करनेवाला। २. हँसमुख। खुशमिजाज।
संज्ञा स्त्री० दे० "नारंगी"।

नवरत्न—संज्ञा पुं० १. नौ प्रकार के मणि। मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम, ये नौ रत्न हैं। २. राजा विक्रमादित्य की सभा के नौ पंडित—धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि। ३. गले में पहनने का नौ रत्नों का हार।

नवरस—संज्ञा पुं० काव्य के नौ रस—शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त।

नवरात्र—संज्ञा पुं० चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (पहली तिथि) से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिनों का एक व्रत, जिसमें दुर्गा की पूजा होती है। प्राचीन काल में नौ दिनों में होनेवाला एक यज्ञ।

नवल—वि० १. नवीन। नया। २. सुन्दर। ३. मनोहर। ४. उज्ज्वल। साफ।

नवल-अनंगा—संज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक।

नवलकिशोर—संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचन्द्र।

नवल-वधू—संज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक।

नवला—संज्ञा स्त्री० युवती।

नववर्ष—संज्ञा पुं० नया साल।

नवविंश—वि० उनतीसवाँ।

नवविंशति—वि० उनतीस।
संज्ञा स्त्री० उनतीस की संख्या। २९।

नवशिक्षित—संज्ञा पुं० १. जिसने हाल में शिक्षा प्राप्त की हो। नौसिखुआ। २. जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नवसंगम—संज्ञा पुं० पति-पत्नी की पहली भेंट। प्रथम समागम।

नवसत*—संज्ञा पुं० दे० "नव सप्त"। नव और सात। सोलह शृंगार।

वि० सोलह। षोडश।
नवसप्त–संज्ञा पुं० नौ और सात। सोलह शृंगार।
नवसर–संज्ञा पुं० नौ लड़ का हार।
वि० नवयुवक।
नवससि*–संज्ञा पुं० द्वितीया या दूज का चाँद। नया चाँद।
नवां–वि० गिनती में आठ के बाद। नौवाँ।
नवांश–संज्ञा पुं० नवाँ हिस्सा।
नवा–वि० नया। नवीन।
नवाई–संज्ञा स्त्री० विनीत होने का भाव। नम्रता।
†*वि० नया। नवीन।
नवागत–वि० नया आया हुआ।
नवाज–वि० [फा०] कृपा करनेवाला।
नवाजना†*–क्रि० स० कृपा करना। दया दिखलाना।
नवाजिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] दया। कृपा। अनुग्रह।
नवाड़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की नाव। डोंगी।
नवाना–क्रि० स० १. झुकाना। नवा देना। नम्र करना। २. विनीत करना।
नवान्न–संज्ञा पुं० १. फसल का नया अनाज। २. एक प्रकार का श्राद्ध।
नवाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुगल सम्राटों के समय में बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त होता था। २. छोटे-मोटे मुसलमानी राजाओं की एक उपाधि।
वि० बहुत शान-शौकत और अमीरी ढंग से रहने तथा खूब खर्च करनेवाला।
नवाबजादा–संज्ञा पुं० [फा०] १. नवाब का पुत्र। २. बहुत शौकीन व्यक्ति।
नवाबी–संज्ञा स्त्री० १. नवाब का पद। २. नवाब का काम। ३. नवाब की हालत। ४. नवाबों का शासन-काल। ५. नवाबों की-सी हुकूमत। ६. बहुत अधिक अमीरी।
नवारी–संज्ञा स्त्री० पुष्प-विशेष। नवारी का फूल।
नवासा–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० नवासी] बेटी का बेटा। दौहित्र।
नवासी–वि० एक संख्या। अस्सी और नव। ८९।
नवाह–संज्ञा पुं० नौ दिन में समाप्त होनेवाला रामायण आदि का पाठ।
नवीन–वि० १. नया। नूतन। हाल का। ताजा। २. विचित्र। अपूर्व। ३. [स्त्री० नवीना] नवयुवक। जवान।
नवीनता–संज्ञा स्त्री० नवीन या नया होने का भाव। नयापन। नूतनता।
नवीस–संज्ञा पुं० [फा०] लिखनेवाला। लेखक। कातिब।
नवीसी–संज्ञा स्त्री० [फा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।
नवेद–संज्ञा पुं० १. निमंत्रण। न्योता। २. निमंत्रणपत्र।
नवेला–वि० [स्त्री० नवेली] १. नवीन। नया। २. तरुण। जवान।
नवोढ़ा–संज्ञा स्त्री० १. नव विवाहिता स्त्री। वधू। २. नवयौवना। युवती। ३. साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका, जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।
नव्बे–वि० ९०। नव दहाई। सौ से दस कम की संख्या।
नव्य–वि० नया। नूतन। नवीन।
नशना*–क्रि० अ० नाश। नष्ट होना।
नशा–संज्ञा पुं० १. मादक द्रव्य खाने या पीने से उत्पन्न अवस्था। नशा करनेवाली वस्तु। मादक द्रव्य। २. घमंड। अभिमान। मद। गर्व।
मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना=किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा छाना=नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना। नशा जमना=अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना=किसी असंभवित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना। नशा-पानी=मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। नशे का सामान। नशा उतारना= घमंड दूर करना।

नशाखोर—संज्ञा पुं० [फा०] नशे का सेवन करनेवाला। नशेबाज।

नशाना*—क्रि० स० नष्ट करना।

नशावन*†—वि० नाश करना।

नशीन—वि० [फा०] बैठनेवाला।

नशीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला—वि० १. नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २. जिस पर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें=वे आँखें, जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज—संज्ञा पुं० [फा०] बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करनेवाला।

नश्तर—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत तेज चाकू, जिसका प्रयोग फोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर—वि० नाशवान्। मिथ्या। जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नश्वरता—संज्ञा स्त्री० नश्वर का भाव। नष्ट हो जाने का भाव।

नषत*—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट—वि० १. जिसका नाश हो गया हो। २. ध्वस्त। बबाद। अदृश्य। ३. अधम। नीच। भ्रष्ट। ४. निष्फल। व्यर्थ।

नष्टबुद्धि—वि० मूर्ख। मूढ़।

नष्ट-भ्रष्ट—वि० जो बिलकुल टूट-फूट या नष्ट हो गया हो। ध्वस्त।

नष्टा—संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। रंडी। २. व्यभिचारिणी। कुलटा।

नसंक*†—वि० दे० "निःशंक"। निर्भय। निडर।

नस—संज्ञा स्त्री० स्नायु। नाड़ी। रंग। शरीर-तंतु या रक्तवाहिनी नली।

मुहा०—नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना=शरीर में किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर-उधर हो जाना या बल खा जाना। नस-नस में=सारे शरीर में। सर्वांग में। नस-नस फड़क उठना=बहुत अधिक प्रसन्नता होना।

नसकटा—संज्ञा पुं० नपुंसक। हिजड़ा। जनखा।

नस-तरंग—संज्ञा पुं० एक बाजा जिसको गले की घंटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसना*†—क्रि० अ० १. नष्ट होना। बरबाद होना। २. बिगड़ जाना।

क्रि० अ० भागना।

नसब—संज्ञा पुं० [अ०] वंश। खानदान।

नसर—संज्ञा स्त्री० [अ०] गद्य। इबारत।

नसल—संज्ञा स्त्री० [अ०] वंश।

नसवार—संज्ञा स्त्री० सूँघने के लिए तमाकू के पीसे हुए पत्ते। सुँघनी। नास।

नसाना*†—क्रि० अ० १. नाश करना। बिगाड़ना। खराब करना। भ्रष्ट करना। २. तितर-बितर करना। ३. नष्ट हो जाना। बिगड़ जाना।

नसावना‡—क्रि० अ० दे० "नसाना"।

नसीब—संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०—नसीब होना=प्राप्त होना। मिलना।

नसीबवर—वि० [अ०] भाग्यवान्।

नसीहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. उपदेश। शिक्षा। सीख। २. सम्मति।

नसूड़िया†—वि० मनहूस।

नसेनी—संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।

नस्त—संज्ञा पुं० नाक।

नस्तरन—संज्ञा पुं० [फा०] १. सफेद गुलाब। सेवती। २. कपड़े की एक किस्म।

नस्ता—संज्ञा स्त्री० पशुओं की नाक का छेद, जिसमें रस्सी डाली जाती है।

नस्य—संज्ञा पुं० १. नास। सुंघनी। २. चूर्ण आदि, जिसे सूँघते हैं। ३. बैलों की नाक में पहनाई जानेवाली रस्सी।

नस्वर*†—वि० दे० "नश्वर"।

नहँ‡—संज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

नह—संज्ञा पुं० नख। नखर। नाखून।

नहक—वि० १. दुर्बल। क्षीण-बल। २. पतला।

नहछू—संज्ञा पुं० विवाह की एक रस्म, जिसमें वर के नाखून काटे जाते हैं और उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है।

नहट्टा—संज्ञा पुं० नखक्षत। नखाघात। खसोट।

नहन—संज्ञा पुं० पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

नहना*–क्रि० स० नाधना। काम में लगाना। जोतना।
नहनी–संज्ञा स्त्री० नख काटने का औजार-विशेष।
नहन्नी–संज्ञा स्त्री० नहनी। नहरनी।
नहर–संज्ञा स्त्री० [फा०] खेतों की सिंचाई आदि के लिए तैयार की गई जलधारा।
नहरनी–संज्ञा स्त्री० नाखून काटने का एक औजार।
नहरुआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग। एक प्रकार का घाव, जिसमें सूत के समान कीड़े निकलते हैं।
नहला–संज्ञा पुं० ताश का वह पत्ता, जिस पर नौ बूटियाँ होती हैं।
नहलाई–संज्ञा स्त्री० नहलाने की क्रिया, या मजदूरी।
नहलाना–क्रि० स० दूसरे को स्नान कराना। नहवाना।
नहसुत–क्रि० स० नख की रेखा। नाखून का निशान।
नहान–संज्ञा पुं० १. स्नान। नहाने की क्रिया। २. स्नान का पर्व।
नहाना–क्रि० अ० १. शरीर को जल से धोना। स्नान करना। २. किसी तरल पदार्थ से सारे शरीर का भीग जाना। बिलकुल तर हो जाना।
मुहा०—दूधों नहाना, पूतों फलना=धन और परिवार से पूर्ण होना (आशीर्वाद)।
नहार–वि० जिसने सबेरे से कुछ खाया न हो। बासी मुँह।
नहारी–संज्ञा स्त्री० कलेवा। प्रातःकाल का जलपान।
नहिं*–अव्य० दे० "नहीं"।
नहीं–अव्य० न। मत। निषेध या अस्वीकृति प्रकट करनेवाला अव्यय।
मुहा०—नहीं तो=उस दशा में जब कि यह बात न हो। नहीं सही=यदि ऐसा न हो तो कोई चिन्ता या हानि नहीं।
नहुष–संज्ञा पुं० १. अयोध्या के एक प्राचीन इक्ष्वाकुवंशी राजा जो अंबरीष के पुत्र और ययाति के पिता थे। २. एक नाग का नाम। ३. विष्णु।
नहूसत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनहूसी। उदासीनता। खिन्नता। २. अशुभ लक्षण।
नाँ–अव्य० दे० "नहीं"।
नाँउँ–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाँगा–वि० दे० "नंगा"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु, जो नंगे ही रहते हैं। नागा।
नाँघना*†–क्रि० स० लाँघना। इस पार से उस पार उछलकर जाना।
नाँठना*–क्रि० अ० नष्ट होना।
नाँद–संज्ञा स्त्री० मिट्टी का बड़ा और चौड़ा बरतन, जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है। हौदी।
नाँदना*–क्रि० अ० १. शब्द करना। शोर करना। २. छींकना। ३. आनंदित होना। प्रसन्न होना। ४. दीपक का बुझने के पहले भभकना।
नांदी–संज्ञा पुं० १. समृद्धि। उत्थान। अभ्युदय। २. नाटक के आरम्भ में सूत्रधार के द्वारा पढ़ा जानेवाला आशीर्वादात्मक पद्य या श्लोक। मंगलाचरण।
नांदीक–संज्ञा पुं० १. शुभ लक्षण के लिए तैयार किया हुआ द्वार। तोरण-स्तम्भ। २. नांदीमुख (श्राद्ध)।
नांदीमुख–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का श्राद्ध, जो विवाह आदि मंगल के अवसरों पर किया जाता है। वृद्धिश्राद्ध। २. वे पूर्वज, जिनका श्राद्ध किया जाय या जिनके लिए तर्पण किया जाय।
संज्ञा स्त्री० दो नगण, दो तगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।
नाँयँ*‡–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।
नाँवँ–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाँह*–संज्ञा पुं० नाथ। स्वामी।
ना–अव्य० नहीं। न। निषेध या अस्वीकृति-सूचक अव्यय।
नाइक*–संज्ञा पुं० दे० "नायक"।
नाइन–संज्ञा स्त्री० १. नाई जाति की स्त्री। २. नाई की स्त्री।
नाइब*–संज्ञा पुं० दे० "नायब"।

नाईं–संज्ञा स्त्री० समान दशा।
वि० समान। तुल्य।
नाई–संज्ञा पुं० नाऊ। हज्जाम। नापित।
नाउँ‡*–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाउ*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "नाव"।
नाउन†–संज्ञा स्त्री० दे० "नाइन"।
नाउम्मेद–वि० [फ़ा०] निराश।
नाउम्मेदी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] निराशा।
नाऊ†–संज्ञा पुं० दे० "नाई"।
नाकंद–वि० बिना निकाला हुआ (घोड़ा आदि)। अल्हड़। अशिक्षित।
नाक–संज्ञा स्त्री० १. साँस लेने की इन्द्रिय। नासिका। २. रेंट। नेटा। ३. प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत। मान।
संज्ञा पुं० १. मगर की जाति का एक प्रसिद्ध जलजंतु। २. स्वर्ग। ३. अंतरिक्ष। आकाश। ४. अस्त्र का एक आघात।
मुहा०—नाक कटना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना। नाक-कान काटना=कड़ा दंड देना। (किसी की) नाक का बाल=सदा साथ रहनेवाला, घनिष्ठ मित्र या मंत्री। नाक चढ़ना=क्रोध आना। त्योरी चढ़ना। नाकों चने चबवाना=खूब तंग करना। नाक-भौं चढ़ाना या नाक-भौं सिकोड़ना=१. अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना। २. घिनाना और चिढ़ना। ३. नापसंद करना। नाक में दम करना या नाक में दम लाना=बहुत तंग करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना=बहुत गिड़गिड़ाना और विनती करना। मिन्नत करना। नाकों दम आना=हैरान हो जाना। नाक रख लेना=प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।
यौ०—नाकघिसनी=विनती और गिड़गिड़ाहट।
नाकड़ा–संज्ञा पुं० एक रोग, जिसमें नाक पक जाती है।
मुहा०—नाकड़ा बन्द कर देना=घर से निकलना बन्द कर देना। तबाह कर देना।
नाक़दर–वि० [संज्ञा नाकदरी] जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो।
नाकना†*–क्रि० स० १. लाँघना। उल्लंघन करना। २. बढ़ जाना। मात कर देना।
नाकबुद्धि–वि० क्षुद्र बुद्धिवाला। ओछी समझ का।
नाका–संज्ञा पुं० १. प्रवेश-द्वार। मुहाना। २. गली या रास्ते का आरंभ-स्थान। ३. नगर, दुर्ग आदि का प्रवेश-द्वार। फाटक। ४. पुलिस के सिपाहियों के तैनात रहने का स्थान। चौकी। वह स्थान जहाँ निगरानी रखने, या महसूल आदि वसूल करने के लिए सिपाही तैनात हों। ५. सूई का छेद। ६. जुलाहों का एक औजार। ७. मगर की जाति का एक जलजन्तु।
मुहा०—नाका छेंकना या बाँधना=आने-जाने का मार्ग रोकना।
नाकाबंदी–संज्ञा स्त्री० किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट। फाटक पर रोका जाना। दे० "नाकेबन्दी"।
नाक़ाबिल–वि० [फ़ा०] अयोग्य। नालायक।
नाकाम–वि० [फ़ा०] निराश। असफल। विफल-मनोरथ।
नाकारा–वि० [फ़ा०] खराब। बुरा।
नाक़िस–वि० [अ०] बुरा। खराब। मनहूस।
नाकली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कंद, जो सर्प के विष को दूर करता है।
नाकेदार–संज्ञा पुं० १. नाके या फाटक पर रहनेवाले सिपाही। २. आने-जाने के प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिए तैनात अधिकारी।
वि० जिसमें नाका या छेद हो।
नाकेबंदी–संज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की रुकावट। फाटक का बन्द होना। एक देश से किसी दूसरे देश को सामान आदि भेजने पर लगाई गई रोक। किसी देश को सामान न भेजने का आदेश।
नाकेश–संज्ञा पुं० इन्द्र।
नाक्षत्र–वि० नक्षत्र-संबंधी।
नाखना*†–क्रि० स० १. नाश करना। बिगाड़ना। २. फेंकना। गिराना।
क्रि० स० उल्लंघन करना। लाँघना।
नाख़ुना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. आँख का एक

रोग, जिसमें आँख की सफेदी में लाल झिल्ली पैदा हो जाती है। घोड़े की आँख का एक रोग। २. चीरा बाँधने का अंगुश्ताना।

नाखुर–संज्ञा पुं० विवाह के पहले की एक रस्म। दे० "नहछू"।

नाखुश–वि० [फा०] [संज्ञा नाखुशी] अप्रसन्न। नाराज।

नाखुशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] नाराजगी। अप्रसन्नता।

नाखून–संज्ञा पुं० १. नख। नहँ। उँगलियों के छोर पर नोक की तरह निकली हुई कड़ी वस्तु। २. चौपायों की टाप या खुर का बढ़ा हुआ किनारा।

नाग–संज्ञा पुं० [स्त्री० नागिन] १. सर्प। साँप। २. कद्रु से उत्पन्न कश्यप की संतान, जिनका स्थान पाताल लिखा गया है। ३. दे० "नागा"। एक देश का नाम। ४. आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जाति। ५. आसाम में वह पहाड़, जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है। एक पर्वत। ६. हाथी। ७. गँगा। ८. सीसा (धातु)। ९. नागकेसर। १०. पुन्नाग। ११. पान। तांबूल। १२. नागवायु। १३. बादल। १४. आठ की संख्या। १५. दुष्ट या क्रूर मनुष्य।

मुहा०—नाग खेलाना=ऐसा कार्य करना, जिसमें प्राण जाने का भय हो।

नागकन्या–संज्ञा स्त्री० नाग जाति की कन्या, जो बहुत सुन्दर मानी गई है।

नागकेसर–संज्ञा पुं० पुष्प-विशेष। एक वृक्ष, जिसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं। नाग-चंपा।

नाग-गर्भ–संज्ञा पुं० सिन्दूर।

नाग-चाम्पेय–संज्ञा पुं० नागकेसर-वृक्ष।

नागज–संज्ञा पुं० १. सिन्दूर। २. रंग।

नागझाग*–संज्ञा पुं० अफीम।

नागन, नागनी–संज्ञा स्त्री० दे० "नागिन"। सर्पिणी। साँपिन।

नागदन्त–संज्ञा पुं० १. हाथी का दाँत। २. खूँटी।

नागदन्तक–संज्ञा पुं० १. घर की दीवाल में लगे हुए डंडे। खूँटी। २. आला। ताख।

नागदमन–संज्ञा पुं० दे० "नागदौन।"

नागदौन–संज्ञा पुं० १. छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़। कहते हैं, इसकी लकड़ी के पास साँप नहीं आते। २. दे० "नागदौना"।

नागनग–संज्ञा पुं० गजमुक्ता।

नागपंचमी–संज्ञा स्त्री० श्रावण के शुक्ल-पक्ष की पंचमी। उस दिन नाग की पूजा होती है।

नागपति–संज्ञा पुं० १. सर्पों का राजा वासुकि। २. हाथियों का राजा ऐरावत।

नागपर्णी–संज्ञा स्त्री० पान।

नागपाश–संज्ञा पुं० एक अस्त्र, जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे। फाँस। फंदा। फाँसी।

नागफनी–संज्ञा स्त्री० १. एक पौधा, जिसके चौड़े मोटे पत्तों पर जहरीले काँटे होते हैं। २. कान में पहनने का एक गहना।

नागफाँस–संज्ञा पुं० दे० "नागपाश"।

नागफेन–संज्ञा पुं० अफीम।

नागबला–संज्ञा स्त्री० गँगेरन।

नागबेल–संज्ञा स्त्री० १. नागवल्ली। पान की बेल। २. पान।

नागमाता–संज्ञा स्त्री० कश्यप ऋषि की स्त्री, कद्रू।

नागर–वि० [स्त्री० नागरी] १. नगरवासी। २. नगर-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला मनुष्य। २. चतुर। सभ्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति। ३. देवर। ४. गुजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक उपजाति।

नागरता–संज्ञा स्त्री० १. नागरिकता। शहरातीपन। २. नगर का रीति-व्यवहार। सभ्यता। ३. चतुराई।

नागरबेल–संज्ञा स्त्री० नागवल्ली। पान।

नागरमुस्ता–संज्ञा स्त्री० नागरमोथा।

नागरमोथा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का तृण, जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है।

नागराज–संज्ञा पुं० १. शेषनाग। २. ऐरावत। ३. 'पंचामर' या 'नाराच' नामक छंद।

नागरि, नागरिन—संज्ञा स्त्री० चतुर स्त्री। नगर की स्त्री।

नागरिक—वि० १. नगर-संबंधी। नगर का। २. नगर में रहनेवाला। शहराती। ३. चतुर। सभ्य।

नागरिकता—संज्ञा स्त्री० नागरिक के अधिकारों से संपन्न होने की अवस्था।

नागरिपु—संज्ञा पुं० १. सर्प का शत्रु-नकुल, न्योला, मोर, मयूर, गरुड़। २. हाथी का वैरी। सिंह।

नागरी—संज्ञा स्त्री० १. नगर की रहनेवाली स्त्री। २. चतुर स्त्री। प्रवीण स्त्री। ३. भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत, मराठी और हिंदी लिखी जाती है। देवनागरी।

नागल—संज्ञा पुं० हल, जिससे खेत जोतते हैं। लांगल।

नागलोक—संज्ञा पुं० पाताल। नागों का वास-स्थान।

नागवंश—संज्ञा पुं० शक जाति की एक शाखा, जिसका राज्य भारत के कई स्थानों और सिंहल में भी था।

नागवल्ली—संज्ञा स्त्री० पान की लता।

नागवार—वि० [फा०] १. असह्य। २. जो अच्छा न लगे। अप्रिय। बुरा लगनेवाला।

नागा—संज्ञा पुं० १. नग्न। २. नंगा रहनेवाले साधु। ३. दसनामी गुसाइयों की एक शाखा। ४. वैरागियों की एक शाखा। ५. आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जंगली जाति। ६. आसाम में वह पहाड़, जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है। ७. नियत समय पर होनेवाली बात का नियत अवसर पर न होना। अंतर। बीच। बाकी। ८. अनुपस्थिति।

मुहा०—नागा करना=अंतर डालकर देना।

नागारि—संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. नागशत्रु। मयूर। ३. नेवला।

नागार्जुन—संज्ञा पुं० एक प्राचीन विद्वान्। बौद्ध महात्मा।

नागाशन—संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. मयूर। ३. सिंह।

नागिन—संज्ञा स्त्री० १. सर्पिणी। नाग की स्त्री। साँप की मादा। २. पीठ पर रोयों की लंबी भौंरी (अशुभ)।

नागेंद्र—संज्ञा पुं० १. सर्पों का राजा। २. शेष, वासुकि आदि नाग। ३. ऐरावत।

नागेसर*—संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर"।

नागोद—संज्ञा पुं० छाती पर रखने का कवच। उरस्त्राण।

नागौर—संज्ञा पुं० मारवाड़ का एक नगर।

नागौरी—वि० नागौर का अच्छी जाति का बैल, आदि।

वि० १. नागौर की। २. अच्छी जाति की गाय।

नाच—संज्ञा पुं० १. नृत्य। ताल-स्वर के अनुसार और हाव-भाव-युक्त अंगों की गति। २. नाट्य। खेल। ३. कृत्य। कर्म।

मुहा०—नाच काछना=नाच के लिए तैयार होना। नाच दिखाना=१. उछलना-कूदना। हाव-भाव दिखाना। २. विलक्षण आचरण करना। नाच नचाना=१. जैसा चाहना, वैसा काम कराना। २. दिक करना।

नाच-कूद—संज्ञा स्त्री० १. नाच-तमाशा। २. आयोजन। प्रयत्न। ३. गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग। डींग। ४. क्रोध से उछलना।

नाचघर—संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ नाच हो। नृत्यशाला।

नाचना—क्रि० अ० १. चित्त की उमंग से उछलना, कूदना आदि। २. संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार हाव-भावपूर्वक अंगों की गति। नृत्य करना। ३. चक्कर मारना। घूमना। ४. दौड़ना-धूपना। ५. थर्राना। काँपना। ६. क्रोध में आकर उछलना-कूदना। बिगड़ना।

मुहा०—सिर पर नाचना=१. घेरना। ग्रसना। २. पास आना। निकट आना। आँख के सामने नाचना=प्रत्यक्ष प्रतीत होना।

नाच-महल—संज्ञा पुं० दे० "नाचघर"।

नाचरंग—संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद। जलसा।

नाचीज—वि० [फा०] तुच्छ। निरर्थक। वस्तु। नगण्य।

नाज†–संज्ञा पुं० १. अन्न। अनाज। २. [फा] नखरा। ३. घमंड। गर्व।
मुहा०–नाज उठाना=चोचला सहना।
नाज़नी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सुन्दरी स्त्री। प्रियतमा।
नाज़बरदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] नाज-नखरे सहन करना। चोचले बर्दाश्त करना।
नाज़ाँ–वि० [फा०] नाज या अभिमान करनेवाली। अभिमानी।
नाजायज़–वि० [अ०] नियमविरुद्ध। अनुचित।
नाज़िम–वि० [अ०] प्रबंधकर्त्ता।
संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी राज्यकाल में वह प्रधान कर्मचारी, जिस पर किसी देश के प्रबंध का भार रहता था।
नाज़िर–संज्ञा पुं० [अ०] १. निरीक्षक। देख-भाल करनेवाला। २. लेखकों का अफसर। ३. ख्वाजा। महलसरा। ४. वेश्याओं का दलाल।
नाजी–संज्ञा पुं० [अँग्रे०] जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल, जिसका नेता हिटलर था। इस दल का सदस्य।
नाज़ुक–वि० [फा०] १. कोमल। सुकुमार। २. पतला। महीन। बारीक। ३. सूक्ष्म। गूढ़। ४. जरा से झटके या धक्के से टूट-फूट जानेवाला। खतरनाक।
नाज़ुक दिमाग–वि० चिड़चिड़ा। दे० "नाजुक मिजाज"।
नाज़ुक मिजाज–वि० जो थोड़ा-सा कष्ट भी न सह सकें। चिड़चिड़ा।
नाजो–वि० दे० "नाजनी"। लाड़ली। दुलारी। प्रियतमा।
नाट–संज्ञा पुं० १. वासस्थान। रहने की भूमि। २. नृत्य। नाच। ३. नकल। स्वाँग। ४. कर्नाटक के पास का एक देश। ५. उस देश का निवासी।
नाटक–संज्ञा पुं० १. नाट्य या अभिनय करनेवाला। नट। २. रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। ३. दृश्य-काव्य। अभिनय-ग्रंथ।
नाटकशाला–संज्ञा स्त्री० रंगशाला। वह घर या स्थान, जहाँ नाटक होता हो।
नाटकावतार–संज्ञा पुं० किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय।
नाटकिया, नाटकी–वि० नाटकवाला। अभिनय करनेवाला। स्वाँग करनेवाला। मसखरा।
नाटकीय–वि० नाटक-संबंधी।
नाटना–क्रि० अ० प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहना। निकल जाना।
क्रि० स० अस्वीकार करना। इनकार करना।
नाटा–वि० [स्त्री० नाटी] ठिंगना। बौना। छोटा। छोटे कद का।
नाटिका–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का दृश्य-काव्य, जिसमें चार अंक होते हैं। स्वाँग। उपरूपक का एक भेद। २. नाड़ी।
नाटेय–संज्ञा पुं० नटी का पुत्र। वेश्यापुत्र।
नाट्य–संज्ञा पुं० १. अभिनय। नटों का काम। नृत्य, गीत और वाद्य। २. स्वाँग के द्वारा चरित्र-प्रदर्शन। ३. स्वाँग।
नाट्यकार–संज्ञा पुं० १. नाटक लिखनेवाला। २. अभिनेता। नाटक करनेवाला।
नाट्यमंदिर–संज्ञा पुं० नाट्यशाला।
नाट्यशाला–संज्ञा स्त्री० अभिनय करने का स्थान। नाटक-घर।
नाट्यशास्त्र–संज्ञा पुं० १. नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। २. भरत मुनि-कृत एक प्राचीन ग्रंथ। नाटक लिखने के नियम।
नाट्यालंकार–संज्ञा पुं० वह अलंकार-विशेष, जिससे नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है।
नाट्योक्ति–संज्ञा स्त्री० नाटक-विषयक वाक्य-विशेष। व्यक्तियों के लिए नाटकों में प्रयुक्त होनेवाले सम्बोधन।
नाठ*–संज्ञा पुं० १. नाश। ध्वंस। २. अभाव। अनस्तित्व।
नाठना*–क्रि० स० नष्ट करना। ध्वस्त करना।
क्रि० अ० नष्ट होना। ध्वस्त होना। भागना। हटना।
नाठा–संज्ञा पुं० जिस व्यक्ति का कोई वारिस न हो। अनाथ। असहाय। अकेला।
नाड़–संज्ञा स्त्री० ग्रीवा। गर्दन। गला।
नाड़ा–संज्ञा पुं० १. इजारबंद। नीबी। २. लाल या पीला रँगा हुआ गंडेदार सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली।

नाड़ी–संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर की रक्तवाहिनी नलियाँ। २. हठयोग के अनुसार ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वास-वाहिनी नलियाँ। ३. व्रणरंध्र। नासूर का छेद।

मुहा०—नाड़ी चलना=कलाई की नाड़ी में गति होना। नाड़ी छूट जाना=प्राण न रहना। मृत्यु हो जाना। मूर्च्छा आना। बेहोशी आना। नाड़ी देखना= कलाई की नाड़ी दबाकर रोगी की अवस्था का पता लगाना।

नाड़ीमंडल–संज्ञा पुं० नाड़ियों का समूह। नाड़ी-समुदाय।

नाड़ीवलय–संज्ञा पुं० समय निश्चित करने का एक यंत्र।

नाड़ीव्रण–संज्ञा पुं० नसों का घाव। नासूर।

नातरु*–अव्य० और नहीं तो। अन्यथा।

नाता–संज्ञा पुं० सम्बन्ध। लगाव। रिश्ता। रिश्तेदारी। विवाह आदि के कारण आपस का सम्बन्ध।

नाताक़त–वि० जिसे ताकत या बल न हो। निर्बल।

नाती–संज्ञा पुं० [स्त्री० नतिनी, नातिन] बेटे या बेटी का बेटा। पौत्र। पोता।

नाते–क्रि० वि० १. संबंध से। २. हेतु। निमित्त। वास्ते। लिए।

नातेदार–वि० [संज्ञा नातेदारी] संबंधी। रिश्तेदार। सगा।

नाथ–संज्ञा पुं० १. प्रभु। स्वामी। अधिपति। मालिक। २. पति। ३. बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें वश में करने के लिए रस्सी। ४. एक सम्प्रदाय-विशेष। गोरखनाथ-द्वारा चलाए हुए सम्प्रदाय का नाम। संज्ञा स्त्री० १. नाथने की क्रिया या भाव। २. जानवरों की नकेल।

नाथना–क्रि० स० १. बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर रस्सी डालना, जिसमें वे वश में रहें। नकेल डालना। २. किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या तागा डालना। ३. नत्थी करना। ४. लड़ी के रूप में जोड़ना।

नाथद्वारा–संज्ञा पुं० वल्लभ-संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।

नाद–संज्ञा पुं० १. शब्द। ध्वनि। आवाज। गर्जन। २. सानुनासिक स्वर। अर्द्धचंद्र। ३. संगीत।

यौ०—नादविद्या=संगीत-शास्त्र।

नादना*–क्रि० स० बजाना।

क्रि० अ० १. बजना। शब्द करना। २. चिल्लाना। गरजना। लहकना। लहलहाना। प्रफुल्लित होना।

नादली–संज्ञा स्त्री० १. हृदय की रोग-बाधा दूर करने के लिए संग यशब नामक पत्थर की चौकोर टिकिया, जिसे यंत्र की तरह पहनते हैं। २. हौलदिली।

नादान–वि० [फा०] [संज्ञा नादानी] नासमझ। अनजान। मूर्ख।

नादार–वि० [फा०] [संज्ञा नादारी] निर्धन।

नादित–वि० जिसमें नाद या शब्द उत्पन्न हो रहा हो। ध्वनि उत्पन्न करता हुआ। ध्वनित। दे० "निनादित"।

नादिम–वि० [अ०] लज्जित।

नादिया–संज्ञा पुं० १. नंदी। २. वह बैल, जिसे लेकर जोगी भीख माँगते हैं।

नादिर–वि० [फा०] अदभुत। अनोखा।

नादिरशाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] अत्याचार। घोर अन्याय।

वि० बहुत कठोर। अत्यन्त उग्र।

नादिहंद–वि० [फा०] न देनेवाला। जिससे रकम वसूल न हो।

नादी–वि० [स्त्री० नादिनी] १. शब्द करनेवाला २. बजनेवाला।

नाधना–क्रि० स० १. जोतना। बैल, घोड़े आदि को जोतना। २. जोड़ना। संबद्ध करना। ३. गूँथना। गुहना। ४. आरंभ करना। ठानना।

नाधा–संज्ञा पुं० १. पानी निकलने का मार्ग। २. पाट या चमड़े की बनी रस्सी जिससे बैल जोते जाते हैं।

नान–संज्ञा स्त्री० [फा०] रोटी। चपाती।

नानक–संज्ञा पुं० सिख-संप्रदाय के आदिगुरु, जिनका जन्म १४६९ ई० में हुआ था।

आपके बनाए हुए ग्रंथ का नाम 'ग्रंथ साहब' है, जो सिखों की धर्म-पुस्तक है।

नानकपंथ—संज्ञा पुं० सिख-सम्प्रदाय। गुरु नानक-द्वारा प्रचारित मत। एकेश्वरवाद।

नानकपंथी—संज्ञा पुं० गुरु नानक का अनुयायी। सिख।

नानकशाही—वि० १. नानकपंथी। गुरु नानक से संबंध रखनेवाला। २. गुरु नानक के अनुयायी। सिख।

नानकार—संज्ञा पुं० [फा०] कर-रहित भूमि। माफी जमीन।

नानकीन—संज्ञा पुं० एक प्रकार का सूती कपड़ा।

नानखताई, नानखटाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।

नानबाई—संज्ञा पुं० [फा०] रोटी बनाकर बचनेवाला।

नाना—वि० १. अनेक प्रकार के। विविध। २. अनेक। बहुत।

संज्ञा पुं० [स्त्री० नानी] १. माता का पिता। मातामह। २. पुदीना (अ०)।

†क्रि० स० १. झुकाना। नम्र करना। २. नीचा करना। ३. डालना। फेंकना। ४. घुसाना। प्रविष्ट करना।

यौ०—अर्क नाना=सिरके के साथ भबके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क।

नानिहाल—संज्ञा पुं० नाना-नानी का घर।

नानी—संज्ञा स्त्री० माता की माता। मातामही।

मुहा०—नानी याद आना या मर जाना= आपत्ति-सी आ जाना।

ना-नुकर—संज्ञा पुं० नाहीं। इनकार।

नान्ह†—वि० १. छोटा। लघु। २. नीच। क्षुद्र। ३. पतला। महीन।

मुहा०—नान्ह कातना=१. बहुत बारीक काम करना। २. कठिन कार्य करना।

नान्हक—संज्ञा पुं० दे० "नानक"।

नान्हा†*—वि० दे० "नन्हा"।

नाप—संज्ञा स्त्री० माप। परिमाण। किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि जानने की क्रिया। नापने का काम। नापने की वस्तु।

नाप-जोख, नाप-तौल—संज्ञा स्त्री० १. नापने-जोखने या तौलने की क्रिया। २. नाप या तौलकर स्थिर की गई मात्रा या परिमाण।

नापना—क्रि० स० तौलना। जोखना। मापना। किसी स्थान या वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई आदि निश्चित करना।

मुहा०—सिर नापना १. सिर काटना। २. कोई वस्तु कितनी है, इसका पता लगाना।

नापसंद—वि० [फा०] १. जो पसंद न हो। जो अच्छा न लगे। २. अप्रिय।

नापाक—वि० [फा०] [संज्ञा नापाकी] १. अशुद्ध। अपवित्र। २. मैला-कुचैला।

नापित—संज्ञा पुं० नाई। नाऊ। हज्जाम। बाल बनानेवाला।

नाफ़ा—संज्ञा पुं० [फा०] कस्तूरी की थैली, जो मृगों की नाभि में होती है।

नाबदान—संज्ञा पुं० [फा०] पनाला। नरदा। नाली, जिसमें मैला पानी आदि बहता है।

नाबालिग़—वि० [संज्ञा नाबालिगी] जो पूरा जवान न हुआ हो। अप्राप्तवयस्क। १८ वर्ष से कम की आयुवाला व्यक्ति कानून के अनुसार नाबालिग माना जाता है।

नाबूद—वि० [फा०] नष्ट। ध्वस्त।

नाभ—संज्ञा स्त्री० १. नाभि। ढोंढी। धुन्नी। २. शिव का एक नाम। ३. एक सूर्यवंशी राजा। (भागवत के अनुसार राजा भगीरथ के पुत्र।) ४. अस्त्रों का एक संहार।

नाभा—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध भक्त, जिनका नाम नारायणदास था। कहते हैं कि ये जाति के डोम थे और दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। ये जन्मांध कहे जाते हैं। अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था।

नाभाग—संज्ञा पुं० १. वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा, जो ययाति के पुत्र थे। इनके पुत्र अज और अज के दशरथ हुए। २. मार्कंडेयपुराण के अनुसार कारूप वंश के एक राजा।

नाभि—संज्ञा स्त्री० १. चक्रमध्य। पहिए का मध्य भाग। नाह। २. ढोंढी। धुन्नी। तुन्नी। तुंदी। ३. कस्तूरी।

संज्ञा पुं० १. प्रधान राजा। २. प्रधान व्यक्ति या वस्तु। ३. गोत्र। ४. क्षत्रिय।

नाभिजन्मा–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। प्रजापति। विधाता।

नामंजूर–वि० [फा०] [संज्ञा नामंजूरी] जो मंजूर न हो। अस्वीकृत। अमान्य।

नाम–संज्ञा पुं० [वि० नामी] १. किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध करानेवाला शब्द। संज्ञा। आख्या। प्रसिद्धि। २.ख्याति। यश। कीर्ति।

मुहा०—नाम उछालना=बदनामी कराना। चारों ओर निंदा कराना। नाम उठ जाना=चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। नाम करना=१. कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिए थोड़ा-सा करना। २. प्रसिद्धि प्राप्त करना। नाम का=१. नाम-धारी। २. कहने-सुनने भर को, काम के लिए नहीं। नाम के लिए या नाम को=१. कहने सुनने भर के लिए। थोड़ा सा। २. काम के लिए नहीं। नाम चढ़ना=नाम लिखा जाना। नाम चलना=लोगों में नाम का स्मरण बना रहना। किसी का इतना प्रभावशाली होना कि उसका नाम सुनकर ही काम हो जाय। नाम जपना=१. बार-बार नाम लेना। २. ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। (किसी का) नाम धरना=१.बदनाम करना। २. दोष निकालना। नाम धराना=१. नामकरण कराना। २. बदनामी कराना। नाम न लेना=दूर रहना। बचना। नाम निकल जाना=किसी बात के लिए मशहूर या बदनाम हो जाना। किसी के नाम पर=किसी को अर्पित करके। किसी के निमित्त। किसी के नाम पड़ना=किसी के नाम के आगे लिखा जाना। जिम्मेदार रखा जाना। (किसी के) नाम पर मरना या मिटना=किसी के प्रेम में लीन होना। किसी के प्रेम में जान देना। (किसी के) नाम पर बैठना=किसी के भरोसे संतोष करके स्थिर रहना। (किसी का) नाम बद करना=बदनामी करना। कलंक लगाना। नाम बाकी रहना=१. मरने या कहीं चले जाने पर भी कीर्ति का बना रहना। २. केवल नाम ही नाम रह जाना, और कुछ न रहना। नाम बिकना=नाम प्रसिद्ध होने से आदर होना। नाम मिटना=नाम न रहना। स्मारक या कीर्ति का लोप होना। नाम-मात्र=नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। अत्यंत अल्प। (कोई) नाम रखना=नाम निश्चित करना। नामकरण करना। नाम लगाना=किसी दोष या अपराध के संबंध में नाम लेना। दोष मढ़ना। (किसी के) नाम लिखना=किसी के ~ के आगे लिखना। किसी के जिम्मे लिखना या टाँकना। (किसी का) नाम लेकर=१. किसी प्रसिद्ध या बड़े आदमी के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके। २. (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके नाम लेना=१. नाम का उच्चारण करना। २. नाम जपना। नाम स्मरण करना। ३. गुण गाना। ४. चर्चा करना। जिक्र करना। नाम व निशान=पता। खोज। (किसी) नाम से=शब्द-द्वारा निर्दिष्ट करके। (किसी) के नाम से=१. चर्चा से। २. (किसी का) संबंध बताकर। यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। ३. (किसी को) हकदार या मालिक बनाकर। (किसी के) उपयोग या उपभोग के लिए। नाम से काँपना=नाम सुनते ही डर जाना। नाम होना=१. दोष मढ़ा जाना। कलंक लगना। २. नाम प्रसिद्ध होना। नाम कमाना या करना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। नाम को मरना=सुयश के लिए प्रयत्न करना। नाम जगाना=उज्ज्वल कीर्ति फैलाना। नाम डुबाना=यश और कीर्ति का नाश करना। नाम डूबना= यश और कीर्ति का नाश होना। नाम पर धब्बा लगाना=यश पर लांछन लगाना। बदनामी करना। नाम पाना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। नाम रह जाना=कीर्त्ति की चर्चा रहना।

नामक–वि० नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करनेवाला।

नामकरण–संज्ञा पुं० १. नाम रखने का काम। २. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में

से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

नामकर्म–संज्ञा पुं० नामकरण। नाम रखने का काम।

नामकीर्त्तन–संज्ञा पुं० ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

नामजाद–वि० [फा०] १. जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित कर लिया गया हो। नाम चुना जाना या प्रस्तावित किया जाना। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

नामजदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी चुनाव या कार्य आदि के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।

नामदार–वि० दे० "नामवर"।

नामदेव–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त। २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।

नामधराई–संज्ञा स्त्री० बदनामी। निंदा। अपकीर्त्ति।

नाम-धाम–संज्ञा पुं० नाम और पता। पता-ठिकाना।

नामधारी–वि० नामक।

नामधेय–संज्ञा पुं० १. संज्ञा। नाम। २. नामकरण।
वि० नामवाला। नाम का।

नामनिशान–संज्ञा पुं० [फा०] चिह्न। पता। ठिकाना।

नामपट्ट–संज्ञा पुं० वह पटरी या पत्थर का टुकड़ा, जिस पर किसी व्यक्ति या संस्था का नाम लिखा हो। नाम लिखा हुआ पत्थर, लकड़ी आदि का टुकड़ा। अंग्रेजी में साइनबोर्ड या नेमप्लेट कहते हैं।

नामबोला–संज्ञा पुं० भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।

नामर्द–वि० [फा०] [संज्ञा नामर्दी] १. नपुंसक। पुरुषत्वहीन। क्लीव। २. डरपोक। कायर।

नामलेवा–संज्ञा पुं० १. नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २. उत्तराधिकारी। संतति। वारिस।

नामवर–वि० [फा०] [संज्ञा नामवरी] जिस-का बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।

नामशेष–वि० १. जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। मरा हुआ।

नामांकित–वि० १. जिस पर नाम लिखा या खुदा हो। खुदा हुआ नाम। मुद्रित नाम। २. प्रसिद्ध। प्रतिष्ठित। विख्यात।

नामांतर–संज्ञा पुं० एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

नामाकूल–वि० १. अयोग्य। नालायक। २. अयुक्त। अनुचित।

नामावली–संज्ञा स्त्री० १. नामों की सूची। नामों की तालिका। २. वह कपड़ा, जिस पर चारों ओर भगवान् या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी। ३. विष्णु-सहस्रनाम।

नामी–वि० १. नामधारी। नामवाला। २. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

नामुनासिब–वि० [फा०] अनुचित।

नामुमकिन–वि० जो न हो सके। असंभव।

नामूसी–संज्ञा स्त्री० [अ०] बेइज्जती। अप्र-तिष्ठा। बदनामी।

नाम्ना–वि० [स्त्री० नाम्नी] नामवाला।

नायँ†*–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।

नायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० नायिका] १. नेता। अगुआ। सरदार। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. श्रेष्ठ पुरुष। जन-नायक। ४. साहित्य में शृंगार-साधक पुरुष। किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य पात्र। ५. संगीत-कला में निपुण पुरुष। कलावंत। ६. एक वर्णवृत्त।

नायका–संज्ञा स्त्री० १. दे० "नायिका"। २. वेश्या की माँ। ३. कुटनी। दूती।

नायन–संज्ञा स्त्री० नाई की स्त्री।

नायब–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुनीम। मुख्तार। २. सहायक। सहकारी।

नायाब–वि० [फा०] दुर्लभ। जो जल्दी न मिल सके। अप्राप्य। बहुत बढ़िया।

नायिका–संज्ञा स्त्री० १. रूप-गुण-संपन्न स्त्री। २. वह स्त्री, जो शृंगार रस का आलंबन

हो। किसी काव्य या नाटक आदि की प्रमुख पात्री।

नारंगी—संज्ञा स्त्री० १. नीबू की जाति का फल-विशेष। २. नारंगी के छिलके का-सा रंग। पीलापन लिये हुए लाल रंग।
वि० पीलापन लिये हुए लाल रंग का।

नार—संज्ञा स्त्री० १. गरदन। ग्रीवा। २. दे० "नारी"। ३. जुलाहों की ढरकी। नाल।
†संज्ञा पुं० १. आँवल नाल। दे० "नाल"। २. नाला। ३. बहुत मोटा रस्सा। ४. सूत की डोरी, जिससे स्त्रियाँ घाँघरा कसती हैं। नारा। नाला। ५. जुवा जोड़ने की रस्सी या तस्मा। ६. नर-समूह। बहुत मनुष्य।
मुहा०—नार नवाना या नीचा करना=१. गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। २. लज्जा, चिंता, संकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीची करना।

नारक—वि० नरक-सम्बन्धी। नरक में रहने वाले जीव।

नारकी—वि० नरकवासी। नरक-भोगी। नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी। दुराचारी।

नारद—संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध देवर्षि, जो बहुत बड़े हरिभक्त तथा कलह-प्रिय भी कहे गए हैं। आजकल के विद्वानों का मत है कि नारद किसी एक आदमी का नाम नहीं था, बल्कि साधुओं का एक संप्रदाय था। २. विश्वामित्र के एक पुत्र। ३. एक प्रजापति। ४. झगड़ा करानेवाला आदमी।

नारना—क्रि० स० थाह लगाना।

नारसिंह—संज्ञा पुं० १. नरसिंह-रूपधारी विष्णु। २. एक तंत्र का नाम। ३. एक उपपुराण। नृसिंह-संबंधी।

नारा—संज्ञा पुं० १. इजारबंद। नीबी। दे० "नाड़ा"। २. लाल रँगा हुआ सूत, जो पूजन में देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली। कुसुंभ-सूत्र। ३. हल के जुवे में बँधी हुई रस्सी।
†४. दे० "नाला"।

नाराच—संज्ञा पुं० १. लोहे का बाण। तीर। २. दुर्दिन। आँधी-पानी का दिन। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त। २४ मात्राओं का एक छंद।

नाराज़—वि० [फा०] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

नाराजगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अप्रसन्नता। नाखुशी।

नाराजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "नाराजगी"।

नारायण—संज्ञा पुं० १. विष्णु। भगवान्। ईश्वर। २. पूस का महीना। ३. 'अ' अक्षर का नाम। ४. कृष्ण यजुर्वेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ५. एक अस्त्र।

नारायणी—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. श्रीकृष्ण की सेना का नाम, जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिए दिया था।

नारायणीय—वि० नारायण संबंधी।

नारि—संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारिकेल—संज्ञा पुं० नारियल।

नारियल—संज्ञा पुं० १. खजूर की जाति का एक पेड़। इसके बड़े गोल फलों के अन्दर सफेद मीठी गरी होती है। २. नारियल का हुक्का।

नारियली—संज्ञा स्त्री० १. नारियल का खोपड़ा। २. नारियल का हुक्का।

नारी—संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। औरत। महिला।
*†२. दे० "नाली"। ३. दे० "नाड़ी"।

नारीत्व—संज्ञा पुं० नारी या स्त्री होने का भाव। स्त्रीधर्म। स्त्रीत्व।

नारीधर्म—संज्ञा पुं० १. स्त्रियों का धर्म। सतीत्व-रक्षा, पतिव्रत धर्म, पति-सेवा, पुत्र-पालन और गृहस्थी का प्रबन्ध करना आदि। २. मासिक होना। रजोदर्शन।

नारू—संज्ञा पुं० १. जूँ। ढील। २. नहरुआ नामक रोग।

नालंद, नालंदा—संज्ञा पुं० १. मगध (बिहार) में पटने से ६० मील दक्षिण बौद्धों का एक प्राचीन स्थान। २. इस स्थान का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय या विद्यापीठ।

नाल–संज्ञा स्त्री० १. कमल, आदि फलों की डंडी। डाँड़ी। २. पौधे का डंठल। कांड। ३. गेहूँ, जौ आदि की लंबी डंडी, जिसमें बाल लगती है। ४. नली। नल। ५. बंदूक की नली। ६. सुनारों की फुकनी। ७. जुलाहों की नली। छूँछा।

संज्ञा पुं० १. नारा। २. लिंग। ३. हरताल। ४. जल बहने का स्थान। ५. घोड़ों की टाप। ६. जूतों की एड़ी के नीचे उन्हें रगड़ से बचाने के लिए जड़ी जानेवाली लोह की वस्तु। ७. तलवार आदि अस्त्रों की मूँठ पर मढ़ने की वस्तु। ८. लकड़ी का वह चक्कर, जिसे नीचे डालकर कुएँ की जोड़ाई की जाती है। ९. वह रुपया या पैसा, जो जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है।

नाल-कटाई–संज्ञा स्त्री० तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम।

नालकी–संज्ञा स्त्री० खुली पालकी, जिस पर एक मिहराबदार छाजन होती है।

नालबंद–संज्ञा पुं० जूते की एड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़नेवाला।

नाला–संज्ञा पुं० [स्त्री० नाली] गंदा पानी बहने का मार्ग। मोरी। पनाला।

नालायक–वि० [फा०] अयोग्य। निकम्मा। मूर्ख

नालायकी–संज्ञा स्त्री० अयोग्यता। निकम्मापन। मूर्खता। बेवकूफी।

नालिक–संज्ञा पुं० आग्नेयास्त्र। बन्दूक। भुशुण्डी।

नालिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटी नाल या डंठल। २. नाली। ३. एक प्रकार का गंध-द्रव्य।

नालिकेर–संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।

नालिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] फरियाद। किसी के विरुद्ध प्रतिकार की माँग। अभियोग। हानि-पूर्ति के लिए हानि करनेवाले पर दावा।

नालिशी–वि० नालिश करनेवाला। दावेदार।

नाली–संज्ञा स्त्री० १. पानी बहने का पतला मार्ग। २. गलीज आदि बहने का मार्ग। मोरी। ३. घोड़े की पीठ का गड्ढा। ४. बैल आदि चौपायों को दवा पिलाने का चोंगा। ढरका। ५. नाड़ी। धमनी। रक्त आदि बहने की नली। ६. एक प्रकार का साग। ७. घड़ी। ८. कमल।

नावँ*†–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

नाव–संज्ञा स्त्री० लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई पानी के ऊपर चलनेवाली सवारी। नौका। किश्ती।

नावक–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का छोटा बाण। २. मधुमक्खी का डंक। ३. केवट। मल्लाह।

नावना†–क्रि० स० १. झुकाना। नवाना। २. डालना। फेंकना। गिराना। ३. प्रविष्ट करना। घुमाना।

नावर*†–संज्ञा स्त्री० १. नाव। नौका। २. नाव की एक क्रीड़ा, जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।

नावाकिफ–वि० [फा०] अनजान। अपरिचित। जो न जानता हो।

नाविक–संज्ञा पुं० मल्लाह। केवट।

नाश–संज्ञा पुं० १. क्षय। नष्ट हो जाना। ध्वंस। बरबादी। २. गायब होना।

नाशक–वि० १. नाश करनेवाला। ध्वंस करनेवाला। २. मारनेवाला। वध करनेवाला। ३. दूर करनेवाला।

नाशकारी–वि० नाशक।

नाशन–संज्ञा पुं० नाश करना।

वि० नाश करनेवाला।

नाशना*–क्रि० स० दे० "नाशना"।

नाशपाती–संज्ञा स्त्री० [तु०] एक प्रसिद्ध फल।

नाशवान्–वि० नश्वर। अनित्य।

नाशाद–वि० [फा०] अप्रसन्न। दुखी। अभागा।

नाशी–वि० [स्त्री० नाशिनी] १. नाश करनेवाला। नाशक। २. नश्वर।

नाश्ता–संज्ञा पुं० [फा०] जलपान।

नास–संज्ञा स्त्री० नाक से सूँघी जानेवाली औषध। २. सुँघनी।

नासदान–संज्ञा पुं० सुँघनी रखने की डिबिया।

नासना –क्रि० स० १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. मार डालना। ३. भागना।

नासमझ–वि० जिसे समझ न हो। अबोध। बेवकूफ। मूर्ख। अज्ञान। मूढ़।

नासमझी–संज्ञा स्त्री० मूर्खता। बेवकूफी। गलती। अज्ञता।

नासा–संज्ञा स्त्री० १. नासिका। नाक। २. नाक का छेद। नथना। ३. दरवाजे के ऊपर लगी लकड़ी। भरेटा।

नासाग्र–संज्ञा पुं० नाक का अगला भाग।

नासापुट–संज्ञा पुं० नाक। नथना। नाक का वह चमड़ा, जो छेदों के किनारे पर परदे का काम देता है।

नासिक–संज्ञा स्त्री० बम्बई-राज्य का एक नगर और तीर्थ-स्थान, जहाँ गोदावरी के तट पर पंचवटी है।

नासिका–संज्ञा स्त्री० नाक। नासा।

नासी*–वि० दे० "नाशी"।

नासीर–संज्ञा पुं० [अ०] अग्रसर। अग्रगामी। सेना का अग्र भाग।

नासूर–संज्ञा पुं० [अ०] नस का घाव। पुराना घाव। घाव, फोड़े आदि के भीतर का छेद, जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता।

नास्ति–क्रि० स० नहीं। अविद्यमानता। अभाव।

नास्तिक–संज्ञा पुं० ईश्वर या परलोक आदि में विश्वास न करनेवाला। ईश्वर को न माननेवाला।

नास्तिकता–संज्ञा स्त्री० नास्तिक होने का भाव। ईश्वर, परलोक आदि को न मानने की बुद्धि।

नास्तिकवाद या नास्तिवाद–संज्ञा पुं० ईश्वर, परलोक आदि न मानने का सिद्धान्त।

नास्तिक्य–संज्ञा पुं० दे० "नास्तिकता"।

नास्य–वि० नाक का। नाक-सम्बन्धी। संज्ञा पुं० १. नासिका में उत्पन्न होनेवाला। २. बैल की नाक में लगाई जानेवाली रस्सी।

नाह*–संज्ञा पुं० दे० "नाथ"। स्वामी।

नाहक़–क्रि० वि० व्यर्थ। फजूल। बेफायदा। बे-मतलब।

नाहट†–वि० बुरा। नटखट।

नाह-नूह*–संज्ञा स्त्री० नहीं-नहीं। इनकार।

नाहर–संज्ञा पुं० १. सिंह। शेर। बाघ। २. टेसू का फूल।

नाहरू–संज्ञा पुं० नारू नाम का रोग। नहरुवा। संज्ञा पुं० दे० "नाहर"।

नाहिनै*–अव्य० नहीं है।

नाहीं–अव्य० दे० "नहीं"।

नाहुषि–संज्ञा पुं० राजा नहुष का पुत्र। राजा ययाति।

नित*क्रि० वि० दे० "नित्य"।

निंद*–वि० दे० "निंद्य"।

निंदक–संज्ञा पुं० निंदा करनेवाला। दूसरे का दोष ढूँढनेवाला। बदनाम करनेवाला।

निंदकाई–संज्ञा स्त्री० निन्दा करने का स्वभाव।

निंदना†*–क्रि० स० निंदा करना। बदनाम करना। कलंक लगाना।

निंदनीय–वि० १. निंदा करने योग्य। शिकायत के लायक। २. बुरा।

निंदरना–क्रि० स० दे० "निंदना"।

निंदरिया‡*–संज्ञा स्त्री० नींद। निद्रा।

निंदा–संज्ञा स्त्री० बुराई। बुराई का वर्णन। शिकायत। बदनामी। कुत्सा।

निंदाई–संज्ञा पुं० खेत निराने की क्रिया या मजदूरी।

निंदासा–वि० उनींदा। जिसे नींद आ रही हो।

निंदास्तुति–संज्ञा स्त्री० निंदा के बहाने बड़ाई या स्तुति। व्याज-स्तुति।

निंदित–वि० दूषित। बुरा। जिसकी लोग निंदा करते हों।

निंदिया‡–संज्ञा स्त्री० नींद।

निंद्य–वि० १. निंदा करने योग्य। निंदनीय। २. दूषित। बुरा। हेय। तुच्छ।

निंब–संज्ञा स्त्री० नीम का पेड़।

निंबार्क या निंबार्काचार्य–संज्ञा पुं० एक वैष्णव-सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य। इन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया।

निंबादित्य–संज्ञा पुं० दे० "निंबार्क"।

निंबू–संज्ञा पुं० नींबू।

निः–अव्य० एक उपसर्ग। निषेधार्थक। यह उपसर्ग जिन शब्दों के पहले आता है, उनके अर्थ को विपरीत कर देता है। दे० "नि"।

निःशंक–वि० १. जिसे डर न हो। निडर। निर्भय। २. साहसी।

निःशब्द–वि० शब्दरहित। जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे।

निःशलाक–वि० १. निर्जन। एकान्त। गुप्त स्थान। २. रहस्य छिपाना।

निःशेष–वि० १. जिसका कोई अंश न रह गया हो। समूचा। सब। २. समाप्त।

निःश्रेणी–संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।

निःश्रेयस्–वि० १. मोक्ष। मुक्ति। २. कल्याण। ३. भक्ति। ४. विज्ञान।

निःश्वास–संज्ञा पुं० नाक से निकली हुई हवा। साँस।

निःसंकोच–क्रि० वि० बेधड़क। बिना संकोच के।

निःसंग–वि० १. बिना मेल या लगाव का। २. जिसमें अपने मतलब का कुछ लगाव न हो। ३. निर्लिप्त।

निःसंतान–वि० जिसके संतान न हो। निपूता या निपूती। लावल्द।

निःसंधि–वि० दृढ़।

निःसंदेह–वि० संदेह-रहित। जिसमें कुछ संदेह न हो। अवश्य ही। निश्चय।

अव्य० १. बिना किसी संदेह के। २. इसमें कोई संदेह नहीं। निश्चय। बेशक।

निःसंशय–वि० संदेह-रहित। निःसन्देह। निश्चय। अवश्य।

निःसत्व–वि० जिसमें कोई तत्त्व या सार न हो। असार। जिस पर किसी का अधिकार न हो। तटस्थ।

निःसरण–संज्ञा पुं० निकलना। निकलने का रास्ता। निकास। मृत्यु। निर्वाण।

निःसार–वि० जिसमें कोई सार या तत्त्व न हो। निष्प्रयोजन। निरर्थक।

निःसारण–संज्ञा पुं० निकास। निकालना।

निःसीम–वि० १. जिसकी सीमा न हो। बेहद। २. बहुत बड़ा या अधिक।

निःसृत–वि० निकला हुआ।

निःस्पंद–वि० स्पंदन-रहित। निश्चल। जिसमें किसी तरह का स्पंदन या कोई हरकत न हो।

निःस्पृह–वि० १. इच्छारहित। जिसे किसी बात की आकांक्षा न हो। निरीह। जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो। २. निर्लोभ।

निःस्व–वि० दरिद्र। निर्धन। जिसका निजी कुछ न हो।

निःस्वन–वि० जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। दे० "निःशब्द"।

निःस्वार्थ–वि० जो अपना मतलब निकालनेवाला न हो। जो अपने लाभ या हित के लिए न हो।

नि–अव्य० शब्दों के पहले लगने पर निषेध निश्चय या आधिक्य अर्थसूचक उपसर्ग। जैसे–निकर (समूह); निपतित (अधोभाव); निग्रह (अवरोध); निदेश (आदेश)।

संज्ञा पुं० निषाद-स्वर का संकेत।

निअर†*–अव्य० निकट। पास। समीप। वि० समान। तुल्य।

निअराना†*–क्रि० स० निकट जाना। समीप पहुँचना।

क्रि० अ० निकट आना। पास होना।

निआउ‡*–संज्ञा पुं० दे० "न्याय।"

निआन*–संज्ञा पुं० अंत।

अव्य० अंत में। आखिर।

निआमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ।

निकंटक*–वि० दे० "निष्कंटक"।

निकंदन–संज्ञा पुं० नाश। विनाश।

निकट–वि० पास। समीप। नजदीक।

मुहा०— किसी के निकट=१. किसी से। २. किसी के लेखे में। किसी की समझ में।

निकटता–संज्ञा स्त्री० समीपता।

निकटवर्ती–वि० [स्त्री० निकटवर्त्तिनी] पासवाला। समीपस्थ।

निकटस्थ–वि० १. पास का। पास रहनेवाला। २. संबंध में जिससे बहुत अंतर न हो।

निकन्दना*—क्रि० स० नष्ट करना। नाश करना। उखाड़ना। उजाड़ना।

निकम्मा—वि० [स्त्री० निकम्मी] १. निठल्ला। आलसी। शिथिल। काम-धंधा न करनेवाला। २. जो किसी काम का न हो। बेमसरफ। बुरा।

निकर—संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। २. राशि। ढेर। ३. निधि।

निकरना†*—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकर्मा—वि० निठल्ला। काम न करनेवाला। आलसी। निष्कर्म्मा।

निकलंक—वि० निष्कलंक। दोषरहित।

निकलंकी—संज्ञा पुं० विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।

निकल—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक धातु, जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है।

निकलना—क्रि० अ० १. भीतर से बाहर आना। २. मिली या लगी हुई चीज का अलग होना। ३. पार होना। एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। ४. उत्तीर्ण होना। ५. गमन करना। जाना। ६. उदय होना। उत्पन्न होना। उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ७. किसी ओर बढ़ा हुआ होना। ८. निश्चित होना। ठहराया जाना। ९. स्पष्ट होना। प्रकट होना। १०. छिड़ना। आरंभ होना। ११. सिद्ध होना। हल होना। १२. फैलाव होना। प्रचलित होना। १३. छूटना। मुक्त होना। १४. शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। १५. अपने को बचा जाना। बच जाना। १६. कहकर नहीं करना। १७. खपना। बिकना। १८. सबके सामने होना। प्रकाशित होना। १९. हिसाब-किताब होने पर कोई रकम जिम्मे ठहरना। २०. फटकर अलग होना। २१. जाता रहना। दूर होना। न रह जाना। २२. व्यतीत होना। गुजरना। २३. घोड़े, आदि का सवारी लेकर चलना सीखना।

मुहा०—निकल जाना=१. चला जाना। आगे बढ़ जाना। २. नष्ट हो जाना। ३. घट जाना। कम हो जाना। ४. न पकड़ा जाना। भाग जाना। (स्त्री का) निकल जाना=किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़ चली जाना।

निकलवाना—क्रि० स० निकालने का काम दूसरे से कराना।

निकष—संज्ञा पुं० १. कसौटी का पत्थर। २. तलवार की म्यान।

निकसना†—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकाई*—संज्ञा पुं० १. निकाने की मजदूरी। २. निराई।

संज्ञा स्त्री० १. भलाई। अच्छापन। २. खूबसूरती। सुंदरता।

निकाज—वि० बेकाम। निकम्मा।

निकाम—वि० १. निकम्मा। २. बुरा। खराब।

क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।

निकाय—संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. घर। निलय। निवास। ४. परमात्मा।

निकारना*†—क्रि० स० दे० "निकालना"।

निकालना—क्रि० स० १. निष्कासन। भीतर से बाहर लाना। २. मिली या लगी हुई वस्तु को अलग करना। ३. पार करना। ले जाना। ४. निश्चित करना। ठहराना। ५. उपस्थित करना। ६. खोलना। स्पष्ट करना। ७. छेड़ना। ८. आरंभ करना। चलाना। ९. सबके सामने लाना। प्रकट करना। १०. अलग करना। ११. घटाना। कम करना। १२. छुड़ाना। नौकरी से छुड़ाना। बरखास्त करना। १३. बेचना। खपाना। १४. सिद्ध करना। प्राप्त करना। १५. निर्वाह करना। चलाना। १६. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। १७. जारी करना। फैलाना। १८. आविष्कार करना। १९. बचाव करना। निस्तार करना। २०. उद्धार करना। २१. प्रचारित करना। प्रकाशित करना। २२. रकम जिम्मे ठहराना। २३. ढूँढ़कर पाना। २४. घोड़े आदि की सवारी लेकर

चलना या गाड़ी आदि खींचना सिखाना। शिक्षा देना। २५. सुई से बेल-बूटे बनाना।

निकाला—संज्ञा पुं० १. निकालने का काम। २. किसी स्थान से निकाले जाने का दंड। निष्कासन। जैसे, देशनिकाला।

निकास—संज्ञा पुं० १. निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। २. निकलने के लिए खुला स्थान या छेद। ३. दरवाजा। ४. बाहर का खुला स्थान। मैदान। ५. उद्गम। ६. वंश का मूल। ७. रक्षा का उपाय। छुटकारा पाने का उपाय। ८. निर्वाह का ढंग। वसीला। ९. प्राप्ति का ढंग। आमदनी का रास्ता। १०. आय।

निकासना—क्रि० स० निकालना। बाहर कर देना।

निकासी—संज्ञा स्त्री० १. निकलने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। २. वह धन, जो सरकारी मालगुजारी आदि देकर जमींदार को बचे। मुनाफा। ३. आय। आमदनी। ४. बिक्री के लिए माल की रवानगी। लदाई। ५. बिक्री। खपत। ६. चुंगी। ७. रवन्ना।

निकासु—वि० निकाला हुआ। निष्कासित। बहिष्कृत।
संज्ञा पुं० द्वार, निकास।

निकाह—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी रीति से विवाह।
मुहा०—निकाह पढ़ना=मुसलमानी ढंग पर विवाह कराना।

निकाहनामा—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिस पर निकाह और मेहर का उल्लेख हो।

निकियाना—क्रि० स० नोचकर छिलका अलग करना।

निकिष्ट *‡—वि० दे० "निकृष्ट"।

निकुंज—संज्ञा पुं० लता-गृह। घनी लताओं से घिरा हुआ स्थान।

निकुंभ—संज्ञा पुं० १. कुंभकर्ण का एक पुत्र। यह रावण का मंत्री था। २. महादेव का एक गण।

निकुम्भिला—संज्ञा स्त्री० १. राक्षसों का देवघर। मेघनाद का यज्ञ-स्थान। २. लंका की एक देवी।

निकुच—संज्ञा पुं० बड़हल।

निकुटी—संज्ञा स्त्री० छोटी इलायची।

निकुही—संज्ञा पुं० एक चिड़िया।

निकृत—वि० १. तिरस्कृत। निकाला हुआ। २. नीच। बदनाम। ३. वंचित।

निकृति—संज्ञा स्त्री० १. अधर्म। बुरा कर्म। पाप। नीचता। २. तिरस्कार। ३. दैन्य।

निकृष्ट—वि० बहुत ही खराब। अधम। नीच। बुरा।

निकृष्टता—संज्ञा स्त्री० बुराई। अधमता। नीचता।

निकृष्टत्व—संज्ञा पुं० नीचता। दे० "निकृष्टता"।

निकेत—संज्ञा पुं० १. घर। मकान। गृह। २. स्थान। जगह।

निकेतन—संज्ञा पुं० दे० ""निकेत"।

निकोचन—संज्ञा पुं० "संकुचन"।

निकोसना—क्रि० स० दाँत निकालना। दाँत पीसना।

निकौनी—संज्ञा स्त्री० १. निराई। २. निराई की मजदूरी।

निक्ती—संज्ञा स्त्री० लोहे के तौलने की छोटी तराजू। काँटा। लौह-तुला।

निक्षण—संज्ञा पुं० चुंबन।

निक्षिप्त—वि० १. फेंका हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त।

निक्षेप—संज्ञा पुं० १. क्षेपण। फेंकना। चलाना। छोड़ना। त्याग। २. समर्पित वस्तु। ३. पोंछना। ४. धरोहर। अमानत। थाती।

निक्षेपक—संज्ञा पुं० १. फेंकनेवाला। २. थाती रखनेवाला। ३. गिरों रखनेवाला। ४. त्याग-कर्त्ता।

निक्षेपण—संज्ञा पुं० [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य] १. फेंकना। डालना। २. छोड़ना। चलाना। ३. त्यागना।

निखंग*—संज्ञा पुं० दे "निषंग"।

निखंड—वि० ठीक मध्य में। बीचोंबीच। सटीक। ठीक।

निखट्टू—वि० १. निकम्मा। आलसी। २. इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला। जो कुछ कमाई न करे या काम-धाम न करे।

निखरना–क्रि० अ० १. मैल छँटकर साफ होना। २. रंग साफ होना। चमकना। ३. छिलका उतरना।

निखरवाना–क्रि० स० साफ कराना। धुलवाना।

निखरी–संज्ञा स्त्री० १. पक्की रसोई। २. सखरी का उलटा।

निखर्व–संज्ञा पुं० दस हजार करोड़ की संख्या। दस खर्व की संख्या।
वि० वामन। ठुमका।

निखवख*–वि० सम्पूर्ण। समस्त। बिलकुल। सब। और बाकी कुछ नहीं।

निखात–संज्ञा पुं० गर्त्त। परिखा। गढ़ा। खाई। खत्ता।

निखाद–संज्ञा पुं० दे० "निषाद"।

निखार–संज्ञा पुं० १. श्रृंगार। शोभा। २. शुद्धता। निर्मलता। स्वच्छता। सफाई।

निखारना–क्रि० स० १. साफ करना। २. पवित्र करना।

निखारा–संज्ञा पुं० शक्कर बनाने का कड़ाह।

निखालिस‡–वि० शुद्ध। बिना मिलावट का। जिसमें और किसी चीज का मेल न हो।

निखिल–वि० संपूर्ण। सब। समस्त। अखिल। समग्र।

निखेध*–संज्ञा पुं० दे० "निषेध"।

निखेधना*–क्रि० स० मना करना।

निखोट–वि० १. जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो। निर्दोष। २. साफ। स्पष्ट या खुला हुआ। सरल। सीधा।
क्रि० वि० बिना संकोच के। बेधड़क।

निखोटना–क्रि० स० नाखून से तोड़ना या काटना।

निखोड़ना–क्रि० स० छीलना। छिलका निकालना। उचेड़ना।

निखोड़ा–वि० निर्दय। कठोर दिल का।

निखोरना–क्रि० स० नाखून से उचाड़ना।

निगंद–संज्ञा पुं० एक रक्त-शोधक बूटी।

निगंदना–क्रि० स० रजाई, दुलाई आदि रुई भरे कपड़ों में तागा डालना।

निगंध*–वि० गंधहीन। निर्गंध।

निगड़–संज्ञा स्त्री० १. लोहे की जंजीर। हाथी के पैर बाँधने की जंजीर। आँदू। २. बेड़ी। पैकड़ी।

निगड़ित–वि० बँधा हुआ। बद्ध। बेड़ी पहनाया हुआ।

निगद–संज्ञा पुं० १. कथन। भाषण। कहना। २. औषध-विशेष।

निगदित–संज्ञा पुं० कथित। भाषित। उक्त। वर्णित। कहा हुआ।

निगन्दाई–संज्ञा स्त्री० सीने का काम। सीना।

निगम–संज्ञा पुं० १. मार्ग। पथ। २. वेद-शास्त्र—विशेषतः वेद की शाखा। ३. हाट। बाजार। ४. मेला। ५. रोजगार। व्यापार। ६. निश्चय। ७. कारपोरेशन (अंग्रे०)। ८. कायस्थों की एक शाखा।

निगमागम–संज्ञा पुं० वेदशास्त्र।

निगर–संज्ञा पुं० १. दे० "निकर"। २. भोजन। ३. एक तौल।
वि० सब।

निगरण–संज्ञा पुं० १. निगलना। २. गला। ३. होमधेनु।

निगरा–वि० खालिस (ईख का रस)।

निगराना–क्रि० स० १. निर्णय करना। निपटाना। २. स्पष्ट करना। अलग करना।

निगरानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] देख-रेख। निरीक्षण। पुलिस-द्वारा किसी व्यक्ति पर देख-रेख।

निगरू*–वि० हलका। जो भारी या वजनी न हो।

निगलना–क्रि० स० १. लील जाना। गले के नीचे उतार लेना। घूँटना। खा जाना। २. दूसरे का धन आदि मार बैठना। हड़प जाना।

निगह–संज्ञा स्त्री० दे० "निगाह"।

निगहबान–संज्ञा पुं० [फा०] रक्षक।

निगहबानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] रक्षा। हिफाजत।

निगालिका–संज्ञा स्त्री० आठ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। नगस्वरूपिणी।

निगाली–संज्ञा स्त्री० हुक्का पीने की नली।

निगाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दृष्टि।

नजर। २. देखने की क्रिया या ढंग। चितवन। ३. कृपादृष्टि। मेहरबानी। ४. ध्यान। विचार। ५. परख। पहचान।

निगिभ*–वि० जिसका बहुत लोभ हो। बहुत प्यारा। गोपनीय। गुप्त।

निगुंफ–संज्ञा पुं० गुच्छा। समूह।

निगुण*–वि० दे० "निर्गुण"।

निगुनी*–वि० जो गुणी न हो। गुण-रहित।

निगुरा–वि० बिना गुरु का। जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो। अदीक्षित।

निगूढ़–वि० अत्यंत गुप्त। बड़ी कठिनाई से मालूम किया जानेवाला। बहुत छिपा हुआ।

निगृहीत–वि० १. धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. जिस पर आक्रमण किया गया हो। आक्रांत। ३. पीड़ित। ४. दंडित।

निगोड़ा–वि० [स्त्री० निगोड़ी] १. जिसके आगे-पीछे कोई न हो। अभागा। २. दुष्ट। बुरा। नीच। कमीना।

निग्रह–संज्ञा पुं० १. रोक। अवरोध। २. दमन। ३. चिकित्सा। रोकने का उपाय। ४. दंड। ५. ताड़ना। सताना। ६. बंधन। ७. डाँट। फटकार। ८. हद। सीमा।

निग्रहण–संज्ञा पुं० १. पराजय। २. आक्रमण। ३. विरोध। कलह। युद्ध। ४. मानखंडन। ५. हठ। ६. बन्धन। ७. घुड़की। रोष। कोप। क्रोध।

निग्रहना*–क्रि० स० १. पकड़ना। २. रोकना। ३. दंड देना।

निग्रही–वि० १. रोकनेवाला। दबानेवाला। २. दंड देनेवाला।

निघंटु–संज्ञा पुं० १. वैदिक शब्दों का कोश। २. शब्द-संग्रह-मात्र। नाम-संग्रह। नाम-कोश।

निघटना*–क्रि० अ० दे० "घटना"। कम होना। न्यून होना।

निघर-घट–वि० १. जिसका कहीं घर-घाट न हो। जिसे कहीं ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया।

मुहा०—निघर-घट देना=बेहयाई से झूठी सफाई देना।

निघरा–वि० जिसके घर-बार न हो। निगोड़ा।

निचय–संज्ञा पुं० १. समूह। दल। यूथ। २. निश्चय। ३. संचय।

निचल*–वि० दे० "निश्चल"।

निचला–वि० [स्त्री० निचली] नीचे का। नीचेवाला।

संज्ञा पुं० स्थिर। शांत।

निचाई–संज्ञा स्त्री० १. नीचा होने का भाव। नीचता। कमीनापन। अधमता। ओछापन। क्षुद्रता। २. नीचे की ओर विस्तार। छोटाई।

निचान–संज्ञा स्त्री० १. नीचापन। २. ढाल। ढालुआँपन। ढुलान।

निचिंत–वि० चितारहित। बेफिक्र। सुचित।

निचुड़ना–क्रि० अ० १. रस से भरी या गीली चीज का इस प्रकार दबना कि रस या पानी टपककर निकल जाय। गरना। २. सारहीन होना। ३. शरीर का सार निकल जाने से दुबला होना।

निचै*–संज्ञा पुं० दे० "निचय"।

निचोड़–संज्ञा पुं० १. निचोड़ने से निकला हुआ रस आदि। २. सार। सत। ३. सारांश। खुलासा।

निचोड़ना–क्रि० स० १. गीली या रस भरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर उसका पानी या रस टपकाना। गारना। २. किसी वस्तु का सार-भाग निकाल लेना। चूस लेना।

निचोना*†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोरना*†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोल–संज्ञा पुं० स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।

निचोवना*†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचौहाँ–वि० [स्त्री० निचौहीं] नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। नमित।

निचौहें–क्रि० वि० नीचे की ओर।

निछक्का–संज्ञा पुं० निराला। एकांत। निर्जन स्थान।

निछत्र–वि० १. छत्रहीन। बिना छत्र का। २. बिना राजचिह्न का। क्षत्रियों से हीन।

निछल*–वि० छलहीन।

निछान†–वि० खालिस। विशुद्ध।

क्रि० वि० एकदम। बिलकुल।

निछावर–संज्ञा स्त्री० १. एक उपचार या टोटका, जिसमें किसी की रक्षा के लिए कोई वस्तु या द्रव्य उसके सिर या अन्य अंगों के ऊपर से घुमाकर दान कर देते हैं। उतारा। २. बलिदान। उत्सर्ग। ३. वह द्रव्य या वस्तु, जो किसी के सिर के ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय। ४. इनाम। नेग।
मुहा०—(किसी का) किसी पर निछावर होना=किसी के लिए मर जाना।

निछोह, निछोही–वि० १. जिसे छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय। कठोर।

निज–वि० १. अपना। स्वकीय। खास। मुख्य। प्रधान। २. ठीक। सही। सच्चा। यथार्थ।
अव्य० १. निश्चय। ठीक-ठीक। २. खासकर। विशेष करके। मुख्यतः।
मुहा०—निज का=खास अपना। निज करके=निश्चय। अवश्य।

निजकाना‡–क्रि० अ० निकट पहुँचना। समीप आना।

निजस्व–संज्ञा पुं० १. अपना धन। अपने अधिकार का धन। २. अपनापन।

निजाअ–संज्ञा पुं० [अ०] झगड़ा। तकरार। शत्रुता। वैर।

निजाई–वि० [अ०] जिसके सम्बन्ध में झगड़ा हो। झगड़े की वस्तु। मुकदमे में विवाद-ग्रस्त भूमि आदि।

निजाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रबन्ध। बंदोबस्त। इंतजाम। २. हैदराबाद के नवाबों की पदवी।

निजी–वि० निज का। अपना। व्यक्तिगत।

निजु‡–वि० निज का। अपना।

निजोर‡*–वि० निर्बल। कमजोर।

निझरना–क्रि० अ० १. पूरा झड़ जाना। २. झड़ जाने से खाली हो जाना। ३. सार वस्तु से रहित हो जाना। ४. अपने को निर्दोष प्रमाणित करना। सफाई देना।

निझारना–क्रि० स० खसोटना। झटकना। झाड़ना। झारना। साफ करना।

निझोल–वि० झोल-रहित। कसा हुआ। सुडौल।

निटिलाक्ष–संज्ञा पुं० शिव। महादेव। शम्भु।

निटोल–संज्ञा पुं० टोला। मुहल्ला। पुरी। बस्ती।

निट्ठि*–क्रि० वि० दे० "नीठि"।

निठल्ला–वि० १. निकम्मा। आलसी। जिसके पास कोई काम-धंधा न हो। २. बे-रोजगार। बेकार।

निठल्लू–वि० दे० "निठल्ला"।

निठाला–संज्ञा पुं० १. ऐसा समय, जब कोई काम-धंधा न हो। खाली वक्त। २. ऐसी दशा, जब कुछ आमदनी न हो।

निठुर–वि० निष्ठुर। कठोर। निर्दय। क्रूर। जो दूसरों का कष्ट न समझे। स्नेह-शून्य।

निठुरई*–संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठुरता*–संज्ञा स्त्री० निष्ठुरता। निर्दयता। क्रूरता। हृदय की कठोरता।

निठुराई–संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठौर–संज्ञा पुं० १. बुरी जगह। कुठाँव। २. बुरा दाँव। बुरी दशा।

निडर–वि० १. जिसे डर न हो। निःशंक। निर्भय। भयरहित। २. साहसी। हिम्मतवाला। ३. ढीठ। धृष्ट।

निडरपन, निडरपना–संज्ञा पुं० निर्भयता।

निडँ*–क्रि० वि० निकट। पास।

निढाल–वि० १. शिथिल। थका-माँदा। अशक्त। २. सुस्त। उत्साहहीन।

निढिल*–वि० १. कसा या तना हुआ। २. कड़ा।

नितंत–क्रि० वि० दे० "नितांत"।

नितंब–संज्ञा पुं० कमर का पिछला भाग। चूतड़ (स्त्रियों का)।

नितंबिनी–संज्ञा स्त्री० सुन्दर नितंबोंवाली स्त्री। सुंदरी।

नित–अव्य० १. प्रतिदिन। रोज। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।
यौ०—नित-नित=प्रतिदिन। रोज-रोज। नित्य नया=सब दिन नया रहनेवाला।

नितल–संज्ञा पुं० सात पातालों में से एक।

नितांत–वि० १. बहुत अधिक। अतिशय। अत्यन्त। २. बिलकुल। सर्वथा। एकदम।

निति‡*–अव्य० दे० "नित"।

नित्य–वि० १. जो सब दिन रहे। शाश्वत। सनातन। जिसका कभी नाश न हो। अविनाशी। त्रिकालव्यापी। २. प्रतिदिन। रोज का।
अव्य० १. प्रतिदिन। रोज-रोज। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

नित्यकर्म–संज्ञा पुं० १. प्रतिदिन का काम। २. प्रतिदिन की आवश्यक क्रिया। नित्य की क्रिया।

नित्यगति–संज्ञा पुं० वायु। हवा। पवन।

नित्यता–संज्ञा स्त्री० नित्य होने का भाव। अनश्वरता।

नित्यत्व–संज्ञा पुं० नित्यता।

नित्यनियम–संज्ञा पुं० प्रतिदिन का निश्चित व्यापार। रोज का कायदा।

नित्य नैमित्तिक कर्म–संज्ञा पुं० पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।

नित्यप्रति–अव्य० प्रतिदिन। हर रोज।

नित्यशः–अव्य० १. प्रतिदिन। रोज। २. सदा। सर्वदा।

निथंभ*–संज्ञा पुं० खंभा। स्तम्भ।

निथरना–क्रि० अ० १. पानी या किसी तरल पदार्थ का स्थिर होना, जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना।

निथार–संज्ञा पुं० १. घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ पानी। २. पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई चीज।

निथारना–क्रि० स० १. पानी या और किसी तरल पदार्थ को स्थिर करना, जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज को नीचे बैठाकर पानी अलग करना।

निदई*–वि० दे० "निर्दय"।

निदरना*–क्रि० स० १. निरादर करना। अपमान करना। बेइज्जती करना। तिरस्कार करना। २. त्याग करना। ३. मात करना। हराना।

निदर्शन–संज्ञा पुं० १. दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य। २. उदाहरण। दृष्टान्त।

निदर्शना–संज्ञा स्त्री० एक अर्थालंकार, जिसमें एक बात किसी दूसरी बात को ठीक-ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है।

निदलन*–संज्ञा पुं० दे० "निर्दलन"।

निदहना*–क्रि० स० जलाना।

निदाघ–संज्ञा पुं० १. गर्मी। ताप। २. धूप। घाम। ३. ग्रीष्म काल। गरमी।

निदान–संज्ञा पुं० १. मूल कारण। २. कारण। ३. रोग-लक्षण। रोग की पहचान। ४. अंत। अवसान। ५. तप के फल की चाह। ६. शुद्धि। ७. वैद्यक के एक ग्रंथ का नाम।
अव्य० अंत में। आखिर।
वि० अंतिम या निम्न श्रेणी का। निकृष्ट।

निदारुण–वि० १. कठिन। घोर। भयानक। २. दुःसह। ३. निर्दय।

निदिध्यासन–संज्ञा पुं० बारंबार स्मरण। बार-बार ध्यान में लाना।

निदेश–संज्ञा पुं० १. आज्ञा। हुक्म। अनुशासन। २. कथन। ३. पास। समीपता।

निदेस*–संज्ञा पुं० दे० "निदेश"।

निदोष*–वि० दे० "निर्दोष"।

निद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "निधि"।

निद्र–संज्ञा पुं० अस्त्र-विशेष।

निद्रा–संज्ञा स्त्री० नींद। सोना। सोने की अवस्था। शयन।

निद्रायमान–वि० जो नींद में हो। सोया हुआ।

निद्रालु–वि० निद्राशील। सोनेवाला।

निद्रित–वि० सोया हुआ।

निधड़क–क्रि० वि० निर्भय। निडर। १. बेरोक। बिना किसी रुकावट के। २. बिना आगा-पीछा किए। ३. बेखटके।
अव्य० सहसा। अचानक। एकाएक।

निधन–संज्ञा पुं० १. नाश। २. मृत्यु। मरण। ३. कुल। खानदान। ४. कुल का अधिपति। ५. विष्णु।
वि० धनहीन। निर्धन। दरिद्र।

निधनी–वि० निर्धन।

निधान–संज्ञा पुं० १. आधार। आश्रय। घर। २. निधि। खजाना। ३. खान। ४. लय-स्थान।

निधि–संज्ञा स्त्री० १. कोष। खजाना। २. कुबेर का कोष। कुबेर के नौ प्रकार के रत्न—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और वर्च्च। ३. समुद्र। ४. आधार। घर। जैसे, गुणनिधि। ५. विष्णु। ६. शिव। ७. नौ की संख्या।

निधिनाथ, निधिपति–संज्ञा पुं० निधियों के स्वामी, कुबेर।

निधेय–संज्ञा पुं० रखने योग्य। स्थापनीय। स्थापन करने योग्य।

निध्यान–संज्ञा पुं० दर्शन।

निध्वान–संज्ञा पुं० शब्द।

निनय–संज्ञा स्त्री० नम्रता।

निनरा–वि० न्यारा। अलग। जुदा। दूर।

निनाद–संज्ञा पुं० शब्द। ध्वनि। गर्जन। जोर की आवाज।

निनादना*–क्रि० अ० निनाद या जोर से शब्द करना।

निनादित–वि० जोर से शब्द करता हुआ। ध्वनित।

निनादी–वि० [स्त्री० निनादिनी] शब्द करनेवाला।

निनान*–संज्ञा पुं० १. अंत। २. लक्षण। क्रि० वि० अंत में। आखिर।
वि० १. परले सिरे का। बिलकुल। एकदम। २. बुरा। निकृष्ट।

निनार–संज्ञा पुं० समस्त। बिलकुल। सम्पूर्ण। वि० दूर हटा हुआ।

निनारा–वि० १. अलग। जुदा। भिन्न। २. दूर। हटा हुआ।

निनावाँ–संज्ञा पुं० मुँह के भीतरी भाग में निकलनेवाले महीन-महीन लाल दाने, जिनमें छरछराहट होती है।

निनौना†–क्रि० स० नीचे करना। झुकाना। नवाना।

निन्नानबे–वि० नब्बे और नौ।
संज्ञा पुं० नब्बे और नौ की संख्या। ९९।
मुहा०—निन्नानबे के फेर में आना या पड़ना=१. धन बढ़ाने की धुन में होना। २. कंजूसी। ३. चक्कर में आना। किंकर्तव्यविमूढ़ होना।

निन्यारा*–वि० दे० "निनारा"। अलग।

निपंग*–वि० जिसके हाथ-पैर टूटे हों। जो किसी अंग से अशक्त हो। अपाहिज। निकम्मा।

निप–संज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष।

निपजना*†–क्रि० अ० १. उपजना। उत्पन्न होना। उगना। २. बढ़ना। पुष्ट होना। पकना। ३. बनना।

निपजी*–संज्ञा स्त्री० १. लाभ। मुनाफा। वृद्धि। २. उपज। अन्न की उत्पत्ति।

निपत्र–वि० पत्रहीन। ठूँठा।

निपट–अव्य० १. निरा। विशुद्ध। केवल। एकमात्र। २. सरासर। एकदम। बिलकुल।

निपटना–क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निपटाना–क्रि० स० १. समाप्त करना। पूरा करना। २. ठहराना।

निपटारा–संज्ञा पुं० फैसला। निर्णय। छुटकारा।

निपटाऊ–संज्ञा पुं० निबटानेवाला। निर्णायक।

निपतन–संज्ञा पुं० [वि० निपतित] गिरना। गिराव। नष्ट होना। अधःपतन।

निपतित–संज्ञा पुं० गिरा हुआ। पतित। च्युत। भ्रष्ट।

निपात–संज्ञा पुं० १. पतन। गिराव। २. अधःपतन। ३. विनाश। ४. मृत्यु। क्षय। नाश। ५. व्याकरण के नियमों के विरुद्ध बनाए गए शब्द।
वि० बिना पत्तों का।

निपातक–संज्ञा पुं० नाशक। उजाड़नेवाला। गिरानेवाला।

निपातन–संज्ञा पुं० १. गिराने का कार्य्य। २. नाश। ३. नाश या वध करने का कार्य्य।

निपातना*–क्रि० स० १. नीचे गिराना। २. नष्ट करना। काटकर गिराना। ३. मार गिराना। वध करना।

निपातित–वि० नीचे गिराया हुआ।

निपाती–वि० १. गिरानेवाला। फेंकनेवाला। २. मारनेवाला। *३. बिना पत्ते का।
संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

निपीड़न–संज्ञा पुं० [स्त्री० निपीड़ित] १. पीड़ित करना। कष्ट देना। तकलीफ देना। २. पेरना। ३. मर्दन। मसलना।

निपीड़ना*–क्रि० स० १. दबाना। मसलना। २. कष्ट देना। पीड़ित करना।

निपुण–वि० कुशल। प्रवीण। दक्ष। चतुर।

निपुणता–संज्ञा स्त्री० दक्षता। कुशलता। चातुरी।

निपुणाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपुत्री–वि० पुत्रहीन। निर्वंश। निःसंतान।

निपुन*–वि० दे० "निपुण"।

निपुनई*–संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपूत, निपूता*†–संज्ञा पुं० [स्त्री० निपूती] पुत्रहीन। निःसंतान।

निपोड़ना, निपोरना–क्रि० स० दाँत दिखाना। निर्लज्जता की एक मुद्रा।

निफन*–वि० पूर्ण। पूरा।
क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।

निफरना–क्रि० अ० १. चुभकर या धँसकर आर-पार होना। २. खुलना। साफ होना।

निफल*–वि०विफल। निष्प्रयोजन। निरर्थक। निष्फल।

निफ़ाक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. विरोध। द्रोह। वैर। २. फूट। बिगाड़। अनबन।

निफोट–वि० स्पष्ट। साफ-साफ।

निबंध–संज्ञा पुं० १. बंधन। बंधेज। बन्धान। रोग-विशेष। २. विशद व्याख्या। लेख। ग्रंथ। ३. सन्दर्भ।

निबंधन–संज्ञा पुं० [वि० निबद्ध] १. बंधन। २. व्यवस्था। नियम। बंधेज। ३. कर्त्तव्य। बंधन। ४. हेतु। कारण।

निबकौरी†–संज्ञा स्त्री० १. नीम का फल। २. नीम का बीज।

निबटना–क्रि० अ० [संज्ञा निबटेरा, निबटाव] १. निवृत्त होना। छुट्टी पाना। फुरसत पाना। २. समाप्त होना। पूरा होना। ३. निर्णीत होना। तय होना। ४. चुकना। खतम होना। ५. शौच आदि से निवृत्त होना।

निबटाना–क्रि० स० १. पूरा करना। समाप्त करना। खतम करना। २. चुकाना। बेबाक करना। ३. तय करना।

निबटाव–संज्ञा पुं० दे० "निबटेरा"।

निबटी–वि० १. छटी हुई। २. खर्च। ३. चंट। चालाक।

निबटेरा–संज्ञा पुं० १. निबटने का भाव या क्रिया। छुट्टी। २. समाप्ति। ३. फैसला। ४. निश्चय।

निबड़ना*–क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निबद्ध–वि० १. बँधा हुआ। २. निरुद्ध। रुका हुआ। ३. ग्रथित। गुथा हुआ। ४. बैठाया या जड़ा हुआ।

निबर†–वि० दे० "निर्बल"।

निबरना–क्रि० अ० १. बँधी या लगी वस्तु का अलग होना। छूटना। २. मुक्त होना। उद्धार पाना। ३. छुट्टी पाना। फुरसत पाना। ४. काम पूरा होना। समाप्त होना। ५. निर्णय होना। ६. एक में मिली-जुली वस्तुओं का अलग होना। ७. उलझन दूर होना। सुलझना। ८. दूर होना।

निबल*–वि० निर्बल। दुर्बल। कमजोर। बलहीन।

निबह–संज्ञा पुं० समूह। झुंड।

निबहना–क्रि० अ० १. पार पाना। निकलना। छुट्टी पाना। २. निर्वाह होना। बराबर चला चलना। ३. पूरा होना। सपरना। ४. पालन होना।

निबहुर–संज्ञा पुं० जहाँ से कोई न लौटे। यमद्वार।

निबहुरा–वि० जाकर न लौटनेवाला (गाली)।

निबाह–संज्ञा पुं० १. निबाहने की क्रिया या भाव। दिन काटना। गुजारा। २. संबंध या परंपरा की रक्षा। पालन। ३. पूरा करने का कार्य्य। समाप्त करना। ४. छुटकारे का ढंग। बचाव का रास्ता।

निबाहना–क्रि० स० १. पूरा करना। निर्वाह करना। २. पालन करना। चरितार्थ करना। जारी रखना। ३. बराबर करते जाना।

निबिड़–वि० दे० "निविड़"।

निबुआ*–संज्ञा पुं० दे० "नीबू"।

निबुकना†*–क्रि० अ० १. छूटना। छुटकारा पाना। २. बंधन खुलना।

निबेड़ना–क्रि० स० १. निबटाना। पूरा

करना। साफ करना। (बंधन आदि) छुड़ाना। उन्मुक्त करना। २. छाँटना। चुनना। ३. उलझन दूर करना। सुलझाना। ४. निर्णय करना। फैसल करना। ५. अलग करना। दूर करना।

निबेड़ा—संज्ञा पुं० १. निपटारा। छुटकारा। २. बचाव। उद्धार। ३. छाँट। चुनाव। ४. सुलझाने की क्रिया या भाव। ५. त्याग। ६. निबटेरा। समाप्ति। ७. निर्णय।

निबेरना—क्रि० स० दे० "निबेड़ना"।

निबेरा—संज्ञा पुं० दे० "निबेड़ा"।

निबेहना*—क्रि० स० दे० "निबेरना"।

निबौरी, निबौली—संज्ञा स्त्री० निंबकौरी। नीम का फल।

निभ—संज्ञा पुं० प्रकाश। प्रभा।
वि० समान। तुल्य।

निभना—क्रि० अ० १. पार पाना। पार लगना। छुट्टी पाना। छुटकारा पाना। २. बन आना। पूरा होना। ३. जारी रहना। लगातार बना रहना। ४. गुजारा होना। सपरना। भुगतना। ५. पालन होना। चरितार्थ होना।

निभरम*—वि० शंका-रहित। भ्रमरहित।
क्रि० वि० बेखटके। बेधड़क।

निभरोसी*†—वि० १. जिसे कोई भरोसा न रह गया हो। निराश। हताश। २. जिसे किसी का आसरा-भरोसा न हो। निराश्रय।

निभागा—वि० अभागा।

निभाना—क्रि० स० [निबाहना] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। २. चरितार्थ करना। पालन करना। ३. लगातार करते जाना। चलाना। ४. भुगताना।

निभाव—संज्ञा पुं० दे० "निबाह"।

निभृत—वि० १. रखा हुआ। २. निश्चल। अटल। ३. छिपा हुआ। गुप्त। ४. बंद किया हुआ। ५. निश्चित। स्थिर। ६. विनीत। नम्र। ७. शांत। धीर। ८. निर्जन। एकांत। ९. भरा हुआ।

निभ्रांत*—वि० दे० "निर्भ्रांत"।

निमंत्रण—संज्ञा पुं० १. किसी कार्य्य के लिए नियत समय पर आने का अनुरोध करना। बुलावा। आह्वान। २. न्योता। खाने का बुलावा।

निमंत्रणपत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिसके द्वारा निमंत्रण दिया जाय।

निमंत्रना*—क्रि० स० न्योता देना।

निमंत्रित—वि० आमंत्रित। जिसे न्योता दिया गया हो। आहूत।

निम—संज्ञा पुं० १. सूई। शलाका। २. कतरनी। ३. थोड़ा। न्यून। कम।

निमक‡—संज्ञा पुं० दे० "नमक"।

निमकी—संज्ञा स्त्री० १. नीबू का अचार। २. मैदे की मोयनदार नमकीन टिकिया।

निमकौड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "निबौली"।

निमग्न—वि० [स्त्री० निमग्ना] १. डूबा हुआ। मग्न। २. तन्मय। लवलीन।

निमज्जन—संज्ञा पुं० स्नान। डुबकी लगाकर किया हुआ स्नान। अवगाहन।

निमज्जना*—क्रि० अ० डूबना। गोता लगाना। अवगाहन करना।

निमज्जित—वि० १. डूबा हुआ। मग्न। २. नहाया हुआ।

निमटना—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निमता*—वि० १. सावधान। २. जो उन्मत्त न हो।

निमन—वि० सुन्दर। अच्छा। मनोहर। ठोस।

निमनाई—संज्ञा स्त्री० सुन्दरता। अच्छाई।

निमय—संज्ञा पुं० विनिमय। परिवर्त्तन। आदान-प्रदान। बदला।

निमाज—संज्ञा स्त्री० दे० "नमाज"।

निमान*—संज्ञा पुं० १. नीचा स्थान। गड्ढा। २. जलाशय।

निमाना—वि० [स्त्री० निमानी] १. नीचा। ढालुवाँ। नीचे की ओर गया हुआ। २. नम्र। विनीत। ३. दब्बू।

निमि—संज्ञा पुं० १. महाभारत के अनुसार एक ऋषि, जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। २. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं से मिथिला का विदेह-वंश चला। राजा जनक के पूर्वज। ३. आँखों का मिचना। निमेष।

निमिख*–संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।
निमित्त–संज्ञा पुं० १. हेतु। कारण। प्रयोजन। २. चिह्न। लक्षण। ३. उद्देश्य।
निमित्तक–वि० किसी उद्देश्य से होनेवाला। उत्पन्न। जनित।
निमित्त कारण–संज्ञा पुं० प्रयोजन। हेतु। जिसकी सहायता या प्रेरणा से कोई कार्य हो।
निमिराज*–संज्ञा पुं० राजा जनक।
निमिष–संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।
निमीलन–संज्ञा पुं० बंद करना। मूँदना। सिकोड़ना। आँख मूँदना। आँख मीचना।
निमीलित–वि० मूँदा हुआ। बन्द किया हुआ। पलकों से बन्द की हुई (आँख)।
निमूद–वि० मुँदा हुआ। बंद।
निमेख*–संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।
निमेट–वि० न मिटनेवाला। अमिट।
निमेष–संज्ञा पुं० १. पलक का गिरना या झपकना। २. पलक गिरने भर का समय। क्षण। पल।
निमोना–संज्ञा पुं० हरे चने या मटर की रसेदार तरकारी।
निम्न–वि० नीचा। नीचे की ओर। नीचे।
निम्नगा–संज्ञा स्त्री० नदी।
निम्नता–संज्ञा स्त्री० नीचापन। निचाई। गहराई।
निम्नलिखित–वि० नीचे लिखे हुए।
निम्नोक्त–वि० नीचे कहा हुआ।
निम्ब–संज्ञा पुं० दे० "नीम"।
नियंता–संज्ञा पुं० [स्त्री० नियंत्री] १. नियम निश्चित करनेवाला। व्यवस्था करनेवाला। नियामक। ईश्वर २. कार्य्य को चलानेवाला। ३. नियम पर चलानेवाला। शासक।
नियंत्रण–संज्ञा पुं० नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना।
नियंत्रित–वि० १. नियमित। संयमित। नियम से बँधा हुआ। नियम से अनुशासित। २. प्रतिबद्ध। रोका गया। निवारण किया हुआ।
नियत–वि० १. बँधा हुआ। परिमित। २. ठीक किया हुआ। निश्चित। मुकर्रर। निर्धारित। ३. नियोजित। स्थापित। तैनात। संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।
नियतात्मा–वि० जितेन्द्रिय। यती। यमी। आत्मवशीभूत।
नियति–संज्ञा स्त्री० १. नियत होने का भाव। २. स्थिरता। ३. भाग्य। दैव। अदृष्ट। ४. निश्चित बात। अवश्य होनेवाली बात। नियम। ५. पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम।
नियम–संज्ञा पुं० १. निश्चय के अनुसार प्रतिबन्ध। रोक। पाबंदी। २. दबाव। शासन। ३. बँधा हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ४. विधि। व्यवस्था। कानून। जाब्ता। धारा। ५. शर्त्त। ६. संकल्प। प्रतिज्ञा। व्रत। ७. योग के आठ अंगों में से एक, जिसमें शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान किया जाता है। ८. एक अर्थालंकार, जिसमें किसी बात का होना एक ही स्थान पर नियमित रूप से बतलाया जाय। ९. विष्णु। १०. महादेव।
नियमतः–क्रि० वि० नियमानुसार।
नियमन–संज्ञा पुं० [वि० नियमित, नियम्य] १. नियमबद्ध करने का कार्य्य। कायदा बाँधना। २. शासन। ३. निवारण। रोक। बन्धन। ४. दमन।
नियमबद्ध–वि० नियमों से बँधा हुआ। नियमित।
नियमित–वि० १. बँधा हुआ। क्रमबद्ध। २. कायदे या कानून के अनुसार। नियमबद्ध।
नियर†–अव्य० समीप। पास। निकट। नजदीक।
नियराई†–संज्ञा स्त्री० निकटता। सामीप्य।
नियराना†–क्रि० अ० निकट पहुँचना। नजदीक आना।
नियरे–अव्य० समीप। निकट।
नियाई*–वि० दे० "न्यायी"।
नियाज–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बड़ों का प्रसाद। दर्शन। बड़ों से मुलाकात। २. इच्छा। ३. दीनता। ४. मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन।
नियान*–संज्ञा पुं० निदान। परिणाम। अव्य० अंत में। आखिर।
नियामक–संज्ञा पुं० [स्त्री० नियामिका]

१. नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला। नियन्ता। कर्णधार। ३. मारनेवाला।

नियामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २. स्वादिष्ठ भोजन। उत्तम व्यंजन। ३. धन-दौलत।

नियार–संज्ञा पुं० जौहरी या सुनारों की दूकान का कूड़ा-कतवार।

नियारा†–वि० न्यारा। पृथक्। अलग। दूर।

नियारिया–संज्ञा पुं० १. सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालनेवाला। २. चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

नियारे*†–अव्य० दे० "न्यारे"।

नियाव‡–संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।

नियुक्त–वि० १. नियोजित। लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। २. तत्पर किया हुआ। प्रेरित। ३. स्थिर किया हुआ।

नियुक्ति–संज्ञा स्त्री० नियुक्त किया जाना। कार्य सौंपना। मुकर्ररी। तैनाती।

नियुत–वि० १. संख्या-विशेष। एक लक्ष। २. दस लाख। ३. नियत। सुसंगत। ४. नित्य।

नियुद्ध–संज्ञा पुं० बाहुयुद्ध। मल्लयुद्ध। कुश्ती।

नियोक्ता–संज्ञा पुं० १. नियुक्त करनेवाला। काम में लगानेवाला। मुकर्रर करनेवाला। २. नियोग करनेवाला।

नियोग–संज्ञा पुं० १. नियोजित करने का कार्य्य। नियोजन। प्रेरणा। आज्ञा। हुक्म। तैनाती। मुकर्ररी। २. अवधारण। ३. प्राचीन आर्यों की एक प्रथा, जिसके अनुसार यदि किसी स्त्री का पति न होता या उसे अपने पति से संतान न होती, तो वह अपने देवर या पति के और किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी।

नियोगी–वि० नियोग करनेवाला। नियोजित किया हुआ। तैनात। मुकर्रर।

नियोजक–संज्ञा पुं० काम में लगानेवाला। मुकर्रर करनेवाला।

नियोजन–संज्ञा पुं० [वि० नियोजित, नियोज्य, नियुक्त] किसी काम में लगाना। तैनात या मुकर्रर करना। नियुक्त करना।

नियोजित–वि० नियुक्त। संयोजित। किसी कार्य में नियुक्त किया हुआ।

निरंकार*–संज्ञा पुं० दे० "निराकार"।

निरंकुश–वि० जिसके लिए कोई अंकुश या प्रतिबंध न हो। बिना डर का। स्वतंत्र।

निरंग–वि० १. अंग-रहित। २. बेरंग। बदरंग। विवर्ण। ३. उदास। बेरौनक। ४. खाली। जिसमें और कुछ न हो।

संज्ञा पुं० रूपक अलंकार का एक भेद।

निरंजन–वि० १. अंजन-रहित। बिना काजल का। जैसे, निरंजन नेत्र। २. दोष-रहित। ३. माया से निर्लिप्त (ईश्वर का एक विशेषण)।

संज्ञा पुं० परमात्मा।

निरंतर–वि० [संज्ञा स्त्री० निरन्तरता] १. अंतर-रहित। जो लगातार चला गया हो। अविच्छिन्न। २. निविड़। घना। ३. अनवरत। लगातार होनेवाला। ४. अविचल। स्थायी।

क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।

निरंतराल–वि० अवकाश-शून्य। निरवकाश।

निरंध–वि० १. बहुत अधिक अँधेरा। २. महामूर्ख।

निरंभ–वि० १. निर्जल। २. बिना पानी पिए रह जानेवाला।

निरंश–वि० १. जिसे भाग न मिला हो। २. बिना अक्षांश का।

निरकेवल†–वि० १. शुद्ध। खालिस। बिना मेल का। २. स्वच्छ।

निरक्ष देश–संज्ञा पुं० भूमध्य रेखा के पास के देश, जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं।

निरखन*–संज्ञा पुं० दे० "निरीक्षण"।

निरक्षर–वि० १. जिसे अक्षर पहचानने तक का ज्ञान न हो। अक्षर-शून्य। २. अनपढ़। अशिक्षित। मूर्ख। अज्ञान।

निरक्षरता–संज्ञा स्त्री० अक्षर-ज्ञान का अभाव। अशिक्षा। अज्ञान।

निरक्ष-रेखा–संज्ञा स्त्री० १. नाड़ीमंडल। क्रांतिवृत्त। २. निरक्षवृत्त।

निरखना*–क्रि० स० निहारना। देखना। अवलोकन करना। निरीक्षण करना।

निरग –संज्ञा पुं० दे० "नृग"।
निरगुन*–वि० दे० "निर्गुण"।
निरच्छ*–वि० अंधा। नेत्रहीन। दृष्टिहीन।
निरजर–वि० कभी जीर्ण या पुराना न होने-वाला।
निरजोस–संज्ञा पुं० निचोड़। सार। निर्णय।
निरजोसी–वि० निचोड़ निकालनेवाला। सत्व निकालनेवाला। निर्णायक।
निरझर*–संज्ञा पुं० दे० "निर्झर"।
निरत–वि० किसी काम में लगा हुआ। लीन। तत्पर। मशगूल। तल्लीन।
*†–संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।
निरतना*–क्रि० स० नाचना। नृत्य करना।
निरति–संज्ञा स्त्री० अप्रीति। अप्रेम।
निरतिशय–वि० सबसे बढ़कर। सर्वोत्तम। सर्व-श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० परमेश्वर।
निरदई*–वि० दे० "निर्दय"।
निरधातु–वि० शक्तिहीन। क्षीण।
निरधार*–संज्ञा पुं० दे० "निर्धार"। निश्चय। निर्णय। सिद्धान्त।
निरधारना–क्रि० स० १. निर्धारण करना। निश्चय करना। स्थिर करना। २. मन में धारण करना। समझना।
निरनुनासिक-वि० जिसका उच्चारण नाक से न हो। वे अक्षर, जिनका उच्चारण नाक की सहायता से न हो।
निरन्न–वि० अन्नरहित। बिना अन्न का। जो अन्न न खाए हो। निराहार। भूखा।
निरन्ना–वि० भूखा। निराहार। अन्नरहित।
निरपत्य–वि० निःसन्तान। सन्तान-हीन।
निरपना*–वि० जो अपना न हो। गैर। बेगाना। पराया।
निरपराध–वि० अपराध-रहित। बेकसूर। निर्दोष। जिसने अपराध न किया हो।
क्रि० वि० बिना अपराध किए।
निरपराधी*–वि० दे० "निरपराध"।
निरपवाद–वि० जिसमें कोई अपवाद या दोष न हो। निर्दोष।
निरपाय–संज्ञा पुं० निर्विघ्न।
वि० जिसका विनाश न हो।
निरपेक्ष–वि० [संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी] अलग। तटस्थ। जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो। स्वाधीन। उदासीन। लापरवाह।
निरपेक्षित–वि० १. अनचाहा। उपेक्षित। २. अनावश्यक।
निरपेक्षी–संज्ञा पुं० लगाव न रखनेवाला। तटस्थ। अलग।
निरबंसी–*वि० निर्वंश। जिसे वंश या संतान न हो। सन्तानहीन।
निरबल*–वि० दे० "निर्बल"।
निरबहना*–क्रि० अ० दे० "निभना"।
निरबेद*–संज्ञा पुं० दे० "निर्वेद"।
निरबेरा*–संज्ञा पुं० दे० "निबेरा"।
निरभिमान–वि० गर्वहीन। जिसे अभिमान न हो। अहंकार-शून्य।
निरभियोग–वि० अभियोग-रहित। जिस पर कोई जुर्म या मुकदमा न हो।
निरभिलाष–वि० इच्छा या अभिलाषा से रहित। जिसे कोई इच्छा न हो।
निरभ्र–वि० बिना बादल का। मेघ-रहित। स्वच्छ। साफ।
निरमना*–क्रि० स० निर्माण करना। बनाना।
निरमर, निरमल*–वि० दे० "निर्मल"।
निरमान*–संज्ञा पुं० दे० "निर्माण"।
निरमाना*–क्रि० स० निर्माण करना। बनाना। रचना। तैयार करना।
निरमायल*–संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य"।
निरमूलना*–क्रि० स० निर्मूलन। निर्मूल करना। नष्ट करना। उखाड़ फेंकना।
निरमोल–वि० अमूल्य। अनमोल। बहुत बढ़िया।
निरमोही*–वि० दे० "निर्मोही"।
निरय–संज्ञा पुं० नरक। दोजख। दुःख भोगने का स्थान।
निरयण–संज्ञा पुं० १. अयन-रहित गणना। ज्योतिष में गणना की एक रीति। २. बे-घर का।
निरर्गल–वि० अबाध। अर्गल या जंजीर-रहित। बे रोक-टोक।

निरर्थक–वि० व्यर्थ। अर्थशून्य। बिना मतलब का। निष्फल।

निरवच्छिन्न–वि० जिसका क्रम न टूटा हो। क्रमबद्ध। सिलसिलेवार। क्रमशः।

निरवद्य–वि० निंदा या दोष से रहित। निर्दोष। शुद्ध। स्वच्छ।

निरवधि–वि० जिसकी कोई अवधि न हो। सीमा-रहित। निस्सीम। बेहद।
क्रि० वि० लगातार। निरन्तर।

निरवयव–वि० निराकार। अंग-रहित। बिना अंग या आकार का।

निरवलंब–वि० अवलंबहीन। बिना सहारे। आधार-रहित। निराश्रय। निराधार।

निरवाना–वि० निराई कराना। खेत में से घास आदि निकलवाना।

निरवार–संज्ञा पुं० निस्तार। छुटकारा। मुक्ति। बचाव। छुड़ाने या सुलझाने का काम। आदि निबटेरा।

निरवारना*–क्रि० स० १. निवारण करना। टालना। हटाना। छुड़ाना। मुक्त करना। छोड़ना। त्यागना। २. गाँठ आदि छुड़ाना। सुलझाना। ३. निर्णय करना। तय करना।

निरवाह‡*–संज्ञा पुं० दे० "निर्वाह"।

निरवाहना*–क्रि० अ० निर्वाह करना। निभाना।

निरशन–संज्ञा पुं० भोजन न करना। उपवास। लंघन।

निरसंक*‡–वि० दे० "निःशंक"।

निरस–वि० १. जिसमें रस न हो। रसविहीन। २. फीका। ३. निस्तत्त्व। असार। ४. रूखा-सूखा। शुष्क।

निरसन–संज्ञा पुं० [वि० निरसनीय, निरस्य] १. फेंकना। हटाना। दूर करना। विसर्जन। २. खारिज करना। ३. परिहार। निराकरण। ४. निकालना। ५. वध। ६. नाश।

निरस्त–वि० १. छोड़ा हुआ। त्यक्त। हटाया हुआ। २. हराया गया।

निरस्त्र–वि० बिना हथियार का। अस्त्रहीन।

निरहंकार–वि० अभिमान-रहित। निरभिमान।

निरा–वि० [स्त्री० निरी] १. विशुद्ध। खालिस। बिना मेल का। २. जिसके साथ और कुछ न हो। केवल। ३. नितांत। निपट। बिलकुल। एकदम।
वि० अकेला। एकाकी।

निराई–संज्ञा स्त्री० १. फसल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि को दूर करना। २. निराने की मजदूरी।

निराकरण–संज्ञा पुं० [वि० निराकरणीय, निराकृत] १. अलग करना। हटाना। दूर करना। २. मिटाना। रद करना। ३. शमन। परिहार। ४. निवारण। ५. खंडन। सन्देह दूर करना। शंका मिटाना।

निराकांक्षी–वि० जिसे कोई इच्छा न हो। निःस्पृह। सन्तुष्ट। शान्त।

निराकार–वि० आकारहीन। शरीर-रहित। जिसका कोई आकार न हो। शून्य।
संज्ञा पुं० ईश्वर। आकाश।

निराकुल–वि० १. सावधान। जो घबराया अथवा आकुल न हो। २. बहुत व्याकुल। बहुत घबराया हुआ।

निराकृत–संज्ञा पुं० १. हटाया हुआ। २. अपमानित। ३. अस्वीकृत।

निराखर*†–वि० १. अक्षरहीन। निरक्षर। बिना अक्षर का। २. मौन। चुप। ३. मूढ़। अपढ़।

निराचार–वि० आचार-भ्रष्ट। अनाचार।

निराट–वि० निपट। एकमात्र। बिलकुल।

निरातंक–वि० निःशंक। निर्भय।

निरादर–संज्ञा पुं० बेइज्जती। अपमान।

निराधार–वि० १. आधार-शून्य। निराश्रित। जिसे सहारा न हो। २. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। मिथ्या। अयुक्त। झूठ। ३. जिसे जीविका आदि का सहारा न हो। ४. जो बिना अन्न-जल आदि के हो।

निरानन्द–वि० आनन्द-रहित। दुःखी।
संज्ञा पुं० आनन्द का अभाव। दुःख।

निराना–क्रि० स० फसल के पौधों के आसपास की घास खोदकर दूर करना, जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके। निकाना। नींदना।

निरापद–वि० १. सुरक्षित। जिसे कोई विपत्ति या डर न हो। २. जिससे हानि या अनर्थ

की आशंका न हो। ३. जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।
निरापन*–वि० जो अपना न हो। गैर। पराया। बेगाना।
निरामय–वि० स्वस्थ। नीरोग। तंदुरुस्त। रोग-रहित।
निरामिष–वि० मांस न खानेवाला। मांस-रहित।
निरायुध–वि० बिना अस्त्र के। अस्त्रहीन। खाली हाथ।
निरालंब–वि० बिना आलंब या सहारे का। निराधार। निराश्रय।
निरालय–वि० १. आलय-रहित। बिना मकानया बे-घर के। २. एकान्त। निर्जन। निराला।
निरालस्य–वि० आलस्यहीन। जिसमें आलस्य न हो। फुरतीला। चुस्त। उद्योगी।
निराला–संज्ञा पुं० [स्त्री० निराली] एकांत स्थान। ऐसा स्थान, जहाँ कोई न हो। वि० १. जहाँ कोई मनुष्य या बस्ती न हो। निर्जन। एकांत। २. विलक्षण। सबसे भिन्न। अद्भुत। अजीब। ३. अपूर्व। बहुत बढ़िया। अनूठा।
निरावना†–क्रि० स० दे० "निराना"।
निराश–वि० आशाहीन। जिसे आशा न हो।
निराशा–संज्ञा स्त्री० नाउम्मेदी। आशा-रहित। आशा के विपरीत।
निराशी*–वि० हताश। विरक्त। उदासीन।
निराश्रय–वि० आश्रयरहित। बिना सहारे का। अशरण। असहाय।
निरास*–वि० दे० "निराश"।
निरासी*–वि० १. दे० "निराशी"। २. उदास। बेरौनक।
निराहार–वि० आहार-रहित। अनशन। जो बिना भोजन के हो। भूखा। जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।
निरिंद्रिय–वि० इंद्रिय-रहित। बिना इंद्रिय का। अंधा, पंगु आदि।
निरिच्छना*–क्रि० स० देखना। अवलोकन।
निरी–संज्ञा स्त्री० केवल। निरा। निपट।
निरीक्षक–संज्ञा पुं० जाँच करनेवाला। देखनेवाला। देख-रेख करनेवाला। परीक्षक।
निरीक्षण–संज्ञा पुं० [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण] देख-रेख। जाँच। निगरानी। देखना। दर्शन। देखने की मुद्रा या ढंग।
निरीक्षा–संज्ञा स्त्री० देखना।
निरीश्वर–संज्ञा पुं० नास्तिक। ईश्वर में विश्वास न करनेवाला।
निरीश्वरवाद–संज्ञा पुं० ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने का सिद्धान्त। यह सिद्धान्त कि ईश्वर नहीं है।
निरीश्वरवादी–संज्ञा पुं० नास्तिक। ईश्वर को न माननेवाला। ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास न करनेवाला।
निरीह–वि० निःस्पृह। इच्छा-रहित। निश्चेष्ट। जिसे किसी बात की चाह न हो। विरक्त। उदासीन।
निरुआर†–संज्ञा पुं० दे० "निरुवार"।
निरुक्त–वि० निश्चयपूर्वक कहा हुआ। व्याख्या किया हुआ। नियुक्त। ठहराया हुआ।
संज्ञा पुं० वेद का चौथा अंग। छः वेदांगों में से एक, जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है। यास्कमुनि-विरचित एक ग्रंथ।
निरुक्ति–संज्ञा स्त्री० १. किसी पद या वाक्य की व्युत्पत्ति-सहित व्याख्या। २. एक काव्यालंकार, जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परन्तु वह अर्थ असंगत न हो।
निरुज*–वि० दे० "नीरुज"।
निरुत्तर–वि० १. जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २. जो उत्तर न दे सके। अवाक्। उत्तरहीन।
निरुत्साह–वि० उत्साहहीन। हतोत्साह। जिसमें उत्साह या उमंग न हो। साहसहीन।
निरुत्सुक–वि० जिसे कोई उत्सुकता न हो। उत्सुकता-रहित। निरुद्वेग।
निरुद्ध–वि० रुका या बँधा हुआ।
संज्ञा पुं० योग में चित्त की वह अवस्था, जिसमें योगी निश्चेष्ट हो जाता है।
निरुद्यम–वि० [संज्ञा निरुद्यमता] उद्योग-

हीन। जिसके पास कोई उद्यम न हो। बेकाम। बेकार।

निरुद्यमी–संज्ञा पुं० निकम्मा। जो उद्यम न करता हो। कोई काम न करनेवाला। परिश्रम न करनेवाला।

निरुद्देश्य–वि० जिसका कोई उद्देश्य या ध्येय न हो।

क्रि० वि० बिना किसी उद्देश्य के।

निरुद्योग–वि० उद्यमहीन। उद्योग-रहित। बेकार। निकम्मा।

निरुद्वेग–वि० निश्चिन्त। जिसमें कोई वेग या हलचल न हो।

निरुपद्रव–वि० शान्त। जिसमें कोई उपद्रव या अशान्ति न हो।

निरुपद्रवी–संज्ञा पुं० उपद्रव न करनेवाला। शान्त। अचंचल।

निरुपम–वि० उपमा-रहित। जिसकी उपमा न हो। बेजोड़। अद्वितीय। अनुपम।

निरुपयोगी–वि० जो उपयोग में न आ सके। निरर्थक। व्यर्थ। बेकाम।

निरुपाधि–वि० जिसकी कोई उपाधि न हो। उपाधि-रहित। बाधा-रहित। माया-रहित। निर्बोध। निर्मल। शुद्ध।

संज्ञा पुं० ब्रह्म।

निरुपाय–वि० १. जो कुछ उपाय न कर सके। जिसका कोई उपाय न हो। २. उपाय-रहित।

निरुवरना*†–क्रि० अ० सुलझना। कठिनता आदि का दूर होना।

निरुवार†–संज्ञा पुं० १. मोचन। छुड़ाने का काम। २. छुटकारा। बचाव। मुक्ति। ३. सुलझाने का काम। ४. तय करना। निबटाना। ५. निर्णय।

निरुवारना*–क्रि० स० १. मुक्त करना। छुड़ाना। २. सुलझाना। उलझन मिटाना। ३. निबटाना। तय करना। ४. निर्णय करना।

निरूढ़–वि० १. उत्पन्न। २. विख्यात। प्रसिद्ध। ३. अविवाहित। कुँआरा।

निरूढ़-लक्षणा–संज्ञा स्त्री० वह लक्षणा, जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो; अर्थात् वह केवल प्रसंग या प्रयोजनवश ही न ग्रहण किया गया हो।

निरूढ़ा–संज्ञा स्त्री० दे० "निरूढ़-लक्षणा"।

निरूप–वि० १. जिसका कोई रूप या आकार न हो। रूपहीन। निराकार। २. कुरूप। बदसूरत।

निरूपक–वि० निरूपण करनेवाला।

निरूपण–संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. विचार। विवेचना-पूर्ण विचार या निर्णय करना। निदर्शन। ३. स्थिर करना।

निरूपना*–क्रि० अ० निश्चित करना। निर्णय करना। ठहराना।

निरूपित–वि० जिसका निरूपण या विवेचन हो चुका हो। जिसका निर्णय हो चुका हो।

निरूप्य–वि० निरूपण या निर्णय करने योग्य। जिसका निरूपण होने को हो।

निरेखना*–क्रि० स० दे० "निरखना"।

निरै*–संज्ञा पुं० नरक।

निरोग, निरोगी‡–संज्ञा पुं० रोग-रहित। वह व्यक्ति, जिसे कोई रोग न हो। स्वस्थ। तन्दुरुस्त।

निरोध–संज्ञा पुं० १. अवरोध। रोक। रुकावट। बंधन। २. घेरा। घेर लेना। ३. योग में चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकना। ४. नाश।

निरोधक–वि० रोकनेवाला। रुकावट डालनेवाला। घेरा डालनेवाला।

निरोधन–संज्ञा पुं० दे० "निरोध"।

निरोधी–वि० दे० "निरोधक"।

निर्ख–संज्ञा पुं० [फा०] दर। भाव।

निर्खनामा–संज्ञा पुं० [फा०] वह पत्र, जिस पर सब चीजों का भाव लिखा हो।

निर्खबन्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] चीजों के भाव या दर निश्चित करना।

निर्गंध–वि० [संज्ञा निर्गंधता] गंधहीन। जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो।

निर्गत–वि० [स्त्री० निर्गता] बाहर आया हुआ। निकला हुआ।

निर्गम–संज्ञा पुं० उद्गम। निकास। निकलना।

निर्गमन–संज्ञा पुं० निकलना। बाहर आना। प्रस्थान करना। पलायन।

निर्गमना–क्रि० अ० निकलना। बाहर आना या जाना। प्रस्थान करना।

निर्गुंडी–संज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष। २. एक औषध। ३. सिंधवार। सँभालू।

निर्गुण–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
वि० [संज्ञा निर्गुणता] गुणहीन। जिसमें कोई गुण न हो। बुरा। जो सत्व, रज और तम, तीनों गुणों से परे हो।

निर्गुणिया–वि० १. निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला। २. गुण-रहित।

निर्गुणी–वि० गुणहीन। मूर्ख।

निघंट–संज्ञा पुं० १. शब्दकोश या ग्रंथसूची। २. द्रव्य-गुणागुण-दर्शक ग्रंथ।

निर्घृण–वि० १. जिसे गंदी वस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। २. निंदित। अति नीच। ३. निर्दय। निष्ठुर। ४. घृणा या जुगुप्सा से हीन।

निर्घात–संज्ञा पुं० १. तेज हवा चलने का शब्द। २. बिजली की कड़क। ३. एक प्रकार का अस्त्र।

निर्घोष–संज्ञा पुं० [वि० निर्घोषित] शब्द। आवाज।
वि० शब्दहीन।

निर्जन–वि० सुनसान। एकांत। वह स्थान, जहाँ कोई मनुष्य न हो। जनहीन। विजन।

निर्जल–वि० १. बिना जल का। जल-रहित। २. जिसमें जल पीने का विधान न हो।

निर्जला एकादशी–संज्ञा स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, जिस तिथि को लोग निर्जल व्रत रखते हैं।

निर्जित–वि० सूद या लाभ आदि के रूप में बढ़कर प्राप्त होनेवाला धन (एक्रूड-अंग्रे०)।

निर्जीव–वि० १. जीव-रहित। प्राणहीन। बेजान। मृतक। मरा हुआ। जड़। २. अचेतन। अशक्त या उत्साहहीन। दुर्बल।

निर्झर–संज्ञा पुं० [स्त्री० निर्झरिणी] पानी का झरना। चश्मा। सोता। पर्वत से गिरनेवाला जल-प्रवाह।

निर्झरिणी–संज्ञा स्त्री० नदी।

निर्णय–संज्ञा पुं० १. औचित्य और अनौचित्य का निश्चय। २. वादी और प्रतिवादी की बातों को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के संबंध में कोई विचार स्थिर करना। निबटारा। फैसला।

निर्णायक–संज्ञा पुं० निर्णय या फैसला करनेवाला।

निर्णयोपमा–संज्ञा स्त्री० एक अर्थालंकार, जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।

निर्णीत–वि० जिसका निर्णय या फैसला हो चुका हो। निर्णय किया हुआ।

निर्णेता–संज्ञा पुं० निर्णय करनेवाला।

निर्त*†–संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।

निर्तक*†–संज्ञा पुं० दे० "नर्त्तक"।

निर्तना*†–क्रि० अ० नाचना।

निर्दंभ–वि० जिसे दंभ या अभिमान न हो।

निर्दय–वि० दयाहीन। निर्मम। निष्ठुर। बेरहम।

निर्दयता–संज्ञा स्त्री० निर्दय होने का भाव। क्रूरता। बेरहमी। कठोरता। निष्ठुरता। निर्ममता।

निर्दयी*†–वि० दे० "निर्दय"।

निर्दल–वि० जिसमें दल या पत्ता न हो।

निर्दहना*†–क्रि० स० जलाना।

निर्दिष्ट–वि० १. जिसका निर्देश हो चुका हो। कथित। निरूपित। बतलाया हुआ। २. निश्चित।

निर्दूषण*†–वि० दे० "निर्दोष"।

निर्देश–संज्ञा पुं० १. आज्ञा। हुक्म। आदेश। हिदायत। २. कथन। उल्लेख। वर्णन। ३. किसी पदार्थ को बतलाना। निश्चित करना। निरूपण।

निर्दोष–वि० [संज्ञा निर्दोषता] १. जो दोषी न हो। दोष-रहित। निरपराध। निष्कलंक। २. बे-कसूर। बे-ऐब। बे-दाग।

निर्दोषी–वि० दे० "निर्दोष"।

निर्द्वंद, निर्द्वंद्व–वि० जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वंद्वों से रहित या परे हो। स्वच्छंद। मुक्त।

निर्धन–वि० दरिद्र। धनहीन। गरीब। कंगाल।

निर्धनता–संज्ञा स्त्री० दरिद्रता। गरीबी। कंगाली।
निर्धर्म–वि० धर्म-रहित। धर्मशून्य। अधार्मिक।
निर्धार–संज्ञा पुं० दे० "निर्धारण"।
निर्धारण–संज्ञा पुं० निश्चित करना। निर्णय। निश्चय।
निर्धारक–संज्ञा पुं० [स्त्री० निर्धारिका, निर्धारिणी] किसी बात का निर्धारण या निश्चय करनेवाला।
निर्धारना–क्रि० स० दे० "निर्धारण"। निश्चित करना। ठहराना। निर्धारित करना।
निर्धारित–वि० निश्चित किया हुआ।
निर्निमेष–क्रि० वि० एकटक। बिना पलक झपकाए।
वि० १. जो पलक न गिरावे। २. जिसमें पलक न गिरे।
निर्बंध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। अड़चन। २. हठ। जिद। आग्रह।
निर्बल–वि० दुर्बल। कमजोर। शक्तिहीन।
निर्बलता–संज्ञा स्त्री० कमजोरी। दुर्बलता।
निर्बहना–क्रि० अ० १. पार होना। दूर होना। अलग होना। २. क्रम का चलना। निभना। पालन होना।
निर्बीज–वि० १. बीजरहित। जिसमें बीज न हो। २. जो कारण से रहित हो। कारण-रहित।
निर्बुद्धि–वि० अज्ञान। अबोध। ज्ञानहीन। बेवकूफ। मूर्ख।
निर्बोध–वि० जिसे अच्छे-बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो। अनजान। अज्ञान।
निर्भय–वि० बिना भय या डर के। निडर। बेखौफ। साहसी। हिम्मती।
निर्भयता–संज्ञा स्त्री० निडरपन। निडर होने का भाव या अवस्था।
निर्भर–वि० आश्रित। अवलंबित। मुनहसर। किसी पर आधारित या ठहरा हुआ।
निर्भीक–वि० निडर।
निर्भीकता–संज्ञा स्त्री० निर्भयता।
निर्भ्रम–वि० भ्रम-रहित। शंका-रहित। क्रि० वि० निधड़क। बेखटके।
निर्भ्रांत–वि० १. भ्रम-रहित। जिसको कोई भ्रम न हो। शंका-रहित। २. जिसमें कोई सन्देह न हो।
निर्मना*†–क्रि० स० दे० "निर्माना"।
निर्मम–वि० १. निःष्ठुर। निर्दय। २. निर्मोही। ३. ममताहीन। निःस्पृह। वासना-रहित।
निर्मर्याद–वि० मर्यादा-रहित। अपमानकारी।
निर्मल–वि० १. स्वच्छ। साफ। २. पवित्र। शुद्ध। ३. निर्दोष। कलंकहीन।
संज्ञा पुं० १. अभ्रक। २. निर्मली।
निर्मलता–संज्ञा स्त्री० १. सफाई। स्वच्छता। २. निष्कलंकता। पवित्रता। शुद्धता।
निर्मला–संज्ञा पुं० एक नानकपंथी साधु-संप्रदाय।
निर्मली–संज्ञा स्त्री० १. रीठे का वृक्ष या फल। २. एक प्रकार का वृक्ष, जिसके पके बीजों का औषध-रूप में तथा गँदला पानी साफ करने के लिए व्यवहार होता है। चाकसू।
निर्माण–संज्ञा पुं० रचना। बनावट। बनाने का काम। सृजन।
निर्माता–संज्ञा पुं० निर्माण करनेवाला। बनानेवाला। रचयिता।
निर्मात्रिक–वि० मात्रा-रहित। अमात्रिक।
निर्मान–वि० असीम। बेहद। अपार।
संज्ञा पुं० दे० "निर्माण"।
निर्माना*–क्रि० स० बनाना। रचना।
निर्मायल*–संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य"।
निर्माल्य–संज्ञा पुं० देवता पर अर्पित वस्तु।
निर्मित–वि० रचित। बनाया हुआ। निर्माण किया हुआ।
निर्मूल–वि० जड़-रहित। बे-बुनियाद। बिना जड़ का। जड़ से उखाड़ा हुआ। जो नष्ट हो गया हो।
निर्मूलन–संज्ञा पुं० निर्मूल होना या करना। नाश करने की क्रिया। विनाश।
निर्मोक–संज्ञा पुं० १. साँप की केंचुली। २. शरीर की ऊपरी खाल। ३. आकाश।
निर्मोल*†–वि० अमूल्य। जिसका मूल्य बहुत अधिक हो।

निर्मोह–वि० जिसके मन में मोह या ममता न हो। निर्दय। कठोर।
निर्मोही–वि० [स्त्री० निर्मोहिनी] जिसमें मोह या ममता न हो। निर्दय। निष्ठुर।
निर्यात–संज्ञा पुं० १. बाहर जाना। देश के बाहर सामान भेजना। २. देश से बाहर भेजा जानेवाला माल।
निर्यातन–संज्ञा पुं० १. बदला चुकाना। प्रतीकार। २. मार डालना।
निर्यास–संज्ञा पुं० १. वृक्षों या पौधों में से निकलनेवाला रस। वृक्षों का रस। २. काढ़ा। ३. बहना। झरना। ४. स्थिर। निश्चय। ५. मीमांसा। ६. गोंद। ७. क्षरण।
निर्युक्ति या **निर्युक्तिक**–संज्ञा स्त्री० युक्ति-रहित। अनुचित। अनुपयुक्त।
निर्योगक्षेम–वि० चिन्तारहित। निश्चिन्त।
निर्लज्ज–वि० बेहया। बेशर्म। लज्जाहीन।
निर्लज्जता–संज्ञा स्त्री० बेहयाई। बेशर्मी। निर्लज्ज होने का भाव।
निर्लिप्त–वि० जो लिप्त न हो। अनासक्त। रागद्वेष से मुक्त। बेलाग।
निर्लेप–वि० दे० "निर्लिप्त"।
निर्लेश–वि० लेश-रहित। तनिक भी नहीं। सर्वथा अभाव।
निर्लोभ–वि० जिसे लालच न हो। लोभहीन।
निर्लोम–वि० रोम-रहित। बिना रोयें के।
निर्वंश–वि० [संज्ञा निर्वंशता] निःसन्तान। वंशहीन।
निर्वचन–वि० चुप। मौन। निर्वाक्। संज्ञा पुं० निश्चित रूप से कोई बात कहना। निरूपण।
निर्वसन*–वि० [स्त्री० निर्वसना] नग्न। नंगा।
निर्वहण–संज्ञा पुं० १. निर्वाह। निबाह। गुजर। २. समाप्ति।
निर्वहना*†–क्रि० अ० परंपरा का पालन होना। निभना।
निर्वाक्–वि० मौन। चुप।
निर्वाचक–संज्ञा पुं० निर्वाचन करनेवाला। चुननेवाला। निर्वाचन का काम करनेवाला।
निर्वाचन–संज्ञा पुं० बहुतों में से एक या अधिक को चुनना। चुनाव। मतदान-द्वारा चुनाव।
निर्वाचन-क्षेत्र–संज्ञा पुं० वह स्थान या क्षेत्र, जहाँ से प्रतिनिधि चुना जाय।
निर्वाचित–वि० चुना हुआ।
निर्वाण–वि० १. बुझा हुआ २. डूबा हुआ। अस्त। ३. शान्त। धीमा। ४. मृत। संज्ञा पुं० १. बुझना। ठंढा होना। २. समाप्ति। न रह जाना। ३. अस्त। डूबना। गमन। ४. शान्ति। ५. मुक्ति। मोक्ष।
निर्वात–वि० वायुरहित स्थान। वह स्थान, जहाँ वायु न जा सके।
निर्वाध–वि० बाधारहित। निष्कण्टक। सरल।
निर्वापण–संज्ञा पुं० [वि० निर्वापित, निर्वाप्य] १. त्याग। दान। २. विनाश। प्राणनाश। अंत। समाप्ति। बध। ३. आग बुझाना। आग का बुझना।
निर्वास–संज्ञा पुं० बहिष्करण। निकाल देना। बाहर कर देना।
निर्वासक–संज्ञा पुं० देशनिकाला देनेवाला। निकालने या बाहर करनेवाला।
निर्वासन–संज्ञा पुं० १. गाँव, शहर या देश-आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना। देश-निकाला। २. वध। हत्या। ३. निकालना। विसर्जन।
निर्वासित–वि० निकाला गया। बहिष्कृत। अपने देश या निवासस्थान से निकाला गया।
निर्वास्य–संज्ञा पुं० निकालने योग्य। बहिष्कार करने योग्य।
निर्वाह–संज्ञा पुं० १. किसी क्रम या परंपरा का चलना। निर्वाह। २. किसी बात के अनुसार आचरण। पालन। ३. समाप्ति। पूरा होना।
निर्वाहना*–क्रि० अ० निर्वाह करना। पूरा करना।
निर्विकल्प–वि० १. एकाग्र। २. जिसमें कल्पना न हो। विकल्प। निरपेक्ष। विचारहीन। ३. (न्याय में) अव्यक्त ज्ञान। ४. ईश्वर का एक विशेषण। ५. निश्चित। स्थिर। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की समाधि।
निर्विकल्प समाधि–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार

की समाधि, जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई अन्तर नहीं रह जाता।
निर्विकार–वि० जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्त्तन न हो। विकारहीन।
निर्विघ्न–वि० बाधा-रहित।
क्रि० वि० बिना किसी विघ्न के।
निर्विरोध–वि० जिसमें विरोध या बाधा न हो। बिना किसी रुकावट के।
निर्विवाद–वि० विवाद-रहित। जिसमें कोई विवाद न हो। बिना झगड़े का।
निर्विवेक–वि० विचारहीन। बुद्धि या ज्ञान से शून्य।
निर्विशंक–वि० निर्भय। साहसी। निडर।
निर्विशेष–संज्ञा पुं० परमात्मा। परब्रह्म। निर्विकल्प। निर्गुण।
निर्वीरा–संज्ञा स्त्री० विधवा और पुत्रहीन स्त्री।
निर्वीर्य्य–वि० वीर्य्यहीन। निस्तेज। कमजोर।
निर्वृत्ति–संज्ञा पुं० १. एक चन्द्रवंशी राजा (पुराण)। २. उत्पत्ति। बनावट। ३. निष्पत्ति। सिद्धि। ४. समाधि। ५. वृत्ति-रहित।
निर्वेद–संज्ञा पुं० १. मोक्ष की अभिलाषा। २, वैराग्य। ३. पश्चात्ताप। दुःख। अनुताप। संताप। खेद। ४. नम्रता। ५. अपना अपमान। अपनी अवहेलना।
निर्वैर–वि० द्वेष से रहित। शत्रु-रहित। जिसका कोई वैरी न हो।
निर्व्याज–वि० १. निष्कपट। छलरहित। २. बाधा-रहित।
निर्व्याधि–वि० निरोग। रोगरहित।
निर्हरण–वि० शव-बहिष्करण। मृतक या अरथी निकालना। मुर्दा निकालना।
निर्हेतु–वि० जिसमें कोई हेतु न हो। अहेतुक। अकारण। प्रयोजन-रहित।
निल–संज्ञा पुं० विभीषण का मन्त्री।
निलज्ज†–वि० दे० "निर्लज्ज"।
निलज्जता*–संज्ञा स्त्री० दे० "निर्लज्जता"।
निलज्जी*†–वि० निर्लज्जा। बेशर्म। बेहया।
निलय–संज्ञा पुं० गृह-मकान। घर। निवास-
निलहा–वि० १. नीलवाला। २. नील-संबंधी।
निवर–वि० १. निर्णय करनेवाला। २. बचानेवाला।
निवरा–संज्ञा स्त्री० कुमारी। अविवाहिता।
निवर्तन–संज्ञा पुं० लौटाना। रोकना। वापस आना।
निवसन–संज्ञा पुं० १. गाँव। २. घर। ३. वस्त्र।
निवसना–क्रि० अ० निवास करना। रहना।
निवह–संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। यूथ। २. सात वायुओं में से एक वायु।
निवाई–वि० १. नवीन। नया। २. विलक्षण।
निवाज–वि० [फा०] कृपा करनेवाला। कृपालु।
निवाजना*†–क्रि० स० अनुग्रह करना। कृपा करना। दया करना।
निवाड़ा–संज्ञा पुं० १. छोटी नाव। २. नाव की एक क्रीड़ा, जिसमें उसे नदी के बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं। नावर।
निवात–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ हवा न जा सके। वातहीन प्रदेश।
निवार–संज्ञा स्त्री० बहुत मोटे सूत की बुनी हुई चौड़ी पट्टी, जिससे पलँग आदि बुने जाते हैं। निवाड़। नेवार।
संज्ञा पुं० तिन्नी धान।
निवारक–वि० १. अवरोधक। रोकनेवाला। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला।
निवारण–संज्ञा पुं० १. रोकने की क्रिया। हटाने या दूर करने की क्रिया। २. छुटकारा। निवृत्ति।
निवारना*–क्रि० स० १. रोकना। निषेध या मना करना। २. हटाना। दूर करना। बचाना।
निवारी–संज्ञा स्त्री० एक लता और उसके फूल।
निवाला–संज्ञा पुं० [फा०] ग्रास। कौर।
निवास–संज्ञा पुं० रहने का स्थान। वास-स्थान। घर। मकान।
निवासस्थान–संज्ञा पुं० घर। मकान। रहने का स्थान।
निवासी–संज्ञा पुं० [स्त्री० निवासिनी] रहनेवाला। बसनेवाला। वासी।
निविड़–वि० अधन। घना। घोर। गहरा।

निविष्ट—वि० **१.** जिसका चित्त एकाग्र हो। लीन। तत्पर। २. लिपटा हुआ। बाँधा हुआ। घुसा या घुसाया हुआ।
निवीत—संज्ञा पुं० १. गले से लटका हुआ। २. यज्ञोपवीत। ३. चादर।
निवृत्त—वि० विरक्त। मुक्त। खाली।
निवृत्ति—संज्ञा स्त्री० मुक्ति। मोक्ष। छुटकारा। प्रवृत्ति का उलटा।
निवेद*†—संज्ञा पुं० दे० "नैवेद्य"।
निवेदक—संज्ञा पुं० निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।
निवेदन—संज्ञा पुं० १. प्रार्थना। विनय। विनती। २. समर्पण।
निवेदना*†—क्रि० स० १. विनती या प्रार्थना करना। २. कुछ अर्पित करना। नैवेद्य चढ़ाना।
निवेदित—वि० १. निवेदन किया हुआ। अर्पित। समर्पित। २. दिया हुआ। ३. दान किया हुआ।
निवेरना*†—क्रि० स० दे० "निवटाना"।
निवेरा*—वि० १. छाँटा हुआ। चुना हुआ। २. अनोखा। ३. नवीन।
निवेश—संज्ञा पुं० १. विवाह। २. पड़ाव। शिविर। डेरा। खेमा। रास्ते में ठहरने की जगह। ३. प्रवेश। ४. घर।
निशंक—वि० निर्भय। निडर। जिसे किसी बात की शंका या भय न हो।
निश—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।
निशचर—संज्ञा पुं० रात में चलनेवाले। राक्षस।
निशांत—संज्ञा पुं० रात्रि का अंत। प्रभात।
निशांध—वि० १. जिसे रात को दिखाई न दे।
निशा—संज्ञा स्त्री० १. रात। रजनी। २. हलदी। हरिद्रा।
निशाकर—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। चाँद। २. महादेव। ३. कुक्कुट। मुरगा।
निशाखातिर—संज्ञा स्त्री० तसल्ली। बेफिक्र। प्रबोध। निश्चिन्त।
निशागम—संज्ञा पुं० रात का आगमन। संध्या।
निशाचर—संज्ञा पुं० १. रात में चलनेवाला। राक्षस। २. गीदड़। शृगाल। ३. उल्लू। ४. सर्प। ५. चक्रवाक। ६. भूत। ७. चोर।
निशाचरी—संज्ञा स्त्री० १. राक्षसी। २. कुलटा।
निशाटन—संज्ञा पुं० उल्लू।
वि० दे० "निशाचर"।
निशात—वि० तेज किया हुआ। शान दिया हुआ। शाणित।
संज्ञा स्त्री० [अ०] आनन्द। प्रसन्नता। सुखभोग।
निशाधीश—संज्ञा पुं० दे० "निशापति"।
निशान—संज्ञा पुं० १. चिह्न। अंकित चिह्न। दाग या धब्बा। किसी पदार्थ के पहचानने का चिह्न। २. झंडा। पताका। ध्वजा। ३. पता। ठिकाना। ४. अनपढ़ व्यक्ति का हस्ताक्षर के बदले में बनाया हुआ अँगूठे का निशान।
यौ०—नाम-निशान=अस्तित्व का लेश। बचा हुआ थोड़ा अंश।
मुहा०—निशान देना=पहचनवाना। निशान उठाना या खड़ा करना=किसी काम में अगुआ या नेता बनकर आन्दोलन करना।
निशानची—संज्ञा पुं० १. निशाना लगानेवाला। अच्छा शिकार खेलनेवाला। २. राजा या सेना आदि के आगे झंडा लेकर चलनेवाला। निशान-बरदार। ध्वजाधारी।
निशानदेही—संज्ञा स्त्री० पहचनवाना। पहचान कराना। असामी को सम्मन आदि देने के लिए पहचनवाने की क्रिया।
निशापति—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। राकेश। २. कपूर।
निशाना—संज्ञा पुं० [फा०] **१.** लक्ष्य। **२.** किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उस पर वार करना। जिसे लक्ष्य करके व्यंगोक्ति की जाय।
मुहा०—निशाना बाँधना=वार करने के लिए अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना, जिसमें ठीक लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या लगाना=ताककर अस्त्र आदि का वार करना।
निशानाथ—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
निशानी—संज्ञा स्त्री० याद के लिए दी हुई

या रखी गई वस्तु। स्मृति-चिह्न। यादगार। पहचानने का चिह्न। निशान।

निशामणि–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

निशामुख–संज्ञा पुं० संध्या। संध्या का समय।

निशास्ता–संज्ञा पुं० [फा०] गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला और जमाया हुआ सत या गूदा। माड़ी। कलफ।

निशि–संज्ञा स्त्री० रात। रात्रि।

निशिकर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

निशिचर–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

निशिचारी–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

निशित–वि० तेज। चोखा।
संज्ञा पुं० लोहा।

निशिनाथ–संज्ञा पुं० दे० "निशानाथ"।

निशिपाल–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. एक प्रकार का छंद।

निशिवासर*–संज्ञा पुं० रात-दिन। सदा। सर्वदा। हमेशा।

निशीथ–संज्ञा पुं० रात। रजनी।

निशीथिनी–संज्ञा स्त्री० रात। रजनी।

निशुंभ–संज्ञा पुं० १. वध। हिंसा। २. एक असुर, जो शुंभ तथा नमुचि का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था।

निशुंभमर्दिनी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। जगदम्बा।

निश्चय–संज्ञा पुं० १. सन्देह-रहित। २. विश्वास। ३. निर्णय। ४. दृढ़ संकल्प। पक्का विचार। प्रतिज्ञा। ५. एक अर्थालंकार।

निश्चयात्मक–वि० असंदिग्ध। ठीक-ठीक।

निश्चल–वि० अचल। अटल। स्थिर।

निश्चलता–संज्ञा स्त्री० स्थिरता। दृढ़ता। निश्चल होने का भाव।

निश्चिंत–वि० चितारहित। जिसे कोई चिंता या फिक्र न हो। बे-फिक्र।

निश्चिंतई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "निश्चिंतता"।

निश्चिंतता–संज्ञा स्त्री० निश्चिंत या चिन्ता-रहित होने का भाव। बे-फिक्री।

निश्चित–वि० १. निर्णीत। जिसके संबंध में निश्चय हो चुका हो। तय किया हुआ। २. जिसमें कोई हेर-फेर न हो सके। पक्का।

निश्चेतन–वि० बेसुध। बेहोश। जड़। जिसमें चेतन-शक्ति न हो।

निश्चेष्ट–वि० १. अचेत। बेहोश। चेष्टा-रहित। २. स्थिर। निश्चल।

निश्चै*–संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"।

निश्छल–वि० छलरहित। सीधा-सादा। निष्कपट।

निश्छिद्र–वि० छिद्र या दोष से हीन।

निश्रेणी–संज्ञा स्त्री० १. सीढ़ी। जीना। २. मुक्ति।

निश्रेयस्–संज्ञा पुं० १. मुक्ति। मोक्ष। २. कल्याण। दुःख का अत्यंत अभाव।

निश्वास–संज्ञा पुं० श्वास। साँस। प्राणवायु।

निश्शंक–वि० १. निर्भय। निडर। २. संदेह-रहित।

निश्शक्त–वि० निर्बल। शक्तिहीन। कमजोर।

निश्शब्द–वि० सन्नाटा। शब्दहीन।

निश्शेष–वि० जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो। समाप्त।

निषंग–संज्ञा पुं० [वि० निषंगी] १. तरकश। तूण। तूणीर। २. खड्ग।

निषाद–संज्ञा पुं० १. केवट। मल्लाह। एक अनार्य जाति। २. संगीत के सात स्वरों में अंतिम।

निषादी–संज्ञा पुं० महावत। हाथीवान।

निषिद्ध–वि० १. वर्जित। जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिए मनाही हो। २. खराब। बुरा। दूषित।

निषिद्धाचरण–वि० शास्त्र-विरुद्ध आचरण। बुरा चाल-चलन।

निषेध–संज्ञा पुं० वर्जन। न करने का आदेश। मनाही। बाधा। रुकावट।

निषेधक–संज्ञा पुं० रोकनेवाला। मना करने-वाला।

निषेधाक्षेप–संज्ञा पुं० आक्षेपालंकार का एक भेद।

निषेधित–वि० दे० "निषिद्ध"।

निष्कंटक–वि० निर्विघ्न। बाधा, आपत्ति या झंझट आदि से रहित। बिना खटके का।

निष्क–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सोने का सिक्का या मोहर। २. एक प्रकार का

गले का गहना। ३. शास्त्रों में वर्णित एक प्रकार की तौल। १०८ रत्ती भर सोना। टंक। ४. सुवर्ण। ५. हीरा।

निष्कंप–वि० जिसमें कोई कम्पन न हो। जो काँपता या हिलता न हो। स्थिर।

निष्कपट–वि० निश्छल। सरल। छल-रहित। सीधा।

निष्कपटता–संज्ञा स्त्री० निश्छलता। सरलता। सीधापन।

निष्करुण–वि० निष्ठुर। बेरहम।

निष्कर्म–वि० अकर्मा। जो कर्म करने में लिप्त न हो।

निष्कर्ष–संज्ञा पुं० परिणाम। तत्त्व। सार। निश्चय। निचोड़। खुलासा। सिद्धान्त।

निष्कलंक–वि० निर्दोष। निरपराध। बे-ऐब।

निष्कलंकी–वि० दे० "निष्कलंक"।

निष्काम–वि० १. निःस्पृह। कामना, आसक्ति या इच्छा आदि से रहित। २. बिना किसी कामना या इच्छा के किया गया कार्य।

निष्कारण–वि० बिना कारण। अकारण। वृथा। व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

निष्कासन–संज्ञा पुं० किसी स्थान से बाहर किया जाना। राज्य या देश से बाहर निकालना।

निष्कासित–वि० बाहर निकाला हुआ।

निष्कृत–वि० [संज्ञा निष्कृति] १. निकला हुआ। २. मुक्त। छूटा हुआ।

निष्क्रमण–संज्ञा पुं० [वि० निष्क्रांत] १. बाहर निकलना। एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान को जाना। २. एक संस्कार, जिसमें बालक जब चार महीने का होता है, तब उसे घर से बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है। निःसरण।

निष्क्रमणार्थी–संज्ञा पुं० कहीं से निकलने की इच्छा रखनेवाला।

निष्क्रय–संज्ञा पुं० १. वेतन। तनख्वाह। मजदूरी। भाड़ा। २. विनिमय। बदला। ३. बिक्री। ४. सामर्थ्य।

निष्क्रान्त–वि० [संज्ञा स्त्री० निष्क्रान्ति] १. निकला या निकाला हुआ। छूटा हुआ। मुक्त। २. निर्गत। एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान में जानेवाला।

निष्क्रिय–वि० निश्चेष्ट। क्रिया-शून्य। अकर्मा।

निष्क्रियता–संज्ञा स्त्री० निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्ठ–वि० १. स्थित। ठहरा हुआ। स्थिर। २. तत्पर। लगा हुआ। ३. जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।

निष्ठा–संज्ञा स्त्री० १. मन की स्थिति। अवस्था। २. निर्वाह। ३. विश्वास। निश्चय। ४. गुरुजनों के प्रति श्रद्धा-भक्ति। पूज्य बुद्धि। ५. निष्पत्ति। ६. नाश। समाप्ति।

निष्ठावान्–वि० श्रद्धाभक्ति रखनेवाला।

निष्ठुर–वि० [स्त्री० निष्ठुरा] निर्दय। क्रूर। बे-रहम। कठिन। कड़ा। सख्त।

निष्ठुरता–संज्ञा स्त्री० निर्दयता। क्रूरता। कड़ाई। सख्ती। कठोरता।

निष्णात–वि० निपुण। किसी बात का पूरा पंडित। विज्ञ। पारंगत। जानकार।

निष्पंद–वि० कम्परहित। जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो। स्थिर। निष्कम्प।

निष्पक्ष–वि० [संज्ञा निष्पक्षता] तटस्थ। पक्षपात-रहित। जो किसी के पक्ष में न हो।

निष्पत्ति–संज्ञा स्त्री० १. समाप्ति। अंत। २. सिद्धि। परिपाक। ३. निर्वाह। ४. मीमांसा। निर्धारण। निश्चय।

निष्पन्न–वि० १. सम्पन्न। २. समाप्त। सिद्ध। जो समाप्त या पूरा हो चुका हो। पूर्ण।

निष्परिग्रह–संज्ञा पुं० योगी। तपस्वी। संन्यासी।

निष्पादन–संज्ञा पुं० १. सम्पादन। साधन। पूरा करना। निष्पत्ति। २. नियुक्ति।

निष्पाप–संज्ञा पुं० निर्दोष। निरपराध। पाप-रहित। जिस पर कोई पाप न हो।

निष्पीड़न–संज्ञा पुं० निचोड़ना। पेरना।

निष्प्रतिभ–वि० अज्ञ। जड़। मूर्ख। निर्बोध।

निष्प्रत्यूह–वि० निर्विघ्न। बाधा-रहित। निरापद।

निष्प्रभ–वि० जिसमें किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। प्रभाशून्य। ओजहीन।

निष्प्रयोजन–वि० व्यर्थ। जिसमें कोई मतलब न हो। निरर्थक।
क्रि० वि० बिना अर्थ या मतलब के। व्यर्थ। फजूल।

निष्प्राण–वि० प्राणहीन। निर्जीव। मृत। मुर्दा।

निष्फल–वि० असफल। विफल। जिसका कोई फल न हो। निरर्थक। व्यर्थ। फल-रहित।

निसंक†–वि० दे० "निश्शंक"।

निसंग–वि० दे० "निःसंग"।

निसंठ–वि० दरिद्र। गरीब। कंगाल।

निसंस*† १. नृशंस। क्रूर। २. अशक्त। पुरुषार्थ-हीन। मृतवत्।

निसंसना*–क्रि० अ० निःश्वास लेना। हाँफना।

निस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसक–वि० निःशक्त। अशक्त। दुर्बल। कमजोर।

निसकर†*–संज्ञा पुं० दे० "निशाकर"। चन्द्रमा।

निसत*‡–वि० निःसत्य। असत्य। झूठ।

निसतरना*†–क्रि० अ० निस्तार पाना। छुटकारा पाना। मुक्ति पाना।

निसतारना–क्रि० स० मुक्त करना। निस्तार करना।

निसद्योस*†–क्रि० वि० रातदिन। सदा।

निसनेहा*–संज्ञा स्त्री० दे० "निःस्नेहा"।

निसबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १.संबंध। लगाव। ताल्लुक। २. मँगनी। विवाह-संबंध की बात। ३. तुलना। ४. मुलाकात।

निसयाना*†–वि० जिसके होश-हवास ठिकाने न हों। उन्मत्त।

निसरना*–क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निसरावन–संज्ञा पुं० ब्राह्मण को दिया जानेवाला बेपका अन्न। सीधा।

निसर्ग–संज्ञा पुं० १. स्वभाव। प्रकृति। २. दान। ३. सृष्टि। ४. रूप। आकृति।

निसवादला‡*–वि० स्वाद-रहित। बेमजा।

निसवासर*†–संज्ञा पुं० दे० "निशिवासर"। रात-दिन।

क्रि० वि० नित्य। हमेशा। सदा।

निसस*†–वि० श्वास-रहित। बेहोश। अचेत।

निसहाय–वि० दे० "निस्सहाय"।

निसाँक‡–वि० दे० "निःशंक"।

निसाँस, निसाँसा*†–संज्ञा पुं० ठंढी साँस। लंबी साँस।
वि० बेदम। मृतप्राय।

निसा–संज्ञा स्त्री० १. दे० "निशा"। २. संतोष।
मुहा०—निसा भर=जी भर के। जोर भर के।

निसाकर–संज्ञा पुं० चन्द्रमा। निशाकर।

निसाचर–संज्ञा पुं० राक्षस। दे० "निशाचर"।

निसान–संज्ञा पुं० १. दे० "निशान"। २. नगाड़ा। धौंसा। ३. झण्डा। ४. चिह्न।

निसानन*†–संज्ञा पुं० १. संध्या का समय। प्रदोष-काल। २. चन्द्रमा।

निसापति–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

निसाफ*†–संज्ञा पुं० दे० "इनसाफ"।

निसार–संज्ञा पुं० [अ०] १.निकास। निकाल। २. निछावर। सदका।
*†वि० दे० "निस्सार"।

निसारना†–क्रि० स० दे० "निकालना"।

निसास*–संज्ञा पुं० निःश्वास। लम्बी या ठंढी साँस।
वि० श्वास-रहित। बे-दम।

निसासी*–वि० श्वास-रहित। बे-दम। मृतप्राय।

निसि–संज्ञा स्त्री० १. निशि। रात। २. एक वर्णवृत्त।

निसिकर–संज्ञा पुं० दे० "निशिकर"। चन्द्रमा।

निसिचर*†–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"। राक्षस।

निसिचारी*–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"। राक्षस।

निसित–वि० तीक्ष्ण। पैना।

निसिदिन*–क्रि० वि० रातदिन। सदा।

निसिनिसि–संज्ञा स्त्री० अर्द्धरात्रि। आधी रात। निशीथ।

निसिपर*–संज्ञा पुं० निशिकर। चंद्रमा।

निसिबासर*–क्रि० वि० निशिवासर। रात-दिन। नित्य। सदा। सर्वदा।

निसीठी—वि० निःसार। थोथा। नीरस।
निसु*†—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।
निसुका*—वि० गरीब। निगोड़ा।
निसूदन—संज्ञा पुं० हिंसा करना। मार डालना।
निसृष्ट—वि० १. छोड़ा हुआ। त्यक्त। अर्पित। २. प्रेरित। भेजा हुआ। ३. दिया हुआ। दत्त। ४. मध्यस्थ।
निसेनी†—संज्ञा स्त्री० निःश्रेणी। सीढ़ी। काठ या बाँस की बनी सीढ़ी। नसैनी (ग्रा०)।
निसेष*—वि० दे० "निःशेष"।
निसेस*—संज्ञा पुं० चंद्रमा।
निसैनी—संज्ञा स्त्री० दे० "निसेनी"।
निसोग*†—वि० १. शोक-रहित। २. जिसे कोई चिन्ता न हो।
निसोच*—वि० चिंता-रहित। निश्चिन्त। प्रसन्न।
निसोत—वि० शुद्ध। निरा। जिसमें और किसी चीज का मेल न हो।
निसोथ—संज्ञा स्त्री० एक लता, जिसकी जड़ और डंठल रेचक समझे जाते हैं।
निसोधु*†—संज्ञा स्त्री० १. सुध। खबर। २. सँदेशा। समाचार।
निस्तन्द्र—वि० जिसे तंद्रा या नींद न आई हो। जगा हुआ। जाग्रत।
निस्तत्त्व—वि० निस्सार। जिसमें कोई तत्व न हो।
निस्तब्ध—वि० जड़वत्। निश्चेष्ट। जो हिलता-डोलता न हो।
निस्तब्धता—संज्ञा स्त्री० सन्नाटा। खामोशी।
निस्तरंग—वि० जिसमें तरंग या लहर न हो।
निस्तरण—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"। उद्धार। पार या मुक्त होना।
निस्तरना*†—क्रि० अ० मुक्त होना। छूट जाना। निस्तार पाना। उद्धार।
निस्तार—संज्ञा पुं० १ पार होने का भाव। २. छुटकारा। उद्धार। मोक्ष।
निस्तारण—संज्ञा पुं० निस्तार करना। छुड़ाना। बचाना। पार करना।
निस्तारन*—वि० दे० "निस्तारण"।
निस्तारना†*—क्रि० स० उद्धार। छुड़ाना। मुक्त करना।
निस्तारा*—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"। निर्वाह। छुटकारा।
निस्तीर्ण—वि० जो तय या पार कर चुका हो। मुक्त। छूटा हुआ।
निस्तेज—वि० प्रभाहीन। तेज-रहित। मलिन।
निस्तोक—संज्ञा पुं० निबटारा। निर्णय।
निस्त्रिंश—वि० असि। खड्ग। तलवार।
निस्त्रप—वि० निर्लज्ज। अशिष्ट। लज्जा-रहित।
निस्पृह—वि० [संज्ञा निस्पृहता] निर्लोभ। कामना-रहित। लालच-रहित। जिसे कोई इच्छा या लालच न हो।
निस्पन्द—वि० [संज्ञा स्त्री० निस्पंदता] कंप-रहित। जो हिलता-डुलता न हो। स्पन्दन-शून्य। निश्चेष्ट। स्थिर। स्तब्ध।
निस्फ—वि० [अ०] आधा। अर्द्ध।
निस्बत—संज्ञा पुं० [फा०] संबंध में। अनुपात।
निस्व—वि० निर्धन। दरिद्र। गरीब। दुखी।
निस्वन—संज्ञा पुं० शब्द। ध्वनि।
निस्वाँस—संज्ञा पुं० निःश्वास।
निस्संकोच—वि० संकोच-रहित। बेधड़क।
निस्संग—वि० १. किसी से कोई सम्बन्ध न रखनेवाला। विषय-विकार से रहित। २. निर्जन। एकान्त। अकेला।
निस्संतान—वि० संतति-रहित। जिसे कोई संतान न हो।
निस्संदेह—क्रि० वि० अवश्य। जरूर। वि० जिसमें संदेह न हो।
निस्सत्व—वि० जिसमें कुछ भी सत्व न हो। असार। सत्वहीन या सारहीन।
निस्सरण—संज्ञा पुं० निकास। निकलने का मार्ग। निकलने का भाव या क्रिया।
निस्सहाय—वि० असहाय। जिसका कोई सहायक न हो।
निस्सार—वि० व्यर्थ। सार-रहित। तुच्छ।
निस्सीम—वि० अपार। असीम। सीमा-रहित। बहुत अधिक।
निस्स्वार्थ—वि० जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो।
निहंग—वि० १. एकाकी। अकेला। २. फक्कड़। चिन्ता-रहित। स्त्री आदि से

सम्बन्ध न रखनेवाला (साधु)। ३. निर्लज्ज। बेहया। नंगा।

निहंग-लाड़ला–वि० दुलार के कारण उद्दंड और लापरवाह लड़का।

निहंता–वि० [स्त्री० निहंत्री] प्राणघातक। नाश करनेवाला।

निहचय*†–संज्ञा पुं० दे० "निश्चय।"

निहचल*†–वि० दे० "निश्चल"।

निहत–वि० १. फेंका हुआ। २. नष्ट। मार डाला गया।

निहत्था–वि० १. शस्त्रहीन। २. खाली हाथ। ३. बिना हाथ का।

निहनना*†–क्रि० स० मार डालना। मारना।

निहाई–संज्ञा स्त्री० सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औजार, जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

निहायत–वि० [अ०] बहुत। अत्यंत।

निहार–संज्ञा पुं० १. कुहरा। २. अन्धकार। ३. ओस। ४. पाला। बरफ। हिम।

निहारना–क्रि० स० ध्यानपूर्वक देखना। ताकना। देखना।

निहाल–वि० [फा०] तृप्त। पूर्णकाम। पूर्ण-मनोरथ। सन्तुष्ट।

निहाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. निहाई। २. गद्दा। तोशक।

निहित–वि० १. स्थापित। रखा हुआ। २. छिपा हुआ।

निहुरना–क्रि० अ० नवना। झुकना।

निहुराना–क्रि० स० नवाना। झुकाना।

निहोर–वि० १. कृपा। उपकार। २. विनती। विनय।

निहोरना–क्रि० स० १. विनय करना। प्रार्थना करना। मनाना। मनौती करना। २. कृतज्ञ होना।

निहोरा†–संज्ञा पुं० १. विनती। प्रार्थना। २. अनुग्रह। ३. कृतज्ञता। ४. उपकार। एहसान। उलाहना। ५. भरोसा। आसरा।

क्रि० वि० १. कारण से। बदौलत। द्वारा। २. निमित्त। वास्ते।

नींद–संज्ञा स्त्री० निद्रा। सोने की अवस्था।

मुहा०—नींद उचटना=नींद टूट जाना। नींद खुलना या टूटना=जाग पड़ना। नींद पड़ना=नींद आना। नींद भर सोना=जितनी इच्छा हो, उतना सोना। नींद हराम होना=न सो सकना।

नींदड़ी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "नींद"।

नीक, नीका†*–वि० अच्छा। भला। सुन्दर। संज्ञा पुं० अच्छाई। अच्छापन। उत्तमता।

नीके–क्रि० वि० अच्छी तरह।

नीच–वि० अधम। बुरा। निकृष्ट। तुच्छ। हेठा। निम्न। क्षुद्र।

यौ०—नीच-ऊँच=१. अच्छा-बुरा। २. गुण-अवगुण। ३. अच्छा और बुरा परिणाम। ४. सुख-दुःख।

नीचगामी–वि० [स्त्री० नीचगामिनी] १. ओछा। २. नीचे जानेवाला।

नीचता–संज्ञा स्त्री० बुराई। अधमता। कमीनापन। क्षुद्रता।

नीचट–संज्ञा पुं० १. एकान्त। निर्जन। २. पक्का। दृढ़।

नीचा–वि० [स्त्री० नीची] १. जिसके आस-पास का तल ऊँचा न हो। २. जो गहराई पर हो। गहरा। निम्न। ऊँचा का उलटा। ३. झुका हुआ। नत। ४. धीमा। मध्यम। ५. बुरा। ओछा। क्षुद्र।

यौ०—नीचा-ऊँचा=कहीं गहरा और कहीं उठा हुआ। जो समतल न हो। ऊबड़-खाबड़। हानि-लाभ। ३. सुख-दुःख।

मुहा०—नीचा खाना=१. तुच्छ बनना। अपमानित होना। २. परास्त होना। ३. लज्जित होना। नीचा दिखाना=१. अपमानित करना। तुच्छ बनाना। २. मान-भंग करना। शेखी झाड़ना। ३. परास्त करना। ४. लज्जित करना। नीचा देखना=दे० "नीचा खाना"। नीची दृष्टि करना=सामने न ताकना। सिर झुकाना।

नीचाशय–वि० ओछा। क्षुद्र।

नीचू†–क्रि० वि० दे० "नीचे"।

नीचे–क्रि० वि० १. नीचे की ओर। अधोभाग में। तले। ऊपर का उलटा। २. घटकर। कम। न्यून। ३. अधीनता में।

मुहा०—नीचे-ऊपर=१. तले-ऊपर। एक पर एक। २. उलट-पलट। अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित। नीचे गिरना=१. प्रतिष्ठा खोना। मान-मर्यादा गँवाना। २. पतित होना। अवनत दशा को प्राप्त होना। ऊपर से नीचे तक=१. सब भागों में। सर्वत्र। २. सर्वांग में। सिर से पैर तक।

नीजन*—संज्ञा पुं० निर्जन। निर्जन-स्थान। जन-शून्य स्थान।

नीझर—संज्ञा पुं० निर्झर। सोता। झरना।

नीठ—क्रि० वि० दे० "नीठि"।

नीठि—संज्ञा स्त्री० अरुचि। अनिच्छा।
क्रि० वि० १. ज्यों-त्यों करके। २. किसी न न किसी प्रकार। ३. कठिनाई से। मुश्किल से।

नीठो*—वि० अप्रिय। अनिष्ट।

नीड़—संज्ञा पुं० घोंसला।

नीत—वि० १. लाया हुआ। पहुँचाया हुआ। २. प्राप्त। ३. स्थापित।

नीति—संज्ञा स्त्री० १. व्यवहार की रीति। उपाय। युक्ति। हिकमत। २. उचित आचार या व्यवहार। अच्छी चाल। सदाचार। ३. राज-विद्या। राज्य-संचालन-सम्बन्धी ज्ञान।

नीतिज्ञ—वि० नीति जाननेवाला। नीतिकुशल।

नीतिमान्—वि० [स्त्री० नीतिमती] सदाचारी। नीतिपरायण।

नीतिवादी—संज्ञा पुं० वह, जो सब काम नीतिशास्त्र के अनुसार करना चाहता है। नीतिशास्त्र का अनुयायी।

नीतिशास्त्र—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें आचार, व्यवहार और शासन का विधान हो। वह शास्त्र, जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों।

नीदना*—क्रि० स० निंदा करना।

नीधना†*—वि० निर्धन। दरिद्र।

नीप—संज्ञा पुं० १. कदंब। बंधूक। २. अशोक का फूल। ३. पहाड़ का निचला भाग।

नीपना*—क्रि० स० दे० "लीपना"।

नीबी*—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवी"।

नीबू—संज्ञा पुं० फल-विशेष। कई प्रकार के खट्टे और मीठे नीबू होते हैं। जैसे कागजी, जंबीरी, बिजौरा, चकोतरा।
मुहा०—नीबू-निचोड़=भारी कंजूस।

नीम—संज्ञा पुं० नींब। एक पेड़।

नीमा—संज्ञा पुं० [फा०] जामे के नीचे का एक पहनावा।

नीमास्तीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] आधी बाँहों की एक प्रकार की कुरती।

नीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] उद्देश्य। आशय: संकल्प। इच्छा। भावना। मंशा। इरादा।
मुहा०—नीयत डिगना या बद होना=अच्छा या उचित संकल्प दृढ़ न रहना। नीयत बदल जाना=१. संकल्प या विचार कुछ का कुछ होना। २. बुरा विचार होना। नीयत बाँधना=संकल्प करना। नीयत भरना=जी भरना। इच्छा पूरी होना। नीयत में फर्क आना=बेईमानी या बुराई सूझना। नीयत लगी रहना=इच्छा बनी रहना।

नीर—संज्ञा पुं० १. रस। २. पानी।
मुहा०—नीर ढलना=आँख से आँसू बहना। किसी की आँख का नीर ढल जाना=निर्लज्ज या बेहया हो जाना।

नीरज—वि० जल से उत्पन्न होनेवाला।
संज्ञा पुं० जल में उत्पन्न वस्तु। कमल। मुक्ता। मोती।

नीरद—संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

नीरधर—संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

नीरधि—संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।

नीरनिधि—संज्ञा पुं० सागर। समुद्र। जलधि।

नीरव—वि० शब्दहीन। जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। जो कुछ न बोलता हो। चुप। शान्त।

नीरवता—संज्ञा स्त्री० सन्नाटा। निःशब्द होने का भाव। चुप्पी।

नीरस—वि० १. रसहीन। जिसमें रस न हो। २. सूखा। शुष्क। ३. जिसमें कोई स्वाद या मजा न हो। फीका। ४. जिसमें मन न लगे।

नीरांजन—संज्ञा पुं० १. देवता को दीपक

दिखाने की विधि। आरती। दीपदान। २. हथियारों को चमकाने या साफ करने का काम।

नीराजना*–क्रि० अ० आरती करना।

नीरुह–संज्ञा पुं० कमल। पद्म।

नीरुज–वि० स्वस्थ। निरोग। तन्दुरुस्त।

नीरे*–क्रि० वि० दे० "नियरे"।

नीरोग–वि० जिसे रोग न हो। स्वस्थ। तंदुरुस्त। चंगा।

नील–वि० नीले रंग का।

संज्ञा पुं० १. नीला रंग। गहरा आसमानी रंग। २. एक प्रसिद्ध पौधा, जिससे नीला रंग निकाला जाता है। ३. विष। गरल। ४. कलंक। लांछन। ५. राम की सेना का एक बंदर। ६. एक पर्वत। ७. नव निधियों में से एक। ८. एक वर्णवृत्त। ९. नीलम। १०. सौ अरब की संख्या। ११. कुबेर के एक खजाने का नाम।

मुहा०—नील का टीका लगाना=कलंक लेना। बदनामी उठाना। नील की सलाई फिरवा देना=आँखें फोड़वा डालना।

नीलकंठ–वि० जिसका गला नीला हो।

संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. महादेव। विषपान करने से इनका गला नीला पड़ गया, इसी से इन्हें नीलकंठ कहते हैं। ३. एक प्रकार की चिड़िया, जिसका कंठ और डैने नीले होते हैं। चाष पक्षी। ४. गौरा पक्षी। चटक।

नीलकांत–संज्ञा पुं० १. चिड़िया। २. नीलम मणि। ३. विष्णु।

नीलगाय–संज्ञा स्त्री० नीलापन लिये भूरे रंग के हिरन की तरह का एक जंगली पशु जो गाय के बराबर होता है।

नीलग्रीव–संज्ञा पुं० महादेव। शिव। दे० "नीलकंठ"।

नीलचक्र–संज्ञा पुं० १. जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर का चक्र। २. ३० अक्षरों का एक दंडक-वृत्त।

नीलता–संज्ञा स्त्री० नीलिमा। नीलापन।

नीलम–संज्ञा पुं० नीले रंग का रत्न। नीलमणि। इंद्रनील।

नीलमणि–संज्ञा पुं० नीलम। रत्न-विशेष। नीलकान्त मणि।

नीलमाधव–संज्ञा पुं० जगन्नाथ। विष्णु।

नीलमोर–संज्ञा पुं० कुररी पक्षी।

नीललोहित–वि० बैंगनी रंग। नीलापन लिये लाल।

संज्ञा पुं० १. शंकर का एक नाम। महादेव। २. नील और रक्त मिश्रित वर्ण। बैंगनी रंग। ३. नीलकण्ठ।

नीलवर्ण–वि० नीला रंग। श्याम रंग। आसमानी रंग। आकाश के रंग का।

नीलस्वरूप, नीलस्वरूपक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का वर्णवृत्त।

नीलांजन–संज्ञा पुं० १. नीला सुरमा। २. नीला थोथा। तूतिया।

नीलांबर–संज्ञा पुं० नीले रंग का एक तरह का रेशमी कपड़ा।

वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला। बलदेवजी।

नीलांबरा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मीजी।

नीलांबुज–संज्ञा पुं० नील कमल।

नीला–वि० आकाश के रंग का। नील के रंग का।

मुहा०—नीला-पीला होना=क्रोध दिखाना। बिगड़ना। चेहरा नीला पड़ जाना=आकृति से भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट होना। जीवन के लक्षण नष्ट होना।

नीलाई–संज्ञा स्त्री० श्यामता। नीलापन।

नीलाथोथा–संज्ञा पुं० तूतिया। ताँबे का नीला क्षार या लवण।

नीलाम–संज्ञा पुं० बिक्री का एक ढंग, जिसमें माल सबसे अधिक दाम लगानेवाले को दिया जाता है। बोली बोलकर बेचना।

नीलावती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का चावल।

नीलिका–संज्ञा स्त्री० १. नीलबरी। २. नील सम्हालू वृक्ष। नीली निर्गुंडी। ३. आँख झिलमिलाने का रोग। ४. मुख पर का एक रोग, जिसमें सरसों के बराबर छोटे-छोटे कड़े काले दाने निकलते हैं। झल्ला।

नीलिमा–संज्ञा स्त्री० नीलापन। स्याही। श्यामता।

नीलोत्पल–संज्ञा पुं० नील कमल। नीले पत्तों का कमल।

नीलोफर–संज्ञा पुं० [फा०] १. नील कमल। २. कुमुद। कुईं।

नीवँ–संज्ञा स्त्री० १. घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा, जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरंभ होती है। २. दीवार की जड़ या आधार। मूल-भित्ति। ३. जड़। मूल। आधार। स्थिति। **मुहा०**–नीवँ देना=गड्ढा खोदकर दीवार खड़ी करने के लिए स्थान बनाना। (किसी बात की) नीवँ देना=कारण या आधार खड़ा करना। उपक्रम करना। नीवँ जमाना, डालना या देना=दीवार उठाने के लिए नीवँ के गड्ढे में ईंट, पत्थर आदि जमाकर आधार खड़ा करना। दीवार की जड़ जमाना। (किसी बात की) नीवँ जमाना या डालना=आधार दृढ़ करना। स्थिर करना। (किसी वस्तु या बात की) नीवँ पड़ना=१. घर की दीवार का आधार खड़ा होना। २. सूत्रपात होना।

नीव–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।

नीवार–संज्ञा पुं० १. तिन्नी पसही। २. एक प्रकार का अन्न, जो तालाबों में अपने-आप होता है।

नीवि–संज्ञा स्त्री० १. कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ, जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंही बाँधती हैं। २. सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। फुफुंदी। कटि-वस्त्र-बंध। इजारबंद। ३. धोती। साड़ी।

नीवी–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवि"।

नीहँ†–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।

नीहार–संज्ञा पुं० १. कुहरा। २. पाला। तुषार। बर्फ। हिम।

नीहारिका–संज्ञा स्त्री० १. कुहरा। कुहासा। धुएँ या कुहरे की तरह आकाश में फैला हुआ क्षीण प्रकाश-पुंज, जो रात में सफेद धब्बे की तरह दिखाई देता है। २. पदार्थों की प्रारम्भिक अवस्था। ३. एक दार्शनिक सिद्धान्त, जिसके अनुसार जगत् के समस्त पदार्थ ठोस होने के पूर्व भाप के रूप में माने जाते हैं।

नुकता, नुक्ता–संज्ञा पुं० [अ०] १. बिंदु। बिन्दी। अनुस्वार का चिह्न। २. चुटकुला। फबती। ३. सूक्ष्म या बारीक बात। लगनेवाली उक्ति। ४. ऐब। दोष।

नुकताचीनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] दोष निकालना। छिद्रान्वेषण।

नुकती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई। बेसन की महीन बुँदिया।

नुकरा–संज्ञा पुं० १. चाँदी। २. घोड़ों का सफेद रंग।

वि० सफेद रंग का (घोड़ा)।

नुकसान–संज्ञा पुं० १. [अ०] विकार। अवगुण। दोष। २. कमी। घटी। ह्रास। छीज। हानि। क्षति। घाटा।

मुहा०—नुकसान उठाना=हानि सहना। नुकसान पहुँचाना=हानि करना। नुकसान भरना=हानि की पूर्त्ति करना। (किसी का) नुकसान करना=दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना या स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होना।

नुकीला–वि० [स्त्री० नुकीली] नोकदार। जिसमें नोक निकली हो। बाँका। तिरछा।

नुक्कड़–संज्ञा पुं० १. नोक। पतला सिरा। २. छोर। सिरा। कोना। ३. निकला हुआ कोना।

नुक्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. दोष। ऐब। बुराई। खराबी। २. कसर। त्रुटि।

नुचना–क्रि० अ० १. नोचा जाना। उखड़ना या उखाड़ना। २. नाखून आदि से छिलना। खरोंचा जाना।

नुचवाना–क्रि० स० नोचने का काम दूसरे से कराना।

नुति–संज्ञा स्त्री० स्तुति। स्तोत्र। खुशामद।

नुत्फा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वीर्य्य। शुक्र। २. संतति। औलाद।

नुत्फाहराम–संज्ञा पुं० [अ०] वर्णसंकर। दोगला।

नुनखरा, नुनहरा–वि० नमकीन। स्वाद में नमक-जैसा खारा।

नुनना–क्रि० स० लुनना। खेत काटना।
नुनाई*†–संज्ञा स्त्री० लावण्य। सलोनापन। सुन्दरता।
नुनियाँ–संज्ञा पुं० जाति-विशेष। नोनिया।
नुनेरा–संज्ञा पुं० १. नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालनेवाला। २. नोनिया। लोनिया।
नुमाइंदा–संज्ञा पुं० [फा०] ,प्रतिनिधि।
नुमाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नाना प्रकार की वस्तुओं का एक स्थान पर दिखाया जाना। प्रदर्शिनी। २. दिखावट। ३. तड़क-भड़क। सजधज। ठाट-बाट।
नुमाइशी–वि० [फा०] जो केवल दिखावट के लिए हो, किसी प्रयोजन का न हो। दिखौवा। दिखाऊ।
नुसखा, नुस्खा–संज्ञा पुं० [अ०] १. लिखा हुआ कागज। २. कागज की वह चिट, जिस पर हकीम या वैद्य रोगी के लिए औषध और सेवन-विधि लिखते हैं।
नूत–वि० १. नूतन। नया। २. अनूठा। अनोखा।
नूतन–वि० नवीन। नया। अनोखा। हाल का। ताजा।
नूतनता–संज्ञा स्त्री० नवीनता। नूतन का भाव। नयापन।
नूधा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का तम्बाकू।
नून–संज्ञा पुं० १. लवण। नोन। नमक। २. आल। आल की जाति की एक लता। **मुहा०**—**नून-तेल**=गृहस्थी का सामान। *वि० दे० "न्यून"।
नूनताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "न्यूनता"।
नूनी–संज्ञा स्त्री० बालकों की मूत्रेन्द्रिय।
नूपुर–संज्ञा पुं० पैर में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण। पैंजनी। घुँघरू।
नूका–संज्ञा पुं० १. १४ मात्राओं का एक छंद। २. कज्जल।
नूर–संज्ञा पुं० [अ०] १. ज्योति। प्रकाश। सौन्दर्य की आभा। २. श्री। शोभा। कांति। मुहा०—**नूर का तड़का**=प्रातःकाल। **नूर बरसना**=प्रभा का अधिकता से प्रकट होना।

नूरा†–वि० [अ०] तेजस्वी। नूरवाला।
नृ–संज्ञा पुं० मनुष्य। नर।
नृकेशरी–संज्ञा पुं० १. नरकेसरी। नृसिंह अवतार। २. श्रेष्ठ पुरुष।
नृतक*–संज्ञा पुं० दे० "नर्त्तक"। नाचनेवाला।
नृत्तना*–क्रि० अ० नाचना।
नृत्य–संज्ञा पुं० १. नर्त्तन। नाच। २. संगीत के ताल और गति के अनुसार अंगों की गति।
नृत्यकारी–वि० नाचनेवाला। नचैया। नर्त्तक।
नृत्यकी*†–संज्ञा स्त्री० वेश्या। नर्त्तकी।
नृत्यशाला–संज्ञा स्त्री० नाचघर।
नृदेव–संज्ञा पुं० १. राजा। २. ब्राह्मण।
नृदेवता–संज्ञा पुं० दे० "नृदेव"।
नृप–संज्ञा पुं० राजा। नरेश। नरपति।
नृपति–संज्ञा पुं० राजा। नरेश।
नृपाल–संज्ञा पुं० दे० "नृपति"।
नृमेध–संज्ञा पुं० नरमेध यज्ञ।
नृयज्ञ–संज्ञा पुं० मनुष्य के प्रति गृहस्थ का आवश्यक कर्त्तव्य। अभ्यागत का सत्कार। अतिथिपूजा।
नृवराह–संज्ञा पुं० १. शूर। वीर। योद्धा। २. भगवान् का वाराह अवतार।
नृशंस–वि० १. निर्दय। क्रूर। २. दुष्ट। घातक। जालिम। अत्याचारी।
नृशंसता–संज्ञा स्त्री० निर्दयता।
नृसिंह–संज्ञा पुं० १. भगवान् का नरसिंह अवतार। नरसिंह का रूप धारण कर भगवान् ने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद की रक्षा की थी। २. श्रेष्ठ पुरुष। ३. मनुष्यों में सिंह-सा वीर।
नृहरि–संज्ञा पुं० नृसिंह। नरसिंह अवतार।
ने†–प्रत्य० सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की एक विभक्ति।
नेउला–संज्ञा पुं० नेवला (जन्तु-विशेष)।
नेऊन*–संज्ञा पुं० मक्खन। नवनीत।
नेक–वि० [फा०] १. उत्तम। भला। २. सज्जन। शिष्ट। ३. तनिक। थोड़ा। क्रि० वि० थोड़ा। तनिक। जरा।
नेकचलन–वि० संज्ञा सदाचारी। अच्छे चालचलन का।

नेकचलनी–संज्ञा स्त्री० सदाचार। चाल-चलन का।

नेकनाम–वि० [फा०] जिसका अच्छा नाम हो। यशस्वी।

नेकनीयत–वि० [संज्ञा नेकनीयती] १. ईमानदार। २. उत्तम विचार का। भला विचार।

नेकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. उपकार। हित। २. भलाई। उत्तम व्यवहार। ३. भलमनसाहत। सज्जनता।

यौ०–नेकी-बदी=भलाई-बुराई। पाप-पुण्य।

नेकु*†–वि०, क्रि० वि० दे० "नेक"।

नेग–संज्ञा पुं० १. विवाह-आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, तथा काम करनेवालों को कुछ देने की परिपाटी। २. इस प्रकार से दिया जानेवाला धन आदि।

नेगचार–संज्ञा पुं० दे० "नेग-जोग"।

नेग-जोग–संज्ञा पुं० विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा नाई-पुरोहित आदि को कुछ देने का दस्तूर।

नेगटी†*–संज्ञा पुं० नेग या रीति का पालन करनेवाला।

नेगी–संज्ञा पुं० नेग पाने का अधिकारी।

नेगी-जोगी–संज्ञा पुं० नेग पानेवाले। नेगी। जैसे, नाई, बारी।

नेछावर‡–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

नेजक–संज्ञा पुं० १. धोबी। रजक। २. परिष्कार या शुद्ध करनेवाला।

नेजन–संज्ञा पुं० शोधन। परिष्करण।

नेजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. बरछा। भाला। २. निशान। साँग।

नेजाबरदार–संज्ञा पुं० [फा०] भाला या राजाओं का निशान लेकर चलनेवाला।

नेजाल‡*–संज्ञा पुं० भाला। बरछा।

नेटा–संज्ञा पुं० रेंट। नाक से निकलनेवाला कफ।

नेठना*–क्रि० अ० दे० "नाठना"।

नेड़े†–क्रि० वि० पास। निकट।

नेत–संज्ञा पुं० १. निर्धारण। ठहराव। २. निश्चय। इरादा। संकल्प। ३. व्यवस्था। प्रबंध। आयोजन। ४. एक तरह की चादर। ५. एक आभूषण।

संज्ञा स्त्री० १. दे० "नीयत"। २. मथानी की रस्सी।

नेतक–संज्ञा पुं० १. नरकट। नरकुल। (देश०) २. चुँदरी। चूनर।

नेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० नेत्री] १. अगुआ। नायक। सरदार। २. स्वामी। मालिक। ३. काम को चलानेवाला। निर्वाहक। ४. मथानी की रस्सी। श्री विष्णु।

नेतागिरी–संज्ञा स्त्री० नेता का कार्य। नेतृत्व। राजनीतिक दल या गुटों के नेतृत्व का कार्य।

नेति–क्रि० वि० १. न इति। अन्त-रहित। अनन्त। असीम। बेहद। २. ऐसा नहीं। ३. नहीं।

नेती–संज्ञा स्त्री० १. मथानी की रस्सी। मथानी घुमानेवाली रस्सी। २. हठयोग की एक क्रिया।

नेती-धोती–संज्ञा स्त्री० हठयोग की एक क्रिया, जिसके अनुसार कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँतें साफ की जाती हैं। धोति।

नेतृत्व–संज्ञा पुं० नेता होने का कार्य, भाव या पद। प्रतिनिधित्व करने का कार्य। नायकत्व।

नेत्र–संज्ञा पुं० १. आँख। २. मथानी की रस्सी। ३. एक प्रकार का वस्त्र। ४. वृक्षमूल। पेड़ की जड़। ५. दो की संख्या का सूचक शब्द। ६. रथ

नेत्र-कनीनिका–संज्ञा स्त्री० आँख की पुतली।

नेत्रच्छद–संज्ञा पुं० पलक।

नेत्रज–संज्ञा पुं० आँसू।

नेत्रजल–संज्ञा पुं० आँसू।

नेत्रपटल–संज्ञा पुं० पलक।

नेत्रबाला–संज्ञा पुं० दे० "सुगंधबाला"।

नेत्रमंडल–संज्ञा पुं० आँख का घेरा। आँख का डेला।

नेत्रस्राव–संज्ञा पुं० आँखों से पानी बहना।

नेत्राभिष्यंद–संज्ञा पुं० आँख आने का रोग।

नेत्रांबु–संज्ञा पुं० आँखों का पानी। आँसू।

नेनुआ–संज्ञा पुं० एक भाजी या तरकारी। घियातरोई।

नेनुवा–संज्ञा पुं० दे० "नेनुआ"

नेपचून–संज्ञा पुं० सूर्य्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह।

नेपथ्य–संज्ञा पुं० १. वेश-भूषा। सजावट। २. नाट्यशाला का भीतरी भाग, जहाँ पात्र अपना वेश सजते हैं। शृंगारघर।

नेपाल–संज्ञा पुं० भारत के उत्तर में एक प्रसिद्ध पहाड़ी देश।

नेपाली–वि० १. नेपाल में रहनेवाला। २. नेपाल-संबंधी। ३. नेपाली भाषा।

नेपुर–संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।

नेफा–संज्ञा पुं० [फा०] लहँगे या पायजामे में नारा या इजारबंद डालने का स्थान।

नेब*–संज्ञा पुं० [फा०] दे० "नायब"। सहायक। मंत्री। मददगार।

नेम–संज्ञा पुं० नियम। कायदा। रीति। दस्तूर। बंधेज। धर्म की दृष्टि से कुछ क्रियाओं का पालन।

यौ०–नेम-धरम=पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि।

नेमि–संज्ञा स्त्री० १. चक्र परिधि। २. कुएँ की जगत। चक्के का घेरा। कुएँ की जमवट। ३. प्रांतभाग।

संज्ञा पुं० १. नेमिनाथ तीर्थंकर। २. वज्र।

नेमी–वि० दे० "नियम"। व्रत का पालन करनेवाला। पूजापाठ, व्रत आदि करनेवाला।

नेराना–क्रि० स० निराना।

क्रि० अ० निकट पहुँचना।

नेरुवा–संज्ञा पुं० पयाल। डाँडी।

नेरे†–क्रि० वि० निकट। पास। नियरे।

नेव*–संज्ञा पुं० दे० "नेब"।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीव"

नेवग*–संज्ञा पुं० दे० "नेग"।

नेवज–संज्ञा पुं० नैवेद्य। देवता को चढ़ाई जानेवाली मिठाई या पकवान भोग।

नेवतना†–क्रि० स० निमंत्रित करना। नेवता भेजना। भोजन करने को बुलाना।

नेवता–संज्ञा पुं० दे० "न्योता"।

नेवर–संज्ञा पुं० १. दे० "नूपुर"। पायजेब। २. नेवला।

संज्ञा स्त्री० घोड़ों के पैरों में रगड़ से उत्पन्न घाव।

†वि० बुरा।

नेवरना–क्रि० अ० निवारण या दूर होना। समाप्त होना।

नेवला–संज्ञा पुं० नकुल। न्योला। एक छोटा जंतु, जो साँप का शत्रु है और उसे खा जाता है।

नेवाज–वि० दे० "निवाज"।

नेवाजिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] कृपा। दया।

निवाजो–क्रि० स० शरण में ली। कृपा की।

नेवाजू–संज्ञा पुं० कृपालु। दयालु। मेहरबान।

नेवारना*–क्रि० स० दे० "निवारना"। दूर या अलग करना।

नेवारी–संज्ञा स्त्री० वनमल्लिका। जूही की जाति का एक पौधा।

नेसुक*†–वि० तनिक। जरा।

क्रि० वि० थोड़ा-सा। तनिक-सा। जरा-सा।

नेस्त–वि० [फा०] जो न हो। नास्ति।

यौ०–नेस्त-नाबूद=नष्ट-भ्रष्ट। बर्बाद।

नेस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. न होना। अनस्तित्व। नाश। २. आलस्य।

नेह–संज्ञा पुं० १. प्रेम। स्नेह। प्रीति। २. चिकनाई। तेल या घी।

नेही*–वि० स्नेह करनेवाला। प्रेमी। स्नेही। मित्र। सुहृद।

नै–संज्ञा स्त्री० १. दे० "नय"। नदी। २. बाँस की नली। बाँसुरी। ३. हुक्के की निगाली।

नैऋत*–वि०, संज्ञा पुं० दे० "नैऋत्य"। दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा। इस दिशा के अधिपति नैऋति हैं। इस कारण इसे नैऋत कहते हैं।

नैक, नैकु–वि० दे० "नेक", "नेकु"। रंच। तनिक।

नैकट्य–संज्ञा पुं० निकटता। समीपता। सामीप्य।

नैगम–वि० निगम-संबंधी। जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो। उपनिषद्।

संज्ञा पुं० १. उपनिषद् भाग। २. नीति। ३. वणिक्। ४. नागर। ५. नायक ६. पथ। मार्ग। ७. कारपोरेशन का सदस्य।

नैचा–संज्ञा पुं० [फा०] हुक्के की नली।

नैचाबंद–संज्ञा पुं० [फा०] हुक्के का नैचा बनानेवाला।

नैज–वि० आत्मीय। निजी।

नैजाना–क्रि० अ० झुक या लच जाना।

नैतिक–वि० नीति-संबंधी। आचार-व्यवहार-सम्बन्धी।

नैदाघ–वि० ग्रीष्म ऋतु से सम्बन्ध रखनेवाला।

नैन या **नैना**–संज्ञा पुं० १. दे० "नयन"। नेत्र। आँख। २. पशु बाँधने की रस्सी।

नैनसुख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का सफेद चिकना सूती कपड़ा।

नैनू†–संज्ञा पुं० नवनीत। मक्खन।

नैपाल–वि०, संज्ञा पुं० दे० "नेपाल"। नेपाल-संबंधी। नेपाल में होनेवाला।

नैपाली–वि० नैपाल देश का निवासी। नैपाल में रहने या होनेवाला।

नैपुण्य–संज्ञा पुं० निपुणता। कुशलता। कमाल। होशियारी। चतुराई।

नैमित्तिक–वि० किसी कारण या प्रयोजन से होनेवाला कार्य। निमित्त-सम्बन्धी। त्योहार आदि का उत्सव।

ष–संज्ञा पुं० एक तीर्थ।

षारण्य–संज्ञा पुं० एक प्राचीन वन, जो नैमिष तीर्थ के निकट है और आजकल हिंदुओं का तीर्थस्थान माना जाता है। नीमखार।

*†–संज्ञा स्त्री० नाव। नौका।

–वि० न्यायशास्त्र का ज्ञाता। न्याय-

।

र्य–संज्ञा पुं० दे० "निरंतरता"।

*–संज्ञा पुं० १. शहर। नगर। २. देश। जनपद।

श–संज्ञा पुं० निराशा। नाउम्मेदी।

पुं० निर्मलता। शुद्धता। स्व-

।

र० **नैर्ऋति-संबंधी**।

संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।

नैर्ऋति–संज्ञा स्त्री० दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा।

नैवेद्य–संज्ञा पुं० देवता को चढ़ाई जानेवाली सामग्री। देवता का भोग। अर्पण। प्रसाद।

नैषध–वि० निषध-देश-संबंधी। निषध-देशका। संज्ञा पुं० १. निषध-देश के राजा नल। २. श्रीहर्ष-रचित संस्कृत का एक महाकाव्य।

नैष्ठिक–वि० [स्त्री० नैष्ठिकी] १. निष्ठावान्। निष्ठायुक्त। श्रद्धा-भक्ति-युक्त। २. मरणकाल के कर्त्तव्य।

संज्ञा पुं० १. धार्मिक। २. ब्रह्मचर्य पालन करनेवाला। ब्रह्मचारी।

नैश–वि० निशा-सम्बन्धी। रात का।

नैसर्गिक–वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक। कुदरती।

नैसा*–वि० बुरा। खराब।

नैसिक, नैसुक–वि० थोड़ा। तनिक।

नैहर–संज्ञा पुं० स्त्री के पिता का घर। पीहर। मायका।

नोआ†–संज्ञा पुं० रस्सी का टुकड़ा, जिससे दूध दुहते समय गाय के पीछे के पैर बाँध दिये जाते हैं।

नोइ या **नोई**–संज्ञा स्त्री० दे० "नोआ"।

नोक–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० नुकीला] उस ओर का सिरा, जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। सूक्ष्म अग्र भाग। निकला हुआ कोना।

वि० नोकदार। नोकीला।

नोक-झोंक–संज्ञा स्त्री० १. सजावट। बनाव-सिंगार। ठाठ-बाट। २. तेज। ३. आतंक। तपाक। दर्प। ४. चुभनेवाली बात। व्यंग्य। ताना। आवाजा। छेड़-

नोकना–क्रि० स० ललचना।

नोकदार–वि० [फा०] १. जिसमें नोक हो। पैना। चुभनेवाला। चित्त में चुभनेवाला। २. शानदार।

नोका-झोंकी—संज्ञा स्त्री० दे० "नोक-झोंक"।
नोखा†—वि० दे० "अनोखा"।
नोच—संज्ञा स्त्री० नोचना। नोचने की क्रिया या भाव। नोचना। बकोट। खसोट। छीनना। काटना। लूट।
नोच-खसोट—संज्ञा स्त्री० छीनाझपटी। लूट। जबरदस्ती खींच-खाँच करके लेना।
नोचना—क्रि०स०झटके से खींचना। उखाड़ना। दुःखी और हैरान करके माँगना या लेना। नख आदि से विदीर्ण करना।
नोचू—वि० नोचने-खसोटने या छीनने-झपटने वाला।
नोट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. टाँकने या लिखने का काम। २. लिखा हुआ परचा। पत्र। चिट्ठी। ३. आशय या अर्थ प्रकट करने वाला लेख। टिप्पणी। ४. सरकार की ओर से जारी किया हुआ कागज का सिक्का, जिस पर रुपयों की संख्या के साथ यह भी लिखा रहता है कि सरकार से उतना रुपया मिल जायगा। सरकारी हुंडी।
नोटबुक—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] याद रखने की बातों को लिखने की बही या कापी।
नोटिस—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सूचना-पत्र। वह पत्र, जिस पर सूचना लिखी हो। किसी को आवश्यक सूचना दिया जाने वाला कागज। विज्ञापन। इश्तहार।
नोदन—संज्ञा पुं० १. प्रेरणा। चलाने या हाँकने का काम। २. बैलों को हाँकने की छड़ी या कोड़ा। औगी। पैना।
नोन†—संज्ञा पुं० दे० "नमक"।
नोनचा—संज्ञा पुं० नमक मिली हुई आम की फाँकें। नमकीन अचार।
नोनछा—संज्ञा स्त्री० लोनी मिट्टी।
नोना—संज्ञा पुं० [स्त्री० नोनी] १. नमक का वह अंश, जो पुरानी दीवारों तथा सीड़ की जमीन में लगा मिलता है। २. लोनी मिट्टी।† ३. सीताफल। शरीफा।
†वि० १. नमक मिला। खारा। २. लावण्यमय। सुंदर। सलोना।
क्रि० स० गाय-भैंस आदि के पैर बाँधना।
नोनिया—संज्ञा पुं०नमक बनानेवाली एक जाति। †संज्ञा स्त्री० अमलोनी। लोनिया।
नोनी†—संज्ञा स्त्री० लोनी मिट्टी। अमलोनी का पौधा। लोनिया।
नोनो†*—वि० दे० "नोना"।
नोर, नोल*—वि० दे० "नवल"।
नोवना†—क्रि० स० दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।
नोहर†—वि० बहुत सुन्दर। दुर्लभ। जल्दी न मिलनेवाला। अद्भुत। अनोखा।
नौ—वि०, संज्ञा पुं० १. नौका। नाव। २. एक कम दस की संख्या।
मुहा०—नौ दो ग्यारह होना=उतावली से भाग जाना। चल देना। चम्पत हो जाना।
नौकर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० नौकरानी] १. दास। सेवक। चाकर। टहलुआ। खिदमतगार। २. कोई काम करने के लिए वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य। वैतनिक कर्मचारी।
नौकरशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य की ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े-बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।
नौकराना—संज्ञा पुं० नौकरों को मिलनेवाली दस्तूरी।
नौकरानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] घर का काम-धंधा करनेवाली स्त्री। मजदूनी। दासी।
नौकरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] नौकर का काम। सेवा। टहल। खिदमत। ऐसा काम जिसके लिए वेतन मिलता हो।
नौकरीपेशा—संज्ञा पुं० [फा०] जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो।
नौका—संज्ञा स्त्री० किश्ती। नाव।
नौगरा—संज्ञा स्त्री० आभूषण-विशेष। पहुँची। कंगन।
नौग्रही—संज्ञा स्त्री० हाथ में पहनने का एक गहना।
नौछावर†—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।
नौज—अव्य० ईश्वर न करे। ऐसा न हो। (अनिच्छा-सूचक) न हो। न सही (बे-परवाही)।

नौजवान–वि० [फा०] नवयुवक। तरुण।
नौजा–संज्ञा पुं० १. बादाम। २. चिलगोजा।
नौजी–संज्ञा स्त्री० दे० "न्योजी"।
*अव्य० भले ही न हो।
नौटंकी–संज्ञा स्त्री० ब्रज में होनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध नाटक, जिसमें नगाड़े पर चौबोले गाकर अभिनय किया जाता है।
नौतन*–वि० दे० "नूतन"।
नौतम*–वि० अत्यंत नवीन। बिलकुल नया। ताजा।
संज्ञा पुं० विनय। नम्रता।
नौता–वि० नवीन। ताजा।
नौधा*–वि० दे० "नवधा"।
नौनगा–संज्ञा पुं० बाहु पर पहनने का नौ नगों का एक गहना।
नौना–क्रि० अ० दे० "नवना"। लचना। झुकना। नम्र होना।
नौबढ़–वि० जिसकी दशा हाल में ही सुधरी हो। हाल में बढ़ा हुआ।
नौबत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बारी। पारी। २. गति। हालत। दशा। उपस्थित दशा। ३. संयोग। ४. मंगलसूचक वाद्य, विशेषतः शहनाई और नगाड़ा।
मुहा०—नौबत झड़ना=नौबत बजना। नौबत बजना=आनंद-उत्सव होना। प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।
नौबतखाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. वाद्यगृह। २. द्वार के ऊपर बना हुआ वह स्थान, जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक्कारखाना।
नौबती–संज्ञा पुं० १. नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २. द्वार पर पहरा देनेवाला। पहरेदार। ३. बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। ४. बड़ा खेमा या तंबू।
नौमासा–संज्ञा पुं० गर्भ के नवें मास का उत्सव। संस्कार-विशेष।
नौमि*–क्रि० स० एक संस्कृत प्रयोग, जिसका अर्थ है "मैं नमस्कार करता हूँ"।
नौमी–संज्ञा स्त्री० पक्ष की नवीं तिथि। नवमी।
नौरंग‡*–संज्ञा पुं० १. औरंग (औरंगजेब) का रूपांतर। २. पक्षी-विशेष।
नौरंगी†–संज्ञा स्त्री० दे० "नारंगी"।
नौरतन–संज्ञा पुं० दे० "नवरत्न"। नौ नगों का गहना।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चटनी। नौरतनी।
नौरोज़–संज्ञा पुं० [फा०] पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। इस दिन बहुत आनंद-उत्सव मनाया जाता था। त्योहार का दिन। खुशी का दिन। अकबर ने इस नाम का एक मेला चलाया था।
नौल*–वि० दे० "नवल"।
नौलखा–वि० जिसका मूल्य नौ लाख हो। जड़ाऊ और बहुमूल्य हार। अनमोल।
नौशा–संज्ञा पुं० [फा०] वर। दूल्हा।
नौसत–संज्ञा पुं० सोलहों शृंगार। सिंगार।
नौसर–संज्ञा पुं० १. धूर्तता। चालबाजी। जालसाजी। २. नौ लड़ों का हार।
नौसरिया–वि० चालबाज। धूर्त। जालसाज।
नौसादर–संज्ञा पुं० [फा०] एक तीक्ष्ण खार जो सींग, हड्डी, खुर, बाल आदि का भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है।
नौसिखिया, नौसिखुआ–वि० नवशिक्षित। नया सीखा हुआ। जिसने कोई काम हाल में सीखा हो। जो सीखे हुए काम में दक्ष या कुशल न हुआ हो।
नौसेना–संज्ञा स्त्री० जल में लड़नेवाली सेना। जलसेना।
नौहड़–संज्ञा पुं० मिट्टी की नई हाँड़ी।
न्यग्रोध–संज्ञा पुं० १. वट-वृक्ष। बरगद। २. शमी वृक्ष। ३. बाहु। ४. महादेव। ५. विष्णु।
न्यस्त–वि० १. स्थापित। रखा हुआ। धरा हुआ। २. संचित। रक्षित। ३. बैठाया या जमाया हुआ। चुनकर सजाया हुआ। ४. समर्पित। ५. फेंका हुआ। डाला हुआ। त्यक्त। छोड़ा हुआ। ६. अमानत रखा हुआ।
न्यस्त-शस्त्र–संज्ञा पुं० जिसने शस्त्र छोड़ दिया हो। परास्त। हारा हुआ।
न्याउ†–संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।
न्यात–संज्ञा पुं० मौका। डौल। घात।
न्याना*†–वि० अज्ञान। अनजान। नासमझ।
न्याति*–संज्ञा स्त्री० जाति।

न्याय–संज्ञा पुं० १. उचित। यथार्थ। नियम के अनुकूल। इंसाफ। नीति-युक्त। २. किसी मामले-मुकदमे में दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। ३. वह शास्त्र, जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है। यह छः दर्शनों में है और इसके प्रवर्तक गौतम ऋषि कहे जाते हैं। तर्कशास्त्र।

न्यायक–संज्ञा पुं० दे० "न्यायकर्त्ता"।

न्यायकर्त्ता–संज्ञा पुं० दो पक्षों के विवाद का निर्णय करनेवाला अधिकारी।

न्यायतः–क्रि० वि० न्याय से। ईमान से। ठीक-ठीक।

न्यायपरता–संज्ञा स्त्री० न्यायशीलता। न्याय का भाव।

न्यायवान्–संज्ञा पुं० [स्त्री० न्यायवती] न्याय पर चलनेवाला। न्यायी।

न्यायाधीश–संज्ञा पुं० न्यायकर्त्ता। मुकदमे का फैसला करनेवाला अधिकारी। इन्साफ करनेवाला।

न्यायालय–संज्ञा पुं० अदालत। कचहरी। वह स्थान, जहाँ मुकदमे का फैसला होता हो।

न्यायी–संज्ञा पुं० न्याय पर चलनेवाला। उचित पक्ष ग्रहण करनेवाला। न्यायकर्त्ता।

न्याय्य–वि० उचित। न्यायसंगत।

न्यारा–वि० [स्त्री० न्यारी] १. जो पास न हो। दूर। अलग। पृथक्। अन्य। भिन्न। २. निराला। विलक्षण। अनोखा।

न्यारिया–संज्ञा पुं० सुनारों के नियार (राख इत्यादि) को धोकर सोना-चाँदी एकत्र करनेवाला।

न्यारे–क्रि० वि० दूर। पृथक्। अलग।

न्याव†–संज्ञा पुं० १. नियम-नीति। आचरण-पद्धति। २. उचित पक्ष। विवेक। न्याय। इंसाफ।

न्यास–संज्ञा पुं० [वि० न्यस्त] १. धरोहर। थाती। स्थापन। रखना। अर्पण। २. त्याग। संन्यास। ३. देवता के भिन्न-भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र पढ़कर उन पर विशेष वर्णों का स्थापन। तांत्रिकों की क्रिया-विशेष।

न्यून–वि० १. अल्प। कम। थोड़ा। तनिक। २. नीचा। घटकर।

न्यूनता–संज्ञा स्त्री० कमी। हीनता। अल्पता।

न्योछावर–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

न्योजी–संज्ञा स्त्री० १. लीची नामक फल। २. नेजा। चिलगोजा।

न्योतना–क्रि० स० किसी उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए किसी को बुलाना। न्योता देना। निमंत्रण देना।

न्योतहारी–संज्ञा पुं० निमंत्रित। न्योते में आया हुआ आदमी।

न्योता–संज्ञा पुं० १. बुलावा। निमंत्रण। २. दावत। ३. इष्ट-मित्र या संबंधी इत्यादि के यहाँ किसी कार्य्य के अवसर पर दिया जानेवाला धन या वस्तु।

न्योला–संज्ञा पुं० दे० "नेवला"।

न्योली–संज्ञा स्त्री० हठयोग की एक क्रिया, जिसमें पेट को पानी से शुद्ध करते हैं।

न्हाना *†–क्रि० अ० दे० "नहाना"।

प

प–हिंदी वर्णमाला का इक्कीसवाँ और पवर्ग का पहला अक्षर। इसका उच्चारण ओठ से होता है। यह स्पर्श वर्ण कहलाता है, क्योंकि इसके उच्चारण में दोनों ओठ मिलते हैं।

पंक–संज्ञा पुं० १. कीचड़। कीच। २. लेप।

पंकज–वि० कीचड़ से उत्पन्न होनेवाला। संज्ञा पुं० कमल। पद्म।

यौ०–पंकज-श्री=कमल-कान्ति।

पंकजन्मा–संज्ञा पुं० कमल। वि० कीचड़ से पैदा होनेवाला।

पंकजराग–संज्ञा पुं० पद्मराग मणि।

पंकजात–संज्ञा पुं० कमल । पंकज ।
पंकजासन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा । कमलासन ।
पंकजित्–संज्ञा पुं० गरुड़ के एक पुत्र का नाम (महाभारत) ।
पंकजिनी–संज्ञा स्त्री० कमलिनी ।
पंकप्रभा–संज्ञा पुं० जैनमत के अनुसार नरक के सात भागों में से एक, जहाँ कीचड़ प्रकाश का स्थान ग्रहण करता है ।
पंकरुह–संज्ञा पुं० कमल । पंकज । पद्म ।
पंकार–संज्ञा पुं० १. सेतु । २. बाँध । ३. सोपान । सीढ़ी ।
पंकिल–वि० पंकयुक्त । जिसमें कीचड़ हो । कीचड़ से सना हुआ ।
संज्ञा स्त्री० नौका । नाव ।
पंक्ति–संज्ञा स्त्री० १. श्रेणी । कतार । पाँति । २. चालीस अक्षरों का एक वैदिक छंद । ३. एक वर्णवृत्त । ४. दस की संख्या । ५. कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी । ६. भोज में एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी । पाँति ।
पंक्तिचर–संज्ञा पुं० कुरर पक्षी । कुलंग ।
वि० पंक्तियों में चलनेवाला ।
पंक्तिच्युत–वि० किसी दोष के कारण जाति से बाहर किया हुआ ।
पंक्तिदूषक–वि० नीच । कुजाति ।
संज्ञा पुं० एक पंक्ति में बैठकर भोजन न कर सकने योग्य व्यक्ति ।
पंक्तिपावन–संज्ञा पुं० पंक्ति को पवित्र करनेवाला । श्रोत्रिय ब्राह्मण । वह ब्राह्मण, जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है ।
पंक्तिबद्ध–वि० कतार में बँधा या रखा हुआ । श्रेणीबद्ध । क्रमबद्ध ।
पंक्तिबाह्य–वि० जातिच्युत ।
पंख–संज्ञा पुं० डैना । पर ।
मुहा०–पंख जमना=१. न रहने का लक्षण दिखाई पड़ना । २. बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई देना । धूर्तता का आरंभ होना । ३. प्राण खोने के लक्षण दिखाई पड़ना । मृत्यु के लक्षण । शामत आना । पंख लगना=पक्षी के समान वेगवान् होना ।

पँखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पंखुड़ी" । फूलों की पत्ती । पुष्पदल ।
पंखा–संज्ञा पुं० (स्त्री० पंखी) वह जिसे हिलाकर लोग हवा का झोंका ओर ले जाते हैं । व्यजन । बिजना । बेना ।
पंखा-कुली–संज्ञा पुं० पंखा खींचनेवाला कुली (मजदूर) ।
पंखापोश–संज्ञा पुं० पंखे का गिलाफ ।
पंखी–संज्ञा पुं० १. पक्षी । चिड़िया । २. पाँखी । फतिंगा । ३. एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।
संज्ञा स्त्री० छोटा पंखा ।
पँखुड़ा†–संज्ञा पुं० पखोरा । कंधे और बाँह का जोड़ ।
पँखुड़ी*†–संज्ञा स्त्री० फूल का दल । पंखड़ी । पुष्प-दल ।
पंग–वि० १. दे० पंगु । लँगड़ा । २. बेकाम । ३. स्तब्ध ।
संज्ञा पुं० आसाम की ओर पाया जानेवाला एक विशेष प्रकार का पेड़ और लकड़ी । एक तरह का नमक ।
पंगत, पंगति–संज्ञा स्त्री० १. पाँती । पंक्ति । २. भोज के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति । ३. भोज । ४. सभा । समाज ।
पंगा–वि० [स्त्री० पंगी] १. लँगड़ा । २. बेकाम । ३. स्तब्ध । ४. पतला । पनिहा ।
पंगु–वि० जो पैर से चल न सकता हो । लँगड़ा ।
संज्ञा पुं० १. शनिग्रह । २. एक प्रकार का वातरोग, जिससे रोगी चल-फिर नहीं सकता ।
पंगुगति–संज्ञा स्त्री० वर्णिक छंदों का एक दोष, जो किसी वर्णिक छंद में लघु के स्थान में गुरु या गुरु के स्थान में लघु आ जाने से होता है ।
पंगुल–वि० पंगु । लँगड़ा ।
संज्ञा पुं० सफेद रंग का घोड़ा ।
पंच–वि० पाँच । पाँचवाँ ।
संज्ञा पुं० १. पाँच की संख्या या अंक । २. समुदाय । समाज । ३. जनता । लोक । जनसाधारण । ४. पाँच या अधिक आदमियों का समाज, जो किसी झगड़े या

मामले को निपटाने के लिए एकत्र हो। न्याय करनेवाली सभा। ५. वह जो फौजदारी के मुकदमे में अदालत को राय देने के लिए नियुक्त हो।

मुहा०—पंच की भीख=जनता की कृपा। सबका आशीर्वाद। पंच की दुहाई=सब लोगों से अन्याय दूर करने या सहायता करने की पुकार। पंच परमेश्वर=दस आदमियों का कहना ईश्वर-वाक्य के तुल्य है। (किसी को) पंच मानना या बदना =झगड़ा निपटाने के लिए किसी को नियत करना।

पंचक—संज्ञा पुं० १. पाँच का समूह। पाँच का संग्रह। २. वह, जिसके पाँच अवयव या भाग हों। ३. धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमें किसी शुभ, कार्य्य का प्रारंभ निषिद्ध है। पचखा। ४. शकुनशास्त्र। ५. पंचायत।

पंचकन्या—संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ये 'पंचकन्या' हैं। ये बहुत ही पवित्र मानी गई हैं।

पंचकल्याण—संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका सिर (माथा) और चारों पैर सफ़ेद हों और शेष शरीर लाल या काला हो।

पंचकवल—संज्ञा पुं० पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति के अनुसार भोजन के पूर्व कुत्ते, पतित, कौए, कोढ़ी, रोगी, आदि के लिए अलग निकाल दिया जाता है। अग्राशन। आत्म-नैवेद्य के पाँच ग्रास।

पंचक्लेश—संज्ञा पुं० योगशास्त्रानुसार पाँच क्लेश।

पंचकोण—वि० पाँच कोनों का क्षेत्र।

पंचकोश—संज्ञा पुं० उपनिषद् और वेदांत के अनुसार शरीर बनानेवाले पाँच कोश (स्तर), जिनके नाम हैं—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय कोश।

पंचकोस—संज्ञा पुं० १. पाँच कोस की लम्बाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि। २. काशी की परिक्रमा।

पंचकोसी—संज्ञा स्त्री० पाँच कोस की परिक्रमा। काशी की परिक्रमा।

पंचक्रोश—संज्ञा पुं० पंचकोस। काशी।

पंचगंगा—संज्ञा स्त्री० काशी में गंगाजीका एक घाट जहाँ, गंगा, यमुना और सरस्वती की संयुक्त धारा के साथ अदृश्य रूप से किरणा और धूतपापा नामक दो नदियाँ मिली हैं। पंचनद।

पंचगत—संज्ञा पुं० बीजगणित के अनुसार वह राशि, जिसमें पाँच वर्ण हों।

पंचगव्य—संज्ञा पुं० गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्यों—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र—का मिश्रण जो बहुत पवित्र माना जाता है।

पंचगौड़—संज्ञा पुं० ब्राह्मणों के पाँच भेद—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल।

पंचजन—संज्ञा पुं० १. पाँच या पाँच प्रकार के जनों का समूह। २. गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस। ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद। ४. मनुष्य, जीव और शरीर से संबंध रखनेवाले प्राण आदि। ५. मनुष्य। जन-समुदाय। ६. पुरुष।

पंचजन्य—संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचंद्र का प्रसिद्ध शंख।

पंचतत्त्व—संज्ञा पुं० १. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का समुदाय। पंचभूत। तंत्रों के अनुसार पाँच तत्त्व। २. वाममार्गियों के पाँच कर्म।

पंचतन्मात्र—संज्ञा पुं० शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध का समूह। इन्हें अतीन्द्रिय माना गया है।

पंचतपा—संज्ञा पुं० पंचाग्नि तापनेवाला। चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठकर तप करनेवाला।

पंचता—संज्ञा स्त्री० पाँच का भाव। विनाश। मृत्यु।

पंचतिक्त—संज्ञा पुं० आयुर्वेद में पाँच कड़वी औषधियों का समूह—गिलोय (गुरुच), कंटकारि (भटकटैया), सोंठ, कुट और चिरायता (चक्रदत्त)।

पंचतोलिया–संज्ञा पुं० एक प्रकार का झीना महीन कपड़ा।
पंचत्व–संज्ञा पुं० १. पाँच का भाव। २. विनाश। मृत्यु। मौत। मरण।
पंचदशी–संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी। अमावस्या।
पंचदेव–संज्ञा पुं० पंच देवता। पाँच प्रधान देवता जिनकी उपासना हिंदुओं में प्रचलित हैं—सूर्य, महादेव, विष्णु, गणेश और देवी।
पंचद्रविड़–संज्ञा पुं० दक्षिणवासी—महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़—ब्राह्मणों का समुदाय।
पंचनद–संज्ञा पुं० १. पंजाब की पाँच प्रधान नदियाँ जो सिन्धु नदी में मिलती हैं—सतलज, व्यास, रावी, चनाव और झेलम। २. पंजाब प्रदेश।
पंचनाथ–संज्ञा पुं० पाँच तीर्थस्थान—बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।
पंचनामा–संज्ञा पुं० वह कागज, जिस पर पंच लोगों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।
पंचपति–संज्ञा पुं० एक ही स्त्री के पाँच पति—पाण्डव। पंचभर्त्ता।
पंचपल्लव–संज्ञा पुं० पाँच वृक्षों के पत्ते। आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल, इन पाँच वृक्षों के पत्ते।
पंचपांडव–संज्ञा पुं० पाण्डु राजा के पाँच पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।
पंचपात्र–संज्ञा पुं० १. पूजा का पात्र-विशेष। २. पाँच पात्रों से किया जानेवाला। ३. पार्वण श्राद्ध।
पंचपीरिया–संज्ञा पुं० मुसलमानों के पाँचों पीरों की पूजा करनेवाला (मुसलमान)।
पंचप्राण–संज्ञा पुं० प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान नामक पाँच वायु।
पंचभर्त्तारी–संज्ञा स्त्री० जिस स्त्री के पाँच पति हों। पाँच पतिवाली स्त्री। द्रौपदी।
पंचभूत–संज्ञा पुं० दे० "पंचतत्त्व"। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी, ये पाँच तत्त्व हैं।
पंचम–वि० [स्त्री० पंचमी] १. पाँचवाँ। २. रुचिर। सुंदर। ३. दक्ष। निपुण। संज्ञा पुं० १. सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर, जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २. छः प्रधान रागों में तीसरा राग।
पंचमकार–संज्ञा पुं० वाम-मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।
पंचमहापातक–संज्ञा पुं० मनुस्मृति के अनुसार पाँच महापाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग।
पंचमहायज्ञ–संज्ञा पुं० स्मृतियों के अनुसार पाँच कृत्य, जिनका नित्य करना गृहस्थों के लिए आवश्यक है। ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, नृयज्ञ और भूतयज्ञ—अर्थात् पाठ, तर्पण, हवन, अतिथिसेवा और पूजा।
पंचमहाव्रत–संज्ञा पुं० योगशास्त्र के अनुसार पाँच आचरण–अहिंसा, सूनृता, अस्तेय (चोरी का त्याग), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हें पतंजलि ने 'यम' माना है।
पंचमी–संज्ञा स्त्री० १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २. द्रौपदी। ३. व्याकरण में अपादान कारक।
पंचमुख–संज्ञा पुं० १. श्रीमहादेव। शिव। २. सिंह। ३. एक प्रकार का रुद्राक्ष।
पंचमुखी–वि० १. पाँच मुखवाला। शिवजी। पंचानन। २. सिंह।
पंचमुद्रा–संज्ञा स्त्री० देव-पूजा में नित्य की जानेवाली पाँच मुद्राएँ—यथा आवाहनी, स्थापनी, सन्निधानी, सम्बोधिनी और सम्मुखीकरणी।
पंचमूल–संज्ञा पुं० पाँच औषधियों की जड़ से बनी एक पाचन-औषध।
पँचमेल–वि० जिसमें पाँच या कई प्रकार की चीजें मिली हों।
पंचयाम–संज्ञा पुं० दिन।
पँचरंग, पँचरंगा–वि० पाँच या अनेक रंगों का।
पंचरत्न–संज्ञा पुं० पाँच प्रकार के रत्न—सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती।
पंचराशिक–संज्ञा पुं० गणित में एक प्रकार का हिसाब, जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पँचलड़ा—वि० पाँच लड़ों का। पाँच लड़ोंवाला हार।

पंचवटी—संज्ञा स्त्री० १. बम्बई राज्य में नासिक के पास गोदावरी-तट पर स्थित एक स्थान, जहाँ रामचंद्रजी वनवास में रहे थे। सीताहरण यहीं हुआ था। २. पाँच प्रकार के वृक्षों का समूह।

पँचवाँसा—संज्ञा पुं० गर्भ रहने से पाँचवें महीने में किया जानेवाला एक संस्कार।

पंचबाण—संज्ञा पुं० १. कामदेव के पाँच बाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद। कामदेव के पाँच पुष्पबाणों के नाम ये हैं—कमल, अशोक, आम्र, नव-मल्लिका और नीलोत्पल। २. कामदेव।

पंचशब्द—संज्ञा पुं० १. पाँच मंगल-सूचक बाजे—तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही। २. व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग।

पंचशर—संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. कामदेव के पाँच बाण।

पंचशिख—संज्ञा पुं० १. सिंह। केसरी। २. सिंघा बाजा। ३. कपिल मुनि के पुत्र।

पंचसूना—संज्ञा स्त्री० मनु के अनुसार पाँच प्रकार की हिंसाएँ, जो चूल्हा जलाने, आटा आदि पीसने, झाड़ू देने, कूटने और पानी का घड़ा रखने आदि गृहकार्यों से होती हैं।

पंचहजारी—संज्ञा पुं० दे० "पंजहजारी"

पंचांग†—संज्ञा पुं० १. ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र, जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग ब्योरेवार दिए गए हों। पत्रा। जंत्री। २. प्रणाम का एक भेद, जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर प्रणामसूचक शब्द कहा जाता है। ३. पाँच अंग या पाँच अंगों से युक्त वस्तु। ४. वृक्ष के पाँच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक)।

पंचाक्षर—वि० जिसमें पाँच अक्षर हों। संज्ञा पुं० शिव का एक मंत्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ॐ नमः शिवाय।

पंचाग्नि—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का तप, जिसमें तप करनेवाला अपने चारों ओर अग्नि जलाकर दोपहरी में धूप में बैठा रहता है। २. अन्वाहार्य्य, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ। ३. छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सूर्य्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्। वि० १. पंचाग्नि की उपासना करनेवाला। २. पंचाग्नि तापनेवाला। ३. पंचाग्नि-विद्या जाननेवाला।

पंचांगुल—वि० पाँच अंगुलि परिमाण-युक्त।

पंचांगुली—संज्ञा स्त्री० पांच अंगुलियाँ—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, और कनिष्ठा।

पंचाध्यायी—संज्ञा स्त्री० श्रीमद्भागवत के रास-मंडल के पाँच अध्याय। रासपंचाध्यायी।

पंचानन—वि० पाँच मुखवाला। संज्ञा पुं० १. शिव। २. सिंह।

पंचामृत—संज्ञा पुं० दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जानेवाला द्रव्य।

पंचायत—संज्ञा स्त्री० १. पंचों की सभा। पंचों की बैठक। किसी विवाद या झगड़े पर विचार करने के लिए चुने गए व्यक्तियों की समिति। गाँवों की समस्याएँ हल करने तथा व्यवस्था आदि की देखभाल करने के लिए वहीं की जनता-द्वारा निर्वाचित समिति या सभा। २. एक साथ बहुत से लोगों की बातचीत। ३. जातीय सभा।

पंचायतन—संज्ञा पुं० पाँच देवताओं की मूर्त्तियों का समूह। जैसे, राम-पंचायतन।

पंचायती—वि० १. पंचायत का किया हुआ। पंचायत का। पंचायत-संबंधी। २. बहुत से लोगों का मिला-जुला। सब लोगों का। साझे का।

पंचायती अदालत—संज्ञा पुं० पंचों का न्याया-लय। गाँवों में वहाँ की जनता से चुनी गई अदालत, जो छोटे-मोटे मामलों का फैसला करती है। किसी विवाद पर निर्णय करने के लिए चुने गए अधिकारियों का न्यायालय।

पंचाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० पंचाली] १. पांचाल नामक प्राचीन देश। यह देश हिमालय और चंबल नदी के बीच गंगा के दोनों ओर था। २. पंचाल-देशवासी। ३. पंचाल देश का राजा। ४. शिव। ५. एक प्रकार का छंद।

पंचालिका–संज्ञा स्त्री० १. नटी। नर्त्तकी। २. पांचाल देश की राजकन्या। द्रौपदी। ३. पुतली। गुड़िया। कठपुतली।

पंचाली–संज्ञा स्त्री० १. पुतली। गुड़िया। २. पंचाल देश के राजा की कन्या द्रौपदी। ३. एक गीत। ४. पीपर (औष०)।

पंचावस्था–संज्ञा स्त्री० मनुष्य की पाँच अवस्थाएँ—बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा और वृद्ध।

पंचाशत्–वि० पचास।

पंचेन्द्रिय–संज्ञा स्त्री० पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ।

पंछा–संज्ञा पुं० १. स्राव, जो प्राणियों के शरीर से या पेड़-पौधों के डंठल, तने या टहनियों से निकलता है। २. फफोले के भीतर भरा हुआ पानी।

पंछाला–संज्ञा पुं० फफोला या फफोले का पानी।

पंछी–संज्ञा पुं० पक्षी। चिड़िया।

पंजर–संज्ञा पुं० १. शरीर की हड्डियों का समूह या ढाँचा। ठठरी। अस्थिसमुच्चय। कंकाल। २. पाँजर। पसली। ३. शरीर। देह। ४. पिंजड़ा।

पंजहजारी–संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि, जो मुसलमान राजाओं के समय में रदारों और दरबारियों को मिलती थी। पाँच हजार सैनिकों का सरदार।

पंजा–संज्ञा पुं० १. पाँच का समूह। गाही। २. हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह। ३. पंजा लड़ाने की कसरत या बलपरीक्षा। ४. उँगलियों के सहित हथेली का संपुट। चंगुल। ५. जूते का अगला भाग, जिसमें उँगलियाँ रहती हैं। ६. ताश का पत्ता, जिसमें पाँच चिह्न या बूटियाँ हों।

मुहा०—पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना=हाथ धोकर पीछे पड़ना। अपनी सारी शक्ति लगाने के लिए तत्पर होना। पंजे में=१. पकड़ में। मुट्ठी में। २. अधिकार में। छक्का-पंजा=चालबाजी। दाँव-पेंच।

पंजाब–संज्ञा पुं० [फा०] (वि० पंजाबी) वह प्रदेश जो सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और झेलम पाँच नदियों से सिंचित है। प्राचीन पंचनद देश। अब यह पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में बँट गया है। पूर्वी पंजाब भारत के अन्तर्गत है और पश्चिमी पंजाब पाकिस्तान में है।

पंजाबी–वि० [फा०] पंजाब का।
संज्ञा पुं० पंजाब-निवासी।

पंजारा–संज्ञा पुं० धुनिया।

पंजिका–संज्ञा स्त्री० पंचांग।

पँजीरी–संज्ञा स्त्री० घी में भुना हुआ धनिया, सिंघाड़े आदि का आटा, जिसमें चीनी, मेवा आदि मिलाकर देवता को प्रसाद चढ़ाते हैं।

पँजेरा–संज्ञा पुं० बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

पंडल–वि० पीला। पांडु वर्ण का।
संज्ञा पुं० पिंड। शरीर।

पँड़वा–संज्ञा पुं० भैंस का बच्चा। पाड़ा।

पंडा–संज्ञा पुं० (स्त्री० पंडाइन) किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी।

पंडाल–संज्ञा पुं० सभा के अधिवेशन के लिए बनाया हुआ मंडप।

पंडित–वि० [स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी] १. विद्वान्। ज्ञानी। शास्त्रज्ञ। २. कुशल। चतुर। प्रवीण। ३. अध्यापक। पढ़ानेवाला।
संज्ञा पुं० १. शास्त्रज्ञ। २. ब्राह्मण।

पंडिता–संज्ञा स्त्री० विदुषी।

पंडिताइन–संज्ञा स्त्री० पंडित की स्त्री।

पंडिताई–संज्ञा स्त्री० विद्वत्ता। पांडित्य। पंडित का कार्य।

पंडिताऊ–वि० पंडितों के ढंग का।

पंडितानी–संज्ञा स्त्री० पंडित की स्त्री। ब्राह्मणी।

पंडु–वि० १. पीलापन लिये हुए मटमैला। पीला। २. श्वेत। सफेद।

पंडुक–संज्ञा पुं० [स्त्री० पंडुकी] एक पक्षी। पिंडुक। पेंडकी। फाख्ता।
पंडुर–संज्ञा पुं० पनिहा साँप। डेड़हा।
पंतीजना–क्रि० स० पींजना। रुई ओटना।
पंतीजी–संज्ञा स्त्री० रुई धुनने की धुनकी।
पंथ-संज्ञा पुं० १. पथ। मार्ग। रास्ता। राह। धर्ममार्ग। मत। सम्प्रदाय। २. आचार-पद्धति। चाल। रीति।
मुहा०–पंथ गहना=मार्ग में पदार्पण करना। राह लेना। आचरण ग्रहण करना। पंथ दिखाना=रास्ता बताना। उपदेश देना। पंथ देखना या निहारना=प्रतीक्षा करना। किसी के आगमन के लिए उत्कण्ठित होना। पंथ में या पंथ पर पाँव देना=चलना। आचरण ग्रहण करना। पंथ पर लगना=चाल ग्रहण करना। रास्ते पर होना। किसी के पंथ लगना=अनुयायी होना। किसी के पीछे पड़ना। बराबर तंग करना। पंथ सेना=आसरा देखना। बाट जोहना।
पंथान*–संज्ञा पुं० मार्ग। रास्ता।
पंथकी*–संज्ञा पुं० पथिक। बटोही। मुसाफिर।
पंथिक*‡–संज्ञा पुं० दे० "पथिक"।
पंथी–संज्ञा पुं० १. पथिक। बटोही। राही। २. किसी संप्रदाय या पंथ का अनुसरण करनेवाला जैसे, नानकपंथी।
पंद–संज्ञा स्त्री० [फा०] सीख। शिक्षा। उपदेश।
पंदरह, पंद्रह–वि० दस और पांच। संज्ञा पुं० दस और पाँच की संख्या। १५।
पंप–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) पानी का नल। हवा भरने का एक औजार।
यौ० पंप-शू=एक प्रकार का जूता।
पंपा–संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी और उसी के समीप एक सरोवर तथा नगर, जहाँ रामचन्द्रजी ने निवास किया था और जिसका रामायण में उल्लेख है।
पंपाल–वि० बड़ा पापी। दुष्ट।
पंपासर–संज्ञा पुं० दे० "पंपा"।
पँवर–संज्ञा पुं० १. दे० "ड्योढ़ी"। द्वार। २. सामान। सामग्री।
पँवरना†–क्रि० अ० १. तैरना। २. पता लगाना। थाह लेना।
पँवरि–संज्ञा स्त्री० प्रवेशद्वार या गृह। ड्योढ़ी।
पँवरिया–संज्ञा पुं० १. दरबान। द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। २. पुत्र-जन्म या विवाह आदि के अवसर पर द्वार पर नाचने-गानेवाला याचक।
पँवरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पँवरि"। २. खड़ाऊँ। पाँवड़ी।
पँवाड़ा–संज्ञा पुं० १. मनगढ़न्त कहानी। लंबी-चौड़ी कथा, जिसे सुनते-सुनते जी ऊब जाय। २. व्यर्थ विस्तार के साथ कही हुई बात। ३. एक विशेष प्रकार का गीत।
पँवार–संज्ञा पुं० दे० "परमार"। क्षत्रियों की एक उपजाति।
पँवारना†–क्रि० स० फेंकना। हटाना। दूर करना।
पंसारी–संज्ञा पुं० मसाला बेचनेवाला। किराना, मेवा आदि बेचनेवाला।
पंसासार–संज्ञा पुं० पाँसों का खेल। चौपड़।
पंसेरी–संज्ञा स्त्री० पाँच सेर की तोल या बाट। पसेरी।
पइता–संज्ञा पुं० एक छंद, जिसे "पाईता" भी कहते हैं।
पइँती–संज्ञा पुं० पेंती, कुश की मुद्रिका।
पइठना*–क्रि० अ० दे० "पैठना"।
पइसना†–क्रि० अ० दे० "पैठना"। घुसना। प्रवेश करना।
पइसार†–संज्ञा पुं० पैठ। प्रवेश। पैठार।
पउँरि, पउरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि"। ड्योढ़ी। द्वार।
पकड़–संज्ञा स्त्री० १. ग्रहण। पकड़ने का ढंग। २. लड़ाई में एक एक बार आकर परस्पर गुथना। भिड़ंत। हाथा-पाई। ३. दोष, भूल आदि ढूँढ़ निकालना।
पकड़-धकड़–संज्ञा स्त्री० दे० "धर-पकड़"।
पकड़ना–क्रि० स० १. धरना। थामना। ग्रहण करना। २. काबू में करना। गिरफ़्तार

करना। ३. कुछ करने से रोक रखना। ठहराना। ४. ढूँढ़ निकालना। पता लगाना। ५. रोकना। टोकना। ६. दौड़ने, चलने या और किसी बात में बढ़े हुए के बराबर हो जाना। ७. आक्रांत करना। घेरना। ग्रसना।

पकड़वाना–क्रि० स० पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

पकड़ाना–क्रि० स० पकड़ना का प्रे०। किसी के हाथ में देना या रखना। थमाना। पकड़ने का काम कराना।

पकना–क्रि० अ० १. गलना। सीझना। २. मवाद से भर जाना। ३. फल आदि खाने के योग्य होना। ४. आँच खाकर गलना या तैयार होना। सिद्ध होना।

मुहा०–बाल पकना=(बुढ़ापे के कारण) बाल सफेद होना। कलेजा पकना=जी जलना। बहुत दुखी होना।

पकरना†*–क्रि० स० दे० "पकड़ना"। थामना।

पकवान–संज्ञा पुं० घी या तेल आदि में बनी खाने की सामग्री।

पकवाना–क्रि० स० पकाने का कार्य दूसरे से करवाना।

पका–वि० दे० "पक्का"। पका हुआ।

पकाई–संज्ञा स्त्री० पकाने का काम या मज़दूरी।

पकाना–क्रि० स० १. फल आदि को खाने के योग्य तैयार करना। २. फोड़े, फुंसी, घाव आदि को इस अवस्था में पहुँचाना कि उसमें पीव या मवाद आ जाय। ३. पक्का करना। ४. आँच या गरमी के द्वारा गलाना या तैयार करना। रींधना। सिझाना। उबालना।

पकावन–संज्ञा पुं० दे० "पकवान"।

पकौड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० पकौड़ी] घी या तेल में पगी हुई बेसन या पीठी की बड़ी।

पक्का–वि० [स्त्री० पक्की] १. अनाज या फल, जो पुष्ट होकर खाने के योग्य हो गया हो। २. पक्का या गला हुआ। ३. पुष्ट। ४. साफ और दुरुस्त। तैयार। ५. जो आँच पर कड़ा या मजबूत हो गया हो। ६. अनुभवी। निपुण। होशियार। ७. आँच पर पका हुआ। ८. मजबूत। टिकाऊ। ९. स्थिर। दृढ़। निश्चित। १०. प्रामाणिक। नपा-तुला।

मुहा०—पक्का भोजन या पक्की रसोई=पूड़ी-कचौड़ी आदि घी में पका हुआ भोजन। पक्का पानी=१. औटाया हुआ पानी। २. स्वास्थ्यकर जल। पक्का कागज=वह कागज, जिस पर लिखी हुई बात कानून से दृढ़ समझी जाती है।

पक्खर*–संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"। पाखरी। वि० पक्का। पुख्ता।

पक्व–वि० १. पका हुआ। पक्का। २. दृढ़। परिपुष्ट।

पक्वता–संज्ञा स्त्री० पक्कापन।

पक्वान्न–संज्ञा पुं० १. घी आदि से बनी खाने की वस्तु। पका हुआ अन्न।

पक्वाशय–संज्ञा पुं० पेट में वह स्थान, जहाँ अन्न जाता है और यकृत् तथा क्लोम-ग्रंथियों से आए हुए रस से मिलता है। मेदा। अन्नकोष।

पक्ष–संज्ञा पुं० १. ओर। पार्श्व। तरफ। २. किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक। पहलू। बगल। ३. किसी दूसरे की बात के विरुद्ध अपनी बात ठीक बताना। ४. अनुकूल मत या प्रवृत्ति। ५. झगड़ा या विवाद करनेवालों में से किसी के अनुकूल स्थिति। ६. निमित्त। लगाव। संबंध। ७. फौज। सेना। बल। ८. सहायक। सखा। साथी। ९. वादियों तथा प्रतिवादियों के अलग-अलग समूह। १०. चिड़ियों का डैना। पंख। ११. शरपक्ष। तीर में लगा हुआ पर। १२. चान्द्र मास के पन्द्रह-पन्द्रह दिनों के दो विभाग। पाख। पखवारा। १३. गृह। घर।

मुहा०—पक्ष गिरना=मत का युक्तियों-द्वारा सिद्ध न हो सकना। [किसी का] पक्ष या पक्षपात करना=तरफदारी करना। (किसी का) पक्ष लेना=१.

(झगड़े में) किसी की ओर होना। २. सहायक होना।

पक्षक–संज्ञा पुं० १. मित्र। सुहृद्। सहायक। २. खिड़की।

पक्षपात–संज्ञा पुं० तरफदारी। बिना उचित-अनुचित के विचार के किसी के अनुकूल प्रवृत्ति या स्थिति का एक ओर झुकाव। अनुचित सहायता-दान।

पक्षपाती–संज्ञा पुं० तरफदार। अन्याय से एक पक्ष की सहायता करनेवाला। अनुचित सहायता देनेवाला।

पक्षाघात–संज्ञा पुं० आधे अंग का लकवा। फालिज। अर्धांग रोग, जिसमें शरीर के दाहिने या बाएँ किसी पार्श्व के सब अंग क्रियाहीन हो जाते हैं।

पक्षान्त–संज्ञा पुं० पूर्णिमा। अमावास्या।

पक्षान्तर–संज्ञा पुं० भिन्न-पक्ष। दूसरा पक्ष।

पक्षिणी–संज्ञा स्त्री० १. चिड़िया। २. पूर्णमासी।

पक्षिराज–संज्ञा पुं० १. पक्षियों का राजा। गरुड़। २. जटायु। ३. एक प्रकार का धान।

पक्षी–संज्ञा पुं० १. चिड़िया। २. तरफदार। पक्षवाला।

पक्षीय–वि० पक्ष का तरफदार। समूह या दल का हिमायती। पक्षवाला।

पक्ष्म–संज्ञा पुं० १. आँख की बरौनी। पलक। २. किंजल्क। ३. केशर। ४. सूत्र आदि का अल्प भाग।

पक्ष्मपात–संज्ञा स्त्री० बरौनियों का गिरना। पलक बन्द होना।

पखंडी–संज्ञा पुं० १. पाखंडी। ढोंगी। वेद-निन्दक। २. छली। कपटी। ३. कठ-पुतलियाँ नचानेवाला।

पख–संज्ञा पुं० १. पक्ष। पखवारा। आधा महीना। पन्द्रह दिन। पाख। २. व्यर्थ बढ़ाई हुई बात। ३. बाधक नियम। अड़ंगा। ४. झगड़ा। बखेड़ा। ५. दोष। त्रुटि। ६. ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त।

पखड़ी–संज्ञा स्त्री० पंखुड़ी। पखुरी। फूलों की पत्ती।

पखराना–क्रि० स० धुलवाना। पखारने का काम कराना या करवाना।

पखरी†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाखर"। २. दे० "पखड़ी"।

पखरौटा–संज्ञा पुं० वरक। सोने या चाँदी का पत्र या वरक, जो पान के बीड़े पर लगाया जाता है।

पखवाड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "पखवारा"। अर्द्ध-मास।

पखवारा–संज्ञा पुं० पक्ष। अर्द्धमास। पन्द्रह दिन। पन्द्रह दिन का काल।

पखाउज–संज्ञा पुं० दे० "पखावज"।

पखान*–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"। पत्थर।

पखाना†–संज्ञा पुं० कहावत। मसल। कथा। दे० "पाखाना"।

पखारना–क्रि० अ० प्रक्षालन। धोना। पानी से धोकर साफ करना।

पखाल–संज्ञा स्त्री० १. मशक, जिसमें पानी भरा जाता है। २. धौंकनी। ३. मुख धोने का बर्तन।

पखाली–संज्ञा पुं० पखाल या मशक से पानी भरनेवाला। भिश्ती।

पखावज–संज्ञा स्त्री० मृदंग से छोटा एक प्रकार का बाजा।

पखावजी–संज्ञा पुं० पखावज बजानेवाला।

पखिया–वि० दे० "झगड़ालू"। बखेड़िया।

पखी, पखीरा*–संज्ञा पुं० दे० "पक्षी"।

पखुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"। पाँखुरी।

पखुवा–संज्ञा पुं० दे० "पार्श्व"। बगल।

पखेरू–संज्ञा पुं० पक्षी। चिड़िया। पंछी।

पखेव–संज्ञा पुं० गाय या भैंस को बच्चा होने पर खिलाया जानेवाला खाना।

पखोड़ा, पखोरा–संज्ञा पुं० कन्धे की हड्डी।

पखौरा–संज्ञा पुं० १. कन्धे पर की हड्डी। २. बगल।

पग–संज्ञा पुं० १. पद। पैर। पाँव। चरण। २. डग। फाल।

पगडंडी–संज्ञा स्त्री० छोटा मार्ग। बिना बनाया मार्ग। जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता, जो लोगों के चलते-चलते बन गया हो।

पगड़ी–संज्ञा स्त्री० साफा । मुरेठा । पाग । चीरा । उष्णीष ।
मुहा०–पगड़ी उतारना=१. प्रतिष्ठा भंग करना। अपमान करना। बेइज्जती करना। २. ठगना। लूटना। (किसी को) पगड़ी बँधना=१. उत्तराधिकार मिलना। वरासत मिलना। २. उच्च पद या स्थान प्राप्त होना । ३. प्रतिष्ठा मिलना । (किसी के साथ) पगड़ी बदलना=भाई-चारे का नाता जोड़ना। मित्रता स्थापित करना।
पगतरी†–संज्ञा स्त्री० १. जूता। २. खड़ाऊँ।
पगदासी–संज्ञा स्त्री० १. जूता। २. खड़ाऊँ। चरणदासी।
पगना–क्रि० अ० १. रस में डूबना। शीरा या चीनी के पाग में पकना। २. किसी के प्रेम में डूबना। ३. सनना। लीन होना। मग्न होना।
पगनियाँ†–संज्ञा स्त्री० जूती।
पगरा*†–संज्ञा पुं० १. पग। डग। कदम। २. बड़ी पगड़ी।
संज्ञा पुं० यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। तड़का। सवेरा।
पगला–वि० दे० "पागल"।
पगहा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० पगही] १. पघा। गाय भैंस आदि बाँधने की रस्सी। पशु बाँधने की रस्सी। २. गिराँव।
पगा†–संज्ञा पुं० १. दुपट्टा। पटका। पाग। पगिया। २. चीनी के रस में डुबाया गया। ३. दे० "पघा"।
पगाना–क्रि० स० १. पागने का काम कराना। ऊपर से चीनी आदि चढ़ाना। २. अनुरक्त करना। मग्न करना। मिलाना।
पगार*–संज्ञा पुं० १. ओट की दीवार। घेरा। चहारदीवारी। २. गीली मिट्टी। गारा। ३. पैरों से कुचलने लायक वस्तु। ४. पाँवों से पार करने योग्य नदी। पायाब।
पगाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. यात्रा आरंभ करने का समय। २. प्रभात। तड़का। भोर।
पगिआना*†–क्रि० स० दे० "पगाना"।
पगिया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी"। पाग।
पगुराना†–क्रि अ० जुगाली करना। पागुर करना। हजम करना।
पघा–संज्ञा पुं० ढोरों को बाँधने की मोटी रस्सी। पगहा। पगही।
पचक–संज्ञा स्त्री० १. दबा हुआ। २. पटकन। शुष्कता। सुखाई। ३. उतार।
पचकना–क्रि० अ० दे० "पिचकना"।
पचकल्यान–संज्ञा पुं० दे० "पंचकल्याण"।
पचगुना–वि० पाँच गुना। पाँच बार अधिक।
पचड़ा–संज्ञा पुं० १. झंझट। प्रपंच। बखेड़ा। पँवाड़ा। २. एक प्रकार का गीत। लावनी।
पचन–संज्ञा पुं० १. पाक। २. पचाने की क्रिया या भाव। पकने की क्रिया या भाव। ३. अग्नि। आग।
पचना–क्रि० अ० १. हजम होना। खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत हो जाना। २. क्षय होना। समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल हाथ में आ जाना। खपना। ४. अधिक परिश्रम से शरीर का क्षीण होना। बहुत हैरान होना।
मुहा०–पच मरना=किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना। हैरान होना।
पचपन–संज्ञा पुं० ५५ की संख्या।
वि० पचास और पाँच।
पचमान–संज्ञा पुं० पकानेवाला। पकाता हुआ।
पचमेल–वि० दे० "पँचमेल"। पाँच वस्तुओं की मिलावट। मिश्रण। घालमेल।
पचरंग–संज्ञा पुं० १. जिसमें पाँच रंग हों। २. चौक पूरने का सामान—मेहँदी का चूरा, अबीर-बुक्का, हल्दी और सुरवारी के बीज।
पचरंगा–वि० [स्त्री० पंचरंगी] १. जिसमें पाँच रंग हों। २. अनेक रंगों से रंजित। संज्ञा पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक।
पचरा–संज्ञा पुं० दे० "पचड़ा"।
पचलड़ी–संज्ञा स्त्री० पाँच लर का हार। जिस हार में पाँच लर हों।
पचहत्तर–वि० सत्तर और पाँच।
संज्ञा पुं० ७५ की संख्या।

पचहरा–वि० १. पाँच तहों या परतोंवाला। २. पाँच बार किया हुआ (अप्रयुक्त)।
पचाना–क्रि० स० १. हजम करना। खपाना। २. पकाना। आँच पर गलाना। ३. समाप्त, नष्ट या क्षय करना।
पचारना†–क्रि० स० ललकारना। डाँटना।
पचास–वि० जो गिनती में ५० हो।
संज्ञा पुं० ५० की संख्या।
पचासवाँ–वि० जो गिनती में ५० के स्थान पर हो।
पचासा–संज्ञा पुं० एक ही तरह की पचास चीजों का समूह।
पचासी–वि० अस्सी और पाँच।
संज्ञा पुं० अस्सी और पाँच की संख्या या अंक। ८५।
पचित–वि० पचा हुआ। जड़ा या बैठाया हुआ।
पचीस–वि० पाँच और बीस।
संज्ञा पुं० ५ और २० की संख्या या अंक। २५।
पचीसी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का खेल, जो चौसर की बिसात पर पाँसे के बदले ७ कौड़ियों से खेला जाता है। २. एक ही तरह की २५ चीजों का समूह। ३. किसी की आयु के पहले २५ वर्ष। ४. एक विशेष गणना, जिसका सैकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् १२५ का माना जाता है।
पचूका–संज्ञा पुं० पिचकारी। दमकला।
पचोतर सौ–संज्ञा पुं० एक सौ पाँच की संख्या। १०५।
पचोतरा–संज्ञा पुं० पाँच रुपए सैकड़ा।
पचौनी–संज्ञा स्त्री० पेट के अंदर की थैली, जिसमें भोजन पचता है। मेदा। आमाशय। पाकाशय।
पचौर, पचौली†–संज्ञा पुं० गाँव का मुखिया। सरदार। पंच।
पचौवर–वि० पाँच तह या परत किया हुआ। पचहरा। पचौहर।
पच्चड़, पच्चर–संज्ञा पुं० १. कील। खूँटी। मेख। बड़ा खूँटा। २. काठ का पैबंद। लकड़ी की बनी हुई चीजों में साल या जोड़ कसने के लिए लकड़ी के टुकड़े। ठेक। पचड़ा।
पच्ची–वि० लगा हुआ। संयुक्त।
संज्ञा स्त्री० १. ऐसा जोड़, जिसमें जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस वस्तु के बिलकुल समतल हो जाय, जिसमें वह जड़ी या जमाई जाय। २. जड़ाव। किसी धातु-निर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।
मुहा०–(किसी में) पच्ची हो जाना=बिलकुल मिल जाना। लीन हो जाना। तदाकार हो जाना।
पच्चीकारी–संज्ञा स्त्री० जड़ने की क्रिया या भाव। जुड़ाई। खुदाई।
पच्छ*†–संज्ञा पुं० दे० "पक्ष"। तरफ। ओर।
पच्छिम–संज्ञा पुं० दे० "पश्चिम"।
पच्छी–संज्ञा पुं० दे० "पक्षी"।
पछड़ना–क्रि० अ० १. पीछे होना। पछाड़ा जाना। हार जाना। २. दे० "पिछड़ना"।
पछताना*–क्रि० अ० किसी बात के लिए दुखी होना। पश्चात्ताप करना। खेद करना। सन्ताप करना।
पछतानि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पछतावा"।
पछतावना–क्रि० अ० दे० "पछताना"। पश्चात्ताप या शोक करना।
पछतावा–संज्ञा पुं० पश्चात्ताप। अनुताप। खेद। शोक।
पछना–क्रि० अ० पाछा जाना।
संज्ञा पुं० १. पाछने का यंत्र। २. फ़सद। छूरा। चाकू।
पछनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कतरनी"। छूरी, छोटा चाकू।
पछलगा–संज्ञा पुं० दे० "पिछलगा"। अनुयायी। अनुगामी। अनुचर। दास।
पछलना–संज्ञा पुं० दे० "पिछलना"। पिछड़ना।
पछवाँ–वि० पश्चिम का।
पछाँह–संज्ञा पुं० पश्चिम की ओर का देश।
पछाँहिया–वि० पछाँह का। पश्चिमी प्रदेश का वासी।
पछाड़–संज्ञा स्त्री० १. मूर्च्छित या अचेत होकर गिरना। २. पटकना। हराना। गिराना।

मुहा०—पछाड़ खाना=खड़े-खड़े अचानक बेसुध होकर गिर पड़ना। सिर के बल गिरना। चित गिरना।

पछाड़ना—क्रि० स० कुश्ती या लड़ाई में पटकना। गिराना। धोने के लिए कपड़े को जोर से पटकना।

पछानना*—क्रि० स० दे० "पहचानना"।

पछारना*—क्रि० स० दे० "पछाड़ना"।

पछावरि*†—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का शरबत या सिकरन। २. छाछ का बना एक विशेष प्रकार का स्वादिष्ट पेय पदार्थ।

पछाहीं—वि० पछाहँ का। पश्चिम का।

पछिआना†—क्रि० स० पीछे-पीछे चलना। पीछा करना।

पछिताव—संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।

पछुवाँ—वि० पच्छिम की हवा।

पछेला-पछेली†—संज्ञा स्त्री० हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा।

पछोड़ना या पछोरना—क्रि० स० सूप आदि में रखकर (अन्न आदि के दानों को) साफ करना। फटकना।

पछयावर†—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सिकरन या शरबत।

पजरना*—क्रि० अ० जलना।

पजारना*—क्रि० स० जलाना।

पजावा—संज्ञा पुं० ईंट पकाने का भट्ठा। आवाँ।

पजोखा†—संज्ञा पुं० मातमपुरसी। किसी की मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों से सहानुभूति प्रकट करना।

पजोड़ा—वि० १. निकम्मा। २. दुष्ट। दुश्चरित्र। ३. अधम। नीच।

पज्ज—संज्ञा पुं० शूद्र। नीच।

पटंबर*†—संज्ञा पुं० रेशमी कपड़ा। कौषेय।

पट—संज्ञा पुं० १. वस्त्र। कपड़ा। २. पर्दा। ३. यवनिका। कपड़े या कागज पर बना हुआ चित्र। चित्रपट। ४. गिरने या मारने का शब्द। ५. किवाड़। देव-मंदिर का किवाड़। ६. सिंहासन। ७. छप्पर। छान। ८. कपास।

वि० १. सीधा। औंधा। २. तिर्यक्। क्रि० वि० चट का अनुकरण। तुरंत।

मुहा०—पट उघड़ना या खुलना=मंदिर का दरवाजा दर्शनार्थ खुलना। पट पड़ना=मंद पड़ना। न चलना। ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो। चित्त का उलटा।

पटइन—संज्ञा स्त्री० पटवा या पटहार जाति की स्त्री।

पटकन*—संज्ञा स्त्री० १. पछाड़। पटकने की क्रिया। पटक। २. चपत। तमाचा। ३. छड़ी। छोटा डंडा।

पटकना—क्रि० स० पछाड़ना। गिराना। १. झोंका देकर नीचे गिराना। २. किसी को उठाकर जोर से नीचे गिराना। दे मारना। ३. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना।

†क्रि० अ० १. सूजन बैठना या पचकना। २. पट शब्द के साथ किसी चीज का फट जाना।

मुहा०—(किसी पर) पटकना=कोई ऐसा काम किसी के मत्थे मढ़ना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो।

पटकनिया, पटकनी—संज्ञा स्त्री० पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव। १. भूमि पर गिरकर पछाड़ खाने या लोटने की क्रिया या अवस्था।

पटका—संज्ञा पुं० कमरपेच। वह दुपट्टा या रूमाल, जिससे कमर बाँधी जाय। कमरबंद।

पटकान—संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी"।

पटकार—संज्ञा पुं० १. जुलाहा। २. चित्रकार।

पटच्चर—संज्ञा पुं० चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।

पटतर*—संज्ञा पुं० बराबरी। समता। उपमा। उदाहरण। मिसाल।

†वि० चौरस। बराबर। समतल।

पटतरना—क्रि० अ० बराबरी करना। उपमा देना।

पटतारना—क्रि० स० १. खाँड़े, भाले आदि शस्त्रों को किसी पर चलाने के लिए पकड़ना या खींचना। सँभालना। २. बराबर करना।

ऊँची-नीची जमीन को चौरस करना। पड़तारना।

पटधारी—वि० वस्त्रधारी। जो कपड़ा पहने हो।

पटना—संज्ञा पुं० दे० "पाटलिपुत्र" (प्राचीन नाम) बिहार-राज्य की राजधानी

क्रि० स० १. किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आसपास की सतह के बराबर हो जाना। समतल होना। २. परिपूर्ण होना। ३. मकान, कुएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना। ४. †सींचा जाना। ५. दो मनुष्यों के विचारों या स्वभाव में समानता होना। मन मिलना। बनना। ६. लेन-देन आदि में उभय पक्ष का मूल्य या शर्तों आदि पर सहमत हो जाना। तय हो जाना। ७. (ऋण) चुकना।

पटनि—संज्ञा स्त्री० कपड़े। वस्त्र।

पटनी—संज्ञा स्त्री० १. वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी (सार्वकालिक) प्रबन्ध पर मिली हो। २. नाव। ३. माँझी। केवट। कर्णधार।

पटपट—संज्ञा स्त्री० (अनु०) शब्द-विशेष। हलके पदार्थ के गिरने से उत्पन्न शब्द।

क्रि० वि० बराबर पट ध्वनि करता हुआ।

पटपटाना—क्रि० अ० १. भूख-प्यास या सरदी-गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना। २. किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना।

क्रि० स० १. 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। २. खेद या शोक करना।

पटपर—वि० समतल। बराबर। चौरस।

संज्ञा पुं० १. ऊजड़। बंजर। अत्यंत उजाड़ स्थान। २. नदी के आस-पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्रायः सदा डूबी रहती है।

पटबंधक—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेहन जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति के लाभ में से सूद लेने के बाद बचा हुआ धन मूल ऋण में मिनहा करता जाता है। दखली रेहन।

पटबीजना†—संज्ञा पुं० दे० "जुगनूँ"।

पटरा—संज्ञा पुं० १. तख्ता। पल्ला। काठ का लंबा चौकोर और चौरस टुकड़ा। २. धोबी का पाट। ३. हेंगा। पाटा।

मुहा०—पटरा कर देना=मार-मार कर फैला देना या बिछा देना। चौपट कर देना।

पटरानी—संज्ञा स्त्री० बड़ी रानी। महा-रानी। वह रानी, जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो। राजमहिषी।

पटरी—संज्ञा स्त्री० १. काठ का पतला और लम्बा तख्ता। २. लिखने की तख्ती। पटिया। ३. सड़क के दोनों किनारों का वह भाग, जो पैदल चलनेवालों के लिए होता है। ४. बगीचे में क्यारियों के इधर-उधर के पतले-पतले रास्ते। रविश। ५. हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी। ६. सुनहरे या रुपहले तारों से बना हुआ फीता, जिसे कपड़े की कोर पर लगाते हैं।

मुहा०—पटरी जमना या बैठना=मन मिलना। मेल होना।

पटल—संज्ञा पुं० १. छप्पर। छत। छानी २. आवरण। पर्दा। ३. परत। तह ४. पहल। पार्श्व। ५. आँख के पर्दे पलक। ६. पुष्पदल। पँखुड़ी। ७. गुलाब ८. लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा। पटरा तख्ता। ९. पुस्तक का भाग या अध्याय परिच्छेद। १०. तिलक। टीका। ११. समूह। अंबार।

पटलता—संज्ञा स्त्री० १. पटल का भाव या धर्म्म। २. अधिकता।

पटवा—संज्ञा पुं० १. रेशम या सूत में गहने गूथनेवाला। पटहार। २. पटसन। पाट। पटुआ।

पटवाना—क्रि० स० पटने या पाटने का काम दूसरे से कराना।

पटवारगरी—संज्ञा स्त्री० पटवारी का काम या पद।

पटवारी—संज्ञा पुं० सरकारी कर्मचारी, जो गाँव की जमीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखता है।

पटवास—संज्ञा पुं० १. शिविर। तंबू। २. वस्त्रों को सुगंधित करने का गंध-द्रव्य। ३. लहँगा।

पटसन—संज्ञा पुं० १. एक पौधा, जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और कपड़े बनाए जाते हैं। २. पटसन के रेशे। जूट। पाट।

पटह—संज्ञा पुं० नगाड़ा। दुंदुभि।

पटहार—संज्ञा पुं० दे० "पटवा"

पटा—संज्ञा पुं० १. लेन-देन। सौदा। क्रय-विक्रय २. चौड़ी लकीर। धारी। ३. दे० "पट्टा"। ४. लोहे का एक अस्त्र, जिससे तलवार चलाना सीखते हैं। पीढ़ा। पटरा। ५. सनद। अधिकारपत्र।

मुहा०—पटा-फेर=विवाह की एक रस्म जिसमें वर-वधू के आसन परस्पर बदल दिए जाते हैं। पटा बाँधना=पटरानी बनाना।

पटाई†—संज्ञा स्त्री० पाटने या पटाने की क्रिया या मजदूरी।

पटाक—किसी पदार्थ के गिरने का शब्द। जैसे, वह पटाक से गिरा।

पटाका—संज्ञा पुं० १. पट या पटाक शब्द। २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतिशबाजी। ३. थप्पड़। तमाचा।

पटाना—क्रि० स० १. पाटने का काम कराना। २. छत को पीटकर बराबर कराना। ३. पाटन बनवाना। छत बनवाना। ४. ऋण चुका देना। ५. मूल्य तय कर लेना। †क्रि० अ० शांत होकर बैठना।

पटापट—क्रि० वि० लगातार ध्वनि। बार-बार 'पट' ध्वनि के साथ।

संज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति।

पटापटी—संज्ञा स्त्री० १. वह वस्तु जिसमें अनेक रंगों के फूल-पत्ते बने हों। २. लेन-देन का चुकता हो जाना।

पटार—संज्ञा स्त्री० १. पेटी। पिटारा। पिंजड़ा। २. कनखजूरा। ३. निवार।

पटालुका—संज्ञा स्त्री० जोंक।

पटाव—संज्ञा पुं० १. पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। ३. छत की पाटन। द्वार के ऊपर का तख्ता।

पटासन—संज्ञा पुं० बैठने के लिए कपड़े का बना आसन।

पटिका—संज्ञा स्त्री० कपड़े का छोटा टुकड़ा। छोटा वस्त्र।

पटिया†—संज्ञा स्त्री० १. पत्थर का प्रायः चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकड़ा। सिली। फलक। २. खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। †३. माँग। चोटी। पट्टी। ४. हेंगा। पाटा। ५. तख्ती। लिखने की पट्टी।

पटी—संज्ञा स्त्री० १. पट्टी। *कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा। २. नाटक का पर्दा। ३. कमरबन्द।

पटीर—संज्ञा पुं० १. चंदन। २. कत्था। ३. खैर का वृक्ष। ४. वटवृक्ष। ५. पपीता। ६. कामदेव। ७. चलनी। ८. क्यारी। ९. वारिद। मेघ। १०. उदर ११. जठर।

पटीलना—क्रि० अ० १. किसी को उलटी-सीधी बातों से समझाना। परास्त करना। ढंग पर लाना। २. अर्जित करना। कमाना। ३. ठगना। छलना। ४. सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना। ५. बलात् हटाना।

पटु—वि० १. कुशल। दक्ष। प्रवीण। निपुण। चतुर। चालाक। होशियार। २. कठोर हृदयवाला। ३. नीरोग। तंदुरुस्त। स्वस्थ। ४. तीक्ष्ण। तीखा। तेज़। ५. प्रचंड। उग्र।

पटुआ—संज्ञा पुं० दे० "पटुवा"।

पटुका—संज्ञा पुं० १. दे० "पटका"। २. चादर।

पटुता—संज्ञा स्त्री० प्रवीणता। निपुणता। होशियारी। दक्षता। चालाकी।

पटुत्व—संज्ञा पुं० पटुता। दक्षता। निपुणता। चतुराई। कुशलता।

पटुली—संज्ञा स्त्री० १. झूले का पटला या पटरी। २. पीढ़ी। चौकी।

पटुवा—संज्ञा पुं० १. पटसन। जूट। २. करेमू।

पटूका*†—संज्ञा पुं० दे० "पटका"।

पटेबाज़—संज्ञा पुं० १. पटा खेलनेवाला। पटे से लड़नेवाला। पटैत। २. धूर्त्त। ३. व्यभिचारी।

पटेर—संज्ञा पुं० पानी में होनेवाली एक घास। गोंदी।

पटेल—संज्ञा पुं० जाति का सरपंच। १. गाँव का मुखिया, चौधरी, नंबरदार। गुजरात में एक पदवी। २. जाति-विशेष।

पटेला—संज्ञा पुं० १. दे० "पटेर"। २. हेंगा। ३. सिल। पटिया। तख्ता। ४. एक प्रकार की नाव। बजरा। ऐसी नाव, जिसका मध्य भाग पटा हो। ५. हाथों में पहनने का एक आभूषण जिसे बुन्देलखण्डी स्त्रियाँ पहनती हैं।

पटैत—संज्ञा पुं० दे० "पटेबाज़"।

पटैला—संज्ञा पुं० १. किवाड़ बन्द करने का डंडा। ब्योंड़ा। २. तख्ता।

पटोर—संज्ञा पुं० १. रेशमी वस्त्र। पाट के बने कपड़े। रेशमी डोरा। २. परवल।

पटोरी—संज्ञा स्त्री० रेशमी धोती या साड़ी।

पटोल—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २. परवल।

पटौहाँ†—पटा हुआ स्थान। दे० "पट बंधक"।

पट्ट—संज्ञा पुं० १. पीढ़ा। पाटा। पट्टी। तख्ती। लिखने की पटिया। २. ताँबे आदि धातुओं की वह चिपटी पट्टी, जिस पर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ३. किसी वस्तु का चिपटा या चौरस तल या भाग। ४. शिला। पटिया। ५. पट्टा। भूमि सम्बन्धी अधिकारपत्र। ६. पगड़ी। दुपट्टा। ७. ढाल। ८. नगर। ९. चौराहा। १०. राजसिंहासन। ११. रेशम। रेशमी सन के कपड़े। कौशेय वस्त्र। १२. पटसन। वि० १. मुख्य। प्रधान। २. दे० "पट"।

पट्टदेवी—संज्ञा स्त्री० पटरानी।

पट्टन—संज्ञा पुं० नगर। शहर। पत्तन।

पट्टमहिषी—संज्ञा स्त्री० पटरानी।

पट्टा—संज्ञा पुं० १. भूमि-सम्बन्धी अधिकारपत्र, जो भूमि के स्वामी की ओर से किसी दूसरे को दिया जाय। सनद। कोई अधिकार-पत्र। २. चमड़े की पट्टी, जो कुत्तों, बिल्लियों के गले में पहनाई जाती है। ३. पीढ़ा। ४. कानों के पास रखे हुए बाल। ५. चपरास। ६. चमड़े का कमरबंद। पट्टी। ७. एक प्रकार की तलवार।

पट्टिका—संज्ञा स्त्री० छोटी तख्ती। कपड़े की छोटी पट्टी। पत्थर की पटिया।

पट्टिश—संज्ञा पुं० एक प्राचीन शस्त्र। खाँड़ा।

पट्टिशी—संज्ञा पुं० पट्टिश बाँधनेवाला।

पट्टी—संज्ञा स्त्री० १. पाटी। पटिया तख्ती। २. पाठ। सबक। उपदेश शिक्षा। सिखावन। ३. बहकावा भुलावा। ४. लकड़ी की बल्ली। पाटी ५. धातु, कागज या कपड़े की धज्जी ६. लकड़ी की लंबी बल्ली, जो छत या छाजन के ठाठ में लगाई जाती है। ७. सन की बनी हुई धज्जियाँ, जिनके जोड़ने से ठाठ तैयार होते हैं। ८. कपड़े की कोर या किनारी। ९. एक मिठाई। १०. कपड़े की धज्जी, जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिए टाँगों में बाँधते हैं। फोड़ा बाँधने का कपड़ा। ११. पंक्ति। कतार। पाँती। १२. माँग के दोनों ओर के कंघी से खूब बैठाए हुए बाल, जो पट्टी से दिखाई पड़ते हैं। पाटी। पटिया। १३. हिस्सा। भाग। विभाग। पत्ती। १४. *वह अतिरिक्त कर, जो जमींदार किसी विशेष प्रयोजन के लिए असामियों पर लगाता है। नेग।

पट्टीदार—संज्ञा पुं० संयुक्त सम्पत्ति का साझेदार। हिस्सेदार। बराबर का अधिकारी।

पट्टीदारी—संज्ञा स्त्री० पट्टीदार होने का भाव। बहुत से हिस्से होना। संयुक्त सम्पत्ति, जिसके कई हिस्सेदार हों। भाई-चारा। बिरादरी।

मुहा०—पट्टीदारी करना=किसी के बराबर अधिकार जताना। बराबरी करना।

पट्टू—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बहुत गरम ऊनी वस्त्र। २. तोता। सुग्गा। सुआ।

पठमान*—वि० पढ़ने योग्य।

पट्ठा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पठिया] १. जवान। तरुण। पाठा। २. कुश्तीबाज। लड़ाका। ३. लंबा, दलदार या मोटा पत्ता। ४. जवान हाथी। ५. मोटी नस। स्नायु। ६. चौड़ा गोटा। ७. पेड़ू के नीचे कमर और जाँघ का वह जोड़, जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती हैं।
मुहा०—पट्ठा चढ़ना=किसी नस का तन जाना। नस पर नस चढ़ना।
पट्ठी—संज्ञा स्त्री० दे० "पठिया"।
पठन—संज्ञा पुं० पढ़ना।
पठनीय—वि० पढ़ने योग्य।
पठनेटा—संज्ञा पुं० पठान का पुत्र।
पठवना*—क्रि० स० भेजना।
पठवाना*—क्रि० स० भेजने का काम दूसरे से कराना। भेजवाना। पठाना।
पठान—संज्ञा पुं० एक मुसलमान जाति, जो अफगानिस्तान के अधिकांश और भारत के सीमांत प्रदेश आदि में बसती है। काबुली। अफगान।
पठाना*—क्रि० स० भेजना।
पठानी—संज्ञा स्त्री० १. पठान की स्त्री। २. पठान की भाषा। ३. शूरता, क्रूरता, रक्तपात-प्रियता आदि पठानों के गुण। पठानपन।
वि० पठानों का।
पठावन†—संज्ञा पुं० दूत। पठौना।
पठावनि, पठावनी—संज्ञा स्त्री० १. किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिए भेजने का काम। २. इस प्रकार भेजने की मजदूरी। ३. कन्या के घर से वर के यहाँ भेजी वस्तु (रीति)।
पठित—वि० १. पढ़ा हुआ। २. पढ़ा-लिखा। शिक्षित।
पठिया—संज्ञा स्त्री० युवती। जवान स्त्री। तरुणी।
पठौनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पठावनी"। पठाने की मजदूरी। भेजने या भेजवाने की मजदूरी।
पड़छती, पड़छत्ती—संज्ञा स्त्री० १. दीवार की रक्षा के लिए लगाया जानेवाला छप्पर या टट्टी। २. कमरे आदि के बीच की पाटन, जिस पर चीज वस्तु रखते हैं। टाँड़। परछती।
पड़त*—संज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता"। लगान।
पड़ता—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु की खरीद या बनवाई का दाम। खर्च। लागत। २. दर। शरह। भूमिकर की दर। लगान की शरह। औसत। सामान्य दर।
मुहा०—पड़ता खाना या पड़ना=लागत और लाभ मिल जाना। खर्च और मुनाफा निकल आना। पड़ता फैलाना या बैठाना=किसी चीज के तैयार करने, खरीदने और मँगाने आदि में जो खर्च पड़ा हो, उसे देखते हुए उसका भाव निश्चित करना।
पड़ताल—संज्ञा स्त्री० १. देखभाल। जाँच। छान-बीन। अन्वीक्षण। अनुसंधान। २. पटवारी-द्वारा गाँव अथवा शहर के खेतों की एक प्रकार की जाँच।
पड़तालना—क्रि० स० जाँच करना।
पड़ती—संज्ञा स्त्री० बिना जोती-बोई भूमि। वह भूमि, जिस पर कुछ समय से खेती न की गई हो।
मुहा०—पड़ती उठना=पड़ती का जोता जाना। पड़ती पर खेती होना। पड़ती छोड़ना=किसी खेत को कुछ समय तक यों ही छोड़ना, उसे जोतना नहीं, जिसमें उसकी उर्वरा-शक्ति बढ़े।
पड़ना—क्रि० अ० १. गिरना। पतित होना। २. (दुःखद घटना) घटित होना। जैसे— पड़ना। ३. बिछाया जाना। जाना। ४. पहुँचना या पहुँचाया जाना। प्रविष्ट होना। ५. हस्तक्षेप करना। दखल देना। ६. टिकना। ठहरना। ७. आराम करना। विश्राम के लिए सोना या लेटना। ८. बीमार होना। खाट पर पड़ना। ९. मिलना। प्राप्त होना। १०. पड़ता खाना। ११. आय, प्राप्ति आदि की औसत होना। पड़ता होना। १२. मार्ग में मिलना। १३ उत्पन्न होना। १४. स्थित होना। १५. संयोगवश होना। उपस्थित होना। १६. जाँच या विचार

करने पर ठहरना । १७. देशान्तर या अवस्थांतर होना । १८. अत्यंत इच्छा होना । धुन होना ।

मुहा०—(किसी पर) पड़ना=विपत्ति या मुसीबत आना । संकट या कठिनाई होना । पड़ा होना=१. एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना । २. रखा रहना । धरा रहना । ३. बाकी रहना । शेष रहना । पड़े रहना या पड़ा रहना=बिना कुछ काम किए लेटे रहना । निकम्मे रहना । क्या पड़ी है=क्या मतलब है ।

पड़पड़ाना—क्रि० अ० पड़पड़ शब्द होना । अत्यंत कड़ुवे पदार्थ के खाने या स्पर्श से जीभ पर दुःख का अनुभव होना । चरपराना । तड़पना ।

पड़पोता—संज्ञा पुं० [स्त्री० पड़पोती] पुत्र का पोता । पोते का पुत्र ।

पड़वा—संज्ञा स्त्री० पखवारे की प्रथम तिथि ।

पड़ाक—संज्ञा पुं० [अनु०] दे० पटाक ।

पड़ाना—क्रि० स० गिराना । झुकाना । रोग से शय्यागत होना ।

पड़ाव—संज्ञा पुं० यात्रा के बीच में ठहरने का स्थान । यात्रियों के विश्राम करने का स्थान ।

पड़िया—संज्ञा स्त्री० भैंस की बच्ची । पाड़ी ।

पड़िवा†—संज्ञा स्त्री० दे० "पड़वा" ।

पड़ोस—संज्ञा पुं० आस-पास । समीप का वास । सन्निकट का वास । किसी स्थान के आस-पास स्थान ।

यौ०—पास-पड़ोस=समीपवर्त्ती स्थान ।

मुहा०—पड़ोस करना=पड़ोस में बसना ।

पड़ोसी—संज्ञा पुं० [स्त्री० पड़ोसिन] वह मनुष्य, जिसका घर पड़ोस में हो । पड़ोस में रहनेवाला । समीपवासी । पास-पास रहनेवाले ।

पढ़ंत—संज्ञा स्त्री० १. पढ़ने की क्रिया या भाव । २. अध्ययन । पाठ । सबक । ३. निरंतर पढ़ना । मंत्र । ४. सन्ध्या ।

पढ़ंता—वि० पढ़नेवाला ।

पढ़त—संज्ञा स्त्री० १. पढ़ने की क्रिया या भाव । २. मंत्र ।

पढ़ना—क्रि० स० १. किसी लिखित वस्तु को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात मालूम हो जाय । २. किसी लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना । बाँचना । ३. स्मरण रखने के लिए किसी विषय का बार-बार उच्चारण करना । रटना । ४. मंत्र फूंकना । जादू करना । ५. तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाए हुए शब्द उच्चारण करना । ६. विद्या पढ़ना । शिक्षा प्राप्त करना । अध्ययन करना ।

यौ०—पढ़ना-लिखना=शिक्षा पाना । पढ़ना-पढ़ाना । पढ़ा-लिखा=शिक्षित ।

पढ़वाई—संज्ञा स्त्री० पढ़वाने की क्रिया । पढ़वाने का पारिश्रमिक ।

पढ़वाना—क्रि० स० १. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना । बँचवाना । २. किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना । किसी दूसरे से पढ़ने का काम लेना ।

पढ़वैया—वि० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पढ़ाई—संज्ञा स्त्री० १. विद्याभ्यास । अध्ययन । पठन । पढ़ने का काम । पढ़ने का भाव । २. अध्यापन । पाठन । पढ़ाने का काम । पढ़ौनी । ३. पढ़ाने का भाव । .४ पढ़ाने का ढंग । अध्यापन-शैली ।

पढ़ाना—क्रि० स० १. सिखाना । समझाना । शिक्षा देना । अध्यापन करना । कोई कला या हुनर सिखाना । २. तोता, मैना आदि पक्षियों को मनुष्यों की बोली सिखाना ।

पढ़ैया—संज्ञा पुं० पढ़नेवाला ।

पण—संज्ञा पुं० १. प्रतिज्ञा । शर्त । होड़ । जूआ । द्यूत । २. संधि । किराया । ३. कीमत । मूल्य । ४. फीस । शुल्क । ५. धन । संपत्ति । जायदाद । ६. क्रय-विक्रय की वस्तु । सौदा । ७. व्यापार । व्यवसाय । व्यवहार । ८. स्तुति । प्रशंसा । ९. ताँबे का प्राचीन सिक्का । १०. एक पुरानी नाप, जो मुट्ठी भर अन्न के बराबर होती थी ।

पणग्रंथि—संज्ञा स्त्री० बाजार ।

पणन—संज्ञा पुं० १. खरीदने की क्रिया या भाव । बेचना । २. शर्त लगाना ।

पणव–संज्ञा पुं० १. छोटा नगाड़ा। ढोलकी। २. चौपाई की तरह का एक छन्द।
पणवानक–संज्ञा पुं० नगाड़ा।
पणस–संज्ञा पुं० खरीदने या बेचने की चीज।
पणसुन्दरी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
पण्य–वि० १. खरीदने या बेचने योग्य। २. प्रशंसा करने योग्य।
संज्ञा पुं० १. सौदा। माल। २. व्यापार। रोजगार। ३. दूकान। ४. बाज़ार।
पण्यदासी–संज्ञा स्त्री० लौंडी। सेविका।
पण्यफल–संज्ञा पुं० मुनाफा। लाभ।
पण्यभूमि–संज्ञा स्त्री० कोठी। गोला। गोदाम। सौदा या माल जमा करने का स्थान।
पण्यविलासिनी–संज्ञा पुं० वेश्या।
पण्यवीथी–संज्ञा स्त्री० बाज़ार।
पण्यशाला–संज्ञा स्त्री० दूकान। बाजार। हाट। विक्रय-गृह।
पण्यस्त्री–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
पतंग–संज्ञा पुं० १. पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य। ३. शलभ। टिड्डी। भुनगा। फतिंगा। उड़नेवाला कीड़ा। ४. एक प्रकार का धान। जड़हन। ५. जल-महुआ। ६. कंदुक। गेंद। ७. शरीर। ८. नौका। नाव। ९. एक बड़ा वृक्ष, जिसकी लकड़ी से बढ़िया लाल रंग बनता है। १०. बाँस की तीलियों के ढाँचे पर चौकोना पतला कागज मढ़कर बनाया हुआ एक खिलौना, जिसे हवा में उड़ाया जाता है। गुड्डी। कनकौवा।
पतंगज–संज्ञा पुं० १. यम। २. सुग्रीव। ३. कर्ण।
पतंगजा–संज्ञा स्त्री० यमुना।
पतंगबाज़–संज्ञा पुं० पतंग उड़ाने का शौकीन। जिसे पतंग उड़ाने का व्यसन हो।
पतंगबाज़ी–संज्ञा स्त्री० पतंग उड़ाने की कला, या भाव।
पतंगसुत–संज्ञा पुं० १. अश्विनीकुमार। २. यम। ३. कर्ण। ४. सुग्रीव।
पतंगा–संज्ञा पुं० १. पतंग। उड़नेवाला कीड़ा-मकोड़ा। फतिंगा। २. घासों अथवा वृक्ष की पत्तियों पर पाया जानेवाला एक कीड़ा। स्फुलिंग। दीपक की बत्ती की अग्नि के छोटे-छोटे कण। गुल। ३. चिनगारी।
पतंगेन्द्र–संज्ञा पुं० गरुड़।
पतंचिका–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी। कमान की ताँत। चिल्ला। प्रत्यंचा।
पतंजलि–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध ऋषि, जिन्होंने योग-शास्त्र की रचना की। २. एक प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य ऋषि, जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन-कृत वार्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना की थी।
पत*†–संज्ञा पुं० १. पति। खसम। २. स्वामी। मालिक।
संज्ञा स्त्री० १. कानि। लज्जा। आबरू। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।
यौ०–पत-पानी=लज्जा। आबरू।
मुहा०–पत उतारना या लेना=बेइज्जती करना। पत रखना=इज्जत बचाना।
पतझड़–संज्ञा स्त्री० १. वह ऋतु, जिसमें वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशिर ऋतु। माघ और फाल्गुन के महीने। वसन्त। २. अवनति-काल।
पतझर–संज्ञा स्त्री० दे० 'पतझड़'।
पतझार†–संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।
पतत्र–संज्ञा पुं० १. पंख। २. वाहन। सवारी।
पतत्रि–संज्ञा पुं० पक्षी।
पतत्रिकेतन–संज्ञा पुं० विष्णु।
पतन–संज्ञा पुं० १. गिरने की क्रिया या भाव। गिरना। स्खलन। २. बैठना या डूबना। ३. अधोगति। अवनति। तबाही। ४. नाश। मृत्यु। ५. पाप। पातक। ६. जातिच्युति। जाति से बहिष्कृत होना। ७. उड़ना। उड़ान।
पतनशील–वि० गिरनेवाला। पतनोन्मुख। नाशवान।
पतनीय–वि० गिरने योग्य। गिरनेवाला।
पतनोन्मुख–वि० जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो। जिसकी अधोगति या विनाश निकट हो।
पत-पानी–संज्ञा पुं० मर्यादा। प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। लाज।

पतर*†–वि० १. दुर्बल। पतला। कृश। २. पत्ता। पर्ण। ३. पत्तल।

पतरा†–वि० दे० "पतला"।

पतरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।

पतला–वि० [स्त्री० पतली] १. महीन। सूक्ष्म। जिसकी चौड़ाई कम हो। जो मोटा न हो। कृश। दुर्बल। २. कमज़ोर। असमर्थ।
मुहा०–पतला पड़ना=दुर्दशा-ग्रस्त होना। पतला हाल=कष्ट और दुःख की दशा।

पतलाई–संज्ञा स्त्री० दुर्बलता। दुबलापन।

पतलापन–संज्ञा पुं० पतला होने का भाव।

पतलून–संज्ञा पुं० [अंग्रे० पैंटलून] पायजामे की तरह अंग्रेजी ढंग का कमर से पैर तक का पहनावा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायँचा सीधा गिरता है।

पतवार, पतवारी–संज्ञा स्त्री० नाव का डाँड़ जिससे नाव दाहिने-बाएँ घुमाई जाती है। इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है। कन्हर। कण। डाँड़।

पता–संज्ञा पुं० १. किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात, जिससे उसको पा सकें। पत्र पर लिखा नाम। नाम, ठिकाना परिचय। २. चिह्न। खोज। अनुसंधान। सुराग। टोह। ३. अभिज्ञता। जानकारी। खबर। ४. गूढ़ तत्त्व। रहस्य। भेद।
यौ०–पता-ठिकाना=किसी वस्तु का स्थान और उसका परिचय। पता-निशान=१. वे बातें, जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। २. नाम-निशान।
मुहा०–पते की बात=भेद प्रकट करनेवाली बात। रहस्य खोलनेवाला कथन।

पताई–संज्ञा स्त्री० झड़ी हुई पत्तियों का ढेर। सूखी गिरी हुई पत्तियाँ।

पताका–संज्ञा स्त्री० १. ध्वजा। झंडा। निशान। झंडी। फरहरा। २. सौभाग्य। ३. दस खर्व की संख्या। ४. नाटक का वह स्थल, जहाँ एक पात्र एक विषय में कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे के संबंध में कोई बात कहे। ५. पिंगल में छन्द-प्रस्तार-संबंधी गणित की एक क्रिया।
मुहा०–(किसी स्थान में अथवा किसी स्थान पर) पताका उड़ना=१. अधिकार होना। राज्य होना। २. सर्वप्रधान होना। सब में श्रेष्ठ माना जाना। (किसी वस्तु की) पताका उड़ना=प्रसिद्धि होना। धूम होना। पताका उड़ाना=अधिकार करना। विजयी होना। पताका गिरना=पराजय होना। हार होना। विजय की पताका=विजय-सूचक पताका।

पताकिनी–संज्ञा स्त्री० सेना। फौज।

पतार*†–संज्ञा पुं० १. दे० "पाताल"। २. जंगल। घना वन।

पताल–संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

पतिंग–संज्ञा पुं० पतंग। फतिंगा।

पतिंवरा–वि० जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा (स्त्री)।

पति-संज्ञा पुं० [स्त्री० पत्नी] १. स्वामी। प्रभु। अधिपति। मालिक। २. स्त्री का विवाहित पुरुष। दूल्हा। शौहर। खाविंद। भर्त्ता। ३. शिव या ईश्वर। ४. मर्यादा। प्रतिष्ठा।

पतिआना†–क्रि० स० विश्वास करना। सच मानना। एतवार करना।

पतिआर*†–संज्ञा पुं० विश्वास। साख। एतबार। विश्वसनीय।

पतिकामा–वि० पति पाने की इच्छा करने-वाली स्त्री।

पतित–वि० १. गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। २. आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। भ्रष्ट। ३. महापापी। अधर्मी। ४. जाति-बहिष्कृत। समाज-बहिष्कृत। ५. महा अपवित्र। ६. अधम। नीच।

पतित-उधारन*–वि० पतितों का उद्धार करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार।

पतितपावन–वि० [स्त्री० पतितपावनी] पतित को पवित्र करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर। परमात्मा।

पतित्व–संज्ञा पुं० १. स्वामी, प्रभु या मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व। २. पति होने का भाव। वरत्व।

पतिदेवा–संज्ञा स्त्री० पतिव्रता। केवल अपने पति की ही आराधना और उपासना में रहनेवाली स्त्री।

पतिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।

पतियाना†–क्रि० स० विश्वास करना। भरोसा करना। प्रतीति करना।

पतियारा*–संज्ञा पुं० पतियाने का भाव। एतबार। विश्वास। भरोसा।

पतिलोक–संज्ञा पुं० पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग, जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवती–वि० सधवा। सौभाग्यवती।

पतिव्रत–संज्ञा पुं० पति में स्त्री की अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

पतिव्रता–वि० पति में अनन्य अनुराग रखनेवाली और यथाविधि पतिसेवा करनेवाली। सती। साध्वी।

पतीजन, पतीजना*–क्रि० अ० पतियाना। विश्वास करना।

पतीली–संज्ञा स्त्री० ताँबे या पीतल की बटलोई। डेगची।

पतुकी*–संज्ञा स्त्री० मिट्टी की छोटी हाँडी।

पतुरिया–संज्ञा स्त्री० वेश्या।

पतुही–संज्ञा स्त्री० छोटे मटर की छीमी।

पतोखा–संज्ञा पुं० १. पत्ते का बना पात्र। दोना। २. एक प्रकार का बगला।

पतोखी–संज्ञा स्त्री० १. एक पत्ते का दोना। छोटा दोना। २. पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी। ३. बारीक कटी सुपारी।

पतोह, पतोहू†–संज्ञा स्त्री० पुत्रवधू। बेटे की पत्नी।

पतौआ*‡–संज्ञा पुं० पत्ता। पर्ण।

पत्तन–संज्ञा पुं० १. शहर। नगर। २. ग्राम। पुर। ३. मृदंग।

पत्तर–संज्ञा पुं० धातु की पतली चादर।

पत्तल–संज्ञा स्त्री० १. पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ भोजन-पात्र। २. पत्तल में सजाई हुई भोजन-सामग्री। ३. भोज के अवसर पर किसी के यहाँ भेजी जानेवाली भोजन सामग्री।

मुहा०–एक पत्तल में खानेवाले=परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करनेवाले। किसी की पत्तल में खाना=किसी के साथ खान-पान आदि का संबंध रखना। जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना=जिससे लाभ उठाना, उसी की हानि करना। कृतघ्नता करना।

पत्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० पत्ती] १. पलास। पात। पत्रक। पर्ण। २. कान में पहनने का एक गहना। ३. मोटे कागज का गोल या चौकोर टुकड़ा, जिससे ताश खेलते हैं।

मुहा०–पत्ता खड़कना=कुछ खटका या आशंका होना। पत्ता न हिलना=हवा का बिलकुल बंद होना।

पत्ति–संज्ञा पुं० १. पैदल सिपाही। प्यादा। पदातिक। २. शूरवीर पुरुष। योद्धा। बहादुर। ३. प्राचीन काल में सेना का सबसे छोटा विभाग, जिसमें १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल होते थे।

पत्तिक–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल में सेना का एक विशेष विभाग जिसमें १० घोड़े, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे। २. उपर्युक्त विभाग का सेनानायक। वि० पैदल चलनेवाला।

पत्ती–संज्ञा स्त्री० १. छोटा पत्ता। २. भाग। हिस्सा। साझे का अंश। ३. फूल की पँखड़ी। दल। ४. भाँग। ५. पत्ती के आकार की लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई टुकड़ा। पट्टी। ६. राजपूतों की एक जाति।

पत्तीदार–संज्ञा पुं० हिस्सेदार। साझीदार।

पत्थ*–संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।

पत्थर–संज्ञा पुं० [वि० पथरीली, क्रि० पथराना] १. पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या खंड। २. मील का पत्थर। ३. ओला। बिनौला। इंद्रोपल। ४. चट्टान का टुकड़ा। प्रस्तर। पाहन। उपली। ५. रत्न। जवाहिर। हीरा, लाल, पन्ना आदि। ६. पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा

टूटने, गलने आदि के अयोग्य वस्तु । ७. कुछ नहीं । बिलकुल नहीं । खाक । (तिरस्कार-सूचक)
मुहा०—पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=कठोर हृदय । दया-करुणा आदि कोमल वृत्तियों से हीन हृदय । पत्थर की छाती=बलवान् और दृढ़ हृदय । मजबूत दिल । पत्थर की लकीर=सदा सर्वदा बनी रहनेवाली (वस्तु) । सार्वकालिक । चिरस्थायी । पत्थर चटाना=पत्थर पर घिसकर धार तेज करना । पत्थर तले हाथ आना या दबना=ऐसे संकट में फँस जाना, जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पड़ता हो । बुरी तरह फँस जाना । पत्थर तले से हाथ निकालना=संकट या मुसीबत से छूटना । पत्थर पर दूब जमना=अनहोनी बात का होना । पत्थर पसीजना या पिघलना =अत्यंत कठोर चित्त में नरमी या कृपण के मन में दान की इच्छा आदि का होना । पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=असंभव बात के लिए प्रयत्न करना । पत्थर पड़ना=चौपट हो जाना । पत्थर-पानी=आँधी-पानी आदि का काल । तूफानी समय ।

पत्थरकला—संज्ञा पुं० पुराने ढंग की बन्दूक, जिसमें बारूद सुलगाने के लिए चकमक पत्थर लगा रहता था । पलीतेदार बंदूक ।

पत्थरचटा—संज्ञा पुं० १. एक घास । २. एक प्रकार का साँप । ३. एक तरह की मछली । ४. कंजूस । मक्खीचूस ।

पत्थरफूल—संज्ञा पुं० छरीला । शैलाख्य ।

पत्थरफोड़—संज्ञा पुं० पत्थरों की संधि में होनेवाली एक वनस्पति ।

पत्नी—संज्ञा स्त्री० गृहिणी । विवाहिता स्त्री । भार्या । सहधर्मिणी । जीवन-संगिनी ।

पत्नीव्रत—संज्ञा पुं० अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का नियम ।

पत्य—संज्ञा पुं० पति होने का भाव ।

पत्याना*†—क्रि० स० दे० "पतिआना" । पुं० दे० "पतिआरा" ।

पत्यारी*—संज्ञा स्त्री० पंक्ति ।

पत्र—संज्ञा पुं० १. किसी वृक्ष का पत्ता । पत्ती । दल । पर्ण । २. लिखा हुआ कागज । समाचारपत्र । अखबार । ३. चिट्ठी । पत्री । खत । ४. पुस्तक या लेख का एक पन्ना । पृष्ठ । सफा । पत्रा । ५. वह कागज, जिस पर किसी खास मामले की सनद या सबूत के लिए कुछ लिखा हो । ६. वसीका, पट्टा या दस्तावेज । ७. धातु की चद्दर । वरक । ८. तीर या पक्षी के पंख । पक्ष ।

पत्रकार—संज्ञा पुं० समाचारपत्र के सम्पादकीय विभाग में काम करनेवाला लेखक । समाचारपत्रों में बराबर लेख, समाचार आदि लिखकर भेजनेवाला । अखबार का सम्पादक या सहायक सम्पादक ।

पत्रकारिता—संज्ञा स्त्री० पत्रकार का कार्य या पेशा ।

पत्रकृच्छ्र—संज्ञा पुं० पत्तों का काढ़ा पीकर रखा जानेवाला एक व्रत ।

पत्र-पुष्प—संज्ञा पुं० १. सत्कार या पूजा की बहुत अल्प सामग्री । २. अल्प मूल्य का उपहार ।

पत्रभंग—संज्ञा पुं० चित्र या रेखाएँ, जो सौंदर्य-वृद्धि के लिए स्त्रियाँ भाल, कपोल आदि पर बनाती हैं ।

पत्रवाहक—संज्ञा पुं० पत्र ले जानेवाला । डाकिया । चिट्ठीरसाँ । हरकारा ।

पत्रवाह-पंजी—संज्ञा स्त्री० वह पंजी या बही, जिसपर पत्रवाह-द्वारा भेजे जानेवाले पत्र दर्ज किए जाते हैं और जिस पर पत्र पानेवाले के हस्ताक्षर होते हैं । (अंग्रे० पियनबुक)

पत्र-व्यवहार—संज्ञा पुं० चिट्ठी आने-जाने का क्रम । खत-किताबत । लिखा-पढ़ी ।

पत्रशिरा—संज्ञा स्त्री० पत्ते की नस ।

पत्रश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० बेल का पत्ता ।

पत्रांक—संज्ञा पुं० १. पृष्ठसंख्या । २. चिट्ठियों पर के अंक ।

पत्रांग—संज्ञा पुं० १. लाल चन्दन । २. पतंगा । ३. भोजपत्र ।

पत्रा–संज्ञा पुं० १. तिथिपत्र । जंत्री । पंचांग । २. पन्ना । पृष्ठ । वर्क ।
पत्राचार–संज्ञा पुं० चिट्ठियों का आना-जाना । पत्र-व्यवहार ।
पत्रालय–संज्ञा पुं० डाकखाना । पोस्ट आफिस ।
पत्रावली–संज्ञा स्त्री० दे० "पत्रभंग" । पत्र-रचना । पत्रों की पंक्ति या समूह । गेरू ।
पत्रिका–संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी । खत । २. कोई छोटा लेख या लिपि । ३. सामयिक पत्र, पुस्तक या समाचारपत्र ।
पत्री–संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी । खत । २. कोई छोटा लेख या पत्रिका ।
संज्ञा पुं० १. तीर । बाण । २. पक्षी । चिड़िया । ३. श्येन । बाज । ४. वृक्ष ।
वि० जिसमें पत्ते हों ।
पथ–संज्ञा पुं० १. मार्ग । पंथ । रास्ता । राह । २. व्यवहार आदि की रीति ।
संज्ञा पुं० दे० "पथ्य" ।
पथगामी–संज्ञा पुं० पथ या मार्ग पर चलनेवाला । अनुगामी । पथिक । बटोही । मुसाफिर ।
पथदर्शक, पथप्रदर्शक–संज्ञा पुं० मार्गदर्शक । रास्ता दिखानेवाला ।
पथना–क्रि० अ० पाथना । कण्डे (उपले) बनाना ।
क्रि० स० पथाना । पथवाना ।
पथरकला–संज्ञा पुं० पुरानी चाल की बंदूक । एक प्रकार की बंदूक या कड़ाबीन, जो चकमक पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न करके चलाई जाती थी ।
पथरचटा–संज्ञा पुं० १. कृपण । कंजूस । २. एक औषध । ३. एक प्रकार का शाक ।
पथराना–क्रि० अ० १. पत्थर की तरह हो जाना । २. ताजगी न रहना । नीरस और कठोर हो जाना । ३. स्तब्ध हो जाना । निर्जीव हो जाना । पत्थर मारना ।
पथरी–संज्ञा स्त्री० १. पत्थर का बना हुआ । कटोरा या कटोरी । पत्थर का पात्र । २. एक प्रकार का रोग, जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-बड़े टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं । ३. चकमक पत्थर । ४. पत्थर का टुकड़ा, सिल्ली । पथरौटी । ५. कुरंड पत्थर, जिससे औजार तेज करने की सान बनाते हैं । ६. पत्थर की कूंड़ी ।
पथरीला–वि० [स्त्री० पथरीली] पत्थरयुक्त । कंकरीली भूमि ।
पथरौटा†–संज्ञा पुं० पत्थर का कटोरा ।
पथिक–संज्ञा पुं० मार्ग चलनेवाला । यात्री । राहगीर । मुसाफिर ।
पथिकाश्रय–संज्ञा स्त्री० यात्रियों के ठहरने का स्थान । धर्मशाला ।
पथिचक्र–संज्ञा पुं० फलित ज्योतिष में यात्रा के शुभाशुभ फल बताने का चक्र ।
पथिवाहक–संज्ञा पुं० कहार । मजदूर । कुली ।
पथी–संज्ञा पुं० यात्री । पथिक ।
पथु*†–संज्ञा पुं० पथ । मार्ग । रास्ता ।
पथेरा–संज्ञा पुं० पाथने का काम करनेवाला । कुम्हार ।
पथौरा–संज्ञा पुं० कंडे पाथने का स्थान ।
पथ्य–संज्ञा पुं० १. रोगी का आहार । वह हलका और जल्दी पचनेवाला भोजन, जो रोगी के लिए लाभदायक हो । उपयुक्त आहार । २. हित । मंगल । कल्याण ।
मुहा०–पथ्य से रहना=संयम से रहना ।
पथ्या–संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का भेद । हरड़, हड़ । रोगी के अनुकूल आहार । हलका लाभदायक भोजन ।
पद–संज्ञा पुं० १. व्यवसाय । काम । २. त्राण । रक्षा । ३. अधिकार-स्थान । मान । प्रतिष्ठा । आदर । महिमा । दर्जा । ४. चिह्न । निशान । ५. पैर । पाँव । चरण । ६. वस्तु । चीज । ७. विभक्तियुक्त शब्द । ८. प्रदेश । ९. पैर का निशान । १०. श्लोक या किसी छंद का चतुर्थांश । श्लोकपाद । ११. उपाधि । १२. मोक्ष । निर्वाण । १३. भजन । १४. पुराणानुसार दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह ।

पदक—संज्ञा पुं० १. पूजन आदि के लिए बनाए गए किसी देवता के पद-चिह्न। २. सोने, चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा, जो किसी व्यक्ति अथवा जनसमूह को कोई विशेष अथवा अद्‌भुत कार्य करने के उपलक्ष में दिया जाता है। तमगा।

पदक्रम—संज्ञा पुं० पग। डग।

पदग—संज्ञा पुं० १. पैदल चलनेवाला। पैदल। २. प्यादा।

पदचर—संज्ञा पुं० पैदल। प्यादा। पदाति। पैरों से चलनेवाला। पैदल चलनेवाला। पीछे-पीछे चलनेवाला। अनुगामी। दास।

पदचारी—संज्ञा पुं० (स्त्री० पदचारिणी) पैदल चलनेवाला।

पदचिह्न—संज्ञा पुं० चरण-चिह्न। पाँव के चिह्न। पृथ्वी पर पाँव के निशान।

पदच्छेद—संज्ञा पुं० वाक्य-विश्लेषण। व्याकरण के नियमों के अनुसार संधि और समास-युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को अलग करना।

पदच्युत—वि० [संज्ञा पदच्युति] जो अपने पद या स्थान से हटा दिया गया हो।

पदज—संज्ञा पुं० १. पैर की उँगलियाँ। २. शूद्र।

पदतल—संज्ञा पुं० पैर का तलवा।

पदत्याग—संज्ञा पुं० पद या ओहदा छोड़ना। इस्तीफा। अधिकार-त्याग। स्थान-त्याग।

पदत्राण—संज्ञा पुं० जूता। पद की रक्षा करनेवाला।

पददलित—वि० १. पैरों से रौंदा या कुचला हुआ। अपमानित। २. दबाकर निर्बल किया गया।

पदना—संज्ञा पुं० १. पादना। दंड-स्वरूप मेहनत करना। २. दौड़ना। तंग होना। ३. डरपोक। ४. पादनेवाला। पदक्कड़। अधिक पादनेवाला।

पदनी—संज्ञा स्त्री० दुराचारिणी। व्यभि-चारिणी।

पदन्यास—संज्ञा पुं० १. 'न्यास' करने की एक विधि। २. पैर रखना। चलना। गमन करना। पद-रचना। ३. चलन। ढंग।

पदपटी—संज्ञा स्त्री० नृत्य-विशेष। एक प्रकार का नाच।

पदपत्र—संज्ञा पुं० १. पद की नियुक्ति का अधिकारपत्र। अधिकारपत्र। २. कमल का पत्र। कमलपत्ता।

पदपीठ—संज्ञा पुं० खड़ाऊँ। जूता।
यौ०—पादपीठ=पैर रखने की चौकी।

पदम†—संज्ञा पुं० १. दे० "पद्म"। कमल। २. बादाम की जाति का एक जंगली पेड़। पद्माख। पद्माक।

पदमनाभ—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. सूर्य।

पदमूल—संज्ञा पुं० पैर का तलवा।

पदमैत्री—संज्ञा स्त्री० अनुप्रास।

पदयोजना—संज्ञा स्त्री० कविता के लिए पदों का जोड़ना। पद-व्यवस्था।

पदरिपु—संज्ञा पुं० काँटा।

पदवी—संज्ञा स्त्री० १. उपाधि। खिताब। ओहदा। दरजा। २. पद्धति। परिपाटी। तरीका। ३. पंथ। रास्ता।

पद-विग्रह—संज्ञा पुं० सामासिक पदों का पृथक्करण (व्या०)।

पदस्थ—वि० १. पदारूढ़। पद पर नियुक्त। पद पर वर्तमान। २. जो पैरों के बल खड़ा हो।

पदांक—संज्ञा पुं० पैरों का चिह्न।

पदाक्रांत—वि० पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।

पदाघात—संज्ञा पुं० पैर से मारना।

पदाति, पदातिक—संज्ञा पुं० १. प्यादा। पैदल सिपाही। २. नौकर। सेवक।

पदाधिकारी—संज्ञा पुं० पद पर नियुक्त। अफसर। ओहदेदार।

पदाना—क्रि० स० बहुत अधिक दिक करना। तंग करना। दौड़ाना।

पदानुग—संज्ञा पुं० अनुयायी।

पदानुसरण—संज्ञा पुं० पीछे-पीछे चलना। अनुसरण करना।

पदाम्भोज—संज्ञा पुं० चरण-कमल। कमल के समान चरण। कमल-तुल्य पद।

पदार—संज्ञा पुं० पैरों की धूल।

पदारविन्द–संज्ञा पुं० चरण-कमल । पद-पद्म ।
पदार्थ–संज्ञा पुं० १. वस्तु । चीज । सामग्री । सामान । तत्त्व । २. पद का अर्थ । शब्दों का तात्पर्य । ३. पुराणानुसार धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष । ४. वैद्यक में रस, गुण । वीर्य्य, विपाक और शक्ति ।
पदार्थवाद–संज्ञा पुं० वह मत, जिसमें आत्मा को छोड़कर केवल भौतिक पदार्थों को ही प्रधानता दी जाती है ।
पदार्थविज्ञान–संज्ञा पुं० तत्त्वविद्या । भौतिक पदार्थों और उनके व्यापार का ज्ञान करानेवाला शास्त्र । विज्ञान-शास्त्र ।
पदार्थविद्या–संज्ञा स्त्री० वह विद्या, जिसमें पदार्थों का तत्त्व बताया गया हो । विज्ञान-शास्त्र । तत्त्वज्ञान ।
पदार्पण–संज्ञा पुं० किसी स्थान में पैर रखना । किसी जगह आना या जाना (प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संबंध में) ।
पदावली–संज्ञा स्त्री० १. वाक्यों की श्रेणी । २. भजनों या पदों का संग्रह । ३. पद-माला ।
पदासन–वि० पादपीठ । पीढ़ा । बैठने के लिए आसन-विशेष ।
पदिक–संज्ञा पुं० १. पैदल सेना । २. गले में पहनने का जुगनूं नाम का गहना । ३. रत्न । हीरा ।
यौ०—पदिकहार=रत्नहार । मणिमाल ।
पदी*–संज्ञा पुं० पैदल । प्यादा ।
पदुमिनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी" ।
पद्धति–संज्ञा स्त्री० १. रीति । रस्म । रवाज । चाल । परिपाटी । २. पथ । सड़क । मार्ग । राह । ३. पंक्ति । कतार । ४. कर्म-काण्ड की पोथी । ५. ढंग । तरीका । ६. विधि । विधान । कार्य-प्रणाली ।
पद्म–संज्ञा पुं० १. कमल या कमल का फूल । पंकज । २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में का एक विशेष आकार का चिह्न, जो भाग्य-सूचक माना जाता है । ३. विष्णु का एक अस्त्र । ४. कुबेर की नौ निधियों में से एक । ५. शरीर पर के सफेद दाग । ६. पदम या पद्माख वृक्ष । ७. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील) । ८. पुराणानुसार एक नरक । ९. पुराणानुसार जंबू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश । १०. एक पुराण । ११. एक छन्द ।
पद्मकंद–संज्ञा पुं० कमल की जड़ । भसींड़ा । मुरार । भिस्सा ।
पद्मकिंजल्क—संज्ञा पुं० कमल का केसर ।
पद्मकोश—संज्ञा पुं० कमल के बीच का भाग ।
पद्मगर्भ—संज्ञा पुं० १. कमल का भीतरी भाग । २. ब्रह्मा । ३. सूर्य्य । ४. बुद्ध ।
पद्मज—संज्ञा पुं० ब्रह्मा ।
पद्मजन्मा–संज्ञा पुं० ब्रह्मा । प्रजापति । पद्म से उत्पन्न ।
पद्मनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु ।
पद्मनेत्र–संज्ञा पुं० विष्णु ।
पद्मपत्र—संज्ञा पुं० कमलदल ।
पद्मपलाश-लोचन–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण । विष्णु । २. कमलपत्र के समान नेत्र ।
पद्मपाणि–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा । २. बुद्ध की एक मूर्त्ति-विशेष । ३. सूर्य्य ।
पद्मबंध–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चित्रकाव्य, जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं जिससे एक पद्म या कमल का आकार बन जाता है ।
पद्मबीज—संज्ञा पुं० कमलगट्टा ।
पद्मयोनि–संज्ञा पुं० ब्रह्मा । प्रजापति ।
पद्मराग–संज्ञा पुं० माणिक । लाल रंग का एक मणि, जिसे 'लाल' कहते हैं ।
पद्मलांछन—संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. कुबेर । ३. राजा । ४. प्रजापति ।
पद्मलोचन—संज्ञा पुं० कमल के समान नेत्र ।
पद्मव्यूह–संज्ञा पुं० प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के लिए सेना सन्नद्ध रखने का एक ढंग ।
पद्मा–संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी । कमला । २. लवङ्ग । ३. भादों सुदी एकादशी । ४. एक नदी का नाम ।
पद्माकर–संज्ञा पुं० १. वह तालाब या झील, जिसमें कमल पैदा होते हों । २. हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ।
पद्माक्ष–संज्ञा पुं० दे० "पदम" ।

पद्मालय—संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
पद्मालया—संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी। कमला। जिसका कमल ही गृह हो।
पद्मावती—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. पटना का प्राचीन नाम। ३. पन्ना नगर का प्राचीन नाम। ४. उज्जयिनी का प्राचीन नाम। ५. एक मात्रिक छंद। ६. मनसा देवी। नदी-विशेष। ७. लोकप्रचलित कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिससे चित्तौर के राजा रत्नसेन का विवाह हुआ था। ८ गीतगोविन्दकर्त्ता जयदेव कवि की स्त्री।
पद्मासन—संज्ञा पुं० १. योग का एक आसन, जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं। योगासन-विशेष। २. ब्रह्मा। प्रजापति। ३. शिव।
पद्मिनी—संज्ञा स्त्री० १. कमलिनी। २. कमल-युक्त तालाब। ३. छोटा कमल। ४. पद्मयुक्त देश। ५. पद्मलता। नलिनी। ६. हथिनी। ७. लक्ष्मी। ८. सिंघल की राजकुमारी पद्मिनी, जिसके पाने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने युद्ध किया था। ९. चित्तौर की रानी। १०. कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। सुलक्षणा स्त्री।
यौ०—पद्मिनीवल्लभ=सूर्य्य।
पद्य—वि० १. छन्द। कविता। काव्य। कवि की कृति। २. जिसका सम्बन्ध पैरों से हो। ३. जिसका सम्बन्ध कविता से हो। कविताबद्ध।
संज्ञा पुं० पिंगल के नियमों के अनुसार नियमित मात्रा या वर्ण का छंद। कविता।
पद्यरचना—संज्ञा पुं० कविता करना। कविता बनाना।
पद्यात्मक—वि० छंदोबद्ध।
पधरना—क्रि० अ० किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन। आना।
पधराना—क्रि० स० १. आदरपूर्वक ले जाना। इज्जत से बैठाना। २. प्रतिष्ठित करना। स्थापित करना।
पधरावनी—संज्ञा स्त्री० १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने का कार्य।
पधारना—क्रि० अ० १. आना। जाना। २. आ पहुँचना। ३. चलना।
क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना। पधराना।
पन—संज्ञा पुं० १. प्रण। प्रतिज्ञा। संकल्प। २. अवस्था। आयु के चार भागों में से एक। ३. एक प्रत्यय, जिसे नामवाचक या गुण-वाचक संज्ञाओं में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं। जैसे, पागल से पागलपन।
पनकपड़ा—संज्ञा पुं० पानी से गीला कपड़ा, जो चोट लगने पर बाँधा जाता है।
पनकाल—संज्ञा पुं० बहुत अधिक वर्षा के कारण अकाल।
पनग*—संज्ञा पुं० [स्त्री० पनगिन] दे० "पन्नग"। साँप।
पनघट—संज्ञा पुं० पानी भरने का घाट।
पनच—संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी। प्रत्यंचा।
पनचक्की—संज्ञा स्त्री० पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।
पनडब्बा, पनडिब्बा—संज्ञा पुं० पान रखने का डिब्बा। पानदान।
पनडब्बी—संज्ञा स्त्री० पान रखने का छोटा डिब्बा।
पनडुब्बा—संज्ञा पुं० १. पानी में गोता लगाने-वाला। गोताखोर। २. पानी में गोता लगाकर मछली पकड़नेवाला पक्षी। ३. मुरगाबी।
पनडुब्बी—संज्ञा स्त्री० १. जल के भीतर चलनेवाली एक प्रकार की नाव। सब-मेरीन (अंग्रे०)। २. पानी में डुबकी लगानेवाला एक पक्षी।
पनपना—क्रि० अ० १. पानी पाकर फिर से हरा हो जाना। पल्लवित या अंकुरित होना। ताजा होना। बढ़ना। २. अच्छी दशा में आना।
पनबट्टा—संज्ञा पुं० पानदान। पान रखने का डिब्बा।
पनबसना—संज्ञा पुं० पान रखने का कपड़ा।
पनभरा—संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"। पानी भरनेवाला।

पनव*–संज्ञा पुं० दे० "प्रणव"। ओ३म् शब्द।
पनबाड़ी–संज्ञा पुं० १. पान बेचनेवाला। तमोली। २. पान की बाड़ी। पान का बगीचा। जहाँ पान बोए जाते हैं।
पनबार–संज्ञा पुं० १. पौधा-विशेष। २. राजपूतों की एक उपजाति।
पनवारा–संज्ञा पुं० १. पत्तल। २. पत्तल भर भोजन, जिसके द्वारा एक मनुष्य की क्षुधा-निवृत्ति हो सके।
पनस–संज्ञा पुं० कटहल का फल या वृक्ष।
पनसाखा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मशाल, जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ एक साथ जलती हैं।
पनसारी–संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।
पनसाल–संज्ञा स्त्री० १. प्याऊ। पनशाला। वह स्थान, जहाँ सर्व-साधारण को पानी पिलाया जाता हो। पौसरा। २. पानी की गहराई नापने का उपकरण।
पनसुइया या **पनसोई**–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी नाव। डोंगी।
पनसेरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पंसेरी"।
पनह*–संज्ञा स्त्री० दे० "पनाह"।
पनहरा–संज्ञा पुं० (स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी) पानी भरने का काम करनेवाला। पनभरा। कहार।
पनहा–संज्ञा पुं० १. कपड़े की चौड़ाई। २. गूढ़ आशय या तात्पर्य। भेद। मर्म। ३. चोरी का पता लगानेवाला। ४. पता। चिह्न।
पनहाना–क्रि० स० गाय-भैंस आदि का दूध दुहने के लिए उनका स्तन सुहराना।
पनहारा–संज्ञा पुं० पानी भरनेवाला नौकर। पनहरा।
पनहारिन, पनिहारिन–संज्ञा स्त्री० पानी भरनेवाली मजदूरिन।
पनहारी–संज्ञा पुं० पानी भरनेवाली स्त्री। पनिहारिन।
पनहियाभद्र–संज्ञा पुं० सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ।
पनही†–संज्ञा स्त्री० जूता। उपानह।
पना–संज्ञा पुं० आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबत। पन्ना। प्रपानक।
पनाती–संज्ञा पुं० [स्त्री० पनातिन] नाती का पुत्र। पन्ती।
पनारी–संज्ञा स्त्री० नाली। मोरी।
पनाला–संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।
पनाली–संज्ञा स्त्री० १. प्रणाली। २. जल निकलने का मार्ग। नाली। मोरी।
पनासना†–क्रि० स० पालन-पोषण करना। परवरिश करना।
पनाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. त्राण। बचाव। रक्षा। संकट या कष्ट से बचाव या रक्षा। २. रक्षा पाने का स्थान। शरण। आड़। **मुहा०**—(किसी से) पनाह माँगना=किसी से बहुत बचने की इच्छा करना।
पनिच*–संज्ञा पुं० दे० "पनच"। प्रत्यंचा।
पनियाना†–क्रि० स० १. सींचना। पानी देना। २. दिक करना।
पनियाला–संज्ञा पुं० पनियार। एक प्रकार का फल।
पनिया सोत†–वि० १. तालाब, खाईं आदि, जिसमें पानी का सोता निकला हो। २. बहुत गहरा।
पनिहा–वि० १. पानी में रहनेवाला। २. जिसमें पानी मिला हो। पानी-संबंधी। ३. पानी का साँप।
संज्ञा पुं० भेदिया। जासूस।
पनिहार–संज्ञा पुं० (स्त्री० पनिहारिन) दे० "पनहरा"।
पनी†*–संज्ञा पुं० प्रण या प्रतिज्ञा करनेवाला। दृढ़प्रतिज्ञ।
पनीर–संज्ञा पुं० [फा०] १. छेना। छेना से बना हुआ खाद्य। फाड़ कर जमाया हुआ दूध। २. दही, जिसका पानी निकाल लिया गया हो।
पनीरी–संज्ञा स्त्री० १. फूल-पत्तोंवाले छोटे पौधे, जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिए उगाए गए हों। फूल-पत्तों के बेहन या बेड़। २. वह क्यारी, जिसमें पनीरी जमाई गई हो। बेड़ या बेहन की क्यारी।
पनीला–वि० जलयुक्त। पानी मिला हुआ।

पनेरी—संज्ञा पुं० पानवाला। पान बेचनेवाला। तमोली।
पनैला—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कपड़ा। २. बेलहरा।
पन्नग—संज्ञा पुं० [स्त्री० पन्नगी] १. सर्प। साँप। *२. पन्ना। मरकत।
पन्नगपति—संज्ञा पुं० शेषनाग।
पन्नगभूषण—संज्ञा पुं० शिवजी। साँप जिनके आभूषण हों।
पन्नगारि—संज्ञा पुं० १. साँपों का शत्रु। गरुड़। २. मोर। ३. गृद्ध। ४. नेवला।
पन्नगाशन—संज्ञा पुं० गरुड़ पक्षी। साँप खाने वाला। वह पक्षी, जिसका भोजन साँप हो।
पन्नगी—संज्ञा स्त्री० नागिन।
पन्ना—संज्ञा पुं० १. रत्न-विशेष। मरकत। हरे रंग का एक रत्न। पृष्ठ। २. वरक। पत्र। ३. बुन्देलखंड का एक नगर जहाँ हीरे की खानें हैं।
पन्नी—संज्ञा स्त्री० १. सोने-चाँदी के पतले पत्तर, जिन्हें शोभा के लिए अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं। २. तबक। ३. एक भोज्य पदार्थ। ४. बारूद की एक तौल।
पन्नीसाज—संज्ञा पुं० पन्नी का काम करनेवाला।
पन्हाना‡—क्रि० अ० दे० "पिन्हाना"।
क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना। २. दे० "पहनाना"।
पपड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पपड़ी] १. छिलका। २. चूर्ण। ३. टुकड़ा। ४. रोटी का छिलका।
पपड़ियाना—क्रि० अ० १. किसी वस्तु की परत का सूखकर सिकुड़ जाना। २. इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी जम जाय।
पपड़ी—संज्ञा स्त्री० १. छिलका। परत। २. उर्द या मूँग के बने पापड़। ३. किसी वस्तु की ऊपरी परत। घाव के ऊपर मवाद के सूख जाने से बना हुआ आवरण या परत। खुरंड। ४. सोहन पपड़ी नामक मिठाई। ५. पकवान।
पपड़ीला—वि० जिस पर पपड़ी जमी हो। पपड़ीदार।
पपनी—संज्ञा स्त्री० बरौनी। पलक।
पपरा—संज्ञा पुं० दे० "पपड़ा"। छिलका।
पपरी—संज्ञा स्त्री० दे० "पपड़ी"।
पपी—संज्ञा पुं० सूर्य्य। रवि।
पपीता—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पके फल खाए जाते हैं। अंड खरबूजा। पपैया।
पपीलि*—संज्ञा स्त्री० दे० पिपीलिका। चींटी।
पपीहरा—संज्ञा पुं० दे० "पपीहा"।
पपीहा—संज्ञा पुं० चातक। एक पक्षी, जो वसंत और वर्षा में बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है। कहा जाता है कि यह पक्षी स्वाती में बरसनेवाले मेघों का ही जल पीता है।
पपोटा—संज्ञा पुं० पलक। आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा। दृगंचल।
पपोलना—क्रि० अ० बिना दाँत के मुँह चलाना। चुभलाना।
पबारना—क्रि० स० १. फेंकना। २. उखाड़ना।
पबलिक—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दे० "पब्लिक"।
पब्बय*—संज्ञा पुं० पहाड़।
पब्बि*—संज्ञा पुं० दे० "पवि"। वज्र।
पब्लिक—संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) जनता। जनसाधारण।
वि० सार्वजनिक। जनसाधारण का।
पब्लिक वर्क्स—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) सर्वसाधारण के लिए सरकार की ओर से किए जानेवाले निर्माण-सम्बन्धी कार्य।
पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट—(पी० डब्लू० डी०) संज्ञा पुं० (अंग्रे०) वह सरकारी विभाग, जिसके द्वारा जनसाधारण के लिए निर्माण-सम्बन्धी कार्य हों।
पमार—संज्ञा पुं० दे० "परमार"।
पम्पा—संज्ञा स्त्री० किष्किन्धा के समीप एक सरोवर का नाम।
पय—संज्ञा० पुं० १. दूध। २. जल। पानी। ३. अन्न।
पयद*—संज्ञा पुं० १. दे० "पयोद"। बादल। २. स्तन।
पयधि*—संज्ञा पुं० दे० "पयोधि"। समुद्र।
पयनिधि*—संज्ञा पुं० दे० "पयोनिधि"। समुद्र।
पयस्विनी—संज्ञा स्त्री० १. दूध देनेवाली गाय। २. बकरी। ३. एक नदी जो चित्रकूट में है।

पयस्वी–वि० [स्त्री० पयस्विनी] १. पानी वाला। जिसमें जल हो। २. दूधयुक्त।
पयहारी–संज्ञा पुं० केवल दूध पीकर रहनेवाला तपस्वी या साधु।
पयान–संज्ञा पुं० प्रयाण। गमन। जाना।
पयार, पयाल–संज्ञा पुं० धान, कोदो आदि के सूखे डंठल, जिनके दाने झाड़ लिये गए हों। पुवाल।
मुहा०–पयाल गाहना या झाड़ना=व्यर्थ परिश्रम या सेवा करना।
पयोज–संज्ञा पुं० कमल।
पयोद–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।
पयोधर–संज्ञा पुं० १. स्तन। थन। २. मेघ। बादल। ३. नागरमोथा। ४. कसेरू। ५. तालाब। ६. पर्वत। पहाड़। समुद्र। ७. दोहा का ११वाँ और छप्पय का २७वाँ भेद।
पयोधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।
पयोनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।
पयोमुख–वि० दुधमुँहा।
पयोव्रत–संज्ञा पुं० यौ० दूध या जल के आहार पर व्रत करना। व्रत-विशेष।
परंच–अव्य० और भी। तो भी। परंतु।
परंतप–वि० १. शत्रुओं को दुःख देनेवाला। २. इन्द्रियजित।
परंतु–अव्य० पर। तो भी। किन्तु। लेकिन। मगर।
परंदा–संज्ञा पुं० [फा०] परिंदा। पक्षी। चिड़िया।
परंपरा–संज्ञा स्त्री० १. रीति। प्रथा। परिपाटी। क्रम से एक के पीछे दूसरा। सिलसिला। अनुक्रम। पूर्वापर क्रम। २. वंशपरंपरा। संतति।
परंपरागत–वि० सनातन। परंपरा से चला आता हुआ। जो सब दिन से होता चला आया हो।
पर–वि० १. दूसरा। अन्य। और। गैर। पराया। दूसरे का। भिन्न। अतिरिक्त। २. पीछे का। बाद का। ३. दूर। तटस्थ। ४. श्रेष्ठ। सबके ऊपर। ५. प्रवृत्त। लीन। तत्पर।
प्रत्य० सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। जैसे, उस पर। तुम पर।
अव्य० १. पश्चात्। पीछे। २. परंतु। किंतु। लेकिन। तो भी।
संज्ञा पुं० पंख। पक्ष। चिड़ियों का डैना।
मुहा०–पर कट जाना=शक्ति या बल का आधार न रह जाना। अशक्त या निर्बल हो जाना। पर जमना=१. पंख निकलना। २. शरारत सूझना। पर जलना=१. हिम्मत न होना। साहस न होना। २. गति न होना। पहुँच न होना। पर न मारना=पाँव न रख सकना। न आना।
परई–संज्ञा स्त्री० मिट्टी का एक बरतन।
परकटा–वि० यौ० जिसके पंख कट गए हों। पंख कटा हुआ।
परकना*†–क्रि० अ० १. चसका लगना। अभ्यास पड़ना। आदत पड़ना। २. परचना। हिलना। ३. धड़क खुलना।
परकसना*–क्रि० अ० जगमगाना। प्रकाशित होना। प्रकट होना।
परकाज–संज्ञा पुं० दूसरे का काम। परकार्य।
परकाजी–वि० परोपकारी। परस्वार्थी। दूसरे का काम करनेवाला।
परकाना†–क्रि० स० चसका लगाना। अभ्यास डलवाना। परचाना।
परकार–संज्ञा पुं० [फा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार।
*†–संज्ञा पुं० दे० "प्रकार"।
परकारना–क्रि० स० १. परकार से वृत्त बनाना। २. चारों ओर घुमाना।
परकाल–संज्ञा पुं० दे० "परकार"।
परकाला–संज्ञा पुं० १. सीढ़ी। जीना। २. देहलीज। चौखट। ३. टुकड़ा। खंड। ४. शीशे का टुकड़ा। ५. चिनगारी।
मुहा०–आफत का परकाला=गजब करनेवाला। प्रचंड या भयानक मनुष्य।
परकीय–वि० दूसरे का। पराया।
परकीया–संज्ञा स्त्री० १. पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री। परपुरुषगामिनी स्त्री। २. दूसरे की स्त्री। ३. नायिका-विशेष।
परकोटा–संज्ञा पुं० १. किला या गढ़ की

चहारदीवारी। किसी स्थान के चारों ओर उठाई हुई दीवार। २. धुस। बाँध।

परख—संज्ञा स्त्री० १. गुण-दोष स्थिर करने के लिए अच्छी तरह देख-भाल। परीक्षा। जाँच। पहचान। २. खोज। अनुसन्धान।

परखना—क्रि० स० १. गुण-दोष स्थिर करने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना। परीक्षा करना। जाँच करना। अनुसन्धान करना। २. भला और बुरा पहचानना। कसौटी पर कसना। ३. प्रतीक्षा करना। इन्तजार करना।

परखाना—क्रि० स० १. जँचवाना। परीक्षा कराना। २. सहेजवाना। सँभलवाना। ३. इन्तजारी कराना।

परखैया—संज्ञा पुं० परखनेवाला। जाँचनेवाला। अनुसंधान करनेवाला।

परग—संज्ञा पुं० पग। कदम। डग।

परगटना*—क्रि० अ० प्रकट होना। खुलना। क्रि० स० प्रकट या जाहिर करना।

परगना—संज्ञा पुं० [फा०] बहुत से गाँवों का एक समूह। तहसील का वह भाग, जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों।

परगसना*—क्रि० अ० प्रकाशित होना। प्रकट होना।

परगाछा—संज्ञा पुं० एक प्रकार के पौधे, जो प्रायः गरम देशों में दूसरे पेड़ों पर उगते हैं।

परगास*—संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।

परघनी या परघरी—संज्ञा स्त्री० सोना-चाँदी आदि के ढालने का साँचा या परघी।

परचंड*—वि० दे० "प्रचंड"।

परचल*†—संज्ञा स्त्री० जान-पहचान। जानकारी। परिचय।

परचना—क्रि० अ० १. हिलना-मिलना। चसका लगना। २. धड़क खुलना।

परचा—संज्ञा पुं० [फा०] १. कागज का टुकड़ा। चिट। पत्र। २. पुरजा। खत चिट्ठी। ३. परीक्षा का प्रश्न-पत्र ४. परिचय। जानकारी। ५. परख परीक्षा। जाँच। ६. प्रमाण। सबूत।

परचाना—क्रि० स० १. हिलाना-मिलाना आकर्षित करना। घनिष्ठता पैदा करना २. धड़क खोलना। संकोच हटाना। ३. चसका लगाना। टेव डालना। ४. जलाना।

परचारना*—क्रि० स० दे० "प्रचारना"।

परचून—संज्ञा पुं० फुटकर सामग्री। आटा, दाल, मसाला आदि सामग्री।

परचूनिया या परचूनी—संज्ञा पुं० फुटकर सामान बेचनेवाला। आटा, दाल आदि बेचनेवाला बनिया। मोदी।

परछती—संज्ञा स्त्री० १. घर या कोठरी के भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक बनाई हुई पाटन, जिस पर सामान रखते हैं। टाँड़। पाटा। २. फूस आदि का छोटा छप्पर।

परछन—संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति, जिसमें बारात द्वार पर आने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती करतीं तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना—क्रि० स० वर-वधू की आरती करना। दे० "परछन"।

परछाईं—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिबिम्ब। प्रतिच्छाया। छायाकृति। २. छाया।

मुहा०—परछाईं से डरना या भागना=१. बहुत डरना। अत्यंत भयभीत होना। २. पास तक आने से डरना।

परछालना*—क्रि० स० धोना। प्रक्षालन।

परछिद्र—संज्ञा पुं० परदोष। दूसरे का दोष।

परज—संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

वि० परजात। दूसरे से उत्पन्न। दूसरी जाति का।

परजकर—संज्ञा पुं० जमीन में बसने के लिए जमीन के स्वामी को दिया जानेवाला कर।

परजवट—संज्ञा पुं० कर। शुल्क। भाड़ा। किराया। राजा या जमींदार की भूमि में बसने के लिए दिया जानेवाला कर।

परजन*—संज्ञा पुं० दे० "परिजन"।

परजन्य*—संज्ञा पुं० दे० "पर्जन्य"।

परजरना*—क्रि० अ० १. जलना। दहकना। २. क्रुद्ध होना। कुढ़ना। डाह करना।

परजा—संज्ञा स्त्री० १. प्रजा। रैयत। २. आश्रित जन। ३. जमींदार की जमीन

पर खेती आदि करनेवाला असामी।
परजात–संज्ञा स्त्री० दूसरी जाति। अन्य जाति का व्यक्ति। कोयल (काव्य में)। वि० दूसरी जाति का। दूसरे से उत्पन्न।
परजाता–संज्ञा पुं० दे० "पारिजात"। एक पेड़, जिसमें गुच्छों में फूल लगते हैं।
परजाय*–संज्ञा पुं० दे० "पर्याय"।
परजौट–संज्ञा पुं० घर बनाने के लिए सालाना किराए पर जमीन लेने-देने का नियम।
परतंचा–संज्ञा स्त्री दे० "पतंचिका"।
परतंत्र–वि० परवश। पराधीन। दूसरे के शासन या नियंत्रण में।
परतंत्रता–संज्ञा स्त्री० पराधीनता। गुलामी।
परतः–अव्य० १. अन्य या दूसरे से। २. पश्चात्। पीछे। ३. परे। आगे।
परत–संज्ञा स्त्री० १. सतह के ऊपर का हिस्सा। स्तर। तह। छिलका। २. पुट।
परतर–वि० पीछे या बाद का।
परतल–संज्ञा पुं० लादनेवाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा। डेरा-डंडा। खुरजी।
परतला–संज्ञा पुं० चपरास। चपरास लगाने की पट्टी। तलवार लटकाने की चमड़े की पट्टी।
परता–संज्ञा पुं० १. परखी। २. सूत कातने का यंत्र। ३. व्यय और लाभ मिलाकर भाव।
परतिचा*–संज्ञा स्त्री० दे० "पतंचिका"।
परती–संज्ञा स्त्री० बिना जोती हुई छोड़ दी गई जमीन या खेत। बंजर। ऊसर भूमि।
परतीत*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति"।
परतेजना*–क्रि० स० परित्याग करना। छोड़ना।
परत्र–वि० १. अन्यत्र। २. स्वर्ग। परलोक।
परत्व–संज्ञा पुं० १. पर का भाव। पार्थक्य। २. श्रेष्ठता। ३. तत्परता। ४. पहले या पूर्व होने का भाव।
परथन†–संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।
परदा–संज्ञा पुं० १. आड़ करनेवाली कोई वस्तु। व्यवधान। २. लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति। आड़। ओट। छिपाव। ३. ओट करने के काम में आनेवाला कपड़ा, चिक आदि। पट। ४. तह। परत। ५. तल।
मुहा०–परदा उठाना या खोलना=गुप्त बात को प्रकट करना। भेद खोलना। परदा डालना या रखना=छिपाना। प्रकट न होने देना। आँख पर परदा पड़ना=सुझाई न देना। समझ में न आना। ढँका परदा= १. छिपा हुआ दोष या कलंक। २. बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्यादा। परदा रखना=१. परदे के भीतर रहना। सामने न होना। २. छिपाना। दुराव रखना। परदा होना= १. स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम। २. छिपाव होना। दुराव होना। परदे में रखना=१. स्त्रियों को घर के भीतर रखना, बाहर लोगों के सामने न होने देना। २. छिपा रखना। प्रकट न होने देना। ३. स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल।
परदाज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सजाना। चित्र आदि के चारों ओर बेलबूटे बनाना। चित्रों में रंगत लाने के लिए बहुत पास-पास महीन बिंदु लगाना।
परदादा–संज्ञा पुं० [स्त्री० परदादी।] दादा का पिता। प्रपितामह।
परदानशीन–वि० [फा०] परदे में रहनेवाली। अंतःपुरवासिनी (स्त्री)।
परदापोशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी रहस्य या दोष को छिपाना।
परदार–वि० [फा०] जिसके पर हों। परोंवाला।
परदुम्न*–संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"। श्रीकृष्ण के पुत्र।
परदेश–संज्ञा पुं० विदेश। दूसरा देश। स्वदेश से भिन्न। पराया स्थान।
परदेशी–वि० विदेशी। दूसरे देश का। अन्य देशवासी।
परद्वेष्टा–संज्ञा पुं० दूसरे की हानि करनेवाला।
परद्रोही–वि० परपीड़क। दूसरों का अनिष्ट करनेवाला।
परधान*–वि० दे० "प्रधान"।

संज्ञा पुं० दे० "परिखान"।

परधाम–संज्ञा पुं० १. वैकुंठ धाम। स्वर्ग। परलोक। २. विष्णु।

परन*–संज्ञा पुं० १. प्रण। हठ। टेव। प्रतिज्ञा। टेक। २. दे० "पर्ण"।

संज्ञा स्त्री० बान। आदत।

परना*†–क्रि० अ० दे० "पड़ना"।

परनाना–संज्ञा पुं० [स्त्री० परनानी] नाना का पिता।

परनाला–संज्ञा पुं० [स्त्री० परनाली] पनाला। मोरी। नाबदान।

परनि*–संज्ञा स्त्री० बान। स्वभाव। आदत। टेव।

परनौत*–संज्ञा स्त्री० प्रणाम।

परन्तप–संज्ञा पुं० विजयी। शत्रुनाशक। वीर।

परन्तु–अव्य० किन्तु। लेकिन।

परपंच*†–संज्ञा पुं० दे० "प्रपंच"।

परपंचक*–वि० दे० "परपंची"।

परपंची*†–वि० १. बखेड़िया। फसादी। २. मायावी। धूर्त्त।

परपक्ष–संज्ञा पुं० विरुद्ध पक्ष। विपक्षी की बात।

परपट–संज्ञा पुं० १. चौरस मैदान। समतल भूमि। २. दूसरे का वस्त्र। ३. पर्पट औषध। पित्तपापरा।

परपटी–संज्ञा स्त्री० १. सौराष्ट्र, गुजरात या काठियावाड़ की मिट्टी। २. गोपीचन्दन। ३. पावड़ी। पपड़ी। ४. स्वर्णपर्पटी औषध।

परपरा–वि० परपरानेवाला। जीभ में तीक्ष्ण लगनेवाला। चुनचुनानेवाला। पर पर शब्द के साथ टूटनेवाला।

परपराना–क्रि० अ० मिर्च आदि कड़ुई चीजों का जीभ में तीक्ष्ण लगना। परपराहट। चुनचुनाना।

परपीड़क–संज्ञा पुं० १. दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला। जालिम। २. पराई पीड़ा को समझनेवाला। ३. शत्रु को दंड देनेवाला।

परपुरुष–संज्ञा पुं० पति को छोड़कर अन्य पुरुष।

परपूठा*–वि० परिपुष्ट। पक्का।

परपूर–वि० पूर्ण। भरपूर। परिपूर्ण।

परपैठ–संज्ञा पुं० असली हुंडी की तीसरी प्रति या नकल। हुंडी की दूसरी प्रति का नाम पैठ और तीसरी प्रति का नाम परपैठ।

परपोता–संज्ञा पुं० प्रपौत्र। पोते का बेटा। पौत्र का पुत्र।

परब–संज्ञा पुं० दे० "पर्व"।

परबल*–वि० दे० "प्रबल"। बलवान्। उग्र।

परबस†–वि० दे० "परवश"। दूसरे के वश में। दूसरे के अधीन। परतंत्र।

परबसताई*–संज्ञा स्त्री० परतंत्रता। पराधीनता।

परबा–संज्ञा स्त्री० प्रतिपदा। शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पहली तिथि।

परबाल–संज्ञा पुं० १. रोयाँ। आँख की पलक पर का बाल, जिससे पीड़ा होती है। २. *दे० "प्रवाल"। मूँगा।

परबीन*–वि० दे० "प्रवीण"।

परबोध*–संज्ञा पुं० दे० "प्रबोध"।

परब्रह्म–संज्ञा पुं० निर्गुण ब्रह्म। परमात्मा।

परभाइ*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

परभाग्योपजीवी–वि० दूसरे के सहारे जीवन बितानेवाला। पराश्रित।

परभात*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभात"।

परभाव*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

परभृत–संज्ञा पुं० स्त्री० कोकिल। कोयल।

परम–वि० १. सर्वश्रेष्ठ। २. महान्। उत्कृष्ट। अग्रगण्य। सबसे बढ़ा-चढ़ा। ३. प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० १. परमात्मा। शिव। २. विष्णु।

परमगति–संज्ञा स्त्री० मोक्ष। मुक्ति। उत्तम गति। परलोक-प्राप्ति। सद्गति।

परम तत्त्व–संज्ञा पुं० मूल तत्त्व, जिससे संपूर्ण विश्व का विकास है। ब्रह्म। परमात्मा।

परम धाम–संज्ञा पुं० वैकुंठ। स्वर्ग। मुक्ति-पद।

परम पद–संज्ञा पुं० मुक्ति। सर्वश्रेष्ठ स्थान। मोक्ष।

परमपिता–संज्ञा पुं० परमेश्वर। परमात्मा।

परमपुरुष–संज्ञा पुं० परमात्मा।

परमब्रह्म–संज्ञा पुं० परमेश्वर। परमात्मा।

परमभट्टारक–संज्ञा पुं० [स्त्री० परमभट्टारिका] राजाओं की एक प्राचीन उपाधि।

परममित्र–संज्ञा पुं० उत्कृष्ट मित्र। सर्वश्रेष्ठ मित्र।

परमल–संज्ञा पुं० ज्वार या गेहूँ का भुना हुआ दाना। चर्वण। भूँजा-विशेष।

परमहंस–संज्ञा पुं० १. ज्ञान की परमावस्था को पहुँचा हुआ संन्यासी। अवधूत। २. परमात्मा। परमज्ञानी। ३. संन्यासियों का एक भेद।

परमा–संज्ञा स्त्री० शोभा। सुन्दरता।

परमाणु–संज्ञा पुं० अत्यन्त सूक्ष्म अणु। अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, जिससे उसका और कोई छोटा भाग न हो। पृथ्वी, जल, तेज और वायु का छोटे से छोटा भाग, जिसके फिर और विभाग न हो सकें। अत्यन्त सूक्ष्म अणु।

परमाणुवाद–संज्ञा पुं० सृष्टि को परमाणुओं से रचित मानने का सिद्धान्त।

परमात्मा–संज्ञा पुं० ईश्वर। ब्रह्म।

परमानंद–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म के अनुभव का सुख। ब्रह्मानंद। २. आनंद-स्वरूप ब्रह्म। अत्यन्त आनन्द।

परमान†–संज्ञा पुं० १. प्रमाण। सबूत २. यथार्थ बात। सत्य बात। ३. अवधि हद। सीमा।

परमानना*–क्रि० स० १. प्रमाण मानना ठीक समझना। २. स्वीकार करना

...ान्न–संज्ञा पुं० दूध। खीर। पक्वान्न

...ु–संज्ञा स्त्री० अधिक से अधिक आयु जीवन-काल की सीमा, जो १०० अथवा १२५ वर्ष मानी जाती है। अधिक आयु। बड़ी उमर।

...र–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक शाखा। पँवार।

...र्थ–संज्ञा पुं० १. सबसे श्रेष्ठ वस्तु। सार वस्तु। सर्वोत्तम कार्य। धर्मकार्य। दानपुण्य का कार्य। २. कीर्ति। ३. ज्ञान। ४. मोक्ष। मुक्ति।

परमार्थवादी–संज्ञा पुं० ज्ञानी। तत्त्वज्ञ। वेदांती।

परमार्थी–वि० १. धर्मकार्य करनेवाला। दान-पुण्य करनेवाला। २. यथार्थ तत्त्व को ढूँढ़नेवाला। तत्त्व-जिज्ञासु। ३. मोक्ष चाहने-वाला। मुमुक्षु।

परमिति–संज्ञा स्त्री० चरम या अन्तिम सीमा। मर्यादा।

परमुख*–वि० १. विमुख। पराङ्मुख। पीछे फिरा हुआ। २. प्रतिकूल आचरण करनेवाला।

परमेश, परमेश्वर–संज्ञा पुं० ईश्वर। पर-मात्मा। भगवान्। परब्रह्म।

परमेश्वरी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

परमेष्ट–वि० परमप्रिय। जो परम इष्ट हो।

परमेष्ठ–संज्ञा पुं० प्रजापति। ब्रह्मा।

परमेष्ठी–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २. विष्णु। ३. शिव। ४. गुरु-विशेष।

परमोद*–संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद"।

परमोदना*†–क्रि० स० मीठी-मीठी बातें करके अपनी तरफ मिलाना।

परयंक*–संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

परलउ, परलय*–संज्ञा पुं० प्रलय। सृष्टि का नाश या अंत।

परला–वि० [स्त्री० परली] उस ओर का। उधर का। दूसरी ओर का।

मुहा०–परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का। अत्यंत। बहुत अधिक।

परलै*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रलय"।

परलोक–संज्ञा पुं० १. वह स्थान, जो स्थूल शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है। जैसे, स्वर्ग, वैकुंठ आदि। २. मृत्यु के उपरांत आत्मा को दूसरी स्थिति की प्राप्ति। जन्मान्तर।

मुहा०–परलोक सिधारना=मरना।

यौ०–परलोकवासी=मृत। मरा हुआ।

परलोकगमन–संज्ञा पुं० मृत्यु। निधन। देहावसान।

परवर*–संज्ञा पुं० परवल। एक तरकारी।

परवरदिगार—संज्ञा पुं० [फा०] परमेश्वर। भरण-पोषण करनेवाला।

परवरिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] पालन-पोषण। भरण-पोषण।

परवल—संज्ञा पुं० एक लता, जिसके फलों की तरकारी बनती है।

परवश, परवश्य—वि० पराधीन। परतंत्र।

परवश्यता—संज्ञा स्त्री० पराधीनता। परतंत्रता।

परवस्ती*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "परवरिश"।

परवा—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिपदा। पक्ष की पहली तिथि। पड़वा। परिवा। २. [फा०] दे० "परवाह"। चिंता। खटका। आशंका। ३. ध्यान। खयाल। ४. आसरा।

परवान*—संज्ञा पुं० १. दे० "प्रमाण"। सबूत। २. यथार्थ या सत्य बात। ३. सीमा। मिति। अवधि।

परवानगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जाने की आज्ञा या इजाजत। अनुमति। आज्ञा। मंजूरी।

परवानना*—क्रि० स० ठीक समझना। मान लेना।

परवाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. आज्ञापत्र। २. फतिंगा। पतंग।

परवाय—संज्ञा पुं० आच्छादन। ढक्कन।

परवाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "चिन्ता"। फिक्र।

संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

परबी—संज्ञा स्त्री० पर्व-काल। त्योहार का दिन।

परवेल*—संज्ञा पुं० हलकी बदली के बीच दिखाई पड़नेवाला चन्द्रमा के चारों ओर का घेरा। चाँद की अथाई। मंडल।

परश—संज्ञा पुं० १. पारस पत्थर। रत्न-विशेष। २. स्पर्श। छूना।

परशु—संज्ञा पुं० फरसा। एक प्रकार का अस्त्र। कुठार। एक प्रकार की कुल्हाड़ी। तबर। भलुआ।

परशुधर—संज्ञा पुं० परशु धारण करनेवाले। परशुराम।

परशुराम—संज्ञा पुं० जमदग्नि ऋषि के पुत्र, जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया था।

परस—संज्ञा पुं० १. स्पर्श। छूना। २. पारस पत्थर।

परसन*—संज्ञा पुं० छूना। छूने का काम या भाव।

वि० प्रसन्न। खुश।

परसना*—क्रि० स० १. छूना। स्पर्श करना। २. स्पर्श कराना।

क्रि० स० परोसना।

परस पखान—संज्ञा पुं० दे० "पारस"। पारस पत्थर।

परसा—संज्ञा पुं० १. फरसा। दे० "परशु"। २. परोसी हुई पत्तल। पत्तल। ३. एक मनुष्य के खाने भर का भोजन।

परसाद*‡—संज्ञा पुं० दे० "प्रसाद"।

परसाना*—क्रि० स० १. छुलाना। २. भोजन परोसवाना।

परसाल—अव्य० १. गत वर्ष। २. आगामी वर्ष।

परसु*—संज्ञा पुं० दे० "परशु"। फरसा।

परसूत*‡—वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रसूत"।

परसेद*—संज्ञा पुं० दे० "प्रस्वेद"।

परसों—अव्य० १. बीते दिन से पहले का दिन। २. आगामी दिन के बाद का दिन।

परसौंहाँ—वि० छूनेवाला। स्पर्श करनेवाला।

परस्पर—क्रि० वि० आपस में। एक दूसरे के साथ।

परहरना*—क्रि० स० त्यागना। छोड़ना।

परहार‡—संज्ञा पुं० १. दे० "प्रहार"। २. दे० "परिहार"।

परहित—संज्ञा पुं० परोपकार। दूसरों की भलाई।

परहेज—संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातों से बचना। खाने-पीने आदि का संयम। २. दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

परहेजगार—संज्ञा पुं० [फा०] संयमी। परहेज करनेवाला।

परहेलना*—क्रि० स० निरादर करना। तिरस्कार करना। अनादर करना।

परांठा—संज्ञा पुं० घी या तेल लगाकर तवे पर सेंकी हुई चपाती। परौठा।

परा–संज्ञा स्त्री० १. चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी। २. वह विद्या, जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है, जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। उपनिषद्-विद्या। ३. मुक्ति। मोक्ष। ४. सर्वोपरि। सबसे बड़ा।
संज्ञा पुं० पंक्ति। कतार।

पराई–संज्ञा स्त्री० दूसरे की। अन्य की। गैर की।

पराक–संज्ञा पुं० १. व्रत-विशेष। २. प्रायश्चित्त-विशेष। ३. तलवार। ४. क्षुद्र रोग-कीटाणु।

पराकाष्ठा–संज्ञा स्त्री० चरम सीमा। सीमांत। अन्त।

पराक्रम–संज्ञा पुं० (वि० पराक्रमी) १. पौरुष। बल। २. शक्ति। पुरुषार्थ। उद्योग।

पराक्रमी–वि० १. बलवान्। बलिष्ठ। २. बहादुर। शूर। ३. उद्योगी। पुरुषार्थी।

पराग–संज्ञा पुं० १. पुष्परज। २. धूलि। रज। ३. एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण, जिसे लगाकर स्नान किया जाता है। ४. चंदन। ५. उपराग।

पराग-केसर–संज्ञा पुं० फूलों के बीच में के बारीक सूत, जिनकी नोकों पर पराग लगा रहता है।

परागना*–क्रि० अ० अनुरक्त होना। मोहित होना।

पराङ्मुख–वि० १. विमुख। मुँह फेरे हुए। २. उदासीन। ३. विरुद्ध।

पराजय–संज्ञा स्त्री० हार। जीत का उल्टा।

पराजित–वि० हारा हुआ। परास्त।

पराजिता–संज्ञा स्त्री० एक लता।
वि० हारी हुई।

परात–संज्ञा स्त्री० थाल। बड़ी थाली। थाली के आकार का एक बड़ा बरतन।

पराती–संज्ञा स्त्री० परात। थाली।
संज्ञा पुं० प्रातःकाल गाने योग्य भजन। प्रभाती।

परात्पर–वि० सर्वश्रेष्ठ। जिसके परे कोई न हो।
संज्ञा पुं० १. परमात्मा। २. विष्णु।

परात्मा–संज्ञा पुं० परमात्मा।

परावन–संज्ञा पुं० फ़ारस देश का घोड़ा।

पराधीन–वि० परवश। परतंत्र।

पराधीनता–संज्ञा स्त्री० परतंत्रता। दूसरे की अधीनता।

पराना*†–क्रि० अ० भागना।

परान्न–संज्ञा पुं० पराया अन्न। दूसरे का दिया हुआ भोजन।

पराभव–संज्ञा पुं० १. पराजय। हार। २. तिरस्कार। अपमान। ३. विनाश।

पराभिक्ष–संज्ञा पुं० वानप्रस्थ-विशेष। गृहस्थों के घरों से थोड़ी-सी भिक्षा लेकर वन में निर्वाह करनेवाला।

पराभूत–वि० १. पराजित। हारा हुआ। परास्त। २. नष्ट। ध्वस्त।

परामर्श–संज्ञा पुं० १. मंत्रणा। सलाह। विचार। सम्मति। २. विवेचन। ३. युक्ति।

परामृष्ट–वि० १. पकड़कर खींचा हुआ। २. पीड़ित। ३. विचारा हुआ। निर्णीत।

परामोद–संज्ञा पुं० फुसलावा। भुलावा। बहकावा। झाँसा।

परायण–वि० १. गत। गया हुआ। २. प्रवृत्त। तत्पर। लगा हुआ।

परायत्त–वि० पराधीन।

पराया–वि० [स्त्री० पराई] १. दूसरे का। अन्य का। २. जो आत्मीय न हो। बिराना। गैर।

परायु–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

परार*–वि० दे० "पराया"।

परार्थ–वि० दूसरे का काम। दूसरे का उपकार।
वि० जो दूसरे के मतलब का हो। दूसरे के लिए।

परार्द्ध–संज्ञा पुं० १. महाशंख। अन्तिम संख्या। २. ब्रह्मा की आधी आयु।

परार्द्ध्य–वि० प्रधान। श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

पराल–संज्ञा पुं० पलाल। घास। तृण।

परावत–संज्ञा पुं० फालसा।

परावन–संज्ञा पुं० १. एक साथ बहुत से लोगों

का भागना। भगदड़। पलायन। २. पर्व। पुण्यकाल।

परावर्त—संज्ञा पुं० १. लौटना। पलटाव। २. लेन-देन।

परावर्तन—संज्ञा पुं० [वि० परावर्त्तित] लौटना। पलटना। पीछे फिरना। प्रत्यावर्त्तन।

परावह—संज्ञा पुं० वायु के सात भेदों में से एक।

परावृत्त—वि० फेरा हुआ। बदला हुआ। पलटाया या उलटा हुआ।

परावृत्ति—संज्ञा स्त्री० पलटाव। फेरा।

परावा—संज्ञा पुं० दे० "पराया"।

पराशर—संज्ञा पुं० १. एक ऋषि, जो पुराणानुसार वशिष्ठ के पौत्र थे। २. एक प्रसिद्ध स्मृतिकार। व्यास के पिता।

पराश्रय—संज्ञा पुं० पराधीनता। परवशता। दूसरे का सहारा या अवलम्ब। वि० पराधीन। परवश।

पराश्रित—वि० परवश। परतंत्र। दूसरे पर निर्भर।

परास*†—संज्ञा पुं० दे० "पलाश"।

परास्त—वि० पराजित। हारा हुआ। विजित। ध्वस्त। पराभूत।

पराह्न—वि० अपराह्न। दोपहर के बाद का समय। तीसरा पहर।

परि—उप० एक उपसर्ग, जिसके लगने से शब्द में इन अर्थों की वृद्धि होती है—चारों ओर—जैसे, परिक्रमण। अच्छी तरह—जैसे, परिपूर्ण। अतिशय—जैसे, परिवर्द्धन। पूर्णता—जैसे, परित्याग। दोषाख्यान—जैसे, परिहास। नियम, क्रम—जैसे, परिच्छेद।

परिक—संज्ञा स्त्री० खराब चाँदी। खोटी चाँदी।

परिकर—संज्ञा पुं० १. पर्यंक। पलँग। २. परिवार। ३. वृन्द। समूह। ४. अनुयायियों का दल। अनुचरवर्ग। सहकारी। ५. समारंभ। तैयारी। ६. एक अर्थालंकार, जिसमें अभिप्राय भरे हुए विशेषणों के साथ विशेष्य आता है। ७. कमरबन्द। कटिबन्धन। ८. विवेक।

परिकरांकुर—संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार, जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग साभिप्राय आता है।

परिकर्म—संज्ञा पुं० स्नान, उबटन लगाना आदि। शरीर-संस्कार-मात्र।

परिकल्पन—संज्ञा पुं० छल। कपट। प्रवंचना, धोखाधड़ी।

परिकल्पना—संज्ञा स्त्री० १. उपाय। २. चिन्ता। ३. चेष्टा। उद्योग। ४. कर्म। क्रिया।

परिकीर्ण—वि० १. व्याप्त। विस्तृत। २. समर्पित।

परिकीर्तन—संज्ञा पुं० १. प्रस्ताव। २. स्तुति। बड़ाई। प्रतिष्ठा। प्रशंसा।

परिकूट—संज्ञा पुं० नगर के फाटक की खाईं।

परिक्रमण—संज्ञा पुं० १. टहलना। घूमना। फेरी देना। २. परिक्रमा।

परिक्रमा—संज्ञा स्त्री० १. चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। प्रदक्षिणा। २. किसी तीर्थ या मंदिर के चारों ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग।

परिक्षत—वि० नष्ट। भ्रष्ट।

परिक्षव—संज्ञा पुं० छींक।

परिक्षिप्त—वि० खाई आदि से घिरा हुआ।

परिक्षीण—वि० निर्धन। कंगाल।

परिखन—वि० रखवाली या चौकसी करनेवाला। रक्षक।

परिखना†—क्रि० स० दे० "परखना"। क्रि० अ० आसरा देखना।

परिखा—संज्ञा स्त्री० खाई। खंदक।

परिख्यात—वि० प्रसिद्ध। विख्यात।

परिगणन—संज्ञा पुं० [वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य] भली भाँति गिनना। शुमार करना।

परिगणना—संज्ञा पुं० गिनती।

परिगणित—वि० ठीक-ठीक गिना हुआ।

परिगणित जाति—संज्ञा पुं० यौ० हिन्दुओं की वे जातियाँ, जिनकी अलग गणना हो और जिनको विशेष सुविधाएँ दी जायँ। पिछड़ी हुई जातियाँ।

परिगत—वि० १. प्राप्त। लब्ध। २. बीता हुआ। गत। ३. मरा हुआ। मृत। ४. भूला हुआ। विस्मृत। ५. विदित। ज्ञात।

परिगह–संज्ञा पुं० आश्रित जन । संगी-साथी ।
परिगुंठित–वि० ढका हुआ । छिपा हुआ ।
परिगृहीत–वि० १. स्वीकृत । मंजूर । २. मिला हुआ । शामिल ।
परिगृह्या–वि० धर्मपत्नी । विवाहिता स्त्री ।
परिग्रह–संज्ञा पुं० [वि० परिग्राह्य] १. प्रतिग्रह । स्वीकार । दान लेना । पाना । धनादि का संग्रह । सम्मान-पूर्वक कोई वस्तु लेना । २. विवाह । ३. पत्नी । भार्या । ४. परिवार । ५. शाप । ६. शपथ । ७ .सूर्यग्रहण ।
परिग्रहण–संज्ञा पुं० १. पूर्ण रूप से ग्रहण करना । २. कपड़े पहनना ।
परिघ–संज्ञा पुं० १. अर्गला । २. भाला । बर्छी । ३. लोहा-जड़ी लाठी । ४. गदा । मुगदर ५. शूल ६. कलश । घड़ा । ७. घोड़ा । ८. फाटक । ९. घर । १०. तीर । ११. पर्वत । १२. वज्र । १३. चन्द्र । १४. सूर्य । १५. प्रतिबंध । बाधा । १६. गोपुर ।
परिघात–संज्ञा पुं० हत्या ।
परिघाती–संज्ञा पुं० हत्यारा । हत्या करनेवाला ।
परिघोष–संज्ञा पुं० १. तेज या भारी आवाज । २. मेघध्वनि । बादल का गरजना ।
परिचय–संज्ञा पुं० १. जान-पहचान । जानकारी । विशेष रूप से ज्ञान । अभिज्ञता । २. लक्षण । प्रमाण । ३. किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुण-कर्म आदि के संबंध की जानकारी । ४. मेल ।
परिचर–संज्ञा पुं० सेवक । खिदमतगार । रोगी की सेवा करनेवाला ।
परिचरी–संज्ञा स्त्री० दासी ।
परिचर्या–संज्ञा स्त्री० १. सेवा । टहल । शुश्रूषा २. रोगी की सेवा ।
परिचायक–संज्ञा पुं० १. जान-पहचान या परिचय करानेवाला । २. सूचक । सूचित करनेवाला । जतानेवाला ।
परिचार–संज्ञा पुं० १. सेवा । टहल । २. टहलने या घूमने-फिरने का स्थान ।
परिचारक–संज्ञा पुं० १. भृत्य । सेवक । नौकर । २. रोगी की सेवा करनेवाला ।
परिचारण–संज्ञा पुं० १. शुश्रूषा या सेवा करना । २. संग-साथ करना । साथ रहना ।
परिचारना*–क्रि० स० सेवा या शुश्रूषा करना ।
परिचारिक–संज्ञा पुं० सेवक । दास ।
परिचारिका–संज्ञा स्त्री० दासी । सेविका । लौंडी ।
परिचालक–संज्ञा पुं० चलानेवाला । संचालक ।
परिचालन–संज्ञा पुं० [वि० परिचालित] १. संचालन । चलाना । २. हिलाना । गति देना । चलने की प्रेरणा देना । ३. कार्यक्रम जारी रखना ।
परिचालित–वि० संचालित । १. चलाया हुआ । हिलाया हुआ । २. कार्यक्रम जारी किया हुआ ।
परिचित–वि० १. जाना हुआ । ज्ञात । जाना-समझा । २. अभिज्ञ । वाकिफ । ३. जान-पहचान रखनेवाला । मुलाकाती । परिचय-प्राप्त ।
परिचिति–संज्ञा स्त्री० दे० "परिचय" ।
परिचुंबन–संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक चुंबन ।
परिचेय–वि० परिचय के योग्य ।
परिच्छद–संज्ञा पुं० १. ढकने का कपड़ा । पट । आच्छादन । २. पहनावा । पोशाक । ३. राजचिह्न । ४. राजा का सेवक । ५. परिवार । कुटुंब ।
परिच्छन्न–वि० १. ढका हुआ । छिपा हुआ । २. जो कपड़े पहने हो । वस्त्रयुक्त । ३. साफ किया हुआ ।
परिच्छिन्न–वि० १. परिमित । मर्यादित । सीमाबद्ध । २. विभक्त । विभाजित ।
परिच्छेद–संज्ञा पुं० १. ग्रंथ का विभाग । पर्व । २. खंड या टुकड़े करना । विभाजन । ३. सीमा । अवधि । ४. प्रकरण । अध्याय ।
परिछन–संज्ञा पुं० दे० "परछन" ।
परिछाहीं–संज्ञा स्त्री० दे० "परछाईं" । प्रतिबिम्ब ।
परिजन–संज्ञा पुं० १. आश्रित या पोष्यवर्ग । परिवार । कुटुम्ब । २. सदा साथ रहने-

वाले सेवक। अनुचर। ३. स्वजन। नातेदार।

परिज्ञा–संज्ञा स्त्री० ज्ञान। बुद्धि।

परिज्ञात–वि० जाना हुआ। ज्ञात।

परिज्ञान–संज्ञा पुं० पूर्ण ज्ञान। सब प्रकार से जाना हुआ। विशेष रूप से ज्ञात।

परिणत–वि० [संज्ञा परिणति] १. परिणाम-प्राप्त। २. झुका हुआ। नम्र। ३. बदला हुआ। रूपांतरित। ४. पका हुआ। पक्व। ५. प्रौढ़। ६. पचा हुआ।

परिणति–संज्ञा स्त्री० १. परिणाम। निष्पत्ति। २. बदलना। रूपांतर होना। झुकाव। निम्नभाव। ३. पकना या पचना। परिपाक। ४. प्रौढ़ता। पुष्टि। ५. अंत। ६. फल। अवनति।

परिणय–संज्ञा पुं० १. विवाह। ब्याह। २. मिलन।

परिणयन–संज्ञा पुं० ब्याहना। विवाह करना।

परिणाम–संज्ञा पुं० १. नतीजा। फल। समाप्त होना। २. बदलना। रूपांतर-प्राप्ति। रूप-परिवर्त्तन या अवस्थांतर-प्राप्ति (सांख्य)। ३. विकृति। विकार। ४. एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति (योग)। ५. एक अर्थालंकार, जिसमें उपमान उपमेय का कार्य (उससे एकरूप होकर) करता है। ६. विकास। वृद्धि। ७. परिपुष्टि।

परिणामदर्शी–वि० दूरदर्शी। परिणाम या फल को सोचकर कार्य करनेवाला। सूक्ष्मदर्शी।

परिणामदृष्टि–संज्ञा स्त्री० किसी कार्य के फल को जान लेने की शक्ति।

परिणामवाद–संज्ञा पुं० सांख्य का मत, जिसके अनुसार संसार की उत्पत्ति और नाश आदि को नित्य परिणाम के रूप में माना जाता है।

परिणायक–संज्ञा पुं० १. पति। स्वामी। २. पाँसा खेलनेवाला।

परिणीत–वि० १. विवाहित। जिसका ब्याह हो चुका हो। २. पूर्ण। समाप्त।

परिणीता–संज्ञा स्त्री० विवाहिता। ब्याही हुई स्त्री।

परिणेता–संज्ञा पुं० पति। स्वामी।

परिणेय–वि० ब्याहने योग्य

परितः–अव्य० चारों ओर से। सम्पूर्ण रूप से।

परितप्त–वि० तपा हुआ। अत्यन्त गरम। संतप्त। बहुत दुखी।

परिताप–संज्ञा पुं० १. आँच। गरमी। २. क्लेश। दुःख। ३. मनस्ताप। सन्ताप। रंज। ४. पश्चात्ताप।

परितापी–वि० १. दुःखित या व्यथित। जिसको परिताप हो। २. पीड़ा देने-वाला। सतानेवाला।

परितुष्ट–वि० [संज्ञा परितुष्टि] १. अत्यन्त संतुष्ट। २. प्रसन्न।

परितृप्त–वि० सन्तुष्ट। भली भाँति तृप्त।

परितृप्ति–संज्ञा स्त्री० पूर्ण तृप्ति।

परितोष–संज्ञा पुं० १. तृप्ति। संतोष। २. प्रसन्नता।

परित्यक्त–वि० [स्त्री० परित्यक्ता] छोड़ा, फेंका या दूर किया हुआ। सब प्रकार से छोड़ा हुआ। त्यक्त।

परित्यजन–संज्ञा पुं० छोड़ देना। त्यागना।

परित्याग–संज्ञा पुं० [वि० परित्यागी] त्यागना। निकालना। अलग कर देना। छोड़ना।

परित्यागना*–क्रि० स० छोड़ देना। त्यागना।

परित्याज्य–वि० छोड़ने या त्यागने योग्य।

परित्राण–संज्ञा पुं० रक्षा। बचाव।

परित्राता–वि० रक्षक। पालक। परित्राण या रक्षा करनेवाला।

परित्रापक–संज्ञा पुं० दे० "परित्राता"।

परिदर्शन–संज्ञा पुं० घूम-घूमकर देखना। निरीक्षण।

परिदान–संज्ञा पुं० परिवर्त्तन। विनिमय। लेन-देन।

परिदाह–संज्ञा पुं० बहुत अधिक मानसिक कष्ट।

परिदेवक–संज्ञा पुं० १. दुःख देनेवाला। दुखदायी। २. विलाप करनेवाला। ३. जुआरी। जुआ खेलनेवाला।

परिदेवन–संज्ञा पुं० १. अनुताप। पश्चात्ताप। पछतावा। २. विलाप। ३. जुआ। जुए का खेल।

परिधन*–संज्ञा पुं० नीचे पहनने का कपड़ा। धोती आदि अधोवस्त्र।

परिधान–संज्ञा पुं० १. कपड़ा पहनना। २. वस्त्र। कपड़ा। पोशाक। परिवेश।

परिधि–संज्ञा स्त्री० १. किसी स्थान या पदार्थ के चारों ओर का घेरा। मंडल। मण्डलाकार घेरा। २. चन्द्र-सूर्य-मण्डल। ३. बाड़ा। चहारदीवारी। ४. वस्त्र। परिवेष्टन।

परिधेय–वि० पहनने के योग्य। धारण करने योग्य।

संज्ञा पुं० कपड़ा। वस्त्र।

परिध्वंस–संज्ञा पुं० १. हानि। क्षति। नाश। २. वर्णसंकर। जाति-विशेष।

परिनिर्वाण–संज्ञा पुं० पूर्ण निर्वाण। मोक्ष। छुटकारा। मुक्ति।

परिनिष्ठित–वि० १. परिज्ञात। २. ज्ञानी। ३. प्रतिष्ठित।

परिन्यास–संज्ञा पुं० १. काव्य में वह स्थल, जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो। २. नाटक में संकेत से मुख्य कथा की मूल घटना की सूचना करना।

परिपक्व–वि० [संज्ञा परिपक्वता] १. अच्छी तरह पका हुआ। पूर्ण पक्व। २. जो बिलकुल हजम हो गया हो। ३. पूर्ण विकसित। प्रौढ़। ४. बहुदर्शी। अनुभवी। ५. निपुण। कुशल।

परिपंथी–संज्ञा पुं० १. शत्रु। विपक्षी। २. चोर। लुटेरा। ठग।

परिपाक–संज्ञा पुं० १. पकना या पकाया जाना। २. पचना। ३. प्रौढ़ता। पूर्णता। ४. फल। निष्कर्ष। ५. बहुदर्शिता। जानकारी। ६. कुशलता। निपुणता। चतुराई।

परिपाटी–संज्ञा स्त्री० रीति। प्रथा। चाल। पद्धति। क्रम। श्रेणी। शैली। प्रणाली। ढंग।

परिपार–संज्ञा पुं० मर्य्यादा। सीमा।

परिपालक–संज्ञा पुं० प्रतिपालक। रक्षा करनेवाला। पोषण करनेवाला।

परिपालन–संज्ञा पुं० [वि० परिपाल्य] १. रक्षा करना। बचाना। २. पोषण। रक्षा। बचाव।

परिपालना–संज्ञा स्त्री० दे० "परिपालन"।

परिपालित–वि० रक्षित। पाला-पोसा हुआ।

परिपिष्टक–संज्ञा पुं० सीसा। धातु-विशेष।

परिपीड़न–संज्ञा पुं० अधिक पीड़ा पहुँचाना। जुल्म करना।

परिपुष्ट–वि० १. भली भाँति पोषित। २. पूर्ण पुष्ट। प्रौढ़।

परिपूत–वि० अति पवित्र। शुद्ध। साफ किया हुआ।

परिपूरक–वि० १. पूरा करनेवाला। भर देनेवाला। समृद्ध करनेवाला। २. सम्पूर्ण।

परिपूरन–वि० दे० "परिपूर्ण"।

परिपूरित–वि० परिपूर्ण। पूरा किया। भरा पूरा। सम्पूर्ण।

र्ण–वि० [वि० परिपूरित] १. भली भाँति भरा हुआ। २. पूर्ण तृप्त। अघाया हुआ। ३. समाप्त या पूरा। सम्पूर्ण।

परिपोष–संज्ञा पुं० दे० "परिपोषण"। पूर्ण पुष्टि या वृद्धि।

परिपोषण–संज्ञा पुं० १. पालन करना। परवरिश करना। २. पुष्ट करना।

परिप्लव–संज्ञा पुं० १. तैरना। २. बाढ़। ३. अत्याचार। ४. नाव।

वि० चंचल। काँपता हुआ।

परिप्लावित–वि० दे० "परिप्लुत"। डूबा हुआ। भावावेश से अभिभूत।

परिप्लुत–वि० १. प्लावित। डूबा हुआ। २. गीला या भीगा हुआ। आर्द्र। ३. कम्पित।

परिफुल्ल–वि० १. पूर्ण विकसित। २. रोमांचयुक्त।

परिबंधन–संज्ञा पुं० जकड़कर बाँधना।

परिबर्हण–संज्ञा पुं० १. पूजा। २. बढ़ती। बुद्धि।

परिबृंहण—संज्ञा पुं० १. उन्नति। तरक्की। समृद्धि। २. परिशिष्ट। किसी ग्रन्थ की पुष्टि करनेवाला दूसरा ग्रंथ।
परिबोधन—संज्ञा पुं० चेतावनी। दंड देने की धमकी देकर पुनः समझाना।
परिभक्षण—संज्ञा पुं० बिलकुल खा डालना। सफाचट कर जाना।
परिभव, परिभाव—संज्ञा पुं० १. अपमान। अनादर। तिरस्कार। २. पराजय। पराभव। हार। ३. अवज्ञा।
परिभावना—संज्ञा स्त्री० १. चिंता। सोच। फिक्र। २. वह वाक्य या पद, जिससे कुतूहल या उत्सुकता प्रकट हो।
परिभाषण—संज्ञा पुं० निन्दापूर्वक कथन।
परिभाषा—संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु के लक्षणों का वर्णन। व्याख्या। २. लक्षण। ३. स्पष्ट कथन। संशय-रहित कथन या बात।
परिभाषित—वि० १. जो अच्छी तरह कहा गया हो। २. जिसकी परिभाषा की गई हो।
परिभू—संज्ञा पुं० परमेश्वर। ईश्वर।
परिभूत—वि० १. हराया हुआ। पराजित। २. अपमानित।
परिभ्रमण—संज्ञा पुं० १. घूमना। पर्यटन। टहलना। चक्कर खाना। २. परिधि। घेरा।
परिभ्रष्ट—वि० गिरा हुआ। पतित। च्युत।
परिमंडल—संज्ञा पुं० घेरा। गोलाकार। वर्तुल। गोल। चक्र।
परिमल—संज्ञा पुं० [वि० परिमलित] १. सुवास। सुगंध। २. मलना। उबटना। ३. संभोग। मैथुन।
परिमाण—संज्ञा पुं० [वि० परिमित, परिमेय] १. माप। तौल। वजन। २. घेरा।
परिमार्जक—संज्ञा पुं० धोने या माँजनेवाला। शुद्ध करनेवाला। परिष्कारक। परिशोधक।
परिमार्जन—संज्ञा पुं० [वि० परिमार्जित] १. अच्छी तरह धोने या माँजने का कार्य। शुद्ध करना २. परिशोधन। परिष्करण।
परिमार्जित—वि० १. शुद्ध किया हुआ। परिष्कृत। शुद्ध। परिशोधित। सुधारा हुआ। २. साफ किया हुआ।
परिमित—वि० १. जिसकी नाप-तोल की गई हो या मालूम हो। २. सीमित। न अधिक, न कम। उचित परिमाण में। कम। थोड़ा।
परिमिति—संज्ञा स्त्री० १. परिमाण। नाप, तौल, सीमा आदि। २. मर्यादा। इज्जत।
परिमेय—वि० १. नापने या तौलने योग्य। जिसे नापना या तौलना हो। २. ससीम। थोड़ा।
परिमोक्ष—संज्ञा पुं० १. मोक्ष। निर्वाण। २. परित्याग।
परिमोक्षण—संज्ञा पुं० १. मुक्त करना या होना। २. परित्याग करना। छोड़ना।
परिम्लान—वि० उदास। मुरझाया हुआ।
परिया—संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति। अछूत। २. तुच्छ। क्षुद्र।
परिरंभ, परिरंभण—संज्ञा पुं० [वि० परिरंभ्य, परिरंभी] आलिंगन। गले या छाती से लगाकर मिलना।
परिरंभना—क्रि० स० आलिंगन करना। गले लगाना।
परिरोध—संज्ञा पुं० रुकावट। अड़ंगा।
परिलंघन—संज्ञा पुं० लाँघना। छलाँग मारना।
परिलघु—वि० बहुत छोटा।
परिलेख—संज्ञा पुं० १. ढाँचा। खाका। २. चित्र। तसवीर। ३. कूँची या कलम, जिससे चित्र खींचा जाय। ४. वर्णन। उल्लेख।
परिलेखन—संज्ञा पुं० किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ खींचना।
परिलेखना—क्रि० स० समझना। मानना। विचार करना।
परिवर्जन—संज्ञा पुं० १. मना करना। २. परिहार करना। छोड़ना।
परिवर्जनीय—वि० १. मना करने योग्य। २. परिहार करने योग्य।
परिवर्जित—वि० त्यक्त। छोड़ा हुआ।
परिवर्त—संज्ञा पुं० १. चक्कर। फेरा। घुमाव। २. बदला। विनिमय। लेन-देन। ३. जो बदले में लिया या दिया जाय। क्रय-विक्रय।

परिवर्तक–संज्ञा पुं० १. घूमने-फिरने या चक्कर खानेवाला। २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला। बदलनेवाला। ३. जो बदला जा सके।

परिवर्तन–संज्ञा पुं० [वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १. रूपान्तर। हेर-फेर। २. चक्कर। आवर्तन। घुमाव। फेरा। अदल-बदल। विनिमय। ३. जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय।

परिवर्त्तनीय–वि० परिवर्त्तन-योग्य। बदलने के योग्य।

परिवर्तित–वि० १. रूपांतरित। बदला हुआ। २. बदले में प्राप्त।

परिवर्ती–वि० १. परिवर्तनशील। बार-बार बदलनेवाला। २. बदला करनेवाला। ३. जो बराबर घूमे।

परिवर्द्धन–संज्ञा पुं० [वि० परिवर्धित] संख्या, गुण आदि में किसी वस्तु की वृद्धि। तरक्की।

परिवर्द्धित–वि० उन्नति या वृद्धि किया हुआ। बढ़ाया हुआ।

परिवह–संज्ञा पुं० १. सात पवनों में से छठा पवन। २. अग्नि की एक जीभ।

परिवा–संज्ञा स्त्री० प्रतिपदा। प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।

परिवाद–संज्ञा पुं० १. अपवाद। निंदा। २. उलाहना। ३. गाली। ४. द्वेष।

परिवादक–संज्ञा पुं० निन्दक। निंदा करने-वाला। द्वेषी।

परिवादी–वि० निन्दक। निंदा करनेवाला।

परिवार–संज्ञा पुं० १. कुटुम्ब। कुल। कुनबा। खानदान। भाईबन्द। कुटुम्ब के व्यक्ति। घराना। २. कोष। म्यान। आवरण। तलवार की खोली। ३. राजा या रईस की सवारी में पीछे चलनेवाले। ४. एक प्रकार की वस्तुओं का समूह।

परिवारण–संज्ञा पुं० रोकना। रुकावट डालना। बाधा डालना।

परिवास–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। २. ठहरना। टिकना। ३. सुगंध।

परिवाह–संज्ञा पुं० १. जलधारा का तीव्र बहाव। मेंड़ या दीवार के ऊपर से उछलकर बहना। २. मेघमार्ग।

परिवृत–वि० १. वेष्टित। आवृत। ढका, छिपाया या घिरा हुआ। उलटा-पलटा हुआ। घेरा हुआ। २. समाप्त।

परिवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. घेरा। वेष्टन। २. घुमाव। ३. विनिमय। तबादला। ४. समाप्ति। अंत। ५. ऐसा शब्द-परि-वर्तन, जिसमें अर्थ में कोई अंतर न आने पावे (व्याकरण)।

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार, जिसमें लेन-देन या विनिमय का कथन हो।

परिवृद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "परिवर्द्धन"।

परिवेद–संज्ञा पुं० पूर्ण ज्ञान।

परिवेदन–संज्ञा पुं० १. पूर्ण ज्ञान। सम्यक् ज्ञान। २. विचरण। ३. लाभ। ४. विद्यमानता। ५. बहस। ६. अधिक दुःख या कष्ट। ७. बड़े भाई से पहले छोटे भाई का ब्याह होना।

परिवेश–संज्ञा पुं० घेरा। परिधि। वेष्टन।

परिवेष, परिवेषण–संज्ञा पुं० [वि० परि-वेष्टव्य, परिवेष्य] १. भोजन परो-सना। २. घेरा। परिधि। वेष्टन। ३. सूर्य्य या चन्द्र आदि के चारों ओर का मंडल। ४. कोट। शहर-पनाह। पर-कोटा।

परिवेष्टन–संज्ञा पुं० [वि० परिवेष्टित] १. चारों ओर से घेरना। २. आच्छादन। आवरण। ३. परिधि। दायरा। घेरा। मण्डलाकार वेष्टन।

परिव्रज्या–संज्ञा स्त्री० १. इधर-उधर भ्रमण। २. तपस्या। ३. भिक्षुक की भाँति जीवन निर्वाह करना। भिक्षुकवृत्ति।

परिव्राज, परिव्राजक–संज्ञा पुं० १. संन्यासी। परमहंस। यती। २. सदा भ्रमण करने-वाला संन्यासी।

परिव्राट्–संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज"।

परिशिष्ट–वि० अवशेष। बचा हुआ। अवशिष्ट। छुटा हुआ।

संज्ञा पुं० किसी पुस्तक या लेख के अन्त

में जोड़ा हुआ भाग, जिसमें वे बातें दी गई हों, जो किसी कारण से यथास्थान न दी जा सकी हों।

परिशीलन–संज्ञा पुं० [वि० परिशीलित] १. ध्यानपूर्वक पढ़ना। मननपूर्वक अध्ययन। २. स्पर्श करना।

परिशुद्ध–वि० परिष्कृत। साफ। पवित्र।

परिशुष्क–वि० बहुत सूखा हुआ।

परिशेष–वि० बचा हुआ।
संज्ञा पुं० १. अवशेष। २. परिशिष्ट। अंत। समाप्ति।

परिशोध–संज्ञा पुं० १. प्रतिकार। परिशोधन। २. पूर्ण शुद्धि। पूरी सफाई। प्रतिदान। ३. चुकता। ऋण की बेबाकी।

परिशोधक–संज्ञा पुं० १. चुकता करनेवाला। २. सफाई या शुद्धि करनेवाला।

परिशोधन–संज्ञा पुं० [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह साफ या शुद्ध करना। २. ऋण या कर्ज की बेबाकी। चुकता।

परिश्रम–संज्ञा पुं० मेहनत। उद्यम। श्रम। उद्योग।

परिश्रमी–वि० अधिक मेहनत करनेवाला। उद्यमी। मेहनती। उद्योगी।

परिश्रय–संज्ञा पुं० १. आश्रय। पनाह की जगह। २. परिषद्। सभा।

परिश्रांत–वि० थका हुआ। क्लान्त। अवसन्न।

परिश्रुत–वि० प्रसिद्ध। विख्यात।

परिषत्–संज्ञा स्त्री० दे० "परिषद्"।

परिषद्–संज्ञा स्त्री० चुने गए व्यक्तियों की सभा या समिति। किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए संघटित समिति।

परिषद–संज्ञा पुं० १. सवारी या जुलूस में स्वामी को घेरकर चलनेवाले नौकर। २. सदस्य। सभासद। ३. मुसाहब। दरबारी।

परिषेक–संज्ञा पुं० छिड़काव। स्नान।

परिष्कार–संज्ञा पुं० १. संस्कार। शुद्धि। सफाई। २. स्वच्छता। निर्मलता। ३. गहना। अलंकार। ४. शोभा। ५. सजावट। सिंगार।

परिष्क्रिया–संज्ञा स्त्री० १. सँवारना। सजाना। २. शुद्ध करना। शोधन। ३. माँजना-धोना।

परिष्कृत–वि० १. शुद्ध या स्वच्छ किया हुआ। शुद्ध। स्वच्छ। २. माँजा या धोया हुआ। ३. सँवारा या सजाया हुआ। संशोधित।

परिसंख्या–संज्ञा स्त्री० १. गिनती। गणना। सीमा। २. एक अर्थालंकार, जिसमें किसी बात के सदृश दूसरी बात व्यंग्य या वाच्य से रोकने के अभिप्राय से कही जाय। यह दो प्रकार का होता है--प्रश्नसहित या बिना प्रश्न के। सप्रश्न और अप्रश्न।

परिसर–संज्ञा पुं० १. आसपास की जमीन। पड़ोस। मैदान। २. स्थिति। ३. मृत्यु। ४. विधि। ५. शिरा।
वि० संयुक्त।

परिसर्प–संज्ञा पुं० १. परिक्रमण। परिक्रिया। घूमना-फिरना। २. किसी की खोज में जाना। ३. नाटक में किसी का किसी की खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना। ४. सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कुष्ठों में से एक।

परिसर्पण–संज्ञा पुं० रेंगना। चलना। टहलना।

परिसीमा–संज्ञा स्त्री० चारों ओर की सीमा। हद।

परिस्तान–संज्ञा पुं० [फा०] १. परियों का देश। वह कल्पित लोक या स्थान, जहाँ परियाँ रहती हों। २. स्त्रियों के जमघट का स्थान।

परिस्तोम–संज्ञा पुं० हाथी की पीठ पर डालने का कपड़ा। झूल।

परिस्पंद–संज्ञा पुं० १. कँपकँपी। २. मर्दन।

परिस्पर्द्धा–संज्ञा स्त्री० प्रतिस्पर्द्धा। होड़।

परिस्फुट–वि० १. प्रकट या खुला हुआ। व्यक्त। प्रकाशित। २. खूब खिला हुआ।

परिस्यंद–संज्ञा पुं० झरना। क्षरण।

परिस्राव–संज्ञा पुं० टपकने की क्रिया।

परिहँस*–संज्ञा पुं० दे० "परिहस"।

परिहृत–वि० मृत। मरा हुआ।

परिहरण–संज्ञा पुं० [वि० परिहरणीय, परिहर्त्तव्य, परिहृत] १. जबरदस्ती लेना। छीन लना। २. छोड़ना । परित्याग। ३. अनिष्ट का उपचार या उपाय करना। ४. निराकरण। निवारण। दोष दूर करना।

परिहरना*–क्रि० स० छोड़ना। तज देना। त्यागना।

परिहस*–संज्ञा पुं० १. परिहास। हँसी। दिल्लगी। २. ईर्ष्या। डाह। रंज। दुःख। खेद।

परिहा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद। वि० पारी से आनेवाला ज्वर।

परिहार–संज्ञा पुं० [वि० परिहारक] १. दोष, अनिष्ट आदि का निवारण या निराकरण। दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय। इलाज। उपचार। २. परित्याग। तजने या त्यागने का काम। ३. पशुओं के चरने के लिए परती छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि। चरागाह। ४. लड़ाई में जीता हुआ धन आदि। ५. कर या लगान की माफी। छूट। ६. खंडन। तरदीद। ७. नाटक में किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना। ८. तिरस्कार। अनादर। अपमान। उपेक्षा। राजपूतों का एक वंश।

परिहारना–क्रि० स० १. परिहार करना। दूर करना। दे० "परिहरना"। २. प्रहार करना। मारना।

परिहारी–संज्ञा पुं० १. निवारण। त्याग। २. दोष या कलंक को छिपाने या मिटानेवाला। हरण या गोपन करनेवाला।

परिहार्य–वि० परिहार के योग्य। जिससे बचा जा सके। त्याग के योग्य। जिसका निवारण या उपचार करना उचित हो।

परिहास–संज्ञा पुं० १. हँसी। दिल्लगी। मजाक। २. क्रीड़ा। खेल। ३. कुतूहल। कौतुक।

परिहित–वि० १. चारों ओर से छिपा या ढँका हुआ। वेष्टित। २. पहना हुआ।

परी–संज्ञा स्त्री० १. फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परोंवाली स्त्रियाँ। २. परम सुन्दरी। अत्यंत रूपवती। ३. देवांगना। अप्सरा। ४. तेल या घी निकालने की छोटी कलछी।

परीक्षक–संज्ञा पुं० परीक्षा करने या लेनेवाला। इम्तहान करने या लेनेवाला।

परीक्षण–संज्ञा पुं० दे० "परीक्षा"। परीक्षा करने की क्रिया। जाँच। देख-भाल।

परीक्षा–संज्ञा स्त्री० १. गुण, दोष आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने-भालने का कार्य। परख। समीक्षा। २. वह कार्य, जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि का ज्ञान हो सके। इम्तहान। ३. आजमाइश। अनुभवार्थ प्रयोग। ४. निरीक्षण। जाँच-पड़ताल।

परीक्षित–वि० जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।
संज्ञा पुं० अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा। कहते हैं कि जब तक्षक के काटने से इनकी मृत्यु हो गई, तब कलियुग का प्रारंभ हुआ।

परीक्ष्य*–वि० परीक्षा करने योग्य।

परीखना*–क्रि० स० दे० "परखना"।

परीछत*–संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परीछा*–संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परीछित*–क्रि० वि० अवश्य ही। अवश्यमेव। संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परीजाद–वि० [फा०] अत्यंत सुंदर। परी की सन्तान।

परीत*–संज्ञा पुं० १. दे० "प्रेत"। २. दे० "प्रीति"।

परीरू–वि० [फा०] अति सुन्दर। जिसकी आकृति परी के समान हो।

परीषह–संज्ञा पुं० जैन धर्मानुसार २२ प्रकार के त्याग या सहन।

परुख*–वि० दे० "परुष"।

परुखाई*–संज्ञा स्त्री० परुषता। कठोरता।

परुष–वि० [स्त्री० परुषा] १. कठोर। कड़ा। सख्त। २. बुरा लगनेवाला शब्द, वचन आदि। ३. निष्ठुर। बेरहम।

परुषता–संज्ञा स्त्री० १. कठोरता। कड़ाई। २. कर्कशता। रूखापन। ३. निर्दयता।

परुषत्व–संज्ञा पुं० परुषता।

परुषा–संज्ञा स्त्री० १. काव्य में शब्द-योजना की एक प्रणाली, जिसमें टवर्गीय, द्वित्व, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण तथा लंबे-लंबे समास अधिक आए हों। २. रावी नदी।

परुषोक्ति–संज्ञा स्त्री० कठोर वाक्य। गाली-गलौज। नीरस वचन।

परे–अव्य० १. उस ओर। उधर। वाहर। अलग। पृथक्। दूर। २. बढ़कर। ऊपर। ३. अनन्तर। पश्चात्। पीछे। बाद।

परेई–संज्ञा स्त्री० पंडुकी। फाखता। मादा कबूतर।

परेखना–क्रि० स० १. परखना। जाँचना। २. आसरा या राह देखना।

परेखा*–संज्ञा पुं० १. परीक्षा। जाँच। २. ३. प्रतीति। विश्वास। ४. पश्चात्ताप अफसोस। खेद।

परेग–संज्ञा स्त्री० छोटा काँटा।

परेड–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. सैनिक शिक्षा। २. सैनिक शिक्षा का अभ्यास। कवायद।

परेत–संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।

परेता–संज्ञा पुं० १. सूत लपेटने की चरखी। रहेटा। २. पतंग की डोर लपेटने का बेलन।

परेर†–संज्ञा पुं० आकाश। आसमान।

परेवा–संज्ञा पुं० [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। फाखता। कबूतर। २. तेज उड़नेवाला पक्षी। ३. चिट्ठीरसाँ। हरकारा। ४. दे० परिवा। पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

परेश–संज्ञा पुं० ईश्वर। परमेश्वर।

परेशान–वि० [फा०] व्याकुल। बेचैन। उद्विग्न। व्यग्र।

परेशानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्याकुलता। उद्विग्नता। व्यग्रता।

परों*†–क्रि० वि० दे० "परसों"।

परोक्ष–संज्ञा पुं० १. भूतकाल। २. अनुपस्थित। अभाव। गैरहाजिरी। ३. परम ज्ञानी।

वि० जो देख न पड़े। अदृश्य। छिपा हुआ। गुप्त।

परोजन–संज्ञा पुं० दे० "प्रयोजन"।

परोपकार–संज्ञा पुं० दूसरे की भलाई। दूसरे के हित का काम। पराया हित। उपकार।

परोपकारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० परोपकारिणी] दूसरों की भलाई करनेवाला। उपकारी।

परोपदेश–संज्ञा पुं० दूसरों को शिक्षा देना। दूसरे के हित की बात कहना। सम्मति।

परोरना†–क्रि० स० मंत्र पढ़ना। फूंकना।

परोल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सैनिकों के संकेत का शब्द, जिसे कहने से पहरे पर के सिपाही आने या जाने से नहीं रोकते।

परोसना†–क्रि० स० दे० "परसना"।

परोसा†–संज्ञा पुं० सजाया हुआ थाल। एक मनुष्य के खाने भर का भोजन, जो भोज आदि के अवसर पर लोगों को घर लेजाकर खाने को दिया जाता है। पत्तल।

परोसैया–संज्ञा पुं० परोसने या परसनेवाला। परसैया (ग्रा०)।

परोहन–संज्ञा पुं० प्ररोहण। सवारी गाड़ी। रथ। यान। वाहन।

परोहा–संज्ञा पुं० चरस। मोट। पुरवट। पानी भरने का चमड़े का थैला।

पर्कटी–संज्ञा स्त्री० पाकड़ नामक वृक्ष।

पर्चून–संज्ञा पुं० चावल, आटा, दाल और मसाला आदि भोजन की सामग्री या सामान।

पर्चूनिया–संज्ञा पुं० आटा, दाल आदि बेचनेवाला। मोदी।

पर्जंक*–संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

पर्जनी–संज्ञा स्त्री० दारुहल्दी।

पर्जन्य–संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. विष्णु। ३. इंद्र। ४. मेघ का शब्द।

पर्जन्या–संज्ञा स्त्री० दारुहल्दी।

पर्ण–संज्ञा पुं० १. पत्र। दल। पत्ती। २. पलाश। ३. पान। पत्ता।

पर्णकार–संज्ञा पुं० बरई। तम्बोली।

पर्णकुटी–संज्ञा स्त्री० पत्तों की बनी हुई कुटी। झोंपड़ी। पर्णशाला।

पर्णभोजन–संज्ञा पुं० केवल पत्ती खाकर जीवित रहनेवाला व्यक्ति।
पर्णमणि–संज्ञा स्त्री० १. पन्ना। २. अस्त्र-विशेष।
पर्णमाचल–संज्ञा पुं० कमरख का वृक्ष।
पर्णमृग–संज्ञा पुं० वृक्षों पर रहनेवाला जीव। गिलहरी, बन्दर आदि।
पर्णरुह–संज्ञा पुं० बसन्त ऋतु।
पर्णलता–संज्ञा स्त्री० पान की बेल।
पर्णवल्ली–संज्ञा स्त्री० पलासी नाम की लता।
पर्णशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "पर्णकुटी"।
पर्णसि–संज्ञा पुं० १. कमल। २. पानी में बना हुआ घर। ३. सागर।
पर्णास–संज्ञा पुं० तुलसी।
पर्णिक–संज्ञा पुं० पत्ते बेचनेवाला।
पर्णिका–संज्ञा स्त्री० १. अग्नि मथने की अरणी। २. शालपर्णी।
पर्णी–संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़। द्रुम। एक औषध। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ।
पर्णीर–संज्ञा पुं० सुगन्धवाला।
पर्त–संज्ञा स्त्री० दे० "परत"। तह।
पर्दनी†–संज्ञा स्त्री० धोती।
पर्दा–संज्ञा पुं० दे० "परदा"।
पर्दानशीन–संज्ञा पुं० दे० "परदानशीन"। परदे में रहनेवाली।
पर्पट–संज्ञा पुं० १. पापड़। २. वृक्ष-विशेष। पित्तपापड़ा। ओषधि-विशेष।
पर्पटी–संज्ञा स्त्री० १. मुल्तानी मिट्टी। २. गोपीचंदन। ३. एक सुगन्धित लता। ४. पानड़ी। ५. पपड़ी। पपरी। पतली रोटी। ६. स्वर्ण-पर्पटी नामक औषध।
पर्पटी रस–संज्ञा पुं० वैद्यक में एक प्रकार का रस।
पर्यंक–संज्ञा पुं० पलँग। खाट। सेज। शय्या।
पर्यंत–अव्य० तक। लौं।
संज्ञा पुं० १. पार्श्व। २. काल। ३. सीमा।
पर्यटन–संज्ञा पुं० भ्रमण। घूमना-फिरना।
पर्यनुयोग–संज्ञा पुं० जिज्ञासा। प्रश्न। अज्ञात विषय को जानने के लिए प्रश्न।
पर्यवसान–संज्ञा पुं० [वि० पर्य्यवसित] १. अंत। समाप्ति। २. शामिल हो जाना। ३. मृत्यु। ४. क्रोध। ५. अंतर्भाव। ६. परिमाण।
पर्यवेक्षण–संज्ञा पुं० [वि० पर्यवेक्षित] अच्छी तरह देखना। निरीक्षण करना।
पर्यसन–संज्ञा पुं० [वि० पर्यस्त] १. दूर करना। हटाना। फेंकना। २. नष्ट करना।
पर्याचांत–संज्ञा पुं० एक पंक्ति में भोजन करनेवालों में से बीच ही में किसी व्यक्ति के उठ खड़े होने या मुँह धो लेने के बाद बचा हुआ जूठा भोजन।
पर्याप्त–वि० यथेष्ट। पूरा। काफी। आवश्यकतानुसार पूरा।
संज्ञा पुं० १. तृप्ति। २. शक्ति। सामर्थ्य। ३. प्रचुरता।
पर्याय–संज्ञा पुं० १. समानार्थवाची शब्द। जैसे, 'विष' का पर्याय 'हलाहल'। २. क्रम। सिलसिला। ३. वह अर्थालंकार, जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक का आश्रय लेना वर्णित हो या अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होने का वर्णन हो। ४. परिवर्तन। अदला-बदली। अपेक्षा। प्रकार।
पर्यायवाचक–संज्ञा पुं० एकार्थवाचक। समान अर्थ देनेवाले। एक ही अर्थ का बोध करानेवाले।
पर्यायवाची–संज्ञा पुं० एकार्थवाचक। समानार्थवाची शब्द। एक ही अर्थवाले शब्द।
पर्यालोचना–संज्ञा स्त्री० पूरी जाँच-पड़ताल। समीक्षा। विचारपूर्वक देखना। ध्यान से देखना। विशेष रूप से अवलोकन करना।
पर्युत्सुक–संज्ञा पुं० शोकार्त्त। उद्विग्नचित्त। व्याकुल।
पर्युपासक–संज्ञा पुं० दास। सेवक।
पर्युपासन–संज्ञा पुं० सेवा। दासता।
पर्युषित–वि० पहले दिन की बनाई वस्तु। बासी।
पर्व–संज्ञा पुं० १. उत्सव। त्यौहार। व्रत पुण्यकाल। २. चातुर्मास्य। ३. पक्ष ४. दिन। ५. क्षण। ६. अवसर। मौका ७. अंश। टुकड़ा। ८. भाग। अध्याय
पर्व-काल–संज्ञा पुं० किसी पर्व का समय पुण्य काल।

पर्वणी—संज्ञा स्त्री० १. पूर्णिमा। २. त्यौहार। उत्सव।
पर्वत—संज्ञा पुं० १. पहाड़। शैल। गिरि। २. किसी चीज का बहुत ऊँचा ढेर। ३. वृक्ष। ४. एक प्रकार के संन्यासी।
पर्वतज—संज्ञा पुं० पर्वतजात। पर्वत से उत्पन्न।
पर्वतनंदिनी—संज्ञा स्त्री० पर्वत की कन्या। पार्वती।
पर्वतराज—संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत। पर्वतों का राजा।
पर्वतारि—संज्ञा पुं० पर्वत के शत्रु। इन्द्र। शक्र। सुरपति। वज्रपाणि।
पर्वतास्त्र—संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक अस्त्र।
पर्वतिया—वि० पहाड़ी। पर्वत-सम्बन्धी। संज्ञा पुं० लौकी। कद्दू।
पर्वती—वि० दे० "पर्वतीय"।
पर्वतीय—वि० १. पहाड़ी। पहाड़-संबंधी। २. पहाड़ पर बसनेवाला। पर्वत-वासी। ३. पर्वत से उत्पन्न। पर्वतजात।
पर्वतेश्वर—संज्ञा पुं० हिमालय।
पर्वरिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] पालन-पोषण। पालना-पोसना।
पर्वसंधि—संज्ञा स्त्री० १. पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय। २. सूर्य्य अथवा चन्द्रग्रहण का समय। ३. घुटने पर का जोड़।
पर्वाह—संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।
पर्विणी—संज्ञा स्त्री० दे० "पर्व"।
पर्हेज—संज्ञा पुं० [फा०] १. परहेज। रोग आदि के समय अपथ्य वस्तु का त्याग। २. अलग रहना। दूर रहना। छोड़ना। त्यागना।
पलंका‡—संज्ञा स्त्री० बहुत दूर का स्थान।
पलंग—संज्ञा पुं० [स्त्री० पलँगड़ी] पर्यक। अच्छी और बड़ी चारपाई।
पलंगपोश—संज्ञा पुं० पलंग पर बिछाने की चादर।
पलँगिया†—संज्ञा स्त्री० छोटा पलंग। खटिया। चारपाई।
पल—संज्ञा पुं० १. क्षण। घड़ी या दंड का ६० वाँ भाग। अत्यन्त अल्प काल। अंश। निमेष। पलक गिरने तक का समय। २. तृण। घास। खर। ३. चार कर्ष की तौल। ४. मांस। ५. धान का पयाल। ६. धोखेबाजी। प्रतारणा। ७. तराजू। तुला ८. पलक। दृगंचल।
मुहा०—पल मारते या पल मारने में=बहुत ही जल्दी। आँख झपकते। तुरंत। पल के पल में=बहुत ही अल्प-काल में। क्षण भर में।
पलक—संज्ञा स्त्री० १. आँख के ऊपर का चमड़े का परदा। पपोटा तथा बरौनी। २. क्षण। पल।
मुहा०—पलक झपकते=अत्यंत अल्प समय में। बात कहते। किसी के रास्ते में या किसी के लिए पलक बिछाना=किसी का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक भाँजना=पलक झपाना या गिराना। पलक मारना=१. आँखों से संकेत या इशारा करना। २. पलक झपकाना या गिराना। पलक लगना=आँखें मुँदना। पलक झपकाना। नींद आना। झपकी लगना। पलक से पलक न लगना=नींद न आना। टकटकी बँधी रहना।
पलक-दरिया†—वि० अति उदार। बड़ा दानी।
पलकनेवाज†—वि० दे० "पलक-दरिया"।
पलका*—संज्ञा पुं० [स्त्री० पलकी] पलँग। चारपाई।
पलटन—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे० प्लैटून] १. अँगरेजी सेना का एक विभाग, जिसमें २०० के लगभग सैनिक होते हैं। २. दल। समुदाय। झुंड।
पलटना—क्रि० अ० १. उलट जाना। २. अवस्था या दशा बदलना। परिवर्त्तन होना। काया-पलट हो जाना। ३. अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना। ४. मुड़ना। घूमना। पीछे फिरना। ५. लौटना। वापस होना।
क्रि० स० १. उलटना। औंधाना। अवनत

को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। काया पलट देना। २. एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना। बदले में लेना। बदला करना। ३. मुकरना। ४. बदलना। लौटाना। वापस करना। फेरना।

पलटनिया–संज्ञा पुं० पलटन में काम करनेवाला। सिपाही। सैनिक।

पलटा–संज्ञा पुं० १. पलटने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन। २. अदला-बदला। प्रतिफल। बदला। ३. प्रतिकार।

मुहा०–पलटा खाना=फिरना। उलटना। स्थिति या दशा एकदम बदल जाना। पलटा लेना=लौटा लेना। बदला लेना।

पलटाना–क्रि० स० १. लौटाना। वापस करना। फेरना। २. बदलना।

पलटाव–संज्ञा पुं० फिराव। लौटाव।

पलटे†–क्रि० वि० बदले में। प्रतिफलस्वरूप।

पलड़ा†–संज्ञा पुं० पल्ला। तुलापट। तराजू का पल्ला।

पलथी†–संज्ञा स्त्री० एक आसन, जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठते हैं। स्वस्तिकासन। पालथी।

पलना–क्रि० अ० १. पनपना। बढ़ना। पाला-पोसा जाना। परवरिश पाना। २. खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट होना। तैयार होना। *†संज्ञा पुं० दे० "पालना"।

पलनाना†*–क्रि० स० घोड़े पर जीन कसकर उसे चलने के लिए तैयार करना।

पलभक्षी–वि० मांस खानेवाला। मांसाहारी।

पलवा*†–संज्ञा पुं० १. अंजलि। चुल्लू। २. तराजू का पलड़ा। ३. डलिया।

पलवाना–क्रि० स० किसी से पालन कराना।

पलवार–संज्ञा पुं० बड़ी नाव। एक प्रकार की नाव।

पलवारी†–संज्ञा पुं० मल्लाह। केवट। माँझी। नाव चलानेवाला।

पलवैया–संज्ञा पुं० पालन करनेवाला। पालक। पोषक।

पलस्तर–संज्ञा पुं० [अंग्रे० प्लास्टर] दीवार आदि पर मिट्टी, चूने आदि के गारे का लेप।

मुहा०–पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना=बहुत परेशान होना।

पलहना*–क्रि० अ० पत्ते निकलना। पल्लव फूटना। लहलहाना। पनपना।

पलहा*–संज्ञा पुं० कोंपल। कोमल पत्ते।

पलांडु–संज्ञा पुं० प्याज।

पला–संज्ञा पुं० १. तराजू का पलड़ा। पल्ला। *२. आँचल। ३. किनारा। पार्श्व। ४. पल। निमिष।

पलाद–संज्ञा पुं० राक्षस।

पलान–संज्ञा पुं० चारजामा या जीन।

पलानना*–क्रि० स० १. घोड़े आदि पर पलान कसना। २. चढ़ाई की तैयारी करना। ३. बुरा-भला कहना।

पलाना*†–क्रि० अ० भागना। पलायन करना।
क्रि० स० पलायन कराना। भगाना।

पलानी–संज्ञा स्त्री० १. छप्पर। २. दे० "पलान"।

पलायक–संज्ञा पुं० भागनेवाला। भग्गू। भगोड़ा।

पलायन–संज्ञा पुं० भागना। भागने की क्रिया। भय के कारण दूसरे स्थान में जाना।

पलायमान–वि० भागता हुआ। भगोड़ा।

पलायित–वि० भागा हुआ।

पलाल–संज्ञा पुं० पयाल। पुवाल।

पलाश–संज्ञा पुं० १. पलास। ढाक। किंशुक वृक्ष। टेसू। २. पत्र। पत्ता। ३. राक्षस। ४. कचूर। ५. मगध देश। वि० १. निर्दय। २. मांसाहारी। ३. हरा।

पलाशी–वि० १. मांसाहारी। २. पत्ते से युक्त।
संज्ञा पुं० राक्षस।

पलास–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वृक्ष, जो तीन रूपों में पाया जाता है—वृक्ष, क्षुप और लता। इसके फूल को प्रायः टेसू कहते हैं। पलाश। ढाक। केसू। २. गीध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी।

पलित–वि० [स्त्री० पलिता] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. पका हुआ या सफेद बाल। संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का सफेद होना। बाल पकना। २. ताप। गरमी। ३. कीचड़।

पली–संज्ञा स्त्री० तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बड़े बरतन से निकालने की कर्छी। पड़ी। एक प्रकार का चम्मच।

मुहा०—पली-पली जोड़ना=थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना।

पलीत—संज्ञा पुं० भूत। प्रेत। पिशाच। भूतयोनि।

वि० १. मैला-कुचैला। २. दुष्ट, पाजी, धूर्त।

पलीता–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० पलीती] १. बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाने की बत्ती। २. कपड़े की मोटी बत्ती।

वि० आग-बबूला। बहुत क्रुद्ध।

पलीद–वि० [फा०] १. अपवित्र। अशुद्ध। २. घृणास्पद। ३. नीच। गंदा।

संज्ञा पुं० १. भूत। प्रेत। २. दुष्ट।

पलुआ†–संज्ञा पुं० पालतू। पाला हुआ। पोसा हुआ। पालित।

पलुहना*†–क्रि० अ० हरा-भरा या पल्लवित होना।

पलुहाना*†–क्रि० स० १. पल्लवित या हरा-भरा करना। २. दूध के लिए गाय-भैंस का आयन सहलाना।

पलेड़ना*†–क्रि० स० ढकेलना या धक्का देना।

पलेथन–संज्ञा पुं० १. सूखा आटा, जिसके सहारे रोटी बेली जाती है। परथन। परोथन। परेथन। २. किसी हानि के बाद होनेवाला आवश्यक व्यय।

मुहा०–पलेथन निकालना=१. खूब मार पड़ना या खाना। पीटकर बेदम कर देना। २. परेशान या तंग होना।

पलोटना–क्रि० स० १. पाँव दबाना। २. दे० "पलटना"।

क्रि० अ० कष्ट से लोटना-पोटना। तड़फड़ाना।

पलोथन–संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।

पलोवना*–क्रि० स० १. पैर दबाना। पैर मलना। २. सेवा करना।

पलोसना*–क्रि० स० १. परोसना। २. धोना। ३. मीठी-मीठी बातें करके ढंग पर लाना।

पल्लव–संज्ञा पुं० १. नए निकले हुए कोमल पत्ते। नवीन पत्तों का समूह। कोंपल। कल्ला। २. हाथ का कड़ा या कंकड़। ३. विस्तार। ४. बल। ५. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।

पल्लवग्राही—संज्ञा पुं० १. अनभिज्ञ व्यक्ति। मोटी बातें जाननेवाला। २. केवल ऊपर-ऊपर से ज्ञान प्राप्त करनेवाला।

पल्लवद्रु—संज्ञा पुं० अशोक का पेड़।

पल्लवन—संज्ञा पुं० पल्लव उत्पन्न करना या निकालना। किसी बात या विषय का एक विस्तार करना।

पल्लवना*–क्रि० अ० नए पत्ते निकलना। पत्ते फेंकना। पनपना।

पल्लवास्त्र–संज्ञा पुं० कामदेव।

पल्लवित–वि० १. नये पत्तों से युक्त। २. हरा-भरा। ३. लंबा-चौड़ा। ४. पनपा हुआ।

पल्लवी–संज्ञा पुं० पेड़।

वि० पल्लवयुक्त।

पल्ला–क्रि० वि० १. दूर। अन्तर। २. दूरी। व्यवधान। ३. †पास। ४. अधिकार में। ५. तरफ़।

संज्ञा पुं० १. कपड़े का छोर। २. दामन। आँचल। ३. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। ४. पटल। किवाड़। ५. पहल। ६. तीन मन का बोझ। ७. तराजू में एक ओर का टोकरा या डलिया। पलड़ा।

मुहा०–पल्ला छूटना=पिंड छूटना। छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना=किसी से कुछ माँगना। पल्ले पड़ना=प्राप्त होना। मिलना। (किसी के) पल्ले बाँधना=गले मढ़ना। पल्ला झुकना या भारी होना=पक्ष प्रबल होना।

पल्ली–संज्ञा स्त्री० १. छोटा गाँव। पुरवा। खेड़ा। २. कुटी। ३. जाजम। सतरंजी। ४. छिपकली।

वि० उस ओर की।

पल्लू†–संज्ञा पुं० १. आँचल। दामन।

कपड़े का छोर। २. चौड़ी गोट। पट्टा।

पल्ले†*–वि० दे० १. "परलय"। २. दे० "पल्ला"।

पल्लेदार–संज्ञा पुं० १. अनाज ढोनेवाला मजदूर। २. गल्ला तौलनेवाला आदमी। बया।

पल्लेदारी–संज्ञा स्त्री० पल्लेदार का काम या मजदूरी।

पल्लौ†–संज्ञा पुं० पल्लव। चद्दर या गोन जिसमें अनाज बाँधते हैं। पल्ला।

पल्वल–संज्ञा पुं० छोटा तालाब। छोटा जलाशय।

पवंगा–संज्ञा पुं० एक छंद।

पव–संज्ञा पुं० १. गोबर। २. वायु।

पवई–संज्ञा, स्त्री० पक्षी-विशेष।

पवन–संज्ञा पुं० १. वायु। हवा। २. कुम्हार का आँवाँ। ३. श्वास। साँस। ४. प्राण-वायु।

मुहा०–पवन का भूसा होना=सब उड़ जाना। कुछ न रहना।

पवन-अस्त्र–संज्ञा पुं० दे० "पवनास्त्र"।

पवन-कुमार–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. भीम।

पवन-चक्की–संज्ञा स्त्री० हवा-चक्की। हवा के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पवन-चक्र–संज्ञा पुं० बवंडर। चक्कर खाती हुई जोर की हवा।

पवन-तनय–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. भीम।

पवन-पति–संज्ञा पुं० वायु के अधिष्ठाता देवता।

पवन-परीक्षा–संज्ञा स्त्री० आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य बतलाया जाता है।

पवन-पुत्र–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. भीम।

पवन-बाण–संज्ञा पुं० दे० "पवनास्त्र"। एक बाण, जिसके चलाने से हवा बेग से चलने लगे।

पवनसखा–संज्ञा पुं० अग्नि। आग।

पवन-सुत–संज्ञा पुं० १. पवनपुत्र। हनुमान। २. भीम।

पवनात्मज–संज्ञा पुं० १. हनुमान। २. भीम। ३. अग्नि।

पवनायन–संज्ञा पुं०, झरोखा। खिड़की। गवाक्ष। वातायन।

पवनावर्ती–संज्ञा स्त्री० महर्षि कश्यप की एक स्त्री।

पवनाशन–संज्ञा पुं० वायु-भक्षक। वायु का आहार करनेवाला। साँप। सर्प।

पवनाशी–संज्ञा पुं० हवा खाकर जीवित रहनेवाला। साँप। सर्प।

पवनास्त्र–संज्ञा पुं० एक अस्त्र, जिसके चलाने से तेज़ हवा चलने लगती थी।

पवनी†–संज्ञा स्त्री० गाँव में रहनेवाली नाऊ, बारी, धोबी आदि छोटी जाति, जिसे उच्च जातिवाले नियमित रूप से कुछ देते हैं।

पवमान–संज्ञा पुं० १. पवन। वायु। २. अग्नि। ३. चंद्रमा।

पवर, पवरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।

पवर्ग–संज्ञा पुं० वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग, जिसमें प, फ, ब, भ, म, पाँच अक्षर हैं।

पवाँर–संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

पवाँरना†–क्रि० स० फेंकना। गिराना।

पवाई–संज्ञा स्त्री० १. एक पैर का जूता। एक पल्ला। घोड़े के पैर की साँकर। २. चक्की का एक पाट। ३. पाने का भाव।

पवाज–संज्ञा पुं० १. गँवइया। ग्रामीण। गँवार। २. नीच। अधम।

पवाड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पँवाड़ा"।

पवाना†–क्रि० स० १ खिलाना। भोजन कराना। २. रोटी बनवाना।

पवि–संज्ञा पुं० १. इन्द्र का अस्त्र। वज्र। बिजली। गाज। २. वाक्य। ३. थूहर। मार्ग।

पवितार्ई–संज्ञा स्त्री० पवित्रता।

पवित्तर‡–वि० दे० "पवित्र"।

पवित्र–वि० १. शुद्ध। साफ। निर्मल। २. पाप-रहित। निष्कलंक।

संज्ञा पुं० १. मेंह। वर्षा। २. कशा। ३. ताँबा। ४. जल। ५. दूध। ६. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ७. घी। ८. शहद। ९. कुशा की बनी हुई पवित्री, जिसे श्राद्ध आदि में उँगलियों में पहनते हैं। अर्घा। १०. विष्णु। ११. महादेव।

पवित्रता—संज्ञा स्त्री० पवित्र या शुद्ध होने का भाव। शुद्धता। निर्मलता। निष्कलंकता। सफाई। स्वच्छता।

पवित्रधान्य—संज्ञा पुं० जौ।

पवित्रा—संज्ञा स्त्री० १. तुलसी। २. हल्दी। ३. पीपल। ४. रेशमी माला, जो कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है। ५. कुश के बने छल्ले-विशेष, जो श्राद्ध आदि कार्यों के समय हाथ की अँगुलियों में पहने जाते हैं।

पवित्रित—वि० शुद्ध या निर्मल किया हुआ। पवित्रीभूत।

पवित्री—संज्ञा स्त्री० कुश का बना छल्ला, जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है। कुश की अँगूठी।

पविधर—संज्ञा पुं० वज्र धारण करनेवाला। इन्द्र।

पशम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बढ़िया मुलायम ऊन, जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं। २. उपस्थ पर के बाल। शष्प। ३. अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

पशमी—वि० ऊन की बनी। मुलायम ऊन के बने पश्मीना, दुशाले आदि।

पशमीना—संज्ञा पुं० [फा०] १. पशम। २. पशम का बना हुआ कपड़ा, दुशाला आदि।

पशु—संज्ञा पुं० १. चौपाया। चतुष्पाद। चार पैरों से चलनेवाला कोई जीव। जैसे—कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा इत्यादि। २. जीव-मात्र। प्राणी। ३. देवता।

पशुता—संज्ञा स्त्री० १. पशुभाव। पशुत्व। २. जानवरपन। मूर्खता। जड़ता।

पशुतुल्य—वि० पशु-समान। पशु-सदृश। मूर्ख। मूढ़। निर्बोध।

पशुत्व—संज्ञा पुं० दे० "पशुता"।

पशुधर्म—संज्ञा पुं० पशुओं का-सा आचरण। मनुष्य के लिए निंद्य कर्म।

पशुनाथ—संज्ञा पुं० १. शिव। २. सिंह। शेर।

पशुपतास्त्र—संज्ञा पुं० महादेव का त्रिशूल। पाशुपत।

पशुपति—संज्ञा पुं० १. पशुओं का स्वामी। शिव। महादेव २. ओषधि। ३. अग्नि।

पशुपाल—संज्ञा पुं० १. पशुओं का पालक या रक्षक। २. गड़रिया। चरवाहा। अहीर।

पशुपालक—संज्ञा पुं० पशु पालनेवाला।

पशुराज—संज्ञा पुं० सिंह। शेर।

पश्चात्—अव्य० पीछे। पीछे से। बाद। अनंतर। फिर।

संज्ञा पुं० १. पश्चिम। २. अन्त।

पश्चात्ताप—संज्ञा पुं० अनुताप। अफसोस। पछतावा।

पश्चात्तापी—संज्ञा पुं० पछतावा करनेवाला। अफसोस करनेवाला।

पश्चाद्वर्त्ती—वि० पीछे रहने या चलनेवाला। अनुवर्त्ती।

पश्चार्ध—वि० १. शेषार्द्ध। अपरार्द्ध। २. शरीर का अपर भाग।

पश्चानुताप—संज्ञा पुं० पछतावा।

पश्चिम—संज्ञा पुं० पश्चिम। प्रतीची। वह दिशा, जिसमें सूर्य का अस्त होता है।

पश्चिमवाहिनी—वि० पश्चिम की ओर बहनेवाली।

पश्चिमा—संज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा-सम्बन्धी। पश्चिम दिशा।

पश्चिमाचल—संज्ञा पुं० अस्ताचल। सूर्यास्त का एक कल्पित पर्वत।

पश्चिमी—वि० १. पश्चिम की ओर का। २. पश्चिम-संबंधी। पश्चिम का।

पश्चिमोत्तर—संज्ञा पुं० पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना। वायुकोण।

पश्तो—संज्ञा पुं० [अफगानों की भाषा] पश्चिमोत्तर भारत की एक आर्य्य भाषा, जिसमें फारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं।

पश्म—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "पशम"।

पश्मीना—संज्ञा पुं० [फा०] दे० "पशमीना"। शाल-दुशाले आदि वस्त्र।

पश्यतोहर—संज्ञा पुं० आँखों के सामने से चीज चुरा ले जानेवाला। जैसे, सुनार आदि।

पश्वाचार—संज्ञा पुं० [वि० पश्वाचारी] तांत्रिकों के अनुसार कामना और संकल्प-पूर्वक वैदिक रीति से देवी का पूजन। वैदिकाचार।

पख*†–संज्ञा पुं० १. पंख । डैना । २. ओर । तरफ । पाख । पक्ष ।
पखबारा–संज्ञा पुं० एक पक्ष । पन्द्रह दिन । पाखभर ।
पखा–संज्ञा पुं० दाढ़ी । श्मश्रु ।
पखान–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण" । पत्थर ।
पखारना*†–क्रि० स० धोना । साफ करना । पछाड़ना ।
पसंघा†–संज्ञा पुं० वह बोझ, जिसे तराजू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिए हलके पल्ले की तरफ बाँध देते हैं । पासंग । वि० बहुत ही थोड़ा या कम ।
मुहा०–पसंघा भी न होना=नहीं के बराबर होना । अत्यन्त अल्प होना ।
पसंद–वि० रुचि के अनुकूल । मनचाहा । मनोनीत । जो अच्छा लगे ।
संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति । अभिरुचि ।
पसनी†–संज्ञा स्त्री० अन्नप्राशन नामक संस्कार । लड़के को पहले-पहल अन्न खिलाना या खीर चटाना ।
पसर–संज्ञा पुं० १. गहरी की हुई हथेली । करतलपुट । आधी अंजलि । †२. विस्तार । फैलाव । प्रसार ।
पसरना–क्रि० अ० १. आगे की ओर बढ़ना । फैलना । विस्तृत होना । बढ़ना । †२. पैर फैलाकर लेटना ।
पसरवाना–क्रि० अ० दूसरे से फैलवाना ।
पसरहट्टा–संज्ञा पुं० बाजार का वह भाग, जिसमें पंसारियों आदि की दूकानें हों ।
पसराना–क्रि० स० पसरवाना । दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना । फैलाना ।
पसरौंहाँ*†–वि० फैलने या पसरनेवाला ।
पसली–संज्ञा स्त्री० शरीर में छाती पर के पंजर की हड्डियाँ ।
मुहा०–पसली फड़कना या फड़क उठना= मन में उत्साह होना या जोश आना । हड्डी-पसली तोड़ना=बहुत मारना-पीटना । पसली चलना=सर्दी से बच्चों का श्वास बढ़ जाना ।
पसा–संज्ञा पुं० मुट्ठी भर । दो मुट्ठी भर ।
पसाई–संज्ञा स्त्री० १. तालाबों में अपने आप उगनेवाला धान । २. चावल पसाने की क्रिया ।
पसाउ†*–संज्ञा पुं० प्रसाद । प्रसन्नता । कृपा ।
पसाना–क्रि० स० १. रिंधे हुए चावलों का माँड़ निकालना । भात में से माँड़ निकालना । २. पसेव निकालना या गिराना ।
†*क्रि० अ० प्रसन्न होना ।
पसार–संज्ञा पुं० १. पसरने या फैलने की क्रिया या भाव । प्रसार । २. फैलाव । विस्तार ।
पसारना–क्रि० स० आगे की ओर बढ़ाना । फैलाना ।
पसारी–संज्ञा पुं० दे० "पंसारी" ।
पसाव–संज्ञा पुं० पसाने पर निकलनेवाला पदार्थ । माँड़ । पीच । पानी ।
पसावन–संज्ञा पुं० दे० "पसाव" ।
पसिंजर–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे० पैसिंजर] हर स्टेशन पर रुकनेवाली मुसाफिरों की रेलगाड़ी ।
पसीजना–क्रि० अ० १. पसीना निकलना । पानी छूटना । नरम होना । रसना । २. चित्त में दया उत्पन्न होना ।
पसीना–संज्ञा पुं० परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर शरीर से निकलनेवाला जल । प्रस्वेद । श्रमवारि । स्वेद ।
पसीव–संज्ञा पुं० पसीना । प्रस्वेद । पसेव ।
पसुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली" ।
पसूज–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सिलाई । सींवन । तुर्पन ।
पसूजना–क्रि० स० सीना । सीधी सिलाई करना ।
पसेउ†–संज्ञा पुं० दे० "पसेव" ।
पसेरी–संज्ञा स्त्री० पाँच सेर का बाट । पंसेरी ।
पसेव–संज्ञा पुं० १. किसी चीज में से रस कर निकला हुआ जल । पसाव । २. पसीना । प्रस्वेद ।
पसोपेश–संज्ञा पुं० [फा०] १. आगा-पीछा । सोच-विचार । हिचक । दुविधा । २. ऊँच-नीच । हानि-लाभ ।
पस्त–वि० [फा०] १. हारा हुआ । थका हुआ । २. दबा हुआ ।

पस्तहिम्मत–वि० [फा०] कायर। जो हिम्मत हार चुका हो। भीरु। डरपोक।

पस्ती–संज्ञा पुं० १. निचाई। २. कमी। न्यूनता।

पस्ती बबूल–संज्ञा पुं० एक पहाड़ी बबूल।

पहँ*–अव्य० १. निकट। पास। २. से।

पहँसुल–संज्ञा स्त्री० तरकारी काटने का

पह–संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"। सवेरा। भोर। प्रकाश की किरण।

पहचनवाना–क्रि० स० किसी से पहचानने का काम कराना।

पहचान–संज्ञा स्त्री० १. जान-पहचान। परिचय। मुलाकात। पहचानने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु के गुण तथा मूल्य आदि का ज्ञान। परख। ३. लक्षण। निशानी। ४. पहचानने या भेद समझने की शक्ति।

पहचानना–क्रि० स० १. देखते ही जान लेना। चीन्हना। २. परिचित होना। ३. अंतर समझना। जानना। समझना। बिलगाना। ४. योग्यता या विशेषता से अभिज्ञ होना।

पहटना†–क्रि० स० १. पीछा करना। खदेड़ना। २. धार पैनी करना।

पहन*–संज्ञा पुं० दे० "पाहन"। पत्थर।

पहनना–क्रि० स० शरीर पर वस्त्र धारण करना। कपड़ा पहनना।

पहनवाना–क्रि० स० किसी और के द्वारा किसी को पहनाना।

पहनाई–संज्ञा स्त्री० १. पहनने की क्रिया या भाव। २. पहनाने की मजदूरी या इनाम।

पहनाना–क्रि० स० दूसरे को कपड़े, आभूषण आदि धारण कराना।

पहनावा–संज्ञा पुं० १. परिधेय। पोशाक। पहनने के मुख्य मुख्य कपड़े। परिच्छद। २. विशेष अवस्था, स्थान अथवा समाज में ऊपर पहने जानेवाले कपड़े। ३. कपड़े पहनने की रीति या चाल।

पहपट–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गीत, जिसे स्त्रियाँ गाया करती हैं। २. शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। ३. बदनामी। ४. छल। धोखा।

पहपटबाज–संज्ञा पुं० शरारती। झगड़ालू। शोर करनेवाला। धोखेबाज।

पहपटबाजी–संज्ञा स्त्री० १. कलह-प्रियता। झगड़ालूपन। २. धोखेबाजी।

पहपटहाई†–संज्ञा स्त्री० झगड़ा करानेवाली स्त्री।

पहर–संज्ञा पुं० १. तीन घंटे का समय। २. समय। प्रहर। समय का परिमाण। रात या दिन का चतुर्थांश।

पहरना†–क्रि० स० दे० "पहनना।"

पहरा–संज्ञा पुं० १. रखवाली। रक्षा। निगरानी। हिफाजत। २. चौकी। रखवाली करने के लिए तैनाती। रक्षक-दल। ३. चौकीदार या पहरेदार की आवाज। पहरेदार का गश्त या फेरा। ४. पहरे में रहने की स्थिति। वह समय, जब तक रक्षक दल को काम करना पड़ता है। ५. हिरासत।

मुहा०—पहरा देना=रखवाली करना। पहरा बदलना=नया रक्षक नियुक्त करके पुराने को छुट्टी देना। रक्षक बदलना। पहरा बैठाना=किसी व्यक्ति या वस्तु के आसपास रक्षक तैनात करना। पहरे में देना या रखना=हिरासत में देना। हवालात भेजना। पहरे में होना=हिरासत में होना। नजरबन्द होना।

पहराना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पहरावन–संज्ञा पुं० पहनावा। पोशाक। दे० "पहरावनी"।

पहरावनी–संज्ञा स्त्री० वह पोशाक, जो कोई बड़ा छोटे को दे। खिलअत।

पहरी–संज्ञा पुं० दे० "प्रहरी"। पहरेदार। चौकीदार। पहरा देनेवाला। रक्षक।

पहरुआ†–संज्ञा पुं० दे० "पहरू"।

पहरू–संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला। रक्षक। चौकीदार।

पहरेदार–संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला। रक्षक। चौकीदार।

पहल–संज्ञा पुं० १. किसी ठोस वस्तु के तीन या अधिक कोनों के बीच की समतल भूमि। बगल। पहलू। बाजू। तरफ। २. जमी हुई रूई अथवा ऊन। ३. रजाई, तोशक आदि से निकाली हुई पुरानी रूई। ४. तह। परत। ५. किसी कार्य्य का आरंभ। शुरू।

पहलदार–वि० जिसमें पहल हों। पहलूदार।

पहलवान–संज्ञा पुं० [फा०] १ कुश्ती लड़नेवाला। कुश्तीबाज। मल्ल। २. बलवान् और मोटा-तगड़ा व्यक्ति। .

पहलवानी–संज्ञा स्त्री० १. कुश्ती लड़ना। २. पहलवान का कार्य करना। मल्ल व्यवसाय। पहलवान का पेशा।

पहलवी–संज्ञा पुं० दे० "पह्लवी"।

पहला–वि० [स्त्री० पहली] आरंभ का। प्रथम। अौवल।

पहलू–संज्ञा पुं० [फा०][वि० पहलूदार] १. बगल और कमर के बीच का वह भाग, जहाँ पसलियाँ होती है। पाँजर। पार्श्व। २. दायाँ अथवा बायाँ भाग। बगल। बाजू। ३. करवट। बल। दिशा। तरफ। ४. पहल। ५. गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी चीज के भिन्न-भिन्न अंग। पक्ष।

पहले–अव्य० १. आरंभ में। सर्व-प्रथम। शुरू में। आदि में। २. आगे। पेश्तर। ३. पूर्वकाल में। बीते समय में।

पहले-पहल–अव्य० पहली बार। सर्व-प्रथम। सबसे पहले।

पहलौठा–वि० [स्त्री० पहलौठी] प्रथम सन्तान। पहली बार उत्पन्न पुत्र।

पहलौठी–संज्ञा स्त्री० पहले पहल बच्चा जनना। प्रथम प्रसव।

पहाड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० पहाड़ी] १. चट्टानों का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो। गिरि। पर्वत। २. बहुत भारी ढेर। ऊँची राशि। ३. बहुत भारी वस्तु। ४. अति कठिन कार्य्य। दुष्कर काम।

मुहा०–पहाड़ उठाना=कष्टसाध्य कार्यकरने को तैयार होना। पहाड़ टूटना या टूट पड़ना=अचानक कोई भारी आपत्ति आ पड़ना। महान् संकट उपस्थित होना। पहाड़ से टक्कर लेना=जबरदस्त से मुकाबला करना।

पहाड़ा–संज्ञा पुं० किसी अंक के गुणनफलों की क्रमागत सूची। गुणन-सूची।

पहाड़ी–वि० पहाड़ पर रहनेवाला। पहाड़ पर होनेवाला। पहाड़ से सम्बद्ध। संज्ञा स्त्री० १. छोटा पहाड़। २. पहाड़ी गाने की एक धुन।

पहार†–संज्ञा पुं० पहरेदार।

पहिचान–संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।

पहित, पहिती*†–संज्ञा स्त्री० पकी हुई दाल।

पहिनना–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहियाँ*‡–अव्य० दे० "पहँ"।

पहिया–संज्ञा पुं० १. गाड़ी में लगा हुआ चक्का, जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाड़ी चलती है। चक्का। चक्र। २. चाक।

पहिरना†–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहिरावनी–संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा"।

पहिला–वि० [स्त्री० पहिली] १. दे० "पहला"। २. प्रथम प्रसूता। पहले पहल ब्याई हुई।

पहिले–अव्य० दे० "पहले"।

पहीति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पहिती"।

पहुँच–संज्ञा स्त्री० १. पैठ। सामर्थ्य। प्रवेश। २. गुजर। रसाई। ३. पहुँचने की सूचना। ४. रसीद। फैलाव। ५.। ६. विस्तार। ७. पकड़। दौड़। ८. परिचय। ९. समझने की शक्ति। जानकारी।

पहुँचना–क्रि० अ० १. एक स्थान से चल-कर दूसरे स्थान में प्रस्तुत होना। २. एक हालत से दूसरी हालत में जाना। ३. घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। ४. किसी के अभिप्राय या आशय को जान लेना। ताड़ना। समझना। ५. समझने में समर्थ होना। ६. भेजी हुई चीज किसी को मिलना। ७. अनुभूत होना।

अनुभव में आना। प्राप्त होना। ८. समकक्ष होना। तुल्य होना।
मुहा०—पहुँचा हुआ=ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ। सिद्ध। पहुँचनेवाला=जानकार। भेद या रहस्य जानने में समर्थ। पहुँचा हुआ=१. जिसे सब कुछ मालूम हो। अभिज्ञ। पता रखनेवाला। २. दक्ष। उस्ताद। निपुण।

पहुँचा—संज्ञा पुं० १. कलाई। २. मणिबंध। ३. गट्टा।

पहुँचाना—क्रि० स० १. किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से ले जाकर दूसरे स्थान पर उपस्थित करना। ले जाना। २. किसी के साथ इसलिए जाना, जिसमें वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष दशा में उपस्थित करना। ४. प्रविष्ट कराना। ५. कोई चीज ले जाकर किसी को दे देना। ६. अनुभव कराना।

पहुँची—संज्ञा स्त्री० कलाई पर पहनने का एक गहना।

पहुड़ना—क्रि० अ० दे० "पौढ़ना"।

पहुना†—संज्ञा पुं० दे० "पाहुना"।

पहुनाई—संज्ञा स्त्री० १. पाहुना होने का भाव। अतिथि-रूप में कहीं जाना या आना। २. अतिथिसत्कार। मेहमानदारी।

पहुप*†—संज्ञा पुं० दे० "पुष्प"।

पहुमी—संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"। भूमि। पृथ्वी।

ा—संज्ञा पुं० कुमुदिनी।

ी—संज्ञा स्त्री० प्रहेलिका। गूढ़ प्रश्न। वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन, जो स्पष्टतया प्रकट न हो। बुझौवल। ऐसा वर्णन, जिसमें सामान्य अर्थ प्रकाशित किया जाता है, परन्तु असली अर्थ छिपा रहता है।

पह्लव—संज्ञा पुं० १. फारस या ईरान की एक प्राचीन जाति। २. एक प्राचीन देश, जो पह्लव जाति का निवास-स्थान था। वर्त्तमान फारस या ईरान का अधिक भाग।

पह्लवी—संज्ञा स्त्री० अति प्राचीन फारसी या जेंद अवस्ता की भाषा।

पाँ—संज्ञा पुं० पाँव। पैर। पद। चरण।

पाँ, पाँइ*—संज्ञा पुं० पाँव। पैर। पद।

पाँइता—संज्ञा पुं० दे० "पाँयता"। पैताना।

पाँईबाग*—संज्ञा पुं० [फा०] राजमहल के चारों ओर की पुष्पवाटिका। महलों के चारों ओर का बना हुआ बाग।

पाँउँ*†—संज्ञा पुं० पाँव। पैर। पद।

पाँक—संज्ञा पुं० कीचड़। पंक। कीच।

पाँख*†—संज्ञा पुं० पंख। पर। पक्ष।

पाँखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँखरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँखी*†—संज्ञा स्त्री० १. पतिंगा २. चिड़िया पक्षी।

पाँगा, पाँगा नोन—संज्ञा पुं० समुद्री नमक।

पाँच—वि० जो गिनती में ५ हो।
संज्ञा पुं० १. पाँच की संख्या या अंक। ५। २. कई आदमी। बहुत से लोग। ३. जाति या बिरादरी के मुखिया लोग। पंच।
मुहा०—पाँचों अँगुलियाँ घी में होना=सब प्रकार का लाभ या आराम होना। खूब बन आना। पाँचों सवारों में नाम लिखाना=अपने को भी बड़ों के साथ गिनाना।

पांचजन्य—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का शंख। २. अग्नि।

पांचभौतिक—संज्ञा पुं० पाँचों तत्त्वों से बना हुआ शरीर।

पाँचर—संज्ञा स्त्री० लकड़ी का टुकड़ा। पच्चड़।

पांचाल—संज्ञा पुं० भारत के पश्चिमोत्तर भाग का एक देश। दे० "पंचाल"।
वि० १. पांचाल देश का रहनेवाला। २. पांचाल देश-संबंधी।

पांचालिका—संज्ञा स्त्री० कपड़े की बनी गुड़िया।

पांचाली—संज्ञा स्त्री० १. पांडवों की स्त्री द्रौपदी। २. गुड़िया। कपड़े की पुतली। ३. एक प्रकार की वाक्य-रचना-प्रणाली, जिसमें बड़े-बड़े पाँच-छः समासों से युक्त और कांतिपूर्ण पदावली होती है। ४. नटी। ५. स्वर-साधन की रीति-विशेष।

पाँचैं†–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि। पंचमी।

पांजना–क्रि० स० धातु के टुकड़ों को टाँके लगाकर जोड़ना। टाँका लगाना। झालना।

पाँजर–संज्ञा पुं० १. जिसमें पसलियाँ हों। २. पसली। ३. पार्श्व। बगल। पास।

पाँजी–संज्ञा स्त्री० नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें।

पाँझ–वि० दे० "पाँजी"।

पांडव–संज्ञा पुं० १. कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। २. एक प्राचीन प्रदेश, जो वितस्ता (झेलम) नदी के तट पर था।

पांडवनगर–संज्ञा पुं० दिल्ली।

पांडित्य–संज्ञा पुं० विद्वत्ता। पंडिताई। पंडित होने का भाव।

पांडित्यपूर्ण–संज्ञा पुं० विद्वत्ता से भरा हुआ।

पांडु–संज्ञा पुं० १. लाल मिला पीला रंग। २. पांडुफली। पारली। ३. परमल। ४. सफेद हाथी। ५. सफेद रंग। ६. एक रोग का नाम, जिसमें रक्त के दूषित हो जाने से शरीर के चमड़े का रंग पीला हो जाता है। पांडव-वंश के आदि राजा, जिनके पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव पांडव कहलाए।

पांडुता–संज्ञा स्त्री० पांडु होने का भाव, धर्म या क्रिया। पीलापन। पांडुत्व।

पांडुर–वि० १. पीला। २. सफेद।
संज्ञा पुं० १. एक वृक्ष। २. कबूतर। ३. बगला। ४. सफेद खड़िया। ५. एक प्रकार का रोग। ६. श्वेत कुष्ठ। सफेद कोढ़।

पांडुलिपि–संज्ञा स्त्री० किसी लेख की हस्तलिखित प्रति। मसविदा। पाण्डुलेख।

पांडुलेख–संज्ञा पुं० दे० "पांडुलिपि"।

पाँड़े–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों की एक शाखा। २. कायस्थों की एक शाखा। ३. विद्वान् पंडित। अध्यापक।

पांडेय–संज्ञा पुं० दे० "पाँड़े"।

पाँति–संज्ञा स्त्री० १. श्रेणी। पंक्ति। कतार। २. समूह। ३. एक साथ भोजन करनेवाले जाति-बिरादरी के लोग। पंगत।

पांथ–वि० १. पथिक। बटोही। यात्री। २. वियोगी। बिरही।

पांथनिवास–संज्ञा पुं० धर्मशाला। सराय। चट्टी।

पांथशाला–संज्ञा स्त्री० सराय। चट्टी। धर्मशाला।

पाँपोश–संज्ञा पुं० पाँवड़ा। पाँयदाज।

पाँय*†–संज्ञा पुं० चरण। पैर। पाँव।

पाँयँचा–संज्ञा पुं० १. पाखानों आदि में बना हुआ वह स्थान, जिस पर पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिए बैठते हैं। २. पायजामे की मोहरी।

पाँयँता–संज्ञा पुं० पलँग, खाट या बिस्तर का वह भाग, जिसकी ओर पैर किए जाते हैं। पैंताना।

पाँव–संज्ञा पुं० पैर। चरण। पद।

मुहा०—पाँव उखड़ना (उखड़ जाना)=हार जाना। हिम्मत छोड़कर भागना। पाँव उठाना=तेजी से चलना। पाँव उतरना (उखड़ना)=पाँव का उखड़ या टूट जाना या फूलना। पाँव काँपना (डगमगाना)=डर जाना, भयभीत होना। पाँव (किसी का) उखाड़ना=किसी को किसी स्थान पर जमने न देना। गले में (किसी के) पाँव डालना=तर्क-द्वारा उसी की बातों से उसी को दोषी ठहराना। पाँव जमीन पर न ठहरना (रखना)=अत्यन्त प्रसन्न होना। हर्ष के कारण फूल जाना। पाँव-तले से जमीन खिसकना=आश्चर्य या भय की बात से स्तब्ध या सन्न रह जाना। होश उड़ जाना। पाँव पकड़ना=शरण में आना। पाँव पर पाँव रखना=अनुकरण करना। पाँव पड़ना=दीनता से प्रार्थना करना। पाँव फूंक-फूंक कर रखना=सावधान रहना। विचारपूर्वक कार्य करना। पाँव भारी होना=गर्भ रहना। पाँव रोपना=प्रतिज्ञा करना।

पाँवर*†–वि० दे० "पामर"। अधम। नीच।
पाँवरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाँवड़ी"। २. सीढ़ी। सोपान। ३. पैर रखने का स्थान। ४. जूता। ५. पौरी। ड्योढ़ी। ६. दालान। बैठक
पांशु–संज्ञा स्त्री० १. धूलि। रज। रेणु। २. बालू। ३. गोबर की खाद। स्त्री का मासिक धर्म।
पांशुका–संज्ञा स्त्री० धूलि। रेणु। रज। रजस्वला स्त्री।
पांशुज–संज्ञा पुं० नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।
पांशुल–संज्ञा पुं० १. धूलियुक्त। धूलि-धूसरित। २. शिव। महादेव। ३. लंपट। व्यभिचारी। ४. मैला। मलिन।
पांशुला–संज्ञा स्त्री० कुलटा। वेश्या। भ्रष्ट-चरित्रा स्त्री। व्यभिचारिणी।
पाँस–संज्ञा स्त्री० १. खाद। सार। सड़ी गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिए उनमें डाली जाती हैं। २. किसी वस्तु को सड़ाने पर उठा हुआ खमीर।
पाँसना†–क्रि० स० खेत में खाद देना। खाद सड़ाना।
पाँसा–संज्ञा पुं० हाथीदाँत या हड्डी के चौपहल टुकड़े, जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।
मुहा०–पाँसा उलटना=किसी प्रयत्न का उल्टा फल होना।
पांसु–संज्ञा पुं० १. पसली। पाँजर की हड्डी। २. धूलि।
पाँसुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।
पाँही*†–क्रि० वि० निकट। समीप। पास।
पाइ*–संज्ञा पुं० दे० "पाद"।
पाइक*–संज्ञा पुं० दे० "पायक"।
पाइतरी*†–संज्ञा स्त्री० पैताना। पायँताना।
पाइल*–संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।
पाई–संज्ञा स्त्री० १. एक छोटा सिक्का, जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। २. एक पैसा। ३. छोटी सीधी लकीर, जो किसी संख्या के आगे लगाने से एकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है। जैसे, ४।, अर्थात् सवा चार। ४. दीर्घ आकार-सूचक मात्रा। ५. पूर्ण विराम सूचित करने-वाली खड़ी रेखा। ६. एक ही घेरे में नाचने या चलने की क्रिया। मंडल। घूमना। ७. धान खराब करनेवाला छोटा लंबा कीड़ा।
पाउँ*†–संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।
पाउंड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक अंग्रेजी सिक्का। एक अंग्रेजी तोल।
पाउ–संज्ञा पुं० पाँव। पैर।
पाउडर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सौन्दर्य बढ़ाने के लिए चेहरे या अन्य अंगों पर लगाने की बुकनी। चूर्ण।
पाक–संज्ञा पुं० १. रींधना। २. पकने या पकाने की क्रिया। ३. पकवान। रसोई। ४. चाशनी में मिलाकर बनाई जानेवाली औषध। ५. पाचन-क्रिया। ६. श्राद्ध में पिंडदान के लिए खीर। ७. पाकिस्तान का लघु नाम।
वि० [फा०] १. शुद्ध। पवित्र। २. पाप-रहित। निर्मल। निर्दोष। ३. समाप्त।
मुहा०—झगड़ा पाक करना=१. किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। २. झगड़ा तय करना। बाधा दूर करना। ३. मार डालना।
पाककर्त्ता–वि० पाचक। रसोइया। रसोई बनानेवाला।
पाकक्षार–संज्ञा पुं० जवाखार।
पाकगृह–संज्ञा पुं० रसोईघर।
पाकट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] जेब। पाकेट।
पाकठ†–वि० १. पका हुआ। २. अनुभवी। ३. मजबूत। बली।
पाकड़–संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।
पाकदामन–वि० [फा०] [संज्ञा पाकदामनी] १. निष्कलंक। २. सती। पतिव्रता।
पाकना–क्रि० अ० दे० "पकना"।
पाकपात्र–संज्ञा पुं० हाँड़ी। भोजन बनाने का पात्र।
पाकपटी–संज्ञा स्त्री० १. स्थाली। २. चूल्हा। आवाँ। भट्ठी। पजावा।

पाकयज्ञ–संज्ञा पुं० [वि० पाकयाज्ञिक] १. गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम, जिसमें खीर की आहुति दी जाती है। २. पंच महायज्ञों में ब्रह्म-यज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्व-देव होम, बलि-कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि-भोजन।

पाकर–संज्ञा पुं० पर्कटी। एक प्रसिद्ध वृक्ष। पाकड़। पाखर। पलखन।

पाकरिपु–संज्ञा पुं० इन्द्र।

पाकशाला–संज्ञा स्त्री० रसोई बनाने का घर। रसोईघर। बावरचीखाना। पाकगृह।

पाकशासन–संज्ञा पुं० इंद्र। देवराज। पाक नामक दैत्य के मारनेवाले।

पाकस्थली–संज्ञा स्त्री० दे० "पक्वाशय"। भोजन बनाने का पात्र। हाँड़ी। बटुई।

पाका†–वि० दे० "पक्का"। फोड़ा। घाव।

पाकिस्तान–संज्ञा पुं० भारत को विभाजित करके उन क्षेत्रों को, जिनमें मुसलमानों की संख्या अधिक थी, मिलाकर बनाया गया नया मुसलमानी राज्य, जिसमें पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त, सिन्ध, पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल है। १५ अगस्त १९४७ को इस राज्य की स्थापना हुई।

पाकागार–संज्ञा पुं० रसोईघर।

पाकी—वि० पक्की। तैयार। परिपक्व।

पाकीजा—वि० पाक। पवित्र। निर्दोष। सुन्दर।

पाकुक–संज्ञा पुं० पाचक। पाककर्त्ता।

पाकेट–संज्ञा पुं० (अं०) जेब। पहनने के कपड़े में चीजें रखने के लिए बनी हुई थैली।

पाकेटमार–संज्ञा पुं० गिरहकट।

पाक्य–वि० पचने योग्य।

पाक्षिक–वि० १. पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखनेवाला। पखवारे का। पन्द्रहवें दिन पर होनेवाला। २. पक्ष में उत्पन्न होनेवाला। पक्षवाही। तरफदार। सहायक। ३. दो मात्राओं का एक छन्द।

पाखंड–संज्ञा पुं० १. शास्त्र-विरुद्ध आचार। २. ढोंग। ढकोसला। आडंबर। ३. धोखा। छल। ४. नीचता। शरारत। मुहा०—पाखंड फैलाना=किसी को ठगने के लिए ढोंग रचना। मकर फैलाना।

पाखंडी–वि० १. वेद-विरुद्ध आचार करने-वाला। २. ढोंग रचनेवाला। कपटा-चारी। बगला भगत। ३. धूर्त। धोखे-बाज।

पाख–संज्ञा पुं० १. पक्ष। पंद्रह दिन। पख-वारा। २. दीवार। भीति। बड़ेर रखने की त्रिकोणाकार दीवार।

पाखर–संज्ञा स्त्री० लोहे की झूल, जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है। चार आईना।
संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

पाखा–संज्ञा पुं० १. छोर। कोना। २. उसारा। ३. एक ओर की दीवाल। दे० "पाख"।

पाखान*†–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

पाखाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. मल त्याग करने का स्थान। २. मल। गू। गलीज। पुरीष। टट्टी।

पाग–संज्ञा स्त्री० १. पगड़ी। दे० "पाक"। २. शीरा या चाशनी, जिसमें मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती हैं। ३. चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि। ४. शीरे में पकाकर बनाई गई दवा या पुष्टई।

पागना–क्रि० स० रस में पकाना। मीठी चाशनी में पागना, सानना या लपेटना। क्रि० अ० अत्यंत अनुरक्त होना।

पागल–वि० [स्त्री० पगली] १. बावला। उन्मत्त। विक्षिप्त। २. जिसके होश-हवास दुरुस्त न हों। आपे से बाहर। ३. बेवकूफ। मूर्ख। सिड़ी।

पागलखाना–संज्ञा पुं० पागलों का चिकित्सा-लय या अस्पताल।

पागलपन–संज्ञा पुं० १. उन्माद। बावला-पन। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. मूर्खता।

पागुर†–संज्ञा पुं० दे० "जुगाली"।

पाचक–वि० [स्त्री० पाचिका] पचानेवाला। पकानेवाला।

संज्ञा पुं० १. पाचनशक्ति बढ़ानेवाली औषध। भोजन पचाने के लिए उपयोगी वस्तु। २. रसोइया। बावर्ची। ३. पाँच पित्तों में से एक। ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि।

पाचन–संज्ञा पुं० १. पचाना या पकाना। २. भोजन का पेट में जाकर शरीर की धातुओं में परिवर्त्तन। ३. भोजन पचानेवाली औषध। ४. प्रायश्चित्त। ५. खट्टा रस। ६. अग्नि।
वि० पचानेवाला।

पाचनशक्ति–संज्ञा स्त्री० भोजन पचानेवाली शक्ति। पेट में पित्त और अग्नि की शक्ति। हाजमा।

पाचना*–क्रि० स० अच्छी तरह पकाना। परिपक्व करना।

पाचनीय–वि० पचाने या पकाने योग्य। पाच्य।

पाचिका–संज्ञा स्त्री० रसोईदारिन। रसोई करनेवाली।

पाच्छाह†–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाच्य–वि० पचनीय। पचाने या पकाने योग्य। पचने योग्य।

पाछ–संज्ञा स्त्री० १. टीका। तेज धारवाले अस्त्र से खराब खून निकालना। शरीर पर छुरी की धार से किया हुआ हलका घाव। २. पोस्ते की बोंड़ी पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा, जिससे अफीम निकलती है। ३. किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिए लगाया हुआ चीरा।
†संज्ञा पुं० पीछा। पिछला भाग।
क्रि० वि० पीछे।

पाछना–क्रि० स० छुरे या नहरनी आदि से हलका चीरा लगाना। चीरना। टीका लगाना। गोटी खोदना।

पाछल–वि० दे० "पिछला"।

पाछा*–संज्ञा पुं० दे० "पीछा"।

पाछिल*–वि० दे० "पिछला"।

पाछी, पाछें*–क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पाज–संज्ञा पुं० दे० "पाँजर"।

पाजामा–संज्ञा पुं० [फा०] पैर में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र, जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, इजार, चूड़ीदार, तमान, अरबी, कलीदार, नैपाली, पेशावरी आदि।

पाजी*–संज्ञा पुं० १. पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २. रक्षक। चौकीदार।
वि० दुष्ट। नीच। बदमाश। दुराचारी। गुण्डा।

पाजीपन–संज्ञा पुं० दुष्टता। नीचता।

पाजेब–संज्ञा स्त्री० [फा०] पैरों में पहनने का एक गहना। नूपुर। मंजीर।

पाटंबर–संज्ञा पुं० रेशमी वस्त्र।

पाट–संज्ञा पुं० १. रेशम। २. बटा हुआ रेशम। जूटी। ३. रेशम के कीड़े का एक भेद। ४. पटसन। ५. राजगद्दी। सिंहासन। ६. चौड़ाई। फैलाव। नदी के दो किनारों के बीच की चौड़ाई। ७. पीढ़ा। पल्ला। ८. वह शिला, जिस पर धोबी कपड़े धोता है। ९. चक्की के एक ओर का भाग। १०. कपड़ा। वस्त्र।

पाटकृमि–संज्ञा पुं० रेशम का कीड़ा।

पाटच्चर–संज्ञा पुं० चोर। तस्कर।

पाटन–संज्ञा स्त्री० १. पटाव। पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर बनाई गई वस्तु। ३. मकान की अटारी या पहली मंजिल से ऊपर की मंजिलें। ४. सर्प का विष उतारने का एक मंत्र जो रोगी के कान के पास चिल्लाकर पढ़ा जाता है।

पाटना–क्रि० स० १. किसी गढ़े को मिट्टी, कूड़े आदि से भर देना। २. छत बनाना। ३. तृप्त करना। ४. सींचना। ५. ऋण चुकाना।

पाटमहिषी–संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"। महारानी। प्रधान रानी।

पाटल–संज्ञा पुं० १. गुलाब का फूल। पाटली पुष्प। २. गुलाबी रंग। श्वेत और लाल रंग का मेल। ३. पाडर या पाढ़र का वृक्ष।

पाटला–संज्ञा स्त्री० १. पाढर का वृक्ष। २. लाल लोध। ३. दुर्गा। ४. पार्वती।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया सोना।

पाटलिपुत्र,पाटलीपुत्र—संज्ञा पुं० मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, जो इस समय भी बिहार की राजधानी है। पटना।

पाटली—संज्ञा स्त्री० १. पाउडर। २. पांडुफली। ३. पटना की एक देवी।

पाटव—संज्ञा पुं० १. चतुराई। पटुता। विज्ञता। कुशलता। नैपुण्य। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. आरोग्य।

पाटवी—वि० १. पटरानी का पुत्र। २. रेशमी। कौषेय (वस्त्र)।

पाटसन—संज्ञा पुं० दे० "पटसन"। एक प्रकार का सन।

पाटा—संज्ञा पुं० १. पटरा। लकड़ी का पीढ़ा। पट्टा। २. पाट। तख्ता, जिस पर धोबी कपड़ा धोता है।

पाटिका—संज्ञा स्त्री०, १. पौधा-विशेष। २. छाल। छिलका। ३. एक दिन की मजदूरी।

पाटिया—संज्ञा पुं० १. पटिया। २. गले में पहनने का सोने का गहना।

पाटी—संज्ञा स्त्री० १. परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २. जोड़, बाक़ी, गुणा आदि का क्रम। ३. श्रेणी। पंक्ति।

संज्ञा पुं० १. लकड़ी की वह पट्टी, जिस पर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पटिया। २. पाठ। सबक। ३. माँग के दोनों ओर कंघी-द्वारा बैठाए हुए बाल। पट्टी। ४. चारपाई के ढाँचे में लंबाई की ओर की पट्टी। ५. सीतलपाटी। चटाई। ६. शिला। चट्टान। ७. खपरैल की नाली का अर्द्ध भाग।

मुहा०—पाटी पढ़ना=१. पाठ पढ़ना। शिक्षा पाना। चाल चलना। २. बात बनाना।

पाटीर—संज्ञा पुं० एक प्रकार का चन्दन।

पाठ—संज्ञा पुं० १. पढ़ाई। पढ़ने की क्रिया। अध्ययन। २. धर्मपुस्तक का नियमपूर्वक पढ़ना। ३. जो पढ़ा या पढ़ाया जाय। ४. उतना अंश, जो एक बार में पढ़ा जाय। सबक। ५. अध्याय। परिच्छेद। ६. शब्दों या वाक्यों का क्रम या योजना।

मुहा०—पाठ पढ़ाना=स्वार्थ साधने के लिए किसी को बहकाना। पट्टी पढ़ाना। उलटा पाठ पढ़ाना=कुछ का कुछ समझा देना। बहका देना।

पाठक—संज्ञा पुं० १. पढ़नेवाला। वाचक। २. अध्यापक। पढ़ानेवाला। ३. धर्मोपदेशक। ४. उपाध्याय। ५. ब्राह्मणों का एक वर्ग।

पाठदोष—संज्ञा पुं० पढ़ने का निंद्य और वर्जित ढंग। जैसे कठोर स्वर से पढ़ना, या ठहर-ठहरकर उच्चारण करना।

पाठन—संज्ञा पुं० पढ़ाने की क्रिया। अध्यापन। पढ़ाना। अध्ययन कराना। विद्या पढ़ाना।

पाठना—क्रि० स० दे० "पढ़ाना"।

पाठभेद—संज्ञा पुं० दे० "पाठांतर"।

पाठशाला—संज्ञा स्त्री० विद्यालय। वह स्थान, जहाँ विद्यार्थी पढ़ाये जायँ। मदरसा। स्कूल।

पाठांतर—संज्ञा पुं० एक ही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी स्थल-विशेष पर भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम। दूसरा पाठ। पाठभेद।

पाठा—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता।

संज्ञा पुं० [स्त्री० पाठी] १. जवान और हट्टा-कट्टा। मोटा-तगड़ा। २. जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठालय—संज्ञा पुं० पाठशाला।

पाठावली—संज्ञा पुं० पाठों का समूह। पाठों की पुस्तक।

पाठी—संज्ञा पुं० १. पाठ करनेवाला। पाठक। पढ़नेवाला। २. चीता। ३. चित्रक वृक्ष।

संज्ञा स्त्री० पाठा का स्त्री०। दे० "पाठा"।

पाठीन—संज्ञा पुं० एक प्रकार की मछली।

पाठ्य—वि० १. पढ़ने योग्य। पठनीय। २. जो पढ़ाया जाय।

पाड़—संज्ञा पुं० १. धोती आदि का किनारा। २. मचान। मंच। ३. मकान बनाने के लिए मंच। कुएँ के मुँह पर रखी जाने वाली जाली। कटकर। चह। ४. पुश्ता। बाँध। ५. फाँसी का तख्ता। तिकठी।

पाड़ड़—संज्ञा स्त्री० पाटल नामक पेड़।

पाड़ा–संज्ञा पुं० १. महल्ला। २. भैंस का बच्चा।
पाढ़–संज्ञा पुं० १. पाटा। २. फसल की रखवाली के लिए मचान।
पाढ़त*–संज्ञा स्त्री० १. जो कुछ पढ़ा जाय। २. मंत्र। जादू। ३. पढ़ने की क्रिया। पढ़ाई।
पाढर, पाढल–संज्ञा पुं० दे० "पाटल"।
पाढा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हिरन। चित्रमृग।
संज्ञा स्त्री० दे० "पाठा"।
पाण–संज्ञा स्त्री० १. पीना। २. पत्ता। ३. कपड़े की माड़ी। ४. ताम्बूल।
पाणि–संज्ञा पुं० हाथ। कर।
पाणिग्रहण–संज्ञा पुं० १. विवाह की एक रीति, जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है। २. ब्याह। विवाह।
पाणिग्राह या **पाणिग्राहक**–संज्ञा पुं० पति।
पाणिघ–संज्ञा पुं० मृदंग। ढोल। हाथ का बाजा।
पाणिज–संज्ञा पुं० १. उँगली। २. नख। नाखून।
पाणिनि–संज्ञा पुं० अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रंथ के रचयिता, जो ईसा-पूर्व चौथी शताब्दी में हुए थे।
पाणिनीय–वि० १. पाणिनि-कृत (ग्रंथ आदि)। २. पाणिनि का कहा हुआ।
पाणिनीय दर्शन–संज्ञा पुं० पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण।
पाणिपल्लव–संज्ञा पुं० उँगलियाँ।
पाणिपाद–संज्ञा पुं० हाथ-पैर। हाथ और पाँव।
पाणिपीड़न–संज्ञा पुं० १. पाणिग्रहण। विवाह। २. क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना।
पाणी–संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।
पातंजल–वि० पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण-महाभाष्य)।
संज्ञा पुं० १. पतंजलि-कृत योगसूत्र। २. पतंजलि-प्रणीत महाभाष्य।
पातंजल दर्शन–संज्ञा पुं० योगदर्शन।
पातंजल भाष्य–संज्ञा पुं० महाभाष्य-नामक व्याकरण-ग्रंथ।
पातंजल सूत्र–संज्ञा पुं० योगसूत्र। योगशास्त्र।
पात–संज्ञा पुं० १. गिरना या गिराना। पतन। २. नाश। ध्वंस। मृत्यु। ३. पड़ना। जा लगना। ४. नक्षत्रों की कक्षाएँ। ५. पत्र। पत्ता। ६. राहु।
पातक–संज्ञा पुं० अघ। दोष। अपराध। गुनाह। अधर्म।
पातकी–वि० पातक करनेवाला। पाप करनेवाला। पापी। कुकर्मी। अधर्मी।
पातन–संज्ञा पुं० गिराने की क्रिया। गिराना।
पातर*†–संज्ञा स्त्री० १. पत्तल। २. वेश्या। रंडी। पतुरिया।
*†वि० पतला। सूक्ष्म। बारीक। क्षीण।
पातल–संज्ञा स्त्री० दे० "पातर"।
पातव्य–वि० १. रक्षा करने योग्य। २. पीने योग्य।
पातशाह–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।
पाता*–संज्ञा पुं० दे० "पत्ता"। पत्र।
वि० रक्षक। रक्षा करनेवाला।
पाताबा–संज्ञा पुं० [फा०] १. पैरों में पहनने का मोजा। २. सुखतला।
पातार*–संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।
पाताल–संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे का लोक। सातवाँ लोक। रसातल। नरक। २. अधोलोक। नागलोक। ३. विवर। बिल। गुफा। ४. बाड़वानल। ५. छंदःशास्त्र में वह चक्र, जो मात्रिक छंद की संख्या लघु, गुरु, कला आदि का सूचक होता है। एक यंत्र, जिससे औषध बनाते हैं।
पाताल-यंत्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार का यंत्र, जिसके द्वारा कड़ी औषधियाँ पिघलाई जाती हैं।
पातालत†–संज्ञा पुं० १. पत्र और अक्षत। २. तुच्छ भेंट।
पाति†–संज्ञा स्त्री० १. पत्ती। दल। २. पत्र। चिट्ठी।

पातित्य—संज्ञा पुं० १. पतित होने का भाव। पतन। २. पातक। पाप। दुराचार। ३. जातिभ्रष्ट होने का कारण। अधःपतन।

पातिव्रत, पातिव्रत्य—संज्ञा पुं० पतिव्रता होने का भाव। पतिव्रता का धर्म। सती-धर्म।

पातिसाहि—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाती*—संज्ञा स्त्री० १. पत्र। चिट्ठी। २. वृक्ष के पत्ते। ३. इज्जत। प्रतिष्ठा।

पातुर†—संज्ञा स्त्री० वेश्या। रण्डी।

पात्र—संज्ञा पुं० १. बरतन। भाजन। आधार। २. किसी विषय का अधिकारी। जैसे, दानपात्र। ३. नाटक के नायक, नायिका आदि। ४. अभिनेता। नट। ५. पत्र। पत्ता।

पात्रक—संज्ञा पुं० १. थाली। २. बरतन। हांडी।

पात्रता—संज्ञा स्त्री० १. योग्य या पात्र होने का भाव। योग्यता। क्षमता। २. अधिकार।

पात्रत्व—संज्ञा पुं० दे० "पात्रता"।

पात्रिय—वि० वह व्यक्ति, जिसके साथ बैठकर एक थाली में भोजन किया जा सके। सहभोजी।

पात्री—संज्ञा स्त्री० छोटा बर्तन।
वि० जिसके पास सुयोग्य लोग हों।

पात्रीय—वि० पात्र का। पात्र-संबंधी।

पाथ—संज्ञा पुं० १. जल। २. सूर्य। ३. अग्नि। ४. अन्न। ५. आकाश। ६. वायु। ७. मार्ग। राह।

पाथना—क्रि० स० १. गढ़ना। सुडौल करना। बनाना। २. थोप-पीट कर बनाना। कण्डे, ईटें या खपरे बनाना। ३. पीटना। ठोंकना। मारना। ४. गोबर पाथना।

पाथनाथ—संज्ञा पुं० समुद्र।

पाथनिधि—संज्ञा पुं० दे० "पाथोनिधि"। सागर। समुद्र।

पाथर*†—संज्ञा पुं० पत्थर। पाषाण।

पाथा—संज्ञा पुं० १. जल। २. अन्न। ३. आकाश।

पाथि—संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. आँख। ३. घाव की पपड़ी। ४. तर्पण के लिए जल-विशेष।

पाथेय—संज्ञा पुं० १. रास्ते का कलेवा। मार्ग में खाने का भोजन। २. संबल। पथ में व्यय करने की सामग्री।

पाथोज—संज्ञा पुं० कमल।

पाथोद—संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. समुद्र।

पाथोधर—संज्ञा पुं० बादल।

पाथोधि—संज्ञा पुं० समुद्र।

पाथोनिधि—संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।

पाद—संज्ञा पुं० १. चरण। पैर। पाँव। २. श्लोक या पद्य का चतुर्थांश। पद। चरण। छन्द का चौथा भाग। चौथाई। ३. पुस्तक का अंश-विशेष। ४. वृक्ष का मूल। ५. नीचे का भाग। तल। ६. बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत। ७. चलना। गमन। ८. गुदा के मार्ग से निकलनेवाली वायु। अपान वायु। अधोवायु। गोज। ९. किरण। रश्मि। १०. शिव।

पादक—वि० १. चलनेवाला। २. चतुर्थांश। चौथाई।

पादकीलिका—संज्ञा स्त्री० नूपुर। पाजेब।

पादखण्ड—संज्ञा पुं० वन। जंगल।

पादगंडिर—संज्ञा पुं० पीलपाँव रोग। श्लीपद रोग।

पादग्रन्थि—संज्ञा स्त्री० १. एड़ी। २. एड़ी और घुट्टी का मध्य भाग। गुल्फ।

पादचत्वर—संज्ञा पुं० १. बकरा। २. बालू का टीला। ३. ओला। ४. पीपल का पेड़। वि० निन्दक। चुगलखोर।

पादचारी—संज्ञा पुं० पैदल। पैर से चलनेवाला। पैदल चलनेवाला।

पादजल—संज्ञा पुं० १. चरणोदक। २. मट्ठा।

पादटीका—संज्ञा स्त्री० ग्रंथ के पृष्ठ के नीचे लिखी गई टिप्पणी। फुटनोट।

पादतल—संज्ञा पुं० पैर का तलवा।

पादत्र, पादत्राण—संज्ञा पुं० १. खड़ाऊँ। पाँवड़ी। २. जूता।

पादना—क्रि० अ० हवा छोड़ना। अपान वायु का त्याग करना।

पादप—संज्ञा पुं० १. पेड़। वृक्ष। २. बैठने का पीढ़ा।

पादपीठ–संज्ञा पुं० पीढ़ा । पाटा ।
पादपूरण–संज्ञा पुं० श्लोक या छन्द के किसी चरण को पूरा करने लिए रखा गया अक्षर या शब्द ।
पादप्रक्षालन–संज्ञा पुं० पैर धोना ।
पादप्रणाम–संज्ञा पुं० साष्टांग दंडवत् । पाँव पड़ना ।
पादप्रहार–संज्ञा पुं० लात मारना । ठोकर मारना । पदाघात ।
पादरक्ष, पादरक्षक–संज्ञा पुं० पैरों की रक्षा करनेवाला । जैसे, जूता ।
पादरज–संज्ञा स्त्री० चरणों की धूल ।
पादरी–संज्ञा पुं० ईसाई-धर्म का पुरोहित, जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार और उपासना कराता है ।
पादवंदन–संज्ञा पुं० पैर पकड़कर प्रणाम करना ।
पादविन्यास–संज्ञा पुं० गमन ।
पादशाह–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह" ।
पादशुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० चरणसेवा ।
पादहीन–वि० १. जिसके तीन ही चरण हों । २. जिसके चरण न हों ।
पादाकुलक–संज्ञा पुं० चौपाई ।
पादाक्रांत–वि० १. पददलित । पैर से कुचला हुआ । २. पामाल ।
पादाति, पादातिक–संज्ञा पुं० पैदल सिपाही ।
पादारघ*–संज्ञा पुं० दे० "पाद्यार्घ" ।
पादी–संज्ञा पुं० पैरोंवाले जल-जंतु । जैसे-गोह, घड़ियाल आदि ।
पादीय–वि० पदवाला । मर्यादावाला ।
पादुका–संज्ञा स्त्री० १. खड़ाऊँ । २. जूता ।
पादोदक–संज्ञा पुं० १. चरणामृत । २. चरणोदक । पैर धोया हुआ जल । वह जल, जिससे पैर धोए गए हों ।
पाद्य–संज्ञा पुं० वह जल, जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ ।
पाद्यक–संज्ञा पुं० पाद्य देने का एक भेद ।
पाद्यार्घ–संज्ञा पुं० १. पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल । २. पूजा की सामग्री । ३. पूजा में भेंट या नजर ।
पाधा–संज्ञा पुं० १. आचार्य । उपाध्याय । पुरोहित । २. पंडित ।
पान–संज्ञा पुं० १. किसी द्रव पदार्थ को पी जाना । पीना । २. शराब पीना । मद्य-पान । ३. पीने का पदार्थ । पेय द्रव्य । ४. मद्य । ५. पानी पीने का पात्र । प्याला । कटोरा । *६. प्राण । ७. तांबूल । एक प्रसिद्ध लता, जिसके पत्तों का बीड़ा बनाकर खाते हैं । ८. पान के आकार की कोई चीज । ९. ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक । *१०. पाणि । हाथ ।
मुहा०—पान देना=दे० "बीड़ा देना" । पान-पत्ता=१. लगा या बना हुआ पान । २. तुच्छ पूजा या भेंट । पान । पान-फूल=१. सामान्य उपहार या भेंट । २. अत्यंत कोमल वस्तु । पान बनाना=१. पान में चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना । २. पान लगाना । पान लेना=दे० "बीड़ा लेना" ।
पानड़ी–संज्ञा स्त्री० एक सुगंधित पत्ती ।
पानदान–संज्ञा पुं० पान और उसके लगाने की सामग्री रखने का डिब्बा । पनडब्बा ।
पानपात्र–संज्ञा पुं० १. जलपात्र । पानी पीने का बर्तन । २. मदिरा या शराब पीने का प्याला । ३. पान रखने का डिब्बा । पनडब्बा ।
पानरा†–संज्ञा पुं० दे० "पनारा" ।
पानशौण्ड–संज्ञा पुं० अतिशय मद्यपायी । मतवाला ।
पानही†–संज्ञा स्त्री० दे० "पनही" ।
पाना–क्रि० स० १. प्राप्त करना । अपने अधिकार में करना । उपलब्ध करना । हासिल करना । दी या खोई हुई चीज वापस मिलना । २. भेद पाना । पता पाना । ३. समझना । कुछ सुन या जान लेना । ४. देखना । साक्षात् करना । ५. समर्थ होना । ६. अनुभव करना । ७. भला या बुरा परिणाम भोगना । उठाना । ८. किसी बात में किसी के बराबर पहुँचना । बराबर होना । ९. भोजन करना । खाना । १०. समझना । जानना ।

वि० जिसे पाने का अधिकार हो। प्राप्तव्य। पावना।
पानागार—संज्ञा पुं० मधुशाला। शराबखाना।
पानासक्त—वि० मद्यप्रिय।
पानाहार—संज्ञा पुं० खाना-पीना। अन्न-जल।
पानि‡—संज्ञा पुं० १. दे० "पाणि"। हाथ। २. *दे० "पानी"।
पानिग्रहण*—संज्ञा पुं० दे० "पाणिग्रहण"।
पानिप—संज्ञा पुं० १. कांति। द्युति। चमक। २. आब। ओप। पानी।
पानी—संज्ञा पुं० १. जल। तोय। नीर। २. पानी का-सा पदार्थ, जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रसकर निकले। ३. मेंह। वृष्टि। वर्षा। ४. पानी-जैसी पतली वस्तु। ५. किसी वस्तु का सार अंश, जो जल के रूप में हो। रस। अर्क। जूस। ६. चमक। कांति। आब। छवि। ७. हथियार की धार। जौहर। आब। ८. मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू। ९. वर्ष। साल। जैसे, पाँच पानी का सुअर। १०. मुलम्मा। ११. पुरुषत्व। जीवट। हिम्मत। १२. पशुओं की वंशगत विशेषता या कुलीनता। १३. पानी की तरह ठंडा पदार्थ। १४. पानी की तरह स्वादहीन पदार्थ। १५. लड़ाई या द्वंद्वयुद्ध। १६. बार। बेर। दफा। १७. जल-वायु। आब-हवा। **मुहा०**—पानी का बतासा या बुलबुला=क्षणभंगुर वस्तु। पानी की तरह बहाना=अंधाधुंध खर्च करना। बिना सोचे-समझे खर्च करना। उड़ाना या लुटाना। पानी के मोल=बहुत सस्ता। पानी टूटना=कुएँ, ताल आदि में इतना कम पानी रह जाना कि निकाला न जा सके। पानी देना=१. सींचना। २. अंजलि में लेकर पितरों के नाम से पानी गिराना। तर्पण करना। पानी पढ़ना=मंत्र पढकर पानी फूंकना। पानी परोरना=मंत्र पढ़कर पानी फूंकना। पानी-पानी होना=लज्जित होना। लज्जा से कट जाना। पानी फूंकना=मंत्र पढ़कर पानी पर फूंक मारना। (किसी पर) पानी फेरना या फेर देना=चौपट कर देना। मटियामेट कर देना। (किसी के सामने) पानी भरना=(किसी से तुलना में) अत्यंत तुच्छ प्रतीत होना। फीका पड़ना। पानी भरी खाल=अनित्य या क्षणभंगुर शरीर। पानी में आग लगाना=जहाँ झगड़ा होना असंभव हो, वहाँ झगड़ा करा देना। पानी में फेंकना या बहाना=नष्ट करना। बरबाद करना। सूखे पानी में डूबना=भ्रम में पड़ना। धोखा खाना। मुँह में पानी आना या छूटना=१. स्वाद लेने का लालच होना। २. गहरा लोभ होना। पानी उतारना=अपमानित करना। इज्जत उतारना। पानी जाना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना। पानी करना या कर देना=किसी का क्रोध शान्त कर देना। पानी लगना=स्थान-विशेष के जल-वायु के कारण स्वास्थ्य बिगड़ना या रोग होना।
पानीदार—वि० १. इज्जतदार। माननीय। आबदार। २. चमकदार। ३. प्रतिष्ठापूर्ण। ४. जीवटवाला। शक्तिमान्। साहसी। ५. आत्माभिमानी।
पानीदेवा—वि० तर्पण या पिंडदान करनेवाला। वंशज।
संज्ञा पुं० पुत्र।
पानीफल—संज्ञा पुं० सिंघाड़ा। पानी में उत्पन्न होनेवाला फल-विशेष।
पानीय—संज्ञा पुं० जल।
वि० १. पीने योग्य। २. रक्षा करने योग्य। रक्षा-संबंधी।
पानूस*—संज्ञा पुं० दे० "फानूस"।
पानौरा†—संज्ञा पुं० पान के पत्ते की पकौड़ी।
पान्थ—वि० पथिक। यात्री। राही। बटोही।
पाप—संज्ञा पुं० १. वह कर्म, जिसका फल इस लोक और परलोक में अशुभ हो। अधर्म। कलुष। धर्म या पुण्य का उलटा बुरा काम। गुनाह। पातक। अघ। २. अपराध। जुर्म। कसूर। ३. वध। हत्या। ४. पापबुद्धि। बुरी नियत। बुराई।

५. अहित। खराबी। अनिष्ट। ६. झंझट। जंजाल। ७. पापग्रह। अशुभ ग्रह।

मुहा०–पाप उदय होना=संचित पाप का फल मिलना। पिछले जन्मों के पाप का दण्ड मिलना। पाप कमाना या बटोरना=पाप कर्म करना। पाप लगना=पाप या दोष होना। पाप कटना=झगड़ा दूर होना। जंजाल छूटना। पाप नाश होना। पाप मोल लेना=जान-बूझकर किसी बखेड़े के काम में फँसना। पाप पड़ना*=कठिन हो जाना।

पापकर्म–संज्ञा पुं० वह काम, जिसके करने में पाप हो। अनुचित कार्य। बुरा काम।

पापकर्मा–वि० दे० "पापी"।

पापक्षय–संज्ञा पुं० पापों का नष्ट होना। तीर्थ।

पापखंडन–संज्ञा पुं० पापनाशक मंत्र-विशेष। पाप दूर करने के लिए व्रत-विशेष।

पापगण–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र के अनुसार ठगण का आठवाँ भेद।

पापग्रह–संज्ञा पुं० राहु, शनि, बुध, केतु आदि अनिष्टकारक ग्रह। अशुभ ग्रह। (फलित ज्योतिष।)

पापघ्न–वि० पापनाशक। पाप दूर करनेवाला।

पापचेता–संज्ञा पुं० पापात्मा। पापी।

पापड़–संज्ञा पुं० मूँग या उर्द की धोई के आटे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी।

मुहा०–पापड़ बेलना=१. घोर परिश्रम करना। २. कठिनाई या दुःख से समय व्यतीत करना। बहुत से पापड़ बेलना=बहुत तरह के काम कर चुकना।

पापड़ा–संज्ञा पुं० १. एक पेड़, जिसकी लकड़ी से कंघी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं। २. दे० "पित्तपापड़ा"।

पापदृष्टि–वि० १. जिसकी दृष्टि पाप से पूर्ण हो। २. जिसकी दृष्टि पड़ने से हानि पहुँचे।

पापनाशन–संज्ञा पुं० १. पाप का नाश करनेवाला। पापनाशी। २. प्रायश्चित्त। ३. विष्णु। ४. शिव।

पापयोनि–संज्ञा स्त्री० पाप से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पशु, पक्षी, आदि की योनि।

पापरोग–संज्ञा पुं० १. पाप करने के कारण होनेवाला रोग। कुष्ठ, यक्ष्मा, पीनस, श्वेतकुष्ठ, मूकता, उन्माद, अपस्मार, बधिरता तथा अंधत्व आदि रोग धर्मशास्त्रानुसार पापरोग माने गए हैं। २. छोटी माता। वसंत रोग।

पापलोक–संज्ञा पुं० नरक।

पापाचार–संज्ञा पुं० [वि० पापाचारी] दुराचार। पाप का आचरण।

पापाचारी–वि० पापी। दुराचारी। दुष्टता के काम करनेवाला।

पापात्मा–वि० पाप में अनुरक्त। दुष्टात्मा।

पापिष्ठ–वि० बहुत बड़ा पापी।

पापी–वि० [स्त्री० पापिनी] १. पाप करनेवाला। दुराचारी। दुष्कर्मी। अपराधी। पातकी। २. क्रूर। नृशंस। निर्दय। पर-पीड़क।

पापोश–संज्ञा स्त्री० [फा०] जूता।

पाबंद–वि० [फा०] १. बँधा हुआ। बद्ध। कैद। २. नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिए विवश। ३. नियमित रूप से किसी बात का अनुसरण करनेवाला।

पाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पाबंद होने का भाव। कैद। अधीनता। बद्धता। विवशता।

पामड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पाँवड़ा"।

पामर–वि० १. दुष्ट। खल। कमीना। अधम। पापी। २. नीच कुल या वंश में उत्पन्न। ३. निर्बुद्धि। मूर्ख।

पामरी–संज्ञा स्त्री० १. दुपट्टा। उपरना। रेशमी वस्त्र। २. दे० "पाँवड़ी"। नीच स्त्री। दुष्टा। कुलटा।

पामा–संज्ञा स्त्री० रोग-विशेष। खुजली। खाज।

पामारि–संज्ञा पुं० गन्धक। खुजली-नाशक।

पामाल–वि० [फा०] [संज्ञा पामाली] १. पद-दलित। पैर से मला या रौंदा हुआ। पादाक्रान्त। २. बरबाद। तबाह।

पायँ*†–संज्ञा पुं० दे० "पावँ" ।

पायजेहरि*–संज्ञा स्त्री० दे० "पाजेब" ।

पायँता–संज्ञा पुं० पलँग या चारपाई का वह भाग, जिधर पैर रहते हैं । पैताना ।

पायँती–संज्ञा स्त्री० दे० "पायँता" ।

पायंदाज–संज्ञा पुं० [फा०] पैर पोंछने का बिछावन ।

पाय*–संज्ञा पुं० पाँव । पैर ।

पायक–संज्ञा पुं० १. पैदल सिपाही । प्यादा । दूत । हरकारा । धावन । २. दास ।

पायजामा–संज्ञा पुं० कमर से पैर तक पहनने का एक पहनावा जिसमें इजारबन्द या मियानी लगाते हैं । दे० "पाजामा" ।

पायजेब–संज्ञा पुं० दे० "पाजेब" ।

पायड़ा†–संज्ञा पुं० पैंडा ।

पायताबा–संज्ञा पुं० [फा०] मोजा । पैर के तलवे और उँगलियों में पहनने का एक पहनावा । जुर्राब ।

पायदार–वि० [फा०] [संज्ञा पायदारी] टिकाऊ । मजबूत । दृढ़ ।

पायमाल–वि० दे० "पामाल" ।

पायमाली–संज्ञा स्त्री० बर्बादी । दे० "पामाली" ।

पायरा–संज्ञा पुं० रकाब ।

पायल–संज्ञा स्त्री० १. पाजेब । नूपुर । २. तेज चलनेवाली हथिनी । ३. उल्टा उत्पन्न होनेवाला बच्चा । ४. सुन्दर चाल । सुन्दर गति । ५. बाँस की सीढ़ी ।

पायस–संज्ञा स्त्री० १. खीर । २. दूध आदि के द्वारा सिद्ध किया गया अन्न । तसमई । ३. एक प्रकार का गोंद ।

पायसा*†–संज्ञा पुं० पड़ोस ।

पाया–संज्ञा पुं० १. खाट का एक पैर । गोड़ा । पावा । २. खंभा । स्तंभ । ३. पद । दरजा । ओहदा । ४. जीना । सीढ़ी ।

पायी–वि० पीनेवाला । जैसे, स्तनपायी ।

पारंगत–वि० १. पार गया हुआ । २. पूर्ण पंडित । पूरा जानकार । मर्मज्ञ ।

पारंपरीण–वि० परम्परा से चला आया हुआ । परम्परागत ।

पारंपर्य–संज्ञा पुं० १. परंपरा का क्रम । २. वंशपरम्परा ।

पार–संज्ञा पुं० दूसरा तट । नदी आदि जलाशयों के दूसरी ओर का किनारा । २. सामनेवाला दूसरा पार्श्व । दूसरी ओर । दूसरी तरफ । ३. छोर । अंत । अखीर । हद । परिमिति । ४. दो तटों में से कोई (एक की अपेक्षा दूसरा) ।

अव्य०—परे । दूर । आगे ।

यौ०–आर-पार= एक किनारे से दूसरे किनारे तक ।

मुहा०—पार उतरना=१. किसी काम से मुक्ति पाना । २. सफलता प्राप्त करना । ३. समाप्त करना । ठिकाने लगाना । मार डालना । पार करना=१. मार्ग तय करना । पूरा करना । २. निबाहना । बिताना । पार लगना=नदी के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना । किसी से पार लगना=पूरा हो सकना । पार लगाना=किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुँचाना । कष्ट या दुःख से बाहर करना । उद्धार करना । पूरा करना । समाप्त करना । पार होना=किसी दूर तक फैली हुई वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना । किसी काम को पूरा कर चुकना । पार पाना=अंत तक पहुँचना । समाप्ति तक पहुँचना । (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना । जीतना ।

पारख*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पारिख" । परख । २. पारखी । परखनेवाला । परीक्षक ।

पारखद*–संज्ञा पुं० १. दे० "पार्षद" । सेवक । २. परखैया ।

पारखी–संज्ञा पुं० परखनेवाला । परीक्षक ।

पारग–वि० १. पार जानेवाला । पारगामी । २. काम पूरा करनेवाला । समर्थ । ३. पूर्ण ज्ञाता । निपुण ।

पारचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. खंड । टुकड़ा । धज्जी (विशेषतः कपड़े, कागज आदि की) । २. कपड़ा । वस्त्र । पट । ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । ४. पहनावा ।

पारजात*–संज्ञा पुं० दे० "पारिजात" ।

पारण–संज्ञा पुं० १. व्रत या उपवास के बाद किया जानेवाला भोजन। २. तृप्त करने की क्रिया या भाव। ३. मेघ। बादल। ४. समाप्ति। खातमा।

पारतंत्र्य–संज्ञा पुं० परतंत्रता। पराधीनता। दूसरे के अधिकार में रहने का भाव।

पारत्रिक–वि० परलोक-सम्बन्धी। पारलौकिक।

पारथ–संज्ञा पुं० दे० "पार्थ"।

पारद–संज्ञा पुं० १. पारा। धातु-विशेष। रसधातु। २. एक प्राचीन जाति।

पारदर्शक–वि० आर-पार दिखाई देनेवाला। जैसे, शीशा।

पारदर्शिता–संज्ञा पुं० पारदर्शी होने का भाव।

पारदर्शी–वि० १. उस पार तक देखनेवाला। २. दूरदर्शी। अग्रसोची। चतुर। बुद्धिमान्। ३. ज्ञानी।

पारदारिक–संज्ञा पुं० कामुक। दूसरे की स्त्री पर आसक्त। परस्त्री-रत।

पारधी–संज्ञा पुं० बहेलिया। व्याध। शिकारी। हत्यारा। बधिक।

पारन–संज्ञा पुं० दे० "पारण"।

पारना–क्रि० स० १. गिराना। डालना। २. जमीन पर लंबा डालना। लेटाना। ३. कुश्ती या लड़ाई में पछाड़ना। ४. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में गिराना या रखना। ५. किसी के अंतर्गत करना। शामिल करना। ६. शरीर पर धारण करना। पहनाना। ७. बुरी बात घटित करना। उत्पात मचाना। ८. साँचे आदि में ढालकर या किसी वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना। *†क्रि० अ० सकना। समर्थ होना। *†क्रि० स० दे० "पालना"।

यौ०—पिंडा पारना=पिंडदान करना।

पारमार्थिक–वि० १. परमार्थ-संबंधी। जिस से परमार्थ सिद्ध हो। २. मुक्तिसाधक। पारलौकिक। वास्तविक। ठीक-ठीक। मुख्य। प्रधान।

पारलौकिक–वि० १. परलोकसंबंधी। परलोक का विषय। आध्यात्मिक। २. परलोक में शुभ फल देनेवाला।

पारवश्य–संज्ञा पुं० परवशता।

पारशव–संज्ञा पुं० १. पराई स्त्री से उत्पन्न सन्तान। २. एक वर्णसंकर जाति। ३. लोहा। ४. लोहे का अस्त्र। ५. एक प्राचीन देश, जहाँ मोती निकलते थे।

पारषद*–संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।

पारस–संज्ञा पुं० १. एक पत्थर, जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है। २. स्पर्शमणि। अत्यंत लाभदायक और उपयोगी वस्तु। ३. वह, जो दूसरे को अपने समान कर ले। ४. पत्तल, जिसमें खाने के लिए पकवान, मिठाई आदि हो। ५. परोसा हुआ भोजन। पत्तल पर का भोजन। ६. निकट। पास। ७. ईरान। फारस देश। वि० १. पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। २. नीरोग। चंगा। तंदुरुस्त। स्वस्थ।

पारसनाथ–संज्ञा पुं० दे० "पार्श्वनाथ"।

पारसव*–संज्ञा पुं० दे० "पारशव"।

पारसा–वि० [फा०] [स्त्री० पारसाई] धर्मनिष्ठ। सदाचारी।

पारसी–वि० पारस देश का। पारस देश-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. पारस देश का रहनेवाला। २. हिंदुस्तान में बंबई और गुजरात की ओर हजारों वर्ष से बसे हुए वे फारस-निवासी, जिनके पूर्वज मुसलमान बनाए जाने के डर से फारस छोड़कर यहाँ आ बसे थे। ३. भाषा-विशेष। पारस देश की भाषा।

पारसीक–संज्ञा पुं० १. पारस देश। २. पारस देश का निवासी। ३. पारस देश का घोड़ा।

पारस्कर–संज्ञा पुं० १. एक देश का प्राचीन नाम। २. गृह्यसूत्रकार एक मुनि।

पारस्परिक–वि० परस्पर होनेवाला। आपस का। एक-दूसरे का।

पारस्य–संज्ञा पुं० पारस देश।

पारा–संज्ञा पुं० १. पारद। एक चाँदी-जैसी सफ़ेद और चमकीली धातु, जो साधारण गरमी या सरदी में द्रव अवस्था में रहती है। २. दिए के आकार का किन्तु उससे

बड़ा मिट्टी का बरतन। परई। २. टुकड़ा। ३. पत्थरों से बनी छोटी दीवार।
मुहा०—पारा पिलाना=किसी वस्तु को इतना भारी करना, मानो उसमें पारा भरा हो।

पारायण—संज्ञा पुं० १. पूरा करने का कार्य। समाप्ति। २. नियमपूर्वक पाठ। समय निश्चित करके किसी ग्रन्थ का आद्योपांत पाठ करना।

पारावत—संज्ञा पुं० १. कबूतर। कपोत। २. परेवा। पंडुक। ३. बंदर। ४. पर्वत। गिरि। ५. आबनूस की लकड़ी।

पारावार—संज्ञा पुं० १. आर-पार। दोनों ओर का तट। २. सीमा। ३. समुद्र। सागर।

पाराशर—संज्ञा पुं० १. पराशर का पुत्र या वंशज। व्यास। २. पाराशर-स्मृति। वि० १. पराशर-संबंधी। २. पराशर का बनाया हुआ।

पारि*—संज्ञा स्त्री० १. सीमा। हद। २. ओर। तरफ। दिशा। ३. देश। ४. जलाशय का तट।

पारिख*†—संज्ञा स्त्री० दे० "परख"।

पारिजात—संज्ञा पुं० १. देवताओं का वृक्ष। देव-वृक्ष। २. पुष्प-विशेष। हरसिंगार। परजाता। ३. कचनार। पारिभद्र। फरहद।

पारितथ्या—संज्ञा स्त्री० १. सधवा स्त्रियों के धारण करने योग्य वस्तु। २. बेंदी। टिकुली।

पारितोषिक—संज्ञा पुं० प्रसन्न होकर दी जानेवाली वस्तु। तुष्टिजनक दान। पुरस्कार। इनाम।

पारिन्द्र या **पारीन्द्र**—वि० १. सिंह। शेर। मृगेन्द्र। २. अजगर।

पारिपंथिक—संज्ञा पुं० चोर। डाकू। लुटेरा।

पारिपात्र—संज्ञा पुं० पर्वत-विशेष। विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग का नाम, जो मालवा प्रान्त की सीमा पर स्थित था।

पारिपार्श्व—संज्ञा पुं० अनुचर। अरदली।

पारिपार्श्वक—संज्ञा पुं० १. सेवक। पारिषद्। अरदली। २. नाटक के अभिनय में एक विशेष नट, जो सूत्रधार की सहायता करता है।

पारिभद्र—संज्ञा पुं० १. देवदार वृक्ष। २. साखू।

पारिभाव्य—संज्ञा पुं० जमानत। प्रतिभू।

पारिभाषिक—वि० सांकेतिक। विशेष अर्थ-बोधक। परिभाषा-सम्बन्धी।

पारिमाण्डल्य—संज्ञा पुं० अति सूक्ष्म परमाणु। वह परमाणु, जिससे छोटा दूसरा न हो।

पारिरक्षक—संज्ञा पुं० तपस्वी। साधु।

पारिश—संज्ञा पुं० १. परात। २. पीतल।

पारिशील—संज्ञा पुं० एक प्रकार का पुआ।

पारिषद—संज्ञा पुं० १. परिषद् में बैठनेवाला। सभासद। सभ्य। २. अनुयायिवर्ग। गण।

पारी—संज्ञा स्त्री० बारी। पाली। अवसर। क्रम।

पारीण—वि० पारगामी।

पारुष्य—संज्ञा पुं० १. परनिन्दा। परद्रोह। २. अप्रिय भाषण। कठोर वचन। ३. कठोरता, परुषत्व। ४. इंद्र का वन।

पार्क—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) उद्यान। बगीचा।

पार्टी—संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) १. दल। राजनीतिक या अन्य उद्देश्य से व्यक्तियों का संघटन। मंडली। २. वह समारोह, जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाय।

पार्थ—संज्ञा पुं० १. पृथ्वीपति। २. (पृथा का पुत्र) अर्जुन। ३. युधिष्ठिर और भीम। ४. अर्जुन वृक्ष।

पार्थक्य—संज्ञा पुं० १. पृथक् होने का भाव। पृथक्ता। भेद। अंतर। भिन्नता। २. वियोग। जुदाई।

पार्थिव—वि० १. पृथिवी-संबंधी। सांसारिक। पृथ्वी से उत्पन्न। २. मिट्टी आदि का बना हुआ। ३. राजा के योग्य। राजसी। संज्ञा पुं० १. मिट्टी का शिवलिंग २. राजा। ३. मंगलग्रह।

पार्थिवी—संज्ञा स्त्री० १. सीता। २. उमा।

पार्थी—वि० दे० "पार्थिव"।

पार्पर—संज्ञा पुं० यम।

पार्लमेण्टरी बोर्ड—संज्ञा स्त्री०[अंग्रे०] किसी दल या पार्टी की वह समिति, जो विधान-सभाओं के चुनाव में खड़े होनेवाले उम्मीदवारों को चुने और चुनाव-संबंधी व्यवस्था करे।

पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०]सभा-सचिव। मंत्रिमंडल में मंत्रियों को विधान-सभा-सम्बन्धी कार्यों में सहायता देनेवाले सचिव।

पार्लमेण्ट—संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) किसी देश के शासन के लिए नियम बनानेवाली सभा, जिसके सदस्य जनता-द्वारा चुने जाते हैं।

पार्वण—संज्ञा पुं० १. पितृपक्ष में किया जानेवाला श्राद्ध-विशेष। २. पर्व पर किया जानेवाला श्राद्ध। पर्वकृत्य। अमावस्या आदि के दिन किया जानेवाला श्राद्ध।

पार्वत—वि० १. पर्वत-संबंधी। २. एक अस्त्र। पर्वत पर होनेवाला। जैसे, शिलाजीत, सीसा धातु आदि।

पार्वत पीलु—वि० अखरोट।

पार्वती—संज्ञा स्त्री० १. हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी देवी, जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामों से पूजी जाती हैं। शिवा। भवानी। उमा। गौरी। गिरिजा। २. गोपीचंदन।

पार्वतीय—संज्ञा पुं० १. पर्वत-सम्बन्धी। पहाड़ का। पहाड़ी। २. पहाड़ से उत्पन्न।

पार्वतेय—वि० पहाड़ पर होनेवाला।

पार्श्व—संज्ञा पुं० १. कन्धे के नीचे का भाग। बगल। पसली। २. अगल-बगल की जगह। पास। समीपता। निकटता।

यौ०—पार्श्ववर्ती=१. साथी या मुसाहिब। सहचर। पास रहनेवाला। २. समीपस्थ। समीपवर्ती।

पार्श्वग—संज्ञा पुं० सहचर। साथी।

पार्श्वनाथ—संज्ञा पुं० जैनों के तेईसवें तीर्थंकर।

पार्श्वभाग—संज्ञा पुं० समीप का भाग। पसली।

पार्श्ववर्ती—संज्ञा पुं० [स्त्री० पार्श्ववर्तिनी] १. पास रहनेवाला। निकटस्थ। सहचर। समीपवर्त्ती। २. मुसाहिब।

पार्श्वशूल—संज्ञा पुं० पसली का रोग-विशेष। पाँजर का शूल। शूल रोग-विशेष।

पार्श्वस्थ—वि० पास खड़ा रहनेवाला। निकटस्थ।

संज्ञा पुं० अभिनय के नटों में से एक।

पार्षद—संज्ञा पुं० १. पास रहनेवाला सेवक। पारिषद। विख्यात पुरुष। २. मंत्री। मुसाहिब।

पार्सल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पुलिंदा। पैकेट। डाक से भेजने का पुलिंदा।

पालंक—संज्ञा पुं० १. पालक शाक। पालकी। २. बाज पक्षी। ३. एक रत्न, जो काला, हरा और लाल होता है।

पालंग—संज्ञा पुं० दे० "पलंग"।

पाल—संज्ञा पुं० १. पालन करनेवाला। पालक। रक्षक। २. चित्रकवृक्ष। ३. बंगाल का एक प्राचीन राजवंश, जिसने साढ़े तीन सौ वर्ष तक बंग और मगध में राज्य किया था। ४. लंबा-चौड़ा कपड़ा, जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिए तानते हैं जिसमें हवा भरे और नाव चले। ५. तंबू। चँदोवा। शामियाना। ६. गाड़ी या पालकी आदि ढाँकने का कपड़ा। ओहार।

संज्ञा स्त्री० १. फलों को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिए पत्ते बिछाकर रखने की विधि। २. पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा। मेड़। ३. ऊँचा किनारा। कगार।

पालक—संज्ञा पुं० १. पालनकर्त्ता। पालन करनेवाला। पोषक। संरक्षक। २. अश्व-रक्षक। साईस। ३. पाला हुआ लड़का। दत्तक पुत्र। ४. एक प्रकार का साग। ५. पलंग। पर्यंक।

पालकी—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की सवारी, जिसे आदमी कंधे पर लेकर चलते हैं। शिविका। २. डोली। पीनस। म्याना। ३. पालक का साग।

पालकी गाड़ी—संज्ञा स्त्री० पालकी की तरह छतवाली गाड़ी। बग्घी।

पालट—संज्ञा पुं० दत्तक पुत्र। गोद लिया हुआ पुत्र।

पालतू—वि० पाला या पोसा हुआ।
पालथी—संज्ञा स्त्री० दे० "पलथी"।
पालन—संज्ञा पुं० [वि० पालनीय, पालित, पाल्य] १. भोजन-वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा। भरण-पोषण। परवरिश। रक्षण। निर्वाह। २. अनुकूल आचरण। नियम या आदेश के अनुसार कार्य न टालना। भंग न करना।
पालना—क्रि० स० १. भोजन-वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा करना। भरण-पोषण करना। निर्वाह करना। परवरिश करना। २. पशु-पक्षी आदि को रखना। पोसना। ३. निबाहना। रक्षा करना। ४. भंग न करना।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का झूला या हिंडोला। गहवारा। पिंगूरा।
पालनीय—वि० पालन करने योग्य। पालने लायक।
पालव†—संज्ञा पुं० पल्लव। पत्ता। कोमल पत्ता।
पाला—संज्ञा पुं० १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह, जो पृथ्वी के बहुत ठंडी हो जाने पर उस पर सफ़ेद-सफ़ेद जम जाती है। हिम। तुषार। नीहार। २. बर्फ। सरदी। ठंड। ३. व्यवहार करने का संयोग। साबिका। वास्ता। ४. रक्षित। पोसा हुआ। ५. पारी। बारी। ६. क्रम-निरूपण। ७. कालनिरूपण। ८. प्रधान स्थान। सदर मुकाम। ९. सीमासूचक मिट्टी की मेड़ या छोटा भीटा। धुस। १०. अनाज भरने का बड़ा बरतन जो प्रायः कच्ची मिट्टी का गोल दीवार के रूप में होता है। ११. डेहरी। कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह। अखाड़ा।
मुहा०—पाला मार जाना=पौधे या फ़सल का पाला गिरने से मुरझा जाना। (किसी से) पाला पड़ना=व्यवहार करने का संयोग होना। वास्ता पड़ना। काम पड़ना। (किसी के) पाले पड़ना=वश में होना। क़ाबू में आना। पकड़ में आना।
पालागन—संज्ञा स्त्री० दंडवत्। प्रणाम। नमस्कार।
पालि—संज्ञा स्त्री० १. कान की बाली। २. कोना। ३. पंक्ति। श्रेणी। ४. किनारा। सीमा। ५. मेड़। बाँध। ६. करारा। कगार। ७. भीटा। ८. अंक। गोद। ९. परिधि। १०. चिह्न। ११. मूछवाली स्त्री। १२. एक प्राचीन भाषा, जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं। यह भाषा संस्कृत से गिरी और मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से उच्च समझी जाती है। बौद्धों के प्रभुत्व काल में यह भारत की जन-भाषा थी। आज भी स्याम, बर्मा, लंका, चीन आदि देशों में इसका पठन-पाठन वैसा ही होता है, जैसा संस्कृत का भारत में।
पालिक—संज्ञा पुं० पालक। पोषक। रक्षक।
पालिका—संज्ञा स्त्री० पालन करनेवाली। भरण-पोषण करनेवाली।
पालित—वि० रक्षित। पाला हुआ। पोषित।
पालिनी—वि० पालन करनेवाली।
पालिसी—संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) १. नीति। २. किसी बीमा कंपनी की वह सनद, जिस पर बीमा का रुपया दिए जाने की अवधि और शर्तें आदि लिखी रहती हैं।
पाली—संज्ञा स्त्री० वि० [स्त्री० पालिनी] १. पालन करनेवाला। २. पारी। बारी।
पालू—वि० पालतू।
पाले—अव्य० अधीन। वश में। अधिकार में।
मुहा०—पाले पड़ना=अधीन होना। वश में होना।
पाल्य—वि० पालन के योग्य।
पावँ—संज्ञा पुं० पैर।
मुहा०—(किसी काम या बात में) पावँ अड़ाना=किसी विषय में व्यर्थ हस्तक्षेप करना। फ़ज़ूल दख़ल देना। पावँ उखड़ जाना=ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। युद्ध से भागना। पावँ उठाना=१. चलने के लिए उद्यत होना। २ जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाना। पावँ घिसना=चलते-चलते थक जाना। पावँ

जमना=स्थिति में स्थिरता आना। स्थिर भाव से खड़ा होना। दृढ़ता रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। पांव तले की मिट्टी निकल जाना या जमीन खिसक जाना=(किसी भयंकर बात को सुनकर) स्तब्ध हो जाना। होश उड़ जाना। पावँ तोड़ना=१. बहुत चलकर पैर थकाना। २. बहुत दौड़-धूप करना। इधर-उधर बहुत हैरान होना। घोर प्रयत्न करना। पावँ तोड़कर बैठना=१. कहीं न जाना। अचल या स्थिर हो जाना। २. हारकर बैठना। किसी के पावँ धरना=१. पैर छूकर प्रणाम करना। २. दीनता से विनय करना। बुरे पंथ पर पावँ धरना=बुरे काम में प्रवृत्त होना। पावँ पकड़ना=१. विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। २. पैर छूना। बड़ी दीनता और विनय करना। ३. पैर छू कर नमस्कार करना। पावँ पखारना=पैर धोना। पावँ पड़ना=१. पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत् करना। २. अत्यंत दीनता से विनय करना। पावँ पर गिरना=दे० "पावँ पड़ना"। पावँ पसारना=१. पैर फैलाना। २. आराम से पड़ना या सोना। ३. मर जाना। ४. आडंबर बढ़ाना। ठाट-बाट करना। पावँ-पावँ चलना=पैदल चलना। पावँ पूजना=१. बड़ा आदर-सत्कार करना। बहुत पूज्य मानना। २. विवाह में कन्या-दान के समय कन्याकुल के लोगों का वर का पूजन करना और कन्यादान में योग देना। पावँ फूंक-फूंककर रखना=बहुत बचाकर काम करना। बहुत सावधानी या होशियारी से चलना। पावँ फैलाना=१. अधिक पाने के लिए हाथ बढ़ाना। मुँह बाना। पाकर भी अधिक का लोभ करना। २. बच्चों की तरह अड़ना। जिद करना। मचलना। पावँ बढ़ाना=१. चलने में पैर आगे रखना। २. अधिक बढ़ना। अतिक्रमण करना। पावँ भर आना=थकावट से पैर में बोझ-सा मालूम होना। पैर थकना। पावँ भारी होना=गर्भ रहना। हमल होना। पावँ रोपना=प्रतिज्ञा करना। प्रण करना। पावँ लगना=१. प्रणाम करना। २. विनती करना। पावँ से पावँ बाँधकर रखना=बराबर अपने पास रखना। पास से अलग न होने देना। कड़ी निगरानी करना। पावँ सो जाना=१. पैर सुन्न हो जाना। स्तब्ध हो जाना। २. पैर झन्ना उठना। (किसी के) पावँ न होना=ठहरने की शक्ति या साहस न होना। दृढ़ता न होना। धरती पर पावँ न रखना=१. बहुत घमंड करना। २. फूले अंग न समाना।

पावँड़ा–संज्ञा पुं० पावँपोश। पायंदाज। किसी के आदर के लिए उसके आगमन पर मार्ग में बिछाया गया वस्त्र।

पावँड़ी–संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ। पादत्राण। जूता।

पावँर*–वि० १. तुच्छ। नीच। दुष्ट। खल। २. मूर्ख। निर्बुद्धि।
संज्ञा पुं० दे० "पावँड़ा"।
संज्ञा स्त्री० दे० "आवँड़ी"।

पाव–संज्ञा पुं० १. चौथाई। चतुर्थ भाग। २. एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक। पौवा।

पावक–संज्ञा पुं० १. आग। अग्नि। ताप। तेज। २. सदाचार। ३. अग्निमंथ वृक्ष। अगेथू का पेड़। ४. वरुण। ५. सूर्य्य।
वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला। परिष्कारक।

पावकमणि–संज्ञा पुं० सूर्यकान्त मणि।

पावदान–संज्ञा पुं० १. पैर रखने के लिए बना हुआ स्थान या वस्तु। २. इक्के, गाड़ी आदि में लोहे या काठ की वस्तु, जिस पर पैर रखकर चढ़ते हैं।

पावन–वि० [स्त्री० पावनी] १. पवित्र। शुद्ध। २. पवित्र करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित्त। ३. शुद्धि। ४. जल। ५. गोबर। ६. रुद्राक्ष। ७. विष्णु। ८. व्यास का एक नाम।

पावनता–संज्ञा स्त्री० पवित्रता।

पावना†*–क्रि० स० १. पाना। प्राप्त करना। २. अनुभव करना। जानना-समझना। ३. भोजन करना। ४. दे० "पाना"।
संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक। लहना। २. बाकी रकम पाने योग्य।

पावस†–संज्ञा स्त्री० वर्षाकाल। वर्षा ऋतु। बरसात।

पावा†–संज्ञा पुं० दे० "पाया"।

पाश–संज्ञा पुं० १. बन्धन। रस्सी, तार आदि की गाँठ। फंदा। फाँस। २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। बंधन। ३. फँसानेवाली वस्तु। ४. अस्त्र-विशेष।

पाशक–संज्ञा पुं० चौपड़। पासा। जुआ।

पाशकेरली–संज्ञा स्त्री० ज्योतिष की एक गणना, जो पासे फेंककर की जाती है।

पाशव–वि० १. पशु-संबंधी। पशुओं का। २. पशुओं-जैसा।

पाशविक–वि० दे० पाशव।

पाशा–संज्ञा पुं० [फा०] तुर्की सरदारों की उपाधि।

पाशी–संज्ञा पुं० १. व्याध। बहेलिया। २. चांडाल, जो फाँसी पाए हुए व्यक्तियों के गले में फन्दा लगाता है। ३. वरुण।

पाशुपत–वि० १. पशुपति-संबंधी। शिव-संबंधी। २. पशुपति का।
संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। शैव। २. शिव। ३. तंत्रशास्त्र। ४. अथर्व वेद का एक उपनिषद्।

पाशुपतास्त्र–संज्ञा पुं० शिव का शूलास्त्र। त्रिशूल।

पाश्चात्य–वि० १. पिछला। पीछे का। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिम देशीय। योरुप देश-सम्बन्धी। पश्चिम का।

पाश्चात्यीकरण–संज्ञा पुं० किसी देश या जाति आदि को पश्चिमी सभ्यता के साँचे में ढालना या पाश्चात्य ढंग का बनाना।

पाषंड–संज्ञा पुं० १. वेदविरुद्ध आचरण करनेवाला। झूठा मत माननेवाला। २. लोगों को ठगने के लिए साधुओं का-सा रूप-रंग बनानेवाला। ढोंगी। धर्मध्वजी।

पाषंडी–वि० १. वेदविरुद्ध आचरण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। धूर्त्त। ढोंगी। छली। ठग।

पाषर–संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।

पाषाण–संज्ञा पुं० पत्थर। शिला।
वि० निर्दय। हृदयहीन।

पाषाणगैरिक–संज्ञा स्त्री० गेरू।

पाषाणदारण या **दारक**–संज्ञा पुं० टाँकी। छेनी। पत्थर काटने का अस्त्र।

पाषाणभेद–संज्ञा पुं० एक पौधा, जो अपनी पत्तियों की सुन्दरता के लिए बगीचों में लगाया जाता है। पथरचट। पखानभेद।

पाषाणभेदी–संज्ञा पुं० दे० "पाषाणभेद"।
वि० पत्थर छेदनेवाला।

पाषाणी–वि० पत्थर की तरह कठोर हृदयवाली।
संज्ञा स्त्री० बाट। बटखरा।

पासंग–संज्ञा पुं० १. तराजू की डंडी को बराबर करने के लिए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा। २. तराजू की डाँड़ी का बराबर न होना।
मुहा०—(किसी का) पासंग भी न होना=किसी की तुलना में बहुत तुच्छ होना।

पास–संज्ञा पुं० १. ओर। बगल। तरफ। २. निकटता। सामीप्य। समीपता। ३. अधिकार। कब्जा। ४. रक्षा। ५. पल्ला।
अव्य० निकट। समीप। नजदीक।
(अंग्रे०) १. परीक्षा में सफल। उत्तीर्ण। २. स्वीकृत। ३. कहीं जाने का आज्ञापत्र।
यौ०—आस-पास=१. अगल-बगल। समीप। २. क़रीब। लगभग।
मुहा०—(किसी के) पास बैठना=संगत में रहना। पास फटकना=निकट जाना।

पासनी†–संज्ञा स्त्री० बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाने का संस्कार। अन्नप्राशन।

पासबुक–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बैंक या डाकखाने में रुपया जमा करने के हिसाब की पुस्तक।

पासमान*–संज्ञा पुं० पास रहनेवाला दास। पार्श्ववर्ती।

पासवर्ती*–वि० दे० "पार्श्ववर्ती"। निकट-वर्ती। समीपस्थ।

पासा—संज्ञा पुं० १. चौपड़ या चौसर खेलने की गोटी। २. चौसर का खेल। ठप्पा। **मुहा०**—(किसी का) पासा पड़ना=भाग्य अनुकूल होना। पासा पलटना=१. भाग्य प्रतिकूल होना। २. युक्ति या तदबीर का उलटा फल होना।

पासिक*—संज्ञा पुं० फंदा। बंधन।

पासी—संज्ञा पुं० १. जाति-विशेष। २. जाल या फंदा डाल कर चिड़िया पकड़नेवाला। व्याध।
संज्ञा स्त्री० १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।

पासुरी*—संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पाहँ*—अव्य० १. समीप। निकट। पास। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहन*—संज्ञा पुं० पत्थर। पाषाण।

पाहरू*†—संज्ञा पुं० पहरेदार। पहरा देनेवाला।

पाहिं*—अव्य० १. निकट। पास। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहि—क्रि० स० संस्कृत में मध्यम पुरुष की क्रिया जिसका अर्थ है 'रक्षा करो', 'बचाओ'।

पाहीं*—अव्य० दे० "पाहि"।

पाहुँच†—संज्ञा स्त्री० दे० "पहुँच"।

पाहुन—संज्ञा पुं० १. दे० "पाहुना"। अतिथि। मेहमान। २. दामाद। जामाता।

पाहुना†—संज्ञा पुं० १. अतिथि। मेहमान। २. दामाद। जामाता।

पाहुनी—संज्ञा स्त्री० १. अतिथि स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।

पाहुर†—संज्ञा पुं० भेंट। उपहार। नजर। सौगात। बैना।

पिंग—वि० १. पीला। पीलापन लिये भूरा। २. भूरापन लिये लाल। तामड़ा।

पिंगल—वि० पीत। पीला। भूरापन लिये लाल। सुँघनी रंग का भूरापन लिये पीला।
संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मुनि, जो छंदःशास्त्र के आदि आचार्य्य माने जाते हैं। २. छंदःशास्त्र। ३. साठ संवत्सरों में से एक। ४. एक निधि का नाम। ५. कपि। बंदर। ६. उल्लू पक्षी। ७. अग्नि। ८. पीतल। ९. पुराणों में वर्णित एक देश।

पिंगला—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. गोरोचन। ३. शीशम का पेड़। ४. हठ योग और तंत्र में तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। नाड़ी-विशेष जो-दाहिनी नाक से निकलती है। ५. पक्षी-विशेष। ६. विदेह देश में रहनेवाली एक प्राचीन वेश्या। कणिका। ७. राजनीति।

पिंजड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पिंजरा"।

पिंजन—सं० पुं० धुनकी।

पिंजर—वि० १. पीला। पीतवर्ण का। २. भूरापन लिये लाल रंग का।
संज्ञा पुं० १. पिंजड़ा। २. शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्टर। पंजर। ३. भूरापन लिये लाल रंग का घोड़ा। ४. सोना।

पिंजरा—संज्ञा पुं० १. लोहे या बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा, जिसमें पक्षी पाले जाते हैं। २. छोटे या बड़े जानवरों-जैसे हिरन, शेर, चीता आदि को बन्द करके रखने के लिए लोहे के छड़ों का घर।

पिंजरापोल—संज्ञा पुं० गोशाला। पशुशाला।

पिंड—संज्ञा पुं० १. गोल-मटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा, जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५. भोजन। आहार। ६. शरीर। देह।
मुहा०—पिंड छोड़ना=साथ छोड़ना या संबंध न रखना। तंग न करना। पिंड छुटाना=पीछा छुड़ाना। अपना दायित्व हटाना। उद्धार पाना।

पिंडखजूर—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खजूर, जिसके फल मीठे होते हैं।

पिंडज—संज्ञा पुं० सब अंगों के बनने पर गर्भ से सजीव निकलनेवाला जंतु। जैसे, मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली आदि।

पिंडदान—संज्ञा पुं० पितरों को पिंड देने का कर्म।

पिंडरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पिंडरोग—संज्ञा पुं० १. शरीर का रोग। २. कोढ़।
पिंडरोगी—वि० रुग्ण शरीर का।
पिंडली—संज्ञा स्त्री० टाँग का ऊपरी पिछला भाग, जो मांसल होता है।
पिंडवाही—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा।
पिंडा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पिंडी] १. दे० "पिंड"। गोला। गोल-मटोल टुकड़ा। लुगदा। २. मधु, तिल मिली हुई खीर आदि का गोल लोंदा, जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ३. देह। शरीर। **मुहा०**—पिंडा-पानी देना=श्राद्ध और तर्पण करना।
पिंडाकार—वि० गोलाकार।
पिंडारी—संज्ञा पुं० दक्षिण की एक जाति, जो पहले खेती करती थी। बाद को अवसर पाकर वह लूट-मार करने लगी और मुसलमान हो गई। लुटेरा, ठग। डकैत। डाकुओं का दल।
पिंडालू—संज्ञा स्त्री० १. एक तरह का शकरकंद। सुथनी। पिंडिया। २. एक प्रकार का शफतालू या रतालू। ओषधि-विशेष की जड़।
पिंडिका—संज्ञा स्त्री० १. पिंडी। छोटा पिंड। २. पिंडली। ३. वह पिंडी, जिस पर देवमूर्त्ति स्थापित की जाती है। वेदी।
पिंड़िया—संज्ञा स्त्री० १. पिंडी। गीली वस्तु का हाथ से बँधा हुआ लम्बा टुकड़ा। २. गुड़ की लंबी भेली। मुट्ठी। ३. लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला।
पिंडी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा गोला। लोंदा। लुगदी। २. गीली वस्तु का टुकड़ा। ३. कद्दू। घीया। ४. पिंड खजूर। ५. वेदी, जिस पर बलिदान किया जाता है। ६. शिव का लिंग। ७. देवता की मूर्ति। ८. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।
पिंडुरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।
पिअ—वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।
पिअराई*†—संज्ञा स्त्री० पीलापन।
पिअरी—संज्ञा स्त्री० हल्दी या पीले रंग से रँगी हुई धोती, जो विवाह या विदाई के समय दी जाती है। वि० दे० "पीली"।
पिउ*—संज्ञा पुं० पति। प्रिय। प्यारा।
पिक—संज्ञा पुं० कोयल। कोकिल।
पिकबैनी—संज्ञा स्त्री० मिष्टभाषिणी। कोकिल के समान बोलनेवाली। मधुरभाषिणी।
पिकप्रिया—संज्ञा स्त्री० बड़ी जामुन।
पिकी—संज्ञा स्त्री० कोयल।
पिघलना—क्रि० अ० १. गरमी से किसी चीज का गलकर पानी-सा हो जाना। गलना। द्रव होना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।
पिघलाना—क्रि० स० १. किसी चीज़ को गरमी पहुँचाकर द्रव करना। गलाना। २. किसी के मन में दया उत्पन्न करना।
पिचकना—क्रि० अ० किसी फूले हुए पदार्थ का दब जाना। दबना। सिकुड़ना। सिमिटना।
पिचकाना—क्रि० स० फूले हुए पदार्थ को दबाना। सिकोड़ना।
पिचकारी—संज्ञा स्त्री० पानी या रंग आदि दूर फेंकने के लिए यंत्र-विशेष।
पिचकी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।
पिचपिचा—संज्ञा पुं० १. लसदार। चिपचिपा। पिलपिला। २. दबा हुआ और गुलगुला।
पिचु—संज्ञा पुं० १. रुई। कपास। २. कुष्ठ-विशेष ३. एक असुर का नाम। ४. भैरव। ५. अन्न-विशेष। ६. तौल-विशेष।
पिचुक्का†—संज्ञा पुं० १. पिचकारी। २. गोलगप्पा।
पिचुमर्द—संज्ञा पुं० नीम का पेड़।
पिचू—संज्ञा पुं० १६ माशे की तौल, कर्ष।
पिच्चर—संज्ञा पुं० आँख का मैल।
पिच्चित—वि० पिचका हुआ। दबा हुआ।
पिच्चो—वि० १. दबा या पिचका हुआ। २. फटे कपड़े में सीया हुआ टुकड़ा।
पिच्छ—संज्ञा पुं० १. पूँछ। लांगूल। २. मयूरपुच्छ। मोर की पूँछ। ३. मोर की चोटी। चूड़ा।

पिच्छक–संज्ञा पुं० पूँछ।
पिच्छबाण–संज्ञा पुं० बाज पक्षी।
पिच्छमार–संज्ञा पुं० मोर की पूँछ।
पिच्छल–वि० दे० "पिछला"।
पिच्छिल–वि० [स्त्री० पिच्छिला] १. गीला और चिकना। २. फिसलनेवाला। पैर फिसलनेवाला। ३. चूड़ायुक्त (पक्षी)। ४. खट्टा और कोमल। कफकारी (पदार्थ)।
पिछड़ना–क्रि० अ० पीछे रह जाना। आगे या बराबर न रहना।
पिछलगा–संज्ञा पुं० १. पीछे-पीछे चलनेवाला २.। अधीन। आश्रित। ३. शिष्य। ४. अनुवर्ती। अनुगामी। ५. नौकर। सेवक।
पिछलगी–संज्ञा स्त्री० पिछलगा होने का भाव। अनुगमन करना। अनुयायी होना।
पिछलग्गू†–संज्ञा पुं० दे० "पिछलगा"।
पिछला–वि० [स्त्री० पिछली] १. पीछे की ओर का। २. बाद का। अनंतर का। ३. अंत की ओर का। ४. गत। पुराना। गुजरा हुआ। बीता हुआ।
मुहा०–पिछला पहर=दो पहर या आधी रात के बाद का समय। पिछली रात=आधी रात के बाद का समय।
पिछवाई–संज्ञा स्त्री० पीछे की ओर लटकाने का परदा।
पिछवाड़ा–संज्ञा पुं० १. किसी मकान के पीछे का भाग। घर का पृष्ठ भाग। २. घर के पीछे का स्थान या जमीन।
पिछाड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पिछला भाग या खण्ड। पीछे का हिस्सा। २. घोड़े के पिछले पैरों को बाँधने की रस्सी।
पिछानना*–क्रि० स० दे० "पहचानना"।
पिछुआर*–संज्ञा पुं० दे० "पिछवाड़ा।"
पिछेलना–क्रि० स० धक्का देकर पीछे हटाना। पीछे छोड़ना।
पिछोरा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० पिछौरी] दुपट्टा। चादर। दोहर। ओढ़ने का वस्त्र।
पिछौंहें*†–क्रि० वि० पीछे की ओर। पीछे से।
पिटंत–संज्ञा स्त्री० पीटने की क्रिया या भाव।
पिटक–संज्ञा पुं० १. पिटारा। २. फुंसी। फुड़िया। ३. किसी ग्रंथ का एक भाग। हिस्सा। खंड।
पिटना–क्रि० अ० १. मार खाना। ठोंका जाना। २. बजना। आघात पाकर आवाज करना।
†संज्ञा पुं० चूने आदि की छत पीटने का औजार। थापी। मुंगरा।
पिटवाना–क्रि० स० पीटने का काम दूसरे से कराना।
पिटाई–संज्ञा स्त्री० १. पीटने की क्रिया या भाव। २. मार। प्रहार। ३. पीटने की मज़दूरी।
पिटारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० पिटारी] बेंत, मूंज आदि का बना हुआ ढक्कनदार पात्र।
पिट्टस–संज्ञा स्त्री० शोक के समय ज़ोर-ज़ोर से छाती पीटना।
पिट्टू–वि० मार खाने का अभ्यासी।
पिट्ठू–संज्ञा पुं० १. अनुयायी। पीछे चलनेवाला। पिछलगा। २. सहायक। हिमायती। मददगार।
पिठर–संज्ञा पुं० १. मोथा। २. मथानी। ३. थाली। ४. घर-विशेष। ५. अग्नि-विशेष।
पिठवन–संज्ञा स्त्री० औषध के काम में आनेवाली एक प्रसिद्ध लता। पिठौनी। पृष्ठिपर्णी।
पिठी–संज्ञा स्त्री० उर्द की भीगी हुई पिसी दाल।
पिठौरी–संज्ञा स्त्री० पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।
पितंबर–संज्ञा पुं० दे० "पीतांबर"। पीला वस्त्र।
पितपापड़ा–संज्ञा पुं० एक झाड़, जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है। दवनपापड़ा।
पितर–संज्ञा पुं० पितृ। पूर्वज। पुरखा। मृत पिता, पितामह आदि।
पितरायँध†–संज्ञा स्त्री० खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।
पिता–संज्ञा पुं० बाप। जनक। जन्म देकर पालन-पोषण करनेवाला।
पितामह–संज्ञा पुं० [स्त्री० पितामही] १.

पिता का पिता। दादा। २. भीष्म। ३. ब्रह्मा। ४. शिव।

पितिया–संज्ञा पुं० दे० "पितृव्य"। चचा। काका। पिता का भाई।

यौ०–पितिया ससुर या पितिया सास=चचिया ससुर या चचिया सास।

पितु*–संज्ञा पुं० दे० "पिता"।

पितृ–संज्ञा पुं० १. दे० "पिता"। २. पितर। मृत बाप, या दादा, परदादा आदि। ३. एक प्रकार के देवता, जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं।

पितृक–वि० पितृ-सम्बन्धी। पिता का। पैतृक।

पितृऋण–संज्ञा पुं० पितरों का ऋण। पितरों के प्रति ऋण। पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है।

पितृकर्म–संज्ञा पुं० श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म।

पितृकुल–संज्ञा पुं० कुटुम्बी। पिता के वंश के लोग।

पितृकृत्य–संज्ञा पुं० श्राद्ध आदि कर्म।

पितृक्रिया–संज्ञा पुं० पितृकर्म। श्राद्ध।

पितृगृह–संज्ञा पुं० बाप का घर। मायका। नैहर (स्त्रियों के लिए)।

पितृतर्पण–संज्ञा पुं० पितरों को पानी देना। पूर्वजों को जलदान। तर्पण।

पितृतिथि–संज्ञा स्त्री० १. पर्व। अमावास्या। २. पिता का मरण-दिन।

पितृतीर्थ–संज्ञा पुं० १. गया तीर्थ। २. अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग।

पितृत्व–संज्ञा पुं० पिता होने का भाव।

पितृदान–संज्ञा पुं० पितरों के उद्देश्य से दिया जानेवाला दान।

पितृपक्ष–संज्ञा पुं० १. आश्विन मास का कृष्ण पक्ष। क्वार मास की प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय, जिसमें हिन्दू अपने पितरों का श्राद्ध, तर्पण आदि करते हैं। २. पिता के सम्बन्धी। पितृकुल।

पितृपति–संज्ञा पुं० यम। यमराज। काल। दण्डधर।

पितृपथ–संज्ञा पुं० पितरों का लोक।

पितृप्रसू–संज्ञा स्त्री० १. सन्ध्या। सायंकाल। २. पितामही।

पितृभक्ति–संज्ञा पुं० पिता की भक्ति। पुत्र का पिता के प्रति कर्त्तव्य।

पितृमेध–संज्ञा पुं० वैदिक युग के समय अन्त्येष्टि कर्म का एक भेद, जो श्राद्ध से भिन्न होता था।

पितृयज्ञ–संज्ञा पुं० तर्पण। श्राद्ध।

पितृयाण–संज्ञा पुं० मृत्यु के अनंतर जीव के जाने का मार्ग, जिससे वह चंद्रमा को प्राप्त होता है।

पितृलोक–संज्ञा पुं० पितरों का लोक। वह स्थान, जहाँ पितृगण रहते हैं।

पितृवन–संज्ञा पुं० श्मशान। प्रेतभूमि।

पितृ-विसर्जन–संज्ञा पुं० पितृपक्ष का अन्तिम दिन। आश्विन की अमावास्या को समस्त पितरों का विसर्जन करने के लिए होनेवाला धार्मिक कृत्य।

पितृवृत्ति–संज्ञा पुं० पैतृक सम्पत्ति।

पितृव्य–संज्ञा पुं० चाचा। पिता का भाई। पिता के समान पूज्य व्यक्ति।

पित्त–संज्ञा पुं० एक तरल पदार्थ, जो शरीर के अन्तर्गत यकृत् में बनता है। यह पाचन में सहायक होता है। शरीर के अन्दर की धातु-विशेष। तिक्तधातु।

मुहा०–पित्त उबलना या खौलना=बहुत क्रोधित होना। पित्त गरम होना=शीघ्र क्रुद्ध होने का स्वभाव होना।

पित्तकर–वि० पित्तवर्धक। पित्त बढ़ानेवाला।

पित्तघ्न–वि० पित्तनाशक।

पित्तज्वर–संज्ञा पुं० पित्त के प्रकोप से होने-वाला ज्वर

पित्तपापड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पितपापड़ा"।

पित्तप्रकृति–वि० जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त अधिक हो।

पित्तप्रकोपी–वि० पित्त बढ़ानेवाले पदार्थ।

पित्तरक्त–संज्ञा पुं० रोग-विशेष। पित्तरक्त-पीड़ा। पित्तरक्त-जनित पीड़ा।

पित्तल–संज्ञा पुं० १. पीतल धातु। २. भोजपत्र। ३. हरताल।

वि० जिससे पित्तदोष बढ़े। पित्तकारी (द्रव्य)।

पित्ता–संज्ञा पुं० १. शरीर के अन्दर पित्त

की थैली। २. साहस। हिम्मत। हौसला। मुहा०–पित्ता उबलना या खौलना=बहुत अधिक क्रोध आना। पित्ता निकालना=बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। पित्ता पानी करना=बहुत परिश्रम करना। जान लड़ाकर काम करना। पित्ता मरना=गुस्सा न रह जाना। पित्ता मारना=१. क्रोध दबाना। सहना। २. कोई अरुचिकर या कठिन काम करने में न ऊबना।

पित्ताशय–संज्ञा पुं० पित्त की थैली, जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।

पित्ती–संज्ञा स्त्री० १. एक रोग, जिसमें शरीर भर में छोटे-छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २. लाल महीन दाने, जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। अँभौरी या अँधौरी।

†‡संज्ञा पुं० पितृव्य। चचा। काका।

पित्र्य–वि० दे० "पैतृक"। पितृ-सम्बन्धी। श्राद्ध करने योग्य।

पिथौरा–संज्ञा पुं० दिल्ली के महाराज पृथ्वी-राज चौहान के नाम का एक रूप।

पिदड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

पिद्दा–संज्ञा पुं० दे० "पिद्दी"।

पिद्दी–संज्ञा स्त्री० १. एक सुन्दर छोटी चिड़िया। फुदकी। २. बहुत ही तुच्छ और नगण्य जीव।

पिधान–संज्ञा पुं० १. गिलाफ। आवरण। पर्दा। २. ढक्कन। ढकना। आच्छादन। ३. तलवार की म्यान। ४. किवाड़।

पिनकी–संज्ञा पुं० पीनकवाला। अफीमची।

पिनकना–क्रि० अ० १. पीनक लेना। अफीम के नशे में सिर का झुक पड़ना। २. ऊँघना। नींद के मारे आगे को झुकना। ३. चिढ़ना। नाराज होना। क्रोध करना।

पिनपिन†–संज्ञा स्त्री० १. बच्चों का रोना। २. धीमे और सानुनासिक स्वर में रोना।

पिनपिनाना†–क्रि० अ० १. बच्चे का रोना। २. चिढ़ना। क्रोध करना।

पिनाक–संज्ञा पुं० १. धनुष। २. शिवजी का धनुष, जिसे रामचन्द्रजी ने जनकपुर में तोड़ा था। ३. त्रिशूल।

पिनाकी–संज्ञा पुं० शिवजी। महादेव।

पिन्ना–संज्ञा पुं० तिल की खली।

वि० बहुत रोनेवाला।

पिन्नी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई २. चावल के आटे के लड्डू।

वि० बहुत रोनेवाली।

पिन्हाना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पिपरमेंट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पुदीने की जाति का अमेरिका का एक पौधा। इसका सत्त दवा के काम में आता है और उसे मुँह मे रखने से ठंडक मालूम होती है।

पिपरामूल–संज्ञा पुं० पीपल की जड़।

पिपासा–संज्ञा स्त्री० १. प्यास। तृष्णा। २. लोभ। लालच।

पिपासु–वि० १. प्यासा। तृषित। २. उत्कट इच्छा रखनेवाला लालची।

पिपील–संज्ञा स्त्री० चींटी पिपीलिका।

पिपीलक–संज्ञा पुं० चींटा।

पिपीलिका–संज्ञा स्त्री० चींटी।

पिप्पल–संज्ञा पुं० १. पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। २. एक पक्षी। ३. नग्न व्यक्ति। ४. जल।

पिप्पलक–संज्ञा पुं० स्तनमुख।

पिप्पली–संज्ञा स्त्री० पीपल। पिपरी। ओषधि-विशेष। पीपर।

पिप्पलीखण्ड–संज्ञा पुं० औषध-विशेष।

पिप्पलीमूल–संज्ञा पुं० पिपरामूल।

पिय*–संज्ञा पुं० १. प्रिय। प्रियतम। प्यारा। २. पति। स्वामी।

पियर–संज्ञा पुं० पीला। हलदी का रंग।

पियराई†–संज्ञा स्त्री० पीलापन। जर्दी।

पियराना*†–क्रि० अ० पीला पड़ना। पीला होना।

पियरी†–वि० दे० "पीली"।

संज्ञा स्त्री० १. पीली रँगी हुई धोती। २. पीलापन।

पियल्ला‡–संज्ञा पुं० दूध पीनेवाला बच्चा। पिल्ला। पीला।

पिया*–संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

पियाल–संज्ञा पुं० चिरौंजी का पेड़।

पियासाल–संज्ञा पुं० बहेड़े की जाति का एक वृक्ष।

पियूख*–संज्ञा पुं० दे० "पीयूष"।
पिरकी†–संज्ञा स्त्री० फुंसी। फुड़िया।
पिरथी‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।
पिराई‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "पियराई"।
पिराक–संज्ञा पुं० गोझा। गोझिया। एक प्रकार का पकवान।
पिराना†*क्रि० अ० १. दर्द करना। दुखना। पीड़ा होना। २. दुःख समझना। पीड़ा अनुभव करना।
पिरारा‡*–संज्ञा पुं० दे० "पिंड़ारा"।
पिरीतम‡*–संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।
पिरीता*–वि० प्रिय। प्यारा।
पिरोज†–संज्ञा पुं० कटोरा। तश्तरी।
पिरोजा–संज्ञा पुं० दे० "फ़ीरोजा"।
पिरोना–क्रि० स० १. सूत या तागे में गूंथना। पोहना। गुहना। जैसे माला पिरोना। २. सूई के छेद या नाके में तागा डालना।
पिरोहना*–क्रि० अ० दे० "पिरोना"।
पिलई†–संज्ञा स्त्री० पेट की एक बीमारी। पिलही।
पिलक–संज्ञा पुं० पीले रंग की एक चिड़िया।
पिलकना–क्रि० स० गिराना। लुढ़काना। ढकेलना।
क्रि० अ० गिरना। झूलना। लटकना।
पिलखन†–संज्ञा पुं० पाकर का पेड़।
पिलना–क्रि० अ० १. एकबारगी घुसना या टूट पड़ना। ढल पड़ना। झुक पड़ना। ढकेलना। धक्का देना। २. प्रवृत्त होना। लिपट जाना। भिड़ जाना। ३. पेरा जाना। तेल निकालने के लिए दबाया जाना।
पिलपिला–वि० १. नरम। २. गीला। पिचपिचा। ढीला। ३. दुर्बल।
पिलपिलाना–क्रि० स० किसी वस्तु को ढीला या नरम करना।
पिलपिलाहट–संज्ञा स्त्री० १. गीलापन लिये हुए नरम। २. दुर्बलता।
पिलवाना–क्रि० स० १. पिलाने का काम दूसरे से कराना। २. पेरने का काम दूसरे से पेरवाना।
पिलाना–क्रि० स० १. पियाना। पान कराना। पीने का काम दूसरे से कराना। २. पीने को देना। ३. भीतर भरना।
पिल्ला–संज्ञा पुं० कुत्ते का बच्चा।
पिल्लू–संज्ञा पुं० कीड़ा। कीट। पिलुवा। ढोला।
पिव*–संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
पिवाना†–क्रि० स० दे० "पिलाना"।
पिशंग–संज्ञा पुं० पिंगल वर्ण।
वि० पिंगल वर्ण का। मटमैले रंग का।
पिशाच–संज्ञा पुं० [स्त्री० पिशाची] १. भूत-प्रेत। २. विधर्मी। अनाचारी।
पिशुन–संज्ञा पुं० १. छिपकर दोष बतानेवाला। २. कुंकुम। ३. कौआ। ४. कपास। ५. नारद। ६. चुगलखोर। ७. दुष्ट। दुर्जन। ८. निन्दक।
पिशुना–संज्ञा स्त्री० चुगलखोरी।
पिष्ट–वि० पिसा हुआ। चूर्ण किया हुआ।
पिष्टक–संज्ञा पुं० १. पिष्ट। पीठी। पिट्ठी। २. पुरी कचौरी, पूआ या पकवान। मिठाई।
पिष्टपेषण–संज्ञा पुं० १. पिसे हुए को पीसना। २. कही हुई बात को फिर कहना। बार-बार दोहराना।
पिसनहारी–संज्ञा स्त्री० आटा पीसने से जीविका चलानेवाली स्त्री।
पिसना–क्रि० अ० १. पीसना। चूर्ण होना। २. पिसकर तैयार होना। ३. दब जाना। कुचला जाना। ४. घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। पीड़ित होना। ५. थककर बेदम होना।
पिसवाना–क्रि० स० पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसाई–संज्ञा स्त्री० १. पीसने की क्रिया। २. पीसने का काम या व्यवसाय। पीसने की मजदूरी। ३. बहुत अधिक श्रम।
पिसान†–संज्ञा पुं० आटा। अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण। चून।
पिसाना–क्रि० स० दे० "पिसवाना"।

पिसौनी†–संज्ञा स्त्री० १. पीसने का काम। २. कठिन काम।

पिस्तई–वि० पिस्ते के रंग का। पीलापन लिये हरा रंग।

पिस्ता–संज्ञा पुं० पिस्ता का वृक्ष। एक हरा मेवा।

पिस्तौल–संज्ञा स्त्री० (अंग्रे० पिस्टल) गोली चलाने का एक बहुत छोटा अस्त्र, जिसको जेब में रख सकते हैं। तमंचा।

पिस्सू–संज्ञा पुं० शरीर का खून चूसनेवाला एक छोटा-सा उड़नेवाला मच्छड़-जैसा कीड़ा।

पिहकना–क्रि० अ० [अनु०] कोयल, पपीहे आदि पक्षियों की बोली। कूकना।

पिहित–वि० छिपा हुआ। गुप्त।
संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार, जिसमें किसी के मन का कोई भाव जानकर क्रिया-द्वारा अपना भाव प्रकट किया जाय।

पींजना–क्रि० स० रूई धुनना।

पींजर या पींजरा*–संज्ञा पुं० दे० "पिंजड़ा"।

पींड†–संज्ञा पुं० १. देह। पिंड। शरीर। २. तना। वृक्ष का धड़। पेड़ी। ३. गीली वस्तु का गोला। पिंड। पिंडी। ४. दे० "पीड़"। ५. पिंडखजूर।

पींडुरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पी*–संज्ञा पुं० १. दे० "पिय"। प्रियतम। २. पपीहे की बोली।

पीक–संज्ञा स्त्री० थूक। खाए हुए पान या तम्बाकू आदि के रस का थूक।

पीकदान–संज्ञा पुं० थूकने का बरतन। एक प्रकार का बरतन, जिसमें पीक थूकते हैं।

पीकना–क्रि० अ० [अनु०] १. पिहकना। २. पपीहे या कोयल का बोलना। ३. थूकना।

पीका†–संज्ञा पुं० नया पत्ता। कोंपल। पल्लव।

पीच–संज्ञा स्त्री० माँड़।

पीछा–संज्ञा पुं० १. पिछला भाग। पीछे की ओर का भाग। पुश्त। पश्चात्। २. अनन्तर।
मुहा०–पीछा दिखाना=१. भागना। पीठ दिखाना। २. दे० "पीछा देना"। पीछा देना=१. किसी काम में आरम्भ में साथ देकर फिर दूर हो जाना। पीछे हट जाना। २. किसी के साथ पीछे-पीछे लगा रहना। पीछा करना=१. किसी बात के लिए किसी को तंग या दिक करना। गले पड़ना। २. किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि के लिए उसके पीछे-पीछे चलना। खदेड़ना। पीछा छुड़ाना=१. पीछा करनेवाले से जान छुड़ाना। २. अप्रिय या इच्छाविरुद्ध संबंध का अंत करना। पीछा छूटना=१. पीछा करनेवाले से छुटकारा मिलना। पिंड छूटना। २. अप्रिय कार्य या संबंध से छुटकारा मिलना। पीछा छोड़ना=१. तंग न करना। परेशान न करना। २. बंद करना। जिस काम के लिए अधिक समय से किसी का पल्ला पकड़े हो, उसे स्थगित कर देना।

पीछू*†–क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पीछे–अव्य० १. पीठ की ओर। पश्चात्। परे। अनन्तर। उपरान्त। २. पीछे की ओर। कुछ दूर पर। ३. अन्त में। ४. किसी की अनुपस्थिति या अभाव में। पीठ पीछे। ५. मर जाने पर। ६. लिए। वास्ते। ७. कारण। बदौलत। निमित्त।
मुहा०–(किसी के) पीछे चलना=१. किसी को मार्गदर्शक, नेता या गुरु मानना। २. (किसी का) अनुकरण करना। नक़ल करना। (किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना=किसी का पीछा करने के लिए किसी को भेजना। (धन) पीछे डालना=आगे के लिए बटोरना। संचय करना। किसी काम को कर डालने पर तुल जाना। किसी कार्य के लिए अविराम उद्योग करना। (किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना=१. कोई काम करने के लिए किसी से बार-बार कहना। घेरना। तंग करना। २. अवसर ढूँढ़-ढूँढ़कर किसी की बुराई करते रहना। पीछे लगना=१. पीछे-पीछे घूमना। पीछा करना। २. दुःखजनक वस्तु का साथ हो जाना। (अपने) पीछे लगाना=१. आश्रय देना। साथ कर लेना। २.

अनिष्ट वस्तु से संबंध कर लेना। (किसी और के) पीछे लगाना=१. अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से संबंध करा देना। मढ़ देना। २. भेद लेने या निगाह रखने के लिए किसी को साथ कर देना। पीछे छूटना, पड़ना या होना=१. किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा घटकर होना। २. पिछड़ जाना। (किसी को) पीछे छोड़ना=किसी विषय में किसी से बढ़कर या अधिक होना।

पीजन–संज्ञा पुं० धुनकी। भेड़ों के बाल धुनने की धुनकी।

पीटना–क्रि० स० १. प्रहार करना। चोट पहुँचाना। मारना। कूटना। ठोंकना। २. भले या बुरे प्रकार से कर डालना। ३. किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना। **मुहा०**–छाती पीटना=दुःख या शोक प्रकट करने के लिए छाती पर हाथ से आघात करना। किसी व्यक्ति को या किसी के लिए पीटना=किसी के मरने पर छाती पीटना। मातम मनाना। २. चोट से चिपटा या चौड़ा करना।

पीठ–संज्ञा स्त्री० १. पेट की दूसरी ओर का भाग, जो मनुष्य के शरीर में पीछे की ओर और पशुओं-पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर होता है। २. पृष्ठ। पुश्त। पृष्ठभाग।

संज्ञा पुं० १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आसन। चौकी। पीढ़ा। विद्यार्थियों आदि के बैठने का आसन। २. किसी मूर्त्ति के नीचे का आधार-पिंड। अधिष्ठान। ३. सिंहासन। तख्त। राजासन। ४. देवपीठ। वेदी। ५. प्रांत। प्रदेश। वृत्त के किसी अंश का पूरक।

मुहा०–पीठ का=दे० "पीठ पर का"। पीठ चारपाई से लग जाना=बीमारी के कारण बहुत अधिक निर्बल और हिलने-डोलने में असमर्थ हो जाना। पीठ ठोंकना=किसी उत्तम कार्य के लिए किसी की प्रशंसा करना। शाबाशी देना। प्रोत्साहित करना। पीठ दिखाना=युद्ध या मुकाबले से भाग जाना। पीछा दिखाना। पीठ दिखाकर जाना=स्नेह तोड़कर या ममता छोड़कर जाना। पीठ देना=१. बिदा होना। रुखसत होना। २. मुँह मोड़ना। विमुख होना। ३. भाग जाना। पीठ दिखाना। ४. लेटना। आराम करना। पीठ पर=एक ही माता-द्वारा जन्मक्रम में पीछे। पीठ पर का=जन्मक्रम में अपने सहोदर के बाद का। पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना=दे० "पीठ ठोंकना"। पीठ पर होना=मदद पर होना। सहायता के लिए तैयार रहना। पीठ पीछे=(किसी की) अनुपस्थिति में। परोक्ष में। पीठ फेरना=१. चला जाना। २. भाग जाना। पीठ दिखाना। ३. मुँह फेर लेना। ४. अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगना=पीठ पर घाव हो जाना। पीठ पक जाना। (चारपाई आदि से) पीठ लगाना=लेटना। पड़ना। सोना।

पीठना*–क्रि० स० दे० "पीसना"।

पीठस्थान–संज्ञा पुं० दे० "पीठ"।

पीठा–संज्ञा पुं० १. दे० "पीढ़ा"। २. एक प्रकार का पकवान।

पीठि*–संज्ञा स्त्री० दे० "पीठ"।

पीठिका–संज्ञा स्त्री० १. आधार। मूर्ति आदि का आधार। आसन। पीढ़ा। २. अंश। परिच्छेद। अध्याय।

पीठी–संज्ञा स्त्री० पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़–संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा। दर्द। व्यथा। दुःख। २. सिर या बालों पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण।

पीड़क–संज्ञा पुं० १. पीड़ा देनेवाला। कष्ट-दायक। दुःखदायी। २. सतानेवाला।

पीड़न–संज्ञा पुं० [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दबाना। चापना। पेलना। २. पेरना। दुःख देना। यंत्रणा पहुँचाना। अत्याचार करना। ३. दबोचना। भली भाँति पकड़ना। ४. नाश। उच्छेद।

पीड़ा–संज्ञा स्त्री० १. व्यथा। वेदना। दर्द। तकलीफ। २. व्याधि। रोग।

पीड़ित–वि० १. क्लेशयुक्त । पीड़ायुक्त । दुःखित । २. बीमार । रोगी । ३. दबाया हुआ ।
पीडुरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली" ।
पीढ़ा†–संज्ञा पुं० बैठने के लिए लकड़ी या पत्थर का छोटा टुकड़ा । छोटा पटरा । पीठक । पीठ ।
पीढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. वंशपरम्परा । पुश्त । २. संतति-समुदाय । ३. किसी विशेष समय में वर्ग-विशेष के व्यक्तियों की समष्टि । ४. संतति । संतान । नस्ल । ५. छोटा पीढ़ा ।
पीत–वि० १. पीला । पीले रंग का । कपिल वर्ण । २. पिया हुआ ।
संज्ञा पुं० १. पीला रंग । २. हरताल । ३. हरिचंदन । ४. कुसुम । ५. मूंगा । ६. पुखराज ।
पीतक–संज्ञा पुं० १. केशर । २. हरताल । ३. अगर । ४. पीतल । ५. हल्दी । ६. गाजर । ७ सफेद जीरा । ८. पीला लोध । ९. चिरायता । १०. शहद । ११. पीला चंदन ।
वि० पीला । पीले रंग का ।
पीतकन्द–संज्ञा पुं० गाजर ।
पीतकदली–संज्ञा पुं० १. चम्पक । २. कदली । ३. सोनकेला ।
पीतकरवीरक–संज्ञा पुं० पीला कनेर ।
पीतचंदन–संज्ञा पुं० हरिचंदन । पीले रंग का चंदन ।
पीतत्व–संज्ञा पुं० पीलापन ।
पीतधातु*–संज्ञा स्त्री० गोपीचंदन । रामरज ।
पीतपुष्प–संज्ञा पुं० १. चंपा । २. कनेर । ३. घिया-तरोई । ४. पीले फूल की कट-सरैया ।
पीतम*–वि० दे० "प्रियतम" ।
पीतमणि–संज्ञा पुं० पुखराज ।
पीतल–संज्ञा पुं० ताँबे और जस्ते के संयोग से बनी एक मिश्रित धातु ।
पीतला–वि० पीतल का बना हुआ ।
पीतवास–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।
पीतशाल–संज्ञा पुं० विजयसार ।
पीतसार–संज्ञा पुं० १. पीतचंदन । हरिचंदन । २. सफेद चंदन । ३. गोमेद मणि । ४. शिलाजीत ।
पीतांबर–संज्ञा पुं० १. पीला वस्त्र । २. मरदानी रेशमी धोती । ३. श्रीकृष्ण । ४. विष्णु
वि० पीताम्बरधारी ।
पीताभ–वि० पीतवर्ण । पीले रंग का ।
पीतु–संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. अग्नि । ३. यूथपति ।
पीतुदारु–संज्ञा पुं० गूलर । देवदार ।
पीथ–संज्ञा पुं० १. पानी । २. अग्नि । ३. सूर्य । ४. काल ।
पीथि–संज्ञा पुं० घोड़ा ।
पीदड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी" ।
पीन–वि० १. मोटा । स्थूल । २. प्रवृद्ध । पुष्ट । ३. संपन्न । भरा-पूरा ।
पीनक–संज्ञा स्त्री० १. अफीम के नशे की झोंक । अफीम के नशे में ऊँघना या झुक-झुक पड़ना । २. ऊँघना ।
पीनता–संज्ञा स्त्री० १. स्थूलता । मोटाई । २. दृढ़ता । पुष्टता ।
पीनस–संज्ञा पुं० नाक का एक रोग ।
संज्ञा स्त्री० पालकी ।
पीना–क्रि० स० १. तरल वस्तु को घूंट-घूंट करके गले के नीचे उतारना । पान करना । घूंटना । २. क्रोध या उत्तेजना न प्रकट करना । सह जाना । ३.किसी मनोविकार को दबा देना । मन मारना । ४. सिगरेट, बीड़ी आदि पीना । धूम्रपान करना । ५. सोखना । शोषण । ६. शराब पीना ।
पीनी–संज्ञा स्त्री० तीसी या तिल की खली ।
पीप–संज्ञा स्त्री० फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ । मवाद । पीब ।
पीपर–संज्ञा पुं० दे० "पीपल" ।
पीपरपर्न*–संज्ञा पुं० १. कान में पहनने का एक गहना । २. पीपल का पत्ता ।
पीपल–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़, जो हिन्दुओं में बहुत पवित्र माना जाता है ।
संज्ञा स्त्री० (पिप्पली) औषध के काम आने-वाली एक लता ।

पीपलामूल–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ओषध, जो पीपल लता की जड़ है ।

पीपा–संज्ञा पुं० तेल, शराब आदि तरल पदार्थ रखने का लोहे या लकड़ी का बड़ा ढोल-जैसा गोल पात्र ।

पीब–संज्ञा स्त्री० दे० "पीप" ।

पीय*–संज्ञा पुं० दे० "पिय" ।

पीयूख–संज्ञा पुं० दे० "पीयूष" ।

पीयूष–संज्ञा पुं० १. सुधा । अमृत । २. दूध ।

पीयूषभानु–संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

पीयूषरुचि–संज्ञा पुं० चन्द्रमा ।

पीयूषवर्ष–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. कपूर । ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद । ४. आनंद-वर्द्धक ।

पीर–संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा । दर्द । दुःख । २. सहानुभूति । हमदर्दी ।
वि० [फा०] [संज्ञा पीरी] १. बूढ़ा । वृद्ध । बुजुर्ग । २. महात्मा ।

पीरजादा–संज्ञा पुं० [फा०] किसी धर्मगुरु की सन्तान ।

पीरा‡–संज्ञा स्त्री० दे० "पीड़ा" ।
वि० दे० "पीला" ।

पीरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वृद्धावस्था । बुढ़ापा । २. चेला मूँड़ने का धंधा या पेशा । गुरुवाई । ३. ठेका । ४. हुकूमत । ५. चमत्कार । करामात । अलौकिक शक्ति । ६. इजारा । ७. चालाकी ।

–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मूल्यवान -विशेष ।

–संज्ञा पुं० [फा०] १. गज । हाथी । हस्ती । २. शतरंज का एक मोहरा । फ़ील ऊंट ।

*‡–संज्ञा पुं० दे० "फीलबान" ।

–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध रोग । श्लीपद । फीलपां ।

–संज्ञा पुं० दे० "फीलवान" । हाथीवान । महावत ।

–संज्ञा पुं० चिरागदान । दीयट ।

–वि० [स्त्री० पीली] १. पीले रंग का । पीला रंग । हल्दी जैसा रंग । जर्द । २. कांतिहीन । निस्तेज ।

मुहा०–पीला पड़ना या होना=१. बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना । २. भय से चेहरे पर सफेदी आना ।

पीलापन–संज्ञा पुं० पीले रंग का । पीला होने का भाव । जर्दी । पीतता ।

पीलिया–संज्ञा पुं० कमल रोग ।

पीलु–संज्ञा पुं० १. फलदार वृक्ष । पीलू । २. पुष्प । फूल । ३. परमाणु । ४. हाथी । ५. हड्डी का टुकड़ा ।

पीलू–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष, जिसका फल दवा के काम में आता है । २. सड़े हुए फलों आदि में पड़नेवाले सफेद लंबे कीड़े । ३. एक राग का नाम ।

पीवना*–क्रि० स० दे० "पीना" ।

पीव–संज्ञा पुं० १. पिय । पति । प्यारा । २. दे० "पीब" ।
वि० १. स्थूल । पीन । मोटा । २. बलिष्ठ ।

पीवर–वि० [संज्ञा पीवरता] १. मोटा । स्थूल । २. भारी । गुरु । ३. दृढ़ ।

पीवरी–संज्ञा स्त्री० १. सतावर । २. सरिवन । ३. युवती । ४. गाय ।

पीसना–क्रि० स० १. किसी वस्तु को बुकनी या चूर्ण करना । रगड़कर बारीक करना । २. दबाकर चकनाचूर कर देना । ३. कुचल देना । ४. कड़ी मिहनत करना । जान लड़ाना ।
संज्ञा पुं० पीसी जानेवाली वस्तु ।
मुहा०–किसी आदमी को पीसन= बहुत भारी अपकार करन । या हानि । पहुँचाना । चौपट कर देना । नष्टप्राय कर देना ।

पीहर–संज्ञा पुं० मायका । नैहर । पिता का घर ।

पुं–संज्ञा पुं० पुरुष । पुमान् । पुरुष-वाचक शब्द ।

पुंख–संज्ञा पुं० १. वाण का पिछला भाग, जिसमें पर लगे होते थे । २. मंगलाचार । ३. श्येन ।

पुंखित–वि० जिसमें पर लगे हों ।

पुंग–संज्ञा पुं० १. राशि। समूह। २. श्रेणी।
पुंगल–संज्ञा पुं० आत्मा।
पुंगव–संज्ञा पुं० बैल। वृष। वरद। वि० उत्तम। श्रेष्ठ।
पुंगवकेतु–संज्ञा पुं० शिव।
पुंछार*†–संज्ञा पुं० मोर। मयूर।
पुंछाला–संज्ञा पुं० दे० "पुछल्ला"।
पुंज–संज्ञा पुं० ढेर। समूह। राशि।
पुंजी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पूँजी"।
पुंड–संज्ञा पुं० तिलक। टीका। त्रिपुण्ड। मस्तक पर लगाया हुआ चन्दन का चिह्न।
पुंडरी–संज्ञा पुं० १. गुलाब। २. कमल।
पुंडरीक–संज्ञा पुं० १. श्वेत कमल। कमल। २. रेशम का कीड़ा। ३. कमण्डलु। ४. शेर। बाघ। ५. तिलक। ६. सफेद हाथी। ७. श्वेत कुष्ठ। सफेद कोढ़। ८. अग्निकोण का दिग्गज। ९. आग। अग्नि। १०. बाण। शर। ११. आकाश। १२. औषध-विशेष। १३. कोषकार-विशेष। १४. एक प्रकार का यज्ञ।
पुंडरीकाक्ष–संज्ञा पुं० १. रेशम के कीड़े। २. विष्णु। वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों।
पुंड्र–संज्ञा पुं० १. गन्ना। पौंड़ा। २. श्वेत कमल। ३. टीका। तिलक। ४. भारत के एक भाग का प्राचीन नाम। ५. दैत्य-विशेष।
पुंड्रक–संज्ञा पुं० १. माधवी लता। २. तिलक। ३. ईख। पौंडा।
पुंड्रवर्द्धन–संज्ञा पुं० पुंड्र देश की प्राचीन राजधानी।
पुंलिंग–संज्ञा पुं० १. पुरुष-चिह्न। २. शिश्न। ३. पुरुषवाचक शब्द (व्या०)।
पुंशक्ति–संज्ञा स्त्री० पुरुषत्व। पुरुषार्थ। पुरुष का सामर्थ्य।
पुंश्चली–वि० १. व्यभिचारिणी। छिनाल। कुलटा। २. वेश्या।
पुंस*‡–संज्ञा पुं० पुरुष। मर्द। नर।
पुंसवन–संज्ञा पुं० १. दूध। दुग्ध। २. संस्कार-विशेष। ३. स्त्रियों का एक व्रत।
पुंस्त्व–संज्ञा पुं० १. पुरुषत्व। पुरुषार्थ। २. पुरुष की शक्ति। ३. शुक्र। वीर्य्य।
पुआ–संज्ञा पुं० आटे की मोटी और मीठी पूड़ी या टिकिया।
पुआल–संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।
पुकार–संज्ञा स्त्री० १. बुलाने की क्रिया या भाव। हाँक। टेर। २. रक्षा या सहायता के लिए बुलाना। दुहाई। प्रतिकार के लिए चिल्लाहट। ३. फरियाद। नालिश। गहरी माँग। ४. गोहार। नाम लेकर बुलाना।
पुकारना–क्रि० स० १. नाम लेकर बुलाना। आवाज लगाना। टेरना। २. नाम का उच्चारण करना। रटना। धुन लगाना। घोषित करना। ३. चिल्लाकर माँगना। ४. रक्षा के लिए चिल्लाना। गोहार लगाना। ५. नालिश करना। फरियाद करना।
पुक्कस–संज्ञा पुं० १. चांडाल। २. नीच। अधम। ३. डोम।
पुक्कसी–संज्ञा स्त्री० कालिमा। कालिख।
पुख†*–संज्ञा पुं० दे० "पुष्य"।
पुखर–संज्ञा पुं० पुष्कर। तालाब। तड़ाग।
पुखराज–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीला रत्न। पीत मणि। गोमेद।
पुख्य–संज्ञा पुं० दे० "पुष्य"।
पुगना–क्रि० अ० दे० "पूजना"।
पुगाना–क्रि० स० पूरा करना।
पुचकार–संज्ञा स्त्री० दे० "पुचकारी"।
पुचकारना–क्रि० स० १. चूमने का-सा शब्द निकालकर प्यार जताना। चुमकारना। स्नेह दिखाना। २. ढाढ़स देना। ३. पशुओं को शब्दों-द्वारा सान्त्वना देकर वश में करना।
पुचकारी–संज्ञा स्त्री० स्नेह या प्यार जताने के लिए ओठों से निकाला हुआ चूमने का-सा शब्द। चुमकार।
पुचारा–संज्ञा पुं० १. भींगे कपड़े से पोंछने का काम। २. पतला लेप करने का काम। ३. पोता। हलका लेप। ४. पोतने का गीला कपड़ा। ५. पोतने की कूँची। ६.

प्रसन्न करनेवाले वचन। ७. झूठी प्रशंसा। खुशामद। चापलूसी। ८. उत्साह बढ़ानेवाला वचन। बढ़ावा।

पुच्छ–संज्ञा स्त्री० १. पूँछ। दुम। २. पिछला भाग।

पुच्छल–वि० पूँछवाला। पुच्छयुक्त। पूँछदार। दुमदार।

पुच्छलतारा–संज्ञा पुं० धूम्रकेतु। अशुभसूचक तारा।

पुछल्ला–संज्ञा पुं० १. लंबी दुम। बड़ी पूँछ। २. पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु। ३. बराबर पीछे लगा रहनेवाला। साथ न छोड़नेवाला। पिछलग्गू। ४. आश्रित। ५. चापलूस।

पुछार†*–संज्ञा पुं० १. आदर करनेवाला। पूछनेवाला। २. मृत व्यक्ति के घर शोक प्रकट करना।

पुजना–क्रि० अ० १. पूजा जाना। आराधना का विषय होना। २. सम्मानित होना। प्रतिष्ठा पाना। ३. पूर्ण होना। पूरा होना।

पुजवना†*–क्रि० स० १. पुजाना। भरना। २. पूरा करना। ३. सफल करना।

पुजवाना–क्रि० स० १. पूजन कराना। पूजा करने में प्रवृत्त करना। २. अपनी या किसी की पूजा कराना। सेवा या सम्मान कराना।

पुजाई–संज्ञा स्त्री० पूजने का भाव, कार्य्य या पुरस्कार।

पुजाना–क्रि० स० १. पूजा में प्रवृत्त करना। २. अपनी पूजा-प्रतिष्ठा कराना। भेंट चढ़वाना। ३. धन वसूल कराना। ४. भर देना या भराना। ५. पूरा करना या कराना। सफल करना।

पुजापा–संज्ञा पुं० देव-पूजन की सामग्री। पूजा का सामान।

पुजारी–संज्ञा पुं० पूजा करनेवाला। पूजक। मन्दिर में देवमूर्ति की पूजा करने के लिए नियुक्त व्यक्ति।

पुजेरी–संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।

पुजैया†–संज्ञा पुं० १. पूजा करनेवाला। पूजक। २. पूरा करनेवाला। भरनेवाला। संज्ञा स्त्री० दे० "पूजा"।

पुट–संज्ञा पुं० १. युग्म। युगल। २. चूर्ण। ३. पोषण। ४. कमल। ५. पद्म। ६. हलका छिड़काव। छींटा देना। ७. रंग का मेल करना। मिलाव। बोर देना। हलका मेल। ८. आच्छादन। ढाँकनेवाली वस्तु। ९. गोल गहरा पात्र। डिब्बी। कटोरा। दोना। १०. औषध पकाने का मुँहबन्द बरतन। संपुट। ११. घोड़े की टाप। १२. अंतःपट। अँतरौटा। १३. दो नगण, एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त।

पुटक–संज्ञा पुं० १. दोना। पत्र-निर्मित पात्र। २. पद्म। कमल।

पुटकिनी–संज्ञा स्त्री० १. पद्मिनी। पद्मलता। पद्म-समूह। २. आद्यंत प्रणव से युक्त मंत्र।

पुटकी–संज्ञा स्त्री० १. पोटली। गठरी। पोटरी। २. अचानक मृत्यु। ३. दैवी आपत्ति। ४. तरकारी के रसे को गाढ़ा करने के लिए उसमें डाला गया बेसन या आटा। आलन।

पुटपाक–संज्ञा पुं० १. पत्ते के दोनों में रखकर औषध पकाने की रीति। २. मुँहबन्द बरतन में पकाना।

पुटरी, पुटली–संज्ञा पुं० दे० "पोटली"। गठरी।

पुटी–संज्ञा स्त्री० १. दोना या कटोरा। २. खाली स्थान, जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। ३. पुड़िया। ४. लँगोटी। कौपीन।

पुटीन–संज्ञा पुं० एक मसाला, जो किवाड़ों में शीशे लगाने या लकड़ी के जोड़ आदि भरने में काम आता है।

पुट्ठा–संज्ञा पुं० १. चूतड़ का ऊपरी कुछ कड़ा भाग। २. चौपायों का, विशेषतः घोड़ों का चूतड़। ३. घोड़ों की संख्या के लिए शब्द। ४. पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।

पुठवार–क्रि० वि० पीछे। बगल में। पार्श्व में।

पुठवाल–संज्ञा पुं० पृष्ठरक्षक। सहायक। मददगार।

पुड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पुड़िया] बड़ी पुड़िया या बंडल।
पुड़िया—संज्ञा स्त्री० १. कागज में लपेटी हुई कोई छोटी वस्तु। २. पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा।
पुड़ी—संज्ञा स्त्री० खाल। ढोल का चमड़ा। चर्म।
पुण्य—वि० १. पवित्र। २. अच्छा। शुभ। संज्ञा पुं० १. सुकृत। धर्म का कार्य्य। फलदायक कार्य। २. शुभ कर्म का संचय।
पुण्यकाल—संज्ञा पुं० १. दान-पुण्य करने का समय। २. पवित्र समय।
पुण्यकृत—वि० पुण्यकर्त्ता। पुण्यकार्य या पुण्य-करनेवाला। सुकृती। सुकर्मी। धार्मिक।
पुण्यक्षेत्र—संज्ञा पुं० तीर्थ। वह स्थान, जहाँ जाने से पुण्य हो।
पुण्यभूमि—संज्ञा स्त्री० १. आर्यावर्त्त। हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का स्थान। २. तीर्थ-स्थान। पुण्य का स्थान।
पुण्यवान्—वि० [स्त्री० पुण्यवती] धर्मात्मा। पुण्य करनेवाला। दानी।
पुण्यशील—संज्ञा पुं० पुण्यशाली। धार्मिक। पवित्र।
पुण्यश्लोक—वि० [स्त्री० पुण्यश्लोका] १. पवित्र चरित्र या आचरणवाला। २. यशस्वी। ३. सुन्दर शिक्षादायक। संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. युधिष्ठिर।
पुण्यस्थान—संज्ञा पुं० तीर्थ-स्थान। पुण्यस्थल। पवित्रस्थान।
पुण्याई—संज्ञा स्त्री० १. पुण्य का फल या प्रभाव। २. सुकृत कर्म। धर्म। धार्मिकता।
पुण्यात्मा—वि० धर्मशील। जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। पुण्य स्वभाववाला। धर्मात्मा। पुण्यशील। सुकर्मी।
पुण्याह—संज्ञा पुं० पवित्र दिन। पुण्यजनक दिवस।
पुण्याहवाचन—संज्ञा पुं० देवकार्य के अनुष्ठान के पूर्व मंगल के लिए 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथन।
पुतरा*†—संज्ञा पुं० (स्त्री० पुतरी) दे० "पुतला"।
पुतरिका*—संज्ञा स्त्री० दे० "पुतली"।
पुतला—संज्ञा पुं० [स्त्री० पुतली] लकड़ी, तृण, मिट्टी, कपड़े आदि की बनी हुई पुरुष की आकृति या मूर्ति, जो विनोद या खेल के लिए हो। गुड्डा।
मुहा०—किसी का पुतला बाँधना=किसी की निंदा या बदनामी करना।
पुतली—संज्ञा स्त्री० १. लकड़ी, तृण, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति, जो विनोद या खेल के लिए हो। गुड़िया। २. आँख के बीच का काला भाग। ३. कपड़ा बुनने की कल या मशीन।
मुहा०—पुतली फिर जाना=आँखें पथरा जाना। नेत्र स्तब्ध होना। (मरण-चिह्न)
यौ०—पुतलीघर=कल-कारखाना, विशेषतः कपड़ा बुनने का कारखाना।
पुताई—संज्ञा स्त्री० पोतने का कार्य, या मजदूरी।
पुतारा—संज्ञा पुं० दे० "पुचारा"।
पुत्त*—संज्ञा पुं० दे० "पुत्र"।
पुत्तरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पुत्री"।
पुत्तलिका—संज्ञा स्त्री० १. पुतली। २. गुड़िया।
पुत्र—संज्ञा पुं० [स्त्री० पुत्री] लड़का। बेटा।
पुत्रकामेष्टि—संज्ञा स्त्री० पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से किया जानेवाला एक यज्ञ।
पुत्रजीव—संज्ञा पुं० वृक्ष-विशेष। इंगुदी से मिलता-जुलता एक बड़ा और सुंदर पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम में आते हैं।
पुत्रवती—संज्ञा स्त्री० पुत्रवाली स्त्री। ऐसी स्त्री, जिसे पुत्र हो।
पुत्रवधू—संज्ञा स्त्री० पुत्र की स्त्री। बहू। पतोहू।
पुत्रवान्—वि० (स्त्री० पुत्रवती) जिसके पुत्र हो।
पुत्रार्थी—संज्ञा पुं० पुत्रेच्छु। पुत्र-प्राप्ति की अभिलाषा करनेवाला।
पुत्रिका—संज्ञा स्त्री० १. लड़की। कन्या। बेटी। २. पुत्र के समान मानी हुई कन्या।

३. गुड़िया। मूर्ति। पुतली। ४. आँख की पुतली। ५. स्त्री का चित्र।

पुत्रिणी—वि० सन्तानयुक्ता। पुत्रवती। पुत्रवाली स्त्री।

पुत्री—संज्ञा स्त्री० कन्या। बेटी। लड़की।

पुत्रेष्टि—संज्ञा स्त्री० पुत्र-प्राप्ति के लिए किया जानेवाला एक विशेष यज्ञ।

पुदीना—संज्ञा पुं० एक सुगन्धित पौधा, जिसकी पत्तियाँ मसाले के काम आती हैं और उनकी चटनी बनाई जाती है।

पुद्‌गल—संज्ञा पुं० १. देह। शरीर। २. आत्मा। ३. जैनियों के मत से चैतन्य-विशिष्ट पदार्थ। परमाणु। अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ।

पुनः—अव्य० १. फिर। दोबारा। दूसरी बार। पुनि। बहुरि। २. पीछे। उपरांत अनंतर।

पुनःपुनः—क्रि० वि० बार-बार।

पुनःसंस्कार—संज्ञा पुं० द्वितीय बार उपनयन आदि संस्कार का होना।

पुन*—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

पुनरपि—क्रि० वि० फिर भी।

पुनरागमन—संज्ञा पुं० १. फिर से आना। दोबारा आना। लौटना। २. फिर जन्म लेना। पुनर्जन्म।

पुनरावर्त्तन—संज्ञा पुं० १. फिर से लौटकर आना। २. बार-बार संसार में जन्म लेना। पुनरावर्त्ती।

पुनरावृत्त—वि० फिर से घूमा हुआ। दोहराया हुआ।

पुनरावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [वि० पुनरावृत्त] १. फिर से लौट या घूमकर आना। किए हुए काम को फिर करना। दोहराना। फिर दुबारा पढ़ना। फिर से। २. दूसरा संस्करण। आवृत्ति।

पुनरासीन—वि० एक बार अपने स्थान से हटने या हटाये जाने पर फिर उसी स्थान पर बैठने या बैठाया जानेवाला।

पुनरीक्षण—संज्ञा पुं० फिर से देखना।

पुनरुक्त—वि० फिर से कहा हुआ।

पुनरुक्ति—संज्ञा स्त्री० [व० पुनरुक्त] १. एक बार कही बात को फिर कहना। कहे हुए वचन को फिर कहना। २. एक अर्थ में व्यर्थ शब्द के पुनः प्रयोग का काव्य-दोष।

पुनरुज्जीवन—संज्ञा पुं० [वि० पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना।

पुनरुत्थान—संज्ञा पुं० दूसरी बार उठना। फिर से उठना। पतन होने के बाद फिर से उठना, उन्नति करना या समर्थ होना।

पुनर्जन्म—संज्ञा पुं० दूसरा जन्म। मरने के बाद फिर पैदा होना।

पुनर्नव—वि० जो फिर से नया हो गया हो।

पुनर्नवा—संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा, जो फूलों के रंग के भेद से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील। गदहपूरना (औष०)।

पुनर्निर्माण—संज्ञा पुं० गिरे या टूटे-फूटे को फिर से बनाना।

पुनर्भव—संज्ञा पुं० १. पुनर्जन्म। पुनः उत्पन्न। २. पुनः विवाह। ३. नख। नह।

पुनर्भू—संज्ञा स्त्री० विधवा स्त्री, जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो। द्विरूढ़ा स्त्री। दो बार ब्याही स्त्री।

पुनर्वसु—संज्ञा पुं० १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र। गन्धर्व। २. विष्णु। ३. शिव। ४. एक लोक। ५. कात्यायन मुनि।

पुनर्वाद—संज्ञा पुं० किसी न्यायालय से विवाद का निर्णय हो जाने पर उसके विरोध में उससे ऊँचे न्यायालय में फिर से उस विवाद पर विचार कराने के लिए की जानेवाली प्रार्थना (अंग्रे० अपील)।

पुनर्वादी—संज्ञा पुं० किसी ऊँचे न्यायालय में पुनर्वाद प्रस्तुत करनेवाला (अंग्रे० एपेलेण्ट)।

पुनर्वासन—संज्ञा पुं० उजड़े हुए लोगों को फिर बसाना या आबाद करना।

पुनर्विधायन—संज्ञा पुं० (वि० पुनर्विधायित) किसी बने हुए विधान को घटा या बढ़ा कर नये सिरे से विधान का रूप देना (अंग्रे०—रिएनैक्टमेण्ट)

पुनर्विधायित—वि० जिसका फिर से विधान

किया गया हो। पहले का बना हुआ विधान जो फिर से घटा बढ़ा कर बनाया गया हो।
पुनर्विवाह—संज्ञा पुं० फिर से होनेवाला विवाह—विशेषकर विधवा स्त्री का। दूसरी बार विवाह।
पुनि†*—क्रि० वि० फिर। फिर से। दोबारा। पुनः।
पुनिपुनि—अव्य० बार-बार। पुनःपुनः। बारंम्बार।
पुनी*—संज्ञा पुं० पुण्यात्मा। दानी।
संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा। पूनो।
क्रि० वि० पुनः। फिर।
पुनीत—वि० पवित्र। शुद्ध। पावन।
पुन्न—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।
पुन्नाग—संज्ञा पुं० १. वृक्ष-विशेष। पुष्प-विशेष। सुलताना चंपा। २. श्वेत कमल। ३. जायफल।
पुन्नाड़, पुन्नार—संज्ञा पुं० चकवँड़ का पेड़। चक्रमर्द।
पुन्य—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।
पुन्यता, पुन्यताई*—संज्ञा स्त्री० धर्मशीलता। पवित्रता। पुण्याई।
पुमान्—संज्ञा पुं० नर। पुरुष।
पुरंजन—संज्ञा पुं० जीवात्मा।
पुरंजय—वि० १. पुर को जीतनेवाला। नगर या ग्राम-विजेता। २. एक सूर्यवंशी राजा।
पुरंदर—संज्ञा पुं० १. पुर, नगर या घर का नाशक। २. इंद्र। ३. विष्णु। ४. शिव।
पुरंध्री—संज्ञा स्त्री० १. पति, पुत्र आदि से सुखी स्त्री। बालबच्चोंवाली स्त्री। २. सुगृहिणी।
पुरः—अव्य० आगे। पहले। प्रथम।
पुरःदत्त—वि० पहले से दिया हुआ (शुल्क, परिव्यय आदि)। (अंग्रे० प्रीपेड)
पुरःदान—संज्ञा पुं० पहले से देना (शुल्क, देन आदि)। [अंग्रे०—प्रीपेमेण्ट।]
पुरःसंधी—वि० किसी कार्य, विषय या तथ्य में उससे पहले सहायक या सम्बद्ध रूप में होनेवाला।
पुरःसर—वि० १. अग्रगामी। अगुआ। २. संगी। साथी। ३. मिला हुआ। युक्त। सहित। समन्वित।
पुर—संज्ञा पुं० [स्त्री० पुरी] १. नगर। शहर। गाँव। २. हाट। स्थान। ग्राम, जिसमें बाजार लगता हो। ३. घर। आगार। ४. अटारी। कोठा। ५. लोक। भुवन। ६. नक्षत्र। ७. राशि। पुंज। ८. शरीर। देह। ९. दुर्ग। किला। गढ़। १०. चरसा। कूएँ से पानी निकालने का चमड़े का डोल। मोट। पुरवट।
वि० पूर्ण। भरा हुआ।
पुरइन*—संज्ञा स्त्री० कमल का पत्ता। कमल। कुमुदिनी। नलिनी।
पुरखा—संज्ञा पुं० १. पूर्वज। बाप, दादा, परदादा आदि। पूर्व-पुरुष। २. घर का बड़ा-बूढ़ा।
मुहा०—पुरखे तर जाना=पूर्व-पुरुषों को (पुत्र आदि के कृत्य से) परलोक में उत्तम गति प्राप्त होना। बड़ा भारी पुण्य या फल होना।
पुरचक—संज्ञा स्त्री० १. चुमकार। पुचकार। २. बढ़ावा। उत्साह-दान। ३. प्रेरणा। उसकावा। ४. समर्थन। हिमायत। तरफ़-दारी। पक्षपात।
पुरजन—संज्ञा पुं० पुरवासी। नगरवासी। ग्रामवासी।
पुरजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. टुकड़ा। खंड। कागज का टुकड़ा। २. कतरन। धज्जी। ३. अवयव। अंग। भाग। अंश।
मुहा०—पुरजे-पुरजे करना या उड़ाना=खंड-खंड करना। टूक-टूक करना। चलता-पुरजा=चालाक आदमी।
पुरट—संज्ञा पुं० सोना। स्वर्ण।
पुरतः—अव्य० आगे।
पुरत्राण—संज्ञा पुं० परकोटा। शहरपनाह। प्राकार। कोट।
पुरद्वार—संज्ञा पुं० नगर-द्वार।
पुरनिया—संज्ञा पुं० १. प्राचीन। वृद्ध। बूढ़ा। २. बिहार-राज्य का एक नगर।
पुरपाल—संज्ञा पुं० १. नगर-रक्षक। कोतवाल। २. जीव।
पुरबला, पुरबुला†—वि० [स्त्री० पुरबली,

पुरबुली] १. पूर्व का। पहले का २. पूर्व जन्म का।

पुरबिया–वि० [स्त्री० पुरबिनी] पूर्व देश में उत्पन्न या रहनेवाला। पूर्व का।

पुरवट†–संज्ञा पुं० चमड़े का बहुत बड़ा डोल, जिसे कुएँ में डालकर बैलों की सहायता से सिंचाई के लिए पानी खींचते हैं। मोट। चरसा।

पुरवना*†–क्रि० स० १. भरना। पूरना। पुजाना। २. पूरा करना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। २. यथेष्ट होना। ३. उपयोगी होना।

मुहा०–साथ पुरवना=साथ देना।

पुरवा–संज्ञा पुं० १. छोटा गाँव। खेड़ा। पुरा। २. पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु। ३. मिट्टी का कुल्हड़ या सकोरा।

पुरवाई, पुरवैया–संज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा। पूर्व की वायु।

पुरश्चरण–संज्ञा पुं० १. किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। २. किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए किसी मंत्र, स्तोत्र आदि को नियमपूर्वक जपना। विधिपूर्वक अनुष्ठान या पूजा।

पुरषा–संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

पुरसा–संज्ञा पुं० पाँच हाथ की एक नाप। ऊँचाई या गहराई की एक माप।

पुरस्कार–संज्ञा पुं० [वि० पुरस्कृत] १. पारितोषिक। इनाम। उपहार। उत्तम कार्य का प्रतिफल। २. आगे करने की क्रिया। ३. आदर। पूजा। ४. प्रधानता। ५. स्वीकार।

पुरस्कृत–वि० १. पारितोषिक पाया हुआ। पुरस्कार या इनाम पाया हुआ। २. आगे किया हुआ। ३. आदृत। पूजित। ४. स्वीकृत।

पुरस्तात्–अव्य० आगे। पहले। पूर्व काल में। पूर्व दिशा में।

पुरस्सर–वि० दे० "पुरःसर"।

पुरहूत–संज्ञा पुं० दे० "पुरुहूत"। इन्द्र।

पुरांगना–संज्ञा स्त्री० नगर में रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।

पुरा–अव्य० पुराने समय में।

वि० पुराना। प्राचीन।

संज्ञा पुं० गाँव। बस्ती।

पुराकल्प–संज्ञा पुं० १. पूर्वकल्प। पहले का युग। २. प्राचीन काल। ३. एक प्रकार का अर्थवाद, जिसमें प्राचीन इतिहास के आधार पर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।

पुराकृत–वि० १. पूर्वकाल में किया हुआ। २. पूर्व-जन्म में किया हुआ।

संज्ञा पुं० पूर्वजन्मकृत पुण्य। प्रारब्ध कर्म। भाग्य। अदृष्ट।

पुराण–वि० पुरातन। प्राचीन। पुराना।

संज्ञा पुं० १. सृष्टि, मनुष्य, देवों, दानवों आदि के ऐसे वृत्तान्त, जो परम्परा से चले आते हों। २. व्यास तथा अन्य मुनियों-द्वारा रचित-ग्रंथ-समूह। हिन्दुओं के धर्म-संबंधी अठारह आख्यान-ग्रंथ, जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तान्त हैं। ३. अठारह की संख्या। अठारह पुराण। ४. प्राचीन इतिहास। ५. शिव। ६. कार्षापण।

पुरातत्त्व–संज्ञा पुं० वह विद्या, जिसमें प्राचीन काल की वस्तुओं के आधार पर प्राचीन अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। प्राचीन काल-संबंधी विद्या। प्रत्नशास्त्र या प्रत्नविज्ञान। (अंग्रे०—आर्कियॉलोजी)

पुरातन–वि० पुराना। प्राचीन।

संज्ञा पुं० विष्णु

पुरातल–संज्ञा पुं० तलातल। सातों संसार के नीचे का तल।

पुरान†–वि० दे० "पुराना"।

संज्ञा पुं० दे० "पुराण"।

पुराना–वि० [स्त्री० पुरानी] १. बहुत दिनों का। प्राचीन। अतीत। पुरातन। पहले का। २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। जीर्ण। ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। अनुभवी। परिपक्व। ४. जिसका चलन अब न हो।

क्रि० स० १. पूरा कराना। भराना।

पुजवाना । २. पालन कराना । अनुकूल कराना । पूरा करना । ३. भरना । ४. अनुसरण करना । पालन करना ।

मु०—पुराना खुर्राट=१. बूढ़ा । २. बहुत बातों का अनुभवी । पुराना घाघ=गहरा चालाक ।

पुरारि—संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

पुराल†*—संज्ञा पुं० दे० "पयाल" ।

पुरालिपि—संज्ञा स्त्री० प्राचीन काल में प्रचलित लिपि ।

पुरालिपिशास्त्र—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें हजारों वर्ष पहले की प्राचीन लिपियाँ पढ़ने का विवेचन होता है । (अंग्रे०—एपिग्राफी)

पुरावृत्त—संज्ञा पुं० प्राचीन काल का वृत्तान्त या हाल । प्राचीन इतिहास ।

पुरि—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पुरी" । २. नदी । संज्ञा पुं० दशनामी संन्यासियों का एक भेद ।

पुरी—संज्ञा स्त्री० १. नगरी । छोटा शहर । २. उड़ीसा में जगन्नाथपुरी । पुरुषोत्तम-धाम ।

पुरीष—संज्ञा पुं० विष्ठा । मल । गू ।

पुरु—संज्ञा पुं० १. देवलोक । २. दैत्य । ३. पराग । ४. शरीर । ५. एक प्राचीन राजा, जो नहुष के पौत्र और ययाति के पुत्र थे । ६. पंजाब का एक राजा, जो सिकंदर से लड़ा था । ७. एक पर्वत ।

पुरुख*‡—संज्ञा पुं० दे० "पुरुष" ।

पुरुष—संज्ञा पुं० १. मनुष्य । आदमी । नर । मर्द । २. सांख्य में प्रकृति से भिन्न एक चेतन पदार्थ । ३. आत्मा । ४. विष्णु । जीव । सूर्य्य । ५. शिव । ६. मनुष्य का शरीर या आत्मा । ७. पूर्वज । ८. स्वामी । पति । ९. व्याकरण में सर्वनाम । जैसे—'मैं' उत्तम पुरुष हुआ, 'तुम' मध्यम पुरुष और 'वह' अन्य पुरुष ।

पुरुषत्व—संज्ञा पुं० पुंस्त्व । पुरुष होने का भाव । पौरुष । साहस । मरदानगी ।

पुरुषत्वहीन—वि० पुंस्त्वहीन । नपुंसक । हिजड़ा ।

पुरुषपुर—संज्ञा पुं० गांधार की प्राचीन राजधानी । आजकल का पेशावर ।

पुरुषमेध—संज्ञा पुं० १. एक यज्ञ, जिसमें नर-बलि की जाती थी । २. दाहकर्म । मृतक मनुष्य की दाहक्रिया ।

पुरुषाधम—संज्ञा पुं० निकृष्ट मनुष्य । नीच ।

पुरुषानुक्रम—संज्ञा पुं० पुरखों की परम्परा, जो क्रम से चली आई हो । वंशपरंपरा ।

पुरुषार्थ—संज्ञा पुं० पराक्रम । उद्यम । शक्ति । बल । सामर्थ्य । पुरुष का लक्षण । पुरुष का प्रयोजन—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।

पुरुषार्थी—वि० पुरुषार्थ करनेवाला । उद्योगी । परिश्रमी । साहसी । बलवान् । सामर्थ्य-वान् ।

पुरुषोत्तम—संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ पुरुष । नारायण । २. विष्णु । ३. जगन्नाथ, जिनका मंदिर उड़ीसा में है । ४. कृष्णचंद्र । ५. ईश्वर । ६. मलमास । अधिक मास ।

पुरुषोत्तममास—संज्ञा पुं० मलमास, अधिक मास ।

पुरुहूत—संज्ञा पुं० इंद्र । पुरन्दर । देवराज ।

पुरूरवा—संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन राजा, जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है । इनकी पत्नी उर्वशी थी । २. विश्वेदेव ।

पुरेन, पुरैन—संज्ञा स्त्री० १. कमल का पत्ता । २. कमल ।

पुरोगामी—वि० [स्त्री० पुरोगामिनी] १. अग्रगामी । आगे चलनेवाला । बराबर उन्नति करता हुआ आगे बढ़नेवाला । २. किसी विषय में उदार विचार रखने और अग्रसर रहनेवाला ।

पुरोडाश—संज्ञा पुं० १. जव के आटे की बनी हुई एक प्रकार की रोटी, जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिए पकाई जाती थी । २. हवि । ३. यज्ञभाग । यज्ञ में होम करने की वस्तु । ४. सोमरस ।

पुरोधा—संज्ञा पुं० पुरोहित । यज्ञ करानेवाला ।

पुरोवर्ती—वि० अग्रगामी । आगे चलनेवाला ।

पुरोहित—संज्ञा पुं० [स्त्री० पुरोहितानी] यजमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करानेवाला याजक । कर्मकांड करानेवाला ब्राह्मण । पुरोधा । उपाध्याय । ऋत्विक ।

पुरोहिताई–संज्ञा स्त्री० पुरोहित का कार्य ।
पुरौ*–संज्ञा पुं० दे० "पुरवट" ।
पुरौती†–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्ति" ।
पुर्त्तगाल–संज्ञा पुं० योरप महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम कोने पर स्थित एक छोटा देश ।
पुर्त्तगाली–वि० १. पुर्त्तगाल-संबंधी । २. पुर्त्तगाल का रहनेवाला ।
पुर्त्तगीज–वि० दे० "पुर्त्तगाली" । पुर्त्तगाल देश-सम्बन्धी ।
पुल–संज्ञा पुं० बाँध । बन्ध । सेतु । नदी, जलाशय आदि के आर-पार जाने का रास्ता, जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय ।
मुहा०–किसी बात का पुल बाँधना=झड़ी लगाना । बहुत अधिकता कर देना ।
पुलक–संज्ञा पुं० १. प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों (छिद्रों) का प्रफुल्ल होना । रोमांच । शरीर के अन्दर और बाहर हर्षजन्य विकार । २. एक प्रकार का रत्न । याकूत । महताब । ३. मणि का दोष विशेष ।
पुलकना–क्रि० अ० पुलकित होना । गद्गद होना । प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना ।
पुलकाई*–संज्ञा स्त्री० पुलकित होने का भाव । गद्गद होना ।
पुलकालि, पुलकावलि–संज्ञा स्त्री० प्रेम या हर्ष से प्रफुल्लित रोम ।
पुलकित–वि० रोमांचित । प्रेम या हर्ष से जिसके रोयें खड़े हों ।
पुलकी–वि० रोमांचयुक्त ।
पुलट†–संज्ञा स्त्री० दे० "पलट" ।
पुलटिस–संज्ञा स्त्री० फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिए उस पर चढ़ाया हुआ दवाओं का गाढ़ा लेप ।
पुलपुला–वि० १. ढीली और मुलायम वस्तु, जो दबाने से धँसे । पिलपिला । गला हुआ । सड़ा हुआ । २. ऋषि । ब्रह्मा के मानस पुत्र ।
पुलपुलाना–क्रि० स० १. किसी मुलायम चीज को दबाना । मुँह में लेकर दबाना । चूसना । २. भयभीत होना । कंपन । ३. ढीला पड़ना । गुलगुला होना । शिथिल पड़ना ।
पुलस्त्य–संज्ञा पुं० १. सप्तर्षियों और प्रजापतियों में से एक ऋषि । ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों में थे । २. शिव । ३. रावण के दादा ।
पुलह–संज्ञा पुं० १. सप्तर्षियों में एक ऋषि, जो ब्रह्मा के मानस पुत्र और प्रजापति थे । २. शिव ।
पुलहना*–क्रि० अ० दे० "पलुहना" ।
पुलाक–संज्ञा पुं० १. एक तुच्छ धान्य । अँकरा । २. उबाला हुआ चावल । भात । ३. भात का माँड़ । पीच । ४. पुलाव ।
पुलाव–संज्ञा पुं० [फा०] मांस और चावल की खिचड़ी । मांसोदन ।
पुलिंद–संज्ञा पुं० १. भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति । भील । शवर । २. वह देश, जिसमें पुलिंद जाति बसती थी ।
पुलिंदा–संज्ञा पुं० लपेटे हुए कपड़े, कागज़ आदि का बण्डल । गठरी । गड्डी । पोटरी ।
पुलिन–संज्ञा पुं० १. जल से निकली हुई भूमि । नदी के बीच की रेत । २. किनारा । तीर । तट ।
पुलिस–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] सरकार-द्वारा प्रजा की जान और माल की रक्षा के लिए नियुक्त सिपाही या अधिकारी ।
पुलिसमैन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पुलिस का सिपाही । पुलिस का कार्य करनेवाला व्यक्ति ।
पुलिहोरा†–संज्ञा पुं० एक पकवान ।
पुलोम–संज्ञा पुं० एक दैत्य, जिसकी कन्या का नाम शची था ।
पुलोमजा–संज्ञा स्त्री०, शची । इंद्राणी । इन्द्र की स्त्री जो पुलोम नामक दैत्य की कन्या थी ।
पुलोमा–संज्ञा स्त्री० भृगु ऋषि की पत्नी ।
पुवा†–संज्ञा पुं० दे० "मालपुवा" ।
पुवार या **पुवाल**–संज्ञा पुं० पयाल । धान के डंठल ।
पुश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पीठ । पृष्ठ । पीछा । २. वंश-परम्परा । पीढ़ी ।
यौ०–पुश्त दर पुश्त=वंशपरम्परा में ।

पीढ़ी दर पीढ़ी। पुश्तहा पुश्त=कई पीढ़ियों तक।

पुश्तक–संज्ञा स्त्री० दोलत्ती। घोड़े, गधे आदि का पीछे के दोनों पैरों से मारना।

पुश्तनामा–संज्ञा पुं० [फा०] पीढ़ीनामा। वंशावली। कुरसीनामा।

पुश्ता–संज्ञा पुं० [फा०] १. पानी रोकने या मजबूती के लिए मिट्टी या ईंट पत्थर का ढालुवाँ टीला। ऊँची मेंड़। बाँध। पुट्ठा। २. किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा।

पुश्ताबन्दी–संज्ञा पुं० पुश्ते की बँधाई। पुश्ते का कार्य।

पुश्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सहारा। टेक। थाम। आश्रय। २. सहायता। मदद। ३. पक्ष। तरफ़दारी। ४. गाव-तकिया। बड़ा तकिया।

पुश्तैनी–वि० १. कई पीढ़ियों से चला आनेवाला। दादा, परदादा के समय का पुराना। २. आगे की पीढ़ियों तक जानेवाला। वंशपरम्परा सम्बन्धी। खानदानी।

पुष्कर–संज्ञा पुं० १. जलाशय। ताल। २. जल। ३. कमल। ४. हाथी की सूँड़ का अग्र भाग। ५. बाण। तीर। ६. आकाश। ७. सर्प। ८. युद्ध। ९. अंश। भाग। पुष्करमूल। १०. सूर्य्य। ११. एक दिग्गज। १२. सारस पक्षी। १३. विष्णु। १४. शंकर। शिव। १५ बुद्ध। पुराणों में वर्णित सात द्वीपों में से एक। १६. अजमेर के पास एक तीर्थ। १७. मद। १८. कूट। १९. एक राजा का नाम। २०. मृदंग, २१. नृत्यकला।

पुष्करिणी–संज्ञा स्त्री० छोटा तालाब। छोटा जलाशय।

पुष्करमूल–संज्ञा पुं० एक औषध की जड़।

पुष्करी–संज्ञा पुं० हाथी।

पुष्कल–संज्ञा पुं० १. भरतजी के दो पुत्रों में से एक। २. चार ग्रास की भिक्षा। अनाज नापने के लिए ६४ मुट्ठियों का एक प्राचीन मान। ३. एक तरह का ढोल। ४. शिव।

वि० १. बहुत। अधिक। अति प्रचुर। २. परिपूर्ण। भरा-पूरा। ३. श्रेष्ठ। ४. उपस्थित। ५. पवित्र।

पुष्ट–वि० १. मोटा-ताजा। तैयार। मांसल। स्थूल। २. बलिष्ठ। हृष्ट-पुष्ट। बलवर्द्धक। ३. दृढ़। पक्का। मजबूत। ४. पालन-पोषण किया हुआ। प्रतिपालित।

पुष्टई–संज्ञा स्त्री० बलवीर्य्य बढ़ानेवाली ओषधि। पुष्टिकर औषध।

पुष्टता–संज्ञा स्त्री० दृढ़ता। मजबूती।

पुष्टि–संज्ञा स्त्री० १. पक्कापन। बात का समर्थन। २. पोषण। मुटाई। बलिष्ठता। ३. वृद्धि। संतति की बढ़ती।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक–वि० पुष्टि करनेवाला। बलवीर्य्य बढ़ानेवाला।

पुष्टिमार्ग–संज्ञा पुं० वल्लभ-संप्रदाय। वल्लभाचार्य्य के मतानुसार वैष्णव भक्ति-मार्ग।

पुष्प–संज्ञा पुं० १. फूल। कुसुम। गुल। २. स्त्री का रज। ३. नेत्र का एक रोग। फूली। ४. कुबेर का विमान। पुष्पक। ५. मांस (वामार्गी)।

पुष्पक–संज्ञा पुं० १. फूल। २. कुबेर का विमान, जिसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था। ३. आँख की फूली। आँख का एक रोग।

पुष्पकीट–संज्ञा पुं० फूल का कीड़ा। भौंरा।

पुष्पचाप–संज्ञा पुं० कामदेव।

पुष्पदंत–संज्ञा पुं० १. वायुकोण का दिग्गज। २. शिव का अनुचर। एक गंधर्व।

पुष्पधन्वा–संज्ञा पुं० मदन। मनोज। कामदेव।

पुष्पध्वज–संज्ञा पुं० कामदेव।

पुष्पपुर–संज्ञा पुं० प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना)।

पुष्पबाण–संज्ञा पुं० कामदेव।

पुष्पमित्र–संज्ञा पुं० दे० "पुष्यमित्र"।

पुष्परज–संज्ञा पुं० फूलों की धूल। पराग।

पुष्परस–संज्ञा पुं० फूलों का रस। मकरन्द।

पुष्पराग–संज्ञा पुं० पुखराज मणि।

पुष्परेणु–संज्ञा पुं० पराग।

पुष्पवती–वि० स्त्री० १. फूलवाली। फूली हुई। २. रजस्वला। रजोवती।

पुष्पवाटिका–संज्ञा स्त्री० उद्यान। फुलवारी। फूलों का बगीचा।

पुष्पवृष्टि–संज्ञा स्त्री० फूलों की वर्षा। ऊपर से फूल गिरना या गिराना।
पुष्पशर–संज्ञा पुं० कामदेव।
पुष्पसार–संज्ञा पुं० १. फूलों का मूल तत्त्व। इत्र। २. फूलों का रस। मधु।
संज्ञा स्त्री० गूलर।
पुष्पांजलि–संज्ञा स्त्री० फूलों से भरी अंजलि, जो किसी देवता या पूज्य पुरुष पर चढ़ाई जाय।
पुष्पागम–संज्ञा पुं० वसंत ऋतु।
पुष्पिका–संज्ञा स्त्री० अध्याय के अंत में वह वाक्य, जिसमें कहे हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है और जो प्रायः "इति श्री" से आरंभ होता है।
पुष्पित–वि० विकसित। फूला हुआ। प्रफुल्ल।
पुष्पिता–संज्ञा स्त्री० रजस्वला स्त्री।
पुष्पिताग्रा–संज्ञा स्त्री० एक अर्द्धसम छन्द।
पुष्पोद्यान–संज्ञा पुं० पुष्पवाटिका। फुलवारी।
पुष्य–संज्ञा पुं० १. पुष्टि। पोषण। २. मूल या सार वस्तु। ३. बाण की आकृतिवाला आठवाँ नक्षत्र तिष्य। ४. पूस का महीना। पौष मास। ५. एक नक्षत्र का नाम।
पुष्यमित्र–संज्ञा पुं० मौर्यों के पश्चात् मगध में शुंग-वंश का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा।
पुसकर*–संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।
पुसाना*†–क्रि० अ० १. बन पड़ना। पूरा पड़ना। २. शोभा देना। उचित जान पड़ना।
पुस्त*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "पुश्त"।
पुस्तक–संज्ञा स्त्री० ग्रंथ। किताब। पोथी।
पुस्तकाकार–वि० ग्रंथ का रूप। पुस्तक का आकार या बनावट।
पुस्तकालय–संज्ञा पुं० वह भवन या घर, जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो।
पुस्त-डाक–संज्ञा स्त्री० वह डाक या डाक से भेजने की वह विधि जिसके अनुसार समाचार-पत्र, छपी हुई पुस्तकें, आदि कुछ रियायती दर से भेजी जाती हैं। (अंग्रे०—बुक पोस्ट)
पुस्तिका–संज्ञा स्त्री० छोटी पुस्तक।
पुहकर*–संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।
पुहना–क्रि० अ० (पोहना क्रिया का स०) पोहा जाना। पिरोया या गूँथा जाना।
पुहप, पुहुप–संज्ञा पुं० पुष्प। फूल।
पुहुपवेनु*–संज्ञा पुं० दे० पुखराज।
पुहुमी*–संज्ञा पुं० दे० पुष्परेणु। पराग।
पुहुवी*–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। भूमि।
पूंगा–संज्ञा पुं० सीप का कीड़ा।
संज्ञा स्त्री० महुवर। सँपेरों का बाजा।
पूंगी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बाँसुरी।
पूँछ–संज्ञा स्त्री० १. जानवरों, पक्षियों, कीड़ों आदि के शरीर का पिछला लम्बा भाग। लांगूल। पुच्छ। दुम। २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग। ३. पुछल्ला। पिछ-लग्गू।
पूँछताछ–संज्ञा स्त्री० दे० "पूछताछ"।
पूँछना–क्रि० अ० १. दे० "पूछना"। २. दे० "पोंछना"।
पूँजी–संज्ञा स्त्री० १. मूलधन। संचितधन। संपत्ति। जमा। २. वह धन, जो किसी व्यापार में लगाया गया हो। धन। रुपया-पैसा। ३. किसी विशेष विषय में किसी की योग्यता। ४. समूह। ढेर।
पूँजीदार–संज्ञा पुं० दे० "पूँजीपति"। वह व्यक्ति जिसके पास पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे। रुपयेवाला।
पूँजीदारी–संज्ञा स्त्री० ऐसी आर्थिक व्यवस्था, जिसमें पूँजीदारों या पूँजीपतियों का स्थान प्रधान हो और उनके हाथ में पूरा अधिकार हो।
पूँजीपति–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति, जिसके पास काफी पूँजी हो या जो किसी कारबार में पूँजी लगावे। पूँजीदार।
पूँजीवाद–संज्ञा पुं० राज्यशासन-प्रणाली का वह सिद्धान्त, जिसमें पूँजीपतियों का स्थान आवश्यक रूप से प्रमुख माना जाता है। (अंग्रे०—कैपिटलिज्म)
पूँठ‡–संज्ञा स्त्री० पीठ।
पूआ–संज्ञा पुं० मीठी पूड़ी। मालपुआ।
पूग–संज्ञा पुं० १. सुपारी का पेड़ या फल। २. ढेरा। ३. छंद। ४. समूह। वृन्द।

५. राशि। ढेर। ६. किसी विशेष कार्य्य के लिए बना हुआ संघ। कंपनी।

पूगना–क्रि० अ० १. पूरा होना। २. प्राप्त होना। ३. पूजना। मिलना। पास जाना।

पूगी–संज्ञा स्त्री० सुपारी।

पूगीफल–संज्ञा पुं० सुपारी। कसैली।

पूछ–संज्ञा स्त्री० १. पूछने का भाव। जरूरत। २. आदर। जिज्ञासा। ३. खोज। चाह। तलब। सम्मान। इज्जत।

पूछ-ताछ–संज्ञा स्त्री० कुछ जानने के लिए बार बार पूछना। जिज्ञासा। खोज-खबर। तहकीकात। जाँच। दर्याफ्त।

पूछना–क्रि० स० १. जानने के लिए किसी से प्रश्न करना। दरियाफ्त करना। जिज्ञासा करना। खोज-खबर लेना। २. किसी के प्रति सम्मान का भाव प्रकट करना। आदर करना। ३. गुण या मूल्य जानना। ४. टोकना। ५. ध्यान देना।

मुहा०–बात न पूछना=१. तुच्छ जानकर ध्यान न देना। २. आदर न करना।

पूछ-पाछ–संज्ञा स्त्री० "पूछ-ताछ"।

पूछरी*†–संज्ञा स्त्री० १. दुम। पूँछ। २. पीछे का भाग।

पूछाताछी, पूछापाछी–संज्ञा स्त्री दे० "पूछ-ताछ"।

पूजक–संज्ञा पुं० पूजा करनेवाला। उपासक। पुजारी।

पूजन–संज्ञा पुं० [वि० पूजक, पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य] १. पूजा। देवता की सेवा और वंदना। अर्चना। आराधना। २. आदर। सम्मान।

पूजना–क्रि० स० १. पूजा करना। देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए आराधना करना। अर्चना करना। वंदना करना। सम्मान करना। २. सिर झुकाना। ३. रिश्वत देना। घूस देना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। भरना। गहराई का भरना या बराबर हो जाना। पटना। २. चुकता होना। चुकाना। ३. समाप्त होना। बीतना।

पूजनीय–वि० पूजने योग्य। १. पूज्य। २. सम्मान-योग्य। आदरणीय।

पूजबंद–संज्ञा पुं० [फा०] जानवरों के मुँह पर बाँधने की जाली।

पूजयिता–संज्ञा पुं० पूजक। पुजारी।

पूजा–संज्ञा स्त्री० १. ईश्वर या देवी-देवता के प्रति श्रद्धा और भक्ति प्रकट करनेवाला कार्य्य। अर्चना। आराधन। किसी देवी-देवता पर जल-फूल आदि चढ़ाना। २. ध्यान धरना। ३. आदर-सत्कार। ४. किसी को प्रसन्न करने के लिए कुछ देना। ५. ताड़ना। दंड।

पूजार्ह–वि० पूजा के योग्य। पूज्य।

पूजित–वि० [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो। आराधित। अर्चित।

पूज्य–वि० [स्त्री० पूज्या] १. पूजा के योग्य। पूजने-योग्य। पूजनीय। २. आदरणीय।

पूज्यपाद–वि० जिसके पैर पूजनीय हों। अत्यन्त मान्य। अत्यन्त पूज्य।

पूज्यमान–वि० पूज्य। पूजनीय।

पूठि*‡–संज्ञा स्त्री० पीठ।

पूड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पूआ"।

पूड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी"।

पूत–वि० पवित्र। शुद्ध।

संज्ञा पुं० १. सत्य। २. शंख। ३. श्वेत कुश। ४. पलास। ५. तिल का वृक्ष। ६. बेटा। पुत्र। लड़का।

पूतना–संज्ञा स्त्री० १. एक राक्षसी, जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिए गोकुल गई थी और जिसे कृष्ण ने मार डाला था। २. एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

पूतनारि–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। (पूतना राक्षसी को वध करनेवाले)

पूतना-सूदन–संज्ञा पुं० पूतना को मारनेवाले। कृष्ण।

पूतरा†–संज्ञा पुं० १. दे० "पुतला"। २. बेटा। पुत्र।

पूतात्मा–संज्ञा पुं० १. शुद्धात्मा। जिसकी आत्मा पवित्र या शुद्ध हो। २. विष्णु।

पूति–संज्ञा स्त्री० १. पवित्रता । शुद्धता । शुचिता । २. बदबू । दुर्गन्ध ।

पूती–संज्ञा स्त्री० १. पवित्र किया हुआ । पवित्रीकृत । शोधित । शुद्ध किया हुआ । २. संचित । रक्षित । ३. गाँठ के रूप में जड़ । ४. लहसुन की गाँठ ।

पून–संज्ञा पुं० १. दे० "पुण्य" । २. *दे० "पूर्ण",

पूनिऊँ*–संज्ञा स्त्री० दे० "पूनो" ।

पूनियाँ–संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा । पूर्णमासी ।

पूनी–संज्ञा स्त्री० धुनी हुई रूई की बत्ती, जो चरखे पर सूत कातने के लिए तैयार की जाती है ।

पूनो†*–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णिमा" ।

पूप–संज्ञा पुं० पूआ । मालपुआ । पकवान-विशेष ।

पूय–संज्ञा पुं० मवाद । पीप ।

पूर–वि० १. दे० "पूर्ण" । २. पकवान के भीतर भरे जानेवाले मसाले या अन्य पदार्थ ।

पूरक–वि० पूरा करनेवाला । किसी के साथ मिलकर उसे पूर्ण रूप देनेवाला ।
संज्ञा पुं० १. प्राणायाम की एक विधि, जिसमें श्वास को नाक से खींचते हुए भीतर ले जाते हैं । २. विजौरा नीबू । ३. हिंदुओं में किसी के मरने की तिथि से दसवें दिन तक नित्य दिए जानेवाले दस पिंड । ४. गुणा करने का अंक । गुणक अंक ।

पूरक प्रश्न–संज्ञा पुं० किसी प्रश्न के साथ पूछा जानेवाला दूसरा प्रश्न । विधान-सभाओं म सरकार-द्वारा प्रश्नों का उत्तर दिए जाने पर उन प्रश्नों से सम्बन्धित पूछे जानेवाले अन्य प्रश्न ।

पूरण–संज्ञा पुं० [वि० पूरणीय] १. भरने की क्रिया । समाप्त या पूरा करना । समाप्ति । पूर्ति । २. अंकों का गुणा करना । अंक-गुणन । ३. पूरक पिंड । दशाह-पिंड । ४. मेह । वृष्टि । ५. समुद्र । ६. सेतु ।
वि० पूरा करनेवाला । पूरक ।

पूरणीय–वि० पूर्ण करने के उपयुक्त । पूरा करने के योग्य ।

पूरन*–वि० दे० "पूर्ण" ।

पूरनपरब*†–संज्ञा पुं० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरनपूरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मीठी कचौरी ।

पूरनमासी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरना†–क्रि० स० १. कमी या त्रुटि को पूरा करना । पूर्ति करना । २. ढाँकना । ३. (मनोरथ) सफल करना । सिद्ध करना । ४. मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देव-पूजन आदि के लिए वर्गादि बनाना । चौक बनाना । ५. बटना जैसे, तागा पूरना । ६. बजाना । फूँकना ।
क्रि० अ० पूर्ण होना । भर जाना ।

पूरब–संज्ञा पुं० पूर्व । प्राची । सूर्योदय की दिशा ।
*†वि०, क्रि० वि० दे० "पूर्व" ।

पूरबल*†–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल । पुराना जमाना । २. पूर्वजन्म ।

पूरबला*–वि० [स्त्री० पूरबली] १. प्राचीन काल का । पुराना । २. पहले जन्म का ।

पूरबी–वि० दे० "पूर्वी" ।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा । (बि[illegible]र)

पूरा–वि० [स्त्री० पूरी] १. पूर्ण । परिपूर्ण । भरा हुआ । जो खाली न हो । २. समूचा । समस्त । समग्र । ३. जिसमें कोई कमी या कसर न हो । भरपूर । काफ़ी । यथेच्छ । बहुत । ५. तुष्ट । ६. संपन्न । पूर्ण संपादित । ७. पक्का । मजबूत । दृढ़ ।
मुहा०–किसी का पूरा पड़ना=कार्य पूर्ण हो जाना । सामग्री न घटना । (कोई काम) पूरा उतरना=अच्छी तरह होना । जैसा चाहिए, वैसा ही होना । बात पूरी उतरना=ठीक निकलना । सत्य ठहरना । दिन पूरे करना=किसी प्रकार कालक्षेप करना । (दिन) पूरे होना=अंतिम समय निकट आना ।

पूरित–वि० १. परिपूर्ण । भरा हुआ । तृप्त । २. गुणा किया हुआ । गुणित ।

पूरी–संज्ञा स्त्री० "पूड़ी" । १. एक प्रसिद्ध पकवान, जिसे रोटी की तरह बेलकर घी में

छान लेते हैं। २. मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा।

पूर्ण–वि० १. भरा हुआ। पूरा। परिपूर्ण। २. अभावशून्य। जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो। परितृप्त। ३. भरपूर। काफी। यथेष्ट। ४. अखंडित। समूचा। समस्त। सारा। ५. सिद्ध। सफल। जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।
संज्ञा पुं० १. जल। २. विष्णु।

पूर्णकाम–वि० जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हों। कामनारहित। निष्काम।
संज्ञा पुं० परमेश्वर।

पूर्णचंद्र–संज्ञा पुं० पूर्णिमा का चंद्रमा।

पूर्णतया, पूर्णतः–क्रि० वि० पूर्ण रूप से। पूरी तरह से।

पूर्णता–संज्ञा स्त्री० १. पूर्ण होने का भाव। पूर्ण होना। २. पूर्ति। पूरण। भरण।

पूर्णपात्र–संज्ञा पुं० वस्तु से भरा हुआ बर्तन। हवन के समय चावल आदि से भरकर दान किया जानेवाला पात्र। पात्र-विशेष जिसमें २५६ मुट्ठी चावल भरा जाता है।

पूर्णप्रज्ञ–वि० पूर्ण ज्ञानी।
संज्ञा पुं० पूर्णप्रज्ञ दर्शनशास्त्र के रचयिता मध्वाचार्य।

पूर्णमासी–संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि। पूनो। पन्द्रह।

पूर्ण विराम–संज्ञा पुं० वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जानेवाला चिह्न।

पूर्णानन्द–संज्ञा पुं० परमेश्वर।

पूर्णाभिषेक–संज्ञा पुं० वाममार्गी अभिषेक। (मंत्रपूर्वक स्नान) महाभिषेक।

पूर्णावतार–संज्ञा पुं० भगवान् का षोडश कलायुक्त अवतार। श्रीकृष्ण।

पूर्णाहुति–संज्ञा स्त्री० १. यज्ञ की अन्तिम आहुति। २. किसी कार्य की समाप्ति की क्रिया।

पूर्णिमा–संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं या अन्तिम तिथि, जिस दिन चन्द्रमा की कला पूर्ण होती है।

पूर्णेन्दु–संज्ञा पुं० पूर्ण चन्द्रमा।

पूर्णोपमा–संज्ञा स्त्री० उपमा अलंकार का एक भेद, जिसमें उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—चारों अंग प्रकट हों।

पूर्त–संज्ञा पुं० १. पालन। २. बावली, देव-मन्दिर, बाग, सड़क आदि बनाने का काम।
वि० १. पूरित। २. ढका हुआ।

पूर्तविभाग–संज्ञा पुं० सड़क, पुल आदि बनवानेवाला सरकारी विभाग। निर्माण-विभाग। तामीर का महकमा।

पूर्ति–संज्ञा स्त्री० १. किसी आरम्भ किए हुए कार्य की समाप्ति। २. पूर्णता। पूरापन। ३. पालन। कमी को पूरा करने की क्रिया। ४. वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। ५. भरने का भाव। पूरण। ६. गुणा करने का भाव। गुणन।

पूर्व–संज्ञा पुं० सूर्योदय की दिशा। पूरब दिशा। प्राची दिशा।
वि० १. पहले का। २. आग का। अगला। ३. पुराना। ४. पिछला।
क्रि० वि० पहले। पेश्तर।

पूर्वक–क्रि० वि० सहित। साथ।

पूर्वकालिक–वि० १. जिसकी उत्पत्ति पूर्वकाल में हुई हो। २. पूर्वकालीन। प्राचीन। पूर्वकाल-सम्बन्धी। पहले का।

पूर्वकालिक क्रिया–संज्ञा स्त्री० वह अपूर्ण क्रिया, जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।

पूर्वज–संज्ञा पुं० १. अग्रज। बड़ा भाई। २. बाप, दादा, परदादा आदि। पूर्व पुरुष। पुरखा।

पूर्वजन्म–संज्ञा पुं० पिछला जन्म। वर्तमान से पहले का जन्म।

पूर्वजा–संज्ञा स्त्री० बड़ी बहन।

पूर्वदिन–संज्ञा पुं० पिछला दिन। गत दिवस। बीता हुआ कल का दिन।

पूर्वदेश–संज्ञा पुं० प्राची दिशा के देश। मध्य-देश।

पूर्वपक्ष–संज्ञा पुं० १. शास्त्रीय विचार के लिए उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका। २. कृष्ण-पक्ष ३. मुद्दई का दावा।

पूर्वपक्षी—संज्ञा पुं० १. पूर्वपक्ष उपस्थित करने-वाला। २. दावा दायर करनेवाला।
पूर्वपितामह—संज्ञा पुं० प्रपितामह।
पूर्वपुरुष—संज्ञा पुं० पिता, पितामह आदि।
पूर्वफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ नक्षत्र।
पूर्वभाद्रपद—संज्ञा पुं० २७ नक्षत्रों में से पचीसवाँ नक्षत्र।
पूर्वमीमांसा—संज्ञा स्त्री० महर्षि जैमिनि-कृत एक हिन्दू दर्शन, जिसमें कर्मकांड का वर्णन है।
पूर्वयाम—संज्ञा पुं० प्रथम प्रहर। पहला पहर।
पूर्वरंग—संज्ञा पुं० नाटक प्रारम्भ होने के पहले विघ्नों की शान्ति या दर्शकों को सजग करने के लिए संगीत या स्तुति।
पूर्वराग—संज्ञा पुं० साहित्य में नायक अथवा नायिका का वह प्रेम, जो दोनों का संयोग होने से पहले गुण सुनकर, चित्र देखकर या स्वयं एक दूसरे को देखकर उत्पन्न होता है। प्रथमानुराग। पूर्वानुराग।
पूर्वरूप—संज्ञा पुं० १. पहले का रूप। किसी वस्तु का पूर्व आकार या रूप। २. किसी वस्तु का वह चिह्न या लक्षण, जो उस वस्तु के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो। आगमसूचक चिह्न या लक्षण। आसार।
पूर्ववत्—क्रि० वि० पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही।
संज्ञा पुं० वह अनुमान, जो कारण को देखकर कार्य के विषय में उससे पहले ही किया जाय।
पूर्ववर्ती—वि० पहले का। पूर्व का। जो पहले हो या रह चुका हो।
पूर्ववृत्त—संज्ञा पुं० इतिहास। पहले का हाल।
पूर्वसाहचर्य—वि० पहले का साथ।
पूर्वा—संज्ञा स्त्री० १. पूर्व दिशा। २. एक नक्षत्र। ३. प्रथम।
वि० पूर्वज। पूर्वपुरुष। पहले पैदा हुआ।
पूर्वाधिकारी—संज्ञा पुं० सम्पत्ति का वह स्वामी या अधिकारी, जो उसके वर्त्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। वह अधिकारी, जो किसी पद पर उसके वर्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। (अंग्रे०—प्रेडिसेसर)
पूर्वानुराग—संज्ञा पुं० किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र देखकर उत्पन्न होने-वाला प्रेम। दे० "पूर्वराग"।
पूर्वापर—क्रि वि० आगे-पीछे।
वि० आगे और पीछे का। अगला और पिछला।
संज्ञा पुं० पूर्व और पश्चिम।
पूर्वापर्य—संज्ञा पुं० पूर्वापर का भाव। आगा-पीछा।
पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ नक्षत्र।
पूर्वाभाद्रपद—संज्ञा पुं० २७ नक्षत्रों में से पचीसवाँ नक्षत्र।
पूर्वाभिमुख—संज्ञा पुं० पूर्व की ओर मुख। पूरब के सामने।
पूर्वाभ्यास—संज्ञा पुं० पहले का अभ्यास।
पूर्वार्द्ध—संज्ञा पुं० आरम्भ का आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।
पूर्वावधि—वि०, यौ० चिरकाल पर्यन्त। पूर्व-कालावधि।
पूर्वावस्था—संज्ञा स्त्री० पहले की दशा या अवस्था। प्रथम अवस्था।
पूर्वाषाढ़ा—संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से बीसवाँ नक्षत्र।
पूर्वाह्न—संज्ञा पुं० सबेरे से दोपहर तक का समय। दिन का पहला भाग।
पूर्वी—वि० पूर्व दिशा से सम्बन्ध रखनेवाला। पूरब का।
संज्ञा पुं० १. पूरब में होनेवाला एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का दादरा। जिसकी भाषा बिहारी होती है। ३. एक राग।
पूर्वोक्त—वि० पहले कहा हुआ। जिसका जिक्र पहले आ चुका हो। पूर्वकथित।
पूला—संज्ञा पुं० [स्त्री० पूली] मूंज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा। घास की गड्डी।
पूष—संज्ञा पुं० दे० "पूस" या "पौष मास"।
पूषण—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. पुराणानुसार बारह आदित्यों में से एक। ३. एक वैदिक देवता।
पूषणा—संज्ञा स्त्री० कार्त्तिकेय की अनुचरी। एक मातृका का नाम।

पूषा—संज्ञा पुं० दे० "पूषण"।
पूस—संज्ञा पुं० अगहन के बाद आनेवाला चांद्र मास। पौष मास।
पृक्का—संज्ञा स्त्री० असबरग। गन्धद्रव्य।
पृक्ष—संज्ञा पुं० अन्न। अनाज।
पृच्छक—वि० जिज्ञासु। पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला।
पृच्छा—संज्ञा स्त्री० जिज्ञासा। प्रश्न। पूर्व पक्ष।
पृतना—संज्ञा स्त्री० १. सेना का एक विभाग, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे। २. सेना। फौज। युद्ध।
पृथक्—वि० [संज्ञा पृथक्ता] भिन्न। जुदा। अलग। अन्य। न्यारा।
पृथक्करण—संज्ञा पुं० अलग करने का काम। भिन्न करना। विभक्त करना।
पृथक्ता—संज्ञा स्त्री० अलग होने का भाव। अलगाव। पार्थक्य।
पृथगात्मता—संज्ञा स्त्री० १. विरक्ति। वैराग्य। २. भेद।
पृथग्न्यास—संज्ञा पुं० (वि० पृथग्न्यस्त) १. अलग करना, लगाना या रखना। आसपास की परिस्थिति से अलग करना। २. दो वस्तुओं के बीच में कोई ऐसी वस्तु लगाना, जिससे एक के ताप या विद्युत् का दूसरी में संचार न होने पावे।
पृथा—संज्ञा स्त्री० कुन्ती। पाण्डवों की माता।
पृथिवी—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।
पृथु—वि० १. विस्तृत। चौड़ा। २. बड़ा। महान्। ३. अगणित। असंख्य। ४. प्रवीण। चतुर। निपुण। ५. कीर्तिशाली। संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. विष्णु। ३. शिव। ४. राजा वेणु के पुत्र का नाम, जो सूर्यवंश के पाँचवें राजा थे। इन्होंने पृथ्वी को बराबर समतल कर दिया था, इस कारण इनका नाम पृथु पड़ा था। एक द्रव्य का मान।
पृथुक—संज्ञा पुं० १. बालक, शिशु, कुमार। २. चिउड़ा।
स्त्री० १. पृथु होने का भाव। २. फैलाव। विस्तार।
पृथुल—वि० [संज्ञा स्त्री० पृथुलता]। स्थूल। मोटा। भारी। बड़ा। विस्तृत। विशाल।
पृथूदक—संज्ञा पुं० तीर्थ-विशेष।
पृथूदर—संज्ञा पुं० मेष। भेड़। वि० बड़े पेटवाला।
पृथ्वी—संज्ञा स्त्री० भूमि। जमीन। धरती। धरणी। पृथिवी। मिट्टी। पंचतत्त्वों में से एक, जिसका प्रधान गुण गंध है।
पृथ्वीकंप—संज्ञा पुं० भूकम्प।
पृथ्वीतल—संज्ञा पुं० १. धरातल, जिस पर हम लोग चलते-फिरते हैं। पृथ्वी का ऊपरी तल। २. दुनिया। संसार।
पृथ्वीधर—संज्ञा पुं० पर्वत।
पृथ्वीनाथ—संज्ञा पुं० राजा।
पृथ्वीपति—संज्ञा पुं० राजा।
पृथ्वीपाल—संज्ञा पुं० राजा।
पृथ्वीराज—संज्ञा पुं० भारत का अन्तिम हिन्दू राजा, जिसे मुहम्मद गोरी ने सन् ११९३ ई० में जीत लिया।
पृथ्वीश—संज्ञा पुं० राजा।
पृदाकु—संज्ञा पुं० १. साँप। २. बिच्छू। ३. बाघ। चीता। ४. हाथी। ५. वृक्ष। पेड़।
पृश्नि—संज्ञा स्त्री० १. सुपत-नामक राजा की रानी। २. चितकबरी गाय। ३. पिठवन। ४. किरण। रश्मि।
पृषत्—संज्ञा पुं० १. बिन्दु। कण। २. श्वेत बिन्दुयुक्त मृग। ३. पुराणों में वर्णित एक राजा।
पृषत्क—संज्ञा पुं० बाण। शर।
पृषदश्व—संज्ञा पुं० १. वायु। पवन। बतास। २. राजा-विशेष।
पृषोदर—संज्ञा पुं० छोटे पेटवाला। अल्पोदर।
पृष्ट—वि० पूछा हुआ।
पृष्ठ—संज्ञा पुं० १. पीठ। २. पीछे का भाग। ३. पुस्तक का पन्ना।
पृष्ठपोषक—संज्ञा पुं० १. पीठ ठोंकनेवाला। २. सहायक। मददगार।
पृष्ठभाग—संज्ञा पुं० १. पीठ। पुश्त। २. पिछला भाग।

पृष्ठभूमि—संज्ञा स्त्री० पिछला भाग का आधार। मूर्ति या चित्र का सब से पीछे का वह भाग, जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। वस्तुस्थिति की पिछली बातें।

पृष्ठवंश—संज्ञा पुं० रीढ़। मेरुदण्ड। पीठ की हड्डी।

पृष्ठव्रण—संज्ञा पुं० पीठ फोड़ा। (अंग्रे०—कारबंकल।)

पृष्ठवास्तु—संज्ञा पुं० मकान के ऊपर का बना हुआ मकान।

पृष्ठास्थि—संज्ञा पुं० रीढ़।

पेंग—संज्ञा स्त्री० १. झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना। २. एक पक्षी। **मुहा०**—पेंग मारना=झूले पर झूलते समय उस पर इस प्रकार जोर पहुँचाना, जिसमें उसका वेग बढ़ जाय और दोनों ओर वह दूर तक झूले।

पेंचक—संज्ञा पुं० १. उल्लू पक्षी। २. जूँ। ३. बादल ४. पलँग।
संज्ञा स्त्री० बटे हुए तागे की गोली।

पेंठ—संज्ञा स्त्री० हाट। बाजार। मण्डी।

पेंडुकी—संज्ञा स्त्री० १. पंडुक पक्षी। फाखता। २. सुनारों की फुँकनी।
संज्ञा स्त्री० दे० "गुझिया"।

पेंदा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पेंदी] किसी वस्तु का निचला भाग। पेंदी। तला।

पेंदी—संज्ञा स्त्री० दे० "पेंदा"। अधोभाग।

पे—संज्ञा पुं० १. उदर। जठर। २. गर्भ। हमल। ३. पचौनी। ४. अन्तःकरण। ५. बन्दूक में गोली भरने का स्थान। ६. समाई। रोजी। जीविका।

पेउसी†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पेवस"। २. एक प्रकार का पकवान। इंदर।

पेखक*—संज्ञा पुं० देखनेवाला। दर्शक। स्वाँग बनानेवाला। खेल-तमाशा करनेवाला।

पेखना*†—क्रि० स० १. देखना। निरखना। २. स्वाँग बनाना। खेल-तमाशा करना। क्रीड़ा करना।

पेच—संज्ञा पुं० [फा०] १. चक्कर। घुमाव। फिराव। मरोड़। २. झंझट। उलझन। बखेड़ा। ३. चालाकी। धूर्तता। चालबाजी। ४. पगड़ी की लपेट। ५. कल। यंत्र। मशीन। ६. मशीन का पुरजा। ७. चक्करदार कील या काँटा। स्क्रू। ८. पतंग लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों की डोरों का एक दूसरी में फँस जाना। ९. कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। १०. युक्ति। तरकीब। ११. टोपी या पगड़ी में सामने की ओर खोंसने या लगाने का सिरपेच। १२. कानों में पहनने का एक आभूषण। गोशपेच।
मुहा०—पेच घुमाना=किसी के विचार बदल देने की युक्ति करना।

पेचक—संज्ञा स्त्री० [फा०] बटे हुए तागे की लच्छी या गोली।
संज्ञा पुं० [स्त्री० पेचिका] १. उल्लू पक्षी। २. जूँ। ३. बादल। ४. पलंग।

पेचकस—संज्ञा पुं० [फा०] पेच कसने या निकालने का औजार। बोतल का काग निकालने का घुमावदार पेच।

पेचताब—संज्ञा पुं० [फा०] क्रोध, जो प्रकट न किया जाय। गुस्सा, जो मन ही मन में रहे और निकाला न जा सके।

पेचदार—वि० [फा०] १. जिसमें कोई पेच या कल हो। २. दे० "पेचीला"।

पेचवान—संज्ञा पुं० [फा०] १. हुक्के की बड़ी सटक जो लम्बी और लचीली होती है। २. बड़ा हुक्का। फर्शी।

पेचा‡—संज्ञा पुं० [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।

पेचिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] पेट का रोग। मरोड़। आमातिसार। आँव गिरना। अतिसार।

पेचीदा—वि० [फा०] [संज्ञा पेचीदगी] १. चक्करदार। जिसमें पेच हो। पेचदार। २. उलझा हुआ। मुश्किल। जटिल।

पेचीला—वि० दे० "पेचीदा"।

पेज—संज्ञा स्त्री० रबड़ी। बसौंधी।
संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना।

पेट—संज्ञा पुं० उदर। १. शरीर में थैले के आकार का वह भाग, जिसमें भोजन पचता है। २. गर्भ। हमल।

मुहा०—पेट काटना=बचाने के लिए जान-बूझकर कम खाना। पेट का धंधा=जीविका का उपाय। पेट का पानी न पचना=रहा न जाना। रह न सकना। गुप्त बात प्रकट कर देना। पेट का हलका=क्षुद्र प्रकृति का। ओछे स्वभाव का। पेट की आग=भूख। पेट की बात=गुप्त भेद की बात। †पेट खलाना=१. अत्यंत दीनता दिखलाना। २. भूखे होने का संकेत करना। पेट चलना=दस्त होना। बार-बार पाखाना होना। पेट जलना=अत्यन्त भूख लगना। †पेट देना=मन का भेद खोलना। पेट पालना=जीवन-निर्वाह करना। पेट फूलना=१. किसी बात के लिए बहुत अधिक उत्सुक होना। २. बहुत अधिक हँसने के कारण पेट में हवा भर जाना। ३. पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट मार कर मर जाना=आत्मघात करना। पेट में दाढ़ी होना=बचपन ही में बहुत चतुर होना। पेट में डालना=खा जाना। पेट में पाँव होना=अत्यंत छली या कपटी होना। चालबाज होना। कोई वस्तु पेट में होना=गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पाँव निकालना=१. कुमार्ग में लगना। २. बहुत इतराना। पेट गिरना=गर्भपात होना। पेट रहना=गर्भ रहना। पेटवाली=गर्भवती। पेट से होना=गर्भवती होना। पेट में घुसना या पैठना=गुप्त भेद जानने के लिए मेल बढ़ाना। पेट में होना=मन में या ज्ञान में होना।

पेटक—संज्ञा पुं० १. मंजूषा। पिटारा। २. समूह। ढेर। राशि।

पेटा—संज्ञा पुं० १. बीच का हिस्सा। किसी वस्तु का मध्य भाग। २. तफसील। पूरा विवरण। ब्यौरा। भेद। ३. सीमा। हद वृत्त। घेरा। ४. टोकरा। पिटारी। पिटारा। ५. नदी का पाट।

पेटाग्नि*—संज्ञा स्त्री० भूख। जठराग्नि।

पेटार्थी, पेटार्थू—वि० भुक्खड़। पेटू।

पेटिका—संज्ञा स्त्री० संदूक। पेटी। छोटी पिटारी।

पेटी—संज्ञा स्त्री० १. संदूकची। छोटा संदूक। २. छाती और पेड़ू के बीच का स्थान। तोंद। ३. कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा। कमरबंद। कमरकस। ४. चपरास। ५. हज्जामों की किसबत जिसमें वे कैंची, छूरा आदि रखते हैं। मुहा०—पेटी पड़ना=तोंद निकलना।

पेटू—वि० बहुत अधिक खानेवाला। भुक्खड़।

पेटेण्ट—वि० (अंग्रे०) किसी आविष्कार के अधिकार के सम्बन्ध में सरकार-द्वारा की गई रजिस्ट्री।

पेट्रोल—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ, जिसके ताप से मोटरें आदि चलती हैं।

पेटौखा—संज्ञा पुं० १. रोग-विशेष। अतिसार। आँव गिरना। २. उद्वेग। व्याकुलता। उद्विग्नता।

पेठा—संज्ञा पुं० सफेद कुम्हड़ा। सफेद कुम्हड़े से बनी एक प्रकार की मिठाई।

पेड़—संज्ञा पुं० वृक्ष। तरु। दरख्त।

पेड़ा—संज्ञा पुं० १. खोवा की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। २. गूँधे हुए आटे की लोई।

पेड़ी—संज्ञा स्त्री० १. पेड़ का तना। धड़। कांड। २. मनुष्य का धड़। ३. पान का पुराना पौधा या उसका पान। ४. प्रतिवृक्ष पर लगाया जानेवाला कर। ५. सुपारी।

पेड़ू—संज्ञा पुं० १. नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान। उपस्थ। २. गर्भाशय।

पेनी—संज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) अंग्रेजी सिक्का-विशेष।

पेन्शन—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बहुत दिनों की या पिछली सेवाओं के बदले में दी गई मासिक या वार्षिक वृत्ति।

पेन्सिल—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बिना स्याही के लिखने का एक साधन। एक तरह की कलम, जिससे बिना स्याही के लिखा जाता है।

पेन्हाना†—क्रि० स० दे० "पहनाना"। क्रि० अ० दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

पेपर–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) कागज। दैनिक समाचारपत्र।

पेम*–संज्ञा पुं० दे० "प्रेम"।

पेमचा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

पेय–वि० पीने योग्य।

संज्ञा पुं० १. पीने की वस्तु। २. जल। पानी। ३. दूध।

पेरना–क्रि० स० १. किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। तेल निकालना। २. कष्ट या दुःख देना। सताना। ३. किसी काम में बहुत देर लगाना। ४. प्रेरणा करना। चलाना। ५. भेजना। पठाना।

पेरोल–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) कैदी आदि का कुछ समय के लिए इस शर्त्त पर छोड़ा जाना कि अवधि पूरी होने पर या बीच में आज्ञा मिलते ही वह तुरन्त लौटकर जेल में आ जायगा।

पेलना–क्रि० स० १. दबाकर भीतर घुसाना। धँसाना। २. धक्का देना। ढकेलना। ३. टाल देना। अवज्ञा करना। ४. त्यागना। हटाना। फेंकना। ५. ज़बरदस्ती करना। बल प्रयोग करना। ६. प्रविष्ट करना। घुसेड़ना। ठूँसना। ७. दे० "पेरना"।

पेला–संज्ञा पुं० १. झगड़ा। तकरार। २. अपराध। कसूर। ३. आक्रमण। चढ़ाई। धावा। ४. पेलने की क्रिया या भाव।

पेवँ†–संज्ञा पुं० प्रेम। स्नेह।

पेवस–संज्ञा पुं० हाल की ब्याई गाय या भैंस का दूध, जो रंग में कुछ पीला और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

पेवसी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पेवस"। २. पीयूष। अमृत। सुधा। ३. फटे दूध का बना खाद्य-विशेष।

पेश–क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने। सन्मुख।

मुहा०–पेश आना=१. बर्ताव करना। व्यवहार करना। २. घटित होना। सामने आना। पेश करना=१. दिखलाना। सामने रखना। २. भेंट करना। नजर करना। पेश जाना या चलना=जोर चलना। वश चलना।

पेशकब्ज–संज्ञा स्त्री० [फा०] कटारी।

पेशकश–संज्ञा पुं० [फा०] भेंट। उपहार।

पेशकार–संज्ञा पुं० [फा०] अधिकारी या हाकिम के सामने कागज-पत्र पेश करने-वाला कर्म्मचारी।

पेशखेमा–संज्ञा पुं० [फा०] १. फौज का वह सामान, जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। २. किसी बात या घटना का पूर्व लक्षण। ३. फौज का अलग हिस्सा। हरावल।

पेशगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन, जो किसी को कोई काम करने के लिए पहले ही दे दिया जाय। अगौड़ी। अगाऊ। अगवढ़। अग्रिम।

पेशबंद–संज्ञा पुं० [फा०] चारजामे का बंधन।

पेशबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पहले से की हुई बचाव की युक्ति या प्रबन्ध।

पेशराज–संज्ञा पुं० पत्थर-ईंट ढोनेवाला मजदूर।

पेशवा–संज्ञा पुं० १. [फा०] नेता। सरदार। अग्रगण्य। २. महाराष्ट्र-साम्राज्य के प्रधान-मंत्रियों की उपाधि।

पेशवाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी माननीय पुरुष के आने पर आगे बढ़कर उसका स्वागत करना। अगवानी। २. पेशवाओं की शासन-प्रणाली। ३. पेशवा का पद या कार्य्य।

पेशवाज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] वेश्याओं या नर्त्तकियों का घाँघरा, जिसे वे नाचते समय पहनती हैं। नाचने के समय का पहनावा।

पेशा–संज्ञा पुं० [फा०] व्यवसाय। जीविका। उपार्जन करने का कार्य। उद्यम।

पेशानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. माथा। ललाट। २. भाग्य। क़िस्मत।

पेशाब–संज्ञा पुं० [फा०] मूत। मूत्र।

मुहा०–पेशाब करना=१. मूतना। २. अत्यंत (किसी वस्तु को) तुच्छ समझना।

पेशाबखाना–संज्ञा पुं० [फा०] मूत्रालय। पेशाब करने का स्थान।

पेशावर—संज्ञा पुं० [फा०] १. किसी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी। व्यापारी। २. पश्चिमोत्तर-प्रदेश का एक नगर।
पेशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मुकदमे की सुनवाई। २. सामने होने की क्रिया या भाव। ३. वज्र। ४. तलवार की म्यान। ५. अण्डा। ६. गर्भाशय। ७. मांसपेशी। शरीर के भीतर मांस की गुल्थी।
पेशीनगोई—संज्ञा स्त्री० [फा०] भविष्य-कथन। आगे की बात कहना।
पेश्तर—क्रि० वि० [फा०] पूर्व। पहले।
पेषण—संज्ञा पुं० पीसना। चूर्ण करना। बाटना।
पेषणीय—वि० पीसने योग्य।
पेखना—क्रि० स० दे० "पेखना"।
पैं*—अव्य० (पहँ) पास।
पैंग*—संज्ञा स्त्री० दे० "पेंग"।
पैंजनिया—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पैंजनी"। स्त्रियों या बच्चों के पैरों में पहनने का झन-झन बजनेवाला एक गहना। पायजेब। २. झाँझ। झाँझर। ३. बैलगाड़ी में धुरे की लकड़ी।
पैंजनी—संज्ञा स्त्री० दे० "पैंजनिया"।
पैंठ—संज्ञा स्त्री० १. हाट। बाजार। २. दुकान। ३. बाजार लगने का दिन।
पैंठौर†—संज्ञा पुं० दुकान। बाजार या दुकान का स्थान।
पैंड़—संज्ञा पुं० १. डग। पग। कदम। २. पगडंडी। मार्ग। पथ। रास्ता।
पैंड़ा—संज्ञा पुं० १. रास्ता। पथ। मार्ग। २. घुड़साल। अस्तबल। ३. प्रणाली। **मुहा०**—पैंड़े परना=पीछे पड़ना। बार-बार तंग करना।
पैंत*†—संज्ञा स्त्री० दाँव। बाजी।
पैंती—संज्ञा स्त्री० कुश का छल्ला, जो श्राद्ध आदि कर्म करते समय उँगली में पहनते हैं। पवित्री।
पैं*†—अव्य० १. परंतु। पर। लेकिन। २. निश्चय। अवश्य। जरूर। ३. बाद। अनंतर। ४. निकट। पास। समीप। ५. प्रति। ओर। तरफ।
प्रत्य० १. अधिकरण-सूचक एक विभक्ति। पर। ऊपर। २. करणसूचक विभक्ति। से। द्वारा।
संज्ञा स्त्री० ऐब। दोष। नुक्स।
संज्ञा पुं० दे० "पय"। पेय पदार्थ।
यौ०—जो पै=यदि। अगर। तो पै=तो। फिर। उस अवस्था में।
पैकरमा*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।
पैकार—संज्ञा पुं० छोटा व्यापारी। फेरी-वाला। फुटकर सौदा बेचनेवाला।
पैकेट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छोटा पुलिन्दा।
पैखाना—संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।
पैगंबर—संज्ञा पुं० [फा०] ईश्वर का दूत। धर्म-प्रवर्तक। मनुष्यों के पास ईश्वर का संदेश पहुँचानेवाला। ईसा, मुहम्मद।
पैगाम—संज्ञा पुं० [फा०] संदेश। खबर।
पैज*—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। हठ। २. प्रतिद्वंद्विता। होड़। लागडाँट।
पैजामा—संज्ञा पुं० दे० "पायजामा"।
पैजार—संज्ञा स्त्री० [फा०] जूता। जोड़ा। **यौ०**—जूती पैजार=१. जूते से मार-पीट। जूता चलना। २. लड़ाई-झगड़ा।
पैट्रोल—संज्ञ पुं० (अँग्रे०) १. सैनिक का रक्षा के लिए घूम-घूमकर पहरा देना। २. घूम-घूमकर पहरा देनेवाला सिपाही।
पैठ—संज्ञा स्त्री० घुसने का भाव। दखल। प्रवेश। पहुँच। गति।
पैठना—क्रि० अ० प्रविष्ट होना। घुसना। प्रवेश करना।
पैठाना—क्रि० स० प्रवेश कराना। भीतर ले जाना। घुसाना।
पैठार†*—संज्ञा पुं० १. पैठ। प्रवेश। २. द्वार। दरवाजा। फाटक।
पैठारी†—संज्ञा स्त्री० १. पैठ। प्रवेश। २. पहुँच। गति।
पैड़ी—संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।
पैतरा—संज्ञा पुं० १. चलने की रीति। २. तलवार चलाने या कुश्ती लड़ने में घूम-फिरकर पैर रखने की मुद्रा। वार करने का ढंग।

पैताना–संज्ञा पुं० पायँता।
पैतृक–वि० पितृ-संबंधी। पिता का धन। बपौती। पुश्तैनी। पूर्वजों का।
पैदल–वि० पैरों से चलनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पदाति। पैदल सिपाही। २. पावँ-पावँ चलना। पादचारण।
क्रि० वि० पावँ-पावँ। पैरों से।
पैदा–वि० [फ़ा०] १. प्रसूत। उत्पन्न। जन्मा हुआ। २. प्रकट। आविर्भूत। ३. घटित। ४. प्राप्त। कमाया हुआ। अर्जित।
‡संज्ञा स्त्री० आमदनी। लाभ। आय।
पैदाइश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जन्म। उत्पत्ति।
पैदाइशी–वि० [फ़ा०] १. जन्म का। जन्म से ही। २. पुराना। ३. प्राकृतिक। स्वाभाविक।
पैदावार–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अन्न आदि जो खेत में बोने से प्राप्त हो। फसल। उपज।
पैन–संज्ञा पुं० छोटी नहर। नाली। खेतों में पानी ले जाने के लिए छोटी नहर।
पैना–वि० [स्त्री० पैनी] धारदार। तेज। तीक्ष्ण।
संज्ञा पुं० १. हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी। २. लोहे का नुकीला छड़।
पैनाना–क्रि० स० तेज कराना। धार दिलवाना। तीक्ष्ण कराना।
पैमाइश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मापने की क्रिया। माप।
पैमाना–संज्ञा पुं० मानदंड। मापने का औजार या साधन। मापने का परिमाण।
पैमाल*‡–वि० दे० "पामाल"। नष्ट।
पैयाँ‡–संज्ञा स्त्री० पावँ। पैर।
पैया–संज्ञा पुं० १. बिना सत का अनाज का दाना। खोखला दाना। खुक्ख। निस्सार। २. दीन-हीन। निर्धन।
पैर–संज्ञा पुं० पाँव। पद। चरण। वह अंग, जिससे प्राणी चलते हैं।
पैरगाड़ी–संज्ञा स्त्री० पैरों से चलाई जानेवाली गाड़ी। जैसे, बाइसिकिल।
पैरना–क्रि० अ० तैरना।
पैरवी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पक्ष लेना। पक्ष का मण्डन। २. दौड़-धूप। कोशिश। उद्योग। ३. अनुगमन। अनुसरण। ४. विनती।
पैरवीकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पैरवी करनेवाला। पैरोकार।
पैरा–संज्ञा पुं० १. पड़े हुए चरण। पौरा। २. किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिए लकड़ियों के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता।
पैराई–संज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव। तैरना। तैरने की रीति।
पैराक–संज्ञा पुं० तैराक। तैरनेवाला। अच्छी तरह तैरना जाननेवाला।
पैराग्राफ–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) वाक्यों का समूह।
पैराव–संज्ञा पुं० इतना पानी जिसे केवल तैरकर ही पार कर सकें। गहरा जल। डुबाव।
पैराशूट–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) दे० "छतरी"। एक प्रकार का छाता, जो हवाई जहाज से धीरे धीरे जमीन पर उतरने में काम आता है।
पैरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पीढ़ी"। दे० "पैड़ी"।
पैरोकार–संज्ञा पुं० दे० "पैरवीकार"।
पैला†–संज्ञा पुं० [स्त्री० पैली] मिट्टी या काठ का एक बड़ा बरतन। अन्न नापने का एक पात्र। बड़ी पैली।
पैवंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. चकती। थिगली। जोड़। २. किसी पेड़ की टहनी को उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़कर बाँधना, जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय। कलम बाँधना।
पैवंदी–वि० [फ़ा०] पैवंद लगाकर पैदा किया हुआ (फल आदि)।
पैवस्त–वि० (द्रव पदार्थ) जो भीतर घुसकर सब भागों में फैल गया हो। सोखा हुआ। समाया या पैठा हुआ।
पैशाच–वि० पिशाच-संबंधी।
पैशाच विवाह–संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो।

पैशाचिक–वि० पिशाचों का। घोर और बीभत्स। राक्षसी।

पैशाची–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

पैशुन्य–संज्ञा पुं० चुगुलखोरी। छल। दुष्टता। परनिन्दा।

पैसना†*–क्रि० अ० प्रवेश करना। घुसना। पैठना।

पैसरा–संज्ञा पुं० १. झंझट। बखेड़ा। २. व्यापार। ३. प्रयत्न।

पैसा–संज्ञा पुं० १. ताँबे का सिक्का, जो एक आने का चौथा भाग होता है। २. धन। द्रव्य। रोकड़।
वि० पैसेवाला। धनी। मालदार।
मुहा०–पैसा उड़ाना=१. बहुत खर्च करना। २. ठगना। चुराना। पैसा खाना=विश्वास-घात करके खा लेना या दबा बैठना। पैसे का मुँह देखना=रुपए का विचार कर खर्च न करना। पैसा डुबोना=धन नष्ट करना। घाटा उठाना। पैसा डूबना=धन मारा जाना। घाटा होना। पैसा लगाना=खर्च करना। पैसे से दरबार बाँधना=रिश्वत या घूस देकर मनमाना काम कराना। पैसे को धूल समझना=अंधाधुन्ध खर्च करना।

पैसार†–संज्ञा पुं० प्रवेश। पैठ।

पैसिंजर–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] मुसाफिरों को ले जानेवाली रेलगाड़ी।

पैहारी–वि० केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।

पोंकना–क्रि० अ० १. पतला पाखाना फिरना। २. बहुत डर जाना।

पोंका–संज्ञा पुं० फतिंगा। पौधों पर उड़ने-वाला फतिंगा। बोंका।

पोंगली–संज्ञा स्त्री० चाक पर से दुबारा उतारी गई नरिया। पोंगी।

पोंगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० पोंगी] बाँस की नली। चोंगा। पाँव की नली।
वि० १. पोला। २. मूर्ख।

पोंछ†–संज्ञा स्त्री० दे० "पूँछ"।

पोंछन–संज्ञा स्त्री० झाड़न। किसी वस्तु का बचा हुआ अंश, जो पोंछने से निकले।

पोंछना–क्रि० स० झाड़ना। साफ करना।
संज्ञा पुं० [स्त्री० पोंछनी] पोंछने का कपड़ा।

पोंटा†–संज्ञा पुं० नासिका का मल। छिनक।

पोंटी–संज्ञा स्त्री० एक छोटी मछली।

पोआ–संज्ञा पुं० १. साँप का बच्चा। २. दूध पीनेवाला शिशु। दुधमुहाँ बालक।

पोआना–क्रि० स० १. पोने का काम दूसरे से कराना। २. रोटी हाथ से बनाकर सेंकने के लिए देना।

पोइया–संज्ञा स्त्री० दो पैर फेंकते हुए घोड़े की दौड़। सरपट चाल।

पोइस–संज्ञा स्त्री० सरपट दौड़।
अव्य० १. देखो। २. हटो। बचो।

पोई–संज्ञा स्त्री० १. एक लता, जिसकी पत्तियों से साग और पकौड़ियाँ बनती हैं। २. गन्ने का कल्ला। अंकुर।

पोख–संज्ञा पुं० दे० "पोस"। पालने-पोसने का सम्बन्ध।

पोखना*–क्रि० स० दे० "पोसना"। पालना। पोषण करना।

पोखर या **पोखरा**–संज्ञा पुं० [स्त्री० पोखरी] खोदकर बनाया गया तालाब। ताल।

पोखरी–संज्ञा स्त्री० छोटा तालाब। तलैया।

पोगंड–संज्ञा पुं० १. पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. वह, जिसका कोई अंग छोटा, बड़ा या अधिक हो।

पोच–वि० १. क्षुद्र। तुच्छ। निकृष्ट। बुरा। २. अशक्त। हीन। क्षीण।

पोची*–संज्ञा स्त्री० नीचता। हेठी। बुराई।

पोछना–क्रि० स० पोंछना। साफ करना।

पोट–संज्ञा स्त्री० १. गठरी। पोटली। मोटरी। २. ढेर। अटाला। ३. कफन के ऊपर का वस्त्र।
संज्ञा पुं० १. मकान की नींव। २. मेल।

पोटना*–क्रि० स० १. समेटना। बटोरना। हथियाना। २. बात में लाना। फुसलाना।

पोटरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली"। गठरी।

पोटला–संज्ञा पुं० गट्ठर। बड़ी गठरी।

पोटली—संज्ञा स्त्री० छोटी गठरी। छोटा बकुचा।

पोटा—संज्ञा पुं० १. पेट की थैली। उदराशय। २. साहस। सामर्थ्य। ३. समाई। श्रौकात। बिसात। ४. आँख की पलक। ५. उँगली का छोर। ६. चिड़िया का बच्चा।

पोटास—संज्ञा पुं० (अंग्रे०—पोटेशियम) जलाए हुए पौधों की राख से निकाला गया एक क्षार, जिससे कुओं आदि का पानी साफ करते हैं।

पोढ़—वि० पुष्ट। बलवान्।

पोढ़ा—वि० [स्त्री० पोढ़ी] १. दृढ़। पुष्ट। मजबूत। २. कठिन। कड़ा। कठोर।

पोढ़ाई—संज्ञा स्त्री० १. कड़ाई। पुष्टता। २. साहस।

पोढ़ाना†—क्रि० अ० दृढ़ होना। मजबूत होना। पक्का पड़ना।

क्रि० स० पक्का करना। दृढ़ करना।

पोत—संज्ञा पुं० १. पशु, पक्षी आदि का छोटा बच्चा। २. शिशु। बच्चा। ३. छोटा पौधा। ४. झिल्ली-रहित गर्भस्थ पिंड। ५. कपड़े की बुनावट। ६. नौका। बड़ी नाव। ७. जहाज। समुद्रयान। ८. ढंग। ढब। ९. प्रवृत्ति। १०. बारी। दाँव। ११. जमीन का लगान। कर। मालगुजारी। १२. मकान की नींव।

संज्ञा स्त्री० १. माला की गुरिया या छोटा दाना। २. काँच की गुरिया।

पोतदार—संज्ञा पुं० १. खजानची। २. तहसीलदार। ३. पारखी। खजानों में रुपया परखनेवाला। व्यक्ति-विशेष जिसके पास लगान का रुपया जमा किया जाय।

पोतना—क्रि० स० लेप करना। किसी पदार्थ को किसी वस्तु पर ऐसा लगाना कि वह उस पर जम जाय। मिट्टी, गोबर, चूने आदि से लीपना। दीवाल पर चूना लगाना।

संज्ञा पुं० वह कपड़ा, जिससे कोई चीज पोती जाय। पोता।

पोतला—संज्ञा पुं० पराँठा।

पोता—संज्ञा पुं० १. पौत्र। बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र। २. पोत। लगान। भूमिकर। ३. अंडकोष। ४. यज्ञ के ऋत्विजों में से एक। ५. वायु। ६. विष्णु। दे० "पोटा"। ७. पोतने का कपड़ा। ८. पोतने की घुली हुई मिट्टी।

पोताच्छादन—संज्ञा पुं० तम्बू।

पोती—संज्ञा स्त्री० १. पौत्री। पुत्र की पुत्री। २. पुतारा देने की क्रिया। ३. मिट्टी का लेप।

पोत्र—संज्ञा पुं० १. सूअर का खाँग। २. वज्र। ३. नाव। ४. एक यज्ञपात्र।

पोत्रायुध—संज्ञा पुं० सूअर।

पोत्री—संज्ञा पुं० सूअर।

पोथा—संज्ञा पुं० १. कागजों का गड्डा। २. बड़ी पोथी। बड़ी पुस्तक।

पोथी—संज्ञा स्त्री० पुस्तक।

पोदना—संज्ञा पुं० १. एक छोटी चिड़िया। २. नाटा आदमी।

पोदीना—संज्ञा पुं० दे० "पुदीना"।

पोद्दार—संज्ञा पुं० दे० "पोतदार"।

पोना—क्रि० स० १. रोटी बनाना (हाथ से)। २. पिरोना। गूथना।

पोप—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ईसाई धर्म के कैथोलिक सम्प्रदाय का सबसे बड़ा गुरु।

पोपला—वि० १. पचका और सिकुड़ा हुआ। खोखला। २. बिना दाँत का। जिसके मुँह में दाँत न हों।

पोपलाना—क्रि० अ० पोपला होना।

पोपलीला—संज्ञा स्त्री० पोपों और धर्म-पुरोहितों के आडम्बर और सीधे-सादे धर्मनिष्ठ लोगों को अपने जाल में फँसाने-वाली बातें या कार्य।

पोया—संज्ञा पुं० १. नरम पौधा। २. साँप का बच्चा। सँपोला।

पोर—संज्ञा स्त्री० १. गाँठ। ग्रन्थि। २. उँगली की दो गाँठों के बीच का भाग। ३. ईख, बाँस आदि की गाँठ। ४. पीठ। रीढ़।

पोरा—संज्ञा स्त्री० १. पोर। २. लकड़ी का मोटा कुन्दा। ३. मोटा आदमी।

पौरिया—संज्ञा स्त्री० एक गहना।

पोल—संज्ञा पुं० १. शून्य स्थान। अवकाश। खाली जगह। २. खोखलापन। सार-हीनता। ३. फाटक। प्रवेशद्वार। ४. सहन। आँगन। मुहा०—(किसी की) पोल खुलना=छिपा हुआ दोष या बुराई प्रकट हो जाना। भंडा फूटना।

पोला—वि० (स्त्री० पोली) १. छूँछा। शून्य। रीता। खाली। २. निःसार। तत्त्वहीन। सुक्ख। खोखला। ३. जो भीतर से कड़ा न हो। पुलपुला। नरम। कोमल।

पोलिटिकल—वि० (अंग्रे०) राजनैतिक। राजनीति-सम्बन्धी।

पोलिया—संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"। दरबान।

पोलो—संज्ञा पुं० (अंग्रे०) घोड़े पर चढ़कर खेला जानेवाला गेंद का एक खेल। चौगान।

पोशाक—संज्ञा स्त्री० [फा०] पहनने के वस्त्र। पहनावा।

पोशीदा—वि० [फा०] गुप्त। छिपा हुआ।

पोष—संज्ञा पुं० १. पोषण। पुष्टि। २. उन्नति। अभ्युदय। बढ़ती। वृद्धि। ३. धन। ४. संतोष। तुष्टि।

पोषक—वि० १. पालक। पालनेवाला। २. बढ़ानेवाला। वर्द्धक। सहायक।

पोषण—संज्ञा पुं० (वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य) १. पालन। रक्षण। २. वर्द्धन। बढ़ती। ३. पुष्टि। ४. सहायता।

पोषना—क्रि० स० पालना। रक्षा करना।

पोषित—वि० पाला हुआ।

पोष्य—वि० पालने योग्य। पालनीय। संज्ञा पुं० भृत्य। नौकर।

पोष्यपुत्र—संज्ञा पुं० १. पुत्र के समान पाला हुआ लड़का। २. दत्तक पुत्र।

पोस—संज्ञा पुं० पालनेवाले के साथ प्रेम या हेल-मेल। पालने की कृतज्ञता।

पोसना—क्रि० स० १. पालन-पोषण करना। २. शरण देकर अपनी रक्षा में रखना।

पोस्ट—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] जगह। पद। नौकरी। २. डाकखाना।

पोस्ट आफिस—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] डाकघर। डाकखाना।

पोस्ट कार्ड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पत्र आदि लिखने का कार्ड, जिस पर डाकखाने का टिकट लगता है।

पोस्टमार्टम—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] लाश को चीरफाड़ कर की जानेवाली परीक्षा।

पोस्टमास्टर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] डाकघर का सबसे बड़ा कर्मचारी।

पोस्टमैन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] डाकिया। चिट्ठीरसा।

पोस्टर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बहुत मोटे अक्षरों में छपा हुआ बड़ा विज्ञापन। दे० प्रज्ञापक।

पोस्टल गाइड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह पुस्तक, जिसमें डाकखाने की सब बातों का वर्णन और नियम आदि रहते हैं।

पोस्टेज—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] डाकखर्च। डाक का महसूल।

पोस्त—संज्ञा पुं० १. [फा०] छिलका। २. खाल। चमड़ा। ३. अफीम का पौधा। पोस्ता।

पोस्ता—संज्ञा पुं० [फा०] एक पौधा, जिसमें से अफीम निकलती है।

पोस्ती—संज्ञा पुं० १. [फा०] पोस्ते की डोंडी पीसकर पीनेवाला नशेबाज। २. आलसी। सुस्त। ३. कागज का खिलौना।

पोस्तीन—संज्ञा पुं० १. [फा०] पशुओं के गरम और मुलायम रोएँवाली खाल का बना हुआ पहनावा। २. खाल का बना हुआ कोट।

पोहना—क्रि० स० १. पिरोना। गूँथना। २. छेदना। ३. लगाना। पोतना। ४. जड़ना। धँसाना। घुसाना। ५. पीसना। घिसना। ६. रोटी बनाना। दे० "पोना"। वि० १. भेदनेवाला। २. घुसनेवाला।

पोहमी*—संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"। पृथ्वी। भूमि।

पोहर‡—संज्ञा पुं० चरहा। पशुओं का चारा।

पोहा‡—संज्ञा पुं० पशु।

पोहिया‡—संज्ञा पुं० चरवाहा।

पौंचा—संज्ञा पुं० साढ़े पाँच का पहाड़ा।

पौंड़ा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा गन्ना।

पौंड़ाई–वि० पौंडे के रंग का । पीलापन लिये हुए ।
पौंड़ी–संज्ञा स्त्री० ड्योढ़ी ।
पौंड्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार की ईख । पौंडा ।
पौंड्रक–संज्ञा पुं० १. मोटा गन्ना । पौंडा । २. एक पतित जाति । ३. पुंड्र जो जरासंध का संबंधी पुंड्र देश का एक राजा था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।
पौंढ़ना–क्रि० स० दे० "पौढ़ना" ।
पौंरना†–क्रि० अ० तैरना ।
पौंरि–संज्ञा स्त्री० दे० "पौंरि", "पौरी" । द्वार । ड्योढ़ी ।
पौंरिया–संज्ञा पुं० द्वारपाल ।
पौ–संज्ञा स्त्री० १. पौसला । पौसाला । प्याऊ । २. प्रकाश की रेखा । किरण । ज्योति । ३. पैर । ४. जड़ ।
संज्ञा स्त्री० पाँसे की एक चाल या दावँ ।
मुहा०–पौ फटना=सवेरे का उजाला दिखाई पड़ना । सवेरा होना । पौ बारह होना =जीत का दाँव पड़ना । बन आना । लाभ का अवसर मिलना ।
पौआ–संज्ञा पुं० दे० "पौवा" ।
पौगंड–संज्ञा पुं० बालक की पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था ।
पौड़ना–क्रि० अ० दे० "तैरना" ।
पौढ़ना–क्रि० अ० १. झूलना । आगे-पीछे हिलना । २. लेटना । सोना ।
पौढ़ाना–क्रि० स० १. डुलाना । झुलाना । इधर से उधर हिलाना । २. लेटाना । सुलाना ।
पौत्तलिक–संज्ञा पुं० मूर्तिपूजक ।
वि० पुतली का ।
पौत्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० पौत्री] पुत्र का पुत्र । पोता ।
पौत्री–संज्ञा स्त्री० पुत्र की कन्या । पोती ।
पौद–संज्ञा स्त्री० १. छोटा पौधा । २. एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जानेवाला छोटा पौधा । ३. सन्तान । ४. दे० "पाँवड़ा" ।
पौदर–संज्ञा स्त्री० १. पदचिह्न । २. पगडंडी । ३. वह मार्ग जिस पर मोट खींचनेवाले बैल चलें ।
पौदा–संज्ञा पुं० पौधा । नया पेड़ । छोटा पेड़ ।
पौध–संज्ञा स्त्री० दे० "पौद" ।
पौधा–संज्ञा पुं० १. नया निकलता पेड़ । वृक्ष का अंकुर । २. क्षुप । पेड़ ।
पौनःपुनिक–वि० फिर-फिर होनेवाला । पुनः-पुनः या बार-बार होनेवाला ।
पौन–संज्ञा पुं०, स्त्री० १. हवा । पवन । २. प्राण । जीव । जीवात्मा । ३. भूत । प्रेत ।
वि० तीन चौथाई अंश ।
पौना–संज्ञा पुं० १. पौन का पहाड़ा । तीन चौथाई । २. काठ या लोहे की एक प्रकार की बड़ी करछी । झरना । लोहे का एक बरतन, जिससे सेव तथा पकौड़ी आदि छानी जाती है । ३. हाथ से रोटी बनाना ।
पौनार–संज्ञा स्त्री० पद्मनाल । कमल के फूल की नाल या डंठल ।
पौनी–संज्ञा स्त्री० १. नाई, बारी, धोबी आदि, जो विवाह आदि उत्सवों पर इनाम पाते हैं । २. छोटा पौना ।
पौने–वि० एक चौथाई कम । किसी संख्या का तीन चौथाई । जैसे, पौने चार ।
पौमान–संज्ञा पुं० १. दे० "पवमान" । २. जलाशय ।
पौर–वि० १. पुर-संबंधी । नगर का । २. पूर्व दिशा में उत्पन्न ।
संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी" ।
पौरक–संज्ञा पुं० घर के बाहर का बाग ।
पौरजन–संज्ञा पुं० नगरनिवासी । नागरिक ।
पौरजानपद–संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र में पुर या नगर और जनपद या बाकी देश के प्रतिनिधियों की सभाओं का सम्मिलित रूप ।
पौरलेख–संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय राजतंत्र में वह अधिकारी, जिसके पास पुर या नगर के लेख्यों या दस्तावेजों की नकल और विवरण रहता था ।
पौरव–संज्ञा पुं० १. पुरु का वंशज । पुरु की सन्तान । २. उत्तर-पूर्व का एक देश । (महाभारत)

पौरवृद्ध–संज्ञा पुं० किसी पुर या नगर के वे बड़े और प्रधान प्रतिनिधि, जो प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र में नगर की व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाले विशिष्ट कार्य करते थे।

पौरसख्य–संज्ञा पुं० एक नगर या एक स्थान पर रहने से उत्पन्न मित्रता।

पौरस्त्री–संज्ञा स्त्री० अन्तःपुरवासिनी। नगर की स्त्री।

पौरा†–संज्ञा पुं० पड़े हुए चरण। पैरा।

पौराण–वि० पुराण-सम्बन्धी।

पौराणिक–वि० [स्त्री० पौराणिकी] १. पुराणवेत्ता। २. पुराण-सम्बन्धी। ३. प्राचीन काल का। पूर्वकालीन।
संज्ञा पुं० १. प्राणों की कथा सुनानेवाला। २. व्यास।

पौरि–संज्ञा स्त्री० द्वार। ड्योढ़ी।

पौरिया–संज्ञा पुं० द्वारपाल। दरबान।

पौरी–संज्ञा स्त्री० १. द्वार। ड्योढ़ी। २. सीढ़ी। ३. पैड़ी। खड़ाऊँ।

पौरुक्त–संज्ञा पुं० पुनर्वचन।

पौरुख*–संज्ञा पुं० दे० "पौरुष"।

पौरुष–संज्ञा पुं० १. पुरुषत्व। पुरुष की शक्ति। पुरुषार्थ। बल। २. साहस। पराक्रम। ३. उद्यम। उद्योग।
वि० पुरुष-संबंधी।

पौरुषेय–वि० १. पुरुष-संबंधी। २. पुरुष-निर्मित। आदमी का किया हुआ।
संज्ञा पुं० १. पुरुष का कर्म। २. आध्यात्मिक।

पौरुष्य–संज्ञा पुं० १. साहस। २. पराक्रम।

पौरुहूत–संज्ञा पुं० वज्र।

पौरोगव–संज्ञा पुं० पाकशाला के अध्यक्ष।

पौरोहित्य–संज्ञा पुं० पुरोहिताई। पुरोहित का कर्म।

पौरेय–संज्ञा पुं० १. नगर-संबंधी। २. नगर का समीपी देश, गाँव आदि।

पौर्णदर्व–संज्ञा पुं० एक प्रकार का वैदिक कृत्य।

पौर्णमास–संज्ञा पुं० पूर्णमासी को किया जानेवाला एक यज्ञ।

पौर्णमासी–संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी। पूर्णिमा।

पौर्वापर्य्य–संज्ञा पुं० १. पूर्वापर का भाव। आगे-पीछे होने की क्रिया। २. अनुक्रम। सिलसिला।

पौर्वाह्णिक–वि० पूर्वाह्ण की क्रिया या पूर्वाह्ण-सम्बन्धी।

पौर्विक–वि० पूर्व में होनेवाला।

पौल–संज्ञा स्त्री० बड़ा दरवाजा। नगर या दुर्ग का बड़ा फाटक।

पौलना*–क्रि० स० काटना।

पौलस्त्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० पौलस्त्यी] १. पुलस्त्य ऋषि के वंशज। २. कुबेर। ३. रावण, कुंभकर्ण और विभीषण। ४. चंद्र।

पौलस्त्यी–संज्ञा स्त्री० शूर्पणखा।

पौला†–संज्ञा पुं० बिना खूँटी की खड़ाऊँ।

पौलिया–संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"। छोटी खड़ाऊँ।

पौली–संज्ञा स्त्री० पौरी। ड्योढ़ी।

पौलोमी–संज्ञा स्त्री० १. इंद्राणी। २. भृगु ऋषि की पत्नी। पुलोम की कन्या।

पौवा†–संज्ञा पुं० १. एक सेर का चौथाई भाग। पाव भर। २. वह बरतन, जिसमें पाव भर पानी, दूध आदि समा जाए।

पौष–संज्ञा पुं० १२ महीनों के अन्तर्गत दसवाँ महीना। पूस।

पौष्टिक–वि० पुष्टिकारक। बलवीर्य्यदायक।

पौष्प–वि० पुष्प-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० फूलों से निकाला गया। मद्य। पराग।

पौष्पक–संज्ञा पुं० कुसुमांजन।

पौसरा, पौसला–संज्ञा पुं० पियाऊ। प्यासे व्यक्तियों को पानी पिलाने का स्थान।

पौहारी–संज्ञा पुं० केवल दूध ही पीकर रहनेवाला व्यक्ति (साधु)। दुग्धाहारी।

प्याऊ–संज्ञा पुं० पौसला। सबील। पौसरा।

प्याज–संज्ञा पुं० [फा०] गोल गाँठवाला एक कंद। इसकी गंध बहुत उग्र और अप्रिय होती है।

प्याजी–वि० [फा०] हलका गुलाबी रंग।

प्यादा–संज्ञा पुं० [फा०] १. पैदल। २. दूत। हरकारा। सेवक। ३. शतरंज के खेल में एक गोटी।

प्यार–संज्ञा पुं० प्रेम । प्रीति । स्नेह । मुहब्बत ।
प्यारा–वि० [स्त्री० प्यारी] १. प्रेमपात्र । प्रिय । स्नेही । २. सुन्दर या भला लगनेवाला ।
प्याला–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० प्याली] कटोरा । चीनीमिट्टी का कटोरा । जाम ।
प्यावना†*–क्रि० स० दे० "पिलाना" । पान कराना ।
प्यास–संज्ञा स्त्री० १. जल पीने की इच्छा । तृषा । तृष्णा । पिपासा । २. प्रबल कामना । इच्छा ।
प्यासा–वि० पिपासित । तृषित । जिसे प्यास लगी हो ।
प्यून–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] प्यादा । चपरासी । सिपाही ।
प्यो*†–संज्ञा पुं० पति । स्वामी ।
प्योसर–संज्ञा पुं० हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध ।
प्योसार†–संज्ञा पुं० स्त्री के पिता का घर । मायका । पीहर ।
प्यौर*–संज्ञा पुं० पति । स्वामी । प्रियतम ।
प्रकंप–संज्ञा पुं० कँपकँपी ।
प्रकम्पन–संज्ञा पुं० थरथराहट । कँपकँपी ।
प्रकम्पमान–वि० हिलनेवाला । थरथराने-वाला । थरथराता हुआ ।
प्रकट–वि० १. विदित । २. उत्पन्न । आविर्भूत । ३. व्यक्त । स्पष्ट ।
प्रकटना*–क्रि० अ० दे० "प्रगटना" ।
प्रकटित–वि० प्रकट किया हुआ । प्रकाशित । व्यक्त ।
प्रकर–संज्ञा पुं० १. फूले हुए कुसुम आदि । २. समूह । दल । ३. सहारा । सहायता । ४. अधिकार ।
प्रकरण–संज्ञा पुं० १. उत्पन्न करना । २. ज़िक्र करना । ३. वृत्तान्त । ४. प्रसंग । विषय । ५. अध्याय । किसी ग्रंथ के छोटे-छोटे भागों में से कोई भाग । काण्ड । ६. दृश्य काव्य के अंतर्गत रूपक का एक भेद ।
प्रकरणी–संज्ञा स्त्री० नाटिका ।
प्रकरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गीत । २. नाटक का एक अंग । नाटक में प्रयोजनसिद्धि के पाँच साधनों में से एक । ३. वह कथा-वस्तु जो थोड़े काल तक चलकर रुक जाय । ४. नाटक खेलने की वेदी । चत्वरभूमि ।
प्रकर्ष–संज्ञा पुं० १. उत्तमता । २. उत्कर्ष । ३. अधिकता । बहुतायत । बाहुल्य ।
प्रकर्षणी–वि० उत्कर्ष करने के योग्य ।
प्रकला–संज्ञा स्त्री० एक कला (समय) का साठवाँ भाग ।
प्रकल्पना–संज्ञा स्त्री० स्थिर करना । निश्चित करना ।
प्रकल्पित–वि० निश्चित ।
प्रकांड–वि० बहुत बड़ा । विस्तृत । विशाल । संज्ञा पुं० १. वृक्ष का वह स्थान जहाँ से डाल निकलती हो । २. शाखा । ३. वृक्ष ।
प्रकाम–वि० १. मनमाना । यथेष्ट । २. अति । प्रचुर ।
संज्ञा पुं० कामना । इच्छा ।
प्रकाम्य–वि० दे० "प्राकाम्य" ।
प्रकार–संज्ञा पुं० १. भेद । तरह । क़िस्म । भाँति । २. क्रम । ३. सदृशता । ४. पर-कोटा । घेरा । शहर-पनाह ।
प्रकारान्तर–वि० दूसरी तरह । अन्य विधि या भाँति । अन्य रीति ।
प्रकाश–संज्ञा पुं० १. दीप्ति । आलोक । ज्योति । उजाला । २. तेज । चमक । ३. विकास । अभिव्यक्ति । स्फुटन । प्रकट होना । ४. विस्तार । ५. उदय । ६. प्रसिद्धि । ख्याति । ७. ग्रंथ या पुस्तक का विभाग । ८. घाम । धूप ।
प्रकाशक–संज्ञा पुं० १. प्रकाश करनेवाला । २. प्रकट या प्रसिद्ध करनेवाला । ३. किसी पुस्तक को प्रकाशित करनेवाला ।
प्रकाशगृह–संज्ञा पुं० वह ऊँची इमारत, विशेषतः समुद्र में बनी हुई इमारत, जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो । (अंग्रे०—लाइटहाउस)
प्रकाशधृष्ट–संज्ञा पुं० १. प्रकट रूप से धृष्टता करनेवाला । २. धृष्टनायक । ३. धृष्टनायक के दो भेदों में से एक ।

प्रकाशन–संज्ञा पुं० १. प्रकाशित करने का काम। प्रकाशित करना। प्रकट करना। २. फैलाना। प्रसिद्ध करना।

प्रकाशमान–वि० १. चमकता हुआ। चमकीला। आलोकित। २. प्रसिद्ध। विख्यात।

प्रकाशवान–वि० दे० "प्रकाशमान"।

प्रकाश-वियोग–संज्ञा पुं० केशव के मतानुसार वह वियोग, जो सब पर प्रकट हो जाय। पूर्णरूप से व्यक्त वियोग।

प्रकाश-संयोग–संज्ञा पुं० केशव के मतानुसार वह संयोग, जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाशित–वि० १. प्रकाशयुक्त। चमकता हुआ। २. प्रकट। प्रसिद्ध। व्यक्त।

प्रकाशी–संज्ञा पुं० प्रकाशयुक्त।

प्रकाश्य–वि० प्रकाशनीय। प्रकट या प्रकाश करने योग्य।
क्रि० वि० प्रकट रूप से। स्पष्टतया। "स्वगत" का उलटा। (नाटक)

प्रकास*–संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।

प्रकासना*–क्रि० स० १. प्रकाशित करना। उजेला करना। २. प्रकट करना। व्यक्त करना।

प्रकीर्ण–वि० १. बिखरा हुआ। २. अनेक प्रकार से मिश्रित। ३. विस्तृत।
संज्ञा पुं० १. अध्याय। प्रकरण। २. चँवर। ३. पागल। ४. उद्दंड। ५. फुटकर कविता।

प्रकीर्णक–संज्ञा पुं० १. अध्याय। प्रकरण। २. चँवर। ३. विस्तार। ४. फुटकर या स्फुट। ५. मिश्रित। वह वस्तु, जिसमें भिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट हो।

प्रकीर्तन–संज्ञा पुं० १. जोर से कीर्तन। घोषणा करना। २. वर्णन। कथन। प्रस्तावना।

प्रकीर्तित–वि० १. भाषित। कथित। उक्त। वर्णित। २. निरूपित।

प्रकुंच–संज्ञा पुं० आठ तोला या एक पल का मान।

प्रकुपित–वि० क्रोधित। क्रोधयुक्त।

प्रकुष्मांडी–संज्ञा स्त्री० श्री दुर्गा।

प्रकृत–वि० [संज्ञा प्रकृतता, प्रकृतत्व] १. स्वाभाविक। यथार्थ। २. सच्चा। असली। विकाररहित।
संज्ञा पुं० श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृतता–संज्ञा पुं० स्वाभाविक। यथार्थता। असलियत।

प्रकृति–संज्ञा स्त्री० १. स्वभाव। प्रकृति। २. प्रधान गुण। तासीर। प्रधान प्रवृत्ति। ३. कुदरत। ४. माया। ५. ईश्वर की शक्ति। ६. उत्पत्ति-स्थान। ७. अंक। ८. स्वामी। ९. अमात्य। १०. सुहृद्। ११. कोष। १२. राष्ट्र। १३. दुर्ग। १४. पुरवासी। १५. समूह। १६. शक्ति। १७. परमात्मा। १८. पंचभूत। १९. प्रत्यय के पहले का भाग। २०. सत्त्व, रज और तम, इन तीन गुणों की साम्यावस्था।

प्रकृति भाव–संज्ञा पुं० १. स्वभाव। २. विकाररहित दो पदों की सन्धि का नियम।

प्रकृतिविज्ञानशास्त्र–संज्ञा पुं० वह विज्ञान, जिसमें प्राकृतिक बातों का विवेचन हो। जैसे वनस्पति, जीवजन्तु, भूगर्भ आदि विषय। दे० "प्रकृति-शास्त्र"।

प्रकृति-शास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विचार किया जाय। प्रकृति-सम्बन्धी विद्या।

प्रकृतिसिद्ध–वि० स्वाभाविक। नैसर्गिक। प्राकृतिक।

प्रकृतिस्थ–वि० १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २. स्वाभाविक।

प्रकृतिस्थ सूर्य–संज्ञा पुं० उत्तरायण से आया हुआ सूर्य।

प्रकृत्यजीर्ण–संज्ञा पुं० स्वाभाविक अजीर्ण।

प्रकृष्ट–संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ। उत्तम। उत्कृष्ट। मुख्य। २. आकृष्ट। खिंचा हुआ।

प्रकृष्टता–संज्ञा स्त्री० उत्तमता।

प्रकोट–संज्ञा पुं० परकोटा। परिखा। शहरपनाह।

प्रकोप–संज्ञा पुं० १. बहुत अधिक कोप। २. क्षोभ। ३. चपलता। चंचलता। ४. उत्तेजना। ५. बीमारी बढ़ना। रोग की प्रबलता। ६. शरीर के वात, पित्त

का बिगड़ जाना, जिससे रोग उत्पन्न होता है।

प्रकोपन—संज्ञा पुं० १. उत्तेजित करना। २. अप्रसन्न होना। बिगड़ना। ३. क्षोभ।

प्रकोष्ठ—संज्ञा पुं० १. सदर फाटक के पास की कोठरी। कोठे के नीचे का घर। २. बड़ा आँगन। ३. हाथ की कलाई और कोहनी के बीच का भाग।

प्रक्रम—संज्ञा पुं० १. उपक्रम। २. क्रम। सिलसिला। ३. अतिक्रम। उल्लंघन। ४. अनुष्ठान। आरम्भ। ५. उद्योग। ६. अवसर।

प्रक्रमण—संज्ञा पुं० १. भली भाँति। घूमना। २. पार करना। ३. आरंभ करना। आगे बढ़ना।

प्रक्रमभंग—संज्ञा पुं० १. काव्य में यथेष्ट क्रम न होने का एक दोष। २. व्यतिक्रम। सिलसिला भंग होना।

प्रक्रान्त—वि० १. शुरू किया हुआ। आरम्भ किया गया। २. अनुचित।

प्रक्रिया—संज्ञा स्त्री० १. प्रकरण। २. युक्ति। क्रिया। तरीका। ३. रीति। ४. प्रणाली। राजाओं का चँवर छत्र आदि का धारण।

प्रक्लेद—संज्ञा पुं० आर्द्रता। गीलापन।

प्रक्लेदन—संज्ञा पुं० तर करना।

प्रक्ष*—वि० पूछनेवाला।

प्रक्षरण—संज्ञा पुं० झरना। बहना।

प्रक्षाल—संज्ञा पुं० प्रायश्चित्त।

प्रक्षालन—संज्ञा पुं० [वि० प्रक्षालित] जल से शुद्ध या साफ करना। धोना। पखारना।

प्रक्षाल्य—वि० धोने के योग्य।

प्रक्षिप्त—संज्ञा पुं० १. फेंका हुआ। २. बाद में बढ़ाया अथवा मिलाया हुआ भाग।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण—संज्ञा पुं० १. फेंकना। डालना। त्यागना। छोड़ना। २. बिखराना। छितराना। ३. ऊपर से मिलाना। बढ़ाना।

प्रक्षोभण—संज्ञा पुं० बेचैनी। घबराहट।

प्रखर—वि० [संज्ञा प्रखरता] १. तीक्ष्ण। प्रचंड। २. धारदार। पैना। ३. खरा। उग्र। ४. घोड़े की जीन या चारजामा।

प्रखरता—संज्ञा स्त्री० प्रखर होने का भाव। तेजी। उग्रता। तीक्ष्णता।

प्रखल—वि० बहुत बड़ा दुष्ट।

प्रख्या—संज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्धि। २. बराबरी। उपमा।

प्रख्यात—वि० १. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर। २. यशस्वी।

प्रख्याति—संज्ञा स्त्री० प्रसिद्धि।

प्रगंड—संज्ञा पुं० कंधे से कोहनी तक का भाग।

प्रगंडी—संज्ञा स्त्री० प्राकार। बाहरी दीवार।

प्रगट—वि० दे० "प्रकट"।

प्रगटना†—क्रि० अ० प्रकट होना। सामने आना। प्रत्यक्ष होना। प्रसिद्ध होना।

प्रगटाना†—क्रि० स० प्रकट करना। प्रत्यक्ष करना।

प्रगति—संज्ञा स्त्री० आगे की ओर बढ़ना। अग्रसर होना। उन्नति।

प्रगतिवाद—संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि को बराबर आगे की ओर बढ़ाते रहना हितकर माना जाता है। आजकल साधारणतः इसका यही मतलब समझा जाता है कि प्राचीन या वर्त्तमान बातें दूषित अथवा गलत हैं और नई बातें ग्रहण करना आगे बढ़ना है।

प्रगतिशील—संज्ञा पुं० बराबर आगे की ओर बढ़ता रहनेवाला।

प्रगमन—संज्ञा पुं० १. आगे बढ़ना। उन्नति। २. झगड़ा। ३. उचित उत्तर।

प्रगल्भ—वि० [संज्ञा प्रगल्भता] १. चतुर। होशियार। प्रवीण। प्रतिभाशाली। २. उत्साही। ३. साहसी। ४. हाजिर-जवाब। ५. निर्भय। निडर। ६. प्रत्युत्पन्न बुद्धिवाला। ७. धृष्ट। उद्धत। उद्दंड। बकवादी। ८. गम्भीर। ९. प्रधान। १०. पुष्ट। ११. दम्भी।

प्रगल्भता—संज्ञा स्त्री० १. बुद्धिमत्ता। प्रतिभा। २. उत्साह। ३. वाक्चातुर्य्य। ४. निर्भयता। ५. गंभीरता। ६. प्रधानता। ७. धृष्टता।

प्रगल्भवचना—संज्ञा स्त्री० वह मध्या नायिका

जो बातों ही बातों में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करे। प्रगल्भा।

प्रगल्भा—संज्ञा स्त्री० प्रौढ़ा। दे० "प्रगल्भ-वचना"।

प्रगसना*†—क्रि० अ० दे० "प्रगटना"। प्रकट होना।

प्रगाढ़—वि० १. बहुत अधिक। २. कठोर। कड़ा। ३. बहुत गाढ़ा या गहरा। घना।

प्रगाता—संज्ञा पुं० गानेवाला।

प्रगामी—संज्ञा पुं० गमन करनेवाला। जानेवाला।

प्रगुण—वि० १. चतुर। २. गुणवान्। ३. अनुकूल।

प्रगृहीत—वि० भली भाँति ग्रहण किया गया।

प्रग्रह—संज्ञा पुं० १. क़ैदी।। बन्दी २. आदर। ३. उद्धतता। ४. किरण। ५. नेता। ६. उपग्रह। ७. बाँह। हाथ। ८. इन्द्रियदमन। ९. सोना। १०. विष्णु। ११. चन्द्र सूर्य के ग्रहण का आरम्भ। १२. ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग। धारण। १३ बन्धन। लगाम।

प्रगृह्य—वि० १. ग्रहण करने योग्य। २. संधि के नियम के बिना उच्चारण-योग्य। संज्ञा पुं० स्मृति-वाक्य।

प्रग्रहण—संज्ञा पुं० १. ग्रहण करने की क्रिया। धारण। २. तराजू आदि की डोरी। ३.लगाम।

प्रग्रीव—संज्ञा पुं० १. मकान के चारों ओर का घेरा। २. झरोखा। छोटी खिड़की। ३. अस्तबल। ४. वृक्ष का ऊपरी भाग। ५. रंगभवन।

प्रघट*—वि० दे० "प्रकट"।

प्रघटक—संज्ञा पुं० सिद्धान्त।

प्रघटना*—क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।

प्रघट्टक*†—वि० प्रकट या प्रकाश करनेवाला। खोलनेवाला।
संज्ञा पुं० १. सिद्धान्त। (अंग्रे०—पैराग्राफ।)

प्रघोर—वि० अति कठिन।

प्रचंड—वि०[संज्ञा प्रचंडता] १. बहुत अधिक। २. तीव्र। बहुत तेज। प्रखर। ३. उग्र। भयंकर। भयानक। ४. कठिन। कठोर। ५. दुःसह। असह्य। ६. बड़ा। भारी।

प्रचंडता—संज्ञा स्त्री० १. उग्रता। २. प्रखरता। तीक्ष्णता। ३. असह्यता। ४. भयंकरता।

प्रचंडत्व—संज्ञा पुं० दे० "प्रचंडता"।

प्रचंडा—संज्ञा स्त्री० दुर्गा। चंडी।

प्रचय—संज्ञा पुं० १. वेदपाठ का एक स्वर-विशेष। २. समूह। झुंड। ३. राशि। ४. वृद्धि।

प्रचरना*†—क्रि० अ० चलना। फैलना। प्रचारित होना।

प्रचलन—संज्ञा पुं० १. प्रचार। २. रीति। रिवाज। ३. प्रसार। प्रसिद्धि। व्यापकता।

प्रचलित—वि० जिसका प्रचलन या प्रचार हो। जारी। चालू। चलनेवाला। व्यवहृत।

प्रचाय—संज्ञा पुं० १. हाथ से कोई वस्तु इकट्ठा करना। २. राशि। ढेर। वृद्धि।

प्रचायक—संज्ञा पुं० संग्रहकर्त्ता।

प्रचार—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु या बात का बराबर व्यवहार में आना। चलन। रवाज। प्रचलन। २. बहुत से लोगों के सामने कोई विषय, मत या बात रखना। (अंग्रे०—प्रोपैगेंडा)

प्रचारक—वि० [स्त्री० प्रचारिणीका] फैलानेवाला। प्रचार करनेवाला।

प्रचारण—संज्ञा पुं० १. प्रचार करना। फैलाना। प्रचार करने की क्रिया या भाव। २.सूचना, या विधान आदि का वह प्रकाशन, जो उसके प्रचलित होने का ज्ञान करावे। (अंग्रे०—प्रोमलगेशन)

प्रचारना*†—क्रि० स० दे० "प्रचारण।"

प्रचारित—वि० १. प्रचार किया हुआ। २. फैलाया हुआ। विस्तृत।

प्रचालित—वि० जो चलाया गया हो।

प्रचित—वि० संगृहीत।

प्रचुर—वि० १. अधिक। बहुत। २. यथेष्ट।

प्रचुरता—संज्ञा स्त्री० अधिकता। बहुतायत। ज्यादती। बाहुल्य।

प्रच्छद—संज्ञा पुं० ढकने की वस्तु। आच्छादन। ओढ़ने की चादर।

प्रच्छन्न–वि० ढका या लपेटा हुआ। छिपा हुआ। गुप्त।

प्रच्छर्दन–संज्ञा पुं० वमन। कै। रेचन (योग)।

प्रच्छर्दिका–संज्ञा स्त्री० १. कै। उल्टी। २. वमन करानेवाली एक औषध।

प्रच्छादन–संज्ञा पुं० [वि० प्रच्छादित] १. ढाँकना। २. छिपाना। ३. उत्तरीय वस्त्र।

प्रच्छाय–संज्ञा पुं० घनी छाया।

प्रच्छालन–संज्ञा पुं० धोना।

प्रच्छालना*–संज्ञा पुं० धोना। दे० "प्रच्छालन"।

प्रच्छेदन–संज्ञा पुं० छेदने या काटने की क्रिया।

प्रच्यवन–संज्ञा पुं० १. क्षरण। झरना। बहना। रसना। २. गिरना (विशेषकर स्वर्ग से यानी फिर से जन्म लेना)।

प्रच्युत–वि० १. गिरा हुआ। २. निकाला हुआ। अलग किया हुआ।

प्रच्युति–अपने स्थान से हटने या गिरने का भाव।

प्रजंत*‡–अव्य० दे० "पर्यन्त"।

प्रजन–संज्ञा पुं० १. सन्तान उत्पन्न करना। २. सन्तान उत्पन्न करने की क्रिया। पैदा होना। फिर से पैदा होना।

प्रजनन–संज्ञा पुं० १. सन्तान उत्पन्न करने का काम। २. जन्म। ३. बच्चा जनाने का काम। धात्री-कर्म।

प्रजरना*–क्रि० अ० अच्छी तरह जलना।

प्रजल्प–संज्ञा पुं० व्यर्थ बात। गप।

प्रजल्पन–संज्ञा पुं० बातचीत।

प्रजव–संज्ञा पुं० अतिशय वेग।

प्रजहित–संज्ञा पुं० १. पुराण। २. गार्हपत्य अग्नि।

प्रजान्तक या **प्रजांतक**–संज्ञा पुं० यम।

प्रजा–संज्ञा स्त्री० १. संतान। सन्तति। औलाद। २. राजा के राज्य का जन-समूह। वश में रहनेवाला व्यक्ति। रैयत। रिआया। राज्य के निवासी। सर्वसाधारण जनता।

प्रजाकार–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। सृष्टि के रचयिता।

प्रजातंत्र–संज्ञा पुं० वह शासन-प्रणाली, जिसमें प्रजा-द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधि शासन करता है। लोकतंत्र। प्रजाधिकार।

प्रजातंत्री–वि० १. प्रजातंत्र-सम्बन्धी। जो प्रजातंत्र के सिद्धान्त के अनुसार हो। २. प्रजातंत्र का पक्षपाती।

प्रजाध्यक्ष–संज्ञा पुं० दे० "प्रजापति"।

प्रजानाथ–संज्ञा पुं० दे० "प्रजापति"।

प्रजापति–संज्ञा पुं० १. सृष्टिकर्त्ता। ब्रह्मा। २. मनु। ३. राजा। प्रजा का स्वामी। ४. सूर्य्य। ५. आग। ६. पिता। घर का मुखिया। ७. दस प्रजापति। ८. एक प्रकार का विवाह।

प्रजापाल–संज्ञा पुं० राजा। प्रजा का पालन-पोषण करनेवाला।

प्रजारना*†–क्रि० स० अच्छी तरह जलाना।

प्रजावती–संज्ञा स्त्री० १. गर्भवती स्त्री। २. सन्तानवाली स्त्री। पुत्रवती। ३. भाई की स्त्री (बड़े भाई की स्त्री)।

प्रजासत्ता–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रजातंत्र"।

प्रजासत्तात्मक–वि० राज्य की वह शासन-प्रणाली, जिसमें प्रजा (जनता) या उसके प्रतिनिधियों की सत्ता (अधिकार और शक्ति) प्रधान हो। 'राजसत्तात्मक' का उल्टा।

प्रजित–संज्ञा पुं० विजय करनेवाला। विजेता।

प्रजीवन–संज्ञा पुं० जीविका। रोजी।

प्रजुलित*–वि० दे० "प्रज्वलित"।

प्रजेश–संज्ञा पुं० राजा। नृप। प्रजापति। प्रजा का स्वामी।

प्रजोग–संज्ञा पुं० दे० "प्रयोग"।

प्रज्ञ–संज्ञा पुं० ज्ञानी। पंडित। विद्वान्।

प्रज्ञता–संज्ञा स्त्री० पांडित्य।

प्रज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० १. निवेदन। जताने का भाव। २. सूचना। ३. संकेत। ज्ञान।

प्रज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। बुद्धि। २. एकाग्रता। सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु–संज्ञा पुं० १. धृतराष्ट्र। २. ज्ञानी। बुद्धिमान्। ३. अंधा (व्यंग्य)।

प्रज्ञापक–संज्ञा पुं० १. प्रज्ञापन करनेवाला। २. बड़े या मोटे अक्षरों में लिखा हुआ या छपा हुआ विज्ञापन (अंग्रे०—पोस्टर)।

प्रज्ञापन–संज्ञा पुं० विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। विशेष रूप से ज्ञात

कराने के लिए लेख या विज्ञापन आदि ।

प्रज्वलन–संज्ञा पुं० [वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित] जलने की क्रिया । जलन । जलना ।

प्रज्वलित–वि० १. जलता हुआ । दहकता या धधकता हुआ । २. बहुत स्पष्ट । प्रकाशित ।

प्रज्वालिया–संज्ञा पुं० दे० "प्रज्झटिका" ।

प्रण–संज्ञा पुं० अटल निश्चय । प्रतिज्ञा । हठ ।

प्रणख–संज्ञा पुं० नख का अग्रभाग ।

प्रणत–वि० १. झुका हुआ । चरणों में गिरा हुआ । २. दीन । नम्र ।
संज्ञा पुं० दास । सेवक । भक्त ।

प्रणतपाल–संज्ञा पुं० शरणागत-रक्षक । दीनों, दासों या भक्तजनों का पालन करनेवाला । दीनरक्षक ।

प्रणति–संज्ञा स्त्री० १. प्रणाम । दंडवत् । २. नम्रता । ३. विनती ।

प्रणमन–संज्ञा पुं० १. झुकना । नम्र होना । २. प्रणाम करना ।

प्रणम्य–वि० प्रणाम करने के योग्य । वंदनीय ।

प्रणय–संज्ञा पुं० १. प्रेम-प्रार्थना । २. प्रेम । ३. विश्वास । भरोसा । ४. मोक्ष । निर्वाण । ५. श्रद्धा । ६. प्रसव ।

प्रणयन–संज्ञा पुं० बनाना । रचना । निर्माण करना । ग्रन्थन ।

प्रणयिनी–संज्ञा स्त्री० १. प्रियतमा । प्रेमिका । २. स्त्री । पत्नी ।

प्रणयी–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रणयिनी] १. प्रेम करनेवाला । प्रेमी । स्नेही । २. पति । स्वामी ।

प्रणव–संज्ञा पुं० १. ओंकार । ओंकार मंत्र । २. परमेश्वर ।

प्रणवना*–क्रि० स० प्रणाम या नमस्कार करना ।

प्रणाम–संज्ञा पुं० नमस्कार । झुककर अभिवादन । दंडवत् ।

प्रणायक–संज्ञा पुं० १. नेता । २. मार्गदर्शक । ३. सेनानायक ।

प्रणालिका–संज्ञा स्त्री० १. परनाली । २. बंदूक की नली ।

प्रणाली–संज्ञा स्त्री० १. नाली निकलने का मार्ग । २. रीति । चाल । विधि । प्रथा । पद्धति । परिपाटी । ढंग । ३. जल के दो बड़े भागों को मिलानेवाला छोटा जल-मार्ग ।

प्रणाश–संज्ञा पुं० १. नाश । २. मृत्यु । ३. भागना ।

प्रणाशी–संज्ञा पुं० नाश करनेवाला ।

प्रणिधान–संज्ञा पुं० १. किसी कर्म के फल का त्याग । २. अर्पण । ३. प्रयत्न । ४. समाधि (योग) । ५. अत्यंत भक्ति, श्रद्धा या प्रेम । ६. ध्यान । मन की एकाग्रता । मनोयोग ।

प्रणिधि–संज्ञा पुं० १. राज्य के किसी विशेष कार्य से भेजा जानेवाला दूत । (अंग्रे०) एमिसिरी २. गुप्त रूप से काम करनेवाला दूत । भेदिया । गुप्तचर । ३. प्रार्थना । माँगना । निवेदन । ४. मन की एकाग्रता । तत्परता ।

प्रणिपतन, प्रणिपात–संज्ञा पुं० प्रणाम । पैरों पर गिरकर प्रणाम करना ।

प्रणिहित–वि० १. रखा हुआ । स्थापित । २. मनोयोगकृत । ३. निश्चित । ४. प्राप्त । ५. सौंपा हुआ ।

प्रणी–वि० अटल प्रण या दृढ़ प्रतिज्ञावाला ।
संज्ञा पुं० ईश्वर ।

प्रणीत–संज्ञा पुं० १. रचित । बनाया हुआ । २. सुधारा हुआ । ३. प्रेरित । ४. भेजा या लाया हुआ ।

प्रणेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रणेत्री] रचयिता । बनानेवाला । निर्माणकर्त्ता ।

प्रतंचा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यंचा" ।

प्रतच्छ–वि० दे० "प्रत्यक्ष" ।

प्रतन–वि० पुराना । प्राचीन ।

प्रतनु–वि० १. दुबला-पतला । क्षीण । दुर्बल । २. महीन । ३. बहुत छोटा ।

प्रतपन–संज्ञा पुं० तपाना । उत्ताप ।

प्रतप्त–वि० तपा हुआ । उष्ण । तपाया हुआ । गरम किया हुआ ।

प्रतर्क–संज्ञा पुं० तर्क । वादविवाद ।

प्रतल–संज्ञा पुं० १. हथेली । २. सातवाँ पाताल ।

प्रतान—संज्ञा पुं० मूर्च्छा का एक रोग। वि० १. विस्तृत। २. रेशेदार।

प्रताप—संज्ञा पुं० १. पौरुष। मरदानगी। वीरता। बल, पराक्रम। २. ऐश्वर्य। तेज। इकबाल। ३. गरमी। ताप।

प्रतापन—संज्ञा पुं० १. पीड़न। २. विष्णु।

प्रतापवान्—वि० प्रताप-युक्त।

प्रतापी—वि० १. तेजस्वी। जिसका प्रताप हो। ऐश्वर्यमान। २. सतानेवाला।

प्रतारक—संज्ञा पुं० १. वंचक। ठग। छली। २. धूर्त। चालाक।

प्रतारणा—संज्ञा स्त्री० (संज्ञा पुं० प्रतारण) ठगी। धूर्तता। वंचना।

प्रतारित—वि० जो ठगा या छला गया हो। जिसे धोखा दिया गया हो।

प्रतिंचा—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यंचा"। धनुष की डोरी। चिल्ला।

प्रति—अव्य० एक उपसर्ग, जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत; जैसे, प्रतिकूल। सामने जैसे, प्रत्यक्ष। बदले में; जैसे, प्रत्युपकार। हर एक; जैसे प्रत्येक। समान; जैसे, प्रतिनिधि। मुकाबले में; जैसे, प्रतिवादी। अव्य० १. एक एक। सब। समस्त। २. पास। सामने। मुकाबिले में। ३. ओर। तरफ। वैसा ही। ज्यों का त्यों। संज्ञा स्त्री० संख्या, जैसे पुस्तक की दो प्रतियाँ। नकल। कापी (अंग्रे०)।

प्रतिकर्म—संज्ञा पुं० १. वेश। २. प्रतीकार। ३. अंग-कर्म।

प्रतिकामिनी—संज्ञा स्त्री० सौत। दूसरी स्त्री।

प्रतिकार—संज्ञा पुं० १. जवाब। २. बदला। ३. उपाय ४. तरीका। ५. चिकित्सा।

प्रतिकार्य—वि० प्रतिकार के योग्य।

प्रतिकूप—संज्ञा पुं० परिखा।

प्रतिकूल—वि० [संज्ञा प्रतिकूलता] खिलाफ। उलटा। विपरीत। विरुद्ध।

प्रतिकूलता—संज्ञा स्त्री० उल्टा या विपरीत होने का भाव। विपक्षता। विरोध।

प्रतिकूलत्व—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिकूलता"।

प्रतिकृत—वि० जिसका बदला हो चुका हो। जिसके विरुद्ध कोई कार्य किया गया हो।

प्रतिकृति—संज्ञा स्त्री० १. किसी की नकल पर बनाई हुई मूर्ति या रूप। प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २. प्रतिबिम्ब। छाया। ३. बदला। प्रतिकार।

प्रतिक्रिया—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिकार। बदला। २. कोई क्रिया होने पर उसके विरोध में या फलस्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया। ३. विरुद्ध या विपरीत दिशा में होनेवाली क्रिया या गति।

प्रतिक्रियावादी—संज्ञा पुं० उन्नति, सुधार आदि के विरुद्ध या विपरीत चलनेवाला। (अंग्रे०—रि-एक्शनरी)

प्रतिग्या*—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।

प्रतिग्रह—संज्ञा पुं० १. स्वीकार। ग्रहण। २. उस दान का लेना, जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक दिया जाय। दान पकड़ना। ३. अधिकार में लाना। ४. पाणिग्रहण। विवाह। ५. विरोध करना। ६. प्रत्युत्तर। सेना का पिछला भाग।

प्रतिग्राहक—संज्ञा पुं० १. लेने या ग्रहण करनेवाला। दान लेनेवाला। २. किसी सम्पत्ति को रक्षापूर्वक रखने के लिए उसे अपने अधिकार में लेनेवाला (अंग्रे०—कस्टोडियन)। ३. किसी की दी हुई वस्तु, सम्पत्ति आदि को किसी विशेष कार्य के लिए ग्रहण करनेवाला (अंग्रे०—रिसीवर)।

प्रतिग्राही—संज्ञा पुं० दान लेनेवाला।

प्रतिग्राह्य—वि० लेने लायक। ग्रहण करने योग्य।

प्रतिघ—संज्ञा पुं० १. क्रोध। २. मारना। ३. मूर्च्छा। ४. विरोध। ५. बाधा। रुकावट। अड़चन।

प्रतिघात—संज्ञा पुं० १. वह आघात, जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय। २. टक्कर। ३. बाधा। रुकावट।

प्रतिघातक—संज्ञा पुं० प्रतिघात करनेवाला।

प्रतिघातन—संज्ञा पुं० १. हत्या। २. बाधा।

प्रतिघाती—संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रतिघातिनी]

१. शत्रु । वैरी । दुश्मन । २. प्रतिद्वन्द्वी । मुकाबला करनेवाला ।
प्रतिचिंतन—संज्ञा पुं० पुनर्विचार ।
प्रतिच्छवि—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिबिम्ब । परछाईं । छाया । २. चित्र ।
प्रतिच्छा*†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा" ।
प्रतिच्छाया—संज्ञा स्त्री० १. चित्र । तसवीर । २. परछाईं । प्रतिबिंब । प्रतिमूर्त्ति ।
प्रतिच्छायित—वि० १. जिसकी परछाईं कहीं पड़ी हो । २. जिस पर किसी की परछाईं पड़ी हो ।
प्रतिछाईं, प्रतिछाँह—संज्ञा स्त्री० दे० "परछाईं" ।
प्रतिछाया—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया" ।
प्रतिजिह्वा—संज्ञा पुं० कौवा । गले के अन्दर की घंटी ।
प्रतिज्ञांतर—संज्ञा पुं० १. तर्क में एक निग्रह-स्थान । २. पराजय ।
प्रतिज्ञा—संज्ञा स्त्री० १. दृढ़ निश्चय । प्रण । २. शपथ । सौगंद । कसम । ३. दावा । अभियोग । ४. न्याय में उस बात का कथन, जिसे सिद्ध करना हो ।
प्रतिज्ञात—संज्ञा, पुं० १. जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो । प्रतिज्ञा या वादा किया हुआ । २. स्वीकृत । अंगीकृत ।
प्रतिज्ञापत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिस पर कोई प्रतिज्ञा या शर्तें लिखी हों । इक़रार-नामा ।
प्रतिज्ञाहानि—संज्ञा स्त्री० १. तर्क में एक प्रकार का निग्रह-स्थान । २. पराजय ।
प्रतितंत्र—संज्ञा पुं० अपने मत के विरुद्ध मत का शास्त्र ।
प्रतिदत्त—वि० लौटाया हुआ । बदले में दिया हुआ ।
प्रतिदान—संज्ञा पुं० १. दान के बदले दान । २. लौटाना । वापस करना । धरोहर या अमानत का लौटाना । ३. परिवर्तन । विनिमय । बदला ।
प्रतिदेश—संज्ञा पुं० सीमा पर का देश ।
प्रतिद्वन्द्व—संज्ञा पुं० बराबरवालों का विरोध या झगड़ा । दे० "प्रतिद्वंद्विता" ।
प्रतिद्वन्द्विता—संज्ञा स्त्री० बराबरवालों का विरोध या लड़ाई । आपसी वैर । प्रतियोगिता ।
प्रतिद्वन्द्वी—संज्ञा पुं० १. शत्रु । वैरी । लड़ने या विरोध करनेवाला । २. सामने मुकावला करनेवाला । विरोधी ।
प्रतिध्वनि—संज्ञा स्त्री० (वि० प्रतिध्वनित ।) १. वह ध्वनि या शब्द, जो अपनी उत्पत्ति के स्थान से चलकर कहीं से टकराकर लौटे और फिर वहीं सुनाई पड़े । प्रतिशब्द । गूँज । २. गूँजना । ३. दूसरे के विचारों आदि का दोहराया जाना ।
प्रतिध्वनित—वि० प्रतिध्वनि से व्याप्त । गूँजा हुआ ।
प्रतिनंदन—संज्ञा पुं० बधाई । आशीर्वादयुक्त अभिनंदन । (अंग्रे०—कांग्रेचुलेशन)
प्रतिना—संज्ञा स्त्री० दे० "पृतना" । सेना । फौज ।
प्रतिनाद—संज्ञा पुं० प्रतिध्वनि ।
प्रतिनायक—संज्ञा पुं० नाटक या काव्य आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र ।
प्रतिनिचयन—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिनिचित) किसी का दिया हुआ धन या शुल्क आदि अधिक या अनुचित होने पर उसे लौटाना या उसके खाते में जमा करना (अंग्रे०—रिफंड)
प्रतिनिधान—संज्ञा पुं० प्रतिनिधि बनाकर कहीं भेजा जानेवाला व्यक्ति या व्यक्तियों का दल ।
प्रतिनिधायन—संज्ञा पुं० प्रतिनिधियों का वह दल जो कहीं किसी काम के लिए जाय । प्रतिनिधियों को कहीं भेजना ।
प्रतिनिधि—संज्ञा पुं० १. प्रतिमूर्ति । प्रतिमा । २. किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ।
प्रतिनिधित्व—संज्ञा पुं० प्रतिनिधि होने की क्रिया या भाव ।
प्रतिनिधिमंडल—संज्ञा पुं० प्रतिनिधियों का दल या समिति । शिष्टमण्डल ।
प्रतिनिधि-सत्तात्मक—वि० राज्य की वह शासन-प्रणाली, जिसमें प्रजा (जनता)

के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।
प्रतिनियुक्त—वि० प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप में बनाकर कहीं भेजा गया व्यक्ति। (अंग्रे०—डेप्युटेड)
प्रतिनियोजन—संज्ञा पुं० किसी को कहीं भेजने के लिए अधीनस्थ कर्मचारी के रूप में नियुक्त करना।
प्रतिनिर्दिष्ट—वि० प्रसंगवश जिसका उल्लेख या चर्चा की गई हो या जिसकी ओर संकेत किया गया हो। जिसका प्रतिनिर्देश किया गया हो (अंग्रे०—रेफर्ड)।
प्रतिनिर्देश—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिनिर्दिष्ट) संकेत, प्रमाण या साक्षी रूप में किया गया उल्लेख या चर्चा (अंग्रे०—रेफरेन्स)
प्रतिपक्ष—संज्ञा पुं० १. प्रतिवादी। विरोधपक्ष। शत्रु। २. सादृश्य। समानता।
प्रतिपक्षता—संज्ञा स्त्री० विरोध।
प्रतिपक्षी—संज्ञा पुं० विपक्षी। प्रतिवादी। विरोधी। शत्रु।
प्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। पाना। २. ज्ञान। अनुमान। ३. देना। दान। ४. प्रतिपादन। निरूपण। ५. मानना। स्वीकृत। ६. कार्यरूप में लाना।
प्रतिपत्तिकर्म—संज्ञा पुं० श्राद्ध आदि में सबसे अन्त में किया जानेवाला कर्म।
प्रतिपदा—संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पहली तिथि। परिवा। प्रतिपद्।
प्रतिपन्न—वि० १. अवगत। ज्ञात। जाना हुआ। २. अंगीकृत। ३. प्रमाणित। निश्चित। ४. भरापूरा। ५. शरणागत। ६. प्राप्त।
प्रति-परीक्षण—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिपरीक्षित) किसी के कुछ कह चुकने पर दबी-दबाई बातों का पता लगाने के लिए उससे कुछ प्रश्न करना [अंग्रे०—क्रास-इक्जामिनेशन]
प्रतिपर्ण—संज्ञा पुं० दो टुकड़ोंवाली रसीद या प्रमाणपत्र आदि का वह टुकड़ा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिस पर किसी को दिए हुए दूसरे टुकड़े की प्रतिलिपि रहती है। [अंग्रे०—काउण्टर-फायल]।
प्रतिपादक—संज्ञा पुं० १. प्रतिपादन करनेवाला। २. संस्थापक। ३. प्रकाशक। ४. उत्पादक।
प्रतिपादन—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिपादित) १. भली भाँति समझाना। प्रतिपत्ति। २. सप्रमाण कथन। सिद्धि। ३. प्रमाण। सबूत। ४. सम्पादन। ५. बोधन। ज्ञापन। ६. दान। ७. पुरस्कार।
प्रतिपादित—वि० १. जो भली भाँति समझा दिया गया हो। २. निर्धारित। ३. प्रमाणित।
प्रतिपाद्य—वि० १. कथनीय। बोधनीय। वर्णन-योग्य। २. देने योग्य।
प्रतिपार*†—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिपाल"।
प्रतिपाल, प्रतिपालक—संज्ञा पुं० १. पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। रक्षक २. राजा।
प्रतिपालन—संज्ञा पुं० [वि० प्रतिपालित] १. पालन-पोषण। २. रक्षण। निर्वाह। ३. तामील।
प्रतिपालना*†—क्रि० स० १. पालन करना। २. बचाना। रक्षा करना। पालना-पोसना।
प्रतिपालित—वि० १. रक्षित। २. पोषित।
प्रतिपाल्य—वि० १. प्रतिपालनीय। २. रक्षणीय।
प्रतिपुरुष—संज्ञा पुं० सहकारी। किसी के अधीन रहकर या किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करनेवाला (डेपुटी)।
प्रतिप्राप्ति—संज्ञा स्त्री० खोई या किसी के हाथ में गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना।
प्रतिफल—संज्ञा पुं० १. परिणाम। नतीजा। फल। २. बदला। ३. बदले में मिली हुई चीज।
प्रतिफलक—संज्ञा पुं० [वि० प्रतिफलित] वह यंत्र, जो कोई प्रतिबिम्ब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो (अँग्रे०—रिफ्लेक्टर)।
प्रतिबंध—संज्ञा पुं० १. विघ्न। बाधा। रुकावट; रोक। २. शर्त्त।
प्रतिबंधक—संज्ञा पुं० १. रोकनेवाला। विघ्न-बाधा डालनेवाला। बाधक। २. वृक्ष।
प्रतिबन्धकता—संज्ञा स्त्री० रुकावट। अड़चन।

प्रतिबद्ध—वि० १. बँधा हुआ । नियंत्रित । २. जिसमें कोई प्रतिबन्ध हो । शर्त्त से बँधा हुआ ।

प्रतिबाधक—वि० १. बाधा डालनेवाला । २. पीड़ा देनेवाला ।

प्रतिबाधन—संज्ञा पुं० १. विघ्न । २. पीड़ा ।

प्रतिबिंब—संज्ञा पुं० [वि० प्रतिबिंबित] १. परछाईं । छाया । २. प्रतिमा । मूर्ति । चित्र । तसवीर । ३. झलक । ४. दर्पण । शीशा ।

प्रतिबिंबवाद—संज्ञा पुं० वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब है ।

प्रतिबीज—वि० नष्ट बीज ।

प्रतिबुद्ध—वि० १. जागा हुआ । सजग । २. प्रसिद्ध । ३. उन्नत ।

प्रतिबुद्धि—संज्ञा स्त्री० विपरीत बुद्धि । उलटी समझ ।

प्रतिबोध—संज्ञा पुं० १. जागरण । २ ज्ञान ।

प्रतिबोधक—संज्ञा पुं० १. ज्ञान उत्पन्न करनेवाला । २. जगानेवाला ।

प्रतिबोधन—संज्ञा पुं० १. जगाना । २. ज्ञान उत्पन्न करना ।

प्रतिभट—संज्ञा पुं० १. समान वीर । २. शत्रु ।

प्रतिभा—संज्ञा स्त्री० असाधारण बुद्धि-बल । असाधारण मानसिक शक्ति जिससे कोई व्यक्ति अधिक योग्यता का कार्य कर दिखाता है । असाधारण योग्यता ।

प्रतिभाग—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिभागिक) प्राचीन काल का एक कर । आजकल का वह शुल्क या कर जो राज्य में बननेवाले कुछ विशेष पदार्थों (नमक, मादकद्रव्य, दियासलाई, कपड़े आदि) पर उनके बनते ही और बाजार में बिक्री होने से पहले लिया जाता है । (अंग्रे०—एक्साइज ड्यूटी)

प्रतिभाग्य—वि० जिस पर प्रतिभाग लगता या लग सकता है । प्रतिभाग (शुल्क) लगनेवाली वस्तु ।

प्रतिभावान्, प्रतिभाशाली—वि० जिसमें प्रतिभा हो । प्रतिभावाला ।

प्रतिभाषा—संज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर । जवाब । वादी का कथन । मुद्दई का बयान ।

प्रतिभाशाली—वि० दे० "प्रतिभावान्" ।

प्रतिभास—संज्ञा पुं० १. आकृति । २. धोखा । ३. प्रकाश ।

प्रतिभू—संज्ञा पुं० जमानत करनेवाला । जामिन । जमानतदार ।

प्रतिभूति—संज्ञा स्त्री० जमानत की रकम । वह धन जो जमानत के लिए जमा हो ।

यौ०—प्रतिभूतिन्यास=जमानत के रूप में धन जमा करना ।

प्रतिभेद—संज्ञा पुं० १. प्रभेद । अन्तर । २. आविष्कार ।

प्रतिमंडल—संज्ञा पुं० सूर्य आदि ग्रहों का मंडल । परिवेश ।

प्रतिम—अव्य० समान । सदृश । तुल्य ।

प्रतिमा—संज्ञा स्त्री० १. अनुकृति । २. मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति । ३. प्रतिबिंब । छाया । ४. एक अलंकार, जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के अभाव में उसी के सदृश किसी अन्य पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन होता है ।

प्रतिमान—संज्ञा पुं० १. प्रतिबिंब । परछाहीं । २. समानता । बराबरी । ३. उदाहरण नमूना ४. आदर्श के अनुरूप या नमूने की तरह बनाई गई वस्तु ।

प्रतिमुख—संज्ञा पुं० १. नाटक की पाँच अंग-संधियों में से एक । २. किसी वस्तु का पृष्ठ भाग ।

प्रतिमूर्ति—संज्ञा स्त्री० प्रतिमा । अनुकृति ।

—संज्ञा पुं० बराबरी का युद्ध ।

पुं० विरोध । फिर से किया हुआ प्रयत्न ।

प्रतियोगिता—संज्ञा स्त्री० किसी काम में औरों से आगे बढ़ने का प्रयत्न । प्रतिद्वंद्विता । चढ़ा-ऊपरी । होड़ । ऐसा कार्य, जिसमें इनाम या पद पाने के लिए बहुत से लोग अग्रसर होने का प्रयत्न करें ।

प्रतियोगी—संज्ञा पुं० १. प्रतियोगिता करनेवाला । २. हिस्सेदार । ३. शत्रु । विरोधी ।

वैरी। ४. मददगार। सहायक।
प्रतियोद्धा—संज्ञा पुं० शत्रु। बराबर का लड़नेवाला।
प्रतिरक्षण—संज्ञा पुं० रक्षा।
प्रतिरथ—संज्ञा पुं० बराबर का लड़नेवाला।
प्रतिरुद्ध—वि० अवरुद्ध।
प्रतिरूप—संज्ञा पुं० १. प्रतिमा। मूर्ति। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिलिपि। नमूना। वि० नकली या जाली। कृत्रिम। बनावटी।
प्रतिरूपक—संज्ञा पुं० नकली या बनावटी चीजें (विशेषतः सिक्के, नोट आदि) बनानेवाला।
प्रतिरोध—संज्ञा पुं० [वि० प्रतिरोधक] १. विरोध। २. रुकावट। रोक। बाधा। विघ्न। ३. तिरस्कार।
प्रतिरोधक या **प्रतिरोधी**—संज्ञा पुं० १. रोकनेवाला। रुकावट या बाधा डालनेवाला। २. चोर। ३. तस्कर। डाकू।
प्रतिरोधन—संज्ञा पुं० प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव।
प्रतिलम्भ—संज्ञा पुं० १. कुरीति। २. दोष। कलंक ३. प्राप्ति। लाभ। ४. निन्दा।
प्रतिलिपि—संज्ञा स्त्री० किसी लिखी हुई चीज की ज्यों की त्यों नकल। (कापी)
प्रतिलोम—वि० १. प्रतिकूल। विपरीत। २. जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। उलटा। ३. बायाँ। ४. नीच।
प्रतिलोम विवाह—संज्ञा पुं० वह विवाह, जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।
प्रतिवचन—संज्ञा पुं० उत्तर। प्रतिध्वनि।
प्रतिवर्तन—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिवर्तित) लौटना। चक्कर काटना। फेरा लगाना। घूमना।
प्रतिवहन—संज्ञा पुं० उलटी ओर बहाना या ले जाना।
प्रतिवस्तूपमा—संज्ञा स्त्री० वह काव्यालंकार, जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग-अलग हो।
प्रतिवाक्य—संज्ञा पुं० उत्तर। प्रत्युत्तर।
प्रतिवाणी—संज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद—संज्ञा पुं० वह कथन, जो किसी मत को मिथ्या ठहराने के लिए हो। खंडन। विरोध। आपत्ति। विवाद। बहस।
प्रतिवादक—संज्ञा पुं० प्रतिवाद करनेवाला। प्रतिवादी।
प्रतिवादिता—संज्ञा स्त्री० प्रतिवाद करने का भाव। प्रतिवादी का कार्य।
प्रतिवादी—संज्ञा पुं० १. प्रतिवाद या खंडन करनेवाला। २. वादी का विरोधी। प्रतिपक्षी। विपक्षी।
प्रतिवारण—संज्ञा पुं० रोकना। मना करना।
प्रतिवास—संज्ञा पुं० १. पड़ोस। समीप का निवास। २. सुगन्धि।
प्रतिवासर—संज्ञा पुं० प्रतिदिन।
प्रतिवासी—संज्ञा पुं० पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।
प्रतिविधान—संज्ञा पुं० किसी विधान के मुकाबले में किया जानेवाला विधान। प्रतिकार।
प्रतिवीर्य—संज्ञा पुं० प्रतिरोध करने के लिए यथेष्ट शक्ति रखनेवाला।
प्रतिवेश—संज्ञा पुं० पड़ोस। घर के सामने का घर। पड़ोस का मकान।
प्रतिवेशी—संज्ञा पुं० पड़ोसी। पड़ोस में रहनेवाला।
प्रतिशंका—संज्ञा पुं० वह शंका, जो बराबर बनी रहे।
प्रतिशब्द—संज्ञा पुं० प्रतिध्वनि। गूँज।
प्रतिशम—संज्ञा पुं० १. नाश। २. मुक्ति।
प्रतिशयन—संज्ञा पुं० किसी इच्छा की पूर्ति के निमित्त किसी देव-स्थान पर धरना देना।
प्रतिशिष्य—संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य।
प्रतिशोध—संज्ञा पुं० बदला। बदला चुकाने के लिए किया गया काम।
प्रतिश्रुत—वि० १. स्वीकृत। मंजूर। २. प्रतिज्ञा किया हुआ।
प्रतिश्रुति—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिध्वनि। २. प्रतिरूप। ३. प्रतिज्ञा। ४. स्वीकृति। मंजूरी।

प्रतिश्रुतिपत्र—संज्ञा पुं० राज्य-द्वारा चलाई हुई वह हुंडी, जिसका रुपया निश्चित समय पर मिलता हो (अंग्रे०—प्रामिसरी नोट)।

प्रतिश्य या प्रतिश्याय—संज्ञा पुं० जुकाम। सर्दी। श्लेष्मा।

प्रतिषेध—संज्ञा पुं० [वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक] १. निषेध। मनाही। रोक। खंडन। २. एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय, जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले।

प्रतिष्क—संज्ञा पुं० दूत।

प्रतिष्ठ—वि० प्रसिद्ध।

प्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० १. मान-मर्यादा। गौरव। सम्मान। इज्जत। २. स्थापना। रखा जाना। जैसे, देवता की प्रतिमा की स्थापना। ३. यश।

प्रतिष्ठान—संज्ञा पुं० १. स्थापित या प्रतिष्ठित करने की क्रिया। बैठाना। रखना। २. जमाना। देवमूर्ति की स्थापना। ३. स्थान। ४. संस्था।

प्रतिष्ठापत्र—संज्ञा पुं० सम्मानपत्र। प्रतिष्ठा करने के लिए दिया जानेवाला पत्र। सनद।

प्रतिष्ठावान्—वि० मान-मर्यादावाला। सम्मानित। इज्जतदार।

प्रतिष्ठित—वि० १. जिसकी प्रतिष्ठा हुई हो। सम्मानित। इज्जतदार। २. स्थापित किया हुआ।

प्रतिस्थापन—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिस्थापित) अपने स्थान से हटी हुई वस्तु या व्यक्ति को फिर से उसी स्थान पर रखना या बैठाना।

प्रतिस्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री० १. लागडाँट। होड़। चढ़ा-ऊपरी। किसी काम में स्पर्द्धा। दूसरे से बढ़ने का प्रयत्न। २. द्वेष।

प्रतिस्पर्द्धी—संज्ञा पुं० प्रतिस्पर्द्धा करनेवाला। मुक़ाबला या बरबरी करनेवाला।

प्रतिस्फलन—संज्ञा पुं० फैलाव।

प्रतिहंता—संज्ञा पुं० बाधक। रोकनेवाला।

प्रतिहत—वि० १. जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। अवरुद्ध। २. निराश। ३. फेंका हुआ।

प्रतिहति—संज्ञा स्त्री० १. आघात। रोकने की चेष्टा। टक्कर। २. क्रोध।

प्रतिहरण—संज्ञा पुं० विनाश।

प्रतिहर्त्ता—संज्ञा पुं० विनाश करनेवाला।

प्रतिहस्त—संज्ञा पुं० प्रतिनिधि।

प्रतिहार—संज्ञा पुं० १. द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। दरबान। २. द्वार। दरवाजा। ३. एक प्राचीन राजकर्मचारी, जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था। ४. नकीब। चोबदार। ५. सामवेदगान का एक अंग। ६. मायावी। ७. एक प्रकार की सन्धि।

प्रतिहारक—संज्ञा पुं० बाजीगर। प्रतिहार। सामगान करनेवाला।

प्रतिहारण—संज्ञा पुं० द्वार। द्वार आदि में प्रवेश करने की आज्ञा।

प्रतिहारी—संज्ञा पुं० (स्त्री० प्रतिहारिणी) ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

प्रतिहिंसा—संज्ञा स्त्री० बदला लेना। हिंसा का प्रतिशोध।

प्रतीक—संज्ञा पुं० चिह्न। निशान। लक्षण। किसी के स्थान या बदले में रखी हुई या काम में आनेवाली वस्तु। प्रतिमा।

प्रतीकार—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिकार"।

प्रतीकार्य्य—वि० प्रतीकार के योग्य। जिससे बदला लिया जा सके।

प्रतीकाश—संज्ञा पुं० १. समान। तुल्य। सदृश। २. उपमा।

प्रतीकोपासना—संज्ञा स्त्री० किसी विशेष वस्तु में ईश्वर की भावना करके उसे पूजना।

प्रतीक्षक—संज्ञा पुं० प्रतीक्षा करनेवाला।

प्रतीक्षण—संज्ञा पुं० १. प्रतीक्षा करना। २. कृपा-दृष्टि।

प्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री० कोई काम होने या किसी के आने की आशा में रहना। बाट देखना। आसरा। इंतजार। प्रत्याशा।

प्रतीक्षी—संज्ञा पुं० प्रतीक्षा करनेवाला।

प्रतीक्ष्य—वि० प्रतीक्षा करने योग्य। जिसकी प्रतीक्षा की जाय।

प्रतीची—संज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य—वि० पश्चिमी।

प्रतीत–वि० १. विदित। ज्ञात। अवगत। जाना हुआ। २. ऐसा जान पड़नेवाला।
प्रतीति–संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। जानकारी। २. विश्वास। ३. प्रसन्नता। ४. साख। ५. प्रतिज्ञा या लेन-देन आदि विश्वास किए जाने का भाव या प्रामाणिकता।
प्रतीप–संज्ञा पुं० १. प्रतिकूल घटना। आशा से विरुद्ध फल। २. एक अर्थालंकार, जिसमें उपमान को ही उपमेय के समान अथवा उपमेय-द्वारा उपमान को तिरस्कृत-सा दिखाते हैं।
प्रतीपदर्शिनी–संज्ञा स्त्री० देखते ही मुँह फेर लेनेवाली नववधू।
प्रतीपोक्ति–संज्ञा स्त्री० खण्डन।
प्रतीयमान–वि० १. प्रतीत या ज्ञात होता हुआ। जान पड़ता हुआ। बोधगम्य। २. अनुभूत।
प्रतीर–संज्ञा पुं० किनारा। तट।
प्रतीवाप–संज्ञा पुं० १. काढ़े में मिलाने की ओषधि। २. दैवी उपद्रव। ३. फेंकना।
प्रतीहार–संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहार"।
प्रतीहारी–संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहारी"।
प्रतुद–संज्ञा पुं० पक्षी, जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं।
प्रतोद–संज्ञा पुं० १. चाबुक। २. अंकुश। ३. किसी को कोई काम करने के लिए उत्तेजित या विवश करना। ४. दे० "चेतक"।
प्रतोली–संज्ञा स्त्री० १. चौड़ी सड़क। गली। कूचा। २. दुर्ग का द्वार। ३. फोड़ों पर पट्टी बाँधने का ढंग।
प्रतोष–संज्ञा पुं० सन्तोष।
प्रत्न–वि० पुराना। प्राचीन।
प्रत्नजीव-विज्ञान–संज्ञा पुं० वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें प्राचीन काल के ऐसे जीव-जन्तुओं का विवेचन होता है, जो अब कहीं नहीं मिलते। (अँग्रे०—पेलियनटालाजी)
प्रत्नतत्त्व, प्रत्नतत्त्वविज्ञान–संज्ञा पुं० दे० "पुरातत्त्व"।
प्रत्यंकन–संज्ञा पुं० (वि० प्रत्यंकित) किसी अंकित वस्तु या आकृति का ठीक-ठीक प्रतिरूप तैयार करना। हू-बहू नकल उतारना। किसी चित्र आदि के ऊपर पतला कागज रखकर उसकी नकल उतारना।
प्रत्यंचा†–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी। चिल्ला।
प्रत्यंजन–संज्ञा पुं० अंजन लगाकर आँख अच्छी करना।
प्रत्यन्त–वि० बिलकुल सीमा पर का। अन्तिम सिरे का।
प्रत्यन्तपर्वत–संज्ञा पुं० बड़े पहाड़ के समीप का छोटा पहाड़।
प्रत्यक–क्रि० वि० १. पीछे। २. पश्चिम।
प्रत्यक्‌चेतन–संज्ञा पुं० १. वह पुरुष, जो योग-द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त कर चुका हो और जिसकी चित्तवृत्ति निर्मल हो चुकी हो। २. परमेश्वर। ३. अन्तरात्मा।
प्रत्यक्ष–वि० [संज्ञा प्रत्यक्षता] १. जो देखा जा सके। जो आँखों के सामने हो। साक्षात्। प्रकट। प्रसिद्ध। २. जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके। ३. निश्चयात्मक ज्ञान।
संज्ञा पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक।
क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।
प्रत्यक्षता–संज्ञा स्त्री० प्रत्यक्ष होने का भाव।
प्रत्यक्षदर्शी–संज्ञा पुं० साक्षी। वह गवाह, जिसने घटना को आंखों देखा हो। चश्मदीद गवाह।
प्रत्यक्षवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धांत, जिसमें केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण माना जाय।
प्रत्यक्षवादी–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को माननेवाला व्यक्ति
प्रत्यक्षीकरण–संज्ञा पुं० आँखों के सामने दिखा देना। किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करना।
प्रत्यक्षीभूत–वि० प्रत्यक्षगति। इन्द्रियों-द्वारा ज्ञात।
प्रत्यगात्मा–संज्ञा पुं० व्यापक ब्रह्म।
प्रत्यग्र–वि० १. नवीन। अभिनव। २. शुद्ध। ३. बोधित।

प्रत्यपकार—संज्ञा पुं० अपकार के बदले में अपकार। बुराई के बदले में बुराई।

प्रत्यभिज्ञा—संज्ञा स्त्री० स्मृति से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान। अभेद ज्ञान, जिसके अनुसार ब्रह्म और जीव अद्वैत माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन—संज्ञा पुं० माहेश्वर-संप्रदाय का एक दर्शन, जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर यह बतलाना कि यह अमुक ही है। पहचान। (अंग्रे०—आइडेण्टिफिकेशन) २. स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।

प्रत्यभिज्ञापत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (अंग्रे०—आइडेण्टिटी-कार्ड)

प्रत्यभियोग—संज्ञा पुं० प्रत्यपराध। अपराध पर अपराध। अपराधी होकर पुनः अपराध करना। अभियुक्त होकर पुनः अभियोग करना।

प्रत्यभिवाद या **प्रत्यभिवादन**—संज्ञा पुं० किसी पूज्य को प्रणाम करने पर मिलनेवाला आशीर्वाद।

प्रत्यय—संज्ञा पुं० १. विश्वास। एतबार। २. प्रमाण। सबूत। ३. विचार। खयाल। ४. बुद्धि। समझ। ५. व्याख्या। शरह। ६. कारण हेतु। ७. आवश्यकता। ८. प्रसिद्धि। प्रख्याति ९. लक्षण। चिह्न। १०. निर्णय। फैसला। ११. सम्मति। राय। १२. छंदों के भेद और उनकी संख्या जानने की नौ रीतियाँ। १३. व्याकरण में वह अक्षर या अक्षरसमूह, जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के लिए लगाया जाय। जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है।

प्रत्ययपत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिसमें यह लिखा रहता है कि वह पत्र ले आनेवाले को इतना धन हमारे खाते में से या ऋण दे दिया जाय। (अंग्रे०—लेटर आफ क्रेडिट)

प्रत्यर्पण—संज्ञा पुं० लौटाना। फेर देना। प्रतिदान।

प्रत्यवमर्श, प्रत्यवमर्शन—संज्ञा पुं० १. अनुसन्धान। पता लगाना। भले-बुरे का विचार।

प्रत्यवरोह—संज्ञा पुं० अवरोहण। सीढ़ी।

प्रत्यवसान—संज्ञा पुं० भोजन।

प्रत्यवस्कन्दन—संज्ञा पुं० जवाब-दावा। मुकदमे में किसी तथ्य को स्वीकार करके यह तर्क करना कि उससे कोई आरोप नहीं लगता।

प्रत्यवहार—संज्ञा पुं० संहार। मार डालना।

प्रत्यवाय—संज्ञा पुं० १. पाप। दोष। २. अनिष्ट। विघ्न।

प्रत्यवेक्षण—संज्ञा पुं० भली भाँति जानना।

प्रत्यश्म—संज्ञा पुं० गेरू।

प्रत्याख्यान—संज्ञा पुं० १. खंडन। २. निराकरण। अस्वीकार।

प्रत्यागत—वि० लौटकर आया हुआ।

प्रत्यागमन—संज्ञा पुं० १. लौट आना। वापसी। २. दोबारा आना।

प्रत्याघात—संज्ञा पुं० चोट के बदले चोट। टक्कर।

प्रत्यादेश—संज्ञा पुं० १. खण्डन। निराकरण। २. देवता की आज्ञा। उपदेश। ३. परामर्श।

प्रत्यानयन—संज्ञा पुं० गई हुई चीज लौटाकर ला देना या उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी वस्तु देना। टूटी-फूटी वस्तु फिर पूर्व रूप में लाना। (अंग्रे०—रिस्टोरेशन)

प्रत्यापतन—संज्ञा पुं० उत्तराधिकारी के न रहने पर किसी सम्पत्ति का राज्य के अधिकार में आना।

प्रत्यारोप—संज्ञा पुं० किसी आरोप के उत्तर में किया जानेवाला आरोप। (अंग्रे०—काउण्टरचार्ज)

प्रत्यालोचन—संज्ञा पुं० किसी के किए हुए निर्णय या निर्णीत व्यवहार को फिर से देखना कि वह ठीक है या नहीं। दे० 'प्रत्यालोचना'। (अंग्रे०

प्रत्यालोचना—संज्ञा स्त्री० आलोचना में कही गई बातों की समीक्षा। किसी ग्रन्थ या विषय की आलोचना का उत्तर या समीक्षा।

प्रत्यावर्तन–संज्ञा पुं० वापसी। लौटकर अपने स्थान पर आना।

प्रत्याशा–संज्ञा स्त्री० १. आशा। उम्मीद। २. विश्वास। ३. प्रतीक्षा।

प्रत्याशी–वि० अभिलाषी। आकांक्षी। भरोसेवाला।

प्रत्याश्रय–संज्ञा पुं० पनाह लेने की जगह।

प्रत्यासन्न–वि० समीपवर्त्ती। निकटस्थ। पास रहनेवाला।

प्रत्याहार–संज्ञा पुं० इंद्रियनिग्रह। योग के आठ अंगों में से एक अंग, जिसमें इंद्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है।

प्रत्युक्ति–संज्ञा स्त्री० जवाब। उत्तर।

प्रत्युज्जीवन–संज्ञा पुं० पुनर्जीवन। मृत प्राणी का पुनः जी उठना।

प्रत्युत–अव्य० बल्कि। वरन्। इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर–संज्ञा पुं० उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर। जवाब का जवाब।

प्रत्युत्थान–संज्ञा पुं० अभ्युत्थान। पुनः उन्नति। किसी बड़े के आने पर आसन छोड़ कर खड़ा हो जाना।

प्रत्युत्पन्न–वि० १. जो फिर से या ठीक समय पर उत्पन्न हो। प्रस्तुत। २. प्रतिभावान्। यौ०–प्रत्युत्पन्नमति=जो तुरंत ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले। तत्पर बुद्धिवाला। तत्परज्ञानी।

प्रत्युद्गमन–संज्ञा पुं० अभ्युत्थान।

प्रत्युद्गमनीय–वि० पूज्य।

प्रत्युपकार–संज्ञा पुं० वह उपकार, जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।

प्रत्युपकारी–संज्ञा पुं० उपकार का बदला देनेवाला।

प्रत्यूष–संज्ञा पुं० १. प्रभात। प्रातःकाल। २. सूर्य।

प्रत्यूह–संज्ञा पुं० विघ्न। बाधा। रुकावट।

प्रत्येक–वि० एक-एक। हर एक। समस्त।

प्रथन–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का गुल्म। विस्तार। २. प्रकाश में लाने की क्रिया या भाव।

प्रथम–वि० पहला। अव्वल। सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

क्रि० वि० पहले। आगे। पेश्तर।

प्रथम कारक–संज्ञा पुं० व्याकरण में "कर्त्ता" कारक।

प्रथमतः–क्रि० वि० पहले से। सबसे पहले।

प्रथम पुरुष–संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष" (व्याकरण)।

प्रथमा–संज्ञा स्त्री० व्याकरण का कर्त्ता कारक। पहली विभक्ति। मदिरा। शराब (तांत्रिक)।

प्रथमार्द्ध–संज्ञा पुं० पूर्वार्द्ध।

प्रथमी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रथा–संज्ञा स्त्री० १. रीति। रिवाज। प्रणाली। नियम। २. लम्बा-चौड़ा। विस्तृत। ३. प्रसिद्धि।

प्रद–वि० देनेवाला। दाता। (यौगिक में) जैसे, आनन्दप्रद।

प्रदक्षिण–संज्ञा पुं० देवमूर्ति आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा। चारों ओर भ्रमण।

प्रदक्षिणा–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण"। परिक्रमा।

प्रदत्त–वि० दिया हुआ।

प्रदर–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों का एक रोग। २. तीर। ३. तोड़ने-फोड़ने का भाव।

प्रदर्शक–संज्ञा पुं० १. दिखलानेवाला। दर्शक। प्रकाशक। २. गुरु।

प्रदर्शन–संज्ञा पुं० दिखलाने का काम। असन्तोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट करने के लिए जुलूस निकालने या नारे लगाने आदि का कार्य। दे० "प्रदर्शनी"।

प्रदर्शनी–संज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ तरह-तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिए रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदर्शित–वि० जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

प्रदाता–वि० दाता। देनेवाला।

प्रदान–संज्ञा पुं० १. देने की क्रिया। २. दान। बखशिश। ३. विवाह। ४. मंगनी।

प्रदायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। दाता। दानी।

प्रदायी–संज्ञा पुं० दे० "प्रदायक"।
प्रदाह–संज्ञा पुं० ज्वर या और विकार से शरीर में होनेवाली जलन। दाह।
प्रदिशा–संज्ञा स्त्री० दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।
प्रदिष्ट–वि० जिसके सम्बन्ध में आज्ञा, नियम आदि देकर यह बताया गया हो कि यह इस प्रकार से होना चाहिए। निर्देशित। (अंग्रे०—प्रेसक्राइब्ड)
प्रदीप–संज्ञा पुं० १. दीपक। दीआ। चिराग। २. प्रकाश। रोशनी।
प्रदीपक–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।
प्रदीपति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदीप्ति"।
प्रदीपन–संज्ञा पुं० १. प्रकाश या उजाला करना। २. उज्ज्वल करना। चमकाना।
प्रदीपिका–संज्ञा स्त्री० छोटी लालटेन।
प्रदीप्त–वि० जगमगाता हुआ। प्रकाशवान्। चमकीला। उज्ज्वल।
प्रदीप्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। रोशनी। २. आभा। चमक। कान्ति। प्रभा।
प्रदुमन*–संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।
प्रदेय–वि० देने योग्य।
प्रदेश–संज्ञा पुं० शासन या भाषा आदि की दृष्टि से किसी देश का विभाग। अंग। अवयव। प्रान्त। सूबा। स्थान। क्षेत्र।
प्रदेशी, प्रदेशीय, प्रादेशिक–वि०प्रदेशसम्बन्धी।
प्रदोष–संज्ञा पुं० १. संध्या-काल। सूर्य के अस्त होने का समय। सूर्यास्त के पश्चात् दो मुहूर्तकाल। गोधूलि-बेला। दिन और रात के बीच की सन्धि। २. त्रयोदशी का व्रत, जिसमें संध्या-समय शिव का पूजन करके भोजन करते हैं। ३. बड़ा दोष। भारी अपराध। ४. दुष्ट।
प्रद्युम्न–संज्ञा पुं० १. कामदेव। कंदर्प। २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र।
प्रद्योत–संज्ञा पुं० १. रश्मि। किरण। २. दीप्ति। आभा। चमक।
प्रद्वेष–संज्ञा पुं० १. शत्रुता। २. घृणा।
प्रधर्षण–संज्ञा पुं० १. अपमान। २. आक्रमण। ३. बलात्कार।
प्रधर्षित–वि० जिसका अनादर किया गया हो। जिस पर आक्रमण किया गया हो।
प्रधान–वि० [संज्ञा स्त्री० प्रधानता] सबसे बड़ा और मुख्य। सबसे ऊँचे पदवाला व्यक्ति।
संज्ञा पुं० १. सबसे बड़ा नेता या सरदार। २. मंत्री। ३. मुख्य अधिकारी। ४. किसी संस्था का चुना हुआ अध्यक्ष।
प्रधानता–संज्ञा स्त्री० प्रधान होने का भाव।
प्रध्वंस–संज्ञा पुं० १. नाश। विनाश। नष्ट-भ्रष्ट। २. किसी वस्तु की अतीत अवस्था।
प्रध्वंसक–वि० विनाशक।
प्रध्वंसी–संज्ञा पुं० नाश करनेवाला।
प्रध्वस्त–वि० नष्ट-भ्रष्ट।
प्रन*†–संज्ञा पुं० दे० "प्रण"।
प्रनति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रणति"। प्रणिपात। नम्रता।
प्रनाम†–संज्ञा पुं० दे० "प्रणाम"।
प्रनामी*†–संज्ञा पुं० प्रणाम करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० वह दक्षिणा, जो गुरु, ब्राह्मण आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय देते हैं।
प्रपंच–संज्ञा पुं० १. आडंबर। ढोंग। २. संसार। सृष्टि। ३. विस्तार। फैलाव। भव-जाल। ४. दुनिया का जंजाल। झगड़ा। झमेला। ५. छल। धोखा।
प्रपंची–वि० १. छली। कपटी। ढोंगी। २. प्रपंच रचनेवाला।
प्रपत्ति–संज्ञा स्त्री० अनन्य भक्ति या शरणागत होने की भावना।
प्रपन्न–वि० प्राप्त। आया हुआ। आश्रित। शरणागत।
प्रपात–संज्ञा पुं० १. पहाड़ या ऊँचे स्थान से गिरनेवाली जलधारा। झरना। २. बहुत ऊँचा स्थान (चट्टान आदि), जहाँ से कोई वस्तु सीधे गिरे। ३. ऊँचाई से सहसा नीचे गिरना।
प्रपितामह–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म। परमेश्वर।
प्रपीड़क–संज्ञा पुं० बहुत कष्ट देनेवाला।

प्रपीड़न–संज्ञा पुं० [वि० प्रपीड़ित] बहुत कष्ट देना।
प्रपुंज–संज्ञा पुं० झुंड। समूह।
प्रपुत्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र। पोता।
प्रपौत्र–संज्ञा पुं० परपोता। पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।
प्रफुलना*–क्रि० अ० १. फूलना। खिलना। २. प्रसन्न होना।
प्रफुला*–संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी। कुँई। कमलिनी। कमल।
प्रफुलित*–वि० १. खिला हुआ। कुसुमित। २. आनंदित। प्रफुल्ल।
प्रफुल्ल–वि० १. विकसित। खिला हुआ। २. आनंदित। प्रसन्न।
प्रबंध–संज्ञा पुं० १. कोई काम ठीक तरह से पूरा करने की व्यवस्था। उपाय। आयोजन। व्यवस्था। इंतजाम। बंदोबस्त। २. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। ३. निबंध।
प्रबंधकर्त्ता–संज्ञा पुं० प्रबंध या इन्तजाम करनेवाला। व्यवस्थापक।
प्रबंधकारिणी–संज्ञा पुं० प्रबंध या इन्तजाम करनेवाली समिति। किसी सभा या समारोह का आयोजन करनेवाली समिति।
प्रबल–वि० [स्त्री० प्रबला] प्रचंड। बलवान्। तेज। घोर। महान्।
प्रबला–संज्ञा स्त्री० बहुत बलवती।
प्रबुद्ध–वि० १. सचेत। जागृत। सावधान जागा हुआ। २. विकसित। खिला हुआ संज्ञा पुं० पंडित। ज्ञानी।
प्रबोध–संज्ञा पुं० [वि० प्रबोधक] १. जागना २. सावधानी। ३. यथार्थ ज्ञान। पूर्णबोध ४. ढाढ़स। तसल्ली। दिलासा। सान्त्वना ५. चेतावनी।
प्रबोधक–वि० जगानेवाला। चेतानेवाला। ज्ञान देनेवाला। सान्त्वना देनेवाला।
प्रबोधन–संज्ञा पुं० [वि० प्रबोधित, प्रबुद्ध] १. जागरण। जागना। २. जगाना। सावधान करना। ३. यथार्थ ज्ञान। बोध। चेत। ४. ज्ञान देना। जताना। ५. सान्त्वना।
प्रबोधना*–क्रि० स० १. जगाना। सचेत करना। सावधान करना। २. समझाना-बुझाना। पाठ पढ़ाना। सिखाना। पट्टी पढ़ाना। ३. ढाढ़स देना। तसल्ली देना।
प्रबोधिनी–वि० प्रबोध या ज्ञान करानेवाली। संज्ञा स्त्री० देवोत्थान या कार्त्तिक शुक्ला एकादशी।
प्रभंजन–संज्ञा पुं० १. आँधी। प्रचंड वायु। २. तोड़-फोड़। नाश।
प्रभव–संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति-कारण। २. जन्म-स्थान। ३. जन्म। उत्पत्ति। ४. सृष्टि। संसार। ५. पराक्रम।
प्रभवन–संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति। २. मूल। ३. अधिष्ठान।
प्रभविष्णु–वि० [संज्ञा स्त्री० प्रभविष्णुता] प्रभावशाली।
प्रभा–संज्ञा स्त्री० प्रकाश। आभा। चमक।
प्रभाउ*–संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।
प्रभाकर–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. समुद्र।
प्रभाकीट–संज्ञा पुं० जुगनू।
प्रभात–संज्ञा पुं० प्रातःकाल। सबेरा।
प्रभातफेरी–संज्ञा स्त्री० प्रचार आदि के लिए बहुत सबेरे दल बाँधकर गाते और नारे लगाते हुए नगर में चक्कर लगाना।
प्रभाती–संज्ञा स्त्री० प्रातःकाल गाया जानेवाला गीत। सबेरे गाई जानेवाली एक रागिनी।
प्रभामंडल–संज्ञा पुं० देवताओं या दिव्य पुरुषों आदि के मुख के चारों ओर का वह आलोक, जो चित्रों या मूर्तियों में दिया जाता है।
प्रभाव–संज्ञा पुं० सामर्थ्य। शक्ति। असर। दबाव। जोर। पहुँच।
प्रभावक–वि० प्रभाव करने या डालनेवाला।
प्रभावती–संज्ञा स्त्री० सूर्य्य की पत्नी। वि० प्रभाववाली।
प्रभावित–वि० जिस पर प्रभाव या असर पड़ा हो।
प्रभावी–वि० प्रभाव या असर डालनेवाला। जोरदार। शक्तिशाली।
प्रभाषी–वि० अच्छी तरह से बोलनेवाला।

प्रभास—संज्ञा पुं० १. दीप्ति । ज्योति । कान्ति । २. एक प्राचीन तीर्थ । प्रभास-पट्टन (सोमनाथ) ।

प्रभासना*—क्रि० अ० भासित होना । प्रकाशित होना । दिखाई या समझ पड़ना ।

प्रभु—संज्ञा पुं० १. स्वामी । मालिक । नायक । अधिपति । २. ईश्वर । भगवान् ।

प्रभुता—संज्ञा स्त्री० १. महत्त्व । वैभव । बड़ाई । २. हुकूमत । शासनाधिकार । ३. ऐश्वर्य । ४. स्वामित्व । मालिकपन ।

प्रभुताई†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रभुता" ।

प्रभुत्व—संज्ञा पुं० प्रभुता ।

प्रभुभक्त—वि० नमकहलाल । स्वामी का हितैषी ।

प्रभू*—संज्ञा पुं० दे० "प्रभु" ।

प्रभूत—वि० १. प्रचुर । बहुत । २. उन्नत । ३. उत्पन्न । उद्भूत ।
संज्ञा पुं० पंचभूत । तत्त्व ।

प्रभूति—संज्ञा १. स्त्री० उत्पत्ति । २. शक्ति । ३. अधिकता ।

प्रभृति—अव्य० इत्यादि । आदि । वगैरह ।

प्रभेद—संज्ञा पुं० १. भेद । भिन्नता । अन्तर । पृथक्ता । २. गुप्त बात ।

प्रभ्रष्ट—वि० १. गिरा हुआ । २. टूटा हुआ ।

प्रमत्त—वि० [संज्ञा प्रमत्तता] उन्मत्त । मस्त । नशे में चूर । मतवाला । बावला । पागल । जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो ।

प्रमत्तता—संज्ञा स्त्री० पागलपन । मस्ती ।

प्रमथ—संज्ञा पुं० १. मथन करनेवाला । पीड़ा पहुँचानेवाला । २. शिव के एक प्रकार के गण या सेवक । ३. घोड़ा ।

प्रमथन—संज्ञा पुं० १. मथना । २. दुःख पहुँचाना । ३. वध करना । नाश करना ।

प्रमथनाथ—संज्ञा पुं० शिव ।

प्रमथालय—संज्ञा पुं० यंत्रणा का स्थान । नरक ।

प्रमथित—वि० खूब मथा हुआ ।

प्रमद—संज्ञा पुं० १. मतवालापन । २. हर्ष । आनंद । प्रसन्नता ।
वि० मत्त । मतवाला ।

प्रमदा—संज्ञा स्त्री० युवती । सुन्दर स्त्री ।

प्रमर्दन—संज्ञा पुं० १. भली भाँति दबाना । दमन करना । २. रौंदना । कुचलना ।
वि० खूब मर्दन करनेवाला ।

प्रमा—संज्ञा स्त्री० १. यथार्थ ज्ञान । भ्रमरहित ज्ञान । २. प्रमाण । ३. अनुभव । ४. नींव । ५. माप । नाप ।

प्रमाण—संज्ञा पुं० १. किसी बात को सिद्ध करनेवाली बात । सबूत । साक्षी । प्रतिपत्ति । २. सत्यता । सचाई । ३. प्रतीति । निश्चय । ४. मान । आदर । ५. प्रामाणिक बात या वस्तु । मानने की बात । ६. इयत्ता । हद । सीमा । ७. निदर्शन । दृष्टान्त । ८. प्रमाण-पत्र । ९. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है ।
वि० १. चरितार्थ । प्रमाणित । ठीक घटता हुआ । २. माना जानेवाला । ठीक । ३. बड़ाई आदि में बराबर ।
अव्य० पर्य्यन्त । तक ।

प्रमाणक—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिस पर प्रमाण के रूप में कोई लेख हो । प्रमाणपत्र ।

प्रमाणकर्त्ता—वि० किसी बात को प्रमाणित करनेवाला ।

प्रमाणकुशल—संज्ञा पुं० अच्छी तर्क करनेवाला ।

प्रमाणपत्र—संज्ञा पुं० वह कागज, जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो । (अंग्रे०—सर्टिफिकेट) । सनद ।

प्रमाणीकरण—संज्ञा पुं० यह लिखना कि अमुक बात या लेख ठीक और प्रामाणिक है ।

प्रमाणित—वि० प्रमाणों-द्वारा सिद्ध । निश्चित । साबित ।

प्रमाता—संज्ञा पुं० १. प्रमाणों-द्वारा सिद्ध करनेवाला । २. आत्मा या चेतन पुरुष । ३. साक्षी । द्रष्टा ।
संज्ञा स्त्री० दादी । पिता की माता ।

प्रमाद—संज्ञा पुं० भ्रम । भ्रान्ति । अभिमान आदि के कारण कुछ का कुछ समझना या करना ।

प्रमादी—वि० प्रमादयुक्त । घमंडी । भूल-चूक करनेवाला ।

प्रमान*—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण" ।

प्रमानना*—क्रि० स० १. प्रमाण मानना ।

ठीक समझना। २. प्रमाणित करना। साबित करना।

प्रमानी*–वि० दे० "प्रामाणिक"।

प्रमायु, प्रमायुक–वि० नाशवान। नश्वर।

प्रमार्जक–वि० हटानेवाला। साफ करनेवाला। पोंछनेवाला।

प्रमार्जन–संज्ञा पुं० १. धोना। पोंछना। २. हटाना।

प्रमित–वि० १. ज्ञात। अवगत। २. प्रमाणित। ३. परिमित। निश्चित। ४. थोड़ा। अल्प।

प्रमीति–संज्ञा पुं० १. नाश। बर्बादी। २. मनुष्य का स्वाभाविक रूप से मरना। साधारण मृत्यु।

प्रमीलन–संज्ञा पुं० निमीलन। मूंदना।

प्रमीला–संज्ञा स्त्री० १. तंद्रा। २. थकावट। शिथिलता।

प्रमुख–वि० १. प्रथम। पहला। श्रेष्ठ। प्रधान। २. प्रतिष्ठित। मान्य।
अव्य० इत्यादि। वगैरह।
संज्ञा पुं० १. आदि। आरम्भ। २. समूह।

प्रमुद–वि० दे० "प्रमुदित"। प्रसन्न।
संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद"।

प्रमुदित–वि० प्रसन्न। हर्षयुक्त।

प्रमेय–वि० १. प्रमाण का विषय या साध्य। २. जिसका नाम बताया जा सके। प्रतिपादन करने योग्य। ३. निर्धारणीय।
संज्ञा पुं० १. प्रमाण-द्वारा बोधनीय। २. यथार्थ ज्ञान का विषय। ३. परिच्छेद।

प्रमेह–संज्ञा पुं० एक रोग, जिसमें मूत्र-मार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएं निकला करती हैं।

प्रमोक्ष–संज्ञा पुं० मुक्ति। त्याग।

प्रमोचन–संज्ञा पुं० १. उद्धार करने का कार्य। २. त्याग।

प्रमोद–संज्ञा पुं० आनंद। हर्ष। प्रसन्नता।

प्रमोदा–संज्ञा स्त्री० सांख्य में आठ•सिद्धियों में से एक।

प्रमोदी–वि० हर्षजनक। हर्षयुक्त।

प्रमोह–संज्ञा पुं० मोह।
पुं० मोहित करना।
पुं० मोहजनक।

प्रयंक*–संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

प्रयंत*–अव्य० दे० "पर्यंत"।

प्रयत–वि० १. पवित्र। २. नियमित। ३. तत्पर। ४. नम्र। ५. प्रयत्नशील।

प्रयतात्मा–वि० जितेन्द्रिय।

प्रयति–संज्ञा स्त्री० संयम।

प्रयत्न–संज्ञा पुं० १. प्रयास। चेष्टा। यत्न। कोशिश। उद्योग। उद्देश्यपूर्ति के लिए की जानेवाली क्रिया। २. प्राणियों की क्रिया। जीवों का व्यापार (न्याय)। ३. वर्णों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया (व्याकरण)।

प्रयत्नवान्–वि० [स्त्री० प्रयत्नवती] प्रयत्न में लगा हुआ। प्रयत्नशील।

प्रयाग–संज्ञा पुं० गंगा-यमुना के संगम पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ। इलाहाबाद। उत्तराखण्ड में देवप्रयाग, कर्ण प्रयाग, विष्णु-प्रयाग और नन्द प्रयाग हैं।

प्रयागवाल–संज्ञा पुं० प्रयाग का पंडा। संगम के तट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण।

प्रयाण–संज्ञा पुं० १. प्रस्थान। गमन। यात्रा। २. युद्धयात्रा। चढ़ाई। हमला। ३. यह लोक छोड़ (मरकर) स्वर्ग या परलोक जाना।

प्रयाणकाल–संज्ञा पुं० १. गमन-काल। २. यात्रा का समय। ३. मरण-काल।

प्रयात–वि० १. गत। २. मृत। ३. सोया हुआ।

प्रयापण–संज्ञा पुं० १. प्रस्थान कराना। भगाना। २. आगे जाना।

प्रयास–संज्ञा पुं० १. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। चेष्टा। २. श्रम। मेहनत।

प्रयुक्त–वि० १. प्रयोग किया गया। २. अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। ३. व्यवहृत।

प्रयुत–संज्ञा पुं० दस लाख की संख्या।
वि० मिला-जुला। सहित। अस्पष्ट।

प्रयुत्सु–संज्ञा पुं० १. योद्धा। २. संन्यासी। ३. इन्द्र। ४. वायु।

प्रयोक्ता–संज्ञा पुं० १. प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। २. ऋण देनेवाला। महाजन। सूत्रधार।

प्रयोग–संज्ञा पुं० १. व्यवहार। २. किसी काम

में लगना । ३. साधन । ४. आयोजन । ५. बरता जाना । क्रिया का विधान । अमल । ६. मारण, मोहन आदि बारह तांत्रिक उपचार या साधन । ७. अभिनय । नाटक का खेल । ८. यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि । ९. पद्धति । १०. निदर्शन । दृष्टांत ।

प्रयोगातिशय–संज्ञा पुं० नाटक में प्रस्तावना का एक भेद ।

प्रयोगी–संज्ञा पुं० प्रयोग करनेवाला ।

प्रयोजक–संज्ञा पुं० १. प्रयोगकर्त्ता । अनुष्ठान करनेवाला । काम में लगानेवाला । २. प्रेरक । ३. प्रदर्शक ।

प्रयोजन–संज्ञा पुं० १. कार्य । काम । २. अर्थ । अभिप्राय । उद्देश्य । मतलब । आशय । ३. व्यवहार । उपयोग ।

प्रयोजनवती लक्षणा–संज्ञा स्त्री० प्रयोजन-द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करनेवाली लक्षणा ।

प्रयोजनीय–वि० काम का । मतलब का । काम में लगने योग्य ।

प्रयोज्य–वि० प्रयोग के योग्य । काम में लाने लायक़ ।

संज्ञा पुं० १. नौकर । २. किसी काम में लगाने का धन ।

प्ररोचन–संज्ञा पुं० १. रुचि उत्पन्न करना २. मोहित करना । ३. उत्तेजित करना

प्ररोपन–संज्ञा पुं० चढ़ाना । ऊपर उठाना

प्ररोह–संज्ञा पुं० १. आरोह । चढ़ाव २. उगना । उत्पत्ति । ३. अँखुवा अंकुर ।

प्ररोहण–संज्ञा पुं० १. दे० "प्ररोह" । आरोह । चढ़ाव । २. जमना । उगना ।

प्रलंब–वि० १. लटकता या टँगा हुआ । २. लंबा । ३. निकला या टिका हुआ ।

संज्ञा पुं० १. लटकाव । झुलाव । २. शाखा । डाल । ३. पयोधर ।

प्रलंबन–संज्ञा पुं० सहारा । अवलंबन ।

प्रलंबी–वि० [स्त्री० प्रलंबिनी] १. दूर तक लटकनेवाला । लम्बा । २. सहारा लेनेवाला ।

प्रलपन–संज्ञा पुं० १. कथन । बकना । २. पश्चात्ताप ।

प्रलयंकर–वि० [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलयकारी । सर्वनाशकारी । विनाशक ।

प्रलय–संज्ञा पुं० १. सृष्टि का नाश । संसार का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, जिसके बाद फिर नयी सृष्टि होती है । कल्पान्त । २. लय को प्राप्त होना । मिट जाना । ३. साहित्य में एक सात्त्विक भाव, जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्व स्मृति का लोप हो जाता है । ४. बेहोशी । मूर्च्छा ।

प्रलयकर–वि० दे० "प्रलयंकर" ।

प्रलाप–संज्ञा पुं० [वि० प्रलापी] १. कहना । बकना । २. व्यर्थ बकवाद । निरर्थक कथन । पागलों की-सी बड़बड़ ।

प्रलापी–वि० प्रलाप करनेवाला ।

प्रलीन–वि० समाया हुआ ।

प्रलीनता–संज्ञा स्त्री० प्रलय । नाश । तिरोभाव । चेष्टानाश ।

प्रलेखक–संज्ञा पुं० लेख, दस्तावेज या प्रार्थना-पत्र लिखनेवाला । अर्जीनवीस या कातिब ।

प्रलेखन–संज्ञा पुं० लेख, दस्तावेज या प्रार्थना-पत्र आदि लिखने का काम ।

प्रलेप–संज्ञा पुं० अंग पर लगाने की गीली दवा आदि । लेप (पुल्टिस) ।

प्रलेपन–संज्ञा पुं० [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य] लेप करने की क्रिया ।

प्रलेह–संज्ञा पुं० चाटने योग्य वस्तु । एक तरह का शोरवा (मांस का) (अंग्रे०—सूप)

प्रलोभ, प्रलोभन–संज्ञा पुं० [वि० प्रलोभक] १. लोभ । लालच । २. लोभ की वस्तु । ३. लालच देना ।

प्रलोभित–वि० मुग्ध । ललचाया हुआ ।

प्रलोभी–वि० लालची ।

प्रवंचक–संज्ञा पुं० धोखेबाज । ठग ।

प्रवंचन–संज्ञा पुं० दे० "प्रवंचना" ।

प्रवंचना–संज्ञा स्त्री० [वि० प्रवंचक] छल । धूर्तता । ठगी ।

प्रवंचित–वि० [स्त्री० प्रवंचिता] जो ठगा गया हो ।

प्रवक्ता–संज्ञा पुं० १. अच्छी भाँति बोलने या

कहनेवाला। किसी की ओर से कहनेवाला। २. वेद आदि का उपदेशक।

प्रवचन—संज्ञा पुं० [वि० प्रवचनीय] अच्छी तरह समझाकर कहना। उपदेश। धार्मिक या नैतिक बातों की जबानी व्याख्या।

प्रवण—संज्ञा पुं० १. नीची भूमि। ढाल। उतार। २. चौराहा। ३. पेट। उदर। ४. क्षण। ५. आहुति।
वि० १. ढालुवाँ। जो क्रमशः नीचा होता गया हो। झुका हुआ। नत। २. अनुकूल। ३. प्रवृत्त। रत। ४. नम्र। विनीत। ५. उदार।

प्रवणता—संज्ञा स्त्री० प्रवण होने का भाव।

प्रवत्स्यत्पतिका—संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रवत्स्यत्पतिका"।

प्रवर—वि० श्रेष्ठ। मुख्य। बड़ा।
संज्ञा पुं० १. किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष-विशेष प्रवर्त्तक मुनि। २. संतति। वंश।

प्रवर्त—संज्ञा पुं० १. कार्यारंभ। ठानना। नियुक्त। तत्पर। २. एक प्रकार के बादल।

प्रवर्त्तक—संज्ञा पुं० १. आरंभ करनेवाला। कार्य चलानेवाला। संचालक। २. प्रेरक। प्रवृत्त करनेवाला। ३. उभारनेवाला। उत्तेजक। ४. निकालने या ईजाद करनेवाला। ५. न्याय करनेवाला। पंच। ६. नाटक में प्रस्तावना का वह भेद, जिसमें सूत्रधार वर्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी से सम्बद्ध पात्र का प्रवेश हो।

प्रवर्त्तन—संज्ञा पुं० [वि० प्रवर्त्तित, प्रवर्त्तनीय, प्रवर्त्य] कार्य आरंभ करना। ठानना। काम को चलाना। प्रचार करना। किसी को अनुचित कार्य करने के लिए उकसाना या प्रेरित करना।

प्रवर्त्तना—संज्ञा स्त्री० प्रवृत्त करने की क्रिया। उत्तेजना। नियोजन।

प्रवर्त्तित—वि० १. आरब्ध। चलाया हुआ। २. उत्पन्न। ३. उत्तेजित। ४. प्रेरित।

प्रवर्द्धन—संज्ञा पुं० वृद्धि।

प्रवसन—संज्ञा पुं० विदेश जाना। बाहर रहना।

प्रवहण—संज्ञा पुं० १. कन्या को विवाह में देना। कन्यादान। २. बहली। डोली। ३. नाव।

प्रवहमान—वि० जोरों से बहता या चलता हुआ।

प्रवाक्—संज्ञा पुं० घोषणा करनेवाला।

प्रवाच्य—वि० १. निन्दनीय। २. अच्छी तरह कहने योग्य।

प्रवाद—संज्ञा पुं० १. बात चीत। २. जनश्रुति। अफवाह। ३. अपवाद। झूठी बदनामी।

प्रवारण—संज्ञा पुं० मनाही। निषेध।

प्रवाल—संज्ञा पुं० १. विद्रुम। मूँगा। २. किसलय। कोंपल।

प्रवास—संज्ञा पुं० १. स्वदेश छोड़कर दूसरे देश में रहना। २. विदेश में रहना।

प्रवासन—संज्ञा पुं० देशान्तर भेजना। देश-निकाला।

प्रवासित—वि० देश से निकाला हुआ। निष्कासित।

प्रवासी—वि० १. परदेश में रहनेवाला। परदेसी। २. यात्री।

प्रवाह—संज्ञा पुं० १. धारा। जलस्रोत। बहाव। २. पानी की गति। ३. झुकाव। प्रवृत्ति। ४. काम का जारी रहना। ५. क्रम। सिलसिला। तार।

प्रवाहक—संज्ञा स्त्री० १. जोर से चलाने या बहानेवाला। अच्छी तरह से वहन करनेवाला। २. हाँकनेवाला। गाड़ीवान।

प्रवाहित—वि० बहता हुआ।

प्रवाही—वि०[स्त्री० प्रवाहिनी]१. बहानेवाला। २. बहनेवाला। द्रव। तरल।

प्रविधान—संज्ञा पुं० विधान-सभा के द्वारा बनाया गया विधान।

प्रविष्ट—वि० घुसा हुआ। प्रवेश किया हुआ।

प्रविसना—*क्रि० अ० घुसना। पैठना। अन्दर जाना।

प्रवीण—वि० [संज्ञा प्रवीणता] निपुण। चतुर। दक्ष। होशियार। कुशल।

प्रवीणता—संज्ञा स्त्री० निपुणता। चतुराई।

प्रवीर–वि० योद्धा । बहादुर । शूरवीर ।
प्रवृत्त–वि० उद्यत । तत्पर । तैयार ।
प्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. मन की लगन । लगाव । २. काम में लगने की इच्छा । अभिरुचि । झुकाव । ३. प्रवाह । बहाव । ४. न्याय में एक यत्न-विशेष । ५. प्रवर्तन । कार्य चलना । ६. सांसारिक विषयों का ग्रहण । निवृत्ति का उलटा ।
प्रवृद्ध–वि० १. खूब बढ़ा हुआ । विस्तृत । २. प्रौढ़ । पक्का । मजबूत ।
संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक ।
प्रवेश–संज्ञा पुं० १. भीतर जाना । घुसना । पैठना । २. पहुँच । गति । जानकारी ।
प्रवेशक–संज्ञा पुं० १. प्रवेश करने या करानेवाला । २. नाटकों में वह अंश, जिसमें बीच की किसी घटना का परिचय केवल बातचीत से कराया जाता है ।
प्रवेशन–संज्ञा पुं० १. पैठना । प्रवेश करना । २. सिंहद्वार । मुख्य द्वार ।
प्रवेशपत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र, जिसे दिखलाने पर किसी स्थान में प्रवेश करने का अधिकार हो (पास या टिकट) ।
प्रवेशशुल्क–संज्ञा पुं० वह शुल्क (फीस), जो कहीं पर (संस्था आदि) सम्मिलित होने के लिए देना पड़ता है । किसी स्थान में प्रवेश करने के लिए दिया जानेवाला शुल्क (फीस) ।
प्रवेशिका–संज्ञा स्त्री० १. प्रवेशपत्र या चिह्न । २. प्रवेश के लिए दिया जानेवाला धन । ३. दाखिला ।
प्रव्रजन–संज्ञा पुं० संन्यास लेना ।
प्रव्रजित–वि० संन्यासी ।
प्रव्रज्या–संज्ञा स्त्री० संन्यास ।
प्रव्रज्यावसित–संज्ञा पुं० जो संन्यास लेने के बाद पुनः उससे च्युत हो गया हो ।
वि० प्रशंसा के योग्य ।
प्रशंसक–वि० १. प्रशंसा करनेवाला । २. खुशामदी । चापलूस ।
प्रशंसन–संज्ञा पुं० [वि० प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य] गुण-गान । सराहना । तारीफ करना ।
प्रशंसना*–क्रि० स० सराहना । गुणगान करना । तारीफ करना ।
प्रशंसनीय–वि० प्रशंसा के योग्य । श्रेष्ठ ।
प्रशंसा–संज्ञा स्त्री० [वि० प्रशंसित, प्रशंसनीय] बड़ाई । तारीफ । गुणगान ।
प्रशंसित–वि० [स्त्री० प्रशंसिता] जिसकी प्रशंसा की गई हो । सराहा हुआ ।
प्रशंस्य–वि० प्रशंसनीय ।
प्रशम–संज्ञा पुं० १. शमन । उपशम । शान्ति । २. निवृत्ति । ३. नाश ।
प्रशमन–संज्ञा पुं० १. शमन । शान्ति । २. विनाश । निवारण । ध्वंस । ३. वध । मारण । ४. प्रतिपादन ।
प्रशस्त–वि० १. प्रशंसनीय । २. सुन्दर । उत्तम । श्रेष्ठ । ३. भव्य । ४. विस्तृत ।
प्रशस्तपाद–संज्ञा पुं० वैशेषिक-दर्शन पर पदार्थ-धर्म-संग्रह नामक ग्रंथ के लेखक, एक प्राचीन आचार्य ।
प्रशस्ति–संज्ञा स्त्री० १. स्तुति । प्रशंसा । २. अभिनन्दन । चट्टानों या ताम्रपत्र आदि पर खोदी जानेवाली राजाज्ञा । ३. प्राचीन, पुस्तकों के आदि अथवा अंत की कुछ पंक्तियाँ जिनसे पुस्तक के रचयिता, विषय, रचना-काल आदि का परिचय मिलता हो ।
प्रशंस्य–वि० प्रशंसा के योग्य । उत्तम ।
प्रशांत–वि० १. स्थिर । निश्चल । २. शांत । अत्यन्त धीर ।
संज्ञा पुं० एक महासागर, जो एशिया और अमरीका के बीच में है । (अँग्रे०—पैसिफिक ओशन)
प्रशांति–संज्ञा स्त्री० १. पूर्ण शान्ति । २. स्थिरता । प्रशान्त या निश्चल होने का भाव ।
प्रशाखा–संज्ञा स्त्री० टहनी । पतली डाली । शाखा की शाखा ।
प्रशाखिका–संज्ञा स्त्री० छोटी टहनी ।
प्रशासन–संज्ञा पुं० [वि० प्रशासनिक] । राज्य-शासन का प्रबंध या व्यवस्था ।
प्रशासनिक–वि० राज्य-प्रबन्ध से सम्बन्ध रखनेवाला ।
प्रशिष्ट–वि० अनुशासन । आज्ञा । उपदेश ।

प्रशिष्य–संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य।
प्रशोषण–संज्ञा पुं० सोखना। सुखाना। चूसना।
प्रश्न–संज्ञा पुं० १. जिज्ञासा। पूछ-ताछ। सवाल। २. पूछने की बात। ३. विचारणीय विषय।
प्रश्नदूती–संज्ञा स्त्री० पहेली।
प्रश्नोत्तर–संज्ञा पुं० १. सवाल-जवाब। प्रश्न और उत्तर। संवाद। २. एक काव्यालंकार, जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।
प्रश्नोत्तरी–संज्ञा स्त्री० किसी विषय में प्रश्नों और उनके उत्तरों का संग्रह।
प्रश्रय–संज्ञा पुं० आश्रय। १. आश्रय-स्थान। २. टेक। आधार। सहारा। ३. विनय। नम्रता।
प्रश्रयी–वि० शिष्ट। सुजन। शान्त।
प्रश्राव–संज्ञा पुं० पेशाब। मूत्र।
प्रश्वास–संज्ञा पुं० १. नाक से बाहर निकलनेवाली हवा। श्वास (भीतर जानेवाली हवा) का उल्टा। २. नासिका से निकलनेवाली वायु। दीर्घ निःश्वास।
प्रष्टव्य–वि० पूछने योग्य। पूछने का। जो पूछना हो।
प्रष्टा–संज्ञा पुं० प्रश्नकर्त्ता। पूछनेवाला।
प्रष्ठ–वि० प्रधान। अग्रगामी। श्रेष्ठ।
प्रसंख्या–संज्ञा स्त्री० १. जोड़। मीजान। २. चिता।
प्रसंख्यान–संज्ञा पुं० सत्यज्ञान। ध्यान।
प्रसंग–संज्ञा पुं० १. संबंध। लगाव। संगति। अर्थ का मेल। विषय का लगाव। २. प्रस्ताव। विषयानुक्रम। प्रकरण। ३. विस्तार। ४. स्त्री-पुरुष का संयोग। ५. बात। विषय। वार्ता। ६. उपयुक्त संयोग। अवसर। मौका। ७. हेतु। कारण।
प्रसंधान–संज्ञा पुं० संधि।
प्रसंसना*–क्रि० स० प्रशंसा करना।
प्रसक्त–वि० १. संश्लिष्ट। २. प्रसंग-विशिष्ट। ३. अतिशय अनुरक्त। ४. प्राप्त। ५. उपस्थित।
प्रसक्ति–संज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति। २. आपत्ति। ३. व्याप्ति। ४. सम्पर्क।
प्रसन्न–वि० १. संतुष्ट। तुष्ट। २. खुश। प्रफुल्ल। हर्षित। ३. अनुकूल।
प्रसन्नता–संज्ञा स्त्री० १. हर्ष। आनंद। प्रफुल्लता। खुशी। २. सन्तोष। तुष्टि। ३. कृपा। अनुग्रह।
प्रसन्नमुख–वि० जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट हो।
प्रसन्नित*‡–वि० दे० "प्रसन्न"। आनन्दित। खुश।
प्रसर–संज्ञा पुं० १. विस्तार। २. तेजी। वेग। ३. समूह। ४. व्याप्ति। ५. प्रकर्ष। ६. प्रधानता। ७. प्रभाव। ८. युद्ध। ९. वीरता।
प्रसरण–संज्ञा पुं० [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १. आगे बढ़ना। खिसकना। सरकना। २. विस्तार। फैलाव। व्याप्ति। ३. काम में प्रवृत्त होना।
प्रसर्पण–संज्ञा पुं० १. प्रसरण। गमन। घुसना। २. सेना का चारों ओर फैलना। ३. रक्षा-स्थान। ४. गति।
प्रसर्पी–वि० गतिशील।
प्रसव–संज्ञा पुं० १. बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। २. जन्म। उत्पत्ति। ३. बच्चा। संतान।
प्रसवन–संज्ञा पुं० बच्चा जनना।
प्रसवना*–क्रि० स० सन्तान को जन्म देना। बच्चा जनना।
प्रसविनी–वि० प्रसव करनेवाली। जननेवाली। जन्म देनेवाली।
प्रसाद–संज्ञा पुं० १. प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। ३. देवता पर चढ़ाई गई वस्तु। बड़ों-द्वारा प्रसन्नतापूर्वक दी गई वस्तु। ४. भोजन। ५. काव्य का एक गुण, जिसमें भाषा स्पष्ट और सरल हो। जिसका भाव सुनते ही समझ में आ जाय। शब्दालंकार के अंतर्गत कोमला वृत्ति।
मुहा०–प्रसाद पाना=भोजन करना।
प्रसादक–वि० दयावान्। अनुग्रह करनेवाला।
प्रसादना*–संज्ञा स्त्री० सेवा।
क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना। राजी करना।

प्रसादनीय*–वि० प्रसन्न करने योग्य।
प्रसादी–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसाद"। देवताओं पर चढ़ाया हुआ पदार्थ।
प्रसाधक–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रसाधिका] १. कार्य का निर्वाह करनेवाला या पूरा करनेवाला। सम्पादन करनेवाला। २. सजावट का कार्य करनेवाला। दूसरे का शृंगार करनेवाला। ३. प्राचीन समय में राजाओं को वस्त्र पहनाने वाला।
प्रसाधन–संज्ञा पुं० १. शृंगार करना। सजाना। २. कार्य का सम्पादन। ३. शृंगार की सामग्री। सजावट का सामान। ४. वेश रचना। ५. बाल सँवारना।
प्रसाधिका–संज्ञा स्त्री० शृंगार करनेवाली दासी। रानियों को गहने-कपड़े पहनाने तथा शृंगार करनेवाली दासी।
प्रसार–संज्ञा पुं० १. विस्तार। फैलाव। २. संचार। गमन। ३. निकास। निर्गम।
प्रसारण–संज्ञा पुं० [वि० प्रसारित, प्रसार्य] १. फैलाना। २. बढ़ाना।
प्रसारिणी–संज्ञा स्त्री० १. गंधप्रसारिणी लता। २. लाजवंती। लजालू।
प्रसारित–वि० फैलाया हुआ। विस्तृत।
प्रसारी–वि० फैलनेवाला।
प्रसिति–संज्ञा स्त्री० १. रस्सी। २. रश्मि। ३. ज्वाला।
प्रसिद्ध–वि० विख्यात। मशहूर। प्रतिष्ठित।
प्रसिद्धि–संज्ञा स्त्री० ख्याति। नाम होना। शोहरत।
प्रसीद–अव्य० प्रसन्न हो। कृपा करो।
प्रसुप्त–वि० १. गाढ़ी नींद में सोया हुआ। २. दबा या रुका हुआ।
प्रसुप्ति–संज्ञा स्त्री० गाढ़ी नींद। निद्रा।
प्रसू–संज्ञा स्त्री० माता। जननेवाली या पैदा करनेवाली।
प्रसूत–वि० [स्त्री० प्रसूता] उत्पन्न। पैदा। संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग, जो स्त्रियों को प्रसव के बाद होता है।
प्रसूता–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसे बच्चा हुआ हो। जच्चा।
प्रसूति–संज्ञा स्त्री० १. प्रसव। जनन। उद्भव। उत्पत्ति। जन्म। २. कारण। ३. प्रकृति। दक्ष की स्त्री।
प्रसूतिका–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसूता"।
प्रसूतिकागृह–संज्ञा पुं० प्रसव करने का स्थान।
प्रसून–संज्ञा पुं० १. फूल। पुष्प। २. फल।
प्रसृत–वि० विस्तृत। फैला हुआ। बढ़ा हुआ। विनीत। प्रेरित। नियुक्त। प्रचलित। लम्पट।
प्रसृति–संज्ञा स्त्री० [वि० प्रसृत] १. फैलाव। विस्तार। २. संतति। संतान।
प्रसृष्ट–वि० १. उत्पन्न। २. व्यक्त। ३. परित्यक्त।
प्रसेक–संज्ञा पुं० १. सींचना। २. छिड़काव। ३. निचोड़। ४. एक असाध्य रोग। जिरियान (सुश्रुत)।
प्रसेद*–संज्ञा पुं० दे० "प्रस्वेद"। पसीना।
प्रसेव–संज्ञा पुं० १. बीन की थैली। २. तूंबी।
प्रस्तर–संज्ञा पुं० १. पत्थर। पाषाण। २. पल्लव आदि की शय्या। ३. चमड़े की थैली। ४. बिछौना।
प्रस्तरकला–संज्ञा स्त्री० पत्थर को खोदने, गढ़ने और उस पर चित्र आदि बनाने की विद्या या कला।
प्रस्तरण–संज्ञा पुं० बिछाना। बिछौना।
प्रस्तर-मुद्रण–संज्ञा पुं० छापने की वह प्रक्रिया, जिसमें छापे जानेवाले लेख आदि एक विशेष प्रकार के कागज पर लिखकर पहले एक प्रकार के पत्थर पर उतारे जाते हैं; और तब उस पत्थर पर से छापे जाते हैं। (अंग्रे०—लिथोग्राफ)
प्रस्तरयुग–संज्ञा पुं० किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय, जब कि अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के बनते थे। पुरातत्त्व के अनुसार यह सभ्यता का आदि काल था। (अंग्रे०—स्टोन-एज)
प्रस्तार–संज्ञा पुं० १. फैलाव। विस्तार। २. आधिक्य। वृद्धि। ३. तह। परत। ४. सीढ़ी। ५. चौड़ी सतह। समतल। ६. छंदःशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से

प्रथम, जो छंदों के भेद की संख्याओं और रूपों को सूचित करता है।

स्ताव–संज्ञा पुं० १. विषय-परिचय। भूमिका। २. किसी कार्य के सम्बन्ध में पेश की गई योजना। सभा या समिति में स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया गया विषय। सुझाव। प्रस्तुत प्रसंग।

स्तावक–संज्ञा पुं० प्रस्ताव पेश करनेवाला। किसी कार्य में सहायता, धन या राय आदि देने का सुझाव रखनेवाला।

स्तावना–संज्ञा स्त्री० १. आरंभ। प्राक्कथन। भूमिका। २. नाटक में अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने का प्रसंग।

स्तावित–वि० जिसके सम्बन्ध में प्रस्ताव किया गया हो। कथित। उल्लेखित।

स्तुत–वि० १. उपस्थित। सामने आया हुआ। पेश किया गया। २. उद्यत। तैयार। ३. उक्त। ४. प्रासंगिक।

स्थ–संज्ञा पुं० १. पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि। २. प्राचीन काल का एक मान।

स्थान–संज्ञा पुं० १. प्रयाण। यात्रा। गमन। २. कपड़े आदि, जो यात्रा के मुहूर्त्त पर घर से निकालकर यात्रा की दिशा में कहीं पर रखवा दिए जाते हैं।

स्थानी–वि० जानेवाला।

स्थापन–संज्ञा पुं० [वि० प्रस्थापित, प्रस्थाप्य] १. भेजना। प्रस्थान कराना। २. स्थापन। स्थापित करना।

स्थापित–वि० १. अच्छी तरह स्थापित। २. प्रेषित। ३. प्रेरित।

स्थित–वि० १. ठहराया हुआ। टिका हुआ। २. दृढ़। ३. गया हुआ। गत।

स्फुट–वि० १. खिला हुआ। विकसित। २. प्रकट। स्पष्ट।

स्फुटित–वि० फूटकर निकला हुआ। खिला हुआ। विकसित।

स्फुरण–संज्ञा पुं० निकलना। खिलना। विकसित होना। प्रकाशित होना।

स्फोटन–संज्ञा पुं० १. सहसा खुलना या फूटना। फूटकर निकलना। स्फोट। २. खिलना। ३. ठोकना।

प्रस्रंस–संज्ञा पुं० पतन।

प्रस्रवण–संज्ञा पुं० १. टपक या गिरकर बहना। २. प्रपात। निर्झर। झरना। सोता।

प्रस्राव–संज्ञा पुं० १. बहाव। २. क्षरण। टपकना। ३. पेशाब।

प्रस्वेद–संज्ञा पुं० पसीना।

प्रहत–वि० १. हत। प्रताड़ित। २. प्रसारित। संज्ञा पुं० १. पाँसे का फेंकना। २. प्रहार।

प्रहर–संज्ञा पुं० दिन-रात के आठ भागों में से एक भाग। चार घड़ी। पहर।

प्रहरक–संज्ञा पुं० पहरे पर घंटा बजानेवाला व्यक्ति।

प्रहरखना*–क्रि० अ० हर्षित होना। आनंदित होना। प्रसन्न होना।

प्रहरण–संज्ञा पुं० १. हरण करना। २. अस्त्र। ३. युद्ध। ४. प्रहार। मारना। ५. फेंकना।

प्रहरणकलिका–संज्ञा स्त्री० चौदह वर्णों का एक छन्द।

प्रहरी–वि० पहरेदार। पहरा देनेवाला। चौकीदार। समय-समय पर घंटा बजाने वाला।

प्रहर्ष–संज्ञा पुं० अत्यन्त हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

प्रहर्षण–संज्ञा पुं० १. आनंद। २. एक अलंकार जिसमें बिना उद्योग के किसी के वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है।

प्रहर्षणी–संज्ञा स्त्री० १३ अक्षरों का एक छंद।

प्रहसन–संज्ञा पुं० १. परिहास। हँसी। दिल्लगी। २. चुहल। खिल्ली। ३. हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का काव्यमिश्रित नाट्य, जो रूपक के दस भेदों में से है।

प्रहार–संज्ञा पुं० चोट। मार। आघात। वार।

प्रहारक–वि० प्रहार करनेवाला। मारनेवाला।

प्रहारना*–क्रि० अ० १. मारना। आघात करना। २. मारने के लिए फेंकना।

प्रहारित†*–वि० जिस पर आघात या चोट की जाय। प्रताड़ित।

प्रहारी–वि० [स्त्री० प्रहारिणी] १. मारनेवाला। प्रहार करनेवाला। २. चलानेवाला। छोड़नेवाला। ३. नाशक।

प्रहास–संज्ञा पुं० १. अट्टहास। ठहाका। २. नट। शिव।
प्रहृत–वि० १. चलाया हुआ। फेंका हुआ। मारा हुआ। २. फैलाया या उठाया हुआ।
प्रहृष्ट–वि० १. सन्तुष्ट। २. आनन्दित।
प्रहृष्टमना–वि० १. सन्तुष्ट-चित्त। २. प्रसन्नचित्त।
प्रहेलिका–संज्ञा स्त्री० पहेली। बुझौवल।
प्रह्लाद–संज्ञा पुं० १. आमोद-प्रमोद। आनंद। २. हिरण्यकशिपु का पुत्र, जो ईश्वर-भक्त था।
प्रह्लादन–संज्ञा पुं० प्रसन्न करना। आह्लादित करना।
प्रांगण–संज्ञा पुं० मकान के बीच का खुला हुआ भाग। सहन। आँगन।
प्रांजन–संज्ञा पुं० १. अंजन या रंग। २. प्राचीन काल में बाण पर लगाया जानेवाला एक लेप।
प्रांजल–वि० १. सीधा। सरल। २. सच्चा। ३. बराबर। समान।
प्रांजलि–संज्ञा स्त्री० अंजलि।
प्रांत–संज्ञा पुं० [वि० प्रांतिक या प्रान्तीय] १. खंड। प्रदेश। २. अंत। शेष। ३. सीमा। छोर किनारा। सिरा। ४. ओर। दिशा। तरफ।
प्रांतर–संज्ञा पुं० १. दो प्रदेशों के बीच का वृक्षहीन निर्जन स्थान। २. उजाड़। जंगल। ३. पेड़ का खोखला अंश। कोटर।
प्रांतिक, प्रांतीय–वि० प्रांत से संबंध रखनेवाला। प्रान्त का।
प्रांतीयता–संज्ञा पुं० प्रांतीय होने का भाव। अपने प्रान्त का पक्षपात या मोह।
प्रांतवृत्ति–संज्ञा स्त्री० क्षितिज।
प्रांशु–वि० ऊँचा।
प्राइमर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] किसी भाषा की प्रारम्भिक पुस्तक। प्रारम्भिक पाठ्य पुस्तक।
प्राइवेट–वि० [अंग्रे०] निजी। व्यक्तिगत। गुप्त।
प्राइवेट सेक्रेटरी–[अंग्रे०] किसी बड़े आदमी या बड़े अधिकारी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि कार्य करनेवाला।
प्राकाम्य–संज्ञा पुं० १. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियों में से एक। २. प्रचुरता। अधिकता।
प्राकार–संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"। परकोटा। चहार दीवारी। शहरपनाह।
प्राकृत–वि० १. प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति-संबंधी। २. स्वाभाविक। नैसर्गिक। ३. भौतिक। लौकिक। ४. सहज।
संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन भारतीय भाषा।
प्राकृतिक–वि० १. प्रकृति से उत्पन्न। २. प्रकृति-संबंधी। प्रकृति का। ३. सहज। स्वाभाविक।
प्राक्–वि० पहले का। अगला।
संज्ञा पुं० पूर्व। पूरब।
प्राक्कथन–संज्ञा पुं० भूमिका। आरम्भ में केवल परिचय के लिए कही हुई संक्षिप्त बात।
प्राक्कर्म–संज्ञा पुं० पूर्वकर्म। भाग्य।
प्रागैतिहासिक–वि० जिस समय का इतिहास मिलता हो, उससे पहले का। इतिहास से पूर्वकाल का।
प्रागल्भ्य–संज्ञा पुं० १. प्रगल्भता। धृष्टता। २. प्रबलता। ३. चातुर्य। ४. साहस। ५. दर्प। गर्व। घमंड।
प्रागार–संज्ञा पुं० प्रासाद।
प्राग्वचन–संज्ञा पुं० मनु आदि महर्षियों के वचन।
प्राघात–संज्ञा पुं० भारी आघात।
प्राघूर्णिक–संज्ञा पुं० अतिथि। पाहुन। अभ्यागत।
प्राङ्मुख–वि० जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो। पूर्वाभिमुख।
प्राची–संज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा। पूरब।
प्राचीन–वि० पुराना। पुरातन।
प्राचीनता–संज्ञा स्त्री० पुरानापन।
प्राचीर–संज्ञा पुं० परकोटा। चहारदीवारी। शहरपनाह।
प्राचुर्य्य–संज्ञा पुं० बहुलता। अधिकता। प्रचुरता। बहुतायत।

प्राचेतस्–संज्ञा पुं० १. प्राचीन। २. राजा बर्हि के पुत्र। प्रचेतागण। ३. वाल्मीकि मुनि। ४. दक्ष। ५. वरुण का पुत्र। ६. विष्णु। ७. प्रचेत के वंशज।

प्राच्य–वि० १. पूर्व का। पूर्वीय। २. पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न। पूर्व-सम्बन्धी। ३. पुराना। प्राचीन।

प्राजापत्य–वि० १. प्रजापति-संबंधी। २. प्रजापति से उत्पन्न एक यज्ञ। ३. आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिसमें कन्या का पिता वर-कन्या से गार्हस्थ्य-धर्म के पालन का संकल्प कराता है।

प्राज्ञ–वि० चतुर। विद्वान्। पंडित्।

प्राज्ञत्व–संज्ञा पुं० चतुराई। बुद्धिमत्ता। पांडित्य।

प्राड्विवाक–संज्ञा पुं० १. न्यायाधीश। २. वकील।

प्राण–संज्ञा पुं० १. जीव। प्राण। जान। २. वायु ३. परम प्रिय। ४. दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारणकाल। ५. शरीर में जीव धारण करनेवाला वायु। श्वास। ६. बल। शक्ति। ७. अग्नि। ८. विष्णु।

यौ०–प्राण-पखेरू।

मुहा०–प्राण उड़ जाना=१. भयभीत होना। २. हक्का बक्का होना। ३. बहुत अधिक कष्ट होना। प्राण जाना, छूटना या निकलना=जीवन का अंत होना। मरना। प्राण डालना=जीवन प्रदान करना। प्राण त्यागना, तजना या छोड़ना=मरना। प्राण देना=मरना। किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना=१. किसी के किसी काम से बहुत दुःखी या रुष्ट होकर मरना। २. किसी को प्राणों से भी अधिक चाहना। प्राण निकलना=१. मर जाना। मरना। २. बहुत व्यग्र हो जाना। भयभीत होना। प्राण पयान होना=प्राण निकलना। प्राण या प्राणों पर बीतना=१. जीवन संकट में पड़ना। २. मर जाना। प्राण रखना=१. जीवन देना। जिलाना। २. जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। प्राण लेना या हरना=मार डालना। प्राण हारना=१. मर जाना। २. साहस टूट जाना।

प्राणअधार*†–संज्ञा पुं० दे० "प्राणाधार"।

प्राणकांत–संज्ञा पुं० १. प्रिय व्यक्ति। २. पति।

प्राणघात–संज्ञा पुं० वध। हत्या। मार डालना।

प्राणघ्न–वि० प्राण लेनेवाला।

प्राणच्छेद–संज्ञा पुं० हत्या।

प्राणजीवन–संज्ञा पुं० १. प्राणाधार। २. परम प्रिय।

प्राणत्याग–संज्ञा पुं० मर जाना।

प्राणदंड–संज्ञा पुं० मृत्युदंड। फाँसी। हत्या आदि अपराध के बदले में मौत की सजा।

प्राणद–वि० १. प्राण देनेवाला। २. जीवन की रक्षा करनेवाला। प्राणदाता। संज्ञा पुं० १. जल। २. रक्त। ३. जीवक वृक्ष। ४. विष्णु।

प्राणदाता–संज्ञा पुं० १. प्राण देनेवाला। २. प्राणरक्षक।

प्राणदान–संज्ञा पुं० १. किसी को मरने या मारे जाने से बचाना। प्राण-रक्षा करना। २. जीवन-दान। प्राण देना।

प्राणद्यूत–संज्ञा पुं० जान पर खेलना।

प्राणधन–वि० १. अत्यंत प्रिय। जीवनधन। २. पति।

प्राणधारी–वि० १. जीवधारी। २. साँस लेनेवाला। चेतन। प्राणयुक्त। संज्ञा पुं० प्राणी। जंतु। जीव।

प्राणनाथ–संज्ञा पुं० १. प्रियतम। प्यारा। २. पति। स्वामी।

प्राणनाश–संज्ञा पुं० मृत्यु। प्राणान्त।

प्राणनिग्रह–संज्ञा पुं० प्राणायाम।

प्राणपण–संज्ञा पुं० १. प्राणों की बाजी। २. जी-जान से उद्योग करना। पूरी शक्ति लगाकर किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए उद्योग करना।

प्राणपति–संज्ञा पुं० १. पति। स्वामी। २. प्रियतम। प्यारा।

प्राणप्यारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्राणप्यारी] १. प्रियतम। अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणपरिग्रह–संज्ञा पुं० जन्म लेना।

प्राणप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० मूर्ति को मंदिर आदि में स्थापित करते समय मंत्रों-द्वारा उसमें प्राण का आरोप करना।
प्राणप्रद—वि० १. जीवनदाता। प्राणदाता। २. स्वास्थ्य-वर्द्धक।
प्राणप्रिय—वि० [स्त्री० प्राणप्रिया] प्राणों के समान प्रिय। प्रियतम। अत्यन्त प्रिय। संज्ञा पुं० पति।
प्राणप्रीता—वि० प्रियतमा। प्राणों-सी प्रिय।
प्राणमय—वि० जिसमें प्राण हो। प्राणयुक्त।
प्राणमय कोश—संज्ञा पुं० वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा, जो पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है।
प्राणरंध्र—संज्ञा पुं० नाक। मुंह।
प्राणरोध या प्राणरोधन—संज्ञा पुं० प्राणायाम।
प्राणवल्लभ—संज्ञा पुं० १. अत्यन्त प्रिय। २. पति। स्वामी।
प्राणवायु—संज्ञा स्त्री० १. प्राण। जीव। २. स्वास्थ्यप्रद हवा।
प्राणशरीर—संज्ञा पुं० १. मनोमय सूक्ष्म शरीर। २. परमेश्वर।
प्राणसंकट—संज्ञा पुं० जान-जोखिम। जान का खतरा।
प्राणहर—वि० घातक।
संज्ञा पुं० विष।
प्राणहारी—वि० प्राणनाशक।
प्राणांत—संज्ञा पुं० मरण। मृत्यु।
प्राणांतक—वि० प्राण लेनेवाला। जान लेनेवाला। घातक।
प्राणाधार—वि० जिसपर प्राण निर्भर हो। अत्यन्त प्रिय। बहुत प्यारा।
संज्ञा पुं० पति।
प्राणाधिक—वि० प्राणों से अधिक प्रिय। प्राणाधार।
संज्ञा पुं० पति।
प्राणायाम—संज्ञा पुं० योग-शास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों में से चौथा। श्वास और प्रश्वास की गतियों को क्रमशः कम करना। श्वास को ब्रह्माण्ड में ले जाने की क्रिया।
प्राणिमात्र—संज्ञा पुं० समस्त जीवधारी।
प्राणी—वि० जिसमें प्राण हो। जीवधारी। संज्ञा पुं० १. जीव। जंतु २. मनुष्य। व्यक्ति।
प्राणेश, प्राणेश्वर—संज्ञा पुं० [स्त्री० प्राणेश्वरी] १. पति। स्वामी। २. प्रियतम।
प्रात—अव्य० सबेरे। तड़के।
संज्ञा पुं० सबेरा। प्रातःकाल।
प्रातः—संज्ञा पुं० सबेरा। प्रभात।
प्रातःकर्म—संज्ञा पुं० प्रातःकाल किया जानेवाला कार्य। जैसे—स्नान-सन्ध्या आदि।
प्रातःकाल—संज्ञा पुं० [वि० प्रातःकालीन] सबेरे का समय।
प्रातःकालीन—वि० प्रातःकाल-सम्बन्धी। सबेरे के समय का।
प्रातःसन्ध्या—संज्ञा स्त्री० सबेरे की जानेवाली संन्ध्या, उपासना आदि। सबेरे के समय ब्रह्मध्यान।
प्रातःस्मरण—संज्ञा पुं० सबेरे के समय ईश्वर का भजन करना।
प्रातःस्मरणीय—वि० प्रातःकाल स्मरण करने योग्य। श्रेष्ठ। पूज्य।
प्रातनाथ—संज्ञा पुं० सूर्य।
प्रातर्—अव्य० सबेरे।
प्रातरह्न—संज्ञा पुं० पूर्वाह्न।
प्रातराश—संज्ञा पुं० प्रातःकालीन भोजन। जलपान। कलेवा। नाश्ता।
प्रातिभागिक—वि० प्रतिभाग नामक शुल्क से सम्बन्ध रखनेवाला। (अंग्रे०-एक्साइज़)
प्रातिभाज्य—वि० जिसपर प्रतिभाग शुल्क लगता हो या लग सकता हो।
प्रातिलोमिक—वि० १. प्रतिलोम से उत्पन्न। २. प्रतिलोम-सम्बन्धी।
प्रात्यहिक—वि० दैनिक।
प्राथमिक—वि० [संज्ञा स्त्री० प्राथमिकता] पहले का। प्रारंभिक। आदिम।
प्राथम्य—संज्ञा पुं० प्रथमता।
प्रादुर्भाव—संज्ञा पुं० १. आविर्भाव। प्रकट होना। उदय। विकास। २. महिमा। ३. उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत—वि० प्रकटित। आविर्भूत। जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। उदय। उत्पन्न।
प्रादेश—संज्ञा पुं० १. प्रदेश। २. स्थान।

३. बालिश्त। तर्जनी और अँगूठे के बीच का भाग।

प्रादेशिक–वि० प्रदेश-संबंधी। किसी एक प्रदेश का। प्रान्तीय।
संज्ञा पुं० सामंत। सूबेदार।

प्रादोष–वि० प्रदोष-सम्बन्धी।

प्राधनिक–वि० लड़ाका।
संज्ञा पुं० युद्ध की सामग्री।

प्राधा–संज्ञा स्त्री० कश्यप की पत्नी। गन्धर्वों और अप्सराओं की जननी।

प्राधान्य–संज्ञा पुं० प्रधानता। मुख्यता। श्रेष्ठता।

प्राध्व–संज्ञा पुं० १. लम्बा मार्ग। बड़ा रास्ता। २. सवारी। ३. पहर। ४. विनय। ५. बंध।

प्राध्वन–संज्ञा पुं० १. सड़क। २. नदी का गर्भ।

प्राध्वर–संज्ञा पुं० वृक्ष की शाखा।

प्रान*–संज्ञा पुं० दे० "प्राण"।

प्रापण–संज्ञा पुं० [वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त] १. मिलना। प्राप्ति। पावना। २. पहुँचाना। ३. लाना। ४. प्रेरण।

प्रापणिक–संज्ञा पुं० सौदा बेचनेवाला।

प्रापति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति"।

प्रापना*†–क्रि० स० प्राप्त होना। मिलना

प्राप्त–वि० १. पाया हुआ। जो मिला हो २. समुपस्थित।

प्राप्तकाल–संज्ञा पुं० १. उपयुक्त अवसर उचित समय। २. मरण-योग्य काल
वि० जिसका काल आ गया हो। समयप्राप्त

प्राप्तव्य–वि० दे० "प्राप्य"। मिलनेवाला

प्राप्ति–संज्ञा स्त्री० १. उपलब्धि। मिलना २. पहुँच। ३. उपार्जन। आय। लाभ ४. नाटक का सुखद उपसंहार।

प्राप्य–वि० पाने योग्य। प्राप्त करने योग्य प्राप्तव्य। जो मिल सके। मिलनेवाला मिलने योग्य।

प्राबल्य–संज्ञा पुं० प्रबलता।

प्राभातिक–वि० प्रभात-सम्बन्धी।

प्राभृत–संज्ञा पुं० उपहार। नजर।

प्रामाणिक–वि० १. प्रमाणों-द्वारा सिद्ध। २. प्रमाणयुक्त। मानने योग्य। ३. यथार्थ। सत्य।

प्रामाण्य–संज्ञा पुं० १. प्रमाण का भाव। प्रमाणता। २. मान-मर्यादा।

प्रामादिक–वि० प्रमादजनित।

प्रामीसरी नोट–संज्ञा पुं० (अंग्रे०) हुंडी। सरकारी ऋणपत्र। वह लेख या पत्र, जिसपर लिखनेवाला अपना हस्ताक्षर करके यह प्रतिज्ञा करे कि मैं अमुक व्यक्ति को जब वह माँगे तब इतना रुपया दूँगा।

प्रामीत्य–संज्ञा पुं० ऋण।

प्राय–संज्ञा पुं० १. तुल्य। समान। जैसे, मृतप्राय। २. लगभग। जैसे प्रायद्वीप।

प्रायः–वि० १. विशेषकर। बहुधा। कभी-कभी। अकसर। २. लगभग। क़रीब-क़रीब।

प्रायद्वीप–संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग, जो तीन ओर जल से घिरा हो और एक ओर स्थल से मिला हो।

प्रायवृत्त–वि० अंडाकार।

प्रायशः–क्रि० वि० अक्सर। प्रायः।

प्रायश्चित्त–संज्ञा पुं० पाप दूर करने का कर्म। पापनाशक कर्म। शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रायश्चित्तिक–वि० १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त-संबंधी।

प्रायश्चित्ती–वि० १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रायिक–वि० १. प्रायः होनेवाला। साधारणतः सभी अवसरों पर सामान्य नियमों के अनुसार होता रहनेवाला। २. अनुमान से बहुत कुछ ठीक। लगभग।

प्रायोज्य–वि० प्रयोग में आनेवाला।

प्रायोगिक–वि० १. प्रयोग-सम्बन्धी। २. प्रयोग के रूप में किया जानेवाला।

प्रारंभ–संज्ञा पुं० आरंभ। शुरू। आदि।

प्रारंभिक–वि० प्राथमिक। प्रारम्भ का। शुरू का। आरंभ का।

प्रारब्ध–संज्ञा पुं० भाग्य। क़िस्मत। पूर्व-कृत कर्म।

प्रारब्धी–वि० भाग्यवान् ।
प्रार्थना–संज्ञा स्त्री० १. किसी से कुछ माँगना । याचना । २. निवेदन । विनय । विनती । *क्रि० स० प्रार्थना या विनती करना ।
प्रार्थनापत्र–संज्ञा पुं० निवेदनपत्र । अर्जी । वह पत्र, जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो ।
प्रार्थित–वि० जिसके लिए प्रार्थना की गई हो । निवेदित । माँगा गया ।
प्रार्थनीय–वि० प्रार्थना करने योग्य ।
प्रार्थी–वि० प्रार्थना या निवेदन करनेवाला ।
प्रालब्ध–संज्ञा पुं० दे० "प्रारब्ध" ।
प्रालेय–संज्ञा पुं० बर्फ । हिम । तुषार ।
प्रालेयरश्मि–संज्ञा पुं० चन्द्रमा ।
प्रालेयांशु–संज्ञा पुं० १. चन्द्रमा । २. कपूर ।
प्रालेयाद्रि–संज्ञा पुं० हिमालय ।
प्राविधानिक–वि० १. प्रविधान-सम्बन्धी । दे० "प्रविधान" । २. प्रविधान में जो हो ।
प्रावृट्–संज्ञा पुं० वर्षा-ऋतु । बरसात ।
प्राशन–संज्ञा पुं० भोजन । खाना । चखना । जैसे, अन्नप्राशन ।
प्राशनीय–वि० खाने योग्य ।
प्राशी–वि० [स्त्री० प्राशिनी] प्राशन करनेवाला । भक्षक ।
प्रासंगिक–वि० १. प्रसंग-संबंधी । प्रसंग का । २. प्रसंग-द्वारा प्राप्त ।
प्रास–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का भाला ।
प्रासन–संज्ञा पुं० फेंकना ।
प्रासाद–संज्ञा पुं० विशाल भवन । महल । देवताओं या राजाओं के रहने का भवन । मन्दिर ।
प्रासेव–संज्ञा पुं० घोड़े के साज की रस्सी ।
प्रासु–संज्ञा पुं० दीर्घ निश्वास ।
प्रास्पेक्टस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विवरण-पत्र, जिसमें किसी कार्य की प्रणाली आदि का पूरा विवरण हो ।
प्राहारिक–संज्ञा पुं० चौकीदार । पहरेदार ।
प्राहुण–संज्ञा पुं० अतिथि । पाहुन ।
प्रिंटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छापनेवाला । मुद्रक ।
प्रिंटिंग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] छपाई का काम । मुद्रण ।
प्रिंटिंग प्रेस–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] छापाखाना । मुद्रणालय ।
प्रियंवद–वि० [स्त्री० प्रियंवदा] प्रिय वचन बोलनेवाला । प्रियभाषी ।
प्रिंसिपल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विद्यालय या कालेज का प्रधान अध्यापक ।
प्रियंवदा–संज्ञा स्त्री० प्रिय वचन बोलनेवाली । प्रिय-भाषिणी । एक वर्णवृत्त ।
प्रिय–वि० १. प्यारा । प्रेमी । २. सुन्दर । मनोहर ।
संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रिया] पति । स्वामी ।
प्रियतम–वि० [स्त्री० प्रियतमा] प्यारा । अत्यन्त प्रिय । सबसे अधिक प्रिय ।
संज्ञा पुं० पति । स्वामी ।
प्रियदर्शन–वि० [स्त्री० प्रियदर्शना] सुन्दर । मनोहर । देखने में प्रिय लगनेवाला ।
प्रियदर्शी–वि० १. मनोहर । सब को प्रिय लगनेवाला । २. सबसे स्नेह करनेवाला । ३. चक्रवर्ती अशोक ।
प्रियवर–वि० अत्यन्त प्रिय । सबसे प्यारा । (पत्रों आदि में संबोधन)
प्रियवादी–संज्ञा पुं० दे० "प्रियभाषी" ।
प्रियांबु–संज्ञा पुं० आम का वृक्ष । आम का फल ।
प्रिया–संज्ञा स्त्री० १. प्रियतमा । प्यारी । प्रेयसी । भार्या । पत्नी । २. मृगी । ३. सोलह मात्राओं का एक छंद । ४. मदिरा ।
प्रीत*–संज्ञा पुं० दे० "प्रीति" ।
वि० प्रीतियुक्त । प्रिय ।
प्रीतम–संज्ञा पुं० पति । स्वामी । अत्यन्त प्यारा । प्रियतम ।
प्रीति–संज्ञा स्त्री० प्रेम । प्यार । स्नेह । संतोष । हर्ष । आनन्द ।
प्रीतिकर, प्रीतिकारक–वि० १. प्रिय लगनेवाला । २. प्रेम उत्पन्न करनेवाला ।
प्रीतिपात्र–संज्ञा पुं० १. जिसके साथ प्रेम किया जाय । प्रेमी । २. प्रेम करने योग्य ।
प्रीतिभोज–संज्ञा पुं० वह भोज, जिसमें मित्र, बंधु आदि सप्रेम सम्मिलित हों ।
प्रीमियम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बीमे की किस्त ।

प्रीमियर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मुख्य मंत्री। प्रधान मंत्री।
प्रूफ–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. प्रमाण। सबूत। २. अशुद्धियाँ दूर करने के लिए छपनेवाली चीजों का नमूना।
प्रेक्षक–संज्ञा पुं० दर्शक। देखनेवाला।
प्रेक्षण–संज्ञा पुं० १. नेत्र। आँख। २. देखने का कार्य।
प्रेक्षणीय–वि० देखने योग्य।
प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० १. देखना। २. दृष्टि। निगाह। ३. नाच-तमाशा देखना। ४. प्रज्ञा। बुद्धि। ५. शोभा। ६. वृक्ष की शाखा।
प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह–संज्ञा पुं० १. राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान। मंत्रणागृह। २. नाट्यशाला। रंगशाला।
प्रेक्षित–वि० देखा हुआ।
प्रेक्षी–संज्ञा पुं० बुद्धिमान्।
प्रेत–संज्ञा पुं० १. मरा हुआ प्राणी। मृतक। २. भूत। पिशाच। ३. नरकनिवासी। ४. कल्पित देवयोनि-विशेष।
प्रेतकर्म या **प्रेतकृत्य**–संज्ञा पुं० श्राद्ध। अन्त्येष्टि-क्रिया।
प्रेतकार्य–संज्ञा पुं० दे० "प्रेतकर्म"।
प्रेतगृह–संज्ञा पुं० १. श्मशान। मरघट। २. कब्रिस्तान।
प्रेतत्व–संज्ञा पुं० प्रेत का भाव या धर्म। प्रेतता।
प्रेतबाह–संज्ञा पुं० मृतक-कार्य। अन्त्येष्टि-क्रिया।
प्रेतदेह–संज्ञा पुं० मृतक का वह कल्पित शरीर, जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है।
प्रेतनदी–संज्ञा स्त्री० वैतरणी।
प्रेतयज्ञ–संज्ञा पुं० वह यज्ञ, जिसके करने से प्रेत-योनि प्राप्त होती है।
प्रेतलोक–संज्ञा पुं० यमपुर। यमलोक।
प्रेतविधि–संज्ञा स्त्री० दाहक्रिया। मृतक का दाहादि संस्कार।
प्रेता–संज्ञा स्त्री० १. पिशाची। २. भगवती।
प्रेताधिप–संज्ञा पुं० यमराज।
प्रेतान्न–संज्ञा पुं० वह अन्न, जो प्रेत के उद्देश्य से दिया जाय।
प्रेताशिनी–संज्ञा स्त्री० भगवती। देवी।
प्रेताशौच–संज्ञा पुं० सूतक। छूत। वह अशौच, जो हिन्दुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है।
प्रेतिक–संज्ञा पुं० मृतक। प्रेत।
प्रेतिनी–संज्ञा स्त्री० पिशाचीनी। भूतनी। चुड़ैल।
प्रेती–संज्ञा पुं० प्रेतोपासक। प्रेतपूजक।
प्रेतेश–संज्ञा पुं० यमराज।
प्रेतोन्माद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पागलपन। भूतोन्माद।
प्रेत्य–संज्ञा पुं० परलोक। लोकान्तर।
प्रेम–संज्ञा पुं० प्यार। स्नेह। मुहब्बत। प्रीति। अनुराग।
प्रेमकलह–संज्ञा पुं० प्रेम के कारण झगड़ा।
प्रेमगर्विता–संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जिसे अपने पति के अनुराग का अहंकार हो।
प्रेमजल–संज्ञा पुं० प्रेम के आँसू। प्रेमाश्रु।
प्रेमनीर–संज्ञा पुं० प्रेमाश्रु। प्रेम के आँसू।
प्रेमपात्र–संज्ञा पुं० वह, जिससे प्रेम किया जाय। प्रेमी।
प्रेमपाश–संज्ञा स्त्री० प्रेम का फंदा। प्रेम का वन्धन।
प्रेमपुत्तलिका–संज्ञा स्त्री० १. प्रेमिका। २. पत्नी।
प्रेमपुलक–संज्ञा स्त्री० प्रेमजनित रोमांच।
प्रेमवंत–वि० १. प्रेम से भरा हुआ। २. प्रेमी।
प्रेमवारि–संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु"।
प्रेमा–संज्ञा स्त्री० १. स्नेहशीला। २. इंद्र। ३. वायु।
प्रेमालाप–संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक या प्रेम के बारे में बातचीत। मुहब्बत की बातचीत।
प्रेमालिंगन–संज्ञा पुं० प्रेम से गले लगाना। प्रेम में आलिंगन करना।
प्रेमाश्रु–संज्ञा पुं० प्रेम के आँसू। प्रेम या स्नेह के कारण आँखों से निकलनेवाले आँसू।
प्रेमास्पद–वि०, यौ० प्रेमपात्र। स्नेहभाजन। स्नेही।

प्रेमिक–संज्ञा पुं० प्रेमी । प्रेम करनेवाला ।
प्रेमिका–संज्ञा स्त्री० १. वह स्त्री, जिससे प्रेम किया जाय। प्रेयसी । २. प्रेम करनेवाली स्त्री।
प्रेमी–संज्ञा पुं० १. प्रेम करनेवाला । २. स्नेही । आशिक ।
प्रेय–संज्ञा पुं० १. प्यारा । २. एक अलंकार, जिसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी का अंग होता है।
प्रेयसी–संज्ञा स्त्री० प्यारी । प्रेमिका । प्रियतमा।
प्रेरक–संज्ञा पुं० १. प्रेरणा करनेवाला। प्रेषक। २. भेजनेवाला। ३. किसी काम में प्रवृत्त करनेवाला ।
प्रेरण–संज्ञा पुं० १. प्रेरणा करना। २. प्रेषण । भेजना।
प्रेरण–संज्ञा पुं० दे० "प्रेरणा"।
प्रेरणा–संज्ञा स्त्री० १. कार्य में प्रवृत्त करना। उत्तेजना देना। २. दबाव। जोर।
प्रेरणार्थक क्रिया–संज्ञा स्त्री० क्रिया का वह रूप, जिससे यह सूचित होता है कि वह क्रिया किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुई है। जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना।
प्रेरना*–क्रि० स० प्रेरणा करना । प्रेरित करना।
प्रेरणीय–वि० प्रेरणा करने के योग्य ।
प्रेरयिता–संज्ञा पुं० १. प्रेरणा करनेवाला। २. प्रेषक। ३. आज्ञा देनेवाला।
प्रेरित–वि० १. प्रेषित। भेजा हुआ । २. नियोजित। ३. उत्तेजित।
प्रेषक–संज्ञा पुं० भेजनेवाला।
प्रेषण–संज्ञा पुं० [वि० प्रेषित] प्रेरणा करना। भेजना ।
प्रेषणीय–वि० भेजने योग्य ।
प्रेषितक–संज्ञा पुं० भेजी जानेवाली वस्तु। (अंग्रे०—कन्साइन्मेन्ट)
प्रेषिती–संज्ञा पुं० जिसके नाम कोई चीज भेजी जाय। (अंग्रे०—कन्साइनी)
प्रेषित–वि० १. प्रेरित । २. भेजा हुआ। ३. नियोजित।
प्रेष्ठ–वि० १. अत्यन्त प्रिय । प्रियतम । २. प्रेषणीय। भेजने योग्य ।
प्रेष्ठा–संज्ञा स्त्री० १. अत्यन्त प्रिय स्त्री। २. जाँघ ।
प्रेष्य–वि० प्रेषणीय । भेजने योग्य । संज्ञा पुं० दास। सेवक। भृत्य। दूत।
प्रेस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. छापाखाना । मुद्रणालय । २. छापने की कल । ३. समाचारपत्र का वर्ग।
प्रेसिडेण्ट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. राष्ट्रपति। २. सभापति । अध्यक्ष।
प्रोक्त–वि० कथित । कहा हुआ ।
प्रोक्ति–संज्ञा स्त्री० दूसरे से कही हुई वह बात या उक्ति, जो कहीं उद्धृत की जाय या की गई हो। (अंग्रे०—कोटेशन)
प्रोक्षण–संज्ञा पुं० १. पानी छिड़कना। २. पानी का छींटा । ३. पोंछना । ४. यज्ञ में वध के पूर्व यज्ञपशु पर जल छिड़कना।
प्रोक्षित–वि० १. सींचा हुआ । २. वध किया हुआ।
प्रोक्षितव्य–वि० प्रोक्षण के योग्य ।
प्रोग्राम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कार्यक्रम।
प्रोत–वि० १. भली भाँति मिला हुआ। २. छिपा हुआ। संज्ञा पुं० वस्त्र।
प्रोत्तेजित–वि० अत्यन्त उत्तेजित ।
प्रोत्थित–वि० उठाया हुआ।
प्रोत्फुल्ल–वि० विकसित । प्रसन्न।
प्रोत्साह–संज्ञा पुं० अत्यन्त उत्साह । अत्यधिक उमंग ।
प्रोत्साहक–संज्ञा पुं० उत्साह बढ़ानेवाला । हिम्मत बढ़ानेवाला।
प्रोत्साहन–संज्ञा पुं० [वि० प्रोत्साहित] खूब उत्साह बढ़ाना । हिम्मत बढ़ाना । साहस देना।
प्रोत्साहित–वि० जिसका उत्साह या साहस बढ़ाया गया हो। अत्यन्त उत्साहित या उत्साहपूर्ण।
प्रोपोजल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] प्रस्ताव।
प्रोप्राइटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मालिक। स्वामी।

प्रोफेसर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] किसी विषय का बड़ा विद्वान्। किसी विश्वविद्यालय या कालेज का बड़ा अध्यापक, जो प्रायः अपने विषय का प्रधान अध्यापक होता है।
प्रोमोशन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] तरक्की।
प्रोषित–वि० प्रवासी। जो विदेश गया हो।
प्रोषित नायक या **पति**–संज्ञा पुं० वह नायक, जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो। विरही नायक।
प्रोषितपतिका–संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो अपने पति के विदेश जाने के कारण दुखी हो। प्रवत्स्यत्प्रेयसी।
प्रोषितभर्तृका–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रोषित-पतिका"।
प्रोषितभार्य्य–संज्ञा पुं० वह नायक, जो अपनी भार्या (पत्नी) के विदेश जाने के कारण दुखी हो।
प्रौढ़–वि० [स्त्री० प्रौढ़ा] १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। युवावस्था के बाद की अवस्था का। २. पुष्ट। पक्का। ३. दृढ़। ४. गंभीर। गूढ़। ५. चतुर। प्रगल्भ। निपुण।
प्रौढ़त्व–संज्ञा पुं० दे० "प्रौढ़ता"।
प्रौढ़ता–संज्ञा स्त्री० प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व। जवानी।
प्रौढ़ा–संज्ञा स्त्री० १. अधिक वयसवाली स्त्री। २. साहित्य में वह नायिका, जो काम-कला आदि अच्छी तरह जानती हो। ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली।
प्रौढ़ा अधीरा–संज्ञा स्त्री० वह प्रौढ़ा, जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हों।
प्रौढ़ा धीरा–संज्ञा स्त्री० ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रौढ़ा।
प्रौढ़ा धीराधीरा–संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो अपने पति के परस्त्रीगमन के चिह्न देखने पर कुछ प्रत्यक्ष और कुछ व्यंग-पूर्वक कोप करे।
प्रौढ़ि–संज्ञा स्त्री० १. सामर्थ्य। २. उद्यम। उद्योग। अध्यवसाय। ३. प्रगल्भता। धृष्टता। ४. वाद-विवाद।
प्लक–संज्ञा पुं० स्त्री की कटि का अधोभाग।
प्लक्ष–संज्ञा पुं० १. पाकर वृक्ष। २. पिलखा। अश्वत्थ। पीपल। ३. पुराणानुसार सात कल्पित द्वीपों में से एक।
प्लवंग–संज्ञा पुं० १. बंदर। वानर। २. हिरन। मृग। ३. प्लक्ष। पाकर।
प्लव–संज्ञा पुं० १. पैंतीसवाँ संवत्सर। २. मुर्गा। ३. मेघ। ४. बन्दर। ५. चाण्डाल। ६. बाढ़। ७. भूमि। ८. पानी। ९. कौड़ी। १०. नौका। ११. शत्रु। १२. शब्द। १३. अन्न। १४. नहाना। १५. तैरना।
प्लवक–वि० तैराक। तैरनेवाला।
संज्ञा पुं० १. मेंढ़क। २. पाकर वृक्ष।
प्लाट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. कथानक। २. षड्यंत्र। ३. जमीन का टुकड़ा।
प्लावन–संज्ञा पुं० १. बाढ़। जलमग्न होना। २. अच्छी तरह धोना। ३. किसी वस्तु को ऊपर फेंकना। तैरना।
प्लावित–वि० पानी में डूबा हुआ। जलमग्न।
प्लीडर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वकील।
प्लीहा–संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"। रोग-विशेष। पिलही।
प्लुत–संज्ञा पुं० १. वक्र गति। टेढ़ी चाल। २. उछाल। ३. स्वर का एक भेद, जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है। अति दीर्घस्वर।
प्लुति–संज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद की चाल। उछलना। कूदना। फाँदना। २. पोई।
प्लेग–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. एक भयंकर संक्रामक रोग। महामारी। ताऊन।
प्लेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] चीनी मिट्टी की तश्तरी।
प्लैटफार्म–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. रेलवे स्टेशनों पर बना हुआ लम्बा चबूतरा जिससे लगकर रेलगाड़ी खड़ी होती है।। २. मंच।
प्लैटिनम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०[एक बहुमूल्य धातु।
प्लोत–संज्ञा स्त्री० मुँह से गिरा पित्त।
प्लोष–संज्ञा पुं० जलन। दाह।

फ

फ–हिंदी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है।
संज्ञा पुं० १. रूखा वचन। कटु वाक्य। २. फुक्कार। फुफकार। ३. निष्फल भाषण।

फंका*–संज्ञा पुं० [स्त्री० फंकी] १. मुंह में एक बार फाँकी जा सकने की मात्रा। २. कतरा। टुकड़ा।

फंकी–संज्ञा स्त्री० १. फाँकने की दवा। २. एक बार फाँकने की औषध। ३. चूर्ण। बुकनी। ४. छोटी फाँक।

फंग*–संज्ञा पुं० १. बंधन। फंदा। २. अनुराग। प्रेम। स्नेह।

फंड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कोष। एकत्रित धन।

फंद–संज्ञा पुं० १. बंधन। फंदा। जाल। फाँस। २. छल। धोखा। ३. मर्म। रहस्य। ४. दुःख। कष्ट। ५. नथ की काँटी फँसाने का फंदा। ६. गूँज।

फंदना*–क्रि० अ० फंदे में पड़ना। फँसना। क्रि० स० फाँदना। लाँघना।

फंदवार–वि० फंदा या जाल लगानेवाला।

फंदा–संज्ञा पुं० १. रस्सी, तागे आदि का वह घेरा, जो किसी को फँसाने के लिए बनाया गया हो। फाँद। पाश। जाल। फाँस। बंधन। २. कष्ट। दुःख।
मुहा०—फंदा लगाना=१. किसी को फँसाने के लिए जाल बिछाना। २. धोखा देना। फंदे में पड़ना=१. धोखे में पड़ना। २. किसी के वश में होना।

फँदाना–क्रि० स० जाल में फँसाना। फंदे में लाना। फाँदने का काम दूसरे से कराना। कुदाना। लँघवाना।

फँफाना†–क्रि० अ० [अनु०] हकलाना। बोलने में जीभ का काँपना।

फँसना–क्रि० स० १. फंदे में फँसना। बंधन में पड़ना। २. उलझना। अटकना।
मुहा०—बुरा फँसना=संकट में पड़ना।

फँसाना–क्रि० स० १. फंदे में लाना। २. वश में करना। अपने जाल या काबू में लाना। ३. अटकाना। उलझाना।

फँसाव–संज्ञा पुं० उलझाव। अटकाव। फंदा।

फँसिहारा–वि० [स्त्री० फँसिहारिन] फँसानेवाला।

फक–वि० १. स्वच्छ। सफेद। २. बदरंग।
मुहा०—रंग फक हो जाना या फक पड़ जाना=घबरा जाना। चेहरे का आभाहीन हो जाना।

फकड़ी–संज्ञा स्त्री० दुर्गति। दुर्दशा।

फ़क़त–वि० [अ०] सिर्फ। केवल। बस।

फ़क़ीर–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० फकीरन, फकीरनी] १. भिखारी। भिक्षुक। २. साधु। संसार-त्यागी। योगी। ३. निर्धन। दरिद्र।

फ़क़ीरी–संज्ञा स्त्री० १. भिखमंगापन। २. साधुता। ३. निर्धनता।

फक्कड़–वि० १. सदा निर्धन, लेकिन मस्त रहनेवाला व्यक्ति। लापरवाह। २. उद्दंड।

फक्कड़बाजी–संज्ञा स्त्री० लापरवाही के साथ वाहियात बातें बकना।

फग*–संज्ञा पुं० दे० "फंग"। फन्दा।

फगुआ–संज्ञा पुं० १. होली। होलिकोत्सव। होली का त्योहार। २. होली पर गाए जानेवाले गीत। फाग।
मुहा०—फगुआ खेलना या मनाना=होली के उत्सव में रंग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

फगुनहट या **फगुनाहट**–संज्ञा स्त्री० फागुन में चलनेवाली तेज हवा। फागुन-सम्बन्धी।

फगुहारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० फगुहारी, फगुहारिन] फाग खेलनेवाला। दूसरे के यहाँ होली खेलने के लिए जानेवाला व्यक्ति। होली के गीत या फगुआ गानेवाला व्यक्ति।

फजर या **फजिर**–संज्ञा स्त्री० [अ०] सबेरा। प्रातःकाल।

फ़ज़ल–संज्ञा पुं० अनुग्रह। कृपा। दया।

फ़ज़ीहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गति। बेइज्जती।

फ़ज़ूल–वि० व्यर्थ। निरर्थक। बेकाम।

फ़ज़ूलख़र्च–वि० [फा०] [संज्ञा फ़ज़ूलख़र्ची] अपव्ययी। अधिक या बेकार खर्च करनेवाला।

फ़ज़ूलख़र्ची–संज्ञा स्त्री० अपव्यय।

फट–संज्ञा स्त्री० १. चीज के हिलने या गिरने का शब्द। २. दुतकार। फटकार। ३. एक तांत्रिक मंत्र। अस्त्र-मंत्र।

वि० फूला हुआ। विकसित। प्रफुल्लित।

फटक†–संज्ञा पुं० बिल्लौर पत्थर। स्फटिक। संगमर्मर।

क्रि० वि० तत्क्षण। झट।

फटकन–संज्ञा स्त्री० अन्न के फटकने पर निकली हुई वस्तु (भूसी)।

फटकना–क्रि० स० १. फटफटाना। पटकना। झटकना। २. फेंकना। मारना। चलाना। ३. हिलाकर सूप से अन्न को साफ करना। रुई आदि को फटके से धुनना। ४. पहुँचना। जाना। ५. दूर होना। अलग होना। ६. तड़फड़ाना। हाथ-पैर पटकना। हाथ-पैर हिलाना। ७. श्रम करना।

मुहा०–फटकना-पछोरना=१. सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना। २. परखना। अच्छी तरह जाँचना।

फटका†–संज्ञा पुं० [अनु०] १. रुई धुनने की धुनकी। २. कोरी तुकबंदी। रस और गुण से हीन कविता।

संज्ञा पुं० दे० "फाटक"।

फटकाना†–क्रि० स० १. फेंकना। अलग करना। २. फटकने का काम दूसरे से कराना।

फटकार–संज्ञा स्त्री० १. फटकारने की क्रिया या भाव। तिरस्कार। दुतकार। डाँट-डपट। झिड़की। २. दे० "फिटकार"।

फटकारना–क्रि० स० १. शस्त्र आदि चलाना। २. झटका मारना। ३. लाभ उठाना। ४. लेना। हथियाना। ५. अच्छी तरह पटक-पटक कर धोना। ६. झटका देकर दूर फेंकना। दूर हटाना। अलग करना। ७. खरी-खोटी सुनाना। डाँटना-डपटना। दुतकारना।

फटना–क्रि० अ० १. तड़कना। टूटना। किसी वस्तु का कोई भाग अलग या छिन्न-भिन्न हो जाना। अलग हो जाना। २. द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना, जिससे उसका पानी और सार भाग दोनों अलग-अलग हो जायँ। ३. किसी बात का बहुत अधिक होना। बहुत अधिक पीड़ा होना।

मुहा०—छाती फटना=असह्य क्लेश या पीड़ा का अनुभव होना। बहुत अधिक दुःख पहुँचना। (किसी से) मन या चित्त फटना=विरक्ति होना। संबंध रखने की रुचि न रहना। फट पड़ना=अकस्मात् आ पहुँचना।

फटफट–संज्ञा स्त्री० शब्द-विशेष। बकबाद।

फटफटाना–क्रि० स० [अनु०] १. व्यर्थ बकवाद करना। २. फड़फड़ाना। हाथ-पैर मारना। ३. व्यर्थ प्रयास करना। ४. इधर-उधर टक्कर मारना।

क्रि० अ० फट-फट शब्द होना।

फटा–संज्ञा पुं० १. छिद्र। छेद। २. साँप का फन। ३. घमंड। ४. छल।

मुहा०—किसी के फटे में पाँव देना=दूसरे की विपत्ति अपने ऊपर लेना।

फटिक–संज्ञा पुं० १. बिल्लौर। स्फटिक। २. संगमर्मर।

फट्ठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० फट्ठी] १. बाँस को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा। २. कपड़े का टुकड़ा।

फड़–संज्ञा पुं० १. जुए का दाँव, जिस पर जुआरी बाजी लगाते हैं। दाँव। २. जुआ-खाना। जुए का अड्डा। ३. वह स्थान, जहाँ माल खरीदा या बेचा जाय। ४. पक्ष। दल। ५. लकड़ी का मोटा चिरा हुआ बल्ला। ६. वह गाड़ी, जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। चरख।

फड़क, फड़कन–संज्ञा स्त्री० फड़कने की क्रिया या भाव। धड़कन। स्फुरण। फड़फड़ाहट।

फड़कना–क्रि० अ० [अनु०] १. अंगों में हलका कम्पन होना। फुरफुराना। उछलना। फड़-फड़ाना। २. किसी अंग में अचानक स्फुरण होना। ३. हिलना-डोलना। ४. चंचल होना। किसी कार्य के लिए उद्यत होना। विरोध या बदला लेने के लिए तैयार होना।

मुहा०—फड़क उठना या जाना=आनंदित

होना। प्रसन्न या मुग्ध होना। उमंग में आना।
बोटी फड़कना=अत्यंत चंचलता होना।

फड़काना–क्रि० स० दूसरे को फड़कने में प्रवृत्त करना।

फड़नवीस–संज्ञा पुं० मराठों के राज्यकाल में एक ऊँचा पदाधिकारी।

फड़फड़ाना–क्रि० स०, अ० दे० "फटफटाना"

फड़फड़िया–वि० १. बकबादी। भड़भड़िया। २. जल्दबाज।

फड़बाज़–संज्ञा पुं० लोगों को अपने यहाँ जुआ खेलाने और उसके बदले में कुछ धन लेनेवाला। जुआड़ी।

फण–संज्ञा पुं० १. साँप का फैला हुआ चौड़ा मस्तक। २. फन्दा।

फणधर–संज्ञा पुं० साँप।

फणिमणि–संज्ञा स्त्री० साँप के फन में पाई जानेवाली मणि।

फणींद्र–संज्ञा पुं० १. शेष नाग। २. साँपों का राजा, अर्थात् सब से बड़ा साँप।

फणी–संज्ञा पुं० १. साँप। २. केतु ग्रह। ३. नागफनी नामक वृक्ष। ४. मरुआ।

फणीश–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फ़तवा–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों के धर्म्म-शास्त्रानुसार मौलवी आदि-द्वारा किसी काम के उचित या अनुचित होने के विषय में दी जानेवाली व्यवस्था।

फ़तह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विजय। जीत। २. सफलता।

फतिंगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० फतिंगी] १. एक उड़नेवाला कीड़ा। २. पतिंगा। पतंग।

फ़तीला–संज्ञा पुं० [अ०] दे० "पलीता"।

फ़तूर–संज्ञा पुं० [अ०] १. दोष। विकार। २. हानि। नुकसान। ३. विघ्न। बाधा। ४. खुराफात। उपद्रव।

फ़तूरिया–वि० खुराफाती। झगड़ालू।

फ़तूह–संज्ञा स्त्री० १. फतह का बहुवचन। विजय। जय। जीत। २. लड़ाई या लूट में मिला हुआ धन।

फ़तूही–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बिना बाँहों की कुरती। सलूका। सदरी। २. लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फ़तेह*–संज्ञा स्त्री० दे० "फतह"।

फदकना–क्रि० अ० फद-फद शब्द करना। फुदकना।

फदफदाना–क्रि० अ० फद-फद करना। उबलना। बलबलाना।

फन†–संज्ञा पुं० दे० "फण"। फैला हुआ साँप का सिर।

फ़न–संज्ञा पुं० [फा०] १. गुण। खूबी। हुनर। कौशल। २. छल-कपट। चाल-बाजी।

फनकार–संज्ञा स्त्री० [अनु०] फनफन होने का शब्द। फूसकार। फूत्कार।

फनगना–क्रि० अ० कल्ला फूटना। पनपना।

फनफनाना–क्रि० अ० [अनु०] १. फन-फन शब्द उत्पन्न करना। फुफकारना। २. हिलना।

फ़ना–संज्ञा स्त्री० [अ०] नाश। बरबादी।

फनिंद*†–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनि*–संज्ञा पुं० १. दे० "फणी"। २. दे० "फण"।

फनिधर†–संज्ञा पुं० दे० "फणिधर"।

फनियाला–संज्ञा पुं० साँप।

फनिराज–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनी*–संज्ञा पुं० दे० "फणी"।

फनूस*–संज्ञा पुं० दे० "फानूस"।

फन्नी–संज्ञा स्त्री० लकड़ी आदि का टुकड़ा, जो किसी ढीली चीज की जड़ में उसे कसने के लिए ठोंका जाता है। पच्चर।

फफड़ना†–क्रि० अ० फैलना।

फफसा†–वि० फूला हुआ, पर अन्दर से खाली। फोफसा। पोला।
संज्ञा पुं० फेफड़ा।

फफूँदी*–संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी। २. भुकड़ी। काई की तरह सफेद तह, जो बरसात में फल, लकड़ी आदि पर लग जाती है।

फफोला–संज्ञा पुं० झलका। छाला। चमड़े पर का पोला उभार, जिसके भीतर पानी भरा रहता है।
मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना=अपने हृदय की ईर्ष्या या क्रोध प्रकट करना।

फब–संज्ञा स्त्री० शोभा। रमणीयता।

फबकना–क्रि० अ० १. मोटा होना। फफदना। २. पनपना। शाखा फूटना।

फबती–संज्ञा स्त्री० १. समयानुकूल बात। २. हँसी की चुभती बात। व्यंग्य। चुटकी।

मुहा०—फबती उड़ाना=हँसी उड़ाना। फबती कहना=चुभती हुई हँसी की बात कहना।

फबन–संज्ञा स्त्री० १. छवि। शोभा। सुन्दरता। २. सजावट।

फबना–क्रि० अ० शोभा देना। सुंदर या भला जान पड़ना। खिलना।

फबाना–क्रि० स० ऐसी जगह लगाना, जहाँ भला जान पड़े। सजाना।

फबि*†–संज्ञा स्त्री० फबन। छवि। शोभा।

फबीला–वि० [स्त्री० फबीली] जो फबता हो। शोभा देनेवाला। शोभायमान। सुन्दर।

फर*‡–संज्ञा पुं० १. दे० "फल"। २. भाले की नोक। फलक। ३. सामना। मुकाबला। ४. बिछौना। बिछावन।

फ़रक़–संज्ञा स्त्री० १. फरकने की क्रिया या भाव। २. फड़क। चंचलता।

फरक–संज्ञा पुं० १. पार्थक्य। अलगाव। २. दूरी। बीच का अंतर। ३. अंतर। भेद। ४. दुराव। परायापन। अन्यता। ५. कसर। कमी।

फरकन–संज्ञा स्त्री० फड़कने की क्रिया या भाव। दे० "फड़की"।

फरकना*†–क्रि० अ० दे० "फड़कना"।

फरका–संज्ञा पुं० १. वह छप्पर, जो अलग छाकर बँडेर पर चढ़ाया जाता है। २. छाजन। पल्ला। ३. दरवाजे का टट्टर।

फरकाना–क्रि० स० फड़फड़ाना। अलग करना।

फ़रज़ी–संज्ञा पुं० [फा०] शतरंज का एक मोहरा, जिसे वजीर भी कहते हैं।

वि० नकली। कल्पित। बनावटी।

फ़रद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सूची। स्मरण के लिए लिखी गई वस्तुओं की सूची अथवा लेखा। २. एक साथ काम में आनेवाले कपड़ों के जोड़े में से एक कपड़ा। पल्ला। ३. रजाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला। ४. दो पदों की कविता।

वि० अनुपम। बेजोड़। अनोखा।

फरना*‡–क्रि० अ० फलना।

फरफंद–संज्ञा पुं० १. छल-कपट। दाँव-पेंच। धोखा। २. बखेड़ा। माया। ३. नखरा।

फरफर–संज्ञा पुं० उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द।

फरफराना–क्रि० स०, अ० दे० "फड़फड़ाना"।

फरफुंदा*‡–संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फरमाबरदार–वि० [फा०] आज्ञाकारी। आज्ञा-पालन करनेवाला।

फरमा–संज्ञा पुं० [अंग्रे० 'फ्रेम'] १. लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा। कालबूत। २. वह साँचा, जिसमें कोई चीज ढाली जाय। ३. कागज का पूरा तख्ता, जो एक वार प्रेस में छापा जाता है।

फ़रमाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी चीज के लिए खास तौर से माँग करना।

फ़रमाइशी–वि० [फा०] विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाई या तैयार कराई गई वस्तु। बहुत उम्दा और बढ़िया।

फ़रमान–संज्ञा पुं० [फा०] राज्य या राजा की आज्ञा। वह पत्र, जिस पर यह आज्ञा लिखी हो।

फ़रमाना–क्रि० स० [फा०] आज्ञा देना। किसी बड़े का कुछ कहना (आदर-सूचक।)

फरराना†–क्रि० अ० दे० "फहराना"।

फ़रलाँग–संज्ञा पुं० दे० "फर्लांग"।

फरवरी–संज्ञा पुं० अंग्रेजी वर्ष का दूसरा महीना।

फरवार–संज्ञा पुं० खलिहान।

फरवारी–संज्ञा स्त्री० बढ़ई-धोबी आदि को खलिहान से अनाज की राशि उठाने के समय दिया जानेवाला अन्न।

फरवी–संज्ञा स्त्री० भुना हुआ चावल। मुरमुरा। लाई।

फ़रशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक विशेष प्रकार का हुक्का।

वि० १. फर्श का। २. एक प्रकार का सलाम, जिसमें हाथ जमीन (फर्श) तक छू जाय।

फरस*–संज्ञा पुं० १. दे० "फर्श"। २. दे० *"फरसा"।

फरसा–संज्ञा पुं० १. पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी। कुठार। परशु। २. फावड़ा।

फरहद–संज्ञा पुं० एक वृक्ष, जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है।

फरहर–वि० १. प्रसन्न। हरा-भरा। २. तेज। फुर्तीला। ३. बिखरा हुआ। ४. शुद्ध। साफ। स्पष्ट।

फरहरना†–क्रि० अ० फरकना। फरफराना। फहराना।

फरहरा–संज्ञा पुं० झंडा। पताका। ध्वजा।

फरहरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "फलहरी"।

फराक*–संज्ञा पुं० [फा० फराख] मैदान। वि० लंबा-चौड़ा। विस्तृत। (अंग्रे० फ्रॉक) लड़कियों और स्त्रियों का घुटने तक का एक पहनावा।

फराकत–वि० लंबा-चौड़ा और समतल। विस्तृत।
वि० संज्ञा पुं० दे० "फ़रागत"।

फ़राख–वि० [फा०] लंबा-चौड़ा।

फ़राखी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चौड़ाई। विस्तार। २. संपन्नता।

फ़रागत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छुटकारा। छुट्टी। २. निश्चिंतता। बेफिक्री। ३. मल-त्याग। पाखाना फिरना।

फ़रामोश–वि० [फा०] भूला हुआ। विस्मृत।

फ़रार–वि० [अ०] भागा हुआ व्यक्ति।

फरालना†–क्रि० स० फैलाना। पसारना।

फरास†–संज्ञा पुं० दे० "फर्राश"।

फरिया–संज्ञा स्त्री० छोटा लहँगा। घँघरिया।

फ़रियाद–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शिकायत। उलाहना। नालिश। २. प्रार्थना। विनती।

फ़रियादी–वि० [फा०] फरियाद या शिकायत करनेवाला। प्रार्थी।

फरियाना–क्रि० स० १. तय करना। निपटाना। २. छाँटकर अलग करना। ३. साफ या शुद्ध करना।
क्रि० अ० १. छँटकर अलग होना। २. साफ होना। ३. निबटना। तय होना। ४. समझ पड़ना।

फ़रिश्ता–संज्ञा पुं० [फा०] देवदूत। मुसलमानों के धर्मानुसार ईश्वर का दूत।

फरी†–संज्ञा स्त्री० १. कुशी। फाल। २. गाड़ी का हरसा। फड़। ३. चमड़े की गोल छोटी ढाल, जिससे गतके की चोट रोकते हैं।

फ़रीक़–संज्ञा पुं० [फा०] १. मुकाबला या विरोध करनेवाला। प्रतिवादी। २. प्रतिद्वन्द्वी। विपक्षी।
यौ०—फरीकसानी=प्रतिवादी।

फरुआ–संज्ञा पुं० दे० "फरुहा"।

फरुहा–संज्ञा पुं० फावड़ा। मिट्टी खोदने या बटोरने का एक औजार।

फरुही†–संज्ञा स्त्री० १. छोटा फावड़ा। २. मिट्टी हटाने के लिए लकड़ी का एक छोटा औजार। छोटा फावड़ा। मथानी।

फरेंद, फरेंदा–संज्ञा पुं० जामुन का फल। जामुन।

फरेब–संज्ञा पुं० [फा०] छल। कपट। धोखा।

फ़रेबी–वि० [फा०] कपटी। धोखेबाज। ढोंगी। मक्कार। चालबाज।

फरेरा†–संज्ञा पुं० फरहरा।

फरेरी†–संज्ञा स्त्री० जंगली फल।

फ़रोख्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] बिक्री। विक्रय।

फ़रोश–वि० [फा०] बेचनेवाला, जैसे मेवा-फरोश।

फ़र्क़–संज्ञा पुं० भेद। अन्तर। फरक।

फ़र्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. कर्तव्य। उत्तर-दायित्व। २. कल्पना। मान लेना।

फ़र्ज़ी–वि० [फा०] १. कल्पित। माना हुआ। २. अस्तित्वहीन। नाम-मात्र का।
संज्ञा पुं० दे० "फ़रज़ी"।

फ़र्द–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कागज या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. विवरण या सूचीपत्र। ३. रजाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला, जो अलग बनता है। चद्दर।

फ़र्दजुर्म–संज्ञा पुं० फौजदारी के मुकदमे में अभियुक्त पर लगाए गए आरोपों का विवरण-पत्र, जिसे मजिस्ट्रेट लिखता है।

फर्राटा–संज्ञा पुं० [अनु०] १. वेग। तेजी। शब्द-विशेष। २. दे० "खर्राटा"।

फ़र्राश–संज्ञा पुं० [अ०] १. नौकर। खिदमतगार। २. तम्बू गाड़ने, फर्श बिछाने, सफाई आदि का काम करनेवाला।

फ़र्राशी–वि० [फा०] फर्श या फर्राश के कार्य्य से संबंध रखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० फर्राश का काम या पद।
यौ०—फर्राशी पंखा=बड़ा पंखा, जिसमें फर्श भर पर हवा की जा सके।

फर्लांग–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ८८० गज की लम्बाई की एक नाप। एक मील का आठवाँ भाग।

फ़र्श–संज्ञा पुं० [अ०] १. कमरे, चबूतरे आदि पर बिछाने की बड़ी सूती दरी। २. कमरे, दालान आदि की धरती या जमीन।

फ़र्शी–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का।
वि० फर्श का। फर्श-संबंधी।
मुहा०—फर्शी सलाम=जमीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम।

फलंक*–संज्ञा पुं० दे० "फलाँग"। आकाश।

फलंगना*–क्रि० अ० दे० "फलाँगना"।

फलंत–संज्ञा स्त्री० फलने की क्रिया या भाव (वृक्ष आदि)।

फल–संज्ञा पुं० १. किसी भी वनस्पति में उत्पन्न होनेवाली बीज या गूदे से परिपूर्ण वस्तु, जो ऋतु-विशेष में पैदा हो। २. लाभ। ३. परिणाम। नतीजा। ४. कर्म का परिणाम। कर्मभोग। ५. प्रभाव। गुण। ६. शुभ कर्मो के परिणाम, जो चार माने जाते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ७. प्रतिफल। प्रतीकार। बदला। ८. भाले, बाण, छुरी आदि का वह पैना अगला भाग, जिससे आघात किया जाता है। ९. हल की फाल। १०. फलक। ११. ढाल। १२. उद्देश्य की सिद्धि। अभिप्राय। १३. न्यायशास्त्र के अनुसार प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ। १४. गणित की किसी क्रिया का परिणाम। १५. फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का परिणाम।

फलक–संज्ञा पुं० पटल। पट्टी। तख्ता। चादर। पत्र। पृष्ठ। वरक। हथेली। फल।

फ़लक–संज्ञा पुं० [अ०] स्वर्ग। आकाश।

फलकना–क्रि० अ० १. उमगना। छलकना। २. दे० "फरकना"।

फल-कर–संज्ञा पुं० वृक्षों के फल पर लगाया जानेवाला महसूल।

फलका–संज्ञा पुं० फफोला। झलका। छाला।

फलतः–अव्य० फलस्वरूप। परिणामतः।

फलद–वि० फल देनेवाला।

फलदाता–संज्ञा पुं० फल देनेवाला। फलप्रद।

फलदान–संज्ञा पुं० हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति। वरेच्छा।

फलदार–वि० १. फलवाला। जिसमें फल लगे हों। २. फल देनेवाला। जिसमें फल लगें।

फलना–क्रि० अ० १. फल से युक्त होना। फल लगना। फल देना। २. लाभदायक होना। ३. सफल होना। ४. शरीर में छोटे-छोटे दानों का निकल आना, जिनके कारण पीड़ा होती है।
मुहा०—फलना-फूलना=सुखी और संपन्न होना।

फलभूमि–संज्ञा स्त्री० कर्मों का फल भोगने का स्थान।

फलवान–वि० फलयुक्त (वृक्ष)। सफल।

फलश्रुति–संज्ञा स्त्री० अर्थवाद।

फलश्रेष्ठ–संज्ञा पुं० आम।

फलहरी†–संज्ञा स्त्री० मेवा। वनफल।
वि० बिना अन्न की मिठाई।

फलहार–संज्ञा पुं० दे० "फलाहार"। व्रत आदि में फलों का आहार।

फलहारी–वि० १. जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो। केवल फलों से बना हुआ। २. केवल फल खाकर रहनेवाला।

फ़लाँ–वि० [फा०] अमुक। फलाना।

फलाँग–संज्ञा स्त्री० १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। चौकड़ी। कुदान। २. वह दूरी, जो फलाँग या उछाल से तय की जाय।

फलाँगना–क्रि० अ० एक स्थान से उछलकर

दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना। उछलना।
फलांश–संज्ञा पुं० तात्पर्य। सारांश।
फलागम–संज्ञा पुं० १. फल लगने की २. शरद् ऋतु। ३. नाटक में नायक के उद्देश्य की जहाँ सिद्धि हो।
फलादेश–संज्ञा पुं० जन्मकुण्डली आदि देखकर ग्रहों आदि का फल कहना (ज्योतिष)।
फलाना–संज्ञा पुं० [स्त्री० फलानी] अमुक। कोई।
†क्रि० स० किसी को फलने में प्रवृत्त करना। फलने का काम कराना।
फलार्थी–संज्ञा पुं० फल की कामना करने वाला। फलकामी।
फ़लालेन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।
फलासव–संज्ञा पुं० दाख, खजूर आदि फलों की मदिरा (आसव)।
फलाहार–संज्ञा पुं० केवल फल खाना। फल-भोजन। बिना अन्न का भोजन।
फलाहारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० फलाहारिणी] केवल फल खाकर निर्वाह करनेवाला।
वि० फलाहार-संबंधी। जो केवल फलों से बना हो।
फलित–वि० १. फला हुआ। फल-प्राप्त। फल-विशिष्ट। २. सफल। पूर्ण। संपन्न।
यौ०—फलित ज्योतिष=ज्योतिष का वह अंग, जिसमें ग्रहों के योग से शुभाशुभ फल का निरूपण किया जाता है।
फलितव्य–वि० फलने योग्य।
फलितार्थ–संज्ञा पुं० १. अर्थ। तात्पर्य। २. सिद्धान्त। सिद्ध अर्थ।
वि० पूर्ण-मनोरथ।
फली–संज्ञा पुं० फलयुक्त। सफल।
संज्ञा स्त्री० छीमी। फलियाँ।
फलीता–संज्ञा पुं० १. पलीता। २ बड़ आदि के रेशों से बटी हुई रस्सी, जिसमें तोड़ेदार बंदूक दागने के लिए आग लगाकर रखी जाती है। ३. बत्ती।
फलीभूत–वि० लाभदायक। फलदायक। जिसका कुछ फल या परिणाम निकले।
फलेंदा–संज्ञा पुं० बड़ा जामुन। फरेंद।
फलोत्तमा–संज्ञा स्त्री० दाख। मुनक्का। द्राक्षा।
फलोदय–संज्ञा पुं० १. लाभ। प्राप्ति। मनोरथ की सिद्धि। २. आनन्द। हर्ष। ३. देवलोक।
फलोद्भव–वि० जो फल से उत्पन्न हुआ हो। फल से उत्पन्न होनेवाला।
फल्गु–वि० १. निस्सार। २. तुच्छ। छोटा। क्षुद्र। ३. सामान्य।
संज्ञा स्त्री० बिहार प्रान्त की एक नदी।
फल्गुन–संज्ञा पुं० १. अर्जुन। २. फाल्गुन मास।
फसकना†–क्रि० अ० [अनु०] बैठना। मसकना। फलना। फूटना। दरकना। ढीला होना।
वि० जो जल्दी मसक या धँस जाय।
फसकाना†–क्रि० अ० फाड़ना। फँसाना। ढीला करना।
फसड्डी–वि० [अनु०] हेय। निकृष्ट। पिछड़ा हुआ।
फसना–क्रि० अ० उलझना। फँसना। रुकना। बझना। स० रूप फसाना। प्रे० रूप फसवाना।
फसफसा–वि० दे० "निर्बल"। पिलपिला।
फ़सल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ऋतु। मौसम। २. काल। समय। ३. शस्य। खेत की उपज। अन्न। ४. खरीफ और रबी की फसल।
फ़सली–वि० ऋतु का। ऋतु-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० १. अकबर का चलाया हुआ एक संवत्, जिसका प्रचार उत्तरीय भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है। २. हैजा।
फ़साद–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० फसादी] विकार। बिगाड़। विद्रोह। बलवा। ऊधम। उपद्रव। झगड़ा। लड़ाई।
फ़सादी–वि० [फा०] १. उपद्रवी। फसाद खड़ा करनेवाला। २. झगड़ालू।
फसाना–क्रि० स० उलझाना। बझाना। बश में करना।
फ़स्द–संज्ञा स्त्री० [अ०] नस को छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

मुहा०—फस्द खुलवाना या लेना=१. शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। २. होश की दवा कराना।

फ़हम–संज्ञा स्त्री० [अ०] ज्ञान। बुद्धि। समझ।

फहरना–क्रि० अ० फहराना का अकर्मक रूप। फड़फड़ाना। उड़ना।

फहरान–संज्ञा स्त्री० फहराने का भाव या क्रिया।

फहराना–क्रि० स० कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना, जिसमें वह हवा में हिले और उड़े। उड़ाना। फड़फड़ाना।

क्रि० अ० हवा में हिलना या उड़ना। फहरना।

फहरानि*–संज्ञा स्त्री० दे० "फहरान"।

फ़हश—वि० अश्लील। फूहड़।

फाँक–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। खंड (फल आदि का)।

फाँकड़ा–वि० १. बाँका। तिरछा। २. हृष्ट-पुष्ट।

फाँकना–क्रि० स० दाने या बुकनी को दूर से मुँह में डालना। फाँका मारना। खाना।

मुहा०—धूल फाँकना=दुर्दशा भोगना।

फाँका–संज्ञा पुं० फंका। एक बार खाने की मात्रा।

फाँकी–संज्ञा स्त्री० फाँक।

फाँग, फाँगी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का साग।

फाँट†–संज्ञा स्त्री० काढ़ा। क्रम से बँटा भाग। भाग बाँटने का अनुपात या दर।

फाँटना–क्रि० स० काढ़ा बनाना। विभाग करना।

फाँटबंदी–संज्ञा स्त्री० वह कागज, जिसमें किसी ग्राम के पट्टीदारों के हिस्सों के अनुसार उस गाँव की आमदनी आदि की बाँट लिखी रहती है।

फाँड़–संज्ञा पुं० दे० "फाँड़ा"।

फाँड़ा†–संज्ञा पुं० दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ भाग। फेंटा।

फाँद–संज्ञा स्त्री० फंदा। पाश। उछलने या फाँदने का भाव। उछाल।

फाँदना–क्रि० अ० एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना। उछलना।

क्रि० स० १. कूदकर लाँघना। २. फंदे में फँसाना।

फाँदा–संज्ञा पुं० फंदा।

फाँफी–संज्ञा स्त्री० १. अत्यन्त महीन झिल्ली। २. माँड़ा। जाला (रोग)।

फाँस–संज्ञा स्त्री० १. पाश। फंदा। बंधन। पशु-पक्षी को फँसाने का फन्दा। २. सूक्ष्म काँटा। बाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा टुकड़ा, जो शरीर में घुस जाता है। ३. पतली तीली या कमाची।

फाँसना–क्रि० स० १. वश में करना। पाश में बाँधना। जाल में फँसाना। २. धोखे में डालना।

फाँसी–संज्ञा स्त्री० १. फँसाने का फंदा। पाश। २. रस्सी का वह फंदा, जिसमें गला फँसने से दम घुट जाता है। पाश द्वारा प्राण-दण्ड। वह दंड, जिसमें अपराधी के गले में फंदा लगाकर उसे मार डाला जाता है।

मुहा०—फाँसी चढ़ना=पाश द्वारा प्राण-दण्ड पाना। फाँसी देना=गले में फंदा डालकर मार डालना।

फाइल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] कागजों की नत्थी। कागज-पत्रों को बाँधकर रखने की चीज।

फ़ाक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] उपवास।

फ़ाक़ेमस्त–वि० [फा०] जो खाने-पीने का कष्ट उठाकर भी निश्चिन्त रहता हो।

फ़ाख़ता–संज्ञा स्त्री० [अ०] पंडुक पक्षी।

फाग–संज्ञा पुं० १. होली का खेल। फागुन में होनेवाला होली का उत्सव, जिसमें एक-दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं। २. होली के गीत।

फागुन–संज्ञा पुं० माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

फागुनी–वि० फागुन-सम्बन्धी।

फ़ाज़िल–वि० [अ०] आवश्यकता से अधिक।

यौ०—आलिम-फाजिल=विद्वान्।

फाटक–संज्ञा पुं० १. बड़ा द्वार या बड़ा दरवाजा। मुख्य द्वार। तोरण। २. †मवेशी

खाना। काँजीहौस। ३. भूसी, जो अनाज फटकने से बची हो। फटकन। पछोड़न।

फाटका–संज्ञा पुं० किसी वस्तु के भाव के अनुमान पर एक प्रकार का जुआ।

यौ०—सट्टा-फाटका।

फाटना–क्रि० अ० दे० "फटना"। टूटना। बिगड़ना।

फाड़न–संज्ञा स्त्री० कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा, जो फाड़ने से निकले।

फाड़ना–क्रि० स० १. चीरना। विदीर्ण करना। २. धज्जियाँ उड़ाना। फोड़ना। तोड़ना। खंड करना। टुकड़े करना। ३. जुड़ी हुई वस्तु को चीर कर अलग करना। ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग-अलग हो जायँ।

फाणित–संज्ञा पुं० १. राब। २. शीरा।

फ़ातिहा–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रार्थना। २. कुरान की एक आयत, जो किसी की मृत्यु पर पढ़ी जाती है।

फ़ानूस–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार की बड़ी कंदील। २. एक छड़ में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

फाब*–संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"। छवि।

फाबना*†–क्रि० अ० दे० "फबना"।

फ़ायदा–संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। नफा। प्राप्ति। प्रयोजन-सिद्धि। मतलब पूरा होना। अच्छा फल। भला परिणाम। उत्तम प्रभाव।

फ़ायदेमंद–वि० [फा०] लाभदायक। गुणकारी।

फार*†–संज्ञा पुं० वि० दे० "फाल"।

फारखती–संज्ञा स्त्री० चुकती। बेबाकी। वह लेख, जो इस बात का सबूत हो कि किसी के जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया।

फारम–संज्ञा पुं० १. दरख्वास्त या प्रार्थनापत्र, रसीद आदि का नमूना। २. छापने के लिए बैठाए हुए उतने अक्षर, जितने एक तख्ता छापने के लिए पूरे हों। फरमा। (अंग्रे० फार्म)। ३. बड़े पैमाने पर व्यवस्थित रूप से मशीनों-द्वारा खेती करने की जमीन।

फ़ारस–संज्ञा पुं० ईरान देश।

फ़ारसी–संज्ञा स्त्री० [फा०] फारस देश की भाषा।

फारा†–संज्ञा पुं० दे० १. "फाँक"। कतरा। २. दे० "फाल"।

फ़ारिग–वि० जो काम करके छुट्टी पा चुका हो।

फाल–संज्ञा स्त्री० १. लोहे की चौकोर लंबी छड़, जो हल के नीचे लगी रहती है और जिससे जमी नखोदी जाती है। २. काटा हुआ पतला टुकड़ा। ३. कदम का फासला। डग। संज्ञा पु० डग। फलाँग।

मुहा०–फाल बाँधना=उछलकर लाँघना।

फालतू–वि० अतिरिक्त। आवश्यकता से अधिक। व्यर्थ। निकम्मा। फजूल।

फालसई–वि० फालसे के रंग का। ललाई लिये हुए हलका ऊदा रंग।

फालसा–संज्ञा पु० [फा०] एक छोटा पेड़, जिसमें मटर के बराबर छोटे-छोटे बैंगनी रंग के खटमिट्ठे फल लगते हैं।

फ़ालिज–संज्ञा पु० [अ०] एक रोग, जिसमें आधा अंग सुन्न हो जाता। अर्धांग। पक्षाघात।

फ़ालूदा–संज्ञा पुं० [फा०] सेवईं की तरह का एक प्रकार का पेय।

फाल्गुन–संज्ञा पुं० १. माघ के बाद का महीना। वर्ष का बारहवाँ महीना। दे० "फागुन"। २. अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी–संज्ञा स्त्री० पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नामक नक्षत्र।

फाव–संज्ञा पुं० घेलवा। वस्तु खरीदने के बाद उसके साथ मिली हुई बिना दाम की वस्तु।

फावड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० फावड़ी] मिट्टी खोदने का एक औजार। फरसा।

फ़ाश–वि० [फा०] प्रकट। खुला। अश्लील। फूहड़। भद्दा।

फ़ासला–संज्ञा पुं० [अ०] अंतर। दूरी।

फाहा–संज्ञा पुं० इत्र आदि में तर रुई का

टुकड़ा। दवा या मरहम लगाने के लिए कपड़े या रुई का टुकड़ा।
फ़ाहिशा–वि० [अ०] छिनाल। व्यभिचारिणी।
फिंगक, फिंगा–संज्ञा पुं० फिंगा नामक पक्षी।
फिकई–संज्ञा स्त्री० एक मोटा अन्न।
फिकर–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़िक्र"।
फ़िक़रा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वाक्य। २. झाँसा-पट्टी। ३. व्यंग्य। ताना।
मुहा०—फिकरा कसना=ताना मारना। व्यंग करना।
फिकैत–संज्ञा पुं० दे० "फेकैत"।
फ़िक्र–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चिंता। सोच। परवाह। आशंका। २. तदबीर। यत्न।
फ़िक्रमंद–वि० चिंताग्रस्त।
फिचकुर–संज्ञा पुं० मूर्च्छा या बेहोशी आने पर मुँह से निकलनेवाला फेन।
फिट–अव्य० [अनु०] धिक्। थुड़ी। छि: (धिक्कारने का शब्द)।
संज्ञा पुं० फटकार। दुतकार।
फिटकार–संज्ञा स्त्री० १. दे० "फटकार"। लानत। धिक्कार। २. शाप। कोसना।
फिटकिरी–संज्ञा स्त्री० क्षार-विशेष। एक श्वेत खनिज पदार्थ।
फिटन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] चार पहियोंवाली एक प्रकार की खुली घोड़ागाड़ी।
फिट्ट या फिट्टा–वि० अपमानित। फटकार खाया हुआ।
फ़ितना–संज्ञा पुं० [अ०] १. झगड़ा। दंगा-फसाद। २. एक प्रकार का इत्र।
फ़ितरत–संज्ञा पुं० [अ०] १. यत्न। २. बखेड़ा।
फ़ितरती–वि० १. चालाक। २. फितूरी। ३. मायावी।
फ़ितूर–संज्ञा पुं० [वि०फितूरी] १. झगड़ा। उपद्रव। बखेड़ा। २. विकार। खराबी। ३. विपर्य्यय।
फिदवी–वि० आज्ञाकारी। स्वामिभक्त।
संज्ञा पुं० [स्त्री० फिदविया] दास।
फ़िनिया–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक आभूषण।
फिरंग–संज्ञा पुं० १. गोरों का देश। फिरंगिस्तान। योरप। २. रोग-विशेष। (गरमी) आतशक।
फिरंगी–वि० १. फिरंग देश में उत्पन्न। २. फिरंग देशवासी। गोरा। ३. फिरंग देश का। संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।
फिरंट–वि० १. विरुद्ध। खिलाफ। फिरा हुआ। २. विरोध करने या लड़ने पर तैयार।
फिर–क्रि० वि० १. दोबारा। पुनः। एक बार और। २. भविष्य में किसी समय। और वक्त। अनंतर। उपरान्त। ३. पीछे। तब। उस अवस्था में। ४. और चलकर। आगे और दूरी पर। ५. इसके अतिरिक्त।
यौ०—फिर-फिर=बार-बार। कई दफा।
फिरकना–क्रि० अ० थिरकना। नाचना। गोल वस्तु का एक स्थान पर घूमना।
फ़िरक़ा–संज्ञा पुं० [अ०] जाति। जमात। कौम। जत्था। संप्रदाय। पथ।
फिरकी–संज्ञा स्त्री० १. एक गोल खिलौना, जो बीच की कीली पर घूमता है। फिरहरी। चकई खिलौना। २. चरखे के तकले में लगाने का चमड़े का गोल टुकड़ा।
फिरना–क्रि० अ० १. घूमना। भ्रमण करना। इधर-उधर चलना। टहलना। विचरना। सैर करना। चक्कर लगाना। २. बार-बार फेरे खाना। ३. ऐंठ जाना। मरोड़ा जाना। ४. वापस होना। लौटना। ५. सामना दूसरी तरफ हो जाना। ६. मुड़ना। पलटना। लड़ने या मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाना। ७. स्थिति बदलना। बदल जाना। उलटा होना। विपरीत होना। विरुद्ध होना। खिलाफ होना। ८. बात पर दृढ़ न रहना। ९. झुकना। टेढ़ा होना। १०. चारों ओर प्रचारित होना। घोषित होना। जारी होना। ११. किसी वस्तु के ऊपर पोता जाना। चढ़ाया जाना। लेप होना।
मुहा०—किसी ओर फिरना=विपरीत ढंग के कार्य में प्रवृत्त होना। अपना ढंग बदल देना। जी फिरना=चित्त उचट जाना। विरक्त हो जाना। सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट या नष्ट होना।

फिरवाना–क्रि० स० फेरने या फिराने का काम कराना। घुमाना। लौटाना। पलटाना।
फ़िराक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. बिछोह। वियोग। २. चिंता। सोच। खटका। ३. खोज।
फिराना–क्रि० स० १. टहलाना। बार-बार फेरे खिलाना। चक्कर देना। २. ऐंठना। मरोड़ना। घुमाना। ३. लौटाना। पलटाना। ४. दे० "फेरना"। विचलित करना।
फ़िरार–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० फिरारी] भाग जाना। भागना। दे० "फरार"।
फिरि†*–क्रि० वि० दे० "फिर"।
फिरियाद*†–संज्ञा स्त्री० दे० "फरियाद"।
फिरिश्ता–संज्ञा पुं० देवदूत।
फिरिहरा–संज्ञा पुं० एक पक्षी।
फिरिहरी–संज्ञा स्त्री० बच्चों का एक खिलौना। फिरकी।
फिल्ली–संज्ञा स्त्री० पिंडली।
फिस–वि० [अनु०] कुछ नहीं।
मुहा०—टाँय-टाँय फिस=थी तो बड़ी धूम-धाम, पर हुआ कुछ नहीं।
फिसड्डी–वि० जो कुछ भी न कर सके। जो काम में सबसे पीछे रहे। निकम्मा।
फिसफिसाना–क्रि० स० १. डरना। भीत होना। २. आगा-पीछा करना। ३. शिथिल होना। फिस होना।
फिसलन–संज्ञा स्त्री० १. फिसलने की क्रिया या भाव। रपटन। २. चिकनी जगह, जहाँ पैर फिसले।
फिसलना–क्रि० अ० १. खसकना। गिरना। रपटना। चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। २. झुकना। प्रवृत्त होना।
फ़िहरिस्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] सूची।
फींचना–क्रि० स० पछाड़ना। धोना।
फ़ी–अव्य० [अ०] प्रत्येक। हर एक।
फीका–वि० १. स्वादहीन। नीरस। बे-जायका। सीठा। २. जो चटकीला न हो। धूमल। मलिन। तेजहीन। कान्तिहीन। बे-रौनक। ३. प्रभावहीन। निष्फल। व्यर्थ।
फ़ीता–संज्ञा पुं० [फा०] पतली धज्जी, सूत आदि, जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है। कपड़े की कोर या पट्टी। २. भूमि नापने की एक प्रकार की पट्टी।
फ़ीरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "फिरनी"।
फ़ीरोज़ा–संज्ञा पुं० [फा०] नीलमणि। हरापन लिये नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।
फ़ीरोज़ी–वि० [फा०] हरापन लिये नीले रंग का।
फ़ील–संज्ञा पुं० [फा०] १. हाथी। २. शतरंज का एक मोहरा।
फ़ीलख़ाना–संज्ञा पुं० [फा०] वह घर, जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।
फ़ीलपा–संज्ञा पुं० [फा०] एक रोग, जिसमें पैर फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है।
फ़ीलवान–संज्ञा पुं० [फा०] हाथीवान। महावत।
फीली–संज्ञा स्त्री० पिंडली।
फ़ील्ड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] खेत। मैदान। खेलने का मैदान।
फ़ीस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] शुल्क। मेहनताना।
फुंकना–क्रि० अ० जलना। भस्म होना। बरबाद होना। नष्ट होना।
संज्ञा पुं० १. दे० "फुंकनी"। बाँस की नली। २. मूत्राशय।
फुंकनी–संज्ञा स्त्री० १. वह नली, जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं। २. भाथी। धौंकनी।
फुंकरना–क्रि० अ० फूत्कार या फुफकार छोड़ना। फू-फू शब्द करना।
फुंकवाना, फुंकाना–क्रि० स० फूँकने का काम दूसरे से कराना। जलवाना। भस्म करवाना।
फुंकार–संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार"। फुफकार।
फुंदना–संज्ञा पुं० फूल के आकार की गाँठ, जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिए बनाते हैं। तराजू के बीच की रस्सी की गाँठ। कोड़े के छोर की गाँठ। झब्बा। फुलरा।
फुंदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "फुंदना"।
फुंदी–संज्ञा स्त्री० गाँठ। फंदा। बिंदी। टीका।

फुंसी—संज्ञा स्त्री० छोटी फोड़िया।
फुआरा*—संज्ञा पुं० दे० "फुहारा"।
फुकना—क्रि० अ० दे० "फुंकना"।
फुंकाना—क्रि० स० फूँकने का काम कराना।
फुचड़ा—संज्ञा पुं० बुने हुए कपड़े से बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।
फुट—वि० १. जिसका जोड़ा न हो। अकेला। एकाकी। २. जो लगाव में न हो। पृथक्। अलग।
संज्ञा पुं० [अँग्रे०] लंबाई, चौड़ाई मापने की एक माप, जो १२ इंच की होती है।
फुटकर, फुटकल—वि० १. विषम। एकाकी। फुट। अकेला। अलग। पृथक्। २. कई प्रकार का। कई मेल का। थोड़ा-थोड़ा।
फुटका—संज्ञा पुं० १. फफोला। २. लावा। ३. कड़ाहा, जिसमें गन्ने का रस पकता है।
फुटकी—संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु के छोटे बुलबुले, जो पानी, दूध आदि में अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं। २. खून, पीब आदि का छींटा, जो किसी वस्तु में दिखाई दे।
फुटनोट—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] टिप्पणी, जो लेख के नीचे दी जाती है।
फुटपाथ—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सड़क की पटरी। पगडंडी।
फुटबाल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पैर से खेलने का बड़ा गेंद।
फुटहरा—संज्ञा पुं० मटर या चने का दाना, जो भुनने से खिल गया हो।
फुटेल—वि० १. फुटकर। अकेला। अयुग्म। २. अभागा।
फुट्ट—वि० अलग। भिन्न। अकेला।
फुट्टल या फुट्टैल—वि० जोड़, झुंड या समूह से अलग।
फुदकना—क्रि० अ० उछलना। कूदना। उमंग में आना। फूले न समाना।
फुदकी—संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया।
फुनंग—संज्ञा स्त्री० दे० "फुनगी"। पेड़ का शिखर। अंकुर।
फुनगी—संज्ञा स्त्री० वृक्ष या पौधे की शाखाओं का अग्रभाग। अंकुर। कली। कोंपल। मंजरी। फुनंग।
फुनना—संज्ञा पुं० झब्बा। झालर। गुच्छा।
फुप्फुस—संज्ञा पुं० फेफड़ा।
फुफँदी—संज्ञा स्त्री० लहँगे का इजारबंद या स्त्रियों की धोती कसने की गाँठ। नीवी।
फुफकाना—क्रि० अ० दे० "फुफकारना"।
फुफकार—संज्ञा पुं० साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द। फुंकार।
फुफकारना—क्रि० अ० साँप का मुँह से फूँक निकालना। फूत्कार करना।
फुफेरा—वि० [स्त्री० फुफेरी] फूफा से उत्पन्न। फूफा का पुत्र। जैसे, फुफेरा भाई। फुआ के सम्बन्धी।
फुर†—वि० सत्य। सच्चा। यथार्थ। ठीक। प्रमाणित।
संज्ञा स्त्री० उड़ने में पंखों का शब्द।
फुरती—संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। तेजी। जल्दी। दे० "फुर्ती"।
फुरतीला—वि० [स्त्री० फुरतीली] जिसमें फुरती हो। तेज।
फुरना*—क्रि० अ० १. उद्भूत होना। प्रकट होना। निकलना। २. प्रकाशित होना। चमक उठना। ३. फड़कना। फड़फड़ाना ४. उच्चरित होना। मुंह से शब्द निकलना। ५. पूरा उतरना। सत्य ठहरना। ६. प्रभाव उत्पन्न करना। ७. सफल होना।
फुरफुर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] उड़ते समय डैनों का शब्द-विशेष।
फुरफुराना—क्रि० स० १. शरीर के रोंगटे सहसा खड़े होने से शरीर का एक बार काँप उठना। "फुर-फुर" करना। उड़कर पंखों का शब्द करना। २. हवा में लहराना। क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का फुर-फुर शब्द कर हिलना।
फुरफुराहट—संज्ञा स्त्री० पंख फड़फड़ाने का भाव।
फुरफुरी—संज्ञा स्त्री० 'फुर-फुर' शब्द होने या पंख फड़फड़ाने का भाव। फुरफुराहट।
फुरसत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अवसर। समय। निवृत्ति। अवकाश। छुट्टी। २. रोग आदि से छुटकारा। आराम।

फुरहरना‡–क्रि० अ० स्फुरित होना। निकलना। प्रस्फुटित होना। विकसित होना।
फुरहरी–संज्ञा स्त्री० १. पंखों को फुलाकर फड़फड़ाना। २. फड़फड़ाहट। फड़कना। ३. फरफराहट। ४. कँपकँपी। रोमांच। ५. सींक के छोर पर इत्र में डूबी रुई का फाहा। फुरेरी।
फुरेरी–संज्ञा स्त्री० १. वह सींक, जिसके सिरे पर हलकी रुई लपेटी हो और जो इत्र, दवा आदि में डुबाकर काम में लाई जाय। २. रोमांच-युक्त कंप।
मुहा०–फुरेरी लेना=१. शीत, भय आदि के कारण काँपना। थरथराना। २. चिड़ियों का पर फड़फड़ाना।
फुर्ती–संज्ञा स्त्री० दे० "फुरती"।
फुर्तीला–वि० दे० "फुरतीला"।
फुलका–संज्ञा पुं० हलकी, पतली और फूली हुई छोटी रोटी।
संज्ञा स्त्री० १. फुलकी। २. फफोला। छाला।
वि० फूला हुआ। हलका।
फुलझड़ी–संज्ञा स्त्री० १. एक तरह की आतशबाजी। २. उपद्रव पैदा करनेवाली बात।
फुलवाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।
फुलवाड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"। फूलों का बगीचा।
फुलवार–वि० प्रसन्न। प्रफुल्ल। हर्षित।
फुलवारी–संज्ञा स्त्री० १. बगीचा। उद्यान। पुष्पवाटिका। २. कागज के बने हुए फूल और वृक्ष आदि, जो बारात के साथ निकाले जाते हैं।
फुलहारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० फुलहारी] माली। फूलवाला।
फुलाना–क्रि० स० १. किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि भरकर बढ़ाना। २. पुलकित या हर्षित करना। गर्व उत्पन्न करना। ३. फूलों से युक्त करना।
क्रि० अ० दे० "फूलना"।
मुहा०–मुँह फुलाना=मान करना। रूठना।
फुलायल–संज्ञा पुं० दे० "फलेल"।
फुलाव–संज्ञा पुं० फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।
फुलिंग*–संज्ञा पुं० दे० "स्फुलिंग"।
फुलिया–संज्ञा स्त्री० फूल के आकार का काँटा या कील। नाक में पहनने की लौंग (गहना)।
फुलेरा†–संज्ञा पुं० देवताओं के ऊपर लगाई जानेवाली फूलों की छतरी। पुष्पों और विल्वपत्रों की बनी हुई माला, जो शिव-पार्वती की मूर्त्ति को हरतालिका-व्रत के दिन पहनाई जाती है।
फुलेल–संज्ञा पुं० फूलों की महक से बासा हुआ तेल। सुगन्धित तेल।
फुलेली–संज्ञा स्त्री० फुलेल रखने का काँच का पात्र-विशेष।
फुलेहरा†–संज्ञा पुं० उत्सवों में द्वार पर लगाए जानेवाले सूत या रेशम के बंदनवार।
फुलौरा–संज्ञा पुं० मूँग की बड़ी पकौड़ी।
फुलौरी–संज्ञा स्त्री० पकौड़ी। चना, मटर, या मूँग आदि की पकौड़ी।
फुल्ल–वि० फूला हुआ। विकसित।
फुल्लदाम–संज्ञा पुं० उन्नीस वर्णों की एक वृत्ति।
फुवारा–संज्ञा पुं० फुहारा।
फुस–संज्ञा स्त्री० धीमी आवाज।
फुसकारना*†–क्रि० अ० फूंक मारना। फूत्कार छोड़ना। फुफकारना।
फुसफुसा–वि० १. दबाने से बहुत जल्दी चूर-चूर होनेवाला। नरम। कमजोर। २. ढीला।
फुसफुसाना–क्रि० स० बहुत ही धीमे स्वर से बोलना। कानाफूसी करना।
फुसफुसाहट–संज्ञा स्त्री० फुसफुस करने का भाव।
फुसलाऊ–वि० बहकानेवाला।
फुसलाना–क्रि० स० भुलावा देना। बहकाना। चकमा देना। झाँसा देना। सन्तुष्ट करने के लिए मीठी-मीठी बातें करना।
फुहार–संज्ञा स्त्री० १. पानी के बारीक छींटे। जलकण। २. महीन बूँदों की झड़ी। झींसी।
फुहारा–संज्ञा पुं० जल के छोटे-छोटे महीन छींटे। सूक्ष्म जलकण। फव्वारा। २.

जल की वह टोंटी, जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर निकलते हैं। जलयंत्र।

फुहो–संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फू–संज्ञा स्त्री० फुफकार।

फूँक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. मुँह से वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। श्वास। ३. मंत्र पढ़कर मुँह से छोड़ी हुई वायु।

मुहा०—फूँक निकल जाना=प्राण निकल जाना।

यौ०—झाड़-फूँक=मंत्र-तंत्र का उपचार।

फूँकना–क्रि० स० १. मुँह से वेग के साथ हवा छोड़ना। २. मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूँक मारना। ३. शंख, बाँसुरी आदि मुँह से बजाए जानेवाले बाजों को फूँककर बजाना। ४. फूँककर आग जलाना। आग सुलगाना। ५. भस्म करना। जलाना। ६. फजूल खर्च कर देना। उड़ाना।

मुहा०—फूँक-फूँककर पैर रखना या चलना=बहुत सावधानी से कोई काम करना।

यौ०—फूँकना-तापना=व्यर्थ खर्च कर देना।

फूँका–संज्ञा पुं० १. फूँक मारने की क्रिया। बाँस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हें स्तन में लगाकर फूँकना, जिससे गायों का सारा दूध बाहर निकल आवे। २. बाँस आदि की वह नली, जिससे फूँका मारा जाता है। ३. फफोला। फोड़ा।

फूँद–संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना"।

फूँदा*†–संज्ञा पुं० १. दे० "फुँदना"। २. फुफुँदी।

यौ०—फूँद-फुँदारा=फुँदनेवाला।

फूआ–संज्ञा स्त्री० बुआ। पिता की बहिन।

फूट–संज्ञा स्त्री० १. फूटने की क्रिया या भाव। २. बैर। विरोध। द्वेष। अनबन। बिगाड़। अलगाव। भिन्नता। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटन–संज्ञा स्त्री० १. फूटकर अलग होनेवाला अंश। २. शरीर के जोड़ों का दर्द।

फूटना–क्रि० अ० १. टूटना। करकना। दरकना। फटना। नष्ट होना। बिगड़ना। २. भीतर से झोंक के साथ बाहर आना। भेदकर निकलना। ३. शरीर पर दाने या घाव के रूप में प्रकट होना। ४. कली का खिलना। प्रस्फुटित होना। अंकुर, शाखा आदि का निकलना। ५. बिखरना। फैलना। व्याप्त होना। ६. एक पक्ष छोड़कर दूसरे में हो जाना। ७. शब्द का मुँह से निकलना। प्रकट होना। व्यक्त होना। ८. प्रकाशित होना। गुप्त बात का प्रकट हो जाना। ९. बाँध, मेड़ आदि का टूट जाना। १०. जोड़ों में पीड़ा होना।

मुहा०—फूटी आँखों न भाना=तनिक भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। फूटी आँखों न देख सकना=बुरा मानना। कुढ़ना। जलना। फूट-फूटकर रोना=विलाप करना।

फूत्कार–संज्ञा पुं० फूँक। मुँह से फू-फू करते हुए हवा छोड़ने का शब्द। फुफकार।

फूफा–संज्ञा पुं० बूआ का पति। पिता का बहनोई।

फूफी–संज्ञा स्त्री० पिता की बहिन। बूआ।

फूल–संज्ञा पुं० १. पुष्प। सुमन। कुसुम। पौधों की फलोत्पादक शक्तिवाली ग्रन्थि। २. फूल के आकार के बेल-बूटे या नक्काशी। फूल के आकार का कोई गहना, जैसे करन-फूल, सीसफूल, हथफूल। ३. पीतल आदि की गोल गाँठ या घुंडी। फुलिया। ४. कुष्ठ रोग के कारण शरीर पर सफेद या लाल धब्बा। श्वेत कुष्ठ। ५. स्त्रियों का मासिक रज। ६. शवदाह के बाद बची हुई हड्डियाँ। ७. एक मिश्रधातु, जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है।

संज्ञा स्त्री० १. फूलने की क्रिया या भाव। २. उमंग। उत्साह। प्रसन्नता। आनंद। हर्ष।

मुहा०—फूल झड़ना=मुँह से प्रिय और मधुर बातें निकलना। फूल-सा=अत्यंत सुकुमार या सुंदर। फूल सूँघकर रहना=बहुत कम खाना (स्त्री० व्यंग्य)। पान-फूल-सा=अत्यंत सुकुमार।

फूलकारी–संज्ञा स्त्री० बेलबूटे बनाने का काम।

फूलगोभी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की गोभी, जिसमें पत्तों का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है। गाँठगोभी।

फूलडोल—संज्ञा पुं० चैत्र शुक्ल एकादशी को मनाया जाने वाला भगवान् श्रीकृष्ण का उत्सव।

फूलदान—संज्ञा पुं० गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिलास के आकार का पात्र।

फूलदार—वि० वह वस्तु, जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे बने हों।

फूलना—क्रि० अ० १. फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना। २. फूल का संपुट खुलना, जिससे उसकी पँखड़ियाँ फैल जायँ। ३. भीतर किसी वस्तु के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना। ४. शरीर के किसी भाग का सूजना। स्थूल होना। ५. गर्व करना। इतराना। घमंड करना। ६. बहुत आनंदित होना। ७. मुँह फुलाना। मान करना। रूठना।

मुहा०—फूला-फूला फिरना=प्रसन्न घूमना। आनंद में रहना। फूले अंग न समाना=अत्यंत आनंदित होना। फूलना-फलना=सुखी और संपन्न होना। उन्नति करना। फूलना-फालना=उल्लास में रहना। प्रसन्न होना।

फूलमती—संज्ञा स्त्री० एक देवी।

फूला—संज्ञा पुं० १. आँख की पुतली का सफेद दाग। २. खीला। ३. लावा।

फूली—संज्ञा स्त्री० आँख की पुतली का सफेद दाग। आँख का रोग।

फूस—संज्ञा पुं० १. छप्पर छानेवाली सूखी लम्बी घास। २. सूखा तृण। घास। तिनका। खर।

फूहड़—वि० बेशऊर। भद्दा। अशिक्षित। मूर्ख। बेढंगा।

फूही—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फेंक—संज्ञा स्त्री० फेंकने की क्रिया या भाव।

फेंकना—क्रि० स० १. झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। असावधानी या भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना या रखना। २. अनादर से त्यागना। छोड़ना। खोना। ३. अपव्यय करना। फजूल खर्च करना।

फेंट—संज्ञा स्त्री० १. कमर का घेरा। कटि-मंडल। २. धोती या वस्त्र का वह भाग, जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। पटुका। कमरबंद। ३. फेरा। घुमाव। लपेट। ४. फेंटने की क्रिया या भाव।

मुहा०—फेंट धरना या पकड़ना=इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पावे। फेंट कसना या बाँधना=कमर कसकर तैयार होना।

फेंटना—क्रि० स० मिलाना। गाढ़े द्रव पदार्थ को घुमाकर भले प्रकार मिलाना। गड्डी के ताशों को उलट-पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना।

फेंटा—संज्ञा पुं० १. छोटी पगड़ी। मुरेठा। साफा। कमर का घेरा आदि। २. दे० "फेंट"। सूत की बड़ी आँटी।

फेंटी—संज्ञा स्त्री० आँटी। लच्छी।

फेकरना—क्रि० अ० (सिर का) खुलना। नंगा होना।

क्रि० अ० दे० "फेंकना"।

फेन—संज्ञा पुं० [वि० फेनिल] नन्हें-नन्हें बुलबुलों का समूह। झाग।

फेनाग्र—संज्ञा पुं० बुद्बुद।

फेनिका—संज्ञा स्त्री० फेनी नाम की मिठाई।

फेनिल—वि० फेन-युक्त। झाग से भरा हुआ।

फेनी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

फेफड़ा—संज्ञा पुं० शरीर के भीतर का वह अवयव, जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।

फेफड़ी—संज्ञा स्त्री० सूखे हुए होंठ पर की चमड़ी। पपड़ी।

फेरंड—संज्ञा पुं० गीदड़।

फेर—संज्ञा पुं० १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव। झुकाव। मोड़ २. परिवर्तन। उलट-पलट। ३. अंतर। भेद ४. असमंजस। उलझन। दुबधा। संशय भ्रम। ५. धोखा। छल। षट्चक्र। षडयंत्र चालबाजी। ६. बखेड़ा। झंझट। ७. युक्ति उपाय। ८. अदला-बदला। आदान-प्रदान ९. एवज। हानि। घाटा। १०. भूत-प्रेत का प्रभाव। ११. दिशा।

*अव्य० फिर। एक बार और। पुनः।

मुहा०—फेर खाना=सीधा न आकर इधर-

उधर घूमकर अधिक चलना। दिनों का फेर=एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति (विशेषतः अच्छी से बुरी दशा की)। कुफेर=बुरे दिन। सुफेर=अच्छी दशा। फेर में पड़ना=असमंजस में होना। निन्नानबे का फेर=निन्नानबे रुपए पाकर सौ रुपए पूरे करने की धुन। रुपया बढ़ाने का चसका। हेर-फेर=लेन-देन। व्यवसाय।

फेरना—क्रि० स० १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। मोड़ना। घुमाना। २. पीछे चलाना। लौटाना। वापस करना। वापस लेना। लौटा लेना। ३. घुमाना। चक्कर देना। ऐंठना। मरोड़ना। ४. तह चढ़ाना। पोतना। ५. उलट-पलट या इधर-उधर करना। चारों ओर सबके सामने ले जाना। ६. घोषित या प्रचारित करना। ७. घोड़े आदि पशुओं को ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना। निकालना। मुहा०—पानी फेरना=नष्ट करना।

फेरफार—संज्ञा पुं० १. उलट-फेर। परिवर्त्तन। २. अन्तर। फर्क। ३. टाल-मटूल। ४. घुमाव-फिराव। चक्कर। पेच।

फेरवट—संज्ञा स्त्री० फिरने का भाव। फेरफार। अन्तर। फेरा। घुमाव। चक्कर। पेच। टाल-मटूल। बहाना।

फेरा—संज्ञा पुं० घूमना। घुमाव। चारों ओर चक्कर। प्रदक्षिणा। लेटने में एक-एक बार का घुमाव। लपेट। बल। मोड़। बार-बार आना-जाना, घूमते-फिरते पहुँचना। लौटकर फिर आना। घेरा। आवर्त्त। मंडल। भाँवर।

फेरि*—अव्य० फिर। पुनः।

फेरी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. भिक्षा के लिए चक्कर लगाना। चक्कर। कई बार आना-जाना। ५. सौदा लादकर गली-गली बेचना।

फेरीवाला—संज्ञा पुं० घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेरु—संज्ञा पुं० गीदड़। सियार। शृगाल।

फ़ेल—संज्ञा पुं० [अ०] कर्म्म। काम। क्रिया। वि० [अंग्रे०] असफल। अनुत्तीर्ण।

फ़ेहरिस्त—संज्ञा स्त्री० दे० "फिहरिस्त"।

फ़ैंसी—वि० [अंग्रे०] सुन्दर। मनोहर। दिखाऊ। तड़क भड़कवाला।

फ़ैक्टरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] कारखाना।

फ़ैज़—संज्ञा पुं० [अ०] १. वृद्धि। लाभ। २. फल। ३. उपकार।

फ़ैयाज़—वि० [अ०] (संज्ञा स्त्री० फैयाजी) बहुत अधिक उदार और दानी।

फैलना—क्रि० अ० १. पसरना। विस्तृत होना। २. अधिक बड़ा या लंबा-चौड़ा होना। स्थूल होना। मोटा होना। वृद्धि होना। ३. छितराना। बिखरना। ४. तनकर किसी ओर बढ़ना। ५. अधिकता से मिलना। प्रसिद्ध होना। ६. आग्रह करना। हठ करना। ७. भाग का ठीक-ठीक लग जाना।

फ़ैलसूफ़—वि० [अ०] फजूल खर्च करनेवाला।

फ़ैलसूफ़ी—संज्ञा स्त्री० [अ०] फजूलखर्ची। अपव्यय।

फैलाना—क्रि० स० विस्तृत करना। पसारना। विस्तार बढ़ाना। बढ़ाना। वृद्धि करना। भर देना। छा देना। बिखेरना। अलग-अलग दूर तक कर देना। तानकर किसी ओर बढ़ाना। प्रचलित करना। जारी करना। दूर तक पहुँचाना। प्रसिद्ध करना। चारों ओर प्रकट करना। हिसाब-किताब करना। लेखा लगाना। गुणा-भाग ठीक या सही होने की जाँच करना।

फैलाव—संज्ञा पुं० विस्तार। प्रसार। प्रचार। बढ़ती। लम्बाई-चौड़ाई।

फ़ैशन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बनाव-सिंगार का नया या अच्छा तरीका। ढंग। रीति। प्रथा। चलन।

फ़ैसला—संज्ञा पुं० [अ०] निर्णय। विवाद का निपटारा। किसी मुकदमे में अदालत की अन्तिम राय या आज्ञा।

फैसिज्म—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] फैसिस्ट दल का सिद्धान्त। अपने दल या दल के नेता के हाथ में सारा अधिकार सौंपने का सिद्धान्त (डिक्टेटरशिप—प्रजातंत्र का विरोधी)।

फैसिस्ट या फासिस्ट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जर्मनी और इटली का एक राष्ट्रवादी दल, जो प्रथम

महायुद्ध के बाद संघटित हुआ था। सारा अधिकार अपने दल या दल के नेता के हाथ में सौंपने के सिद्धान्त में विश्वास करनेवाला।

फोंक–संज्ञा पुं० तीर के पीछे की नोक। वि० खोखला। पोला। थोथा।

फोंका–संज्ञा पुं० चोंगा। फोंफी।

फोंका गोला–संज्ञा पुं० तोप का लम्बा गोला।

फोंफर, **फाँफर**†–वि० पोला। जिसके भीतर खाली जगह हो।

फोंफी–संज्ञा स्त्री० नली। छोटा चोंगा। वि० खोखली।

फोक–संज्ञा पुं० १. सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश। सीठी। भूसी। तुष। छिलका २. एक तृण। फीकी या नीरस चीज।

फोकट–वि० बिना दाम का। सेंत का। जिसका कुछ मूल्य न हो। व्यर्थ। निःसार। तुच्छ। संज्ञा पुं० छूँछा। दरिद्र। कंगाल।

मुहा०—फोकट में=मुफ्त में। योंही।

फोकला‡–संज्ञा पुं० छिलका। बकला।

फोकस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह बिन्दु, जहाँ प्रकाश की किरणें एकत्र हों।

फोटो–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छाया-चित्र। प्रतिबिम्ब। फोटोग्राफ के यंत्र से लिया गया चित्र।

फोटोग्राफर–संज्ञा पुं० [अँग्रे०] फोटो खींचनेवाला या इसका व्यवसाय करनेवाला।

फोड़ना–क्रि० स० १. टुकड़े-टुकड़े करना। भग्न करना। विदीर्ण करना। तोड़ना। २. नष्ट करना। भेदन करना। ३. फाड़ना। चीरना। ४. अंकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना। ५. दूसरे पक्ष से अलग करके अपने पक्ष में कर लेना। ६. भेद-भाव उत्पन्न करना। ७. फूट डालकर अलग करना। ८. भेद या रहस्य सहसा प्रकट करना।

फोड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० फोड़िया] व्रण। घाव। बड़ी फुंसी। स्फोटक।

फोता–संज्ञा पुं० [फा०] १. अंडकोष। २. भूमिकर। पोत। ३. थैली। थैला। कोष। ४. पटुका। कमरबन्द।

फ़ोतेदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. कोषाध्यक्ष। खजांची। २. रोकड़िया। पोतदार।

फोनोग्राफ–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक यंत्र, जिसमें कही हुई बातें या गाए हुए गाने बाद में ज्यों के त्यों सुनाई देते हैं।

फोरना*†–क्रि० स० दे० "फोड़ना"।

फोरमैन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] किसी कारखाने के कारीगरों का सरदार।

फोहा–संज्ञा पुं० टुकड़ा। फाहा।

फोहरा–संज्ञा पुं० दे० 'फुहार'।

फ़ौज–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सेना। लश्कर। २. झुंड। जत्था।

फ़ौजदार–संज्ञा पुं० [फा०] सेनापति। सेनानायक। सेना का प्रधान।

फ़ौजदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लड़ाई-झगड़ा। मार-पीट। २. मार-पीट के मुकदमों का निर्णय करनेवाली अदालत। मारपीट या लड़ाई-झगड़ा-सम्बन्धी मुकदमा। वि० १. मारपीट या लड़ाई-झगड़ा सम्बन्धी। २. संगीन। खतरनाक।

फ़ौजी–वि० [फा०] फौज-संबंधी। सैनिक।

फ़ौजी क़ानून–संज्ञा पुं० सैनिक शासन से सम्बन्ध रखनेवाले कानून, जो साधारण कानूनों से बहुत कठोर होते हैं और किसी बड़े उपद्रव या सैनिक आक्रमण आदि के समय साधारण नागरिकों पर लागू किए जाते हैं (मार्शल ला)।

फ़ौत–वि० [अ०] मृत। मृतक।

फ़ौती–संज्ञा स्त्री० मरने की वह सूचना, जो सरकारी कागजों में लिखाई जाती है।

फ़ौरन–क्रि० वि० [अ०] तुरंत। तत्काल। शीघ्र।

फ़ौलाद–संज्ञा पुं० [फा०] पक्का लोहा। इस्पात। खेड़ी।

फ़ौलादी–वि० फौलाद का बना हुआ। दृढ़। मजबूत।

फ़ौवारा–संज्ञा पुं० फव्वारा।

फ़्रांसीसी–वि० १. फ्रांस देश का। २. फ्रांस-निवासी।

फ़्राक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] लड़कियों या स्त्रियों के घुटने तक पहनने का पहनावा।

फ़्री–वि० [अंग्रे०] १. स्वतंत्र। मुक्त। २. मुफ्त। बिना दाम का।

फ़्रेम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] चौखटा।

ब

ब–हिंदी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। अतः यह ओष्ठ्य वर्ण है। संज्ञा पुं० १. वरुण। २. सिन्धु। ३. जल। ४. सुगन्ध। ५. कुम्भ।

बंक–वि० १. टेढ़ा। तिरछा। बक्र। २. पुरुषार्थी। पराक्रमी। ३. दुर्गम। अगम। जिस तक पहुँच न हो सके।
संज्ञा पुं० (अंग्रे०-बैंक) वह संस्था, जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

बंकट–वि० दे० "टेढ़ा"। तिरछा। वक्र।
संज्ञा पुं० हनुमान।

बंकनाल–संज्ञा स्त्री० एक नली, जिससे सुनार लोग चिराग की लौ फूँकते हैं। बगनहा।

बंकराज–संज्ञा पुं० एक प्रकार का सर्प।

बंकसाल–संज्ञा पुं० मस्तूलों पर चढ़ानेवाली रस्सियों या जंजीरों को रखने के लिए जहाज का बड़ा कमरा।

बंका†–वि० १. टेढ़ा। तिरछा। २. बाँका। ३. पराक्रमी।

बंकाई†–संज्ञा स्त्री० टेढ़ापन। तिरछापन। वक्रता।

बंकुरता*–संज्ञा स्त्री० वक्रता। टेढ़ापन।

बंग–संज्ञा पुं० १. दे० "वंग"। २. बंगाल। ३. एक पौष्टिक औषध। राँगे की भस्म का रस-विशेष।
वि० दे० "वक्र"। १. टेढ़ा। २. उद्दंड।

बँगला–वि० बंगाल देश का। बंगाल-संबंधी।
संज्ञा पुं० १ अंग्रेजी ढंग का मकान। चारों ओर से खुला हुआ एक मंजिल का मकान, जिसके चारों ओर बरामदे हों। २. वह छोटा हवादार कमरा, जो प्रायः ऊपरवाली छत पर बनाया जाता है। ३. बंगाल देश का पान।
संज्ञा स्त्री० बंगाल देश की भाषा।

बँगली–संज्ञा स्त्री० चूड़ियों के साथ पहना जानेवाला स्त्रियों का एक गहना।

बंगसार–संज्ञा पुं० समुद्र के पास बना ऊँचा चबूतरा, जिस पर से लोग जहाज पर चढ़ते-उतरते हैं।

बंगा†–वि० टेढ़ा। मूर्ख। झगड़ालू।

बंगाल–संज्ञा पुं० १. भारतवर्ष का पूर्वीय प्रान्त-विशेष, जिसके अब दो भाग हो गए हैं। पूर्वीय बंगाल पाकिस्तान के अन्तर्गत है और पश्चिमी बंगाल भारत के। २. एक राग।

बंगाला–संज्ञा पुं० बंगाल प्रांत।
संज्ञा स्त्री० बंगालिका नाम की एक रागिनी।

बंगालिन–संज्ञा स्त्री० बंगाली स्त्री। बंगाल की रहनेवाली स्त्री।

बंगाली–संज्ञा पुं० बंगाल का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बंग-देश की भाषा।

बंगुरी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का एक आभूषण, जो पहुँचे पर पहना जाता है।

बंचक–संज्ञा पुं० वंचक। ठग। धूर्त्त। पाखण्डी। छली।

बंचकता, बंचकताई*†–संज्ञा स्त्री० छल। चालबाजी। धूर्त्तता। पाखण्ड।

बंचना–संज्ञा स्त्री० वंचना। ठगी। धूर्त्तता। छल।
*†–क्रि० स० ठगना। छलना।

बँचवाना–क्रि० स० पढ़वाना।

बंछना*†–क्रि० स० अभिलाषा करना। चाहना। इच्छा करना।

बंछित*†–वि० दे० "वांछित"।

बंज†–संज्ञा पुं० दे० "बनिज"। बलूत का पेड़।

बंजर–संज्ञा पुं० ऊसर भूमि। उजाड़। वीरान।

बंजारा–संज्ञा पुं० दे० "बनजारा"। व्यापारी, जो बैल आदि पर माल लादकर घूमा करता है। रोजगारी।

बंझा–वि० संज्ञा स्त्री० दे० "बाँझ"।

बंझौटी–संज्ञा स्त्री० गर्भ नाश करने की एक औषध।

बँटना–क्रि० अ० विभाग होना। हिस्सा होना। अलग-अलग दिया जाना या बाँटा जाना।

बँटवाई—संज्ञा स्त्री० बाँटने या पिसवाने की क्रिया या मजदूरी।

बँटवाना—क्रि० स० बाँटने का काम दूसरे से कराना।

बँटवारा—संज्ञा पुं० बाँटने की क्रिया। विभाजन। तकसीम।

बँटवैया—संज्ञा पुं० बाँटनेवाला। विभाजक।

बंटा—संज्ञा पुं० [स्त्री० बंटी] छोटा डब्बा।

बँटाई—संज्ञा स्त्री० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार की खेती, जिसमें खत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फसल का कुछ अंश मिलता है।

बँटाढार—वि० नष्ट। बर्बाद।

बँटाना—क्रि० स० १. बँटवाना। २. हिस्सा कराना। सहयोग देना। भाग लेना।

बँटावन*—वि० बाँटनेवाला। बँटानेवाला। भाग करनेवाला।

बंटी—संज्ञा स्त्री० पशुओं को फँसाने का जाल। फन्दा।

बंडल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छोटी गठरी। पुलिन्दा।

बंडा—संज्ञा पुं० बड़ी अरुई। एक प्रकार का कद्दू।

बंडी—संज्ञा स्त्री० १. छोटी मिरजई। फतूही। कोट की तरह आधे बाँह का एक पहनावा। २. बगलबंदी।

बँड़ेरा या बँडेरी—संज्ञा स्त्री० खपरैल में मँगरे पर लगनेवाली लकड़ी।

बंडोहा—संज्ञा पुं० बवंडर। अंधड़। चक्रवात।

बंद—संज्ञा पुं० १. बाँधने की वस्तु। २. मेड़। बाँध। पुश्ता। ३. बंधन। कैद। ४. शरीर के अंगों का कोई जोड़। ५. तनी। फीता। कागज का लंबा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा।

वि० रुका हुआ। स्थगित। अवरुद्ध। बँधा हुआ। जो खुला न हो।

बंदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] आदाब। सलाम। प्रणाम। ईश्वर की वंदना। सेवा। खिदमत।

बंदगोभी—संज्ञा स्त्री० करमकल्ला। पातगोभी।

बंदन—संज्ञा पुं० दे० "वंदन"। रोचन। रोली। सेंदुर। ईंगुर।

बंदनवार—संज्ञा पुं० उत्सव के अवसर पर द्वार या दीवारों पर बाँधी गई फूलों या पत्तों की झालर। तोरण।

बंदना—संज्ञा स्त्री० दे० "वंदना"।

क्रि० स० प्रणाम करना। स्तुति करना।

बंदनी*—वि० दे० "वंदनीय"।

बंदनीमाल—संज्ञा स्त्री० गले से पैरों तक लटकनेवाली लम्बी माला।

बंदर—संज्ञा पुं० वानर। मर्कट। कपि।

मुहा०—बंदर-घुड़की या बंदर-भबकी=ऐसी धमकी या डाँट-डपट, जो केवल डराने या धमकाने के लिए ही हो।

संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।

बंदरगाह—संज्ञा पुं० [फा०] समुद्र-तट का वह स्थान, जहाँ जहाज ठहरते हैं।

बंदरघुड़की—संज्ञा स्त्री० ऐसी धमकी, जो दिखाने भर को हो, पर पूरी न की जाय। ऐसी धमकी, जो किसी प्रकार प्रभावोत्पादक न हो सके।

बंदरबाँट—संज्ञा स्त्री० न्याय के नाम पर ऐसा बटवारा करना, जिसमें न तो वादी को कुछ मिले और न प्रतिवादी को ही, सब बटवारा करनेवाले के पास पहुँच जाय।

बंदरभबकी—संज्ञा स्त्री० दे० "बंदरघुड़की"।

बंदवान—संज्ञा पुं० बंदीगृह का रक्षक। कैदखाने का अधिकारी। जेलर।

बंदसाल†—संज्ञा पुं० कैदखाना। जेल। बन्दीगृह।

बंदा—संज्ञा पुं० [फा०] दास। सेवक। विनीत भाषा में 'मैं' का एक रूप।

बंदानी—संज्ञा पुं० १. गोलंदाज। २. एक तरह का गुलाबी रंग।

बंदारु—वि० १. वंदनीय। २. आदरणीय। पूजनीय।

बंदिया†—संज्ञा स्त्री० बेंदी। मस्तक पर बाँधने का एक आभूषण। दासी। बाँदी।

बंदिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बाँधने की क्रिया या भाव। २. रचना। प्रबंध। योजना। ३. षड्यंत्र।

बंदी—संज्ञा पुं० १. कैदी। २. चारण। भाट। राजाओं का कीर्तिगान करनेवाला। ३. एक

प्रकार का गहना, जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

बंदीखाना–संज्ञा पुं० [फा०] कैदखाना। कारागार।

बंदीगृह–संज्ञा पुं० बन्दियों या कैदियों के रखने का स्थान। कैदखाना। कारागार। जेल (अंग्रे०)।

बंदीघर–संज्ञा पुं० दे० "बन्दीगृह"।

बंदीछोर*†–संज्ञा पुं० कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।

बंदीजन–संज्ञा पुं० चारण। भाट।

बंदीवान*–संज्ञा पुं० कारागार का रक्षक।

बंदूक–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रसिद्ध अस्त्र, जिसमें गोली चलाई जाती है।

बंदूकची–संज्ञा पुं० [फा०] बंदूक चलानेवाला सिपाही।

बंदेरा*–संज्ञा पुं० [स्त्री० बंदेरी] १. वंदी। कैदी। २. दास। सेवक।

बंदोबस्त–संज्ञा पुं० [फा०] १. प्रबंध। व्यवस्था। इंतजाम। २. खेती के लिए भूमि को नापकर उसका राज्यकर निर्धारित करने का काम। ३. वह सरकारी विभाग, जिसके सिपुर्द खेतों आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

बंध–संज्ञा पुं० १. बंधन। गाँठ। गिरह। कैद। पानी रोकने का धुस्स। बाँध। २. कोकशास्त्र के अनुसार रति का आसन। ३. योगशास्त्र के अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा या आसन। ४. गद्य या पद्य में निबन्ध-रचना। ५. छंद की ऐसी रचना, जिससे कोई विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। बाँधने की वस्तु। ६. बंद। बननेवाले घर की लम्बाई और चौड़ाई का योग। ७. फँसाव। लगाव। ८. शरीर।

बंधक–संज्ञा पुं० किसी से ऋण लेने के बदले में उसके पास रखी जानेवाली वस्तु। गिरों। रेहन। बाँधनेवाला।

बंधन–संज्ञा पुं० १. बाँधने की क्रिया। बाँधने की वस्तु। स्वतंत्रता में बाधक। प्रतिबंध। २. हत्या। वध। हिंसा। ३. रस्सी। ४. कारागार। बन्दीगृह। ५. शरीर का संधि-स्थान। जोड़।

बंधनग्रंथि–संज्ञा स्त्री० शरीर में वह हड्डी, जो किसी जोड़ पर हो।

बंधनपालक–संज्ञा पुं० कारागार का रक्षक।

बँधना–क्रि० अ० १. बंधन में आना। बद्ध होना। बाँधा जाना। गाँठ पड़ना। कैद होना। वंदी होना। प्रतिबंध में रहना। फँसना। अटकना। प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। २. ठीक या सही होना। क्रम निर्धारित होना। ३. स्थिर होना। ४. प्रेमपाश में बँधना या मुग्ध होना। संज्ञा पुं० बाँधने की वस्तु। बाँधने का साधन।

बँधवाना–क्रि० स० बाँधने का काम दूसरे से कराना।

बंधान–संज्ञा पुं० १. लेन-देन या व्यवहार आदि की बँधी हुई परिपाटी। २. वह पदार्थ या धन, जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ३. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। बन्धेज।

बँधाना–क्रि० स० १. धारण कराना। २. दे० "बँधवाना"।

बंधानी–संज्ञा स्त्री० कुली। मजदूर।

बंधाल–संज्ञा पुं० नाव का वह स्थान, जिसमें भीतर आया हुआ पानी जमा होता है।

बंधी–संज्ञा पुं० बँधा हुआ। बन्धन-युक्त। संज्ञा स्त्री० बंधेज। बँधा हुआ क्रम।

बंधु–संज्ञा पुं० १. भ्राता। भाई। २. सहायक। मददगार। ३. मित्र। दोस्त। ४. दोधक। एक वर्णवृत्त। ५. बंधूक फूल।

बँधुआ–संज्ञा पुं० बंदी। कैदी।

बंधुक–संज्ञा पुं० गुलदुपहरिया का पौधा और फूल।

बंधुता–संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुत्व"।

बंधुत्व–संज्ञा पुं० बंधु होने का भाव। बंधुता। भाई-चारा। मित्रता। दोस्ती।

बंधुदत्त–संज्ञा पुं० विवाह के समय कन्या को मिला हुआ धन। स्त्री-धन।

बंधुला–संज्ञा स्त्री० दुराचारिणी स्त्री। वेश्या।

बंधुर–संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. दुपहरिया का फूल। ३. हंस। बगुला।

वि० रम्य। मनोहर। नम्र।

बंधुल—संज्ञा पुं० व्यभिचारिणी स्त्री से उत्पन्न पुत्र। वेश्या-पुत्र।

वि० १. सुन्दर। २. नम्र।

बंधूक—संज्ञा पुं० दे० "बंधुक"।

बंधेज—संज्ञा पुं० १. नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या धन। २. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। बंधान।

बंध्या—वि० बाँझ। संतान न पैदा कर सकनेवाली स्त्री।

बंध्यापन—संज्ञा पुं० दे० "बाँझपन"।

बंध्यापुत्र—संज्ञा पुं० ठीक वैसा ही असंभव कार्य या पदार्थ, जैसे बंध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज। असम्भव बात।

बंपुलिस—संज्ञा स्त्री० सर्वसाधारण के लिए म्यूनिसिपैलिटी आदि के द्वारा बनवाया हुआ पाखाना।

बंब—संज्ञा स्त्री० [अनु०] एक तरह की आवाज। युद्ध में वीरों का उत्साहवर्द्धक नाद। रणनाद। डंका। नगाड़ा।

बंबा—संज्ञा पुं० १. जल-कल। पंप। पानी का नल। २. स्रोत। सोता।

बंबाना—क्रि० अ० गौ आदि पशुओं का बाँ-बाँ शब्द करना। रँभाना।

बंबू—संज्ञा पुं० १. चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली। २. बाँस।

बंबूकाट—संज्ञा पुं० ताँगे-जैसी एक विशेष प्रकार की सवारी। (पश्चिम)

बँभनाई†—संज्ञा स्त्री० १. ब्राह्मणत्व। २. हठ।

बंस—संज्ञा पुं० दे० "वंश"।

बंसकार—संज्ञा पुं० बाँसुरी।

बंसलोचन—संज्ञा पुं० वंशलोचन। बाँस का सार भाग, जो सफेद और नीले रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। बंसकपूर।

बंसवाड़ी—संज्ञा स्त्री० बाँसों का झुरमुट। एक जगह उगे हुए बाँसों का समूह।

बंसी—संज्ञा स्त्री० वंशी १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। मुरली। २. मछली फँसाने का एक औजार। ३. विष्णु, कृष्ण और राम के चरणों का रेखा-चिह्न।

बंसीधर—संज्ञा पुं० दे० "वंशीधर"। श्रीकृष्ण।

बँहगी—संज्ञा स्त्री० बोझा ढोने का उपकरण, जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरों पर रस्सियों के बड़े-बड़े छींके लटका दिए जाते हैं।

बँहुटा—संज्ञा पुं० बाँह पर पहनने का एक गहना।

बउरा†*—वि० दे० "बावला"।

बउराना†*—क्रि० अ० पागल हो जाना। बावला हो जाना।

बक—संज्ञा पुं० १. बगला। पक्षी-विशेष। २. अगस्त्य नामक पुष्प अथवा वृक्ष। ३. कुबेर। ४. बकासुर।

संज्ञा स्त्री० बकवाद। निरर्थक बात। बड़-बड़ाहट। प्रलाप।

बकठाना†—क्रि० स० कसैली चीज के खाने से मुँह के स्वाद का बिगड़ जाना।

बकतर—संज्ञा पुं० [फा०] लड़ाई के समय पहनने का एक प्रकार का कवच। सन्नाह।

बकता*—वि० दे० "वक्ता"।

बकध्यान—संज्ञा पुं० बनावटी साधु-भाव। बगले की तरह शान्त भाव से ऐसी चेष्टा जो देखने में निष्कपट जान पड़े, पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो।

बकध्यानी—वि० कपटी। दुष्ट। ढोंगी। पाखंडी।

बकना—क्रि० स० बकवाद करना। व्यर्थ बोलना। प्रलाप करना। बड़बड़ाना।

बकबक—संज्ञा स्त्री० दे० "बकवाद"।

बकबाहा—संज्ञा पुं० बड़बड़िया। बक्की। वाचाल। बकवादी।

बकमौन—संज्ञा पुं० दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।

वि० चुपचाप अपना काम साधनेवाला।

[illegible] पुं० बकरों का मांस बेचनेवाला। कसाई।

[illegible] क्रि० स० १. आपसे आप बकना। बड़बड़ाना। २. अपना दोष या अपराध आप कह देना।

बकरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बकरी] एक प्रसिद्ध चौपाया, जिसके सींग छोटे और पीछे झुके हुए, लम्बे बाल, पूँछ छोटी और खुर फटे होते हैं। अज। छाग।

बकलस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार की विलायती अँकुसी, जो किसी बंधन के दो छोरों को मिलाए रखने या कसने के काम में आती है। बकसुआ। लोहे का चौकोर छल्ला-विशेष।

बकला–संज्ञा पुं० [वल्कल] छिलका।

बकवाद–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात या बकबक।

बकवादी–वि० बहुत बकबक करनेवाला। बक्की।

बकवाना–क्रि० स० किसी से बकवाद करना।

बकवास–संज्ञा स्त्री० बकवाद करने की इच्छा। दे० "बकवाद"।

बकवृत्ति–संज्ञा स्त्री० बनावटी साधुता का व्यवहार। पाखण्ड। छल। कपट।

बकव्रती–वि० कपटी। दे० "बकध्यानी"। पाखण्डी।

बकस–संज्ञा पुं० [अंग्रे० बाक्स] १. संदूक। २. डिब्बा। खाना।

बकसना*–क्रि० स० प्रसन्नतापूर्वक या कृपा-पूर्वक देना। प्रदान करना। छोड़ देना। क्षमा करना। माफ करना।

बकसाना*†–क्रि० स० क्षमा कराना। माफ कराना।

बकसीस*–संज्ञा स्त्री० [फा० बख्शिश] १. दान। २. इनाम। पुरस्कार।

बकसुआ–संज्ञा पुं० दे० "बकलस"।

बकाना–क्रि० स० कहलाना। स्वीकार कराना। रटाना।

बकायन–संज्ञा स्त्री० नीम की तरह का एक पेड़।

बकाया–संज्ञा पुं० [अ०] दे० "बाकी"।

बकारि–संज्ञा पुं० बकासुर को मारनेवाले श्रीकृष्ण।

बकारी–संज्ञा स्त्री० मुँह से निकलनेवाला ।

बकावर–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।

बकावली–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"। एक पौधा, जिसके फूल सफेद और सुगंधित होते हैं।

बकासुर–संज्ञा पुं० एक दैत्य का नाम, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बकुचना*–क्रि० अ० सिमटना। सिकुड़ना। संकुचित होना।

बकुचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बकुची] छोटी गठरी। बकचा।

बकुचाना–क्रि० स० बकुचे में बाँधकर पीठ या कंधे पर लटकाना।

बकुची–संज्ञा स्त्री० एक पौधा, जो औषध के काम में आता है। छोटी गठरी।

बकुल–संज्ञा पुं० मौलसिरी।

बकुला†–संज्ञा पुं० दे० "बगुला"।

बकेन, बकेना–संज्ञा स्त्री० वह गाय या भैंस, जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो।

बकैयाँ–संज्ञा पुं० बच्चों का घुटनों के बल चलना।

बकोट–संज्ञा स्त्री० बकोटने की मुद्रा, क्रिया या भाव। किसी वस्तु को ग्रहण करने में हाथ के पंजे की स्थिति। उतनी चीज जितना एक बार चंगुल में आ सके।

बकोटना–क्रि० स० नाखूनों से नोचना। पंजा मारना। निकोटना। खरोंचना।

बकौरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।

बक्कल–संज्ञा पुं० छिलका। बकला। छाल। वल्कल।

बक्काल–संज्ञा पुं० [अ०] बनिया।

बक्की–वि० बहुत बोलने या बकबक करने-वाला। बड़बड़िया। बकवादी। गप्पी। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का धान।

बक्खर–संज्ञा पुं० १. खेत जोतने का एक यंत्र। २. चीनी का शीरा।

बक्स–संज्ञा पुं० सन्दूक। [अंग्रे० बाक्स]

बखतर–संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।

बखरा–संज्ञा पुं० [फा०] १. भाग। हिस्सा। बाँट। २. दे० "बाखर"।

बखरी‡–संज्ञा स्त्री० मकान। झोंपड़ी। गृह। घर। कुटी।

बखरैत–वि० हिस्सेदार।

बखसीस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बखशीश"। इनाम।

बखान–संज्ञा पुं० वर्णन। कथन। प्रशंसा। स्तुति। बड़ाई।

बखानना–क्रि० स० वर्णन करना। प्रशंसा करना। व्यंग्य में शिकायत करने के बहाने बड़ाई करना।

बखार†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बखारी] गोल घेरा, जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है। खत्ता।

बखिया–संज्ञा पुं० [फा०] महीन और मजबूत सिलाई का एक भेद।

बखियाना–क्रि० स० बखिया की सिलाई करना।

बखील–वि० [अ०] कंजूस।

बखूबी–क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह। भली भाँति।

बखेड़ा–संज्ञा पुं० झंझट। झगड़ा। विवाद। कठिनाई। मुश्किल।

बखेड़िया–वि० बखेड़ा करनेवाला। झगड़ालू। फसादी।

बखेरना–क्रि० स० फैलाना। छितराना। चीजों को इधर-उधर या दूर-दूर फैलाना।

बखोरना‡–क्रि० स० छेड़ना। टोकना। पूछना।

बख्तर–संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।

बख्शना–क्रि० स० १. दे० "देना"। २. छोड़ना। ३. क्षमा करना। माफ करना।

बख्शवाना, बख्शाना–क्रि० स० किसी को बख्शने में प्रवृत्त करना।

बख्शिश, बख्शीश–संज्ञा स्त्री० [फा०] उदारता। दान। क्षमा। कृपा।

बख्शी–संज्ञा पुं० म्युनिसिपैलिटी आदि में वेतन बाँटनेवाला कर्मचारी।

बग†–संज्ञा पुं० दे० "बक"। बगुला।

बगछुट, बगटुट–क्रि० वि० सरपट। बेतहाशा। बड़े वेग से।

बगदना‡–क्रि० अ० १. बिगड़ना। खराब होना। २. भ्रम में पड़ना। बहकना। भूलना। ३ गिरना। लुढ़कना। ठीक मार्ग से हट जाना।

बगदहा*‡–वि० [स्त्री० बगदही] बिगड़ैल। चौंकने या बिगड़नेवाला।

बगदाना†–क्रि० स० १. बिगाड़ना। खराब करना। २. ठीक रास्ते से हटाना। भुलाना। भटकाना।

बगमेल–संज्ञा पुं० १. बराबर-बराबर चलना। २. तुलना। बराबरी। समानता।
क्रि० वि० बाग मिलाए हुए। साथ-साथ।

बगर*†–संज्ञा पुं० १. महल। प्रासाद। बड़ा मकान। घर। कोठरी। २. आँगन। सहन। ३. गौओं को बाँधने का स्थान। बगार। घाटी।
संज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।

बगरना*†–क्रि० अ० छितरना। बिखरना।

बगराना†–क्रि० स० छितराना। फैलाना। छिटकाना।
क्रि० अ० बगरना। फैलना। बिखरना।

बगरूरा*–संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बगल–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. काँख। पार्श्व। २. समीप का स्थान। किनारा। ३. कुरते आदि में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जानेवाला कपड़ा।
मुहा०—बगल में दबाना या धरना=अधिकार करना। ले लेना। बगलें बजाना=अत्यधिक प्रसन्नता का भाव व्यक्त करना। बहुत खुशी मनाना। बगलें झाँकना=इधर-उधर भागने का यत्न करना।

बगलगंध–संज्ञा पुं० १. बगल का फोड़ा। कँखवार। २. एक प्रकार का रोग, जिसमें बगल से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

बगला—संज्ञा पुं० [स्त्री० बगली] सफेद रंग का एक पक्षी, जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है।
मुहा०–बगला भगत=१. धोखेबाज। कपटी। २. धर्मध्वजी।

बगलियाना–क्रि० अ० बगल से होकर जाना। अलग हटकर चलना या निकलना।
क्रि० स० अलग करना। बगल में लाना या करना।

बगली–संज्ञा स्त्री० १. जेब। कुरता आदि में बगल के नीचे लगाया जानेवाला कपड़ा। २. बगुला पक्षी की मादा। ३. थैली। तिलादानी। ४. बगल।
वि० बगल-संबंधी। बगल का।
मुहा०—बगली घूँसा=वह वार, जो आड़ में छिपकर या धोखे से किया जाय।

बगलौहाँ‡–वि० [स्त्री० बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना*‡–क्रि० स० दे० "बख्शना"।

बगा*†–संज्ञा पुं० १. बागा। जामा। २. बगला।

बगाना*‡–क्रि० स० सैर कराना। टहलाना। घुमाना-फिराना।
क्रि० अ० भागना। जल्दी-जल्दी जाना।

बगार–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ गाएँ बाँधी या चराई जाती हैं। घाटी।

बगारना–क्रि० स० १. बिखेरना। छितराना। २. दे० "बगराना"।

बग़ावत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बलवा। २. विद्रोह।

बगिया*†–संज्ञा स्त्री० फुलवाड़ी। उपवन। छोटा बगीचा। वाटिका।

बगीचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बगीची] उद्यान। छोटा बाग। वाटिका। उपवन।

बगुर–संज्ञा पुं० फन्दा। जाल।

बगुला–संज्ञा पुं० दे० "बगला"।

बगूला–संज्ञा पुं० बवंडर। एक ही स्थान पर चक्कर काटती हुई दिखाई देनेवाली हवा या आँधी।

बगेदना†–क्रि० स० १. हटाना। भगाना। २. दे० "बगदना"।

बगेरी–संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया। बघेरी। टिटिहिरी।

बग़ैर–अव्य० [अ०] बिना।

बग्गी, बग्घी–संज्ञा स्त्री० चार पहियों की छायादार घोड़ा-गाड़ी।

बघंबर–संज्ञा पुं० बाघ की खाल।

बघछाला–संज्ञा स्त्री० दे० "बाघंबर"।

बघनहाँ†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बघनहीं] १. एक प्रकार का हथियार, जिसमें बाघ के नाखून जैसे चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं। शेरपंजा। २. बच्चों के गले का एक आभूषण, जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं।

बघनहियाँ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बघनहाँ"।

बघना*–संज्ञा पुं० १. बाघ के नख या दाँत। २. दे० "बघनहाँ"।

बघरूरा‡–संज्ञा पुं० दे० "बगुला"।

बघार–संज्ञा पुं० छौंकने का मसाला। छौंक। तड़का।

बघारना–क्रि० स० १. छौंकना। तड़का देना। दागना। २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना।
मुहा०—शेखी बघारना=बढ़-बढ़कर बातें करना।

बघूरा*–संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बघेल–संज्ञा पुं० राजपूतों की एक उपजाति।

बघेला–संज्ञा १. पुं० बघेल क्षत्रिय। २. बाघ का बच्चा।

बच*–संज्ञा पुं० वचन। वाक्य।
संज्ञा स्त्री० एक पौधा, जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं।

बचका–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पकवान। २. गठरी। पुटकी।

बचकाना‡–वि० [स्त्री० बचकानी] १. बच्चों के योग्य। बच्चों के लिए। २. बच्चों का-सा। बच्चों की तरह। थोड़ी अवस्था का।

बचत–संज्ञा स्त्री० १. बाकी। बचा हुआ अंश। शेष। लाभ। मुनाफा। २. रक्षा। बचाव।

बचन*†–संज्ञा पुं० १. दे० "वचन" २. वाणी।
मुहा०—बचन डालना=माँगना। याचना करना। बचन तोड़ना या छोड़ना=प्रतिज्ञा भंग करना। कहकर न करना। बचन बाँधना=प्रतिज्ञा कराना। वचनबद्ध करना। बचन हारना=प्रतिज्ञा में बँध जाना। बात हारना।

बचना–क्रि० अ० १. कष्ट या विपत्ति आदि से अलग रहना। रक्षा करना। २. किसी बुरी बात से अलग रहना। ३. रह जाना।

४. छूट जाना। शेष रह जाना। बाकी रहना। दूर या अलग रहना।
क्रि० स० कहना।
बचपन–संज्ञा पुं० १. लड़कपन। बाल्यावस्था। २. बच्चा होने का भाव।
बचवैया*‡–संज्ञा पुं० बचानेवाला। रक्षक।
बचा†*–संज्ञा पुं० [स्त्री० बच्ची] लड़का। बालक।
बचाना–क्रि० स० १. आपत्ति या कष्ट आदि में न पड़ने देना। रक्षा करना। अलग रखना। २ खर्च न होने देना। ३. छिपाना। चुराना। दूर रखना। अलग रखना।
बचाव–संज्ञा पुं० बचने या बचाने की क्रिया या भाव। त्राण। रक्षा।
बचिया–संज्ञा स्त्री० १. कसीदे के काम में छोटी बूटियाँ। २. छोटी लड़की।
बचून–संज्ञा पुं० भालू का बच्चा।
बच्चा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बच्ची] छोटा लड़का। बालक। नवजात शिशु।
वि० अज्ञान। अनजान।
मुहा०—बच्चों का खेल=सहज काम।
बच्चादान या **बच्चेदानी**–संज्ञा पुं० गर्भाशय।
बच्छ–संज्ञा पुं० १. बच्चा। बेटा। २. गाय का बछड़ा।
बच्छनाग–संज्ञा पुं० औषध-विशेष। एक तरह का विष। वत्सनाभ।
बच्छल*†–वि० माता-पिता के समान प्यार करनेवाला। वत्सल। कृपालु।
बच्छस*†–संज्ञा पुं० छाती। वक्षःस्थल।
बच्छा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बछिया] गाय का बछड़ा।
बछ*†–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"। गाय का बच्चा।
बछड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।
बछनाग–संज्ञा पुं० वत्सनाभ। एक स्थावर विष। यह नेपाल में होनेवाले एक पौधे की जड़ है। सींगिया। तेलिया। मीठा विष।
बछरा*–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछरू†–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछल*†–वि० दे० "वत्सल"।
बछवा‡–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछेड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बछेड़ी] घोड़े का बच्चा।
बछेरू*–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बजंत्री–संज्ञा पुं० बाजा बजानेवाला। बजनियाँ।
बजट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] भविष्य में होनेवाले आय और व्यय का लेखा।
दे० "व्याकल्प"।
बजड़ा–संज्ञा पुं० दे० "बजरा"।
बजना–क्रि० अ० १. शब्द होना। बोलना। किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर इस प्रकार पड़ना कि शब्द उत्पन्न हो। बाजे से शब्द निकलना। २. आघात पड़ना। प्रहार होना। हथियारों का चलना। ३. अड़ना। हठ या आग्रह करना। जिद करना। ४. ख्याति पाना। प्रसिद्ध होना। ५. लड़ाई होना।
संज्ञा पुं० १. बजनेवाला बाजा। २. झगड़ा। टंटा।
यौ०—बजना-बजनी (भोजपुरी)=हाथापाई। लड़ाई-झगड़ा। टंटा।
बजनियाँ†–संज्ञा पुं० बाजा बजानेवाला।
बजनी–वि० बजनेवाला। जो बजता या बजाता हो।
संज्ञा पुं० बाजा। बजाने की चीज। जिससे सस्वर शब्द निकले।
बजबजाना–क्रि० अ० उबलना। उफनना। सड़ना। गलना।
बजमारा*†–वि० [स्त्री० बजमारी] वज्र से मारा हुआ (गाली)। जिस पर वज्र गिरा हो।
बजरंग*–वि० वज्र के समान दृढ़ शरीरवाला।
संज्ञा पुं० हनुमानजी।
बजरंगबली–संज्ञा पुं० हनुमान। महावीर।
बजर*†–संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।
बजरबट्टू–संज्ञा पुं० एक प्रकार के वृक्ष का बीज। कहते हैं इसे बच्चों को नजर से बचाने के लिए पहनाते हैं।
बजरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की छायादार बड़ी नाव।
संज्ञा पुं० दे० "बाजरा"।

बजरागि*–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बजरी†–संज्ञा स्त्री० १. कंकड़ के छोटे-छोटे टुकड़े। कंकड़ी। २. ओला। ३. किले आदि की दीवारों के ऊपर छोटा नुमायशी कँगूरा। ४. दे० "बाजरा"।

बजवाई–संज्ञा स्त्री० बजाने या बजवाने की मजदूरी।

बजवाना–क्रि० स० किसी से बजाने का काम कराना।

बजवैया†–वि० बजानेवाला। बजैया।

बजा–वि० [फा०] उचित। ठीक। सही। मुहा०—बजा लाना=पूरा करना। पालन करना। निभाना।

बजागि*‡–संज्ञा स्त्री० वज्र की आग। विद्युत्। बिजली।

बज़ाज़–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० बजाजिन] कपड़े का व्यापारी। कपड़ा बेचनेवाला।

बज़ाज़ा–संज्ञा पुं० [फा०] वह बाजार, जिसमें कपड़े की दुकानें हों।

बज़ाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कपड़ा बेचने का रोजगार। बजाज का काम। २. बजाज के दूकान की सामग्री।

बजाना–क्रि० स० १. आवाज पैदा करना। बाजे आदि से स्वर-लय के साथ आवाज निकालना। किसी चीज से मारकर शब्द निकालना। आघात पहुँचाना। २. पालन करना। ३. पूजा करना। मुहा०—बजाकर = खुल्लमखुल्ला। डंका पीटकर। ठोकना-बजाना=जाँचने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना। हुक्म बजाना=आज्ञा पालन करना।

बजाय–अव्य० [फा०] स्थान पर। बदले में। एवज में।

बजार*‡–संज्ञा पुं० दे० "बाजार"।

बजारू–वि० दे० "बाजारू"।

बजूखा–संज्ञा पुं० दे० "बिजूखा"।

बज्जर*†–संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

बज्जात–वि० दुष्ट। बदमाश।

बज्जाती–संज्ञा स्त्री० दुष्टता।

बज्र–संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

बझना*†–क्रि० अ० १. बंधन में पड़ना। बँधना। २. फँसना। उलझना। ३. अटकना। हठ करना। ४. भिड़ना।

बझाना*‡–क्रि० स० बंधन में लाना। फँसाना। उलझाना। पकड़ना। अधीन करना।

बझाव–संज्ञा पुं० फँसने की क्रिया या भाव। उलझन। फँसाव। अटकाव।

बझावट–संज्ञा स्त्री० दे० "बझाव"।

बझावना*†–क्रि० स० दे० "बझाना"।

बट–संज्ञा पुं० १. दे० "वट"। बरगद का पेड़। २. बड़ा या बरा नाम का पकवान। ३. गोला। गोल वस्तु। ४. बट्टा। लोढ़ा। ५. बाट। बटखरा। ६. रस्सी की ऐंठन। बटाई। बल। ७. रास्ता। मार्ग।

बटई–संज्ञा स्त्री० १. बटेर पक्षी। २. जरी बादला का काम बनाने की विद्या।

बटखरा–संज्ञा पुं० तौलने का बाँट।

बटन–संज्ञा स्त्री० ऐंठन। बल। संज्ञा पुं० [अँग्रे०] १. पहनने के कपड़ों में चिपटे आकार की कड़ी गोल घुंडी। २. एक प्रकार का बादल का तार।

बटना–क्रि० स० कई तागों या तारों को एक साथ मिलाकर ऐंठना, जिसमें वे मिलकर एक हो जायँ। ऐंठना। बल देना। रस्सी बनाना। क्रि० अ० सिल पर रखकर पीसा जाना। पिसना।
संज्ञा पुं० सरसों आदि का लेप, जो शरीर पर मला जाता है। उबटन।

बटपरा†*–संज्ञा पुं० दे० "बटमार"। डाकू। लुटेरा।

बटपार–संज्ञा पुं० दे० "बटमार"।

बटमार–संज्ञा पुं० रास्ते में मारकर लूट लेनेवाला। डाकू। ठग। लुटेरा।

बटमारी–संज्ञा स्त्री० राहजनी। रास्ते में लूट लेना। ठगी।

बटला–संज्ञा पुं० बड़ी बटलोई। देग। देगचा। हंडा।

बटली, बटलोई–संज्ञा स्त्री० दाल चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बरतन। देगची। पतीली।

बटवार–संज्ञा पुं० पहरेदार। मार्ग का कर वसूल करनेवाला।

बटवारा—संज्ञा पुं० १. दे० "बँटवारा"। २. बाँटने की क्रिया। विभाजन। वितरण। ३. भाग। अंश। बाँट।

बटा*—संज्ञा पुं० [स्त्री० बटिया] १. गोला। वर्तुलाकार वस्तु। गेंद। ढोंका। ढेला। रोड़ा। २. पथिक। बटोही।

बटाई—संज्ञा स्त्री० १. बाँटने का काम। रस्सी बनाना। रस्सी बटना। २. बटने की मजदूरी।

बटाऊ—संज्ञा पुं० पथिक। बटोही। मुसाफिर। मुहा०—बटाऊ होना=चलता होना। चल देना।

बटाक‡*—वि० बड़ा। ऊँचा। उत्तुंग।

बटाना†—क्रि० अ० बंद हो जाना। जारी न रहना।

बटाली—संज्ञा स्त्री० रुखानी।

बटिया—संज्ञा स्त्री० १. छोटा गोला। २. बटखरा। बाँट। ३. छोटा बट्टा। लोढ़िया।

बटी—संज्ञा स्त्री० १. गोली। २. बड़ी नाम का एक पकवान। *३. उपवन। वाटिका।

बटुआ—संज्ञा पुं० १. दे० "बटुवा"। २. कई खानोंवाली एक प्रकार की कपड़े की थैली। सिल आदि पर पीसा हुआ।

बटुक—संज्ञा पुं० १. बालक। विद्या अध्ययन करनेवाला ब्रह्मचारी। २. एक भैरव (देवता)।

बटुरना†—क्रि० अ० १. सिमटना। सिकुड़ना। २. इकट्ठा होना। एकत्र होना।

बटुरी—संज्ञा स्त्री० एक मोटा अनाज। खेसारी।

बटुला—संज्ञा पुं० बड़ी बटलोई।

बटुवा—संज्ञा पुं० १. कई खानों वाली कपड़े की छोटी थैली। २. बटलोई या देग।

बटेर—संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

बटेरबाज़—संज्ञा पुं० बटेर पालने या लड़ानेवाला।

बटेरबाजी—संज्ञा स्त्री० बटेर पालने या लड़ाने का कार्य।

बटोर—संज्ञा पुं० समूह। जमाव। ढेर। जमघट।

बटोरन—संज्ञा स्त्री० कूड़ा। बहारन। रद्दी वस्तुओं का ढेर।

बटोरना—क्रि० स० १. बिखरी हुई वस्तुओं को समेटना। २. एकत्र करना। इकट्ठा करना। जुटाना।

बटोही—संज्ञा पुं० रास्ता चलनेवाला। पथिक। मुसाफिर।

बट्टा—संज्ञा पुं० १. लेन-देन में पूरे मूल्य में कमी या भाँज। दलाली। दस्तूरी। सिक्का भुनाने में लगने वाली भाँज। २. टोटा। घाटा। हानि। क्षति। ३. कूटने या पीसने का पत्थर। लोढ़ा। पत्थर आदि का गोल टुकड़ा। ४. छोटा गोल डिब्बा। ५. उबाली हुई सुपारी।
मुहा०—बट्टा लगना=दाग या कलंक लगना।

बट्टाखाता—संज्ञा पुं० डूबी हुई या न वसूल होनेवाली रकम का लेखा या मद।

बट्टाढाल—वि० चौरस और चिकना।

बट्टी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा बट्टा। गोल छोटा टुकड़ा। २. कूटने-पीसने का पत्थर। लोढ़िया। ३. बड़ी टिकिया, जैसे साबुन की बट्टी।

बट्टू—संज्ञा पुं० १. दे० "बजरबट्टू"। २. चारखाना। ३. बोड़ा। लोबिया।

बट्टेबाज़—वि० १. धूर्त। २. जादूगर।

बठिया†—संज्ञा स्त्री० सूखे कंडों का ढेर।

बड़—संज्ञा स्त्री० बकवाद। बकबक। प्रलाप।
संज्ञा पुं० बरगद का वृक्ष।
वि० दे० "बड़ा"।

बड़क—संज्ञा स्त्री० डींग। शेखी। बकवाद।

बड़का†—वि० बड़ा। महान्।

बड़कुइयाँ—संज्ञा पुं० कच्चा कुआँ।

बड़प्पन—संज्ञा पुं० बड़ाई। श्रेष्ठता। श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव। महत्त्व। गुरुता।

बड़बट्टा—संज्ञा पुं० बरगद का फल।

बड़बड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद।

बड़बड़ाना—क्रि० अ० १. बक-बक करना। बकवाद करना। २. कोई बात बुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना। बुड़बुड़ाना।

बड़बड़िया—वि० बकवादी। बड़बड़ करनेवाला।

बड़बेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "झड़बेरी"।

बड़बोल, बड़बोला—वि० सीटनेवाला। बड़-

बढ़कर बातें करनेवाला। बहुत बोलनेवाला। व्यर्थ की बातें करनेवाला।

बड़भाग, बड़भागी—वि० भाग्यवान्। बड़े भाग्यवाला।

बड़रा*—वि० विशाल। बड़ा।

बड़वा—संज्ञा स्त्री० १. बड़वाग्नि। २. घोड़ी। ३. दासी।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

बड़वाग्नि—संज्ञा पुं० समुद्राग्नि। समुद्र के भीतर की आग या ताप।

बड़वानल—संज्ञा पुं० दे० "बड़वाग्नि"।

बड़वामुख—संज्ञा पुं० १. बड़वाग्नि। २. शिवजी का मुख।

बड़वार†—वि० दे० "बड़ा"।

बड़वारी—संज्ञा स्त्री० बड़प्पन। महत्त्व। प्रशंसा।

बड़हन†—संज्ञा पुं० बड़ा। एक प्रकार का धान।

बड़हर, बड़हल—संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़ और उसका फल, जो शरीफे के बराबर पर बेडौल होता है।

बड़हार—संज्ञा पुं० विवाह होने के बाद बारातियों को ज्योनार।

बड़ा—वि० १. खूब लंबा-चौड़ा। बृहत्। महान्। विशाल। २. जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक आयु का। अधिक परिमाण, विस्तार या अवस्था का। श्रेष्ठ। गुरु। बुजुर्ग। ३. महत्त्वपूर्ण। ४. भारी। ज्यादा।

संज्ञा पुं० [स्त्री० बड़ी] एक पकवान, जो मसाला मिली हुई उड़द की पीठी की गोल टिकियों को तलकर बनाया जाता है।

मुहा०—बड़ा घर=कैदखाना। कारागार।

बड़ाई—संज्ञा स्त्री० १. बड़ा होने का भाव। बड़प्पन। बुजुर्गी। २. प्रशंसा। तारीफ। ३. परिमाण या विस्तार।

मुहा०—बड़ाई देना=आदर करना। सम्मान करना। बड़ाई मारना=शेखी बघारना।

बड़ा दिन—संज्ञा पुं० २५ दिसंबर का दिन, जो ईसाइयों का त्यौहार है।

बड़ापा—संज्ञा पुं० बड़प्पन।

बड़ी—वि० दे० "बड़ा"।

संज्ञा स्त्री० उड़द या मूँग की पिट्ठी की बनाई हुई छोटी-छोटी टिकियाँ। बरी। कुम्हड़ौरी।

बड़ी माता—संज्ञा स्त्री० शीतला। चेचक।

बड़ेरर—संज्ञा पुं० बवंडर।

बड़ेरा†*—वि० बड़ा। महान्। बृहत्। प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० [स्त्री० बड़ेरी] छाजन में बीच की लकड़ी। कुएँ पर फिरकी लगाने की लकड़ी।

बढ़ई—संज्ञा पुं० लकड़ी का काम करनेवाला। लकड़ी का काम करनेवाली एक जाति।

बढ़ती—संज्ञा स्त्री० १. वृद्धि। अधिकता। तौल या गिनती में अधिक होना। २. उन्नति। धन-सम्पत्ति का बढ़ना। ३. लाभ।

बढ़ना—क्रि० अ० १. विस्तार या परिमाण में अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना। गिनती या नाप-तौल में ज्यादा होना। मर्य्यादा, अधिकार, विद्या-बुद्धि, सुख-संपत्ति आदि में अधिक होना। उन्नति करना। २. किसी स्थान से आगे जाना। अग्रसर होना। चलना। ३. किसी से किसी बात में अधिक हो जाना। ४. लाभ होना। मुनाफे में मिलना। ५. दूकान आदि का बंद होना। ६. चिराग का बुझना।

मुहा०—बढ़कर चलना=इतराना। घमंड करना।

बढ़नी†—संज्ञा स्त्री० झाड़ू।

बढ़ाना—क्रि० स० १. वृद्धि करना। विस्तार या परिमाण में अधिक करना। विस्तृत करना। गिनती या नाप-तौल आदि में ज्यादा करना। फैलाना। लंबा करना। २. तेज करना। उन्नत करना। आगे चलाना। ३. सस्ता बेचना। फैलाना। ४. दूकान आदि बन्द करना। ५. दीपक बुझाना।

क्रि० अ० चुकना। समाप्त होना।

बढ़ाली†—संज्ञा स्त्री० कटारी।

बढ़ाव—संज्ञा पुं० १. फैलाव। विस्तार। २. वृद्धि। आधिक्य। चढ़ाव। ३. उन्नति। बढ़ने का भाव।

बढ़ावा–संज्ञा पुं० १. प्रोत्साहन। उत्तेजना। किसी काम की ओर मन बढ़ानेवाली बात। २. साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात।

बढ़िया–वि० उत्तम। अच्छा। कीमती। महँगा। चोखा।

बढ़ैया†–वि० बढ़ानेवाला। बढ़नेवाला। †संज्ञा पुं० दे० "बढ़ई"।

बढ़ोतर–संज्ञा पुं० बढ़ती। सूद। लाभ।

बढ़ोतरी–संज्ञा स्त्री० १. क्रमशः वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। २. सूद। लाभ।

बढ़न्त या **बढ़न्ती**–संज्ञा स्त्री० वृद्धि। उन्नति। लाभ।

बणिक्–संज्ञा पुं० बनिया। सौदागर। व्यापार, व्यवसाय करनेवाला। बेचनेवाला। विक्रेता।

बणिज–संज्ञा पुं० दे० "बणिक्"।

बत–संज्ञा स्त्री० बात। कौल। करार।

बतक–संज्ञा स्त्री० दे० "बतख"।

बतकहाव–संज्ञा पुं० दे० "बतकही"। कहा-सुनी।

बतकही–संज्ञा स्त्री० बातचीत। कहासुनी। वाद-विवाद।

बतख–संज्ञा स्त्री० [अ०] सफेद रंग का एक जलपक्षी।

बतबढ़ाव–संज्ञा पुं० व्यर्थ बात बढ़ाना। बात का विस्तार करना। झगड़ा-बखेड़ा बढ़ाना।

बतरस–संज्ञा पुं० [वि० बतरसिया] बात-चीत का आनंद। बातों का मजा।

बतरान*–संज्ञा स्त्री० बातचीत। बोली।

बतराना†–क्रि० अ० बातचीत करना।

बतरौहाँ*†–वि० [स्त्री० बतरौहीं] बातचीत करने का इच्छुक।

बतलाना–क्रि० स० बताना। कहना। सम-झाना। ठीक करना। मारपीट कर ठीक करना।

बताना–क्रि० स० १. कहना। जताना। सूचित करना। समझाना-बुझाना। सिखाना। निर्देश करना। २. प्रदर्शित करना। नाचने-गाने में हाथ उठाकर भाव प्रकट करना। भाव बताना। ठीक करना। ३. मार-पीटकर दुरुस्त करना। दंड देना।

बताशा–संज्ञा पुं० दे० "बतासा"।

बतास‡–संज्ञा स्त्री० हवा। वात का रोग। गठिया।

बतासा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मिठाई, जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३. बुद्बुद। बुलबुला।

बतिया–संज्ञा स्त्री० १. छोटा, कोमल और कच्चा फल। २. बात।

बतियाना†–क्रि० अ० बातचीत करना।

बतियार–संज्ञा स्त्री० बातचीत।

बतू–संज्ञा पुं० दे० "कलाबत्तू"।

बतून–वि० बातून। वाचाल। बहुत बोलने-वाला।

बतौर–क्रि० वि० [अ०] १. तरह पर। रीति से। तरीके पर। २. सदृश। समान।

बत्तक–संज्ञा स्त्री० दे० "बतख"।

बत्तिस–वि० गिनती में तीस से दो अधिक। तीस और दो।
संज्ञा पुं० तीस से दो अधिक की संख्या। ३२।

बत्ती–संज्ञा स्त्री० १. चिराग में जलनेवाला रूई या सूत का बटा हुआ लच्छा। बाती। पलीता। २. मोमबत्ती। दीपक। चिराग। प्रकाश। रोशनी। ३. पतली छड़ या सलाई के आकार की कोई वस्तु। ४. छाजन में लगाने का फूस या पूला। मूठा। ५. घाव में मवाद साफ करने के लिए भरने की कपड़े की धज्जी।

बत्तीस–वि० दे० "बत्तिस"।

बत्तीसा–संज्ञा पुं० पुष्टई के बत्तीस मसालों का बना एक प्रकार का लड्डू।

बत्तीसी–संज्ञा स्त्री० बत्तीस का समूह। बत्तीस दाँतों का समूह।

बथुआ–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा, जिसके पत्तों का साग बनाते हैं।

बद–वि० [फा०] बुरा। खराब। दुष्ट। नीच। संज्ञा स्त्री० १. गोहिया। बाघी रोग। पेड़ू और जाँघ के जोड़ में फोड़े के रूप में होने-वाला एक रोग। जाँघ की गिल्टी। २. पलटा। बदला।

मुहा०—बद में=एवज में। बदले में।

बद-अमली—संज्ञा स्त्री० राज्य का कुप्रबंध अशांति।
बदइंतज़ामी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अव्यवस्था। बुरा प्रबन्ध।
बदकार—वि० संज्ञा [स्त्री० बदकारी] [फा०] कुकर्मी। व्यभिचारी।
बदक़िस्मत—वि० अभागा। भाग्यहीन।
बदक़िस्मती—संज्ञा स्त्री० दुर्भाग्य।
बदगोई—संज्ञा स्त्री० [फा०] निंदा। चुगली।
बदचलन—वि० [फा०] बुरे चाल चलनवाला। चरित्रहीन। दुराचारी। व्यभिचारी।
बदचलनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बुरा आचरण। दुराचार।
बदज़बान—वि० [फा०] गन्दी बातें कहनेवाला। गाली-गलौज बकनेवाला।
बदज़ात—वि० [फा०] खोटा। नीच। तुच्छ।
बदतमीज़—वि० [फा०] अशिष्ट। बेहूदा।
बदतर—वि० [फा०] और भी बुरा। किसी की अपेक्षा बुरा।
बददुआ—संज्ञा स्त्री० दे० "शाप"। अशुभ कामना।
बदन—संज्ञा पुं० [फा०] शरीर। देह।
बदनसीब—वि० अभागा।
बदनसीबी—संज्ञा स्त्री० [फा०] दुर्भाग्य।
बदना*—क्रि० स० १. कहना। वर्णन। बखान करना। २. मान लेना। स्वीकार करना। ३. नियत करना। ठहराना। निश्चित करना। ४. बाजी लगाना। शर्त लगाना। दावँ लगाना। ५. कुछ समझना। बड़ा या महत्व मानना। ६. वचन देना। ७. गिनती में लाना। ध्यान देना। कुछ ख्याल करना। **मुहा०**—बदा होना=भाग्य में लिखा होना। बदकर (कोई काम करना)=१. जान-बूझकर। पूरे हठ के साथ। २. ललकारकर।
बदनाम—वि० [फा०] निन्दित। कलंकित। जिसकी निन्दा हो।
बदनामी—संज्ञा स्त्री० [फा०] अपयश। बेइज्जती।
बदनुमा—वि० कुरूप। भद्दा।
बदपरहेज़—वि० [फा०] कुपथ्य करनेवाला।
बदपरहेज़ी—संज्ञा स्त्री० [फा०] खाने-पीने में असंयम। कुपथ्य।
बदबख़्त—वि० [फा०] बदकिस्मत। अभागा।
बदबू—संज्ञा स्त्री० [फा०] दुर्गंध। बुरी गंध।
बदबूदार—वि० [फा०] दुर्गंधयुक्त।
बदमज़ा—वि० [फा०] बुरे स्वाद का। फीका। नीरस। आनन्दरहित।
बदमस्त—वि० [फा०] नशे में चूर। मस्त। कामोन्मत्त।
बदमस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] मतवालापन। उनमत्तता। कामोन्मत्तता।
बदमाश—वि० [फा०] दुष्ट। लुच्चा। पाजी। दुराचारी। बदचलन।
बदमाशी—संज्ञा स्त्री० दुष्कर्म। खोटाई। दुष्टता। पाजीपन। शरारत। व्यभिचार।
बदमिजाज़—वि० [फा०] [संज्ञा स्त्री० बदमिजाजी] दुःस्वभाव। चिड़चिड़ा। बुरे स्वभाव का।
बदरंग—वि० [फा०] भद्दे रंग का। जिसका रंग बिगड़ गया हो। फीका। विवर्ण।
बदरंगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रंग का फीकापन। भद्दापन।
बदरा‡—संज्ञा पुं० बादल।
बदराह—वि० [फा०] बदचलन। बुरी राह पर चलनेवाला। दुष्ट। बुरा।
बदरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।
बदरी—संज्ञा स्त्री० १. बदली। बादल। २. बेर का पेड़ और उसका फल।
बदरौंहाँ—वि० दुराचारी। बदचलन। संज्ञा पुं० बदली का आभास।
बदल—संज्ञा पुं० [अ०] १. परिवर्त्तन। हेर-फेर। २. पलटा। एवज। प्रतिकार। ३. बादल।
बदलगाम—वि० [फा०] मुँहजोर।
बदलना—क्रि० अ० १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न हो जाना। परिवर्त्तित होना। २. एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। ३. एक जगह से दूसरी जगह नियुक्त होना।
क्रि० स० १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न करना। परिवर्त्तित करना। पलटना। २. एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना। उलटा

करना। हेर-फेर करना। ३. विनिमय करना।

मुहा०—बात बदलना=पहले एक बात कह-कर फिर उससे विरुद्ध दूसरी बात कहना।

बदलवाना—क्रि० स० बदलने का काम दूसरे से कराना।

बदला—संज्ञा पुं० १. लेने और देने का व्यवहार। विनिमय। २. किसी वस्तु की हानि या स्थान की पूर्त्ति के लिए दूसरी वस्तु। किसी प्रकार के व्यवहार के उत्तर में वैसा ही व्यवहार। पलटा। प्रतीकार। एवज। परिणाम। नतीजा।

मुहा०—बदला लेना=हानि की पूर्त्ति करना। किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना।

बदलाना—क्रि० स० दे० "बदलवाना"।

बदली—संज्ञा स्त्री० १. बादल। २. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु रखना। एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। तबादला।

बदलौवल—संज्ञा स्त्री० अदल-बदल। हेर-फेर। बदलने का कार्य।

बदशकल—वि० [फा०] कुरूप। बदसूरत। भद्दा।

बदसूरत—वि० कुरूप। भद्दी सूरत का।

बदस्तूर—क्रि० वि० [फा०] जैसा था वैसा ही। जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों। नियमानुकूल।

बदहजमी—संज्ञा स्त्री०[फा०] अपच। अजीर्ण।

बदहवास—वि० [फा०] बेहोश। अचेत। व्याकुल। उद्विग्न। विकल। हक्का-बक्का। श्रान्त। पस्त।

बदा—वि० होनहार। भाग्य में लिखा हुआ।

बदान—संज्ञा स्त्री० बदे जाने की क्रिया या भाव।

बदाबदी—संज्ञा स्त्री० १. स्पर्द्धा। होड़ाहोड़ी। लाग-डाँट। २. दो पक्षों का एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ।

बदाम—संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।

बदामी—वि० बादामी रंग का।

संज्ञा पुं० एक पक्षी।

बदि*†—संज्ञा स्त्री० पलटा। बदला। एवज। अव्य० १. बदले में। एवज में। २. लिए। वास्ते। खातिर।

बदी—संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख। २. अपकार। बुराई। अहित।

बदे†—अव्य० १. वास्ते। लिए। २. दलाली समेत (दाम)।

बदौलत—क्रि० वि० [फा०] १. द्वारा। अवलंब से। २. कृपा से। कारण से।

बद्दर*—संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

बद्दल—संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

बद्दू—संज्ञा पुं० अरब की एक असभ्य जाति।

बद्ध—वि० १. बँधा हुआ। २. बंधन में पड़ा हुआ। ३. जिसके लिए कोई रोक हो ४. निर्धारित। ठहराया हुआ। स्थिर। सटा हुआ। जुड़ा हुआ।

बद्धकोष्ठ—संज्ञा पुं० मल अच्छी तरह न निकलने का रोग। कब्ज।

बद्धपरिकर—वि० कमर बाँधे हुए। तैयार। कटिबद्ध।

बद्धमुष्टि—संज्ञा स्त्री० बँधी हुई मुट्ठी। वि० कंजूस।

बद्धमूल—वि० दृढ़। स्थिर।

बद्धशिख—वि० बँधी शिखावाला। संज्ञा पुं० शिशु।

बद्धांजलि—वि० जो हाथ जोड़े हुए हो।

बद्धी—संज्ञा स्त्री० १. बाँधने या कसने की वस्तु। डोरी। रस्सी। तसमा। २. चार लड़ों का गले में पहनने का एक गहना।

बध—संज्ञा पुं० हत्या। जान से मारना।

बधक—संज्ञा पुं० बध करनेवाला।

बधत्र—संज्ञा पुं० अस्त्र।

बधना—क्रि० स० मार डालना। हत्या करना। बध करना।

संज्ञा पुं० गडुआ। टोंटीदार लोटा। मुसलमानों का जल-पात्र।

बधाई—संज्ञा स्त्री० १. किसी शुभ अवसर पर आनन्द प्रकट करनेवाला वचन या संदेश। शुभकामना। साधुवाद। मुबारकबाद। २. वृद्धि। ३. बढ़ती। मंगलाचार। मंगल अवसर का गाना-बजाना। ४. आनंद। मंगल। उत्सव।

बधाना—क्रि० स० बध कराना।

बधावना, बधवार—संज्ञा पुं० दे० "बधावा"।

बधावा–संज्ञा पुं० १. बधाई। मंगलाचार। शुभ-अवसर पर गाना-बजाना। २. संबंधियों या इष्ट-मित्रों के यहाँ से मंगल-अवसरों पर मिलनेवाला उपहार।

बधिक–संज्ञा पुं० १. बध करनेवाला। हत्यारा। २. जल्लाद। बहेलिया।

बधिया–संज्ञा पुं० वह पशु (बैल आदि), जिसका अंडकोश निकाल दिया गया हो। आख़्ता। नपुंसक चौपाया।

बधियाना–क्रि० स० बधिया करना।

बधिर–संज्ञा पुं० जो कान से न सुन सकता हो या बहुत कम सुनता हो। बहरा।

बधिरता–संज्ञा पुं० बहरापन।

बधू–संज्ञा स्त्री० बहू। पुत्र की स्त्री। पतोहू।

बधूटी–संज्ञा स्त्री० १. पुत्र की स्त्री। पतोहू। २. नई आई हुई बहू। सुहागिन स्त्री।

बधैया–संज्ञा स्त्री० दे० "बधाई"।
संज्ञा पुं० दे० "बधावा"। दे० "बधिक"।

बध्य–वि० मार डालने के योग्य।

बन–संज्ञा पुं० १. जंगल। २. समूह। ३. पानी। ४. बगीचा। बाग।
संज्ञा स्त्री० सजधज। बाना। वेष।
मुहा०—**बन ठन के**=सजधजकर। शृंगार कर। **बन पड़ना**=१. सुधरना। २. निभना। निबहना।

बनकंडा–संज्ञा पुं० बाहर सूखा हुआ गोबर।

बनक*‡–संज्ञा स्त्री० १. सजधज। सजावट। बनावट। वेष। बाना। २. बन की उपज।

बनकटा–वि० जंगली।

बनकर–संज्ञा पुं० जंगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि पर लगनेवाला कर।

बनखंड–संज्ञा पुं० जंगली प्रदेश।

बनखंडी–संज्ञा स्त्री० १. बन का कोई भाग। २. छोटा-सा वन।
संज्ञा पुं० वन में रहनेवाला। वनवासी।

बनचर–संज्ञा पुं० १. जंगल में रहनेवाला आदमी। २. जंगली पशु।

बनचारी–वि० बन में घूमने या रहनेवाला। जंगली जानवर।

बनज–संज्ञा पुं० जल से उत्पन्न वस्तु। कमल आदि। वन में उत्पन्न फल-फूल आदि।

बनजात–संज्ञा पुं० कमल। जल या वन में उत्पन्न।

बनजारा–संज्ञा पुं० १. बैलों पर माल लादकर बेचने के लिए एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश को ले जानेवाला व्यापारी। टँड़िया। बंजारा। २. व्यापारी। सौदागर। पहले समय में इस प्रकार का व्यापार करनेवाली एक जाति।

बनजी*†–संज्ञा पुं० १. व्यापार। रोजगार। २. व्यापारी।

बनज्योत्स्ना–संज्ञा स्त्री० माधवी लता।

बनत–संज्ञा स्त्री० १. रचना। बनावट। २. मेल। सामंजस्य।

बनद*–संज्ञा पुं० बादल।

बनदाम–संज्ञा स्त्री० दे० "बनमाला"।

बनदेवी–संज्ञा स्त्री० किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।

बनना–क्रि० अ० १. रचा जाना। तैयार होना। काम में आने के योग्य होना। २. जैसा चाहिए, वैसा होना। ३. रूपान्तरित हो जाना। ४. भाव या संबंध में अन्तर हो जाना। कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ५. वसूल होना। प्राप्त होना। ६. मरम्मत होना। दुरुस्त होना। ७. संभव होना। हो सकना। पूरा होना। निभना। समाप्त होना। ८. पटना। मित्रता या मेल होना। ९. अच्छा, सुंदर या स्वादिष्ठ होना। १०. सुयोग मिलना। अवसर मिलना। ११. रूप धारण करना। १२. हँसी करना। १३. बेवकूफ बन जाना। १४. अपने को योग्य या गम्भीर दिखाना। १५. सजना। शृंगार करना।
मुहा०—बना रहना=जीता रहना। संसार में जीवित रहना। उपस्थित रहना।

बननि*†–संज्ञा स्त्री० १. बनावट। २. बनाव-सिंगार।

बनपति–संज्ञा पुं० सिंह।

बनपथ–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. जंगल का

मार्ग। दुर्गम मार्ग। मार्ग-विशेष, जिसमें जल या जंगल अधिक पड़ता हो।

बनपाट—संज्ञा पुं० जंगली सन।

बनपाती*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बनस्पति"

बनपाल—संज्ञा पुं० वन-रक्षक। जंगल की रखवाली करनेवाला माली।

बनप्रिय—संज्ञा स्त्री० कोयल।

बनफल—संज्ञा पुं० जंगली मेवा।

बनफशा या **बनफसा**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की वनस्पति, जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

बनबास, बनबास—संज्ञा पुं० [वि० बनबासी] वन में जाकर रहना या बसना। प्राचीन काल का देश-निकाले का दंड।

बनबिलाव—संज्ञा पुं० बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जंगली जंतु। ऊदबिलाव।

बनमानुष या **बनमानुस**—संज्ञा पुं० मनुष्य से मिलता-जुलता कोई जंगली जंतु। जैसे—गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि।

बनमाला—संज्ञा स्त्री० तुलसी, कुंद, मंदार, पारिजात और कमल, इन पाँच चीजों की बनी हुई माला। गले से पैर तक लटकनेवाली माला।

बनमाली—संज्ञा पुं० १. बनमाला धारण करनेवाला। कृष्ण। विष्णु। नारायण। २. बादल। मेघ। ३. वह प्रदेश, जिसमें घने बन हों।

बनमुर्गा—संज्ञा पुं० जंगली मुर्गा।

बनमुर्गी—संज्ञा स्त्री० जंगली मुर्गी।

बनरखा—संज्ञा पुं० १. जंगल की रखवाली करनेवाला। वन-रक्षक। २. बहेलियों की एक जाति।

बनरा*‡—संज्ञा पुं० दे० "बंदर"। १. वर। दूल्हा। २. विवाह के समय गाये जानेवाले एक तरह के गीत।

बनराज, बनराय*†—संज्ञा पुं० १. वन का राजा। सिंह। शेर। २. बहुत बड़ा पेड़।

बनरी—संज्ञा स्त्री० [बनरा का स्त्री०] १. दे० "बंदरी"। २. दुलहिन। नववधू।

बनरुह—संज्ञा पुं० जंगल में अपने आप होने वाले पेड़। कमल।

बनवाई—संज्ञा स्त्री० बनाने का दाम या मजदूरी।

बनवाना—क्रि० स० दूसरे से बनाने का काम करवाना।

बनवारी—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

बनवैया—संज्ञा पुं० बनानेवाला।

बनसी—संज्ञा स्त्री० दे० "बंसी"।

बनस्थली—संज्ञा स्त्री० जंगल का कोई भाग। वन-खंड।

बनस्पति—संज्ञा पुं० दे० "वनस्पति"।

बना—संज्ञा पुं० [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।

बनाइ, बनाय—क्रि० वि० बिलकुल। नितांत। अत्यन्त। भली भाँति। अच्छी तरह।

बनाउरि*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बाणावली"।

बनाग्नि—संज्ञा स्त्री० जंगल में लगनेवाली आग। दावाग्नि।

बनात—संज्ञा स्त्री० [वि० बनाती] एक तरह का ऊनी कपड़ा।

बनाना—क्रि० स० १. रचना। तैयार करना। २. ठीक करना। सुधारना। मरम्मत करना। सजाना। सँवारना। ३. आविष्कार करना। ४. किसी चीज का रूप बदलकर या ठीक कर उसे काम में लाने लायक करना। ५. कोई पद या प्रतिष्ठा प्रदान करना या उसका अधिकारी करना। ६. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ७. किसी का उपहास करना। किसी को इस तरह से मूर्ख ठहराना कि वह जल्दी समझ न सके। ८. उपार्जित करना, जैसे माल बेचकर रुपये बनाना।

मुहा०—बनाकर=खूब अच्छी तरह। भली भाँति।

बनाबनत*—संज्ञा स्त्री० विवाह-सम्बन्ध के लिए लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

बनाम—अव्य० [फा०] नाम से। नाम पर। नाम के विरुद्ध। जैसे मुकदमे में वादी और प्रतिवादी के बीच में लिखा जाता है—सरकार बनाम रामप्रसाद अर्थात् रामप्रसाद पर सरकार का मुकदमा।

बनाय†—क्रि० वि० दे० "बनाकर"। अच्छी तरह से। भली भाँति। पूरी तरह।

बनाव–संज्ञा पुं० १. बनावट। गढ़न। २. सजावट। ऊपरी दिखावा। शृंगार। ३. मेल-मिलाप। मित्रता। ४. युक्ति। उपाय। तरकीब।

बनावट–संज्ञा स्त्री० १. गढ़न। २. बनने या बनाने का ढंग या भाव। ऊपरी दिखावा। आडम्बर। कृत्रिमता।

बनावटी–वि० नकली। कृत्रिम।

बनावनहारा–संज्ञा पुं० बनानेवाला। निर्माता। बिगड़े हुए को बनानेवाला।

बनावरि–संज्ञा स्त्री० दे० "बाणावली"।

बनि*†–वि० समस्त। सब। बिलकुल। पूर्ण।

बनिक–संज्ञा पुं० दे० "वणिक्"। बनिया।

बनिज–संज्ञा पुं० दे० "वाणिज्य"। व्यापार। लेन-देन। रोजगार। व्यापार की वस्तु। सौदा।

बनिजना*†–क्रि० अ० व्यापार करना। लेन-देन करना।

क्रि० स० वश में करना। अपने अधीन करना।

बनित*†–संज्ञा स्त्री० बानक। वेष। ठाठ-बाट।

बनिता–संज्ञा स्त्री० दे० "वनिता"। स्त्री। औरत। पत्नी।

बनिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० बनियाइन] वणिक्। व्यापारी। वैश्य। सौदागर।

बनियाइन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] गंजी। कुर्ते या कमीज आदि के नीचे पहनने का एक छोटा कपड़ा।

बनिस्बत–अव्य० [फा०] अपेक्षा। मुकाबले में।

बनी–संज्ञा स्त्री० १. वाटिका। बाग। २. वन का कोई भाग। वनस्थली। †३. दुलहिन। ४. नायिका।

बनीनी–संज्ञा स्त्री० दे० "बनैनी"। वैश्य जाति की स्त्री। बनिए की स्त्री।

बनीर*†–संज्ञा पुं० बेंत।

बनेठी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लाठी, जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं (पटेबाजों का डंडा)।

बनेला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

बनैनी–संज्ञा स्त्री० बनिए की स्त्री। वैश्य जाति की स्त्री।

बनैला–वि० जंगली (पशु)।

बनौरी‡–संज्ञा स्त्री० वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला।

बनौवा–वि० बनावटी।

बन्नात–संज्ञा स्त्री० दे० "बनात"।

बन्नी–संज्ञा स्त्री० अन्न का वह भाग, जो खेत में काम करनेवालों को दिया जाता है।

बपंश या **बपंस**–संज्ञा पुं० बाप का अंश। बपौती। पैतृक धन।

बप*†–संज्ञा पुं० दे० "बाप"।

बपमार–वि० १. अपने पिता की हत्या करने-वाला। २. सबके साथ धोखा करनेवाला। ३. अन्यायी।

बपतिस्मा–संज्ञा पुं० [अंग्रे० बेप्टिज्म] ईसाई धर्म का एक मुख्य संस्कार, जो नवजात बालक को नामकरण या किसी व्यक्ति को ईसाई बनने के समय किया जाता है।

बपना*†–क्रि० स० बीज बोना।

बपु*–संज्ञा पुं० दे० "वपु"। शरीर। अवतार। रूप।

बपुख*–संज्ञा पुं० दे० "वपुस्"। शरीर देह।

बपुरा†–वि० बेचारा। गरीब। कंगाल। दुखिया। अनाथ।

बपौती–संज्ञा स्त्री० बाप से पाई हुई जायदाद। पैतृक सम्पत्ति।

बप्पा†–संज्ञा पुं० बाप।

बफारा–संज्ञा पुं० १. वाष्प। भाप। २. गरम जल या किसी औषध की भाप से रोगी के किसी अंग को सेंकना।

बफौरी–संज्ञा स्त्री० भाप से पकाई हुई बरी।

बबकना–क्रि० अ० [अनु०] बमकना। उत्ते-जित होकर उच्च स्वर से बोलना।

बबर–संज्ञा पुं० [फा०] १. बड़ा शेर। सिंह। २. एक तरह का मोटा कम्बल।

बबा–संज्ञा पुं० दे० "बाबा"।

बबुआ†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बबुई] १. लड़का। दुलारा बेटा। २. बेटे या दामाद के लिए

प्यार का संबोधन। ३. जमींदार, रईस या उसके बेटे को पुकारने का शब्द।

बबुई–संज्ञा स्त्री० बेटी। छोटी ननद।

बबुर या **बबूल**–संज्ञा पुं० कँटेदार पेड़।

बबूला–संज्ञा पुं० १. दे० "बगूला"। बवण्डर। २. बुलबुला। ३. एक प्रकार का फोड़ा।

बबेसिया–संज्ञा पुं० गप्पी।

बबेसी*–संज्ञा स्त्री० दे० "बवासीर"।

बब्बू–संज्ञा पुं० दे० "बाबू"।

बभूत–संज्ञा स्त्री० १. दे० "भभूत"। २. दे० "विभूति"।

बम–संज्ञा पुं० [अंग्रे० बाम्ब] १. विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना गोला। २. शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द। ३. बग्घी, एक्का आदि में आगे की ओर लगा हुआ लंबा बाँस, जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

मुहा०–बम बजना=लड़ाई में लाठी या अस्त्र चलना। बम बोलना या बोल जाना=शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना। कुछ न रह जाना।

बमकना–क्रि० अ० १. बहुत शेखी हाँकना। डींग हाँकना। २. क्रोध में जोर से बोलना।

बमचख–संज्ञा स्त्री० शोरगुल। लड़ाई।

बमना*†–क्रि० स० वमन करना। कै करना।

बमपुलिस–संज्ञा पुं० दे० "बंपुलिस"।

बमबाज–संज्ञा पुं० शत्रुओं पर बम के गोले फेंकनेवाला व्यक्ति।

बमबाजी–संज्ञा स्त्री० गोलाबारी करना। बम फेंकना।

बममार–वि० बम मारनेवाला।

संज्ञा पुं० शत्रुओं पर बम गोले फेंकनेवाला हवाई जहाज।

बमुक़ाबला–क्रि० वि० [फा०] मुकाबले में। समक्ष। विरुद्ध।

बमूजिब–क्रि० वि० [फा०] अनुसार। मुताबिक। अनुकूल।

बम्हनी–संज्ञा स्त्री० १. एक लाल, पतला कीड़ा। २. बिलनी। आँख की पलक पर की फुंसी।

बयंड–संज्ञा पुं० हाथी।

बयन*†–संज्ञा पुं० वचन।

बयना*†–क्रि० स० १. दे० "बोना"। २. वर्णन करना। कहना।

संज्ञा पुं० दे० "बैना"।

बयनी*†–वि० बोलनेवाली।

बया–संज्ञा पुं० १. गौरैया के आकार और रंग का एक पक्षी। २. अनाज तौलने का काम करनेवाला।

बयाई–संज्ञा स्त्री० तौलाई।

बयान–संज्ञा पुं० [फा०] १. कथन। वर्णन। जिक्र। विवरण। वृत्तांत। २. अदालत में दी जानेवाली गवाही।

बयाना–संज्ञा पुं० पेशगी। खरीदी हुई वस्तु के मूल्य या किसी कार्य की मजदूरी का कुछ अंश अग्रिम देना।

बयार, **बयारि***†–संज्ञा स्त्री० वायु। हवा। पवन।

बयारा†–संज्ञा पुं० हवा का झोंका। तूफान।

बयारी–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू", "बयारि"।

बयाला†–संज्ञा पुं० झरोखा। दीवार में का छेद, जिससे झाँककर बाहर की ओर की वस्तु देखी जा सके। आला। ताख के गढ़े में तोपों को लगाने का स्थान। पटाव के नीचे का खाली स्थान।

बयालिस–संज्ञा पुं० ४२ की संख्या।

४२ का आन्दोलन–सन् १९४२ के अगस्त महीने में भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध किया गया विद्रोह, जो ९ अगस्त '४२ को महात्मा गांधी तथा अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के बाद शुरू हुआ था।

बयासी–संज्ञा पुं० अस्सी और दो। ८२।

बरंग–संज्ञा पुं० १. बख्तर। कवच। २. एक वृक्ष।

बरंगा–संज्ञा पुं० छत पाटने की लकड़ी या पटिया।

बर–संज्ञा पुं० १. वह, जिसका विवाह होता हो। दूल्हा। पति। दे० "वर"। २. आशीर्वाद-सूचक वचन। वरदान। आशिष। ३. मनोरथ। ४. सिद्धि।

वि० १. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. शक्ति।

बल। ३. वट-वृक्ष। बरगद। ४. रेखा। लकीर। ५. पूरा। पूर्ण (आशा)।
*अव्य० बरन्। बल्कि। ऊपर।
मुहा०—बर आना या पाना=बढ़कर निकलना। तुलना में अच्छा ठहरना। बर खींचना=१. किसी विषय में बहुत दृढ़ता सूचित करना। २. हठ करना।

बरई†—संज्ञा पुं० [स्त्री० बरइन] तमोली। पान पैदा करने या बेचनेवाला।

बरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वृद्धि। बढ़ती। बाहुल्य। २. लाभ। फायदा। धन-दौलत। ३. कृपा। प्रसाद।

बरकती—वि० बरकतवाला। वृद्धि करनेवाला। वृद्धि-सम्बन्धी।

बरकना‡—क्रि० अ० १. बुरा कार्य न होने पाना। निवारण होना। २. अलग रहना। दूर रहना। हटना। बचना।

बरक़रार—वि० [फा०] ज्यों का त्यों बना रहना। कायम। मौजूद।

बरकाना†—क्रि० अ० १. कोई बुरी बात न होने देना। २. निवारण करना। बचाना। ३. बहलाना। फुसलाना। ४. बहकाना। पीछा छुड़ाना।

बरखा*—संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

बरखाना—क्रि० स० बरसाना।

बरखास्त—वि० [फा०] जो नौकरी से हटा दिया गया हो। पदच्युत। जिसकी समाप्ति कर दी गई हो। विसर्जित।

बरखिलाफ़—क्रि० वि० विरुद्ध।

बरगद—संज्ञा पुं० पीपल की तरह का एक बहुत बड़ा पेड़। वट-वृक्ष।

बरछा—संज्ञा पुं० [स्त्री० बरछी] भाला। नोकदार हथियार।

बरछैत—संज्ञा पुं० भाला-बर्दार। बरछा चलानेवाला।

बरजन*†—क्रि० अ० वर्जन। मना करना। रोकना। निषेध करना।

बरजनि*†—संज्ञा स्त्री० वर्जन। मनाही। निषेध। रोक।

बरज़बान—वि० [फा०] जो जबानी याद हो। कंठस्थ।

बरज़ोर—वि० [फा०] प्रबल। बलवान्। जबरदस्त। अत्याचारी। बल प्रयोग करनेवाला।
क्रि० वि० बलपूर्वक। जबरदस्ती।

बरज़ोरी*†—संज्ञा स्त्री० [फा०] बलप्रयोग। जबरदस्ती।
क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।

बरत—संज्ञा पुं० दे० "व्रत"।

बरतन—संज्ञा पुं० पात्र। भाँड़ा। बासन। मिट्टी या धातु आदि की बनी वस्तु, जिसमें खाने-पीने की वस्तु रख सकें।

बरतना—क्रि० अ० व्यवहार करना। बरताव करना।
क्रि० स० काम में लाना। इस्तेमाल करना।

बरतरफ़—वि० किनारे। एक ओर। अलग। नौकरी से छुड़ाया हुआ। बरखास्त।

बरताना—क्रि० स० बाँटना। भाग लगाना।

बरताव—संज्ञा पुं० व्यवहार। आचरण।

बरद—संज्ञा पुं० १. दे० "बर्द"। बैल। २. दे० "वरद"। वरदान देनेवाला।

बरदान—संज्ञा पुं० दे० "वरदान"। आशीर्वाद।

बरदाना†—क्रि० स० गाय, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर-पशुओं से संयोग कराना। जोड़ा खिलाना।
क्रि० अ० गाय, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का अपनी जाति के नर पशुओं से जोड़ा खाना।

बरदार—वि० [फा०] १. ढोनेवाला। ले जानेवाला। वहन करनेवाला। धारण करनेवाला। २. माननेवाला। पालन करनेवाला।

बरदाश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] सहन करने की क्रिया या भाव। सहन।

बरध या **बरधा**—संज्ञा पुं० बैल। बर्द।

बरधाना—क्रि० स०, अ० दे० "बरदाना"।

बरन*—संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

बरनन*†—संज्ञा पुं० दे० "वर्णन"।

बरनना*†—क्रि० स० वर्णन करना। बयान करना। बखान करना।

बरना—क्रि० स० १. वर या वधू के रूप में ग्रहण करना। ब्याहना। २. चुनना या नियुक्त करना। ३. दान देना।
‡क्रि० अ० दे० "जलना"।

बरनाल–संज्ञा पुं० जहाज में से पानी निकलने का मार्ग।

बरनाला–संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

बरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "बरुनी"। पलकों के अग्रभाग पर के बाल।

बरनेत–संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति।

बरफ–संज्ञा स्त्री० दे० "बर्फ"।

बरफानी–वि० [फा०] जिसमें अथवा जिस पर बरफ हो (देश, पर्वत, मैदान आदि)।

बरफी–संज्ञा स्त्री० खोआ और चीनी से बनाई जानेवाली एक प्रसिद्ध मिठाई।

बरबंड*‡–वि० १. बलवान्। शक्तिशाली। २. उद्दंड। ३. प्रचंड। प्रतापी।

बरबट*–क्रि० वि० दे० "बरबस"।

बरबस–क्रि० वि० १. बलपूर्वक। हठात्। जबरदस्ती। अपने आप। जैसे बरबस आँसू निकल आए। २. व्यर्थ।

बरबाद–वि० [फा०] नष्ट। चौपट। नाश। तबाह।

बरबादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] नाश। तबाही। खराबी।

बरम*–संज्ञा पुं० जिरह बक्तर। कवच।

बरमा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का लोहे का एक औजार। दे० "बर्मा"।

बरमी–संज्ञा पुं० बर्मा देश का निवासी। संज्ञा स्त्री० बर्मा देश की भाषा। वि० बर्मा-संबंधी। बर्मा देश का।

बरम्हा–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मा"।

बरम्हाना*†–क्रि० स० (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना।

बरम्हाव*†–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणत्व। २. ब्राह्मण का आशीर्वाद।

बरवट–संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"। पिलही। प्लीहा (रोग)।

बरवै–संज्ञा पुं० १९ मात्राओं का एक छंद।

बरषना*†–क्रि० अ० दे० "बरसना"।

बरषा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

बरषासन*†–संज्ञा पुं० एक वर्ष की भोजन-सामग्री।

बरस–संज्ञा पुं० दे० "वर्ष"। साल।

बरसगाँठ–संज्ञा स्त्री० वर्षगाँठ। जन्म-दिवस। सालगिरह। जन्मदिवस के उपलक्ष का उत्सव।

बरसना–क्रि० स० १. वर्षा होना। पानी गिरना। २. वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना। ३. अधिक मात्रा में चारों ओर से आना। झलकना। प्रकट होना। ४. दाएँ हुए गल्ले का इस प्रकार हवा में उड़ाया जाना, जिसमें दाना अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाया जाना।

मुहा०—बरस पड़ना=अति क्रुद्ध होकर डाँटने-डपटने लगना।

बरसाइत†–संज्ञा स्त्री० जेठ बदी अमावस। (इस दिन स्त्रियाँ बट-सावित्री का पूजन करती हैं।)

बरसाऊ–वि० बरसनेवाला।

बरसात–संज्ञा स्त्री० वर्षा-ऋतु। वर्षा-काल।

बरसाती–वि० बरसात का। वर्षा ऋतु-संबंधी।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपड़ा, जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भीगता।

बरसाना–क्रि० स० १. वर्षा करना। २. वर्षा के जल की तरह गिराना। ३. अधिक संख्या या मात्रा में चारों ओर से प्राप्त कराना। ४. दाँए हुए अनाज को इस प्रकार हवा में गिराना, जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय। डाली देना। ओसाना।

बरसी–संज्ञा स्त्री० मृतक का वार्षिक श्राद्ध।

बरसौंहाँ–वि० बरसनेवाला।

बरसौड़ी, बरसौढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. वार्षिक कर। सालाना महसूल। २. वार्षिक वृत्ति।

बरहा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरही] १. खेतों में सिंचाई के लिए बनी हुई छोटी नाली। २. पशुओं के चरने की भूमि। ३. मोटा रस्सा। पुरवट का रस्सा। ४. मोर। मयूर। ५. मयूर-शिखा।

बरहापीड़*†–संज्ञा पुं० मोर-मुकुट। मोर के परों से बना हुआ मुकुट।

बरही–संज्ञा पुं० १. मयूर। मोर। २. साही नाम का जंतु। ३. मुर्गा।
संज्ञा स्त्री० १. संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होनेवाली क्रियाएँ। २. मोटा रस्सा। ३. जलाने की लकड़ी आदि का भारी बोझ।
बरहीमुख*†–संज्ञा पुं० १. देवता। २. अग्निमुख।
बरांडा–संज्ञा पुं० दे० "बरामदा"।
बरांडी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] ब्राण्डी। एक प्रकार की शराब।
बरा–संज्ञा पुं० १. उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक पकवान। २. बड़ा। बाँह पर पहनने का एक आभूषण। ३. बरगद। वट-वृक्ष।
बराक–संज्ञा पुं० १. शिव। २. युद्ध।
वि० १. शोचनीय। २. अधम। नीच। ३. बेचारा। दुखिया।
बराट–संज्ञा स्त्री० कौड़ी।
बरात–संज्ञा स्त्री० बरयात्रा। विवाह की यात्रा। वर-पक्ष के लोग, जो विवाह के समय वर के साथ जाते हैं।
बराती–संज्ञा पुं० बरात में वर के साथ जानेवाले।
बराना–क्रि० अ० प्रसंग पर भी कोई बात न कहना। अलग करना। बचाना। परहेज करना। रक्षा करना। हिफाजत करना।
क्रि० स० चुनना। छाँटना। खेतों में पानी देना
बराबर–वि० समान। तुल्य। समतल।
क्रि० वि० १. लगातार। निरंतर। २. एक ही पंक्ति में। एक साथ। ३. साथ-साथ।
मुहा०—बराबर करना=समान या समाप्त कर देना।
बराबरी–संज्ञा स्त्री० १. बराबर होने की क्रिया या भाव। समानता। २. सादृश्य। सामना। मुकाबला।
बरामद–वि० [फा०] १. निकलकर बाहर या सामने आया हुआ। २. चोरी गई या छिपाई हुई वस्तु, जो कहीं से खोजकर निकाली जाय।
[बरामदा]–संज्ञा पुं० [फा०] दालान। ओसारा। [illegible]। छज्जा। बरण्डा।

बरायन–संज्ञा पुं० लोहे का छल्ला, जो ब्याह के समय वर के हाथ में पहनाया जाता है।
बराव–संज्ञा पुं० संयम। रोक। बचाव। परहेज।
बराह–संज्ञा पुं० १. दे० "वराह"। सूअर। २. विष्णु का तीसरा अवतार।
बरिया*–वि० बलवान्। बली।
बरियाई†–क्रि० वि० बलपूर्वक। बलात्।
संज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव।
बरियार–वि० बली। बलवान्। प्रभावशाली।
बरिस†–संज्ञा पुं० दे० "वर्ष"। साल।
बरी–संज्ञा स्त्री० १. बटी। गोल टिकिया। २. बड़ी। उर्द, मूँग या बेसन की पिट्ठी की छोटी-छोटी टिकियाँ। ३. एक प्रकार का पकवान, जो वर के यहाँ से दुलहिन के घर जाता है। ४. एक घास।
वि० छूटा हुआ। मुक्त। बचा हुआ। दे० "बली"।
बरीस‡–संज्ञा पुं० दे० "वर्ष"।
बरीसना–क्रि० अ० दे० "बरसना"।
बरु†*–अव्य० भले ही। चाहे। बल्कि। बरन्।
बरुआ†–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मचारी। २. ब्राह्मण-कुमार। ३. उपनयन-संस्कार। जनेऊ। ४. मूँज, जिससे डलिया आदि बनाई जाती है।
बरुक†–अव्य० दे० "बरु"।
बरुनी–संज्ञा स्त्री० पलकों के आगे के बाल। बरौनी।
बरूथ–संज्ञा पुं० दे० "वरूथ"।
बरेंड़ा–संज्ञा पुं० १. लकड़ी का मोटा गोल लट्ठा, जो खपरैल या छाजन की लंबाई के बल रहता है। २. छाजन या खपरैल के मध्य का सबसे ऊँचा भाग। धरन। बड़ेरी।
बरेंड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "बरेंड़ा"। बड़ेरी। धरन।
बरे*†–क्रि० वि० १. ओर से। बलपूर्वक। २. जबरदस्ती। ३. ऊँचे स्वर से।
अव्य० १. बदले में। २. वास्ते। लिए। हेतु।
बरेखी–संज्ञा स्त्री० १. बाँह पर पहनने का एक गहना। २. विवाह-संबंध के लिए वर या कन्या देखना। विवाह का निश्चय।

बरेज–संज्ञा पुं० पान का खेत या बगीचा। पनवाड़ी। पान का भीटा या बरेजा।
बरेठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरेठिन] धोबी।
बरेत या बरेता–संज्ञा पुं० मोटा रस्सा।
बरेदी–संज्ञा पुं० चरवाहा।
बरेषी–संज्ञा स्त्री० दे० "बरेखी"।
बरोक–संज्ञा पुं० १. कन्यापक्ष से वरपक्ष को विवाह-संबंध पक्का करने के लिए दिया जानेवाला द्रव्य। बरेच्छा। फलदान। *२. सेना।
क्रि० वि० बलपूर्वक। जबरदस्ती।
बरोठा–संज्ञा पुं० १. ड्योढ़ी। पौरी। २. बैठक। ३. ज्वार आदि का डंठल।
मुहा०–बरोठे का चार=द्वारपूजा। द्वाराचार।
बरोह*–वि० दे० "वरोह"।
बरोह–संज्ञा स्त्री० बरगद के पेड़ के ऊपर की डालों से नीचे की ओर लटकनेवाली शाखा, जो जमीन पर जाकर जम जाती है। बरगद की जटा।
बरौठा‡–संज्ञा पुं० दे० "बरोठा"।
बरौनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बरुनी"।
बरौरी†–संज्ञा स्त्री० बड़ी या बरी नाम का पकवान।
बर्छा, बर्छी–संज्ञा पुं० दे० "बरछा"। भाला। शस्त्र-विशेष।
बर्जना–क्रि० स० दे० "बरजना"। मना करना।
बर्णना*–क्रि० स० वर्णन करना। बयान करना।
बर्तना–क्रि० स० दे० "बरतना"। व्यवहार करना।
बर्ताव–संज्ञा पुं० व्यवहार। आचरण।
बर्दाश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] सहन।
बर्दा, बर्द–संज्ञा पुं० बैल।
बर्न*–संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।
बर्फ–संज्ञा स्त्री० १. पाला। हिम। तुषार। ठंढक के कारण हवा में मिली हुई भाप का जमा हुआ रूप। २. कृत्रिम उपायों (मशीनों) से जमाया हुआ पानी। कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस। ३. दे० "ओला"।
बर्फिस्तान–संज्ञा पुं० बर्फ का मैदान या पहाड़। वह स्थान, जहाँ बर्फ ही बर्फ हो। हिमस्थल।
बर्फी–संज्ञा स्त्री० दे० "बरफी"।
बर्बर–संज्ञा पुं० अनार्य्य। असभ्य मनुष्य। जंगली आदमी। अत्याचारी और निर्दय। वि० जंगली। असभ्य। उद्दंड।
बर्बरता–संज्ञा स्त्री० जंगलीपन। असभ्यता। अत्याचार और क्रूरता।
बर्राक़–वि० [अ०] १. चमकीला। २. तीव्र। तेज। ३. चालाक। ४. बहुत उजला। सफेद। ५. पूर्ण अभ्यस्त। रटा हुआ। जबानी याद।
बर्राना–क्रि० अ० १. व्यर्थ बोलना अथवा बकना। २. नींद या बेहोशी में बकना। ३. बड़बड़ाना। ४. ऐंठ जाना।
बर्राहट–संज्ञा पुं० बकवाद।
बर्रे†–संज्ञा पुं० भिड़ नाम का कीड़ा। बर्रैया।
बलंद-बुलंद–वि० [फा०] [संज्ञा बलंदी] ऊँचा।
बल–संज्ञा पुं० १. शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। बूता। जोर। बोझ उठाने की शक्ति। २. सँभार। आश्रय। सहारा। आसरा। बिर्ता। भरोसा। ३. सेना। फौज। ४. पार्श्व। पहलू। ५. मरोड़। ऐंठन। लपेट। फेरा। लहरदार घुमाव। ६. टेढ़ापन। खम। ७. सिकुड़न। शिकन। ८. लचक। झुकाव।
मुहा०—बल खाना=१. घुमाव के साथ टेढ़ा होना। कुंचित होना। २. घाटा सहना। हानि सहना। बल पड़ना=अंतर होना। भूल-चूक होना। सिकुड़न पड़ना।
बलकना–क्रि० अ० १. उबलना। खौलना। जोश में आना। उत्तेजित होना। उमड़ना। २. अपनी बड़ाई आप करना।
बलकल*–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।
बलकाना–क्रि० स० उबालना। खौलाना। उभारना। उत्तेजित करना।
बलकारक–वि० बल या ताकत बढ़ानेवाला। बलवर्द्धक।
बलगम–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० बलगमी] कफ। श्लेष्मा।

बलचक्र–संज्ञा पुं० राज्य। साम्राज्य। राज्य-शासन।

बलज–संज्ञा पुं० १. शस्य। फसल। २. खेत। ३. युद्ध। ४. द्वार।

बलजा–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. रस्सी।

बलतंत्र–संज्ञा पुं० शक्ति या सेना का प्रबन्ध। सैनिक व्यवस्था।

बलदंड–संज्ञा पुं० कसरत करने के लिए लकड़ी का बना हुआ एक ढाँचा।

बलद–संज्ञा पुं० बैल।
वि० बल देनेवाला।

बलदा–वि० बल देनेवाला। बलदायक।

बलदाऊ, बलदेव–संज्ञा पुं० दे० "बलराम"।

बलदायक–वि० बल देने या बढ़ानेवाला। बलप्रद।

बलना–क्रि० अ० जलना। दहकना। लपट फेंककर जलना।

बलप्रद–वि० बल प्रदान करनेवाला। बल देने या बढ़ानेवाला।

बलबलाना–संज्ञा पुं० [अनु०] ऊँट की बोली।
क्रि० अ० १. उबलना। व्यर्थ बकना। २. जोश में आकर अभिमानपूर्वक बड़ी-बड़ी बातें करना।

बलभद्र–संज्ञा पुं० बलदेवजी। बलराम।

बलभी–संज्ञा स्त्री० १. मकान में सबसे ऊपर-वाली कोठरी। २. ऊपर का खंड। चौबारा।

बलम* या बलमा–संज्ञा पुं० पति। प्रियतम। दे० "बालम"।

बल्मीक–संज्ञा स्त्री० बाँबी (दीमकों की)।

बलय*–संज्ञा पुं० दे० "वलय"। कंकण।

बलराम–संज्ञा पुं० कृष्णचन्द्र के बड़े भाई।

बलवंड*–वि० बली। बलवान्। प्रतापी।

बलवंत–वि० बलवान्। बली।

बलवत्ता–संज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव। शक्तिसम्पन्नता।

बलवा–संज्ञा पुं० [फा०] विद्रोह। बगावत। उपद्रव।

बलवाई–संज्ञा पुं० विद्रोही। उपद्रवी। बलवा करनेवाला।

बलवान्–वि० [स्त्री० बलवती] १. बलिष्ठ। बली। शक्तिशाली। मजबूत। ताकतवर। २. सामर्थ्यवान्।

बलवीर–संज्ञा पुं० बलराम के भाई श्रीकृष्ण।

बलशाली–वि० दे० "बलवान्"।

बलशील–वि० बली। शक्तिशाली।

बलसूदन–संज्ञा पुं० १. इन्द्र। २. विष्णु।

बला–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। विपत्ति। आफत। २. कष्ट। दुःख। ३. भूत-प्रेत या उसकी बाधा। ४. रोग। व्याधि। ५. बरियारा नामक पौधा। वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति। ६. पृथिवी। ७. लक्ष्मी।
मुहा०–बला का=अत्यंत। घोर।

बलाइ*–संज्ञा स्त्री० दे० "बला"। आपत्ति। दुःख। रोग।

बलाक–संज्ञा पुं० बक। बगला। बगुला।

बलाका–संज्ञा स्त्री० १. बगली। २. बगलों की पंक्ति।

बलाग्र–संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. सेना का अगला भाग।
वि० बलशाली। बली।

बलाढ्य–वि० बलवान्। बली।

बलात्–क्रि० वि० बलपूर्वक। जबरदस्ती।

बलात्कार–संज्ञा पुं० किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती संभोग।

बलात्कृत–वि० जिसके साथ बलात्कार किया गया हो।

बलाधिकृत–संज्ञा पुं० प्राचीन भारत में किसी राज्य के सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी और राजमंत्री।

बलाध्यक्ष–संज्ञा पुं० सेनापति।

बलाय–संज्ञा स्त्री० दे० "बला"। आपत्ति। संकट।

बलाराति–संज्ञा पुं० १. इन्द्र। २. विष्णु।

बलावलेप–संज्ञा पुं० गर्व।

बलासम–संज्ञा पुं० बुद्ध।

बलासी–संज्ञा पुं० बसना-नामक पौधा।

बलाह–संज्ञा पुं० वह घोड़ा, जिसकी गरदन और दुम पीली हो।

बलाहक–संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

बलिंदम–संज्ञा पुं० विष्णु।

बलि—संज्ञा पुं० १. मालगुजारी। कर। राजकर। २. भेंट। उपहार। पूजा की सामग्री या उपकरण। ३. पंच-महायज्ञों में चौथा। भूतयज्ञ। ४. किसी देवता के नैवेद्य का पदार्थ। भक्ष्य। अन्न। चढ़ावा। भोग। नैवेद्य। ५. देवता को चढ़ाने के लिए मारा जानेवाला पशु। ६. प्रह्लाद का पौत्र, जो दैत्यों का राजा था।

संज्ञा स्त्री० सखी।

मुहा०—बलि चढ़ना=मारा जाना। बलि चढ़ाना=देवता के निमित्त बलिदान करना। बलि जाना=निछावर होना। बलिहारी जाना। बलि-बलि जाऊँ=मैं तुम पर निछावर हूँ।

बलिकर्म—संज्ञा पुं० बलिदान।

बलित*—वि० १. बलिदान चढ़ाया हुआ। मारा हुआ। हत। २. बल या सिकुड़न पड़ा हुआ।

बलिदान—संज्ञा पुं० १. निछावर। प्राण-त्याग। २. देवता को चढ़ाने के लिए बकरा या किसी जीव की हिंसा।

बलिपशु—संज्ञा पुं० किसी देवता को चढ़ाने के लिए मारा जानेवाला पशु।

बलिपुष्ट—संज्ञा पुं० कौवा। काग।

बलिवर्द—संज्ञा पुं० साँड़।

बलिवैश्वदेव—संज्ञा पुं० पाँच महायज्ञों में से चौथा महायज्ञ। इसमें गृहस्थ पके हुए अन्न से एक एक ग्रास लेकर भिन्न-भिन्न स्थानों पर रखता है। भूतयज्ञ।

बलिष्ठ—वि० बहुत बलवान्। शक्तिशाली।

बलिहारना*—क्रि० स० निछावर कर देना। कुर्बान कर देना। आत्मोत्सर्ग।

बलिहारी—संज्ञा स्त्री० बधाई। निछावर। कुर्बान।

मुहा०—बलिहारी जाना=निछावर होना। कुरबान जाना। बलैया लेना। बलिहारी लेना=बलैया लेना। प्रेम दिखाना।

बली—वि० बलवान्। शक्तिशाली। समर्थ। पराक्रमी।

बलीमुख*—संज्ञा पुं० बंदर।

बलीयस्—वि० [स्त्री० बलीयसी] बहुत अधिक बलवान्।

बलीयान्—वि० बली। बलशाली।

बलु*—अव्य० "बरु"।

संज्ञा पुं० बल। ताकत।

बलुआ, बलुवा—वि० [स्त्री० बलुई] जिसमें बालू मिला हो। रेतीला।

बलूच—संज्ञा पुं० बलूचिस्तान में रहनेवाले मुसलमानों की एक जाति।

बलूचिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] एक देश-विशेष, जो पश्चिमी पाकिस्तान और अफगानिस्तान से मिला हुआ है।

बलूची—संज्ञा पुं० बलूचिस्तान का निवासी। दे० "बलोच"।

बलूरना—क्रि० स० नोचना। खसोटना। खुरचना।

बलैया—संज्ञा स्त्री० बला। बलाय।

मुहा०—(किसी की) बलैया लेना= अर्थात् किसी का रोग या दुःख अपने ऊपर लेना। मंगल-कामना करते हुए प्यार करना। निछावर करना। बलिहारी होना।

बल्कल—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।

बल्कस—संज्ञा पुं० तलछट।

बल्य—वि० बलकारक।

बल्कि—अव्य० [फा०] १. अन्यथा। प्रत्युत। इसके विरुद्ध। २. और अच्छा है। बेहतर है।

बल्लभ—संज्ञा पुं० १. दे० "वल्लभ"। प्रिय। २. पति। स्वामी।

स्त्री० बल्लभी।

बल्लम—संज्ञा पुं० १. भाला। बरछा। २. सोंटा। डंडा। सुनहला या रुपहला डंडा, जिसे लेकर चोबदार राजाओं के आगे चलते हैं।

बल्लमटेर—संज्ञा पुं० १. स्वेच्छापूर्वक सेना में भरती होनेवाला। २. दे० "स्वयंसेवक"। [अंग्रे०—वालंटियर]

बल्लमबर्दार—संज्ञा पुं० राजा की सवारी या बरात के आगे बल्लम लेकर चलनेवाला।

बल्लरी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता।

बल्लव—संज्ञा पुं० १. चरवाहा। २. रसोइया।

बल्ला—संज्ञा पुं० [स्त्री० बल्ली] १. शहतीर या डंडा। २. मोटा डंडा। लट्ठ।

दंड। ३. नाव खेने का डंडा। ४. गेंद खेलने का डंडा। बैट।
बल्ली–संज्ञा स्त्री० १. छोटा बल्ला। २. लम्बा कुन्दा। खम्भा। ३. छत में लगाने की गोल मोटी लकड़ी। ४. नाव खेने का बड़ा लम्बा बाँस।
बवँड़ना†–क्रि० अ० इधर-उधर घूमना। व्यर्थ घूमना-फिरना।
बवंडर–संज्ञा पुं० १. चक्कर काटती हुई तेज हवा। बगूला। २. आँधी। तूफान।
बवंडा*–दे० "ववंडर"।
बवघूरा*–संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।
बवन*†–संज्ञा पुं० दे० "वमन"।
बवना*–क्रि० स० १. दे० "बोना"। २. बिखराना। छितराना।
क्रि० अ० छिटकना। छितरना। बिखरना।
संज्ञा पुं० दे० "वामन"।
बवरना–क्रि० अ० दे० "बौरना"। आम के वृक्ष में मंजरी निकलना।
बवाई–संज्ञा स्त्री० बिवाई। पैर के तलवे का फटना। विपादिका।
बवासीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक रोग, जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं और मल-त्याग के समय खून निकलता है या बहुत दर्द होता है। अर्श।
बसंत–संज्ञा पुं० दे० "वसंत"।
यौ०–चोंघा बसंत=भारी मूर्ख।
बसंता–संज्ञा पुं० एक चिड़िया।
बसंती–वि० १. बसंत का। बसंत-ऋतु-संबंधी। २. पीले रंग का।
बसंदर–संज्ञा पुं० आग। वैश्वानर।
बस–वि० [फा०] भरपूर। काफी। बहुत। यथेष्ट।
अव्य० पर्याप्त। काफी। सिर्फ। केवल।
संज्ञा पुं० १. दे० "वश"। २. [अंग्रे०] लम्बी और ऊँची मोटरगाड़ी।
बसन–संज्ञा पुं० दे० "वसन"
बसना–क्रि० अ० १. स्थायी रूप से रहना। निवास करना। आबाद होना। २. निवासियों से भरा-पूरा होना। आबाद होना। ३. ठहरना। टिकना। डेरा करना। बैठना। ४. सुगंधित होना। महक से भर जाना।
संज्ञा पुं० वह कपड़ा, जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। वेष्टन। बेठन। थैली।
मुहा०—घर बसाना=कुटुंब-सहित सुख-पूर्वक रहना। गृहस्थी का बनना। घर में बसना=सुखपूर्वक गृहस्थी में रहना। मन में बसना=ध्यान में बना रहना। स्मृति में रहना।
बसनि*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बसना"। निवास। रहना।
बसनी†–संज्ञा स्त्री० रुपए रखने की पतली थैली, जो कमर में बाँध ली जाती है।
बसवार–संज्ञा पुं० छौंक। बघार।
बसवास–संज्ञा पुं० १. निवास। रहना। ठिकाना। २. रहने का ढंग। स्थिति। रहने की सुविधा।
बसर–संज्ञा पुं० [फा०] निर्वाह। गुजर। जीवन व्यतीत करना।
यौ०–गुजर-बसर=किसी तरह से निर्वाह करना।
बसह†–संज्ञा पुं० दे० "वृषभ"।
बसाँधा–वि० बसाया हुआ। सुगंधित किया हुआ।
बसात, बिसात–संज्ञा पुं० हैसियत। सामर्थ्य। औकात।
बसाना–क्रि० स० १. बसने या रहने के लिए जगह देना। आबाद करना। बैठाना। २. रखना। टिकाना। ठहराना।
*क्रि० अ० १. बसना। रहना। २. महकना। दुर्गंध देना। बदबू करना। ३. बश या जोर चलना।
मुहा०–घर बसाना=गृहस्थी जमाना। सुख-पूर्वक सुकुटुंब रहने का ठिकाना करना।
बसिऔरा–संज्ञा पुं० १. वर्ष की कुछ तिथियाँ, जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती हैं। २. बासी भोजन।
बसिया†–वि० बासी। जो ताजा न हो।
बसियाना–क्रि० अ० बासी हो जाना।
बसीकत, बसीगत–संज्ञा स्त्री० १. बस्ती।

आबादी। २. बसने का भाव या क्रिया। ३. स्थिति। रहन।

बसीकर–वि० वशीकर। वश में करनेवाला।

बसीकरन*–संज्ञा पुं० दे० "वशीकरण"।

बसीठ–संज्ञा पुं० दूत। सँदेसा ले जानेवाला। धावन।

बसीठी–संज्ञा स्त्री० दूत का काम। सँदेसा पहुँचाने का काम। दूतत्व।

बसीला†*–संज्ञा पुं० बसना। बसने या रहने की क्रिया या भाव। निवास।

बसूला–संज्ञा पुं० [स्त्री० बसूली] लकड़ी छीलने और गढ़ने के लिए बढ़ई का एक औजार।

बसैंधा–वि० सड़ा। दुर्गन्धयुक्त।

बसेरा–वि० रहने या बसनेवाला।

संज्ञा पुं० १. वह स्थान, जहाँ रहकर यात्री रात बिताते हैं। टिकने की जगह। २. रात में पक्षियों के रहने का स्थान। घोंसला। ३. टिकने या बसने का भाव। रहना।

मुहा०—बसेरा करना=१. डेरा करना। ठहरना। निवास करना। २. घर बनाना। बस जाना। बसेरा लेना=निवास करना। रहना। बसेरा देना=आश्रय देना।

बसेरी*–वि० निवासी। रहने या बसनेवाला।

बसैया*†–वि० बसनेवाला।

बसोवास–संज्ञा पुं० निवासस्थान। रहने का स्थान।

बसौंधी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की रबड़ी।

बस्ता–संज्ञा पुं०[फा०] कागज, बही या पुस्तक आदि बाँधकर रखने का कपड़ा। बेठन। कपड़े में बँधी हुई पुस्तकें या कागज का छोटा गठ्ठर।

मुहा०—बस्ता बाँधना=कागज आदि समेट कर उठने की तैयारी करना।

बस्ती–संज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ कुछ लोग घर बना कर रहते हैं। आबादी। निवास।

बहँगा–संज्ञा पुं० बड़ी बहँगी।

बहँगी–संज्ञा स्त्री० बोझ ढोने के लिए तराजू के आकार का एक ढाँचा। काँवर। काँवरि।

बहकना–क्रि० अ० १. ठीक रास्ता छोड़कर भूल से दूसरी ओर जा पड़ना। मार्ग-भ्रष्ट होना। भटकना। २. ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना। चूकना। ३. किसी की बात या भुलावे में आ जाना। धोखा खाना। ४. किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना। बहलना (बच्चों के लिए)। ५. आपे में न रहना। रस या मद में चूर होना।

मुहा०—बहकी-बहकी बातें करना=१. मदोन्मत्त की-सी बातें करना। २. बहुत बढ़ी-चढ़ी बातें करना।

बहकाना–क्रि० स० १. ठीक रास्ते से दूसरी ओर ले जाना या फेरना। भुलवाना। धोखा देना। २. लक्ष्यभ्रष्ट करना। भुलावा देना। भरमाना। बातों से फुसलाना। ३. बातों से शांत करना। बहलाना।

बहकावट–संज्ञा स्त्री० बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल*†–संज्ञा स्त्री० पानी बहने की नाली।

बहन–संज्ञा स्त्री० भगिनी (भाई के लिए)। माता की पुत्री। अपने चाचा, मामा और बुआ की लड़की।

बहना–क्रि० अ० १. पानी आदि तरल वस्तुओं का किसी ओर प्रवाहित होना। २. पानी की धारा के साथ जाना। ३. लगातार बूँद या धार के रूप में निकलना। ४. हवा का चलना। ५. हट जाना। दूर होना। ६. पिघलकर निकल जाना। ७. मारा-मारा फिरना। कुमार्गी होना। बिगड़ना। आवारा होना। ८. गर्भपात होना। अड़ाना (चौपायों के लिए)। ९. अधिक मिलना। सस्ता मिलना। १०. (रुपया आदि) डूब जाना। नष्ट हो जाना। ११. लादकर ले चलना। वहन करना। खींचकर ले चलना (गाड़ी आदि)। १२. धारण करना। १३. उठना। चलना। १४. निर्वाह करना।

मुहा०—बहती गंगा में हाथ धोना=किसी ऐसी बात से लाभ उठाना, जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हों।

बहनापा–संज्ञा पुं० बहन का संबंध या नाता।

बहनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "वह्नि"। आग। †दे० "भगिनी"।

बहनु*–संज्ञा पुं० दे० "वाहन"। सवारी।

बहनेऊ–संज्ञा पुं० दे० "बहनोई"।

बहनेली–संज्ञा स्त्री० वह, जिसके साथ बहन का नाता जोड़ा जाय।

बहनोई–संज्ञा पुं० बहन का पति। अपने से बड़ी बहन के पति को जीजा कहते हैं।

बहरा–वि० [स्त्री० बहरी] कान से न सुननेवाला या कम सुननेवाला। बधिर।

बहराना–क्रि० स० १. ऐसी बातें करना, जिससे दुःख भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। २. बहकाना। बहलाना। फुसलाना। भुलाना।

बहरिया–संज्ञा पुं० अतिथि।
वि० बाहर का। अशुद्ध।

बहरियाना†–क्रि० स० बाहर करना। निकालना। अलग करना।
क्रि० अ० बाहर की ओर होना। अलग होना।

बहरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] बाज की तरह का एक शिकारी पक्षी।
वि० बाहरी। बाहर का।

बहल–संज्ञा स्त्री० दे० "बहली"।

बहलना–क्रि० अ० चित्त प्रसन्न होना या मन खुश होना। मनोरंजन होना। चिन्ता या दुःख भूलकर दूसरी दिशा में मन लगना। बहकना। भुलावे में आना।

बहलाना–क्रि० स० १. चित्त प्रसन्न करना। चिंता या दुःख की बात भुलवाकर चित्त को दूसरी ओर लगाना। मनोरंजन करना। मनबहलाव करना। २. भुलावा देना। भुलाना। बहकाना।

बहलाव–संज्ञा पुं० बहलाने की क्रिया या भाव। मनोरंजन। प्रसन्नता।

बहलिया†–संज्ञा पुं० बहली हाँकनेवाला।

बहली–संज्ञा स्त्री० रथ-जैसी एक छोटी बैलगाड़ी। खड़खड़िया।

बहल्ला†*–संज्ञा पुं० आनंद। प्रसन्नता।

बहस–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी विषय का खंडन-मंडन। वादविवाद। तर्क-वितर्क। उत्तर-प्रत्युत्तर। जवाब-सवाल।

बहसना*–क्रि० अ० बहस करना। विवाद करना। तर्क-वितर्क करना। शर्त्त लगाना। होड़ लगाना।

बहादुर–वि० [फा०] [संज्ञा बहादुरी] १. साहसी। २. पराक्रमी। शूरवीर।

बहादुरी–संज्ञा स्त्री० वीरता। शूरता।

बहादुराना–वि० [फा०] बहादुरों की तरह। वीरता-पूर्ण।

बहाना–क्रि० स० १. ऐसा ढालना या गिराना, जिससे चीज बह जाय। प्रवाहित करना। २. पानी की धारा में डालना। धार के रूप में छोड़ना। ३. वायु संचालित करना। हवा चलाना। ४. व्यर्थ व्यय करना। ५. गँवाना। खोना। फेंकना। ६. सस्ता बेचना।
संज्ञा पुं० १. मतलब निकालने के लिए कही गई झूठी बात। २. किसी काम के होने या न होने का ऐसा कारण बताना, जो केवल कल्पित हो। ३. झाँसा-पट्टी। हीला। मिस। नाम-मात्र का कारण। केवल कहने भर के लिए।

बहार–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वसंत ऋतु। २. आनंद। मौज। ३. यौवन का विकास। जवानी का रंग। ४. शोभा। सौन्दर्य। सुहावनापन। रमणीयता। रौनक। ५. विकास। ६. प्रफुल्लता। ७. कौतुक। मजा। तमाशा।

बहारना†–क्रि० स० साफ करना।

बहारी†–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।

बहाल–वि० [फा०] पूर्ववत् स्थित। ज्यों का त्यों। भला-चंगा। स्वस्थ।

बहाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. फिर उसी जगह या पद पर नियुक्ति। पुनर्नियुक्ति। २. बहाना। झाँसापट्टी।

बहाव–संज्ञा पुं० १. बहने का भाव या क्रिया। प्रवाह। धारा। २. बहता हुआ जल आदि। वेग या प्रवृत्ति।

बहिअर–संज्ञा स्त्री० स्त्री।

बहिक्रम*–संज्ञा पुं० वयःक्रम। उम्र। आयु।

बहिश्त–संज्ञा पुं० दे० "बिहिश्त"।

बहिन—संज्ञा स्त्री० दे० "बहन"। भगिनी।
बहिनापा—संज्ञा पुं० बहिन का सम्बन्ध।
बहियाँ‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "बाँह"।
बहिरंग—वि० बाहरवाला। बाहरी। 'अंतरंग' का उलटा।
बहिर†*—वि० दे० "बहरा"।
बहिरत‡*—अव्य० बाहर।
बहिरा—वि० जो सुन न सके। बधिर। न सुनने या कम सुननेवाला।
बहिराना—क्रि० स० निकाल देना।
क्रि० अ० बाहर होना।
बहिर्गत—वि० बाहर आया या निकला हुआ। अलग।
बहिर्जगत्—संज्ञा पुं० दृश्य जगत्। बाहरी दुनिया।
बहिर्देश—संज्ञा पुं० बाहर का स्थान या भूमि। बाहर का देश।
बहिर्भूत—वि० जो बाहर हो। अलग। जुदा।
बहिर्भूमि—संज्ञा स्त्री० बस्ती या आबादी से बाहरवाली जमीन।
बहिर्मुख—वि० १. विरुद्ध। विमुख। प्रतिकूल। २. उदासीन।
बहिर्लापिका—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पहेली, जिसमें उसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों के बाहर रहता है, भीतर नहीं। अंतर्लापिका का उलटा।
बहिर्वाणिज्य—संज्ञा पुं० दूसरे देशों के साथ होनेवाला व्यापार। (अंग्रे० एक्सटर्नल ट्रेड)
बहिला—वि० वंध्या। बाँझ (चौपायों के लिए)।
बहिश्त—संज्ञा पुं० मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग।
बहिष्कार—संज्ञा पुं० [वि० बहिष्कृत] निकालना। बाहर करना। हटाना।
बहिष्कृत—वि० बाहर या अलग किया हुआ। निकाला हुआ।
बही—संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब लिखने की

बहीखाता—संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब की पुस्तक। महाजनी का हिसाब लिखने की पुस्तक।
बहीर—संज्ञा स्त्री० १. भीड़। जन-समूह। २. सेना के साथ-साथ चलनेवाले, जिसमें साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं। ३. सेना की सामग्री। सैनिकों का सामान।
*‡अव्य० बाहर।
बहुँटा—संज्ञा पुं० बाँह पर पहनने का एक गहना।
बहु—वि० अनेक। बहुत। अधिक।
बहुज्ञ—वि० बहुत बातें जाननेवाला। बड़ा जानकार।
बहुत—वि० १. अनेक। अधिक। २. यथेष्ट। काफी। बस।
क्रि० वि० अधिक परिमाण में। ज्यादा।
मुहा०—बहुत अच्छा=स्वीकृति-सूचक वाक्य। बहुत करके=अधिकतर। प्रायः। बहुधा। अधिक संभव है। बहुत कुछ=कम नहीं। गिनती करने योग्य। बहुत खूब=वाह! क्या कहना है! बहुत अच्छा।
बहुतक†*—वि० दे० "बहुतेरा"। बहुत से। बहुतेरे।
बहुतायत—संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती। बाहुल्य। बहुलता।
बहुतेरा—वि० अधिक। बहुत-सा।
क्रि० वि० अनेक प्रकार से। बहुत परिमाण में।
बहुतेरे—वि० संख्या में अधिक। अनेक। बहुत से।
बहुत्व—संज्ञा पुं० अधिकता। आधिक्य।
बहुदर्शिता—संज्ञा स्त्री० बहुज्ञता। बहुत-सी बातों की समझ।
बहुदर्शी—संज्ञा पुं० अनुभवी। जिसने संसार या व्यवहार की बहुत-सी बातें देखी हों। बहुज्ञ। जानकार।
बहुधंधी—वि० एक साथ बहुत से काम अपने हाथ में ले लेनेवाला।
बहुधा—क्रि० वि० प्रायः। अक्सर।
बहुनाद—वि० बहुत आवाज करनेवाला।
संज्ञा पुं० शंख।
बहुबल—वि० बहुत बलवान्।
संज्ञा पुं० सिंह।
बहुभाषी—वि० बहुत बोलनेवाला।
बहुभुज—संज्ञा पुं० वह क्षेत्र, जिसमें बहुत-सी भुजाएँ या किनारे हों।
बहुभुजा—संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

बहुमत–संज्ञा पुं० १.बहुत से लोगों की मिलकर एक राय। (अंग्रे० मेजारिटी) २. बहुत से लोगों की अलग-अलग राय।

बहुमूत्र–संज्ञा पुं० बहुत अधिक और बार-बार पेशाब होने का रोग।

बहुमूल्य–वि० बहुत अधिक दाम का। कीमती। बढ़िया।

बहुरंगा–वि० १. चित्र-विचित्र। कई रंगों का। २. मनमौजी। ३. बहुरूपधारी।

बहुरंगी–वि० १. अनेक रंगोंवाला। २. बहुरूपिया। ३.अनेक प्रकार के करतब या चाल दिखानेवाला। कौतुकी।

बहुरना†–क्रि० अ० लौटना। वापस आना। फिर मिलना।

बहुरि*†–क्रि० वि० फिर। पुनः। उपरान्त।

बहुरिया†–संज्ञा स्त्री० दुलहिन। नववधू।

बहुरूपिया–संज्ञा पुं० तरह-तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलानेवाला। अनेक रूप धारण करनेवाला। नकल करनेवाला। स्वाँग करनेवाला।

बहुरूपी–वि० अनेक रूप धारण करनेवाला। संज्ञा पुं० बहुरूपिया।

बहुल–वि० अधिक। बहुत। प्रचुर।

बहुलगन्धा–संज्ञा स्त्री० इलायची।

बहुलता–संज्ञा स्त्री० बहुतायत। अधिकता।

बहुवचन–संज्ञा पुं० व्याकरण की एक परिभाषा, जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है।

बहुविज्ञ–वि०बहुज्ञ। अनेक विद्याएँ जाननेवाला।

बहुव्रीहि–संज्ञा पुं० व्याकरण में छः प्रकार के समासों में से एक, जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुश्रुत–वि० जिसने अनेक विद्वानों से भिन्न-भिन्न शास्त्रों की बातें सुनी हों। अनेक विषयों का जानकार।

बहुसंख्यक–वि० गिनती में बहुत। अधिक। अगणित।

बहूँटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बहूँटी] बाँह पर पहनने का एक गहना। बहूँटा।

बहू–संज्ञा स्त्री० १. लड़के की स्त्री। पतोहू। २. पत्नी। ३. दुलहिन।

बहेंगवा–संज्ञा पुं० एक पक्षी।
वि० आवारा। घुमक्कड़।

बहेड़ा–संज्ञा पुं० एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़, जिसके फल औषध के काम में आते हैं।

बहेरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'बहाना'। हीला-हवाला।

बहेलिया–संज्ञा पुं० पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला। चिड़ीमार। व्याध।

बहोर*†–संज्ञा पुं० फेरा। चक्कर। वापसी।
अव्य० दे० "बहोरि"। फिर। पुनः।

बहोरना†–क्रि० स० लौटाना। फेरना। वापस करना। चौपायों का हाँकना।

बहोरि†*–अव्य० पुनः फिर।

बाँ–संज्ञा पु० [अनु०] गाय अथवा बैल के बोलने का शब्द।

बाँक–संज्ञा स्त्री० १. बाँह पर पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार का चाँदी का गहना, जो पैरों में पहना जाता है। ३. हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी। ४. नदी का मोड़। ५. कमान। धनुष। ६. एक प्रकार का चाकू।
संज्ञा पुं० वक्रता। टेढ़ापन।
वि० टेढ़ा। तिरछा। बाँका।

बाँकड़ा†–वि० वीर। साहसी।

बाँकड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुनहला या रुपहला गोटा।

बाँकना†–क्रि० स० टेढ़ा करना।
‡क्रि० अ० टेढ़ा होना।

बाँकपन–संज्ञा पुं० १. टेढ़ापन। २. तिरछापन। छैलापन। अलबेलापन। ३. बनावट। ४. शोभा। छवि।

बाँका–वि० १. टेढ़ा। तिरछा। २ बहादुर। ३. बना-ठना। छैला।

बाँकुर, बाँकुरा*†–वि० १. बाँका। टेढ़ा। २. पैना। तेज धार का। ३. चतुर। कुशल। ४. बहादुर।

बाँकुड़ी†–संज्ञा स्त्री० गोटेदार फीता।

बाँग–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पुकार। चिल्लाहट

२. वह ऊँचा शब्द, जो नमाज का समय सूचित करने के लिए मुल्ला मसजिद में करता है। अजान। ३. प्रातःकाल का मुर्गे का शब्द।

बाँगड़—संज्ञा पुं० पंजाब में हिसार, रोहतक और करनाल जिला का भूभाग। हरियाना। दे० 'बाँगर'।

बाँगड़ू—वि० १. मूर्ख। उजड्ड। २. जंगली। संज्ञा स्त्री० बाँगड़ के जाटों की बोली। हरियानी।

बाँगर—संज्ञा पुं० १. अवध में एक प्रकार के बैल। २. नदी के किनारे की ऊँची भूमि। ३. छकड़ा गाड़ी के फड़ के ऊपर का भाग।

बाँगुर—संज्ञा पुं० जाल। फंदा।

बाँचना†—क्रि० स० १. पढ़ना। †२. बचना। ३. बचाना। छुड़ाना।
क्रि० अ० १. शेष रहना। २. छोड़ देना।

बाँछना†*—संज्ञा स्त्री० १. दे० "वांछा"। इच्छा करना। २. छाँटना। चुनना।

बाँछा*—संज्ञा स्त्री० दे० "वांछा"।

बाँछित*—वि० दे० 'वांछित'।

बाँजर—संज्ञा पुं० दे० 'बंजर'।

बाँझ—संज्ञा स्त्री० बंध्या। वह स्त्री या मादा पशु, जिसे संतान होती ही न हो।

बाँझपन—संज्ञा पुं० बाँझ होने का भाव। वंध्यात्व।

बाँट—संज्ञा स्त्री० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग। अंश। हिस्सा। ३. तौलने का बटखरा। ४. पयाल का बना रस्सा। ५. दूध दुहने के बाद गाय-भैंस को दिया जानेवाला भोजन।
मुहा०—बाँट पड़ना=हिस्से में आना।

बाँटचूँट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भाग। लेन-देन।

बाँटना—क्रि० स० १. किसी चीज के कई भाग करके अलग-अलग रखना। २. हिस्सा लगाना या देना। विभाग करना। ३. थोड़ा-थोड़ा सबको देना। वितरण करना।

बाँटा—संज्ञा पुं० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. हिस्सा। भाग।

बाँड़—संज्ञा पुं० दो नदियों के संगम के बीच की भूमि।

बाँड़ा†—वि० १. बिना पूँछ का पशु। दुमकटा। २. असहाय। दीन। अकेला।

बाँड़ी—संज्ञा स्त्री० १. छोटी लाठी। २. बिना पूँछ की गाय। ३. पूँछकटी।

बाँद†—संज्ञा पुं० [स्त्री० बाँदी] सेवक। दास।

बाँदर—संज्ञा पुं० बंदर।

बाँदा†—संज्ञा पुं० एक प्रकार की वनस्पति, जो पेड़ों की शाखाओं पर फैलती है। बंदाक।

बाँदी—संज्ञा स्त्री० दासी। लौंडी। मुसलमान बादशाहों और नवाबों के जनानखाने में काम करनेवाली लौंडी।

बाँध—संज्ञा पुं० १. नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स। पानी आदि रोकने के लिए बनाया हुआ बन्द। २. नदी आदि पार करने के लिए उसके ऊपर बनाई गई वस्तु। पुल। ३. आगे बढ़ने से रोकने के लिए लगाया गया बन्धन।

बाँधना—क्रि० स० १. बन्धन में करना। जकड़ना। गाँठ लगाना। २. पकड़कर बन्द करना। कैद करना। ३. नियम, प्रतिज्ञा, अधिकार या शपथ आदि की सहायता से मर्य्यादित रखना। पाबंद करना। ४. मंत्र, तंत्र आदि की सहायता से शक्ति या गति को रोकना। ५. प्रेम-पाश में जकड़ना। ६. नियत या स्थिर करना। ७. पानी का बहाव रोकने के लिए बाँध आदि बनाना। ८. चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। ९. घर आदि बनाना। १०. योजना अथवा उपक्रम करना। ११. क्रम का विधान ठीक करना। मन में बैठाना। १२. किसी प्रकार का अस्त्र-शस्त्र साथ रखना।

बाँधनीपौरि*†—संज्ञा स्त्री० पशुओं के बाँधने का स्थान। पशुशाला।

बाँधनू—संज्ञा पुं० १. पहले से ठीक की हुई युक्ति या विचार। उपक्रम। मंसूबा। २. खयाली पुलाव। मनगढ़न्त बात। ३. झूठा दोष। कलंक। तोहमत। ४. चुनरी की रँगाई में कपड़े की एक प्रकार की बँधाई। इस प्रकार बाँध-कर रँगा गया कोई दूसरा वस्त्र।

बाँधव—संज्ञा पुं० १. भाई। बंधु। २. नातेदार। ३. मित्र।

बाँबी—संज्ञा स्त्री० १. दीमकों का बनाया

हुआ मिट्टी का भीटा या ढूह। बँबीठा। २. साँप का बिल।

बाँया–वि० दाहिने का उल्टा।

बाँवना*†–क्रि० स० रखना।

संज्ञा पुं० बामन। बौना।

बाँस–संज्ञा पुं० १. अनेक पोले कांडों और गाँठोंवाला एक पेड़, जो छाजन और टोकरी आदि बनाने के काम आता है। २. सवा तीन गज की एक नाप। ३. लाठी। ४. नाव खेने की लग्गी। ५. भूमि नापने की लकड़ी। ६. रीढ़। ७. भाला।

मुहा०–बाँस पर चढ़ना=बदनाम होना। बाँस पर चढ़ाना=१. बदनाम करना। २. बहुत बढ़ा देना। मिजाज बढ़ा देना। अधिक आदर देकर धृष्ट या घमंडी बना देना। बाँसों उछलना=बहुत अधिक प्रसन्न होना।

बाँसली–संज्ञा स्त्री० दे० "बाँसुरी"। वंशी।

बाँसा†–संज्ञा पुं० १. नाक के ऊपर की हड्डी, जो दोनों नयनों के ऊपर बीचोंबीच रहती है। २. पीठ की हड्डी। रीढ़।

बाँसुरी–संज्ञा स्त्री० बाँस का बना हुआ प्रसिद्ध बाजा, जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। बाँसुरी। वंशी।

बाँह–संज्ञा स्त्री० १. हाथ। बाहु। भुजा। २. बल। शक्ति। ३. सहायक। भरोसा। आसरा। सहारा। शरण। ४. एक प्रकार की कसरत, जो दो आदमी मिलकर करते हैं। ५. कुरते, कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है। आस्तीन।

मुहा०—बाँह गहना या पकड़ना=१. किसी की सहायता करने के लिए हाथ बढ़ाना। सहारा देना। मदद करना। अपनाना। २. विवाह करना। बाँह देना=सहारा या सहायता देना। बाँह टूटना=सहायक या रक्षक आदि का न रह जाना।

यौ०—बाँह-बोल=रक्षा करने या सहायता देने का वचन।

बाँही–संज्ञा स्त्री० दे० "बाँह"।

बा–संज्ञा पुं० १. जल। पानी। २. बार। मरतबा। दफा।

बाइबिल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] ईसाइयों की मुख्य धर्म-पुस्तक।

बाइसिकिल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] पैरों से चलाई जानेवाली दो पहियों की एक गाड़ी।

बाई–संज्ञा स्त्री० १. वात-रोग। शरीर में वायु बढ़ जाने की बीमारी। दे० "वात"। २. स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। ३. वेश्याओं के नाम के साथ लगनेवाला एक शब्द।

मुहा०—बाई की झोंक=१. वायु का प्रकोप। २. आवेश। बाई चढ़ना=१. वायु का प्रकोप होना। २. घमंड में आकर व्यर्थ की बातें करना। बाई पचना=१. वायु-दोष शान्त होना। २. घमंड टूटना।

बाईस–संज्ञा पुं० बीस और दो की संख्या या अंक। २२।

वि० जो बीस और दो हो।

बाउ†–संज्ञा पुं० दे० "वायु"।

बाउर†–वि० [स्त्री बाउरी] दे० "बावला।" पागल। मूर्ख। गूँगा। बुरा। खराब।

बाऊ†–संज्ञा पुं० दे० "वायु"।

बाएँ–क्रि० बाईं ओर। बाईं तरफ।

बाक*–संज्ञा पुं० दे० "वाक्"। बात। वचन। बोली।

बाकचाल†–वि० दे० "वाचाल"।

बाकना*‡–क्रि० अ० बकना।

बाकल†–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।

बाका*†–संज्ञा स्त्री० दे० "वाचा"।

बाकी–वि० [अ०] बचत। बचा हुआ। अवशिष्ट। शेष।

संज्ञा स्त्री० गणित में दो संख्याओं या मानों का अंतर निकालने की रीति। घटाने पर बची हुई संख्या या मान। एक प्रकार का धान।

अव्य० लेकिन। मगर। परन्तु। किन्तु।

बाकुल*–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।

बाखर–संज्ञा पुं० १. चौक। आँगन। २. बड़ा मकान।

बाखरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"। बड़ा मकान। घर।

बाग—संज्ञा पुं० [अ०] बगीचा। उद्यान। वाटिका। उपवन।
संज्ञा स्त्री० लगाम।
मुहा०—बाग मोड़ना=किसी ओर प्रवृत्त करना या घुमाना।

बागडोर—संज्ञा स्त्री० लगाम। घोड़े की लगाम में बाँधी जानेवाली डोरी।

बागना†—क्रि० अ० चलना। फिरना। टहलना। घूमना बोलना।

बागबान—संज्ञा पुं० [फा०] माली।

बागबानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] माली का काम।

बागर—संज्ञा पुं० नदी-तट की ऊँची भूमि, जहाँ तक नदी की बाढ़ का भी पानी कभी नहीं पहुँचता।

बागल*†—संज्ञा पुं० दे "बगला"।

बागा—संज्ञा पुं० अंगे की तरह का एक पुराना पहनावा। जोड़ा। जामा। खिलअत। पारितोषिक दिया जानेवाला कपड़ा।

बागी—संज्ञा पुं० [अ०] विद्रोही। राजद्रोही।

बागीचा—संज्ञा पुं० छोटा बाग। वाटिका। उपवन।

बागुर*—संज्ञा पुं० जाल। फंदा।

बागेसरी‡—संज्ञा स्त्री० १ दे० "बागीश्वरी"। सरस्वती। २. एक रागिनी।

बाघंबर—संज्ञा पुं० १. बाघ की खाल, जो बिछाने के काम आती है। २. एक प्रकार का रोएँदार कंबल।

बाघ—संज्ञा पुं० शेर।

बाघिन—संज्ञा स्त्री० बाघ की मादा।

बाघी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की गिलटी, जो अधिकतर गरमी के रोगियों के पेड़ू और जाँघ के जोड़ में होती है।

बाचना—क्रि० अ० बचना। सुरक्षित रहना।
क्रि० स० १. रक्षा करना। बचाना। २. पाठ करना। पढ़ना।

बाचा—संज्ञा स्त्री० दे० "वाचा।" बोलने की शक्ति। बातचीत। प्रतिज्ञा।

बाचाबंध*—वि० दे० "वचनबद्ध।" प्रतिज्ञा-बद्ध। प्रण करनेवाला।

बाछा—संज्ञा पुं० १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २. लड़का।

बाज—संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २. तीर में लगा हुआ पर। ३. घोड़ा। ४. बाजा। वाद्य। ५. बजने या बाजे का शब्द। ६. प्रत्यय, जो शब्दों के अंत में लगाकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है। जैसे—दगाबाज, नशेबाज। कबूतरबाज।
वि० १. वंचित। रहित। २. कोई-कोई। कुछ। थोड़े।
क्रि० वि० बगैर। बिना।
मुहा०—बाज आना=१. खोना। छोड़ना। रहित होना। २. दूर होना। पास न जाना। बाज करना=रोकना। बाज रखना=मना करना।

बाजदावा—संज्ञा पुं० [फा०] अपने अधिकारों का त्याग। अपने दावे से बाज आना।

बाजन*†—संज्ञा पुं० दे० "बाजा"। वाद्ययंत्र।

बाजना—क्रि० अ० १. बाजे आदि का बजना। २. झगड़ना। लड़ना। ३. प्रसिद्ध होना। पुकारा जाना। ४. चोट पहुँचना। लगना।

बाजरा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा अन्न।

बाजा—संज्ञा पुं० बजाने का यंत्र। वाद्य।
यौ०—बाजा-गाजा=अनेक प्रकार के बजते हुए बाजों का समूह। बाजे-गाजे से=धूम-धाम से।

बाजाब्ता—क्रि० वि० [फा०] जाब्ते के साथ। नियमानुकूल। कायदे के मुताबिक।
वि० जो नियमानुसार हो।

बाजार—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह स्थान, जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थों की बिक्री होती हो। २. वह स्थान, जहाँ किसी निश्चित समय पर सब तरह की दूकानें लगती हों। पैठ। हाट।
मुहा०—बाजार करना=चीजें खरीदने के लिए बाजार जाना। बाजार गर्म होना=१. बाजार में चीजों या ग्राहकों आदि की अधिकता होना। २. रौनक बढ़ना। खूब काम चलना। बाजार तेज होना=बाजार में किसी चीज की माँग बहुत अधिक होना। किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना।

काम जोरों पर चलना। बाजार उतरना या मंदा होना=बाजार में किसी चीज की माँग कम होना। दाम घटना। कारबार कम चलना।

बाजारी–वि० [फा०] १. बाजार-संबंधी। बाजार का। २. मामूली। साधारण। ३. अशिष्ट। मर्यादाहीन।

बाजारू–वि० दे० "बाजारी"।

बाजि*†–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. बाण। ३. पक्षी।
वि० चलनेवाला।

बाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] शर्त। दाँव। बदान। ऐसी शर्त्त, जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। दाँववाला खेल।
मुहा०—बाजी मारना=बाजी जीतना। दावँ जीतना। बाजी ले जाना=किसी बात में आगे बढ़ जाना। श्रेष्ठ ठहरना।

बाजीगर–संज्ञा पुं० [फा०] जादूगर।

बाजु–अव्य० १. बिना। बगैर। २. सिवा। अतिरिक्त।

बाजू–संज्ञा पुं० [फा०] १. भुजा। बाँह। बाहु। २. बाजूबंद नाम का आभूषण। भुजबंद। ३. सेना का एक पक्ष। ४. सदा सहायक। ५. पक्षी का पंख।

बाजूबंद–संज्ञा पुं० [फा०] बाँह पर पहनने का एक गहना। बाजू। बिजायठ। भुजबंद।

बाजूबीर‡–संज्ञा पुं० दे० "बाजूबंद"।

बाझ*–अव्य० बगैर। बिना।

बाझन*†–संज्ञा स्त्री० फँस या बझ जाना। उलझन। पेंच। बखेड़ा। झंझट।

बाझना–क्रि० अ० दे० "बझना"। बझ जाना। बंधन में पड़ना। बँधना।

बाट–संज्ञा पुं० १. मार्ग। रास्ता। २. बटखरा। ३. बट्टा। पत्थर का टुकड़ा, जिससे सिल पर कोई चीज पीसते हैं।
मुहा०—बाट करना=रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। बाट जोहना या देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। बाट पड़ना=तंग करना। पीछे पड़ना। डाका पड़ना। बाट पारना=डाका मारना।
क्रि० स० पीसना। चूर्ण करना।
क्रि० स० दे० "बटना"।

बाटिका–संज्ञा स्त्री० दे० "वाटिका।" छोटा बाग। बगीचा। फुलवारी।

बाटी–संज्ञा स्त्री० १. गोली। पिंड। २. उपलों आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की गोल रोटी। अँगा-कड़ी। लिट्टी। दे० "कटोरी।"

बाड़व–संज्ञा पुं० दे० "बड़वानल।" समुद्र की आग।
वि० बड़वा-संबंधी।

बाड़वानल–संज्ञा पुं० दे० "बड़वानल"।

बाड़ा–संज्ञा पुं० १. चारों ओर से घिरा हुआ बड़ा मैदान। हाता। २. पशुशाला।

बाड़ी†–संज्ञा स्त्री० बाटिका। फुलवारी।

बाढ़–संज्ञा स्त्री० १. बढ़ाव। अधिकता। वृद्धि। २. नदी आदि का बहुत अधिक बढ़ना। जलप्लावन। सैलाब। ३. व्यापार आदि से होनेवाला लाभ। ४. एक प्रकार का गहना। ५. बंदूक या तोप का लगातार छूटना। ६. तलवार, छूरी आदि शस्त्रों की धार। सान।
मुहा०—बाढ़ दगना=बंदूक या तोप का लगातार छूटना। बाढ़ (पर) रखना= उत्साहित करना। धार तेज करना।

बाढ़ना*†–क्रि० अ० दे० "बढ़ना"।

बाढ़ि बाढ़ी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बाढ़"।

बाढ़ीवान–वि० हथियारों पर बाढ़ या सान चढ़ानेवाला।

बाण–संज्ञा पुं० १. तीर। शर। २. गाय का थन। ३. आग। ४. लक्ष्य। निशाना। ५. पाँच की संख्या। ६. शर का अगला भाग।

बाणक‡–संज्ञा पुं० महाजन।

बाणभट्ट–संज्ञा पुं० संस्कृत के एक कवि तथा सर्वश्रेष्ठ गद्यकाव्यकार। कादम्बरी और हर्षचरित गद्यकाव्यों के रचयिता।

बाणलिंग–संज्ञा पुं० नर्मदा नदी से प्राप्त शिव-लिंग।

बाणविद्या–संज्ञा स्त्री० बाण चलाने की विद्या। तीरंदाजी।

वाणिज्य–संज्ञा पुं० व्यापार। रोजगार। व्यवसाय।

बाणी–संज्ञा स्त्री० दे० "बाणी।" सरस्वती। भाषा। गिरा। बोली।

बात–संज्ञा स्त्री० १. सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वाणी। वचन। वार्त्ता। २. चर्चा। जिक्र। ३. प्रसंग। खबर। ४. अफवाह। किंवदन्ती। प्रवाद। व्यवस्था। माजरा। हाल। ५. घटित होनेवाली अवस्था। प्राप्त संयोग। परिस्थिति ६. संदेश। पैगाम। ७. वार्त्तालाप। वाग्विलास। गप-शप। ८. झूठ कथन। मिस। बहाना। ९. वचन। प्रतिज्ञा। वादा। १० विश्वास। प्रतीति। ११. मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा।१२. अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के संबंध में कथन या वाक्य। १३. आदेश। १४. उपदेश। सीख। १५. रहस्य। भेद। १६. तारीफ की बात। प्रशंसा का विषय। १७. चमत्कारपूर्ण कथन। उक्ति। गूढ़ अर्थ। १८. अभिप्राय। मानी। १९. गुण या विशेषता। खूबी। २०. ढंग। ढब। २१. प्रश्न। समस्या। २२. अभिप्राय। तात्पर्य्य। २३. इच्छा। कामना। कथन का सार। मर्म। २४. काम। व्यवहार। आचरण। २५. संबंध। लगाव। २६. स्वभाव। गुण। लक्षण। प्रकृति। २७. वस्तु। पदार्थ। विषय। २८. मूल्य। मोल। २९. उचित पथ या उपाय। कर्त्तव्य।

संज्ञा पुं० दे० "बात"।

मुहा०—बातों में आना या पड़ना=बहकावे या भुलावे में आना। बात उखाड़ना=भूली बातों की याद दिलाना। बुरी बातें छेड़ना। बात कहते=तुरंत। फौरन। झट। बात काटना=किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। कथन का खंडन करना। बात की बात में=झट। तुरंत। फौरन। बात खाली जाना=प्रार्थना या कथन का निष्फल होना। बात टलना=कथन का अन्यथा होना। बात टालना=सुनी-अनसुनी करना। कही हुई बात पर न चलना। बात न पूछना=कुछ भी आदर न करना। (किसी की) बात पर आना=बात का खयाल करना। बात पर ध्यान देना। कहने पर भरोसा करना। बात पूछना=खोज रखना। खबर लेना। कदर करना। बात बढ़ना=बात का विवाद के रूप में हो जाना। झगड़ा होना। बात बढ़ाना=विवाद करना। झगड़ा करना। बात बनाना=झूठ बोलना। बहाना करना। बातें बनाना=झूठमूठ इधर-उधर की बातें कहना। बहाना करना। खुशामद करना। बातों में उड़ाना=(किसी विषय को) हँसी में टालना। टालमटूल करना। बातों में लगाना=बातें कहकर उनमें लीन रखना। बात उठाना=चर्चा चलाना। बात चलना या छिड़ना=प्रसंग आना। चर्चा छिड़ना। बात निकालना=बात चलाना। बात पड़ना=चर्चा छिड़ना। बात उड़ना=चारों ओर चर्चा फैलना। बात गहना=चारों ओर चर्चा फैलना। बात का बतंगड़ करना=साधारण विषय या छोटे-से मामले को व्यर्थ तूल देना या पेचीदा बना देना। बात न पूछना=बात पर ध्यान न देना। परवा न रखना। बात बढ़ना=किसी प्रसंग या घटना का भयंकर रूप धारण करना। बात बनना=काम बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। अच्छी परिस्थिति होना। बोल-बाला होना। बात बनाना या सँवारना=काम बनाना। बात-बात पर या बात-बात में=प्रत्येक प्रसंग पर। हर काम में। बात बिगड़ना=काम चौपट होना। विफलता होना। बातों बातों में=बातचीत करते हुए। कथोपकथन के बीच में। बात ठहरना=विवाह-संबंध स्थिर होना। किसी प्रकार का निश्चय होना। बात का धनी, पक्का या पूरा=प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला। बात पक्की करना=१. पक्का निश्चय करना। २. प्रतिज्ञा या संकल्प पुष्ट करना। (अपनी) बात रखना=वचन पूरा करना। बात हारना=वचन देना। (किसी की) बात जाना=बात का प्रमाण न रहना। (लोगों को) एतबार न रह जाना। बात खोना=१. विश्वास खोना। २. नष्ट करना।

इज्जत गँवाना। बात जाना=इज्जत न रह जाना। बात बनना= १. प्रतिष्ठा मिलना। २. विश्वास रहना। साख रहना। बात पाना=छिपा हुआ अर्थ समझ जाना।

बात-चीत–संज्ञा स्त्री० वार्तालाप। दो या कई मनुष्यों के बीच कथोपकथन।

बाती†–संज्ञा स्त्री० दे० "बत्ती"।

बातुल–वि० दे० "वातुल"। पागल। सनकी। सिड़ी।

बातूनिया, बातूनी–वि० बहुत बातें करनेवाला। बकवादी। बाचाल।

बाथ†–संज्ञा पुं० अंक। गोद।

बाथू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग। बथुआ।

बाद–संज्ञा पुं० दे० "वाद"। १. तर्क। बहस। झगड़ा। विवाद। हुज्जत। झकझक। २. शर्त्त। बाजी ३. हवा। बात।

वि० १. अलग किया हुआ। २. दस्तूरी या कमीशन, जो दाम में से काटा जाय। ३. अतिरिक्त। सिवाय।

अव्य० १. व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २. पीछे।

मुहा०—बाद मेलना=बाजी लगाना।

बादना–क्रि० अ० १. बकवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २. बोलना। ललकारना।

बादबान–संज्ञा पुं० [फा०] पाल।

बादर*†–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।

वि० १. हर्षित। प्रसन्न। २. मोटा खद्दर।

बादरा–संज्ञा स्त्री० १. बेर का पेड़। २. कपास का पौधा। ३. जल। ४. बादल। ५. रेशम।

बादरायण–संज्ञा पुं० वेदव्यास।

बादरिया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बदली" (मेघ)।

बादरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"। बादल।

बादल–संज्ञा पुं० पृथ्वी पर के जल से निकली हुई वह भाप, जो घनी होकर आकाश में फैल जाती है और फिर पानी की बूंदों के रूप में गिरती है। घन। मेघ।

मुहा०—बादल उठना या चढ़ना=बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में बढ़ते हुए दिखाई पड़ना। बादल गरजना=मेघों के संघर्ष का घोर शब्द। बादल घिरना= मेघों का चारों ओर छा जाना। बादल छँटना=मेघों का खंड-खंड होकर हट जाना। आकाश साफ हो जाना।

बादला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का सुनहला या रुपहला चमकीला तार। जरी का तार।

बादली†–संज्ञा स्त्री० दे० "बदली।" बादल।

बादशाह–संज्ञा पुं० [फा०] १. बड़ा राजा। स्वतंत्र शासक। सम्राट्‌ २. सबसे श्रेष्ठ पुरुष। सरदार। मनमानी करनेवाला। ३. शतरंज का एक मुहरा। ४. ताश का एक पत्ता।

बादशाहत–संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य। शासन। हुकूमत।

बादशाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य। राज्याधिकार। हुकूमत। शासन। मनमाना व्यवहार।

वि० १. बादशाह-संबंधी। बादशाह का। २. राजाओं के योग्य।

बादहवाई–क्रि० वि० बे सिर-पैर की। ऊट-पटाँग (बात)। व्यर्थ। फजूल। निरर्थक।

बादाम–संज्ञा पुं० [फा०] मझोले आकार का एक वृक्ष, जिसके छोटे किन्तु कड़े छिलके वाले फल मेवों में गिने जाते हैं।

बादामी–वि० बादाम के छिलके के रंग का। कुछ पीलापन लिये लाल। बादाम के आकार का।

बादि–अव्य० व्यर्थ। फजूल।

बादिनि–संज्ञा स्त्री० दे० "वादिनि"। झगड़ालू। बकबक करनेवाली। बोलनेवाली।

बादी–वि० [फा०] वायु-संबंधी। २. वात-विकार-संबंधी। वायु या वात का विकार उत्पन्न करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० वातरोग। वायु का दोष।

संज्ञा पुं० मुद्दई। प्रतिवादी। प्रतिद्वन्द्वी।

बादुर–संज्ञा पुं० चमगादड़।

बाध–संज्ञा पुं० १. रोक। रुकावट। बाधा। निवारण। अड़चन। २. पीड़ा। कष्ट। कठिनाई। मुश्किल। ३. अर्थ की असंगति। व्याघात। ४. वह पक्ष, जो साध्य-रहित-सा प्रतीत हो (न्याय)। ५. मूँज की रस्सी।

बाधक–संज्ञा पुं० [स्त्री० बाधिका] बाधा

या रुकावट डालनेवाला। कष्टदायक। दुःख-दायी। विघ्नकारी।

बाधन—संज्ञा पुं० [वि० बाधित, बाध्य] १. रुकावट या विघ्न डालना। २. कष्ट या दुख देना।

बाधना—क्रि० स० १. बाधा या विघ्न डालना। रुकावट डालना। २. दुख देना।

बाधा—संज्ञा स्त्री० १. विघ्न। रुकावट। अड़चन। रोक। २. संकट। शारीरिक कष्ट।

बाधित—वि० १. रोका हुआ। प्रतिबन्धित। बाधायुक्त। जिसके साधन में विघ्न या रुकावट पडी हो। २. तर्क-विरुद्ध। असंगत। ३. गृहीत। ग्रस्त।

बाधी—संज्ञा पुं०, वि० बाधा डालनेवाला।

बाध्य—वि० [संज्ञा स्त्री० बाध्यता] रोकने योग्य। रोका या दबाया जानेवाला। मजबूर होनेवाला या मजबूर किया जानेवाला। विवश।

बान—संज्ञा पुं० १. बाण। तीर। शर। २, अभ्यास। ३. एक प्रकार की आतशबाजी। ४. मूंज की रस्सी। ५. ऊँची लहर। ६. एक प्रकार का वृक्ष। ७. आब। कांति। ८. बाना। (हथियार) गोला।

संज्ञा स्त्री० १. बनावट। सजधज। वेश-विन्यास। २. आदत। अभ्यास।

बानइत†—वि० दे० "बानैत"।

बानक—संज्ञा स्त्री० १. वेश। बनाव-सिंगार का रूप। सज-धज। २. एक प्रकार का रेशम। ३. परिस्थिति। संयोग।

बानगी—संज्ञा स्त्री० नमूना। किसी तरह के काम का नमूना।

बानर—संज्ञा पुं० दे० "बंदर।"

बानबे—संज्ञा पुं० ९२. संख्या-विशेष।

वि० नब्बे और दो।

बाना—संज्ञा पुं० १. पहनावा। पोशाक। वेश-विन्यास। रूप। २. रीति। चाल। ३. स्वभाव। प्रकृति। ४. व्यवहार। ५. तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। सांग या भाले के आकार का एक हथियार। ६. बुनावट। बुनना। बुनाई। कपड़े की आड़ी बुनावट, जो ताने में की जाती है। भरनी। ताने के आड़े तागे। ७. बारीक महीन डोरी, जिससे पतंग उड़ाई जाती है।

क्रि० स० १. सिकुड़नेवाली वस्तु का मुंह या छेद फैलाना। जैसे मुंह बाना। २. बालों में कंघी करना।

बानात—संज्ञा स्त्री० एक तरह का मोटा ऊनी कपड़ा। बनात।

बानावरी*—संज्ञा स्त्री० बाण चलाने की विद्या या कला। तीरंदाजी।

बानि—संज्ञा स्त्री० १. सजधज। बनावट। २. आदत। अभ्यास। ३. टेव। चमक। आभा। ४. दे० "वाणी"।

बानिक—संज्ञा स्त्री० दे० "बानक"। सज-धज। वेश। बनाव। सिंगार।

बानिया—संज्ञा पु० दे० "बनिया"।

बानी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "वाणी।" वचन। मुंह से निकला हुआ शब्द। २. मनौती। प्रतिज्ञा। ३. सरस्वती। ४. साधु-महात्मा का उपदेश। जैसे, कबीर की बानी। ५. आभा। दमक। ६. दे० "वाणिज्य"। ७. कपड़े बुनने का सूत। ८. बाना-नामक हथियार। ९. गोला।

संज्ञा पु० १. बनिया। २. प्रारम्भ करने वाला। प्रवर्त्तक।

बानैत—संज्ञा पुं० १. बाना, बनैठी या पटा फेरनेवाला। २. बाण चलानेवाला। तीरंदाज। ३. सैनिक। योद्धा। ४. बीर। ५. बाना धारण करनेवाला।

वि० बनानेवाला। निर्माता। रचयिता। धुरंधर।

बाप—संज्ञा पु० जनक। पिता।

मुहा०—बाप-दादा=पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप-माँ=रक्षक। पालन-पोषण करनेवाला। बाप रे बाप=आश्चर्य-या भय-सूचक वाक्य। बाप मारे का बैर=बड़ा भारी विरोध। बहुत अधिक बैर। बाप न मारी पीदड़ी बेटा तीरंदाज=अयोग्य पिता के पुत्र का घमण्डी होना। अयोग्य पिता का अयोग्य पुत्र जब अपना बखान करने लगता है, तब इस मुहावरे का प्रयोग होता है।

बापड़ा, बापरा—वि० दे० "बापुरी"।

बापी–संज्ञा पुं० दे० "वापी"।
बापुरा–वि० [स्त्री० बापुरी] तुच्छ। दीन। बेचारा। असहाय। अकिंचन। नगण्य।
बापू–संज्ञा पुं० १. दे० "बाप"। महात्मा गांधी को 'बापू' कहा जाता है। २. दे० "बाबू"।
बाफ†–संज्ञा स्त्री दे० "भाप"। दे० "बफारा"।
बाफता–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का बूटीदार रेशमी कपड़ा।
बाबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संबंध। २. विषय।
अव्य० सम्बन्ध में। विषय में।
बाबरची–संज्ञा पुं० [फा०] रसोइया।
बाबरी, बाबड़ी–संज्ञा स्त्री० जुल्फ। सिर के बड़े-बड़े बाल।
बाबा–संज्ञा पु० १. पिता का पिता। दादा। २. बूढ़ा। ३. साधु-संन्यासी। ४. वृद्ध बाप को भी बाबा कहते हैं। ५. बड़ा। आदरणीय। ६. लड़कों के लिए प्यार का सम्बोधन। ७. साधु संन्यासी या बूढ़े व्यक्ति के लिए आदर-सूचक शब्द।
यौ०—बाबाजी=१. योगी। २. संन्यासी। ३. ब्राह्मण।
बाबी*‡–संज्ञा स्त्री० १. संन्यासिनी। २. लड़कियों के लिए प्यार का सम्बोधन।
बाबुल–संज्ञा पु० १. बाबू। २. पिता। प्यारा।
बाबू–संज्ञा पु० १. भले आदमियों, बड़ों, शिक्षितों तथा बड़े आदमियों के लिए प्रयोग किया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। २. दफ्तर के क्लर्क या कार्यालय के कर्मचारियों के लिए प्रयुक्त शब्द। (पहले बंगाली किरानी के लिए इस शब्द का प्रयोग शुरू हुआ।) ३. जमींदार, ठाकुर आदि बड़े लोगों के लिए प्रयुक्त शब्द। ४. पिता के लिए सम्बोधन। ५. पुत्र या बालक को पुकारने का शब्द।
वि०—नाम के आगे या पीछे आदर दिखाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
बाभन–संज्ञा पु० ब्राह्मण।
बाम–वि० दे० "वाम"। उलटा। विपरीत।
संज्ञा स्त्री० दे० "वामा"।
बामा–संज्ञा स्त्री० दे० "वामा"। स्त्री। पत्नी।
बामी–संज्ञा स्त्री० दे० "बाँबी"।
बाम्हन–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मण"।
बाम्हनी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "ब्राह्मणी"। २. देहातों में छिपकली जैसे लाल रंग के एक कीड़े को बाम्हनी कहते हैं।
बायँ–वि० १. बायाँ। २. खाली। चूका हुआ। दावँ या लक्ष्य पर न बैठा हुआ।
मुहा०—बायँ देना=१. बचा जाना। छोड़ना। २. तरह देना। कुछ ध्यान न देना। ३. फेरा देना। चक्कर देना।
बाय†*–संज्ञा स्त्री० १. वायु। हवा। २. बाई। वात का कोप। ३. बावली। बेहर। वापिका।
क्रि० स० फैलाकर।
बायक*–संज्ञा पु० १. बतलानेवाला। २. कहनेवाला या पढ़नेवाला। ३. दूत।
बायकाट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बहिष्कार। सम्बन्ध आदि का त्याग। किसी तरह का सम्पर्क न रखने का निश्चय।
बायन*–संज्ञा पुं० १. उपहार। बैना। डाली। मंगल अवसरों पर इष्ट मित्रों के यहाँ भेजा जानेवाला उपहार, मिठाई आदि। २. बयाना। पेशगी।
बायना–संज्ञा पुं० दे० "बायन"।
बायबिडंग–संज्ञा पुं० एक लता, जिसमें काली मिर्च से कुछ छोटे गोल फल लगते हैं, जो औषध के काम आते हैं।
बायबी–वि० १. बाहरी। अपरिचित। अजनबी। २. बाहर से नया आया हुआ।
बायला†–वि० वात या वायु का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला। जिसे वायु का प्रकोप हुआ हो।
संज्ञा पुं० १. बाहरी। २. दे० "बायबी"।
बायस–संज्ञा पु० १. दे० "वायस"। २. [फा०] कारण। सबब।
बायस्कोप–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] यंत्र-विशेष, जिससे परदे पर चलते-फिरते चित्र दिखाई देते हैं।
बायाँ–वि० १. पूरब की ओर मुँह करके खड़े होने से उत्तर की तरफ पड़ने वाला शरीर का भाग। 'दाहिना' का उल्टा। बाईं ओर। बाएँ हाथ की ओर। बाएँ हाथ की ओर पड़नेवाली कोई चीज। २. उल्टा।

विरुद्ध। विरोधी। ३. हानिकारक या शत्रु।
मुहा०—बायाँ देना=किनारे से निकल जाना। बचा जाना। जानबूझकर छोड़ देना। बायाँ पाँव पूजना—पाखंडियों के धोखे में आना। पाखंडियों पर विश्वास करना या उनका आदर-सत्कार करना।

बायें—क्रि०वि० बाईं ओर। बाएँ हाथ की ओर। विपरीत। विरुद्ध। प्रतिकूल।
मुहा०—बाएँ होना=१. विरुद्ध होना। २. विमुख होना। नाराज या अप्रसन्न होना।

बारंबार—क्रि० वि० बार-बार। पुनःपुनः। लगातार। निरंतर।

बार—संज्ञा पुं० १. द्वार। दरवाजा। २. आश्रय। ठिकाना। ३. दरबार। ४. घेरा।
संज्ञा स्त्री० १. काल। समय। २. बेर। विलंब। देर। ३. मरतबा। दफा। अवसर। बेला। ४. छोर। किनारा। तट। ५. धार। बाढ़। ६. दे० "बाल" ७. बोझ।
*वि० दे० "बाल" और "बाला"।
मुहा०—बार-बार=फिर-फिर। बार लगाना=विलम्ब करना। देरी लगाना।

बारगाह—संज्ञा स्त्री० १. द्वार। ड्योढ़ी। २. खेमा। तम्बू।

बारजा—संज्ञा पुं० १. मकान के सामने द्वार के ऊपर पाटकर बढ़ाया हुआ बरामदा। कोठा। अटारी। २. बरामदा। कमरे के सामने का दालान।

बारण—संज्ञा पुं० दे० "वारण"।

बारदाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. व्यापार की चीजों के रखने का बरतन। २. सेना के खाने-पीने की सामग्री। रसद।

बारन*—संज्ञा पुं० दे० "वारण"।

बारना—क्रि० अ० निवारण करना। निषेध करना। रोकना।
क्रि० स० बालना। जलाना। दे० "वारना"।

बारनारी—संज्ञा स्त्री० वेश्या। गणिका। पतुरिया।

बारवधू*—संज्ञा स्त्री० वेश्या।

बारबधूटी—संज्ञा स्त्री० वेश्या।

बारबरदार—संज्ञा पु० [फा०] बोझ ढोनेवाला।

बारबरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सामान ढोने का काम या मजदूरी। २. बोझा ढोने की मजदूरी।

बारमुखी—संज्ञा स्त्री० वेश्या। पतुरिया।

बारह—वि० बारहवाँ। दस और दो की संख्या। द्वादश।
संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।
मुहा०—बारह बाट करना या घालना=नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-भिन्न करना। इधर-उधर कर देना। बारह बाट जाना या होना=तितर-बितर होना। नष्ट-भ्रष्ट होना।

बारहखड़ी—संज्ञा स्त्री० देवनागरी वर्णमाला के प्रत्येक व्यंजन के वे बारह रूप, जो बारह स्वरों की मात्राओं के योग से बनते हैं। द्वादश मात्राओं का व्यंजनों के साथ मिलान। प्रत्येक व्यंजन के १२ स्वरों को मात्रा के रूप में मिलाकर लिखने की विधि।

बारहदरी—संज्ञा स्त्री० बारह दरवाजों का मकान। चारों ओर से खुली हवादार बैठक, जिसमें १२ द्वार हों। हवादार मकान। बँगला।

बारह पत्थर—संज्ञा पुं० १. सीमा पर गाड़ा गया पत्थर। २. छावनी।

बारहबाट—संज्ञा पुं० नाश। सर्वनाश। चौपट।
मुहा०—बारह बाट होना=उजड़ना। खराब होना। सत्यानाश होना।

बारहबान—संज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना।

बारहबाना—वि० दे० "बारहबानी"।

बारहबानी—वि० १. सूर्य के समान चमकवाला। चोखा। खरा (सोने के लिए)। २. निर्दोष। सच्चा। ३. पूरा। पक्का। पूर्ण।
संज्ञा स्त्री० सूर्य्य की-सी चमक।

बारहमासा—संज्ञा पु० वह पद्य या गीत, जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन विरही द्वारा कराया गया हो।

बारहमासी—वि० सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। बारहों महीने होनेवाला। सदाबहार पेड़, जिसमें बारहों महीने फल फूल लगते हों। हमेशा फल देनेवाला।

बारहवफात या **बारावफात**—संज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानों के पैगम्बर मुहम्मद

साहब के जीवन के वे अंतिम बारह दिन, जिनमें वे बीमार थे।

बारहसिंगा–संज्ञा पुं० हिरन की जाति का एक प्रसिद्ध पशु।

बारहा–क्रि० वि० कई बार। बारम्बार।

बारहों–संज्ञा स्त्री० बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही।

बारा–वि० [स्त्री० बारी] बालक। कम उम्रवाला।

संज्ञा पुं० बालक। लड़का।

बारात–संज्ञा स्त्री० विवाह में दूल्हे के साथ उसके घर के लोगों और इष्ट-मित्रों का मिलकर वधू के घर जाना। बरात। बरयात्रा।

बारादरी–संज्ञा स्त्री० बारह दरवाजे का बड़ा कमरा या मकान। खूब हवादार मकान।

बारानी–वि० [फा०] बरसाती।

संज्ञा स्त्री० १. वह भूमि, जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। २. बरसात में पानी से बचानेवाला कपड़ा।

बाराह–संज्ञा, पुं० दे० "वराह।" सूअर।

बारि–संज्ञा पुं० दे० "वारि"।

बारिगर*–संज्ञा पुं० हथियारों पर बाढ़ या धार चढ़ानेवाला। सिकलीगर।

बारिज–संज्ञा पुं० दे० "वारिज।"

बारिद–संज्ञा पुं० दे० "वारिद।"

बारिधर–संज्ञा पुं० दे० "वारिधर"। बादल। वारिद।

बारिधि–संज्ञा पुं० दे० "वारिधि।"

बारिवाह–संज्ञा पुं० बादल।

बारिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वर्षा। २. वर्षा ऋतु। बरसात।

बारी–संज्ञा स्त्री० १. किनारा। तट। छोर पर का भाग। हाशिया। २. बगीचे, खेत आदि के चारों ओर की मेंड़। घेरा। बाड़। ३. बरतन के मुँह का घेरा। औंठ। पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़। ४. फुलवारी। बगीचा। ५. मेंड़ आदि से घिरा स्थान। क्यारी। ६. घर। मकान (बंगला-बाड़ी)। झरोखा। खिड़की। ७. बंदरगाह। ८. एक जाति, जो पत्तल-दोना बनाती है। ९. क्रमानुगत अवसर। अवसर। पारी। मौका। १०. लड़की। कन्या। थोड़े वयस की स्त्री। नवयौवना। ११. कान की बाली।

मुहा०—बारी-बारी से=क्रम में एक के पीछे एक। बारी बँधना=आगे-पीछे समय नियत होना।

बारीक–वि० [फा०] [संज्ञा बारीकी] १. महीन। झीना। पतला। सूक्ष्म। २. बहुत ही छोटा। ३. गूढ़। कठिनाई से समझ में आनेवाला।

बारीकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. महीनपन। पतलापन। २. विशेषता। गुण। खूबी।

मुहा०—बारीकी निकालना=खूबी या विशेषता प्रकट करना। जल्दी समझ में न आने वाली चीज निकालना।

बारुणी या **बारुनी**–संज्ञा स्त्री० दे० "वारुणी।"

बारू†–संज्ञा पुं० दे० "बालू"।

बारूद–संज्ञा स्त्री० १. तोप-बन्दूक आदि चलाने का मसाला। गन्धक और कोयले से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही भक से उड़ जाती है। २. दारू। ३. एक प्रकार का धान।

मुहा०—गोली-बारूद=लड़ाई का सामान।

बारूदखाना–संज्ञा पुं० गोली-बारूद या लड़ाई का सामान रखने का स्थान।

बारे–क्रि० वि० [फा०] अंत को। अन्त में।

संज्ञा पुं० बच्चे। लड़के।

अव्य०–बारे में। संबंध में। विषय में।

बारोठा–संज्ञा पुं० ब्याह की एक रस्म, जो वर के द्वार पर आने के समय होती है।

बाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० बाला] १. केश। २. बालक। लड़का। बच्चा। ३. नासमझ आदमी। मूर्ख। अज्ञान। ४. अनाज के पौधों का अंश, जिसमें दानों के गुच्छे लगे रहते हैं। दे० "बाला"।

वि० जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ़ को न पहुँचा हो। नासमझ।

मुहा०—बाल बाँका न होना=कष्ट या हानि कुछ भी न पहुँचना। पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना। बाल न बाँकना=बाल बाँका न होना। नहाते बाल न खिसकना=कुछ

भी कष्ट या हानि न पहुँचना। (किसी काम में) बाल पकाना=(कोई काम करते-करते) बुड्ढा हो जाना। बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना। बाल-बाल बचना=कोई आपत्ति पड़ने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना।

बालक–संज्ञा पुं० [स्त्री० बालिका] १. मनुष्य का बच्चा। कम उम्र का लड़का। बेटा। २. नादान। अबोध व्यक्ति।

बालकपन†–संज्ञा पुं० लड़कपन। दे० "बाल्पन"। नासमझी। बालकों की सी मूर्खता।

बालकाल–संज्ञा पुं० बचपन।

बालकी–संज्ञा स्त्री० कन्या।

बालकृष्ण–संज्ञा पुं० बाल्यावस्था के कृष्ण।

बालक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० बच्चों का खेल।

बालकेलि–संज्ञा स्त्री० खिलवाड़। बालक्रीड़ा।

बालखोरा–संज्ञा पुं० रोग-विशेष, जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं। गंज।

बालगोपाल–संज्ञा पुं० १. बाल्यावस्था के कृष्ण। २. बालबच्चे।

बालगोविन्द–संज्ञा पुं० दे० "बालकृष्ण"।

बालग्रह–संज्ञा पुं० बालकों के प्राणघातक नौ ग्रह।

बालचर–संज्ञा पुं० वह बालक, जिसे सामाजिक सेवा करने की शिक्षा मिली हो। (अंग्रे० बायस्काउट)।

बालटी–संज्ञा स्त्री० लोहे या पीतल का एक बरतन, जो गिलास के आकार का होता है और जिसे उठाने के लिए एक दस्ता लगा रहता है।

बालतंत्र–संज्ञा पुं० शिशु को पालने की विद्या। बालकों के पालन-पोषण की विद्या।

बालतोड़–संज्ञा पुं० शरीर पर के बाल टूट जाने से होनेवाला फोड़ा।

बालद–संज्ञा पुं० बैल।

बालधि–संज्ञा पुं० पूँछ।

बालना–क्रि० स० जलाना।

बालपन–संज्ञा पुं० १. बालक होने का भाव। लड़कपन। २. नासमझी। बालकों की तरह की मूर्खता।

बाल-बच्चे–संज्ञा पुं० लड़के-बाले। संतान।

बालबुद्धि–संज्ञा स्त्री० छोटी बुद्धि। वि० नासमझ।

बालबोध–वि० बहुत सुगम या आसान। संज्ञा स्त्री० देवनागरी लिपि (जिसका ज्ञान बच्चों को कराया जाता है)।

बालब्रह्मचारी–संज्ञा पुं० बाल्यावस्था से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करनेवाला व्यक्ति।

बालभोग–संज्ञा पुं० देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण आदि की मूर्तियों के सामने प्रातःकाल चढ़ाया जानेवाला प्रसाद। जलपान।

बालम–संज्ञा पुं० १. प्रियतम। पति। स्वामी। २. प्रेमी।

बालमुकुंद–संज्ञा पुं० बाल्यावस्था के कृष्ण। बालकृष्ण।

बाललीला–संज्ञा स्त्री० १. बचपन के खेल-कूद। बालकों की क्रीड़ा। २. श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की क्रीड़ाएँ।

बालवत्स–संज्ञा पुं० बच्चों से अधिक स्नेह करनेवाला या उन पर दयालु।

बालविधु–संज्ञा पुं० शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।

बाल-विधवा–संज्ञा स्त्री० बाल्यावस्था में विधवा होनेवाली स्त्री। कम उम्रवाली विधवा।

बालविवाह–संज्ञा पुं० बाल्यावस्था में होनेवाला विवाह।

बालसूर्य–संज्ञा पुं० सबेरे उदय होनेवाला सूर्य।

बाला–संज्ञा स्त्री० १. छोटी अवस्था की लड़की। पुत्री। कन्या। २. १२-१३ वर्ष से १६-१७ वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। युवती। ३. पत्नी। ४. हाथ में पहनने का कड़ा। ५. कानों में पहनने का गहना। ६. एक वर्णवृत्त।

संज्ञा पुं० १. बालकों के समान। अज्ञान। २. सरल। ३. निश्छल।

यौ०–बालाभोला=भोला-भाला। बहुत ही सीधा।

मुहा०–बोलबाला रहना=सम्मान और आदर बढ़ा रहना।

बालाई–संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।

वि० [फा०] ऊपरी। अतिरिक्त। अलावा।
बालाखाना–संज्ञा पुं० [फा०] कोठे पर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।
बालादस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] जबरदस्ती।
बालानशीन–संज्ञा पुं० [फा०] १. बैठने का सबसे ऊँचा स्थान। २. सबसे श्रेष्ठ पद। ३. ऊँचे स्थान पर आसीन।
वि० बहुत बढ़िया। सबसे अच्छा।
बालापन†–संज्ञा पुं० लड़कपन।
बालार्क–संज्ञा पुं० सबेरे उदय होनेवाला सूर्य्य। बालसूर्य।
बालि–संज्ञा पुं० पंपा, किष्किन्धा का वानर राजा जो अंगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था।
बालिका–संज्ञा स्त्री० छोटी लड़की। कन्या। बेटी।
बालिग़–संज्ञा पुं० [अ०] १८ वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति। प्राप्त-वयस्क। युवा। जवान।
बालिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] तकिया।
वि० अबोध। अज्ञान। नासमझ।
बालिश्त–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
बालिश्य–संज्ञा पुं० मूर्खता। अज्ञता।
बाली–संज्ञा स्त्री० १. कान में पहनने का एक आभूषण। कुण्डल। २. जौ, गेहूँ आदि पौधों की बाल। ३. एक औजार।
संज्ञा पुं० दे० "बालि"।
बालुका–संज्ञा स्त्री० बालू।
बालू–संज्ञा पुं० चट्टानों आदि का बारीक चूर्ण, जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों पर से आता है और नदियों के किनारे या रेगिस्तानों में बहुत पाया जाता है। रेत।
मुहा०—बालू की भीत=शीघ्र नष्ट हो जानेवाली वस्तु। अस्थायी कार्य या वस्तु।
बालूदानी–संज्ञा स्त्री० बालू रखने की झँझरीदार डिबिया, जिसके बालू से सुखाने का काम लेते हैं।
बालूसाही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
बालेय–संज्ञा पुं० १. गदहा। २. चावल।
वि० १. मृदु। कोमल। २. बलिदान के योग्य।
बाल्टी–संज्ञा पुं० दे० "बालटी"।
बाल्य–संज्ञा पुं० बालक होने की अवस्था या भाव। लड़कपन। बचपन।
वि० बालक का। बचपन का। बाल्यावस्था-सम्बन्धी।
बाल्यावस्था–संज्ञा स्त्री० लड़कपन। बचपन। छोटी आयु। कम उम्र।
बाव*–संज्ञा पुं० हवा। बाई (वायु का प्रकोप)। पाद (अपानवायु)।
बावजूद–क्रि० वि० [फा०] इतना होने पर भी। इस पर भी।
बावड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "बावली"।
बावन–संज्ञा पुं० पचास और दो की संख्या। ५२। दे० "वामन"।
वि० पचास और दो।
मुहा०—बावन तोला पाव रत्ती=जो हर तरह से बिलकुल ठीक हो।
बावनवीर–संज्ञा पुं० बड़ा बहादुर और चालाक।
बावना–वि० दे० "बौना।" ठिगना। नाटा।
बावभक–संज्ञा स्त्री० पागलपन। सिड़ीपन।
बावर*†–वि० दे० "बावला"।
बावरची–संज्ञा पुं० [फा०] रसोइया। खाना पकाने की नौकरी करनेवाला (मुसल०)।
बावरचीखाना–संज्ञा पुं० [फा०] भोजन पकने का स्थान। रसोईघर (मुसल०)।
बावरा–वि० दे० "बावला"।
बावरी†–वि० पगली।
संज्ञा स्त्री० दे० "बावली।" तालाब।
बावल–संज्ञा पुं० अन्धड़।
बावला–वि० [स्त्री० बावली] उन्मत्त। पागल। सनकी। मूर्ख।
बावलापन–संज्ञा पुं० पागलपन। झक। सिड़ीपन।
बावली–संज्ञा स्त्री० छोटा गहरा तालाब, जिसमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों। दे० "वापिका"।
वि० पगली। उन्मत्त स्त्री।
बावाँ*†–वि० दे० "बायाँ।"
बाशिंदा–संज्ञा पुं० [फा०] निवासी। वास करने या रहनेवाला।

बाष्प—संज्ञा पुं० दे० "बाष्प"।
बासंतिक—वि० दे० "वासंतिक।" वसंत-ऋतु का। वसंती।
बास—संज्ञा पुं० १. दे० "वास।" २. रहने की क्रिया या भाव। निवास। निवास-स्थान। ३. बू। गंध। महक। ४. एक छंद। ५. कपड़ा। वस्त्र। पोशाक।
संज्ञा स्त्री० १. वासना। इच्छा। २. अग्नि। ३. एक हथियार। तेज धारवाले छोटे अस्त्र।
बासकसज्जा—संज्ञा स्त्री० अपने पति या प्रियतम के आने पर उससे मिलने के लिए विशेष सामग्री सज्जित करनेवाली नायिका।
बासठ—वि० साठ और दो।
संज्ञा पुं० ६२ की संख्या।
बासन—संज्ञा पुं० १. बरतन। २. कपड़ा।
बासना—संज्ञा स्त्री० दे० "वासना"। गंध।
क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।
बासमती—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बढ़िया चावल। पकने पर इसमें से हलकी सुगंध आती है।
बासर—संज्ञा पुं० १. दे० "वासर"। दिन। २. सबेरा।
बासव—संज्ञा पुं० दे० "वासव।"
बासा—संज्ञा पुं० १. रहने का स्थान, जहाँ खाना भी मिले। डेरा। २. एक पक्षी।
बासी—वि० १. दे० "वासी।" रहनेवाला। २. देर का बना हुआ। जो ताजा न हो (भोजन)। कुछ समय तक का रखा हुआ (भोजन)। सूखा हुआ (फूल)।
मुहा०—बासी कढ़ी में उबाल आना=बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। किसी बात का समय बीत जाने पर उसकी चर्चा होना।
बाहक—संज्ञा पुं० दे० "वाहक।"
बाहकी*—संज्ञा स्त्री० कहारिन। पालकी ढोने का काम करनेवाली स्त्री।
बाहना—क्रि० स० १. ढोना, चलाना या फेंकना (अस्त्र)। २. गाड़ी आदि हाँकना। ३. पकड़ना। धारण करना। ४. बहाना। ५. खेत जोतना।
बाहनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी।"
बाहर—क्रि० वि० सीमा से पार। 'अन्दर' का का उलटा।
मुहा०—बाहर आना या होना=सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना=दूर करना। हटाना। बाहर-बाहर=अलग या दूर से। बिना किसी को जताए। किसी दूसरी जगह। अन्य नगर में। बाहर का=बेगाना। पराया। अधिकार या संबंध आदि से अलग।
बाहरी—वि० १. बाहर का। जो आपस का न हो। पराया। अपरिचित। बेगाना। २. केवल बाहर से दिखाई देनेवाला।
बाहल—संज्ञा पुं० अजगर।
बाहाँजोरी—क्रि० वि० हाथ से हाथ मिलाकर।
बाहा—संज्ञा पुं० नाव का डाँड़ बाँधने की रस्सी।
बाहिज*—संज्ञा पुं० दे० "वाह्य"। बाहरी। ऊपर से देखने में। बाह्य रूप में।
बाहिनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी"।
बाहिर—क्रि० वि० दे० "बाहर"।
बाहु—संज्ञा स्त्री० बाँह। हाथ।
बाहुक—संज्ञा पुं० १. राजा नल का उस समय का नाम, जब वे अयोध्या के राजा के सारथी बने थे। २. नकुल।
बाहुज—संज्ञा पुं० जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। क्षत्रिय।
बाहुत्राण*—संज्ञा पुं० युद्ध में हाथों की रक्षा के लिए पहना जानेवाला दस्ताना।
बाहुबल—संज्ञा पुं० हाथों की ताकत। शक्ति। जोर। सामर्थ्य। पौरुष। पराक्रम।
बाहुपाश—संज्ञा, पुं० हाथों को मिलाकर बनाया गया फन्दा। आलिंगन में हाथों में बाँध रखना।
बाहुमूल—संज्ञा पुं० कंधे और बाँह के बीच का जोड़।
बाहुयुद्ध—संज्ञा पुं० कुश्ती। मल्लयुद्ध।
बाहुल्य—संज्ञा पुं० बहुत या अधिक होने का भाव। अधिकता। बहुतायत।
बाहू—संज्ञा स्त्री० दे० "बाँह।"
बाह्मन—संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मण।"
बाह्य—वि० दे० "बाह्य"। बाहरी। बाहर का।

बाह्लीक–संज्ञा पुं० कांबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख।

बिंग*†–संज्ञा पुं० दे० "व्यंग्य"।

बिंजन*†–संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"। पंखा।

बिंद*†–संज्ञा पुं० दे० "बूंद" या "बिंदी"।

बिंदा–संज्ञा पुं० मस्तक का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। बुंदा।

बिंदी–संज्ञा स्त्री० १. शून्य-सूचक चिह्न०। बिंदु। २. माथे पर का गोल छोटा टीका। बेंदी। टिकुली। ३. बिंदु के आकार का कोई चिह्न।

बिंदुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिंदी"। टिकुली।

बिंदुली–संज्ञा स्त्री० दे० "बिंदी"। टिकुली।

बिंध†–संज्ञा पुं० दे० "विन्ध्याचल"।

बिंधना–क्रि० अ० बींधा या छेदा जाना। फँसना। उलझना।

बिंब–संज्ञा पुं० १. प्रतिबिंब। छाया। २. कमंडलु। ३. प्रतिमूर्त्ति। ४. कुँदरू नामक फल। ५. सूर्य्य या चंद्रमा का मंडल। ६. आभास। झलक। ७. गिरगिट। ८. सूर्य। ९. एक छंद। १०. दे० "बाँबी"।

बिंबक–संज्ञा पुं० सूर्य या चन्द्रमा का मण्डल। कुँदरू। साँचा। प्राचीन काल का एक बाजा।

बिंबफल–संज्ञा पुं० कुँदरू नामक फल।

बिंबा–संज्ञा पुं० कुँदरू। बिंब। प्रतिबिम्ब। परछाईं। चंद्रमा या सूर्य्य का मंडल।

बिंबिसार–संज्ञा पुं० एक प्राचीन राजा, जो अजातशत्रु के पिता और गौतम बुद्ध के समकालीन थे।

बिंबोट–संज्ञा स्त्री० दीमक।

बि*–वि० दो। एक और एक।

बिअहुता†–वि० दे० "विवाहित।" १. जिसका विवाह हुआ हो। २. विवाह-संबंधी। विवाह का।

बिआधि*–संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।

बिआध†–संज्ञा पुं० दे० "व्याध"।

बिआना–क्रि० स० दे० "व्याना"। बच्चा देना। जनना (पशुओं के लिए प्रयुक्त)।

बिआहना*–क्रि० स० दे० "व्याहना"। विवाह करना।

बिकट–वि० दे० "विकट"।

बिकना–क्रि० अ० मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना।
मुहा०–किसी के हाथ बिकना=किसी का गुलाम बनना।

बिकरम†–संज्ञा पुं० १. दे० "विक्रम"। २. दे० "विक्रमादित्य"।

बिकरार‡–वि० दे० "विकराल"।

बिकराल–वि० दे० "विकराल"।

बिकल†–वि० दे० "विकल"। व्याकुल।

बिकलाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेचैनी"। व्याकुलता।

बिकलाना†–क्रि० अ० व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।
क्रि० स० बेचैन करना। व्याकुल करना।

बिकसना–क्रि० अ० १. खिलना। विकसित होना। फूलना। २. बहुत खुश होना।

बिकसाना–क्रि० अ० दे० "बिकसना"।
क्रि० स० १. खिलाना। विकसित करना। २. प्रसन्न करना।

बिकाऊ–वि० बिकनेवाला। बेचा जानेवाला।

बिकाना†–क्रि० अ० दे० "बिकना"। बेचा जाना। खप जाना।

बिकार*†–संज्ञा पुं० दे० "विकार"।

बिकारी†–वि० १. रूपान्तरित। २. बुरा। हानिकारक।
संज्ञा स्त्री० [विक्रत या वंक] एक टेढ़ी पाई जिसे अंकों आदि के आगे संख्या या मान सूचित करने के लिए लगाते हैं।

बिकास–संज्ञा पुं० दे० "विकास"।

बिक्री–संज्ञा स्त्री० बेचे जाने की क्रिया। बेचने से मिलनेवाला धन।

बिख†*–संज्ञा पुं० दे० "विष"।

बिखम–वि० दे० "विषम"।

बिखरना–क्रि० अ० छितराना। तितर-बितर हो जाना। फैल जाना।

बिखराना–क्रि० स० दे० "बिखेरना"।

बिखेरना–क्रि० स० छितराना।

बिगड़ना–क्रि० अ० १. खराब होना। नष्ट होना। किसी वस्तु का ठीक न बनना। बुरी दशा को प्राप्त होना। खराब दशा में आना।

२ बद-चलन होना। ३. क्रुद्ध होना। विरोधी होना। अप्रसन्न होना। ४. विद्रोह करना। (पशुओं आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। ५. परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ६. व्यर्थ खर्च होना।

बिगड़ेदिल–संज्ञा पु० बिगड़नेवाला। हर बात में लड़ने-झगड़नेवाला। क्रोधी। कुमार्गी।

बिगड़ैल–वि० १. झगड़ालू। हर बात में बिगड़ने या क्रोध करनेवाला। क्रोधी। २. कुमार्गी। हठी। जिद्दी।

बिगर†–क्रि० वि० दे० "बगैर"।

बिगरना–क्रि० अ० दे० "बिगड़ना"।

बिगराइल†–वि० दे० "बिगड़ैल"।

बिगसना*–क्रि० अ० दे० "विकसना"।

बिगहा–संज्ञा पु० दे० "बीघा"।

बिगाड़–संज्ञा पु० खराबी। दोष। वैमनस्य। झगड़ा। मनोमालिन्य।

बिगाड़ना–क्रि० स० १. खराब करना। हानि पहुँचाना। २. नष्ट करना। तोड़ना। बुरी दशा में लाना। ३. कुमार्ग में लगाना। ४. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ५. बुरी आदत लगाना। बहकाना। व्यर्थ खर्च करना।

बिगाना†–वि० [फा०] बेगाना। दे० "पराया"। गैर। अनजान।

बिगार*–संज्ञा पु० दे० १. "बिगाड़"। २. दे० "बेगार"।

बिगारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगार"।

बिगारी–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगारी"। बेगार में काम करनेवाला आदमी।

बिगास*†–संज्ञा पु० दे० "विकास"।

बिगिर*†–क्रि० वि० दे० "बगैर"।

बिगुन*†–वि० बिना गुण के। गुणहीन। मूर्ख।

बिगुर–वि० जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।

बिगुरचिन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिगूचन"। दुबिधा।

बिगूरदा*†–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक

बिगुल*†–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार की अंग्रेजी तुरही, जो प्रायः सैनिकों को आज्ञा देने के लिए बजाई जाती है।

बिगूचन†–संज्ञा स्त्री० १. असमंजस। द्विविधा। किंकर्त्तव्यविमूढ़ होने की अवस्था। अड़चन। २. कठिनाई। परेशानी।

बिगूचना–क्रि० अ० १. द्विविधा या असमंजस में पड़ना। २. दबाया जाना। पकड़ा जाना। क्रि० स० दबोचना। धर दबाना।

बिगोई–संज्ञा स्त्री० १. भुलावा। २. छिपाव।

बिगोना–क्रि० स० १. नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाड़ना। २. छिपाना। दुराना। ३. तंग करना। दिक करना। ४. बहकाना। भ्रम में डालना। बिताना। व्यतीत करना।

बिग्गाहा–संज्ञा पु० आर्य्या छंद का एक भेद। उद्गीति।

बिघटना–क्रि० स० विनाश करना। बिगाड़ना। तोड़ना। नष्ट-भ्रष्ट करना।

बिघन–संज्ञा पु० दे० "विघ्न"।

बिघनहरन*†–वि० दे० "विघ्नहरण"। विघ्न या बाधा दूर करनेवाला।
संज्ञा पुं० गणेशजी।

बिच*†–क्रि० वि० दे० "बिच"।

बिचकना–क्रि० अ० १ भड़कना। चौंकना। २ सतर्क होना। ३ मुँह बनाना या टेढ़ा करना। ४ चिढ़ना।

बिचकाना–क्रि० अ० १. भड़काना। मुँह चिढ़ाना। २. मुँह को (स्वाद बिगड़ने के कारण) टेढ़ा करना। ३. मुँह बनाना। ४. सतर्क करना।

बिचच्छन*†–वि० दे० "विचक्षण"।

बिचरना–क्रि० अ० दे० "विचरण।" इधर-उधर घूमना। भ्रमण करना।

बिचलना–क्रि० अ० १. विचलित होना। २. फिसलना। ३. हिम्मत हारना। कहकर मुकरना।

बिचला–वि० [स्त्री० बिचली] बीच का। जो बीच में हो।

बिचलाना*†–क्रि० स० १. विचलित करना। डिगाना। ३. हिला देना। ४. तितर-बितर करना।

बिचवई–संज्ञा पुं० १. मध्यस्थ। झगड़े में बीच-बचाव करनेवाला। बिचवान। २. दलाल।
बिचवाई–संज्ञा स्त्री० १. झगड़े का बीच बचाव। मध्यस्थता। २. दलाली।
बिचवानी–संज्ञा पुं० दे० "बिचवई"। मध्यस्थ। बीच-बचाव करनेवाला।
बिचहुत–संज्ञा पुं० अंतर। संदेह। दुविधा।
बिचार–संज्ञा पुं० दे० "विचार"।
बिचारना*†–क्रि० अ० दे० "विचारना"। १. विचार करना। सोचना। समझना। २. पूछना (शुभ मुहूर्त आदि)।
बिचारा–वि० दे० "बेचारा"।
बिचारी*†–संज्ञा पुं० १. विचार करनेवाला। विचारक। २. छूतछात माननेवाला।
बिचाल†*–संज्ञा पुं० १. अलग करना। अंतर। २. अलगाव। फर्क।
बिचाली–संज्ञा स्त्री० १. पुआल। सूखी घास। २. चटाई।
बिचेत*†–वि० १. मूर्च्छित। अचेत। बेहोश। २. घबराया हुआ। बदहवास।
बिच्छी–संज्ञा स्त्री० दे० "बिच्छू"।
बिच्छू–संज्ञा पुं० [स्त्री० बिच्छी] विषैले डंकवाला एक छोटा कीड़ा।
बिच्छेप*†–संज्ञा पुं० दे० "विक्षेप"।
बिछना–क्रि० अ० बिछाना का अकर्मक रूप। बिछाया जाना।
बिछलन–संज्ञा स्त्री० १. फिसलन। २. फिसलने की जगह।
बिछलना†–क्रि० अ० फिसलना।
बिछलाना–क्रि० अ० फिसल जाना।
बिछवाना–क्रि० स० किसी दूसरे से "बिछाने" का काम कराना।
बिछाम–संज्ञा पुं० दे० "बिछावन"।
बिछाना–क्रि० स० १. फैलाना। पसारना। बिस्तर या बिछावन करना। २. बिखेरना। बिखराना। जमीन पर गिरा या लेटा देना।
बिछावन†–संज्ञा पुं० दे० "बिछौना"।
बिछिआ†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिछुआ"। स्त्रियों के पैर की अँगुलियों में पहनने का एक छोटा गहना। छल्ला।
बिछिप्त*†–वि० दे० "विक्षिप्त"।
बिछुआ–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों के पैर की अँगुलियों में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार की छुरी।
बिछुड़ना†–संज्ञा स्त्री० १. बिछुड़ने का भाव। अलग होने का भाव। २. वियोग। विच्छेद।
बिछुड़ना–क्रि० अ० १. अलग होना। एक दूसरे से अलग होना। २. वियोग होना।
बिछुरंता*†–संज्ञा पुं० १. बिछुड़नेवाला। २. जिसका साथ छूट चुका हो। वियोगी।
बिछुरना*–क्रि० अ० दे० "बिछुड़ना"।
बिछुवा–संज्ञा पुं० दे० "बिछिआ"। अस्त्र-विशेष।
बिछूना*†–संज्ञा पुं० वियोगी। जो बिछड़ गया हो।
बिछोई†–संज्ञा पुं० विरही।
बिछोड़ा–संज्ञा पुं० बिछुड़ने की क्रिया, भाव या दुख। विछोह। वियोग।
बिछोह–संज्ञा पुं० बिछड़ने का दुख। जुदाई का सदमा। वियोग। जुदाई।
बिछौना–संज्ञा पुं० बिछाने का कपड़ा या सामान। बिस्तर। बिछावन।
बिजड़–संज्ञा स्त्री० तलवार।
बिजन*†–संज्ञा पुं० पंखा। बेना। बिजना। वि० विजन। एकांत स्थान। जिसके साथ कोई न हो। अकेला।
बिजयघंट–संज्ञा पुं० मन्दिरों में बजाया जानेवाला एक प्रकार का घंटा।
बिजयसार–संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा जंगली पेड़।
बिजया–संज्ञा स्त्री० दे० "विजया"। भाँग।
बिजली–संज्ञा पुं० १. बादलों की टक्कर से उत्पन्न अग्नि। २. वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण करनेवाली शक्ति, जो कुछ खास क्रियाओं द्वारा उत्पन्न की जाती है। इस शक्ति से प्रकाश और गर्मी पैदा होती तथा वस्तुओं का संचालन होता है। ३. कान और गले का एक गहना। ४. विद्युत्। वि० १. चंचल। २. चमकीली। प्रकाश-युक्त। मुहा०—बिजली गिरना या पड़ना=विपत्ति आना। बिजली का आकाश से पृथ्वी की ओर बड़े वेग से आना, जिससे मार्ग में पड़ने-

वाली चीजें जलकर नष्ट हो जाती हैं। बिजली कड़कना=बिजली के कारण आकाश में बहुत जोर का शब्द होना।

बिजलीघर–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ से सारे नगर या आस-पास के स्थानों में बिजली पहुँचाई जाती है।

बिजहन–वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो।

बिजाती–वि० दे० 'विजातीय'। दूसरी जाति का। जाति से निकाला हुआ।

बिजान*†–संज्ञा पुं० अजान। अनजान। मूर्ख। अजान।

बिजायठ–संज्ञा पुं० बाँह पर पहनने का बाजूबंद। अंगद। भुजबंद।

बिजार–संज्ञा पुं० बैल। साँड़।

बिजुरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बिजाला–वि० बीजयुक्त। बीज के साथ।

बिजूका, बिजूखा‡–संज्ञा पुं० खेतों में पक्षियों आदि को भगाने के लिए लकड़ी के ऊपर उलटी रखी हुई काली हाँड़ी या इसके लिए इसी तरह की रखी गई कोई दूसरी चीज। दे० "धोखा"।

बिजोग*†–संज्ञा पुं० दे० "वियोग"।

बिजोना*–क्रि० स० अच्छी तरह देखना।

बिजोरा–वि० बिना जोर का। कमजोर। संज्ञा पुं० दे० "बिजौरा"।

बिजौरा–संज्ञा पुं० नीबू की जाति का एक वृक्ष, जिसके फल बड़ी नारंगी के बराबर होते हैं।

बिजौरी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुम्हड़ौरी"।

बिज्जु*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बिज्जुपात*‡–संज्ञा पुं० दे० "वज्रपात"। बिजली गिरना।

बिज्जुल*‡–संज्ञा पुं० छाल। खाल। त्वचा। छिलका।

संज्ञा स्त्री० दे० "विद्युत्"। बिजली।

बिज्जू–संज्ञा पुं० बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जंगली जानवर।

बिझरा†–संज्ञा पुं० बेझड़। चना, गेहूँ, मटर और जव आदि मिला हुआ अन्न।

बिझुकना*–क्रि० अ० १. भड़कना। बिचकना। २. डरना। ३. टेढ़ा होना। ४. तनना।

बिझुकाना*–क्रि० स० १. भड़काना। बिचकाना। २. डराना। ३. टेढ़ा करना।

बिञ्जन–संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

बिट–संज्ञा पुं० दे० "विट"। नीच। खल।

बिटचर–संज्ञा पुं० सूअर। विष्ठा खानेवाला।

बिटना–क्रि० अ० १. छिटकना। २. अलग होना। ३. बिथुरना।

बिटरना–क्रि० अ० १. घँघोला जाना। २. गंदा होना।

बिटारना–क्रि० स० १. घँघोलना। २. गंदा करना।

बिटिया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी"।

बिट्ठल–संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान् का एक नाम। २. बंबई प्रांत में शोलापुर के अंतर्गत पंढरपुर की एक देवमूर्त्ति।

बिठलाना–क्रि० स० बैठाना।

बिठाना–क्रि० स० बैठाना। ठहराना।

बिडंब–संज्ञा पुं० दे० "विडंब"। ढोंग।

बिडंबना*–संज्ञा स्त्री० दे० "विडंबना"।

बिडर–वि० १. छितराया हुआ। तितर-बितर। अलग-अलग। २ दे० "निडर"। बिना डर के।

बिडरना–क्रि० अ० १. तितर-बितर होना। २. भागना। बिदकना। ३. पशुओं का भयभीत होकर बिचकना। ४. बरबाद होना। नष्ट होना।

बिडराना–क्रि० स० १. तितर-बितर करना। २. भगाना। ३. डरवाना।

बिडवना*†–क्रि० स० तोड़ना।

बिडारना–क्रि० स० १. डराकर भगाना। २. नष्ट करना।

बिड़ाल–संज्ञा पुं० बन-बिलाव।

बिड़ालक–संज्ञा पुं० आँख की पुतली।

बिड़ालवृत्तिक–वि० १. लोभी। २. कपटी। ३. हिंसक।

बिड़ालाक्ष–वि० बिल्ली के समान आँखोंवाला।

बिड़ालिका–संज्ञा स्त्री० बिल्ली।

बिड़ाली–संज्ञा स्त्री० बिल्ली।

बिढ़तो*†–संज्ञा पुं० १. बढ़ती। २. कमाई। ३. लाभ।

बिढ़वना*†–क्रि० स० १. बढ़ाना। २.

कमाना। पैसा पैदा करना। उपार्जन करना। ३. जमा करना।

बिढ़ाना*†–क्रि० स० दे० "बिढ़वना"।

बित*†–संज्ञा पुं० दे० "वित्त"।

बितताना–क्रि० अ० बिलखना। व्याकुल होना।

क्रि० स० १. बिलखाना। दुःख देना। २. व्याकुल करना।

बितना‡–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।

बितरना*†–क्रि० स० दे० "वितरण"। बाँटना।

बितवना*†–क्रि० स० दे० "बिताना"।

बिताना–क्रि० स० व्यतीत करना। काटना। गुजारना।

बितावना*†–क्रि० स० दे० "बिताना"।

बितीत–वि० दे० "व्यतीत"।

बितीतना–क्रि० अ० व्यतीत होना। गुजरना।

क्रि० स० गुजारना। बिताना।

बितु–संज्ञा पुं० दे० "वित्त"।

बित्त–संज्ञा पुं० १. दे० "वित्त"। धन। दौलत। २. औकात। हैसियत। सामर्थ्य।

बित्ता–संज्ञा पुं० हाथ की सब उँगलियों को फैलाकर अँगूठे के सिरे तक की दूरी। बालिश्त।

बित्तिया–वि० ठिगना। बवना। नाटा।

बिथकना–क्रि० अ० १. थकना। २. चकित होना। ३. हैरान या परेशान होना। ४. मोहित होना।

बिथरना, बिथुरना†–क्रि० अ० १. छितराना। बिखरना। फैल जाना। अलग-अलग होना। २. खिल जाना।

बिथा*–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।

बिथारना–क्रि० स० छितराना। छिटकाना। बिखेरना। फैलाना।

बिथित*–वि० दे० "व्यथित"।

बिथोरना*–क्रि० स० दे० "बिथराना"।

बिदकना–क्रि० अ० दे० "भड़कना"। १. बिल-रना। २. घायल होना।

बिदकाना–क्रि० स० १. भड़काना। २. फाड़ना। विदीर्ण करना। ३. घायल करना। जख्मी करना।

बिदर–संज्ञा पुं० १. विदर्भ देश या बरार। २. ताँबे और जस्ते के मेल से बनी एक उपधातु।

बिदरन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "विदीर्ण"। दरार। फटने का चिह्न। छेद।

वि० फाड़नेवाला। चीरनेवाला।

बिदरना*–क्रि० अ० १. फटना। २. नष्ट होना।

बिदरी–संज्ञा स्त्री० जस्ते और ताँबे के मेल से बना चाँदी-सोने के तारों का नक्काशीदार सामान। बिदर की धातु का बना हुआ सामान।

बिदा–संज्ञा स्त्री० दे० "विदा।" विदाई। जाने की आज्ञा। प्रस्थान। रुखसत।

बिदाई–संज्ञा स्त्री० १. दे० "विदाई।" बिदा होने की क्रिया या भाव। जाने की आज्ञा। २. विदा होने के समय दिया जानेवाला धन आदि।

बिदारना†–क्रि० स० १. फाड़ना। चीरना। २. नष्ट करना।

बिदारी–संज्ञा पुं० १ भुँई कुम्हड़ा। एक प्रकार का कुम्हड़ा जो जमीन के अन्दर फलता है। २. शालपर्णी।

बिदारीकंद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल कंद। बिलाईकंद।

बिदाहना–क्रि० अ० जोते हुए खेत में हल चलाना।

बिदीरना*–क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना।

बिदुराना*†–क्रि० अ० धीरे-धीरे हँसना। मुस्कराना।

बिदुरानी*†–संज्ञा स्त्री० मुस्कराहट।

बिदूखना*†–क्रि० अ० १. दे० "विदूषण।" कलंक लगाना। २. दोष लगाना या करना। ३. बिगाड़ना। खराब करना।

बिदेश–संज्ञा पुं० दे० "विदेश"।

बिदोख*†–संज्ञा पुं० दे० "विद्वेष"। वैर।

बिद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खराबी। बुराई। दोष। २. कष्ट। विपत्ति। ३. अत्याचार। जुल्म। ४. दुर्दशा।

बिधँसना*†–क्रि० स० नाश करना। विध्वंस करना।

बिध–संज्ञा स्त्री० १. विधि। प्रकार। भाँति। तरह। रीति। व्यवहार। २. ब्रह्मा। ३. जमा-खर्च का हिसाब। आय-व्यय का लेखा।
मुहा०—बिध मिलाना=यह देखना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं या नहीं।

बिधना–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। विधि। विधाता।
क्रि० अ० दे० "विधना"।

बिधाँसना*†–क्रि० स० नाश करना। विध्वंस करना। बर्बाद करना।

बिधाई*–संज्ञा पुं० दे० "विधायक"। विधान करने या बनानेवाला।

बिधाना–क्रि० अ० दे० "बिधाना"।

बिधिना–संज्ञा स्त्री० दे० "विधना।" ब्रह्मा।

बिधुर–संज्ञा पुं० दे० "विधुर।"

बिन*†–अव्य० दे० "बिना"।

बिनई*†–संज्ञा पुं० दे० "विनयी"।

बिनउ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।

बिनकार–वि०, संज्ञा पुं० दे० "बिनकारी।" कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा।

बिनकारी–संज्ञा पुं० जुलाहे का काम।

बिनति, बिनती–संज्ञा स्त्री० निवेदन। प्रार्थना।

बिनन–संज्ञा स्त्री० बुनने या चुनने की क्रिया। किसी चीज में से चुनकर निकाला जानेवाला कूड़ा-कर्कट।

बिनना–क्रि० स० १. छोटी-छोटी वस्तुओं को एक-एक करके उठाना। बटोरना। चुनना। २. छाँट-छाँटकर अलग करना। ३. दे० "बुनना"।

बिनवना*†–क्रि० अ० विनय करना। प्रार्थना करना।

बिनवाना–क्रि० स० १. बुनने का काम कराना। कपड़े आदि बुनवाना। चारपाई बुनवाना। २. बटोरवाना। इकट्ठा कराना।

बिनवाई–संज्ञा स्त्री० बिनने का काम या मजदूरी।

बिनसना*†–क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।
क्रि० स० विनाश करना। नष्ट करना।

बिनसाना*–क्रि० स० विनाश करना। नष्ट कर देना। बिगाड़ डालना।
क्रि० अ० विनष्ट होना।

बिना–अव्य० छोड़कर। रहित। बगैर।

बिनाई–संज्ञा स्त्री० १. बीनने या चुनने की क्रिया या मजदूरी। २. बुनने की क्रिया या मजदूरी। बुनावट।

बिनाती†–संज्ञा स्त्री० दे० "विनती"।

बिनानी–वि० १. अज्ञानी। अनाड़ी। अनजान। २. विज्ञानी।
संज्ञा स्त्री० विशेष रूप से विचार। विवेचन।

बिनावट–संज्ञा स्त्री० दे० "बुनावट"।

बिनासना–क्रि० स० नष्ट करना। नाश करना। बरबाद करना।

बिनि, बिनु*–अव्य० दे० "बिना"।

बिनूठा*†–वि० १. अनूठा। अनोखा। २. जो झूठा न हो। ३. शुद्ध। पवित्र।

बिनै*†–संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।

बिनौना–क्रि० अ० और स० १. विनय करना। २. छाँटना।

बिनौरी–संज्ञा स्त्री० जोर से पानी बरसने के समय गिरनेवाले ओले या उनके छोटे टुकड़े।

बिनौला–संज्ञा पुं० कपास का बीज।

बिपच्छ*†–संज्ञा पुं० दे० "विपक्ष"।

बिपत, बिपद, बिपता* –संज्ञा स्त्री० दे० "विपत्ति"।

बिपर*†–संज्ञा पुं० दे० "विप्र"।

बिपादिका–संज्ञा स्त्री० दे० "बिवाई।" पैरों के तलुओं के फटने का रोग। बिमाई।

बिफर*†–वि० दे० "विफल"।

बिफरना*†–क्रि० अ० १. बागी होना। विद्रोही होना। २. बिगड़ उठना। नाराज होना। चिढ़ना। ३. धृष्ट होना।

बिबछना*†–क्रि० अ० १. विरोधी होना। २. फँसना। उलझना।

बिबरन*–वि० जिसका रंग बिगड़ गया हो। बदरंग। जिसके मुख की कांति नष्ट हो गई हो। विवर्ण।
संज्ञा पुं० दे० "विवरण"।

बिबस*†-वि० मजबूर। लाचार। विवश। परतंत्र। पराधीन।
क्रि० वि० विवश होकर। लाचारी से।

बिवहार*†–संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।
बिवाई–संज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है।
बिवाक*–वि० दे० "बेबाक"।
बिवाकी–संज्ञा स्त्री० दे० "बेबाकी"।
बिबि–वि० दो।
बिभाना*–क्रि० अ० चमकना।
बिभिचारी*–दे० "व्यभिचारी"।
बिमानी*–वि० जिसे अभिमान या घमंड न हो। मानरहित।
बिमोहना–क्रि० स० मोहित करना। मोहना। लुभाना।
क्रि० अ० मोहित होना। लुभाना।
बिमौरा†–संज्ञा पुं० बाँबी।
बिय*†–वि० दो। दूसरा। अन्य।
*†–संज्ञा पुं० दे० "बीज"।
बियत*–संज्ञा पुं० दे० "वियत"।
बिया†–संज्ञा पुं० दे० "बीज"।
वि० दूसरा। अन्य। अपर।
बियाधा*†–संज्ञा पुं० दे० "व्याधा"।
बियाधि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।
बियान†–संज्ञा पुं० दे० "ब्यान"। प्रसव (पशुओं के लिए प्रयुक्त)।
बियाना–क्रि० अ० बच्चा देना। ब्याना (पशु)।
बियापना*†–क्रि० स० दे० "व्यापना"।
बियाबान–संज्ञा पुं० [फा०] बहुत उजाड़ स्थान। ऐसा जंगल, जिसमें बहुत दूर तक पानी न मिले।
बियारी, बियालू*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"। रात्रि का भोजन।
बियाह*†–संज्ञा पुं० दे० "विवाह"।
बियाहता‡–वि० स्त्री० विवाहित। जिसके साथ विवाह हुआ हो।
बिरंग–वि० बिना रंग का। कई रंगों का।
बिरंजी–संज्ञा स्त्री० छोटी कील।
बिरई†–संज्ञा स्त्री० छोटा बिरवा। जड़ी-बूटी।
बिरचन–संज्ञा पुं० बेर का चूर्ण।
बिरछ†*–संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।
बिरछिक*†–संज्ञा पुं० दे० "वृश्चिक"।
बिरझना†–क्रि० अ० उलझना। झगड़ना।
बिरतंत*†–संज्ञा पुं० दे० "वृत्तांत"।
बिरत–वि० दे० विरत। उदासीन। रहित।
बिरता–संज्ञा पुं० सामर्थ्य। शक्ति। बूता।
बिरथा†–वि० दे० "व्यर्थ"।
बिरद†–संज्ञा पुं० दे० "विरद"।
बिरदैत–संज्ञा पुं० बहुत प्रसिद्ध वीर या योद्धा।
वि० नामी। प्रसिद्ध।
बिरध–वि० दे० "वृद्ध"।
बिरधाई–संज्ञा स्त्री० वृद्धापन। बुढ़ापा।
बिरमना†–क्रि० अ० १. दे० "बिलमना"। विश्राम करना। २. ठहरना। रुकना। ३. मोहित होकर कहीं रुक जाना।
बिरमाना†–क्रि० स० १. ठहराना। रोक रखना। २. मोहित करके फँसा रखना। ३. बिताना। गुजारना।
बिरल–वि० १. छितराया हुआ। २. जुदा। अलग अलग।
बिरला–वि० १. एकाध। कोई एक। २. कोई कोई। ३. अनूठा। अद्वितीय। ४. अलग।
बिरवा–संज्ञा पुं० पेड़।
बिरहा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का ग्राम्य गीत (पूर्वी जिलों में भोजपुरी में) जिसमें विरह का विशेष रूप से वर्णन है। अहीरों का गीत-विशेष, जिसे वे गाय चराते समय प्रायः गाते हैं। २. विरह या वियोग।
बिरही–संज्ञा पुं० दे० "विरही"। [स्त्री० बिरहिन, बिरहिनी]
बिराजना–क्रि० अ० १. बैठना। २. शोभा देना।
बिरादर–संज्ञा पुं० [फा०] भाई। बन्धु-बान्धव।
बिरादराना–वि० भाइयों का-सा। भाई-चारे का (व्यवहार)।
बिरादरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक ही जाति के लोगों का समूह या वर्ग। भाई-चारा। बन्धुत्व।
बिरान, बिराना*–वि० दे० "बेगाना"।
बिराना, बिरावन†*–क्रि० स० चिढ़ाना। किसी को चिढ़ाने के लिए मुँह बनाना।

बिराम–संज्ञा पुं० दे० "विराम"।
बिरख*†–संज्ञा पुं० १. दे० "वृष"। २. दे० "वृक्ष"।
बिरिछ*†–संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।
बिरियाँ–संज्ञा स्त्री० समय। बेला। बार।
बिरी*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "बीड़ी"। २. दे० "बीड़ा"।
बिरुझना†–क्रि० अ० उलझना। झगड़ना। मचलना।
बिरुदैत–संज्ञा पुं० दे० "विरदैत"।
बिरोजा–संज्ञा पुं० दे० "गंधाबिरोजा"। चीड़ के पेड़ का गोंद।
बिरोधना†–क्रि० अ० विरोध करना। बैर करना।
बिलंद–वि० १. बुलन्द। ऊँचा। बड़ा। २. जो विफल हो गया हो (व्यंग)।
बिलंब–संज्ञा पुं० दे० "विलम्ब"।
बिलंबना*†–क्रि० अ० १. विलंब करना। देर करना। २. रुकना। ठहरना।
बिल–संज्ञा पुं० छेद। माँद। विवर। जमीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ जंगली या घरेलू जीवों के रहने का स्थान। जैसे, चूहे या साँप आदि का। [अंग्रे०] १. पुरजा। परचा। दाम माँगने का पर्चा। २. विधेयक। कानून की पाण्डुलिपि।
बिलकुल–क्रि० वि० दे० "बिल्कुल"। पूरा। सब। एकदम।
बिलखना–क्रि० अ० १. विलाप करना। फूट-फूटकर रोना। दुःखी होना। २. देखना। निरखना।
बिलखाना–क्रि० स० रुलाना।
क्रि० अ० दे० "बिलखना"।
बिलग–वि० पृथक्। जुदा। अलग। भिन्न।
संज्ञा पुं० १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २. द्वेष या और कोई बुरा भाव। ३. रंज। दुख।
बिलगना–क्रि० अ० अलग होना। पृथक् या भिन्न होना। फटना। छटना।
बिलगाना–क्रि० अ० दूर होना। अलग होना।
क्रि० स० १. अलग करना। दूर करना। २. चुनना। छाँटना।
बिलच्छन–वि० दे० "विलक्षण"।
बिलछना*–क्रि० अ० ताड़ना। देखकर समझ जाना।
बिलटना–क्रि० अ० बिगड़ना। बर्बाद हो जाना। नष्ट होना।
मुहा०—बिलट जाना=बर्बाद हो जाना। नष्ट होना। बहुत अधिक हानि होना।
बिलटी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] रेल से भेजे जानेवाले माल की रसीद, जिसे दिखलाने पर पानेवाले को माल मिलता है।
बिलनी–संज्ञा स्त्री० १. आँख की पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसी। २. गुहांजनी। ३. एक छोटा कीड़ा।
बिलपना*†–क्रि० अ० रोना-पीटना। विलाप करना।
बिलबिलाना–क्रि० अ० १. व्याकुल होकर बकना या रोना-चिल्लाना। घबराना। विलाप करना। २. छोटे-छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना।
बिलम*†–संज्ञा पुं० दे० "विलंब"।
बिलमना*†–क्रि० अ० १. विलंब या देर करना। ठहर जाना। रुकना। २. किसी के प्रेम में फँसकर कहीं रुक जाना।
बिलमाना–क्रि० स० १. ठहराना। रोक रखना। २. प्रेम में फँसाकर रोक रखना। ३. देर कराना।
बिललाना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"।
बिलल्ला–संज्ञा पुं० १. जिसका कोई पूछने-वाला न हो। जिसके आगे-पीछे कोई न हो। असहाय। २. आवारा। घुमक्कड़। ३. भोंदू। मूर्ख।
बिलवाना†–क्रि० स० १. खो देना। बरबाद करना। नष्ट करना। २. दूसरे के द्वारा नष्ट या बरबाद कराना। ३. छिपाना। ४. छिपवाना।
बिलसना*†–क्रि० अ० शोभा देना। आनन्द करना। भला या सुन्दर जान पड़ना।
क्रि० स० उपभोग करना। सुख भोगना।
बिलसाना*†–क्रि० स० १. भोग करना या कराना। २. काम में लाना।
बिलहरा–संज्ञा पुं० पान रखने के लिए बाँस

की तीलियों का एक प्रकार का छोटा डिब्बा। मचला।
बिलहरी–संज्ञा स्त्री० पान रखने के लिए एक प्रकार की छोटी डिबिया। दे० "बिलहरा"।
बिला–अव्य० [अ०] बिना। बगैर।
बिलाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली"।
बिलाना–क्रि० अ० गायब या लुप्त हो जाना। अदृश्य होना। नष्ट होना। मिट जाना।
बिलापना*–क्रि० अ० दे० "विलापना"। विलाप करना या रोना।
बिलार†–संज्ञा पुं० बिलाव। बिल्ली का नर।
बिलारी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली"।
बिलाव–संज्ञा पुं० बिल्ली का नर।
बिलावल–संज्ञा पुं० एक राग।
बिलासना–क्रि० स० भोगना। उपभोग करना।
बिलुठना*–क्रि० अ० जमीन पर लेटना (कष्ट आदि के कारण बच्चों का रूठकर जमीन पर लोटना)।
बिलूर*–संज्ञा पुं० दे० "बिल्लौर"।
बिलैया‡–संज्ञा स्त्री० बिल्ली।
बिलोकना*–क्रि० स० देखना। निरखना।
बिलोकनि*–संज्ञा स्त्री० १. देखने की क्रिया। चितवन। २. कटाक्ष।
बिलोचन–संज्ञा पुं० दे० "लोचन"। आँख।
बिलोखना–क्रि० स० देखना।
बिलोड़ना*–क्रि० स० १. दूध, दही आदि मथना। २. बिगाड़ना। गड़बड़ कर देना।
बिलोन–वि० १. बिना नमक का। अलोना। २. नीरस। ३. बदसूरत। कुरूप।
बिलोना–क्रि० स० १. दूध-दही आदि मथना। २. ढालना। गिराना। ३. बिगाड़ना।
बिलोरना*–क्रि० स० दे० "बिलोड़ना"। छिन्न-भिन्न करना।
बिलोलना–क्रि० स० दे० "बिलोल"। हिलना। डोलना।
वि० विलोल। चंचल।
बिलोवना†*–क्रि० स० दे० "बिलोना"।
बिल्कुल–क्रि० वि० [अ०] पूरा-पूरा। सब। आदि से अन्त तक। एकदम।
बिल्मुकता–वि० [अ०] १. जो घट-बढ़ न सके। निश्चित। २. चुकता।

बिल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री० बिल्ली] १. बिल्ली का नर। कपड़े की पट्टी आदि जिसे किसी समारोह के समय समारोह का प्रबन्ध करनेवाले या उससे सम्बद्ध व्यक्ति पहचान के लिए लगाते हैं। पहचान का चिह्न, जिसे स्वयंसेवक आदि लगाते हैं। २. पीतल की पतली पट्टी, जिसे चपरासी लगाते हैं (चपरास) ३. तगामा। (अंग्रे० बैज)
बिल्लाना–क्रि० अ० दे० "बिललाना"। चिल्लाकर रोना। बिलखना।
बिल्ली–संज्ञा स्त्री० शेर की जाति का एक छोटा घरेलू जानवर।
बिल्लौर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पत्थर। स्फटिक। २. एक तरह का बहुत साफ, मोटा और बढ़िया शीशा।
बिल्लौरी–वि० १. बिल्लौर का बना हुआ। २. बिल्लौर के समान स्वच्छ।
बिवरना*–क्रि० अ० सुलझना। साफ करना।
बिवाई–संज्ञा स्त्री० पैर के तलवे फटने का घाव या रोग।
बिषखपरा या **बिषखोपरा**–संज्ञा पुं० गोह की जाति का एक जन्तु।
बिसंच*–संज्ञा पुं० १. संचय का नाश। वस्तुओं को सँभालकर न रखना। बेपरवाही। २. कार्य-हानि। बाधा। ३. भय।
बिसंभर*‡–संज्ञा० पुं० दे० "विश्वंभर"। वि० दे० "बिसँभार"।
बिसँभार†–वि० बेसुध। अचेत। बेखबर। असावधान।
बिस–संज्ञा पुं० दे० "विष"।
बिसखपरा–संज्ञा पुं० दे० "बिषखपरा"।
बिसतरना*–क्रि० अ० विस्तार करना। फैलाना। बढ़ाना।
बिसद*–वि० दे० "विशद"।
बिसन*–संज्ञा पुं० दे० "व्यसन"।
बिसनी–वि० दे० "व्यसनी"।
बिसमउ*†–संज्ञा पुं० दे० "विस्मय"।
बिसरना*–क्रि० स० भूल जाना।
बिसमिल्लाह–क्रि० अ० दे० "बिस्मिल्लाह"।
बिसरना–क्रि० स० भूल जाना।
बिसराना–क्रि० स० भुलाना।

बिसराम*–संज्ञा पुं० दे० "विश्राम"।
बिसरावना†*–क्रि० स० दे० "बिसराना"।
बिसवास*–संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।
बिसवासी–वि० [स्त्री० बिसवासिनी] १. विश्वास करनेवाला। विश्वासी। २. विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय। ३. अविश्वासी। अविश्वास के योग्य।
बिससना*–क्रि० स० १. विश्वास करना। २. वध करना। ३. शरीर के अंग काटना। चीरना-फाड़ना।
बिसहना*†–क्रि० स० १. दे० "बिसाहना"। १. खरीदना। २. जान-बूझकर अपने ऊपर झंझट या विपत्ति मोल लेना।
बिसहर*–संज्ञा पुं० दे० "विषधर"। साँप।
बिसायँध–वि० जिसमें सड़ी मछली की-सी दुर्गंध हो।
संज्ञा स्त्री० सड़े मांस की-सी दुर्गंध।
बिसाख*–संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा"।
बिसात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सामर्थ्य। शक्ति। हैसियत। औकात। २. जमा। पूँजी। ३. शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का वस्त्र या दफ्ती, जिस पर खाने बने होते हैं।
बिसातखाना–संज्ञा पुं० बिसाती की दूकान पर मिलनेवाली चीजें।
बिसाती–संज्ञा पुं० [अ०] गृहस्थी के काम की विविध प्रकार की वस्तुएँ बेचनवाला।
बिसाना–क्रि० अ० १. वश चलना। काबू में होना। २. विष का प्रभाव करना। जहर का असर करना।
बिसारद*–संज्ञा पुं० दे० "विशारद"।
बिसारना–क्रि० स० भुला देना। याद न रखना। ध्यान में न रखना।
बिसारा*–वि० [स्त्री बिसारी] दे० "विषैला"। विष-भरा।
बिसास*–संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।
बिसासिन–संज्ञा स्त्री० अविश्वासिनी। विश्वासघातिनी। विश्वास न करने योग्य स्त्री।
बिसासी*–वि० दे० "बिसवासी"। अविश्वासी। [स्त्री० बिसासिन] विश्वासघाती। दगाबाज। कपटी। विश्वास न करने योग्य पुरुष।
बिसाह–संज्ञा स्त्री० खरीदी हुई वस्तु। संज्ञा पुं० खरीद।
बिसाहना†–क्रि० स० १. जानबूझकर अपने ऊपर विपत्ति या झंझट मोल लेना। २. खरीदना। मोल लेना। ३. जान-बूझकर अपने पीछे लगाना।
बिसाहनी–संज्ञा स्त्री० सौदा। मोल की वस्तु।
बिसाहा–संज्ञा पुं० दे० "बिसाहनी"।
बिसिख*–संज्ञा पुं० दे० "विशिख"।
बिसियर*–वि० दे० "विषधर"। विषैला। जहरीला।
बिसूरना–क्रि० अ० १. सोच करना। २. खेद करना। ३. मन में दुःख मानना।
संज्ञा स्त्री० चिंता। सोच।
बिसेस*–वि० दे० "विशेष"।
बिसेखना*–क्रि० अ० १. विशेष रूप से वर्णन करना ब्यौरेवार या सिलसिलेवार बयान करना। २. निर्णय या निश्चय करना। ३. विशेष रूप से जान पड़ना। विशेषता से युक्त होना।
बिसेन–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक शाखा।
बिसेसर*‡–संज्ञा पुं० दे० "विश्वेश्वर"।
बिस्कुट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] आरारोट या खमीरी मैदे की बनी हुई मीठी या नमकीन टिकिया।
बिस्तर–संज्ञा पुं० बिछौना। बिछावन।
बिस्तरबंद–संज्ञा पुं० बिस्तर या बिछौना बाँधने के लिए कपड़े या चमड़े आदि का लम्बा थैला।
बिस्तरना*–क्रि० अ० फैलना। इधर-उधर बढ़ना।
क्रि० स० १. फैलाना। बढ़ाना। २. विस्तार से वर्णन करना। बढ़ाकर कहना।
बिस्तरा–संज्ञा पुं० दे० "बिस्तर"। बिछौना।
बिस्तारना–क्रि० स० फैलाना। विस्तार करना।
बिस्तुइया†–संज्ञा स्त्री० छिपकली।
बिस्तुई–संज्ञा स्त्री० दे० "बिस्तुइया"। छिपकली।
बिस्मिल–वि० घायल। जख्मी। जबह करते

समय जिसका अभी आधा ही गला कटा हो और जो तकलीफ से छटपटा रहा हो।

बिस्मिल्लाह–[अ०] ईश्वर के नाम से कोई काम शुरू करना। श्रीगणेश करना। किसी काम को शुरू करते समय, विशेषकर जानवरों को जबह करते समय, मुसलमान इस अरबी पद को कहते हैं। जैसे हिन्दू लोग किसी शुभ काम के आरम्भ करने को श्रीगणेश करना कहते हैं।

बिस्वा–संज्ञा पुं० [जमीन की एक नाप] एक बीघे का बीसवाँ भाग।

मुहा०—बीस बिस्वा=निश्चय। निस्संदेह। ठीक-ठीक।

बिस्वास–संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

बिहंग–संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

बिहंडना–क्रि० स० टुकड़े-टुकड़े कर डालना। तोड़ना। नष्ट कर देना। मार डालना।

बिहँसना–क्रि० अ० मुसकराना। प्रसन्न होकर धीरे से हँसना। प्रफुल्लित होना। खिलना (फूल का)।

बिहँसाना–क्रि० अ० दे० "बिहँसना"।

क्रि० स० हँसाना। हर्षित या प्रफुल्लित करना।

बिहँसौंहाँ–वि० हँसता हुआ।

बिहग*–संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

बिहद*–वि० दे० "बेहद"।

बिहबल*–वि० दे० "विह्वल"।

बिहरना–क्रि० अ० दे० "विहरण"। घूमना-फिरना। विहार करना। आनन्द करना। मस्त होकर घूमना। सैर करना।

†*–क्रि० स० विदीर्ण होना। फटना। टूटना-फूटना।

बिहराना†*–क्रि० अ० फटना।

बिहरी†–संज्ञा स्त्री० १. चन्दा। सहायता। २. सहायता के लिए दिया हुआ धन।

बिहाग–संज्ञा पुं० रात में गाया जानेवाला एक राग।

बिहान–संज्ञा पुं० सबेरा। प्रातःकाल। भोर। आनेवाले दिन का सबेरा। कल।

बिहाना*–क्रि० स० त्यागना। छोड़ देना।

क्रि० अ० व्यतीत होना। निर्वाह होना। बीतना।

बिहारना–क्रि० अ० दे० "बिहरना"। विहार करना। क्रीड़ा करना।

बिहाल–वि० दे० "बेहाल" [फा०] बिना हाल का। जिसे अपनी हालत का ठीक पता न हो। व्याकुल। बेचैन। बेसुध।

बिहि–संज्ञा पुं० दे० "विधि"। ब्रह्मा।

बिहिश्त–संज्ञा पुं० [फा०] दे० "बहिश्त" स्वर्ग।

बिही–संज्ञा स्त्री० १. अनार का पेड़ या अनार। २. अमरूद।

बिहीदाना–संज्ञा पुं० [फा०] अनार। बढ़िया काबुली अनार। बिही नामक फल के बीज या दाने, जिसे बीमारी में खाने के लिए देते हैं।

बिहीन–वि० दे० "विहीन"।

बिहोरना–क्रि० अ० बिछुड़ना। अलग होना। लौटाना। फेरना। बहोरना।

बींड़ा–संज्ञा पुं० १. बींड। पिंडी। २. टहनियों या पतली लकड़ियों से बनाया हुआ लंबा नाल, जो कच्चे कुएँ में उसका भगाड़ रोकने के लिए दिया जाता है। ३. मूँज या घास की बनी हुई गेंडुरी, जिस पर घड़ा आदि रखा जाता है। ४. बाँस आदि का बोझ।

बींडी–संज्ञा स्त्री० मोटी रस्सी, जो गाड़ी खींचनेवाले बैलों के गले में बाँधी जाती है। सूत की पिंडी।

बींधना*–संज्ञा पुं० दे० "बींधना"।

बींधना*–क्रि० अ० बिंधना। फँसना। उलझना।

क्रि० स० बेधना। छेदना। चुभाना।

बी–संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी"।

बीका†–वि० टेढ़ा। बाँका।

बीख†*–संज्ञा पुं० डग। कदम।

बीगना‡–क्रि० स० फेंकना।

बीघा†–संज्ञा पुं० खेत नापने की बीस बिस्वे की एक नाप (३०२५ वर्गगज)।

बीच†–संज्ञा पुं० १. मध्य। २. विरोध। विद्वेष। ३. बीच का अंतर। ४. अवसर। मौका।

क्रि० वि० में। अंदर।

मुहा०—बीच खेत=१. खुले मैदान। सबके सामने। २. अवश्य। जरूर। बीच-बीच में=थोड़ी-थोड़ी देर में। थोड़े-थोड़े अंतर पर। बीच करना=१. लड़नेवालों को लड़ने से रोकने के लिए अलग-अलग करना। २. झगड़ा निबटाना। बीच में पड़ना=१. झगड़ा निबटाने के लिए पंच बनना। २. मध्यस्थ होना। बीच डालना। भेद या फूट पैदा करना। अलग करना। बदलना। बीच में पड़ना=१. मध्यस्थ होना। २. उत्तरदायी या जिम्मेदार बनना। प्रतिभू बनना। बीच रखना=दुराव रखना। पराया समझना। बीच में कूदना=अनावश्यक हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना=(ईश्वर आदि की) शपथ खाना। कसम खाना।

बीचि—संज्ञा स्त्री० दे० "वीचि"।

बीचु*†—संज्ञा पुं० १. बीच। अवसर। मौका। २. अंतर। भेद। दूरी।

बीचोंबीच—क्रि० वि० बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछना*†—क्रि० स० छाँटकर पसन्द करना। चुनना। छाँटना।

बीछी*‡—संज्ञा स्त्री० बिच्छू।

बीछू*‡—संज्ञा पुं० १. दे० "बिच्छू"। २. दे० "बिछुआ" (गहना और हथियार)।

बीज—संज्ञा पुं० १. पेड़-पौधे या अनाज आदि के वे दाने, जिनसे नए पेड़-पौधे या अनाज निकलते हैं। बीया। दाना। २. मुख्य कारण। ३. संख्या-सूचक चिह्न या संकेत। ४. दे० "बीजगणित"। गणित का एक भेद। ५. मंत्र का प्रधान भाग। ६. दे० "वीर्य"।

बीजक—संज्ञा पुं० १. सूची। तालिका। २. चालान। ३. बेची और रवाना की हुई वस्तुओं की संख्या और उनका मूल्य बतानेवाली सूची। ४. बीज। ५. कबीरदास के पदों का एक संग्रह।

बीजगणित—संज्ञा पुं० वह गणित-विद्या, जिसके अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं। (अंग्रे० अलजबरा)

बीजन—संज्ञा पुं० दे० "व्यजन"। पंखा।

बीजना*—संज्ञा पुं० १. दे० "बोना"। २. दे० "व्यजन"। ३. पंखा।

बीजपूर, बीजपूरक—संज्ञा पुं० बिजौरा नीबू। चकोतरा।

बीजमंत्र—संज्ञा पुं० १. किसी देवता को प्रसन्न करनेवाला मंत्र। मूलमंत्र। २. तत्त्व।

बीजरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजल—वि० बीज-युक्त।

संज्ञा स्त्री० तलवार।

बीजा—वि० दे० "द्वितीय"। दूसरा।

बीजाक्षर—संज्ञा पुं० किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर।

बीजाध्यक्ष—संज्ञा पुं० शिव।

बीजी—वि० बीजवाला।

संज्ञा स्त्री० १. मींगी। गिरी। २. गुठली।

बीजु, बीजुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजू—वि० बीज बोने से उत्पन्न होनेवाला पेड़ आदि। कलमी का उल्टा।

संज्ञा पुं० दे० "बिज्जु"। एक प्रकार का आम, जो छोटा होता है और जिसे चूसकर खाते हैं।

बीजोदक—संज्ञा पुं० ओला।

बीज्य—संज्ञा पुं० कुलीन।

बीझना*†—क्रि० अ० १. लिप्त होना। फँसना। २. खोदना। ३. रेलना। ठेलना।

बीझा*†—वि० दे० "विजन"। एकांत। निर्जन। शून्य।

बीट—संज्ञा स्त्री० चिड़ियों का मल या पाखाना।

बीड़—संज्ञा स्त्री० एक के ऊपर एक रखे हुए रुपए, जो गुल्ली के समान दीखते हैं।

बीड़ा—संज्ञा पुं० १. पान की गिलौरी। लगा या लपेटा हुआ पान। २. काम करने का भार। ३. एक प्रकार का सूत, जो तलवार की मूठ में बाँधा जाता है।

मुहा०—बीड़ा उठाना=कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना। तैयार होना।

बीड़ी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "बीड़ा"। गड्डी। २. दे० "बीड़"। ३. दाँतों पर रगड़ने की

मिस्सी। ४. पत्ते में लपेटी हुई तम्बाकू, जिसे लोग सुलगाकर पीते हैं।

बीतना–क्रि० अ० १. व्यतीत होना। समय चला जाना। वक्त कटना। गुजरना। पूरा होना। २. दूर होना। चला जाना। छूट जाना। ३. संघटित होना। पड़ना। घटना।

बीता–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"। बालिश्त।

बीथित*†–दे० "व्यथित"। दुखित।

बीधना*†–क्रि० अ०, क्रि० स० दे० "बींधना"।

बीन–संज्ञा स्त्री० वीणा। सितार की तरह का एक प्रसिद्ध बाजा। सँपेरों के बजाने की तूमड़ी।

बीनना†–क्रि० स० १. छोटी-छोटी चीजों को उठाना। २. नीचे फैली हुई चीजों को उठाना। छाँटकर अलग करना या पसन्द चुनना।

क्रि० स० १. दे० "बुनना"। दे० २. "बींधना"।

बीफै–संज्ञा पुं० बृहस्पतिवार। गुरुवार।

बीबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पत्नी। स्त्री। बहू। अच्छे घर की महिला।

बीभत्स–वि० १. जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २. क्रूर। पापी।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से सातवाँ रस। इसमें रक्त-मांस आदि का ऐसा वर्णन होता है, जिससे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।

बीम–संज्ञा पुं० १. जहाज का मस्तूल। २. शहतीर।

बीमा–संज्ञा पुं० [फा०] १. खतरे की जिम्मेदारी। किसी खतरे के, जैसे मृत्यु या दुर्घटना आदि होने पर आर्थिक हानि पूरी करने की जिम्मेदारी, जो कुछ नियत धन लेकर उसके बदले में की जाती है। २. डाक के द्वारा भेजी जानेवाली वस्तु के टूटने-फूटने या हानि की जिम्मेदारी के लिए डाक-विभाग-द्वारा द्रव्य वसूल करने की व्यवस्था। वह पत्र या पार्सल आदि, जिसकी क्षति-पूर्ति करने की जिम्मेदारी डाकविभाग ने ली हो।

बीमार–वि० [फा०] रोगी। अस्वस्थ। मरीज।

बीमारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शरीर का किसी प्रकार का विकार या खराबी। रोग। मर्ज। २. झंझट ३. बुरी आदत (बोलचाल)।

बीय*†–संज्ञा पुं० दे० "बीज।"

वि० दे० "बीजा।" दूसरा।

बीया*–वि० दे० "द्वितीय।" दूसरा।

संज्ञा पुं० दे० "बीज।" दाना।

बीर–वि० दे० "वीर"।

संज्ञा पुं० १. भाई। २. बहादुर। शूर (वीर)।

संज्ञा स्त्री० १. सखी। २. कान का एक गहना। ३. कलाई में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।

बीरउ*†–संज्ञा पुं० दे० "बिरवा"।

बीरक–संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष।"

बीरज*–संज्ञा पुं० दे० "वीर्य्य"।

बीरता–संज्ञा स्त्री० दे० "वीरता।"

बीरन–संज्ञा पुं० भाई।

बीरबहूटी–संज्ञा स्त्री० दे० "वीरवधूटी।" गहरे लाल रंग का एक छोटा बरसाती कीड़ा।

बीरा*–संज्ञा पुं० पान का बीड़ा।

वि० १. दे० "बीड़ा"। २. भाई। भैया। ३. देवता का प्रसाद, फल-फूल आदि।

बीरी†–संज्ञा स्त्री० १. पान का बीड़ा। २. कान का एक गहना। तरना।

बीरो†–संज्ञा पुं० दे० "बिरवा।" पेड़।

बील–संज्ञा पुं० दे० "बिल।" जमीन के अन्दर खोदकर बनाया हुआ घरेलू या जंगली जीवों के रहने का स्थान (जैसे चूहे या साँप आदि)।

वि० पोला। खोखला।

बीवी–संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी।"

बीस–वि० १. जो संख्या में २० हो। दस का दुगुना। २. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा।

संज्ञा पुं० बीस की संख्या या अंक—२०।

मुहा०—बीस बिस्वे=निश्चय। ठीक।

बीसी–संज्ञा स्त्री० १. बीस चीजों का समूह। कोड़ी। २. बीस गाहियों का सैकड़ा। ३. ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई विभाग।

संज्ञा पुं० तराजू।

बीह*–वि० बीस। बिंशति।
बीहड़–वि० १. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़। २. विषम। विकट।
बुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "बूंद"।
बुंदकी–संज्ञा स्त्री० छोटी गोल बिंदी।
बुंदा–संज्ञा पुं० १. बिन्दु। बिन्दी। कान में पहनने का एक गहना २. माथे पर लगाने की टिकली।
बुंदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "बूंदी"। एक प्रकार की मिठाई, जिसमें छोटी-छोटी गोल बुँदिया बनती हैं।
बुंदीदार–वि० जिस पर छोटी-छोटी बिंदियाँ हों।
बुंदेल–संज्ञा पुं० दे० "बुंदेला।"
बुंदेलखंड–संज्ञा पुं० उत्तर प्रदेश का वह अंश, जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा जिले पड़ते हैं।
बुंदेलखंडी–वि० बुंदेलखंड-संबंधी। बुंदेलखंड का।
संज्ञा पुं० बुंदेलखंड का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बुंदेलखंड की भाषा।
बुंदेला–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश। बुंदेलखंड का राजपूत।
बुंदोरी या बुंदौरी*†–संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूंदी नाम की एक मिठाई।
बुआ–संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"। फूआ या फूफी।
बुक–संज्ञा स्त्री० कलफ किया हुआ एक प्रकार का महीन कपड़ा।
बुकचा–संज्ञा पुं० [तु०] गठरी। गट्ठा।
बुकची–संज्ञा स्त्री० १. छोटी गठरी। २. दर्जियों की वह थैली, जिसमें वे सूई-डोरा रखते हैं।
बुकनी–संज्ञा स्त्री० बारीक पिसी हुई चीज। चूर्ण। चूरा। सफूफ।
बुकवा†–संज्ञा पुं० दे० "बुक्का।" उबटन।
बुका–संज्ञा पुं० दे० "बुक्का।"
बुकुनं†–संज्ञा पुं० बुकनी। किसी प्रकार का पाचक चूर्ण।
बुक्का–संज्ञा पुं० १. सरसों आदि पीसकर बनाया गया उबटन, जिसे स्त्रियाँ शरीर साफ करने के लिए लगाती हैं। २. अबरक या अभ्रक का चूर्ण। ३. एक प्रकार का लाल रंग।
बुखार–संज्ञा पुं० [अ०] १. ताप। ज्वर। २. शोक, क्रोध, दुःख आदि का आवेग।
बुग या बुगदर–संज्ञा पुं० मच्छर।
बुगचा–संज्ञा पुं० गठरी।
बुगदा–संज्ञा पुं० [फा०] कसाइयों का छुरा।
बुग्ज–संज्ञा स्त्री० [फा०] द्वेष। बैर।
बुचका–संज्ञा पुं० गठरी।
बुजदिल–वि० [फा०] [संज्ञा स्त्री० बुजदिली] डरपोक। कायर। जिसे हिम्मत न हो।
बुजुर्ग–वि० [फा०] [संज्ञा बुजुर्गी] वृद्ध। बूढ़ा। बड़ा। सयाना।
संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज।
बुझना–क्रि० अ० आग का जलना बन्द होना। चिराग या दीपक का जलना बन्द हो जाना या गुल होना। रोशनी बन्द होना। जोश या उत्साह आदि कम होना।
बुझाना–क्रि० स० १. आग जलना बन्द कर देना। चिराग आदि की रोशनी बन्द करना। २. पानी डालकर ठंढा करना। ३. जोश या उत्साह आदि कम करना। ४. समझाना। संतोष देना।
मुहा०—जहर में बुझाना=छुरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रों की धार को तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ में बुझाना, जिसमें वह भी जहरीला हो जाय।
बुझौवल–संज्ञा स्त्री० पहेली।
बुट*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बूटी"।
बुटना*†–क्रि० अ० दे० "भागना"।
बुड़की†–संज्ञा स्त्री० डुबकी।
बुड़ना†–क्रि० अ० दे० "बूड़ना"। डूबना।
बुड़बुड़ाना–क्रि० अ० कुढ़कर धीरे-धीरे अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ाना।
बुड़ाना*†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
बुड्ढा†–वि० वृद्ध। जिसकी आयु बहुत अधिक हो चुकी हो। (मनुष्यों के लिए प्रायः ५०-६० वर्ष की आयु और जीवों के लिए उम्र का आधे से अधिक या तीन चौथाई भाग।)

बुढ़भस–संज्ञा पुं० अपने को युवा समझने-वाला बूढ़ा। बुढ़ापे में जवान की चाल चलना।

बुढ़वा‡–वि० दे० "बुड्ढा"।

बुढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुढ़ाना–क्रि० अ० बुड्ढा होना। वृद्धावस्था को प्राप्त होना।

बुढ़ापा–संज्ञा पुं० बुढ़ाई। वृद्धावस्था। बुड्ढे होने की अवस्था। वृद्धता।

मुहा०—बुढ़ापा बिगड़ना=बुढ़ाई में कलंक लगना। वृद्धावस्था में कष्ट सहना।

बुढ़िया–संज्ञा स्त्री० वृद्धा स्त्री। बूढ़ी। ५०-६० वर्ष या इससे अधिक की आयु-वाली स्त्री।

बुढ़ौती†–संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा।

बुत–संज्ञा पुं० [फा०] १. मूर्त्ति। प्रतिमा। जिसकी पूजा की जाय या जिसके साथ प्रेम किया जाय। २. प्रियतम।

वि० मूर्त्ति की तरह चुपचाप बैठा रहने-वाला।

बुतखाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. मूर्त्ति रखने का स्थान। मन्दिर आदि। २. प्रेमिका के रहने का स्थान।

बुतना†–क्रि० अ० दे० "बुझाना"।

बुतपरस्त–संज्ञा पुं० [फा०] मूर्त्तिपूजक।

बुतशिकन–वि० [फा०] [संज्ञा बुतशिकनी] मूर्त्तियों को तोड़नेवाला। मूर्ति-पूजा का विरोधी।

बुताना†–क्रि० स० दे० "बुझाना"।

बुताम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बटन का देहाती रूप। घुंडी।

बुत्ता–संज्ञा पुं० १. धोखा। झाँसापट्टी। २. बहाना। हीला।

बुद्बुद–संज्ञा पुं० बुल्ला। पानी का बुलबुला।

बुदबुदा–संज्ञा पुं० बुल्ला। बुलबुला।

बुद्ध–वि० १. सर्वज्ञ। जागा हुआ। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी। विद्वान्। पंडित।

संज्ञा पुं० बौद्धधर्म के प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध, जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व हुआ था। इनके पिता कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन थे और इनकी माता का नाम महामाया था। ये संसार के दुःख-दैन्य को देखकर ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को छोड़कर चले गए थे।

बुद्धगया–संज्ञा पुं० बिहार-प्रदेश में गया के समीप एक स्थान, जहाँ गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बुद्धि–संज्ञा स्त्री० सोचने-समझने और निश्चय करनेवाली शक्ति। मानसिक शक्ति। विवेक-शक्ति। ज्ञान। अक्ल। समझ। दिमाग। मस्तिष्क।

बुद्धिचक्षु–संज्ञा पुं० ज्ञान की आँखें। प्रज्ञाचक्षु। सोच समझ करके काम करनेवाला।

बुद्धिजीवी–वि० अपने मस्तिष्क से काम करके या बुद्धि के बल से जीविका चलानेवाला। जैसे पत्रकार या दफ्तरों में काम करने-वाले।

बुद्धिभ्रंश–संज्ञा पुं० एक तरह की मानसिक बीमारी, जिसमें बुद्धि ठीक तरह से पूरा काम नहीं करती।

बुद्धिमत्ता–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमानी। समझ-दारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्–वि० बहुत समझदार। ज्ञानी। अक्ल-मंद। होशियार। चतुर। तेज दिमागवाला।

बुद्धिमानी–संज्ञा स्त्री० समझदारी। अक्ल-मंदी। होशियारी।

बुद्धिवंत–वि० बुद्धिमान्।

बुद्धिवाद–संज्ञा पुं० एक तरह का सिद्धान्त, जिसके अनुसार समझ में आनेवाली बातें ही सही मानी जाती हैं। खेल। बोधगम्य बातों को ही मानने का सिद्धान्त। (अंग्रे० रैशनलिज्म)।

बुद्धिशाली–वि० दे० "बुद्धिमान्"। विद्वान्। तेज दिमागवाला।

बुद्धिशील–वि० दे० "बुद्धिमान्"।

बुद्धिसहाय–संज्ञा पुं० परामर्श या राय देने-वाला। मंत्री।

बुद्धिहत–वि० दे० "बुद्धिहीन"।

बुद्धिहा–संज्ञा स्त्री० बुद्धि को हरनेवाली। मदिरा।

बुद्धिहीन–वि० मूर्ख। बेवकूफ। अज्ञानी।

बुध—संज्ञा पुं० १. सप्ताह का तीसरा दिन बुधवार। २. एक ग्रह, जो सूर्य्य के सबसे अधिक निकट रहता है। (ज्योतिष) नौ ग्रहों में से चौथा ग्रह। ३. देवता। ४. बुद्धिमान् या विद्वान् व्यक्ति।
वि० बुद्धिमान्। विद्वान्। चतुर।

बुधवान्*†—वि० दे० "बुद्धिमान्"।

बुधवार—संज्ञा पुं० बुध का दिन। सप्ताह का तीसरा दिन, जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार के पहले पड़ता है।

बुधि*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि"।

बुनकर—संज्ञा पुं० कपड़ा बुननेवाला या कपड़ा बुनने का व्यवसाय करनेवाला। जुलाहा।

बुनत—संज्ञा स्त्री० दे० "बुनाई"।

बुनना—क्रि० स० १. करघे पर सूत से कपड़ा तैयार करना। बिनना। २. कपड़े में बेल-बूटे निकालना। जाली निकालना।

बुनाई—संज्ञा स्त्री० १. बुनावट। बुनने की क्रिया। २. बुनने की मजदूरी।

बुनावट—संज्ञा स्त्री० बुनाई। बुनने में सूतों को मिलाने का ढंग।

बुनिया—संज्ञा पुं० दे० "बुनकर"।
संज्ञा स्त्री० दे० "बुंदिया।" एक प्रकार की मिठाई (भोजपुरी में)।

बुनियाद—संज्ञा स्त्री० [फा०] जड़। नींव। आधार।
वि० १. बुनियादी। २. वास्तविकता। असलियत।

बुबुकना—क्रि० अ० [अनु०] १. चिल्ला-चिल्लाकर रोना। बुक्का फाड़ना। ढाड़ मारना। २. सुलग-सुलगकर जलना।

बुबुकारी—संज्ञा स्त्री० जोर-जोर से रोना। ऐसे रोने का शब्द। फूट-फूटकर रोना।

बुभुक्षा—संज्ञा स्त्री० भूख। खाने की इच्छा।

बुभुक्षित—वि० भूखा। जिसे बहुत भूख लगी हो।

बुभूषा—संज्ञा स्त्री० यश की इच्छा।

बुरकना—क्रि० स० [अनु] भुरभुराना। छिड़कना। किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना।

बुरका—संज्ञा पुं० [अ०] मुँह ढाँकने का पर्दा। मुसलमान स्त्रियों का एक पहनावा, जो सिर से पैर तक सब अंगों को ढक लेता है।

बुरकाना—क्रि० स० भुरभुराना। छिड़कवाना।

बुरा—वि० खराब। निकृष्ट। नीच। मंदा।
मुहा०—बुरा मानना=द्वेष रखना। खार खाना। जलना।
यौ०—बुरा-भला=१. हानि-लाभ। अच्छा और खराब। २. लानत-मलामत। गाली-गलौज।

बुराई—संज्ञा स्त्री० १. बुरा होने का भाव। खराबी। दोष। अवगुण। २. शिकायत। निंदा।

बुरादा—संज्ञा पुं० [फा०] लकड़ी चीरने से निकला हुआ चूर्ण। चूर्ण। कुनाई।

बुरापन—संज्ञा पुं० बुराई। खराबी। नीचता।

बुरुश—संज्ञा पुं० साफ करने या रँगने आदि के लिए एक प्रकार की जानवरों के बालों से बनाई हुई कूँची। (अंग्रे० ब्रुश) (दाँत या कपड़ा-जूता साफ करने की चीज।

बुर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १. मीनार का भीतरी भाग। २. गुंबद। किले आदि की दीवारों में आगे की ओर निकला हुआ या ऊपर उठा हुआ गोल हिस्सा। गरगज।

बुर्द—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ऊपरी आमदनी। लाभ। नफा। २. होड़। बाजी। ३. शतरंज के खेल में सब मुहरों के मात खा जाने पर सिर्फ बादशाह के रह जाने की दशा।

बुलंद—वि० [संज्ञा स्त्री० बुलंदी]। सही। ऊँचे पद पर वर्तमान या प्रभावशाली। बहुत ऊँचा।

बुलबुल—संज्ञा स्त्री० एक गानेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला—संज्ञा पुं० पानी का बुल्ला।

बुलवाना—क्रि० स० दूसरे से बुलाने का काम कराना। बुलाना। किसी को भेजकर या चिट्ठी तार आदि भेजकर किसी को बुलाना।

बुलाक—संज्ञा पुं०, स्त्री० नाक के बीच में पहनने का एक गहना।

बुलाकी—संज्ञा स्त्री० नाक के बीच में पहनने का एक गहना।

बुलाना–क्रि० स० १. पुकारना। आवाज देना। अपने पास आने के लिए कहना। २. किसी को बोलने के लिए प्रेरित करना।
बुलावा–संज्ञा पुं० निमंत्रण। बुलाने की क्रिया या भाव। न्योता देना।
बुलाहट–संज्ञा स्त्री० दे० "बुलावा"। पुकार। निमंत्रण।
बुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला"।
बुलौआ†–संज्ञा पुं०दे०"बुलावा"। निमंत्रण।
बुस–संज्ञा पुं० भूसी।
बुहारन–संज्ञा स्त्री० झाड़न। कूड़ा-कर्कट।
बुहारना–क्रि० स० झाड़ू लगाना। झाड़ू से कोई जगह साफ करना। झाड़ना।
बुहारा–संज्ञा पुं० बड़ी झाड़ू (विशेषकर ताड़ की बनी हुई)।
बुहारी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू। बढ़नी।
बूँद–संज्ञा स्त्री० जल आदि तरल पदार्थों का वह थोड़ा अंश, जो गिरते समय छोटी गोली की तरह हो जाता है। बिन्दु। जलकण। छींटा। कतरा।
मुहा०—बूँदें गिरना या पड़ना=हलकी या धीमी वर्षा होना।
बूँदाबाँदी–संज्ञा स्त्री० हलकी या थोड़ी वर्षा।
बूँदी–संज्ञा स्त्री० १. वर्षा की बूँद। २. एक प्रकार की मिठाई। ३. बुँदिया।
बू–संज्ञा स्त्री० गंध। महक। दुर्गंध। बदबू।
बूआ–संज्ञा स्त्री० १. पिता की बहन। फूआ या फूफी। २. बड़ी बहन।
संज्ञा पुं० बकोटा। चंगुल।
बूक–संज्ञापुं० १. चंगुल। बकोटा (देहाती प्रयोग)। २. माजूफल की तरह का एक पेड़।
बूकना–क्रि० स० पीसना। चूर्ण करना। गढ़कर बातें करना। जैसे, अँगरेजी बूकना—शान दिखाने के लिए अँगरेजी बोलना।
बूका–संज्ञा पुं० चूर्ण। बुकनी। दे० "बुक्का"। सफूफ।
बूचड़–संज्ञा पुं० [अंग्रे० बूचर] कसाई।
बूचड़खाना–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ पशुओं की हत्या होती है। कसाई-बाड़ा।
बूचा–वि० जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा। कोई अंग कट जाने या न होने से कुरूप व्यक्ति।
बूजना–क्रि० स० छिपाना। धोखा देना।
बूझ–संज्ञा स्त्री० १. समझ। बुद्धि। अक्ल। २. पहेली।
बूझना–क्रि० स० १. समझना। जानना। २. पूछना। ३. ताड़ना।
बूट–संज्ञा पुं० १. चने का हरा पौधा या दाना। २. पेड़। पौधा। ३. एक प्रकार का फीतेदार जूता (अं०)।
बूटना*–क्रि० अ० भागना।
बूटनि*†–संज्ञा स्त्री० बीर-बहूटी नाम का एक बरसाती कीड़ा, जो लाल रंग का और बहुत मुलायम होता है।
बूटा–संज्ञा पुं० १. बेलबूटा। कपड़े में सूत या तार का बना काम। बड़ी बूटी। २. छोटा पेड़ या पौधा।
बूटी–संज्ञा स्त्री० [बूटा का स्त्री०] १. कपड़े आदि पर बनाए गए फूलों के छोटे चिह्न। छोटा बूटा। २. जड़ी। वनौषधि। ३. भाँग। ४. ताश के पत्तों पर बने हुए चिह्न।
बूड़ना†–क्रि० अ० डूबना। किसी विषय में लीन होना, निमग्न होना।
बूड़ा–संज्ञा पुं० बाढ़। आदमी के डूब जाने लायक गहरा पानी। डुबाव।
बूड़ी–संज्ञा स्त्री० भाले की नोक। बर्छी की धार।
बूढ़†–वि० दे० "बुड्ढा"।
बूढ़ा–संज्ञा पुं० वि० दे० "बुड्ढा"। प्राचीन।
मुहा०–बूढ़ा घाघ=बहुत अनुभवी। चालाक। धूर्त। बहुत बूढ़ा।
बूढ़ी–संज्ञा स्त्री० बुढ़िया।
बूता–संज्ञा पुं० बल। शक्ति। सामर्थ्य।
बूदोबाश–संज्ञा स्त्री० [फा०] रहना-सहना। निवास।
बूर–संज्ञा स्त्री० १. भूसी। छिलका। २. अन्न का कण।
मुहा०–बूर के लड्डू=एक प्रकार की मिठाई का नाम। बूर के लड्डू जो खाय सो भी पछताय, जो न खाय सो भी पछताय=

जिस काम के करने से विशेष फल न हो। वैसे काम, जो देखने में अच्छे मालूम पड़ें, पर उनका फल कुछ नहीं।

बूरना*‡–क्रि० अ० डूबना। बूड़ना।

बूरा–संज्ञा पु० १. भूरे रंग की साफ की हुई खाँड़। २. चूर्ण। ३. लकड़ी का चूरा।

बृच्छ*†–संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।

बृटिश–वि० [अंग्रे०] दे० "ब्रिटिश"।

बृहत–वि० बहुत बड़ा। विशाल।

बृहन्नल–संज्ञा पुं० १. दे० अर्जुन का एक नाम, जब वे अज्ञातवास में विराट के यहाँ स्त्रीवेष में रहकर उनकी कन्या उत्तरा को नाचगान सिखाते थे। २. बाहु।

बृहन्नला–संज्ञा स्त्री० दे० "बृहन्नल"।

बृहस्पति–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैदिक देवता, जो अंगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।

बेंग–संज्ञा पुं० मेंढक।

बेंच–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. लकड़ी या लोहे की एक तरह की लम्बी चौकी। २. वह सरकारी न्यायालय, जिसमें एक से अधिक न्यायाधीश किसी मुकदमे पर विचार करें।

बेंचना–क्रि० स० दे० "बेचना"।

बेंट, बेंठ–संज्ञा स्त्री० हथियारों में लगा काठ आदि का दस्ता। मूठ।

बेंड़–†संज्ञा स्त्री० टेक। चाँड़।

बेंड़ना–क्रि० स० दे० "बेड़ना"। चारों ओर पेड़ आदि बनाकर घेरना। पशुओं को पकड़कर बन्द करना या हाँकना।

बेंड़ा†–वि० १. टेढ़ा। आड़ा। तिरछा। २. कठिन। मुश्किल।

संज्ञा पुं० किवाड़ बन्द करने की लकड़ी। अर्गल।

बेंड़ी–संज्ञा स्त्री० डलिया। बाँस की टोकरी।

बेंड–संज्ञा पुं० फरहरा।

बेंत–संज्ञा पुं० १ एक प्रसिद्ध लता, जिसके डंठल से टोकरी, छड़ी या कुर्सी आदि बनती है। २. बेंत के डंठल की बनी

मुहा०–बेंत की तरह काँपना=डर से थर-थर काँपना। बहुत अधिक डरना।

बेंदा–संज्ञा पुं० १. माथे पर लगाने की गोल बड़ी बिंदी। बेंदी। बड़ी गोल टिकली। २. माथे पर का एक गहना।

बेंदी–संज्ञा स्त्री० १. बिंदी। टिकली। २. माथे पर का एक तरह का गहना (दावनी या बंदी)।

बेंवड़ा–संज्ञा पुं० बंद किवाड़ों के पीछे लगाने की लकड़ी। गज। ब्योंड़ा। अर्गल।

बेंवत–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्योंत"। उपाय। तरकीब।

बे–अव्य० बिना। बगैर। रहित। तिरस्कार के साथ पुकारने या छोटे आदमियों को बुलाने का सम्बोधन (अबे)।

बेअंत*†–क्रि० वि० बिना अन्त का। अनंत। बहुत अधिक। बेहद।

बेअकल, बेअक्ल–वि० बिना अक्ल का। मूर्ख।

बेअदब–वि० [संज्ञा बेअदबी] बड़ों का आदर न करनेवाला। धृष्ट। उद्दंड। अशिष्ट।

बेअदबी–संज्ञा स्त्री० अशिष्टता। शोखी।

बेअसर–वि० जिसका कोई असर या प्रभाव न हो। प्रभावहीन।

बेआब–वि० बिना पानी का, अर्थात् बिना चमक या बिना इज्जत का। द्युतिहीन। बिना मान-मर्यादा का।

बेआबरू–वि० बेइज्जत। प्रतिष्ठाहीन।

बेइंतजामी–संज्ञा स्त्री० इन्तजाम या व्यवस्था न होना या इसकी कमी। अव्यवस्था।

बेइन्तिहा–वि० बेहद। बहुत ज्यादा। जिसकी कोई हद न हो।

बेइज्जत–वि० [संज्ञा बेइज्जती] १. अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।

बेइज्जती–संज्ञा स्त्री० [फा०] अपमान। अप्रतिष्ठा।

बेइन्साफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] अन्याय।

बेइलि†–संज्ञा पुं० दे० "बेला"।

बेइल्म–वि० बिना ज्ञान का। अपढ़। अशिक्षित। मूर्ख।

बेईमान–वि० [फा०] [संज्ञा बेईमानी] १. अविश्वासी २. अधर्मी। अनाचारी।

३. झूठा और धोखाधड़ी करनेवाला। ४. अन्यायी।

बेईमानी–संज्ञा स्त्री० १. बेईमान होने का भाव। अविश्वास। २. अधर्म।

बेएतबार–वि० १. जिसका कोई विश्वास न करे। २. अविश्वासी। शक्की।

बेक़दर–वि० [फ़ा०] अप्रतिष्ठित। बेइज्जत। अपमानित।

बेक़दरी–संज्ञा [फ़ा०] स्त्री० बेइज्जती। अपमान।

बेक़रार–वि० बेचैन। व्याकुल। विकल।

बेक़रारी–संज्ञा स्त्री० बेचैनी। व्याकुलता।

बेकल*†–वि० दे० "विकल।" बेचैन। परेशान।

बेकली–संज्ञा स्त्री० बेचैनी। व्याकुलता।

बेकस–वि० [फ़ा०] १. विवश। निःसहाय। २. गरीब। ३. अनाथ।

बेकसूर–वि० दे० "बेकुसूर।" निरपराध। निर्दोष।

बेकहा–वि० कहना न माननेवाला।

बेक़ाबू–वि० १.काबू के बाहर। जो किसी के वश या अधिकार में न हो। २. विवश। लाचार।

बेकाम–वि० निकम्मा। निठल्ला। व्यर्थ।

बेक़ायदा–वि० नियमविरुद्ध। नियम के प्रतिकूल। कायदे के खिलाफ।

बेकार–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेकारी] १. निकम्मा। निठल्ला। २. व्यर्थ। निरर्थक।

बेकारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेकार होने का भाव। बिना व्यवसाय के। निठल्लापन।

बेकार्‍यो*†–संज्ञा पुं० बुलाने का शब्द। जैसे, रे, अरे, हो आदि। मुँह से निकलने वाला कोई शब्द।

बेकुसूर–वि० निरपराध। निर्दोष। बिना कुसूर या अपराध का। जिसका कोई कुसूर न हो।

बेख*†–संज्ञा पुं० दे० "वेष"। स्वरूप। नकल। स्वाँग।

संज्ञा स्त्री० जड़।

बेखटके–क्रि० वि० निस्संकोच। बेधड़क।

बेखबर–वि० [फ़ा०] १. जिसे खबर या जानकारी ही न हो। अनजान। २. बेहोश।

बेखबरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अज्ञता। बेहोशी।

बेखुद–वि० बेसुध। बेहोश। जो आपे में न हो।

बेखौफ़–वि० [फ़ा०] निडर। निर्भय।

बेग–संज्ञा पुं० दे० "वेग"।

बेगम–संज्ञा स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] मुसलमान बादशाह या नवाब की पत्नी। (रानी) बड़े घर की मुसलमान महिलाओं के लिए प्रयोग किया जानेवाला शब्द।

बेग़रज–वि० जिसे कोई जरूरत या मतलब न हो।

बेगरज़ू–वि० बेगरज।

बेगाना–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जो अपना न हो। पराया। दूसरा। अनजान।

बेगार–संज्ञा स्त्री० १. बिना मजदूरी का काम। जबरदस्ती किसी से काम लेना और मजदूरी न देना। २. बेमन से किया गया काम।

मुहा०—बेगार टालना=बिना मन लगाए कोई काम करना।

बेगारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेगार में काम करनेवाला आदमी।

बेगि*†–क्रि० वि० जल्दी से। शीघ्रता से। चटपट। तुरंत।

बेगुनाह–वि० [फ़ा०] १. निरपराध। बेकसूर। २. निर्दोष।

बेचना–क्रि० स० दाम लेकर देना। बिक्री करना।

मुहा०–बेच खाना=बेचकर दाम खा जाना। गँवा देना। खो देना।

बेचाना*†–क्रि० स० दे० "बिकवाना"। बेचवाना।

बेचारा–वि० [फ़ा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और असहाय। गरीब। जिसे कोई सहारा न हो।

बेचिराग़–वि० जहाँ चिराग या दीया भी न जलता हो। उजड़ा हुआ।

बेचिरागी मौजा–संज्ञा पुं० वह बस्ती या गाँव, जहाँ पहले आबादी रही हो, पर अब वहाँ कोई आबादी न हो (चिराग भी न जलता हो)।

:–वि० बेचनेवाला।
न–वि० [संज्ञा बेचैनी] जिसे चैन न हो। व्याकुल। परेशान।
बेजड़–वि० निर्मूल। जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो। सारहीन।
बेजबान–वि० [फा०] १. गूँगा। मूक। गरीब। २. दीन। ३. निर्बल।
बेजा–वि० [फा०] अनुचित। खराब। बुरा।
बेजान–वि० [फा०] १. बिना जान का। प्राणहीन। निर्जीव। मृतक। मुरदा। जिसमें कुछ भी दम न हो। २. पस्त। शक्तिहीन। ३. बहुत कमजोर। मुरझाया हुआ।
बेजाब्ता–वि० नियम-विरुद्ध। नियम या कानून के प्रतिकूल या खिलाफ। अनियमित। बेकायदा।
बेजार–वि० [फा०] जो किसी बात से तंग आ गया हो। दुखी।
बेजोड़–वि० १. जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २. जिसकी समता न हो सके। अनुपम। अद्वितीय।
बेझना*–क्रि० स० दे० "बेधना"।
बेझरा–संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ, चना आदि एक में मिले हुए अन्न।
बेझा*†–संज्ञा पुं० लक्ष्य। निशाना।
बेटकी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी"।
बेटवा या **बेटला***–संज्ञा पुं० दे० "बेटा"।
बेटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बेटी] पुत्र। लड़का।
बेटी†–संज्ञा स्त्री० पुत्री। लड़की।
बेटौना†–संज्ञा पुं० बेटा।
बेठन–संज्ञा पुं० दे० "वेष्टन"। किसी चीज को लपेटने या बाँधने के काम में आनेवाला कपड़ा।
बेठिकाने–वि० १. जो अपने ठीक स्थान पर न हो। बेमौके। २. ऊल-जलूल। ३. अनुपयुक्त। क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बेमतलब।
बेड़–संज्ञा पुं० घेरा। बाड़ा। आड़। मेंड़। पेड़ के चारों ओर लगाई हुई बाड़।
बेड़ना–क्रि० स० घेरा बनाना। 'बेढ़ना'। आड़ करना। थाला बाँधना। मेंड़ बाँधना।
बेड़ा–संज्ञा पुं० १. नावों या जहाजों का समूह। २. नदी आदि को पार करने के लिए बड़े-बड़े लट्ठों या तख्तों आदि से बनाया ढाँचा। तिरना।
१. आड़ा। तिरछा। २. कठिन। विकट। मुश्किल।
मुहा०—बेड़ा पार करना या लगाना= संकट या दुःख दूर करना। सहायता करना। **बेड़ा पार होना**–संकट या दुःख दूर होना। मनोरथ सफल होना।
बेड़िन, बेड़िनी–संज्ञा स्त्री० नाचने-गानेवाली नट जाति की स्त्री।
बेड़िया–संज्ञा पुं० नटों की एक जाति।
बेड़ी–संज्ञा स्त्री० १. लोहे के कड़े या जंजीर, जो कैदियों के पैरों में पहनाई जाती है। २. बाँस की एक प्रकार की टोकरी।
बेडौल–वि० जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। कुरूप। बदशक्ल।
बेढंगा–वि० जिसका ढंग या तरीका ठीक न हो। बुरे ढंगवाला। भद्दा। कुरूप। जो ठीक तरह से रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब।
बेढंगापन–संज्ञा पुं० बेढंगा होने का भाव। कुरूपता। बुरा या अनुचित तरीका।
बेढ़–संज्ञा पुं० १. विनाश। बरबादी। २. बोया हुआ अंकुरित बीज।
बेढ़ई–संज्ञा स्त्री० कचौड़ी।
बेढ़ना–क्रि० स० १. घेरना। बाड़ा बाँधना। वृक्षों या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिए, चारों ओर से किसी काँटेदार चीज या तार आदि से घेरना। २. पशुओं को घेरकर हाँक ले जाना।
बेढब–वि० बेढंगा। भद्दा। बेतरीका।
बेढ़ा–संज्ञा पुं० १. हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा (गहना)। २. बाड़ा। ३. कठघरा। ४. घर के आस-पास छोटा-सा घेरा हुआ स्थान, जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हों।
बेणीफूल–संज्ञा पुं० फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना। सीसफूल।
बेतकल्लुफ़–वि० [संज्ञा बेतकल्लुफी] दिखावे के शिष्टाचार पर विशेष ध्यान न देनेवाला।

जो तकल्लुफ या बनावट की परवाह न करे। अपने मन की बात साफ-साफ कहनेवाला।

क्रि० वि० बिना किसी तकल्लुफ के। नि:संकोच। बेधड़क।

बेतकल्लुफ़ी–संज्ञा स्त्री० सरलता। सादगी।

बेतकसीर–वि० निर्दोष। निरपराध। बेगुनाह।

बेतना–क्रि० अ० जान पड़ना। प्रतीत होना।

बेतमीज़–वि० अशिष्ट। असभ्य। उजड्ड।

बेतरह–क्रि० वि० बुरी तरह से। अनुचित रूप से। असाधारण रूप से।

वि० बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।

बेतरतीब–वि० क्रि० वि० [फा०] क्रम-विरुद्ध। जो सिलसिलेवार न हो।

बेतरीक़ा–वि०, क्रि० वि० नियम-विरुद्ध। बेकायदा। अनुचित।

बेतहाशा–क्रि० वि० १. बहुत तेजी से। बड़े वेग से। २. बहुत घबराकर। बिना सोचे-विचारे।

बेताब–वि० [फा०] [संज्ञा बेताबी]। १. बेचैन। व्याकुल। विकल। २. दुर्बल। अशक्त। शिथिल। कमजोर।

बेताबी–संज्ञा स्त्री० बेचैनी। व्याकुलता। कमजोरी। दुर्बलता।

बेतार–वि० बिना तार का।

यौ०—बेतार का तार=बिजली के द्वारा बिना तार की सहायता से भेजा हुआ समाचार। इस तरह समाचार भेजने की प्रणाली।

बेताल–संज्ञा पुं० १. दे० "वैताल"। २. दे० "वैतालिक"। ३. भाट। बंदी। ४. एक भूतयोनि। शिव के गणाधिप।

वि० ऐसा गाना-बजाना, जिसमें ताल ठीक न हो।

बेताला–वि० दे० "बेताल"। संगीत में ताल का ध्यान न रखनेवाला।

बेतुका–वि० १. बिना तुक या सामंजस्य के। बेमेल। २. बेढब। बेढंगा। असंगत।

बेतौर–वि० बेढंगा।

क्रि० वि० बेढंगेपन से।

बेदख़ल–वि० [फा०] जिसका कब्जा या अधिकार छीन लिया गया हो। खेत या मकान आदि स्थान पर से जिसके अधिकार छीन लिये गये हों या जो वहाँ से निकाल दिया गया हो। अधिकारहीन।

बेदख़ली–संज्ञा स्त्री० [फा०] संपत्ति पर से अधिकार या कब्जा हटाया जाना अथवा न होना।

बेदम–वि० [फा०] १. बिना दम का। प्राणहीन। मृतक। मुरदा। २. मृतप्राय। थका हुआ। अधमरा। ३. जर्जर। बोदा।

बेदमल, बेदमाल–संज्ञा पुं० लकड़ी की तख्ती विशेष, जिस पर तेल लगाकर सिकलीगर लोग औजार तेज करते हैं।

बेदमुश्क–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फूल कोमल और सुगन्धित होते हैं।

बेदर्द–वि० [फा०] [संज्ञा बेदर्दी] कठोर। निष्ठुर। किसी के दुःख को न समझने-वाला। क्रूर। निर्दय।

बेदर्दी–संज्ञा स्त्री० निदर्यता। निष्ठुरता।

बेदाग़–वि० [फा०] १. जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो। साफ। शुद्ध। २. निष्कलंक। निर्दोष। निरपराध। बेकसूर।

बेदाना–संज्ञा पुं० दे० काबुली अनार

बेदाम–क्रि० वि० बिना दाम का। मुफ्त। संज्ञा पु० दे० "बादाम"।

बेदिका, बेदी–संज्ञा स्त्री० दे० "वेदी"।

बेधड़क–क्रि० वि० बिना धड़कन या संकोच के। निडर होकर। बे-खौफ।

वि० जिसे किसी प्रकार का संकोच, खटका या भय न हो। निडर। निर्भीक।

बेधना–क्रि० स० छेदना। भेदना। चुभाना।

बेधर्म–वि० धर्म के विरुद्ध काम करनेवाला। अपना धर्म छोड़ देनवाला। अधर्मी। धर्मच्युत।

बेधीर*–वि० दे० "अधीर"। व्याकुल। बिना धैर्य का।

बेन†–संज्ञा पु० दे० "वेणु" १. बंशी। बाँसुरी। २. सँपेरों की तूमड़ी। ३. महुवर। बाँस।

बेनज़ीर–वि० अद्वितीय। जिसकी कोई नजीर

न हो अर्थात् मिसाल या उदाहरण न हो ।

बेनमूना–वि० अद्वितीय। अनुपम ।

बेनवर–संज्ञा पुं० बिनौला ।

बेनसीब–वि० अभागा। बदकिस्मत । भाग्य-हीन।

बेना†–संज्ञा पुं० १.बाँस का बना हुआ छोटा पंखा। २. खस। उशीर। ३. बाँस। ४. एक प्रकार का गहना (बेना बेंदिया)।

बेनी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "वेणी"। स्त्रियों की चोटी। जूड़ा। २. दे०"त्रिवेणी" (गंगा, यमुना तथा सरस्वती का प्रयाग में संगम)।

बेनु–संज्ञा पुं० दे० "वेणु"। १. बंसी २. बाँस।

बेपरवा, बेपरवाह–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेपरवाही] १. जिसे कोई परवा या चिन्ता न हो। बेफिक्र। निश्चिन्त। २. मनमौजी। लापरवाह। ३. उदार।

बेपरवाही–संज्ञा पुं० [फा०] निश्चिन्तता। बेफिक्री। चिन्ता-रहित होने की अवस्था। लापरवाही।

बेपर्द–वि० जिसके आगे को ओट न हो। खुला। बिना ढँका हुआ। नग्न।

बेपर्दगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पर्दा न होना। नग्नता। अश्लीलता ।

बेपाइ*†–वि० जिसे कोई उपाय न सूझे। भौचक्का। हक्का-बक्का। किंकर्त्तव्य-विमूढ़।

बेपीर–वि० दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। निर्दय। बेरहम। क्रूर।

बेपेंदी–वि० जिसमें पेंदा न हो ।

मुहा०—बेपेंदी का लोटा=किसी के जरा से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी। वह व्यक्ति, जिसका कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न हो ।

बेफ़ायदा–वि०, क्रि० वि० [फा०] जिससे कोई लाभ न हो। व्यर्थ। फजूल। नाहक।

बेफ़िक्र–वि०[फा०] जिसे कोई फिक्र या चिन्ता न हो। निश्चिन्त। बेपरवाह।

बेफ़िक्री–संज्ञा स्त्री० निश्चिन्तता। चिन्ता-रहित या बेफिक्र होने की अवस्था या भाव ।

बेबस–वि० १. विवश। लाचार। मजबूर। २. परवश।

बेबसी–संज्ञा स्त्री० लाचारी। विवशता। मजबूरी। परवशता।

बेबाक़–वि० [फा०] [संज्ञा स्त्री० बेबाकी] चुकता। चुकाया हुआ ऋण या बाकी दाम आदि। साफ किया गया हिसाब-किताब।

बेबुनियाद–वि० [फा०] निर्मूल। निराधार। अस्तित्व-हीन ।

बेब्याहा–वि० [स्त्री० बेब्याही] अविवाहित। कुँआरा।

बेभाव–क्रि० वि० बिना दर के। बेहिसाब। बेहद।

बेमन–क्रि० वि० बिना मन लगाए।
वि० जिसका मन न लगता हो।

बेमरम्मत–वि० [फा०] [संज्ञा बेमरम्मती] टूटा फूटा। बिगड़ा हुआ ।

बेमुरव्वत–वि० [फा०] [संज्ञा बेमुरव्वती] शील-संकोच से रहित। किसी का लेहाज या ख्याल न करनेवाला।

बेमौक़ा–वि० [फा०] जो उचित समय पर न हो।
संज्ञा पुं० मौके या अवसर का न होना।

बेमौसिम–वि० [फा०] मौसम (ऋतु या उपयुक्त समय) न होने पर भी होनेवाली चीज। असमय पर होनेवाली बात। जिसका मौसम न हो।

बेर–संज्ञा पुं० एक वृक्ष और उसके फल का नाम।
संज्ञा स्त्री० बार। दफा। देर। विलंब।
यौ०—बेर-बेर=बार-बार। अनेक बार। बारम्बार।

बेरहम–वि० [फा०] [संज्ञा बेरहमी] निर्दय। निष्ठुर। दयाहीन।

बेरा†–संज्ञा पुं० समय। वक्त। प्रातःकाल।

बेराम†–वि० दे० "बीमार"।

बेरामी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बीमारी"।

बेरिआ या **बेरिया**†–संज्ञा स्त्री० बेला। समय।

बेरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "बेर"। बेर की झाड़ी। २. दे० "बेड़ी"।

बेरुख़–वि० [फा०] [संज्ञा बेरुखी] १. समय पड़ने पर रुख (मुँह) फेर लेनेवाला। बेमुरव्वत। उदासीन। २. नाराज। अप्रसन्न।

बेरुखी—संज्ञा स्त्री० १. नाराजगी। अप्रसन्नता। मनमुटाव। २. उदासीनता। ३. बेमुरव्वती।

बेल—संज्ञा पुं० १. एक काँटेदार वृक्ष और उसके फल का नाम। श्रीफल। २. एक प्रकार की कुदाली। ३. सीमा निर्धारित करने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर। ४. बेले का फूल।

संज्ञा स्त्री० १. वल्ली। लता। लतर। २. संतान। वंश। ३. कपड़े, फीते या दीवार आदि पर बनी हुई फूल-पत्तियाँ। बूटा। ४. नाव खेने का डाँड़।

मुहा०—बेल मँढ़े चढ़ना=कोई काम अंत तक ठीक-ठीक पूरा उतरना।

बेलचा—संज्ञा पुं० [फा०] फावड़ा। कुदाल।

बेलज्जत—वि० [फा०] [संज्ञा बेलज्जती] १. बिना स्वाद का। २. नीरस। ३. आनन्द-रहित। बेमजा।

बेलदार—संज्ञा पुं० [फा०] जमीन खोदने आदि का काम करनेवाला मजदूर।

बेलदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बेलदार का काम।

बेलन—संज्ञा पुं० १. दे० "बेलना"। गोल और दंड के आकार की वस्तु, जिसे लुढ़काकर किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़-पत्थर आदि कूटकर सड़कें बनाते हैं (रोलर)। २. किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरजा। ३. कोल्हू का जाठ। ४. रूई धुनकने की मुठिया या हत्था।

बेलनदार—वि० जिसमें बेलन लगा हो।

बेलना—संज्ञा पुं० काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता, जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।

क्रि० स० १. रोटी, पूरी आदि को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। फैलाना। बढ़ना। २. चौपट करना। नष्ट करना।

मुहा०—पापड़ बेलना=बेकार का काम करना।

बेलपत्ती—संज्ञा स्त्री० बेल वृक्ष की पत्ती।

बेलपत्र—संज्ञा पुं० दे० "बिल्वपत्र"। बेल के वृक्ष के छोटे-छोटे पत्ते, जो शिवजी पर चढ़ाए जाते हैं।

बेलपात—संज्ञा पुं० दे० "बेलपत्र"।

बेलबूटा—संज्ञा पुं० कपड़े आदि पर काढ़ी गई फूल-पत्ती या बिन्दी आदि। फूलपत्ती आदि बनाने का काम।

बेलबूटेदार—वि० बेलबूटोंवाला।

बेलसना*†—क्रि० अ० विलसना। विलास करना। भोग करना। सुख लूटना।

बेलहरा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० बलहरी] बाँस की बनी एक छोटी पिटारी, जिसमें पान के बीड़े रक्खे जाते हैं।

बेला—संज्ञा पुं० १. सफेद रंग का एक सुगंधित फूल जो गर्मी के दिनों में संध्या के समय फूलता है। इसका और इसके छोटे पौधे का नाम। २. [अंग्रे० वायलिन] एक प्रकार का बाजा जिसमें तार होते हैं और जो बालों की छड़ी से बजाया जाता है। ३. चमड़े की एक प्रकार की छोटी कुल्हिया, जिससे तेल दूसरे पात्र में भरते हैं। ४. लहर। ५. समुद्र का किनारा। ६. समय। वक्त। ७. एक गहना।

बेलाग—वि० १. बिलकुल अलग। जो किसी चीज पर टिका हुआ न हो। जिसका किसी से लाग या सम्बन्ध न हो, या जो किसी से सम्बन्ध न रखना चाहता हो। २. खरा।

बेलि—संज्ञा स्त्री० [बेला का स्त्री०] लता।

बेली—संज्ञा पुं० संगी। साथी।

बेलौस—वि० १. स्पष्टवक्ता। सच्चा। खरा। २. बेमुरव्वत। ३. लावलपट न रखनेवाला। किसी का पक्षपात न करनेवाला।

बेवकूफ़—वि० [फा०] [संज्ञा बेवकूफी] मूर्ख। नासमझ। अज्ञान। अनाड़ी।

बेवकूफ़ी—संज्ञा स्त्री० मूर्खता। अज्ञता।

बेवक्त—क्रि० वि० [फा०] अनुपयुक्त समय पर। कुसमय में।

बेवतन—वि० [फा०] बिना घर-द्वार का।

बेवफ़ा—वि० [संज्ञा बे-वफाई] १. कृतघ्न। २. बेमुरव्वत।

बेवरा*†—संज्ञा पुं० दे० "ब्योरा"। विवरण।

बेवरेबाजी—संज्ञा स्त्री० चालाकी।

बेवरेवार—वि० तफसीलवार। विवरण-सहित।

बेवहरना*†–क्रि० अ० व्यवहार करना। बरताव करना या बरतना।
बेवहरिया*†–संज्ञा पुं० लेन-देन करनेवाला। महाजन।
बेवा–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] विधवा। राँड़। जिसका पति मर गया हो।
बेवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बवाई"।
बेवान*†–संज्ञा पुं० दे० "विमान"।
बेशऊर–वि० नासमझ। उजड्ड। फूहड़।
बेशऊरी–संज्ञा स्त्री० १. मूर्खता। उजड्डता। २. फूहड़पन।
बेशक–क्रि० वि० बिना शक या शुबहे के। अवश्य। निःसंदेह। जरूर।
बेशक़ीमत, बेशक़ीमती–वि० बहुमूल्य। बहुत दाम का।
बेशरम–वि० [फ़ा०] निर्लज्ज। बेहया।
बेशरमी–संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता। बेहयाई।
बेशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अधिकता। क्रि० वि० अधिक।
बेशुमार–वि० [फ़ा०] असंख्य। जिनकी गिनती न हो सके। अगणित।
बेसन–संज्ञा पुं० चने की दाल का आटा।
बेसनी–संज्ञा स्त्री० बेसन की बनी या भरी हुई पूरी आदि।
बेसनौटी–संज्ञा स्त्री० बेसन की रोटी।
बेसबर†–वि० जिसे सब्र या संतोष न हो। अधीर।
बेसमझ–वि० [संज्ञा बेसमझी] नासमझ। मूर्ख। बेवकूफ।
बेसमझी–संज्ञा स्त्री० नासमझी। मूर्खता। बेवकूफी।
बेसर–संज्ञा पुं० १. नाक में पहनने की नथ। २. खच्चर।
बेसवा–संज्ञा स्त्री० दे० "वेश्या"।
बेसारा*†–वि० १. बैठानेवाला। २. रखने या जमानेवाला।
बेसाहना†–क्रि० अ० १. मोल लेना। २. जानबूझकर झंझट, झगड़ा, विरोध या आपत्ति मोल लेना।
बेसाहनी–संज्ञा स्त्री० मोल लेने की क्रिया।
बेसाहा†–संज्ञा पुं० खरीदी हुई चीज। सौदा।
बेसिक–वि० [अंग्रे०] आधार। आधारभूत।
बेसिक प्राइमर, बेसिक रीडर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बच्चों की शिक्षा के लिए प्रारम्भिक पुस्तकें।
बेसिक शिक्षा–संज्ञा पुं० बच्चों को, शिक्षा देने की एक तरह की प्रणाली, जिसमें चित्रों आदि की सहायता से उन्हें व्यावहारिक विषयों का ज्ञान कराया जाता है।
बेसिलसिले–वि० जो सिलसिलेवार या क्रम के अनुसार न हो। जिसमें कोई क्रम न हो।
बेसुध–वि० बिना सुध या होश के। अचेत। बेहोश। बेखबर।
बेसुधी–संज्ञा स्त्री० बेहोशी।
बेसुर, बेसुरा–वि० बेमेल। १. राग के स्वर से भिन्न। भद्दी आवाजवाला। बिना ताल-स्वर का (संगीत)। २. बेमौका।
बेहंगम–वि० [संज्ञा पुं० बेहंगमपन] १. घुमक्कड़। आवारा। २. बेशऊर। उजड्ड। ३. बेढंगा।
बेह*†–संज्ञा पुं० दे० "वेध।" छेद।
बेहड़–वि० संज्ञा पुं० दे० "बीहड़"।
बेहतर–वि० [फ़ा०] अधिक अच्छा। किसी की तुलना या मुकाबले में अधिक अच्छा। बढ़कर।
अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। बहुत अच्छा। जरूर।
बेहतरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेहतर का भाव। अच्छापन। भलाई।
बेहद–वि० [फ़ा०] बिना हद या सीमा के। अपार। असीम। बहुत अधिक।
बेहन†–संज्ञा पुं० बीज। बीया।
बेहना†–संज्ञा पुं० जुलाहों की एक जाति। धुनिया।
बेहया–वि० [फ़ा०][संज्ञा बेहयाई] निर्लज्ज। बेशर्म। जिसे हया या लज्जा न हो।
बेहयाई–संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता। बेशर्मी।
बेहरना†–क्रि० अ० फटना।
बेहरा–वि० अलग। पृथक्। जुदा।
संज्ञा पुं० [अंग्रे० बेयरर] दे० "बैरा"। होटलों में काम करनेवाला नौकर। बड़े

अधिकारी या बड़े आदमी का निजी चपरासी।

बेहरी†—संज्ञा स्त्री० विशेष काम के लिए लोगों से माँगकर इकट्ठा किया गया चन्दा। चंदा माँगने की क्रिया। वह किस्त, जो असामी शिकमीदार को देता है।

बेहाल—वि० जिसका हाल या दशा ठीक न हो। [संज्ञा बेहाली] व्याकुल। बेसुध। बेचैन। परेशान।

बेहिसाब—क्रि० वि० इतना अधिक कि जिसका हिसाब न हो सके। बहुत अधिक। बेहद।

बेहुनरा—वि० कोई हुनर न जाननेवाला।

बेहूदगी—संज्ञा स्त्री० असभ्यता। दे० "बेहूदापन"। अशिष्टता। मूर्खता। बेवकूफी।

बेहूदा—वि० [फा०] अशिष्ट। असभ्य। बदतमीज।

बेहूदापन—संज्ञा पुं० बेहूदगी। अशिष्टता। असभ्यता।

बेहून*‡—क्रि० वि० दे० "विहीन"। बिना। बगैर।

बेहैफ़—वि० [फा०] जिसे कोई डर, चिन्ता या परवाह न हो। बेफिक्र। चिंता-रहित।

बेहोश—वि० [फा०] जिसे होश या सुध न हो। मूर्च्छित। बेसुध। अचेत।

बेहोशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मूर्च्छा। अचेत-नता।

बैंक—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बंक। वह संस्था या कम्पनी, जो रुपए का लेन-देन करती है और जहाँ लोग रुपया जमा करते हैं, तो उसका उन्हें सूद मिलता है।

बैंगन—संज्ञा पुं० एक पौधा, जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है। भ.टा।

बैंगनी, बैंजनी—वि० जो ललाई लिये नीले रंग का हो। बैंगन के रंग का।

बैंड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अंग्रजी बाजों का समूह या उनके बजानेवालों की टोली।

बैंडा*—वि० दे० "बेंड़ा"।

बै—संज्ञा स्त्री० १. बैसर। कंघी (जुलाहों की)। २. दे० "वय"। बेचना। बिक्री।

बैकुंठ—संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ"।

बैग—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] थैला। झोला।

बैजंती—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का पौधा, जिसके फल लंबे होते हैं और गुच्छों में लगते हैं। २. विष्णु भगवान् की माला। श्रीकृष्ण की माला।

बैजंतीमाला—संज्ञा स्त्री० १. पँचरंगी माला। पाँच रंगों की घुटनों तक लटकती हुई माला, जिसे श्रीकृष्ण पहनते थे। २. हीरा आदि मणियों की माला।

बैज—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अधिकार-सूचक चिह्न। चपरास।

बैजनाथ—संज्ञा पुं० दे० "वैद्यनाथ"।

बैजयंती—संज्ञा स्त्री० दे० "बैजयंती।" बैजंती माला।

बैज़ा—संज्ञा पुं० [अ०] अंडकोश। पक्षियों आदि का अंडा।

बैटरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. रासायनिक क्रिय -द्वारा बिजली पैदा करने के काम में लाया जानेवाला लोहे आदि का बना हुआ पात्र। इसका प्रयोग टार्च से रोशनी करने के लिए करते हैं या मोटर आदि में इंजन चलाने के लिए करते हैं। २. गोला-बारूद रखने का स्थान।

बैठक—संज्ञा स्त्री० १. बैठने का स्थान या कमरा। वह स्थान, जहाँ बहुत से लोग आकर बैठा करते हों। चौपाल। २. किसी मूर्ति या खंभे आदि के नीचे का आधार। ३. जमाव। जमा-वड़ा। किसी संघ, संस्था या समिति आदि के सदस्यों का कहीं पर किसी कार्य के लिए एक बार जमा होना। अधिवेशन। ४. बैठने की रीति या ढंग। बार-बार बैठने और उठने की कसरत। दे० "बैठकी"।

बैठकबाज़—वि० [संज्ञा बैठकबाज़ी] १. बड़ी देर तक दिलचस्पी की बातें करनेवाला। २. बातें बनानेवाला या बातें बनाकर अपना काम निकालनेवाला। चालाक।

बैठका—संज्ञा पुं० वह कमरा, जिसमें लोग बैठते हों। बैठक।

बैठकी—संज्ञा स्त्री० १. बार-बार बैठने और उठने की कसरत। बैठक। २. आसन। ३. धातु आदि की दीवट।

बैठना—क्रि० अ० १. पैरों को समेटकर रीढ़ के आसपास की हड्डियों के सहारे टेकना या ऐसी स्थिति में होना कि चूतड़ किसी आधार पर रहे। आसीन होना। आसन जमाना। किसी स्थान पर जमना। २. अभ्यस्त होना। ३. जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे जमना। दबना या डूबना। ४. पचक जाना। धँसना। ५. कारबार चलता न रहना। ६. बिगड़ना। ७. तौल में ठहरना या परता पड़ना। ८. लागत लगना। खर्च होना। ९. लक्ष्य पर पड़ना। निशाने पर लगना। १०. पौधे का जमीन में गाड़ा जाना। ११. लगना। खर्च होना। १२. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। घर में पड़ना। १३. पक्षियों का अंडे सेना। १४. काम से खाली रहना। बेकार होना। बेरोजगार रहना। १५. अस्त होना।

मुहा०—बैठे-बैठाए=१. अकारण बिना कुछ किए ही। २. अचानक। एकाएक। बैठे-बैठे=१. निष्प्रयोजन। २. अचानक। ३. अकारण। बैठते-उठते=सदा। सब अवस्था में। हरदम।

बैठवाना—क्रि० स० बैठाने का काम दूसरे से कराना।

बैठाना—क्रि० स० १. किसी को बैठने में प्रवृत्त करना। दे० "बैठना"। बैठने को कहना। २. स्थापन करना। पद पर स्थापित करना। ३. नियत करना। ठीक जमाना। अड़ाना या टिकाना। ४. पानी आदि में घुली हुई वस्तु को तल में जमाना। ५. धँसाना या डुबाना। पचकाना। ६. कारबार चलता न रहने देना। ७. बेकाम कर देना। ८. बिगाड़ना। ९. कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। जैसे मोच लगने पर बैठाना। (हड्डी आदि बैठाना) लक्ष्य पर जमाना। १०. पौधे को जमीन में गाड़ना। जमाना। ११. किसी स्त्री को पत्नी के रूप में रख लेना। घर में डालना।

मुहा०—हाथ बैठाना=किसी काम को बार-बार करके हाथ को अभ्यस्त करना।

बैठारना‡*—क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैठालना—क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैड़ना†—क्रि० स० बंद करना। बेड़ना (पशुओं को)।

बैत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पद्य। श्लोक।

बैतरनी—संज्ञा स्त्री० दे० "वैतरणी"।

बैताल—संज्ञा पुं० दे० "वैताल"।

बैद—संज्ञा पुं० १. दे० "वैद्य"। आयुर्वेदिक दवा करनेवाला। २. गाँवों में घूम-घूमकर कान साफ करनेवाला जो अपने को बैद कहता है।

बैदगी†—संज्ञा स्त्री० दे० 'वैद्यक"। वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।

बैदेही—संज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।

बैन*—संज्ञा पुं० वचन। कथन। बात।

बैना—संज्ञा पुं० १. उत्सवों पर बिरादरी तथा इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजा जानेवाला उपहार। २. वाणी। बोली। ३. माथे पर पहनने का एक गहना।

बैयाँ*—क्रि० वि० घुटनों के बल।

बैया*‡—संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष।

बैयान या **बियान**—संज्ञा पुं० प्रसव। जन्म (पशुओं के लिए प्रयुक्त)।

बैरंग—वि० बिना टिकट की या कम टिकट लगी हुई डाक से भेजी गई चिट्ठी या पार्सल, जिसका महसूल पानेवाले को देना पड़े।

बैर—संज्ञा पुं० १. शत्रुता। विरोध। २. बेर का पेड़ और फल। ३. अदावत। दुश्मनी।

मुहा०—बैर काढ़ना या निकालना=बदला लेना। बैर ठानना=दुश्मनी मान लेना। शत्रुता रखना। बैर पड़ना=शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना। बैर बिसाहना या मोल लेना=किसी से दुश्मनी पैदा करना। बैर लेना=बदला लेना। बैर निकालना।

बैरख—संज्ञा पुं० १. विरागी का वेष। २. सेना का झंडा।

बैरखी—संज्ञा स्त्री० स्त्री का बाँहों में विवाह में पहनने का एक गहना।

बैरा—संज्ञा पुं० १. हल के पीछे लगा हुआ चोंगा, जिसमें बोने के लिए बीज डाला जाता है। (अंग्रे०) २. होटल में काम करनेवाला नौकर। खिदमतगार।

बैराखी–संज्ञा स्त्री० दे० "वैरखी"।
बैराग–संज्ञा पुं० दे० "वैराग्य"।
बैरागी–संज्ञा पुं० [स्त्री० बैरागिन] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।
दे० "वैरागी"। संन्यासी। साधु। जिसने वैराग्य या संन्यास ले लिया हो। संसार की मोहमाया से अलग।
बैरिस्टर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] इँगलैंड में कानून की उपाधि 'बार एट-ला' प्राप्त व्यक्ति, जिसकी मर्यादा या प्रतिष्ठा साधारण वकील (प्लीडर या एडवोकेट) से अधिक मानी जाती है।
बैरी–वि० दे० "वैरी" [स्त्री० बैरिन] वैर रखनेवाला। शत्रु। दुश्मन। विरोधी।
बैल–संज्ञा पुं० [स्त्री० गाय] १. गोवंश का बधिया किया हुआ नर। यह हल में जोता जाता है। इस पर बोझ ढोते हैं और यह गाड़ियों को खींचता है। २. मूर्ख।
बैलून–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] गुब्बारा।
बैसंदर*–संज्ञा पुं० दे० "वैश्वानर"। अग्नि।
बैस–संज्ञा स्त्री० १. आयु। उम्र। २. यौवन। जवानी।
संज्ञा पुं० १. क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा। २. वैश्य। बनिया।
बैसना*†–क्रि० स० बैठना।
बैसर–संज्ञा स्त्री० जुलाहों का एक औजार, जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं।
बैसवारा–संज्ञा पुं० [वि० बैसवारी] अवध का पश्चिमी प्रांत।
बैसाख–संज्ञा पुं० दे० "वैशाख"।
बैसाखी–संज्ञा स्त्री० १. वैशाख महीना-सम्बन्धी। २. वह डंडा, जिसके सिरे को कंधे के नीचे बगल में रखकर लँगड़े लोग टेकते हुए चलते हैं।
बैसाना*–क्रि० स० बैठाना।
बैसारना*†–क्रि० स० दे० "बैठाना"।
बैहर*‡–वि० १. भयानक। २. क्रोधी।
*संज्ञा स्त्री० वायु।
बोंड़ा–संज्ञा पुं० बारूद में आग लगाने का पलीता।
बोंड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "बौंडी"।

बोआई–संज्ञा स्त्री० बोने का काम या उसकी मजदूरी।
बोक†–संज्ञा पुं० बकरा।
बोच–संज्ञा पुं० मगर की जाति का एक जलजन्तु।
बोज–संज्ञा पुं० घोड़ों का एक भेद।
बोझ–संज्ञा पुं० १. भार। भारीपन। गुरुत्व। वजन। भारी वस्तु। गट्ठर। २. मुश्किल काम। कठिन बात। ३. किसी कार्य्य को करने में होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय। ४. गट्ठा। उतना भार, जितना एक आदमी या पशु लादकर ले जा सके।
बोझना–क्रि० स० बोझ लादना। भार डालना।
बोझल, बोझिल–वि० वजनी। भारी। वजन-दार।
बोझा–संज्ञा पुं० दे० "बोझ"।
बोट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] नाव।
बोटा–संज्ञा पुं० कुंदा। कटा हुआ टुकड़ा।
बोटी–संज्ञा स्त्री० मांस का छोटा टुकड़ा।
मुहा०–बोटी-बोटी काटना=शरीर को काटकर टुकड़े-टुकड़े करना।
बोढा–संज्ञा पुं० फल की डंठी।
बोड़ना–क्रि० स० दे० "बोरना"। डुबाना।
बोड़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पतली लंबी फली, जिसकी तरकारी होती है। लोबिया।
बोड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "बौंड़ी"। एक प्रकार के पौधे की कली, जिसकी तरकारी आदि बनती है।
बोतल–संज्ञा स्त्री० काँच का लंबी गरदन का एक गहरा बरतन।
बोताम–संज्ञा पुं० बटन का देहाती रूप।
बोदरी–संज्ञा स्त्री० खसरा नाम का रोग।
बोदा–वि० [भाव० बोदापन] १. मूर्ख। गावदी। जिसकी समझ में जल्दी कोई बात न आवे। २. सुस्त। मट्ठर। ३. कमजोर। ४. जो कड़ा न हो। फुसफुसा।
बोदापन–संज्ञा पुं० मूर्खता। नासमझी।
बोध–संज्ञा पुं० ज्ञान। जानकारी। तसल्ली। धीरज। सान्त्वना।
बोधक–संज्ञा पुं० १. ज्ञान करानेवाला। बताने

वाला। जतानेवाला। २. शृंगार रस के हावों में से एक हाव, जिसमें किसी संकेत या क्रिया-द्वारा एक दूसरे को अपने मन के भाव बताए जाते हैं।

बोधगम्य—वि० समझ में आने योग्य। जो समझ में आ सके।

बोधन—संज्ञा पुं० [वि० बोधनीय, बोध्य, बोधित] समझाना। सूचित करना। जगाना।

बोधना*†—क्रि० स० बोध देना। समझाना। ज्ञान देना। बतलाना। जताना।

बोधनीय—वि० समझने योग्य। बोध न करने योग्य।

बोधितरु, बोधिद्रुम—संज्ञा पुं० दे० "बोधिवृक्ष"।

बोधिवृक्ष—संज्ञा पुं० गया में स्थित पीपल का वह पेड़, जिसके नीचे गौतम बुद्ध ने बोध (ज्ञान) या बुद्धत्व प्राप्त किया था।

बोधिसत्व—संज्ञा पुं० जिसे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होनेवाली हो। बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी। जो बुद्ध बनने का अधिकारी हो गया हो। महात्मा गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम।

बोना—क्रि० स० बीज को जमने के लिए जमीन में डालना। खेत में बीज डालना। बिखराना।

बोय‡—संज्ञा स्त्री० गंध। बास।

बोर—संज्ञा पुं० १. डुबाने की क्रिया। जैसे, दावात में कलम डालना या कपड़े को रंग में डालना। २. गड्ढा। बिल।

बोरना†—क्रि० स० १. डुबाना। २. कलंकित करना। बदनाम करना। ३. युक्त करना। योग देना या मिलाना। ४. रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी†—संज्ञा स्त्री० अँगीठी।

बोरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० बोरी] टाट का बड़ा थैला, जो अनाज आदि सामान रखने के काम आता है।

बोरिया—संज्ञा स्त्री० छोटा थैला। संज्ञा पुं० [फा०] १. चटाई। २. बिस्तर।

मुहा०—बोरिया-बँधना उठाना=सब सामान लेकर चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।

बोरी—संज्ञा स्त्री० टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरो—संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा धान। एक प्रकार की पतली लम्बी फली, जिसकी तरकारी होती है।

बोर्ड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] समिति। मण्डल। किसी विशेष या स्थायी कार्य के लिए नियुक्त या निर्वाचित समिति।

यौ०—बोर्ड आफ रेवेन्यू=माल के मुकदमों का फैसला करनेवाली सब से बड़ी अदालत। कार्ड बोर्ड=कागज की मोटी दफ्ती। जिला बोर्ड या डिस्ट्रिक्ट बोर्ड=पूरे जिले की व्यवस्था करनेवाली, गैर सरकारी, निर्वाचित सदस्यों की समिति। म्युनिस्पल बोर्ड—नगरपालिका या नगर की व्यवस्था करने के लिए गैर सरकारी निर्वाचित सदस्यों की समिति।

बोर्डिंगहाउस—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छात्रावास। विद्यार्थियों के रहने और खाने का स्थान।

बोल—संज्ञा पुं० १. कही हुई बात। बोली। वचन। वाणी। २. ताना। व्यंग्य। लगती हुई बात। ३. प्रतिज्ञा। ४. बाजे का शब्द।

मुहा०—(किसी का) बोल-बाला रहना या होना=बात की साख बनी रहना। मान-मर्यादा बनी रहना।

बोल-चाल—संज्ञा स्त्री० १. बातचीत। कथनोपकथन। संवाद। २. मेल-मिलाप। परस्पर सद्‌भाव। ३. छेड़छाड़। ४ चलती भाषा। नित्य के व्यवहार की बोली।

बोलता—संज्ञा पुं० बोलने की शक्ति। आत्मा। जीव। प्राण।

वि० बोलनेवाला। खूब बोलनेवाला। वाचाल।

बोलती—संज्ञा स्त्री० बोली। बोलने की शक्ति।

बोलनहारा—संज्ञा पुं० बोलनेवाला। बोलता।

बोलना—क्रि० अ० मुख से शब्द उच्चारण करना। कहना। बात करना।

यौ०—बोलना-चालना=१.बातचीत करना। २. आवाज निकालना।

क्रि० स० १. कहना। कथन करना। २.

बदना। ठहराना। रोक-टोक करना। ३. छेड़-छाड़ करना। ४. *† आवाज देना। बुलाना। पुकारना। पास आने के लिए। ५. कहना या कहलाना।

मुहा०—बोल जाना=१. मर जाना (अशिष्ट)। दम हार जाना। शक्ति समाप्त हो जाना। २. बाकी न रह जाना। चुक जाना। ३. व्यवहार के योग्य न रह जाना। *बोलि पठाना=बुला भेजना।

बोलबाला—संज्ञा पुं० प्रताप। आतंक।

बोलवाना—क्रि० स० दे० "बुलवाना"।

बोलाचाली—संज्ञा स्त्री० दे० "बोलचाल"।

बोली—संज्ञा स्त्री० १. मुँह से निकली हुई आवाज। वाणी। २. अर्थयुक्त शब्द या वाक्य। वचन। बात। ३. नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। ४. वह शब्द-समूह, जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी आपस में अपने विचार प्रकट करने के लिए करते हैं। भाषा। ५. ताना। व्यंग्य। ६. हँसी-दिल्लगी। ठठोली।

मुहा०—बोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना।

बोल्लाह—संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।

बोल्शेविक—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रूस के साम्यवादी दल का अनुयायी या सदस्य (कम्युनिस्ट)।

बोल्शेविज्म—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रूस के साम्यवादी दल का सिद्धान्त। कम्युनिज्म।

बोवना†—क्रि० स० दे० "बोना"।

बोवाई—संज्ञा स्त्री० बोने की क्रिया।

बोवाना—क्रि० स० [बोना का प्रे०] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह—संज्ञा स्त्री० डुबकी। गोता।

बोहनी—संज्ञा स्त्री० किसी सौदे की पहली बिक्री।

बोहारना—क्रि० स० दे० "बुहारना"।

बोहित*—संज्ञा पुं० बड़ी नाव। जहाज।

बौंड़†—संज्ञा स्त्री० लता। बेल। मंजरी।

बौंड़ना†—क्रि० अ० १. लता की तरह बढ़ना। २. टहनी फेंकना।

बौंडर‡—संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।

बौंड़ियाना—क्रि० अ० चक्कर खाना। घूमना।

बौंड़ी—संज्ञा स्त्री० १. पौधों या लताओं के कच्चे फल। ढेंड़ी। ढोंड़। २. छीमी। फली। ३. छदाम। दमड़ी।

बौआना†—क्रि० अ० १. स्वप्न में कुछ कहना। स्वप्नावस्था का प्रलाप। बर्राना। २. पागल की भाँति अट्ट-सट्ट बकना।

बौखल—वि० सनकी। पागल।

बौखलाना—क्रि० अ० बहुत क्रोध करना। बहक जाना।

बौछार—संज्ञा स्त्री० १. हवा के झोकों से आनेवाली तिरछी बूँदें। हलकी वर्षा। झड़ी। २. ताना। कटाक्ष। ३. किसी चीज का बहुत अधिक संख्या या मात्रा में गिरना या पड़ना। जैसे प्रश्नों की बौछार; फूलों की बौछार आदि।

बौड़ाना—क्रि० अ० दे० "बौराना"।

बौड़म—वि० सनकी। मतिभ्रम। पागल। उन्मत्त। बावला।

बौड़हा—वि० उन्मत्त। पागल। सनकी।

बौद्ध—वि० बुद्ध-द्वारा प्रचारित।

संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का अनुयायी। बौद्ध धर्म को माननेवाला।

बौद्ध-धर्म—संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का चलाया हुआ धर्म। इसकी दो प्रधान शाखाएँ हैं—हीनयान और महायान।

बौना—संज्ञा पुं० [स्त्री० बौनी] वामन। ठिगना। नाटा। बहुत ही छोटे कद का आदमी।

बौर†—संज्ञा पुं० आम की मंजरी। मौर।

बौरना—क्रि० अ० आम के पेड़ में मंजरी निकलना। आम का फूलना।

बौरहा†—वि० दे० "बावला"।

बौरा—वि० [स्त्री० बौरी] १. बावला। पागल। २. नादान। मूर्ख।

बौराई*†—संज्ञा स्त्री० बावलापन। पागलपन।

बौराना†—क्रि० अ० १. पागल हो जाना। सनक जाना। उन्मत्त हो जाना। २. विवेक या बुद्धि खो देना।

क्रि० स० किसी को ऐसा कर देना कि वह

भला-बुरा न विचार सके। पागल बना देना।
बौराह* या **बौराहा**†–वि० बावला। पागल।
बौरी–संज्ञा स्त्री० बावली स्त्री।
बौलसिरी–संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।
बौला–संज्ञा पुं० पोपला। दन्तहीन।
बौहर–संज्ञा स्त्री० वधू। बहू।
बौहा–वि० पथरीला। कंकरीला।
ब्यतीतना*–क्रि० स० १. दे० "बिताना"। व्यतीत करना। २. दे० बीतना।
ब्यथा–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
ब्यवहर†–संज्ञा पुं० उधार। दे० "व्यवहर"।
ब्यवहरिया–संज्ञा पुं० दे० व्यवहरिया। रुपए का लेन-देन करनेवाला। महाजन।
ब्यवहारी–संज्ञा पुं० १. कार्य-कुशल। अनुभवी।
२.मामला करनेवाला। ३. लेन-देन करनेवाला। ४. व्यापारी।
ब्याज–संज्ञा पुं० दे० "व्याज"। सूद।
ब्याजू–वि० व्याज या सूद पर दिया जानेवाला धन।
ब्यान–संज्ञा पुं० पशुओं का प्रसव। बियान।
ब्याना–क्रि० स० जनना। गर्भ से पैदा करना (पशुओं के लिए प्रयुक्त)।
ब्यारी–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
ब्यालू–संज्ञा स्त्री० दे० रात का भोजन।
ब्याह–संज्ञा पुं० दे० "विवाह"।
ब्याहता–वि० दे० "विवाहित"। जिसके साथ विवाह हुआ हो।
संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री।
ब्याहना–क्रि० स० [वि० ब्याहता] विवाह करना। पुरुष का किसी स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का किसी पुरुष को अपना पति बनाना। विवाह कराना।
ब्याहा–वि० विवाहित। जिसका विवाह हो गया हो।
ब्याहुला†–वि० विवाह का।
ब्योंचना–क्रि० अ० अचानक मुड़ जाने या टेढ़ी हो जाने से नसों का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुरकना।
ब्योंड़ा–संज्ञा पुं० दरवाजा बंद करने के लिए अन्दर से लगाने की लम्बी लकड़ी। अरगल।
ब्योंत–संज्ञा स्त्री० १. उपाय। काम पूरा करने या कराने का तरीका। युक्ति। ढंग। २. संयोग। अवसर। नौबत। ३. व्यवस्था। इन्तजाम। ४. सामर्थ्य। समाई। ५. पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़ों की काट-छाँट। कतरना। तराश।
ब्योंतना–क्रि० स० पोशाक बनाने के लिए कपड़े को नापकर काटना-छाँटना। कतरना।
ब्योंताना–क्रि० स० नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।
ब्योरना–क्रि० स० १. उलझी हुई चीज को सुलझाना। २. गुंथे या उलझे हुए बालों या सूतों को सुलझाना।
ब्योरा–संज्ञा पुं० १. विस्तार से या सिलसिलेवार वर्णन। किसी घटना की एक-एक बात का उल्लेख। विवरण। तफसील। २. किसी एक विषय की सारी बात। वृत्तांत। हाल। समाचार। ३. अन्तर। भेद।
यौ०—ब्योरेवार=विस्तार के साथ। सिलसिलेवार।
ब्योहर–संज्ञा पुं० लेन-देन का व्यापार। रुपया ऋण देना।
ब्योहरा–संज्ञा पुं० लेन-देन करनेवाला।
ब्योहरिया–संज्ञा पुं० सूद पर रुपए के लेन-देन का व्यापार करनेवाला। महाजन।
ब्योहार–संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।
ब्रज–संज्ञा पुं० दे० "व्रज"। मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का प्रदेश। श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र।
ब्रजबाला–संज्ञा स्त्री० दे० "व्रजबाला"। गोपी। ब्रज की स्त्री।
ब्रजभाषा–संज्ञा स्त्री० दे० "व्रजभाषा"। मथुरा, आगरा और उसके आस-पास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा।
ब्रजमण्डल–संज्ञा पुं० दे० "व्रजमण्डल"। मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का प्रदेश। ब्रज और उसके आस-पास की भूमि।
ब्रह्मांड–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

ब्रह्म–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमात्मा। जगत्कर्त्ता। २. ब्रह्मा। ३. सत्, चित्, आनन्द-स्वरूप। तत्त्व। ४. आत्मा। चैतन्य। ५. ब्राह्मण। समास में ब्राह्मण या ब्रह्मा के लिए 'ब्रह्म' का प्रयोग होता है। ६. एक की संख्या। ७. ब्रह्मराक्षस। वह ब्राह्मण, जो मरने के बाद प्रेत हुआ हो।

ब्रह्मकर्म–संज्ञा पुं० ब्राह्मण का कर्म। वेद-विहित कार्य।

ब्रह्मगति–संज्ञा स्त्री० मुक्ति। निर्वाण। मोक्ष। जन्ममरण से छुटकारा।

ब्रह्मगाँठ–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मग्रंथि"।

ब्रह्मग्रंथि–संज्ञा स्त्री० यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ।

ब्रह्मघाती–संज्ञा पुं० ब्राह्मण की हत्या करने-वाला।

ब्रह्मघोष–संज्ञा पुं० पूजा या प्रार्थना करते समय उत्पन्न ध्वनि। वेदों के पवित्र शब्द या उनका पाठ।

ब्रह्मचक्र–संज्ञा पुं० संसार का आवागमन। संसार-चक्र।

ब्रह्मचर्य्य–संज्ञा पुं० १. इन्द्रियों का दमन। वीर्य की रक्षा के लिए संयम। २. योग में एक प्रकार का यम। ३. चार आश्रमों में पहला आश्रम, जिसमें अविवाहित व्यक्ति को संभोग आदि व्यसनों से दूर रहकर केवल अध्ययन में लगा रहना चाहिए।

ब्रह्मचारिणी–संज्ञा स्त्री० १. ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री। २. दुर्गा। पार्वती। सरस्वती।

ब्रह्मचारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] १. ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाला। २. ब्रह्मचर्य्य आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति। गुरुकुल-ऋषिकुल में वेदाध्ययन करनेवाला अविवाहित विद्यार्थी।

ब्रह्मज–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. ब्रह्म से उत्पन्न जगत्।

ब्रह्मज्ञ–वि० ज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्मज्ञान–संज्ञा पुं० परमात्मा-सम्बन्धी ज्ञान। ब्रह्म का बोध।

ब्रह्मज्ञानी–वि० ब्रह्म को जाननेवाला। परमात्मा-विषयक ज्ञान का पंडित। अद्वैत-वादी।

ब्रह्मण्य–वि० १. ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला। २. ब्रह्म या ब्रह्मा-संबंधी। ३. वेदविहित कर्म।

ब्रह्मतत्त्व–संज्ञा पुं० ब्रह्म के विषय में सच्चा ज्ञान। ब्रह्मज्ञान। ब्रह्मस्वरूप।

ब्रह्मत्व–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म का भाव। २. ब्राह्मणत्व। ३. ब्रह्म की स्थिति प्राप्त करने का भाव। ४. ब्रह्मपद। मोक्ष।

ब्रह्मदिन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा का एक दिन, जो १०० चतुर्युगियों का माना जाता है (पुराण में)।

ब्रह्मदोष–संज्ञा पुं० [वि० ब्रह्मदोषी] ब्राह्मण की हत्या करने का दोष या पाप।

ब्रह्मद्रोही–वि० ब्राह्मणों से बैर रखनेवाला।

ब्रह्मद्वार–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मरंध्र"। मस्तक का मध्य स्थान।

ब्रह्मनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु।

ब्रह्मनिष्ठ–वि० १. ब्राह्मण-भक्त। २. ब्रह्म-ज्ञानी।

ब्रह्मपद–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मत्व। २. ब्राह्मणत्व। ३. मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्मपुत्र–संज्ञा पुं० १. एक नद, जो हिमालय पर्वत से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है। २. ब्रह्मा के पुत्र (नारद, वशिष्ठ, सनक आदि)।

ब्रह्मपुर–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मलोक। स्वर्ग। २. कैलाश। ३. वह नगर या गाँव, जहाँ ब्राह्मणों की संख्या अधिक हो।

ब्रह्मपुराण–संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक। पुराणों में इसका नाम पहले आने से कुछ लोग इसे आदिपुराण भी कहते हैं।

ब्रह्मपुरी–संज्ञा स्त्री० १. वह गाँव या बस्ती जहाँ ब्राह्मणों की आबादी अधिक हो। २. राजा-महाराजाओं-द्वारा ब्राह्मणों को दान किया गया मकानों का समूह। ३. ब्रह्मलोक।

ब्रह्मभट्ट–संज्ञा पुं० एक प्रकार के ब्राह्मण। भाट।

ब्रह्मभोज–संज्ञा पुं० बहुत से ब्राह्मणों को भोजन कराना।

ब्रह्ममुहूर्त–संज्ञा पुं० सूर्योदय से पहले दो घड़ी का समय। ब्राह्ममुहूर्त। प्रभात। तड़का।

ब्रह्मयज्ञ–संज्ञा पुं० १. विधिपूर्वक वेद-पाठ। २. वेदाध्यापन। वेद पढ़ाना।

ब्रह्मयोग–संज्ञा पुं० संगीत का एक ताल-विशेष।

ब्रह्मरंध्र–संज्ञा पुं० मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद, जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। ब्रह्मांड-द्वार।

ब्रह्मराक्षस–संज्ञा पुं० वह ब्राह्मण, जो मरकर भूत हुआ हो।

ब्रह्मरात्र–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्ममुहूर्त"।

ब्रह्मरात्रि–संज्ञा स्त्री० ब्रह्मा की एक रात, जो एक कल्प की मानी जाती है।

ब्रह्मरेख–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मलेख"।

ब्रह्मर्षि–संज्ञा पुं० ब्राह्मण-ऋषि।

ब्रह्मलेख–संज्ञा पुं० भाग्य का कल्पित लेख, जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक में लिख देते हैं और जो अमिट माना जाता है।

ब्रह्मलोक–संज्ञा पुं० १. वह लोक, जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। २. स्वर्ग में पुण्य-आत्मा का कल्पित निवास-स्थान। मोक्ष का एक भेद।

ब्रह्मवाद–संज्ञा पुं० अद्वैतवाद। आत्मा और परमात्मा में कोई भेद न मानने का सिद्धांत।

ब्रह्मवादिनी–संज्ञा स्त्री० गायत्री मंत्र।

ब्रह्मवादी–वि० [स्त्री० ब्रह्मवादिनी] वेदांती। अद्वैतवादी। आत्मा और परमात्मा में कोई भेद न मानने के सिद्धान्त का अनुयायी।

ब्रह्मविद्–वि० ब्रह्म को जानने या समझने-वाला। ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्मविद्या–संज्ञा स्त्री० ब्रह्म को जानने की विद्या। उपनिषद् (उपनिषदों में ब्रह्म को जानने की विद्या का उल्लेख है)।

ब्रह्मवेत्ता–संज्ञा पुं० ब्रह्मज्ञानी। ब्रह्म को जाननेवाला।

ब्रह्मवैवर्त–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म के कारण प्रतीत होनेवाला जगत्। २. श्रीकृष्ण। अठारह महापुराणों में से एक महापुराण जो कृष्ण-भक्ति-संबंधी है।

ब्रह्मसमाज–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्म-समाज"। एक नवीन सम्प्रदाय, जिसके प्रवर्तक राजा राममोहन राय थे। इसमें एकमात्र ब्रह्म की उपासना की जाती है।

ब्रह्मसूत्र–संज्ञा पुं० १. जनेऊ। यज्ञोपवीत। २. वेदान्त-सूत्र। बादरायण या व्यास-द्वारा रचित ब्रह्मज्ञान-सम्बन्धी सूत्रग्रंथ।

ब्रह्मस्तेय–संज्ञा पुं० वेद का अनधिकृत अध्ययन। गुरु की बिना अनुमति के, अन्य को पढ़ाया हुआ पाठ सुनकर अध्ययन करना।

ब्रह्मस्व–संज्ञा पुं० ब्राह्मण का भाग। ब्राह्मण का धन या उसकी सम्पत्ति।

ब्रह्महत्या–संज्ञा स्त्री० ब्राह्मणों को मार डालना। ब्राह्मण-वध। इसे महापाप माना जाता है।

ब्रह्मांड–संज्ञा पुं० १. संपूर्ण विश्व। चौदहों भुवन। २. खोपड़ी। कपाल।

ब्रह्मा–संज्ञा पुं० ईश्वर। परमात्मा। विधाता। ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप।

ब्रह्माणी–संज्ञा स्त्री० १. ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति। २. सरस्वती।

ब्रह्मानंद–संज्ञा पुं० ब्रह्म के ज्ञान की प्राप्ति से उत्पन्न आनन्द या आत्म-तृप्ति।

ब्रह्मावर्त–संज्ञा पुं० उत्तरी भारत के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। आधुनिक बिठूर का प्राचीन नाम।

ब्रह्मास्त्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अस्त्र, जो मंत्र से चलाया जाता था। २. ऐसी युक्ति, जो कभी असफल न हो। अपनी पूरी शक्ति से किया जानेवाला वह प्रयत्न या प्रहार, जिससे सफलता निश्चित हो।

ब्रह्मिष्ठा–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

ब्रांडी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की अंग्रेजी शराब।

ब्राह्म–वि० ब्रह्म-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. विवाह का एक भेद, जिसमें वर-पक्ष से बिना कुछ लिये हुए कन्या दी जाती है। २. ब्राह्म समाज के नियमों का अनुयायी।

ब्राह्मण–संज्ञा पुं० [स्त्री० ब्राह्मणी] १. चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति, जिसके प्रधान कर्म पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश

आदि हैं। २. उक्त वर्ण या जाति का व्यक्ति। ३. वेद का वह भाग, जो मंत्र नहीं कहलाता। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. अग्नि।

ब्राह्मणत्व—संज्ञा पुं० ब्राह्मण का भाव, अधिकार या धर्म। ब्राह्मणपन।

ब्राह्मण-भोजन—संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों को खिलाना। २. ब्राह्मणों को खिलाया जाने-वाला भोजन।

ब्राह्मणी—संज्ञा स्त्री० ब्राह्मण जाति की स्त्री।

ब्राह्मण्य—संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मणत्व"।

ब्राह्ममुहूर्त—संज्ञा पुं० सूर्य्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय। प्रभात।

ब्राह्मसमाज—संज्ञा पुं० एक नया संप्रदाय, जिसमें एकमात्र ब्रह्म की ही उपासना की जाती है। बंगाल में इसे राजा राममोहन राय ने चलाया था।

ब्राह्मी—संज्ञा स्त्री० १. भारतवर्ष की एक प्राचीन लिपि, जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। २. एक प्रसिद्ध बूटी, जो स्मरण-शक्ति और बुद्धि बढ़ाने-वाली है। ३. दुर्गा।

ब्रिगेड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सेना का एक भाग जिसमें ८ बैटेलियन होती हैं। प्रायः एक बैटेलियन में बारह सौ सैनिक होते हैं।

ब्रिटिश—वि० [अंग्रे०] ब्रिटेन या इँगलैंड का। ब्रिटेन सम्बन्धी। अंग्रेजी।
संज्ञा पुं० अंग्रेज।

ब्रुश—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पशुओं के बालों की बनी एक प्रकार की अंग्रेजी कूची।

ब्लाक—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छापने के काम में आनेवाला चित्र आदि का ठप्पा, जो ताँबे, काठ आदि का बना होता है।

भ

भ—हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
संज्ञा पुं० १. नक्षत्र। २. राशि। ३. ग्रह ४. शुक्राचार्य। ५. भ्रमर। भौंरा। ६. भूधर। पहाड़। ७. भ्रान्ति। ८. दे० "भगण"।

भंकार*—संज्ञा पुं० जोर की डरावनी आवाज।

भंग—संज्ञा पुं० १. खंड। टुकड़ा। २. भेद। कुटिलता। टेढ़ापन। ३. भय। ४. टूटने का भाव। विनाश। विध्वंस। ५. बाधा। अड़चन। रोक। ६. टेढ़े होने या झुकने का भाव। ७. तरंग। लहर। ८. पराजय। हार।
संज्ञा स्त्री० दे० "भाँग"।

भंगड़—वि० बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगना†—क्रि० अ० १. टूटना। २. दबना। हार मानना।
क्रि० स० १. तोड़ना। २. दबाना।

भँगरा—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की वनस्पति, जो औषध के काम में आती है। भँगरैया। भंगराज। २. भाँग के रेशे से बुना हुआ एक कपड़ा।

भंगराज—संज्ञा पुं० १. काले रंग की एक चिड़िया। २. दे० "भँगरा"।

भँगरैया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "भँगरा"।

भंगसार्थ—वि० कुटिल।

भँगार—संज्ञा पुं० १. वर्षाकाल में अपने आप बन जानेवाला गड्ढा। २. वह गड्ढा जो कुआँ बनाते समय खोदते हैं। ३. घास-फूस। कूड़ा।

भंगारी—संज्ञा पुं० मच्छड़।

भंगि—संज्ञा स्त्री० दे० "भंगिमा"।

भंगिन—संज्ञा स्त्री० भंगी की स्त्री। मेहतरानी।

भंगिमा—संज्ञा स्त्री० १. तिरछापन। टेढ़ापन। कुटिलता (विशेषकर आँखों के कटाक्ष के लिए प्रयुक्त)। २. स्त्रियों का हावभाव। नाज-नखरा। ३. लहर। ४. आकृति। ५. प्रतिकृति।

भंगी—संज्ञा पुं० [स्त्री० भंगिन] एक जाति, जिसका काम मल-मूत्र आदि उठाना है।
वि० १. भंग या नष्ट होनेवाला। २. भंग करने, तोड़ने या नाश करनेवाला। ३. भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगुर–वि० १. भंग होनेवाला। जल्दी नष्ट होनेवाला। नाशवान्। दे० "क्षण-भंगुर"। २. टेढ़ा। कुटिल।

भंगेड़ी–वि० बहुत भाँग पीनेवाला।

भंगेला–संज्ञा पुं० १. भाँग के रेशों से बना हुआ एक तरह का कपड़ा। २. दे० "भंगरा।"

भंजक–वि० [स्त्री० भंजिका] तोड़नेवाला। भंग या नाश करनेवाला।

भंजन–संज्ञा पुं० तोड़ना। भंग करना। ध्वंस। नाश।

वि० भंजक। तोड़नेवाला।

भंजना–क्रि० स० तोड़ना। टुकड़े-टुकड़े करना। नाश करना।

क्रि० अ० १. टुकड़े-टुकड़े होना। टूटना। २. किसी बड़े सिक्के का छोटे-छोटे सिक्कों से बदला जाना। भुनना। ३. बटा जाना। ४. कागज के तख्तों का कई परतों में मोड़ा जाना। भाँजा जाना।

भँजाई–संज्ञा स्त्री० १. भँजाने या भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. दे० "भुनाई"। बड़े सिक्के भुनाने के लिए दिया जानेवाला बट्टा। ३. भाँजने (हाथ चलाने आदि) की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भँजाना *–क्रि० स० १. भँजने का सकर्मक रूप। भाँजने, तोड़ने या भुनाने आदि का काम किसी दूसरे से कराना। तुड़वाना। २. बड़ा सिक्का देकर उसके मूल्य के छोटे सिक्के लेना। भुनाना।

भंटा†–संज्ञा पुं० बैंगन।

भंड–संज्ञा पुं० दे० "भाँड़"।

वि० अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। बेहया। धूर्त। पाखंडी।

भँड़ताल†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का गाना और नाच, जिसमें तालियाँ पीटते हैं। भाँड़ों का नाच। भँड़तिल्ला।

भंडतिल्ला–संज्ञा पुं० दे० "भँड़ताल"।

भंडना–क्रि० स० १.बिगाड़ना। तोड़ना। नष्ट-भ्रष्ट करना। हानि पहुँचाना। २. बदनाम करना।

भंड़फोड़†–संज्ञा पुं० १. रहस्योद्घाटन। भंडाफोड़। २. मिट्टी के बर्तनों को गिराना या तोड़ना-फोड़ना। ३. मिट्टी के बर्तनों का टूटना-फूटना।

भँड़भाँड़–संज्ञा पुं० एक कँटीला पौधा, जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवा के काम में आती है। भड़भाड़। सत्यानासी।

भँडर–संज्ञा पुं० दे० "भड्डर।"

भँडरिया–वि० १. पाखंडी। २. धूर्त्त। मक्कार।

संज्ञा स्त्री० दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बताकर या देवदर्शन, कराकर निर्वाह करते हैं। दे० "भड्डर।"

भँड़सार, भँड़साल–संज्ञा स्त्री० वह गोदाम, जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाता है। खत्ती। खत्ता।

भंडा–संज्ञा पुं० १. बर्तन। पात्र। भाँड़ा। २. भंडारा। ३. भेद। रहस्य।

मुहा०—भंडा फोड़ना=पोल खोलना। सच्ची बात या रहस्य प्रकट करना। भंडा फूटना=भेद खुलना।

भँडाना–क्रि० स० उछल-कूद मचाना। उपद्रव करना। तोड़ना-फोड़ना। नष्ट करना। दे० "भंडना"।

भंडाफोड़–संज्ञा पुं० भेद या रहस्य प्रकट होना। पोल खुल जाना। रहस्योद्घाटन। असलियत मालूम हो जाना।

भंडार–संज्ञा पुं० १. कोष। खजाना। २ पाकशाला। भंडारा। ३. अन्न आदि रखने का स्थान। कोठार। ४. पेट। ५. दे० "भंडारा"।

भंडारा–संज्ञा पुं० १. दे० "भंडार"। २. साधुओं का भोज। ३. समूह। झुंड। ४. पेट।

भंडारी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी कोठरी। २. कोश। खजाना।

संज्ञा पुं० १. रसोइया। रसोईदार। २. खजानची। कोषाध्यक्ष। ३. तोशाखाने का दारोगा। ४. भंडार-गृह का प्रधान अध्यक्ष।

भंडेरिया–संज्ञा पुं० दे० "भड्डर"। भंडरिया।

भंडेरियापन–संज्ञा पुं० ढोंग। पाखंड।

भड़ौआ–संज्ञा पुं० १. भाँड़ों का गीत। २. हास्य-रस की कविता। निम्नकोटि की कविता।

भँभरना–क्रि० अ० भयभीत होना।

भंभा–संज्ञा पुं० बिल। जमीन के अन्दर का छेद।

भँभाना–क्रि० अ० दे० "रँभाना"। गाय आदि पशुओं का चिल्लाना।

भँभेरि*†–संज्ञा स्त्री० भय।।

भँभोरना–क्रि० स० १. फाड़ खाना। २. दाँत से जोरों से काटना। काट खाना। ३. नोंचना। कुत्ते का काटना।

भँवन*–संज्ञा स्त्री० घूमना। चक्कर या फेरा लगाना।

भँवना–क्रि० अ० घूमना-फिरना। चक्कर लगाना।

भँवर–संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. चक्कर। पानी के बहाव में वह स्थान, जहाँ लहरें चक्कर काटती हुई घूमती हैं।

भँवरकली–संज्ञा स्त्री० घूमनेवाली कुंडी या कड़ी। लोहे या पीतल की वह कड़ी, जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि आसानी से चारों तरफ घूम सकती है।

भँवरगीत–संज्ञा पुं० दे० "भ्रमर-गीत"।

भँवरजाल–संज्ञा पुं० सांसारिक झगड़े-बखेड़े। संसार का जंजाल। भ्रमजाल। माया-जाल।

भँवरभीख–संज्ञा स्त्री० वह भीख, जो भौंरे के समान चारों ओर घूम-फिरकर माँगी जाय।

भँवरी–संज्ञा स्त्री० १. पानी का चक्कर। भँवर। २. शरीर के ऊपर वह स्थान, जहाँ के रोएँ या बाल घूमे हुए हों। ३. दे० "भाँवर"। परिक्रमा। ४. बनियों का सौदा लेकर घूम-घूमकर बेचना। फेरी। गश्त।

भँवाना*–क्रि० स० घुमाना। चक्कर देना। भ्रम में डालना।

भँवारा†–वि० घूमने फिरनेवाला। चक्कर लगानेवाला। भ्रमणशील।

भँसना–क्रि० अ० १. पानी में फेंका जाना। २. पानी के ऊपर तैरना। ३. गिरना (दीवाल का भँसना)।

भँसार–संज्ञा पुं० दे० "भाड़"। भड़भूँजों की अनाज भूँजने की भट्ठी।

भइया–संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई। भैया। २. बड़े भाई के लिए सम्बोधन। ३. बराबरवालों के लिए आदरसूचक शब्द। ४. प्यार से पुकारने का सम्बोधन, जैसे घर में छोटे लड़कों को पुकारने का शब्द।

भई–क्रि० स० हो गई।
संज्ञा पुं० भाई। भैया।

भक–संज्ञा स्त्री० सहसा या रह-रहकर आग के जल उठने का शब्द। एकाएक इस तरह 'भक' की आवाज होना।

भकड़ना–क्रि० अ० अनाज का सड़ना। भगरना।

भकभकाना–क्रि० अ० [अनु०] भकभक आवाज करके जलना। चमकना।

भकराँध†–संज्ञा स्त्री० सड़े हुए अनाज की गंध।

भकसा†–वि० सड़ा हुआ अन्न।

भकसाना†–क्रि० अ० अधिक समय तक रहने के कारण अन्न का सड़ जाना।

भकाऊँ–संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा। बालकों को डराने के लिए कहा जानेवाला एक शब्द।

भकुआ†–वि० मूर्ख। बेवकूफ।

भकुआना–क्रि० अ० चकपका जाना। भौंचक्का होना। घबरा जाना।
क्रि० स० १. चकपका देना। घबरा देना। २. मूर्ख बनाना।

भकुवा–वि० दे० "भकुआ"। मूर्ख। बेवकूफ।

भकोसना–क्रि० स० बड़े-बड़े कौर मुँह में डालकर जल्दी-जल्दी खाना या भद्देपन से खाना। निगलना। हड़पना। ठूँस-ठूँसकर खाना।

भक्त–वि० १. भक्ति करनेवाला। ईश्वर या किसी विशेष देवी-देवता की उपासना, भजन या पूजा-पाठ आदि करनेवाला। २. किसी पर श्रद्धा रखनेवाला। ३. सेवा करनेवाला। ४. अनुयायी। ५. भागों में बाँटा हुआ। विभक्त। ६. बाँट कर दिया हुआ। प्रदत्त। ७. अलग किया हुआ।

भक्तकार–संज्ञा पुं० १. रसोइया । रसोई बनानेवाला । २. भक्तकर नामक सुगंधित द्रव्य ।

भक्तजा–संज्ञा स्त्री० अमृत ।

भक्तदास–संज्ञा पुं० १. भक्ति करनेवाला दास या सेवक । २. केवल भोजन पर काम करनेवाला दास या नौकर ।

भक्तवच्छल–वि० दे० "भक्तवत्सल" ।

भक्तवत्सल–वि० [संज्ञा भक्तवत्सलता] भक्तों पर कृपा या स्नेह करनेवाला । दयालु ।

भक्ताई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" ।

भक्ति–संज्ञा स्त्री० १. परमात्मा में अनुराग । ईश्वर या देवी-देवताओं में श्रद्धा, विश्वास और प्रेम । श्रद्धा । सेवा । [भक्ति नौ प्रकार की हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन ।] २. अनेक भागों में बाँटना । भाग । विभाग । ३. विभाग करनेवाली रेखा ।

भक्तिसूत्र–संज्ञा पुं० शांडिल्य मुनि-कृत वैष्णव-संप्रदाय का एक सूत्र-ग्रंथ ।

भक्ष–संज्ञा पुं० १. दे० "भक्ष्य" । २. दे० "भक्षण" । खाने-योग्य वस्तु । आहार । भोजन ।

भक्षक–वि० [स्त्री० भक्षिका] १. खानेवाला । भोजन करनेवाला । २. खाकर खत्म करने वाला, यानी नाश करनेवाला ।

भक्षण–संज्ञा पुं० [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] १. भोजन करना । खाना । निगलना । २. भोजन । खाने की वस्तु ।

भक्षणीय–वि० भोजन करने योग्य । खाने लायक ।

भक्षना*–क्रि० स० खाना । भोजन करना ।

भक्षित–वि० खाया हुआ ।

भक्षी–वि० [स्त्री० भक्षिणी] खानेवाला ।

भक्ष्य–वि० खाने योग्य ।
संज्ञा पुं० खाद्य । अन्न । आहार ।

भख*–संज्ञा पुं० दे० "भक्ष" आहार । भोजन ।

भखना*–क्रि० स० दे० "भक्षण" । खाना । निगलना ।

भगंदर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का फोड़ा, जो गुदा के किनारे होता है ।

भग–संज्ञा पुं० १. योनि । २. सूर्य्य । ३. बारह आदित्यों में से एक । कीर्ति । ४. प्रतिष्ठा । ५. ऐश्वर्य । समृद्धि । धन । ६. सौभाग्य । ७. यश । ८. कामशक्ति । ९. धर्म । १०. मोक्ष । १. कान्ति । सौन्दर्य ।

भगई–संज्ञा स्त्री० लँगोटी ।

भगण–संज्ञा पुं० १. छंदःशास्त्रानुसार एक गण, जिसमें आदि का एक वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं । २. खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर । ३. नक्षत्र-मंडल ।

भगत–वि० [स्त्री० भगतिन] १. दे० "भक्त" । भक्ति करनेवाला । सेवक । उपासक । २. साधु । ३. मांस आदि न खानेवाला । ४. धूर्त । पाखण्डी । चालाक (व्यंग्य) । ५. दे० "भगतिया" । ६. भूत-प्रेत उतारनेवाला पुरुष । ओझा । ७. स्वाँग करनेवाला ।

भगतबछल*–वि० दे० "भक्तवत्सल" ।

भगताई–संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" । भक्ति का कर्म ।

भगति*–संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" ।

भगतिन या **भगतन**–संज्ञा स्त्री० १. भक्त स्त्री । भक्ति करनेवाली स्त्री । २. वेश्या । नर्तकी ।

भगतिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० भगतिन] गाने-बजाने का काम करनेवाली एक जाति । (राजपूताने में) गवैया । कत्थक ।

भगती–संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" ।

भगदड़–संज्ञा स्त्री० घबराकर भागने की क्रिया या भाव । घबराकर बहुत से लोगों का एक साथ किसी एक ओर या इधर-उधर भागना ।

भगदर–संज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़" ।

भगन*–वि० दे० "भग्न" ।

भगना†–क्रि० अ० दे० "भागना" ।
संज्ञा पुं० दे० "भानजा" ।

भगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "भगिनी" ।

भगर*‡–संज्ञा पुं० १. छल । फरेब । २. सड़ा हुआ अन्न ।

भगरना–क्रि० अ० भकड़ना । अनाज का

सड़ना। इकट्ठा किए हुए अन्न का गर्मी के कारण सड़ना।

भगल–संज्ञा पुं० १. छल। कपट। ढोंग। २. जादू। इन्द्रजाल।

भगली–संज्ञा पुं० १. ढोंगी। कपटी। २. बाजीगर।

भगवंत*†–संज्ञा पुं० दे० "भगवत्"।

भगवत्–संज्ञा पुं० १. भगवान्। ईश्वर। परमेश्वर। विष्णु। २. शिव। ३. पूजनीय। ४. ऐश्वर्ययुक्त।

भगवती–संज्ञा स्त्री० १. देवी। २. गौरी। ३. सरस्वती। ४. दुर्गा।

भगवत्पदी–संज्ञा स्त्री० गंगा।

भगवद्गीता–संज्ञा स्त्री० महाभारत में अठारह अध्यायों का सर्वश्रेष्ठ प्रकरण, जिसमें उन उपदेशों का वर्णन है, जो भगवान् कृष्णचंद्र ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिए उन्हें युद्धस्थल में दिए थे। यह हिन्दू-धर्म का सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य ग्रंथ है।

भगवदीय–वि० भगवत्-सम्बन्धी। भगवान् का। भगवान् का भक्त।

भगवद्भक्त–संज्ञा पुं० ईश्वर-भक्त। भगवान् की पूजा करनेवाला।

भगवा–संज्ञा पुं० गेरुआ वस्त्र।

भगवान्, भगवान–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. विष्णु। ३. पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

वि० ऐश्वर्ययुक्त। पूज्य।

भगाना–क्रि० स० १. हटाना। दूर करना। खदेड़ना। २. दौड़ाना। ३. स्त्री-बच्चों आदि को उनके घर के लोगों से किसी तरीके से छुड़ाकर अपने साथ कहीं ले जाना। अपहरण। (अंग्रे०-एब्डक्शन)।

भगाल–संज्ञा पुं० आदमी की खोपड़ी।

भगास्त्र–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक अस्त्र।

भगिनी–संज्ञा स्त्री० बहन।

भगीरथ–संज्ञा पुं० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्यवंशी राजा, जो घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे।

वि० १. भगीरथ की तपस्या के समान कठिन या बहुत बड़ा। महान्। २. अथक परिश्रम। ३. घोर प्रयत्न।

भगेड़ू, भगेलू–वि० भागा हुआ। कायर। डरपोक।

भगेल–संज्ञा स्त्री० १. हार। २. भगदड़।

संज्ञा पुं० भगोड़ा। भागा हुआ।

भगोड़ा–वि० १. भागा हुआ या भागनेवाला। २. कायर। डरपोक। भग्गू। ३. अपना काम या कर्त्तव्य छोड़कर भागनेवाला। ४. अपराध करके भागनेवाला। फरार। (अंग्र०-एब्सकाण्डर)।

भगोल–संज्ञा पुं० दे० "खगोल"। नक्षत्रचक्र।

भगोती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भगवती"।

भगौहाँ–वि० १. भागनेवाला। भागने के लिए तैयार। २. कायर। ३. भगवा। ४. गेरुआ।

भग्गुल*‡–वि० युद्ध से भागा हुआ। भगोड़ा।

भग्गू†–वि० भगोड़ा। भागनेवाला। कायर।

भग्न–वि० १. टूटा हुआ। नष्ट-भ्रष्ट। २. जो हारा या हराया गया हो। पराजित।

भग्नांश–संज्ञा पुं० टूटा हुआ हिस्सा। खण्डित भाग। विभाग।

भग्नावशेष–संज्ञा पुं० १. खँडहर। किसी टूटे-फूटे मकान, इमारत या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। २. किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश=वि० निराश। हताश। जिसकी आशा भंग हो गई हो।

भचक–संज्ञा स्त्री० भचककर चलने का भाव। लँगड़ापन।

वि० भौंचक। आश्चर्यचकित। अचम्भे में।

भचकना–क्रि० अ० अचम्भे में पड़ जाना। आश्चर्यचकित होना। लँगड़ाकर चलना।

भचक्र–संज्ञा पुं० १. राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग। कक्षा। २. नक्षत्रों का समूह।

भच्छ*‡–संज्ञा पुं० दे० "भक्ष्य"।

भच्छन†–संज्ञा पुं० दे० "भक्षण।"

भच्छना*†–क्रि० स० दे० "भक्षना"। खाना

भजन–संज्ञा पुं० १. ईश्वर का गुणगान। स्मरण। जप। सेवा। २. वह गीत, जिसमें ईश्वर, देवता या अवतारों के गुणगान हों। ३. भाग। खण्ड।

भजना—क्रि० स० १. ईश्वर या देवता आदि का नाम स्मरण करना। सेवा करना। २. आश्रय लेना। आश्रित होना। ३. जपना। ४. ध्यान करना। ५. पूजा करना।
क्रि० अ० १. भागना। भाग जाना। २. पहुँचना। प्राप्त होना।

भजनानंद—संज्ञा पुं० भजन से मिलनेवाला आनंद।

भजनानंदी—संज्ञा पुं० भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला। भजन में सर्वदा मग्न रहनेवाला।

भजनी—संज्ञा पुं० भजन करनेवाला। भजन गानेवाला।

भजनीक—संज्ञा पुं० भजन करनेवाला।

भजनीय—वि० भजने योग्य। सेवा या पूजा करने योग्य।

भजाना—क्रि० अ० १. दौड़ना। भागना। २. भगाना। दूर कर देना।

भट—संज्ञा पुं० १. युद्ध करनेवाला। योद्धा। शूरवीर। सैनिक। २. दे० "भट्ट"।

भटई—संज्ञा स्त्री० १. गुणगान। बखान। स्तुति। २. भाटों का काम। भाटों का व्यवहार।

भटकटाई, भटकटैया—संज्ञा स्त्री० एक छोटा और काँटेदार पौधा।

भटकना—क्रि० अ० १. रास्ता भूल जाना। बहकना। व्यर्थ इधर-उधर घूमना। २. भ्रम में पड़ना।

भटकाना—क्रि० स० १. भ्रम में डालना। २. गलत रास्ता बताना।

भटकैया*‡—संज्ञा पुं० १. भटकनेवाला। २. भटकानेवाला।

भटकौहाँ*‡—वि० भटकानेवाला।

भटतीतर—संज्ञा पुं० एक विशेष प्रकार का पक्षी।

भटनास—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता। इसमें एक प्रकार की फलियाँ लगती हैं, जिनके दानों की दाल बनती है।

भटभेरा*†—संज्ञा पुं० १. दो वीरों का मुकाबला। भिड़ंत। २. टक्कर। ठोकर। धक्का। ३. अनायास भेंट।

भटियारा—संज्ञा पुं० १. खाना पकाने और सराय में मुसाफिरों को ठहरानेवाला। २. सराय में घोड़ों की देखभाल करनेवाला।

भटू†—संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के संबोधन के लिए एक आदर-सूचक शब्द। सखी। प्रिया। प्रणयिनी।

भट्ट—संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. भाटों की जाति-विशेष। ३. योधा। शूर।

भट्टार—संज्ञा पुं० सूर्य।
वि० पूजनीय। मान्य। आदरणीय।

भट्टारक—संज्ञा पुं० [स्त्री० भट्टारिका] १. राजा। २. ऋषि। ३. पंडित। ४. देवता। ५. सूर्य। ६. प्राचीन समय में हिन्दू राजाओं या मंत्रियों की उपाधि।
वि० परम आदरणीय। पूजनीय।

भट्टी—संज्ञा स्त्री० दे० "भट्ठी"।

भट्ठा—संज्ञा पुं० १. ईंटें या खपड़े आदि पकाने का पजावा। २. बड़ी भट्ठी। ईंटों का बना बड़ा चूल्हा।

भट्ठी—संज्ञा स्त्री० १. ईंट आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा। २. देशी शराब बनाने का स्थान। ३. ईंट पकाने का पजावा।

भठाना—क्रि० स० १. गाड़ना। २. छिपाना। ३. गिराना। ४. गड्ढे को भरना। कुआँ भरवा देना।

भठियाना†—क्रि० अ० १. दे० "भठाना"। २. नदी की धार पर बहना।

भठियारपन—संज्ञा पुं० १. भठियारे का काम। २. भठियारों की तरह लड़ना और गालियाँ बकना।

भठियारा—संज्ञा पुं० [स्त्री० भठियारी या भठियारिन] सराय का प्रबन्ध करनेवाला या रक्षक।

भठियारिन—संज्ञा स्त्री० भठियारे की स्त्री।

भड़ंबा—संज्ञा पुं० आडंबर।

भड़—संज्ञा स्त्री० बड़ी नाव।
संज्ञा पुं० १. दे० "भट"। २. गिरने की आवाज।

भड़क—संज्ञा स्त्री० १. चमक-दमक। २. चटकीलापन। चमकीलापन। ३. भड़कीला होने का भाव। ४. भड़कने का भाव। चौंक। घबराहट। ५. झिझक।

भड़कदार—वि० १. चमकीला। भड़कीला। चटकीला। २. रोबदार।

भड़कना—क्रि० अ० १. तेजी से जल उठना। २. झिझकना। चौंकना। डरकर पीछे हटना। ३. क्रुद्ध होना।

भड़काना—क्रि० स० १. चौंकाना। २. प्रज्वलित करना। जलाना। ३. उत्तेजित करना। उभारना। ४. डरवाना। भयभीत कर देना। चमकाना।

भड़की—संज्ञा स्त्री० घुड़की। भभकी। डरावना।

भड़कीला—वि० दे० १. "भड़कदार"। चमकीला। २. भड़कने या चौकन्ना होनेवाला।

भड़कीलापन—संज्ञा पुं० चमक-दमक।

भड़भड़—संज्ञा स्त्री० १. भड़भड़ शब्द, जो प्रायः आघातों से होता है। २. भीड़। भब्बड़। ३. व्यर्थ की बहुत अधिक बातचीत।

भड़भड़ाना—क्रि० स० [अनु०] भड़भड़ शब्द करना।

भड़भड़िया—वि० १. जल्दबाज। उतावला। २. बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बहुत बातें करनेवाला। डींग हाँकनेवाला। फड़फड़िया।

भड़भाँड़—संज्ञा पुं० एक कँटीला पौधा। सत्यानासी। घमोय।

भड़भूँजा—संज्ञा पुं० १. भाड़ में अन्न भूनने का काम करनेवाला। २. यह काम करनेवाली जाति।

भड़साई—संज्ञा स्त्री० दे० "भाड़"। भड़भूंजों की अनाज भूनने की भट्ठी।

भड़ार*†—संज्ञा पुं० दे० "भंडार"।

भड़ाल—संज्ञा स्त्री० १. मन में छिपा हुआ असन्तोष या वैर। क्रोध। २. दिल की जलन या द्वेष।

भड़िहा†—संज्ञा पुं० चटोर। चोरी करके खानेवाला।

भड़िहाई*†—क्रि० वि० चोरों की तरह लुकछिप या दबकर।

भड़ी—संज्ञा स्त्री० झूठा बढ़ावा।

भड़आ या भड़वा—संज्ञा पुं० १. वेश्यापुत्र। २. वेश्याओं की दलाली करनेवाला या उनके साथ रहनेवाला।

भड़ैत—संज्ञा पुं० १. भाड़ा देनेवाला। भाड़े या किराए के मकान में रहनेवाला। किराएदार। २. दे० "भांड़"।

भड़ौआ—संज्ञा पुं० १. भाँड़ों की तरह किसी की दिल्लगी उड़ाने के लिए की गई हास्यरस की कविता। २. किसी कविता के अनुकरण पर बनी हुई, लेकिन उसका उपहास करनेवाली कविता या हास्यरसपूर्ण कविता (अंग्रे०-पैरोडी)।

भड्डर—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के ब्राह्मण, जो लोगों को देवदर्शन करा कर या सामुद्रिक-द्वारा भविष्य बताकर जीविका चलाते हैं। २. ब्राह्मणों में निम्न श्रेणी की एक शाखा। इस उपजाति के लोग शनि का दान लेते हैं। भंडर।

भणना*†—क्रि० अ० कहना।

भणित—वि० कहा हुआ।

भतार†—संज्ञा पुं० दे० "भर्त्तार"। पति।

भतीजा—संज्ञा पुं० [स्त्री० भतीजी] भाई का पुत्र।

भत्ता—संज्ञा पुं० १. किसी कर्मचारी को यात्रा के समय वेतन के अलावा दिया जानेवाला दैनिक व्यय। २. महँगी या विशेष कार्य आदि के लिए वेतन के अतिरिक्त दिया जानेवाला दैनिक या मासिक धन।

भदंत—वि० पूज्य। मान्य। आदरणीय। संज्ञा पुं० बौद्ध भिक्षुक या साधु।

भद—संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के गिरने का शब्द। पेड़ से फल गिरने या पैर का शब्द। धप्पा।

भदई—संज्ञा स्त्री० भादों के महीने में तैयार होनेवाली फसल।

भदभद—वि० बहुत मोटा। भद्दा। संज्ञा स्त्री० भद-भद की आवाज।

भदभदाना—वि० भदभद शब्द करना।

भदभदाहट—संज्ञा स्त्री० भदभद शब्द।

भदावर—संज्ञा पुं० चम्बल और यमुना नदियों के बीच का भाग, जिसका अधिकांश आगरा जिले में है और कुछ अंश ग्वालियर राज्य में है।

भदाक—संज्ञा पुं० धड़ाक। पड़ाक। 'भदभद' शब्द के साथ गिरना।

भबेरा, भबेस—वि० भद्दा। कुरूप।
भबैल†—संज्ञा पुं० मेंढक।
भदौंह†—वि० भादों के मास में होनेवाला।
भद्दा—वि० [स्त्री० भद्दी] जो देखने में अच्छा न लगे। खराब। बुरा। कुरूप। बेढंगा। अश्लील।
भद्दापन—संज्ञा पुं० भद्दा होने का भाव।
भद्र—वि० . शिष्ट। भला। सभ्य। सुशिक्षित। २. भलाई करनेवाला। कल्याणकारी। ३. श्रेष्ठ। ४. साधु।
संज्ञा पुं०•१. मंगल। कल्याण। २. सिर, दाढ़ी, मूछ आदि सब का मुंडन।
भद्रकार—वि० कल्याण करनेवाला।
भद्रकाली—संज्ञा स्त्री० दुर्गादेवी। काली। महामाया।
भद्रता—संज्ञा स्त्री० भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।
भद्रश्री—संज्ञा स्त्री० १. मंगल। २. शोभा। श्री। ३. चन्दन। ४. केसर। ५. कुंकुम।
भद्रा—संज्ञा स्त्री० १. फलित ज्योतिष के अनुसार एक आरंभ योग। २. द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी आदि तिथियों की संज्ञा। ३. ज्योतिष के अनुसार ऐसा समय, जिसमें यात्रा या शुभ कार्य करने का निषेध हो। बाधा। ४. आकाशगंगा। ५. गाय। ६. दुर्गा। ७. पृथ्वी। ८. सुभद्रा का एक नाम।
भद्राश्व—संज्ञा पुं० जम्बूद्वीप के नौ खण्डों और वर्षों में से एक।
भद्रासन—संज्ञा पुं० मणियों से जटित राज-सिंहासन।
भद्रिका—संज्ञा स्त्री० १. दशा-विशेष। कल्याणी। २. कल्याण करनेवाली। ३. एक वर्णवृत्त।
भद्री—वि० १. भाग्यवान्। २. सामुद्रिक विद्या जाननेवाला।
भनक—संज्ञा स्त्री० १. धीमा शब्द। आहट। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।
भनकना*†—क्रि० स० कहना। बोलना।
भनना*—क्रि० स० कहना।
भनभनाना—क्रि० अ० भनभन शब्द करना। गुंजारना।
भनभनाहट—संज्ञा स्त्री० भनभनाने का शब्द। गुंजार।
भनित*—वि० दे० "भणित"। कहा हुआ। कथित। वर्णित। रचित।
भबका—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बन्द मुंह का घड़ा, जो शराब या अर्क उतारने में काम आता है।
क्रि० वि० उबला हुआ या उबलता हुआ।
भबकी—संज्ञा स्त्री० दे० "भभकी।" झूठी धमकी। घुड़की।
भभक—संज्ञा स्त्री० १. भभकने की क्रिया या भाव। उबाल। २. जोर से जलना। प्रज्वलन। ३. रह-रहकर आनेवाली दुर्गंध।
भभकना—क्रि० अ० [अनु०] १. उबलना। २. जोर से जलना। ३. खलबलाना। भड़कना। ४. बहुत क्रोध करना। ५. उबाल आने पर गिरना।
भभकाना—क्रि० स० १. जलाना। प्रज्वलित करना। २. गिराना।
भभकी—संज्ञा स्त्री० घुड़की। झूठी धमकी।
भभ्भड़—संज्ञा स्त्री० १. भीड़भाड़। होहल्ला। भीड़ और शोर-गुल। २. अव्यवस्था।
भभर—संज्ञा पुं० १. डर। खटका। २. भीड़-भाड़। ३. घबराहट। उद्वेग। व्याकुलता।
भभरना*†—क्रि० अ० १. भयभीत होना। डरना। २. घबरा जाना। भ्रम में पड़ना।
भभूका—संज्ञा पुं० ज्वाला।
वि० सुन्दर। स्वच्छ। साफ।
भभूत—संज्ञा स्त्री० दे० "भस्म"। यज्ञ या पूजा में हवन करने पर बची हुई राख, जिसे साधु या पूजापाठ करनेवाले अपने मस्तक या बाहँ में लगाते हैं।
भयंकर—वि० डरावना। भय या डर पैदा करनेवाला। भयानक। उग्र। विकट।
भयंकरता—संज्ञा स्त्री० भय पैदा करने या भयंकर होने का भाव। डरावनापन। भीषणता। उग्रता।
भय—संज्ञा पुं० डर। खौफ। त्रास। आशंका।
मुहा०—भय खाना=डरना।
भयकर—वि० [स्त्री० भयकरी] दे० "भयंकर"।

भयग्रस्त–वि० भयभीत। डरा हुआ। डर के के कारण दुखी।

भयद या **भयदा**–वि० डरावना। भयानक।

भयप्रद–वि० डरावना। भय उत्पन्न करनेवाला। भयानक।

भयनाशन–संज्ञा पुं० १. डर दूर करनेवाला। २. विष्णु। ३. दुख दूर करनेवाला।

भयभीत–वि० डरा हुआ।

भयमोचन–वि० डर दूर करनेवाला। निर्भय करनेवाला। दुखों को दूर करनेवाला (ईश्वर के लिए)।

भयवाद–संज्ञा पुं० एक ही गोत्र या वंश के लोग। भाई-बन्धु। भाईचारा।

भयहारी–वि० डर दूर करनेवाला।

भया*†–वि० दे० "हुआ"।

भयाकुल–वि० भयभीत। डरा हुआ।

भयातुर–वि० भय से व्याकुल। डर से घबराया हुआ। डरा हुआ। डरपोक। भयभीत।

भयान*†–वि० डरावना। भयानक।

भयानक–वि० डरावना। जिससे डर लगता हो। डर उत्पन्न करनेवाला। भीषण। भयंकर।

संज्ञा पुं० साहित्य में नौ रसों में छठा रस, जिसमें भयप्रद दृश्यों का वर्णन होता है।

भयाना*†–क्रि० अ० डरना।

क्रि० स० डराना। भयभीत करना।

भयावन†–वि० डरावना।

भयावह–वि० डरावना। भयंकर।

भय्या–संज्ञा पुं० भाई। भ्राता।

भरंत*†–संज्ञा स्त्री० भ्रांति। संदेह।

भर–वि० पूरा। सब। कुल।

*†क्रि० वि० बल से। द्वारा।

संज्ञा पुं० १. दे० "भार"। बोझ। वजन। २. दे० "भराव"। पुष्टि। ३. हिन्दुओं की एक छोटी जाति।

भरकना*†–क्रि० अ० दे० "भड़कना"।

भरका–संज्ञा पुं० पहाड़ों अथवा जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर डाकू छिप जाते हैं।

[illegible]†–संज्ञा पुं० मस्तक।

[illegible] पुं० १. कुम्हार। २. नौकर।

भरण–संज्ञा पुं० १. पालन। पोषण। निर्वाह। २. पूर्ति। पूरा करने का कार्य। ३. भर्त्ती। ४. वेतन।

भरणी–संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र। तीन तारों के कारण इसकी आकृति त्रिकोण-सी है।

वि० भरण या पालन करनेवाला।

भरणीय–वि० भरण करने योग्य। पालन-पोषण करने लायक। पूरा करने योग्य।

भरण्य–संज्ञा पुं० १. मूल्य। २. वेतन।

भरण्यु–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. मित्र।

भरत–संज्ञा पुं० १. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई, जिनका विवाह मांडवी के साथ हुआ था। २. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र, जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था। इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है। ३. दे० "जड़-भरत"। ४. एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य्य माने जाते हैं। ५. संगीत-शास्त्र के एक आचार्य्य का नाम। ६. नाटकों में अभिनय करनेवाला। नट। ७. प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश, जिसका उल्लेख वाल्मीकि-रामायण में है। ८. काँसा नामक धातु। कसकुट।

भरतखंड–संज्ञा पुं० भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।

भरता–संज्ञा पुं० चोखा। एक प्रकार का नमकीन सालन, जो बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जाता है।

मुहा०—भरता होना=दब जाने आदि से एकदम पिस या पिचक जाना, नष्ट या विकृत हो जाना। भरता कर दूँगा=मार कर चौपट कर दूंगा।

भरतार–संज्ञा पुं० दे० "भर्त्तार" या "भर्त्ता"। पति। खसम।

भरती–संज्ञा स्त्री० १. भरे जाने का भाव। भरा जाना। २. प्रवेश होना। दाखिल होना। ३. सेना में सैनिकों का लिया जाना। ४. शामिल करने का कार्य। ५. माल लादने की नाव।

मुहा०—भरती का=बहुत ही साधारण या रद्दी ।

भरत्थ*†–संज्ञा पुं० दे० "भरत" ।

भरथरी–संज्ञा पुं० दे० "भर्तृहरि" ।

भरद्वाज–संज्ञा पुं० १. एक वैदिक ऋषि, जो गोत्र-प्रवर्त्तक और मंत्रकार थे। ये राजा दिवोदास के पुरोहित और सप्तर्षियों में से भी एक माने जाते हैं। २. इन ऋषि के वंशज या गोत्रवाले। ३. एक पक्षी।

भरन–संज्ञा पुं० १. भरण। पूर्ति। पालन। २. घोषणा।

भरना–क्रि० स० १. पूरा करना। २. उँडेलना। उलटना। डालना। ३. ऋण चुकाना या हानि की पूर्त्ति करना। चुकाना। देना। ४. तोप या बंदूक आदि में गोली-बारूद आदि डालना। ५. पद पर नियुक्त करना। खाली स्थान को पूरा करना। ६. गुप्त रूप से किसी की निंदा करना। ७. निर्वाह करना। निबाहना। ८. काटना। डसना। ९. सहना। झेलना। १०. सारे शरीर में लगाना। पोतना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। उँडेला या डाला जाना। २. तोप या बंदूक आदि में गोली-बारूद आदि का होना। ३. ऋण चुकाना। ४. मन में क्रोध होना। असंतुष्ट या अप्रसन्न रहना। ५. घाव में पीव आना। ६. किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करना। ७. शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना।

संज्ञा पुं० १. भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

भरनि*†–संज्ञा स्त्री० पहनावा। पोशाक।

भरनी–संज्ञा स्त्री० १. भरनेवाली। पूरा करने वाली। २. एक नक्षत्र। ३. करघे में की ढरकी। नार।

भरपाई–क्रि० वि० पूर्ण रूप से। भली भाँति।

संज्ञा स्त्री० १. जो कुछ बाकी हो, उसे पूरा-पूरा पाना या चुकता करना। २. चुकाने का भाव। ३. कुल बाकी चुकाने पर दी जानेवाली रसीद ।

भरपूर–वि० पूरी तरह से भरा हुआ। पूरा-पूरा। जिसमें कोई कमी न हो। परिपूर्ण।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह ।

भरभराना–क्रि० अ० १. छिड़कना। भुरभुराना। छींटना। २. फूलना। सूजना। ३. रोएँ खड़े होना। ४. घबराना ।

भरभटा*†–संज्ञा पुं० सामना। मुकाबला। मुठभेड़ ।

भरम*†–संज्ञा पुं० १. दे० "भ्रम"। संदेह। भूल। धोखा। २. भेद। रहस्य ।

भरमना*†–क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। भटकना। २. घूमना। चलना। फिरना। मारा-मारा फिरना।

संज्ञा स्त्री० भ्रम। भूल। गलती। धोखा।

भरमाना–क्रि० स० १. भ्रम में डालना। बहकाना। ठगना। २. भटकाना। व्यर्थ इधर-उधर घुमाना।

क्रि० अ० चकित होना। हैरान होना।

भरमार–संज्ञा स्त्री० अत्यंत अधिकता। बहुत अधिक। ज्यादती ।

भरमीला–वि० १. भरमानेवाला। बहकानेवाला। भ्रमोत्पादक। २. सन्देह करनेवाला। संशयी। ३. सन्देह उत्पन्न करनेवाला।

भरराना–क्रि० अ० [अनु०] १. भरर शब्द करना या होना। भरर शब्द के साथ गिरना। २. दे० "भहराना"। अरराना। टूट पड़ना।

भरवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "भराई"। भरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। जैसे पानी भराने की मजदूरी।

भरवाना–क्रि० स० भरने का काम दूसरे से कराना। पूरा कराना।

भरसक–क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। यथाशक्ति।

भरसन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"। निंदा।

भरसाईं–संज्ञा पुं० दे० "भाड़"।

भरहरना–क्रि० अ० दे० "भरभराना"।

भरहराना–क्रि० अ० भहराना। एकाएक ऊपर से गिरना।

भराँति*–संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रांति"।

भराई–संज्ञा स्त्री० भरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भराना–क्रि० स० दे० "भरवाना"। पूरा कराना। खाली चीज को पूरा कराना।

भरापूरा–वि० १. परिपूर्ण। सम्पन्न। २· स्वस्थ। हृष्टपुष्ट।
भराव–संज्ञा पुं० १. भरने का काम या भाव। २. भरा हुआ अंश या भाग। ३. भरती। भरा या भरपूर होने का भाव।
भरावट–संज्ञा स्त्री० पूर्णता। भरती।
भरित–वि० भरा हुआ।
भरी–संज्ञा स्त्री० दस माशे या एक रुपए के बराबर एक तौल।
भरु*–संज्ञा पुं० भार। बोझ। वजन।
भरुका†–संज्ञा पुं० चुक्कड़। पुरवा।
भरुहाना†–क्रि० अ० घमंड करना। अभिमान करना।
क्रि० स० १. बहकाना। धोखा देना। २. उत्तेजित करना। बढ़ावा देना।
भरेठ–संज्ञा पुं० दरवाजे के ऊपर की लकड़ी।
भरैया†–वि० भरनेवाला। पालन-पोषण करनेवाला। पालक। रक्षक।
भरोठा–संज्ञा पुं० बोझा।
भरोसा–संज्ञा पुं० १. आसरा। सहारा। अवलंब। आश्रय। २. आशा। उम्मीद। ३. विश्वास।
भरौना†–वि० वजनी। भारी। बोझल।
भर्ग–संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. सूर्य का तेज। ज्योति। दीप्ति।
भर्त्ता–संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. पति। मालिक। खाविन्द। ३. विष्णु। ४. भरण-पोषण या पालन करनेवाला। रक्षक। प्रतिपालक।
भर्त्तार–संज्ञा पुं० पति। स्वामी।
भर्त्ती–संज्ञा स्त्री० पूर्त्ति। शामिल करने का कार्य।
भर्तृहरि–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि। इनके बनाए श्रृंगार, वैराग्य और नीति, ये तीन शतक प्रसिद्ध हैं।
भर्त्सक–संज्ञा पुं० निन्दा या तिरस्कार करनेवाला। निन्दक।
भर्त्सना–संज्ञा स्त्री० १. निंदा। शिकायत। २. तिरस्कार। डाँट-डपट।
भर्म*†–संज्ञा पुं० दे० "भ्रम"।
भर्मन*†–संज्ञा पुं० दे० "भ्रमण"।
भर्रा–संज्ञा पुं० झाँसापट्टी। अपना काम निकालने के लिए डराना-धमकाना या बहकाना।
भर्राना–क्रि० अ० भर्र-भर्र शब्द होना।
भर्सन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।
भल–संज्ञा पुं० १. दे० "भला"। अच्छा। २. अवश्य। जरूर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।
यौ०–भला आदमी=सज्जन। शरीफ।
भलका†–संज्ञा पुं० तीर का फल। गाँसी।
भलपति–संज्ञा पुं० १. भाला रखनेवाला। २. भाला चलानेवाला सैनिक।
भलमनसत, भलमनसी–संज्ञा स्त्री० सज्जनता। शराफत। भलेमानस होने का भाव।
भलमनसाहत–संज्ञा स्त्री० सज्जनता। शराफत।
भला–वि० १. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। बढ़िया। २. सज्जन। शरीफ।
संज्ञा पुं० १. कल्याण। कुशल। भलाई। २. लाभ।
अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. "नहीं" का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में रखा जाता है।
यौ०—भला-बुरा=उलटी-सीधी बात। अनुचित बात। डाँट-फटकार। हानि और लाभ।
मुहा०—भले ही=ऐसा हुआ करे। इससे कोई हानि नहीं। अच्छा ही है।
भलाई–संज्ञा स्त्री० उपकार। नेकी। भले होने का भाव। भलापन। अच्छाई।
भलापन–संज्ञा पुं० १. सज्जनता। २. अच्छाई। भलाई।
भले–क्रि० वि० भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।
अव्य० खूब। वाह।
भलेरा*†–संज्ञा पुं० दे० "भला"।
भल्ल–संज्ञा पुं० १. भाला। बर्छा। २. भालू।
भल्लक–संज्ञा पुं० १. भालू। २. इंगुदी। ३, भिलावाँ। ४. एक चिड़िया।
भल्लाक्ष–वि० मंददृष्टि।
भल्लुक–संज्ञा पुं० भालू या भल्लूक।
भवँ–संज्ञा स्त्री० भौंह। आँख के ऊपर के बाल।
भवंग या भवंगा*–संज्ञा पुं० साँप।

भव–संज्ञा पुं० १. संसार। जगत्। २. सत्ता। ३. उत्पत्ति। जन्म। ४. शिव। ५. मेघ। बादल। ६. कुशल। ७. डर। भय। ८. कामदेव। ९. जन्म-मरण का दुःख।
वि० १. शुभ। कल्याणकारक। २. जन्मा हुआ। उत्पन्न।

भवचाप–संज्ञा पुं० शिवजी के धनुष का नाम। पिनाक।

भवजाल–संज्ञा पुं० संसार का जाल या संसार-रूपी जाल, अर्थात् संसार की मोहमाया। दुनिया की झंझट या बखेड़ा। सांसारिक कष्ट और दुख। आवागमन का चक्कर।

भवदीय–सर्व० आपका। तुम्हारा।

भवधरण–संज्ञा पुं० परमेश्वर। संसार का भरण-पोषण करनेवाले।

भवन–संज्ञा पुं० १. महल। प्रासाद। २. बड़ा मकान। ३. जगत्। संसार। ४. जन्म। उत्पत्ति। ५. घर। रहने का स्थान।

भवना*†–क्रि० अ० घूमना। भ्रमण करना।

भवनी–संज्ञा स्त्री० स्त्री। गृहिणी।

भवबंधन–संज्ञा पुं० सांसारिक दुःख और कष्ट। संसार की मोहमाया। आवागमन का चक्कर।

भव-भंजन–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। सांसारिक बन्धनों को तोड़नेवाला, अर्थात् सांसारिक दुख और कष्ट दूर करनेवाला। २. काल।

भवभय–संज्ञा पुं० संसार में बार-बार जन्म लेने और मरने का भय।

भवभामिनी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।

भवभूति–संज्ञा पुं० संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, जो ईसा की ८वीं शताब्दी में हुए थे। इनके तीन नाटक (मालती-माधव, उत्तर-राम-चरित और महावीर-चरित्र) बहुत प्रसिद्ध हैं।

भवभोग–संज्ञा पुं० संसार के सुखों का आनन्द।

भवमोचन–वि० संसार के बंधनों से छुड़ाने या मुक्त करनेवाला। भगवान्। ईश्वर।

भवरुत–संज्ञा पुं० मृतक की अन्त्येष्टि के समय बजाया जानेवाला प्राचीन काल का एक बाजा।

भववामा–संज्ञा स्त्री० पार्वती।

भवविलास–संज्ञा पुं० १. सांसारिक सुखों का उपभोग। २. माया। ३. संसार के सुख, जो अज्ञान के कारण उत्पन्न होते हैं।

भवशूल–संज्ञा पुं० सांसारिक दुख।

भवसंभव–वि० सांसारिक।

भवसागर–संज्ञा पुं० १. संसार-रूपी सागर। २. संसार को समुद्र की तरह विस्तृत और संकटपूर्ण समझने का भाव।

भवाँ‡–संज्ञा स्त्री० फेरी। भौंरी। चक्कर।

भवाँना†–क्रि० स० घुमाना। फिराना।

भवा–संज्ञा स्त्री० पार्वती। दुर्गा।

भवाचल–संज्ञा पुं० कैलाश पर्वत।

भवानी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। काली। शिव की स्त्री। पार्वती।

भवाब्धि–संज्ञा पुं० संसार-रूपी सागर।

भवार्णव–संज्ञा पुं० संसार-रूपी समुद्र। संसार-सागर।

भवित–वि० बीता हुआ।

भवितव्य–संज्ञा पुं० होनहार। भावी। होनेवाला।

भवितव्यता–संज्ञा स्त्री० १. होनी। भावी। होनहार। २. भाग्य। किस्मत।

भविष्णु–संज्ञा पुं० होनेवाला। होनहार। भावी।

भविष्य–वि० आनेवाला समय। होनेवाला। होनहार। भवितव्यता।

भविष्यत्–संज्ञा पुं० भविष्य। आनेवाला समय।

भविष्यद्वक्ता–संज्ञा पुं० ज्योतिषी। भविष्य में होनेवाली बात को बतानेवाला। भविष्य-वाणी करनेवाला। होनहार जाननेवाला।

भविष्यद्वाणी–संज्ञा स्त्री० भविष्य में होनेवाली बात, जो पहले से ही कह दी गई हो।

भवीला*†–वि० १. भावयुक्त। भावपूर्ण। २. तिरछा। बाँका।

भवेश–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

भव्य–वि० (संज्ञा स्त्री० भव्यता) १. शानदार। सुन्दर। २. शुभ। मंगल-सूचक। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। ४. भविष्य में होनेवाला।

भव्या–संज्ञा स्त्री० उमा। पार्वती।

भस–संज्ञा पुं० १. भस्म। राख। २. किसी असह्य गंध।

भसकना–क्रि० स० गिरना। पड़ना। फाँकना।

भसना†–क्रि० अ० १. पानी के ऊपर तैरना। २. पानी में डूबना। ३. ढहना।

भसम–संज्ञा पुं० दे० "भस्म"।

भसमा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खिजाब।

भसान†–संज्ञा पुं० १. काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना। २. धँसने या ढहने का भाव।

भसाना†–क्रि० स० १. किसी चीज को पानी में गिराना। २. ढहाना।

भसिंड या भसींड–संज्ञा स्त्री० कमल की जड़। कमलनाल। मृणाल।

भसुंड–संज्ञा पुं० हाथी। गज।
वि० मोटा-ताजा

भसुर–संज्ञा पुं० पति का बड़ा भाई। जेठ।

भस्म–संज्ञा पुं० राख। यज्ञ या पूजा में हवन करने पर बची हुई राख। भभूत।
वि० जो जलकर राख हो गया हो।

भस्मक–संज्ञा पुं० एक रोग, जिसमें अधिक खाने पर भी कमजोरी बढ़ती जाती है।

भस्मता–संज्ञा स्त्री० भस्म होने का गुण या भाव।

भस्मप्रिय–संज्ञा पुं० शिव।

भस्मस्नान–संज्ञा पुं० हवन की राख से नहाना, अर्थात् शरीर में राख पोतना।

भस्मासुर–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य, जिसने तप करके शिवजी से यह वर माँगा था कि वह जिसके ऊपर हाथ रखे, वह जलकर मर जाय।

भस्मित–वि० जला हुआ।

भस्मीभूत–वि० जो जलकर राख हो गया हो। बिलकुल जला हुआ।

भहराना–क्रि० अ० १. टूट पड़ना। २. एका-एक गिर पड़ना।

भाँउँ*–संज्ञा पुं० १. दे० "भाव"। विचार या अभिप्राय। २. भाँवरी। घुमाव।

भाँउर–संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँउरि‡–संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँग–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध बूटी, जिसकी पत्तियाँ पीसकर पीने से नशा होता है।
मुहा०—भाँग खा जाना या पी जाना=नशे की-सी या पागलपन की बातें करना। घर में भूँजी भाँग न होना=घर में फूटी कौड़ी न होना। बहुत गरीब होना।

भाँज–संज्ञा स्त्री० १. भाँजने या घुमाने की क्रिया। २. वह धन, जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई। ३. ऐंठना। बल। मोड़। ४. ताने का सूत।

भाँजना–क्रि० स० १. तह करना। मोड़ना। ऐंठना। बल देना। २. मुगदर आदि घुमाना (व्यायाम)।

भांजा†–संज्ञा पुं० बहन का बेटा।

भांजी–संज्ञा स्त्री० १. बहन की बेटी। २. शिकायत। चुगली। ३. किसी के काम में रुकावट डालनेवाली बात।

भाँटा†–संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।

भाँड़–संज्ञा पुं० १. गाने-नाचने और हास्यपूर्ण नकलें उतारने का पेशा करनेवाले व्यक्ति (विशेषकर बारात की महफिलों आदि में गिरोह के रूप में गाते-बजाते हैं)। मसखरा। २. बेहया। नंगा। ३. दे० "भाँडा"। ४. दे० "भंडाफोड़"। ५. उपद्रव। ६. नाश। बर्बादी।

भाँड़ना*†–क्रि० अ० व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना।
क्रि० स० १. किसी को बहुत बदनाम करते फिरना। गाली देना। २. नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाड़ना।

भाँडा–संज्ञा पुं० बरतन। पात्र। मिट्टी का बड़ा बरतन। मटका।
मुहा०—भाँड़े भरना=पश्चात्ताप करना। पछताना।

भांडागार–संज्ञा पुं० भंडार। कोष। खजाना।

भांडागारिक–संज्ञा पुं० भंडारी। भंडार की देखभाल करनेवाला।

भांडार–संज्ञा पुं० बहुत अधिक मात्रा में किसी चीज के रखने का स्थान। भंडार। खजाना। कोष। वह कोठरी या कमरा, जिसमें अनाज इकट्ठा करके रखा जाता हो। गोदाम। (अंग्रे०–स्टाक या स्टोर)।

भांडारपंजी–संज्ञा स्त्री० भांडार में रहने-वाली चीजों की सूची और उनके आने

तथा भेजे जाने का हिसाब लिखने की पुस्तक, बही या पंजी। (अंग्रे०—स्टाक बुक)।

भांडारपाल—संज्ञा पुं० भांडार की देख-रेख करनेवाला। भांडार का प्रधान अधिकारी। (अंग्रे०—स्टोरकीपर)।

भांडारिक—संज्ञा पुं० दे० "भंडारी"। बेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भंडार रखनेवाला। (अंग्रे०—स्टाकिस्ट)

भांडिक—संज्ञा पुं० तुरुही आदि बजाकर राजाओं को जगानेवाला व्यक्ति।

भांडिल—संज्ञा पुं० हज्जाम। नाऊ।

भांडिलशाला—संज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ पर हजामत बनवाई जाती है।

भाँड़ैती—संज्ञा स्त्री० स्वाँग।

भाँति—संज्ञा स्त्री० तरह। प्रकार। रीति। किस्म।

भाँपना†—क्रि० स० १. देखते ही समझ जाना। ताड़ना। २. जानना। पहचान जाना। ३. अटकल लगाना।

भाँय-भाँय—संज्ञा पुं० सुनसान स्थान या सन्नाट में होनेवाला शब्द।

भाँरी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँवना†—क्रि० स० सुन्दर बनाना। खरादना। कुनना।

भाँवर—संज्ञा स्त्री० चारों ओर घूमना। परिक्रमा। अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं। भाँवरी। संज्ञा पुं० दे० "भौंरा"।

भाँवरी—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भांस†—संज्ञा स्त्री० आवाज। शब्द। दे० "भास"।

भा—संज्ञा स्त्री० १. चमक। २. शोभा। छटा। ३. किरण। ४. बिजली।

*†अव्य० चाहे। यदि इच्छा हो। या।

भाइ*†—संज्ञा पुं० १. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. स्वभाव। विचार। संज्ञा स्त्री० १. भाँति। २. चाल-ढाल। रंग-ढंग।

भाइप*†—संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।

भाई—संज्ञा पुं० १. एक ही माता पिता से उत्पन्न व्यक्तियों में एक के लिए दूसरा व्यक्ति। भ्राता। सहोदर। बंधु। २. माता या पिता के कुल की उसी पीढ़ी का दूसरा व्यक्ति। जैसे चचेरा या फुफेरा भाई। ३. बराबरवालों के लिए एक प्रकार का संबोधन।

भाईचारा—संज्ञा पुं० भाई के समान होने का भाव और व्यवहार। भाई का सम्बन्ध। बन्धुत्व। भ्रातृत्व।

भाई दूज—संज्ञा स्त्री० यमद्वितीया। कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भैया दूज।

भाईबंद—संज्ञा पुं० एक ही वंश के व्यक्ति। भाईबिरादरी। भाई और मित्र-बंधु आदि।

भाईबिरादरी—संज्ञा स्त्री० एक ही जाति या समाज के लोग।

भाउ*†—संज्ञा पुं० १. दे० "भाव"। विचार। २. प्रेम। ३. प्रवृत्ति। ४. उत्पत्ति। जन्म।

भाऊ*—संज्ञा पुं० १. दे० "भाव"। प्रेम। स्नेह। २. भावना। वृत्ति। विचार। स्वभाव। ३. हालत। अवस्था। ४. महत्त्व। महिमा। ५. रूप। आकृति। शक्ल। स्वरूप। ६. सत्ता।

भाए*†—क्रि० वि० समझ में। समझ के मुताबिक। बुद्धि के अनुसार।

भाकुर—वि० भद्दा और डरावना। हौआ।

भाखना*†—क्रि० स० कहना।

भाखर†—संज्ञा पुं० पहाड़।

भाखा‡—संज्ञा स्त्री० दे० "भाषा"। बोली।

भाग—संज्ञा पुं० १. हिस्सा। खंड। अंश। २. तरफ। ओर। ३. भाग्य। किस्मत। सौभाग्य। खुशनसीबी। ४. भाग्य का कल्पित स्थान, माथा। ललाट। ५. प्रातःकाल। भोर। ६. गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

भागड़—संज्ञा स्त्री० १. दे० "भगदड़"। पलायन। बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना। २. ऐसा स्थान, जहाँ नदी की बाढ़ का पानी बाढ़ के बाद इकट्ठा रह जाता हो।

भागदौड़—संज्ञा स्त्री० १. भगदड़। लोगों का घबराकर भागना। २. कोशिश। सिफारिश।

भागधेय—संज्ञा पुं० १. भाग्य। २. शुभकर्म। ३.

राजकर। राजस्व। दायाद। ४. सपिंड।
भागना–क्रि० अ० किसी स्थान से दौड़कर निकल जाना। पलायन करना। हट जाना। पीछा छुड़ाना। कोई काम करने से बचना।
मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना=बहुत तेजी से भागना।
भागफल–संज्ञा पुं० वह संख्या, जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि।
भागवंत†–वि० दे० "भाग्यवान्"।
भागवत–संज्ञा पुं० १. अठारह पुराणों में से एक पुराण। श्रीमद्भागवत। २. ईश्वर का भक्त। ३. १३ मात्राओं का एक छंद।
वि० भगवत्संबंधी। ईश्वर-संबंधी।
भागवान्–वि० दे० "भाग्यवान्"।
भागहर–वि० हिस्सेदार।
भागहार–संज्ञा पुं० (गणित में) भाग। तकसीम।
भागार्ह–वि० विभक्त करने योग्य।
भागिनेय–संज्ञा पुं० [स्त्री० भागिनेयी] बहन का लड़का। भानजा।
भागी–संज्ञा पुं० अधिकारी। हिस्सेदार। साझेदार। हकदार।
*वि० भाग्यवाला। भाग्यशाली।
यौ०–जैसे, बड़भागी।
भागीरथ–संज्ञा पुं० दे० "भगीरथ"।
भागीरथी–संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।
भागू–संज्ञा पुं० भगोड़ा। भागनेवाला।
भाग्य–संज्ञा पुं० वह अवश्यंभावी दैवी विधान, जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य्य पहले ही से निश्चित रहते हैं। भवितव्यता। प्रारब्ध। अदृष्ट। तकदीर। किस्मत। नसीब।
वि० हिस्सा करने के लायक।
भाग्यवन्त–वि० भाग्यवान्।
भाग्यवान्–वि० जिसका भाग्य अच्छा हो। सुखी और सम्पन्न। भाग्यशाली या सौभाग्यशाली। खुशकिस्मत। खुशनसीब।
भाग्यशाली–वि० अच्छे भाग्यवाला। भाग्यवान्।
भाग्यहीन–वि० अभागा। दुखी।
भाजक–वि० विभाग करनेवाला। बाँटनेवाला।
संज्ञा पुं० वह अंक, जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय। विभाजक (गणित)।
भाजकांश–संज्ञा पुं० वह संख्या, जिससे किसी राशि को भाग देने पर शेष कुछ न बचे।
भाजन–संज्ञा पुं० १. भाग देने की क्रिया। २. बरतन। आधार। ३. योग्य। पात्र।
भाजना*–क्रि० अ० १. दे० भागना। २. भूंजना। भूनना।
भाजित–वि० "विभक्त"।
भाजी–संज्ञा स्त्री० १. तरकारी, साग आदि। २. माँड़। ३. पीच। ४. बायना। बायन।
भाज्य–संज्ञा पुं० वह अंक, जिसमें भाग दिया जाता है।
वि० विभाग करने के योग्य।
भाट–संज्ञा पुं० [स्त्री० भाटिन] १. राजाओं का यशगान करनेवाला व्यक्ति। २. यह पेशा करनेवाली जाति। चारण। बंदी। ३. खुशामदी।
संज्ञा स्त्री० १. नदी का पेटा। नदी का किनारा। २. उतार। बहाव।
भाटक–संज्ञा पुं० भाड़ा। किराया।
भाटा–संज्ञा पुं० समुद्र के पानी के चढ़ाव का उतार। ज्वार का उल्टा। पानी का उतार की ओर जाना।
भाट्यौ*†–संज्ञा पुं० भाट का काम। भटैती। यशकीर्तन।
भाठ–संज्ञा स्त्री० १. नदी के प्रवाह के साथ बहकर आई हुई मिट्टी। २. धारा।
भाठा–संज्ञा पुं० १. दे० "भट्ठा"। ईंट पकाने का भट्ठा। २. दे० "भाटा"। समुद्र के चढ़ाव का उतराव। ३. गड्ढा।
भाठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भट्ठी"।
भाड़–संज्ञा पुं० भड़भूंजे की भट्ठी।
मुहा०—भाड़ झोंकना=तुच्छ या नगण्य काम करना। भाड़ में झोंकना या डालना=१. फेंकना। नष्ट करना। २. जाने देना।
भाड़ा–संज्ञा पुं० किराया। कहीं रहने या किसी सवारी पर चढ़ने के लिए दिया जानेवाला धन।
मुहा०—भाड़े का टट्टू=१. किराए पर या मजदूरी पर काम करनेवाला। २. केवल

धन के लालच में दूसरों का काम करने वाला।

भाण–संज्ञा पुं० १. नाटक के दस रूपकों में से हास्य-रस का एक प्रकार का रूपक, जो एक ही अंक का होता है। २. बहाना।

भात–संज्ञा पुं० १. पानी में पकाया हुआ चावल। २. विवाह की एक रसम, जिसमें कन्या-पक्ष वर-पक्षवालों को दाल-भात खिलाता है।

भाता–संज्ञा पुं० उपज का वह भाग, जो हल-वाले को खलियान में अन्न की राशि में से मिलता है।

वि० सुहावना। सुन्दर। मनभावन।

भाति–संज्ञा स्त्री० शोभा। कांति। चमक।

भाथा–संज्ञा पुं० १. तरकश। तूणीर। २. बड़ी भाथी।

भाथी–संज्ञा स्त्री० आग सुलगाने के लिए चमड़े की धौंकनी।

भादों–संज्ञा पुं० सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना। भाद्र। भाद्रपद। मुहा०—भादों की भरन=अधिक वर्षा। तेज झड़ी।

भाद्र, भाद्रपद–संज्ञा पुं० दे० "भादों"।

भाद्रपदा–संज्ञा स्त्री० एक नक्षत्रपुंज, जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।

भान–संज्ञा पुं० १. प्रकाश। चमक। २. जान पड़ना। ज्ञान। प्रतीति। आभास। बिना पुष्ट आधार का ज्ञान या अनुभव।

भानजा*†–संज्ञा पुं० [स्त्री० भानजी] बहन का लड़का।

भानना*†–क्रि० स० १. तोड़ना। भंग करना। नष्ट करना। मिटाना। दूर करना। काटना। २. समझना।

भानमती–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी। इन्द्रजाल करनेवाली स्त्री। नटनी। मुहा०—भानमती का पिटारा=बहुत-सी बेमेल चीजों का संग्रह। छोटे बक्स या थैले आदि में बहुत-सी चीजें, या छिपी हुई कुछ अजीब चीजें।

भानवी*–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भानवीया–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भाना*†–क्रि० अ० १. जान पड़ना। मालूम होना। २. अच्छा लगना। पसंद आना। ३. शोभा देना।

क्रि० स० चमकाना।

भानु–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २.किरण। ३.राजा।

भानुज–संज्ञा पुं० [स्त्री० भानुजा] १. यम। २. शनैश्चर।

भानुजा–संज्ञा स्त्री० यमुना। सूर्य्य की पुत्री।

भानुतनया–संज्ञा स्त्री० यमुना (सूर्य की पुत्री)।

भानुतनूजा–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भानुमत्–वि० प्रकाशमान। दीप्तियुक्त।

संज्ञा पुं० सूर्य।

भानुसुता–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भानेमि–संज्ञा पुं० सूर्य।

भाप–संज्ञा स्त्री० १. पानी का धुँएँ का रूप। २. पानी खौलने पर उसमें से निकलनेवाला धुँआँ। वाष्प। ३. भौतिक शास्त्रानुसार ठोस या तरल पदार्थों की वह अवस्था, जो उनके बहुत ताप पाने पर विलीन होने पर होती है।

भाभर–संज्ञा पुं० पहाड़ों के नीचे तराई का जंगल।

भाभरा*†–वि० लाल।

भाभरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] गरम राख।

भाभी–संज्ञा स्त्री० बड़े भाई की स्त्री। भौजाई।

भाम*–संज्ञा स्त्री० दे० "भामा"। स्त्री।

भामा–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

भामिनि, भामिनी–संज्ञा स्त्री० स्त्री। नाराज या कुपित स्त्री। स्त्री के लिए प्यार का सम्बोधन।

भामी–वि० क्रुद्ध।

संज्ञा स्त्री० क्रुद्ध स्त्री।

भाय‡–संज्ञा पुं० दे० "भाव"। भाई।

भायप–संज्ञा पुं० भाई-बन्धु होने का भाव या व्यवहार। दे० "भाईचारा"।

भाया–वि० प्रिय। प्यारा।

भार–संज्ञा पुं० १. दे० "तौल"। ढोने का बोझ। २. उत्तरदायित्व। किसी का धन

चुकाने, कोई काम करने या किसी चीज की रक्षा की जिम्मेदारी। ३. आश्रय। सहारा। मुहा०—भार उठाना=उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। भार उतारना=कर्त्तव्य के ऋण से मुक्त होना।

भारत–संज्ञा पुं० १. भरत नामक एक प्राचीन राजा के नाम पर एक देश जो उत्तर-दक्षिण हिमालय से कन्याकुमारी तक और पूर्व-पश्चिम पाकिस्तान के बीच स्थित है। भारतवर्ष (इंडिया)। २. भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ३. महाभारत का पूर्व रूप, जो २४ सौ श्लोकों का था। लंबी कथा। ४. बड़ी भारी लड़ाई।

भारतखंड–संज्ञा पुं० दे० "भारतवर्ष"।

भारतवर्ष–संज्ञा पुं० वह देश, जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। अब इसके कुछ पूर्वी और पश्चिमी भाग अलग करके पाकिस्तान बनाया गया है। इसका नाम केवल भारत हो गया है।

भारतवासी–संज्ञा पुं० भारत का रहनेवाला। भारत का नागरिक।

भारती–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. वचन। वाणी। ३. नाटक में एक वृत्ति, जिसके द्वारा रौद्र और बीभत्स रस का वर्णन किया जाता है। ४. ब्राह्मी बूटी। ५. दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

भारतीय–वि० भारत-संबंधी। भारत का। संज्ञा पुं० भारत का निवासी।

भारथ†*–संज्ञा पुं० १. दे० "भारत"। २. युद्ध। संग्राम।

भारथी–संज्ञा पुं० योद्धा।

भारद्वाज–संज्ञा पुं० १. भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २. द्रोणाचार्य्य। ३. भरदूल पक्षी। ४. एक ऋषि, जिनका रचा हुआ श्रौत सूत्र और गृह्य सूत्र है।

भारधारक–संज्ञा पुं० भार धारण करनेवाला। वह व्यक्ति, जिस पर कोई काम करने या किसी चीज की रक्षा करने का भार हो।

भार-प्रमाणक–संज्ञा पुं० वह प्रमाण-पत्र, जिससे यह पता चले कि किसी ने दूसरे को कार्य, पद आदि का भार सौंप दिया या ले लिया है।

भारना*†–क्रि० स० बोझ लादना। भार डालना। दबाना।

भारभृत–वि० भार धारण करनेवाला।

भारयष्टि–संज्ञा पुं० बहँगी।

भारव–संज्ञा पुं० धनुष की रस्सी। ज्या।

भारवाह, भारवाहक–वि० १. भार या बोझ ढोनेवाला। २. कार्यभार सँभालनेवाला। संज्ञा पुं० भोटिया। कहार।

भारवाहन–संज्ञा पुं० बोझ ढोने की क्रिया।

भारवाहिक–वि० भार ढोनेवाला।

भारवाही–संज्ञा पुं० [स्त्री० भारवाहिनी] १. भार या बोझा ढोनेवाला। २. कार्य-भार सँभालनेवाला।

भारवि–संज्ञा पुं० संस्कृत के एक प्राचीन कवि, जो किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता थे।

भारशिव–संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन शैव-सम्प्रदाय जिसके अनुयायी पाप दूर करने के लिए शिव की मूर्ति अपने सिर पर रखते थे। २. एक प्राचीन राजवंश।

भारा†–वि० दे० "भारी"। संज्ञा पुं० १. भाड़ा। किराया। २. बोझ।

भाराक्रांता–संज्ञा स्त्री० एक वर्णिक छंद।

भारावलंबकत्व–संज्ञा पुं० पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

भारी–वि० १. जिसमें बोझ हो। गुरु। बोझिल। २. कठिन। ३. विशाल। बड़ा। अधिक। अत्यंत। बहुत।। ४. सूजा हुआ। फूला हुआ। ५. प्रबल। ६. गंभीर। शांत। मुहा०—भारी भरकम=बड़ा और भारी।

भारीपन–संज्ञा पुं० भारी होने का भाव। गुरुत्व।

भारोपीय–वि० भारत और योरोप दोनों में समान रूप से पाया जानेवाला, एक मूल से उत्पन्न जाति-समूह या भाषावर्ग (विशेषकर भारतीय, पारसी, यूनानी, इटालियन आदि जातियों और भाषाओं के सम्बन्ध में प्रयुक्त)।

भार्गव–संज्ञा पुं० १. भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। परशुराम। २. हिसार और गुड़गाँव स्थान में रहनेवाली एक जाति।

वि० भृगु-संबंधी। भृगु का।
भार्गवी–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. लक्ष्मी।
भार्गवेश–संज्ञा पुं० परशुराम।
भार्य्या–संज्ञा स्त्री० पत्नी। स्त्री।
भार्य्याट–संज्ञा पुं० वह पुरुष, जो अपनी स्त्री किसी अन्य को भोग के लिए दे।
भार्यातिक्रम–संज्ञा पुं० १. स्त्री त्याग। २. स्त्री-नाश। ३. परस्त्री-गमन।
भाल–संज्ञा पुं० १. कपाल। ललाट। २. भाला। बरछा। ३. तीर का फल। गाँसी। ४. भालू। रीछ।
भालचंद्र–संज्ञा पुं० शिवजी।
भालना–क्रि० स० १. अच्छी तरह देखना। †२. ढूंढ़ना। तलाश करना।
भालनेत्र या **भाललोचन**–संज्ञा पुं० शिव।
भालवी–संज्ञा पुं० रीछ।
भालांक–संज्ञा पुं० १. शिव। २. एक अस्त्र।
भाला–संज्ञा पुं० बरछा। नेजा।
भालाबरदार–संज्ञा पुं० बरछा चलानेवाला।

भालि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भाली"।
भाली–संज्ञा स्त्री० १. भाले की नोक। २. बरछी। साँग। ३. शूल। काँटा।
भालुनाथ–संज्ञा पुं० दे० "जामवंत"।
भालू–संज्ञा पुं० रीछ। एक जंगली जानवर, जिसे पकड़कर मदारी नाचना और खेल करना सिखाते हैं।
भालैत–संज्ञा पुं० भाला या बरछा चलानेवाला।
भावंता*†–संज्ञा पुं० दे० "भावता"।
भाव–संज्ञा पुं० १. होना या होने की क्रिया। सत्ता या अस्तित्व। २. मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति। विचार। खयाल। कल्पना। अभिप्राय। मतलब। ३. मुख या अंगों की आकृति या चेष्टा। ४. चित्त। ५. पदार्थ। चीज। ६. प्रेम। ७. प्रकृति। स्वभाव। ८. ढंग। तरीका। ९. प्रकार। तरह। १०. अवस्था। दशा। ११. भावना। विश्वास। भरोसा। १२. आदर। प्रतिष्ठा। १३. बिक्री आदि का हिसाब। दर। निर्ख। १४. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति। १५. देखने से या और किसी प्रकार मन में उत्पन्न होनेवाला विकार। १६. नाच-गाने के विषय के अनुसार अंगों का संचालन। नाज। चोचला। नखरा।
मुहा०—भाव उतरना या गिरना=किसी चीज का मूल्य घट जाना। भाव चढ़ना=मूल्य बढ़ जाना। भाव बताना=अंगों या आकृति से मन के भाव प्रकट करना।
भावइ*†–अव्य० अगर मन भावै तो। जी चाहे तो। इच्छा हो तो।
भावक*–वि० भाव से भरा। भावपूर्ण। संज्ञा पुं० १. भावना करनेवाला। भाव-युक्त। २. भक्त। प्रेमी।
क्रि० वि० थोड़ा-सा। जरा-सा।
भावगम्य–वि० समझ में आने लायक। जानने योग्य।
भावग्राह्य–वि० समझ में आने योग्य।
भावज–संज्ञा स्त्री० भाई की स्त्री। भाभी।
भावज्ञ–वि० मन के भाव या विचार जाननेवाला। रहस्य जाननेवाला। मर्मज्ञ।
भावता–वि० [स्त्री० भावती] मन को अच्छा लगनेवाला। प्रिय। मनोहर। प्रियतम।
भाव-तस्व–संज्ञा पुं० १. किसी चीज का मूल्य या दर आदि। २. मोल-तोल। दाम ठीक करना। ३. रंग-ढंग।
भावन*†–वि० अच्छा लगनेवाला। मन को भानेवाला। प्रिय। मनोहर। सुन्दर।
भावना–संज्ञा स्त्री० १. विचार। खयाल। कल्पना। चित्त का एक भाव। इच्छा। चाह। २. वैद्यक के अनुसार औषध को किसी तरल पदार्थ में घोटना। पुट।
*क्रि० अ० अच्छा लगना। मन को भाना। वि० प्रिय। प्यारा।
भावनि*†–संज्ञा स्त्री० जो कुछ जी में आवे। इच्छानुसार कार्य।
भावनीय–वि० विचार करने योग्य।
भावप्रधान–वि० जिसमें भाव की प्रधानता हो या जिसमें भाव ही प्रधान हो।
भावप्रवण–वि० दे० "भावुक"।
भावभक्ति–संज्ञा स्त्री० १. आदर। सत्कार।

२. ईश्वर-भक्ति का भाव या भावना। उपासना।

भावली–संज्ञा स्त्री० जमींदार और असामी के बीच उपज की बँटाई।

भाववाचक–संज्ञा पुं० व्याकरण के अनुसार वह संज्ञा, जिससे किसी पदार्थ का गुण, दशा और व्यापार का बोध हो, जैसे भयंकरता।

भाववाच्य–संज्ञा पुं० व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप, जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है। भावप्रधान क्रिया। इसमें तृतीया की विभक्ति रहती है। जैसे—मुझसे बोला नहीं जाता।

भावविकार–संज्ञा पुं० भाव के दोष। जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश—ये ६ प्रकार के विकार हैं।

भावव्यंजक–वि० भाव प्रकट करनेवाला।

भावसंधि–संज्ञा स्त्री० दो विरुद्ध भावों का एक साथ वर्णन।

भावसत्य–वि० ऐसा सत्य, जो ध्रुव न होने पर भी भाव की दृष्टि से सत्य हो।

भावशबलता–संज्ञा स्त्री० कई एक भावों का एक साथ वर्णन।

भावाभाव–संज्ञा पुं० १. भाव और अभाव। २. उत्पत्ति और लय।

भावार्थ–संज्ञा पुं० १. मूल भाव। २. आशय। तात्पर्य। गूढ़ अर्थ।

भावित–वि० १. सोचा या विचारा हुआ। २. चिन्ताग्रस्त। चिन्तित। ३. सुगंधित या शुद्ध किया हुआ। ४. मिलाया हुआ। ५. समर्पित।

भाविता–संज्ञा स्त्री० होनहार।

भावित्र–संज्ञा पुं० त्रैलोक्य। तीनों लोक।

भाविश्या–संज्ञा स्त्री० होनहार।

भावी–संज्ञा स्त्री० १. भविष्यत् काल। आनेवाला समय। आगामी। २. भविष्य में होनेवाली बात। होनहार। भवितव्यता। भाग्य। तकदीर। भविष्य।

भावुक–वि० १. सोचनेवाला। २. सहृदय। जिस पर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो। ३. अच्छी बातें सोचनेवाला।

भावै†–अव्य० चाहे।

भाव्य–वि० १. सोचने योग्य। चिन्तनीय। २. भावी। होनहार। भवितव्य।

भाषण–संज्ञा पुं० व्याख्यान। वक्तृता। कथन। बातचीत।

भाषना*†–क्रि० अ० १. बोलना। कहना। बात करना। २. भोजन करना।

भाषांतर–संज्ञा पुं० अनुवाद। किसी एक भाषा में लिखी गई चीज का दूसरी भाषा में किया गया रूप या अनुवाद।

भाषा–संज्ञा स्त्री० १. मन के विचार दूसरों पर प्रकट करने के लिए मुख से उच्चरित शब्दों और वाक्यों आदि का समूह। बोली। जबान। २. किसी विशेष जन-समुदाय में प्रचलित बातचीत करने का ढंग। ३. आधुनिक हिंदी। ४. वाणी।

भाषाबद्ध–वि० भाषा के रूप में आया या लाया हुआ। साधारण बोल-चाल की भाषा में बना हुआ।

भाषी–संज्ञा पुं० बोलनेवाला।

भाषित–वि० कथित। कहा हुआ।

भाष्य–संज्ञा पुं० १. टीका। टिप्पणी। सूत्रों या ग्रंथों की व्याख्या या टीका। २. किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या।

भाष्यकार–संज्ञा पुं० सूत्रों की व्याख्या करनेवाला। भाष्य बनानेवाला।

भास–संज्ञा पुं० १. प्रतीत। झलक। आभास। २. दीप्ति। प्रकाश। चमक। ३. इच्छा। ४. किरण। ५. संस्कृत का प्राचीन नाटककार।

भासना–क्रि० अ० १. मालूम होना। प्रतीत होना। देख पड़ना। २. प्रकाशित होना। चमकना। ३. फँसना। लिप्त होना।

भासमान–वि० जान पड़ता हुआ। भासता हुआ। दिखाई देता हुआ।

भासित–वि० १. जान पड़ता हुआ। २. चमकीला। ३. प्रकाशित।

भास्कर–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. सुवर्ण। सोना। ३. आग। ४. वीर। ५. महादेव। ६. पत्थर पर नक्काशी करने की कला। वि० प्रकाश करनेवाला। चमकनेवाला। प्रदीप्त।

भास्वर–संज्ञा पुं० १. दिन। २. सूर्य्य।

वि० दीप्तियुक्त। चमकदार।

भिंग–संज्ञा पुं० १. दे० "भृंग"। भौंरा। २. बिलनी (कीड़ा)।

भिंगाना–क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिंगोरा–संज्ञा पुं० भृंगराज।

भिंजाना–क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिंडा–संज्ञा पुं० बड़ी सटक।
संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।

भिंडिपाल, भिंदिपाल–संज्ञा पुं० छोटा डंडा। (प्राचीन काल में इसे फेंक कर मारते थे।)

भिंडी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फली, जिसकी तरकारी बनती है।

भिंसार–संज्ञा पुं० प्रातःकाल। सबेरा।

भिक्षा–संज्ञा स्त्री० १. माँगना। भीख। २. दीनता दिखलाते हुए पेट के लिए याचना करना। ३. इस प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु। भीख।

भिक्षाक–संज्ञा पुं० भिक्षुक।

भिक्षाटन–संज्ञा पुं० भीख माँगने की फेरी।

भिक्षापात्र–संज्ञा पुं० वह पात्र, जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं। भिक्षा माँगने का बरतन।

भिक्षु–संज्ञा पुं० [स्त्री० भिक्षुणी] १. संन्यासी। २. बौद्ध-संन्यासी। ३. भीख माँगनेवाला। भिखारी।

भिक्षुक–संज्ञा पुं० भिखारी। भिखमंगा। याचक। भीख माँगनेवाला।

भिखमंगा–संज्ञा पुं० भीख माँगनेवाला। भिखारी। भिक्षुक।

भिखार–संज्ञा पुं० भिखमंगा। भिक्षुक।

भिखारिणी–संज्ञा स्त्री० भीख माँगनेवाली स्त्री। भिखमंगिन।

भिखारिन–संज्ञा स्त्री० दे० "भिखारिणी"।

भिखारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी] भिखमंगा। भिक्षुक। भीख माँगनेवाला।

भिगाना या **भिगोना**–क्रि० स० किसी चीज को पानी से तर करना। गीली करना।

भिच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।

भिच्छु–संज्ञा पुं० दे० "भिक्षु"।

भिजवना*†–क्रि० स० पानी से तर करना।

भिजवाना–क्रि० स० किसी को भेजने में प्रवृत्त करना। दूसरे से भेजने का काम कराना। दूसरे से कोई चीज पहुँचवाना।

भिजाना–क्रि० स० १. भिगोना। २. दे० "भिजवाना"।

भिजोना*†–क्रि० स० दे० "भिगोना"।

भिज्ञ–वि० जानकार। वाकिफ।

भिटनी–संज्ञा स्त्री० भेंटी। स्तन के आगे का भाग।

भिड़ंत–संज्ञा स्त्री० १. टक्कर। २. मुठभेड़। ३. संघर्ष। लड़ने अर्थात् टकराने की क्रिया या भाव।

भिड़–संज्ञा स्त्री० बर्रे। ततैया।

भिड़ज–संज्ञा पुं० भिड़नेवाला। शूरवीर।

भिड़ना–क्रि० अ० १. टक्कर खाना। टकराना। २. लड़ना-झगड़ना। लड़ाई करना। ३. सटना। मिलना।

भिड़ाना–क्रि० स० १. टकराना। लड़ाना। २. झगड़ा कराना।

भितल्ला–संज्ञा पुं० दोहरे कपड़े में भीतरी ओर का पल्ला। अस्तर।
वि० भीतर का। अंदर का।

भिताना*†–क्रि० स० डरना या डराना।

भित्ति–संज्ञा स्त्री० १. दीवार। भीत। २. वह पदार्थ, जिस पर चित्र बनाया जाय। चित्र खींचने का आधार। ३. भीति। डर। भय।

भित्तिचित्र–संज्ञा पुं० दीवार पर बनाया गया चित्र।

भित्ति-चित्रकला–संज्ञा स्त्री० दीवारों पर चित्र बनाने का कौशल।

भिद–संज्ञा पुं० दे० "भेद"। अंतर।

भिदना–क्रि० अ० १. छेदा जाना। २. अन्दर धँस जाना। घुस जाना। ३. घायल होना।

भिनकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भिन-भिन शब्द करना। मक्खियों का बैठना। २. घृणा उत्पन्न होना।

भिनभिनाना–क्रि० अ० भिन-भिन शब्द करना। भिनकना।

भिनसार†–संज्ञा पुं० सबेरा।

भिन्न–वि० अलग। पृथक्। जुदा। इतर। दूसरा। अन्य।

संज्ञा पुं० वह संख्या, जो एकाई से कुछ कम हो (गणित)।
भिन्नता–संज्ञा स्त्री० भिन्न होने का भाव। अलगाव। भेद। अंतर।
भिन्नत्व–संज्ञा पुं० भिन्नता। जुदाई।
भिन्नाना–क्रि० अ० १. सिर में चक्कर आना। सिर घूमना या ठनकना। २. दुर्गंध या बदबू आना। ३. नाराज हो जाना।
भिन्नाया†–क्रि० अ० डरना। भयभीत होना।
भियना*†–क्रि० स० दे० "भिड़ना"।
भिरिंग*†–संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।
भिलनी–संज्ञा स्त्री० भील जाति की स्त्री।
भिलावाँ–संज्ञा पुं० एक जंगली पेड़, जिसका जहरीला फल औषध के काम आता है।
भिल्ल–संज्ञा पुं० दे० "भील"।
भिश्ती–संज्ञा पुं० मशक-द्वारा पानी छिड़कने-वाला व्यक्ति।
भिषक्–संज्ञा पुं० वैद्य। चिकित्सक।
भिषज–संज्ञा पुं० वैद्य।
भींगना–क्रि० अ० गीला होना।
भींगा–वि० गीला। ओदा। तर।
भींगी–संज्ञा पुं० भँवरा।
भींचना†–क्रि० स० १. खींचना। कसना। २. दबाना। दे० "मीचना"।
भींजना*†–क्रि० अ० १. गीला होना। तर होना। भीगना। २. पुलकित या गद्‌गद हो जाना। ३. मेल-मिलाप पैदा करना। ४. नहाना। ५. समा जाना।
भी–अव्य० १. तथा। और। अपितु। २. अवश्य। ३. अधिक। ज्यादा। ४. तक। लौं।
संज्ञा स्त्री० भय। डर।
भीख–संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।
भीखन*–वि० दे० "भीषण।"
भीखम*–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीगना–क्रि० अ० पानी या और किसी तरल पदार्थ से तर होना। गीला होना।
भीजना†–क्रि० अ० दे० "भींगना"।
भीटा–संज्ञा पुं० १. ऊँची जमीन। टीला। २. खँडहर। गिरा हुआ पुराना घर या भीत। ३. ऊँची जमीन, जिस पर पान की खेती होती है।
भीड़–संज्ञा स्त्री० १. आदमियों का जमाव। जन-समूह। ठठ। समुदाय। २. संकट। आपत्ति। मुसीबत।
मुहा०—भीड़ छँटना=भीड़ के लोगों का इधर-उधर हो जाना। भीड़ न रह जाना।
भीड़ना*†–क्रि० स० मिलाना। लगाना। मलना।
भीड़भड़क्का–संज्ञा पुं० दे० "भीड़-भाड़"।
भीड़भाड़–संज्ञा स्त्री० भीड़। जन-समूह। आदमियों का जमघट।
भीड़ा†–वि० संकुचित। तंग।
भीत–संज्ञा स्त्री० भित्ति। दीवार।
वि० [स्त्री० भीता] डरा हुआ।
मुहा०—भीत में दौड़ना=अपनी सामर्थ्य से बाहर अथवा असंभव कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना=बे सिर-पैर की बात करना।
भीतर–क्रि० वि० अंदर। बीच। मध्य में। घर में।
संज्ञा पुं० घर के अन्दर का भाग। जनान-खाना। अन्तःपुर।
भीतरी–वि० भीतरवाला। अंदर का। छिपा हुआ। गुप्त।
भीति–संज्ञा स्त्री० १. भित्ति। दीवार। २. डर। भय। खौफ। ३. कंप।
भीती*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "भीति"। २. दे० "भित्ति"।
भीन*†–संज्ञा पुं० सवेरा।
भीनना–क्रि० अ० पूरी तरह भींग जाना। भर जाना। समा जाना। जैसे सुगंध से भर जाना।
भीम–संज्ञा पुं० १. पाँचों पाण्डवों में एक, जो युधिष्ठिर से छोटे और अर्जुन से बड़े थे। ये बहुत अधिक बलवान् थे। भीमसेन। २. भयानक रस। ३. शिव। ४. विष्णु। ५. महादेव की आठ मूर्त्तियों में से एक।
वि० भयानक। बहुत बड़ा और बलवान्।
भीमता–संज्ञा स्त्री० भयंकरता।
भीमपलासी–संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।
भीमर–संज्ञा पुं० युद्ध।
भीमराज–संज्ञा पुं० काले रंग की एक चिड़िया।

भीमसेन–संज्ञा पुं० पाँच पांडवों में से एक, जो युधिष्ठिर से छोटे और बहुत अधिक बलवान् थे। भीम।

भीमसेनी एकादशी–संज्ञा स्त्री० १. ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २. माघ शुक्ला एकादशी।

भीमसेनी कपूर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया कपूर। बरास।

भीर*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "भीड़"। २. कष्ट। दुःख। तकलीफ। विपत्ति। आफत। *वि० १. डरा हुआ। भयभीत। २. डरपोक कायर।

भीरना*–क्रि० अ० डरना।

भीरु–वि० कायर। डरपोक।

भीरुक–संज्ञा पुं० १. जंगल। २. उल्लू। वि० भीरु। डरपोक।

भीरुता–संज्ञा स्त्री० डर। भय। कायरता। बुजदिली।

भीरुताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता"।

भीरे*†–क्रि० वि० समीप। नजदीक। पास।

भील–संज्ञा पुं० [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति।

भीषण–वि० भयंकर। भयानक। डरावना। अत्यन्त उग्र या विकट।

भीषणता–संज्ञा स्त्री० डर उत्पन्न होने का भाव। भयंकरता। डरावनापन।

भीषन*–वि० दे० "भीषण"।

भीषम*–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

भीष्म–संज्ञा पुं० राजा शान्तनु के पुत्र, जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। भीष्म पितामह। गांगेय।
वि० भीषण। भयंकर।

भीष्मक–संज्ञा पुं० विदर्भ देश के एक राजा, जो रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्मपंचक–संज्ञा पुं० कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन।

भीष्म पितामह–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

भीसम*–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

भुइँ–संज्ञा स्त्री० दे० "भूमि।" पृथिवी।

भुइँफोर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।

भुइँहरा–संज्ञा पुं० भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया रहने का स्थान, घर या कमरा आदि। तहखाना।

भुँकाना–क्रि० स० किसी को भूँकने के लिए प्रेरित करना।

भुँजना†–क्रि० अ० दे० "भुनना"।

भुँजवा–संज्ञा पुं० भड़भूंजा।

भुँडा–वि० १. भोंड़ा। बिना सींग का (पशु)। २. दुष्ट। बदमाश।

भुअंग*†–संज्ञा पुं० दे० "साँप।" भुजंग।

भुअंगम*–संज्ञा पुं० साँप। भुजंगम।

भुअन*–संज्ञा पुं० दे० "भुवन"।

भुआल*–संज्ञा पुं० दे० "भूपाल।" राजा।

भुइँचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूचाल।"

भुइँडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूडोल।"

भुइँहार–संज्ञा पुं० दे० "भूमिहार"।

भुक*–संज्ञा पुं० १. भोजन। खाद्य। आहार। २. अग्नि। आग।

भुकड़ी–संज्ञा स्त्री० सड़ी हुई खाने की चीजों में निकलनेवाली एक तरह की सफेद और कुछ कालापन लिये हुए वनस्पति।

भुकराँध, भुकरायँध–संज्ञा स्त्री० सड़ायँध। सड़ने की बदबू। किसी चीज के सड़ने पर उसमें से आनेवाली दुर्गंधि, विशेषकर वनस्पति आदि सड़ने पर।

भुक्खड़–वि० १. भूखा। जिसे बहुत भूख लगी हो। २. पेटू। बहुत खानेवाला। ३. दरिद्र। कंगाल।

भुक्त–वि० १. खाया हुआ। भक्षित। २. भोगा हुआ। उपभुक्त।

भुक्तभोगी–वि० १. अनुभवी। जिसे पूरा अनुभव हो चुका हो। २. जो भुगत चुका हो। पूर्ण भोग करनेवाला।

भुक्ति–संज्ञा स्त्री० १. भोजन। आहार। २. लौकिक सुख। विषय-भोग।

भुक्तिप्रद–वि० भोग देनेवाला। भोगदाता।

भुखमरा–वि० जो भूख से मर रहा हो। भुक्खड़। पेटू।

भुखमरी–संज्ञा स्त्री० १. भूख से होनेवाली मृत्यु। २. अकाल। अन्न की कमी से या खाना न मिलने से लोगों की मृत्यु होने की परिस्थिति।

भुखाना‡–क्रि० अ० भूख से पीड़ित होना। भूखा होना ।
भुगत*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।
भुगतना–क्रि० स० भोगना। सहना। झेलना। क्रि० अ० १. पूरा होना। निबटना। २. बीतना। चुकना ।
भुगतान–संज्ञा पुं० १. देना। अदा करना । २. निपटारा। फैसला। ३. मूल्य या देन आदि चुकाना। बेबाकी।
भुगताना–क्रि० स० १. चुकाना। बेबाक करना। पूरा करना। २. बिताना। लगाना। ३. झेलना। ४. भोग कराना। ५. दुःख देना।
भुगाना–क्रि० स० दे० "भोगवाना"।
भुग्न–वि० टेढ़ा। रोगी।
भुच्चड़–वि० मूर्ख। बेवकूफ।
भुजंग–संज्ञा पुं० [स्त्री० भुजंगिनी] साँप।
भुजंगम–संज्ञा पुं० साँप।
भुजंगा–संज्ञा पुं० १. दे० "भुजंग"। साँप। २. काले रंग का एक पक्षी। भुजैटा।
भुजंगिनी–संज्ञा स्त्री० साँपिन। नागिन।
भुजंगी–संज्ञा स्त्री० साँपिन। नागिन।
भुजंगेन्द्र, भुजंगेश–संज्ञा पुं० साँपों का राजा। शेषनाग ।
भुज–संज्ञा पुं० १. हाथ। बाँह। २. हाथी की सूंड़। ३. पेड़ की शाखा या डाली। ४. किनारा। ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। त्रिभुज का आधार। ५. समकोणों का पूरक कोण। ६. दो की संख्या का बोधक शब्द या संकेत।
मुहा०—भुज में भरना=आलिंगन करना।
भुजकोटर–संज्ञा पुं० काँख।
भुजग–संज्ञा पुं० साँप।
भुजगपति–संज्ञा पुं० वासुकि नाग। शेषनाग।
भुजगेन्द्र, भुजगेश–संज्ञा पुं० शेषनाग।
भुजदंड–संज्ञा पुं० बाँह-रूपी दंड या हथियार।
भुजपात*–संज्ञा पुं० दे० "भोजपात्र"।
भुजपाश–संज्ञा पुं० गलबाँही । गले में हाथ डालना। आलिंगन। बाहुओं का बन्धन।
भुजप्रतिभुज–संज्ञा पुं० सरल क्षेत्र की आमने-सामने की भुजाएँ।
भुजबंद–संज्ञा पुं० बाजूबंद। बिजायठ। बाँह का एक गहना।
भुजबाथ*–संज्ञा पुं० गलबाँही । अँकवार।
भुजमूल–संज्ञा पुं० १. कंधा। २. काँख।
भुँजवा–संज्ञा पुं० भड़भूँजा।
भुजांतर–संज्ञा पुं० १. गोद। क्रोड़। २. छाती। वृक्ष। ३. दो भुजाओं का अन्तर।
भुजा–संज्ञा स्त्री० बाँह। हाथ।
मुहा०—भुजा उठाना या टेकना=प्रतिज्ञा करना।
भुजाना–क्रि० स० दे० "भुनाना"।
भुजाली–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की बड़ी टेढ़ी छुरी। कुकरी। खुखरी। २. छोटी बरछी।
भुजाग्र–संज्ञा पुं० हाथ के आगे का हिस्सा। हाथ।
भुजामूल–संज्ञा पुं० दे० "भुजमूल।"
भुजिया†–संज्ञा पुं० १. सूखी भुनी हुई तरकारी। २. उबाले हुए धान का चावल।
भुजिष्या–संज्ञा स्त्री० १. दासी। २. गणिका। वेश्या।
भुजेना†–संज्ञा पुं० भुजना। चबेना।
भुजैल–संज्ञा पुं० भुजंगा पक्षी।
भुजौना‡–संज्ञा पुं० १. भुना हुआ अन्न। भुजैना। २. भूनने या भुनाने की मजदूरी।
भुट्टा–संज्ञा पुं० १. मक्के की हरी बाल। २. ज्वार-बाजरे की बाल। ३. गुच्छा। धौद।
भुठौर–संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति-विशेष।
भुतहा–वि० १. भयावना। डरावना। २. भूत के समान। ३. भूत के रहने का स्थान।
भुथरा–वि० दे० "भोथरा।"
भुनगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० भुनगी] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।
भुनना–क्रि० अ० भूनना का अकर्मक रूप। भूना जाना। 'भुनाना' का अकर्मक रूप। भुन जाना। बड़े सिक्के का छोटे सिक्के में बदल जाना।
भुनभुनाना–क्रि० अ० १. भुन-भुन शब्द करना। २. मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना। बड़बड़ाना।
भुनाना–क्रि० स० बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों से बदलना। भँजाना। तुड़वाना।

भुखि*—संज्ञा स्त्री० भूमि। पृथ्वी।
भुरकना—क्रि० अ० १. सूखकर भुरभुरा हो जाना। २. भूलना।
क्रि० स० भुरभुराना। बुरकना।
भुरका—संज्ञा पुं० १. बुकनी। चूर्ण। २. कुज्जा।
भुरकाना—क्रि० स० १. भुरभुरा करना। २. छिड़कना। भुरभुराना। ३. भुलवाना। बहकाना।
भुरकी—संज्ञा स्त्री० १. अन्न रखने के लिए छोटा कोठिला। २. पानी का छोटा गड़वा। हौज। ३. छोटा कुल्हड़।
भुरकुटा—संज्ञा पुं० छोटा कीड़ा।
भुरकुन—संज्ञा पुं० १. चूर्ण। बुकनी। २. नष्ट-भ्रष्ट।
भुरकुस—संज्ञा पुं० १. चूर्ण। २. नष्ट-भ्रष्ट।
मुहा०—भुरकुस निकलना=१. चूर-चूर होना। इतनी मार खाना कि हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाय। २. नष्ट होना।
भुरता—संज्ञा पुं० १. दबकर या कुचलकर नष्ट हुई वस्तु। चकनाचूर हो जाना। २. चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुरा—वि० [स्त्री० भुरभुरी] कुरकुरा। जरा-सी चोट लगते ही चूर होनेवाला।
भुरभुराना—क्रि० अ० १. भुरभुरा करना। २. छिड़कना। फैलाना।
भुरवना, भुरवाना*†—क्रि० स० भुलवाना। भ्रम में डालना। फुसलाना।
भुराई*†—संज्ञा स्त्री० भोलापन।
संज्ञा पुं० भूरापन।
भुराना*†—क्रि० स० १. भूलना। भुलाना। २. भुलवाना।
भुलक्कड़—वि० जो बराबर भूल जाता हो। भूलनेवाला। जिसका स्वभाव भूलने का हो।
भुलभुला—संज्ञा पुं० गरम राख।
भुलवाना—क्रि० स० १. भ्रम में डालना। बहकाना। २. दे० "भुलाना"। खो देना।
भुलाना—क्रि० स० भ्रम में डालना। भुलवाना। बहकाना। भूलना। याद न करना। खो देना।
*†—क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। २. भटकना। भरमना। राह भूलना। ३. भूल जाना। विस्मरण होना।
भुलावा—संज्ञा पुं० बहकाना। छल। चक्कर। धोखा।
मुहा०—भुलावा देना=बहकाना। फुसलाना। भुलवाना।
भुवंग—संज्ञा पुं० दे० "भुजंग"। साँप।
भुवंगम—संज्ञा पुं० दे० "भुजंगम"। साँप।
भुवः—संज्ञा पुं० वह आकाश या लोक जो, भूमि और सूर्य्य के बीच में है। अंतरिक्ष-लोक।
भुव—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. स्वर्ग। आकाश।
संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। भूमण्डल। २ भौंह।
भुवन—संज्ञा पुं० १. संसार। जगत्। २. प्राणी। जीव। जन। लोग। ३. जल। ४. सृष्टि। लोक पुराणानुसार लोक चौदह हैं। भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात स्वर्गलोक हैं और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत्, महातल, रसातल और पाताल, ये सात पाताल हैं। ५. चौदह की संख्या का द्योतक शब्द-संकेत।
भुवनकोश—संज्ञा पुं० भूमंडल। पृथिवी। ब्रह्मांड।
भुवनपति—संज्ञा पुं० भूपति। राजा।
भुवनपावन—संज्ञा स्त्री० गंगा।
भुवनेश—संज्ञा पुं० ईश्वर। शिव।
भुवनेश्वर—संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. उड़ीसा में पुरी के पास एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। ३. भुवनेश्वर में स्थापित शिवजी की प्रधान मूर्ति।
भुवन्यु—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. अग्नि। ३. चन्द्रमा। ४. प्रभु।
भुवपाल*—संज्ञा पुं० दे० "भूपाल"। राजा।
भुवर्लोक—संज्ञा पुं० सात लोकों में दूसरा लोक। अंतरिक्ष लोक।
भुवा—संज्ञा पुं० घूआ। रुई।
भुवार*—संज्ञा पुं० दे० "भुवाल"।
भुवाल*—संज्ञा पुं० राजा। भूपाल।
भुवि—संज्ञा स्त्री० भूमि। पृथिवी।
भुशुंडी—संज्ञा पुं० दे० "काक भुशुंडी"।
संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन अस्त्र।
भुस—संज्ञा पुं० दे० "भूसा"। अनाज के डंठल का चूरा। चोकर।

भुसी*–संज्ञा स्त्री० भूसी।

भूँकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भूँ-भूँ या भौं-भौं शब्द करना (कुत्तों का)। कुत्तों की बोली। २. व्यर्थ बकना।

भूँचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूचाल"। भूकम्प।

भूँजना†–क्रि० स० १. भूनना। तलना। २. दुःख देना। सताना। ३. भोगना। भोग करना।

भूँजा†–संज्ञा पुं० १. भुना हुआ चबेना। २. भड़-भूँजा।

भूँडोल–संज्ञा पुं० भूडोल। भूकम्प।

भू–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। स्थान। भूमि। २. सत्ता। प्राप्ति। ३. यज्ञ की अग्नि।
संज्ञा पुं० रसातल।

भूकंप–संज्ञा पुं० कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा हिल उठना। भूचाल। भूडोल। जलजला।

भूख–संज्ञा स्त्री० १. खाने की इच्छा। क्षुधा। २. आवश्यकता। जरूरत। ३. कामना।

भूखन*–संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।

भूखना*†–क्रि० स० १. सजाना। भूषित करना। २. कोई चीज न खाना। व्रत रहना।

भूखहड़ताल–संज्ञा स्त्री० दे० "अनशन"। अपनी माँगें पूरी कराने के लिए भोजन छोड़ देने का हठ।

भूखा–वि० [स्त्री० भूखी] १. जिसे भूख लगी हो। क्षुधित। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. दरिद्र। गरीब।

भूगर–संज्ञा पुं० विष।

भूगर्भ–संज्ञा पुं० पृथ्वी का भीतरी भाग।

भूगर्भगृह–संज्ञा पुं० जमीन के नीचे बना हुआ मकान, कमरा आदि। तहखाना।

भूगर्भशास्त्र–संज्ञा पुं० पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग के तत्वों का ज्ञान करानेवाला शास्त्र (अंग्रे०-जियालोजी)।

भूगोल–संज्ञा पुं० १. पृथ्वी। २. वह शास्त्र, जिसके द्वारा पृथ्वी की आकृति और उसके प्राकृतिक विभागों आदि का ज्ञान होता है। ३. वह ग्रंथ, जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक विभागों आदि का वर्णन हो।

भूचक्र–संज्ञा पुं० विषुवत् रेखा। भूमध्य रेखा।

भूचर–संज्ञा पुं० १. भूमि पर रहनेवाला प्राणी। २. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।

भूचरी–संज्ञा स्त्री० योग में समाधि-अंग की एक मुद्रा।

भूचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भूचुंगी–संज्ञा स्त्री० भूमि-सम्पत्ति पर लगनेवाला राज्य-कर या चुंगी (अंग्रे०-एस्टेट-ड्यूटी)।

भूटान–संज्ञा पुं० नेपाल के पूर्व का एक प्रदेश, जो सिक्किम-राज्य के पड़ोस में है।

भूटानी–वि० भूटान देश का। भूटान-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. भूटान देश का निवासी। २. भूटान देश का घोड़ा।
संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

भूडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भूत–संज्ञा पुं० १. वे मूल पदार्थ, जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। मूलतत्त्व। द्रव्य। २. सृष्टि के सभी प्राणी और जड़ पदार्थ। ३. बीता हुआ समय। व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप, जिससे यह सूचित होता हो कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। ४. पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव, जो रुद्र के अनुचर हैं। ५. मृत-शरीर। शव। ६. मृत-प्राणी की आत्मा। प्रेत। शैतान।
वि० १. गत। बीता हुआ। गुजरा हुआ। भूत काल। २. युक्त। मिला हुआ। ३. समान। सदृश। ४. जो हो चुका हो।
यौ०––भूतदया=जड़ और चेतन, सबके साथ की जानेवाली दया।
मुहा०––भूत चढ़ना या सवार होना=बहुत अधिक आग्रह या हठ होना। बहुत अधिक क्रोध होना। भूत की मिठाई या पकवान=वह पदार्थ, जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो। सहज में मिला हुआ धन, जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।

भूतकला–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की शक्ति, जो पंचभूतों को उत्पन्न करती है।

भूतकाल–संज्ञा पुं० बीता हुआ समय। अतीत काल।

भूतचारी–संज्ञा पुं० महादेव। भूतों में विचरण करनेवाले।

भूतत्वविद्या–संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भशास्त्र"।

भूतधात्री–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। समस्त जीवों का भरण-पोषण करनेवाली धरती माता।

भूतनाथ–संज्ञा पुं० शिव। भूत-प्रेतों के स्वामी।

भूतनायिका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

भूतनी–संज्ञा स्त्री० प्रेतिनी।

भूतपाल–संज्ञा पुं० विष्णु। समस्त जीवों के रक्षक।

भूतपूर्व–वि० वर्तमान से पहले का।

भूतभावन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। विष्णु। महेश। समस्त जीवों की सृष्टि और उनका पालन-पोषण करनेवाले।

भूत-भाषा–संज्ञा स्त्री० १. पैशाची भाषा। भूत-प्रेतों की कल्पित भाषा। २. प्राकृत-भाषा की एक बोली।

भूतभृत–संज्ञा पुं० समस्त जीवों का भरण-पोषण करनेवाले। विष्णु।

भूतयज्ञ–संज्ञा पुं० पंचयज्ञों में से एक यज्ञ। भूतबलि। बलिवैश्वदेव।

भूतराज–संज्ञा पुं० शिव।

भूतल–संज्ञा पुं० १. पृथ्वी का ऊपरी तल। धरती। भूमि। २. भूमण्डल। संसार। दुनिया।

भूतवाद–संज्ञा पुं० दे० "पदार्थवाद।"

भूतवाहन–संज्ञा पुं० महादेव।

भूतविनायक–संज्ञा पुं० शिव।

भूतांतक–संज्ञा पुं० १. यम। २. रुद्र।

भूतात्मा–संज्ञा पुं० १. जीवात्मा। २. शरीर। ३. परमेश्वर। शिव।

भूताधिपति–संज्ञा पुं० शिव।

भूतादि–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. अहंकार-तत्त्व।

भूतायन–संज्ञा पुं० नारायण। परमेश्वर।

भूतावास–संज्ञा पुं० १. संसार। २. देह। ३. बहेड़े का वृक्ष। ४. विष्णु।

भूताविष्ट–वि० जिसे भूत लगा हो।

भूति–संज्ञा स्त्री० १. वैभव। धन-संपत्ति। राज्य-श्री। २. भस्म। राख। ३. सत्ता। ४. विष्णु। ५. उत्पत्ति। ६. अधिकता। वृद्धि। ७. आठ प्रकार की सिद्धियाँ।

भूतिकाम–वि० ऐश्वर्य की कामना करने-वाला।

संज्ञा पुं० १. राजा का मंत्री। २. बृहस्पति।

भूतिकृत्–संज्ञा पुं० शिव।

भूतिद–संज्ञा पुं० शिव।

भूतिदा–संज्ञा स्त्री० गंगा।

भूतिनी–संज्ञा स्त्री० १. भूत-योनि में प्राप्त स्त्री। २. डाकिनी। शाकिनी।

भूतिवाहन–संज्ञा पुं० शिव।

भूतृण–संज्ञा पुं० रूसा घास।

भूतेश–संज्ञा पुं० १. भूतप्रेतों के स्वामी। शिव। २. समस्त जीवों के स्वामी। परमेश्वर।

भूतेश्वर–संज्ञा पुं० महादेव।

भूतोन्माद–संज्ञा पुं० वह उन्माद, जो पिशाचों के आक्रमण के कारण हो।

भूत्तम–संज्ञा पुं० सोना।

भूदार–संज्ञा पुं० सूअर।

भूदारक–संज्ञा पुं० शूर। योद्धा। बहादुर।

भूदेव या **भूदेवता**–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।

भूधर–संज्ञा पुं० १. पहाड़। पर्वत। २. शेषनाग। ३. विष्णु। ४. राजा।

भूधरेश्वर–संज्ञा पुं० पहाड़ों के राजा या स्वामी। हिमालय।

भूधृति–संज्ञा स्त्री० जोतने-बोने के लिए किसान का जमीन पर अधिकार।

भूनना–क्रि० स० १. आग में डालकर पकाना। गरम घी या तेल आदि में डालकर कुछ देर तक चलाना। तलना। २. बहुत अधिक कष्ट देना।

भूनेता–संज्ञा पुं० राजा।

भूप–संज्ञा पुं० राजा।

भूपग–संज्ञा पुं० राजा।

भूपति–संज्ञा पुं० राजा। भूमि का स्वामी।

भूपद–संज्ञा पुं० वृक्ष।

भूपरा–संज्ञा पुं० सूर्य।

भूपाल–संज्ञा पुं० राजा। पृथ्वी का पालन-पोषण करनेवाला।

भूपाली–संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

भूपुत्र–संज्ञा पुं० मंगल-ग्रह।

भूपुत्री–संज्ञा स्त्री० सीता।
भूप्रकम्प–संज्ञा पुं० भूकम्प।
भूभल–संज्ञा स्त्री० गरम बालू। गरम राख। सूर्य की किरणों से तपी हुई धूल।
भूभुज–संज्ञा पुं० राजा।
भूभुरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "भूभल"। गरम राख या धूल।
भूभृत्–संज्ञा पुं० १. राजा। २. पहाड़।
भूमंडल–संज्ञा पुं० पृथ्वी। संसार।
भूमध्यसागर–संज्ञा पुं० योरप और अफ्रीका के बीच का समुद्र (अंग्रे०-मेडिटेरेनियन सी)।
भूमाप–संज्ञा पुं० भूमि नापने की कोई नाप। दे० "भूमापन।"
भूमापक–संज्ञा पुं० जमीन की नाप-जोख या जाँच-पड़ताल करनेवाला। (अंग्रे०-सर्वे)।
भूमापन–संज्ञा पुं० खेतीबारी के लिए जमीन की नाप-जोख या जाँच-पड़ ताल। (अंग्रे०-सर्वे)।
भूमि–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। जमीन। खेत। खेती करने या मकान आदि बनाने के काम में आनेवाली जगह। २. स्थान। आधार।
भूमिकम्प–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप।"
भूमिका–संज्ञा स्त्री० १. कोई चीज करने या कहने के पहले उसका आधार बताने के लिए कही गई बात। प्रस्तावना। किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना या वक्तव्य, जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। २. पृष्ठभूमि। आधार। ३. वेदांत के अनुसार चित्त की पाँच अवस्थाएँ–क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ४. उपक्रम। कोई काम करने की तैयारी। ५. पृथ्वी। जमीन।
भूमिचल–संज्ञा पुं० दे० "भूकम्प।"
भूमिज–वि० भूमि से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. सोना। २. मंगल-ग्रह।
भूमिजा–संज्ञा स्त्री० सीताजी। पृथ्वी से पैदा हुई।
भूमिजीवी–संज्ञा पुं० १. किसान। २. वैश्य।
भूमिदेव–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण। २. राजा।
भूमिधर–संज्ञा पुं० १. पर्वत। २. शेषनाग। ३. उत्तर प्रदेश के जमींदारी उन्मूलन और भूमि-सुधार कानून के अनुसार एक विशेष प्रकार का किसान।
भूमिपति–संज्ञा पुं० राजा।
भूमिपाल–संज्ञा पुं० राजा।
भूमिपुत्र–संज्ञा पुं० मंगल-ग्रह।
भूमिपुत्री–संज्ञा स्त्री० सीता।
भूमिया–संज्ञा पुं० १. जमींदार। २. ग्राम-देवता।
भूमिसुत–संज्ञा पुं० मंगल-ग्रह।
भूमिसुता–संज्ञा स्त्री० जानकीजी।
भूमिसुर–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
भूमिहार–संज्ञा पुं० एक जाति, जो बिहार और उत्तर प्रदेश में पाई जाती है।
भूमीन्द्र–संज्ञा पुं० राजा।
भूय–अव्य० १. पुनः। फिर। २. बहुत।
भूयण–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
भूयसी–वि० बहुत अधिक
क्रि० वि० बार-बार।
भूयसी दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० मंगल-कार्य समाप्त होने पर ब्राह्मणों को दी जानेवाली दक्षिणा या दान।
भूर–वि० बहुत। अधिक।
संज्ञा पुं० बालू।
संज्ञा स्त्री० मंगल-उत्सव के समय की दक्षिणा। दान।
भूरज–संज्ञा पुं० १. धूल। गर्द। मिट्टी। २. भोजपत्र।
भूरजपत्र–संज्ञा पुं० दे० "भोजपत्र"।
भूरपूर*†–वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर"।
भूरसी दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० किसी उत्सव या धर्मकार्य के अन्त, में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जानेवाली दक्षिणा।
भूरा–संज्ञा पुं० १. लाल और पीला मिला हुआ रंग। खाकी रंग। २. कच्ची चीनी। चीनी।
वि० मटमैले रंग का। खाकी।
भूरि–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र। ५. स्वर्ण। सोना।
वि० अधिक। बहुत। प्रचुर। भारी।
भूरिज्–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

भूरिता–संज्ञा स्त्री० अधिकता।
भूरितेज–संज्ञा पुं० १. दे० "भूरितेजस्"। अग्नि। २. सोना।
भूरितेजस्–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. सोना।
भूरिदक्षिण–संज्ञा पुं० विष्णु।
भूरुह–संज्ञा पुं० वृक्ष।
भूर्जपत्र–संज्ञा पुं० भोजपत्र।
भूर्णि–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। मृत्युलोक।
भूर्लोक–संज्ञा पुं० मृत्युलोक। संसार।
भूल–संज्ञा स्त्री० १. भूलने का भाव। याद न आने का भाव। विस्मृति। गलती। चूक। २. कसूर। दोष। अपराध। अशुद्धि।
भूलक*†–संज्ञा पुं० भूल करनेवाला। भूलनेवाला। जिससे भूल होती हो। दोषी।
भूलना–क्रि० स० १. विस्मरण करना। याद न रखना। गलती करना। २. खो देना।
क्रि० अ० १. विस्मृत होना। याद न रहना। गलती होना। २. आसक्त होना। लुभाना। ३. घमंड में होना। इतराना। ४. खो जाना।
भूलभुलैयाँ–संज्ञा स्त्री० १. वह घुमावदार और चक्कर में डालनेवाली इमारत, जिसमें जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २. चकाबू। ३. बहुत घुमाव-फिराव की बात या घटना। पेचीदी बात।
भूलोक–संज्ञा पुं० संसार। जगत्। मर्त्यलोक।
भूलोटन–वि० पृथ्वी पर लोटनेवाला।
भूवल्लभ–संज्ञा पुं० राजा।
भूवा–संज्ञा पुं० रुई।
वि० उजला। श्वेत। सफेद।
भूशक्र–संज्ञा पुं० राजा।
भूशय्या–संज्ञा स्त्री० भूमि की सेज।
भूशायी–वि० १. पृथ्वी पर सोनेवाला। २. पृथ्वी पर गिरा हुआ। ३. मृतक। मरा हुआ।
भूषक–वि० शृंगार करनेवाला। अलंकार करनेवाला।
भूषण–संज्ञा पुं० १. गहना। अलंकार। जेवर। शोभा या सुन्दरता बढ़ानेवाली वस्तु। २. हिन्दी में वीररस के सबसे बड़े कवि, जिन्होंने शिवाजी तथा छत्रसाल महाराज आदि की प्रशंसा में ओजपूर्ण कविताएँ की थीं।
भूषन*–संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूषना*†–क्रि० स० सजाना। भूषित करना। अलंकृत करना।
भूषा–संज्ञा स्त्री० १. भूषण। गहना। जेवर। २. सजाने की क्रिया।
भूषित–वि० १. गहना पहने हुए। अलंकृत। २. सजाया हुआ। सज्जित। सँवारा हुआ।
भू-सम्पत्ति–संज्ञा स्त्री० जायदाद। अचल सम्पत्ति। खेत, मकान, जंगल आदि के रूप में सम्पत्ति।
भूसना†–क्रि० अ० दे० "भूकना"।
भूसा–संज्ञा पुं० भुस। भूसी। गेहूँ, जौ आदि के डंठलों का चूरा।
भूसी–संज्ञा स्त्री० १. भूसा। २. किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।
भूसुत–संज्ञा पु० १. वृक्ष। पेड़। पौधा। २. मंगलग्रह।
भूसुता–संज्ञा स्त्री० सीता।
भूसुर–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
भूस्वामी–संज्ञा पुं० जमीन का मालिक। वह व्यक्ति, जिसे किसी जमीन पर पूरा अधिकार हो।
भूहरा*–संज्ञा पुं० दे० "भुइँहरा"।
भृंग–संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. एक प्रकार का कीड़ा। ३. बिजली।
भृंगराज–संज्ञा पुं० १. भँगरा नामक वनस्पति। भँगरैया। २. काले रंग का एक पक्षी। भीमराज।
भृंगरीट–संज्ञा पुं० लोहा।
भृंगाभीष्ट–संज्ञा पुं० आम का वृक्ष।
भृंगार–संज्ञा पुं० १. लौंग। २. सोना।
भृंगारि–संज्ञा स्त्री० केवड़ा।
भृंगी–संज्ञा पुं० शिवजी का एक गण।
संज्ञा स्त्री० १. भौंरी। २. बिलनी।
भृंगीश–संज्ञा पुं० शिव।
भृकुटी–संज्ञा स्त्री० भौंह।
भृगु–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध मुनि जिनके बारे में पुराणों में कहा गया है कि इन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी।

२. शिव। ३. परशुराम। ४. शुक्राचार्य। ५. शुक्रवार। ६. पर्वत का किनारा।
भृगुनाथ–संज्ञा पुं० परशुराम।
भृगुपति–संज्ञा पुं० परशुराम।
भृगुरेखा–संज्ञा स्त्री० विष्णु की छाती पर का वह चिह्न, जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।
भृत–संज्ञा पुं० [स्त्री० भृता] भृत्य। दास। वि० १. भरा हुआ। पूरित। २. पाला हुआ। पोषण किया हुआ। पोषित।
भृतक–संज्ञा पुं० नौकर।
भृति–संज्ञा स्त्री० १. नौकरी। २. मजदूरी। वेतन। तनखाह। मूल्य। दाम। ३. भरना। पालन करना।
भृत्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० भृत्या] नौकर। सेवक। दास।
भृत्या–संज्ञा स्त्री० दासी। वेतन।
भृमि–संज्ञा पुं० घूमनेवाली वायु। बवंडर। वि० घूमनेवाला।
भृश–क्रि० वि० बहुत। अधिक।
भेंट–संज्ञा स्त्री० १. मिलना। मुलाकात। २. उपहार। ३. नजर या नजराना।
भेंटना*†–क्रि० स० १. भेंट करना। मुलाकात करना। २. गले लगाना।
भेंड–संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़"। मेष।
भेंवना†–क्रि० स० भिगोना।
भेउ*†–संज्ञा पुं० भेद। रहस्य।
भेक–संज्ञा पुं० दे० "मेढक"।
भेख–संज्ञा पुं० दे० "वेष"।
भेखज*–संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।
भेजना–क्रि० स० किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए रवाना करना। पठाना। पहुँचाना।
भेजवाना–क्रि० स० भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा–संज्ञा पुं० सिर का गूदा। खोपड़ी के भीतर की वस्तु। मग्ज।
भेट–संज्ञा स्त्री० दे० "भेंट।"
भेटना–क्रि० स० दे० "भेंटना।"
भेड़–संज्ञा स्त्री० [पुं० भेड़ा] बकरी की जाति का एक चौपाया, जिसके बालों के ऊन से कम्बल आदि बनाए जाते हैं। गाडर।
मुहा०—भेड़िया धसान=बिना परिणाम सोचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।
भेड़ा–संज्ञा पुं० भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।
भेड़िया–संज्ञा पुं० कुत्ते की तरह का एक जंगली हिंसक पशु। हुँड़ार।
भेड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़"।
भेद–संज्ञा पुं० १. भीतरी छिपा हुआ हाल। रहस्य। मर्म। तात्पर्य। २. अन्तर। फर्क। ३. प्रकार। किस्म। ४. भेदने या छेदने की क्रिया। ५. शत्रु-पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना।
भेदक–वि० १. छेदनेवाला। २. रेचक। दस्तावर (वैद्यक)।
भेदड़ी–संज्ञा स्त्री० रबड़ी। बसौंधी।
भेदन–संज्ञा पुं० [वि० भेदनीय, भेद्य] भेदने की क्रिया। छेदना। बेधना।
भेदना–संज्ञा पुं० छेदना। बेधना।
भेदभाव–संज्ञा पुं० अंतर। पक्षपात। मतभेद। फरक।
भेदिया–संज्ञा पुं० १. जासूस। गुप्तचर। भेद लेनेवाला। २. गुप्त रहस्य जाननेवाला।
भेदी–संज्ञा पुं० भेदिया। गुप्तचर। वि० भेदक। बेधक। भेदने या छेदने वाला।
भेदू–संज्ञा पुं० दे० "भेदिया"।
भेद्य–वि० जो भेदा या छेदा जा सके। छेदने या भेदने योग्य।
भेन†–संज्ञा स्त्री० बहिन।
भेना†–क्रि० स० दे० "भेवना"। भिगोना।
भेरा*†–संज्ञा पुं० दे० "बेड़ा"।
भेरी–संज्ञा स्त्री० दुंदुभि। बड़ा ढोल या नगाड़ा। ढक्का।
भेरीकार–संज्ञा पुं० [स्त्री० भेरीकारी] भेरी बजानेवाला।
भेला*†–संज्ञा पुं० [संज्ञा स्त्री० भेली] १. बड़ा गोला। पिंड। २. भिड़ंत। भेंट। ३. दे० "भिलावाँ" (पेड़)।
भेली†–संज्ञा स्त्री० गुड़ या और किसी चीज की गोल बट्टी या पिंडी। गुड़ का लड्डू।

भेव*†–संज्ञा पुं० १. दे० "भेद"। रहस्य। २. स्वभाव। ३. फूट। ४. बारी। पारी।
भेवना*†–क्रि० स० भिगोना।
भेष–संज्ञा पुं० दे० "वेष"।
भेषज–संज्ञा पुं० औषध। दवा।
भेषना*–क्रि० स० भेष बनाना। स्वाँग बनाना। पहनना।
भेस–संज्ञा पुं० दे० "वेष"। १. बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि। २. दूसरों को दिखलाने के लिए पहनावा। बनावटी रूप।
भेसज*–संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।
भेसना*†–क्रि० स० वेश धारण करना। वस्त्र आदि पहनना।
भैंस–संज्ञा स्त्री० गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उससे बड़ा काला मादा चौपाया, जिसका दूध लोग पीते हैं।
भैंसा–संज्ञा पुं० भैंस का नर।
भैंसासुर–संज्ञा पुं० दे० "महिषासुर"।
भै*–संज्ञा पुं० दे० "भय"।
भैचक, भैंचक्क*†–वि० दे० "भौंचक्का"। चकपकाया हुआ। चकित।
भैजन*–वि० डरावना। भयप्रद।
भैदा*–वि० दे० "भयदा"। डरावना। भयप्रद।
भैन, भैना या भैनी–संज्ञा स्त्री० दे० "भगिनी"। बहिन।
भैया–संज्ञा पुं० भाई। बड़ा भाई। बराबर-वालों या छोटों के लिए (स्नेह का) संबोधन शब्द।
भैयाचारी–संज्ञा स्त्री० दे० "भाईचारा।"
भैयादूज–संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज। इस दिन बहिनें भाइयों को टीका लगाती हैं।
भैयापा–संज्ञा पुं० भाईचारा।
भैरव–वि० भयंकर। भीषण। डरावनी शक्ल या आकृति का। भयानक शब्दवाला।
संज्ञा पुं० शिव के गणों के प्रधान या अधिपति। संगीत के ६ रागों में एक मुख्य राग। भयानक शब्द।
भैरवी–संज्ञा स्त्री० १. एक रागिनी, जो बहुत सबेरे गाई जाती है। प्रातःकाल का संगीत। २. एक प्रकार की देवी, जो महाविद्या की एक मूर्त्ति मानी जाती है। ३. तांत्रिकों की एक देवी। पार्वती। चामुंडा।
भैरवी-चक्र–संज्ञा पुं० तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह, जो किसी विशिष्ट तिथि, नक्षत्र या समय में देवी का पूजन करने के लिए एकत्र होता है।
भैरवी-यातना–संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार वह यातना जो प्राणियों को मरते समय भैरवजी देते हैं।
भैवा†–संज्ञा पुं० दे० "भैया"।
भैवाद†–संज्ञा पुं० दे० "भयवाद"। भाई-चारा। बिरादरी। कुटुम्ब।
भैषज या भैषज्य–संज्ञा पुं० औषध। दवा।
भैहा*†–संज्ञा पुं० १. डरा हुआ। २. जिस पर भूत या किसी देव का आवेश आता हो।
भोंकना–क्रि० स० १. चुभाना। बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज जोर से धँसाना। घुसेड़ना। २. भौं-भौं करना।
भोंडा–वि० [स्त्री० भोंडी] भद्दा। भद्दी शक्ल या आकृति का। कुडौल। बदसूरत। कुरूप।
भोंडापन–संज्ञा पुं० भद्दापन। बेहूदगी।
भोंदू–वि० बुद्धू। बेवकूफ। मूर्ख।
भोंपा या भोंपू–संज्ञा पुं० फूँककर बजाने का एक बाजा, जिससे जोर की आवाज निकलती है।
भोंसले–संज्ञा पुं० महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि। (महाराज शिवाजी और नागपुर के रघुनाथराव आदि इसी कुल के थे।)
भो*–संज्ञा पुं० हे। अहो।
क्रि० अ० भया। हुआ।
भोकस*†–वि० भुक्खड़।
संज्ञा पुं० १. डरावना। २. ओझा।
भोकार–संज्ञा स्त्री० जोर-जोर से रोना।
भोक्ता–वि० १. भोजन करनेवाला। २. भोग करनेवाला। भोगनेवाला। ३. ऐयाश।
भोग–संज्ञा पुं० १. सुख या दुःख का अनुभव करना। सुख। विलास। २. दुःख। कष्ट। ३. स्त्री-संभोग। विषय। ४. धन। ५. पालन। ६. भोजन करना। भक्षण। ७. देह। ८. पाप या पुण्य का फल, जो सहन किया या

भोगा जाता है। ९. प्रारब्ध। १०. फल। ११. अर्थ। १२. देवता आदि को चढ़ाए जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य। १३. सूर्य्य आदि ग्रहों के राशियों में रहने का समय।

भोगना–क्रि० अ० १. भुगतना। सहन करना। सहना। २. सुख-दुःख अनुभव करना। अच्छे-बुरे कार्यों का फल पाना।

भोगबंधक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेहन या बंधक, जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि का उपयोग करने का अधिकार होता है। दृष्टबंधक का उल्टा।

भोगवाना–क्रि० स० दूसरे से भोग कराना।

भोग-विलास–संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद। ऐशो-आराम। सुख-चैन से जीवन व्यतीत करना।

भोगाना–क्रि० स० दे० "भोगवाना"।

भोगी–संज्ञा पुं० भोगनेवाला।

वि० १. सुखी। २. इंद्रियों का सुख चाहने-वाला। भुगतनेवाला। ३. विषयासक्त। विलासी। दुराचारी। आनंद करनेवाला।

भोग्य–वि० भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोग्यमान–वि० जिसका भोग होने को हो। जो अभी भोगा न गया हो।

भोग्या–संज्ञा स्त्री० भोगी जानेवाली। वेश्या।

भोज–संज्ञा पुं० १. बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना-पीना। दावत। जेवनार। २. खाने की चीज। ३. भोजकट प्रदेश, जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं। ४. मालवा के परमार-वंशी एक प्रसिद्ध राजा, जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् और कवि थे। भोजदेव।

भोजक–संज्ञा पुं० भोग करनेवाला। भोगी। ऐयाश। विलासी।

भोजकट–संज्ञा पुं० एक प्राचीन नगर तथा प्रदेश, जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं।

भोजदेव–संज्ञा पुं० मालवा के परमार-वंशी प्रसिद्ध राजा भोज, जो संस्कृत के बड़े विद्वान् और कवि थे।

भोजन–संज्ञा पुं० खाना। खाने की सामग्री।

भोजनभट्ट–संज्ञा पुं० बहुत अधिक खाने वाला। पेटू।

भोजनालय–संज्ञा पुं० रसोईघर। होटल। ऐसा स्थान, जहाँ दाम लेकर भोजन दिया जाता हो।

भोजपत्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा पेड़, जिसकी छाल प्राचीन काल में ग्रंथ और लेख आदि लिखने के काम आती थी।

भोजपुरी–संज्ञा स्त्री० भोजपुर की भाषा।

संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी।

वि० भोजपुर का। भोजपुर-संबंधी।

भोजराज–संज्ञा पुं० दे० "भोजदेव"।

भोजविद्या–संज्ञा स्त्री० इंद्रजाल। बाजीगरी।

भोजी–संज्ञा पुं० खानेवाला।

भोजू*–संज्ञा पुं० भोजन।

भोज्य–संज्ञा पुं० खाने की वस्तु। खाद्य पदार्थ।

वि० खाने योग्य। जो खाया जा सके।

भोट–संज्ञा पुं० १. भूटान देश। २. एक प्रकार का बड़ा पत्थर।

भोटिया–संज्ञा पुं० भूटान देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

वि० भूटान देश-संबंधी। भूटान का।

भोटिया बादाम–संज्ञा पुं० आलूबुखारा। २. मूँगफली।

भोडर†–संज्ञा पुं० अभ्रक। अबरक। अभ्रक का चूर। बुक्का।

भोडल–संज्ञा पुं० दे० "अबरक"।

भोतर, भोतरा या भोंतल–वि० जिसकी धार तेज न हो (अस्त्र या औजार)। कुंद। कुंठित।

भोता–वि० दे० "भोतर"।

भोथरा–वि० दे० "भोतर"। जिसकी धार तेज न हो (अस्त्र या औजार आदि)। कुंद।

भोना*–क्रि० अ० १. भीनना। संचरित होना। २. लिप्त या लीन होना। आसक्त होना।

भोर–संज्ञा पुं० प्रातःकाल। तड़का। बहुत सबेरे।

वि० चकित। भौंचक्का।

*वि० दे० "भोला"। सीधा।

भोरा*†–संज्ञा पुं० दे० "भोर"।

*†वि० दे० "भोला।" सीधा।

भोराई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भोलापन"।

भोराना*–क्रि० स० भ्रम में डालना। बह-काना।

क्रि० अ० धोखे में आना।
भोला–वि० सीधा-सादा। सरल। निष्कपट। जल्दी से किसी के बहकावे में आ जानेवाला। नासमझ।
भोलानाथ–संज्ञा पुं० शिव।
भोलापन–संज्ञा पुं० १. सिधाई। सरलता। २. सादगी। निष्कपटता। ३. नादानी। नासमझी।
भोलाबाबा या भोलेबाबा–वि० १. शिवजी का विशेषण। दे० "भोलानाथ।" २. साधु-संन्यासी।
भोला-भाला–वि० सीधा-सादा। सरल स्वभाव का। निष्कपट।
भोसर–वि० मूर्ख।
भौं–संज्ञा स्त्री० दे० "भौंह"।
भौंकना–क्रि० अ० १. भौं-भौं शब्द करना। कुत्तों का बोलना। भूँकना। २. बहुत बकवाद करना।
भौंचाल†–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भौंड़ी–संज्ञा स्त्री० पहाड़ी टीला।
भौंतुआ–संज्ञा पुं० १. जल-भौंरा। २. काँख में निकलनेवाली एक प्रकार की गिल्टी। ३. तेली का बैल, जो सबेरे से ही कोल्हू में जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है।
भौंर–संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. तेज बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्कर। भँवर। ३. मुश्की घोड़ा।
भौंरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० भँवरी] १. काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा, जो फूलों का रस चूसता है। २. एक प्रकार का खिलौना। ३. हिंडोले की वह लकड़ी, जिसमें डोरी बँधी रहती है। ४. मकान के नीचे का घर। तहखाना। ५. अन्न रखने का गड्ढा। खत्ता।
भौंराना*–क्रि० स० १. चारों ओर घुमाना। परिक्रमा कराना। २. विवाह की भाँवर दिलाना। ३. विवाह करना।
क्रि० अ० घूमना। चक्कर काटना।
भौंरी–संज्ञा स्त्री० १. भौंरा की मादा। २. पशुओं के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ वह चक्र, जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण-दोष का निर्णय होता है। ३. विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना। भाँवर। ४. तेज बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर। भँवर। ५. अंगाकड़ी। बाटी। कंडे में पकाई जानेवाली सत्तू आदि भरी हुई आटे की गोल-गोल टिकिया।
भौंह–संज्ञा स्त्री० आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।
मुहा०—भौं चढ़ाना या तानना=क्रुद्ध होना। नाराज होना। त्योरी चढ़ाना। बिगड़ना। भौंह जोहना=खुशामद करना।
भौंहरा*–संज्ञा पुं० दे० "भुइँहरा"।
भौ*–संज्ञा पुं० १. दे० "भव"। संसार। २. दे० "भय"। डर।
भौगिया*†–संज्ञा पुं० संसार के सुखों को भोगनेवाला।
भौगोलिक–वि० भूगोल का। भूगोल-सम्बन्धी।
भौचक–वि० भौंचक्का। हक्का-बक्का। सकपकाया हुआ।
भौज*–संज्ञा स्त्री० दे० "भौजाई"।
भौजाई–संज्ञा स्त्री० भ्रातृजाया। बड़े भाई की स्त्री। भाभी। भावज।
भौतिक–वि० १. पार्थिव। सांसारिक। पंचभूत-संबंधी। २. पाँचों भूतों से बना हुआ। ३. शरीर-संबंधी। शारीरिक।
भौतिकवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त, जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता है और जिसमें आत्मा या ईश्वर आदि नहीं माने जाते। पदार्थवाद।
भौतिक-विज्ञान–संज्ञा पुं० वह विज्ञान, जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, प्रकाश आदि भौतिक तत्त्वों का विवेचन होता है। पदार्थ-विज्ञान (अंग्रे०-फिजिक्स)।
भौतिक-विद्या–संज्ञा स्त्री० १. दे० "भौतिक-विज्ञान"। २. भूतों-प्रेतों को बुलाने और उन्हें दूर करने की विद्या।
भौतिक सृष्टि–संज्ञा स्त्री० सांसारिक रचना। आठ प्रकार की देव-योनि, पाँच प्रकार की तिर्यग्-योनि और मनुष्य-योनि, इन सबकी समष्टि।
भौन*–संज्ञा पुं० घर। मकान। भवन।

भौना*†–क्रि० अ० घूमना। भ्रमण करना।

भौम–वि० १. भूमि-संबंधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० मंगल-ग्रह।

भौमवार–संज्ञा पुं० मंगलवार।

भौमिक–संज्ञा पुं० भूमि का मालिक। भूमि पर जिसका असली अधिकार हो।
वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।

भौर*–संज्ञा पुं० १. दे० "भौंरा"। २. दे० "भँवर"।

भौसा–संज्ञा पुं० १. भीड़-भाड़। २. हो-हुल्लड़। गड़बड़। उपद्रव।

भ्रंश–संज्ञा पुं० १. नाश। २. ध्वंस। ३. अधः-पतन। नीचे गिरना। भागना।
वि० भ्रष्ट। खराब।

भ्रकुटि–संज्ञा स्त्री० भौंह।

भ्रम–संज्ञा पुं० १. संशय। संदेह। शक। २. किसी चीज या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। माया। धोखा। ३. एक प्रकार का रोग, जिसमें चक्कर आता है। मूर्च्छा। बेहोशी। ४. भ्रमण। ५. मान। प्रतिष्ठा। इज्जत।

भ्रमण–संज्ञा पुं० १. घूमना-फिरना। विचरण। २. आना-जाना। यात्रा। सफर। ३. मंडल। चक्कर। फेरी।

भ्रमना–क्रि० अ० १. घूमना। २. धोखा खाना। ३. भूल करना। भटकना। भूलना।

भ्रममूलक–वि० जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर–संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. कृष्ण के सखा। उद्धव के लिए प्रयुक्त उपनाम।
यौ०—भ्रमर-गुफा=योगशास्त्र के अनुसार हृदय के अंदर का एक स्थान। भ्रमरगीत=वह गीत या काव्य, जिसमें उद्धव के प्रति व्रज की गोपियों का उपालंभ हो।

भ्रमरावली–संज्ञा स्त्री० भँवरों की पंक्ति या झुंड।

भ्रमवात–संज्ञा पुं० आकाश का वायुमंडल, जो सर्वदा घूमा करता है।

भ्रमात्मक–वि० भ्रम उत्पन्न करनेवाला। संदिग्ध।

भ्रमाना*†–क्रि० स० १. भ्रम में डालना। बहकाना। २. घुमाना। फिराना।

भ्रमित–वि० १. भ्रांत। जो भ्रम में पड़ा हो। २. घूमता या चक्कर काटता हुआ।

भ्रमितनेत्र–वि० ऐंचाताना। तिरछा देखने-वाला।

भ्रमी–वि० १. जिसे भ्रम हुआ हो। चकित। भौंचक। २. उन्मत्त।

भ्रष्ट–वि० १. गिरा हुआ। पतित। नीच। २. दुराचारी। दूषित। बदचलन।

भ्रष्टा–संज्ञा स्त्री० छिनाल। दुराचारिणी।

भ्रांत–वि० १. जिसे भ्रम हो गया हो। भ्रमित। जो भ्रम या धोखे में पड़ा हो। २. व्याकुल। उन्मत्त।

भ्रांति–संज्ञा स्त्री० १. भ्रम। संदेह। धोखा। शक। भूलचूक। २. मोह। प्रमाद। ३. एक अलंकार, जिसमें समानता के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का भ्रम होने का वर्णन होता है।

भ्राजना–क्रि० अ० शोभा पाना। शोभित होना। सुन्दर लगना। शोभायमान होना।

भ्राजमान*–वि० शोभायमान।

भ्रात*–संज्ञा पुं० दे० "भ्राता"। भाई।

भ्राता–संज्ञा पुं० सगा भाई।

भ्रातृज–संज्ञा पुं० भतीजा।

भ्रातृजाया–संज्ञा स्त्री० भावज।

भ्रातृत्व–संज्ञा पुं० भाई होने का भाव या धर्म्म। बन्धुत्व। भाई-चारा।

भ्रातृद्वितीया–संज्ञा स्त्री० कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया। यमद्वितीया। भैया दूज।

भ्रातृपुत्र–संज्ञा पुं० भतीजा।

भ्रातृभाव–संज्ञा पुं० भाई का-सा प्रेम या संबंध। भाई-चारा। भाईपन।

भ्रातृवधू–संज्ञा स्त्री० भावज। भाभी।

भ्रातृव्य–संज्ञा पुं० भतीजा।

भ्रामक–वि० १. भ्रम में डालनेवाला। बहकाने-वाला। सन्देह उत्पन्न करनेवाला। २. घुमाने या घूमनेवाला।

भ्रामर–संज्ञा पुं० १. मधु। शहद। २. दोहे का दूसरा भेद। ३. चुंबक पत्थर।
वि० भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का।

भ्राष्ट्र–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. भाड़, जिसमें भड़भूँजे अनाज भूनते हैं।

भ्रू–संज्ञा स्त्री० भौंह।

भ्रूण–संज्ञा पुं० १. स्त्री का गर्भ। २. गर्भ में बालक के रहने की अवस्था।

भ्रूणहत्या–संज्ञा स्त्री० गर्भ में बालक को मार डालना।

भ्रूणहा–संज्ञा पुं० भ्रूणहत्या करनेवाला व्यक्ति।

भ्रूभंग–संज्ञा पुं० त्यौरी चढ़ाना। भौंहें चढ़ाना।

भ्रूविक्षेप–संज्ञा पुं० भौंहें टेढ़ी करके देखना। त्योरी चढ़ाना।

भ्रेष–संज्ञा पुं० १. नाश। २. चलना। गमन। ३. भय।

भ्वहरना*†–क्रि० अ० डरना। भयभीत होना।

भ्वासर†– वि० मूर्ख।

म

म–हिन्दी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान होंठ और नासिका है।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. चंद्रमा। ३. ब्रह्मा। ४. यम। ५. मधुसूदन।

मंकुर*–संज्ञा पुं० दे० "मुकुर"।

मंगता–संज्ञा पुं० भिखमंगा। माँगनेवाला।

मंगन–संज्ञा पुं० भिखमंगा।

मँगनी–संज्ञा स्त्री० १. उधार। वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत उसे लौटा दिया जायगा। २. इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। ३. विवाह के पहले की वह रस्म, जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चित होता है। सगाई।

मँगरा–संज्ञा पुं० १. छाँद का सिरा। २. खपड़ा।

मंगल–संज्ञा पुं० १. कल्याण। कुशल। भलाई। २. मनोकामना या इच्छा पूरी होना। अभीष्ट की सिद्धि। ३. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह। ४. भौम। मंगलवार।

मंगलकलश (घट)–संज्ञा पुं० शुभ अवसरों पर पूजा के लिए या यों ही रखा जानेवाला जल से भरा हुआ घड़ा।

मंगलपाठ–संज्ञा पुं० दे० "मंगलाचरण"।

मंगलपाठक–संज्ञा पुं० बंदीजन। मंगल पाठ करनेवाले।

मंगल पाँड़े–संज्ञा पुं० सन् १८५७ में भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम को मेरठ में शुरू करनेवाले व्यक्ति का नाम।

मंगलप्रद–वि० कल्याणकारी।

मंगलवाद–संज्ञा पुं० आशीर्वाद।

मंगलवार–संज्ञा पुं० सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़नेवाला दिन। भौमवार।

मंगलसूत्र–संज्ञा पुं० वह तागा, जो किसी देवता के प्रसाद-रूप में शुभ अवसरों पर पूजा के बाद कलाई में बाँधा जाता है।

मंगलस्नान–संज्ञा पुं० वह स्नान, जो मंगल की कामना से किया जाता है।

मंगला–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. पतिव्रता स्त्री। ३. हल्दी।

मंगलाचरण–संज्ञा पुं० शुभ कार्य के आरंभ में मंगल की कामना के लिए पढ़ा जानेवाला श्लोक या पद। किसी ग्रंथ के आरम्भ का स्तुति-सूचक पद।

मंगलामुखी–संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी।

मंगलालय–संज्ञा पुं० परमेश्वर।

मंगलाव्रत–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों का एक व्रत। २. शिव।

मंगली–वि० जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो (अशुभ)।

मँगवाना–क्रि० स० मँगाना। दूसरे से माँगने का काम कराना। कोई चीज मोल खरीदकर या किसी से माँगकर लाने के लिए कहना। पास लाने के लिए कहना।

मँगाना–क्रि० स० "मँगवाना"।
मँगेतर–वि० जिसकी किसी के साथ मँगनी (विवाह की बातचीत) हो चुकी हो।
मंगोल–संज्ञा पुं० मध्य एशिया और उसके पूर्व की ओर बसनेवाली एक जाति।
मंच, मंचक–संज्ञा पुं० १. छोटी पीढ़ी। मँचिया। २. खाट। खटिया। ३. ऊँचा बना हुआ मंडप, जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य या भाषण किया जाय।
मंछर*–संज्ञा पुं० १. मत्सर। २. मच्छर।
मंजन–संज्ञा पुं० १. दाँत साफ करने की बुकनी या चूर्ण। २. दे० "मज्जन" (स्नान)।
मँजना–क्रि० अ० १. माँजा जाना। २. अभ्यास होना। मश्क होना।
मंजरिका–संज्ञा स्त्री० दे० "मंजरी"।
मंजरित–वि० जिसमें मंजरी लगी हो। मंजरियों से युक्त या भरा हुआ।
मंजरी–संज्ञा स्त्री० १. नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २. कुछ पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सींके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह। (आम का बौर)। ३. लता।
मँजाई–संज्ञा स्त्री० मँजाने या माँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मँजाना–क्रि० स० माँजने का काम दूसरे से कराना। दे० "माँजना"।
मंजिका–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
मंज़िल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. यात्रा का अन्तिम स्थान। ३. मकान का खंड या तल्ला। ४. अन्तिम उद्देश्य या लक्ष्य।
मंजी–संज्ञा स्त्री० दे० "मंजरी"।
मंजीर–संज्ञा पुं० नूपुर। घुँघरू।
मंजु–वि० सुंदर। मनोहर।
मंजुकेशी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। जिसके बाल बहुत सुन्दर हों।
मंजुल–वि० सुंदर। मनोहर।
मंजुलता–संज्ञा स्त्री० मनोहरता। सुन्दरता।
मंज़ूर–वि० [अ०] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।
मंज़ूरी–संज्ञा स्त्री० मंजूर होने का भाव। स्वीकृति।
मंजूषा–संज्ञा स्त्री० १. बहुत छोटी-सी सन्दूक। पिटारी। छोटा डिब्बा। २. झोली। थैली।
मँझधार–संज्ञा स्त्री० दे० "मझधार"।
मँझला–वि० दे० "मझला।" बीच का।
मंझा*†–वि० मध्य का। बीच का। संज्ञा पुं० १. पलंग। खाट। २. दे० "माँझा"।
मँझार†–क्रि० वि० बीच में।
मँझियार†–वि० दे० "मझधार"। बीच में। मध्य में।
मँझोला†–वि० दे० "मझोला"।
मँड़ई–संज्ञा स्त्री० झोपड़ी। कुटी।
मंड–संज्ञा पुं० भात का पानी। माँड़। संज्ञा स्त्री० दे० "मंडा"।
मंडन–संज्ञा पुं० १. शृंगार करना। सजाना। सँवारना। २. प्रमाण आदि-द्वारा कोई बात सिद्ध करना। 'खंडन' का उलटा। ३. एक प्रसिद्ध मीमांसक मंडन मिश्र।
मंडना*–क्रि० स० १. शृंगार करना। सजाना। मंडित करना। २. युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादित करना। ३. भरना। ४. मर्दन करना। मसलना। दलना। कुचलना।
मंडप–संज्ञा पुं० १. उत्सव या समारोह आदि के लिए अस्थायी रूप से छाकर बनाया हुआ स्थान। चँदोवा। मंच। २. मंगल-कार्य के लिए बाँस-फूस से छाकर बनाया हुआ स्थान (विवाह में)। ३. मंदिर के ऊपर की गोल बनावट और उसके नीचे का स्थान।
मंडपी–संज्ञा पुं० छोटा मंडप।
मँडरना–क्रि० अ० मंडल बाँधकर छा जाना (जैसे बादल का)। चारों ओर से घेर लेना। ऊपर फहराना।
मँडराना–क्रि० अ० १. किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। २. किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रमण करना। किसी के आस-पास ही घूम-फिरकर रहना। ३. ऊपर फहराना।
मँडरी–संज्ञा स्त्री० पयाल की बनी चटाई।
मंडल–संज्ञा पुं० १. परिधि। चक्कर। गोलाई। वृत्त। गोल फैलाव। गोला। २. चंद्रमा या ... के चारों ओर पड़नेवाला घेरा।

३. चारों दिशाओं का घेरा। परिवेश। ४. क्षितिज। ५. समाज। समूह। ६. भूमिखंड। क्षेत्र। प्रदेश का वह विभाग, जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो। ७. ग्रह के घूमने की कक्षा। ८. ऋग्वेद का एक खंड। ९. बारह राज्यों का समूह। १०. गाँवों का समूह।

मंडलनृत्य–संज्ञा पुं० नाच का एक भेद।

मंडल-परिषद्–संज्ञा स्त्री० किसी मंडल के निवासियों-द्वारा चुने प्रतिनिधियों की वह समिति, जो इस मण्डल की व्यवस्था करे।

मंडलाकार–वि० गोल।

मँडलाना–क्रि० अ० दे० "मँडराना"।

मंडलायित–वि० गोल।

मंडली–संज्ञा स्त्री० समूह। समाज। गोष्ठी।

मंडलीक–संज्ञा पुं० १. एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति। २. दस लाख की आमदनीवाला।

मंडलेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "मंडलीक"। एक मंडल का अधिपति।

मँड़वा–संज्ञा पुं० मंडप।

मंडा–संज्ञा पुं० १. दो विस्वे के बराबर की एक नाप। २. शराब। मद्य। ३. माँड़।

मँडार†–संज्ञा पुं० १. गड्ढा। २. झाबा। डलिया।

मंडित–वि० १. सजाया हुआ। विभूषित। २. छाया हुआ। आच्छादित। ३. भरा हुआ।

मंडी–संज्ञा स्त्री० बहुत भारी बाजार, जहाँ व्यापार की चीजें बहुत आती हों। बड़ा हाट।

मँड़ुआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खराब अन्न।

मंडूक–संज्ञा पुं० १. दोहा छंद का पाँचवाँ भेद। २. प्राचीन काल का एक बाजा। ३. एक प्रकार का नृत्य। ४. मेंढक। ५. एक ऋषि।

मंडूर–संज्ञा पुं० गलाए हुए लोहे की मैल। लोह-कीट। सिघान।

मढ़ना–क्रि० स० १. ढकना। किसी वस्तु के ऊपर कोई चीज चढ़ाना। २. लगाना। छिपाना।

मंत*†–संज्ञा पुं० १. सलाह। २. मंत्र। **यौ०**–तंत-मंत=उद्योग। प्रयत्न।

मंतव्य–संज्ञा पुं० विचार। मत।

मंत्र–संज्ञा पुं० १. गुप्त रखने योग्य रहस्य की बात। २. सलाह। परामर्श। ३. वैदिक वाक्य, जिनके द्वारा यज्ञ आदि कर्म-काण्ड करने का विधान हो, जैसे गायत्री। ४. वेदों का वह भाग, जिसमें मंत्रों का संग्रह है। संहिता। ५. अलौकिक शक्तिसम्पन्न शब्द। ६. जादू का शब्द। ७. तंत्र में वे शब्द या वाक्य, जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिए किया जाता है।

यौ०–मंत्रयंत्र या यंत्रमंत्र=जादू-टोना।

मंत्रकार–संज्ञा पुं० मंत्र रचनेवाला ऋषि।

मंत्रगृह–संज्ञा पुं० मंत्रणा या परामर्श करने का निश्चित स्थान।

मंत्रजल–संज्ञा पुं० मंत्र से प्रभावित किया हुआ जल।

मंत्रज्ञ–संज्ञा पुं० १. भेद या रहस्य जाननेवाला। २. गुप्तचर। जासूस।

मंत्रण–संज्ञा पुं० परामर्श। सलाह।

मंत्रणा–संज्ञा स्त्री० १. परामर्श। सम्मति। सलाह। मशविरा। २. सलाह करने के बाद निश्चित मत।

मंत्रद–वि० परामर्श देनेवाला।

मंत्रधर–संज्ञा पुं० मंत्री।

मंत्रपूत–वि० मंत्र से पवित्र या शुद्ध किया गया। मंत्र पढ़कर फूँका हुआ।

मंत्रबीज–संज्ञा पुं० मूल मंत्र।

मंत्रवादी या **मंत्रविद्**–वि० दे० "मंत्रज्ञ"।

मंत्रविद्या–संज्ञा स्त्री० तंत्रविद्या। मंत्रशास्त्र। मंत्र का ज्ञान प्राप्त करने की शिक्षा। तंत्र।

मंत्रसंहिता–संज्ञा स्त्री० वेदों का वह भाग, जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।

मंत्रसिद्ध–वि० जिसको मंत्र सिद्ध हो।

मंत्रसिद्धि–संज्ञा स्त्री० मंत्र का सिद्ध होना। मंत्र का ऐसा ज्ञान, जिससे उद्देश्य पूर्ण हो।

मंत्रित–वि० मंत्र से जिसका संस्कार किया गया हो। मंत्र से शुद्ध। अभिमंत्रित। जिस पर मंत्र का प्रभाव पड़ा हो।

मंत्रित्व–संज्ञा पुं० मंत्री का कार्य्य या पद।

मंत्रिमंडल–संज्ञा पुं० किसी देश, राज्य, संस्था या संघ आदि के मंत्रियों का समूह, जो उसका शासन संचालन करता है।

मंत्री—संज्ञा पुं० १. परामर्श देनेवाला। सलाह देनेवाला। २. वह प्रधान अधिकारी, जिसके परामर्श या आदेश से राज्य के, या राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हैं। सचिव। वजीर। (अंग्रे०—मिनिस्टर)। ३. किसी संस्था या संघ का अवैतनिक अधिकारी, या सरकारी विभाग का वह अधिकारी, जो नियमित रूप से उसके सब काम चलाता हो।

मंथ—संज्ञा पुं० १. दे० "मंथन"। मथना। बिलोना। २. कम्पन। ३. मथानी।

मंथज—संज्ञा पुं० मक्खन।

मंथन—संज्ञा पुं० १. मथना। बिलोना। २. अवगाहन। ३. खूब डूबकर पता लगाना। गहरी छान-बीन। ४. मथानी।

मंथर—वि० [संज्ञा मंथरता] १. मंद। धीमी चालवाला। धीमा। सुस्त। २. मंदबुद्धि। मूर्ख। नीच। ३. झुका हुआ। टेढ़ा। कुबड़ा।

मंथरा—संज्ञा स्त्री० कैकेयी की एक दासी का नाम। इसी के बहकाने पर कैकेयी ने रामचंद्र को वनवास और भरत को राज्य देने की माँग दशरथ से की थी।

मंथान—संज्ञा पुं० १. मथानी। २. मंदर पर्वत। ३. महादेव। ४. एक वर्णिक छंद।

मंथिता—वि० मथनेवाला।

मंथिनी—संज्ञा स्त्री० माठ। मटका।

मंथी—वि० १. मथनेवाला। २. कष्ट देनेवाला।

मंद—वि० १. धीमा। सुस्त। ढीला। शिथिल। आलसी। २. मूर्ख। कुबुद्धि। ३. खल। दुष्ट।

मंदक—वि० मूर्ख। सुस्त।

मंदग—वि० धीमा चलनेवाला।

मंदगति—संज्ञा स्त्री० १. धीमी चाल। २. ग्रहों की गति की अवस्था, जब वे अपनी कक्षा में घूमते हुए सूर्य से दूर निकल जाते हैं।

मंदट—संज्ञा पुं० देवदारु।

मंदता—संज्ञा स्त्री० धीमापन।

मंदभागी—वि० अभागा।

मंदभाग्य—वि० दुर्भाग्य। अभाग्य।

मंदर—संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार एक पर्वत, जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था। २. मंदार। ३. स्वर्ग। ४. दर्पण। आईना। ५. एक वर्ण-वृत्त।

वि० मंद। धीमा।

मंदरगिरि—संज्ञा पुं० मंदराचल।

मँदरा—वि० नाटा। ठिंगना।

मंदराचल—संज्ञा पुं० मंदर नामक पहाड़।

मंदसान—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. प्राण। ३. निद्रा।

मंदसानु—संज्ञा पुं० १. स्वप्न। २. जीव।

मंदा—वि० [स्त्री० मंदी] १. धीमा। मंद। ढीला। शिथिल। २. कम दाम का। सस्ता। ३. खराब। निकृष्ट।

मंदाकिनी—संज्ञा स्त्री० १. पुराणानुसार गंगा की वह धारा, जो स्वर्ग में है। २. आकाश-गंगा। ३. एक नदी, जो चित्रकूट के पास है। ४. बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।

मंदाक्रांता—संज्ञा स्त्री० सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

मंदाग्नि—संज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें अन्न नहीं पचता। पाचन-शक्ति मन्द पड़ जाने की बीमारी। बदहजमी। अपच।

मंदानल—संज्ञा पुं० दे० "मंदाग्नि"।

मंदार—संज्ञा पुं० १. स्वर्ग का एक वृक्ष। देव-वृक्ष। २. मदार। आक। ३. स्वर्ग। ४. मंदराचल पर्वत। ५. हाथी।

मंदारमाला—संज्ञा स्त्री० बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

मंदिर—संज्ञा पुं० १. देवता का निवास-स्थान। देवालय। २. घर। मकान। वासस्थान।

मंदिरा—संज्ञा स्त्री० १. अश्वशाला। घुड़साल। २. मजीरा।

मंदिल*‡—संज्ञा पुं० दे० "मंदिर"।

मंदी—संज्ञा स्त्री० भाव का उतरना या गिरना। सस्ती। महँगी का उलटा।

मंदीर—संज्ञा पुं० मंजीर।

मंदुरा—संज्ञा पुं० अश्वशाला। घुड़साल।

...—संज्ञा पुं० साईस।

...—संज्ञा स्त्री० रावण की पटरानी का नाम।

वि० छोटे पेटवाली।

मंद्र—संज्ञा पुं० १. गंभीर ध्वनि। २. हाथी

की एक जाति। ३. मृदंग। ४. संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक। वि० १. सुंदर। मनोहर। २. प्रसन्न। ३ गंभीर। ४. धीमा (शब्द आदि)।

मंशा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। २. मतलब। अभिप्राय।

मंसना–क्रि० स० १. दे० "मनसना"। इच्छा करना। २. संकल्प करना।

मंसब–संज्ञा पुं० [अ०] १. पद। पदवी। २. काम। कर्त्तव्य। ३. अधिकार।

मंसबदार–संज्ञा पुं० [फा०] जो किसी मंसब पर हो। अधिकारी। मुसलमानी राज्य-काल में एक प्रकार के अधिकारी, जिन्हें कुछ सेना रखने का अधिकार होता था।

मंसा–संज्ञा स्त्री० दे० "मंशा"।

मंसूख–वि० [अ०] खारिज किया हुआ। रद्द। काटा हुआ।

मंसूबा–संज्ञा पुं० दे० "मनसूबा।" इरादा। संकल्प।

मइँ‡–सर्व० दे० "मैं"।

मइका*–संज्ञा पुं० मायका।

मइमंत*–वि० दे० "मैमंत"। मद से उन्मत्त।

मइया–संज्ञा स्त्री० दे० "मैया"।

मई–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] अंग्रेजी वर्ष का पाँचवाँ महीना।

मकई‡–संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार"। एक अन्न।

मकड़ा–संज्ञा पुं० बड़ी मकड़ी।

मकड़ी–संज्ञा स्त्री० एक कीड़ा, जो अपने शरीर से निकले हुए एक प्रकार के तन्तुओं से जाला बुनकर मक्खियाँ आदि फँसाता है।

मकतब–संज्ञा पुं० [अ०] छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मदरसा।

मकतल–संज्ञा पुं० [अ०] वध-स्थान। कत्ल करने की जगह।

मक़दूर–संज्ञा पुं० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति।

मकनातीस–संज्ञा पुं० [अ०] चुंबक पत्थर।

मकफूल–वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० मकफूलियत] रेहन किया हुआ या बंधक रखा हुआ।

मक़बरा–संज्ञा पुं० [अ०] लाश गाड़ी गई जगह पर बनी हुई इमारत। मजार। समाधि।

मकबूल–वि० १. कबूल किया हुआ। स्वीकृत। २. चुना हुआ। ३. अच्छा। प्रिय।

मकरंद–संज्ञा पुं० १. पराग। फूलों का रस, जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। फूल का केसर। २. कुंद। ३. माधवी। ४. मंजरी।

मकर–संज्ञा पुं० १. दे० "मक्र।" मगर या घड़ियाल। २. मछली। ३. बारह राशियों में से दसवीं राशि। ४. फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। ५. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ६. माघ मास। ७. छल। कपट। धोखा। ८. नखरा।

मकरकेतु–संज्ञा पुं० कामदेव (जिसके झंडे पर मछली का निशान हो)।

मकरकुंडल–संज्ञा पुं० मकर या मछली के आकार का कानों में पहनने का एक गहना। कुंडल।

मकरतार–संज्ञा पुं० बादले का तार।

मकरध्वज–संज्ञा पुं० १. कामदेव। कंदर्प। २. सिंदूर। ३. चंद्रोदय रस।

मकरपति–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. ग्राह।

मकरव्यूह–संज्ञा पुं० एक प्रकार का व्यूह (सेना का घेरा)।

मकर संक्रांति–संज्ञा स्त्री० सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करने का समय। एक पर्व, जिस दिन प्रयाग में स्नान करने और खिचड़ी का दान करने का माहात्म्य है।

मकरांक–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. समुद्र।

मकरा–संज्ञा पुं० १. मड़ुवा नामक अन्न। २. एक प्रकार का कीड़ा। मकड़ा।

मकराकर–संज्ञा स्त्री० समुद्र। मछलियों का आगार।

मकराकार–वि० मकर या मछली के आकार का।

मकराकृत–वि० मकर या मछली के आकार-वाला।

मकरालय–संज्ञा पुं० समुद्र।

मकरिकापत्र–संज्ञा पुं० मछली के आकार का बना हुआ चन्दन का चिह्न, जिसे प्राचीन काल में स्त्रियाँ अपने कानों में पहनती थीं।

मकरी–संज्ञा स्त्री० १. मकड़ी। २. मगर की मादा। ३. एक वैदिक गीत। ४. जहाज के फर्श में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

मकरूह–वि० १. अपवित्र। २. घृणित।

मक़सद–संज्ञा पुं० [अ०] १. मनोरथ। २. अभिप्राय।

मक़सूद–वि० [अ०] चाहा हुआ। अभीष्ट। अभिलषित। अभिप्रेत।

संज्ञा पुं० अभिप्राय। मतलब।

मकाँ–संज्ञा पुं० [फा०] घर।

मकान–संज्ञा पुं० घर। गृह। रहने की जगह।

मकुंद–संज्ञा पुं० दे० "मुकुंद"।

मकु–अव्य० चाहे। बल्कि। कदाचित्। क्या जाने। शायद।

मकुना–संज्ञा पुं० बिना दाँत का छोटा हाथी।

वि० १. मोटा। थलथल। २. बिना मूँछ का पुरुष।

मकुनी, मकूनी†–संज्ञा स्त्री० आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौड़ी। बेसनी रोटी।

मकूला–संज्ञा पुं० कहावत। उक्ति। कौल।

मकोई–संज्ञा स्त्री० जंगली मकोय। दे० "मकोय"।

मकोड़ा–संज्ञा पुं० कोई छोटा कीड़ा। जैसे, कीड़ा-मकोड़ा।

मकोय–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा और उसका फल। यह दो प्रकार का होता है। एक में लाल रंग के और दूसरे में काले रंग के बहुत छोटे-छोटे फल लगते हैं। रसभरी।

मकोरना*†–क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

मक्कर*–संज्ञा पुं० छल। कपट।

मक्का–संज्ञा पुं० [अ०] १. अरब का एक प्रसिद्ध नगर, जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है। २. ज्वार। मकई।

मक्कार–वि० [अ०] [संज्ञा मक्कारी] कपटी। धोखेबाज। धूर्त।

मक्कारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] छल। कपट। धोखा।

मक्खन–संज्ञा पुं० दूध में का सार भाग, जो दही या मठे को मथने पर निकलता है और जिसको तपाने से घी बनता है। नवनीत। माखन। नैनूं।

मुहा०—कलेजे पर मक्खन मला जाना= शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता होना।

मक्खी–संज्ञा स्त्री० १.एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा, जो साधारणतः सब जगह उड़ता फिरता है और जिससे बीमारी फैलती है। २. मधु-मक्खी। मक्षिका।

मुहा०—जीती मक्खी निगलना=जान-बूझकर कोई ऐसा अनुचित काम करना, जिसके कारण पीछे से हानि हो। मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना=किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। मक्खी मारना या उड़ाना=बिलकुल निकम्मा रहना।

मक्खीचूस–संज्ञा पुं० बहुत अधिक कंजूस। अतिकृपण।

मक्खीमार–संज्ञा पुं० घृणित व्यक्ति।

मक़दूर–संज्ञा पुं० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति। वश। काबू। समाई। गुंजाइश।

मक्ष–संज्ञा पुं० १. अपने दोष को छिपाना। २. क्रोध। ३. समूह।

मक्षिका–संज्ञा स्त्री० १. मक्खी। २. मधु मक्खी।

मुहा०—मक्षिकास्थाने मक्षिका=मक्खी के स्थान पर मक्खी। ज्यों की त्यों नकल। हुबहू नकल। अक्षरशः।

मक्षिकामल–संज्ञा पुं० मोम। शहद के छत्ते में से शहद निकालने के बाद बचा हुआ अंश, जिससे मोम बनता है।

मक्षिकासन–संज्ञा पुं० शहद की मक्खी का छत्ता।

मख–संज्ञा पुं० यज्ञ जिसमें बलि चढ़ाई जाती थी।

वि० १. हँसमुख। २. फुर्तीला। ३. बुद्धिमान् या बलवान्।

मखजन–संज्ञा पुं० भंडार। खजाना।

मखतूल–संज्ञा पुं० काला रेशम।

मखतूली–वि० काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मख़दूम–संज्ञा पुं० [अ०] स्वामी। वि० पूज्य।
मखन*–संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।
मखनिया†–संज्ञा पुं० मक्खन बनाने या बेचनेवाला।
वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।
मख़मल–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मख़मली] एक प्रकार का बहुत बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।
मख़मली–वि० १. मख़मल का बना हुआ। २. मख़मल की तरह।
मखराज–संज्ञा पुं० राजसूय यज्ञ। यज्ञों में सबसे बड़ा।
मखशाला–संज्ञा स्त्री० यज्ञशाला।
मख़सूस–वि० जो किसी विशेष कार्य के लिए अलग कर दिया गया हो।
मखाना–संज्ञा पुं० दे० "तालमखाना"।
मखालय–संज्ञा पुं० यज्ञशाला।
मखी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।
मखेश–संज्ञा पुं० राजसूय यज्ञ। यज्ञों में सबसे बड़ा।
मखोना†–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा।
मखौल–संज्ञा पुं० हँसी-ठट्ठा। उपहास। मजाक। दिल्लगी।
मखौलिया–वि० हँसोड़। दिल्लगीबाज।
मग–संज्ञा पुं० १. मार्ग। रास्ता। २. मगध देश। मगह।
मगज–संज्ञा पुं० [अ०] १. दे० "मग्ज।" दिमाग। मस्तिष्क। २. गूदा। गिरी। मींगी।
मुहा०—मगज खाना या चाटना=बकवाद करके तंग करना। मगज खाली करना या पचाना=बहुत अधिक दिमाग लड़ाना। **सिर** खपाना।
मगजचट–वि० बकवादी। दिमाग चाट जानेवाला।
मगजपच्ची–संज्ञा स्त्री० किसी काम के लिए बहुत दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।
मगज़ी–संज्ञा स्त्री० कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।
मगण–संज्ञा पुं० कविता के आठ गणों में से एक, जिसमें ३ गुरु वर्ण होते हैं।
मगद–संज्ञा पुं० दे० "मगदल"। एक प्रकार की मिठाई।
मगदर–संज्ञा पुं० दे० "मगदल"।
मगदल–संज्ञा पुं० मूँग या उड़द का एक प्रकार का लड्डू।
मगदा–वि० मार्ग-प्रदर्शक। रास्ता दिखलानेवाला।
मगदूर*–संज्ञा पुं० दे० "मक़दूर"।
मगध–संज्ञा पुं० १. दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। २. मागध। बंदीजन।
मगन–वि० १. दे० "मग्न"। लीन। २. प्रसन्न।
मगना*†–क्रि० अ० लीन होना। तन्मय होना। डूबना।
मगर–संज्ञा पुं० १. घड़ियाल। ग्राह। २. मछली।
अव्य० लेकिन। परंतु। पर।
मगरमच्छ–संज्ञा पुं० १. मगर या घड़ियाल। २. बड़ी मछली।
मग़रब–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मगरबी] पश्चिम दिशा।
मग़रूर–वि० [अ०] घमंडी। अभिमानी।
मगरूरी–संज्ञा स्त्री० घमंड। अभिमान।
मगसिर–संज्ञा पुं० अगहन का महीना।
मगह†–संज्ञा पुं० मगध देश।
मगहपति*–संज्ञा पुं० मगधपति। मगध देश का राजा, जरासंध।
मगहय*†–संज्ञा पुं० मगध देश।
मगहर*†–संज्ञा पुं० मगध देश।
मगही–वि० १. मगध-संबंधी। मगध देश का। २. मगह में उत्पन्न (पान)।
मग, मग्ग*†–संज्ञा पुं० दे० "मार्ग"। रास्ता।
मग्ज़–संज्ञा पुं० १. मस्तिष्क। दिमाग। २. गूदा। गिरी। मींगी।
मग्न–वि० १. लीन। तन्मय। लिप्त। २. डूबा हुआ। निमज्जित। ३. प्रसन्न। खुश। ४. नशे आदि में चूर। मदमस्त।
मघ–संज्ञा पुं० १. पुरस्कार। २. धन।
मघई†–वि० दे० "मगही"।
मघन–संज्ञा पुं० महक। सुवास। सुगन्ध।

मघवा–संज्ञा पुं० इंद्र।
मघवाजित्–संज्ञा पुं० मेघनाद।
मघवान–संज्ञा पुं० इन्द्र।
मघवाप्रस्थ–संज्ञा पुं० इंद्रप्रस्थ। इन्द्र के रहने का स्थान।
मघवारिपु–संज्ञा पुं० मेघनाद।
मघा–संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे हैं।
मघोनी, मघौनी*–संज्ञा स्त्री० इंद्राणी। शची।
मघौना–संज्ञा पुं० नीले रंग का कपड़ा।
मचक–संज्ञा स्त्री० १. दबाव। दाब। २. धीरे-धीरे दर्द। गाँठ की पीड़ा।
मचकना–क्रि० अ० १. दर्द होना। चर्राना। गाँठ में पीड़ा होना। २. जोर से ऐसा दबाना कि मच-मच शब्द निकले। ३. ऐसा दबना, जिसमें मच-मच शब्द हो। ४. झटके से हिलना। ५. हावभाव करना। मटकना।
मचका–संज्ञा पुं० १. मचक या झटका। झोंका। धक्का। २. झूले की पेंग।
मचकाना–क्रि० स० मटकाना। झपकाना। आँख चलाना। हावभाव करना।
मचना–क्रि० अ० [अनु०] १. किसी ऐसे कार्य का होना, जिसमें शोर-गुल हो। २. होना। ३. छा जाना। फैलना। ४. शुरू करना। ५. उठाना। ६. दे० "मचकना"।
मचमच–अव्य० ध्वनि-विशेष। चरचर। मरमर।
मचमचाना–क्रि० अ० जोर से हिलाना। मचमच करना।
क्रि० स० ऐसा दबाना या हिलाना जिससे मचमच शब्द हो।
मचल–संज्ञा स्त्री० मचलने की क्रिया या भाव।
मचलना–क्रि० अ० किसी चीज के लिए हठ करना। जिद करना। अड़ना।
मचला–वि० मचलनेवाला। बोलने के अवसर पर जान-बूझकर चुप रहनेवाला। अनजान बननेवाला।
संज्ञा पुं० पान के बीड़े रखने का बाँस का बुना हुआ एक प्रकार का छोटा पात्र।
[illegible]ई*–संज्ञा स्त्री० मचलने का भाव [illegible] क्रिया। दे० "मचल"।
मचलाना–क्रि० अ० [अनु०] दे० "मिचलाना"। मतली आना। कै करने की इच्छा होना। कै मालूम होना। दे० "मचलना"। हठ करना। क्रि० स० किसी चीज का लालच देकर उसे न देना। तरसाना। किसी को मचलने में प्रेरित करना।
मचलाहा–वि० हठीला। मचलने या रूठने-वाला।
मचवा–संज्ञा पुं० खाट।
मचान–संज्ञा पुं० १. बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान, जिस पर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं। २. मंच। कोई ऊँची बैठक।
मचाना–क्रि० स० १. करना। होने देना। प्रारम्भ करना। उठाना। ठानना। २. कोई ऐसा कार्य्य आरंभ करना, जिसमें हुल्लड़ हो।
मचिया†–संज्ञा स्त्री० १. छोटी चारपाई। पलँगड़ी। २. पीढ़ी।
मचिलई*–संज्ञा स्त्री० मचलने का भाव।
मचोड़ना–क्रि० अ० निचोड़ना। ऐंठना। गारना।
मच्छ–संज्ञा पुं० बड़ी मछली।
मच्छड़, मच्छर–संज्ञा पुं० एक छोटा पतिंगा, जिसके काटने से बीमारी फैलती है। मसा।
मच्छरता*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मत्सर"। ईर्ष्या। द्वेष। २. क्रोध।
मच्छरदानी–संज्ञा स्त्री० दे० "मसहरी"।
मच्छी–संज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।
मच्छीमार–संज्ञा पुं० १. मछली मारनेवाला। २. धीवर। मछुआ।
मच्छोदरी*–संज्ञा स्त्री० व्यासजी की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती। मत्स्यो-दरी।
मछन्दर–संज्ञा पुं० १. मत्स्येन्द्रनाथ। गोरख-पंथियों के गुरु। २. चूहा।
वि० १. बड़ी मूँछवाला। २. मूर्ख। अनभिज्ञ।
मछरंगा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जलपक्षी। रामचिड़िया।
मछली–संज्ञा स्त्री० १. जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव, जिसे लोग खाते हैं। मीन।

२. मछली के आकार का कोई पदार्थ।

मछुआ, मछुवा–संज्ञा पुं० मछली मारनेवाला। मल्लाह। धीवर।

मजकूर–वि०[फा०]कहा हुआ। उक्त।उपर्युक्त। संज्ञा पुं० लिखित विवरण।

मजकूरी–संज्ञा पुं० [फा०] नोटिस और सम्मन आदि तामील करनेवाला चपरासी।

मजदूर–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन] १. बोझ ढोनेवाला। मजूरा। कुली। मोटिया। २. कल-कारखानों में छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी। शारीरिक मेहनत से अपनी जीविका प्राप्त करनेवाला व्यक्ति। धन लेकर दूसरे के लिए काम करनेवाला व्यक्ति। श्रमिक।

मजदूरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मजदूर का काम। परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन। पारिश्रमिक। उजरत।

मजना*†–क्रि० अ० १. डूबना। २. अनुरक्त होना। ३. माँजना। ४. अभ्यस्त होना।

मजनूं–संज्ञा पुं० [अ०] १. अरब के एक प्रसिद्ध सरदार का लड़का, जिसका वास्तविक नाम कैस था और जो लैला नाम की एक सुन्दरी पर आसक्त होकर उसके लिए पागल हो गया था। २. आशिक। प्रेमी। आसक्त। दीवाना। प्रेम में पागल या बावला।

मजबूत–वि० [अ०] [संज्ञा मजबूती] १. बलवान्। सबल। २. दृढ़। पुष्ट। पक्का।

मजबूर–वि० [अ०] लाचार। विवश।

मजबूरन–क्रि० वि० [अ०] विवश होकर। लाचारी से।

मजबूरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] विवशता। असमर्थता। लाचारी। बे-बसी।

मजमा–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से लोगों का जमाव। भीड़भाड़। जमघट।

मजमुआ–वि० [अ०] इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। संज्ञा पुं० बहुत-सी चीजों का समूह। संग्रह। खजाना। जखीरा।

मजमून–संज्ञा पुं० [अ०] १. विषय, जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २. लेख।

मजरा–संज्ञा पुं० खेड़ा। छोटा गाँव।

मजरुआ–वि० जोती-बोई हुई जमीन। खेत।

मजरूह–वि० [अ०] घायल।

मजल†–संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।

मजलिस–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मजलिसी] १. सभा। समाज। जलसा। २. महफिल। नाच-रंग का स्थान।

मजलूम–वि० [अ०] जिस पर जुल्म हो। पीड़ित। सताया हुआ।

मजहब–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मजहबी] धर्म। पंथ। मत। धार्मिक सम्प्रदाय।

मजहबी–वि० [अ०] धार्मिक। धर्म या मजहब-सम्बन्धी।

मजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. मन को अच्छा लगने का भाव। स्वाद। लज्जत। २. आनन्द। सुख। ३. दिल्लगी। हँसी। **मुहा०**—मजा आ जाना=आनन्द आना। अच्छा लगना। दिल्लगी का सामान होना। मजा चखाना=बदला लेना। उचित दंड देना। मजा लूटना=खूब आनन्द लेना।

मजाक़–संज्ञा पुं० [अ०] हँसी। ठट्ठा। परिहास।

मजाक़न–क्रि० वि० हँसी या मजाक में।

मजाकिया–क्रि० वि० हँसी या मजाक में। संज्ञा पुं० बहुत हँसी करनेवाला। दिल्लगीबाज। हँसोड़।

मजार–संज्ञा पुं० [अ०] कब्र।

मजारी–संज्ञा स्त्री० दे० "मार्जार।"

मजाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति। हिम्मत।

मजिल*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।

मजिस्ट्रेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जिले के किसी भाग का शासन-प्रबन्ध करनेवाला तथा फौजदारी अदालत का सरकारी अधिकारी। अधिकार के विचार से तीन श्रेणी के मजिस्ट्रेट होते हैं–प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी और तृतीय श्रेणी। कार्यों के अनुसार कई प्रकार के मजिस्ट्रेट होते हैं, जैसे जिला मजिस्ट्रेट, जुडिशियल मजिस्ट्रेट, रेलवे मजिस्ट्रेट आदि।

मजीठ–संज्ञा स्त्री० १. लाल रंग। २. औषधविशेष। ३. एक प्रकार की लता, जिसकी जड़ और डंठलों से लाल रंग निकलता है।

मजीठी–संज्ञा पुं० मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख।
मजीर*–संज्ञा स्त्री० घौद। गुच्छा।
मजीरा–संज्ञा पुं० बजाने के लिए काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी। जोड़ी। ताल। छोटी झाँझ।
मजूर*–संज्ञा पुं० १. दे० "मजदूर"। २. दे० "मयूर"। मोर।
मजूरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "मजदूरी"।
मजेज*†–वि० [फा०] मिजाज। अहंकार।
मजेदार–वि० [फा०] १. मजा या आनन्द देनेवाला। स्वादिष्ठ। जायकेदार। २. अच्छा। बढ़िया।
मज्ज–संज्ञा स्त्री० दे० 'मज्जा'।
मज्जन–संज्ञा पुं० स्नान। नहाना।
मज्जना*–क्रि० अ० नहाना। स्नान करना। निमग्न होना। गोता लगाना। डूबना।
मज्जा–संज्ञा स्त्री० हड्डी के भीतर का गूदा। चर्बी।
मज्जित–वि० नहाया हुआ। डूबा हुआ।
मझ, मझ*–क्रि० वि० दे० "मध्य"। बीच।
मझधार–संज्ञा स्त्री० नदी के बीचोबीच का भाग या नदी के मध्य की धारा। किसी काम का मध्य।
मुहा०—मझधार में=बीचोबीच में।
मझला–वि० बीच का। मध्य का।
मझाना*†–क्रि० स० प्रविष्ट करना। पैठाना। बीच में धँसाना।
क्रि० अ० प्रविष्ट होना। पैठना।
मझार*†–क्रि० वि० मध्य में। बीच में।
मझारि या **मझारी**–संज्ञा पुं० बीच। मध्य।
मझावना*†–क्रि० अ०, क्रि स० दे० "मझाना"।
मझियाना*†–क्रि० अ० १. नाव खेना। मल्लाही करना। २. बीच से होकर निकलना।
मझियारा*†–वि० बीच का। मध्य।
मझोला–वि० १. मझोली। मझला। बीच का। मध्य का। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मध्यम आकार का।
मझोली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बैल-गाड़ी।
वि० दे० "मझोला।"

मट†–संज्ञा पुं० मटका। मटकी।
मटक–संज्ञा स्त्री० १. गति। चाल। आँखों या अंगों को हाव-भाव के साथ हिलाना। २. मटकने की क्रिया या भाव। हाव-भाव। नखरा। चोचला।
मटकना–क्रि० अ० १. अंग हिलाते हुए चलना। लचक कर नखरे से चलना। २. आँख घुमाना। विचलित होना। ३. हिलना।
मटकनि*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मटक।" लचक कर नखरे से चलना। २. नाचना। नृत्य। ३. नखरा।
मटका–संज्ञा पुं० मिट्टी का बड़ा घड़ा। बड़ी गगरी।
मटकाना–क्रि० स० १. नखरे के साथ अंगों को हिलाना-डुलाना। २. चमकाना। ३. आँख घुमाना। कटाक्ष करना।
मटकी–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का छोटा घड़ा। छोटा मटका। २. आँख का इशारा। आँखों या अंगों का हावभाव के साथ हिलाना। मटकने या मटकाने का भाव। मटक।
मटकीला–वि० मटकनेवाला। नखरा करनेवाला।
मटकौअल–संज्ञा स्त्री० आँखों या अंगों को हाव-भाव के साथ हिलाना। मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।
मटमैला–वि० मिट्टी के रंग का। खाकी। धूसर। गंदा।
मटर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा अन्न। इसकी लंबी फलियों को छीमी कहते हैं, जिनमें गोल दाने रहते हैं।
मटरगश्त–संज्ञा पुं० १. टहलना। धीरे-धीरे घूमना। २. सैर-सपाटा।
मटलनी†–संज्ञा स्त्री० मिट्टी का कच्चा बर्त्तन।
मटिआना†–क्रि० स० १. मिट्टी लगाकर माँजना। २. मिट्टी लगाना। मिट्टी से ढाँकना।
मटिया†–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी। २. शव। निर्जीव शरीर।
वि० मटमैला।
मटियामसान–वि० मिट्टी की तरह नश्वर। गया-बीता। नष्टप्राय।

मटियामेट–वि० मिट्टी में मिला दिया गया। दे० "मलियामेट"। नष्ट-भ्रष्ट। तहस-नहस। नेस्त-नाबूद।
मटियार–संज्ञा पुं० ऐसी भूमि, जिसमें अधिक चिकनी मिट्टी हो।
मटियाला–वि० दे० "मटमैला"।
मटुक†–संज्ञा पुं० दे० "मुकुट"।
मटुका–संज्ञा पु० दे० "मटका"।
मटुकी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।
मट्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।
मट्ठर†–वि० सुस्त। आलसी। काहिल।
मट्ठा–संज्ञा पुं० मथा हुआ दही, जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।
मट्ठी–संज्ञा स्त्री० मैदा का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।
मठ–संज्ञा पुं० १. निवास-स्थान। २. साधुओं या संन्यासियों के रहने का स्थान। आश्रम। ३. मंदिर।
मठधारी–संज्ञा पुं० किसी मठ का मालिक या स्वामी। वह साधु या महंत, जिसके अधिकार में कोई मठ हो। मठाधीश।
मठपति–संज्ञा पुं० मठ का मालिक। मठाधीश।
मठरी–संज्ञा स्त्री० दे० "मट्ठी"। एक प्रकार का नमकीन पकवान।
मठा–संज्ञा पुं० दे० "मट्ठा"।
मठाधीश–संज्ञा पुं० किसी मठ का महन्त या स्वामी। मठ का प्रधान।
मठिया–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मठ या कुटी। २. फूल (धातु) की बनी हुई चूड़ियाँ। ३. दे० "माँठी"।
मठी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मठ। २. मठ का महंत। मठधारी।
मठोर–संज्ञा स्त्री० दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।
मठोरना–क्रि० स० खरादना। सुडौल करना।
मड़ई†–संज्ञा स्त्री० फूस से छाया हुआ बहुत छोटा घर। झोपड़ी। मड़ैया। कुटी या कुटिया।
मड़क–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी बात का भीतरी रहस्य।
मड़राना–क्रि० अ० दे० "मँडराना"।
मड़वा–संज्ञा पुं० दे० "मंडप"। विवाह-मंडप।
मड़ाड़†–संज्ञा पुं० छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।
मड़ियाना–क्रि० स० १. चिपकाना। मिलाना। २. जमाना।
मडुआ–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मोटा अन्न। २. एक पक्षी।
मड़ैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मड़ई"।
मढ़–वि० अड़कर बैठनेवाला।
मढ़ना–क्रि० स० १. चारों ओर से लपेट लेना। आवेष्टित करना। कपड़ा या चमड़ा चढ़ाना। छिपाना। आवरण चढ़ाना। २. किसी के गले लगाना। थोपना।
मढ़वाना–क्रि० स० मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ाई–संज्ञा स्त्री० मढ़ने का काम या मजदूरी।
मढ़ाना–क्रि० स० दे० "मढ़वाना"।
मढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मठ। २. कुटी। झोंपड़ी। छोटा घर।
मणगयण–संज्ञा पुं० सूर्य।
मणि–संज्ञा स्त्री० १. कीमती पत्थर-विशेष। बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २. सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। ३. पुरुषेन्द्रिय का अग्रभाग।
मणिक–संज्ञा पुं० छोटी मणि।
मणिकर्णिका–संज्ञा स्त्री० १. बनारस में एक पवित्र कुंड तथा उसके निकट का घाट, जो हिन्दुओं के तीर्थस्थान हैं। २. मोतियों या जवाहरात से युक्त कान का एक गहना।
मणिकार–संज्ञा पुं० मोतियों या जवाहरात से युक्त गहना बनानेवाला। जौहरी। जड़िया।
मणिगुण–संज्ञा पु० १. एक वर्णिक छंद। २. शशिकला। शरभ (चन्द्रमा का मृग)।
मणिधर–संज्ञा पु० मणि धारण करनेवाला। ऐसी किंवदन्ती है कि सर्प के मस्तक में मणि रहती है। सर्प। साँप।
मणिपुर–संज्ञा पुं० तंत्र के अनुसार नाभि के पास का चक्र।
मणिबंध–संज्ञा पुं० कलाई। गट्टा।
मणिमाला–संज्ञा स्त्री० मणियों की माला।

मणिया, मनिया—संज्ञा पुं० माला का दाना।

मणिहार—संज्ञा पुं० मनिहार। चूड़ीहार।

मणिश्याम—संज्ञा पुं० नीलम।

मतंग—संज्ञा पुं० १. हाथी। २. बादल।

मतंगी—संज्ञा पुं० हाथी का सवार।

मत—क्रि० वि० न। नहीं। निषेध-सूचक शब्द। जैसे मत करो=न करो।

संज्ञा पुं० १. सम्मति। राय। २. धर्म। मजहब। सम्प्रदाय। पंथ। ३. निर्वाचन या चुनाव में खड़े हुए उम्मीदवार को दी जानेवाली अपनी सम्मति (वोट)। सभा, समिति, संस्था या विधान-मंडलों आदि में जिन व्यक्तियों या सदस्यों को अपनी सम्मति प्रकट करने का अधिकार हो, उनके द्वारा दी गई सम्मति। ४. निश्चित सिद्धान्त।

मतदाता—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति, जिसे किसी चुनाव में या किसी विवादग्रस्त विषय पर अपना मत देने का अधिकार प्राप्त हो (अंग्रे०—वोटर)। मतदान करनेवाला या मत देनेवाला।

मतदान—संज्ञा पुं० चुनाव आदि में मत देने की क्रिया या भाव (अंग्रे०—वोटिंग)।

मतदान-क्षेत्र—संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ से मत (वोट) लिया जाय।

मतना*—क्रि० अ० १. सम्मति निश्चित करना। राय कायम करना। २. उन्मत्त होना। पागल होना।

मत-पत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिस पर चुनाव में खड़े होनेवाले व्यक्तियों के नाम या विशिष्ट चिह्न रहते हैं और जिस पर अपनी ओर से कोई चिह्न लगाकर मतदाता उनमें से किसी के पक्ष में अपना मत (वोट) देता है (अंग्रे०—बैलेट पेपर)।

मतपेटिका—संज्ञा स्त्री० वह पेटी या बक्स, जिसमें मतदाता अपना मत-पत्र डालता है (अंग्रे०-बैलेट बाक्स)।

मतभिन्नता—संज्ञा स्त्री० अलग-अलग राय होना। दे० "मतभेद"।

मतभेद—संज्ञा पुं० आपस में राय या मत न मिलना। एक दूसरे से विभिन्न विचार होना। परस्पर भेदभाव।

मतरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"। माता।

मतलब—संज्ञा पुं० १. तात्पर्य। अभिप्राय। आशय। अर्थ। मानी। २. अपना हित। स्वार्थ। ३. उद्देश्य। ४. संबंध। लगाव।

मतलबी—वि० स्वार्थी। अपना मतलब निकालनेवाला। खुदगरज।

मतली—संज्ञ स्त्री० कै करने की इच्छा।

मतवार, मतवारा*—वि० दे० "मतवाला"।

मतवाला—वि० [स्त्री० मतवाली] १. मस्त। उन्मत्त। पागल। २. नशे में बेहोश। मद-मस्त। शराबी। ३. घमंडी।

संज्ञा पुं० १. वह भारी पत्थर, जो किले या पहाड़ पर से, नीचे के शत्रुओं को मारने के लिए, लुढ़काया जाता है। २. एक प्रकार का खिलौना।

मता†—संज्ञा पुं० दे० "मत"।

संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

मताधिकार—संज्ञा पुं० मत (वोट) देने का अधिकार।

मतानुयायी—संज्ञा पुं० मत या सिद्धान्त को माननेवाला। मतावलंबी।

मतारी†—संज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"। माता।

मतावलंबी—संज्ञा पुं० किसी मत या संप्रदाय को माननेवाला या अनुयायी।

मति—संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। समझ। अक्ल। २. राय। सलाह। सम्मति।

*†क्रि० वि० दे० "मत"। नहीं।

वि० बुद्धिमान। चतुर।

मतिमंत—वि० बुद्धिमान्। चतुर।

मतिगर्भ—वि० बुद्धिमान्। चतुर।

मतिमान—वि० बुद्धिमान्।

मतिमाह*—वि० दे० "मतिमान"।

मतिवंत—वि० दे० "मतिमान"। बुद्धिमान्।

मती—संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

मतीरा—संज्ञा पुं० तरबूज। कलिंदा।

मतीस—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।

मतेई*†—संज्ञा स्त्री० विमाता। सौतेली माँ।

मत्कुण—संज्ञा पुं० खटमल।

मत्त–वि० १. मस्त। मतवाला। नशे में चूर या मस्त। २. बहुत खुशी या प्रसन्नता से मस्त। उन्मत्त।
मत्तकाशिनी–संज्ञा स्त्री० नशे में मस्त की तरह दिखाई देनेवाली स्त्री। मोहित करनेवाली स्त्री। कामासक्त स्त्री (सम्बोधन)।
मत्तगयंद–संज्ञा पुं० सवैया छंद का एक भेद।
मत्तता*–संज्ञा स्त्री० मतवालापन। मस्ती।
मत्तमयूर–संज्ञा पुं० पंद्रह अक्षरों का एक छन्द।
मत्ता–प्रत्य० मान् से बननेवाला भाववाचक प्रत्यय। जैसे, बुद्धिमान् से बुद्धिमत्ता।
मत्था†–संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
मत्सर–संज्ञा पुं० डाह। द्वेष। प्रतिस्पर्द्धा। हसद। जलन।
मत्सरता–संज्ञा स्त्री० डाह। द्वेष। हसद।
मत्सरी–वि० द्वेष या डाह करनेवाला। हसद करनेवाला।
मत्स्य–संज्ञा पुं० १. मछली। २. प्राचीन विराट् देश का नाम। विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।
मत्स्यगंधा–संज्ञा स्त्री० व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।
वि० मछली की तरह महकनेवाली।
मत्स्यपुराण–संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक पुराण।
मत्स्यावतार–संज्ञा पुं० विष्णु या भगवान् के दस अवतारों में से पहला अवतार, जब उन्होंने एक बड़ी मछली का रूप धारण किया था।
मत्स्यासन–संज्ञा पुं० तांत्रिकों के योग का एक आसन।
मत्स्येंद्रनाथ–संज्ञा पुं० गोरखपंथ के प्रवर्त्तक, गोरखनाथ के गुरु।
मत्स्योपजीवी–संज्ञा पुं० मछुआ। मछलियों से अपनी जीविका चलानेवाला।
मथना–क्रि० स० १. मथना। बिलोना। दही में से मक्खन निकालना। २. फेंटना। तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना। ३. नष्ट करना। ध्वंस करना। ४. घूम-घूमकर पता लगाना। ५. किसी कार्य को बहुत अधिक बार करना।
संज्ञा पुं० मथानी। रई।
मथनियाँ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी"।
मथनी–संज्ञा स्त्री० मटका, जिसमें दही मथा जाता है। दे० "मथानी"। मथने की क्रिया।
मथवाह*–संज्ञा पुं० महावत।
मथानी–संज्ञा स्त्री० काठ का एक प्रकार का दंड, जिससे दही मथकर मक्खन निकाला जाता है। दही मथने की हँडिया।
मुहा०–मथानी पड़ना या बहना=खलबली मचना।
मथित–वि० मथा हुआ। बिलोया हुआ। आलोड़ित।
मथी–संज्ञा पुं० मथानी।
वि० मथनेवाला।
मथुरा–संज्ञा स्त्री० उत्तर-प्रदेश में आगरा के निकट यमुना के किनारे बसा हुआ एक नगर, जहाँ श्रीकृष्ण का जन्म-स्थान था। यह हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ है।
मथुरिया–वि० मथुरा का। मथुरा-सम्बन्धी। मथुरा का रहनेवाला।
मथूल*–संज्ञा पुं० दे० "मस्तूल"।
मथौरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का भद्दा रंदा (औजार)।
संज्ञा स्त्री० सिर में पहनने का एक आभूषण।
मथ्था†–संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
मदंध*–वि० दे० "मदांध"।
मद–संज्ञा पुं० १. अत्यधिक हर्ष या प्रसन्नता। आनन्द। २. अहंकार। घमंड। मत्तता। मोह। ३. मद्य। मादक वस्तु। नशा। शराब। ४. मस्ती। मतवालापन। उन्मत्तता। ५. मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहनेवाला वीर्य्य। ६. कस्तूरी।
संज्ञा स्त्री० विभाग। खाता। कोई एक विषय या रकम। जैसे, इस मद में।
मदक–संज्ञा स्त्री० अफीम से बनी एक प्रकार की नशीली वस्तु। इसे चिलम पर रखकर पीते हैं।
मदकची–वि० मदक पीनेवाला।

मदकट—संज्ञा पुं॰ साँड़।
मदकद्रुम—संज्ञा पुं॰ ताड़ का पेड़।
मदकल—वि॰ मस्त। मत्त। मतवाला। संज्ञा पुं॰ मत्त हाथी।
मदकृत—वि॰ मादक। नशीली।
मदकोहल—संज्ञा पुं॰ साँड़।
मदगल—वि॰ मस्त। मत्त।
मदजल—संज्ञा पुं॰ हाथी का मद। मतवाले हाथियों की कनपटियों से निकलनेवाला द्रव (दान)।
मदद—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] सहायता। सहारा।
मददगार—वि॰ [फा॰] मदद या सहायता देनेवाला। सहायक।
मदन—संज्ञा पुं॰ १. कामदेव। २. काम-क्रीड़ा। ३. भ्रमर। ४. मैना पक्षी। सारिका। ५. प्रेम।
मदनकंटक—संज्ञा पुं॰ प्रेम के कारण उत्पन्न होनेवाला रोमांच। सात्विक रोमांच।
मदनकलह—संज्ञा पुं॰ प्रेम-कलह। प्रेम का झगड़ा।
मदनकदन—संज्ञा पुं॰ शिव। कामदेव का नाश करनेवाले।
मदनगोपाल—संज्ञा पुं॰ श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।
मदनचतुर्दशी—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मदनमहोत्सव"।
मदनदमन—संज्ञा पुं॰ शिव।
मदनपति—संज्ञा पुं॰ १. इन्द्र। २. विष्णु।
मदनपाठक—संज्ञा पुं॰ १. बंदीजन। २. कोयल। वसन्त के आगमन की सूचना देनेवाला।
मदनबान, मदनबाण—संज्ञा पुं॰ १. कामदेव का बाण। २. एक प्रकार का बेला (फूल)।
मदनमनोरमा—संज्ञा स्त्री॰ आचार्य केशव के अनुसार सवैया का एक भेद। दुर्मिल।
मदनमस्त—संज्ञा पुं॰ चंपे की जाति का एक प्रकार का फूल।
मदनमहोत्सव—संज्ञा पुं॰ वसन्तोत्सव। प्राचीन समय में चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होनेवाला एक उत्सव।
मदनमोहन—संज्ञा पुं॰ कृष्णचंद्र। कामदेव को मोहित करनेवाला।
मदनललिका—संज्ञा स्त्री॰ एक वर्णिक छंद।
मदनलेख—संज्ञा पुं॰ प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेमपत्र।
मदनांतक—संज्ञा पुं॰ शिव।
मदनांध—वि॰ कामवासना से अन्धा। कामांध।
मदना—संज्ञा स्त्री॰ मैना।
मदनायुध—संज्ञा पुं॰ कामदेव का अस्त्र।
मदनारि—संज्ञा पुं॰ शिव। कामदेव का शत्रु।
मदनास्त्र—संज्ञा पुं॰ कामदेव का अस्त्र।
मदनी—संज्ञा स्त्री॰ सुरा। वारुणी। शराब।
मदनोत्सव—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वसन्तोत्सव।"
मदमत्त—वि॰ १. मस्त। मतवाला। नशे में चूर। २. अहंकार या घमंड से चूर।
मदर*—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मँडराना"।
मदरसा—संज्ञा पुं॰ [अ॰] पाठशाला। छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान।
मदविक्षिप्त—वि॰ मदमत्त। मस्त। मतवाला।
मदांध—वि॰ जो मद (नशा या घमंड) के कारण अन्धा हो रहा हो अर्थात् मनमाना कर रहा हो। मदमत्त। मतवाला।
मदाखिलत—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. दखल देना। हस्तक्षेप। २. दखल जमाना। कब्जा करना।
मदाखिलत बेजा—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] अनधिकार प्रवेश। अनुचित हस्तक्षेप।
मदाढ्य—संज्ञा पुं॰ ताड़ का पेड़।
मदार—संज्ञा पुं॰ १. आक। मंदार। अकवन। २. एक गन्ध द्रव्य।
मदारी—संज्ञा पुं॰ १. बंदर, भालू आदि नचाकर लोगों को तमाशे दिखानेवाला। २. इन्द्रजाल या जादू का खेल दिखानेवाला। मदारिया। बाजीगर।
मदालसा—संज्ञा स्त्री॰ पुराणानुसार विश्वावसु गंधर्व की कन्या, जिसे पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल में रखा था।
मदाह्व—संज्ञा पुं॰ कस्तूरी।
मदिक—संज्ञा पुं॰ घमंडी। अभिमानी।
मदिर—वि॰ [संज्ञा स्त्री॰ मदिरा] मत्त या मस्त करनेवाला। नशीला।
मदिरा—संज्ञा स्त्री॰ मद्य। शराब।
मदीय—वि॰ मेरा।
मदीयून—संज्ञा पुं॰ [अ॰] कर्जदार। मुद्दाअलेह।
मदीला—वि॰ नशीला। नशा पैदा करनेवाला।

मदोत्कट—वि० मद में चूर। मदगर्वित।
मदोदग्र—वि० मत्त।
मदोन्मत्त—वि० मद में पागल। मदांध। मद-माता।
मदोल्लापी—संज्ञा पुं० कोकिल।
मद्धिक—संज्ञा पुं० द्राक्ष। अंगूर से बनाई जानेवाली मदिरा।
मद्धिम*†—वि० १. मध्यम। अपेक्षाकृत कम अच्छा। २. मंदा।
मद्धे—अव्य० १. बीच में। में। २. विषय में। बाबत। संबंध में। ३. लखे या हिसाब में।
मद्य—संज्ञा पुं० मदिरा। शराब।
मद्यप—वि० शराबी। मदिरा पीनेवाला।
मद्र—संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश। उत्तर कुरु। पुराणानुसार रावी और झेलम नदियों के बीच का देश। २. हर्ष। आनन्द।
मद्रक—वि० मद्रदेश-सम्बन्धी।
मद्रकार—वि० मंगलकारक। शुभ।
मध, मधि*—संज्ञा पुं० दे० "मध्य"। अव्य० में।
मधिम*—वि० दे० "मध्यम"।
मधु—संज्ञा पुं० १. शहद। २. पानी। जल। ३. मदिरा। शराब। ४. अमृत। ५. फूल का रस। मकरंद। ६. वसंत ऋतु। ७. चैत्र मास।
वि० १. मीठा। २. स्वादिष्ठ।
मधुकंठ—संज्ञा पुं० कोयल।
मधुक—संज्ञा पुं० महुआ का पेड़ और उसका फूल।
मधुकर—संज्ञा पुँ० भौंरा। भ्रमर।
मधुकरी—संज्ञा स्त्री० १. मधुकर (भौंरा) की मादा। भौंरी। २. वह भिक्षा, जिसमें केवल पका हुआ अन्न कई स्थानों से लिया जाता है। ३. बाटी। गकरिया।
मधुकैटभ—संज्ञा पुं० पुराणानुसार मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य, जिन्हें विष्णु ने मारा था।
मधुकोष—संज्ञा पुं० शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुगंध—संज्ञा पुं० अर्जुनवृक्ष। बकुल।
मधुघोष—संज्ञा पुं० कोकिल।
मधुचक्र—संज्ञा पुं० शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुज—संज्ञा पुं० मोम।
मधुजा—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
मधुज्वाल—संज्ञा पुं० मधु (शराब) की ज्वाला। शराब की गरमी। नशा।
मधुत्रय—संज्ञा पुं० शहद, घी और चीनी, इन तीनों का मिश्रण या मेल।
मधुत्व—संज्ञा पुं० मिठास।
मधुदीप—संज्ञा पुं० कामदेव।
मधुद्र—संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुधूलि—संज्ञा स्त्री० शक्कर। चीनी।
मधनेत्रा—संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुप—संज्ञा पुं० भौंरा।
वि० मधु पीनेवाला।
मधुपति—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
मधुपर्क—संज्ञा पुं० दही, घी, जल, शहद और चीनी का मिश्रण, जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।
मधुपर्ण—संज्ञा पुं० रसयुक्त फल।
मधपायी—संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुपुर—संज्ञा पुं० मथुरा नगर का प्राचीन नाम।
मधुपुरी—संज्ञा स्त्री० मथुरा नगरी।
मधुपुष्प—संज्ञा पुं० १. महुआ। २. सिरिस का पेड़। ३. अशोक वृक्ष। ४. मौलसिरी।
मधुप्रमेह—संज्ञा पुं० एक तरह की बीमारी, जिसमें पेशाब से चीनी निकलती है। इस रोग के प्रधान लक्षण कमर और जोड़ों में दर्द होना, पेशाब का बार-बार आना और पेशाब में अधिक चीनी आना, प्यास और भूख लगना आदि हैं। प्रमेह। मधुमेह।
मधुबन—संज्ञा पुं० दे० "मधुवन"।
मधुबीज—संज्ञा पुं० अनार।
मधुमक्खी—संज्ञा स्त्री० शहद की मक्खी। एक प्रकार की मक्खी, जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है।
मधुमक्षिका—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।
मधुमती—संज्ञा स्त्री० दो नगण और एक गुरु का एक छंद।
मधुमाखी—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।
मधुमारक—संज्ञा पुं० भौंरा।

मधुमालती—संज्ञा स्त्री० मालती लता।
मधुमेह—संज्ञा पुं० प्रमेह रोग का बढ़ा हुआ रूप, जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है। दे० "मध प्रमेह"।
मधुयष्टि—संज्ञा स्त्री० मुलेठी।
मधुर—वि० १. जिसका स्वाद मधु के समान हो। मीठा। २. जो सुनने में भला जान पड़े। सुंदर। मनोरंजक। ३. सुकुमार। कोमल।
मधुरई*—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुरता—संज्ञा स्त्री० १. मधुर होने का भाव। मिठास। २. सौंदर्य। सुंदरता। ३. कोमलता। सुकुमारता।
मधुरत्व—संज्ञा पुं० दे० "मधुरता"।
मधुरस—संज्ञा पुं० ईख।
मधुरसिक—संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुरा—संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह शब्द-योजना, जिससे रचना में माधुर्य या सरसता आती है।
मधुराई*—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुराज—संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुरान्न—संज्ञा पुं० मिठाई।
मधुराना*†—क्रि० अ० १. मीठा होना। २. सुंदर होना।
मधुरिका—संज्ञा स्त्री० सौंफ।
मधुरिपु—संज्ञा पुं० कृष्ण।
मधुरिमा—संज्ञा स्त्री० १. मिठास। मीठापन। २. सुंदरता। सौंदर्य।
मधुरी*—वि० मीठी। रसीली। सुंदर।
संज्ञा स्त्री० दे० "माधुर्य"।
मधुवन—संज्ञा पुं० १. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। २. किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन।
मधुवामन—संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुशर्करा—संज्ञा स्त्री० शहद से बनाई हुई चीनी।
मधुसख—संज्ञा पुं० कामदेव।
मधुसूदन—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
मधूक—संज्ञा पुं० महुआ (पेड़ और फल)।
मधूकरी—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुकरी"।
मध्य—संज्ञा पुं० १. बीच। किसी पदार्थ के बीच का भाग। दरमियानी हिस्सा। २. कमर। कटि। ३. अंतर। भेद। फरक। ४. सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था।
मध्यक—संज्ञा पुं० औसत। बराबर का पड़ता। सामान्य अनुपात। कई संख्याओं, मूल्यों या तौल-नाप आदि को एक में मिलाकर उनके जोड़ का किया हुआ सम विभाग, जो उनका मध्यम मान प्रकट करता है।
मध्यगत—वि० बीच का। मध्य का।
मध्यता—संज्ञा स्त्री० मध्य होने का भाव।
मध्यदेश—संज्ञा पुं० भारतवर्ष का वह प्रदेश, जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य-पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।
मध्यम—वि० १. मध्य का। बीच का। २. न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा।
संज्ञा पुं० १. संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर। २. नायिका के क्रोध करने पर अनुराग न प्रकट करनेवाला उपपति नायक।
मध्यम पुरुष—संज्ञा पुं० वह पुरुष, जिससे बात की जाय (व्याकरण)।
मध्यमवर्ग—संज्ञा पुं० समाज की वह श्रेणी या समाज में उन व्यक्तियों का समूह, जो न तो बहुत ही गरीब हैं और न बहुत धनी, या जो न तो मजदूर हैं और न पूंजीपति। (अंग्रे०—मिडिल क्लास)।
मध्यमा—संज्ञा स्त्री० १. बीच की उँगली। २. वह नायिका, जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर-मान या अपमान करे।
मध्यमान—संज्ञा पुं० [वि० मध्यमानिक] औसत। सामान्य अनुपात। बराबर का पड़ता। दे० "मध्यक"।
मध्ययुग—संज्ञा पुं० प्राचीन और आधुनिक युगों के बीच का समय। प्रायः सभी देशों के इतिहास में ईसवी छठीं से पन्द्रहवीं शताब्दी तक का समय।
मध्ययुगीन—वि० १. मध्ययुग का। २. मध्ययुग-संबंधी।
मध्यवर्ती—वि० बीच का। मध्य भाग।
संज्ञा पुं० बिचवई। दो दलों या पक्षों के

बीच में रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेनदेन में कुछ सुभीते पैदा करके अपना लाभ करनेवाला। जैसे—उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के बीच में व्यापारी या सरकार और किसान के बीच में जमीदार। (अंग्रे०—इण्टरमिडियेटरी या मिडिल मैन।)

मध्यस्थ—वि० जो बीच में हो।
संज्ञा पुं० [स्त्री० मध्यस्थता] बीच में पड़कर विवाद या झगड़ा निपटानेवाला। आपस में समझौता करानेवाला। बिचवई।

मध्या—संज्ञा स्त्री० १. वह नायिका, जिसमें लज्जा और काम समान हों। २. नाप-तौल या समय आदि के विचार से बीच में पड़नेवाली नाप आदि।

मध्यावकाश—संज्ञा पुं० काम करने के घंटों में थोड़े समय के लिए मिलनेवाला वह अवकाश, जो लोगों को आराम या जलपान आदि के लिए दिया जाता है। (अंग्रे०—१. रिसेस। २. लंच। ३. इण्टरवल)।

मध्याह्न—संज्ञा पुं० दोपहर। दिन के बीच का समय।

मध्ये—क्रि० वि० बीच में। मध्य में।

मध्वाचार्य्य—संज्ञा पुं० माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य, जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।

मन—संज्ञा पुं० १. अंतःकरण। चित्त। २. अंतःकरण की चार वृत्तियों में से एक, जिससे संकल्प-विकल्प होता है। ३. इच्छा। विचार। इरादा। ४. चालीस सेर की एक तौल। ५. मणि।
मुहा०—किसी से मन अटकना या उलझना=प्रीति होना। प्रेम होना। मन हरा होना=चित्त प्रसन्न रहना। मन टूटना=साहस छूटना। हताश होना। मन बढ़ना=साहस बढ़ना। उत्साह बढ़ना। मन बढ़ाना=साहस देना। उत्साह बढ़ाना। मन बहलाना=दुखी मन को किसी तरह खुश करना। किसी का मन बूझना=किसी के मन की थाह लेना। मन के लड्डू खाना=व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। मन चलना=इच्छा होना। चाहना। लालच होना। किसी का मन टटोलना=किसी के मन की थाह लेना। मन डोलना=मन का चंचल होना। मन में लालच उत्पन्न होना। मन देना=१. जी लगाना। २. ध्यान देना। मन तोड़ना या हारना=साहस छोड़ना। मन फेरना=मन को किसी ओर से हटाना। मन में बसना=पसंद आना। मन भरना=१. निश्चय या विश्वास होना। २. संतोष होना। मन भर जाना=अघा जाना। तृप्त होना। मन भाना=भला लगना। मन मानना=संतोष होना। निश्चय होना। अच्छा लगना। अनुराग होना। मन में रखना=गुप्त रखना। प्रकट न करना। मन में लाना=विचार करना। सोचना। मन मिलना=दो मनुष्यों का स्वभाव अनुकूल होना। मन मारना=चित्त खिन्न होना। उदास होना। इच्छा को दबाना। मन मैला करना=अप्रसन्न या असंतुष्ट होना। मन मोटा होना=विराग होना। उदासीन होना। मन मोड़ना=प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। किसी का मन रखना=किसी की इच्छा पूर्ण करना। मन लगना=जी लगना। तबीअत लगना। मन से उतरना=मन में आदर-भाव न रह जाना। विस्मृत होना। मन ही मन=हृदय में। चुपचाप। मनमाना=अपने मन के अनुसार। इच्छानुसार। अपनी तबीअत के मुताबिक।

मनई‡—संज्ञा पुं० मनुष्य।

मनकना—क्रि० अ० हिलना-डोलना।

मनकरा*—वि० चमकदार।

मनका—संज्ञा पुं० १. पत्थर, लकड़ी आदि का बेधा हुआ दाना, जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरिया। २. गरदन के पीछे की हड्डी, जो रीढ़ के बिलकुल ऊपर होती है।
मुहा०—मनका ढलना या ढलकना=मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना—संज्ञा स्त्री० इच्छा। मनोरथ।

मनकूला—वि० [अ०] अस्थिर। चलायमान। अस्थायी। चर।
यौ०—जायदाद मनकूला=चल संपत्ति। गैर मनकूला=स्थिर। स्थायी।

गैर मनकूला जायदाद=चल सम्पत्ति।
मन-गढ़ंत–वि० जिसकी वास्तविक सत्ता न हो, केवल कल्पना कर ली गई हो। कपोल-कल्पित।
संज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना। कपोल-कल्पना।
मनचला–वि० १.रसिक। २. साहसी। निडर।
मनचाहा–वि० इच्छित। मन से चाहा हुआ।
मनचीता–वि० [स्त्री० मनचीती] मनचाहा। मन में सोचा हुआ।
मनजात–संज्ञा पुं० कामदेव।
मनन–संज्ञा पुं० १. चिंतन। २. भली भाँति अध्ययन। सोचना, विचार करना।
मननशील–वि० विचारशील। विचारवान्।
मनना–क्रि० अ० [अनु०] गुंजारना।
मनवांछित–वि० दे० "मनोवांछित"।
मनभाया–वि० [स्त्री० मनभाई] मन को भाने या अच्छा लगनेवाला। मनोनुकूल।
मनभावता–वि०[स्त्री० मनभावती] १. भला लगनेवाला। मन को अच्छा लगनेवाला। २. प्रिय। प्यारा।
मनभावन–वि० मन को अच्छा लगनेवाला।
मनमत*†–वि० दे० "मदमत्त"।
मनमति–वि० अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।
मनमानता–वि० दे० "मनमाना"।
मनमाना–वि० [स्त्री० मनमानी] इच्छानुसार। बिना रोक-टोक के। अपने मन को अच्छा लगनेवाला।
मनमुखी†–वि० मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।
मनमुटाव या **मनमोटाव**–संज्ञा पुं० अनबन। वैमनस्य। आपस में फर्क पड़ना।
मनमोदक–संज्ञा पुं० अपनी प्रसन्नता के लिए मन में सोची हुई असंभव बात। मन का लड्डू।
मनमोहन–वि० [स्त्री० मनमोहिनी] मन को मोहनेवाला। चित्ताकर्षक। प्रिय। प्यारा।
संज्ञा पुं० १.श्रीकृष्ण। २. एक मात्रिक छंद।
मनमौजी–वि० मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। अपने मन को जो अच्छा लगे, वही करनेवाला। किसी बात की परवाह या चिन्ता न करनेवाला। मस्त।
मनरंज*–वि० दे० "मनोरंजक"।
मनरंजन–वि० संज्ञा पुं० दे० "मनोरंजन"।
मनरोचन–वि० सुंदर।
मनवाना–क्रि० स० मनाना। दूसरे को मनाने में प्रवृत्त करना।
मनशा–संज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। विचार। इरादा। तात्पर्य्य। मतलब।
मनसना*–क्रि० स० १. इच्छा करना। इरादा करना। मन लगाना। २. संकल्प करना। दृढ़ निश्चय या विचार करना। ३. हाथ में कुश-जल लेकर किसी वस्तु के दान का संकल्प करना।
मनसब–संज्ञा पुं० [अ०] पद। ओहदा। काम। अधिकार।
मनसबदार–संज्ञा पुं० [फा०] जो किसी मनसब पर हो। मुसलमानी राज्य-काल में एक प्रकार के अधिकारी, जिन्हें कुछ सेना रखने का अधिकार होता था। ओहदेदार। अधिकारी।
मनसा–संज्ञा स्त्री० १. कामना। इच्छा। २. संकल्प। इरादा। ३. अभिलाषा। मनोरथ। ४. मन। ५. बुद्धि। ६. अभिप्राय। तात्पर्य्य। ७. एक देवी का नाम।
वि० १. मन से उत्पन्न। २. मन का।
क्रि० वि० मन से। मन के द्वारा।
मनसाकर–वि० मनोरथ पूरा करनेवाला।
मनसाना–क्रि० अ० उमंग में आना।
क्रि० स० १. दूसरे का मन बहलाना। २. दूसरे का मन लगाना। मनसने का काम दूसरे से कराना।
मनसायन†–वि० १. मन बहलाने का कार्य। २. मनबहलाव का स्थान। मनोरम स्थान। गुलजार।
मनसिज–संज्ञा पुं० कामदेव।
मनसूख–वि० [अ०] [संज्ञा मनसूखी] १. रद्द किया हुआ। जो अप्रामाणिक ठहरा दिया गया हो। २. परित्यक्त। त्यागा हुआ।
मनसूबा–संज्ञा पुं० [अ०] इरादा। विचार। युक्ति। ढंग।
मुहा०—मनसूबा बाँधना=१. इरादा करना। २. युक्ति सोचना।

मनस्क–संज्ञा पुं० मन का अल्पार्थक रूप (समस्त पदों में)।
मनस्ताप–संज्ञा पुं० १. मानसिक कष्ट। मन का दुःख। २. पश्चात्ताप। पछतावा।
मनस्विता–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमत्ता। बुद्धिमानी।
मनस्वी–वि० [स्त्री० मनस्विनी] बुद्धिमान्।
मनहंस–संज्ञा पुं० पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मानस हंस।
मनहर–वि० दे० "मनोहर"।
संज्ञा पुं० घनाक्षरी छंद का एक नाम।
मनहरण–वि० मनोहर। सुंदर।
संज्ञा पुं० १. मन हरने की क्रिया या भाव। २. ।द्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। नलिनी। भ्रमरावली।
मनहार–वि० दे० "मनोहारी"।
मनहारि–वि० दे० "मनोहर"।
मनहु*–अव्य० जैसे। यथा।
मनहूस–वि० [अ०] अशुभ। बुरा। अप्रिय-दर्शन।
मना–वि० [अ०] १. जिसके संबंध में निषेध हो। निषिद्ध। वर्जित। २. अनुचित। ना-मुनासिब।
मनाक, मनाग–वि० थोड़ा।
मनादी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुनादी"।
मनाना–क्रि० स० १. स्वीकार कराना। २. रूठे हुए को प्रसन्न करने की कोशिश करना। राजी करना। ३. ईश्वर या देवता आदि से किसी काम के पूरा होने के लिए प्रार्थना करना। स्तुति करना।
मनावन†–संज्ञा पुं० रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम।
मनाही–संज्ञा स्त्री० न करने की आज्ञा। रोक। अवरोध। निषेध।
मनिधर*–संज्ञा पुं० दे० "मणिधर"।
मनिया–संज्ञा स्त्री० गुरिया। मनिका। माला में पिरोया हुआ दाना। कंठी। माला।
मनियार†*–वि० उज्ज्वल। चमकीला। दर्शनीय। शोभायुक्त। सुहावना।
मनिहार–संज्ञा पुं० [स्त्री० मनिहारिन] बनाने या बेचनेवाला। चुड़िहार।
मनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मणि"। वीर्य्य। अहंकार।
मनीषा–संज्ञा स्त्री० बुद्धि। ज्ञान। अक्ल।
मनीषि या **मनीषी**–वि० पंडित। ज्ञानी। बुद्धिमान्। मेधावी। अक्लमंद।
मनु–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा के पुत्र, जो मनुष्यों के आदि पुरुष माने जाते हैं। इन्हीं के समय से मानवी सृष्टि प्रारम्भ होती है। एक कल्प में चौदह मनु होते हैं। यथा—स्वायम्, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि और इंद्र सावर्णि। २. विष्णु। ३. अंतःकरण। मन। ४. १४ की संख्या। *अव्य० मानों। जैसे।
मनुआं‡*–संज्ञा पुं० १. मन। २. मानव। मनुष्य।
मनुज–संज्ञा पुं० मनुष्य। आदमी।
मनुजता–संज्ञा स्त्री० दे० "मनुजत्व"।
मनुजत्व–संज्ञा पुं० मनुष्य होने का भाव या गुण। मनुष्यत्व। आदमीयत।
मनुजोचित–वि० मनुष्य के लिए जो उचित हो। मनुष्य के उपयुक्त।
मनुष*–संज्ञा पुं० १. दे० "मनुष्य"। आदमी। २. पति। खाविंद।
मनुष्य–संज्ञा पुं० बुद्धि-बल के कारण प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी। मनु से उत्पन्न प्राणी। आदमी। नर।
मनुष्यता–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्य होने का भाव या गुण। आदमीयत। २. दया-भाव। शील। ३. शिष्टता। तमीज।
मनुष्यत्व–संज्ञा पुं० दे० "मनुष्यता"।
मनुष्यलोक–संज्ञा पुं० संसार। मर्त्यलोक।
मनुसाई*†–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यता। २. आदमीयत। ३. पुरुषार्थ। पराक्रम। बहादुरी।
मनुस्मृति–संज्ञा स्त्री० मनुप्रणीत हिन्दू-धर्म-शास्त्र का प्रसिद्ध ग्रंथ। मानव-धर्म्म-शास्त्र।
मनुहार–संज्ञा स्त्री० १. किसी का मान छुड़ाने या उसे प्रसन्न करने के लिए की जानेवाली विनती। मनौआ। खुशामद। विनय।

प्रार्थना। २. सत्कार। आदर। ३. शांति। तृप्ति।

मनुहारना*†–क्रि० स० १. मनाना। विनय करना। प्रार्थना करना। खुशामद करना। २. सत्कार करना। आदर करना।

मनों†–अव्य० मानो।

मनोकामना–संज्ञा स्त्री० इच्छा। अभिलाषा।

मनोगत–वि० जो मन में हो। मन की बात। संज्ञा पुं० कामदेव।

मनोगति–संज्ञा स्त्री० मन की गति। चित्त-वृत्ति। इच्छा। खाहिश।

मनोज–संज्ञा पुं० कामदेव।

मनोजव–वि० भावों या विचारों की तरह तेज चालवाला। जितनी तेजी से मन में विचार होते हैं, उतनी तेजी से चलनेवाला। बहुत तेज। अत्यंत वेगवान्। संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वायु के एक पुत्र का नाम (महाभारत, हरिवंशपुराण)।

मनोज्ञ–वि० मनोहर। सुंदर।

मनोदेवता–संज्ञा पुं० विवेक। बुद्धि।

मनोनिग्रह–संज्ञा पुं० मन का निग्रह। मन को वश में रखना।

मनोनियोग–संज्ञा पुं० किसी काम में मन को एकाग्र करके लगाना। अच्छी तरह मन लगाना।

मनोनीत–वि० १. मन के अनुकूल। पसंद। चुना हुआ। २. किसी पद के लिए नियुक्त होनेवाला या निर्वाचित व्यक्ति।

मनोभाव–संज्ञा पुं० मन में उत्पन्न होनेवाला भाव या विचार।

मनोभिराम–वि० मन को सुन्दर लगनेवाला। मनोहर। सुंदर।

मनोभिलाष–संज्ञा पुं० मन की प्रबल इच्छा। हृदय की कामना।

मनोभू–संज्ञा पुं० १. मन से उत्पन्न। २. प्रेम। ३. कामदेव।

मनोमय–वि० मन से युक्त या पूर्ण। मानसिक। मन-सम्बन्धी। आध्यात्मिक।

मनोमय कोश–संज्ञा पुं० मनुष्य के शरीर के अन्दर पाँच कोशों में से तीसरा। मन, अहंकार और कर्मेन्द्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी जाती हैं (वेदांत)।

मनोमालिन्य–संज्ञा पुं० मनमुटाव। रंजिश। अनबन।

मनोयोग–संज्ञा पुं० ध्यान। ध्यानपूर्वक। मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना।

मनोरंजक–वि० चित्त को प्रसन्न करनेवाला। दिलचस्प।

मनोरंजन–संज्ञा पुं० [वि० मनोरंजक] मन को प्रसन्न करने की क्रिया। मनोविनोद। दिल-बहलाव।

मनोरथ–संज्ञा पुं० अभिलाषा। इच्छा। मनःकामना।

मनोरम–वि० [स्त्री० मनोरमा] मनोहर। सुंदर।

मनोरमा–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी। सुंदर स्त्री। २. गोरोचन। ३. सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ४. एक प्रकार का छंद। ५. चंद्रशेखर के अनुसार आर्य्या के ५७ भेदों में से एक वर्णिक वृत्त। ६. दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ७. केशव के अनुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ८. केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक नाम। ९. सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।

मनोरा–संज्ञा पुं० गोबर के बने हुए वे चित्र या मूर्तियाँ, जो दीपावली होने के बाद दीवार पर बनाकर पूजी जाती हैं। झिंझिया।

मनोराझूमक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का गीत।

मनोराज–संज्ञा पुं० मनोराज्य। मानसिक कल्पना। मन की कल्पना।

मनोलीला–संज्ञा स्त्री० मन में उठनेवाले विचार या कल्पित बात, जिसका कोई वास्तविक आधार न हो (अंग्रे०–फैण्टम)।

मनोवांछा–संज्ञा स्त्री० इच्छा। कामना।

मनोवांछित–वि० जिस चीज की इच्छा की गई हो, वह चीज। इच्छित। मन-माँगा।

मनोविकार–संज्ञा पुं० मन की वह अवस्था, जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है। जैसे क्रोध, दया।

मनोविज्ञान–संज्ञा पुं० [वि० मनोवैज्ञानिक] वह शास्त्र, जिसमें चित्त की वृत्तियों, मन के विचारों या स्वभाव आदि का विवेचन होता है।

मनोविश्लेषण–संज्ञा पुं० मनुष्य का मन किन अवस्थाओं में किस प्रकार कार्य करता है, इसका विश्लेषण या जाँच। (अंग्रे०–साइको-अनैलिसिस)

मनोवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मनोविकार।" २. प्रवृत्ति। अभिरुचि। ३. सम्मान।

मनोवेग–संज्ञा पुं० दे० "मनोविकार"। मनोवृत्ति।

मनोवैज्ञानिक–वि० मनोविज्ञान-सम्बन्धी। दे० "मनोविज्ञान"।

मनोव्यापार–संज्ञा पुं० विचार। मानसिक क्रिया।

मनोसर*–संज्ञा पुं० दे० "मनोविकार"।

मनोहर–वि० [संज्ञा मनोहरता] मन को आकर्षित करनेवाला। सुदर।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद का एक भेद।

मनोहरता–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।

मनोहरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मनोहरता"।

मनोहारी–वि० दे० "मनोहर"।

मनौती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मन्नत–संज्ञा स्त्री० कामना की पूर्ति के लिए किसी देवता की पूजा करने की प्रतिज्ञा। मानता। मनौती।
मुहा०—मन्नत उतारना या चढ़ाना=पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। मन्नत मानना= यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक कार्य के हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।

मन्वंतर–संज्ञा पुं० १. एक मनु का राज्य-काल। एक मनु का समय। २. ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग, जो ७१ चतुर्युगियों का समय माना गया है।

मफरूर–वि० [अ०] भागा हुआ। फरार।

मम–सर्व० मेरा या मेरी।

ममता–संज्ञा स्त्री० १. अपनापन। 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव। ममत्व। २. स्नेह। प्रेम। ३. वह स्नेह, जो माता का पुत्र पर होता है। ४. मोह। लोभ।

ममत्व–संज्ञा पुं० "ममता"।

ममास*–संज्ञा पुं० दे० "मवास"।

ममिया–वि० नाते या रिश्ते में मामा के स्थान का—जैसे ममिया ससुर।

ममीरा–संज्ञा पुं० एक पौधे की जड़, जो आँख के रोगों की ओषधि है।

मयंक–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

मयंद–संज्ञा पुं० सिंह। शेर।

मय–प्रत्य० [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय, जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० दे० "मैं"।
अव्यय [फा०] सहित। साथ।
संज्ञा पुं० १. एक देश का नाम। २. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव, जो एक उत्कृष्ट शिल्पी था।

मयगल–संज्ञा पुं० दे० "मदकल"। मत्त हाथी।

मयन–संज्ञा पुं० कामदेव।

मयमंत, मयमत्त–वि० मस्त। मदमत्त।

मयसुता–संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।

मयस्सर–वि० [अ०] मिला हुआ। प्राप्त। उपलब्ध। सुलभ। मिलनेवाला।

मया*–संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।

मयार–वि० [स्त्री० मयारी] दयालु। कृपालु।

मयारी–संज्ञा स्त्री० वह डंडा या धरन, जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकती है।

मयूख–संज्ञा पुं० १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। प्रकाश। ३. ज्वाला।

मयूर–संज्ञा पुं० [स्त्री० मयूरी] मोर।

मयूरगति–संज्ञा स्त्री० चौबीस अक्षरों का एक छन्द।

मयूरसारिणी–संज्ञा स्त्री० तेरह अक्षरों के एक छंद का नाम।

मरंद*–संज्ञा पुं० मकरंद।

मरक–संज्ञा स्त्री० १. मरकना। दबाकर इशारा करना। संकेत। २. मृत्यु। ३. किसी बात का गुप्त रहस्य। दे० "मड़क"।

मरकट–संज्ञा पुं० दे० "मर्कट"।

मरकज–वि० [अ०] केन्द्र।

मरकत—संज्ञा पुं० पन्ना (रत्न)।

मरकना—क्रि० अ० १. दबाव के नीचे पड़कर टूटना। २. दे० "मुड़कना"।

मरकाना—क्रि० स० १. चूर करना। तोड़ना। २. दे० "मुड़काना"।

मरगजा*†—वि० मसला हुआ। गींजा हुआ।

मरघट—संज्ञा पुँ० मुर्दे फूँकने का घाट या स्थान। श्मशान।

मरज या मर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १. रोग। बीमारी। २. बुरी लत। खराब आदत। कुटेवा।

मरजाद, मरजादा*—संज्ञा स्त्री० १. दे० "मर्यादा।" २. सीमा। हद। ३. प्रतिष्ठा। आदर। महत्त्व।४.रीति। परिपाटी। नियम।

मरजिया—वि० १.मरकर जीनेवाला।जो मरने से बचा हो। २. जो मरने के समीप हो। मरणासन्न। ३.जोप्राण देने पर उतारू हो। अधमरा संज्ञा पुं० समुद्र में डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला। जिवकिया।

मरजी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। कामना। चाह। २. आज्ञा। ३. स्वीकृति। ४.प्रसन्नता। खुशी।

मरजीवा—संज्ञा पुं० दे० "मरजिया"।

मरण—संज्ञा पुं० मृत्यु। मौत।

मरतबा—संज्ञा पुं० [अ०] १. बार। दफा। २. पद। पदवी।

मरदई‡—संज्ञा स्त्री० १. मरदानगी। पुरुषार्थ। २. साहस। ३. वीरता।

मरदना*—क्रि० स० १. मर्दन करना। मसलना। २. कुचलना। मलना। ध्वंस करना। ३. माँड़ना। गूँथना।

मरदनिया†—संज्ञा पुं० शरीर में ;तेल मलनेवाला सेवक।

मरदानगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वीरता। शूरता। शौर्य्य। साहस।

मरदाना—वि० [फा०] १. बहादुरी का। साहस का। वीरता-सम्बन्धी। २. पुरुष-संबंधी। पुरुषों का-सा।

मरदूद—वि० [अ०] नीच। तिरस्कृत।

मरना—क्रि० अ० १. शरीर से प्राण का निकलना। शरीर का अन्त होना। मृत्यु होना। २.मरने के समान बहुत अधिक कष्ट उठाना। ३. सूखना। मुरझाना। मृतक के समान हो जाना। ४. लज्जा या संकोच आदि के कारण सिर न उठा सकना। ५. न्योछावर या कुर्बान होना। जान देना।

मुहा०—मरना-जीना=शादी-गमी। शुभाशुभ अवसर। सुख-दुःख। किसी पर मरना=किसी से इतना अधिक प्रेम करना कि उसे प्राप्त करने के लिए अपनी जान की भी परवाह न करना। आसक्त होना। किसी पर जान देना। मर मिटना=जान दे देना। प्रयत्न करते-करते अपना सब कुछ गवाँ देना। मरा जाना=व्याकुल होना। पानी मरना=१. पानी का दीवार की नींव में धँसना। २. किसी के सिर कोई कलंक आना।

मरनी—संज्ञा स्त्री० १. मृत्यु। मौत। २. किसी के मरने पर उसके संबंधियों-द्वारा किया जाने वाला कृत्य। ३. कष्ट। हैरानी।

मरभुक्खा—वि० १. भुक्खड़। २. कंगाल। दरिद्र।

मरम—संज्ञा पुं० दे० "मर्म"।

मरमर—संज्ञा पुं० [यू०] १. एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर (जैसे संगमरमर)। २. 'मरमर' की आवाज-जैसे, हवा से पत्तों आदि के हिलने पर होती है।

मरमराना—क्रि० अ० [अनु०] मरमर शब्द करना। अधिक दबाव पाकर लकड़ी आदि का मरमर शब्द करके दबना।

मरमी—वि० दे० "मर्मज्ञ।"

मरम्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिगड़ी हुई या टूटी-फूटी वस्तु को ठीक करना। दुरुस्ती। जीर्णोद्धार।

मरवाना—क्रि० स० दूसरे से मारने का काम कराना। किसी को मारने के लिए प्रेरित करना।

मरसा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग।

मरसिया—संज्ञा पुं० [अ०] १. उर्दू भाषा में शोक-सूचक कविता, जो किसी की मृत्यु के संबंध में बनाई जाती है। २. मरण-शोक। रोना-पीटना।

मरहट*†—संज्ञा पुं० मरघट। मसान।

*†संज्ञा स्त्री० मोठ।

मरहट्टा–संज्ञा पुं० १. दे० "मरहठा।" २. उनतीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

मरहठा–संज्ञा पुं० महाराष्ट्र देश का रहनेवाला। महाराष्ट्र।

मरहठी–वि० महाराष्ट्र या मरहठों से संबंधी रखनेवाला। मरहठों का।

संज्ञा स्त्री० मरहठों की बोली। दे० "मराठी।"

मरहम–संज्ञा पुं० [अ०] शरीर के घाव या कटे हुए स्थानों पर लगाने का लेप या औषध। मलहम।

मरहला–संज्ञा पुं० [अ०] १. टिकान। मंजिल। पड़ाव। २. दे० 'मरातिब"।

मुहा०—मरहला तय करना=झमेला निबटाना। कठिन काम पूरा करना।

मरहूम–वि० [अ०] स्वर्गीय। मृत।

मराठा–संज्ञा पुं० दे० "मरहठा।"

मरातिब–संज्ञा पुं० [अ०] १. दरजा। पद। २. उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ। ३. मकान का खंड। तल्ला। ४. ध्वजा। झंडा।

मराना–क्रि० स० मारने के लिए प्रेरणा देना। मरवाना। दूसरे से मारने का काम कराना।

मरायल*†–वि० १. मार खाया या पीटा हुआ। २. निःसत्त्व। सत्त्वहीन। निर्बल। निर्जीव। मरियल।

संज्ञा पुं० घाटा। टोटा।

मराल–संज्ञा पुं० [स्त्री० मराली] १. हंस। एक प्रकार का बत्तख। २. घोड़ा। ३. हाथी।

मरिंद*–संज्ञा पुं० १. दे० "मलिंद"। २. दे० "मरंद"।

मरिच–संज्ञा पुं० मिर्च। मिरिच।

मरियम–संज्ञा स्त्री० [अ०] ईसा मसीह की माता का नाम।

मरियल–वि० बहुत दुर्बल। मरे हुए के समान।

मरी–संज्ञा स्त्री० महामारी। प्लेग, हैजा आदि कोई संक्रामक रोग, एक साथ जिसमें बहुत से लोग मरते हैं।

मरीचि–संज्ञा पुं० १. एक ऋषि जिन्हें पुराणों में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और सप्तर्षियों में माना गया है। २. एक मरुत का नाम। ३. एक ऋषि, जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे।

संज्ञा स्त्री० १. किरण। २. प्रभा। कांति। ३. मरीचिका। मृगतृष्णा।

मरीचिका–संज्ञा स्त्री० १. झूठी आशा। रेगिस्तान में जल की मिथ्या भ्रांति। मृगतृष्णा। २. किरण।

मरीची–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. चंद्रमा।

मरीज़–वि० [अ०] रोगी। बीमार।

मरु–संज्ञा पुं० १. मरुस्थल। रेगिस्तान। निर्जल स्थान। २. मारवाड़ और उसके आस-पास के देश का नाम।

मरुआ–संज्ञा पुं० १. बन-तुलसी या बर्बरी की जाति का एक पौधा। २. मकान की छाजन में सबसे ऊपर की बल्ली। बँड़ेर। हिंडोला लटकाने की लकड़ी।

मरुत्–संज्ञा पुं० १. वायुदेवता। वायु। हवा। २. प्राण। दे० "मरु"।

मरुतवान*–संज्ञा पुं० दे० "मरुत्वान्"।

मरुत्वान्–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. देवताओं का एक गण, जो धर्म के पुत्र माने जाते हैं। ३. हनुमान।

मरुथल–संज्ञा पुं० दे० "मरुस्थल"।

मरुद्वीप–संज्ञा पुं० मरुस्थल में उपजाऊ और सजल हरा-भरा स्थान।

मरुधर–संज्ञा पुं० मारवाड़ देश।

मरुभूमि–संज्ञा स्त्री० बालू का निर्जल मैदान। रेगिस्तान।

मरुरना*–क्रि० अ० 'मरोरना' का अकर्मक रूप। ऐंठना।

मरुस्थल–संज्ञा पुं० दे० "मरुभूमि"। रेगिस्तान।

मरू*–वि० कठिन। दुरूह।

मुहा०—मरू करिके या मरू करि*=ज्यों-त्यों करके। बड़ी कठिनाई से।

मरूरा*†–संज्ञा पुं० दे० "मरोड़"।

मरोड़–संज्ञा पुं० १. मरोड़ने की क्रिया या भाव। पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। २. ऐंठन। घुमाव। बल। ३. व्यथा। क्षोभ। ४. घमंड। गर्व। ५. क्रोध। गुस्सा।

मुहा०—मरोड़ खाना=चक्कर खाना। उल-

ध्यान में पड़ना। मन में मरोड़ करना=कपट करना। मरोड़ की बात=घुमाव-फिराव की बात। मरोड़ गहना=क्रोध करना।

मरोड़ना–क्रि० स० १. ऐंठना। बल डालना। २. पीड़ा देना। दुःख देना। मसलना। ३. ऐंठ करना। ४. नष्ट करना।

मुहा०—अंग मरोड़ना=शरीर का कोई भाग ऐंठना। अँगड़ाई लेना। भौंह मरोड़ना या आँख मरोड़ना=१. आँख से इशारा करना या कनखी मारना। २. नाक-भौंह चढ़ाना। भौंह सिकोड़ना। हाथ मरोड़ना*=पछताना। हाथ ऐंठना।

मरोड़ा–संज्ञा पुं० १. ऐंठन। मरोड़। २. पेट की वह पीड़ा, जिसमें कुछ ऐंठन मालूम हो। ३. उमेठ। बल।

मरोड़ी–संज्ञा स्त्री० ऐंठन। मरोड़।

मुहा०—मरोड़ी करना=खींचातानी करना।

मरोर†*–संज्ञा पुं० दे० "मरोड़"।

मर्कट–संज्ञा पुं० १. बंदर। २. मकड़ा।

मर्कटी–संज्ञा स्त्री० १. बँदरी। बानरी। २. मकड़ी। ३. छंद के ९ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।

मर्कत*–संज्ञा पुं० दे० "मरकत"।

मर्तबान–संज्ञा पुं० रोगन लगा हुआ बर्तन, जिसमें अचार, घी और मुरब्बे आदि रखे जाते हैं। अमृतबान।

मर्त्य–वि० मरनेवाला। नश्वर।
संज्ञा पुं० १. मनुष्य। २. पृथिवी। ३. शरीर।

मर्त्यलोक–संज्ञा पुं० पृथ्वी। संसार।

मर्द–संज्ञा पुं० १. पुरुष। नर। २. साहसी या वीर पुरुष। ३. पुरुषार्थी। ४. योद्धा। ५. पति।

मर्दना*–क्रि० स० १. मालिश करना। मलना। २. कुचलना। मसलना। तोड़-फोड़ डालना। ३. नाश करना। रौंदना।

मर्दुम–संज्ञा पुं० [फा०] मनुष्य।

मर्दुमशुमारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी स्थान या देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना। जन-संख्या की गिनती। जन-गणना। २. जन-संख्या। आबादी।

मर्दुमी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मरदानगी। पौरुष।

मर्दन–संज्ञा पुं० [वि० मर्दित] १. कुचलना। रौंदना। मलना। मसलना। २. तेल, उबटन आदि शरीर में लगाना या मलना। ३. कुश्ती में एक पहलवान का दूसरे पहलवान की गर्दन पर घस्सा लगाना। घस्सा। ४. ध्वंस। ५. पीसना। घोंटना। रगड़ना।
वि० नाशक। संहारकर्ता।

मर्दल–संज्ञा पुं० मृदंग की तरह का एक बाजा इसका प्रचार बंगाल में है।

मर्दित–वि० जिसका मर्दन किया गया हो। मसला हुआ।

मर्म–संज्ञा पुं० १. रहस्य। भेद। २. सार। तत्त्व। ३. संधिस्थान। प्राणियों के शरीर में वह स्थान, जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है। दे० "मर्मस्थल"।

मर्मज्ञ–वि० किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। रहस्य जानने-वाला। किसी विषय का पूर्ण ज्ञान रखने-वाला।

मर्मभेदक–वि० दे० "मर्मभेदी"।

मर्मभेदी–वि० हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। आंतरिक कष्ट देनेवाला।

मर्मर–संज्ञा पुं० दे० "मरमर"। 'मरमर' की ध्वनि या आवाज–जैसे, हवा से पत्तों आदि के हिलने पर होती है।

मर्मवचन–संज्ञा पुं० १. ऐसी बात, जिससे सुननेवाले के मन में तकलीफ हो या उसे आन्तरिक कष्ट हो। २. गूढ़ अर्थवाली या रहस्यपूर्ण बात।

मर्मवाक्य–संज्ञा पुं० भेद या रहस्य की बात। गूढ़ बात।

मर्मविद्–वि० दे० "मर्म्मज्ञ"।

मर्मस्थल–संज्ञा पुं० १. शरीर के वे कोमल अंग, जिन पर चोट लगने से बड़ी पीड़ा होती है और मनुष्य मर सकता है। जैसे, हृदय, कंठ, अण्डकोश आदि। २. वह स्थल, जिस पर चोट या आक्षेप होने से मानसिक कष्ट हो।

मर्मस्पर्शी–वि० [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी, संज्ञा स्त्री० मर्मस्पर्शिता] मर्मस्थल पर प्रभाव डालनेवाला। हृदयस्पर्शी। मन में चुभनेवाला।

मर्मी–वि० मर्म या रहस्य जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्य्याद–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मर्य्यादा"। सीमा। हद। २. रीति। रस्म। प्रथा। ३. विवाह में बड़हार। बढ़ार।

मर्य्यादा–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। हद। किनारा। २. सदाचार। नीतिधर्म्म। ३. प्रतिष्ठा। ४. प्रतिज्ञा। मुआहिदा। करार। ५. नियम।

मर्य्यादित–वि० १. जिसके सदाचार आदि का मान या स्तर निर्धारित हो। सदाचार आदि के नियमों से नियंत्रित। २. जिसकी सीमा निश्चित हो। ३. जो अपनी मर्यादा या सीमा के अन्दर हो।

मर्षण–संज्ञा पुं० [वि० मर्षणीय, मर्षित] क्षमा। माफी। रगड़। घर्षण।

वि० नाश करनेवाला। नाशक। दूर करनेवाला।

मलंग–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार के मुसलमान साधु।

मल–संज्ञा पुं० १. मैल। कीट। शरीर के अंगों से निकलनेवाला विकार। २. विष्ठा। ३. दूषण। विकार। पाप। ऐब।

मलका–संज्ञा स्त्री० [अ०] बादशाह की पटरानी। महारानी।

मलखंभ–संज्ञा पुं० दे० "मलखम"।

मलखम–संज्ञा पुं० व्यायाम करने के लिए लकड़ी का एक प्रकार का चिकना, गोल खंभा। मालखंभ। मलखम पर की जानेवाली कसरत या व्यायाम।

मलखाना*†–संज्ञा पुं० उत्तर प्रदेश में बसने वाली एक जाति, जो अब मुसलमान से हिन्दू बन गई है।

मलगजा*–वि० दे० "मरगजा"। मला-दला हुआ। मींजा हुआ।

संज्ञा पुं० बेसन में लपेटकर तेल या घी में छाने हुए बैंगन के पतले टुकड़े।

मलद्वार–संज्ञा पुं० गुदा। शरीर की वह इन्द्रिय, जिससे मल निकलता है।

मलना–क्रि० स० हाथ या किसी और चीज से दबाकर घिसना। मर्दन। मींजना। मसलना। मालिश करना। मरोड़ना। ऐंठना। हाथ से बार-बार रगड़ना या दबाना।

मुहा०—दलना-मलना=पीसकर टुकड़े-टुकड़े करना। चूर्ण करना। मसलना। घिसना। हाथ मलना=पछताना। पश्चात्ताप करना।

मलबा–संज्ञा पुं० दे० "मलवा"।

मलमल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।

मलमलाना–क्रि० स० १. बार-बार स्पर्श कराना। २. बार-बार खोलना और ढकना। ३. बार-बार आलिंगन करना। ४. पश्चात्ताप करना।

मलमास–संज्ञा पुं० अधिक मास। वह मास, जिसमें संक्रांति न पड़ती हो। वर्ष में जब एक महीना दो बार पड़े, तो उसे मलमास कहते हैं। पुरुषोत्तम मास।

मलय–संज्ञा पुं० १. मलाया देश। मलाया देश का रहनेवाला। २. दक्षिण भारत का मलाबार देश। ३. मलाबार देश के रहनेवाले मनुष्य। ४. सफेद चंदन। ५. नंदन वन। ६. छप्पय का एक भेद।

मलयगिरि–संज्ञा पुं० मलय-नामक पर्वत, जो दक्षिण में है और जिसमें चन्दन के पेड़ होते हैं। मलयगिरि में उत्पन्न चंदन।

मलयज–संज्ञा पुं० चंदन।

मलयागिरि–संज्ञा पुं० दे० "मलयगिरि"।

मलयाचल–संज्ञा पुं० मलय-पर्वत।

मलयानिल–संज्ञा पुं० १. मलय-पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। २. सुगंधित वायु। ३. वसंत काल की वायु।

मलयाली–वि० मलाबार देश का। मलाबार देश-संबंधी।

संज्ञा स्त्री० मलाबार देश की भाषा।

मलयुग–संज्ञा पुं० दे० "कलियुग"।

मलराना*–क्रि० स० दे० "मलहाना"।

मलरुचि–वि० नीच विचार का। दूषित रुचि का। पापी।

मलवा–संज्ञा पुं० कूड़ा-कर्कट। गिरी हुई इमारत की ईंट, पत्थर आदि या उनका ढेर। रेल आदि की दुर्घटना होने पर टूटी-फूटी चीजों का जमा हुआ ढेर।

मलवाना–क्रि० स० मलने का काम दूसरे से कराना।

मलहम–संज्ञा पुं० दे० "मरहम"।

मलाई–संज्ञा स्त्री० १. बहुत गरम किए हुए दूध के ऊपर जमनेवाला सार भाग। दूध की साढ़ी। २. सार। तत्त्व। रस। ३. मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मलाट–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा घटिया कागज।

मलान*–वि० दे० "म्लान"।

मलानि*–संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि"।

मलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लानत। फटकार। दुतकार। २. गंदगी। मैल।

यौ०–लानत मलामत=डाँट फटकार।

मलार–संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु में या पानी बरसने के साथ गाया जानेवाला एक राग।

मुहा०—मलार गाना बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषतः गाना।

मलाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुःख। रंज। मानसिक व्यथा। २. उदासीनता। उदासी।

मलाह*–संज्ञा पुं० दे० "मल्लाह"।

मलिंद–संज्ञा पुं० दे० "मिलिंद"। भौंरा।

मलिक–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मलिका] राजा। अधीश्वर।

मलिक्ष, मलिच्छ*–संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

मलिन–वि० [स्त्री० मलिना, मलिनी] १. म्लान। उदासीन। २. मलयुक्त। मैला। गँदला। दूषित। खराब। मटमैला। धूमिल। धुँधला। बदरंग। ३. पापात्मा। पापी। ४. धीमा। फीका।

मलिनता–संज्ञा स्त्री० मैलापन। उदासीनता। फीकापन। धुँधलापन।

मलिनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

मलिनाना*–क्रि० अ० १. मैला होना। २. मुरझाना। ३. उदासीन होना। ४. फीका पड़ना।

मलिया†–संज्ञा स्त्री० १. छोटी प्याली। तंग मुँह का मिट्टी का एक छोटा बर्तन। २. घेरा। चक्कर।

मलियामेट–संज्ञा पुं० सत्यानाश। बर्बादी। तहस-नहस। मटियामेट।

मलीदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र। २. चूरमा। बाजरे की रोटी या आटे आदि से बनाई हुई खाने की एक चीज।

मलीन–वि० १. उदास। २. मैला। गंदा। ३. फीका।

मलीनता–संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

मलूक–वि० सुंदर। मनोहर।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का कीड़ा। २. एक प्रकार का पक्षी।

मलेच्छ–संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

मलेरिया–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जाड़ा देकर और रुक-रुककर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

मलोलना–क्रि० अ० १. मन में दुखी होना। २. पछताना। अफसोस करना।

मलोला–संज्ञा पुं० १. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज। २. अरमान। प्रबल इच्छा।

मुहा०—मलोला या मलोले आना=दुःख होना। पछतावा होना। मलोले खाना=मानसिक व्यथा सहना।

मल्ल–संज्ञा पुं० १. पहलवान। २. भारत की एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्वंद्व युद्ध में बड़े निपुण होते थे; इसी लिए कुश्ती लड़नेवाले का नाम मल्ल पड़ गया है। ३. एक प्राचीन देश, जो विराट देश के पास था। ४. दीप-शिखा।

मल्लभूमि–संज्ञा स्त्री० कुश्ती लड़ने की जगह। अखाड़ा।

मल्लयुद्ध–संज्ञा पुं० कुश्ती। परस्पर द्वंद्व-युद्ध, जो बिना शस्त्र के केवल हाथों से किया जाय। बाहुयुद्ध।

मल्लविद्या–संज्ञा स्त्री० कुश्ती की विद्या। पहलवानी।

मल्लशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।

मल्लार–संज्ञा पुं० दे० "मलार"।

मल्लाह–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन]

नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करनेवाला। यह कार्य करनेवाली एक जाति। केवट। धीवर। माझी।
मल्लिका–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का बेला। मोतिया। २. आठ अक्षरों का एक वर्णिक छंद। सुमुखी वृत्ति।
मल्लिनाथ–संज्ञा पुं० १. जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम। २. संस्कृत काव्यों के एक टीकाकार।
मल्ली–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मल्लिका"। २. सुन्दरी वृत्ति का एक नाम।
मल्लू–संज्ञा पुं० बंदर।
मल्हाना, मल्हारना†–क्रि० स० चुमकारना। पुचकारना।
मवक्किल–संज्ञा पुं० दे० "मुवक्किल।" मुकदमे में अपनी ओर से अदालत में काम करने के लिए वकील नियत करनेवाला पुरुष। अदालत में मुकदमा लड़नेवाला। वकील को अपना मुकदमा सुपुर्द करनेवाला।
मवाजिब–संज्ञा पुं० [अ०] नियमित समय पर मिलनेवाली वस्तु, जैसे, वेतन।
मवाद–संज्ञा पुं० [अ०] पीब। फोड़े आदि में से सफेद या पीलापन लिये हुए निकलनेवाली चीज।
मवास–संज्ञा पुं० १. रक्षा का स्थान। आश्रय। शरण। २. किला। दुर्ग। गढ़। ३. वे पेड़ जो दुर्ग की चहारदीवारी पर होते हैं।
मुहा०—मवास करना=निवास करना।
मवासी–संज्ञा स्त्री० छोटा गढ़।
संज्ञा पुं० १. गढ़पति। किलेदार। २. प्रधान। मुखिया। अधिनायक।
मवेशी–संज्ञा पुं० [अ०] पशु। ढोर।
मवेशीखाना–संज्ञा पुं० [फा०] मवेशियों के रखने का बाड़ा।
मशक–संज्ञा पुं० १. मच्छड़। २. मसा नामक चर्मरोग।
संज्ञा स्त्री० [फा०] चमड़े का बना हुआ थैला, जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।
मशक्कत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेहनत। परिश्रम। श्रम। २. वह परिश्रम, जो जेलखाने में कैदियों को करना पड़ता है।
मशगूल–वि० [अ०] काम में लगा हुआ। तल्लीन। व्यस्त।
मशरू–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
मशविरा–संज्ञा पुं० [अ०] सलाह। परामर्श।
मशहूर–वि० [अ०] प्रसिद्ध। नामी। विख्यात।
मशाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] डंडे में लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती।
मुहा०—मशाल लेकर या जलाकर ढूंढ़ना=अच्छी तरह ढूंढ़ना। बहुत ढूंढ़ना।
मशालची–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मशालचिन] मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला।
मशीन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] यंत्र। कल। पेंचों और पुरजों से बनी हुई वह वस्तु या यंत्र, जिससे काम जल्दी होता है।
मशीनगन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बहुत जल्दी-जल्दी बमगोले या गोलियाँ चलानेवाला यंत्र या शस्त्र।
मश्क–संज्ञा पुं० [अ०] अभ्यास।
मष–संज्ञा पुं० दे० "मख"।
मष्ट–वि० १. संस्कार-शून्य। जो भूल गया हो। २. उदासीन। मौन। चुप।
मुहा०—मष्ट करना, धारना या मारना=चुप रहना। न बोलना।
मस*†–संज्ञा स्त्री० १. रोशनाई। २. मूंछ निकलने से पहले उसके स्थान पर की रोमावली।
मुहा०—मस भींजना=मूंछों का निकलना आरंभ होना।
मसक–संज्ञा पुं० मसा। मच्छड़।
संज्ञा स्त्री० मसकने की क्रिया।
मसकत*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मशक्कत"।
मसकना–क्रि० स० [अनु०] १. कपड़े को इस प्रकार दबाना कि बुनावट टूट जाय। २. इस प्रकार दबाना कि बीच में से फट जाय। ३. जोर से दबाना या मलना।
क्रि० अ० किसी पदार्थ का दबाव या खिंचाव आदि के कारण बीच से फट जाना। चिंतित होना।

मसकरा–संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।

मसक़ला–संज्ञा पुं० [अ०] १. सिकलीगरों का एक औजार। इससे रगड़ने से धातुओं पर चमक आ जाती है। २. सैकल या सिकली करने की क्रिया।

मसकली–संज्ञा स्त्री० दे० "मसक़ला"।

मसका–संज्ञा पुं० [फा०] १. नवनीत। २. मक्खन। नैनूँ। ताजा निकला हुआ घी। ३. दही का पानी। चूने की बरी का वह चूर्ण, जो उस पर पानी छिड़कने से बने।

मसकीन*†–वि० १. गरीब। दरिद्र। दीन। बेचारा। २. भोला। सुशील।

मसखरा–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोड़। दिल्लगीबाज।

मसखरापन–संज्ञा पुं० मजाक। दिल्लगी। हँसी। ठट्ठा। ठठोली।

मसखरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] दिल्लगी। हँसी। मजाक।

मसखवा†–संज्ञा पुं० मांस खानेवाला। मांसाहारी।

मसजिद–संज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने तथा ईश्वर-वंदना करने का भवन।

मसनद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बड़ा तकिया। गाव तकिया। २. अमीरों के बैठने की गद्दी।

मसनवी–संज्ञा स्त्री० [अ०] उर्दू और फारसी की एक प्रकार की कविता।

मसना†–क्रि० स० दे० "मसलना"।

मसमुंद*†–वि० ठेलमठेल। धक्कमधक्का।

मसयारा*†–संज्ञा पुं० १. मशाल। २. मशालची।

मसरफ़–संज्ञा पुं० [अ०] काम में आना। उपयोग।

मसल–संज्ञा स्त्री० [अ०] कहावत। लोकोक्ति।

मसलन–वि० [अ०] उदाहरण के लिए। उदाहरणार्थ। यथा, जैसे।

मसलना–क्रि० स० १. हाथ से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २. जोर से दबाना। ३. गूँधना।

मसलहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छिपा हुआ उद्देश्य या मतलब। रहस्य। २. ऐसी छिपी हुई भलाई या युक्ति, जो जल्दी प्रकट न हो या समझ में न आए।

मसला–संज्ञा पुं० [अ०] १. कहावत। लोकोक्ति। २. विचारणीय विषय। समस्या।

मसवासी–संज्ञा पुं० वह साधु आदि, जो एक मास से अधिक किसी स्थान में न रहे।
संज्ञा स्त्री० गणिका। वेश्या।

मसविदा–संज्ञा पुं० [अ०] १. संशोधन करके निश्चित रूप से ठीक लिखे जाने के लिए पहली बार लिखा गया कोई लेख। किसी लेख का वह पूर्व रूप, जिसमें काट-छाँट या सुधार किया जाने को हो। प्रालेख। मसौदा। [अंग्रे०-ड्राफ़्ट] २. उपाय। युक्ति।

मसहरी–संज्ञा स्त्री० १. मच्छड़ों से बचने के लिए पलँग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला जालीदार कपड़ा। २. ऐसा पलंग, जिसमें मसहरी लग सके।

मसहार*–संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी"।

मसा–संज्ञा पुं० १. शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मांस का छोटा दाना। २. बवासीर रोग में मांस का दाना। ३. मच्छड़।

मसान–संज्ञा पुं० १. दे० "श्मशान"। मरघट। २. भूत-पिशाच आदि। ३. रणभूमि।
मुहा०—मसान जगाना=तंत्रशास्त्र के अनुसार श्मशान पर बैठकर शव की सिद्धि करना।

मसाना–संज्ञा पुं० [अ०] शरीर में पेशाब की थैली। मूत्राशय। दे० "मसान"।

मसानिया–संज्ञा पुं० मसान या मरघट पर रहनेवाला। डोम।
वि० मसान-सम्बन्धी।

मसानी–संज्ञा स्त्री० श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि।

मसाला–संज्ञा पुं० [फा०] १.तरकारी आदि बनाने में सहायक वस्तुएँ। जैसे मिर्च, हल्दी आदि। २. वे चीजें, जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो। ३. ओषधियों या रासायनिक द्रव्यों का समूह। ४. साधन। ५. तेल। आतिशबाजी।

मसालेदार–वि० जिसमें मसाला पड़ा हो।
मसि–संज्ञा स्त्री० १. लिखने की स्याही। रोशनाई। २. काजल। ३. कालिख।
मसिदानी–संज्ञा स्त्री० दावात। मसिपात्र।
मसिपात्र–संज्ञा पुं० दावात।
मसिबिंदु–संज्ञा पुं० काजल का बुंदा जो नजर से बचने के लिए बच्चों को लगाया जाता है। दिठौना।
मसिबुंदा–संज्ञा पुं० दे० "मसिबिंदु"।
मसिमुख–वि० १. बुरा या बदनामी का काम करनेवाला। २. अपना मुँह काला करने-वाला। जिसके मुँह में स्याही लगी हो।
मसियर*–संज्ञा स्त्री० दे० "मशाल"।
मसियाना–क्रि० अ० भली भाँति भर जाना। पूरा हो जाना।
मसियारा*–संज्ञा पुं० दे० "मशालची"।
मसी–संज्ञा स्त्री० दे० "मसि"।
मसीत*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।
मसीना†–संज्ञा पुं० मोटा या घटिया अन्न। जैसे—कोदों, साँवा आदि।
मसीह, मसीहा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मसीही] १. ईसाइयों के धर्मगुरु या पैगंबर हजरत ईसा। २. उद्धार करनेवाला।
मसू*†–संज्ञा स्त्री० कठिनाई से। मुश्किल से। जैसे-तैसे।
मुहा०—मसू करके=बड़ी कठिनाई या मुश्किल से।
मसूड़ा–संज्ञा पुं० मुँह के अंदर का वह मांस, जिस पर दाँत जमे होते हैं।
मसूर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अन्न और उसकी दाल। मसुरी।
मसूरिका–संज्ञा स्त्री० १. शीतला। माता। चेचक। २. छोटी माता।
मसूस, मसूसन–संज्ञा स्त्री० मन मसोसने या दबाने का भाव। आंतरिक व्यथा।
मसूसना–क्रि० अ० दे० "मसोसना"।
मसृण–वि० चिकना और मुलायम। कोमल।
मसृणत्व–संज्ञा पुं० चिकनापन और कोमलता।
मसेवरा–†संज्ञा पुं० मांस की बनी हुई खाने की चीजें।
मसोसना–क्रि० अ० १. मन ही मन रंज या अफसोस करना। कुढ़ना। अधिक खेद या दुःख को दबा रखना। मन के भावों या आवेग को रोकना। जब्त करना। २. ऐंठना। मरोड़ना। निचोड़ना।
मसोसा–संज्ञा पुं० मानसिक दुःख। आन्तरिक व्यथा।
मसौदा–संज्ञा पुं० दे० "मसविदा"।
मस्त–वि० [फा०] १. मतवाला। नशे आदि के कारण मत्त। मदोन्मत्त। २. सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहनेवाला। ३. यौवन-मद या जवानी के जोश से भरा हुआ। ४ जिसमें मद हो। मदपूर्ण। ५. बहुत प्रसन्न। आनंदित।
मस्तक–संज्ञा पुं० सिर। । माथा। कपाल।
मस्ताना–वि० १. मस्त। मतवाला। २. मस्तों की तरह।
क्रि० अ० मस्त होना।
क्रि स० मस्ती पर लाना। मस्त करना।
मस्तिष्क–संज्ञा पुं० १. बुद्धि। दिमाग। २. मस्तक के अंदर का गूदा। बुद्धि के रहने का स्थान। भेजा। मगज।
मस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मतवालापन। मस्त होने की क्रिया या भाव। मत्तता। २. वह स्राव, जो कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि के पास उनके मस्त होने के समय होता है। मद। ३. वह स्राव, जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि से निकलता है।
मस्तूल–संज्ञा पुं० बड़ी नावों के बीच का लम्बा लट्ठा, जिसमें पाल बाँधते हैं।
मस्सा–संज्ञा पुं० दे० "मसा"।
महँ*†–अव्य० में।
महँई*†–वि० महान्। भारी।
अव्य० दे० "महँ"
महँगा–वि० उचित मूल्य से अधिक। जिसका मूल्य साधारण या उचित से अधिक हो।
महँगाई†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "महँगी"। २. महँगी के कारण मिलनेवाला भत्ता।
महँगी–संज्ञा स्त्री० १. महँगा होने का भाव।

महँगापन। २. महँगा होने की परिस्थिति। दुर्भिक्ष। अकाल।
महंत–संज्ञा पुं० साधु-मंडली या मठ का अधिष्ठाता।
वि० श्रेष्ठ। प्रधान। मुखिया।
महंती–संज्ञा स्त्री० महंत का पद। महन्त होने का भाव।
मह–अव्य० दे० "महँ"।
वि० महा। अति। बहुत। महत्। श्रेष्ठ। बड़ा।
महक–संज्ञा स्त्री० गंध। बास।
महकना–क्रि० अ० गंध देना। वास देना।
महकमा–संज्ञा पुं० [अ०] कार्य्य-विशेष के लिए अलग किया हुआ विभाग। सीगा। सरिश्ता।
महकान*–संज्ञा स्त्री० दे० "महक"।
महकीला–वि० महकनेवाला।
महज़–वि० [अ०] केवल। सिर्फ।
महजिद†–संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।
महज्जन–संज्ञा पुं० महापुरुष।
महत्–वि० महान्। बृहत्। बड़ा। सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० प्रकृति का पहला विकार, महत्तत्त्व। ब्रह्म।
महता–संज्ञा पुं० १. गाँव का मुखिया। महतो। २. मुहर्रिर। मुंशी।
महताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. दे० "महताबी"।
संज्ञा पुं० चाँद। चंद्रमा।
महताबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार की आतिशबाजी। २. बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।
महतारी*†–संज्ञा स्त्री० माँ। माता।
महती–संज्ञा स्त्री० महिमा। महत्त्व। बड़ाई।
वि० बहुत बड़ी। महान्। जैसे महती सभा।
महतु*†–संज्ञा पुं० दे० "महत्त्व"।
महतो–संज्ञा पुं० १. दे० "महता"। २. कहार। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार।
महत्तत्त्व–संज्ञा पुं० १. सांख्य में प्रकृति का पहला कार्य्य या विकार, जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है। बुद्धितत्त्व। २. जीवात्मा।
महत्तम–वि० सबसे अधिक श्रेष्ठ।
महत्तर–वि० दो पदार्थों में से श्रेष्ठ या बड़ा।
महत्ता–संज्ञा स्त्री० दे० "महत्त्व"।
महत्त्व–संज्ञा पुं० महान् होने का भाव। श्रेष्ठता। बड़प्पन। गौरव। गुरुता। उत्तमता। प्रधानता।
महदूद–वि० [अ०] जो सीमा या हद के अन्दर हो। सीमित। परिमित।
महन*†–संज्ञा पुं० दे० "मथन"।
महना*†–क्रि० स० दे"थना"।
महनीय–वि० [संज्ञा महनीयता]
मान्य। पूज्य। आदरणीय। महान्।
महफ़िल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मजलिस। सभा। जलसा। २.नाच-गाने का स्थान।
महफ़ूज़–वि० [अ०] सुरक्षित। जिसे अच्छी तरह बचाकर रखा गया हो या जिसकी खूब हिफाजत की गई हो।
महबूब–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० महबूबा] प्रिय। प्यारा।
महमंत*–वि० मस्त। मदमत्त।
महमह–क्रि० वि० सुगंधि के साथ। खुशबू के साथ।
महमहा–वि० सुगंधित।
महमहाना–क्रि० अ० महकना। सुगंधि देना। गमकना।
महमेज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] जूते की एड़ी के पास लगाई जानेवाली एक तरह की लोहे की नाल, जिसकी सहायता से घुड़सवार घोड़े को एड़ लगाते हैं।
महम्मद–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।
महर–संज्ञा पुं० [स्त्री० महरि] १. एक आदरसूचक शब्द, जिसका व्यवहार विशेषतः जमींदारों आदि के संबंध में होता है (ब्रजभाषा)। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "महरा"।
वि० महमहा। सुगंधित।
महरम–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में किसी कन्या या स्त्री के लिए उसका कोई ऐसा बहुत पास का संबंधी, जिसके साथ उसका विवाह न हो सकता हो। जैसे—पिता, चाचा, नाना, भाई, मामा आदि।

२. भेद जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. अँगिया की कटोरी। २. अँगिया।
महरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० महरी] १. कहार। २. सरदार। नायक।
महराई*†–संज्ञा स्त्री० प्रधानता। श्रेष्ठता।
महराज–संज्ञा पुं० दे० "महाराज"।
महराना–संज्ञा पुं० महरों के रहने का स्थान।
महराब–संज्ञा स्त्री० दे० "मेहराब"।
महरि–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का आदर-सूचक शब्द, जिसका व्यवहार ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के संबंध में होता है। २. मालकिन। घरवाली। ३. ग्वालिन नामक पक्षी। दहिंगल।
महरूम–वि० [अ०] जिसे चाही हुई चीज न मिले। वंचित।
महरेटा–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
महरेटी–संज्ञा स्त्री० श्री राधिका।
महर्घ–वि० दे० "महार्घ।"
महर्लोक–संज्ञा पुं० पुराणानुसार चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।
महर्षि–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा और श्रेष्ट ऋषि। ऋषीश्वर।
महल–संज्ञा पुं० [अ०] १. बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २. रनिवास। अंतःपुर। ३. बड़ा कमरा। ४. अवसर।
महलसरा–संज्ञा स्त्री० [अ०] महल का भीतरी भाग। अन्तःपुर।
महल्ला–संज्ञा पुं० [अ०] दे० "मुहल्ला"। शहर का कोई विभाग, जिसमें आबादी हो।
महसिल–संज्ञा पुं० [अ०] महसूल आदि वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।
महसूल–संज्ञा पुं० [अ०] १. सरकार या नगर-पालिका (म्युनिसिपैलिटी)आदि-द्वारा किसी विशेष कार्य या वस्तु के लिए वसूल किया जानेवाला धन। चुंगी। २. कर। टैक्स। ३. भाड़ा। किराया (जैसे—रेल के टिकट का)। ४. मालगुजारी। लगान।
महसूली–वि० जिस पर महसूल लगता हो। महसूल लगनेवाली चीज।
महसूस–वि० [अ०] जिसका अनुभव या ज्ञान हो। अनुभूत। जो जान पड़े या समझ में आये।
महाँ*–अव्य० दे० "महँ"।
महा–वि० अत्यंत। बहुत अधिक। सर्वश्रेष्ठ। सबसे बढ़कर। बहुत बड़ा। भारी।
संज्ञा पुं० मट्ठा। छाछ।
महाअरंभ–वि० बहुत शोर।
महाई†–संज्ञा स्त्री० मथने का काम या मजदूरी।
महाउत*–संज्ञा पुं० दे० "महावत"।
महाउर–संज्ञा पुं० दे० "महावर"।
महाकल्प–संज्ञा पुं० पुराणानुसार उतना समय, जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। ब्रह्मकल्प।
महाकाय–वि० बहुत बड़े शरीरवाला। बड़े डीलडौल का। विशालकाय।
महाकाल–संज्ञा पुं० १. महादेव। २. संहार करनेवाले शिव का रूप। ३. शिव के एक गण का नाम। ४. अखण्ड समय।
महाकाली–संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी।
महाकाव्य–संज्ञा पुं० वह बहुत बड़ा सर्गबद्ध काव्य, जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों तथा सामाजिक कार्यों आदि का वर्णन हो। बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्यग्रंथ।
महाखर्व–संज्ञा पुं० सौ खर्ब की संख्या या अंक।
महागौरी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
महाजन–संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ पुरुष। २. सज्जन पुरुष। ३. धनवान्। दौलतमंद। ४. रुपए-पैसे का लेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ५. बनिया। ६. भलामानस।
महाजनी–संज्ञा स्त्री० १. रुपए के लेने-देने का व्यवसाय। २. एक लिपि, जो महाजनों के यहाँ बहीखाता लिखने में काम आती है। मुड़िया।
महाजल–संज्ञा पुं० समुद्र।
महातम*†–संज्ञा पुं० "माहात्म्य"।
महातल–संज्ञा पुं० चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भवन या तल।
महात्मा–संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति, जिसकी

आत्मा बहुत उच्च हो। महान् पुरुष। महानुभाव। अलौकिक शक्ति-सम्पन्न पुरुष। २. बहुत बड़ा साधु या संन्यासी।

महात्मा गांधी–संज्ञा पुं० भारत के एक महान् नेता। इन्हें भारत के राष्ट्रपिता कहा जाता है। गौतम बुद्ध के बाद इनके समान प्रसिद्ध कोई भी भारतीय नहीं हो सका। आपने सत्य, अहिंसा, अछूतोद्धार और चरखा आदि (गांधीवाद) का प्रतिपादन किया। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गांधी था। दो अक्टूबर सन् १९६९ को पोर बन्दर (काठियावाड़) में इनका जन्म हुआ था। लन्दन में बैरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त की थी। १८९३ में दक्षिण अफ्रीका गए, वहाँ भारतीय प्रवासियों के अधिकारों के लिए आन्दोलन छेड़ा। भारत वापस आने पर असहयोग-आन्दोलन छेड़ा। १५ अगस्त १९४७ को भारत के स्वतंत्र होने पर आपके जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया, पर ३० जनवरी सन् १९४८ को नाथूराम गोडसे नामक एक हिन्दू ने दिल्ली में पिस्तौल से आपकी हत्या कर दी।

महादान–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग-प्राप्ति के लिए दिए जानेवाले बड़े दान। २. वह दान, जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है।

महादेव–संज्ञा पुं० शंकर। शिव।

महादेवी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी।

महाद्वीप–संज्ञा पुं० चारों ओर जल से घिरा हुआ पृथ्वी का बहुत बड़ा भाग, जिसमें अनेक देश हों।

महाधन–वि० १. बहुमूल्य। अधिक मूल्य का। २. बहुत धनी।

महान्–वि० बहुत बड़ा। श्रेष्ठ।

महानवमी–संज्ञा स्त्री० आश्विन महीने के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि।

महानस–संज्ञा पुं० रसोईघर।

महानाटक–संज्ञा पुं० दस अंकोंवाला बड़ा नाटक।

महानाभ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मंत्र, जिससे शत्रु के शस्त्र व्यर्थ जाते हैं।

महानिद्रा–संज्ञा स्त्री० मृत्यु। मौत।

महानिर्वाण–संज्ञा पुं० मोक्ष। बौद्ध धर्म के अनुसार वह मोक्ष या परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्ध माने गए हैं।

महानिशा–संज्ञा स्त्री० १. प्रलय की रात्रि। २. आधी रात।

महानुभाव–संज्ञा पुं० आदरणीय व्यक्ति। महाशय। महापुरुष।

महानुभावता–संज्ञा स्त्री० बड़प्पन।

महापथ–संज्ञा पुं० १. लंबा और चौड़ा रास्ता। राजपथ। २. मृत्यु।

महापद्म–संज्ञा पुं० १. नौ निधियों में से एक। २. सफेद कमल। ३. सौ पद्म की संख्या।

महापातक–संज्ञा पुं० पाँच बहुत बड़े पाप= ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ व्यभिचार और इन सब पाप करनेवालों का साथ करना।

महापातकी–संज्ञा पुं० महापातक या महापाप करनेवाले।

महापात्र–संज्ञा पुं० मृतक कर्म का दान लेनेवाला। महाब्राह्मण। कट्टहा ब्राह्मण।

महापुरुष–संज्ञा पुं० १. नारायण। २. श्रेष्ठ पुरुष। महात्मा। महानुभाव।

महाप्रभु–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। वल्लभाचार्य जी की एक आदरसूचक पदवी। २. बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी।

महाप्रलय–संज्ञा पुं० संपूर्ण सृष्टि के विनाश का समय, जब अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता।

महाप्रसाद–संज्ञा पुं० १. ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। २. जगन्नाथजी का चढ़ा हुआ भात।

महाप्रस्थान–संज्ञा पुं० १. मृत्यु। देहान्त। २. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना।

महाप्राज्ञ–संज्ञा पुं० बड़ा भारी विद्वान्।

महाप्राण–संज्ञा पुं० व्याकरण के अनुसार वे वर्ण, जिनके उच्चारण में प्राण वायु का व्यवहार विशेष करना पड़ता है। हिंदी-वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है।

महाबल—वि० अत्यंत बलवान्। बहुत अधिक शक्तिशाली।

महाबलाधिकृत—संज्ञा पुं० भारत में गुप्त-शासनकाल में राज्य की समस्त सेना के प्रधान अधिकारी और सेना-विभाग के मंत्री को 'महाबलाधिकृत' कहते थे।

महाबाहु—वि० लंबी बाहोंवाला। बलवान्।

महाब्राह्मण—संज्ञा पुं० दे० "महापात्र"।

महाभाग—वि० जिसका भाग्य बहुत ही अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।

महाभागवत—संज्ञा पुं० १. दे० "भागवत।" २. २६ मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ३. परम वैष्णव।

महाभारत—संज्ञा पुं० अठारह पर्वों का एक प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक महाकाव्य, जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। कोई बहुत बड़ा ग्रंथ। कौरवों और पाण्डवों का प्रसिद्ध युद्ध। बहुत बड़ा युद्ध।

महाभाष्य—संज्ञा पुं० पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य।

महाभूत—संज्ञा पुं० पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पंचतत्त्व।

महामंत्र—संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र। २. अच्छी सलाह।

महामंत्री—संज्ञा पुं० प्रधान मंत्री। किसी राज्य या संस्था का सबसे बड़ा मंत्री। [अंग्रे०—जनरल सेक्रेटरी या सेक्रेटरी जनरल।]

महामति—वि० बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

महामना—वि० जिसका मन बहुत उच्च और उदार हो। महापुरुष। महानुभाव।

महामहिम—वि० बहुत अधिक महिमावाला। हिज एक्सेलेन्सी, का हिन्दी रूपान्तर। आजकल इस शब्द को राज्यपाल (गवर्नर) या राजदूत के नाम के आगे जोड़ते हैं।

महामहोपाध्याय—संज्ञा पुं० १. गुरुओं का गुरु। २. एक उपाधि, जो भारत में अंग्रेजी शासन-काल में सरकार की ओर से संस्कृत के विद्वानों को दी जाती थी।

महामांस—संज्ञा पुं० गोमांस। गाय या मनुष्य का मांस।

महामाई—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. काली।

महामात्य—संज्ञा पुं० महामंत्री। प्रधान मंत्री।

महामाया—संज्ञा स्त्री० १. प्रकृति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. आर्या छंद का तेरहवाँ भेद।

महामारी—संज्ञा स्त्री० एक भीषण संक्रामक रोग, जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें। प्लेग। मरी। ताउन।

महामालिनी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद।

महामृत्युंजय—संज्ञा पुं० शिव।

महामेदा—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कंद।

महाय*—वि० महान्। बहुत।

महायज्ञ—संज्ञा पुं० धर्म्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले कर्म। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।

महायात्रा—संज्ञा स्त्री० मृत्यु। मौत।

महायान—संज्ञा पुं० बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय।

महायुग—संज्ञा पुं० सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि, इन चारों युगों का समूह।

महायुद्ध—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा युद्ध, जिसमें कई बड़े राष्ट्र सम्मिलित हों। (अंग्रे०—ग्रेट-वार) अभी तक इस शताब्दी में दो महायुद्ध हो चुके हैं—प्रथम महायुद्ध सन् १९१४ से १९१९ तक और द्वितीय महायुद्ध सन् १९३९-१९४५ तक हुआ था।

महारथी—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योद्धा।

महाराज—संज्ञा पुं० [स्त्री० महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। २. ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए एक संबोधन।

महाराजाधिराज—संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा राजा। राजाओं का राजा। २. अधिक प्रतापी और अधिकार-सम्पन्न राजाओं की एक उपाधि।

महाराज्ञी—संज्ञा स्त्री० महारानी। राजा की सबसे बड़ी रानी।

महाराणा—संज्ञा पुं० मेवाड़ के राजाओं की उपाधि।

महारात्रि—संज्ञा स्त्री० महाप्रलय की वह रात, जब सृष्टि लय हो जाती है और दूसरा महाकल्प होता है।

महारानी—संज्ञा स्त्री० महाराज की रानी। राजा की सबसे बड़ी पत्नी या रानी।

महारावण—संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह रावण, जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।

महारावल—संज्ञा पुं० जैसलमेर, डूँगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र—संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २. इस देश के निवासी। ३. बहुत बड़ा राष्ट्र।

महाराष्ट्री—संज्ञा स्त्री० दे० "मराठी"। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

महारुद्र—संज्ञा पुं० शिव।

महारोग—संज्ञा पुं० कठिन रोग। बहुत बड़ा रोग। जैसे—दमा, भगंदर आदि।

महारौरव—संज्ञा पुं० एक नरक। सबसे निकृष्ट नरक।

महार्घ—वि० १. महँगा। २. बहुमूल्य।

महाल—संज्ञा पुं० १. मुहल्ला। टोला। पाड़ा। २.बन्दोबस्त में जमीन का एक भाग, जिसमें कई गाँव होते हैं। ३.भाग। पट्टी। हिस्सा।

महालक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी देवी। २. एक वर्णिक छन्द।

महालय—संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. आश्रम। ३. पितृपक्ष। ४. श्राद्धविशेष। ५. अमावस्या।

महालया—संज्ञा स्त्री० आश्विन मास की अमावस्या। पितृविसर्जन की तिथि।

महावट—संज्ञा स्त्री० पूस-माघ की वर्षा। जाड़े की झड़ी।

महावत—संज्ञा पुं० हाथी हाँकनेवाला। फीलवान। हाथीवान।

महावर—संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल रंग, जिसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैरों में लगती हैं। यावक।

महावरी—संज्ञा पुं० महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।

महावारुणी—संज्ञा स्त्री० गंगा-स्नान का एक योग।

महाविद्या—संज्ञा स्त्री० १. तंत्र में मानी हुई दस देवियाँ—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। २. दुर्गा देवी।

महावीर—संज्ञा पुं० १. हनुमानजी। २. गौतम बुद्ध। ३. जैनियों के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर।

वि० बहुत बड़ा बहादुर।

महाव्याहृति—संज्ञा स्त्री० भूः, भुवः और स्वः ये तीन ऊपर के लोक।

महाव्रत—संज्ञा पुं० बहुत कठिन या बड़े महत्त्व का व्रत। वि० (स्त्री० महाव्रता) बहुत कठिन या बहुत बड़ा व्रत करनेवाला।

महाशंख—संज्ञा पुं० सबसे बड़ी संख्या का नाम। सौ शंख।

महाशक्ति—संज्ञा पुं० शिव।

महाशय—संज्ञा पुं० १. सज्जन। उच्च आशयवाला व्यक्ति। महानुभाव। महोदय। २. भद्र पुरुषों को सम्बोधित करने के लिए एक आदर-सूचक शब्द। ३. समुद्र।

महाश्मशान—संज्ञा पुं० काशी नगरी। हिन्दुओं का ऐसा विश्वास है कि काशी में मरने से स्वर्ग मिलता है।

महाश्वेता—संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

महासंस्कार—संज्ञा पुं० अंत्येष्टि क्रिया।

महि*—अव्य० दे० "महँ" में।

संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

महिजा—संज्ञा स्त्री० सीताजी।

महिदेव—संज्ञा पुं० ब्राह्मण।

महिधर—संज्ञा पुं० १. पहाड़। २. शेषनाग। दे० "महीधर"।

महिनंदिनी—संज्ञा स्त्री० सीताजी।

महिपाल*—संज्ञा पुं० दे० "महीपाल"।

महिमा—संज्ञा स्त्री० १. महत्त्व। माहात्म्य। बड़ाई। गौरव। २. प्रभाव। प्रताप। ३.आठ प्रकार की सिद्धियों में से पाँचवीं, जिससे सिद्ध योगी अपने आपको बहुत बड़ा बना लेता है।

महिमावान्—वि० गौरवशाली। महिमा या गौरव से युक्त।

महिम्न—संज्ञा पुं० शिवजी की स्तुति करने का प्रधान स्तोत्र।

महियाँ†*—अव्य० में।

महियाउर†–संज्ञा पुं० मठे में पका हुआ चावल।

महिरावण–संज्ञा पुं० रावण के लड़के का नाम।

महिला–संज्ञा स्त्री० १. भले घर की स्त्री। २. किसी स्त्री के लिए प्रयोग किया जानेवाला शिष्ट शब्द।

महिष–संज्ञा पुं० [स्त्री० महिषी] १. भैंसा। २. वह राजा, जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो। ३. एक राक्षस का नाम, जिसे दुर्गाजी ने मारा था।

महिषमर्दिनी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

महिषासुर–संज्ञा पुं० रंभ नामक दैत्य का पुत्र, जिसकी आकृति भैंसे की-सी थी। इसे दुर्गाजी ने मारा था।

महिषी–संज्ञा स्त्री० १. भैंस। २. पटरानी। ३. सैरिंध्री।

महिषेश–संज्ञा पुं० १. महिषासुर। २. यमराज।

महिसुता–संज्ञा स्त्री० सीताजी।

महिसुर–संज्ञा पुं० ब्राह्मण। दे० "महीसुर"।

मही–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. मिट्टी। ३. देश ४. स्थान। ५. नदी। ६. एक की संख्या। ७. छाँछ। मट्ठा। ८. एक लघु और एक गुरु मात्रा का एक छंद।

महीतल–संज्ञा पुं० पृथ्वी। संसार।

महीधर–संज्ञा पुं० १. पर्वत। २. शेषनाग।

महीन–वि० १. बहुत पतला। २. बारीक। "मोटा" का उलटा। झीना। कोमल। ३. धीमा। मंद।

महीना–संज्ञा पुं० १. काल का एक परिमाण, जो प्रायः साधारणतया तीस दिन का होता है। २. मासिक वेतन। दरमाहा। ३. स्त्रियों का मासिक धर्म।

महीप, महीपति–संज्ञा पुं० राजा।

महीर–संज्ञा स्त्री० १. मठे में पकाया हुआ चावल। २. गरम किए गए मक्खन की तलछट।

महीसुर–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।

महुँ*–अव्य० दे० "महँ"।

महुअर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बाजा। तुमड़ी। तूँबी। २. एक प्रकार का इन्द्रजाल का खेल, जो महुअर या तूँबड़ी बजाकर किया जाता है।

महुआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे, मीठे, गोल फूलों से शराब बनती है।

महुवरि–संज्ञा स्त्री० दे० "महुअर"।

महूक*–संज्ञा पुं० १. महुआ। २. जेठी मधु। मुलेठी।

महेंद्र–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. विष्णु।

महेर†–संज्ञा पुं० १. दे० "महेरा"। २. झगड़ा। बखेड़ा।

महेरा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का व्यंजन या खाद्य पदार्थ। २. मट्ठे में पका अन्न।

महेरी–संज्ञा स्त्री० उबाली हुई ज्वार, जिसे लोग नमक-मिर्च के साथ खाते हैं। वि० अड़चन डालनेवाला।

महेश–संज्ञा पुं० शिव।

महेश्वर–संज्ञा पुं० [स्त्री० महेश्वरी] ईश्वर।

महेस*–संज्ञा पुं० दे० "महेश"।

महोखा–संज्ञा पुं० एक पक्षी, जो तेज दौड़ता है, पर उड़ नहीं सकता।

महोगनी–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत बड़ा वृक्ष, जिसकी लकड़ी बहुत अच्छी, मजबूत और टिकाऊ होती है।

महोच्छव, महोछा*†–संज्ञा पुं० दे० "महोत्सव।"

महोत्सव–संज्ञा पुं० बड़ा उत्सव।

महोदधि–संज्ञा पुं० समुद्र।

महोदय–संज्ञा पुं० [स्त्री० महोदया] महाशय। महानुभाव। जिसका भाग्य उदय हो या जो समृद्धशाली हो।

महोला*†–संज्ञा पुं० हीला। बहाना। धोखा। चकमा।

महौघ–संज्ञा पुं० समुद्री तूफान।

मह्या*–संज्ञा पुं० मठा। छाँछ।

माँ–संज्ञा स्त्री० जन्म देनेवाली। माता। †अव्य० में।

माँखना*†–क्रि० अ० दे० "माखना"।

माँखी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।

माँग–संज्ञा स्त्री० १. माँगने की क्रिया या भाव। २. किसी चीज को पाने की इच्छा। चाह। आवश्यकता। ३. वह वस्तु, जिसे पाने की

इच्छा प्रकट की जाय। ४. सिर के बालों को कंघी से विभक्त करके उनके बीच बनाई गई रेखा।
मुहा०—माँग-कोख से सुखी रहना या जुड़ाना =स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती रहना। माँग-पट्टी करना=कंघी करना।
माँग-टीका—संज्ञा पुं० स्त्रियों की माँग पर का एक गहना।
माँगन*†—संज्ञा पुं० १. माँगने की क्रिया या भाव। २. भिक्षुक।
माँगना—क्रि० स० किसी से कोई चीज पाने की इच्छा प्रकट करना। याचना करना। प्रार्थना करना। चाहना।
माँगफूल—संज्ञा पुं० दे० "माँग-टीका"।
मांगलिक—वि० मंगल करनेवाला।
संज्ञा पुं० नाटक का वह पात्र, जो मंगल-पाठ करता है।
मांगल्य—वि० शुभ। मंगल-कारक।
संज्ञा पुं० मंगल का भाव।
माँचना*†—क्रि० अ० १. आरंभ होना। जारी होना। २. प्रसिद्ध होना।
माँचा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० माँची] १. पलँग। खाट। २. मंझा। ३. छोटी पीढ़ी। ४. मचान।
माँछ†—संज्ञा पुं० मछली।
माँजना—क्रि० स० १. किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २. सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को मजबूत करना। माँझा देना।
क्रि० अ० अभ्यास करना।
माँजर*†—संज्ञा स्त्री० दे० "पंजर"।
माँजा—संज्ञा पुं० पहली वर्षा का फेन।
माँझ*†—अव्य० में। भीतर।
*†संज्ञा पुं० अंतर।
माँझा—संज्ञा पुं० १. नदी में का टापू। २. एक प्रकार का आभूषण, जो पगड़ी पर पहना जाता है। ३. वृक्ष का तना। ४. वे पीले कपड़े, जो वर और कन्या को हलदी चढ़ने पर पहनाए जाते हैं। ५. पतंग या गुड्डी के डोरे पर चढ़ाया जानेवाला कलफ। ६. दे० "मंझा"।
माँझिल*†—क्रि० वि० बीच का।
माँझी—संज्ञा पुं० नाव खेनेवाला। केवट। मल्लाह। झगड़ा या मामला तय करानेवाला।
माँट*†—संज्ञा पुं० १. मटका। कुंडा। २. घर का ऊपरी भाग। अटारी।
माँठ—संज्ञा पुं० मटका। कुंडा।
माँठी*—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की चूड़ी। २. मट्ठी या मठरी नाम की बनी हुई खाने की चीज।
माँड़—संज्ञा पुं० पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी। पीच।
माँड़ना*†—क्रि० स० १. मलना। जोर से दबाना। २. सानना। गूंधना। ३. पोतना। लेपन करना। ४. बनाना। सजाना। ५. अन्न की बाल में से दाने झाड़ना। ६. मचाना।
माँड़नी—संज्ञा स्त्री० मग्जी। गोट।
माँड़यो*†—संज्ञा पुं० १. विवाह का मंडप। मँडवा। २. अतिथिशाला।
मांडलिक—संज्ञा पुं० १. किसी मंडल या प्रांत की रक्षा अथवा शासन करनेवाला। २. किसी बड़े राजा को कर देनेवाला छोटा राजा।
माँड़व—संज्ञा पुं० विवाह आदि शुभ कार्य के लिए छाया हुआ मंडप।
मांडवी—संज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो भरत को ब्याही थी।
मांडव्य—संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने यमराज को शूद्र होने का शाप दिया था।
माँड़ा—संज्ञा पुं० १. आँख का एक रोग, जिसमें उसके अन्दर महीन झिल्ली-सी पड़ जाती है। २. मंडप। मँड़वा। ३. मैदे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी। लुचई। ४. एक प्रकार की रोटी। पराँठा। उलटा।
माँड़ी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "माँड़"। भात का पसावन। पीच। २. कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।
मांडूक्य—संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।
माँड़ौ*†—संज्ञा पुं० दे० "माँड़व"।
माँढ़ा—संज्ञा पुं० दे० "माँड़व"।
माँत*—वि० १. उन्मत्त। मतवाला। २. नशे में चूर। मस्त।

माँतना*†–क्रि० अ० १. उन्मत्त होना। २. नशे में चूर होना। मतवाला होना।
माँतल*†–वि० उन्मत्त। पागल। मदमस्त। मतवाला।
माँता*†–वि० मतवाला। उन्मत्त।
माँत्रिक–संज्ञा पुं० तंत्र-मंत्र का काम करनेवाला।
माँद–वि० १. बेरौनक। उदास। आभारहित। २. किसी के मुकाबले में खराब या हलका। ३. पराजित। हारा हुआ। मात।
संज्ञा स्त्री० हिंसक जंतुओं के रहने का विवर। खोह। बिल। गुफा। चुर।
माँदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बीमारी। रोग।
माँदर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा। मर्दल (बाजा)।
माँदा–वि० १. थका हुआ। २. बचा हुआ। बाकी। ३. रोगी।
मांद्य–संज्ञा पुं० मंद होने का भाव।
मांधाता–संज्ञा पुं० एक प्राचीन सूर्य्यवंशी राजा।
माँपना*†–क्रि० अ० नशे में चूर होना। उन्मत्त होना।
माँयँ–अव्य० में। बीच। मध्य।
मांस–संज्ञा पुं० १. शरीर का रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ लाल अंश। २. कुछ पशुओं के शरीर का उक्त अंश, जो प्रायः खाया जाता है। गोश्त।
मांसपेशी–संज्ञा स्त्री० शरीर के अंदर का मांस-पिंड जिससे अंग-संचालन होता है।
मांसभक्षी–संज्ञा पुं० मांस खानेवाला। दे० "मांसाहारी"।
मांसल–वि० [संज्ञा मांसलता] मांस से भरा हुआ। मांसपूर्ण। मोटा-ताजा। पुष्ट।
संज्ञा पुं० काव्य में गौडी रीति का एक गुण।
मांसाद–वि० मांस खानेवाला। मांसाहारी। मांसभक्षी।
मांसाहारी–संज्ञा पुं० मांस खानेवाला। मांसभक्षी।
माँसु*–संज्ञा पुं० दे० "मांस"।
माँह*†–अव्य० में। बीच। अंदर।
माँहा*†–अव्य० दे० "माँह"।
माँहि, माँहीं*†–अव्य० दे० "माँह"।
मा–संज्ञा स्त्री० १. माता। २. लक्ष्मी। ३. दीप्ति। प्रकाश।
माइँ, माइँ–संज्ञा स्त्री० १. माँ। माता। २. पुत्री। लड़की। ३. छोटा पूआ, जिससे विवाह में मातृपूजन किया जाता है।
मुहा०–माइँन में थापना = पितरों के समान आदर करना।
माइ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "माई"।
माइका–संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
माई–संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. माँ का सम्बोधन। बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए संबोधन।
यौ०—माई का लाल=समर्थ, बहुत उदार या साहसी व्यक्ति। ऐसी हिम्मतवाला व्यक्ति, जो अमुक कार्य कर सके। वीर।
माक़ूल–वि० [अ०] १. उचित। ठीक। वाजिब। सही। २. लायक। योग्य। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. जिसने वाद-विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।
माख*–संज्ञा पुं० १. अप्रसन्नता। नाराजगी। रिस। २. अभिमान। घमंड। ३. पछतावा। ४. अपने दोष को ढकना।
माखन–संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।
यौ०—माखनचोर=श्रीकृष्ण।
माखना*†–क्रि० अ० अप्रसन्न होना। नाराज होना। क्रोध करना।
माखी*†–संज्ञा स्त्री० मक्खी।
मागध–संज्ञा पुं० १. विरुदावली गानेवाली एक प्राचीन जाति। भाट। २. जरासंध।
वि० मगध देश का।
मागधी–संज्ञा स्त्री० मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।
माघ–संज्ञा पुं० १. वर्ष का ११वाँ महीना, जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २. संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि। ३. इनका बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्यग्रंथ। ४. कुंद का फूल।
माघी–संज्ञा स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा।
वि० माघ का। जैसे—माघी मिर्च।
माच*†–संज्ञा पुं० दे० "मचान"।

माचना*†–क्रि० स० दे० "मचना"।
माचल*†–वि० १. मचलनेवाला। जिद्दी। हठी। २. मनचला।
माचा†–संज्ञा पुं० खाट की तरह की बैठन की पीढ़ी। बड़ी मचिया।
माची–संज्ञा स्त्री० मचिया। छोटा माचा।
माछ†–संज्ञा पुं० मछली।
माछर*†–संज्ञा पुं० १. दे० "मच्छड़"। २. दे० "मछली"।
माछी†–संज्ञा स्त्री० मक्खी।
माजरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. हाल। वृत्तांत। २. घटना।
माजून–संज्ञा स्त्री० [अ०] औषध के रूप में काम आनेवाला कोई मीठा अवलेह। चाटनेवाली औषध।
माजूफल–संज्ञा पुं० माजू नामक झाड़ी का गोटा या गोंद, जो ओषधि तथा रँगाई के काम में आता है।
माट–संज्ञा पुं० १. मिट्टी का बरतन, जिसमें रँगरेज रंग बनाते हैं। मटोर। २. बड़ी मटकी।
माटा†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल च्यूँटा
माटी*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मिट्टी" २. धूल। रज। ३. शव। लाश। ४. शरीर ५. वह पदार्थ, जिससे पृथ्वी बनी है।
माठ–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई
माडना*†–क्रि० अ० ठानना। मचाना करना।
क्रि० स० १. पैर या हाथ से मसलना। मलना। २. घूमना। फिरना। ३. सजाना। मंडित करना। भूषित करना। ४. धारण करना। पहनना। ५. आदर करना। पूजना।
माड़ा*†–संज्ञा पुं० कोठे पर का बरामदा, जो छत से बाहर होता है। अटारी पर का चौबारा। मंडप।
माणवक–संज्ञा पुं० १. सोलह वर्ष की अवस्था-वाला युवक। २. विद्यार्थी। ३. निंदित या नीच आदमी।
माणिक, माणिक्य–संज्ञा पुं० लाल रंग का एक रत्न। लाल। मानिक।
वि० सर्वश्रेष्ठ।

मातंग–संज्ञा पुं० १. हाथी। २. चांडाल। ३. एक ऋषि, जो शवरी के गुरु थे। ४. अश्वत्थ।
मातंगी–संज्ञा स्त्री० दे० "महाविद्या"। दस महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या (तंत्र)।
मात–संज्ञा स्त्री० १. दे० "माता"। २. पराजय।
वि० १. पराजित।*२. मदमस्त। मतवाला।
मातदिल–वि० [अ०] जो गुण के विचार से न बहुत ठंडा हो, न बहुत गर्म।
मातना*†–क्रि० अ० मस्त होना। मदमत्त होना। नशे में हो जाना।
मातबर–वि० [अ०] विश्वसनीय।
संज्ञा स्त्री० मातबरी।
मातम–संज्ञा पुं० [अ०] मृत्यु-शोक। किसी के मरने पर रोना-पीटना।
मातमपुर्सी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मृतक के संबं-धियों को सांत्वना देना और उनसे सहानुभूति प्रकट करना।
मातमी–वि० [फा०] शोक-सूचक।
मातलि–संज्ञा पुं० इंद्र का सारथी।
मातलिसूत–संज्ञा पुं० इंद्र।
मातहत–वि० [अ०] [संज्ञा मातहती] अधीन। किसी की अधीनता या नियंत्रण में काम करनेवाला।
माता–संज्ञा स्त्री० १. जन्म देनेवाली। माँ। जननी। २. कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री। बड़ी स्त्री। ३. गौ। ४. पृथ्वी। भूमि। ५. लक्ष्मी। ६. शीतला। चेचक। वि० [स्त्री० माती] मतवाला।
मातामह–संज्ञा पुं० [स्त्री० मातामही] नाना। माता का पिता।
मातामही–संज्ञा स्त्री० माँ की माँ। नानी।
मातु*–संज्ञा स्त्री० माता। माँ।
मातुल–संज्ञा पुं० १. मामा। माता का भाई। २. धतूरा।
मातुली–संज्ञा स्त्री० १. मामी। मामा की स्त्री। २. भाँग।
मातृ–संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
मातृक–वि० माता-संबंधी।
मातृका–संज्ञा स्त्री० १. माता। २. दाई। धाय। ३. तांत्रिकों की ये सात देवियाँ—

ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा।

मातृकुल—संज्ञा पुं० माता या नाना का वंश।

मातृत्व—संज्ञा पुं० माता होने का भाव। माता होने के गुण।

मातृपूजा—संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति, जिसमें पितरों का पूजन किया जाता है। मातृकापूजन।

मातृभाषा—संज्ञा स्त्री० वह भाषा, जो बालक अपनी माता से सीखता है।

मातृष्वसा—संज्ञा स्त्री० माँ की बहन। मौसी।

मात्र—अव्य० केवल। सिर्फ।

मात्रा—संज्ञा स्त्री० १. परिमाण। तौल का परिमाण। मिकदार। २. एक बार खाने योग्य औषध। ३. उतना काल, जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है। कल। कला। ४. स्वरसूचक रेखा, जो अक्षर के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है।

मात्रिक—वि० १. मात्रा-संबंधी। २. जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य—संज्ञा पुं० ईर्ष्या। डाह।

माथ*†—संज्ञा पुं० दे० "माथा"। मस्तक।

माथना*—संज्ञा पुं० दे० "मथना"।

माथा—संज्ञा पुं० १. मस्तक। ललाट। २. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

मुहा०—माथा टेकना=प्रणाम करना। माथा ठनकना=पहले से ही किसी दुर्घटना या अनिष्ट की आशंका होना। माथे चढ़ाना या धरना=शिरोधार्य करना। सादर स्वीकार करना। माथे पर बल पड़ना=आकृति से क्रोध, दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना। माथे मानना=सादर स्वीकार करना।

माथा-पच्ची—संज्ञा स्त्री० १. ऐसा काम, जिसमें दिमाग पर बहुत जोर पड़े। सिरपच्ची। २. बहुत अधिक बकना या समझाना। सिर खपाना।

माथुर—संज्ञा पुं० १. मथुरा का निवासी। २. ब्राह्मणों की एक शाखा। चतुर्वेदी या चौबे। ३. कायस्थों की एक शाखा।

माथे—क्रि० वि० १. मस्तक पर। सिर पर। २. भरोसे। सहारे पर।

माद*—संज्ञा पुं० दे० "मद"।

मादक—वि० [संज्ञा स्त्री० मादकता] नशा लानेवाला। मस्त करनेवाला। जिससे नशा हो। नशीला।

मादकता—संज्ञा स्त्री० मादक या नशा होने का भाव। नशीलापन। मतवालापन।

मादन—वि० मस्त करनेवाला। मादक। संज्ञा पुं० कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

मादर—संज्ञा स्त्री० [फा०] माँ। माता।

मादरजाद—वि० [फा०] १. जन्म का। पैदाइशी। २. सहोदर (भाई)। ३. बिलकुल नंगा।

मादरी—वि० [फा०] मादर या माता-संबंधी। माता का। जैसे मादरी जबान। मातृभाषा।

मादा—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा (जीवजंतु)।

माद्दा—संज्ञा पुं० [अ०] १. मूल तत्त्व। २. योग्यता। ३. मवाद। पीब।

माद्री—संज्ञा स्त्री० पांडु राजा की दूसरी पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।

माधव—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. वसंत ऋतु। ४. एक छंद। मुक्तहरा। वि० [माधवी, माधविका] १. मधु-सम्बन्धी। २. मस्त करनेवाला।

माधविका—संज्ञा स्त्री० दे० "माधवी"।

माधवी—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध लता, जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं। २. सवैया छंद का एक भेद। ३. एक प्रकार की शराब। ४. तुलसी। ५. दुर्गा।

माधुरी—संज्ञा स्त्री० १. मिठास। मीठापन। माधुर्य। २. शोभा। सुंदरता। ३. मद्य।

माधुर्य—संज्ञा पुं० १. मधुरता। २. सुंदरता। ३. मिठास। मीठापन। ४. काव्य का एक गुण, जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।

माधैया*—संज्ञा पुं० दे० "माधव"।

माधो—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। माधव।

माध्यंदिनी—संज्ञा स्त्री० शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम—वि० मध्य का। बीचवाला। संज्ञा पुं० १. साधन। कार्य्यसिद्धि का उपाय।

जरिया। २. वह भाषा, जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय (अंग्रे०—मीडियम)।

माध्याकर्षण—संज्ञा पुं० पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण, जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता है और जिसके कारण सब वस्तुएँ ऊपर से नीचे या पृथ्वी पर गिरती हैं (अंग्रे०-ग्रैविटेशन)।

माध्व—संज्ञा पुं० वैष्णवों के चार मुख्य संप्रदायों में से एक, जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माध्वी—संज्ञा स्त्री० मदिरा। शराब।

मान—संज्ञा पुं० १. तौल या नाप आदि। परिमाण। २. पैमाना। वह साधन, जिसके द्वारा कोई चीज नापी या तौली जाय। ३. अभिमान। घमंड। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत। ५. साहित्य में मन का एक विकार, जो अपने प्रिय व्यक्ति को कोई दोष या अपराध करते देखकर होता है। रूठना। ६. सामर्थ्य। मुहा०—मान मथना=घमंड दूर करना। गर्व चूर्ण करना। मान रखना=प्रतिष्ठा बचाना। इज्जत रखना।
यौ०—मान-महत=आदर-सत्कार। प्रतिष्ठा। मान मनाना=रूठे हुए को मनाना।

मानकंद—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मीठा कंद। २. सालिब मिस्री।

मानक—संज्ञा पुं० दे० "मानदंड"। किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि का अनुमान लगाने या आँकने के लिए निर्धारित मान या माप।

मानकच्चू—संज्ञा पुं० दे० "मानकंद"।

मानकीकरण—संज्ञा पुं० एक प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं का मानदंड या मानक निश्चित करना, जैसे तौल के बटखरों या नाप के गजों आदि का मानकीकरण।

मानगृह—संज्ञा पुं० कोप-भवन।

मानचित्र—संज्ञा पुं० किसी स्थान का बना हुआ नकशा।

मानता—संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मानदंड—संज्ञा पुं० निश्चित या स्थिर किया हुआ वह मान या माप, जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि आँका जाय या अनुमान लगाया जाय। (अंग्रे०—स्टैंडर्ड)।

मानना—क्रि० अ० १. मंजूर करना। स्वीकार करना। २. कल्पना या अनुमान करना। समझना। ध्यान में लाना। ठीक मार्ग पर लाना। क्रि० स० १. स्वीकृत करना। मंजूर करना। २. किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। आदर करना। गुरु या उस्ताद समझना। ३. धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। ४. देवता आदि की भेंट चढ़ाने का प्रण करना। मन्नत करना। ५. ध्यान में लाना। समझना।

माननीय—वि० [स्त्री० माननीया] मान (आदर या इज्जत) करने योग्य। मान्य। आदरणीय। पूजनीय।

मान-परेखा*—संज्ञा पुं० आशा। भरोसा।

मानमंदिर—संज्ञा पुं० १. वेधशाला। वह स्थान, जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। २. कोपभवन।

मान-मनौती—संज्ञा स्त्री० १. मन्नत। मनौती। २. रूठने और मनाने की क्रिया।

मानमरोर*†—संज्ञा स्त्री० दे० "मनमुटाव"।

मानमोचन—संज्ञा पुं० रूठे हुए प्रिय को मनाना।

मानव—संज्ञा पुं० १. मनुष्य। आदमी। २. १४ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

मानवता—संज्ञा पुं० १. मानव या आदमी होने का भाव और गुण। मनुष्यत्व। आदमीयत। २. संसार भर के समस्त मनुष्यों का समूह या समाज। समस्त मानव-समाज।

मानवशास्त्र—संज्ञा पुं० मानव जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र।

मानवी—संज्ञा स्त्री० स्त्री। नारी।
वि० मानव-संबंधी। मानवीय।

मानवीय—वि० मानव या मनुष्य-सम्बन्धी।

मानवेंद्र—संज्ञा पुं० १. राजा। २. अत्यन्त श्रेष्ठ व्यक्ति।

मानस—संज्ञा पुं० १. मन। हृदय। २. मान-सरोवर। ३. कामदेव। ४. संकल्प-विकल्प। ५. मनुष्य।

वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। २. मन में विचारा हुआ।
क्रि० वि० मन के द्वारा।
मानस पुत्र–संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह पुत्र, जिसकी उत्पत्ति इच्छा-मात्र से हो।
मानसर–संज्ञा पुं० दे० "मानसरोवर"।
मानसरोवर–संज्ञा पुं० हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील, जो पवित्र मानी जाती है।
मानसशास्त्र–संज्ञा पुं० मनोविज्ञान।
मानसिक–वि० १. मन-संबंधी। मन का। २. मन की कल्पना से उत्पन्न।
मानसी–संज्ञा स्त्री० वह पूजा, जो मन ही मन की जाय। एक विद्या देवी।
वि० मन का। मन से उत्पन्न।
मानहानि–संज्ञा स्त्री० [वि० मानहानिकर] अपमान। बेइज्जती। [अंग्रे०-डिफेमेशन] कोई ऐसा काम या बात करना, जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा घटे। इसके लिए कानून में दंड देने की व्यवस्था है। इसे मानहानि का कानून कहते हैं। भारतीय दंड-विधान की धारा ५००।
माना–*†क्रि० स० १. नापना। तौलना। २. जाँचना।
क्रि० अ० दे० "समाना" या "अमाना"।
मानिंद–वि० [फा०] समान। तुल्य।
मानिक–संज्ञा पुं० लाल रंग की एक मणि। पद्मराग।
मानिकचंदी–संज्ञा स्त्री० साधारण छोटी सुपारी।
मानिक रेत–संज्ञा स्त्री० मानिक का चूरा, जिससे गहने साफ करते हैं।
मानित–वि० सम्मानित। प्रतिष्ठित।
मानिता–संज्ञा स्त्री० १. सम्मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। २. अभिमान। घमंड।
मानिनी–वि० गर्वीली। मान करनेवाली। मानवती।
संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।
मानी–वि० [स्त्री० मानिनी] १. सम्मानित। प्रतिष्ठित। २. घमंडी। अभिमानी।
संज्ञा पुं० वह नायक, जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो।
संज्ञा स्त्री० अर्थ। मतलब। तात्पर्य।
मानुख*–संज्ञा पुं० दे० "मनुष्य"।
मानुष–संज्ञा पुं० [स्त्री० मानुषी] मनुष्य। आदमी।
वि० मनुष्य का।
मानुषिक–वि० मनुष्य का। मनुष्य-संबंधी।
मानुषी–वि० मनुष्य-संबंधी। मानुषीय।
मानुष्य–संज्ञा पुं० १. मनुष्य होने का भाव या धर्म। मनुष्यता। २. मनुष्य का शरीर।
मानुस–संज्ञा पुं० मनुष्य। मानुष।
माने–संज्ञा पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।
मानो–अव्य० जैसे। गोया।
मान्य–वि० [स्त्री० मान्या] मानने योग्य। माननीय। पूजनीय। पूज्य।
माप–संज्ञा स्त्री० १. तौल। मापने का परिमाण। २. मापने की क्रिया। ३. मान।
मापक–संज्ञा पुं० १. मान। माप। पैमाना। जिससे कुछ तौला या नाप किया जाय। २. माप करनेवाला।
मापना–क्रि० स० नापना। तौलना।
माफ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. क्षमा। २. दोष से मुक्त।
वि० जो क्षमा कर दिया गया हो। क्षमा किया हुआ। क्षमिक।
माफ़िक†–वि० [अ०] अनुकूल। योग्य।
माफ़ी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क्षमा। २. वह भूमि, जिसका कर सरकार से माफ हो।
यौ०–माफीदार=सरकार-द्वारा मालगुजारी माफ की हुई भूमि का मालिक।
माम*‡–संज्ञा पुं० १. ममता। २. अहंकार। ३. शक्ति। ४. अधिकार।
मामता–संज्ञा स्त्री० दे० "ममता"। अपनापन। आत्मीयता। प्रेम। स्नेह। मुहब्बत।
मामलत, मामलति*†–संज्ञा स्त्री० मामला व्यवहार की बात। विवादास्पद विषय।
मामला–संज्ञा पुं० [अ०] १. विवादपूर्ण विषय झगड़ा। विवाद। मुकदमा। २. व्यापार ३. काम। धंधा। उद्यम। ४. पारस्परिक व्यवहार।

मामा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मामी] माता का भाई।

मामी–संज्ञा स्त्री० १. मामा की पत्नी। २. अपने दोष पर ध्यान न देना।

मुहा०––मामी पीना=मुकर जाना।

मामूल–संज्ञा पुं० [अ०] रीति। रवाज।

मामूली–वि० [अ०] १. सामान्य। साधारण। २. नियमित। नियत। जो रीति-रवाजों के अनुकूल हो।

माय*†–संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। जननी। २. बड़ी या आदरणीय स्त्री। ३. दे० "माया"।

अव्य० दे० "माँहि"।

मायक–संज्ञा पुं० दे० "मायावी"।

मायका–संज्ञा पुं० स्त्री के माता-पिता का घर। नैहर। पीहर।

मायन*†–संज्ञा पुं० १. विवाह में मातृका-पूजन और पितृ-निमंत्रण की तिथि या दिन। २. उपर्युक्त दिन का कृत्य।

मायनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "मायाविनी"।

मायल–वि० [फा०] १. प्रवृत्त। रुजू। झुका हुआ। २. मिश्रित। मिला हुआ (रंग)।

माया–संज्ञा स्त्री० १. भ्रम। अविद्या। अज्ञान। छल। कपट। धोखा। लीला। २. दैवी शक्ति। सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण। प्रकृति। ३. ईश्वर की वह कल्पित शक्ति, जिससे सब कार्य होते हैं। ४. लक्ष्मी। द्रव्य। धन। संपत्ति। दौलत। ५. इंद्रजाल। जादू। ६. मय दानव की कन्या, जिससे खर, दूषण, त्रिशिरा और शूर्पनखा पैदा हुए थे। ७. दुर्गा। ८. मोह। ममत्व। ९. कृपा। दया। अनुग्रह।

मायादेवी–संज्ञा स्त्री० गौतम बुद्ध की माता का नाम।

मायापति–संज्ञा पुं० विष्णु। ईश्वर। परमात्मा।

मायामोह–संज्ञा पुं० सांसारिक झंझट। माया का भ्रम।

मायावाद–संज्ञा पुं० ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत।

मायावादी–संज्ञा पुं० सारी सृष्टि को माया या भ्रम समझनेवाला।

मायाविनी–संज्ञा स्त्री० छल-कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।

मायावी–संज्ञा पुं० [स्त्री० मायाविनी] १. छल-कपट करनेवाला। धूर्त। धोखेबाज। २. जादूगर।

मायिक–वि० १. माया से बना हुआ। बनावटी। जाली। २. मायावी।

मायूस–वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० मायूसी] निराश। नाउम्मेद।

मार–संज्ञा स्त्री० १. मारने की क्रिया या भाव। मार-पीट। २. आघात। चोट। निशाना।

संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. विष। जहर। ३. धतूरा।

अव्य० अत्यंत। बहुत।

मारक–वि० १. मार डालनेवाला। मारनेवाला। नाश करनेवाला। संहारक। २. किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला।

मारका–संज्ञा पुं० [अंग्रे०–'मार्क'] १. चिह्न। निशान। २. विशेषता-सूचक चिह्न।

संज्ञा पुं० १. युद्ध। लड़ाई। २. बहुत बड़ी या महत्त्वपूर्ण घटना।

मार-काट–संज्ञा स्त्री० युद्ध। लड़ाई। मारने-काटने का काम।

मारकीन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।

मारकेश–संज्ञा पुं० ग्रहों का वह योग, जो किसी व्यक्ति के लिए प्राणघातक होता है।

मारग*†–संज्ञा पुं० दे० "मार्ग"। रास्ता।

मुहा०––मारग मारना=रास्ते में पथिक को लूट लेना। मारग लगना=रास्ता लेना।

मारगन*–संज्ञा पुं० दे० १. "मार्गण"। २. बाण। तीर। ३. भिखमंगा।

मारण–संज्ञा पुं० १. मार डालना। हत्या करना। २. एक तांत्रिक प्रयोग। जिस मनुष्य के मारने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है, वह मर जाता है।

मारतौल–संज्ञा पुं० [पुर्त्त० मोर्टली] एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मारना–क्रि० स० १. वध या हत्या करना। प्राण लेना। २. पीटना। चोट पहुँचाना। जैसे–मार बैठना। ३. दुःख देना। सताना। ४. कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ देना। ५. बंद कर देना। ६. शस्त्र आदि चलाना। फेंकना। ७. आवेग या मनोविकार आदि को रोकना। जैसे, मन मारना। ८. नष्ट कर देना। न रहने देना। ९. शिकार करना। १०. चलाना। संचालित करना। ११. कोई चीज अपने कब्जे में कर लेना। हड़प लेना। १२. धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना। १३. विजय प्राप्त करना। जीतना। १४. अनुचित रूप से रख लेना। लूटना। बिना परिश्रम के प्राप्त करना। १५. बल या प्रभाव कम करना। निर्जीव-सा कर देना। १६. लगाना। देना।

मुहा०—गोली मारना=१. किसी पर बंदूक या पिस्तौल की गोली चलाना। जाने देना। छोड़ देना। २. कुछ पढ़कर मारना=मंत्र से फूंककर कोई चीज किसी पर फेंकना। जादू मारना=जादू का प्रयोग करना। मंत्र मारना=जादू करना।

मार-पीट–संज्ञा स्त्री० लड़ाई। ऐसी लड़ाई, जिसमें लोग मारे और पीटे जायँ।

मारपेच–संज्ञा पुं० धूर्त्तता। चालबाजी।

मारफ़त–अव्य० [अ०] द्वारा। जरिये।

मारवाड़–संज्ञा पुं० १. राजपूताने में मेवाड़ के आस-पास का प्रदेश। २. मेवाड़-राज्य।

मारवाड़ी–संज्ञा पुं० [स्त्री० मारवाड़िन] मारवाड़-प्रदेश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० मारवाड़-प्रदेश की भाषा।

वि० मारवाड़ का। मारवाड़-सम्बन्धी।

मारा*–वि० जो मार डाला गया हो। मारा

मुहा०—मारा फिरना, मारा-मारा फिरना=बुरी दशा में इधर-उधर भटकना।

मारामार–क्रि० वि० बहुत जल्दी। ताबड़-तोड़।

मारी–संज्ञा स्त्री० महामारी। भीषण संक्रामक रोग—प्लेग, हैजा आदि।

मारीच–संज्ञा पुं० एक राक्षस, जिसने सोने के हिरन का रूप धारण करके रामचन्द्र को धोखा दिया था।

मारुत–संज्ञा पुं० वायु। हवा।

मारुति–संज्ञा पुं० १. मारुत (वायु) के पुत्र हनुमान। २. भीम।

मारू–संज्ञा पुं० १. लड़ाई का बाजा। युद्धवाद्य। बहुत बड़ा डंका या धौंसा। २. लड़ाई में गाया जानेवाला एक गाना। ३. मरुदेश-निवासी। वि० १. मारनेवाला। २. हृदयवेधक। कटीला।

मारें–अव्य० इस कारण। वजह से।

मार्कंडेय–संज्ञा पुं० मृकंड ऋषि के पुत्र। कहते हैं कि ये अपने तपोबल के प्रभाव से अमर हो गए हैं।

मार्का–संज्ञा पुं० दे० "मारका"।

मार्ग–संज्ञा पुं० १. रास्ता। पंथ। २. अगहन का महीना। ३. मृगशिरा नक्षत्र।

मार्गकर–संज्ञा पुं० किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जानेवाला कर (अंग्रे०-टॉलटैक्स)।

मार्गण–संज्ञा पुं० १. इच्छा करना। पूछना। माँग करना। २. जाँच। खोज। ढूंढ़ना। अन्वेषण। ३. बाण। तीर। ४. भिखमंगा। ५. संख्याओं का प्रतीक। (कामदेव के पाँच बाण।)

मार्गन*–संज्ञा पुं० १. दे० "मार्गण"। बाण। तीर। २. भिखमंगा।

मार्गशीर्ष–संज्ञा पुं० अगहन मास। कार्त्तिक के बाद का महीना।

मार्गी–संज्ञा पुं० मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री। बटोही।

मार्जन–संज्ञा पुं० दे० "मार्जना"।

मार्जना–संज्ञा स्त्री० [वि० मार्जनीय] सफाई। क्षमा। माफी।

मार्जनी–संज्ञा स्त्री० झाड़।

मार्जार–संज्ञा पुं० [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।

मार्जित–वि० साफ किया हुआ।

मार्तण्ड–संज्ञा पुं० सूर्य।

मार्दव–संज्ञा पुं० १. अहंकार का त्याग। नम्रता। २. दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होना। ३. सरलता।

मार्फत–अव्य० [अ०] द्वारा। जरिए।

मार्मिक–वि० [संज्ञा मार्मिकता] १. दिल पर असर करनेवाला। मर्म स्थल पर प्रभाव डालनेवाला। २. विशेष प्रभावशाली। ३. मर्मज्ञ।

मार्शल ला–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] फौजी कानून। सैनिक विधान। साधारण नागरिकों पर लागू किए जानेवाले कानूनों की अपेक्षा सैनिकों पर लागू किए जानेवाले कानून कठोर होते हैं। असाधारण परिस्थिति में या संकट के समय इस कानून को साधारण नागरिकों पर भी लागू किया जाता है।

माल*–संज्ञा पुं० १. संपत्ति। धन। २. सामग्री। सामान। असबाब। ३. बेचने-खरीदने की चीज। ४. कर के रूप में मिलनेवाला धन। ५. फसल की उपज। ६. उत्तम और सुस्वादु भोजन। ७. पहलवान। कुश्ती लड़नेवाला। वह द्रव्य, जिससे कोई चीज बनी हो। सामग्री।

†संज्ञा स्त्री० १. माला। हार। २. वह रस्सी या सूत की डोरी, जो चरखे में टेकुए को घुमाती है। ३. पंक्ति। पाँती।

मुहा०—माल मारना या माल चीरना=पराया धन हड़पना। दूसरे की संपत्ति दबा बैठना।

यौ०—माल-टाल=धन-संपत्ति। माल-मता=माल-असबाब।

मालकंगनी–संज्ञा स्त्री० एक लता, जिसके बीजों से तेल निकलता है।

मालकोश–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध राग।

मालखाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. भंडार। माल-असबाब रखने का स्थान। २. कलक्टरी कचहरी का सरकारी गोदाम, जिसमें शस्त्रादि (बन्दूकें) रखी जाती हैं।

मालगाड़ी–संज्ञा स्त्री० माल ढोनेवाली रेल-गाड़ी।

मालगुजार–संज्ञा पुं० [फा०] मालगुजारी देनेवाला पुरुष।

मालगुजारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह भूमि-कर, जो जमींदार से सरकार लेती है। २. लगान।

मालगोदाम–संज्ञा पुं० स्टेशन पर वह स्थान, जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।

मालती–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध लता। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ३. रात्रि। रात। ४. छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। ५. सवैया का गयंद नामक भेद।

मालदार–वि० [फा०] धनी। संपन्न।

मालपूआ–संज्ञा पुं० पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान।

मालव–संज्ञा पुं० १. मालवा देश। २. एक राग, जिसे भैरव भी कहते हैं। ३. मालव देश-वासी या मालवा का पुरुष।

वि० मालव देश-सम्बन्धी। मालवे का।

मालवा–संज्ञा पुं० एक प्राचीन प्रदेश, जो अब मध्य भारत में है।

मालवीय–वि० १. मालवे का। मालव देश का निवासी। २. ब्राह्मणों की एक उपजाति।

माला–संज्ञा स्त्री० १. फूलों का हार। गजरा। २. समूह। झुंड। ३. दूब। ४. छंद का एक भेद। ५. पंक्ति। अवली।

मुहा०—माला फेरना=जपना। भजना।

मालामाल–वि० [फा०] बहुत संपन्न। धनी।

मालिक–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मालिका] १. स्वामी। अधिपति। २. ईश्वर। ३. पति। शौहर।

मालिका–संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। २. माला। ३. मालिन।

मालिकाना–संज्ञा पुं० [फा०] स्वामी का अधिकार। मिलकियत। स्वामित्व।

क्रि० वि० मालिक की तरह।

मालिकी–संज्ञा स्त्री० मालिक होने का भाव। मालिक का स्वत्व।

मालिनी–संज्ञा स्त्री० मालिन। एक वर्णिक छन्द।

मालिन्य–संज्ञा पुं० मलिनता। उदासीनता।

मालियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कीमत। मूल्य। २. संपत्ति। ३. कीमती चीज।

मालिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] मलने की क्रिया या भाव। शरीर में तेल या कोई लेप मल-मलकर लगाना। मर्दन।

माली–संज्ञा पुं० [स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी] बाग को सींचने और पौधों की देखभाल करनेवाला व्यक्ति।
वि० आर्थिक। धन-संबंधी।

मालीदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. मलीदा। चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत कोमल और गरम ऊनी कपड़ा।

मालूम–वि० [अ०] जाना हुआ। ज्ञात।

माल्य–संज्ञा पुं० १. माला। २. फूल।

माल्यवंत–संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्"।

माल्यवान्–संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २. एक राक्षस, जो सुकेश का पुत्र था।

मावत*†–संज्ञा पुं० दे० "महावत"।

मावली–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत की एक वीर पहाड़ी जाति का नाम।

मावस*–संज्ञा स्त्री० दे० "अमावस"।

मावा–संज्ञा पुं० १. खोआ। दूध का जला हुआ गाढ़ा सार। २. माँड़। सत्त। ३. प्रकृति।

माविजा–संज्ञा पुं० दे० "मुआवजा।"

माशकी–संज्ञा पुं० मशक में पानी भरकर उसे छिड़कने वाला। भिश्ती।

माशा–संज्ञा पुं० ८ रत्ती का एक बाट या मान।

माशा अल्लाह–वि० अरबी का एक पद, जिसका अर्थ है :—१. ईश्वर उसे बुरी नजर से बचाए। २. बहुत अच्छा। अगर ऐसा हो गया, तो बहुत ही अच्छा।

माशी–संज्ञा पुं० कालापन लिये हुए हरा रंग।
वि० कालापन लिये हरे रंग का।

माशूक–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० माशूका] प्रिय। प्यारा।

माष–संज्ञा पुं० १. उड़द। २. माशा। ३. शरीर के ऊपर का काले रंग का मसा।
*संज्ञा स्त्री० दे० "माख"।

माषपर्णी–संज्ञा स्त्री० जंगली उड़द।

मास–संज्ञा पुं० १. महीना। ३० दिन की अवधि।* २. मांस।

मासना*†–क्रि० अ० मिलना।
क्रि० स० मिलाना।

मासांत–संज्ञा पुं० १. महीने का अंत। अमावस्या। २. संक्रांति।

मासा–संज्ञा पुं० दे० "माशा"।

मासिक–वि० १. मास-संबंधी। महीने का। २. महीने में एक बार होनेवाला।

मासी–संज्ञा स्त्री० मौसी। माँ की बहिन।

मासूम–वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० मासूमियत] १. अबोध। बच्चे की तरह नासमझ। २. निर्दोष। निरपराध। बेकसूर।

माहँ*–अव्य० बीच में।

माह*†–संज्ञा पुं० १. मास। महीना। २. माघमास। ३. माष। उड़द।
अव्य० बीच में।

माहत*–संज्ञा स्त्री० महत्त्व।

माहताब–संज्ञा पुं० [फा०] चंद्रमा।

माहताबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "महताबी"। एक प्रकार का कपड़ा।

माहना*–क्रि० अ० मथकर निकालना। दे० "उमाहना"।

माहली–संज्ञा पुं० १. अंतःपुर में जानेवाला सेवक। महली खोज। २. सेवक। दास।

माहवार–क्रि० वि० [फा०] प्रतिमास।
वि० हर महीने का। मासिक।

माहवारी–वि० [फा०] हर महीने का।

माहाँ†–अव्य० दे० "महँ"।

माहात्म्य–संज्ञा पुं० महिमा। गौरव। बड़ाई। महत्त्व। विशेषतः धार्मिक।

माहि*–अव्य० भीतर। अंदर। अधिकरण कारक का चिह्न। 'में' या 'पर'।

माहिर–वि० [अ०] निपुण। कुशल। सिद्धहस्त। वह व्यक्ति, जो कोई काम करने में खूब मँजा हो या जिसे किसी विषय की अच्छी जानकारी हो। विशेषज्ञ।

माहिला*†–संज्ञा पुं० माँझी।

माहिष्मती–संज्ञा स्त्री० दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।

माहीं*–अव्य० दे० "माँहि"।

माही–संज्ञा स्त्री० [फा०] मछली।
माही मरातिब–संज्ञा पुं० [फा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले झंडे, जिन पर मछली आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।
माहुर–संज्ञा पुं० विष। जहर।
माहेन्द्र–वि० महेन्द्र (इन्द्र)-सम्बन्धी। महेन्द्र का।
माहेश्वर–वि० महेश्वर (शिव)-संबंधी। महेश्वर का।
संज्ञा पुं० १. एक यज्ञ का नाम। २. एक उपपुराण का नाम। ३. पाणिनि के वे चौदह सूत्र, जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। ४. शैव संप्रदाय का एक भेद। ५. एक प्राचीन अस्त्र।
माहेश्वरी–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा माता। तांत्रिकों की एक देवी। २. वैश्यों की एक उपजाति।
मिंड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. मींड़ने या मींजने का कार्य। २. मींड़ने की मजदूरी। ३. देशी छींट की छपाई, जिसमें छींट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है।
मिक़दार–संज्ञा स्त्री० [अ०] परिमाण। मात्रा।
मिचकना†–क्रि० अ० आँखों का बार-बार खुलना और बंद होना।
मिचकाना†–क्रि० स० बार-बार आँखें खोलना और बंद करना।
मिचकी–संज्ञा स्त्री० १. आँख मिचकाने की क्रिया या भाव। २. आँख का इशारा।
मिचना–क्रि० अ० आँखों का बंद होना।
मिचलाना–क्रि० अ० मिचली या मतली आना। कै करने को जी चाहना।
मिचली–संज्ञा स्त्री० कै करने की इच्छा। मतली।
मिचौनी–संज्ञा स्त्री० आँख बन्द करना और खोलना। दे० "आँखमिचौनी।"
मिछा*†–वि० दे० "मिथ्या"
मिजराब–संज्ञा स्त्री० [अ०] तार का एक प्रकार का छल्ला, जिससे सितार आदि बजाते हैं। डंका। नाखुना।
मिज़ाज–संज्ञा पुं० [अ०] १. स्वभाव। प्रकृति। २. शरीर या मन की दशा। तबीअत। दिल। ३. प्रवृत्ति। ४. किसी वस्तु का मूल गुण। तासीर। ५. अभिमान। घमंड। शेखी।
मुहा०—मिजाज खराब होना=अस्वस्थ होना। तबीअत खराब होना। मिजाज बिगाड़ना=किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। मिजाज पाना=किसी के स्वभाव से परिचित होना। किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिजाज पूछना=किसी के स्वास्थ्य या तबीअत के बारे में पूछना। मिजाज न मिलना=घमंड के कारण किसी से बात न करना।
मिज़ाजपुरसी–संज्ञा स्त्री० किसी का मिजाज या कुशल-समाचार पूछना।
मिज़ाज शरीफ़–[अ०] किसी से उसकी कुशलता का समाचार पूछने के लिए प्रयोग किया जानेवाला वाक्यांश, जिसका अर्थ है—आपकी तबीअत तो ठीक है। आप सकुशल तो हैं।
मिटना–क्रि० अ० १. न रह जाना। नष्ट हो जाना। बर्बाद होना। खराब होना। २. किसी अंकित चिह्न का न रहना।
मिटाना–क्रि० स० १. खराब करना। नष्ट करना। २. रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना।
मिट्टी–संज्ञा स्त्री० १. भूमि। जमीन। २. वह पदार्थ, जिससे पृथ्वी बनती है। ३. वह भुरभुरा पदार्थ, जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है। खाक। धूल। राख। भस्म। ४. शव। लाश। ५. शरीर। बदन।
मुहा०—मिट्टी करना=नष्ट करना। खराब करना। मिट्टी के मोल=बहुत सस्ता। मिट्टी डालना=१. किसी बात को जाने देना। २. किसी के दोष को छिपाना। मिट्टी देना=मुसलमानों में किसी के मरने पर सब लोगों का उसकी कब्र में तीन-तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। कब्र में गाड़ना। मिट्टी में मिलना=नष्ट होना। चौपट होना। मरना। मिट्टी पलीद या बरबाद करना=दुर्दशा करना। खराबी करना।
यौ०—मिट्टी का पुतला=मानव शरीर।

मिट्टी खराबी= १. दुर्दशा। २. बरबादी। नाश।

मिट्टी का तेल–संज्ञा पुं० किरासन तेल। एक प्रसिद्ध खनिज द्रव, जिससे लालटेन और गैस लैम्प आदि जलाते हैं।

मिट्ठी–संज्ञा स्त्री० चुंबन।

मिट्ठू–संज्ञा पुं० १. प्रिय या मीठा बोलनेवाला। मधुरभाषी। २. तोता।
वि० १. चुप रहनेवाला। न बोलनेवाला। २. प्रिय बोलनेवाला।

मिठ–वि० मीठा का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—मिठबोला।

मिठबोला–संज्ञा पुं० मधुर-भाषी। मन में कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करनेवाला।

मिठलोना–संज्ञा पुं० थोड़े नमकवाला।

मिठाई–संज्ञा स्त्री० १. मिठास। माधुरी। २. कोई मीठी खाने की चीज। अच्छा पदार्थ।

मिठाना=क्रि० अ० मीठा होना।

मिठास–संज्ञा स्त्री० मीठे होने का भाव। मीठापन। माधुर्य्य।

मितंग*–संज्ञा पुं० हाथी।

मित–वि० १. सीमा के अन्दर। सीमित। २. थोड़ा। कम।

मितभाषी–संज्ञा पुं० कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय–संज्ञा पुं० कम खर्च करना। किफायत।

मितव्ययिता–संज्ञा स्त्री० कम खर्च करने का भाव।

मितव्ययी–संज्ञा पुं० कम खर्च करनेवाला। किफायतशार।

मिताई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

मिताक्षरा–संज्ञा स्त्री० याज्ञवल्क्य-स्मृति की विज्ञानेश्वर-कृत टीका।

मितार्थ–संज्ञा पुं० थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करनेवाला।

मिति–संज्ञा स्त्री० १. मान। परिमाण। २. सीमा। हद।

मिती–संज्ञा स्त्री० तिथि। तारीख। चान्द्र-मास की तिथि, जो प्रत्येक पक्ष में १ से १५ तक होती हैं। (चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार महीने में दो बार १ से १४ तक की तिथियाँ गिनी जाती हैं।) शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि अर्थात् पूर्णिमा के लिए १५ का अंक लिखा जाता है और कृष्ण पक्ष की १५वीं तिथि अर्थात् अमावस्या के लिए ३० का।
मुहा०—मिती पूजना=हुंडी का नियत समय पूरा होना।

मितीकाटा–संज्ञा पुं० सूद जोड़ने का एक बहुत आसान महाजनी तरीका, जिसमें एक-एक दिन और एक-एक रकम का सूद जोड़ते हैं।

मित्र–संज्ञा पुं० १. अपना साथी, सहायक और शुभचिंतक। बंधु। सखा। दोस्त। २. सूर्य का एक नाम। बारह आदित्यों में से पहला। ३. पुराणानुसार मरुद्गण में से पहला। ४. आर्यों के एक प्राचीन देवता। ५. भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश।

मित्रता–संज्ञा स्त्री० १. मित्र होने का भाव। दोस्ती। २. मित्र का धर्म्म।

मित्रत्व–संज्ञा पुं० दे० "मित्रता"।

मित्राई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

मित्राक्षर–संज्ञा पुं० छंद के रूप में बना हुआ पद।

मित्रावरुण–संज्ञा पुं० मित्र और वरुण नामक देवता।

मिथिला–वर्त्तमान तिरहुत (बिहार के उत्तरी और पूर्वी भाग) का प्राचीन नाम।

मिथुन–संज्ञा पुं० १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २. संयोग। समागम। ३. मेष आदि राशियों में से तीसरी राशि।

मिथ्या–वि० असत्य। झूठ।

मिथ्याचार–संज्ञा पुं० चालबाजी या छल-कपट का व्यवहार। झूठा या दिखावटी बरताव।

मिथ्यात्व–संज्ञा पुं० १. मिथ्या होने का भाव। २. माया।

मिथ्यावादी–संज्ञा पुं० [स्त्री० मिथ्या-वादिनी] झूठा।

मिथ्याहार–संज्ञा पुं० अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।

मिदुराना*–क्रि० अ० मृदु या मधुर होना। कोमल होना।

मिनकना†–क्रि० अ० (अनु०) बहुत ही दबकर या धीरे से कुछ बोलना।

मिन्‌जानिब–क्रि० वि० [अ०] किसी की ओर से।

मिन्‌जालिक–संज्ञा पुं० [अ०] खर्च की मद। खर्च किया जानेवाला धन या उसका खाता।

मिन्‌जुमला–क्रि० वि० [अ०] इन सबमें से।

मिनट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक घंटे का साठवाँ भाग। साठ सेकंड का समय।

मिनती†–संज्ञा स्त्री० दे० "मिन्नत"। विनती।

मिनमिन–क्रि० वि० बहुत धीमे या अस्पष्ट स्वर में।

मिनमिनाना–क्रि० अ० धीमे स्वर में या नाक से बोलना।

मिनहा–वि० [अं०] किसी रकम में से काटा या घटाया हुआ। मुजरा किया हुआ।

मिनिस्टर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] राज्य के शासन में किसी विभाग का मंत्री।

यौ०—प्राइम मिनिस्टर=प्रधान मंत्री।

मिनिस्टरी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] राज्य के मंत्री का कार्य या पद।

मिन्नत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थना। विनती। निवेदन।

मिमियाना–क्रि० अ० [अनु०] बकरी या भेड़ का बोलना। में-में करना।

मियाँ–संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वामी। मालिक। २. पति। खसम। ३. महाशय। ४. मुसलमान।

मियाँमिट्ठू–संज्ञा पुं० १. मीठी बोली बोलनेवाला। मधुर-भाषी। २. तोता। ३. मूर्ख।

मुहा०—अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनना=अपने मुँह अपनी प्रशंसा या बड़ाई करना।

मियाना–वि० [फा०] मध्यम आकार का। संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।

मियानी–संज्ञा स्त्री० पाजामा के बीच का भाग।

मिरग*†–संज्ञा पुं० दे० "मृग।"

मिरगी–संज्ञा स्त्री० मानसिक रोग, जिसमें रोगी मूर्छित होकर गिर पड़ता है। अपस्मार रोग।

मिरचा–संज्ञा पुं० लाल मिर्च।

मिरजई–संज्ञा स्त्री० कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा।

मिरदंगी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मृदंग। २. मृदंग के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी। ३. मोमबत्ती जलाकर रखने के लिए शीशे का आधार।

मिरियास*–संज्ञा स्त्री० दे० "मीरास।"

मिरजा–संज्ञा पुं० १. [फा०] मुगलों की एक उपाधि। २. मीर या अमीर का लड़का। अमीरजादा। ३. राजकुमार। कुँवर।

मिर्च–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का मसाला। २. एक प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना, जिसका व्यवहार मसाले के रूप में होता है। गोल मिर्च। ३. मिरचा।

मिलक†–संज्ञा स्त्री० [अ० मिल्क] १. जमीन-जायदाद। जमींदारी। २. जागीर।

मिलकना*–क्रि० स० जलना।

मिलन–संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया या भाव। २.मिलाप। भेंट। ३. मिश्रण। मिलावट।

मिलनसार–वि० [संज्ञा मिलनसारी] सबसे मेल-जोल रखनेवाला। सद् व्यवहार रखनेवाला। सुशील।

मिलना–क्रि० स० १.दो पदार्थों का एक होना। सम्मिलित होना। २. मिश्रित होना। समूह या समुदाय के भीतर होना। सटना। जुड़ना। चिपकना। ३. बिलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। ४. आलिंगन करना। गले लगाना। ५. भेंट होना। मेल-मिलाप होना। ६. लाभ होना। प्राप्त होना।

यौ०—मिला-जुला=१. सम्मिलित। २. मिश्रित।

मिलनी–संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रस्म। इसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं।

मिलवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "मिलाई।"

मिलवाना–क्रि० स० मिलने का काम दूसरे से कराना।

मिलाई–संज्ञा स्त्री० १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। (जेल में

कैदियों से मुलाकात करने को मिलाई कहते हैं ।)

मिलान–संज्ञा पुं० तुलना। मुकाबला। ठीक होने की जाँच। मिलाने की क्रिया।

मिलाना–क्रि० स० १.मिश्रण करना। दो पदार्थों को एक करना। सम्मिलित करना। एक करना। २.सटाना। जोड़ना। चिपकाना। ३.तुलना करना। मुकाबला करना। ठीक होने की जाँच करना। ४. भेंटया परिचय कराना। ५.सुलह या संधि कराना। ६. अपना भेदिया या साथी बनाना। ७. साँटना। ८. बजाने से पहले बाजों का सुर ठीक करना।

मिलाप–संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया या भाव। मित्रता। २. भेंट। मुलाकात।

मिलावट–संज्ञा स्त्री० १. मिलाए जाने का भाव। २. बढ़िया चीज में घटिया चीज का मेल। खोट।

मिलिंद–संज्ञा पुं० भौंरा।

मिलिक*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मिल्कियत।"

मिलित–वि० मिला हुआ। युक्त।

मिलोना†–क्रि० स० १. दे० "मिलाना"। २. गाय दुहना।

मिलौनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मिलाई।"

मिल्कियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मालिक होने का अधिकार या भाव। २. वह धन-संपत्ति जिस पर मालिकों का-सा हक हो। ३. जमींदारी। जागीर। जायदाद। माफी।

मिल्लत–संज्ञा स्त्री० १. मेल-जोल। घनिष्ठता मिलाप। २. मिलनसारी। [अ०] ३. मजहब। ४. संप्रदाय। पंथ।

मिशन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. लक्ष्य। ध्येय। किसी विशेष कार्य का लक्ष्य पूरा करने का व्रत ठान लेना। २. किसी विशेष कार्य के लिए स्वयं बाहर जाना या भेजा जाना। ३.किसी विशेष कार्य के लिए भेजी जानेवाली दूत-मंडली। ४.ईसाई-धर्मप्रचारकों का धर्म-प्रचार के लिए कहीं जाना। ५. ईसाई-धर्म-प्रचारकों का निवास-स्थान।

मिशनरी–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ईसाई-धर्म-प्रचारक।

वि० मिशन-संबंधी। मिशन का।

मिश्र–वि० १.मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। संयुक्त। २. श्रेष्ठ। बड़ा। ३. वह संख्या, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की कई संख्याएँ हों (गणित)।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।

मिश्रण–संज्ञा पुं० [वि० मिश्रणीय] १. दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया। मेल। मिलावट। २. जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना (गणित)।

मिश्रित–वि० एक में मिलाया हुआ।

मिष–संज्ञा पुं० १. छल। कपट। २. बहाना। हीला। मिस। ३. ईर्ष्या। डाह।

मिष्ट–वि० मीठा। मधुर।

मिष्टभाषी–संज्ञा पुं० प्रिय या मीठा बोलने-वाला। मधुरभाषी।

मिष्टान्न–संज्ञा पुं० मिठाई।

मिस–संज्ञा पुं० १. बहाना। हीला। २. नकल। पाखंड।

मिसकीन–वि० [अ०] १. बेचारा। २. दीन। गरीब। निर्धन।

मिसकीनता*–संज्ञा स्त्री० गरीबी। दीनता।

मिसना*–क्रि० अ० १. मींजा या मला जाना। मीसा जाना। २. मिश्रित होना। मिलना।

मिसरा–संज्ञा पुं० [अ०] उर्दू या फारसी की कविता का एक चरण। पद।

मिसरी–संज्ञा स्त्री० दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।

मिसहा†–वि० १. बहानेबाज। २. ढोंगी। ३. चालबाज।

मिसाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नमूना। नजीर। उदाहरण। २. उपमा। ३. कहावत।

मिसिल–वि० दे० "मिस्ल"।

संज्ञा स्त्री० किसी एक मुकदमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागज-पत्र।

मिस्तर–संज्ञा पुं० १. काठ का एक औजार, जिससे राज लोग छत पीटते हैं। पिटना। २. दे० "मेहतर"। ३. डोरे में लपेटा हुआ दफ्ती का वह टुकड़ा, जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिए लिखे जानेवाले कागज के नीचे रख लिया जाता है।

मिस्तरी–संज्ञा पुं० बहुत अच्छा कारीगर।

मकान आदि बनाने या यंत्रों आदि की मरम्मत करनेवाला। कुशल कारीगर।
मिस्तरीखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ लोहार, बढ़ई आदि काम करते है।
मिस्र–संज्ञा पुं० एक देश, जो अफ्रिका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।
मिस्री–संज्ञा पुं० १. मिस्र देश का। मिस्र देश-सम्बन्धी। २. मिस्र देश का रहनेवाला।
मिस्ल–वि० [अ०] तुल्य। समान।
मिस्सा–संज्ञा पुं० कई तरह की दालों आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।
मिस्सी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मंजन, जिसे सधवा स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।
मिहचना*–क्रि० स० दे० "मींचना"।
मिहानी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।
मिहिर–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. बादल। ३. चंद्रमा। ४. आक का पौधा। ५. दे० "वराह-मिहिर"।
मिहीं–वि० दे० "महीन"।
मींगी–संज्ञा स्त्री० बीज के अंदर का गूदा। गिरी।
मींजना†–क्रि० स० १. हाथों से मलना। मसलना। २. मर्दन करना।
मींड़–संज्ञा स्त्री० संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश, जिससे दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाता है। गमक।
मींडक*–संज्ञा पुं० दे० "मेढक"।
मींड़ना†–क्रि० स० हाथ से मलना। मसलना।
मीआद–संज्ञा स्त्री० [अ०] अवधि।
मीआदी–वि० जिसकी अवधि निश्चित हो।
मीच–संज्ञा स्त्री० दे० "मृत्यु"। मौत।
मीचना–क्रि० स० (आँखें) बन्द करना। मूंदना।
मीचु*†–संज्ञा स्त्री० मृत्यु।
मीजान–संज्ञा स्त्री० [अ०] कुल संख्याओं का योग। जोड़ (गणित)।
मीटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] नापने का यंत्र। बिजली खर्च होने, नल का पानी खर्च होने या किसी चलनेवाली चीज की गति आदि नापने का यंत्र।
मीठा*–वि० [स्त्री० मीठी] १. चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर। २. स्वादिष्ठ। जायकेदार। ३. धीमा। सुस्त। हलका। मद्धिम। मंद। ४. बहुत अधिक सीधा। ५. प्रिय। रुचिकर।
संज्ञा पुं० १. मिठाई। २. गुड़।
मुहा०—मीठा होना=किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना।
मीठा तेल–संज्ञा पुं० तिल का तेल।
मीठा नीबू–संज्ञा पुं० बड़ा नींबू, जो खाने में मीठा होता है। जमीरी नींबू। चकोतरा।
मीठा पानी–संज्ञा पुं० लेमनेड। नींबू का सत मिला हुआ पानी।
मीठी छुरी–संज्ञा स्त्री० दिखाने के लिए मित्र बनकर भीतर ही भीतर घात करने-वाला। विश्वासघातक। कपटी।
मीत–संज्ञा पुं० दे० "मित्र"। दोस्त।
मीन–संज्ञा पुं० १. मछली। २. १२ राशियों में से अंतिम राशि।
मीनकेतन–संज्ञा पुं० कामदेव।
मीनमेख–संज्ञा पुं० १. मीन मेष (राशियाँ)। २. सोच-विचार। आगा-पीछा। दुबिधा। असमंजस। ३. दूसरे के कामों में दोष ढूंढ़ना। नुक्ताचीनी करना।
मीना–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। २. सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग-बिरंग का काम। ३. शराब रखने का पात्र।
मीनाकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सोने या चाँदी पर का रंगीन काम।
मीनाबाजार–संज्ञा पुं० [फा०] बहुत सुन्दर और सजा हुआ बढ़िया बाजार। (मुगल बादशाहों–अकबर और जहाँगीर के जमाने में ऐसे बाजार लगते थे, जिनमें महिलाओं को भाग लेना पड़ता था।)
मीनार–संज्ञा स्त्री० गोलाकार बनी हुई बहुत ऊँची इमारत। लाट। स्तम्भ।
मीमांसक–संज्ञा पुं० किसी विषय की मीमांसा या अच्छी तरह विवेचन करनेवाला। मीमांसा-शास्त्र का ज्ञाता।
मीमांसा–संज्ञा स्त्री० १. तर्क-द्वारा यह निश्चय

करना कि कोई बात वास्तव में कैसी है। तर्क-द्वारा किसी विषय का प्रतिपादन। पूर्ण रूप से या बहुत अच्छी तरह किसी विषय का विवेचन। २. हिंदुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन, जो पूर्व-मीमांसा और उत्तर-मीमांसा कहलाते हैं। ३. जैमिनि-कृत दर्शन, जिसे पूर्व-मीमांसा कहते हैं।

मीमांस्य—वि० मीमांसा करने के योग्य।

मीर—संज्ञा पुं० [फा०] १. सरदार। प्रधान। नेता। २. धार्म्मिक आचार्य। ३. सैयद जाति की उपाधि। ४. सबसे पहले कोई काम, विशेषतः प्रतियोगिता का काम, करनेवाला।

मीर फ़र्श—संज्ञा पुं० [फा०] वे बड़े बड़े पत्थर आदि, जो फर्शों आदि के कोनों पर उन्हें उड़ने से रोकने के लिए रखे जाते हैं।

मीर मजलिस—संज्ञा पुं० सभापति। अध्यक्ष। सभा, समारोह या जलसे का अध्यक्ष।

मीरास—संज्ञा स्त्री० [अ०] बपौती। तरका। उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।

मीरासी—संज्ञा पुं० [स्त्री० मीरासिन] एक प्रकार के मुसलमान, जो प्रायः गाना-बजाना या मसखरापन करते हैं।

मील—संज्ञा पुं० दूरी की एक नाप, जो १७६० गज की होती है (अंग्रे०—माइल)।

मीलन—संज्ञा पुं० [वि० मीलनीय, मीलित] १. बंद करना। २. संकुचित करना।

मीलित—वि० १. बंद किया हुआ। २. सिकोड़ा हुआ।

संज्ञा पुं० एक अलंकार, जिसमें यह कहा जाता है कि एक होने के कारण उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं जान पड़ता।

मुंगरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० मुंगरी] हथौड़े के आकार का काठ का एक औजार।

मुंगौरी—संज्ञा स्त्री० मूंग की बनी हुई बरी।

मुंचना*—क्रि० स० [संज्ञा मोचन] छुटकारा पाना। मुक्त होना।

मुंड—संज्ञा पुं० १. गरदन के ऊपर का अंग। सिर। २. कटा हुआ सिर। ३. एक उपनिषद्, 'मुंडक'। ४. शुंभ का सेनापति एक दैत्य, जिसे दुर्गाजी ने मारा था। ५. राहु ग्रह। ६. वृक्ष का ठूँठ।

वि० मुँड़ा हुआ। मुंडा।

मुंड़चिरा—संज्ञा पुं० १. ऐसा भिखारी, जो प्रायः अपने सिर, आँख या नाक आदि को नुकीले हथियार से घायल करके भिक्षा माँगता है। अघोरी। २. लेन-देन में बहुत हुज्जत और हठ करनेवाला।

मुंडन—संज्ञा पुं० १. सिर को मूँड़ने की क्रिया। २. एक संस्कार, जिसमें बालक का सिर मूँड़ा जाता है।

मुँड़ना—क्रि० अ० १. मूँड़ा जाना। एक दम सिर के बालों की सफाई होना। २. लुटना। ठगा जाना।

मुंडमाला—संज्ञा स्त्री० कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला।

मुंडमालिनी—संज्ञा स्त्री० काली देवी।

मुंडमाली—संज्ञा पुं० शिव।

मुंडा—संज्ञा पुं० [स्त्री० मुंडी] १. जिसके सिर के बाल मुँड़े हुए हों। २. किसी साधु या जोगी का शिष्य। ३. वह पशु, जिसके सींग होना चाहिए, पर न हों। जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर फैलनेवाले अंग न हों। ४. एक प्रकार की लिपि, जिसमें मात्राएँ आदि नहीं होतीं। ५. कोठीवाली। ६. एक प्रकार का जूता। ७. छोटा नागपुर में रहनेवाली एक असभ्य जाति।

मुंड़ाई—संज्ञा स्त्री० मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मजदूरी।

मुंड़ासा†—संज्ञा पुं० सिर पर बाँधने का साफा।

मुंडिया—संज्ञा पुं० संन्यासी। साधु या योगी आदि का शिष्य।

मुंडी—संज्ञा स्त्री० १. वह स्त्री, जिसका सिर मुँड़ा हो। २. विधवा। राँड़ (गाली)। ३. गोरखमुंडी।

मुंडेर—संज्ञा स्त्री० दे० "मुँडेरा"।

मुंडेरा—संज्ञा पुं० दीवार का ऊपरी भाग, जो सबसे ऊपर की छत पर होता है।

मुंतज़िम—वि० [अ०] इन्तजाम या प्रबन्ध करनेवाला। प्रबन्धकर्त्ता।

मुंतज़िर—वि० [अ०] इन्तजार या प्रतीक्षा करनेवाला।

मुंदना—क्रि० अ० १. बंद होना। खुली हुई

वस्तु का ढँक जाना। २. लुप्त होना। छिपना। ३. छेद, बिल आदि का बंद होना।

मुंदरा—संज्ञा पुं० १. कान का एक गहना। २. एक प्रकार का कुंडल, जो योगी लोग कान में पहनते हैं।

मुंदरी—संज्ञा स्त्री० अँगूठी। छल्ला।

मुंशियाना—वि० मुंशियों का-सा। मुंशियों के ढंग का।

मुंशी—संज्ञा पुं० [अ०] १. लिखने का पेशा करनेवाला। मुहर्रिर। वकीलों के क्लर्क। २. कायस्थों की एक उपाधि। ३. गुजरातियों की एक शाखा।

मुंसरिम—संज्ञा पुं० [अ०] इंतजाम करनेवाला। कचहरी का कर्म्मचारी, जो दफ्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुर्द मिसलें आदि ठिकाने से रखना रहता है।

मुंसिफ़—संज्ञा पुं० [अ०] न्याय या इंसाफ करनेवाला। दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।

मुंसिफ़ी—संज्ञा स्त्री० १. न्याय करने का काम। २. मुंसिफ का काम या पद। ३. मुंसिफ की कचहरी।

मुँह—संज्ञा पुं० १. प्राणी का वह अंग जिससे वह बोलता और भोजन करता है। मुख-विवर। २. मनुष्य का मुख। चेहरा। ३. किसी वस्तु के ऊपरी भाग का विवर। सूराख। छेद। छिद्र। ४. मुरव्वत। लिहाज। शील। संकोच। ५. साहस। शक्ति। ६. योग्यता। सामर्थ्य। ७. ऊपर की सतह या किनारा।

मुहा०—मुँह खराब करना=गंदी बातें कहना। मुँह खुलना=बढ़-बढ़कर बोलने की आदत पड़ना। धृष्टतापूर्वक बोलना। मुँह चलना=१.भोजन होना। खाया जाना। २. मुँह से व्यर्थ की बातें या दुर्वचन निकलना। मुँह चिढ़ाना=किसी की आकृति, हाव-भाव या कथन को बिगाड़कर उसकी नकल करना। मुँह छूना (संज्ञा मुँह छुवाई)=नाममात्र के लिए मन से नहीं, बल्कि ऊपर से, कहना। मुँह पर लाना=मुँह से कहना। वर्णन करना। मुँह-पेट चलना=कै-दस्त होना। हैजा होना। मुँह फाड़कर कहना=बेहया बनकर कहना। मुँह बाँधकर बैठना=बैठना। कुछ न बोलना। भरना=रिश्वत देना। घूस देना। मुँह करना=मिठाई खिलाना। कुछ देकर प्रसन्न करना। मुँह में खून या लहू लगना=चसका पड़ना। चाट पड़ना। मुँह में जबान होना=कहने की सामर्थ्य होना। मुँह में पानी भर आना=कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिए ललचना। मुँह में लगाम न होना=जो मुँह में आवे, सो कह देना। (अपना) मुँह सीना=बोलने से रुकना। मुँह से बात न निकालना। बिलकुल चुप रहना। मुँह सूखना=प्यास या रोग आदि के कारण गला खुश्क होना। मुँह से दूध टपकना=बहुत ही अनजान या बालक होना। (परिहास) मुँह से निकालना=कहना। उच्चारण करना। मुँह से फूल झड़ना=बहुत ही सुन्दर और प्रिय बातें कहना। अपना-सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित होना। (अपना) मुँह काला करना=१. व्यभिचार करना। २. अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) मुँह काला करना=उपेक्षा से हटाना। त्यागना। मुँह की खाना=बेइज्जत होना। अपमानित होना। दुर्दशा कराना। मुँह के बल गिरना=ठोकर खाना। धोखा खाना। मुँह छिपाना=लज्जा के मारे सामने न होना। (किसी का) मुँह ताकना=किसी के मुँह की ओर कुछ पाने आदि की आशा से देखना। विवश या चकित होकर देखना। मुँह ताकना=अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। मुँह दिखाना=सामने आना। मुँह देखकर बात कहना=खुशामद करना। (किसी का) मुँह देखना=सामना करना। चकित होकर देखना। मुँह धो रखना=किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। मुँह पर=सामने। प्रत्यक्ष। मुँह पर या मुँह से बरसना=आकृति से प्रकट होना। मुँह फुलाना या फुलाकर बैठना=आकृति या

चेहरे से असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट करना। मुँह में आग लगाना =१. मुँह झुलसना। (स्त्री० गाली) २. दाह-कर्म करना। (किसी के) मुँह लगना=किसी के सामने बढ़-बढ़कर बातें करना। उद्दंड बनना। जवाब-सवाल करना। मुँह लगाना=सिर चढ़ाना। उद्दंड बनाना। मुँह सूखना=उदास होना। भय या लज्जा आदि से चेहरे का तेज जाता रहना। मुँह देखे का=जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी या दिखौआ हो। मुँह मुलाहज़े का=जान,-पहचान का। परिचित। मुँह रखना=किसी का लिहाज रखना। मुँह पड़ना=साहस होना। मुँह तक आना या भरना=पूरी तरह से भर जाना। लबालब होना।

मुँहअखरी*†–वि० मौखिक। जबानी। शाब्दिक।

मुँहकाला–संज्ञा पुं० १. बेइज्जती। बदनामी। २. बलात्कार आदि के कारण होनेवाली बदनामी।

मुँहचंग–संज्ञा पुं० दे० "मुरचंग"।

मुँहचोर–वि० मुँह छिपानेवाला। सामने आने में हिचकनेवाला।

मुँहछुट–वि० दे० "मुँहफट।"

मुँहजोर–वि० १. बकवादी। २. दे० "मुँहफट"। ३. उद्दंड।

मुँहदिखाई–संज्ञा स्त्री० १. नई दुलहिन का मुँह देखने की रस्म। २. मुँह देखने पर बधू को दिया जानेवाला धन।

मुँहदेखा–वि० [स्त्री० मुँहदेखी] केवल दिखाने के लिए। केवल सामना होने पर होनेवाला (काम या व्यवहार)।

मुँहनाल–संज्ञा स्त्री० वह नली, जिसे हुक्के की सटक या नैचे आदि में लगा देते हैं और जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं।

मुँहफट–वि० खरी-खोटी या गन्दी बात कहने में संकोच न करनेवाला।

मुँहबोला–वि० जो वास्तविक न हो, केवल मुँह से कहकर बनाया गया हो।

मुँहभराई–संज्ञा स्त्री० १. मुँह भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

मुँहमाँगा–वि० जैसी माँग की जाय, वैसा ही। मनमुताबिक।

मुँहामुँह–क्रि० वि० मुँह तक। लबालब। भरपूर।

मुँहासा–संज्ञा पुं० मुँह पर के वे दाने या फुँसियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं।

मुअत्तल–वि० [अ०] [संज्ञा मुअत्तली] वह व्यक्ति, जिसे अपने पद या नौकरी से कुछ समय के लिए किसी आरोप की जाँच या निर्णय होने तक दंडस्वरूप अलग कर दिया गया हो। [अंग्रे०–ससपेंड]

मुआफ़िक़–वि० [अ०] [संज्ञा मुआफ़िक़त] अनुकूल। सदृश। समान। मन के अनुकूल या मुताबिक।

मुआयना–संज्ञा पुं० [अ०] जाँच। निरीक्षण।

मुआवज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बदला। २. किसी को उसकी कुछ हानि होने के बदले में दिया जानेवाला धन। राज्य-द्वारा सम्पत्ति आदि हस्तगत करने पर मिलनेवाला धन। ३. प्रतिकर (अंग्रे०–कम्पेन्सेशन)।

मुकटा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की रेशमी धोती।

मुकति*–संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।

मुक़दमा–संज्ञा पुं० [अ०] अदालत में किसी के विरुद्ध चलनेवाला मामला। अभियोग। दावा। नालिश।

मुक़दमेबाज़–संज्ञा पुं० [भाव० मुदकमेबाजी] बहुत अधिक मुकदमे लड़नेवाला। जो प्रायः मुकदमा लड़ा करता हो।

मुक़द्दर–संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य। किस्मत।

मुक़द्दस–संज्ञा पुं० [अ०] पवित्र।

मुकना*†–क्रि० अ० १. मुक्त होना। छूटना। २. चुकना। खत्म हो जाना।

मुकम्मल–वि० [अ०] १. पूरा। २. पूरा किया हुआ (काम)।

मुकरना–क्रि० अ० कोई बात कहकर उसे फिर बदल देना या इनकार करना। नटना। वादे के खिलाफ बात करना।

मुकरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुकरी"।

मुकरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कविता, जिसमें कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है। कह-मुकरी।

मुकर्रर–क्रि० वि० [अ०] दूसरी बार। फिर से।
वि० [संज्ञा मुकर्ररी] १. निश्चित। २. तैनात। नियुक्त।

मुक़ाबला–संज्ञा पुं० [अ०] १. सामना। मुठभेड़। २. बराबरी। तुलना। मिलान। ३. विरोध।

मुक़ाबिल–क्रि० वि० [अ०] सम्मुख। सामने। संज्ञा पुं० १. प्रतिद्वंद्वी। २. शत्रु। दुश्मन।

मुक़ाम–संज्ञा पुं० [अ०] १. ठहरने का स्थान। टिकान। पड़ाव। २. ठहरने की क्रिया। विराम। ३. रहने का स्थान। घर। ४. अवसर।

मुकियाना–क्रि० स० १. मुक्कियों से बार-बार आघात करना। २. घूँसे लगाना।

मुकुंद–संज्ञा पुं० विष्णु।

मुकुट–संज्ञा पुं० सिर पर टोपी की तरह पहनने का एक आभूषण, जिसे राजा आदि पहनते हैं। राजाओं के सिर पर पहनने का राजचिह्न। ताज।

मुकुर–संज्ञा पुं० आईना। शीशा। दर्पण।

मुकुल–संज्ञा पुं० १. कली। २. शरीर। ३. आत्मा। ४. एक प्रकार का छंद।

मुकुलित–वि० १. जिसमें कलियाँ लग गई हों। २. कुछ खिली हुई। अधखुली (कली)। ३. आधा खुला, आधा बंद (फूल, आँख आदि।)

मुक्का–संज्ञा पुं० [स्त्री० मुक्की] बँधी या तनी हुई मुट्ठी। घूँसा।

मुक्की–संज्ञा पुं० १. मुक्का। घूँसा। २. मुट्ठी बाँधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे-धीरे आघात मारना, जिससे शरीर की थकावट और पीड़ा दूर होती है।

मुक्केबाजी–संज्ञा स्त्री० घूँसेबाजी। मुक्कों की लड़ाई।

मुक्केश–संज्ञा पुं० [अ०] बादला, कलाबत्तू आदि का काम किया हुआ या जरी का बना हुआ एक तरह का कपड़ा।

मुक्त–वि० १. जिसे बंधन से छुटकारा मिल गया हो। बन्धनरहित। स्वतंत्र। आजाद। २. दोष से छुटकारा पाया हुआ। निर्दोष। मुक्ति या मोक्ष-प्राप्त। ३. चलाने के लिए फेंका हुआ। खुला हुआ।

मुक्तकंठ–वि० खुले कंठ से अर्थात् बिलकुल स्पष्ट रूप से। निःसंकोच। बेधड़क। खुले आम।

मुक्तक–संज्ञा पुं० १. वह कविता, जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग दूर तक न चले। कई विषयों की कविताओं का संग्रह। "प्रबन्ध काव्य" का उल्टा। २. एक प्राचीन अस्त्र जिसे फेंककर मारा जाता था।

मुक्त-व्यापार–संज्ञा पुं० खुला हुआ व्यापार जिसमें किसी के लिए कोई रुकावट न हो। दूसरे देशों से ऐसा व्यापार, जिसमें आयात-निर्यात की विशेष बाधाएँ न हों (अंग्रे०–फ्रीट्रेड)

मुक्तहस्त–वि० [संज्ञा मुक्तहस्तता] खुले हाथों दान करनेवाला। बहुत उदारता से दान देनेवाला।

मुक्ता–संज्ञा स्त्री० मोती।

मुक्तावली–संज्ञा स्त्री० मोतियों की माला या लड़ी।

मुक्ताफल–संज्ञा पुं० मोती।

मुक्ति–संज्ञा स्त्री० १. बन्धन से छुटकारा। मोक्ष। बार-बार संसार में जन्म लेने से छुटकारा पाकर आत्मा का ईश्वर मे मिल जाना या स्वर्ग में पहुँच जाना। २. अभियोग या दोष आदि से छुटकारा। निर्दोष। निरपराध।

मुख–संज्ञा पुं० १. मुँह। चेहरा। आनन। २. घर का द्वार। दरवाजा। ३. नाटक में एक प्रकार की संधि, जहाँ से अर्थों और रसों का सूत्रपात होता है। ४. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग। ५. आदि। आरंभ। किसी वस्तु से पहले पड़नेवाली वस्तु। वि० प्रधान। मुख्य।

मुखड़ा–संज्ञा पुं० मुख। चेहरा। आनन।

मुख़्तार–संज्ञा पुं० [अ०] १. अदालत में मुकदमे की पैरवी करनेवाला कानूनी

सलाहकार। २. वह व्यक्ति, जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने का अधिकार दिया हो।

मुख़तारनामा–संज्ञा पुं० वह अधिकार-पत्र, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने का अधिकारी होता है।

मुख़तारी–संज्ञा स्त्री० १. मुख़तार का पेशा या काम। २. प्रतिनिधित्व।

मुखपात्र–संज्ञा पुं० वह, जिसकी आड़ में रहकर कोई काम किया जाय।

मुखपृष्ठ–संज्ञा पुं० किसी पुस्तक, पत्र या पत्रिका में सबसे ऊपर का पन्ना। पहला आवरण-पृष्ठ ।

मुखबंध–संज्ञा पुं० ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका।

मुख़बिर–संज्ञा पुं० [अ०] जासूस। भेदिया।

मुख़बिरी–संज्ञा स्त्री० ख़बर देने का काम। मुख़बिर का काम। भेदियागिरी।

मुखर–वि० १. बहुत बोलनेवाला। २. अप्रिय बोलनेवाला। ३. कटुभाषी। ४. दे०

[illegible]–वि० बोलता हुआ। ध्वनित। शब्दों या ध्वनियों से युक्त।

मुखशुद्धि–संज्ञा स्त्री० मुंह साफ करना। भोजन के उपरान्त पान, सुपारी आदि खाकर मुंह शुद्ध करना।

मुखाग्र–वि० जो जबानी याद हो। कंठस्थ। बर-जबान।

मुखापेक्षा–संज्ञा स्त्री० दूसरों का मुँह ताकना। दूसरों के आश्रित रहना।

मुखापेक्षी–संज्ञा पुं० दूसरों का मुँह ताकने-वाला। आश्रित।

मुख़ालिफ़–वि० [अ०] [संज्ञा मुख़ालिफ़त] १. विरोधी। २. शत्रु। दुश्मन। ३. प्रतिद्वंद्वी।

मुखिया–संज्ञा पुं० नेता। प्रधान। अगुआ। किसी काम में सबसे आगे रहनेवाला। अगुआ।

मुख़तलिफ़–वि० [अ०] भिन्न। अलग। दूसरा। भिन्न-भिन्न। अलग-अलग।

मुख़तसर–वि० [अ०] जो थोड़े में हो। संक्षिप्त। छोटा। अल्प। थोड़ा।

मुख्य–वि० [संज्ञा मुख्यता] १. प्रधान। सबसे बड़ा या आगे रहनेवाला। २. सब से अधिक महत्त्वपूर्ण। खास। ३. अपने वर्ग या विभाग में सबसे बड़ा या प्रधान, जैसे, मुख्य मंत्री।

मुख्यतः–क्रि० वि० मुख्य रूप से। खास तौर पर। प्रधान रूप से।

मुगदर–संज्ञा पुं० एक प्रकार की भारी मुँगरी जो व्यायाम करने के काम आती है। जोड़ी।

मुग़ल–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुगलानी] मंगोल देश का निवासी। तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग, जो तातार देश का निवासी था।

मुग़लई–वि० मुगलों का-सा। मुगलों की तरह का।

मुग़लाई–वि० दे० "मुगलई"।

संज्ञा स्त्री० मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुग़लानी–संज्ञा स्त्री० १. मुगल की स्त्री या मुगल-वंश की स्त्री। २. कपड़े सीनेवाली मुसलमान स्त्री।

मुगवन–संज्ञा पुं० मोठ।

मुग़ालता–संज्ञा पुं० [अ०] भ्रम। धोखा।

मुग्घम–वि० बहुत खोलकर या स्पष्ट करके न कही जानेवाली बात।

मुग्ध–वि० [संज्ञा मुग्धता] १. आसक्त। मोहित। मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। २. मूढ़। ३. सुंदर। खूबसूरत। ४. प्रसन्न।

मुग्धकर–वि० [स्त्री० मुग्धकरी] १. मुग्ध या मोहित करनेवाला। मोहक। २. अत्यंत आकर्षक।

मुग्धा–संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो यौवन को तो प्राप्त हो चुकी हो, पर जिसमें काम-चेष्टा न हो।

मुचकुंद–संज्ञा पुं० १. एक बड़ा पेड़। २. पुराण में वर्णित एक राजा।

मुचलका–संज्ञा पुं० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र, जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो। (अंग्रे०-पर्सनल बांड) अदालत-द्वारा गिरफ्तार व्यक्तियों को उनके विरुद्ध अभियोग पर विचार होने के समय तक रिहा करने

के लिए ली जानेवाली जमानत के साथ मुचलका (प्रतिज्ञापत्र) भी लिया जाता है।

मुछंदर–संज्ञा पुं० १. जिसकी मूँछें वड़ी-बड़ी हों। २. कुरूप और मूर्ख।

मुजरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी रकम में से काटी जानेवाली रकम। २. किसी बड़े या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना। अभिवादन। ३. वेश्या का बैठकर गाना।

मुजरिम–संज्ञा पुं० [अ०] १. अपराधी। दोषी। २. अभियुक्त। जिस पर जुर्म या अपराध लगा हो। जिस पर अभियोग (फौजदारी का मुकदमा) चल रहा हो।

मुजस्सिम–वि० [अ०] पूरे जिस्म या शरीर-वाला। शरीरधारी। साकार।

मुजायका–संज्ञा पुं० [अ०] हानि। हर्ज।

मुजाविर–संज्ञा पुं० [अ०] किसी पीर की कब्र, रौजे आदि पर रहकर उन्हें पुजाने और चढ़ावा लेनेवाला।

मुझ–सर्व० "मैं" सर्वनाम का वह रूप, जो उसे कर्ता और संबंध कारक को छोड़कर शेष कारकों में, विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—मुझको, मुझसे।

मुझे–सर्व० "मैं" सर्वनाम का वह रूप जो उसे कर्म और संप्रदान कारक में प्राप्त होता है।

मुटकना†–वि० आकार में छोटा, पर सुन्दर।

मुटका–संज्ञा पुं० एक प्रकार की रेशमी धोती। मुकटा।

मुटाई–संज्ञा स्त्री० १. मोटापन। स्थूलता। २. पुष्टि। ३ अहंकार। घमंड। शेखी।

मुटाना–क्रि० अ० १. मोटा होना। २. घमंडी होना।

मुटासा–वि० जो धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो।

मुटिया–संज्ञा पुं० बोझ ढोनेवाला। मजदूर।

मुट्ठा–संज्ञा पुं० १. घास, फूस, तृण या डंठल का उतना पूला, जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके। २. चंगुल भर वस्तु। ३. पुलिंदा। ४. शस्त्र या यंत्र आदि की बेंट। दस्ता।

मुट्ठी–संज्ञा स्त्री० १. हाथ की वह मुद्रा, जो उँगलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने से बनती है। बँधी हुई हथेली। उतनी वस्तु, जितनी बँधी हुई हथेली में आ सके। २. बँधी हथेली के बराबर का विस्तार। ३. हाथों से किसी के अंगों को पकड़-पकड़कर दबाने की क्रिया, जिससे शरीर की थकावट दूर होती है। चंपी।

मुहा०—मुट्ठी में=कब्जे में। मुट्ठी गरम करना=रुपया देना। धन देना।

मुठभेड़–संज्ञा स्त्री० १. टक्कर। भिड़ंत। लड़ाई। २. भेंट। सामना।

मुठिका*–संज्ञा स्त्री० १. मुट्ठी। २. घूँसा। मुक्का।

मुठिया–संज्ञा स्त्री० औजारों का दस्ता। बेंट।

संज्ञा स्त्री० भिखमंगों को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया।

मुठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मुड़कना–क्रि० अ० दे० "मुरकना"।

मुड़ना–क्रि० अ० १. सीधी वस्तु का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना। २. किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना। झुकना। ३. दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना। पलटना। लौटना।

क्रि० अ० दे० "मुँड़ना"।

मुड़ला*†–वि० जिसके सिर पर बाल न हों। मुंडा।

मुड़वाना–क्रि० स० सिर के बाल एकदम साफ कराना। किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना।

मुड़वारी†–संज्ञा स्त्री० १. अटारी की दीवार का सिरा। मुँड़ेरा। २. सिरहाना।

मुड़हर†–संज्ञा पुं० स्त्री की साड़ी या चादर का वह भाग, जो ठीक सिर पर रहता है।

मुड़ाना–क्रि० स० दे० "मुँड़ाना"।

मुड़िया†–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति, जिसका सिर मुड़ा हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लिपि। महाजनी लिपि, जिसमें मात्राएँ और अक्षरों के ऊपर रेखाएँ नहीं होतीं।

मुतअल्लिक–वि० [अ०] १. संबंध रखने-वाला। संबद्ध। २. सम्मिलित।

क्रि० वि० संबंध में। विषय में।

मुतक्का–संज्ञा पुं० १. कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे खड़ी की पटिया या नीची दीवार। २. खंभा। मीनार। लाट।

मुतफ़न्नी–वि० [अ०] धूर्त। चालाक।

मुतफ़र्रिक़–वि० [अ०] [बहु० मुतफर्रकात] तरह-तरह के। विभिन्न प्रकार के।

मुतबन्ना–संज्ञा पुं० [अ०] दत्तक पुत्र।

मुतलक़–क्रि० वि० [अ०] जरा भी। तनिक भी।

वि० बिलकुल। निरा। निपट।

मुतवज्जह–वि० [अ०] तवज्जह या ध्यान देनेवाला।

मुतवफ़्फ़ी–वि० [अ०] स्वर्गीय। मृत।

मुतवल्ली–संज्ञा पुं० [अ०] धार्मिक संस्था की सम्पत्ति का रक्षक या प्रबन्धकर्त्ता।

मुतसद्दी–संज्ञा पुं० [अ०] १. लेखक। मुंशी। २. पेशकार। ३. दीवान। ४. इंतजाम करने वाला। प्रबंधकर्त्ता। ५. मुनीम।

मुतसिरी*†–संज्ञा स्त्री० कंठ में पहनने की मोतियों की कंठी।

मुताबिक़–क्रि० वि० [अ०] अनुसार।

वि० अनुकूल।

मुतालबा–संज्ञा पुं० १. उतना धन जितना पाना वाजिब हो। २. बाकी रुपया।

मुताह–संज्ञा पुं० मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुतिलाडू*†–संज्ञा पुं० मोतीचूर का लड्डू।

मुतहरा*†–संज्ञा पुं० कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

मुद–संज्ञा पुं० हर्ष। आनंद।

मुदगर–संज्ञा पुं० दे० "मुगदर"।

मुदर्रिस–संज्ञा पुं० [अ०] अध्यापक।

मुदा*†–अव्य० १. मगर। लेकिन। २. मतलब यह कि। तात्पर्य यह कि। ३. हर्ष। आनंद।

मुदाम–क्रि० वि० [फा०] १. सदा। हमेशा। २. निरंतर। लगातार। ३. ठीक ठीक। हू-ब-हू।

मुदामी–वि० [फा०] जो सदा होता रहे।

मुदित–वि० प्रसन्न। खुश।

मुदिता–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की परकीया नायिका। २. हर्ष।

मुदिर–संज्ञा पुं० १. बादल। मेघ। २. कामुक व्यक्ति। ३. मेढक।

मुद्ग–संज्ञा पुं० मूंग।

मुद्गर–संज्ञा पुं० दे० "मुगदर"। प्राचीन काल का एक अस्त्र (गदा)।

मुद्गल–संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।

मुद्दई–संज्ञा पुं० [अ०] १. बादी। नालिश या दावा करनेवाला। दावादार २. दुश्मन। वैरी। शत्रु।

मुद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मुद्दती] बहुत दिन। अवधि। अरसा।

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–संज्ञा पुं० जिस पर कोई दावा या नालिश की गई हो। प्रतिवादी।

मुद्धा–संज्ञा पुं० पिंडली के नीचे का गाँठवाला भाग। टखना।

मुद्धी–संज्ञा पुं० रस्सी आदि की ऐसी गाँठ, जिसके अन्दर से उसका कोई सिरा इधर-उधर खिसक सके।

मुद्रक–संज्ञा पुं० छापनेवाला। किसी छापेखाने का वह अधिकारी, जिस पर उस प्रेस में छपने वाले पत्र, पत्रिका आदि के छापने का उत्तर-दायित्व रहता है और उसका नाम वहाँ की छपी हुई हर पत्र-पत्रिका तथा पुस्तकों आदि पर छापना पड़ता है।

मुद्रण–संज्ञा पुं० छपाई। छापना। किसी चीज पर अक्षर आदि अंकित करना।

मुद्रणयंत्र–संज्ञा पुं० छापने का यंत्र या कल (अंग्रे०–प्रिंटिंग मशीन)।

मुद्रणालय–संज्ञा पुं० छापाखाना। वह स्थान, जहाँ मुद्रण यंत्र से चीजें छापी जायँ (अंग्रे०–प्रिंटिंग प्रेस)।

मुद्रांकित–वि० मोहर किया हुआ।

मुद्रा–संज्ञा स्त्री० १. मोहर। रुपया पैसा आदि। सिक्का। २. अँगूठी। ३. टाइप से छपे हुए अक्षर। ४. गोरखपंथी साधुओं के कान में पहनने की एक गोल कंकण की तरह वस्तु। ५. हाथ, पाँव, आँख, गर्दन आदि शरीर के अंगों की कोई स्थिति। बैठने, लेटने या खड़े होने का कोई ढंग। ६. मुख की आकृति

या चेष्टा। ७. विष्णु के आयुधों के चिह्न, जो प्राय: भक्त लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं। छाप। ८. हठयोग में विशेष अंगविन्यास। ये मुद्राएँ पाँच होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। ९. काव्य का एक अलंकार, जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय अर्थ हों।

मुद्रातत्त्व–संज्ञा पुं० दे० "मुद्राशास्त्र"।

मुद्रा-बाहुल्य–संज्ञा पुं० दे० "मुद्रास्फीति"।

मुद्रायंत्र–संज्ञा पुं० छापने का यंत्र या कल।

मुद्राविज्ञान–संज्ञा पुं० दे० "मुद्राशास्त्र"।

मुद्राविस्फीति–संज्ञा स्त्री० कृत्रिम रूप से मुद्रा के बहुत अधिक प्रचलन या स्फीति को कम करना या उसे साधारण स्थिति में लाना। 'मुद्रास्फीति' का उल्टा (अंग्रे०-डिफ्लेशन)।

मुद्राशास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं और उनका विवेचन होता है।

मुद्रास्फीति–संज्ञा स्त्री० किसी देश में कागजी मुद्रा या नोटों आदि का बहुत अधिक प्रचलन या अन्य कृत्रिम कारणों से मुद्रा के बहुत बढ़ जाने की स्थिति, जिससे मुद्रा का मूल्य बहुत घट और चीजों के दाम बहुत बढ़ जाते हैं। (अंग्रे०-इन्फ्लेशन,)

मुद्रिक–संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका"।

मुद्रिका–संज्ञा स्त्री० १. अँगूठी। २. कुश की बनी हुई अँगूठी, जो पितृ-कार्य्य में अनामिका में पहनी जाती है। पवित्री। पैंती। ३. मुद्रा। सिक्का। रुपया।

मुद्रित–वि० १. मुद्रण या अंकित किया हुआ। छपा हुआ। २. मुंदा हुआ। बंद।

मुधा–क्रि० वि० व्यर्थ। वृथा।
वि० १. व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। २. मिथ्या। झूठ।
संज्ञा पुं० असत्य। मिथ्या।

मुनक्का–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

मुनहसर–वि० [अ०] निर्भर। आश्रित।

मुनादी–संज्ञा स्त्री० [अ०] डुग्गी या ढोल आदि पीटकर की हुई घोषणा। ढिंढोरा।

मुनाफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। नफा।

मुनारा†–संज्ञा पुं० दे० "मीनार"।

मुनासिब–वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० मुनासिबत] उचित। वाजिब।

मुनि–संज्ञा पुं० १. ईश्वर, धर्म, सच, झूठ का सूक्ष्म विचार करनेवाला महात्मा। २. त्यागी। ऋषि। तपस्वी। ३. सात की संख्या।

मुनियाँ–संज्ञा स्त्री० दे० "मुन्नी"। छोटी बच्ची।

मुनीब, मुनीम–संज्ञा पुं० १. मददगार। सहायक। २. महाजनों का हिसाब-किताब लिखनेवाला।

मुनीश, मुनीश्वर–संज्ञा पुं० १. मुनियों में श्रेष्ठ। २. बुद्धदेव। ३. विष्णु।

मुन्ना–संज्ञा पुं० छोटों के लिए प्रेम-सूचक शब्द। प्रिय। प्यारा।

मुफ़लिस–वि० [अ०] गरीब। निर्धन।

मुफ़लिसी–संज्ञा स्त्री० [अ०] गरीबी। निर्धनता।

मुफ़स्सल–वि० [अ०] ब्योरेवार। विस्तृत।
संज्ञा पुं० बड़े नगर या शहर के आसपास के स्थान। देहात।

मुफ़ीद–वि० [अ०] फायदेमंद। लाभप्रद।

मुफ़्त–वि० [अ०] १. बिना दाम का। सेंत का। जिसमें कुछ मूल्य न लगे। २. व्यर्थ।
मुहा०–मुफ्त में=बिना मूल्य दिये या लिये।

मुफ़्तखोर–वि० [संज्ञा स्त्री० मुफ्तखोरी] बिना मेहनत किए मुफ्त का माल खानेवाला।

मुफ़्ती–वि० [अ०] मुफ्त का।
संज्ञा पुं० १. मुसलमानों का धर्म-शास्त्री। फतवा देनेवाला। २. सैनिकों के सादे और साधारण कपड़े, जो उनकी वर्दी के अतिरिक्त होते हैं।

मुबलिग़–संज्ञा पुं० [अ०] १. धन की संख्या। २. रकम।

मुबारक–वि० [अ०] बरकत या समृद्धि करनेवाला। शुभ। मंगलप्रद।

मुबारकबाद–संज्ञा पुं० बधाई। कोई मंगल

अथवा उन्नति-सूचक घटना होने पर यह कहना कि "मुबारक हो"।

मुबारकी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुबारकबाद"।

मुबालिग़ा–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात।

मुब्तिला–वि० [अ०] व्यस्त। मशगूल। संकट आदि में फँसा हुआ।

मुमकिन–वि० [अ०] संभव। शायद। जो हो सके।

मुमानिअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मनाही। निषेध।

मुमुक्षु–वि० मुक्ति पाने का इच्छुक। मुक्ति की कामना करनेवाला।

मुमूर्षा–संज्ञा स्त्री० मरने की इच्छा।

मुमूर्षु–वि० जो मरने के समीप हो।

मुरंडा–संज्ञा पुं० भूने हुए गरमागरम गेहूँ का गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू। गुड़धानी।
वि० सूखा हुआ। शुष्क।

मुर–संज्ञा पुं० १. वेष्टन। बेठन। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।
अव्य० फिर। दोबारा।

मुरक–संज्ञा स्त्री० मुरकने की क्रिया का भाव।

मुरकना–क्रि० अ० १. मोच खाना। किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि जल्दी सीधा न हो। २. लचकना। लचककर किसी ओर झुकना। ३. मुड़ना। फिरना। घूमना। लौटना। वापस होना। ४. हिचकना। रुकना। ५. चौपट होना। नष्ट होना।

मुरकाना–क्रि० स० १. लचकाना। टेढ़ा करना। २. फेरना। घुमाना। लौटाना। वापस करना। ३. किसी अंग में मोच लाना। ४. नष्ट करना। चौपट करना।

मुरकी–संज्ञा स्त्री० १. संगीत में किसी स्वर को कोमलता और सुन्दरता के साथ दूसरे स्वर पर ले जाने की क्रिया। २. कान में पहनने की एक प्रकार की बाली।

मुरग़ा–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुरगी] दे० "मुर्ग़, मुर्ग़ा"।

मुरग़ाबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मुर्गे की जाति का एक जल-पक्षी।

मुरचंग–संज्ञा पुं० मुँह से बजाने का एक प्रकार का बाजा। मुँहचंग।

मुरछना, मुरछाना*–क्रि० अ० १. मूर्च्छित होना। २. शिथिल होना। ३. अचेत होना।

मुरज–संज्ञा पुं० १. मृदंग। २. पखावज।

मुरझाना–क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"। शिथिल या उदास होना।

मुरदार–वि० [फा०] १. मरा हुआ। मृत। २. बेदम। बेजान। ३. अपवित्र। अशुद्ध।

मुरदासंख–संज्ञा पुं० [फा०] मुरदार संग। एक प्रकार का औषध जो फूँके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।

मुरना*–क्रि० अ० दे० "मुड़ना"।

मुर-परेना‡–संज्ञा पुं० फेरी करके सौदा बेचनेवालों की गठरी।

मुरब्बा–संज्ञा पुं० [अ०] चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रखा हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।

मुरमुराना–क्रि० अ० चूर-चूर हो जाना। चुरमुर होना।

मुररिपु–संज्ञा पुं० दे० "मुरारि"।

मुररिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्री"।

मुरलिका–संज्ञा स्त्री० मुरली। वंशी।

मुरलिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।

मुरली–संज्ञा स्त्री० बाँसुरी। वंशी।

मुरलीधर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

मुरलीमनोहर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

मुरवा–संज्ञा पुं० एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा।
†संज्ञा पुं० दे० "मोर"।

मुरवी*–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी। चिल्ला।

मुरव्वत–संज्ञा स्त्री० [अ०] शील। संकोच। लेहाज। भलमनसाहत।

मुरहा–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
†वि० [स्त्री० मुरही] १. मूल नक्षत्र में उत्पन्न (बालक)। अनाथ। यतीम। २. नटखट। उपद्रवी।

मुरहारी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

मुरा–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य।

एकांगी। मुरामांसी। २. 'कथासरित्सागर' के अनुसार उस नाइन का नाम, जिसके गर्भ से महानंद का पुत्र चंद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था।

मुराड़ा–संज्ञा पुं० जलती लकड़ी।

मुराद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनोरथ। अभिलाषा। इच्छा। २. अभिप्राय। मतलब।

मुहा०—मुराद पाना=मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना=मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।

मुराना*†–क्रि० स० मुँह में कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना। *†क्रि० स० दे० "मोड़ना"।

मुरार–संज्ञा पुं० कमल की जड़। कमलनाल। दे० "मुरारि"।

मुरारि–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। मुर नामक दैत्य को मारनेवाले।

मुरासा†–संज्ञा पुं० कान का एक गहना। कर्णफूल।

मुरीद–संज्ञा पुं० [अ०] १. शिष्य। चेला। २. अनुगामी। अनुयायी।

मुरुआ†–संज्ञा पुं० एँड़ी के ऊपर का घेरा। पैर का गट्ठा।

मुरुछना*–क्रि० अ० दे० "मुरझाना"। संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छना"।

मुरुझना*†–क्रि० अ० दे० "मुरझाना"।

मुरेठा–संज्ञा पुं० पगड़ी। साफा।

मुरेरना†–क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

मुर्ग, मुर्गा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मुर्गी] एक प्रसिद्ध पक्षी, जिसके सर पर कलँगी होती है और जो बहुत सवेरे बोलता है।

मुर्दनी–संज्ञा स्त्री० १. निर्जीव की-सी अवस्था। बहुत अधिक उदासी। बिना जान या हिम्मत के। मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न। २. शव के साथ उसकी अंत्येष्टि-क्रिया के लिए जाना।

मुर्दा–संज्ञा पुं० मरा हुआ शरीर। शव। लाश। मुरदा।

वि० १. मरा हुआ। मृत। निर्जीव। बिना दम का। २. मुरझाया हुआ।

मुर्रा–संज्ञा पुं० १. मरोड़फली। २. पेट में ऐंठन होकर बार-बार दस्त होना। मरोड़।

मुर्री–संज्ञा स्त्री० १. दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया, जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं। २. कपड़े आदि में लपेटकर डाली हुई ऐंठन या बल। ३. कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती।

मुर्रीदार–वि० जिसमें मुर्री पड़ी हो। ऐंठनदार।

मुर्शिद–संज्ञा पुं० [अ०] १. मार्गदर्शक। २. गुरु। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। ४. चतुर।

मुलकना*†–क्रि० अ० १. पुलकित होना। मुस्कराना। २. आँख से हँसी प्रकट करना। मचकना।

मुलकाना–क्रि० स० मुलकना का सकर्मक रूप।

मुलकित–वि० पुलकित। प्रसन्न। खुश।

मुलकी–वि० [अ०] १. शासन या व्यवस्था-संबंधी। २. देशी। विलायती का उलटा।

मुल्जिम–वि० [अ०] अभियुक्त। जिस पर कोई अभियोग हो। दोषी।

मुलतानी–वि० मुलतान का। मुलतान-संबंधी। संज्ञा स्त्री० १. एक रागिनी। २. एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।

मुलतवी–वि० [अ०] जिसका समय टाल दिया गया हो। स्थगित।

मुलमची–संज्ञा पुं० गिलट करनेवाला। मुलम्मासाज।

मुलम्मा–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह। गिलट। कलई। २. ऊपरी तड़क-भड़क।

यौ०—मुलम्मासाज=मुलम्मा चढ़ानेवाला। मुलमची।

मुलहा†–वि० १. जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो। २. उपद्रवी। शरारती।

मुलाँ†–संज्ञा पुं० [अ० मुल्ला] मौलवी।

मुलाक़ात–संज्ञा स्त्री० [अ०] आपस में मिलना। भेंट। मिलन। मेल-मिलाप।

मुलाक़ाती–संज्ञा पुं० [अ०] परिचित। वह, जिससे जान-पहचान हो।
मुलाज़िम–संज्ञा पुं० [अ०] नौकर। सेवक।
मुलाज़िमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] नौकरी। सेवा।
मुलायम–वि० [अ०] १. कोमल। नर्म। 'सख्त' का उलटा। जो कड़ा न हो। २. हलका। मंद। धीमा। ३. नाजुक। सुकुमार। जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिंचाव न हो।
यौ०—मुलायम चारा=१. जो सहज में दूसरों की बातों में आ जाय। २. जो सहज में प्राप्त किया जा सके।
मुलायमियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुलायम होने का भाव। कोमलता। २. नजाकत।
मुलायमी–संज्ञा स्त्री० दे० "मुलायमियत"।
मुलाहज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. निरीक्षण। देखभाल। २. संकोच। ३. रिआयत।
मुलेठी–संज्ञा स्त्री० घुँघची नाम की लता की जड़, जो औषध के काम में आती है। जेठी मधु। मुलट्ठी।
मुल्क–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुल्की] १. देश। २. प्रांत। प्रदेश। ३. संसार।
मुल्की–वि० [अ०] मुल्क या देश-सम्बन्धी। देश का।
मुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "मौलवी"।
मुवक्किल–संज्ञा पुं० [अ०] अपने किसी काम के लिए वकील नियुक्त करनेवाला।
मुवना*†–क्रि० अ० (भोजपुरी–मुअना)। मरना। मर जाना।
मुवाना*‡–क्रि० स० [मुवना का स० रूप] मार डालना। हत्या करना।
मुशायरा–संज्ञा पुं० [अ० मशायरः] वह सभा या समाज, जिसमें बहुत से लोग मिलकर उर्दू की कविताएँ पढ़ते हैं। उर्दू कवि-सम्मेलन।
मुशाहरा–संज्ञा पुं० [फा०] तनख्वाह। वेतन।
मुश्क–संज्ञा पुं० [फा०] १. कस्तूरी। मृग-मद। २. गंध। बू।
संज्ञा स्त्री० कंधे और कोहनी के बीच का भाग। भुजा। बाँह।
मुहा०—मुश्कें कसना या बाँधना=(अपराधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना।
मुश्कदाना–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की लता का बीज, जिसमें से कस्तूरी की-सी सुगंध निकलती है।
मुश्कनाफा–संज्ञा पुं० [फा०] कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है।
मुश्किल–वि० [अ०] कठिन।
संज्ञा स्त्री० कठिनाई। दिक्कत। मुसीबत। संकट।
मुश्की–वि० [फा०] १. कस्तूरी के रंग का। काला। श्याम। २. जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो।
संज्ञा पुं० काले रंग का घोड़ा।
मुश्त–संज्ञा पुं० [फा०] मुट्ठी।
यौ०—एकमुश्त=एक साथ। एक ही बार (रुपयों के लेन-देन में)।
मुश्तरका–वि० [अ०] संयुक्त। साझे का। जिसमें कई व्यक्ति शरीक या सम्मिलित हों।
मुश्ताक़–वि० [अ०] इच्छुक। इश्तियाक या इच्छा रखनेवाला।
मुष्टि–संज्ञा स्त्री० १. मुट्ठी। २. मुक्का। घूँसा।
मुष्टिक–संज्ञा पुं० १. मुक्का। घूँसा। २. चार अंगुल की नाप। मुट्ठी। ३. राजा कंस के पहलवानों में से एक, जिसे बलदेवजी ने मारा था।
मुष्टिका–संज्ञा स्त्री० १. मुक्का। घूँसा। २. मुट्ठी।
मुष्टियुद्ध–संज्ञा पुं० वह लड़ाई, जिसमें मुक्कों से प्रहार हो। घूँसेबाजी।
मुष्टियोग–संज्ञा पुं० १. हठ-योग की कुछ क्रियाएँ, जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं। २. छोटा और सहज उपाय।
मुसकान*–संज्ञा स्त्री० दे० "मुस्कान"। मुस्कराहट।
मुसकाना–क्रि० अ० दे० "मुस्कराना"।
मुसजर–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।

मुसना–क्रि० अ० मूसना का अकर्मक रूप। मूसा जाना। चुराया जाना (धन आदि)।
मुसन्ना–संज्ञा पुं० [अ०] १. असल कागज की दूसरी नकल। २. रसीद आदि का वह दूसरा भाग, जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है। दे० "प्रतिपर्ण"।
मुसब्बर–संज्ञा पुं० [अ०] जमाया हुआ घीकुँवार का रस, जिसका व्यवहार औषध के रूप में होता है।
मुसम्मात–वि० [अ०] १. औरत। २. मुसम्मा शब्द का स्त्रीलिंग रूप। ३. नामवाली। नामधारिणी। स्त्रियों के नाम के आगे इसे जोड़ देते हैं।
मुसम्मी–वि० [अ०] नामवाला। नामक। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया मीठा नीबू, जिसका रस बीमारी में रोगी को पिलाते हैं।
मुसरा†–संज्ञा पुं० दे० "मूसला"। पेड़ की जड़, जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर-उधर शाखाएँ न हों।
मुसलमान–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुसलमानिन] मुहम्मद साहब के चलाए हुए धर्म को माननेवाला। मुहम्मदी।
मुसलमानी–वि० [फा०] मुसलमान-संबंधी। मुसलमान का।
संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रसम, जिसमें छोटे बालक की पुरुषेन्द्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत। खतना।
मुसल्लम–वि० [फा०] जिसके खंड न किए गए हों। पूरा। अखंड।
मुसल्ला–संज्ञा पुं० [अ०] १. नमाज पढ़ने की दरी या चटाई। २. दे० "मुसलमान"।
मुसहर–संज्ञा पुं० जंगली जड़ी-बूटी तथा साँपों को मारकर बेचनेवाली एक जाति। ये लोग पत्तलों और ईंधन का व्यवसाय करते तथा जंगली मूस आदि को खाते हैं।
मुसाफ़िर–संज्ञा पुं० [अ०] यात्री। पथिक।
मुसाफिरखाना–संज्ञा पुं० [अ०] १. यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के ठहरने का स्थान। २. धर्मशाला। सराय।
मुसाफ़िरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुसाफिर होने की दशा। २. यात्रा। प्रवास।
मुसाहब–संज्ञा पुं० [अ०] धनवान् या राजा आदि के पीछे-पीछे साथ रहनेवाला।
मुसाहबी–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसाहब का पद या काम।
मुसीबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तकलीफ। कष्ट। २. विपत्ति। संकट।
मुस्कराना–क्रि० अ० बहुत धीमे या धीरे से हँसना।
मुस्कराहट–संज्ञा स्त्री० मुस्कराने की क्रिया या भाव। बहुत धीमी हँसी। मंद हास।
मुस्काना–क्रि० अ० दे० "मुस्कराना।"
मुस्की–संज्ञा स्त्री० दे० "मुस्कराहट"।
मुस्क्यान*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुस्कराहट"।
मुस्टंडा–वि० १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २. बदमाश। गुंडा।
मुस्तक़िल–वि० [अ०] १. स्थायी। स्थिर। २. पक्का। मजबूत। दृढ़।
मुस्तग़ीस–संज्ञा पुं० [अ०] अभियोग उपस्थित करनेवाला। दावेदार। मुद्दई। फौजदारी मुकदमे में शिकायत या आरोप लगानेवाला।
मुस्तैद–वि० [अ०] १. तत्पर। सन्नद्ध। पूरी मेहनत से काम करनेवाला। २. चालाक। तेज।
मुस्तैदी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तत्परता। सन्नद्धता। २. फुर्ती।
मुस्लिम–संज्ञा पुं० मुसलमान।
मुहकम–वि० [अ०] दृढ़। पक्का।
मुहकमा–संज्ञा पुं० [अ०] विभाग। सरिश्ता।
मुहब्बत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रेम। प्रीति। प्यार। चाह। २. दोस्ती। मित्रता। ३. इश्क। लगन। लौ।
मुहम्मद–संज्ञा पुं० [अ०] इस्लाम या मुसलमानी धर्म्म के प्रवर्त्तक।
मुहम्मदी–संज्ञा पुं० मुसलमान।
मुहर–संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।
मुहरा–संज्ञा पुं० १. सामने का भाग। आगा। सामना। २. निशाना। ३. मुँह की आकृति। ४. शतरंज की कोई गोटी। ५. घोड़े का एक साज, जो उसके मुँह पर रहता है।
मुहा०–मुहरा लेना=मुकाबला करना।

मुहर्रम–संज्ञा पुं० [अ०] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। इसमें मुसलमान लोग शोक मनाते हुए जुलूस आदि निकालते हैं।

मुहर्रमी–वि० [अ०] १. मुहर्रम-संबंधी। मुहर्रम का। २. शोक-व्यंजक। ३. मनहूस।

मुहर्रिर–संज्ञा पुं० [अ०] लेखक। मुंशी। अदालत में वकील के साथ लिखापढ़ी का काम करनेवाला।

मुहर्रिरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुहर्रिर का काम। लिखने का काम।

मुहल्ला–संज्ञा पुं० शहर का कोई विभाग, जिसमें मकान और आबादी हो।

मुहसिल–वि० [अ०] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

संज्ञा पुं० १. प्यादा। २. फेरीदार।

मुहाफ़िज–वि० [अ०] हिफाजत या रक्षा करनेवाला। रक्षक। रखवाला।

मुहाल–वि० [अ०] १. असंभव। नामुमकिन। २. कठिन। दुष्कर। दुःसाध्य।

संज्ञा पुं० १. दे० "महाल"। २. दे० "महल्ला"।

मुहाला–संज्ञा पुं० पीतल की चूड़ी, जो हाथी के दाँत में शोभा के लिए चढ़ाई जाती है।

मुहावरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. लक्षणा या व्यंजना-द्वारा सिद्ध वाक्य, जो किसी भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो। रोजमर्रा। बोलचाल। २. आदत। अभ्यास।

मुहासिब–संज्ञा पुं० [अ०] १. जाँचने या हिसाब लेनेवाला। २. गणितज्ञ।

मुहासिबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब। लेखा। २. पूछ-ताछ।

मुहासिरा–संज्ञा पुं० [अ०] किले या शत्रु-सेना को चारों ओर से घेरना। घेरा।

मुहासिल–संज्ञा पुं० [अ०] १. आय। आमदनी। २. लाभ। मुनाफा। नफा।

मुहिं*–सर्व० दे० "मोहिं"।

मुहिम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन या बड़ा काम। २. लड़ाई। युद्ध। ३. फौज की चढ़ाई। आक्रमण।

मुहुः–अव्य० बार-बार।

मुहूर्त्त–संज्ञा पुं० १. दिन-रात का तीसवाँ भाग। २. निश्चित समय। ३. फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय, जिस पर कोई शुभ काम किया जाय।

मुह्य–वि० १. मोह में पड़ा हुआ। मोहित। २. मूर्च्छित। बेसुध। बेहोश।

मुह्यता–संज्ञा स्त्री० मोह में पड़े रहने का भाव। मूर्च्छित होने की अवस्था, प्रवृत्ति या भाव। बेहोशी। जड़ता।

मुह्यमान–वि० १. मूर्च्छित। बेसुध। बेहोश। २. बहुत अधिक मोहित। दे० "मुह्य"।

मूँग–संज्ञा स्त्री०, पुं० एक अन्न, जिसकी दाल बनती है।

मूँगफली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा और उसका फल, जो बादाम की तरह होता है। चिनिया बादाम।

मूँगा–संज्ञा पुं० समुद्र में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का रत्न। प्रवाल। विद्रुम।

मूँगिया–वि० मूँग के रंग का। हरा।

संज्ञा पुं० हरा रंग।

मूँछ–संज्ञा स्त्री० ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल, जो केवल पुरुषों के होते हैं।

मुहा०—मूँछ उखाड़ना=घमंड चूर करना। मूँछों पर ताव देना=अभिमान से मूँछ मरोड़ना। मूँछें नीची होना=घमंड टूट जाना। अप्रतिष्ठा होना। बेइज्जती होना।

मूँछी–संज्ञा स्त्री० बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का तृण, जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली, लंबी पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं।

मूँड़†–संज्ञा पुं० दे० "मुंड"। सिर।

मुहा०—मूँड़ मारना=बहुत हैरान होना। कोशिश करना। मूँड़ मुँड़ाना=संन्यासी होना।

मूँड़न–संज्ञा पुं० चूड़ाकरण-संस्कार। मुंडन।

मूँड़ना–क्रि० स० १. सिर के बाल बनाना। हजामत करना। २. धोखा देकर माल उड़ाना। ठगना। ३. चेला बनाना।

मूंड़ी–संज्ञा स्त्री० १. सिर। २. किसी वस्तु का मूँड़ के आकार का भाग।

मूंदना–क्रि० स० ढाँकना। बन्द करना। द्वार, मुँह आदि पर कोईवस्तु रखकर उसे बन्द करना।

मूक–वि० १. गूँगा। २. अवाक्। ३. विवश। लाचार।

मूकता–संज्ञा स्त्री० गूँगापन।

मूकना*†–क्रि० स० १. दूर करना। छोड़ना। त्यागना। २. बंधन से छुड़ाना।

मूका†–संज्ञा पुं० छोटा गोल झरोखा। मोखा। संज्ञा पुं० दे० "मुक्का"।

मूखना*–क्रि० स० दे० "मूसना"।

मूचना*–क्रि० स० दे० "मोचना"।

मूज़ी–संज्ञा पुं० [अ०] कष्ट पहुँचानेवाला। दुष्ट। खल।

मूठ–संज्ञा स्त्री० १. मुष्टि। मुट्ठी। २. किसी औजार या हथियार का वह भाग, जो हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। ३. उतनी वस्तु, जितनी मुट्ठी में आ सके। ४. एक प्रकार का जूआ। ५. जादू। टोना।
मुहा०––मूठ चलाना या मारना=जादू करना। मूठ लगना=जादू का असर होना।

मूठना*–क्रि० अ० नष्ट होना।

मूठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मूढ़–वि० १. मूर्ख। जड़बुद्धि। बेवकूफ। २. स्तब्ध। जिसे आगा-पीछा न सूझता हो।

मूढ़गर्भ–संज्ञा पुं० गर्भ का बिगड़ना, जिससे गर्भ-पात आदि होता है।

मूढ़ता–संज्ञा स्त्री० मूर्खता। बेवकूफी।

मूढ़ाग्रह–संज्ञा पुं० मूढ़ता या मूर्खता से किया जानेवाला आग्रह। अनुचित हठ। दुराग्रह।

मूढ़ाग्रही–वि० अनुचित हठ करनेवाला। दुराग्रही।

मूत–संज्ञा पुं० दे० "मूत्र"।

मूतना–क्रि० अ० पेशाब करना।

मूत्र–संज्ञा पुं० शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला पानी। पेशाब। मूत।

मूत्रकृच्छ्र–संज्ञा पुं० एक रोग, जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक-रुककर होता है।

मूत्राघात–संज्ञा पुं० पेशाब बंद होने का रोग। मूत्र का रुक जाना।

मूत्राशय–संज्ञा पुं० नाभि के नीचे का वह स्थान, जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाना।

मूना†–क्रि० अ० दे० "मुवना"। मरना।

मूर*†–संज्ञा पुं० १. मूल। जड़। जड़ी। २. मूल धन। ३. मूल नक्षत्र।

मूरख*‡–वि० दे० "मूर्ख"।

मूरखताई*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।

मूरचा–संज्ञा पुं० दे० "मोरचा या मोर्चा"।

मूरछा‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छा"।

मूरत*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।

मूरतिवंत*–वि० मूर्त्तिमान्। देहधारी।

मूरि, मूरी*–संज्ञा स्त्री० १. मूल। जड़। २. जड़ी। बूटी।

मूर्ख–वि० बेवकूफ। मूढ़। अज्ञान। नासमझ।

मूर्खता–संज्ञा स्त्री० मूढ़ता। नासमझी। बेवकूफी।

मूर्खत्व–संज्ञा पुं० दे० "मूर्खता"।

मूर्खिनी*–संज्ञा स्त्री० बेवकूफ स्त्री। मूढ़ स्त्री।

मूर्च्छन–संज्ञा पुं० १. बेहोश करना, या बेहोश होना। २. मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग। ३. पारे का तीसरा संस्कार। ४. कामदेव का एक बाण।

मूर्च्छना–संज्ञा स्त्री० संगीत में स्वरों का आरोह-अवरोह।

मूर्च्छा–संज्ञा स्त्री० अचेत अवस्था। बेहोशी। वह अवस्था, जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है। संज्ञा का लोप।

मूर्च्छित–वि० १. जिसे मूर्च्छा आई हो। बेसुध। बेहोश। अचेत। २. मारा हुआ (पारा आदि धातुओं के लिए)।

मूर्त्त–वि० १. जिसका कुछ रूप या आकार हो। साकार। २. ठोस।

मूर्त्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्रतिमा के किसी रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु। २. शरीर। देह। ३. आकृति। शकल। सूरत। ४. चित्र।

मूर्त्तित–वि० मूर्त्ति के रूप में बनाया हुआ। दे० "मूर्त्त"।

मूर्त्तिकार–संज्ञा पुं० मूर्त्ति बनानेवाला। तसवीर बनानेवाला ।

मूर्त्तिपूजक–संज्ञा पुं० मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करनेवाला।

मूर्त्तिपूजा–संज्ञा स्त्री० ईश्वर या देवता की मूर्त्ति की पूजा या उपासना। मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना।

मूर्त्तिभंजक–संज्ञा पुं० मूर्त्ति तोड़नेवाला। बुतशिकन। मुसलमान ।

मूर्त्तिमन्त–वि० दे० "मूर्त्तिमान्"।

मूर्त्तिमान्–वि० [स्त्री० मूर्त्तिमती] जो मूर्त्ति या शरीर के रूप में हो। साकार। साक्षात्। प्रत्यक्ष।

मूर्द्ध–संज्ञा पुं० सिर।

मूर्द्धकर्णी–संज्ञा स्त्री० छाया आदि के लिए सिर पर रखी हुई वस्तु ।

मूर्द्धकपारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्द्धकर्णी"।

मूर्द्धन्य–वि० १. मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। २. मूर्द्धा स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्ण। ३. मस्तक में स्थित।

मूर्द्धन्य वर्ण–संज्ञा पुं० वे वर्ण, जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धा–संज्ञा पुं० १. सिर। मस्तक। २. उच्च। श्रेष्ठ। ३. तलुवे के पीछे का भाग।

मूर्द्धाभिषेक–संज्ञा पुं० [वि० मूर्द्धाभिषिक्त] सिर पर अभिषेक या जल-सिंचन।

मूर्वा–संज्ञा स्त्री० मरोड़फली। पेट की मरोड़ दूर करनेवाली एक ओषधि।

मूल–संज्ञा पुं० १.पेड़ों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है। जड़। २. खाने के योग्य मोटी जड़। ३. कंद। ४. आदि। आरंभ। शुरू। आदिकारण। उत्पत्ति का हेतु। ५. असल जमा या धन। पूंजी। ६. आरंभ का भाग। नींव। बुनियाद। ७. ग्रंथकार का निज का वाक्य या लेख, जिस पर टीका आदि की जाय। ८. उन्नीसवाँ नक्षत्र।
वि० मुख्य। प्रधान।

मूलक–संज्ञा पुं० १. मूली। २. मूल-स्वरूप। वि० उत्पन्न करनेवाला। जिसके मूल में कुछ हो या जो मूल में हो। जैसे, विवादमूलक बात।

मूलद्रव्य–संज्ञा पुं० असली पदार्थ।

मूलद्वार–संज्ञा पुं० मुख्य फाटक। सदर दरवाजा।

मूल धन–संज्ञा पुं० पूंजी। किसी व्यापार या काम में लगाया जानेवाला असल धन।

मूलपुरुष–संज्ञा पुं० किसी वंश का आदि-पुरुष जिससे वंश चला हो।

मूलभूत–संज्ञा पुं० असल। मुख्य आधार। किसी वस्तु के मूल तत्त्व या असल बात से सम्बन्ध रखनेवाला।

मूलस्थान–संज्ञा पुं० १. बाप-दादों के रहने की जगह। पूर्वजों का निवास-स्थान। २. प्रधान स्थान। ३. मुलतान नगर का प्राचीन नाम।

मूलाधार–संज्ञा पुं० मानव शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र। (योग)

मूलिका–संज्ञा स्त्री० जड़ी।

मूली–संज्ञा स्त्री० १. एक पौधा, जिसकी जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती है। २. मूलिका । जड़ी-बूटी।
मुहा०—(किसी को) मूली-गाजर समझना=अति तुच्छ समझना।

मूल्य–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु को खरीदने पर उसके बदले में दिया जानेवाला धन। दाम। कीमत। २. किसी वस्तु का महत्त्व या मान। जैसे–इस बात का कोई मूल्य नहीं या इस बात का बहुत मूल्य है।

मूल्यवान्–वि० जिसका दाम अधिक हो। बहुत दाम का। कीमती।

मूल्यांकन–संज्ञा पुं० किसी वस्तु का मूल्य आँकना या अनुमान लगाना। किसी वस्तु के महत्त्व को समझना। (अंग्रे०—वैल्यूएशन)

मूल्यानुसार–क्रि० वि० दाम के मुताबिक। वस्तुओं पर उनके मूल्य के विचार या अनुपात से लगनेवाला कर।

मूष, मूषक–संज्ञा पुं० चूहा।

मूस–संज्ञा पुं० चूहा।

मूसदानी–संज्ञा स्त्री० चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना–क्रि० स० चुराकर ले जाना।

मूसर, मूसल–संज्ञा पुं० धान आदि अन्न कूटने का लंबा मोटा डंडा। एक अस्त्र, जिसे बलराम धारण करते थे।

मूसरचंद, मूसलचंद–संज्ञा पुं० देखने में खूब तगड़ा, पर निकम्मा व्यक्ति।

मूसलधार–क्रि० वि० ऐसी वर्षा, जिसमें मूसल के समान मोटी धार से पानी गिरे। बहुत जोर की वर्षा।

मूसला–संज्ञा पुं० मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर शाखाएँ न फूटी हों। झखरा का उलटा।

मूसली–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

मूसा–संज्ञा पुं० १. चूहा। २. यहूदियों के एक पैगम्बर।

मूसाकानी–संज्ञा स्त्री० एक लता, जो ओषधि के काम में आती है।

मृग–संज्ञा पुं० [स्त्री० मृगी] १. हिरन। २. वन्य पशु। जंगली जानवर। ३. हाथियों की एक जाति। ४. मार्गशीर्ष। अगहन का महीना। ५. मृगशिरा नक्षत्र। ६. मकर राशि। ७. कस्तूरी का नाफा। ८. पुरुष के चार भेदों में से एक (कामशास्त्र)।

मृगचर्म–संज्ञा पुं० हिरन का चमड़ा, जो पवित्र माना जाता है।

मृगछाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म"।

मृगजल–संज्ञा पुं० ऊसर रेगिस्तान में जल की मिथ्या भ्रान्ति। मृगतृष्णा।

मृगतृषा, मृगतृष्णा–संज्ञा स्त्री० १. ऊसर रेगिस्तान में जल की मिथ्या भ्रान्ति। २. असम्भव इच्छा। व्यर्थ लोभ। ३. मिथ्या मोहमाया।

मृगदाव–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ गौतम बुद्ध ने प्रथम बार अपने उपदेश दिये थे। काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।

मृगधर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

मृगनाथ–संज्ञा पुं० सिंह। शेर। मृगों (जंगली जानवरों) का राजा।

मृगनाभि–संज्ञा स्त्री० कस्तूरी।

मृगनैनी–संज्ञा स्त्री० हरिण के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रोंवाली (स्त्री)। दे० "मृगलोचनी"।

मृगभद्र–संज्ञा पुं० हाथियों की एक जाति।

मृगमद–संज्ञा पुं० कस्तूरी।

मृगमरीचिका–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगतृष्णा"।

मृगमित्र–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

मृगमेद–संज्ञा पुं० कस्तूरी।

मृगया–संज्ञा पुं० शिकार। आखेट।

मृगरोचन–संज्ञा पुं० कस्तूरी।

मृगलांछन–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

मृगलोचना–वि० दे० "मृगलोचनी"।

मृगलोचनी–वि० हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली (स्त्री)।

मृगवारि–संज्ञा पुं० १. मृगतृष्णा का जल। ऊसर रेगिस्तान में भ्रान्ति से उत्पन्न मिथ्या जल। २. झूठी आशा दिलानेवाली चीज।

मृगशिरा–संज्ञा पुं० सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।

मृगशीर्ष–संज्ञा पुं० दे० "मृगशिरा"।

मृगांक–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. वैद्यक में एक प्रकार का रस।

मृगाक्षी–वि० हिरन की-सी आँखोंवाली।

मृगाशन–संज्ञा पुं० सिंह।

मृगिनी*‡–संज्ञा स्त्री० हरिणी।

मृगी–संज्ञा स्त्री० १. हिरन की मादा। हरिणी। हिरनी। २. अपस्मार नामक रोग। ३. मिर्गी रोग। ४. कस्तूरी। ५. एक वर्ण-वृत्त। ६. कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में से एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है।

मृगेंद्र–संज्ञा पुं० सिंह। मृगों का राजा।

मृग्य–वि० १. अनुसन्धान या खोज करने योग्य। अन्वेषणीय। २. दर्शन।

मृड–संज्ञा पुं० शिव। महादेव। शम्भु।

मृड़ा, मृड़ानी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

मृणाल–संज्ञा पुं० १. कमल का डंठल। कमलनाल। २. कमल की जड़। मुरार। भसींड़।

मृणालिका–संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

मृणालिनी–संज्ञा स्त्री० १. कमलिनी। २. वह स्थान, जहाँ कमल हों।

मृणाली–संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

मृण्मय–वि० [स्त्री० मृण्मयी] १. मिट्टी का बना हुआ। २. मिट्टी से युक्त।

मृण्मूर्ति–संज्ञा स्त्री० मिट्टी की बनी हुई मूर्त्ति।

मृत–वि० मरा हुआ। मुर्दा।

मृतक–संज्ञा पुं० मरा हुआ प्राणी।

मृतक-कर्म–संज्ञा पुं० मृत व्यक्ति की शुद्ध गति के लिए किया जानेवाला कृत्य। प्रेत-कर्म। अंत्येष्टि।

मृतकधूम–संज्ञा पुं० राख। भस्म।

मृतजीवनी–संज्ञा स्त्री० वह विद्या, जिससे मुर्दे को जिलाया जाता है।

मृतसंजीवनी–संज्ञा स्त्री० एक बूटी, जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।

मृताशौच–संज्ञा पुं० वह अशौच, जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।

मृत्तिका–संज्ञा स्त्री० मिट्टी। खाक।

मृत्युंजय–संज्ञा पुं० १. मृत्यु पर विजय पाने-वाला। वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। २. शिव का एक नाम।

मृत्यु–संज्ञा स्त्री० १. प्राण या जीव का अन्त। मौत। मरण। जीवित शरीर का अन्त। देहान्त। २. यमराज।

मृत्युलोक–संज्ञा पुं० १. यमलोक। ‡२. मर्त्य-लोक। संसार।

मृत्स्न–संज्ञा स्त्री० १. बहुत अच्छी जमीन। २. गीली मिट्टी, जिससे बरतन बनाते हैं। ३. एक प्रकार का गंधद्रव्य।

मृथा*‡–क्रि० वि० १. दे० "वृथा"। २. दे० "मृषा"।

मृदंग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा, जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।

मृदव–संज्ञा पुं० गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन (नाट्यशास्त्र)।

मृदु–वि० [स्त्री० मृद्वी] १. कोमल। मुला-यम। नरम। २. सुकुमार। नाजुक। ३. धीमा। मंद। ४. सुनने में प्रिय या मधुर।

मृदुता–संज्ञा स्त्री० १. कोमलता। मुलाय-मियत। धीमापन। २. मंदता।

मृदुत्पल–संज्ञा पुं० नीलकमल।

मृदुल–वि० [संज्ञा स्त्री० मृदुला, भाव० मृदु-लता] १. कोमल। नरम। नाजुक। सुकुमार। २. कोमल-हृदय। दयालु।

मृदुलता–संज्ञा स्त्री० कोमलता। कोमल या सुकुमार होने का भाव।

मृदुलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मृदुलता"।

मृषा–अव्य० झूठ-मूठ। व्यर्थ।
वि० असत्य। झूठ।

मृषात्व–संज्ञा पुं० झूठापन। असत्यता।

मृषाभाषी–वि० झूठ बोलनेवाला। झूठा।

मृष्ट–वि० शोधित।

मृष्टि–संज्ञा स्त्री० शोधन।

में–अव्य० अधिकरण कारक का चिह्न, जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है। आधार या अवस्थान-सूचक शब्द।

मेंगनी–संज्ञा स्त्री० छोटी गोलियों के आकार की विष्ठा। लेंड़ी।

मेकल–संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत का एक भाग, जिसमें अमरकंटक है।

मेख–संज्ञा पुं० दे० "मेष"।
संज्ञा स्त्री० १. गाड़ने के लिए एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील। खूँटी। कील। काँटा। २. लकड़ी का पच्चड़।

मेखल–संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।

मेखला–संज्ञा स्त्री० १. करधनी। तागड़ी। किंकिणी। २. मंडल। मँडरा। वह वस्तु, जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य भाग में चारों ओर घेरे हुए हो। ३. डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद। ४. सामी। सान। ५. पर्वत का मध्य भाग। ६. कपड़े का वह टुकड़ा, जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।

मेखली–संज्ञा स्त्री० १. करधनी। कटिबंध। २. एक पहनावा, जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं।

मेघ–संज्ञा पुं० १. बादल। आकाश में घनीभूत जलवाष्प, जिससे वर्षा होती है। २. संगीत में छः रागों में से एक।

मेघडंबर–संज्ञा पुं० १. मेघगर्जन। दल-बादल। २. बड़ा शामियाना।

मेघनाद–संज्ञा पुं० १. मेघ का गर्जन। २. वरुण। ३. रावण का पुत्र इंद्रजित्। ४. मयूर। मोर।

मेघपुष्प–संज्ञा पुं० १. इंद्र के घोड़े का नाम। २. श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम।
मेघमाला–संज्ञा स्त्री० बादलों का समूह या झुंड। मेघों की माला। बादलों की घटा। कादंबिनी।
मेघराज–संज्ञा पुं० इंद्र। बादलों के राजा।
मेघवर्त–संज्ञा पुं० प्रलय-काल के मेघों में से एक का नाम।
मेघवाई*‡–संज्ञा स्त्री० बादलों की घटा।
मेघा†–संज्ञा पुं० मेढक।
मेघागम–संज्ञा पुं० बरसात का शुरू होना। वर्षा ऋतु का प्रारम्भ।
मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित–वि० बादलों से ढका या छाया हुआ।
मेघाध्वा–संज्ञा पुं० मेघपथ। आकाश। अन्तरिक्ष
मेघावारि*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "मेघावलि"।
मेघावलि–संज्ञा स्त्री० बादलों की घटा।
मेचकता–संज्ञा स्त्री० कालापन।
मेचकताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "मेचकता"।
मेज–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह की चौड़ी और ऊँची चौकी, जो खाना खाने या लिखने-पढ़ने के लिए रखी जाती है। [अंग्रे०–टेबिल]
मेजबान–संज्ञा पुं० [फा०] वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई अतिथि या मेहमान आकर रुके। अपने यहाँ निमंत्रित करनेवाला। अतिथि-सत्कार करनेवाला। मेहमानदार।
मेजबानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मेजबान का भाव या धर्म। अतिथि-सत्कार। मेहमानदारी। खातिरदारी। २. बारात आने पर पहले पहल कन्यापक्ष की ओर से बारातियों को भेजे जानेवाले खाद्य पदार्थ।
मेजा†–संज्ञा पुं० मेढक। मंडूक।
मेट–संज्ञा पुं० [अ०] मजदूरों का सरदार। जमादार। टंडैल।
मेटक*‡–संज्ञा पुं० नाशक। मिटानेवाला।
मेटनहारा*†–संज्ञा पुं० मिटानेवाला। दूर करनेवाला।
मेटना†–क्रि० स० १. दे० "मिटाना"। २. धो डालना। दूर करना। ३. नाश करना। खराब करना।
मेटिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।
मेड़–संज्ञा पुं० १. मिट्टी से बनाया हुआ घेरा। छोटा बाँध। २. दो खेतों के बीच में सीमा के रूप में बना हुआ बाँध।
मेड़रा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० मेड़री] किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढाँचा।
मेड़िया–संज्ञा स्त्री० मढ़ी।
मेढ़क–संज्ञा पुं० एक जल-स्थलचारी जंतु, जो एक बालिश्त तक लंबा होता है। मंडूक। दादुर।
मेढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मेढ़] सींगोंवाला एक चौपाया, जो घने रोयों से ढका होता है। भेड़ा।
मेढ़ासिंगी–संज्ञा स्त्री० एक झाड़ीदार लता, जिसकी जड़ ओषधि के काम आती है।
मेढ़ी†–संज्ञा स्त्री० तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी।
मेथी–संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा, जिसकी पत्तियों का साग बनाया जाता है और इसके बीज मसाले के काम आते हैं।
मेथौरी–संज्ञा स्त्री० मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।
मेद–संज्ञा पुं० १. शरीर के अंदर की वसा नामक धातु। २. चरबी। मोटाई या चरबी बढ़ना। ३. कस्तूरी।
मेदा–संज्ञा पुं० पेट।
संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध ओषधि।
मेदिनी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरती।
मेदुर–वि० १. चिकना और मुलायम। स्निग्ध। २. मोटा या गाढ़ा।
मेध–संज्ञा पुं० यज्ञ।
मेधा–संज्ञा स्त्री० १. स्मरण रखने की मानसिक शक्ति। बुद्धि। धारणा-शक्ति। २. षोडश मात्रिकाओं में से एक। ३. छप्पय छंद का एक भेद।
मेधावी–वि० [स्त्री० मेधाविनी] १. बुद्धिमान्। चतुर। २. पंडित। विद्वान्। ३. जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो।
मेध्य–वि० १. यज्ञ-सम्बन्धी। २. पवित्र।
संज्ञा पुं० १. बकरी। २. जौ। ३. खैर।

मेनका—संज्ञा स्त्री० १. स्वर्ग की एक अप्सरा। २. उमा या पार्वती की माता।

मेना—क्रि० स० पकवान में मोयन डालना। मिलाना।

मेम—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे० मैडम का संक्षिप्त रूप] १. अंग्रेज स्त्री। युरोप या अमेरिका आदि पश्चिमी देशों की स्त्री। २. पत्नी। बीबी। रानी। ३. ताश का एक पत्ता। बीबी।

मेमना—संज्ञा पुं० १. भेड़ का बच्चा। २. घोड़े की एक जाति।

मेमार—संज्ञा पुं० [अ०] इमारत बनानेवाला। थवई। राजगीर।

मेय—वि० जो नापा जा सके। नापने योग्य।

मेरवना†—क्रि० स० मिलाना। मिश्रित करना। संयोग कराना।

मेरा—सर्व० [स्त्री० मेरी] "मैं" के संबंध-कारक का रूप। मम। अपना।

मेराउ, मेराव†—संज्ञा पुं० मेल। मिलाप। समागम।

संज्ञा स्त्री० अहंकार।

मेरु—संज्ञा पुं० १. पुराणों में वर्णित एक पर्वत जो सोने का कहा गया है। सुमेरु। हेमाद्रि। २.जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना। सुमेरु। ३. छंदःशास्त्र की एक गणना, जिससे यह पता लगता है कि कितने-कितने लघु गुरु के कितने छंद हो सकते हैं।

मेरुदंड—संज्ञा पुं० १. रीढ़। पीठ के बीचो-बीच की एक हड्डी। २. पृथ्वी के दोनों ध्रुवों से बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा।

मेरुपृष्ठ—संज्ञा पुं० आकाश। स्वर्ग।

मेरे—सर्व० १. 'मेरा' का बहुवचन। २. 'मेरा' का वह रूप, जो उसे संबंधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त होता है।

मेल—संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया या भाव। मिश्रण। २. संयोग। समागम। मिलाप। ३. एकता। सुलह। मैत्री। मित्रता। दोस्ती। ४. उपयुक्तता। संगति। जोड़। बराबरी। ५. ढंग। ६. चाल। तरह।

मेलक—संज्ञा पुं० १. संग। साथ। मेल-जोल। जान-पहचान।' २. मिलान। समूह। मेला। वि० मेल कराने या मिलानेवाला।

मेल-जोल—संज्ञा पुं० आपस में मेल का या मिलते रहने का सम्बन्ध। संग-साथ। मेल-मिलाप। घनिष्ठता।

मेलना*†—क्रि० स० १. मिलाना। २. डालना। रखना। ३. पहनाना।

क्रि० अ० इकट्ठा होना। एकत्र होना।

मेल-मिलाप—संज्ञा पुं० दे० "मेल-जोल"।

मेला—संज्ञा पुं० १.बहुत-से लोगों का जमावड़ा। भीड़। २. देव-दर्शन, उत्सव या तमाशे आदि के समय एकत्र बहुत से लोगों का समूह। ३. बहुत-सी दूकानों तथा प्रदर्शनी आदि से सजा हुआ, चौपायों की बिक्री आदि के लिए किसी विशेष स्थान पर आयोजन, जिसमें लोगों की भीड़ रहा करती है।

मेली—संज्ञा पुं० मुलाकाती। परिचित। वि० जल्दी हिल-मिल जानेवाला।

मेल्हना†—क्रि० अ० १. छटपटाना। बेचैन होना। २. आनाकानी करके समय बिताना।

मेव—संज्ञा पुं० राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति। मेवाती।

मेवा—संज्ञा पुं० [फा०] किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए फल।

मेवाटी—संज्ञा स्त्री० एक पकवान, जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाड़—संज्ञा पुं० राजपूताने का एक प्रांत, जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी।

मेवात—संज्ञा पुं० राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाती—संज्ञा पुं० मेवात का रहनेवाला।

मेवाफ़रोश—संज्ञा पुं० [फा०] मेवे बेचने-वाला।

मेवास*†—संज्ञा पुं० १. किला। गढ़। २. रक्षा का स्थान। ३. घर।

मेवासी—संज्ञा पुं० १. घर का मालिक। २. किलें में रहनेवाला। ३. सुरक्षित और प्रबल।

मेष—संज्ञा पुं० भेड़। बारह राशियों में से एक। मुहा०—मीनमेष करना=आगा-पीछा करना।

मेषसंक्रांति—संज्ञा स्त्री० मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या समय (पर्व)।

मेहँदी–संज्ञा स्त्री॰ एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने पर लगाने का स्थान लाल रंग का हो जाता है। स्त्रियाँ इसे हाथ-पैरों में लगाती हैं।

मेह–संज्ञा पुं॰ १. मेघ। बादल। २. वर्षा। झड़ी। मेंह। ३. प्रस्राव। मूत्र। ४. प्रमेह रोग।

मेहतर–संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] [स्त्री॰ मेहतरानी] भंगी।

मेहनत–संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] परिश्रम। प्रयास। श्रम।

मेहनताना–संज्ञा पुं॰ किसी काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

मेहनती–वि॰ मेहनत करनेवाला। परिश्रमी।

मेहमान–संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] अतिथि। पाहुना।

मेहमानदारी–संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] अतिथि-सत्कार। खातिरदारी।

मेहमानी–संज्ञा स्त्री॰ आतिथ्य। अतिथि-सत्कार। पहुनाई। मेहमान बनकर रहने का भाव।

मुहा॰—मेहमानी करना=खूब गत बनाना। मारना-पीटना। दंड देना (व्यंग्य)।

मेहर–संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] कृपा। दया। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मेहरी"।

मेहरबान–वि॰ कृपालु। दयालु।

मेहरबानी–संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] दया। कृपा।

मेहरा–संज्ञा पुं॰ जनखा। स्त्रियों की-सी चेष्टावाला। नामर्द।

मेहराब–संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ द्वार के ऊपर का भाग।

मेहरी–संज्ञा स्त्री॰ स्त्री। औरत। पत्नी। जोरू।

मैं–सर्व॰ सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद।

*अव्य॰ दे॰ "मय"। सहित।

मैका–संज्ञा पुं॰ दे॰ "मायका"।

मैगल–संज्ञा पुं॰ मस्त हाथी।

वि॰ मस्त। (हाथी के लिए)

मैच–संज्ञा पुं॰ [अंग्रे॰] खेल की प्रतियोगिता।

मैजल*†–संज्ञा स्त्री॰ १. दे॰ "मंजिल"। २. पड़ाव। ३. सफर। यात्रा।

ड़–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मेड़"।

मैत्रायणि–संज्ञा पुं॰ एक उपनिषद्।

मैत्रावरुणि–संज्ञा पुं॰ मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

मैत्री–संज्ञा स्त्री॰ मित्रता। दोस्ती।

मैत्रेय–संज्ञा पुं॰ १. सूर्य्य। २. भागवत के अनुसार एक ऋषि।

मैत्रेयी–संज्ञा स्त्री॰ १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २. अहल्या।

मैथिल–वि॰ मिथिला देश का। मिथिला-संबंधी

संज्ञा पुं॰ मिथिला देश का निवासी।

मैथिली–संज्ञा स्त्री॰ जानकी। सीता।

मैथुन–संज्ञा पुं॰ स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग। रति-क्रीड़ा।

मैदा–संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] बहुत महीन आटा।

मैदान–संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. लंबा-चौड़ा समतल स्थान। सपाट भूमि। २. लंबी-चौड़ी भूमि, जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३. रणभूमि। युद्धक्षेत्र। ४. विस्तार।

मुहा॰—मैदान में आना=मुकाबले पर आना। मैदान साफ होना=मार्ग में कोई बाधा आदि न होना। मैदान मारना=खेल, बाजी आदि में जीतना। विजय प्राप्त करना। मैदान करना=लड़ना। युद्ध करना।

मैन–संज्ञा पुं॰ १. कामदेव। मदन। २. मोम।

मैनकामिनी–संज्ञा स्त्री॰ कामदेव की स्त्री। रति।

मैनफल–संज्ञा पुं॰ मझोले आकार का एक कँटीला वृक्ष। इस वृक्ष का फल अखरोट की तरह होता है और औषध के काम में आता है। मदनफल।

मैनमय*–वि॰ कामवासना से युक्त या व्याकुल। कामासक्त।

मैनसिल–संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की पीली धातु।

मैना–संज्ञा स्त्री॰ काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, जो सिखाने से मनुष्य की-सी बोली बोलने लगता है। सारिका। दे॰ "मेनका"। संज्ञा पुं॰ राजपूताने की एक जाति, जो "मीना" कहलाती है।

मैनाक–संज्ञा पुं० १ एक पर्वत, जो हिमालय का पुत्र माना जाता है । २. हिमालय की एक ऊँची चोटी।
मैमंत*†–वि० १. मदोन्मत्त । मतवाला । २. अहंकारी। अभिमानी।
मैया–संज्ञा स्त्री० माता। माँ ।
मैर†–संज्ञा स्त्री० साँप के विष की लहर।
मैल–संज्ञा स्त्री० १. गर्द, धूल आदि जिससे किसी वस्तु की चमक-दमक नष्ट हो जाती है। २. मल। गंदगी। दोष। विकार ।
मुहा०––हाथ-पैर की मैल=तुच्छ वस्तु।
मैलखोरा–वि० जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे ।
मैला–वि०१. जिस पर मैल जमी हो। मलिन। गंदा। २. विकार-युक्त। दूषित। ३. दुर्गंध-युक्त ।
संज्ञा पुं० १. गलीज। गू। विष्ठा। २. कूड़ा-कर्कट ।
मैला-कुचैला–वि० १. बहुत मैला। गंदा। २. जो बहुत गंदा कपड़ा पहने हुए हो।
मैलापन–संज्ञा पुं० गंदापन। मलिनता ।
मों*†–अव्य० दे० "में" ।
सर्व० दे० "मों" ।
मोंगरा–संज्ञा पुं० १. दे० "मोगरा"। २. दे० "मँगरा"।
मोंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूंछ"।
मोंढ़ा–संज्ञा पुं० १. बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन । २. कंधा।
मो*–सर्व० मेरा।. अवधी और ब्रजभाषा में "मैं" का वह रूप, जो उसे कर्त्ता-कारक के अतिरिक्त और किसी कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है ।
मोकना*†–क्रि० स० १. छोड़ना । परित्याग करना। २. फेंकना। क्षिप्त करना ।
मोकल*†–वि० छूटा हुआ। मुक्त। जो बँधा न हो। आजाद। स्वच्छंद ।
मोकला†–वि० १. अधिक चौड़ा । कुशादा। २. छूटा हुआ। स्वच्छंद ।
मोक्ष–संज्ञा पुं० १. बंधन से छूट जाना। छूटकारा। जन्म-मरण के बंधन से छूट जाना। मुक्ति। २. मृत्यु। मौत।
मोक्षद–संज्ञा पुं० मोक्ष देनेवाला।
मोख*†–संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।
मोखा–संज्ञा पुं० बहुत छोटी खिड़की। झरोखा।
मोगरा–संज्ञा पुं० बेला फूल की एक बढ़िया किस्म।
मोगल–संज्ञा पुं० दे० "मुगल"।
मोगा–संज्ञा पुं० १. एक तरह का रेशम। २. इस रेशम का बना हुआ कपड़ा।
मोघ–वि० निष्फल। चूकनेवाला।
मोच–संज्ञा स्त्री० शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना।
मोचन–संज्ञा पुं० १. बंधन आदि से छुड़ाना। मुक्त करना। २. दूर करना। हटाना।
मोचना–क्रि० स० १. छोड़ना। २. गिराना। बहाना। ३. छुड़ाना।
संज्ञा पुं० हज्जामों का एक औजार, जिससे वे बाल उखाड़ते हैं।
मोचरस–संज्ञा पुं० सेमल का गोंद।
मोची–संज्ञा पुं० जूता बनानेवाला। जूता और चमड़े की सिलाई आदि का व्यवसाय करनेवाला।
वि० [स्त्री० मोचिनी] १. छुड़ानेवाला। २. दूर करनेवाला।
मोछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूंछ"।
*–संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।
मोजा–संज्ञा पुं० [फा०] पैरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा। पायताबा। जुर्राब। पैर में पिंडली के नीचे का भाग।
मोट–संज्ञा स्त्री० पतला का उल्टा। गठरी। मोटरी। बोझ।
संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा थैला, जिससे खेत सींचने के लिए कूएँ से पानी निकालते हैं। चरसा। पुर ।
*वि० दे० "मोटा"। कम दाम का। साधारण।
मोटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जमीन पर पेट्रोल से चलनेवाली एक प्रसिद्ध गाड़ी। बिजली

का इंजन, जो दूसरे यंत्रों का संचालन करता है।

मोटरी–संज्ञा स्त्री० गठरी।

मोटा–वि० [स्त्री० मोटी] १. दुबला या पतला का उल्टा। चरबी आदि के कारण जिसका शरीर फूल गया हो। २. जिसके कण महीन न हों। दरदरा। ३. घटिया। खराब। ४. भारी। ५. कठिन। ६. घमंडी। अहंकारी। ७. दबीज। दलदार। ८. गाढ़ा। ९. जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो।

मुहा०—मोटा असामी=अमीर। जिससे अधिक धन वसूल हो सके। मोटी बात=साधारण बात। मामूली बात। मोटे हिसाब से=अंदाज से या अनुमान से। अटकल से। मोटा दिखाई देना=आँख की ज्योति में कमी होना। कम दिखाई देना।

मोटाई–संज्ञा स्त्री० १. मोटा होने का भाव। स्थूलता। मोटापन। २. शरारत। पाजीपन।

मुहा०—मोटाई चढ़ना=बदमाश या घमंडी होना।

मोटाना–क्रि० अ० मोटा होना। स्थूलकाय हो जाना। अभिमानी होना। धनवान् होना।

क्रि० स० दूसरे को मोटा करना।

मोटापन–संज्ञा पुं० शरीर के मोटे होने का भाव। दे० "मोटाई"।

मोटापा–संज्ञा पुं० दे० "मोटाई"।

मोटा-मोटी–क्रि० वि० मोटे हिसाब से। अनुमान या अन्दाज से।

मोटिया–संज्ञा पुं० १. मोटा और खुरखुरा देशी कपड़ा। गाढ़ा कपड़ा। २. बोझ ढोनेवाला।

मोट्टायित–संज्ञा पुं० साहित्य में वह हाव, जिसमें नायिका अपने आन्तरिक प्रेम को कटु भाषण आदि-द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।

मोठ–संज्ञा स्त्री० मूंग की तरह का एक मोटा अन्न। मोथ। मोथी। बनमूंग।

मोड़–संज्ञा पुं० १. रास्ते में घुमाव का स्थान। २. घुमाव में मुड़ने की क्रिया।

मोड़ना–क्रि० स० १. फेरना। लौटाना। टेढ़ा करना। २. किसी फैली हुई सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। ३. धार भुथरी करना। कुंठित करना। जैसे—धार मोड़ना।

-मुँह मोड़ना=विमुख होना।

पुं० १. एक प्रकार का बेला (फूल)। २. एक प्रकार का सलमा।

वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का 'रंग'। २. मोती-सम्बन्धी। छोटे गोल दानों का।

मोतियाबिंद–संज्ञा पुं० एक रोग, जिसमें आँख के एक परदे में गोल झिल्ली-सी पड़ जाती है।

मोती–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न, जो समुद्रों में होनेवाली सीपी में से निकलता है।

संज्ञा स्त्री० बाली, जिसमें मोती पड़े रहते हैं।

मुहा०—मोतियों की-सी आब उतरना=अप्रतिष्ठा होना। अपमान होना। मोती गरजना=मोती चटकना या कड़क जाना। मोती पिरोना=माला गूंथना। मोती रोलना=बिना परिश्रम अथवा थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियों से मुँह भरना=बहुत अधिक धन-संपत्ति देना।

मोतीचूर–संज्ञा पुं० छोटी बूँदियों का लड्डू।

मोतीझरा या **मोतीझिरा**–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मियादी बुखार। २. जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। मलेरिया। ३. छोटी शीतला का रोग। ४. मंथर-ज्वर।

मोती-बेल–संज्ञा स्त्री० मोतिया बेला (फूल)।

मोती-भात–संज्ञा पुं० एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीसिरी–संज्ञा स्त्री० मोतियों की कंठी। मोतियों की माला।

मोथा–संज्ञा पुं० नागरमोथा नामक घास या उसकी जड़।

मोद–संज्ञा पुं० १. आनंद। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। २. एक वर्णवृत्त। ३. सुगंध। महक। खुशबू।

मोदक–संज्ञा पुं० १. लड्डू। मिठाई। २.

औषध आदि का बना हुआ लड्डू। ३. गुड़। ४. चार नगण का एक वर्णवृत्त।

मोदकी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की गदा।

मोदना*–क्रि० अ० १. प्रसन्न होना। खुश होना। २. सुगंध फैलना।
क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना।

मोदित*–वि० दे० "मुदित"।

मोदी–संज्ञा पुं० १. आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया। परचुनिया। बनियों की जाति। २. पारसियों की एक जाति।

मोदीखाना–संज्ञा पुं० अन्न आदि रखने का भंडार। गोदाम।

मोधुक–संज्ञा पुं० मछली पकड़नेवाला। मछुआ। धीवर।

मोघू†–वि० बेवकूफ। मूर्ख।

मोन–संज्ञा पुं० दे० "मोना"।

मोना*†–क्रि० स० भिगोना।
संज्ञा पुं० झाबा। पिटारा।

मोम–संज्ञा पुं० [फा०] १. शहद के छत्ते में के बचे हुए अंश को निकालकर बनाया हुआ पदार्थ। २. एक चिकना नरम पदार्थ, जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।

मोमजामा–संज्ञा पुं० [फा०] वह कपड़ा, जिस पर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो। तिरपाल।

मोमिन–संज्ञा पुं० धर्मनिष्ठ मुसलमान। मुसलमान जुलाहों की एक श्रेणी।

मोमबत्ती–संज्ञा स्त्री० मोम की बनाई हुई बत्ती, जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।

मोमियाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नकली शिलाजीत।

मोमी–वि० [फा०] मोम का बना हुआ।

मोयन–संज्ञा पुं० आटे में घी या चिकनी वस्तु मिलाना, जिसमें उससे बनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो।

मोरंग–संज्ञा पुं० नैपाल का पूर्वी भाग।

मोर–संज्ञा पुं० [स्त्री० मोरनी] १. एक अत्यंत सुन्दर पक्षी, जिसके पर सूर्य की किरणें पड़ने पर चमचमा उठते हैं। मयूर। २. नीलम की आभा।
*†–सर्व० दे० "मेरा"।

मोरचंग–संज्ञा पुं० मुरचंग। एक प्रकार का बाजा।

मोरचंदा–संज्ञा पुं० दे० "मोरचंद्रिका"।

मोरचंद्रिका–संज्ञा स्त्री० मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी।

मोरचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. लोहे पर वायु और नमी के कारण लगनेवाला विकार। जंग। २. वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिए खोदा जाता है। ३. वह स्थान, जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है। युद्ध-स्थल का प्रमुख क्षेत्र।
मुहा०—मोरचाबंदी करना=गढ़ के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। युद्ध में उपयुक्त स्थान पर सेना नियुक्त करना। मोरचा जीतना या मारना=शत्रु के मोरचे पर अधिकार कर लेना। मोरचा बाँधना=दे० "मोरचाबंदी करना"। मोरचा लेना=युद्ध करना।

मोरछड़*–संज्ञा पुं० दे० "मोरछल"।

मोरछल–संज्ञा पुं० मोर के परों से बनाया हुआ चँवर।

मोरछली–संज्ञा पुं० दे० १. "मौलसिरी"। २. मोरछल हिलानेवाला।

मोरछाँह*—संज्ञा स्त्री० दे० "मोरछल"।

मोरजुटना–संज्ञा पुं० एक प्रकार का आभूषण।

मोरन*–संज्ञा स्त्री० १. मोड़ने की क्रिया या भाव। मोड़ना। २ बिलोया हुआ दही, जिसमें मिठाई और सुगंधित वस्तुएँ डाली गई हों। शिखरन।

मोरना*–क्रि० स० १. दे० "मोड़ना"। २. दही को मथकर मक्खन निकालना।

मोरनी–संज्ञा स्त्री० १. मोर-पक्षी की मादा। २. मोर के आकार का टिकड़ा, जो नथ में पिरोया जाता है।

मोरपंख–संज्ञा पुं० मोर का पर।
वि० मोर के पंख का बना हुआ।

मोरपंखा*†–संज्ञा पुं० १. मोर के पंखों का बना हुआ पंखा। २. मोर का पर। ३. मोरपंख की कलगी।

मोरपंखी—वि० १. मोर के पंख का बना हुआ। २. मोर के पंख के रंग का।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नाव, जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना और रँगा हुआ हो।
संज्ञा पुं० मोर के पर से मिलता-जुलता गहरा चमकीला नीला रंग।

मोरमुकुट—संज्ञा पुं० मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।

मोरवा*†—संज्ञा पुं० दे० "मोर"।

मोरशिखा—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की जड़ी। २. मोरपंख।

मोरा*†—वि० दे० "मेरा"।

मोराना*†—क्रि० स० चारों ओर घुमाना। फिराना।

मोरी—संज्ञा स्त्री० १. नाली, जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो। पनाली। २. मोर की मादा।

मोल—संज्ञा पुं० मूल्य। कीमत। दाम।
यौ०—मोल-तोल=किसी चीज का दाम घटा-बढ़ाकर तय करना।

मोलाना*—क्रि० स० दाम पूछना। मूल्य तय करना।

मोवना*†—क्रि० स० दे० "मोना"।

मोषण—संज्ञा पुं० १. लूटना। २. चोरी करना। ३. वध करना।

मोह—संज्ञा पु० १. अज्ञान। भ्रम। भ्रांति। २. शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की दुःख देनेवाली बुद्धि। ३. प्रेम। मुहब्बत। प्यार। ४. साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक। ५. भय, दुःख, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ६. दुःख। कष्ट। ७. मूर्च्छा। बेहोशी। गश।

मोहक—वि० लुभानेवाला। मनोहर। मन मोहनेवाला। मोह उत्पन्न करनेवाला।

मोहठा—संज्ञा पुं० १. दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। २. बाला।

मोहड़ा—संज्ञा पु० किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

मोहताज—वि० दूसरों पर आश्रित। परमुखापेक्षी।

मोहन—संज्ञा पुं० १. मन को लुभानेवाला। मोह लेनेवाला। २. श्रीकृष्ण। ३. एक वर्णवृत। ४. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग, जिससे किसी को बेहोश या मूर्च्छित करते हैं। ५ मूर्च्छित करने का एक प्राचीन अस्त्र (मोहनास्त्र)। ६. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० [स्त्री० मोहनी] मन मोहनेवाला। मोह उत्पन्न करनेवाला।

मोहनभोग—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलुआ। २. एक प्रकार का आम।

मोहनमाला—संज्ञा स्त्री० सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला।

मोहना—क्रि० अ० १. मोहित होना। रीझना। २. मूर्च्छित होना।
क्रि० स० १. मोहित करना। लुभा लेना। २. भ्रम में डालना। धोखा देना।

मोहनास्त्र—संज्ञा पुं० एक प्राचीन अस्त्र, जिसे फेंककर शत्रु या शत्रु की सेना को मूर्च्छित किया जाता था।

मोहनिशा—संज्ञा स्त्री० दे० "मोहरात्रि"।

मोहनी—संज्ञा स्त्री० १. मन मोहनेवाली या सुन्दर स्त्री। २. भगवान् का वह स्त्री-रूप, जो उन्होंने समुद्र-मंथन के उपरांत अमृत बाँटते समय धारण किया था। ३. वशीकरण का मंत्र। ४. एक वर्णवृत्त। ५. माया।
वि० मोहित करनेवाली। अत्यंत सुन्दरी।
मुहा०—मोहनी डालना या लाना=माया के वश करना। जादू करना। मोहनी लगना=मोहित होना। लुभाना।

मोहर—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा। २. इस ठप्पे की कागज आदि पर लगी छाप। ३. अशरफी।

मोहरबंद—वि० बन्द करके ऊपर से मोहर लगाई गई वस्तु।

मोहरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० मोहरी] १. किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २. किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। ३.

सेना की अगली पंक्ति। ४. फौज की चढ़ाई का रुख। ५. कोई छेद या द्वार, जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। ६. चोली आदि की तनी। ७. शतरंज की कोई मोटी। ८. मिट्टी का साँचा, जिसमें चीजें ढालते हैं। ९. रेशमी वस्त्र घोटने का घोटना। १०. सिंगिया विष। ११. जहर-मोहरा।

मुहा०—मोहरा लेना=१. सेना का मुकाबला करना। २. भिड़ जाना। प्रतिद्वंद्विता करना।

मोहरात्रि—संज्ञा स्त्री० १. प्रलय की वह रात, जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होती है। २. कृष्ण-जन्माष्टमी।

मोहरी—संज्ञा स्त्री० १. बरतन आदि का छोटा मुँह। २. पाजामे का वह भाग, जिसमें टाँगें रहती हैं। ३. दे० "मोरी"।

मोहर्रिर—संज्ञा पुं० अदालत में लिखने का काम करनेवाला। वकीलों के साथ लिखने-पढ़ने का काम करनेवाला। लेखक। मुंशी।

मोहलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अवकाश। छुट्टी। फुर्सत। २. अवधि।

मोहार†—संज्ञा पुं० १. द्वार। दरवाजा। २. मुँहड़ा।

मोहि*—सर्व० मुझको। मुझे। (ब्रज और अवधी)

मोहित—वि० १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २. मोहा हुआ। आसक्त।

मोहिनी—वि० स्त्री० मोहनेवाली।

संज्ञा स्त्री० १. विष्णु के एक अवतार का नाम। २. माया। जादू। ३. टोना। ४. एक अर्द्धसम वृत्ति। ५. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।

मोही—वि० १. मोहित करनेवाला। मोह करनेवाला। प्रेम करनेवाला। २. लोभी। लालची। ३. अज्ञानी।

मोहोपमा—संज्ञा स्त्री० एक अलंकार जो केशवदास के अनुसार उपमा का एक भेद है, पर और आचार्य्य जिसे 'भ्रांति अलंकार' कहते हैं।

मौंगा, मौंगी*—संज्ञा स्त्री० मौन। चुप।

मौंड़ा*†—संज्ञा पुं० [स्त्री० मौंड़ी] लड़का। बालक।

मौक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. घटनास्थल। २. देश। स्थान। जगह। ३. अवसर। समय।

मौक़ूफ़—वि० [अ०] [संज्ञा मौकूफी] १. नौकरी से अलग किया गया। बरखास्त। २. रद किया गया। ३. रोका हुआ। बंद किया हुआ।

मौक्तिक—संज्ञा पुं० मुक्ता। मोती।

वि० १. मोतियों का। २. मोती-सम्बन्धी।

मौक्तिकदाम—संज्ञा पुं० बारह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।

मौक्तिकमाला—संज्ञा स्त्री० १. मोतियों की माला। २. ग्यारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति।

मौख—संज्ञा पुं० एक प्रकार का मसाला।

मौखरी—संज्ञा पुं० भारत का एक प्राचीन राजवंश।

मौखर्य—संज्ञा पुं० मुखर होने का भाव। मुखरता।

मौखिक—वि० १. जबानी। मुँह से कहा हुआ। मुख का। २. मुख-सम्बन्धी।

मौज—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मजा। आनन्द। सुख। धुन। २. मन की उमंग। उछंग। जोश। लहर। तरंग।

मुहा०—किसी की मौज पाना=मरजी या इच्छा जानना।

मौज़ा—संज्ञा पुं० [अ०] गाँव।

मौजी—वि० १. जो जी में आवे, वही करने-वाला। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनंदी।

मौज़ूँ—वि० [अ०] उपयुक्त। उचित। ठीक।

मौजूद—वि० [फा०] [संज्ञा स्त्री० मौजूदगी] १. उपस्थित। हाजिर। विद्यमान। २. प्रस्तुत। तैयार।

मौजूदगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] उपस्थित या होने का भाव। उपस्थिति। हाजिरी।

मौजूदा—वि० [अ०] वर्त्तमान काल का। प्रस्तुत।

मौड़ा*†—संज्ञा पुं० दे० "मौंड़ा"।

मौत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मृत्यु। देहान्त। २. मरने का समय। काल। ३. अत्यन्त कष्ट या विपत्ति।

मुहा०—मौत का सिर पर खेलना=१. मरने को होना। २. आपत्ति समीप होना।

मौन–संज्ञा पुं० १. चुप्पी। चुप रहना। न बोलना। २. मुनियों का व्रत। मौन या चुप रहने का व्रत।
वि० चुप। न बोलनेवाला।
मुहा०—मौन ग्रहण या धारण करना=चुप रहना। न बोलना। मौन खोलना=चुप रहने के उपरांत बोलना। मौन तजना=चुप्पी छोड़ना। बोलने लगना। मौन बाँधना=चुप हो जाना। मौन लेना या साधना=चुप होना। न बोलना। मौन सँभारना*=मौन साधना। चुप होना।

मौनव्रत–संज्ञा पुं० मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने की प्रतिज्ञा या व्रत।

मौनी–वि० १. चुप रहनेवाला। मौन धारण करनेवाला। २. मुनि।

मौर—संज्ञा पुं० [स्त्री० मौरी] १. विवाह के समय का एक शिरोभूषण। २. शिरोमणि। प्रधान। ३. मंजरी। बौर। ४. गरदन।

मौरना–क्रि० स० वृक्षों पर मंजरी लगना। बौर लगना।

मौरसिरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।

मौरूसी–वि० [अ०] १. पैतृक। पूर्वजों का। २. बाप-दादा के समय से चला आया हुआ।

मौर्य्य–संज्ञा पुं० क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट् चंद्रगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।

मौर्वी–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी।

मौलवी–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान धर्म्म का आचार्य्य, जो अरबी, फारसी आदि का पंडित होता है।

मौलसिरी–संज्ञा स्त्री० एक बड़ा सदाबहार पेड़, जिसमें छोटे-छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। किसी किसी में फल भी लगते हैं। बकुल।

मौला–संज्ञा पुं० [अ०] १. ईश्वर। २. स्वामी। मालिक। ३. सहायक। मददगार। ४. मित्र। दोस्त।

मौलाना–संज्ञा पुं० दे० "मौलवी"।

मौलि–संज्ञा पुं० १. चोटी। सिरा। २. चूड़ा। मस्तक। सिर। ३. किरीट। ४. जूड़ा। जटाजूट। ५. प्रधान व्यक्ति। सरदार।

मौलिक–वि० [संज्ञा मौलिकता] असल। मूल से सम्बन्ध रखनेवाला। अपनी उद्भावना से निकला हुआ विचार या रचित ग्रंथ, जो किसी का अनुवाद, नकल या आधार पर न हो।

मौलिकता–संज्ञा स्त्री० मौलिक होने का भाव। अपनी उद्भावना से कुछ सोचने-समझने, कहने या लिखने की शक्ति। (अंग्रे०–ओरिजनैलिटी)

मौली–वि० मौलि धारण करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० पूजा आदि के लिए रँगा हुआ सूत। नारा।

मौसम–संज्ञा पुं० दे० "मौसिम"। ऋतु।

मौसा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मौसी] माता की बहिन का पति।

मौसिम–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मौसिमी] १. उपयुक्त समय। २. ऋतु। दिन और रात की प्राकृतिक अवस्था। ३. प्राकृतिक अवस्था के अनुसार वर्ष के ६ विभाग। ४. ऋतु।

मौसिया–संज्ञा पुं० १. मौसा। २. दे० "मौसेरा"।

मौसी–संज्ञा स्त्री० [वि० मौसेरा] माता की बहन।

मौसेरा–वि० मौसी के द्वारा संबद्ध। मौसी के संबंध का।

म्याँव–संज्ञा स्त्री० बिल्ली की बोली।
मुहा०—म्याँव म्याँवँ करना=भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना।

म्यान–संज्ञा पुं० [फा०] तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना।

म्याना*–क्रि० स० म्यान में रखना।
*संज्ञा पुं० दे० "मियाना"।

म्यूजियम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अजायबघर। संग्रहालय। अद्भुत पदार्थों का संग्रहालय।

म्यों–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

म्यौंड़ी–संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार झाड़, जिसमें पीले छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।

म्युनिसिपैलटी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] नगर-पालिका। नगर की सफाई, स्वास्थ्य, सड़क आदि का प्रबन्ध करनेवाली संस्था, जिसके सदस्य जनता-द्वारा चुने जाते हैं।

म्लान–वि० [भाव० संज्ञा म्लानता] १. मलिन। कुम्हलाया हुआ। २. दुर्बल। ३. मैला। मलिन।

म्लानता–संज्ञा स्त्री० १. म्लान या उदास होने का भाव। मलिनता। उदासीनता। २. दुर्बलता। कमजोरी।

म्लानि–संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानता"।

म्लेच्छ–संज्ञा पुं० मनुष्यों की वे जातियाँ, जिनमें वर्णाश्रम धर्म्म न हो। अनार्य। वि० १. नीच। २. पापी।

म्हा*†–सर्व दे० "मुझ"।

म्हारा*†–सर्व० दे० "हमारा"।

य

य–हिंदी वर्णमाला का २६वाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।
संज्ञा पुं० १. यश। २. योग। ३. सवारी। ४. ५. संयम। ६. छंद-शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप।

यंता–संज्ञा पुं० सारथी। रथ हाँकनेवाला।

यंति–संज्ञा स्त्री० दमन।

यंत्र–संज्ञा पुं० १. औजार। किसी खास काम के लिए बनाई हुई कल या औजार। (अंग्रे०–मशीन) २. किसी वस्तु को बनाने के लिए विशेष उपकरण। ३. बाजा। वाद्य। ४. ताला। ५. तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशेष प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि। जंतर।

यंत्रक–संज्ञा पुं० १. यंत्र की सहायता से वस्तुएँ तैयार करनेवाला। २. वशीकरण करनेवाला। ३. घाव आदि बाँधने की पट्टी।

यंत्रकरंडिका–संज्ञा स्त्री० बाजीगरों की पेटी।

यंत्रगृह–संज्ञा पुं० १. वह स्थान, जहाँ यंत्रों की सहायता से कोई कार्य होता है। वेधशाला। २. प्राचीन काल में अपराधियों को यंत्रणा देने का स्थान।

यंत्रण–संज्ञा पुं० १. रक्षा करना। २. बाँधना। ३. नियम में रखना। ४. नियंत्रण।

यंत्रणा–संज्ञा स्त्री० पीड़ा। कष्ट। तकलीफ। दर्द।

यंत्र-मंत्र–संज्ञा पुं० जादू-टोना।

यंत्र-युक्त–वि० १. यंत्र या कलपुर्जोंवाला। यंत्रों के साथ। २. दे० "यंत्रसज्ज"।

यंत्रविद्या–संज्ञा स्त्री० कलों के चलाने और बनाने की विद्या।

यंत्रशाला–संज्ञा स्त्री० १. वेधशाला। २. वह स्थान, जहाँ यंत्र बनाए जाते हों और उनसे काम लिया जाता हो।

यंत्रसज्ज–वि० मशीनगनों और टैंकों आदि से युक्त और सजी हुई (सेना)।

यंत्रालय–संज्ञा पुं० १. वह स्थान, जहाँ यंत्र (कल) आदि से काम होता हो। २. छापाखाना। प्रेस।

यंत्रिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटा ताला। २. छोटी साली।

यंत्रित–वि० १. यंत्र आदि की सहायता से बंद किया हुआ। २. ताले में बंद।

यंत्री–संज्ञा पुं० १. यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २. बाजा बजानेवाला।

यक-बयक, यकबारगी–क्रि० वि० [फा०] अचानक। एकाएक। सहसा।

यकसाँ–वि० [फा०] एक समान। बराबर। एक-साँ।

यकायक–क्रि० वि० [फा०] एकाएक। अचानक। एकबारगी। सहसा।

यक़ीन–संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। एतबार।

यक़ीनन–क्रि० वि० [अ०] निःसन्देह। अवश्य।

यकृत–संज्ञा पुं० १. पेट में दाहिनी ओर की एक थैली, जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। २. वह रोग जिसमें यह अंग दूषित

होकर बढ़ जाता है। तापतिल्ली नामक रोग। वर्म-जिगर।
यक्ष–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के देवता, जो कुबेर की निधियों के रक्षक माने जाते हैं। २. कुबेर।
यक्षकर्दम–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अंग-लेप।
यक्षग्रह–संज्ञा पुं० पुराणों में वर्णित एक तरह के कल्पित ग्रह।
यक्षतरु–संज्ञा पुं० बड़ का पेड़।
यक्षता, यक्षत्व–संज्ञा पुं० यक्ष होने का भाव।
यक्षनायक–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्षप–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्षपति–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्षपुर–संज्ञा पुं० अलकापुरी।
यक्षरस–संज्ञा पुं० फूलों की शराब।
यक्षराज–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्षलोक–संज्ञा पुं० यक्षों का निवास स्थान।
यक्षवित्त–संज्ञा पुं० बहुत धनी होने पर भी धन में से कुछ खर्च न करनेवाला व्यक्ति।
यक्षाधिप या **यक्षाधिपति**–संज्ञा प० कुबेर।
यक्षिणी–संज्ञा स्त्री० १. यक्ष की पत्नी। २. कुबेर की पत्नी।
संज्ञा पं० यक्ष की उपासना करनेवाला।
यक्षी–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।
संज्ञा पुं० यक्ष की उपासना करनेवाला।
यक्षेन्द्र–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्षेश्वर–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्ष्मग्रह–संज्ञा पुं० क्षय रोग।
यक्ष्मघ्नी–संज्ञा स्त्री० अंगूर। दाख।
यक्ष्मा–संज्ञा पुं० क्षय रोग। तपेदिक।
यखनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बकरे के ठेंहुने से पैर तक के हिस्से को उबालकर निकाला हुआ रसा।
यगण–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में एक गण, जो एक लघु और दो गुरु मात्राओं का होता है (ISS)। संक्षिप्त रूप 'य'।
यगाना–संज्ञा पुं० [फा०] आत्मीय। नातेदार। वि० अनुपम। अकेला।
यगूर–संज्ञा पुं० एक ऊंचा वृक्ष।
यच्छ*‡–संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।
यजंत–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।
यजत–संज्ञा पुं० ऋत्विक्। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।
यजति–संज्ञा पुं० यज्ञ।
यजत्र–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला। अग्निहोत्री।
यजन–संज्ञा पुं० यज्ञ करना।
यजनकर्त्ता–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।
यजना*–क्रि० स० १. यज्ञ करना। २. पूजा करना।
यजमान–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों को दान देनेवाला। २ यज्ञ करनेवाला। यष्टा।
यजमानी–संज्ञा स्त्री० १. यजमान का भाव या धर्म्म। २. यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।
यजी–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।
यजु–संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।
यजुर्वेद–संज्ञा पुं० चार प्रसिद्ध वेदों में से एक वेद, जिसमें विशेषतः यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवरण है।
यजुर्वेदी–संज्ञा पुं० यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार कार्य करनेवाला।
यजुष्पति–संज्ञा पुं० श्री विष्णु।
यजुष्पात्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञपात्र।
यज्ञ–संज्ञा पुं० १ प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था। होम। हवन। २. श्रीविष्णु।
यज्ञक–संज्ञा पुं० १. यज्ञ करनेवाला। २. यज्ञ।
यज्ञकर्त्ता–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला। याजक। यजमान।
यज्ञकर्म–संज्ञा पुं० यज्ञ का काम।
यज्ञकल्प–संज्ञा पुं० विष्णु।
यज्ञकारी–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।
यज्ञकाल–संज्ञा पुं० १. यज्ञ के लिए निश्चित समय। २. पूर्णमासी।
यज्ञकीलक–संज्ञा पुं० यज्ञ के लिए बलि दिये जानेवाले पशु को बाँधने का खूंटा।
यज्ञकुंड–संज्ञा पुं० हवन करने की वेदी या कुंड।
यज्ञक्रिया–संज्ञा स्त्री० यज्ञ का काम। कर्मकांड।
यज्ञघ्न–संज्ञा पुं० राक्षस।

यज्ञज्ञ–संज्ञा पुं० यज्ञ का विधान जाननेवाला।
यज्ञत्राता–संज्ञा पुं० १. श्रीविष्णु। २. वह, जो यज्ञ की रक्षा करता हो।
यज्ञद्रुह–संज्ञा पुं० राक्षस।
यज्ञदेव–संज्ञा पुं० १. यज्ञ के देवता। २. विष्णु। नारायण।
यज्ञधर–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञनेमि–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यज्ञपति–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. यज्ञ करनेवाला। यजमान।
यज्ञपत्नी–संज्ञा स्त्री० १. यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा। २. माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों की वे स्त्रियाँ, जो अपने पतियों के मना करने पर भी श्रीकृष्ण के लिए भोजन लेकर गई थीं (भागवत में प्रयुक्त शब्द)।
यज्ञपशु–संज्ञा पुं० यज्ञ में बलिदान किया जानेवाला पशु (बकरा। घोड़ा)।
यज्ञपात्र–संज्ञा पुं० यज्ञ में काम आनेवाले काठ के बने हुए बरतन।
यज्ञपाल–संज्ञा पुं० यज्ञ की रक्षा करनेवाला।
यज्ञपुरुष–संज्ञा पुं० विष्णु।
यज्ञफलद–संज्ञा पुं० यज्ञ का फल देनेवाला।

यज्ञबाहु–संज्ञा पुं० अग्नि।
यज्ञभाग–संज्ञा पुं० १. यज्ञ का वह अंश जो देवताओं को मिलता है। २. वह देवता जिन्हें यज्ञ का भाग मिलता है।
यज्ञभाजन–संज्ञा पुं० दे० "यज्ञपात्र"।
यज्ञभूमि–संज्ञा स्त्री० यज्ञ का स्थान। वह स्थान, जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञक्षेत्र।
यज्ञभूषण–संज्ञा पुं० कुश।
यज्ञभोक्ता–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञमंडप–संज्ञा पुं० यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ मंडप।
यज्ञमंडल–संज्ञा पुं० यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ स्थान।
यज्ञमंदिर–संज्ञा पुं० दे० "यज्ञशाला"।
यज्ञमय–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञमुख–संज्ञा पुं० यज्ञ का प्रारंभ।
यज्ञयूप–संज्ञा पुं० यज्ञ के बलिपशु बाँधने का खंभा।

यज्ञरस–संज्ञा पुं० सोमरस।
यज्ञराज–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
यज्ञलिंग–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।
यज्ञवराह–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञवल्ली–संज्ञा स्त्री० सोमलता।
यज्ञवाह–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।
यज्ञवाहन–संज्ञा पुं० १. यज्ञ करनेवाला। २. ब्राह्मण। ३. श्री विष्णु। ४. श्री शिव।
यज्ञवीर्य–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यज्ञवेदी–संज्ञा स्त्री० यज्ञ के लिए साफ की हुई भूमि।
यज्ञशत्रु–संज्ञा पुं० राक्षस।
यज्ञशाला–संज्ञा स्त्री० यज्ञमंडप। यज्ञ करने का स्थान।
यज्ञशास्त्र–संज्ञा पुं० यज्ञ तथा उनके कृत्यों को करने का विधान।
यज्ञशील–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला ब्राह्मण।
यज्ञसदन–संज्ञा पुं० दे० "यज्ञशाला"।
यज्ञसाधन–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञसूत्र–संज्ञा पुं० यज्ञोपवीत। जनेऊ।
यज्ञसेन–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञस्तम्भ–संज्ञा पुं० वह खम्भा, जिसमें बलि चढ़ाया जानेवाला पशु बाँधा जाता था।
यज्ञस्थाणु–संज्ञा पुं० दे० "यज्ञस्तम्भ।"
यज्ञहृदय–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञहोता–संज्ञा पुं० यज्ञ में देवताओं को आवाहन करनेवाला।
यज्ञांग–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञान्त–संज्ञा पुं० यज्ञ का अन्त। यज्ञ समाप्त होने के बाद का स्नान।
यज्ञात्मा–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यज्ञारि–संज्ञा पुं० श्रीशिव।
यज्ञाशन–संज्ञा पुं० देवता।
यज्ञिक–संज्ञा पुं० यज्ञ के प्रसादस्वरूप मिला हुआ पुत्र।
यज्ञीय–वि० यज्ञ-सम्बन्धी।
यज्ञेश्वर–संज्ञा पुं० विष्णु।
यज्ञोपवीत–संज्ञा पुं० १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. हिंदुओं में द्विजों का एक संस्कार। व्रतबन्ध। उपनयन।
यड़र–संज्ञा पुं० एक पक्षी।

यत्–अव्य० १. जितना। जहाँ तक। २. जो। जिसका।
यत–वि० १. नियमित। पाबंद। २. शासित। प्रतिबद्ध।
यतनीय–वि० यत्न करने योग्य।
यतव्रत–संज्ञा पुं० संयम से रहनेवाला।
यति–संज्ञा पुं० १. इंद्रियों पर विजय प्राप्त करनेवाला। २.संन्यासी। त्यागी। योगी। ३. ब्रह्मचारी। ४. छप्पय के ६६वें भेद का नाम। संज्ञा स्त्री० छंदों के चरणों में वह स्थान, जहाँ पढ़ते समय, लय ठीक रखने के लिए, थोड़ा विश्राम हो। विरति। विराम।
यतिधर्म–संज्ञा पुं० संन्यास।
यतिनी–संज्ञा स्त्री० १. संन्यासिनी। २. विधवा।
यतिभंग–संज्ञा पुं० छंद-रचना का वह दोष, जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।
यतिभ्रष्ट–संज्ञा पुं० वह छन्द, जिसमें यति-भंग का दोष हो।
यती–संज्ञा पुं० दे० "यति"। जितेन्द्रिय। संन्यासी।
संज्ञा स्त्री० १. रुकावट। २. छंदों का विराम-स्थान। ३. मनोविकार। ४. विधवा। ५. संधि।
यतीम–संज्ञा पुं० [अ०] जिसके माता-पिता न हों। अनाथ।
यतीमखाना–संज्ञा पुं० अनाथालय।
यत्किंचित्–क्रि० वि० थोड़ा-सा। कुछ।
यत्न–संज्ञा पुं० १. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २. उपाय। तदबीर। ३. रक्षा का प्रबन्ध। हिफाजत।
यत्नवान्–वि० प्रयत्नशील। यत्न करनेवाला।
यत्र–क्रि० वि० जिस जगह। जहाँ।
यत्रतत्र–क्रि० वि० जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। जगह-जगह। कई स्थानों में।
यत्रु–संज्ञा स्त्री० हँसली।
यथा–अव्य० जिस प्रकार। जैसे। ज्यों।
यथाकामी–संज्ञा पुं० स्वेच्छाचारी। मनमौजी।
यथाकारी–संज्ञा पुं० स्वेच्छाचारी। मन-मौजी।
यथाक्रम–क्रि० वि० क्रमशः। क्रमानुसार। तरतीबवार।
यथातथ्य–अव्य० ज्यों का त्यों। ठीक-ठीक। हू-ब-हू। जैसा हो, वैसा ही।
यथानियम–अव्य० नियमानुसार।
यथानुक्रम–वि० दे० "यथाक्रम"।
यथापूर्व–अव्य० जैसा पहले था, वैसा ही। ज्यों का त्यों। पूर्ववत्।
यथाभाग–अव्य० जितना चाहिए उतना।
यथामति–अव्य० बुद्धि के अनुसार। समझ के मुताबिक।
यथायोग्य–अव्य० जैसा चाहिए, वैसा। यथोचित। उपयुक्त। मुनासिब।
यथारथ*–अव्य० दे० "यथार्थ"।
यथारुचि–अव्य० रुचि के अनुसार। इच्छानुकूल।
यथार्थ–अव्य०, वि० [संज्ञा स्त्री० यथार्थता] १. ठीक। उचित। वाजिब। २. जैसा होना चाहिए, वैसा।
यथार्थतः–अव्य० यथार्थ में। सचमुच। वस्तुतः।
यथार्थता–संज्ञा स्त्री० सत्यता। वास्तविकता। असलियत।
यथार्थवाद–संज्ञा पुं० यथार्थ या सत्य वर्णन का सिद्धान्त। एक पश्चिमी साहित्यिक सिद्धान्त, जिसके अनुसार किसी वस्तु का यथार्थ अर्थात् ज्यों का त्यों वर्णन किया जाता है। (अंग्रे०–रियलिज्म)।
यथार्थवादी–संज्ञा पुं० यथार्थ या सत्य कहनेवाला। साहित्य में यथार्थवाद के सिद्धान्त का अनुयायी। (अंग्रे०–रियलिस्ट)।
यथालब्ध–वि० जितना मिल सके।
यथालाभ–वि० जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर। जो मिले, उसी के अनुसार।
यथावत्–अव्य० ज्यों का त्यों। जैसा था, वैसा ही। जैसा चाहिए, वैसा। अच्छी तरह।
यथावस्थित–अव्य०, वि० अचल। जैसा था वैसा।
यथाविधि–अव्य० विधि या नियम और तरीके के अनुसार ठीक। विधिवत्। विधिपूर्वक।

यथाविहित–अव्य० जैसा नियम हो, उसी के अनुसार।
यथाशक्य–अव्य० जहाँ तक हो सके। भरसक।
यथाशक्ति–अव्य० जहाँ तक हो सके। भरसक। शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार।
यथासंभव–अव्य० जहाँ तक हो सके। जितना हो सके। जितना होना सम्भव या मुमकिन हो।
यथासमय–अव्य० समय के अनुसार। ठीक समय पर। जैसा समय हो वैसा।
यथासाध्य–अव्य० दे० "यथाशक्ति"।
यथास्थान–अव्य० उचित स्थान पर। ठीक।
यथेच्छ–अव्य० इच्छा के अनुसार। मनमाना।
यथेच्छाचार–संज्ञा पुं० जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।
यथेच्छाचारी–संज्ञा पुं० मनमौजी।
यथेच्छित–वि० इच्छानुसार। यथेच्छ।
यथेष्ट–वि० जितने की इच्छा हो, उतना। जितना चाहिए, उतना। काफी। पूरा।
यथेष्टाचरण–संज्ञा पुं० स्वेच्छाचार।
यथोक्त–अव्य० जैसा कहा गया हो।
यथोक्तकारी–वि० शास्त्र के नियमों के अनुसार चलनेवाला। आज्ञाकारी।
यथोचित–वि० जैसा चाहिए, वैसा। ठीक।
यदपि*–अव्य० दे० "यद्यपि"।
यदा–अव्य० जिस समय। जब। जहाँ।
यदा कदा–अव्य० कभी-कभी। जब-तब।
यदि–अव्य० अगर। जो।
यदु–संज्ञा पुं० देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का बड़ा पुत्र जिसके वंश में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।
यदुनंदन–संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुनाथ–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यदुपति–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यदुराई–संज्ञा पुं० दे० "यदुराज"।
यदुराज–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यदुवंश–संज्ञा पुं० राजा यदु का कुल। यदु का खानदान।
यदुवंशमणि–संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुवंशी–संज्ञा पुं० यदुकुल में उत्पन्न। यदुकुल के लोग। यादव।
यदुवर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यदुवीर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
यदृच्छया–क्रि० वि० अकस्मात्। अचानक। दैवसंयोग से। मनमाने तौर पर।
यदृच्छा–संज्ञा स्त्री० १. स्वेच्छाचार। २. आकस्मिक संयोग।
यद्यपि–अव्य० ऐसा होने पर भी। यदि ऐसा है तो भी। अगरचे। गो कि।
यम–संज्ञा पुं० १. हिन्दुओं के अनुसार मृत्यु के देवता धर्मराज। २. एक साथ उत्पन्न होनेवाले बच्चे। यमज। ३. मन, इंद्रिय आदि को वश में रखना। निग्रह। ४. चित्त को धर्म में स्थिर रखनेवाले कर्मों का साधन। ५. दो की संख्या। ६. शनि। ७. कौआ।
यमक–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का शब्दालंकार (अनुप्रास) जिसमें एक ही शब्द कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। २. एक वृत्त। ३. सेना का एक व्यूह। ४. एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बालक। यमज। संयम। इन्द्रिय-निग्रह।
यमकातर–संज्ञा पुं० यम का छुरा या खाँड़ा। एक प्रकार की तलवार।
यमघंट–संज्ञा पुं० एक दुष्ट योग, जो कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है। दीपावली का दूसरा दिन।
यमचक्र–संज्ञा पुं० यमराज का शस्त्र।
यमज–संज्ञा प० १. एक साथ जन्मनेवाले दो बच्चों का जोड़ा। जौआँ। जुड़वाँ। २. अश्विनीकुमार। ३. ऐसा घोड़ा, जिसका एक अंग ठीक और एक दुर्बल हो।
यमजात–संज्ञा पुं० जुड़वाँ। एक साथ जन्मने वाले दो बच्चे। यमज।
यमजित्–संज्ञा पुं० यम या मृत्यु को जीतनेवाला। मृत्युंजय।
यमदंड–संज्ञा पुं० कालदंड। यमराज का दंड।
यमदग्नि–संज्ञा पुं० दे० "जमदग्नि"।
यम-द्वितीया–संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भैयादूज।
यमधार–संज्ञा पुं० दोनों ओर धारवाली तलवार या कटार। दुधारी तलवार।
यमन–संज्ञा पुं० १. प्रतिबन्ध करना। नियम से

बाँधना। विराम देना। ठहराना। बंद करना। यम।

यमनकल्याण–संज्ञा पुं० एक राग।

यमनाह*–संज्ञा पुं० धर्मराज।

यमनी–संज्ञा स्त्री० एक बहुमूल्य पत्थर।

यमपुर–संज्ञा पुं० दे० "यमलोक"।

यमपुरी–संज्ञा स्त्री० यमलोक।

यमपुरुष–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. यम के दूत।

यमभगिनी–संज्ञा स्त्री० यमुना नदी।

यमयन–संज्ञा पुं० श्रीशिव।

यम-यातना–संज्ञा स्त्री० १. नरक की पीड़ा। २. मृत्यु के समय की पीड़ा।

यमरथ–संज्ञा पुं० यम की सवारी। भैंसा।

यमराज–संज्ञा पुं० यमों के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे फल देते हैं।

यमल–संज्ञा पुं० १. युग्म। जोड़। २. यमज।

यमलार्जुन–संज्ञा पुं० कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव, जो नारद के शाप से पेड़ हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।

यमली–संज्ञा स्त्री० १. एक में मिली हुई दो चीजें। २. स्त्रियों का घाँघरा और चोली।

यमलोक–संज्ञा पुं० हिन्दुओं के अनुसार वह लोक, जहाँ मरने पर आत्माएँ जाती हैं। यमपुरी।

यमवाहन–संज्ञा पुं० यम की सवारी। भैंसा।

यमस्–संज्ञा पुं० सूर्य।
संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसके एक ही गर्भ से दो सन्तानें हों।

यमांतक–संज्ञा पुं० श्रीशिव।

यमानुजा–संज्ञा स्त्री० यमुना।

यमारि–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।

यमालय–संज्ञा पुं० यमपुरी।

यमी–संज्ञा पुं० संयम करनेवाला। संयमी।
संज्ञा स्त्री० यम की बहन, जो यमुना नदी होकर बही।

यमुना–संज्ञा स्त्री० १. उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी। २. दुर्गा। ३. यम की बहन यमी।

यमुनाभिद्–संज्ञा पुं० बलराम।

यमुनोत्तरी–संज्ञा पुं० हिमालय की एक श्रेणी, जहाँ से यमुना नदी निकली है।

यमेरुका–संज्ञा स्त्री० प्राचीन काल में घड़ी (समय की अवधि) पूरी होने पर बजाया जानेवाला घड़ियाल।

यमेश्वर–संज्ञा पुं० श्रीशिव।

ययाति–संज्ञा पुं० राजा नहुष के पुत्र एक प्राचीन राजा, जिनका विवाह शुक्राचार्य्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।

ययावर–संज्ञा पुं० १. साग्नि ब्राह्मण। २. याचना। ३. संन्यासी। ४. अश्वमेध का घोड़ा।

ययी–संज्ञा पुं० १. श्री शिव। २. घोड़ा। ३. मार्ग।

ययु–संज्ञा पुं० घोड़ा। अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

यलनाथ–संज्ञा पुं० राजा।

यला–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

यव–संज्ञा पुं० १. जौ (अन्न)। २. १२ सरसों या एक जौ की तौल। ३. एक नाप, जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ४. सामुद्रिक के अनुसार जौ के आकार की एक प्रकार की रेखा, जो उँगली में होती है (शुभ)।

यवक–संज्ञा पुं० दे० "यव"।

यवकलश–संज्ञा पुं० इन्द्रजौ।

यवक्षार–संज्ञा पुं० पौधों से निकला हुआ क्षार।

यवज–संज्ञा पुं० १. यवक्षार। २. गेहूँ का पौधा। ३. अजवाइन।

यवदोष–संज्ञा पुं० रत्नों में पड़ी हुई जौ के आकार की रेखा।

यवद्वीप–संज्ञा पुं० जावा द्वीप का प्राचीन नाम, जो प्रशान्त महासागर में मलय प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्व स्थित है।

यवन–संज्ञा पुं० [स्त्री० यवनी] १. यूनान देश का निवासी। यूनानी। २. अनार्य। ३. मुसलमान। ४. कालयवन नामक राजा।

यवनानी–वि० यवन देश-संबंधी।

यवनारि–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

यवनाल–संज्ञा स्त्री० ज्वार।

यवनिका–संज्ञा स्त्री० नाटक का परदा।

यवनी–संज्ञा स्त्री० यवन की स्त्री। यवन-जाति की स्त्री।
यवबिन्दु–संज्ञा पुं० ऐसा हीरा, जिसमें बिन्दु के साथ यव रेखा हो।
यवमद्य–संज्ञा पुं० जौ से बनाई गई शराब।
यवमती–संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त।
यवलक–संज्ञा पुं० एक पक्षी।
यवस–संज्ञा पुं० भूसा।
यवसुरा–संज्ञा स्त्री० जौ की शराब।
यवागू–संज्ञा पुं० १. ऐसा जौ या चावल का मांड, जिसमें खमीर उठाया गया हो। २. माँड़ की काँजी।
यवान–वि० तेज।
यविष्ठ–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. छोटा भाई। वि० कनिष्ठ।
यश–संज्ञा पुं० कीर्त्ति। सुख्याति। नेकनामी। बड़ाई। प्रशंसा।
मुहा०—यश गाना=१. प्रशंसा करना। २. एहसान मानना। यश मानना=कृतज्ञ होना।
यशब, यशम–संज्ञा पुं० [अ०]एक प्रकार का हरा पत्थर, जिसकी नादली बनती है।
यशस्वान्–वि० [स्त्री० यशस्विनी] यश :-प्राप्त। कीर्त्तिमान्। सुप्रसिद्ध। प्रतिष्ठावान्।
यशस्वी–वि० [स्त्री० यशस्विनी] जिसका खूब यश हो। कीर्त्तिमान्।
यशी–वि० दे० "यशस्वी"।
यशील‡*–वि० दे० "यशस्वी"।
यशुमति–संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
यशोद–संज्ञा पुं० पारा।
यशोदा–संज्ञा स्त्री० नंद की स्त्री, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।
यशोधरा–संज्ञा स्त्री० गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।
यशोमति, यशोमती–संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।
यशोमाधव–संज्ञा पुं० श्रीविष्णु।
यष्टि–संज्ञा स्त्री० १. लाठी। छड़ी। २. लकड़ी। ३. टहनी। शाखा। डाल। ४. जेठी मधु। मुलेठी।
यष्टिका–संज्ञा स्त्री० १. छड़ी। २. लकड़ी। ३. गले में पहनने का हार।
यष्टियंत्र–संज्ञा पुं० एक तरह की धूपघड़ी।
यष्टी–संज्ञा स्त्री० १. मुलेठी। २. गले में पहनने का एक प्रकार का का हार।
यह–सर्व० समीप की वस्तु को सूचित करनेवाला एक सर्वनाम।
यहाँ–क्रि० वि० इस स्थान पर। इस जगह।
यहि–सर्व०, वि० 'यह' का एक रूप, जो उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। 'ए' का विभक्ति-युक्त रूप। इसको।
यही–अव्य० निश्चित रूप से यह। यह ही।
यहूद–संज्ञा पुं० एशिया की पश्चिमी सीमा पर स्थित एक देश, जहाँ हजरत ईसा पैदा हुए थे। यरूशलम।
यहूदी–संज्ञा पुं० [स्त्री० यहूदिन] यहूद देश का निवासी। यहूद देश में रहनेवाली एक जाति।
यां†–क्रि० वि० दे० "यहाँ"।
यांचना–क्रि० स० याचना करना। माँगना।
यांचा–संज्ञा स्त्री० विनयपूर्वक माँगना।
यांत्रिक–वि० यंत्र सम्बन्धी। यंत्र या यंत्रों का। संज्ञा पुं० यंत्रों को बनाने, चलाने या सुधारनेवाला। यंत्र-विद्या का ज्ञाता। (अंग्रे०–मैकेनिक)
यंत्रीकरण–संज्ञा पुं० १. यंत्रों आदि से युक्त करना। २. कल कारखाने आदि स्थापित करना।
या–अव्य० [फा०] अथवा। वा। विकल्प-सूचक अव्यय।
सर्व, वि० 'यह' का वह रूप, जो उसे ब्रजभाषा में कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।
संज्ञा स्त्री० १. गति। चाल। २. गाड़ी। ३. रोक। ४. ध्यान। ५. प्राप्ति।
याक–संज्ञा पुं० पर्वतप्रदेश का एक पशु, जिसका उपयोग बैल की तरह किया जाता है।
याक़ूत–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर। लाल।
याग–संज्ञा पुं० यज्ञ।
याचक–संज्ञा पुं० याचना करनेवाला। माँगनेवाला। भिक्षुक। भिखमंगा।

याचना–क्रि० स० [वि० याच्य, याचक] पाने के लिए विनती करना। माँगना। संज्ञा स्त्री० माँगने की क्रिया।
याचित–वि० माँगा हुआ।
याजक–संज्ञा पुं० १. यज्ञ करनेवाला। पुरोहित। ऋत्विक्। याज्ञिक। २. मस्त हाथी। ३. राजा का हाथी।
याजन–संज्ञा पुं० यज्ञ की क्रिया।
याजी–संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला, याजक।
याजुष्य–वि० यजुर्वेद सम्बन्धी।
याज्य–वि० १. यज्ञ कराने लायक। २. यज्ञ में चढ़ाया हुआ। ३. यज्ञ कराने से प्राप्त।
याज्ञ–वि० यज्ञ-सम्बन्धी।
याज्ञवत्ति–संज्ञा पुं० कुबेर।
याज्ञवल्क्य–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध ऋषि, जो वैशंपायन के शिष्य थे। वाजसनेय। २. एक ऋषि। योगीश्वर याज्ञवल्क्य। ३. योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशज एक स्मृतिकार।
याज्ञिक–संज्ञा पुं० १. यज्ञ करने या करानेवाला। २. गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा।
यातन–संज्ञा पुं० बदला। पारितोषिक।
यातना–संज्ञा स्त्री० १. तकलीफ। अधिक कष्ट। पीड़ा। दुःख। २. दण्ड। ३. वह पीड़ा, जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।
यातव्य–वि० समीप होने के कारण चढ़ाई करने योग्य (शत्रु)।
याता–संज्ञा स्त्री० पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।
संज्ञा पुं० १. जानेवाला। २. सारथी। ३. हत्या करनेवाला।
यातायात–संज्ञा पु० आना-जाना। आमदरफ्त। एक स्थान से दूसरे स्थान को व्यक्ति तथा माल आदि के आने-जाने की क्रिया या उनके आने-जाने का साधन। (अंग्रे०–ट्रान्सपोर्ट या कम्यूनिकेशन)।
यातायात-विभाग–संज्ञा पु० यातायात के साधनों का प्रबन्ध और उन पर नियंत्रण रखनेवाला सरकारी महकमा।
यातु–संज्ञा पुं० १. आनेवाला। २. रास्ता चलनेवाला। पथिक। ३. काल। ४. राक्षस। ५. वायु। ६. कष्ट। यातना। ७. हिंसा। ८. अस्त्र।
यातुधान–संज्ञा पुं० राक्षस।
यात्रा–संज्ञा स्त्री० १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। २. प्रयाण। प्रस्थान। ३. दर्शन के लिए तीर्थ-स्थानों को जाना। तीर्थाटन।
यात्रावाल–संज्ञा पुं० वह पंडा, जो यात्रियों को देव-दर्शन कराता हो।
यात्री–संज्ञा पु० १. यात्रा करनेवाला। मुसाफिर। २. तीर्थ आदि स्थानों का भ्रमण करनेवाला।
याथातथ्य–संज्ञा पुं० यथातथ्य होने का भाव। ज्यों का त्यों होना।
याद–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्मरणशक्ति। स्मृति। २. स्मरण करने की क्रिया।
यादगार–संज्ञा स्त्री० [फा०] याद दिलानेवाली या याद रखने की निशानी। स्मृति-चिह्न। स्मारक।
याददाश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्मरण-शक्ति। स्मृति। २. स्मरण रखने के लिए लिखी हुई कोई बात।
यादव–संज्ञा पुं० [स्त्री० यादवी] १. यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।
वि० यदु-सम्बन्धी।
यादृश–वि० जिस तरह का। जैसा।
यान–संज्ञा पुं० १. गाड़ी, रथ आदि सवारी। वाहन। २. विमान। हवाई जहाज। ३. शत्रु पर चढ़ाई। ४. अभियान। गति।
यानभत्ता–संज्ञा पुं० कहीं आने-जाने को सवारी के खर्च के लिए दिया जानेवाला भत्ता। (अंग्रे०–कनवेएन्स एलाउन्स)
यानी, याने–अव्य० अर्थात्। मतलब यह कि।
यापन–संज्ञा पु० [वि० यापित, याप्य] १. चलाना। २. व्यतीत करना। बिताना। समय काटना।
यापित–वि० व्यतीत किया हुआ। बिताया हुआ (समय)।
याबू–संज्ञा पुं० [फा०] छोटा घोड़ा। टट्टू।
याबूक–संज्ञा पुं० लाल रंग। महावर।
याम–संज्ञा पुं० १. तीन घंटे का समय।

पहर। २. एक प्रकार के देवगण। ३. काल। समय।
संज्ञा स्त्री० दे० "यामि"। रात।
यामल—संज्ञा पुं० १. यमज संतान। जोड़ा। २. एक प्रकार का तंत्र-ग्रंथ।
यामा—संज्ञा स्त्री० दे० "यामि"। रात। याम का स्त्रीलिंग।
यामि—संज्ञा स्त्री० १. रात। २. कुलवधू। ३. बहन। ४. कन्या।
यामिका—संज्ञा स्त्री० रात।
यामिन, यामिनि—संज्ञा स्त्री० दे० "यामिनी"।
यामिनी—संज्ञा स्त्री० रात।
याम्य—वि० १. यम-संबंधी। यम का। २. दक्षिण का।
याम्योत्तर दिगंश—संज्ञा पुं० लंबांश। दिगंश (भूगोल, खगोल)।
याम्योत्तर रेखा—संज्ञा स्त्री० वह कल्पित रेखा, जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर मानी गई है।
यायावर—संज्ञा पुं० १. एक स्थान पर रुककर न रहनेवाला। संन्यासी। २. ब्राह्मण। ३. अश्वमेध का घोड़ा।
यार—संज्ञा पुं० [फा०] १. मित्र। दोस्त। २. उपपति। जार।
याराना—संज्ञा पुं० [फा०] मित्रता। मैत्री। दोस्ती।
वि० मित्र का-सा। मित्रता का।
यारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मित्रता। २. स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।
याल—संज्ञा पुं० दे० "अयाल"। पहाड़ी पशुओं की गरदन पर के बाल।
यावज्जीवन—अव्य० जीवन-पर्यन्त। जब तक जीवित रहे। जीवन भर।
यावत्—वि० १. जितना। २. सब। कुल।
क्रि० वि० जब तक। जिस समय तक।
यावनी—वि० यवन-संबंधी।
यासु*—सर्व० दे० "जासु"।
यास्क—संज्ञा पुं० वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
याहि*†—सर्व० इसको। इसे।
युंजान—संज्ञा पुं० अभ्यास करनेवाला योगी।
युक्त—वि० १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। सम्मिलित। २. नियुक्त। मुकर्रर। ३. संयुक्त। साथ। ४. उचित। ठीक। मुनासिब।
युक्ता—संज्ञा स्त्री० दो नगण और एक मगण का एक वृत्त।
युक्ति—संज्ञा स्त्री० १. उपाय। ढंग। तरकीब। २. कौशल। चातुरी। ३. चाल। रीति। प्रथा। ४. मेल। ५. न्याय। ६. नीति। ७. तर्क। दलील। ८. योग। मिलन। ९. एक अलंकार, जिसमें अपने मर्म को छिपाने के लिए दूसरे को किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वंचित करने का वर्णन होता है। केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।
युक्तियुक्त—वि० तर्क के अनुकूल। युक्तिसंगत। ठीक। वाजिब।
युग—संज्ञा पुं० १. काल। समय। २. जोड़ा। युग्म। ३. बारह वर्ष का काल। ४. पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये संख्या में चार माने गए हैं—सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। ५. जुआ। जुआठा। पाँसे के खेल की गोल गोटियाँ। ६. पाँसे के खेल की वे दो गोटियाँ, जो एक घर में साथ-साथ एक आ बैठती हैं।
मुहा०—युग युग=बहुत दिनों तक। युग-धर्म=समय के अनुसार चाल या व्यवहार।
युगति*†—संज्ञा स्त्री० दे० "युक्ति"।
युगपत्—अव्य० साथ-साथ।
युगम*—संज्ञा पुं० दे० "युग्म"।
युगल—संज्ञा पुं० जोड़ा। युग्म।
युगान्त—संज्ञा पुं० १. युग का अन्तिम समय। २. युग का अन्त यानी प्रलय।
युगान्तक—संज्ञा पुं० प्रलयकाल।
युगान्तर—संज्ञा पुं० १. युगपरिवर्त्तन। २. दो युगों के बीच का संधिकाल। ३. दूसरा युग। दूसरा समय या जमाना।
मुहा०—युगांतर उपस्थित करना=किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना।
युगादि—संज्ञा पुं० सृष्टि का आरम्भ।
वि० प्राचीन। युग के आरम्भ का।

युगाद्या—संज्ञा स्त्री० वह तिथि, जिससे किसी युग का आरम्भ हुआ हो।

युग्म—संज्ञा पुं० १. जोड़ा। २. युगल। द्वंद्व। ३. मिथुन राशि।

युग्मक—संज्ञा पुं० [भा० संज्ञा स्त्री० युग्मता] युग्म। जोड़ा।

युग्मज—संज्ञा पुं० जुड़वाँ। यमज। एक गर्भ से उत्पन्न हुए दो बच्चे।

युत—वि० युक्त। सहित। मिला हुआ। मिलित।

युति—संज्ञा स्त्री० योग। मिलन। मिलाप।

युद्ध—संज्ञा पुं० विपक्षी सैनिकों की लड़ाई। संग्राम। रण। लड़ाई।

युद्धपोत—संज्ञा पुं० लड़ाई का जहाज, जिस पर तोपें आदि लगी रहती हैं।

युद्धमंत्री—संज्ञा पुं० राज्य का वह मंत्री जिसके अधीन युद्ध-विभाग हो।

युद्धमान—वि० युद्ध करनेवाला।

युधान—संज्ञा पुं० १. क्षत्रिय। २. शत्रु। दुश्मन।

युधिष्ठिर—संज्ञा पुं० पाँचों पांडवों में सबसे बड़े और बहुत धर्मपरायण।

युध्म—संज्ञा पुं० १. युद्ध। संग्राम। लड़ाई। २. धनुष। ३. अस्त्रशस्त्र। ४. बाण। ५. योद्धा।

युयु—संज्ञा पुं० घोड़ा।

युयुत्सा—संज्ञा स्त्री० युद्ध करने की इच्छा। शत्रुता। विरोध।

युयुत्सु—वि० १. लड़ने की इच्छा रखनेवाला। २. जो लड़ना चाहता हो।

युयुधान—संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. क्षत्रिय। ३. योद्धा।

युरोप, योरप, योरोप—संज्ञा पुं० एक महाद्वीप, जो एशिया के पश्चिम में है।

युरोपीय, योरपीय, योरोपीय—वि० यूरोप का। यूरोप-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० यूरोप का निवासी।

युवक—संज्ञा पुं० जवान। सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य। युवा।

युवति, युवती—संज्ञा स्त्री० जवान स्त्री। तरुणी।

युवन—संज्ञा पुं० तरुण।

युवन्यु—वि० जवान।

युवराई*—संज्ञा स्त्री० दे० "युवराजी"।

युवराज—संज्ञा पुं० [स्त्री० युवराज्ञी] राजा का सबसे बड़ा लड़का जिसे भविष्य में राज्य मिलनेवाला हो।

युवराजी—संज्ञा स्त्री० १. युवराज का पद। २. युवराज का राज्य।

युवराज्ञी—संज्ञा स्त्री० युवराज की पत्नी। युवरानी।

युवरानी—संज्ञा स्त्री० युवराज की पत्नी।

युवा—वि० [स्त्री० युवती] जवान। युवक।

यूं†—अव्य० दे० "यों"।

यू—संज्ञा स्त्री० पकी हुई दाल का पानी। जूस।

यूत—संज्ञा पुं० मिलावट। मिश्रण। मेल।

यूति—संज्ञा स्त्री० मिश्रण।

यूथ—संज्ञा पुं० १. समूह। झुण्ड। गिरोह। दल। २. सेना। फौज।

यूथप, यूथपति—संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. समुदाय का मालिक।

यूथिका—संज्ञा स्त्री० जूही का फूल।

यूनान—संज्ञा पुं० यूरोप का एक देश (ग्रीस), जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिए प्रसिद्ध था।

यूनानी—वि० यूनान देश-संबंधी। यूनान का।
संज्ञा स्त्री० १. यूनान देश की भाषा। २. यूनान देश का निवासी। ३. यूनान देश की चिकित्सा-प्रणाली। हकीमी।

यूनिवर्सिटी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] विश्व-विद्यालय।

यूप—संज्ञा पुं० १. यज्ञ में वह खंभा, जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है। २. विजय-स्तम्भ।

यूपा†—संज्ञा पुं० जूआ। द्यूतकर्म।

यूह*†—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

ये—सर्व० 'यह' सर्वनाम का बहुवचन। यह सब।

येई*†—सर्व० यही।

येऊ†—सर्व० यह भी।

येतो*†—वि० दे० "इतना"।

येन केन प्रकारेण—क्रि० वि० जैसे-तैसे। जिस तरह से भी हो। किसी तरह से।

येहू*†—अव्य० यह भी।
यों०—अव्य० ऐसे। इस तरह पर। इस भाँति।
यों ही—अव्य० १. इसी प्रकार से। ऐसे ही। २. बिना काम। व्यर्थ ही। बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।
योग—संज्ञा पुं० १. तप और ध्यान। वैराग्य। मुक्ति या मोक्ष का उपाय। २. चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकने का सिद्धान्त। (दर्शन) ३. छः दर्शनों में से एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन होने का विधान है। चित्तवृत्ति-निरोध। ४. संयोग। ५. सम्बन्ध। मेल। ६. उपाय। तरकीब। ७. ध्यान। ८. संगति। ९. प्रेम। १०. छल। धोखा। दगाबाजी। ११. प्रयोग। १२. औषध। दवा। १३. धन। दौलत। १४. लाभ। फायदा। १५. शुभ अवसर। मौका। १६. नियम। १७. कायदा। साम, दाम, दंड और भेद ये चारों उपाय। १८. धन और संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। १९. गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़। २०. एक प्रकार का छंद। २१. सुभीता। सुयोग। २२. फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर।
योगक्षेम—संज्ञा पुं० १. कुशल-मंगल। खैरियत। २. जो अपने पास न हो उसे प्राप्त करने का उद्योग और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना। ३. जीवन-निर्वाह। गुजारा। ४. दूसरे के धन की रक्षा। ५. मुनाफा। लाभ। ६. राष्ट्र की सुव्यवस्था। मुल्क का अच्छा इन्तजाम।
योगतत्त्व—संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।
योगत्व—संज्ञा पुं० योग का भाव।
योगदर्शन—संज्ञा पुं० १. छः दर्शनों में एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान है। २. पतंजलि-द्वारा रचित चित्तवृत्तियों को चंचल होने से रोकने के सिद्धान्त का ग्रंथ। दे० "योगशास्त्र"।
योग-दान—संज्ञा पुं० सहयोग देना। किसी काम में साथ देना या सहायक होना।
योगनिद्रा—संज्ञा स्त्री० १. योग की समाधि। २. युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा मानी जाती है।
योगफल—संज्ञा पुं० दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या।
योगबल—संज्ञा पुं० वह शक्ति जो, योग की साधना से प्राप्त हो। तपोबल।
योगमाया—संज्ञा स्त्री० १. श्रीविष्णु की माया। भगवती। २. वह कन्या, जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मार डाला था।
योगरूढ़ि—संज्ञा स्त्री० दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द, जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे।
योगवाशिष्ठ—संज्ञा पुं० वेदांत शास्त्र का वशिष्ठ-कृत एक प्रसिद्ध ग्रंथ।
योगशास्त्र—संज्ञा पुं० पतंजलि ऋषिकृत योग-साधन पर एक दर्शन, जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए गए हैं।
योगसूत्र—संज्ञा पुं० महर्षि पतंजलि के बनाए हुए योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह।
योगांजन—संज्ञा पुं० दे० "सिद्धांजन"।
योगात्मा—संज्ञा पुं० योगी।
योगाभ्यास—संज्ञा पुं० योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।
योगाभ्यासी—संज्ञा पुं० योगी।
योगासन—संज्ञा पुं० योग-साधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग।
योगिनी—संज्ञा स्त्री० १. रण-पिशाची। २. योगाभ्यासिनी। तपस्विनी। ३. आठ-विशिष्ट देवियाँ—शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंद-माता, कालरात्रि, चंडिका, कूष्मांडी, कात्या-यनी और महागौरी। ४. देवी। योगमाया।
योगिराज, योगीन्द्र—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी।
योगी—संज्ञा पुं० १. आत्मज्ञानी, जिसने योगा-भ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो। २. महादेव। शिव।
योगीश, योगीश्वर—संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा
योगेश्वरी—संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
योगेंद्र—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी। योगी। २. याज्ञवल्क्य।
योगेश—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी।
योगेश्वर—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. बहुत बड़ा योगी। सिद्ध।

योग्य—वि० १. काबिल। लायक। बुद्धिमान् और कुशल। २. अधिकारी। ३. श्रेष्ठ। अच्छा। युक्त। उचित। मुनासिब। ठीक। ४. उपाय करनेवाला। ५. आदरणीय। ६. माननीय।

योग्यता—संज्ञा स्त्री० १. क्षमता। किसी काम को करने या समझने की शक्ति या गुण। सामर्थ्य। २. बुद्धिमानी। लियाकत। ३. अनुकूलता। गुण। ४. उपयुक्तता।

योजक—वि० मिलाने या जोड़नेवाला। योजना बनानेवाला या योजना करनेवाला।

योजन—संज्ञा पुं० १. दूरी की एक नाप, जो दो कोस, चार कोस या आठ कोस की होती है। २. योग। संयोग। ३. मिलाना। ४. किसी काम में लगाना। ५. धन-सम्पत्ति काम में ले आना या अपना लेना।

योजनगंधा—संज्ञा स्त्री० व्यास की माता और शांतनु की पत्नी, सत्यवती।

योजना—संज्ञा स्त्री० [वि० योजनीय, योजित] १. भावी कार्यों की व्यवस्था। आयोजन। २. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। ३. प्रयोग। व्यवहार। ४. जोड़। मिलान। मेल। ५. बनावट। रचना।

योजनीय—वि० १. मिलाने योग्य। वह वस्तु जिसे मिलाना हो। २. योजना करने योग्य। जिसकी योजना बनाई जाय।

योजित—वि० १. जिसकी योजना की गई हो। २. नियमबद्ध। नियमित। ३. रचित।

योज्य—वि० १. दे० "योजनीय"। २. व्यवहार करने योग्य। ३. जोड़ने या मिलाने योग्य।

योद्धव्य—वि० जिससे युद्ध करना हो।

योद्धा—संज्ञा पुं० युद्ध करनेवाला। शूरवीर। सैनिक।

योनि—संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति-स्थान। उद्गम। स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। २. प्राणियों के बिभाग या वर्ग, जिनकी संख्या ८४ लाख कही गई है। ३. देह। शरीर। ४. आकर। खानि।

योनिज—संज्ञा पुं० योनि से उत्पन्न। वह जीव, जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो।

योम—संज्ञा पुं० [फा०] १. दिन। २. रोज। ३. तिथि। तारीख।

योरोप—संज्ञा पुं० दे० "युरोप"।

योषणा—संज्ञा स्त्री० दुराचारिणी। बदचलन स्त्री।

योषा—संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

योषिता—संज्ञा स्त्री० नारी। औरत।

यौं*†—अव्य० दे० "यों"।

यौ*†—सर्व० यह।

यौक्तिक—वि० युक्ति-सम्बन्धी। युक्ति के अनुकूल। ठीक।

यौगिक—संज्ञा पुं० १. मिला हुआ। २. प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। ३. दो शब्दों से मिलाकर बना हुआ शब्द। ४. २८ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

यौजनिक—वि० एक योजन तक जानेवाला।

यौतुक—संज्ञा पुं० १. वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो। दाइजा। दहेज। २. विवाह के अवसर पर कन्यापक्ष की ओर से वरपक्ष को दिया जानेवाला धन। ३. अन्नप्राशन आदि संस्कारों के समय जिसका संस्कार हो, उसे मिलनेवाला धन।

यौथिक—वि० १. यूथ सम्बन्धी २. झुंड बाँधकर रहनेवाला।

यौध—संज्ञा पुं० योद्धा।

यौद्धिक—वि० युद्ध-सम्बन्धी। युद्ध का।

यौधेय—संज्ञा पुं० १. योद्धा। २. एक प्राचीन देश का नाम। प्राचीन काल की एक योद्धा जाति।

यौवन—संज्ञा पुं० १. जवानी। बाल्यावस्था के उपरान्त और वृद्धावस्था के बीच की अवस्था। २. युवा होने का भाव। ३. दे० "जोबन"।

यौवनकंटक—संज्ञा पुं० मुँहासा।

यौवनलक्षण—संज्ञा पुं० १. जवानी आने या फूटने का चिह्न। २. लावण्य। ३. स्त्रियों की छाती।

यौवनारूढ़ा—वि० युवती।

यौवनिक—वि० यौवन-सम्बन्धी।

यौवराजिक—वि० युवराज-सम्बन्धी।

यौवराज्य–संज्ञा पुं० १. राजा का ज्येष्ठ पुत्र। २. युवराज होने का भाव। ३. युवराज का पद।

यौवराज्याभिषेक–संज्ञा पुं० युवराज बनाए जाने के समय का अभिषेक (पद-ग्रहण का उत्सव)

र

र–हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन, जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है। संज्ञा पुं० १. पावक। अग्नि। २. कामाग्नि। ३. सितार का एक बोल।

रंक–वि० १. गरीब। कंगाल। दरिद्र। धनहीन। २. कृपण। कंजूस। ३. सुस्त। काहिल।

रंग–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु, जिससे कोई वस्तु रँगी जाय। २. वर्ण। जैसे–लाल, काला। ३. बदन और चेहरे की रंगत। ४. शोभा, रौनक। छवि। सौन्दर्य। ५. प्रभाव। असर। धाक। ६. जवानी। युवावस्था। ७. मन की उमंग। आनन्द। मौज। ८. क्रीड़ा-कौतुक। ९. नृत्य-गीत आदि। नाचना-गाना। १०. नृत्य या अभिनय का स्थान। ११. युद्ध। लड़ाई। १२. युद्ध-स्थान। रणक्षेत्र। १३. दशा। हालत। अद्भुत व्यापार। काण्ड। १४. दृश्य। १५. कृपा। दया। १६. अनुराग। १७. ढंग। चाल। तर्ज। १८. भाँति। प्रकार। तरह। १९. ताश के पत्तों या चौपड़ की गोटियों आदि के खेल के विभाग में एक।

मुहा०–(चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना=भय या लज्जा से चेहरा फीका पड़ना। रंग काछना=१. चाल चलना। २. ढंग अख्तियार करना। रंग चूना या टपकना=युवावस्था का पूर्ण विकास होना। यौवन उमड़ना। रंग जमना=१. प्रभाव या असर पड़ना। २. खूब मजा होना। आनन्द का पूर्णता पर आना। रंग जमाना या बाँधना=प्रभाव डालना। रंग लाना=प्रभाव या गुण दिखलाना। रंग निखरना=चेहरा साफ और चमकदार होना। रंग बदलना=क्रुद्ध होना। नाराज होना।

यौ०—रंगरलियाँ=आमोद-प्रमोद। मौज। रंग रलना=आमोद-प्रमोद करना। रंग में भंग पड़ना=आनंद में विघ्न पड़ना। रंग मचाना=१. रण में खूब युद्ध करना। २. धूम मचाना। रंग रचाना=उत्सव करना। रंग मारना=बाजी जीतना। विजय पाना। रंग-ढंग=१. दशा। हालत। २. चाल-ढाल। तौर-तरीका। ३. व्यवहार। बरताव। ४. लक्षण।

रंगक्षेत्र–संज्ञा पुं० दे० "रंगभूमि"।

रंगचर–संज्ञा पुं० नाटक में अभिनय करने-वाला। नट।

रंगत–संज्ञा स्त्री० १. हालत। दशा। अवस्था। २. रंग का भाव। ३. मजा। आनंद।

रंगतरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। संतरा।

रंगन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष।

रँगना–क्रि० स० १. रंग में डुबाकर किसी चीज को रंगीन करना। रंग चढ़ाना। २. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ३. अपने अनुकूल करना। अपना-सा बनाना।

क्रि० अ० किसी पर आसक्त होना।

रंगबाती–संज्ञा स्त्री० शरीर पर लगाने के लिए सुगंधित या खुशबूदार द्रव्य की बत्ती।

रंगबिरंग–वि० १. अनेक रंगों का। २. तरह-तरह का।

रंगबिरंगा–वि० १. अनेक रंगों का। २. तरह-तरह का।

रंगभवन–संज्ञा पुं० रंगमहल। आमोद-प्रमोद का स्थान। भोग-विलास करने का स्थान।

रंगभूमि–संज्ञा स्त्री० १. जलसा या उत्सव का स्थान। २. खेलकूद या तमाशे का स्थान। ३. नाटक करने का स्थान। नाट्यशाला। ४. लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। रणभूमि।

रंगमहल–संज्ञा पुं० वह महल या बड़ा भवन,

जिसमें भोगविलास या आमोद-प्रमोद किया जाय।

रंगमार–संज्ञा पुं० ताश का एक खेल, जिसमें रंग से पत्तों को मारते हैं।

रंग-रली–संज्ञा स्त्री० ऐश-आराम। आनंद-क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद। मौज।

रंगरस–संज्ञा पुं० दे० "रंगरली"।

रंगरसिया–संज्ञा पुं० भोग-विलास या आमोद-प्रमोद में लिप्त रहनेवाला। विलासी व्यक्ति।

रँगराता–वि० १. अनुराग या प्रेम में डूबा हुआ। २. भोग-विलास या ऐश-आराम में मस्त रहनेवाला।

रँगरूट–संज्ञा पुं० [अंग्रे० रिक्रूट] १.फौज और पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला व्यक्ति। २. किसी काम को पहले पहल सीखनेवाला। नौसिखिया।

रँगरेज–संज्ञा पुं० [स्त्री० रँगरेजिन] कपड़े रँगने का काम या पेशा करनेवाला। रँगसाज।

रँगरेली†–संज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली"।

रँगवाई–संज्ञा स्त्री० १. रँगने का काम या इसकी मज़दूरी। २. रँगाई।

रँगवाना–क्रि० स० रँगने का काम दूसरे से कराना।

रंगशाला–संज्ञा स्त्री० नाट्यशाला। नाटक करने का स्थान। रंगभूमि।

रंगसाज़–संज्ञा पुं० रंग चढ़ाने या बनानेवाला।

रंगाई–संज्ञा स्त्री० रँगने का कार्य या मजदूरी।

रँगाना–क्रि० स० रँगने का काम दूसरे से कराना। दे० "रँगवाना"।

रंगालय–संज्ञा पुं० दे० "रंगशाला"।

रँगावट–संज्ञा स्त्री० रंगने का भाव या रंगने की क्रिया।

ंगावतरी–संज्ञा पुं० अभिनय करनेवाला।

ा–संज्ञा स्त्री० रँगरेज। कपड़ा रंगने का काम करनेवाला।

ा–वि० दे० "रँगीला"। मौजी। विनोदी। आनन्द में मस्त रहनेवाला।

ा–वि० [फ़ा०] [भाव० संज्ञा रंगीनी] १. रँगा हुआ। रंगदार। २. चमकीला। ३. मजेदार। ४. रँगीला। मौजी। ५. विलासी।

रँगीला–वि० [स्त्री० रँगीली] १. रसिक। मौजी। २. सुन्दर। ३. प्रेमी।

रँगैया–संज्ञा पुं० रँगनेवाला।

रंच, रंचक*–वि० थोड़ा। अल्प। जरा-सा। किंचित्।

रंज–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० रंजीदा] दुःख। खेद। शोक।

रंजक–वि० संज्ञा पुं० १. रँगनेवाला। रँगसाज। रँगने का रोजगार करनेवाला। २. प्रसन्न करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० १. थोड़ी-सी बारूद, जो बत्ती लगाने के लिए बंदूक की प्याली पर रखी जाती है। २. किसी को भड़कानेवाली बात।

रंजन–संज्ञा पुं० १. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। २. रँगने की क्रिया। ३. रंग बनाने का पदार्थ। ४. लाल चंदन।

रंजना*–क्रि० स० १. प्रसन्न करना। आनंदित करना। २. भजना। स्मरण करना। ३. रँगना।

रंजनीय–वि० १. आनन्ददायक। २. रँगने योग्य।

रंजित–वि० १. रँगा हुआ। २. प्रसन्न। आनन्दित। ३. अनुरक्त।

रंजिश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रंज होने का भाव। वैर। मन-मुटाव।

रंजीदा–वि० [फ़ा०] [संज्ञा रंजीदगी] १.जिसे रंज हो। दुखी। शोकपूर्ण। उदास। २. नाराज।

रण्ड–वि० १. धूर्त। २. बेचैन।

रण्डा–वि० राँड़। विधवा।

रँड़ापा–संज्ञा पुं० राँड़ या विधवा होने की दशा। वैधव्य।

रंडी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।

रंडीबाज़–संज्ञा पुं० वेश्यागामी। वेश्या से सम्भोग आदि करनेवाला।

रंडीबाजी–संज्ञा पुं० वेश्यागमन। वेश्या से सम्भोग आदि करने की आदत।

रँडुआ, रँडूवा–संज्ञा पुं० वह पुरुष, जिसकी स्त्री मर गई हो। विधुर।

रंता*†–वि० अनुरक्त ।

रंति–संज्ञा स्त्री० केलि। क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद ।

रंतु–संज्ञा स्त्री० १. नदी। २. सड़क।

रंद–संज्ञा पुं० १. रोशनदान । २. किले की दीवारों का वह छेद जिसमें से बंदूक या तोप चलाई जाती है।

रंदना–क्रि० स० रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना। रंदा फेरना।

रंदा–संज्ञा पुं० एक औजार, जिससे लकड़ी छीलकर चिकनी की जाती है ।

रंधक–संज्ञा पुं० १. रसोइया। रसोई बनानेवाला। २. नष्ट करनेवाला। नाशक।

रंधन–संज्ञा पुं० १. पकाना। भोजन बनाना। २. नष्ट करना।

रंधित–वि० १. पकाया हुआ। २. नष्ट।

रंध्र–संज्ञा पुं० १. छेद। सूराख। २. दोष।

रंभ–संज्ञा पुं० १. हलचल। २. बाँस। ३. एक प्रकार का बाण।

रंभण–क्रि० स० १. आलिंगन। गले से लिपटाना। २. रँभाना। गाय का बोलना।

रंभा–संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। २. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा। ३. केला। ४. गौरी। ५. उत्तर दिशा। ६. गाय का रँभाना। संज्ञा पुं० लोहे का मोटा भारी डंडा, जिससे दीवार आदि खोदते हैं ।

रँभाना–क्रि० अ० गाय का बोलना ।

रंभापति–संज्ञा पुं० इन्द्र ।

रंभाफल–संज्ञा पुं० केला ।

रंभी–संज्ञा पुं० १. दण्डधारी। द्वारपाल। २. वृद्ध। बूढ़ा ।

रंभोरु–वि० केले के वृक्ष की तरह जाँघोंवाली (स्त्री)। सुन्दर ।

रँह–संज्ञा पुं० वेग ।

रँहचटा–संज्ञा पुं० १. लालच। २. चस्का। मनोरथ पूरा करने की लालसा ।

रअय्यत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया ।

रइनि*†–संज्ञा स्त्री० रैन। रात।

रई–संज्ञा स्त्री० १. मथानी। दही मथने की लकड़ी। खैलर। २. दरदरा आटा। सूजी। ३. चूर्णमात्र।
वि० १. डूबी हुई । पगी हुई। २. अनुरक्त। ३. सहित। संयुक्त। मिली हुई।

रईस–संज्ञा पुं० [अ०] जिसके पास रियासत या इलाका हो। तअल्लुकेदार। बड़ा आदमी। अमीर। धनी ।

रउताई*†–संज्ञा स्त्री० मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व ।

रउरे†–सर्व० मध्यम पुरुष के लिए आदरसूचक शब्द। आप। जनाब।

रकत*–संज्ञा पुं० दे० "रक्त"। लहू। खून। वि० लाल। सुर्ख।

रक़बा–संज्ञा पुं० [अ०] क्षेत्र-फल। किसी स्थान की लम्बाई-चौड़ाई का वर्गफल।

रक़म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. धन। रुपया-पैसा। संपत्ति। दौलत। २. गहना। जेवर। ३. लिखने की क्रिया या भाव। ४. रुपया या बीघा बिस्वा आदि लिखने के फारसी के विशिष्ट अंक। ५. संख्या। ६. परिमाण। ७. लगान की दर। ८. छाप। मोहर। ९. चालाक। १०. धूर्त्त। ११. प्रकार। तरह।

रकाब–संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़ों की काठी का पावदान।

मुहा०—रकाब पर या रकाब में पैर रखना=चलने के लिए बिलकुल तैयार होना।

रकाबदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. साईस। रकाब पकड़ कर घोड़े पर चढ़ानेवाला। २. बादशाहों के साथ खाना लेकर चलनेवाला। खानसामाँ। ३. हलवाई।

रकाबा–संज्ञा पुं० [फा०] बड़ी थाली।

रकाबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की छिछली तश्तरी।

रक़ीब–संज्ञा पुं० [अ०] प्रेमिका का दूसरा प्रेमी ।

रकेबी–संज्ञा स्त्री० दे० "रकाबी" ।

रक्त–संज्ञा पुं० १. लाल रंग का वह तरल पदार्थ, जो शरीर की नसों आदि में से होकर बहा करता है। खून। लहू। रुधिर। २. कुंकुम ३. केसर। ४. ताँबा। ५. कमल। ६. सिंदूर। ७. शिंगरफ। ८. ईंगुर। ९. लाल चंदन। १०. लाल रंग। ११. कुसुंभ।

वि० १. अनुरक्त। लीन। २. रँगा हुआ। ३. लाल। ४. सुर्ख। साफ किया हुआ।
रक्त आमातिसार–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पेट की बीमारी जिसमें लाल दस्त होते हैं।
रक्तकंठ–संज्ञा पुं० १. कोयल। २. भाँटा। बैंगन।
रक्तक–संज्ञा पुं० १. गुल दुपहरिया। २. लाल सहजन। ३. लाल कपड़ा। ४. लाल रंग का घोड़ा। केसर। कुंकुम।
वि० १. लाल रंग का। २. प्रेमी। ३. मसखरा। विनोदी।
रक्तकदली–संज्ञा स्त्री० चंपाकली।
रक्तकमल–संज्ञा पुं० लाल कमल।
रक्तकुमुद–संज्ञा पुं० कुईं। बीलोफर।
रक्तकुसुम–संज्ञा पुं० १. कचनार। २. आक। ३. धामिन का पेड़। ४. फरहद का पेड़।
रक्तकेशी–वि० लाल बालोंवाला।
रक्तकैरव–संज्ञा पुं० लाल कुमुद।
रक्तकोकनद–संज्ञा पुं० लाल कमल।
रक्तगंधा–संज्ञा स्त्री० असगंध।
रक्तगैरिक–संज्ञा पुं० गेरू।
रक्तग्रीव–संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. कबूतर।
रक्तघ्न–संज्ञा पुं० लोध वृक्ष।
रक्तचंचु–संज्ञा पुं० तोता। जिसकी चोंच लाल हो।
रक्तचंदन–संज्ञा पुं० लाल चंदन।
रक्तज–वि० खून से उत्पन्न। रक्त के विकार से उत्पन्न होनेवाली एक बीमारी।
रक्ततर–संज्ञा पुं० गेरू।
रक्तता–संज्ञा स्त्री० लाली। सुर्खी।
रक्ततुंड–संज्ञा पुं० तोता।
रक्तनयन, रक्तनेत्र–संज्ञा पुं० १. चकोर। २. कबूतर। ३. सारस। ४. लाल आँखोंवाला।
रक्तप–वि० खून पीनेवाला। राक्षस।
रक्तपात–संज्ञा पुं० ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें चोट से लोगों के खून बहने लगे। खून-खराबी। मारकाट।
रक्तपायी–वि० [स्त्री० रक्तपायिनी] खून पीनेवाला।
रक्तपित्त–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बीमारी, जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से खून गिरता है। नाक से खून बहना। नकसीर।
रक्तपुच्छ–संज्ञा पुं० गरुड़।
रक्तपुष्प–संज्ञा पुं० १. कनेर। २. गुल दुपहरिया। ३. अनार का पेड़। ४. पुन्नाग।
रक्तपुष्पक–संज्ञा पुं० १. पलास। २. सेमर।
रक्तप्रदर–संज्ञा पुं० स्त्रियों की एक बीमारी, जिसमें गर्भाशय से लाल लसीला पानी रसता है।
रक्तबिन्दु–संज्ञा पुं० खून की बूंद।
रक्तबीज–संज्ञा पुं० १. अनार। बीदाना। २. एक राक्षस, जो शुंभ और निशुंभ का सेनापति था। कहते हैं कि युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूंदें गिरती थीं, उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।
रक्तलोचन–संज्ञा पुं० दे० "रक्तनयन।"
रक्तवसन–संज्ञा पुं० [स्त्री० रक्तवसना] लाल या गेरुए रंग के कपड़े पहननेवाला। संन्यासी।
रक्तवृष्टि–संज्ञा स्त्री० आकाश से खून या लाल रंग के पानी की वर्षा (कल्पित)।
रक्तव्रण–संज्ञा पुं० ऐसा फोड़ा, जिसमें मवाद न निकलकर केवल खून निकले।
रक्तशासन–संज्ञा पुं० सिंदूर।
रक्त शृंगिक–संज्ञा पुं० जहर।
रक्तशेखर–संज्ञा पुं० दे० "पुन्नाग"।
रक्तस्राव–संज्ञा पुं० किसी अंग से खून बहना।
रक्तांग–संज्ञा पुं० १. मंगल-ग्रह। २. मूंगा। ३. केसर। ४. लाल चंदन।
रक्ता–संज्ञा स्त्री० १. गुंजा। घुंघची। २. पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से एक।
रक्तातिसार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग, जिसमें खून के दस्त आते हैं।
रक्ताधार–संज्ञा पुं० चमड़ा।
रक्ताभ–वि० लाल रंग की झलक लिये हुए ललौहाँ। लाली लिये हुए।
रक्तार्श–संज्ञा पुं० वह बवासीर, जिसमें मसों में से खून भी निकलता है। खूनी बवासीर।
रक्ताशय–संज्ञा पुं० हृदय। दिल।
रक्तिका–संज्ञा स्त्री० घुंघची। रत्ती।

रक्तिम–वि० खून के रंग का। लाल रंग का। लाली लिये हुए। ललौहाँ।

रक्तिमा–संज्ञा स्त्री० ललामी। सुर्खी।

रक्तोत्पल–संज्ञा पुं० लाल कमल। शाल्मलि।

रक्तोपदंश–संज्ञा पुं० खून के विकार से पैदा होनेवाली गर्मी, सुजाक या पेट की बीमारी।

रक्तोपल–संज्ञा पुं० गेरू।

रक्ष–संज्ञा पुं० १. रक्षक। बचानेवाला। रखवाला। पहरेदार। २. रक्षा। हिफाजत। ३. राक्षस। ४. छप्पय-छन्द का एक भेद।

रक्षक–संज्ञा पुं० १. रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। २. पालन करनेवाला। पहरेदार।

रक्षण–संज्ञा पुं० १ रक्षा करना। हिफाजत करना। २. पालन-पोषण। ३. रक्षक। रखवाला। ४. पहरेदार। ५. पालन-पोषण करनेवाला।

रक्षणकर्ता–संज्ञा पुं० बचानेवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक।

रक्षणीय–वि० रक्षा करने योग्य। बचाने लायक।

रक्षना*–क्रि० स० रक्षा करना। बचाना।

रक्षपाल–संज्ञा पुं० रखवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक।

रक्षमाण–वि० १. जिसकी रक्षा हो सके। २. जिसकी रक्षा की जा रही हो।

रक्षस*–संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

रक्षा–संज्ञा स्त्री० १. बचाव। आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाना। रक्षण। २. बालकों को भूतप्रेत, नजर आदि से बचाने के लिए बाँधा जानेवाला यंत्र या सूत्र। ३. भस्म। ४. गोंद।

रक्षाइद*–संज्ञा स्त्री० राक्षसपन।

रक्षागृह–संज्ञा पुं० प्रसव करने का स्थान। सूतिकागृह। जच्चाखाना।

रक्षाधिकृत–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का किसी नगर का अधिकारी।

रक्षापति–संज्ञा पुं० प्राचीन काल में नगर की रक्षा करनेवाला एक कर्मचारी।

रक्षापुरुष–संज्ञा पुं० पहरेदार। रखवाला।

रक्षापेक्षक–संज्ञा पुं० १. पहरेदार। २. नाटक में पर्दा गिरानेवाला। ३. अभिनय करनेवाला। नट।

रक्षाबंधन–संज्ञा पुं० हिन्दुओं का एक त्योहार, जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। दे० "राखी"।

रक्षामंगल–संज्ञा पुं० भूत-प्रेत आदि की बाधा से बचने के लिए की जानेवाली क्रिया।

रक्षिका–संज्ञा स्त्री० १. रक्षा करनेवाली। २. रक्षा। हिफाजत।

रक्षित–वि० १. जिसकी रक्षा या हिफाजत की गई हो। बचाया हुआ। सुरक्षित। २. पाला-पोसा। ३. किसी काम या व्यक्ति के लिए अलग निकालकर रखा हुआ।

रक्षित राज्य–संज्ञा पुं० किसी बड़े राज्य या साम्राज्य के संरक्षण में रहनेवाला कोई छोटा राज्य, जिसे स्वराज्य के परिमित अधिकार प्राप्त हों (अंग्रे०–प्रोटेक्टरेट)

रक्षिता–संज्ञा स्त्री० रखेली। बिना ब्याह के पत्नी की तरह रखी गई स्त्री।

रक्षी–संज्ञा पुं० पहरेदार। दे० 'रक्षक'।

रक्ष्य–वि० दे० "रक्ष्यमाण"।

रक्ष्यमाण–वि० १. रक्षा करने योग्य। जिसकी रक्षा हो सके। २. जिसकी रक्षा हो रही हो।

रखना–क्रि० स० १. धरना। २. ठहराना। ३. टिकाना। ४. रक्षा करना। बचाना। ५. नष्ट न होने देना। बिगड़ने न देना। ६. संग्रह करना। जोड़ना। ७. सुपुर्द करना। सौंपना। ८. रेहन करना। बंधक में देना। ९. अपने अधिकार में लेना। १०. नियुक्त करना। मुकर्रर करना। ११. व्यवहार करना। धारण करना। १२. जिम्मे लगाना। मढ़ना। १३. ऋणी होना। कर्जदार होना। १४. मन में अनुभव करना। १५. स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना। उपपत्नी (या उपपति) बनाना। १६. निवास कराना। अभिभूत करना।

यौ०—रख-रखाव=रक्षा। हिफाजत।

रखनी–संज्ञा दे० "रखेली"। बिना ब्याह किए हुए पत्नी की भाँति रखी हुई स्त्री।

रखवाई–संज्ञा स्त्री० १. रखवाली करने का काम, मजदूरी या ढंग। २. खेतों की रखवाली। चौकीदारी।

रखवाना–क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखाना।

रखवार*†–संज्ञा पुं० दे० "रखवाला"।

रखवाला–संज्ञा पुं० रखवाली करनेवाला। रक्षक। पहरेदार। चौकीदार।

रखवाली–संज्ञा स्त्री० रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

रखाई–संज्ञा स्त्री० रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी। रखवाली। हिफाजत।

रखान–संज्ञा स्त्री० १. चरी। २. चराई की भूमि।

रखाना–क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

क्रि० अ० रखवाली करना। रक्षा करना।

रखिया*†–संज्ञा पुं० रक्षक। रखनेवाला।

रखेली–संज्ञा स्त्री० बिना ब्याह किए हुए पत्नी की भाँति रखी हुई स्त्री। उपपत्नी।

रखैया†–संज्ञा पुं० रक्षा करनेवाला। रखवाली करनेवाला। दे० "रक्षक"।

रग–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शरीर की नस या नाड़ी। २. पत्तों की नसें।

मुहा०—रग दबना=दबाव मानना। किसी के प्रभाव या अधिकार में होना। रग-रग फड़कना=शरीर में बहुत अधिक उत्साह या आवेश के लक्षण प्रकट होना। रग-रग में=सारे शरीर में।

रगड़–संज्ञा स्त्री० १. रगड़ने की क्रिया या भाव। २. घर्षण। रगड़ने से उत्पन्न चिह्न। हुज्जत। झगड़ा। तकरार। ३. कड़ी मेहनत।

रगड़ना–क्रि० स० १. घिसना। पीसना। किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रम-पूर्वक करना। २. तंग करना।

क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़वाना–क्रि० स० रगड़ने का काम दूसरे से कराना।

रगड़ा–संज्ञा पुं० १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड़। २. वह झगड़ा, जो बराबर होता रहे। ३. बहुत अधिक मेहनत।

रगड़ी–वि० झगड़ालू।

रगण–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह, जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है। (ऽ।ऽ)।

रगत*–संज्ञा पुं० दे० "रक्त"।

रग-पट्ठा–संज्ञा पुं० शरीर के भीतरी भिन्न-भिन्न अंग।

रगर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।

रग-रेशा–संज्ञा पुं० १. नस। २. बारीक से बारीक बात। पत्तियों की नसें।

रगवाना*†–क्रि० स० चुप कराना। शान्त कराना।

रगाना†–क्रि० अ० चुप होना।

क्रि० स० चुप कराना। शान्त करना।

रगीला–संज्ञा पुं० १. पाजी। २. हठी।

रगेद–संज्ञा स्त्री० दौड़ाने की क्रिया या भाव।

रगेदना–क्रि० स० दौड़ाना। खदेड़ना।

रग्गा–संज्ञा पुं० १. एक तरह का मोटा अन्न। २. अधिक वर्षा के बाद होनेवाली धूप।

रघु–संज्ञा पुं० सूर्य्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र, जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और श्रीरामचन्द्र के परदादा थे।

रघुकुल–संज्ञा पुं० राजा रघु का वंश।

रघुनंद, रघुनंदन–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुनाथ–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र। रघुवंश के स्वामी या सर्वश्रेष्ठ।

रघुनायक–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुपति–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुराई*–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुराज–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुरैया*–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुवंश–संज्ञा पुं० १. महाराज रघु का वंश या खानदान। २. महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।

रघुवंशकुमार–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

रघुवंशी–संज्ञा पुं० रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

रघुवर–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र। रघुवंश में सर्वश्रेष्ठ।

रघुवीर–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्रजी।

रचक–संज्ञा पुं० रचना करनेवाला। रचयिता। वि० दे० "रंचक"।

रचना–संज्ञा स्त्री० १.बनाने की क्रिया। बनाने

का ढंग या कौशल। बनावट। २. बनाई हुई वस्तु। निर्मित वस्तु। ३. निर्माण।
क्रि० स० १. हाथों से बनाकर तैयार करना। बनाना। निर्माण करना। २. विधान करना। ३.निश्चित करना। ४.ग्रंथ आदि लिखना। ५. रूप खड़ा करना। ६. शृंगार करना। सँवारना। सजाना। ७. तरतीब या क्रम से रखना। ८. रँगना। रंजित करना।
क्रि० अ० १. अनुरक्त होना। २. रंग चढ़ना। रँगा जाना।
मुहा०—*रचि-रचि=बहुत होशियारी और कारीगरी के साथ (कोई काम करना)।

रचनात्मक—वि० १. रचना या निर्माण से सम्बन्ध रखनेवाला या उसमें सहायक। २. समाज या देश की उन्नति में सहायक। ३. ऐसी बात, जिसे अमल में लाने में कल्याण हो।

रचयिता—संज्ञा पुं० बनानेवाला। रचना करनेवाला।

रचवाना—क्रि० स० १. बनवाना। दूसरे से बनाने का काम कराना। २. मेहँदी या महावर लगवाना।

रचाना†*—क्रि० स० १. आयोजन कराना। अनुष्ठान करना या कराना। २. बनाना। ३. दे० "रचवाना"।
क्रि० अ० मेहँदी, महावर आदि से हाथ-पैर रँगाना।

रचित—वि० बनाया हुआ। रचा हुआ।

रचौहाँ*—वि० १. रचा या बनाया हुआ। २. रँगा हुआ। ३. लीन या अनुरक्त।

रज—संज्ञा पुं० १ स्त्रियों की जननेन्द्रिय से प्रतिमास तीन-चार दिन तक निकलनेवाला खून। ऋतु। २. सांख्य के अनुसार तीन गुणों में दूसरा। दे० "रजोगुण"। ३. पाप। ४. आकाश। ५. फूलों का पराग। ६. एक तौल या परिमाण ७. चाँदी। ८. रजक। धोबी।
संज्ञा स्त्री० १. धूल। गर्द। २. रात। ३. ज्योति। प्रकाश।

रजक—संज्ञा पुं० [स्त्री० रजकी] धोबी। कपड़ा धोनेवाली एक जाति।

रजतंत—संज्ञा स्त्री० दे० "राजतत्व।" वीरता।

रजत—संज्ञा स्त्री० चाँदी।
वि० १. सफेद। धवल। २. लाल।

रजतपट—संज्ञा पुं० वह पर्दा, जिस पर सिनेमा के चित्र आदि दिखाए जाते हैं (अंग्रे०—सिलवर स्क्रीन)।

रजतजयंती—संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति, संस्था या महत्त्वपूर्ण कार्य आदि के जन्म या आरम्भ से २५वें वर्ष होनेवाला उत्सव। (अंग्रे०—सिलवर जुबली)

रजधानी*—संज्ञा स्त्री० दे० "राजधानी"।

रजन—संज्ञा स्त्री० दे० "राल"।

रजना*—क्रि० अ० रँगा जाना।
क्रि० स० रंग में डुबाना। रँगना।
संज्ञा स्त्री० संगीत की एक मूर्च्छना।

रजनी—संज्ञा स्त्री० रात।

रजनीकर—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

रजनीगंधा—संज्ञा स्त्री० रात में फूलने और खूब महकनेवाला एक प्रसिद्ध फूल।

रजनीचर—संज्ञा पुं० राक्षस।

रजनीपति—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

रजनीमुख—संज्ञा पुं० संध्या।

रजनीश—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

रजपूत*†—संज्ञा पुं० १. दे० "राजपूत"। २. वीर पुरुष। योद्धा।

रजपूती†—संज्ञा स्त्री० राजपूत होने का भाव। क्षत्रियत्व। वीरता। बहादुरी।

रजबहा—संज्ञा पुं० वह बड़ा नल, जिससे और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।

रजवंती, रजवती—वि० दे० "रजस्वला।"

रजवाड़ा—संज्ञा पुं० १. रियासत। २. राज्य। ३. राजाओं का घराना।

रजवार*†—संज्ञा पुं० १. राजा का दरबार। दरबार। २. राजद्वार।

रजस्वला—वि० वह स्त्री, जिसका मासिक धर्म हो रहा हो। ऋतुमती।

रजा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। २. छुट्टी। ३. अनुमति। स्वीकृति।

रजाइ, रजाइय*—संज्ञा स्त्री० १. दे० "रजा"। २. आज्ञा। हुक्म।

रजाई—संज्ञा स्त्री० १. रुई भरा हुआ एक प्रकार का ओढ़ना। लिहाफ। मोटी दुलाई। २. दे० "रजाइ।" आज्ञा।

रजाना–क्रि० स० राज्य-सुख का भोग कराना। बहुत अधिक सुख देना।

रजामंद–वि० [फा०] [संज्ञा रजामंदी] राजी। सहमत।

रजाय*†–संज्ञा स्त्री० दे० "रज़ा।" आज्ञा। इच्छा।

रजायस, रजायसु*†–संज्ञा पुं० राजा की आज्ञा।

रजिस्टर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. हिसाब-किताब की पुस्तक। २. उपस्थिति-पुस्तिका।

रजिस्टरी, रजिस्ट्री–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. चिट्ठी, पारसल आदि डाक से भेजी जानेवाली चीजों को डाक-रजिस्टर में लिखाने का काम। २. किसी लिखित प्रतिज्ञापत्र को कानून के अनुसार सरकारी रजिस्टरों में दर्ज कराना।

रज़ील–वि० [अ०] नीच। छोटी जाति का।

रजोकुल*–संज्ञा पुं० राजवंश।

रजोगुण–संज्ञा पुं० प्रकृति के तीन गुणों में से वह गुण जिससे जीवधारियों में भोग-विलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।

रजोदर्शन–संज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक धर्म। रजस्वला होना।

रजोधर्म–संज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक धर्म्म।

रजोरस–संज्ञा पुं० अंधकार।

रजोवती†–संज्ञा स्त्री० रजस्वला। जिस स्त्री को मासिक धर्म हो रहा हो।

रज्जु–संज्ञा स्त्री० १. रस्सी। डोरी। जेवरी। २. लगाम की डोरी। बाग-डोर।

रटंत–संज्ञा स्त्री० रटना। रटने की क्रिया या भाव।

रट–संज्ञा स्त्री० बार-बार उच्चारण करने की क्रिया।

रटन–संज्ञा स्त्री० दे० "रट।"

रटना–क्रि० स० १. बार-बार उच्चारण करना। बार-बार कहना। २. जबानी याद करने के लिए बार-बार उच्चारण करना। बार-बार शब्द करना। ३. बजना।

रठ†–वि० रूखा। शुष्क।

रढ़ना*–क्रि० स० दे० "रटना"।

रण–संज्ञा पुं० १. लड़ाई। २. युद्ध। जंग। ३. शब्द। गति। ४. रमण।

रणक्षेत्र–संज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान। युद्ध-स्थल।

रणछोड़–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

रणन–संज्ञा पुं० [वि० रणित] झनकार या गुंजार करना। बजना। शब्द करना।

रणभूमि–संज्ञा स्त्री० लड़ाई का मैदान। रणक्षेत्र।

रणरंग–संज्ञा पुं० १. लड़ाई का जोश या उत्साह। २. लड़ाई। युद्ध। ३. युद्धक्षेत्र।

रणलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० युद्ध की देवी। दे० "विजय-लक्ष्मी"।

रणसिंहा–संज्ञा पुं० तुरही। नरसिंघा।

रणस्तंभ–संज्ञा पुं० युद्ध में विजय प्राप्त करने के स्मारक रूप में बनवाया हुआ स्तंभ या बड़ा खम्भा।

रणस्थल–संज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान। रणभूमि।

रणस्वामी–संज्ञा पुं० १. शिवजी। २. सेनापति।

रणांगण–संज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

रणित–वि० झनकार या गुंजार करता हुआ। बजता हुआ।

रत–वि० १. अनुरक्त। आसक्त। २. (कार्य्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।

*संज्ञा पुं० १. मैथुन। २. प्रीति। दे० "रक्त।"

रतगुरु–संज्ञा पुं० पति। शौहर।

रतजगा–संज्ञा पुं० किसी उत्सव आदि में सारी रात जागना।

रतताली–संज्ञा स्त्री० कुटनी।

रतन–संज्ञा पुं० दे० "रत्न"।

रतनजोत–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मणि। २. एक प्रकार का बहुत छोटा पौधा, जिसकी जड़ से लाल रंग निकाला जाता है।

रतनागर*–संज्ञा पुं० दे० "रत्नाकर"।

रतनार, रतनारा–वि० कुछ लाल। ललामी लिये हुए।

रतनारी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान। संज्ञा स्त्री० लाली। लालिमा। सुर्खी।

रतमुंहा*–वि० [स्त्री० रतमुहीं] लाल मुंह-वाला।
रता–संज्ञा स्त्री० बरसात के दिनों में सीड़ की जगह चीजों में लगनेवाली एक मैल।
रताना*†–क्रि० अ० रत होना। लीन होना। क्रि० स० किसी को अपनी ओर रत करना या अनुरक्त करना।
रतायनी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
रतालू–संज्ञा पुं० १. पिंडालू नामक एक कंद। २. वाराही कंद। गेंठी।
रति–संज्ञा स्त्री० १. कामदेव की पत्नी, जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौन्दर्य की साक्षात् मूर्त्ति मानी जाती है। २. काम-क्रीड़ा। संभोग। मैथुन। ३. प्रेम। मुहब्बत। ४. शोभा। छवि। ५. साहित्य में शृंगार रस का स्थायी भाव। ६. नायक और नायिका की परस्पर प्रीति या प्रेम।
रतिक*†–क्रि० वि० रत्ती भर। बहुत थोड़ा। जरा-सा।
रतिकर–संज्ञा पुं० १. कामी। अधिक भोग करनेवाला। २. एक तरह की समाधि। वि० जिसमे आनन्द की वृद्धि हो।
रतिकलह–संज्ञा पुं० काम-क्रीड़ा। सम्भोग।
रतिकांत–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिका–संज्ञा स्त्री० ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियों में से एक।
रतिकेलि–संज्ञा पुं० काम-क्रीड़ा। भोग विलास।
रतिज्ञ–संज्ञा पुं० रतिक्रिया में प्रवीण।
रतिनाथ–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिनायक–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिनाह*–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिपति–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिप्रिय–संज्ञा पुं० कामदेव। वि० कामुक।
रतिप्रीता–संज्ञा स्त्री० कामिनी। अधिक भोग-विलास चाहनेवाली स्त्री या नायिका।
रतिबंध–संज्ञा पुं० मैथुन या संभोग करने का प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं।
रतिभवन–संज्ञा पुं० प्रेमी और प्रेमिका के रतिक्रीड़ा करने का स्थान।
रतिभौन*–संज्ञा पुं० दे० "रतिभवन"।
रतिभाव–संज्ञा पुं० दाम्पत्य-भाव। कामेच्छा।
रतिमंदिर–संज्ञा पुं० प्रेमी-प्रेमिका के रति-क्रीड़ा करने का स्थान। रतिभवन। केलिगृह।
रतियाना*†–क्रि० अ० प्रेम करना। अनुरक्त होना।
रतिरमण–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. मैथुन।
रतिराई*–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिराज–संज्ञा पुं० कामदेव।
रतिवंत–वि० सुन्दर। खूबसूरत।
रतिवर–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. किसी स्त्री को उससे रति करने के अभिप्राय से दी हुई भेंट।
रतिवल्ली–संज्ञा स्त्री० प्रीति।
रतिशास्त्र–संज्ञा पु० काम-शास्त्र।
रती*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "रति"। कामदेव की पत्नी। रति। २. सौंदर्य। शोभा। ३. मैथुन। ४. कांति। ५. घुंघची। दे० "रत्ती"।
क्रि० वि० जरा-सा। रत्ती भर। किंचित्।
रतीक*–क्रि० वि० दे० "रतिक"।
रतोपल*†–संज्ञा पुं० १. दे० "रक्तोत्पल"। लाल कमल। २. गेरू।
रतौंधी–संज्ञा स्त्री० आँख की एक प्रकार की बीमारी, जिसमें रोगी को रात के समय दिखाई नहीं देता।
रत्तल–संज्ञा पुं० आध सेर के लगभग की एक तौल।
रत्ती–संज्ञा स्त्री० १. आठ चावल का मान या बाट। २. घुंघची का दाना। गुंजा। वि० बहुत थोड़ा। किंचित्।
*संज्ञा स्त्री० शोभा। छवि।
मुहा०–रत्ती भर=बहुत थोड़ा-सा। जरा-सा।
रत्थी–संज्ञा स्त्री० शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिए ले जानेवाली वस्तु। अरथी।
रत्न–संज्ञा पुं० १. छोटे, चमकीले, बहुमूल्य पत्थर। मणि। जवाहिर। नगीना। मानिक। लाल। २. सर्वश्रेष्ठ। अपने वर्ग का सबसे उत्तम पदार्थ।

रत्नकर–संज्ञा पुं० कुबेर।
रत्नगर्भ–संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. समुद्र।
रत्नगर्भा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
रत्नद्रुम–संज्ञा पुं० मूँगा।
रत्ननिधि–संज्ञा पुं० समुद्र।
रत्नपारखी–संज्ञा पुं० जवाहरात का गुण-अवगुण पहचाननेवाला। जौहरी।
रत्नप्रभा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
रत्नबाहु–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
रत्नमाला–संज्ञा स्त्री० रत्नों या जवाहरात की माला।
रत्नवती–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
रत्नसू, रत्नसूति–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
रत्नाकर–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. खान। ३. रत्नों का समूह।
रत्नावली–संज्ञा स्त्री० १. मणियों की श्रेणी या माला। २. एक अर्थालंकार, जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ और वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं।
रथ–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की एक प्रकार की सवारी, जिसमें दो या चार पहिए होते और घोड़े जोते जाते थे। गाड़ी। २. शरीर। ३. चरण। पैर। ४. क्रीड़ा-स्थल।
रथकार–संज्ञा पुं० रथ बनानेवाला।
रथगुप्ति–संज्ञा स्त्री० रथ के किनारे लगा हुआ लकड़ी या लोहे का ढाँचा (यह बचाव के लिए लगाया जाता था)।
रथचरण–संज्ञा पुं० चकवा।
रथमहोत्सव–संज्ञा पुं० रथयात्रा-उत्सव।
रथयात्रा–संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक पर्व, जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है। पुरी (उड़ीसा) में यह उत्सव बड़ी धूम से मनाया जाता है।
रथवान–संज्ञा पुं० रथ हाँकनेवाला। सारथी।
रथवाह–संज्ञा पुं० १. रथ चलानेवाला। सारथी। २. घोड़ा।
रथवाहक–संज्ञा पुं० सारथी।
रथशाला–संज्ञा स्त्री० रथों के रखने का स्थान।
रथांग–संज्ञा पुं० १. रथ का पहिया। २. चक्र नाम का एक अस्त्र। ३. चकवा पक्षी।
रथांगधर–संज्ञा पुं० १. श्रीविष्णु। २. श्रीकृष्ण।
रथांगपाणि–संज्ञा पुं०
रथांगवर्त्ती–संज्ञा पुं० चक्रवर्ती सम्राट्।
रथाक्ष–संज्ञा पुं० रथ का पहिया या धुरा।
रथाग्र–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योद्धा।
रथिक–संज्ञा पुं० रथी।
रथी–संज्ञा पुं० १. रथ पर चढ़नेवाला। २. रथ पर चढ़कर लड़नेवाला योद्धा। ३. एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा। ४. शव को रखकर ले जाने की टिकठी। अरथी।
संज्ञा स्त्री० दे० "रत्थी"।
वि० रथ पर चढ़ा हुआ।
रथोत्सव–संज्ञा पुं० रथ-यात्रा का उत्सव।
रथ्य–संज्ञा पुं० १. पहिया। २. रथ में जोता जानेवाला घोड़ा। ३. रथ चलानेवाला।
रथ्या–संज्ञा स्त्री० १. रास्ता। सड़क। २. आँगन। ३. नाली। नाबदान। रथों का समूह। ४. मार्ग में रथ की लकीर।
रद–संज्ञा पुं० दाँत।
वि [अ०] दे० "रद्द"। रद्दी। [illegible]। खराब।
रदच्छद–संज्ञा पुं० १. ओंठ। ओष्ठ। २. रति के समय दाँतों के लगने का चिह्न।
रदछद*–संज्ञा पुं० दे० "रदच्छद"।
रददान–संज्ञा पुं० रति के समय दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।
रदन–संज्ञा पुं० दाँत।
रदनी–वि० दाँतोंवाला।
रदपट, रदपद*–संज्ञा पुं० ओष्ठ। ओंठ।
रद्द–वि० [अ०] १. काट छाँट किया हुआ। २. खारिज किया हुआ। ३. खराब। बेकार।
संज्ञा स्त्री० कै। वमन।
यौ०—रद्द-बदल=परिवर्त्तन। फेरफार।
रद्दा–संज्ञा पुं० १. दीवार की पूरी लम्बाई में एक बार रखी हुई ईंट की जुड़ाई। २. थाली में स्तरों के रूप में मिठाइयों का चुनाव। ३. नीचे-ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।
रद्दी–वि० बेकार। खराब।
रन*–संज्ञा पुं० १. युद्ध। लड़ाई। २. जंगल। वन। ३. झील। ताल।
रनकना*†–क्रि० अ० घुंघरू आदि का मंद शब्द होना।

रनना*–क्रि० अ० दे० "रणन"। बजना। शब्द करना। झनकार होना।

रनबंका, रनबाँकुरा–संज्ञा पुं० शूरवीर। योद्धा।

रनवाबी*–संज्ञा पुं० योद्धा।

रनवास–संज्ञा पुं० रानियों के रहने का महल। अंतःपुर। जनानखाना।

रनित*–वि० दे० "रणित"। झन्कार करता हुआ। बजता हुआ।

रनिवास–संज्ञा पुं० दे० "रनवास"।

रनी*–संज्ञा पुं० योद्धा।

रपट†–संज्ञा स्त्री० १. रपटने की क्रिया या भाव। दौड़। २. फिसलाहट। ३. जमीन की ढाल। दे० [अंग्रे०] "रिपोर्ट।" देहातों में पुलिस थानों पर लिखाई गई रिपोर्ट को रपट कहते हैं।

रपटना†–क्रि० अ० १. फिसलना। २. झपटना। बहुत तेजी से चलना।

रपटाना–क्रि० स० रपटने का काम दूसरे से कराना।

रपट्टा†–संज्ञा पुं० १. फिसलने की क्रिया। फिसलाव। २. दौड़-धूप। झपट्टा। ३. चपेट।

रफ़ा–वि० [अ०] १. दूर किया हुआ। निवृत्त। निवारण किया गया। २. दबाया हुआ।

रफा दफा–वि० दे० "रफ़ा"।

रफ़ू–संज्ञा पुं० [अ०] फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।

रफ़ूगर–संज्ञा पुं० [फा०] रफू करने का व्यवसाय करनेवाला। रफू बनानेवाला।

र–वि० चंपत। गायब।

रफ़्तार–संज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति।

रफ़्ता रफ़्ता–क्रि० वि० [फा०] धीरे-धीरे। क्रम-क्रम से।

रब–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर।

रबड़–संज्ञा पुं० [अंग्रे० 'रबर'] १. एक लचीला पदार्थ, जो एक वृक्ष के गोंद से बनता है और जिससे बहुत-सी चीजें बनती हैं। २. एक वृक्ष, जिसकी गोंद से उपर्युक्त लचीला पदार्थ बनता है।

रबड़छन्द–संज्ञा पुं० ऐसी कविता, जिसमें मात्राओं की गिनती आदि का कुछ विचार न हो। व्यंग्य में अतुकान्त कविता के लिए प्रयुक्त शब्द।

रबड़ना–क्रि० स० घुमाना। फेंटना।

रबड़ी–संज्ञा स्त्री० औटकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध। बसौंधी।

रबदा–संज्ञा पुं० १. बार-बार आने-जाने की मेहनत। २. कीचड़।

मुहा०—रबदा पड़ना=खूब पानी बरसना।

रबर–संज्ञा पुं० दे० "रबड़"।

रबाना–संज्ञा पुं० एक प्रकार का डफ।

रबाब–संज्ञा पुं० [अ०] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

रबाबिया, रबाबी–वि० [अ०] रबाब बजाने वाला।

रबी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वसंत ऋतु। २. वह फसल, जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।

रबील–संज्ञा स्त्री० एक पक्षी।

रब्त–संज्ञा पुं० [अ०] १. अभ्यास। मश्क। महावरा। २. संबंध। मेल।

यौ०—रब्त-जब्त=मेलजोल। घनिष्ठता।

रब्ध–वि० आरम्भ किया हुआ।

रब्ब–संज्ञा पुं० दे० "रब"।

रब्बा†–संज्ञा पुं० तोप लादने की गाड़ी। एक तरह की बैलगाड़ी।

रभस–संज्ञा पुं० १. हर्ष। आनन्द। २. वेग। तेजी। ३. प्रेमोत्साह। उमंग। ४. पूर्वापर का विचार। ५. पछतावा। रंज। ६. अस्त्रों का एक संहार।

रम–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. लाल अशोक। ३. प्रेमी।

वि० प्रिय। सुन्दर। आनन्ददायक।

रमक–संज्ञा स्त्री० १. झूले की पेंग। २. तरंग। ३. झकोरा।

संज्ञा पुं० १. प्रेमी। २. उपपति। ३. जार।

वि० थोड़ा सा, बहुत अल्प।

रमकना–क्रि० अ० १. हिंडोले पर झूलना। २. झूमते या इतराते हुए चलना।

रमचा†–संज्ञा पुं० छोटा चम्मच।

रमजान–संज्ञा पुं० [अ०] एक अरबी महीना, जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

रमण–संज्ञा पुं० १. भोग-विलास। केलि।

क्रीड़ा। मैथुन। २. घूमना। विचरण। ३. पति। ४. कामदेव। ५. एक वर्णिक छंद। वि० १. मनोहर। सुंदर। २. प्रिय। ३. रमनेवाला। विलास या क्रीड़ा करनेवाला।

रमणगमना–संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो यह समझकर दुखी होती है कि संकेत-स्थान पर नायक आया होगा, और मैं वहाँ उपस्थित न थी।

रमणी–संज्ञा स्त्री० स्त्री। युवती।

रमणीक–वि० मनोहर। सुंदर।

रमणीय–वि० सुंदर। मनोहर।

रमणीयता–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरता। मनोहरता। माधुर्य। २. साहित्य-दर्पण के अनुसार वह माधुर्य्य, जो सब अवस्थाओं में बना रहे।

रमता–वि० एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता-फिरता। जैसे, रमता जोगी।

रमति–संज्ञा पुं० १. रमनेवाला। २. कौवा। ३. स्वर्ग। ४. नायक। ५. कामदेव। ६. काल।

रमन*–संज्ञा पुं० वि० दे० "रमण"।

रमना–क्रि० अ० १. भोग-विलास करना। २. भोग-विलास के लिए कहीं रहना या ठहरना। ३. आनंद करना। मजा उड़ाना। ४. व्याप्त होना। ५. भीनना। अनुरक्त होना। लग जाना। ६. घूमना-फिरना। चलता होना।

संज्ञा पुं० १. चरागाह। वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिए या पालने के लिए छोड़ दिए जाते हैं। हाता। बाग। २. कोई रमणीक स्थान।

रमनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

रमनीक*–वि० दे० "रमणीक"।

रमल–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० रमली] एक प्रकार का फलित ज्योतिष, जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।

रमा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

रमाकांत–संज्ञा पुं० विष्णु। लक्ष्मी के पति।

रमानरेश*–संज्ञा पुं० दे० "रमाकांत"।

रमाना–क्रि० स० १. मोहित करना। लुभाना। अपने अनुकूल बनाना। २. ठहराना। रोक रखना। लगाना। ३. जोड़ना।

मुहा०—रास रमाना=रास रचना।

रमानिवास–संज्ञा पुं० विष्णु।

रमारमण–संज्ञा पुं० विष्णु।

रमित*–वि० लुभाया हुआ। मुग्ध।

रमैनी–संज्ञा स्त्री० कबीरदास के बीजक का एक भाग।

रमैया‡*–संज्ञा पुं० राम। ईश्वर।

रम्माल–संज्ञा पुं० [अ०] रमल फेंकनेवाला। रमल की सहायता से भविष्य बतानेवाला।

रम्य–वि० [स्त्री० रम्या] मनोहर। सुंदर।

रम्यसानु–संज्ञा पुं० पहाड़ के शिखर पर की समतल भूमि।

रम्या–संज्ञा स्त्री १. गंगा नदी। २. रात।

रम्हाना–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

रय*–संज्ञा पुं० १. दे० "रज"। धूल। गर्द। २. वेग। तेजी। ३. प्रवाह।

रयन*†–संज्ञा स्त्री० रात। रात्रि।

रयना*†–क्रि० स० रंग से भिगोना। तराबोर करना। मिलाना।

क्रि० अ० १. अनुरक्त होना। २. संयुक्त होना। मिलना।

रयिष्ठ–संज्ञा पुं० अग्नि।

रय्यत†–संज्ञा स्त्री० [अ०] रियाया। प्रजा।

ररंकार–संज्ञा पुं० रकार की ध्वनि।

रर*†–संज्ञा स्त्री० रटन। रट।

ररक–संज्ञा स्त्री० कसक।

ररकना†–क्रि० अ० [संज्ञा ररक] कसकना। सालना। पीड़ा देना।

ररना†–क्रि० अ० लगातार एक ही बात कहना। रटना। बारबार कहना।

ररिहा*†–संज्ञा पुं० १. ररनेवाला। गिड़गिड़ानेवाला। २. रटुआ या ररुआ नामक पक्षी। ३. भारी मंगन। ४. लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।

ररुआ–संज्ञा पुं० १. बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २. गिड़गिड़ानेवाला। ३. लड़ाई करनेवाला।

रलना*†–क्रि० अ० एक में मिलना। सम्मिलित होना।

रलाना*†–क्रि० स० एक में मिलाना। सम्मिलित करना।

रलिका*–संज्ञा स्त्री० दे० "रली"।

रली—संज्ञा स्त्री० क्रीड़ा। विहार। आनंद। यौ० रंगरली=मौज उड़ाना। आनन्द के साथ विहार करना।

रल्ल*†—संज्ञा पुं० १. रेला। २. हल्ला।

रव—संज्ञा पुं० १.आवाज। ध्वनि। शब्द। नाद गुंजार। शोर। हल्ला। *‡ २. सूर्य।

रवताई*—संज्ञा स्त्री० १. राजा या रावत होने का भाव। २. प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवन*—वि० दे० "रमण"।

रवना*—क्रि० अ० १. रमण करना। २. शब्द करना।

‡संज्ञा पुं० दे० "रावण"।

रवनि, रवनी*—संज्ञा स्त्री० १. दे० "रमणी"। स्त्री। २. पत्नी। ३. सुंदरी।

रवन्ना—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक तरह का कागज, जिस पर रवाना किए हुए माल का ब्योरा होता है। चुंगी की रसीद। २. कहीं जाने का परवाना, या वह पत्र, जिससे किसी रास्ते से जाने का अधिकार मिलता है। ३. मुसलमानों के यहाँ स्त्रियों का काम-काज करनेवाला अथवा सौदा लानेवाला नौकर।

रवाँ—वि० [फा०] १. बहता हुआ। प्रवाहित। २. चलता हुआ या जारी। ३. अभ्यास या मश्क किया हुआ। ४. पैना। तेज।

रवा—संज्ञा पुं० १.किसी चीज का अत्यन्त छोटा टुकड़ा। कण। दाना। सूजी। २. बारूद का दाना।

वि० १.ठीक। उचित। २. प्रचलित।

रवाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] रस्म। रीति। परिपाटी। प्रथा।

रवादार—वि० १. जिसमें कण या दाने हों। दानेदार। रवे वाला। २. सम्बन्ध या लगाव रखनेवाला।

रवानगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] प्रस्थान। रवाना होने की क्रिया या भाव।

रवाना—वि० [फा०] १. जो कहीं के लिए चल पड़ा हो। प्रस्थान किया हुआ। २. भेजा हुआ।

रवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १.बहाव। प्रवाह। २. तेजी।

रवि—संज्ञा पुं० सूर्य्य।

रविकर—संज्ञा पुं० सूर्य्य की किरण।

रविकुल—संज्ञा पुं० सूर्यवंश।

रविचक्र—संज्ञा पुं० १. सूर्य का मंडल। २. सूर्य के रथ का पहिया।

रविजा—संज्ञा स्त्री० सूर्य की पुत्री। यमुना।

रविजात—संज्ञा पुं० सूर्य की किरण।

रवितनय—संज्ञा पुं० १. यम। २. शनि। ३. वैवस्वत मनु। ४. सुग्रीव। ५. कर्ण। ६. अश्विनीकुमार।

रवितनया—संज्ञा स्त्री० यमुना।

रविदिन—संज्ञा पुं० रविवार।

रविनन्द, रविनंदन—संज्ञा पुं० दे० "रवितनय"।

रविनंदिनी—संज्ञा स्त्री० यमुना।

रविबिंब—संज्ञा पुं० दे० "रविमंडल"।

रविमणि—संज्ञा पुं० सूर्यकान्तमणि।

रविवंश—संज्ञा पुं० सूर्यवंश।

रविवंशी—संज्ञा पुं० सूर्यवंशी। सूर्यवंश में उत्पन्न।

रविमंडल—संज्ञा पुं० सूर्य के चारों ओर दिखाई देनेवाला लाल मंडल या गोला।

रविवार—संज्ञा पुं० इतवार। शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पड़नेवाला दिन।

रविश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चाल। गति। २. ढंग। तरीका। ३. क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

रविसारथि—संज्ञा पुं० सूर्य का रथ हाँकनेवाला, जिसका नाम अरुण है।

रवीला—वि० रवे या कणवाला। दानेदार।

रवीशु—संज्ञा पुं० कामदेव।

रवैया‡—संज्ञा पुं० बर्त्ताव या बर्त्ताव करने का ढंग। व्यवहार। चाल-चलन। ढंग। तरीका।

रशना—संज्ञा स्त्री० १. दे० "रसना"। जीभ। २. रस्सी। ३. करधनी।

रशनाकलाप—संज्ञा पुं० धागे की बनी हुई एक प्रकार की करधनी।

रश्क—संज्ञा पुं० [फा०] ईर्ष्या। डाह।

रश्मि—संज्ञा पुं० १. किरण। २. पलक के रोएँ। ३. घोड़े की लगाम। बाग।

रस—संज्ञा पुं० १. खाने की चीज का स्वाद या जीभ-द्वारा किया गया अनुभव। रसनेन्द्रिय

का विषय। वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय, ये छः रस माने गए हैं। २. छः की संख्या। ३. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर की सात धातुओं में से पहली धातु। ४. किसी पदार्थ का सार। तत्त्व। ५. मन में उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनंद, जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने आदि से उत्पन्न होता है। ६. साहित्य में अनुभाव, विभाव और संचारी भावों से युक्त स्थायी भाव, जिससे चित्त में आनन्द उत्पन्न हो। ७. काम-क्रीड़ा। केलि। विहार। ८. प्रेम। मुहब्बत। ९. उमंग। जोश। १०. गुण। कोई तरल पदार्थ। पानी। ११. शरबत। फलों का निचोड़। १२. लासा या वृक्षों का निर्यास। १३. जहर। १४. गंधरस। १५. शिलारस। १६. पारा। १७. धातुओं को फूंककर तैयार किया हुआ भस्म। १८. भाँति। तरह। १९. मन की तरंग। मौज। इच्छा।

यौ०—रस-रंग=प्रेम-क्रीड़ा। केलि। रस-रीति=प्रेम का व्यवहार।

मुहा०—रस भीजना या भीनना=यौवन का आरंभ या संचार होना।

रसकपूर—संज्ञा पुं० औषध के काम आनेवाली सफेद रंग की एक उपधातु।

रसकेलि—संज्ञा स्त्री० १. रतिक्रीड़ा। २. आमोद-प्रमोद। विहार। ३. हँसी। दिल्लगी।

रसगुल्ला—संज्ञा पुं० एक प्रकार की छेने की बंगाली मिठाई।

रसग्रह—संज्ञा पुं० जीभ।

रसज—संज्ञा पुं० १. गुड़। २. रसौत। ३. शराब की तलछट।

रसज्ञ—वि० [संज्ञा रसज्ञता] १. अच्छे जानकार। निपुण। २. रस का ज्ञाता। काव्य-मर्मज्ञ।

रसज्ञता—संज्ञा स्त्री० रसज्ञ होने का भाव।

रसज्ञा—संज्ञा स्त्री० जीभ।

रसता या रसत्व—संज्ञा स्त्री० रस का भाव या रस होने का गुण। रसत्व।

रसद—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कच्चा अनाज। २. सेना के लिए खाद्य पदार्थ।

वि० १. रस देनेवाला। स्वादिष्ट। २. मजेदार। आनन्ददायक।

रसदार—वि० १. रसवाला। जिसमें रस हो। २. स्वादिष्ट। मजेदार।

रसधातु—संज्ञा पुं० शरीर की सात धातुओं में से एक। पारा।

रसन—संज्ञा पुं० १. चखना। २. ध्वनि। ३. जीभ।

रसना—संज्ञा स्त्री० १. जीभ। जिह्वा। २. जीभ से अनुभव किया जानेवाला स्वाद। ३. रस्सी। ४. लगाम। ५. करधनी।

क्रि० अ० १. धीरे-धीरे बहना या टपकना। धीरे-धीरे टपकाना। २. किसी चीज के ढीला होने पर उसमें से पानी या रस छोड़ना या टपकाना। ३. रस से पूर्ण होना। रस में मग्न होना। ४. प्रफुल्लित होना। तन्मय होना। ५. रस लेना। स्वाद लेना। ६. प्रेम में अनुरक्त होना।

मुहा०—रसना खोलना=बोलना आरंभ करना। रसना तालू से लगाना=बोलना बंद करना। रस-रस या रसे-रसे=धीरे-धीरे।

रसनीय—वि० स्वाद लेने योग्य। मजेदार।

रसनेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० जीभ।

रसपति—संज्ञा पुं० १. शृंगार रस। २. चंद्रमा। ३. राजा। ४. पारा।

रस-प्रबन्ध—संज्ञा पुं० १. नाटक। २. वह कविता, जिसमें एक ही विषय अनेक संबद्ध पद्यों में वर्णित हो।

रसभरी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का स्वादिष्ट फल। मकोइया नामक फल।

रसभीना—वि० [स्त्री० रसभीनी] १. रस से युक्त। २. आनंद में मग्न। अनुरक्त। ३. तर। गीला।

रसम—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "रस्म"।

रसराज—संज्ञा पुं० १. शृंगार रस। २. पारा।

रसराय*—संज्ञा पुं० दे० "रसराज"।

रसरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "रस्सी"।

रसल—वि० दे० "रसीला"।

रसवंत—संज्ञा पुं० [स्त्री० रसवन्ती] रसिक। प्रेमी।

वि० रसीला। रसयुक्त।

रसवाद–संज्ञा पुं० १. प्रेम की बात-चीत। प्रेम या आनन्द का सिद्धान्त। २. प्रेमपूर्ण कहा-सुनी। छेड़छाड़। ३. बकवाद।

रसविरोध–संज्ञा पुं० एक ही पद्य में परस्पर विरोधी रसों का वर्णन। जैसे–शृंगार और रौद्र का। परस्पर-विरोधी रस—जैसे आहार में मीठा और नमकीन।

रससागर–संज्ञा पुं० पुराणों के अनुसार सात समुद्रों में से एक।

रससिंदूर–संज्ञा पुं० वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रस।

रसाँ–वि० [फा०] पहुँचानेवाला—जैसे चिट्ठीरसाँ।

रसांजन–संज्ञा पुं० १ सुरमा। २. रसौत।

रसा–संज्ञा स्त्री० १. । जमीन। २. जीभ। रसना।

संज्ञा पुं० पकी हुई तरकारी आदि का पतला हिस्सा या झोल। शोरबा।

रसाइनी*–संज्ञा पुं० दे० "रासायनिक"।

रसाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] पहुँच। किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव।

रसातल–संज्ञा पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक।

मुहा०—रसातल में पहुँचाना=मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।

रसादार–वि० १. रस से युक्त। २. रसयुक्त या शोरवेदार तरकारी।

रसाना*–क्रि० स० १. रसयुक्त करना। २. प्रसन्न करना।

क्रि० अ० १. रसमय होना। २. मजा लूटना। आनन्द करना।

रसाभास–संज्ञा पुं० साहित्य में किसी रस का अनुचित विषय में अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन। एक प्रकार का अलंकार, जिसमें उक्त ढंग का वर्णन होता है।

रसायन–वि० दे० "रसायन-शास्त्र"।

संज्ञा पुं० १. पदार्थों के तत्त्वों का ज्ञान। २. एक कल्पित योग, जिसके द्वारा ताँबे से सोना बनना माना जाता है। ३. धातु-विद्या। ४. वैद्यक के अनुसार वह औषध, जिससे आदमी स्वस्थ और पुष्ट बना रहता है।

रसायनज्ञ–संज्ञा पुं० रसायन-शास्त्र का ज्ञाता।

रसायन विद्या–संज्ञा स्त्री० दे० "रसायन-शास्त्र"। धातुओं के मिलाने और अलग करने आदि का ज्ञान करानेवाली शिक्षा।

रसायन-शास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें पदार्थों में कौन-कौन से तत्त्व होते हैं और उनके परमाणुओं में परिवर्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है, आदि का विवेचन हो।

रसायनी–संज्ञा स्त्री० रोग को दूर करनेवाली तथा स्वस्थ और पुष्ट रखनेवाली औषधि।

रसाल–संज्ञा पुं० १. आम। २. गन्ना।

वि० १. स्वादिष्ट। २. रसीला। ३. सुंदर। मनोहर।

रसाली–संज्ञा पुं० रसिक। भोग विलास करनेवाला। आनन्द लेनेवाला।

रसाव–संज्ञा पुँ० रसने की क्रिया या भाव।

रसावर, रसावल–संज्ञा पुं० ईख के रस में पकाए हुए चावल। दे० "रसौर"।

रसास्वादन–संज्ञा पुं० स्वाद लेना। चखना।

रसिक–संज्ञा पुं० १. मजा उड़ानेवाला। आनन्दी। २. रस लेनेवाला। स्वाद लेनेवाला। ३. रसिया। ४. अच्छा ज्ञाता। मर्मज्ञ। ५. भावुक। सहृदय। ६. काव्य-मर्मज्ञ।

रसिकता–संज्ञा स्त्री० १. रसिक होने का भाव या धर्म्म। २. हँसी-ठट्ठा।

रसिकबिहारी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

रसिकाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "रसिकता"।

रसित–संज्ञा पुं० १. ध्वनि। शब्द। २. अंगूर की शराब। ३. रसयुक्त।

वि० १. बोलता हुआ। बजता हुआ २. रसा, छना या टपका हुआ। ३. रसयुक्त। ४. जिस पर मुलम्मा चढ़ा हुआ हो।

रसिया–संज्ञा पुं० १. दे० "रसिक"। रस लेने वाला। २. एक प्रकार का गाना, जो फागुन में ब्रज आदि में गाया जाता है।

रसियाव–संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसी*‡–संज्ञा पुं० दे० "रसिक"।

रसीद–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी चीज के

पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र। २. किसी चीज के पहुँचने या प्राप्त होने की स्वीकृति । प्राप्ति।
रसील–वि० दे० "रसीला"।
रसीला–वि० [स्त्री० रसीली] १. रस में भरा हुआ। रस-युक्त। २. स्वादिष्ठ। मजेदार। ३. रस या आनंद लेनेवाला। ४. छबीला। बाँका। सुंदर।
रसीलापन–संज्ञा पुं० रसीला होने का भाव।
रसूम–संज्ञा पुं० [अ०] १. रस्म का बहुवचन। सरकारी नियमों के अनुसार किसी कार्य के लिए दिया जानेवाला धन, विशेषकर न्यायालय में। २. नियम। कानून। ३. वह धन, जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाता हो। नेग। लाग।
रसूल–संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर (मुसलमान धर्म के अनुसार)।
रसेन्द्र–संज्ञा पुं० १. पारा। २. पारस पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है।
रसेश्वर–संज्ञा पुं० पारा।
रसेश्वर दर्शन–संज्ञा पुं० पारा का प्रयोग करने की विद्या या विज्ञान।
रसोइया–संज्ञा पुं० रसोई बनानेवाला। रसोईदार।
रसोई, रसोई–संज्ञा स्त्री० १. पका हुआ खाद्य पदार्थ या भोजन। २. चौका। पाकशाला।
रसोईघर–संज्ञा पुं० भोजन बनाने का कमरा। चौका। पाकशाला।
रसोईदार–संज्ञा पुं० दे० "रसोइया"।
रसोईदारी–संज्ञा स्त्री० भोजन बनाने का काम या पेशा।
रसोईबरदार–संज्ञा पुं० भोजन ले जानेवाला।
रसौंत, रसौत–संज्ञा स्त्री० दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तैयार की जानेवाली एक प्रसिद्ध औषध।
रसौर–संज्ञा पुं० ऊख के रस में पके हुए चावल। रसावर।
रसौली–संज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें शरीर में गिलटी निकल आती है।
रस्ता–संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।
रस्तोगी–संज्ञा पुं० वैश्यों की एक शाखा।

रस्म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रीति-रवाज। परिपाटी। २. चाल-व्यवहार। ३. मेल-जोल।
मुहा०–राह-रस्म=मेल-जोल। व्यवहार।
रस्य–संज्ञा पुं० १. खून। २. शरीर का मांस।
रस्सा–संज्ञा पुं० [स्त्री० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।
रस्सी–संज्ञा स्त्री० सन या सूत आदि को बटकर बनाई हुई लम्बी चीज। डोरी।
रहँकला–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की हलकी गाड़ी। २. तोप लादने की गाड़ी। ३. रहकले पर लदी हुई छोटी तोप।
रहँचटा–संज्ञा पुं० चसका। लिप्सा। लालसा या उत्कंठा।
रहँट–संज्ञा पुं० कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र।
रहँटा–संज्ञा पुं० सूत कातने का चर्खा।
रहँटी–संज्ञा पुं० कपास ओटने की चर्खी।
रहचह–संज्ञा स्त्री० चिड़ियों का बोलना। चहचहाहट।
रहठा–संज्ञा पुं० अरहर का सूखा डंठल।
रहन–संज्ञा स्त्री० १. रहने की क्रिया या भाव। २. चाल-चलन। आचरण। व्यवहार।
रहन-सहन–संज्ञा स्त्री० १. रहने का तरीका। जीवन बिताने का ढंग। २. चाल-ढाल। आचरण।
रहना–क्रि० अ० १. ठहरना। रुकना। स्थित होना। चलना बंद करना। २. निवास करना। बसना या टिकना। ३. कोई काम बंद करना। थमना। ४. विद्यमान होना। उपस्थित होना। ५. समय बिताना। ६. नौकरी करना। काम-काज करना। ७. स्थापित होना। ८. मैथुन करना। ९. जीवित रहना। १०. बचना। पीछे छूट जाना। ११. शेष बचना। खर्च या प्रयोग होने के बाद बच जाना।
मुहा०—रह चलना या जाना=रुक जाना। रह जाना=१. कुछ करते न बनना। २. सफल न होना। ३. गर्भ रह जाना। (अंग आदि का) रह जाना=थक जाना। शिथिल हो जाना। रह जाना।
यौ०—रहा-सहा=बचा-बचाया। शेष।

रहनि*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "रहन"। २ चालढाल। आचरण। ३. प्रीति। प्रेम।

रहम–संज्ञा पुं० [अ०] १. दया। करुणा। २. कृपा।

यौ०—रहमदिल=दयालु। कृपालु।

रहमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] दया। कृपा।

रहमार–संज्ञा पुं० बटमार। डाकू।

रहर–संज्ञा स्त्री० दे० "अरहर।"

रहरूठभाव–संज्ञा पुं० १. संसार से विरक्त होकर एकान्त स्थान में रहना। २. एकान्त स्थान-वासी।

रहल–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी चौकी, जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है।

रहस–संज्ञा पुं० दे० "रहस्य"। १. गुप्त भेद। छिपी बात। मर्म। २. लीला। क्रीड़ा। ३. आनंद। सुख। ४. एकांत स्थान।

रहसना–क्रि० अ० प्रसन्न होना। आनंदित होना।

रहसबधावा–संज्ञा पुं० हिन्दुओं में विवाह की एक रीति।

रहसि*–संज्ञा स्त्री० दे० "रहस"। गुप्त स्थान। एकांत स्थान।

रहस्य–संज्ञा पुं० १. गुप्त भेद। छिपी हुई बात। २.मर्म। गूढ़ तत्त्व, जो सहज में समझ में न आ सके।

वि० गोपनीय। गुप्त भेद। सहज में समझ में न आनेवाली बात।

रहस्यवाद–संज्ञा पुं० निराकार ब्रह्म या अज्ञात के प्रति प्रणय के शब्दों में हृदय की आकुलता प्रकट करने का सिद्धान्त।

रहस्यवादी–वि० १. रहस्यवाद के सिद्धान्त को माननेवाला। २. रहस्यवाद-सम्बन्धी।

रहाई–संज्ञा स्त्री० १. रहने की क्रिया। दे० "रहन"। २. आराम। सुख।

रहाना*–क्रि० अ० १. होना। २. रहना।

रहा सहा–वि० बचा-खुचा। जो कुछ बचा हो, वह भी।

रहित–वि० बगैर। बिना। हीन।

रहिला–संज्ञा पुं० चना।

रहीम–वि० [अ०] दयालु। कृपालु।

संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. अकबर के वजीर रहीम खाँ खानखाना का उपनाम, जो हिंदी के प्रसिद्ध कवि भी थे।

रहुवा†–संज्ञा पुं० दूसरों के यहाँ रोटियों के लिए रहनेवाला व्यक्ति। रोटी-तोड़। टुकड़हा।

रांक–वि० दे० "रंक"।

रांकव–संज्ञा पुं० मृगों के रोयों से बना हुआ कपड़ा।

रांगा–संज्ञा पुं० बहुत नरम और सफेद रंग की एक प्रसिद्ध धातु, जिससे वर्त्तन आदि जोड़े जाते हैं।

रांच*†–अव्य० दे० "रंच"।

रांचना*†–क्रि० अ० दे० "राचना"। चाहना। प्रेम करना। अनुरक्त होना।

क्रि० स० रँगना। रंग चढ़ाना।

रांजना†–क्रि० अ० काजल लगाना।

क्रि० स० १. रंजित करना। रँगना। २. फूटे हुए बर्त्तन को राँगे से जोड़ना।

रांटा†–संज्ञा पुं० टिटिहरी चिड़िया।

रांड़–वि० स्त्री० विधवा। बेवा।

रांड़ना†–क्रि० स० रोना। विलाप करना।

रांध–संज्ञा पुं० पास। निकट। बगल। पड़ोस।

रांधना–क्रि० स० पकाना। भोजन पकाना।

रांपी–संज्ञा स्त्री० पतली खुरपी के आकार का मोचियों का एक औजार।

रांभना–क्रि० अ० गाय का बोलना या चिल्लाना। बँबाना।

राआ*†–संज्ञा पुं० दे० "राजा"।

राइ–संज्ञा पु० छोटा राजा। राय। सरदार।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

राइता, रायता–संज्ञा पुं० दही में कुम्हड़ा, लौकी, बुँदिया या पोदीना आदि डालकर मसालों से बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।

राइफल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की बन्दूक, जिसका निशाना बहुत दूर तक जाता है।

राई–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों। २. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण। ३. राजापन। राजश्री।

संज्ञा पु० १. राजा। २. सर्वश्रेष्ठ।
मुहा०—राई-नोन उतारना=नजर लगे हुए बच्चे पर उतार करके राई और नमक को आग में डालना। राई से पर्वत करना=थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। राई-राई करना=टुकड़े-टुकड़े कर डालना।

राउ*—संज्ञा पु० दे० "राव"।

राउत†—संज्ञा पु० १. दे० "राजपूत"। क्षत्रिय। ठाकुर। २. अहीरों की एक उपाधि। २. वीर। बहादुर।

राउर*†—वि० श्रीमान् का। आपका।
संज्ञा पु० अंतःपुर। रनवास। जनानखाना।

राउल*†—संज्ञा पु० १. दे० "राजकुल"। २. राजकुल में उत्पन्न पुरुष। राजा।

राकस*†—संज्ञा पु० [स्त्री० राकसिन] दे० "राक्षस"।

राका—संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी। पूर्णिमा की रात।

राकेश—संज्ञा पु० चंद्रमा।

राक्षस—संज्ञा पु० [स्त्री० राक्षसी] १. दैत्य। असुर। दुष्ट और पापी। २. एक प्रकार का विवाह, जिसमें कन्या प्राप्त करने के लिए युद्ध करना पड़ता है।

राख—संज्ञा स्त्री० किसी चीज के बिलकुल जल जाने के बाद बचा हुआ काला अंश। भस्म। खाक।

राखना*†—क्रि० स० १. बचाना। रक्षा करना। रखवाली करना। २. छिपाना। रोक रखना। जाने न देना। ३. आरोप करना। ४. दे० "रखना"।

राखी—संज्ञा स्त्री० रक्षाबंधन का डोरा, जिसे कलाई पर बाँधते हैं। मंगलसूत्र। रक्षा।
संज्ञा स्त्री० दे० "राख"।

राग—संज्ञा पुं० १. सांसारिक सुखों की चाह। प्रिय वस्तु के प्रति मन का झुकाव। २. कष्ट। तकलीफ। ३. ईर्ष्या। द्वेष। ४. अनुराग। प्रेम। ५. शरीर के अंगों में लगाने का सुगंधित लेप। अंगराग। ६. रंग, विशेषतः लाल रंग। पैर में लगाने का आलता। ७. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर, जिनके उच्चारण से गान होता हो। भारतीय संगीत में ६ राग माने गए हैं। लय।
मुहा०—अपना राग अलापना=अपनी ही बात कहना।

रागना*†—क्रि० अ० १. प्रेम या अनुराग करना। अनुरक्त होना। २. रँगा जाना। ३. लीन या मग्न होना।
*क्रि० स० गाना। अलापना।

रागमाला—संज्ञा स्त्री० एक ही गीत में एक साथ मिले हुए अनेक रागों या उनके कुछ अंशों का समूह।

रागरज्जु—संज्ञा पु० कामदेव।

रागलता—संज्ञा स्त्री० रति।

रागान्वित—वि० १. जिसे प्रेम हो। प्रेमासक्त। २. जिसे क्रोध हो।

रागिनी—संज्ञा स्त्री० संगीत में किसी एक राग का भेद। विशेष रागिनियाँ छत्तीस हैं (प्रत्येक राग की प्रायः ६ रागिनियाँ मानी गई हैं)।

रागी—संज्ञा पु० [स्त्री० रागिनी] १. अनुरागी। प्रेमी। २. छः मात्रावाले छंदों का नाम।
‡*संज्ञा स्त्री० राज्ञी। रानी।
वि० १. रँगा हुआ। २. लाल। सुर्ख। ३. विषय-वासना में फँसा हुआ। विरागी का उलटा। ४. रँगनेवाला।

राघव—संज्ञा पु० १. रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। श्रीरामचंद्र। २. एक बड़ी समुद्री मछली।।

राचना*—क्रि० स० दे० "रचना"। बनाना।
क्रि० अ० १. रचा जाना। बनना। २. रंजित होना। रँगा जाना। ३. अनुरक्त होना। प्रेम करना। ४. मग्न होना। लीन होना ५. प्रसन्न होना। ६. भला जान पड़ना। शोभा देना। ७. सोच या चिंता में पड़ना।

राछ—संज्ञा पु० १. कारीगरों का औजार। २. जुलाहों के करघे में एक औजार, जिससे ताने का तागा ऊपर-नीचे उठता और गिरता है। बरात। ३. जुलूस।

राछस†*—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

राज—संज्ञा पुं० १. राज्य। शासन। हुकूमत। २. राजा। ३. एक राजा-द्वारा शासित

देश । ४. जनपद । ५. पूरा अधिकार । ६. अधिकार-काल । समय । ७. देश । ८. दे० "राजगीर" । मकान बनानेवाला कारीगर । **मुहा०**—राज-काज=राज्य का प्रबंध । राज पर बैठना=राज-सिंहासन पर बैठना । राज रजना=राज्य करना । बहुत सुख से रहना ।

यौ०—राजपाट=राज-सिंहासन । शासन ।

राज—संज्ञा पुं० [फा०] रहस्य । भेद ।

राज-ऋण—संज्ञा पुं० १. सरकार-द्वारा राष्ट्र या राज्य के नाम पर उसके कार्यों के लिए लिया जानेवाला कर्जा । २. इस प्रकार का ऋण देनेवाले व्यक्तियों को प्रमाण-स्वरूप दिया जानेवाला पत्र ।

राजक—संज्ञा पुं० राजा ।
वि० प्रकाश करनेवाला ।

राजकन्या—संज्ञा स्त्री० राजा की पुत्री ।

राजकर—संज्ञा पुं० राजा या राज्य-द्वारा प्रजा से लिया जानेवाला कर । राजस्व । खिराज ।

राजकीय—वि० राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला ।

राजकुँअर*†—संज्ञा पुं० दे० "राजकुमार" ।

राजकुमार—संज्ञा पुं० [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र ।

राजकुल—संज्ञा पुं० दे० "राजवंश" ।

राजकोश—संज्ञा पुं० सरकारी खजाना । राजा या राज्य का वह खजाना, जो प्रजा के लाभ के लिए जमा हो और प्रजा की भलाई के लिए खर्च हो ।

राजग—संज्ञा पुं० नजूल । शहर की वह जमीन, जो सरकार के कब्जे में हो और जिसका इन्तजाम राज्य की ओर से होता हो ।

राजगद्दी—संज्ञा स्त्री० १. राजसिंहासन । २. राज्याभिषेक ।

राजगिरि—संज्ञा पुं० १. मगध देश के एक पर्वत का नाम । २. दे० "राजगृह" ।

राजगीर—संज्ञा पुं० मकान बनानेवाला कारीगर । राज । थवई ।

राजगृह—संज्ञा पुं० राजा का महल । बिहार में पटने के पास एक प्राचीन स्थान । मगध की प्राचीन राजधानी ।

राजत—वि० चाँदी का ।
संज्ञा पुं० चाँदी ।
क्रि० वि० सुशोभित ।

राजतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० कल्हण-कृत संस्कृत में कश्मीर सम्बन्धी एक प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ ।

राजतिलक—संज्ञा पुं० नए राजा के गद्दी पर बैठने के समय होनेवाला कर्मकाण्ड या उत्सव । दे० "राज्याभिषेक" ।

राजत्व—संज्ञा पुं० राजा का भाव या कर्म । राजा का पद ।

राजदंड—संज्ञा पुं० १. राजा की आज्ञा से दिया जानेवाला दंड । वह दंड, जिसका विधान राजशासन के अनुसार हो । २. राजशासन ।

राजदंत—संज्ञा पुं० बीच का वह दाँत, जो और दाँतों से बड़ा और चौड़ा होता है ।

राजदूत—संज्ञा पुं० राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य में प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ।

राजद्रोह—संज्ञा पुं० [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह या विद्रोह । बगावत ।

राजद्रोही—वि० बागी । राजा या राज्य के प्रति विद्रोह करनेवाला ।

राजद्वार—संज्ञा पुं० राजा के महल की ड्योढ़ी । न्यायालय ।

राजधर्म्म—संज्ञा पुं० राजा का कर्त्तव्य या धर्म्म ।

राजधानी—संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश का वह नगर, जहाँ उस प्रदेश के शासन का केंद्र हो ।

राजनय—संज्ञा पुं० राजनीति ।

राजना*—क्रि० अ० १. उपस्थित होना । रहना । २. शोभित होना ।

राजनीति—संज्ञा स्त्री० देश के शासन से सम्बन्ध रखनेवाली नीति । वह नीति, जिससे अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का संचालन किया जाय ।

राजनीतिक—वि० राजनीति-संबंधी ।

राजनील—संज्ञा पुं० पन्ना । मरकत मणि ।

राजन्य—संज्ञा पुं० १. क्षत्रिय । २. राजा । ३. राजपुत्र । ४. अग्नि ।

राजपंथ*—संज्ञा पुं० दे० "राजपथ"।
राजपथ—संज्ञा पुं० आम सड़क। राजमार्ग। बड़ी सड़क।
राजपद्धति—संज्ञा स्त्री० राजनीति। राज-धर्म।
राजपाल—संज्ञा पुं० राज्य का रक्षक। दे० "राज्यपाल"। भारत में राज्यों के शासकों की उपाधि। (अंग्रे० गवर्नर)।
राजपुत्र—संज्ञा पुं० १. राजा का पुत्र। राजकुमार। २. एक वर्णसंकर जाति।
राजपुत्रक—संज्ञा पुं० राजकुमार।
राजपुत्रिका—संज्ञा स्त्री० राजकुमारी। राजपुत्री।
राजपुरुष—संज्ञा पुं० सरकारी अधिकारी। राजकर्मचारी। शासन की नीति और व्यवहार का ज्ञाता राजनीतिज्ञ।
राजपूत—संज्ञा पुं० १. दे० "राजपुत्र"। २. राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।
राजपूताना—संज्ञा पुं० भारत के पश्चिमी भाग में एक प्रदेश, जिसका वर्त्तमान नाम राजस्थान है।
राजप्रासाद—संज्ञा पुं० राजमहल। राजा के रहने का महल।
राजबंदी—संज्ञा पुं० राजा या राज्य-द्वारा बिना मुकदमा चलाए किसी आरोप के संदेह में गिरफ्तार व्यक्ति।
राजबाहा—संज्ञा पुं० वह बड़ी नहर, जिससे अनेक छोटी-छोटी नहरें निकाली जाती हैं।
राजभण्डार—संज्ञा पुं० सरकारी खजाना। राजा या राज्य का खजाना।
राजभक्त—वि० [संज्ञा राजभक्ति] राजा या राज्य के प्रति भक्ति रखनेवाला। राज्य के प्रति ईमानदार या वफादार।
राजभक्ति—संज्ञा स्त्री० राजा या राज्य के प्रति निष्ठा। राज्य के प्रति वफादारी या ईमानदारी।
राजभवन—संज्ञा पुं० राजमहल।
राजभाषा—संज्ञा स्त्री० किसी देश या राज्य के सरकारी कार्यों और न्यायालयों आदि में प्रयोग की जानेवाली वहाँ की प्रचलित भाषा।
राजभूय—संज्ञा पुं० राज्य। राजत्व।
राजभोग—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का महीन धान। २. मन्दिर में दोपहर को लगनेवाला बड़ा भोग या नैवेद्य
राजमराल—संज्ञा पुं० राजहंस।
राजमहल—संज्ञा पुं० राजभवन। राजा का महल। राजप्रासाद।
राजमहिषी—संज्ञा स्त्री० महारानी। पटरानी।
राजमाता—संज्ञा स्त्री० शासन करनेवाले राजा की माता।
राजमार्ग—संज्ञा पुं० आम सड़क।
राजमुद्रा—संज्ञा स्त्री० राजा या राज्य की वह मोहर, जो सरकारी कागजों आदि पर लगाई जाती है।
राजयक्ष्मा—संज्ञा पुं० यक्ष्मा या क्षयरोग। तपेदिक।
राजयोग—संज्ञा पुं० १. वह प्राचीन योग, जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है। २. फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का ऐसा योग, जिसके जन्मकुंडली में पड़ने से मनुष्य राजा होता है।
राजराजेश्वर—संज्ञा पुं० [स्त्री० राजराजेश्वरी] अनेक राजाओं का राजा। सम्राट्। राजाधिराज।
राजरोग—संज्ञा पुं० १. अच्छी न होनेवाली बीमारी। असाध्य रोग। २. क्षय रोग।
राजर्षि—संज्ञा पुं० १. ऋषियों में श्रेष्ठ। २. राजवंश या क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न ऋषि।
राजलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० राजवैभव। राज्य का ऐश्वर्य। राजश्री। राजा की शोभा।
राजलिपि—संज्ञा स्त्री० राज-कार्यों में काम आनेवाली लिपि।
राजवंत—वि० राजा के गुणों या कर्म्म से युक्त।
राजवंश—संज्ञा पुं० राजा का कुल या खानदान। राजकुल।
राजवर्त्मा—संज्ञा पुं० राजमार्ग।
राजवार—संज्ञा पुं० दे० "राजद्वार"।
राजवाह—संज्ञा पुं० घोड़ा।
राजश्री—संज्ञा स्त्री० राजलक्ष्मी। राजवैभव। राजा का ऐश्वर्य।

राजस–वि० [स्त्री० राजसी] १. रजोगुण से उत्पन्न। २. रजोगुणी।
संज्ञा पुं० आवेश। क्रोध।

राजसत्ता–संज्ञा स्त्री० १. राज्याधिकार। २. राज्य की सत्ता। देश के शासन के लिए स्थापित की हुई सत्ता।

राजसत्तात्मक–वि० वह शासन-प्रणाली, जिसमें केवल राजा की सत्ता ही प्रधान हो। प्रजा-सत्तात्मक का उलटा।

राजसभा–संज्ञा स्त्री० १. राजाओं की सभा। २. दरबार।

राजसमाज–संज्ञा पुं० राजाओं का दरबार या समाज। राजमंडली।

राजसिंहासन–संज्ञा पुं० राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

राजसिक–वि० दे० "राजस" और "राजसी"।

राजसी–वि० राजा के योग्य। बहुमूल्य या भड़कीला। जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुणमयी।

राजसूय–संज्ञा पुं० एक बड़ा यज्ञ, जिसे प्राचीन काल में सम्राट् पद के अधिकारी राजा करते थे।

राजस्कंध–संज्ञा पुं० घोड़ा।

राजस्थान–संज्ञा पुं० उत्तर-प्रदेश के पश्चिम और पूर्वी पंजाब के दक्षिण का प्रदेश, जिसे पहले राजपूताना कहते थे।

राजस्थानी–संज्ञा स्त्री० राजस्थान या राजपूताने की भाषा।
वि० राजस्थान या राजपूताने का।

राजस्व–संज्ञा पुं० १. राज्य को कर या शुल्क आदि से होनेवाली आमदनी। २. राज्य-द्वारा लिया जानेवाला भूमि आदि का कर।

राजहंस–संज्ञा पुं० [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का हंस।

राजा–संज्ञा पुं० [स्त्री० राज्ञी, रानी] १. किसी देश या जाति का प्रधान शासक। बादशाह। नरेश। भूप। अधिपति। स्वामी। मालिक। २. एक उपाधि, जो अँगरेजी सरकार बड़े रईसों को प्रदान करती थी।

राजाज्ञा–संज्ञा स्त्री० राजा की आज्ञा।

राजाधिराज–संज्ञा पुं० राजाओं का राजा। शाहंशाह। सम्राट्।

राजावर्त्त–संज्ञा पुं० लाजवर्द नामक उप-रत्न।

राजि–संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार। रेखा। लकीर। २. राई।

राजिका–संज्ञा स्त्री० १. राई। २. राजि। पंक्ति। ३. लकीर। रेखा।

राजित–वि० १. सुशोभित। २. विराजा हुआ। उपस्थित। मौजूद।

राजिव*–संज्ञा पुं० दे० "राजीव"।

राजी–संज्ञा स्त्री० पंक्ति। श्रेणी। कतार।

राजी–वि० [अ०] १. कही हुई बात मानने को तैयार। सम्मत। रजामन्दी। अनुकूलता। २. नीरोग। चंगा। ३. खुश। प्रसन्न। सुखी।
यौ०—राजी-खुशी=सही-सलामत।

राजीनामा–संज्ञा पुं० [फा०] वह लेख, जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।

राजीव–संज्ञा पुं० कमल।

राजीवगण–संज्ञा पुं० १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

राजुक–संज्ञा पुं० मौर्य्य-काल का एक राज-कर्मचारी या सूबेदार।

राजेंद्र, राजेश्वर–संज्ञा पुं० [स्त्री० राजेश्वरी] अनेक राजाओं का राजा। महाराज।

राज्ञी–संज्ञा स्त्री० १. रानी। राजा की पत्नी। २. सूर्य्य की पत्नी, संज्ञा।

राज्य–संज्ञा पुं० १. राजा का काम। शासन। बादशाहत। २. शासन के अन्तर्गत देश का विशेष भूभाग।

राज्यच्युत–वि० राजगद्दी से उतारा हुआ।

राज्यतंत्र–संज्ञा पुं० राज्य की शासन-प्रणाली।

राज्य-व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० १. राज-नियम। कानून। २. शासन-व्यवस्था। ३. नीति।

राज्याभिषेक–संज्ञा पुं० राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक। राजगद्दी पर बैठने की रीति। राज्यारोहण।

राट्–संज्ञा पुं० १. राजा। बादशाह। २. श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. सरदार।

राठ*–संज्ञा पुं० १. राज्य। २. राजा।

राठौर—संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश। राष्ट्रकूट।
राड़—वि० १. नीच। २. निकम्मा। ३. कायर। ४. भगोड़ा।
राढ़‡—संज्ञा स्त्री० १. झगड़ा। रार। २. निकम्मा। ३. कायर।
राढ़ा—संज्ञा स्त्री० १. कान्ति। २. शोभा।
राढ़ि—संज्ञा पुं० बंग देश के उत्तरी भाग का नाम।
राणा—संज्ञा पुं० महाराणा। राजा।
रात—संज्ञा स्त्री० संध्या के बाद से प्रातःकाल तक का समय। निशा। रजनी।
मुहा०—रात-दिन=सदा। हमेशा।
रातड़ी, रातरी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "रात"।
रातना*—क्रि० अ० १. लाल रंग से रँग जाना। २. रँगा जाना। ३. अनुरक्त होना। आशिक होना।
राता*—वि० [स्त्री० राती] १. लाल। सुर्ख। २. रँगा हुआ। ३. अनुरक्त।
राति*—संज्ञा स्त्री० रात। रजनी।
रातिचर*—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"। रात के समय चलनेवाला।
रातिब—संज्ञा पुं० [अ०] पशुओं का भोजन। घोड़े या हाथी की खुराक।
रातुल—वि० लाल। सुर्ख।
रात्रि—संज्ञा स्त्री० रात। निशा।
रात्रिकर—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
रात्रिचर, रात्रिचारी—संज्ञा पुं० राक्षस। वि० रात के समय विचरनेवाला।
रात्रिज—संज्ञा पुं० नक्षत्र।
रात्रिपुष्प—संज्ञा पुं० कमल।
रात्रिबल—संज्ञा पुं० राक्षस।
रात्रिमणि—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
रात्रिहास—संज्ञा पुं० कुमुद।
राद्ध—वि० १. पका हुआ। २. ठीक किया हुआ। ३. पूरा किया हुआ।
राद्धांत—संज्ञा पुं० सिद्धान्त। उसूल।
राद्धि—संज्ञा स्त्री० सिद्धि। सफलता।
राध—संज्ञा पुं० धन। सम्पत्ति।
संज्ञा स्त्री० मवाद।
राधन—संज्ञा पुं० १. साधने की क्रिया। साधना। २. मिलना। प्राप्ति। ३. संतोष। तुष्टि। ४. साधन।
राधना*†—क्रि० स० १. आराधना करना। पूजा करना। २. सिद्ध करना। पूरा करना। ३. काम निकालना।
राधा—संज्ञा स्त्री० १. वैशाख की पूर्णिमा। २. प्रीति। ३. वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। ४. बिजली। ५. एक वर्णवृत्त।
राधाकान्त—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
राधारमण—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
राधावल्लभ—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
राधावल्लभी—संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।
राधिका—संज्ञा स्त्री० १. वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २. बाइस मात्राओं का एक छंद।
राधेय—संज्ञा पुं० कर्ण। (धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ की पत्नी राधा ने कर्ण का अपने पुत्र की तरह पालन किया था, इसलिए कर्ण को 'राधेय' कहते हैं।)
रान—संज्ञा स्त्री० [फा०] जंघा। जाँघ।
राना—संज्ञा पुं० दे० "राणा"।
*क्रि० अ० अनुरक्त होना।
रानी—संज्ञा स्त्री० १. राजा की स्त्री। २. स्वामिनी। मालकिन। स्त्रियों के लिए आदर-सूचक शब्द। ३. मधुमक्खियों की प्रधान।
रानी-काजर—संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
रापी—संज्ञा स्त्री० चमारों का एक औजार। राँपी।
राब—संज्ञा स्त्री० आँच पर औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
राम—संज्ञा पुं० १. सूर्य्यवंशी महाराज दशरथ के पुत्र, जो दस अवतारों में से एक माने जाते हैं। रामचंद्र। २. परशुराम। ३. बलराम। बलदेव। ४. तीन की संख्या। ५. ईश्वर। भगवान्। ६. एक प्रकार का मात्रिक छंद।
मुहा०—राम शरण होना=१. साधु होना। विरक्त होना। २. मर जाना। राम-राम करना=अभिवादन करना। प्रणाम करना।

भगवान् का नाम जपना। राम-राम= घृणासूचक शब्द। राम-राम करके=बड़ी कठिनाई से। राम-राम हो जाना=मर जाना।

रामगिरि—संज्ञा पुं० दे० "रामटेक"।

रामगीती—संज्ञा पुं० ३६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

रामचंद्र—संज्ञा पुं० अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र, जो विष्णु के अवतार हैं। दे० "राम"।

रामजननी—संज्ञा स्त्री० श्री रामचन्द्र की माता, कौशल्याजी।

रामजना—संज्ञा पुं० [स्त्री० रामजनी] १. एक संकर जाति, जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती हैं। २. वर्णसंकर।

रामजनी—संज्ञा स्त्री० वेश्या।

रामझोल—संज्ञा स्त्री० पाजेब।

रामटेक—संज्ञा पुं० नागपुर जिले की एक प्रसिद्ध पहाड़ी।

रामणीयक—वि० मनोहर।
संज्ञा पुं० मनोहरता।

रामतरोई—संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"। एक तरकारी।

रामता—संज्ञा स्त्री० राम का गुण। रामपन।

रामतारक—संज्ञा पुं० रामजी का मंत्र, जो इस प्रकार है—रां रामाय नमः।

रामति*†—संज्ञा स्त्री० भिक्षा के लिए इधर-उधर घूमना। भिक्षुओं की फेरी।

रामतुलसी—संज्ञा पुं० एक प्रकार की तुलसी। रामा तुलसी।

रामतत्त्व—संज्ञा पुं० राम का भाव। राम होने का गुण। रामपन।

रामदल—संज्ञा पुं० १. रामचंद्रजी की बंदरों-वाली सेना। २. कोई बड़ी और प्रबल सेना, जिसका मुकाबला करना कठिन हो।

रामदाना—संज्ञा पुं० एक तरह का धान। चौलाई की जाति का एक पौधा और उसका दाना, जिसे व्रत के दिन खाते हैं।

रामदास—संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा, जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।

रामदूत—संज्ञा पुं० हनुमान्जी।

रामधनुष—संज्ञा पुं० १. इन्द्रधनुष। २. रामचंद्रजी का धनुष।

रामधाम—संज्ञा पुं० १. साकेत लोक। स्वर्ग। २. अयोध्या।

रामनवमी—संज्ञा स्त्री० चैत्र शुक्ल पक्ष की ९वीं तिथि, जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था। चैत सुदी नवमी।

रामना*‡—क्रि० अ० दे० "रमना"।

रामनामी—संज्ञा पुं० १. चद्दर या दुपट्टा, जिस पर "राम-राम" छपा रहता है। २. एक प्रकार का हार, जिसके बीच में 'राम' नाम अंकित पान लगा रहता है।

रामफल—संज्ञा पुं० एक फल।

राम-फटाका—संज्ञा पुं० वह लम्बा तिलक, जो रामानुज आदि सम्प्रदायों के अनुयायी मस्तक पर लगाते हैं।

रामबाण—वि० १. अचूक। अमोघ। २. तुरन्त लाभ करनेवाली या तुरन्त प्रभाव दिखाने-वाला (औषध)।
संज्ञा पुं० वैद्यक में एक प्रकार की औषध।

रामबाँस—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मोटा बाँस। २. केवड़े की जाति का एक पौधा, जिसके पत्तों के रेशे से रस्से बनते हैं।

रामभक्त—संज्ञा पुं० १. रामचन्द्र के उपासक। २. हनुमानजी।

रामभद्र—संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्रजी।

रामभोग—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का आम।

रामरज—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली मिट्टी।

रामरस—संज्ञा पुं० नमक।

रामराज्य—संज्ञा पुं० १. श्री रामचन्द्रजी का शासन। २. अत्यंत सुखदायक शासन, जिसमें जनता को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

रामलीला—संज्ञा स्त्री० १. रामचन्द्रजी की जीवन-लीला। २. अभिनय।

रामशर—संज्ञा पुं० एक प्रकार का नरकट या सरकंडा।

रामसखा–संज्ञा पुं० सुग्रीव।

रामसनेही–वि० राम से स्नेह रखनेवाला। रामभक्त।
संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक संप्रदाय।

रामसुंदर–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नाव।

रामसेतु–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत में रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह, जिसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि रामचन्द्रजी ने बन्दरों की सहायता से लंका पर आक्रमण करने के लिए समुद्र पर पुल बनाया था।

रामा–संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री। २. नदी। ३. लक्ष्मी। ४. सीता। ५. रुक्मिणी। ६. राधा। ७. इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक छंद। ८. आर्या छंद का १७वाँ भेद।

रामा तुलसी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का तुलसी का पौधा।

रामानंद–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य, जिनका चलाया हुआ रामावत नामक संप्रदाय अब तक प्रचलित है। ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे।

रामानंदी–वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

रामानुज–संज्ञा पुं० वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध दक्षिणी आचार्य्य। वेदांत में इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

रामायण–संज्ञा पुं० रामचन्द्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला ग्रंथ। संस्कृत में रामायण नाम के बहुत-से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकि-कृत रामायण सबसे प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है। यह आदिकाव्य है। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास-कृत प्रसिद्ध ग्रंथ, जो हिन्दुओं का धर्मग्रन्थ जैसा है (रामचरित-मानस)।

रामायणी–वि० रामायण का। रामायण-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० १. रामायण की कथा कहनेवाला। २. रामायण का विशेषज्ञ।

रामायुध–संज्ञा पुं० धनुष।

रामावत–संज्ञा पुं० वैष्णव आचार्य्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

रामिल–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. पति। ३. प्रेमपात्र। ४. रमण।

रामेश्वर–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक तीर्थस्थान।

राम्या–संज्ञा स्त्री० रात।

राय–संज्ञा पुं० १. राजा। २. सरदार। ३. सामंत। ४. भाट। बंदीजन।
संज्ञा स्त्री० सम्मति। मत। सलाह।

रायज–वि० [अ०] जिसका रवाज हो। प्रचलित। चलनसार।

रायता–संज्ञा पुं० दही में कुम्हड़ा, लौकी या बुँदिया आदि डालकर मसालों के साथ बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।

रायभोग–संज्ञा पुं० दे० "राजभोग"।

रायबहादुर–संज्ञा पुं० अँगरेजी शासन-काल में सरकार की ओर से हिन्दुओं को दी जानेवाली एक उपाधि।

रायमुनी–संज्ञा स्त्री० लाल नामक पक्षी की मादा।

रायरासि*–संज्ञा स्त्री० राजराशि। राजा का कोष। शाही खजाना।

रायल्टी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] किसी ग्रंथ-कर्त्ता या आविष्कारक आदि को उसकी रचना या आविष्कार से होनेवाले लाभ का वह अंश, जो उसे बराबर मिलता रहता है। दे० "स्वामित्व"।

रायसा–संज्ञा पुं० दे० "रासो"। वह काव्य जिसमें किसी राजा का जीवनचरित्र छंदों में वर्णित हो।

रायसाहब–संज्ञा पुं० अँगरेजी शासन-काल में सरकार की ओर से हिन्दुओं को दी जानेवाली एक उपाधि।

रार–संज्ञा पुं० झगड़ा। टंटा। हुज्जत।

राल–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का बड़ा पेड़ और उसका निर्यास। धूना। धूप। २. पतला लसदार थूक। लार।
मुहा०–राल गिरना, चूना या टपकना=किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना।

राव—संज्ञा पुं० १. दे० "राय"। २. सरदार। ३. राजा। ४. भाट। ५. राजपूताने के राजाओं की एक उपाधि।

रावचाव—संज्ञा पुं० लाड़-प्यार। राग-रंग।

रावट*—संज्ञा पुं० राजमहल। महल।

रावटी—संज्ञा स्त्री० १. कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा घर या डेरा। तम्बू। २. बारहदरी।

रावण—संज्ञा पुं० लंका का प्रसिद्ध राजा, जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचन्द्र ने मारा था। दशकंधर।

रावणारि—संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्रजी।

रावत—संज्ञा पुं० १. शूर। बहादुर। २. सामंत। सरदार। ३. छोटा राजा।

रावन—संज्ञा पुं० दे० "रावण"।

रावनगढ़*—संज्ञा पुं० दे० "लंका"।

रावना*—क्रि० स० रुलाना।

रावबहादुर—संज्ञा पुं० अंग्रेजी शासन-काल में सरकार-द्वारा हिन्दुओं को दी जानेवाली एक उपाधि।

रावर*—संज्ञा पुं०, वि० [स्त्री० राउरी] दे० "राउर"। आपका।

रावल—संज्ञा पुं० [स्त्री० रावलि, रावली] १. राजा। २. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। ३. प्रधान। सरदार। ४. आदर-सूचक सम्बोधन। ५. अंतःपुर। रनिवास।

राशन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] खाने की सामग्री। सरकार-द्वारा निर्धारित प्रत्येक व्यक्ति के लिए खाद्यान्न का परिमाण, जो सरकारी दूकानों से कार्ड पर मिलता है।

राशनिंग—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] राशन देने की सरकारी व्यवस्था। वह सरकारी प्रबन्ध जिसमें लोगों को खाने-पीने की, या अन्य आवश्यक वस्तुएँ निश्चित मात्रा में और निश्चित समय पर दी जाती हैं।

राशि—संज्ञा स्त्री० १. समूह। ढेर। २. किसी का उत्तराधिकार। जा-नशीनी। ३. क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा-समूह, जो बारह हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन। **यौ०**—राशि मिलना। १. विवाह के लिए लड़के और लड़की की राशियों में उचित मेल होना। २. पटरी बैठना। मेल मिलना।

राशिचक्र—संज्ञा पुं० राशियों का चक्र या मंडल। जैसे मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का मंडल।

राशिनाम—संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति का वह नाम, जो उसके जन्म-समय की राशि के अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न होता है।

राशी—संज्ञा स्त्री० दे० "राशि"।

राष्ट्र—संज्ञा पुं० १. राज्य। देश। मुल्क। २. राज्य की जनता। प्रजा। एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय।

राष्ट्रक—संज्ञा पुं० देश। राज्य। वि० राष्ट्रसम्बन्धी।

राष्ट्रकूट—संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश। राठौर।

राष्ट्रतंत्र—संज्ञा पुं० राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रपति—संज्ञा पुं० आधुनिक प्रजातंत्र शासन-प्रणाली में वह सर्व-प्रधान शासक, जो शासन करने के लिए चुना जाता है। जैसे, भारत और अमेरिका आदि देशों में।

राष्ट्रपरिषद्—संज्ञा स्त्री० देश या राष्ट्र के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा।

राष्ट्रपाल—संज्ञा पुं० राजा।

राष्ट्रभाषा—संज्ञा स्त्री० किसी देश में प्रचलित वह प्रधान भाषा, जिसका व्यवहार उस देश के रहनेवाले अन्य भाषाभाषी भी सार्वजनिक पारस्परिक कार्यों में करते हैं।

राष्ट्रभृत—संज्ञा पुं० राजा। किसी राष्ट्र का स्वामी।

राष्ट्रमंडल—संज्ञा पुं० [वि० राष्ट्रमंडलीय] कुछ राष्ट्रों का ऐसा समूह, जिसमें प्रत्येक सदस्य राष्ट्र के कुछ निश्चित कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व हों और सबको समान अधिकार प्राप्त हो।

राष्ट्रमुद्रा—संज्ञा स्त्री० राज्य की मुहर। किसी देश के सरकारी कागज-पत्रों पर अंकित की जानेवाली मुहर।

राष्ट्रलिपि–संज्ञा स्त्री० किसी देश की राष्ट्र-भाषा की लिपि ।

राष्ट्रवाद–संज्ञा पुं० [वि० राष्ट्रवादी] अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता देने का सिद्धान्त ।

राष्ट्रवादी–वि० अपने देश या राष्ट्र की महत्ता, एकता और कल्याण का पक्षपाती। राष्ट्रवाद के सिद्धान्त का अनुयायी ।

राष्ट्रसंघ या **संयुक्त राष्ट्रसंघ**–संज्ञा पुं० द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व-शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से संघटित संसार के अनेक राष्ट्रों का एक संघ । (अंग्रे०–यूनाइटेड नेशन्स आर्गनिजेशन–यू० एन० ओ०)

राष्ट्रिक–वि० राष्ट्र-सम्बन्धी । राष्ट्र का । राष्ट्रीय ।

संज्ञा पुं० [वि० राष्ट्रिकता] राष्ट्र या देश का निवासी। नागरिक । किसी राष्ट्र का अंग या सदस्य। प्रजा।

राष्ट्रीकता–संज्ञा स्त्री० राष्ट्रिक होने का भाव या अवस्था । दे० "राष्ट्रियता" ।

राष्ट्रिय–वि० राष्ट्र या देश का। राष्ट्र-सम्बन्धी । अपने राष्ट्र या देश की एकता या उन्नति आदि से सम्बन्ध रखनेवाला।

राष्ट्रियकरण, राष्ट्रीयकरण–संज्ञा पुं० देश के उद्योग आदि पर सरकारी कब्जा और सरकार द्वारा उसका संचालन।

राष्ट्रियता, राष्ट्रीयता–संज्ञा स्त्री० १. अपने राष्ट्र या देश के प्रति प्रेम-विशेष । किसी राष्ट्र के नागरिक होने का भाव या अवस्था । राष्ट्र से सम्बन्ध रखने का भाव। २ किसी राष्ट्र के गुण-विशेष ।

राष्ट्रीय–वि० [संज्ञा स्त्री० राष्ट्रीयता] दे० "राष्ट्रिय" ।

रास–संज्ञा स्त्री० १. गोपों की प्राचीन-काल की एक क्रीड़ा, जिसमें वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे । श्रीकृष्ण का गोपियों के साथ नृत्य। २. एक प्रकार का नाटक, जिसमें श्रीकृष्ण की इस क्रीड़ा का अभिनय होता है। ३. एक प्रकार का चलता गाना। ४. लगाम । ५. बागडोर । जंजीर । शृंखला । ६. ढेर। समूह। दे० "राशि" । ७. एक प्रकार का छंद । ८. जोड़ । ९. चौपायों का झुंड । १०. गोद । दत्तक । ११. सूद । ब्याज ।

वि० अनुकूल। ठीक ।

रासक–संज्ञा पु० हास्य-रस के नाटक का एक भेद, जो केवल एक अंक का होता है।

रासधारी–संज्ञा पु० श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करनेवाला व्यक्ति या समुदाय।

रासन–वि० स्वादिष्ट ।

संज्ञा पुं० चखना । स्वाद लेना ।

रासभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० रासभी] १. गदहा । गधा। २. खच्चर।

रासमंडल–संज्ञा पु० श्रीकृष्ण का गोपियों के साथ क्रीड़ा करने का स्थान या समूह । रास-क्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली । रास करनेवालों का अभिनय ।

रासमंडली–संज्ञा स्त्री० रासधारियों का समाज या टोली ।

रासलीला–संज्ञा स्त्री० १. वह लीला, जो श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ शरत्पूर्णिमा को की थी। २. रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय ।

रासविलास–संज्ञा पुं० रासक्रीड़ा ।

रासविहारी–संज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

रासायन–वि० रसायन-सम्बन्धी।

रासायनिक–वि० रसायन-संबंधी। रसायन-शास्त्र का ज्ञाता ।

रासायनिक परीक्षक–संज्ञा पु० रासायनिक तत्त्वों की जाँच करनेवाला या उनका विश्लेषण करनेवाला।

रासु*†–वि० १. सीधा । २. सरल । ३. ठीक ।

रासो–संज्ञा पुं० १. वह काव्य, जिसमें किसी राजा का जीवनचरित, उसकी वीरता और युद्ध आदि का वर्णन हो। २. हिन्दी का प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ पृथ्वीराज-रासो ।

रास्त–वि० [फा०] १. उचित । वाजिब । २. सीधा । सरल । ३. दुरुस्त । ठीक ।

रास्ता–संज्ञा पुं० [फा०] १. मार्ग । राह । २. प्रथा । चाल । ३. उपाय । तरकीब ।

मुहा०—रास्ता देखना=प्रतीक्षा करना ।

आसरा देखना। रास्ता पकड़ना=चल देना। चले जाना। रास्ता बताना=१. चलता करना। टालना। २. सिखाना। तरकीब बताना।

रास्ना–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कंद। घोड़रासन।

राह–संज्ञा स्त्री० १. मार्ग। रास्ता। २. प्रथा। चाल। ३. नियम। कायदा। ४. दे० "रोहू"।

संज्ञा पु० दे० "राहु"।

मुहा०—राह देखना या ताकना=प्रतीक्षा करना। राह पड़ना=डाका पड़ना। लूट पड़ना।

राहखर्च–संज्ञा पु० रास्ते में होनेवाला खर्च। मार्ग-व्यय।

राहगीर–संज्ञा पु० [फा०] पथिक। मुसाफिर।

राहचलता–संज्ञा पु० १. पथिक। राहगीर। २. अपरिचित। ३. गैर। जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध न हो।

राहचौरंगी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चौमुहानी"।

राहजन–संज्ञा पु० [फा०] लुटेरा। बटमार। डाकू।

राहजनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] रास्ते में लूटमार। बटमारी।

राहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आराम। चैन। सुख।

राहदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] राह पर चलने का महसूल। सड़क का कर। चुंगी। महसूल।

यौ०—परवाना राहदारी=वह आज्ञापत्र, जिसके अनुसार किसी मार्ग से होकर जाने या माल ले जाने का अधिकार प्राप्त होता है।

राहना‡*–क्रि० अ० दे० "रहना"।

क्रि० स० रेती आदि को खुरदरा करके रेतने योग्य बनाना।

राहरस्म, राहरीति–संज्ञा पुं० १. रीति-व्यवहार। रिवाज। प्रथा। परिपाटी। २. जान-पहचान।

राहित्य–संज्ञा पुं० 'रहित' होने का भाव। किसी चीज के न होने का भाव। खालीपन।

राहिन–वि० [अ०] रेहन या बंधक रखनेवाला।

राही–संज्ञा पुं० [फा०] पथिक। यात्री।

राहु–संज्ञा पु० नौ ग्रहों में से एक।

राहुल–संज्ञा पु० गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।

रिंगन–संज्ञा स्त्री० घुटनों के बल चलना। रेंगना।

रिंगना*–क्रि० अ० दे० "रेंगना"।

रिंगाना*†–क्रि० स० १. रेंगने की क्रिया कराना। रेंगाना। २. घुमाना-फिराना। बच्चों को चलाना।

रिंद–संज्ञा पु०[फा०] १. मनमौजी। स्वेच्छाचारी। २. धर्म के विषय में उदार विचार रखनेवाला या धार्मिक बन्धनों को न माननेवाला।

वि० १. मस्त। २. मतवाला।

रिंदा†–वि० निरंकुश। उद्दंड।

रिआयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] छूट। कमी। कृपा। दयापूर्ण व्यवहार। नरमी।

रिआया–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा।

रिकवँछ–संज्ञा स्त्री० अरुई के पत्तों की बनाई गई खाने की एक चीज।

रिकाब–संज्ञा स्त्री० दे० "रकाब"।

रिक्त–वि० १. खाली। शून्य। २. निर्धन।

रिक्तता–संज्ञा स्त्री० खाली होने का भाव।

रिक्ति–संज्ञा स्त्री० १. रिक्त या खाली होने का भाव या क्रिया। खाली होना। खालीपन। २. खाली जगह। किसी कर्मचारी का पद या स्थान खाली होना।

रिक्थ–संज्ञा पु० उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।

रिक्शा–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की साइकिल या बिना साइकिल की छोटी गाड़ी जिसे आदमी खींचते या चलाते हैं और इसके चलाने का रोजगार करते हैं।

रिखभ*†–संज्ञा पु० दे० "ऋषभ"।

रिजक–संज्ञा पुं० [अ० रिज़्क़] रोजी। जीविका।

रिजाली–संज्ञा स्त्री० १. रजीलपन। नीचता। बेहयाई।

रिजु–वि० दे० "ऋजु"।
रिझकवार, रिझवार†–संज्ञा पुं० १. रीझनेवाला। किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। मोहित होनेवाला। प्रेमी। २. कदरदान। गुणग्राहक।
रिझाना–क्रि० स० १. मोहित करना। किसी को अपने ऊपर खुश कर लेना। अपना प्रेमी बनाना। २. अनुरक्त करना।
रिझायल*†–वि० रीझनेवाला।
रिझाव–संज्ञा पु० रीझने का भाव या क्रिया। प्रसन्न या मोहित होने की क्रिया या भाव।
रिझावना*†–क्रि० स० दे० "रिझाना"।
रिढ़ना–क्रि० अ० १. घिसटते हुए चलना।
रितवना*–क्रि० स० खाली करना।
रिद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋद्धि"।
रिधम–संज्ञा पु० कामदेव।
रिन–संज्ञा पु० दे० "ऋण"।
रिनवन्धी–संज्ञा पु० कर्जदार।
रिनिआँ, रिनी†–वि० जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार।
रिप–संज्ञा पु० १. पृथ्वी। २. शत्रु। ३. हिंसा।
रिपु–संज्ञा पु० शत्रु। दुश्मन।
रिपुता–संज्ञा स्त्री० शत्रुता। वैर। दुश्मनी।
रिपोर्ट–संज्ञा स्त्री० [अं०] किसी घटना, संस्था या बैठक आदि के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक विवरण। जाँच का विवरण। कार्य विवरण।
रिपोर्टर–संज्ञा पु० [अंग्रे०] समाचार-पत्र का संवाददाता।
रिप्र–संज्ञा पु० पातक।
रिमझिम–संज्ञा स्त्री० वर्षा की छोटी-छोटी बूँदों का लगातार गिरना।
क्रि० वि० वर्षा की छोटी-छोटी बूँदों से हलकी फुहार।
रियासत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. देशी राज्य। २. अमलदारी। ३. अमीरी। वैभव। ऐश्वर्य।
रिर*†–संज्ञा स्त्री० १. रार। २. हठ। जिद।
रिरना†–क्रि० अ० गिड़गिड़ाना।
रिरिहा†–वि० बहुत गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक माँगनेवाला।

रिलना*†–क्रि० अ० १. पैठना। घुसना। २. मिल जाना।
रिलमिल–संज्ञा स्त्री० मेल-मिलाप। मेलजोल।
रिवाज–संज्ञा पु० [अ०] रस्म। रीति। प्रथा।
रिश्ता–संज्ञा पु० [फा०] नाता। संबंध।
रिश्तेदार–संज्ञा पु० [फा०] नातेदार। संबंधी।
रिश्य–संज्ञा पु० हिरन।
रिश्वत–संज्ञा स्त्री० [अ०] घूस। अपना मतलब हल करने के लिए किसी को अवैध रूप से दिया जानेवाला धन या सामग्री आदि।
रिश्वतखोर–संज्ञा पु० घूस लेनेवाला। रिश्वत खाने या लेनेवाला।
रिश्वती–वि० रिश्वत या घूस लेनेवाला। घूसखोर।
रिषीक–संज्ञा पु० शिव।
रिष्ट*–वि० हृष्ट-पुष्ट। प्रसन्न। मोटा-ताजा।
संज्ञा पु० १. अमंगल। २. अभाव। ३. पाप। ४. नाश। ५. खड्ग।
रिष्टि–संज्ञा पु० १. खड्ग। २. अमंगल।
रिष्यमूक–संज्ञा पु० दक्षिण भारत का एक पर्वत।
रिस–संज्ञा स्त्री० खीझ। क्रोध। गुस्सा (हठ के साथ क्रोध)।
मुहा०—रिस मारना=क्रोध को रोकना।
रिसना†–क्रि० स० छन-छनकर बाहर निकल जाना। रसना।
रिसवाना†–क्रि० स० दे० "रिसाना"।
रिसहा†–वि० क्रोधी।
रिसहाया†–वि० [स्त्री० रिसहाई] क्रुद्ध। कुपित। नाराज।
रिसान–संज्ञा पु० ताने के सूतों को फैलाकर उनको साफ करने की क्रिया।
रिसाना†–क्रि० अ० क्रुद्ध होना।
क्रि० स० किसी पर क्रोध या गुस्सा करना।
रिसानी*–संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।
रिसाल†–संज्ञा पु० [अ० इरसाल] राज्य-कर। मुफस्सिल से राजधानी को भेजा जानेवाला कर।
रिसालदार–संज्ञा पु० [फा०] घोड़सवार सेना का एक अधिकारी। कर के आनेवालों का जमादार।

रिसाला—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़सवारों की सेना। अश्वारोही सेना।
रिसि*†—संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।
रिसिआना, रिसियाना†—क्रि० अ० क्रोध करना। गुस्सा होना।
क्रि० स० रिसाना। किसी पर क्रोध करना। बिगड़ना।
रिसिक*—संज्ञा स्त्री० तलवार।
रिसौहाँ—वि० १. क्रुद्ध-सा। थोड़ा नाराज। २. क्रोध से भरा। कोपसूचक।
रिहल—संज्ञा स्त्री० [अ०] काठ की कैंचीनुमा चौकी, जिस पर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।
रिहा—वि० [फा०] [संज्ञा रिहाई] (बंधन या बाधा आदि से) मुक्त। छूटा हुआ। जेल से छोड़ा गया।
रिहाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] छुटकारा। जेल से छुटकारा या कैद की सजा रद्द होना। मुक्ति।
रींधना—क्रि० स० दे० "राँधना"।
री—अव्य० सखियों के लिए संबोधन। अरी। एरी।
रीछ—संज्ञा पुं० भालू नामक जंगली जानवर।
रीछराज*—संज्ञा पुं० जामवंत। भालुओं का राजा।
रीज्या—संज्ञा स्त्री० घृणा।
रीझ—संज्ञा स्त्री० प्रसन्न होने का भाव। मुग्ध होने का भाव।
रीझना—क्रि० अ० मोहित होना। प्रसन्न होना।
रीठ*—संज्ञा स्त्री० तलवार। युद्ध। (डिं०) वि० अशुभ। खराब।
रीठा—संज्ञा पुं० एक बड़ा जंगली वृक्ष और उसका फल, जो बेर के बराबर होता है।
रीढ़—संज्ञा स्त्री० पीठ के बीचोंबीच की लंबी खड़ी हड्डी, जिससे पसलियाँ मिली रहती हैं। मेरुदंड।
रीत—संज्ञा स्त्री० दे० "रीति"।
रीतना*—†क्रि० अ० खाली होना। रिक्त होना
क्रि० स० खाली करना। रिक्त करना।
रीता—वि० खाली। रिक्त। शून्य।

ढब। २. रस्मरिवाज। परिपाटी। ३. कायदा। नियम। ४. साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह योजना, जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता है।
रीम—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बीस दस्ते कागज की एक गड्डी।
रीर—संज्ञा पुं० श्रीशिव।
संज्ञा स्त्री० दे० "रीढ़"।
रीरी—संज्ञा स्त्री० पीतल नामक धातु।
रीषमूक*—संज्ञा पुं० दे० "ऋष्यमूक"।
रीस—संज्ञा स्त्री० १. दे० 'रिस'। खीझ। २. डाह। स्पर्द्धा। बराबरी करने की इच्छा।
रीसना—क्रि० अ० खीझना। क्रोध करना।
रुंज—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।
रुंड—संज्ञा पुं० बिना सिर का धड़। कबंध। वह शरीर जिसके सिर या हाथ-पैर कटे हों।
रुंदवाना—क्रि० स० पैरों से कुचलवाना। रौंदवाना।
रुंधती*—संज्ञा स्त्री० दे० "अरुंधती"।
रुँधना—क्रि० अ० १. रुकना। २. उलझना। फँस जाना। किसी काम में लगना। ३. घेरा जाना। ४. मार्ग में अटकना।
रु*—अव्य० दे० "अरु" तथा "और"।
रुआना*†—क्रि० स० दे० "रुलाना"।
रुआब—संज्ञा पुं० दे० "रोब"।
रुई—संज्ञा स्त्री० दे० "रूई"।
रुकना—क्रि० अ० १. ठहर जाना। आगे न बढ़ना। अवरुद्ध होना। अटकना। २. किसी कार्य्य का बीच में ही बंद हो जाना। किसी चलते क्रम का बंद होना।
रुकमिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी"।
रुकवाना—क्रि० स० रोकने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को रोकने में प्रवृत्त करना।
रुकाव—संज्ञा पुं० दे० "रुकावट"।
रुकावट—संज्ञा स्त्री० रुकने की क्रिया या भाव। रोक। रोकनेवाली बात या चीज। बाधा। विघ्न।
रुक्का—संज्ञा पुं० [अ०] १. छोटा पत्र या चिट्ठी। २. पुरजा। परचा। ३. कर्ज

लेनेवालों के द्वारा महाजन को लिखकर दिया जानेवाला पुर्जा या हुंडी।

रुख*†–संज्ञा पुं० दे० "रूक्ष"। पेड़।

रुक्म–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. नागकेसर। ३. धतूरा। ४. रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

रुक्मिणी–संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की बड़ी रानी, जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थीं।

रुक्मी–संज्ञा पुं० राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष–वि० [संज्ञा स्त्री० रुक्षता] १. रूखा। जिसमें चिकनाहट न हो। खुरदरा। नीरस। शुष्क। सूखा। २. शील-रहित।
संज्ञा पुं० दे० "रूक्ष"। "पेड़"।

रुक्षता–संज्ञा स्त्री० रूखापन। रुखाई।

रुख–संज्ञा पुं० [फा०] १. गाल। २. मुख। मुँह। आकृति। ३. चेष्टा। मन का भाव, जो आकृति से प्रकट हो। ४. कृपादृष्टि। मेहरबानी की नजर। ५. सामने या आगे का भाग।
क्रि० वि० तरफ। ओर। सामने।

रुखसत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कूच। विदाई। प्रस्थान। रवानगी। २. आज्ञा। ३. छुट्टी। अवकाश।
वि० जो कहीं से चल पड़ा हो।

रुखसताना–संज्ञा पुं० [फा०] विदा होने के समय दिया जानेवाला धन आदि। बिदाई।

रुखसती–संज्ञा स्त्री० [अ०] बिदाई। विशेषतः दुलहिन की बिदाई।

रुखाई–संज्ञा स्त्री० १. रूखे होने की क्रिया या भाव। रूखापन। नीरसता। शुष्कता। खुश्की। २. रूखा व्यवहार। शील का अभाव। बेमुरौवती।

रुखाना*†–क्रि० अ० रूखा होना। नीरस होना। सूखना।

रुखानी–संज्ञा स्त्री० बढ़इयों का लोहे का एक औजार।

रुखिता*–संज्ञा स्त्री० कोप करनेवाली नायिका। मानवती नायिका।

रुखौंहाँ–वि० [स्त्री० रुखौंहीं] रुखाई लिये हुए। रूखा-सा।

रुगिया†–वि० दे० "रोगी"।

रुग्ण–वि० रोगी। बीमार। अस्वस्थ। झुका हुआ। बिगड़ा हुआ।

रुग्णता–संज्ञा स्त्री० बीमारी। रोग।

रुच*†–संज्ञा स्त्री० दे० "रुचि"।

रुचना–क्रि० अ० रुचि के अनुकूल होना। भला लगना। खाने में अच्छा लगना।
मुहा०—रुच-रुच = बहुत रुचि से।

रुचा–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। २. शोभा। ३. इच्छा।

रुचि–संज्ञा स्त्री० १. प्रवृत्ति। तबीअत। २. मन को अच्छा लगने का भाव। अनुराग। प्रेम। चाह। ३. खाने की इच्छा। भूख। ४. स्वाद। जायका। ५. एक अप्सरा का नाम। ६. किरण। ७. शोभा। सुंदरता।
वि० फबता हुआ। योग्य।

रुचिकर–वि० १. अच्छा लगनेवाला। रुचि उत्पन्न करनेवाला। मनोहर। २. पाचक।

रुचिकारक–वि० दे० "रुचिकर"।

रुचिकारी–वि० दे० "रुचिकर"। मनोहर।

रुचिता–संज्ञा स्त्री० रोचकता। सुन्दरता। सौन्दर्य।

रुचिमान–वि० १. प्रकाशमान। २. सुन्दर। मनोहर।

रुचिर–वि० १. मनोहर। सुंदर। अच्छा। भला। २. मीठा।

रुचिरा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद। एक वृत्त।

रुचिराई*†–संज्ञा स्त्री० मनोहरता। सुंदरता।

रुचिवर्द्धक–वि० रुचि बढ़ानेवाला या उत्पन्न करनेवाला। भूख बढ़ानेवाला।

रुच्छ*–वि० दे० "रूखा"।
संज्ञा पुं० दे० "रूख"।

रुच्य–वि० रुचिकर। सुन्दर।

रुज–संज्ञा पुं० १. रोग। २. वेदना। ३. कष्ट। क्षत। घाव। ४. भग। भाँग। ५. एक प्राचीन बाजा।

रुजग्रस्त–वि० रोगग्रस्त। रोगी। बीमार।

रुजाकर–संज्ञा पुं० १. रोग उत्पन्न करनेवाला। रोग। २. कमरख नामक फल।

रुजाली–संज्ञा स्त्री० रोगों या कष्टों का समूह।

रुग्णी–वि० अस्वस्थ। बीमार।
रुचू–वि० जिसकी तबीअत किसी ओर लगी हो। प्रवृत्त।
रुझना*†–क्रि० अ० मन लगना। मोहित होना। उलझना। घाव आदि का भरना।
रुठ–संज्ञा पुं० क्रोध। गुस्सा।
रुठना–क्रि० अ० दे० "रूठना"।
रुठाना–क्रि० स० नाराज करना।
रुणित–वि० झनकारता या बजता हुआ।
रुत–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु"।
संज्ञा पुं० १. पक्षियों का शब्द। कलरव। २. शब्द। ध्वनि।
रुतबा–संज्ञा पुं० [अ०] १. पद। ओहदा। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।
रुदथ–संज्ञा पुं० १. छोटा बच्चा। २. कुत्ता।
रुदन–संज्ञा पुं० रोना। क्रंदन।
रुदित–वि० जो रो रहा हो। रोता हुआ।
रुद्ध–वि० १. घेरा हुआ। बँधा हुआ। वेष्टित २. आवृत। मुँदा हुआ। बंद। ३. जिसकी गति रोक दी गई हो।
यौ०—**रुद्धकंठ**=प्रेम आदि के कारण जो बोलने में असमर्थ हो गया हो।
रुद्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के गणदेवता, जो कुल मिलाकर ग्यारह हैं। ग्यारह की संख्या। २. शिव का एक रूप। रौद्र रस। वि० भयंकर। डरावना।
रुद्रक†–संज्ञा पुं० रुद्राक्ष।
रुद्रगण–संज्ञा पुं० पुराणानुसार शिव के बहुत से अनुचर।
रुद्रगर्भ–संज्ञा पुं० अग्नि।
रुद्रजटा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा।
रुद्रट–संज्ञा पुं० साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य, जिनका बनाया हुआ 'काव्यालंकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है।
रुद्रतेज–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।
रुद्रपति–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
रुद्रपत्नी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
रुद्रयज्ञ–संज्ञा पुं० एक तरह का यज्ञ।
रुद्रयामल–संज्ञा पुं० तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ, जिसमें भैरव और भैरवी का ...है।
रुद्रलोक–संज्ञा पुं० वह लोक, जिसमें शिव और रुद्रों का निवास माना जाता है।
रुद्रवंती–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जंगली औषध।
रुद्रविंशति–संज्ञा स्त्री० साठ संवत्सरों या वर्षों में से अंतिम बीस वर्षों का समूह। रुद्र-बीसी।
रुद्राक्ष–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। २. इस वृक्ष के गोल बीज, जिन्हें गूँथकर माला बनाई जाती है और जिसे शैव लोग पहनते हैं।
रुद्राणी–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। भवानी। २. रुद्रजटा नाम की लता।
रुद्रारि–संज्ञा पुं० कामदेव।
रुद्री–संज्ञा स्त्री० वेद के रुद्रानुवाक् या अघमर्षण-सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ।
रुधिर–संज्ञा पुं० शरीर का रक्त। खून। लहू।
रुधिरपायी–संज्ञा पुं० खून पीनेवाला। राक्षस।
रुधिराशन–संज्ञा पुं० खून चूसने या पीनेवाला। राक्षस।
रुधिराशी–वि० लहू पीनेवाला।
रुनझुन–संज्ञा स्त्री० नूपुर, किंकिणी आदि का शब्द। झनकार।
रुनाई*–संज्ञा स्त्री० अरुणता। अरुणई। लाली।
रुनित*–वि० दे० "रुणित"। बजता हुआ।
रुमी–संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
रुनुकझुनुक–संज्ञा स्त्री दे० "रुनझुन"।
रुपना–क्रि० अ० रोपा जाना। जमीन में गाड़ा या लगाया जाना। डटना। अड़ना।
रुपवती*–संज्ञा स्त्री० रूपवती। सुन्दर स्त्री।
रुपया–संज्ञा पुं० भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोलह आने का सिक्का। धन। संपत्ति।
रुपहरा–वि० चाँदी के रंग का। रुपहला।
रुपहला–वि० [स्त्री० रुपहली] चाँदी के रंग का। चाँदी की तरह।
रुपैया–संज्ञा पुं० दे० "रुपया"।
रुबाई–संज्ञा स्त्री० [अ०] उर्दू या फारसी का चार पंक्तियों का एक छंद, जिसमें

प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पंक्ति की तुक एक होती है। २. उमर खैयाम की रुबाइयाँ।

रुमाली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लँगोट।

रुराई*–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।

रुरु–संज्ञा पुं० १. काला हिरन। कस्तूरी-मृग। २. पुराणानुसार एक दैत्य, जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. एक भैरव का नाम। ४. एक प्रकार का पेड़।

रुरुआ–संज्ञा पुं० बड़ा उल्लू पक्षी।

रुलना†–क्रि० अ० इधर-उधर मारा फिरना।

रुलाई–संज्ञा स्त्री० रोने की क्रिया। रोने की प्रवृत्ति।

रुलाना–क्रि० स० दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना। इधर-उधर फिराना। खराब करना। नष्ट करना।

रुवा†–संज्ञा पुं० सेमल के फूल में का घूआ। भूआ।

रुष–संज्ञा पुं० क्रोध। गुस्सा।

रुषा–संज्ञा स्त्री० क्रोध।

रुषित–वि० १. क्रुद्ध। नाराज। २. उदास।

रुष्ट–वि० क्रुद्ध। नाराज। अप्रसन्न।

रुष्टता–संज्ञा स्त्री० नाराजगी। अप्रसन्नता।

रुष्टपुष्ट–वि० हृष्टपुष्ट। स्वस्थ। तन्दुरुस्त।

रुष्टि–संज्ञा स्त्री० क्रोध।

रुसना*–क्रि० अ० दे० "रूसना"।

रुसित*–वि० रुष्ट। नाराज।

रुस्तम–संज्ञा पुं० [अ०] फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। महान् शक्तिशाली।

मुहा०—छिपा रुस्तम=जो देखने में सीधा-सादा पर वास्तव में बहुत वीर या गुणी हो।

रुहठि*†–संज्ञा स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव।

रुहिर*–संज्ञा पुं० दे० "रुधिर"।

[illegible]–संज्ञा पुं० अवध के उत्तर-पश्चिम स्थित एक प्रदेश, जहाँ रुहेला नाम की पठानों की एक शाखा के बस जाने के कारण इस प्रदेश का नाम रुहेल-खंड पड़ा।

रुहेला–संज्ञा पुं० रुहेला नाम की पठानों की एक शाखा, जो प्रायः रुहेलखंड में बस गई थी। इससे उस प्रदेश का नाम रुहेलखंड पड़ा।

रूँगटाली†–संज्ञा स्त्री० भेड़।

रूँगा‡–संज्ञा पुं० घाल। घलुआ।

रूँदना–क्रि० स० रौंदना।

रूँध–वि० रुका हुआ। अवरुद्ध।

रूँधना–क्रि० स० १. कँटीले झाड़ आदि से घेरना। बाड़ लगाना। २. चारों ओर से घेरना। रोकना। छेंकना। आने-जाने का रास्ता बन्द करना।

रूई–संज्ञा स्त्री० कपास के डोडे या कोष के अन्दर का घूआ, जिसका सूत कातकर कपड़ा बनाते हैं, या कपड़ों में भरते हैं। बीजों के ऊपर का रोआँ।

रूईदार–वि० जिसमें रूई भरी गई हो।

रूक्ष–वि० रूखा।

रूख–संज्ञा पुं० पेड़।

वि० दे० "रूखा"।

रूखड़ा†–संज्ञा पुं० पेड़।

रूखना*–क्रि० अ० रूठना।

रूखा–वि० [संज्ञा स्त्री० रुखाई, रूखापन] १. जिसमें चिकनाहट न हो। खुरदरा। २. जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पड़े हों। ३. जो खाने में स्वादिष्ट न हो। नीरस। ४. सूखा। शुष्क। ५. उदासीन। विरक्त। ६. कठोर।

मुहा०—रूखा-सूखा=जिसमें चिकना और चरपरा पदार्थ न हो। बहुत साधारण भोजन। रूखा पड़ना या होना=१. बेमुरौवती करना। २. क्रुद्ध होना। नाराज होना। ३. उपेक्षा करना। उदासीनता प्रकट करना।

रूज–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बुकनी।

रूझना*–क्रि० अ० दे० "उलझना"।

रूठ, रूठन–संज्ञा स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव। नाराजगी।

रूठना–क्रि० अ० १. अप्रसन्न होकर हठ करना। नाराज होकर चुप या अलग होना। रूसना। २. मचलना। कोई चीज लेने के लिए हठ करना (बच्चों का)।

रूढ़–वि० [स्त्री० रूढ़ा] १. जिसका कोई

भाग न हो सके। अविभाज्य। २. चढ़ा हुआ। आरूढ़। ३. उत्पन्न। ४. प्रसिद्ध। ५. गँवार। उजड्ड। ६. कठोर। ७. अकेला।
संज्ञा पुं० अर्थानुसार शब्द का वह भेद, जो दो शब्दों या शब्द और प्रत्यय के योग से बना हो। यौगिक का उलटा। रूढ़ि।

रूढ़यौवना–संज्ञा स्त्री० दे० "आरूढ़-यौवना"।

रूढ़ा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा, जो प्रचलित हो और जिसका व्यवहार प्रसिद्ध से भिन्न अर्थ के लिए न हो।

रूढ़ि–संज्ञा स्त्री० १. रूढ़ होने का भाव। प्राचीन काल से चली आई हुई प्रथा या परम्परा। २. चढ़ाव। उभार। उठान। ३. वृद्धि। बढ़ती। ४. उत्पत्ति। ५. प्रसिद्धि। ६. विचार। ७. निश्चय। ८. रूढ़। शब्द की वह शक्ति, जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है।

रूप–संज्ञा पुं० १. आकार। सूरत। शक्ल। २. स्वभाव। प्रकृति। ३. सौंदर्य्य। खूबसूरती। ४. शरीर। देह। ५. वेष। ६. दशा। अवस्था। ७. समान। तुल्य। सदृश। ८. चिह्न। लक्षण। ९. आकार। १०. रूपक। *११. चाँदी। रूपा।
वि० रूपवान्=खूबसूरत।
मुहा०—रूप हरना=लज्जित करना। रूप लेना=रूप धारण करना। रूप भरना=भेस बनाना।
यौ०—रूपरेखा=१. आकार। चिह्न। २. पता।

रूपक–संज्ञा पुं० १. मूर्ति। प्रतिकृति। २. अभिनय किया जानेवाला काव्य। दृश्यकाव्य। इसके दस भेद हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन। ३. एक अर्थालंकार, जिसमें उपमान का आरोप उपमेय में करके उसका वर्णन उपमान के रूप से या अभेद रूप से किया जाता है। ४. दिखाने के लिए बनाया हुआ रूप। बनावटी रूप या मुद्रा। ५. संगीत की एक ताल [रूपक ताल]। ६. एक परिमाण। रुपया।

रूपकार–संज्ञा पुं० मूर्ति बनानेवाला। शिल्पकार।

रूपकांता–संज्ञा स्त्री० सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

रूपगर्विता–संज्ञा स्त्री० अपने रूप का अभिमान करनेवाली नायिका।

रूपघनाक्षरी–संज्ञा स्त्री० ३२ वर्णों का एक प्रकार का दंडक छंद।

रूपजीवनी–संज्ञा स्त्री० वेश्या। अपना सौन्दर्य बेंचकर जीविका चलानेवाली।

रूपजीवी–संज्ञा पुं० बहुरूपिया।

रूपण–संज्ञा पुं० १. आरोपण। २. परीक्षा। ३. प्रमाण।

रूपधर–वि० सुन्दर। खूबसूरत।
संज्ञा पुं० धारण करनेवाला। दे० "रूपधारी"

रूपधारी–संज्ञा पुं० दूसरे का रूप धारण करनेवाला। बहुरूपिया।

रूपभेद–संज्ञा पुं० चित्रकला में हर प्रकार की आकृति और उसकी विशेषताओं का विभेद। भारतीय चित्रकला के ६ अंगों में से एक।

रूपमनी*–वि० रूपवती। सुन्दरी स्त्री।

रूपमय–वि० [स्त्री० रूपमयी] अति सुंदर। बहुत खूबसूरत।

रूपमान*–वि० दे० "रूपवान्"।

रूपमाला–संज्ञा स्त्री० २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

रूपमाली–संज्ञा स्त्री० नौ दीर्घ वर्णों का एक छंद।

रूपरेखा–संज्ञा स्त्री० १. खाका। किसी कार्य या योजना का स्थूल अनुमान, जिससे उसका परिचय मिल जाय। २. बनाए जानेवाले रूप या चित्र का प्रारम्भिक आकार-प्रकार। चित्र का खाका।

रूपवंत–वि० [स्त्री० रूपवंती] खूबसूरत। रूपवान्। सुंदर।

रूपवती–वि० सुंदरी। खूबसूरत।
संज्ञा स्त्री० १. गौरी नामक छंद। २. चंपकमाला वृत्ति का एक नाम। खूबसूरत स्त्री।

रूपवान्–वि०[स्त्री० रूपवती] सुंदर। खूबसूरत। रूपवाला।

रूपशाली–वि० दे० "रूपवान्।"
रूपसी–संज्ञा स्त्री० रूपवती। सुंदरी स्त्री।
रूपस्वी–वि० सुन्दर।
रूपा–संज्ञा पुं० १. चाँदी। घटिया चाँदी। २. सफेद रंग का घोड़ा।
रूपी–वि० [स्त्री० रूपिणी] १. जिसका कोई रूप हो। रूपधारी। रूपवाला। २. समान। सदृश।
रूपोश–वि० [फा०] [संज्ञा रूपोशी] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. दंड के भय से भागा हुआ। फरार।
रूपोशी–संज्ञा स्त्री० मुँह छिपाने की क्रिया।
रूप्य–वि० सुंदर। खूबसूरत।
संज्ञा पुं० रूपा। चाँदी।
रूप्यक–संज्ञा पुं० रुपया।
रू-बरू–क्रि० वि० [फा०] सम्मुख। सामने।
रूम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कमरा।
[फा०] तुर्किस्तान या टर्की देश।
रूमना*–क्रि० स० झूमना। झूलना।
रूमाल–संज्ञा पुं० [फा०] १. कपड़े का छोटा चौकोर टुकड़ा, जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं। २. चौकोना शाल या दुपट्टा।
रूमाली–संज्ञा स्त्री० दे० "रुमाली"।
रूमी–वि० [फा०] १. रूम देश का निवासी। २. रूम देश-संबंधी। रूम का।
रूर–वि० जला हुआ। तप्त।
रूरना*–क्रि० अ० चिल्लाना।
रूरा–वि० [स्त्री० रूरी] श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। सुंदर। बहुत बड़ा।
रूल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. कायदा। नियम। २. लकीर खींचने का छोटा गोल डंडा। रूलर। ३. सीधी रेखा।
रूलर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. लकीर खींचने का छोटा गोल डंडा। २. मशीन आदि में लगनेवाला डंडा। ३. शासक।
रूलना–क्रि० स० दबाना।
रूषण–संज्ञा पुं० १. सजाना। भूषित करना। २. अनुलेपन। ३. आच्छादन।
रूषित–वि० टूटा हुआ।
रूस–संज्ञा पुं० १. यूरोप तथा एशिया महाद्वीपों के बीच फैला हुआ एक बड़ा देश, जहाँ साम्यवादी शासन-व्यवस्था है। २. एक प्रकार का जंगली पौधा, जिसकी जड़, पत्तियाँ, छाल तथा पुष्प औषध के काम में आते हैं।
रूसना–क्रि० अ० दे० "रूठना"। मचलना। कोई चीज लेने के लिए हठ करना (बच्चों का)।
रूसा–संज्ञा पुं० अडूसा। एक सुगंधित घास, जिसका तेल निकाला जाता है।
रूसी–वि० रूस देश का निवासी। रूस देश का। संज्ञा स्त्री० १. रूस देश की भाषा। २. सिर के चमड़े पर की पतली झिल्ली, जो कट या फटकर निकलती है।
रूह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आत्मा। जीव। २. सार। सत्त।
रूहना*–क्रि० अ० १. चढ़ना। २. उमड़ना। ३. चारों ओर से घेरना या घिरना।
क्रि० स० दे० "रूँधना"।
रूहानी–वि० [अ०] रूह या आत्मा-सम्बन्धी। आध्यात्मिक।
रेंकना–क्रि० अ० १. गदहे का बोलना। २. गदहे की तरह चिल्लाना। ३. भद्दे तरीके से गाना।
रेंगटा–संज्ञा पुं० गदहे का बच्चा।
रेंगना–क्रि० अ० १. च्यूँटी आदि कीड़ों का चलना। २. धीरे-धीरे चलना। ३. पेट के बल चलना।
रेंगनी–संज्ञा स्त्री० १. भटकटैया। २. कपड़ा आदि टाँगने के लिए फैलाकर बाँधी गई डोरी।
रेंट–संज्ञा पुं० नाक से निकलनेवाला मल।
रेंड़–संज्ञा पुं० एक पौधा, जिसके बीजों का तेल निकलता है और वह दस्तावर होता है।
रेंडना–क्रि० अ० फसल के पौधों का बढ़ना।
रेंड़ी–संज्ञा स्त्री० रेंड़ के बीज।
रेंरें–अव्य० बच्चों के रोने का शब्द।
रे–अव्य० छोटे आदमियों के लिए एक सम्बोधन।
संज्ञा पुं० संगीत में ऋषभ स्वर का सूचक संक्षिप्त रूप–जैसे सा, रे, ग, म आदि।
रेख–संज्ञा स्त्री० १. रेखा। लकीर। २. चिह्न।

निशान। ३. गिनती। गणना। शुमार। ४. नई निकलती हुई मूँछें।

मुहा०—रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना=१. लकीर बनाना। २. जोर देकर कहना। ३. प्रतिज्ञा करना। रेख भींजना या भीनना=मूँछें निकलना शुरू होना। निकलती हुई मूँछें दिखाई देना।

यौ०—रूप-रेखा=स्वरूप। सूरत।

रेखता–संज्ञा [फा०] एक प्रकार की गजल।

रेखना*–क्रि० स० १. रेखा या लकीर खींचना। २. चिह्न या निशान बनाना। ३. खरोंचना।

रेखांकण, रेखांकन–संज्ञा पुं० १. रेखाओं से चिह्न बनाना। चित्र बनाने के लिए रेखाएँ अंकित करना। २. दे० "रेखाचित्र"।

रेखांकित–वि० जिस पर रेखाओं से चिह्न बनाया गया हो। जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो।

रेखांश—संज्ञा पुं० १. वृत्त का एक अंश। २. रेखा का एक भाग।

रेखा–संज्ञा स्त्री० १. पतला लम्बा चिह्न। डाँड़ी। लकीर। २. किसी वस्तु का सूचक चिह्न। ३. गणना। शुमार। गिनती। आकृति। आकार। ४. हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें, जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का पता चलता है।

यौ०—कर्मरेखा=भाग्य का लेख।

रेखाकर्म–संज्ञा पुं० दे० "रेखांकण"।

रेखागणित–संज्ञा पुं० ज्यामिति। ज्योमेट्री (अंग्रे०) गणित का वह विभाग, जिसमें रेखाओं-द्वारा कुछ सिद्धांत निर्द्धारित किए जाते हैं।

रेखाचित्र–संज्ञा पुं० खाका। केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र।

रेखाचित्रण–संज्ञा पुं० रेखा-चित्र बनाने का काम।

रेखित–वि० १. रेखांकित। जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो। २. फटा हुआ।

रेग–संज्ञा स्त्री० बालू।

रेगमाल–संज्ञा पुं० एक तरह का कागज, जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिसे रगड़कर लकड़ियाँ या धातुएँ, जैसे लोहे आदि की चीजें साफ की जाती हैं।

रेगिस्तान–संज्ञा पुं० [फा०] बालू का मैदान। मरुस्थल।

रेचक–वि० वह चीज, जिसके खाने से दस्त हों। दस्तावर।

संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमें खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।

रेचन–संज्ञा पुं० १. दस्त लाना। २. जुल्लाब। कब्ज दूर करना या कोष्ठशुद्धि करना।

रेचना*–क्रि० स० वायु या मल को बाहर निकालना।

रेजगारी या **रेजगी**–संज्ञा स्त्री० [फा०] दुअन्नी-चवन्नी आदि छोटे सिक्के।

मुहा०—रेजगारी भुनाना=बड़े सिक्कों को छोटे सिक्कों में बदलना।

रेजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २. नग। ३. थान। ४. अदद।

रेजीमेंट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] सेना का एक भाग।

रेडियम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक बहुमूल्य सफेद द्रव-धातु, जिसमें बहुत अधिक शक्ति संचित रहती है।

रेडियो–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बिजली का एक प्रसिद्ध यंत्र, जिसके बिना तार के सम्बन्ध के बहुत दूर की कही हुई बातें सुनाई पड़ती हैं। आकाशवाणी।

रेडियो ब्राडकास्ट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रेडियो से भाषण या गाने आदि का प्रसार।

रेढ़ना†–क्रि० स० लुढ़कना। घसीटते हुए चलना।

रेणु–संज्ञा स्त्री० १. धूल। २. बालू। अत्यंत लघु परिमाण। कणिका।

रेणुका–संज्ञा स्त्री० १. बालू। रेत। २. रज। धूल। ३. पृथ्वी। ४. परशुराम की माता का नाम।

रेणुवास–संज्ञा पुं० भौंरा।

रेत–संज्ञा स्त्री० १. बालू। २. बालू का मैदान।

रेतना–क्रि० स० १. रेती से रगड़कर किसी

वस्तु को चिकनी या महीन करना। २. औजार से रगड़कर काटना।

रेतस्–संज्ञा पुं० १. शुक्र। वीर्य। २. वीर्य का निकलना। ३. जल-धारा। ४. वर्षा की धारा। ५. पारा।

रेता–संज्ञा पुं० १. बालू। २. बालू का मैदान। मिट्टी।

रेतिया–संज्ञा पुं० रेतनेवाला।

रेती–संज्ञा स्त्री० १. लोहे का एक औजार, जिसे किसी वस्तु पर रगड़कर उसे चिकना या महीन किया जाता है। २. नदी या समुद्र के तट पर पड़ी हुई बलुई जमीन। बलुआ किनारा।

रेतीला–वि० [स्त्री० रेतीली] बलुआ। बालू-वाला।

रेना†–क्रि० स० किसी वस्तु में डालकर लटकाना।

रेनु*–संज्ञा पुं० दे० "रेणु"।

रेप–वि० १. क्रूर। २. कृपण। कंजूस। ३. निंदित। बदनाम।

रेफ–संज्ञा पुं० हलंत रकार का वह रूप, जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके ऊपर लगता है। जैसे, सर्प, दर्प, हर्ष में। रकार (र)।

रेल–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. लोहे की पटरी पर भाप के जोर से चलनेवाली गाड़ी। रेलगाड़ी। २. बहाव। ३. धारा। ४. आधिक्य। भरमार।

रेलठेल–संज्ञा स्त्री० दे० "रेलपेल"।

रेलना–क्रि० स० धक्का देकर आगे बढ़ाना। आगे ढकेलना। धक्का देना।

क्रि० अ० ठसाठस भरा होना।

रेलपेल–संज्ञा स्त्री० १. भारी भीड़। २. भरमार। अधिकता।

रेलवे–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. दे० "रेल"। रेलगाड़ी। २. रेल-सम्बन्धी विभाग या कार्यालय।

रेला–संज्ञा पुं० १. भीड़ में जोर का धक्का। भीड़ का जोरों से आगे बढ़ना। दे० "रेल-पेल"। धक्कमधक्का। २. तीव्र बहाव। तोड़। ३. धावा। समूह-द्वारा चढ़ाई। ४. अधिकता। बहुतायत।

रेवंद–संज्ञा पुं० [फा०] एक पहाड़ी पेड़, जिसकी जड़ और लकड़ी रेवंद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम में आती है।

रेवड़–संज्ञा पुं० भेड़ों या बकरियों आदि का झुंड।

रेवड़ी–संज्ञा स्त्री० तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई।

रेवती–संज्ञा स्त्री० १. सत्ताइसवाँ नक्षत्र, जो ३२ तारों से मिलकर बना है। २. दुर्गा। ३. गाय। ४. बलराम की पत्नी, जो राजा रेवत की कन्या थीं।

रेवतीरमण–संज्ञा पुं० १. बलराम। २. श्रीविष्णु।

रेवा–संज्ञा स्त्री० १. नर्मदा नदी। २. कामदेव की पत्नी रति। ३. दुर्गा। ४. बघेलखंड। रीवाँ राज्य। ५. एक मछली।

रेशम–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का महीन, चिकना और चमकीला रेशा, जिससे कपड़े बुने जाते हैं। कोश में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़े इसे तैयार करते हैं। कौशेय।

रेशमी–वि० रेशम का। रेशम का बना हुआ।

रेशा–संज्ञा पुं० [फा०] तंतु। महीन सूत।

रेह–संज्ञा स्त्री० खार मिली हुई मिट्टी।

रेहन–संज्ञा पुं० [फा०] बंधक। गिरवी। किसी के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब उसे ऋण चुका दिया जाय, तब वह माल या जायदाद वापस कर दे।

रेहनदार–संज्ञा पुं० [फा०] वह, जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी गई हो।

रेहननामा–संज्ञा पुं० [फा०] वह कागज, जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रेहल–संज्ञा स्त्री० दे० "रिहल"।

रेहुआ–वि० अधिक रेहवाला।

रेहू–संज्ञा पुं० रोहू मछली।

रैदास–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध चमार भक्त, जो रामानंद के शिष्य और कबीर के समकालीन थे। २. चमार।

रैन, रैनि*–संज्ञा स्त्री० रात।

रैमुनिया–संज्ञा स्त्री० एक तरह की अरहर।

रैयत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।

रैयाराव–संज्ञा पुं० छोटा राजा।
रैवत–संज्ञा पुं० १. श्रीशंकर। २. मेघ। बादल। ३. वर्तमान काल के पाँचवें मनु।
रैवतक–संज्ञा पुं० गुजरात का एक पर्वत, जो अब गिरनार कहलाता है।
रैवत्य–संज्ञा पुं० धन। सम्पत्ति।
रैसा–संज्ञा पुं० झगड़ा। कलह।
रोंगटा–संज्ञा पुं० रोआँ। रोम।
मुहा०–रोंगटे खड़े होना=किसी भयानक कांड को देख या सुनकर बहुत भय या क्षोभ होना। रोमांच होना=दे० रोएँ खड़े होना।
रोंगटी–संज्ञा स्त्री० खेल में बुरा मानना या बेईमानी करना।
रोंठा–संज्ञा पुं० कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
रोंव–संज्ञा पुं० दे० "रोम"। रोआँ।
रोंसा–संज्ञा पुं० लोबिया की फली।
रोआँ–संज्ञा पुं० रोम। शरीर पर के बहुत छोटे और पतले बाल।
मुहा०—रोएँ खड़े होना=कोई भयानक कांड देख या सुनकर इतना भय या क्षोभ होना कि रोएँ खड़े हो जायँ। रोमांच होना।
रोआब†–संज्ञा पुं० १. [अ०] रोब। आतंक। २. असर। प्रभाव।
रोएँ–संज्ञा पुं० रोंआ।
रोएँदार–वि० जिसके शरीर पर बहुत रोएँ हों। जिस पर रोएँ की तरह सूत, रेशे आदि हों।
रोक–संज्ञा स्त्री० १. रुकावट। बाधा। प्रतिबन्ध। मनाही। निषेध। काम में बाधा। २. रोकनेवाली वस्तु।
संज्ञा पुं० नकद। रुपए-पैसे आदि के रूप में। रोकड़।
रोक-टोक–संज्ञा स्त्री० मनाही। निषेध। बाधा।
रोकड़–संज्ञा स्त्री० १. नकद रुपया-पैसा आदि। २. जमा। धन। पूँजी।
रोकड़बही–संज्ञा स्त्री० प्रतिदिन की आय और व्यय लिखने की बही। रोकड़ लेने-देने के हिसाब की बही।
रोकड़बाकी–संज्ञा स्त्री० व्यय आदि निकल जाने के बाद बाकी बची हुई रकम (अंग्रे०-क्लोजिंग बैलेन्स)।
रोकड़बिक्री–संज्ञा स्त्री० नकद बिक्री।
रोकड़िया–संज्ञा पुं० खजानची। मुनीम। रोकड़ रखनेवाला।
रोकथाम–संज्ञा स्त्री० रोकने का उपाय या प्रयत्न। बीमारी रोकने का उपाय। अनुचित या हानिकारक कार्य रोकने का प्रयत्न।
रोकना–क्रि० स० १. आगे बढ़ने न देना। चलने न देना। गति रोक देना। २. कहीं जाने से मना करना। बंद करना। रुकावट डालना। अड़चन या बाधा डालना। ३. ऊपर लेना। ओढ़ना। ४. वश या काबू में रखना। ५. सामना करना।
रोग–संज्ञा पुं० [वि० रोगी] बीमारी।
रोगग्रस्त–वि० बीमार। रोग से पीड़ित।
रोगन–संज्ञा पुं० [फा०] १. तेल। २. वह पतला लेप, जिसे किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे। पालिश। वारनिश। ३. लाख से बना हुआ मसाला, जिसे मिट्टी या काठ के बरतनों आदि पर चढ़ाते हैं। ४. चमड़ा मुलायम करने के लिए बनाया हुआ एक मसाला।
रोगनाशक–वि० बीमारी दूर करनेवाला।
रोग़नी–वि० [फा०] रोगन किया हुआ।
रोगातुर–वि० रोग से घबराया हुआ।
रोगार्त–वि० रोग से दुखी।
रोगिणी–वि० रोगी स्त्री।
रोगिया–संज्ञा पुं० दे० "रोगी"।
रोगी–वि० [स्त्री० रोगिनी] बीमार। अस्वस्थ।
रोचक–वि० [संज्ञा रोचकता] रुचिकारक। प्रिय। मनोरंजक। दिलचस्प।
रोचकता–संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने का भाव। मनोहरता। दिलचस्पी।
रोचन–वि० १. अच्छा लगनेवाला। रोचक। २. शोभा देनेवाला। दीप्तिमान। ३. प्रिय लगनेवाला। ४. लाल।
संज्ञा पुं० १. काला सेमर। २. प्याज। ३. स्वारोचिष मन्वंतर के इंद्र। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ५. गोरोचन। ६. रोली।

रोचना–संज्ञा स्त्री० १. रक्त-कमल। २. गोरोचन। ३. वंशलोचन। ४. वसुदेव की स्त्री। ५. श्रेष्ठ स्त्री। ६. आकाश।

रोचि–संज्ञा स्त्री० १. प्रभा। दीप्ति। २. प्रकट होती हुई शोभा। ३. किरण। रश्मि।

रोचित–वि० शोभित सुन्दर।

रोचिष्णु–वि० १. चमकदार। २. आभूषणों आदि से जगमगाता हुआ।

रोचस्–संज्ञा पुं० प्रभा।

रोज–संज्ञा पुं० [फा०] दिन। दिवस। अव्य० प्रतिदिन। नित्य।

रोजगार–संज्ञा पुं० [फा०] जीविका के लिए किया जानेवाला काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। कारबार। व्यापार।

रोजगारी–संज्ञा पुं० [फा०] व्यापारी।

रोजनामचा–संज्ञा पुं० [फा०] दैनिकी। दिन-चर्य्या लिखने की पुस्तक। वह किताब, जिस पर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है।

रोजमर्रा–अव्य० [फा०] प्रतिदिन। नित्य। संज्ञा पुं० नित्य के व्यवहार में आनेवाली भाषा। बोलचाल। चलती बोली।

रोजा–संज्ञा पुं० [फा०] व्रत। उपवास। वह उपवास, जिसे मुसलमान रमजान के महीने में ३० दिन तक रखते हैं।

रोजाना–क्रि० वि० [फा०] प्रतिदिन। हर रोज।

रोजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नित्य का भोजन। २. जीवन-निर्वाह का अवलंब। जीविका। रोजगार।

रोजीना–वि० [फा०] नित्य का। संज्ञा पुं० रोज की मजदूरी। नित्य का वेतन।

रोझ–संज्ञा स्त्री० नील गाय।

रोट–संज्ञा पुं० मीठी रोटी। बहुत मोटी रोटी। लिट्टी।

रोटा†–वि० पिसा हुआ। संज्ञा पुं० पतली बड़ी रोटी।

रोटिका–संज्ञा स्त्री० छोटी रोटी।

रोटिहा†–संज्ञा पुं० केवल भोजन पर रहने-वाला नौकर।

रोटी–संज्ञा स्त्री० १. गुंधे हुए आटे की आँच पर सेंकी हुई टिकिया। चपाती। फुलका। २. भोजन। रसोई।

मुहा०–रोटी-कपड़ा=भोजन-वस्त्र। जीवन-निर्वाह की सामग्री। किसी बात की रोटी खाना=किसी बात से जीविका कमाना। किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना=किसी के घर पड़ा रहकर पेट पालना। रोटी-दाल चलना=जीवन-निर्वाह होना।

रोटीफल–संज्ञा पुं० एक वृक्ष का फल, जो खाने में अच्छा होता है।

रोड़ा–संज्ञा पुं० ईंट या पत्थर का टुकड़ा। बड़ा कंकड़।

मुहा०—रोड़ा अटकाना या डालना=विघ्न या बाधा डालना।

रोदन–संज्ञा पुं० रोना। रुदन। क्रंदन।

रोदसी–संज्ञा स्त्री० १. स्वर्ग। २. भूमि।

रोदा–संज्ञा पुं० कमान की डोरी। चिल्ला।

रोध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। २. तट। ३. बारी।

रोधक–संज्ञा पुं० रोकनेवाला। रुकावट डालनेवाला।

रोधन–संज्ञा पुं० १. रोक। रुकावट। अवरोध। २. दमन।

रोधना*–क्रि० स० रोकना।

रोध्र–संज्ञा पुं० अपराध।

रोना–क्रि० अ० १. आँसू बहाना। २. रुदन करना। चिल्लाना। ३. बुरा मानना। ४. चिढ़ना। पछताना। संज्ञा पुं० दुःख। रंज। खेद। वि० १. थोड़ी-सी बात पर भी रोने-वाला। चिड़चिड़ा। २. रोनेवाले का-सा। मुहर्रमी। रोवाँसा।

मुहा०–रोना-पीटना=बहुत विलाप करना। रो-रोकर=ज्यों-त्यों करके। कठिनता से। बहुत धीरे-धीरे। रोना-गाना=विनती करना। गिड़गिड़ाना।

रोनीधोनी–वि० रोने-धोनेवाली।

रोप–संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. मोहने की क्रिया या भाव। ३. रुकावट। ४. सूराख। ५. बाण।

रोपक–वि० १. रोपने या बोनेवाला। २. स्थापित करनेवाला।

रोपण–संज्ञा पुं० [वि० रोपित, रोप्य] १. जमाना। बैठाना। (बीज या पौधा) २. बोना। ३. ऊपर से लाकर लगाना, स्थापित करना। ४. मोहित करना। मोहना। बुद्धि फेरना। ५. घाव का सूखना।

रोपना–क्रि० स० १. बोना। बीज डालना। २. जमाना। लगाना। बैठाना। पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३. लेने के लिए हथेली या कोई बरतन सामने करना। ४. अड़ाना। ठहराना। रोकना।

रोपनी–संज्ञा स्त्री० धान आदि के पौधों को गाड़ने का काम। रोपाई।

रोपित–वि० १. बोया हुआ। लगाया हुआ। जमाया हुआ। २. स्थापित। ३. मोहित। ४. भ्रांत।

रोब–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० रोबीला] बड़प्पन की धाक। प्रताप। आतंक। दबदबा।

मुहा०–रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना। रोब में आना=आतंक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना, जो यों न की जाती हो। भय मानना। आतंकित होना।

रोबदार–वि० [अ०] १. प्रभावशाली। रोबदाबवाला। २. भड़कीला। चमकदार।

रोमंथ–संज्ञा पुं० जुगाली। पागुर।

रोम–संज्ञा पुं० १. शरीर के बहुत छोटे बाल। रोयाँ। लोम। २. छेद। सूराख। ३. जल। ४. ऊन। ५. इटली की राजधानी प्रसिद्ध रोम नगर।

मुहा०—रोम-रोम में=शरीर भर में। रोम-रोम से=तन-मन से। जी-जान से। पूरे दिल से।

रोमकूप–संज्ञा पुं० शरीर के वे छिद्र, जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं।

रोमद्वार–संज्ञा पुं० दे० "रोमकूप"।

रोमन–वि० [अंग्रे०] रोम का रहनेवाला। वह लिपि, जिसमें अँगरेजी-आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमन कैथलिक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ईसाइयों का एक सम्प्रदाय।

रोमपाट–संज्ञा पुं० ऊनी कपड़ा।

रोमराजी–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावलि"। नाभि से ऊपर की रोमों की पंक्ति।

रोमलता–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।

रोमहर्ष–संज्ञा पुं० रोमांच।

रोमहर्षण–संज्ञा पुं० रोमांच। (सहसा अधिक प्रसन्नता या भय से रोयों का खड़ा होना।) वि० भयंकर। भीषण। जिससे रोयें खड़े हों।

रोमांच–संज्ञा पुं० हर्ष या भय से रोंगटे खड़े होना। पुलक। सिहरन।

रोमांचित–वि० पुलकित। जिसके रोयें आनन्द या भय से खड़े हो गए हों।

रोमाग्र–संज्ञा पुं० रोएँ की नोक या अगला हिस्सा।

रोमाली–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"। रोयों की पंक्ति।

रोमावलि, रोमावली–संज्ञा स्त्री० रोयों की पंक्ति, जो पेट के बीचोंबीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमाली। रोमराजी।

रोमिल–वि० रोएँदार।

रोमोद्गम–संज्ञा पुं० हर्ष या भय से रोएँ खड़े होना।

रोयाँ–संज्ञा पुं० शरीर पर उगनेवाले बाल। लोम। रोम।

मुहा०—रोयाँ खड़ा होना=हर्ष या भय से रोमांच होना। पुलकित होना। रोयाँ पसीजना=हृदय में दया उत्पन्न होना। तरस आना।

रोर–संज्ञा स्त्री० १. हल्ला। कोलाहल। शोरगुल। बहुत से लोगों के रोने-चिल्लाने का शब्द। २. उपद्रव। हलचल।

वि० १. प्रचंड। तेज। दुर्दमनीय। २. उपद्रवी। उद्धत। दुष्ट।

रोरी†–संज्ञा स्त्री० १. रोली। हल्दी और चूने से बनी हुई लाल रंग की बुकनी। २. चहल-पहल। धूम।

वि० सुंदर। रुचिर।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का नग।

रोवा–संज्ञा स्त्री० अत्यन्त रुदन और विलाप।

रोल*–संज्ञा स्त्री० १. रोर। हल्ला। कोलाहल। २. शब्द। ध्वनि।
संज्ञा पुं० पानी का तोड़। रेला। बहाव।

रोलर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जमीन बराबर करने का बड़ा बेलन।

रोला–संज्ञा पुं० १. रोर। शोरगुल। कोलाहल। २. घमासान युद्ध। ३. २४ मात्राओं का एक छंद।

रोली–संज्ञा स्त्री० चूने और हल्दी से बनी लाल बुकनी, जिसका तिलक लगाते हैं। श्री।

रोवनहार–संज्ञा पुं० १. रोनेवाला। २. किसी के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला कुटुंबी।

रोवना–क्रि० अ०, वि० दे० "रोना"।

रोवनिहारा*–वि० दे० "रोवनहार"। रोनेवाला।

रोवनी, धोवनी†–संज्ञा स्त्री० रोने-धोने की आदत। मनहूसी।

रोवासा–वि० [स्त्री० रोवासी] जो रो देना चाहता हो।

रोशन–वि० [फा०] १. जलता हुआ। प्रदीप्त। प्रकाशित। प्रकाशमान। चमकदार। २. प्रसिद्ध। मशहूर। ३. प्रकट। जाहिर।

रोशन चौकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] शहनाई का बाजा। नफीरी।

रोशनदान–संज्ञा पुं० [फा०] प्रकाश आने का छिद्र। गवाक्ष।

रोशनाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लिखने की स्याही। मसि। २. रोशनी। प्रकाश।

रोशनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. उजाला। प्रकाश। २. दीप-माला का प्रकाश। ३. दीपक। चिराग। ४. ज्ञान का प्रकाश।

रोष–संज्ञा पुं० [वि० रुष्ट] १. क्रोध। कोप। गुस्सा। २. वैर। विरोध। ३. चिढ़। कुढ़न। ४. लड़ाई की उमंग। जोश। आवेश।

रोषान्वित–वि० क्रुद्ध।

रोषित–वि० क्रुद्ध।

रोषी–वि० क्रोधी। गुस्सावर। रोषयुक्त।

रोस–संज्ञा पुं० दे० "रोष"।

रोसा–संज्ञा पुं० एक सुगंधित घास।

रोह–संज्ञा पुं० १. ऊपर की चढ़ाई। २. कली। ३. अंकुर। ४. नील गाय।

रोहक–संज्ञा पुं० चढ़नेवाला।

रोहज*–संज्ञा पुं० नेत्र।

रोहण–संज्ञा पुं० १. चढ़ना। चढ़ाई। ऊपर को बढ़ना। २. पौधे का उगना। जमना। ३. वीर्य्य।

रोहना*–क्रि० अ० १. चढ़ना। ऊपर की ओर जाना। २. सवार होना।
क्रि० स० १. चढ़ाना। ऊपर करना। २. सवार कराना। ३. धारण करना।

रोहि–संज्ञा पुं० १. वृक्ष। २. बीज। ३. व्रती। ४. तपस्वी।

रोहिणी–संज्ञा स्त्री० १. गाय। २. बिजली। ३. वसुदेव की स्त्री, जो बलराम की माता थीं। ४. नौ वर्ष की कन्या की संज्ञा (स्मृति)। ५. सत्ताइस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र।

रोहिणीपति–संज्ञा पुं० १. श्रीवसुदेव। २. चन्द्रमा। रोहिणीश।

रोहित्–संज्ञा पुं० सूर्य।

रोहित–वि० लाल रंग का। लोहित।
संज्ञा पुं० १. लाल रंग। २. रोहू मछली। ३. एक प्रकार का मृग। ४. इंद्र-धनुष। ५. केसर। ६. कुंकुम। ७. रक्त। लहू। खून। ८. रोहित नामक वृक्ष।

रोहितक–संज्ञा पुं० रोहित का पेड़।

रोहिताश्व–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. राजा हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम।

रोहिश–संज्ञा पुं० एक घास। रोसा।

रोहिष–संज्ञा पुं० १. एक घास, रोसा। २. रोहू मछली। ३. एक तरह का मृग।

रोही–वि० [स्त्री० रोहिणी] चढ़नेवाला।
संज्ञा पुं० १. एक तरह का मृग। २. रोहिष घास। ३. रोहू मछली। ४. एक हथियार।

रोहू–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।

रौंट–संज्ञा स्त्री० १. खेल में बुरा मानना। २. चिढ़कर बेईमानी करना।

रौंद–संज्ञा स्त्री० १. रौंदने का भाव या क्रिया। २. चक्कर। गश्त। (अंग्रे०—राउण्ड)

रौंदन–संज्ञा स्त्री० दे० "रौंद"। रौंदने की क्रिया या भाव। मर्दन।

रौंदना–क्रि० स० पैरों से कुचलना। मर्दन करना।

रौंदी†–संज्ञा स्त्री० चौपायों के रहने का घेरा।

रौ–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गति। चाल। २. वेग। रफ्तार। ३. पानी का बहाव। तोड़। ४. किसी बात की धुन। झोंक। ५. ढंग। चाल।

*‡संज्ञा पुं० दे० "रव"।

रौक्ष्य–संज्ञा पुं० रूखापन।

रौगन–संज्ञा पुं० दे० "रोगन"।

रौज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] कब्र। समाधि। बड़े पीर या बादशाह की कब्र की इमारत।

रौताइन–संज्ञा स्त्री० १. राव या रावत की स्त्री। ठकुराइन। २. स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द।

रौताई–संज्ञा स्त्री० १. राव या रावत होने का भाव। २. ठकुराई। सरदारी।

रौद्र–वि० १. रुद्र-संबंधी। २. प्रचंड। उग्र। भयंकर। डरावना। ३. क्रोधपूर्ण।

संज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक, जिसमें क्रोधसूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन होता है। २. ग्यारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ३. एक प्रकार का अस्त्र। ४. यमराज। ५. धूप।

रौद्रता–संज्ञा स्त्री० डरावनापन। प्रचंडता।

रौद्रदर्शन–वि० देखने में भयानक।

रौद्रार्क–संज्ञा पुं० २३ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

रौद्री–संज्ञा स्त्री० गौरी देवी।

रौन*–संज्ञा पुं० दे० "रमण"।

रौनक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वर्ण और आकृति। रूप। २. चमक-दमक। दीप्ति। कांति। ३. प्रफुल्लता। विकास। ४. शोभा। छटा।

रौनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

रौप्य–संज्ञा पुं० चाँदी। रूपा।

वि० चाँदी का बना हुआ।

रौरव–वि० १. भयंकर। डरावना। २. धूर्त्त। ३. चंचल।

संज्ञा पुं० एक भीषण नरक का नाम।

रौरा†–संज्ञा पुं० दे० "रौला"।

†सर्व० [स्त्री० रौरी] आपका।

रौराना†–क्रि० स० प्रलाप करना। बकना।

रौरे†–सर्व० आप। (संबोधन)

रौला–संज्ञा पुं० १. शोरगुल। २. हुल्लड़। धूम।

रौशन–वि० दे० "रोशन"।

रौशनदान–संज्ञा पुं० [फा०] दे० "रोशनदान"।

रौस–संज्ञा स्त्री० [फा० रविश] १. गति। चाल। रंग-ढंग। तौर-तरीका। २. बाग की क्यारियों के बीच का मार्ग।

रौसा–संज्ञा पुं० लोबिया। केवाँच।

रौहाल–संज्ञा स्त्री० १. घोड़े की एक चाल। २. घोड़े की एक जाति।

रौहिण–संज्ञा पुं० चन्दन।

रौहिणेय–संज्ञा पुं० १. रोहिणी के पुत्र, बलराम। २. पन्ना। ३. बुधग्रह। ४. गाय का बछड़ा।

ल

ल–व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवाँ वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान दंत होता है। यह अल्पप्राण है।

लंक–संज्ञा स्त्री० १. कमर। कटि। २. लंका नामक द्वीप।

लंकनाथ, लंकनायक–संज्ञा पुं० १. रावण। २. विभीषण।

लंकलाट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक प्रकार का सफेद मोटा चिकना कपड़ा।

लंका–संज्ञा स्त्री० १. भारत के दक्षिण का

एक टापू, जहाँ रावण का राज्य था। २. एक योगिनी का नाम। ३. एक पिशाचिनी। ४. डाली। शाखा। ५. दुराचारिणी स्त्री।

लंकाकांड–संज्ञा पुं० रामायण का एक अध्याय, जिसमें राम-रावण युद्ध का वर्णन है।

लंकादाही–संज्ञा पुं० श्रीहनुमान।

लंकाधिपति–संज्ञा पुं० १. रावण। २. विभीषण।

लंकापति–संज्ञा पुं० रावण।

लंकारि–संज्ञा पुं० श्रीरामचन्द्र।

लंकेश, लंकेश्वर–संज्ञा पुं० रावण।

लंग–संज्ञा स्त्री० दे० "लाँग"। काछ।
संज्ञा पुं० [फा०] १. लँगड़ापन। २. उपपति।

लंगक–संज्ञा पुं० उपपति।

लगड़–वि० दे० "लँगड़ा"।
संज्ञा पुं० दे० "लंगर"।

लँगड़ा–वि० [स्त्री० लँगड़ी] एक पैर का। जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हुआ हो।
संज्ञा पुं० एक तरह का बहुत बढ़िया कलमी आम।

लँगड़ाना–क्रि० अ० लँगड़ाकर चलना। लँगड़े होकर चलना। चलने में पैरों का ठीक न बैठना।

लंगर–संज्ञा पुं० [फा०] १. लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा, जिसे जमीन में गाड़कर बड़ी-बड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराते हैं। २. लकड़ी का वह कुंदा, जो किसी हरहाई (शरारती) गाय के गले में बाँधा जाता है। ठेंगुर। ३. लटकती हुई कोई भारी चीज। लोहे की मोटी और भारी जंजीर। ४. किसी पदार्थ के नीचे का मोटा और भारी अंश। ५. चाँदी का तोड़ा, जो पैर में पहना जाता है। ६. पहलवानों का लँगोट। ७. कपड़े में के वे टाँके, जो दूर-दूर पर डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ८. वह भोजन, जो प्रायः नित्य दरिद्रों को बाँटा जाता है। ९. वह स्थान, जहाँ दरिद्रों-आदि को भोजन बाँटा जाता हो।
वि० १. भारी। वजनी। २. शरारती। नटखट। ३. ढीठ।
मुहा०—लंगर करना=शरारत करना।

लँगरई, लँगराई*†–संज्ञा स्त्री० ढिठाई। शरारत।

लंगूर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बन्दर, जिसका मुँह काला और पूँछ बहुत लम्बी होती है। २. बंदर। ३. पूँछ। दुम (बंदर की)।

लंगूल–संज्ञा पुं० पूँछ। दुम।

लँगोट, लँगोटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र, जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है। रूमाली।
यौ०—लँगोटबंद=ब्रह्मचारी।

लँगोटी–संज्ञा स्त्री० कौपीन। कछनी। भगई।
मुहा०—लँगोटिया यार=बचपन का मित्र। लँगोटी पर फाग खेलना=कम सामर्थ्य होने पर भी बहुत अधिक व्यय करना।

लंघक–वि० लाँघनेवाला।

लंघन–संज्ञा पुं० १. उपवास। अनाहार। फाका। २. लाँघने की क्रिया। डाँकना। ३. अतिक्रमण। ४. वह उपाय, जिससे किसी काम में सुभीता हो।

लंघनक–संज्ञा पुं० जिसके द्वारा लाँघा जाय।

लँघना–क्रि० स० दे० "लाँघना"। किसी वस्तु के ऊपर से होकर जाना। डाँकना।

लंघनीय–वि० लाँघने योग्य। उल्लंघन करने योग्य।

लंच–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. दोपहर का जलपान। २. इस जलपान के लिए होनेवाली छुट्टी।

लंज–संज्ञा पुं० १. पैर। पाँव। २. काछ। ३. पूँछ। ४. लंपटता।
संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

लंजिका–संज्ञा स्त्री० वेश्या।

लंठ–वि० मूर्ख। उजड्ड।

लँडूरा–वि० जिसकी सब पूँछ कट गई हो। (पक्षी) बिना पूँछ का।

लंतरानी–संज्ञा स्त्री० [अ०] व्यर्थ की बड़ी-बड़ी बातें। शेखी।

लंप या लैम्प–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. लालटेन। २. गैसबत्ती। ३. चिराग।

लंपट–वि० बदमाश। व्यभिचारी। विषयी। कामी। कामुक।

लंपटता–संज्ञा स्त्री० दुराचार। बदमाशी।

लंपाक–संज्ञा पुं० दुराचारी।

लंब–संज्ञा पुं० १. वह रेखा, जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण बनावे। २. अंग। ३. पति। ४. एक राक्षस, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ५. ज्योतिष की एक रेखा।
संज्ञा स्त्री० दे० "विलंब"।
वि० लंबा।

लंबक–संज्ञा पुं० किसी पुस्तक का एक अध्याय।

लंबकर्ण–वि० जिसके कान लंबे हों।
संज्ञा पुं० १. हाथी। २. बकरा। गदहा। ३. ४. खरगोश। ५. राक्षस।

लंबग्रीव–संज्ञा पुं० ऊँट।

लंबतड़ंग–वि० ताड़ के समान बहुत लंबा।

लंबन–संज्ञा पुं० १. झूलने की क्रिया। २. गले का हार। ३. आश्रय।

लंबरदार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जमींदार। नंबरदार।

लंबा–वि० [स्त्री० लंबी] १. जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो। 'चौड़ा" का उलटा। जिसके दोनों छोर एक दूसरे से दूरी पर हों। २. जिसकी उँचाई अधिक हो। ३. (समय) जिसका विस्तार अधिक हो। ४. विशाल। दीर्घ। बड़ा।
मुहा०—लंबा करना=१. रवाना करना। चलता करना। २. जमीन पर पटक या लेटा देना।

लंबाई–संज्ञा स्त्री० लंबा होने का भाव। लंबापन।

लंबान–संज्ञा स्त्री० लम्बाई।

लंबायमान–वि० जो सीधा और खड़ा गिरा हो। बहुत लम्बा। लेटा हुआ।

लंबित–वि० लंबा।
मुहा०—लंबी तानना=लेटकर सो जाना।

लंबोतरा–वि० लंबे आकारवाला। जो कुछ लंबा हो।

लंबोदर–संज्ञा पुं० १. गणेश। २. बड़े पेटवाला। बहुत खानेवाला। पेटू।

लम्बोष्ठ–संज्ञा पुं० १. एक तरह के क्षेत्रपाल। २. देवता। ३. ऊँट।

लंमन–संज्ञा पुं० १. कलंक। २. ध्वनि।

लउटी–संज्ञा स्त्री० दे० "लकुटी"।

लकड़बग्घा–संज्ञा पुं० एक मांसाहारी जंगली जंतु, जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है। लग्घड़।

लकड़हारा–संज्ञा पुं० १.जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला। २. लकड़ी काटनेवाला।

लकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पेड़ का कोई ठोस या स्थूल अंग, जो उससे अलग हो गया हो। काठ। २. ईंधन। जलावन। ३. छड़ी। लाठी।
मुहा०—लकड़ी होना=१. बहुत दुबला-पतला होना। २. सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।

लकलक–संज्ञा पुं० [अ०] सारस।
वि० लचीला। बहुत दुबला-पतला।

लक़वा–संज्ञा पुं० [अ०] एक वात-रोग। जिस अंग में यह रोग होता है, वह बेकाम हो जाता है।

लकाटी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बिल्ली। (इस जाति की बिल्ली के नर के अंडकोशों से एक तरह का मुश्क निकलता है।)

लकीर–संज्ञा स्त्री० १. रेखा। खत। लीक। २. धारी। ३. पंक्ति। सतर।
मुहा०—लकीर का फकीर=आँखें बंद करके पुराने ढंग पर चलनेवाला। लकीर पीटना=बिना समझे-बूझे पुरानी प्रथा पर चले चलना।

लकुच–संज्ञा पुं० बड़हर। दे० "लकुट"।

लकुट–संज्ञा स्त्री० लाठी। छड़ी।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल। लुकाट। लखोट।

लकुटी†–संज्ञा स्त्री० लाठी। छड़ी।

लकोटा–संज्ञा पुं० एक तरह का पहाड़ी बकरा।

लक्कड़–संज्ञा पुं० काठ का बड़ा कुंदा।

लक्क़ा–संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का कबूतर। जब यह बैठता है, तो इसके पीछे के पंख जेबी पंखे की तरह खुले रहते हैं।

लक्खी–वि० लाख के रंग का। लाखी।

संज्ञा पुं० १. लखपती। २. घोड़े की एक जाति।

लखत–वि० लाल। सुर्ख।

लखतक–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों के पैरों में लगाने का अलता। २. फटा हुआ कपड़ा। लत्ता। चीथड़ा।

लक्ष–वि० एक लाख। सौ हजार।

संज्ञा पुं० १. एक लाख की संख्या, १०००००। २. अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ३. दे० "लक्ष्य"।

लक्षक–संज्ञा पुं० १. जतानेवाला। लक्ष्य करानेवाला। २. प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करनेवाला शब्द।

लक्षण–संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। २. आसार। ३. नाम। परिभाषा। ४. स्वभाव। प्रकृति। ५. चाल-ढाल। तौर-तरीका। ६. शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि, जो किसी रोग के सूचक हों। ७. सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों में होनेवाले कुछ चिह्न-विशेष, जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। ८. शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग। लच्छन।

लक्षणा–संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति, जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।

लक्षणी–वि० लक्षणसहित।

लखना*–क्रि० स० दे० "लखना"।

लक्षा–संज्ञा स्त्री० एक लाख की संख्या। १०००००।

लक्षि–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

*संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्य"।

लक्षित–वि० १. बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २. देखा हुआ। अनुमान से समझा या जाना हुआ।

संज्ञा पुं० वह अर्थ, जो शब्द की लक्षणा-शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।

लक्षित-लक्षणा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा।

लक्षिता–संज्ञा स्त्री० वह परकीया नायिका, जिसका परपुरुष-प्रेम दूसरों को ज्ञात हो।

लक्षी–संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। गंगाधर। २. खंजन।

लक्ष्मण–संज्ञा पुं० १. राजा दशरथ के एक पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और रामचन्द्र के साथ वन में गए थे। ये शेषनाग के अवतार माने जाते हैं। २. चिह्न। लक्षण।

वि० शोभायुक्त।

लक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० १. धन की अधिष्ठात्री देवी, जो विष्णु की पत्नी मानी जाती हैं। कमला। २. धन-सम्पत्ति। दौलत। ३. शोभा। छबि। सौंदर्य ४. दुर्गा का एक नाम। ५. घर की मालकिन। गृहस्वामिनी। ६. कन्या।

लक्ष्मीक–संज्ञा पुं० धनी। अमीर। भाग्यवान्।

लक्ष्मीकान्त–संज्ञा पुं० नारायण। विष्णु।

लक्ष्मीधर–संज्ञा पुं० विष्णु।

लक्ष्मीनारायण–संज्ञा पुं० विष्णु और लक्ष्मी की युगल मूर्ति।

लक्ष्मीनिवास–संज्ञा पुं० विष्णु। नारायण।

लक्ष्मीपति–संज्ञा पुं० विष्णु।

लक्ष्मीरमण–संज्ञा स्त्री० विष्णु। नारायण।

लक्ष्य–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु, जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना। २. वह, जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। ३. अभिलषित पदार्थ। ४. उद्देश्य। ५. अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। ६. वह अर्थ, जो किसी शब्द की लक्षणा-शक्ति के द्वारा निकलता हो। ७. वह जिसका अनुमान किया जाय।

वि० देखने योग्य।

लक्ष्यभेद–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्यवेध"।

लक्ष्यवेध–संज्ञा पुं० एक प्रकारका निशाना, जो चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर लगाया जाता है।

लक्ष्यवेधी–संज्ञा पुं० लक्ष्यवेध करनेवाला।

लक्ष्यार्थ–संज्ञा पुं० वह अर्थ, जो लक्षणा से निकले।

लखघर–संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लखन*†–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

संज्ञा स्त्री० लखने या देखने की क्रिया या भाव।

लखना*†–क्रि० स० १. लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना। २. देखना।

लखपती–संज्ञा पुं० लाखों रुपए का मालिक। जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो। लाखों रुपयोंवाला।

लखराव–संज्ञा पुं० लाख पेड़ोंवाला बाग। बहुत बड़ा बाग।

लखलखा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कोई सुगंधित द्रव्य। मूर्च्छा दूर करने का एक सुगंधित द्रव्य।

लखलुट–वि० बहुत अधिक बेकार खर्च करनेवाला। बहुत बड़ा अपव्ययी।

लखाउ*–संज्ञा पुं० १. लक्षण। पहचान। चिह्न।२. चिह्न के रूप में दी गई कोई वस्तु।

लखाना*†–क्रि० अ० दिखाई पड़ना।

क्रि० स० १. दिखलाना। २. अनुमान करा देना। समझा देना।

लखाव*–संज्ञा पुं० दे० "लखाउ"।

लखिमी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लखिया*†–संज्ञा पुं० लखनेवाला। देखने या ताड़नेवाला। जो लखता हो।

लखी–संज्ञा पुं० लाखी। लाख के रंग का घोड़ा।

लखेरा–संज्ञा पुं० लाख की चूड़ी बनानेवाला।

लखौट†–संज्ञा स्त्री० लाख की चूड़ी, जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं।

लखौटा–संज्ञा स्त्री० १. चंदन, केसर आदि से बना हुआ अंगराग। २. एक प्रकार का छोटा डिब्बा, जिसमें स्त्रियाँ प्रायः सिंदूर आदि रखती हैं। ३. लिखावट। लिखने का ढंग।

लखौरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की भ्रमरी या भृंगी के रहने की जगह। २. एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ-तेरही ईंट। ककैया ईंट। ३. किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल आदि चढ़ाना।

लग–क्रि० वि० १. तक। पर्यंत। ताईं। २. निकट। समीप। पास।

संज्ञा स्त्री० लगन। लाग। प्रेम।

अव्य० १. वास्ते। लिए। २. साथ। संग।

लगन–संज्ञा स्त्री० १. किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया। प्रवृत्ति का किसी ओर लगना। लौ। २. प्रेम। स्नेह। ३. लगाव। संबंध।

संज्ञा पुं० दे० "लग्न"। विवाह का मुहूर्त्त। वे दिन, जिनमें विवाह आदि होते हों। सहालग।

लगनपत्री–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्नपत्रिका" विवाह-समय के निर्णय तथा विवाह-सम्बन्धी अन्य कार्यों के विषय की चिट्ठी, जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।

लगनवट–संज्ञा स्त्री० लगन। प्रेम। मुहब्बत।

लगना–क्रि० अ० १. दो पदार्थों का आपस में मिलना। सटना। मिलना। जुड़ना। २. एक चीज का दूसरी चीज पर जड़ा, या चिपकाया जाना। ३. सम्मिलित होना। शामिल होना। मिलना। ४. किनारे पर पहुँचकर टिकना या रुकना। ठिकाने पर पहुँचना। टिकना। रुकना। ५. क्रम से रखा या सजाया जाना। ६. व्यय होना। ७. जान पड़ना। ८. स्थापित होना। ९. पौधे आदि का जमीन में लग जाना। १०. फल-फूल निकलना। ११. संबंध या रिश्ते में कुछ होना। १२. आघात पड़ना। चोट पहुँचना। १३. किसी पदार्थ का किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना। १४. खाद्य पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना। १५. आरंभ होना। जारी होना। चलना। १६. सड़ना। गलना। १७. प्रभाव पड़ना। असर होना। १८. आरोप होना। १९. हिसाब होना। २०. गणित की क्रिया होना। २१. पीछे-पीछे चलना। २२. साथ होना। २३. साथ न छोड़ना। चिमटना। किसी काम में लग जाना। २४. दूध देनेवाले पशुओं का दूध देना। २५.

गड़ना। चुभना। धँसना। २६. छेड़खानी करना। छेड़छाड़ करना। २७. बंद होना। मुँदना। २८. दाँव पर रखा जाना। बदना। २९. घात या ताक में रहना। होना। **मुहा०**—लगती बात कहना=मर्मभेदी या चुभनेवाली बात कहना। चुटकी लेना।

लगनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"।

लगभग–क्रि० वि० [अनु०] प्रायः। करीब-करीब। आस-पास।

लगमात–संज्ञा स्त्री० व्यंजनों में लगनेवाली स्वरों की मात्राएँ या उनके सूचक चिह्न।

लगवाना–क्रि० स० दूसरे से लगाने का काम कराना।

लगहर†–संज्ञा पुं० १. पासंग का काँटा या तराजू। २. दूध देनेवाली गाय।

लगातार–क्रि० वि० एक के बाद एक। बराबर। निरंतर। बिना क्रम टूटे हुए।

लगान–संज्ञा पुं० १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर लगनेवाला कर। राजस्व। मालगुजारी। जमाबंदी। पोत। ३. वह स्थान, जहाँ मजदूर आदि सुस्ताने के लिए अपने सिर का बोझ उतार कर रखते हैं। ४. नावों के ठहरने का स्थान।

लगाना–क्रि० स० १. मिलाना। जोड़ना। सटाना। २. किसी वस्तु पर कोई चीज चिपकाना या सटाना। ३. मिलाना। शामिल करना। ४. वृक्ष आदि आरोपित करना। जमाना। ५. एक ओर या किसी उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना। ६. क्रम से रखना। सजाना। चुनना। ७. खर्च करना। ८. किसी व्यवसाय में पूँजी देना। ९. अनुभव कराना। मालूम कराना। १०. चोट पहुँचाना। ११. किसी में कोई नई प्रवृत्ति आदि उत्पन्न करना। १२. काम में लाना। १३. आरोप करना। अभियोग लगाना। १४. जलाना। जैसे आग लगाना। १५. ठीक स्थान पर बैठाना। जड़ना। १६. गणित करना। हिसाब करना। १७. कान भरना। चुगली खाना। १८. झगड़ा कराना। १९. नियुक्त करना। २०. गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं को दुहना। २१. गाड़ना। धँसाना। २२. टाँकना। २३. स्पर्श कराना। छुआना। २४. जूए की बाजी पर रखना। दाँव पर रखना। २५. किसी बात का अभिमान करना। २६. अंग पर पहनना, ओढ़ना या रखना। २७. करना। २८. दाम आँकना। २९. सधाना। ३०. परचना। ३१. फैलाना। ३२. बिछाना।

मुहा०—किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना=बीच में किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना। मन लगाना=ध्यान देना।

यौ०—लगाना-बुझाना=लड़ाई-झगड़ा कराना। दो आदमियों में वैमनस्य उत्पन्न करना।

लगाम–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. रास। बाग। बागडोर। वह ढाँचा, जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सी या चमड़े का तस्मा बँधा रहता है। २. उस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सी या चमड़े का तस्मा, जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहता है।

लगार*†–संज्ञा स्त्री० १. नियमित रूप से कोई काम करना या कोई चीज देना। बंधी। बंधेज। २. लगाव। संबंध। ३. क्रम। सिलसिला। ४. लगन। प्रीति। मुहब्बत। ५. किसी की ओर से भेद लेने के लिए भेजा जानेवाला। ६. मेली। संबंधी।

लगालगी–संज्ञा स्त्री० १. लगन। प्रेम। स्नेह। प्रीति। २. संबंध। मेल-जोल। ३. लाग। लाग-डाँट। बाजी। ४. ईर्ष्या। द्वेष।

लगाव–संज्ञा पुं० लगे होने या मिले रहने का भाव। संबंध।

लगावट–संज्ञा स्त्री० १. लगाव। संबंध। वास्ता। २. प्रेम। मुहब्बत।

लगावना–क्रि० स० दे० "लगाना"।

लगि*†–अव्य० दे० "लग"।

लगी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।

लगु*†–अव्य० दे० "लग"।

लगुड़—संज्ञा पुं० डंडा। लाठी।
लगुवा—वि० पिछलगा।
लगूर*—संज्ञा स्त्री० पूँछ।
लगूल*—संज्ञा स्त्री० पूँछ।
लगे†—अव्य० दे० "लग"।
लगेलगे—संज्ञा पुं० १. लड़ने के लिए प्रोत्साहित करने का शब्द। २. बंदरों आदि को भगाने का शब्द।
अव्य०=पास-पास। समीप। करीब।
लग्गो—वि० [अ०] १. झूठ। २. व्यर्थ।
लगौंहाँ*—वि० जिसे लगन लगाने की कामना हो। रिझवार।
लग्गा—संज्ञा पुं० १. लंबा बाँस। लग्गी। वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लंबा बाँस। लकसी। २. नाव चलाने का बाँस। ३. कार्य्य आरंभ करना। काम में हाथ लगाना। ४. जुआ में दाँव खेलनेवालों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों-द्वारा दाँव पर रखी गई वस्तु।
मुहा०—लग्गा लगाना=साथ देना। जुआ में दाँव खेलनेवालों के साथ दाँव पर कुछ रखना।
लग्गी—संज्ञा स्त्री० लम्बा बाँस। "लग्गा" का स्त्रीलिंग रूप।
लग्घड़—संज्ञा पुं० १. बाज। २. लकड़-बग्घा।
लग्घा—संज्ञा पुं० दे० "लग्गा"।
लग्घी—संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी।"
लग्न—संज्ञा पुं० १. ज्योतिष में दिन का उतना अंश, जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है। कोई शुभ कार्य्य करने का मुहूर्त्त। २. विवाह का समय। ३. विवाह। शादी। विवाह के दिन। ४. राजाओं की स्तुति करनेवाला।
वि० १. लगा हुआ। मिला हुआ। २. लज्जित। ३. आसक्त।
संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "लगन"।
लग्नकंकण—संज्ञा पुं० विवाह के पूर्व कन्या और वर के हाथ में बाँधा जानेवाला मंगल-सूत्र।
लग्नकुंडली—संज्ञा स्त्री० फलित ज्योतिष में वह चक्र, जिससे किसी के जन्म के समय के ग्रहों का पता लगाया जाता है। जन्मकुंडली।
लग्नदिन—संज्ञा पुं० विवाह के लिए निश्चित दिन।
लग्नक—संज्ञा पुं० जमानत करनेवाला। प्रतिभू।
लग्नपत्र—संज्ञा पुं० दे० "लग्नपत्रिका।"
लग्नपत्रिका—संज्ञा स्त्री० विवाह-सम्बन्धी कार्यों के बारे में ब्योरेवार लिखी गई चिट्ठी, जो कन्यापक्ष की ओर से वर-पक्ष को भेजी जाती है।
लग्नेश—संज्ञा पुं० जन्मकुंडली में लग्न का स्वामी ग्रह।
लघिमा—संज्ञा स्त्री० लघु होने का भाव। लघुता। आठ सिद्धियों में से एक कल्पित सिद्धि, जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है।
लघु—वि० १. छोटा। कनिष्ठ। २. थोड़ा। कम। ३. हलका। ४. पतला। दुर्बल। ५. सुंदर। बढ़िया। ६. निःसार।
संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह स्वर, जो एक ही मात्रा का होता है। जैसे—अ, इ। २. छन्दःशास्त्र में वह अक्षर, जिसमें एक ही मात्रा हो। इसका चिह्न "।" है। ३. तीन प्रकार के प्राणायामों में से एक।
लघुक्रम—संज्ञा पुं० जल्दी-जल्दी चलने की क्रिया।
लघुचित्त—संज्ञा पुं० १. दुर्बल चित्तवाला। जो अधिक साहसी न हो। २. छोटे दिलवाला। संकीर्ण विचारवाला।
लघुचेता—संज्ञा पुं० तुच्छ और बुरे विचार-वाला। नीच।
लघुजल—संज्ञा पुं० लवा पक्षी।
लघुजांगल—संज्ञा पुं० लवा पक्षी।
लघुता—संज्ञा स्त्री० लघु होने का भाव। छोटापन। हलकापन। तुच्छता।
लघुतमापवर्त्य—गणित में वह सबसे छोटी संख्या जो, दो या अधिक संख्याओं में से प्रत्येक को पूरा-पूरा भाग दे सके।
लघुत्व—संज्ञा पुं० दे० "लघुता।"
लघुपाक—संज्ञा पुं० वह खाद्य पदार्थ, जो सहज में पच जाय।

लघुमति–वि० कम-समझ। छोटी बुद्धिवाला। मूर्ख।

लघुमान–संज्ञा पुं० नायिका का वह मान, जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है।

लघुशंका–संज्ञा स्त्री० पेशाब करना।

लच–संज्ञा पुं० लचकने की क्रिया। लचक।

लचक–संज्ञा स्त्री० लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। वह गुण, जिसके रहने से कोई वस्तु झुकती या दबती हो।

लचकना–क्रि० अ० [अनु०] झुकना। लचना। स्त्रियों की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना।

लचकनि*–संज्ञा स्त्री० १. लचीलापन। २. लचक।

लचका–संज्ञा पुं० एक प्रकार का गोटा।

लचकाना–क्रि० स० लचाना। झुकाना।

लचकीला–वि० लचकनेवाला। लचीला।

लचकौहाँ–वि० लचकनेवाला। लचीला।

लचन–संज्ञा स्त्री० दे० "लचक"।

लचना–क्रि० अ० दे० "लचकना"।

लचर–संज्ञा स्त्री० १. रद्दी। व्यर्थ। निकृष्ट। २. शक्तिहीन।

लचलचा–वि० लचीला।

लचाना–क्रि० स० झुकाना।

लचार*†–वि० दे० "लाचार"।

लचारी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "लाचारी"। २. भेंट। नजर। ३. एक प्रकार का गीत।

लचाव–संज्ञा पुं० दे० "लचक"।

लचीला–वि० [संज्ञा लचीलापन] लचकदार। आसानी से झुकने या लचकनेवाला।

लचुई†–संज्ञा स्त्री० मैदे की बनी हुई एक प्रकार की पतली मुलायम पूरी।

लच्छ*–संज्ञा पुं० १. दे० "लक्ष्य"। निशाना। ताक। २. ब्याज। बहाना। मिस। ३. दे० "लक्ष"। सौ हजार की संख्या। लाख।

संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छन*–संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।

लच्छमी–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छा–संज्ञा पुं० १. गुच्छे के रूप में लपटे हुए तार। २. सूत, रेशम, ऊन आदि का लपेटा हुआ गुच्छा। ३. किसी चीज के सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े। ४. मैदे की एक प्रकार की मिठाई। ५. हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना।

लच्छि*–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छित*–वि० दे० "लक्षित"।

लच्छी–संज्ञा स्त्री० सूत, रेशम तथा ऊन आदि की लपेटी हुई गुच्छी। छोटा लच्छा।

लच्छेदार–वि० १. लच्छों से युक्त। जिसमें लच्छे हों। २. मजेदार बातचीत।

लछमन–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

लछमन झूला–संज्ञा पुं० रस्सों या तारों आदि से बना पुल। बद्रीनाथ तीर्थ-स्थान जाने के मार्ग में एक प्रसिद्ध स्थान।

लछमना–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मणा"।

लछमी*–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लज*–संज्ञा स्त्री० दे० "लाज"। लज्जा।

लजना–क्रि० अ० दे० "लजाना"। लज्जित होना।

लजवाना–क्रि० स० दूसरे को लज्जित करना। शर्मिन्दा करना।

लज्जाधुर†–वि० जो बहुत लज्जा करनेवाला हो। शर्मीला।

संज्ञा पुं० लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई।

लजाना–क्रि० अ० लज्जा करना। लज्जित या शर्मिंदा होना। संकोच करना।

क्रि० स० लज्जित करना। लजवाना।

लजालू–वि० लज्जाशील। लजानेवाला या संकोच करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक काँटेदार छोटा पौधा, जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ जाती हैं। छुई-मुई।

लजावन†*–क्रि० स० दे० "लजाना"।

लजीज–वि० [अ०] स्वादिष्ट। खाने में अच्छा लगनेवाला।

लजीला–वि० बहुत लजानेवाला। दे० "लज्जाशील"।

लजुरी‡–संज्ञा स्त्री० कुएँ से पानी खींचने की डोरी। रस्सी।

लजोहा, लजौहाँ–वि० [स्त्री लजौहीं] बहुत लजानेवाला। लजीला। शर्मीला।

लज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वाद। जायका।

लज्जतदार–वि० स्वादिष्ट। मजेदार।

लज्जा–संज्ञा स्त्री० [वि० लज्जित] १. लाज। शर्म्म। हया। २. मान-मर्यादा। इज्जत। ३. संकोच या दोष आदि के कारण दूसरों के सामने न बोलने या सिर न उठाने का मनोभाव।

लज्जाप्रद–वि० जिससे लज्जा या शर्म उत्पन्न हो।

लज्जाप्राया–संज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक (केशव)।

लज्जालु–वि० शर्मीला। लजीला।
संज्ञा पुं० लज्जालु पौधा। छुई-मुई।

लज्जावंत–वि० लज्जायुक्त। लजीला।

लज्जावती–वि० लजानेवाली। शर्मीली।
संज्ञा स्त्री० लजालू पौधा। छुई-मुई।

लज्जावान्–वि०[स्त्री० लज्जावती]लजीला। दे० "लज्जाशील"।

लजाशील–वि० लजीला। लजानेवाला।

लज्जाशून्य–वि० जिसमें लज्जा न हो। निर्लज्ज। बेशर्म। बेहया।

लज्जाहीन–वि० जिसमें लज्जा न हो। निर्लज्ज। बेहया। बेशर्म।

लज्जित–वि० लजाया हुआ। शर्माया हुआ।

लट–संज्ञा स्त्री० १. सिर के बालों का समूह। केशपाश। अलक। उलझे हुए बालों का गुच्छा। २. लपट। लौ। ३. सूत के समान एक तरह के बहुत महीन कीड़े जो आँतों में पड़ जाते हैं।
मुहा०—लट छिटकाना=सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना।

लटक–संज्ञा स्त्री० १. लटकने की क्रिया या भाव। झुकाव। लचक। २. अंगों की मनोहर गति। अंग-भंगी।

लटकन–संज्ञा पुं० १. दे० "लटक"। २. लटकनेवाली चीज। लटक। ३. नाक में पहनने का एक गहना। ४. कलंगी या सिरपेंच में लगे हुए रत्नों का गुच्छा। ५. एक पेड़, जिसके बीजों से बढ़िया गेरूआ रंग निकलता है।

लटकना–क्रि० अ० १. ऊँचे स्थान से लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक झुका रहना। झूलना। २. किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर हों। टँगना। ३. किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ४. लचकना। बल खाना। ५. किसी काम का बिना हुए पड़ा रहना। ६. देर होना।
मुहा०—लटकती चाल=बल खाती हुई मनोहर चाल।

लटकवाना–क्रि० स० लटकने का काम दूसरे से कराना।

लटकहर†–संज्ञा पुं० तेली।

लटका–संज्ञा पुं० १. गति। चाल। २. ढब। ३. बनावटी चेष्टा। हाव-भाव। ४. बातचीत का बनावटी ढंग। ५. मंत्र-तंत्र या उपचार आदि की छोटी युक्ति। टोटका। ६. संक्षिप्त उपचार। ७. एक तरह का चलता गाना।

लटकाना–क्रि० स० १. टाँगना। किसी वस्तु को ऊँचे स्थान पर टिकाकर नीचे की ओर झुकाना। लचकाना। २. दुविधा में डालना। ३. प्रतीक्षा या इंतजार कराना। ४. किसी काम को पूरा न कर यों ही छोड़ रखना।

लटकीला–वि० [स्त्री० लटकीली] लचकदार। लटकता या झूमता हुआ।

लटकौवाँ–वि० लटकनेवाला। जो लटकता हो।

लटजीरा–संज्ञा पुं० १. अपामार्ग। चिचड़ा। २. एक प्रकार का जड़हन धान।

लटना–क्रि० अ० १. थककर गिर जाना। लड़खड़ाना। २. अशक्त होना। दुबला और कमजोर होना। ३. मेहनत या बीमारी से शिथिल होना। शक्ति और उत्साह से रहित। ४. निकम्मा होना। ५. व्याकुल या विकल होना।
क्रि० अ० १. ललचाना। लुभाना। २. प्रेमपूर्वक तत्पर होना। लीन होना।

लटपटा–वि० [स्त्री० लटपटी] १. गिरता-पड़ता। लड़खड़ाता हुआ। २. ढीला-ढाला। जो चुस्त और दुरुस्त न हो। अस्त-व्यस्त। ३. ऐसी वस्तु, जो न बहुत पतली और न बहुत गाढ़ी हो। लुटपुटा। ४. (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले। टूटा-फूटा। ५. अव्यवस्थित। अंडबंड। ६. थक-कर गिरा हुआ। अशक्त। मलादला हुआ।

लटपटान–संज्ञा स्त्री० लड़खड़ाहट। लटक। लचक। मनोहर चाल।

लटपटाना–क्रि० अ० १. गिरना-पड़ना। लड़खड़ाना। २. डिगना। चूक जाना। ३. ठीक तरह से न चलना। ४. लुभाना। मोहित होना। ५. लीन होना। अनुरक्त होना।

लटा†–वि० [स्त्री० लटी] १. लोलुप। लालची। २. लंपट। लुच्चा ३. नीच। तुच्छ। हीन। बुरा।

लटापटी–संज्ञा स्त्री० लटपटाने की क्रिया या भाव। लड़ाई-झगड़ा।

लटापोट*†–वि० मोहित। मुग्ध।

लटिया–संज्ञा स्त्री० सूत की लच्छी। आँटी।

लटी–संज्ञा स्त्री० १. बुरी बात। २. झूठी बात। गप। ३. साधुदेनी। भगतिन। ४. वेश्या।

लटुआ–संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।

लटुक–संज्ञा पुं० ० "लकुट"।

लटुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "लटूरी"।

लटूरी–संज्ञा स्त्री० सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा। केश। अलक।

लटोरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा पेड़, जिसके फलों में बहुत-सा लसदार गूदा होता है।

लट्टपट्ट‡–वि० दे० "लथपथ"। दे० "लट-पटा"।

लट्टू–संज्ञा पुं० एक गोल खिलौना, जिसे सूत के द्वारा जमीन पर फेंककर नचाते हैं। क्रि० स० मोहित होना। लुभाना।

मुहा०—(किसी पर) लट्टू होना=मोहित होना। पाने के लिए बेचैन होना।

लट्ठ–संज्ञा पुं० बड़ी लाठी।

लट्ठबाज–वि० लाठी चलाने में कुशल या अभ्यस्त। लठैत। लाठी चलानेवाला।

लट्ठबाजी–संज्ञा स्त्री० लाठी की लड़ाई या मारपीट।

लट्ठमार–वि० १. लट्ठ मारनेवाला। २. अप्रिय और कठोर। कर्कश। कड़वा।

लट्ठा–संज्ञा पुं० १. लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा। २. जमीन नापने का एक बाँस। ३. बल्ला। शहतीर। लकड़ी का बल्ला। धरन। कड़ी। ४. एक प्रकार का गाढ़ा मोटा कपड़ा।

लट्व–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. एक राग।

लट्वा–संज्ञा स्त्री० १. एक बाजा। २. चित्र बनाने की कूँची। ३. व्यभिचारिणी स्त्री। ४. सिर के बाल के गुच्छे। अलक।

लठियल†–वि० लठैत। लट्ठबाज।

लठिया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "लाठी"।

लठैत–संज्ञा पुं० दे० "लट्ठबाज"।

लड़ंत–संज्ञा स्त्री० १. लड़ाई। भिड़ंत। २. सामना। मुकाबला।

लड़–संज्ञा स्त्री० १. एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। मोतियों की माला या सोने का हार आदि। फूलों की माला। २. रस्सी का एक तार। ३. पान।

लड़कई†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"। नादानी। चंचलता।

लड़कखेल–संज्ञा पुं० १. बालकों का खेल। २. सहज काम।

लड़कपन–संज्ञा पुं० १. बाल्यावस्था। बच-पन। नादानी। २. चपलता। चंचलता।

लड़कबुद्धि–संज्ञा स्त्री० बालकों की-सी समझ। नासमझी। नादानी।

लड़का–संज्ञा पुं० [स्त्री० लड़की] १. पुत्र। बेटा। २. बालक।

मुहा०—लड़कों का खेल=बहुत आसान काम। मामूली बात।

लड़काई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लड़का-बाला–संज्ञा पुं० संतान। औलाद। बाल-बच्चे। परिवार।

लड़की–संज्ञा स्त्री० पुत्री। बालिका।

लड़कौरी–वि० बच्चेवाली।

लड़खड़ाना–क्रि० अ० १. डगमगाना। डगमगाकर गिरना। विचलित होना। ठीक से न चलना। २. इधर-उधर झुक पड़ना। ३. झोंका खाना। चूकना।
मुहा०—जीभ लड़खड़ाना=मुँह से रुक-रुक कर शब्द निकलना।

लड़ना–क्रि० अ० १. एक दूसरे को चोट पहुँचाना। युद्ध करना। भिड़ना। मल्ल युद्ध करना। २. झगड़ा करना। हुज्जत करना। तकरार करना। बहस करना। ३. टक्कर खाना। भिड़ना। ४. व्यवहार आदि में सफलता के लिए एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। ५. पूर्ण रूप से घटित होना। सटीक बैठना। ६. बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना। ७. लक्ष्य पर पहुँचना।

लड़बड़ाना–क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।

लड़बावर या **लड़बावला**–वि० [स्त्री० लड़बावरी] १. जिसमें बहुत लड़कपन हो। अल्हड़। मूर्ख। नासमझ। २. गँवार। अनाड़ी। ३. जिससे मूर्खता प्रकट हो।

लड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे पर वार। भिड़ंत। संग्राम। जंग। युद्ध। २. मल्लयुद्ध। कुश्ती। ३. झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ४. आपस की कहा-सुनी। विवाद। बहस। ५. टक्कर। ६. व्यवहार या मामले में सफलता के लिए एक-दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। ७. अनबन। विरोध।

लड़ाका–वि० [स्त्री० लड़ाकी] १. योद्धा। लड़ने में बहादुर। सिपाही। २. झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

लड़ाकू–वि० १. लड़ाई में काम आनेवाला। २. लड़नेवाला। योद्धा।

लड़ाना–क्रि० स० १. दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। झगड़े में प्रवृत्त करना। २. टक्कर खिलाना। भिड़ाना। ३. लक्ष्य पर पहुँचाना। ४. परस्पर उलझाना। ५. सफलता के लिए व्यवहार में लाना। ६. लाड़-प्यार करना। दुलार करना। पुचकारना।

लड़ायता†–वि० दे० "लड़ैता"।

लड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार। २. फूलों की माला। हार। ३. दे० "लड़"।

लड़ीला*–वि० दे० "लाड़ला"।

लडुआ–संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।

लड़ैता–वि० [स्त्री० लड़ैती] १. लड़नेवाला। योद्धा। २. लाड़ला। दुलारा। ३. जो लाड़-प्यार के कारण बहुत इतराया हो। ४. धृष्ट। शोख। ५. प्यारा। प्रिय।

लड्डू–संज्ञा पुं० गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।
मुहा०–ठग के लड्डू खाना=नासमझी करना। होश-हवास में न रहना। पागल होना। मन के लड्डू खाना=व्यर्थ किसी लाभ की कल्पना करना।

लड़याना*†–क्रि० स० लाड़-प्यार करना। दुलार करना।

लढ़त–संज्ञा पुं० कुश्ती का एक पेंच।

लढ़ा†–संज्ञा पुं० बैलगाड़ी। दे० "लढ़िया"।

लढ़िया†–संज्ञा स्त्री० बैलगाड़ी।

लत–संज्ञा स्त्री० बुरी आदत। दुर्व्यसन। बुरी टेव।

लतखोर, **लतखोरा**–वि० [स्त्री० लतखोरिन] १. लात खानेवाला। २. नीच। कमीना। ३. दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का कपड़ा। पायंदाज।

लतमर्दन–संज्ञा स्त्री० १. पैर से कुटाई। लात से दबाना या कुचलना। २. पदाघात।

लतर–संज्ञा स्त्री० बेल। बल्ली।

लतरा–संज्ञा पुं० एक तरह का मोटा अन्न।

लतरी–संज्ञा स्त्री० १. एक पौधा, जिसकी फलियों से दाल निकलती है। २. एक तरह की घास।

लतहा–वि० लात मारनेवाला।

लता–संज्ञा स्त्री० १. वह पौधा, जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा किसी वस्तु से लिपटकर ऊपर चढ़े। बल्ली। बेल। २. बौर। ३. कोमल शाखा। ४. सुंदरी स्त्री।

लताकुंज, **लतागृह**–संज्ञा पुं० छाई हुई लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।

लताड़–संज्ञा स्त्री० लताड़ने की क्रिया या भाव। दे० "लथाड़"।

लताड़ना–क्रि० स० १. रौंदना। पैरों से कुचलना। लेटे हुए आदमी पर खड़े होकर पैर से उसका शरीर दबाना। २. डाँटना-फटकारना। ३. परेशान करना।

लता-पता–संज्ञा पुं० १. लता और पत्ते। २. पेड़-पौधों का समूह। पेड़-पत्ते। ३. पौधों की हरियाली। ४. जड़ी-बूटी।

लताभवन–संज्ञा पुं० दे० "लतागृह"।

लतामंडप–संज्ञा पुं० दे० "लतागृह"।

लतिका–संज्ञा स्त्री० छोटी लता। बेल।

लतियर, लतियल–वि० लात खानेवाला। दे० "लतखोर"।

लतियाना†–क्रि० स० खूब लातें मारना। पैरों से दबाना या रौंदना।

लतिहर, लतिहल–वि० दे० "लतियर"।

लतीफ़–वि० [अ०] स्वादिष्ट। जायकेदार। मजेदार। बढ़िया।

लतीफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. चुटकला। हास्यरस की छोटी कहानी। २. हँसी की बात। अनूठी बात।

लत्ता–संज्ञा पुं० फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा। कपड़े का टुकड़ा। कपड़ा।

यौ०—कपड़ा-लत्ता=पहनने के वस्त्र।

लत्ती–संज्ञा स्त्री० १. पशुओं का लात मारना। २. लात। ३. कपड़े की लम्बी धज्जी। ४. पतंग के नीचे बँधी हुई कपड़े की लम्बी धज्जी।

लथपथ–वि० १. [अनु०] भीगा हुआ। तरा-बोर। २. (कीचड़ आदि में) सना हुआ।

लथाड़–संज्ञा स्त्री० १. जमीन पर पटकने या घसीटने की क्रिया। २. हार। ३. चपेट। ४. झिड़की। फटकार।

लथाड़ना–क्रि० स० दे० "लथेड़ना"।

लथेड़ना–क्रि० स० १. कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना। २. पटककर इधर-उधर लोटाना या घसीटना। ३. हैरान करना। थकाना। ४. डाँटना। डपटना। ५. कुश्ती में पटकना। बुरी तरह हराना। ६. लताड़ना।

लदना–क्रि० अ० १. बोझ ऊपर लेना। भार उठाना। आच्छादित होना। पूर्ण होना। २. सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना। २. बोझ का डाला या रखा जाना। ३. जेलखाने जाना। कैद होना। ४. मर जाना। परलोक जाना। ५. समाप्त होना।

लदवाना–क्रि० स० १. लादने का काम दूसरे से कराना। २. किसी गाड़ी पर सामान रखवाना।

लदाऊ*†–वि० दे० "लदाव"। लदनेवाला।

लदाना–क्रि० स० लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाफँदा–वि० लदा हुआ। बोझ से दबा या थका हुआ।

लदाव–संज्ञा पुं० १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार। बोझ। ३. छत आदि का पटाव। ईंटों की जुड़ाई, जो बिना धरन या कड़ी के अधर में ठहरी हो। ४. इस प्रकार की जुड़ाई की छत।

लदुवा, लद्दू–वि० बोझ ढोनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।

लद्धड़–वि० मोटा-ताजा होने से आलसी। सुस्त।

लद्धड़पन–संज्ञा पुं० सुस्ती। आलस। ढिलाई।

लद्धना*–क्रि० स० प्राप्त करना।

लप–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बेंत या पतली छड़ी आदि लचीली चीज को हिलाने से उत्पन्न शब्द। २. लपलपाने की क्रिया या भाव। ३. कटार, तलवार आदि की चमक की गति।

संज्ञा पुं० अँजली।

लपक–संज्ञा स्त्री० १. आग की लौ। ज्वाला। लपट। २. चमक। ३. लपट निकलने की तेजी। लपलपाहट। ४ तेजी। वेग। ५. चलने की तेजी।

लपकना–क्रि० अ० १. किसी चीज को लेने के लिए तेजी से हाथ बढ़ाना। झपटना। तेजी से जाना। २. आक्रमण करने या लेने के लिए झपटना।

मुहा०—लपककर=१. तुरंत तेजी से जाकर। २. तुरंत। झट से।

लपझप–वि० १. चंचल। २. फुर्तीला। तेज।

लपट–संज्ञा स्त्री० १. आग की लौ। ज्वाला। २. गरम हवा। ३. आँच। ४. गंध से भरा वायु का झोंका।

लपटना†–क्रि० अ० १. लिपटना। चिमटना। २. आलिंगन करना। गले लगाना। ३. बाँधना। घेरना। ४. उलझना। ५. सटना। संलग्न होना।

लपटा–संज्ञा पुं० १. थोड़ा-बहुत लगाव या सम्बन्ध। २. गाढ़ी गीली वस्तु। कढ़ी। लपसी।

लपटाना†–क्रि० स० १. दे० "लिपटाना"। २. दे० "लपेटना"।

*क्रि० अ० १. दे० "लिपटना"। सटना। २. उलझना। फँसना।

लपना†–क्रि० अ० [अनु०] १. लचना। इधर-उधर झुकना। लपकना। २. ललचना। हैरान होना।

लपलपाना–क्रि० अ० [अनु०] १. लपना। लचीली वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना। बेंत या लचीली छड़ी का इधर-उधर झुकना। २. झलकना। छुरी, तलवार आदि का चमकना।

क्रि० स० दे० १. "लपाना"। २. लचीली वस्तुओं को इधर-उधर झुकाना। ३. छुरी, तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।

लपलपाहट–संज्ञा स्त्री० १. लपलपाने की क्रिया या भाव। २. झलक। चमक।

लपसी–संज्ञा स्त्री० १. गीली गाढ़ी वस्तु। २. पतला हलुआ। ३. लपटा।

लपाटिया–संज्ञा पुं० १. बात बनानेवाला। लबार। २. गप हाँकनेवाला। गप्पी।

लपाटी–संज्ञा पुं० गप हाँकनेवाला। गप्पी।

लपाना–क्रि० स० १. लचीली वस्तु को इधर-उधर लचाना। २. फटकारना। ३. आगे बढ़ाना।

लपेट–संज्ञा स्त्री० १. लपटने की क्रिया या भाव। बन्धन। २. घुमाव। फेरा। ऐंठन। बल। मरोड़। ३. घेरा। परिधि। ४. उलझन। जाल या चक्कर।

लपेटन–संज्ञा स्त्री० दे० "लपेट"।

संज्ञा पुं० १. लपेटनेवाली वस्तु। बाँधने का कपड़ा। वेष्टन। बेठन। किसी वस्तु के चारों ओर घुमाकर बाँधने की वस्तु। २. पैरों में उलझनेवाली वस्तु।

लपेटना–क्रि० स० १. फैली हुई वस्तु को समेटना। मोड़कर सिमटना या बाँधना। २. कपड़े आदि के अंदर बाँधना। ३. किसी वस्तु को घुमाकर बाँधना। ४. पकड़ लेना। गतिविधि बंद करना। ५. उलझन में डालना। झंझट में फँसाना।

लपेटवाँ–वि० १. जो लपेटकर बनाया गया हो। जो लपेटा हो। २. जिसमें सोने-चाँदी के तार लपेटे गए हों। ३. गूढ़। ४. व्यंग्य। ५. चक्करदार।

लपेटा–संज्ञा पुं० दे० "लपेट"।

लप्पड़–संज्ञा पुं० थप्पड़।

लप्पा–संज्ञा पुं० एक तरह का गोटा।

लफंगा–वि० लंपट। बदमाश। लुच्चा। आवारा।

लफ़्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] शब्द।

लब–संज्ञा पुं० [फा०] १. होंठ। २. किनारा।

लबझना*†–क्रि० अ० उलझना। फँसना।

लबड़-धोंधों–संज्ञा स्त्री० १. गड़बड़ी। अव्यवस्था। २. अंधेर। धाँधली। ३. बेईमानी की चाल। झूठमूठ का हल्ला।

लबड़ना*†–क्रि० अ० १. झूठ बोलना। २. गप हाँकना।

लबड़सबड़–संज्ञा पुं० १. झूठ-सच। इधर-उधर की बातें। गप। २. बकझक।

लबदा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लबदी] मोटा बेडौल डंडा।

लबनी†–संज्ञा स्त्री० ताड़ी चुआने का पात्र या घड़ा।

लबरा†–वि० १. दे० "लबार"। झूठ बोलनेवाला। गप हाँकनेवाला। २. चुगलखोर।

लबादा–संज्ञा पुं० [फा०] रूईदार या ऊनी चोगा। दगला। चोगा।

लबार†–वि० १. गप हाँकनेवाला। गप्पी। झूठा। २. चुगलखोर।

लबारी–संज्ञा स्त्री० झूठ बोलने का काम।

वि० १. झूठा। २. चुगलखोर।

लबालब–क्रि० वि० [फा०] मुँह तक भरा हुआ। छलकता हुआ।

लबेद–संज्ञा पुं० [वेद का अनु०] १. वेद

विरुद्ध कथन। २. दंतकथा। ३. लोकाचार की भद्दी या भोंडी बात।

लबेदा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लबेदी] मोटा बड़ा डंडा।

लब्ध–वि० १. प्राप्त। कमाया हुआ। २. भाग करने से आया हुआ फल (गणित)।

लब्धकाम–वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हों।

लब्धकीर्ति–वि० प्रसिद्ध। प्रतिष्ठित। नामवर।

लब्धनाम–वि० प्रतिष्ठित। प्रसिद्ध।

लब्धप्रतिष्ठ–वि० प्रतिष्ठित। प्रसिद्ध।

लब्धांक–संज्ञा पुं० गुणा, भाग आदि करने पर प्राप्त होनेवाला अंक-विशेष (गणित)।

लब्धा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नायिका (विप्रलब्धा नायिका)।

लब्धि–संज्ञा स्त्री० १. भाग देने से प्राप्त अंक (गणित)। हिसाब का उत्तर। २. लाभ। प्राप्ति।

लभन–संज्ञा पुं० प्राप्त करना।

लभस–संज्ञा पुं० १. घोड़ा बाँधने की रस्सी। २. माँगनेवाला। ३. धन।

लभ्य–वि० १. पाने योग्य। जो मिल सके। २. उचित। मुनासिब।

लमक–संज्ञा पुं० १. जार। उपपति। २. लंपट। ३. झूले की पेंग।

लमकना†–क्रि० अ० १. लपकना। २. उत्कंठित होना।

लमगोड़ा–वि० लम्बी टाँगोंवाला।

संज्ञा पुं० कायस्थों की एक शाखा।

लमघिचा–वि० लम्बी गर्दनवाला।

लमछड़–संज्ञा पुं० १. बरछा। २. पुरानी चाल की लम्बी बन्दूक। ३. लग्गी।

वि० पतला और एकदम लम्बा।

लमतड़ंग–वि० [स्त्री० लमतड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा।

लमाना*†–क्रि० स० १. लंबा करना। २. दूर तक आगे बढ़ाना।

क्रि० अ० दूर निकल जाना।

लय–संज्ञा पुं० १. एक पदार्थ का दूसरे में मिल जाना। विलीन होना। २. जगत् का नाश। प्रलय। विनाश। ३. लोप। ४. मग्नता। ध्यान में डूबना। ५. लगन। एकाग्रता। ६. कार्य्य का फिर कारण के रूप में परिणत हो जाना। ७. संश्लेष। ८. संगीत में नृत्य, गीत और वाद्य का मेल। ९. विश्राम। १०. मूर्च्छा। ११. वह समय, जो किसी स्वर को निकालने में लगता है। १२. गाने का स्वर।

संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग या तर्ज। धुन। २. संगीत में सम।

लर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।

लरकई*–संज्ञा स्त्री० दे० लड़काई। लड़कपन।

लरकना*†–क्रि० अ० दे० "लटकना"।

लरखरना, लरखराना*†–क्रि० अ० [संज्ञा स्त्री० लरखरनि] दे० "लड़खड़ाना"।

लरजना–क्रि० अ० १. काँपना। हिलना। २. डरना। दहल जाना।

लरझर*‡–वि० १. बहुत अधिक। प्रचुर। २. बरसता हुआ।

लरनि*–संज्ञा स्त्री० १. लड़ाई। २. लड़ने का तरीका।

लरिकई*†–संज्ञा स्त्री० दे० 'लड़कपन'।

लरिक-सलोरी†–संज्ञा स्त्री० लड़कों का खेल। खेलवाड़।

लरिका*–संज्ञा पुं० दे० "लड़का"।

लरिकाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ी"।

लर्ज–संज्ञा पुं० सितार में एक तार का नाम।

ललक–संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक चाह। उमंग। लालसा। उत्कंठा। प्रबल इच्छा।

ललकना–क्रि० अ० १. पाने की बहुत इच्छा करना। लालसा करना। २. ललचना। चाह की उमंग से भरना।

ललकार–संज्ञा स्त्री० १. ललकारने की क्रिया या भाव। युद्ध के लिए आह्वान। २. लड़ने के लिए प्रोत्साहन। चुनौती। ३. लड़ाई के लिए उच्च स्वर से निमंत्रण।

ललकारना–क्रि० स० १. युद्ध के लिए उच्च स्वर से आह्वान करना। २. लड़ने के लिए बढ़ावा देना। चुनौती देना।

ललकित*–वि० ललक से भरा हुआ। प्रबल इच्छा से आतुर। उत्कंठित।

ललचना–क्रि० अ० १. लालच करना। २. पाने के लिए अधीर होना। मोहित होना।

ललचाना–क्रि० स० १. किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। २. मोहित करना। लुभाना। ३. कोई वस्तु दिखाकर उसके पाने के लिए अधीर करना।
*† क्रि० अ० दे० "ललचना"।
मुहा०—जी या मन ललचाना=मन मोहित करना। मुग्ध करना। लुभाना।

ललचौहाँ–वि० [स्त्री० ललचौहीं] ललचाया हुआ। लालच से भरा।

ललन–संज्ञा पुं० १. प्यारा बालक। २. लड़के के लिए प्यार का शब्द। दे० "लला"। ३. प्रिय नायक या पति। ४. केलि। क्रीड़ा।

ललना–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। महिला। कामिनी। २. जिह्वा। जीभ। ३. एक वर्ण-वृत्त।

ललनिका–संज्ञा स्त्री० स्त्री। ललना।

लला–संज्ञा पुं० [स्त्री० लली] १. लड़का। २. लड़के के लिए प्यार का शब्द। ३. प्यारा या दुलारा लड़का। ४. प्रिय नायक या पति। ५. बहुत प्यारा।

ललाई–संज्ञा स्त्री० लाली। सुर्खी। लाल होने का भाव।

ललाट–संज्ञा पुं० १. भाल। मस्तक। माथा। २. भाग्य। किस्मत का लिखा।

ललाट-पटल–संज्ञा पुं० भाल। ललाट का तल या सतह।

ललाट-रेखा–संज्ञा स्त्री० भाग्य का लेख। प्रारब्ध। किस्मत का लिखा।

ललाटाक्ष–संज्ञा पुं० शिव।

ललाटाक्षी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

ललाना*†–क्रि० अ० ललचना। लालायित होना।

ललाम–वि० १. सुंदर। मनोहर। २. लाल। सुर्ख। ३. श्रेष्ठ। प्रधान।
संज्ञा पुं० १. अलंकार। गहना। २. रत्न। ३. निशान। चिह्न।

ललामी–संज्ञा स्त्री० लाली। सुन्दरता।

ललित–वि० १. सुंदर। मनोहर। मनचाहा। प्यारा। २. हिलता-डोलता। चलता हुआ।
संज्ञा पुं० शृंगार-रस में एक हाव या अंग-चेष्टा, जिसमें सुकुमारता (नजाकत) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। २. एक विषम वर्ण-वृत्त। ३. साहित्य में एक अलंकार, जिसमें वर्ण्य-वस्तु (बात) के स्थान पर उसके प्रतिबिंब का वर्णन किया जाता है।

ललितई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "ललिताई"।

ललित कला–संज्ञा स्त्री० वे कलाएँ, जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा हो। जैसे—संगीत, चित्रकला, वास्तु-कला आदि।

ललिता–संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में त, भ, ज, र होता है। २. राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक।

ललिताई*–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।

ललियाना†–क्रि० स० १. फुसलाना। बहकाना। बहलाना। २. वश में करना।

लली–संज्ञा स्त्री० १. लड़की के लिए प्यार का शब्द। २. नायिका। ३. प्रेयसी।

ललौहाँ–वि० [स्त्री० ललौहीं] ललाई लिये हुए। लाल रंग का।

लल्ला–संज्ञा पुं० १. दे० "लला"। लड़के के लिए प्यार का शब्द। २. दुलारा लड़का।

लल्लो–संज्ञा स्त्री० जीभ। जबान।

लल्लो-चप्पो–संज्ञा स्त्री० चिकनी-चुपड़ी बातें। खुशामद की बातें। ठकुरसुहाती।

लल्लो-पत्तो†–संज्ञा स्त्री० दे० "लल्लो-चप्पो"।

लवंग–संज्ञा पुं० लौंग (मसाला)।

लव–संज्ञा पुं० १. बहुत थोड़ी मात्रा। २. दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का अल्प समय। ३. चाह। धुन। लगन। ४. विनाश। लय। ५. काटना। छेदना। ६. ऊन, बाल या पर, जो पशु-पक्षियों से कतरकर निकाले जाते हैं। ७. लवा नाम की चिड़िया। ८. लवंग। ९. श्रीरामचंद्र के दो पुत्रों में से एक का नाम।

लवण–संज्ञा पुं० नमक।
वि० नमकीन। सलोना।

लखन–संज्ञा पुं० १. काटना। छेदना। २. खेत की कटाई। लुनाई। लौनी।
लखना–क्रि० स० दे० "लुनना"। पके हुए अन्न के पौधों को एकत्र करना।
लखनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लखनि, लखनी–संज्ञा स्त्री० १. खेत में अनाज की पकी फसल की कटाई। लुनाई। २. मक्खन। नवनीत।
लवर†–संज्ञा स्त्री० आग की लपट। ज्वाला।
लवलासी†*–संज्ञा स्त्री० प्रेम का लगाव। तन्मयता। लगन।
लवली–संज्ञा स्त्री० १. हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल। २. एक विषम वर्णवृत्त।
लवलीन–वि० मग्न। तन्मय। तल्लीन।
लवलेश–संज्ञा पुं० १. बहुत ही कम। अत्यन्त अल्प मात्रा। २. बहुत थोड़ा-सा संसर्ग या संपर्क।
लवहर†–संज्ञा पुं० जुड़वाँ। यमज।
लवा†–संज्ञा पुं० १. भुने हुए धान या ज्वार का दाना। लावा। २. तीतर की जाति का एक पक्षी।
लवाई–वि० वह गाय, जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो।
संज्ञा स्त्री० खेत की फसल की कटाई। लुनाई।
लवाजमा–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी के साथ रहनेवाला दल-बल और साज-सामान। २. आवश्यक सामग्री।
लवारा–संज्ञा पुं० गौ का बच्चा।
लवासी*†–वि० १. गप्पी। बकवादी। २. लंपट।
लशकर–संज्ञा पुं० [फा०] १. फौज। सेना। २. सेना का पड़ाव। छावनी। ३. जहाज में काम करनेवालों का दल। ४. भीड़। दल।
लशकरी–वि० १. फौज का। सेना-संबंधी। २. जहाज पर काम करनेवाला। खलासी। जहाजी।
लशकारना–क्रि० स० १. लहकारना या ललकारना। २. शिकारी कुत्तों को शिकार के लिए बढ़ावा देना।
लशुन, लशून–संज्ञा पुं० लहसुन।
लषन*–संज्ञा पुं० दे० "लखन"। लक्ष्मण।
लस–संज्ञा पुं० १. चिपकने या चिपकाने का गुण। चिपचिपाहट। २. वह वस्तु, जिसके लगाने से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय। लासा। ३. चित्त लगने की बात। ४. आकर्षण।
लसदार–वि० जिसमें लस हो। लसीला। लसलसा। चिपचिपा।
लसना–क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना। चिपकाना।
*क्रि० अ० १. शोभित होना। छजना। सुन्दर लगना। फबना। २. विराजना। विद्यमान या मौजूद होना।
लसनि*–संज्ञा स्त्री० १. शोभा। छटा। २. स्थिति। विद्यमानता। मौजूदगी। ३. शोभित होने की दशा।
लसम–वि० दूषित। खोटा। जो खरा न हो।
लसलसाना–क्रि० अ० चिपचिपाना। लसदार होना।
लसलसा–वि० दे० "चिपचिपा", "लसदार"।
लसिका–संज्ञा स्त्री० लार। थूक।
लसित–वि० १. शोभायुक्त। शोभित। सुन्दर लगता हुआ या फबता हुआ। २. विद्यमान। विराजित। प्रत्यक्ष। आँख के सामने।
लसियाना–क्रि० स०, अ० लसलस होना। चिपकना। लसदार होना। चिपचिप होना।
लसी–संज्ञा स्त्री० १. लस। चिपचिपाहट। २. दिल लगने की वस्तु। ३. आकर्षण। ४. लाभ होने का अवसर। ५. संबंध। लगाव। ६. दही का शरबत, लस्सी।
लसीका–संज्ञा स्त्री० लार। माँस और चमड़े के बीच में रहनेवाला रस।
लसीला–वि० [स्त्री० लसीली] लसदार। सुंदर। शोभायुक्त।
लसोड़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़, जिसके फल औषध के काम में आते हैं।
लसोटा–संज्ञा पुं० बहेलियों का चिड़ियों को फंसाने का बाँस का चोंगा।
लस्टम-पस्टम‡–क्रि० वि० किसी तरह से। ज्यों-त्यों। जैसे-तैसे।

लस्त–वि० १. थका हुआ। शिथिल। २. अशक्त।

लस्तक–संज्ञा पुं० धनुष का मध्यभाग।

लस्सी–संज्ञा स्त्री० १. चिपचिपाहट। लसी। २. दही का शरबत। ३. छाछ। मठा।

लहँगा–संज्ञा पुं० कमर के नीचे का सारा अंग ढाँकने के लिए स्त्रियों का एक घेरेदार पहनावा।

लहक–संज्ञा स्त्री० १. लहकने की क्रिया या भाव। २. आग की लपट। ३. शोभा। छवि। ४. चमक। द्युति।

लहकना–क्रि० अ० [अनु०] १. आग का इधर-उधर लपट छोड़ना। दहकना। लपकना। २. झोंके खाना। लहराना। ३. हवा का बहना। ४. उत्कंठित होना। चाह या उमंग से भरना।

लहकाना, **लहकारना**–क्रि० स० १. आगे बढ़ाना। २. उत्साह दिलाना। ३. प्रेरित करना। ४. ताव दिलाना। ५. लपकाना।

लहकौर, **लहकौरि**–संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति, जिसमें वर को दही-चीनी खिलाते हैं।

लहजा–संज्ञा पुं० [अ०] बोलने या गाने का ढंग। लय। स्वर।

लहनदार–संज्ञा पुं० ऋण देनेवाला। महाजन।

लहना–क्रि० स० १. प्राप्त करना। पाना। २. लहलहाना। ३. काटना। ४. छेदना। ५. छीलना। तराशना।

संज्ञा पुं० १. उधार दिया हुआ धन। २. किसी कारण से किसी से मिलनेवाला धन। ३. भाग्य। ४. जलाने की लकड़ी। ईंधन।

लहनी–संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। २. फलभोग।

लहबर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का लंबा पहनावा। लबादा। चोगा। २. झंडा। निशान।

लहमा–संज्ञा पुं० [अ०] पल। क्षण। बहुत थोड़ा समय। अल्पकाल।

लहर–संज्ञा स्त्री० १. ऊँची उठती हुई जल की राशि। तरंग। बड़ा हिलोरा। २. मौज। उमंग। जोश। मन की मौज। ३. बेहोशी, पीड़ा आदि का वेग, जो कुछ अंतर पर रह-रहकर उत्पन्न हो। ४. झोंका। ५. इधर-उधर मुड़ती हुई टेढ़ी चाल। ६. चलते हुए सर्प की-सी कुटिल रेखा। ७. हवा का झोंका। ८. महक। ९. लपट।

मुहा०—साँप काटने की लहर=साँप से काटे गए आदमी की वह अवस्था, जिसमें बेहोशी से बीच-बीच में वह जाग उठता है।

यौ०—लहर-बहर=आनंद और सुख।

लहरदार–वि० १. जो सीधा न जाकर बल खाता हुआ गया हो। लहर की तरह टेढ़ा मेढ़ा। २. चटकीला। भड़कदार। ३. उमंग उत्पन्न करनेवाला।

लहरना–क्रि० अ० दे० "लहराना"।

लहर-पटोर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

लहरा–संज्ञा पुं० १. लहर। तरंग। २. मौज। आनंद। मजा। ३. बाजों की वह गति, जो गाने के पहले समाँ बाँधने के लिए बजाई जाती है। ४. एक झोंक या एक बार में जितनी वृष्टि हो।

लहराना–क्रि० अ० १. हवा के झोंके से इधर-उधर हिलना-डोलना। २. पानी का हवा के झोंके से उठना और गिरना। बहना या हिलोरा मारना। ३. हवा की चाल। ४. इधर-उधर मुड़ते या झोंका खाते हुए चलना। मन का उमंग में होना। ५. उत्कंठित होना। ६. लपकना। आग की लपट का हिलना। दहकना। ७. भड़कना। ८. शोभित होना। लसना। विराजना।

क्रि० स० १. हवा के झोंके में इधर-उधर हिलाना। २. इधर-उधर मुड़ते हुए चलाना।

लहरिया–संज्ञा पुं० १. लहरदार चिह्न। टेढ़ी-मेढ़ी गई हुई लकीरों की श्रेणी। २. एक प्रकार का कपड़ा, जिसमें रंग-बिरंगी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी होती हैं। ३. उपर्युक्त प्रकार के कपड़े की साड़ी या धोती।

संज्ञा स्त्री० दे० "लहर"।

लहरी–संज्ञा स्त्री० लहर। तरंग।

†वि० मनमौजी। मन की तरंग के अनुसार काम करनेवाला।

लह-लह–वि० दे० "लहलहा"।

लहलहा–वि० [स्त्री० लहलही] १. लहलहाता हुआ। हरा-भरा। २. आनंद से पूर्ण। प्रफुल्ल। ३. हृष्ट-पुष्ट।
लहलहाना–क्रि० अ० १. हरा-भरा होना। सूखे पेड़ या पौधे में फिर से पत्तियाँ निकलना। पनपना। २. प्रफुल्लित होना।
लहसुन–संज्ञा पुं० लम्बी पत्तियों का एक पौधा, जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और मसाले के काम में आती है।
लहसुनिया–संज्ञा पुं० धूमिल रंग का एक रत्न। रुद्राक्षक।
लहा*–संज्ञा पुं० दे० "लाह"।
लहाछेह–संज्ञा पुं० १. वह छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ हों। २. लक्षण जाननेवाला। ३. नाच की एक रीति।
लहालह†*–वि० दे० "लहलहा"।
लहालोट–वि० १. हँसी से लोटता हुआ। हँसी से लोट-पोट। २. खुशी से भरा हुआ। ३. प्रेम-मग्न। मोहित। लट्टू। ४. उधार लेकर वापस न देनेवाला।
लहासी–संज्ञा स्त्री० मोटी रस्सी। नाव बाँधने की डोरी।
लहि†–अव्य० पर्य्यंत। तक।
लहियत*–क्रि० स० पाता है।
लहिला–संज्ञा पुं० दे० "रहिला"। चना।
लहु*†–अव्य० दे० "लौं"।
लहुरा†–वि० [स्त्री० लहुरी] छोटा। कनिष्ठ।
लहू–संज्ञा पुं० रक्त। खून।
मुहा०–लहू-लुहान होना=खून से भर जाना। अत्यंत लहू बहाना।
लहेरा–संज्ञा पुं० लाह का पक्का रंग चढ़ानेवाला।
लाँक†–संज्ञा स्त्री० १. ताजी कटी हुई फसल। २. परिमाण। ३. कमर। कटि।
लाँग–संज्ञा स्त्री० १. धोती का वह भाग, जो पीछे की ओर कमर में खोंस लिया जाता है। काछ। २. छलाँग।
लांगल–संज्ञा पुं० खेत जोतने का हल। अर्द्ध चन्द्रमा का तिरछा कोण।
लांगली–संज्ञा पुं० १. बलराम। २. नारियल। ३. साँप।
संज्ञा स्त्री० १. पुराणानुसार एक नदी का नाम। २. कलियारी। ३. मजीठ।
लांगुली–संज्ञा पुं० बंदर।
लांगूल–संज्ञा पुं० दुम। पूँछ।
लांगूली–संज्ञा पुं० बंदर।
लाँघना–क्रि० स० १. इस पार से उस पार जाना। २. डाँकना। नाँघना। किसी वस्तु को उछलकर पार करना।
लाँच–संज्ञा स्त्री० घूस। रिशवत।
लांछन–संज्ञा पुं० १. दोष। २. कलंक। ३. दाग। धब्बा।
लांछना–संज्ञा स्त्री० दे० "लांछन"।
लांछनित–वि० कलंकित। दे० "लांछित"।
लांछित–वि० जिस पर दोष या कलंक लगा हो।
लाँबा†*–वि० दे० "लंबा"।
लाई*†–संज्ञा पुं० अग्नि।
लाइक–वि० दे० "लायक"।
लाइची–संज्ञा पुं० इलायची।
लाइन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. रेखा। लकीर। पंक्ति। कतार। २. रेल की पटरी। ३. सिपाहियों के रहने का स्थान, बैरक।
लाई†–संज्ञा स्त्री० १. धान का लावा। धान की भूनी हुई खील। २. चुगली। निंदा। ३. चुगलखोर (स्त्री)।
यौ०–लाई-लुतरी=चुगली। शिकायत।
लाकड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "लकड़ी"।
लाक्षा–संज्ञा स्त्री० लाख। लाह।
लाक्षणिक–वि० १. जिससे लक्षण प्रकट हो। २. लक्षण-संबंधी। लक्षण के रूप में होनेवाला (काम)।
लाक्षागृह–संज्ञा पुं० लाख का वह घर, जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।
लाक्षारस–संज्ञा पुं० महावर।
लाक्षिक–वि० लाख-सम्बन्धी। लाख का बना हुआ।
लाख–संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या १००००० वि० १. सौ हजार। २. बहुत अधिक।
क्रि० वि० बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्ध लाल पदार्थ, जो कुछ

पेड़ों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है। लाह। २. वे छोटे लाल कीड़े, जिनसे उक्त द्रव्य निकलता है।

मुहा०—लाख से लीख होना=सब कुछ से कुछ न रह जाना। लाख रूपए की बात=बहुत उपयोगी बात।

लाखना–क्रि० अ० लाख लगाकर कोई छेद बंद करना।

*†क्रि० स० दे० "लखना"। जानना। परखना।

लाखागृह–संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लाखामंदिर–संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लाखिराज–वि० माफी जमीन। वह जमीन, जिसका खिराज या लगान न देना पड़े।

लाखी–वि० लाख के रंग का। मटमैला लाल। संज्ञा पुं० लाख के रंग का घोड़ा।

लाग–संज्ञा स्त्री० १. संपर्क। संबंध। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। ३. लगन। मन की तत्परता। ४. युक्ति। तरकीब। उपाय। ५. वह स्वाँग आदि, जिसमें कोई कौशल-विशेष हो। ६. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। ७. वैर। शत्रुता। दुश्मनी। ८. जादू। मंत्र। टोना। ९. शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जानेवाला निश्चित धन। १०. भूमि-कर। लगान। ११. एक प्रकार का नृत्य। १२. दैनिक भोजन का सामान।

क्रि० वि० पर्य्यंत। तक। लौं।

लाग-डाँट–संज्ञा स्त्री० १. स्पर्द्धा। प्रतिद्वन्द्विता। चढ़ा-ऊपरी। २. शत्रुता। वैर।

लागत–संज्ञा स्त्री० किसी चीज की तैयारी या बनाने में लगनेवाला धन।

लागना*–क्रि० अ० दे० "लगना"।

लागि*†–अव्य० १. कारण। २. हेतु। निमित्त। लिए। ३. द्वारा।

क्रि० वि० तक। पर्य्यंत।

लागू†–वि० १. जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त होनेवाला। २. चरितार्थ होनेवाला।

लागे†–अव्य० लिए। वास्ते।

लाघव–संज्ञा पुं० १. छोटापन। लघु होने का भाव। लघुता। २. कमी। अल्पता। ३. हाथ की सफाई। फुर्ती। तेजी। ४. आरोग्य। तंदुरुस्ती।

अव्य० फुर्ती से। सहज में।

लाघवी*–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। फुर्ती।

लाचार–वि० जिसका कुछ वश न चलता हो। विवश। मजबूर।

क्रि० वि० विवश या मजबूर होकर।

लाचारी–संज्ञा स्त्री० मजबूरी। विवशता।

लाज–संज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"।

लाजना*†–क्रि० अ० लजाना। लज्जित होना।

लाजवंत–वि० [स्त्री० लाजवंती] जिसे लज्जा हो। शर्मदार।

लाजवंती–संज्ञा स्त्री० १. लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई। २. लजाधुर।

ला-जवाब–वि० [फा०] १. जिसका कोई जवाब न हो। निरुत्तर। २. अनुपम। बेजोड़।

लाजा–संज्ञा स्त्री० भूनकर फुलाया हुआ धान। लावा।

लाजिम–वि० [अ०] १. अवश्य करने योग्य। २. उचित। वाजिब। मुनासिब।

लाजिमी–वि० [अ०] आवश्यक। जरूरी।

लाट–संज्ञा स्त्री० मोटा और ऊँचा खंभा।

संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश, जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं। २. इस देश के निवासी। ३. दे० "लाटानुप्रास"। ४. अँगरेजी शासन-काल में किसी प्रान्त का शासक, लार्ड [अंग्रे०] का अपभ्रंश।

मुहा०–बड़े लाट साहब बने हैं=अपने को बहुत बड़ा समझते हैं।

लाटरी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] गोटी उठाकर किसी बात का निर्णय करना या धन आदि बाँटना।

लाटानुप्रास–संज्ञा पुं० वह शब्दालंकार, जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परन्तु अन्वय के हेर-फेर से अर्थ भिन्न हो जाता है।

लाटिका–संज्ञा स्त्री० साहित्य में एक प्रकार की रचना या रीति। इसमें छोटे-छोटे पद और समास होते हैं।

लाटी†–संज्ञा स्त्री० मुँह का थूक और होंठ सूख जाने की दशा।

संज्ञा स्त्री० लाटिका रीति।

लाठ–संज्ञा स्त्री० दे० "लाट"।

लाठी–संज्ञा स्त्री० डंडा। लट्ठ। लकड़ी। मुहा०–लाठी चलना=लाठियों की मार-पीट होना।

लाठी चार्ज–संज्ञा पुं० भीड़ या प्रदर्शन करनेवालों को हटाने के लिए पुलिस-द्वारा उन पर लाठियों का प्रहार।

लाड़–संज्ञा पुं० दुलार। बच्चों का प्यार। लालन।

लाड़लड़ता–वि० दे० "लाड़ला"। बहुत प्यारा। दुलारा।

लाड़ला–वि० [स्त्री० लाड़ली] दुलारा। जिसको बहुत लाड़ या प्यार किया जाय। प्यारा।

लात–संज्ञा स्त्री० १. पैर। पाँव। पद। २. पैर से किया हुआ आघात या पाद-प्रहार। मुहा०–लात खाना=पैरों की ठोकर या मार सहना। लात मारना=तुच्छ समझकर छोड़ देना। त्याग देना।

लाद–संज्ञा स्त्री० १. लादने की क्रिया। २. पेट। आँत। अँतड़ी। ३. लदा हुआ सामान। ४. ढेंकी पर लगा हुआ मिट्टी का ढोंका।

लादना–क्रि० स० १. किसी चीज पर बहुत-सी वस्तुएँ रखना। २. ढोने या ले जाने के लिए वस्तुओं को रखना। एक पर एक वस्तुएँ रखना। ३. किसी बात का भार रखना। बोझ डालना।

लादिया–संज्ञा पुं० किसी चीज पर बोझ लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाने-वाला।

लादी–संज्ञा स्त्री० १. वह गट्ठर, जिसे धोबी गदहे पर ले जाते हैं। २. किसी पशु पर लादी जानेवाली गठरी।

लाधना*†–क्रि० स० प्राप्त करना। पाना।

लानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] धिक्कार। फटकार। भर्त्सना।

लानती–संज्ञा पुं० सदा फटकार सुननेवाला।

लाना–क्रि० अ० १. ले आना। कोई चीज उठाकर या अपने साथ लेकर आना। २. उपस्थित करना। सामने रखना। ३. उत्पन्न करना। कहीं से पैदा करना। क्रि० स० लगाना। आग लगाना। जलाना।

लानें*†–अव्य० वास्ते। लिए।

लापता–वि० [अ०] १. जिसका पता न लगे। बिना पता के। २. गुप्त। गायब।

लापरवा, लापरवाह–वि० १. जिसे किसी बात की परवा या चिन्ता न हो। बेफिक्र। २. असावधान।

लापरवाही–संज्ञा स्त्री० १. बेफिक्री। २. असावधानी।

लाबी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] विधान सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा, जिसमें उसके सदस्य बैठकर आपस में बातचीत करते और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं।

लाभ–संज्ञा पुं० १. फायदा। मुनाफा। नफा। प्राप्ति। २. उपकार। भलाई।

लाभकारक, लाभकारी, लाभदायक–वि० जिससे लाभ हो। फायदा करनेवाला। फायदेमंद। स्वास्थ्यप्रद। गुणकारक।

लाभांश–संज्ञा पुं० किसी व्यापार से होनेवाले आर्थिक लाभ का वह अंश, जो उस व्यापार में रुपए लगानेवाले सब हिस्सेदारों को उनके हिस्से के अनुसार मिलता है। (अंग्रे०—डिविडेण्ड)।

लाभालाभ–संज्ञा पुं० लाभ और हानि। फायदा और नुकसान।

लाम–संज्ञा पुं० [फा०] १. सेना। फौज। २ बहुत से लोगों का समूह। *क्रि० वि० दूर पर। फासले पर।

लामज–संज्ञा पुं० खस की तरह का एक तृण।

लामज्जक–संज्ञा पुं० लामज तृण।

लामन*†–संज्ञा पुं० लहँगा।

लामा–संज्ञा पुं० १. तिब्बत के बौद्धों का धर्म्माचार्य। २. घास खानेवाला ऊँट की तरह का एक जन्तु, जो दक्षिणी अमेरिका में पाया जाता है। *वि० दे० "लंबा"। बहुत दूर।

लामे‡–क्रि० वि० दूर। अंतर पर।

लाय*–संज्ञा स्त्री० १. लपट। ज्वाला। २. आग।

लायक़–वि० [अ०] १. योग्य। गुणवान्।

समर्थ। २. उचित। ठीक। वाजिब। उपयुक्त।

लायकी–संज्ञा स्त्री० लायक होने का भाव या धर्म। योग्यता।

लायची–संज्ञा स्त्री० दे० "इलायची"।

लार–संज्ञा स्त्री० १. मुँह से निकलनेवाला पतला लसदार थूक। लासा। लुआब २. कतार। पंक्ति।

क्रि० वि० साथ। पीछे।

मुहा०–मुँह से लार टपकना=किसी चीज को देखकर उसके पाने की बहुत इच्छा होना। लार लगाना=फँसाना। बुझाना।

लारी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] वह लम्बी बड़ी मोटर, जिस पर बहुत से आदमी यात्रा करते हैं या माल ढोया जाता है।

लाल–संज्ञा पुं० १. छोटा प्यारा बच्चा। बेटा। २. प्रिय व्यक्ति। ३. श्रीकृष्णचंद्र। ४. दुलार। प्यार। ५. दे० "लार"। ६. दे० "मानिक"। ७. एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया। इसकी मादा को "मुनियाँ" कहते हैं।

*† संज्ञा स्त्री० लालसा। इच्छा। चाह। वि० १. लाल रंग का। सुर्ख। २. बहुत अधिक क्रुद्ध। क्रोध से तमतमाया हुआ।

मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना। नाराज होना। लाल-पीले होना=गुस्सा होना। क्रोध करना। लाल होना=बहुत अधिक संपत्ति पाकर संपन्न होना।

लाल चंदन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चंदन, जिसे घिसने से लाल रंग और अच्छी सुगंध निकलती है। रक्त-चंदन। देवी-चंदन।

लालच–संज्ञा पुं० [वि० लालची] १. कोई चीज पाने की बहुत अधिक इच्छा करना। २. लोलुपता। लोभ।

लालचहा†–वि० दे० "लालची"।

लालची–वि० जिसे लालच हो। लोभी। जिसे कोई चीज पाने के लिए बहुत अधिक इच्छा हो।

लालटेन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०–लैंटर्न] एक प्रकार का प्रकाश-पात्र, जिसमें मिट्टी का तेल भरकर बत्ती जलाते हैं और जिसके चारों ओर शीशा लगा रहता है। कंडील।

लालड़ी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल नगीना।

लालन–संज्ञा पुं० १. बच्चों का प्यार या दुलार। लाड़। प्यार। २. प्रिय पुत्र। प्यारा बच्चा। ३. कुमार। बालक।

क्रि० अ० लाड़ करना। प्यार करना।

लालना*–क्रि० स० दुलार करना। लाड़ करना। प्यार करना।

लालनीय–वि० लालन या प्यार करने योग्य।

लाल पानी–संज्ञा पुं० शराब।

लाल-बुझक्कड़–संज्ञा पुं० बातों का अटकल-पच्चू मतलब लगानेवाला। न जानने पर भी अंदाज लगानेवाला।

लालमन–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. एक प्रकार का तोता।

लालमिर्च–संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च"। एक तरह की मिर्च।

लालमुहाँ–संज्ञा पुं० मुँह का एक रोग।

लालरी–संज्ञा स्त्री० दे० "लालड़ी"।

लाल समुद्र–संज्ञा पुं० दे० "लाल सागर"।

लालसा–संज्ञा स्त्री० १. बहुत अधिक इच्छा या चाह। लिप्सा। किसी वस्तु को प्राप्त करने की बहुत इच्छा। २. उत्सुकता। उमंग। वि० चंचल। लोल।

लाल सागर–संज्ञा पुं० भारतीय महासागर का वह अंश, जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है।

लालसिखी†–संज्ञा पुं० मुर्गा। लाल शिखा-वाला (अरुण-शिख)।

लालसी*–वि० अभिलाषा या इच्छा करने-वाला। उत्सुक।

लाला–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का संबोधन। महाशय। साहब। २. कायस्थ जाति का सूचक शब्द। ३. कायस्थ और बनिया जाति के व्यक्तियों के नाम के आगे लगनेवाला एक शब्द। ४. छोटे प्रिय बच्चे के लिए संबोधन। ५. [फा०] पोस्त का लाल रंग का फूल।

संज्ञा स्त्री० मुँह से निकलनेवाली लार। वि० लाल रंग का।
लालाजी–संज्ञा पुं० कायस्थ या बनिया के लिए प्रयुक्त शब्द या सम्बोधन।
लालायित–वि० ललचाया हुआ।
लालाविष–संज्ञा पुं० ऐसा जन्तु, जिसके मुँह की लार में विष हो।
लालास्राव–संज्ञा पुं० १. मुँह से लार गिरना। २. मकड़ी का जाला।
लालित–वि० [स्त्री० लालिता] १. दुलारा। प्यारा। २. जो पाला-पोसा गया हो।
लालित्य–संज्ञा पुं० ललित का भाव। सौंदर्य। सरसता।
लालिमा–संज्ञा स्त्री० लाली। ललाई। सुर्खी।
लाली–संज्ञा स्त्री० १. लाल होने का भाव। ललाई। सुर्खी। २. इज्जत। प्रतिष्ठा।
लालोल–संज्ञा पुं० अग्नि।
लाले–संज्ञा पुं० लालसा। अभिलाषा। **मुहा०**–किसी चीज के लाले पड़ना–किसी चीज के लिए बहुत तरसना।
लाल्हा†–संज्ञा पुं० दे० "मरसा" (साग)।
लाव*†–संज्ञा स्त्री० आग। मोटा रस्सा।
लावक–संज्ञा पुं० लवा पक्षी।
लावणिक–वि० नमक-सम्बन्धी।
लावण्य–संज्ञा पुं० बहुत अधिक सुंदरता। लोनाई।
लावनता*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लावना*†–क्रि० स० १. लाना। लगाना। स्पर्श कराना। २. जलाना। आग लगाना।
लावनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लावनी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का छंद। २. इस छंद का एक भेद, जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है (ख्याल)।
लावबाली–संज्ञा पुं० १. लापरवाह। २. आवारा। ३. उच्छृङ्खल। ४. निकम्मा। संज्ञा स्त्री० लापरवाही। उपेक्षा।
लाव-लश्कर–संज्ञा पुं० सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।
लावल्द–वि० [फा०] निःसंतान। जिसके कोई बच्चा न हो।
लावा–संज्ञा पुं० १. लवा नामक पक्षी। २. भूना हुआ धान, या रामदाना आदि, जो भूनने के कारण फूटकर फूल जाता है। खील। लाई। फुल्ला। ३. [अंग्रे०] ज्वालामुखी पहाड़ों के विस्फोट से निकलनेवाला द्रव पदार्थ।
लावा-परछन–संज्ञा पुं० विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० लावारिसी] वह, जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो। ऐसी सम्पत्ति, जिसका कोई मालिक या अधिकारी न हो।
लावारिसी–वि० बिना उत्तराधिकारी या वारिस का।
लाश–संज्ञा स्त्री० [फा०] मृत देह। मुर्दा। शव। लोथ।
लास–संज्ञा पुं० दे० "लास्य"। नृत्य के भेदों में एक।
लासक–संज्ञा पुं० १. नाचनेवाला। मटकनेवाला। २. मोर। वि० चमकानेवाला।
लासकी–संज्ञा स्त्री० नाचनेवाली।
लासा–संज्ञा पुं० १. कोई लसदार चीज। चेप। लुआब। २. एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ, जिसे बहेलिये चिड़ियों को फँसाने के लिए बनाते हैं।
लासानी–वि० [अ०] अद्वितीय। बेजोड़।
लासि–संज्ञा पुं० दे० "लास्य"।
लास्य–संज्ञा पुं० १. नृत्य। नाच। २. वह नृत्य, जो कोमल अंगों के द्वारा हो और जिससे शृङ्गार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता हो।
लाह*–संज्ञा स्त्री० १. लाख। चपड़ा। २. चमक। आभा। कांति। संज्ञा पुं० लाभ। नफा।
लाहन†–संज्ञा पुं० १. मद निकालने के बाद बचा हुआ महुआ। २. महुए और जूसी को मिलाकर बनाया गया खमीर। किसी प्रकार का खमीर।
लाही†*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "लाख"। २. लाख से मिलता-जुलता एक कीड़ा, जो फसल को प्रायः हानि पहुँचाता है।

वि० मटमैलापन लिये लाल रंग।

लाहु*–संज्ञा पुं० नफा। लाभ।

लाहौल–संज्ञा पुं० [अ०] एक अरबी वाक्य का पहला शब्द, जिसका व्यवहार प्रायः घृणा प्रकट करने के लिए किया जाता है।

लिंग–संज्ञा पुं० १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. पुरुष की मूत्रेंद्रिय। शिश्न। ३. शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति। ४. व्याकरण में वह भेद, जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है। जैसे, पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग। ५. वह, जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो। ६. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति।

लिंगदेह–संज्ञा पुं० वह सूक्ष्म शरीर, जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों का फल भोगने के लिए जीवात्मा के साथ लगा रहता है। (अध्यात्म)

लिंगपुराण–संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक, जिसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है।

लिंगशरीर–संज्ञा पुं० दे० "लिंगदेह"।

लिंगायत–संज्ञा पुं० एक शैव संप्रदाय, जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।

लिंगी–संज्ञा पुं० १. चिह्नवाला। निशानवाला। २. आडंबरी। धर्म का ढोंग रचनेवाला। धर्मध्वजी।

लिंगेंद्रिय–संज्ञा पुं० पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

लिपाक–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का नीबू। २. गदहा।

लिए–हिंदी का एक कारक-चिह्न, जो संप्रदान में आता है, और जिस शब्द के आगे लगता है, उसके निमित्त या वास्ते का अर्थ सूचित करता है। जैसे—उसके लिए।

लिकुच–संज्ञा पुं० बड़हर का वृक्ष। लकुच।

लिक्खाड़–संज्ञा पुं० बहुत लिखनेवाला। बड़ा भारी लेखक (व्यंग्य)।

लिक्षा–संज्ञा स्त्री० १. जूँ का अंडा। लीख। २. एक परिमाण।

लिखत–संज्ञा स्त्री० १. लिखी हुई बात। लेख। २. दस्तावेज।

लिखधार*†–संज्ञा पुं० लिखनेवाला। मुंशी या मुहर्रिर।

लिखन–संज्ञा स्त्री० १. लिखावट। लेख। २. कर्म की रेखा।

लिखना–क्रि० स० १. स्याही में डूबी हुई कलम से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध करना। २. अक्षर अंकित करना। ३. चित्रित करना। चित्र बनाना। ४. पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना।

लिखनी–संज्ञा स्त्री० लेखनी।

लिखवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "लिखाई"।

लिखवाना–क्रि० स० दे० "लिखाना"।

लिखवार–संज्ञा पुं० लिखनेवाला। मुंशी। मुहर्रिर।

लिखाई–संज्ञा स्त्री० १. लेख। लिपि। २. लिखने का कार्य्य। ३. लिखने का ढंग। लिखावट। ४. लिखने की मजदूरी।

लिखाना–क्रि० स० दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।

लिखापढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. पत्र-व्यवहार। चिट्ठियों का आना-जाना। २. किसी विषय को कागज पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।

लिखावट–संज्ञा स्त्री० १. लेख। लिपि। २. लिखने का ढंग।

लिखित–वि० लिखा हुआ। अंकित।
संज्ञा पुं० लिखा हुआ प्रमाणपत्र। लेख।

लिखितक–संज्ञा पुं० एक प्रकार के प्राचीन चौखूंटे अक्षर।

लिखेरा–संज्ञा पुं० लिखनेवाला।

लिख्या–संज्ञा स्त्री० दे० "लिक्षा"।

लिगु–संज्ञा पुं० १. मृग। २. भूप्रदेश। ३. मूर्ख। ४. मन।

लिच्छवि–संज्ञा पुं० इतिहास-प्रसिद्ध एक राजवंश, जिसका राज्य मगध और कोशल में था।

लिटाना–क्रि० स० दूसरे को लेटने में प्रवृत्त कराना। दूसरे से लेटने की क्रिया कराना। सुलाना। पौढ़ाना। सुला देना।

लिट्ट–संज्ञा पुं० [स्त्री० लिट्टी] मोटी रोटी। अंगाकड़ी। बाटी।

लिठोर–संज्ञा पुं० एक नमकीन पकवान।

लिडार, लिडोर†–संज्ञा पुं० शृगाल। गीदड़। वि० डरपोक। कायर। बुजदिल।

लिपटना–क्रि० अ० १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सट जाना। चिमटना। २. गले लगना। आलिंगन करना। ३. किसी काम में जी-जान से लग जाना।

लिपटाना–क्रि० स० १. एक वस्तु को दूसरी से सटाना। संलग्न करना। चिमटाना। २. गले लगाना। आलिंगन करना।

लिपड़ा–संज्ञा पुं० कपड़ा।
वि० गीला और चिपचिपा।
संज्ञा स्त्री० दे० "लिबड़ी"।

लिपना–क्रि० अ० १. लीपा या पोता जाना। २. रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।

लिपवाना–क्रि० स० लीपने का काम दूसरे से कराना।

लिपाई–संज्ञा स्त्री० लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना–क्रि० स० १. रंग या किसी गीली वस्तु को तह चढ़वाना। पुताना। २. चूने, मिट्टी, गोबर आदि से लेप कराना।

लिपि–संज्ञा स्त्री० १. लिखावट। २. अक्षर लिखने की प्रणाली। जैसे—ब्राह्मी लिपि, देवनागरी लिपि। ३. लेख। लिखे हुए अक्षर या बात।

लिपिका–संज्ञा स्त्री० लिपि। लिखावट।

लिपिकार–संज्ञा पुं० लेखक। लिखनेवाला।

लिपिबद्ध–वि० लिखा हुआ। लिखित।

लिप्त–वि० १. लीन। अनुरक्त। तत्पर। २. लिपा हुआ। पुता हुआ। ३. जिसकी पतली तह चढ़ी हो।

लिप्सा–संज्ञा स्त्री० लालच। लोभ। चाह।

लिप्सु–संज्ञा पुं० लोलुप। लालची। इच्छुक।

लिफाफा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कागज की बनी हुई वह चौकोर थैली, जिसके अंदर कागज-पत्र रखकर भेजे जाते हैं। २. दिखावटी कपड़े-लत्ते। ३. ऊपरी आडंबर। मुलम्मा। कलई। जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।

लिबड़ना–क्रि० अ० कीचड़ आदि में लथपथ होना।
क्रि० स० कीचड़ आदि में लथपथ करना।

लिबड़ी–संज्ञा स्त्री० कपड़ा-लत्ता।
यौ०–लिबड़ी बरतना या बारदाना= निर्वाह करने का मामूली सामान। असबाब।

लिबरल–वि० [अं०] उदार।
संज्ञा पुं० १. इँगलैंड के एक राजनीतिक दल का नाम। २. भारत के एक राजनीतिक दल का नाम। ३. उदार या नरम नीति का अनुयायी।

लिबास–संज्ञा पुं० [अ०] पहनने का कपड़ा। पहनावा। पोशाक।

लियाक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। काबिलीयत। २. गुण। हुनर। ३. सामर्थ्य। ४. शील। शिष्टता।

लिलाट, लिलार*†–संज्ञा पुं० दे० "ललाट"।

लिलोही†–वि० लालची।

लिवाना–क्रि० स० लेने या लाने का काम दूसरे से कराना।

लिवाल–संज्ञा पुं० खरीदने या लेनेवाला।

लिवैया†–संज्ञा पुं० लेनेवाला। लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिसोड़ा–संज्ञा पुं० एक मँझोला पेड़, जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं।

लिहाज–संज्ञा पुं० [अ०] १. शील-संकोच। मुरव्वत। व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान। २. मेहरबानी का खयाल। कृपा-दृष्टि। ३. पक्षपात। ४. सम्मान या मर्य्यादा का ध्यान। ५. लज्जा। शर्म।

लिहाड़ा–वि० १. नीच। गिरा हुआ। २. खराब। वाहियात। ३. निकम्मा।

लिहाड़ी†–संज्ञा स्त्री० उपहास। निंदा।

लिहाफ़–संज्ञा पुं० [अ०] ओढ़ने का रूईदार कपड़ा। बड़ी रजाई।

लिहित–वि० चाटता हुआ।

लीक–संज्ञा स्त्री० १. लकीर। रेखा। गहरी पड़ी हुई लकीर। गाड़ी के पहिए से पड़ी हुई लकीर। २. मर्य्यादा। नाम। यश। ३. बँधी हुई मर्य्यादा। लोक-नियम। ४. रीति। प्रथा। चाल। ५. हद। ६. प्रतिबंध। ७. बदनामी। लांछन। ८. गिनती। गणना। ९. एक चिड़िया।

मुहा०–लीक करके=दे० "लीक खींचकर"। लीक खिचना=किसी बात का अटल और दृढ़ होना। मर्य्यादा बँधना। प्रतिष्ठा स्थिर होना। लीक खींचकर=निश्चयपूर्वक। जोर देकर। लीक पीटना=चली आई हुई प्रथा का ही अनुसरण करना।

लीख–संज्ञा स्त्री० १. जूँ का अंडा। २. लिक्षा नामक परिमाण।

लीग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. संघ या संस्था। जैसे मुस्लिम लीग। कुछ खास दलों या व्यक्तियों का किसी उद्देश्य से आपस में मिलना। राष्ट्रों का संघ। जैसे, लीग आफ नेशन्स। २. लम्बाई की एक नाप, जो स्थल के लिए ३ मील की और समुद्र के लिए ३॥ मील की होती है।

लीगी–संज्ञा पुं० [अंग्रे० लीग] लीग का सदस्य।
वि० लीग-सम्बन्धी। लीग का।

लीचड़–वि० १. सुस्त। काहिल। निकम्मा। २. जल्दी न छोड़नेवाला। चिपटनेवाला। ३. जिसका लेन-देन ठीक न हो।

लीची–संज्ञा स्त्री० एक बड़ा पेड़ और उसका फल, जो मीठा होता है।

लीठी–वि० १. नीरस। निस्सार। २. निकम्मा।
संज्ञा स्त्री० सीठी। १. रस निचोड़ा हुआ गूदा। २. देह में लगे हुए उबटन के साथ छूटी हुई मैल की बत्ती।

लीडर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] नेता। अगुआ।

लीथो–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पत्थर का छापा, जिस पर हस्तलिखित अक्षर या चित्र छपते हैं।

लीद–संज्ञा स्त्री० घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं की विष्ठा।

लीन–वि० [संज्ञा लीनता] १. जो किसी वस्तु में समा गया हो। २. तन्मय। मग्न। ३. बिलकुल लगा हुआ। अनुरक्त। तत्पर।

लीपना–क्रि० स० १. किसी गीली वस्तु की पतली तह चढ़ाना। पोतना। २. जमीन

मुहा०—लीप-पोतकर बराबर करना=१. चौपट कर देना। २. चौका लगाना।

लीलना–क्रि० स० गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।

लीलया–क्रि० वि० खेल में। सहज में ही।

लीला–संज्ञा स्त्री० १. मनोरंजन के लिए किया गया कार्य। केलि। क्रीड़ा। खेल। २. प्रेम का खेलवाड़। प्रेम-विनोद। ३. नायिकाओं का एक हाव, जिसमें वे प्रायः वेश, गति, वाणी आदि का अनुकरण करती हैं। ४. विचित्र काम। ५. मनुष्यों के मनोरंजन के लिए किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय। चरित्र। ६. बारह मात्राओं का एक छंद। एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है। ७. एक छंद, जिसमें २४ मात्राएँ और अंत में सगण होता है।
संज्ञा पुं० स्याह रंग का घोड़ा।
वि० नीला।

लीलापुरुषोत्तम–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

लीलामय–वि० क्रीड़ायुक्त। लीला से भरा हुआ या लीला करनेवाला। भगवान्।

लीलावती–संज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य्य की पुत्री, जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। २. विलासवती या विलासयुक्ता स्त्री। ३. ३२ मात्राओं का एक छंद।

लीलास्थल–संज्ञा पुं० केलि या क्रीड़ा करने का स्थान।

लुंगाड़ा–संज्ञा पुं० शोहदा। लुच्चा। लफंगा।

लुंगी–संज्ञा स्त्री० १. धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा। तहमत। २. लाल रंग का एक मोटा कपड़ा। ३. एक चिड़िया।

लुंचन–संज्ञा पुं० चुटकी से उखाड़ना। नोचना। अलग करना। जैसे, केश-लुंचन=सिर के बालों को उखाड़ना (जैन-मत)।

लुंचित–वि० १. उखाड़ा हुआ। २. निचोड़ा हुआ।

लुंज–वि० १. बिना हाथ-पैर का। लँगड़ा-लूला। २. बिना पत्ते का। ठूँठ (पेड़)।

लुंठक–संज्ञा पुं० लुटेरा।

लुंठन–क्रि० स० [वि० लुंठित] १. लुढ़कना। २. लूटना। चुराना।

लुंठित–वि० १. जमीन पर गिरा हुआ या लुढ़का हुआ। २. जिसका सब कुछ लूट लिया गया हो।

लुंठी–संज्ञा स्त्री० घोड़े का लोटना।

लुंड–संज्ञा पुं० बिना सिर का धड़। कबंध। रुंड।

लुंड-मुंड–वि० १. जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों; केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २. बिना पत्ते का। ठूंठ।

लुंडा–वि० [स्त्री० लुंडी] ऐसी चिड़िया, जिसकी पूँछ और पर झड़ गए हों।

लुंबिनी–संज्ञा स्त्री० कपिलवस्तु के पास का एक वन, जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लुआठी] जलती हुई लकड़ी।

लुआब–संज्ञा पुं० [अ०] लसदार गूदा। चिपचिपा गूदा। लासा।

लुआबदार–वि० लसदार।

लुआर†–संज्ञा स्त्री० लू। तेज गरम हवा।

लुकंजन*†–संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

लुकंदर‡–वि० छिपनेवाला।

लुक–संज्ञा पुं० १. चमकदार रोगन। वार्निश। २. आग की लपट। लौ। ज्वाला।

लुकठी–संज्ञा स्त्री० जलती हुई लकड़ी।

लुकना–क्रि० अ० आड़ में होना। छिपना। ऐसी जगह रहना, जहाँ कोई देख न सके।

लुक़्मा–संज्ञा पुं० [अ०] ग्रास। कौर।

लुकाट–संज्ञा पुं० एक तरह का पेड़ और उसके फल।

लुकाना–क्रि० स० आड़ में करना। छिपाना। क्रि० अ० लुकना। छिपना।

लुकार–संज्ञा स्त्री० दे० "लुक"।

लुकेठा†–संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"। जलती हुई लकड़ी।

लुगड़ा–संज्ञा पुं० दे० "लूगड़ा"।

लुगदी–संज्ञा स्त्री० गीली वस्तु का पिंड या गोला। छोटा लोंदा।

लुगरा†–संज्ञा पुं० १. कपड़ा। वस्त्र। २. ओढ़नी। छोटी चादर। ३. फटा-पुराना कपड़ा। लत्ता।

लुगरी–संज्ञा स्त्री० फटी-पुरानी धोती।

लुगाई–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

लुगी†–संज्ञा स्त्री० १. पुराना कपड़ा। २. लहँगे का संजाफ या फटा चौड़ा किनारा।

लुचकना–क्रि० स० झटके से छीनना।

लुचवाना–क्रि० स० नोचवाना। उखड़वाना।

लुचुई†–संज्ञा स्त्री० मैदे की पतली पूरी।

लुच्चा–वि० [स्त्री० लुच्ची] १. दूसरे के हाथ से कोई वस्तु छीन या झपटकर भागनेवाला। २. दुराचारी। कुमार्गी। खोटा। ३. शोहदा। बदमाश। लफंगा।

लुटंत*‡–संज्ञा स्त्री० लूट।

लुटकना–क्रि० अ० दे० "लटकना"।

लुटना–क्रि० अ० १. दूसरे के द्वारा लूटा जाना। किसी वस्तु का छीना जाना। २. तबाह होना। बरबाद होना।
*दे० "लुठना"।

लुटरना–क्रि० अ० लोटना। लुढ़कना।

लुटाना–क्रि० स० १. दूसरे को लूटने देना। २. मुफ्त में या बिना पूरा मूल्य लिये देना। ३. व्यर्थ फेंकना या व्यय करना। बर्बाद करना। ४. बहुत अधिक बाँटना। अंधाधुंध दान करना।

लुटावना*†–क्रि० स० दे "लुटाना"।

लुटिया–संज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।

लुटेरा–संज्ञा पुं० लूटनेवाला। डाकू। दस्यु।

लुठना*–क्रि० अ० १. भूमि पर पड़ना। लोटना। २. लुढ़कना।

लुठाना*–क्रि० स० १. भूमि पर डालना। लोटाना। २. लुढ़काना।

लुढ़कना–क्रि० अ० किसी गोल वस्तु की भाँति नीचे-ऊपर चक्कर खाते हुए चलना। ढुलकना। ऊपर से नीचे की ओर चक्कर खाते हुए गिरना।

लुढ़काना–क्रि० स० इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय। ढुलकाना।

लुढ़ना*†–क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"।

लुढ़ाना*–क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

लुढ़ियाना–क्रि० स० गोल तुरपना या सिलाई करना।
लुतरा–वि० [स्त्री० लुतरी] १. चुगलखोर। २. नटखट। शरारती।
लुत्थ*–संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ"।
लुत्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. मजा। आनन्द। २. स्वाद। जायका। ३. रोचकता। ४. कृपा। मेहरबानी। ५. भलाई। ६. खूबी। उत्तमता।
लुनना–क्रि० स० १. खेत की तैयार फसल काटना। २. नष्ट करना। दूर हटाना।
लुनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"। सुन्दरता।
लुनेरा–संज्ञा पुं० खेत की फसल काटनेवाला। लूननेवाला।
लुपना*–क्रि० अ० छिपना।
लुप्त–वि० १. छिपा हुआ। गुप्त। अंतर्हित। गायब। अदृश्य। २. नष्ट।
लुप्तोपमा–संज्ञा स्त्री० वह उपमा अलंकार, जिसमें उसका कोई अंग लुप्त हो, अर्थात् न कहा गया हो।
लुबुधना†–क्रि० अ० लुब्ध होना। लालच में आना। लोभित होना। मोहित होना। संज्ञा पुं० अहेरी। बहेलिया। लुब्धक।
लुबुधा*–वि० १. लोभी। लालची। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. प्रेमी।
लुब्ध–वि० १. लुभाया या ललचाया हुआ। लोभी। २. मोहित। सुधबुध भूला हुआ।
लुब्धक–संज्ञा पुं० १. ब्याध। बहेलिया। शिकारी। २. उत्तरी गोलार्द्ध का एक तारा।
लुब्धना*–क्रि० अ० दे० "लुबुधना"।
लुब्धापति–संज्ञा स्त्री० वह प्रौढ़ा नायिका, जो पति और कुल के लोगों की लज्जा करे।
लुभाना–क्रि० अ० १. लुब्ध होना। मोहित होना। रीझना। मोह में पड़ना। २. लालसा करना। ३. सुध-बुध भूलना।
क्रि० स० १. लुब्ध करना। मोहित करना। रिझाना। २. ललचाना। ३. सुध-बुध भुलाना। मोह में डालना।
लुरकना†–क्रि० अ० लटकना। झूलना।
लुरकी–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने की बाली। झुमका।
लुरना*†–क्रि० अ० १. लटकना। झूलना। २. ढल पड़ना। झुक पड़ना। ३. टूट पड़ना। कहीं से एकाएक आ जाना। ४. काम कराने के लिए पीछे लगे रहना। ५. आकर्षित होना। ६. प्रवृत्त होना।
लुरियाना†–क्रि० अ० १. प्यार करना। २. किसी को प्रेम से छूना या उसके किसी अंग पर अपना कोई अंग रखना।
लुरी–संज्ञा स्त्री० वह गाय, जिसे बच्चा दिये थोड़े ही दिन हुए हों।
लुलन–संज्ञा पुं० झूलना। लटकते हुए इधर-उधर डोलना। आन्दोलित होना।
लुलना*–क्रि० अ० १. दे० "लुरना"। २. झूलना। लहराना।
लुलित–वि० १. झूलता हुआ। २. आन्दोलित।
लुवार†–संज्ञा स्त्री० दे० "लू"। तप्त वायु।
लुहँगी–संज्ञा स्त्री० लोहा जड़ी हुई लाठी।
लुहना*–क्रि० अ० दे० १. "लुभाना"। ललचाना। २. मोहित होना।
लुहार–संज्ञा पुं० [स्त्री० लुहारिन, लुहारी] लोहे की चीजें बनानेवाला। वह जाति, जो लोहे की चीजें बनाती है।
लुहारी–संज्ञा स्त्री० १. लुहार की स्त्री। २. लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लूंबरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।
लू–संज्ञा स्त्री० गरमी के दिनों में चलनेवाली गरम तेज हवा।
मुहा०—लू मारना या लगना=शरीर में गरम हवा प्रवेश कर जाने से ज्वर हो आना।
लूक–संज्ञा स्त्री० १. आग की लपट। २. जलती हुई लकड़ी। लुत्ती। ३. गरमी के दिनों की तप्त वायु। ४. टूटा हुआ तारा। उल्का।
मुहा०–लूक लगाना=जलती लकड़ी या बत्ती छुलाना। आग लगाना।
लूकट*–संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।
लूकना*–क्रि० स० आग लगाना। जलाना। *‡क्रि० अ० दे० "लुकना"।
लूका–संज्ञा पुं० [स्त्री० लूकी] १. आग

की लौ या लपट। २. लुआठा। पतली लकड़ी, जिसका छोर दहकता हो।

लूकी–†संज्ञा स्त्री० १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २. लूका।

लूखा*–वि० रूखा।

लूगड़ा†–संज्ञा पुं० १. ओढ़नी। चादर। २. वस्त्र।

लूगा†–संज्ञा पुं० १. वस्त्र। कपड़ा। २. धोती।

लूट–संज्ञा स्त्री० १. किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना। डकैती। २. लूटने से मिला हुआ माल।

यौ०—लूटमार, लूटपाट=लोगों को मारना-पीटना और उनका धन छीनना।

लूटक–संज्ञा पुं० १. लूटनेवाला। लुटेरा। २. कांति हरनेवाला।

लूटना–क्रि० स० १. मार-पीटकर या छीन-झपटकर ले लेना। जबरदस्ती माल हड़पना। २. बर्बाद करना। ३. अनुचित रीति से किसी का माल लेना। ४. वाजिब से बहुत ज्यादा दाम लेना। ठगना। ५. मोहित करना। मुग्ध करना।

लूटि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लूट"।

लूत–संज्ञा स्त्री० मकड़ी।

लूता–संज्ञा पुं० लूका। लुआठा।

संज्ञा स्त्री० मकड़ी।

लूती–संज्ञा स्त्री० लुआठी।

लून–संज्ञा पुं० लोन। नमक।

वि० कटा हुआ।

लूनना*†–क्रि० अ० दे० "लुनना"।

लूम–संज्ञा पुं० पूँछ।

संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कपड़ा बुनने का करघा। जैसे हैंडलूम=हाथ का करघा। पावर लूम= बिजली का करघा।

लूमना*–क्रि० अ० लटकना। झूलना।

लूमर–वि० सयाना। जवान।

लूरना*–क्रि० अ० दे० "लुरना"।

लूला–वि० [स्त्री० लूली] १. जिसका हाथ कट गया हो। लुंजा। टुंडा। २. बेकाम।

लूलू–वि० बेवकूफ। मूर्ख।

लूहा†–संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।

लेंड़–संज्ञा पुं० दे० "लेंड़ी"।

लेंड़ी–संज्ञा स्त्री० १. मल की बत्ती। बँधा हुआ मल। २. बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़, लेंहड़ा–संज्ञा पुं० झुंड। दल। समूह। (चौपायों के लिए)।

ले–अव्य० १. लेकर। आरंभ होकर। ‡२. तक। पर्यंत।

लेई–संज्ञा स्त्री० १. किसी चूर्ण को गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ। अवलेह। लपसी। २. घुला हुआ आटा, जिसे आग पर पकाकर कागज आदि चिपकाने के काम में लाते हैं। सुरखी मिला हुआ गीला चूना, जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।

यौ०—लेई-पूँजी=सारी जमा। सर्वस्व।

लेक्चर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] व्याख्यान। भाषण। वक्तृता।

लेक्चरबाजी–संज्ञा स्त्री० खूब व्याख्यान देने की क्रिया।

लेख–संज्ञा पुं० १. लिखे हुए अक्षर। लिपि। २. लिखावट। लिखाई। ३. निबन्ध। प्रबन्ध। ४. लेखा। हिसाब-किताब।

*वि० १. लेख्य। लिखने योग्य। २. हिसाब के लायक।

संज्ञा स्त्री० १. पक्की बात। २. लकीर।

लेखक–संज्ञा पुं० [स्त्री० लेखिका] १. लिखनेवाला। २. ग्रंथकार। लिपिकार।

लेखन–संज्ञा पुं० [वि० लेखनीय, लेख्य] १. लिखने का कार्य्य। अक्षर बनाना। लिखने की कला या विद्या। २. चित्र बनाना। ३. हिसाब करना। लेखा लगाना।

लेखनहार*–वि० लेखक। लिखनेवाला।

लेखना*–क्रि० स० १. अक्षर या चित्र बनाना। २. लिखना। ३. गिनना। हिसाब करना। ४. समझना। सोचना। विचारना।

यौ०–लेखना-जोखना=१. ठीक-ठीक अंदाज करना। हिसाब करना। २. परीक्षा करना।

लेखनी–संज्ञा स्त्री० कलम। वह वस्तु, जिससे लिखा जाय।

लेखनीय–वि० लिखने योग्य।

लेखपत्र–संज्ञा पुं० १. लिखा हुआ कागज। २. दस्तावेज।

लेखा–संज्ञा पुं० १. गणना। गिनती। २.

हिसाब-किताब। आय-व्यय का विवरण। ३. ठीकठीक अंदाज। अनुमान। ४. विचार। समझ।

मुहा०—लेखा डेवढ़ करना=१. हिसाब चुकता करना। २. चौपट करना। नाश करना। किसी के लेखे=किसी की समझ में। किसी के विचार के अनुसार।

लेखा-कर्म—संज्ञा पुं० आमदनी और खर्च आदि का हिसाब लिखने या रखने का कार्य (अंग्रे०—एकाउन्टेन्सी)

लेखा-परीक्षक—संज्ञा पुं० आय-व्यय के हिसाब की जाँच करनेवाला। (अंग्रे० आडिटर)

लेखा-परीक्षा—संज्ञा स्त्री० आय-व्यय के हिसाब की जाँच। (अंग्रे०—आडिटिंग)

लेखाबही—संज्ञा स्त्री० आय-व्यय लिखने की बही या कापी। (अंग्रे०—एकाउण्ट बुक)

लेखिका—संज्ञा स्त्री० १. लिखनेवाली। २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेख्य—वि० १. लिखने योग्य। २. जो लिखा जाने को हो।

संज्ञा पुं० १. लेख। लिखी हुई बात। २. दस्तावेज।

लेज—संज्ञा स्त्री० रस्सी।

लेजम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक तरह की कमान, जिसमें लोहे की जंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते हैं। २. एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान, जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है।

लेजिसलेटिव असेम्बली—संज्ञा स्त्री०[अंग्रे०] विधान-सभा। जनता-द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की व्यवस्थापिका सभा, जो किसी प्रदेश के शासन के लिए कानून बनाती है।

लेजिसलेटिव कौंसिल—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] विधान-परिषद्। जनता-द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों की बड़ी व्यवस्थापिका सभा।

लेजुर, लेजुरी†—संज्ञा स्त्री० १. रस्सी। डोरी। लेज। २. कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लेट—संज्ञा स्त्री० १. चूने-सुरखी या सीमेंट से बनाई हुई पक्की सतह। गच। चूना-सुरखी। २. [अंग्रे०] देर। निश्चित समय के बाद।

लेटना—क्रि० अ० १. पौढ़ना। सोना। आराम करना। विश्राम करना। २. मर जाना। ३. किसी चीज का बगल की ओर झुककर जमीन पर गिर जाना।

लेटर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पत्र। चिट्ठी।

लेटरबक्स—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. चिट्ठियाँ डालने का लम्बा सन्दूक। डाक-विभाग की ओर से नगर या गाँव के प्रमुख स्थानों पर लगा हुआ लाल रंग का लम्बा-सा सन्दूक, जिसमें चिट्ठियाँ डालते हैं। २. घर के दरवाजे पर लगा हुआ छोटा डिब्बा, जिसमें घरवालों के नाम आई चिट्ठियाँ छोड़ दी जाती हैं।

लेटाना—क्रि० स० दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लेदी—संज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

लेन—संज्ञा पुं० लेने की क्रिया या भाव। लहना पावना।

लेनदार—संज्ञा पुं० जिसका ऋण चुकाना हो। जिसका कुछ बाकी हो। महाजन। लहनेदार।

लेन-देन—संज्ञा पुं० लेन-देन का व्यापार। लेने और देने का व्यवहार। आदान-प्रदान। ऋण देने और लेने का व्यवहार। महाजनी।

मुहा०—लेन-देन=सरोकार। संबंध।

लेनहार—वि० लेनेवाला।

लेना—क्रि० स० १. अपने हाथ में करना। ग्रहण करना। प्राप्त करना। २. थामना। पकड़ना। धरना। भागते हुए को पकड़ना। ३. मोल लेना। खरीदना। ४. अपने अधिकार में करना। ५. जीतना। अगवानी करना। अभ्यर्थना करना। ६. भार ग्रहण करना। ७. सेवन करना। पीना। ८. स्वीकार करना। ९. किसी को उपहास-द्वारा लज्जित करना। १०. अलग करना। ११. एकत्र करना।

मुहा०—आड़े हाथों लेना=गूढ़ व्यंग्य-द्वारा लज्जित करना। लेने के देने पड़ना=लेने के स्थान पर उलटे देना पड़ना। (किसी मामले

में) लाभ के बदले हानि होना। ले डालना=१. खराब करना। चौपट करना। २. पराजित करना। हराना। ३. पूरा करना। समाप्त करना। ले-दे करना=हुज्जत करना। तकरार करना। लेना एक, न देना दो=कुछ मतलब नहीं। ले मरना=अपने साथ नष्ट या बरबाद करना। कान में लेना=सुनना।

लेप–संज्ञा पुं० १. कहीं पर लगाने के लिए गीली वस्तु। पोतने की चीज। गाढ़ी गीली वस्तु की वह तह, जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय। २. लगाव। सम्बन्ध। ३. मलहम। ४. उबटन।

लेपना–क्रि० स० गीली वस्तु लगाना। गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। पोतना।

ले-पालक–संज्ञा पुं० पाला-पोसा हुआ पुत्र। पोष्यपुत्र। गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक।

लेफ्टिनेंट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. सहायक कर्मचारी। २. सेना में कप्तान के नीचे का पद।

लेमनेड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] नीबू का शरबत।

लेरुवा–संज्ञा पुं० बछड़ा।

लेलिह–संज्ञा पुं० १. जूँ। लीख। २. साँप।

लेव–संज्ञा पुं० १. लेप। २. गीली ओषधि या घुली हुई मिट्टी का लेप। मिट्टी का लेप, जो बर्तनों की पेंदी पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पहले इसलिए लगाया जाता है कि उनका कालापन जल्दी छूट सके। लेवा।

लेवा–संज्ञा पुं० मिट्टी का गिलावा। लेप।
वि० लेनेवाला।
यौ०—लेवा-देई=लेन-देन।

लेवाल–संज्ञा पुं० लेने या खरीदनेवाला।

लेश–वि० अल्प। थोड़ा।
संज्ञा पुं० १. अणु। २. छोटाई। सूक्ष्मता। ३. चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। लगाव। संबंध। ५. एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है।

लेश्या–संज्ञा स्त्री० १. जैनियों के अनुसार जीव की वह अवस्था, जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। २. जीव।

लेस†–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कलाबत्तू की पटरी या गोटा। बेल।

लेसना–क्रि० स० १. जलाना। किसी चीज पर लेस लगाना। २. पोतना। लेप लगाना। ३. दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। कहगिल करना। ४. सटाना। चिपकाना। ५. चुगली खाना। ६. दो आदमियों को लड़ने के लिए उत्तेजित करना।

लेह–संज्ञा पुं० अवलेह। चाटने की ओषधि।

लेहन–संज्ञा पुं० चाटना। चखना।

लेहना–संज्ञा पुं० १. दे० "लहना"। खेत काटने की मजदूरी में दी जानेवाली फसल। २. नाई, धोबी आदि को दी जानेवाली फसल। †३. आग में जलाने की लकड़ी।

लेहाजा–क्रि० वि० [अ०] इसलिए। इस वास्ते। इस कारण।

लेहाड़ी–संज्ञा स्त्री० बदनामी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा।

लेह्य–वि० चाटने के योग्य।
संज्ञा पुं० चाटने का पदार्थ। अवलेह।

लैंगिक–वि० लिंग-सम्बन्धी। यौन। पुरुष और स्त्री की जननेन्द्रिय से सम्बन्ध रखनेवाला।
संज्ञा पुं० वैशेषिक-दर्शन के अनुसार व ज्ञान, जो लिंग या स्वरूप के वर्णन-द्वारा प्राप्त हो।

लैंप–संज्ञा पुं० बड़ी लालटेन। गैस बत्ती।

लै*–अव्य० तक। पर्यंत।

लैन†–संज्ञा स्त्री० दे० "लाइन"।

लैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "लाई"।

लैरु†–संज्ञा पुं० बछड़ा। बच्चा।

लैस–वि० १. वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। २. कटिबद्ध। तैयार।
संज्ञा पुं० १. कपड़े पर चढ़ाने का फीता। लेस। २. एक प्रकार का बाण।

लौं–अव्य० दे० "लौं"।

लोंद–संज्ञा पुं० अधिक मास। पुरुषोत्तम मास।

लोंदा–संज्ञा पुं० पिंड। मिट्टी का पिंडा। डले की तरह बँधा हुआ गीला पदार्थ।

लोइ*–संज्ञा पुं० लोग।
संज्ञा स्त्री० १. लौ। शिखा। २. प्रभा। दीप्ति।

लोइन*–संज्ञा पुं० १. दे० "लोयन"। २. दे० "लावण्य"।

लोई–संज्ञा स्त्री० १. गुँधे हुए आटे का उतना अंश, जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं। २. एक प्रकार का कम्बल।

लोकंजन*–संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

लोकंदा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० लोकंदी] विवाह होने पर कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी†–संज्ञा स्त्री० विवाह के बाद कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जानेवाली दासी।

लोक–संज्ञा पुं० १. मनुष्यों का वासस्थान। संसार। २. स्थान। निवास-स्थान। ३. प्रदेश। ४. दिशा। ५. लोग। जनता। सारा समाज। ६. प्राणी। ७. यश। कीर्त्ति।

विशेष–उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है–पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल में सात लोकों की कल्पना हुई—भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक। फिर पीछे इनके साथ सात पाताल—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए।

लोककंटक–संज्ञा पुं० सर्वसाधारण को कष्ट देनेवाला कार्य। जैसे, सड़क पर कूड़े का ढेर लगाना। (अंग्रे०–पब्लिक न्यूसेन्स)

लोकगीत–संज्ञा पुं० ग्राम्य गीत। गाँवों या देहातों में गाए जानेवाले प्रचलित गीत। (अंग्रे०–फोकलोर)

लोकनी–संज्ञा स्त्री० विवाह के बाद कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जानेवाली दासी। लोकंदी।

लोकधुनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "लोकध्वनि"।

लोकध्वनि–संज्ञा स्त्री० अफवाह। जनश्रुति।

लोकना–क्रि० स० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। बीच में से ही उड़ा लेना।

संज्ञा पुं० विवाह होने पर कन्या को ससुराल भेजते समय डोले के साथ दासी भेजना या दासी भेजने की परिपाटी।

लोकनृत्य–संज्ञा पुं० गाँवों में प्रचलित नाच। (अंग्रे०–फोकडान्स)

लोकप, लोकपति–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३. राजा।

लोकपद–संज्ञा पुं० जनता की सेवा से संबंध रखनेवाला पद। (अंग्रे०–पब्लिक आफिस)

लोकपाल–संज्ञा पुं० १. किसी दिशा का स्वामी। दिक्पाल। २. राजा।

लोकमत–संज्ञा पुं० जनता की राय। किसी विषय पर समाज का बहुमत। (अंग्रे०–पब्लिक ओपीनियन)

लोकप्रवाद–संज्ञा पुं० अफवाह। किसी के विषय में चर्चा। जनश्रुति।

लोकरव–संज्ञा पुं० अफवाह। जनश्रुति।

लोकल–वि० [अंग्रे०] स्थानीय। अपने नगर या स्थान का। उसी स्थान से सम्बन्ध रखनेवाली, जहाँ की वह चीज हो।

लोकल बोर्ड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] किसी स्थान की समिति या सभा, जिसके सदस्यों का चुनाव उसी स्थान के रहनेवाले नागरिकों द्वारा होता है।

लोकलीक*–संज्ञा स्त्री० लोक की मर्यादा।

लोकविश्रुत–वि० संसार में प्रसिद्ध। जगत्-विख्यात।

लोकसंग्रह–संज्ञा पुं० १. सबकी भलाई। २. संसार के लोगों को प्रसन्न करना।

लोकसत्ता–संज्ञा स्त्री० राज्य की वह शासन-प्रणाली, जिसमें सब अधिकार जनता के हाथ में हो।

लोकसभा–संज्ञा स्त्री० जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की सभा, जो विधान आदि बनाती है। भारतीय संविधान में उक्त प्रकार की सभा। (अंग्रे०–हाउस आफ पीपुल)

लोक-सेवक–संज्ञा पुं० १. जनता या सर्व-साधारण की भलाई के काम करनेवाला या जनता की सेवा करनेवाला। २. राज्य का कर्मचारी। (अंग्रे०–पब्लिक सर्वेण्ट)

लोक-सेवा–संज्ञा स्त्री० १. जनता या सर्व-

साधारण की भलाई के लिए किए जाने-वाले कार्य। २. राज्य की नौकरी।

लोक-स्वास्थ्य–संज्ञा पुं० सर्वसाधारण के स्वस्थ और नीरोग रहने की व्यवस्था या अवस्था।

लोकांतर–संज्ञा पुं० वह लोक, जहाँ मरने पर जीव जाता है।

लोकांतरित–वि० मृत। मरा हुआ। दूसरे लोक को गया हुआ।

लोकाचार–संज्ञा पुं० प्रचलित व्यवहार। रीति-रवाज। संसार में किया जानेवाला व्यवहार। लोक-व्यवहार।

लोकाट–संज्ञा पुं० एक पौधा और उसका फल। इसके फल बेर से कुछ बड़े और स्वादिष्ट होते हैं।

लोकाना†–क्रि० स० उछालना। ऊपर फेंकना।

लोकापवाद–संज्ञा पुं० १. जनता में फैली हुई बदनामी। बदनामी। निन्दा। अप-कीर्ति। २. शिकायत।

लोकायत–संज्ञा पुं० १. इस लोक के अति-रिक्त दूसरे लोक को न माननेवाला व्यक्ति। भौतिकवादी। २. चार्वाक-दर्शन। ३. दुर्मिल-नामक छंद।

लोकेश, लोकेश्वर–संज्ञा पुं० ईश्वर। संसार का स्वामी।

लोकैषणा–संज्ञा स्त्री० १. सांसारिक उन्नति की इच्छा। २. स्वर्गसुख की इच्छा।

लोकोक्ति–संज्ञा स्त्री० १. कहावत। मसल। २. काव्य में वह अलंकार, जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।

लोकोत्तर–वि० इस संसार में होनेवाली वस्तुओं से श्रेष्ठ। बहुत ही अद्भुत और विलक्षण। अलौकिक।

लोखर–संज्ञा स्त्री० १. लोहारों या बढ़इयों आदि के औजार। २. नाई के औजार।

लोग–संज्ञा पुं० मनुष्य। आदमी। मनुष्य-समुदाय। जन-समूह।

लोच–संज्ञा पुं० १. लचक। लचलचाहट। २ कोमलता। ३. सुन्दर ढंग। ४. अभिलाषा

लोचन–संज्ञा पुं० आँख।

लोचना†–क्रि० स० तथा अ० १. प्रकाशित करना। २. रुचि उत्पन्न करना। इच्छा करना। अभिलाषा करना। ३. ललचना। तरसना। ४. शोभित होना।

संज्ञा पुं० सुन्दर नेत्रोंवाली।

लोट–संज्ञा स्त्री० लोटने का भाव। लुढ़कना।

संज्ञा पुं० १. उतार। घाट। *२. त्रिबली।

लोटन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर। रास्ते में पड़ी हुई छोटी कंकड़ियाँ।

लोटना–क्रि० अ० १. सीधे और उलटे लेटते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना। २. लुढ़कना। ३. कष्ट से करवट बदलना। तड़पना। ४. विश्राम करना। लेटना। ५. मुग्ध होना। चकित होना।

मुहा०—लोट जाना=१. बेसुध होना। बेहोश हो जाना। २. मर जाना।

लोटपटा†–संज्ञा पुं० १. विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। २. दाँव का उलट-फेर।

लोट-पोट–संज्ञा स्त्री० १. लेटना। आराम करना। २. हँसते-हँसते लेट जाना।

वि० हँसते-हँसते लेट जानेवाला। बहुत ही खुश।

लोटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लुटिया] धातु का एक गोल पात्र, जो पानी रखने के काम में आता है।

लोटिया–संज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।

लोटी–संज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।

लोड़ना*†–क्रि० स० आवश्यकता होना। दरकार होना।

लोढ़ना–क्रि० स० १. चुनना। तोड़ना। २. ओटना।

लोढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लोढ़िया] सिल पर पीसने का छोटा पत्थर। बट्टा।

मुहा०—लोढ़ा डालना=बराबर करना। लोढ़ाढाल=चौपट। सत्यानाश।

लोढ़िया–संज्ञा स्त्री० छोटा लोढ़ा।

लोण–संज्ञा पुं० लवण। नमक।

लोथ, लोथि–संज्ञा स्त्री० मृत शरीर। लाश।

मुहा०—लोथ गिरना=मारा जाना। लोथ डालना=मार गिराना। हत्या करना।

लोथड़ा–संज्ञा पुं० मांसपिंड। बिना हड्डी का मांस का टुकड़ा।

लोदी–संज्ञा पुं० १. पठानों की एक शाखा। २. इस शाखा के लोग कुछ वर्षों तक भारत में शासन कर चुके हैं।

लोध–संज्ञा स्त्री० दे० "लोध्र"।

लोध्र–संज्ञा पुं० एक तरह का पेड़। वैद्यक में इसकी छाल और लकड़ी दोनों का प्रयोग होता है।

लोध्रतिलक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अलंकार, जो उपमा का एक भेद है।

लोन*†–संज्ञा पुं० दे० "लवण"। नमक।

लोनहरामी†–वि० दे० "नमकहराम"। कृतघ्न।

लोना–वि० [भाव० लोनाई] १. नमकीन। खारा। लवण-युक्त। २. सलोना। सुंदर।
संज्ञा पुं० १. दीवारों में लगनेवाली एक खराबी, जिससे वह झड़ने लगती और कमजोर हो जाती हैं। २. लोना लगने पर दीवार से झड़कर गिरनेवाली मिट्टी। ३. नमकीन मिट्टी, जिससे शोरा बनाया जाता है। ४. अमलोनी।
क्रि० स० फसल काटना।

लोनाई–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लोनार†–संज्ञा पुं० खारी भूमि। खार। वह स्थान, जहाँ नमक होता है।

लोनिया–संज्ञा पुं० एक जाति, जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है। नोनियाँ।

लोनी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिट्टी जिससे शोरा और नमक बनता है। २. एक प्रकार का साग।

लोप–संज्ञा पुं० [संज्ञा लोपन] [वि० लुप्त, लोपक, लोप्य] १. गायब होना। छिपना। अंतर्धान होना। २. नाश। लय। ३. विच्छेद। अभाव। ४. व्याकरण में वह नियम, जिसके अनुसार शब्द के साधन में किसी वर्ण को उड़ा देते हैं।

लोपन–संज्ञा पुं० १. लुप्त करना। तिरोहित करना। २. अंतर्धान होने का भाव। ३. नष्ट करना।

लोपना*†–क्रि० स० १. लुप्त करना। मिटाना। २. छिपाना।
क्रि० अ० लुप्त होना। मिटना।

लोपांजन–संज्ञा पुं० वह कल्पित अंजन, जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोपामुद्रा–संज्ञा स्त्री० १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री का नाम। २. एक तारा, जो अगस्त्य-मंडल के पास उदय होता है।

लोपी–संज्ञा पुं० लोप करनेवाला। नाश करनेवाला।

लोबा–संज्ञा स्त्री० लोमड़ी।

लोबान–संज्ञा पुं० [अ०] एक वृक्ष का सुगंधित गोंद, जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।

लोबिया–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा बोड़ा (तरकारी)।

लोभ–संज्ञा पुं० [वि० लोभी] लालच। लिप्सा।

लोभना–क्रि० स० १. ललचाना। २. मोहित करना।
क्रि० अ० १. मोहित होना। मुग्ध होना। २. लालच में पड़ना। चाहना।

लोभाना*†–क्रि० स० मोहित करना।
क्रि० अ० मोहित होना।

लोभनीय–वि० १. लालच करने योग्य। ललचाने योग्य। २. मोहने योग्य। मनोहर।

लोभार*†–वि० लुभानेवाला। मोहित करनेवाला।

लोभित–वि० मुग्ध। मोहित। लुब्ध।

लोभी–वि० लालची। जिसे किसी बात का लोभ या लालच हो। लोलुप। लुब्ध।

लोम–संज्ञा पुं० १. शरीर पर के छोटे-छोटे बाल। रोवाँ। रोम। बाल। २. लोमड़ी।

लोमकूप–संज्ञा पुं० रोएँ की जड़ का छिद्र।

लोमड़ी–संज्ञा स्त्री० गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु।

लोमपाद–संज्ञा पुं० अंग देश के एक राजा, जो दशरथ के मित्र थे।

लोमश–संज्ञा पुं० १. एक ऋषि, जिनको

पुराणों में अमर माना गया है। २. मेष भेड़ा।
वि० जिसके शरीर में बहुत बाल हों बहुत अधिक और बड़े-बड़े रोएँवाला।
लोमहर्षण–वि० ऐसा भीषण जिससे रोएँ खड़े हो जायँ। बहुत भयानक।
लोय*†–संज्ञा पुं० १. लोग। २. आँख। नेत्र।
संज्ञा स्त्री० लौ। लपट।
अव्य० दे० "लौं"।
लोयन*–संज्ञा पुं० आँख।
लोर†–वि० दे० "लोल"। चंचल।
संज्ञा पुं० १. आँसू। २. कान का कुंडल।
लोरना*–क्रि० अ० १. चंचल होना। २. ललकना। ३. लिपटना। ४. झुकना लोटना।
लोरा†–संज्ञा पुं० आँसू।
लोरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत, जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं।
लोल–वि० १. चंचल। २. लालायित। लालची। ३. सुन्दर। ४. मनोहर। हिलता-डोलता। ५. परिवर्तनशील। ६. क्षणभंगुर। क्षणिक।
लोलक–संज्ञा पुं० १. लटकन, जो बालियों में पहना जाता है। २. कान की लव। लोलकी।
लोलना*–क्रि० अ० हिलना।
लोला–संज्ञा स्त्री० १. जिह्वा। जीभ। २. लक्ष्मी। ३. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, यगण, भगण और अंत में दो गुरु होते हैं।
लोलिनी–वि० चंचल स्वभाववाली।
लोलुप–वि० १. लोभी। लालची। २. चटोरा। चट्टू। ३. अत्यन्त उत्सुक। बहुत इच्छुक।
लोवा–संज्ञा स्त्री० लोमड़ी।
संज्ञा पुं० लवा।
लोष्ट–संज्ञा पुं० १. पत्थर। २. ढेला। मिट्टी।
लोहँड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लोहँड़ी] १. लोहे का एक प्रकार का पात्र। २. तसला।
लोह–संज्ञा पुं० १. लोह नामक धातु। २. रक्त। ३. लोहे का बना हुआ एक शस्त्र।
लोहकार–संज्ञा पुं० लोहार।
लोहबान–संज्ञा पुं० दे० "लोबान"।
लोहसार–संज्ञा पुं० १. फौलाद। २. फौलाद की बनी हुई जंजीर।
लोहा–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध धातु, जिसके बरतन, शस्त्र और लौह मशीनें आदि बनती हैं। २. अस्त्र। हथियार। ३. लोहे की बनाई हुई कोई चीज या उपकरण।
मुहा०–लोहे के चने=अत्यंत कठिन काम। लोहा गहना=हथियार उठाना। युद्ध करना। लोहा बजना=युद्ध होना। किसी का लोहा मानना=१. किसी विषय में किसी का प्रभुत्व स्वीकार करना। २. पराजित होना। हार जाना। लोहा लेना=लड़ना। युद्ध करना।
लोहान–संज्ञा पुं० खून से भरा हुआ। रक्त-मय।
यौ०–लहू लोहान=खून से लथपथ।
लोहाना–क्रि० अ० लोहे के बर्त्तन में रखे रहने से किसी वस्तु में लोहे का स्वाद आ जाना।
लोहार–संज्ञा पुं० [स्त्री० लोहारिन, लोहाइन] लोहे का काम करनेवाली एक जाति।
लोहारी–संज्ञा स्त्री० लोहार का काम।
लोहित–वि० रक्त। लाल।
संज्ञा पुं० १. मंगल ग्रह। २. आँख की एक बीमारी। ३. एक बहुमूल्य पत्थर। ४. एक प्रकार का चावल। ५. एक हिरन। ६. एक प्रकार का साँप।
लोहित्य–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मपुत्र नद। २. एक समुद्र का नाम।
लोहिया–संज्ञा पुं० १. लोहे की चीजों का व्यापार करनेवाला। २. बनियों और मारवाड़ियों की एक अल्ल। ३. लाल रंग का बैल।
लोही–संज्ञा स्त्री० उषा-काल की लाली।
लोहू–संज्ञा पुं० खून। रक्त। लहू।
लौं*†–अव्य० १. तक। पर्य्यंत। २. तुल्य। समान। बराबर।
लौंग–संज्ञा पुं० १. लवंग। एक झाड़ की कली, जो खिलने के पहले ही तोड़कर सुखा ली

जाती है। यह मसाले और दवा के काम में आती है। २. लौंग के आकार का एक आभूषण, जिसे स्त्रियाँ नाक या कान में पहनती हैं।

लौंगलता–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बँगला मिठाई।

लौंडा–संज्ञा पुं० [स्त्री० लौंडी, लौंडिया] १. बालक। लड़का। २. खूबसूरत लड़का। ३. नाचनेवाला लड़का। ४. नौकरी करनेवाला लड़का। ५. छोकरा।
वि० अबोध।

लौंडी–संज्ञा स्त्री० दासी। दाई।

लौंद–संज्ञा पुं० अधिक मास। मलमास। पुरुषोत्तम मास।

लौंदा*–संज्ञा पुं० दे० "लोंदा"।

लौ–संज्ञा स्त्री० १. आग की लपट। ज्वाला। २. जलती हुई बत्ती की लपट। ३. लगन। चाह। ४. चित्त की वृत्ति। ५. आशा। कामना।
यौ०–लौलीन=किसी के ध्यान में डूबा हुआ।

लौआ†–संज्ञा पुं० कद्दू।

लौकना–क्रि० अ० दूर से दिखाई पड़ना।

लौका–संज्ञा पुं० [स्त्री० लौकी] खड़ी लौकी।

लौकिक–वि० १. लोक-संबंधी। सांसारिक। संसार का। इस संसार में होनेवाला। २. व्यावहारिक।
संज्ञा पुं० सात मात्राओं के छंदों का नाम।

लौकी†–संज्ञा स्त्री० एक तरह की तरकारी। पूर्वी जिलों में इसे कद्दू भी कहा जाता है।

लौजोरा*†–संज्ञा पुं० धातु गलानेवाला कारीगर।

लौटना–क्रि० अ० वापस आना। पलटना। पीछे की ओर मुड़ना।
क्रि० स० पलटना। उलटना।

लौट-फेर–संज्ञा पुं० उलट-फेर। हेर-फेर। भारी परिवर्तन।

लौटाना–क्रि० स० १. फेरना। पलटाना। २. वापस करना। ३. ऊपर-नीचे करना।

लौटानी–क्रि० वि० लौटती समय।

लौन*–संज्ञा पुं० नमक।

लौनहार†–संज्ञा पुं० खेत काटनेवाला।

लौना†–संज्ञा पुं० १. दे० "लौनी"। चरते समय पशुओं के पैरों में बाँधने की रस्सी, जिससे वे अधिक दूर तक न जा सकें। २. ईंधन। ३. जलाने की लकड़ी। फसल काटने का काम। कटाई।
*वि० [स्त्री० लौनी] सुंदर। लावण्ययुक्त।

लौनी‡–संज्ञा स्त्री० १. फसल की कटनी। कटाई। २. अँकवार (बगल) में आने लायक फसल का डंठल। अँकोरा। लहना।
*३. मक्खन। नैनू। नवनीत।

लौमनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "लौना। लौनी"।

लौह–संज्ञा पुं० १. लोहा। २. लोहे का बना हुआ। किसी धातु का बना हुआ।

लौहकार–संज्ञा पुं० लोहार।

लौहयुग–संज्ञा पुं० इतिहास में वह युग, जब अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि लोहे के बनते थे।

लौहसार–संज्ञा पुं० लोहे से बनाया हुआ एक प्रकार का नमक।

लौहाचार्य्य–संज्ञा पुं० धातुओं के तत्त्व को जाननेवाला।

लौहासव–संज्ञा पुं० लोहे के योग से बनाया हुआ एक तरह का आसव।

लौहित–संज्ञा पुं० महादेव का त्रिशूल।

लौहित्य–वि० १. लोहे का। २. लोहे के रंग का। ३. लाल रंग का।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मपुत्र नद। २. लाल सागर।

ल्याना*–क्रि० स० दे० "लाना"।

ल्यारी†–संज्ञा पुं० भेड़िया।

ल्यावना*–क्रि० स० दे० "लाना"।

ल्वारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लूह"।

ल्हासा–संज्ञा पुं० १. दे० "लासा"। २. तिब्बत की राजधानी।

ल्हीक–संज्ञा स्त्री० दे० "लीख"।

व

व–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से होता है। इसे दन्त्योष्ठ्य कहते हैं। अव्य० [फा०] और। तथा।
संज्ञा पुं० १. वायु। २. बाण। ३. वरुण। ४. बाहु। ५. कल्याण। ६. समुद्र। ७. वस्त्र। ८. वंदन।

वंक–वि० टेढ़ा। वक्र।

वंकट–वि० १. टेढ़ा। बाँका। कुटिल। २. विकट। दुर्गम।

वंकनाली–संज्ञा स्त्री० सुषुम्ना नामक नाड़ी।

वंकिम–वि० टेढ़ा। झुका हुआ। बाँका।

वंकिल–संज्ञा पुं० काँटा।

वंक्षु–संज्ञा स्त्री० आक्सस नदी, जो हिंदूकुश पर्वत से निकलकर आरल समुद्र में गिरती है।

वंग–संज्ञा पुं० १. बंगाल-प्रदेश। २. राँगा नाम की धातु। ३. राँगे का भस्म।

वंगज–संज्ञा पुं० १. सिंदूर। २. पीतल।
वि० बंगाल में उत्पन्न होनेवाला।

वंचक–वि० १. धूर्त्त। धोखेबाज। ठग। २. खल।
संज्ञा पुं० ठग। धूर्त्त।

वंचन–संज्ञा पुं० धूर्त्तता। दे० "वंचना"।

वंचना–संज्ञा स्त्री० धोखा। छल। धूर्त्तता।
*क्रि० स० १. धोखा देना। ठगना। २. बाँचना। पढ़ना।

वंचित–वि० १. जो ठगा गया हो। २. अलग किया हुआ। अलग। हीन। रहित।

वंजुल–संज्ञा पुं० १. स्थल-पद्म। २. अशोक वृक्ष। ३. एक पक्षी। ४. तिनिश वृक्ष। ५. बेंत।

वंट–संज्ञा पुं० १. हँसिया आदि की मूठ। बेंट। २. भाग। हिस्सा। बाँट। ३. लँडूरा। ४. विवाहित पुरुष।

वंटक–संज्ञा पुं० हिस्सा। भाग।
वि० विभाजक। बाँटनेवाला।

वंठ–वि० खंडित। अंग का लँडूरा।
संज्ञा पुं० १. दास। २. अविवाहित पुरुष। ३. वामन। बौना। ४. माला।

वंठर–संज्ञा पुं० १. कंजूस। मक्खीचूस। २. अन्तःपुर का रक्षक। ३. खोजा। नपुंसक।

वंडा–संज्ञा स्त्री० दुराचारिणी। बदचलन स्त्री।

वंदन–संज्ञा पुं० १. स्तुति। विनती। २. पूजन। ३. अभिवादन। प्रणाम।

वंदनमाला–संज्ञा स्त्री० बंदनवार।

वंदनवार–संज्ञा स्त्री० विवाह या अन्य उत्सवों पर घर के दरवाजों पर बाँधी जानेवाली फूलों या पत्तों की मालाएँ।

वंदना–संज्ञा स्त्री० [वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति। विनती। २. प्रणाम। वंदन।

वंदनीय–वि० वंदना करने योग्य। आदर करने योग्य। पूजनीय।

वंदित–वि० पूज्य। आदरणीय।

वंदी–संज्ञा पुं० दे० "बंदी"।

वंदीक–संज्ञा पुं० इन्द्र।

वंदीजन–संज्ञा पुं० राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति। भाट। मागध।

वंद्य–वि० वन्दना करने योग्य। वंदनीय। पूजनीय।

वंश–संज्ञा पुं० १. सन्तान। सन्तति। २. कुल। खानदान। परिवार। कुटुम्ब। ३. बाँस। ४. पीठ की हड्डी। ५. नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसा। ६. बाँसुरी। ७. बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ।

वंशकार–संज्ञा पुं० १. बाँसफोड़ा। २. डोम। भंगी।

वंशज–संज्ञा पुं० १. संतान। संतति। औलाद। २. बाँस का चावल।

वंशतिलक–संज्ञा पुं० एक छंद।

वंशधर–संज्ञा पुं० १. कुल में उत्पन्न। वंशज। संतति। संतान। २. वंश की मर्यादा रखनेवाला।

वंशलोचन–संज्ञा पुं० दे० "वंसलोचन"। बाँस से निकलनेवाला एक पदार्थ।

वंशस्थ–संज्ञा पुं० बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त।

वंशहीन–वि० जिसके वंश में कोई न हो। जिसके कोई सन्तान न हो। निःसन्तान।

वंशावली–संज्ञा स्त्री० १. वंश में उत्पन्न

व्यक्तियों को कालक्रम के अनुसार सूची। २. वंश-परम्परा। पीढ़ी। पुश्त।

वंशी–संज्ञा स्त्री० मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला बाँस की नली का बाजा। मुरली। बाँसुरी।

वंशीधर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण। वंशी बजाने और रखनेवाला।

वंशीय–वि० कुल में उत्पन्न।

वंशीवट–संज्ञा पुं० वृन्दावन में वह बरगद का पेड़, जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।

वंशोद्भव–वि० कुल में उत्पन्न।

वंश्य–वि० कुलीन। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न।

वक–संज्ञा पुं० १. बगला पक्षी। २. अगस्त का वृक्ष या फूल। ३. एक दैत्य, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ४. एक राक्षस, जिसे भीमसेन ने मारा था।

वक़त–संज्ञा स्त्री० [अ० वकअत] १. सामर्थ्य। शक्ति। २. एतबार। विश्वास। साख। ३. प्रभाव। ४. इज्जत।

वकवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. पाखण्ड। २. धूर्त्तता। चालबाजी। धोखा देकर काम निकालने की घात में रहना।

वकालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना। २. वकील का कार्य या पेशा। कानून के जानकार व्यक्ति द्वारा अदालत में वादी या प्रतिवादी की ओर से मुकदमे की पैरवी करने का कार्य। ३. दूत का कार्य।

वकालतनामा–संज्ञा पुं० वकील को न्यायालय में मुकदमे की पैरवी करने के लिए नियुक्त करने का अधिकार-पत्र।

वकासुर–संज्ञा पुं० एक राक्षस, जिसे श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था।

वकील–संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और सरकार से वकालत करने की सनद पाकर अदालत में वकालत करे। २. दूसरे की ओर से उसके पक्ष का समर्थन करनेवाला। ३. दूत। ४. राजदूत। एलची। प्रतिनिधि।

वकुल–संज्ञा पुं० अगस्त का वृक्ष या फूल।

वकूफ़–संज्ञा पुं० [अ०] बुद्धि। समझ। शऊर। यौ०–बेवकूफ़=मूर्ख।

वक़्त–संज्ञा पुं० [अ०] १. समय। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फुरसत।

वक़्तन फ़वक़्तन–क्रि० वि० [अ०] कभी कभी। यथासमय।

वक्तव्य–वि० कहने योग्य। वाच्य। संज्ञा पुं० कथन। किसी विषय में बोलकर या लिखकर अपने विचार प्रकट करना। (अंग्रे०–स्टेटमेण्ट)

वक्ता–वि० १. बोलनेवाला। बोलने में तेज। २. भाषण करनेवाला। भाषण-पटु। संज्ञा पुं० १. व्याख्यान देनेवाला। बोलनेवाला। कथा कहनेवाला। २. व्यास।

वक्तृता–संज्ञा स्त्री० १. व्याख्यान। २. कथन। भाषण। ३. वाक्पटुता। बोलने की चतुरता।

वक्तृत्व–संज्ञा पुं० १. वक्तृता। २. व्याख्यान। ३. कथन। ४. वाक्पटुता।

वक्त्र–संज्ञा पुं० १. मुख। २. कार्य का आरम्भ। ३. एक प्रकार का छंद।

वक्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह संपत्ति, जो धर्म्मार्थ दान कर दी गई हो। २. किसी के लिए कोई चीज छोड़ देना।

वक्र–वि० टेढ़ा। १. तिरछा। २. कुटिल। दाँव-पेंचवाला।

वक्रगामी–वि० १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। २. शठ। कुटिल।

वक्रतुंड–संज्ञा पुं० गणेश।

वक्रदंष्ट्र–संज्ञा पुं० सूअर।

वक्रदृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ी दृष्टि। २. क्रोध की दृष्टि।

वक्रधर–संज्ञा पुं० शिवजी।

वक्रित–वि० जो टेढ़ा हो।

वक्रिम–वि० १. टेढ़ा। २. कुटिल।

वक्री–संज्ञा पुं० १. वह प्राणी, जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २. बुद्धदेव। (इन्होंने टेढ़ी युक्तियों से वेद का विरोध किया था, इसलिए यह नाम पड़ा।)
वि० अपने मार्ग को छोड़कर पीछे लौटनेवाला।

वक्रोक्ति–संज्ञा स्त्री० १. एक काव्यालंकार, जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का कुछ का कुछ अर्थ किया जाता है। काकूक्ति। २. बढ़िया उक्ति।

वक्ष–संज्ञा पुं० छाती। उर। सीना। उरस्थल।

वक्षःस्थल–संज्ञा पुं० छाती। उर।

वक्षु–संज्ञा पुं० दे० "वंक्षु"।

वक्षोज–संज्ञा पुं० स्तन।

वक्षोरुह–संज्ञा पुं० स्तन।

वगैरह–अव्य० [फा०] आदि। इत्यादि।

वचन–संज्ञा पुं० १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। कथन। उक्ति। २. व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान, जिससे एक या एक से अधिक का बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।

वचनीय–वि० कहने योग्य। कथनीय। संज्ञा पुं० निंदा। शिकायत।

वचनलक्षिता–संज्ञा स्त्री० वह परकीया नायिका, जिसकी बातचीत से उसके उपपति से प्रेम प्रकट होता हो।

वचनविदग्धा–संज्ञा स्त्री० वह परकीया नायिका, जो अपने वचन की चतुराई से नायक को आकर्षित करने का प्रयत्न करती हो।

वचा–संज्ञा स्त्री० बच नाम की ओषधि।

वजन–संज्ञा पुं० [अ०] १. भार। बोझ। २. तौल। ३. मान। मर्यादा। गौरव।

वजनी–वि० जिसका बहुत बोझ हो। भारी।

वजह–संज्ञा स्त्री० [अ०] कारण। हेतु।

वजा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बनावट। रचना। २. सज-धज। ३. चाल-ढाल। ४. दशा। अवस्था। ५. रीति। प्रणाली। ६. मुजरा। मिनहा। कटौती।

वजादार–वि० जिसकी बनावट आदि बहुत अच्छी हो। तरहदार।

वजारत–संज्ञा पुं० [अ०] मंत्रित्व। मंत्री का पद या कार्य।

वजीफा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वृत्ति। विद्वानों, छात्रों, संन्यासियों आदि को दी जानेवाली आर्थिक सहायता या वृत्ति। २. नियमपूर्वक नित्य किया जानेवाला जप या पाठ (मुसलमान)।

वजीर–संज्ञा पुं० [अ०] १. मंत्री। दीवान। २. शतरंज की एक गोटी।

वजू–संज्ञा पुं० [अ० वुजू] नमाज पढ़ने से पहले हाथ-पाँव आदि धोना।

वजूद–संज्ञा पुं० [अ०] १. अस्तित्व। सत्ता। २. घटित होना।

वज्र–संज्ञा पुं० १. पुराणों में कहा गया भाले के फल के समान एक शस्त्र, जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि। २. विद्युत्। बिजली। ३. हीरा। ४. फौलाद। ५. भाला। बरछा।
वि० १. बहुत कड़ा या मजबूत। २. घोर। दारुण। भीषण। ३. वज्र के समान कठिन।

वज्रदंती–संज्ञा स्त्री० मौलसिरी।

वज्रपाणि–संज्ञा पुं० इन्द्र।

वज्रमणि–संज्ञा पुं० हीरा।

वज्रलेप–संज्ञा पुं० एक तरह का पलस्तर। एक मसाला, जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मजबूत हो जाती हैं।

वज्रसार–संज्ञा पुं० हीरा।

वज्रांग–संज्ञा पुं० १. हनुमानजी। २. वज्र के समान मजबूत अंगवाला। ३. साँप।

वज्रायुध–संज्ञा पुं० इंद्र।

वज्रासन–संज्ञा पुं० हठयोग के चौरासी आसनों में से एक।

वज्रोली–संज्ञा स्त्री० हठयोग की एक मुद्रा।

वट–संज्ञा पुं० बरगद का वृक्ष।

वटक–संज्ञा पुं० १. बड़ी टिकिया। २. गोला। ३. बट्टा। ४. बड़ा। पकौड़ा।

वटसावित्री–संज्ञा स्त्री० एक व्रत, जिसमें स्त्रियाँ बरगद के पेड़ की पूजा करती हैं।

वटिका–संज्ञा स्त्री० गोली या टिकिया। बटी।

वटी–संज्ञा स्त्री० दे० "वटिका"।

वटु, वटुक–संज्ञा पुं० १. बालक। २. ब्रह्मचारी। ३. भैरव। ४. शिवजी का एक रूप। (शाक्तों-द्वारा किए जानेवाले कर्मकाण्ड में बालक को शिव का रूप धारण कराते हैं। इसी से उसे वटुक कहते हैं।)

वड़व–संज्ञा पुं० एक तरह का घोड़ा, जो देखने में घोड़ी जान पड़ता है।

वणिक्–संज्ञा पुं० १. रोजगार करनेवाला। २. वैश्य। बनिया।

वतंस–संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।

वतन–संज्ञा पुं० [अ०] जन्मभूमि।

वत्–प्रत्यय समान। तुल्य।

वत्स–संज्ञा पुं० १. बालक। लड़का। २. गाय का बच्चा। बछड़ा।

वत्सतर–वि० बहुत छोटा बच्चा। अत्यन्त छोटा।

वत्सनाभ–संज्ञा पुं० एक विष,जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं। यह एक पौधे की जड़ है। मीठा जहर।

वत्सर–संज्ञा पुं० १. वर्ष। साल। २. जवान बछड़ा, जो हल में जोता न गया हो।

वत्सल–वि० [स्त्री० वत्सला] १. बच्चों से अधिक स्नेह करनेवाला। २. अपने से छोटों के प्रति बहुत स्नेह या कृपा करनेवाला। दयालु।
संज्ञा पुं० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस, जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।

वत्सासुर–संज्ञा पुं० कंस का एक अनुचर, जिसे कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा था। लेकिन श्रीकृष्ण ने ही इसे मार डाला।

वदंती–संज्ञा स्त्री० बात। कथा।

वदक–संज्ञा पुं० वक्ता।

वदन–संज्ञा पुं० १. मुँह। चेहरा। २. अगला भाग। ३. कथन। बात कहना।

वदान्य–वि० १. बहुत बड़ा दानी। अत्यन्त उदार। २. मधुरभाषी।

वदि–संज्ञा पुं० कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।

वदुसाना*–क्रि० स० दोष लगाना। भला-बुरा कहना।

वध–संज्ञा पुं० जान से मार डालना। हत्या।

वधक–संज्ञा पुं० १. वध करने या जान से मारनेवाला। हिंसक। २. व्याध। शिकारी। ३. मृत्यु।

वधत्र–संज्ञा पुं० वध करने का हथियार।

वधांगक–संज्ञा पुं० कैदखाना।

वधू–संज्ञा स्त्री० १. दुलहन। २. पत्नी। ३. बहू। पुत्र की पत्नी। पतोहू।

वधूटी–संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।

वधूत*–संज्ञा पुं० दे० "अवधूत"।

वध्य–वि० मार डालने योग्य।

वन–संज्ञा पुं० १. जंगल। बाग। २. जल। ३. घर। ४. शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की एक उपाधि।

वनचर–वि० १. वन में रहनेवाला या भ्रमण करनेवाला। जंगली जानवर। २. जंगली मनुष्य।

वनचारी–वि० दे० "वनचर"।

वनज–संज्ञा पुं० १. वन, जंगल या पानी में उत्पन्न होनेवाला। २. कमल।

वनद–संज्ञा पुं० बादल।

वनदेव–संज्ञा पुं० [स्त्री० वनदेवी] वन का अधिष्ठाता देवता।

वनदेवी–संज्ञा स्त्री० वन की अधिष्ठात्री देवी।

वनमाला–संज्ञा स्त्री० १. वन के फूलों की माला। २. एक विशेष प्रकार की माला, जो घुटने तक लम्बी होती थी और जिसे श्रीकृष्ण पहनते थे।

वनमाली–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
वि० वनमाला धारण करनेवाला।

वनराज–संज्ञा पुं० सिंह। शेर।

वनराजि, वनराजी–संज्ञा स्त्री० १. वन-समूह। वन की श्रेणी। २. पेड़ों का समूह। ३. जंगल के बीच की पगडंडी।

वनरुह–संज्ञा पुं० कमल।

वनलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० वन या जंगल की शोभा। वनश्री।

वनवास–संज्ञा पुं० १. जंगल में रहना। २. बस्ती छोड़कर जंगल में रहने का नियम या दंड।

वनवासी–वि० [स्त्री० वनवासिनी] घर बार छोड़कर जंगल में निवास करनेवाला।

वनस्थ–संज्ञा पुं० १. वन में रहने की अवस्था। वानप्रस्थ। २. वन का निवासी। ३. हिरन।

वनस्थली–संज्ञा स्त्री० १. वनभूमि। २. छोटा वन।

वनस्पति–संज्ञा स्त्री० १. वह वृक्ष या पौधा, जिसमें बिना फूल के ही फल लगे। २. पेड़-पौधे।

वनस्पति घी–संज्ञा पुं० वनस्पतियों से तैयार किया हुआ घी। डालडा।

वनस्पति-विज्ञान–संज्ञा पुं० वह विद्या, जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों, जातियों और भिन्न-भिन्न अंगों का विवेचन होता है।

वनस्पति-शास्त्र–संज्ञा पुं० दे० "वनस्पति-विज्ञान"।

वनिता–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। औरत। २. प्रियतमा।

वनौषध–संज्ञा स्त्री० वन की ओषधियाँ। जंगली जड़ी-बूटी।

वन्य–वि० १. वन में उत्पन्न होनेवाला। २. जंगली।

वपन–संज्ञा पुं० १. बीज बोना। २. मुंडन। बाल मुड़ाना।

वपु–संज्ञा पुं० शरीर। देह।

वपुमान–संज्ञा पुं० सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला।

वफ़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वादा पूरा करना। बात निबाहना। २. शील। मुरौवत।

वफ़ादार–वि० [संज्ञा वफादारी] १. वचन या कर्त्तव्य का पालन करनेवाला। २. सच्चा। ३. ईमानदारी से काम करनेवाला।

वफ़ात–संज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु।

वबा–संज्ञा स्त्री० [अ०] महामारी। फैलने-वाले भयंकर रोग, जैसे—प्लेग, हैजा।

वबाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. आपत्ति। कठि-नाई। २. दैवी या ईश्वरीय कोप। पाप का फल। ३. बोझ। भार।

वमन–संज्ञा पुं० १. कै करना। उलटी करना। २. कै की हुई चीज।

वमि–संज्ञा स्त्री० वमन का रोग।

वयःक्रम–संज्ञा पुं० आयु। उम्र।

वयःसंधि–संज्ञा स्त्री० लड़कपन और जवानी के बीच का समय।

वय–संज्ञा स्त्री० उम्र। आयु।

वयस्–संज्ञा पुं० उम्र। आयु।

वयस्क–वि० [स्त्री० वयस्का] १. उम्र या आयुवाला। २. जो पूरी आयु का हो चुका हो। बालिग। कानून के अनुसार १८ वर्ष के पुरुष और २१ वर्ष की स्त्री को वयस्क (बालिग) माना जाता है। इससे कम की अवस्थावालों को नाबालिग (अल्पवयस्क) माना जाता है।

वयस्कता–संज्ञा स्त्री० वयस्क होने का भाव। कानून के अनुसार वयस्क या बालिग होना।

वयस्क मताधिकार–संज्ञा पुं० चुनाव में सभी वयस्क (बालिग) व्यक्तियों को अपना मत देने का अधिकार।

वयस्थ–वि० १. वयस्क अवस्था को प्राप्त। बालिग। युवा। २. बराबर की उम्र का। समवयस्क।

संज्ञा पुं० समवयस्क पुरुष।

वयस्य–संज्ञा पुं० बराबर की उम्रवाला। मित्र। दोस्त।

वयस्या–संज्ञा स्त्री० सखी। सहेली।

वयोवृद्ध–वि० आदरणीय वृद्ध। बड़ा-बूढ़ा।

वरंच–अव्य० १. अपितु। ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। २. परंतु। लेकिन।

वरंडा–संज्ञा स्त्री० कटारी। वत्ती।

संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दे० "बरामदा"।

वर–संज्ञा पुं० १. आशीर्वाद। आशीष। २. मनोरथ-सिद्धि। किसी देवता से माँगा हुआ मनोरथ। ३. किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। ४. पति या दूल्हा।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे—प्रियवर।

वरक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. पुस्तकों का पन्ना। पत्रा। पत्र। २. सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर।

वरण–संज्ञा पुं० १. चुनना। अपनाना। २. लपेटना। ३. निमंत्रण देना। ४. किसी को किसी काम के लिए चुनना या मुकर्रर करना। ५. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति। ६. पूजा। अर्चना। सत्कार। ७. मंगल-कार्य्य में पूजा करानेवाले या अन्य ब्राह्मणों को दी हुई वस्तु या दान।

वरणी–संज्ञा स्त्री० मंगल-कार्य में पूजा कराने-

वाले ब्राह्मणों को दी जानेवाली वस्तु या दान।

वरणीय–वि० वरण करने योग्य। पूजनीय।

वरद–वि० [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला।

वरदाता–वि० वर देनेवाला।

वरदान–संज्ञा पुं० दे० "वर"। आशीर्वाद देने की क्रिया। किसी देवता का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। किसी की कृपा से होनवाला लाभ।

वरदानी–संज्ञा पुं० वर देनेवाला।

वरदी–संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "वर्दी"।

वरन्–अव्य० प्रत्युत। ऐसा नहीं। बल्कि।

वरना*–अव्य० [अ०] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो। वरन्।

संज्ञा पुं० ऊँट।

वरपतिक–संज्ञा पुं० अबरक। अभ्रक।

वरप्रद–वि० १. वर देनेवाला। २. प्रसन्न।

वरप्रदान–संज्ञा पुं० वर देना। वर देने की क्रिया।

वरम–संज्ञा पुं० [फा०] सूजन। शरीर के किसी अंग का फूलना।

वरयात्रा–संज्ञा स्त्री० बारात। दूल्हे का अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिए जाना।

वररुचि–संज्ञा पुं० एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि। इन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर वार्त्तिक बनाए थे।

वरल–संज्ञा पुं० १. बिरनी। २. हड्डा।

वरही*–संज्ञा पुं० दे० "वर्ही"।

वरांगना–संज्ञा स्त्री० सुन्दरी स्त्री।

वराक–संज्ञा पुं० १. शिव। २. युद्ध।

वि० १. बेचारा। २. शोचनीय।

वराट–संज्ञा पुं० १. रस्सी। २. कौड़ी।

वराटिका–संज्ञा स्त्री० १. कौड़ी। २. तुच्छ वस्तु।

वराण–संज्ञा पुं० इन्द्र।

वरानना–संज्ञा स्त्री० सुंदर स्त्री।

वरान्न–संज्ञा पुं० दला हुआ उत्तम अन्न।

वरारणि–संज्ञा स्त्री० माता।

वरारोह–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २ एक पक्षी।

वि० श्रेष्ठ सवारीवाला।

वराल–संज्ञा पुं० लौंग।

वरासत–संज्ञा स्त्री० १. दे० "विरासत"। वारिस होने का भाव। उत्तराधिकार। २. उत्तराधिकार में मिली हुई वस्तु। ३. बपौती। ४. तरका।

वरासन–संज्ञा पुं० ऊँचा आसन। श्रेष्ठ आसन।

वराह–संज्ञा पुं० १. सूअर। २. भगवान् के एक अवतार। विष्णु।

वराहमिहिर–संज्ञा पुं० ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य, जिनके बनाए बृहत्संहिता आदि ग्रंथ प्रचलित हैं।

वरिष्ठ–वि० पूजनीय। श्रेष्ठ।

वरुण–संज्ञा पुं० १. जल के अधिपति एक देवता। २. जल। ३. एक ग्रह, जिसे अँगरेजी में "नेपच्यून" कहते हैं।

वरुणपाश–संज्ञा पुं० वरुण का अस्त्र पाश या फंदा।

वरुणानी–संज्ञा स्त्री० वरुण की स्त्री।

वरुणालय–संज्ञा पुं० समुद्र।

वरूथ–संज्ञा पुं० १. समूह। झुण्ड। २. सेना। ३. रथ के ऊपर डाला जानेवाला लोहे या सीकड़ों का बना एक आवरण।

वरूथिनी–संज्ञा स्त्री० सेना।

वरूथी–संज्ञा पुं० हाथी की काठी।

वरेंद्र–संज्ञा पुं० १. इन्द्र। २. राजा।

वरेण्य–वि० १. मुख्य। प्रधान। २. पूजनीय।

वर्ग–संज्ञा पुं० १. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। २. कोटि। श्रेणी। ३. एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह। ४. शब्द-शास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन-वर्णों का समूह। ५. ग्रंथ का विभाग। अध्याय। परिच्छेद। ६. दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणन-फल। ७. वह चौकोर क्षेत्र, जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर और चारों कोण समकोण हों (रेखा-गणित)।

वर्गफल–संज्ञा पुं० वह गुणन-फल, जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।

वर्गमूल–संज्ञा पुं० किसी वर्गांक का वह जिसे उसी अंक से गुणा करें तो गुणन वही

वर्गांक हो। जैसे—२५ का वर्गमूल ५ होगा।

वर्गांक–संज्ञा पुं० किसी संख्या को उसी संख्या से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

वर्गीकरण–बहुत-सी वस्तुओं या व्यक्तियों को उनके अलग-अलग वर्ग के अनुसार छाँटकर अलग करना।

वर्चस्–संज्ञा पुं० १. रूप। २. तेज। कांति। ३. अन्न। ४. विष्ठा।

वर्चस्य–वि० तेजवर्द्धक।

वर्चस्व–संज्ञा पुं० १. तेज। दीप्ति। कांति। २. श्रेष्ठता।

वर्चस्वी–वि० तेजस्वी।

वर्जन–संज्ञा पुं० [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १. छोड़ देना। त्याग देना। २. कोई काम करने से रोकना। निषेध। मनाही।

वर्जनीय–वि० १. छोड़ने योग्य। २. निषेध के योग्य। मना करने योग्य।

वर्जित–वि० १. मना किया हुआ। ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया। निषिद्ध। २. त्यक्त।

वर्जिश–संज्ञा पुं० [फा०] व्यायाम। कसरत।

वर्ज्य–वि० १. छोड़ने योग्य। त्याज्य। २. जो मना हो। निषिद्ध।

वर्ण–संज्ञा पुं० १. रंग। २. रूप। सूरत। ३. अक्षर। अक्षरों के चिह्न। ४. हिन्दुओं के कर्मानुसार ये चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जो प्राचीन आर्य्यों ने किए थे। ५. जाति। ६. रंग के आधार पर मनुष्य जाति के विभाग, जैसे लाल, गोरे, काले। ७. भेद। प्रकार। किस्म।

वर्णक–वि० १. वर्णन करनेवाला। २. प्रशंसा करनेवाला।

संज्ञा पुं० १. रंग। चित्रों में भरा जानेवाला रंग। २. असली रूप छिपाने के लिए धारण किया हुआ रूप या आवरण।

वर्णचित्र–संज्ञा पुं० रंगों से बनाया गया चित्र। रँगा हुआ चित्र।

वर्णतूलिका–संज्ञा स्त्री० चित्रों आदि में रंग भरने की कूँची या बुरुश।

वर्णन–संज्ञा पुं० [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] सविस्तर कहना। कथन। बयान। प्रशंसा। तारीफ। बखान।

वर्णनातीत–वि० जिसका वर्णन या बयान न हो सके। वर्णन के बाहर।

वर्णनीय–वि० वर्णन करने योग्य। कहने योग्य।

वर्णपताका–संज्ञा स्त्री० छंदःशास्त्र में एक क्रिया, जिसके द्वारा लघु और गुरु के हिसाब से वर्णवृत्तों के भेद का ज्ञान होता है।

वर्णप्रस्तार–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में वह क्रिया, जिसके द्वारा वृत्तों के भेद और उन भेदों के स्वरूप का ज्ञान होता है।

वर्णमाला–संज्ञा स्त्री० अक्षरों के रूपों की क्रमानुसार लिखित सूची। अक्षरमाला। ककहरा।

वर्णविचार–संज्ञा पुं० आधुनिक व्याकरण का वह अंश, जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था।

वर्णवृत्त–संज्ञा पुं० वह छंद, जिसके प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णसंकर–संज्ञा पुं० दोगला। दो भिन्न वर्णों के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न व्यक्ति या जाति।

वर्ण-सूची–संज्ञा स्त्री० छंदःशास्त्र या पिंगल में एक क्रिया, जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अंत लघु और आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

वर्णात्मक–वि० अक्षर-सम्बन्धी। वर्ण-संबंधी।

वर्णाश्रम–संज्ञा पुं० ब्राह्मण आदि हिन्दुओं के चार वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम।

वर्णिक वृत्त–संज्ञा पुं० दे० "वर्णवृत्त"।

वर्णित–वि० १. कथित। कहा हुआ। २. जिसका वर्णन हो चुका हो।

वर्ण्य–वि० १. वर्णन के योग्य। २. जो वर्णन का विषय हो। जिसका वर्णन हो रहा हो।

वर्तन–संज्ञा पुं० [वि० वर्तित] १. बरताव। व्यवहार। २. व्यवसाय। जीविका।

वृत्ति। रोजी। ३. फेरना। घुमाना। ४. परिवर्त्तन। बटना। फेर-फार। ५. स्थापन। रखना। ६. सिल-बट्टे से पीसना। ७. पात्र। बरतन। ८. विष्णु।

वर्त्तना–क्रि० अ० और स० १. बटना। २. बरतना।

वर्त्तनि–संज्ञा १. पुं० पूर्व दिशा। २. रास्ता।

वर्त्तनी–संज्ञा स्त्री० १. बटने की क्रिया। पिसाई। २. रास्ता। बाट।

वर्त्तमान–वि० १. उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। २. आधुनिक। हाल का। चलता हुआ। जो जारी हो।

संज्ञा पुं० १. व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है। २. वृत्तांत। समाचार। ३. चलता व्यवहार।

वर्त्ता–संज्ञा स्त्री० काठ की कलम, जिससे पटरे पर लिखा जाता है।

वर्त्ति–संज्ञा स्त्री० १. बत्ती। दीपक में जलाने की बत्ती। २. अंजन। ३. आँख में सुरमा लगाने की सलाई। ४. गोली। बटी। ५. घाव में लगाने की बत्ती। ६. उबटन।

वर्त्तिका–संज्ञा स्त्री० १. बत्ती। २. शलाका। सलाई। ३. बटेर पक्षी।

वर्त्तित–वि० १. जारी किया हुआ। चलाया हुआ। २. सम्पादित किया हुआ।

वर्त्ती–वि० [स्त्री० वर्त्तिनी] १. वर्त्तनशील। बरतनेवाला। २. स्थित रहनेवाला।

संज्ञा स्त्री० १. बटी। २. सलाई।

वर्त्तुल–वि० गोल। गोलाकार। वृत्ताकार।

वर्त्म–संज्ञा पुं० १. मार्ग। पथ। २. गाड़ी के पहिए का मार्ग। लीक। ३. किनारा। ओठ। बारी। ४. आँख की पलक। ५. आधार।

वर्दी–संज्ञा स्त्री० किसी विभाग के कर्मचारियों के लिए निश्चित पहनावा। परिच्छद।

वर्द्धक–वि० १. बढ़ानेवाला। २. पूरक। ३. काटनेवाला।

वर्द्धन–संज्ञा पुं० [वि० वर्द्धित] १. बढ़ाना। २. वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ३. काटना। तराशना।

वर्द्धमान–वि० जो बढ़ता जा रहा हो। बढ़नेवाला। वर्द्धनशील।

संज्ञा पुं० १. एक वर्णवृत्त, जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न, अर्थात् १४, १३, १८ और १५ होती है। २. जैनियों के २४वें जिन महावीर।

वर्द्धित–वि० १. बढ़ा हुआ। २. पूर्ण। ३. छिन्न। कटा हुआ।

वर्म–संज्ञा पुं० १. कवच। बकतर। २. घर।

वर्मा–संज्ञा पुं० क्षत्रियों और कायस्थों आदि की उपाधि, जो उनके नाम के अंत में लगाई जाती है।

वर्य्य–वि० श्रेष्ठ। प्रधान। शिरोमणि। यह शब्द जिस संज्ञा शब्द के अन्त में आता है, उसकी श्रेष्ठता बतलाता है।

संज्ञा पुं० कामदेव।

वर्ष–संज्ञा पुं० १. काल का एक मान, जिसमें बारह महीने होते हैं। साल। संवत्सर। वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र। २. वर्षा। वृष्टि। ३. मेघ। बादल। ४. पुराणों में माने हुए सात द्वीपों का एक विभाग। ५. किसी द्वीप का प्रधान भाग।

वर्षक–वि० वर्षा करनेवाला। (जल) बरसानेवाला (कोई चीज)।

वर्षगाँठ–संज्ञा स्त्री० जन्मदिन। साल गिरह। प्रतिवर्ष जन्म के दिन मनाया जानेवाला उत्सव।

वर्षण–संज्ञा पुं० [वि० वर्षित] वर्षा। वृष्टि। बरसना।

वर्षधर–संज्ञा पुं० १. बादल। २. अन्तःपुर-रक्षक। खोजा।

वर्षफल–संज्ञा पुं० ज्योतिष-गणना के अनुसार वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण।

वर्षांश–संज्ञा पुं० वर्ष का कोई भाग।

वर्षा–संज्ञा स्त्री० १. पानी बरसना। पानी बरसने की क्रिया या भाव। २. वह ऋतु, जिसमें पानी बरसता है। बरसात।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना=

१. बहुत अधिक परिमाण में ऊपर से गिरना। २. बहुत अधिक संख्या में मिलना।

वर्षाकाल–संज्ञा पुं० बरसात। वर्षाऋतु।

वर्षागम–संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु का आगमन।

वर्षाबीज–संज्ञा पुं० बादल।

वर्षाभू–संज्ञा पुं० दादुर।

वर्षामद–संज्ञा पुं० मयूर। मोर।

वर्ष्मा–संज्ञा पुं० १. शरीर। २. प्रमाण। ३. इयत्ता। ४. जल रोकने का बाँध।

वर्ह–संज्ञा पुं० १. मोर का पंख। २. पत्ता।

वर्ही–संज्ञा पुं० मोर।

वल–संज्ञा पुं० १. मेघ। २. एक असुर, जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया।

वलन–संज्ञा पुं० १. ज्योतिष-शास्त्रानुसार ग्रह-नक्षत्रादि का सायनांश से हटकर चलना। २. विचलन।

वलभी–संज्ञा स्त्री० १. घर के ऊपर बना हुआ मंडप। २. बारजा। ३. बरामदा। ४. वेष्टन। ५. काठियावाड़ में स्थित एक प्राचीन नगरी।

वलय–संज्ञा पुं० १. कंकण। २. चूड़ी। ३. हाथ में पहनने का कड़ा। ४. वेष्टन। ५. मंडल। घेरा।

वलयित–वि० लपेटा या घिरा हुआ। वेष्टित। परिवृत्त।

वलवला–संज्ञा पुं० [अ०] १. हलचल। उथल-पुथल। २. जोश। आवेश।

वलहन्ता–संज्ञा पुं० इन्द्र।

वला–संज्ञा स्त्री० १. सेना। २. लक्ष्मी। ३. धरणी। ४. ओषधि-विशेष। ५. बलवान्।

वलाक–संज्ञा पुं० [स्त्री० वलाकी] बगुला। बकपंक्ति।

वलाहक–संज्ञा पुं० १. बादल। २. पहाड़।

वलि–संज्ञा पुं० १. रेखा। लकीर। चंदन आदि से बनाई हुई रेखा। २. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा। झुर्री। बल। ३. देवता को चढ़ाने की वस्तु। ४. एक दैत्य, जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ५. राजकर। ६. श्रेणी।

वलित–वि० १. बल खाया हुआ। झुकाया या मोड़ा हुआ। २. घेरा हुआ। ३. जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों। ४. लिपटा हुआ। लगा हुआ। ५. ढका हुआ। ६. युक्त। सहित। संज्ञा पुं० नाच में हाथ मोड़ने की एक मुद्रा।

वलिमुख–संज्ञा पुं० बन्दर।

वली–संज्ञा स्त्री० १. झुर्री। शिकन। २. श्रेणी। अवली। पंक्ति। ३. रेखा। लकीर। पेट में सिकुड़ने पर बनी हुई लकीर।
संज्ञा पुं० [अ०] १. मालिक। स्वामी। २. शासक। हाकिम। ३. साधु। फकीर।

वलीक–संज्ञा पुं० घर की छत या छाजन की ओलती।

वल्क–संज्ञा पुं० छाल। वल्कल।

वल्कल–संज्ञा पुं० १. पेड़ की छाल। त्वक्। २. पेड़ की छाल का वस्त्र, जिसे तपस्वी पहना करते थे।

वल्कली–वि० पेड़ की छाल पहननेवाला।

वल्किल–संज्ञा पुं० काँटा।

वल्गा–संज्ञा स्त्री० लगाम।

वल्गुल–संज्ञा पुं० गीदड़।

वल्द–संज्ञा पुं० [अ०] औरस पुत्र। बेटा। जैसे "गोकुल वल्द बलदेव" अर्थात् 'गोकुल, बेटा बलदेव का'।

वल्दियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम का परिचय।

वल्मीकि–संज्ञा पुं० १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २. एक रोग।

वल्लभ–वि० प्यारा। प्रियतम।
संज्ञा पुं० १. अत्यन्त प्यारा। २. पति। स्वामी। मालिक। ३. वैष्णव-संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य।

वल्लभा–संज्ञा स्त्री० प्रियतमा। प्रिया।

वल्लभाचार्य्य–संज्ञा पुं० वैष्णवों में वल्लभ-सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लरि, वल्लरी–संज्ञा स्त्री० लता। बेल। मंजरी।

वल्लव–संज्ञा पुं० १. गोप। अहीर। ग्वाला। २. रसोइया।

वल्लाह–अव्य० [अ०] १. ईश्वर की कसम। २. सचमुच। वास्तव में। ३. क्या खूब।

वल्लिका—संज्ञा स्त्री० लता। बेल।

वल्ली—संज्ञा स्त्री० लता। बेल।

वश—संज्ञा पुं० १. इच्छा। चाह। २. शक्ति की पहुँच। काबू। ३. अधिकार। कब्जा।
मुहा०—वश का=जिस पर अधिकार हो। वश चलना=शक्ति काम करना।

वशवर्ती—वि० अधीन। किसी के वश या अधिकार में रहनेवाला।

वशा—संज्ञा स्त्री० १. वंध्या स्त्री। बाँझ। २. स्त्री। ३. पत्नी। ४. गाय। ५. हथिनी। ६. वंध्या गाय। ७. ननद।

वशानुग—संज्ञा पुं० दास।
वि० वशीभूत।

वशिता—संज्ञा स्त्री० १. अधीनता। ताबेदारी। २. वश में करने या मोहने की क्रिया या भाव।

वशित्व—संज्ञा पुं० १. वशता। २. योग की आठ सिद्धियों में से एक।

वशिष्ठ—संज्ञा पुं० दे० "वसिष्ठ"।

वशिमा—संज्ञा स्त्री० योग की आठ सिद्धियों में से एक।

वशी—वि० [स्त्री० वशिनी] १. अपने को वश में रखनेवाला। २. अधीन।

वशीकरण—संज्ञा पुं० [वि० वशीकृत] १. वश में लाने की क्रिया। २. मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।

वशीकृत—वि० वश में किया हुआ। मोहित।

वशीभूत—वि० १. अधीन। ताबे। दूसरे की इच्छा के अधीन। २. मोहित।

वश्य—वि० १. वश में आनेवाला। २. किसी की इच्छा के अधीन।
संज्ञा पुं० मातहत। दास।

वश्यता—संज्ञा स्त्री० अधीनता। मातहती।

वसंत—संज्ञा पुं० [वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु, जिसके अंतर्गत चैत और बैसाख के महीने माने गए हैं। बहार का मौसिम। २. शीतला रोग। चेचक। ३. छः रागों में से दूसरा राग।

वसंत-पंचमी—संज्ञा स्त्री० माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी। श्रीपंचमी।

वसंती—संज्ञा पुं० हलका पीला रंग। बसन्ती।
वि० हलके पीले रंग का। बसन्ती रंग का।

वसन्तोत्सव—संज्ञा पुं० वसन्त पंचमी के दिन होनेवाला उत्सव। मदनोत्सव।

वसन—संज्ञा पुं० १. वस्त्र। कपड़ा। २. ढकने की वस्तु। आवरण। ३. निवास।

वसनार्णवा—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

वसवास—संज्ञा पुं० [वि० वसवासी] १. भ्रम। संदेह। २. प्रलोभन। मोह।

वसवासी—वि० शक्की। संदेह करनेवाला।

वसह*—संज्ञा पुं० बैल। वृषभ।

वसा—संज्ञा स्त्री० १. चरबी। २. मज्जा।

वसार—संज्ञा पुं० १. वश। २. इच्छा।

वसिष्ठ—संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि, जिनका उल्लेख ऋग्वेद और पुराणों में है। ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इन्होंने ही राजा दशरथ से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। इनमें और विश्वामित्र में वैर था। २. सप्तर्षिमंडल का एक तारा।

वसीक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] वृत्ति। पेंशन।

वसीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य जाता है।

वसीयतनामा—संज्ञा पुं० वह लेख, जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि उसके मरने के बाद उसकी संपत्ति का विभाग और प्रबंध किस प्रकार हो।

वसीला—संज्ञा पुं० [अ०] १. संबंध। लगाव। २. जरिया।

वसुंधरा—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

वसु—संज्ञा पुं० १. रत्न। धन। २. आग। ३. जल। ४. किरण। ५. सोना। ६. शिव। ७. कुबेर। ८. सूर्य्य। ९. विष्णु। १०. साधु पुरुष। सज्जन। ११. सरोवर। १२. देवताओं का एक गण, जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। १३. आठ की संख्या।

वसुद—संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. विष्णु।

वसुदा—संज्ञा स्त्री० १. धन-सम्पत्ति देनेवाला। २. उदार। ३. दानी। ४. पृथ्वी। ५. माली

राक्षस की पत्नी। इसके अनल, निल, हर और संपाति नामक चार पुत्र थे।
वसुदेव–संज्ञा पुं० एक यदुवंशी राजा, जो श्रीकृष्ण के पिता थे।
वसुधा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरणी। वि० धन देनेवाला।
वसुधाधर–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. पहाड़।
वसुधापति–संज्ञा पुं० राजा। पृथ्वी का मालिक।
वसुधान–संज्ञा पुं० पृथ्वी।
वसुधारा–संज्ञा स्त्री० १. जैनों की एक देवी। २. कुबेर की पुरी, अलका।
वसुनीथ–संज्ञा पुं० अग्नि।
वसुप्रद–संज्ञा पुं० १. शिवजी। २. कुबेर।
वसुमती–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. छः वर्णों का एक वृत्त।
वसुरूप–संज्ञा पुं० शिवजी।
वसुरेता–संज्ञा पुं० १.शिव। २. अग्नि।
वसुल–संज्ञा पुं० देवता।
वसुविद्–संज्ञा पुं० अग्नि।
वसुहंस–संज्ञा पुं० वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम।
वसूल–वि० [अ०] मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। जो चुका लिया गया हो।
वसूली–संज्ञा स्त्री० १. दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम। चुकता कराने की क्रिया। २. प्राप्ति।
वस्ति–संज्ञा स्त्री० १. पेड़ू। नाभि के नीचे का भाग। २. मूत्राशय। ३. पिचकारी। ४. हठयोग की एक क्रिया।
वस्तिकर्म–संज्ञा पुं० लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देने की क्रिया।
वस्तु–संज्ञा स्त्री० [वि० वास्तव, वास्तविक] १. वह, जिसका अस्तित्व या सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। २. सत्य पदार्थ। चीज। दिखाई देनेवाली चीज। ३. वृत्तान्त। ४. नाटक का आख्यान। कथावस्तु।
वस्तुतः–अव्य० सचमुच। ठीक। यथार्थ।
वस्तुनिर्देश–संज्ञा पुं० मंगलाचरण का एक भेद, जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है।
वस्तुवाद–संज्ञा पुं० एक दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे—न्याय और वैशेषिक।
वस्तुस्थिति–संज्ञा स्त्री० वास्तविक परिस्थिति। असली हालत।
वस्त्र–संज्ञा पुं० कपड़ा। पोशाक।
वस्न–संज्ञा पुं० १. वेतन। २. मूल्य। ३. द्रव्य। धन। ४. वस्तु। ५. वसन। ६. छाल।
वस्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. गुण। ३. विशेषता।
वस्ल–संज्ञा पुं० [अ०] १. मिलन। २. संयोग। मिलाप।
वहंत–संज्ञा पुं० वायु।
वह–सर्व० १. एक शब्द, जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। २. एक निर्देशकारक शब्द, जिससे दूर की या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते हैं।
वि० वाहक। बोझ ले जानेवाला। (समास में)
संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. वायु। ३. मार्ग। ४. नदी।
वहन–संज्ञा पुं० [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १. खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। २. ऊपर लेना। उठाना। ३. भार उठाना। ४. बेड़ा। तरेंदा।
वहनीय–वि० १. खींचकर या लादकर ले जाने योग्य। भार उठाने योग्य। २. ऊपर लेने योग्य।
वहम–संज्ञा पुं० [अ०] मिथ्या धारणा। झूठा खयाल। भ्रम। व्यर्थ की शंका। मिथ्या संदेह।
वहमी–वि० वहम करनेवाला। व्यर्थ संदेह करनेवाला। झूठा शक करनेवाला।
वहशत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. असभ्यता। उजड्डपन। जंगलीपन। पागलपन। २. डरावनापन। ३. घबराहट। अधीरता।

वहशी–वि० [अ०] १. जंगल में रहनेवाला। जंगली। जो पालतू न हो। २. असभ्य। उजड्ड। ३. भड़कनेवाला।

वहाँ–अव्य० उस जगह।

वहाबी–संज्ञा पुं० [अ०] अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय। इस संप्रदाय का अनुयायी।

वहिः–अव्य० जो अन्दर न हो। बाहर।

वहित्र–संज्ञा पुं० जहाज।

वहिनी–संज्ञा स्त्री० १. ढोनेवाली। २. नौका।

वहिरंग–संज्ञा पुं० १. शरीर का बाहरी भाग। बाहरी भाग। अंतरंग का उलटा। २. कहीं बाहर से आया हुआ आदमी। आगंतुक। वि० १. ऊपर-ऊपर का। बाहरी। २. फालतू। अनावश्यक।

वहिर्भूत–वि० दे० "वहिर्गत"।

वहिर्मुख–वि० दे० "विमुख"।

वहिर्लापिका–संज्ञा स्त्री० पहेली।

वहीं–अव्य० उसी स्थान पर। उसी जगह।

वही–सर्व० १. जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जा चुका हो, उसकी ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम। पूर्वोक्त व्यक्ति या विषय। २. निर्दिष्ट वस्तु, अन्य नहीं।

वहीक–संज्ञा पुं० १. रक्तवाहिनी नाड़ियों का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। मांस-पेशी।

वह्नि–संज्ञा पुं० १. अग्नि। आग। २. कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वह्निमित्र–संज्ञा पुं० हवा।

वह्निमुख–संज्ञा पुं० देवता।

वह्निरेता–संज्ञा पुं० शिव।

वाँ†–अव्य० वहाँ। (वहाँ का छोटा रूप) उस स्थान पर।

वांछनीय–वि० १. चाहने योग्य। २. जिस वस्तु की इच्छा हो।

वांछा–संज्ञा स्त्री० [वि० वांछित, वांछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

वांछित–वि० इच्छित। चाहा हुआ।

वा–अव्य० या। अथवा। विकल्प वाचक या संदेहवाचक शब्द।

*†सर्व० व्रज भाषा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारकचिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे—वाकों, वासों।

वाइ*†–सर्व० दे० "वाहि"। उसे। उसको।

वाइस चान्सलर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विश्व-विद्यालय का उपकुलपति।

वाइसराय–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सम्राट् का प्रतिनिधि। भारतवर्ष में अंग्रेजी शासन-काल में सर्वप्रधान शासक। बड़ा लाट।

वाक्–संज्ञा पुं० १. वाणी। सरस्वती। २. बोलने की इंद्रिय।

वाक़ई–वि० [अ०] सच। वास्तव। यथार्थ। अव्य० सचमुच। ठीक-ठीक। यथार्थ में। वास्तव में।

वाक़फ़ियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जानकारी। ज्ञान। २. परिचय। जान-पहचान।

वाक़या–संज्ञा पुं० [अ०] घटना। वृत्तांत। समाचार।

वाक़ा–वि० [अ०] १. होने या घटनेवाला। २. स्थित। खड़ा।

वाक़िफ़–वि० [अ०] १. जानकार। ज्ञाता। जानकारी रखनेवाला। २. अनुभवी।

वाक़िफ़कार–वि० जानकार। काम को सम-झनेवाला। अनुभवी।

वाक्–संज्ञा स्त्री० दे० "वाणी"।

वाक्-चपल–वि० बहुत बातें बनानेवाला। मुँहजोर।

वाक्-चातुरी या **वाक्चातुर्य्य**–संज्ञा स्त्री० बात करने में चतुराई। बात करने का कौशल।

वाक्छल–संज्ञा पुं० कहने में कपट। न्याय-शास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक।

वाक्पटु–वि० बात करने में चतुर।

वाक्पति–संज्ञा पुं० १. बृहस्पति। २. विष्णु।

वाक़फ़ियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] जानकारी।

वाक्य–संज्ञा पुं० वह शब्दसमूह, जिससे सुनने

या पढ़नेवाला कहने या लिखनेवाले का मतलब समझे।

वाक्यार्थ–संज्ञा पुं० वाक्य का अर्थ या मतलब।

वाक्युद्ध–संज्ञा पुं० जबानी लड़ाई-झगड़ा। मौखिक संघर्ष।

वाक्संयम–संज्ञा पुं० वाणी पर रोक। व्यर्थ बातें न कहना।

वाक्सिद्धि–संज्ञा स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।

वाकुची–संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष।

वागर–संज्ञा पुं० १. सान। २. निर्णय। ३. पंडित। ४. मुमुक्षु। ५. भेड़िया।

वागा–संज्ञा स्त्री० लगाम।

वागीश–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. बृहस्पति। ३. कवि।
वि० अच्छा वक्ता।

वागीशा–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वागीश्वरी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वाग्जाल–संज्ञा पुं० बातों का बवंडर। लच्छेदार बातें। बातों की भरमार।

वाग्दंड–संज्ञा पुं० डाँट-डपट। भला-बुरा कहने का दंड। लिथाड़।

वाग्दत्त–वि० वचन-द्वारा प्रदान किया हुआ। दूसरे को देने के लिए कहा हुआ। एक प्रकार का विवाह।

वाग्दत्ता–संज्ञा स्त्री० वह कन्या, जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।

वाग्दान–संज्ञा पुं० सगाई। कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा।

वाग्देवी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती। वाणी।

वाग्दोष–संज्ञा पुं० १. बोलने की गलती। व्याकरण-सम्बन्धी त्रुटि। २. निन्दा या गाली।

वाग्भट्ट–संज्ञा पुं० १. भावप्रकाश, शास्त्र-दर्पण आदि के रचयिता। २. वैद्यक निघंटु के रचयिता। ३. अष्टांगहृदय-संहिता नामक वैद्यक ग्रंथ के रचयिता।

वाग्मी–संज्ञा पुं० १. अच्छा वक्ता। २. पंडित। ३. बृहस्पति।

वाग्वादिनी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वाग्विदग्ध–वि० बात करने में चतुर। पंडित।

वाग्विलास–संज्ञा पुं० परस्पर प्रेम या आनन्द-पूर्वक बातचीत।

वाङ्मय–संज्ञा पुं० साहित्य।
वि० १. वचन-संबंधी। २. वचन-द्वारा किया हुआ। ३. वाक्य-संबंधी जो पठन-पाठन का विषय हो।

वाङ्मयी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वाच्–संज्ञा स्त्री० वाणी। वाक्।

वाचक–वि० बोलनेवाला। पढ़कर सुनानेवाला। सूचक।
संज्ञा पुं० व्यक्ति या वस्तु का निर्देश या परिचय देनेवाला शब्द। नाम। संज्ञा। संकेत। दे० "वाची"। पढ़कर सुनानेवाला। जैसे—कथावाचक।

वाचकधर्मलुप्ता–संज्ञा स्त्री० व[illegible] उपमा, जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।

वाचकलुप्ता–संज्ञा स्त्री० वह उपमालंकार, जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप हो।

वाचन–संज्ञा पुं० १. पढ़ना। पठन। बाँचना। २. कहना। उच्चारण करना। ३. प्रति-पादन।

वाचनालय–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ बैठकर लोग समाचार-पत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों।

वाचनिक–वि० वचन-सम्बन्धी। कथित। जबानी।

वाचयिता–वि० दे० "वाचक"।

वाचस्पति–संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा विद्वान्। २. वाणी। वचन। ३. बृहस्पति।

वाचा–संज्ञा स्त्री० १. वाणी। २. वचन। शब्द। वाक्य।

वाचापत्र–संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा-पत्र।

वाचाबंध*–वि० वचनबद्ध। प्रतिज्ञाबद्ध।

वाचाबंधन–संज्ञा पुं० प्रतिज्ञाबद्ध होना। वचनबद्ध होना।

वाचाबद्ध–संज्ञा पुं० वचनबद्ध। वादे में बँधा हुआ।

वाचाल—वि० [संज्ञा, वाचालता] १. बोलने में तेज। वाक्पटु। २. बकवादी। व्यर्थ बकनेवाला।

वाचालता—संज्ञा स्त्री० १. बात करने में निपुणता। २. बहुत बोलना।

वाचिक—वि० १. वक्ता-संबंधी। २. वाणी-संबंधी। वाणी से किया हुआ। ३. संकेत से कहा हुआ।
संज्ञा पुं० अभिनय का एक भेद, जिसमें केवल वाक्य-विन्यास-द्वारा अभिनय का कार्य्य संपन्न होता है।

वाची—वि० प्रकट करनेवाला। सूचक। जैसे भाववाचक।

वाच्य—वि० १. कहने योग्य। २. शब्द-संकेत द्वारा जिसका बोध हो।
संज्ञा पुं० दे० "वाच्यार्थ"।

वाच्यार्थ—संज्ञा पुं० वह अभिप्राय, जो शब्दों के नियत अर्थ-द्वारा हो प्रकट हो। मूल शब्दार्थ।

वाच्यावाच्य—संज्ञा पुं० कहने और न कहने योग्य बातें। भली-बुरी बातें।

वाज—संज्ञा पुं० १. घी। २. अन्न। ३. यज्ञ का अन्न। ४. श्राद्ध का चावल। ५. यज्ञ। ६. संग्राम। ७. घोड़ा। ८. युद्ध का घोड़ा। ९. जल। १०. बल। शक्ति। ११. वेग। १२. पलक। १३. युद्ध में लूट की सामग्री। १४. पुरस्कार। इनाम। १५. शब्द। आवाज। १६. मुनि।

वाजपति—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. पुरस्कार या लूट के सामान का स्वामी (अग्नि के लिए प्रयुक्त)।

वाजपेय—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है।

वाजपेयी—संज्ञा पुं० वह पुरुष, जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि। अत्यंत कुलीन पुरुष।

वाजश्रवा—संज्ञा पुं० अग्नि।

वाजसनि—संज्ञा पुं० सूर्य्य।

वाजसनेय—संज्ञा पुं० १. यजुर्वेद की एक शाखा। २. याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजिब—वि० [अ०] उचित। ठीक।

वाजिबी—वि० [अ०] उचित। ठीक।

वाजी—संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. वीर। बहादुर। ३. योद्धा। ४. इन्द्र, बृहस्पति के नाम। ५. बाण। ६. फटे हुए दूध का पानी।

वाजीकर—वि० काम-भावना को जगानेवाला।

वाजीकरण—संज्ञा पुं० मनुष्य के वीर्य और पुंस्त्व को बढ़ानेवाली औषध।

वाट—संज्ञा पुं० मार्ग। रास्ता।

वाटरवर्क्स, वाटरवर्क्स डिपार्टमेंट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. जलकल। २. जलकल-विभाग। नगर में घर-घर नल-द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग।

वाटिका—संज्ञा स्त्री० १. बगीचा। बाग। २. फुलवाड़ी।

वाडव—संज्ञा स्त्री० समुद्र के भीतर की आग।

वाड़वाग्नि—संज्ञा स्त्री० समुद्र के अंदर की आग। समुद्री आग।

वाड़वानल—संज्ञा स्त्री० दे० "वाड़वाग्नि"।

वाणिज्य—संज्ञा पुं० व्यापार। वणिज शब्द से बना हुआ। रोजगार। व्यवसाय। क्रय-विक्रय।

वाणी—संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. बोली। मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। ३. वाक्शक्ति। ४. जीभ। रसना।
मुहा०—वाणी फुरना=मुँह से शब्द निकलना।

वात—संज्ञा पुं० १. वायु। हवा। २. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु, जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातज—वि० वायु-द्वारा उत्पन्न।

वातजात—संज्ञा पुं० हनुमान्।

वात-प्रकोप—संज्ञा पुं० वायु का बढ़ जाना, जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातापि—संज्ञा पुं० एक असुर का नाम, जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।

वातायन—संज्ञा पुं० झरोखा। छोटी खिड़की।

वातावरण—संज्ञा पुं० १. चारों ओर की हवा। वायुमंडल। २. आस-पास की परिस्थिति,

जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता है।

वातुल—संज्ञा पुं० बावला। पागल।
वि० १. जिसकी बुद्धि वायु के प्रकोप से ठिकाने न हो। २. वायु-प्रधान। जिसमें वायु अधिक हो।

वात्या—संज्ञा स्त्री० बवंडर। अन्धड़।

वात्सरिक—वि० वार्षिक। सालाना।

वात्सल्य—संज्ञा पुं० १. प्रेम। स्नेह। २. माता-पिता का अपनी सन्तान के प्रति प्रेम।

वात्स्यायन—संज्ञा पुं० १. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २. कामसूत्र-ग्रंथ के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद—संज्ञा पुं० १. विवाद। तर्क। दलील। २. झगड़ा। ३. मुकदमा। ४. सिद्धांत।

वादक—संज्ञा पुं० १. बाजा बजानेवाला। २. वक्ता। ३. तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वादग्रस्त—वि० जिसके बारे में विवाद या मतभेद हो।

वादन—संज्ञा पुं० बाजा बजाना।

वादनक—संज्ञा पुं० बाजा।

वाद-प्रतिवाद—संज्ञा पुं० बहस। वाद-विवाद। तर्क-वितर्क।

वादरायण—संज्ञा पुं० वेदव्यास।

वाद-विवाद—संज्ञा पुं० बहस। तर्क-वितर्क।

वादा—संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा। वचन। इकरार।
मुहा०—वादाखिलाफ़ी करना=कथन के विरुद्ध कार्य्य करना। वादा पूरा करना=वचन या प्रतिज्ञा का पालन करना। वादा रखाना=वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।

वादानुवाद—संज्ञा पुं० बहस। वाद-विवाद। तर्क-वितर्क।

वादिक—संज्ञा पुं० बहस करनेवाला। तार्किक।

वादित—वि० बजाया हुआ।

वादित्र—संज्ञा पुं० बाजा। वाद्य।

वादी—संज्ञा पुं० १. मुकद्दमा दायर करने-वाला। फरियादी। मुद्दई। २. वक्ता। ३. पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

वाद्य—संज्ञा पुं० बाजा।

वाद्यकर—संज्ञा पुं० बजानेवाला।

वानप्रस्थ—संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय आर्य्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।

वानर—संज्ञा पुं० [स्त्री० वानरी] बंदर।

वानवासिका—संज्ञा स्त्री० सोलह मात्राओं के छंदों या चौपाई का एक भेद।

वानस्पत्य—संज्ञा पुं० १. वनस्पति का समूह। २. वे वृक्ष, जिनमें पहले फूल और पीछे फल लगते हैं।
वि० वनस्पति-संबंधी।

वापस—वि० [फा०] लौटा हुआ। लौटकर आया हुआ। फिरता। फिरा हुआ।

वापसी—संज्ञा स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव।
वि० लौटा हुआ। फेरा हुआ। वापस होने के संबंध का।

वापिका—संज्ञा स्त्री० बावली। छोटा जला-शय। सरोवर।

वापी—संज्ञा स्त्री० दे० "वापिका।"

वाम—वि० १. बायाँ। दाहिने का उलटा। २. विरुद्ध। विरोधी। ३. टेढ़ा। ४. कुटिल। दुष्ट।

वामकी—संज्ञा स्त्री० एक देवी, जिनकी पूजा जादूगर करते हैं।

वामदेव—संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि। ३. राजा दशरथ के एक मंत्री का नाम।

वामन—वि० १. नाटा। बौना। छोटे डील का। २. खर्व। ह्रस्व।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. शिव। ३. एक दिग्गज का नाम। ४. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार, जो बलि को छलने के लिए हुआ था। ५. अठारह पुराणों में से एक।

वामपंथ—संज्ञा पुं० [वि० वामपंथी] किसी विषय में बहुत उग्र मत रखनेवालों का सिद्धान्त या वर्ग।

वाम-मार्ग—संज्ञा पुं० [वि० वाममार्गी] तांत्रिक मत, जिसमें मद्य, मांस आदि के उपयोग का विधान है।

वामलोचना—संज्ञा स्त्री० सुंदरी स्त्री।

वामांगिनी, वामांगी—संज्ञा स्त्री० पत्नी।

वामा—संज्ञा स्त्री० १. सुन्दर स्त्री। महिला।

२. पत्नी। ३. दुर्गा। ४. दस अक्षरों का एक वृत्त।
वामाचार–संज्ञा पुं० तांत्रिक मत का एक भेद।
वामावर्त–वि० १. दक्षिणावर्त का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु की बाईं ओर से आरंभ की जाय। २. जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो।
वाय*–सर्व० दे० "वाहि। वही"।
वायविक–वि० वायु-सम्बन्धी। वायु का।
वायव्य–वि० वायु-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २. एक अस्त्र का नाम।
वायस–संज्ञा पुं० कौआ। काक।
वायु–संज्ञा स्त्री० हवा। वात।
वायुकोण–संज्ञा पुं० पश्चिमोत्तर दिशा।
वायुग्रस्त–वि० १. उन्मत्त। २. वायु के पुत्र हनुमानजी।
वायुगुल्म–संज्ञा पुं० १. बवंडर। वातचक्र। २. पेट का एक रोग। वायुगोला।
वायुभक्ष्य–संज्ञा पुं० साँप। सर्प।
वायुमंडल–संज्ञा पुं० आकाश। दे० "वातावरण"।
वायुयान–संज्ञा पुं० हवाई जहाज। हवा में चलनेवाली सवारी।
वायुलोक–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. पुराणानुसार एक लोक का नाम।
वारंक–संज्ञा पुं० पक्षी।
वारंग–संज्ञा पुं० तलवार की मुट्ठी।
वारंट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अदालत का एक आज्ञापत्र, जिसके अनुसार मुकदमे से संबंधित भागे हुए व्यक्तियों को पकड़कर अदालत में हाजिर किया जाता है।
वार–संज्ञा पुं० १. रोक। रुकावट। २. आवरण। ३. अवसर। ४. बार। दफा। ५. क्षण। ६. द्वार। दरवाजा। ७. सप्ताह का दिन। जैसे—सोमवार। ८. दाँव। बारी। ९. चोट। आघात। आक्रमण। १०. नदी आदि का किनारा।
वारक–संज्ञा पुं० निषेध या मना करनेवाला। प्रतिबन्धक।
वारकन्या–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
वारण–संज्ञा पुं० [वि० वारक] १. किसी बात को न करने की आज्ञा। निषेध। मनाही। २. अंकुश। ३. रुकावट। बाधा। विघ्न।
वारणावत–संज्ञा पुं० महाभारत के अनुसार एक जनपद, जो गंगा के किनारे था।
वारणीय–वि० निषेध के योग्य।
वारतिय*–संज्ञा स्त्री० रंडी। वेश्या।
वारद*–संज्ञा पुं० दे० "वारिद"। बादल।
वारदात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. घटना। भीषण कांड। दुर्घटना। २. मार-पीट। दंगा-फसाद। ३. घटना-सम्बन्धी हाल या समाचार।
वारन*–संज्ञा स्त्री० १. निछावर। भेंट चढ़ाना। बलि। २. रोक। रुकावट।
संज्ञा पुं० वंदनवार। वंदनमाला।
वारना–क्रि० स० निछावर करना। अर्पण करना। भेंट चढ़ाना।
संज्ञा पुं० निछावर। अर्पण। भेंट।
मुहा०—वारने जाना=निछावर होना।
वारनारी–संज्ञा स्त्री० रंडी। वेश्या।
वारनिश–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] लकड़ी आदि की चीजों पर पालिश करने और उनके चमकाने के लिए लगाई जानेवाली तरल वस्तु या रोगन।
वार-पार–संज्ञा पुं० १. आरपार। एक किनारे से दूसरा किनारा। (नदी आदि के) दोनों किनारों का पूरा विस्तार। २. अन्त।
अव्य० इस किनारे से उस किनारे तक।
वारफेर–संज्ञा पुं० निछावर। बलि।
वारमुखी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
वारवधू–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
वारस्त्री–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
वारांगना–संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। २. दिव्यांगना।
वारांनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र। सागर।
वारा–संज्ञा पुं० १. जो निछावर हुआ हो। २. खर्च की बचत। किफायत। ३. लाभ।
वि० १. किफायत। २. सस्ता।
वाराणसी–संज्ञा स्त्री० बनारस। वरुणा और असी नदियों का संगम-स्थान होने के कारण वाराणसी नाम पड़ा।

वारा-न्यारा–संज्ञा पुं० १. निबटारा। फैसला। २. झंझट या झगड़े का निबटेरा।
वाराह–संज्ञा पुं० दे० "वराह"।
वाराही–संज्ञा स्त्री० १. आठ मातृकाओं में से एक। २. एक योगिनी।
वाराहीकंद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा कंद, जो गेंठी कहलाता है।
वारि–संज्ञा पुं० पानी। जल।
वारिचर–संज्ञा पुं० पानी में रहनेवाला जंतु।
वारिज–संज्ञा पुं० १. कमल। २. मछली। ३. शंख। ४. घोंघा। ५. कौड़ी। ६. खरा सोना।
वारित–वि० जो मना किया गया हो। निषिद्ध। निवारित।
वारिद–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।
वारिधर–संज्ञा पुं० बादल। वारिद।
वारिधि–संज्ञा पुं० समुद्र।
वारिनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र।
वारियाँ–संज्ञा स्त्री० निछावर। बलि।
वारिरुह–संज्ञा पुं० कमल।
वारिवर्त*–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।
वारिवाह–संज्ञा पुं० बादल। मेघ।
वारिस–संज्ञा पुं० [अ०] उत्तराधिकारी। किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी होनेवाला व्यक्ति।
वारींद्र–संज्ञा पुं० समुद्र।
वारीट–संज्ञा पुं० हाथी।
वारी-फेरी–संज्ञा स्त्री० किसी प्रिय व्यक्ति पर कोई वस्तु निछावर करके देना। स्त्रियों का एक टोटका। दे० "वारफेर"।
वारीश–संज्ञा पुं० समुद्र।
वारुणी–संज्ञा स्त्री० १. मदिरा। शराब। २. वरुण की स्त्री। ३. उपनिषद्-विद्या। ४. पश्चिम दिशा। ५. एक पर्व, जिसमें गंगा-स्नान का विशेष माहात्म्य है।
वारुक–संज्ञा पुं० अग्नि। आग।
वारेंद्र–संज्ञा पुं० एक प्राचीन जनपद, जहाँ आजकल का राजशाही जिला है।
वार्ड–संज्ञा पुं० [अंग्र०] १. किसी उद्देश्य-विशेष से घेरकर बनाया या निश्चित किया हुआ स्थान। २. अस्पताल के विशेष कमरे। ३. मुहल्ले का विभाग-विशेष।
वार्डर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] जेल के अंदर का पहरेदार।
वार्ता–संज्ञा स्त्री० १. कथोपकथन। बातचीत। संवाद। २. वृत्तांत। हाल। ३. विषय। मामला। ४. वैश्यवृत्ति।
वार्त्तालाप–संज्ञा पुं० बात-चीत। कथोपकथन।
वार्त्तावह–संज्ञा पुं० दूत। संवाद ले जानेवाला।
वार्त्तावहन–संज्ञा पुं० संवाद (पत्र-व्यवहार आदि) ले आने और ले जाने का कार्य।
वार्त्तावहन-विभाग–संज्ञा पुं० वह सरकारी विभाग, जो डाक, तार, टेलीफोन आदि की व्यवस्था करता है।
वार्त्तिक–संज्ञा पुं० १. किसी ग्रंथ की आलोचनात्मक टीका। २. सूत्रों की टीका। ३. किसी ग्रंथ में कहे गए, न कहे गए या दो-चार बार कहे गए विषयों की स्पष्ट व्याख्या। ४. पाणिनि के व्याकरण का कात्यायन-द्वारा प्रसिद्ध भाष्य।
वार्द्धक्य–संज्ञा पुं० १. बुढ़ापा। २. वृद्धि।
वार्द्धि–संज्ञा पुं० समुद्र।
वार्मुच–संज्ञा पुं० बादल।
वार्य–वि० वारण या निवारण करने योग्य।
वार्वट–संज्ञा पुं० नौका।
वार्षिक–वि० वर्ष-संबंधी। प्रतिवर्ष होनेवाला। सालाना।
वार्षिला–संज्ञा स्त्री० ओला।
वार्ष्ण–संज्ञा पुं० कृष्णचन्द्र।
वार्ष्णेय–संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र।
वालंटियर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] स्वयंसेवक।
वाला–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उपजाति वृत्त।
प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक संबंध-सूचक प्रत्यय। जैसे—मकानवाला।
वालिद–संज्ञा पुं० [अ०] पिता। बाप।
वालिदा–संज्ञा स्त्री० [अ०] माता। माँ।
वालेय–संज्ञा पुं० १. पुत्र। २. गदहा।
वाल्कल–वि० छाल या वल्कल का बना हुआ।
वाल्दैन–संज्ञा पुं० [अ० वालिदैन] माता-पिता।
वाल्मीकि–संज्ञा पुं० एक भृगुवंशी मुनि, जो

रामायण के रचयिता और संस्कृत के आदि-कवि कहे जाते हैं।

वाल्मीकीय–वि० १. वाल्मीकि-संबंधी। २. वाल्मीकि का बनाया हुआ।

वावदूक–संज्ञा पुं० खूब बोलनेवाला। विख्यात वक्ता।

वावैला–संज्ञा पुं० [अ०] १. विलाप। रोना-पीटना। २. शोरगुल। हल्ला।

वाशन–संज्ञा पुं० १. पक्षियों का बोलना। २. मक्खियों का भिनभिनाना।

वि० चिल्लानेवाला। रोनेवाला। भिन-भिनानेवाला।

वाशि–संज्ञा पुं० अग्नि।

वाशिष्ठ–संज्ञा पुं० एक उपपुराण।

वि० वशिष्ठ-संबंधी। वशिष्ठ का।

वाष्प–संज्ञा पुं० १. भाप। २. आँसू। ३. लोहा।

वासंत–वि० १. वसंत का। वसंत-सम्बन्धी। २. वसंत ऋतु में होनेवाला।

वासंतक–वि० वसंत-सम्बन्धी।

वासंतिक–संज्ञा पुं० १. भाँड़। विदूषक। २. नाचनेवाला। नर्त्तक।

वि० वसंत-संबंधी।

वासंती–संज्ञा स्त्री० १. माधवी लता। २. जूही। ३. मदनोत्सव। ४. दुर्गा। ५. चौदह वर्णों का एक वृत्त।

वास–संज्ञा पुं० १. रहने का स्थान। निवास। गृह। घर। मकान। २. सुगंध। बू।

वासक–संज्ञा पुं० १. अड़ूसा नामक एक पौदा। २. महकनेवाला। सुगंध देने-वाला।

वासकसज्जा–संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और स्वयं सजकर बैठी हो।

वासतेय–वि० रहने लायक। निवास करने योग्य। रखने या शरण देने योग्य।

वासतेयी–संज्ञा स्त्री० रात।

वासन–संज्ञा पुं० [वि० वासित] १. वस्त्र। २. वास। ३. सुगंधित करना। ज्ञान।

वासना–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। कामना। २. भोग-विलास की इच्छा। ३. प्रत्याशा। ४. भावना। बुद्धिजन्य संस्कार। ५. स्मृति-ज्ञान।

वासर–संज्ञा पुं० दिवस। दिन।

वासरमणि–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

वासव–संज्ञा पुं० इंद्र। देवताओं का राजा।

वासवि–संज्ञा पुं० इंद्र के पुत्र अर्जुन।

वासित–वि० १. सुगंधित किया हुआ। २. कपड़े से ढका हुआ। ३. बासी।

वासिल–वि० [अ०] १. पहुँचाया हुआ। २. प्राप्त। मिला हुआ। ३. जो वसूल हुआ हो।

यौ०–वासिलबाकी = वसूल और बाकी रकम।

वासिष्ठ–वि० १. वसिष्ठ-संबंधी। २. वसिष्ठ-द्वारा रचा हुआ (ऋग्वेद का सातवाँ मण्डल)।

वासी–संज्ञा पुं० रहनेवाला।

वासु–संज्ञा पुं० विष्णु। परमात्मा।

वासुकी–संज्ञा पुं० १. सर्पों के राजा का नाम। २. आठ नागों में से दूसरा नागराज। पुराणों के अनुसार देवताओं ने मन्दर-पर्वत में वासुकी को रस्सी की तरह बाँधकर समुद्र-मंथन किया था।

वासुदेव–संज्ञा पुं० वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण।

वासुरा–संज्ञा स्त्री० १. हथिनी। २. रात्रि। ३. स्त्री। ४. जमीन। भूमि।

वास्कट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०–वेस्टकोट] बिना बाँह के केवल कमर तक का एक अँगरेजी पहनावा।

वास्तव–वि० सच। यथार्थ। असली।

वास्तविक–वि० सचमुच। सत्य। यथार्थ।

वास्तव्य–वि० रहने या बसने योग्य।

संज्ञा पुं० बस्ती। आबादी।

वास्ता–संज्ञा पुं० [अ०] १. सरोकार। संबंध। लगाव। २. स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।

वास्तु–संज्ञा पुं० १. निवास-योग्य स्थान। २. वह स्थान, जिस पर घर उठाया जाय। ३. घर। मकान। इमारत।

वास्तुकर्म—संज्ञा पुं० मकान आदि बनाने का काम। भवन-निर्माण-कार्य ।

वास्तुकला—संज्ञा स्त्री० इमारत आदि बनाने की कला या हुनर। भवन-निर्माण-कला। वास्तुविद्या।

वास्तुकाष्ठ—संज्ञा पुं० मकान, कुर्सी, अलमारी, मेज आदि बनाने के काम में आनेवाली लकड़ी।

वास्तुदेव—संज्ञा पुं० घर के देवता। गृहदेव।

वास्तु-पूजा—संज्ञा स्त्री० गृहदेव की पूजा, जो नवीन घर में गृह-प्रवेश के आरंभ में की जाती है।

वास्तु-विद्या—संज्ञा स्त्री० भवन-निर्माण-कला। वह विद्या, जिससे इमारत के संबंध की सारी बातों का ज्ञान होता है। वास्तु-कला।

वास्तुशास्त्र—संज्ञा पुं० दे० "वास्तुविद्या"।

वास्ते—अव्य० [अ०] लिए। निमित्त। कारण। हेतु।

वाह—अव्य० [फा०] १. प्रशंसा या आश्चर्य-सूचक शब्द। २. आनन्द या घृणासूचक शब्द।

संज्ञा पुं० १. सवारी। वाहन। २. लादकर ले जानेवाला। ढोनेवाला। ३. वायु। ४. घोड़ा। ५. भैंसा। ६. बैल।

वाहक—संज्ञा पुं० १. बोझ ढोने या खींचने-वाला। २. सारथी।

वाहन—संज्ञा पुं० सवारी।

वाहना—क्रि० स० १. वहन करना। ढोना। २. लादना। ३. हाँकना (गाड़ी आदि)। ४. हथियार चलाना।

वाहरिपु—संज्ञा पुं० भैंसा।

वाह-वाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लोगों की प्रशंसा। स्तुति। २. साधुवाद।

वाहि*—सर्व० उसे। उसको।

वाहित—वि० १. वहन किया हुआ। ढोया हुआ। २. बिताया हुआ।

वाहिनी—संज्ञा स्त्री० सेना। फौज। (प्राचीन समय में सेना का एक भेद, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे।)

वाहिनीपति—संज्ञा पुं० सेनापति।

वाहियात—वि० १. बेकार। रद्दी। व्यर्थ। २. बुरा। खराब।

वाही—वि० [अ०] १. वहन करनेवाला। ढोने या खींचनेवाला। २. ऊपर लेने-वाला। उठानेवाला।

वाही-तबाही—वि० [अ०] १. बेहूदा। २. आवारा। ३. अंडबंड। बे सिर-पैर का। वाहियात।

संज्ञा स्त्री० अंडबंड बातें। गाली-गलौज।

वाह्यांतर—वि० भीतर और बाहर का।

वाह्येंद्रिय—संज्ञा स्त्री० पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ, जिनका काम बाह्य विषयों को ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।

वाह्लीक—संज्ञा पुं० १. गांधार के पास का एक प्रदेश। २. वाह्लीक देश का घोड़ा।

विंगेश—संज्ञा पुं० अग्नि।

विंजन—संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

विंजाली—संज्ञा स्त्री० श्रेणी।

विंद—संज्ञा पुं० १. दे० "विंदु"। २. दिन का एक विशेष भाग। ३. लाभ।

विंदक*—संज्ञा पुं० १. प्राप्त करनेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।

विंदु—संज्ञा पुं० १. बूँद। जलकण। २. बुँदकी। बिंदी। ३. अनुस्वार। ४. शून्य। ५. एक बूँद परिमाण। ६. रेखा-गणित के अनुसार वह, जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। ७. बहुत छोटा टुकड़ा।

वि० १. ज्ञाता। जानकार। २. जानने योग्य।

विंदुमाधव—संज्ञा पुं० काशी की एक प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम।

विंदुर—संज्ञा पुं० बुँदकी।

विंदुराजि—संज्ञा पुं० एक तरह का साँप।

विंदुल—संज्ञा पुं० एक कीड़ा।

विंदुसार—संज्ञा पुं० चंद्रगुप्त के एक पुत्र, जो सम्राट् अशोक के पिता थे।

विंध*—संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत।

विंध्य—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी, जो भारत के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैली है।

विंध्यकूट–संज्ञा पुं० १. विंध्य पर्वत। २. अगस्त्य मुनि।

विंध्यचूलक–संज्ञा पुं० विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।

विंध्यवासिनी–संज्ञा स्त्री० देवी की एक प्रसिद्ध मूर्त्ति, जो मिर्जापुर जिले में विन्ध्याचल तीर्थ में है।

विंध्याचल–संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत। मिर्जापुर जिले में इस नाम का तीर्थ।

विंश–वि० बीसवाँ।

विंशत–वि० बीस। [समासान्त में]

विंशति–संज्ञा स्त्री० बीस की संख्या।

विंशतिबाहु–संज्ञा पुं० रावण। बीस बाँहवाला।

विंशोत्तरी–संज्ञा स्त्री० फलित ज्योतिष में मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

वि–उप० एक उपसर्ग, जो शब्द के पहले लगकर विशेष प्रकार के अर्थ देता है—अनेकरूपता, जैसे—विविध। प्रतिकूल भाव, जैसे—विक्रय; विपक्ष। विशेष अर्थ, जैसे—विकराल।

विकंपन–संज्ञा पुं० दे० "काँपना"।

विकंपित–वि० दे० "कंपित"।

विकच–वि० १. खिला हुआ। विकसित। २. बिना कच या बाल के।
संज्ञा पुं० बालों का समूह या लट।

विकट–वि० १. भयंकर। विकराल। भीषण। २. कठिन। मुश्किल। दुस्साध्य। दुर्गम।

विकर–संज्ञा पुं० १. रोग। व्याधि। २. तलवार के ३२ हाथों में से एक।

विकराल–वि० भयंकर। भीषण। डरावना।

विकर्त्तन–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. मंदार।

विकर्म–संज्ञा पुं० बुरा काम। मना किया हुआ कार्य। आचार के विरुद्ध।
वि० कर्मभ्रष्ट। अपने कर्त्तव्य से च्युत।

विकर्ष–संज्ञा पुं० तीर। बाण।

विकर्षण–संज्ञा पुं० १. आकर्षण। खिंचाव। २. हिस्सा। विभाग। ३. न रहने देना। रद्द करना। ४. दूर करना, जैसे—रीति, प्रथा या पद्धति का विकर्षण। ५. विधान आदि का अन्त करना। ६. प्राचीन काल का एक शास्त्र, जिसमें किसी को अपनी ओर आकृष्ट करने की विद्या का वर्णन है।

विकल–वि० १. बेचैन। विह्वल। व्याकुल। २. कलाहीन। ३. खंडित। अपूर्ण। ४. अस्वाभाविक। ५. असमर्थ।

विकलांग–वि० जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो। अंगहीन।

विकला–संज्ञा स्त्री० १. समय का एक बहुत छोटा भाग। २. कला का साठवाँ अंश।

विकलाना*–क्रि० अ० व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।

विकलास–संज्ञा पुं० एक प्राचीन बाजा।

विकलित–वि० बेचैन। दुखी। दे० "विकल"।

विकलेंद्रिय–वि० १. जिसकी इन्द्रियाँ वश में न हों। २. जिसकी कोई इन्द्रिय खराब हो।

विकल्प–संज्ञा पुं० १. भ्रम। धोखा। २. एक बात मन में बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच-विचार। विपरीत कल्पना। संकल्प या दृढ़-निश्चय का उलटा। ३. विशेष रूप से कल्पना। वह अवस्था, जिसमें कई विषयों या बातों में किसी एक को चुनने का अधिकार रहता है। ४. किसी विषय में कई प्रकार की विधियों का मिलना। ५. योगशास्त्रानुसार पाँच चित्तवृत्तियों में एक। ६. अवांतर कल्प। ७. एक काव्यालंकार, जिसमें दो विरुद्ध बातों को लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या वही। ८. समाधि का एक भेद। ९. व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक को इच्छानुसार लेना या मानना।

विकल्पित–वि० १. संदिग्ध। २. अनियमित।

विकल्मष–वि० पापरहित।

विकसन–संज्ञा पुं० [वि० विकसित] खिलना। फूटना।

विकसना–क्रि० अ० १. विकसित होना। खिलना (कलियों आदि का) प्रकट होना। २. मन प्रसन्न होना। प्रफुल्लित होना।

विकसाना–क्रि० स० 'विकसना' का सकर्मक रूप।

विकसित–वि० खिला हुआ। जिसका विकास हुआ हो।

विकस्वर–संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार, जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि साधारण बात से की जाती है।

विकार–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। बिगड़ना। खराबी। २. दोष। अवगुण। ३. मनोवेग या प्रवृत्ति। ४. मनोविकार। वासना। ५. उपद्रव। ६. किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। ७. परिणाम। ८. निरुक्त के प्रधान चार नियमों में से एक।

विकारी–वि० १. जिसमें विकार (दोष या खराबी) हुआ हो। विकारयुक्त। जिसमें कोई हेर-फेर हुआ हो। २. क्रोध आदि मनोविकारों से युक्त।

विकाल–संज्ञा पुं० १. अतिकाल। २. सायंकाल।

विकाश–संज्ञा पुं० १. प्रकाश। रोशनी। २. प्रसार। फैलाव। ३. आकाश। ४. खिलना। प्रस्फुटित होना। ५. उत्तरोत्तर वृद्धि। दे० "विकास"।

विकास–संज्ञा पुं० १. प्रसार। फैलाव। २. खिलना। प्रस्फुटित होना। ३. किसी पदार्थ का उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। विज्ञान में वह प्रक्रिया, जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी प्रारम्भिक अवस्था से धीरे-धीरे बढ़ती हुई उन्नत और पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है। विकासवाद। (अंग्रे०–इवाल्यूशन।)

विकासना*–क्रि० स० विकसित करना। प्रकट करना।
क्रि० अ० खिलना। प्रकट होना। दे० "विकसना"।

विकासवाद–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धान्त, जिसमें यह माना जाता है कि समस्त सृष्टि, जीव-जन्तु तथा वनस्पतियाँ आदि एक ही मूल तत्त्व से निकले और विकसित हुए हैं।

विकिर–संज्ञा पुं० १. चिड़िया। २. कुआँ।

विकिरण–संज्ञा पुं० बहुत-सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना या होना; जैसे आतशी शीशे से।

विकीर्ण–वि० १. चारों ओर फैला या बिखरा हुआ। छितराया हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर। संज्ञा पुं० स्वर के उच्चारण का एक दोष।

विकुंठ–वि० जो कुंठित न हो।
*संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ"।

विकूणिका–संज्ञा स्त्री० नासिका।

विकृत–वि० १. जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २. जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। ३. अपूर्ण या अधूरा। असाधारण। ४. अस्वाभाविक। ५. विद्रोही। रोगी।

विकृतचित्त–वि० मानसिक विकार या नशे आदि के कारण जिसका चित्त ठिकाने न हो।

विकृतस्वर–संज्ञा पुं० अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरनेवाले स्वर, जो संख्या में १२ हैं (संगीतशास्त्र)।

विकृति–संज्ञा स्त्री० १. विकार। खराबी। बिगड़ा हुआ रूप। २. रोग। बीमारी। ३. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप, जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। ४. परिणाम। ५. परिवर्त्तन। ६. मन में होनेवाला क्षोभ। ७ मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप।

विकृष्ट–वि० खींचा हुआ। आकृष्ट।

विकेश–वि० १. जिसके बाल खुले हों। २. बिना बालों का। गंजा।

विक्रम–संज्ञा पुं० १. बहादुरी। पराक्रम। २. बल। ताकत। ३. गति। ४. दे० "विक्रमादित्य"। ५. साठ संवत्सरों में से चौदहवाँ। ६. विष्णु।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

विक्रमण–संज्ञा पुं० चलना। कदम रखना।

विक्रमाजीत–संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।

विक्रमादित्य–संज्ञा पुं० उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा। विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द–संज्ञा पुं० विक्रमादित्य का चलाया हुआ संवत्। विक्रम संवत्।

विक्रमार्क—संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।

विक्रमी—संज्ञा पुं० १. पराक्रमी। प्रतापी। २. शक्तिशाली। बलवान्। बली। ३. विष्णु। ४. शेर।
वि० विक्रम का। विक्रम-संबंधी।

विक्रमी संवत्—संज्ञा पुं० भारत में प्रचलित एक प्रसिद्ध संवत्, जिसे उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य ने चलाया था। ईसवी सन् से ५७ वर्ष पूर्व यह चलाया गया था।

विक्रय—संज्ञा पुं० बेचना। बिक्री। मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना।

विक्रयक—संज्ञा पुं० बेचनेवाला।

विक्रयकर—संज्ञा पुं० दे० "बिक्रीकर"।

विक्रयण—संज्ञा पुं० बेचने की क्रिया।

विक्रयपत्र—संज्ञा पुं० वह कागज, जिस पर विक्रय-सम्बन्धी बातें लिखी गई हों। बैनामा।

विक्रयिक—संज्ञा पुं० दे० "विक्रयी"।

विक्रयिका—संज्ञा स्त्री० वह रसीद, जो खरीदनेवाले को बेचनेवाला देता है। नकद बिक्री का पुरजा (अंग्रे०—कैशमेमो)।

विक्रांत—संज्ञा पुं० १. शूर। वीर। बहादुर। २. तेजस्वी। प्रतापी। ३. साहस। हिम्मत। ४. व्याकरण में एक प्रकार की संधि, जिसमें विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है। ५. वैक्रांत मणि।

विक्रायक—संज्ञा पुं० बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रिया—संज्ञा स्त्री० विकार। किसी क्रिया के विरुद्ध होनेवाली क्रिया।

विक्रियोपमा—संज्ञा स्त्री० एक उपमालंकार, जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय के अवलंबन का वर्णन होता है।

विक्रीत—वि० जो बेच दिया गया हो।

विक्रुष्ट—संज्ञा पुं० निष्ठुर। कठोर। निर्दय।

विक्रेता—संज्ञा पुं० बेचनेवाला। विक्रयी।

विक्रेय—वि० बेची जानेवाली वस्तु। बिकाऊ।

विक्लव—वि० विह्वल। बेचैन।

विक्षत—वि० घायल। जख्मी।

विक्षिप्त—वि० १. फेंका या छितराया हुआ। २. जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। ३. व्याकुल। विकल।
संज्ञा पुं० योग में चित्त की एक अवस्था, जिसमें चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।

विक्षिप्तता—संज्ञा स्त्री० पागलपन।

विक्षुब्ध—वि० जिसका मन चंचल या परेशान हो। क्षुब्ध। जिसम क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।

विक्षेप—संज्ञा पुं० १. फेंकना। डालना। २. इधर-उधर हिलाना। झटका देना। ३. (धनुष की डोरी) खींचना। चिल्ला चढ़ाना। ४. मन को इधर-उधर भटकाना। संयम का उलटा। ५. बाधा। विघ्न। ६. एक प्रकार का अस्त्र, जो फेंककर चलाया जाता था।

विक्षेपण—संज्ञा पुं० १. इधर-उधर फेंकने का कार्य। २. विघ्न। बाधा।

विक्षोभ—संज्ञा पुं० मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ।

विखान*—संज्ञा पुं० विषाण। सींग।

विख्यात—वि० प्रसिद्ध। मशहूर।

विख्याति—संज्ञा स्त्री० प्रसिद्धि। शोहरत। नामवरी।

विख्यापन—संज्ञा पुं० प्रसिद्ध करना। मशहूर करना।

विगंध—वि० १. बदबूदार। २. गंधरहित।

विगत—वि० १. बीता हुआ। जो बीत चुका हो। विशेष रूप से गत। जो अभी तुरन्त बीता है, उसके ठीक पहलेवाला, जैसे—विगत रविवार यानी बीते हुए रविवार से पहलेवाला रविवार। २. रहित। विहीन।

विगता—वि० १. पर पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री०। २. वह स्त्री, जो विवाह के योग्य न रह गई हो।

विगति—संज्ञा स्त्री० बुरी दशा। दुर्गति।

विगम—संज्ञा पुं० १. प्रस्थान। २. समाप्ति। नाश। ३. मोक्ष।

विगर्हण—संज्ञा पुं० डाँट-फटकार। धिक्कार। भर्त्सना। तिरस्कार।

विगर्हणा—संज्ञा स्त्री० धिक्कार। भर्त्सना। निन्दा। तिरस्कार। डाँट-फटकार।

विगर्हित—वि० १. बुरा। खराब। २. जिसकी भर्त्सना या निन्दा की गई हो। निषिद्ध। त्याज्य।

विगर्ह्य—वि० निन्दा करने योग्य।

विगलित—वि० १. जो गल या गिर गया हो। २. ढीला पड़ा हुआ। शिथिल। ३. बिगड़ा हुआ।

विगाथा—संज्ञा स्त्री० आर्य्या छंद का एक भेद। विग्गाहा। उद्गीति।

विगुण—वि० बिना गुण का। निर्गुण।

विग्रह—संज्ञा पुं० १. विरोध। कलह। लड़ाई-झगड़ा। २. युद्ध। समर। ३. विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना। ४. आकृति। शकल। ५. शरीर। ६. मूर्त्ति। ७. दूर या अलग करना। ८. विभाग। ९. यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना (व्याकरण)। १०. शिव। ११. मूर्त्ति। १२. शृंगार। सजावट। १३. सांख्य के अनुसार कोई तत्त्व।

विग्रही—संज्ञा पुं० १. लड़ाई झगड़ा करनेवाला। २. युद्ध करनेवाला।

विघटन—संज्ञा पुं० १. अलग-अलग करना। तोड़ना। २. समाप्त करना (जैसे किसी संस्था या संघ का विघटन) ३. नष्ट करना। तोड़ना-फोड़ना।

विघटिका—संज्ञा स्त्री० समय का एक छोटा मान। घड़ी का २४वाँ भाग।

विघटित—वि० जो तोड़ दिया गया हो। तोड़ा-फोड़ा हुआ। नष्ट।

विघट्टन—संज्ञा पुं० १. तोड़ना। २. पटकना। ३. रगड़ना।

विघट्टित—वि० १. खुला हुआ। २. तोड़ा फोड़ा हुआ। ३. समाप्त किया गया। ४. नष्ट किया हुआ।

विघन—संज्ञा पुं० १. हथौड़ा। घन। २. चोट पहुँचाना। ३. इन्द्र। ४. दे० "विघ्न"।

विघर्षण—संज्ञा पुं० अच्छी तरह रगड़ने की क्रिया।

विघात—संज्ञा पुं० १. चोट। प्रहार। २. हत्या। नाश। ३. बाधा। रुकावट। ४. असफलता।

विघातक—संज्ञा पुं० विघ्न या बाधा डालने वाला। हत्या करनेवाला।

विघातन—संज्ञा पुं० विघात करने की क्रिया। हत्या करना।

विघाती—संज्ञा पुं० हत्यारा। घातक।

विघूर्णिका—संज्ञा स्त्री० नाक। नासिका।

विघूर्णन—संज्ञा पुं० चक्कर देना। चारों ओर घुमाना।

विघ्न—संज्ञा पुं० अड़चन। बाधा। रुकावट।

विघ्नकारी—संज्ञा पुं० विघ्न या बाधा डालने वाला।

विघ्नजित्—संज्ञा पुं० १. गणेश। २. बाधाओं पर विजय पानेवाला।

विघ्नविनाशक—संज्ञा पुं० १. गणेश। २. विघ्नों को दूर या नाश करनेवाला।

विघ्नविनायक—संज्ञा पुं० गणेश।

विघ्नेश—संज्ञा पुं० गणेश।

विचकित—वि० घबराया हुआ।

विचक्षण—वि० १. चमकता हुआ। २. निपुण। पारदर्शी। ३. पंडित ; विद्वान्। ४. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।

विचच्छन—संज्ञा पुं० दे० "विचक्षण"।

विचय—संज्ञा पुं० १. एकत्र या इकट्ठा करना। २. परीक्षा करना। ३. चुनना।

विचयन—संज्ञा पुं० १. इकट्ठा करना। २. परीक्षा करना। ३. चुनना।

विचरण—संज्ञा पुं० घूमना-फिरना। भ्रमण करना। पर्य्यटन करना।

विचरन*—संज्ञा पुं० दे० "विचरण"।

विचरना—क्रि० अ० घूमना-फिरना। भ्रमण करना।

विचल—वि० १. जो स्थिर न हो। अस्थिर। २. चंचल। अधीर। ३. प्रतिज्ञा या संकल्प से टूटा हुआ। स्थान से हटा हुआ।

विचलता—संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. घबराहट। अस्थिरता।

विचलना*†—क्रि० अ० १. अपने स्थान से हट जाना। २. अधीर होना। घबराना। ३. प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ न रहना।

विचलाना*†–क्रि० स० विचलित करना।

विचलित–वि० १. अस्थिर। चंचल। क्षुब्ध। २. प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

विचार–संज्ञा पुं० १. वह जो मन से सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चित किया जाय। २. मन में उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। इरादा। ३. मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारक–संज्ञा पुं० [स्त्री० विचारिका] १. विचार करनेवाला। २. फैसला करनेवाला। न्यायकर्त्ता। न्यायाधीश। ३. नेता। ४. गुप्तचर।

विचारकर्त्ता–संज्ञा पुं० विचार करनेवाला। निर्णय करनेवाला। दे० "विचारक"।

विचारणा–संज्ञा स्त्री० विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय–वि० १. विचार करने योग्य। चिंत्य। जिस पर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। २. जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। ३. संदिग्ध।

विचारना–क्रि० अ० १. विचार करना। सोचना। समझना। २. पूछना। ३. ढूंढ़ना। पता लगाना।

विचारपति–संज्ञा पुं० न्यायाधीश। विचारक।

विचारवान्–संज्ञा पुं० दे० "विचारशील"। अच्छी तरह से सोचने-समझनेवाला। बुद्धिमान्।

विचारशक्ति–संज्ञा स्त्री० सोचने या भला-बुरा पहचानने की शक्ति।

विचारशील–संज्ञा पुं० जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्।

विचारशीलता–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमत्ता। भली भाँति सोचना-समझना।

विचारालय–संज्ञा पुं० न्यायालय। कचहरी। अदालत।

विचारित–वि० १. विचार किया हुआ। २. जिस पर विचार हो चुका हो। निर्णय किया हुआ। निर्णीत।

विचारी–संज्ञा पुं० १. विचार करनेवाला। २. छूतछात माननेवाला।

• दे० "विचारणीय"।

विचालन–संज्ञा पुं० १. हटाना। २. नष्ट करना।

विचिंतन–संज्ञा पुं० चिन्ता करना।

विचिंतनीय–वि० चिंता करने या सोचने योग्य।

विचिंत्य–वि० १. चिंतन करने योग्य। २. संदिग्ध।

विचिकित्सा–संज्ञा स्त्री० संदेह। शक। किसी विषय में कुछ निश्चय करने के पहले उत्पन्न संदेह।

विचित–वि० जिसका अन्वेषण किया जाय।

विचिति–संज्ञा स्त्री० १. सोचना। विचारना। २. अनुसन्धान।

विचित्त–वि० १. बेहोश। अचेत। २. जिसका चित्त ठिकाने न हो।

विचित्र–वि० १. अद्भुत। विलक्षण। अजीब। २. कई रंगों या वर्णोंवाला। ३. विस्मित या चकित करनेवाला।

संज्ञा पुं० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।

विचित्रता–संज्ञा स्त्री० १ विलक्षण या अजीब होने का भाव। २. रंग-बिरंगे होने का भाव।

विचित्रदेह–संज्ञा पुं० १. रँगा हुआ शरीर। २. विचित्र ढंग से सजाया हुआ शरीर। ३. बादल।

विचित्रवीर्य्य–संज्ञा पुं० चंद्रवंशी राजा शांतनु के पुत्र का नाम।

विचेतन–वि० बेहोश। अचेत। संज्ञाहीन।

विचेता–संज्ञा पुं० १. घबराया हुआ। २. बेहोश। ३. मूर्ख।

विचेष्ट–वि० १. चेष्टारहित। प्रयत्न न करनेवाला। निश्चेष्ट। २. इच्छा-रहित। निस्पृह।

विचेष्टा–संज्ञा स्त्री० बुरी चेष्टा करना।

विच्छर्दक–संज्ञा पुं० १. देवमंदिर। २. प्रासाद। महल।

विच्छल–संज्ञा पुं० बेंत की लता।

विच्छाय–वि० जिसकी छाया न पड़ती हो। श्रीहीन।

विच्छित्ति–संज्ञा स्त्री० १. विच्छेद। अलगाव। २. काटकर अलग करना। ३. कमी। त्रुटि। ४. बेढंगापन। ५. रंगों आदि से शरीर को चित्रित करना। ६. कविता में यति। ७. साहित्य में एक हाव, जिसमें स्त्री थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छिन्न–वि० १. जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। विभक्त। २. जुदा। अलग। छिन्न-भिन्न। जिसका विच्छेद हो गया हो। जिसका अन्त हो गया हो। ३. कुटिल।
संज्ञा पुं० योग में चारों क्लेशों की वह अवस्था, जिसमें बीच में उनका विच्छेद हो जाता है।

विच्छेद–संज्ञा पुं० [वि० विच्छेदक] १. वियोग। विरह। काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २. क्रम का बीच से टूट जाना। ३. टुकड़े-टुकड़े करना। ४. नाश। ५. अवकाश। ६. कविता में यति। ७. पुस्तक का परिच्छेद।

विच्छेदन–संज्ञा पुं० १. काट या छेदकर अलग करना। २. नष्ट करना।

विच्युत–वि० अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत।

विच्युति–संज्ञा स्त्री० १. गिर पड़ना। च्युत होना। २. गर्भपात।

विछलना*†–क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

विछेव*–संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

विछोई*†–संज्ञा पुं० दे० "वियोगी"।

विछोह*†–संज्ञा पुं० १. वियोग। अपने प्रिय जनों से अलग होना। २. अलग होने का मोह।

विजन–वि० एकांत। निर्जन। ऐसा स्थान, जहाँ कोई आदमी न हो। एकान्त स्थान।

विजनता–संज्ञा स्त्री० एकान्त होने का भाव। निर्जनता।

विजनन–संज्ञा पुं० जनना। प्रसव। बच्चा पैदा करना।

विजना*†–संज्ञा पुं० पंखा।

विजन्मा–संज्ञा पुं० दोगला। जारज।

विजय–संज्ञा स्त्री० जीत। जय। फतह। युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत।

विजयक–संज्ञा पुं० सदा जीतनेवाला।

विजयदशमी–संज्ञा स्त्री० दे० "विजया दशमी"।

विजय-पताका–संज्ञा स्त्री० जीत के समय फहराया जानेवाला झंडा या ध्वजा।

विजय-यात्रा–संज्ञा स्त्री० किसी पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जानेवाली यात्रा।

विजयलक्ष्मी, विजयश्री–संज्ञा स्त्री० विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयशील–वि० सदा जीतनेवाला।

विजया–संज्ञा स्त्री० १. भाँग। सिद्धि। २. दुर्गा। ३. श्रीकृष्ण की माला का नाम। ४. दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद। ५. आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त। ६. दे० "विजयादशमी"। दशहरा।

विजयादशमी–संज्ञा स्त्री० दशहरा। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी, जिस दिन राम ने रावण को मारकर लंका पर विजय प्राप्त की थी और जो हिंदुओं का बहुत बड़ा त्योहार है।

विजयी–संज्ञा पुं० [स्त्री० विजयिनी] विजय प्राप्त करनेवाला। जीतनेवाला। विजेता।

विजयोत्सव–संज्ञा पुं० १. विजया दशमी का उत्सव। २. वह उत्सव, जो विजय प्राप्त करने पर होता है।

विजर–वि० जिसे बुढ़ापा न आता हो। नवीन।

विजल–वि० बिना जल का। जलरहित। संज्ञा पुं० सूखा। अनावृष्टि।

विजल्प–संज्ञा पुं० व्यर्थ की बकवाद।

विजोग*–संज्ञा पुं० दे० "वियोग"।

विजात–संज्ञा पुं० दोगला। दूसरे से उत्पन्न।

विजाता–संज्ञा स्त्री० १. दोगली सन्तान। २. नवजात शिशु की माता। जच्चा।

विजाति–वि० दूसरी या निम्न जाति।

विजातीय–वि० दूसरी जाति का।

विजानु–संज्ञा पुं० तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक हाथ।

विज़ारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वजीर का पद। मंत्रित्व।

विजिगीषा–संज्ञा स्त्री० १. विजय की अभिलाषा। जीतने की इच्छा। २. वह इच्छा, जिससे मनुष्य यह चाहता है कि उसे कोई पेट पालने में असमर्थ न कहे। ३. उत्कर्ष।

विजिगीषु–वि० १. विजय की इच्छा करनेवाला। उत्साही। २. योद्धा। प्रतिद्वन्द्वी।

विज़िटिंग कार्ड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] संज्ञा-पत्र। एक छोटा कार्ड, जिस पर लोग अपना नाम और पता छपा लेते हैं और किसी विशिष्ट व्यक्ति से भेंट करने के लिए जब वे जाते हैं, तब अपने आने की सूचना के रूप में उसे उसके पास भेज देते हैं।

विजित–संज्ञा पुं० १. जो जीत लिया गया हो। २. जीता हुआ (देश)।

विजृंभण–संज्ञा पुं० १. जँभाई लेना। २. धनुष की डोरी खींचना। ३. (भौं) सिकोड़ना।

विजृंभा–संज्ञा स्त्री० जँभाई।

विजेता–संज्ञा पुं० जीतनेवाला। जिसने विजय पाई हो।

विजेय–वि० जीता जाने योग्य।

विजै*†–संज्ञा स्त्री० दे० "विजय"।

विजैसार–संज्ञा पुं० साल की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। विजयसार।

विजोर–वि० कमजोर।

विजोहा–संज्ञा पुं० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। विमोहा। विज्जोहा।

विज्जल–संज्ञा पुं० एक तरह का बाण।

विज्जु, विज्जुलता*–संज्ञा स्त्री० दे० "विद्युत्"। बिजली।

विज्जुल–संज्ञा पुं० १. दालचीनी। २. छिलका।

विज्जोहा–संज्ञा पुं० दे० "विजोहा"।

विज्ञ–वि० [संज्ञा विज्ञता] १. जानकार। २. बुद्धिमान्। ३. विद्वान्। पंडित।

विज्ञता–संज्ञा स्त्री० १. जानकारी। २. बुद्धिमत्ता। ३. बुद्धिमानी। चतुराई।

विज्ञत्व–संज्ञा पुं० दे० "विज्ञता"।

विज्ञप्त–वि० बतलाया हुआ। सूचित।

विज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० सूचित करने की क्रिया। प्रकाशित सूचना। किसी कार्यालय या विभाग की प्रकाशित सूचना। विज्ञापन। इश्तहार।

विज्ञात–वि० १. जाना हुआ। २. प्रसिद्ध।

विज्ञातव्य–वि० जानने योग्य।

विज्ञाता–संज्ञा पुं० १. जाननेवाला। २. विज्ञान जाननेवाला। ३. आत्मा और परमात्मा के विषय में जानकार।

विज्ञान–संज्ञा पुं० १. विशेष ज्ञान। किसी विषय के सिद्धान्तों का विशेष रूप से ज्ञान। किसी विषय का शास्त्रीय ज्ञान। शास्त्र। २. माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ३. ब्रह्म। ४. आत्मा। ५. निश्चयात्मिका वुद्धि। ६. मोक्ष।

विज्ञानमय कोष–संज्ञा पुं० ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह (वेदांत)।

विज्ञानवाद–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करनेवाला सिद्धान्त। २. आधुनिक विज्ञान की बातों को प्रतिपादित करनेवाला सिद्धान्त।

विज्ञानवादी–संज्ञा पुं० १. आधुनिक विज्ञान-शास्त्र का पक्षपाती। २. योग का अनुसरण करनेवाला। योगी।

विज्ञानी–संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा ज्ञानी। पंडित। चतुर। किसी विषय का अच्छा ज्ञान रखनेवाला। २. वैज्ञानिक।

विज्ञापक–संज्ञा पुं० विज्ञापन करनेवाला। सूचना प्रकाशित करनेवाला।

विज्ञापन–संज्ञा पुं० [वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय] १. जानकारी कराना। सूचना देना। २. वह पत्र, जिसके द्वारा लोगों को कोई सूचना दी जाय। इश्तहार।

विज्ञापना–संज्ञा स्त्री० जतलाना। सूचना देना। दे० "विज्ञापन"।

विज्ञापनीय–संज्ञा पुं० विज्ञापन करने योग्य। सूचित करने योग्य।

विज्ञापी–वि० सूचना देनेवाला।

विज्ञेय–वि० समझने योग्य।

विज्वर–वि० १. जिसका ज्वर या बुखार छूट गया हो। २. निश्चिन्त। बेफिक्र।

विटंक–वि० मनोहर। सुंदर।

बिट–संज्ञा पुं० १. कामुक। लंपट। २. वेश्यागामी। ३. धूर्त। चालाक। ४. साहित्य में धूर्त और स्वार्थी नायक। ५. विष्ठा। मल।
बिटप–संज्ञा पुं० १. वृक्ष। पेड़। २. वृक्ष की शाखा।
बिटपी–संज्ञा पुं० जिसमें नई शाखाएँ निकली हों। पेड़।
बिटपीमृग–संज्ञा पुं० बन्दर।
बिट-लवण–संज्ञा पुं० साँचर नमक।
बिट्ठल–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत में विष्णु की एक मूर्त्ति का नाम।
बिडंबना–संज्ञा स्त्री० [वि० विडंबनीय, विडंबित] १. किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिए उसकी नकल उतारना। २. हँसी उड़ाना। उपहास करना।
बिडरना*†–क्रि० अ० १. तितर-बितर होना। २. भागना। दौड़ना।
बिडराना*†–क्रि० स० दे० "बिडारना"।
बिडारक–संज्ञा पुं० बिल्ली।
बिडारना–क्रि० स० १. तितर-बितर करना। छितराना। २. नष्ट करना। ३. भगाना। दौड़ाना।
बिड़ाल–संज्ञा पुं० बिल्ली।
बिड़ालक–संज्ञा पुं० बिल्ली।
बिड़ाली–संज्ञा स्त्री० बिल्ली।
बिड़ौजा–संज्ञा पुं० इंद्र का एक नाम।
बितंडा–संज्ञा० स्त्री १. व्यर्थ का झगड़ा या कहा-सुनी। २. शास्त्रार्थ में दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना।
बितंत*–संज्ञा पुं० वह बाजा, जिसमें तार न लगे हों।
बितंस–संज्ञा पुं० छोटे जानवरों और चिड़ियों को फँसाने का जाल।
बित*–वि० १. जाननेलवाा। ज्ञाता। २. चतुर। निपुण।
बितत–वि० विस्तृत। फैला हुआ।
बितताना*†–क्रि० अ० व्याकुल होना। बेचैन होना।
बितति–संज्ञा स्त्री० फैलाव। बिस्तार।
बितथ–वि० १. झूठ। जिसमें कोई तथ्य न हो। २. व्यर्थ।
बितथ्य–वि० मिथ्या। झूठ।
बितद्रु–संज्ञा पुं० झेलम नदी।
बितनु–संज्ञा पुं० कामदेव।
वि० बहुत सूक्ष्म। बहुत छोटा।
बितपन्न*–संज्ञा पुं० किसी काम में कुशल। दक्ष। प्रवीण।
वि० घबराया हुआ। व्याकुल।
बितरक–संज्ञा पुं० बाँटनेवाला।
बितरण–संज्ञा पुं० बाँटना। देना।
बितरन*–संज्ञा पुं० दे० "वितरण"।
बितरना*–क्रि० स० बाँटना।
बितरित–वि० बाँटा हुआ।
बितर्क–संज्ञा पुं० १. एक तर्क के बाद दूसरा तर्क। २. संदेह। शक। अनुमान। ३. एक अर्थालंकार, जिसमें संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है।
बितर्क्य–वि० १. जिसमें संदेह न हो। २. देखने में विलक्षण।
बितर्दि, बितर्दिका–संज्ञा स्त्री० वेदी। मंच।
बितल–संज्ञा पुं० पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा पाताल।
बितस्ता–संज्ञा स्त्री० झेलम नदी।
बितस्ति–संज्ञा पुं० बालिश्त। बित्ता।
बिताड़न–संज्ञा पुं० दे० "ताड़ना"।
बितान–संज्ञा पुं० १. विस्तार। फैलाव। २. तंबू। बड़ा चँदोबा या खेमा। ३. समूह। संघ। जमाव। ४. अवसर। अवकाश। ५. घृणा। ६. घाव पर बाँधने का एक बंधन। ७. शून्य। खाली स्थान। ८. एक प्रकार का छंद। एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण और दो गुरु होते हैं। ९. यज्ञ।
बितानक–संज्ञा पुं० १. खेमा। तंबू। २. समूह। ३. धन।
बितानना*†–क्रि० स० १. तानना। फैलाना। २. शामियाना आदि तानना।
बितामस–संज्ञा पुं० उजाला।
बितीत*†–वि० दे० "व्यतीत"।
बितुंड–संज्ञा पुं० हाथी।
बितुष–संज्ञा पुं० एक भूतयोनि।
बितुष्ट–वि० असंतुष्ट।

वितृण–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ घास या तृण न हो।
वितृप्त–वि० १. असंतुष्ट। २. जिसकी प्यास न बुझी हो।
वितृष–संज्ञा पुं० तृष्णा से रहित।
वितृष्ण–संज्ञा पुं० इच्छारहित। निस्पृह।
वित्त–संज्ञा पुं० धन। संपत्ति।
वि० १. सोचा हुआ। समझा हुआ। २. पाया हुआ। ३. प्रसिद्ध।
वित्तप, वित्तपति–संज्ञा पुं० कुबेर।
वित्तमंत्री–संज्ञा पुं० राज्य का वह मंत्री, जिसके अधीन सरकारी अर्थविभाग हो। अर्थ-मंत्री।
वित्तविधेयक–संज्ञा पुं० राज्य का वह विधेयक, (प्रस्तावित विधान) जो आगामी वर्ष के आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखता है और जो विधान-सभा में स्वीकृति के लिए पेश किया जाता है। (अंग्रे०–फाइनेन्स बिल)
वित्तहीन–संज्ञा पुं० दरिद्र। गरीब।
वित्ति–संज्ञा पुं० १. विचार। ज्ञान। २. सम्भावना।
वित्तीय–वि० १. लाभ। २. वित्त-सम्बन्धी। वित्त का। अर्थ-सम्बन्धी। आर्थिक।
वित्रप–वि० बेहया।
वित्रास–संज्ञा पुं० डर।
विथक–संज्ञा पुं० १. न थकनेवाला। २. हवा।
विथकना*†–क्रि० अ० १. थकना। शिथिल होना। २. मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।
विथकित*–वि० १. थका हुआ। शिथिल। २. आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप।
विथराना*–क्रि० स० १. फैलाना। २. इधर-उधर करना।
विथा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
विथारना*–क्रि० स० फैलाना।
विथित*–वि० दे० "व्यथित"। दुःखी।
विथुर–संज्ञा पुं० १. चोर। २. राक्षस। ३. क्षय। ४. दे० "विधुर"।
वि० १. थोड़ा। अल्प। २. दुखित।
विदग्ध–वि० जला हुआ।
संज्ञा पुं० १. पंडित। विद्वान्। २. चतुर। चालाक। ३. रसिक पुरुष।
विदग्धता–संज्ञा स्त्री० १. पांडित्य। विद्वत्ता। २. जलना।
विदग्धा–संज्ञा स्त्री० वह परकीया नायिका जो चतुराई से पर-पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
विदथ–संज्ञा पुं० १. यज्ञ। २. योगी।
विदमान*–अव्य० दे० "विद्यमान"।
विदर–संज्ञा पुं० फाड़ना। विदारण करना।
विदरण–संज्ञा पुं० फाड़ना।
विदरना*–क्रि० अ० फटना।
क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना।
विदर्भ–संज्ञा पुं० आधुनिक बरार-प्रदेश का प्राचीन नाम।
विदर्भराज–संज्ञा पुं० दमयंती के पिता राजा भीष्मक, जो विदर्भ के राजा थे।
विदल–वि० १. बिना दल का। २. खिला हुआ।
विदलन–संज्ञा पुं० १. मलने-दलने या दबाने की क्रिया। २. फाड़ना। टुकड़े-टुकड़े करना।
विदलना*–क्रि० स० १. नष्ट करना। २. कुचलना या मसलना। रौंदना।
विदलित–वि० १. अच्छी तरह दला हुआ। मला हुआ। २. फाड़ा हुआ। विदीर्ण या टुकड़े टुकड़े करना।
विदा–संज्ञा स्त्री० १. प्रस्थान। रवाना होना। २. कहीं से चलने की अनुमति।
विदाई–संज्ञा स्त्री० १. विदा होने की क्रिया या भाव। रुखसती। प्रस्थान। २. विदा होने की आज्ञा या अनुमति। ३. विदा होने के समय दिया जानेवाला धन आदि।
विदार–संज्ञा पुं० दे० "विदारण"।
विदारक–वि० १. फाड़ डालनेवाला। २. नष्ट करनेवाला।
विदारण–संज्ञा पुं० १. फाड़ना। २. मार डालना।
विदारना*–क्रि० स० फाड़ना।
विदारी–वि० फाड़नेवाला।
विदारीकंद–संज्ञा पुं० भुई-कुम्हड़ा।
विदाह–संज्ञा पुं० जलन।

विदाही—संज्ञा पुं० जलन पैदा करनेवाला। वह पदार्थ, जिससे जलन पैदा हो।
विदित—वि० जाना हुआ। ज्ञात।
विदिश्—संज्ञा स्त्री० दो दिशाओं के बीच का कोना। कोण।
विदीर्ण—वि० १. बीच से फाड़ा हुआ। २. टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। नष्ट। ३. मार डाला हुआ। निहत।
विदु—संज्ञा पुं० १. हाथी के मस्तक के नीचे का भाग। २. घोड़े के कान के नीचे का भाग।
विदुर—संज्ञा पुं० १. जानकार। ज्ञाता। २. पंडित। ज्ञानी। ३. धृतराष्ट्र के छोटे भाई और कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री, जो राजनीति तथा धर्मनीति में बहुत निपुण थे।
विदुष्—संज्ञा पुं० विद्वान्। पंडित।
विदुषी—संज्ञा स्त्री० पढ़ी-लिखी स्त्री।
विदूर—वि० जो बहुत दूर हो।
संज्ञा पुं० दे० "वैदूर्य्य" (मणि)।
विदूषक—संज्ञा पुं० १. तरह-तरह की नकलें अथवा बातचीत करके दूसरों को हँसानेवाला। मसखरा। २. एक प्रकार का नायक, जो अपने परिहास आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है। ३. भाँड़। ४. दूसरों की निन्दा करनेवाला। ५. विषयी। कामुक।
विदूषण—संज्ञा पुं० दोष लगाना। ऐब बताना।
विदूषना—क्रि० स० १. दोष लगाना। २. सताना। दुःख देना।
क्रि० अ० दुःखी होना।
विदेश—संज्ञा पुं० अपने देश को छोड़कर दूसरा देश। परदेश।
विदेशी—वि० १. दूसरे देश का। दूसरे देश से सम्बन्ध रखनेवाला। २. दूसरे देश का निवासी। परदेशी।
विदेह—संज्ञा पुं० १. बिना शरीर का। २. राजा जनक। ३. मिथिला का प्राचीन नाम।
वि० संज्ञा-रहित। बिना शरीर का। बेसुध।
विदेहजा—संज्ञा स्त्री० सीता।
विदेही—संज्ञा पुं० दे० "विदेह"।
विदोष—वि० बिना दोष का। निर्दोष।
विद्—संज्ञा पुं० किसी विषय को अच्छी तरह जाननेवाला। जानकार। पंडित। विद्वान्।
विद्ध—वि० १. बीच में से छेद किया हुआ। २. फेंका हुआ। ३. जिसको चोट लगी हो। ४. टेढ़ा। ५. सटा हुआ। आबद्ध। बँधा हुआ। ६. तुल्य। समान।
विद्यमान—वि० उपस्थित। मौजूद।
विद्यमानता—संज्ञा स्त्री० विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।
विद्या—संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। शिक्षा आदि द्वारा प्राप्त ज्ञान। इल्म। २. शास्त्र-ज्ञान। वे शास्त्र आदि, जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यथा—चारों वेद, छहों अंग, मीमांसा, न्याय, धर्म्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र। ३. दुर्गा।
विद्यागुरु—संज्ञा पुं० १. शिक्षक। २. विद्वान्।
विद्यादान—संज्ञा पुं० शिक्षा देना। विद्या पढ़ाना।
विद्याधर—संज्ञा पुं० [स्त्री० विद्याधरी] १. विद्वान्। पंडित। २. एक प्रकार की देवयोनि, जिसके अंतर्गत खेचर, गंधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। ३. एक प्रकार का अस्त्र।
विद्यापीठ—संज्ञा पुं० शिक्षा का बड़ा केन्द्र। महाविद्यालय।
विद्यारंभ—संज्ञा पुं० वह संस्कार, जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है।
विद्यार्थी—संज्ञा पुं० विद्या पढ़नेवाला। छात्र। शिष्य। शिक्षार्थी।
विद्यालय—संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।
विद्यावान्—संज्ञा पुं० दे० "विद्वान्"।
विद्युत्—संज्ञा स्त्री० बिजली।
विद्युत्-चालक—वि० [सं० स्त्री० विद्युत्-चालकता] वह पदार्थ, जिसके लगने से बिजली चलने लगे। वह पदार्थ, जिसके एक सिरे पर बिजली लगते ही दूसरे सिरे तक पहुँच जाय; जैसे धातुएँ।
विद्युत्मापक—संज्ञा पुं० वह यंत्र या औजार,

जिससे बिजली की शक्ति और गति मालूम की जाय।

विद्युन्माला–संज्ञा स्त्री० बिजली का समूह या सिलसिला।

विद्युल्लता–संज्ञा स्त्री० बिजली।

विद्योत्–संज्ञा स्त्री० बिजली। प्रभा।

विद्र–संज्ञा पुं० छेद।

विद्रढ–वि० १. दृढ़। मजबूत। २. मोटा-ताजा।

विद्रधि–संज्ञा पुं०, स्त्री० पेट के अंदर का एक प्रकार का घातक फोड़ा।

विद्रव–संज्ञा पुं० १. बुद्धि। २. भागना। ३. डर। ४. लड़ाई। ५. बहना। ६. पिघलना। ७. निंदा। शिकायत।

विद्राव–संज्ञा पुं० १. चूना। २. पिघलना। गलना। ३. क्षरण।

विद्रावण–संज्ञा पुं० १. भागना। २. पिघलना। गलना। ३. उड़ना। ४. फाड़ना। ५. नाश करनेवाला।

विद्रुम–संज्ञा पुं० मूंगा।

विद्रोह–संज्ञा पुं० राज्य की सरकार को उलटने के लिए या राज्य को हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला भारी उपद्रव। बलवा। बगावत। विप्लव।

विद्रोही–संज्ञा पुं० १. बागी। विद्रोह करनेवाला। २. सरकार को उपद्रव-द्वारा उलटनेवाला। राज्य का अनिष्ट करनेवाला।

विद्वत्ता–संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।

विद्वान्–संज्ञा पुं० बहुत अधिक विद्या जाननेवाला। पंडित।

विद्विष्–संज्ञा पुं० शत्रु। द्वेष रखनेवाला।

विद्विष्ट–वि० द्वेष का पात्र। शत्रुता या वैर करने योग्य।

विद्विष्टि–संज्ञा स्त्री० शत्रुता।

वि० १. विद्वेष से उत्पन्न। २. विरुद्ध पड़नेवाला।

विद्वेष–संज्ञा पुं० वैर। शत्रुता।

विद्वेषी–संज्ञा पुं० वैरी। शत्रु।

विद्वेष्टा–संज्ञा पुं० वैरी। विद्वेषी।

विद्वेष्य–संज्ञा पुं० द्वेष का पात्र। वैर करने योग्य।

विधंस*–संज्ञा पुं० दे० "विध्वंस"।

विधंसना*†–क्रि० स० विध्वंस करना। नष्ट करना। बरबाद करना।

विध*–संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "विधि"।

विधना–संज्ञा पुं० विधि। ब्रह्मा।

क्रि० स० १. प्राप्त करना। २. अपने साथ लगाना। ३. ऊपर लेना।

संज्ञा स्त्री० होनहार। भवितव्य।

विधरण–संज्ञा पुं० १. पकड़ना। २. रोकना।

विधर्म्म–संज्ञा पुं० दूसरे किसी का धर्म्म। पराया धर्म्म।

वि० १. धर्म के विपरीत। धर्मशास्त्र में जिसकी निन्दा की गई हो। २. गुणहीन।

विधार्मिक–संज्ञा पुं० दे० "विधर्मी"।

विधर्मी–संज्ञा पुं० १. धर्म्म के विपरीत आचरण करनेवाला। धर्म्म-भ्रष्ट। २. दूसरे धर्म्म का अनुयायी।

विधवा–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो। बेवा।

विधवाश्रम–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ विधवाओं के पालन-पोषण आदि का प्रबंध किया जाता है।

विधांसना*†–क्रि० स० दे० "विधंसना"।

विधाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० विधात्री] १. विधान करनेवाला। व्यवस्था करनेवाला। २. प्रबंध करनेवाला। ३. बनानेवाला। सृष्टि बनानेवाला। ब्रह्मा या ईश्वर।

विधात्री–संज्ञा स्त्री० बनानेवाली। रचनेवाली।

विधान–संज्ञा पुं० १. किसी कार्य्य की व्यवस्था या आयोजन। अनुष्ठान। प्रबंध। इंतजाम। २. विधि। प्रणाली। पद्धति। ३. आज्ञा करना। ४. कानून। नियम। शास्त्रोक्त विधान या कर्त्तव्य-निर्देश। ५. रचना। निर्माण। ६. ढंग। उपाय। युक्ति। ७. धन। सम्पत्ति। ८. पूजा। ९. नाटक में वह स्थान, जहाँ किसी वाक्य-द्वारा एक साथ सुख और दुःख दोनों प्रकट किए जाते हैं।

विधान-परिषद्–संज्ञा स्त्री० वह सभा, जो किसी देश के शासन की नियमावली बनाने के लिए संघटित हो। संविधान परिषद्।

विधान-मंडल—संज्ञा पुं० दे० "विधान-सभा"। दो सदनोंवाली विधान-सभाओं को संयुक्त रूप में विधान-मंडल कहते हैं।

विधानवाद—संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार विधान या कानून ही सर्वप्रधान माना जाता हो और उसके विरुद्ध कुछ न किया जाता हो।

विधानवादी—संज्ञा पुं० विधानवाद के सिद्धान्त का अनुयायी। विधान या कानून के अनुसार ही सब काम करनेवाला।

विधान-सभा—संज्ञा स्त्री० लोकतांत्रिक-शासन में जनता के प्रतिनिधियों की वह सभा, जो कानून बनाती है और पुराने कानूनों में आवश्यकतानुसार संशोधन आदि करती है।

विधायक—संज्ञा पुं० [स्त्री० विधायिका] १. विधान या कानून बनानेवाला। रचनेवाला। २. प्रबंध करनेवाला। ३. पत्र या आज्ञा आदि, जिसके द्वारा कोई नियम लागू किया जाय।

विधायन—संज्ञा पुं० विधान करना या बनाना। राज्य-सरकार या विधान-सभा का कोई नया कानून बनाना।

विधायिक-सभा—संज्ञा स्त्री० दे० "विधान सभा"।

विधायित—वि० जिसका विधान किया गया हो। कानून के रूप में लाया गया। (अंग्रे०—इनैक्टेड)

विधायी—वि० दे० "विधायक"।

विधारण—संज्ञा पुं० [वि० विधारित] विपरीत धारणा। किसी विवादग्रस्त विषय या प्रमाणित की जानेवाली बात के सम्बन्ध में पहले से निश्चित पक्षपातपूर्ण विचार। (अंग्रे०—प्रिजुडिस)।

विधारा—संज्ञा स्त्री० एक लता, जिसकी जड़ कई रोगों में औषध के काम आती है।

विधारित—वि० १. जिसने अपने मन में कोई विकृत या पक्षपातपूर्ण धारणा बना ली हो। २. जिसके संबंध में उक्त प्रकार की धारणा बनी या हुई हो (अंग्रे०—प्रिजुडिस्ड)।

विधि—संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

संज्ञा स्त्री० १. कार्य करने की रीति। प्रणाली। व्यवस्था। २. सरकार-द्वारा निर्धारित नियम। विधान। कानून। ३. शास्त्रों में वर्णित आचरण-सम्बन्धी नियम। ४. भाँति। प्रकार। तरह। ५. प्रकृति या नियति। ६. व्याकरण में क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। ७. साहित्य में एक अर्थालंकार, जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ८. आचार-व्यवहार। चाल-ढाल।

यौ०—गतिविधि=चेष्टा और कार्रवाई।

विधिक—वि० कानूनी। विधि या कानून से सम्बन्ध रखनेवाला। विधि के अनुकूल। वैध।

विधिकर्त्ता—संज्ञा पुं० कानून बनानेवाला।

विधिक व्यवहार—संज्ञा पुं० कानूनी कार्रवाई। किसी व्यवहार या मुकदमे में कानून के अनुसार कार्य।

विधिज्ञ—संज्ञा पुं० विधान या कानून जाननेवाला। कानून का अच्छा जानकार और अदालत में दूसरों की पैरवी करनेवाला। वकील। बैरिस्टर।

विधितः—क्रि० वि० कानून के अनुसार।

विधिना—संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

विधिभंग—संज्ञा पुं० विधान या कानून का उल्लंघन। कानून तोड़ने का कोई काम।

विधिवत्—क्रि० वि० १. नियम के अनुसार। विधिपूर्वक। कायदे के मुताबिक। २. उचित रूप से।

विधु—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. वायु।

विधुप्रिया—संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की प्रियतमा। रोहिणी। २. कुमुदिनी।

विधुबैनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "विधुवदनी"।

विधुर—संज्ञा पु० [स्त्री० विधुरा] १. दुःखी। घबराया हुआ। व्याकुल। २. परित्यक्त। जिसकी स्त्री मर गई हो या छोड़ चुकी हो। स्त्री-हीन पुरुष। रँडुआ। ३. असमर्थ। अशक्त। ४. विमूढ़। ५. दुःख। ६. वियोग। ७. मोक्ष।

विधुवदनी—संज्ञा स्त्री० बहुत सुन्दर स्त्री।

चन्द्रमा की तरह मुखवाली। चन्द्र-मुखी।

विधूत–वि० १. काँपता या हिलता हुआ। त्यक्त। २. छोड़ा हुआ। निकाला हुआ। हटाया या दूर किया हुआ।

विधूनन–संज्ञा पुं० कम्पन। काँपना।

विधूम–वि० बिना धुएँ का। धूम-रहित।

विधूम्र–वि० १. बिना धुएँ का। २. मटमैले रंग का। धूसर वर्ण का।

विधेय–वि० १. जिसका विधान या कानून बनाना उचित हो। विधान के योग्य। जिसके करने का नियम हो। कर्त्तव्य। २. वशीभूत। अधीन। ३. वह (शब्द या वाक्य), जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय (व्या०)।

विधेयक–संज्ञा पुं० किसी विधान या कानून का वह पूर्व या प्रस्तावित रूप, जो विधान-सभा में स्वीकृत होने के लिए पेश किया जाता है। (अंग्रे०–बिल)

विध्वंस–संज्ञा पुं० नाश। बरबादी।

विध्वंसक–संज्ञा पुं० १. नाश करनेवाला। २. एक प्रकार का जंगी जहाज।

विध्वंसित–वि० नष्ट या बर्बाद किया हुआ।

विध्वंसी–संज्ञा पुं० [स्त्री० विध्वंसिनी] नाश या बरबाद करनेवाला।

विध्वस्त–वि० नष्ट या बर्बाद किया हुआ।

विन‡–सर्व० एक सर्वनाम। "उस" का बहु-वचन। उन।

अव्य० बिना।

विनत–वि० १. झुका हुआ। २. दे० "विनीत"। नम्र। शिष्ट।

विनता–संज्ञा स्त्री० १. कुबड़ी। २. दक्ष प्रजापति की एक कन्या, जो कश्यप की स्त्री और गरुड़ की माता थी।

विनती–संज्ञा स्त्री० १. प्रार्थना। निवेदन। २. झुकाव। ३. नम्रता। विनय। शिष्टता। सुशीलता।

विनमन–संज्ञा पुं० झुकाना। नवाना।

विनम्र–वि० १. झुका हुआ। २. विनीत। सुशील।

विनय–संज्ञा स्त्री० १. नम्रता। २. शिक्षा। ३. प्रार्थना। विनती। ४. नीति।

विनय-पिटक–संज्ञा पुं० बौद्ध-शास्त्रों में से एक शास्त्र।

विनयन–संज्ञा पुं० १. विनय। नम्रता। २. निर्णय। ३. निराकरण। दूर करना। ४. शिक्षा।

विनयवान्–वि० नम्र। सुशील। शिष्ट। विनयी।

विनयी–वि० नम्र। सुशील। विनययुक्त।

विनशन–संज्ञा पुं० [वि० विनष्ट, विनश्वर] विनाश। बरबादी।

विनश्य–वि० नष्ट होने योग्य या नष्ट किए जाने लायक।

विनश्वर–वि० नाश होनेवाला। अनित्य।

विनष्ट–वि० १. जो नष्ट या बरबाद हो गया हो। ध्वस्त। मृत। मरा हुआ। २. बिगड़ा हुआ। भ्रष्ट। पतित।

विनसना*–क्रि० अ० नष्ट होना।

विनसाना*–क्रि० स० [विनसना का स० रूप] नष्ट करना। बिगाड़ना।

क्रि० अ० दे० "विनसना"।

विना–अव्य० बिना। बगैर। छोड़कर। अति-रिक्त। सिवा। अभाव में। न रहने की अवस्था में।

विनाथ–वि० दे० "अनाथ"।

विनायक–संज्ञा पुं० गणेश। विघ्नों के मालिक या नाश करनेवाले।

विनायक-केतु–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

विनाश–संज्ञा पुं० [वि० विनाशक] १. नाश। बरबादी। ध्वंस। बुरी दशा। २. लोप। ३. बिगड़ जाने का भाव। खराबी।

विनाशक–संज्ञा पुं० [स्त्री० विनाशिका] नाश करनेवाला। बर्बाद करनेवाला।

विनाशन–संज्ञा पुं० [वि० विनाशी, विनाश्य] १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. संहार करना। वध करना। ३. खराब करना।

विनास*‡–संज्ञा पुं० दे० "विनाश"।

विनासन*–संज्ञा पुं० दे० "विनाशन"।

विनासना*–क्रि० स० १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. संहार करना। ३. बिगाड़ना।

क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।

विनिगमना–संज्ञा स्त्री० १. दो विरुद्ध पक्षों में

से एक का प्रमाण-द्वारा निश्चय। २. सिद्धान्त। ३. नतीजा।

विनिग्रह—संज्ञा पुं० १. नियम। २. बंधेज। ३. अवरोध। ४. व्याघात।

विनिपात—संज्ञा पुं० १. नाश। बर्बादी। ध्वंस। पतन। २. हत्या। ३. अनादर। ४. विषाद।

विनिमय—संज्ञा पुं० १. एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देना। अदल-बदल। लेनदेन। २. वह व्यवस्था या प्रणाली, जिसके अनुसार भिन्न पक्षों या देशों में वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है। ३. वह व्यवस्था या प्रणाली, जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य निर्धारित होते हैं और जिसके अनुसार आपस में लेनदेन चुकाए जाते हैं। (अंग्रे०—एक्सचेंज।)

यौ०—विनिमय की दर=वह दर, जिससे एक देश के सिक्के दूसरे देश के सिक्कों से बदले जाते हैं।

विनिमय-पत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिसके द्वारा आपस में लेन-देन का भाव तय होता है या जो किसी आर्थिक देन या प्राप्य का सूचक होता है।

विनियंत्रण—संज्ञा पुं० [वि० विनियंत्रित] नियंत्रण का हटाया जाना। (अंग्रे०—डिकण्ट्रोल।)

विनियोग—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु का उपयोग। प्रयोग। २. वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग। ३. भेजना। ४. घुसना। ५. व्यापार में पूँजी लगाना।

विनियोजित—वि० १. प्रयुक्त। २. अर्पित। ३. प्रेरित।

विनिर्गत—वि० १. निकला हुआ। २. अतीत।

विनिवेश—संज्ञा पुं० प्रवेश। घुसना।

विनिहत—वि० १. चोट खाया हुआ। आहत। २. मरा हुआ। लुप्त।

विनीत—वि० विनयी। नम्र। विनययुक्त। सुशील। शिष्ट।

विनु*†—अव्य० दे० "बिना"।

विनूठा†—वि० अनूठा। सुंदर।

विनोद—संज्ञा पुं० १. मनोरंजन। हँसी-दिल्लगी। २. कुतूहल। तमाशा। ३. खेल-कूद। आमोद-प्रमोद। ४. परिहास। ५. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

विनोदी—वि० [स्त्री० विनोदिनी] १. आमोद-प्रमोद करनेवाला। बहुत हँसी-मजाक करनेवाला। मसखरा। हँसोड़। २. चुहल-बाज। आनन्दी। मौजी।

विन्यस्त—वि० १. स्थापित। क्रम से रखा हुआ। २. डाला हुआ। ३. लगा हुआ। ४. फैला हुआ।

विन्यास—संज्ञा पुं० [वि० विन्यस्त] १. स्थापन। रखना। धरना। २. यथास्थान स्थापन। सजाना। ३. जड़ना।

विपंची—संज्ञा स्त्री० १. वीणा। तंत्री। एक बाजा। २. क्रीड़ा। खेल।

विपक्व—वि० खूब पका हुआ।

विपक्ष—संज्ञा पुं० १. विरोधी पक्ष। २. विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। प्रतिवादी या शत्रु। ३. विरोध। ४. खंडन। ५. अपवाद।

वि० १. विरोध। उल्टा। खिलाफ। २. पक्षहीन। जिसके पक्ष में कोई न हो।

विपक्षी—संज्ञा पुं० १. विरोधी पक्ष का। दूसरी तरफ का। २. शत्रु। प्रतिद्वंद्वी। प्रतिवादी।

वि० पंखहीन। बगैर डैने का।

विपत्ति—संज्ञा स्त्री० १. संकट। आफत। कष्ट। दुःख। शोक। २. संकट की अवस्था। बुरे दिन। ३. कठिनाई। झंझट। बखेड़ा।

विपत्तिजनक—वि० खतरनाक। जिससे विपत्ति या संकट उत्पन्न हो।

विपथ—संज्ञा पुं० १. बुरा रास्ता। कुमार्ग। २. गलत या बुरा आचरण।

विपथगा—संज्ञा स्त्री० १. उल्टे या बुरे रास्ते से चलनेवाली। २. दुराचारिणी। बदचलन स्त्री।

विपथगामी—संज्ञा पुं० [स्त्री० विपथगामिनी] १. बुरे रास्ते पर चलनेवाला। कुमार्गी। २. दुराचारी। बदचलन।

विपद्—संज्ञा स्त्री० विपत्ति। आफत।

विपदा—संज्ञा स्त्री० संकट। विपत्ति। आफत।

विपन्न—वि० १. जिस पर विपत्ति पड़ी हो। दुःखी। आर्त्त। २. भूला हुआ।

विपरीत—वि० १. उलटा। विरुद्ध। खिलाफ। प्रतिकूल। २. रुष्ट। ३. विरोधी। हित के विरुद्ध।
विपर्णक—वि० बिना पत्तों का।
विपर्य्यय—संज्ञा पुं० १. पारस्परिक विरोध। २. गड़बड़ी। अव्यवस्था। सिलसिले में उलट-फेर। इधर का उधर या आगे-पीछे होना। व्यतिक्रम। ३. कुछ का कुछ समझना। ४. भ्रम।
विपर्य्यस्त—वि० जिसका विपर्य्यय (उलटफेर) हुआ हो। अस्त-व्यस्त। जिसे उलट या रद्द कर दिया गया हो।
विपर्य्यास—संज्ञा पुं० दे० "विपर्य्यय"।
विपल—संज्ञा पुं० एक पल (२४ सेकंड) का साठवाँ भाग। समय का एक बहुत ही छोटा विभाग।
विपाक—संज्ञा पुं० १. कर्म का फल। पूर्व जन्म में किए हुए कामों का फल इस जन्म में और इस जन्म में किए हुए कामों का फल अगले जन्म में। २ परिणाम। नतीजा ३. अच्छी तरह से पकना। ४. पचना। ५. पूरी अवस्था को पहुँचना। चरम उत्कर्ष।
विपाटन—संज्ञा पुं० १. उखाड़ना। २. दो भागों में फाड़ना। ३. नष्ट करना। ४. दूर करना।
विपाठ—संज्ञा पुं० एक तरह का लम्बा बाण।
विपात—संज्ञा पुं० नाश।
विपातन—संज्ञा पुं० नाश करना। गलाना।
विपाशा—संज्ञा स्त्री० व्यास नदी।
विपिन—संज्ञा पुं० १. जंगल। बाग। २. उपवन। बगीचा।
विपिनपति—संज्ञा पुं० सिंह।
विपिनबिहारी—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. वन में विहार करनेवाला।
विपुल—वि० [स्त्री० विपुला] १. बहुत अधिक। २. बृहत्। बड़ा। ३. अगाध।
विपुलता—संज्ञा स्त्री० आधिक्य। बहुतायत।
विपुला—संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। वसुधरा। २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं। ३. आर्य्या छंद के तीन भेदों में से एक।
विपुलाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "विपुलता"।
विपोहना*—क्रि० स० १. पोतना। लीपना। २. नाश करना। ३. दे० "पोहना"।
विप्र—संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण। २. पुरोहित। यज्ञ करानेवाला।
वि० बुद्धिमान्।
विप्रचरण—संज्ञा पुं० भृगु मुनि की लात का चिह्न, जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।
विप्रचित्ति—संज्ञा पुं० एक दानव, जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु उत्पन्न हुआ था।
विप्रत्व—संज्ञा पुं० ब्राह्मणत्व।
विप्रथित—वि० मशहूर। प्रसिद्ध।
विप्रपद—संज्ञा पुं० दे० "विप्रचरण"।
विप्रराम—संज्ञा पुं० परशुराम।
विप्रलंभ—संज्ञा पुं० १. चाही हुई वस्तु का न मिलना। २. प्रिय का न मिलना। ३. वियोग; विरह। अलग होना। विच्छेद। ४. निराशा। ५. धोखा। छल। धूर्तता। ६. साहित्य में शृंगार का वियोग-पक्ष।
विप्रलंभक या विप्रलंभी—संज्ञा पुं० धोखेबाज।
विप्रलब्ध—वि० १. वियोगी। २. वियोग-दशा को प्राप्त। ३. जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वंचित।
विप्रलब्धा—संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो संकेतस्थान में प्रिय को न पाकर दुःखी हो।
विप्रलाप—संज्ञा पुं० बकवाद। व्यर्थ विवाद।
विप्लव—संज्ञा पुं० १. विद्रोह। बलवा। २. उपद्रव। अशांति और हलचल। उथल-पुथल। अव्यवस्था। ३. आफत। विपत्ति। ४. विनाश। ५. जल की बाढ़।
विप्लवी—वि० विप्लव या विद्रोह करनेवाला। बगावत करनेवाला।
विप्लुत—वि० १. छितराया हुआ। २. घबराया हुआ। व्यग्र। ३. भ्रष्ट।
विफल—वि० [संज्ञा विफलता] १. निष्फल। असफल। व्यर्थ। २. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। नाकामयाब।
विबुध—संज्ञा पुं० १. पंडित। बुद्धिमान्। २. देवता। ३. चंद्रमा। ४. शिव।
विबुधपति—संज्ञा पुं० इन्द्र।

विबुधपुर—संज्ञा पुं० स्वर्ग।
विबुधवन—संज्ञा पुं० नन्दन कानन।
देवता की स्त्री। २. अप्सरा।
विबुधबेलि—संज्ञा स्त्री० कल्पलता।
विबुधविलासिनी—संज्ञा स्त्री० १. देवांगना।
विबुधाधिप—संज्ञा पुं० इन्द्र।
विबुधान—संज्ञा पुं० १. देवता। २. पंडित। ३. आचार्य।
विबुधेश—संज्ञा पुं० इन्द्र।
विबोध—संज्ञा पुं० १. सम्यक् बोध। अच्छा ज्ञान। २. जागरण। जागना। ३. सचेत होना। सावधान होना। ४. विकास। प्रफुल्लता।
विभंज—वि० टूटना। नाश।
क्रि० स० १. तोड़ना। टुकड़े करना। नाश करना। २. निराश करना।
विभक्त—वि० बँटा हुआ। विभाजित। अलग किया हुआ।
विभक्ति—संज्ञा स्त्री० १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न, जिसमें यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रिया-पद से क्या संबंध है (व्याकरण)।
विभव—संज्ञा पुं० १. ऐश्वर्य्य। २. धन। संपत्ति। ३. बहुतायत। ४. मोक्ष।
विभववान्, विभवशाली—वि० १. दे० "वैभवशाली"। ऐश्वर्य्यवाला। प्रतापी। २. शक्तिशाली।
विभाँति—संज्ञा स्त्री० प्रकार। किस्म।
वि० अनेक प्रकार का।
अव्य० अनेक प्रकार से।
विभा—संज्ञा स्त्री० १. शोभा। २. कान्ति। चमक। ३. किरण। ४. प्रकाश। रोशनी।
विभाकर—संज्ञा पुं० १. सूर्य। प्रकाश करनेवाला या प्रकाशवाला। राजा। २. अग्नि।
विभाग—संज्ञा पुं० १. भाग। अंश। हिस्सा। बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। तकसीम। २. प्रकरण। अध्याय। ३. कार्य्य-क्षेत्र। ४. मुहकमा। दफ्तर। कार्यालय।
विभाजक—वि० बाँटनेवाला। विभाग या टुकड़े करनेवाला। भाग या तकसीम करनेवाला।
विभाजन—संज्ञा पुं० १. बँटवारा। विभाग करना या बाँटना। २. विभाग। तकसीम।
विभाजित—वि० बँटा हुआ। जिसका विभाग किया गया हो। विभक्त।
विभाज्य—वि० १. विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो।
विभात—संज्ञा पुं० प्रभात। विभा या चमक से युक्त (उषा के लिए प्रयुक्त शब्द)।
विभाति—संज्ञा स्त्री० शोभा। सुन्दरता।
विभाना*—क्रि० अ० १. चमकना। झलकना। २. शोभित होना।
विभारना*—क्रि० अ० दे० "विभाना"।
विभाव—संज्ञा पुं० साहित्य में वह वस्तु, जो रति आदि भावों को उत्पन्न करनेवाली या उद्दीप्त करनेवाली हो।
विभावना—संज्ञा स्त्री० एक अर्थालंकार, जिसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है।
विभावनीय—वि० चिन्ता करने योग्य।
विभावरी—संज्ञा स्त्री० १. रात्रि। रात। २. वह रात, जिसमें तारे चमकते हों।
विभावरीश—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
विभावसु—संज्ञा पुं० १. वसुओं के एक पुत्र। २. सूर्य्य। ३. चंद्रमा। ४. अग्नि।
विभास—संज्ञा पुं० १. तेज। चमक। २. एक राग।
विभासना*—क्रि० अ० चमकना। झलकना
विभिन्न—वि० १. बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २. अनेक प्रकार का। कई तरह का। ३. उल्टा।
विभीत—संज्ञा स्त्री० डरा हुआ। भयभीत।
विभीति—संज्ञा स्त्री० १. डर। भय। २. शंका।
विभीषण—संज्ञा पुं० रावण का भाई। एक राक्षस वंशी, जो रावण के मारे जाने पर लंका का राजा बनाया गया था।
वि० बहुत भयानक।
विभीषिका—संज्ञा स्त्री० १. भयानक कांड या दृश्य। २. डराना। भयभीत करना।
विभु—वि० १. जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्व-

व्यापक। २. जो सब जगह जा सकता हो। जैसे, मन। ३. बहुत बड़ा। महान्। ४. नित्य। ५. दृढ़। अचल। ६. शक्तिमान्। संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. जीवात्मा। ३. प्रभु। स्वामी। ईश्वर। ४. शिव। ५. विष्णु।

विभुता–संज्ञा स्त्री० दे० "विभूति"।

विभूति–संज्ञा स्त्री० १. ऐश्वर्य। २. बहुतायत। ३. वृद्धि। बढ़ती। ४. शिव के अंग में चढ़ाने की राख या भस्म। ५. पूजा के बाद किए गए हवन की राख, जिसे मस्तक आदि अंगों में लगाते हैं। ६. संपत्ति। धन। ७. अलौकिक शक्ति, जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं। ८. लक्ष्मी। ९. एक दिव्यास्त्र, जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। १०. सृष्टि।

विभूषण–संज्ञा पुं० १. गहना। २. गहनों आदि से सजाना। अलंकृत या सुशोभित करने की क्रिया।

विभूषना–क्रि० स० गहने आदि से सजाना। सुशोभित करना।

विभूषित–वि० १. गहनों आदि से सजाया हुआ। अलंकृत। शोभित। २. अच्छी वस्तु, गुण आदि से युक्त।

विभेंटन*–संज्ञा पुं० भेंटना। गले मिलना।

विभेद–संज्ञा पुं० १. विभिन्नता। फर्क। अंतर। अनेक भेद। कई प्रकार। २. छेदकर धँसना। बेधना। ३. भेद या अलगाव। ४. भेदन करना।

विभेदना*–क्रि० स० १. भेदन करना। छेदना। २. घुसना। ३. भेद या फर्क डालना।

विभोर–वि० १. मग्न। लीन। २. व्याकुल। विह्वल। ३. मस्त। मत्त।

विभौ*–संज्ञा पुं० दे० "विभव"।

विभ्रंश–संज्ञा पुं० नाश। पतन।

विभ्रम–संज्ञा पुं० १. भ्रम। भ्रांति। धोखा। २. संदेह। संशय। ३. घबराहट। ४. भ्रमण। चक्कर। ५. स्त्रियों का एक हाव, जिसमें वे भ्रम से उलटे-पलटे भूषण-वस्त्र पहनकर कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती हैं।

विभ्रान्त–वि० १. भ्रम में पड़ा हुआ। २. घूमता हुआ या चक्कर काटता हुआ।

विभ्राट्–संज्ञा पुं० १. आपत्ति। विपत्ति। संकट। २. उपद्रव। बखेड़ा।

विमंडन–संज्ञा पुं० [वि० विमंडित] १. सजाना। शृंगार करना। सँवारना। २. अलंकार।

विमंडित–वि० १. अलंकृत। सजा हुआ। सुशोभित। २. सहित। अच्छी वस्तु से युक्त।

विमत, विमति–संज्ञा पुं० १. विरुद्ध मत। विपरीत सम्मति। प्रतिकूल विचार या सिद्धान्त। २. बुरा विचार। ३. अस्वीकृति।

विमत्सर–संज्ञा पुं० अधिक अहंकार।

विमद–वि० बिना घमंड के। अहंकार-रहित। मद-रहित।

विमन–वि० जिसका मन या तबीअत न लगती हो। अनमना। उदास।

विमनस्क–वि० अनमना। उदास। जिसका ध्यान किसी और तरफ हो। अन्यमनस्क।

विमर्दन–संज्ञा पुं० [वि० विमर्दनीय, विमर्दित] १. अच्छी तरह मलना-दलना। कुचलना। २. नष्ट करना। ३. मार डालना।

विमर्श–संज्ञा पुं० १. किसी बात का विवेचन या विचार। २. परामर्श। ३. आलोचना। समीक्षा। ४. परीक्षा।

विमर्ष–संज्ञा पुं० १. दे० "विमर्श"। २. नाटक का एक अंग, जिसके अंतर्गत अपवाद, व्यवसाय, शक्ति, प्रसंग, खेद, विरोध और आदान आदि का वर्णन होता है।

विमल–वि० [संज्ञा विमलता] [स्त्री० विमला] १. स्वच्छ। साफ। निर्मल। बिना मैल का। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. सुंदर। मनोहर।

विमला–संज्ञा स्त्री० सरस्वती। वि० स्वच्छ। दे० "विमल"।

विमलापति–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

विमाता–संज्ञा स्त्री० सौतेली माँ।

विमान–संज्ञा पुं० १. हवाई जहाज। वायुयान। हवा में चलनेवाली गाड़ी। देवताओं का रथ, जो आकाश-पथ से चलता था। २. मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी, जो

सजधज के साथ निकाली जाती है। ३. रथ। गाड़ी।

विमान-चालक—संज्ञा पुं० हवाई जहाज चलानेवाला।

विमान-वाहक—संज्ञा पुं० एक प्रकार का समुद्री जहाज, जिसकी छत बहुत लम्बी-चौड़ी होती है और उस पर बहुत से हवाई जहाज रखे जाते हैं।

विमानवेधी—संज्ञा पुं० एक प्रकार की तोप, जो उड़ते हुए हवाई जहाजों पर गोले चलाती है।

विमार्ग—संज्ञा पुं० १. बुरा रास्ता। कुमार्ग। २. बुरा आचरण।

विमुक्त—वि० १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। २. स्वतंत्र। स्वच्छंद। ३. हानि या दंड आदि से बचा हुआ। ४. अलग किया हुआ। बरी। ५. फेंका हुआ। छोड़ा हुआ।

विमुक्ति—संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष।

विमुख—वि० [सं० विमुखता] १. मुख-रहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। उदासीन। विरत। निवृत्त। ३. जिसे परवाह न हो। ४. विरुद्ध। खिलाफ। ५. अप्रसन्न। ६. निराश। जिसका मनोरथ पूरा न हुआ हो।

विमुग्ध—वि० बहुत अधिक मोहित। बेसुध।

विमुद—वि० उदास। खिन्न।

विमूढ़—वि० [स्त्री० विमूढ़ा] १. ज्ञान-रहित। मूर्ख। नासमझ। २. भ्रम में पड़ा हुआ। ३. बेसुध। अचेत।

विमूढ़गर्भ—संज्ञा पुं० वह गर्भ, जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो।

विमूल—वि० १. मूल या जड़ से रहित। निर्मूल। २. बर्बाद।

विमूलन—संज्ञा पुं० जड़ से उखाड़ना। विनाश।

विमूल्यन—संज्ञा पुं० दे० "अवमूल्यन"।

विमोक्ष—संज्ञा पुं० छुटकारा। रिहाई।

विमोघ—वि० दे० "अमोघ"।

विमोचन—संज्ञा पुं० [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बंधन, गाँठ आदि खोलना। २. बंधन से छुड़ाना। मुक्त करना। ३. निकालना। ४. छोड़ना। फेंकना।

विमोचना*—क्रि० स० १. बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। छोड़ना। २. निकालना। बाहर करना।

विमोह—संज्ञा पुं० [वि० विमोहक] १. मोह। अज्ञान। भ्रम। २. बेसुध होना। बेहोशी। ३. मोहित होना। आसक्ति।

विमोहक—संज्ञा पुं० [स्त्री० विमोहिनी] मोहनेवाला।

विमोहन—संज्ञा पुं० [वि० विमोहित, विमोही] १. मोहित करना। मन लुभाना। २. सुध-बुध भुलाना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

विमोहना*—क्रि० अ० १. मोहित होना। लुभा जाना। २. बेसुध होना। ३. धोखे में आ जाना।

विमोहित—वि० १. अत्यन्त मोहित। लुभाया हुआ। मुग्ध। २. तन-मन की सुध भूला हुआ। ३. मूर्च्छित।

विमोही—वि० [स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित करनेवाला। जी लुभानेवाला। २. सुध-बुध भुलानेवाला। मूर्च्छित या बेहोश करनेवाला। ३. भ्रम में डालनेवाला। ४. बिना मोह का। निष्ठुर। निर्दय।

विमौट—संज्ञा पुं० दीमकों का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह। बाँबी।

वियंग*—संज्ञा पुं० महादेव।

विय*—वि० १. दो। युग्म। जोड़ा। २. अन्य। दूसरा।

वियत—संज्ञा पुं० आकाश। वायुमंडल।

वियुक्त—वि० १. बिछुड़ा हुआ। २. जुदा। अलग। ३. रहित। हीन।

वियो*—वि० अन्य। दूसरा।

वियोग*—संज्ञा पुं० १. विरह। जुदाई। विच्छेद। २. अलगाव। ३. मिलाप या संयोग न होना।

वियोगांत—वि० (नाटक या उपन्यास आदि) जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।

वियोगिनी—वि० अपने पति या प्रिय से बिछुड़ी हुई स्त्री।

वियोगी—वि० [स्त्री० वियोगिनी] विरही। अपनी प्रेमिका से बिछुड़ा हुआ पुरुष।

वियोजक—संज्ञा पुं० १. दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला। २. गणित में वह संख्या, जिसे किसी दूसरी बड़ी संख्या में से घटाना हो।

विरंग—वि० १. बुरे रंग का। बदरंग। फीका। २. अनेक रंगों का।

विरंच, विरंचि—संज्ञा पुं० ब्रह्मा। विधाता।

विरंचिसुत—संज्ञा पुं० नारद।

विरक्त—वि० १. विरागी। जो अनुरक्त न हो। संसार या मोहमाया से अलग रहनेवाला। विमुख। २. उदासीन। ३. वासना-रहित।

विरक्ति—संज्ञा स्त्री० १. उदासीनता। विमुखता। वैराग्य। २. अनुराग का अभाव।

विरचन—संज्ञा पुं० बनाना। निर्माण।

विरचना*—क्रि० स० १. रचना। बनाना। निर्माण करना। २. सजाना।
क्रि० अ० विरक्त होना।

विरचित—वि० १. बनाया हुआ। निर्मित। २. रचा हुआ। लिखित।

विरज—वि० १. बिना रज या धूल का। निर्मल। स्वच्छ। २. निर्दोष। ३. रजोगुण-रहित। ४. वासना-रहित।

विरत—वि० १. दे० "विरक्त"। विमुख। जो अनुरक्त न हो। २. जो लीन या तत्पर न हो। निवृत्त। ३. वैरागी। ४. बहुत लीन। विशेष रूप से रत।

विरति—संज्ञा स्त्री० १. दे० "विरक्ति"। चाह का न होना। २. उदासीनता। ३. वैराग्य।

विरथ—वि० जिसके पास रथ या सवारी न हो। पैदल।

विरद—संज्ञा पुं० १. बड़ा नाम। प्रसिद्धि। ख्याति। २. यश। कीर्त्ति। दे० "विरुद"।

विरदावली—संज्ञा स्त्री० दे० "विरुदावली"। १. प्रशंसा के गीत। २. यश की कथा। कीर्ति की गाथा।

विरदैत*—वि० बड़े विरदवाला। कीर्त्ति या यशवाला। बड़े नामवाला।

विरमण—संज्ञा पुं० १. रमना। रमण करना। २. रुकना। ठहरना। ३. निवृत्त होना।

विरमना*†—क्रि० अ० १. दे० "विरमण"। देर करना। विलम्ब करना। २. कहीं रुक जाना। विराम करना। ठहरना। रम जाना। ३. किसी से या कहीं मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। ४. वेग आदि का थमना या कम होना।

विरमाना*†—क्रि० स० विरमना का सकर्मक रूप। दूसरे को विरमने में प्रवृत्त करना।

विरल—वि० १. जो घना न हो। 'सघन' का उलटा। २. जो दूर-दूर पर हो। ३. दुर्लभ। ४. अल्प। थोड़ा। ५. पतला। ६. शून्य। निर्जन।

विरस—वि० [संज्ञा विरसता] १. नीरस। फीका। २. जो अच्छा न लगे। अरुचिकर। ३. (काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हो सका हो।

विरह—संज्ञा पुं० १. वियोग। जुदाई। किसी वस्तु से अलग या रहित होने का भाव। २. प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। ३. वियोग का दुःख।

विरहा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का ग्राम्य गीत, जिसे विशेषकर अहीर आदि गाते हैं।

विरहिणी—वि० दे० "वियोगिनी"।

विरहित—वि० रहित। शून्य। बिना।

विरही—वि० [स्त्री० विरहिणी] प्रियतमा से अलग होने के कारण दुखी। वियोगी।

विरहोत्कंठिता—संज्ञा स्त्री० वह दुःखी नायिका, जिसके मन में पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर हो सकता है, वह किसी कारणवश न आवे।

विराग—संज्ञा पुं० [वि० विरागी] १. वैराग्य। अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २. विषय-भोग आदि से अलग रहने का भाव। उदासीनता।

विरागी—वि० १. विषयवासना से अलग रहनेवाला। वैरागी। संसार-त्यागी। २. उदासीन। ३. विमुख।

विराजना—क्रि० अ० १. शोभित होना। २. मौजूद रहना। उपस्थित होना। ३. बैठना।

विराजमान—वि० १. उपस्थित। मौजूद। बैठा हुआ। "उपस्थिति" के लिए प्रयुक्त बहुत

आदर-सूचक शब्द। २. चमकता हुआ। शोभायमान।
विराजित–वि० दे० "विराजमान"।
विराट्–वि० १. बहुत बड़ा। विशाल। २. विकराल।
संज्ञा पुं० परमात्मा का वह स्थूल स्वरूप, जिसका शरीर संपूर्ण विश्व है।
विराट–संज्ञा पुं० १. मत्स्य-देश। २. मत्स्य देश का राजा जिसके यहाँ अज्ञातवास के समय पांडव नौकर थे।
विराध–संज्ञा पुं० १. पीड़ा। तकलीफ। २. सतानेवाला। ३. एक राक्षस, जिसे दंडकारण्य में लक्ष्मण ने मारा था।
विराधन–संज्ञा पुं० १. कष्ट या पीड़ा पहुँचाना। २. हानि करना।
विराम–संज्ञा पुं० १. रुकना या थमना। ठहरना। २. सुस्ताना। विश्राम। ३. वाक्य के अंतर्गत वह स्थान, जहाँ बोलते समय रुकना पड़ता हो। ४. छंद के चरण में यति।
विरामकाल–संज्ञा पुं० विराम करने या सुस्ताने के लिए मिलनेवाली छुट्टी का समय।
विराम-चिह्न–संज्ञा पुं० वाक्य में विराम के समय लगाया जानेवाला चिह्न।
विराम-सन्धि–संज्ञा स्त्री० वह सन्धि, जो अंतिम या पक्का सन्धि होने के पहले उसकी शर्तें तय करने के लिए होती है।
विराव–संज्ञा पुं० १. शब्द। बोली। कलरव। २. हल्ला-गुल्ला। शोर-गुल।
वि० शब्द-रहित।
विरासी*–वि० दे० "विलासी"।
विरिंच, विरिंचन–संज्ञा पुं० दे० "विरंचि"। ब्रह्मा।
विरुज–वि० नीरोग। स्वस्थ।
विरुझना* †–क्रि० अ० दे० "उलझना"।
विरुत–वि० गूँजता हुआ।
विरुद–संज्ञा पुं० १. राजाओं की स्तुति या प्रशंसा। यशकीर्तन। प्रशस्ति। २. यश या प्रशंसासूचक पदवी, जो राजा लोग प्राचीन काल में धारण करते थे। ३. यश।
विरुदावली–संज्ञा स्त्री० किसी के गुण, पराक्रम आदि का विस्तार से वर्णन। यश-वर्णन।
विरुद्ध–वि० [संज्ञा स्त्री० विरुद्धता]। १. प्रतिकूल। खिलाफ। विपरीत। उलटा। २. अनुचित। ३. अप्रसन्न।
विरूढ़–वि० १. चढ़ा हुआ। आरूढ़। २. उत्पन्न। ३. खूब जमा हुआ।
विरूप–वि० [स्त्री० विरूपा, विरूपता] १. कई रंग-रूप का। २. कुरूप। बदसूरत। भद्दा। ३. परिवर्तित। बदला हुआ। ४. शोभाहीन। ५. विरुद्ध। उलटा।
विरूपाक्ष–संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. शिव के एक गण का नाम। ३. एक राक्षस, जो रावण का एक सेनानायक था। ४. एक दिग्गज।
विरेचक–वि० दस्त लानेवाला। दस्तावर।
विरेचन–संज्ञा पुं० १. दस्त लानेवाली दवा। जुलाब। २. दस्त लाना।
विरोचन–संज्ञा पुं० १. चमकना। प्रकाशित होना। २. प्रकाशमान। ३. सूर्य की किरण। ४. सूर्य। ५. चंद्रमा। ६. अग्नि। किरण। ७. विष्णु। ८. प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता।
विरोध–संज्ञा पुं० [वि० विरोधक] १. विपरीत या उलटा भाव। प्रतिकूलता। २. बिगाड़। अनबन। वैर। शत्रुता। ३. दो बातों का एक साथ न हो सकना। व्याघात। उलटी स्थिति। ४. किसी कार्य के विपरीत प्रयत्न। ५. भिन्न-भिन्न विचारों या तथ्यों में पारस्परिक विपरीत भाव।
विरोधक–संज्ञा पुं० विरोध करनेवाला।
विरोध-पीठ–संज्ञा पुं० विधान-सभा आदि में सरकारी पक्ष या बहुमत दल के विरोधी सदस्यों के बैठने का स्थान।
विरोधाभास–संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार, जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है।
विरोधी–वि० [स्त्री० विरोधिनी] १. विरोध करनेवाला। बाधा डालनेवाला। २. विपक्षी। प्रतिद्वन्द्वी। शत्रु। वैरी।
विरोपना–संज्ञा पुं० बोना। रोपना। बोने या रोपने का कार्य।
विलंब–वि० देर। आवश्यकता या अनु-

मान से अधिक समय, जो किसी कार्य में लगे।

विलंबना–क्रि० अ० १. देर करना। विलंब करना। २. लटकना। ३. सहारा लेना।

विलंबित–वि० १. जिसमें देर हुई हो। २. लटकता हुआ। झूलता हुआ।

विलक्ष–वि० १. लज्जित। २. आश्चर्यचकित। घबराया हुआ।

विलक्षण–वि० [संज्ञा विलक्षणता] अनोखा। अनूठा। असाधारण।

विलखना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"। *क्रि० अ० ताड़ना। पता पाना।

विलगाना–क्रि० स० अलग होना। अलग करना। पृथक् होना।

विलपना*–क्रि० अ० रोना।

विलपाना*–क्रि० स० [विलपना का स०] रुलाना।

विलम*–संज्ञा पुं० दे० "विलंब"। देर। अबेर।

विलमना–*क्रि० अ० दे० "विलंबना"।

विलय या **विलयन**–संज्ञा पुं० १. विलीन होने का भाव। नाश। एक वस्तु का दूसरे में मिल जाना। घुलकर मिल जाना। २. किसी देशी रियासत या राज्य का आस-पास के दूसरे बड़े राज्य में मिलकर एक हो जाना। विघटित होना। (अंग्रे०–मर्जर)

विलयीकरण–संज्ञा पुं० १. विलय करना। २. छोटे-छोटे राज्यों को एक में मिलाकर एक राज्य में करना। ३. राज्य-द्वारा किसी छोटे राज्य को अपने में मिला लेना।

विलसन–संज्ञा पुं० १. चमकने की क्रिया। २. आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

विलसना*–क्रि० अ० १. शोभा पाना। २. विलास करना। ३. आनंद मनाना।

विलाप–संज्ञा पुं० १. बिलख-बिलखकर रोना। २. रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। ३. रुदन। क्रंदन।

विलापना*–क्रि० अ० रोकर दुख प्रकट करना। विलाप करना।

विलायत–संज्ञा पुं० [अ०] १. विदेश। पराया देश। २. दूर का देश। [बोलचाल में प्रायः इसका प्रयोग ब्रिटेन या इँगलैंड के लिए होता है।]

विलायती–वि० [अ०] १. विलायत का। विदेशी। २. दूसरे देश में बना हुआ।

विलायती बैंगन–संज्ञा पुं० टमाटर। एक तरह का बैंगन, जिसका रंग कच्चा होने पर हरा और पकने पर लाल होता है।

विलास–संज्ञा पुं० १. बहुत सुख भोग। आनंद। २. मनोरंजन। ३. स्त्रियों का हाव-भाव। नाज-नखरा। ४. किसी अंग की मनोहर चेष्टा।

विलासिका–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का रूपक (नाटक), जिसमें एक ही अंक होता है। २. दे० "विलासिनी"।

विलासिनी–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री। कामिनी। २. वेश्या।

विलासी–संज्ञा पुं० [स्त्री० विलासिनी] १. सुख-भोग में अनुरक्त पुरुष। भोगी। कामी। २. आराम-तलब। ३. आमोद-प्रमोद करनेवाला। ४. विनोदी। हँसोड़। कौतुकशील।

विलीक*–वि० अनुचित।

विलीन–वि० १. अदृश्य। लुप्त। २. जो किसी दूसरे में मिल गया हो। ३. छिपा हुआ। ४. नष्ट।

विलेप–संज्ञा पुं० १. लेप। २. पलस्तर।

विलेपन–संज्ञा पुं० लेप करने का पदार्थ।

विलेशय–संज्ञा पुं० १. बिल या दरार में रहनेवाले जीव। २. सर्प। साँप।

विलोकना–क्रि० स० देखना।

विलोकनि*–संज्ञा स्त्री० चितवन। दृष्टि।

विलोचन–संज्ञा पुं० आँख। नेत्र। नयन।

विलोड़न–संज्ञा पुं० मथना। हिलोरना। आलोड़न।

विलोड़ना–क्रि० स० १. मथना। हिलोरना। २. लुप्त या गायब होना।

विलोप–संज्ञा पुं० १. लुप्त या गायब होना। किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया। २. नाश। ३. रुकावट। बाधा। ४. आघात। ५. नुकसान।

विलोपन–संज्ञा पुं० लुप्त या गायब करना। लेकर भाग जाना। दे० "विलोप"।

विलोपना*–क्रि० स० लुप्त या गायब करना। नष्ट करना।

विलोभ–संज्ञा पुं० लालच। प्रलोभन। मोह। वि० बिना लालच के।

विलोम–वि० १. विपरीत। उलटा। क्रम के विपरीत। २. उचित या प्रचलित रीति के विरुद्ध।
संज्ञा पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। संगीत में स्वर का उतार-चढ़ाव।

विलोमक–वि० विपरीत।

विलोमजा, विलोमजात–संज्ञा स्त्री० पिता से उच्च जातिवाली माँ से उत्पन्न सन्तान।

विलोल–वि० १. सुंदर। २. चंचल।

विल्व–संज्ञा पुं० बेल का पेड़।

विल्वपत्र–संज्ञा पुं० बेल का पत्ता, जो शिव पर चढ़ाते हैं। बेलपत्र।

विव*–वि० दो। दूसरा। दे० "विवि"।

विवक्षा–संज्ञा स्त्री० १. कहने या बोलने की इच्छा। विचार प्रकट करने की इच्छा। २. अर्थ। मतलब। ३. प्रसंगवश हो जानेवाली बात। ४. संदेह। शक।

विवक्षित–वि० जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। अपेक्षित।

विवदना*–क्रि० अ० विवाद करना। शास्त्रार्थ करना।

विवर–संज्ञा पुं० १. छिद्र। बिल। २. दरार। गर्त। ३. कंदरा। गुफा।

विवरण–संज्ञा पुं० १. सविस्तर वर्णन। ब्यौरा। २. वृत्तांत। बयान। हाल। ३. विवेचन। व्याख्या। भाष्य। टीका।

विवरणिका–घटनाओं या सभा-संस्थाओं का वह विवरण, जो सूचना के लिए किसी के पास भेजा जाय (अंग्रे०–रिपोर्ट)।

विवर्जन–संज्ञा पुं० १. निषेध। मनाही। २. दे० "वर्जन"। ३. परित्याग। अनादर।

विवर्ण–वि० १. नीच। कमीना। २. कुजाति। ३. बदरंग। बुरे रंग का। ४. जिसके चेहरे का रंग उतरा हुआ हो। कांतिहीन।
संज्ञा पुं० साहित्य में एक भाव, जिसमें भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदल जाता है।

विवर्त–संज्ञा पुं० १. समुदाय। समूह। २. आकाश। ३. भ्रांति। भ्रम। ४. रूपान्तर। ५. नृत्य।

विवर्तन–संज्ञा पुं० १. घूमना। फिरना। चक्कर काटना। २. चारों ओर घूमना। नाच।

विवर्तवाद–संज्ञा पुं० वेदांत में एक सिद्धांत, जिसके अनुसार ब्रह्मा को सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति-स्थान और संसार को माया मानते हैं। परिणामवाद।

विवर्तित–वि० १. बदला हुआ। २. भ्रमित। ३. उखड़ा हुआ।

विवर्द्धन–संज्ञा पुं० वृद्धि। १. विशेष रूप से बढ़ाना। २. किसी छोटी वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि को कुछ विशेष प्रक्रियाओं-द्वारा बड़ा करना।

विवश–वि० १. जिसका कुछ वश न चले। लाचार। बेबस। २. पराधीन।

विवसन–वि० [स्त्री० विवसना] बिना वस्त्र का। नंगा।

विवस्त्र–वि० बिना कपड़े का। नंगा।

विवस्वत्–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. सूर्य्य का सारथी। अरुण।

विवाद–संज्ञा पुं० १. किसी बात पर जबानी झगड़ा। झगड़ा। २. मुकदमा। मुकदमेबाजी।

विवादक–संज्ञा पुं० १. विवाद करनेवाला। झगड़ालू। २. मुकदमेबाज।

विवादास्पद–वि० जिस पर विवाद या झगड़ा हो। विवाद-योग्य। विवादयुक्त।

विवादी–संज्ञा पुं० १. कहा-सुनी या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक पक्ष। वादी। मुद्दई।

विवाह–संज्ञा पुं० एक धार्मिक और सामाजिक कृत्य, जिसके अनुसार पुरुष और स्त्री आपस में पति और पत्नी का सम्बन्ध स्थापित करते हैं। शादी। ब्याह। परिणय। पाणिग्रहण। हिन्दू-धर्म के अनुसार विवाह आठ

प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच। आजकल केवल ब्राह्म विवाह प्रचलित है।

विवाह-विच्छेद—संज्ञा पुं० तलाक। पति और पत्नी का अपना विवाह-सम्बन्ध तोड़ना। [अंग्रे०—डाइवोर्स]

विवाहित—वि० [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ।

विवाही—वि० विवाहित। जिसका विवाह हो चुका हो।

विवाह्य—वि० विवाह करने योग्य। शादी करने लायक।

विवि*—वि० १. दो। २. दूसरा।

विविक्त—वि० १. पृथक् या अलग किया हुआ। २. निर्जन। ३. पवित्र।

विविचार—वि० १. विचार-रहित। २. विवेक-रहित। ३. आचार-रहित।

विविदिषा—संज्ञा स्त्री० ज्ञान प्राप्त करने या जानने की इच्छा।

विविध—वि० बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।

विविर—संज्ञा पुं० १. खोह। गुफा। २. बिल। ३. दरार।

विवृत—वि० १. विस्तृत। फैला हुआ। २. खुला हुआ।
संज्ञा पुं० ऊष्म स्वरों का उच्चारण करने का एक प्रयत्न (व्या०)।

विवृति—संज्ञा स्त्री० १. व्याख्या। टीका। विवरण। २. परिधि। घेरा। ३. चारों ओर घूमना। परिभ्रमण। ४. अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जाने पर उसके स्पष्टीकरण के लिए दिया गया वक्तव्य या कथन। कैफियत।

विवृत्त—वि० [संज्ञा विवृत्ति] १. चारों ओर घेरा हुआ। २. घूमता हुआ। ३. लौटा हुआ। दे० "परावृत्त"।

विवेक—संज्ञा पुं० १. भले २. रेवान।गायक मन की वह शक्ति, जिससे भले-बुरे का ज्ञान होता है। ३. बुद्धि। समझ। विचार। निर्णयात्मक बुद्धि।

विवेकी—संज्ञा पुं० १. भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला। २. बुद्धिमान्। समझदार। ज्ञानी। विचारक। ३. न्यायशील। निर्णय-कर्त्ता।

विवेचक—संज्ञा पुं० विवेचना करनेवाला।

विवेचन—संज्ञा पुं० १. व्याख्या। मीमांसा। २. भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। यह देखना कि कौन-सी बात ठीक है और कौन नहीं। निर्णय। ३. तर्क-वितर्क। सत्-असत् का विचार।

विवेचनीय—वि० विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।

विवेचित—वि० १. जिसकी विवेचना की जा चुकी हो। विचारा हुआ। २. निश्चित।

विब्बोक—संज्ञा पुं० साहित्य में एक हाव, जिसमें स्त्रियाँ संयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशद—वि० १. बड़ा। बृहत्। विशाल। २. स्वच्छ। विमल। साफ। ३. व्यक्त। स्पष्ट। ४. सफेद। ५. भव्य। चमकीला। ६. सुंदर। खूबसूरत।

विशय—संज्ञा पुं० १. संदेह। २. आश्रय।

विशल्यकरणी—संज्ञा स्त्री० शरीर के घाव आदि में से विष का प्रभाव दूर करने-वाली प्रक्रिया या दवा।

विशांपति—संज्ञा पुं० राजा।

विशाख—संज्ञा पुं० १. कार्त्तिकेय। २. एक देवता, जिनका जन्म कार्त्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ३. शिव।

विशाखदत्त—संज्ञा पुं० संस्कृत के प्रसिद्ध कवि और नाटककार जिन्होंने, 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक बनाया है।

विशाखा—संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र, जिसे राधा भी कहते हैं।

विशारद—संज्ञा पुं० १. किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान्। २. कुशल। चतुर।
वि० १. मशहूर। २. श्रेष्ठ।

विशाल—वि० [संज्ञा विशालता] १. बहुत बड़ा और विस्तृत। लंबा-चौड़ा। २. सुंदर और भव्य। ३. प्रसिद्ध। मशहूर।

विशालाक्ष—संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव। २. विष्णु। ३. गरुड़।

विशालाक्षी—संज्ञा स्त्री० १. बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखोंवाली स्त्री। २. पार्वती। ३. देवी की एक मूर्त्ति।

विशिख—संज्ञा पुं० बाण।

विशिष्ट—वि० [संज्ञा विशिष्टता] १. जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो। विशेष। खास। प्रमुख। २. विलक्षण। ३. श्रेष्ठ। ४. प्रसिद्ध। मशहूर।

विशिष्टता—संज्ञा स्त्री० विशेषता।

विशिष्टाद्वैत—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध दार्शनिक सिद्धांत, जिसके अनुसार जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं माने जाते।

विशीर्ण—वि० १. दुबला-पतला। २. सूखा। ३. जीर्ण।

विशुद्ध—वि० [भाव० संज्ञा विशुद्धता] १. शुद्ध। जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। २. सच्चा। खालिस।

विशुद्धता—संज्ञा स्त्री० विशुद्ध होने का भाव। शुद्धता। पवित्रता।

विशुद्धि—संज्ञा स्त्री० शुद्धता। पवित्रता।

विशूचिका—संज्ञा स्त्री० हैजा।

विशृंखल—वि० १. बिना जंजीर के। बन्धन-[illegible]। २. जो रोका या दबाया न जा सके। ३. जिसमें कोई क्रम न हो।

विशेष—वि० १. खास। प्रधान। साधारण के अतिरिक्त। मुख्य। २. भेद। जाति। ३. अधिक।

संज्ञा पुं० १. साधारण के अतिरिक्त। २. अधिकता। ज्यादती। ३. भेद। अंतर। ४. वस्तु। पदार्थ। ५. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, जिसमें (क) बिना आधार के आधेय (ख) थोड़ा काम करने पर बहुत-सी प्राप्ति या (ग) एक ही चीज का अनेक स्थानों में होना वर्णित होता है। ६. सात प्रकार के पदार्थों में से एक। (वैशेषिक)

विशेषज्ञ—संज्ञा पुं० जिसे किसी विषय का बहुत अधिक या खास तौर का ज्ञान हो।

विशेषण—संज्ञा पुं० १. वह, जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करे या बतलावे। २. व्याकरण में वह शब्द, जो किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित करे।

विशेषता—संज्ञा स्त्री० १. विशेष का भाव। औरों से भिन्न गुण। २. प्रधानता। मुख्यता। खासियत। खसूसियत।

विशेषना—क्रि० अ० १. निश्चय या निर्णय करना। २. विशेष रूप देना।

विशेष्य—संज्ञा पुं० व्याकरण में वह संज्ञा, जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।

विश्रंभ—संज्ञा पुं० १. विश्वास। एतबार। २. प्रेमी और प्रेमिका में रति के समय होनेवाला झगड़ा। ३. प्रेम।

विश्रब्ध—वि० १. शांत। २. विश्वसनीय। ३. निर्भय। निडर।

विश्रब्धनवोढ़ा—संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नवोढ़ा नायिका, जिसको अपने पति पर कुछ-कुछ अनुराग और कुछ-कुछ विश्वास होने लगा हो।

विश्रवा—संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि, जो कुबेर के पिता थे।

विश्रांत—वि० १. जिसने विश्राम कर लिया हो। २. जो विश्राम कर रहा हो। ३. थका हुआ। ४. ठहरा या रुका हुआ।

विश्रांति—संज्ञा स्त्री० १. दे० "विश्राम"।

विश्राम—संज्ञा पुं० १. श्रम दूर करना। थकावट मिटाना। आराम करना। २. ठहरने का स्थान। ३. आराम। चैन। सुख।

विश्रामालय—संज्ञा पुं० यात्रियों के आराम करने की जगह (स्टेशनों पर)। [अंग्रे—रेस्टरूम]

विश्री—वि० १. श्रीविहीन। कान्ति से हीन। २. बिना धन या ऐश्वर्य का। ३. कुरूप। भद्दा।

विश्रुत—वि० १. प्रसिद्ध। मशहूर। २. जो सुना गया हो।

विश्रुतात्मा—संज्ञा पुं० विष्णु।

विश्रुति—संज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्धि। ख्याति। मशहूर होने का भाव। २. किसी बात को सबको बताने या प्रसिद्ध करने की क्रिया या भाव।

विश्लिष्ट–वि० १. जिसका विश्लेषण हो चुका हो। अलग किया हुआ। २. विकसित। खिला हुआ। ३. प्रकट। प्रकाशित।

विश्लेष–संज्ञा पुं० दे० "विश्लेषण"। अलग होना। वियोग।

विश्लेषक–संज्ञा पुं० १. विश्लेषण करनेवाला। २. रासायनिक या अन्य किसी विषय का विश्लेषण।

विश्लेषण–संज्ञा पुं० १. किसी बात के सब तथ्यों की परीक्षा के लिए उसका अलग-अलग निरूपण। २. किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग-अलग करना।

विश्वंभर–संज्ञा पुं० सारे संसार का पालन करनेवाला। परमेश्वर। विष्णु।

विश्वंभरा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

विश्व–संज्ञा पुं० १. संसार। दुनिया। चौदहों भुवनों का समूह। समस्त ब्रह्मांड। २. देवताओं का एक गण, जिसमें ये दस देवता हैं––वसु, सत्य, ऋतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा। ३. विष्णु। ४. शरीर।

वि० १. समस्त। सब। २. बहुत।

विश्वकर्मा–संज्ञा पुं० १. संसार का रचयिता। ईश्वर। ब्रह्मा। २. एक देवता, जो शिल्प-शास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं। ३. बढ़ई। ४. लोहार।

विश्वकोश–संज्ञा पुं० वह ग्रंथ, जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो। (अंग्रे०–एन्साइक्लोपीडिया)

विश्वगंधा–संज्ञा पुं० पृथ्वी।

विश्वधर–संज्ञा पुं० विष्णु।

विश्वनाथ–संज्ञा पुं० १. संसार का स्वामी। २. शिव। महादेव।

विश्वनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु।

विश्वपति–संज्ञा पुं० ईश्वर।

विश्वबंधु–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

विश्वरूप–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. शिव। ३. श्रीकृष्ण का वह स्वरूप, जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।

विश्वविद्यालय–संज्ञा पुं० वह संस्था, जिसमें सभी विषयों की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो और परीक्षाएँ ली जाती हों। (अंग्रे०–यूनिवर्सिटी)।

विश्वव्यापी–संज्ञा पुं० ईश्वर।

वि० जो सारे संसार में व्याप्त या फैला हो। जो सब जगह विद्यमान या मौजूद हो। सर्वव्यापी।

विश्वश्रवा–संज्ञा पुं० एक मुनि, जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।

विश्वसनीय–वि० [संज्ञा विश्वसनीयता] विश्वास करने योग्य। एतबार करने लायक। जिसका विश्वास किया जा सके। विश्वस्त।

विश्वात्मा–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. शिव। ३. ब्रह्मा।

विश्वाधार–संज्ञा पुं० ईश्वर।

विश्वामित्र–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि, जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि ये बहुत ही उग्र स्वभाव के थे और प्रायः लोगों को शाप दे दिया करते थे।

विश्वावसु–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. एक संवत्सर। ३. एक गंधर्व।

संज्ञा स्त्री० रात।

विश्वास–संज्ञा पुं० एतबार। यकीन। प्रतीति। भरोसा।

विश्वासघात–संज्ञा पुं० [वि० विश्वास-घातक] धोखा। अपने पर विश्वास करने-वाले के साथ उसके विश्वास के बिलकुल विपरीत कार्य करना।

विश्वासघातक–संज्ञा पुं० १. धोखेबाज। विश्वासघात करनेवाला। २. धूर्त। ठग।

विश्वासपात्र–संज्ञा पुं० विश्वसनीय। वह व्यक्ति, जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके।

विश्वासभाजन–संज्ञा पुं० दे० "विश्वासपात्र"।

विश्वासी–संज्ञा पुं० [स्त्री० विश्वासिनी] १. विश्वास करनेवाला। २. विश्वसनीय। जिस पर विश्वास हो।

विश्वेदेव–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. देवताओं

का एक गण, जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।

विश्वेवेद—संज्ञा पुं० अग्नि।

विश्वेश—संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु।

विश्वेश्वर—संज्ञा पुं० ईश्वर। शिव की एक मूर्ति का नाम।

विष—संज्ञा पुं० जहर।

मुहा०—विष की गाँठ=अनेक प्रकार की बुराई या खराबी पैदा करनेवाला।

विषकंठ—संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

विषकन्या—संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।

विषण्ण—वि० जिसका मन बहुत दुखी हो। खिन्न। बहुत उदास। विषादयुक्त।

विषण्णवदन—वि० उदास चेहरेवाला।

विषदंड—संज्ञा पु० कमल की नाल।

विषधर—संज्ञा पुं० साँप।

विषमंत्र—संज्ञा पुं० १. विष उतारने का मंत्र जाननेवाला। २. सँपेरा।

विषम—वि० १. जो सम या समान न हो। असमान। २. वह संख्या, जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। ताक। ३. बहुत कठिन। ४. बहुत तीव्र। बहुत तेज। ५. भीषण। भयंकर।

संज्ञा पुं० १. संकट। आफत। २. वह छन्द, जिसके चारों चरणों में बराबर-बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। ३. एक अर्थालंकार, जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है। ४. ताल का एक प्रकार। (संगीत)

विषमचतुर्भुज या **विषमचतुष्कोण**—चतुर्भुज क्षेत्र, जिसकी कोई भी दो भुजाएँ समानान्तर न हों।

विषमज्वर—संज्ञा पुं० १. जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। मलेरिया। २. एक तरह का पुराना बुखार, जो नित्य होता है, पर जिसके आने का समय नियत नहीं रहता।

विषमता—संज्ञा स्त्री० १. विषम या असमान होने का भाव। २. विरोध। वैर।

विषमपद—संज्ञा पुं० असमान पदोंवाला छन्द।

विषमवृत्त—संज्ञा पुं० वह छंद, जिसके पद समान न हों। असमान पदोंवाला छंद।

विषय—संज्ञा पुं० १. वह, जिस पर विचार किया जाय। मजमून। २. वस्तु। ३. स्त्री-संभोग। ४. संपत्ति।

विषयक—अव्य० किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाला। संबंधी।

विषयप्रवेश—संज्ञा पुं० किसी विषय के सम्बन्ध में दिया जानेवाला परिचय या भूमिका। ग्रंथ की भूमिका या ग्रंथ के विषय का परिचयात्मक कथन।

विषय-समिति—संज्ञा स्त्री० कुछ खास सदस्यों की वह समिति, जो किसी सम्मेलन में उपस्थित किए जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित करती है। [अंग्रे०—सबजेक्ट्स कमेटी]।

विषयानुक्रमणिका—संज्ञा स्त्री० विषय-सूची। विषयों के आधार पर बनी हुई अनुक्रमणिका या सूची।

विषयी—संज्ञा पुं० १. भोग-विलास में बहुत आसक्त रहनेवाला। विलासी। कामी। २. कामदेव।

विषविद्या—संज्ञा स्त्री० मंत्र आदि की सहायता से विष उतारने की विद्या।

विषवैद्य—संज्ञा पुं० १. मंत्र-तंत्र आदि की सहायता से विष उतारनेवाला वैद्य। २. विष का प्रभाव दूर करने की दवा करनेवाला।

विषांगना—संज्ञा स्त्री० दे० "विषकन्या"।

विषाक्त—वि० जहरीला। विषैला। विष से भरा हुआ।

विषाण—संज्ञा पुं० १. सींग। २. सूअर का दाँत। ३. खाँग।

विषाद—संज्ञा पुं० [वि० विषादी] १. खेद। दुःख। रंज। २. निश्चेष्ट होने का भाव। जड़ता।

विषानन—संज्ञा पुं० साँप।

विषुव–संज्ञा पुं० वह समय, जब कि सूर्य्य विषुवत रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। ऐसा समय वर्ष में दो बार आता है।

विषुवत रेखा–संज्ञा स्त्री० एक कल्पित रेखा, जो पृथ्वी-तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर मानी जाती है।

विषैला–वि० जहरीला। विष से भरा हुआ।

विष्कंभ–संज्ञा पुं० १. नाटक का एक प्रकार का अंक। जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी सूचना इसमें मध्यम पात्रों-द्वारा दी जाती है। २. ज्योतिष में एक प्रकार का योग। ३. विस्तार। ४. बाधा। विघ्न।

विष्कंभक–संज्ञा पुं० दे० "विष्कंभ"।

विष्किर–संज्ञा पुं० चिड़िया।

विष्टंभ–संज्ञा पुं० १. बाधा। रुकावट। २. पेट फूलने का रोग।

विष्टंभन–संज्ञा पुं० रोकने या सिकोड़ने की क्रिया।

विष्टिभद्रा–संज्ञा स्त्री० ज्योतिष में एक प्रकार का योग, जो यात्रा और शुभ कार्यों के लिए निषिद्ध माना जाता है। भद्रा।

विष्ठा–संज्ञा स्त्री० मल। मैला। गुह। पाखाना।

विष्णु–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। हिंदुओं के एक प्रधान देवता, जो सृष्टि का भरण-पोषण और पालन करनेवाले माने जाते हैं। ब्रह्मा सृष्टि की रचना करनेवाले और शिव सृष्टि का संहार करनेवाले माने जाते हैं। २. विष्णु के १० अवतार माने जाते हैं। ३. बारह आदित्यों में से एक।

विष्णुक्रांता–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता।

विष्णुगुप्त–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण, जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे। २. प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम।

विष्णुपदी–संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।

विष्णुलोक–संज्ञा पुं० वैकुंठ।

विष्वक्सेन–संज्ञा पुं० १. । २. एक मनु का नाम। ३. शिव।

विसदृश–वि० १. विपरीत। विरुद्ध। उलटा। २. विलक्षण। अद्भुत।

विसर्ग–संज्ञा पुं० १. व्याकरण में एक वर्ण, जिसमें ऊपर-नीचे दो बिंदु होते हैं और जिनका उच्चारण आध ह के समान होता है। २. दान। ३. त्याग। ४. मोक्ष। ५. मृत्यु। ६. प्रलय।

विसर्जन–संज्ञा पुं० १. छोड़ना। परित्याग। २. विदा होना या चला जाना। ३. सभा की समाप्ति। समाप्ति। ४. षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार। ५. आवाहन किए हुए देवता से अपने स्थान पर वापस जाने की प्रार्थना करना।

विसर्प–संज्ञा पुं० एक तरह की बीमारी, जिसमें बुखार के साथ फुंसियाँ हो जाती हैं।

विसार–संज्ञा पुं० १. फैलाव। २. प्रवाह। ३. उत्पत्ति। ४. बोने के लिए अलग रखा गया अन्न। बीज।

विसूचिका–संज्ञा स्त्री० दे० "विशूचिका"।

विस्तर–वि० बहुत अधिक। विस्तृत। बड़ा और लम्बा-चौड़ा।

संज्ञा पुं०* दे० "विस्तार"।

विस्तरण–संज्ञा पुं० विस्तार करने या बढ़ाने की क्रिया या भाव।

विस्तार–संज्ञा पुं० १. फैलाव। लम्बे या चौड़े होने का भाव। २. लम्बाई और चौड़ाई।

विस्तारण–संज्ञा पुं० फैलाना। बढ़ाना। विस्तार करना।

विस्तारना*–क्रि० स० फैलाना। बढ़ाना। विस्तार करना।

विस्तीर्ण–वि० फैला हुआ। विस्तृत।

विस्तृत–वि० [संज्ञा विस्तार, विस्तृति] १. फैला हुआ। विस्तारवाला। २. यथेष्ट विवरणवाला। ३. बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा। विशाल।

विस्फार–संज्ञा पुं० १. विस्तार। फैलाव। २. धनुष की टंकार और डोरी। ३. तेजी। ४. विकास। ५. काँपना।

विस्फारण—संज्ञा पुं० [वि० विस्फारित] १. फैलना। खोलना। २. झाड़ना।

विस्फारित—वि० १. अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ, जैसे विस्फारित नेत्र। २. फाड़ा हुआ।

विस्फीत—संज्ञा स्त्री० १. "स्फीत" का उल्टा। फूले या बढ़े हुए पदार्थ को पूर्व स्थिति में लाना। २. बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन को फिर से पूर्व स्थिति में लाना।

विस्फोट—संज्ञा पुं० १. अन्दर की गरमी आदि के कारण फूटना। २. बम का फूटना। ३. ज्वालामुखी का फूटना। ४. जहरीला और खराब फोड़ा।

विस्फोटक—संज्ञा पुं० १. भभककर फूटनेवाला पदार्थ, जैसे बम आदि। २. जहरीला फोड़ा।

विस्मय—संज्ञा पुं० १. आश्चर्य। ताज्जुब। २. साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी भाव।

विस्मरण—संज्ञा पुं० भूल जाना। याद न रखना।

विस्मित—वि० चकित। जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो।

विस्मृत—वि० भूला हुआ। जो स्मरण या याद न हो।

विस्मृति—संज्ञा स्त्री० भूल जाना। विस्मरण।

विहंग—संज्ञा पुं० १. चिड़िया। २. बाण। ३. बादल।

विहंगम—संज्ञा पुं० चिड़िया।

विहँसना*—क्रि० अ० १. मुसकराना। हँसना। २. खिलना।

विहग—संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

विहरना*—क्रि० अ० विहार करना। आनन्द करना। घूमना-फिरना।

विहरण—संज्ञा पुं० १. विहार करना। घूमना। आनन्द करना। २. केलिक्रीड़ा।

विहान—संज्ञा पुं० सबेरा। प्रातःकाल।

विहार—संज्ञा पुं० १. मनबहलाव के लिए घूमना। आनन्द करना। २. रति-क्रीड़ा। संभोग। ३. क्रीड़ा करने का स्थान। ४. बौद्ध भिक्षुओं या संन्यासियों के रहने का स्थान। ५. भारत गणतन्त्र का एक राज्य।

विहारी—संज्ञा पुं० [स्त्री० विहारिणी] श्रीकृष्ण का एक नाम। विहार करनेवाला।

विहित—वि० १. जिसका विधान किया गया हो। नियमों के अनुसार उचित। २. किया हुआ। ३. दिया हुआ।

विहीन—वि० [संज्ञा विहीनता] १. छोड़ा हुआ। त्यक्त। २. बगैर। बिना। रहित।

विह्वल—वि० [संज्ञा विह्वलता] बचैन। व्याकुल। घबराया हुआ।

वीक्ष—संज्ञा पुं० दृष्टि।

वीक्षण—संज्ञा पुं० देखना।

वीचि—संज्ञा स्त्री० पानी की लहर।

वीचिमाली—संज्ञा पुं० समुद्र।

वीटक, बीटक—संज्ञा पुं० पान का बीड़ा।

वीणा—संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध बाजा। बीन।

वीणापाणि—संज्ञा स्त्री० सरस्वती। हाथ में वीणा धारण करनेवाली देवी।

वीत—वि० १. जो छोड़ दिया गया हो। २. जो छूट गया हो। ३. व्यतीत। समाप्त। बीता हुआ। ४. मुक्त। निवृत्त। ५. सुन्दर।

वीतराग—संज्ञा पुं० जिसने मोह-माया या आसक्ति छोड़ दी हो। जिसने सांसारिक वस्तुओं और सुखों की चाह बिलकुल छोड़ दी हो। संसार से निर्लिप्त।

वीतिहोत्र—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. सूर्य।

वीथि—संज्ञा स्त्री० दे० "वीथी"।

वीथिका—संज्ञा स्त्री० दे० "वीथी"।

वीथी—संज्ञा स्त्री० १. गली। मार्ग। रास्ता। २. दृश्यकाव्य या रूपक का एक भेद, जो एक ही अंक का होता है और जिसमें एक ही नायक होता है। ३. आकाश में नक्षत्रों के रहने के कुछ विशिष्ट स्थान।

वीथ्यंग—संज्ञा पुं० रूपक में वीथी के अंग, जो १३ माने गए हैं।

वीप्सा—संज्ञा स्त्री० १ व्याप्त होने की इच्छा। २. द्विरुक्ति। एक प्रकार का शब्दालंकार।

वीर—संज्ञा पुं० १. बहादुर। साहसी और बलवान्। शूर। २. योद्धा। सैनिक। ३. जो किसी काम में और लोगों से बहुत बढ़कर हो। ४. पुत्र। ५. पति या भाई के लिए सम्बोधन। (स्त्री०) ६. साहित्य

में एक रस, जिसमें उत्साह और वीरता आदि का वर्णन होता है। ७. तांत्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक भाव।

वीरकेशरी—संज्ञा पुं० वीरों में सिंह के समान श्रेष्ठ।

वीरगति—संज्ञा स्त्री० १. लड़ाई के मैदान में मृत्यु। २. वीरों को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होनेवाली गति। स्वर्ग।

वीरता—संज्ञा स्त्री० शूरता। बहादुरी।

वीरप्रसू—संज्ञा स्त्री० वीर सन्तान उत्पन्न करनेवाली स्त्री। वीर-जननी।

वीरबाहु—संज्ञा पुं० विष्णु।

वीरभद्र—संज्ञा पुं० १. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २. शिव के एक प्रसिद्ध गण, जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं।

वीरभूमि—संज्ञा स्त्री० युद्धभूमि। पश्चिमी बंगाल का एक नगर।

वीरमाता—संज्ञा स्त्री० वीर पुत्र की माँ। वीर पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री। वीरप्रसू।

वीरललित—संज्ञा पुं० वीरों का तरह, पर साथ ही कोमल स्वभाववाला।

वीरव्रती—संज्ञा पुं० बहुत बड़ा वीर। वीरता का व्रत लेनेवाला। परम वीर।

वीरशयन—संज्ञा स्त्री० रणभूमि।

वीरशय्या—संज्ञा स्त्री० रणभूमि।

वीरशैव—संज्ञा पुं० शैवों का एक भेद।

वीरसू—संज्ञा स्त्री० दे० "वीरप्रसू"। वीर पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री।

वीरा—संज्ञा स्त्री० १. मदिरा। शराब। २. वह स्त्री, जिसके पति और पुत्र हों।

वीराचारी—संज्ञा पुं० एक प्रकार के वाममार्गी, जो देवताओं की उपासना वीर भाव से करते हैं।

वीरान—वि० [फा०] सुनसान। उजड़ा हुआ स्थान। उजाड़। वह जगह, जहाँ बस्ती न रह गई हो। निर्जन।

वीरासन—संज्ञा पुं० बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

वीरुध—संज्ञा स्त्री० १. लता। २. पौधा। ३. एक लता, जो काटने पर फिर बढ़ जाय। ४. शाखा।

वीरेश, वीरेश्वर—संज्ञा पुं० शिव।

वीर्य, वीर्य्य—संज्ञा पुं० १. शरीर की सात धातुओं में से एक धातु, जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है। शुक्र। २. किसी वस्तु का सार भाग। ३. पराक्रम। बल। शक्ति। ४. तेज। ५. बीज। बीआ।

वृंत—संज्ञा पुं० १. स्तन का अगला भाग। २. ढोंड़ी। डंठा।

वृंद—संज्ञा पुं० समूह। झुंड।

वृंदा—संज्ञा स्त्री० १. तुलसी। २. राधिका का एक नाम।

वृंदारक—संज्ञा पुं० देवता। अमर। देव।

वृंदारण्य—संज्ञा पुं० वृन्दावन।

वृंदावन—संज्ञा पुं० मथुरा के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीड़ाएँ की थीं।

वृक—संज्ञा पुं० १. भेड़िया। २. शृगाल। गीदड़। ३. कौवा। ४. क्षत्रिय। ५. वज्र। ६. हल। ७. चन्द्रमा। ८. सूर्य। ९. एक पौधा। १०. एक असुर का नाम। ११. श्रीकृष्ण के पुत्र का नाम।

वृकोदर—संज्ञा पुं० भीमसेन।

वृक्क—संज्ञा पुं० गुर्दा। मूत्राशय।

वृक्कक—संज्ञा पुं० मूत्राशय। गुर्दा।

वृक्ष—संज्ञा पुं० १. पेड़। दरख्त। २. वृक्ष से मिलती-जुलती आकृति, जिसमें किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ आदि दी गई हों। जैसे—वंशवृक्ष।

वृक्षायुर्वेद—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें वृक्षों के रोगों आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।

वृजन—संज्ञा पुं० १. आकाश। २. बुरा कार्य। ३. लड़ाई। ४. निराकरण। ५. बल। ६. शत्रु।
वि० टेढ़ा। कुटिल।

वृजिन—संज्ञा पुं० १. पाप। गुनाह। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ। ३. खाल। ४. लोहू। ५. बाल।
वि० टेढ़ा।

वृत्त—संज्ञा पुं० १. चरित्र। २. आचार। चाल-चलन। ३. समाचार। वृत्तांत। हाल। ४. जीविका का साधन। ५. वह छंद, जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। ६. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। दंडका। दंडिका। ७. वह क्षेत्र, जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। गोल घेरा। वि० १. दृढ़। २. वर्तुल। गोलाकार। ३. मृत। ४. उत्पन्न। ५. ढका हुआ। आच्छादित।

वृत्तक—संज्ञा पुं० छंद।

वृत्तखंड—संज्ञा पुं० १. किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २. मेहराब।

वृत्तांत—संज्ञा पुं० घटना का विवरण। समाचार। हाल।

वृत्ति—संज्ञा स्त्री० १. वह कार्य, जिसके द्वारा जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका। रोजी। २. सहायता के रूप में दिया गया धन। वह धन, जो किसी असहाय व्यक्ति या छात्र आदि को सहायतार्थ दिया जाय। ३. सूत्रों आदि की व्याख्या, जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए की जाती है। ४. नाटकों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली, जो चार प्रकार की कही गई है। ५. इन्द्रिय-निग्रह की ओर प्रवृत्ति। ६. योग के अनुसार चित्त की अवस्था, जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ७. व्यापार। कार्य्य। ८. स्वभाव। प्रकृति। ९. संहार करने का एक प्रकार का शस्त्र।

वृत्र—संज्ञा पुं० १. अँधेरा। २. मेघ। बादल। ३. शत्रु। दुश्मन। ४. पुराणानुसार त्वष्टा का पुत्र एक असुर, जिसे इंद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिए दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बना था।

वृत्रघ्न—संज्ञा पुं० इन्द्र।

वृत्रारि—संज्ञा पुं० इन्द्र।

वृत्रासुर—संज्ञा पुं० दे० "वृत्र"।

वृथा—अव्य० बिना मतलब का। व्यर्थ। फजूल। निष्प्रयोजन। क्रि० वि० बिना मतलब के। बेफायदा। संज्ञा पुं० वृथात्व।

वृद्ध—संज्ञा पुं० १. बुड्ढा। बुढ़ापा। प्रायः ६० वर्ष या इससे अधिक आयुवाला। २. पंडित। विद्वान्।

वृद्धता—संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा। वृद्ध होने का भाव।

वृद्धश्रवा—संज्ञा पुं० इंद्र।

वृद्धा—संज्ञा स्त्री० वृद्ध स्त्री। बुड्ढी।

वृद्धि—संज्ञा स्त्री० १. बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ती। अधिकता। २. उन्नति। ३. समृद्धि। ४. लाभ। मुनाफा। ५. ब्याज। सूद।

वृश्चिक—संज्ञा पुं० १. बिच्छू। २. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ३. मेष आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि, जिसके सब तारों से बिच्छू का आकार बनता है।

वृश्चिकाली—संज्ञा स्त्री० बिच्छू नाम की लता, जिसके रोएँ शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होता है।

वृष—संज्ञा पुं० १. साँड़। बैल। २. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ३. बारह राशियों में से दूसरी राशि।

वृषकेतन—संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

वृषकेतु—संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

वृषण—संज्ञा पुं० १. सांड। २. अंडकोश। पोता।

वृषध्वज—संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. गणेश। ३. पुराणानुसार एक पर्वत।

वृषभ—संज्ञा पुं० बैल। साँड़।

वृषभकेतु—संज्ञा पुं० शिव। जिसके झंडे पर बैल का चित्र हो।

वृषभधुज*—संज्ञा पुं० दे० "वृषभध्वज"।

वृषभध्वज—संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. जिसके झंडे पर बैल का चित्र हो।

वृषभाक्ष—संज्ञा पुं० विष्णु।

वृषभानु—संज्ञा पुं० राधिकाजी के पिता, सूर्य-भानु राजा के पुत्र।

वृषभानुनंदिनी—संज्ञा स्त्री० राधिका।

वृषल—संज्ञा पुं० १. शूद्र। २. पापी और

दुराचारी। ३. घोड़ा। ४. सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम।

वृषली–संज्ञा स्त्री० १. स्मृतियों के अनुसार वह कुँआरी कन्या, जो रजस्वला हो गई हो। रजस्वला स्त्री। २. कुलटा। दुराचारिणी। ३. नीच जाति की स्त्री।

वृषवाहन–संज्ञा पुं० शिव। जिसकी सवारी बैल हो।

वृषवासी–संज्ञा पुं० शिवजी।

वृषाणक–संज्ञा पुं० १. शिव। २. शिव का एक अनुचर।

वृषायण–संज्ञा पुं० शिव।

वृषासुर–संज्ञा पुं० दे० "भस्मासुर"।

वृषोत्सर्ग–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के नाम पर साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।

वृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. वर्षा। बारिश। बरसात। २. ऊपर से बहुत-सी चीजों का एक साथ गिरना।

वृष्टिमान–संज्ञा पुं० वर्षामापक यंत्र, जिससे यह नापा जाता है कि कितनी वर्षा हुई।

वृष्णि–संज्ञा पुं० १. बादल। २. यादववंश। ३. श्रीकृष्ण। ४. इंद्र। ५. अग्नि। ६. वायु। वि० प्रचंड। बलवान्। शक्तिशाली।

वृष्य–संज्ञा पुं० वीर्य, बल और आनंद बढ़ानेवाली चीज।

वेंकटगिरि–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।

वेंकटेश–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के वेंकट पर्वत पर भगवान् विष्णु की मूर्त्ति का नाम। इसे बालाजी भी कहते हैं। यह हिन्दुओं का एक प्रधान तीर्थ है।

वे–सर्व० 'वह' का बहुवचन रूप।

वेक्षण–संज्ञा पुं० अच्छी तरह से देखना या ढूँढ़ना।

वेग–संज्ञा पुं० १. तेजी के साथ बढ़ना। प्रवाह। बहाव। २. जोर। तेजी। ३. जोश। ४. जल्दी। ५. शरीर में से मल-मूत्र आदि बाहर निकलने की प्रवृत्ति।

वेगधारण–संज्ञा पुं० मल-मूत्र आदि का वेग रोकना।

वेगवती–संज्ञा स्त्री० नदी। वि० बहुत तेज चलनेवाली।

वेगवान्–वि० तेज चलनेवाला।

वेगि*–क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

वेगी–संज्ञा पुं० वेगवाला। वेगवान्। शीघ्रगामी।

वेणी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। नदियों का संगम। जैसे त्रिवेणी।

वेणु–संज्ञा पुं० १ बाँस। २. बाँस की बनी हुई वंशी।

वेतन–संज्ञा पुं० १. कोई काम करने के बदले में दिया जानेवाला धन। पारिश्रमिक। २. तनख्वाह। दर-माहा। महीना।

वेतनभोगी–संज्ञा पुं० वेतन या तनख्वाह लेकर काम करनेवाला।

वेताल–संज्ञा पुं० १. द्वारपाल। संतरी। २. शिव के एक गणाधिप। ३. भूतों की एक प्रकार की योनि। ४. वह शव, जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ५. छप्पय का छठा भेद।

वेत्ता–वि० जाननेवाला। ज्ञाता।

वेत्र–संज्ञा पुं० १. बेंत। २. अधिकारी या द्वारपाल का दंड। ३. बाँसुरी की नली।

वेत्रकार–संज्ञा पुं० बेंत से चीजें बनाने का काम करनेवाला।

वेत्रधर–संज्ञा पुं० द्वारपाल। संतरी।

वेत्रवती–संज्ञा स्त्री० मध्य भारत की बेतवा नदी।

वेत्रासन–संज्ञा पुं० बेंत से बुना हुआ आसन या बैठने की जगह। जैसे–कुर्सी, कोच आदि।

वेत्रासुर–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर।

वेद–संज्ञा पुं० १. हिन्दुओं के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ, जिनकी संख्या चार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। श्रुति। २. किसी विषय का, विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञान। ३. वृत्त। ४. बिल। ५. यज्ञांग

वेदकार–संज्ञा पुं० वेदों का रचयिता।

वेदगर्भ–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। ब्राह्मण।

वेदगुह्य–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वेदों में छिपा हुआ।

वेदज्ञ–संज्ञा पुं० १. वेदों का जाननेवाला। वेदों का पंडित। २. ब्रह्मज्ञानी।

वेदन–संज्ञा पुं० दे० "वेदना"।

वेदना–संज्ञा स्त्री० मानसिक कष्ट। पीड़ा। दुःख। व्यथा।

वेदनिंदक–संज्ञा पुं० १. वेदों की बुराई करनेवाला। २. नास्तिक।

वेदनीय–वि० १. कष्टदायक। २. जानने योग्य।

वेदबीज–संज्ञा पुं० १. वेदों का मूल बीज। २. श्रीकृष्ण।

वेदमंत्र–संज्ञा पुं० वेदों के मंत्र।

वेदमाता–संज्ञा स्त्री० १. गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। ३. सरस्वती।

वेदवाक्य–संज्ञा पुं० १. वेदों ˘ कहा हुआ वाक्य। २. पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात, जिसका खंडन न हो सके।

वेदव्यास–संज्ञा पुं० वेदों का संग्रह और सम्पादन करनेवाले तथा पुराणों, महाभारत और भागवत आदि के रचयिता कहे जानेवाले कृष्ण द्वैपायन।

वेदांग–संज्ञा पुं० वेदों के अंग या शास्त्र, जो छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद।

वेदांत–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म। ज्ञानकांड। २. छः दर्शनों में से प्रधान दर्शन, जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही को एकमात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है। ३. उत्तर-मीमांसा। ४. अद्वैतवाद। ५. उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग, जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है।

वांतसूत्र–संज्ञा पुं० महर्षि बादरायण-कृत सूत्र, जो वेदांत-शास्त्र के मूल माने जाते हैं।

ांती–संज्ञा पुं० वेदांत का ज्ञाता। वेदांत का पंडित। ब्रह्मवादी।

िका–संज्ञा स्त्री० वह चबूतरा, जिसके ऊपर इमारत बनती है। कुरसी। दे० "वेदी"।

वेदी–संज्ञा स्त्री० यज्ञ, पूजा, अनुष्ठान बलि आदि के लिए तैयार किया गया कुछ ऊँचा स्थान।

वि० वेद जाननेवाला। पंडित।

वेध–संज्ञा पुं० १. छेदना। बेधना। २. यंत्रों आदि की सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि को देखना। ३. ज्योतिष के अनुसार एक ग्रह पर दूसरे ग्रह की छाया।

वेधक–संज्ञा पुं० बेधने या छेदनेवाला।

वेधशाला–संज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों आदि के वेध करने के यंत्र आदि रखे हों।

वेधा–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य। ५. पंडित। विद्वान्।

वेधालय–संज्ञा पुं० दे० "वेधशाला"।

वेधी–संज्ञा पुं० [स्त्री० वेधिनी] वेध करनेवाला। वेधनेवाला।

वेपथु–संज्ञा पुं० कँपकपी।

वेपन–संज्ञा पुं० काँपना। कंप।

वेल्लि, वेल्ली–संज्ञा स्त्री० बेल। लता।

वेश–संज्ञा पुं० १. कपड़ा पहन लेने के बाद का रूप। २. पहनावा। पोशाक।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना=किसी के रूप-रंग और पहनावे की नकल करना।

यौ०–वेशभूषा=पहनने के कपड़े आदि। पहनावा।

वेशधारी–संज्ञा पुं० वेश या रूप धारण करनेवाला।

वेशन–संज्ञा पुं० प्रवेश करना।

वेश्म–संज्ञा पुं० रहने का स्थान। घर।

वेश्या–संज्ञा स्त्री० रंडी। नाचने-गाने और संभोग कराने का व्यवसाय या पेशा करनेवाली स्त्री।

वेश्यालय–संज्ञा पुं० वह घर, जिसमें रंडियाँ अपना पेशा करती हों। (अंग्रे०—ब्राथेल)

वेष–संज्ञा पुं० १. दे० "वेश"। २. रंगमंच में नेपथ्य।

वेष्ट–संज्ञा पुं० १. पेड़ का रस। २. पगड़ी। ३. परकोटा। चहारदीवारी।

वेष्टन–संज्ञा पुं० [वि० वेष्टित] १. कपड़ा

आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय। वेठन। २. घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव।

वेष्टित—वि० किसी चीज से लपेटा या घिरा हुआ।

वै*—वि० १. दे० "वे"। २. दे० "दो"।

वैकल्प—संज्ञा पुं० विकल्प का भाव।

वैकल्पिक—वि० १. जो अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके। २. जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। ३. संदिग्ध।

वैकुंठ—संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. विष्णु भगवान् के रहने का स्थान। ३. विष्णु का नाम।

वैकृत—संज्ञा पुं० १. विकार। खराबी। २. वीभत्स रस। ३. वीभत्स रस का आलंबन, जैसे—मांस, रक्त आदि।
वि० १. विकार से उत्पन्न। २. जल्दी ठीक न होनेवाला। दुःसाध्य।

वैक्रमीय—वि० विक्रम का। विक्रम-संबंधी।

वैक्रांत—संज्ञा पुं० चुन्नी नामक मणि।

वैखरी—संज्ञा स्त्री० १. उच्च और गंभीर स्वर, जो बहुत स्पष्ट सुनाई पड़े। २. वाक्‌शक्ति। ३. वाग्देवी।

वैखानस—संज्ञा पुं० वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। वानप्रस्थाश्रमी साधु। तपस्वी।

वैगन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मालगाड़ी का डब्बा, जिसमें माल भरकर बाहर भेजा जाता है।

वैचारिक—वि० १. विचार-सम्बन्धी। न्याय-विचार-सम्बन्धी। २. न्यायालय में विचारणीय विषय-सम्बन्धी।

वैचित्र्य—संज्ञा पुं० दे० "विचित्रता"।

वैजयंत—संज्ञा पुं० १. इंद्र की पुरी का नाम। २. इंद्र।

वैजयंती—संज्ञा स्त्री० १. पाँच रंगों की घुटनों तक लटकती हुई एक प्रकार की माला, जिसे श्रीकृष्ण पहनते थे। २. पताका।

वैज्ञानिक—संज्ञा पुं० १. विज्ञान का अच्छा ज्ञाता। २. निपुण। दक्ष।
वि० विज्ञान-संबंधी। विज्ञान का।

वैतनिक—संज्ञा पुं० वेतन या तनखाह लेकर काम करनेवाला। नौकर।

वैतरणी—संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी, जो यमराज के द्वार पर है।

वैताल—संज्ञा पुं० स्तुति पाठ करनेवाला।

वैतालिक—संज्ञा पुं० स्तुति पाठ करनेवाला। राजाओं को स्तुति सुना करके जगानेवाला।

वैतालीय—संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त।
वि० वेताल-संबंधी। वेताल का।

वैदग्ध—संज्ञा पुं० विदग्धता। विदग्ध होने का भाव।

वैदर्भी—संज्ञा पुं० १. विदर्भ देश का राजा या शासक। २. दमयंती के पिता भीमसेन। ३. रुक्मिणी के पिता भीष्मक।
वि० विदर्भ देश का।

वैदर्भ—संज्ञा स्त्री० १. काव्य की वह रीति या शैली, जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना होती है। २. राजा वैदर्भ की पुत्री, दमयंती। ३. रुक्मिणी।

वैदिक—वि० वेद-संबंधी। वेद का।
संज्ञा पुं० १. वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वेदों का पंडित।

वैदूर्य—संज्ञा पुं० धूमिल रंग का मणि। 'लहसुनिया' नामक रत्न।

वैदेशिक—वि० विदेश-संबंधी। दूसरे देशों से संबंध रखनेवाला।

वैदेशिक नीति—संज्ञा पुं० दूसरे देशों से सम्बन्धित नीति। परराष्ट्र नीति।

वैदेही—संज्ञा स्त्री० विदेह राजा जनक की कन्या, सीता।

वैद्य—संज्ञा पुं० १. पंडित। विद्वान्। २. आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करनेवाला। आयुर्वेद का ज्ञाता। चिकित्सक।

वैद्यक—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद।

वैद्युत—वि० विद्युत् (बिजली) संबंधी।

वैध—वि० विधान या संविधान के अनुकूल। कानून के मुताबिक। विधि के अनुसार। न्यायसंगत। नियम या कायदे के मुताबिक।

वैधर्म्य—संज्ञा पुं० १. धर्म के विरुद्ध होने का भाव। २. नास्तिकता।

वैधव्य–संज्ञा पुं० विधवा होने का भाव। रँड़ापा।

वैधानिक–वि० विधान से सम्बन्ध रखनेवाला विधि-सम्बन्धी। कानूनी।

वैधेय–वि० विधान-सम्बन्धी। कानूनी। विधि-संबंधी। विधि का।

वैनतेय–संज्ञा पुं० १. विनता (कुबड़ी स्त्री) की संतान। २. गरुड़। पक्षियों का राजा। ३. अरुण।

वैपरीत्य–संज्ञा पुं० विपरीत या उल्टा होने का भाव। विपरीतता।

वैफल्य–संज्ञा पुं० विफलता। असफलता। निष्फल या निरर्थक होने का भाव।

वैभव–संज्ञा पुं० १. धन-संपत्ति। दौलत। विभव। ऐश्वर्य। २. महत्त्व। बड़प्पन।

वैभवशाली–संज्ञा पुं० जिसके पास बहुत धन-संपत्ति हो। मालदार। गौरवशाली।

वैमनस्य–संज्ञा पुं० वैर। द्वेष। दुश्मनी।

वैमल्य–संज्ञा पुं० विमलता। स्वच्छता।

वैमात्र या **वैमात्रेय**–वि० [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैमानिक–वि० विमान या हवाई जहाज से सम्बन्ध रखनेवाला। विमान-संबंधी।

वैमृध–संज्ञा पुं० इन्द्र।

वैयक्तिक–वि० केवल एक व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। 'सामूहिक' का उल्टा। व्यक्तिगत।

वैयाकरण–संज्ञा पुं० व्याकरण का पंडित। व्याकरण का ज्ञाता।
वि० व्याकरण-सम्बन्धी।

वैर–संज्ञा पुं० [भाव० वैरता] शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

वैरशुद्धि–संज्ञा स्त्री० वैर का बदला चुकाना।

वैरागी–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति, जिसे राग या आसक्ति न हो। जिसने वैराग्य ले लिया हो। विरक्त। मोहमाया से अलग रहनेवाला। उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य–संज्ञा पुं० मन की वह वृत्ति, जिससे लोग संसार की झंझटें छोड़कर एकांत में ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति।

वैराज्य–संज्ञा पुं० १. एक ही देश में दो राजाओं या शासकों का शासन। २. वह देश, जहाँ इस प्रकार की शासन-प्रणाली हो।

वैराट–वि० १. विराट-सम्बन्धी। २. लम्बा-चौड़ा।

वैरी–संज्ञा पुं० शत्रु। दुश्मन। विरोधी।

वैरूप्य–संज्ञा पुं० विरूप और विकृत होने का भाव। विरूपता या कुरूपता। भद्दापन। बदसूरत होने का भाव।

वैलक्षण्य–संज्ञा पुं० १. विलक्षणता। अनोखापन। २. विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

वैवर्ण्य–संज्ञा पुं० चेहरे का रंग उतरने की हालत। विवर्ण होने का भाव। मलिनता। उदासीनता।

वैवस्वत–संज्ञा पुं० १. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. एक रुद्र। ३. एक मनु। वर्तमान मन्वंतर का नाम। ४. सूर्य, यम या मनु-सम्बन्धी।

वैवाह–वि० विवाह-सम्बन्धी।

वैवाहिक–वि० विवाह–संबंधी। विवाह का। संज्ञा पुं० कन्या अथवा वर का श्वशुर। समधी।

वैशंपायन–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ऋषि, जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशाख–संज्ञा पुं० चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखी–संज्ञा स्त्री० वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशाली–संज्ञा स्त्री० विहार की एक प्राचीन प्रसिद्ध नगरी। विशाला नगरी। विशाला पुरी।

वैशिक–संज्ञा पुं० साहित्य के अनुसार वेश्यागामी नायक।

वैशेषिक–संज्ञा पुं० १. छः दर्शनों में से एक, जो महर्षि कणाद-कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ-विद्या। २. न्यायदर्शन का एक भाग। ३. वैशेषिक दर्शन का माननेवाला। वि० १. विशेष। खास। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण। २. विचित्र।

वैश्य–संज्ञा पुं० भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण, जिसकी वृत्ति कृषि और वाणिज्य है। आजकल इसका प्रयोग विशेषकर बनियों और महाजनों के लिए होता है।

वैश्यता—संज्ञा स्त्री० वैश्य का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्या—संज्ञा स्त्री० वैश्य-जाति की स्त्री।

वैश्वजनीन—वि० विश्व भर के लोगों से संबंध रखनेवाला। सब लोगों का।
संज्ञा पुं० जो समस्त संसार के लोगों का कल्याण करता हो।

वैश्वदेव—संज्ञा पुं० वह होम या यज्ञ आदि, जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय।

वैश्वानर—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. परमात्मा। ३. चेतन।

वैषम्य—संज्ञा पुं० १. विषमता। विषम होने का भाव। असमानता। २. विरोध।

वैषयिक—वि० विषय-संबंधी। विषय का।
संज्ञा पुं० विषयी। विषय-वासना में रहनेवाला। लंपट।

वैष्णव—संज्ञा पुं० [स्त्री० वैष्णवी] विष्णु की उपासना करनेवाला। हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग विष्णु की उपासना करते और विशेष आचार-विचार से रहते हैं।
वि० विष्णु-संबंधी। विष्णु का।

वैष्णवी—संज्ञा स्त्री० १. विष्णु की शक्ति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी। ५.पृथ्वी।

वैसर्गिक—वि० त्यागने योग्य। त्याज्य।

वैसा—वि० उस तरह का।

वैसे—क्रि० वि० उस तरह।

वैहासिक—संज्ञा पुं० विदूषक। हँसानेवाला। मसखरा।

वोक*—संज्ञा पुं० ओर। तरफ।

वोट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] चुनाव या निर्वाचन में दिया जानेवाला मत।

वोटर—संज्ञा पुं० [अंग्रे ०] वह व्यक्ति, जिसे चुनाव में मतदान (अपना मत देने) का अधिकार हो। मतदाता।

वोटर्स लिस्ट—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] मतदाताओं की सूची। मतदाता-सूची।

वोटिंग—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] मतदान। किसी चुनाव में वोट या मत लेना। किसी विषय पर मतदान। जैसे—समिति आदि में प्रस्तावित विषय पर मत लेना।

वोल्लाह—संज्ञा पुं० वह घोड़ा, जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रंग के हों।

वोहित्थ—संज्ञा पुं० बड़ी नाव। जहाज।

व्यंग्य—संज्ञा पुं० ताना। बोली। चुटकी। व्यंजना-द्वारा प्रकट होनेवाला शब्द का गूढ़ अर्थ।
वि० अंगहीन। विकलांग।

व्यंग्यचित्र—संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति या घटना की हँसी उड़ाने के लिए बनाया गया व्यंग्य-पूर्ण चित्र या तसवीर। (अंग्रे०—कार्टून)

व्यंग्यपूर्ण—वि० व्यंग्य या उपहास से भरा हुआ।

व्यंजक—वि० व्यक्त या प्रकट करनेवाला। सूचित करनेवाला।

व्यंजन—संज्ञा पुं० १. प्रकट करने की क्रिया। व्यक्त होने की क्रिया। २. अवयव। अंग। ३. स्त्री-पुरुष के चिह्न। ४. किसी प्रकार का चिह्न। ५. व्यंग्य। ६. पका हुआ भोजन। ७. पके हुए भोजन के साथ खाने की तरकारी या साग। ८. वर्णमाला में का वह वर्ण, जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जा सकता हो। स्वरहीन वर्ण। हिंदी वर्णमाला में "क" से "ह" तक के सब वर्ण।

व्यंजना—संज्ञा स्त्री० १. प्रकट करने की क्रिया। २. शब्द की वह शक्ति, जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो।

व्यक्त—वि० [संज्ञा व्यक्तता] प्रकट। स्पष्ट। जाहिर। जो प्रकट किया गया हो।

व्यक्ति—संज्ञा पुं० मनुष्य। आदमी। किसी शरीरधारी का शरीर।
संज्ञा स्त्री० व्यक्त या प्रकट होने का भाव।

व्यक्तिगत—वि० निजी। अपना। किसी व्यक्ति से सम्बन्ध रखनेवाला।

व्यक्तित्व—संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति का औरों से अपना अलग अस्तित्व प्रकट करने का गुण या भाव। वे विशेष गुण, जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता प्रकट होती है। व्यक्ति का गुण या भाव।

व्यग्र—वि० [संज्ञा व्यग्रता] १. घबराया

हुआ। व्याकुल। उद्विग्न। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. काम में फँसा हुआ।

व्यजन–संज्ञा पुं० पंखा।

व्यतिक्रम–संज्ञा पुं० १. क्रम या सिलसिले में उलट-फेर। २. विघ्न। बाधा।

व्यतिरिक्त–क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

व्यतिरेक–संज्ञा पुं० १. अभाव। २. भेद। अंतर। अलगाव। विभिन्नता। ३. अतिक्रम। ४. एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है।

व्यतिरेकी–संज्ञा पुं० १. पदार्थों में विभिन्नता उत्पन्न करनेवाला। २. क्रम भंग करनेवाला। ३. किसी को अतिक्रमण करके जानेवाला। अतिक्रमण करनेवाला।

व्यतीत–वि० बीता हुआ।

व्यतीपात–संज्ञा पुं० १. भारी उपद्रव। अपमान। २. ज्योतिष में एक योग, जिसमें यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध है।

व्यत्यय–संज्ञा पुं० दे० "व्यतिक्रम"।

व्यथा–संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा। वेदना। तकलीफ। २. क्लेश। दुःख।

व्यथित–वि० दुखित। जिसे कोई कष्ट या तकलीफ हो।

व्यपगत–वि० १. असावधानी या लापरवाही से छूटा हुआ। २. वह अधिकार या सुविधा, जो नियत समय पर उपयोग न किए जाने के कारण हाथ से निकल गई हो। जो तमादी हो चुकी हो।

व्यपगति–संज्ञा स्त्री० १. असावधानी या लापरवाही से होनेवाली मामूली भूल। २. किसी अधिकार या सुविधा का नियत समय पर उपयोग न किए जाने के कारण उससे वंचित हो जाना। तमादी।

व्यभिचार–संज्ञा पुं० १. दुराचार। बदचलनी। २. स्त्री का पर-पुरुष से अथवा पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित संबंध। छिनाला।

व्यभिचारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. बदचलन। परस्त्रीगामी। २. दुराचारी। दे० "संचारी" (भाव)।

व्यय–संज्ञा पुं० १. खर्च। सरफा। २. खपत। चला जाना। ३. नाश। बरबादी।

व्ययी–संज्ञा पुं० बहुत खर्च करनेवाला।

व्यर्थ–वि० १. बिना माने का। २. निरर्थक। बेमतलब। फजूल। जिसमें कोई लाभ न हो। क्रि० वि० फजूल। योंही। बिना कारण के।

व्यर्थन–संज्ञा पुं० रद्द किया जाना। किसी आदेश या निर्णय (फैसले) का रद्द किया जाना।

व्यर्थीकरण–संज्ञा पुं० व्यर्थ या रद्द करने की क्रिया। दे० "व्यर्थन"।

व्यलीक–संज्ञा पुं० १. अपराध। कसूर। २. डाँट-डपट। ३. दुःख। ४. अनुचित या न करने योग्य।

वि० १. झूठा। अविश्वासी। २. ढोंगी। ३. अप्रिय। ४. दुख देनेवाला।

व्यवकलन–संज्ञा पुं० १. घटाना। बाकी निकालना। २. अलगाव।

व्यवच्छेद–संज्ञा पुं० १. अलगाव। पार्थक्य। भिन्नता। २. विभाग। हिस्सा। खंड। ३. विराम। ठहराव। ४. निवृत्ति।

व्यवधान–संज्ञा पुं० १. रुकावट। अड़चन। विघ्न। २. अन्तर। भेद। दो पदार्थों के बीच का अन्तर। ३. परदा। ४. विभाग। खंड। ५. विच्छेद। अलग होना।

व्यवसाय–संज्ञा पुं० १. व्यापार। जीविका। २. रोजगार। ३. काम-धंधा।

व्यवसायी–संज्ञा पुं० १. व्यवसाय करनेवाला। २. रोजगारी। व्यापारी।

व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० १. प्रबन्ध। इन्तजाम। २. निर्धारित कार्य-प्रणाली। शास्त्र या कानून आदि के द्वारा निर्धारित कोई कार्य करने का तरीका।

मुहा०–व्यवस्था देना=शास्त्र, विधान या कानून-द्वारा किसी विषय के बारे में विचार प्रकट करना।

व्यवस्थान–संज्ञा पुं० १. आपस में समझौता। २. संघटित संघ या सभा।

व्यवस्थापक–संज्ञा पुं० १. व्यवस्था करनेवाला। शास्त्रीय या वैधानिक व्यवस्था देनेवाला। किसी कार्य्य आदि को नियम-

पूर्वक चलानेवाला। २. प्रबन्धकर्त्ता। (अंग्रे०—मैनेजर)

व्यवस्थापत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय या वैधानिक व्यवस्था हो।

व्यवस्थापन—संज्ञा पुं० व्यवस्था देने का कार्य या भाव। प्रबन्ध या इन्तजाम करने का काम या भाव।

व्यवस्थापिका—संज्ञा स्त्री० विधान बनानेवाली। व्यवस्था स्थापित करनेवाली।

व्यवस्थापिका सभा—संज्ञा स्त्री० राज्य में विधान (कानून) बनानेवाली सभा, जिसके सदस्यों का चुनाव राज्य की जनता करती है।

व्यवस्थित—वि० १. जिसकी व्यवस्था की गई हो। नियम-बद्ध। कायदे का। २. जिसका अच्छी तरह से प्रबन्ध किया गया हो।

व्यवहार—संज्ञा पुं० १. आपस में एक दूसरे के साथ बरतना। बरताव। २. चालचलन। साधारण रीति-रवाज। ३. व्यापार। रोजगार। ४. लेन-देन का काम। महाजनी। ५. दीवानी का मुकदमा या विवाद। (फौजदारी के मुकदमे को अभियोग कहते हैं।)

व्यवहारतः—क्रि० वि० व्यवहार के विचार से। प्रयोग की दृष्टि से।

व्यवहार-दर्शन—संज्ञा पुं० १. व्यवहार (वाद) या मुकदमे का विचार और सुनवाई। (अंग्रे०—ट्रायल) २. न्यायिक निरीक्षण या अदालती जाँच (अंग्रे०—जुडीशियल इन्वेस्टिगेशन)।

व्यवहार-शास्त्र—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निर्णय करना चाहिए और किस अपराध के लिए कितना दंड देना चाहिए आदि। धर्म्मशास्त्र।

व्यवहारी—संज्ञा पुं० व्यवहार करनेवाला।

व्यवहार्य—वि० दे० "व्यावहारिक"

व्यवहृत—वि० [संज्ञा व्यवहृति] १. जो काम में लाया गया हो। २. जिसका आचरण या अनुष्ठान किया गया हो।

व्यवहृति—संज्ञा स्त्री० १. व्यवहार या काम में लाया जाना। व्यवहार। २. होशियारी। कुशलता। ३. व्यापार। २. व्यापार में होनेवाला मुनाफा।

व्यवाय—संज्ञा पुं० १. तेज। २. सम्भोग। स्त्री-प्रसंग। ३. परिणाम। ४. शुद्धि। ५. परदा। ६. विघ्न।

व्यष्टि—संज्ञा स्त्री० एक व्यक्ति-सम्बन्धी। इकाई। समष्टि का एक पृथक् अंश। समष्टि का उलटा।

व्यसन—संज्ञा पुं० १. किसी तरह का शौक। २. बुरी आदत। विषयों के प्रति आसक्ति। ३. विपत्ति। आफत। ४. कोई अमंगल की या बुरी बात। ५. काम या क्रोध आदि विकारों से उत्पन्न दोष।

व्यसनी—संज्ञा पुं० १. जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो। २. विषय-भोग करनेवाला। ३. वेश्यागामी।

व्यस्त—वि० १. काम में लगा या फँसा हुआ। २. व्याप्त। ३. घबराया हुआ। व्याकुल।

व्याकरण—संज्ञा पुं० वह विद्या या शास्त्र, जिसमें किसी भाषा के शुद्ध रूप के नियमों आदि का निरूपण होता है।

व्याकुल—वि० [संज्ञा व्याकुलता] घबराया हुआ। विकल। व्यग्र। बेचैन।

व्याकुलता—संज्ञा स्त्री० घबराहट। व्यग्रता। बेचैनी।

व्याक्रोश—संज्ञा पुं० १. तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। २. चिल्लाना।

व्याख्या—संज्ञा स्त्री० १. अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका। व्याख्यान २. कहना। वर्णन।

व्याख्याता—संज्ञा पुं० १. व्याख्या करनेवाला। २. भाषण करनेवाला।

व्याख्यान—संज्ञा पुं० १. भाषण। वक्तृता। २. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण देने का काम।

व्याघात—संज्ञा पुं० १. विघ्न। बाधा। २. आघात। प्रहार। मार। ३. ज्योतिष में एक अशुभ योग। ४. एक प्रकार का अलंकार, जिसमें एक ही उपाय या साधन के द्वारा

दो विरोधी कार्य्यों के होने का बर्णन होता है।

व्याघ्र–संज्ञा पुं० बाघ। शेर।

व्याघ्रचर्म्म–संज्ञा पुं० शेर की खाल।

व्याघ्रनख–संज्ञा पुं० १. शेर का नाखून। जो प्रायः बच्चों के गले में, उन्हें नजर से बचाने के लिए, पहनाया जाता है। २. नख-नामक गंध-द्रव्य।

व्याज–संज्ञा पुं० १. दे० "ब्याज"। सूद। २. कपट। छल। बहाना। ३. बाधा। विघ्न। ४. देर। विलंब।

व्याजनिंदा–संज्ञा स्त्री० १. ऐसी निंदा, जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसमें इस प्रकार की निंदा की जाती है।

व्याजस्तुति–संज्ञा स्त्री० १. व्याज या किसी बहाने से की गई स्तुति, जो ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसमें उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है।

व्याजोक्ति–संज्ञा स्त्री० १. कपट-भरी बात। २. एक प्रकार का अलंकार, जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिए किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।

व्याड–संज्ञा पुं० १. द्वेष करनेवाला। २. शरारती। ३. धोखेबाज। कुटिल।

व्याध–संज्ञा पुं० बहेलिया। शिकारी। पशुओं को मारकर निर्वाह करनेवाला।

व्याधि–संज्ञा स्त्री० १. रोग। बीमारी। २. झंझट। आफत।

व्यान–संज्ञा पुं० शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी गई है।

व्यापक–वि० १. चारों ओर फैला हुआ। सर्वत्र विद्यमान। २. जो चारों ओर घेरे हुए हो।

व्यापकता–संज्ञा स्त्री० विस्तार। फैलाव।

व्यापन–संज्ञा पुं० व्याप्त होना। सब जगह मौजूद होने या फैलने का भाव। फैलना।

व्यापना–क्रि० अ० १. किसी चीज के अंदर फैलना। व्याप्त होना। २. सर्वत्र विद्यमान या मौजूद होना।

व्यापार–संज्ञा पुं० १. रोजगार। व्यवसाय। वाणिज्य। क्रय-विक्रय का कार्य। २. काम-काज।

व्यापार-चिह्न–संज्ञा पुं० वह निशान, जो व्यापारी अपने माल पर दूसरों के माल से अलग पहचान करने के लिए लगावे। (अंग्रे०–ट्रेड-मार्क)।

व्यापारिक–वि० व्यापार-सम्बन्धी। व्यवसाय या रोजगार-सम्बन्धी।

व्यापारी–संज्ञा पुं० व्यापार करनेवाला। व्यवसाय या रोजगार करनेवाला।
वि० व्यापार-संबंधी।

व्याप्त–वि० १. विस्तृत। फैला हुआ। २. सर्वत्र विद्यमान। सब जगह मौजूद। ३. पूर्ण रूप से भरा हुआ।

व्याप्ति–संज्ञा स्त्री० १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव। सर्वत्र विद्यमान या सब जगह मौजूद होने की अवस्था। २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना।

व्यामोह–संज्ञा पुं० [वि० व्यामोहक, व्यामोही] अज्ञान। मोह।

व्यायाम–संज्ञा पुं० कसरत। मेहनत। शारीरिक बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जानेवाला श्रम।

व्यायोग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य, जो एक अंक का होता है और जिसमें पौराणिक या ऐतिहासिक कथा का आधार होता है।

व्याल–संज्ञा पु० १. साँप। २. दुष्ट हाथी। ३. (काव्य में) दंडक छंद का एक भेद।

व्याली–संज्ञा स्त्री० साँप की मादा। साँपिन।

व्यालू†–संज्ञा स्त्री० रात का भोजन।

व्यावहारिक–वि० व्यवहार या काम में आने योग्य। व्यवहार-संबंधी। व्यवहार या बरताव का। व्यवहार के अनुकूल।

व्यासंग–संज्ञा पुं० बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्यास–संज्ञा पुं० १. वेदों का संग्रह, विभाग और

सम्पादन करनेवाले तथा पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदान्त आदि के रचयिता कहे जानेवाले, जिनका नाम कृष्ण-द्वैपायन और बादरायण भी था। २. वेदव्यास। ३. कथा-वाचक। रामायण, महाभारत या पुराणों आदि की कथा सुनानेवाला। ४. वह रेखा, जो किसी गोल मंडल या वृत्त के किसी एक स्थान से बिलकुल सीधी चलकर दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ५. विस्तार। फैलाव।

व्यासक्त–वि० बहुत आसक्त। एक ही वर्ग या प्रकार के होने के कारण परस्पर सम्बद्ध या समान।

व्यासक्ति–संज्ञा स्त्री० अनेक वस्तुओं में उनके एक ही प्रकार या वर्ग के अन्तर्गत होनेवाली समानता या एकरूपता।

व्यासार्द्ध–संज्ञा पुं० किसी वृत्त या गोलाकार मंडल के व्यास का आधा भाग।

व्याहत–वि० १. मना किया हुआ। निषिद्ध। वर्जित। बुरा। २. व्यर्थ।

व्याहार–संज्ञा पुं० वाक्य। जुमला।

व्याहृति–संज्ञा स्त्री० १. कथन। उक्ति। २. वैदिक-मंत्र-विशेष, जिससे प्राणायाम किया जाता है। (भूः, भुवः, स्वः इन तीनों का मंत्र।)

व्युत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु का मूल उद्गम या उत्पत्ति-स्थान। २. शब्द का मूल रूप, जिससे वह शब्द बना हो। ३. किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न–वि० १. जिसका संस्कार हुआ हो। २. निकला हुआ (व्याकरण)। जिस शब्द की व्युत्पत्ति की गई हो। ३. किसी विज्ञान् या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता। विद्वान्। ४. प्रवीण। कुशल। ५. अनुभवी।

व्यूह–संज्ञा पुं० १. सेना। फौज। २. युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। सेना का विन्यास। ३. किसी विपत्ति से बचने के लिए की जानेवाली योजनाएँ। ४. समूह। जमघट। ५. निर्माण। ६. शरीर।

व्योम–संज्ञा पुं० आकाश। आसमान।

व्योमकेश–संज्ञा पुं० शिव।

व्योमगंगा–संज्ञा स्त्री० आकाशगंगा।

व्योमचारी–संज्ञा पुं० १. आकाश में चलने या विचरण करनेवाला। २. पक्षी। ३. देवता।

व्योमपाद–संज्ञा पुं० विष्णु।

व्योमयान–संज्ञा पुं० आकाश की सवारी। विमान। हवाई जहाज।

व्रज–संज्ञा पुं० १. जाना या चलना। गमन। २. समूह। झुंड। ३. मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का प्रांत, जो श्रीकृष्ण की लीला-भूमि है।

व्रजकिशोर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

व्रजभाषा–संज्ञा स्त्री० मथुरा, आगरा और इसके आस-पास के क्षेत्र में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा, जिसमें लगभग पाँच सौ वर्षों तक हिन्दी के अधिकांश कवियों ने कविताएँ की हैं। इनमें से सूर, तुलसी, बिहारी आदि बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं।

व्रजमंडल–संज्ञा पुं० व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

व्रजराज–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

व्रजांगना–संज्ञा स्त्री० गोपी। व्रज-क्षेत्र की स्त्री।

व्रजेश, व्रजेश्वर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

व्रज्या–संज्ञा स्त्री० १. घूमना। फिरना। पर्य्यटन। २. गमन। जाना। ३. आक्रमण।

व्रण–संज्ञा पुं० घाव। फोड़ा। जख्म।

व्रणी–वि० जिसे फोड़ा हुआ हो। घायल।

व्रत–संज्ञा पुं० १. भोजन न करना। २. किसी पुण्य तिथि को या पुण्य-प्राप्ति के लिए नियम-पूर्वक उपवास करना। अनुष्ठान। ३. प्रतिज्ञा। संकल्प।

व्रती–संज्ञा पुं० १. व्रत करनेवाला। २. ब्रह्म-चारी। ३. यजमान।

व्राचड़–संज्ञा स्त्री० १. अपभ्रंश भाषा का एक भेद, जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में था। २. पैशा-चिक भाषा का एक भेद।

व्रात्य–संज्ञा पुं० १. संस्कारहीन। पतित। २. वह व्यक्ति, जिसके दस संस्कार न हुए हों। ३. वह, जिसका यज्ञोपवीत-संस्कार समय पर

न हुआ हो। ऐसा मनुष्य पतित या अनार्य्य समझा जाता है। ४. दोगला। वर्ण-संकर।

व्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० लज्जा। शर्म।

व्रीहि–संज्ञा पुं० धान। चावल।

श

श–हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है, इससे इसे तालव्य कहते हैं।
संज्ञा पुं० १. मंगल। कल्याण। २. सुख। ३. शांति। ४. वैराग्य। शस्त्र।
वि० शुभ।

शंक–संज्ञा पुं० १. शंका। सन्देह। २. भय। डर।

शंकनीय–वि० भय या शंका करने योग्य।

शंकर–वि० १. मंगल करनेवाला। २. शुभ। ३. लाभदायक।
संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. दे० "शंकराचार्य्य"।

शंकर-शैल–संज्ञा पुं० कैलास-पर्वत। कैलास।

शंकरस्वामी–संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य्य"।

शंकराचार्य्य–संज्ञा पुं० अद्वैत मत के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य्य, जिनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल-प्रदेश में हुआ था और स्वर्गवास ३२ वर्ष की आयु में ही हो गया।

शंकरी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।

शंका–संज्ञा स्त्री० १. संदेह। शक। २. अनिष्ट का भय। ३. डर। खौफ। ४. काव्य का एक संचारी भाव।

शंकित–वि० [स्त्री० शंकिता] १. डरा हुआ भयभीत। २. जिसे संदेह हुआ हो। ३. संदेहयुक्त। अनिश्चित।

शंकु–संज्ञा पुं० १. कोई नुकीली वस्तु। २. मेख। कील। खूँटी। ३. बाण का अगला भाग। ४. भाला। बरछा। ५. गाँसी। फल। ६. दस लाख करोड़ की एक संख्या। शंख। ७ कामदेव। ८. शिव। ९. राक्षस।

शंख–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बड़ा घोंघा, जो समुद्र के किनारे पाया जाता है और जिसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता है। वह पूजा, हवन आदि के समय बजाया जाता है। प्राचीन काल में युद्ध में भी इसे बजाया जाता था। एक प्रकार की प्राचीन रणभेरी। कंबु। २. दस खर्व या एक लाख करोड़ की एक संख्या। ३. हाथी का गंडस्थल। ४. एक दैत्य। शंखासुर। ५. एक प्रकार का छन्द। ६. कुबेर की एक निधि और उसके अधिपति का नाम।

शंखचूड़–संज्ञा पुं० १. एक राक्षस, जिसे कृष्ण ने मारा था। २. कुबेर के दूत और सखा का नाम।

शंखद्राव–संज्ञा पुं० वैद्यक में एक प्रकार का अर्क, जिसमें शंख भी गल जाता है।

शंखधर–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शंखनारी–संज्ञा स्त्री० छः वर्णों का एक वृत्त। सोमराजी।

शंखपाणि–संज्ञा पुं० विष्णु (जिनके हाथ में शंख है)।

शंखासुर–संज्ञा पुं० एक दैत्य, जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था। इसी को मारने के लिए विष्णु ने मत्स्यावतार लिया था।

शंखिनी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की वनौषधि। २. स्त्रियों के पद्मिनी आदि चार भेदों में से एक भेद।

शंगरफ–संज्ञा पुं० दे० "शिंगरफ"।

शंठ–संज्ञा पुं० १. नपुंसक। हीजड़ा। २. अविवाहित। ३. मूर्ख। बेवकूफ।

शंड–संज्ञा पुं० दे० "षंड"।

शंडामर्क–संज्ञा पुं० शंड और मर्क नाम के दो दैत्य।

शंतनु–संज्ञा पुं० दे० "शांतनु"।

शंतनु-सुत–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म पितामह"।

शंपा—संज्ञा स्त्री० १. बिजली। २. कमर।
शंब—संज्ञा पुं० इन्द्र का वज्र।
शंबर—संज्ञा पुं० १. एक दैत्य, जो इंद्र के बाण से मारा गया था। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ३. युद्ध। लड़ाई। ४. एक तरह का मृग। ५. मछली।
वि० बहुत बढ़िया।
शंबर-सूदन—संज्ञा पुं० कामदेव।
शंबरारि—संज्ञा पुं० १. शंबर का शत्रु, कामदेव। मदन। २. प्रद्युम्न।
शंबु—संज्ञा पुं० सीप। घोंघा।
शंबुक—संज्ञा पुं० घोंघा। छोटा शंख।
शंबूक—संज्ञा पुं० १. घोंघा। २. शंख। ३. एक तपस्वी शूद्र, जिसकी तपस्या के कारण राम-राज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल-मृत्यु से मरा था। इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मण-पुत्र को जिलाया था।
शंभु—संज्ञा पुं० १. शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक। ३. दैत्यों का एक राजा। ४. उन्नीस वर्णों का एक वृत्त। ५. दे० "स्वायंभुव"।
वि० १. सुख देनेवाला। २. दानी। उदार। ३. शुभ करनेवाला।
शंभुगिरि—संज्ञा पुं० कैलास-पर्वत। कैलास।
शंभुलोक—संज्ञा पुं० कैलास।
शंस—संज्ञा पुं० १. बड़ाई करना। प्रशंसा। २. समर्थन। ३. प्रतिज्ञा। शपथ। ४. शुभ-कामना। ५. चापलूसी। ६. जादू। ७. घोषणा। ८. भाषण। वक्तृता।
शंस्य—वि० प्रशंसा के योग्य।
संज्ञा स्त्री० अग्नि।
शऊर—संज्ञा पुं० [अ०] १. तमीज। काम करने का ढंग। २. शिष्टता। ३. बुद्धि।
शऊरदार—संज्ञा पुं० १. जिसमें शऊर हो। २. समझदार। ३. शिष्ट। सभ्य। ४. हुनरमंद।
शक—संज्ञा पुं० १. गौर वर्ण की एक प्राचीन जाति, जिसने भारत पर आक्रमण किया था और जिसे राजा विक्रमादित्य ने हराया था। २. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्, जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था। ३. [अ०] शंका। संदेह।
शकट—संज्ञा पुं० १. बोझ लादने की गाड़ी। छकड़ा। बैलगाड़ी। २. एक असुर का नाम, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। (शकटासुर)
शकटारि—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण, जिन्होंने शकटासुर को मारा था।
शकटासुर—संज्ञा पुं० एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
शकठ—संज्ञा पुं० मचान।
शकर—संज्ञा स्त्री० चीनी।
शकरकंद—संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।
शकरपारा—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का फल, जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। २. एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान। ३. शकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।
शकल—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ल"।
शकाब्द—संज्ञा पुं० राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत्। (ईसवी संवत् में से ७८ घटाने से शकाब्द निकल आता है।)
शकार—संज्ञा पुं० शक जाति का व्यक्ति।
शकारि—संज्ञा पुं० शक जाति का शत्रु। विक्रमादित्य।
शकुंत—संज्ञा पुं० १. पक्षी। चिड़िया। २. विश्वामित्र के लड़के का नाम।
शकुंतला—संज्ञा स्त्री० राजा दुष्यंत की स्त्री, जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी। कण्व ऋषि के आश्रम में राजा दुष्यन्त ने इससे गांधर्व-विवाह किया था।
शकुन—संज्ञा पुं० १. किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण, जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं। २. सगुन। शुभसूचक चिह्न। ३. शुभ मुहूर्त्त या उसमें होनेवाला कार्य्य। ४. एक पक्षी, जिसे देखने से शुभ या अशुभ शकुन हो।
मुहा०—शकुन विचारना या देखना = कोई कार्य्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं।
शकुनशास्त्र—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें

शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो।

शकुनि–संज्ञा पुं० १. पक्षी। गिद्ध पक्षी। २. एक दैत्य, जो हिरण्याक्ष का पुत्र था। ३. कौरवों का मामा, जो दुर्योधन का मंत्री और कौरवों के नाश का मुख्य कारण था।

शक्कर–संज्ञा स्त्री० १. चीनी। २. शकर।

शक्करी–संज्ञा स्त्री० वर्ण-वृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा।

शक्की–वि० जिसे हर बात में संदेह हो। शक करनेवाला।

शक्त–संज्ञा पुं० बलवान्। शक्तिसंपन्न।

शक्ति–संज्ञा स्त्री० १. बल। ताकत। जोर। सामर्थ्य। पराक्रम। २. वश। अधिकार। ३. कार्य करने की क्षमता रखनेवाले साधन। ४. वह सम्बन्ध, जो शब्द और अर्थ में होता है। ५. सेना और धन आदि से सम्पन्न बलवान् देश या राष्ट्र। ६. तंत्र के अनुसार एक देवी, जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। दुर्गा। लक्ष्मी। ७. एक प्रकार का शस्त्र। साँग। ८. प्रकृति। माया। ईश्वर की वह माया, जिससे सृष्टि की रचना मानी जाती है।

शक्तिपूजक–संज्ञा पुं० १. देवी की उपासना करनेवाला। शाक्त। २. तांत्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा–संज्ञा स्त्री० शक्ति का पूजन, जिसे शाक्त करते हैं।

शक्तिमत्ता–संज्ञा स्त्री० शक्तिशाली या ताकतवर होने का भाव।

शक्तिमान्–वि० [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्। ताकतवर।

शक्तिशाली–वि० [स्त्री० शक्तिशालिनी] बलवान्। ताकतवर।

यौ०–शक्तिशाली राष्ट्र=सेना और धन आदि से सम्पन्न बलवान् देश।

शक्तिसम्पन्न–वि० १. बलवान्। २. समर्थ। ३. प्रभावशाली।

शक्तिहीन–वि० १. बलहीन। निर्बल। असमर्थ। २. नामर्द। नपुंसक।

शक्तु–संज्ञा पुं० सत्तू।

शक्य–वि० १. जो किया जा सके। करने योग्य। संभव। २. जिसमें शक्ति हो।

शक्र–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. रगण का चौथा भेद, जिसमें छः मात्राएँ होती हैं।
वि० समर्थ।

शक्रचाप–संज्ञा पुं० इन्द्रधनुष।

शक्ल–संज्ञा स्त्री० १. मुँख की बनावट। आकृति। चेहरा। २. मुँह का भाव। चेष्टा। ३. गढ़न। बनावट। ४. स्वरूप। उपाय।

शख्स–संज्ञा पुं० [अ०] आदमी। व्यक्ति।

शग़ल–संज्ञा पुं० [अ०] १. मनोरंजन। मनबहलाव। २. व्यापार। काम-धंधा।

शगुन–संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन"। २. एक प्रकार की रस्म, जो विवाह की बात-चीत पक्की होने पर होती है। तिलक। टीका।

शगुनियाँ–संज्ञा पुं० शकुन निकालनेवाला। ज्योतिषी। साधारण ज्योतिषी।

शगूफा–संज्ञा पुं० [फा०] १. बिना खिला हुआ फूल। कली। २. पुष्प। फूल। ३. कोई अद्भुत बात या घटना।

शची–संज्ञा स्त्री० इंद्र की पत्नी। इंद्राणी।

शचीपति–संज्ञा पुं० इंद्र।

शचीश–संज्ञा पुं० इंद्र।

शजरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वंशावली। कुर्सीनामा। २. पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा।

शठ–वि० १. पाजी। बदमाश। २. धोखेबाज। ३. चालाक।
संज्ञा पुं० साहित्य में वह नायक, जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।

शठता–संज्ञा स्त्री० १ शठ का भाव। दुष्टता। धूर्त्तता। २ बदमाशी।

शत–वि० सौ।
संज्ञा पुं० सौ की संख्या—१००।

शतक–संज्ञा पुं० [स्त्री० शतिका] १. सौ का समूह। एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह। २. शताब्दी।

शतकोटि–संज्ञा पुं० १. सौ करोड़ की संख्या। २. इन्द्र का वज्र। ३. हीरा।

शतक्रतु—संज्ञा पुं० इन्द्र। जिसने सौ यज्ञ किए हों।
शतगुण—वि० सौ गुना।
शतघ्नी—संज्ञा स्त्री० प्राचीन काल का एक शस्त्र।
शतदल—संज्ञा पुं० कमल।
शतधा—अव्य० १. सैकड़ों बार। २. सैकड़ों तरीके के। ३. सैकड़ों टुकड़ों में।
शतधार—संज्ञा पुं० वज्र।
शतद्रु—संज्ञा स्त्री० सतलज नदी।
शतपत्र—संज्ञा पुं० १. कमल। २. सेवती। ३. ४. शतपत्री। मोर नामक पक्षी।
शतपथ—वि० १. असंख्य मार्गोंवाला। २. बहुत-सी शाखाओं या भागोंवाला।
शतपथ ब्राह्मण—संज्ञा पुं० यजुर्वेद का एक भाग, जिसके रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।
शतपद—संज्ञा पुं० १. कन-खजूरा। २. गोजर।
शतभिषा—संज्ञा स्त्री० सत्ताइस नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र।
शत योजन—संज्ञा पुं० सौ योजन की दूरी।
शतरंज—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल, जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।
शतरंजी—संज्ञा स्त्री०[फा०] १. शतरंज खेलने की बिसात। २. शतरंज का अच्छा खिलाड़ी। ३. रंग-बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी।
शतरूपा—संज्ञा स्त्री० स्वायंभुव मनु की स्त्री।
शतलक्ष—संज्ञा पुं० सौ लाख की संख्या।
शतशः—वि० सौगुना।
शतानंद—संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कृष्ण। ४. गौतम मुनि। ५. राजा जनक के एक पुरोहित।
शतांश—संज्ञा पुं० सौवाँ भाग।
शतानीक—संज्ञा पुं० १. सौ सिपाहियों का नायक। २. पुराणानुसार चंद्रवंश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था।
शताब्दी—संज्ञा स्त्री० १. सौ वर्षों का समय। शती। सदी। २. किसी संवत् या सन् के अनुसार सौ वर्ष तक का समय।
शतायु—संज्ञा पुं० सौ वर्ष की उम्रवाला।
शतायुध—संज्ञा पुं० सौ अस्त्र धारण करनेवाला। सौ अस्त्रोंवाला।
शतावधान—संज्ञा पुं० १. वह मनुष्य, जो एक साथ बहुत-सी बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सके। २. बहुत से काम एक साथ कर सकनेवाला व्यक्ति। ३. श्रुतिधर।
शतावर—संज्ञा स्त्री० १. सतावर नाम की औषध। २. सफेद मूसली।
शतावरी—संज्ञा स्त्री० सतावर।
शती—संज्ञा स्त्री० १. सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे—दुर्गा सप्तशती। २. शताब्दी। सौ वर्षों का समय।
शतोदर—संज्ञा पुं० शिव।
शत्रु—संज्ञा पुं० दुश्मन। वैरी।
शत्रुघ्न—संज्ञा पुं० राजा दशरथ के पुत्र और राम के सबसे छोटे भाई, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।
वि० शत्रुओं या दुश्मनों का नाश करनेवाला।
शत्रुजित—संज्ञा पुं० शिव।
वि० शत्रु या दुश्मन को जीतनेवाला।
शत्रुता—संज्ञा स्त्री० शत्रु का भाव। दुश्मनी। वैर।
शत्रुदमन—वि० शत्रुओं या दुश्मनों को वश में करनेवाला या उनका नाश करनेवाला।
शत्रुमर्द्दन—संज्ञा पुं० वि० दुश्मनों का दमन या उनका नाश करनेवाला।
शत्रुसाल—वि० दुश्मन को दुःख देनेवाला।
शनाख्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] पहचानने की क्रिया। न्यायालय में प्रमाण-पुष्टि के लिए किसी व्यक्ति या वस्तु को पहचनवाने की क्रिया। पुलिस-द्वारा की जानेवाली कार्रवाई में पहचनवाने की क्रिया।
शनि—संज्ञा पुं० १. सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। २. फलित ज्योतिष के अनुसार एक ग्रह। शनिश्चर। ३. दुर्भाग्य। बदकिस्मती। ४. दे० "शनिवार"।

शनिवार–संज्ञा पुं० रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का दिन।

शनिश्चर–संज्ञा पुं० दे० "शनि"।

शनैः–अव्य० धीरे। आहिस्ता।

शनैः शनैः–अव्य० धीरे-धीरे।

शपथ–संज्ञा स्त्री० १. कसम। सौगन्ध। २. प्रतिज्ञा। कौल।

यौ०—शपथ ग्रहण करना=उच्चतम अधिकारियों, जैसे—मंत्रियों, राज्यपालों आदि-द्वारा कार्यभार सँभालते समय शपथ लेना और देशभक्ति तथा शासन विधान के सर्वथा अनुकूल आचरण करने की प्रतिज्ञा करना।

शपथ-पत्र–संज्ञा पुं० न्यायालय में किसी बात की सत्यता प्रमाणित करने के लिए शपथपूर्वक लिखकर दिया जानेवाला पत्र। हलफ़नामा। (अंग्रे०–एफिडेविट)

शफ़तालू–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सतालू।

शफ़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर का स्वस्थ होना। आरोग्यता। तंदुरुस्ती।

शफ़ाखाना–संज्ञा पुं० अस्पताल। चिकित्सालय।

शब–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रात।

शबनम–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ओस। २. एक प्रकार का बहुत महीन कपड़ा।

शबनमी–संज्ञा स्त्री० मसहरी। मच्छड़ रोकने के लिए चारपाई के चारों ओर लगाए जानेवाले जालीदार परदे।

शबबरात–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मुसलमानों का एक त्योहार, जिसमें मिठाई बाँटी जाती और आतिशबाजी छोड़ी जाती है।

शब्द–संज्ञा पुं० १. आवाज। ध्वनि। २. वह सार्थक ध्वनि, जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो। ३. अक्षर। लफ्ज। ४. किसी संत के बनाए हुए पद।

शब्दगुण–संज्ञा पुं० शब्द की अपनी विशेषता, जैसे काव्य आदि में। दस प्रकार के शब्द-गुणालंकार हैं—ओज, प्रसाद, श्लेष, समता, समाधि, माधुर्य, सौकुमार्य, उदारता, अर्थ-व्यक्ति और कान्ति।

शब्दचातुर्य–संज्ञा पुं० बोलचाल की प्रवीणता। वाक्पटुता।

शब्दचित्र–संज्ञा पुं० १. शब्दों-द्वारा चित्र के समान वर्णन। २. शब्दों में किसी विषय या घटना का ऐसा स्पष्ट और विशद वर्णन, जो चित्र या तसवीर की तरह मालूम हो।

शब्दचोर–संज्ञा पुं० दूसरे के लेखों आदि से चोरी करनेवाला।

शब्दजाल–संज्ञा पुं० साधारण-सी बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और कठिन वाक्यों का प्रयोग। शब्दाडम्बर।

शब्द-प्रमाण–संज्ञा पुं० किसी के केवल कथन के आधार पर प्रमाण या सबूत। जबानी सबूत।

शब्दब्रह्म–संज्ञा पुं० वेद।

शब्दभेद–संज्ञा पुं० १. शब्दों का अन्तर या विशेषता। २. ध्वनि का अन्तर।

शब्द-योजना–संज्ञा स्त्री० १. किसी वाक्य या कथन के लिए ढूँढ़कर उपयुक्त शब्दों को बैठाना। २. इस प्रकार बैठाए हुए शब्दों का क्रम और रूप।

शब्दवारिधि–संज्ञा पुं० १. शब्दों का समुद्र। शब्द-भंडार। २. शब्दकोश।

शब्द-विरोध–संज्ञा पुं० १. केवल शब्दों में दिखाई देनेवाला विरोध, पर जिसके अर्थ में कोई विरोध न हो। शब्दगत विरोध। २. भासित होनेवाला विरोध।

शब्दवेध–संज्ञा पुं० [वि० शब्दवेधी] बिना देखे हुए केवल शब्द या आवाज सुनकर किसी वस्तु का निशाना लगाना।

शब्दवेधी–संज्ञा पुं० बिना देखे हुए केवल आवाज सुनकर किसी वस्तु का निशाना लगानेवाला। अर्जुन और दशरथ को शब्दवेधी विशेषण से सम्बोधित किया गया है।

शब्दशक्ति–संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति, जिससे उसका अर्थ या भाव प्रकट होता है। यह तीन प्रकार की है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

शब्दशासन–संज्ञा पुं० व्याकरण।

शब्दशासनविद्–संज्ञा पुं० व्याकरण का पंडित या आचार्य।

शब्दशास्त्र–संज्ञा पुं० व्याकरण।

शब्दसागर–संज्ञा पुं० १. शब्दों का समुद्र। शब्द-भांडार। २. शब्द-कोश।

शब्दसाधन–संज्ञा पुं० १. शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि के विवेचन से सम्बन्ध रखनेवाला व्याकरण का एक अंग। २. बिना देखे हुए केवल आवाज सुनकर निशाना लगाना।

शब्दाडंबर–संज्ञा पुं० बड़े-बड़े शब्दों का और कठिन वाक्यों का प्रयोग, जिसमें भाव की बहुत कमी हो। शब्दजाल।

शब्दातीत–संज्ञा पुं० जो शब्द से परे हो। ईश्वर।

शब्दालंकार–संज्ञा पुं० काव्य में वह अलंकार, जिसमें केवल शब्दों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे—यमक, अनुप्रास आदि।

शम–संज्ञा पुं० [स्त्री० शमता] १. शांति। २. मोक्ष। ३. उपचार। ४. अंतःकरण तथा इंद्रियों को वश में करना। ५. क्षमा।

शमन–संज्ञा पुं० १. शांति। दमन। २. दोष, विकार आदि को दबाना। जैसे, रोग का शमन। ३. यज्ञ में पशुओं का बलिदान। ४. यम। ५. हिंसा।

शमशेर–संज्ञा स्त्री० [फा०] तलवार।

शमा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बत्ती। २. चिराग की लौ। ३. मोमबत्ती।

शमादान–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का पात्र या आधार, जिसमें मोमबत्ती या चिराग रखकर उसे जलाते हैं। प्रकाश-स्तम्भ। दीयट की तरह का एक पात्र।

शमित–वि० १. शान्त। २. जिसका शमन किया गया हो।

शमी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, जिसकी पूजा विजयादशमी के दिन की जाती है।
वि० शांत।

शमीक–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि, जिनके गले में परीक्षित ने एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया था, परन्तु ये कुछ न बोले।

शमीगर्भ–संज्ञा पुं० अग्नि।

शयन–संज्ञा पुं० १. सोना। लेटना। २. बिछौना। शय्या।

शयन-आरती–संज्ञा स्त्री० देवताओं की वह आरती, जो रात को सोने के समय होती है।

शयनगृह–संज्ञा पुं० शयनागार। सोने के लिए कमरा या घर।

शयनबोधिनी–संज्ञा स्त्री० अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

शयनागार, शयनालय–संज्ञा पुं० सोने का कमरा या घर।

शय्या–संज्ञा स्त्री० बिछौना। बिस्तर। पलँग या भूमि आदि पर बिछा हुआ बिस्तर।

शय्यादान–संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके परिवारवालों-द्वारा उसके उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जा-दान।

शर–संज्ञा पुं० १. बाण। तीर। २. भाले का फल। ३. सरकंडा। ४. पाँच की संख्या (कामदेव के पाँच बाणों के अनुसार)। ५. दूध या दही की मलाई। ६. चिता। ७. एक असुर का नाम।

शरअ–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शरई] १ मुसलमानों का धर्म-शास्त्र। कुरान में दी हुई आज्ञा। २. ईश्वर-द्वारा भक्तों को बताया हुआ सीधा मार्ग। मजहब। ३ दस्तूर। परिपाटी। तरीका।

शरच्चन्द्र–संज्ञा पुं० शरद ऋतु का चन्द्रमा।

शरण–संज्ञा स्त्री० १. बचाव की जगह। २. रक्षा। आश्रय। पनाह। ३. मकान। घर। निवास-स्थान। ४. अधीन। मातहत।

शरणगृह–संज्ञा पुं० १. पनाहघर। २. हवाई जहाजों के हमले से बचने के लिए जमीन के अन्दर बनाया गया स्थान।

शरणद–वि० शरण देनेवाला।

शरणागत–संज्ञा पुं० अपनी जान बचाने के लिए शरण में आया हुआ। शरणार्थी। आश्रित।

शरणापन्न–वि० दे० "शरणागत"।

शरणार्थी–संज्ञा पुं० १. शरण में आया हुआ व्यक्ति। २. किसी देश या स्थान से जबरदस्ती हटाया गया व्यक्ति, जो दूसरी जगह शरण

पाकर रहना चाहता हो। (अंग्रे०-रिफ्यूजी) पाकिस्तान से अपनी जान बचाकर भारत में आये हुए हिन्दुओं के लिए प्रयुक्त शब्द।

शरणी–वि० शरण देनेवाली।

शरण्य–वि० १. शरण देने योग्य। २. शरण में आए हुए को रक्षा करनेवाला।

शरत् या **शरद्**–संज्ञा स्त्री० १. एक ऋतु, जो आश्विन और कार्त्तिक मास में होती है (अगस्त से नवम्बर तक का समय)। २. वर्ष (काव्य में)।

शरत्काल–संज्ञा पुं० शरद ऋतु।

शरदंड–संज्ञा पुं० चाबुक।

शरद–संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।

शरद-पूर्णिमा–संज्ञा स्त्री० शरद् पूनो। क्वार महीने की पूर्णमासी।

शरद्वत्–संज्ञा पुं० १. शरद-ऋतु। २. एक प्राचीन ऋषि।

शरपट्टा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुंख–संज्ञा पुं० १. तीर में लगा हुआ पंख।

शरबत–संज्ञा पुं० [अ०] १. पीने की मीठी वस्तु। रस। पानी में शक्कर और कुछ अन्य वस्तुओं को घोलकर पीने की वस्तु। २. चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का रस।

शरबती–वि० रसीला। रसदार।

संज्ञा पुं० १. एक तरह का हल्का पीला रंग। २. एक प्रकार का नीबू। ३. एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

शरभंग–संज्ञा पुं० एक प्राचीन महर्षि। वनवास के समय रामचन्द्र इनका दर्शन करने गए थे।

शरभ–संज्ञा पुं० १. हाथी का बच्चा। २. विष्णु। ३. टिड्डी। ४. एक पक्षी। ५. एक प्रकार छन्द। ६. एक तरह का मृग। ७. दन्तकथाओं में वर्णित आठ पैरों का एक जानवर, जो शेर और हाथी से भी बलवान् माना गया है। ८. शशिकला नामक एक वृत्त। ९. राम की सेना का एक बन्दर।

शरभा–संज्ञा स्त्री० वह बालिका जिसके हाथ-पैर टूटे हुए हों और जो इस कारण विवाह के लिए अयोग्य हो। अपंग बालिका।

शरम–संज्ञा स्त्री० [फा०] 'शर्म'। १. लज्जा। हया। २. संकोच। लिहाज।

मुहा०–शरम से गड़ जाना या शरम से पानी-पानी होना=बहुत लज्जित होना।

शरमाना–क्रि० अ० लजाना। लज्जित होना। शर्मिन्दा होना।

क्रि० स० शर्मिंदा करना। लज्जित करना।

शरमिंदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] शरमिंदा या लज्जित होने का भाव। झेंप। लाज।

शरमिंदा–वि० [फा०] लज्जित।

शरमीला–वि० [स्त्री० शरमीली] बहुत लज्जा या शर्म करनेवाला। लज्जालु।

शरह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. व्याख्या। किसी बात या कथन को स्पष्ट करने के लिए किया हुआ वर्णन। टीका। २. दर। भाव।

शरहबन्दी–संज्ञा स्त्री० दरबन्दी। दर या भाव निश्चित करना।

शराकत–संज्ञा स्त्री० [फा०] शरीक या शामिल होने का भाव। हिस्सेदारी। साझा।

शराकतनामा–संज्ञा पुं० [फा०] वह पत्र, जिस पर साझे या हिस्सेदारी की शर्तें लिखी हों।

शराफत–संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीफ या सज्जन होने का भाव। सज्जनता। भलमनसी।

शराब–संज्ञा स्त्री० [अ०] मद्य। मदिरा। विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ कुछ लाल रंग का तरल पदार्थ, जिसके पीने से नशा हो।

शराबखाना–संज्ञा पुं० शराब बेचने का स्थान।

शराबखोर–संज्ञा पुं० [फा०] बहुत शराब पीनेवाला।

शराबखोरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बहुत शराब पीने को लत या आदत।

शराबी–संज्ञा पुं० शराब पीनेवाला।

शराबोर–वि० [फा०] बिलकुल भीगा हुआ। तर-बतर।

शरारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] बदमाशी। नटखटपन। दुष्टता। पाजीपन।

शरारती–वि० पाजी। दुष्ट।

शरासन–संज्ञा पुं० धनुष।

शरीअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का धर्म्म-शास्त्र। मुसलमानों के अनुसार वह मार्ग, जो परमात्मा ने अपने भक्तों के लिए निश्चित कर दिया है।

शरीक–वि० [अ०] मिला हुआ। शामिल। सम्मिलित।
संज्ञा पुं० साझी। हिस्सेदार। सहायक।

शरीफ़–संज्ञा पुं० [अ०] सज्जन। सभ्य या भला व्यक्ति।

शरीफा–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वृक्ष और उसका फल, जो गोल होता है। २. श्रीफल। सीताफल।

शरीर–संज्ञा पुं० देह। बदन।
वि० [अ०] [संज्ञा शरारत] पाजी। नट-खट। दुष्ट।

शरीरत्याग–संज्ञा पुं० मृत्यु। प्राण-द्वारा शरीर को छोड़ देना अर्थात् मृत्यु।

शरीरपात–संज्ञा पुं० मृत्यु।

शरीररक्षक–संज्ञा पुं० राजाओं, शासकों या बहुत बड़े पदाधिकारियों के साथ-साथ उनकी रक्षा के लिए रहनेवाले व्यक्ति।

शरीर-शास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें शरीर के अंगों का विवेचन हो। शरीर-विज्ञान।

शरीरस्थ–वि० १. शरीर में रहनेवाला। २. शरीर में।

शरीरांत–संज्ञा पुं० मृत्यु।

शरीरार्पण–संज्ञा पुं० बलिदान करना। किसी कार्य्य को पूरा करने के लिए अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।

शरीरास्थि–संज्ञा पुं० कंकाल। केवल हड्डियों-वाला शरीर।

शरीरी–संज्ञा पुं० १. शरीरवाला। २. प्राणी। ३. आत्मा। जीव।
वि० शरीरवाला। शरीर से युक्त।

शर्करा–संज्ञा स्त्री० १. शक्कर। चीनी। खाँड़। २. बालू का कण।

शर्करी–संज्ञा स्त्री० चौदह अक्षरों की एक वृत्ति।

शर्त्त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी कार्य की सिद्धि के लिए अपेक्षित बात। करार। इकरार। २. बाजी। दाँव। ३. दो दलों या व्यक्तियों में परस्पर होनेवाली प्रतिज्ञा।

शर्त्तिया–क्रि० वि० [अ०] १. अवश्य। २. बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। शर्त्त बदकर।
वि० बिलकुल ठीक। निश्चित।

शर्म–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लज्जा। हया। २. लिहाज। संकोच।

शर्म्म–संज्ञा पुं० १. सुख। आनंद। २. घर। सुखी।

शर्म्मद–वि० [स्त्री० शर्म्मदा] आनंद देने-वाला। सुखदायक।

शर्म्मा–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक उपाधि।

शर्मिष्ठा–संज्ञा स्त्री० दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या, जो देवयानी की सखी थी।

शर्य्यणावत–संज्ञा पुं० शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर।

शर्वरी–संज्ञा स्त्री० १ रात। २ संध्या। ३. स्त्री।

शर्वरीपति–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

शर्वरीश–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

शल–संज्ञा पुं० १. बरछा। भाला। २. कंस के एक मल्ल का नाम। ३. ब्रह्मा।

शलगम–संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

शलजम–संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक कंद।

शलभ–संज्ञा पुं० फतिंगा (जो रोशनी पर मँडराता है)। शरभ।

शलवार–संज्ञा स्त्री० [फा०] पायजामे के नीचे पहनने का जाँघिया। एक प्रकार का बहुत ढीला पायजामा, जो विशेष रूप से पंजाब आदि पश्चिमोत्तर भागों में पहना जाता है।

शलाका–संज्ञा स्त्री० १. लोहे आदि की लंबी सलाई। सलाख। सूई। २. चीर-फाड़ करने का औजार। ३. बाण।

शलाख–संज्ञा स्त्री० दे० "शलाका"।

शलातुर–संज्ञा पुं० पाणिनि के पूर्वजों का निवास-स्थान एक प्राचीन जनपद। इसी से पाणिनि को 'शालातुरीय' भी कहते हैं।

शलूका–संज्ञा पुं० [फा०] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्य–संज्ञा पुं० १. चीर-फाड़ नश्तर। २. अस्त्र-चिकित्सा। ३. बाण। ४. साँग नामक अस्त्र। ५. भाला। ६. बाण या भाले का नुकीला हिस्सा। ७. मद्र देश के एक राजा, जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्ल-युद्ध में भीमसेन से हार गए थे। ८. दर्द पैदा करनेवाला शरीर में जमा हुआ कोई पदार्थ, जैसे बायगोला।

शल्यक्रिया–संज्ञा पुं० चीर-फाड़ करना। शस्त्र-चिकित्सा। नश्तर लगाना।

शल्लकी–संज्ञा स्त्री० साही (जंतु)।

शल्व–संज्ञा पुं० दे० "शाल्व"।

शव–संज्ञा पुं० लाश। मुर्दा।

शवदाह–संज्ञा पुं० आदमी की लाश को जलाने की क्रिया। अन्त्येष्टि क्रिया।

शव-परीक्षा–संज्ञा स्त्री० मृत्यु का कारण जानने के लिए मृत व्यक्ति की लाश की जाँच। सरकारी डाक्टर लाश को चीर-फाड़कर यह जाँच करते हैं कि किस कारण मृत व्यक्ति की मृत्यु हुई है (अंग्रे०-पोस्ट-मार्टम)।

शवभस्म–संज्ञा पुं० लाश को जलाने के बाद बची हुई राख।

शबर–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल में दक्षिण भारत की एक जंगली जाति। २. शिव।

शबरी–संज्ञा स्त्री० १. शबर जाति की एक तपस्विनी, जिसके आश्रम में श्रीरामचन्द्रजी सीता को ढूँढ़ते समय गए थ। वहाँ उन्होंने उसके जूठे बेर खाए थे। २. शबर जाति की स्त्री।

शश–संज्ञा पुं० १. खरगोश। २. काम-शास्त्र के अनुसार पुरुष के चार भेदों में से एक। ३. चन्द्रमा में का दाग या कलंक (जो खरगोश या काले हिरन की तरह दिखाई पड़ता है)।

शशक–संज्ञा पुं० खरगोश। दे० "शश"।

शशधर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

शशशृंग–संज्ञा पुं० १. कोई असम्भव बात। २. खरगोश के सींग की तरह असम्भव बात।

शशांक–संज्ञा पुं० चन्द्रमा। (चन्द्रमा के दाग को खरगोश समझा जाता है, इसलिए चन्द्रमा को शशांक कहते हैं।)

शशा–संज्ञा पुं० दे० "शश"।

शशि–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

शशिकर–संज्ञा पुं० चन्द्रमा की किरण।

शशिकला–संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की कला। चन्द्रमा की किरण। चन्द्रमा। २. एक प्रकार का छन्द।

शशिकान्त–संज्ञा पुं० १. कुमुद। २. चंद्रकान्त मणि।

वि० चन्द्रमा को प्यारा।

शशिकुल–संज्ञा पुं० चंद्रवंश।

शशिकेतु–संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का एक नाम।

शशिग्रह–संज्ञा पुं० दे० "चन्द्रग्रहण"।

शशिज–संज्ञा पुं० बुध ग्रह (चन्द्रमा का पुत्र)।

शशिधर–संज्ञा पुं०। शिवजी। चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करनेवाले शिव।

शशिप्रभा–संज्ञा पुं० चाँदनी। ज्योत्स्ना।

शशिभाल–संज्ञा पुं० मस्तक पर चन्द्रमा धारण करनेवाले। शिव।

शशिभूषण–संज्ञा पुं० शिव।

शशिमंडल–संज्ञा पुं० चंद्रमंडल। चंद्रमा का घेरा या मंडल।

शशिमुख–वि० [स्त्री० शशिमुखी] १. चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाला। २. अत्यन्त सुन्दर।

शशिमौलि–वि० शिव।

शशिवदना–वि० चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाली। शशिमुखी।

शशिशेखर–संज्ञा पुं० शिव।

शशिहीरा–संज्ञा पुं० चंद्रकांत मणि।

शशीश–संज्ञा पुं० महादेव।

शस, शसा *–संज्ञा पुं० दे० "शश, शशा"। खरगोश।

शस्त–संज्ञा पुं० [फा०] निशाना। लक्ष्य।

शस्त्र–संज्ञा पुं० १. हथियार। वे उपकरण, जिनसे किसी को काटा या मारा जाय। २. हाथ से बिना फेंके हुए चलाने का हथियार। जैसे-बंदूक, पिस्तौल (अंग्रे०-

'आर्म्स')। (हाथ से फेंककर चलाए जानेवाले हथियारों को अस्त्र कहते हैं—जैसे, बाण।)

शस्त्रकर्म, शस्त्रक्रिया–संज्ञा स्त्री० फोड़े आदि की चीर-फाड़ करने का काम।

शस्त्रधारी–वि० [स्त्री० शस्त्रधारिणी] हथियारबंद। जिसके हाथ में शस्त्र या हथियार हो।

शस्त्रविद्या–संज्ञा स्त्री० १. हथियार चलाने की विद्या। २. धनुर्वेद, जिसमें युद्ध करने और अस्त्र चलाने की विधियाँ हैं (यह यजुर्वेद का एक उपवेद है)।

शस्त्रशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "शस्त्रागार"।

शस्त्रागार–संज्ञा पुं० शस्त्रों के रखने का स्थान। सिलहखाना।

शस्त्रास्त्र–संज्ञा पुं० शस्त्र और अस्त्र। हर तरह के हथियार। हाथ से फेंककर या बिना फेंके हुए चलाए जानेवाले दोनों प्रकार के हथियार।

शस्त्रीकरण–संज्ञा पुं० देश की सेना या जनता को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्य–संज्ञा पुं० १. अन्न। २. नई घास। ३. खेती। फसल।
वि० उत्तम। श्रेष्ठ।

शहंशाह–संज्ञा पुं० दे० "शाहंशाह"। बादशाहों का बादशाह। महाराजाधिराज।

शह–संज्ञा पुं० [फा० शाह का संक्षिप्त रूप] १. बादशाह। २. दूल्हा।
संज्ञा स्त्री० १. शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना, जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किस्त। २. छिपे तौर पर किसी को भड़काने की क्रिया या भाव।
वि० श्रेष्ठतर। बढ़ा-चढ़ा।

शहजादा–संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"। राजकुमार।

शहजोर–वि० [फा०] बलवान्। ताकतवर।

शहतीर–संज्ञा पुं० [फा०] लकड़ी का बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा, जो मकान आदि बनाने के काम आता है।

शहतूत–संज्ञा पुं० एक वृक्ष और उसका फल। तूत।

शहद–संज्ञा पुं० [अ०] मधु। मधुमक्खियों के छत्तों से निकाला हुआ मीठा तरल पदार्थ।
मुहा०—शहद लगाकर चाटना=किसी बेकार चीज को लेकर रखे रहना (व्यंग्य)।

शहनाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँसुरी या अलगोजे के आकार का मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा। रोशन चौकी।

शहबाला–संज्ञा पुं० [फा०] विवाह के समय दूल्हे के साथ-साथ जानेवाला छोटा बालक।

शह-मात–संज्ञा स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात, जिसमें बादशाह पर वार करके हराया जाय।

शहर–संज्ञा पुं० [फा०] नगर। बड़ी बस्ती।

शहरपनाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] शहर की चारदीवारी। नगर-कोटा।

शहराती–वि० दे० 'शहरी'।

शहरियत–संज्ञा स्त्री० [फा०] शहरीपन। नागरिकता।

शहरी–वि० [फा०] १. शहर का। शहर का रहनेवाला। नगर-निवासी। २. शहर से सम्बन्धित।

शहवत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. काम-वासना। सम्भोग की इच्छा। २. सम्भोग।

शहादत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गवाही। सबूत। २. शहीद होना। बलिदान।

शहाना–संज्ञा पुं० दे० "शाहना"। बादशाहों या राजाओं से सम्बन्ध रखनेवाली बातें।
वि० १. शाही। राजसी। २. बहुत ही अच्छा।

शहीद–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी अच्छे कार्य को पूरा करने के लिए अपना बलिदान करनेवाला व्यक्ति। २. मुसलमानों के अनुसार धर्म के लिए प्राण देनेवाला व्यक्ति।

शांकर–वि० १. शिव-सम्बन्धी। शंकर-संबंधी। २. शंकराचार्य का। ३. शंकराचार्य का अनुयायी।

शांडिल्य–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध मुनि, जिन्होंने भक्तिसूत्र की रचना की थी। २. शांडिल्य के कुल में उत्पन्न व्यक्ति। ३. शांडिल्य की रचनाएँ—जैसे शांडिल्य-सूत्र, शांडिल्योपनिषद्। ४. अग्नि। ५. बेल।

शांत—वि० १. स्थिर। रुका हुआ। वेगहीन। निश्चल। २. चुप। मौन। खामोश। ३. धीर। गम्भीर। ४. स्वस्थचित्त। क्रोधहीन। जिसके मन में क्षोभ, चिन्ता या दुख न हो। ५. जितेन्द्रिय। ६. बिना झगड़े-बखेड़े या उपद्रव के (घर, समाज या देश)। विघ्न-बाधा-रहित। ७. मरा हुआ। (जैसे—वह शान्त हो गए)।
संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से एक, जिसका स्थायी भाव निर्वेद है और जिसमें शान्त-भाव या सांसारिक मोह-माया की असारता तथा वासनाओं से छुटकारा पाने अर्थात् विराग का वर्णन होता है।

शान्ता—संज्ञा स्त्री० राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यश्रृंग की पत्नी—रेणुका।

शांति—संज्ञा स्त्री० १. समाज या देश में झगड़े-बखेड़े या उपद्रव का न होना। अमन-चैन। २. स्तब्धता। सन्नाटा। खामोशी। ३. चित्त की स्वस्थता। ४. रोग आदि का दूर होना। ५. मृत्यु। ६. वेग या गति का न होना। निश्चलता। ७. धीरता। गंभीरता। ८. वासनाओं से छुटकारा। विराग। ९. दुर्गा। १०. अमंगल दूर करने का उपचार या धार्मिक कृत्य।

शांतिकर्म—संज्ञा पुं० बुरे ग्रह आदि से होने-वाले अमंगल के निवारण का उपचार।

शान्तिभंग—संज्ञा पुं० जनसाधारण के सुख और शान्तिपूर्वक रहने में बाधा उत्पन्न करनेवाला कोई उपद्रव या अनुचित कार्य। अमन-चैन में खलल डालनेवाला काम।

शान्तिवाद—संज्ञा पुं० शान्ति-स्थापना का सिद्धान्त, जिसका ध्येय यह है कि सब लोग शान्तिपूर्वक रहें और संसार से लड़ाई-झगड़े तथा युद्ध आदि का अन्त हो जाय। (अंग्रे०—पैसिफिज्म)

शान्तिवादी—संज्ञा पुं० शान्तिवाद के सिद्धान्त को माननेवाला।

शाइस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सज्जनता। भलमनसी। शिष्टता।

शाइस्ता—वि० [फा०] सभ्य। शिष्ट। नम्र।

शाक—संज्ञा पुं० तरकारी। सब्जी।
वि० शक जाति-संबंधी।

शाकद्वीप—संज्ञा पुं० १. पुराणों में वर्णित सात द्वीपों में से एक। २. ईरान और तुर्की के बीच का एक प्राचीन प्रदेश, जिसमें पहले शक बसते थे।

शाकद्वीपीय—वि० शाकद्वीप का।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद।

शाकल—संज्ञा पुं० १. खंड। टुकड़ा। २. ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३. हवन की सामग्री। ४. प्राचीन मद्र देश का एक नगर।

शाकाहार—संज्ञा पुं० [वि० शाकाहारी] मांस-मछली आदि को छोड़कर केवल अनाज या वनस्पति (तरकारी, फल आदि) का भोजन। मांसाहार का उलटा।

शाकाहारी—वि० मांस-मछली आदि न खाने-वाला।

शाकिनी—संज्ञा स्त्री० चुड़ैल। डाइन।

शाकुन, शाकुनि—संज्ञा पुं० बहेलिया।

शाक्त—वि० शक्ति-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. शक्ति या देवी का उपासक। २. तंत्र-पद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

शाक्य—संज्ञा पुं० एक प्राचीन क्षत्रिय जाति, जो नैपाल की तराई में बसती है।

शाक्य मुनि—संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध।

शाख—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. टहनी। डाल। शाखा। २. लगा हुआ टुकड़ा। ३. खंड। फाँक। ४. नदी की धारा से निकली हुई छोटी धारा।
मुहा०—शाख निकालना=दोष निकालना।

शाखा—संज्ञा स्त्री० १. पेड़ की डाल। २. किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद। विभाग। हिस्सा। ३. अंग। किसी संस्था या संघ का वह अंग, जो दूर रहकर उसके अधीन कार्य करे—जैसे बंक, दूकान या किसी राजनीतिक पार्टी की विभिन्न स्थानों में स्थित शाखाएँ। ४. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद।

शाखामृग—संज्ञा पुं० १. बंदर। २. गिलहरी। ३. पेड़ों पर रहनेवाला जन्तु।

शाखोच्चार–संज्ञा पुं० विवाह के समय वंशावली का कथन।

शागिर्द–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शागिर्दी] शिष्य। चेला। किसी से कोई विद्या सीखनेवाला।

शाठ्य–संज्ञा पुं० शठता। दुष्टता। छल-कपट।

शाण–संज्ञा पुं० [वि० शाणित] एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किए जाते हैं। सान।

शातवाहन–संज्ञा पुं० दे० "शालिवाहन"।

शातिर–संज्ञा पुं० [अ०] १. धूर्त्त। २. चालाक। ३. शतरंज का खेलाड़ी।

शाद–वि० [फा०] १. प्रसन्न। खुश। २. भरपूर।

शादियाना–संज्ञा पुं० [फा०] १. बधावा। २. खुशी का बाजा।

शादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. विवाह। २. खुशी या आनन्द का उत्सव।

शाद्वल–वि० १. हरा-भरा। २. हरी-हरी घास से ढका हुआ।
संज्ञा पुं० १. हरी घास। २. दूब। ३. साँड़। ४. रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती।

शान–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शानदार] १. रोब। २. घमंड। ३. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। ४. प्रभुत्व। ५. शक्ति। ६. प्रतिष्ठा। इज्जत।
मुहा०—शान बघारना=रोब दिखलाना।

शान-शौकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रोबदाब। २. तड़क-भड़क। सजधज। ठाट-बाट।

शाप–संज्ञा पुं० किसी के अहित या हानि की इच्छा से कही हुई बात। अहित-कामना। बददुआ।

शापग्रस्त–वि० जिसे शाप दिया गया हो या जिस पर शाप पड़ा हो। शापित।

शापित–वि० जिसे शाप दिया गया हो।

शापोद्धार–संज्ञा पुं० शाप से छुटकारा पाना।

शाबरी–संज्ञा स्त्री० शबरों की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबाश–अव्य० [फा०] [संज्ञा शाबाशी] १. बधाई। साधुवाद। कोई अच्छा काम करनेवाले की प्रशंसा के लिए प्रयुक्त शब्द। २. बहुत अच्छे। वाह-वाह। धन्य हो। ३. खुश रहो (बच्चों के लिए)।

शाब्द–वि० [स्त्री० शाब्दी] १. शब्द या शब्दों का। शब्द-संबंधी। दे० "शाब्दिक"। २. केवल शब्द पर निर्भर रहनेवाला (अर्थ पर नहीं)।

शाब्दिक–वि० १. शब्द-संबंधी। २. शब्दों में कहा हुआ।

शाब्दी–वि० १. शब्द-संबंधिनी। २. केवल शब्द-विशेष पर निर्भर रहनेवाली। जैसे शाब्दी व्यंजना।

शाब्दी व्यंजना–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की व्यंजना, जो शब्द-विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो; अर्थात् उसका पर्य्यायवाची शब्द रखने पर वह व्यंजना न रह जाय। आर्थी व्यंजना का उलटा।

शाम–संज्ञा स्त्री० [फा०] संध्या। साँझ।
*वि० संज्ञा पुं० दे० "श्याम"।
संज्ञा पुं० अरब के उत्तर का एक देश, जिसे सीरिया कहते हैं।

शामकर्ण–संज्ञा पुं० दे० "श्यामकर्ण"।

शामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दुर्भाग्य। बदकिस्मती। २. आफत। विपत्ति। दुर्दशा।
मुहा०—शामत का मारा=जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो। शामत सवार होना या सिर पर खेलना=दुर्दशा का समय आना।

शामियाना–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बड़ा तंबू।

शामिल–वि० [फा०] मिला हुआ। सम्मिलित।

शामी–संज्ञा स्त्री० धातु का वह छल्ला, जो लकड़ियों या औजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिए लगाया जाता है। शाम।
संज्ञा पुं० अरब, मिस्री आदि जातियों का वर्ग (अंग्रे०—सेमेटिक)।
वि० शाम (सीरिया) देश का। शाम देश का निवासी। शाम देश में होनेवाला।

शाम्य–संज्ञा पुं० शान्ति। शम (शान्ति) का भाव।

शायक–संज्ञा पुं० १. बाण। शर। २. खड्ग। तलवार।

शायक़–वि० [अ०] १. इच्छुक। २. शौकीन।

शायद–अव्य० [फा०] ऐसा हो सकता है। कदाचित्। सम्भव है। सम्भवतः।

शायर–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शायरा] कवि।

शायरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. काव्य। २. कविता। ३. कविताएँ बनाना।

शायी–वि० १. सोया हुआ। लेटा हुआ। २. सोनेवाला। (इसे अन्त में जोड़कर यौगिक शब्द बनाते हैं, जैसे शेषशायी=शेषनाग पर सोए हुए विष्णु)।

शारंग–संज्ञा पुं० दे० "सारंग"।

शारंगपाणि–संज्ञा पुं० दे० "शार्ङ्गपाणि"।

शारद–वि० १. शरद्-काल-सम्बन्धी। २. शरद-ऋतु में पैदा होनेवाला। ३. शरद्-काल का।

शारदा–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. प्राचीन काल की एक लिपि।

शारदीय–वि० १. शरन्‌काल-सम्बन्धी। २. शरद्-ऋतु में होनेवाला। ३. शरत्-काल का।

शारदीय महापूजा–संज्ञा स्त्री० शरत्काल में होनेवाली नवरात्र की दुर्गा-पूजा।

शारिका, सारिका–संज्ञा स्त्री० मैना (चिड़िया)।

शारिवा, सारिवा–संज्ञा स्त्री० १. जवासा। सालसा। २. अनन्तमूल।

शारीर–वि० १. शारीरिक। शरीर-संबंधी। २. शरीर में या शरीर से होनेवाला।

शारीर-विज्ञान (शास्त्र)–संज्ञा पुं० १. वह शास्त्र, जिसमें जीव की उत्पत्ति, विकास और शरीर-सम्बन्धी ज्ञान का विवेचन हो। २. दे० "शरीर-शास्त्र"।

शारीरिक भाष्य–संज्ञा पुं० शंकराचार्य्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरिक सूत्र–संज्ञा पुं० वेदांत-सूत्र।

शारीरिक–वि० १. शरीर-संबंधी। २. शरीर में या शरीर से होनेवाला, जैसे शारीरिक कष्ट या शारीरिक परिश्रम।

शार्ङ्ग–संज्ञा पुं० १. सींग का बना हुआ धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष। ३. पक्षी-विशेष।

शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। हाथ में शारंग नामक धनुष धारण करनेवाले।

शार्दूल–संज्ञा पुं० १. बाघ। सिंह। २. राक्षस। ३. एक चिड़िया। ४. दोहे का एक भेद। वि० सर्वश्रेष्ठ। बहुत नामी या प्रसिद्ध।

शार्दूलललित–संज्ञा पुं० अठारह अक्षरों का एक प्रकार का छन्द।

शार्दूलविक्रीड़ित–संज्ञा पुं० उन्नीस अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त।

शार्वरी–संज्ञा स्त्री० १. रात-सम्बन्धी। २. रात।

शालंकि–संज्ञा पुं० पाणिनि ऋषि।

शाल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़। साखू।
संज्ञा स्त्री० ऊनी या रेशमी चादर। दुशाला।

शालग्राम–संज्ञा पुं० विष्णु की एक प्रकार की पत्थर की गोल मूर्त्ति।

शालपर्णी–संज्ञा स्त्री० एक तरह का पौधा, जिसे आजकल "सरिवन" कहते हैं।

शाला–संज्ञा स्त्री० १. घर। मकान। २. बड़ा भारी कमरा। ३. कोई चीज रखने या कोई कार्य करने का स्थान। जैसे—पाठशाला। ४. एक प्रकार का छन्द, जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से बनता है।

शालातुरीय–संज्ञा पुं० पाणिनि ऋषि।

शालि–संज्ञा पुं० जड़हन धान।

शालिका–वि० धान से निकाला या बनाया हुआ।

शालिधान, शालिधान्य–संज्ञा पुं० बासमती चावल।

शालिनी–संज्ञा स्त्री० ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त।
वि० १. छेदनेवाली। २. दुख देनेवाली।

शालिवाहन–संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध शक राजा, जिसने "शक" नामक संवत् चलाया था।

शालिहोत्र—संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. पशु-चिकित्सा की विद्या। (अंग्रे०—वेटेरिनरी साइन्स)

शालिहोत्री—संज्ञा पुं० पशुओं की चिकित्सा करनेवाला (अंग्रे०—वेटरिनरी डाक्टर)।

शालिहोत्रीय—वि० पशु-चिकित्सा से सम्बन्ध रखनेवाला (अंग्रे०—वेटेरिनरी)।

शालीन—वि० [संज्ञा स्त्री० शालीनता] १. नम्र। २. लज्जाशील। ३. समान। तुल्य। ४. आचार-विचारवाला। ५. धनी। ६. निपुण। चतुर।

शालीनता—संज्ञा स्त्री० शालीन होने का भाव। नम्रता। शील-संकोच।

शाल्मलि—संज्ञा पुं० १. सेमल का पेड़। २. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ३. एक नरक का नाम।

शाल्मली—संज्ञा स्त्री० सेमल का पेड़।

शाव, शावक—संज्ञा पुं० पशु या पक्षी का बच्चा।

शाश्वत—वि० जो सदा बना रहे। चिरन्तन। कभी नष्ट न होनेवाला।

शाश्वती—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

शासक—संज्ञा पुं० [स्त्री० शासिका] १. शासन करनेवाला। २. हाकिम।

शासन—संज्ञा पुं० १. आज्ञा। हुक्म। २. राज्यकार्य का प्रबन्ध या संचालन। हुकूमत। ३. अधिकार या वश में रखना। नियंत्रण। ४. सरकारी अधिकारियों का समूह या मंडल। ५. दंड। सजा।

शासनीय—वि० १. शासन करने योग्य। २. दंड देने योग्य।

शासित—वि० [स्त्री० शासिता] १. जिस पर शासन हो रहा हो। २. दंडित। जिसे दंड दिया जाय।

शास्ता—संज्ञा पुं० १. शासक। २. राजा। ३. पिता। ४. गुरु।

शास्ति—संज्ञा स्त्री० १. शासन। २. दंड। सजा। ३. जुर्माने में लिया जानेवाला धन या काम।

शास्त्र—संज्ञा पुं० १. हिन्दुओं के अनुसार वे ग्रंथ, जो जनसाधारण की भलाई के लिए बनाए गए हैं और जिनमें उनके लिए कर्त्तव्य बताए गये हैं। इनकी संख्या १८ कही गई है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्म्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, और अर्थशास्त्र। २. किसी विषय का क्रम से संग्रह किया हुआ पूरा ज्ञान। ३. विज्ञान। विद्या।

शास्त्रकार—संज्ञा पुं० शास्त्रों की रचना करनेवाला।

शास्त्रज्ञ—संज्ञा पुं० शास्त्रों का जानकार या पंडित।

शास्त्री—संज्ञा पुं० १. शास्त्र जाननेवाला। शास्त्रज्ञ। धर्मशास्त्र का पंडित। २. संस्कृत-विद्यालयों और काशी-विद्यापीठ की एक उपाधि।

शास्त्रीकरण—संज्ञा पुं० किसी विषय को शास्त्र का रूप देना।

शास्त्रीय—वि० १. शास्त्र-संबंधी। २. शास्त्रों के अनुसार।

शास्त्रोक्त—वि० शास्त्रों में कहा हुआ। शास्त्रों में कही हुई बातों के अनुसार।

शाहंशाह—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाहों का बादशाह। महाराजाधिराज।

शाहंशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] शाहंशाह, (बादशाह) का कार्य या भाव। राजसी।

शाह—संज्ञा पुं० [फा०] १. बादशाह। महाराज। २. मुसलमान फकीरों की उपाधि। वि० बड़ा। महान्।

शाहखर्च—वि० [फा०] [संज्ञा शाहखर्ची] बहुत खर्च करनेवाला।

शाहजादा—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शाहजादी] राजकुमार। बादशाह का पुत्र।

शाहाना—वि० [फा०] शाही। राजसी। संज्ञा पुं० विवाह का जोड़ा, जो दूल्हे को पहनाया जाता है। जामा।

शाही—वि० [फा०] १. राजसी। २. बादशाह-संबंधी।

शिंगरफ—संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।

शिंजन—संज्ञा पुं० १. झनकार। २. गहनों

की झनकार। ३. मधुर ध्वनि। सुरीली या मीठी आवाज।
वि० मधुर ध्वनि करनेवाला।

शिंजनी–संज्ञा स्त्री० १. धनुष की डोरी। २. अँगूठी। ३. नूपुर। ४. पैंजनी।

शिंबी–संज्ञा स्त्री० १. सेम की फली। २. छीमी। फली। बौंड़ी।

शिंशपा–संज्ञा स्त्री० १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।

शिंशुपा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शिंशपा"।

शिंशुमार–संज्ञा पुं० सूँस। (पानी का एक जानवर।)

शिकंजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। २. एक यंत्र, जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं। ३. प्राचीन काल में अपराधियों को कठोर दंड देने का यंत्र, जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं।

शिकन–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिकुड़न। सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी।

शिकम–संज्ञा पुं० [फा०] पेट।

शिकमी–वि० [फा०] १. किसी के अधीन या अन्तर्गत रहनेवाला। २. पेट-सम्बन्धी।

शिकमी काश्तकार–संज्ञा पुं० [फा०] वह काश्तकार, जिसे जोतने के लिए खेत किसी दूसरे काश्तकार से मिला हो।

शिकरा–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का बाज पक्षी।

शिकवा–संज्ञा पुं० [अ०] शिकायत। उलाहना।

शिकस्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] हार। पराजय।

शिकायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई करना। निन्दा। २. उलाहना। ३. रोग। बीमारी–जैसे, पेट की शिकायत।

शिकार–संज्ञा पुं० [फा०] १. जंगली पशु-पक्षियों को मारने का कार्य्य। आखेट। २. मारा हुआ जानवर। ३. मांस। ४. खाने की वस्तु। ५. कोई ऐसा आदमी, जिसके फँसने से बहुत लाभ हो।
मुहा०—किसी का शिकार होना=१. किसी के द्वारा मारा जाना। २. किसी के जाल में फँसना।

शिकारगाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान।

शिकारी–संज्ञा पुं०, वि० [फा०] १. शिकार करनेवाला। २. शिकार से सम्बन्ध रखनेवाला।

शिक्षक–संज्ञा पुं० १. शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। २. विद्यालयों में छात्रों को पढ़ानेवाला व्यक्ति। गुरु।

शिक्षण–संज्ञा पुं० १. शिक्षा देने का काम। २. शिक्षा। तालीम।

शिक्षणालय–संज्ञा पुं० विद्यालय। वह स्थान, जहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाय।

शिक्षा–संज्ञा स्त्री० १. किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। तालीम। ज्ञान। २. उपदेश। सीख। नसीहत। पाठ। सबक। ३. छः वेदांगों में से एक, जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है।

शिक्षार्थी–संज्ञा पुं० शिक्षा प्राप्त करनेवाला। विद्यार्थी।

शिक्षालय–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाय। विद्यालय।

शिक्षाविभाग–संज्ञा पुं० वह सरकारी विभाग, जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है। शिक्षा-संचालक का कार्यालय।

शिक्षित–वि० [स्त्री० शिक्षिता] पढ़ा-लिखा। जिसने शिक्षा पाई हो।

शिखंड–संज्ञा पुं० १. मोर की पूँछ। २. शिखा। चोटी।

शिखंडिनी–संज्ञा स्त्री० १. मोरनी या मयूरी। २. द्रुपदराज की एक कन्या, जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।

शिखंडी–संज्ञा पुं० १. मोर। २. मुर्गा। ३. बाण। ४. शिखा। ५. दे० "शिखंडिनी"।

शिख*–संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।

शिखर–संज्ञा पुं० १. पहाड़ की चोटी। सिरा। २. पेड़ का ऊँचा अगला हिस्सा। ३. मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। गुंबद।

शिखरन—संज्ञा स्त्री० दही और चीनी का बनाया हुआ एक तरह का शरबत।

शिखरिणी—संज्ञा स्त्री० १. रसाल। २. रोमावली। ३. स्त्रियों में श्रेष्ठ। ४. दही और चीनी का रस। शिखरन। ५. सत्रह अक्षरों की एक वृत्ति।

शिखा—संज्ञा स्त्री० १. सिर के बीच में सबसे लम्बे बालों का गुच्छा। चोटी। चुटिया। २. नुकीला छोर या सिरा। नोक। ३. शिखर। ऊपरी भाग। ४. मोर, मुर्गा आदि पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी। कलगी। ५. दीपक की लौ। ६. आग की लपट। ७. प्रकाश की किरण।

शिखाधर—वि० नुकीला सिरा या नोकवाला। संज्ञा पुं० मोर।

शिखाबन्धन—संज्ञा पुं० चोटी बाँधना।

शिखासूत्र—संज्ञा पुं० चोटी और जनेऊ।

शिखि—संज्ञा पुं० १. मोर। २. कामदेव। ३. तीन की संख्या। ४. अग्नि।

शिखिध्वज—संज्ञा पुं० १. धुँआँ। २. कार्त्तिकेय। ३. मोर के चिह्नवाला झंडा (मयूरध्वज)।

शिखी—वि० [स्त्री० शिखिनी] चोटीवाला। संज्ञा पुं० १. मोर। २. मुर्गा। ३. अग्नि। ४. तीन की संख्या (तीन प्रकार की अग्नि होने के कारण)। ५. पुच्छल तारा। ६. केतु। बाण। ७. तीर। ८. साँड़। ९. घोड़ा।

शिगाफ—संज्ञा पुं० [फा०] १. चीरा। नश्तर। २. दरार। ३. छेद।

शितद्रु, शतद्रु—संज्ञा स्त्री० सतलज नदी।

शिति—वि० १. सफेद। २. काला।

शितिकंठ—संज्ञा पुं० १. सफेद या काली गर्दन-वाला। २. मोर। ३. शिव। ४. मुर्गाबी। जलकाक। ५. पपीहा।

शिथिल—वि० (संज्ञा शिथिलता) १. थका हुआ। श्रांत। २. सुस्त। धीमा। ३. जो पूरा मुस्तैद न हो। ४. ढीला। जो कसा या जकड़ा न हो। ५. शब्द-योजना का ठीक न होना या प्रवाह न होना (वाक्य या काव्य में)। ६. आज्ञा या नियम आदि, जिसका ठीक पालन न हुआ हो।

शिथिलता—संज्ञा स्त्री० १. शिथिल होने का भाव। थकावट। आलस्य। २. ढीलापन। मुस्तैदी का न होना। नियम-पालन में ढीलापन। ३. शक्ति की कमी। ४. वाक्यों में शब्दों का परस्पर गठा हुआ अर्थ-संबंध न होना।

शिथिलित—वि० दे० "शिथिल"। थका-माँदा।

शिद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेजी। जोर। २. अधिकता। ज्यादती। जैसे, शिद्दत की गर्मी=बहुत अधिक गर्मी।

शिनाख्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर उसे पहचानने का कार्य। पहचान। २. परख। ३. फौजदारी के मुकदमों या पुलिस की कार्रवाइयों में अभियुक्त आदि की पहचान।

शिफर‡*—संज्ञा पुं० ढाल। सिपर (फा०)।

शिया—संज्ञा पुं० दे० "शीया"।

शिर—संज्ञा पुं० १. सिर। २. मस्तक। ३. सिरा। चोटी।

शिरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी काम में शामिल होना। २. किसी वस्तु के अधिकार में भाग। साझा। हिस्सा।

शिरज—संज्ञा पुं० केश। सिर के बाल।

शिरत्रान—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

शिरफूल—संज्ञा पुं० दे० "सीसफूल"।

शिरमौर—संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. सिर का गहना। ३. प्रधान। श्रेष्ठ अधिपति।

शिरस्त्राण—संज्ञा पुं० लड़ाई के समय बचाव के लिए सिर पर पहनी जानेवाली लोहे की टोपी।

शिरा—संज्ञा स्त्री० शरीर में खून की छोटी नाड़ी या नस।

शिरीष—संज्ञा पुं० सिरिस का पेड़, जो शीशम की तरह लम्बा होता है और जिसमें फूल लगते हैं।

शिरोधार्य—वि० सिर पर धारण करने योग्य। आदरपूर्वक मानने योग्य, जैसे बड़ों की आज्ञा।

शिरोभूषण*—संज्ञा पुं० १. __ । २. सिर पर पहनने का गहना। शिरोमणि। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोमणि—संज्ञा पुं० १. सिर पर पहनने का रत्न। चूड़ामणि। २. सिरताज। श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोरुह—संज्ञा पुं० केश। सिर के बाल।

शिल—संज्ञा पुं० १. अन्न की बालियाँ। २. खेत में गिरे हुए दाने चुनना। संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।

शिला—संज्ञा स्त्री० १. पत्थर। २. चट्टान। ३. पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा।

शिलाजतु—संज्ञा पुं० दे० "शिलाजीत"।

शिलाजीत—संज्ञा पुं० पर्वतों पर उत्पन्न होनेवाली काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक औषध, जो शिलाओं का रस मानी जाती है। मोमियाई।

शिलादित्य—संज्ञा पुं० दे० "हर्षवर्द्धन"।

शिलान्यास—संज्ञा पुं० नींव का पत्थर रखने का कार्य।

शिलापट्ट—संज्ञा पुं० १. पत्थर का टुकड़ा या पटिया (बैठने या पीसने के लिए)। २. सिलवट।

शिलारस—संज्ञा पुं० लोहबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य।

शिलारोपण—संज्ञा पुं० [शिला+आरोपण] नींव का पत्थर रखना। शिलान्यास।

शिलालेख—संज्ञा पुं० पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ प्राचीन लेख।

शिलावृष्टि—संज्ञा स्त्री० ओलों की वर्षा। ओले गिरना।

शिलाहरि—संज्ञा पुं० शालग्राम।

शिली—संज्ञा स्त्री० १. बाण। २. भाला।

शिलीमुख—संज्ञा पुं० १. बाण। २. भौंरा। ३. मूर्ख।

शिल्प—संज्ञा पुं० १. दस्तकारी। हाथ से बनाकर चीजें तैयार करने का काम या कला। कारीगरी। २. गृहनिर्माण-कला, मूर्तिकला आदि। ३. कला-संबंधी व्यवसाय।

शिल्पकला—संज्ञा स्त्री० १. दस्तकारी। हाथ से चीजें बनाने की कला या हुनर। कारीगरी। २. मूर्तिकला। ३. गृहनिर्माण-कला या विद्या।

शिल्पकार—संज्ञा पुं० १. कारीगर। हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला। २. शिल्पी। मूर्तिकार। चित्रकार।

शिल्पजीवी—संज्ञा पुं० कारीगर। हाथ से कारीगरी करके जीविका उपार्जन करनेवाला।

शिल्पविद्या—संज्ञा स्त्री० १. हाथ से अच्छी चीजें बनाने की विद्या। २. गृहनिर्माण-कला। ३. दे० "शिल्पकला"।

शिल्पशाला—संज्ञा स्त्री० कारखाना।

शिल्पशास्त्र—संज्ञा पुं० १. शिल्पकला-सम्बन्धी शास्त्र। शिल्पविद्या। २. गृह-निर्माण या वास्तुशास्त्र।

शिल्पिक—वि० शिल्प-सम्बन्धी। शिल्प-कला या उसकी शिक्षा से सम्बन्ध रखनेवाला।

शिल्पी—संज्ञा पुं० १. शिल्पकार। कारीगर। मूर्तिकार। २. किसी शिल्प का अच्छा ज्ञाता।

शिव—संज्ञा पुं० १. शंकर या महादेव। २. हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता, जो सृष्टि का संहार करनेवाले और त्रिमूर्त्ति के अंतिम देवता हैं। ब्रह्मा सृष्टि करनेवाले और विष्णु सृष्टि का पालन-पोषण करनेवाले देवता हैं। ३. मंगल। कल्याण। ४. पारा। ५. मोक्ष। ६. पानी। ७. वसु। ८. लिंग। ९. ग्यारह मात्राओं का एक छंद। वि० कल्याण करनेवाला। मंगलप्रद।

शिवनंदन—संज्ञा पुं० शिवजी के पुत्र गणेशजी।

शिवनामी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा या चादर, जिस पर चारों ओर 'शिव' शब्द छपा रहता है।

शिव-निर्माल्य—संज्ञा पुं० १. शिवजी को अर्पित की गई वस्तु। (ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है।) २. सर्वथा छोड़ देने योग्य वस्तु।

शिवपुराण—संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक। जिसमें शिव के माहात्म्य का वर्णन है।

शिवपुरी—संज्ञा स्त्री० बनारस। काशी।

शिवरात्रि—संज्ञा स्त्री० फाल्गुन बदी चतुर्दशी। (इस दिन लोग शिवजी का व्रत रखते हैं) शिव-चतुर्दशी।

शिवरानी—संज्ञा स्त्री० पार्वती।

शिवलिंग–संज्ञा पुं० शिव का लिंग या पिंडी, जिसकी पूजा होती है।
शिवलिंगी–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध लता, जिसका व्यवहार औषध के रूप में होता है।
शिवलोक–संज्ञा पुं० कैलाश।
शिववृषभ–संज्ञा पुं० शिव की सवारी का बैल।
शिवा–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. दुर्गा। ३. शिव की शक्ति, जो उनकी पत्नी के रूप में साकार दिखाई पड़ती है। ४. मोक्ष।
शिवालय–संज्ञा पुं० शिव का मन्दिर। वह मन्दिर, जिसमें शिव की मूर्ति स्थापित हो। शिवाला।
शिवाला–संज्ञा पुं० दे० "शिवालय"। शिवजी का मन्दिर।
शिवि–संज्ञा पुं० राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा, जो अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं।
शिविका–संज्ञा स्त्री० पालकी। डोली।
शिविर–संज्ञा पुं० १. डेरा। खेमा। (अंग्रे०–कैम्प) २. पड़ाव। फौज ठहरने का स्थान। छावनी। ३. वह स्थान, जहाँ कुछ लोग किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से थोड़े दिनों तक रहें, जैसे शिक्षा-शिविर।
शिवीरथ–संज्ञा पुं० पालकी।
शिशिर–संज्ञा पुं० १. जाड़ा। शीतकाल। २. एक ऋतु, जो माघ और फाल्गुन के महीने में होती है।
वि० ठंढा। शीतल।
शिशिकर, शिशिरमयूख–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
शिशु–संज्ञा पुं० छोटा बच्चा।
शिशुता–संज्ञा स्त्री० बचपन।
शिशुत्व–संज्ञा स्त्री० दे० "शिशुता"। बचपन।
शिशुपाल–संज्ञा पुं० चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
शिशुमार–संज्ञा पुं० १. बच्चों को जान से मारनेवाला। २. सूँस (पानी का जानवर)। ३. नक्षत्र-मंडल। आकाश में तारों का समूह-विशेष। ४. कृष्ण (शिशुपाल को मारनेवाले)।
शिशुमार-चक्र–संज्ञा पुं० सौर जगत्। सब ग्रहों सहित सूर्य का मंडल।
शिश्न–संज्ञा पुं० पुरुष का लिंग।
शिष*–संज्ञा पुं० दे० "शिष्य"।
संज्ञा स्त्री० १. दे० "शिक्षा"। सीख। २. दे० "शिखा"।
शिष्ट–वि० [संज्ञा स्त्री० शिष्टता] १. सभ्य। सज्जन। २. अच्छे स्वभाववाला। सुशील। ३. धीर। शान्त। ४. आचार-व्यवहार में निपुण। ५. सुशिक्षित। ६. परामर्श या सलाह देनेवाला। ७. प्रतिनिधित्व करनेवाला (जैसे शिष्ट-मंडल)।
वि० भला। अच्छा। उत्तम।
शिष्टता–संज्ञा स्त्री० १. शिष्ट या सभ्य होने का भाव या गुण। सज्जनता। भद्रता। भलमनसाहत। २. श्रेष्ठता। उत्तमता।
शिष्टमंडल–संज्ञा पुं० किसी कार्य-विशेष के लिए कहीं भेजा जानेवाला प्रतिनिधियों का दल। (अंग्रे०–डेपुटेशन या डेलीगेशन)
शिष्टाचार–संज्ञा पुं० १. सभ्यता-पूर्ण व्यवहार। सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। २. आव-भगत। खातिरदारी। ३. विनय। नम्रता।
शिष्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० शिष्या] १. विद्यार्थी। जिसे शिक्षा या उपदेश दिया जाय। शिक्षा ग्रहण करनेवाला। २. शागिर्द। चेला।
शिष्यता–संज्ञा स्त्री० १. शिष्य होने का भाव। २. शिक्षा या उपदेश देने का भाव।
शिष्या–संज्ञा स्त्री० शिक्षा या उपदेश ग्रहण करनेवाली स्त्री।
शिस्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. निशाना। लक्ष्य। २. मछली पकड़ने का काँटा।
शीकर, सीकर–संज्ञा पुं० १. पानी की बूँद। जलकण। २. पानी की फुहार। वर्षा की फुहार। ३. तुषार। ४. शीत।
शीघ्र–क्रि० वि० जल्द। तुरंत। बिना देर के।
शीघ्रगामी–वि० जल्दी या तेज चलनेवाला।
शीघ्रता–संज्ञा स्त्री० जल्दी। फुरती।
शीत–वि० ठंढा। शीतल। सर्द।
संज्ञा पुं० १. जाड़ा। सर्दी। २. जाड़े का मौसिम। शीतकाल। ओस। तुषार।

शीत कटिबंध—संज्ञा पुं० पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमि-खंड के वे कल्पित विभाग, जो भूमध्य-रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं और जिनमें बहुत अधिक जाड़ा पड़ता है।

शीतकर—संज्ञा पुं० चन्द्रमा। (शीतल या ठंडी किरणोंवाला।)
वि० ठंडा करनेवाला।

शीतकाल—संज्ञा पुं० १. जाड़े का मौसिम। हेमन्त-ऋतु। २. अगहन और पूस के महीने।

शीतज्वर—संज्ञा पुं० जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी (मलेरिया)।

शीततरंग—संज्ञा स्त्री० जाड़े के दिनों में किसी स्थान पर बहुत अधिक सर्दी पड़ने से बहनेवाली ठंडी हवा, जिससे सर्दी बहुत बढ़ जाती है। (अंग्रे०—'कोल्ड वेव)।

शीतल—वि० [संज्ञा शीतलता] १. ठंढा। सर्द। २. शांत। क्षोभ या उद्वेग से रहित।

शीतल चीनी—संज्ञा स्त्री० कबाब चीनी।

शीतलता—संज्ञा स्त्री० ठंडक। ठंढापन।

शीतला—संज्ञा स्त्री० १. चेचक। माता। २. एक देवी, जो चेचक की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं।

शीतलाष्टमी—संज्ञा स्त्री० चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

शीतांशु—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

शीतांग—संज्ञा पुं० एक रोग, जिसमें आधा शरीर शून्य हो जाता है। लकवा। पक्षाघात।

शीतार्त्त—वि० शीत या ठंड से पीड़ित।

शीताद्रि—संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़।

शीतोष्ण—वि० १. सर्द-गर्म। ठंडा-गरम। २. सुख-दुख।

शीया—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों का एक संप्रदाय, जो हजरत अली का अनुयायी है और उन्हें पैगंबर का ठीक उत्तराधिकारी मानता है। २. सहायक। मददगार। ३. अनुयायी।

शीरा—संज्ञा पुं० [फा०] चीनी या गुड़ को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।

शीरीं—वि० [फा०] १. प्रिय। प्यारा। २. मीठा। मधुर।

शीरीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मीठापन। मिठास। २. मिठाई।

शीर्ण—वि० १. टूटा-फूटा। २. फटा-पुराना। जीर्ण। ३. मुरझाया हुआ। ४. दुबला-पतला।

शीर्ष—संज्ञा पुं० १. सिरा। चोटी। आगे का भाग। २. सिर। मस्तक। ३. खाते आदि की मद का नाम।

शीर्षक—संज्ञा पुं० १ विषय के परिचय के लिए किसी लेख के ऊपर लिखा जानेवाला, शब्द या वाक्य (अंग्रे०—हेडिंग)। २. दे० "शीर्ष"।

शीर्षनाम—संज्ञा पुं० १. शीर्षक। विषय के परिचय के लिए लेख आदि के ऊपर लिखा जानेवाला नाम। २. सबसे ऊपर नाम।

शीर्षबिंदु—संज्ञा पुं० सिर के ऊपर या ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील—संज्ञा पुं० १. स्वभाव। चाल। व्यवहार। आचरण। चरित्र। २. बहुत अच्छा स्वभाव या आचरण। अच्छा मिजाज। ३. संकोच। मुरौवत।
वि० तत्पर। प्रवृत्त या लगा हुआ। (यौ० में) जैसे प्रयत्नशील।

शीलवान्—वि० [स्त्री० शीलवती] १. सुशील। सज्जन। २. अच्छे आचरण का। मिलनसार।

शीश*†—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।

शीशम—संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़, जिसकी लकड़ी भारी और मजबूत होती है।

शीशमहल—संज्ञा पुं० वह महल, मकान या कमरा, जिसकी दीवारों में बहुत से शीशे जड़े हों।

शीशा—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक पारदर्शी मिश्र धातु, जो बालू, रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है। काँच। २. आइना। दर्पण। ३. झाड़-फानूस आदि काँच के बने सामान।

शीशी—संज्ञा स्त्री० शीशे का छोटा लम्बा पात्र, जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।

मुहा०—शीशी सुँघाना=दवा सुँघाकर बेहोश करना।
शुंग—संज्ञा पुं० एक क्षत्रियवंश, जो मौर्य्यों के बाद मगध के सिंहासन पर बैठा था।
शुंठि, शुंठी—संज्ञा स्त्री० सोंठ। सुखाया हुआ अदरख।
शुंड—संज्ञा पुं० हाथी की सूँड़।
शुंडा—संज्ञा स्त्री० १. हाथी की सूँड़। २. शराब। ३. शराब पीने का स्थान। ४. वेश्या।
शुंडिक—संज्ञा पुं० शराब बनानेवाला।
शुंडी—संज्ञा पुं० १. सूँड़वाला। हाथी। २. शराब बनाने या बेचनेवाला। ३. गले का कौआ। घाँटी।
शुंभ—संज्ञा पुं० एक असुर, जिसे दुर्गा ने मारा था।
शुक—संज्ञा पुं० १. तोता। २. शुकदेव। ३. कपड़ा। ४. पगड़ी। ५. एक पौराणिक अस्त्र।
शुकदेव—संज्ञा पुं० कृष्णद्वैपायन व्यास के पुत्र, जो पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।
शुकराना—संज्ञा पुं० १. वह धन, जो कार्य्य हो जाने पर धन्यवाद के रूप में दिया जाय। २. शुक्रिया। धन्यवाद। कृतज्ञता।
शुकी—संज्ञा स्त्री० तोता की मादा। सुग्गी।
शुक्त—वि० १. स्वच्छ। शुद्ध। २. चमकदार। ३. खट्टा। ४. कड़ा। कठोर। ५. संयुक्त। ६. अप्रिय। नापसंद। ७. उजाड़। सूनसान।
शुक्ति—संज्ञा स्त्री० १. सीपी। २. शंख।
शुक्तिका—संज्ञा स्त्री० सीपी। दे० "शुक्ति"।
शुक्र—संज्ञा पुं० १. स्वच्छ। २. चमकदार। देदीप्यमान। ३. बेदाग। ४. अग्नि। ५. एक बहुत चमकीला ग्रह, जिसे पुराणानुसार दैत्यों का गुरु और भृगु मुनि का पुत्र कहा गया है। शुक्राचार्य्य। ६. वीर्य्य। ७. सामर्थ्य। बल। शक्ति। ८. सप्ताह का छठा दिन, जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है।
संज्ञा पुं० [अ०] धन्यवाद। कृतज्ञता।
शुक्रगुजार—वि० आभारी। कृतज्ञ। एहसान माननेवाला।
शुक्राचार्य्य—संज्ञा पुं० एक ऋषि, जो दैत्यों के गुरु थे।
शुक्रिया—संज्ञा पुं० [फा०] धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकट करने का शब्द।
शुक्ल—वि० १. सफेद। उजला। श्वेत। २. बेदाग। ३. स्वच्छ।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शुक्ल पक्ष—संज्ञा पुं० अमावस के बाद पूर्णिमा तक के १५ दिन।
शुक्ला—संज्ञा स्त्री० सरस्वती।
शुक्लाभिसारिका—संज्ञा स्त्री० शुक्ल पक्ष में शृंगार करनेवाली नायिका।
शुचि—संज्ञा स्त्री० [संज्ञा शुचिता] १. पवित्रता। शुद्धता। २. स्वच्छता।
वि० १. पवित्र। शुद्ध। २. स्वच्छ। साफ। ३. निर्दोष। ४. साफ दिलवाला। निष्कपट।
शुचिकर्म्मा—वि० पवित्र कार्य्य करनेवाला। सदाचारी।
शुचिता—संज्ञा स्त्री० १. शुद्धता। पवित्रता। २. स्वच्छता। सफाई।
शुजा—वि० [फा०] बहादुर। वीर।
शुतुर—संज्ञा पुं० [अ०] ऊँट।
शुतुरनाल—संज्ञा स्त्री० ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप।
शुतुरमुर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] एक बड़ा पक्षी, जिसकी गर्दन ऊँट की तरह बहुत लम्बी होती है।
शुदनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] होनहार। भावी। नियति।
शुद्ध—वि० [संज्ञा शुद्धता] १. पवित्र। साफ। स्वच्छ। २. जिसमें गलती न हो। ठीक। सही। ३. जिसमें मिलावट न हो। खालिस। ४. निर्दोष।
शुद्ध पक्ष—संज्ञा पुं० शुक्ल पक्ष।
शुद्धि—संज्ञा स्त्री० १. शुद्ध होने का कार्य्य। २. पवित्रता। सफाई। स्वच्छता। ३. धर्म-च्युत, विधर्मी या किसी कारण अशुद्ध व्यक्ति को शुद्ध करने तथा अपने धर्म में शामिल करने का कृत्य या संस्कार।
शुद्धिपत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र, जिसमें यह सूचित किया जाय कि कहाँ क्या गलतियाँ हैं।

जैसे पुस्तकों में छपाई की गलतियाँ बताने के लिए दिया गया कागज।

शुद्धोदन–संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पिता। एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा।

शुनःशेफ–संज्ञा पुं० वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि, जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

शुन–संज्ञा पुं० [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

शुनासीर-संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. खेती बढ़ानेवाले दो देवता: इन्द्र और वायु या इन्द्र और सूर्य।

शुबहा–संज्ञा पुं० [अ०] १. संदेह। शक। २. भ्रम। वहम।

शुभंकर–वि० कल्याण या मंगल करनेवाला।

शुभंकरी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।

शुभ–वि० १. कल्याणकारी। मंगलप्रद। भलाई करनेवाला। २. सुन्दर। अच्छा लगनेवाला। अच्छा। भला। उत्तम।

संज्ञा पुं० भलाई। कल्याण।

शुभकर–वि० मंगल करनेवाला।

शुभचिंतक–वि० शुभ या भला चाहनेवाला। हितैषी। खैरख्वाह।

शुभदर्शन–वि० १. जिसका मुँह देखने से मंगलजनक बात हो। २. सुंदर। खूबसूरत।

शुभा–संज्ञा स्त्री० १. शोभा। २. चमक। ३. सुन्दरी। ४. इच्छा।

शुभाकांक्षी–वि० [स्त्री० शुभाकांक्षिणी] दे० 'शुभचिंतक'।

शुभाशय–संज्ञा पुं० वह जिसका आशय या विचार अच्छा हो। जिसकी मंशा या उद्देश्य अच्छा हो।

शुभे–संज्ञा स्त्री० १. हे सुन्दरी। २. सुन्दर स्त्री के लिए सम्बोधन।

शुभ्र–वि० सफेद। श्वेत। उज्ज्वल।

शुभ्रता–संज्ञा स्त्री० सफेदी। उज्ज्वलता।

शुमार–संज्ञा पुं० १. गिनती। संख्या। २. हिसाब। लेखा।

शुरू–संज्ञा पुं० [अ० शुरूअ] आरम्भ। प्रारम्भ।

शुल्क–संज्ञा पुं० १. राज्य की ओर से वसूल किया जानेवाला महसूल। २. फीस। किसी कार्य के बदले में दिया जानेवाला धन। ३. किराया। भाड़ा। ४. बाजी। शर्त्त। ५. दहेज। दायजा। ६. घाटों या रास्तों आदि पर वसूल की जानेवाली चुंगी। ७. मेहनताना।

शुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० [वि० शुश्रूष्य] १. सेवा। २. परिचर्य्या। तीमारदारी। रोगी या घायल आदि की सेवा।

शुष्क–वि० १. सूखा। खुश्क। नीरस। २. जिसमें मन न लगता हो। ३. निरर्थक। व्यर्थ। ४. कठोर। ५. निर्मोही। विरक्त। उदासीन।

शुष्कता–संज्ञा स्त्री० सूखापन। नीरसता।

शूक–संज्ञा पुं० १. अन्न की बाल। जौ। यव। २. एक प्रकार का कीड़ा। ३. कागज नत्थी करने का काँटा। अलपीन।

शूकदानी–संज्ञा स्त्री० वह डिबिया जिसमें अलपीनें खोंसकर रखी जाती हैं।

शूकर–संज्ञा पुं० [स्त्री० शूकरी] १. सूअर। वाराह। २. विष्णु का तीसरा अवतार। वाराह अवतार।

शूकरक्षेत्र–संज्ञा पुं० एक तीर्थ, जो नैमिषारण्य के पास है (आजकल का सोरों)।

शूची-संज्ञा स्त्री० सूई।

शूद्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० शूद्रा] १. आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अन्तिम वर्ण। इनका कार्य अन्य तीन वर्णों की सेवा करना माना गया है। शूद्र जाति का पुरुष। २. खराब। निकृष्ट।

शूद्रक–संज्ञा पुं० १. शूद्र जाति का एक राजा। शंबूक। २. विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' नाटक का रचयिता।

शूद्रता–संज्ञा स्त्री० शूद्र होने का भाव। शूद्र का धर्म्म। शूद्रत्व।

शूद्रद्युति–संज्ञा पुं० नीला रंग।

शूद्रा–संज्ञा स्त्री० शूद्र जाति की स्त्री।

शूद्राणी–संज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री।

शूद्री–संज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री।

शून्य–संज्ञा पुं० १. खाली स्थान। एकांत स्थान। २. बिंदु। बिंदी। सिफर (अंग्रे०–'जीरो')। ३. अभाव। कुछ न होना। ४. आकाश। ५. स्वर्ग। ६. विष्णु। ७. ईश्वर।

वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २. निराकार। ३. विहीन। रहित।

शून्यगर्भ–वि० १. जिसके अन्दर कुछ न हो। खाली। २. मूर्ख। बेवकूफ।

शून्यवाद–संज्ञा पुं० बौद्धों का एक सिद्धांत, जिसके अनुसार ईश्वर और जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता।

शून्यवादी–संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति, जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।

शूर–संज्ञा पुं० १. वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। सिपाही।

शूरण–संज्ञा पुं० सूरन। जिमींकन्द।

शूरता–संज्ञा स्त्री० बहादुरी। वीरता।

शूरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।

शूरवीर–संज्ञा पुं० वीरों और योद्धाओं में श्रेष्ठ। अच्छा वीर और योद्धा। सूरमा। बहादुर।

शूरवीरता–संज्ञा स्त्री० बहादुरी। पराक्रम।

शूरसेन–संज्ञा पुं० १. मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा, जो कृष्ण के पितामह थे। २. मथुरा-प्रदेश का प्राचीन नाम।

शूरा*†–संज्ञा पुं० सामंत। वीर। बहादुर। पराक्रमी योद्धा।

शूर्प–संज्ञा पुं० सूप। जिसमें अन्न आदि फटककर साफ किया जाता है। फटकनी।

शूर्पणखा–संज्ञा स्त्री० रावण की बहिन। एक प्रसिद्ध राक्षसी, जिसकी नाक और कान लक्ष्मण ने वन में काटे थे।

शूल–संज्ञा पुं० १. बड़ा लंबा और नुकीला काँटा। २. बरछे के आकार का एक प्राचीन अस्त्र। ३. सूली, जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था। ४. दे० "त्रिशूल"। ५. वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द। ६. पीड़ा। टीस। दुःख। दर्द। ७. ज्योतिष में एक अशुभ योग। ८. छड़। सलाख। सींक। ९. मृत्यु। १०. झंडा।

वि० काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला।

शूलधर, शूलधारी–संज्ञा पुं० शिव। त्रिशूल धारण करने के कारण शिव का नाम।

शूलना*–क्रि० अ० १. शूल के समान गड़ना। २. दुख देना।

शूलपाणि–संज्ञा पुं० शिव। हाथ में शूल-या त्रिशूल धारण करने के कारण शिव का यह नाम है।

शूलहस्त–संज्ञा पुं० दे० "शूलपाणि"। शिव।

शूलि–संज्ञा पुं० शिव।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।

शूलिक–संज्ञा पुं० सूली या फाँसी देनेवाला। जल्लाद।

शूली–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सूली"। २. पीड़ा। शूल।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. शूल रोग से पीड़ित। ३. एक नरक का नाम।

शृंखल–संज्ञा पुं० [संज्ञा स्त्री० शृंखला] १. जंजीर (विशेषकर जानवरों के लिए)। साँकल। सिक्कड़। २. हाथी आदि के बाँधने की लोहे की जंजीर।

शृंखलक–संज्ञा पुं० १. जंजीर। शृंखला। २. ऐसा जानवर, जिसके पैरों में जंजीर पड़ी हो, जिससे कि वह भाग न सके।

शृंखलता, शृंखलत्व–संज्ञा स्त्री० १. जंजीर में बँधे होने का भाव। २. सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव। व्यवस्थित।

शृंखला–संज्ञा स्त्री० १. जंजीर। हथकड़ी। बेड़ी। साँकल। सिक्कड़। २. करधनी। मेखला। तागड़ी। ३. क्रम। सिलसिला। ४. श्रेणी। कतार। ५. काव्य में एक अलंकार, जिसमें पदार्थों का वर्णन सिलसिलेवार होता है।

शृंखलाबद्ध–वि० १. जंजीर में जकड़ा हुआ। जो शृंखला में बँधा हुआ हो। २. सिलसिलेवार। क्रमबद्ध।

शृंग–संज्ञा पुं० १. पहाड़ की चोटी। शिखर। २. कँगूरा। ३. गाय, बैल आदि पशुओं के सिर के सींग। ४. सिंगी बाजा। ५. कमल।

वि० तेज धारवाला। तीक्ष्ण।

शृंगज–संज्ञा पुं० १. सींग से बनाया हुआ। २. तीर। बाण।

शृंगपुर–संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।

शृंगवेरपुर–संज्ञा पुं० एक प्राचीन नगर, जो रामचंद्र के समय में निषाद राजा गुह की राजधानी था।

शृंगार–संज्ञा पुं० १. सजधज। बनाव-ठनाव। सजावट। २. शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। वह जिससे किसी चीज की शोभा हो। ३. स्त्रियों का गहने-कपड़े से अपने को सजाना। ४. साहित्य के नौ रसों में से एक रस, जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। इसमें नायक-नायिका के परस्पर मिलन या वियोग का वर्णन किया जाता है। यह दो प्रकार का होता है—एक संयोग और दूसरा वियोग या विप्रलंभ। ५. भक्ति का एक भाव या प्रकार, जिसमें भक्त अपने आपको पत्नी और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं।

शृंगारना*–क्रि० स० शृङ्गार करना। सजाना। सँवारना।

शृंगारहाट–संज्ञा स्त्री० वह बाजार, जहाँ वेश्याएँ रहती हैं। वह बाजार, जहाँ सौन्दर्य बेचा जाता हो–अर्थात्, जहाँ वेश्याएँ रहती हों। चकला।

शृंगारिक–वि० शृंगार-संबंधी।

शृंगारिणी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद (स्रग्विणी छंद)।

शृंगारित–वि० जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ।

शृंगारिया–संज्ञा पुं० देवमूर्तियों का शृंगार करनेवाला। सजानेवाला।

शृंगि–संज्ञा पुं० १. सींगवाला जानवर। २. सिंगी मछली।

शृंगी–संज्ञा पुं० १. पहाड़। २. हाथी। ३. पेड़। ४. सींगवाला पशु। ५. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। ६. महादेव। ७. एक ऋषि, जो शमीक के पुत्र थे। इन्हीं के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। ८. ऋषभक नामक अष्टवर्गीय औषध।

शृंगीगिरि–संज्ञा पुं० एक प्राचीन पहाड़, जिस पर शृंगी ऋषि तप करते थे।

शृंग*–संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"।

शृगाल–संज्ञा पुं० गीदड़। सियार। वि० लाक्षणिक अर्थ में डरपोक।

शृष्टि–संज्ञा पुं० कंस का एक भाई।

शेख–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शेखानी] १. मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला और श्रेष्ठ वर्ग। २. मुसलमानों के पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। ३. इसलाम धर्म का आचार्य्य। ४. बड़ा-बूढ़ा। ५. मुसलमानों के लिए आदर-सूचक शब्द।

शेखचिल्ली–संज्ञा पुं० १. बड़े-बड़े मंसूबे बाँधनेवाला। २. बड़ी-बड़ी बातें बनानेवाला। ३. एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति। ४. मूर्ख। ५. मसखरा।

शेखर–संज्ञा पुं० १. शिखर। मुकुट। पहाड़ की चोटी। २. शीर्ष। सिर। ३ श्रेष्ठता-सूचक शब्द। जैसे—सब से ऊँचा या सब से अच्छा। ४. सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति या उत्तम वस्तु। ५. टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा (।।ऽ।)।

शेखावत–संज्ञा पुं० कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेखी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. घमंड। गर्व। शान। २. ऐंठ। अकड़। ३. डींग। बढ़-बढ़कर बातें करना।

मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या मारना=बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

शेखीबाज–वि० डींग हाँकनेवाला व्यक्ति। घमंडी।

शेफालिका, शेफाली–संज्ञा स्त्री० एक तरह का पौधा—निर्गुंडी। नील सिंधुवार का पौधा। (काव्य में इसका बहुत वर्णन होता है)

शेयर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. भाग। हिस्सा। २. किसी कारबार या कम्पनी आदि में लगी हुई पूंजी का एक हिस्सा।

शेर–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १. बिल्ली की जाति का एक भयंकर हिंसक

पशु। बाघ। २. उर्दू-कविता गजल के दो चरण।

मुहा०—शेर होना=निर्भय और साहसी होना। अत्यंत वीर और साहसी पुरुष। शेरे बंगाल, शेरे-कश्मीर=बंगाल या कश्मीर का सबसे बड़ा और बहादुर नेता।

शेर-दहाँ—वि० [फा०] १. जिसका मुँह शेर की तरह हो। २. जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो।

संज्ञा पुं० वह, जिसकी घुंडी शेर के मुँह के आकार की बनी हो। वह मकान, जो आगे चौड़ा और पीछे सँकरा हो।

शेर-पंजा—संज्ञा पुं० शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहा।

शेर-बच्चा—संज्ञा पुं० १. शेर का बच्चा। २. वीर-पुत्र। ३. एक तरह की छोटी बन्दूक।

शेर-बबर—संज्ञा पुं० [फा०] सिंह। सबसे बड़ा बाघ। केसरी।

शेरवानी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का अंगा।

शेरिफ—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. बहुत बड़े-बड़े नगरों (जैसे कलकत्ता, बम्बई, मद्रास) में शान्ति-रक्षा आदि कार्यों के लिए निर्वाचित अवैतनिक अधिकारी—जैसे अन्य शहरों में म्युनिस्पैलिटी के अध्यक्ष होते हैं। २. विशेष रूप से सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति।

शेष—संज्ञा पुं० १. बाकी। बची हुई वस्तु। घटाने से बची हुई संख्या। २. समाप्ति। अंत। ३. स्मृति। ४. मृत्यु। ५. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज, जिनके फनों पर पृथ्वी स्थित है। ६. लक्ष्मण (जो शेष के अवतार कहे जाते हैं)। ७. बलराम। ८. दिग्गजों में से एक। ९. परमेश्वर। १०. पिंगल में टगण के पाँचवें भेद का नाम। ११. छप्पय-छंद के पचीसवें भेद का नाम।

वि० १. बाकी। बचा हुआ। २. समाप्त।

शेषधर—संज्ञा पुं० शिव। साँप धारण करने या पहननेवाले (शिव)।

शेषनाग—संज्ञा पुं० पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज, जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी हुई मानी जाती है।

शेषवत—संज्ञा पुं० न्याय में कार्य्य को देखकर कारण का निश्चय।

शेषशायी—संज्ञा पुं० विष्णु (सर्प पर सोनेवाले)।

शेषांश—संज्ञा पुं० १. बचा हुआ अंश या भाग। २. अंतिम अंश।

शेषाचल—संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक पहाड़।

शेषोक्त—वि० अंत में कहा हुआ।

शैतान—संज्ञा पुं० [अ०] १. मनुष्यों को बहकाकर धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करनेवाला दुष्ट देवता। २. धर्म-कार्य में बाधा डालनेवाला। ३. दुष्ट देवयोनि। भूत। प्रेत। ४. शरारती। दुष्ट।

मुहा०—शैतान की आँत=बहुत लंबी वस्तु।

शैतानी—संज्ञा स्त्री० बदमाशी। दुष्टता। शरारत। पाजीपन।

वि० १. शैतान-संबंधी। शैतान का। २. दुष्टतापूर्ण। शरारत से भरा।

शैत्य—संज्ञा पुं० "शीत" का भाव। दे० "शीतता"। सर्दी। ठंडक।

शैथिल्य—संज्ञा पुं० शिथिल होने का भाव। दे० "शिथिलता।" सुस्ती। ढिलाई।

शैल—संज्ञा पुं० पहाड़। चट्टान।

वि० १. पर्वत या चट्टान-सम्बन्धी। २. पथरीला। ३. पत्थर का बना हुआ। ४. कड़ा। कठोर।

शैलकुमारी—संज्ञा स्त्री० पार्वती।

शैलगंगा—संज्ञा स्त्री० गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी।

शैलजा—संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. दुर्गा।

शैलतटी—संज्ञा स्त्री० पहाड़ की तराई।

शैलनंदिनी—संज्ञा स्त्री० पार्वती।

शैलपुत्री—संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३. गंगा नदी।

शैलसुता—संज्ञा स्त्री० पार्वती।

शैली—संज्ञा स्त्री० १. ढंग। प्रणाली। तरीका। २. रीति। प्रथा। रस्म। ३. वाक्य-रचना का वह रूप, जिससे लेखक की भाषा-सम्बन्धी

निजी विशेषताएँ प्रकट होती हैं (अंग्रे०—स्टाइल)। ४. हाथ से बनाई जानेवाली चीजों में ऐसी खास बातें, जिनसे बनानेवाले की मनोवृत्ति और उसके समय की विशेषताएँ प्रकट होती हों (मुगल-कालीन शैली, आदि)।

शैलूष—संज्ञा पुं० [स्त्री० शैलूषी] १. नाटक खेलनेवाला। अभिनेता। नट। २. नर्तक। ३. धूर्त। पाखंडी।

शैलेंद्र—संज्ञा पुं० हिमालय (पहाड़ों का राजा)।

शैलेय—वि० १. पथरीला। पत्थर का। २. पहाड़ी। ३. पहाड़ों पर पैदा होनेवाला।

शैल्य—वि० पत्थर का। पथरीला।

शैव—वि० शिव-संबंधी। शिव का।
संज्ञा पुं० १. शिवभक्त। शिव का अनन्य उपासक। हिन्दुओं में शिव के उपासकों का एक सम्प्रदाय। अन्य दो सम्प्रदाय वैष्णव और शाक्त हैं। २. पाशुपत अस्त्र। ३. एक तंत्र का नाम। ४. एक पुराण का नाम।

शैवल—संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।

शैवलिनी—संज्ञा स्त्री० नदी।

शैवाल—संज्ञा पुं० पानी में होनेवाली एक तरह की लम्बी घास। सिवार या सेवार।

शैव्य—वि० शिव-सम्बन्धी।

शैव्या—संज्ञा स्त्री० अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम।

शैशव—वि० १. शिशु-संबंधी। बच्चों का। २. बाल्यकाल-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. बचपन। २. बच्चों का-सा व्यवहार। लड़कपन।

शैशुनाग—संज्ञा पुं० मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वंशज।

शोक—संज्ञा पुं० किसी प्रिय व्यक्ति के वियोग या मृत्यु के कारण मन में होनेवाला दुख। अफसोस। रंज। गम।

शोकाकुल—वि० शोक से व्याकुल। शोक-पीड़ित।

शोकातुर—वि० शोक से व्याकुल। शोकाकुल।

शोकार्त—वि० शोक से दुखी। शोक से व्याकुल।

शोकावह—वि० शोक दूर करनेवाला। शोक-नाशक। दुखनाशक।

शोख़—वि० [फा०] [संज्ञा शोखी] १. ढीठ। धृष्ट। २. नटखट। चंचल। ३. गहरा और चमकदार (रंग)।

शोच—संज्ञा पुं० १. चिंता। फिक्र। २. दुःख। अफसोस।

शोचनीय—वि० १. चिन्ता करने योग्य। जिसकी दशा देखकर दुःख हो। २. जिसकी हालत बहुत खराब हो।

शोच्य—वि० दे० "शोचनीय"। चिन्ता करने योग्य। सोचने-विचारने लायक।

शोण—संज्ञा पुं० १. लाल रंग। २. लाली। ३. आग। ४. खून। ५. सोन नामक नद।
वि० लाल रंग का। सुर्ख।

शोणित—वि० लाल। खून के रंग का।
संज्ञा पुं० खून।

शोथ—संज्ञा पुं० किसी अंग का फूलना। सूजन।

शोध—संज्ञा पुं० १. ठीक किया जाना। दुरुस्ती। २. शुद्ध करने का कार्य। शुद्धि-संस्कार। ३. खोज। अनुसन्धान; जैसे किसी साहित्यिक या वैज्ञानिक विषय-सम्बन्धी खोज। ४. जाँच। परीक्षा। ५. चुकता या अदा होना (ऋण आदि)। सफाई।

शोधक—संज्ञा पुं० १. शोधनेवाला या शोध-कार्य करनेवाला। सुधार करनेवाला। २. खोज करनेवाला। अनुसन्धान करनेवाला।

शोधन—संज्ञा पुं० [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य] १. शुद्ध करना। ठीक या दुरुस्त करना। सुधारना। २. धातुओं का औषध-रूप में व्यवहार करने के लिए संस्कार। ३. छान-बीन। जाँच। ढूंढ़ना। ४. ऋण चुकाना। ५. प्रायश्चित्त। साफ करना। ६. दस्त की दवा से पेट साफ करना। विरेचन।

शोधना—क्रि० स० १. शुद्ध करना। ठीक या दुरुस्त करना। सुधारना। साफ करना। २. औषध के लिए धातु का संस्कार करना। ३. ढूंढ़ना। खोज करना।

शोधवाना—क्रि० स० १. शुद्ध कराना। २. खोज कराना।

शोधित—वि० १ शुद्ध या साफ किया हुआ।

२. जिसके सम्बन्ध में शोध (खोज आदि) हो चुका हो।

शोधैया–संज्ञा पुं० दे० "शोधक"।

शोफ–संज्ञा पुं० दे० "शोथ"। सूजन।

शोबदा–संज्ञा पुं० [अ०] जादू। इंद्रजाल।

शोबदेबाज–संज्ञा पुं० १. धोखेबाज। धूर्त। २. चालाक।

शोभन–वि० १. शोभायुक्त। सुंदर। सुहावना। भव्य। २. उत्तम। शुभ।
संज्ञा पुं० १. सौंदर्य्य। २. दीप्ति। ३. गहना। आभूषण। ४. मंगल। कल्याण। शिव। ५. शुभ फल के लिए एक यज्ञ। ६. २४ मात्राओं का एक छन्द, जिसे सिंहिका भी कहते हैं।

शोभना–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री। २. हल्दी (अप्रयुक्त अर्थ)।
*क्रि० अ० शोभा देना। भला लगना।

शोभनीय–वि० शोभा देनेवाला। सुन्दर। सुहावना। दे० "शोभन"।

शोभांजन–संज्ञा पुं० सहिंजन।

शोभा–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरता। २. कांति। चमक। ३. छबि। ४. सजावट। ५. वर्ण। रंग। ६. बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

शोभायमान–वि० १. शोभा देता हुआ। सुन्दर। मनोहर। शोभित। २. शोभा बढ़ानेवाला।

शोभित–वि० शोभा देता हुआ या अच्छा लगता हुआ। सुंदर।

शोर–संज्ञा पुं० [फा०] १. हल्ला। जोर की आवाज। कोलाहल। २. धूम। प्रसिद्धि।

शोरबा, शोरवा–संज्ञा पुं० [फा०] रसा। उबाली हुई तरकारी आदि का पानी। जूस। पके मांस का रसा।

शोरा–संज्ञा पुं० [फा०] मिट्टी से निकलनेवाला एक प्रकार का क्षार।

शोला–संज्ञा पुं० [अ०] अंगारा। आग की लपट।

शोशा–संज्ञा पुं० [फा०] १. निकली हुई नोक। दोष। २. अनोखी बात।

शोष–संज्ञा पुं० १. सूखने का भाव। खुश्क होना। २. शरीर का घुलना या क्षीण होना। ३. बच्चों का सुखंडी रोग। ४. राजयक्ष्मा का एक भेद। क्षयी।

शोषक–संज्ञा पुं० [स्त्री० शोषिका] १. शोषण करने या सोखनेवाला। २. चूसकर सुखा देनेवाला। ३. कम मजदूरी देकर अधिक काम लेनेवाला और इस तरह से दूसरों का धन हरण करनेवाला। ४. जल, रस या तरी खींचनेवाला।

शोषण–संज्ञा पुं० [वि० शोषी, शोषित, शोषनीय] १ सोखना। चूसना। २. जल या रस खींचना। ३. घुलाना। ४. क्षीण करना। ५. नाश करना। ६. कमजोर और अपने अधीन व्यक्तियों की मेहनत और आमदनी से लाभ उठाना। ७. साम्यवादी और समाजवादी सिद्धान्त के अनुसार पूँजीपतियों द्वारा श्रमिकवर्ग को कम मजदूरी देना और उनसे अधिक काम लेना (अंग्रे०–एक्सप्लायटेशन)। ८. कामदेव के एक बाण का नाम।

शोषणीय–वि० शोषण करने योग्य। जिसका शोषण हो सके।

शोषित–वि० जिसका शोषण किया गया हो। सोखा हुआ।

शोषी–वि० दे० "शोषक"।

शोहदा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बदमाश। व्यभिचारी। लंपट। २. गुंडा। छैला।

शोहरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रसिद्धि। ख्याति। धूम।

शोहरा–संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।

शौंड–संज्ञा पुं० १. शराबी। २. शराब में मस्त।

शौंडिक–संज्ञा पुं० शराब बनाने या बेचनेवाला। कलवार।

शौक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. लालसा। हौसला। चाह। २. व्यसन। चस्का। ३. प्रवृत्ति। झुकाव। ४. किसी चीज के पाने या सुख भोगने की अभिलाषा। ठाटबाट से रहने की इच्छा।

मुहा०—**शौक करना**=किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। **शौक से**=प्रसन्नतापूर्वक।

शौक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "शान"। ठाटबाट।

शौक़िया–क्रि० वि० शौक से।

शौक़ीन–संज्ञा पुं० [अ०] १. जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। २. बनठनकर रहनेवाला। ऐयाश।

शौकीनी–संज्ञा स्त्री० शौकीन होने का भाव।

शौक्तिक–संज्ञा पुं० मोती।

शौच–संज्ञा पुं० १. शुचिता। पवित्रता। शुद्धता। २. प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जानेवाले काम (मल-त्याग, कुल्ला-दातुन आदि)। पाखाने जाना। ३. किसी के मरने से उसके घर में होनेवाली अपवित्रता। दे० "अशौच"।

शौध*–वि० शुद्ध। निर्मल। पवित्र।

शौनक–संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि। इन्होंने नैमिषारण्य में १२ वर्ष में समाप्त होनेवाला एक यज्ञ किया था।

शौरसेन–संज्ञा पुं० आधुनिक व्रज-मंडल का प्राचीन नाम।

शौरसेनी–संज्ञा स्त्री० १. प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा, जो शौरसेन प्रदेश (आधुनिक व्रजमण्डल) में बोली जाती थी। २. एक प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा, जो नागर भी कहलाती थी।

शौर्य्य–संज्ञा पुं० १. शूरता। बहादुरी। वीरता। सामर्थ्य। २. नाटक में आरभटी नाम की वृत्ति।

शौहर–संज्ञा पुं० [फा०] स्त्री का पति।

श्मशान–संज्ञा पुं० मरघट। मुर्दे जलाने का स्थान। मसान।

श्मशानपति–संज्ञा पुं० शिव।

श्मश्रु–संज्ञा पुं० १. मूँछ। २. मुँह पर के बाल। दाढ़ी-मूँछ।

श्याम–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का एक नाम। साँवले रंग का। २. बादल।
वि० साँवला। १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला।

श्यामकर्ण–संज्ञा पुं० वह घोड़ा, जिसका सारा शरीर सफेद और कान काला हो।

श्याम-टीका–संज्ञा पुं० वह काला टीका, जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है।

श्यामता–संज्ञा स्त्री० साँवलापन। कालापन। मलिनता। उदासी।

श्यामल–वि० [भाव० श्यामलता] श्याम रंग का। काला। साँवला।

श्यामसुंदर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

श्यामा–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. सोलह वर्ष की नवयुवती। ३. राधा। एक गोपी का नाम। ४. काले रंग की गाय। ५. तुलसी। ६. कोयल। ७. यमुना। रात।
वि० श्याम रंगवाली। काली। साँवली।

श्याल, श्यालक–संज्ञा पुं० साला। पत्नी का भाई।

श्येन–संज्ञा पुं० बाज (चिड़िया)।

श्येनिका–संज्ञा स्त्री० १. बाज (पक्षी) की मादा। २. ११ अक्षरों का एक प्रकार का वृत्त। श्येनी।

श्येनी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "श्येनिका"। २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या, जो पक्षियों की जननी थी।

श्योनाक–संज्ञा पुं० १. सोनापाढ़ा पेड़। २. लोध्र। लोध।

श्रद्धा–संज्ञा स्त्री० १. भक्तिपूर्वक विश्वास। २. आदर और पूज्य भाव। ३. वैवस्वत मनु की पत्नी ('कामायनी')। भक्ति। ४. आस्था। विश्वास। ५. प्रजापति की पुत्री। (तैत्तिरीय ब्राह्मण में)। ६. कर्दम मुनि की कन्या, जो अत्रि ऋषि की पत्नी थीं (भागवत-पुराण में)। ७. काम की माता (मार्कण्डेय-पुराण में)। ८. दक्ष की कन्या और धर्म की स्त्री (महाभारत में)।

श्रद्धादेव–संज्ञा पुं० श्रद्धा के पति वैवस्वत मनु।

श्रद्धालु–वि० श्रद्धा करनेवाला। श्रद्धायुक्त।

श्रद्धावान्–संज्ञा पुं० १. श्रद्धा करनेवाला। श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु। २. धर्म्मनिष्ठ।

श्रद्धास्पद–वि० श्रद्धेय। पूज्य। जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके।

श्रद्धेय–वि० पूज्य। श्रद्धा करने योग्य। मान्य।

श्रम–संज्ञा पुं० १. मेहनत। थकावट। परि-

श्रम। २. व्यायाम। कसरत। शरीर को थकानेवाला कार्य। ३. शिथिलता। ४. उद्योग। धन कमाने या जीविका के लिए की जानेवाली मेहनत या कार्य। ५. दौड़-धूप। परेशानी। ६. पसीना।

श्रमकण—संज्ञा पुं० पसीने की बूँदें।

श्रमजल—संज्ञा पुं० पसीना।

श्रमजित—वि० जो बहुत परिश्रम करने पर भी न थके।

श्रमजीवी—संज्ञा पुं० मजदूर।
वि० मेहनत करके जीविका चलानेवाला।

श्रमण—संज्ञा पुं० १. बौद्ध भिक्षु या संन्यासी। २. यति। संन्यासी। ३. मुनि।

श्रमबिंदु—संज्ञा पुं० पसीना।

श्रमवारि—संज्ञा पुं० पसीना।

श्रम-विभाग—संज्ञा पुं० सरकार या किसी कम्पनी या कारखाने का वह विभाग या दफ्तर, जो श्रम-सम्बन्धी कार्यों की व्यवस्था करे।

श्रम-विभाजन—संज्ञा पुं० किसी कार्य के अलग-अलग अंगों के सम्पादन के लिए अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त करना।

श्रमसीकर—संज्ञा पुं० पसीना।

श्रमिक—संज्ञा पुं० मजदूर। शारीरिक मेहनत करके अपनी जीविका चलानेवाला। श्रमजीवी।
वि० श्रम या मेहनत-सम्बन्धी। शारीरिक श्रम या मेहनत का।

श्रमिकसंघ—संज्ञा पुं० (अंग्रे०—लेबर यूनियन)। मजदूर-संघ। कल-कारखानों आदि में काम करनेवाले मजदूरों की संस्था, जिसका उद्देश्य उनके हितों की रक्षा करना है।

श्रमित—वि० थका हुआ। श्रांत। जो मेहनत करने से थक गया हो।

श्रमी—संज्ञा पुं० १. श्रम या मेहनत करनेवाला। श्रमिक। मजदूर। २. मेहनती।

श्रवण—संज्ञा पुं० १. कान। २. सुनना। सुनने की क्रिया। ३. शास्त्रों में लिखी हुई बातें अथवा देवताओं आदि के चरित्र या धार्मिक कथाएँ सुनना। ४. एक प्रकार की भक्ति, जो भगवान् का गुणगान सुनकर की जाय। ५. अंधक मुनि के पुत्र का नाम, जो माता-पिता के आदर्श-सेवक पुत्र माने जाते हैं। ६. सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार तीर का-सा है।

श्रवणपथ—संज्ञा पुं० कान। कान के सूराख का रास्ता, जिसमें से आवाज जाकर सुनाई देती है।

श्रवणीय—वि० सुनने लायक। श्रव्य।

श्रवन*—संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"। कान।

श्रवना*—क्रि० स० बहना। चूना। बहाना।

श्रवित*—वि० बहा हुआ।

श्रव्य—वि० सुनने योग्य। जो सुनाई दे सके; जैसे—संगीत।

श्रव्य काव्य—संज्ञा पुं० वह काव्य, जो केवल सुना जा सके, नाटक आदि के रूप में देखा न जा सके।

श्रांत—वि० १. मेहनत से थका हुआ। थका हुआ। शिथिल। २. उदास। दुःखी। ३. जितेंद्रिय। ४. शांत।

श्रांति—संज्ञा स्त्री० १. विश्राम। आराम। २. थकावट। शिथिलता। ३. परिश्रम। मेहनत।

श्राद्ध—संज्ञा पुं० १. श्रद्धा से किया जानेवाला कार्य। २. पितरों के सम्मान और उनकी तृप्ति के लिए शास्त्र के अनुसार किया जानेवाला कार्य। जैसे—तर्पण, पिंडदान तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना। ३. पितृ-पक्ष।

श्रावक—वि० सुननेवाला। श्रोता।
संज्ञा पुं० [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध भिक्षु या संन्यासी। २. गौतम बुद्ध के शिष्य, जिन्होंने उनके मुँह से उपदेश सुना था। सारिपुत्त और मोग्गलायन अग्रश्रावक (प्रमुख शिष्य) तथा अन्य ८० शिष्य महाश्रावक (महाशिष्य) कहे जाते थे। ३. जैन धर्म्म का अनुयायी। जैनी। ४. नास्तिक।

श्रावग—संज्ञा पुं० दे० "श्रावक"।

श्रावगी—संज्ञा पुं० जैनी। सरावगी।

श्रावण—संज्ञा पुं० वर्ष का पाँचवाँ महीना, जो आषाढ़ के बाद और भादों के पहले पड़ता है। सावन।

श्रावणी–संज्ञा स्त्री० सावन मास की पूर्णिमा। इस दिन प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षा-बंधन' तथा पूजन आदि होते हैं।

श्रावस्ती–संज्ञा स्त्री० कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत-महेत कहलाती है और अयोध्या से ५८ मील उत्तर की ओर है। यह बौद्धों का तीर्थ-स्थान है। प्राचीन समय में यहाँ बौद्धों का प्रसिद्ध जेतबन विहार था। कहते हैं कि यहाँ गौतम बुद्ध चौमासा बिताया करते थे।

श्राव्य–वि० सुनने लायक। जो सुनाई दे सके।

श्री–संज्ञा स्त्री० १. आदर-सूचक शब्द, जो नाम के शुरू में रखा जाता है। अधिक सम्मान सूचित करने के लिए इसे दो, तीन या चार बार तक नाम के शुरू में रखते हैं। २. विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। ३. सरस्वती। ४. कमल। ५. सफेद चंदन। संदल। ६. धर्म्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। ७. संपत्ति। धन। ८. विभूति। ऐश्वर्य। ९. कीर्ति। १०. प्रभा। शोभा। ११. कांति। १२. एक प्रकार का पद-चिह्न। १३. स्त्रियों का एक आभूषण बेंदी। संज्ञा पुं० १. वैष्णवों का एक संप्रदाय। २. एक एकाक्षरा वृत्त। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।

श्रीकंठ–संज्ञा पुं० शिव। एक पक्षी। (सुन्दर कंठवाला शाब्दिक अर्थ)

श्रीकांत–संज्ञा पुं० विष्णु।

श्रीकृष्ण–संज्ञा पुं० भगवान् कृष्णचंद्र। यदुवंशी वसुदेव के पुत्र, जो ईश्वर के एक अवतार माने जाते हैं।

श्रीक्षेत्र–संज्ञा पुं० जगन्नाथपुरी तथा उसके आस-पास का क्षेत्र।

श्रीखंड–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का चंदन। मलयागिरि चंदन। संदल। २. दही और चीनी का बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ। दे० "शिखरन"।

श्रीखंड शैल–संज्ञा पुं० मलय पर्वत।

श्रीगणेश–संज्ञा पुं० गणेश देवता।
मुहा०–-श्रीगणेश करना=प्रारम्भ करना। शुरू करना।

श्रीगदित–संज्ञा पुं० उपरूपक का एक भेद, जिसमें एक ही अंक हो और जो किसी प्रसिद्ध कथा के आधार पर रचकर किसी देवी को समर्पित हो। श्रीरासिका।

श्रीगर्भ–संज्ञा पुं० विष्णु।
वि० १. जिसके अन्दर का स्वभाव कल्याण करने का हो। २. दंड और तलवार के लिए प्रयुक्त शब्द।

श्रीचूर्ण–संज्ञा स्त्री० रोली। कुंकुम।

श्रीज–संज्ञा पुं० कामदेव। श्री से उत्पन्न।

श्रीदत्त–संज्ञा पुं० धन-ऐश्वर्य आदि देनेवाला।

श्रीदाम–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक बाल-सखा का नाम। सुदामा।

श्रीधर–संज्ञा पुं० विष्णु। लक्ष्मी को धारण करनेवाला अर्थात् लक्ष्मी के पति विष्णु।

श्रीधाम–संज्ञा पुं० स्वर्ग।

श्रीनाथ–संज्ञा पुं० विष्णु (लक्ष्मी के स्वामी या पति)।

श्रीनिकेतन–संज्ञा पुं० विष्णु। वैकुंठ।

श्रीनिवास–संज्ञा पुं० १. विष्णु। जिसके यहाँ या जहाँ लक्ष्मी निवास करती हों। २. वैकुंठ।

श्रीपंचमी–संज्ञा स्त्री० वसंत पंचमी।

श्रीपति–संज्ञा पुं० १. लक्ष्मी के पति। विष्णु। हरि। २. रामचंद्र। ३. कृष्ण। ४. कुबेर। ५. राजा।

श्रीपद्म–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

श्रीपाद–संज्ञा पुं० पूज्य। श्रेष्ठ।

श्रीफल–संज्ञा पुं० १. बेल। २. नारियल। ३. आँवला। ४. खिरनी।

श्रीमंत–वि० श्रीमान्। सम्पन्न। धनी।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का शिरोभूषण। २. स्त्रियों के सिर के बीच की माँग।

श्रीमत्–वि० १. श्रीमान्। आदरणीय। २. धनी। अमीर। सम्पन्न। भाग्यवान्। ३. जिसमें श्री या शोभा हो। ४. सुंदर।

श्रीमती–संज्ञा स्त्री० १. "श्रीमान्" का स्त्रीलिंग। स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। २. पत्नी-सूचक शब्द। ३. लक्ष्मी ४. राधा।

श्रीमान्–संज्ञा पुं० पुरुषों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। श्रीयुत्।

वि० १. सम्पन्न। अमीर। धनी। भाग्यवान्। २. यशस्वी।

श्रीमाल—संज्ञा स्त्री० गले का एक गहना। कंठ-श्री।

श्रीमुख—संज्ञा पुं० १. सुंदर मुख। २. वेद। ३. सूर्य्य।

श्रीमुखी—संज्ञा स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री।

श्रीयुक्त—वि० १. जिसमें श्री या शोभा हो। २. बड़े आदमियों के लिए एक आदरसूचक विशेषण। श्रीमान्। ३. यशस्वी। कीर्तमान्।

श्रीयुत—वि० दे० "श्रीयुक्त"। पुरुषों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। श्रीमान्।

श्रीरंग—संज्ञा पुं० विष्णु।

श्रीरमण—संज्ञा पुं० विष्णु।

श्रीवत्स—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. विष्णु के वक्षःस्थल पर का एक चिह्न, जो भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न माना जाता है।

श्रीवास, श्रीवासक—संज्ञा पुं० १. गंधा-बिरोजा। २. देवदारु। ३. चंदन। ४. कमल। ५. शिव। ६. विष्णु।

श्रीश—संज्ञा पुं० विष्णु (श्री के ईश अर्थात् लक्ष्मी के स्वामी)।

श्रीहत—वि० जिसकी श्री या शोभा हर ली गई हो या जिसमें शोभा न रह गई हो। शोभा-रहित। कांतिहीन। निस्तेज।

श्रीहर्ष—संज्ञा पुं० १. नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध कवि और पंडित। २. रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता, जो संभवतः प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।

श्रुत—वि० १. जो सुना जा चुका हो। २. जिसे परंपरा से सुनते आते हों। ३. प्रसिद्ध। मशहूर।

श्रुतकीर्ति—संज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।

श्रुतपूर्व—वि० जो पहले सुना जा चुका हो।

श्रुति—संज्ञा स्त्री० १. कान। २. सुनना। सुनने की क्रिया या इन्द्रिय। ३. सुनी हुई बात। ४. शब्द। ध्वनि। आवाज। ५. अफवाह। किंवदंती। ६. वह पवित्र ज्ञान, जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षियों-द्वारा सुना गया और जिसे परंपरा से ऋषि सुनते आए। ७. वेद। निगम। चार की संख्या (वेद चार होने से)। ८. अनुप्रास का एक भेद। श्रुत्यनुप्रास। ९. त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १०. नाम। प्रसिद्धि। ११. विद्या।

श्रुतिकटु—संज्ञा पुं० काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का व्यवहार। (दोष)। वि० सुनने में कठोर और कर्कश। अप्रिय।

श्रुतिपथ—संज्ञा पुं० १. वेद-विहित मार्ग। सन्मार्ग। २. कान के सूराख का रास्ता, जिसमें आवाज जाकर सुनाई देती है। श्रवण-मार्ग। ३. कान।

श्रुवा—संज्ञा पुं० दे० "स्रुवा"।

श्रेणी—संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार। २. क्रम। सिलसिला। ३. परम्परा। ४. शृंखला। ५. विभाग। ६. दर्जा। (डिवीजन या क्लास प्रथम, द्वितीय, तृतीय, श्रेणी)। ७. वर्ग। ८. समूह। मंडली। ९. एक ही प्रकार का कारबार करनेवाले व्यापारियों आदि का संघ। (अंग्रे०—कारपोरेशन) १०. सीढ़ी। ११. किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग।

श्रेणीबद्ध—वि० १. सिलसिलेवार। क्रमबद्ध या क्रमानुसार। २. पंक्ति या कतार में रखा हुआ या लगा हुआ।

श्रेय—वि० [स्त्री० श्रेयसी] १. यश या बड़ाई के योग्य। २. कीर्ति या यश देनेवाला। ३. श्रेष्ठ। उत्तम। ४. मंगलदायक। संज्ञा पुं० १. किसी अच्छे काम के लिए मिलनेवाला यश। २. भलाई। कल्याण। ३. कीर्ति। ४. धर्म। पुण्य। ५. सदाचार।

श्रेयस्कर—वि० १. श्रेय देनेवाला। २. यश देनेवाला। ३. कल्याण करनेवाला। शुभदायक।

श्रेष्ठ—वि० [स्त्री० श्रेष्ठा] १. सबसे अच्छा। सर्वोत्तम। २. मुख्य। प्रधान। ३. पूज्य। ४. आयु में बड़ा।

श्रेष्ठता–संज्ञा स्त्री० अच्छाई। उत्तमता। प्रधानता। बड़प्पन।
श्रेष्ठी–संज्ञा पुं० १. सेठ। महाजन। २. व्यापारियों या वणिकों का मुखिया।
श्रोतव्य–वि० १. सुनने योग्य। जो सुनाई दे सके। २. जिसका सुनना आवश्यक हो।
श्रोता–संज्ञा पुं० सुननेवाला।
श्रोत्र–संज्ञा पुं० १. कान। सुनने की इन्द्रिय। २. वेदज्ञान।
श्रोत्रिय–संज्ञा पुं० १. वेद-वेदांगों का ज्ञाता। वेदज्ञ। २. वेदपाठी। ३. ब्राह्मणों का एक भेद।
श्रौतसूत्र–संज्ञा पुं० कल्प-ग्रंथ का वह अंश, जिसमें यज्ञों का विधान है।
श्लथ–वि० १. शिथिल। ढीला। २. धीमा। ३. अशक्त। दुर्बल। कमजोर।
श्लाघनीय–वि० १. सराहने या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. उत्तम। बहुत अच्छा। श्लाघ्य।
श्लाघा–संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा। स्तुति। तारीफ। बड़ाई। २. खुशामद। चापलूसी। ३. इच्छा या चाह (अप्रयुक्त अर्थ)।
श्लाघ्य–वि० १. सराहने योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. उत्तम।
श्लिष्ट–वि० १. मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ। २. खूब बैठा या चिपका हुआ। ३. (साहित्य में) श्लेष-युक्त। जिसके दो अर्थ हों। दो अर्थोंवाले शब्दों या पदों से युक्त।
श्लीपद–संज्ञा पुं० फीलपाव। पैर फूलने का रोग।
श्लील–वि० [संज्ञा श्लीलता] १. शिष्टता या सभ्यता के अनुकूल। २. जो भद्दा या फूहड़ न हो। इसके विपरीत दे० "अश्लील"। ३. उत्तम। नफीस। ४. शुभ।
श्लेष–संज्ञा पुं० १. मिलना। जुड़ना। मिलान। संयोग। २. साहित्य में एक अलंकार, जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिये जाते हैं।
श्लेषक–वि० जोड़नेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।
श्लेषण–संज्ञा पुं० [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। २. आलिंगन।
श्लेषोपमा–संज्ञा स्त्री० एक अलंकार, जिसमें ऐसे श्लिष्ट (दो अर्थोंवाले) शब्दों का प्रयोग होता है, जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं।
श्लेष्मा–संज्ञा पुं० १. कफ। बलगम। २. वैद्यक के अनुसार शरीर की तीन धातुओं में से एक।
श्लोक–संज्ञा पुं० १. संस्कृत का कोई पद। २. संस्कृत का सबसे अधिक प्रयुक्त छंद। अनुष्टुप् छंद। ३. शब्द। आवाज। ४. आह्वान। पुकार। ५. स्तुति। प्रशंसा। ६. यश। बड़ाई। नाम।
श्वन्–संज्ञा पुं० [स्त्री० शुनी] कुत्ता।
श्वपच–संज्ञा पुं० चांडाल। डोम।
श्वफल्क–संज्ञा पुं० यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।
श्वशुर–संज्ञा पुं० ससुर। पत्नी या पति का पिता।
श्वश्रू–संज्ञा स्त्री० सास। पति या पत्नी की माता।
श्वसन–संज्ञा पुं० १. श्वास। साँस। २. जीवन। ३. हवा। ४. हाँफना। ५. फूँकना। ६. लम्बी साँस लेना।
श्वसित–वि० १. जो श्वास (साँस) ले रहा हो। जिसमें साँस हो। जीवित। २. साँस लिया हुआ।
संज्ञा पुं० १. साँस लेने की क्रिया। २. निःश्वास या ठंडी साँस।
श्वान–संज्ञा पुं० कुत्ता। कुक्कुर।
श्वाननिद्रा–संज्ञा स्त्री० हल्की नींद। कुत्ते की तरह नींद, जो जरा सी आहट पाकर टूट जाय।
श्वापद–संज्ञा पुं० हिंसक पशु। खूँखार जानवर।
श्वास–संज्ञा पुं० १. साँस। दम। २. जल्दी-जल्दी साँस लेना। हाँफना। ३. दम फूलने का रोग। दमा।
श्वासकास–संज्ञा पुं० दमा और खाँसी।

श्वासा–संज्ञा स्त्री० दे० "श्वास"। साँस।

श्वासोच्छ्वास–संज्ञा पुं० तेजी या जोर से साँस खींचना और निकालना।

श्वेत–वि० १. सफेद। धवल। उज्ज्वल। २. साफ। ३. गोरा।
संज्ञा पुं० १. सफेद रंग। २. चाँदी। ३. गोरे वर्ण के व्यक्ति (जैसे—इँगलैंड, अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका की गोरी जाति का व्यक्ति। इसके विपरीत—अश्वेत: काले वर्ण के व्यक्ति) ४. पुराणानुसार एक द्वीप (श्वेत द्वीप)। ५. शिव का एक अवतार। ६. श्वेत वराह।

श्वेत-कृष्ण–संज्ञा पुं० सफेद और काला। किसी विषय के दोनों पक्ष।

श्वेतकेतु–संज्ञा पुं० १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. केतु ग्रह।

श्वेतगज–संज्ञा पुं० ऐरावत हाथी।

श्वेतद्युति–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

श्वेतद्वीप–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक उज्ज्वल द्वीप, जहाँ विष्णु रहते हैं।

श्वेतपत्र–संज्ञा पुं० विशेष सरकारी विज्ञप्ति, जिसमें किसी विषय का उज्ज्वल पक्ष प्रतिपादित किया जाता है। [अंग्रे०–ह्वाइट पेपर]

श्वेतपद्म–संज्ञा पुं० सफेद कमल।

श्वेतप्रदर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रदर रोग, जिसमें स्त्रियों को सफेद रंग की धातु गिरती है।

श्वेतवाराह–संज्ञा १. पुं० वाराह भगवान् की एक मूर्त्ति। २. एक कल्प का नाम, जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है।

श्वेतसार–संज्ञा पुं० माँड़ी। कलफ। चावल आदि अन्न का वह सफेद सत, जो कपड़ों पर कलफ लगाने या दवाओं के काम आता है।

श्वेतांबर–संज्ञा पुं० १. जैनियों के दो प्रधान सम्प्रदायों में से एक। २. शिव का एक रूप। वि० सफेद वस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति।

श्वेतांग–वि० सफेद वर्ण या रंग के शरीरवाला।
संज्ञा पुं० गोरी जाति—(इँगलैंड, यूरोप, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका आदि के निवासी)

श्वेतांशु–संज्ञा पुं० चन्द्रमा।

श्वेता–संज्ञा स्त्री० १. दूब। घास। तृण। २. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ३. कौड़ी। ४. शंखिनी। ५. सफेद चीनी। शकर। ६. आँख की सफेदी। ७. बाल की सफेदी।

श्वेताश्वतर–संज्ञा स्त्री० कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

ष

ष–हिन्दी वर्णमाला का ३१वाँ व्यंजन अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, अतः यह मूर्द्धन्य कहलाता है। इसका उच्चारण दो प्रकार से होता है—'श' के समान और 'ख' के समान।

षंड, षंढ–संज्ञा पुं० १. साँड। २. नपुंसक। हीजड़ा। नामर्द। ३. शिव का एक नाम। ४. समूह। झुंड। ५. झाड़ी (शब्द के अन्त में जोड़ने पर)। ६. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (महाभारत)।

षंढत्व–संज्ञा पुं० नामर्दी। हीजड़ापन।

षट्–वि० छः। गिनती में ६।
संज्ञा पुं० ६ की संख्या।

षट्क–संज्ञा पुं० ६ की संख्या। ६ वस्तुओं का समूह।
वि० ६ सम्बन्धी या ६ चीजों से सम्बन्ध रखनेवाला।

षट्कर्म्म–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों के छः कर्म–यज्ञ करना, यज्ञ कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान देना और दान लेना। २. झंझट। झमेला।

षट्कोण–वि० छः कोनोंवाला। छःकोना। छःपहला।

षट्चक्र–संज्ञा पुं० १. हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर छः चक्र, जिनके नाम हैं––मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनहत, विशुद्धि, प्रज्ञा। २. भीतरी चाल। षड्यंत्र।

षट्चरण–संज्ञा पुं० भौंरा। जिसके छः पैर होते हैं।

षट्तिला–संज्ञा स्त्री० माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

षट्पद–वि० [स्त्री० षट्पदी] छः पैरोंवाला। संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. छः पदोंवाला छन्द।

षट्पदी–संज्ञा स्त्री० १. भौंरे की मादा। भ्रमरी। २. छप्पय (छः पदों का छन्द)।

षट्प्रयोग–संज्ञा पुं० तंत्र सम्बन्धी छः प्रयोग––शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विप्रेषण, उच्चाटन और मारण।

षट्मुख–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय। षड़ानन। वि० जिसके छः मुँह हों।

षट्राग–संज्ञा पुं० १. संगीत के छः राग––भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २. बखेड़ा। झंझट।

षट्रस–संज्ञा पुं० १. दे० "षड्रस"। षट्रस-भोज, छः रसों से युक्त भोजन। २. विभिन्न प्रकार का स्वादिष्ट भोजन।

षट्रिपु–संज्ञा पुं० दे० "षड्रिपु"।

षट्शास्त्र–संज्ञा पुं० हिंदुओं के छः दर्शन। न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातंजल। षड्दर्शन।

षट्वांग–संज्ञा पुं० खट्वांग नामक राजर्षि, जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

षडंग–संज्ञा पुं० वेद के छः अंग––शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। शरीर के छः अंग––दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़।
वि० जिसके छः अंग या अवयव हों।

षडानन–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।
वि० छः मुँहवाला।

षड्ऋतु–संज्ञा स्त्री० वर्ष की ६ ऋतुएँ––वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

षड्गुण–संज्ञा पुं० छः गुणों का समूह। राजनीति के सन्धि, विग्रह, यान (चढ़ाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय, ये छः गुण हैं।

षड्ज–संज्ञा पुं० संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर, जिसका संकेत "स" है।

षड्दर्शन–संज्ञा पुं० न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छः दर्शन। दे० "षट्शास्त्र"।

षड्दर्शनी–संज्ञा पुं० छः दर्शनों को जानने-वाला। ज्ञानी।

षड्यंत्र–संज्ञा पुं० किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। भीतरी चाल। कुचक्र।

षड्रस–संज्ञा पुं० छः प्रकार के रस या स्वाद––मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षड्रिपु–संज्ञा पुं० काम, क्रोध आदि मनुष्य के छः विकार।

षण्मुख–संज्ञा पुं० दे० "षड़ानन"। कार्त्ति-केय। छः मुँहवाला।

षष्ठ–वि० छठा। जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो।

षष्ठी–संज्ञा स्त्री० १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. संबंधकारक (व्याकरण)। ३. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा इस दिन का उत्सव। ४. षोडश मातृकाओं में से एक। ५. कात्यायिनी। दुर्गा।

षाड़व–संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग, जिसमें केवल छः स्वर लगते हों। मनोविकार।

षाण्मातुर-संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय। षड़ानन। (छः मुंडों या सिरोंवाला)।

षाण्मासिक–वि० १. छः महीने का। २. छठे महीने में पड़नेवाला।

षोड़श–संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।
वि० सोलहवाँ।

षोड़श-कला–संज्ञा स्त्री० चंद्रमा के सोलह भाग, जो क्रम से एक-एक करके निकलते और क्षीण होते हैं।

षोड़शपूजन–संज्ञा पुं० दे० "षोड़शोपचार"।

षोड़श-मातृका–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की देवियाँ, जो सोलह मानी गई हैं––गौरी,

पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः और आत्म-देवता।

षोड़श-शृंगार–संज्ञा पुं० १६ तरह का शृंगार या सजावट। पूर्ण शृंगार, जो १६ प्रकार का होता है।

षोड़श संस्कार–संज्ञा पुं० गर्भाधान से लेकर मरने तक हिन्दुओं के १६ संस्कार—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णभेद, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक, और्ध्वदेहिक।

षोड़शी–वि० १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की युवती।
संज्ञा स्त्री० १० महाविद्याओं में से एक। हिन्दुओं में किसी की मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन बाद किया जानेवाला एक श्राद्ध कर्म।

षोड़शोपचार–संज्ञा पुं० पूजा के पूर्ण अंग, जो सोलह माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

ष्ठीवन–संज्ञा पुं० थूकना।

स

स–१. हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान दंत है, इसलिए इसे दंती या दंत्य 'स' कहते हैं। २. एक उपसर्ग, जो शब्दों के प्रारम्भ में लगने पर कुछ विशेष अर्थ देता है—जैसे सहित या साथ के अर्थ में—सजीव। एक में ही—सगोत्र।
संज्ञा पुं० १. छंदःशास्त्र में 'सगण' का संक्षिप्त रूप। २. संगीत-शास्त्र में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। ३. ईश्वर। ४. शिव। ५. साँप। ६. पक्षी। ७. हवा। ८. जीव। ९. चन्द्रमा। १०. ज्ञान।

सं–अव्य० १. एक अव्यय, जिसका प्रयोग शब्द के आरम्भ में शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिए होता है। जैसे—संयोग, संताप, संतुष्ट आदि। २. से।

संक*†–संज्ञा स्त्री० दे० "शंका"।

संकट–संज्ञा पुं० १. विपत्ति। आफत। मुसीबत। दुःख। कष्ट। तकलीफ। २. दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा। ३. पानी या जमीन के दो बड़े विभागों को जोड़नेवाला तंग रास्ता। जैसे, जल-संकट = जलडमरूमध्य। गिरि-संकट = पहाड़ का दर्रा।
वि० १. तंग। सँकीर्ण या सँकरा। २. कष्टप्रद। ३. भयानक।

संकटा–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध देवी। २. ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

संकना*†–क्रि० अ० १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना।

संकर–संज्ञा पुं० [स्त्री० संकरता] १. दो चीजों का आपस में मिलना या मिलकर एक होना। २. भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न। दोगला। वर्णसंकर।

संकर-समास–संज्ञा पुं० दो भिन्न भाषाओं के शब्दों का समास, अर्थात् एक शब्द किसी भाषा का हो और दूसरा किसी दूसरी भाषा का—जैसे अछूतोद्धार।

संकर-घरनी*–संज्ञा स्त्री० शंकर की पत्नी, पार्वती।

संकरता–संज्ञा स्त्री० संकर होने का भाव या क्रिया। मिलावट। घाल-मेल।

सँकरा†–वि० [स्त्री० सँकरी] तंग। कम चौड़ा। संकीर्ण।
संज्ञा पुं० संकट। विपत्ति। कष्ट।

संकर्षण–संज्ञा पुं० १. खींचने की क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। ४. वैष्णवों का एक संप्रदाय। ५. कानून में अधिकार या

प्राथमिकता आदि के अनुसार किसी व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर दूसरे व्यक्ति या वस्तु को रखा जाना या उसका नाम चढ़ाया जाना। (अंग्रे०—सब-रोगेशन)

संकल†—संज्ञा स्त्री १. दे० "साँकल"। सिकड़ी। जंजीर। २. पशुओं को बाँधने का सिक्कड़।

संकलन—संज्ञा पुं० [वि० संकलित] १. संग्रह करना। चुनकर इकट्ठा करना। २. संग्रह। ३. ढेर। ४. अनेक ग्रंथों से अच्छे-अच्छे विषय चुनने की क्रिया। ५. वह ग्रंथ, जिसमें ऐसे चुने हुए विषय हों। ६. गणित की योग नाम की क्रिया। जोड़।

संकलप—संज्ञा पुं० दे० "संकल्प"।

संकलपना*—क्रि० स० १. संकल्प करना। दृढ़ निश्चय करना। २. कुछ दान देने या धार्मिक कार्य करने का निश्चय करना। ३. संकल्प का मंत्र पढ़कर दान देने का वचन देना।

क्रि० अ० दृढ़ निश्चय करना। विचार करना।

संकलित—वि० चुनकर इकट्ठा किया हुआ। चुना हुआ। संगृहीत।

संकल्प—संज्ञा पुं० १. दृढ़ निश्चय। पक्का इरादा। २. कार्य करने की इच्छा। विचार। ३. एक विशेष मंत्र पढ़ते हुए दान-पुण्य करने का निश्चय करना या वचन देना। ४. वह मंत्र, जिसे पढ़कर ऐसा निश्चय किया जाय।

संकल्पित—वि० १. जिसका संकल्प या निश्चय हो चुका हो। २. जिसे दान देने का निश्चय किया जा चुका हो।

संकष्ट—संज्ञा पुं० संकट। विपत्ति। आफत।

संकारना†—क्रि० स० संकेत करना। इशारा करना।

संकाश—संज्ञा पुं० प्रकाश। चमक।

अव्य० १. समान। एक-सा। २. निकट। पास।

संकीर्ण—वि० [संज्ञा संकीर्णता] १. जो चौड़ा या फैला न हो। सँकरा। तंग। संकुचित। २. मिश्रित। ३. अनुदार (उदार का उल्टा)। संकीर्ण विचारवाला। ओछा। तुच्छ। ४. छोटा।

संज्ञा पुं० १. दो या अधिक रागों से मिलकर बना हुआ राग। संकर-राग। २. मिश्रित जाति का। वर्णसंकर।

संकीर्तन—संज्ञा पुं० भजन या वंदना आदि। गा-बजाकर उपासना करना। दे० "कीर्त्तन"। किसी की कीर्ति का भली भाँति वर्णन।

संकुचन—संज्ञा पुं० दे० "संकोच"।

संकुचित—वि० १. सिकुड़ा हुआ। २. सँकरा। तंग। ३. संकोच-युक्त। लज्जित। ४. उदार का उल्टा। संकीर्ण विचारोंवाला। क्षुद्र।

संकुपित—वि० दे० "कुपित"। क्रोधित।

संकुल—वि० [संज्ञा संकुलता] १. संकुलित। भरा हुआ। परिपूर्ण। २. समस्त। ३. संकीर्ण। तंग।

संज्ञा पुं० १. लड़ाई। युद्ध। २. झुंड। समूह। भीड़। ३. परस्पर-विरोधी वाक्य।

संकुलित—वि० भरा हुआ। व्याप्त।

संकेत—संज्ञा पुं० १. इशारा। इंगित। भाव प्रकट करने की कोई शारीरिक चेष्टा। २. चिह्न। निशान। ३. वह स्थान, जहाँ प्रेमी-प्रेमिका मिलना निश्चित करें। †वि० सँकरा। तंग। बैठने या लेटने आदि के लिए बहुत कम जगह। (भोजपुरी में संकेता=विपत्ति, मुसीबत।)

संकेत-चिह्न—संज्ञा पुं० नाम, पद या वाक्य आदि के सूचक उनके संक्षिप्त रूप या चिह्न, जो संकेत के रूप में प्रयुक्त किए जायँ। जैसे—उत्तर-प्रदेश का उ० प्र०।

संकेत-लिपि—संज्ञा स्त्री० बहुत जल्दी और थोड़े स्थान में लिखने के लिए किसी लिपि के अक्षरों तथा पदों के छोटे और संक्षिप्त चिह्नों से बनाई गई लेख-प्रणाली। (अँग्रे०—शार्ट हैण्ड)।

संकोच—संज्ञा पुं० १. थोड़ी लज्जा या शर्म। लेहाज २. आगा-पीछा। हिचकिचाहट। ३. सिकुड़ने की क्रिया या भाव। खिंचाव। ४. काव्य का एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु के बहुत संकोच का वर्णन होता है (विकास-अलंकार के विपरीत)।

संकोचना*—क्रि० स० १. संकोच करना।

लजाना या शर्माना। २. संकुचित करना। सिकोड़ना।

संकोची—संज्ञा पुं० १. संकोच या लज्जा करने वाला। शर्म करनेवाला। २. थोड़े में ही सन्तोष करनेवाला। ३. सिकुड़नेवाला।

संकोपना*—क्रि० अ० क्रोध करना।

संक्रंदन—संज्ञा पुं० इंद्र।

संक्रमण—संज्ञा पुं० १. जाना। चलना। २. परिवर्त्तन की दशा। एक अवस्था से धीरे-धीरे दूसरी अवस्था में बदलना। अवस्थान्तर। ३. सूर्य्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना। दे० "संक्रांति"।

संक्रमण-काल—संज्ञा पुं० वह समय, जब एक अवस्था से दूसरी अवस्था में धीरे-धीरे परिवर्त्तन हो रहा हो।

संक्रांति—संज्ञा स्त्री० १. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना या जाने का समय (यह हिन्दुओं का एक पर्व है)। २. एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना। ३. परिवर्त्तन-काल।

संक्रामक—वि० छूत के कारण फैलनेवाली बीमारी। संसर्ग से फैलनेवाला।

संक्रोन*†—संज्ञा स्त्री० दे० "संक्रांति"।

संक्षमण—संज्ञा पुं० १. किसी के दोष या अपराध आदि पर ध्यान न देकर उसे क्षमा करना। २. सहन करना। बर्दाश्त करना।

संक्षिप्त—वि० १. संक्षेप किया हुआ। २. खुलासा। ३. सार रूप। बड़े का छोटा किया हुआ रूप। कम किया हुआ। ४. थोड़ा। अल्प। ५. थोड़े में कहा गया या लिखा हुआ। ६. फेंका हुआ (केवल संस्कृत में)।

संक्षिप्त आलेख—संज्ञा पुं० बड़े लेख, वक्तव्य या भाषण आदि का थोड़े में तैयार किया हुआ रूप। संक्षिप्त या छोटा रूप।

संक्षिप्तक—संज्ञा पुं० किसी शब्द या नाम के वे आरंभिक अक्षर, जो उस शब्द या नाम के सूचक बन जाते हैं।

संक्षिप्त-लिपि—संज्ञा स्त्री० दे० "संकेत-लिपि"।

संक्षिप्ति—संज्ञा स्त्री० नाटक में एक आरभटी, जिसमें क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति होती है।

संक्षिप्तीकरण—संज्ञा पुं० किसी विषय, कथन आदि को संक्षिप्त (छोटा) करने की क्रिया या भाव।

संक्षेप—संज्ञा पुं० १. थोड़े में कोई बात कहना। सारांश। सार। २. घटाना। कम करना।

संक्षेपण—संज्ञा पुं० संक्षेप करना। थोड़े में करना। [अंग्रे० एब्रिजमेण्ट]

संक्षेपत:—अव्य० संक्षेप में। थोड़े में।

संक्षोभ—संज्ञा पुं० १. दे० "क्षोभ"। २. उद्विग्नता। ३. चंचलता। व्याकुलता। ४. उत्तेजना। ५. जोर का कंपन। ६. उलट-पुलट।

संखिया—संज्ञा पुं० १. एक बहुत जहरीला सफ़ेद पत्थर या उपधातु। २. इस धातु का तैयार किया हुआ भस्म, जो दवा के काम में आता है।

संख्यक—वि० संख्यावाला। जैसे अल्पसंख्यक=कम संख्यावाला। बहुसंख्यक=बहुत संख्यावाला।

संख्या—संज्ञा स्त्री० १. गिनती। गणना। तादाद। २. गिनती में, परिमाण बतानेवाला अंक।

संख्याता—संज्ञा पुं० किसी तरह का हिसाब लिखनेवाला, विशेषकर आय-व्यय का हिसाब लिखनेवाला।

संख्यान—संज्ञा पुं० आय-व्यय या लेन-देन आदि का लिखा हुआ हिसाब।

संख्यानकर्म—संज्ञा पुं० लेन-देन या आमदनी-खर्च आदि के हिसाब लिखने का काम।

संग—संज्ञा पुं० १. साथ। मिलन। सहवास। २. विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग। वासना। आसक्ति। [फा०] पत्थर। जैसे संगमरमर।

वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कड़ा।

क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित।

मुहा०—(किसी के) संग लगना=साथ हो लेना। पीछे लगना।

संग जहरात—संज्ञा पुं० एक सफेद चिकना

पत्थर, जो घाव भरने के लिए बहुत लाभदायक होता है।

संगठन–संज्ञा पुं० १. दे० "संघटन"। रचना। बनावट। २. बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाना। सुव्यवस्थित करना। ३. संघ या संस्था।

संगठित–वि० १. संग्रथित। संघटित। जिसका संगठन हो चुका हो। २. सुव्यवस्थित।

संगत–संज्ञा स्त्री० १. दे० "संगति"। संग रहना। साथ। २. मित्रता। ३. संग रहनेवाला। साथी। ४. संबंध। संसर्ग। ५. मठ। साधुओं का समाज। ६. सिक्खों का धर्म-समाज।

संग-तराश–संज्ञा पुं० [फा०] पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर।

संगति–संज्ञा स्त्री० १. संग। साथ। २. मेल। मिलाप। संगत। ३. संबंध। ताल्लुक। ४. प्रसंग। आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान।

संगतिया, संगती–वि० १. साथी। २. गवैए के साथ बाजा बजानेवाला।

संगदिल–वि० [फा०] [संज्ञा संगदिली] कठोर-हृदय। निर्दय।

संगम–संज्ञा पुं० १. मिलाप। संयोग। मेल। २. दो नदियों के मिलने का स्थान। दो या अधिक वस्तुओं का एक जगह मिलने का भाव।

संग-मर्मर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बढ़िया, चिकना, मुलायम और सफेद पत्थर।

संगमूसा–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का काला, चिकना पत्थर।

संग-यशब–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का हरा पत्थर। २. हौल-दिली।

संगर–संज्ञा पुं० १. संग्राम। युद्ध। २. विपत्ति। ३. नियम।

[फा०] मोरचा। सेना की रक्षा के लिए चारों ओर की खाई या धुस।

संगाती–संज्ञा पुं० १. संगी। साथी। २. दोस्त।

संगिनी–संज्ञा स्त्री० १. पत्नी। २. साथ रहनेवाली स्त्री। ३. सखी। सहेली।

संगी–संज्ञा पुं० १. संग रहनेवाला। साथी। २. मित्र। दोस्त। ३. बन्धु।

वि० [फा० संग=पत्थर] पत्थर का। संगीन।

संगीत–संज्ञा पुं० १. नाचना, गाना और बजाना तीनों का मेल। २. लय, ताल के अनुसार गाना। गायन। ३. एक साथ मिलकर गाना।

संगीत-शास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें संगीत अर्थात् गाने, बजाने और नाचने की कला का विवेचन हो।

संगीतज्ञ–संज्ञा पुं० संगीत-विद्या का पंडित या अच्छा जानकार। संगीत में निपुण। अच्छा गवैया।

संगीन–संज्ञा पुं० [फा०] बन्दूक के सिरे पर लगाया जानेवाला लोहे का एक नुकीला अस्त्र।

वि० १. खतरनाक। २. विकट। बहुत पेचीदा या गम्भीर मामला। ३. पत्थर का बना हुआ। ४. मोटा। ५. टिकाऊ। मजबूत।

संगोपन–संज्ञा पुं० छिपाना।

संगृहीत–वि० संग्रह या इकट्ठा किया हुआ। संकलित।

संग्रह–संज्ञा पुं० १. इकट्ठा करना। जमा करना। संचय। २. रक्षा। ३. ग्रहण करने की क्रिया। ४. वह पुस्तक, जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। संकलन।

संग्रहकर्त्ता–संज्ञा पुं० संग्रह या इकट्ठा करनेवाला। संग्राहक।

संग्रहणी–संज्ञा पुं० पेट की एक बीमारी, जिसमें खाना नहीं पचता और दस्त होते हैं।

संग्रहणीय–वि० संग्रह या इकट्ठा करने योग्य। दे० "संग्राह्य"।

संग्रहना*–क्रि० स० इकट्ठा या जमा करना।

संग्रहाध्यक्ष–संज्ञा पुं० किसी संग्रहालय का प्रधान अधिकारी (अंग्रे०–क्यूरेटर)।

संग्रहालय–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ प्राचीन या दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह हो (अंग्रे०–म्यूजियम)।

संग्रही–वि० संग्रह या इकट्ठा करनेवाला। दे० "संग्राहक"।

संग्राम–संज्ञा पुं० लड़ाई। युद्ध।

संग्राहक–संज्ञा पुं० संग्रह या इकट्ठा करनेवाला। संग्रहकर्त्ता।

संग्राह्य–वि० संग्रह या इकट्ठा करने योग्य। जमा करने लायक।

संघ–संज्ञा पुं० १. समुदाय। समूह। २. किसी विशेष उद्देश्य से कई व्यक्तियों का संघटित समाज, संस्था, सभा, समिति, दल। ३. कानून के विचार से एक व्यक्ति के रूप में कार्य करनेवाली व्यापारिक या अन्य प्रकार की समिति या सभा (अंग्रे०–कारपोरेशन या कम्पनी)। ४. ऐसे राज्यों का समूह, जो अपने क्षेत्र म स्वतंत्र हों, पर कुछ विशेष कार्यों के लिए किसी केन्द्रीय शासन के अधीन हों (अंग्रे०–यूनियन या फेडरेशन)। ५. भारत का एक तरह का प्राचीन प्रजातंत्र राज्य। ६. बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान या उनका धार्मिक समाज। ७. साधुओं आदि के रहने का मठ।

संघट–संज्ञा पुं० १. संघटन। २. मेल। ३. संयोग। ४. एकत्र होना। ५. समूह। ढेर।

संघटन–[वि० संघटित] १. रचना। बनावट। निर्माण। २. मेल। संयोग। मिलाप। ३. किसी कार्य के लिए बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाना। ४. सुव्यवस्थित करना। किसी उद्देश्य से कई व्यक्तियों को एक साथ करके कोई संघ या संस्था बनाना। संघ। संस्था। संगठन।

संघट्ट, संघट्टन–संज्ञा पुं० १. दे० "संघटन"। २. मेल। संयोग। ३. रचना। बनावट। रगड़। ४. संघर्ष। ५. मुठभेड़। ६. स्पर्धा। होड़।

संघटित-वि० १. जिसका संघटन हो चुका हो। संगठित। २. जो संघ या संस्था के रूप में बन चुका हो। सुव्यवस्थित।

संघति–संज्ञा स्त्री० कई दलों, संस्थाओं या राज्यों आदि का इस प्रकार मिलकर एक हो जाना कि सब एक दल, संस्था या राज्य के रूप में कार्य करें।

संघती–संज्ञा पुं० दे० "संघाती"।

संघरना*–क्रि० स० १. संहार करना। नाश करना। २. मार डालना।

संघपति–संज्ञा पुं० संघ का प्रधान या दल का नायक।

संघर्ष–संज्ञा पुं० १. रगड़ खाना। रगड़। २. लड़ाई। मुठभेड़। मारपीट। ३. प्रतियोगिता। होड़। ४. विरोध। स्पर्धा।

संघर्षण–संज्ञा पुं० दे० "संघर्ष"।

संघस्थविर–संज्ञा पुं० बौद्धों के संघ या मठ का प्रधान भिक्षु। संघाराम का प्रधान।

संघात–संज्ञा पुं० १. झुंड। समूह। कोई विशेष कार्य करने के उद्देश्य से बनाया गया कुछ व्यक्तियों का समूह। २. हत्या। जान से मार डालना। ३. आघात। गहरी चोट। ४. नाटक में एक प्रकार की गति। ५. शरीर। ६. रहने की जगह। निवासस्थान। वि० घना।

संघाती–संज्ञा पुं० साथी। मित्र। दोस्त। वि० प्राणनाशक। संघात करनेवाला।

संघार*†–संज्ञा पुं० दे० "संहार"।

संघारना*–क्रि० स० संहार करना। नाश करना। मार डालना।

संघाराम–संज्ञा पुं० बौद्ध भिक्षुओं के रहने का मठ। विहार।

संघोष–संज्ञा पुं० बहुत जोर का शब्द।

संच*†–संज्ञा पुं० १. दे० "संचय"। संग्रह या इकट्ठा करना। २. रक्षा। देखभाल।

संचकर*–संज्ञा पुं० १. संचय करनेवाला। इकट्ठा या जमा करनेवाला। २. कंजूस।

संचना*†–क्रि० स० संचय करना। इकट्ठा या जमा करना। बचाकर रखना।

संचय–संज्ञा पुं० जमा करना। संग्रह या इकट्ठा करना।

संचरण–संज्ञा पुं० संचार। संचार करने की क्रिया। चलना।

संचरना*†–क्रि० अ० १. चलना। घूमना-फिरना। २. फैलना। प्रसारित या प्रचलित होना।

संचरित–वि० १. जिसका संचार हुआ हो। २. जिसमें संचार हुआ हो।

संचान–संज्ञा पुं० बाज चिड़िया।

संचार–संज्ञा पुं० [वि० संचारित] १.चलना। गमन। २. फैलना। जैसे खून का संचार। ३. चलाने की क्रिया। प्रसारित या प्रचलित होना।

संचारक–वि० [स्त्री० संचारिणी] संचार करनेवाला। फैलानेवाला। चलानेवाला।

संचारना*†–क्रि० स० १. संचार करना। २. जन्म देना। ३. चलाना। ४. फैलाना। प्रचार करना।

संचारिका–संज्ञा स्त्री० दूती। कुटनी।

संचारी–संज्ञा पुं० १. साहित्य में वे भाव, जो मुख्य भाव की पुष्टि या सहायता करते हैं। २. व्यभिचारी भाव। ३. हवा।
वि० संचरण करनेवाला। गतिशील

संचालक–संज्ञा पुं० [स्त्री० संचालिका, संचालिनी] १. चलानेवाला। चालक संचालन करनेवाला। २. किसी कार्य या कार्यालय आदि का काम चलाने या व्यवस्था करनेवाला। नियंत्रण करनेवाला। (अंग्रे०–'डाइरेक्टर')

संचालन–संज्ञा पुं० १. चलाना। चलाने की क्रिया। २. नियंत्रण। देख-रेख। २. काम जारी रखना। ऐसी व्यवस्था करना जिसमें, कोई काम होता रहे।

संचालित–वि० जो चलाया गया हो। जिसका संचालन किया गया हो।

संचित–वि० संचय या जमा किया हुआ। बचाकर रखा हुआ।

संजम*–संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

संजय–संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के मंत्री, जो महाभारत के युद्ध के समय उन्हें युद्ध का विवरण सुनाया करते थे।

संजात–वि० १. उत्पन्न। २. प्राप्त।

संजाफ–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. झालर। २. गोट। मगजी। शोभा के लिए लगाया हुआ किनारा।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा, जिसका रंग आधा लाल और आधा सफेद या आधा हरा होता है।

संजाफी–वि० जिसमें संजाफ या झालर लगी हो।

संजाब–संज्ञा पुं० दे० "संजाफ"।

संजीदा–वि० [फा०] [संज्ञा संजीदगी] १. गंभीर। शांत। २. समझदार। बुद्धिमान्।

संजीवन–संज्ञा पुं० १. जीवन देनेवाला। २. भली भाँति जीवन व्यतीत करने की क्रिया।

संजीवनी–वि० जीवन देनेवाली। मरे हुए को जिलानेवाली।
संज्ञा स्त्री० मरे हुए व्यक्ति को जिलानेवाली एक प्रकार की कल्पित ओषधि (बूटी-विशेष) या विद्या। (रामायण की कथा के अनुसार लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने के लिए हनुमान जी इस बूटी को धवलागिरि के साथ उठा लाए थे।)

संजीवनी विद्या–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित विद्या, जिससे मृत व्यक्ति को जीवित किया जा सकता है।

संजुग*–संज्ञा पुं० संग्राम। लड़ाई।

संजुत*–वि० दे० "संयुक्त"।

संजुता–संज्ञा स्त्री० दे० "संयुत"। (छंद)

संजोइ*–क्रि० वि० संग में। साथ में।

सँजोइल*–वि० १. सुसज्जित। अच्छी तरह सजाया हुआ २. एकत्र। जमा किया हुआ।

संजोग–संज्ञा पुं० दे० "संयोग"।

संजोगी–संज्ञा पुं० दे० "संयोगी"।

सँजोना†–क्रि० स० सजाना।

सँजोवल*†–वि० १. सजा हुआ। सुसज्जित। २. सेना-सहित। ३. सचेत। होशियार।

संजोवना*–क्रि० स० सजाना।

संज्ञक–वि० संज्ञावाला। जिसकी संज्ञा हो (यौगिक में)।

संज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान या चेतना-शक्ति। ज्ञान। बुद्धि। अक्ल। २. चेतना। होश। ३. नाम। ४. व्याकरण में वह शब्द, जिससे किसी वस्तु का बोध होता है। जैसे—राम, नदी, घोड़ा। ५. सूर्य्य की पत्नी, जो विश्वकर्मा की कन्या थी।

संज्ञाहीन–वि० बेसुध। बेहोश।

सँझला‡–वि० १. संध्या या शाम का।

२. मँझला से छोटा और सबसे छोटे से बड़ा।

सँझवाती–संज्ञा स्त्री० १. शाम को जलाया जानेवाला दीया। २. संध्या-समय गाया जानेवाला गीत।

संझा†–संज्ञा स्त्री० संध्या। शाम।

सँझोख*–संज्ञा स्त्री० संध्या का समय। शाम का वक्त।

संड–संज्ञा पुं० साँड़।

संडमुसंड–वि० खूब मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। खूब तगड़ा।

संड़सा–संज्ञा पुं० [स्त्री० सँड़सी] लोहे का एक औजार, जिससे गरम या कसी हुई चीजें पकड़ते हैं।

संडा–वि० हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा।

संडास–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पाखाना, जो गहरा गड्ढा खोदकर बनाया जाता है। शौच-कूप।

संत–संज्ञा पुं० १. साधु-संन्यासी। महात्मा। २. ईश्वर-भक्त। धार्म्मिक पुरुष।

संतत–अव्य० १. सदा। हमेशा। २. लगातार।

संतति–संज्ञा स्त्री० लड़के-लड़कियाँ या बाल-बच्चे। संतान। औलाद।

संतपन–संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह तपने की क्रिया। २. बहुत संताप या दुःख देना। ३. संत होने का भाव। साधुता।

संतप्त–वि० खूब तपा हुआ। दुखी। पीड़ित।

संतरण–संज्ञा पुं० अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया।

संतरा–संज्ञा पुं० [पुर्त्त० संगतरा] एक तरह की नारंगी।

संतरी–संज्ञा पुं० [अंग्रे०–सेंटरी] १. पहरा देनेवाला सिपाही। २ पहरेदार। द्वारपाल।

संतान–संज्ञा पुं० और स्त्री० बाल-बच्चे। किसी के लड़के-लड़कियाँ। औलाद। संतति।

संताप–संज्ञा पुं० १. ताप। जलन। आँच। २. दुःख। मानसिक कष्ट।

संतापन–संज्ञा पुं० १. संताप देना। सताना। दुःख या कष्ट देना। २. कामदेव के बाणों में से एक।

संतापना*†–क्रि० स० संताप देना। सताना। दुःख देना।

संतापित–वि० दे० "संतप्त"। पीड़ित। सताया गया। दुखी।

संतापी–संज्ञा पुं० संताप देनेवाला। सतानेवाला। दुःख या पीड़ा देनेवाला।

संती‡–अव्य० बदले में। एवज में।

संतुलन–संज्ञा पुं० १. तौल या भार बराबर और ठीक करना। २. दो पक्षों का बल बराबर होना या बराबर रखना।

संतुष्ट–वि० जिसे संतोष हो गया हो। जिसकी इच्छा पूर्ण या शान्त हो चुकी हो। जिसका जी भर गया हो। तृप्त।

संतुष्टि–संज्ञा पुं० संतोष। सब्र।

संतुष्टीकरण–संज्ञा पुं० दे० "तुष्टीकरण"। किसी को सन्तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

संतोख–संज्ञा पुं० दे० "संतोष"।

संतोष–संज्ञा पुं० १. सब्र। किसी बात की इच्छा न करना और जो कुछ उसके पास है, उसी से प्रसन्न रहना। मन की शान्ति। किसी बात की चिन्ता न होना। २. जी भर जाना। तृप्ति।

संतोषना*†–क्रि० स० संतोष दिलाना। संतुष्ट करना।

क्रि० अ० संतुष्ट होना।

संतोषित–वि० दे० "संतुष्ट"।

संतोषी–संज्ञा पुं० संतोष करनेवाला। सब्र करनेवाला। सन्तुष्ट।

संत्रस्त–वि० १. डरा हुआ। भयभीत। २. पीड़ित। सताया गया। जिसे कष्ट पहुँचा हो। ३. घबराया हुआ। व्याकुल।

संथा–संज्ञा स्त्री० एक बार में पढ़ाया हुआ पाठ। सबक।

संद–संज्ञा पुं० १. दरार। छेद। २. दबाव। चंद्रमा।

संदंश–संज्ञा पुं० १. चिमटी। सँड़सी। २. चीर-फाड़ के समय काम आनेवाली एक विशेष प्रकार की छोटी चिमटी।

संदर्प–संज्ञा पुं० १. दर्प। घमंड। २. शेखी।

संदर्भ–संज्ञा पुं० १. रचना। २. विस्तार।

३. तरतीब। विन्यास। ४. सुसंगत या सम्बद्ध। ५. वह पुस्तक, जिसमें अनेक प्रकार की बातों का संग्रह हो। ६. वह ग्रंथ, जिसमें अन्य ग्रंथ के गूढ़ वाक्यों का स्पष्टीकरण या व्याख्या की गई हो। ७. निबंध। लेख।

संदर्शन–संज्ञा पुं० १. टकटकी लगाकर देखना। २. अच्छी तरह से देखना।

संदल–संज्ञा पुं० चंदन।

संदली–वि० चंदन का। संदल के रंग का। हलका पीला (रंग)।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका पीला रंग। २. घोड़े की एक जाति। ३. एक प्रकार का हाथी।

संदिग्ध–वि० [संज्ञा संदिग्धता] १. जिसमें संदेह हो। संदेहपूण। अनिश्चित। २. जिस पर सदेह हो।

संदिग्धता–संज्ञा स्त्री० १. संदिग्ध होने का भाव। संदेह। अनिश्चय। २. अलंकार-शास्त्रानुसार एक दोष। किसी उक्ति का ठीक-ठीक अर्थ प्रकट न होना।

संदीपन–संज्ञा पुं० [वि० संदीपक] १. उद्दीप्त या उत्तेजित करने की क्रिया। उद्दीपन। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ३. कृष्ण के गुरु का नाम।
वि० उद्दीपन या उत्तेजना करनेवाला।

संदूक–संज्ञा पुं० [अ०] बक्स। लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई चौकोर पेटी।

संदूकचा–संज्ञा पुं० छोटा संदूक।

संदूकड़ी–संज्ञ स्त्री० छोटा सदूक।

संदेश–संज्ञा पुं० १. समाचार। खबर। हाल। २. किसी के नाम कही गई विशेष बात। किसी के पास कहलाया या लिखकर भेजा हुआ समाचार। ३. एक प्रकार की बँगला मिठाई।

सँदेसा–संज्ञा पुं० १. दे० "संदेश"। २. जबानी कहलाया हुआ समाचार। खबर। हाल।

संदेसी–संज्ञा पुं० सँदेसा ले जानेवाला। दूत।

संदेह–संज्ञा पुं० १. शंका। शक। संशय। किसी के प्रति अविश्वास। २. एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है।

संदोह–संज्ञा पुं० झुंड। समूह।

संधना*–क्रि० अ० संयुक्त होना।

संधाता–संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु।

संधान–संज्ञा पुं० १. निशाना लगाना। २. धनुष पर बाण चढ़ाकर निशाना लगाने की क्रिया। ३. खोज। अन्वेषण। ४. मिलाना। दो चीजों को मिलाना। ५. सन्धि। ६. किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना। मेल मिलाना। ७. लेन-देन का हिसाब ठीक और पूरा करना। जमा-खर्च करना। ८. आसानी से न होनेवाले काम को ठीक तरह से करना।

संधानना†–क्रि० स० १. निशाना लगाना। धनुष पर बाण चढ़ाना या बाण छोड़ना। २. किसी अस्त्र का प्रयोग करने के लिए उसे ठीक करना।

संधि–संज्ञा स्त्री० १. मेल। संयोग। २. मिलने की जगह। जोड़। ३. शरीर में का जोड़, जहाँ दो या अधिक हड्डियाँ आपस में मिलती हों। गाँठ। ४. मैत्री। देशों या राज्यों में होनेवाली वह प्रतिज्ञा, जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है अथवा मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है। ५. व्याकरण में शब्दों का रूप-परिवर्त्तन, जो दो अक्षरों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से होता है। ६. एक अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के आरंभ के बीच का समय। ७. एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरंभ का समय। ८. चोरी आदि करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९. दो चीजों के बीच की खाली जगह। १०. अवकाश। ११. सीमा। १२. सीमा-रेखा या पंक्ति।

संध्या–संज्ञा स्त्री० १. शाम। सायंकाल। दिन और रात, दोनों के मिलने का समय। संधिकाल। २. एक विशेष प्रकार की उपासना, जो प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है।

संध्यावधू–संज्ञा स्त्री० रात।

संध्याराग–संज्ञा पुं० १. श्याम-कल्याण राग। २. सिंदूर।

संनिकट–संज्ञा पुं० पास। समीप।

संन्यास–संज्ञा पुं० हिन्दुओं के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम, जिसमें त्यागी और विरागी होकर किसी फल की इच्छा किए बिना सब काम किए जाते हैं।

संन्यासी–संज्ञा पुं० वैरागी। जिसने संन्यास ले लिया हो। संन्यास-आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

संपत्ति–संज्ञा स्त्री० १. धन। दौलत। जायदाद। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

संपद्–संज्ञा स्त्री० १. ऐश्वर्य्य। वैभव। गौरव। २. सौभाग्य। ३. सिद्धि-प्राप्ति। पूर्णता। ४. अधिकता। ५. किसी व्यापारिक संस्था (कम्पनी) आदि में अपने हिस्से के रूप में लगाई गई पूंजी। ६. ऐसी पूंजी (अंग्रे०–'स्टाक') का प्रमाणपत्र।

संपदा–संज्ञा स्त्री० १. धन। दौलत। संपत्ति। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

संपन्न–वि० १. भरा-पूरा। २. धनी। ३. पूरा किया हुआ। पूर्ण। ४. सहित। युक्त।

संपरीक्षक–संज्ञा पुं० संपरीक्षण या अच्छी तरह जाँच करनेवाला। (अंग्रे०–'स्क्रूटिनाइजर')।

संपरीक्षण–संज्ञा पुं० [अंग्रे०–स्क्रूटिनी] अच्छी तरह जाँचना। किसी चीज को अच्छी तरह जाँचकर यह देखना कि वह नियमानुसार है या नहीं।

संपर्क–संज्ञा पुं० [वि० संपृक्त] १. संबंध। लगाव। संसर्ग। वास्ता। २. मेल। आपस में अधिक जान-पहचान। संयोग। ३. स्पर्श। ४. मिश्रण।

संपर्कित–वि० दे० "संपृक्त"।

संपा–संज्ञा स्त्री० बिजली।

संपात–संज्ञा पुं० १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. मेल। संसर्ग। ३. समागम। संगम। ४. वह स्थान, जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या उसे काटती हुई आगे बढ़े। ५. कुदान। ६. पहुँच। ७. घटित होना। ८. शेष। बचा हुआ अंश।

संपाति–वि० एक साथ झपटनेवाला।
संज्ञा पुं० १. एक गीध, जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नामक राक्षस का एक पुत्र।

संपाती–दे० "संपाति"।

संपादक–संज्ञा पुं० १. कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २. तैयार करनेवाला। ३. किसी समाचारपत्र, मासिक पत्रिका या पुस्तक का क्रम तथा पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करनेवाला। (अंग्रे०–एडीटर)

संपादकत्व–संज्ञा पुं० संपादन करने का भाव या अवस्था।

संपादकीय–संज्ञा पुं० संपादक-द्वारा लिखित किसी समाचार-पत्र या मासिक पत्रिका आदि का अग्रलेख।
वि० १. संपादक का। २. संपादक-संबंधी।

संपादन–संज्ञा पुं० १. काम को पूरा करना। २. ठीक करना। ३. किसी पत्र-पत्रिका या पुस्तक आदि का क्रम, पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करना।

संपादित–वि० १. पूरा किया हुआ। २. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (पत्र-पत्रिका, पुस्तक आदि)

संपुट–संज्ञा पुं० १. फूल के दलों का ऐसा समूह, जिसके बीच में खाली जगह हो। कोश। २. पात्र के आकार की कोई वस्तु। ३. अंजलि। ४. दोना। ५. डिब्बा। ६. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूंकते हैं।

संपुटी–संज्ञा स्त्री० प्याली। कटोरी।

संपूर्ण–वि० १. खूब भरा हुआ। सब। पूरा। समस्त। २. समाप्त। खतम।
संज्ञा पुं० वह राग, जिसमें सातों स्वर लगते हों (सम्पूर्ण राग)।

संपूर्णतः–क्रि० वि० पूरी तरह से।

संपूर्णतया–क्रि० वि० पूरी तरह से।

संपूर्णता–संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण या पूरा होने का भाव। २. समाप्ति।

संपृक्त–वि० सम्बद्ध। जिससे सम्पर्क या सम्बन्ध हो। जिसका सम्पर्क हो।

सँपेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० सँपेरिन] १. साँप पालनेवाला। २. साँप का तमाशा दिखानेवाला। मदारी।

सँपोला–संज्ञा पुं० साँप का बच्चा।

संप्रज्ञा–संज्ञा पुं० पूर्ण रूप से जानना। विवेक या विवेचन करना।

संप्रज्ञात–संज्ञा पुं० योग में समाधि के दो प्रधान भेदों में से एक, जिसमें आत्मा अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।

संप्रति–अव्य० १. इस समय। अभी। आजकल। २. मुकाबले में। ३. ठीक तौर पर।

संप्रदान–संज्ञा पुं० १. पूरी तरह से दे देना। दान देने की क्रिया या भाव। दान। २. भेंट। उपहार। ३. किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। ४. दीक्षा। मंत्रोपदेश। ५. व्याकरण में एक कारक, जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न 'को' है।

संप्रदाय–संज्ञा पुं० [वि० सांप्रदायिक] १ कोई विशेष धर्म-संबंधी मत। २. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। पंथ। फिरका। ३. परिपाटी। रीति। चाल।

संप्राप्त–वि० [संज्ञा संप्राप्ति] १. पाया हुआ। प्राप्त। २. घटित। जो हुआ हो। ३. पहुँचा हुआ। उपस्थित।

संप्राप्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। प्राप्त होने या पाने का भाव। २. उपस्थिति। ३. घटित होना।

संप्रेक्षक–संज्ञा पुं० १. संप्रेक्षण या जाँच करनेवाला। २. आय-व्यय के हिसाब की जाँच करनेवाला।

संप्रेक्षण–संज्ञा पुं० १. जाँच। खूब अच्छी तरह देखना। २. आय-व्यय आदि के हिसाब की जाँच करने का काम। आय-व्यय-निरीक्षण।

संप्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० दे० "संप्रेक्षण"।

संपोषण–संज्ञा पुं० [वि० संपोषित] अच्छी तरह पालन-पोषण करना।

संबंध–संज्ञा पुं० १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। लगाव। संपर्क। वास्ता। २. नाता। रिश्ता। ३. मेल। संयोग। ४. विवाह। विवाह का निश्चय या सगाई। ५. व्याकरण में एक कारक, जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध सूचित होता है। इसका चिह्न पुंल्लिग शब्दों से सम्बन्ध होने पर 'का' और स्त्रीलिंग शब्दों से 'की' है। जैसे मोहन का घोड़ा, मोहन की किताब।

यौ०—सम्बन्ध में=बारे में। विषय में।

संबंधी–वि० [स्त्री० संबंधिनी] १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. विषयक। संज्ञा पुं० वह, जिससे सम्बन्ध या नाता हो। रिश्तेदार। नातेदार।

संबद्ध–वि० १. जुड़ा या बँधा हुआ। मिला हुआ। संयुक्त। २. जिससे सम्बन्ध हो या जिससे सम्बद्ध हुआ हो। जिसका किसी के साथ सम्बन्ध लगा हो।

संबल–संज्ञा पुं० १. रास्ते का भोजन। पाथेय। २. सफर-खर्च। ३. वह साधन या सामान आदि, जिसके सहारे कोई काम किया जाय। ४. यात्रा की सामग्री और व्यय के लिए धन।

संबुद्ध–संज्ञा पुं० १. ज्ञानी। जाग्रत। २. जाना हुआ। ज्ञात।

संबोधन–संज्ञा पुं० [वि० संबोधित, संबोध्य] १. पुकारना। २. जगाना। ३. जताना। विदित कराना। ४. समझाना-बुझाना। ५. किसी के नाम कोई बात कहना। (अंग्रे०—"एड्रेस")। ६. व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का प्रयोग किसी को पुकारने या बुलाने के लिए सूचित होता है। जैसे—हे राम!

संबोधना*–क्रि० स० समझाना-बुझाना। सांत्वना देना।

संभरण–संज्ञा पुं० भरण-पोषण या परवरिश का सामान या उसके लिए इन्तजाम।

संभरणविधि–संज्ञा स्त्री० १. भरण-पोषण या

परवरिश के लिए जमा धन। २. नौकरी से अवकाश ग्रहण करने या बुढ़ापे के समय किसी के भरण-पोषण के लिए जमा किया जानेवाला धन। ३. वह कोष, जिसमें यह धन जमा किया जाय। (अंग्रे०-प्राविडेण्ट फंड)

सँभरना*†–क्रि० अ० दे० "सँभलना"।

सँभलना–क्रि० अ० १. किसी सहारे पर रुका रह सकना। २. किसी बोझ आदि को थामे रह सकना। ३. कार्य का भार उठाया जाना। ४. सावधान या होशियार होना। ५. चोट या हानि से बचाव करना। ६. स्वस्थ होना। चंगा होना।

संभव–वि० हो सकने योग्य। जो हो सके। मुमकिन।

संज्ञा पुं० १. होना। हो सकने योग्य होना। २. उत्पत्ति। जन्म। ३. मेल। संयोग।

संभवतः–अव्य० हो सकता है। शायद।

संभवना*–क्रि० अ० १. संबंध होना। २. हो सकना। ३. संभव होना। ४. उत्पन्न या पैदा होना।

क्रि० स० उत्पन्न करना।

संभवनीय–वि० दे० "संभव"।

संभार–संज्ञा पुं० १. तयारी। साज-सामान। २. संचय। इकट्ठा करना। ३. भंडार। वह स्थान, जहां एक ही तरह की बहुत-सी चीजें इकट्ठी की गई हों या बेचने के लिए रखी गई हों। ४. धन। संपत्ति। ५. पालन। पोषण। ६. समूह। ७. अधिकता।

सँभार†*–संज्ञा पुं० दे० "सँभाल"। १. देख-रेख। खबरदारी। २. पालन-पोषण। ३. वश या काबू में रखने का भाव। ४. रोक। निरोध। ५. तन-बदन की सुध।

सँभारना†*–क्रि० स० दे० "सँभालना"।

सँभाल–संज्ञा स्त्री० १. भार। देखरेख। २. रक्षा। हिफाजत। निगरानी। ३. सुधि। ४. तन-बदन की सुध। ५. पालन-पोषण या देख-रेख का भार। प्रबन्ध।

सँभालना–क्रि० स० १. भार ऊपर ले सकना। २. रोके रहना। वश या काबू में रखना। ३. गिरने न देना। थामना। ४. बचाना। रक्षा या हिफाजत करना। ५. बुरे रास्ते या बुरी दशा में जाने से रोकना। ६. निर्वाह करना। चलाना। ७. पालन-पोषण या परवरिश करना। ८. देखरेख करना। निगरानी करना। ९. सहेजना। ठीक तरह से रखना। प्रबन्ध करना। १०. कोई चीज ठीक है या नहीं, इसका इतमीनान कर लेना।

सँभाला–संज्ञा पुं० मरने से पहले कुछ होश-सा आना।

सँभालू–संज्ञा पुं० सफेद सिंधुवार पेड़। मेवड़ी।

संभावना–संज्ञा स्त्री० १. हो सकना। मुमकिन होना। हो सकने की उम्मीद। २. कल्पना। अनुमान। ३. एक अलंकार, जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है।

संभावित–वि० १. जिसके होने की सम्भावना हो। संभव। मुमकिन। २. कल्पित। मन में माना हुआ। जुटाया हुआ।

संभाव्य–वि० हो सकने योग्य। संभव। मुमकिन।

संभाव्यतः–क्रि० वि० जिसके हो सकने की आशा की जा सकती हो। सम्भवतः।

संभाषण–संज्ञा पुं० [वि० सम्भाषणीय, संभाषित, संभाष्य] बातचीत। कथोपकथन।

संभाषित–वि० अच्छी तरह कहा हुआ।

संभाषी–वि० [स्त्री० संभाषिणी] कहने-वाला। बोलनेवाला।

संभाष्य–वि० बातचीत करने योग्य। जिससे बातचीत करना उचित हो।

संभूत–वि० [संज्ञा संभूति] १. एक साथ पैदा होनेवाले। २. उत्पन्न। पैदा। ३. सहित।

संभूय–अव्य० एक साथ। साझे में।

संभूय-समुत्थान–संज्ञा पुं० साझे का कारबार।

संभोग–संज्ञा पुं० १. सुखपूर्वक उपभोग। अच्छी तरह भोग या व्यवहार। २. मैथुन। ३. मिलन। संयोग। ४. प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप। ५ पुरुष-स्त्री का समागम।

संभोगी–वि० संभोग करनेवाला।

संभ्रम–संज्ञा पुं० १. भ्रम। मतिभ्रम। २.

घबराहट। व्याकुलता। ३. सहम। सिट-पिटाना। ४. आदर। सम्मान। ५. उत्कंठा। ६. शौक। हौसला। ७. घूमना। चक्कर।

संभ्रांत–वि० १. घुमाया हुआ। २. घबराया हुआ। व्याकुल। बेचैन। उद्विग्न। ३. भ्रम में पड़ा हुआ। मतिभ्रम। ४. सम्मानित।

संभ्राजना*–क्रि० अ० अच्छी तरह शोभा देना। पूरी तरह से सुशोभित होना।

संमत–वि० दे० "सम्मत"।

संयत–वि० १. दबाव में रखा हुआ। वशीभूत। २. रोका हुआ। बंद किया हुआ। बद्ध। बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। ३. क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ४. जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। निग्रही। ५. उचित सीमा के भीतर।

संयम–संज्ञा पुं० [वि० संयमी, संयमित, संयत] १. रोक। किसी वस्तु को वश में रखना या बाँधना। बंद करना या रोक रखना। २. इंद्रियों को वश में रखना। इंद्रिय-निग्रह। ३. मन की वासनाओं को रोकना। चित्तवृत्ति का निरोध। ४. हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज। ५. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

संयमन–संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

संयमनी–संज्ञा स्त्री० यमपुरी।

संयमी–वि० १. संयम करनेवाला। २. मन और इंद्रियों को वश में रखनेवाला। आत्म-निग्रही। योगी। ३. हानिकारक वस्तुओं से परहेज रखनेवाला।

संयुक्त–वि० १. साथ जुड़ा हुआ। मिला हुआ। संबद्ध। २. सहित। साथ। पूर्ण। ३. साथ रहकर या मिलकर काम करनेवाला। जैसे—संयुक्त सचिव (अंग्रे०–ज्वाइण्ट सेक्रेटरी)।

संयुक्तक–संज्ञा पुं० किसी पत्र आदि के साथ जुड़ा हुआ दूसरा पत्र या कोई कागज आदि।

संयुक्तराष्ट्र-संघ–संज्ञा पुं० राष्ट्रों का संघ। द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्वशान्ति के उद्देश्य से संघटित राष्ट्रों का संघ, जिसकी अनेक शाखाएँ हैं। (अंग्रे०–यूनाइटेड नेशन्स आर्गनाइजेशन=यू० एन० ओ०।)

संयुक्ता–संज्ञा स्त्री० १. कन्नौज के राजा जयचन्द की कन्या, जिसका अपहरण पृथ्वी-राज ने स्वयंवर में से किया था। २. एक छंद का नाम।

संयुग–संज्ञा पुं० १. संयोग। मेल। मिलाप। २. युद्ध। लड़ाई (संस्कृत में)।

संयुत–वि० १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। संयुक्त। सम्बद्ध। एक साथ लगा हुआ। २. सहित। साथ।

संज्ञा पुं० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।

संयोग–संज्ञा पुं० १. मिलन। प्रेमी और प्रेमिका का एक साथ रहना। वियोग का उलटा। २. लगाव। सम्बन्ध। ३. समागम। सहवास। ४. विवाह-संबंध। ५. योग। जोड़। मीजान। ६. दो या कई बातों का इकट्ठा होना। ७. इत्तफाक। दैवयोग। आकस्मिक घटना। अकस्मात्। ८. अवसर। मौका।

मुहा०–संयोग से=इत्तफाक से। अकस्मात्।

संयोगी–संज्ञा पुं० [स्त्री० संयोगिनी] १. अपनी प्रेमिका के साथ रहनेवाला पुरुष। २. मिलनेवाला। मिला हुआ। ३. संयोग करनेवाला। ४. विवाहित व्यक्ति।

संयोजक–संज्ञा पुं० १. जोड़नेवाला। मिलाने-वाला। २. व्याकरण में वह शब्द, जो दो शब्दों या वाक्यों के बीच में केवल जोड़ने के लिए आता है। योजना करनेवाला। आयो-जन या व्यवस्था करनेवाला। सभा-समिति का वह मुख्य सदस्य, जो उसकी बैठक बुलाने और उसके अध्यक्ष की तरह उसका काम चलाने आदि के लिए नियुक्त होता है।

संयोजन–संज्ञा पुं० [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित] जोड़ने या मिलाने की क्रिया। आयोजन। व्यवस्था। सहवास।

संयोजना–संज्ञा स्त्री० व्यवस्था। इन्तजाम। मेल। मिलान।

संयोजित–वि० मिलाया या जोड़ा हुआ।

सँयोना*–क्रि० स० दे० "सँजोना"।

संरक्षक–संज्ञा पुं० [स्त्री० संरक्षिका] १.

रक्षा करनेवाला। रक्षक। २. देख-रेख और पालन-पोषण करनेवाला। अभिभावक। आश्रय देनेवाला। (अंग्रे०—'पेट्रन')

संरक्षण—संज्ञा पुं० [वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय] १. रक्षा। बचाव। हिफाजत। हानि या नाश आदि से बचाने का काम। २. आश्रय। देखरेख और भरण-पोषण। ३. अधिकार। कब्जा। ४. रोक। ५. किसी बड़े राज्य का किसी छोटे राज्य पर उसकी रक्षा आदि के विशष अधिकार या नियंत्रण। ६. उद्योग-व्यापार आदि की रक्षा।

संरक्षित—वि० १. जिसकी रक्षा अच्छी तरह की गई हो। रक्षित। बचाया हुआ। २. अपने सरक्षण या देखरेख में लिया हुआ। अच्छी तरह बचाकर रखा हुआ। सँभालकर या हिफाजत से रखा हुआ।

संरम्भ—संज्ञा पुं० १. मानसिक आवेश। २. उत्कंठा। ३. लालसा। ४. जोश। क्रोध।

संराधन—संज्ञा पुं० १. पूजा करके प्रसन्न करना। २. सेवा करना। सब प्रकार की सेवा करना। ३. चिन्तन करना। एकाग्र चिन्तन। ४. मन का पूर्ण एकाग्र होना।

संराव—संज्ञा पुं० १. ध्वनि। शब्द। २. पक्षियों का शब्द।

संरोदन—संज्ञा पुं० १. बहुत अधिक शोक करना। २. एक साथ विलाप करना।

संलक्ष्य—वि० १. अच्छी तरह दिखाई पड़नेवाला। २. निशाना लगान योग्य।

संलग्न—वि० १. साथ जुड़ा हुआ। सम्बद्ध। २. गुँथा हुआ। मिला हुआ।

संलाप—संज्ञा पुं० १. बातचीत। कथोपकथन। २. नाटक में एक प्रकार का कथोपकथन, जिसमें धीरता होती है।

संलापक—संज्ञा पुं० १. संलाप या बातचीत करनेवाला। २. एक प्रकार का उपरूपक।

संलेख—संज्ञा पु० नियमानुसार लिखा हुआ। ठीक और प्रामाणिक लेख।

संलोभन—संज्ञा पुं० दे० "प्रलोभन"।

संवत्—संज्ञा पुं० (संवत्सर का छोटा रूप) वर्ष। साल। सन्। महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई वर्ष-गणना (विक्रम संवत्)। इस वर्षगणना को हिन्दू मानते हैं, इसलिए इसे हिन्दुओं की वर्षगणना या हिन्दवी सन् कह सकते हैं। जैसे ईसाइयों का ईसवी सन्। यह गणना ईसवी सन् से ५८ वर्ष पहले प्रारम्भ की गई थी। ईसवी सन् में ५७ जोड़ देने से संवत् और बीते हुए संवत् में से ५७ घटा देने पर ईसवी सन् मालूम हो जाता है।

संवत्सर—संज्ञा पुं० १. वर्ष। साल। २. विक्रम-संवत् का एक वर्ष। संवत्।

सँवर—सज्ञा स्त्री० १. स्मरण। याद। २. हाल। खबर।

संज्ञा पु० १. रोक। परिहार। २. इन्द्रिय-निग्रह ३. बाँध। ४. पुल। ५. चुनना।

संवरण—संज्ञा पुं० [वि० संवरणीय, संवृत] १ विचार या इच्छा को दबाना या रोकना। निग्रह। जैसे, लोभ का संवरण। २. हटाना। दूर रखना। ३. बंद करना। ४. ढाकना। ५. छिपाना। ६. परदा या ढक्कन। ७. पसंद करना। चुनना। ८. कन्या का अपने विवाह के लिए पति चुनना। ९. अन्त करना। जैसे, जीवन-लीला का संवरण।

संवरना—क्रि० अ० १. सजना। बनना-ठनना। अलंकृत होना। २. दुरुस्त या ठीक होना। *क्रि० स० स्मरण करना।

सँवरिया—वि० दे० "साँवला"।

संवर्द्धक—संज्ञा पुं० बढ़ानेवाला।

संवर्द्धन—संज्ञा पुं० [वि० संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध] १. बढ़ना। २. बढ़ाना। ३. पालना। पोसना।

संवाद—संज्ञा पुं० १. समाचार। खबर। हाल। २. बात-चीत। कथोपकथन। ३. प्रसंग। चर्चा। ४. सहमति। रजामन्दी। ५. नियुक्ति। ६. मुकदमा। विवाद।

संवाददाता—संज्ञा पुं० १. संवाद या समाचार देनेवाला। खबर देनेवाला। २. समाचार-पत्र में छपने के लिए किसी विशेष स्थान या क्षेत्र के समाचार भेजनेवाला। (अंग्रे०—'करेसपाण्डेण्ट')

संवादी—वि० [स्त्री० संवादिनी] १. संवाद या बातचीत करनेवाला। २. सहमत या अनुकूल होनेवाला। मेल में होनेवाला। जैसे, संवादी-स्वर।
संज्ञा पुं० संगीत में वह स्वर, जो सब स्वरों के साथ मिलता और सहायक होता है।

सँवार—संज्ञा पुं० शब्दों के उच्चारण में वह बाह्य प्रयत्न, जिसमें कंठ कुछ सिकुड़ता है।
संज्ञा स्त्री० १. सँवारने की क्रिया या भाव। २. खबर। हाल। ३. एक तरह की गाली या शाप—जैसे तुम पर खुदा की सँवार।

संवारण—संज्ञा पुं० १. हटाना। दूर करना। २. रोकना। निषेध करना। ३. छिपाना।

सँवारना—क्रि० स० १. सजाना। २. दुरुस्त करना। गलतियों को ठीक करना। काम ठीक करना। ३. क्रम से रखना।

संवास—संज्ञा पुं० [वि० संवासित] १. सुगन्ध। खुशबू। महक। २. मुँह से साँस के साथ निकलनेवाली दुर्गंध। ३. वासस्थान या घर। ४. सार्वजनिक निवासस्थान।

संवाहन—संज्ञा पुं० [वि० संवाहनीय, संवाहित, संवाही, संवाह्य] १. उठाकर ले चलना। ढोना। ले जाना। २. पहुँचाना। ३. चलाना। परिचालन।

संविद्—संज्ञा स्त्री० १. ज्ञानशक्ति। चेतना। बोध। २. समझ। बुद्धि। ज्ञान। अच्छी तरह जानना। ३. संवेदन। ४. अनुभव करना। अनुभूति। ५. सवाद। वृत्तांत। हाल। ६. संज्ञा। नाम। ७. संपत्ति। जायदाद। ८. आपस में समझौता। दे० "संविदा"। ९. युद्ध।

संविद—वि० जिसमें चेतना या ज्ञान हो। चेतन। सज्ञान।

संविदा—संज्ञा स्त्री० कुछ निश्चित शर्तों पर दो या दो से अधिक पक्षों के बीच होनेवाला समझौता। (अंग्रे०—काण्ट्रैक्ट)

संविदा-पत्र—संज्ञा पुं० वह पत्र या कागज, जिस पर संविदा की शर्तें लिखी गई हों। ठेकानामा।

संविदा-अधिविधि—संज्ञा स्त्री० संविदा (ठेके या लेन-देन) से सम्बन्ध रखनेवाली नियमावली या कानून।

संविदा-विधान—वह कानून, जिसमें संविदा (ठेके, लेन-देन या समझौते आदि) करने के नियमों की व्यवस्था हो (अंग्रे०—ला आफ काण्ट्रेक्ट)।

संविधा—संज्ञा स्त्री० १. प्रबन्ध या व्यवस्था करना। २. निश्चय करना। ३. नियम बनाना। ४. निर्देश या आदेश देना। ५. रहन-सहन का तरीका।

संविधान—संज्ञा पुं० १. किसी देश, राज्य या संस्था के संघटन और संचालन की व्यवस्था के लिए बनाया गया विधान या कानून। (अंग्रे०—कान्स्टिट्यूशन)। २. प्रबन्ध। व्यवस्था। ३. नियम। ४. रीति।

संविधान-परिषद्—संज्ञा स्त्री० किसी देश या राज्य के शासन की नियमावली आदि बनाने के लिए संघटित परिषद् या सभा। (अंग्रे०—कान्स्टिट्यूएण्ट एसेम्बली)।

संविधान-सभा—संज्ञा स्त्री० दे० "संविधान-परिषद्"।

संवृत—वि० १. ढका हुआ। २. छिपा या छिपाया हुआ। ३. घिरा या घेरा हुआ। ४. अलग किया हुआ। रक्षित।

संवृद्धि—संज्ञा स्त्री० १. पूर्ण रूप से वृद्धि। पूरा विकास। २. शक्ति। उन्नति। समृद्धि।

संवेद—संज्ञा पुं० १. ज्ञान। बोध। समझ। २. अनुभव। वेदना।

संवेदन—संज्ञा पुं० [वि० संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य] १. अनुभव करना। २. सुख-दुःख आदि का अनुभव करना। ३. जानना। ४. ज्ञान। जताना। प्रकट करना।

संवेदनसूत्र—संज्ञा पुं० पूरे शरीर में तन्तुओं का वह जाल, जिससे कष्ट, पीड़ा, सुख, गर्मी, सर्दी का अनुभव होता है।

संवेदना—संज्ञा स्त्री० १. सहानुभूति। किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुख। २. मन में होनेवाला बोध। अनुभव। ३. दे० "संवेदन"।

संवेदनीय, संवेद्य—वि० १. अनुभव करने योग्य। समझने लायक। २. बोध करने

या करानें योग्य। जताने योग्य। बताने लायक।

संशय—संज्ञा पुं० १. संदेह। अनिश्चय। २. आशंका। डर।

संशयात्मक—वि० जिसमें संदेह हो। संदिग्ध।

संशयात्मा—संज्ञा पुं० किसी बात पर विश्वास न करनेवाला। शक करनेवाला। शक्की।

संशयालु—वि० संदेह या शक करनेवाला। दे० "संशयी"।

संशयी—वि० १. संशय या संदेह करनेवाला। २. शक्की।

संशुद्ध—वि० पूरी तरह से शुद्ध किया हुआ। जिसका संशोधन हो चुका हो। संशोधित।

संशोधक—संज्ञा पुं० १. संशोधन करनेवाला। सुधारनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। पूरी तरह से शुद्ध करनेवाला। २. चुकता या अदा करनेवाला (संस्कृत में)।

संशोधन—संज्ञा पुं० [वि० संशोधनीय, संशोधित, सशुद्ध, सशोध्य] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. सुधारना। दुरुस्त या ठीक करना। ३. प्रस्ताव आदि में कुछ घटाने-बढ़ाने या सुधार करने का सुझाव। (अंग्रे०—एमेण्डमेण्ट) ४. चुकता करना। अदा करना (ऋण आदि)।

संशोधित—वि० १. शुद्ध किया हुआ। २. सुधारा हुआ।

संश्रय—संज्ञा पुं० १. मेल। सयोग। २. लगाव। ३. शरण। आश्रय। ४. सहारा। ५. घर।

संश्रयण—संज्ञा पुं० [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, सश्रित] १. शरण लेना। २. सहारा लेना।

संश्रित—वि० १. शरण में आया हुआ। शरणागत। २. दूसरे के सहारे रहनेवाला। आश्रित। ३. लगा या सटा हुआ।

संश्लिष्ट—वि० १. एक साथ सटा या जुड़ा हुआ। मिला हुआ। सम्मिलित। २. मिश्रित। गड्ड-बड्ड।

संश्लेषण—संज्ञा पुं० [वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट] १. एक में मिलाना। सटाना। २. मिलान करना। विश्लेषण का उल्टा। ३. कार्य के कारण, नियम या सिद्धान्त आदि से उनके फल का विचार करना।

संस, संसइ*—संज्ञा पुं० दे० "संशय"।

संसक्त—वि० १. लग्न। लीन। अनुरक्त। प्रवृत्त। २. सम्बद्ध। किसी सीमा के साथ सटा या जुड़ा हुआ।

संसक्ति—संज्ञा स्त्री० १. लगन। लीनता। प्रवृत्ति। २. सम्बद्ध। लगाव। ३. एक ही तरह के पदार्थ या तत्त्व का आपस में मिलकर एक हो जाना। ४. किसी सीमा के साथ सटे या जुड़े होने का भाव।

संसद्—संज्ञा स्त्री० देश या राज्य के शासन के लिए कानून बनानेवाली सभा, जिसके सदस्य प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं।

संसरण—संज्ञा पुं० [वि० संसरणीय, संसरित, संसृत] १. सरकना। चलना। २. एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने की परम्परा। ३. संसार। ४. रास्ता। ५. युद्ध का आरम्भ (संस्कृत में)।

संसर्ग—संज्ञा पुं० १. संग। साथ। २. संबंध। लगाव। ३. मेल। मिलाप। ४. स्त्री-पुरुष का सहवास।

संसर्ग-दोष—संज्ञा पुं० किसी के साथ रहने से पैदा होनेवाली बुराई या दोष।

संसर्ग-रोध—संज्ञा पुं० १. संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ दिन तक कहीं अलग रखने का नियम या व्यवस्था (अँग्रे०—क्वारेण्टाइन)। २. इस काम के लिए अलग किया हुआ स्थान।

संसर्गी—वि० [स्त्री० संसर्गिणी] १. संसर्ग या लगाव रखनेवाला। २. सम्बन्ध या साथ रखनेवाला।

संसा*—संज्ञा पुं० दे० "संशय"।

संसार—संज्ञा पुं० १. दुनिया। जगत्। २. दुनिया भर के लोग। ३. गृहस्थी। माया-जाल। ४. बार-बार जन्म लेने की परम्परा। आवागमन। ५. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना।

संसार-यात्रा—संज्ञा स्त्री० १. जीवन। जिन्दगी। २. जीवन का निर्वाह। जिन्दगी बिताना।

संसारी—वि० [स्त्री० संसारिणी] १. संसार से सम्बन्ध रखनेवाला। लौकिक। २. दुनियावी। ३. बार-बार जन्म लेनेवाला। ४.

दुनिया के जंजाल में फंसा हुआ। ५. लोक-व्यवहार में कुशल। चतुर।

संसिक्त—वि० १. अच्छी तरह सींचा हुआ। २. खूब तर। बहुत गीला।

संसृति—संज्ञा स्त्री० १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। २. संसार। दुनिया।

संसृष्ट—वि० १. एक साथ उत्पन्न। २. एक में मिला-जुला। मिश्रित। शामिल। ३. संबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ४. संगृहीत।

संसृष्टि—संज्ञा स्त्री० १. एक साथ उत्पत्ति। २. मिलावट। मिश्रण। ३. लगाव। संबंध। ४. हेलमेल। घनिष्ठता। ५. संग्रह। इकट्ठा करना। ६. शामिल। ७. काव्य में दो या अधिक अलंकारों का ऐसा मेल, जिसमें सब अलग-अलग हों।

संस्करण—संज्ञा पुं० १. दोष दूर करके ठीक करना। शुद्ध करना। २. सुधारना। ३. नियमित संस्कार करना। ४. पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति (अंग्रे०—एडीशन)।

संस्कर्ता—संज्ञा पुं० संस्कार करनेवाला।

संस्कार—संज्ञा पुं० १. ठीक करना। सुधार। दुरुस्ती। २. साफ करना। परिष्कार। ३. शिक्षा, उपदेश, संग - साथ, खानदान या पिछले जन्म आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। ४. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। शुद्धि। ५. हिन्दुओं के १६ कृत्य या संस्कार, जो जन्म से लेकर मरण-काल तक के संबंध में आवश्यक होते हैं। जैसे, यज्ञोपवीत-विवाह आदि। ६. मृतक की क्रिया। अन्त्येष्टि-क्रिया। ७. रुचि, आचार-विचार आदि को उन्नत या सुधार करने का कार्य।

संस्कारहीन—वि० जिसका संस्कार न हुआ हो।

संस्कृत—वि० १. शुद्ध किया हुआ। २. सँवारा हुआ। ३. परिष्कृत। साफ किया हुआ। ४. सुधारा हुआ। ५. जिसके यज्ञोपवीत आदि संस्कार हो चुके हों।

संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा। देववाणी।

संस्कृति—संज्ञा स्त्री० १. सभ्यता। २. रहन-सहन का तरीका। ३. संस्कार। ४. शुद्धि। सफाई। ५. सुधार। सजावट।

संस्था—संज्ञा स्त्री० १. किसी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिए संघटित समाज। मंडल। २. सभा। ३. जत्था। ४. व्यवस्था। ५. विधि। ६. मर्यादा। ७. व्यवसाय। ८. राजनीतिक या सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली कोई प्रथा, नियम या विधान।

संस्थान—संज्ञा पुं० १. साहित्य, कला, विज्ञान आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। २. ठहराव। स्थिति। ३. स्थापन। बैठाना। ४. खड़ा या डटा रहना। जमा रहना। ५. सम्यक् पालन। ६. जीवन। अस्तित्व। ७. बस्ती। ८. जनपद। ९. डेरा। घर। १०. आयोजन। ११. ढाँचा। १२. विन्यास। १३. प्रबन्ध। व्यवस्था। १४. दशा। १५. योग। जोड़। १६. समष्टि। १७. लोगों के इकट्ठे होने की जगह। सार्वजनिक स्थान।

संस्थापक—संज्ञा पुं० १. स्थापित करनेवाला। २. नई बात जारी करनेवाला। प्रवर्त्तक।

संस्थापन—संज्ञा पुं० १. स्थापित करना। २. नई बात चलाना। ३. भवन आदि खड़ा करना। ४. जमाना। बैठाना।

संस्मरण—संज्ञा पुं० १. ऐसा लेख, जिसमें कोई याददाश्त लिखी गई हो। किसी व्यक्ति के बारे में स्मरण या याद करनेवाली घटनाओं का उल्लेख। २. पूर्ण स्मरण। अच्छी तरह स्मरण करना या नाम लेना।

संस्मारक—संज्ञा पुं० स्मरण करानेवाला।

संहत—वि० १. खूब मिला हुआ। जुड़ा या सटा हुआ। संयुक्त। २. कड़ा। सख्त। ३. गठा हुआ। ४. घना। ५. मजबूत। ६. एकत्र। इकट्ठा। ७. आहत। घायल।

संहति—संज्ञा स्त्री० १. मेल। इकट्ठा होने की क्रिया या भाव। २. राशि। ढेर। समूह। झुंड। ३. ठोसपन। घनत्व। ४. संधि। जोड़।

संहनन–संज्ञा पुं० पूरा हनन या नाश कर देना।

संहरना–क्रि० अ० नष्ट होना। संहार होना। क्रि० स० संहार करना।

संहार–संज्ञा पुं० १. नाश। ध्वंस। २. समाप्ति। अन्त। ३. निवारण। परिहार। ४. कल्पान्त। प्रलय। ५. इकट्ठा करना। बटोरना। ६. गूँथना। ७. समेटकर बाँधना (चोटी)। ८. छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना।

संहारक–संज्ञा पुं० संहार करनेवाला। नाशक।

संहार-काल–संज्ञा पुं० प्रलय-काल।

संहारना–क्रि० स० १. मार डालना। २. नाश करना। ध्वंस करना।

संहित–वि० १. एकत्र किया हुआ। मिलाया हुआ। २. जुड़ा हुआ।

संहिता–संज्ञा स्त्री० १. मेल। २. मिलावट। ३. व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का मिलकर एक हो जाना। संधि। ४. वह ग्रंथ, जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। जैसे, धर्म-संहिताएँ या स्मृतियाँ। ५. वेदों का मंत्र-भाग।

सइ*–अव्य० १. से। २. साथ। ३. एक विभक्ति, जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सकट–संज्ञा पुं० दे० "शकट"। गाड़ी। छकड़ा।

सकत†–संज्ञा स्त्री० १. शक्ति। बल। २. सामर्थ्य। ३. वैभव। संपत्ति।
क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। भरसक।

सकता–संज्ञा स्त्री० शक्ति। ताकत। बल। सामर्थ्य।
संज्ञा पुं० १. बेहोशी की बीमारी। २. विराम। यति। ३. यति-भंग दोष (कविता में)।
मुहा०—सकता पड़ना=छंद में यति-भंग दोष होना।

सकती*–संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

सकपकाना–क्रि० अ० १. चकपकाना। २. हिचकना। ३. डर और आश्चर्य से उत्पन्न हिचक।

सकरना–क्रि० अ० सकारा जाना। स्वीकार या मंजूर होना। माना जाना।

सकरपाला–संज्ञा पुं० दे० "शकरपारा"।

सकरा–वि० दे० "सँकरा"।

सकर्मक–वि० १. कर्म से युक्त (व्याकरण में)। २. काम में लगा हुआ। क्रियाशील।

सकर्मक क्रिया–संज्ञा स्त्री० व्याकरण में वह क्रिया, जिसका कार्य्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे—लेना। देना। खाना।

सकल–वि० सब। समस्त। कुल।

सकलात–संज्ञा पुं० १. सौगात। भेंट। २. रजाई। दुलाई। ३. मखमल (कपड़ा)।

सकलाती–वि० १. भेंट में देने लायक। २. बहुत बढ़िया। ३. मखमल का। मखमली।

सकसकाना, सकसाना*†–क्रि० अ० डर के मारे काँपना। जुकाम में तबीअत भारी होना। अस्वस्थ होना।

सकाना*†–क्रि० अ० १. शंका या संदेह करना। हिचकना। २. डर आदि के कारण संकोच करना। ३. दुःखी होना।

सकाम–संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति, जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. फल मिलने की इच्छा से कोई काम करनेवाला। ३. जिसे कामवासना हो। कामी।

सकामी–संज्ञा पुं० वासनायुक्त। कामी। विषयी।

सकारना–क्रि० अ० १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले उस पर हस्ताक्षर करना।

सकारे†–क्रि० वि० सवेरे। जल्दी।

सकिलना†–क्रि० अ० १. फिसलना। सरकना। २. सिमटना।

सकुच*†–संज्ञा स्त्री० दे० "संकोच"। लाज। शर्म।

सकुचना–क्रि० अ० १. संकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। २. फूलों का बन्द होना। सिमटना। सिकुड़ना।

सकुचाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "संकोच"। लज्जा।

सकुचाना–क्रि० अ० संकोच करना। लज्जा करना।
क्रि० स० १. सिकोड़ना। २. लज्जित करना।
सकुची–संज्ञा स्त्री० कछुए के आकार की एक प्रकार की मछली।
सकुचीला–वि० संकोच करनेवाला। शर्मीला। लजीला।
सकुचीली–वि० लजानेवाली। लाजवंती। लजीली।
सकुचौंहाँ–वि० संकोच करनेवाला। लजीला।
सकुन*–संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन"। २. दे० "शकुंत" (चिड़िया)।
सकुनी*†–संज्ञा स्त्री० चिड़िया।
सकुपना*–क्रि० अ० दे० "सकोपना"।
सकुल्य–संज्ञा पुं० एक ही कुल या वंश का। सगोत्र।
सकूनत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रहने की जगह। निवासस्थान। २. पता।
सकृत्–अव्य० १. एक बार। २. सदा। ३. साथ।
सकेत*†–संज्ञा पुं० १. दे० "संकेत"। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निश्चित स्थान। ३ विपत्ति। दुःख। कष्ट। ४. तंग। कम जगह।
वि० तंग। संकुचित।
सकेतना*†–क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।
सकेलना†–क्रि० स० इकट्ठा करना। जमा करना।
सकोच–संज्ञा पुं० दे० "संकोच"।
सकोचना–क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"।
सकोपना*†–क्रि० अ० कोप या क्रोध करना। गुस्सा करना।
सकोरा–संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"। मिट्टी का एक प्रकार का कटोरा या प्याला।
सक्का–संज्ञा पुं० [अ०] भिश्ती।
सक्ति–संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।
सक्तु, सक्तुक–संज्ञा पुं० भुने हुए अनाज का आटा। सत्तू।
सक्र*–संज्ञा पुं० दे० "शक्र"। इंद्र।
सक्रारि*–संज्ञा पुं० दे० "शक्रारि"। मेघनाद (इन्द्र का शत्रु)।
सक्रिय–वि० [संज्ञा सक्रियता] जो कार्य के रूप में हो रहा हो। क्रियाशील। जिसमें कुछ करके दिखलाया जाय। जिसमें क्रिया भी हो। क्रिया के साथ।
सक्षम–वि० [संज्ञा सक्षमता] १. समर्थ। २. जिसमें क्षमता या सामर्थ्य हो। किसी काम को पूरी तरह करने योग्य या उसका अधिकारी।
सख–संज्ञा पुं० दे० "सखा"।
सखरस–संज्ञा पुं० मक्खन।
सखरा–संज्ञा पुं० १. दे० "सखरी"। कच्ची रसोई। २. निखरा का उलटा।
वि० खारा।
सखरी–संज्ञा स्त्री० कच्ची रसोई। जैसे–दाल-भात।
सखा–संज्ञा पुं० १. साथी। २. मित्र। दोस्त। ३. साहित्य में 'नायक' का सहचर। ये चार प्रकार के होते हैं—पाठमर्द, विट, चेट और विदूषक।
सखावत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. उदारता। २. दानशीलता।
सखी–संज्ञा स्त्री० १. सहेली। सहचरी। २. साहित्य में नायिका के साथ रहनेवाली स्त्री, जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे। ३. १४ मात्राओं का एक छंद।
सखीभाव–संज्ञा पुं० एक प्रकार की भक्ति, जिसमें भक्त अपने को इष्टदेवता की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना करते हैं।
सखुआ–संज्ञा पुं० दे० "शाल"। सागौन। एक प्रकार का पेड़ और उसकी लकड़ी।
सखुन–संज्ञा पुं० [फा०] १. बातचीत। वार्तालाप। २. वचन। कथन। उक्ति। ३. कविता। ४. काव्य।
सखुन-तकिया–संज्ञा पुं० [फा०] ऐसे शब्द, जो किसी के मुँह से बातचीत में बेजरूरत बार-बार निकलें। तकिया कलाम।
सख्त–वि० [फा०] १. कड़ा। कठोर। कठिन। मुश्किल। २. कठोर व्यवहार। ३. कड़ाई करनेवाला।
क्रि० वि० बहुत अधिक।
सख्ती–संज्ञा स्त्री० कड़ापन। कड़ाई। कठोरता (व्यवहार आदि के अर्थ में)।

सख्य–संज्ञा पुं० १. सखा का भाव। मित्रता। दोस्ती। २. एक प्रकार की भक्ति, जिसमें भक्त इष्टदेव को अपना सखा मानकर उसकी उपासना करता है।

सगण–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में एक गण, जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इसका रूप ।।ऽ है।

सग-पहती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

सगबग–संज्ञा पुं० चहल-पहल। हिलना-डुलना।

वि० १. सजग। चौकन्ना। २. सराबोर। तर-बतर। लथपथ। ३. भरा हुआ। परिपूर्ण।

क्रि० वि० चटपट। तेजी से। जल्दी से।

सगबगाना–क्रि० अ० १. सकपकाना। शंकित होना। २. हिलने-डुलने लगना। ३. सजग होना। चौकन्ना होना। ४. तरबतर होना। सराबोर होना। लथपथ होना।

सगर–संज्ञा पुं० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्य-वंशी राजा, जो बड़े धर्मात्मा और प्रजा-पालक थे। पुराण के अनुसार इनके ६० हजार पुत्र थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वंश के थे।

सगरा†–वि० [स्त्री० सगरी] सकल। सब। समस्त। सारा।

संज्ञा पुं० तालाब।

सगल †–वि० दे० "सकल"।

सगा–वि० [स्त्री० सगी] १. एक ही माता से उत्पन्न। सहोदर। २. जो संबंध में अपने ही कुल या खानदान का हो।

सगाई–संज्ञा स्त्री० १. विवाह का निश्चय। मँगनी। २. संबंध। नाता। रिश्ता। ३. छोटी जातियों में स्त्री-पुरुष का वह सम्बन्ध, जो विवाह न होने पर भी विवाह के समान माना जाता है।

सगापन–संज्ञा पुं० सगा होने का भाव। अपनापन। आत्मीयता।

सगारत†*–संज्ञा स्त्री० दे० "सगापन"।

सगुण–संज्ञा पुं० १. ईश्वर का साकार रूप। सत्व, रज और तम, तीनों गुणों से युक्त ईश्वर का रूप। साकार ब्रह्म। २. वह संप्रदाय, जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।

सगुन–संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन"। २. दे० "सगुण"।

सगुनाना–क्रि० स० १. शकुन बतलाना। २. शकुन निकालना या देखना।

सगुनिया–संज्ञा पुं० शकुन विचारने और बतलानेवाला।

सगुनौती–संज्ञा स्त्री० शकुन विचारने की क्रिया या भाव।

सगोती–संज्ञा पुं० १. दे० "सगोत्र"। एक गोत्र के लोग। २. भाई-बंधु।

सगोत्र–संज्ञा पुं० एक ही गोत्र के लोग। सजातीय।

सग्गड़–संज्ञा पुं० १. शकट। २. बोझ ढोने की एक प्रकार की गाड़ी। ठेला। (बिहार में घोड़े जुती गाड़ियों को सग्गड़ कहते हैं।)

सघन–वि० [संज्ञा सघनता] १. घना। गझिन। २. ठोस। ठस।

सघनता–संज्ञा स्त्री० सघन या घना होने का भाव।

सच–संज्ञा पुं० दे० "सत्य"।

वि० १. जो यथार्थ हो। २. जैसा हो वैसा ही कहा हुआ। वास्तविक या बिलकुल ठीक।

सचना*†–क्रि० स० १. संचय करना। बचा-कर रखना। २. इकट्ठा करना। पूरा करना।

क्रि० अ०, स० दे० "सजना"।

सचमुच–अव्य० १. सच में ही। निःसन्देह। ठीक-ठीक। वास्तव में। २. अवश्य। निश्चय।

सचरना*–क्रि० अ० १. संचरित होना। फैलना। २. संचार करना। ३. किसी वस्तु का बहुत अधिक व्यवहार में आना। ४. बहुत प्रचलित होना।

सचराचर–संज्ञा पुं० संसार के चर (चेतन) और अचर (जड़) सभी जीव तथा पदार्थ। समस्त संसार।

सचल–वि० [संज्ञा सचलता] चलने-फिरने-वाला। चलता हुआ। जो अचल न हो।

सचाई–संज्ञा स्त्री० १. सच होने का भाव। सत्यता। २. यथार्थता। वास्तविकता।
सचान–संज्ञा पुं० बाज चिड़िया।
सचारना*†–क्रि० स० सचरना का सकर्मक रूप। फैलाना।
सचिंत–वि० चिन्तित। जिसे चिंता हो।
सचिक्कण–वि० बहुत अधिक चिकना।
सचिव–संज्ञा पुं० १. मंत्री। वजीर। २. मित्र। दोस्त। ३. सहायक। ४. किसी विभाग का प्रधान, जो मंत्री के अधीन हो।
सचिवालय–संज्ञा पुं० किसी सरकार या बड़ी संस्था के मंत्रियों, सचिवों तथा विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय। (अंग्रे०–सेक्रेटेरियट)
सची–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।
सचु*†–संज्ञा पुं० १. सुख। आनंद। २. प्रसन्नता। खुशी।
सचेत–वि० १. चेतनायुक्त। चेतन। २. सावधान। होशियार।
सचेतक–संज्ञा पुं० १. सावधान करनेवाला। २. विधान-मंडलों में किसी पार्टी या दल का वह नेता, जो मतदान के विषय में सदस्यों को निर्देश देता है (अंग्रे०–ह्विप)।
सचेतन–संज्ञा पुं० १. जिसमें चेतना या ज्ञान हो। विवेकयुक्त। २. चेतन। जीवधारी।
वि० १. चेतनायुक्त। जो जड़ न हो। २. सचेत। सावधान। चतुर। ३. समझदार।
सचेष्ट–वि० १. जिसमें चेष्टा हो। चेष्टा करनेवाला। २. प्रयत्नशील। सजग। जो चेष्टा या प्रयत्न कर रहा हो।
सच्चरित, सच्चरित्र–वि० अच्छे चरित्र या चाल-चलनवाला। सदाचारी।
सच्चा–वि० [स्त्री० सच्ची] १. सच बोलनेवाला। सत्यवादी। २. यथार्थ। बिलकुल ठीक। वास्तविक। ३. असली। विशुद्ध।
सच्चाई–संज्ञा स्त्री० सच्चा होने का भाव। सत्यता।
सच्चापन–संज्ञा पुं० दे० "सच्चाई"।
सच्चिदानंद–संज्ञा पुं० (सत्, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा। ईश्वर।
छंद*–वि० दे० "स्वच्छंद"।
सज–संज्ञा स्त्री० १. सजावट। २. सजने की क्रिया। ३. रूप। ४. बनावट। गढ़न। ५. शोभा। सौन्दर्य।
सजग–वि० सावधान। सचेत। होशियार।
सज-धज–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सजावट। बनाव-सिंगार। ठाट-बाट।
सजन–संज्ञा पुं० [स्त्री० सजनी] १. सज्जन। भला आदमी। शरीफ। २. पति। ३. प्रियतम।
सजना–क्रि० अ० १. सुसज्जित होना। २. शृंगार करना।
क्रि० स० १. सजाया जाना। २. अलंकृत करना।
सजल–वि० [स्त्री० सजला] १. जल से युक्त। पानी से भरा हुआ। २. आँसुओं से भरे हुए (नेत्र)।
सजवाई–संज्ञा स्त्री० सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सजवाना–क्रि० स० दूसरे से सजाने का काम कराना।
सजा–संज्ञा स्त्री० [फा०] दंड। जेल में रखने का दंड।
सजाइ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सजा"।
सजाई–संज्ञा स्त्री० सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सजागर–वि० १. जागता हुआ। २. दे० "सजग"। होशियार।
सजाति, सजातीय–वि० एक ही जाति का। एक ही गोत्र का।
सजान*–संज्ञा पुं० १. जानकार। सज्ञान। २. चतुर। होशियार।
सजाना–क्रि० स० १. वस्तुओं को यथास्थान ऐसा रखना, जिसमें सुन्दरता बढ़े। २. तरतीब लगाना। यथाक्रम रखना। ३. शृंगार करना। सँवारना।
सजाय*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सजा"।
सजायाफ्ता, सजायाब–संज्ञा पुं० [फा०] जो कैद की सजा भोग चुका हो।
सजाव–संज्ञा पुं० एक प्रकार का दही, जो अच्छी तरह जम गया हो और जिस पर छाली पड़ी हो।

सजावट–संज्ञा स्त्री० १. सज्जित होने या सजाने का भाव। तैयारी। २. शोभा।

सजावन*†–संज्ञा पुं० सजाने या तैयार करने की क्रिया। सजावट।

सजावल–संज्ञा पुं० लगान या कर वसूलनेवाला कर्म्मचारी। जमादार। सिपाही।

सजावार–वि० [फा०] दंड पाने योग्य। दंडनीय। उचित। वाजिब।

सजीउ*†–वि० दे० "सजीव"।

सजीला–वि० [स्त्री० सजीली] १. सजा हुआ। सुंदर। मनोहर। २. सजधज के साथ रहनेवाला। छैला।

सजीव–वि० १. चेतन। प्राण-युक्त। जिन्दा। जीवित। २. जिसमें उत्साह या स्फूर्ति हो। जिसमें तेज या ओज हो।

सजीवता–संज्ञा स्त्री० सजीव होने का भाव।

सजीवन–संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी"।

सजीवन मूर, सजीवन मूल*–संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी"।

सजीवनी मंत्र–संज्ञा पुं० वह कल्पित मंत्र, जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि यह मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है।

सजुग*†–वि० दे० "सजग"। सचेत।

सजूरी–संज्ञा स्त्री० एक तरह की मिठाई।

सजोना†–क्रि० स० दे० "सजाना"।

सज्ज*–संज्ञा पुं० दे० "साज"। सजा हुआ। सुसज्जित।

सज्जन–संज्ञा पुं० १. भला आदमी। शरीफ। २. अच्छे स्वभाववाला। सभ्य व्यक्ति।

सज्जनता–संज्ञा स्त्री० सज्जन होने का भाव। भलमंसाहत। सौजन्य। शराफत।

सज्जनताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता"।

सज्जा–संज्ञा स्त्री० १. दे० "शय्या।" २. दे० "शय्यादान"। ३. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। ४. वेष-भूषा।

सज्जित–वि० १. सजा हुआ। सुशोभित। अलंकृत। २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त।

सज्जी–संज्ञा स्त्री० भूरे रंग का एक प्रसिद्ध क्षार (खारी मिट्टी), जिससे कपड़े, गहने आदि चीजें साफ की जाती हैं।

सज्जीखार–संज्ञा पुं० दे० "सज्जी"।

सज्ञान–वि० १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानयुक्त। २. चतुर। बुद्धिमान्।

सटक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सटकने की क्रिया या भाव। धीरे से खिसक जाना। चुपचाप चल देना। २. हुक्का पीने की लंबी लचीली नली। नैचा। ३. पतली लचनेवाली छड़ी।

सटकना–क्रि० अ० धीरे से खिसक जाना। चुपचाप चल देना। चंपत होना।

क्रि० स० बालों में से अनाज निकालना।

सटकाना–क्रि० स० छड़ी, कोड़े आदि से मारना।

सटकार–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सटकाने की क्रिया या भाव। गाय, बैल आदि को हाँकने की क्रिया। हटकार।

सटकारना–क्रि० स० [अनु०] छड़ी या कोड़े से मारना। सट-सट मारना। गाय, बैल आदि हाँकना।

सटकारा–वि० चिकना और लंबा (बाल)।

सटकारी–संज्ञा स्त्री० लचनेवाली छड़ी।

सटना–क्रि० अ० १. चिपकना। जुड़ना। दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना, जिसमें दोनों एक दूसरे से लग जायँ। २. मारपीट होना।

सटपटाना–क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना"।

सटरपटर–संज्ञा स्त्री० १. बखेड़े या उलझन का काम। २. किसी तरह काम में फँसा रहना। ३. कोई काम किसी तरह खत्म करना। वि० छोटा-मोटा। तुच्छ। मामूली।

सटसट–क्रि० वि० [अनु०] १. शीघ्र। जल्दी। २. सट-सट शब्द के साथ। सटासट। ३. लगातार।

सटाना–क्रि० स० १. मिलाना। २. दो चीजों को एक साथ जोड़ना।

सटीक–वि० १. बिलकुल ठीक। २. जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। व्याख्या सहित।

सटोरिया–संज्ञा पुं० दे० "सट्टेबाज"।

सट्टक–संज्ञा पुं० प्राकृत भाषा में रचा गया छोटा रूपक।

सट्टा–संज्ञा पुं० १. काश्तकारों में खेत के

साझे के बारे में होनेवाला समझौता। इकरारनामा। २. एक प्रकार का व्यापारिक जुआ, जिसमें वस्तुओं के बाजार-भाव को पहले से ही तेजी-मंदी के विचार से तय करके उन्हें खरीदा और बेचा जाता है। (अंग्रे०—स्पेक्यूलेशन)।

सट्टा-बट्टा—संज्ञा पुं० १. मेल-मिलाप। हेल-मेल। २. चालबाजी। ३. अनुचित सम्बन्ध।

सट्टी—संज्ञा स्त्री० वह बाजार, जिसमें एक ही मेल की चीजें निश्चित समय पर बिकती हैं। हाट।

सट्टेबाज—संज्ञा पुं० [स्त्री० सट्टेबाजी] १. बाजार-भाव की तेजी-मंदी के विचार से खरीद और बिक्री करनेवाला। २. इस प्रकार का व्यापारिक जुआ खेलनेवाला।

सठियाना—क्रि० अ० १. साठ वर्ष का होना। २. बुड्ढा होना। ३. बुढ़ापे के कारण बुद्धि का मन्द हो जाना।

सठोरा—संज्ञा पुं० दे० "सोंठौरा"।

सड़क—संज्ञा स्त्री० १. चौड़ा रास्ता। मार्ग। आम रास्ता। २. राजमार्ग।

सड़न—संज्ञा पुं० १. सड़ने की क्रिया या भाव। २. सड़न से पैदा होनेवाली बदबू।

सड़ना—क्रि० अ० १. गलना। किसी चीज में ऐसी खराबी पैदा होना, जिससे उसके अंग गलने लगें और उसमें बदबू आने लगे। २. पानी मिली हुई चीज में खमीर उठना या आना। ३. बुरी हालत में पड़ा रहना।

सड़सठ—संज्ञा पुं० साठ और सात की संख्या। ६७।

सड़सी—संज्ञा स्त्री दे० "सँड़सी"। पतले लोहे के छड़ों का एक औजार, जो चूल्हे पर से गर्म बटलोई आदि उतारने के काम में आता है।

सड़ाना—क्रि० स० किसी चीज को सड़ने देना।

सड़ायँध—संज्ञा स्त्री० सड़ी हुई चीज की दुर्गन्ध या बदबू।

सड़ाव—संज्ञा स्त्री० सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़—अव्य० १. सड़सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो। २. जल्दी जल्दी।

सड़ियल—वि० १. सड़ा हुआ। गला हुआ। २. रद्दी। ३. निकम्मा। ४. नीच। तुच्छ।

सतंत*—अव्य० दे० "सतत"।

सत—संज्ञा पुं० १. सत्यता। सच्चाई। २. सदाचार। ३. सार। मूल तत्त्व। निचोड़। ४. जीवन-शक्ति। ५. ताकत।

वि० १. दे० "सत्"। २. दे० "शत"। ३. 'सात' की संख्या का संक्षिप्त रूप—यौगिक में, जैसे—सतमासा, सतलड़ा हार।

मुहा०—सत चढ़ना*=किसी काम को पूरा करने की जिद्द होना। झक या धुन सवार होना। सत पर चढ़ना=अपने पति के शव के साथ चिता पर जलकर सती होना। सत पर रहना=पतिव्रता रहना। अपने वचन या प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना।

सतकार—संज्ञा पुं० दे० "सत्कार"।

सतकारना*—क्रि० स० आदर करना।

सतगुरु—संज्ञा पुं० १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा। ईश्वर।

सतजुग—संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

सतत—अव्य० सदा। लगातार। निरन्तर।

सतनजा—संज्ञा पुं० सात तरह के अन्नों का मेल।

सतपदी—संज्ञा पुं० दे० "सप्तपदी"।

सतपुतिया—संज्ञा स्त्री० एक तरह की तरोई, जिसकी तरकारी बनती है।

सतफेरा—संज्ञा पुं० दे० "सप्तपदी"। विवाह के समय आग की सात परिक्रमा करना।

सतभाय, सतभाव—संज्ञा पुं० दे० "सद्भाव"।

सतमासा—संज्ञा पुं० १. गर्भ के सातवें महीने बाद ही उत्पन्न होनेवाला बच्चा। २. गर्भ के सातवें महीने में किया जानेवाला एक विशेष संस्कार या कृत्य।

सतमूली—संज्ञा स्त्री० सतावर।

सतयुग—संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

सतरंगा—वि० सात रंगोंवाला।

संज्ञा पुं० इन्द्रधनुष।

सतर—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लकीर। रेखा। २. पंक्ति। कतार। ३. मनुष्य की गुप्त इंद्रिय। ४. ओट। आड़।

वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. क्रुद्ध। नाराज।

सतराना—क्रि० अ० १. क्रोध करना। २. चिढ़ना।

सतराहट†—संज्ञा स्त्री० १. क्रोध। चिढ़ने का भाव। २. चिढ़ना।

सतरौहाँ†—वि० १. क्रुद्ध। नाराज। २. चिढ़नेवाला। ३. क्रोधसूचक।

सतर्क—वि० [संज्ञा सतर्कता] १. सावधान। सजग। होशियार। २. तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट।

सतर्पना—क्रि० स० अच्छी तरह संतुष्ट या तृप्त करना।

सतलज—संज्ञा स्त्री० पंजाब की पाँच नदियों में से एक, जिसका प्राचीन नाम शतद्रु था।

सतलड़ा—संज्ञा पुं० सात लड़ों का हार।

सतलड़ी—संज्ञा स्त्री० सात लड़ों की माला।

सतवंती—वि० सती। पतिव्रता।

सतसई—संज्ञा स्त्री० १. दे० "सप्तशती"। २. वह ग्रंथ, जिसमें सात सौ पद्यों का संग्रह हो। जैसे, बिहारी-सतसई।

सतह—संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २. वह विस्तार, जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो, लेकिन मोटाई न हो।

सतानंद—संज्ञा पुं० गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना—क्रि० स० १. दुःख देना। कष्ट देना। २. परेशान करना।

सतालू—संज्ञा पुं० शफ़तालू। आड़ू।

सतावना*†—क्रि० स० दे० "सताना"।

सतावर—संज्ञा स्त्री० एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली।

सति*—संज्ञा पुं० दे० "सत्य"।

सतिवन—संज्ञा पुं० सदा हरा-भरा रहनेवाला एक पेड़। छतिवन।

सती—वि० १. पतिव्रता। साध्वी। २. सती होनेवाली स्त्री।

संज्ञा स्त्री० १. पतिव्रता स्त्री। २. अपने पति के शव के साथ चिता पर जल जानेवाली या पति के मरने पर किसी और तरह से अपना प्राण दे देनेवाली स्त्री। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या, जो शिव को ब्याही थी। पार्वती।

सतीत्व—संज्ञा पुं० १. सती रहने का भाव। २. विवाहित स्त्री का पातिव्रत्य।

सतीत्व-हरण—संज्ञा पुं० स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। परस्त्री के साथ बलात्कार।

सतुआ†—संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।

सतुआ-संक्रांति—संज्ञा स्त्री० मेष की संक्रांति, जिस दिन लोग सत्तू खाते हैं।

सतृष्ण—वि० १. तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण। बहुत इच्छुक। २. प्यासा।

सतोखना*†—क्रि० स० १. दे० "संतोषण"। संतुष्ट करना। सान्त्वना देना। २. ढाढ़स देना।

सतोगुण—संज्ञा पुं० दे० "सत्त्वगुण"।

सतोगुणी—संज्ञा पुं० १. सत्त्वगुणवाला। सात्त्विक। २. पवित्र।

सत्—संज्ञा पुं० १. सत्य। २. ब्रह्म।

वि० १. सत्य। २. स्थायी। अविनाशी। सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। ३. सच्चा। साधु। ४. सज्जन। ५. धीर। ६. विद्वान्। ७. मान्य। ८. शुद्ध। ९. पवित्र। १०. उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।

सत्कर्म—संज्ञा पुं० १. अच्छा काम। २. धर्म का काम। पुण्य।

सत्कार—संज्ञा पुं० १. आदर-सम्मान। खातिरदारी। २. आतिथ्य।

सत्कार्य्य—संज्ञा पुं० उत्तम कार्य्य। सत्कर्म। वि० सत्कार करने योग्य।

सत्कीर्ति—संज्ञा स्त्री० यश। नेकनामी।

सत्कुल—संज्ञा पुं० उत्तम कुल। अच्छा खानदान।

सत्कृत—वि० १. जिसका सत्कार या आदर किया जाय। २. जिसका अच्छी तरह से आदर या खातिरदारी की गई हो।

सत्कृति—संज्ञा स्त्री० उत्तम कृति या कार्य। संज्ञा पुं० अच्छे कार्य करनेवाला। सत्कर्मी।

सत्त—संज्ञा पुं० १. सार भाग। असली जुज़। तत्त्व। २. काम की वस्तु। ३.†* दे० "सत"। सत्य। सच बात। ४. सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्तम–वि० १. सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ। सबसे बढ़कर। २. परमपूज्य। ३. सर्वश्रेष्ठ साधु।

सत्ता–संज्ञा स्त्री० १. होने का भाव। २. अस्तित्व। ३. हस्ती। ४. सामर्थ्य। शक्ति। ५. अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत।
संज्ञा पुं० ताश या गंजीफे का वह पत्ता, जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्ताईस–संज्ञा पुं० २७ की संख्या। बीस और सात।

सत्ताधारी–संज्ञा पुं० शासन करनेवाला। हुकूमत करनेवाला। अधिकारी।

सत्तू–संज्ञा पुं० भुने हुए चने या जौ आदि का आटा। सतुआ।

सत्पथ–संज्ञा पुं० १. उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छा चाल-चलन।

सत्पात्र–संज्ञा पुं० १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी।

सत्पुरुष–संज्ञा पुं० १. सदाचारी व्यक्ति। २. सज्जन। भला आदमी।

सत्य–वि० १. सच। २. सच्चा। ३. वास्तविक। असल। ४. ठीक-ठीक।
संज्ञा पुं० १. ठीक बात। यथार्थ तत्त्व। २. न्याय-संगत बात। धर्म की बात। ३. वह वस्तु, जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो (वेदांत)। ४. ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक। ५. विष्णु। ६. चार युगों में से पहला युग। सत्ययुग।

सत्यकाम–वि० सत्य का प्रेमी।

सत्यतः–अव्य० सचमुच। वास्तव में।

सत्यता–संज्ञा स्त्री० १. सत्य होने का भाव। सच्चाई। २. वास्तविकता। असलियत।

सत्यनारायण–संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम। (सत्यनारायण की कथा=हिन्दुओं में प्रचलित एक प्रसिद्ध कथा, जिसे लोग शुभ फल की इच्छा से सुनते हैं।)

-वि० [संज्ञा सत्यनिष्ठा] सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला। सत्य में अटल विश्वास करनेवाला। सत्यव्रत।

-वि० १. सच्ची प्रतिज्ञा करनेवाला। अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २. बात का सच्चा या बात का पक्का।

सत्यभामा–संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की आठ महारानियों में से एक।

सत्ययुग–संज्ञा पुं० चार युगों में से पहला, जो सबसे उत्तम माना जाता है।

सत्यलोक–संज्ञा पुं० पुराण के अनुसार सबसे ऊपर का संसार, जहाँ ब्रह्मा रहते हैं।

सत्यवती–संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण द्वैपायन या व्यास की माता और वसुराज की कन्या (मत्स्यगंधा-नामक धीवर-कन्या)। २. गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी।

सत्यवादी–वि० [स्त्री० सत्यवादिनी] १. सच बोलनेवाला। २. अपने वचन को पूरा करनेवाला।

सत्यवान्–वि० अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। सच बोलनेवाला।
संज्ञा पुं० शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र, जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।

सत्यव्रत–संज्ञा पुं० १. सत्यवादी। जिसने सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की हो। २. सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।

सत्यशील–वि० १. सच्चा। सत्यवान्। २. धर्म का पालन करनेवाला।

सत्यसंध–वि० [स्त्री० सत्यसंधा] सत्य-प्रतिज्ञ। अपने वचन को पूरा करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. रामचन्द्र। २. जनमेजय।

सत्या–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सत्ता"। २. दे० "सत्यता। ३. दे० "सत्यभामा"।

सत्याग्रह–संज्ञा पुं० [वि० सत्याग्रही] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शांतिपूर्वक हठ करना।

सत्याग्रही–वि० सत्याग्रह करनेवाला।

सत्यानाश–संज्ञा पुं० सर्वनाश। पूरी बर्बादी। बिलकुल नष्ट हो जाना।

सत्यानाशी–वि० १. सत्यानाश करनेवाला। पूरी तरह बर्बाद करनेवाला। चौपट करनेवाला। २. अभागा।
संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा। भड़भाँड़।

सत्यानृत–वि० सच और झूठ। जिसमें सच

और झूठ दोनों हों। बाहर से सच दिखाई देनेवाला, पर वास्तव में झूठ।
संज्ञा पुं० १. सच-झूठ। जिसमें सच-झूठ का व्यवहार हो। २. व्यापार। वाणिज्य।

सत्यापन–संज्ञा पुं० १. सत्य की स्थापना। सत्य सिद्ध करना। २. जाँच करके यह देखना कि यह ठीक या ज्यों का त्यों है। लेख्य आदि पर उसके ठीक होने की बात लिखकर उसके सही होने के प्रमाण के लिए अपना हस्ताक्षर करना (अंग्रे०–वेरीफिकेशन)।

सत्र–संज्ञा पुं० १. अधिवेशन। २. अधिवेशन-काल। वह निश्चित समय, जिसमें कोई कार्य एक बार शुरू होकर कुछ समय तक बराबर होता रहता है। (अंग्रे०–सेशन) ३. किसी प्रतिनिधि या कार्यकर्ता के काम करने की निश्चित अवधि। ४. यज्ञ। ५. एक सोमयाग। ६. घर। मकान। ७. कपड़ा। ८. धन। ९. वह स्थान, जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। १०. सदावर्त्त।

सत्रन्यायालय–संज्ञा पुं० [अंग्रे०–सेशनकोर्ट] किसी जिले के न्यायाधीश का वह न्यायालय, जिसमें बड़े अपराधों का विचार होता है और विचार आरम्भ होने पर तब तक चलता रहता है, जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। दौरा अदालत।

सत्रावसान–संज्ञा पुं० विधान-सभाओं आदि के किसी अधिवेशन को कुछ समय के लिए आधिकारिक रूप से बन्द किया जाना या अगले अधिवेशन तक के लिए स्थगित किया जाना। (अंग्रे०–प्रोरोगेशन)।

सत्रिक–वि० १. सत्र-सम्बन्धी। २. सत्र का। ३. किसी सत्र या निश्चित समय तक लगातार होता रहनेवाला। ४. किसी सत्र या निश्चित समय पर होता रहनेवाला।

सत्रुहन*‡–संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।

सत्व–संज्ञा पुं० १. सत्ता। अस्तित्व। २. हस्ती। ३. सार। तत्व। ४. विशेषता। ५. चित्त की प्रवृत्ति। ६. आत्म-तत्त्व। ७. चैतन्य। ८. प्राण। जीव। ९. तत्त्व। १०. सांख्य-दर्शन के अनुसार प्रकृति के तीन गुणों में एक। दे० "सत्वगुण"।

सत्वगुण–संज्ञा पुं० अच्छे कर्म्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण।

सत्वर–अव्य० १. शीघ्र। जल्द। २. तुरंत।

सत्संग–संज्ञा पुं० साधुओं या सज्जनों का संग-साथ। अच्छी संगत। वह समाज, जिसमें भक्ति, ज्ञान या धर्म की चर्चा होती हो।

सत्संगति–संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग"।

सत्संगी–वि० [स्त्री० सत्संगिनी] १. अच्छे व्यक्तियों के साथ रहनेवाला। भली संगति में रहनेवाला। २. मेल-जोल रखनेवाला। राधास्वामी मत का अनुयायी।

सथर*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्थल"। भूमि।

सथिया–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मंगल-सूचक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न (卐)। २. फोड़े आदि की चीरफाड़ करनेवाला। जर्राह। अस्त्र-चिकित्सक।

सद–संज्ञा स्त्री० प्रकृति। आदत।
वि० ताजा।
अव्य०–तत्काल। तुरन्त।

सदई*–अव्य० दे० "सदैव"।

सदका–संज्ञा पुं० [अ० सद्क़ः] १. दान। खैरात। २. निछावर। उतारा।

सदन–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। २. विराम। ३. विधान-सभा की बैठक का स्थान। ४. विधान-सभा में उपस्थित सदस्यों का समूह। ५ किसी विषय पर विचार या नियम आदि बनानेवाली सभा की बैठक होते समय का स्थान या उसमें उपस्थित व्यक्तियों का ...। वह स्थान या भवन, जिसमें बहुत से ...क उपस्थित हों। ऐसे उपस्थित व्यक्तियों का समूह। (अंग्रे०–हाउस)। ६. एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई।

सदमा–संज्ञा पुं० (अ० सद्मः) १. अफसोस। दुःख। रंज। मानसिक कष्ट। २. आघात।

सदय–वि० दयालु। दयावान्।

सदर–वि० [अ० सद्र, संज्ञा सदारत] प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० १. वह स्थान, जहाँ कोई बड़ा

हाकिम रहता हो। केंद्र-स्थान। २. अध्यक्ष। सभापति।

सदर-आला–संज्ञा पुं० [अ०] अदालत का वह हाकिम, जो जज से छोटा और मुंसिफ से बड़ा हो। जज। (अंग्रे०–सिविल जज)।

सदरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना बाँह की एक प्रकार की बंडी। जवाहर जैकेट।

सदर्थना*–क्रि० स० समर्थन करना। पुष्टि करना।

सदसद्विवेक–संज्ञा पुं० अच्छे और बुरे की पहचान। भले-बुरे का ज्ञान।

सदस्य–संज्ञा पुं० किसी संघ, सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। (संस्कृत में यज्ञ करनेवाला) (अंग्रे०–मेम्बर)

सदस्यता–संज्ञा स्त्री० सदस्य होने का भाव या पद।

सदा–अव्य० १. नित्य। हमेशा। २. निरंतर। लगातार।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आवाज। शब्द। २. पुकार। ३. गूँज। प्रतिध्वनि।

सदाचरण, सदाचार–संज्ञा पुं० अच्छा चाल-चलन। सद्व्यवहार। उत्तम आचरण।

सदाचारिता–संज्ञा स्त्री० दे० "सदाचार"।

सदाचारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० सदाचारिणी] १. अच्छे चाल-चलनवाला। उत्तम आचरण-वाला। २. धर्मात्मा।

सदाफल–वि० सदा फलनेवाला।

सज्ञा पुं० १. गूलर। २ बेल। ३. नारियल। ४. एक प्रकार का नीबू।

सदारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] सदर या प्रधान होने का भाव या कार्य। सभापतित्व। अध्यक्षता।

सदावर्त–संज्ञा पुं० १. नित्य भूखों और गरीबों को भोजन बाँटना। २. नित्य गरीबों को बाँटा जानेवाला भोजन। खैरात।

सदाबहार–वि० सदा फूलने-फलनेवाला। सदा हरा-भरा रहनेवाला (एक पेड़)।

सदाशय–वि० [संज्ञा सदाशयता] जिसके मन के भाव अच्छे और उदार हों। सज्जन। भला-मानस।

सदाशिव–संज्ञा पुं० शिव।

फा० ८९

सदासुहागिन–वि० जो कभी पतिहीन न हो। संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी। (व्यंग में प्रयुक्त)

सदिया–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. 'लाल' नाम की चिड़िया, जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। २. लाल-पक्षी की मादा।

सदी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सौ वर्षों का समय। शती। शताब्दी। २. सैकड़ा।

सदुपदेश–संज्ञा पुं० १. उत्तम उपदेश। २. अच्छी सलाह। ३. अच्छी शिक्षा।

सदुपयोग–संज्ञा पुं० १. अच्छा उपयोग। अच्छी तरह इस्तेमाल। २. अच्छे काम में लाना, या अच्छी तरह काम में लाना।

सदृश–वि० १. समान। एक ही तरह। २. तुल्य।

सदेह–क्रि० वि० १. शरीर के साथ। सशरीर। इसी शरीर से। बिना शरीर-त्याग किए। २. प्रत्यक्ष। मूर्त्तिमान्।

सदैव–अव्य० सदा। हमेशा।

सदोष–वि० १. दोषयुक्त। जिसमें गलती हो। २. अपराधी।

सद्गति–संज्ञा स्त्री० १. मरने के बाद अच्छी दशा को पाना या अच्छे लोक में जाना। २. उत्तम गति।

सद्गुण–संज्ञा पुं० [वि० सद्गुणी] अच्छा गुण। अच्छी सिफत।

सद्गुरु–संज्ञा पुं० १. अच्छा गुरु। वह धर्म-शिक्षक, जिसके उपदेशों से संसार के बंधनों से छुटकारा या मुक्ति प्राप्त हो। २. परमात्मा। ईश्वर।

सद्ग्रंथ–संज्ञा पुं० १. सन्मार्ग बतानेवाली पुस्तक। २. बहुत अच्छी पुस्तक।

सद्द*†–संज्ञा पुं० शब्द। ध्वनि।

अव्य० तुरंत। तत्काल।

सद्भाव–संज्ञा पुं० १. अच्छा भाव। अच्छी नीयत। २. प्रेम और भलाई की भावना। ३. मेल-जोल। मैत्री।

सद्म–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। २. युद्ध। लड़ाई। ३. पृथ्वी और आकाश।

सद्य–अव्य० १. इसी समय। अभी। २. आज ही। ३. शीघ्र ४. तुरंत।

सद्यः–अव्य० दे० "सद्य"।

सद्यःप्रसूत–वि० तुरन्त का उत्पन्न।
सद्यःस्नाता–वि० स्त्री० तुरन्त नहाई हुई।
सद्रूप–वि० [संज्ञा सद्रूपता] सुन्दर। अच्छे रूपवाला।
सद्व्रत–वि० [स्त्री० सद्व्रता] १. अच्छा व्रत धारण करनेवाला। २. सदाचारी। अच्छे चाल-चलनवाला।
सधना–क्रि० अ० १. अभ्यस्त होना। २. मँजना। ३. सिद्ध होना। काम पूरा होना। ४. मतलब निकलना। ५. मतलब हल होने लायक। ६. उद्देश्य पूरा होने के अनुकूल होना। ७. निशाना ठीक होना। ८. ठीक नापा जाना।
सधर–संज्ञा पुं० ऊपर का होंठ। (नीचे के होंठ को अधर कहते हैं।)
सधवा–संज्ञा स्त्री० [विधवा का अनु०] वह स्त्री, जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।
सधाना–क्रि० स० १. साधने का काम दूसरे से कराना। २. समाप्त करना। कोई चीज खा-पीकर खत्म करना। ३. प्रयोग करना। इस्तेमाल करना।
सधुक्कड़ी–संज्ञा स्त्री० साधु होने का भाव। साधुता।
वि० १. साधुओं की तरह का। २. साधुओं का। जैसे सधुक्कड़ी भाषा=नाथ-पंथियों की बोली।
सनंदन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सन्–संज्ञा पुं० [अ०] वर्ष। साल। संवत्।
सन–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके रेशे से रस्सियाँ और टाट आदि बनते हैं।
संज्ञा स्त्री० वेग से निकलने या चलने का शब्द। जैसे हवा का सन-सन शब्द।
वि० १. दे० "सन्न"। स्तब्ध। २. मौन।
*†प्रत्य० अवधी में करण-कारक का चिह्न। से। साथ।
सनई–संज्ञा स्त्री० छोटी जाति का सन।
सनक–संज्ञा स्त्री० १. धुन। झक। खब्त। २. पागलों की-सी धुन। पागल की तरह बात या काम करना।
संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
मुहा०–सनक सवार होना=धुन होना। झक में आना। खब्त चढ़ना।
सनकना–क्रि० अ० पागल होना। पगलाना। पागलों की तरह बातें या काम करना।
सनकारना*†–क्रि० स० संकेत करना। इशारा करना।
सनकियाना–क्रि० स० १. इशारा करना। २. सनक पैदा करना। सनकी या पागल बना देना।
सनकी–वि० १. धुन में मस्त। खब्ती। २. पागल की तरह।
सनत्–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
सनत्कुमार–संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रमाणपत्र। (अंग्रे०–सर्टीफिकेट] २. प्रमाण। सबूत।
सनदयाफ़्ता–वि० जिसे कोई सनद मिली हो।
सनना–क्रि० अ० १. गीला होकर लेई के रूप में मिलना। २. एक में मिलना। लीन होना।
सनन्दन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। सप्त ऋषियों में से एक।
सनम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रियतम। प्यारा।
सनमान–संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।
सनमानना*–क्रि० स० सम्मान करना। आदर-सत्कार करना। खातिर करना।
सनमुख*–अव्य० दे० "सम्मुख"।
सनसनाना–क्रि० अ० १. सन-सन शब्द करते हुए बहना या चलना (हवा का)। २. खूब तेजी से जाना। ३. हवा की तरह तेज दौड़ना। ४. हवा में झोंके से निकलने या जाने का शब्द होना।
सनसनाहट–संज्ञा स्त्री० सन-सन शब्द होना। सन-सन शब्द होने का भाव या क्रिया।
सनसनी–संज्ञा स्त्री० १. भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न उत्तेजना या सन्नाटा। २. उद्वेग। घबराहट। ३. झनझनाहट।

खेज या **सनसनीदार**–वि० भय, घब-

राहट और आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला काम या घटना।

सनाढ्य—संज्ञा पुं० पञ्च गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।

सनातन—संज्ञा पुं० १. अनादिकाल। २. अत्यन्त प्राचीन समय। ३. बहुत दिनों से चली आती हुई परम्परा या व्यवहार। प्राचीन परम्परा। ४. ब्रह्मा। ५. विष्णु।
वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत ही पुराना। जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। २. हमेशा बना रहनेवाला। चिरन्तन। शाश्वत।

सनातन धर्म—संज्ञा पुं० १. प्राचीन या परंपरागत धर्म। २. प्राचीन काल से चला आता हुआ वर्त्तमान हिन्दू-धर्म, जिसमें मूर्तिपूजन, अवतारों की उपासना और पुराण आदि माननीय हैं।

सनातन पुरुष—संज्ञा पुं० विष्णु भगवान्।

सनातनी—संज्ञा पुं० १. सनातन धर्म का अनुयायी। २. जो बहुत दिनों से चला आता हो।

सनाथ—वि० [स्त्री० सनाथा] जिसका कोई मालिक और सहायक हो। जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो।

सनाय—संज्ञा स्त्री० एक पौधा, जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। सोनामुखी।

सनीचर—संज्ञा पुं० दे० "शनैश्चर"।

सनीचरी—संज्ञा पुं० शनि की दशा, जिसमें अधिक दुःख होता है।

सनेह*†—संज्ञा पुं० दे० "स्नेह"।

सनेहिया*†—संज्ञा पुं० दे० "स्नेही"।

सनेही—वि० १. दे० "स्नेही"। स्नेह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. हितैषी।
संज्ञा पुं० प्रियतम।

सनोबर—संज्ञा पुं० [अ०] चीड़ का पेड़।

सन्न—वि० १. डर या आश्चर्य के कारण एकदम चुप। स्तब्ध। संज्ञाशून्य। २. स्तब्ध। भौंचक।

सन्नद्ध—वि० १. उद्यत। २. तत्पर। ३. तैयार। ४. आमादा। ५. काम में पूरी तरह लगा या जुटा हुआ। ६. मुस्तैद। ७. बँधा या जुड़ा हुआ। ८. पास का।

सन्नयन—संज्ञा पुं० १. ले जाना। ले जाने की क्रिया या भाव। २. सम्पत्ति या अधिकार आदि देना। सम्पत्ति-समर्पण। ३. किसी सम्पत्ति, विशेषकर अचल सम्पत्ति का लेख्य-द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे के कब्जे में जाना या दिया जाना। ४. समर्पण-पत्र या क्रय-लेख्य।

सन्नाटा—संज्ञा पुं० १. कहीं कुछ भी आवाज न होने की अवस्था या भाव। निःशब्दता। नीरवता। २. निर्जनता। एकांतता। सुनसान। ३. ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता। ४. एकदम खामोशी। चुप्पी। ५. चहल-पहल का अभाव। उदासी। ६ गुलजार न रहना। ७. हवा के जोर से चलने की आवाज। ८. हवा को चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द।
वि० १. नीरव। स्तब्ध। २. निर्जन।
मुहा०—सन्नाटे में आना=ठक रह जाना। कुछ कहते-सुनते न बनना। सन्नाटा खींचना या मारना=एकदम चुप हो जाना।

सन्नाह—संज्ञा पुं० कवच। बकतर।

सन्निकट—अव्य० समीप। पास।

सन्निकर्ष—संज्ञा पुं० [वि० सन्निकृष्ट] १. समीपता। निकटता। पड़ोस। २. संबंध। लगाव।

सन्निधान—संज्ञा पुं० १. स्थापित करना। रखना। २. किसी वस्तु के रखने का स्थान। ३. निधि। खजाना। ४. निकटता। समीपता।

सन्निधि—संज्ञा स्त्री० १. समीपता। निकटता। पड़ोस। २. आमने-सामने की स्थिति।

सन्निपात—संज्ञा पुं० १. एक बीमारी, जिसमें कफ, वात और पित्त, तीनों एक साथ बिगड़ जाते हैं। त्रिदोष। सरसाम। २. एक साथ गिरना। एक साथ जुटना। ३. संयोग। मेल। ४. इकट्ठा होना। ५. एक साथ कई बातों का घटना। समाहार।

सन्निविष्ट—वि० १. एक साथ बैठा हुआ। जमा हुआ। रखा हुआ। २. किसी में शामिल किया गया या मिलाया हुआ। ३. स्थापित। ४. पास का।

सन्निवेश—संज्ञा पुं० १. स्थिति। २. आधार। ३. आसन। ४. निवास। घर। ५. एक

साथ बैठना। ६. रखना। ७. लगाना। ८. जड़ना। ९. जमाकर या सजाकर रखना। १०. अँटना। समाना। ११. इकट्ठा होना। जुटना। १२. समूह। १३. योजना। १४. गढ़न। बनावट।

सन्निवेशन—संज्ञा पुं० [वि० सन्निविष्ट] १. मिलाना। २. जमाकर या लगाकर रखना। ३. सजा कर रखना। ४. किसी को किसी दूसरी चीज या बात में शामिल करना।

सन्निहित—वि० १. रखा हुआ। २. एक साथ या पास रखा हुआ। ३. ठहराया हुआ। टिकाया हुआ। ४. निकट। समीपस्थ। ५. तैयार।

सन्मान—संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।

सन्मुख—अव्य० दे० "सम्मुख"। सामने।

सपक्ष—संज्ञा पुं० १. न्याय में वह बात, जो साध्य हो। २. अनुकूल पक्ष। ३. समर्थक। ४. तरफदार। ५. मित्र। ६. सहायक।
वि० जो अपने पक्ष में हो। समर्थक।

सपत्नी—संज्ञा स्त्री० एक ही पति की दूसरी स्त्री। सौत।

सपत्नीक—वि० पत्नी के साथ।

सपदि—अव्य० तुरन्त। उसी समय।

सपना—संज्ञा पुं० दे० 'स्वप्न'। नींद की अवस्था में दिखाई देनेवाली बात या घटनाएँ।

सपरदाई—संज्ञा पुं० १. वेश्या के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। भँड़ुआ। २. समाजी।

सपरना—क्रि० अ० १. काम का किया जा सकना। २. हो सकना। तैयार होना। ३. काम का पूरा होना। समाप्त होना। ४.† स्नान करना।

सपराना—क्रि० स० पूरा करना। 'सपरना' का सकर्मक रूप।

सपरिकर—वि० १. अपने दलबल के साथ। अपने अनुचरों के साथ। २. ठाठ-बाट के साथ।
*†सपरि कर=तैयार होकर (भोजपुरी में)।

सपाट—वि० १. समतल। बराबर। जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। २. चिकना। (मैदान या भूमि)

सपाटा—संज्ञा पुं० १. चलने या दौड़ने की तेजी। तीव्र गति। २. दौड़।
यौ०—सैर-सपाटा=घूमना-फिरना।

सपाद—वि० १. पैर के साथ। चरण-सहित। २. सवाया। जिसमें एक का चौथाई और मिला हो।

सपिंड—संज्ञा पुं० एक ही कुल या खानदान के लोग, जो एक ही पितरों को पिंडदान करते हों।

सपिंडी—संज्ञा स्त्री० मृतक के लिए किया जाने का एक कर्म्म, जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है।

सपुर्द, सुपुर्द—संज्ञा स्त्री० [फा० सिपुर्द] धरोहर। अमानत।
वि० किसी के जिम्मे किया हुआ। सौंपा हुआ।

सपुर्दगी, सुपुर्दगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सपुर्द करने या होने की क्रिया अथवा भाव।

सपूत—संज्ञा पुं० सत्पुत्र। अच्छा और योग्य बेटा। अपने कर्त्तव्य का पालन करनेवाला पुत्र। सुपुत्र।

सपूती—संज्ञा स्त्री० १. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता। २. सपूत होने का भाव।

सपेरा—संज्ञा पुं० दे० "सँपेरा"।

सपोला—संज्ञा पुं० साँप का छोटा बच्चा।

सप्त—वि० सात। गिनती में सात।

सप्तऋषि—संज्ञा पुं० दे० "सप्तर्षि"।

सप्तक—संज्ञा पुं० सात वस्तुओं का समूह। संगीत में सात स्वरों का समूह।

सप्तद्वीप—संज्ञा पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग—जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप।

सप्तधातु—संज्ञा पुं० आयुर्वेद के अनुसार शरीर में की सात धातुएँ—रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र।

सप्तपदी—संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं। भाँवर। भँवरी।

सप्तपर्ण–संज्ञा पुं० छतिवन (पेड़)।
सप्तपर्णी–संज्ञा स्त्री० लज्जावंती लता।
सप्त-पाताल–संज्ञा पुं० पृथ्वी के नीचे के सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।
सप्तपुरी–संज्ञा स्त्री० सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।
सप्तभुज–संज्ञा पुं० सात भुजाओंवाला क्षेत्र [अंग्रे०–हेप्टैगन]
सप्तम–वि० [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।
सप्तमी–वि० स्त्री० सातवीं।
संज्ञा स्त्री० १. किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २. व्याकरण में अधिकरण कारक का चिह्न।
सप्तर्षि–संज्ञा पुं० १. सात ऋषियों का समूह या मंडल। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार–गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। २. महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। ३. उत्तर दिशा के सात तारे, जो ध्रुव के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं।
सप्तशती–संज्ञा स्त्री० १. सात सौ का समूह। सात सौ पद्यों का समूह। २. सतसई।
सप्ताह–संज्ञा पुं० १. सात दिनों का समय। हफ्ता। २. भागवत तथा रामायण आदि की पूरी कथा को सात दिनों में पढ़ना या सुनना। ३. कोई पुण्य कार्य, जो सात दिनों में समाप्त हो।
सप्लाई–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. जिन चीजों की माँग हो, उन्हें देना। पूर्ति करना। मुहय्या करना। २. खाद्य पदार्थ। रसद। ३. संचय। भण्डार।
सप्लाई अफसर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] पूर्ति-अधिकारी। वह अधिकारी, जो रसद आदि आवश्यक वस्तु-सम्बन्धी प्रबन्ध करे।
सफ़र–संज्ञा पुं० [अ०] १. यात्रा। २. रास्ते में चलने का समय या दशा।
सफरमैना–संज्ञा स्त्री० सेना के वे सिपाही, जो खाई आदि खोदने, या रास्ता साफ करने के लिए उसके आगे चलते हैं। [अंग्रे०–सैपर माइनर]
सफ़री–वि० सफर में काम आनेवाला (छोटा और हल्का सामान)।
संज्ञा पुं० १. राह-खर्च। २. रास्ते का सामान।
संज्ञा स्त्री० १. दे० "शफरी"। सौरी मछली। २. धातु की बनी हुई एक तरह की पन्नी या पीला वरक।
सफल–वि० १. कामयाब। २. जो प्रयत्न करके अपना उद्देश्य या कार्य सिद्ध कर चुका हो। ३. जिसका कुछ नतीजा निकले। ४. सार्थक। ५. जिसमें फल लगा हो। ६. फल देनेवाला।
सफलता–संज्ञा स्त्री० १. सफल होने का भाव। कामयाबी। २. उद्देश्य की पूर्ति। कार्य की सिद्धि। ३. पूर्णता।
सफलीभूत–वि० जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।
सफ़ा–संज्ञा पुं० वि० [अ० सफहः] १. पृष्ठ। पन्ना। २. साफ। स्वच्छ। ३. पवित्र। ४. चिकना। ५. बराबर।
सफ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. साफ होने का भाव या साफ करने की क्रिया। स्वच्छता। निर्मलता। २. कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया। ३. स्पष्टता। कपट का न होना। ४. आरोप का खंडन। ५. अभियुक्त-द्वारा अपने को निर्दोष सिद्ध करना। निर्दोषिता। ६. कैफियत। ७. मामले का निपटारा। निर्णय।
सफ़ाचट–वि० बिलकुल साफ या चिकना किया हुआ। एकदम साफ या चिकना।
सफ़ाया–संज्ञा पुं० १. बाकी दाम पूरा-पूरा चुकता कर देना। कुछ भी बाकी न रहना। २. एकदम साफ करना। पूरी सफाई। ३. पूरी तरह नाश करना।
सफ़ीना–संज्ञा पुं० [अ० सफीनः] १. अदालती परवाना। समन। २. इत्तलानामा। ३. बही।
सफीर–संज्ञा पुं० [अ०] एलची। राजदूत।
सफूफ–संज्ञा पुं० [अ०] चूर्ण। बुकनी।

सफ़ेद–वि० [फ़ा० सुफ़ेद] १. उजला। श्वेत। २. साफ़।

मुहा०—स्याह-सफ़ेद=भला-बुरा।

सफ़ेद दाग–संज्ञा पुं० कोढ़ की बीमारी में शरीर पर होनेवाले सफ़ेद धब्बे। श्वेत-कुष्ट।

सफ़ेदपोश–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. साफ़ कपड़े पहननेवाला। २. भलामानस। शिष्ट।

सफ़दा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बढ़िया आम। २. एक तरह का खरबूजा। ३. जस्ते का भस्म, जो दवा तथा रँगाई के काम में आता है।

सफ़ेदी–संज्ञा स्त्री० १. सफ़ेद होने का भाव। उजलापन। श्वेतता। २. दीवार आदि पर चूने की सफ़ेद रंग की पोताई। चूनाकारी।

मुहा०—सफ़ेदी आना=बुढ़ापा आना।

सब–वि० पूरा। सारा। समस्त। कुल।

सबक़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पाठ। २. शिक्षा।

सबद–संज्ञा पुं० १. दे० "शब्द"। २. किसी साधु-महात्मा के उपदेश।

सबब–संज्ञा पुं० [अ०] १. कारण। वजह। २. द्वारा। जरिए (जैसे उनके सबब से)।

सब-मेरीन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] पानी के नीचे डूबकर चलनेवाला एक प्रकार का जहाज। पनडुब्बा जहाज।

सबर–संज्ञा पुं० दे० "सब्र"।

सबल–वि० (संज्ञा सबलता) १. बलवान्। ताकतवर। २. शक्तिशाली। ३. जिसके साथ सेना हो।

सबार*–क्रि० वि० जल्दी।

सबील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रास्ता। सड़क। २. उपाय। तरकीब। ३. पौसला। प्याऊ।

सबूत–संज्ञा पुं० [अ०] प्रमाण। वह, जिससे कोई बात सिद्ध या साबित की जाय।

सब्ज़–वि० [फ़ा०] १. हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २. कच्चा और ताजा (फल-फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना=काम निकालने के लिए झूठी आशाएँ दिलाना।

सब्ज़ा–संज्ञा पुं० १. हरियाली। २. भाँग। ३. पन्ना-नामक रत्न। ४. घोड़े का एक रंग, जिसमें सफ़ेदी के साथ कुछ कालापन हो।

सब्ज़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. हरी तरकारी। २. हरियाली। ३. हरापन। ४. भाँग।

सब्र–संज्ञा पुं० [अ०] संतोष। धैर्य्य।

सभा–संज्ञा स्त्री० १. किसी कार्य-विशेष या उद्देश्य के लिए बनाई गई संस्था। परिषद्। समिति। मजलिस। २. वह बैठक, जिसमें अनेक लोग किसी का भाषण सुनने या किसी विषय पर विचार करने के लिए इकट्ठे हों।

सभागा–वि० १. भाग्यवान्। २. सुंदर।

सभागृह–संज्ञा पुं० सभा का स्थान या भवन। मजलिस की जगह।

सभापति–संज्ञा पुं० सभा का प्रधान। सदर। अध्यक्ष। (निश्चित समय के लिए स्थायी रूप से चुने गए प्रधान को अध्यक्ष कहते हैं। पर आजकल 'अध्यक्ष' का प्रयोग सभापति के अर्थ में होने लगा है।)

सभासद–संज्ञा पुं० किसी सभा में सम्मिलित होनेवाला। सभा में बैठने या उपस्थित होनेवाला। सदस्य।

सभिक–संज्ञा पुं० अपने यहाँ लोगों को बैठा कर जुआ खेलाने और उसके बदले में उनसे कुछ धन लेनेवाला। फड़बाज।

सभीत–वि० दे० "भीत"।

सभ्य–वि० शिष्ट। भला। सज्जन। अच्छे आचार-व्यवहारवाला।

संज्ञा पुं० १. सभा के योग्य। २. सभासद। सभा का सदस्य। ३. भला आदमी। सज्ज्जन।

सभ्यता–संज्ञा स्त्री० १. सभ्य होने का भाव। सज्जन होने की अवस्था या भाव। भलमनसाहत। शराफ़त। २. सभा के सदस्य होने का भाव। सदस्यता। ३. किसी राष्ट्र या जाति की वे सब बातें, जो उसके रहन-सहन, सौजन्य तथा शिक्षित और उन्नत होने की दशा प्रकट करती हैं। (अंग्रे०—सिविलिजेशन)।

समंजन–संज्ञा पुं० (वि० समंजित) १. मेल मिलाना या मेल ठीक बैठाना। २. ठीक करना या ठीक बैठाना। ३. लेन-देन का

हिसाब ठीक और पूरा करना। [अंग्रे०— एडजेस्टमेंट]

समंजस—वि० १. उचित। ठीक। २. अभ्यस्त। ३. मेल खानेवाला। पहले कही हुई बातों के प्रसंग के विचार से ठीक बैठनेवाला।

समंत—संज्ञा पुं० १. सीमा। २. सिरा।

समंद—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़ा।

समंदर—संज्ञा पुं० १. दे० "समुद्र"। २. [फा०] एक प्रकार का कल्पित चूहा, जिसकी उत्पत्ति आग से मानी गई है।

सम—वि० १. समान। बराबर। तुल्य। २. चौरस। जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो। ३. (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस। ४. जिसमें परिवर्तन न हो। ५. निष्पक्ष। तटस्थ। न अधिक प्रेम या मोह करनेवाला और न एकदम विराग रखनेवाला। ६. सब।
संज्ञा पुं० १. संगीत-शास्त्र के अनुसार गाने-बजाने में निश्चित क्रम। २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का वर्णन होता है।

समकक्ष—वि० बराबर। समान। तुल्य।

समकालीन—वि० १. एक ही समय में होनेवाला। २. एक ही समय का।

समकोण—वि० जिसके आमने-सामने के दो कोण समान हों। त्रिभुज या चतुर्भुज।
संज्ञा पुं० बेड़ी रेखा पर बिलकुल खड़ी रेखा के आकर मिलने से बननेवाला ९० अंशों का कोण (ज्यामिति)।

समक्ष—अव्य० सामने। सम्मुख।

समग्र—वि० सब। पूरा।

सम चतुर्भुज—संज्ञा पुं० वह चतुर्भुज, जिसकी चारों भुजाएँ समान हों।

समचर—वि० समान आचरण करनेवाला।

समझ—संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। २. विचार।

समझदार—वि० १. सोच-समझकर काम करनेवाला। बुद्धिमान्। अक्लमन्द। २. होशियार।

समझना—क्रि० अ० किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना।

समझाना—क्रि० स० दूसरे को बतलाना या सिखाना। दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।

समझावा—संज्ञा पुं० समझाने या समझने की क्रिया या भाव।

समझौता—संज्ञा पुं० आपस का निपटारा। झगड़े, विवाद या लेन-देन का तय होना। किसी बात पर दो या अधिक पक्षों का एकमत होना।

समतल—वि० जिसकी सतह बराबर हो। सपाट।

समता—संज्ञा स्त्री० सम या समान होने का भाव। बराबरी। समानता।

समत्रिभुज—संज्ञा पुं० वह त्रिभुज, जिसकी तीनों भुजाएँ समान हों।

समतोल—वि० १. एक ही तौल के बराबर। २. महत्त्व आदि के विचार से एक समान।

समत्व—संज्ञा पुं० दे० "समता"।

समदन—संज्ञा स्त्री० भेंट। नजर।
संज्ञा पुं० युद्ध (संस्कृत में)।

समदना—क्रि० अ० प्रेमपूर्वक मिलना।

समदर्शी—संज्ञा पुं० १. सबके साथ एक समान व्यवहार करनेवाला। २. सबको एक-सा समझनेवाला। ३. सबको समान दृष्टि या बराबर की नजर से देखनेवाला।

समधिक—वि० बहुत। अधिक।

समधियाना—संज्ञा पुं० समधी का घर।

समधी—संज्ञा पुं० बेटा या बेटी का ससुर।

समन*—संज्ञा पुं० १. दे० "शमन"। २. (अंग्रे०—समन) दे० "सम्मन"। किसी को न्यायालय या अदालत में उपस्थित होने के लिए उस न्यायालय-द्वारा जारी किया गया आज्ञा-पत्र।

समनाम—संज्ञा पुं० १. एक ही नाम के दो व्यक्ति या वस्तुएँ। २. समान नामवाला। नामरासी। हमनाम। पर्याय।

समनुज्ञा—संज्ञा स्त्री० किसी विषय का समर्थन या उसकी पुष्टि करते हुए उसके लिए अपनी स्वीकृति देना।

समन्वय—संज्ञा पुं० (वि० समन्वित) १. मेल। मिलाप। संयोग। २. विरोध का न होना। कार्य्य और कारण का निर्वाह या संगति।

समन्वित–वि० मिला हुआ। संयुक्त। समन्वय किया हुआ।

समपाद–संज्ञा पुं० वह छंद या कविता, जिसके चारों चरण समान हों।

समबल–वि० समान बल या ताकतवाला।

समभाव–संज्ञा पुं० एक समान भाव। समता। साम्य। बराबरी।

समय–संज्ञा पुं० १. वक्त। काल। २. अवसर। मौका। अवकाश। फुरसत। ३. अंतिम काल।

समय-सारिणी–संज्ञा स्त्री० भिन्न-भिन्न समयों पर होनेवाले कार्यों की विवरण-सूची या तालिका। (अंग्रे०–टाइमटेबिल–जैसे रेल का टाइमटेबिल)

समर–संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।

समरथ–वि० दे० "समर्थ"।

समरभूमि–संज्ञा स्त्री० लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

समरांगण–संज्ञा पुं० दे० "समरभूमि"।

समरस–वि० [भाव० संज्ञा स्त्री० समरसता] १. सदा एक-सा रहनेवाला। २. एक ही तरह के रसवाले (पदार्थ)। ३. एक ही तरह के। एक ही विचार के।

समराना*–क्रि० स० सँवारना। सजाना या सजवाना।

समर्चना–संज्ञा स्त्री० बहुत अच्छी तरह से की जानेवाली अर्चना या पूजा।

समर्थ–वि० १. कोई काम करने की शक्ति या क्षमता रखनेवाला। २. योग्य। काबिल। ३. शक्तिमान्। ४. दूसरी चीजों या कार्यों आदि पर अपना असर डालने की शक्ति रखनेवाला। ५. प्रयुक्त होने योग्य। काम में आने लायक।

समर्थक–वि० समर्थन करनेवाला। किसी के मत का अनुमोदन करनेवाला।

समर्थता–संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य। शक्ति।

समर्थन–संज्ञा पुं० [वि० समर्थनीय, समर्थक, समर्थ्य] १. अनुमोदन। ताईद। किसी के विचार, सुझाव या प्रस्ताव को सही कहकर उसके पक्ष में अपना मत प्रकट करना। किसी के मत का पोषण। २. विवेचन।

समर्थित–वि० समर्थन किया हुआ।

समर्पक–वि० १. समर्पण करनेवाला। दान या भेंट करनेवाला। २. कहीं पहुँचाने के लिए कोई माल देनेवाला। (अंग्रे०–कन्साइनर)

समर्पण–संज्ञा पुं० १. पूरी तरह से दे देना। २. आदर के साथ भेंट करना। आदरपूर्वक दान देना। ३. स्वामित्व, अधिकार या भार आदि देना। ४. बचाकर रखने या जमा करने के लिए या कहीं पहुँचाने के लिए किसी को देना (संस्कृत में)। (अंग्रे०–कन्साइन्मेण्ट)

समर्पित–वि० १. दान या भेंट किया गया। समर्पण किया हुआ। २. कहीं भेजने या पहुँचाने के लिए दिया गया (माल)।

समवयस्क–वि० समान वयसवाला। बराबर की उम्रवाला। हमउम्र।

समल–वि० १. मैला। गंदा। मलयुक्त। २. दाग या धब्बेवाला। ३. अपवित्र (संस्कृत में)।

समवकार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का वीर-रस-प्रधान नाटक, जिसमें किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है।

समवर्ती–वि० १. जो पास में स्थित हो। समीपस्थ। २. जो समान रूप से स्थित हो। ३. किसी के साथ समान रूप या समान भाव से रहने या चलनेवाला।

समवाय–संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। २. न्यायशास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के सम्बन्धों में से एक संबंध, जो अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का होता है। ३. व्यापार करने के लिए नियमानुसार बनी हुई वह संस्था, जिसके हिस्सेदारों को अपनी लगाई हुई पूँजी के हिसाब से उस व्यापार से होनेवाले लाभ का हिस्सा मिलता है (अंग्रे०–कम्पनी)।

समवायी–वि० जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो।

समवृत्त–संज्ञा पुं० वह छंद, जिसके चारों चरण समान हों।

समवेत–वि० १. इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २. जमा किया हुआ। संचित। ३. किसी

के साथ एक श्रेणी में आया हुआ। ४. नित्य सम्बन्ध से बँधा हुआ।

समशीतोष्ण कटिबंध—संज्ञा पुं० पृथ्वी के वे भाग, जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क-रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर-रेखा से दक्षिण वृत्त तक हैं।

समष्टि—संज्ञा स्त्री० सबका समूह। सब एक में मिलकर। कुल एक साथ। व्यष्टि का उलटा।

समष्टिवाद—संज्ञा पुं० साम्यवाद राज्य-शासन का वह सिद्धान्त, जिसमें सब वस्तुओं पर राष्ट्र के सब लोगों का समान अधिकार हो और सम्पत्ति पर व्यक्तियों का अधिकार न हो। समाजवाद का यह अत्यन्त विकसित रूप है। (अंग्रे०—कम्यूनिज्म)

समष्टिवादी—संज्ञा पुं० समष्टिवाद या साम्य-वाद का सिद्धान्त माननेवाला। (अंग्रे०—कम्युनिस्ट)

समस्त—वि० १. सब। कुल। सम्पूर्ण। २. एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। (संस्कृत में) ३. जो समास-द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त।

समस्थली—संज्ञा स्त्री० अंतर्वेद। गंगा और यमुना के बीच का देश।

समस्या—संज्ञा स्त्री० १. कठिन प्रश्न। २. कठिनाई। संकट। आसानी से हल न होनेवाली दिक्कत। ३. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद, जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है। ४. मिश्रण। मिलाने की क्रिया। एक साथ मिलाने का भाव। संघटन।

समस्यापूर्ति—संज्ञा स्त्री० किसी छन्द के अन्तिम पद को लेकर या किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।

समाँ—संज्ञा पुं० १. समय। वक्त। २. दृश्य। **मुहा०**—**समाँ बँधना**=संगीत या दृश्य आदि का इतना अच्छा प्रदर्शन होना कि लोग मुग्ध हो जायँ।

समांतक—संज्ञा पुं० कामदेव।

समांतर—वि० दो या दो से अधिक रेखाएँ, जो शुरू से अन्त तक बराबर समान अन्तर पर रहें। समानान्तर।

समा—संज्ञा स्त्री० वर्ष। साल। संज्ञा पुं० दे० "समाँ"।

समाई—संज्ञा स्त्री० १. सामर्थ्य। शक्ति। २. औकात। ३. फैलाव। ४. चौड़ाई। ५. समाने की क्रिया या भाव। ६. विसात। गुंजाइश।

समाकुल—वि० १. व्याप्त। घिरा हुआ। २. दुखी। परेशान।

समाख्यान—संज्ञा पुं० किसी घटना की मुख्य बातें क्रम से वर्णन करना।

समागत—वि० जिसका आगमन हुआ हो। आया हुआ।

समागम—संज्ञा पुं० १. आगमन। आना। २. मिलना। भेंट। ३. मैथुन।

समाचार—संज्ञा पुं० संवाद। खबर। हाल।

समाचारपत्र—संज्ञा पुं० अखबार। वह पत्र, जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों।

समाज—संज्ञा पुं० १. समूह। व्यक्तियों का समूह। समुदाय। २. एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगों का समूह। ३. विशेष उद्देश्य से स्थापित की गई संस्था। ४. सभा।

समाजवाद—संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त, जिसमें सारी सम्पत्ति समाज की मानी जाती है और सबके लाभ के लिए सब लोग कार्य करते हैं। (अंग्रे०—सोशलिज्म)

समाजवादी—संज्ञा पुं० समाजवाद के सिद्धान्त को माननेवाला। (अंग्रे०—सोशलिस्ट)

समाजशास्त्र—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जो मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानकर उसके समाज और संस्कृति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन करता है। (अंग्रे०—सोशियालाजी)

समाजशास्त्री—संज्ञा पुं० समाज-शास्त्र का जाननेवाला या समाज-शास्त्र का पंडित।

समाजी—संज्ञा पुं० १. गाने-बजानेवाली वेश्या के साथ तबलची या सारंगी बजानेवाला।

२. आर्य-समाजी (बोलचाल में आर्य-समाजी का संक्षिप्त रूप)। ३. सभासद।

समादर—संज्ञा पुं० [वि० समादृत, समादरणीय] आदर। सम्मान। खातिर।

समादृत—वि० जिसका बहुत अच्छी तरह से आदर-सत्कार हुआ हो। बहुत अधिक सम्मानित।

समादेश—संज्ञा पुं० १. अधिकारपूर्वक आदेश या आज्ञा। २. निर्देश। ३. परामर्श। सलाह। ४. किसी को काम करने का आदेश देना। (अंग्रे०—कमांड)।

समादेशक—संज्ञा पुं० आदेश देनेवाला। वह प्रधान सैनिक अधिकारी, जिसके आदेश से सेना के कार्य होते हैं। (अंग्रे०—कमाण्डर)

समाधान—संज्ञा पुं० १. शंका दूर करना। किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। २. किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ३. निष्पत्ति। ४. निराकरण। ५. मत की पुष्टि। समर्थन।
वि० १. समाधानीय। चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। समाधि। २. बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना, जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो (नाटक)।

समाधानना*—क्रि० स० समाधान करना। संतोष या सान्त्वना देना।

समाधि—संज्ञा स्त्री० १. योग की क्रिया-विशेष। २. योग-द्वारा प्राप्त शरीर की वह अवस्था, जिसमें संज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और कोई शारीरिक क्रिया नहीं होती। ३. साधु-महात्माओं का योग-द्वारा जीवित दशा में जमीन के अन्दर बैठकर अपना प्राण-त्याग करना (समाधि लेना)। ४. किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना। ५. वह स्थान, जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। ६. योग। ७. योग का चरम फल। इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के कष्टों से मुक्त हो जाता है और उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। ८. समर्थन। ९. ग्रहण करना। अंगीकार। १०. प्रतिज्ञा। ११. निद्रा। नींद। १२. काव्य का एक गुण, जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैव-संयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है। १३. एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें किसी आकस्मिक कारण से कोई कार्य्य बहुत ही सुगमतापूर्वक होना बतलाया जाता है।

समाधि-क्षेत्र—संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ योगियों आदि ने समाधि ली हो या उनके मृत शरीर गाड़े जाते हों।

समाधित—वि० जिसने समाधि लगाई या ली हो।

समाधिस्थ—वि० जो समाधि लगाए हुए हो।

समान—वि० १. बराबर। तुल्य। २. जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्त्व आदि में एक से हों।

समानता—संज्ञा स्त्री० समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता।

समानांतर—वि० दो या अधिक रेखाएँ जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अन्तर पर रहें। (अंग्रे०—पैरेलल)

समाना—क्रि० अ० अंदर आना। अटना। भरना।
क्रि० स० अंदर करना। भरना।

समानाधिकरण—संज्ञा पुं० व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश, जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आता है।

समानार्थ—संज्ञा पुं० वे शब्द आदि, जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय।

समानिका—संज्ञा स्त्री० एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण और एक गुरु होता है। समानी।

समापक—संज्ञा पुं० समाप्त या खत्म करनेवाला। पूरा करनेवाला।

समापन—संज्ञा पुं० [वि० समाप्य, समापनीय] १. समाप्त करना। पूरा करना। २. मार डालना। वध।

समापात—संज्ञा पुं० संयोग से दो कार्यों या बातों का साथ-साथ या एक ही समय में घटित होना।

समापिका–संज्ञा स्त्री० व्याकरण में वह क्रिया, जिससे किसी कार्य्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है।

समापित–वि० समाप्त किया हुआ। खत्म। पूरा किया हुआ।

समाप्त–वि० जो खत्म या पूरा हो चुका हो। अन्त। खत्म। पूरा।

समाप्ति–संज्ञा स्त्री० खत्म होना। पूरा होना। अन्त।

समाप्य–वि० समाप्त करने योग्य। खत्म करने लायक।

समायुक्त–वि० जरूरत पड़ने पर दिया गया या पास पहुँचाया हुआ।

समायुक्तक–संज्ञा पुं० १. प्रबन्ध करनेवाला। २. ऐसा प्रबन्ध करनेवाला कि जरूरत की चीजें लोगों को मिल जायँ या उनके पास पहुँच जायँ। समायोजक।

समायोग–संज्ञा पुं० १. संयोग। लोगों का एकत्र होना। २. समारोह। ३. ऐसा प्रबन्ध या इन्तजाम, जिसमें लोगों की जरूरत की चीजें उन्हें मिल जायँ, या उनके पास पहुँच जायँ।

समायोजन–संज्ञा पुं० [वि० समायोजक] अच्छी तरह आयोजन। ऐसा प्रबन्ध जिसमें लोगों को जरूरत की चीजें मिल जायँ या उनके पास पहुँच जायँ। समायोग।

समारंभ–संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह आरंभ होना। २. समारोह।

समारोह–संज्ञा पुं० १. बहुत धूमधाम से होनेवाला कोई उत्सव या बड़ा काम। भारी आयोजन। धूमधाम। २. तड़क-भड़क।

समालोचक–संज्ञा पुं० समालोचना करनेवाला। किसी चीज को अच्छी तरह देख-भाल करके उसके गुण और दोष को प्रकट करनेवाला।

समालोचन–संज्ञा पुं० दे० "समालोचना"।

समालोचना–संज्ञा स्त्री० १. अच्छी तरह देखना-भालना। २. किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। ३. गुण-दोष का उचित विवेचन। वह कथन या लेख आदि, जिसमें इस प्रकार गुण और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।

समावर्त्तन–संज्ञा पुं० [वि० समावर्त्तनीय] १. वापस आना। २. लौटना। ३. वैदिक काल का एक संस्कार, जो गुरुकुल में ब्रह्मचारी के अध्ययन समाप्त कर लेने पर उसके स्नातक बनकर घर लौटने के समय होता था। ४. विश्वविद्यालयों में प्रतिवर्ष होनेवाला वह समारोह, जिसमें परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पदवियाँ दी जाती हैं। पदवीदान-समारोह। (अंग्रे०–कनवोकेशन)

समावास–संज्ञा पुं० १. रहने का स्थान। २. एक देश से दूसरे देश में जाकर इस तरह बस जाना, जिसमें उस देश की नागरिकता के अधिकार मिल जायँ। (अंग्रे०–डोमिसाइल)

समाविष्ट–वि० जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ।

समावृत–वि० अच्छी तरह ढका हुआ। संज्ञा पुं० १. वापस आया हुआ। २ जो अध्ययन समाप्त करके घर लौट आया हो।

समावेश–संज्ञा पुं० १. एक का दूसरे में मिलना। २. एक साथ या एक जगह रहना। ३. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। ४. मनोनिवेश। चित्त को एक ओर लगाना।

समाश्रय–संज्ञा पुं० आश्रय। शरण।

समाश्रित–वि० आश्रय या शरण में रहनेवाला।

समास–संज्ञा पुं० १. पदार्थों का एक में मिलना। सम्मिलन। २. संक्षेप। ३. समर्थन। ४. संग्रह। ५. व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना। यह चार प्रकार का होता है—अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व।

समासीन–वि० भली भाँति आसीन, खूब अच्छी तरह से बैठा हुआ। दे० "असीन"।

समाहरण–संज्ञा पुं० दे० "समाहार"।

समाहर्त्ता–संज्ञा पुं० १. समाहार करनेवाला। संग्रह करनेवाला। मिलानेवाला। २. प्राचीन काल का राज-कर वसूल करनेवाला एक कर्मचारी (अंग्रे०–कलेक्टर)।

समाहार–संज्ञा पुं० १. बहुत-सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २. समूह। राशि। ढेर। ३. मिलना। मिलाप। ४. कर, चन्दा, या प्राप्त धन आदि की वसूली। ५. क्रम, नियम आदि के अनुसार ठीक ढंग से इकट्ठा होना।

समाहार-द्वंद्व–संज्ञा पुं० वह द्वंद्व-समास, जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे—सेठ-साहूकार।

समाहित–वि० १. समाया हुआ। २. संयुक्त। मिला हुआ। ३. एक जगह इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। केंद्रित। ४. ठीक किया हुआ। ५. पूरा किया हुआ। समाप्त। ६ दबाया हुआ। शांत। ७. स्वीकृत। ८. समाधिस्थ।

समिति–संज्ञा स्त्री० १. सभा। २. समाज। ३. किसी विशेष कार्य्य के लिए नियुक्त की हुई छोटी सभा। (अंग्रे०–कमेटी)। ४. वैदिक काल की वह सभा या संस्था, जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था।

समिद्ध–वि० १. जलता हुआ। प्रज्वलित। २. उत्तेजित। भड़का या भड़काया हुआ।

समिध–संज्ञा पुं० अग्नि।

समिधा–संज्ञा स्त्री० हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण–संज्ञा पुं० १. समान या बराबर करना। २. गणित में एक क्रिया, जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं। ३. बीजगणित की एक क्रिया जिसके द्वारा दो राशियाँ बराबर की जाती हैं।

समीक्षक–वि० समीक्षा करनेवाला। अच्छी तरह से देखने-भालनेवाला। छान-बीन और जाँच-पड़ताल करनेवाला। आलोचना करनेवाला। समालोचक।

समीक्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १. अच्छी तरह देखना। २. छान-बीन या जाँच। समालोचना। गुण-दोष का विवेचन। ३. बुद्धि। ४. यत्न। कोशिश। ५. मीमांसा-शास्त्र।

समीचीन–वि० [संज्ञा स्त्री० समीचीनता] १. उचित। वाजिब। न्यायसंगत। २. यथार्थ। ठीक।

समीप–वि० [संज्ञा समीपता] पास। नजदीक। निकट।

समीपवर्त्ती–वि० समीप का। पास का।

समीपस्थ–वि० जो समीप या पास में स्थित हो। नजदीक।

समीपी–वि० १. पड़ोसी। २. नजदीकी। ३. स्वजन। आत्मीय।

समीर–संज्ञा पुं० हवा। वायु।

समीरण–संज्ञा पुं० हवा। वायु।

समुंदर–संज्ञा पुं० दे० "समुद्र"।

समुचित–वि० १. उचित। जैसा चाहिए, वैसा। २. उपयुक्त। ठीक। वाजिब।

समुच्चय–संज्ञा पुं० [वि० समुच्चित] १. बहुत-सी वस्तुओं का एक में मिलना। मिलान। संग्रह। २. समूह। राशि। ढेर। ३. साहित्य में एक अलंकार, जिसके दो भद हैं। एक तो जहाँ आश्चर्य्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत-से भावों के एक साथ उदित होने का वर्णन हो और दूसरा, जहाँ किसी एक ही कार्य्य के लिए बहुत से कारणों का वर्णन हो।

समुज्ज्वल–वि० [संज्ञा समुज्ज्वलता] १. विशेष रूप से या बहुत उज्ज्वल या सफेद। २. चमकता हुआ। प्रकाशमान।

समुझ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

समुत्थान–संज्ञा पुं० १. उठने की क्रिया। उन्नति। २. उत्पत्ति। ३. आरंभ।

समुत्सुक–वि० [संज्ञा समुत्सुकता] विशेष रूप से उत्सुक। बहुत इच्छुक।

समुदय–संज्ञा पुं० दे० "उदय"।
वि० समस्त। दे० "समुदाय"।

समुदाय–संज्ञा पुं० १. समूह। २. झुंड।

समुदाव–संज्ञा पुं० दे० "समुदाय"।

समुदित–वि० १. उठा हुआ। उन्नत। २. उत्पन्न।

समुद्यत–वि० भली भाँति उद्यत। अच्छी तरह से तैयार।

समुद्र–संज्ञा पुं० १. सागर। जलनिधि। खारे पानी का विशाल आगार, जो पृथ्वी को चारों

ओर से घेरे हुए है। २. नदियों के राजा, स्वामी या पति के रूप में मान्य (साहित्य)। पुराणों में सात समुद्रों का वर्णन है—लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध और जल। ३. किसी विषय या गुण का बहुत बड़ा आगार या खजाना।

समुद्रफल–संज्ञा पुं० एक औषध।

समुद्रफेन–संज्ञा पुं० समुद्र के पानी का फेन या झाग।

समुद्रयात्रा–संज्ञा स्त्री० समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयान–संज्ञा पुं० जहाज।

समुद्रलवण–संज्ञा पुं० करकच नमक, जो समुद्र के जल से बनता है।

समुद्री–वि० समुद्र-सम्बन्धी। दे० "समुद्रीय"।

समुद्रीय–वि० १. समुद्र-सम्बन्धी। २. समुद्र का। ३. समुद्र में उत्पन्न होनेवाला या समुद्र में रहनेवाला।

समुन्नत–वि० १. खूब बढ़ा-चढ़ा हुआ। भली भाँति उन्नत। जिसकी विशेष उन्नति हुई हो। २. बहुत ऊँचा।

समुन्नति–संज्ञा स्त्री० [वि० समुन्नत] १. विशेष या पर्याप्त उन्नति। काफी तरक्की। २. महत्त्व। बड़ाई। ३. उच्चता।

समुपस्थित–वि० दे० "उपस्थित"।

समुल्लास–संज्ञा पुं० [वि० समुल्लसित] १. उल्लास। आनंद। खुशी। २. ग्रंथ आदि का अध्याय।

समुहा–वि० सामने का।
क्रि० वि० सामने। आगे।

समुहाना–क्रि० अ० सामने आना।

समूचा–वि० सारा। पूरा। समस्त।

समूर, समूरु–संज्ञा पुं० शंबर या साबर नामक हिरन।

समूल–वि० जिसमें मूल या जड़ हो। जिसका कोई कारण हो। कारण-सहित।
क्रि० वि० जड़ से। जड़ के साथ। मूल-सहित।

समूह–संज्ञा पुं० १. बहुत-सी चीजों का ढेर। राशि। २. समुदाय। झुंड।

समृद्ध–वि० १. संपन्न। बहुत धनी। भरा-पूरा। २. भाग्यवान्।

समृद्धि–संज्ञा स्त्री० १. बहुत धन, ऐश्वर्य आदि से युक्त होने की अवस्था। सम्पन्नता। बहुत अमीरी। ऐश्वर्य। धन। सम्पत्ति। २. उन्नति। बढ़ती। ३. सफलता। ४. प्रभाव।

समेटना–क्रि० स० १. सिकोड़ना। बटोरना। संकोच करना। २. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। ३. अपने ऊपर लेना।

समेत–वि० संयुक्त। मिला हुआ।
अव्य० सहित। साथ।

समै, समैया*–संज्ञा पुं० दे० "समय"।

समोना*–क्रि० स० मिलाना।

समोसा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नमकीन पकवान। (आलू, मसाला आदि भरकर बनाई हुई मैदे की खाने की नमकीन चीज) तिकोना।

समौरिया–वि० बराबर की उमरवाला। समवयस्क।

सम्मत–संज्ञा पुं० १. दे० "सम्मति"। राय। सलाह। २. अनुमति।
वि० सहमत। जिसकी राय मिलती हो।

सम्मति–संज्ञा स्त्री० १. सलाह। राय। मत। २. विचार। ३. अभिप्राय। ४. अनुमति। आदेश। ५. किसी विषय पर कुछ लोगों की एक राय होना। ६. एकमन होना। ७. किसी के प्रस्ताव या विचार के समर्थन में दी जानेवाली अनुमति।

सम्मन–संज्ञा पुं० [अंग्रे० समन] किसी को न्यायालय में उपस्थित होने के लिए उस न्यायालय-द्वारा जारी किया गया आज्ञापत्र।

सम्मान–संज्ञा पुं० [वि० सम्मानित] प्रतिष्ठा। इज्जत। सम्मान या आदर करना।

सम्माननना–संज्ञा स्त्री० दे० "सम्मान"।
*क्रि० स० आदर या मान करना।

सम्मानित–जिसका सम्मान हुआ हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

सम्मार्जनी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।

सम्मिलन–संज्ञा पुं० मिलाप। मिलन। मेल।

सम्मिलित–वि० मिला हुआ। शामिल। मिश्रित। संयुक्त।

सम्मिश्रक–संज्ञा पुं० सम्मिश्रण करनेवाला। मिलानेवाला। विभिन्न दवाओं को मिलाकर के दवा तैयार करनेवाला। (अंग्रे०–कम्पाउण्डर)

सम्मिश्रण–संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया। मेल। मिलावट। कई चीजों का एक में मेल। २. कई तरह की दवाओं को एक में मिलाना।

सम्मुख–अव्य० सामने। आगे। समक्ष।

सम्मेलन–संज्ञा पुं० १. किसी विशेष कार्य के लिए या किसी विषय पर विचार करने के लिए एकत्र मनुष्यों का समाज। सभा। समाज। परिषद्। जमघट। २. मिलाप। संगम।

सम्मोहन–संज्ञा पुं० [वि० सम्मोहक] १. मोहित या मुग्ध करना। २. मोह उत्पन्न करनेवाला। ३. एक प्राचीन अस्त्र, जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

सम्यक्–क्रि० वि० १. सब प्रकार से। २. अच्छी तरह। भली भाँति। ठीक-ठीक। वि० पूरा। सब।

सम्राज्ञी–संज्ञा स्त्री० सम्राट् की पत्नी। साम्राज्य की स्वामिनी या अधीश्वरी। मलका।

सम्राट्–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा राजा, जिसके अधीन अनेक राजा या राज्य हों। चक्रवर्ती राजा। महाराजाधिराज। शाहंशाह।

सम्हलना–क्रि० अ० दे० "सँभलना"।

सयन*–संज्ञा पुं० १. दे० "शयन"। २. बंधन।

सयानपत–संज्ञा स्त्री० दे० "सयानपन"।

सयानपन–संज्ञा पुं० सयाना या चालाक होने का भाव। चालाकी।

सयाना–संज्ञा पुं० १. काफी उम्रवाला। बड़ा। वयस्क। २. चतुर। होशियार। चालाक। ३. धूर्त्त। ४. निपुण। ५. बुद्धिमान्।

सयोनि–वि० एक ही योनि से उत्पन्न। एक ही जाति या वर्ग का।

सर–संज्ञा पुं० तालाब। ताल। २. *†दे० "शर"। [फा०] १. सिर। २. सिरा। चोटी। संज्ञा स्त्री० १. दे० "शर"। २. चिता। वि० १. दमन किया हुआ। २. जीता हुआ। पराजित।

सरअंजाम–संज्ञा पुं० [फा०] सामान। सामग्री।

सरकंडा–संज्ञा पुं० नरकट। सरपत की जाति का एक पौधा।

सरक–संज्ञा स्त्री० १. सरकने की क्रिया या भाव। २. शराब की खुमारी।

सरकना–क्रि० अ० १. जमीन से सटकर धीरे से बढ़ना। खिसकना। २. टलना। हटना। ३. आगे बढ़ना।

सरकश–वि० [फा०] [संज्ञा सरकशी] १. उद्धत। उद्दंड। शरारती। २. विरोध में सिर उठानेवाला।

सरकस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. शारीरिक व्यायाम के खेल और जंगली जानवरों को पालतू बनाकर उनसे खेल दिखाने का तमाशा। २. ऐसे खेल दिखलाने का दल।

सरकाना–क्रि० स० खिसकाना। टालना। हटाना।

सरकार–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १. राज्य-शासन करनेवाली संस्था। राज्य-संस्था। शासन-सत्ता। २. मालिक। प्रभु। ३. (अंग्रे०–गवर्नमेंट)।

सरकारी–वि० [फा०] १. सरकार का। २. सरकार-सम्बन्धी। राज्य का। राजकीय। ३. मालिक का।

यौ०—सरकारी कागज=राज्य के दफ्तर का कागज।

सरखत–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह दस्तावेज या कागज, जिस पर कर्जा लेनेवाले के हस्ताक्षर के साथ कर्जा दिए जाने और उसके चुकाने आदि का ब्योरा लिखा रहता है। २. वह दस्तावेज (हस्तलिखित पत्र), जिस पर मकान आदि के किराए या और तरह के लेन-देन का ब्योरा लिखा रहता है।

सरग*–संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

सरगतिय*–संज्ञा स्त्री० अप्सरा। परी।

सरगना–संज्ञा पुं० [फा०] सरदार। अगुआ। क्रि० अ० डींग हाँकना।

सरगम–संज्ञा पुं० [सा, रे, ग, म] संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम। (स्वरग्राम)

सर-गरदाँ–वि० [फा०] [संज्ञा स्त्री० सर गरदानी] १. घबराया हुआ। २. चक्कर में पड़ा हुआ।

सर-गर्म–वि० [संज्ञा सरगर्मी] [फा०] १. जोशीला। आवेशपूर्ण। २. उमंग से भरा हुआ। उत्साही।

सरगर्मी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जोश। आवेश। उमंग। २. जोर-शोर। चहल-पहल।

सर-घर-संज्ञा पुं० तीर रखने का खाना। तरकश।

सरघा–संज्ञा स्त्री० मधुमक्खी। शहद की मक्खी।

सरजना-क्रि० स० १. दे० "सिरजना।" सृष्टि करना। २. रचना। बनाना।

सरजा–संज्ञा पुं० [फा० सरजाह] १. श्रेष्ठ व्यक्ति। २. सरदार। ३. सिंह। शेर।

सरजीवन†–वि० १. जिलानेवाला। २. हरा-भरा। ३. उपजाऊ।

सर-जोर–वि० [फा०] (संज्ञा सर-जोरी) १. बहुत बलवान् या ताकतवर। २. जबरदस्त। प्रबल। ३. दबंग। जिसका बहुत रोबदाब हो। प्रभावशाली। ४. विद्रोही। ५. उद्दंड।

सरणी–संज्ञा स्त्री० १. पगडंडी। मार्ग। रास्ता। २. लकीर। रेखा। ३. ढंग।

सरताज–संज्ञा पुं० दे० "सिरताज"।

सरतारा*–वि० जो अपना काम खत्म करके निश्चिन्त हो गया हो।

सरद–वि० दे० "सर्द"।

सरदई–वि० सरदे के रंग का। हरापन लिये हुए पीला।

सर-दर–क्रि० वि० १. एक सिरे से। २. सब एक साथ मिला करके उसके विचार से या उसके अनुपात से। औसत में।

सरदा–संज्ञा पुं० [फा०] काबुल का बढ़िया खरबूजा।

सरदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. नायक। अगुवा। नेता। प्रधान। २. श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. शासक। ४. अमीर। रईस।

यौ०–सरदारजी=किसी सिख को सम्बोधित करने के लिए आदरसूचक शब्द। [स्त्री० सरदारणी]

सरदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सरदार का पद या भाव।

सरदी–संज्ञा स्त्री० दे० "सर्दी"।

सरधन*–वि० धनी। अमीर।

सरधर*–संज्ञा पुं० तीर रखने का खाना। तरकश।

सरधा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"। संज्ञा पुं० दे० 'सरदा'।

सरन*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "शरण"।

सरनदीप–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल-द्वीप"।

सरना–क्रि० अ० १. सरकना। खिसकना। २. हिलना। डोलना। ३. काम चलना। काम निकलना। ४. किया जाना। निबटना। निर्वाह होना। पूरा होना।

सरनाम–वि० [फा०] बहुत नामवाला। प्रसिद्ध। मशहूर।

सरनामा–संज्ञा पुं० [फा०] १. शीर्षक। २. पत्र प्रारम्भ करते समय लिखा जानेवाला सम्बोधन। ३. पत्र के ऊपर लिखा जानेवाला पता।

सरपंच–संज्ञा पुं० पंचों का प्रधान। पंचायत का सभापति।

सरपंजर*–संज्ञा पुं० बाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।

सरपट–क्रि० वि० १. घोड़े की एक प्रकार की बहुत तेज चाल या दौड़, जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ-साथ आगे फेंकता है। २. बहुत तेज दौड़ के साथ।

सरपत–संज्ञा पुं० कुश की तरह की एक घास, जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है।

सर-परस्त–संज्ञा पुं० [फा०] पालन-पोषण करनेवाला। अभिभावक। संरक्षक। रक्षा करनेवाला।

सरपेच–संज्ञा पुं० [फा०] १. पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना। २. दो ढाई अंगुल चौड़ा गोटा।
सरपोश–संज्ञा पुं० [फा०] थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।
सरफराज–वि० [फा०] [संज्ञा सरफराजी] ऊँचे पद पर पहुँचा हुआ। सम्मानित।
सरफराना*–क्रि० अ० घबराना। व्याकुल होना। परेशान या बेचैन होना।
सरफोका–संज्ञा पुं० दे० "सरकंडा"।
सरबंधी*–संज्ञा पुं० तीरंदाज। धनुर्धर।
सरब*†–वि० दे० "सर्व"।
सर-बराह–संज्ञा पुं० [फा०] १. कारिंदा। प्रबंधकर्त्ता। इन्तजाम करनेवाला। २. मजदूरों आदि का सरदार। ३. रास्ते में ठह-रने और खाने-पीने आदि का प्रबन्ध करनेवाला।
सरबराहकार–संज्ञा पुं० किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा। इन्तजाम करनेवाला।
सरबरि*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सरवरि"। बराबरी। मुकाबला। २. ढिठाई। गुस्ताखी। ३. झगड़ा। तकरार।
सरबस*‡–संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।
सरमा–संज्ञा स्त्री० इन्द्र तथा अन्य देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया (वैदिक)।
सरयू–संज्ञा स्त्री० उत्तर-भारत की एक प्रसिद्ध नदी। घाघरा नदी।
सरराना†–क्रि० अ० [अनु०] हवा में किसी चीज के बहुत तेजी से चलने का शब्द होना।
सरल–वि० [स्त्री० सरला] १.सहज। आसान। २. जो टेढ़ा न हो। सीधा। ३. निष्कपट। संज्ञा पुं० १. चीड़ का पेड़। २. सरल का गोंद। गंधा-बिरोजा।
सरलता–संज्ञा स्त्री० १. सुगमता। आसानी। २. टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। ३. निष्कपटता। सिधाई। ४. सादगी। भोला-पन।
सरल-निर्य्यास–संज्ञा पुं० १. गंधा-बिरोजा। २. ताड़पीन का तेल।
सरलीकरण–संज्ञा पुं० किसी कठिन विषय को सरल या आसान करने की क्रिया या भाव। (अंग्रे०–सिम्प्लीफिकेशन)
सरवन*–संज्ञा पुं० दे० "श्रवण या श्रवण-कुमार"।
सरवर–संज्ञा पुं० दे० "सरोवर"।
सरवरि*‡–संज्ञा स्त्री० बराबरी। तुलना।
सरवरिया–संज्ञा पुं० सरयूपारीण। वि० सरवार या सरयू-पार का। सरयू पार का रहनेवाला।
सरवाक–संज्ञा पुं० १. शरावक। संपुट। २. प्याला। कसोरा। ३. दीया।
सरवान–संज्ञा पुं० तंबू। खेमा।
सरवार–संज्ञा पुं० सरयू नदी के उस पार का प्रदेश, जिसमें गोरखपुर और बस्ती आदि जिले हैं।
सरविस–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] दे० "सर्विस"।
सरस–वि० [संज्ञा स्त्री० सरसता] १. रसीला। रसयुक्त। गीला। तर। २. हरा। ताजा। ३. सुंदर। मनोहर। ४. मधुर। मीठा। ५. रस या कोमल भाव उत्पन्न करनेवाला। ६. उत्तम। ७. रसिक। ८. सहृदय। भावपूर्ण।
सरसई*–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. सरसता। ३. रसपूर्णता। रसिकता। हरापन। ताजापन। ४. फल के छोटे अंकुर या दाने, जो पहले दिखाई पड़ते हैं।
सरसता–संज्ञा स्त्री० १. सरस होने का भाव। २. रसीलापन। रसिकता। ३. भावपूर्णता। ४. सुंदरता। ५. मधुरता। मीठापन। ६. गीलापन। आर्द्रता। तरी।
सरसना–क्रि० अ० १. हरा होना। पनपना। बढ़ना। २. शोभा देना। सोहाना। ३. रसपूर्ण होना। ४. भाव की उमंग से भरना।
सरसब्ज–वि० [फा०] १. हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २. वह जगह, जहाँ हरियाली हो।
सर-सर–संज्ञा पुं० १. जमीन पर रेंगने का शब्द। २. वायु चलने से उत्पन्न ध्वनि, जैसे साँप आदि के जमीन पर तेजी से रेंगने से पैदा होनेवाली आवाज।
सरसराना–क्रि० अ० [संज्ञा स्त्री० सरसराहट] १. हवा का सर-सर की आवाज

उनकी स्त्री कही जाती हैं। शारदा। २. विद्या। इल्म। ३. ब्राह्मी बूटी। ४. एक प्राचीन नदी। कहा जाता है कि पृथ्वी के नीचे-नीचे बहकर यह नदी प्रयाग में गंगा और यमुना से मिल गई है, जिससे त्रिवेणी (संगम) नाम पड़ा। ५. पंजाब की एक प्राचीन नदी, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में है। ६. सोमलता। ७. एक छंद का नाम।

सरस्वती-पूजा–संज्ञा स्त्री० सरस्वती का उत्सव, जो कहीं वसंतपंचमी को और कहीं कहीं आश्विन महीने में होता है।

सरहंग–संज्ञा पुं० [फा०] १.सेनापति। २. कोतवाल। ३. सैनिक। सिपाही। ४. पहलवान।

सरह–संज्ञा पुं० १. फतिंगा। २. टिड्डी।

सरहज–संज्ञा स्त्री० साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

सरहटी–संज्ञा स्त्री० सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।

सरहद–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। २. किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न। सीमान्त।

सरहदी–वि० सरहद-संबंधी। सीमा-संबंधी।

सरहरी–संज्ञा स्त्री० मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।

सराई†–संज्ञा स्त्री० १. शलाका। सलाई। २. सरकंडे की पतली छड़ी। ३. सकोरा। दीया।

सराग†–संज्ञा पुं० लोहे की सीख। सींखचा। छड़।

सराध*‡–संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।

सराना*†–दे० "सारना"। पूरा कराना। काम पूरा कराना।

सराप–संज्ञा पुं० दे० "श्राप"।

सरापना*†–क्रि० स० शाप देना। बददुआ देना।

सरापा–संज्ञा पुं० सिर से पैर तक। नख-शिख तक।

सराफ़–संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़] १. सोने-चाँदी का व्यापारी। २. रुपए-नोट आदि भुनाने के लिए रुपए-पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

सराफा–संज्ञा पुं० [अ०] १.सराफ़ का काम या

पेशा। सोने-चाँदी का व्यापार। २. रुपए के लेन-देन का काम। ३. सोने-चाँदी का बाजार। सराफों का बाजार। ४. कोठी।

सराफी–संज्ञा स्त्री० १. सोने-चाँदी या रुपए-पैसे के लेन-देन का रोजगार। २. नोट, रुपए आदि भुनाने का बट्टा। ३. महाजनी लिपि। मुँड़िया।

सराबोर–वि० बिलकुल भीगा हुआ। आप्लावित। तरबतर।

सराय–संज्ञा स्त्री० [फा०] यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना। धर्मशाला।

सराव*†–संज्ञा पुं० १. शराब पीने का प्याला। मद्यपात्र। २. कसोरा। ३. कटोरा। ४. दीया।

सरावग, सरावगी–संज्ञा पुं० श्रावक। जैन-धर्म्म माननेवाला। जैन।

सरासन*–संज्ञा पुं० दे० "शरासन"।

सरासर–अव्य० [फा०] १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २. बिलकुल। पूरा पूरा। एकदम। ३. प्रत्यक्ष। साक्षात्।

सरासरी–क्रि० वि० १. जल्दी में। हड़बड़ी में। २. मोटे तौर पर।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आसानी। २. जल्दी। ३. साधारण अनुमान। मोटा अंदाज।

सराह*–संज्ञा स्त्री० बड़ाई। प्रशंसा। श्लाघा।

सराहना–क्रि० स० तारीफ करना। प्रशंसा करना। बड़ाई करना।

संज्ञा स्त्री० तारीफ। प्रशंसा।

सराहनीय*–वि० १. तारीफ या बड़ाई करने लायक। प्रशंसा के योग्य। २. अच्छा। बढ़िया।

सरि*–संज्ञा स्त्री० १. नदी। २. झरना।

वि० सदृश। समान। बराबर।

सरिता–संज्ञा स्त्री० १. नदी। २. धारा।

सरित्पति–संज्ञा पुं० समुद्र।

सरियाना†–क्रि० स० तरतीब से लगाना। क्रम से ठीक करके रखना।

सरिवन–संज्ञा पुं० शालपर्णी नामक पौधा। त्रिपर्णी।

सरिवरि*†–संज्ञा स्त्री० १. बराबरी। समता। २. आपस में झगड़ा। तकरार। ३. चढ़ा-ऊपरी।

सरिश्ता–संज्ञा पुं० [फा०] १. अदालत। कचहरी। विभाग। महकमा। २. कार्यालय। दफ्तर।

सरिश्तेदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २. अदालतों में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिस*–वि० दे० "सदृश।" समान।

सरी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा तालाब। २. झरना। सोता।

सरीकता*–संज्ञा स्त्री० [अ० शरीक] शिरकत। शामिल होने का भाव। साझा।

सरीका, सरीखा–वि० समान। तुल्य।

सरीसृप–संज्ञा पुं० रेंगकर चलनेवाले जन्तु। साँप, गिरगिट, कनखजूरा आदि।

सरुज–वि० रोगी। बीमार।

सरुष–वि० क्रोधयुक्त। क्रुद्ध। नाराज।

सरूप–वि० १. जिसका कोई रूप या आकार हो। रूपयुक्त। आकारवाला। २. सदृश। समान। ३. रूपवान्। सुंदर।

‡संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।

सरूर–संज्ञा पुं० [फा० सुरूर] १. हलका नशा। २. खुशी। प्रसन्नता।

सरेख, सरेखा†*–वि० [स्त्री० सरेखी] १. बड़ा और समझदार। २. सयाना। चालाक।

सरेखना–क्रि० स० दे० "सहेजना"।

सरे-वक्त–क्रि० वि० [फा०] १. इसी समय। अभी। २. इस समय के लिए।

सरे-बाजार–क्रि० वि० [फा०] खुले आम। बाजार में। सबके सामने।

सरेस–संज्ञा पुं० [फा० सरेश] एक लसदार वस्तु, जो ऊँट, भैंस आदि के चमड़े या सींग और मछली के पोटे आदि को पकाकर निकालते हैं। सहरेश।

सरोट*†–संज्ञा पुं० सिलवट। कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट। शिकन।

सरो–संज्ञा पुं० [फा०] एक तरह का सीधा पेड़, जिसे बगीचों में शोभा के लिए लगाते हैं। बनझाऊ।

सरोकार–संज्ञा पुं० [फा०] १. आपस के व्यवहार का संबंध। २. लगाव। वास्ता।

सरोज–संज्ञा पुं० कमल।

सरोजना–क्रि० स० पाना ।

सरोजभव–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। विधाता । प्रजापति ।

सरोजिनी–संज्ञा स्त्री० १. कमलों से भरा हुआ तालाब। २. कमलों का समूह। ३. कमल का फूल ।

सरोद–संज्ञा पुं० [फा०] वीणा जैसा एक बाजा ।

सरोरुह–संज्ञा पुं० कमल ।

सरोवर–संज्ञा पुं० १. तालाब। २. झील।

सरोष–वि० क्रुद्ध। नाराज ।

सरो-सामान–संज्ञा पुं० [फा०] १. सारा सामान। पूरी सामग्री । २. उपकरण। क्रि० वि० सामान के साथ। सब सामान लिये-दिये ।

सरौता–संज्ञा पुं० [स्त्री० सरौती] सुपारी आदि काटने का एक औजार।

सरकिट हाउस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सरकारी कोठी, जिसमें दौरा करनेवाले बड़े अधिकारी ठहरते हैं।

सर्क्यूलर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. परिपत्र। गश्ती चिट्ठी। २. दफ्तरों में घुमाया जानेवाला आज्ञापत्र ।

सर्ग–संज्ञा पुं० १. चलना। आगे बढ़ना। गमन। गति। २. सृष्टि। ३. संसार। ४. बहाव। छोड़ना। चलाना । फेंकना। ५. उद्गम। उत्पत्ति-स्थान। ६. प्राणी । जीव। ७. संतान। औलाद। ८. स्वभाव। प्रकृति । ९. किसी ग्रंथ (विशेषतः काव्य) का अध्याय। १०. जीवों या प्राकृतिक वस्तुओं आदि का कोई अलग पूरा समूह या वर्ग—जैसे, वनस्पति-सर्ग, जीव-सर्ग।

सर्गबंध–वि० जो कई अध्यायों में बँटा हो जैसे—सर्गबंध काव्य ।

सर्गुन‡–वि० दे० "सगुण"।

सर्ज–संज्ञा पुं० १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। सलई का पेड़। २. राल। ३. धूना। संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक तरह का बढ़िया ऊनी कपड़ा ।

सर्जन–संज्ञा पुं० [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। फेंकना। निकालना। २. रचना। बनाकर तैयार करना। ३. सृष्टि। [अंग्रे०] चीर-फाड़ करनेवाला डाक्टर। शल्य-चिकित्सक ।

सर्टीफ़िकेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. प्रमाणपत्र। सनद। २. परीक्षा में उत्तीर्ण होने या किसी अधिकार का प्रमाणपत्र। ३. किसी प्रतिष्ठित परिचित-द्वारा अपनी योग्यता आदि के विषय में लिखाया गया प्रमाणपत्र।

सर्द–वि० [फा०] १. ठंढा। शीतल। २. मंद। सुस्त। काहिल। ३. ढीला। धीमा। ४. नपुंसक। नामर्द।

सर्दा–संज्ञा पुं० काबुल में होनेवाला बढ़िया खरबूजा ।

सर्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सर्द होने का भाव। ठंढ। २. जाड़ा। शीत। ३. जुकाम। नजला ।

सर्प–संज्ञा पुं० [स्त्री० सर्पिणी] १. साँप। २. रेंगना। रेंगकर चलने की क्रिया। ३. प्राचीन समय की एक म्लेच्छ जाति (पुराण)।

सर्पकाल–संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. जो साँप के लिए काल के समान हो। (गरुड़ पक्षी साँप खाता है।)

सर्पयज्ञ, सर्पयाग–संज्ञा पुं० एक यज्ञ, जिसे जनमेजय ने साँपों का नाश करने के लिए किया था ।

सर्पराज–संज्ञा पुं० साँपों के राजा, शेषनाग। वासुकि ।

सर्पविद्या–संज्ञा स्त्री० साँप को पकड़ने और उसे वश में करने की विद्या ।

सर्पिणी–संज्ञा स्त्री० १. साँपिन। मादा साँप। २. भुजंगी लता।

सर्पिल–वि० १. साँप की तरह। २. साँप के आकार या शक्ल का। ३. साँप की तरह कुंडली मारे हुए। ४. साँप की चाल की तरह का टेढ़ा-तिरछा।

सर्फ़–वि० [अ०] १. खर्च किया हुआ। जो खर्च हो चुका हो। २. जो खप चुका हो।

सर्फ़ा–संज्ञा पुं० [अ० सर्फः] खर्चा। व्यय।

सर्राटा–संज्ञा पुं० [अनु०] हवा के जोर से चलने पर होनेवाली सर्र-सर्र आवाज।

ऐसी तेजी से भागना, जिससे सर्र-सर्र आवाज हो।
मुहा०—सर्राटा भरना=बहुत तेजी से सर्र-सर्र आवाज करते हुए इधर से उधर दौड़ना।
सर्राफ़—संज्ञा पुं० [अ०] सोने-चाँदी का व्यापारी या रुपए-पैसे का लेनदेन करनेवाला। सराफ।
सर्व—वि० सब। सारा। समस्त।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु ३. पारा।
सर्वकाम—संज्ञा पुं० १. शिव। २. सब इच्छाएँ रखनेवाला। ३. सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला।
सर्वकाल—संज्ञा पुं० नित्य। सदा। हमेशा।
सर्वक्षमा—संज्ञा स्त्री० सबको दी जानेवाली क्षमा या माफी। किसी अवसर-विशेष पर या किसी खास कारण से सब बन्दियों को क्षमा करके छोड़ देना।
सर्वग—वि० सब जगह जानेवाला। सर्वव्यापी। सब जगह फैलनेवाला।
सर्वगत—वि० १. सबमें मौजूद रहनेवाला। २. सर्वव्यापी। सब जगह मौजूद।
सर्वग्रास—संज्ञा पुं० चंद्रमा या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण, जिसमें उनका मंडल पूरी तरह छिप जाता है। खग्रास ग्रहण।
सर्वजनीन—वि० दे० सार्वजनिक।
......त्—वि० सबको जीतनेवाला।
सर्वज्ञ—वि० [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. शिव। ३. बुद्ध। जैनियों के अर्हत।
सर्वज्ञता—संज्ञा स्त्री० 'सर्वज्ञ' होने का भाव। सब कुछ जानने का भाव।
सर्वज्ञा—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. एक योगिनी का नाम।
सर्वज्ञानी—संज्ञा पुं० दे० "सर्वज्ञ"।
सर्वतंत्र—संज्ञा पुं० सब प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्त।
वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों।
सर्वतः—अव्य० १. सब ओर। चारों तरफ़। २. सब प्रकार से। हर तरह से।
सर्वतोभद्र—वि० १. सब ओर से मंगल। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूंछ आदि सबके बाल मुड़े हों।
संज्ञा पुं० १. वह चौखूँटा मंदिर, जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २. यज्ञ की प्रधान वेदी, जिस पर प्रधान देवता की स्थापना होती है। ३. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न, जो पूजा पर चढ़ाए जानेवाले वस्त्र पर बनाया जाता है। ४ एक प्रकार की पहेली, जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग-अलग अर्थ लिये जाते हैं। ५ एक प्रकार का चित्र काव्य। ६. विष्णु का रथ।
सर्वतोभाव-अव्य० सब प्रकार से। खूब अच्छी तरह। भली भाँति।
सर्वतोमुख—वि० १. जिसका मुँह चारों ओर हो। चतुर्मुख ब्रह्मा। २. व्यापक। सब दिशाओं में प्रवृत्त। ३. जीवात्मा। ४. जल। ५. अग्नि। ६. आकाश। ७ शिव।
सर्वत्र—अव्य० सब जगह। चारों ओर।
सर्वथा—अव्य० १. सब तरह से। पूर्णतया। २. बिलकुल। सब।
सर्वदर्शी—संज्ञा पुं० [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखनेवाला। ईश्वर।
सर्वदा—अव्य० हमेशा। सदा।
सर्वनाम—संज्ञा पुं० व्याकरण में वह शब्द जिसक प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, जैसे—मैं, तू, वह।
सर्वनाश—संज्ञा पुं० सत्यानाश। पूरी बरबादी।
सर्वप्रिय—वि० सबको प्यारा। सबको अच्छा लगनेवाला।
सर्वभक्षी—वि० [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।
संज्ञा पुं० अग्नि।
सर्वभोगी—वि० [स्त्री० सर्वभोगिनी] १. सब कुछ खानेवाला। २. सबका आनंद लेनेवाला।
सर्वभूत—संज्ञा पुं० सारा संसार। चराचर।
सर्वमंगला—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।
सर्वयोगी—संज्ञा पुं० शिवजी।
सर्वरी*—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।
सर्ववेत्ता—वि० सब कुछ जाननेवाला। सर्वज्ञ।
सर्वव्यापक—संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।

सर्वव्यापी–वि० [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सब में रहनेवाला। सब जगह मौजूद। संज्ञा पुं० ईश्वर।

सर्वशक्तिमान्–वि० [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की शक्ति या सामर्थ्य रखनेवाला जो सब कुछ कर सके। जिसमें सब शक्तियाँ हों।

सर्वश्री–वि० जितने नामों का उल्लेख हो, उन सबके आगे अलग-अलग 'श्री' न लगाकर सबके आरम्भ में ही लगाया जानेवाला एक आदरसूचक शब्द।

सर्वश्रेष्ठ–वि० १. सबसे अच्छा। सर्वोत्तम। २. सबसे अधिक आदरणीय या पूज्य।

सर्व-साधारण–संज्ञा पुं० सब लोग। जनता। साधारण या आम जनता। आम लोग। वि० सामान्य। आम। जो सबमें आम तौर पर पाया जाय।

सर्व-सामान्य–वि० साधारण। मामूली। जो सबमें एक-सा पाया जाय।

सर्वस्व–संज्ञा पुं० जितना पास में हो, वह सब। सारी सम्पत्ति। सब कुछ। कुल पूँजी।

सर्वहर–संज्ञा पुं० १. सब कुछ छीन लेनेवाला। २. शिवजी। ३. यमराज। ४. काल।

सर्वांग–संज्ञा पुं० पूरा शरीर। सारा बदन। सब अंग। सब अंश।

सर्वांगीण–वि० १. सब अंगों से युक्त। सम्पूर्ण। २. सब अंगों से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. हर तरह से, जैसे सर्वांगीण उन्नति।

सर्वात्मा–संज्ञा पुं० १. सारे संसार की आत्मा। ब्रह्म। २. शिव।

सर्वाधिकार–संज्ञा पुं० सब कुछ करने का अधिकार। पूरा अधिकार या इख्तियार।

सर्वाधिकारी–संज्ञा पुं० १. जिसके हाथ में पूरा अधिकार या हो। सब कुछ करने का अधिकारी। २. सबसे बड़ा हाकिम।

सर्वाशी–वि० [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी।

सर्वास्तिवाद–संज्ञा पुं० एक दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें यह माना जाता है कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है और वे असत् नहीं हैं।

सर्विस–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. नौकरी। २. सेवा। ३. सेवा या नौकरी करने का भाव।

सर्वेश, सर्वेश्वर–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. सबका मालिक ३. चक्रवर्ती राजा।

सर्वेश्वरवाद–संज्ञा पुं० एक सिद्धान्त, जिसमें माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह संसार के सभी जीवों और तत्त्वों में एक समान व्याप्त है।

सर्वेसर्वा–वि० पूरा मालिक। सब कुछ करने-धरनेवाला। किसी काम में सब कुछ करने का अधिकार रखनेवाला।

सर्वोच्च–वि० [संज्ञा सर्वोच्चता] सबसे ऊँचा। सबसे बड़ा।

सर्वोत्तम–वि० सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोच्च न्यायालय–संज्ञा पुं० किसी देश की सबसे ऊँची अदालत। [अंग्रे०-सुप्रीम कोर्ट]

सर्वोपरि–वि० सबसे ऊपर। सबसे बढ़कर। सबसे उत्तम या बड़ा। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोषधि–संज्ञा स्त्री० आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग, जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं।

सर्षप–संज्ञा पुं० १. सरसों। २. सरसों भर की तौल।

सलई–संज्ञा स्त्री० १. दे० "शल्लकी"। २. चीड़ का पेड़। ३. चीड़ का गोंद। ४. कुंदुर।

सलगम–संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

सलज्ज–वि० शर्मवाला। लज्जाशील। क्रि० वि० लज्जा के साथ। शरमाते हुए।

सलना–क्रि० अ० १. साला जाना। २. छिदना। चुभना। गड़ना। ३. खाट या तख्त की पट्टी के सिरे का पावे के छेद में डाला जाना।

सलब–वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

सलमा–संज्ञा पुं० [अ०] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार, जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट–संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।

सलवार–संज्ञा स्त्री० दे० "शलवार"।

सलहज–संज्ञा स्त्री० सरहज। साले की पत्नी।

सलाई–संज्ञा स्त्री० १. शलाका। धातु या काठ आदि की बनी हुई कोई पतली छोटी छड़। २. दियासलाई। ३. सुरमा लगाने की सलाई। ४. सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मुहा०—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिए आँखों में लगाना।

सलाक–संज्ञा पुं० १. शलाका। २. तीर।

सलाख–संज्ञा स्त्री० १. धातु का बना हुआ छड़। २. सलाई। शलाका।

सला[illegible]–संज्ञा पुं० [अंग्रे० 'सैलाड'] १. मूली, प्याज आ[illegible] के पत्तों का अँगरेजी ढंग से डाला हुआ अचार। [illegible] एक प्रकार के कंद के पत्ते, जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम। बंदगी। आदाब।
मुहा०—दूर से सलाम करना=किसी बुरी चीज के पास न जाना। अलग रहना। सलाम लेना=सलाम का जवाब देना। सलाम देना=सलाम करना।

सलामत–वि० [अ०] १. सकुशल। २. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। ३. कायम। बरकरार। ४. जीवित और स्वस्थ। तंदुरुस्त और जिंदा।
क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

सलामती–संज्ञा स्त्री० १. कुशल-क्षेम। २. स्वस्थता।

सलामी–संज्ञा स्त्री० १. प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। २. सैनिकों द्वारा शस्त्रों से अभिवादन (सलाम) करने की प्रणाली (अंग्रे० 'गार्ड आफ आनर')। ३. किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर उसके सम्मान के लिए तोपों या बंदूकों का दागना। ४. वह धन, जो मकान या जमीन के मालिक किराएदारों से उसे किराए पर देने से पहले किराए के अलावा लेते हैं। पगड़ी।
मुहा०—सलामी लेना=किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति का खड़े होकर सैनिकों का अभिवादन स्वीकार करना।

सलार–संज्ञा पुं० एक तरह की चिड़िया।

सलाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सम्मति। राय। २. परामर्श। मशवरा।

सलाहकार–संज्ञा पुं० परामर्श देनेवाला। राय देनेवाला।

सलाही–संज्ञा पुं० दे० "सलाहकार"।

सलिल–संज्ञा पुं० पानी।

सलिलपति–संज्ञा पुं० समुद्र। वरुण (जल के देवता)।

सलीका–संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करने का ठीक-ठीक ढंग। योग्यता। लियाकत। २. हुनर। ३. शिष्टता। शऊर। तमीज। ४. चाल-चलन। बरताव। ५. सभ्यता। तहजीब।

सलीकामंद–वि० सभ्य। शऊरदार। तमीज-दार। हुनरमंद।

सलीता–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।

सलील–वि० १. लीला या क्रीड़ा से युक्त। कौतुकी। खेलाड़ी। कुतूहल-प्रिय। २. किसी प्रकार की भावभंगी से युक्त।

सलीस–वि० [अ०] १. आसान। सुगम। २. मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक–संज्ञा पुं० [अ०] बर्त्ताव। व्यवहार। आचरण। मेल। भलाई। नेकी।

सलेमशाही–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जूता, जिसमे फीता नहीं रहता और जो नोकदार होता है।

सलोतर–संज्ञा पुं० दे० "शालिहोत्र"।

सलोतरी–संज्ञा पुं० दे० "शालिहोत्री"।

सलोना–वि० [स्त्री० सलोनी] १. नमकीन। जिसमे नमक पड़ा हो। २. सुन्दर। ३. रसीला। ४. मनोहर।

सलोनापन–संज्ञा पुं० सलोना होने का भाव।

सलोनो–संज्ञा पुं० हिंदुओं का रक्षाबन्धन नामक त्योहार, जो श्रावण-मास में पूर्णिमा को पड़ता है। राखी पूनो।

सल्तनत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. प्रबंध। इंतजाम। ४. सुभीता। आराम।

सल्लम–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गाढ़ा। गजी।

सल्लू†–संज्ञा पुं० जूता सीने का चमड़ा।

सवत–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

सवन–संज्ञा पुं० १. बच्चा जनना। प्रसव। २. यज्ञस्नान। ३. यज्ञ। ४. चंद्रमा। ५. अग्नि।

सवर्ण–वि० १. समान वर्ण या जाति का। एक जातिवाला। २. समान। सदृश।

सवा–संज्ञा स्त्री० पूरा और उसका चौथाई। एक और उसका चौथाई। १¼।
वि० पूरे से उसका एक चौथाई अधिक।

सवाई–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का ऋण, जिसमें मूलधन का चौथाई सूद में देना पड़ता है। २. राजपूतों की एक उपाधि। ३. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
वि० सवा। एक और चौथाई।

सवाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. अच्छे काम का फल, जो स्वर्ग में मिलेगा। २. पुण्य। भलाई।

सवाया–वि० चौथाई अधिक। सवा गुना।

सवार–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह, जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही। २. अश्वारोही सैनिक या सिपाही। ३. वह, जो किसी सवारी या चीज पर चढ़ा हो।
वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ऐसी चीज, जिस पर चढ़कर चला जाय। वाहन। गाड़ी। जैसे रेल, मोटर, ताँगा, एक्का आदि। २. किसी चीज पर चलने के लिए चढ़ने की क्रिया। ३. वह व्यक्ति, जो सवार हो। ४. किसी देवमूर्ति आदि को रथ या किसी सवारी पर रखकर या किसी बड़े आदमी के साथ चलनेवाला जुलूस।

सवाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रश्न। २. पूछने की क्रिया। ३. किसी वस्तु की माँग। ४. निवेदन। प्रार्थना। ५. गणित का प्रश्न, जो उत्तर निकालने के लिए दिया जाता है।

सवाल-जवाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. बहस। वादविवाद। २. तकरार। हुज्जत। ३. झगड़ा।

सविकल्प–वि० १. विकल्प-सहित। संदेह-युक्त। संदिग्ध। २. जो किसी विषय के दोनों पक्षों या मतों आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो।
संज्ञा पुं० दो प्रकार की समाधियों में से एक समाधि, जो किसी आलम्बन की सहायता से होती है।

सविता–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. बारह की संख्या। ३. आक। मदार।

सवितापुत्र–संज्ञा पुं० सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।

सवितासुत–संज्ञा पुं० शनैश्चर।

सविनय अवज्ञा–संज्ञा स्त्री० राज्य की किसी आज्ञा या कानून को न मानकर उसका उल्लंघन करना।

सवेरा–संज्ञा पुं० १. प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित समय के पूर्व का समय।

सवैया–संज्ञा पुं० १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। मालिनी। २. वह पहाड़ा, जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है। ३. सवा सेर। तौलने का सवा सेर का बाट

सव्य–वि० १. बायाँ। वाम। ३. प्रतिकूल।
संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत। २. विष्णु।

सव्यसाची–संज्ञा पुं० अर्जुन।

सव्रण–वि० जिसे व्रण या घाव हों। जिसे घाव लगे हों। घायल।

सशंक–वि० १. जिसे शंका हो। २. जिसे सन्देह या डर हो। शंकित। भयभीत। ३. भयानक।

सशंकना–क्रि० अ० शंका करना। सन्देह करना। डरना।

सस*–संज्ञा पुं० दे० "शशि"। चंद्रमा। दे० "शस्य"। खेती-बारी।

ससक†–संज्ञा पुं० दे० "शशक।" खरगोश।

ससहर*–संज्ञा पुं० दे० "शशिधर।"

ससा–संज्ञा पुं० दे० "ससक"।

ससाना*–क्रि० अ० १. घबराना। २. काँपना।

ससि*–संज्ञा पुं० दे० "शशि।" चन्द्रमा।

ससिधर*–संज्ञा पुं० शशिधर। चंद्रमा।

ससिहर*–संज्ञा पुं० दे० "शशिधर।"

ससी*–संज्ञा पुं० दे० "शशि।"

ससुर–संज्ञा पुं० पति या पत्नी का पिता। श्वशुर।

ससुरा–संज्ञा पुं० १. दे० 'ससुराल'। २. श्वशुर। ससुर। ३. एक प्रकार की गाली।

ससुराल–संज्ञा स्त्री० श्वशुरालय। श्वशुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर।

सस्ता–वि० [स्त्री० सस्ती] १. कम दाम का। : महँगा न हो। २. जिसका भाव बहुत उतर गया हो। ३. साधारण। मामूली। घटिया। मुहा०—सस्ते छूटना=१. कम खर्च या मेहनत में कोई काम हो जाना। २. आसानी से किसी बड़े काम या संकट से छुटकारा पाना।

सस्ताना†–क्रि० अ० किसी चीज का कम दाम पर बिकना।
क्रि० स० सस्ते दामों पर बेचना।

सस्ती–संज्ञा स्त्री० १. सस्ता होने का भाव। सस्तापन। २. वह समय, जब कि सब चीजें सस्ती मिलें।

सस्त्रीक–वि० जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के साथ। सपत्नीक।

सस्य–संज्ञा पुं० दे० "शस्य।"

सस्मित–वि० मुसकराता या हँसता हुआ।
क्रि० वि० मुस्कराते हुए। मुसकराकर। हँसकर।

सह–अव्य० साथ। सहित। युक्त।
वि० १. मौजूद। उपस्थित। २. समर्थ। योग्य। ३. सहनशील।

सहकार–संज्ञा पुं० १. सहयोग। दूसरों के साथ मिलकर काम करने का भाव या प्रवृत्ति। २. सहायता। ३. सहायक। ४. सुगंधित वस्तु। ५. आम का पेड़।

सहकारता–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सहकारिता।" २. सहयोग। सहायता।

सहकार-समिति, सहकारी-समिति–वह समिति या संस्था, जिसे उपभोक्ता या व्यवसायी आदि आपस म मिलकर सबके हित के लिए बनाते हैं और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बेचने या बनाने आदि का प्रबन्ध करते हैं। [अंग्रे०–कोआपरेटिव सोसाइटी]

सहकारिता–संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना या ऐसे काम करने का भाव। परस्पर सहयोग देना या देने का भाव। सहकारी या सहायक होने का भाव। २. सहयोग। आपस की सहायता।

सहकारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० सहकारिणी] १. एक साथ काम करनेवाला। साथी। सहयोगी। २. सहायक। मददगार। (अंग्रे०–असिस्टेंट)। जैसे, सहकारी सम्पादक।

सहगतक–संज्ञा पुं० १. साथ जानेवाला। २. वह कागज-पत्र, जो किसी पत्र के साथ नत्थी करके लिफाफे में भेजे जाते हैं। (अंग्रे०–एन्क्लोजर)

सहगमन–संज्ञा पुं० १. पति के शव के साथ पत्नी का सती होना। स्त्री का अपने पति के साथ ही संसार से चला जाना। २. साथ जाना।

सहगान–संज्ञा पुं० १. कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना। २. इस प्रकार गाया जानेवाला गीत। (अंग्रे०–कोरस)

सहगामिनी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। पत्नी। २. पति के शव के साथ सती होनेवाली स्त्री। सहगमन करनेवाली स्त्री। ३. सहचरी। संगिनी। सखी।

सहगामी–संज्ञा पुं० [स्त्री० सहगामिनी] साथ चलनेवाला। साथी। अनुयायी।

सहगौन*–संज्ञा पुं० दे० "सहगमन"।

सहचर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सहचरी] १. साथ चलनेवाला। साथी। २. दोस्त। मित्र। ३. सेवक। नौकर।

सहचरी–संज्ञा स्त्री० १. पत्नी। बीवी। २. सखी।

सहचार–संज्ञा पुं० साथ। संग। सोहबत। दे० "सहचर"।

सहचारिणी–संज्ञा स्त्री० १. साथ में रहनेवाली पत्नी। २. सखी।

सहचारिता–संज्ञा स्त्री० सहचर होने का भाव। साथ में रहने का भाव।

सहचारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० सहचारिणी] १. दे० "सहचर"। संगी। साथी। २. सेवक।

सहज–वि० १. आसान। सरल। सुगम। २. स्वाभाविक। प्राकृतिक। ३. साधारण। ४. साथ उत्पन्न होनेवाला।
संज्ञा पुं० [स्त्री० सहजा] १. सगा भाई। २. स्वभाव।

सहजधारी–संज्ञा पुं० गुरु नानक का वह

अनुयायी जो सिर और दाढ़ी आदि के बाल न बढ़ाता हो, बल्कि हिन्दुओं की तरह कटवाता या मुँडवाता हो।

सहजपंथ—संज्ञा पुं० गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्नवर्ग।

सहजबुद्धि—संज्ञा स्त्री० जीव-जन्तुओं में वह स्वाभाविक ज्ञान या शक्ति, जो उन्हें कोई काम करने या न करने की प्रेरणा देती है।

सहजात—वि० १. एक साथ या एक ही समय उत्पन्न होनेवाला। यमज। २. सहोदर।

सहजिया—संज्ञा पुं० सहज सम्प्रदाय या पंथ का अनुयायी।

सहत-महत, सहेत-महेत—संज्ञा पुं० दे० "श्रावस्ती।"

सहतरा—संज्ञा पुं० १. पित्तपापड़ा। २. पर्यटक।

सहताना*†—क्रि० अ० दे० "सुस्ताना"।

सहत्व—संज्ञा पुं० १. "सह" का भाव। २. एकता। ३. मेल-जोल।

सहदानी*—संज्ञा स्त्री० निशानी। पहचान। चिह्न।

सहदेई—संज्ञा स्त्री० एक पहाड़ी और जंगली ओषधि। एक तरह का पौधा।

सहदेव—संज्ञा पुं० राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र। माद्री के गर्भ और अश्विनीकुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था।

सहधर्म्मचारिणी—संज्ञा स्त्री० पत्नी। समान धर्म का पालन करनेवाली या धर्म-पालन करने में सहयोग देनेवाली स्त्री।

सहधर्मिणी—संज्ञा स्त्री० पत्नी। समान धर्म पालन करनेवाली।

सहधर्म्मी—वि० समान धर्म का पालन करनेवाला। समान धर्मवाला।

संज्ञा पुं० पति। (स्त्री० सहधर्म्मिणी)

सहन—संज्ञा पुं० १. सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २. क्षमा। सहिष्णुता। ३. आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना।

संज्ञा पुं० [अ०] १. मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग। आँगन। चौक। २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

सहनभंडार—संज्ञा पुं० कोष। खजाना। धन-राशि। दौलत।

सहनशील—वि० [संज्ञा सहनशीलता] १. बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २. संतोषी।

सहनशीलता—संज्ञा स्त्री० सहनशील होने का भाव। सहिष्णुता। बरदाश्त करने का भाव।

सहना—क्रि० स० १. बरदाश्त करना। झेलना। २. फल भोगना। ३. अपने ऊपर भार लेना। बोझ बर्दाश्त करना।

सहनीय—वि० सहन करने योग्य। बर्दाश्त करने लायक।

सहपाठी—संज्ञा पुं० साथ पढ़नेवाला। जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।

सहप्रतिवादी—संज्ञा पुं० किसी मुकदमे में मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप में प्रतिवादी बतलाया गया व्यक्ति। (अंग्रे०—को-डिफेण्डेण्ट)।

सहबाला—संज्ञा पुं० दे० "शहबाला।"

सहभावी—वि० १. साथ-साथ होनेवाला। २. साथ-साथ चलने या रहनेवाला।

सहभोज—संज्ञा पुं० १. बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना। २. एक साथ खाना।

सहभोजन—संज्ञा पुं० एक साथ बैठकर खाना।

सहभोजी—संज्ञा पुं० एक साथ बैठकर खानेवाला।

सहम—संज्ञा पुं० [फा०] १. संकोच। लिहाज। २. डर। भय।

सहमत—वि० १. एक मत का। जिसके विचार या राय दूसरे की राय से मिलती हो। २. राजी।

सहमना—क्रि० अ० [फा०] १. डरना। २. संकोच या लिहाज करना। हिचकना।

सहमरण—संज्ञा पुं० १. एक साथ मरना। २. सती होना। ३. सहगमन।

सहमाना—क्रि० स० डराना।

सहमृता—संज्ञा स्त्री० सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

सहयोग—संज्ञा पुं० १. साथ मिलकर काम करने का भाव। २. सहायता। ३. मदद। साथ। संग। ४. बहुत से लोगों का साथ मिलकर कोई काम करने का भाव।

सहयोगी–संज्ञा पुं० साथ मिलकर काम करनेवाला। सहयोग देनेवाला। सहायक।

सहर–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रभात। तड़का। प्रातःकाल। सबेरा। २. जादू। टोना। ३. दे० "शहर"।
क्रि० वि० १. धीरे-धीरे। २. धीमी चाल से। ३. रुक-रुककर।

सहरगही–संज्ञा स्त्री० वह भोजन, जो निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के किया जाता है। सहरी।

सहरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. खाली मैदान। २. जंगल। ३. वन। वन-बिलाव।

सहराना*†–क्रि० स० दे० "सहलाना"। *†क्रि० अ० दे० "सिहरना"।

सहरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "शफरी"। मछली। २. दे० "सहरगही"।

सहल–वि० आसान। सरल। सहज।

सहलाना–क्रि० स० १. धीरे-धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना। २. मलना। ३. धीरे-धीरे खुजलाना।

सहवास–संज्ञा पुं० १. एक साथ रहना। संग। साथ। २. मैथुन। संभोग।

सहवासी–संज्ञा पुं० एक साथ रहनेवाला। संगी। साथी।

सहव्रता–संज्ञा स्त्री० धर्मपत्नी। सहधर्म्मिणी।

सहस–वि० दे० "सहस्र"।

सहसकिरन–संज्ञा पुं० दे० "सहस्रकिरण"। सूर्य।

सहसगौ*–संज्ञा पुं० दे० "सहस्रगु"। सूर्य।

सहसा–अव्य० एकाएक। अचानक।

सहसाखि*–संज्ञा पुं० दे० "सहस्राक्ष"। इंद्र।

सहसाखी*–संज्ञा पुं० दे० "सहस्राक्ष"। इंद्र।

सहसानन*–संज्ञा पुं० दे० "सहस्रानन"। शेषनाग।

सहस्र–संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या। एक हजार। १०००।
वि० जो गिनती में एक हजार हो।

सहस्रकर–संज्ञा पुं० सूर्य्य। जिसकी हजार किरणें हों।

सहस्रकिरण–संज्ञा पुं० सूर्य्य। हजार किरणों वाला।

सहस्रचक्षु–संज्ञा पुं० इंद्र। हजार आँखोंवाला।

सहस्रदल–संज्ञा पुं० कमल। जिसकी हजार पंखुड़ियाँ हों।

सहस्रधारा–संज्ञा स्त्री० देवताओं को स्नान कराने का एक प्रकार का छेददार पात्र।

सहस्रनाम–संज्ञा पुं० वह स्तोत्र, जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

सहस्रनेत्र–संज्ञा पुं० इंद्र।

सहस्रपाद–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. विष्णु। ३. सारस पक्षी।

सहस्रबाहु–संज्ञा पुं० १. शिव। २. कार्त्तवीर्यार्जुन, जो क्षत्रिय राजा कृतवीर्य्य का पुत्र था। इसका दूसरा नाम हैहय था। ३. राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र।

सहस्रभुजा–संज्ञा स्त्री० देवी का एक रूप।

सहस्ररश्मि–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

सहस्रलोचन–संज्ञा पुं० इन्द्र।

सहस्रशीर्ष–संज्ञा पुं० विष्णु।

सहस्राक्ष–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. विष्णु।

सहस्राब्दी–संज्ञा स्त्री० १. एक हजार वर्षों का समय। २. किसी संवत् या सन् के एक हजार वर्षों का समूह। साहस्री।

सहस्रार–संज्ञा पुं० हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर के ६ चक्रों में से एक चक्र, जो मस्तिष्क के ऊपरी भाग में माना गया है, और जो विज्ञान के अनुसार मन तथा उन गिलटियों का केंद्र है, जिनसे शरीर का विकास होता है।

सहांशिक–संज्ञा पुं० अपने हिस्से के रूप में किसी को कुछ देनेवाला।
वि० सहांश के रूप में।

सहाइ,सहाई*†–संज्ञा पुं० सहायक। मददगार। संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

सहाउ*–संज्ञा पुं० दे० "सहाय"।

सहाध्यायी–संज्ञा पुं० दे० "सहपाठी"।

सहाना–संज्ञा पुं० कुर्क की हुई चीज की रखवाली करने के लिए नियुक्त व्यक्ति। (मुकदमों में अदालत की आज्ञा से विवादग्रस्त वस्तु कुर्क की जाती है। उसकी हिफाजत के लिए जो आदमी नियुक्त किया जाता है, उसे सहाना कहते हैं।)

*वि० दे० "शहाना"। (स्त्री० सहानी)।
सहानुगमन–संज्ञा पुं० दे०"सहगमन"।
सहानुभूति–संज्ञा स्त्री० दूसरे के दुख से दुखी होना। दूसरे को दुखी देखकर स्वयं दुखी होना। हमदर्दी।
सहाय–संज्ञा पुं० १. सहायता। मदद। सहारा। २. आश्रय। भरोसा। ३. सहायक। मददगार।
सहायक–वि० (स्त्री० सहायिका) १. सहायता करनेवाला। मददगार। २. किसी के अधीन या मातहत रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला। सहकारी। (अंग्रे०–असिस्टेण्ट) ३. किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली छोटी नदी।
सहायता–संज्ञा स्त्री० १. मदद। किसी के कार्य में योग देना। सहाय। किसी के कार्य में शारीरिक परिश्रम या धन आदि से मदद देना। २. किसी काम को आगे बढ़ाने या जारी रखने के लिए दिया जानेवाला धन।
सहायी–संज्ञा पुं० १. सहायक। मददगार २. सहायता। मदद।
सहार–संज्ञा पुं० १. सहना। २. बर्दाश्त सहनशीलता।
सहारना†–क्रि० स० १. दे० "सहना"। सहन करना। बर्दाश्त करना। २. अपने ऊपर भार लेना।
सहारा–संज्ञा पुं० १. भरोसा। इतमीनान। २. आश्रय। आसरा। ३. मदद। सहायता। ४. अफ्रीका का मरुस्थल।
सहालग–संज्ञा पुं० १. ब्याह-शादी के दिन। लगन। २. वे महीने या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त्त हों।
सहावल–संज्ञा पुं० दे०"साहुल"।
सहिजन–संज्ञा पुं० शोभांजन। एक बड़ा पेड़, जिसकी लंबी फलियों की तरकारी होती है। मुनगा।
सहिजानी*†–संज्ञा स्त्री० निशानी। चिह्न। पहचान।
सहित–अव्य० साथ। समेत। युक्त।
सहिदान*†–संज्ञा पुं० दे०"सहिदानी"।
सहिदानी*†–संज्ञा स्त्री० १. निशानी। किसी को अपनी स्मृति या यादगार के लिए दी गई कोई चीज। २. चिह्न। ३. पहचान। ४. लक्षण। ५. निशान।
सहिष्णु–वि० [संज्ञा सहिष्णुता] सहन करनेवाला। सहनशील। बर्दाश्त करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० सहनशीलता। बर्दाश्त करने का भाव।
सही–वि० १. शुद्ध। ठीक। २. सत्य। सच। प्रामाणिक। यथार्थ। ३. हस्ताक्षर। दस्तखत। **मुहा०**—सही भरना=मान लेना। 'हाँ' कहना।
सही-सलामत–वि० १. सकुशल। २. स्वस्थ। तन्दुरुस्त। आरोग्य। ३. अच्छी तरह। ४. जिसमें कोई दोष या कमी न आई हो।
सहुँ*–अव्य० १. सम्मुख। सामने। २. ओर। तरफ।
सहूलियत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आसानी। सुभीता। सुगमता। २. अदब। ३. [illegible]ऊर।
सहृदय–वि० [संज्ञा सहृदयता] १. दूसरे के दुःख-सुख आदि को समझनेवाला। दयालु। २. भावुक। ३. रसिक। ४. सज्जन।
सहेजना–क्रि० स० १. सौंपना। २. सुपुर्द करना। ३. भली भाँति जाँचना। ४. सँभालना।
सहेजवाना–क्रि० स० सहेजने का काम दूसरे से कराना।
सहेत*†–संज्ञा पुं० प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का पहले से निश्चित स्थान।
सहेतुक–वि० जिसमें कोई उद्देश्य या मतलब हो।
सहेली–संज्ञा स्त्री० १. किसी स्त्री के साथ में रहनेवाली दूसरी स्त्री। सखी। संगिनी। २. परिचारिका। दासी।
सहैया*†–संज्ञा पुं० सहायक।
वि० सहन करनेवाला।
सहोदर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सहोदरा] सगा भाई। एक ही माता के पेट से उत्पन्न।
वि० सगा। अपना। खास।
सहोदरा–संज्ञा स्त्री० सगी बहन। एक ही माता के पेट से उत्पन्न।
सह्य–वि० सहने या बर्दाश्त करने लायक।

ह्याद्रि—संज्ञा पुं० बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत।

साँई—संज्ञा पुं० १.स्वामी। मालिक। २. पति। ३. शौहर। ईश्वर। ४. मुसलमान फकीरों की एक उपाधि या सम्बोधन।

सांकड़ा—संज्ञा पुं० पैरों में पहनने का एक गहना।

साँकर*†—संज्ञा स्त्री० दे० "शृंखला"। जंजीर। सीकड़। सिकड़ी।
संज्ञा पुं० संकट। कष्ट।
वि० १. संकीर्ण। सँकरा। तंग। २. दुःखमय। कष्टमय।

साँकरा†—वि० दे० "सँकरा"।

साँकल—संज्ञा स्त्री० १. शृंखला। सांकर। २. दरवाजे की सिकड़ी। ३. गले में पहनने का एक गहना।

सांकेतिक—वि० १. जो संकेत या इशारे के रूप में हो। २. संकेत या इशारे से सम्बन्ध रखनेवाला। इशारे का।

सांख्य—संज्ञा पुं० हिन्दुओं के ६ दर्शनों में एक, जिसे महर्षि कपिल ने रचा था। इसमें प्रकृति को ही जगत् का मूल माना गया है और कहा गया है कि सत्त्व, रज और तम के योग से सृष्टि और उसके सब पदार्थों का विकास हुआ है।

साँग—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बरछी, जो फेंककर मारी जाती है। शक्ति। भारी बोझ उठाने का डंडा।
वि० १. संपूर्ण। पूरा। २. सब अंगों-सहित।

साँगी—संज्ञा स्त्री० बरछी। साँग।

सांगोपांग—अव्य० संपूर्ण। समस्त। सब अंगों और उपांगों-सहित।

सांघातिक—वि० १. संघात-सम्बन्धी। २. घातक। जिससे मर जाने का डर हो। ३. जान से मार डालनेवाला। ४. ऐसी चोट, जिससे आदमी मर सके। ५. बहुत खतरनाक। ६. इकट्ठा करनेवाला।

सांघिक—वि० १. किसी संघ से सम्बन्ध रखनेवाला। २. संघ-सम्बन्धी। ३. संघ का।

साँच*†—वि० [स्त्री० साँची] १. सत्य। सच। २. यथार्थ। ठीक।

सांचला†—वि० [स्त्री० साँचली] सच्चा। सत्यवादी।

साँचा—संज्ञा पुं० १. वह उपकरण, जिसमें कोई गीली चीज रखकर किसी विशेष आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा। २. वह छोटी आकृति, जो बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर बनाई जाती है। ३. कपड़े पर बेल-बूटा छापने का ठप्पा। ४. छापा। ५. ढाँचा।
मुहा०—साँचे में ढला हुआ=अंग-प्रत्यंग से बहुत ही सुन्दर।

साँची—संज्ञा पुं० १. मध्य भारत में एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ प्राचीन स्तूप हैं। २. एक प्रकार का पान, जो खाने में ठंडा होता है। ३. पुस्तकों की एक प्रकार की छपाई, जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं।

साँझ†—संज्ञा स्त्री० दे० "संध्या"। शाम।

साँझा—संज्ञा पुं० दे० "साझा"।

साँझी—संज्ञा स्त्री० मंदिरों में जमीन पर बनाए गए फूल-पत्तों आदि की सजावट, जो प्रायः सावन में होती है।

सोंट—संज्ञा स्त्री० १. कोड़ा। २. छड़ी। ३. पतली कमची। ४. शरीर पर कोड़े आदि की मार से पड़ा हुआ दाग।

साँटा—संज्ञा पुं० १. कोड़ा। २. गन्ना। ईख।

साँटिया—संज्ञा पुं० डौंड़ी या डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी—संज्ञा स्त्री० १. पतली छोटी छड़ी। २. पतली कमची। ३. मेल-मिलाप। ४. बदला। प्रतिकार। ५. प्रतिहिंसा।

साँठ—संज्ञा पुं० १. दे० "साँकड़ा"। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।
यौ०—साँठ-गाँठ—१. मेल-मिलाप। २. गुप्त या अनुचित संबंध। घनिष्ठ सम्बन्ध।

साँठना—क्रि० स० १. सटाना। २. लगाना। ३. जोड़ना। ४. पकड़े रहना।

साँठी—संज्ञा स्त्री० पूंजी। धन।

साँड़—संज्ञा पुं० १. वह बैल (या घोड़ा), जो बधिया न हो और जो केवल जोड़ा खिलाने के लिए पाला जाय। २. वह साँड़ बैल, जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

सांड़नी–संज्ञा स्त्री० ऊँटनी। ऊँट की मादा।
सांड़ा–संज्ञा पुं० एक जंगली जानवर, जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।
सांड़िया–संज्ञा पुं० १. साँड़नी पर सवारी करनेवाला। २. बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट।
सांत–वि० १. अन्त होनेवाला। २. जिसका अन्त अवश्य हो। ३. दे० "शान्त"।
सांत्वना–संज्ञा स्त्री० १. दूसरे का दुख या कष्ट कम करने के लिए उसे धैर्य और शान्ति देना। तसल्ली। ढाढ़स। २. आश्वासन। दिलासा।
सांदीपनि–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मुनि, जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।
सांध–संज्ञा पु० १. दे० "संधान"। २. लक्ष्य।
साँधना–क्रि० स० १. संधान करना। निशाना ठीक करना। लक्ष्य करना। २. साधना। ३. पूरा करना। ४. दे० "सानना"। मिलाना। ५. मिश्रण।
सांध्य–वि० संध्या-संबंधी। सायंकाल का या शाम के वक्त का।
साँप–संज्ञा पुं० [स्त्री० साँपिन] रेंगनेवाला जहरीला लंबा जन्तु, जिसके काटने से प्रायः मृत्यु हो जाती है। सर्प। भुजंग। विषधर। **मुहा०**—कलेजे पर साँप लोटना=ईर्ष्या आदि के कारण बहुत दुख होना। साँप सूँघ जाना=मर जाना। निर्जीव हो जाना। साँप-छछूँदर की दशा=भारी असमंजस की दशा। बड़ी द्विविधा।
सांपत्तिक–वि० सम्पत्ति-सम्बन्धी। आर्थिक। माली।
साँपधरन*–संज्ञा पुं० शिव। साँप धारण करनेवाला।
साँपिन–संज्ञा स्त्री० साँप की मादा।
साँपिया–संज्ञा पुं० काले साँप के रंग से मिलता-जुलता एक तरह का रंग।
वि० साँप के रंग का।
सांप्रत–अव्य० [वि० सांप्रतिक] १. इसी समय। सम्प्रति। अभी। तत्काल। २. आजकल।
सांप्रतिक–वि० जो इस समय हो रहा हो। चालू।
सांप्रदायिक–वि० किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का। जाति-सम्बन्धी। कौमी।
साम्प्रदायिकता–संज्ञा स्त्री० १. केवल अपने सम्प्रदाय (जाति या कौम) की भलाई और बड़प्पन का बहुत अधिक ख्याल रखना। २. साम्प्रदायिक होने का भाव। फिरका-परस्ती।
सांब–संज्ञा पुं० जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुदर थे; पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गए थे।
साँभर–संज्ञा पुं० १. राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २. इस झील के जल से बना हुआ नमक। ३. एक जंगली जानवर, जिसका शिकार खेला जाता है और जिसके चमड़े का जूता, छोटे सन्दूक आदि बनाए जाते हैं।
साँमुहें†–अव्य० सामने।
साँवत†–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।
सांवत्सरिक–वि० संवत्सर-सम्बन्धी। संवत्सर का।
साँवर†–वि० दे० "साँवला"।
साँवलता–संज्ञा स्त्री० श्यामता। साँवला होने का भाव।
साँवला–वि० [स्त्री० साँवली] जिसका रंग कुछ कालापन लिये हुए हो। साँवलें रंग का। श्याम वर्ण का।
संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. पति या प्रेमी (गीतों में)।
साँवलापन–संज्ञा पुं० १. साँवला होने का भाव। २. साँवला रंग। श्यामता।
साँवाँ†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अन्न।
साँस–संज्ञा पुं० १. श्वास। नाक या मुँह से भीतर खींचकर फिर बाहर निकाली गई हवा। २. दम। प्राण। ३. अवकाश। फुरसत। ४. दमा। साँस फूलने का रोग। ५. गुंजाइश। सन्धि या दराज, जिसमें से हवा आ-जा सके।
मुहा०—साँस उखड़ना=मरने के समय रोगी

का बड़े कष्ट से साँस लेना। साँस टूटना। साँस ऊपर-नीचे होना=साँस का ठीक तरह से ऊपर-नीचे न आना। साँस रुकना। दम घुटना। साँस चढ़ना=बहुत मेहनत आदि के कारण साँस का जल्दी-जल्दी चलना। साँस टूटना=दे० "साँस उखड़ना"। साँस तक न लेना=बिलकुल चुपचाप रहना। साँस फूलना=बार-बार साँस आना और जाना। दमे का रोग होना। साँस रहते=जीते जी। जिन्दा रहते समय तक। उलटी साँस लेना=१. दे० "गहरी साँस लेना"। २. मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम साँस लेना। गहरी, ठंढी या लंबी साँस लेना=१. बहुत अधिक दुःख आदि के कारण देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना। २. बहुत दुख या अफसोस होना। साँस लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम लेना। अवकाश या फुरसत पाना। साँस भरना=१. उत्साह बढ़ाना। २. किसी चीज के अन्दर हवा भरना।

सांसत—संज्ञा स्त्री० १. दम घुटने का-सा कष्ट। दम घुटने की तरह तकलीफ। २. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। यातना। ३ झंझट।

सांसत-घर—संज्ञा पुं० काल-कोठरी। वह तंग और अँधेरी कोठरी, जिसमें अपराधियों को दंड-विशेष देने के लिए रखा जाता है।

सांसद—वि० १. संसद-सम्बन्धी। २. संसद की मर्यादा के अनुकूल। संसद के सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल कथन, व्यवहार या आचरण आदि।

सांसदी—वि० संसद-सम्बन्धी।

संज्ञा पुं० संसद-सम्बन्धी कार्यों (रीति व्यवहार आदि) का अच्छा जानकार और संसद में वाद-विवाद करने में निपुण (अंग्रे०-'पालमिण्टेरियन')

साँसा†—संज्ञा पुं० १. साँस। प्राण। जीवन। जिंदगी। २. घोर कष्ट। ३. संशय। संदेह। शक। ४. भय। डर। दहशत।

सांसर्गिक—वि० १. संसर्ग-सम्बन्धी। साथ या सहवास से सम्बन्ध रखनेवाला। संसर्ग-विषयक। २. संसर्ग (साथ या सहवास) से उत्पन्न होनेवाला।

सांसारिक—वि० संसार-सम्बन्धी। इस संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सांस्कृतिक—वि० संस्कृति से सम्बन्ध रखनेवाला। संस्कृति-सम्बन्धी।

सा—अव्य० १. समान। बराबर। तुल्य। २. एक मानसूचक शब्द। जैसे—थोड़ा-सा, बहुत-सा।

संज्ञा पुं० षड्ज। संगीत में स्वर का सूचक शब्द—जैसे—सा, रे, ग, म।

साइक*—संज्ञा पुं० दे० "शायक"।

साइकिल—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] दो पहियोंवाली एक प्रसिद्ध गाड़ी, जिसके दोनों पहिए आगे-पीछे होते हैं और जिस पर बैठकर उसे पैरों से चलाते हैं। पैरगाड़ी।

साइक्लोपीडिया—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. वह बड़ा ग्रंथ, जिसमें किसी विषय के सब अंगों का वर्णन हो। २. विश्वकोश ('इनसाइक्लोपीडिया') ३. बृहत् कोश।

साइज—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. नाप। २. परिमाण।

साइत—संज्ञा स्त्री० १. शुभ लग्न। मुहूर्त्त। शुभ समय। २. पल। क्षण। ३. समय। अवसर। ४. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय।

साइनबोर्ड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह तख्ता या टीन आदि का टुकड़ा, जिस पर किसी व्यक्ति, दूकान या संस्था का नाम या विवरण आदि लिखा रहता है। नामपट। संज्ञापट। संकेतपट।

साइयाँ—संज्ञा पुं० दे० "साईं"।

साइर†—संज्ञा पुं० दे० "सायर"।

साईं—संज्ञा पुं० १. साँई। स्वामी। २. पति। ३. ईश्वर। ४. मुसलमान फकीर।

साई—संज्ञा स्त्री० पेशगी। बयाना। किसी तरह का पेशा करनेवालों को उनसे काम कराने की बात पक्की करने के लिए दिया जानेवाला धन।

साइन्स—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] विज्ञान।

साईस—संज्ञा पुं० घोड़े की देख-रेख और सेवा करनेवाला नौकर।

साईसी—संज्ञा स्त्री० साईस का काम, भाव या पद।
साउज*—संज्ञा पुं० "सावज"।
साकंभरी—संज्ञा पुं० साँभर झील या उसके आस-पास का प्रांत।
साकचेरि†—संज्ञा स्त्री० मेहँदी।
साकट—संज्ञा पुं० १. शाक्त मत का अनुयायी। २. जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। ३. दुष्ट। पाजी।
साकर†—वि० दे० "सँकरा"।
साकल्य—संज्ञा पुं० १. सकल या समस्त होने का भाव। २. समूह। समुदाय। ३. हवन की सामग्री।
साका—संज्ञा पुं० १. संवत्। शाका। २. ख्याति। नाम। कीर्त्ति। यश। ३. धाक। रोब। ४. कीर्त्ति का स्मारक। कोई ऐसा बड़ा काम, जिसके करनेवाले की कीर्त्ति हो। ५. अवसर। मौका।
मुहा०—साका चलाना=रोब जमाना। साका बाँधना=दे० "साका चलाना"।
साकार—वि० १. जिसका कोई आकार या रूप हो। २. मूर्त्तिमान्। ३. स्थूल। ४. साक्षात्।
संज्ञा पुं० ईश्वर का साकार रूप।
साकारोपासना—संज्ञा स्त्री० ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर उसकी पूजा करना। सगुण भक्ति।
साकिन—वि० [अ०] रहनेवाला। निवासी।
साक़ी—संज्ञा पुं० [अ०] १. शराब पिलानेवाला। २. माशूक।
साकेत—संज्ञा पुं० अयोध्या नगरी।
साक्षर—वि० जो पढ़ना-लिखना जानता हो। पढ़ा-लिखा। शिक्षित।
साक्षात्—वि० मूर्त्तिमान्। साकार।
अव्य० सामने। सम्मुख।
संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा-देखी।
साक्षात्कार—संज्ञा पुं० १. भेंट। मुलाकात। २. पदार्थों का इंद्रियों-द्वारा होनेवाला ज्ञान।
साक्षी—संज्ञा पुं० [स्त्री० साक्षिणी] १. वह व्यक्ति, जिसने किसी घटना को अपनी आँखों से देखा हो। चश्मदीद गवाह। साखी। २. देखनेवाला। दर्शक।
संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। साखी। शहादत।
साक्ष्य—संज्ञा पुं० गवाही। शहादत।
साक्ष्य-प्रविधि—संज्ञा स्त्री० वह प्रविधि (कानून या नियमावली), जिसके अनुसार साक्षी या गवाही देने की व्यवस्था हो।
साक्ष्य-विधान—संज्ञा पुं० वह कानून, जिसमें साक्षी या गवाही देने के नियमों आदि की व्यवस्था हो। (अंग्रे०—ला आफ एविडेन्स)।
साख—संज्ञा पुं० १. दे० "साक्षी"। गवाह। २. गवाही। प्रमाण। शहादत। ३. धाक। रोब। ४. मर्य्यादा। ५. किसी व्यक्ति की वह प्रतिष्ठा, जिससे वह लेन-देन कर सकता हो। ६. लेन-देन या व्यवहार की मान्यता। (अंग्रे०—क्रेडिट)
साखना*—क्रि० स० साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना।
साखर*†—वि० दे० "साक्षर"।
साखा*†—संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"।
साखी—संज्ञा पुं० साक्षी। गवाह।
संज्ञा स्त्री० १. गवाही। २. ज्ञान-सम्बन्धी दोहे या पद।
मुहा०—साखी पुकारना=गवाही देना।
साखू—संज्ञा पुं० शाल वृक्ष। सागौन।
साखोचारन*†—संज्ञा पुं० शाखोच्चारण। विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंश-गोत्र आदि का जोर से कहकर परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।
साग—संज्ञा पुं० १. कुछ विशेष पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २. पकाई हुई भाजी। तरकारी। ३. तुच्छ और निकम्मी चीज। नाचीज (बोल-चाल में)।
यौ०—साग-पात=रूखा-सूखा भोजन।
सागर—संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. बहुत बड़ा जलाशय। जैसे, बड़ी झील। ३. संन्यासियों का एक भेद। ४. आगार। खजाना।
साग़र—संज्ञा पुं० [अ०] शराब पीने का प्याला।
सागू—संज्ञा पुं० १. ताड़ की जाति का एक पेड़। २. दे० "सागूदाना"। [अंग्रे० सैगो]
सागूदाना—संज्ञा पुं० सागू नामक पेड़ के तने का गूदा, जो कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है। साबूदाना।

सागौन–संज्ञा पुं० दे० "शाल" वृक्ष। साखू। (एक प्रसिद्ध पेड़ और उसकी मजबूत लकड़ी)

साग्निक–संज्ञा पुं० बराबर अग्निहोत्र (यज्ञ, होम) आदि करनेवाला।

साग्र–वि० समस्त। सब। कुल।

साग्रह–क्रि० वि० आग्रह या अनुरोध के साथ। आग्रहपूर्वक। जोर देकर।

साज–संज्ञा पुं० १. सजाव। ठाठ-बाट। २. सजावट का सामान। ३. सामग्री। उपकरण। जैसे—घोड़े का साज। नाव का साज। ४. बाजा। ५. लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। ६. मेल-जोल।

वि० १. मरम्मत या तैयार करनेवाला। २. बनानेवाला। (यौगिक के अंत में) जैसे घड़ीसाज।

साजन–संज्ञा पुं० १. प्रेमी। प्यारा। २. पति। स्वामी। ३. ईश्वर। ४. सज्जन।

साजना*†–क्रि० स० दे० "सजाना"।

क्रि० अ० दे० "सजना"। सजधज कर तैयार होना।

संज्ञा पुं० दे० "साजन"।

साज-बाज–संज्ञा पुं० १. तैयारी। २. ठाट-बाट। ३. धूम-धाम के साथ। ४. गाने-बजाने के सामान के साथ। ५. मेल-जोल।

साज-सामान–संज्ञा पुं० [फा०] १. सामग्री। उपकरण। २. गाने-बजाने के सामान के साथ। ठाट-बाट।

साजिंदा–संज्ञा पुं० [फा०] १. साज या बाजा बजानेवाला। २. समाजी। ३. वेश्याओं के यहाँ तबला वगैरह बजानेवाला।

साजिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ षड्यंत्र। भीतरी चाल। कुमंत्रणा। दुरभिसन्धि। २. किसी के विरुद्ध कोई काम करने में किसी का साथ। देना।

साजुज्य*–संज्ञा पुं० दे० "सायुज्य"।

साझा–संज्ञा पुं० १. हिस्सेदारी। शराकत। २. हिस्सा। भाग। बाँट।

साझी–संज्ञा पुं० दे० "साझेदार"।

साझेदार–संज्ञा पुं० हिस्सेदार। साझी। किसी रोजगार या व्यापार की पूंजी में हिस्सा देनेवाला।

साटक–संज्ञा पुं० १. भूसी। छिलका। २. तुच्छ और निकम्मी चीज। ३. एक प्रकार का छंद।

साटन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०-सैटिन] एक तरह का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

साटना*†–क्रि० स० दे० "सटाना"। किसी को गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना।

साटिका, शाटिका–संज्ञा स्त्री० साड़ी।

साठ–संज्ञा पुं० पचास और दस के जोड़ की संख्या, जो इस तरह लिखी जाती है—६०

वि० पचास और दस।

साठ-नाठ–वि० १. इधर-उधर। तितर-बितर। २. नीरस। रूखा। ३. निर्धन। गरीब।

साठसाती–संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़े साती"।

साठा–संज्ञा पुं० १. गन्ना। ईख। २. साठी धान।

वि० साठ वर्ष की उम्रवाला। साठ साल का।

साठी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

साड़ी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के पहनने की धोती। सारी।

साढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. असाढ़ में बोई जानेवाली फसल। असाढ़ी। २. दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई।

साढ़ू–संज्ञा पुं० साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

साढ़े–अव्य० एक अव्यय, जो पूरे के साथ लगकर आधा अधिक का सूचक होता है। जैसे साढ़े तीन, अर्थात्–तीन और आधा।

साढ़ेसाती–संज्ञा स्त्री० शनिग्रह की वह अशुभ दशा या प्रभाव, जो साढ़े सात दिन, साढ़े सात महीना या साढ़े सात वर्ष तक रहता है।

सातंक–क्रि० वि० १. आतंक या भय के साथ। आतंकपूर्वक। २. आतंक या भय दिखलाकर।

सात्–वि० एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में जुड़ने पर "मिला हुआ" या "रूप में आया हुआ" का अर्थ देता है। जैसे—भूमिसात्, भस्मसात्।

सात–संज्ञा पुं० पाँच और दो के जोड़ की संख्या, जो इस तरह लिखी जाती है—७।

वि० पाँच और दो।

मुहा०—सात-पाँच=चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। सात समुद्र पार=बहुत दूर। सात राजाओं की साक्षी देना=किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। सात सींकें बनाना=शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति, जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं।

सातत्य—संज्ञा पुं० 'सतत' का भाव। सदा या हमेशा होता रहना।

सात-फेरी—संज्ञा स्त्री० विवाह की भाँवर नामक रीति, जिसमें वर-वधू अग्नि की सात बार परिक्रमा करते हैं।

सातला—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कँटीला पौधा। सप्तला। स्वर्णपुष्पी।

सातिक*—वि० दे० "सात्विक"।

सातिग*—वि० दे० "सात्विक"।

सात्मक—वि० आत्मा के साथ।

सात्म्य—संज्ञा पुं० सारूप्य। सरूपता। एक-रूपता।

सात्यकि—संज्ञा पुं० एक यादव, जिसने श्रीकृष्ण और अर्जुन से युद्ध-विद्या सीखी थी और महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था। युयुधान।

सात्वत—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. बलराम। ३. श्रीकृष्ण। यदुवंशी।

सात्वती—संज्ञा स्त्री० १. शिशुपाल की माता का नाम। २. सुभद्रा।

सात्वती वृत्ति—संज्ञा स्त्री० नाटक में एक प्रकार की वृत्ति, जिसमें विशेष रूप से दान, दया, शौर्य्य आदि वीरोचित कार्यों का वर्णन किया जाता है। इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है।

सात्विक—वि० १. सत्वगुणवाला। सतोगुणी। २. सत्वगुण से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. साहित्य में सत्वगुण से उत्पन्न होनेवाले अंग-विकार। यथा—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय। २. सात्वती वृत्ति। (साहित्य)

साथ—संज्ञा पुं० १. संग। संगत। मिलकर या संग रहने का भाव। २. मेल-मिलाप। घनिष्ठता। मित्रता। दोस्ती। ३. बराबर पास रहने-वाला। साथी। संगी।

अव्य० १. संबंधसूचक अव्यय, जिससे संग या मिले रहने का बोध होता है। सहित। से। ३. विरुद्ध। ४. प्रति। २. द्वारा।

मुहा०—साथ ही=सिवा। अलावा। अति-रिक्त। साथ ही साथ=एक साथ। एक सिलसिले में। एक साथ=एक सिलसिले में।

साथरा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० साथरी] १. कुश की बनी चटाई। पत्तों का बिछौना। चटाई। २. बिछौना। बिस्तर।

साथी—संज्ञा पुं० [स्त्री० साथिन] १. साथ रहनेवाला। संगी। २. मित्र। दोस्त।

सादगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सादापन। आडम्बर या दिखावा न होना। सरलता। २. सीधापन। निष्कपटता।

सादर—वि० आदर-सहित। सम्मानपूर्वक।

सादरा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बढ़िया गाना।

सादा—वि० [स्त्री० सादी] १. बिना आड-म्बर या दिखावे का। जिसकी बनावट आदि बहुत सरल हो। २. जिसके ऊपर कोई सजावट का काम न बना हो। ३. बिना मिलावट का। खालिस। ४. जिसके ऊपर कुछ भी अंकित या लिखा न हो। जिस पर कोई रंग न हो। ५. सीधा। सरल। निष्कपट। ६. मूर्ख।

सादापन—संज्ञा पुं० सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

सादिर—वि० [अ०] निकलने या जारी होने-वाला आदेश या हुक्म आदि। जैसे, सादिर फरमाना।

सादी—संज्ञा स्त्री० १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। सदिया। २. वह पूरी, जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती। संज्ञा पुं० १. शिकारी। २. घोड़ा।

सादूर—संज्ञा पुं० १. दे० "शार्दूल"। सिंह। २. कोई हिंसक पशु।

सादृश्य—संज्ञा पुं० १. समानता। एक-रूपता। २. बराबरी। तुलना।

साध—संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। ख्वाहिश। कामना। २. उत्साह। ३. किसी स्त्री के गर्भ धारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।
संज्ञा पुं० १. साधु। महात्मा। २. योगी। ३. सज्जन। ४. फर्रुखाबाद और कन्नौज के आस-पास पाई जानेवाली एक जाति।
वि० उत्तम। अच्छा।

साधक—संज्ञा पुं० [स्त्री० साधिका] १. साधना करनेवाला। साधनेवाला। २. योगी। तपस्वी। ३. साधन। वह वस्तु, जिसके द्वारा कोई कार्य किया जाय। जरिया। ४. जो किसी दूसरे के स्वार्थ की पूर्त्ति में सहायक हो। जो दूसरे का मतलब हल होने या काम पूरा होने में मददगार हो। जो अनुकूल और सहायक हो।

साधन—संज्ञा पुं० १. काम पूरा करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. सामग्री। उपकरण। सामान। ३. उपाय। युक्ति। हिकमत। ४. यत्न। उद्योग। ५. उपासना। साधना। ६. अभ्यास। ७. अनुष्ठान। ८. धातुओं को शोधने की क्रिया। शोधन। ९. कारण। हेतु। १०. निर्णय। आज्ञा आदि के अनुसार कार्य करना। पालन करना। बतलाए हुए काम पूरा करना।

साधनता—संज्ञा स्त्री० साधन का भाव या धर्म्म। साधना।

साधनपत्र—संज्ञा पुं० १. वह लेख्य, जिसके द्वारा कार्य आदि की व्यवस्था की गई हो। जिसके द्वारा किसी अधिकार, दायित्व आदि के बारे में किसी तरह की व्यवस्था की गई हो। २. वह लेख या पत्र, जिसपर किसी प्रकार के देने-पावने का ठीक-ठीक हिसाब हो, या भेजे हुए माल का पूरा ब्योरा लिखा हो।

साधनहार*—संज्ञा पुं० साधनेवाला।
वि० सिद्ध होने योग्य। जो साधा जा सके।

साधना—संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य्य सिद्ध या पूरा करने की क्रिया। सिद्धि। २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिए उसकी उपासना। ३. दे० "साधन"।
क्रि० स० १. कोई कार्य्य सिद्ध करना। पूरा करना। २. निशाना लगाना। संधान करना। ३. आदत डालना। अभ्यास करना। ४. नापना। पैमाइश करना। ५. शोधना। शुद्ध करना। ६. बनावटी को असल की तरह दिखाना। ७. पक्का करना। ठहराना। ८. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ९. वश में करना।

साधनिक—वि० १. कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला। २. शासन या प्रबन्ध से सम्बन्ध रखनेवाला।

साधनिक अधिकारी—संज्ञा पुं० प्रबन्ध आदि का साधन या संचालन करनेवाला अधिकारी। किसी संस्था का ऐसा अधिकारी, जो उसके प्रबन्ध आदि का साधन या संचालन करे।

साधनिकी—संज्ञा स्त्री० १. वह सरकारी विभाग, जो कानून और नियमों आदि का पालन कराता और स्वयं करता है। २. इस विभाग के अधिकारियों का समूह या वर्ग। (अंग्रे०-एक्जिक्यूटिव)

साधनीय—वि० १. साधन करने योग्य। २. जिसका साधन करना उपयोगी हो। अच्छा कर्म।

साधर्म्य—संज्ञा पुं० समान धर्म या समान गुण होने का भाव। एक-धर्मता।

साधार—वि० १. आधार के साथ। जिसका कुछ आधार हो। जिसकी कोई बुनियाद हो। २. जिसका कोई प्रमाण या सबूत हो। (इसका उल्टा—निराधार।)

साधारण—वि० १. मामूली। जिसमें कोई विशेषता न हो। सामान्य। औसत दर्जे का। औसत। २. आम तौर पर होनेवाला या पाया जानेवाला। ३. सीधा। ४. सरल। आसान। सहज। ५. सार्वजनिक। आम। सबसे सम्बन्ध रखनेवाला।

साधारणतः—अव्य० १. अक्सर। २. बहुधा। प्रायः। आम तौर पर। मामूली तौर पर।

साधारणीकरण—संज्ञा पुं० १. गुणों आदि के आधार पर समानता स्थिर करना। किसी समान गुण के आधार पर अनेक तत्त्वों को एक वर्ग

ण; एक तल पर लाना। २. एक ही तरह के कई तत्त्वों के आधार पर कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धान्त निश्चित करना, जो उन सब तत्त्वों पर एक समान लागू हो सके।

साधिका—संज्ञा स्त्री० भेजे हुए माल या देने-पावने का पूरा विवरण लिखा हुआ लेख या पत्र।

साधिकार—क्रि० वि० अधिकार के साथ। अधिकारपूर्वक। अधिकार से।
वि० जिसे अधिकार मिला हो। अधिकार मिला हुआ।

साधित—वि० १. सिद्ध किया हुआ। जो साधा गया हो। २. पूरा किया हुआ। निष्पादित।

साधी—वि० १. शुद्ध की गई। शोधित। २. अनुभव या आजमाइश की हुई। ३. सिद्ध की हुई। ४. ठहराई या थमी हुई।

साधु—संज्ञा पुं० १. संत। महात्मा। २. धार्मिक पुरुष। परोपकारी व्यक्ति। परमार्थी। ३. सज्जन। भला आदमी। ४. कुलीन। आर्य।
वि० १. अच्छा। उत्तम। भला। २. सच्चा। ३. प्रशंसनीय। बड़ाई के लायक। ४. उचित। शिष्ट और शुद्ध (भाषा)।
अव्य० अच्छी बात है। ठीक है।
मुहा०—साधु-साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना।

साधुता—संज्ञा स्त्री० १. साधु होने का भाव। २. सज्जनता। भलमनसाहत। नेकी। ३. सीधापन। सिधाई।

साधुवाद—संज्ञा पुं० बधाई देना। किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना। 'साधु-साधु' कहना।

साधु-साधु—अव्य० धन्य-धन्य, वाह-वाह। बहुत खूब।

साधो—संज्ञा पुं० दे० "साधु"।

साध्य—वि० [संज्ञा साध्यत्व] १. सिद्ध करने योग्य। जो सिद्ध हो सके। २. जिसे सिद्ध या प्रमाणित करना हो। साधनीय। करने योग्य। ३. जो हो सके। ४. जिसे करना उपयोगी हो। ५. जो अच्छा किया जा सके (रोग)।
संज्ञा पुं० १. देवता। २. न्याय में वह विषय, जिसे सिद्ध करना हो। ३. शक्ति। सामर्थ्य।

साध्यता, साध्यत्व—संज्ञा स्त्री० साध्य होने का भाव। सिद्ध हो सकने का भाव। कर सकने या हो सकने का भाव।

साध्यसम—संज्ञा पुं० न्याय में वह हेतु, जिसका साधन साध्य की भाँति करना पड़े।

साध्या—संज्ञा स्त्री० १. सिद्ध की जानेवाली बातें। २. विचारणीय विषय। ३. दीवानी मुकदमे में विवादग्रस्त विषय (अंग्रे०—इश्यू)। दो प्रकार की होती है—१. तथ्य सम्बन्धी। २. कानून-सम्बन्धी।

साध्वी—वि० १. पतिव्रता स्त्री। २. शुद्ध चरित्रवाली स्त्री।

सानंद—वि० आनंद के साथ। आनंदपूर्वक।

सान—संज्ञा पुं० वह पत्थर, जिस पर कैंची, चाकू तथा अस्त्रादि रगड़कर तेज किए जाते हैं। कुरंड।
मुहा०—सान देना या धरना=धार तेज करना।

सानना—क्रि० स० १. गूँधना। २. आटे को पानी के साथ गूँधना। ३. माँड़ना। ४. लपेटना। ५. सम्मिलित करना। मिलाना। ६. अपराध या बुरे काम आदि में किसी को सम्मिलित करना या उसे उत्तरदायी बनाना।

सानी—संज्ञा स्त्री० पानी में सानकर को खिलाया जानेवाला चारा।
वि० [अ०] १. बराबरी का। मुकाबले का। २. दूसरा। द्वितीय।
यौ०—लासानी=अद्वितीय। बे-जोड़।

सानु—संज्ञा पुं० १. पहाड़ की चोटी। शिखर। २. सिरा। अंत। छोर। ३. चौरस जमीन। जंगल। वन।
वि० चौरस। लम्बा-चौड़ा।

सान्निध्य—संज्ञा पुं० १. सामीप्य। बहुत नजदीक होने का भाव। निकटता। २. एक प्रकार की मुक्ति। मोक्ष।

सान्निपातिक—वि० सन्निपात-सम्बन्धी।

सापत्न्य—संज्ञा पुं० १. सपत्नी का भाव या धर्म्म। सौतपन। २. सौत का लड़का।

सापना*†—क्रि० स० शाप देना। बद्दुआ देना। कोसना।

सापेक्ष—वि० [संज्ञा सापेक्षता] १. एक दूसरे की अपेक्षा रखनेवाले। एक दूसरे पर निर्भर रहनेवाले। एक दूसरे में कार्य-कारण रखनेवाले या एक दूसरे की आवश्यकता रखनेवाले। जिसे किसी की अपेक्षा (आवश्यकता) हो। २. विचार, निर्णय या आदेश की अपेक्षा में रुका हुआ।

सापेक्षवाद—संज्ञा पुं० वह सिद्धान्त, जिसमें दो वस्तुओं या बातों को एक दूसरी का अपेक्षक या एक दूसरे पर निर्भर माना जाता है।

साप्ताहिक—वि० १. प्रतिसप्ताह होनेवाला। हफ्तेवार। २. सप्ताह से सम्बन्ध रखनेवाला। सप्ताह-सम्बन्धी।
संज्ञा पुं० सप्ताह में एक बार प्रकाशित होनेवाला पत्र या पत्रिका।

साफ—वि० १. जिसमें कोई मैल न हो। स्वच्छ। निर्मल। २. चमकीला। ३. सादा। कोरा। ४. निर्दोष। ५. बे-ऐब। जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो। ६. स्पष्ट। ७. उज्ज्वल। ८. शुद्ध। खालिस। जिसमें छल-कपट न हो। ९. निष्कपट। १०. जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। ११. जिसमें कुछ तत्त्व न रह गया हो। खाली। १२. लेन-देन आदि का निपटना।
क्रि० वि० १. बिना किसी दोष, कलंक या अपवाद आदि के। निष्कलंक। निर्दोष। २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। ३. बिलकुल। एकदम। नितांत। ४. इस तरह से, जिसमें किसी को पता न लगे।
मुहा०—साफ करना=१. मार डालना। हत्या करना। २. नष्ट करना।

साफल्य—संज्ञा पुं० दे० "सफलता"।

साफा—संज्ञा पुं० १. पगड़ी। २. मुरैठा। ३. नित्य के पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ करना। कपड़े धोना।

साफी—संज्ञा स्त्री० १. रूमाल। दस्ती। २. गाँजे की चिलम के नीचे लगाने का छोटा कपड़ा। ३. भाँग छानने का कपड़ा। छनना।

साबर—संज्ञा पुं० १. दे० "साँभर"। २. साँभर का चमड़ा। ३. मिट्टी खोदने का एक औजार। सबरी। ४. दे० "शाबर।" शिव-कृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र।

साबिक़—वि० [अ०] पहले का। पुराना।
यौ०—साबिक दस्तूर=जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह। यथापूर्व।

साबिक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुलाकात। भेंट। २. संबंध। सरोकार। ३. मुकाबला।

साबित—वि० [फा०] १. सिद्ध। जिसका सबूत दिया गया हो। २. प्रमाणित।
वि० १. साबूत। पूरा। २. दुरुस्त। ठीक। ३. दृढ़।

साबुत, साबूत—वि० [फा०] १. पूरा। समूचा। २. बिना टूटा-फूटा। दुरुस्त।

साबुन—संज्ञा पुं० [अ०] रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ, जिससे शरीर और कपड़े आदि साफ किए जाते हैं। इसमें सज्जी, चूना, सोडा तथा तेल आदि चीजें डाली जाती हैं।

साबूदाना—संज्ञा पुं० दे० "सागूदाना"।

साभार—वि० भार से युक्त। भार या बोझ के साथ।
क्रि० वि० १. आभार या एहसान मानते हुए। कृतज्ञतापूर्वक। २. भार या बोझ के साथ।

सामंजस्य—संज्ञा पुं० १. मेल। विरोधी विचारों या वस्तुओं का परस्पर मेल। २. अनुकूलता। ३. औचित्य। उपयुक्तता।

सामंत—संज्ञा पुं० १. वीर। २. योद्धा। ३. जागीरदार। ४. सरदार। ५. बड़ा जमींदार।

सामंत-तंत्र—संज्ञा पुं० किसी राज्य की ऐसी शासन-व्यवस्था या प्रणाली, जिसमें सरदारों और जमींदारों को जमीन और खेतीबारी आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिक या पूरे-पूरे अधिकार होते हैं।

सामंतवाद—संज्ञा पुं० ऐसी शासन-व्यवस्था या सिद्धान्त, जिसमें जनता पर राजाओं,

महाराजाओं या बड़े-बड़े जमींदारों का अधिकार हो।

साम–संज्ञा पुं० १. वेद-मंत्र, जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। २. दे० "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। ४. राजनीति में अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें कहकर अपनी ओर मिला लेना। ५. सामान। ६. दे० "शाम" और "स्याम" (दो देश)।
संज्ञा स्त्री० दे० "शाम" (संध्या)

सामग–संज्ञा पुं० [स्त्री० सामगी] सामवेद का अच्छा ज्ञाता।

सामग्री–संज्ञा स्त्री० १. सामान। २. किसी काम में आनेवाली जरूरी चीजें। ३. उपकरण। ४. साधन। ५. माल। असबाब।

सामना–संज्ञा पुं० १. किसी के सामने होने की क्रिया या भाव। मुकाबला। विरोध। २. भेंट। मुलाकात। ३. किसी पदार्थ का अगला भाग।
मुहा०—सामने होना=(स्त्रियों का) परदा न करके सामने आना। सामना करना=१. मुकाबिला करना। विरोध करना। २. सामने होकर जवाब देना।

सामने–क्रि० वि० १. सम्मुख। समक्ष। आगे। २.सीधे। ३. उपस्थिति में। ४. मुकाबले में।

सामयिक–वि० [संज्ञा स्त्री० सामयिकता] १. समय के अनुसार। समय को देखते हुए उचित। समयानुकूल। २. वर्त्तमान समय से संबंध रखनेवाला। समय-संबंधी।

सामयिक पत्र–संज्ञा पुं० १. निश्चित समय पर प्रकाशित होनेवाले पत्र।(अंग्रे०–पीरियाडिकल) २. अखबार। समाचार-पत्र।

सामरथ†–संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

सामरिक–वि० समर-संबंधी। युद्ध या लड़ाई से सम्बन्ध रखनेवाला।

सामर्थ–संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

सामर्थी–संज्ञा पुं० १. सामर्थ्य रखनेवाला। २. पराक्रमी। ३. शक्तिशाली। बलवान्।

सामर्थ्य–संज्ञा पुं०, स्त्री० १. समर्थ होने का भाव। कर सकने की शक्ति या ताकत। २. योग्यता ३. शक्ति। बल। ४. पराक्रम। ५. शब्द की वह शक्ति, जिससे उसका अर्थ या भाव प्रकट होता है।

सामवायिक–वि०१. समवाय 'सम्बन्धी'। दे० "समवाय" २. समूह या झुंड-संबंधी।

सामवेद–संज्ञा पुं० भारतीय आर्य्यों के चार वेदों में से तीसरा, जिसमें यज्ञों के समय गाए जानेवाले स्तोत्रों का संग्रह है।

सामवेदीय–वि० सामवेद-संबंधी।
संज्ञा पुं० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।

सामहिं*–अव्य० सम्मुख। सामने।

सामाजिक–वि० १. समाज का। २. समाज से संबंध रखनेवाला।

सामाजिकता–संज्ञा स्त्री० लौकिकता। सामाजिक होने का भाव।

सामान–संज्ञा पुं० १. किसी काम में आनेवाली जरूरी चीजें। सामग्री। २. उपकरण। ३. माल। असबाब। ४. आयोजन। इंतजाम। बन्दोबस्त।

सामान्य–वि० साधारण। मामूली। जिसमें कोई विशेषता न हो।
संज्ञा पुं० १. समानता। बराबरी। २.औसत। ३. किसी जाति की सब चीजों में समान रूप से पाया जानेवाला गुण या विशेषता। ४. साहित्य में एक अलंकार (एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन, जिनमें देखने में तनिक भी अंतर नहीं जान पड़ता)।

सामान्यतः, सामान्यतया–अव्य० सामान्य रूप से। आम तौर पर। साधारणतः।

सामान्य-लक्षणा–संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों को बोध करानेवाली शक्ति।

सामान्य विधि–संज्ञा स्त्री० १. साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म। जैसे—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो। २.किसी देश के निवासियों के आचरण या व्यवहार-सम्बन्धी प्राचीन काल से प्रचलित नियम, कानून या सिद्धान्त।

सामान्या–संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।

सामासिक–वि० १. समास से संबंध रखनेवाला। २. समास का।

सामिष–वि० मांस, मछली आदि के साथ। निरामिष का उलटा।

सामीप्य–संज्ञा पुं० समीप या नजदीक होने का भाव। निकटता। वह मुक्ति, जिसमें जीव का भगवान् के समीप पहुँचना माना जाता है।

सामुझि*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

सामुदायिक–वि० १. समुदाय या समूह से सम्बन्ध रखनेवाला। २. समुदाय का। ३. मनुष्यों या जीवों के समुदाय से सम्बन्ध रखनेवाला।

सामुद्र–वि० १. समुद्र से उत्पन्न। २. समुद्र का। समुद्र-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. समुद्र से निकला हुआ नमक। २. समुद्रफेन। ३. दे० "सामुद्रिक"।

सामुद्रिक–वि० १. समुद्र या सागर सम्बन्धी। २. समुद्र का।

संज्ञा पुं० १. एक विशेष विद्या, जो फलित ज्योतिष का एक भाग है और जिसमें मनुष्य की हथेली की रेखाओं और शरीर पर के तिलों आदि लक्षणों को देखकर उसके जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं। २. इस विद्या का जाननेवाला व्यक्ति।

सामुहाँ*†–अव्य० सामने।

संज्ञा पुं० आगे का।

सामुहें*†–अव्य० सामने।

सामूहिक–वि० [संज्ञा स्त्री० सामूहिकता] समूह-सम्बन्धी। समूह का। मनुष्यों या जीवों के समुदाय से सम्बन्ध रखनेवाला।

साम्य–संज्ञा पुं० समान होने का भाव। समानता। बराबरी।

साम्यवाद–संज्ञा पुं० सबको समान समझने का सिद्धान्त। एक प्रकार का पश्चिमी सिद्धान्त, जिसके अनुसार समाज के सब व्यक्तियों को एक समान समझा जाता है और समाज के वर्ग-भेद आदि अन्य प्रकार की असमानताएँ दूर करके मजदूरों और किसानों आदि साधारण जनता का राज्य स्थापित किया जाता है। इसमें किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती और सब सम्पत्ति पर राष्ट्र का अधिकार होता है। (अंग्रे०-कम्युनिज्म)

साम्यवादी–संज्ञा पुं० साम्यवाद के सिद्धान्त को माननेवाला। (अंग्रे०-कम्युनिस्ट)

साम्या–संज्ञा स्त्री० १. सबके साथ समान व्यवहार। समदर्शिता। २. न्यायपूर्ण निष्पक्ष व्यवहार। सब लोगों के साथ साधारण न्याय के अनुसार निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार। (अंग्रे०-ईक्विटी)।

साम्यामूलक–वि० १. जिसमें साम्या या समान व्यवहार का पूर्ण ध्यान रखा गया हो। २. पक्षपातरहित। न्यायसंगत।

साम्यावस्था–संज्ञा स्त्री० १. एक समान रहने की अवस्था। २. वह अवस्था या दशा जिसमें सत्, रज और तम तीनों गुण बराबर हों। ३. प्रकृति। ४. ऐसी दशा या स्थिति, जिसमें परस्पर-विरोधी शक्तियाँ इतनी संतुलित हों कि कोई विकार उत्पन्न न हो।

साम्राज्य–संज्ञा पुं० १. वह राज्य, जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम। राज्य। सल्तनत। २. आधिपत्य। पूर्ण अधिकार।

साम्राज्यवाद–संज्ञा पुं० दूसरे देशों पर अपना कब्जा रखने और राज्य-विस्तार करने का सिद्धान्त। साम्राज्य को कायम रखने और उसे बढ़ाते रहने का सिद्धांत। (अंग्रे०-इम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी–संज्ञा पुं० साम्राज्यवाद के सिद्धान्त का समर्थक या अनुयायी।

सायं–संज्ञा पुं० संध्या। शाम।

वि० संध्या-संबंधी।

सायंकाल–संज्ञा पुं० [वि० सायंकालीन] संध्या। संध्या समय। शाम के वक्त। शाम।

सायंसंध्या–संज्ञा स्त्री० सायंकाल के समय की जानेवाली उपासना।

सायक–संज्ञा पुं० १. बाण। तीर। २. खड्ग। ३. पाँच की संख्या ४. एक प्रकार का वृत्त, जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

सायण—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध आचार्य, जिन्होंने वेदों के प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।
सायत—संज्ञा स्त्री० १. साइत। शुभ मुहूर्त। अच्छा समय। २. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। ३. दंड। पल।
अव्य० दे० "शायद"।
सायन—संज्ञा पुं० १. सूर्य्य की एक प्रकार की गति। २. वर्ष में दो बार आनेवाला वह समय जब सूर्य के भूमध्यरेखा पर पहुँचने पर दिन और रात दोनों बराबर हो जाते हैं। (२० मार्च और २३ सितम्बर)
वि० अयन के साथ या अयन-युक्त। दे० "अयन"। जिसमें अयन (ग्रह आदि) हों।
सायबान—संज्ञा पुं० मकान के आगे की छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिए बनाया गया हो।
सायर†—संज्ञा पुं० १. दे० "सागर।" समुद्र। २. ऊपरी भाग। शीर्ष। ३. [अ०] वह भूमि, जिसकी आय पर कर नहीं लगता। ४. अतिरिक्त आय।
सायल—संज्ञा पुं० [अ०] १. सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्त्ता। २. माँगनेवाला। याचक। ३. भिखारी। फकीर। ४. प्रार्थी।
साया—संज्ञा पुं० १. छाया। परछाईं। २. असर। प्रभाव। ३. भूत, प्रेत आदि। (अ० शेमीज) ४. घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।
मुहा०—साये में रहना=शरण में रहना।
सायास—क्रि० वि० आयास या प्रयत्न से।
सायाह्न—संज्ञा पुं० संध्या। शाम।
सायुज्य—संज्ञा पुं० [स्त्री० सायुज्यता] १. ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २. योग। ३. मिलन। ४. एक प्रकार की मुक्ति, जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।
सारंग—संज्ञा पुं० १. हिरन। एक खास तरह का हिरन। २. हंस। ३. मोर। ४. चातक। पपीहा। ५. कोकिल। ६. बाज। ७. सूर्य्य। ८. चंद्रमा। ९. सिंह। १०. साँप। ११. हाथी। १२. घोड़ा। १३. छाता। छत्र। १४. शंख। १५. कमल। १६. स्वर्ण। सोना। १७. आभूषण। गहना। १८. सर। तालाब। १९. भ्रमर। भौंरा। २०. एक प्रकार की मधुमक्खी। २१. विष्णु का धनुष। २२. कपूर। २३. श्रीकृष्ण। २४. शंभु। शिव। ईश्वर। २५. कामदेव। । २६. समुद्र। २७. पानी। २८. बाण। तीर। २९. दीपक। ३०. चंदन। ३१. भूमि। जमीन। ३२. शोभा। सुन्दरता। ३३. स्त्री। नारी। ३४. रात। ३५. दिन। ३६ तलवार। खड्ग। (डिं०) ३७. बादल। ३८. हाथ। ३९. ग्रह। नक्षत्र। ४०. खंजन-पक्षी। सोनचिड़ी। ४१. मेंढक। ४२. आकाश। ४३. चिड़िया। ४४. सारंगी नामक बाजा। ४५. विद्युत्। बिजली। ४६. पुष्प। फूल। ४७. एक प्रकार का राग। ४८. एक प्रकार का छंद, जिसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ४९. छप्पय के २६वें भेद का नाम। ५०. केश। बाल।
वि० १. रँगा हुआ। रंगीन। २. सुन्दर। सुहावना। ३. सरस।
सारंगपाणि—संज्ञा पुं० विष्णु।
सारंग-लोचन—वि० [स्त्री० सारंगलोचना] जिसकी आँखें हिरन की आँखों की तरह हों।
सारंगिक—संज्ञा पुं० १. बहेलिया। चिड़ीमार। २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक पद में न, य, स होते हैं।
सारंगिया—संज्ञा पुं० सारंगी बजानेवाला। साजिंदा।
सारंगी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध तारवाला बाजा।
सार—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु का असली भाग। तत्त्व। सत्त। २. मुख्य अभिप्राय। ३. सारांश। ४. परिणाम। फल। नतीजा। ५. निष्कर्ष। ६. निर्यास या अर्क आदि। रस। ७. पानी। ८. गूदा। मग्ज। ९. मज्जा। १०. दूध पर की साढ़ी। मलाई। ११. नवनीत। १२. लकड़ी का हीर। १३. धन। दौलत। १४. अमृत। १५. बल। शक्ति। ताकत। १६. जूआ खेलने का पासा। १७. सारिका। मैना। १८. शय्या। पलंग। खाट। १९. पालन-पोषण। २०. देख-रेख।

दे० "साला।" पत्नी का भाई।
१. वि० उत्तम। श्रेष्ठ। २. दृढ़। मजबूत। ३. दे० "ग्वाल"। ४. उदार। ५. एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं की उन्नति या अवनति का वर्णन होता है।

सारगर्भ—संज्ञा पुं० तत्त्वपूर्ण। अर्थयुक्त। गम्भीर अर्थवाला।

सारगर्भित—वि० जिसमें सार या तत्त्व भरा हो। मतलब से भरा हुआ। सार-युक्त। तत्त्वपूर्ण।

सारग्राही—वि० [स्त्री० सारग्राहिणी] [संज्ञा स्त्री० सारग्राहिता] सार या तत्त्व ग्रहण करनेवाला। विषयों या वस्तुओं का सार ले लेनेवाला।

सारणी—संज्ञा स्त्री० १. तालिका। अलग-अलग खानों में दिये हुए शब्दों, पदों या अंकों का वह विन्यास, जिससे उनके पारस्परिक सम्बन्ध या कुछ विशेष तथ्य सूचित होते हैं। २. छोटी नदी या नाला।

सारथी—संज्ञा पुं० १. रथ चलानेवाला। सवारी हाँकनेवाला। २. सागर।

सारथ्य—संज्ञा स्त्री० सारथी का कार्य, पद या भाव।

सारद*—संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"। सरस्वती।
वि० दे० "शारद।" शरद-संबंधी।
संज्ञा पुं० शरद ऋतु।

सारदा—संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।

सारदी—वि० दे० "शारदीय"।

सारदूल—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सारना—क्रि० स० १. समाप्त करना। पूरा करना। २. सुशोभित करना। सुन्दर बनाना। ३. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ४. रक्षा करना। सँभालना। ५. देख-रेख करना। ६. आँखों में अंजन या सुरमा आदि लगाना। ७. अस्त्र चलाना। प्रहार या वार करना।

सारभाटा—संज्ञा पुं० समुद्र की वह बाढ़, जिसमें पानी पहले समुद्र के तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है। (ज्वारभाटा का उलटा।)

सारमेय—संज्ञा पुं० [स्त्री० सारमेयी] कुत्ता। सरमा की संतान।

सारल्य—संज्ञा पुं० सरलता। सीधापन।

सारवती—संज्ञा स्त्री० तीन भगण और एक गुरु का एक छंद।

सारवत्ता—संज्ञा स्त्री० १. सार ग्रहण करने का भाव। सारग्राहिता। २. सारयुक्त होने का भाव।

सारवान्—वि० सारयुक्त। जिसमें सार या तत्त्व हो।

सारस—संज्ञा पुं० [स्त्री० सारसी] १. एक प्रकार का बड़ा श्वेत पक्षी। २. हंस। ३. चंद्रमा। ४. कमल। ५. छप्पय का ३७वाँ भेद।

सारसी—संज्ञा स्त्री० १. मादा सारस। २. आर्य्या छंद का २३वाँ भेद।

सारसुता—संज्ञा स्त्री० यमुना।

सारसुती*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।

सारस्वत—संज्ञा पुं० १. दिल्ली के उत्तर-पश्चिम सरस्वती नदी के तट पर का एक प्राचीन प्रदेश, जिसमें पंजाब का कुछ भाग सम्मिलित था। २. इस देश के ब्राह्मण। ३. एक प्रसिद्ध व्याकरण।
वि० १. सारस्वत देश का। २. सरस्वती-संबंधी। ३. विद्वानों का।

सारांश—संज्ञा पुं० १. सार। संक्षेप। २. तात्पर्य। मतलब। निचोड़। ३. परिणाम।

सारा—वि० [संज्ञा स्त्री० सारी] सब। समस्त।
संज्ञा पुं० दे० "साला"।

सारावती—संज्ञा स्त्री० सारावली छंद।

सारि—संज्ञा पुं० १. पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २. जूआ खेलने का पासा।

सारिक—संज्ञा पुं० दे० "सारिका"।

सारिका—संज्ञा स्त्री० मैना पक्षी।

सारिणी—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का जंगली पौधा। २. सहदेई। ३. नागबला। ४. कषाय। ५. गंधप्रसारिणी। ६. रक्त पुनर्नवा।

सारिवा—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा। अनंतमूल।

सारी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "साड़ी"। २. सारिका पक्षी। मैना। ३. पासा। गोटी। ४. कुल्हा।
संज्ञा पुं० अनुकरण या नकल करनेवाला।

वि० सब। समस्त। पूरा।
साव*†–संज्ञा पुं० दे० "सार"।
सारूप्य–संज्ञा पुं० १. समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता। समानता। २. एक प्रकार की मुक्ति, जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है।
सारो*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।
सारोपा–संज्ञा स्त्री० साहित्य में एक लक्षणा, जिसके अनुसार एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कुछ विशेष अर्थ निकलता है।
सार्थ–वि० अर्थ-सहित।
सार्थक–वि० [भाव० संज्ञा स्त्री० सार्थकता] १. अर्थ-सहित। जिसका कुछ अर्थ या मतलब हो। इसका उल्टा 'निरर्थक'। २. सफल। कामयाब। ३. फलदायक ४. लाभदायक।
सार्द्ध–वि० डयोढ़ा। जिसमें पूरे के साथ आधा और मिला हो।
सार्द्र–वि० गीला। आर्द्र।
सार्व–वि० सबसे संबंध रखनेवाला।
सार्वकालिक–वि० सदैव होनेवाला। जो सब कालों में होता हो। सब समयों का।
सार्वजनिक, सार्वजनीन–वि० सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्व-साधारण-संबंधी। जनता-सम्बन्धी। (अंग्रे०-पब्लिक)।
सार्वत्रिक–वि० हर जगह मौजूद रहनेवाला। सर्वव्यापी।
सार्वदेशिक–वि० सब देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। सब देशों का। सब देशों में होनेवाला।
सार्वभौतिक–वि० सब तत्त्वों से सम्बन्ध रखनेवाला। सब तत्त्वों में होनेवाला।
सार्वभौम–संज्ञा पुं० १. शासन करने का पूर्ण अधिकार। सम्पूर्ण प्रभुता या स्वामित्व। २. चक्रवर्ती राजा। ३. हाथी।
वि० समस्त भूमि-संबंधी।
सार्वभौमिक–वि० सार्वभौम-सम्बन्धी। दे० "सार्वभौम"।
सार्वराष्ट्रीय–वि० जिसका संबंध सब या अनेक राष्ट्रों से हो। अन्तर्-राष्ट्रीय।
सालंक–संज्ञा पुं० वह राग, जिसमें किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।
साल–संज्ञा पुं० १. जड़। २. राल। ३. वृक्ष। ४. *दे० "शालि" और "शाल"। ५. *दे० "शाला।" (जैसे घुड़साल) ६. [फा०] वर्ष।
संज्ञा स्त्री० १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। सूराख। ३. दुख। पीड़ा। वेदना। ४. घाव। जख्म। ५. चारपाई के पायों में किया हुआ चौकोर छेद।
सालक–वि० सालनेवाला। दुःख देनेवाला।
सालगिरह–संज्ञा स्त्री० [फा०] वर्षगाँठ। जन्म-दिवस।
सालन–संज्ञा पुं० १. मसालेदार तरकारी। २. पका हुआ मांस या मछली।
सालना–क्रि० अ० १. दुःख देना। २. दुख मिलना। ३. खटकना। ४. कसकना। चुभना।
क्रि० स० १. दुःख पहुँचाना। २. चुभाना। छेद करना। ३. लकड़ी आदि में छेद करके उसमें दूसरी लकड़ी का सिरा घुमाना।
सालनिर्यास–संज्ञा पुं० १. राल। २. धूना।
सालम मिसरी–संज्ञा स्त्री० [अ० सालब मिस्री] एक प्रकार का पौधा, जिसकी जड़ पौष्टिक होती है। सुधामूली। वीरकंदा।
सालरस–संज्ञा पुं० १. राल। २. धूना।
सालस–संज्ञा पुं० दे० "सालिस"।
सालसा–संज्ञा पुं० [अंग्रे०-सारसा-पेरिल्ला] खून साफ करने की एक प्रसिद्ध दवा।
साला–संज्ञा पुं० [स्त्री० साली] १. पत्नी का भाई। २. एक प्रकार की गाली, जो यह सम्बन्ध प्रकट करने के लिए दी जाती है। ३. सारिका। मैना।
संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।
सालाना–वि० [फा०] १. साल भर पर होनेवाला। वार्षिक। हर साल होनेवाला। २. पूरे साल भर का। प्रतिवर्ष का।
सालार–संज्ञा पुं० प्रधान नेता। अगुआ। पथ-प्रदर्शक। रास्ता बतानेवाला।
सालिग्राम–संज्ञा पुं० दे० "शालग्राम"।

सालिब मिसरी–संज्ञा स्त्री० दे० "सालम मिसरी"।

सालिम–वि० [अ०] संपूर्ण। पूरा।

सालियाना–वि० दे० "सालाना"।

सालिस–संज्ञा पुं० [अ०] दो पक्षों के झगड़े का निपटारा करनेवाला या उनमें समझौता करानेवाला। पंच।
वि० तीसरा। तृतीय।

सालिसनामा–संज्ञा पुं० पंचनामा। वह लेख्य, जिस पर समझौते की शर्तों के साथ पंचों के हस्ताक्षर हों।

सालिसी–संज्ञा स्त्री० १. सालिस होने की क्रिया या भाव। २. पंचायत।

साली–संज्ञा स्त्री० पत्नी की बहन।

सालु*†–संज्ञा पुं० १. दे० "साल"। दुख। २. कष्ट। ३. ईर्ष्या।

सालू–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का लाल कपड़ा (मांगलिक)। २. सारी।

सालोक्य–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मुक्ति, जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता।

सावंत–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साव–संज्ञा पुं० १. दे० "साहु"। २. पुत्र।

सावकाश–संज्ञा पुं० १. अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २. मौका। अवसर।
क्रि० वि० मौके से। अवकाश या छुट्टी के समय।

सावचेत*‡–वि० दे० "सावधान"।

सावज–संज्ञा पुं० वह जंगली जानवर, जिसका शिकार किया जाय या जो शिकार में मिला हो। शिकार।

सावत–संज्ञा पुं० १. सौतिया डाह। सौतों का आपस में द्वेष। २. ईर्ष्या। डाह।

सावधान–वि० होशियार। खबरदार। [संज्ञा स्त्री० सावधानता, सावधानी] सचेत। सजग। सतर्क।

सावधानी–संज्ञा स्त्री० सावधान रहने की क्रिया या भाव। सतर्कता। होशियारी।

सावधि–वि० १. जिसकी कुछ अवधि या निश्चित समय हो। २. जिसमें अभी कुछ अवधि या समय बाकी हो। अवधि के साथ।

सावन–संज्ञा पुं० १. हिन्दुओं के वर्ष का पाँचवाँ महीना, जो आषाढ़ के बाद और भादों के पहले पड़ता है। श्रावण। २. एक प्रकार का गीत, जो श्रावण महीने में गाया जाता है (पूरब)। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड।

सावनी–वि० १. सावन-सम्बन्धी। २. सावन का।
संज्ञा पुं० दे० १. "श्रावणी"। सावन महीने की पूर्णमासी, जिस दिन 'रक्षा-बंधन' तथा पूजन आदि होते हैं। २. वह बायन या उपहार, जो सावन के महीने में वरपक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है।

साबर–संज्ञा पुं० १. दे० "शाबर"। शिव-कृत एक प्रसिद्ध तंत्र। २. एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार। ३. एक प्रकार का हिरन।

सावर्णि–संज्ञा पुं० १. आठवें मनु, जो सूर्य्य के पुत्र थे। २. एक मन्वंतर का नाम।

सावित्र–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. शिव। ३. वसु। ४. ब्राह्मण। ५. यज्ञोपवीत। ६. एक प्रकार का अस्त्र।
वि० १. सविता या सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का। २. सूर्यवंशी।

सावित्री–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। ब्रह्मा की पत्नी। २. वेदमाता गायत्री। ३. धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ४. मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी। ५. यमुना नदी। ६. सरस्वती नदी। ७. सधवा स्त्री। ८. उपनयन के समय होनेवाला एक संस्कार।

साश्रु–वि० आँसुओं से भरा हुआ। जिसमें आँसू भरे हों। अश्रुयुक्त।
क्रि० वि० आँखों में आँसू भरकर। आँसू के साथ।

साष्टांग–वि० आठों अंगों सहित।
क्रि० वि० आठों अंगों से।
यौ०–साष्टांग प्रणाम=मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेटकर किया जानेवाला प्रणाम। दंडवत् प्रणाम।

मुहा०—साष्टांग प्रणाम करना = बहुत बचना। दूर रहना। (व्यंग्य)

सास–संज्ञा स्त्री० पति या पत्नी की माँ।

सासनलेट–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

सासना–संज्ञा स्त्री० १. दे० "साँसना"। कष्ट या दुख देना। २. दंड देना। ३. शासन।

सासरा†–संज्ञा पुं० दे० "ससुराल"।

सासा*†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "संशय"। संदेह। शुबहा। २. दे० "श्वास" या "साँस"।

सासुर†–संज्ञा पुं० १. ससुर। २. ससुराल।

साह–संज्ञा पुं० १. दे० "साहु"। २. व्यापारी। ३. सेठ। महाजन। धनी। ४. सज्जन। भला आदमी। ५. दे० "शाह"।

साहचर्य–संज्ञा पुं० १. संग। साथ। २. सहचर होने का भाव।

साहजिक–वि० सहज में होनेवाला। स्वाभाविक सहज बुद्धि या स्वभाव से होनेवाला।

साहनी–संज्ञा स्त्री० सेना। फौज।

संज्ञा पुं० १. साथी। संगी। २. पारिषद्। मध्यकालीन भारत के एक प्रकार के राजकर्मचारी।

साहब–संज्ञा पुं० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] १. स्वामी। मालिक। २. प्रभु। परमेश्वर। ३. एक सम्मानसूचक शब्द। ४. मित्र। दोस्त। ५. गोरी जाति का व्यक्ति। जैसे, अंग्रेज आदि।

साहबजादा–संज्ञा पुं० [स्त्री० साहबजादी] १. भले या बड़े आदमी का लड़का। २. पुत्र। बेटा।

साहब-सलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. परस्पर अभिवादन। आपस में अभिवादन या सलाम-बंदगी का सम्बन्ध। सलाम। बंदगी। २. जान-पहचान। मेल-जोल।

साहबी–वि० साहब का। साहबों या अंग्रेजों की तरह।

संज्ञा स्त्री० १. साहब होने का भाव। २. प्रभुता। मालिकपन। अधिकार। ३. बड़प्पन। ठाट-बाट या रोबदाब का दिखावा। अंग्रेजियत।

साहस–संज्ञा पुं० १. हिम्मत। हियाव। २. वीरता। वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढ़तापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है। ३. कोई बुरा काम। ४. लूटना। दूसरे का धन जबरदस्ती लेना। ५. दंड। सजा। ६. जुर्माना।

साहसिक–संज्ञा पुं० १. जिसमें साहस हो। पराक्रमी। हिम्मतवर। बहादुर। २. निर्भय। निडर। ३. क्रूर। ४. लुटेरा। डाकू। ५. चोर।

साहसी–वि० १. हिम्मती। दिलेर। निडर। २. वीर। बहादुर।

साहस्र, साहस्रिक–वि० सहस्र-संबंधी। हजार का।

साहस्री–संज्ञा स्त्री० किसी सन् या संवत् के हजार हजार वर्षों का समूह। सहस्राब्दी।

साहा–संज्ञा पुं० विवाह आदि शुभ कार्यों के लिए निश्चित लग्न या मुहूर्त।

साहाय्य–संज्ञा पुं० सहायता। मदद।

साहि*–संज्ञा पुं० [फा० शाह] १. राजा। २. दे० "साहु"।

साहित्य–संज्ञा पुं० १. 'सहित' या साथ होने का भाव। एक साथ रहना या मिलना। २. एकत्र होना। मिलना। ३. किसी भाषा के गद्य और पद्य सब प्रकार के ग्रंथों का समूह। वाङ्मय (अंग्रे०-लिटरेचर)। ४. लिपिबद्ध ज्ञान। ५. गद्य और पद्य की शैली. काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौन्दर्य या अलंकार और नायिकाभेद आदि से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रंथों का समूह। ६. किसी विषय, कवि या लेखक से सम्बन्ध रखनेवाले सभी ग्रंथों और लेखों आदि का समूह, जैसे तुलसी का साहित्य। ७. किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण, जो प्रायः उसकी जानकारी कराने या विज्ञापन के रूप में बँटता है, जैसे किसी संस्था या यंत्र आदि का साहित्य।

साहित्यिक–वि० साहित्य-सम्बन्धी।

संज्ञा पुं० १. साहित्य की सेवा या रचना करनेवाला। साहित्यसेवी। साहित्यकार। २. साहित्य का ज्ञाता। ३. साहित्य में रुचि रखनेवाला।

साहियाँ*‡–संज्ञा पुं० दे० "साँई"।

साही–संज्ञा स्त्री० एक जंगली जानवर, जिसकी पीठ पर नुकीलें काँटे होते हैं। इन काँटों से लिखने की कलम बनती है।

साहु–संज्ञा पुं० १. सज्जन। भला आदमी। २. महाजन। सेठ। साहूकार। ३. व्यापारी। बनिया। ४. ईमानदार।

साहुल–संज्ञा पुं० दीवारें आदि बनाते समय उनकी सीध नापने के लिए एक प्रकार का यंत्र या डोरेदार लट्टू।

साहू–संज्ञा पुं० दे० "साहु"।

साहूकार–संज्ञा पुं० बड़ा व्यापारी या महाजन। कोठीवाल।

साहूकारा–संज्ञा पुं० १. रुपयों का लन-देन। महाजनी। २. वह बाजार जहाँ बहुत से साहूकार कारबार करते हों।
वि० साहूकारों का।

साहूकारी–संज्ञा स्त्री० साहूकार होने का भाव। साहूकारपन।

साहँ*†–संज्ञा स्त्री० बाँह। भुजदंड। बाजू।
अव्य० सामुहें। सामने। सम्मुख।

सिउँ‡*–प्रत्य० दे० "स्यों"।

सिकना–क्रि० अ० सेंका जाना। आँच पर गरम होना या पकना।

सिंगा–संज्ञा पुं० फूंककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का एक बाजा। तुरही। रणसिंगा।

सिंगार–संज्ञा पुं० १ दे० "श्रृंगार"। सजावट। बनाव। शोभा। २. दे० "हरसिंगार"।

सिंगारदान–संज्ञा पुं० वह छोटा संदूक या मेज, जिसमें शीशा, कंघी आदि श्रृंगार की सामग्री रखी जाती है।

सिंगारना–क्रि० स० १. श्रृंगार करना। सँवारना। २. सजाना। सुसज्जित करना।

सिंगारहाट–संज्ञा स्त्री० वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला।

सिंगारहार–संज्ञा पुं० हरसिंगार नामक फूल। पारिजात।

सिंगारिया–वि० १. श्रृंगारिया। २. देवमूर्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी।

सिंगारी–वि० १. श्रृंगार करनेवाला। सजानेवाला। २. दे० "सिंगारिया"।

सिंगिया–संज्ञा पुं० श्रृंगिक। एक तरह का जहर।

सिंगी–संज्ञा पुं० फूंककर बजाया जानेवाला एक बाजा, जो सींग का बना होता है।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली। सींग की नली, जिससे देहाती जर्राह शरीर का खराब खून या मवाद चूसकर निकालते हैं।

सिंगौटी–संज्ञा स्त्री० १. सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी। २. बैल के सींग पर पहनाने का एक तरह का गहना।

सिंघ†*–संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।

सिंघल–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

सिंघाड़ा–संज्ञा पुं० १. पानी में पैदा होनेवाला एक तिकोना फल। पानीफल। २. इस फल के आकार की तरह सिलाई या बेल-बूटा। ३. समोसा नाम का नमकीन पकवान।

सिंघासन–संज्ञा पुं० दे० "सिंहासन"।

सिंघी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की छोटी मछली। २. सोंठ। शुंठी।

सिंघेला–संज्ञा पुं० शेर का बच्चा।

सिंचन–संज्ञा पुं० [वि० सिंचित] १. जल छिड़कना। २. सींचना।

सिंचना–क्रि० अ० सींचा जाना।

सिंचाई–संज्ञा स्त्री० १. पानी छिड़कने का काम। २. सींचने का काम। ३. सींचने की मजदूरी या कर।

सिंचाना–क्रि० स० सींचने का काम दूसरे से कराना।

सिंचित–वि० सींचा हुआ। जो सींचा गया हो। भींगा हुआ। गीला।

सिंजित–संज्ञा स्त्री० १. शब्द। ध्वनि। २. झनक। झंकार।

सिंदन*‡–संज्ञा पुं० दे० "स्यंदन"।

सिंदुवार–संज्ञा पुं० सँभालू नाम का पेड़। निर्गुंडी।

सिंदूर–संज्ञा पुं० ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण, जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ सुहाग के चिह्न-स्वरूप माँग में भरती हैं।

सिंदूरदान–संज्ञा पुं० विवाह के समय वर के

द्वारा कन्या की माँग में सिंदूर भरना।

सिंदूरपुष्पी—संज्ञा स्त्री० एक पौधा, जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीरपुष्पी।

सिंदूरबंदन—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूरदान"।

सिंदूरिया—वि० सिंदूर के रंग का खूब लाल।

सिंदूरी—वि० सिंदूर के रंग का। पीला मिला लाल रंग का।

सिंधोरा—संज्ञा पुं० दे० "सिंधोरा"।

सिंध—संज्ञा पुं० भारत के पश्चिम का एक प्रदेश, जो अब पाकिस्तान में है।
संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्रधान नदी (सिंधु)। २. भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—संज्ञा पुं० दे० "सैंधव"।

सिंधिया—संज्ञा पुं० ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजाओं के वंश की उपाधि।

सिंधी—संज्ञा पुं० १. सिंध-प्रदेश का निवासी। २. सिंध-प्रदेश का घोड़ा।
संज्ञा स्त्री० सिंध-प्रदेश की बोली।
वि० सिंध-प्रदेश का।

सिंधु—संज्ञा पुं० १. नद। बड़ी नदी। २. पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी। ३. सिंध-प्रदेश। ४. समुद्र। ५.चार की संख्या। ६. सात की संख्या। ७. एक राग।

सिंधुज—संज्ञा पुं० सेंधा नमक।

सिंधुजा—संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

सिंधुपुत्र—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सिंधुमाता—संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

सिंधुर—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिंधुरा] १. हाथी। २. आठ की संख्या।

सिंधुरमणि—संज्ञा पुं० गजमुक्ता। हाथी की मणि।

सिंधुरबदन—संज्ञा पुं० गणेश।

सिंधुरगामिनी—वि० हाथी की-सी चालवाली। गजगामिनी।

सिंधुविष—संज्ञा पुं० समुद्र से निकला हुआ जहर। हलाहल विष।

सिंधुसुत—संज्ञा पुं० जलंधर राक्षस।

सिंधुसुता—संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

सिंधुसुतासुत—संज्ञा पुं० मोती।

सिंधूरा—संज्ञा पुं० संपूर्ण जाति का एक राग।

सिंधोरा—संज्ञा पुं० सिंदूर रखने की काठ का डिब्बी।

सिंह—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे बलवान् और हिंस्रक जंगली जानवर, जिसकी गरदन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। शेर बबर। केसरी। २. बहुत बड़ा वीर या पराक्रमी। ३. वीरता या श्रेष्ठता-वाचक शब्द। जैसे—पुरुष-सिंह। ४. ज्योतिष में बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। ५. लाल सहिजन। ६. एक प्रकार के जैन साधु। ७. एक राग। ८. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद।

सिंहद्वार—संज्ञा पुं० किले या महल का मुख्य दरवाजा। सदर फाटक।

सिंहनाद—संज्ञा पुं० १. सिंह की दहाड़। २. युद्ध में वीरों की ललकार। ललकारकर कहना। ३. शेर की तरह चिघाड़कर कहना। बहुत जोर देकर निश्चयपूर्वक कहना। ४. एक प्रकार का वर्णवृत्त। ५. शिव का नाम। (महाभारत) ६. रावण के एक पुत्र का नाम।

सिंहनी—संज्ञा स्त्री० १. सिंह की मादा। शेरनी। २. एक छंद, जिसके चारों पदों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं।

सिंहपौर—संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार"।

सिंहल—संज्ञा पुं० भारत के दक्षिण का एक द्वीप, लंका।

सिंहलद्वीप—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

सिंहलद्वीपी—वि० दे० "सिंहली"।

सिंहली—वि० सिंहल-द्वीप का।
संज्ञा पुं० सिंहल देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० सिंहल देश की भाषा।

सिंहवाहिनी—संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी। सिंह की सवारी करने के कारण दुर्गा को सिंह-वाहिनी कहते हैं।

सिंहस्थ—वि० सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति)।

सिंहावलोकन—संज्ञा पुं० १. सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। ३. पहले कही हुई बातों का अन्त में बहुत संक्षेप में फिर से वर्णन। ४. पद्य-रचना की एक

पद्धति, जिसमें पिछले चरण के अन्त के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।

सिंहासन—संज्ञा पुं० १. राजा या देवता के बैठने का आसन (विशेष प्रकार की चौकी)। २. राजगद्दी।

सिंहिका—संज्ञा स्त्री० १. एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लंका जाते समय हनुमान ने मारा था। २. शोभन छंद का एक नाम।

सिंहिकासूनु—संज्ञा पुं० राहु।

सिंहिनी—संज्ञा स्त्री० सिंह या बाघ की मादा। शेरनी।

सिंही—संज्ञा स्त्री० १. सिंह की मादा। शेरनी। २. आर्य्या छंद का पचीसवाँ भेद। इसमें तीन गुरु और ५१ लघु होते हैं।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० सिंह के समान पतली कमरवाली।

सिअन—संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।

सिअरा*—वि० ठंढा।

संज्ञा पुं० छाया। छाहँ।

सिआना—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिआर—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड़।

सिकंजबीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकन्दरा—संज्ञा पुं० [फा०] रेल की पटरी के किनारे ऊँचे खम्भे पर लगा हुआ डंडा, जो झुककर रेलगाड़ी के आगे बढ़ने का संकेत करता है। [अंग्रे० सिगनल]। (सिकन्दर ने ऐसा एक निशाना लगाया था, जिससे जहाज आपस में टकरा न जायँ। इसी से इसका नाम सिकन्दरा पड़ गया।)

सिकटा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिकटी] मिट्टी के बर्तन का छोटा टुकड़ा। कंकड़।

सिकड़ी—संज्ञा स्त्री० १. शृंखला। किवाड़ की कुंडी। साँकल। २. जंजीर। गले में पहनने की सोने की जंजीर। ३. करधनी।

सिकता—संज्ञा स्त्री० १. बालू। रेत। २. बलुई जमीन।

सिकतिल—वि० [संज्ञा सिकता] रेतीला।

सिकरवार*†—संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकली—संज्ञा स्त्री० धारदार हथियारों को माँजने और उन पर सान चढ़ाने की क्रिया।

सिकलीगर—संज्ञा पुं० तलवार आदि हथियारों पर सान रखनेवाला।

सिकहर—संज्ञा पुं० सीका। छींका। रस्सी या तार के बने हुए जालीदार थैले, जिनमें बिल्ली आदि से बचाने के लिए खाने की चीजें वगैरह रखकर टाँग दी जाती हैं।

सिकुड़न—संज्ञा स्त्री० १. सिमटन। २. बल। शिकन। चुन्नट।

सिकुड़ना—क्रि० अ० १. सिमटना। संकुचित होना। २. बल पड़ना। शिकन पड़ना। ३. संकीर्ण होना।

सिकोड़ना—क्रि० स० समेटना। संकुचित करना।

सिकोरा—संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।

सिकोली—संज्ञा स्त्री० मूँज, बेंत आदि की बनी डलिया।

सिकोही—वि० १. गर्वीला। २. वीर। बहादुर। ३. आन-बानवाला।

सिक्कड़—संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।

सिक्का—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुद्रा। टकसाल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा, जो सरकार-द्वारा निश्चित मूल्य का धन माना जाता है। जैसे, रुपया-पैसा आदि। २. मुहर। छाप। ठप्पा। ३. रुपए-पैसे आदि पर की राजकीय छाप। ४. मुद्रित चिह्न। ५. पदक। तमगा। ६. मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा। ७. अधिकार। प्रभुत्व। ८. आतंक। रोब।। ९. असर।

मुहा०—सिक्का बैठना या जमना=१. अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। २. आतंक छाना। रोब जमना।

सिक्ख—संज्ञा पुं० दे० "सिख"।

सिक्त—वि० १. सींचा हुआ। २. भीगा हुआ। तर। गीला।

सिखंड—संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।

सिख—संज्ञा पुं० १. गुरु नानक आदि दस गुरुओं का अनुयायी। नानकपंथी। २. शिष्य।
संज्ञा स्त्री० १. सीख। *२. शिखा। चोटी।

सिखरन—संज्ञा स्त्री० दे० "शिखरन"। श्रीखंड। दही-चीनी का मिश्रण।
सिखलाना—क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखाना—क्रि० स० १. पढ़ाना। २. शिक्षा देना। उपदेश देना।
यौ०—सिखाना-पढ़ाना=चालाकी सिखाना।
सिखावन—संज्ञा पुं० शिक्षा। उपदेश।
सिखावना*†—क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखिर*—संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।
सिखी—संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।
सिगनल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] स्टेशनों के पास रेल की पटरी के किनारे ऊँचे खम्भे पर लगा हुआ डंडा, जो झुककर गाड़ी के आगे बढ़ने का संकेत करता है। इसके झुके बिना गाड़ी आगे नहीं बढ़ती।
सिगरा, सिगरो*†—वि० [स्त्री० सिगरी]। संपूर्ण। सब। सारा।
सिगरेट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कागज में लपेटा हुआ तम्बाकू का चूरा, जिसे जलाकर पीते हैं।
सिचान*—संज्ञा पुं० बाज पक्षी।
सिजदा—संज्ञा पुं० [अ०] दंडवत्। प्रणाम। ज़मीन पर सिर रखकर या बहुत झुककर किया गया प्रणाम।
सिझना—क्रि० अ० दे० "सीझना"। सिझाया जाना। आँच पर पकना।
सिझाना—क्रि० स० १. आँच पर पकाना। २. कष्ट देना। सताना। ३. तपस्या करना।
सिटकिनी—संज्ञा स्त्री० किवाड़ बंद करने के लिए लोहे या पीतल का छोटा छड़। चटकनी। अगरी।
सिटपिटाना—क्रि० अ० [अनु०] डर या संकोच से एकदम चुप हो जाना। दब जाना। सकुचाना।
सिट्टी—संज्ञा स्त्री० १. बहुत बढ़-बढ़कर बोलना। डींग हाँकना। २. वाक्पटुता।
मुहा०—सिट्टी भूलना=सिटपिटा जाना।
सिट्ठी—संज्ञा स्त्री० दे० "सीठी"।
सिठनी—संज्ञा स्त्री० सीठना। विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली।
सिठाई—संज्ञा स्त्री० १. मंदता। २. फीकापन। नीरसता।
सिड़—संज्ञा स्त्री० १. सनक। झक। २. पागलपन। उन्माद।
सिड़बारा*—वि० दे० "सिड़ी"।
सिड़ी—वि० [स्त्री० सिड़िन] १. सनकी। पागल। बावला। २. धुनी। धुन का पक्का।
सित—वि० [स्त्री० सिता, संज्ञा सितता] १. सफेद। उज्ज्वल। २. साफ। ३. चमकीला।
संज्ञा पुं० १. शुक्लपक्ष। २. चीनी। ३. चाँदी।
सितकंठ—संज्ञा पुं० महादेव।
वि० सफेद गर्दनवाला।
सितकर—संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सितता—संज्ञा स्त्री० श्वेतता। सफेदी।
सितपक्ष—संज्ञा पुं० हंस।
सितभानु—संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सितम—संज्ञा पुं० [फा०] १. जुल्म। अत्याचार। २. गजब। अनर्थ।
सितमगर—संज्ञा पुं० [फा०] अन्यायी। दुःखदायी। जालिम।
सितवराह—संज्ञा पुं० सफेद सूअर। श्वेत वराह।
सितवराहपत्नी—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
सितसागर—संज्ञा पुं० क्षीर-सागर।
सिता—संज्ञा स्त्री० १. ज्योत्स्ना। चाँदनी। २. शुक्ल पक्ष। ३. मल्लिका। ४. मोतिया (फूल)। ५. चीनी। ६. चाँदी। ७. शराब।
सिताखंड—संज्ञा पुं० १. मिसरी। २. शहद से बनाई हुई शक्कर।
सिताब†*—क्रि० वि० [फा०] १. तुरंत। झटपट। २. जल्दी।
सितार—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध बाजा, जिसके तार पर्दों पर दबाकर, उँगली से बजाए जाते हैं।
सितारा—संज्ञा पुं० [फा०] १. भाग्य। नसीब। २. तारा। नक्षत्र। ३. चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी, जो शोभा के लिए चीजों पर लगाई जाती है। चमकी।
मुहा०—सितारा चमकना या बलंद होना=भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना।
सितारिया—संज्ञा पुं० सितार बजानेवाला।

सितारेहिंद—संज्ञा पुं० [फा०] अंग्रेजी• शासन काल में सरकार की ओर से दी जानेवाली एक उपाधि।

सितासित—संज्ञा पुं० १. सफेद और काला। श्वेत और श्याम। २. बलदेव।

सितिकंठ—संज्ञा पुं० महादेव।

सिथिलाई*—संज्ञा स्त्री० शिथिलता।

सिदरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] तीन दरवाजों-वाला कमरा या बरामदा।

सिदिक—वि० [अ०] सच्चा। सत्य।

सिदौसी†—क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

सिद्ध—वि० [भा० संज्ञा स्त्री० सिद्धि,] १. तर्क या प्रमाण-द्वारा निश्चित। प्रमाणित। निरूपित। २. जिसका साधन हो चुका हो। ३. सम्पन्न। संपादित। ४. प्राप्त। ५. प्रयत्न में सफल। कृतकार्य्य। ६. जिसने योग या तप-द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो। ७. योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ८. मोक्ष का अधिकारी। ९. जिस कथन के अनुसार कोई बात हुई हो। १०. अनुकूल किया गया। ११. कार्य्य-साधन के उपयुक्त बनाया हुआ। १२. आँच पर पका या उबला हुआ।
संज्ञा पुं० १. वह, जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो। २. ज्ञानी। ३. योगी। महात्मा। ४. एक प्रकार के देवता। ५. ज्योतिष में एक योग।

सिद्धकाम—वि० १. जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। २. सफल। कृतार्थ।

सिद्धगुटिका—संज्ञा स्त्री० वह मंत्र-सिद्ध गोली, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है।

सिद्धत्व—संज्ञा पुं० दे० "सिद्धि"।

सिद्धपीठ—संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धरस—संज्ञा पुं० पारा।

सिद्ध-रसायन—संज्ञा पुं० दीर्घ जीवन और बहुत शक्ति देनेवाला 'रस'। औषध।

सिद्धहस्त—वि० १. निपुण। २. जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। अत्यन्त कुशल।

सिद्धांजन—संज्ञा पुं० एक प्रकार का अंजन, जिसके बारे में कहते हैं कि उसे आँख में लगा लेने से जमीन में गड़ी हुई चीजें भी दिखाई देती हैं।

सिद्धांत—संज्ञा पुं० १. मुख्य उद्देश्य या अभि-प्राय। २. भली भाँति सोच-विचारकर स्थिर किया हुआ मत। ३. विद्वानों या किसी वर्ग या संप्रदाय द्वारा प्रतिपादित या निश्चित मत। वाद। ४. निर्णीत विषय। ५. तत्त्व की बात। ६. पूर्व-पक्ष के खंड के उपरांत स्थिर मत। ७. ऋषियों या महात्माओं के मान्य उपदेश। ८. शास्त्र-द्वारा निश्चित मत। ९. किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई पुस्तक-विशेष।

सिद्धान्ती—वि० अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहने-वाला। शास्त्रों आदि के सिद्धान्त जानने-वाला।

सिद्धा—संज्ञा स्त्री० १. देवांगना। २. सिद्ध की स्त्री। ३. आर्य्या छंद का १५वाँ भेद, जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धार्थ—वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गईं हों। पूर्णकाम।
संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. जैनों के २४वें तीर्थंकर महावीर के पिता का नाम।

सिद्धासन—संज्ञा पुं० १. योग का एक आसन। २. सिद्ध-पीठ।

सिद्धि—संज्ञा स्त्री० १. काम का पूर्ण होना। सफलता। २. कौशल। निपुणता। ३. प्रमाणित होना। ४. किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। निर्णय। ५. पकना। सीझना। ६. योग के पूरे होने का अलौकिक फल। ७. विभूति। ८. तप या योग की आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। ९. मुक्ति। मोक्ष। १०. दक्ष प्रजापति की एक कन्या, जो धर्म की पत्नी थी। गणेश की दो स्त्रियों में से एक। ११. छप्पय छंद के ४१वें भेद का नाम, जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण होते हैं।

सिद्धि-गुटिका—संज्ञा स्त्री० रसायन आदि बनाने की गुटिका।

सिद्धिदाता—संज्ञा पुं० १. गणेश। २. सिद्धि देनेवाला।

सिद्धेश्वर—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. शिव। २. बहुत बड़ा सिद्ध महात्मा। महायोगी।

सिधाई—संज्ञा स्त्री० सीधापन।

सिधाना*—क्रि० अ० दे० "सिधारना"।

सिधारना—क्रि० अ० १. जाना। गमन या प्रस्थान करना। २. मरना। स्वर्गवास होना। ‡*क्रि० स० दे० "सुधारना"।

सिन—संज्ञा पुं० [अ०] उम्र। आयु।

सिनक—संज्ञा स्त्री० नाक से निकला हुआ कफ या मल।

सिनकना—क्रि० अ० जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर निकालना।

सिनीवाली—संज्ञा स्त्री० १. शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या पहली तिथि। २. एक वैदिक देवी।

सिनेमा—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] चल-चित्र। पर्दे पर बिजली-यंत्रों से दिखलाया जानेवाला चित्र।

सिन्नी†—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मिठाई। २. सिरनी। ३. किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जानेवाली मिठाई।

सिपर—संज्ञा स्त्री० [फा०] ढाल।

सिपहगरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिपाही का काम या पेशा।

सिपहसालार—संज्ञा पुं० [फा०] सेनापति।

सिपाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] फौज। सेना।

सिपाहगिरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "सिपहगरी"।

सिपाहियाना—वि० सिपाहियों या सैनिकों की तरह। फौजी।

सिपाही—संज्ञा पुं० [फा०] १. सैनिक। योद्धा। २. कांस्टेबिल। पुलिस का छोटा कर्मचारी।

सिपुर्द‡—संज्ञा पुं० दे० "सुपुर्द"।

सिप्पर—संज्ञा स्त्री० दे० "सिपर"।

सिप्पा—संज्ञा पुं० १. निशाने पर किया हुआ वार। २. काम हल करने का उपाय या तरकीब। तदबीर। ३. रंग। प्रभाव। धाक। मुहा०—सिप्पा जमाना=१. किसी कार्य्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना। २. रंग जमाना। धाक जमाना।

सिप्रा—संज्ञा स्त्री० १. मालवा की एक नदी, जिसके किनारे उज्जैन नगर बसा है। २. भैंस (संस्कृत में अप्रयुक्त अर्थ)।

सिफ़त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विशेषता। गुण। २. लक्षण। ३. स्वभाव।

सिफर—संज्ञा पुं० [अ०] शून्य। सुन्ना।

सिफ़ला—वि० [अ०] [संज्ञा सिफलापन] १. नीच। २. छिछोरा। कमीना।

सिफ़ारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी के पक्ष में कुछ कहना-सुनना। कृपा करने के लिए अनुरोध। २. नौकरी दिलाने के लिए कोशिश या तारीफ। ३. सुझाव पेश करना।

सिफ़ारिशी—वि० [फा०] १. जिसमें सिफारिश हो। २. जिसकी सिफारिश की गई हो। ३. सिफारिश करनेवाला। खुशामदी।

सिफारिशी टट्टू—संज्ञा पुं० जो केवल सिफारिश से ही किसी पद पर पहुँचा हो या अपना काम निकालता हो।

सिबिका*—संज्ञा स्त्री० दे० "शिविका"।

सिमंत—संज्ञा पुं० दे० "सीमंत"।

सिमटना—क्रि० अ० १. संकुचित होना। सिकुड़ना। २. शिकन या बल पड़ना। ३. इकट्ठा होना। ४. व्यवस्थित होना। ५. तरतीब से लगना। ६. पूरा होना। निबटना। ७. सहमना। ८. संकोच करना।

सिमरना†—क्रि० स० दे० "सुमिरना"।

सिमाना†—संज्ञा पुं० सिवाना। हद।
*†—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिमिटना†*—क्रि० अ० दे० "सिमटना"।

सिमेटना*†—क्रि० स० दे० "समेटना"।

सिय*—संज्ञा स्त्री० सीता। जानकी।

सियना*—क्रि० अ० १. उत्पन्न करना। २. रचना।
क्रि० स० दे० "सीना"।

सियरा*—वि० [स्त्री० सियरी] [संज्ञा सियराई] १. शीतल। ठंढा। २. कच्चा।

सियराई*—संज्ञा स्त्री० शीतलता।

सियराना*—क्रि० अ० जुड़ाना। ठंडा होना।

सिया—संज्ञा स्त्री० सीता। जानकी।

सियापा—संज्ञा पुं० [फा०] मरे हुए व्यक्ति के शोक में स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।

सियार†—संज्ञा पुं० [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़।

सियाल—संज्ञा पुं० गीदड़।

सियाला—संज्ञा पुं० जाड़े का मौसिम। शीतकाल।

सियासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] (वि० सियासी) १. राजनीति। २. देश की रक्षा और शासन।

सियाह—वि० दे० "स्याह"।

सियाहगोश—संज्ञा पुं० [फा०] बन-बिलाव। बिल्ली की जाति का एक जंगली जानवर।

सियाहा—संज्ञा पुं० (फा०) रोजनामचा। १. आय-व्यय के हिसाब की बही। २. सरकारी खजाने का वह रजिस्टर, जिसमें जमींदारों से वसूल हुई मालगुजारी लिखी जाती है।

सियाहानवीस—संज्ञा पुं० [फा०] सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला।

सियाही—संज्ञा स्त्री० दे० "स्याही"।

सिर—संज्ञा पुं० १. शरीर का सब सेऊपरी भाग। शिर। मस्तक। कपाल। खोपड़ी। शरीर में गर्दन के ऊपर का भाग। २. ऊपर का छोर। सिरा। चोटी।

मुहा०—सिर-आँखों पर होना=सहर्ष स्वीकार होना। शिरोधार्य होना। सादर मान्य होना। सिर-आँखों पर बैठाना=बहुत आदर-सत्कार करना। सिर उठाना=विरोध में खड़ा होना। सामने मुँह करना। गर्व या प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। (अपना) सिर ऊँचा करना=प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच में खड़ा होना। सिर के बल जाना=बहुत नम्रतापूर्वक किसी के पास जाना। सिर खाली करना=बकवाद करना। माथा-पच्ची करना। सोच विचार में हैरान होना। सिर खाना=बकवाद करके जी उबाना। सिर खपाना=सोच-विचार में हैरान होना। बहुत मेहनत करना। सिर चकराना=दे० "सिर घूमना"। सिर चढ़ाना=१. माथे से लगाना। पूज्य भाव दिखाना। २. दुलार से उद्दंड बना देना। मुँह लगाना। सिर घूमना=१. सिर में दर्द होना। २. घबराहट होना। बेहोशी होना। सिर झुकाना=सिर नवाना। नमस्कार करना। लज्जा से गर्दन नीची करना। सिर देना=प्राण निछावर करना। सिर धरना=सादर स्वीकार करना। अंगीकार करना। सिर धुनना=शोक या पछतावे से सिर पीटना। सिर नीचा करना=लज्जा से सिर झुकाना। शर्माना। सिर पटकना=१. सिर धुनना। २. बहुत परिश्रम करना। ३. अफसोस करना। सिरपर पाँव रखना या सिर पर पाँव रख कर भागना=बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। सिर पर पड़ना=अपने ऊपर आना या बीतना। १. गुजरना। २. हिस्से में आना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना=१. जान लेने पर उतारू होना। २. हत्या करने के बाद आपे में न रहना। सिर पर सवार होना=कोई काम कराने के लिए किसी को हमेशा परेशान करना या हमेशा उस पर ताकीद रखना। सिर पर होना=थोड़े ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। सिर फिरना=१. सिर घूमना। सिर चकराना २. पागल हो जाना। सिर मारना=समझाते-समझाते हैरान होना। सोचने-विचारने में हैरान होना। सिर खपाना। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना=शुरू में ही काम बिगड़ना। कार्य प्रारम्भ होते ही विघ्न पड़ना या संकट आना। सिर पर सेहरा होना=किसी कार्य्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। सिर से पैर तक=१.आरंभ से अंत तक। २.सब अंगों में। पूर्ण रूप से। सिर से पैर तक आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना। सिर से कफन बाँधना=मरने के लिए तैयार होना। सिर से खेल जाना=प्राण दे देना। सिर पर सींग होना=कोई विशेषता होना। खसूसियत होना। (किसी का किसी के) सिर होना=१. पीछे पड़ना। पीछा न छोड़ना। २. बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना। ३.उलझ

पड़ना। झगड़ा करना। (किसी बात के) सिर होना=ताड़ लेना। समझ लेना।

सिरकटा—वि० [स्त्री० सिरकटी] १. जिस का सिर कट गया हो। २. दूसरों का अहित करनेवाला।

सिरका—संज्ञा पुं० [फा०] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख या किसी फल आदि का रस।

सिरकी—संज्ञा स्त्री० १. सरकंडा। सरई। २. सरकंडे की बनी हुई टट्टी, जो प्रायः दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षा से बचाव के लिए डालते हैं।

सिरचंद—संज्ञा पुं० हाथी का एक प्रकार का अर्द्ध-चंद्राकार गहना।

सिरजक*—संज्ञा पुं० १. बनानेवाला। रचनेवाला। २. सृष्टिकर्त्ता। ईश्वर।

सिरजनहार*—संज्ञा पुं० १.बनानेवाला। रचनेवाला। २. सृष्टिकर्त्ता। ईश्वर।

सिरजना*—क्रि० स० १. रचना। बनाना। २. उत्पन्न करना। ३. सृष्टि करना। ४. संचय करना।

सिरजित*—वि० रचा हुआ। बनाया हुआ।

सिरताज—संज्ञा पुं० १. सरदार। २.शिरोमणि। ३. मुकुट।

सिर-तापा—क्रि० वि० १. आदि से अंत तक। २. सिर से पाँव तक।

सिरत्राण—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

सिरदार*‡—संज्ञा पुं० दे० "सरदार"।

सिर-धरा, सिर-धरू—संज्ञा पुं० [स्त्री० सिर-धरी] १. सिर पर रहनेवाला। संरक्षक। २. सहायक। मददगार।

सिरनामा—संज्ञा पुं० [फा०] १. लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २. किसी लेख का शीर्षक। सुर्खी।

सिरनेत—संज्ञा पुं० १. पगड़ी। २. पटा। ३. चीरा।

सिरपाव—संज्ञा पुं० दे० "सिरोपाव"।

सिरपेच—संज्ञा पुं० [फा०] १. पगड़ी। २. पगड़ी पर बाँधने का एक गहना। कलँगी।

सिरफूल—संज्ञा पुं० सिर पर पहनने का एक गहना।

सिरफेंटा—संज्ञा पुं० साफा। पगड़ी।

सिरबंद—संज्ञा पुं० साफा। पगड़ी।

सिरबंदी—संज्ञा स्त्री० माथे पर पहनने का एक गहना।

सिरमनि*—संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

सिरमौर—संज्ञा पुं० १.मुकुट। २. सिरताज। शिरोमणि।

सिररुह—संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरस—संज्ञा पुं० दे० "शिरीष"। सिरिस का पेड़।

सिरहाना—संज्ञा पुं० चारपाई में या कहीं सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग।

सिरा—संज्ञा पुं० १. लंबाई का अंत। छोर। २. ऊपर का भाग। ३. नोक। अंतिम भाग। ४. आरंभ का भाग। ५. शीर्ष।

मुहा०—सिरे का=अव्वल दरजे का। सबसे अच्छा।

सिराना*†—क्रि० स० ठंढा करना। समाप्त करना। बिताना।

क्रि० अ० १. ठंढा होना। २. मंद पड़ना। ३. हतोत्साह होना। ४. समाप्त होना। बीत जाना। ५. मिटना। दूर होना। ६. काम से फुरसत पाना।

सिरावना*†—क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिरिश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] विभाग।

सिरिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी, जो मुकदमे के कागज-पत्र अपने अधिकार में रखता है।

सिरिस—संज्ञा पुं० दे० "शिरीष"। शीशम की तरह लम्बा एक ऊँचा पेड़, जिसमें फूल होते हैं।

सिरी*‡—संज्ञा स्त्री० १. दे० "श्री"। लक्ष्मी। २. शोभा। कांति। ३. रोली। रोचना। ४. माथे पर का एक गहना। ५. खाने के लिए मारे हुए पशु या पक्षी का सिर।

सिरोपाव—संज्ञा पुं० सिर से पैर तक का पहनावा, जो राज-दरबार से सम्मान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि—संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

सिरोरुह—संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरोही—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की काली चिड़िया।

संज्ञा पुं० १. राजपूताने में एक स्थान, जहाँ की तलवार बहुत बढ़िया होती है। २. तलवार।

सिर्फ़–क्रि० वि० [अ०] केवल। मात्र। वि० १. अकेला। एकमात्र। २. शुद्ध। बिना मिलावट के।

सिल–संज्ञा स्त्री० १. पत्थर। २. चट्टान। शिला। पत्थर की चौकोर पटिया, जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ३. पत्थर का लम्बा और बड़ा टुकड़ा।

संज्ञा पुं० दे० १. "शिल"। "उंछ"। २. [अ०] क्षयरोग। (अंग्रे०-थाइसिस)

सिलकी–संज्ञा पुं० बेल।

सिलखड़ी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। २. खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलगना–क्रि० अ० दे० "सुलगना"।

सिलपट–वि० १. बराबर। चौरस। २. साफ ३. घिसा हुआ। चौपट। सत्तानाश।

सिलपोहनी–संज्ञा स्त्री० मातृपूजा की एक रीति-विशेष, जो विवाह तथा यज्ञोपवीत आदि संस्कारों के अवसर पर होती है।

सिलवट–संज्ञा स्त्री० सिकुड़न। बल। शिकन।

सिलवाना–क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिलसिला–संज्ञा पुं० [अ०] १. क्रम। २. तरतीब। ३. परम्परा। ४. व्यवस्था। ५. श्रेणी। पंक्ति। ६. शृंखला।

वि० १. गीला। २. चिकना।

सिलसिलेवार–वि० सिलसिले से। क्रम के अनुसार। तरतीबवार।

सिलह–संज्ञा पुं० दे० "सिलाह"।

सिलहखाना–संज्ञा पुं [अ०] हथियार रखने का स्थान। शस्त्रागार।

सिलहारा–संज्ञा पुं० खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला–वि० [स्त्री सिलहिली] १. चिकना। कीचड़ जमने से चिकना। २. ऐसा चिकना जिस पर पैर फिसले।

सिला–संज्ञा स्त्री० दे० 'शिला"।

सिलाई–संज्ञा स्त्री० १. सीने का काम या मजदूरी। २. सीने का ढंग। ३. टाँका।

सिलाजीत–संज्ञा पुं० दे० "शिलाजीत"।

सिलाना–क्रि० स० सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।

सिलारस–संज्ञा पुं० १. सिल्हक नाम का पेड़, अथवा उसका रस या गोंद। २. इलायची का तेल।

सिलावट–संज्ञा पुं० पत्थर काटने और गढ़नेवाला। संगतराश।

सिलाह–संज्ञा पुं० [अ०] १. हथियार। २. कवच। जिरह बकतर।

सिलाहबंद–वि०.हथियारबंद। सशस्त्र। शस्त्रों से सज्जित।

सिलाहर–संज्ञा पुं० दे० "सिलहार"।

सिलाही–संज्ञा पुं० [अ०] सैनिक।

सिलिक†–संज्ञा पुं० दे० "सिल्क"।

सिलीमुख–संज्ञा पुं० दे० "शिलीमुख"।

सिलौट, सिलौटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० सिलौटी] १. सिल। २. सिल और बट्टा।

सिल्क–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. रेशम। २. रेशमी कपड़ा।

सिल्ला–संज्ञा पुं० अनाज की बालियाँ या दाने, जो फसल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं।

सिल्ली–संज्ञा स्त्री० १. हथियार की धार तेज करने का पत्थर। सान। २. पत्थर की छोटी पतली पटिया। ३. लकड़ी का बड़ा कुंदा। ४. कटे पेड़ के तने का बड़ा टुकड़ा।

सिल्हक–संज्ञा पुं० दे० "सिलारस"।

सिवई–संज्ञा स्त्री० गुँधे हुए आटे के सूत की तरह के पतले सूखे लच्छे, जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवा–अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा। वि० अधिक। ज्यादा।

सिवाइ–अव्य० दे० "सिवाय", "सिवा"।

सिवाई–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया।

सिवान–संज्ञा पुं० सीमा। हद।

सिवाय–अव्य० दे० "सिवा"। अलावा। अतिरिक्त। छोड़कर। बाद देकर।

वि० १. अधिक। ज्यादा। २. ऊपरी।

सिवार–संज्ञा स्त्री० पानी में होनेवाली एक तरह की लम्बी घास।

सिवाल–संज्ञा स्त्री० दे० "सिवार"।

सिवाला–संज्ञा पुं० दे० "शिवालय"।

सिसकना–क्रि० अ० [अनु०] १. सिसकी भरते हुए या रुक रुककर साँस छोड़ते हुए रोना। खुलकर नहीं, बल्कि धीरे-धीरे रोना। २. तरसना।

सिसकारना–क्रि० अ० १. मुँह से सीटी की तरह आवाज निकालना। सुसकारना। २. अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से साँस खींचना। सीत्कार करना।

सिसकारी–संज्ञा स्त्री० १. सिसकारने का शब्द। २.सीटी की तरह की आवाज। ३. पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी-सी' शब्द। सीत्कार।

सिसकी–संज्ञा स्त्री० १. खुलकर नहीं, बल्कि धीरे-धीरे रोने का शब्द। २. सिसकारी। सीत्कार।

सिसोदिया–संज्ञा पुं० गहलौत राजपूतों की एक शाखा।

सिहद्दा–संज्ञा पुं० वह स्थान, जहाँ तीन सीमाएँ मिलती हों।

सिहरन–संज्ञा स्त्री० १. सिहरने की क्रिया या भाव। कँपकँपी। २. रोमांच। रोंगटे खड़े होना।

सिहरना†–क्रि० अ० [संज्ञा स्त्री० सिहरन] रोमांच होना। रोंगटे खड़े होना। ठंढ से काँपना। डरना या डर से काँपना। किसी दर्दनाक घटना को देखकर रोमांचित होना।

सिहरा–संज्ञा पुं० [अ०] दे० "सेहरा"।

सिहराना†–क्रि० स० सर्दी से कँपाना। डराना।

सिहरावन†–संज्ञा पुं० दे० "सिहरन"।

सिहरी–संज्ञा स्त्री० १. सिहरन। ठंड या डर से काँपना। कँपकँपी। २. जूड़ी। बुखार। ३. रोंगटे खड़े होना। लोमहर्ष।

सिहाना†–क्रि० अ० १. ईर्ष्या करना। डाह करना। २. ललचना। लुभाना। ३. मुग्ध होना। मोहित होना।
क्रि० स० १. ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २. ललचना। ललचाना।

सिहारना*†–क्रि० स० १. ढूँढ़ना। खोजना। २. जुटाना। इकट्ठा करना।

सिहोड़, सिहोर†–संज्ञा पुं० दे० "सेहुँड़"।

सींक–संज्ञा स्त्री० १. मूँज आदि की पतली तीली। २. महीन डंठल। ३. तिनका। ४. नाक का एक गहना। कील।

सींका–संज्ञा पुं० १. छींका। सिकहर। २. पेड़-पौधों की डाल में निकली हुई छोटी डाल। उपशाखा। डाँडी।

सींकिया–वि०-सींक की तरह पतला।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंगीन धारीदार कपड़ा।

सींग–संज्ञा पुं० खुरवाले पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए कड़े नुकीले अंग।
मुहा०–(किसी के सिर पर) सींग होना= कोई विशेषता होना। (व्यंग्य) सींग कटा-कर बछड़ों में मिलना=बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना। बड़े होकर भी बच्चों की तरह का व्यवहार करना। कहीं सींग समाना= कहीं ठिकाना मिलना।

सींगदाना–संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

सींगरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का लोबिया या फली। २. मोगरे की फली।

सींगी–संज्ञा स्त्री० १. सींग का बना एक तरह का बाजा, जो फूँककर बजाया जाता है। २. वह सींग की नली, जिससे जर्राह शरीर का खराब खून या मवाद चूसकर निकालते हैं। ३. एक प्रकार की मछली।

सींचना–क्रि० स० १. पानी छिड़ककर तर करना। २. खेतों तथा बगीचों आदि में पानी देना। सिंचाई करना।

सींव*–संज्ञा पुं० दे० "सीमा"।

सी–वि० समान। सदृश। की तरह।
संज्ञा स्त्री० सिसकारी। सीत्कार।
मुहा०—अपनी सी=१. भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक। २. अपने मन मुताबिक।

सीउ*–संज्ञा पुं० शीत। ठंढ।

सीकर–संज्ञा पुं० १. पानी की बूँद। जल-कण। २. पसीना।
*†–संज्ञा स्त्री० सिक्कड़। जंजीर।

सीकल–संज्ञा स्त्री० हथियारों का मोरचा छुड़ाने की क्रिया।

सीकस*–संज्ञा पुं० ऊसर।

सीकुर–संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत।

सीख–संज्ञा स्त्री० १. सिखाई जानेवाली बात। २. सलाह। परामर्श। ३. उपदेश।

सीख़–संज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की लंबी पतली छड़। तीली। शलाका।

सीखचा–संज्ञा पुं० [फा०] लोहे की पतली छड़। लोहे की सींक।

सीखना–क्रि० स० १. काम करने का ढंग आदि जानना। २. ज्ञान प्राप्त करना। किसी से कोई विषय समझना या कोई काम करने का ढंग जानना।

सीग़ा–संज्ञा पुं०[अ०] १. साँचा। २. ढाँचा। ३. व्यापार। पेशा। ४. विभाग। महकमा।

सीझना–क्रि० अ० १. आँच पर पकना। चुरना। २. आँच या गरमी से मुलायम पड़ना या गलना। ३. दुख सहना। कष्ट झेलना। ४. मिलने के योग्य होना। ५. सूखे हुए चमड़े का मसालें आदि में भीगकर मुलायम होना।

सीट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. बैठने का स्थान। आसन। २. पद। ३. विधान सभा या संसद की सदस्यता का स्थान।

सीटना–क्रि० स० [अनु०] बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग हाँकना। शेखी बघारना।

सीटी–संज्ञा स्त्री० १. ओठों को गोल सिकोड़कर नीचे की ओर जोर के साथ हवा निकालने से उत्पन्न महीन शब्द। २. एक तरह की छोटी चीज, जिसमें से ऐसी महीन पर तेज आवाज निकलती है, जिसका प्रयोग खेल आदि में या पुलिस-द्वारा किया जाता है। २. वह बाजा या खिलौना, जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले। ३. इसी प्रकार का शब्द, जो किसी बाजे या यंत्र आदि से होता है।

सीठना–संज्ञा पुं० विवाह आदि शुभ अवसरों पर गाए जाने वाले परिहासपूर्ण गीत।

सीठनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सीठना"।

सीठा–वि० नीरस। फीका।

सीठी–संज्ञा स्त्री० १. किसी फल-फूल, पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ बेकार अंश। २. सारहीन पदार्थ। ३. फीकी चीज।

सीड़–संज्ञा स्त्री० नमी। तरी। धूप न मिलने के कारण या भीगी होने से जमीन के अन्दर की ठंडक।

सीड़न–संज्ञा स्त्री० दे० "सीड़"।

सीढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिए ऐसा साधन या मार्ग, जिसमें एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों। जीना। सोपान। निसेनी। २. ऐसे मार्ग या साधन में पैर रखने का प्रत्येक स्थान या डंडा आदि। ३. क्रम से आगे बढ़ने की परम्परा।

सीतलपाटी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बढ़िया चटाई, जो बंगाल में बनती है।

सीता–संज्ञा स्त्री० १. मिथिला के राजा जनक की कन्या, जो श्रीरामचंद्र की पत्नी थीं। जानकी। २. जमीन जोतते समय हल की फाल के धँसने से जमीन में पड़ जानेवाली रेखा। कूँड़। ३. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं।

सीताध्यक्ष–संज्ञा पुं० राजा की निज की भूमि में खेती-बारी आदि का प्रबंध करनेवाला राजकर्मचारी।

सीतापति–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।

सीताफल–संज्ञा पुं० १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सीत्कार–संज्ञा पुं० पीड़ा या आनन्द के समय मुँह से निकलनेवाला 'सी-सी' शब्द। सिसकारी।

सीथ–संज्ञा पुं० पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना।

सीदना–क्रि० अ० दुःख पाना।

सीध–संज्ञा स्त्री० १. ठीक सामने की दिशा। २. वह लंबाई, जो बिना इधर-उधर मुड़े एक-तार चली गई हो। ३. लक्ष्य। निशाना।

सीधा–वि० [स्त्री० सीधी] १. जो टेढ़ा न हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। २. सरल स्वभाव का। भोला-भाला। निष्कपट। ३.

शान्त और सुशील। ४. आसान। सहज। ५. दहिना।

क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख।

संज्ञा पुं० भोजन बनाने की सामग्री, आटा-दाल, चावल आदि।

यौ०—सीधा-सादा=भोला-भाला।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना=दंड देकर ठीक करना।

सीधापन—संज्ञा पुं० १. सीधा होने का भाव। सिधाई। २. सरलता। निष्कपटता।

सीधे—क्रि० वि० १. सामने की ओर। सम्मुख। २. बिना कहीं मुड़े या रुके हुए। बिना टेढ़ा हुए। ३. नरमी से। शिष्टता के साथ।

सीन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. दृश्य। नजारा। २. रंगमंच का दृश्य।

सीनरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] प्राकृतिक दृश्य।

सीना—संज्ञा पुं० [फा०] छाती। वक्षःस्थल।

क्रि० स० १. कपड़े आदि को सूई-तागे से जोड़ना। २. टाँका मारना।

सीना-बंद—संज्ञा पुं० [फा०] अँगिया। चोली।

सीप—संज्ञा पुं० १. शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु। सीपी। सितुही। २.समुद्री सीप (जलजन्तु) का सफेद, कड़ा, चमकीला आवरण, जिसके बटन आदि बनते हैं। ताल के सीप का आवरण, जो काम में लाया जाता है।

सीपर*‡—संज्ञा पुं० [फा०] दे० "सिपर" ढाल।

सीपसुत—संज्ञा पुं० मोती।

सीपिज—संज्ञा पुं० मोती।

सीपी—संज्ञा स्त्री० दे० "सीप"। सीप नामक जल-जन्तु का आवरण या संपुट।

सीबी—संज्ञा स्त्री० सी-सी शब्द। सिसकारी। सीत्कार।

सीमंत—संज्ञा पुं० १. स्त्रियों के सिर की माँग। २. हड्डियों का संधि-स्थान। सीमा; हद। दे० "सीमंतोन्नयन" (गर्भवती स्त्री का एक संस्कार)।

सीमंतिनी—संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

सीमन्ती—संज्ञा स्त्री० दे० "सीमंतिनी"।

सीमंतोन्नयन—संज्ञा पुं० हिन्दुओं में गर्भवती स्त्री का एक संस्कार, जो प्रथम गर्भ के चौथे, छठें या आठवें महीने में होता है।

सीम—संज्ञा पुं० सीमा। हद।

मुहा०—सीम चरना या काँड़ना=दूसरे के क्षेत्र में अधिकार जताना। जबरदस्ती करना। दबाना।

सीमांत—संज्ञा पुं० सरहद। वह स्थान, जहाँ सीमा का अंत होता हो।

सीमांतिक—वि० सीमान्त या सरहद से सम्बन्ध रखनेवाला। सीमान्त-सम्बन्धी।

सीमा—संज्ञा स्त्री० १. किसी क्षेत्र, प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद। सरहद। २. वह अंतिम स्थान, जहाँ तक कोई काम या बात हो सकती हो या होना उचित हो। ३. मर्य्यादा। ४. माँग।

मुहा०—सीमा से बाहर जाना=उचित से अधिक बढ़ जाना। अपने अधिकार से बाहर जाना या काम करना।

सीमाबद्ध—संज्ञा पुं० सीमा के अन्दर घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ। परिमित।

सीमा-शुल्क—संज्ञा पुं० चुंगी। देश की सीमा पर विदेश से आनेवाली और देश से बाहर जानेवाली चीजों पर लगनेवाली चुंगी। (अंग्रे०—कस्टम्स ड्यूटी)

सीमोल्लंघन—संज्ञा पुं० १. सीमा पार करना। सीमा का उल्लंघन करना। २. एक देश-द्वारा किसी दूसरे देश के क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश। ३. मर्य्यादा या नियम के विरुद्ध कार्य करना।

सीय*—संज्ञा स्त्री० सीता। जानकी।

सीयन†—संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।

सीर—संज्ञा पुं० १. हल। २. हल जोतनेवाले बैल। ३. सूर्य्य।

संज्ञा स्त्री० १. वह जमीन, जिसे उसका मालिक या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा हो। २. वह जमीन, जिसकी उपज कई हिस्सेदारों में बँटती हो। ३. साझा। शिरकत।

*†वि० ठंडा। शीतल।

सीरक*—संज्ञा पुं० ठंडा करनेवाला।

सीरख*—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।

सीरध्वज—संज्ञा पुं० राजा जनक। इनकी ध्वजा पर सीर (हल) का चिह्न था। इसलिए इन्हें सीरध्वज कहते हैं।
सीरनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मिठाई।
सीरा—संज्ञा पुं० पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी।
*†—वि० [स्त्री० सीरी] १. ठंढा। २. शांत। मौन। चुपचाप।
सील—संज्ञा स्त्री० सीड़। नमी। तरी।
*‡संज्ञा पुं० दे० "शील"।
सीला—संज्ञा पुं० १. अनाज के वे दाने, जो फसल कट जाने पर वहीं पड़े रह जाते हैं। सिल्ला। २. खेत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति या जीविका।
वि० [स्त्री० सीली] गीला। आर्द्र।
सीव*—संज्ञा स्त्री० दे० "सीमा"।
सीवन—संज्ञा पुं० स्त्री० १. सीने का काम। सिलाई। सिलाई के टाँके। २. सीने में पड़ी हुई लकीर। ३. दरार।
सीवना—संज्ञा पुं० दे० "सिवाना"।
क्रि० स० दे० "सीना"।
सीस—संज्ञा पुं० सिर। माथा।
सीसक—संज्ञा पुं० सीसा (एक धातु)।
सीसताज—संज्ञा पुं० कुलाह। शिकारी जानवरों के सिर पर रखने की एक प्रकार की टोपी, जो शिकार के समय हटा ली जाती है।
सीसत्रान—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।
सीसफूल—संज्ञा पुं० सिर पर पहनने का एक गहना।
सीसा—संज्ञा पुं० नीलापन लिये काले रंग की एक मूल धातु।
*‡संज्ञा पुं० दे० "शीशा"।
सी-सी—संज्ञा स्त्री० बहुत ठंड, पीड़ा या खुशी के समय मुँह से निकला हुआ शब्द। सिसकारी।
सीसोदिया—संज्ञा पुं० दे० "सिसोदिया"।
सीह—संज्ञा स्त्री० महक। गंध।
*संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।
सीहगोस—संज्ञा पुं० एक प्रकार का जानवर जिसके कान काले होते हैं।
सुँ*†—प्रत्य० दे० "सों"।

सुंघनी—संज्ञा स्त्री० तंबाकू के पत्ते की खूब बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास।
सुंघाना—क्रि० स० सूँघने की क्रिया कराना।
सुंड-भुसुंड—संज्ञा पुं० हाथी, जिसका अस्त्र सूँड़ है।
सुंडा—संज्ञा स्त्री० सूँड़।
सुंडाल—संज्ञा पुं० हाथी।
सुंदर—वि० [स्त्री० सुंदरी] १. खूबसूरत। जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्। मनोहर। २. अच्छा। बढ़िया।
सुंदरता—संज्ञा स्त्री० सुंदर होने का भाव। खूबसूरती। सौंदर्य्य।
सुंदरताई*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुंदरता"।
सुंदराई*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुंदरता।"
सुंदरापा*—संज्ञा स्त्री० दे० सुंदरता।
सुंदरी—वि० अच्छी लगनेवाली। रूपवती। संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री। खूबसूरत औरत। २. किसी भी स्त्री के लिए सम्बोधन। ३. त्रिपुर-सुंदरी देवी। ४. एक योगिनी का नाम। ५. सवैया-नामक छंद का एक भेद, जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। ६. बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। द्रुतविलंबित। ७. तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
सुंधावट—संज्ञा स्त्री० सोंधापन।
सुंबा—संज्ञा पुं० १. इस्पंज। २. लोहे का एक औजार। ३. पुचारा। तोप या बंदूक को गरम नली को ठंढा करने के लिए गीला कपड़ा।
सु—उप० एक उपसर्ग, जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है। जैसे—सुनाम, सुशील आदि।
वि० १. सुंदर। अच्छा २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. शुभ। भला।
सर्व० सो। वह।
*अव्य० तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।
सुअटा†—संज्ञा पुं० सुग्गा। तोता।
सुअन*—संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।
सुअनजर्द—संज्ञा पुं० दे० "सोनजर्द"।

सुअना*–क्रि० अ० उत्पन्न होना। उगना। *संज्ञा पुं० सुग्गा। तोता।

सुअर–संज्ञा पुं० दे० "सूअर"।

सुआ–संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।

सुआउ*–वि० बड़ी उम्रवाला। दीर्घायु।

सुआन*–संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।

सुआना†–क्रि० स० उत्पन्न कराना। पैदा कराना।

सुआमी*–संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।

सुआर†–संज्ञा पुं० रसोइया।

सुआरव–वि० मीठे स्वर से बोलने या बजानेवाला।

सुआसिनी*†–संज्ञा स्त्री० पास रहनेवाली स्त्री। सहचरी। सुहागिन। सधवा।

सुकंठ–वि० १. सुन्दर गर्दनवाला। २. मधुर स्वरवाला। सुरीला।
संज्ञा पुं० सुग्रीव। (बालि का भाई।)

सुकनासा*–वि० जिसकी नाक शुक (सुग्गे) की नाक के समान सुन्दर हो। सुन्दर नाकवाला।

सुकर–वि० [संज्ञा स्त्री० भाव० सुकरता, सौकर्य] सहज। आसान।

सुकरित*–वि० दे० "सुकृति।"

सुकर्म–संज्ञा पुं० [वि० सुकर्म्मी] अच्छा काम। (इसका उल्टा-कुकर्म।)

सुकर्म्मी–वि० १. अच्छा काम करनेवाला। २. सदाचारी। ३. धार्म्मिक।

सुकल–संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।

सुकचाना–क्रि० अ० अचंभे में आना।

सुकवि–संज्ञा पुं० अच्छा कवि।

सुकाज–संज्ञा पुं० अच्छा काम।

सुकाना*–क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुकाल–संज्ञा पुं० १. अच्छा समय। २. वह समय, जिसमें अन्न आदि की उपज अच्छी हो। ३. सस्ती का समय। अकाल का उल्टा।

सुकावना*–क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुकिज*–संज्ञा पुं० शुभ कर्म।

सुकिया*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।

सुकीउ*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।

सुकुआर–वि० दे० "सुकुमार"।

सुकुति*†–संज्ञा स्त्री० दे० "शुक्ति"।

सुकुमार–वि० [स्त्री० सुकुमारी] कोमल। नाजुक। कोमल अंगोंवाला।
संज्ञा पुं० १. कोमल अंगोंवाला बालक। २. काव्य में कोमल भाव (काव्य का एक गुण)। ३. काव्य का कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त होना।

सुकुमारता–संज्ञा स्त्री० सुकुमार होने का भाव। कोमलता। नजाकत।

सुकुमारी–वि० कोमल अंगोंवाली। कोमलांगी।
संज्ञा स्त्री० १. कन्या। २. पुत्री। ३. कोमल अंगोंवाली स्त्री।

सुकुरना*†–क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

सुकुल–संज्ञा पुं० १. उत्तम कुल। २. उत्तम कुल में उत्पन्न। कुलीन। ३. दे० "शुक्ल"।

सुकुवाँर, सुकुवार–वि० दे० "सुकुमार"।

सुकृत–वि० १. उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। २. धार्मिक। भाग्यशाली।
संज्ञा पुं० १. अच्छा काम। सत्कर्म। २. पुण्य। ३. दान।

सुकृतात्मा–वि० पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।

सुकृति–संज्ञा स्त्री० १. अच्छी कृति। सत्कर्म। २. पुण्य।

सुकृती–वि० १. अच्छे काम करनेवाला व्यक्ति। २. धार्म्मिक। ३. पुण्यवान्। ४. भाग्यवान्। ५. बुद्धिमान्।

सुकृत्य–संज्ञा पुं० अच्छा कार्य। पुण्य। धर्म-कार्य।

सुकेशी–संज्ञा स्त्री० सुन्दर बालोंवाली स्त्री।
संज्ञा पुं० [स्त्री० सुकेशिनी] वह, जिसके बाल बहुत सुन्दर हों।

सुखंडी–वि० बहुत दुबला-पतला।
संज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें शरीर सूख जाता है और जो प्रायः बच्चों को होता है।

सुखंद–वि० दे० "सुखद"।

सुख–संज्ञा पुं० १. आनन्द। २. आराम। ३. शान्ति। ४. आरोग्य। ५. स्वस्थता। 'दुख' का उल्टा। ६. इन्द्रियों की तृप्ति। ७. मन के अनुकूल प्रिय अनुभव, जिसे प्राप्त करने की इच्छा बनी रहती है। ८. स्वर्ग।

क्रि० वि० सुख से। सुखपूर्वक।
मुहा०—सुख की नींद सोना=निश्चिन्त होकर रहना। बेफिक्र होना।
सुखकंद–वि० सुख देनेवाला। सुखद।
सुखकंदन–वि० दे० "सुखकंद"।
सुखकर–वि० १. सुख देनेवाला। सुखद। आनन्ददायक। २. सहज में होनेवाला। आसान।
सुखकरण†–वि० सुख देनेवाला। सुखद।
सुखकारक–वि० सुख देनेवाला। सुखद।
सुखकारी–वि० दे० "सुखकारक"।
सुखजननी–वि० सुख देनेवाली।
सुखजीवी–वि० मेहनत न करके आराम से जीवन व्यतीत करनेवाला। जो झंझटों से दूर रहकर और बिना मेहनत किए सुख से जीवन बिताना चाहता हो।
सुखज्ञ–वि० सुख का ज्ञान रखनेवाला।
सुखढरन–वि० दे० "सुखद"।
सुखतला–संज्ञा पुं० जूते का तल्ला।
सुखद–वि० [स्त्री० सुखदा] सुख या आनन्द देनेवाला। सुखदायी।
सुखदनियाँ*–वि० दे० "सुखदानी"।
सुखदा–वि० सुख देनेवाली। आनन्द देनेवाली। आराम पहुँचानेवाली।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद।
सुखदाइन*–वि० दे० "सुखदायिनी"।
सुखदाता–वि० सुख देनेवाला। सुखद।
सुखदान–वि० दे० "सुखदाता"।
सुखदानी–वि० सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली। सुखदा।
सुखदायक–वि० सुख देनेवाला। सुखद।
सुखदायी–वि० [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला।
सुखदास–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अगहनी बढ़िया धान।
सुखदैन–वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदैनी–वि० सुखदायिनी। सुख देनेवाली।
सुखधाम–संज्ञा पुं० १. सुख का घर या स्थान। २. स्वर्ग। बैकुंठ।
सुखना*–क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सुखपाल–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।
सुखपूर्वक–क्रि० वि० सुख से। आनंद से। आराम के साथ।
सुखप्रद–वि० सुख देनेवाला। सुखद।
सुखमन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुखमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषमा"।
सुखराशि–वि० सुख का भंडार। जो सर्वथा सुखमय हो।
सुखरास, सुखरासी*–वि० दे० "सुखराशि"।
सुखलाना–क्रि० स० दे० "सुखाना"।
सुखवंत–वि० १. सुखी। प्रसन्न। सुख देनेवाला। २. सुखदायक।
सुखवन† संज्ञा पुं० १. किसी चीज में सूखने के कारण होनेवाली कमी। २. वह बालू, जिससे लिखे हुए अक्षरों आदि पर की स्याही सुखाते हैं।
सुखवार–वि० [स्त्री० सुखवारी] सुखी। प्रसन्न। खुश।
सुखसाध्य–वि० आसानी से हो सकनेवाला। सुगम। सहज।
सुखसार–संज्ञा पुं० सुख का सार। मोक्ष।
सुखांत–संज्ञा पुं० १. वह जिसका अंत सुखमय हो। २. वह नाटक तथा काव्य आदि जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना हो। (जैसे संयोग)
सुखाना–क्रि० स० १. गीली या नम चीज को धूप आदि में रखना, जिससे उसकी नमी दूर हो। नमी या गीलापन दूर करना। २. कमजोर करना।
क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सुखारा, सुखारी*†–वि० १. सुखी। प्रसन्न। २. सुखद।
सुखाला–वि० [स्त्री० सुखाली] १. सुखदायक। आनंददायक। २. सहज। आसान।
सुखावह–वि० सुख देनेवाला।
सुखासन–संज्ञा पुं० १. सुख देनेवाला आसन या बैठने का स्थान। २. पालकी। डोली।
सुखित–वि० सूखा हुआ। सुखी। प्रसन्न।
सुखिता–संज्ञा स्त्री० सुख। आनंद।
सुखिया–वि० दे० "सुखी"।
सुखिर–संज्ञा पुं० साँप का बिल।
सुखी–वि० १. जो सुख भोग रहा हो। जिसे

सब प्रकार का सुख प्राप्त हो। २. आनन्दित। प्रसन्न। खुश।

सुखेन—संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।

सुखेलक—संज्ञा पुं० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, र आता है। प्रभद्रक। प्रभद्रिका।

सुखैना*†—वि० सुख देनेवाला।

सुख्याति—संज्ञा स्त्री० कीर्ति। यश। बड़ाई। प्रसिद्धि।

सुगंध—संज्ञा स्त्री० १. खुशबू। अच्छी महक। २. वह चीज, जिससे अच्छी महक निकलती हो। ३. चंदन।
वि० सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधबाला—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सुगंधित वनौषध।

सुगंधि—संज्ञा स्त्री० १. सुगं । अच्छी महक। खुशबू। २. परमात्मा।

सुगंधित—वि० जिसमें अच्छी महक हो। खुशबूदार। सुगंधयुक्त।

सुगत—संज्ञा पुं० १. बुद्धदेव। २. बौद्ध।

सुगति—संज्ञा स्त्री० १. मरने के बाद होनेवाली उत्तम गति। २. मोक्ष।

सुगना†—संज्ञा पुं० सुग्गा। तोता।

सुगम—वि० आसान। सरल । सहज। जिसमें जाना या जहाँ पहुँचना कठिन न हो।

सुगमता—संज्ञा स्त्री० सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी।

सुगम्य—वि० १. जिसमें आसानी से प्रवेश हो सके। आसानी से जाने योग्य। २. सहज। आसान।

सुगर*†—वि० १. दे० "सुघड़"। २. दे० "सुगल।" ३. शिंगरफ।

सुगल—वि० अच्छे गलेवाला। दे० "सुकंठ"।
संज्ञा पुं० सुग्रीव। बालि का भाई।

सुगाना*—क्रि० अ० १. संदेह करना। शक करना। २. दुखी होना। ३. बिगड़ना। नाराज होना।

सुगीतिका—संज्ञा स्त्री० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में २५ मात्राएँ और आदि में लघु और अंत में गुरु-लघु होते हैं।

सुगुरा—संज्ञा पुं० वह, जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो। जिसे अच्छा गुरु मिला हो।

सुगैया†—संज्ञा स्त्री० चोली। स्त्रियों का एक पहनावा।

सुग्गा†—संज्ञा पुं० तोता।

सुग्रीव—संज्ञा पुं० १. बालि का भाई, जो बानरों का राजा और श्रीरामचंद्र का मित्र था। २. इंद्र। ३. शंख।
वि० जिसकी गर्दन सुन्दर हो।

सुघट—वि० १. सुन्दर। २. सुडौल। ३. सहज में बन सकनेवाला। आसानी से हो सकनेवाला।

सुघटित—वि० अच्छी तरह से बना या गढ़ा हुआ।

सुघड़—वि० १. सुंदर। सुडौल। २. निपुण। कुशल (विशेषकर हाथ के काम करने में)।

सुघड़ई—संज्ञा स्त्री० १. सुन्दरता। सुडौलपन। २. कौशल। निपुणता। चतुरता।

सुघड़ता—संज्ञा स्त्री० सुघड़ होने का भाव। दे० "सुघड़पन"।

सुघड़पन—संज्ञा पुं० १. सुन्दरता। सुडौलपन। २. निपुणता। कौशल।

सुघड़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"।

सुघड़ापा—संज्ञा पुं० दे० "सुघड़पन"।

सुघर—वि० दे० "सुघड़"।

सुघरी—संज्ञा स्त्री० शुभ घड़ी या समय। अच्छा समय। अच्छी साइत।
वि० [सुघर का स्त्री०] सुन्दर। सुडौल।

सुच*—वि० दे० "शुचि"।

सुचना—क्रि० स० संचय करना। इकट्ठा करना। बहुत बचाकर या हिफाजत से रखना।
क्रि० अ० इकट्ठा होना। जमा होना।

सुचरित, सुचरित्र—संज्ञा पुं० [स्त्री० सुचरित्रा] अच्छे चाल-चलनवाला। सदाचारी।

सुचरित्रा—संज्ञा स्त्री० अच्छे चाल-चलनवाली स्त्री। पतिव्रता।

सुचा—वि० दे० "शुचि"।
संज्ञा स्त्री० ज्ञान। चेतना।

सुचाना—क्रि० स० १. किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। २. याद दिलाना।

३. सुझाना। ४. दिखलाना। ५. ध्यान आकृष्ट करना।

सुचार*–वि० दे० "सुचारु।"

संज्ञा स्त्री० दे० "सुचाल"।

सुचारु–वि० बहुत अधिक सुन्दर।

सुचाल–संज्ञा स्त्री० अच्छी चाल। अच्छा आचरण। सदाचार।

सुचाली–वि० अच्छे चाल-चलनवाला। सदाचारी।

सुचाव–संज्ञा पुं० १. सुचाने अर्थात् सुझाने की क्रिया या भाव। सुझाव। २. सूचना।

सुचित–वि० १. सुचित्त जिसका चित्त या मन स्थिर हो २. जो किसी कार्य से निवृत्त हो गया हो। निश्चिंत। बे-फिक्र। ३. एकाग्र। शान्त। ४. सावधान।

सुचितई–संज्ञा स्त्री० १. निश्चितता। बेफिक्री। २. एकाग्रता। ३. शान्ति। ४. छुट्टी। फुर्सत।

सुचिती†–वि० दे० "सुचित"।

सुचित्त–वि० १. सुचित का तत्सम रूप। जिसका चित्त स्थिर हो। शान्त। एकाग्र। २. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो।

सुचिमंत–वि० अच्छे चाल-चलनवाला। सदाचारी।

सुचिर–वि० १. बहुत दिनों तक चलनेवाला। २. स्थायी। ३. पुराना।

सुचेत–वि० चौकन्ना। सावधान। होशियार।

सुच्छंद*†–वि० दे० "स्वच्छंद"।

सुच्छ*†–वि० दे० "स्वच्छ"।

सुच्छम*–वि० दे० "सूक्ष्म"

सुजन–संज्ञा पुं० १. सज्जन। भला आदमी। शरीफ। २. स्वजन। परिवार के लोग।

सुजनता–संज्ञा स्त्री० सज्जनता। सौजन्य। भलमनसाहत।

सुजनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह की बड़ी चादर।

सुजन्मा–वि० १. अच्छे कुल में उत्पन्न। कुलीन। २. विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न।

सुजस–संज्ञा पुं० दे० "सुयश"।

सुजागर–वि० १. प्रकाशित। २. देखने में बहुत सुन्दर। सुशोभित।

सुजात–वि० [स्त्री० सुजाता] १. विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न। २. अच्छे कुल में उत्पन्न। ३. सुन्दर।

सुजाति–संज्ञा स्त्री० उत्तम जाति।

वि० १. उत्तम जाति का। २. अच्छे कुल का।

सुजान–वि० १. सज्ञान। बुद्धिमान्। चतुर। होशियार। २. निपुण। कुशल। अच्छी तरह जाननेवाला। ३. सज्जन।

संज्ञा पुं० १. पति। प्रेमी। २. ईश्वर।

सुजानी–वि० ज्ञानी। पंडित। निपुण।

सुजोग*†–संज्ञा पुं० दे० "सुयोग"। अच्छा अवसर। अच्छा संयोग।

सुजोधन*–संज्ञा पुं० दे० "सुयोधन"।

सुजोर–वि० १. मजबूत। बलवान्। २. दृढ़।

सुज्ञ–वि० १. अच्छी तरह जाननेवाला। सुविज्ञ। २. विद्वान्।

सुझाना–क्रि० स० १. दूसरे के ध्यान में लाना। २. दिखाना। ३. बतलाना। ४. कोई नई बात बतलाना या राय देना।

सुझाव–संज्ञा पुं० १. सुझाने की क्रिया या भाव। २. सुझाई गई बात। प्रस्ताव। ३. सलाह। सूचना।

सुटुकना–क्रि० अ० १. दे० "सुड़कना"। चुसकी लेना। २. दे० "सिकुड़ना"। समेटना। क्रि० स० चाबुक लगाना। पतली छड़ी से पीटना।

सुठ–वि० दे० "सुठि"।

सुठहर†–संज्ञा पुं० अच्छा स्थान। बढ़िया जगह।

सुठार*†–वि० सुडौल। सुन्दर।

सुठि*†–वि० १. सुष्ठु। सुन्दर। उत्तम। २. बहुत।

अव्य० पूरा-पूरा। बिलकुल।

सुठौना*†–वि० दे० "सुठि"।

सुड़कना, सुड़ुकना–क्रि० स० सुरकना। सुड़-सुड़ शब्द करते हुए पीना। नाक या मुँह से धीरे-धीरे सुड़सुड़ शब्द के साथ खींचना।

सुड़सुड़ाना–क्रि० स० सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना।

सुडौल—वि० सुन्दर डौल या आकार का। सुन्दर या अच्छी बनावट वाला।

सुढंग—संज्ञा पुं० १. अच्छा ढंग। अच्छी रीति। २. सुघड़।

सुढर—वि० १. जल्दी दया करनेवाला। दयालु। जल्दी ढलनेवाला।
वि० सुघड़। सुडौल। सुन्दर।

सुढार, सुढाद*†—वि० [स्त्री० सुढारी] सुडौल। सुन्दर।

सुतंत्र*—वि० दे० "स्वतंत्र"।

सुत—संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।
वि० १. जो पैदा हुआ हो। २. उत्पन्न।

सुतधार*—संज्ञा पुं० सूत्रधार।

सुतनु—वि० सुन्दर शरीरवाला।
संज्ञा स्त्री० सुन्दर शरीरवाली स्त्री।

सुतरां—अव्य० १. अतः। इसलिए। २. और भी। किंबहुना।

सुतरी†—संज्ञा स्त्री० तुरही। दे० "सुतली"।

सुतल—संज्ञा पुं० सात पाताल लोकों में से एक लोक।

सुतली—संज्ञा स्त्री० सूत या सन की बनी हुई डोरी। पतली रस्सी।

सुतवाना†—क्रि० स० दे० "सुलवाना"।

सुतहर, सुतहार†—संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।

सुता—संज्ञा स्त्री० पुत्री। बेटी।

सुतार—संज्ञा पुं० १. बढ़ई। २. शिल्पकार। कारीगर। ३. दे० "सुभीता"।
वि० अच्छा। उत्तम।

सुतारी—संज्ञा स्त्री० १. मोचियों का सूआ, जिससे वे जूता सीते हैं। २. सुतार या बढ़ई का काम।
संज्ञा पुं० शिल्पकार। कारीगर।

सुतिय*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुतनु"।

सुतिहार†—संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।

सुती—वि० जिसे सुत या बेटा हो। पुत्रवान्।

सुतीक्ष्ण—संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि के भाई जो, वनवास में श्रीरामचंद्र से मिले थे।

सुतीछन*—संज्ञा पुं० दे० "सुतीक्ष्ण"।

सुतुही†—संज्ञा स्त्री० दे० "सीपी"। वह सीपी, जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं।

सुत्रामा—संज्ञा पुं० इंद्र।

सुथना—संज्ञा पुं० दे० "सूथन"। पायजामा।

सुथनी—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का कंद। पिंडालू। रतालू। २. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन।

सुथरा—वि० [स्त्री० सुथरी] साफ। स्वच्छ।

सुथराई—संज्ञा स्त्री० दे० "सुथरापन"।

सुथरापन—संज्ञा पुं० सफाई। स्वच्छता।

सुथरेशाही—संज्ञा पुं० १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २. इस संप्रदाय के अनुयायी।

सुदंती—वि० सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।

सुदर्शन—संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २. शिव। ३. सुमेरु।
वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोहर।

सुदामा—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का सहपाठी और मित्र एक दरिद्र ब्राह्मण, जिसे बाद में श्रीकृष्ण ने धनी बना दिया था।

सुदावन—संज्ञा पुं० दे० "सुदामा"।

सुदास—संज्ञा पुं० १. दिवोदास का पुत्र। २. एक प्राचीन जनपद।

सुदि—संज्ञा स्त्री० दे० "सुदी"।

सुदिन—संज्ञा पुं० शुभ दिन।

सुदी—संज्ञा स्त्री० किसी महीने का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।

सुदीपति*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।

सुदीप्ति—संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।

सुदूर—वि० बहुत दूर।

सुदृढ़—वि० बहुत दृढ़। खूब मजबूत।

सुदेव—संज्ञा पुं० अच्छे देवता।

सुदेश—संज्ञा पुं० उपयुक्त स्थान। सुन्दर या उत्तम देश।
वि० सुंदर। खूबसूरत।

सुदेह—वि० सुन्दर शरीरवाला। खूबसूरत।

सुद्दी—संज्ञा स्त्री० पेट का जमा हुआ सूखा मल।

सुद्धाँ†—अव्य० सहित। समेत।

सुधंग—संज्ञा पुं० दे० "सुढंग"।

सुध—संज्ञा स्त्री० १. स्मृति। स्मरण। याद। २. चेतना। होश। ३. खबर। पता। दे० "सुधा"।

वि० दे० "शुद्ध"।

मुहा०—सुध दिलाना=याद दिलाना। सुध न रहना=भूल जाना। याद न रहना। सुध बिसरना=१. भूल जाना। २. होश में न रहना। सुध बिसराना या बिसारना=किसी को भूल जाना। सुध बिसारना=अचेत करना।

यौ०—सुध-बुध=होश-हवास।

सुधन्वा—संज्ञा पुं० १. धनुष चलाने में निपुण। अच्छा धनुर्धर। २. विष्णु। ३. विश्वकर्मा। ४. आंगिरस। ५. एक राजा।

सुधमना*†—वि० [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

सुधरना—क्रि० अ० १. बिगड़े हुए का बनना। ठीक या दुरुस्त होना। २. संशोधन होना।

सुधराई—संज्ञा स्त्री० १. सुधरने की क्रिया। सुधार। २. सुधारने की मजदूरी।

सुधर्म—संज्ञा पुं० १. उत्तम धर्म। पुण्य। २. कर्त्तव्य। ३. न्याय। ४. अच्छे कानून।

सुधर्मी—वि० धर्मात्मा। धर्म के अच्छे कार्य करनेवाला। धर्मनिष्ठ।

सुधवाना—क्रि० स० शोधन कराना। दोष दूर कराना। दुरुस्त कराना।

सुधाँ—अव्य० दे० "सुद्धाँ"।

सुधांग—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधांशु—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधा—संज्ञा स्त्री० १. अमृत। २. जल। ३. मधु। ४. मकरंद। ५. दूध। ६. रस। ७. अर्क। ८. गंगा। ९. पृथ्वी। धरती। १०. एक प्रकार का छंद।

सुधाई—संज्ञा स्त्री० सीधापन। सरलता।

सुधाकर—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधागेह—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधाघट—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधाधर—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

वि० जिसके अधरों में अमृत हो।

सुधाधाम—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधाधार—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधाधी—वि० सुधा के समान।

सुधाना*—क्रि० स० १. सुध कराना। याद दिलाना। २. शोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना।

सुधानिधि—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. समुद्र। ३. दंडक छंद का एक भेद, जिसमें १६ बार क्रम से गुरु-लघु आते हैं।

सुधापाणि—संज्ञा पुं० धन्वंतरि।

वि० जो हाथ में अमृत लिये हो। सफल चिकित्सक।

सुधार—संज्ञा पुं० सुधरने की क्रिया या भाव। ठीक या दुरुस्त होना। संशोधन। संस्कार।

सुधारक—संज्ञा पुं० १. सुधार करनेवाला। दोषों या गलतियों को दूर करनेवाला। संशोधक। २. धार्मिक, या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करनेवाला।

सुधारना—क्रि० स० दोष, बुराई या गलती दूर करना। संशोधन करना।

वि० सुधारनेवाला।

सुधारा—वि० सीधा। निष्कपट।

सुधारालय—संज्ञा पुं० वह कारागार (जेल) जहाँ अपराधी बालकों को सुधार करने के लिए रखा जाता है। (अंग्रे०—रिफार्मेटरी)

सुधासदन—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सुधास्रवा—संज्ञा पुं० अमृत बरसानेवाला।

सुधि—संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।

सुधियाना*—क्रि० स० १. ठीक करना। उलझी हुई चीज को सुलझा देना। २. सुधि दिलाना। क्रि० अ० सुध आना। याद पड़ना।

सुधी—वि० १. बुद्धिमान्। चतुर। २. धार्मिक। संज्ञा पुं० विद्वान्। पंडित।

सुनंदिनी—संज्ञा स्त्री० १. एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में स ज स ज ग रहते हैं। २. प्रबोधिता। ३. मंजुभाषिणी।

सुनकिरवा—संज्ञा पुं० एक तरह का कीड़ा, जिसके पर चमकीले हरे रंग के होते हैं। जुगनू।

सुन-गुन—संज्ञा स्त्री० १. कानाफूसी। २. इधर-उधर सुनने या आहट पाने से पता लगनेवाला भेद। ३. टोह। सुराग।

सुनत, सुनति*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सुन्नत"।

०. स० १. कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना। २. किसी

के कथन या प्रार्थना पर ध्यान देना। ३. दोनों पक्षों की बातों पर विचार करना। ४. विचार करने के लिए दोनों पक्षों को अपनी बातें सामने पेश करने देना। भली-बुरी बातें सुनना।

सुनय–संज्ञा पुं० सुनीति। उत्तम नीति।

सुनयना–संज्ञा स्त्री० सुन्दर आँखोंवाली। सुन्दरी स्त्री।

सुनरी*संज्ञा स्त्री० दे० "सुन्दरी"।

सुनवाई–संज्ञा स्त्री० १. सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमों या शिकायतों आदि का सुना जाना या उन पर विचार होना।

सुनवैया–वि० १. सुननेवाला। २. सुनानेवाला।

सुनसान–वि० १. जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकान्त। २. उजाड़। वीरान।

संज्ञा पुं० सन्नाटा।

सुनहरा–वि० दे० "सुनहला"।

सुनहला–वि० [स्त्री० सुनहली] सोने के रंग का।

सुनाई–संज्ञा स्त्री० दे० "सुनवाई"।

सुनाना–क्रि० स० १. दूसरे का सुनने में प्रवृत्त करना। श्रवण कराना। २. खरी-खोटी कहना।

सुनाम–संज्ञा पुं० यश। कीर्ति। बड़ाई।

सुनार–संज्ञा पुं० स्वर्णकार [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला। यह पेशा करनेवाली जाति।

सुनारी–संज्ञा स्त्री० १. सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री।

सुनावनी–संज्ञा स्त्री० १. बाहर से किसी संबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना। २. ऐसा समाचार आने पर किया जानेवाला स्नान आदि कार्य।

सुनाहक*–क्रि० वि० दे० "नाहक"।

स्त्री० १. अच्छी नीति। २. अच्छा आचार-व्यवहार। शिष्टाचार। ३. राष्ट्र की रक्षा और हित के लिए अच्छी नीति। ४. उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव माता।

नेवाला।

सुनोची†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न–वि० १. निर्जीव। निःस्तब्ध। २. निश्चेष्ट। ३. चेतनारहित होने की अवस्था। किसी अंग का हिलना-डुलना बन्द हो जाना।

संज्ञा पुं० शून्य। सिफर।

सुन्नत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों की एक रस्म, जिसमें लड़के की लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।

सुन्ना–संज्ञा पुं० शून्य की सूचक गोल बिन्दी। बिंदी। सिफर।

सुन्नी–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक सम्प्रदाय, जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चारयारी।

सुपक्व–वि० अच्छी तरह पका हुआ।

सुपच–संज्ञा पुं० चांडाल। डोम।

सुपत–वि० प्रतिष्ठा या इज्जतवाला।

सुपथ–संज्ञा पुं० १. अच्छा रास्ता। २ सदाचरण। ३. एक वर्णिक छंद, जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।

वि० समतल। हमवार।

सुपन, सुपना–संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।

सुपनाना*–क्रि० स० स्वप्न दिखाना।

सुपरस*–संज्ञा पुं० दे० "स्पर्श"।

सुपर्ण–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. गरुड़। ३. पक्षी। ४. किरण। ५. घोड़ा।

सुपर्णी–संज्ञा स्त्री० १. गरुड़ की माता। सुपर्णा। २. कमलिनी। ३. रात।

सुपात्र–संज्ञा पुं० योग्य। कोई काम करने या कुछ पाने के लिए योग्य या उपयुक्त व्यक्ति।

सुपारी–संज्ञा स्त्री० नारियल की जाति का एक पेड़, जिसके बहुत छोटे फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं।

सुपार्श्व–संज्ञा पुं० जैनियों के सातवें तीर्थंकर।

सुपास–संज्ञा पुं० [वि० सुपासी] १. सुख। आराम। २. सुयोग। सुभीता।

सुपासी–वि० सुख देनेवाला। आराम पहुँचानेवाला।

सुपुत्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० सुपुत्री] अच्छा और योग्य बेटा।

सुपुर्द–संज्ञा पुं० सौंपने का भाव या काम।
मुहा०—सुपुर्द करना=सौंपना।
सुपूत–संज्ञा पुं० दे० "सपूत"।
सुपूती–संज्ञा स्त्री० सुपूत होने का भाव।
सुपेती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सफेदी"।
सुपेदी*†–संज्ञा स्त्री० १. सफेदी। उज्ज्वलता। २. ओढ़ने की रजाई। ३. बिछाने की तोशक। ४. बिछौना।
सुपेली–संज्ञा स्त्री० छोटा सूप।
सुप्त–वि० १. सोया हुआ। जिसकी क्रिया या चेष्टा रुकी हुई हो। २. बंद। मुँदा हुआ।
सुप्ति–संज्ञा स्त्री० निद्रा। नींद।
सुप्रज्ञ–वि० बहुत बुद्धिमान्। बड़ा ज्ञानी।
सुप्रतिष्ठ–वि० अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जतवाला। बहुत प्रसिद्ध। मशहूर।
सुप्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [वि० सुप्रतिष्ठित] १ अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत। २. प्रसिद्धि। शोहरत।
सुप्रसिद्ध–वि० नामी। बहुत प्रसिद्ध।
सुप्रिया–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चौपाई, जिसमें अंतिम वर्ण के अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं।
सुफल–संज्ञा पुं० अच्छा फल या नतीजा। अच्छा परिणाम।
वि० [स्त्री० सुफला] १. सफल। कामयाब। २. सुंदर फलवाला। (अस्त्र आदि)।
सुबल–वि० अत्यन्त बलवान्। बहुत मजबूत।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. गंधार देश का एक राजा और शकुनि का पिता।
सुबह–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सबेरा।
सुबहान–संज्ञा पुं० [अ०] १. पवित्र। शुद्ध। २. (हिन्दी में) सुभान। वाह! वाह! धन्य!
सुबहान अल्ला–अव्य० [अ०] अरबी का एक पद, जिसका अर्थ है—ईश्वर धन्य है। इसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।
सुबास–संज्ञा स्त्री० सुगंध। अच्छी महक।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
सुबासना–संज्ञा स्त्री० सुगंध। खुशबू।
क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।
सुबाहु–वि० पुष्ट या मजबूत बाँहोंवाला। सुन्दर बाँहोंवाला।
संज्ञा पुं० १. सेना। फौज। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। चेदि का राजा।
सुबीता–संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।
सुबुक–वि० १. हल्का। २. सुन्दर। खूबसूरत।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
सुबुद्धि–संज्ञा स्त्री० अच्छी बुद्धि या अक्ल।
वि० बुद्धिमान्।
सुबू–संज्ञा पुं० दे० "सुबह"।
सुबूत–संज्ञा पुं० [अ०] प्रमाण। वह, जिससे कोई बात सिद्ध हो।
सुबोध–वि० १. आसानी से समझ में आनेवाला। सहज। सुगम। २. अच्छी बुद्धिवाला। समझदार।
सुब्रह्मण्य–संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रान्त।
सुभग–वि० [स्त्री० सुभगता] १. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। २. सुंदर। मनोहर। ३. प्रिय। प्रियतम। ४. सुखद।
सुभगा–वि० १. सौभाग्यवती। सुहागिन। २. सुंदरी। खूबसूरत स्त्री।
संज्ञा स्त्री० १. वह स्त्री, जो अपने पति को प्रिय हो। २. पाँच वर्ष की कुमारी।
सुभव्य–वि० दे० "सुभग"।
सुभट–संज्ञा पुं० बड़ा योद्धा। शूरवीर।
सुभटवंत–वि० दे० "सुभट"।
सुभद्र–वि० १. सज्जन। २. भाग्यवान्।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. सनत्कुमार। ३. श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ४. सौभाग्य। ५. कल्याण। मंगल।
सुभद्रा–संज्ञा स्त्री० १. श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी। २. दुर्गा।
सुभद्रिका–संज्ञा स्त्री० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में न न र ल ग होता है।
सुभर*–वि० दे० "शुभ्र"।
सुभाउ, सुभाव*†–संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"
क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावतः
सुभाग*†–संज्ञा पुं० दे० "सौभाग्य"।

सुभागी–वि० भाग्यवान्। खुश-किस्मत।
सुभान–अव्य० दे० "सुबहान"। वाह! वाह!! धन्य।
सुभाना*†–क्रि० अ० शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना।
सुभाय*†–संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।
सुभायक*–वि० दे० "स्वाभाविक"।
सुभाव*†–संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।
वि० अच्छा भाव। इसका उलटा कुभाव।
सुभाषित–वि० १. अच्छी तरह कहा हुआ। सुन्दर रूप या अच्छे ढंग से कहा हुआ। २. उपदेश। ३. सलाह।
सुभाषी–वि० [स्त्री० सुभाषिणी] प्रिय बोलनेवाला या अच्छी तरह बोलनेवाला।
सुभिक्ष–संज्ञा पुं० ऐसा समय, जिसमें अन्न खूब हो। सुकाल।
सुभी–वि० शुभदायक। मंगलप्रद।
सुभीता–संज्ञा पुं० १. आसानी। सुगमता। सहूलियत। २. सुअवसर। सुयोग।
सुमंगली–संज्ञा स्त्री० विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।
सुमंत–संज्ञा पुं० दे० "सुमंत्र"।
सुमंत्र–संज्ञा पुं० राजा दशरथ का मंत्री और सारथि।
सुमंथन–संज्ञा पुं० दे० "मंदर" (पर्वत)।
सुमंद्र–संज्ञा पुं० २७ मात्राओं का एक वृत्त, जिसके अंत में गुरु-लघु होते हैं। सरसी।
सुम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। टाप।
सुमत–संज्ञा स्त्री० दे० "सुमति"।
सुमति–संज्ञा स्त्री० १. अच्छी बुद्धि। सुबुद्धि। २. मेल-जोल। ३. भक्ति। ४. प्रार्थना। ५. सगर की पत्नी।
वि० अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।
सुमन–संज्ञा पुं० १. फूल। २. विद्वान्। ३. देवता।
वि० १. अच्छे मन या हृदयवाला। सहृदय। दयालु। २. सुंदर।
सुमनचाप–संज्ञा पुं० कामदेव। (फूलों का धनुष रखने के कारण कामदेव को सुमनचाप कहते हैं।)

सुमनस्–संज्ञा पुं० १. फूल। २. देवता। ३. विद्वान्।
वि० प्रसन्न-चित्त।
सुमनित–वि० बहुत अच्छी मणियों से जड़ा हुआ।
सुमरन*–संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।
सुमरना*†- क्रि० स० स्मरण करना। ध्यान करना। जपना।
सुमरनी–संज्ञा स्त्री० जप करने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।
सुमान्य–वि० विशेष रूप से या बहुत अच्छी तरह मान्य।
सुमानिका–संज्ञा स्त्री० सात अक्षरों का एक वर्णिक छंद।
सुमार्ग–संज्ञा पुं० सुपथ। सन्मार्ग।
सुमालिनी–संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं।
सुमाली–संज्ञा पुं० एक राक्षस, जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।
सुमित्रा–संज्ञा स्त्री० राजा दशरथ की एक पत्नी, जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं।
सुमित्रानंदन–संज्ञा पुं० सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न।
सुमिष्ट–वि० बहुत मीठा।
सुमुख–संज्ञा पुं० १. सुन्दर मुख। २. हँसमुख चेहरा। प्रसन्न-वदन। ३. शिव। ४. गणेश। ५. विद्वान्। ६. आचार्य।
वि० १. सुंदर मुखवाला। २. सुंदर। मनोहर। ३. प्रसन्न। ४. कृपालु। ५. जिसमें प्रवेश-द्वार अच्छा हो। ६. जिसके आगे का हिस्सा नुकीला हो—जैसे तीर।
सुमुखी–संज्ञा स्त्री० १. सुंदर मुखवाली स्त्री। २. सुन्दरी। (स्त्री के लिए एक सम्बोधन।) ३. दर्पण। आइना। ४. एक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।
सुमेध–वि० दे० "सुमेधा"।
सुमेधा–वि० १. अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्। २. विद्वान्।
सुमेर–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
सुमेरु–संज्ञा पुं० १. पुराणों में वर्णित एक

पहाड़, जो पर्वतों का राजा कहा गया है। २. शिव। ३. जप करने की माला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना। ४. मध्यस्थान। केन्द्र। ५. उत्तरी ध्रुव। ६. एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं।
वि० १. बहुत ऊँचा। २. सुंदर।

सुमेरुवृत्त—संज्ञा पुं० वह रेखा, जो उत्तरी ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुयश—संज्ञा पुं० कीर्त्ति। सुख्याति। बहुत बड़ाई।
वि० जिसे बहुत यश मिला हो। यशस्वी।

सुयोग—संज्ञा पुं० सुन्दर या अच्छा योग। सुअवसर। संयोग।

सुयोग्य—वि० बहुत योग्य या लायक।

सुयोधन—संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

सुरंग—संज्ञा स्त्री० १. जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २. किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता, जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३. एक प्रकार का आधुनिक यंत्र (टारपीडो), जिससे शत्रुओं के जहाज नष्ट किए जाते हैं। ४. सेंध।
संज्ञा पुं० १. शिंगरफ। २. नारंगी। ३. रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।
वि० १. सुंदर रंग का। २. सुंदर। सुडौल। ३. रसपूर्ण। ४. लाल रंग का। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ।

सुर—संज्ञा पुं० १. देवता। २. सूर्य। ३. विद्वान्। ४. मुनि। ऋषि। ५. स्वर। ध्वनि।
मुहा०—सुर में सुर मिलाना=हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना।

सुरकंत*—संज्ञा पुं० इंद्र। देवताओं का मालिक।

सुरक—संज्ञा पुं० नाक पर का वह तिलक, जो भाले की आकृति का होता है।

सुरकना—क्रि० स० नाक या मुँह से धीरे-धीरे ऊपर खींचना, जिससे सुड़-सुड़ की आवाज होती है। सुड़कना।

सुरकरी—संज्ञा पुं० देवताओं का हाथी। दिग्गज।

सुर-कुदाव*—संज्ञा पुं० धोखा देने के लिए स्वर बदलकर बोलना।

सुरकेतु—संज्ञा पुं० १. देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २. इंद्र।

सुरक्षण—संज्ञा पुं० अच्छी तरह से रक्षा करना। रखवाली।

सुरक्षा—संज्ञा पुं० बहुत अच्छी तरह से बचाव या हिफाजत। सैनिक रक्षा।

सुरक्षा-परिषद्—संज्ञा पुं० संयुक्त राष्ट्र-संघ की वह शाखा या अंग, जिसका उद्देश्य संसार भर में युद्ध या आक्रमण रोकना है। पाँच राष्ट्र (अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और चीन) इसके स्थायी सदस्य हैं और ६ सदस्य दो साल के लिए चुने जाते हैं। (अंग्रे०-सिक्योरिटी कौंसिल)।

सुरक्षित—वि० जिसकी रक्षा की भली भाति गई हो।

सुरख, सुरखा—वि० दे० "सुर्ख"।

सुरखाब—संज्ञा पुं० [फा०] चकवा पक्षी की एक जाति, जिसके पर बहुत खूबसूरत और कीमती होते हैं।
मुहा०—सुरखाब का पर लगना=कोई विशेषता या अनोखापन होना (व्यंग्य)।

सुरखी—संज्ञा स्त्री० १. ईंटों का महीन चूरा, जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० "सुर्खी।"

सुरखुरू—वि० दे० "सुर्खरू"।

सुरग*†—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

सुरगज—संज्ञा पुं० इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

सुरगिरि—संज्ञा पुं० सुमेरु।

सुरगुरु—संज्ञा पुं० बृहस्पति।

सुरगैया—संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।

सुरचाप—संज्ञा पुं० इंद्रधनुष।

सुरजन—संज्ञा पुं० देवतागण। देव-समूह।
वि० १. सज्जन। २. चतुर।

सुरझना—क्रि० अ० दे० "सुलझना"।

सुरझाना—क्रि० स० दे० "सुलझाना"।

सुरत—संज्ञा पुं० संभोग। मैथुन।
संज्ञा स्त्री० १. स्मृति। याद। २. सुध। ध्यान।

मुहा०—सुरत बिसारना=भूल जाना।

सुरतरंगिणी–संज्ञा स्त्री० गंगा।

सुरतरु–संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।

सुरति–संज्ञा स्त्री० १. संभोग। काम-क्रीड़ा। भोग-विलास। २. स्मृति। स्मरण। सुधि। ३ दे० "सूरत"। रूप।

सुरतिगोपना–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नायिका, जो रति-क्रीड़ा करके अपनी सखियों आदि से छिपाती हो।

सुरतिवंत–वि० अधिक सम्भोग के लिए लालायित। कामातुर। कामी।

सुरतिविचित्रा–संज्ञा स्त्री० वह मध्या नायिका जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।

सुरती–संज्ञा स्त्री० १. सूरत नगर की। २. तंबाकू के पत्तों का चूरा, जो चूना मिलाकर खाया जाता है। खैनी।

सुरतैन*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुरैतिन"। रखैल स्त्री।

सुरत्राण, सुरत्राता–संज्ञा पुं० १. देवताओं के रक्षक। विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. इंद्र।

सुरथ–संज्ञा पुं० १. एक पहाड़। २. इन्द्र। ३. पुराणों में वर्णित एक चंद्रवंशी राजा जिन्होंने पहले-पहल दुर्गा की आराधना की थी। ४. जयद्रथ के एक पुत्र का नाम।

सुरदार–वि० जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुरीला।

सुरदीर्घिका–संज्ञा स्त्री० आकाश-गंगा।

सुरदुंदुभि–संज्ञा स्त्री० देवताओं का नगाड़ा।

सुरद्रुम–संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।

सुरधनु–संज्ञा पुं० इन्द्र-धनुष।

सुरधाम–संज्ञा पुं० स्वर्ग।

सुरधामी*–वि० स्वर्ग में रहनेवाला। स्वर्गीय।

सुरधुनी–संज्ञा स्त्री० गंगा।

सुरधेनु–संज्ञा स्त्री० कामधेनु।

सुरनदी–संज्ञा स्त्री० १. गंगा। २. आकाश-गंगा।

सुरनाथ–संज्ञा पुं० इन्द्र। (देवताओं का स्वामी।)

सुरनारी–संज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी। देववधू।

सुरनाह–संज्ञा पुं० दे० "सुरनाथ"।

सुरनिलय–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।

सुरप*–संज्ञा पुं० दे० "सुरपति"। इंद्र।

सुरपति–संज्ञा पुं० इंद्र।

सुरपथ–संज्ञा पुं० आकाश।

सुरपादप–संज्ञा पुं० कल्प-वृक्ष।

सुरपाल, सुरपालक–संज्ञा पुं० इंद्र।

सुरपुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सुरपुरी] स्वर्ग। देवताओं का नगर। अमरावती।

सुरबहार–संज्ञा पुं० सितार की तरह का एक बाजा।

सुरबाला–संज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी या कन्या। देवांगना। अप्सरा।

सुरबेल–संज्ञा स्त्री० कल्पलता।

सुरभवन–संज्ञा पुं० १. देवता के रहने का स्थान। मंदिर। २. स्वर्ग।

सुरभान–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. इंद्र।

सुरभि–संज्ञा स्त्री० १. सुगंध। खुशबू। २. पृथ्वी। ३. गाय। ४. गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। (पुराणों के अनुसार दक्ष की कन्या और कश्यप की पत्नी।) ५. सुरा। शराब। ६. तुलसी।

संज्ञा पुं० १. वसंत-काल। २. चैत्र मास। ३. स्वर्ण। सोना।

वि० १. सुगंधित। २. सुंदर। ३. उत्तम।

सुरभित–वि० सुगंधित। खुशबूदार।

सुरभी–संज्ञा स्त्री० १. चंदन। २. गाय। ३. सुगंध। खुशबू।

सुरभीपुर–संज्ञा पुं० गोलोक। स्वर्ग। वैकुंठ।

सुरभूप–संज्ञा पुं० १. देवताओं के राजा। इंद्र। २. विष्णु।

सुरभोग–संज्ञा पुं० अमृत।

सुरभौन*–संज्ञा पुं० दे० "सुरभवन"। स्वर्ग।

सुरमंडल–संज्ञा पुं० १. देवताओं का मंडल। २. एक प्रकार का बाजा।

सुरमई–वि० [फा०] सुरमे के रंग का। हल्का नीला।

संज्ञा पुं० १. हलका नीला रंग। २. इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा। ३. इस रंग का घोड़ा।

सुरमचू–संज्ञा पुं० सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमा–संज्ञा पुं० [फा०] नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ, जिसकी महीन बुकनी आँखों में लगाई जाती है।
सुरमादानी–संज्ञा स्त्री० सुरमा रखने का शीशी की तरह का एक लम्बा बरतन।
सुरमे*–वि० दे० "सुरमई"। सुरमे के रंग का।
सुरम्य–वि० अत्यन्त मनोहर या रमणीक।
सुरराई*–संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।
सुरराज–संज्ञा पुं० इंद्र।
सुरराय*–संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।
सुररिपु–संज्ञा पुं० देवताओं का शत्रु। राक्षस।
सुरली–संज्ञा स्त्री० सुंदर क्रीड़ा।
सुरलोक–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
सुरवधू–संज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी। देवांगना। अप्सरा।
सुरवैद्य–संज्ञा पुं० देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।
सुरवृक्ष–संज्ञा पुं० कल्पतरु।
सुरश्रेष्ठ–संज्ञा पुं० १. देवताओं में श्रेष्ठ। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र।
सुरस–वि० १. सरस। रसीला। २. स्वादिष्ठ। मधुर। ३. सुंदर।
सुरसती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।
सुरसदन–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
सुरसर–संज्ञा पुं० मानसरोवर।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।
सुरसरसुता–संज्ञा स्त्री० सरयू नदी।
सुरसरि, सुरसरी–संज्ञा स्त्री० गंगा।
सुरसरिता–संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।
सुरसा–संज्ञा स्त्री० १. तुलसी। २. ब्राह्मी। ३. दुर्गा। ४. एक वृत्त का नाम। ५. एक प्रसिद्ध राक्षसी, जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था। ६. एक अप्सरा।
सुरसारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरी"।
सुरसालु*–वि० देवताओं को सतानेवाला।
सुरसुंदरी–संज्ञा स्त्री० १. अप्सरा। २. देवकन्या। ३. दुर्गा। ४. एक योगिनी।
सुरसुरभी–संज्ञा स्त्री० कामधेनु।
सुरसुराना–क्रि० अ० [संज्ञा स्त्री० सुरसराहट. सरसरी] १. सरसर की आवाज होना। २. कीड़ों आदि का रेंगना। कुलबुलाना। ३. हल्की खुजली होना।
सुरस्वामी–संज्ञा पुं० इंद्र।
सुरहरा–वि० जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त।
सुरही†–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की सोलह चित्ती कौड़ियाँ, जिनसे जूआ खेलते हैं। २. इन कौड़ियों से होनेवाला जुआ।
सुरांगना–संज्ञा स्त्री० १. देवता की पत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।
सुरा–संज्ञा स्त्री० शराब। मदिरा।
सुराई*–संज्ञा स्त्री० शूरता। बहादुरी।
सुराख–संज्ञा पुं० १. दे० "सूराख"। २. "सुराग"।
सुराग–संज्ञा पुं० [अ०] १. टोह। अपराध या षड्यंत्र आदि का गुप्त रूप से लगाया हुआ पता। २. अत्यंत अनुराग या प्रेम। ३. बहुत अच्छा राग।
सुरागाय–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दो नस्ली गाय, जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।
सुराज–संज्ञा पुं० १. दे० "सुराज्य"। २. दे० "स्वराज्य"।
सुराज्य–संज्ञा पुं० १. वह राज्य या शासन, जिसमें सुख और शांति हो। २. दे० "स्वराज्य"।
सुराधिप–संज्ञा पुं० देवताओं के स्वामी या राजा। इंद्र।
सुरानीक–संज्ञा पुं० देवताओं की सेना।
सुरापगा–संज्ञा स्त्री० गंगा।
सुरा-पान–संज्ञा पुं० शराब पीना।
सुरापात्र–संज्ञा पुं० शराब पीने या रखने का खास बरतन।
सुरापी–वि० शराब पीनेवाला। शराबी।
सुरारि–संज्ञा पुं० देवताओं का अरि या शत्रु। राक्षस। असुर।
सुरालय–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. मंदिर। ३. सुमेरु। ४. शराबखाना।
सुरावती–संज्ञा स्त्री० कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति।
सुरासुर–संज्ञा पुं० देवता और राक्षस।
सुरासुरगुरु–संज्ञा पुं० १. शिव। २. कश्यप।

सुराही—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पानी रखने का एक तरह का प्रसिद्ध बरतन। २. बाजू, जोशन आदि गहनों में घुंडी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकड़ा।

सुराहीदार—वि० सुराही की तरह का गोल और लम्बी गर्दन के आकार का।

सुरी—संज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी। देवांगना।

सुरीला—वि० [स्त्री० सुरीली] जिसकी आवाज पतली और मधुर हो। मीठे सुरवाला। सुमधुर।

सुरुचि—संज्ञा स्त्री० १. उत्तम रुचि। अच्छी पसन्द। २. राजा उत्तानपाद की एक पत्नी, जो उत्तम की माता और ध्रुव की विमाता थीं।

वि० उत्तम रुचिवाला। अच्छी पसंदवाला।

सुरुबा†—संज्ञा पुं० दे० "शोरबा।"

सुरूप—वि० [संज्ञा सुरूपता] रूपवाला। सुंदर। खूबसूरत। सुडौल। *संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।

सुरूपा—वि० सुंदरी।

सुरेंद्र—संज्ञा पुं० इंद्र।

सुरेंद्रचाप—संज्ञा पुं० इंद्रधनुष।

सुरेंद्रवज्रा—संज्ञा स्त्री० एक वर्णिक छन्द, जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इंद्रवज्रा।

सुरेभ—संज्ञा पुं० सूंस। शिशुमार।

सुरेश—संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कृष्ण। ५. लोकपाल।

सुरेश्वर—संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. ब्रह्मा। ३. शिव। रुद्र।

सुरेश्वरी—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. स्वर्ग-गंगा।

सुरैत—संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली। सुरैतिन।

सुरैतिन—संज्ञा स्त्री० दे० "सुरैत"।

सुरोचि—वि० सुन्दर।

सुर्ख—संज्ञा पुं० [फा०] गहरा लाल रंग। वि० लाल रंग का। लाल।

सुर्खरू—वि० १. लाली लिये हुए। २. कान्तिमान। तेजस्वी। ३. प्रतिष्ठित। ४. सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह पर लाली रह गई हो।

सुर्खी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लाली। अरुणता। २. लेख आदि का शीर्षक। ३. इमारत बनाने के काम में आनेवाला एक तरह का लाल मसाला, जो प्रायः ईंटें आदि पीस कर बनाया जाता है। ४. दे० "सुरखी"।

सुलंक—वि० अच्छी कमरवाला।

सुलक्षण—वि० १. शुभ या मंगल लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। ३. अच्छे गुणोंवाला।

संज्ञा पुं० १. शुभ या मंगल लक्षण। अच्छे चिह्न। २. अच्छे गुण। ३. १४ मात्राओं का एक छंद जिसमें ७ मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु, और तब विराम होता है।

सुलक्षणा—वि० १. शुभ लक्षणोंवाली। २. भाग्यवती। ३. मंगलदायिनी। अच्छे गुणोंवाली।

सुलक्षणी- वि० दे० "सुलक्षणा"।

सुलग—अव्य० पास। नजदीक।

सुलगना—क्रि० अ० १. जलना। दहकना। २. बहुत संताप या दुख होना।

सुलगाना—क्रि० स० १. जलाना। दहकाना। २. दुःखी करना।

सुलच्छन—वि० दे० "सुलक्षण"।

सुलच्छनी—वि० दे० "सुलक्षणा"।

सुलझन—संज्ञा स्त्री० सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।

सुलझना—क्रि० अ० १. उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। २. कठिनाई दूर होना। आसान होना। ३. कोई समस्या हल होना।

सुलझाना—क्रि० स० १. उलझन या गुत्थी खोलना। २. कठिनाई दूर करना। समस्या हल करना।

सुलझाव—संज्ञा पुं० दे० "सुलझन"।

सुलटा—वि० [स्त्री० सुलटी] सीधा। 'उल्टा' का विपरीत।

सुलतान—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाह।

सुलताना चंपा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।

सुलतानी–संज्ञा स्त्री० १. बादशाही। बादशाहत। राज्य। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
वि० लाल रंग का।

सुलप*–वि० दे० "स्वल्प"।
संज्ञा पुं० अच्छा आलाप।

सुलफ–वि० १. लचीला। २. कोमल। नाजुक।

सुलफ़ा–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह तम्बाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भर कर पिया जाता है। २. चरस।

सुलफ़ेबाज–वि० गाँजा या चरस पीनेवाला।

सुलभ–वि० [संज्ञा सुलभता] १. सहज में मिलनेवाला। सहज। आसान। २. साधारण। मामूली।

सुलह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल। मिलाप। २. संधि। समझौता। किसी तरह का वैर-विरोध या लड़ाई खत्म होने पर होनेवाला मेल।

सुलहनामा–संज्ञा पुं० १. वह कागज, जिस पर सुलह या मेल की शर्तें लिखी हों। २, वह कागज, जिस पर मुकदमा आदि लड़नेवाले व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं। ३. वह कागज, जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्ते लिखी रहती हैं। संधिपत्र।

सुलाना–क्रि० स० १. सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। २. लिटाना। ३. डाल देना।

सुलिपि–संज्ञा स्त्री० उत्तम लिपि। अच्छी लिखावट।

सुलेमान–संज्ञा पुं० [फा०] १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह, जो पैगम्बर माना जाता है। २. एक पहाड़, जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है।

सुलेमानी–वि० [फा०] सुलेमान का। सुलेमान-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. सफेद आँखोंवाला घोड़ा। २. एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।

सुलोचन–वि० [स्त्री० सुलोचना] सुंदर आँखोंवाला। सुनयन।

सुलोचना–संज्ञा स्त्री० १. सुंदर आँखोंवाली स्त्री। २. एक अप्सरा। ३. मेघनाद की पत्नी।

सुलोचनी–वि० सुंदर आँखोंवाली।

सुव–संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।

सुवक्ता–वि० अच्छा बोलनेवाला। अच्छा भाषण करनेवाला। वाक्पटु या वाग्मी।

सुवन–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. अग्नि। ३. चंद्रमा। ४. दे० "सुअन"। ५. दे० "सुमन"।

सुवनारा–संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।

सुवर्ण–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. धन। संपत्ति। ३. एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा, जो दस माशे की होती थी। ४. सोलह माशे का एक मान। ५ धतूरा। ६. एक प्रकार का छन्द।
वि० १. सुंदर वर्ण या रंग का। २. उज्ज्वल। ३. अच्छे वर्ण या जाति का। कुलीन। ४. सोने के रंग का। पीला।

सुवर्णकरणी–संज्ञा स्त्री० शरीर के वर्ण या रंग को सुंदर करनेवाली एक प्रकार की जड़ी।

सुवस*–वि० जो अपने वश या अधिकार में हो।

सुवाना*†–क्रि० स० दे० "सुलाना"।

सुवार–संज्ञा पुं० अच्छा दिन।
*†सूपकार। रसोइया।

सुवास–संज्ञा पुं० १. सुगंध। खुशबू। २. रहने का अच्छा स्थान। सुन्दर या अच्छा घर। ३. एक प्रकार का छन्द।

सुवासिका–वि० सुवास या सुगंध करनेवाली। खुशबू देनेवाली।

सुवासित–वि० सुगन्धित। खुशबूदार।

सुवासिनी–संज्ञा स्त्री० १. पिता के यहाँ रहनेवाली विवाहित या अविवाहित स्त्री। २. सधवा स्त्री के लिए सम्मान प्रदर्शित करने का शब्द। ३. सधवा स्त्री।
वि० आराम देनेवाले या प्रतिष्ठा बढ़ानेवाले घर में रहनेवाली।

सुविचार–संज्ञा पुं० १. अच्छे विचार या ख्याल। २. अच्छी तरह से सोचना-समझना। ३. किसी आपत्ति या मुकदमे पर अच्छी तरह से विचार या सुनवाई। उचित न्याय। अच्छा निर्णय या फैसला।

सुविज्ञ—वि० बहुत अच्छा जानकार या ज्ञाता। बहुत बुद्धिमान् या चतुर।
सुविधा—संज्ञा स्त्री० आसानी। सुभीता। सहूलियत।
सुवृत्ता—संज्ञा स्त्री० एक अप्सरा। १९ अक्षरों का एक छंद।
सुवेल—संज्ञा पुं० त्रिकूट पर्वत, जो रामायण के अनुसार लंका में था।
सुवेश—वि० १. अच्छा वेश या रूप धारण किए हुए। २. सुन्दर पोशाक पहने हुए या सजे हुए। सुंदर।
सुवेषित—वि० दे० "सुवेश"।
सुव्रत—वि० दृढ़ता से व्रत पालन करनेवाला।
सुशिक्षित—वि० १. अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ। २. जिसे यथेष्ट शिक्षा मिली हो।
सुशील—वि० [स्त्री० सुशीला] [संज्ञा स्त्री० सुशीलता] १. अच्छे स्वभाव या आचरण-वाला। अच्छा व्यवहार या बर्त्ताव करने-वाला। २. विनीत। नम्र। सच्चरित्र।
सुशृंग—संज्ञा पुं० शृंगी ऋषि।
सुशोभन—वि० १. अत्यंत शोभायुक्त। दिव्य। २. बहुत सुंदर।
सुशोभित—वि० अत्यन्त शोभायमान।
सुश्राव्य—वि० सुनने में अच्छा लगनेवाला।
सुश्री—संज्ञा स्त्री० एक आदरसूचक शब्द, जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है, जैसे—सुश्री निर्मला देवी।
वि० बहुत सुंदर। शोभायुक्त।
सुश्रुत—संज्ञा पुं० आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य, जिनका रचा हुआ "सुश्रुत-संहिता" ग्रंथ बहुत मान्य है।
सुषमा—संज्ञा स्त्री० १. बहुत अधिक सुन्दरता। अत्यन्त शोभा। २. दस अक्षरों का एक वृत्त।
सुषिर—संज्ञा पुं० १. बाँस। २. बेंत। ३. अग्नि। ४. वह यंत्र, जो वायु के जोर से बजता हो। ५. संगीत।
वि० १. छेदवाला। २. खोखला। पोला।
सुषुप्त—वि० गहरी नींद में सोया हुआ। संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुषुप्ति—संज्ञा स्त्री० १. गहरी नींद। २. अज्ञान (वेदांत)। ३. पातंजल दर्शन के अनुसार योग-साधन की वह अवस्था या चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति, जिसमें जीव को ब्रह्म की प्राप्ति करने पर भी उसका बोध नहीं होता।
सुषुम्ना—संज्ञा स्त्री० १. हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक, जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है। २. वैद्यक में चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक, जो नाभि के मध्य में है।
सुषेण—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ३. एक वानर, जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था। ४. राक्षसों का वैद्य, जो लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए लंका से रामचन्द्र की छावनी में लाया गया था।
सुषोपति*—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुष्ट—वि० अच्छा। सज्जन। भला।
सुष्ठु—क्रि० वि० अच्छी तरह।
वि० सुंदर। उत्तम।
सुष्ठुता—संज्ञा स्त्री० १. सुष्ठु होने का भाव। सुंदरता। २. सौभाग्य।
सुसंग—संज्ञा पुं० दे० "सुसंगति"।
सुसंगति—संज्ञा स्त्री० अच्छा संग। साथ। सत्संग। अच्छी सोहबत।
सुसकना—क्रि० अ० दे० "सिसकना"।
सुसज्जित—वि० भली भाँति सजाया या सजा हुआ।
सुसताना—क्रि० अ० १. थकावट दूर करना। विश्राम करना। मेहनत करने के बाद कुछ आराम करना।
सुसमय—संज्ञा पुं० अच्छा समय या वक्त। अच्छे दिन। सुकाल। वे दिन, जिनमें अकाल न हो।
सुसर, सुसरा—संज्ञा पुं० दे० "ससुर"।
सुसराल—संज्ञा स्त्री० दे० "ससुराल"।
सुसरित्—संज्ञा स्त्री० गंगा।
सुसा*†—संज्ञा स्त्री० बहन।
संज्ञा पुं० एक पक्षी।
सुसाध्य—वि० [संज्ञा सुसाधन] जो आसानी से किया जा सके। सहज।
सुसाना—क्रि० अ० सिसकना।

सुसीतलाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुशीतलता"।
सुसुकना–क्रि० अ० दे० "सिसकना"।
सुसेन–संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।
सुस्त-वि० [संज्ञा सुस्ती] १. जिसमें फुर्ती न हो। धीमी चालवाला। २. मंद। ३. ढीला। ४. जिसका उत्साह कम हो गया हो। उदास। ५. दुर्बल। कमजोर।
सुस्ती–संज्ञा स्त्री० १. सुस्त होने का भाव। २. शिथिलता। आलस्य।
सुस्तैन–संज्ञा पुं० दे० "स्वस्त्ययन"।
सुस्थ–वि० [संज्ञा सुस्थता, सुस्थत्व] १. स्वस्थ। भला-चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। २. प्रसन्न। खुश।
सुस्थिर–वि० अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ। अटल। अत्यंत स्थिर या दृढ़।
सुस्वर–वि० [स्त्री० सुस्वरा] अच्छे या सुमधुर स्वर वाला। सुरीला। सुकंठ।
सुस्वादु–वि० बहुत अच्छे स्वादवाला। अत्यन्त स्वादिष्ठ। बहुत जायकेदार।
सुहंग*–वि० [अनु०] सस्ता।
सुहंगम*–वि० सुगम। आसान।
सुहटा*–वि० [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर।
सुहनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "सोहनी"।
सुहराना†–क्रि० स० दे० "सहलाना"।
सुहल*–संज्ञा पुं० दे० "सुहेल"।
सुहव–संज्ञा पुं० दे० "सूहा" (राग)।
सुहवा*–संज्ञा स्त्री० दे० "सूहा"। (राग)
सुहाग–संज्ञा पुं० १. सौभाग्य, सधवा बने रहने की अवस्था। स्त्री की वह अवस्था, जिसमें उसका पति जीवित हो। अहिवात। २. वह वस्त्र, जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। विवाह के अवसर पर स्त्रियों-द्वारा गाया जानेवाला गीत।
सुहागा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का क्षार, जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।
सुहागिन, सुहागिनी–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती।
सुहागिल–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सुहाता–वि० सहने योग्य।
सुहाना–क्रि० अ० शोभा देना। सुन्दर लगना। अच्छा लगना। भला मालूम होना।
वि० दे० "सुहावना"।
सुहाया*–वि० दे० "सुहावना"।
सुहारी†–संज्ञा स्त्री० पूरी नामक पकवान।
सुहाल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव*–वि० दे० "सुहावना"।
संज्ञा पुं० सुंदर हाव। अच्छे हाव-भाव।
सुहावता, सुहावन*–वि० दे० "सुहावना"।
सुहावना–वि० [स्त्री० सुहावनी] बहुत अच्छा लगनेवाला। सुंदर।
क्रि० अ० दे० "सुहाना"।
सुहास–वि० [स्त्री० सुहासा] सुंदर या मधुर मुसकानवाला।
सुहासी–वि० [स्त्री० सुहासिनी] मधुर मुसकानवाला।
सुहृत, सुहृद्–संज्ञा पुं० [भाव० सुहृत्ता] १. अच्छे हृदयवाला। २. मित्र। दोस्त।
सुहेल–संज्ञा पुं० [अ०] एक चमकीला तारा, जिसका उदय शुभ माना जाता है।
सुहेलरा*†–वि० दे० "सुहेला"।
सुहेला–वि० १. सुहावना। सुंदर। २. सुखदायक।
संज्ञा पुं० १. मंगल-गीत। २. स्तुति।
सूं*†–अव्य० करण और अपादान कारकों का चिह्न। सों। से। (ब्रजभाषा)
सूंघना–क्रि० स० १. नाक से गंध या महक का अनुभव करना। बास लेना। २. बहुत कम भोजन करना। (व्यंग्य) ३. (साँप का) काटना।
मुहा०—सिर सूँघना=बड़ों का मंगल-कामना के लिए छोटों का मस्तक सूँघना।
सूंघा–संज्ञा पुं० १. केवल सूंघकर यह बतलानेवाला कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। २. जासूस। भेदिया।
सूंड़–संज्ञा स्त्री० हाथी की लंबी नाक, जो लगभग जमीन तक लटकती है। शुंड।
सूंड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सफेद कीड़ा, जो पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूंस—संज्ञा स्त्री० शिशुमार। पानी का एक प्रसिद्ध जन्तु।
सूंह*†—अव्य० सम्मुख। सामने।
सूअर—संज्ञा पुं० [स्त्री० सूअरी] १. शूकर। २. एक प्रसिद्ध जानवर, जो दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। ३. एक प्रकार की गाली (डांट-फटकार के समय)।
सूआ†—संज्ञा पुं० १. बड़ी सूई। सूजा। २. सुग्गा। तोता।
सूई—संज्ञा स्त्री० १. कपड़े सीनें का एक बहुत छोटा पतला उपकरण जिसके छेद में धागा डालकर सीते हैं। २. वह तार या काँटा, जिससे अंक, दिशा, समय या परिमाण आदि कोई बात सूचित हो। जैसे—घड़ी की सूई। ३. छोटा पतला अंकुर।
सूक†—संज्ञा पुं० १. दे० "शुक"। २. दे० "शुक्र" (नक्षत्र)।
सूकना†—क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सूकर—संज्ञा पुं० सूअर।
सूकरक्षेत्र—संज्ञा पुं० उत्तर-प्रदेश के एटा जिले में सोरों-नामक स्थान।
सूकर-खेत—संज्ञा पुं० दे० "सूकरक्षेत्र"।
सूकरी—संज्ञा स्त्री० सूअर की मादा।
सूका†—संज्ञा पुं० चवन्नी। चार आने के मूल्य का सिक्का।
सूक्त—संज्ञा पुं० वेद-मंत्रों या ऋचाओं का समूह। उत्तम कथन।
वि० भली भाँति कहा हुआ।
सूक्ति—संज्ञा स्त्री० उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि।
सूक्ष्म—वि० [स्त्री० सूक्ष्मा, संज्ञा सूक्ष्मता] १. बहुत ही छोटा। २. बारीक। महीन। ३. पतला। ४. दुर्बल।
संज्ञा पुं० परमाणु। परब्रह्म। लिंग-शरीर। एक काव्यालंकार, जिसमें मनोवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से प्रकट करने का वर्णन होता है।
सूक्ष्मदर्शक-यंत्र—संज्ञा पुं० एक यंत्र, जिससे देखने पर छोटी से छोटी चीजें भी बड़ी दिखाई देती हैं। खुर्दबीन।
सूक्ष्मदर्शिता—संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।
सूक्ष्मदर्शी—वि० बारीक बात को सोचने-समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।
सूक्ष्मदृष्टि—संज्ञा स्त्री० बहुत ही सूक्ष्म बातें आसानी से समझ या देख लेनेवाली दृष्टि। संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।
सूक्ष्म शरीर—संज्ञा पुं० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, और मन तथा बुद्धि, इन सत्रह तत्त्वों का समूह या इनके योग से बना हुआ कल्पित शरीर, जो मृत्यु के बाद भी बना रहनेवाला माना जाता है। लिंग-शरीर।
सूख*‡—वि० दे० "सूखा"।
सूखना—क्रि० अ० १. जल का न रहना या कम हो जाना। २. नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। ३. उदास होना। तेज नष्ट होना। ४. नष्ट या बरबाद होना। ५. डरना। सन्न होना। ६. दुबला होना।
सूखा—वि० [स्त्री० सूखी] १. जिसमें पानी न हो। जिसकी नमी दूर हो गई हो। २. उदास। तेजरहित। ३. हृदयहीन। कठोर। ४. कोरा। ५. केवल। निरा।
संज्ञा पुं० १. पानी न बरसना। अनावृष्टि। २. नदी का किनारा, जहाँ पानी न हो। ३. ऐसा स्थान, जहाँ जल न हो। ४. सूखा हुआ तंबाकू का पत्ता। ५. एक प्रकार की खाँसी। हब्बा-डब्बा। ६. दे० "सुखंडी"।
मुहा०—सूखा जवाब देना=साफ इनकार करना।
सूघर*—वि० दे० "सुघड़"।
सूचक—वि० [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। बतानेवाला। बोधक। प्रकट करनेवाला।
संज्ञा पुं० १ सूची। सूई। २. सीनेवाला। दर्जी। ३. नाटककार। ४. सूत्रधार। ५. चुगलखोर।
सूचना—संज्ञा स्त्री० १. खबर। संवाद। वह बात, जो किसी को बताने या सावधान करने के लिए कही जाय। विज्ञप्ति। (अंग्रे०—नोटिस)। २. किसी के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने से पहले उसे दी गई सूचना। ३. अदालत-द्वारा कोई कार्रवाई करने से पहले किसी

को दी गई लिखित खबर। ४. अदालत में उपस्थित होने के लिए अदालत-द्वारा किसी को दिया गया आदेश। ५. किसी अपराध या दुर्घटना आदि के सम्बन्ध में अदालती या किसी तरह की कार्रवाई करने के पहले उपयुक्त अधिकारी या पुलिस-द्वारा उसका हाल कहना (अंग्रे०–रिपोर्ट)। ६. वह पत्र आदि, जिस पर किसी को सूचित करने के लिए कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ७. बेधना। छेदना।

*क्रि० अ० बतलाना।

सूचनापत्र–संज्ञा पुं० वह कागज, जिस पर कोई सूचना लिखी या छपी हो। विज्ञप्ति। विज्ञापन। इश्तहार।

सूचा–संज्ञा स्त्री० दे० "सूचना"।

†संज्ञा स्त्री० जो होश में हो। सावधान।

सूचिका–संज्ञा स्त्री० १. सूई। २. हाथी की सूँड़।

सूचिकाभरण–संज्ञा पुं० एक प्रकार की औषध, जो सन्निपात आदि घातक रोगों की अंतिम दवा मानी गई है।

सूचित–वि० जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ।

सूची–संज्ञा स्त्री० १. तालिका। नामावली। फिहरिस्त। २. दे० "सूचीपत्र"। ३. कपड़ा सीने की सूई। ४. दृष्टि। नजर। ५. पिंगल के अनुसार एक रीति, जिसके द्वारा मात्रिक छंदों के भेदों में आदि-अंत लघु या आदि-अंत गुरु की संख्या जानी जाती है। ६. सेना का एक प्रकार का व्यूह।

संज्ञा पुं० १. चुगुलखोर। २. दुष्ट।

सूचीकर्म–संज्ञा पुं० सिलाई या सूई का काम।

सूचीपत्र–संज्ञा पुं० वह पुस्तिका आदि, जिसमें बहुत-सी चीजों की नामावली, विवरण, मूल्य आदि दिये हों। तालिका। सूची।

सूच्य–वि० सूचना देने योग्य। बताने लायक।

संज्ञा पुं० सूचना देने योग्य बात।

सूच्यार्थ–संज्ञा पुं० शब्दों की व्यंजना-शक्ति से प्रकट होनेवाला अर्थ।

सूजन–संज्ञा स्त्री० १. सूजने की क्रिया या भाव। २. फुलाव। शोथ।

सूजना–क्रि० अ० रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना।

सूजनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

सूजा–संज्ञा पुं० बड़ी मोटी सूई। सूआ।

सूजाक–संज्ञा पुं० [फा०] मूत्रेंद्रिय में घाव होने का एक रोग। औपसर्गिक प्रमेह।

सूजी–संज्ञा स्त्री० गेहूँ का एक तरह का दरदरा आटा, जिससे पकवान बनाते हैं।

सूझ–संज्ञा स्त्री० १. सूझने का भाव। २. दृष्टि। नजर। ३. अनूठी कल्पना। ४. उद्भावना। उपज।

यौ०—सूझ-बूझ=समझ। अक्ल।

सूझना–क्रि० अ० १. ध्यान में आना। याद आना। २. दिखाई देना। ३. छुट्टी पाना।

सूट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] विलायती ढंग का पूरा मर्दानी पहनावा, विशेषकर कोट और पतलून आदि।

सूटकेस–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कपड़े आदि रखने का छोटा बक्स (विशेषकर चमड़े का)।

सूटा†–संज्ञा पुं० मुँह से तंबाकू या गाँजे का धुआँ जोर से खींचना।

सूत–संज्ञा पुं० १. रूई, रेशम आदि का महीन बटा हुआ तागा, जिससे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। २. तागा। धागा। ३. नापने का एक मान। ४. संगतराशों और बढ़इयों की पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की डोरी।

संज्ञा [स्त्री० सूती] १. प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति। २. रथ हाँकनेवाला। सारथि। ३. भाट। चारण। ४. पुराणों की कथा कहनेवाला। पौराणिक। ५. बढ़ई। ६. भला। अच्छा। ७. सूत्रकार। सूत्रधार। ८. सूर्य्य। ९. थोड़े शब्दों में ऐसा पद या वचन, जिसका बहुत अर्थ हो। दे० सूत्र।

वि० प्रसूत। उत्पन्न।

मुहा०—सूत धरना=निशान लगाना।

सूतक–संज्ञा पुं० १. जन्म। २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को लगता है।

सूतक-गेह–संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

सूतकी–वि० वह व्यक्ति. जिसे परिवार में

किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण सूतक (अशौच) लगा हो।

सूतधार–संज्ञा पुं० दे० "सूत्रधार।"

सूतना†–क्रि० अ० दे० "सोना।" शयन करना।

सूतपुत्र–संज्ञा पुं० १. सारथि। सूर्य-पुत्र। २. कर्ण।

सूता–संज्ञा पुं० तंतु। सूत।
संज्ञा स्त्री० प्रसूता।

सूति–संज्ञा स्त्री० १. जन्म। २. प्रसव। ३. उद्गम। उत्पत्ति का स्थान।

सूतिका–संज्ञा स्त्री० जच्चा। वह स्त्री, जिसे अभी हाल में बच्चा हुआ हो।

सूतिकागार,सूतिकागृह–संज्ञा पुं० वह कमरा या घर, जिसमें स्त्री के बच्चा उत्पन्न हुआ हो।

सूती–वि० सूत का बना हुआ।
*संज्ञा स्त्री० सीपी।

सूतीघर–संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

सूत्र–संज्ञा पुं० १. तागा। सूत। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. नियम। व्यवस्था। ४. थोड़े शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन, जो बहुत अर्थ प्रकट करे। ५. पता। सुराग। ६. रेखा। लकीर। ७. करधनी।

सूत्रकार–संज्ञा पुं० १. सूत्रों (गूढ़ अर्थवाले थोड़े से शब्दों में कहे हुए पदों) की रचना करनेवाला। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा।

सूत्रकर्म–संज्ञा पुं० बढ़ई या राजगीर का काम।

सूत्रग्रंथ–संज्ञा पुं० वह ग्रंथ, जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रधर, सूत्रधार–संज्ञा पुं० १. नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। २. बढ़ई। लकड़ी पर नक्काशी करनेवाला। ३. पुराणानुसार एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

सूत्रपात–संज्ञा पुं० प्रारंभ होना। नींव पड़ना।

सूत्रपिटक–संज्ञा पुं० बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।

सूत्रात्मा–संज्ञा पुं० जीवात्मा।

सूथन–संज्ञा स्त्री० पायजामा। सुथना।

सूथनी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का कंद। २. पायजामा। सुथना।

सूद–संज्ञा पुं० [फा०] १. उधार दिये धन के बदले में मिलनेवाला मूल से भिन्न धन। २. ब्याज। वृद्धि। ३. लाभ। फायदा।
मुहा०–सूद दर सूद=ब्याज का भी ब्याज। चक्रवृद्धि।

सूदखोर–वि० [संज्ञा सूदखोरी] बहुत सूद लेनेवाला।

सूदन–वि० नाश करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. जान से मार डालना। हत्या। वध। २. अंगीकरण। ३. फेंकने की क्रिया।

सूदना–क्रि० स० नाश करना।

सूदी–वि० ब्याज पर दिया गया धन या रकम।

सूध*‡–वि० १. दे० "सीधा"। २. दे० "शुद्ध"।

सूधना*–क्रि० अ० सिद्ध होना। सत्य होना।

सूधरा†–वि० दे० "सूधा"।

सूधे†–क्रि० वि० सीधे से।

सून–संज्ञा पुं० १. प्रसव। जनन। २. पुत्र। बेटा। ३. कली। ४. फूल। ५. फल।
*†संज्ञा पुं० वि० दे० "शून्य"।

सूना–वि० [स्त्री० सूनी] जहाँ कोई न हो। निर्जन। सुनसान।
संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।
संज्ञा स्त्री० १. पुत्री। बेटी। २. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की आदि चीज, जिनसे जीव-हिंसा की संभावना रहती है। ३. हत्या। ४. कसाईखाना।

सूनापन–संज्ञा पुं० १. सूना होने का भाव। २. सन्नाटा।

सूनु–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. पुत्र। संतान। ३. छोटा भाई। ४. नाती। दौहित्र।

सूप–संज्ञा पुं० १. रसोइया। २. पकी हुई दाल या उसका रसा। ३. रसेदार तरकारी। ४. बाण। ५. अनाज फटकने का एक उपकरण, जो सिरकी या बाँस का बनता है। छाज।

सूपक–संज्ञा पुं० रसोइया।

सूपकार–संज्ञा पुं० रसोइया।

सूपनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूपशास्त्र–संज्ञा पुं० भोजन बनाने का शास्त्र। पाकशास्त्र।

सूफ–संज्ञा पुं० [अ०] १ पश्म। ऊन। २. स्याही भरी हुई दावात में डाला जानेवाला चिथड़ा।

सूफी–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय, जो अपने विचारों की उदारता के लिए प्रसिद्ध है। इसके सिद्धान्त हिन्दुओं के अद्वैतवाद से मिलते-जुलते हैं। २. इस सम्प्रदाय के अनुयायी मुसलमान फकीर, जो छिपे तौर पर मुसलमान धर्म का प्रचार करते थे।

सूबा–संज्ञा पुं० [फा०] १. किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २. दे० "सूबेदार"।

सूबेदार–संज्ञा पुं० १. किसी सूबे या प्रांत का शासक। २. सेना में एक छोटा पद।

सूबेदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सूबेदार का पद या काम।

सूभर*–वि० १. सुंदर। बढ़िया। २. सफेद।

सूम–वि० [अ०] कंजूस। कृपण।

सूर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सूरी] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. विद्वान्। आचार्य्य। ४. दे० "सूरदास"। अंधा। *५. शूरवीर। बहादुर। *†६. सूअर। ७. भूरे रंग का घोड़ा। ८. पठानों की एक उपजाति। ९. दे० "शूल"। छप्पय छंद के ५५वें भेद का नाम, जिसमें १६ गुरु और १२० लघु होते हैं।

सूरकांत–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यकांत"।

सूरज–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।

मुहा०—सूरज को दीपक दिखाना=जो स्वयं बहुत प्रसिद्ध है, उसका परिचय देना। जो बहुत विद्वान् या गुणी हो, उसे कुछ बतलाना।

सूरजमुखी–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पौधा, जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता है और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है। २. एक प्रकार की आतिशबाजी। ३. एक प्रकार का छत्र या पंखा।

सूरत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. रूप। आकृति। शक्ल। २. शोभा। सुन्दरता। ३. उपाय। युक्ति या तरकीब। ढंग। ४. दशा। हालत। ५. दे० "सुरत"। *६. स्मृति। सुध।

मुहा०—सूरत बिगड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ना। रूप-रंग आदि खराब होना। सूरत बनाना=१. रूप बनाना। भेस बदलना। २. मुँह बनाना। नाक-भौं सिकोड़ना। सूरत दिखाना=सामने आना।

वि० अनुकूल। मेहरबान।

सूरति–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सूरत"। २. स्मृति। सुध।

सूरदास–संज्ञा पुं० १. हिन्दी के एक प्रसिद्ध कृष्णभक्त महाकवि और महात्मा, जो अंधे थे। २. सूर। अन्धा। ३. गा-बजाकर भीख माँगनेवाला अन्धा।

सूरन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद। जमींकंद।

सूरमा–संज्ञा पुं० योद्धा। वीर। बहादुर।

सूरमुखी मनि‡–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यकांत मणि"।

सूरवाँ‡–संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।

सूर-सावंत–संज्ञा पुं० १. शूर सामन्त। २. युद्धमंत्री। ३. नायक। सरदार।

सूरसुत–संज्ञा पुं० दे० "सूर्यपुत्र।"

सूरसुता–संज्ञा स्त्री० यमुना।

सूरसेन*–संज्ञा पुं० दे० "शूरसेन"।

सूरसेनपुर*–संज्ञा पुं० दे० "मथुरा"।

सूराख–संज्ञा पुं० [फा०] छेद।

सूरि–संज्ञा पुं० १. यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २. विद्वान्। आचार्य। ३. कृष्ण का एक नाम। ४. सूर्य्य।

सूरी*‡–संज्ञा पुं० विद्वान्। १. पंडित। २. ‡*शूल। भाला।

संज्ञा स्त्री० १. विदुषी। पंडिता। २. सूर्य की पत्नी। ३. कुंती। ४.*† दे० "सूली"।

सूरुज*‡–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।

सूर्पनखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूर्य्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० सूर्य्या, सूर्य्याणी] १. आकाश में ग्रहों के बीच सबसे बड़ा ज्वलंत पिंड, सब ग्रह जिसकी परिक्रमा करते हैं और जिससे सब ग्रहों को गरमी और

रोशनी मिलती है। भानु। आफ-ताब। २. बारह की संख्या।
सूर्य्यकांत–संज्ञा पुं० १. एक मणि। २. एक प्रकार का बिल्लौर। ३. सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।
सूर्य्यग्रहण–संज्ञा पुं० सूर्य्य का ग्रहण या चंद्रमा की छाया में आना।(पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने और उसकी छाया पड़ने से सूर्य-ग्रहण होता है।)
सूर्य्यतनय–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यपुत्र"।
सूर्य्यतनया–संज्ञा स्त्री० यमुना।
सूर्य्यतापिनी-संज्ञा स्त्री० एक उपनिषद्।
सूर्यपुत्र–संज्ञा पुं० १. शनि। २. यम। ३. वरुण। ४. सुग्रीव। ५. कर्ण। ६. अश्विनीकुमार।
सूर्य्यपुत्री–संज्ञा स्त्री० १. यमुना। २. विद्युत्। बिजली। (क्व०)
सूर्य्यप्रभ–वि० सूर्य्य के समान प्रकाशमान।
सूर्य्यमणि–संज्ञा पुं० "सूर्य्यकांत मणि"।
सूर्य्यमुखी–संज्ञा पुं० दे० सूरजमुखी।
सूर्य्यलोक–संज्ञा पुं० सूर्य्य का लोक। कहते हैं कि युद्ध में मरनेवाले इसी लोक में जाते हैं।
सूर्य्यवंश–संज्ञा पुं० क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान कुलों में से एक, जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।
सूर्य्यवंशी-वि० जो सूर्य्यवंश में उत्पन्न हुआ हो। सूर्य्यवंश का।
सूर्य्यसंक्रांति-संज्ञा स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।
सूर्य्यसुत–संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यपुत्र"।
सूर्य्या–संज्ञा स्त्री० सूर्य्य की पत्नी संज्ञा।
सूर्य्यावर्त्त–संज्ञा पुं० १. हुलहुल का पौधा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आधासीसी
सूर्य्यास्त–संज्ञा पुं० १. सूर्य का छिपना या डूबना। २. सायंकाल। शाम।
सूर्य्योदय–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य का उदय या निकलना। २. प्रातःकाल। सबेरा।
सूर्य्योपासक–संज्ञा पुं० सूर्यपूजक। सौर। सूर्य्य की उपासना करनेवाला।
सूर्य्योपासना–संज्ञा स्त्री० सूर्य्य की आराधना या पूजा।
सूलना–क्रि० स० १. भाले या किसी नुकीली चीज से छेदना। २. पीड़ा देना। कष्ट या दुःख पहुँचाना।
क्रि० अ० १. भाले या किसी नुकीली चीज से छिदना। २. पीड़ित होना। दुखी होना।
सूली–संज्ञा स्त्री० १. फाँसी। २. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा, जिसमें दंडित मनुष्य लोहे के एक नुकीले डंडे पर बैठा या लेटा दिया जाता था और उसे मुगरे से पीटा जाता था। ३. प्राणदण्ड देने का नुकीला डंडा या इसी प्रकार का कोई और उपकरण।
*संज्ञा पुं० महादेव। शिव।
सूवना*†–क्रि० अ० बहना।
सूस–संज्ञा पुं० सूंस, एक बड़ा जलजन्तु।
सूसि*‡–संज्ञा पुं० दे० "सूंस"।
सूहा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का लाल रंग। २. एक संकर राग।
वि० लाल रंग का। लाल।
सूही–वि० स्त्री० दे० "सूहा"।
सृंजय–संज्ञा पुं० १. मनु के एक पुत्र का नाम। २. एक वंश, जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।
सृक्–संज्ञा पुं० १. शूल। भाला। २. हवा। ३. बाण। *४. माला। हार।
सृग*–संज्ञा पुं० दे० "सृक्।"
सृग्विनी*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "स्रग्विणी"।
सृजक*–संज्ञा पुं० सृष्टि करनेवाला। रचने या बनानेवाला। सर्जक।
सृजन*–संज्ञा पुं० सृष्टि करने की क्रिया। रचना या बनाना। निर्माण। सृष्टि।
सृजनहार*–संज्ञा पुं० सृष्टि या संसार की रचना करनेवाला। सृष्टिकर्त्ता। ब्रह्मा।
सृजना*–क्रि० स० सृष्टि करना। रचना या निर्माण करना। बनाना।
सृत–वि० चला हुआ। खिसका हुआ।
सृति–संज्ञा स्त्री० १. चलना। २. सरकना। खिसकना। ३. पथ। रास्ता।
सृष्ट–वि० १. रचा हुआ। बनाया हुआ। जिसकी सृष्टि हो गई हो। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३. मुक्त।
सृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. रचना। निर्माण।

बनावट। २. उत्पत्ति। जन्म। ३. संसार की उत्पत्ति। दुनिया की पैदाइश। ४. संसार। दुनिया। निसर्ग। प्रकृति।

सृष्टिकर्त्ता—संज्ञा पुं० १. संसार की रचना करनेवाला। दुनिया बनानेवाला। ब्रह्मा। २. ईश्वर।

सृष्टिविज्ञान—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, रचना और विकास आदि पर विचार हो।

सेंक—संज्ञा स्त्री० सेंकने की क्रिया या भाव। ताप या गर्मी।

सेंकना—क्रि० स० १. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना। २. आँच के पास या आग पर रखकर गरम करना या भूनना।
मुहा०—आँख सेंकना=सुंदर रूप देखना। धूप सेंकना=धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुँचाना।

सेंगर—संज्ञा पुं० १. क्षत्रियों की एक शाख। २. एक पौधा, जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। ३. एक प्रकार का अगहनी धान।

सेंट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सुगंध। खुशबू। इत्र। पश्चिमी ढंग से बनाया हुआ सुगंधित द्रव्य।

सेंटर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] केन्द्र। मध्यबिन्दु।

सेंट्रल—वि० [अंग्रे०] १. केन्द्रीय। मध्य का। २. मुख्य। जैसे सेंट्रल गवर्नमेंट=केन्द्रीय सरकार (भारत-सरकार)।

सेंत—संज्ञा स्त्री० १. मुफ्त। बिना दाम का। २. पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना। *†३. बहुत। ढेर का ढेर। व्यर्थ। फजूल।
मुहा०—सेंत का=जिसमें कुछ दाम न लगा हो। मुफ्त का।

सेंतना*—क्रि० स० दे० "सैंतना"।

सेंत-मेत—क्रि० वि० १. बिना दाम दिये। मुफ्त में। २. व्यर्थ। झूठ-मूठ में।

सेंति, सेंती—*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेंत"। प्रत्य० पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति।

सेंथी†—संज्ञा स्त्री० बरछी। भाला।

सेंदुर*†—संज्ञा पुं० दे० "सिन्दूर"।
मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। सेंदुर देना=विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना।

सेंदुरिया—संज्ञा पुं० एक सदाबहार पौधा, जिसमें लाल फूल लगते हैं।
वि० सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सेंदुरी—संज्ञा स्त्री० लाल गाय।

सेंद्रिय—वि० जिसमें इंद्रियाँ हों। इन्द्रियोंवाला। जीव।

सेंध—संज्ञा स्त्री० चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ बड़ा छेद। नकब। सुरंग।

सेंधना—क्रि० स० सेंध या नकब लगाना।

सेंधा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का खनिज नमक। सैंधव। लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि० दीवार में सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "सिंधिया"।

सेंवई—संज्ञा स्त्री० मैदे के सुखाए हुए, सूत की तरह पतले लच्छे, जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

सेंवर*‡—संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।

सेंसर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. समाचार-पत्र, पुस्तकें आदि प्रकाशित होने या सिनेमा आदि दिखाए जाने के पहले सरकार-द्वारा उनकी जाँच या जाँच करने का अधिकार। २. इस तरह की जाँच करनेवाला अधिकारी।

सेंहुड़—संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़, जिसकी गाँठों पर से डंडे की तरह डंठल निकलते हैं। इसका दूध जहरीला होता है और दवा के काम में आता है। "थूहर"।

से—प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति।
वि० ['सा' का बहुवचन] समान। सदृश।
*सर्व० 'सो' (वह) का बहुवचन। वे।

सेउ*†—संज्ञा पुं० दे० "सेव"।

सेकंड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. द्वितीय। दूसरा। २. एक मिनट का साठवाँ भाग। ३. किसी बात का समर्थन।

सेकेंडरी—वि० [अंग्रे०] १. माध्यमिक। २. दूसरे क्रम का। ३. अप्रधान।

सेकेंडरी एज्युकेशन—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] माध्यमिक शिक्षा।

सेकेंड हैंड–वि० [अंग्रे०] १. दूसरे की इस्तेमाल की हुई। पुरानी। २. घड़ी की छोटी सुई।
सेक्रेटरी–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मंत्री। सचिव।
सेक–संज्ञा पुं० १. सिंचाई। २. पानी छिड़कना। छिड़काव।
सेगा–संज्ञा पुं० [अ०] १. विषय। २. विभाग। महकमा।
सेचक–वि० सींचनेवाला।
सेचन–संज्ञा पुं० [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १. पानी से सींचना। सिंचाई। २. छिड़काव। ३. दे० अभिषेक।
सेज–संज्ञा स्त्री० शय्या। पलंग।
सेजपाल–संज्ञा पुं० राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। शयनागार-रक्षक।
सेजरिया*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "सेज"
सेज्या*–संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।
सेझना–क्रि० अ० दूर होना।
सेटना*†–क्रि० अ० १. समझना। मानना। २. अपने को बड़ा समझना। महत्त्व स्वीकार करना।
सेठ–संज्ञा पुं० [स्त्री० सेठानी] १. बड़ा साहूकार। महाजन। धनी। २. बड़ा या थोक व्यापारी। ३. खत्रियों की एक अल्ल।
सेत*–संज्ञा पुं० १. दे० "सेतु"। २. दे० "श्वेत"।
सेतद्युति*–संज्ञा पुं० दे० "श्वेतद्युति"।
सेतबाह*–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. अर्जुन।
सेतिका–संज्ञा स्त्री० अयोध्या।
सेतु–संज्ञा पुं० १. नदी आदि पार करने का पुल। २. पानी रोकने का बाँध। धुस्स। ३. मेंड़। डाँड़। ४. सीमा। हद-बंधन। ५. नियम या व्यवस्था। ६. मर्यादा। ७. व्याख्या। अर्थ स्पष्ट करनेवाली टीका। ८. प्रणव। ओंकार (ओम्)।
सेतुक–संज्ञा पुं० पुल। बाँध
सेतुबंध–संज्ञा पुं० १. पुल की बँधाई या बाँध बनाने का काम। २. वह पुल, जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर बँधवाया था।
सेद*–संज्ञा पुं० दे० "स्वेद"।
सेदज*–वि० दे० "स्वेदज"।

सेन–संज्ञा पुं० १. शरीर। २. जीवन। ३. श्येन। बाज पक्षी।
*संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
सेनजित्–वि० सेना को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सेनप, सेनपति*–संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।
सेन-वंश–संज्ञा पुं० बंगाल-प्रदेश का एक हिंदू राजवंश, जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक शासन किया था।
सेना–संज्ञा स्त्री० १. फौज। २. युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सिपाहियों का बड़ा समूह। ३. भाला। बरछी। ४. इंद्र का वज्र। ५. इंद्राणी।
क्रि० स० १. सेवा करना। खिदमत करना। २. पूजना। आराधना करना। ३. नियमपूर्वक व्यवहार करना। ४. पड़ा रहना। निरंतर वास करना। ५. लिये बैठे रहना। दूर न करना। (व्यंग में—बेकार लिये बैठे रहना।) ६. पालना-पोसना। अंडा पोसना। ७. मादा चिड़ियों का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना।
सेनाग्र–संज्ञा पुं० सेना का अग्र भाग या फौज का अगला हिस्सा।
सेनाजीवी–संज्ञा पुं० १. सेना में काम करके निर्वाह करनेवाला। २. सैनिक या सिपाही।
सेनादार–संज्ञा पुं० दे० "सेनानायक"।
सेनाध्यक्ष–संज्ञा पुं० सेनापति।
सेनानायक–संज्ञा पुं० सेनापति। सेना का एक अधिकारी। फौजदार।
सेनानी–संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. कार्त्तिकेय। ३. एक रुद्र का नाम।
सेना-न्यायालय–संज्ञा पुं० फौजी अदालत। दे० "सैनिक न्यायालय"।
सेनापति–संज्ञा पुं० १. सेना का प्रधान अधिकारी। फौज का सबसे बड़ा अफसर। सिपहसालार। २. हिन्दी के रीतिकाल के एक प्रसिद्ध कवि। ३. कार्त्तिकेय। ४. शिव।
सेनापतित्व, सेनापत्य–संज्ञा पुं० सेनापति का कार्य, पद या अधिकार।
सेनापाल–संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।
सेनामुख–संज्ञा पुं० १. सेना का अगला भाग।

२. फौज में सबसे आगे रहनेवाली टुकड़ी। प्राचीन समय में सेना का एक खंड, जिसमें ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे।

सेनावास–संज्ञा पुं० फौज के रहने की जगह। छावनी।

सेना-वाहक–संज्ञा पुं० सैनिकों को एक जगह से दूसरी जगह पर पहुँचनेवाला हवाई जहाज या समुद्री जहाज।

सेनाव्यूह–संज्ञा पुं० युद्ध में विभिन्न स्थानों पर सेना के भिन्न-भिन्न अंगों की नियुक्ति।

सेनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।

सेनिका–संज्ञा स्त्री० दे० "श्येनिका"।

सेनी–संज्ञा स्त्री०* १. मादा बाज-पक्षी। २. पंक्ति। कतार। ३. सीढ़ी। जीना। ४. [फा० सीनी] तश्तरी।

सेफ्टी पिन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बन्द नोक-वाली आलपीन।

सेब–संज्ञा पुं० नाशपाती की तरह का एक फल और मझोले आकार का उसका पेड़।

सेम–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनाते हैं।

सेमई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "सेंवई"।

सेमल–संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा पेड़, जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं और जिसके फलों में रुई होती है।

सेमा–संज्ञा पुं० एक तरह की बड़ी सेम।

सेमिटिक–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मनुष्यों का वह वर्ग या विभाग जिसमें यहूदी, अरब, शामी (सीरियन) और मिस्री आदि जातियाँ हैं।

सेमीकोलन–[अंग्रे०] अर्द्ध विराम चिह्न (;)

सेर–संज्ञा पुं० सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल।

सेरा–संज्ञा पुं० १. चारपाई की वे पाटियाँ, जो सिरहाने की ओर रहती हैं। २. दे० "सेराब" (सींची हुई जमीन)।

सेराना*†–क्रि० अ० १. ठंढा होना। २. तृप्त होना। मन भर जाना। ३. मर जाना। ४. समाप्त होना। चुकना। ५. तय होना। क्रि० स० १. ठंढा करना। २. मूर्त्ति आदि

सेराब–वि० [फा०] १. सिंचा हुआ। तराबोर। २. पानी से भरा हुआ।

सेल–संज्ञा पुं० [स्त्री० सेली] १. बरछा। भाला। २. बिक्री (अंग्रे०)।

सेलसटैक्स–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बिक्री-कर। बेची जानेवाली चीजों पर लगनेवाला सरकारी कर।

सेलखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

सेलना–क्रि० अ० मर जाना।

सेला–संज्ञा पुं० [स्त्री० "सेली"] रेशमी चादर। एक तरह का दुपट्टा।

सेलिया–संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

सेली–संज्ञा स्त्री० १. बर्छी। छोटा भाला। २. छोटा दुपट्टा। ३. गाँती। ४. वह बद्धी या माला जिसे योगी संन्यासी आदि सिर में लपेटते हैं। ५. एक गहना।

सेल्ला–संज्ञा पुं० भाला। सेल।

सेल्ह–संज्ञा पुं० दे० "सेल"।

†–संज्ञा पुं० दे० "सेला"।

–संज्ञा स्त्री० गुंधे हुए मैदे के सूत की तरह पतले लच्छे, जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

सेवँर*†–संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।

सेव–संज्ञा पुं० १. सूत की तरह पतला बेसन का बना हुआ एक पकवान। २. दे० "सेब"।

*संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।

सेवक–संज्ञा पुं० [स्त्री० सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १. सेवा करने-वाला। नौकर। दास। २. भक्त। उपासक। ३. सेवन करनेवाला। काम में लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। ४. छोड़कर कहीं न जानेवाला। वास करनेवाला।

सेवकाई–संज्ञा स्त्री० सेवा। खिदमत।

सेवग*–संज्ञा पुं० दे० "सेवक"।

सेवड़ा–संज्ञा पुं० १. मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान। २. जैन-साधुओं का एक भेद।

सेवति*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

सेवती–संज्ञा स्त्री० सफेद गुलाब।

सेवन–संज्ञा पुं० [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवी] १. उपयोग। इस्तेमाल (विशेषकर

नियमित रूप से उपयोग) जैसे औषध का सेवन। २. सेवा। ३. पूजा। उपासना। ४. छोड़कर न जाना। किसी अच्छे स्थान पर लगातार रहना। जैसे—काशी-सेवन।

नी–संज्ञा स्त्री० दासी।

नीय–वि० १. सेवन करने योग्य। काम में लाने लायक। उपयोग करने योग्य। २. पूजा के योग्य।

र–संज्ञा पुं० दे० "शबर"।

रा*†–संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा"।

री*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "शबरी"।

ल–संज्ञा पुं० विवाह की एक रस्म।

वा–संज्ञा स्त्री० १. खिदमत। टहल। दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। परिचर्य्या। नौकरी। २. पूजा। ३. आश्रय। रक्षा। शरण। ४. किसी उपयोगी वस्तु, विषय, कारण, आदि में रुचि होने के कारण उसकी उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला कार्य—जैसे देश-सेवा, साहित्य-सेवा।

वा-टहल–संज्ञा स्त्री० सेवा-शुश्रूषा। खिदमत। परिचर्य्या।

वाती*–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

वादारी–संज्ञा पुं० १. पुजारी। २. सिखों के गुरुद्वारे में रहकर वहाँ का प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी।

वार, सेवाल–संज्ञा स्त्री० पानी में फैलनेवाली एक तरह की घास।

वावृत्ति–संज्ञा स्त्री० नौकरी। दासत्व। नौकरी की जीविका।

वि–संज्ञा पुं० 'सेवी' का वह रूप, जो समास में होता है।

*वि० दे० "सेव्य", "सेवित"।

विका–संज्ञा स्त्री० दासी। नौकरानी। सेवा करनेवाली।

वित–वि० १. जिसकी सेवा की गई हो। २. पूजित। जिसकी पूजा की गई हो। ३. जिसका उपयोग या इस्तेमाल किया गया हो। उपभोग किया हुआ।

वी–वि० १. सेवा करनेवाला। पूजा करनेवाला। २. सेवन करनेवाला।

व्य–वि० [स्त्री० सेव्या] [illegible] करने के योग्य हो। २. जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। ३. पूजा के योग्य। सेवन करने योग्य। ४. काम में लाने लायक। रक्षा करने योग्य।

संज्ञा पुं० १. स्वामी। मालिक। २. पीपल का पेड़।

सेव्य-सेवक–संज्ञा पुं० मालिक और नौकर। स्वामी और सेवक।

यौ०—सेव्य-सेवक भाव=उपास्य देव को स्वामी या मालिक के रूप में और अपने को उनका दास समझना (भक्तिमार्ग में उपासना का एक भाव)।

सेशन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. दौरा अदालत जिसमें फौजदारी के मुकदमों पर विचार होता है। २. कार्यकाल। ३. अधिवेशन। ४. न्यायालय या विधान-सभा की कुछ दिनों तक लगातार होनेवाली बैठक।

सेश्वर–वि० १. ईश्वर-सहित। २. जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो। ३. आस्तिकता-सम्बन्धी।

सेष, सेस*–संज्ञा पुं० दे० "शेष"।

सेस रंग*–संज्ञा पुं० सफेद रंग।

सेसर–संज्ञा पुं० १. ताश का एक खेल। २. ज़ाल। ३. जालसाजी।

सेसरिया–वि० चालबाजी से दूसरों का माल मारनेवाला। जालिया।

सेहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। २. सुख। चैन। ३. रोग से छुटकारा।

सेहतखाना–संज्ञा पुं० [अ०] पाखाने-पेशाब आदि की कोठरी।

सेहरा–संज्ञा पुं० १. मौर। २. विवाह के अवसर पर दूल्हे के यहाँ गाए जानेवाले मांगलिक गीत। ३. फूलों की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति, जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है। ४. विवाह का मुकुट।

मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना=किसी को श्रेय या यश मिलना।

सेही–संज्ञा स्त्री० दे० "साही"।

सेहुँड़ *†–संज्ञा पुं० थूहर। एक छोटा कटीला पेड़। [illegible]

सेहुआँ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चर्म-रोग। शरीर में गाल या अन्य स्थान पर सफेद, काला या साँवला दाग।

सैंडल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक तरह का जूता या चप्पल। ऊँची एड़ी का चप्पल, जिसे प्रायः स्त्रियाँ पहनती हैं।

सैंतना–क्रि० स० १. संचित करना। बचाकर रखना। इकट्ठा करना। २. सहेजना। सँभालकर रखना। ३. समेटना। बटोरना।

सैंथी†–संज्ञा स्त्री० बर्छी। छोटा भाला।

सैंधव–संज्ञा पुं० १. सेंधा नमक। २ सिंध प्रदेश का निवासी। ३. सिंध का घोड़ा।
वि० १. सिंध देश का। २. सिन्धु या समुद्र-संबंधी।

सैंधवी–संज्ञा स्त्री० संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

सैंधू–संज्ञा स्त्री० दे० "सैंधवी"।

सैंबर†–संज्ञा पुं० दे० "साँभर"।

सैंह*‡–क्रि० वि० दे० "सौंह"।

सै†–वि०, संज्ञा पुं० सौ।
संज्ञा स्त्री० १. तत्त्व। सार। २. वीर्य। शक्ति। ३. वृद्धि।

सैकड़ा–संज्ञा पुं० सौ का समूह। एक सौ।

सैकड़े–क्रि० वि० प्रतिशत। फी सदी। प्रति सौ के हिसाब से।

सैकड़ों–वि० बहु-संख्यक। गिनती में बहुत। कई सौ।

सैकत–वि० [स्त्री० सैकती] १. बलुआ। रेतीला। २. बालू का बना हुआ।

सैकल–संज्ञा पुं० [अ०] हथियारों को साफ करने और उन पर सान चढ़ाने का काम।

सैकलगर–संज्ञा पुं० [अ०] तलवार, छुरी आदि पर सान चढ़ानेवाला।

सैथी–संज्ञा स्त्री० बरछी। छोटा भाला।

सैद*‡–संज्ञा पुं० दे० "सैयद"।

सैद्धांतिक–वि० सिद्धांत-संबंधी। तत्त्व-संबंधी।
संज्ञा पुं० सिद्धांत जाननेवाला। विद्वान्। तांत्रिक।

सैन–संज्ञा स्त्री० १. इशारा। संकेत। २. चिह्न। निशान। ३. दे० "सेना"।
*‡संज्ञा पुं० १. दे० "शयन"। २. दे० "श्येन"।

सैनभोग–संज्ञा पुं० मंदिरों में रात को भगवान् के सोने के समय चढ़ाया जानेवाला भोग।

सैनापत्य–संज्ञा पुं० सेनापति का पद या कार्य। सेनापतित्व।
वि० सेनापति-संबंधी।

सैनिक–संज्ञा पुं० [स्त्री० सैनिकता] १. सिपाही। सेना या फौज का आदमी। २. संतरी।
वि० फौजी। सेना-संबंधी।

सैनिक-न्यायालय–संज्ञा पुं० फौजी अदालत। सेना में होनेवाले अपराधों पर विचार और निर्णय करनेवाला विशेष न्यायालय या अदालत। [अंग्रे०–कोर्ट मार्शल]।

सैनिका–संज्ञा स्त्री० एक छंद।

सैनिकीकरण–संज्ञा पुं० लोगों को सैनिक बनाने, सैनिक-सामग्री से सज्जित करने या सेना का बहुत विस्तार करने का काम।

सैनिटोरियम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह स्थान जहाँ लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए जाकर रहते हैं (विशेषकर क्षय के रोगियों के लिए)। स्वास्थ्य-निवास।

सैनी–संज्ञा पुं० हज्जाम।
*‡ संज्ञा स्त्री० दे० "सेन"।

सैनू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैन।

सैनेय*–वि० सेना के योग्य। सेना में रहकर लड़ने योग्य।

सैनेश–संज्ञा पुं० सेनापति।

सैन्य–वि० १. सेना-संबंधी। २. फौज का।
संज्ञा पुं० १. सेना। फौज। २. सैनिक। सिपाही। ३. सेना का पड़ाव। शिविर। छावनी।

सैन्य-सज्जा–संज्ञा पुं० फौज को जरूरी हथियारों से तैयार करना।

सैन्याध्यक्ष–संज्ञा पुं० सेनापति।

सैफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार।

सैफ़ी–वि० [अ०] तिरछा। तलवार की तरह तिरछा।

सैमंतिक–संज्ञा पुं० सिंदूर।

सैयद–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश की उपाधि। इस वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।

सैयाँ*‡–संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"। पति।

सैरंध्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० सैरंध्री] १. घर का नौकर। सेवक। २. एक प्राचीन संकर जाति।

सैरंध्री–संज्ञा स्त्री० १. सैरन्ध्र-नामक संकर जाति की स्त्री। २. अंतःपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। ३. द्रौपदी (अज्ञातवास के समय का द्रौपदी का नाम)।

सैर–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मन बहलाने के लिए घूमना-फिरना। २. मौज। बहार। आनंद। ३. मित्र-मंडली का कहीं बगीचे आदि में खान-पान और आमोद-प्रमोद। ४. मनोरंजन। तमाशा।

सैल‡–संज्ञा स्त्री० दे० "सैर"। [फा० सैलाब] पानी की बाढ़।
संज्ञा पुं० दे० "शैल"।

सैलानी–वि० [फा०] १. सैर करनेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २. मनमौजी। आनंदी

सैलाब–संज्ञा पुं० [फा०] बाढ़ बाहिया।

सैलाबी–वि० [फा०] १. बाढ़ आने पर डूब जानेवाला। २. बाढ़वाला।
संज्ञा स्त्री० तरी। सील। सीड़।

सैहथी–संज्ञा स्त्री० छोटा भाला।

सों*†–प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
वि० दे० "सा"।
क्रि० वि० संग। साथ।
सर्व० दे० "सो"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
अव्य० दे० "सौंह"।

सोंचर नमक–संज्ञा पुं० दे० "काला नमक"।

सोंटा–संज्ञा पुं० १. मोटा डंडा। मोटी छड़ी। २. भाँग घोटने का डंडा।

सोंटा बरदार–संज्ञा पुं० बल्लमबदार। आसा-बरदार।

सोंठ–संज्ञा स्त्री० सुखाया हुआ अदरक।

सोंठौरा†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लड्डू, जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पड़ती है। (प्रसूता स्त्री या जच्चा के लिए)

सोंध*–अव्य० दे० "सौंह"।

सोंधा–वि० [स्त्री० सोंधी] १. महकनेवाला। सुगंधित। खुशबूदार। २. मिट्टी के नए बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान।
संज्ञा पुं० सुगंध। १. एक प्रकार का सुगंधित मसाला, जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल धोती हैं। २. एक सुगंधित मसाला, जो नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिए मिलाते हैं।

सोंवनिया–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का एक गहना।

सोंह*†–संज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "सौंह"।

सोंही*–अव्य० दे० "सौंह"।

सो–सर्व० वह।
*वि० दे० "सा"।
अव्य० अतः। इसलिए।

सोऽहम्–वह अर्थात् ब्रह्म मैं ही हूँ (वेदान्त का सिद्धान्त)। उपनिषदों में यह बात "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" रूप में कही गई है।)

सोअना*–क्रि० अ० दे० "सोना"।

सोआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग।

सोई–सर्व० दे० "वही"।
अव्य० दे० "सो"।

सोऊ*–सर्व० वह भी।
वि० सोनेवाला।

सोकन–संज्ञा पुं० दे० "सोखन"।

सोकना*–क्रि० स० अफसोस करना। शोक करना।

सोकित*–वि० शोकयुक्त।

सोक्कन–संज्ञा पुं० दे० "सोखन"।

सोखता–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोख्ता"।

सोखन्–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जंगली धान।

सोखना–क्रि० स० १. सुखा डालना। २. शोषण करना। चूस लेना।

सोख्ता–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का खुरखुरा कागज, जो स्याही सोख लेता है।
वि० जला हुआ।

सोग*–संज्ञा पुं० १. दे० "शोक"। २. किसी के मरने पर होनेवाला शोक या दुःख। मातम।
सोगिनी*–वि०, स्त्री० शोक या अफसोस करनेवाली।
सोगी–वि० [स्त्री० सोगिनी] शोक मनानेवाला। शोक से दुखी, व्याकुल।
सोच–संज्ञा पुं० १. सोचने की क्रिया या भाव। २. शोक। दुःख। ३. चिंता। फिक्र। रंज। अफसोस। ४. पछतावा।
सोचना–क्रि० अ० १. गौर करना। मन में विचार करना। २. चिंता करना। फिक्र करना। ३. खेद करना। दुःख करना।
सोच-विचार–संज्ञा पुं० सोचने-समझने की क्रिया या भाव। समझ-बूझ। गौर।
सोचाना–क्रि० स० किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। दे० "सुचाना"।
सोज–संज्ञा स्त्री० १. सूजन। शोथ। २. दे० "सौंज"।
सोजिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] सूजन। शोथ।
सोझ, सोझा–वि० [स्त्री० सोझी] १. सामने की ओर गया हुआ। २. सीधा। सरल स्वभाव का।
सोटा–संज्ञा पुं० १. दे० "सोंटा"। २. दे० "सुअटा"।
सोढर–वि० बेवकूफ। मूर्ख। भोंदू।
सोत–संज्ञा पुं० दे० "स्रोत" या "सोता"।
सोता–संज्ञा पुं० १. कहीं से निकलकर बराबर बहनेवाली जल की छोटी धारा। २. झरना। चश्मा।
सोति–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सोता"। २. धारा। ३. दे० "स्वाति"।
संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।
सोदर–संज्ञा पुं० और वि० [स्त्री० सोदरा, सोदरी] दे० "सहोदर"।
सोध*†–संज्ञा पुं० १. दे० "शोध"। खोज। संशोधन। २. दे० "सौध।" महल। प्रासाद।
सोधना†–क्रि० स० १. शोधन करना। शुद्ध करना। साफ करना। २. गलती या दोष दूर करना। ठीक या दुरुस्त करना। ३. खोजना। ढूंढ़ना। ४. निश्चित करना। निर्णय करना। ५. धातुओं का औषध-रूप में व्यवहार करने के लिए संस्कार। ६. ऋण चुकाना। अदा करना।
सोधाना†–क्रि० स० सोधने का काम दूसरे से कराना।
सोन–संज्ञा पुं० १. बिहार प्रान्त का एक प्रसिद्ध नद, जो गंगा में मिला है। २. एक प्रकार का जलपक्षी।
वि० लाल। अरुण।
सोनकिरवा–संज्ञा पुं० चमकीले पंखवाला एक कीड़ा।
सोनकोकर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।
सोनकेला–संज्ञा पुं० चंपा केला। पीला केला।
सोनचिरी–संज्ञा स्त्री० नट-जाति की स्त्री। नटी।
सोनजर्द, सोनजूही–संज्ञा स्त्री० वह जूही, जिसके फूल पीले होते हैं। पीली जूही।
सोनभद्र–संज्ञा पुं० दे० "सोन" (नदी)।
सोनहा–संज्ञा पुं० कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।
सोनहार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का समुद्री पक्षी।
सोना–संज्ञा पुं० १. बढ़िया पीले रंग की एक प्रसिद्ध कीमती धातु, जिसके सिक्के और गहने बनते हैं। कंचन। स्वर्ण। २. कोई बहुत सुन्दर और बहुमूल्य वस्तु।
क्रि० अ० १. नींद लेना। शयन करना। आँख लगना। २. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। ३. किसी बात पर ध्यान न देना या उदासीन होकर चुप रह जाना।
मुहा०—सोने का घर मिट्टी होना=सब कुछ नष्ट होना। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना। सोते-जागते=हर समय।
सोनागेरू–संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद।
सोनापाठा–संज्ञा पुं० एक ऊँचा पेड़, जिसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं।
सोनामक्खी–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वर्णमाक्षिक"।
सोनी†–संज्ञा पुं० सुनार।
सोपत–संज्ञा पुं० सुबीता। आराम।

सोपाधिक—वि० १. किसी प्रतिबन्ध या शर्त के साथ। २. किसी विशेष सीमा, मर्यादा आदि से बँधा हुआ।

सोपान—संज्ञा पुं० सीढ़ी। जीना।

सोपि—वि० १. वही। २. वह भी।

सोफता—संज्ञा पुं० १. रोग आदि में कुछ कमी होना। २. एकांत स्थान। सुनसान जगह।

सोफा—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक तरह का गद्देदार आसन (लम्बी गद्देदार कुर्सी)। कोच। यौ०—सोफासेट=गद्देदार कुर्सियों का समूह, जिसमें साधारणतः तीन कुर्सियाँ होती हैं। बीच में एक लम्बा सोफा और बगल में दो गद्देदार कुर्सियाँ।

सोफियाना—वि० १. सूफियों का। सूफी संबंधी। २. देखने में सादा, पर बहुत भला लगनेवाला।

सोफी—संज्ञा पुं० दे० "सूफी"।

सोभ*—संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।

सोभना*†—क्रि० अ० शोभा देना। सोहना।

सोभाकारी—वि० सुंदर।

सोभार—क्रि० वि० उभार के साथ। उभर कर।

वि० जिसमें उभार हो। उभारदार।

सोम—संज्ञा पुं० १. पुराने जमाने की एक लता, जिसका रस मादक होता था और वह वैदिककाल में पिया जाता था। २. चन्द्रमा। ३. सोमवार। ४. एक प्रकार की लता, जो वैदिक-काल के सोम से भिन्न है। सोमयज्ञ। ५. वैदिक-काल के एक देवता। ६. कुबेर। ७. यम। ८. वायु। ९. अमृत। १०. जल। ११. स्वर्ग। आकाश।

सोमकर—संज्ञा पुं० चंद्रमा की किरण।

सोमन—संज्ञा पुं० दे० "सौमन"। एक प्रकार का पुराना हथियार।

सोमनाथ—संज्ञा पुं० १. बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक शिवलिंग। चन्द्रमा के स्वामी शिवजी। २. काठियावाड़ के पश्चिमी तट पर स्थित एक प्रसिद्ध मन्दिर, जिसमें उक्त ज्योतिर्लिंग स्थापित है। महमूद गजनवी आदि मुसलमान आक्रामकों ने इस मन्दिर पर कई बार हमले किए। देश के स्वतंत्र होने के बाद इस मन्दिर का पुनर्निर्माण हुआ और ११ मई सन् १९५१ को राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने नवीन रूप में उसकी प्रतिष्ठा की।

सोमपान—संज्ञा पुं० सोम-रस पीना।

सोमपायी—वि० [स्त्री० सोमपायिनी] सोम-रस पीनेवाला।

सोमप्रदोष—संज्ञा पुं० सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत।

सोमयाग—संज्ञा पुं० तीन वर्ष पर किया जानेवाला एक प्राचीन यज्ञ, जिसमें सोम-रस पिया जाता था।

सोमयाजी—संज्ञा पुं० सोमयाग (एक विशेष यज्ञ) करनेवाला।

सोमरस—संज्ञा पुं० सोमलता का रस।

सोमराज—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सोमराजी—संज्ञा स्त्री० १. एक लता। बकुची। २. दो यगण का एक छन्द।

सोमवंश—संज्ञा पुं० चंद्रवंश (क्षत्रियों का)।

सोमवंशीय—वि० १. चंद्रवंश में उत्पन्न। २. चंद्रवंश-संबंधी।

सोमवती अमावस्या—संज्ञा स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या, जो पुराणानुसार पुण्य-तिथि मानी जाती है।

सोमवल्लरी—संज्ञा स्त्री० १. सोमलता। ब्राह्मी। २. एक वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं।

सोमवल्ली—संज्ञा स्त्री० दे० "सोम" (सोमलता)।

सोमवार—संज्ञा पुं० सप्ताह में रविवार के बाद पड़नेवाला दिन, जो सोम अर्थात् चंद्रमा का माना जाता है।

सोमवारी—संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।

वि० सोमवार-संबंधी।

सोमसुत—संज्ञा पुं० बुध (चन्द्रमा का पुत्र)।

सोमावती—संज्ञा स्त्री० चंद्रमा की माता।

सोमास्त्र—संज्ञा पुं० एक अस्त्र, जो चंद्रमा का अस्त्र माना जाता है।

सोमेश्वर–संज्ञा पुं० १ दे० "सोमनाथ"। २. संगीत-शास्त्र के एक आचार्य।
सोय*–सर्व० वही। दे० 'सो'।
सोर*–संज्ञा स्त्री० पेड़ आदि की जड़। मूल।
संज्ञा पुं० १. दे० "शोर"। हल्ला। २. प्रसिद्धि। नाम।
सोरठ–संज्ञा पुं० १. सौराष्ट्र। २. गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। ३. सोरठ देश की राजधानी, सूरत। ४. पाँच स्वरोंवाला एक राग।
सोरठा–संज्ञा पुं० एक छन्द, जिसमें कुल ४८ मात्राएँ होती हैं—पहले और तोसरे चरण में, ग्यारह-ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है।
सोरनी†–संज्ञा स्त्री० १. झाड़ू। बुहारी। २. किसी के मरने से कुछ समय बाद किया जानेवाला मृतक-कर्म, जिसे "त्रिरात्रि" क्रिया कहते हैं।
सोरह*‡–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।
सोरही†–संज्ञा स्त्री० १. जुआ खेलने के लिए सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. इन सोलह कौड़ियों से खेला जानेवाला जूआ।
सोलंकी–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश, जिसने गुजरात में बहुत दिनों तक शासन किया था।
सोलह–वि० गिनती में दस से छः अधिक।
संज्ञा पुं० दस और छः की संख्या या अंक, जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।
मुहा०—सोलहों आने=पूरा-पूरा। सम्पूर्ण। सब।
सोलह सिंगार–संज्ञा पुं० दे० "षोडश शृंगार"।
सोला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का ऊँचा झाड़, जिसकी डालियों के छिलके से अँगरेजी ढंग के टोप बनते हैं।
सोल्लास–क्रि० वि० उल्लास के साथ। आनन्द और उत्साह से। उल्लासपूर्वक।
सोवज–संज्ञा पुं० दे० "सावज"।
सोवन*†–संज्ञा पुं० सोने की क्रिया या भाव।
सोवरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।
सोवाना–क्रि० स० दे० "सुलाना"।
सोवियट, सोवियत–संज्ञा पुं० [रूसी] १. रूस में मजदूरों या सैनिकों के प्रतिनिधियों की सभा। २. आधुनिक रूसी प्रजातन्त्र, जिसका संचालन इन सभाओं के प्रतिनिधि करते हैं।
सोवैया*†–संज्ञा पुं० सोनेवाला।
सोशलिज्म–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दे० "समाजवाद"।
सोशलिस्ट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] समाजवादी। समाजवाद के सिद्धान्त का अनुयायी।
सोषु सोसु*–वि० सोखनेवाला।
सोसन–संज्ञा पुं० [फा० सौसन] १. फारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा। २. इस पौधे का फल।
सोसनी–वि० सोसन के फूल के रंग का। लाली लिये नीला।
सोसाइटी, सोसायटी–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. समाज। २. समिति। सभा। ३. संग। साथ।
सोस्मि*–दे० "सोऽहम्"।
सोहं, सोहंग*–दे० "सोऽहम्"।
सोह*‡–क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सोहगी–संज्ञा स्त्री० १. तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म, जिसमें लड़की के लिए कपड़े, गहने आदि जाते हैं। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।
सोहन–वि० [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुहावना। सुंदर।
संज्ञा पुं० १. सुंदर पुरुष। २. नायक।
संज्ञा स्त्री० एक तरह की बड़ी चिड़िया।
सोहन पपड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
सोहन हलवा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई।
सोहना–क्रि० अ० १. शोभा देना। सजना। २. अच्छा लगना।
†वि० सुंदर। मनोहर।
सोहनी–वि०,बहुत अच्छी लगनेवाली। सुंदर। सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
सोहबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संग-साथ। [illegible]

सोहमस्मि—दे० "सोऽहम्"।
सोहर—संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।
संज्ञा स्त्री० सूतिकागृह। सौरी।
सोहराना—क्रि० स० दे० "सहलाना"।
सोहला—संज्ञा पुं० १. घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियों द्वारा गाए जानेवाले गीत। सोहर। २. मांगलिक गीत।
सोहाइन*‡—वि० दे० "सुहावना"।
सोहाग†—संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।
सोहागिन, सोहागिल—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सोहाता—वि० [स्त्री० सोहाती] अच्छा लगनेवाला। सुहावना। शोभित। सुंदर।
सोहाना—क्रि० अ० सुहाना। अच्छा लगना। शोभा देना। सुन्दर लगना।
सोहाया—वि० [स्त्री० सोहाई] शोभित। सुंदर।
सोहारी—संज्ञा स्त्री० पूरी (पकवान)।
सोहावना—वि० दे० "सुहावना"।
क्रि० अ० दे० "सोहाना"।
सोहासित*†—वि० १. अच्छा लगनेवाला। सुन्दर। शुभ। २. ठकुर-सोहाती। खुशामद।
सोहिं‡—क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सोहिनी—वि० सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।
सोहिल—संज्ञा पुं० १. दे० "सुहेल"। २. अगस्त्य तारा।
सोहिला—संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।
सोहीं*†—क्रि० वि० सम्मुख। सामने।
सोहें*—क्रि० वि० सम्मुख। सामने। आगे।
सौं*—संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
अव्य०, प्रत्य०, दे० "सों" या "सा"।
सौंकारा, सौंकेरा—संज्ञा पुं० सबेरा। सुबह।
सौंगत—संज्ञा पुं० १. 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २. ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक।
सौंघा—वि० [संज्ञा स्त्री० सौंघाई] १. महँगा का उलटा। २. उचित। ठीक। ३. अच्छा। ४. उत्तम।
सौंचना†—क्रि० स० शौच करना। मल त्याग करना मलत्याग करने के बाद मल-द्वार में लगे हुए मल को जल से धोना।
सौंचर—संज्ञा पुं० दे० "सोंचर नमक"।
सौंचाना†—क्रि० स० १. शौच कराना। मल त्याग कराना। हगाना। २. मल-त्याग के बाद किसी के मल-द्वार में लगे हुए मल को धोना।
सौंज*—संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।
सौंड़, सौंड़ा†—संज्ञा पुं० ओढ़ने का भारी कपड़ा।
सौंतुख*—संज्ञा पुं० सम्मुख। सामने।
क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।
सौंदन—संज्ञा स्त्री० १. आपस में मिलाने का काम। २. सौंदने का काम। धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह-मिले पानी में भिगोना।
सौंदना—क्रि० स० १. आपस में मिलाना। सानना। २. मिट्टी आदि मिलाकर गन्दा करना।
सौंदर्ज, *सौंदर्य—संज्ञा पुं० सुंदरता। खूबसूरती। सुन्दर होने का भाव या गुण।
सौंध*—संज्ञा पुं० दे० "सौध"।
संज्ञा स्त्री० सुगंध। खुशबू।
सौंधना—क्रि० स० सुगंधित करना।
सौंधा—वि० १. दे० "सोंधा"। अच्छा लगनेवाला २. रुचिकर। अच्छा।
सौंनमक्खी—संज्ञा स्त्री० दे० "सोना मक्खी"।
सौंपना—क्रि० स० सहेजना। सुपुर्द करना। हवाले करना।
सौंफ—संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा, जिसके बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं।
सौंफिया, सौंफी—संज्ञा स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।
सौंभरि—संज्ञा पुं० दे० "सौभरि"।
सौंर—संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।
सौंरई†—संज्ञा स्त्री० सांवलापन। साँवर।
सौंरना*—क्रि० स० स्मरण करना। याद करना।
क्रि० अ० दे० "सँवारना"।

सौंह*†–संज्ञा स्त्री० सौगंद। शपथ। कसम।
संज्ञा पुं० क्रि० वि० सम्मुख। सामने।
सौंही–संज्ञा स्त्री० एक तरह का हथियार।
सौ–वि० पचास का दूना। नब्बे और दस।
*वि० दे० "सा"।
संज्ञा पुं० सौ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।
मुहा०—सौ बात की एक बात=सारांश। तात्पर्य। निचोड़।
सौक–संज्ञा स्त्री० सौत।
वि० एक सौ।
सौकन†–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सौकर्य–संज्ञा पुं० १. "सुकर" होने का भाव। २. आसानी। ३. सुगमता। सुभीता।
सौकुमार्य–संज्ञा पुं० १. सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २. यौवन। जवानी। ३. काव्य का एक गुण, जो ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दों का त्याग करने और सुंदर तथा कोमल शब्दों का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है।
सौख*‡–संज्ञा पुं० दे० "शौक"।
सौख्य–संज्ञा पुं० १. सुख। आराम। २. सुख का भाव।
सौगंद–संज्ञा स्त्री० सौगंध। कसम। शपथ।
सौगंध–संज्ञा स्त्री० शपथ। कसम। सौगंद।
संज्ञा पुं० १. सुगंध। खुशबू। २. सुगंधित तेल इत्र आदि का व्यापार करनेवाला। गंधी।
सौगतिक–संज्ञा पुं० १. 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २. ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक।
सौगात–संज्ञा स्त्री० [तु०] तोहफा। भेंट। उपहार। किसी को उपहार देने के लिए कहीं से लाई गई वस्तु।
सौगाती–वि० १. सौगातवाला। सौगात-संबंधी। २. सौगात या भेंट देने योग्य। बहुत बढ़िया।
सौघा†–वि० कम दाम का। सस्ता।
सौज–संज्ञा स्त्री० सामग्री। साज-सामान। उपकरण।
सौजना–क्रि० अ० दे० "सजना"।
सौजन्य–संज्ञा पुं० सज्जनता का भाव।
सौजा–संज्ञा पुं० वह पशु या पक्षी, जिसका शिकार किया जाय।
सौत–संज्ञा स्त्री० किसी स्त्री के पति की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सवत। सपत्नी।
मुहा०—सौतिया डाह=दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या। द्वेष। जलन।
सौतन, सौतिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सौतुक, सौतुख*–संज्ञा पुं० दे० "सौंतुख"।
सौतेला–वि० [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। २. जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो।
सौत्रामणी–संज्ञा स्त्री० इंद्र को प्रसन्न करने के लिए किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
सौदा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बेचने या खरीदने की चीज। माल। २. लेन-देन। व्यवहार। ३. क्रय-विक्रय। व्यापार। ४. [फा०] पागलपन। उन्माद।
सौदाई–संज्ञा पुं० दीवाना। पागल। बावला।
सौदागर–संज्ञा पुं० [फा०] व्यापार या तिजारत करनेवाला। व्यापारी। व्यवसायी।
सौदागरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।
सौदामनी, सौदामिनी–संज्ञा स्त्री० विद्युत्। बिजली।
सौध–संज्ञा पुं० १. ऊँचा और बड़ा मकान। महल। २. चाँदी। ३. दूधिया पत्थर।
सौधना–क्रि० स० दे० "सोंधना"।
सौन*–क्रि० वि० सम्मुख। सामने।
सौनन†–संज्ञा स्त्री० दे० "सौंदन"।
सौबल–संज्ञा पुं० गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।
सौभ–संज्ञा पुं० १. कामचारिपुर। राजा हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी, जो आकाश में मानी गई है। २. एक प्राचीन जनपद। ३. उक्त जनपद के राजा।
सौभग–संज्ञा पुं० १. खुशकिस्मती। सौभाग्य। २. सुख। आनंद। ३. ऐश्वर्य। धन-दौलत। ४. सौंदर्य। खूबसूरती।
सौभद्र–संज्ञा पुं० १. सुभद्रा का पुत्र, अभिमन्यु। २. सुभद्रा-हरण का युद्ध।
वि० सुभद्रा-संबंधी।

सौभद्रेय–संज्ञा पुं० सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु।
सौभागिनी–संज्ञा स्त्री० सुहागिन। वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सौभाग्य–संज्ञा पुं० १. अच्छा भाग्य। खुशकिस्मती। २. कल्याण। कुशल। क्षेम। ३. सुख। आनंद। ४. ऐश्वर्य। वैभव। ५. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ६. सुंदरता। सौंदर्य।
सौभाग्यवती–वि० सुहागिन। वह स्त्री- जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो (जिसका पति जीवित हो)। सधवा।
सौभाग्यवान्–वि० १. अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। २. सुखी और संपन्न।
सौभिक्ष्य–संज्ञा पुं० दे० "सुभिक्ष"।
सौम*–वि० दे० "सौम्य"।
सौमन–संज्ञा पुं० एक तरह का बहुत पुराना हथियार।
सौमनस–वि० १. सुमनों का अर्थात् फूलों का। मनोहर। प्रिय। आनन्ददायक।
संज्ञा पुं० १. प्रसन्नता। आनंद। २. पश्चिम दिशा का हाथी (पुराण)। ३. हथियारों को निष्फल कर देनेवाला एक बहुत पुराना हथियार।
सौमनस्य–संज्ञा पुं० १. प्रसन्नता। प्रफुल्लता। २. प्रेम। ३. सौजन्य। भलमनसाहत। ४. सन्तोष।
सौमित्र–संज्ञा पुं० १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. मित्रता। दोस्ती।
सौमित्रा*–संज्ञा स्त्री० दे० "सुमित्रा"।
सौम्य–वि० [स्त्री० सौम्या] १. शीतल और स्निग्ध। २. सुशील। शांत। ३. मांगलिक। शुभ। ४. मनोहर। सुंदर। ५. सोमलता-संबंधी। ६. चंद्रमा-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. भलमनसत। सौजन्य। २. सोम यज्ञ। ३. चंद्रमा के पुत्र, बुध। ४. ब्राह्मण। ५. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ६. साठ संवत्सरों में से एक। ७. खून का वह रूप, जब वह लाल रंग का होने से पहले रहता है (सीरम)। ८. एक दिव्यास्त्र। (देवताओं का दिया या मन्त्रों-द्वारा चलनेवाला एक बहुत पुराना हथियार)।
सौम्यकृच्छ्–संज्ञा पुं० एक प्रकार का व्रत।
सौम्यदर्शन–वि० सुंदर। प्रियदर्शन (देखने में सुंदर)।
सौम्यविज्ञान–संज्ञा पुं० वह विज्ञान, जिसमें औषध के काम के लिए जीवों के खून से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।
सौम्या–संज्ञा स्त्री० आर्य्या-छंद का एक भेद।
सौर–वि० १. सूर्य्य-संबंधी। सूर्य्य का। २. सूर्य्य से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. शनि। २. सूर्य्य का उपासक।
*संज्ञा स्त्री० चादर। ओढ़ना।
सौर जगत्–संज्ञा पुं० सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले ग्रहों का समूह या वर्ग। पृथ्वी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरेनस आदि ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इनके समूह को सौरजगत् कहते हैं। (अंग्रे०–सोलर सिस्टम)।
सौर दिवस–संज्ञा पुं० एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।
सौरभ–संज्ञा पुं० [वि० सौरभित] १. सुगंध। खुशबू। महक। २. केसर।
सौरभक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छन्द।
सौरभित–वि० जिसमें सौरभ हो। सुगंधित।
सौर मास–संज्ञा पुं० एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।
सौर वर्ष–संज्ञा पुं० एक मेष-संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय।
सौरस्य–संज्ञा पुं० 'सुरस' या 'सरस' होने का भाव। सुरसता। सरसता।
सौराष्ट्र–संज्ञा पुं० १. भारत का एक वर्तमान राज्य जिसे काठियावाड़ की छोटी बड़ी रियासतों को मिलाकर बनाया गया है और इसमें नवानगर, भावनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर, मोरवी, गोंडाल, राजकोट आदि ३० बड़ी और बहुत सी छोटी रियासतें सम्मिलित हैं। इसकी राजधानी राजकोट है। २. गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। ३. इस प्रदेश का निवासी। ४. एक प्रकार का छन्द।

सौराष्ट्र-मृत्तिका–संज्ञा स्त्री० १. गोपी-चंदन। २. पीले रंग की मिट्टी, जो पवित्र मानी जाती है।

सौरास्त्र–संज्ञा पुं० देवताओं का दिया हुआ या मंत्रों-द्वारा चलाया जानेवाला एक प्राचीन अस्त्र। एक दिव्यास्त्र।

सौरी–संज्ञा स्त्री० १ वह कोठरी या कमरा, जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सूतिका, गृह। जच्चाखाना। २. एक प्रकार की मछली।

सौर्य–वि० सूर्य्य-संबंधी। सूर्य्य का।

सौवर्चल–संज्ञा पुं० सोंचर नमक।

सौवर्ण–संज्ञा पुं० स्वर्ण। सोना।
वि० स्वर्ण का। सोने का।

सौवीर–संज्ञा पुं० १. सिंधु नद के आस-पास का प्राचीन प्रदेश। २. उक्त प्रदेश का निवासी या राजा।

सौवीरांजन–संज्ञा पुं० सुरमा।

सौष्ठव–संज्ञा पुं० १. 'सुष्ठु' होने का भाव। सुडौलपन। २. उपयुक्तता। ३. सौंदर्य। ४. नाटक का एक अंग।

सौहैं–संज्ञा स्त्री० कसम। शपथ।
क्रि० वि० सामने। आगे। सम्मुख।

सौहार्द–संज्ञा पुं० १. 'सुहृद' होने का भाव। सहानुभूति। २. सज्जनता। ३. मित्रता।

सौहीं–क्रि० वि० आगे। सामने।

सौहृद–संज्ञा पुं० [स्त्री० सौहृद्य] १. मित्रता। दोस्ती। २. मित्र। दोस्त।

स्कंद–संज्ञा पुं० [वि० स्कंदित] १. निकलना। बहना। २. गिरना। ३. नाश। ४. शरीर। देह। ५. बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक। ६. कार्तिकेय, जो शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ७. शिव।

स्कंदन–संज्ञा पुं० १. निकलना। बहना। गिरना। २. पेट साफ होना। रेचन।

स्कंदपुराण–संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।

स्कंध–संज्ञा पुं० १. मोढ़ा। कंधा। २. पेड़ के तने का वह भाग, जहाँ से डालियाँ निकलती ... ४ अमर। झुंड। ५. ग्रंथ का विभाग, जिसमें कोई पूरा प्रसंग हो। खंड। ६. शरीर। देह। ७. मुनि। ८. आचार्य। ९. राजा। १०. सेना का अंग। व्यूह। ११. युद्ध। संग्राम। १२. आर्या-छंद का एक भेद। १३. गोदाम। भंडार। वह स्थान, जहाँ देखने या इस्तेमाल की जानेवाली बहुत-सी चीजें जमा हों। १४. बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार, ये पाँचों पदार्थ। १५. दर्शन-शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

स्कंधक–संज्ञा पुं० बेचने आदि के लिए बहुत-सी चीजें अपने पास रखनेवाला। (अंग्रे०-स्टाकिस्ट)

स्कंधधारी–संज्ञा पुं० अपने पास बेचने आदि के लिए बहुत-सी चीजें रखने-वाला या उनका स्कंध (स्टाक) रखने-वाला।

स्कंधपंजी–संज्ञा स्त्री० वह बही या पुस्तक, जिसमें स्कंध या भंडार में रखी हुई चीजों का हिसाब हो।

स्कंधावार–संज्ञा पुं० १. राजा का शिविर। कंप। २ सेना का पड़ाव। छावनी। ३. सेना। फौज।

स्कंभ–संज्ञा पुं० १. स्तंभ। खंभा। २. ईश्वर।

स्काउट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बालचर। वह बालक, जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवा करने की शिक्षा मिली हो।

स्काउटिंग–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] स्काउट या बालचर को दी जानेवाली सामाजिक सेवा की शिक्षा।

स्कोर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. गणना। खेलों में होनेवाली गणना। क्रिकेट के खेल की दौड़ की गणना। २. दौड़ शुरू करने का स्थान। ३. कोड़ी।

स्कूल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] [वि० स्कूली] १. विद्यालय। पाठशाला। २. सम्प्रदाय या शाखा।

स्खलन–संज्ञा पुं० १. गिरना। पतन। २. चीरना। फाड़ना। ३. हत्या।

स्खलित–वि० १. गिरा हुआ। पतित।

युत। २. लड़खड़ाया हुआ। विचलित। फँसला हुआ। ३. चूका हुआ।
लिंग—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सोने का २० शलिंग का अँगरेजी सिक्का।
वि० शुद्ध। खरा।
ंप—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. डाक या अदालत का टिकट। २. मोहर। छाप। ३. वह सरकारी कागज, जिस पर किसी तरह की लिखा-पढ़ी होनी है और जिसके दाम उस पर लिखे जानेवाले विषय के अनुसार अलग-अलग होते हैं। अंक-पत्र।
टाक—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] [वि० स्टाकिस्ट] गोदाम। भंडार। बेचने के लिए जमा किया हुआ माल।
ट्राइक—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] हड़ताल।
टीमर—संज्ञा पुं० जहाज। [भाप से चलनेवाला जहाज] साधारणतः नदी में चलनेवाले छोटे जहाज को अँगरेजी में स्टीमर और समुद्री जहाज को "शिप" कहते हैं।
स्टील—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] इस्पात। फौलाद।
स्टूल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. तिपाई। तीन पैरों का काठ का छोटा ऊँचा आसन। २. मल। पाखाना।
स्टेज—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रंग-मंच। रंग-भूमि। मंच।
स्टेट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. राष्ट्र। राज्य। शासन करनेवाली शक्ति। २. देशी रियासत। ३. बड़ी जमींदारी। ४. जायदाद। चल और अचल सम्पत्ति।
स्टेनोग्राफर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] शीघ्र-लिपिक बड़े अधिकारियों के साथ रहनेवाला वह कर्मचारी, जो उनके आदेशों को संकेत-लिपि में लिखकर टाइप करता है।
स्टेशन—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. रेलगाड़ी के रुकने का वह स्थान, जहाँ यात्री चढ़ते-उतरते हों या सामान लादा उतारा जाता हो। २. किसी विशेष कार्य के लिए निश्चित स्थान (जैसे पोलिंग स्टेशन)।
स्टेशनरी—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] लेखन-सामग्री। लिखने का सामान: कागज, कलम, स्याही आदि।
स्टैंडर्ड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. स्तर। मानदंड। २. कसौटी। ३. माप। ४. प्रामाणिक वस्तु। ५. आदर्श। नमूना। ६. श्रेणी। कक्षा। ७. ध्वजा। झंडा।
स्टोर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. गोदाम। भंडार। २. सामान। ३. संचय। ४. अधिकता।
स्तंभ—संज्ञा पुं० [वि० स्तंभित] १. खंभा। २. थूनी। ३. पेड़ का तना। ४. किसी कारण से शरीर के सब अंगों की गति का रुकना। जड़ता। अचलता। ५. साहित्य में एक प्रकार का सात्त्विक भाव, जब किसी कारण या घटना से सब अंगों की गति रुक जाने का वर्णन हो। ६. प्रतिबन्ध। रुकावट। ७. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग, जिससे किसी शक्ति को रोकते हैं।
स्तंभक—वि० १. रोकनेवाला। रोधक। २. वीर्य को जल्दी गिरने से रोकनेवाला (औषध)। ३. कब्ज करनेवाला।
स्तंभन—संज्ञा पुं० १. रुकावट। अवरोध। निवारण। २. वीर्य आदि के स्खलन में बाधा या विलंब। सम्भोग की एक विशेष क्रिया। ३. वीर्य्यपात रोकने की दवा। ४. जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. कब्ज। मल बाहर निकलने से रुक जाना। ६. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग, जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। ७. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
स्तंभित—वि० १. जो जड़ या निश्चेष्ट हो गया हो। निश्चल। सुन्न। २. चकित। हक्का-बक्का। ३. रुका या रोका हुआ।
स्तन—संज्ञा पुं० स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती, जिसमें दूध रहता है। चूँची। थन।
स्तनपान—संज्ञा पुं० स्तन में मुँह लगाकर उसमें का दूध पीना। स्तन्यपान।
स्तनपायी—वि० माता के स्तन से दूध पीने-वाला। वे जीव या जन्तु, जो जन्म लेने पर अपनी माता का दूध पीकर पलते हैं।
स्तब्ध—वि० १. हक्काबक्का। स्तंभित। २.

सुन्न। जड़ीभूत। ३. कुंठित। ४. निश्चेष्ट। ५. दृढ़। स्थिर। ६. मंद। धीमा।

स्तब्धता–संज्ञा स्त्री० १. स्तब्ध या सुन्न होने का भाव। जड़ता। निःशब्दता। सुनसान। २. स्थिरता। दृढ़ता।

स्तनित–संज्ञा पुं० १. बिजली की कड़क। २. बादल की गरज। ३. ताली बजाने का शब्द। वि० शब्द करता हुआ। गरजता हुआ।

स्तन्य–वि० स्तन-सम्बन्धी। संज्ञा पुं० दूध। (स्तन से निकला हुआ)

स्तर–संज्ञा पुं० १.सतह। धरातल। तह। परत २. जल, भूमि आदि की ऊपरी सतह। ३. मानदण्ड (योग्यता का मानदण्ड)।

स्तरण–संज्ञा पुं० फैलाने या बिखेरने की क्रिया।

स्तरीभूत–वि० जो जमकर स्तर के रूप में हो गया हो।

स्तव–संज्ञा पुं० किसी देवता का छंदोबद्ध गुणगान या स्वरूप-वर्णन। स्तोत्र। स्तुति। प्रशंसा।

स्तवक–संज्ञा पुं० १. फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। स्तुति करनेवाला। गुणगान करनेवाला। २. समूह। ढेर। ३. पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छेद।

स्तवन–संज्ञा पुं० स्तुति करने की क्रिया। गुणगान। स्तव या स्तुति।

स्तिमित–वि० १. भीगा हुआ। गीला। तर। २. ठहरा हुआ। निश्चल।

स्तीर्ण–वि० फैलाया, बिखेरा या छितराया हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।

स्तुत–वि० जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। प्रशंसित।

स्तुति–संज्ञा स्त्री० गुणगान। प्रशंसा। तारीफ।

स्तुतिपाठक–संज्ञा पुं० १. गुणगान करनेवाला। २. चारण। भाट।

स्तुतिवाचक–संज्ञा पुं० १. स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

स्तुतिवाचक–संज्ञा पुं० स्तुति करनेवाला। प्रशंसा करनेवाला। दे० "स्तुति-पाठक"।

स्तुत्य–वि० स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तूप–संज्ञा पुं० १. ऊँचा ढूह या टीला। २. वह ऊँचा टीला या ढूह, जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्न संरक्षित हों।

स्तेन–संज्ञा पुं० १. चोर।

स्तेय–संज्ञा पुं० चोरी।

स्तैन्य–संज्ञा पुं० चोरी।

स्तोक–संज्ञा पुं० १. बूंद। बिंदु। २. पपीहा। चातक।

स्तोता–वि० स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र–संज्ञा पुं० किसी देवता का छंदोबद्ध गुणकीर्तन। स्तुति।

स्तोम–संज्ञा पुं० १. प्रार्थना। स्तुति। २. यज्ञ। ३. एक विशेष प्रकार का यज्ञ। ४. समूह।

स्त्री–संज्ञा स्त्री० १. औरत। नारी। २. पत्नी। बीबी। ३. मादा।

स्त्रीजित्–वि० जिसे स्त्री ने जीत लिया हो। स्त्री के वश में रहनेवाला। बीबी का गुलाम।

स्त्रीत्व–संज्ञा पुं० १. स्त्री होने का भाव या धर्म। जनानापन। २. व्याकरण में वह प्रत्यय, जो स्त्री-लिंग का सूचक होता है।

स्त्रीधन–संज्ञा पुं० वह धन, जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो।

स्त्रीधर्म–संज्ञा पुं० मासिक धर्म। स्त्री का रजस्वला होना।

स्त्रीप्रसंग–संज्ञा पुं० मैथुन। संभोग।

स्त्रीलिंग–संज्ञा पुं० १. हिंदी, व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो स्त्री-जाति का या किसी शब्द का अल्पार्थक रूप सूचित करता है। जैसे—'घोड़ा' का स्त्रीलिंग 'घोड़ी' या 'छुरा' का 'छुरी'। २. स्त्री की जननेंद्रिय। भग। योनि।

स्त्रीव्रत–संज्ञा पुं० अपनी स्त्री के अलावा दूसरी स्त्री की इच्छा न करना। पत्नीव्रत।

स्त्रैण–वि० १. स्त्री-संबंधी। २. स्त्रियों का। ३. स्त्री के वश में रहनेवाला। ४. स्त्रीरत। स्त्रियों के समान चेष्टा करनेवाला। मेहरा।

स्थ–प्रत्य० एक प्रत्यय, जो शब्दों के अन्त में

लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) स्थित। कायम। (ख) रहनेवाला। निवासी। (ग) उपस्थित। हाजिर। वर्तमान। (घ) रत। लीन।

स्थगन—संज्ञा पुं० १. छिपाना। गोपन। २. सभा की बैठक, वाद की सुनवाई अथवा अन्य कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक देना। (अंग्रे०—एडजर्नमेण्ट)

स्थगनक—संज्ञा पुं० काम रोको प्रस्ताव। विधान-सभा आदि में पेश किया जानेवाला वह प्रस्ताव, जिसमें यह माँग की जाती है कि अन्य काम रोककर पहले उस पर विचार होना चाहिए। (अंग्रे०—एडजर्नमेण्ट-मोशन)।

स्थगित—वि० रोका हुआ। अवरुद्ध। जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी।

स्थल—संज्ञा पुं० १. भूमि। २. जलहीन भूमि। खुश्की। ३. स्थान। जगह। ४. अवसर। मौका।

स्थलकमल—संज्ञा पुं० कमल के आकार का एक फूल, जो जमीन पर होता है।

स्थलचर, स्थलचारी—वि० जमीन पर रहनेवाला या विचरण करनेवाला।

स्थलज—वि० स्थल या जमीन में पैदा होनेवाला। जो जमीन में पैदा हुआ हो।

स्थलपद्म—संज्ञा पुं० दे० "स्थलकमल"।

स्थलयुद्ध—संज्ञा पुं० जमीन पर होनेवाली लड़ाई।

स्थल-सेना—संज्ञा स्त्री० जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही, घुड़सवार, तोप आदि चलानेवाले।

स्थलालेख—संज्ञा पुं० किसी स्थल का रेखाचित्र। किसी जमीन का नक्शा।

स्थली—संज्ञा स्त्री० १. खुश्क जमीन। भूमि। २. स्थान। जगह।

स्थलीय—वि० १. स्थल या भूमि-संबंधी। स्थल का। २. किसी स्थान का। स्थानीय।

स्थविर—संज्ञा पुं० १. बुड्ढा। २. वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु। ३. ब्रह्मा।

स्थाणु—संज्ञा पुं० १. थूनी। खंभ। २. पेड़ का वह धड़, जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों। ठूँठ। ३. शिव।

वि० स्थिर। अचल।

स्थान—संज्ञा पुं० १. जगह। भूमि। जमीन। २. मैदान। ३. स्थिति। ठहराव। टिकाव। ४. डेरा। घर। आवास। ५. काम करने की जगह। पद। ओहदा। ६. मंदिर। देवालय। ७. अवसर। मौका।

स्थानच्युत—वि० जो अपने स्थान से गिर गया हो। जो अपने पद से हट गया हो या हटाया गया हो।

स्थानभ्रष्ट—वि० दे० "स्थानच्युत"।

स्थानांतर—संज्ञा पुं० वर्त्तमान स्थान से भिन्न स्थान। एक जगह से दूसरी जगह। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। तबादला।

स्थानांतरण—संज्ञा पुं० एक जगह से दूसरी जगह पर पहुँचाना, भेजना या रखना।

स्थानांतरित—वि० जो एक स्थान से हटकर दूसरे स्थान पर गया हो। जिसका तबादला हुआ हो।

स्थानापन्न—वि० दूसरे की जगह पर अस्थायी रूप से काम करने वाला। एवजी। कायम-मुकाम।

स्थानिक—वि० १. उस जगह का, जहाँ से कोई बात कही जाय। २. उस स्थान का, जिसके विषय में कुछ कहा गया हो। दे० "स्थानीय"।

स्थानिक-कर—संज्ञा पुं० किसी जगह पर लगनेवाला कर। (अंग्रे०—लोकल टैक्स)।

स्थानीय—वि० १. उस जगह का, जहाँ से कोई बात कही जाय। २. जिस जगह के बारे में कुछ कहा गया हो, वहाँ से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. स्थान-विशेष से सम्बन्ध रखनेवाला। स्थानिक।

स्थापक—वि० १. स्थापना करनेवाला। कायम करनेवाला। २. मूर्त्ति बनानेवाला। ३. सूत्रधार का सहकारी (नाटक)। ४. कोई संस्था स्थापित करनेवाला। संस्थापक।

स्थापत्य—संज्ञा पुं० १. वह विद्या, जिसमें भवन-निर्माण-संबंधी सिद्धान्तों आदि का विवेचन होता है। २. भवन-निर्माण। राजगीरी। मेमारी। वास्तुविद्या।

स्थापत्यकला—संज्ञा पुं० भवन-निर्माण-

कला या विद्या। वास्तु-कला। दे० "स्थापत्य"।

स्थापत्य वेद—संज्ञा पुं० वह उपवेद, जिसमें वास्तुशिल्प या भवन-निर्माण का विषय वर्णित है।

स्थापन—संज्ञा पुं० [वि० स्थापनीय] १. स्थापित करने का काम। २. खड़ा करना। उठाना। ३. रखना। जमाना। ४. नया काम जारी करना। ५. (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। प्रतिपादन। साबित करना। ६. निरूपण।

स्थापना—संज्ञा स्त्री० १. स्थित करना। बैठाना। थापना। २. स्थापित करना। प्रतिष्ठित करना। देवमूर्ति आदि की प्रतिष्ठा या स्थापना। ३. सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन करना। ४. जमा कर रखना।

स्थापित—वि० १. प्रतिष्ठित। जिसकी स्थापना की गई हो। जिसे कायम किया गया हो। रखा हुआ। २. व्यवस्थित। ३. निर्दिष्ट।

स्थायित्व—संज्ञा पुं० १. स्थिरता। दृढ़ता। मजबूती। २. स्थायी होने का भाव।

स्थायी—वि० १. स्थिर रहनेवाला। २. ठहरनेवाला। ३. बहुत समय तक कायम रहनेवाला। ४. मुस्तकिल। ५. बहुत दिन चलनेवाला। ६. टिकाऊ।

स्थायी कोष—संज्ञा पुं० किसी संस्था आदि की वह धन-राशि, जो उसे स्थायी बनाए रखने के लिए संचित होती है और जिसका केवल सूद खर्च किया जा सकता है। (अंग्रे०-परमेनेण्ट फण्ड)

स्थायी भाव—संज्ञा पुं० साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक, जो सदा रस में स्थित रहता है और विभाव आदि में अभिव्यक्त होकर रस की उत्पत्ति करता है। यह ९ प्रकार का होता है—रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निंदा, विस्मय और निर्वेद।

स्थायी समिति—संज्ञा स्त्री० १. वह समिति, जो सम्मेलन या सभा के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्य्यों का निर्वाह करती है। २. वह समिति, जो स्थायी रूप से किसी संस्था के कार्य का संचालन करती है। (अंग्रे०—स्टैंडिंग कमिटी)।

स्थाली—संज्ञा स्त्री० १. हँडिया। हंडी। २. मिट्टी की रिकाबी।

स्थालीपुलाक-न्याय—संज्ञा पुं० (हँडिया में पकते हुए चावलों में का एक चावल टटोलकर समझ लेना कि सब चावल पक गए हैं) एक बात को देखकर उस संबंध की और सब बातों का मालूम होना।

स्थावर—वि० [संज्ञा स्थावरता] अपने स्थान से न हट सकनेवाला। स्थिर। अचल। 'जंगम' का उलटा। गैर-मनकूला। संज्ञा पुं० १. अचल संपत्ति। गैर-मनकूला जायदाद। २. पहाड़।

स्थावर सम्पत्ति—संज्ञा स्त्री० ऐसी सम्पत्ति या जायदाद, जो अपनी जगह से हटाई न जा सके। अचल सम्पत्ति।

स्थावर विष—संज्ञा पुं० स्थावर पदार्थों में होनेवाला जहर।

स्थित—वि० १. अपने स्थान पर ठहरा हुआ। अवलंबित। जमा हुआ। २. बैठा हुआ। विद्यमान। मौजूद। ३. अपनी प्रतिज्ञा पर अटल।

स्थितप्रज्ञ—वि० १. समस्त मनोविकारों से रहित। आत्म-संतोषी। २. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो।

स्थिति—संज्ञा स्त्री० १. निवास। अवस्थान। अवस्था। २. रहना। ठहरना। टिकाव। ठहराव। ३. दशा। हालत। ४. पद। दर्जा। ५. एक स्थान या अवस्था में रहना। ६. निरंतर बना रहना। अस्तित्व। ७. पालन।

स्थितिस्थापक—संज्ञा पुं० वह गुण, जिससे कोई वस्तु नई स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय। वि० १. लचीला। २. किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था प्राप्त करानेवाला।

स्थितिस्थापकता—संज्ञा स्त्री० लचीलापन।

स्थिर—वि० १. अटल। स्थायी। सदा बना रहनेवाला। २. नियत। ३. निश्चल। ४. निश्चित। ५. शांत।

स्थिरचित्त—वि० दृढ़चित्त। जिसका मन स्थिर या दृढ हो।

स्थिरता—संज्ञा स्त्री० स्थायित्व। स्थिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। दृढ़ता। मजबूती। धैर्य।

स्थिरबुद्धि—वि० जिसकी बुद्धि चंचल न हो। दृढ़चित्त।

स्थिरीकरण—संज्ञा पुं० १. स्थिर करना। निश्चित करना। २.स्थायी करना। दृढ़ करना। ३. घटती-बढ़ती रहनेवाली चीजों का स्वीरूप या मान स्थिर करना। ४. मूल्य या। भाव आदि स्थायी रूप से निश्चित करना।

स्थूल—वि० १. मोटा। २.आसानी से दिखाई देने या समझ में आनेवाला। ३. 'सूक्ष्म' का उलटा। मोटे हिसाब से अनुमान किया हुआ या ध्यान में आया हुआ।

संज्ञा पुं० इंद्रियों-द्वारा ग्रहण हो सकनेवाली वस्तु, जैसे—आँख, कान, नाक, मुँह आदि इंद्रियों से ग्रहण हो सकनेवाली चीजें।

स्थूलता—संज्ञा स्त्री० १. मोटाई। २. भारीपन। ३. स्थूल होने का भाव।

स्थैर्य—संज्ञा पुं० १. दृढ़ता। २. स्थिरता।

स्नात—वि० जो स्नान कर चुका हो। नहाया हुआ।

स्नातक—संज्ञा पुं० १. को विद्या अध्ययन तथा ब्रह्मचर्यव्रत समाप्त कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करनेवाला। २. जो विश्वविद्यालय की किसी परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका हो।

स्नान—संज्ञा पुं० १. शरीर को साफ करने के लिए पानी से धोना। नहाना। सरोवर आदि में नहाना। २. शरीर के अंगों को धूप या हवा के सामने करना कि उसके ऊपर उनका पूरा असर पड़े। जैसे—वायु-स्नान।

स्नानागार—संज्ञा पुं० नहाने का कमरा।

स्नायविक—वि० स्नायु-संबंधी। नसों से संबंध रखनेवाला।

स्नायु—संज्ञा स्त्री० शरीर के भीतर की नसें, जिनसे गर्मी, ठंडक और कष्ट आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध—वि० [संज्ञा स्त्री० स्निग्धता] १.जिसमें स्नेह या प्रेम हो। कोमल। दयालु। २. जिसमें स्नेह या तेल हो। चिकना।

स्निग्धता—संज्ञा स्त्री० १. स्निग्ध या स्नेहपूर्ण होने का भाव। प्रिय होने का भाव। कोमलता। २. चिकनाहट। स्निग्ध या चिकना होने का भाव।

स्नेह—संज्ञा पुं० १. प्यार। प्रेम। मुहब्बत। (माता-पिता का अपनी सन्तान पर या बड़ों का छोटों पर प्रेम)। २. चिकना पदार्थ। तेल। ३. कोमलता।

स्नेहपात्र—संज्ञा पुं० प्यारा। प्रेमपात्र।

स्नेहपान—संज्ञा पुं० वैद्यक की एक क्रिया, जिसमें खास-खास रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं।

स्नेही—संज्ञा पुं० स्नेह करनेवाला। प्रेमी।

स्पंदन—संज्ञा पुं० १. काँपना। धीरे-धीरे हिलना। २. (अंगों आदि का) फड़कना।

स्पंदित—वि० फड़कता हुआ। हिलता या काँपता हुआ।

स्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री० १. किसी के मुकाबले में आगे बढ़ने की इच्छा। होड़। २. जलन। डाह। दूसरे की उन्नति देखकर दुखी होना।

स्पर्द्धी—वि० स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्श—संज्ञा पुं० १. छूने का भाव या क्रिया। २. छूना। ३. व्याकरण के अनुसार "क" से लेकर "म" तक के २५ व्यंजन, जिनके उच्चारण में वागिंद्रिय का द्वार बन्द रहता है। ४. ग्रहण के समय सूर्य्य या चंद्रमा पर छाया पड़ने का आरंभ।

स्पर्शजन्य—वि० १. स्पर्श या छूने से उत्पन्न। छूत से पैदा होनेवाला। २. संक्रामक।

स्पर्शेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० छूने की इंद्रिय। त्वचा। चमड़ा।

स्पर्शमणि—संज्ञा पुं० पारस पत्थर।

स्पर्शास्पर्श—संज्ञा पुं० छूत-अछूत का विचार। छूने या न छूने का भाव या विचार।

स्पर्शी—वि० छूनेवाला।

स्पर्शेन्द्रिय—संज्ञा स्त्री० वह इंद्रिय, जिससे स्पर्श या छूने का ज्ञान होता है। त्वचा।

स्पष्ट—वि०. साफ। साफ दिखाई देने या

समझ में आनेवाला। जिसे देखने या समझने में कठिनाई, सन्देह या धोखा न हो।
क्रि० वि० स्पष्ट रूप से। साफ-साफ।

स्पष्ट कथन–संज्ञा पुं० साफ-साफ कहना बिना डर या संकोच के कहना। किसी भी कही हुई बात को ठीक उसी रूप में कहना, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हो।

स्पष्टतया–क्रि० वि० स्पष्ट रूप से। साफ-साफ।

स्पष्टता–संज्ञा स्त्री० स्पष्ट होने का भाव। सफाई।

स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी–संज्ञा पुं० साफ-साफ कहनेवाला। बिना किसी डर, संकोच या दुराव के साफ बात कहनेवाला।

स्पष्टीकरण–संज्ञा पुं० १. स्पष्ट या साफ करने की क्रिया। २. किसी कठिन बात को इस तरह कहना कि वह आसानी से समझ में आ जाय। ३. किसी बात के बारे में सन्देह दूर करना। ४. किसी बात की सफाई देना।

स्पिनिंग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] कताई का काम।

स्पिरिट–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. आत्मा। २. सूक्ष्म शरीर। ३. जीवन-शक्ति। ४. एक प्रसिद्ध तरल पदार्थ, जो जलाने और दवा के काम मे आता है। ५. बहुत तेज मादक द्रव्य। शराब। सत्व।

स्पीकर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. बोलनेवाला। वक्ता। भाषण करनेवाला। व्याख्यान देनेवाला। २. विधान-सभा, विधान-परिषद् या संसद् का अध्यक्ष।

स्पीच–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] व्याख्यान। भाषण।

स्पीड–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. गति। चाल। २. तेज चाल।

स्पृक्का–संज्ञा स्त्री० १. लजालु। लाजवंती। २. असबरग। ३. ब्राह्मी बूटी।

स्पृश–वि० छूनेवाला।

स्पृश्य–वि० स्पर्श करने के योग्य। छूने लायक।

स्पृष्ट–वि० स्पर्श किया हुआ। छूआ हुआ। संज्ञा पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न, जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे को पूरी तरह छू लेते हैं। जैसे 'प', 'म'।

स्पृहणीय–वि० १. जिसके लिए इच्छा या कामना की जा सके। २. जिसे पाने की इच्छा करना उचित हो। वांछनीय।

स्पृहा–संज्ञा स्त्री० कामना। इच्छा। चाह।

स्पृही–वि० इच्छा करनेवाला।

स्पेलिंग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] अक्षर-विन्यास। हिज्जे।

स्पेशल–वि० [अंग्रे०] विशेष। खास। दूसरों की अपेक्षा विशेषता रखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] किसी विशेष व्यक्ति, अधिकारी या विशेष कार्य के लिए चलने वाली रेलगाड़ी।

स्पोर्ट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. खेलकूद। क्रीड़ा। लीला। विहार। २. हँसी।

स्प्रिंग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. कमानी। लचीला तार। २. वसंत ऋतु। ३. जल का सोता। झरना।

स्फटिक–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर, जो काँच के समान पारदर्शी होता है। २. शीशा। काँच। ३. सूर्यकांत मणि। ४. फिटकिरी।

स्फार–वि० १. फैला हुआ। लम्बा-चौड़ा। २. बहुत। ३. प्रबल। ४. विकट। घना, जैसे कुहरा।

स्फाल–संज्ञा पुं० स्फूर्ति। स्फुरण। हिलना। फड़कना।

स्फीत–वि० १. फूला हुआ। २. फैला हुआ। ३. बढ़ा हुआ। समृद्ध।

स्फीति–संज्ञा स्त्री० १. फैलना। फूलना। २. वृद्धि। बढ़ती। जैसे—मुद्रा-स्फीति।

स्फुट–वि० १. खिला हुआ। विकसित। २. सामने दिखाई देनेवाला। व्यक्त। प्रकाशित। ३. स्पष्ट। साफ। ४. फुटकर। अलग-अलग।

स्फुटन–संज्ञा पुं० १. फूटना। २. खिलना। फूलना (फूल का)। ३. सामने आना।

स्फुटित–वि० १. खिला हुआ। २. विकसित। जो स्पष्ट किया गया हो। ३. हँसता हुआ।

स्फुरण—संज्ञा पुं० धीरे-धीरे हिलना। अंग का फड़कना। दे० "स्फूर्त्ति"।

स्फुरित—वि० जिसमें स्फुरण हो। हिलता हुआ। फड़कता हुआ।

स्फुलिंग—संज्ञा पुं० चिनगारी।

स्फूर्त्ति—संज्ञा स्त्री० १. फुरती। तेजी। २. कोई काम करने के लिए मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३. फड़कना। स्फुरण।

स्फोट—संज्ञा पुं० १. फूटना। किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना। फोड़ा, फुंसी आदि। २. दे० "विस्फोट"।

स्फोटक—संज्ञा पुं० १. फूटकर निकलनेवाला पदार्थ। फोड़ा। फुंसी। २. दे० "विस्फोटक"।

स्फोटन—संज्ञा पुं० १. भीतर से फोड़ना। २. विदारण। फाड़ना।

स्मर—संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. स्मरण। याद।

स्मरण—संज्ञा पुं० १ याद। किसी देखी, सुनी या अनुभव में आई हुई बात का फिर से मन में आना। स्मृति। २. नौ प्रकार की भक्ति में से एक, जिसमें उपासक अपने उपास्य देव को याद करता रहता है। ३. काव्य में एक अलंकार, जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर किसी विशेष पदार्थ या बात की याद आने का वर्णन होता है।

स्मरणपत्र—संज्ञा पुं० किसी को कोई बात याद दिलाने के लिए लिखा गया पत्र। याद दिलाने की चिट्ठी। [अंग्रे०—रिमाइण्डर]

स्मरणशक्ति—संज्ञा स्त्री० याददाश्त। याद रखने की शक्ति। वह मानसिक शक्ति, जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके रख छोड़ती है।

स्मरणीय—वि० याद रखने लायक। स्मरण रखने योग्य।

स्मरना*—क्रि० स० याद करना। स्मरण करना।

स्मरारि—संज्ञा पुं० महादेव (कामदेव के शत्रु)।

स्मारक—वि० स्मरण करानेवाला। याद दिलानेवाला। संज्ञा पुं० १. वह कार्य या वस्तु, जो किसी की स्मृति या याद बनाए रखने के लिए हो। यादगार। २. अपनी याद दिलाने के लिए किसी को दी गई चीज।

स्मारिका—संज्ञा स्त्री० याद दिलाने की चिट्ठी। स्मरण-पत्र।

स्मार्त्त—संज्ञा पुं० १. स्मृतियों में लिखे हुए कार्य। २. स्मृतियों में लिखे अनुसार सब काम करनेवाला। वेदान्त-सिद्धान्त का अनुयायी। ३. स्मृतिशास्त्र का विद्वान्। वि० स्मृति-संबंधी। स्मृति का।

स्मार्त्तिक—वि० १. स्मृति का। २. स्मृति-सम्बन्धी।

स्मालपाक्स—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] शीतला। चेचक।

स्मित—संज्ञा पुं० मुसकान। धीमी हँसी। वि० खिला हुआ। विकसित।

स्मिति—संज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।

स्मृत—वि० याद किया हुआ। जो स्मरण में आया हो।

स्मृति—संज्ञा स्त्री० १. स्मरण। याद। स्मरण-शक्ति के द्वारा संचित होनेवाला ज्ञान। २. हिंदुओं के धर्मशास्त्र, जिनमें धर्म्म, दर्शन, आचार-व्यवहार, शासननीति आदि का विवेचन है और जिनकी रचना मुनियों ने वेदों का स्मरण करके की थी। ३. १८ की संख्या। ४. एक प्रकार का छंद।

स्मृतिकार—संज्ञा पुं० स्मृति या धर्म-शास्त्र बनानेवाला।

स्मृतिपत्र—संज्ञा पुं० १. वह पत्र या पुस्तिका आदि, जिसमें किसी विषय की खास बातें याद रखने या कराने के लिए लिखी गई हों। २. अपनी माँगें पूरी कराने और उनकी याद दिलाने के लिए दिया जानेवाला पत्र। किसी संस्था आदि के मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। (अंग्रे०—मेमोरेण्डम)।

स्यंद—संज्ञा पुं० १. टपकना। चूना। २. गलना। ३. पसीना निकलना। ४. चंद्रमा।

स्यंदन—संज्ञा पुं० १. टपकना। चूना। रसना। २. गलना। ३. जाना। चलना। ४. रथ, विशेषतः युद्ध में काम आनेवाला रथ। ५.

हवा। ६. घोड़ा। ७. वृक्ष। ८. चित्र।
स्यमंतक–संज्ञा पुं० पुराणों में कहा गया एक प्रसिद्ध मणि, जिसकी चोरी का आरोप श्रीकृष्णचंद्र पर किया गया था।
स्यात्–अव्य० शायद। कदाचित्।
स्याद्वाद–संज्ञा पुं० अनेकांतवाद। जैन-दर्शन, जिसमें किसी वस्तु के संबंध में कहा जाता है कि स्यात् यह भी है, स्यात् वह भी है, आदि।
स्यान*–वि० दे० "स्याना"।
स्यानप–संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन"।
स्यानपन–संज्ञा पुं० १. चालाकी। २. चतुरता। बुद्धिमानी।
स्याना–वि० [स्त्री० स्यानी] १. चालाक। धूर्त्त। वयस्क। बालिग। २. चतुर।
संज्ञा पुं० १. वयस्क। अधिक उम्रवाला। बड़ा-बूढ़ा। २. ओझा। ३. चिकित्सक। हकीम।
स्यानापन–संज्ञा पुं० १. युवावस्था। सयाना होने की अवस्था। २. होशियारी। ३. चालाकी। धूर्त्तता।
स्यापा–संज्ञा पुं० मरे हुए व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।
मुहा०—स्यापा पड़ना=१. रोना-धोना शुरू होना। २. बिलकुल उजाड़ या सुनसान होना।
स्यामलिया–संज्ञा पुं० दे० "साँवला"।
स्यार†–संज्ञा पुं० [स्त्री० स्यारिनी, स्यारी] गीदड़। सियार।
स्यारपन–संज्ञा पुं० सियार या गीदड़ का-सा स्वभाव।
स्यारी–संज्ञा स्त्री० सियार की मादा। गीदड़ी।
स्याल–संज्ञा पुं० [स्त्री० स्याली] साला। पत्नी का भाई।
संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार"।
स्यालिया†–संज्ञा पुं० सियार। गीदड़।
स्याली–संज्ञा स्त्री० साली। पत्नी की बहन।
स्याह–वि० [फ़ा०] काला। काले रंग का।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
स्याहा–संज्ञा पुं० दे० "सियाहा"।
स्याही–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. रोशनाई। २. कालापन। कालिमा। कालिख। ३. साही (जंतु)।
मुहा०—स्याही जाना=१. बालों का कालापन जाना। २. जवानी का बीत जाना।
स्यों, स्यो*–अव्य० १. सह। साथ। सहित। २. पास। निकट।
स्रंसन–संज्ञा पुं० गर्भपात। नाश। पतन।
स्रक्–संज्ञा स्त्री०, पुं० १. फूलों की माला। २. एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है।
स्रग*–संज्ञा स्त्री०, पुं० दे० "स्रक्"।
स्रग्धरा–संज्ञा स्त्री० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य होते हैं।
स्रग्विणी–संज्ञा स्त्री० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।
स्रज–संज्ञा स्त्री० माला।
स्रवण–संज्ञा पुं० १. बहना। बहाव। प्रवाह। २. पसीना। ३. गर्भ का गिरना। गर्भपात। ४. मूत्र। पेशाब।
स्रवना*–क्रि० अ० १. बहना। २. चूना। टपकना। ३. गिरना।
क्रि० स० १. बहाना। २ टपकाना। ३. गिरना।
स्रष्टा–संज्ञा पुं० १. सृष्टि या संसार की रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।
वि० सृष्टि रचनेवाला। जगत् का रचयिता।
स्रस्त–वि० १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. थका हुआ। शिथिल।
स्राव–संज्ञा पुं० १. बहना। गिरना। टपकना। रस-रसकर चूना। क्षरण। २. गर्भपात। ३. निर्यास। रस।
स्रावक–वि० स्राव करानेवाला। चुआने या टपकानेवाला। बहानेवाला।
स्रावित–वि० बहाया या चुआया हुआ।
स्रावी–वि० बहानेवाला। टपकाने या चुआनेवाला।
स्राव्य–वि० बहाने योग्य। चुआने या टपकाने लायक।
स्रुत–वि० १. बहा हुआ। २. चुआ हुआ। *३. दे० "श्रुत"।

स्रुतिमाथ*–संज्ञा पुं० विष्णु।

स्रुवा–संज्ञा स्त्री० हवन आदि में घी की आहुति देने के लिए लकड़ी की एक प्रकार की छोटी कलछी। सुरवा।

स्रोत–संज्ञा पुं० १. पानी का सोता। झरना। २. पानी का बहाव। धारा। ३. नदी। ४. वह आधार या साधन, जिससे कोई चीज बराबर निकलती या मिलती रहे।

स्रोतस्विनी–संज्ञा स्त्री० नदी।

स्लिप–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. कागज की पर्ची। २. फिसलना। ३. भूल।

स्लीपर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] चट्टी। जूती। एक तरह का बिना फीते का जूता।

स्वः–संज्ञा पुं० स्वर्ग।

स्वःपथ–संज्ञा पुं० स्वर्ग का मार्ग। मृत्यु।

स्वःसरिता–संज्ञा स्त्री० गंगा।

स्व–वि० १. अपना। निज का। २. प्रत्यय — एक प्रत्यय, जो कुछ शब्दों के अन्त में लगकर भाववाचक होने का अर्थ देता है—जैसे राजस्व।

स्वकीय–वि० अपना। निजी।

स्वकीया–संज्ञा स्त्री० अपने ही पति से प्रेम करनेवाली स्त्री या नायिका। (साहित्य में स्वकीया नायिका।)

स्व-ख्यापन–संज्ञा पुं० खुद अपनी बड़ाई करके अपने को मशहूर करना। आत्म-प्रसिद्धि।

स्वगत–संज्ञा पुं० दे० "स्वगत-कथन"।
क्रि० वि० आप ही आप। अपने आपसे (कहना या बोलना)। स्वयं।
वि० मन में आया हुआ। मनोगत। अपने में आया या लाया हुआ। आत्मगत।

स्वगत-कथन–संज्ञा पुं० आत्मगत। अश्राव्य। नाटक में पात्र का आप ही आप इस प्रकार बोलना, मानो वह किसी को सुनाना नहीं चाहता और न कोई उसकी बात सुनता है।

स्वचालित–वि० अपने आप चलनेवाला। (अंग्रे०-अ टोमेटिक।)

स्वच्छंद–वि० इच्छानुसार काम करनेवाला। स्वाधीन। स्वतंत्र। आजाद। मनमाना
क्रि० वि० मनमाना। बेधड़क। बिना किसी संकोच या विचार के। निर्द्वंद्व।

स्वच्छंदचारी–संज्ञा पुं० मनमौजी। स्वेच्छाचारी। निरकुंश।

स्वच्छन्दता–संज्ञा स्त्री० स्वतंत्रता। आजादी।
–वि० १. साफ। जिसमें कोई गंदगी न हो। निर्मल। २. स्पष्ट। ३. उजला। सफेद। ४. शुद्ध। पवित्र।

स्वच्छता–संज्ञा स्त्री० स्वच्छ होने का भाव। सफाई। निर्मलता। शुद्धता।

स्वज–वि० अपने से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. पुत्र। बेटा। २. खून। पसीना।

स्वजन–संज्ञा पुं० १. अपने परिवार का। सगा। २. सम्बन्धी। रिश्तेदार।

स्वजनता–संज्ञा स्त्री० १. आत्मीयता। अपनापन। २. नातेदारी।

स्वजनि, स्वजनी*–संज्ञा स्त्री० १. अपने परिवार की स्त्री। सजनी। २. सहचरी। सखी। सहेली।

स्वजन्मा–वि० अपने आपसे उत्पन्न। ईश्वर।

स्वजात–वि० अपने से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।

स्वजाति–संज्ञा स्त्री० अपनी जाति।
वि० अपनी जाति या कौम का।

स्वजातिद्विष–संज्ञा पुं० १ अपनी ही जाति से द्वेष या वैर करनेवाला। २. कुत्ता।

स्वजातीय–वि० अपनी जाति का। अपने वर्ग का।

स्वतंत्र–वि० १. स्वाधीन। आजाद। जो किसी दूसरे के अधीन न हो, केवल अपने अधीन हो। मुक्त। स्वेच्छाचारी। २. अलग। जुदा। पृथक्। ३. बंधन से रहित।

स्वतंत्रता–संज्ञा स्त्री० स्वाधीनता। आजादी। स्वतंत्र होने का भाव।

स्वतः–अव्य० अपने आप। आप ही।

स्वतोविरोधी–संज्ञा पुं० अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।

स्वत्व–संज्ञा पुं० १. हक। "स्व" या अपना होने का भाव। २. किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने या लेने का अधिकार।

स्वत्वाधिकारी–संज्ञा पुं० १. किसी विषय

का पूरा स्वत्व या अधिकार रखनेवाला। २. स्वामी। मालिक।

स्वदृष्ट–वि० अपना देखा हुआ।

स्वदेश–संज्ञा पुं० अपना देश। मातृ-भूमि। जन्म-भूमि। वतन।

स्वदेशी–वि० अपने देश का। अपने देश से सम्बन्ध रखनेवाला। अपने देश का बना हुआ।

स्वदोषज–वि० अपने दोष से उत्पन्न होनेवाला पाप।

स्वधर्म–संज्ञा पुं० अपना धर्म। अपना कर्त्तव्य।

स्वधा–अव्य० एक शब्द, जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है।

संज्ञा स्त्री० १. पितरों को दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ-अन्न। २. दक्ष की एक कन्या।

स्वधाकर, स्वधाकार–वि० श्राद्ध करनेवाला।

स्वधाधिप–संज्ञा पुं० अग्नि।

स्वन–संज्ञा पुं० शब्द। आवाज।

स्वनामधन्य–वि० जो अपने नाम के कारण प्रसिद्ध हो। महापुरुष।

स्वनामा–वि० अपने नाम से प्रसिद्ध होनेवाला।

स्वप्न–संज्ञा पुं० १. नींद। सोने की क्रिया। २. सोते समय पूरी नींद न आने के कारण कुछ घटनाएँ दिखाई देना। नींद में के विचार या दिखाई देनेवाली घटनाएँ। ख्वाब। सपना। ३. सहज में पूर्ण न होनेवाली या असम्भव कल्पना।

स्वप्नक–वि० सोनेवाला।

स्वप्नगृह–संज्ञा पुं० सोने का कमरा। शयनागार।

स्वप्नदर्शी–वि० स्वप्न देखनेवाला। बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करनेवाला।

स्वप्नदोष–संज्ञा पुं० १. नींद में सपना देखते हुए वीर्य गिर जाना। २. इस तरह वीर्य गिरने की बीमारी।

स्वप्नाना–क्रि० स० स्वप्न देखना। स्वप्न दिखाना।

स्वप्निल–वि० १. स्वप्न देखता हुआ। सोया हुआ। २. सुलानेवाला। ३. स्वप्न-सम्बन्धी। ४. स्वप्न का।

स्वभाव–संज्ञा पुं० १. अपने आप पैदा होनेवाला। २. सदा बना रहनेवाला मूल गुण। ३. मन की प्रवृत्ति। प्रकृति। ४. मिजाज। आदत।

स्वभावज–वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक। सहज।

स्वभावतः–अव्य० सहज ही। स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से।

स्वभावसिद्ध–वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक।

स्वभू–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। वि० अपने आप उत्पन्न होनेवाला।

स्वयं–अव्य १. आप। खुद। अपने से। २. आप से आप। खुद ब खुद।

स्वयंदत्त–संज्ञा पुं० माता-पिता की मृत्यु होने पर या उनके द्वारा परित्यक्त होने पर जो पुत्र अपने आप को किसी दूसरे को देकर उसका पुत्र बन जाय।

स्वयंदूत–संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वयंदूती] नायिका पर अपना प्रेम या कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक। अपना दूत आप बननेवाला नायक।

स्वयंदूती–संज्ञा स्त्री० नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

स्वयंपाक–संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वयंपाकी] १. अपने हाथ से अपना भोजन बनाना। २. अपने हाथ का बना हुआ खाना।

स्वयंप्रकाश–संज्ञा पुं० अपने आप प्रकाशित होनेवाला। परमात्मा।

स्वयंभव–वि० दे० "स्वयंभू"।

स्वयंभू–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। काल। ४. कामदेव।

वि० जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंभूत–वि० दे० "स्वयंभू"।

स्वयंवर–संज्ञा पुं० १. भारत की एक प्राचीन विवाह-प्रथा, जिसमें कन्या उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिए आप वर चुनती थी। स्वयंवरण। २. वह रंगभूमि, जहाँ उपस्थित व्यक्तियों में से कन्या अपने लिए वर चुने।

स्वयंवरण–संज्ञा पुं० कन्या का इच्छानुसार अपना वर चुनना। दे० "स्वयंवर"।

स्वयंवरा–संज्ञा स्त्री० अपने इच्छानुसार अपना पति चुननेवाली अविवाहिता कन्या।

स्वयंसिद्ध—वि० जो अपने आप सिद्ध हो चुका हो। जिसकी सिद्धि के लिए किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो।

स्वयंसेवक—संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वयंसेविका] बिना किसी वेतन या पुरस्कार के अपनी इच्छा से काम करनेवाला। स्वेच्छासेवक।

स्वयमेव—क्रि० वि० अपने आप ही।

स्वर्—संज्ञा पुं० १. आकाश। स्वर्ग। २. परलोक।

स्वर—संज्ञा पुं० १. शब्द। आवाज। ध्वनि। २. संगीत में वह शब्द, जिसके उतार-चढ़ाव आदि का कोई निश्चित रूप हो। सुर। स्वर सात होते हैं, जिनके नाम क्रम से षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम-धैवत और निशाद हैं। इनके संक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं। ३. व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द, जिसका उच्चारण बिना किसी सहायता के होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण में सहायक होता है। हिंदी वर्णमाला में ११ स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ। ४. वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव। दे० 'स्वर्'। ५. आकाश।

मुहा०—स्वर उतारना=स्वर नीचा या धीमा करना। स्वर चढ़ाना=स्वर ऊँचा करना।

स्वरग्राम—संज्ञा पुं० संगीत में 'सा' से 'नि' तक के सात स्वरों का समूह। सप्तक।

स्वरपात—संज्ञा पुं० १. किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ रुक जाना। २. उचित रुकाव या वेग आदि का ध्यान रखते हुए शब्दों का उच्चारण।

स्वरभंग—संज्ञा पुं० आवाज का बैठना। गला बैठने का रोग।

स्वरमंडल—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा, जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरनासिका—संज्ञा स्त्री० वंशी। बाँसुरी।

स्वर-लिपि—संज्ञा स्त्री० संगीत में किसी गीत या तान आदि में लगनेवाले स्वरों का क्रमानुसार लेख।

स्वरवेधी—संज्ञा पुं० दे० "शब्दवेधी"।

स्वरशास्त्र—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें स्वर-संबंधी बातों का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।

स्वरसंक्रम—संज्ञा पुं० स्वरों का उतार-चढ़ाव।

स्वरस—संज्ञा पुं० पत्तियों आदि ओषधियों को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस (वैद्यक)।

स्वरांत—वि० वह शब्द, जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला।

स्वराज्य—संज्ञा पुं० अपना राज्य, अपना शासन। वह राज्य या शासन-प्रणाली, जिसमें किसी देश के निवासी अपने देश का सब शासन और प्रबंध बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के स्वयं करते हों।

स्वराट्—संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. ईश्वर। ३. स्वराज्य शासन-प्रणालीवाले देश का प्रधान या राजा। ४. एक वैदिक छंद।
वि० जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरापगा—संज्ञा स्त्री० आकाशगंगा। मंदा-किनी।

स्वराष्टक—संज्ञा पुं० संगीत में एक प्रकार का संकर राग।

स्वराष्ट्र—संज्ञा पुं० अपना देश, राज्य।

स्वराष्ट्र-मंत्री, स्वराष्ट्र-सचिव—संज्ञा पुं० किसी राज्य का वह मंत्री, जिसके अधीन पुलिस, जेल आदि जैसे राज्य के आन्तरिक विषयों का शासन-प्रबन्ध हो। गृहमंत्री। (अंग्रे०—होम मिनिस्टर)

स्वरित—संज्ञा पुं० वह स्वर, जिसका उच्चारण न बहुत जोर से हो और न बहुत धीरे से हो।
वि० १. स्वर से युक्त। २. गूंजता हुआ।

स्वरूप—संज्ञा पुं० १. आकार। आकृति। सूरत। शक्ल। २. आत्मा ३. स्वभाव। ४. मूर्ति या चित्र आदि। ५. देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ६. किसी देवता का रूप धारण करनेवाला।
वि० १. सुन्दर। खूबसूरत। २. तुल्य। समान।

अव्य० तौर पर। रूप में।

स्वरूपज्ञ—संज्ञा पुं० परमात्मा और आत्मा के स्वरूप को पहचाननेवाला। तत्त्वज्ञ।

स्वरूपता—संज्ञा स्त्री० स्वरूप का भाव या धर्म।

स्वरूपवान्—वि० [स्त्री० स्वरूपवती] अच्छे स्वरूपवाला। सुंदर।

स्वरूपी—वि० १. रूपवाला। स्वरूपयुक्त। २. जो किसी के रूप से मिलता हो। जिसने किसी का रूप धारण किया हो। *संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

स्वरोचिस्—संज्ञा पुं० स्वारोचिष् मनु के पिता, जो कलि-नामक गंधर्व के पुत्र थे।

स्वरोद—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा, जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरोदय—संज्ञा पुं० वह शास्त्र, जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

स्वर्गंगा—संज्ञा स्त्री० स्वर्ग में बहनेवाली नदी। 'आकाशगंगा'। मंदाकिनी।

स्वर्ग—संज्ञा पुं० १. हिंदुओं के अनुसार सात लोकों में से तीसरा लोक, जिसके बारे में कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर रहती हैं। देवलोक। २. अन्य धर्मों में इस प्रकार का स्थान। बिहिश्त। ३. वह स्थान, जहाँ स्वर्ग का-सा सुख मिले। बहुत अधिक आनन्द का स्थान। ४. सुख। ५. ईश्वर। ६. आकाश।

मुहा०—स्वर्ग जाना या सिधारना=मरना। देहांत होना।

यौ०—स्वर्ग-सुख=बहुत अधिक और उच्च-कोटि का सुख। स्वर्ग की धार=आकाश-गंगा।

स्वर्गकाम—संज्ञा पुं० स्वर्ग की कामना करने-वाला। स्वर्ग-प्राप्ति का इच्छुक।

स्वर्गगमन—संज्ञा पुं० स्वर्ग जाना। मरना।

स्वर्गगामी—वि० १. स्वर्ग जानेवाला। २. मरा हुआ। स्वर्गीय।

स्वर्गत—वि० जो स्वर्ग चला गया हो। जो मर गया हो। मृत।

स्वर्गतरु—संज्ञा पुं० कल्पतरु।

स्वर्गद—वि० स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गधेनु—संज्ञा स्त्री० कामधेनु।

स्वर्गनदी—संज्ञा स्त्री० आकाशगंगा।

स्वर्गपति—संज्ञा पुं० इन्द्र।

स्वर्गपुरी—संज्ञा स्त्री० इन्द्रपुरी। अमरावती। स्वर्ग।

स्वर्गलाभ—संज्ञा पुं० मरना। मृत्यु। स्वर्ग प्राप्त करना।

स्वर्गलोक—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

स्वर्गवधू-संज्ञा स्त्री० देवांगना। अप्सरा।

स्वर्गवाणी-संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

स्वर्गवास—संज्ञा पुं० मरना। मृत्यु। स्वर्ग में रहना।

स्वर्गवासी—वि० [स्त्री० स्वर्गवासिनी] स्वर्ग में रहनेवाला। जो मर गया हो। स्वर्गीय।

स्वर्गस्थ—वि० स्वर्ग में स्थित। जो स्वर्ग में हो। जो मर गया हो।

स्वर्गारोहण—संज्ञा पुं० स्वर्ग की ओर पैर बढ़ाना। मरना। मृत्यु।

स्वर्गिक—वि० स्वर्ग का। स्वर्ग-सम्बन्धी। स्वर्गीय।

स्वर्गी—वि० स्वर्ग में रहनेवाला। जो मर गया हो।

स्वर्गीय—वि० [स्त्री० स्वर्गीया] स्वर्ग का। स्वर्ग-सम्बन्धी। जो मर गया हो।

स्वर्ण—संज्ञा पुं० १. सोना-नामक बहुमूल्य धातु। कंचन। २. धतूरा। ३. नागकेसर।

स्वर्णकदली—संज्ञा स्त्री० सोनाकेला।

स्वर्णकमल—संज्ञा पुं० लाल कमल।

स्वर्णकार—संज्ञा पुं० सुनार।

स्वर्णकीट—संज्ञा पुं० जुगनू। सोनकिरवा। एक तरह का चमकीला कीड़ा, जो अँधेरे में उड़ने पर प्रकाश करता है।

स्वर्णगिरि—संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।

स्वर्णजयंती—संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या संस्था आदि के ५० वें वर्ष मनाई जानेवाली वर्षगाँठ। (अंग्रे०—गोल्डेन जुबली)।

स्वर्णदिवस—संज्ञा पुं० अत्यन्त शुभ दिन या महत्वपूर्ण दिन।

स्वर्णपत्र—संज्ञा पुं० सोने का पत्तर। सोने का तबक।

स्वर्णपर्पटी—संज्ञा स्त्री० वैद्यक में संग्रहणी (दस्तों की बीमारी) के लिए बहुत लाभदायक मानी जानेवाली एक औषध।

स्वर्णपुरी—संज्ञा स्त्री० लंका।

स्वर्णफल—संज्ञा पुं० धतूरा।

स्वर्णभाक्, **स्वर्णभाज्**—संज्ञा पुं० सूर्य्य।

स्वर्णभूमि—संज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ सब प्रकार के सुख हों।

स्वर्णमय—वि० जो सोने का हो। सुनहला।

स्वर्णमाक्षिक—संज्ञा पुं० एक खनिज पदार्थ, जो औषध के काम में आता है और जिसकी गणना उपधातुओं में है।

स्वर्णमुद्रा—संज्ञा स्त्री० सोने का सिक्का। मोहर। अशरफी।

स्वर्णयुग—संज्ञा पुं० ऐसा समय, जब सब प्रकार की समृद्धि और उन्नति हो। श्रेष्ठ युग। सबसे अच्छा समय।

स्वर्णयूथिका—संज्ञा स्त्री० पीली जूही।

स्वर्णिम—वि० सुनहला। सोने के रंग का।

स्वर्धुनी—संज्ञा स्त्री० गंगा।

स्वर्नगरी—संज्ञा स्त्री० अमरावती। स्वर्ग।

स्वर्नदी—संज्ञा स्त्री० स्वर्गंगा। आकाशगंगा।

स्वर्लोक—संज्ञा पुं० स्वर्ग।

स्वर्वेश्या—संज्ञा स्त्री० अप्सरा।

स्वर्वैद्य—संज्ञा पुं० स्वर्ग के वैद्य। अश्विनी-कुमार।

स्वल्प—वि० बहुत थोड़ा। जरा-सा।

स्ववश—वि० जो अपनें वश मे हो। स्वतंत्र। स्वाधीन। जितेन्द्रिय।

स्ववश्य—वि० जो केवल अपने ही में हो। अपने पर अधिकार रखनेवाला।

स्ववासिनी—संज्ञा स्त्री० अपने पिता के घर पर रहनेवाली स्त्री।

स्वविवेक—संज्ञा पुं० भला-बुरा सोचने की शक्ति।

स्वसा—संज्ञा स्त्री० बहिन।

स्वस्ति—अव्य० कल्याण हो। मंगल हो। (आशीर्वाद-वचन)।

संज्ञा स्त्री० १. कल्याण। मंगल। २. ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक। ३. सुख।

स्वस्तिक—संज्ञा पुं० १. एक मंगल-चिह्न। इसका रूप यह है 卐। २. शरीर के खास अंगों में होनेवाला उक्त आकार का चिह्न जो शुभ माना जाता है। ३. हठयोग में एक आसन। ४. चौराहा। ५. एक यंत्र। ६. साँप के फन की रेखा। ७. चावल पीसकर और पानी में मिलाकर बनाया हुआ एक मंगल-द्रव्य, जिसमें देवताओं का निवास मानते हैं।

स्वस्तिवाचन—संज्ञा पुं० [वि० स्वस्तिवाचक] शुभ कार्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य, जिसमें मंत्र-पाठ किया जाता है।

स्वस्तिवाद—वि० आशीर्वाद।

स्वस्त्ययन—संज्ञा पुं० किसी खास कार्य में शुभ के विचार से किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

स्वस्थ—वि० [संज्ञा स्त्री० स्वस्थता] १. नीरोग। तन्दुरुस्त। २. भला-चंगा। ३. जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान।

स्वस्थचित्त—वि० जिसकी तबीअत ठीक हो। जिसका चित्त ठिकाने हो। शांतचित्त।

स्वस्थता—संज्ञा स्त्री० १. स्वस्थ या तन्दुरुस्त होने का भाव। नीरोगता। आरोग्य। स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। २. सावधानी।

स्वाँग—संज्ञा पुं० १. दूसरे का रूप धारण करने के लिए बनावटी वेष। नकल। रूप। २. मजाक का खेल या तमाशा। ३. धोखा देने के लिए बनाया हुआ कोई रूप। ढोंग। आडम्बर।

स्वाँगना*—क्रि० स० बनावटी वेष धारण करना। स्वाँग रचना।

स्वाँगी—संज्ञा पुं० बनावटी वेष धारण करके अपनी जीविका चलानेवाला। बहुरूपिया। ढोंगी।

वि० बनावटी रूप धारण करनेवाला।

स्वांगीकरण—संज्ञा पुं० किसी चीज को अपने शरीर पर इस तरह धारण करना कि वह शरीर में मिलकर एक हो जाय। आत्मसात् करना।

स्वांत—संज्ञा पुं० १. मन। अंतःकरण। २. अपना अन्त। मृत्यु।

स्वाक्षर–संज्ञा पुं० हस्ताक्षर। दस्तखत। अपने लिखे हुए अक्षर।

स्वाक्षरित–वि० अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना दस्तखत किया हुआ।

स्वागत–संज्ञा पुं० आदर-सत्कार। अतिथि या किसी बड़े व्यक्ति के आने पर उसका अभिनंदन करना। अगवानी। अभ्यर्थना।

स्वागतकारिणी-समिति या **सभा**–संज्ञा स्त्री० किसी सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिए संघटित समिति।

स्वागतपतिका–संज्ञा स्त्री० पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न होनेवाली नायिका। आगत-पतिका।

स्वागतप्रिया–संज्ञा पुं० अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न होनेवाला नायक।

स्वागता–संज्ञा स्त्री० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में (र, न, भ, ग, ग) ऽ।ऽ + ।।। + ऽ।। + ऽऽ होता है।

स्वाच्छंद*–संज्ञा पुं० दे० "स्वच्छन्दता"। क्रि० वि० स्वच्छन्दतापूर्वक। स्वतंत्रता या आजादी के साथ। सुख से। सहज से।

स्वातंत्र्य–संज्ञा पुं० दे० "स्वतंत्रता"।

स्वाति–संज्ञा स्त्री० पंद्रहवाँ नक्षत्र, जो फलित ज्योतिष में शुभ माना गया है। कहते हैं कि चातक इसी नक्षत्र की वर्षा का पानी पीता है और इसी वर्षा के जल से मोती उत्पन्न होता है।

स्वातिपंथ–संज्ञा पुं० आकाश-गंगा।

स्वातियोग–संज्ञा पुं० आषाढ़ शुक्ल-पक्ष में स्वाति-नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ योग।

स्वातिसुत–संज्ञा पुं० मोती।

स्वातिसुवन–संज्ञा पुं० दे० "स्वातिसुत"।

स्वाती–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

स्वात्म–वि० अपना।

स्वात्मवध–संज्ञा पुं० आत्महत्या। अपनी आत्मा को मारना।

स्वाद–संज्ञा पुं० १. रसनेंद्रिय (जीभ, मुँह) द्वारा होनेवाला अनुभव। जायका। मजा। २. किसी बात में होनेवाली रुचि या उससे मिलनेवाला आनन्द। ३. चाह। इच्छा। कामना। ४. मीठा रस। ५. रसानुभूति।

मुहा०—स्वाद चखाना=किसी को उसके किए हुए अपराध का दंड देना।

स्वादक–संज्ञा पुं० १. स्वाद लेनेवाला। २. स्वाद जाननेवाला। ३. खाने की चीजें चखनेवाला। ४. स्वाद परखनेवाला।

स्वादन–संज्ञा पुं० स्वाद लेना। चखना। मजा लेना।

स्वादनीय–वि० स्वाद लेने योग्य। जायकेदार। स्वादिष्ठ।

स्वादित–वि० चखा हुआ। स्वाद लिया हुआ।

स्वादिष्ठ–वि० अच्छे स्वादवाला। खाने में अच्छा लगनेवाला। जायकेदार। सुस्वादु।

स्वादी–वि० स्वाद लेनेवाला। मजा लेनेवाला। रसिक।

स्वादु–संज्ञा पुं० १. मीठा रस। मधुरता। २. गुड़। ३. दूध। ४. महुआ। ५. नीबू। वि० १. मीठा। मजेदार। २. जायकेदार। स्वादिष्ट। ३. सुंदर।

स्वादुखंड–संज्ञा पुं० गुड़।

स्वादुतिक्त–संज्ञा पुं० पीलूफल।

स्वादुमूल–संज्ञा पुं० गाजर।

स्वाद्य–वि० स्वाद लेने योग्य।

स्वाधिकार–संज्ञा पुं० अपना अधिकार। स्वतंत्रता। स्वाधीनता।

स्वाधिष्ठान–संज्ञा पुं० हठयोग के अनुसार शरीर के छः चक्रों में से एक, जिसका स्थान शिश्न का मूल माना गया है। (वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र से यौवन और शरीर की प्रजननशक्ति बढ़ती है।)

स्वाधीन–वि० जो केवल अपने अधीन हो, दूसरे के अधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद। निरंकुश।

स्वाधीनता–संज्ञा स्त्री० स्वाधीन होने का भाव। स्वतंत्रता। आजादी।

स्वाधीनपतिका–संज्ञा स्त्री० वह नायिका, जिसका पति उसके वश में हो। पति को अपने वश में करनेवाली नायिका।

स्वाधीनभर्तृका–संज्ञा स्त्री० पति को वश में रखनेवाली नायिका। स्वाधीनपतिका।

स्वाध्याय—संज्ञा पुं० १. नियमानुसार वेदों का अध्ययन। २. अनुशीलन। अध्ययन।

स्वाध्यायी—संज्ञा पुं० स्वाध्याय करनेवाला। वेदपाठी।

स्वाना*†—क्रि० स० दे० "सुलाना"।

स्वानुभव—संज्ञा पुं० अपना अनुभव। अपना तजुर्बा।

स्वानुरूप—वि० अपने रूप का। अपने रूप की तरह। अपने सदृश।

स्वाप—संज्ञा पुं० १. नींद। २. स्वप्न। ३. अज्ञान।

स्वापन—संज्ञा पुं० नींद लानेवाली दवा। प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र, जिसके प्रभाव से शत्रु को नींद आ जाती थी।
वि० नींद लानेवाला।

स्वाभाविक—वि० स्वभाव से होनेवाला। अपने आप होनेवाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती।

स्वाभाविकी—वि० दे० "स्वाभाविक"।

स्वाभाव्य—वि० अपने आप पैदा होनेवाला।
संज्ञा पुं० स्वभाव का भाव। स्वाभाविकता।

स्वाभिमान—संज्ञा पुं० [वि० स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या इज्जत का अभिमान। अपनी मान-मर्यादा का ध्यान।

स्वामिक—वि० १. स्वामी या मालिक का। २. स्वामी-सम्बन्धी। ३. जिसका कोई स्वामी या मालिक हो।

स्वामिकार्त्तिक—संज्ञा पुं० शिव के पुत्र कार्त्तिकेय। स्कंद।

स्वामिता—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामित्व"।

स्वामित्व—संज्ञा पुं० प्रभुत्व। स्वामी होने का भाव।

स्वामिनी—संज्ञा स्त्री० १. मालकिन। २. घर की मालकिन। गृहिणी। ३. श्रीराधिका।

स्वामिस्व—संज्ञा पुं० जमीन के मालिक को निश्चित रूप से मिलनेवाला धन आदि। आविष्कारक या ग्रंथ-लेखक को उसके कार्य से होनेवाले लाभ से, निश्चित रूप से, मिलनेवाला अंश [अंग्रे०—रायल्टी]।

स्वामी—संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वामिनी] १. मालिक। २. किसी वस्तु पर सब प्रकार के अधिकार रखनेवाला। ३. अन्नदाता। जीविका देनेवाला। प्रभु। भगवान्। ४. घर का प्रधान पुरुष। ५. पति। ६. राजा। ७. सेनानायक। ८. कार्त्तिकेय। ९. शिव। १०. विष्णु। ११. साधु, संन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि या सम्बोधन।

स्वाम्य—संज्ञा पुं० स्वामित्व। प्रभुत्व।

स्वायंभुव—संज्ञा पुं० चौदह मनुओं में पहले मनु, जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।

स्वायंभू—संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।

स्वायत्त—वि० जो अपने अधीन हो। जिस पर अपना अधिकार हो। जो अपने कार्यों का संचालन अपने आप करता हो और किसी दूसरे के अधीन न हो।

स्वायत्त शासन—संज्ञा पुं० वह शासन, जो अपने अधिकार में हो। स्वराज्य। स्थानिक स्वराज्य। किसी राज्य के भिन्न-भिन्न नगरों आदि को अपना शासन आप करने की स्वतंत्रता और ऐसी शासन-प्रणाली। (अंग्रे०—लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट)।

स्वारथ*†—संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ"।
वि० सफल। सार्थक। सिद्ध।

स्वारस्य—वि० १. सरसता। रसीलापन। २. स्वाभाविकता।

स्वारोचिष—संज्ञा पुं० [स्वरोचिष के पुत्र] दूसरे मनु का नाम।

स्वार्थ—संज्ञा पुं० १. अपना मतलब। गरज। अपना प्रयोजन। २. अपना लाभ। अपनी भलाई। ऐसी बात, जिसमें अपना लाभ हो। ३. अपना धन।
वि० सार्थक। सफल। कामयाब।

स्वार्थता—संज्ञा स्त्री० स्वार्थ का भाव। खुदगर्जी।

स्वार्थत्याग—संज्ञा पुं० किसी अच्छे काम के लिए अपने हित या लाभ को छोड़ना।

स्वार्थत्यागी—वि० दूसरे की भलाई के लिए अपने लाभ को छोड़ देनेवाला।

स्वार्थपर—वि० स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थपरता—संज्ञा स्त्री० स्वार्थपर या स्वार्थी होने का भाव। खुदगरजी।

स्वार्थपरायण—वि० [संज्ञा स्वार्थ-परायणता] स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थसाधन–संज्ञा पुं० [वि० स्वार्थ-साधक] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम निकालना। अपना मतलब हल करना।

स्वार्थांध–वि० जो अपने स्वार्थ के वश होकर अंधा हो। अपना काम निकालने के लिए भले-बुरे का विचार न करनेवाला।

स्वार्थी–वि० खुदगरज। अपना ही मतलब निकालनेवाला। मतलबी।

स्वावलंब–संज्ञा पुं० दे० "स्वावलंबन"।

स्वावलंबन–संज्ञा पुं० अपने सहारे या भरोसे पर रहना। अपने भरोसे रहकर काम करना। अपने बल पर काम करना।

स्वावलंबी–वि० अपने सहारे या भरोसे पर रहनेवाला। अपने बल पर काम करनेवाला।

स्वाश्रय–संज्ञा पुं० केवल अपना सहारा रखना, दूसरों का भरोसा न करना। वह, जिसे केवल अपना ही सहारा हो, दूसरों का सहारा न हो।

स्वाश्रयी–वि० दूसरे का भरोसा न करके अपने बल पर काम करनेवाला।

स्वाश्रित–वि० केवल अपने सहारे पर रहनेवाला। स्वावलंबी।

स्वास्थ्य–संज्ञा पुं० स्वस्थ या नीरोग होने की अवस्था। तंदुरुस्ती। आरोग्य।

स्वास्थ्यकर–वि० १. स्वस्थ या तंदुरुस्त करनेवाला। २. स्वास्थ्य के लिए लाभदायक। आरोग्यवर्द्धक।

स्वाहा–अव्य० एक शब्द, जिसका प्रयोग हवन करने के समय किया जाता है। संज्ञा स्त्री० अग्नि की पत्नी का नाम। **मुहा०**—स्वाहा करना=नष्ट करना।

स्वीकरण–संज्ञा पुं० १. अपनाना। अंगीकार करना। २. मानना। राजी होना।

स्वीकार–संज्ञा पुं० १. मान लेना। कबूल कर लेना। २. अपनाने की क्रिया। अंगीकार।

स्वीकारोक्ति–संज्ञा स्त्री० अपने कथन को स्वीकार करना। वह बयान, जिसमें अभियुक्त अपना अपराध स्वीकार कर ले। अपराध की स्वीकृति।

स्वीकार्य–वि० स्वीकार करने योग्य। मानने लायक। अपनाने या लेने लायक।

स्वीकृत–वि० माना हुआ। मंजूर। स्वीकार किया हुआ।

स्वीकृति–संज्ञा स्त्री० मंजूरी। सम्मति। रजामंदी। स्वीकार का भाव।

स्वीय–वि० निज का। अपना। संज्ञा पुं० स्वजन। आत्मीय। संबंधी।

स्वीयत्व–संज्ञा पुं० अपनापन। आत्मीयता।

स्वेच्छा–संज्ञा स्त्री० अपनी इच्छा।

स्वेच्छाचार–संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वेच्छाचारिता] इच्छानुसार काम करना। जो जी में आवे, वही करना। मनमानी।

स्वेच्छाचारी–वि०[स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] मन माना काम करनेवाला। स्वच्छंद। निरंकुश।

स्वेच्छासेवक–संज्ञा पुं० दे० "स्वयंसेवक"।

स्वेटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ऊनी बनियान।

स्वेद–संज्ञा पुं० १.पसीना।२.भाप।३.ताप।गर्मी।

स्वेदक–वि० पसीना लानेवाला।

स्वेदकण–संज्ञा पुं० पसीने की बूंद।

स्वेदचूषक–संज्ञा पुं० पसीना सुखानेवाला। ठंडी हवा।

स्वेदज–वि० पसीने से उत्पन्न होनेवाला। (जूं, खटमल, मच्छर आदि)।

स्वेदजल–संज्ञा पुं० पसीना।

स्वेदन–संज्ञा पुं० पसीना निकलना।

स्वेदित–वि० पसीने से युक्त। भफारा दिया हुआ। सेंका हुआ।

स्वै*–वि० अपना। निज का। सर्व० दे० "सो"।

स्वैर–वि० १. मनमाना काम करनेवाला। स्वच्छंद। स्वतंत्र। २. धीमा। मंद।

स्वैरचारी–वि० [स्त्री० स्वैरचारिणी] १. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। २. व्यभिचारी। लम्पट।

स्वैरता–संज्ञा स्त्री० स्वेच्छाचार। स्वच्छंदता। मनमाना काम करना। निरंकुशता।

स्वैराचार–संज्ञा पुं० स्वेच्छाचार। मनमानी। इच्छानुसार काम करना।

स्वैरिणी–संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरिता–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वैरता"।

स्वोपार्जित–वि० १. अपना उपार्जित किया हुआ। २. अपना कमाया हुआ।

ह

ह–हिन्दी वर्णमाला का तेंतीसवाँ और अंतिम व्यंजन, जो उच्चारण के अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है। इसका उच्चारण कंठ से होता है, इसलिए इसे कण्ठ्य भी कहते हैं। संज्ञा पुं० १. हँसी। हास। २. महादेव। शिव। ३. जल। पानी। ४. शून्य। ५. शुभ। मंगल। ६. आकाश। ७. ज्ञान। ८. घोड़ा। अश्व।

हँक–संज्ञा स्त्री० दे० "हाँक"।

हँकड़ना–क्रि० अ० १. घमंड के साथ बोलना। २. ललकारना।

हँकरना–क्रि० अ० दे० "हँकड़ना"।

हँकवा–संज्ञा पुं० शिकार के समय बहुत से लोगों का शोर करके शेर आदि जंगली जानवरों को घेर कर शिकारी के सामने लाना।

हँकवाना–क्रि० स० १. हाँक लगवाना। बुलवाना। २. हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हँकवैया*†–संज्ञा पुं० हाँकनेवाला।

हँका–संज्ञा स्त्री० ललकार। जोर की पुकार। डपट।

हँकाई–संज्ञा स्त्री० हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हँकाना–क्रि० स० १. दे० "हाँकना"। २. पुकारना। ३. हँकवाना।

हँकार–संज्ञा स्त्री० १. चिल्लाकर बुलाना। आवाज देकर बुलाना। २. पुकार। बुलाने की ऊँची आवाज।

हंकार*†–संज्ञा पुं० १. दे० "हुंकार"। २. "अहंकार"

हँकारना†*–क्रि० स० १. जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २. नाम लेकर पुकारना। पास बुलाना। ३. युद्ध के लिए बुलाना। ललकारना।

क्रि० अ० हुंकार करना। दपटना।

हँकारा–संज्ञा पुं० १. पुकार। बुलाहट। बुलौवा। २. निमंत्रण।

हँकारी–संज्ञा स्त्री० १ लोगों को बुलाकर लाने वाला। २. दूत।

हंगर-स्ट्राइक–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] भूख हड़ताल। अनशन।

हंगामा–संज्ञा पुं० [फा०] १. शोरगुल। हल्ला। २. भीड़-भाड़। ३. उपद्रव। दंगा। लड़ाई-झगड़ा। मारपीट।

हंटर–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कोड़ा। चाबुक।

हंडना–क्रि० अ० १. घूमना-फिरना। २. इधर-उधर बेकार घूमना। ३. इधर-उधर ढूंढ़ना। वस्त्र-आदि का पहना या ओढ़ा जाना।

हंडरवेट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ११२ पौंड की एक अंग्रेजी तौल।

हंडा–संज्ञा पुं० ताँबे या पीतल का बहुत बड़ा बरतन, जो बहुत से आदमियों के लिए खाना बनाने या पानी रखने आदि के काम आता है।

हंडाना–क्रि० स० १. घुमाना। फिराना। २. काम में लाना।

हंडिया–संज्ञा स्त्री० बटुलोई के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँडी। हंडी।

हंत–अव्य० शोक या खेद-सूचक शब्द।

हंता–संज्ञा पुं० [स्त्री० हंत्री] मारनेवाला। वध करनेवाला। हत्यारा।

हँफनि–संज्ञा स्त्री० हाँफने की क्रिया या भाव। **मुहा०**—हँफनि मिटाना=सुस्ताना।

हंबाना†–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

हंस–संज्ञा पुं० १. बड़ी झीलों में रहनेवाला बत्तख की तरह का एक जलपक्षी। २. माया से निर्लिप्त आत्मा। ३ सूर्य्य। ४. ब्रह्म। परमात्मा। ५. जीवात्मा। जीव। ६. प्राण वायु। ७. विष्णु। ८. संन्यासियों का एक भेद। ९. घोड़ा। १०. शिव। महादेव। ११. दोहे के नवें भेद का नाम, जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं (पिंगल)। १२. एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। पंक्ति।

हंसक–संज्ञा पुं० १. हंस-पक्षी। २. पैर की उँग-लियों में पहनने का बिछुआ।

हंसगति–संज्ञा स्त्री० १. हंस की तरह सुंदर धीमी चाल। २. सायुज्य मुक्ति। ३. बीस मात्राओं का एक छंद।

हंसगवनि–वि० दे० "हंसगामिनी"।

हंसगामिनी–वि० हंस की तरह सुन्दर धीमी चाल चलनेवाली।

हंसजा–संज्ञा स्त्री० सूर्य की कन्या, यमुना।

हँसता-मुखी–संज्ञा पुं० हँसमुख। हँसते चेहरे-वाला। प्रसन्नबदन।

हँसन–संज्ञा स्त्री० हँसने की क्रिया, भाव या ढंग। हंसी।

हँसना–क्रि० अ० १. प्रसन्नता या खुशी के कारण मुँह से एक तरह की आवाज निकलना। खिलखिलाना। कहकहा लगाना। २. अच्छा लगना। ऐसा सुंदर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े। ३. दिल्लगी करना। हँसी करना। ४. प्रसन्न या सुखी होना। खुशी मनाना।

क्रि० स० किसी को मूर्ख बनाना। किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना। **मुहा०**—किसी पर हँसना=विनोद की बात कहकर मूर्ख बनाना। उपहास करना। हँसते-हँसते=प्रसन्नता से। खुशी से। आसानी से। ठठाकर हँसना=जोर से हँसना। अट्टहास करना। बात हँसकर उड़ाना=कोई बात तुच्छ समझकर हँसी में टाल देना।

यौ०—हँसना-बोलना=आनंद की बात-चीत करना। हँसना-खेलना=आनंद करना।

हँसनि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

हंसपदी–संज्ञा स्त्री० एक लता।

हंसपाद–संज्ञा पुं० ईंगुर। हिंगुल।

हँसमुख–वि० १. हँसते चेहरेवाला। जिसके चेहरे से खुशी जाहिर हो। प्रसन्न-वदन। सदा हँसता रहनेवाला। २. खुशमिजाज। विनोद-प्रिय। मसखरा।

हंसरथ–संज्ञा पुं० हंस की सवारी करनेवाले ब्रह्मा।

हंसराज–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। एक प्रकार का अगहनी धान।

हँसली–संज्ञा स्त्री० १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की हड्डी, जो धनुष की तरह टेढ़ी होती है। २. गले में पहनने का स्त्रियों का एक मंडलाकार गहना।

हंसवंश–संज्ञा पुं० सूर्यवंश।

हंसवाहन–संज्ञा पुं० हंस की सवारी करनेवाले ब्रह्मा।

हंसवाहिनी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती (जो हंस की सवारी करती हैं)।

हंससुता–संज्ञा स्त्री० यमुना-नदी।

हँसाई–संज्ञा स्त्री० १. हँसने की क्रिया या भाव। २. निंदा। बदनामी।

हँसाना–क्रि० स० दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।

हँसाय*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसाई"।

हंसालि–संज्ञा स्त्री० ३७ मात्राओं का एक छंद।

हंसिनी–संज्ञा स्त्री० हंस की मादा। दे० "हंसी"।

हँसिया–संज्ञा स्त्री० एक औजार, जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है।

हँसी–संज्ञा स्त्री० १. हँसने की क्रिया या भाव। हास। २. मजाक। दिल्लगी। विनोद। ३. अनादर-सूचक हास। उपहास। ४. लोक-निंदा। बदनामी। ५. अनादर। **मुहा०**—हँसी छूटना=हँसी आना। हँसी समझना या हँसी-खेल समझना=साधारण बात समझना। आसान बात समझना। हँसी में उड़ाना=परिहास की बात कहकर टाल देना। हँसी में ले जाना =किसी बात को मजाक समझना। हँसी उड़ाना= व्यंगपूर्ण निंदा करना। उपहास करना।

यौ०—हँसी-खुशी=प्रसन्नता। हँसते हुए। हँसी-ठट्ठा=आनंद-क्रीड़ा। मजाक। हँसी-खेल=विनोद और क्रीड़ा। साधारण या सहज बात।

हंसी–संज्ञा स्त्री० १. हंस की मादा। हंसिनी। २. बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

हँसुआ, हँसुवा†–संज्ञा पुं० दे० "हँसिया"।

हँसोड़–वि० मजाक करनेवाला। दिल्लगी-बाज। मसखरा।

हँसौहाँ*–वि० [स्त्री० हँसौहीं] १. कुछ हँसी

लिये। २. हँसने का स्वभाव रखनेवाला। ३. दिल्लगी का। मजाक से भरा। ४. मंद हास-सहित। ईषत्‌हास्य-युक्त। ५. हँसमुख।

हुई–संज्ञा पुं० घुड़सवार।
संज्ञा स्त्री० ह! आश्चर्य।

हुउँ*–क्रि० अ० सर्व० दे० "हौं"।

हक़–वि० [अ०] १. सच। सत्य। २. वाजिब। ठीक। उचित। न्याय्य।
संज्ञा पुं० १. अधिकार। स्वामित्व। •किसी वस्तु को अपने कब्जे में रखने, काम में लाने या पाने का अधिकार। स्वत्व। २. कोई काम करने या किसी से कराने का अधिकार। ३. वह वस्तु, जिसे पाने या रखने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। दस्तूरी। किसी मामले में दस्तूर के मुताबिक मिलने वाली कुछ रकम। ४. ठीक या वाजिब बात। उचित पक्ष। न्याय्य पक्ष। ५. कर्तव्य। फर्ज। ६. खुदा। ईश्वर। (मुसलमान)।
मुहा०—हक में=विषय में। पक्ष में। हक अदा करना=कर्त्तव्य पालन करना। हक पर होना=उचित बात का आग्रह करना।

हक़तलफ़ी–संज्ञा स्त्री० किसी का हक मारना। अन्याय।

हकबक–वि० भौंचक्का। चकित।

हक़दार–संज्ञा पुं० १. हिस्सा पानेवाला। २. अधिकार रखनेवाला। अधिकारी।

हक़-नाहक़–अव्य० [अ०] जबरदस्ती। बिना कारण या प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।

हकबक-वि० दे० "हक्का-बक्का"।

हकबकाना–क्रि० अ० हक्का-बक्का हो जाना। घबरा जाना।

हकला–वि० हकलानेवाला। रुक-रुककर बोलनेवाला।

हकलाना–क्रि० अ० बोलने में अटकना। रुक-रुककर बोलना।

हकशफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] पड़ोसियों या हिस्सेदारों को जमीन, मकान आदि खरीदने का औरों से पहले मिलनेवाला हक या अधिकार।

हक़ीक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वास्तविकता। सचाई। असलियत। २. तथ्य। ठीक बात। ३. असल हाल। सच्चा वृतान्त।
मुहा०– हकीकत में=वास्तव में। सचमुच। हकीकत खुलना=असल बात का पता लगाना।

हक़ीक़ी–वि० [अ०] असली। सच्चा। सगा। आत्मीय।

हकीम–संज्ञा पुं० [अ०] यूनानी रीति से दवा करनेवाला। चिकित्सक।

हकीमी–संज्ञा स्त्री० १. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। २. हकीम का पेशा या काम।

हक़ीयत–संज्ञा पुं० [अ०] अधिकार। हकदार या अधिकारी होने का भाव।

हक्काक़–संज्ञा पुं० नग को काटने और जड़ने आदि का काम करनेवाला।

हक्का-बक्का–वि० ऐसा चकित या घबराया हुआ कि मुँह से बोली न निकले। भौंचक। बहुत घबराया हुआ।

हगना–क्रि० अ० १. मल त्याग करना। पाखाना फिरना। २. झख मारकर अदा कर देना।

हगाना–क्रि० स० हगने की क्रिया कराना।

हगास–संज्ञा स्त्री० मल त्याग करने की हाजत।

हचकोला–संज्ञा पुं० गाड़ी, चारपाई आदि के हिलने-डोलने से लगनेवाला धक्का। धचका।

हचना*†–क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

हज–संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिए मक्के (अरब) जाना। मुसलमानों की काबे तक की यात्रा।

हजम, हज़्म–संज्ञा पुं० [अ०] पेट में पचने की क्रिया या भाव। पाचन।
वि० १. पेट में पचा हुआ। २. बेईमानी या अनुचित ढंग से अधिकार किया हुआ। हड़पा हुआ।

हजरत–संज्ञा पुं० [अ०] १. महाशय। महात्मा। महापुरुष। २. नटखट या धूर्त्त (व्यंग्य)।

हजामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाल काटने और दाढ़ी बनाने का काम या इसकी मजदूरी। क्षौर। २. सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल कटाना या मुड़ाना।
मुहा०—हजामत बनाना=१. दाढ़ी या सिर के बाल साफ करना या काटना। २. ठगना। लूटना। ३. मारना-पीटना।

हजार–वि० [फा०] १. जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र। २. बहुत से। अनेक।
संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या या अंक, जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।
क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक।
हजारहा–वि० [फा०] हजारों। बहुत-से।
हजारा–वि० [फा०] हजार या बहुत अधिक पंखुड़ियों का फूल। सहस्रदल।
संज्ञा पुं० फुहारा। फव्वारा।
हजारी–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक हजार सिपाहियों का सरदार। २. दोगला। वर्ण-संकर।
हजूम–संज्ञा पुं० दे० "हुजूम"।
हजूरा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० हजूरी] दे० "हजूरी"।
हजूरी–संज्ञा पुं० [अ० हजूर] बादशाह या राजा के पास सदा रहनेवाला सेवक। मालिक की खुशामद में लगा रहनेवाला नौकर।
हजो–संज्ञा स्त्री० [अ०] बुराई। निंदा। बदनामी।
हज्ज–संज्ञा पुं० दे० "हज"।
हज्जाम–संज्ञा पुं० हजामत बनानेवाला। नाई।
हटक*†–संज्ञा स्त्री० १. हटकने या मना करने की क्रिया या भाव। रोक। निषेध। २. पशुओं को हाँकने का काम।
हटकन–संज्ञा स्त्री० १. दे० "हटक"। २. पशुओं को हाँकने की छड़ी या लाठी।
हटकना–क्रि० स० १. रोकना। मना करना। निषेध करना। २. पशुओं को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी तरफ हाँकना।
हटतार†–संज्ञा पुं० दे० "हरताल"।
संज्ञा स्त्री० माला का सूत।
हटना–क्रि० अ० १. एक जगह से दूसरी जगह पर जाना। खिसकना। सरकना। टलना। २. जी चुराना। भागना। ३. सामने से दूर होना। ४. न रह जाना। ५. बात पर दृढ़ न रहना। ६. *† दे० "हटकना"। मना करना।
हटवा–संज्ञा पुं० दूकानदार।
हटवाई*†–संज्ञा स्त्री० सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।
हटवाना–क्रि० स० हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटवार*†–संज्ञा पुं० दूकानदार। हाट में सौदा बेचनेवाला।
हटाना–क्रि० स० १. एक जगह से दूसरी जगह करना। खिसकाना। सरकाना। किसी स्थान पर न रहने देना। २. दूर करना। भगाना। ३. जाने देना।
हट्ट–संज्ञा पुं० १. बाजार। २. दूकान।
यौ०—चौहट्ट=बाजार का चौक।
हट्टा-कट्टा–वि० [स्त्री० हट्टी-कट्टी] मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। बलवान्।
हट्टी–संज्ञा स्त्री० दूकान।
हठ–संज्ञा पुं० [वि० हठी, हठीला] १. किसी बात के लिए अड़ना। जिद। आग्रह (दुराग्रह)। २. दृढ़ प्रतिज्ञा। पक्का इरादा। जबरदस्ती।
हठधर्म–संज्ञा पुं० उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। कट्टरपन। दुराग्रह।
हठधर्मी–संज्ञा स्त्री० १. दुराग्रह। उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। २. अपने मत की बात लेकर अड़ने की प्रवृत्ति। कट्टरपन। जिद्दी।
हठना–क्रि० अ० १. जिद पकड़ना। हठ करना। २. दुराग्रह करना। ३. प्रतिज्ञा करना। दृढ़ संकल्प करना।
मुहा०—हठ कर=बलात्। जबरदस्ती।
हठयोग–संज्ञा पुं० वह योग, जिसमें शरीर को साधने के लिए बड़ी कठिन-कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है। जैसे—नेती, धोती आदि क्रियाएँ।
हठविद्या–संज्ञा स्त्री० हठयोग।
हठात्–प्रत्य० १. हठ या जिद के साथ। हठ-पूर्वक। २. जबरदस्ती। बलात्। ३. अवश्य।
अव्य०—अचानक। सहसा। एकाएक।
हठाहठ, हठाहठी*–क्रि० वि० दे० "हठात्"।
हठी–वि० हठ करनेवाला। जिद्दी।
हठीला–वि० [स्त्री० हठीली] १. हठ करने वाला। जिद्दी। हठी। २. बात का पक्का। दृढ़प्रतिज्ञ। ३. लड़ाई में डटा रहनेवाला। वीर।

हड़—संज्ञा स्त्री० १. एक बड़ा पेड़, जिसका फल दवा के काम में लाया जाता है। हर्रे। २. हड़ के आकार का एक प्रकार का गहना। लटकन।

हड़कंप—संज्ञा पुं० तहलका। भारी हलचल।

हड़क—संज्ञा स्त्री० १. उत्कट इच्छा। रट। धुन। झक। किसी वस्तु के पाने के लिए व्याकुलता २. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए गहरी आकुलता।

हड़कना—क्रि० अ० किसी वस्तु के अभाव से दुखी होना। तरसना।

हड़काना—क्रि० स० १. बढ़ावा देना। लहकारना। आक्रमण करने या तंग करने आदि के लिए पीछे लगा देना। २. किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना। तरसाना। ३. कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना।

हड़काया—वि० पागल (कुत्ता)।

हड़गीला—संज्ञा पुं० बगले की जाति का एक पक्षी।

हड़जोड़—संज्ञा पुं० एक प्रकार की लता। कहते हैं, इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल—संज्ञा स्त्री० किसी बात से असन्तोष या विरोध प्रकट करने या अपनी माँगें पूरी कराने के लिए काम बन्द कर देना—जैसे बाजारों, दुकानों को बन्द करना। कल-कारखानों आदि के मजदूरों और कर्मचारियों का अपना काम बन्द कर देना।

यौ०—भूख-हड़ताल=विरोध प्रकट करने या माँग पूरी कराने के लिए भोजन का त्याग। अनशन। (अंग्रे०—हंगर स्ट्राइक)। किसी विषय पर विरोध प्रकट करने के लिए होनेवाली क्षणिक हड़ताल को 'प्रतीक हड़ताल' कहते हैं। (अंग्रे०—टोकेन स्ट्राइक)।

हड़ना—क्रि० अ० तौल में जाँचा जाना।

हड़प—वि० १. निगला हुआ। पेट में डाला हुआ। २. गायब किया हुआ।

हड़पना—क्रि० स० १. मुँह में डाल लेना। खा जाना। २. अनुचित रीति से ले लेना। उड़ा लेना।

हड़बड़—संज्ञा स्त्री० जल्दी होने या जल्दबाजी की दशा। जल्दबाजी। शीघ्रता।

हड़बड़ाना—क्रि० अ० १. जल्दी करना। उतावलापन करना। २. आतुर होना। ३. घबराना। व्याकुल होना।

क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिए कहना। जल्दी करने के लिए कहकर किसी को घबरा देना।

हड़बड़िया—वि० उतावला। हड़बड़ी करनेवाला। जल्दबाज।

हड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० १. उतावली। जल्दी। २. जल्दी के कारण घबराहट।

हड़हड़ाना—क्रि० स० [अनु०] जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि, हड़ावल—संज्ञा स्त्री० १. ठठरी। हड्डियों का ढाँचा। २. हड्डियों की माला।

हड़ीला—वि० १. हड्डियोंवाला। २. वह, जिसमें केवल हड्डियाँ बच गई हों। बहुत दुबला-पतला।

हड्डा—संज्ञा पुं० भिड़। बर्रे।

हड्डी—संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर की वह बड़ी सफेद चीज, जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि। २. कुल। वंश। मुहा०—हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना=खूब मारना। खूब पीटना। हड्डियाँ निकल आना=शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हड्डी=पुराने आदमी का दृढ़ शरीर।

हत—वि० १. मारा हुआ। वध किया हुआ। २. पीटा हुआ। ३. खोया हुआ। गँवाया हुआ। ४. जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो। ५. नष्ट किया हुआ। बिगाड़ा हुआ। ६. पीड़ित। ७. गुणा किया हुआ। गुणित (गणित)।

हतक—संज्ञा स्त्री० [अ०] हेठी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा।

हतक-इज्जती—संज्ञा स्त्री० [अ०] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। मानहानि।

हतचेत—वि० जिसकी चेतना नष्ट हो गई हो। चेतना-रहित। ज्ञानहीन। बेसुध। बेहोश।

हतज्ञान—वि० जिसका ज्ञान नष्ट हो गया हो। बेसुध। बेहोश।

हतदैव–वि० अभागा।

हतना–क्रि० स० १. वध करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३. पालन न करना। न मानना।

हतप्रभ–वि० प्रभाहीन। तेज-रहित। जिसकी प्रभा या कान्ति नष्ट हो गई हो।

हतप्रभाव–वि० प्रभावहीन। बेअसर। अधिकारहीन।

हतबुद्धि–वि० १. मूर्ख। बुद्धिहीन। २. अकचकाया हुआ। किंकर्त्तव्य-विमूढ़।

हतबोध–वि० दे० "हतबुद्धि"।

हतभागा, हतभागी–वि० [स्त्री० हतभागिनी, हतभागिन] भाग्यहीन। अभागा। बदकिस्मत।

हतभाग्य–वि० अभागा। भाग्यहीन।

हतवाना–क्रि० स० जान से मरवाना। वध कराना।

हतश्री–वि० १. जिसकी कांति नष्ट हो गई हो। प्रभाहीन। उदास। २. मुरझाया हुआ।

हता*†–क्रि० स० [होना का भूतकाल] था।

हताना–क्रि० स० दे० "हतवाना"।

हताश–वि० नाउम्मीद। जिसे आशा न रह गई हो। निराश।

हताहत–वि० मारे गए और घायल।

हतोत्साह–वि० जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो। उत्साहहीन।

हत्थ*–संज्ञा पुं० दे० "हाथ"।

हत्था–संज्ञा पुं० १. हथियार या औजार का वह भाग, जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूठ। २. लकड़ी का वह बल्ला, जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है। हाथा। हथेरा। ३. केले के फलों का घौद।

हत्थी–संज्ञा स्त्री० दस्ता। मूठ। औजार या हथियार का वह भाग, जो हाथ से पकड़ा जाता है।

हत्थे–क्रि० वि० हाथ में।

मुहा०—हत्थे चढ़ना=१. हाथ में आना। प्राप्त होना। २. वश में होना।

हत्या–संज्ञा स्त्री० १. जान से मारना। वध। खून। २. झंझट। बखेड़ा।

मु०—हत्या लगना=हत्या का पाप लगना। के वध का दोष ऊपर आना।

हत्यारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला। जान से मारनेवाला।

हत्यारी–संज्ञा स्त्री० १. हत्या करनेवाली। २. हत्या करने का पाप। प्राण-वध का दोष।

हथ–संज्ञा पुं० 'हाथ' का संक्षिप्त रूप (समस्त पदों में)।

हथउधार–संज्ञा पुं० बिना लिखा-पढ़ी के कुछ समय के लिए लिया हुआ कर्ज। हथफेर। दस्तगरदा।

हथकंडा–संज्ञा पुं० १. हाथ की सफाई। २.गुप्त चाल। ३. चालबाजी। चालाकी का ढंग।

हथकड़ी–संज्ञा स्त्री० लोहे का कड़ा, जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है।

हथगोला–संज्ञा पुं० हाथ से फेंका जानेवाला गोला, जो तोप के गोलों की तरह होता है।

हथछुट–वि० मारने के लिए जल्दी हाथ चला देनेवाला। जरा-सी बात पर नाराज होकर मार बैठनेवाला।

हथनाल–संज्ञा पुं० हाथियों पर ले जाई जानेवाली तोप। गजनाल।

हथनी–संज्ञा स्त्री० हाथी की मादा।

हथफूल–संज्ञा पुं० १. हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना। हथसांकर। २. हाथी को पहनाने का एक गहना। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी।

हथफेर–संज्ञा पुं० १. बिना लिखा-पढ़ी के थोड़े दिनों के लिए लिया या दिया हुआ कर्ज। २. हथ-उधार। एक हाथ से लेना और दूसरे हाथ से लौटाना। ३. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। ४. दूसरे के माल को सफाई से उड़ा देना। ५. हाथ की सफाई।

हथलेवा–संज्ञा पुं० विवाह में वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणिग्रहण।

हथवांस–संज्ञा पुं० नाव चलाने का सामान। जैसे—पतवार, डाँड़ा।

हथवाना†–क्रि० स० हाथ में लेना। पकड़ना। काम में लाना।

हथसांकर–संज्ञा पुं० दे० "हथफूल"।

हथसार–संज्ञा स्त्री० वह घर, जिसमें हाथी रक्खे जाते हैं। फीलखाना। गजशाला।

हथा†–संज्ञा पुं० १. हथकड़ा। २. बेंट। ३. एक

प्रकार की वस्तु, जिससे पानी फेंकते हैं। ४. हाथ का छापा, जो शुभ अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

हथाहथी* †–अव्य० १. हाथोंहाथ। २. बहुत जल्दी। झटपट। तुरंत।

हथिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

हथिया–संज्ञा पुं० हस्त नक्षत्र।

हथियाना–क्रि० स० १.अपने हाथ में ले लेना। २. धोखा देकर ले लेना। हड़प लेना। ३. हाथ में पकड़ना।

हथियार–संज्ञा पुं० हाथ में लेकर काम करने या मारने का साधन। औजार। अस्त्र-शस्त्र। उपकरण।

मुहा०—हथियार रख देना=हार मान लेना।

हथियारबंद–वि० सशस्त्र। जो हथियार बाँधे या लिये हो।

हथेली–संज्ञा स्त्री० करतल। हाथ की कलाई के आगे का चौड़ा हिस्सा, जिसमें उँगलियाँ होती हैं।

मुहा०—हथेली में आना=१. मिलना। प्राप्त होना। २. वश में होना। हथेली पर जान होना=ऐसी हालत में होना, जिसमें जान जाने का भय हो। हथेली पर जान लेकर काम करना=मरने का डर छोड़कर काम करना। हथेली पर सरसों जमाना=१.अनोखा काम करना। २.जल्दबाजी करना।

हथौड़–संज्ञा पुं० हथौड़ा।

हथौटी–संज्ञा स्त्री० १. हाथ से काम करने का ठीक ढंग। हस्त-कौशल। २. किसी काम में हाथ लगाना। ३. लिखावट।

हथौड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० हथौड़ी] एक औजार, जिससे कारीगर किसी चीज को तोड़ते-पीटते या गढ़ते हैं। घन। मारतौल।

हथौड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा हथौड़ा।

हद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सीमा। २. मर्यादा। ३. अन्तिम स्थिति। ४. उचित सीमा।

मुहा०—हद बाँधना=सीमा निर्धारित करना। हद से ज्यादा=बहुत अधिक। अत्यंत। हद व हिसाब नहीं=बहुत ही ज्यादा। अत्यंत।

हदका–संज्ञा पुं० धक्का। चोट।

हदस–संज्ञा स्त्री० डर। आशंका।

हदसना–क्रि० अ० डरना। हदस या डर पैदा होना।

हदसाना–क्रि० स० डरवाना।

हदीस–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ, जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है।

हन–क्रि० अ० १. जान से मारना। २. पीटना। मारना। ३. नष्ट करना।

हनन–संज्ञा पुं० [वि० हननीय, हनित] १. मार डालना। वध करना। २. प्रहार करना। पीटना। ३. नष्ट करना। ४. गुणा करना (गणित)।

हनना†*–क्रि० स० १. मार डालना। वध करना। २. प्रहार करना। ३. पीटना। ठोंकना। ४. लकड़ी से पीट या ठोंककर बजाना। ५. शस्त्र चलाना।

हनवाना–क्रि० स० हनने का कार्य्य दूसरे से कराना।

हनिवंत*‡संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुंव–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनु–संज्ञा स्त्री० १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। *२. ठुड्डी। चिबुक।

हनुल–वि० पुष्ट या दृढ़ दाढ़वाला। मजबूत जबड़ेवाला।

हनुमंत–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुमान्–संज्ञा पुं० एक वानर वीर, जिन्होंने सीता-हरण के बाद रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी और जो हिन्दुओं के पूज्य देवता हैं। महावीरजी।

वि० १. दाढ़ या जबड़ेवाला। २. भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। ३. बहुत बड़ा वीर।

हनूफाल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अन्त में गुरु-लघु होते हैं।

हनोज–अव्य० [फा०] अभी। अभी तक।

हप–संज्ञा पुं० मुँह में चट से लेकर ओंठ बंद करने का शब्द।

मुहा०—हप कर जाना=झट से मुँह में डालकर खा जाना।

हफ़्ता–संज्ञा पुं० [फा०] सप्ताह। सात दिन का समय।

हबकना†–क्रि० अ० खाने या दाँत काटने के लिए झट से मुँह खोलना।
क्रि० स० दाँत काटना।

हबर-हबर–क्रि० वि० १. जल्दी-जल्दी। उतावली से। २. जल्दी के कारण ठीक तौर से नहीं। हड़बड़ी से।

हबराना†*–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हबशी–संज्ञा पुं० [फा०] हबश देश का निवासी, जो बहुत काला होता है।

हबीब–संज्ञा पुं० १. प्रिय। प्यारा। २. मित्र। दोस्त।

हबूब–संज्ञा पुं० १. पानी का बबूला। बुल्ला। २. झूठ-मूठ की बात।

हब्बा-डब्बा–संज्ञा पुं० जोर-जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी, जो प्रायः बच्चों को होती है।

हब्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. हवा न पहुँचने के कारण दम घुटना। २. दम घुटने की जगह। ३. कैद। कारावास। जेल।

हम–सर्व० उत्तम पुरुष, बहुवचन-सूचक सर्वनाम शब्द। "मैं" का बहुवचन।
संज्ञा पुं० अहंकार। 'हम' का भाव।
अव्य० [फा०] १. साथ। संग। २. समान। तुल्य।

हमजोली–संज्ञा पु० साथी। सहयोगी।

हमता*–संज्ञा स्त्री० अहंभाव। अहंकार।

हमदर्द–संज्ञा पुं० [फा०] १. दुःख में सहानुभूति रखनेवाला। २. कष्ट में साथ देनेवाला।

हमदर्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] दूसरे के दुःख से दुखी होना। सहानुभूति।

हमराह–अव्य० [फा०] रास्ते का साथ। साथ में। संग।

हमराही–वि० रास्ते का साथी। एक ही रास्ते पर चलनेवाला।

हमल–संज्ञा पुं० [अ०] गर्भ। स्त्री के पेट में बच्चा रहना।
मुहा०—हमल गिरना=गर्भपात होना।

हमला–संज्ञा पुं० [अ०] १. धावा। चढ़ाई। आक्रमण। २. मारने के लिए झपटना। ३. प्रहार। वार। ४. विरोध में कही हुई बात।

हमवतन–वि० एक ही जगह का रहनेवाला। एक ही देश का रहनेवाला। स्वदेशवासी।

हमवार–वि० [फा०] बराबर सतहवाला। समतल। सपाट।

हमसर–संज्ञा पुं० [फा०] गुण, बल या पद में समान व्यक्ति।

हमसरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बराबरी।

हमहमी–संज्ञा स्त्री० दे० "हमाहमी"।

हमाम–संज्ञा पुं० दे० "हम्माम"।

हमारा–सर्व० [स्त्री० हमारी] 'हम' का संबंधकारक रूप।

हमाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. बोझ उठानेवाला। २. रक्षक। रखवाला। ३. मजदूर। कुली।

हमाशुमा–वि० [फा०] हमारे-तुम्हारे जैसे। सामान्य लोग।

हमाहमी–संज्ञा स्त्री० १. अपने-अपने लाभ के लिए प्रयत्न। स्वार्थपरता। २. अहंकार।

हमीर–संज्ञा पुं० दे० "हम्मीर"।

हमें–सर्व० 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेल–संज्ञा स्त्री० गले में पहनने की सिक्कों आदि की माला।

हमेव*†–संज्ञा पुं० अहंकार। घमंड। 'हम हैं' यह भावना।

हमेशा–अव्य० [फा०] सब दिन या हर समय। सदा। सदैव।

हमैं*–अव्य० दे० "हमें"।

हम्माम–संज्ञा पुं० [अ०] नहाने की कोठरी (जिसमें गरम पानी रखा रहता है)। स्नानागार।

हम्मीर–संज्ञा पुं० १. रणथम्भोर गढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा, जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था। २. एक मिश्रित राग।

हयंद*–संज्ञा पुं० हयेंद्र। बड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय–संज्ञा पुं० [स्त्री० हया, हयी] १. घोड़ा। अश्व। २. कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द। ३. चार मात्राओं का एक छंद। ४. इंद्र।

हयगृह–संज्ञा पुं० घुड़साल। अस्तबल।

हयग्रीव–संज्ञा पुं० १. विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक अवतार। २. एक राक्षस, जो कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था।

हयना*–क्रि० स० १. वध करना। मार डालना। २. मारना-पीटना। ३. ठोंककर बजाना। ४. नष्ट करना। न रहने देना।

हयनाल–संज्ञा स्त्री० वह तोप, जिसे घोड़े खींचते हैं।

हयमेध–संज्ञा पुं० अश्वमेध यज्ञ।

हयशाला–संज्ञा स्त्री० घुड़साल। अस्तबल।

हया–संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। शर्म।

हयात–संज्ञा स्त्री० [अ०] जिंदगी। जीवन।
यौ०—हीन हयात में=जीवन-काल में। जिन्दगी में।

हयादार–वि० [संज्ञा स्त्री० हयादारी] जिसे हया हो। लज्जाशील। शर्मदार।

हर–वि० [फा०] १. प्रत्येक। एक एक। २. हरण करनेवाला। छीनने या लूटनेवाला। ३. दूर करनेवाला। मिटानेवाला। ४. वध या नाश करनेवाला। ५. ले जानेवाला। वाहक।
संज्ञा पुं० *१. खेत जोतने का हल। २. शिव। महादेव। ३. एक राक्षस, जो विभीषण का मंत्री था। ४. वह संख्या, जिससे भाग दें। भाजक (गणित)। ५. अग्नि। आग। ६. गदहा। ७. छप्पय के दसवें भेद का नाम। ८. टगण के पहले भेद का नाम।
मुहा०—हर एक=प्रत्येक। एकएक। हर रोज=प्रतिदिन। हर दम=सदा।

हरउआ†–संज्ञा पुं० लोरी। बच्चों को सुलाने का गीत।

हरएँ*–अव्य० धीरे-धीरे। चुपके से।

हरकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क्रिया। २. गति। चाल। हिलना-डोलना। ३. चेष्टा। ४. चाल-चलन ५. बुरा व्यवहार। बुरी चाल।

हरकना*†–क्रि० स० दे० "हटकना"।

हरकारा–संज्ञा पुं० [फा०] १. चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला। २. चिट्ठीरसाँ। डाकिया।

हरखना*–क्रि० अ० हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

हरखाना–क्रि० अ० हर्षित होना। दे० "हरखाना।"
क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना।

हरगिज, हर्गिज–अव्य० [फा०] कभी। कदापि। किसी भी हालत में।

हरचंद–अव्य० [फा०] १. कितने ही बार। बारबार। २. यद्यपि। अगर्चे।

हरजाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] बदचलन औरत। दुराचारिणी। कुलटा।
संज्ञा पुं० [फा०] १. हर जगह घूमनेवाला। २. आवारा।

हरजाना–संज्ञा पुं० [फा०] हानि का बदला। क्षतिपूर्ति।

हरट्ट*–वि० हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

हरण–संज्ञा पुं० १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। मिटाना। ३. नाश। संहार। ४. ले जाना। ५. भाग देना। तकसीम करना (गणित)।

हरता–संज्ञा पुं० दे० "हर्त्ता"।

हरता-धरता–संज्ञा पुं० सब बातों का अधिकार रखनेवाला। पूर्ण अधिकारी। नाश करनेवाला और भरण-पोषण करनेवाला।

हरताल–संज्ञा स्त्री० पीले रंग का एक खनिज पदार्थ।
मुहा०—(किसी बात पर) हरताल लगाना=नष्ट करना। रद्द करना।

हरद*–संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरदिया–वि० हल्दी के रंग का। पीला।
संज्ञा पुं० पीले रंग का घोड़ा।

हरदी*–संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरदौल–संज्ञा पुं० ओरछा के राजा जुझारसिंह (सन् १६२६-३५ ई०) के छोटे भाई,

जो बड़े भ्रातृभक्त थे। इन्हें 'हरदिया देव' भी कहते हैं।

हरद्वान–संज्ञा पुं० एक प्राचीन स्थान, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वानी–वि० हरद्वान का बना हुआ।

हरद्वार–संज्ञा पुं० दे० "हरिद्वार"।

हरना–क्रि० स० १. लूटना। चुराना या छीनना। २. दूर करना। हटाना। ३. मिटाना। नष्ट करना। ४. उठाकर ले जाना।

*क्रि० अ० दे० "हारना"।

*†–संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

मुहा०—मन हरना=मन को आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना=१. मार डालना। २. बहुत संताप या दुःख देना।

हरनाकस*‡–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हरनाच्छ†*–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।

हरनी–संज्ञा स्त्री० हिरन की मादा। मृगी।

हरनौटा–संज्ञा पुं० हिरन का बच्चा।

हरफ़–संज्ञा पुं० [अ०] अक्षर। वर्ण।

हरफा-रेवड़ी–संज्ञा स्त्री० १. कमरख की जाति का एक पेड़। २. उक्त पेड़ का फल।

हरबराना*†–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हरबा–संज्ञा पुं० हथियार।

हरबोंग–वि० १. गँवार। लट्ठमार। अक्खड़। २. मूर्ख। जड़।

संज्ञा पुं० १. अंधेर। कुशासन। २. उपद्रव।

हरम–संज्ञा पुं० [अ०] अंतःपुर। जनानखाना।

संज्ञा स्त्री० १. मुताही। रखेली स्त्री। २. दासी। ३. पत्नी।

यौ०—हरमसरा=अंतःपुर। जनानखाना।

हरमजदगी–संज्ञा स्त्री० बदमाशी। शरारत। कुटिलता।

हरयाल*–संज्ञा स्त्री० हरियाली।

हरये*–अव्य० दे० "हरुएँ"।

हरवल*–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हरवली–संज्ञा स्त्री० [तु०] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवा‡–संज्ञा पुं० दे० "हार"।

वि० दे० "हलका"।

हरवाना–क्रि० अ० जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावली करना।

क्रि० स० 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप।

हरवाहा–संज्ञा पुं० दे० "हलवाही"।

हरषना*–क्रि० अ० १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. पुलकित होना। रोमांच से प्रफुल्ल होना।

हरषाना*–क्रि० अ० १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. रोमांच से प्रफुल्ल होना।

क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरसिंगार–संज्ञा पुं० एक पेड़, जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डाँड़ी होती है। परजाता।

हरहाया–वि० [स्त्री० हरहाई] नटखट। चंचल।

हरहाई–वि० १. नटखट। चंचल। २. झगड़ालू। ३. मारने या तंग करनेवाली (गाय)।

हरहार–संज्ञा पुं० १. शिवजी के गले का हार। २. साँप। ३. शेषनाग।

हरांस–संज्ञा स्त्री० १. हरारत। २. थकावट। ३. चिन्ता। ४. दुःख। ५. भय। डर।

हरा–वि० [स्त्री० हरी] १. हरे रंग का। घास या पत्ती के रंग का। सब्ज। २. ताजा। जो मुरझाया न हो। ३. प्रफुल्ल। प्रसन्न। ४. (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५. कच्चा फल या दाना।

*‡दे० "हार"। माला।

मुहा०—हरा-भरा=१. जो सूखा या मुरझाया न हो। २. जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

हराई–संज्ञा स्त्री० हारने की क्रिया या भाव। हार।

हराना–क्रि० स० १. पराजित करना। परास्त करना। २. थकाना।

हरापन–संज्ञा पुं० हरे होने का भाव। हरियाली। सब्जी।

हराम–वि० [अ०] १. धर्मद्वारा वर्जित। २. निषिद्ध।

संज्ञा पुं० १. वह वस्तु या बात, जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो। २. सूअर (मुसल०)। ३. बुरा। अनुचित। ४. दूषित। ५. बेईमानी। ६. अधर्म। पाप। ७. व्यभिचार।

मुहा०—हराम का=१. बेईमानी से प्राप्त। २. मुफ्त का। ३. अधर्म से उत्पन्न या प्राप्त।

हरामखोर—संज्ञा पुं० १. पाप की कमाई खानेवाला। मुफ्तखोर। २. काम से जी चुरानेवाला। आलसी। निकम्मा।

हरामजादा—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० हरामजादी] १. व्यभिचार से उत्पन्न। दोगला। वर्णसंकर। २. नीच। दुष्ट। बदमाश। पाजी।

हरामी—वि० दे० "हरामजादा।" दोगला। नीच। २. दुष्ट। पाजी।

हरामीपन—संज्ञा पुं० 'हरामी' होने का भाव। नीचता। दुष्टता। बदमाशी।

हरारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हल्का ज्वर। ज्वरांश। २. गर्मी। ताप।

हरावरि*—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ावरि"। संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हरावल—संज्ञा पुं० सैनिकों का वह दल, जो मोरचे पर सबसे आगे रहता है।

हरास—संज्ञा पुं० [फा०] १. डर। २. आशंका। खटका। ३. दुःख। रंज। ४. निराशा। नाउम्मेदी।

हरहर*—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हरि—वि० १. पीला। २. हरा। हरित। ३. भूरा या बादामी।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। श्रीराम। ३. शिव। ४. इंद्र। ५. घोड़ा। ६. बंदर। ७. सिंह। ८. सूर्य्य। ९. चंद्रमा। १०. मोर। ११. साँप। १२. अग्नि। १३. वायु। १४. एक पर्वत का नाम। १५. एक वर्ष या भू-भाग का नाम। १६. अठारह वर्णों का एक छंद।
अव्य० धीरे। आहिस्ते।

हरिअर*‡—वि० हरा। सब्ज।

हरिअरी‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।

हरिअाना—क्रि० अ० हरा होना। पल्लवित होना। लहलहाना।

हरिकथा—संज्ञा स्त्री० भगवान् या उनके अवतारों का चरित्र-वर्णन।

हरिकीर्तन—संज्ञा पुं० भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान।

हरिगीतिका—संज्ञा स्त्री० अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद, जिसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु और अंत में लघु-गुरु होता है।

हरिचंदन—संज्ञा पुं० एक प्रकार का चंदन।

हरिजन—संज्ञा पुं० १. भगवान् का भक्त। २. अछूत जाति के व्यक्ति।

हरिजान*—संज्ञा पुं० दे० "हरियान"।

हरिण—संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिणी] १. मृग। हिरन। २. हंस। ३. सूर्य्य।

हरिणप्लुता—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद, जिसके विषम चरणों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण होता है।

हरिणाक्षी—वि० हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखों वाली। सुंदरी।

हरिणी—संज्ञा स्त्री० १. हिरन की मादा। २. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक, जिसे चित्रिणी भी कहते हैं। ३. एक वर्णिक छंद, जिसमें सत्रह वर्ण होते हैं। ४. दस वर्णों का एक छन्द। ५. पीली चमेली। ६. मजीठ।

हरित्—वि० १. हरा। सब्ज। २. भूरे या बादामी रंग का।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य के घोड़े का नाम। २. घोड़ा। ३. मरकत। ४. पन्ना। ५. सिंह। ६. सूर्य्य।

हरित—वि० १. पीला। जर्द। २. हरा। सब्ज। ३. भूरे या बादामी रंग का।

हरितमणि—संज्ञा पुं० १. मरकत। २. पन्ना।

हरिताभ—वि० हरे रंग की चमकवाला। हरापन लिये हुए।

हरितालिका—संज्ञा स्त्री० १. भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया। २. तीज। ३. तीज का स्त्रियों का व्रत।

हरिद्रा—संज्ञा स्त्री० १. हलदी। २. मंगल। ३. सीसा। ४. वन। ५. एक नदी। (इस शब्द के अनेक अर्थ हैं, पर यह विशेषकर हल्दी के अर्थ में प्रयुक्त होता है।)

हरिद्राराग—संज्ञा पुं० साहित्य में वह पूर्वराग जो स्थायी न हो।

हरिद्वार—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ से

गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है। इस स्थान के निकट बसा हुआ नगर।
हरिधाम—संज्ञा पुं० वैकुंठ।
हरिन—संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिनी] दे० "हिरन"।
हरिनग*—संज्ञा पुं० साँप की मणि।
हरिनाकुस*‡—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।
हरिणाक्ष—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।
हरिनाथ—संज्ञा पुं० बन्दरों में श्रेष्ठ, हनुमान्।
हरिनी—संज्ञा स्त्री० हिरन की मादा। मृगी।
हरिपद—संज्ञा पुं० १. विष्णु-लोक। वैकुंठ। २. एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुरु-लघु होता है।
हरिपुर—संज्ञा पुं० विष्णुलोक। वैकुंठ।
हरिप्रिया—संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. तुलसी। ३. लाल चंदन। ४. एक मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में गुरु होता है।
हरिप्रीता—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शुभ मुहूर्त (ज्योतिष)।
हरिबोधिनी—संज्ञा स्त्री० देवोत्थान एकादशी। कार्तिक शुक्ल एकादशी।
हरिभक्त—संज्ञा पुं० ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर का भजन करनेवाला।
हरिभक्ति—संज्ञा स्त्री० ईश्वर-प्रेम। भगवान् की भक्ति।
हरियर‡—वि० दे० "हरा"।
हरियाना—संज्ञा पुं० हिसार और रोहतक तक के आस-पास का प्रांत।
हरियाई†*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरियाली—संज्ञा स्त्री० १. हरे-हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार। २. दूब। ३. हरे रंग का फैलाव।
मुहा०—हरियाली सूझना=चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना।
हरियाली तीज—संज्ञा स्त्री० सावन बदी तीज।
हरिलीला—संज्ञा स्त्री० चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
हरिलोक—संज्ञा पुं० वैकुंठ। विष्णुलोक।
हरिवंश—संज्ञा पुं० १. कृष्ण का कुल। २. एक पुराण, जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तांत है।
हरिवासर—संज्ञा पुं० १. रविवार। २. विष्णु का दिन, एकादशी।
हरिवाहन—संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. इंद्र का एक नाम। ३. सूर्य का एक नाम।
हरिशंकर—संज्ञा पुं० १. विष्णु और शिव। २. एक विशेष प्रकार का रस, जो प्रमेह के रोगियों के लिए उपकारी होता है।
हरिशयनी—संज्ञा स्त्री० आषाढ़ शुक्ल एकादशी। कहा जाता है कि विष्णु भगवान् इस दिन सोते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागते हैं।
हरिश्चन्द्र—संज्ञा पुं० सूर्यवंश के २८वें प्रसिद्ध राजा, जो बहुत बड़े सत्यवादी और दानी थे। विश्वामित्र की माँगें पूरी करने के लिए इन्होंने अपना राज-पाट, पुत्र, स्त्री, सब कुछ त्याग दिया था और अपने आपको एक चाण्डाल के हाथ बेचकर उसका दासत्व स्वीकार किया था।
वि० सोने की-सी चमकवाला।
हरिस—संज्ञा स्त्री० हल का वह लट्ठा, जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जूआ रहता है। ईषा।
हरिसौरभ—संज्ञा पुं० कस्तूरी।
हरिहर-क्षेत्र—संज्ञा पुं० बिहार में एक तीर्थ-स्थान (सोनपुर में)। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला लगता है, जिसमें हाथी भी बिकते हैं।
हरी—संज्ञा पुं० दे० "हरि"।
संज्ञा स्त्री० १४ वर्णों का एक वृत्त। अनंद।
हरीतकी—संज्ञा स्त्री० हड़। हर्रे।
हरीतिमा—संज्ञा स्त्री० हरियाली। हरे-भरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार।
हरीरा—संज्ञा पुं० दूध में मसाले और मेवे डालकर बनाया हुआ पीने का एक पदार्थ, जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।
*†वि० [स्त्री० हरीरी] १. हरिअर। हरा। २. हर्षित। प्रफुल्ल। प्रसन्न।
हरीस—संज्ञा स्त्री० दे० "हरिस"।
हरुअ†*—वि० हलका।

†*–वि० दे० "हलका"।

हरुआई†–संज्ञा स्त्री० १. हलकापन। २. फुर्ती।

हरुआना†–क्रि० अ० १. हलका होना। लघु होना। २. फुर्ती करना।

हरुए†*–क्रि० वि० धीरे-धीरे। आहिस्ता से। इस प्रकार, जिसमें आहट न मिले। चुपचाप।

हरूफ–संज्ञा पुं० (अ० 'हरफ' का बहुवचन) अक्षर।

हरे*–संज्ञा पुं० 'हरि' शब्द के संबोधन का का रूप। जैसे—हरे राम।

क्रि० वि० १. धीरे से। आहिस्ते से। मंद। २. जो ऊँचा या जोर का न हो (शब्द)। ३. हलका। कोमल।

हरेव–संज्ञा पुं० [देश०] मंगोल जाति। मंगोलों का देश।

हरेवा–संज्ञा पुं० हरे रंग की एक चिड़िया।

हरैं*–क्रि० वि० दे० "हरे"।

हरैया†*–संज्ञा पुं० हरनेवाला। दूर करनेवाला।

हरौल–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हर्ज–संज्ञा पुं० [अ०] १. काम में रुकावट। अड़चन। बाधा। २. नुकसान। हानि।

हर्त्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० हर्त्री] १. हरण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।

हर्त्तार–संज्ञा पुं० दे० "हर्त्ता"।

हर्फ़–संज्ञा पुं० दे० "हरफ"।

हर्म्य–संज्ञा पुं० १. महल। प्रासाद। राजभवन। नरक।

हर्र–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।

हर्रा–संज्ञा पुं० बड़ी जाति की हड़।

हर्रे–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।

हर्ष–संज्ञा पुं० १. आनंद। खुशी। प्रसन्नता। २. खुशी या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना। ३. एक संचारी भाव।

हर्षण–संज्ञा पुं० १. खुशी या भय से रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लित होना या करना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. काम का वेग। ५. आँख का एक रोग। ६. एक विशेष प्रकार का श्राद्ध।

हर्षना–क्रि० अ० खुश होना। प्रसन्न होना।

हर्षाना*–क्रि० अ० हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

क्रि० स० हर्षित करना। खुश या प्रसन्न करना।

हर्षित–वि० प्रसन्न। खुश। प्रफुल्ल।

हर्षुल–वि० हर्षित रहनेवाला। प्रसन्न रहनेवाला। खुश-मिजाज।

संज्ञा पुं० १. प्रियतम। २. नायक। ३. हिरन।

हर्षोत्फुल्ल–वि० खुशी में फूला हुआ। अत्यन्त प्रसन्न।

हल्, हलंत–संज्ञा पुं० स्वरहीन व्यंजन। व्यंजन का वह शुद्ध रूप, जिसके अन्त में स्वर न लगा हो। इसका चिह्न (्) है, जो अक्षर के नीचे लगाया जाता है। जैसे—कदाचित्।

हल–संज्ञा पुं० १. जमीन जोतने का एक औजार। सीर। लांगल। २. भूमि नापने का लट्ठा। ३. एक प्राचीन अस्त्र का नाम।

संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब लगाना। उत्तर निकालना। २. किसी समस्या का समाधान।

मुहा०—हल जोतना=१. खेत में हल चलाना। २. खेती करना।

हलकंप–संज्ञा पुं० घबराहट। हलचल। उथल-पुथल। तहलका।

हलक़–संज्ञा पुं० [अ०] गले की नली। कंठ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना=१. पेट में जाना। २. (किसी बात का) मन में बैठना।

हलकई†–संज्ञा स्त्री० १. हलकापन। २. ओछापन। बेइज्जती। ३. हेठी।

हलकन–संज्ञा स्त्री० हलकने की क्रिया या भाव। हिलना।

हलकना†*–क्रि० अ० १. किसी चीज में भरे हुए जल का हिलने से शब्द करना। २. हिलना। डोलना। हिलोरें लेना। लहराना। ३. बत्ती की लौ का झिलमिलाना।

हलका–वि० [स्त्री० हलकी] १. जो भारी न हो। २. जो गाढ़ा न हो। पतला। महीन। ३. कम अच्छा। ४. खाली। छूँछा। ५. जो चटकीला न हो। ६. जो गहरा न हो। उथला। ७. कम। थोड़ा। ८. जो जोर का

न हो। मंद। ९. ओछा। तुच्छ। १०. आसान। ११. बेफिक्र। निश्चिंत। १२. प्रफुल्ल। १३. हरा। १४. ताजा।

†संज्ञा पुं० १. लहर। तरंग। [अ० हल्कः] २. कई गाँवों या कसबों का समूह, जो किसी काम के लिए नियत हो। ३. वृत्त। मंडल। गोलाई। ४. घेरा। परिधि। ५. मंडली। झुंड। दल। ६. गले का पट्टा। ७. पहिए की लोहे की हाल। ५. हाथियों का झुंड।

मुहा०—हलका करना=अपमानित करना। तुच्छ ठहराना। हलके-हलके=धीरे-धीरे।

हलकाई†—संज्ञा स्त्री० दे० "हलकापन"।

हलकान‡—वि० दे० "हैरान"।

हलकाना†—क्रि० अ० हलका होना। बोझ कम होना।

क्रि० स० १. हिलोर देना। २. दे० "हिलगाना"।

हलकापन—संज्ञा पुं० १. हलका होने का भाव। भारी न होने का भाव। लघुता। २. ओछापन। नीचता। ३. तुच्छ बुद्धि। ४. बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलकारा‡ संज्ञा पुं० दे० "हरकारा"।

हलकोरा†—संज्ञा पुं० [अनु०] लहर।

हलचल—संज्ञा स्त्री० १. हिलना-डोलना। २. घबराहट। ३. घबराहट के कारण दौड़-धूप, भगदड़, शोरगुल। खलबली। तहलका। धूम। ४. उपद्रव। दंगा।

वि० हिलता हुआ। डगमगाता हुआ। कंपित।

हलद-हाथ—संज्ञा स्त्री० विवाह में हल्दी चढ़ाने की रस्म।

हलदी—संज्ञा स्त्री० हरिद्रा। एक प्रसिद्ध पौधा और उसकी जड़, जो मसाले और रँगाई के काम में भी आती है।

मुहा०—हलदी उठना या चढ़ना=विवाह के पहले दूल्हे और दुलहिन के शरीर में हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना। हलदी लगना=विवाह होना। हलदी लगे न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च किए। मुफ्त में।

हलबू—संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़। करन।

हलधर—संज्ञा पुं० १. बलराम (हल को धारण करनेवाले)। २. किसान।

हलना†*—क्रि० अ० १. हिलना-डोलना। २. घुसना। पैठना।

हलफ़—संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर को साक्षी देकर कहना। कसम। शपथ।

मुहा०—हलफ उठाना=कसम खाना।

हलफ़नामा—संज्ञा पुं० शपथपत्र। (अदालत में पेश किया जानेवाला) वह कागज, जिस पर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलबल†*—संज्ञा पुं० खलबली। धूम। हलचल।

हलबलाना†—क्रि० अ० १. हड़बड़ाना। जल्दी करना। २. जल्दी में घबराना।

क्रि० स० १. दूसरे को जल्दी करने को कहना। २. दूसरे को घबराहट में डालना।

हलबी, हलब्बी—वि० १. हलब देश का (शीशा)। २. बढ़िया (शीशा)।

हलमुखी—संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

हलराना—क्रि० स० (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना। प्यार से गोद में झुलाना।

हलवा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा खाद्य-पदार्थ। मोहनभोग। हलुआ।

मुहा०—हलवे-माँडे से काम=केवल स्वार्थ-साधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से मतलब।

हलवाई—संज्ञा पुं० [स्त्री० हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह, हलवाहा—संज्ञा पुं० १. हल चलानेवाला। २. दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करनेवाला।

हलहलाना†—क्रि० स० खूब जोर से हिलाना-डुलाना। झकझोरना।

क्रि० अ० काँपना। थरथराना।

हलाक—वि० [अ०] मरा या मारा हुआ।

हलाकान‡—वि० [संज्ञा हलाकानी] परेशान। हैरान। तंग।

हलाकी—वि० मार डालनेवाला। मारू। घातक।

हलाकू—वि० हलाक करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक तुर्क सरदार, जो चंगेज खाँ का नाती और उसी के समान अत्याचारी था।

हला-भला—संज्ञा पुं० १. निर्णय। निबटारा। २. परिणाम।

हलायुध—संज्ञा पुं० बलराम (जिनका अस्त्र हल है)।

हलाल—वि० [अ०] शरअ या मुसलमानी धर्मपुस्तक के अनुकूल। जायज।

संज्ञा पुं० वह पशु, जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।

मुहा०—हलाल करना=खाने के लिए पशुओं को मुसलमानी शरअ के मुताबिक (धीरे धीरे गला रेतकर) मारना। जबह करना। हलाल का=ईमानदारी से पाया हुआ।

हलालखोर—संज्ञा पुं० [स्त्री० हलालखोरी, हलालखोरिन] १. हलाल की कमाई खानेवाला। मिहनत करके जीविका कमानेवाला। २. मेहतर। भंगी।

हलाहल—संज्ञा पुं० १. समुद्र-मंथन से निकला हुआ प्रचंड विष। २. महाविष। बहुत तेज जहर। ३. एक जहरीला पौधा।

हली—संज्ञा पुं० १. हल को धारण करनेवाले, बलराम। २. किसान।

हलीम—वि० [अ०] सीधा। शांत।

हलुक†*—वि० दे० "हलका"।

हलका—संज्ञा स्त्री० दे० [illegible]।

हलेरा†*—संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हलोरना—क्रि० स० १. पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना-डुलाना। २. मथना। ३. अनाज फटकना। ४. दोनों हाथों से समेटना। ५. कोई चीज बहुत अधिक इकट्ठा करना। संग्रह करना। (धन आदि)।

हलोरा†*—संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हल्दी—संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला—संज्ञा पुं० १. चिल्लाहट। शोर-गुल। कोलाहल। २. लड़ाई के समय की ललकार या शोर। ३. आक्रमण। हमला।

हल्लीश—संज्ञा पुं० एक प्रकार का उपरूपक (नाटक), जिसमें एक ही अंक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।

हव—संज्ञा पुं० १. आग में दी हुई आहुति। २. अग्नि।

हवन—संज्ञा पुं० १. मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालना। होम। यज्ञ। २. आग। ३. अग्निकुंड। ४. हवन करने का चमचा। स्रुवा।

हवनीय—वि० हवन के योग्य।

संज्ञा पुं० हवन के समय आग में डालने की वस्तु।

हवलदार—संज्ञा पुं० १. फौज में सबसे छोटा अफसर, २. बादशाही जमाने का वह अफसर, जो राजकर की ठीक-ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिए तैनात रहता था।

हवस—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चाह। लालसा। कामना। २. तृष्णा।

हवा—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वायु। पवन। २. भूत। प्रेत। ३. अच्छा नाम। प्रसिद्धि। ख्याति। ४. बड़प्पन या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख। ५. किसी बात की सनक।

मुहा०—हवा उड़ना=खबर फैलना। हवा करना=पंखे से हवा का झोंका लाना। पंखा हाँकना। हवा के घोड़े पर सवार=बहुत उतावली में। बहुत जल्दी में। हवा खाना=१. शुद्ध वायु के सेवन के लिए बाहर टहलना। २. असफल होना। हवा पीकर रहना=बिना आहार के रहना। (व्यंग्य) हवा बताना=बहाना करके कोई चीज न देना। टाल देना। हवा बाँधना=१. लंबी चौड़ी बातें कहना। शेखी हाँकना। २. गप्प हाँकना। हवा पलटना, फिरना या बदलना= १. दूसरी ओर की हवा चलने लगना। २. हालत बदलना। हवा बिगड़ना=१. संक्रामक रोग फैलना। २. रीति या चाल बिगड़ना। बुरे

विचार फैलना। ३. डर के कारण तबीअत खराब होना। हवा सा=बिलकुल महीन या हलका। हवा से लड़ना=किसी से अकारण लड़ना। हवा से बातें करना=१. बहुत तेज दौड़ना या चलना। २. आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना। किसी की हवा लगना=किसी की संगत का प्रभाव पड़ना। हवा हो जाना=१. झपटकर चल देना। भाग जाना। २. न रह जाना। एक बारगी गायब हो जाना। हवा बँधना=१. अच्छा नाम हो जाना। २. बाजार में साख होना।

हवाई–वि० १. हवा का। वायु-संबंधी। २. हवा में चलनेवाला। ३. कल्पित या झूठ। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाजी। बान। आसमानी।

मुहा०—(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ जाना। विवर्णता होना। मुँह पर हवाइयाँ उड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ना या मलिन हो जाना।

हवाई अड्डा–संज्ञा पुं० हवाई जहाजों के उतरने और ठहरने का स्थान। [अंग्रे०· एरोड्रम]

हवाई जहाज–संज्ञा पुं० हवा में उड़नेवाली सवारी। विमान। वायुयान।

हवाई हमला–संज्ञा पुं० विमान से आक्रमण करना या बम आदि गिराना।

हवागाड़ी–संज्ञा स्त्री० मोटर गाड़ी।

हवाचक्की–संज्ञा स्त्री० हवा के जोर से चलनेवाली आटा पीसने की चक्की।

हवादार–वि० [फा०] १. जिसमें हवा आती-जाती हो। २. जिसमें हवा आने-जाने के लिए खिड़कियाँ या दरवाजे हों। संज्ञा पुं० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हल्का तख्त।

हवाबाज–संज्ञा पुं० हवाई जहाज चलानेवाला। उड़ाका। विमान-चालक।

हवाल–संज्ञा पु० १. हाल। दशा। अवस्था। २. परिणाम। ३. समाचार। खबर। वृत्तान्त।

हवालदार–संज्ञा पुं० दे० "हवलदार"।

हवाला–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रमाण का उल्लेख। २. उदाहरण। दृष्टांत। मिसाल। ३. सुपुर्दगी। जिम्मेदारी।

मुहा०—(किसी के) हवाले करना=किसी के सुपुर्द करना। सौंपना।

हवालात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहरे के भीतर रखा जाना। २. नजरबंदी। मुकदमे के फैसले के पहले अभियुक्त को भागने से रोकने के लिए दी जानेवाली कैद। हाजत। ३. विचाराधीन अभियुक्तों को रखने का स्थान।

हवास–संज्ञा पुं० [अ०] १. इंद्रियाँ। २. संवेदन। ३. चेतना। संज्ञा। होश।

मुहा०—हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। भय आदि से स्तंभित होना।

हवि–संज्ञा पुं० हवन की सामग्री। आहुति दी जानेवाली वस्तु।

हविष्य–वि० हवन करने योग्य। संज्ञा पुं० वह वस्तु, जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय। बलि। हवि।

हविष्यान्न–संज्ञा पुं० यज्ञ के समय का भोजन। पवित्र खाद्य पदार्थ।

हवेली–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कोठी। पक्का बड़ा मकान। २. पत्नी। स्त्री।

हव्य–संज्ञा पुं० हवन की सामग्री। आहुति दी जानेवाली वस्तु।

हशमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वैभव। ऐश्वर्य। २. गौरव। बड़ाई।

हसद–संज्ञा पुं० [अ०] डाह। ईर्ष्या।

हसन–संज्ञा पुं० १. हँसना। २. परिहास। दिल्लगी। ३. विनोद।

हसब–अव्य० [अ०] अनुसार। मुताबिक।

हसरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रंज। अफसोस। २. हार्दिक इच्छा। अभिलाषा। अरमान।

हसित–वि० १. जिस पर लोग हँसते हों। २. जो हँसा हो। संज्ञा पुं० १. हँसना। २. हँसी-ठट्ठा। ३. कामदेव का धनुष।

हसीन–वि० खूबसूरत। सुंदर।

हस्त–संज्ञा पुं० १. हाथ। २. हाथी की सूँड़।

३. २४ अंगुल की एक नाप। हाथ कुहनी से उँगली के छोर तक की लम्बाई)। ४. हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५. छंद का एक चरण। ६. समूह। ७. गुच्छा। ८. नाच में हाथों द्वारा भाव बताना। ९. एक नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का-सा माना गया है।

हस्तक–संज्ञा पुं० १. हाथ। २. करताल नामक बाजा। ३. हाथ से बजाई हुई ताली। ४. नाच के समय की एक मुद्रा (हाथों से भाव प्रकट करने की मुद्रा)। ५. संगीत का ताल।

हस्तकौशल–संज्ञा पुं० किसी काम में हाथ की निपुणता। हाथ की कारीगरी। हाथ की सफाई।

हस्तक्रिया–संज्ञा स्त्री० १. हाथ का काम। दस्तकारी। २. हाथ से इंद्रिय-संचालन। सरका कूटना।

हस्तक्षेप–संज्ञा पुं० बाधा डालना। दस्तंदाजी। किसी के काम में हेरफेर करने के लिए हाथ डालना या अनावश्यक रूप से पड़ना।

हस्तगत–वि० हाथ में आया हुआ। प्राप्त।

हस्तचापल्य–संज्ञा पुं० हाथ की फुर्ती या सफाई।

हस्तत्राण–संज्ञा पुं० अस्त्रों की चोट या ठंडक से बचने के लिए हाथ में पहना जानेवाला आवरण। दस्ताना।

हस्तधारण–संज्ञा पुं० १. हाथ पकड़ना। २. पाणिग्रहण। विवाह। ३. हाथ का सहारा देना। ४. दूसरे के वार को हाथ पर रोकना।

हस्तपृष्ठ–संज्ञा पुं० हथेली की पीठ। हथेली का उलटा भाग।

हस्तमैथुन–संज्ञा पुं० हाथ के द्वारा इंद्रिय-संचालन। सरका कूटना।

हस्तरेखा–संज्ञा स्त्री० हथेली में पड़ी हुई लकीरें, जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।

हस्तलाघव–संज्ञा पुं० हाथ की फुर्ती। हाथ की सफाई।

हस्तलिखित–वि० हाथ का लिखा हुआ (लेख, ग्रंथ आदि)।

हस्तलिपि–संज्ञा स्त्री० १. हाथ की लिखावट। २. लेख, ग्रंथ आदि।

हस्तवारण–संज्ञा पुं० शत्रु की चोट को हाथ पर रोकना।

हस्तसूत्र–संज्ञा पुं० विवाह के समय पहनाया जानेवाला सूत का कंगन।

हस्तांतरण–संज्ञा पुं० एक हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना (सम्पत्ति, अधिकार आदि)।

हस्ताक्षर–संज्ञा पुं० अपने हाथ से लिखा गया अपना नाम। दस्तखत।

हस्ताक्षरित–वि० जिस पर हस्ताक्षर किए गए हों। दस्तखत किया हुआ।

हस्तामलक–संज्ञा पुं० १. हाथ में आया हुआ आँवला—अर्थात् किसी विषय के प्रत्येक अंग का ज्ञान। भले प्रकार समझा हुई बात। २. वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ-साफ जाहिर हो गया हो।

हस्तिकंद–संज्ञा पुं० एक पौधा, जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिकर्णिका–संज्ञा स्त्री० हठयोग का एक आसन।

हस्तिजिह्वा–संज्ञा स्त्री० १. हाथी की जीभ। २. दाहिनी आँख की नस।

हस्तिदंत–संज्ञा पुं० १. हाथी का दाँत। २. कपड़ा टाँगने की खूँटी। ३. मूली।

हस्तिनापुर–संज्ञा पुं० कौरवों की राजधानी, जो वर्त्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूर पर थी।

हस्तिनी–संज्ञा स्त्री० १. मादा हाथी। हथिनी। २. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से सबसे निकृष्ट भेद। ३. एक सुगन्धित द्रव्य।

हस्ती–संज्ञा पुं० [स्त्री० हस्तिनी] हाथी। संज्ञा स्त्री० [फा०] अस्तित्व। होने का भाव।

हस्ते–अव्य० हाथ से। द्वारा। मारफत।

हहर–संज्ञा स्त्री० १. थर्राहट। कँपकँपी। २. डर। भय।

हहरना–क्रि० अ० [अनु०] १. काँपना। थरथराना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। थर्राना। ३. चकित रह जाना। चकपकाना। दंग रह जाना। ४. डाह करना।

हहराना–क्रि० अ० १. हहरना। काँपना। थरथराना। २. डरना। ३. दे० "हरहराना"। क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।

हहा–संज्ञा स्त्री० १. हँसने का शब्द। ठट्ठा। २. दीनतासूचक शब्द। गिड़गिड़ाने का शब्द। ३. हाहाकार।

मुहा०—हहा खाना=बहुत गिड़गिड़ाना।

हाँ–अव्य० १. स्वीकृति, सम्मति आदि प्रकट करनेवाला शब्द। २. एक शब्द, जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि जो बात पूछी जा रही है, वह ठीक है। ३. वह शब्द, जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में, या अंशतः, माना जाना प्रकट किया जाता है। *४. दे० "यहाँ"।

मुहा०—हाँ करना=सम्मत होना। राजी होना। हाँ जी हाँ जी करना=खुशामद करना।

हाँक–संज्ञा स्त्री० १. किसी को बुलाने के लिए जोर का शब्द। पुकार। २. ललकार। हुंकार। गर्जन। ३. उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४. सहायता के लिए की हुई पुकार। दुहाई।

मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना=जोर से पुकारना। हाँक मारना=दे० "हाँक लगाना"। हाँक-पुकारकर कहना=सबके सामने निर्भय और निस्संकोच कहना।

हाँकना–क्रि० स० १. पंखे से हवा पहुँचाना। जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २. ललकारना। हुंकार करना। ३. बढ़-बढ़कर बोलना। सीटना। ४. मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। जानवरों को चलाना। भगाना। ५. गाड़ी, रथ आदि चलाना।

मुहा०—डींग की हाँकना=बढ़-बढ़कर बातें करना।

हाँका–संज्ञा पुं० १. हाँक। पुकार। ललकार। २. गरज। ३. दे० "हंकवा"।

हाँगी–संज्ञा स्त्री० हामी। स्वीकृति।

मुहा०—हाँगी भरना=स्वीकार करना।

हाँड़ना‡–क्रि० स० बेकार इधर-उधर घूमना।

हाँड़ी–संज्ञा स्त्री० १. बटलोई के आकार का मिट्टी का बरतन। हँड़िया। २. इसी आकार का शीशे का वह पात्र, जो सजावट के लिए कमरे में टाँगा जाता है। ३. चिराग का बड़ा गोल शीशा।

मुहा०—हाँड़ी पकना=१. हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। २. भीतर ही भीतर कोई युक्ति रचा जाना। कोई षड्‌यंत्र रचा जाना। हाँड़ी चढ़ना=कोई चीज पकाने के लिए हाँड़ी का आग पर रखा जाना।

हाँता*–वि० [स्त्री० हाँती] अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। दूर किया हुआ।

हाँपना, हाँफना–क्रि० अ० जोर-जोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना।

हाँफा–संज्ञा पुं० जोर-जोर से साँस लेना। बच्चों का एक रोग।

हाँसना‡*–क्रि० अ० दे० "हँसना"।

हाँसल–संज्ञा पुं० वह घोड़ा, जिसका रंग मेहँदी-सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों। कुम्मैत हिनाई।

हाँसी–संज्ञा स्त्री० १. हँसी। दिल्लगी। मजाक। २. उपहास। ३. निंदा।

हाँ-हाँ–अव्य० मना करने का शब्द। निषेध-सूचक शब्द। जैसे—अगर कोई किसी को मार रहा हो, उस समय "हाँ हाँ" करना।

हा–अव्य० १. शोक या दुःख-सूचक शब्द। २. आश्चर्य्य या हर्ष-सूचक शब्द। ३. भय-सूचक शब्द।

संज्ञा पुं० मारनेवाला। वध करनेवाला।

हाइ‡*–अव्य० दे० "हाय"।

संज्ञा स्त्री० १. दशा। हालत। २. घात। ३. ढंग। तौर।

हाइजीन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] स्वास्थ्य-विज्ञान।

हाइड्रोइलेक्ट्रिक–वि० [अंग्रे०] जलधारा से उत्पन्न बिजली की शक्ति।

हाइड्रोजन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] सबसे हलका वायुरूप तत्व। उद्‌जन।

हाइड्रोसील–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] अंडकोष बढ़ने का रोग। फोते का बढ़ना।

हाइफन–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] दो या अधिक

शब्दों के बीच में लगाया जानेवाला संयोजक चिह्न (-) जैसे—पत्र-व्यवहार।

हाईकोर्ट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] उच्च न्यायालय। किसी राज्य की सबसे ऊँची अदालत।

हाऊस—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. घर। मकान। कोठी। २. सभा। मंडली। ३. विधान सभा की बैठक, सदन।

हाऊ—संज्ञा पुं० मकाऊँ। हौआ।

हाकल—संज्ञा पुं० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।

हाकलिका—संज्ञा स्त्री० पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाकली—संज्ञा स्त्री० दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाकिम—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० हाकिमी] १. हुकूमत करनेवाला। शासक। २. बड़ा अधिकारी या अफसर।

हाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जरूरत। आवश्यकता। २. चाह। ३. पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।

मुहा०—हाजत में देना या रखना=पहरे के भीतर देना। हवालात में डालना।

हाजमा—संज्ञा पुं० [अ०] १. भोजन पचने की क्रिया। पाचन-क्रिया। २. भोजन पचाने की शक्ति। पाचन-शक्ति।

हाजिम—वि० [अ०] हजम करनेवाला। भोजन पचानेवाला। पाचक।

हाजिर—वि० [अ०] उपस्थित। मौजूद। विद्यमान।

हाजिर-जवाब—वि० [अ०] [संज्ञा हाजिर-जवाबी] १. बातों का तुरन्त और अच्छा जवाब देनेवाला। २. इस तरह जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न-मति।

हाजिरबाश—वि० [अ०] १. हाजिर रहनेवाला उपस्थित रहनेवाला। २. लोगों से मिलने-जुलनेवाला।

हाजिरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] मंत्र आदि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना, जिससे वह अनेक प्रकार की बातें कहने लगता है।

हाजी—संज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान, जो हज (मक्का की यात्रा) कर आया हो।

हाट—संज्ञा स्त्री० १. बाजार। २. दूकान। ३. बाजार लगने का दिन।

मुहा०—हाट करना=१. दूकान लगाकर बैठना। २. बाजार में चीजें खरीदना। हाट लगना=बाजार में दूकानें लगना। हाट चढ़ना=बाजार में बिकने के लिए आना

हाटक—संज्ञा पुं० स्वर्ण। सोना।

हाटकपुर—संज्ञा पुं० लंका।

हाटकलोचन—संज्ञा पुं० हिरण्याक्ष-नामक राक्षस।

हाड़†*—संज्ञा पुं० १. हड्डी। २. वंश या जाति की मर्य्यादा। कुलीनता।

हाता—संज्ञा पुं० १. अहाता। घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २. सीमा। हद। ३. हंता। मारनेवाला। ४. देश-विभाग। हलका या सूबा। प्रांत।

वि० [स्त्री० हाती] १. अलग। दूर किया हुआ। २. नष्ट। बरबाद।

हातिम—संज्ञा पुं० [अ०] १. निपुण। चतुर। २. उस्ताद। ३. एक प्राचीन अरब सरदार, जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार था। ४. अत्यंत दानी और उदार मनुष्य।

मुहा०—हातिम की कबर पर लात मारना=बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना (व्यंग्य)।

हाथ—संज्ञा पुं० १. कन्धे से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। कर। २. कोहनी से पंजे के सिरे तक की लम्बाई की नाप। दो हाथ का एक गज होता है। ३. ताश, जूए आदि के खेल में एक-एक आदमी के खेलने की बारी। दाँव।

मुहा०—हाथ कंगन को आरसी क्या=प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं। हाथ में आना या पड़ना=अधिकार या वश में आना। मिलना। (किसी को) हाथ उठाना=सलाम करना। प्रणाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना=मारना। मारने को तैयार होना। हाथ ऊँचा होना=१. दान

देने में प्रवृत्त होना। २. संपन्न होना। हाथ कट जाना=१. कुछ करने लायक न रह जाना। २. जबानी या लिखकर वचन देने के कारण कुछ करने योग्य न रहना। हाथ का मैल=तुच्छ वस्तु। हाथ खाली होना= पास में कुछ द्रव्य न रह जाना। हाथ खुज-लाना=१. मारने को जी करना। २. कुछ मिलने की उम्मीद दिखाई देना। हाथ खींचना=किसी काम से अलग हो जाना। सहयोग न देना। हाथ चलाना=मारना। हाथ [illegible]ा= किसी की कारीगरी पर इतना खुश [illegible] कि उसके हाथों को प्रेम से देखना। हाथ छोड़ना=मारना। प्रहार करना। हाथ जोड़ना=१. प्रणाम करना। नमस्कार करना। २. विनती करना। (दूर से) हाथ जोड़ना=संबंध न रखना। दूर या अलग रहना। हाथ डालना=किसी काम में हाथ लगाना। योग देना। हाथ तंग होना=खर्च के लिए रुपया-पैसा न रहना। हाथ धोना=खो देना। नष्ट करना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=किसी काम में जी-जान से लग जाना। किसी काम को पूरा करने पर तुल जाना। हाथ पकड़ना=१. (किसी को) कोई काम करने से रोकना। २. आश्रय देना। शरण में लेना। ३. पाणिग्रहण करना। विवाह करना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना= खाली बैठे रहना। कुछ काम-धंधा न करना। हाथ पसारना या फैलाना=कुछ माँगना। हाथ-पाँव चलना=काम करने की शक्ति होना। हाथ-पाँव ठंढे होना=१. मरणासन्न होना। २. भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना। हाथ-पाँव फूलना= डर या शोक से घबरा जाना। हाथ-पाँव पटकना=छटपटाना। हाथ-पाँव मारना या हिलाना=१. प्रयत्न करना। २. बहुत परिश्रम करना। हाथ-पैर जोड़ना= विनती करना। अनुनय-विनय करना। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना=किसी वस्तु को उड़ा लेना। ले लेना। (किसी काम में) हाथ बँटाना=शामिल होना। शरीक होना। हाथ बाँधे खड़ा रहना=सेवा में बराबर उप-स्थित रहना। हाथ मलना=१. बहुत पछ-ताना। २. निराश और दुःखी होना। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना=उड़ा लेना। गायब कर लेना। हाथ में करना=वश में करना। ले लेना। हाथ में होना=अधिकार या वश में होना। हाथ रँगना=घूस लेना। हाथ रोपना या ओड़ना=हाथ फैलाना। माँगना। हाथ लगना=हाथ में आना। प्राप्त होना। (किसी काम में) हाथ लगना= १. आरंभ होना। २. किसी के द्वारा किया जाना। (किसी वस्तु में) हाथ लगना=छू जाना। स्पर्श होना। किसी काम में हाथ लगाना=१. आरंभ करना। २. योग देना। हाथ लगाना=छूना। स्पर्श करना। हाथ लगे मैला होना=इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मैला होना। हाथों हाथ=एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। तुरन्त। हाथों हाथ लेना=बहुत आदर और सम्मान से स्वागत करना।

हाथपान—संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथफूल—संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा—संज्ञा पुं० १. मुठिया। दस्ता। २. पंजे की छाप या चिह्न। छापा।

हाथाजोड़ी—संज्ञा स्त्री० एक पौधा, जो दवा के काम में आता है।

हाथापाई, हाथाबाँही—संज्ञा स्त्री० मारपीट। वह लड़ाई, जिसमें हाथ-पैर चलाए जायँ। भिड़ंत। मुठभेड़।

हाथी—संज्ञा पुं० [स्त्री० हथिनी] एक बहुत बड़ा चौपाया, जिसकी लम्बी सूँड़ होती है। **मुहा०**—हाथी बाँधना=बहुत अमीर होना। हाथी के संग गाँड़े खाना=बहुत बड़े बलवान् की बराबरी करना।

हाथीखाना—संज्ञा पुं० फीलखाना। गजशाला। हाथी बाँधने का स्थान।

हाथीदाँत—संज्ञा पुं० हाथी के मुँह के दोनों ओर बाहर निकले हुए दो लम्बे और सफेद दाँत, जो केवल दिखावटी होते हैं। इनसे कई तरह की चीजें बनती हैं।

हाथीनाल–संज्ञा स्त्री० हाथी पर चलनेवाली तोप। हथनाल। गजनाल।

हाथीपाँव–संज्ञा पुं० दे० "फीलपाँव"। फीलपाँव रोग, जिससे पैर बहुत फूल जाते हैं।

हाथीवान–संज्ञा पुं० हाथी को चलानेवाला आदमी। महावत। फीलवान।

हादसा–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुर्घटना। २. भारी संकट। आपत्ति। आशंका।

हान*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

हानि–संज्ञा स्त्री० १. नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। घाटा। २. नाश। ३. अभाव। ४. अनिष्ट। बुराई। ५. स्वास्थ्य में होनेवाली खराबी।

हानिकर–वि० १. हानि करनेवाला। नुकसान पहुँचानेवाला। २. बुरा फल देनेवाला। ३. तंदुरुस्ती खराब करनेवाला।

हानिकारक–वि० दे० "हानिकर"।

हानिकारी–वि० दे० "हानिकर"।

हाफ़िज़–वि० हिफाजत करनेवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक।

संज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान, जिसे कुरान कंठस्थ हो।

हामी–संज्ञा स्त्री० 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार।

संज्ञा पुं० हिमायत या समर्थन करनेवाला। मदद करनेवाला। सहायक।

मुहा०—हामी भरना=मंजूर करना।

हाय–अव्य० अफसोस, दुःख या पीड़ा आदि प्रकट करनेवाला शब्द। आह।

संज्ञा स्त्री० कष्ट। पीड़ा। दुःख।

हायन–संज्ञा पुं० वर्ष। साल।

हायल*–वि० १. घायल। मूर्च्छित। २. शिथिल।

वि० [अ०] दो वस्तुओं के बीच में पड़नेवाला। बीच में आड़ करनेवाला। रोकनेवाला। अंतरवर्त्ती।

हाय-हाय–अव्य० शोक, दुःख, घबराहट या पीड़ा-सूचक शब्द। दे० "हाय"।

संज्ञा स्त्री० १. शोक। दुःख। पीड़ा। २. घबराहट। परेशानी।

हार–संज्ञा स्त्री० १. पराजय। शिकस्त। लड़ाई, खेल या बाजी आदि को प्रतिद्वंद्वी से न जीतने का भाव। 'जीत' का उलटा। २. हानि। ३. जब्ती। राज्य-द्वारा हरण। ४. विरह। वियोग। थकावट।

संज्ञा पुं० १.गले की माला। २. ले जानेवाला। वहन करनेवाला। ३. नाश करनेवाला। नाशक। ४. मनोहर। सुंदर। ५. अंकगणित में भाजक। ६. पिंगल या छंदःशास्त्र में गुरु मात्रा।

प्रत्य० दे० "हारा"।

मुहा०—हार खाना=हारना।

हारक–संज्ञा पुं० १. हरण करनेवाला। २. मनोहर। सुंदर। ३. हार। माला। ४. चोर। लुटेरा। ५. गणित में भाजक।

हारना–क्रि० अ० १. पराजित होना। शिकस्त खाना। 'जीतना' का उलटा। २. असफल होना। ३. थक जाना। प्रयत्न में निराश होना। ४. असमर्थ होना।

क्रि० स० १. गँवाना। खोना। २. छोड़ देना। न रख सकना। दे देना।

मुहा०—हारे दर्जे=लाचार होकर। विवश होकर। हारकर=१. असमर्थ होकर। २. लाचार होकर।

हारबंध–संज्ञा पुं० एक चित्र-काव्य, जिसमें पद्य हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारवार*–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़बड़ी"।

हारसिंगार–संज्ञा पुं० हरसिंगार। (सुगंधित फूलवाला एक पेड़) पारिजात।

हारा†–प्रत्य० [स्त्री० हारी] एक प्रत्यय, जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्त्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है। वाला। जैसे, लकड़हारा।

हारित–वि० १. हारा हुआ। खोया या गँवाया हुआ। २. हरण कराया हुआ। छीना हुआ। ३. मोहित। ४. वंचित।

संज्ञा पुं० १. वर्णिक छन्द। २. तोता। सुग्गा।

हारिल–संज्ञा पुं० एक चिड़िया, जो प्रायः अपने चंगुल में तिनका लिये रहती है।

हारी–वि० [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। ३. चुरानेवाला। ४. दूर करनेवाला। ५.

नाश करनेवाला। ६. मोहित करनेवाला। संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं।

हारीत—संज्ञा पुं० १. चोर। लुटेरा। २. चोरी। लुटेरापन। ३. कण्व ऋषि के एक शिष्य।

हारौल—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हार्ट—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. हृदय। दिल। २. चित्त। मन। आत्मा। ३. साहस। ४. मध्य-भाग। ५. सत्त्व।

हार्टफेल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] हृदय की गति रुक जाना। दिल की धड़कन बन्द हो जाना। एकाएक मृत्यु हो जाना।

हार्दिक—वि० १. हृदय का। हृदय-संबंधी। २. हृदय से निकला हुआ। ३. दिली। सच्चा।

हार्सपावर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बिजली या भाप की शक्ति, जो घोड़ों की शक्ति के रूप में आँकी जाती है।

हाल—संज्ञा पुं० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३. समाचार। वृत्तांत। ४. ब्योरा। विवरण। कैफियत। ५. कथा। ६. ईश्वर में तन्मयता। लीनता। (मुसल०) वि० वर्तमान। उपस्थित। मौजूद। अव्य० १. इस समय। अभी। २. तुरंत। संज्ञा स्त्री० १. हिलना-डोलना। २. धक्का। ३. झटका। ४. पहिए के चारों ओर का लोहे का घेरा।

मुहा०—हाल में=थोड़े ही दिन हुए। हाल का=नया। ताजा।

हालगोला—संज्ञा पुं० गेंद।

हालडोल—संज्ञा पुं० १. हिलना डोलना। गति। २. कंपन। ३. हलचल। हलकंप।

हालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. आर्थिक स्थिति। ३. परिस्थिति।

हालना†*—क्रि० अ० १. हिलना। डोलना। हरकत करना। २. काँपना। झूमना।

हालरा—संज्ञा पुं० १. बच्चों को लेकर हिलाना-डुलाना। २. झोंका। ३. लहर। हिलोर।

हालाँकि—अव्य० [फा०] यद्यपि। गो कि। ऐसी बात है, फिर भी।

हाला—संज्ञा स्त्री० शराब। मदिरा।

हालाहल—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हालिम—संज्ञा पुं० एक पौधा, जिसके बीज दवा के काम में आते हैं। चंसुर।

हाली—अव्य० जल्दी। शीघ्र।

हालों—संज्ञा पुं० दे० "हालिम"।

हाव—संज्ञा पुं० संयोग के समय नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ। इनकी संख्या ११ है—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, बिब्बोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला।

हावनदस्ता—संज्ञा पुं० [फा०] खरल और बट्टा। खल और लोढ़ा।

हावभाव—संज्ञा पुं० स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ। नाज-नखरा।

हाशिया—संज्ञा पुं० १. किनारा। २. गोट। मगजी। ३. हाशिए या किनारे पर का लेख या नोट।

मुहा०—हाशिए का गवाह=वह गवाह, जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढ़ाना=किसी बात में मनोरंजन आदि के लिए कुछ और बात जोड़ना।

हास—संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव। २. दिल्लगी। मजाक। ३. उपहास। वि० उज्ज्वल। सफेद रंग।

हासक—संज्ञा पुं० [स्त्री० हासिका] हँसने-वाला। मसखरा। हँसोड़।

हासिल—वि० [अ०] प्राप्त। पाया हुआ। संज्ञा पुं० १. गुणा करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक, जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २. लाभ। नफा। ३. उपज। पैदावार। ४. गणित की क्रिया का फल। ५. जमा। लगान।

हासी—वि० [स्त्री० हासिनी] हँसनेवाला।

हास्य—संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। ३. विनोद। दिल्लगी। मजाक। ४. उपहास। निंदापूर्ण हँसी। वि० १. हँसने के योग्य। २. उपहास के योग्य। ३. वह जिस पर लोग हँसें।

हास्यास्पद—संज्ञा पुं० १. हँसी उत्पन्न करने वाला। २. वह, जिसकी लोग हँसी उड़ावें। ३. हँसी उड़ाए जाने लायक। उपहास का विषय।

हास्योत्पादक–वि० हँसी उत्पन्न करनेवाला। वह बात, जिससे लोगों को हँसी आए। उपहास के योग्य।

हा हंत–अव्य० हाय। अत्यन्त शोक या करुणा।

हाहा–संज्ञा पुं० १. जोर से हँसने का शब्द २. गिड़गिड़ाने का शब्द। ३. बहुत विनती या दीनता की पुकार। दुहाई।

यौ०—हाहा हीही, हाहा ठीठी=हँसी-ठट्ठा।

मुहा०—हाहा करना या खाना=गिड़गिड़ाना। बहुत विनती करना।

हाहाकार–संज्ञा पुं० घबराहट या दुख की चिल्लाहट। बहुत से आदमियों के मुँह से निकला हुआ "हाहा' शब्द। कुहराम।

हाहाहूत*–संज्ञा पुं० दे० "हाहाकार"। कुहराम।

हाहाहूहू–संज्ञा पुं० १. हाहा करके हँसना। २. हँसी-ठट्ठा।

हाही–संज्ञा स्त्री० कुछ पाने के लिए 'हाय-हाय' करते रहना।

हाहू–†*–संज्ञा पुं० १. शोरगुल। कोलाहल। २. हलचल। धूम।

हाहूबेर–संज्ञा पुं० जंगली बेर। झड़बेड़ी।

हिंकरना–क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

हिंकार–संज्ञा पुं० गाय के रँभाने का शब्द।

हिंगलाज–संज्ञा स्त्री० दुर्गा या देवी की एक मूर्त्ति, जो सिंध में है।

हिंगाष्टक चूर्ण–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण, जिसमें हींग आदि आठ औषधियाँ पड़ती हैं।

हिंगु–संज्ञा पुं० हींग।

हिंगुपत्र–संज्ञा पुं० दे० "हिंगोट"। इंगुदी पेड़।

हिंगुल–संज्ञा पुं० ईंगुर।

हिंगोट–संज्ञा पुं० हिंगुपत्र। इंगुदी पेड़। एक झाड़दार कँटीला जंगली पेड़, जिसके गोल छोटे फलों से तेल निकलता है।

हिंछा*‡–संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।

हिंडन–संज्ञा पुं० घूमना। फिरना।

हिंडोरा–संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।

हिंडोल–संज्ञा पुं० १. हिन्दोल। हिंडोला। झूला। पालना। २. एक प्रकार का राग।

हिंडोलना‡–संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।

हिंडोला–संज्ञा पुं० १. पालना। झूला। २. चर्खी। ऊपर-नीचे घूमनेवाला चक्करदार झूला, जिसमें बैठने के लिए चौखटे बने रहते हैं।

हिंताल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खजूर।

हिंद–संज्ञा पुं० [फा०] भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।

हिंदवाना*†–संज्ञा पुं० [फा०] कलींदा। तरबूज।

हिंदवी–संज्ञा स्त्री० हिंदी भाषा।

हिंदी–संज्ञा पुं० हिन्दी भाषा। भारत की राष्ट्र-भाषा, जो नागरी लिपि में लिखी जाती है। वि० हिन्द का। हिंदुस्तान का। भारतीय। संज्ञा पुं० हिंद का रहनेवाला। भारतवासी। भारतीय।

हिंदुस्तान–संज्ञा पुं० [फा० हिंदोस्तान] भारतवर्ष।

हिंदुस्तानी–संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. बोल-चाल या व्यवहार की वह हिंदी, जिसमें न तो बहुत अरबी-फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के।

वि० [फा०] हिंदुस्तान का।

संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी।

हिंदुस्थान–संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।

हिंदू–संज्ञा पुं० [फा०] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्य्य जाति के वंशज। हिंदू-धर्म का अनुयायी।

हिंदोस्तान–संज्ञा पुं० [फा०] दे० "हिंदुस्तान"।

हियाँ†*–अव्य० दे० "यहाँ"।

हिंव–संज्ञा पुं० दे० "हिम"।

हिंवार†–संज्ञा पुं० बर्फ। पाला।

हिंस–संज्ञा स्त्री० घोड़ों के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट।

हिंसक–संज्ञा पुं० १. हिंसा करनेवाला। मार डालनेवाला। घातक। २. हानि या नुकसान करनेवाला। बुराई करनेवाला। ३. शत्रु। वि० जीवों को मारकर उनका मांस खानेवाला (जानवर)।

हिंसन–संज्ञा पुं० [हिंसनीय. हिंसित, हिंस्य] १. हिंसा करना। जान मारना। वध करना। २. कष्ट पहुँचाना। सताना। बुराई करना या चाहना।

हिंसा—संज्ञा स्त्री० १. जीवों को मारना या कष्ट देना। २. हानि पहुँचाना।
हिंसात्मक—वि० जिसमे हिंसा हो। हिंसा से युक्त।
हिंसालु—वि० १. हिंसा करनेवाला। मारनेवाला। २. हिंसा करने का स्वभाव रखनेवाला।
हिंस्र—वि० हिंसा करनेवाला। मारनेवाला। खूँखार।
हिंस्रक—वि० १. हिंसा करनेवाला। मार डालनेवाला। २. जीवों को मारकर मांस खानेवाला (जानवर)।
हि—एक पुरानी विभक्ति, जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर बाद में कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया।
‡*अव्य० दे० "ही"।
हिअ, हिआ—संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हिकमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. युक्ति। तदबीर। २. उपाय चतुराई का ढंग। चाल। ३. कोई नई बात या उपाय ढूंढ निकालने की बुद्धि। ४. विद्या। कला-कौशल। ५. हकीम का काम या पेशा। हकीमी।
हिकमती—वि० १. हिकमत जाननेवाला। काम हल करने की तरकीब निकालनेवाला। २. चतुर। चालाक। ३. किफायती।
हिक्का—संज्ञा स्त्री० १. हिचकी। २. बहुत हिचकी आने का रोग।
हिचक—संज्ञा स्त्री० आगा-पीछा। कोई काम करने की इच्छा करते समय मन में होनवाली रुकावट। झिझक।
हिचकना—क्रि० अ० १. आगा-पीछा करना। झिझकना। २. भय या संकोच आदि के कारण कोई काम करने से रुकना। ३. *हिचकी लेना।
हिचकिचाना—क्रि० अ० हिचकना। आगा-पीछा सोचना। झिझकना।
हिचकिचाहट—संज्ञा स्त्री० हिचक। आगा-पीछा।
हिचकी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पेट की वायु का झोंक के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना। २. रह-रहकर सिसकने का शब्द।
हिचर मिचर—संज्ञा पुं० हिचकिचाहट।
हिजड़ा—संज्ञा पुं० नपुंसक। जनखा। वह व्यक्ति, जिसे पुरुष या स्त्री का लिंग न हो।
हिजरी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी सन्, जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०) से चला है।
हिज्जे—संज्ञा पुं० [अ०] किसी शब्द के अक्षरों और मात्राओं का क्रम। अक्षर-विन्यास।
हिज्र—संज्ञा पुं० [अ०] वियोग। जुदाई।
हिडिंब—संज्ञा पुं० भैंसा। एक राक्षस, जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था।
हिडिंबा—संज्ञा स्त्री० हिडिंब राक्षस की बहिन, जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।
हित—संज्ञा पुं० १. भलाई। २. कल्याण। उपकार। लाभ। फायदा। ३. स्वास्थ्य के लिए लाभ। ४. प्रेम। स्नेह। ५. मित्रता। ६. भलाई चाहने या करनेवाला आदमी। मित्र। ७. संबंधी। रिश्तेदार।
वि० १. भलाई करने या चाहनेवाला। खैरख्वाह। २. लाभकारी। अनुकूल।
अव्य० १. (किसी के) लाभ के लिए। प्रसन्नता के लिए। २. हेतु। लिए। वास्ते।
हितकर, हितकारक—संज्ञा पुं० [संज्ञा हितकारिता] १. भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला। फायदेमंद। ३. स्वास्थ्यकर।
हितकारी—वि० दे० "हितकर"।
हितचिंतक—संज्ञा पुं० भलाई चाहनेवाला। खैरख्वाह। शुभचिन्तक।
हितचिंतन—संज्ञा पुं० किसी की भलाई सोचना भलाई की इच्छा। खैरख्वाही।
हितवचन—संज्ञा पुं० भलाई की बात या उपदेश।
हितवना*‡—क्रि० अ० दे० "हिताना"।
हितवादी—वि० [स्त्री० हितवादिनी] भलाई की बात कहनेवाला।
हिताई—संज्ञा स्त्री० १. 'हित' होने का भाव। भलाई २. सम्बन्ध। नाता। रिश्ता।

हिताना*—क्रि० अ० १. भलाई करना। हितकर होना। लाभदायक होना। अनुकूल होना। २. प्यारा या अच्छा लगना। ३. प्रेम करना। प्रेम-युक्त होना।

हितावह—वि० दे० "हितकारी"।

हिताहित—संज्ञा पुं० भलाई-बुराई। लाभ-हानि। नफा-नुकसान।

हिती, हितू—संज्ञा पुं० १. भलाई चाहने या करनेवाला। शुभचिन्तक। खैरख्वाह। २. संबंधी। नातेदार। ३. सुहृद्। स्नेही।

हितेच्छा—संज्ञा पुं० हित या भलाई की इच्छा।

हितेच्छु—वि० हित चाहनेवाला। भलाई चाहनेवाला। हितैषी। खैरख्वाह।

हितैषिता—संज्ञा स्त्री० भलाई चाहने की इच्छा। खैरख्वाही।

हितैषी—वि० [स्त्री० हितैषिणी] भलाई चाहनेवाला। शुभचिन्तक। खैरख्वाह।

हिदायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आदेश। निर्देश। २. मार्ग दिखाना। बड़े का छोटे को कोई कार्य करने का तरीका बताना।

हिनती*‡—संज्ञा स्त्री० दे० "हीनता"।

हिनहिनाना—क्रि० अ० [संज्ञा स्त्री० हिनहिनाहट] घोड़े का बोलना (हिन् हिन् शब्द करना)। हींसना।

हिना—संज्ञा स्त्री० [अ०] मेहँदी।

हिफ़ाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी चीज को इस तरह रखना कि वह नष्ट न हो। रक्षा। बचाव। २. देख-रेख। रखवाली।

हिब्बा—संज्ञा पुं० [अ० हिब्बः] १. दान। २. दो जौ के बराबर तौल। ३. दाना। ४. कौड़ी।

हिब्बानामा—संज्ञा पुं० दानपत्र।

हिमंचल‡*—संज्ञा पुं० दे० "हिमाचल"।

हिमंत‡*—संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"।

हिम—संज्ञा पुं० १. बर्फ। तुषार। पाला। २. ठंड। जाड़ा। जाड़े का मौसम। ३. चंद्रमा। ४. कमल। ५. चंदन। ६. कपूर। मक्खन। ७. मोती। ८. राँगा।
वि० ठंढा। सर्द।

हिम-उपल—संज्ञा पुं० ओला।

हिमकण—संज्ञा पुं० बर्फ या पाले के छोटे-छोटे टुकड़े।

हिमकर—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।

हिमकिरण—संज्ञा पुं० [ठंढी किरणोंवाला] चंद्रमा।

हिमतैल—संज्ञा पुं० कपूर और ठंडक पहुँचानेवाली औषधियाँ डालकर बनाया गया तेल।

हिमपात—संज्ञा पुं० बर्फ गिरना। पाला पड़ना।

हिमभानु—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

हिमयानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया-पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है। डोंड़ा।

हिमरश्मि—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

हिमवत्—संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्"।

हिमवान्—वि० [स्त्री० हिमवती] बर्फ-वाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।
संज्ञा पुं० १. हिमालय। २. कैलाश पर्वत। ३. चंद्रमा।

हिमशैल—संज्ञा पुं० हिमालय।

हिमांक—संज्ञा पुं० कपूर।

हिमांशु—संज्ञा पुं० चंद्रमा।

हिमाकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] बेवकूफी। मूर्खता।

हिमाचल—संज्ञा पुं० हिमालय।

हिमाद्रि—संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़।

हिमानी—संज्ञा स्त्री० १. बर्फ। तुषार। पाला। २. बर्फ का ढेर। हिमखंड। [अंग्रे०—ग्लेशियर]।

हिमायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पक्षपात। २. समर्थन।

हिमायती—वि० [फा०] १. समर्थन करनेवाला। २. पक्षपाती। तरफदार। ३. सहायक। मददगार।

हिमालय—संज्ञा पुं० भारत की उत्तरी सीमा पर का पहाड़, जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है।

हिमि*—संज्ञा पुं० दे० "हिम"।

हिम्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन काम करने की मानसिक दृढ़ता। साहस। २. बहादुरी। पराक्रम।

हिम्मती—वि० [फा०] १. साहसी। दृढ़। बहादुर। २. पराक्रमी।

हिय–संज्ञा पुं० १. हृदय। मन। २. वक्ष-स्थल। छाती।
हियरा–संज्ञा पुं० १. हृदय। २. मन। ३. वक्षः-स्थल। छाती।
हियाँ‡–अव्य० दे० "यहाँ"।
हिया–संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हियाव–संज्ञा पुं० हिम्मत। साहस।
हिरकना†*–क्रि० अ० १. पास आना। नजदीक जाना। २. सटना। ३. हिलना-मिलना।
हिरकाना†*–क्रि० अ० १. पास ले जाना। नजदीक लाना। २. सटाना। भिड़ाना।
हिरण*‡–संज्ञा पुं० दे० "हरिण"।
हिरण्मय–वि० सोने का। सुनहला।
संज्ञा पुं० हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा। जंबूद्वीप का एक खंड। एक ऋषि।
हिरण्य–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. वीर्य्य। ३. धतूरा। ४. अमृत। ५. कौड़ी।
हरिण्य-कशिपु–संज्ञा पुं० प्रह्लाद का पिता एक दैत्य राजा, जो ईश्वर का बड़ा विरोधी था। भगवान् ने नृसिंहावतार धारण करके इसे मारा था।
वि० सोने की गद्दीवाला।
हिरण्य-कश्यप–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्य-कशिपु"।
हिरण्यगर्भ–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। वह ज्योतिर्मय अंड, जिससे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २. सूक्ष्म शरीर सहित आत्मा। ३. विष्णु। ४. एक ऋषि।
हिरण्यनाभ–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. मैनाक पर्वत।
हिरण्यरेता–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. अग्नि। ३. शिव।
हिरण्यव–संज्ञा पुं० देवता पर चढ़ाई हुई सम्पत्ति। देवोत्तर धन।
हिरन–संज्ञा पुं० हरिण। मृग। खुर और सींगों वाला एक चौपाया, जो प्रायः सुनसान मदानों और जंगलों में रहता है।
हिरनाकुस†–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।
हिरनौटा–संज्ञा पुं० हिरन का बच्चा। मृग-छौना।
हिरफत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। कला-कौशल। २. हुनर। ३. पेशा। व्यापार। ४. चालाकी। ५. धूर्त्तता। चालबाजी।
हिरफ़तबाज–वि० चालबाज। धूर्त।
हिरमजी–संज्ञा स्त्री० [अ०] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।
हिराती–संज्ञा पुं० अफगानिस्तान के उत्तर हिरात-प्रदेश का घोड़ा।
हिराना†–क्रि० अ० १. दे० "हेराना"। २. खाद के लिए भेड़-बकरी को खेत में बैठाना।
हिरावल–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
हिरास–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हरास। डर। भय। २. निराशा। ३. उदासी। रंज। चिंता। दुख।
वि० निराश। हताश। उदासीन।
हिरासत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहरा। चौकी। २. कैद। नजरबंदी।
हिरौंजी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "हिरमजी"।
हिरौल*–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
हिर्स–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लोभ। लालच। २. देखा-देखी किसी बात की इच्छा। स्पर्द्धा। ३. इच्छा का वेग। वासना।
हिलकना–क्रि० अ० [अनु०] १. हिचकियाँ लेना। सिसकना। २. दे० "हिलगना"।
क्रि० स० सिकोड़ना। ऐंठना।
हिलकी†*–संज्ञा स्त्री० १. हिचकी। २. सिसकने का शब्द। सिसक।
हिलकोर, हिलकोरा–संज्ञा पुं० हिलोर। लहर।
हिलग–संज्ञा स्त्री० १. लगाव। संबंध। प्रेम। २. लगन। ३. परिचय।
हिलगना–क्रि० अ० १. हिल-मिल जाना। परचना। २. पास होना। सटना। भिड़ना। हिरकना। ३. अटकना। टँगना। ४. फँसना। बझना।
हिलगाना–क्रि० स० १. मेल-जोल करना। परचाना। हिला-मिला लेना। २. सटाना। ३. अटकाना। टाँगना। ४. फँसाना। बझाना।
हिलना–क्रि० अ० १. स्थिर न होना। जमकर बैठा न रहना। हरकत करना। चलना। सरकना। २. काँपना। ३. ढीला होना। ४. झूमना। ५. लहराना। पैठना। घुसना (पानी

में)। ६. (मन) चंचल होना। ७. अनुरक्त होना। ८. हेल मेल में आना। परचना।

हिलसा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।

हिलना–क्रि० स० १. डुलाना। चलायमान करना। हरकत देना। २. स्थान से उठाना। टालना। हटाना। ३. कँपाना। ४. नीचे ऊपर या इधर-उधर डुलाना। झुलाना। ५. परिचित और अनुरक्त करना। परचाना। ६. [देश०] घुसाना। पैठाना।

हिलाल–संज्ञा पुं० [अ०] सच्चाई। धर्म।

हिलोर, हिलोरा–संज्ञा पुं० तरंग। लहर। मौज।

हिलोरना–क्रि० स० १. पानी को इस प्रकार हिलाना कि उसमें लहरें उठें। २. लहराना।

हिलोल–संज्ञा पुं० दे० "हिल्लोल"।

हिल्लोल–संज्ञा पुं० १. हिलोर। तरंग। लहर। २. आनंद की तरंग। मौज।

हिवंचल–संज्ञा पुं० बर्फ। पाला।

हिवर–संज्ञा पुं० बर्फ। पाला।

हिसका–संज्ञा पुं० १. ईर्ष्या। डाह। बराबरी की इच्छा। २. स्पर्द्धा। देखादेखी किसी बात की इच्छा।

हिसाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. गिनती। गणित। लेन-देन या आमदनी-खर्च आदि का ब्योरा। आय-व्यय का विवरण। लेखा। २. वह विद्या, जिसके द्वारा संख्या, मान आदि निर्धारित हो। गणित-विद्या। ३. गणित विद्या का प्रश्न। ४. भाव। दर। ५. नियम। कायदा। व्यवस्था। ६. धारणा। समझ। ७. मत। विचार। ८. हाल। दशा। अवस्था। ९. चाल। व्यवहार। १०. रहन। ढंग। तरीका। ११. कम खर्च। किफायत। मितव्यय।

मुहा०–**हिसाब चुकाना या चुकता करना**=जो कुछ बाकी हो, उसे दे देना। **हिसाब करना**=जो जिम्मे आता हो, उसे दे देना। **हिसाब देना**=जमा-खर्च का ब्योरा बताना। **हिसाब लेना या समझना**=यह पूछना कि कहाँ कितना खर्च हुआ। **बेहिसाब**=बहुत अधिक। अत्यंत। **हिसाब रखना**=आमदनी-खर्च आदि का ब्योरा लिखकर रखना। **हिसाब बैठना**=१. ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबंध होना। युक्ति या तरकीब ठीक होना २. सुभीता होना। **हिसाब से**=संयम से। लिखे हुए ब्योरे के मुताबिक क्रम से। **बेंड़ा या टेढ़ा हिसाब**=१. कठिन कार्य्य। मुश्किल काम। २. अव्यवस्था। गड़बड़।

हिसाब-किताब–संज्ञा पुं० [अ०] आय-व्यय का ब्योरा। आमदनी-खर्च आदि का लिखा हुआ ब्योरा। लेखा-जोखा। ढंग। रीति। तरीका।

हिसाबी–संज्ञा पुं० हिसाब या गणित का जानकार। मितव्ययी। हिसाब से खर्च करनेवाला।

वि०—हिसाब-सम्बन्धी।

हिसिषा*†–संज्ञा स्त्री० ईर्ष्या। बराबरी करने का भाव या होड़। स्पर्धा। समता।

हिस्टीरिया–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] मूर्च्छा का रोग। स्त्रियों का विशष रोग, जिसमें मूर्च्छा या उन्माद की स्थिति होती है।

हिस्सा–संज्ञा पुं० १. भाग। अंश। २. टुकड़ा। खंड। ३. अंग। अवयव। ४. किसी चीज के बटने पर प्रत्येक को मिलनेवाला अंश। बखरा। ५. किसी व्यापार या रोजगार में साझा।

हिस्सेदार–संज्ञा पुं० १. हिस्सा पानेवाला जिसे कुछ हिस्सा मिला हो। २. रोजगार में शरीक। साझेदार। किसी अंश या हिस्से का मालिक (जायदाद आदि)।

हिहिनाना–क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

हींग–संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा और उसका जमाया हुआ गोंद। इसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और इसे दवा और मसाले के काम में लाते हैं। यह अफगानिस्तान और फारस में बहुत होता है।

हींचना†–क्रि० स० खींचना।

हींस–संज्ञा स्त्री० १. घोड़े के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट। २. गधे के बोलने का शब्द। रेंक।

हींसना–क्रि० अ० १. दे० "हिनहिनाना"। २. गदहे का बोलना। रेंकना।

हींहीं–संज्ञा स्त्री० हँसने का शब्द।

ही–अव्य० एक अव्यय, जो किसी बात पर जोर देने के लिए या निश्चय, अल्पता, परि-

मिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिए आता है।
संज्ञा पुं० दे० "हिय", "हृदय"।
क्रि० अ० थी (ब्रज भाषा में 'हो' (था) का स्त्री०)।

हीक–संज्ञा स्त्री० १. हिचकी। २. हलका अरुचिकर स्वाद या गले में जलन।

हीचना*†–क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

हीजड़ा–संज्ञा पुं० हिजड़ा। नपुंसक। जनखा।

हीठना–क्रि० अ० १. पास जाना। समीप होना। फटकना। २. जाना।

हीन–वि० [संज्ञा हीनता] १. रहित। बिना। २. खाली। शून्य। ३. छोड़ा हुआ। त्यक्त। वंचित। ४. ओछा। नीच। बुरा। ५. निम्नकोटि का। घटिया। ६. तुच्छ। नाचीज। नगण्य ७. सुख, धन आदि से रहित। दीन। दुखी। ८. नम्र। ९. अल्प। कम। थोड़ा।

हीनक्रम–संज्ञा पुं० जिस क्रम से गुण गिनाए गए हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जाने का काव्य में एक दोष।

हीनचरित, हीनचरित्र–बुरे चाल-चलनवाला। चरित्रहीन।

हीनता–संज्ञा स्त्री० १. हीन होने का भाव। कमी। त्रुटि। अभाव। २. छोटा या तुच्छ समझने का भाव। ओछापन। तुच्छता। ३. बुराई। निकृष्टता।

हीनत्व–संज्ञा पुं० हीनता।

हीनबल–वि० कमजोर।

हीनबुद्धि–वि० मूर्ख। दुर्बुद्धि।

हीनयान–संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म की दो शाखाओं में से मूल और प्राचीन शाखा।

हीनरस–संज्ञा पुं० काव्य में एक दोष, जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध बातों के वर्णन से होता है। रस-विरोध।

हीनवीर्य्य–संज्ञा पुं० कमजोर। निर्बल। अशक्त।

हीन-हयात–संज्ञा स्त्री० [अ०] जीवन-काल। जीते रहने का समय।
अव्य० जब तक जिंदा रहे, तब तक।

हीनांग–वि० १. जिसका कोई अंग न हो। अंगरहित। खंडित अंगवाला २. अधूरा।

हीनोपमा–संज्ञा स्त्री० [उपमा की हीनता] बड़े की छोटे से उपमा। काव्य में ऐसी उपमा, जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जाता है।

हीय, हीया*–संज्ञा पुं० दे० "हिय"।

हीर–संज्ञा पुं० १. हीरा। २. रत्न। ३. मोतियों की माला। ४. वज्र। बिजली। ५. साँप। ६. किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गूदा या सत। तत्त्व। ७. लकड़ी के भीतर का भाग। ८. शरीर की सार वस्तु। धातु। वीर्य्य। ९. शक्ति। बल। १०. छप्पय के ६२वें भेद का नाम। ११. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, नगण, जगण और रगण होते हैं। १२. एक मात्रिक छंद, जिसमें ६, ६ और ११, के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं।

हीरक–संज्ञा पुं० हीरा। रत्न। एक छन्द।

हीरक-जयंती–संज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या संस्था आदि के ६०वें वर्ष मनाई जानेवाली वर्षगाँठ।

हीरा–संज्ञा पुं० एक बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो अपनी चमक और सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

हीराकट–वि० हीरे की भाँति कटा हुआ।

हीरा कसीस–संज्ञा पुं० लोहे का हरापन लिये मटमैले रंग का विकार।

हीरामन–संज्ञा पुं० सोने के रंग का कल्पित तोता।

हीरो–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] नाटक, कहानी, उपन्यास, सिनेमा आदि का प्रमुख पात्र। नायक।

हीरोइन–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] नाटक, कहानी, उपन्यास, सिनेमा आदि की प्रमुख पात्री। नायिका।

हीलना*†–क्रि० अ० दे० "हिलना"।

हीला–संज्ञा पुं० १ बहाना। मिस। २ जरिया। वसीला। साधन।
यौ०—हीला-हवाला=बहाना।

हीसका, हीसा†–संज्ञा स्त्री० हिसका। ईर्ष्या।

डाह। होड़। बराबरी की इच्छा। देखा-देखी किसी बात की इच्छा।

हुँ—अव्य० दे० "हूँ"। स्वीकृति-सूचक शब्द।

हुँकरना—क्रि० अ० दे० "हुंकारना।"

हुंकार—संज्ञा पुं० १. ललकार। २. गर्जना। गरज। डराने के लिए बहुत जोर का शब्द। शेर की बोली।

हुंकारना—क्रि० अ० ललकारना। २. गरजना। ३. चिग्घाड़ना। चिल्लाना। दपटना।

हुंकारी—संज्ञा स्त्री० १. 'हुँ' करने की क्रिया। २. स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी। दे० "बिकारी" रकम सूचित करने की लकीर।

हुंडार—संज्ञा पुं० दे० "भेड़िया"।

हुंडावन—संज्ञा स्त्री० हुंडी की दर। हुंडी की दस्तूरी, जो हुंडी से रुपया भेजने पर लगती है।

हुंडी—संज्ञा स्त्री० १. वह कागज, जिस पर एक महाजन दूसरे महाजन को कुछ रुपया देने के लिए, लिखकर किसी को बदले में रुपए देता है। निधि-पत्र। लोटपत्र (एक प्रकार का हैंडनोट)। २. अपना धन पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसमें यह लिखा होता है कि इतने रुपए अमुक व्यक्ति को दे दिये जायँ। (अंग्रे०—ड्राफ्ट-बिल आफ एक्सचेंज)। ३. धन उधार देने की एक रीति, जिसमें लेनेवाले को एक निश्चित समय में सूद सहित, कुछ किस्तों में, सब कर्ज चुका देना पड़ता है।

मुहा०—हुंडी सकारना=हुंडी के रुपए का देना स्वीकार करना। दर्शनी हुंडी=वह हुंडी, जिसको दिखाते ही रुपए चुकता कर देने का नियम हो।

हुँत—प्रत्य० १. पुरानी हिंदी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २. लिए। वास्ते। खातिर। ३. द्वारा। जरिए से।

हुँ*†—अव्य० कही हुई बात के अलावा और भी। 'भी'। अतिरेक-सूचक शब्द, जिससे 'भी' का अर्थ प्रकट होता हो।

हुआना—क्रि० अ० [अनु०] 'हुआँ' 'हुआँ' करना। गीदड़ों का बोलना।

हुक—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. पीठ में सहसा होनेवाला दर्द। २. टेढ़ी कील। अंकुसी। अँकुड़ी।

हुकुम‡—संज्ञा पुं० दे० "हुक्म"।

हुकूमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] शासन। अधिकार। प्रभुत्व। आधिपत्य।

मुहा०—हुकूमत चलाना=प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। हुकूमत जताना=अधिकार प्रकट करना। रोब दिखाना।

हुक्का—संज्ञा पुं० [अ०] तंबाकू पीने के लिए विशेष रूप से बना एक नलयंत्र। गड़गड़ा। फरशी।

हुक्का-पानी—संज्ञा पुं० एक बिरादरी के लोगों का आपस में एक दूसरे के हाथ से हुक्का-तंबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्यवहार। बिरादरी का व्यवहार। सामाजिक व्यवहार।

मुहा०—हुक्का पानी बंद करना=बिरादरी से अलग करना।

हुक्काम—संज्ञा पुं० [अ० 'हाकिम' का बहुवचन रूप] हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग।

हुक्म—संज्ञा पुं० [अ०] १. आज्ञा। आदेश। अनुमति। २. अधिकार। प्रभुत्व। शासन। ३. विधि। नियम। ४. उपदेश। ५. ताश का एक काला रंग।

मुहा०—हुक्म की तामील=आज्ञा का पालन। हुक्म चलाना या जारी करना=आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना=आज्ञा भंग करना। हुक्म बजाना या बजा लाना=आज्ञा पालन करना।

हुक्मनामा—संज्ञा पुं० वह कागज, जिस पर हुक्म लिखा हो। आज्ञा-पत्र।

हुक्मबरदार—संज्ञा पुं० हुक्म माननेवाला। आज्ञाकारी। सेवक।

हुक्मी—वि० [अ०] १. हुक्म दिया हुआ। अवश्य किया जानेवाला। लाजिमी। जरूरी। २. दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पराधीन। ३. जरूर असर करनेवाला। अचूक।

हुजूम—संज्ञा पुं० [अ०] भीड़। जमाव।

हुजूर—संज्ञा पुं० [अ०] १. बड़े लोगों को संबोधित करने का शब्द। आदर-सूचक शब्द।

२. सामने। दृष्टि या नजर का सामना। ३. किसी बड़े की समीपता। ४. बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी।

हुजूरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नजर का सामना। २. बड़े की समीपता। बड़े आदमी, बादशाह या राजा आदि की सेवा में सदा रहनेवाला नौकर। ३. दरबारी। मुसाहब। वि० हुजूर का। सरकारी।

हुज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. व्यर्थ का तर्क। बेकार की बहस। २. झगड़ा। तकरार।

हुज्जती–वि० हुज्जत करनेवाला।

हुड़कना–क्रि० अ० १. वियोग में बहुत दुखी होना (विशेषकर बच्चों का)। बच्चा जिससे बहुत हिलमिल गया हो, उसके लिए उसका बेचैन होना। २. तरसना। ३. भयभीत और चिंतित होना।

हुड़काना–क्रि० स० १. भयभीत और दुःखी करना। २. तरसाना।

हुड़दंग, हुरदंग–संज्ञा पुं० ऊधम। उछलकूद। उपद्रव। उत्पात। हुल्लड़। शोर-गुल।

हुडुक–संज्ञा पुं० एक तरह का छोटा ढोल।

हुड्ड†–वि० उजड्ड। गँवार। जंगली। उद्दंड।

हुडुक्क*†–संज्ञा पुं० दे० "हुडुक"।

हुत–क्रि० अ० 'होना' क्रिया का पुराना भूतकालिक रूप—'था'।
वि० हवन किया हुआ। हवन के समय आग में डाला हुआ। आहुति के रूप में दिया हुआ।
संज्ञा पुं० हवन की वस्तु।

हुतभक्ष–संज्ञा पुं० अग्नि। आग।

हुतशेष–संज्ञा पुं० हवन से बची सामग्री।

हुता*–क्रि० अ० 'होना' क्रिया का पुराना भूतकालिक रूप—था।

हुताग्नि–संज्ञा पुं० १. यज्ञ की आग। २. हवन करनेवाला। अग्निहोत्री।

हुताशन–संज्ञा पुं० अग्नि।

हुति*–अव्य० करण और अपादान कारक का चिह्न—द्वारा, से। ओर से। तरफ से।

हुते*–अव्य० से। द्वारा। ओर से। तरफ से।

हुतो*–क्रि० अ० ब्रज-भाषा में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

हुदकाना†*–क्रि० स० [देश०] उकसाना। उभाड़ना। उत्तेजित करना।

हुदना†*–क्रि० अ० ठिठकना। स्तब्ध होना। चकपका जाना।

हुदहुद–संज्ञा पुं० [अ०] एक रंगबिरंगी चिड़िया।

हुन–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. स्वर्ण-मुद्रा। मोहर। अशरफी।
मुहा०—हुन बरसना=किसी के पास बहुत अधिक धन होना। बहुत आमदनी होना।

हुनना*–क्रि० स० हवन करना। आहुति देना।

हुनर–संज्ञा पुं० [फा०] १. कला। कारीगरी। २. गुण। ३. कौशल। काम करने की निपुणता। चतुराई।

हुनरमंद–वि० [फा०] हुनर जाननेवाला। कलाकार। निपुण। कुशल।

हुमकना–क्रि० अ० [अनु०] १. किसी चीज पर चढ़कर उसे जोर से नीचे दबाना। हुमचना। २. उछलना। कूदना। ३. पैरों से जोर लगाना। ४. कसकर पैर तानना। ५. चलने की कोशिश करना (बच्चों का)। ६. दबाने के लिए जोर लगाना।

हुमगना–क्रि० अ० दे० "हुमकना"।

हुमचना–क्रि० अ० १. दबाने के लिए जोर लगाना। किसी चीज पर चढ़कर उसे बारबार जोर से नीचे दबाना। २. उछलना। कूदना। ३. दे० "हुमकना"।

हुमसना–क्रि० अ० १. उछलना। कूदना। २. दबाने के लिए जोर लगाना। हुमचना। ३. दे० "उमसना।" हवा न चलने के कारण गरमी होना।

हुमसाना–क्रि० स० ('हुमसना' क्रिया का सकर्मक रूप) उछालना। जोर से ऊपर की ओर उठाना। बढ़ाना।

हुमा–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक कल्पित पक्षी। कहते हैं कि जिस व्यक्ति के ऊपर इसकी छाया पड़ जाय, वह राजा हो जाता है।

हुमेल–संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] अशर्फियों, रुपयों आदि को गूँथकर बनाई हुई एक प्रकार की माला।

हुरमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रतिष्ठा। इज्जत। मान। मर्यादा। शान।
हुरमयी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का नृत्य।
हुलसना–क्रि० अ० १. बहुत खुश होना। उल्लास से भरना। प्रफुल्लित होना। २. उभरना। उमँगना। ३. उमड़ना। बढ़ना। *क्रि० स० प्रसन्न करना। आनन्दित करना।
हुलसना–क्रि० स० प्रसन्न करना। आनंदित करना।
क्रि० अ० दे० "हुलसना"।
हुलसित*–वि० अत्यन्त प्रसन्न। बहुत ही खुश। उल्लास से भरा। आनन्दयुक्त।
हुलसी–संज्ञा स्त्री० १. हुलास। उल्लास। आनंद की उमंग। २. तुलसीदास की माता का नाम।
हुलहुल–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा।
हुला–संज्ञा पुं० लाठी या छड़ी की नोक।
हुलाना–क्रि० सं० लाठी आदि को जोर से ठेलना। दे० "हूलना"।
हुलाल–संज्ञा स्त्री० लहर।
हुलास–संज्ञा पुं० [वि० हुलासी] १. उल्लास। आनन्द। आह्लाद। हर्ष। २. उत्साह। हौसला। ३. उमगना। बढ़ना।
संज्ञा स्त्री० सुंघनी। मग्जरोशन।
हुलिया–संज्ञा पुं० [अ०] १. शक्ल। आकृति। २. पहचान के लिए किसी के रूप-रंग आदि का विवरण।
हुल्कारना–क्रि० स० कुत्ते को भगाना या किसी को काटने के लिए उसे बढ़ावा देना।
हुल्लड़–संज्ञा पुं० १. शोरगुल। हो-हल्ला। ऊधम। २. उपद्रव। हुड़दंग।
हुल्लड़बाजी–संज्ञा स्त्री० शोरगुल मचाना। उपद्रव करना।
हुल्लास–संज्ञा पुं० चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बना एक छंद।
हुश–अव्य० [अनु०] अनुचित बात बोलने पर रोकने का शब्द। निषेध-सूचक शब्द।
हुशियार, हुसियार*†–वि० दे० "होशियार"।
हुसैन–संज्ञा पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे, जो करबला के मैदान में मारे गए थे। इन्हीं के शोक में मुहर्रम मनाया जाता है।
हुस्न–संज्ञा पुं० [अ०] १. खूबसूरती। सौंदर्य। लावण्य। २. तारीफ की बात। खूबी।
हुस्नपरस्त–वि० रूप का पूजक। सौंदर्योपासक। रूप का लोभी।
हुस्नपरस्ती–संज्ञा स्त्री० सौन्दर्योपासना। रूप की पूजा। रूप का लोभ।
हूँ–अव्य० १. स्वीकृति या समर्थन प्रकट करने का शब्द। २. किसी बात को ध्यान से सुनने की स्वीकृति।
अव्य० दे० "हू"।
सर्व० "[illegible]" क्रिया उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप।
हूँकना–क्रि० अ० कष्ट या दुख प्रकट करने के लिए धीरे-धीरे बोलना (विशेषकर गाय का किसी कष्ट के कारण धीरे-धीरे बोलना)। हुड़कना। हुंकार शब्द करना। ललकारना। डपटना।
हूँठ–वि० साढ़े तीन, ३॥।
हूँठा–संज्ञा पुं० साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूँस–संज्ञा स्त्री० १. बुरी नजर। टोक। २. ईर्ष्या। डाह। ३. कोसना। फटकार।
हूँसना–क्रि० स० १. नजर लगाना। २. बराबर डाँटते रहना।
क्रि० अ० १. ईर्ष्या से लजाना २. ललचाना। ३. कोसना।
हू†–अव्य० एक अतिरेक-बोधक शब्द। भी।
हूक–संज्ञा स्त्री० १. हृदय की पीड़ा। कसक। २. पीड़ा। दर्द। ३. दुःख ४. आशंका। खटका।
हूकना–क्रि० अ० १. दर्द करना। दुखना। कसकना। २. पीड़ा से चौंक उठना।
हूटना*†–क्रि० अ० १. हटना। टलना। २. मुड़ना। पीठ फेरना।
हूठा–संज्ञा पुं० १. अँगूठा दिखाने की मुद्रा। ठेंगा। २. भद्दी या गँवारू चेष्टा।
हूण–संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मंगोल जाति, जिसने एशिया और योरप के देशों पर आक्रमण और अत्याचार किया था। २. निर्दय या कठोर मनुष्य।

हूनना†–क्रि० स० १. आग में डालना। २. हवन करना। ३. आफत में डालना। ४. मारना।

हू-बहू–वि० [अ०] ज्यों का त्यों। जैसा हो, ठीक वैसा ही। बिलकुल एक ही तरह का।

हूर–संज्ञा स्त्री० [अ०] इस्लाम धर्म के अनुसार स्वर्ग की अप्सरा।

संज्ञा पु० सिन्ध में रहनेवाले मुसलमानों का एक लड़ाकू फिरका।

हूरना†–क्रि० स० १. मारना। २. हूलना। ३. बहुत अधिक भोजन करना।

हूल–संज्ञा स्त्री० १. किसी नोकदार चीज से भोंकने की क्रिया। भाले, लाठी आदि की नोक को जोर से ठेलना या भोंकना। २. शूल। हूक। ३. टीस। पीड़ा। ४. ललकार। ५. कोलाहल। हल्ला। ६. धूम। खुशी। हर्ष-ध्वनि।

हूलना–क्रि० स० १. लाठी, भाले या किसी हथियार आदि की नोक को जोर से ठेलना या घुसाना। गड़ाना। भोंकना। २. ठेलना। ढकेलना। धक्का देना। ३. पीड़ा देना।

हूश–वि० उजड्ड। असभ्य। अशिष्ट।

हूह–संज्ञा स्त्री० १. हुंकार। २. कोलाहल। ३. युद्ध की ललकार।

हूहू–संज्ञा पुं० आग के जोर से जलने का शब्द। धायँ धायँ करके जलना।

हृत–वि० १. हरण किया हुआ। छीना हुआ। २. पहुँचाया हुआ।

हृति–संज्ञा स्त्री० १. हरण। ले जाना। २. नाश। ३. लूट।

हृत्कंप–संज्ञा पुं० १. दिल की धड़कन। हृदय का कंपन। २. जी का दहलना। दहशत। इतना अधिक डर कि हृदय काँप जाय।

हृत्तंत्री–संज्ञा स्त्री० हृदय-रूपी वीणा।

हृत्तल–संज्ञा पुं० कलेजा। हृदय। दिल।

हृत्पिंड–संज्ञा पुं० कलेजा। हृदय का जोश।

हृद्–संज्ञा पु० हृदय। दिल।

हृदयंगम–वि० मन में बैठा हुआ। अच्छी तरह समझ में आया हुआ।

हृदय–संज्ञा पुं० १. शरीर का एक प्रधान अंग, जो छाती के भीतर बाईं ओर होता है और जिसमें से होकर शुद्ध रक्त नाड़ियों के द्वारा शरीर में संचार करता है। दिल। कलेजा। २. मन। अंतःकरण। विवेकबुद्धि। ३. प्रेम, हर्ष, शोक आदि भावों का माना जानेवाला उद्गम-स्थान।

हृदयग्राही–संज्ञा पुं० [स्त्री० हृदयग्राहिणी] मन को आकृष्ट करनेवाला। दिल को लुभा लेनेवाला। मन को मोहनेवाला।

हृदयनिकेत–संज्ञा पुं० कामदेव।

हृदय प्रमाथी–वि० मन को क्षुब्ध या चंचल करनेवाला। मन मोहनेवाला।

हृदयवान्–वि० कोमल हृदयवाला। सहृदय। भावुक। रसिक।

हृदय-विदारक–वि० दिल के टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाला अर्थात् मन को बहुत अधिक कष्ट पहुँचानेवाला। अत्यंत शोक या दया उत्पन्न करनेवाला।

हृदयवेधी–वि० [स्त्री० हृदयवेधिनी] १. दिल को चोट पहुँचानेवाला। मर्मस्पर्शी। अत्यन्त दुख उत्पन्न करनेवाला। २. मन को अत्यन्त प्रसन्न करनेवाला।

हृदयस्पर्शी–वि० [हृदयस्पर्शिनी] १. हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। दया उत्पन्न करनेवाला। मर्मस्पर्शी। मार्मिक।

हृदयहारी–वि० [स्त्री० हृदयहारिणी] १. हृदय हरण करनेवाला अर्थात् दिल लुभानेवाला। मन मोहनेवाला। मनोहर।

हृदयालु–वि० १. उदार। सहृदय। २. भावुक। सुशील।

हृदयेश, हृदयेश्वर–संज्ञा पुं० [स्त्री० हृदयेश्वरी] १. प्रियतम। २. पति। स्वामी।

हृदि–क्रि० वि० हृदय में। मन में। दिल में।

हृद्गत–वि० १. हृदय का। आंतरिक। भीतरी। २. मन में बैठा हुआ। अच्छी तरह ध्यान में आया हुआ। ३. प्रिय। रुचिकर।

हृद्य–वि० १. हृदय का। आन्तरिक। भीतरी। २. मन को अच्छा लगनेवाला। ३. सुंदर। लुभावना। ४. स्वादिष्ठ। जायकेदार।

हृद्रोग–संज्ञा पुं० हृदय म होनेवाला रोग। दिल की बीमारी—जैसे, धड़कन आदि।

हृद्रोध–संज्ञा पुं० हृदय की गति रुक जाना।

दिल की धड़कन बन्द हो जाना। (अंग्रे०—'हार्टफेल')।
हृद्यांशु—संज्ञा पुं० चन्द्रमा।
हृषि—संज्ञा स्त्री० १. प्रसन्नता। हर्ष। आनंद। २. चमक दमक। ३. झूठा आदमी।
हृषीक—संज्ञा पुं० इन्द्रिय।
हृषीकेश—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. पूस का महीना। ४. हरिद्वार के पास का एक तीर्थ।
हृष्ट—वि० १. हर्षित। अत्यन्त प्रसन्न। बहुत खुश। २. उठा हुआ। खड़ा। ३. कड़ा।
हृष्ट-पुष्ट—वि० मोटा-ताजा। तगड़ा। स्वस्थ।
हृष्टयोनि—संज्ञा पुं० नपुंसक। हिजड़ा।
हृष्टरोम—वि० जिसे हर्ष से रोमांच हो गया हो। रोमांचित। पुलकित।
हृष्टि—संज्ञा स्त्री० हर्ष। प्रसन्नता।
हें हें—संज्ञा पुं० [अनु०] १. धीरे से हँसने का शब्द। दीनतापूर्वक हँसने का शब्द। २. गिड़गिड़ाने का शब्द।
हेंगा†—संज्ञा पुं० एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर की जाती है। पाटा। मैड़ा। पहटा।
हे—अव्य० संबोधन का शब्द।
‡क्रि० अ० व्रजभाषा के 'हो' (=था) क्रिया का बहुवचन। थे।
हेकड़—वि० १. अक्खड़। २. उद्धत। ३. कड़े दिल का। ४. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। ५. जबरदस्त। प्रबल। प्रचंड।
हेकड़ी—संज्ञा स्त्री० १. अक्खड़पन। २. डींग। ३. जबरदस्ती।
हेच—वि० [फा०] १. तुच्छ। नाचीज। २. जो किसी गिनती म न हो।
हेठ†—वि० नीचे। कम। घटकर।
संज्ञा पुं० १. चोट। २. हानि। ३. बाधा।
हेठा—वि० १. नीचा। २. घटकर। कम। कमजोर। ३. तुच्छ। नीच।
हेठापन—संज्ञा पुं० नीचता। तुच्छता। क्षुद्रता।
हेठी—संज्ञा स्त्री० नीचा देखने का भाव। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।
हेड—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. प्रधान। उच्च अधिकारी। बड़ा अफसर। २. सिर। मस्तक।
हेडक्वार्टर—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. प्रधान स्थान। सदर मुकाम। केन्द्र। २. किसी अधिकारी का प्रधान स्थान। ३. सेना के प्रधान का स्थान।
हेडिंग—संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] शीर्षक। लेख आदि के ऊपर दिया जानेवाला शब्द या वाक्य।
हेड़ी—संज्ञा पुं० शिकारी। व्याध।
संज्ञा स्त्री० चौपायों का झुंड, जिसे बनजारे बेचने के लिए घूमते फिरते हैं।
हेत*—संज्ञा पुं० दे० "हेतु"।
हेति—संज्ञा स्त्री० १. भाला। बर्छी। २. हथियार। औजार। ३. आघात। चोट। ४. आग की लपट। लौ। ५. सूर्य की किरण। ६. वज्र। अंकुर।
हेतु—संज्ञा पुं० १. कारण। वजह। निमित्त। २. अभिप्राय। उद्देश्य। ३. उत्पादक। ४. वह बात, जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो। ५. तर्क। दलील। ६. एक अर्थालंकार, जिसमें कारण ही कार्य्य बताया जाता है।
अव्य० लिए। वास्ते।
हेतुवाद—संज्ञा पुं० १. सब बातों के कारण ढूंढ़ने का सिद्धान्त। तर्कविद्या। तर्कशास्त्र। २. नास्तिकता। ३. कुतर्क।
हेतुशास्त्र—संज्ञा पुं० तर्कशास्त्र।
हेतुहेतुमद्भाव—संज्ञा पुं० कार्य्य-कारण भाव। कारण और कार्य्य का संबंध।
हेत्वाभास—संज्ञा पुं० किसी बात को सिद्ध करने के लिए ऐसा कारण बताना, जो कारण-सा जान पड़ते हुए भी सचान हो। असत् हेतु।
हेमंत—संज्ञा पुं० जाड़े का मौसम। अगहन और पूस में होनेवाली ऋतु। शीतकाल।
हेम—संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। सोना। २. हिम। बर्फ। पाला। ३. बादामी रंग का घोड़ा। ४. नागकेसर।
हेमकूट—संज्ञा पुं० पुराणों में कहा गया हिमालय के उत्तर का एक पहाड़।
हेमगिरि—संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
हेमपर्वत—संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
हेममुद्रा—संज्ञा स्त्री० सोने का सिक्का। मोहर। अशरफी।

हेमयूथिका–संज्ञा स्त्री० सोनजूही।
हेमबल–संज्ञा पुं० मोती।
हेमसुता–संज्ञा स्त्री० पार्वती। दुर्गा।
हेमांग–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. सिंह। ४. गरुड़। ५. चम्पा।
वि० जिसका शरीर सोने के रंग का हो।
हेमाद्रि–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
हेमाभ–वि० सोने की-सी चमकवाला। सुनहला।
हेय–वि० १. त्याज्य। निकृष्ट। छोड़ने योग्य। २. बुरा। खराब।
हेरंब–संज्ञा पुं० १. गणेश। २. भैंसा। ३. धीरोद्धात नायक।
हेर†*–संज्ञा स्त्री० खोज। तलाश।
संज्ञा पुं० दे० "अहेर"।
हेरना†*–क्रि० स० १. ढूँढ़ना। खोजना। २. देखना। जाँचना। परखना।
हेरना-फेरना–क्रि० स० १. इधर का उधर करना। २. उलटना-पलटना। बदलना। परिवर्तन करना।
हेर-फेर–संज्ञा पुं० १. परिवर्तन। अदल-बदल। उलट-फेर। २. अंतर। फर्क। ३. घुमाव। चक्कर। ४. दाँव पेच। चालबाजी। ५. अदल-बदल। विनिमय।
हेरवाना†–क्रि० स० १. खो देना। गँवाना। ढुंढ़वाना। तलाश कराना।
हेराना†–क्रि० अ० १. खो जाना। गुम हो जाना। २. रास्ता भूल जाना। भटकना। ३. लुप्त हो जाना। नष्ट हो जाना। न रह जाना। ४. फीका या मंद पड़ जाना। ५. सुध-बुध भूलना। दंग रह जाना।
क्रि० स० १. ढुंढ़वाना। तलाश कराना। २. खोना। गँवाना। ३. भूल जाना।
हेराफेरी–संज्ञा स्त्री० १. हेर-फेर। अदल-बदल। २. बार-बार आना-जाना।
हेरिक–संज्ञा पुं० दूत। गुप्तचर। भेदिया।
हेरी†*–संज्ञा स्त्री० पुकार। आवाज देकर बुलाना।
हेल–संज्ञा पुं० १. कीचड़, गोबर इत्यादि। २. गोबर का खेप।
हेलना*–क्रि० अ० १. क्रीड़ा करना। मन बहलाना। २. हँसी-मजाक करना। ३. खेल समझना। परवाह न करना। ४. घुसना। पैठना। ५. तैरना।
क्रि० स० तिरस्कार करना। तुच्छ समझना।
हेलमेल–संज्ञा पुं० १. मेल-जोल। घनिष्ठता। मित्रता। २. संग। साथ।
हेला–संज्ञा स्त्री० १. अनादर का भाव। तिरस्कार। तुच्छ समझना। २. खेलवाड़। क्रीड़ा। केलि। प्रेमक्रीड़ा। ३. नायक से मिलने के समय नायिका का विविध विलास या विनोद-सूचक मुद्रा। (साहित्य)
संज्ञा पुं० १. पुकार। हाँक। २. धावा। आक्रमण। चढ़ाई।
संज्ञा पुं० १. रेलना। ठेलना। धक्का। रेल। २. [स्त्री० हेलिन] मला उठानेवाला। भंगी। मेहतर। ३. खेप। बारी। ४. गाड़ी म एक बार जानेवाला बोझ।
हेली*–अव्य० हे अली! हे सखी!
संज्ञा स्त्री० सहेली। सखी।
हेल्थ–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।
हेवंत*–संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"।
हैं–क्रि० अ० 'होना' क्रिया के वर्त्तमान कालिक रूप "है" का बहुवचन।
अव्य० १. आश्चर्य, असम्मति या निषध प्रकट करनेवाला शब्द।
हैंड–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. हाथ। २. अधिकार। ३. कारखाने में काम करनवाले व्यक्ति। ४. हाथ का व्यापार। ५. लिपि। ६. घड़ी की सुई। ७. ताश का दाँव।
हैंडबिल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] वह कागज, जिस पर कोई विज्ञापन या सूचना छपी हो। विज्ञापन-पत्र।
हैंडबैग–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] हाथ में लटकाने का छोटा बक्स।
हैंडिल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] मुठिया। दस्ता। बेंट।
हैंडलूम–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] हाथ का करघा।
हैंडराइटिंग–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] हस्तलिपि, लिखावट।
हैंडिक्रैफ्ट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] शिल्प। दस्तकारी।

है–क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एकवचन-रूप।
हैकल–संज्ञा स्त्री० १. गले में का एक गहना। हुमेल। २. हाथी घोड़े के गले का एक गहना।
हैजा–संज्ञा पुं० एक बीमारी जिसमें दस्त और कै होते हैं। कालरा। विशूचिका।
हैट–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] धूप बचानेवाली एक तरह की अंग्रेजी टोपी।
हैतुक–संज्ञा पुं० १. तर्कशास्त्र को माननेवाला। मीमांसा का अनुयायी। तर्क करनेवाला। कुतर्की। ३. नास्तिक।
हैफ–अव्य० [अ०] अफसोस। हाय।
हैबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] डर। भय। दहशत।
हैबतनाक–वि० डरावना। भयानक।
हैबर*–संज्ञा पुं० अच्छा घोड़ा।
हैम–वि० [स्त्री० हैमी] १. सोने का बना हुआ। २. सुनहरे रंग का। सुनहला। हिम-संबंधी। बर्फ का। जाड़े का। जोड़ में होनेवाला।
संज्ञा पुं० १ पाला। ओस। २. शिव।
हैमवत–वि० [स्त्री० हैमवती] हिमालय का। हिमालय-संबंधी। हिमालय से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. हिमालय का निवासी। २. एक संप्रदाय का नाम। ३. एक राक्षस। ४. एक विष। ५. मोती।
हैमवती–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. गंगा।
हैमी–वि०, स्त्री० सोने की बनी हुई। सुनहरे रंग की।
संज्ञा स्त्री० सोनजूही। केतकी।
हैरंब–वि० गणेश-संबंधी।
संज्ञा पुं० गणेश का उपासक संप्रदाय।
हैरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आश्चर्य्य। अचंभा।
हैरान–वि० [अ०] [संज्ञा हैरानी] १. परेशान। बेचैन। २. चकित। भौचक्का। ३. दंग।
हैवान–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० हैवानी] १. पशु। जानवर। २. बेवकूफ या गँवार आदमी।
हैसियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सामर्थ्य। शक्ति। बिसात। २. आर्थिक दशा या योग्यता। ३. प्रतिष्ठा। ४. श्रेणी। दर्जा। ६. धन। दौलत। सम्पत्ति।
हैहय–संज्ञा पुं० १. एक क्षत्रिय-वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। २. हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।
हैहयराज, हैहयाधिराज–संज्ञा पुं० हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रर्जुन।
है है–अव्य० शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस।
हों–क्रि० अ० 'होना' क्रिया का बहुवचन, संभाव्य काल का रूप।
होंठ–संज्ञा पुं० ओंठ। अधर।
हो–संज्ञा पुं० पुकारने का शब्द या संबोधन।
क्रि० अ० 'होना' क्रिया के अन्य पुरुष, संभाव्य काल का या मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप।
* –व्रज-भाषा की वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप। था।
होई–संज्ञा स्त्री० होली के आठ दिन पहले होने वाला एक त्योहार, जिस दिन स्त्रियाँ सन्तान-प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए एक विशेष प्रकार की पूजा करती हैं।
होटल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] भोजनालय। वह स्थान, जहाँ मूल्य देने पर भोजन और ठहरने का प्रबन्ध हो।
होड़–संज्ञा स्त्री० १. शर्त्त। बाजी। २. एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। स्पर्द्धा। ३. बराबरी। ४. हठ। जिद।
होड़ाबादी–संज्ञा स्त्री० दे० "होड़ाहोड़ी"।
होड़ाहोड़ी–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ा-ऊपरी। लाग-डाँट। २. बाजी। शर्त्त।
होत†–संज्ञा स्त्री० १. सामर्थ्य। वश। शक्ति। २. पास में धन होने की दशा। संपन्नता।
होतब, होतव्य–संज्ञा पुं० जो होनेवाला हो। दे० "होनहार"।
होतव्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "होनहार"।
होता–संज्ञा पुं० [स्त्री० होत्री] हवन करनेवाला। यज्ञ में आहुति देनेवाला।
क्रि० अ० 'होना' क्रिया का भूतकालिक संभाव्य रूप।
होनहार–वि० १. जो अवश्य होनेवाला हो। भावी। होनी। २. जिसके सुयोग्य होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला।
संज्ञा पुं० अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता।

होना—क्रि० अ० १. सत्ता और उपस्थिति आदि प्रकट करने की क्रिया। रहना। २. एक रूप से दूसरे रूप में आना।३. कार्य्य किया जाना। भुगतना। ४. बनना। निर्माण किया जाना। ५. किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना। घटित किया जाना। ६. किसी रोग या बाधा आदि का आना। ७. बीतना। गुजरना। ८. परिणाम निकलना। फल देखने में आना। ९. प्रभाव या गुण दिखाई पड़ना। १०. जन्म लेना। ११. काम निकलना। १२. काम बिगड़ना। हानि पहुँचना। १३. अस्तित्व रखना। मौजूद रहना।

होनी—संज्ञा स्त्री० १ अवश्य होनेवाली बात या घटना। २. भावी। भवितव्यता। होनहार। ३. जिसका होना सम्भव हो। ४. उत्पत्ति। पैदाइश। ५. हाल। वृत्तांत।

होम—संज्ञा पुं० देवताओं के निमित्त मंत्र पढ़कर अग्नि में जौ आदि डालन का कार्य-विशेष। हवन। यज्ञ। आहुति देने का कार्य।
मुहा०—होम कर देना=१. जला डालना। भस्म कर देना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. बलिदान करना। ४. छोड़ देना। ५. अर्पण करना।

होमकुंड—संज्ञा पुं० हवन करने का कुंड। वह गड्ढा, जिसमें होम करने के लिए आग रखी जाती है।

होमना—क्रि० स० १. हवन करना। आहुति देना। २. बलिदान करना। ३. छोड़ देना। नष्ट करना। बरबाद करना।

होमियोपैथ—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] होमियोपैथी चिकित्सा-प्रणाली के अनुसार दवा करनेवाला।

होमियोपैथी—संज्ञा स्त्री० [वि० होमियोपैथिक] जर्मन डाक्टर हेनिमन-द्वारा आविष्कार की हुई चिकित्सा-प्रणाली, जिसमें विष को विष से दूर करने का सिद्धान्त माना जाता है।

होमीय—वि० १. होम या हवन-संबंधी। २. होम का।

होम्य—वि० १. होम या हवन-सम्बन्धी। २. होम का।
संज्ञा पुं० घी।

होरसा—संज्ञा पुं० पत्थर की गोल छोटी चौकी, जिस पर चंदन घिसा जाता है। चौका।

होरहा—संज्ञा पुं० १. आग में भूनी हुई चने या मटर आदि की फलियाँ। होला। २. चने का पौधा। बूँट।

होरा—संज्ञा प० दे० "होला"।
संज्ञा स्त्री० १. दिन-रात का २४वाँ भाग। घंटा। ढाई घड़ी का समय। एक राशि या लग्न का आधा भाग। २. जन्मकुंडली।

होरिल, होरिला—संज्ञा पुं० नवजात शिशु। बहुत छोटा बच्चा।

होरिहार*†—संज्ञा पुं० होली खेलनेवाला।

होरी—संज्ञा स्त्री दे० "होली"।

होलक—संज्ञा पु० आग में भूनी हुई चने या मटर की फलियाँ—होला। होरहा।

होलडाल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बिस्तरबन्द।

होला—संज्ञा पुं० १. आग में भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २. चने का हरा दाना। होरहा। सिखों की होली, जो होली जलने के दूसरे दिन होती है।
संज्ञा स्त्री० होली का त्योहार।

होलाष्टक—संज्ञा पुं० होली के पहले के आठ दिन, जिनमें विवाह आदि शुभ कार्य नहीं किए जाते। जरता-बरता।

होलिका—संज्ञा स्त्री० १. होली का त्योहार। २. लकड़ी, घास-फूस आदि का ढेर, जो होली के दिन से पहली रात में जलाया जाता है। ३. एक राक्षसी का नाम।

होली—संज्ञा स्त्री० १. हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार, जो फाल्गुन की पूर्णमासी को मनाया जाता है और जिसमें लोग एक• दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालते हैं। २. लकड़ी, घास-फूस आदि का ढेर, जो होली में जलाया जाता है। ३. होली के उत्सव के गीत, जो माघ-फाल्गुन में गाए जाते हैं।
मुहा०—होली खेलना=एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना।

होश—संज्ञा पुं० [फा०] १. स्मरण। सुध। याद। २. बुद्धि। समझ। अक्ल। ३. बोध या ज्ञान। संज्ञा। चेतना।
यौ०—होश व हवास=चेतना और बुद्धि।

मुहा०—होश उड़ना या जाता रहना=भूल जाना। डर से बहुत घबरा जाना। होश दंग होना=चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना। होश सँभालना=उम्र बढ़ने पर सब बातें समझने-बूझने लगना। सयाना होना। होश में आना=चेतना प्राप्त करना। होश की दवा करो=समझ-बूझकर बोलो। होश ठिकाने होना=१. बुद्धि ठीक होना। भ्रांति या मोह दूर होना। २. मन की घबराहट दूर होना। ३. दंड मिलने पर भूल के लिए पछतावा होना। होश दिलाना=याद दिलाना।

होशियार—वि० [फा०] १. चतुर। बुद्धिमान्। समझदार। २. निपुण। कुशल। ३. सचेत। सावधान। ४. जिसकी उम्र समझने-बूझने योग्य हो गई हो। सयाना। ५. चालाक। धूर्त्त।

होशियारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. समझदारी। बुद्धिमानी। २. चालाकी। निपुणता। ३. सावधानी।

होस्टल—संज्ञा पुं० [अंग्रे०] छात्रावास। विद्यार्थियों के रहने का स्थान, जिसका प्रबन्ध उनकी शिक्षा-संस्था के अधीन हो।

होहल्ला—संज्ञा पुं० हुल्लड़। शोरगुल।

हौं*†—सर्व० व्रजभाषा में उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम। मैं।
क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्त्तमान-कालिक, उत्तम पुरुष, एकवचन रूप हूँ।

हौंकना*†—क्रि० अ० १. गरजना। हुंकार करना। २. हाँफना। ३. दे० "हाँकना"। दे० "धौंकना।"

हौंस—संज्ञा स्त्री० दे० "हौस"।

हौं-हौं—संज्ञा पुं० १. कुत्ते का भूकना। २. शोर करना।

हौ—क्रि० अ० १. 'होना' क्रिया के मध्यम पुरुष, एक-वचन का वर्तमान-कालिक रूप। हो। २. होना का भूतकाल—था।
*अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द—हाँ।

हौआ—संज्ञा पुं० [अनु०] बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। भकाऊँ।
संज्ञा स्त्री० दे० "हौवा"।

हौका—संज्ञा पुं० प्रबल इच्छा। लम्बी साँस।

हौज—संज्ञा पुं० [अ०] १. पानी जमा रखने का स्थान या चहबच्चा। २. छोटा कुंड। ३. पानी रखने का बड़ा बरतन। नाँद। टंकी।

हौद—संज्ञा पुं० दे० "हौज"।

हौदा—संज्ञा पुं० १. हाथी की पीठ पर सवारियों के बैठने का आसन, जिसके चारों ओर रोक रहती है। २. पशुओं को चारा खिलाने की बड़ी नाँद।

हौदी—संज्ञा स्त्री० १. छोटा हौदा। छोटा हौज। २. नाँद। पशुओं को चारा खिलाने का मिट्टी का बर्त्तन। ३. वह छोटा गड्ढा जिसमें मकान का खराब पानी, कीचड़ आदि जमा होता है।

हौरा†—संज्ञा पुं० हल्ला। शोरगुल।

हौरे*—क्रि० वि० दे० "हौले"।

हौल—संज्ञा पुं० [अ०] डर। भय।

हौलखौल, हौलगौल—संज्ञा पुं० डर या बहुत जल्दी के कारण होनेवाली घबराहट।

हौलदिल—संज्ञा पुं० [फा०] १. दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने की बीमारी।
वि० १. जिसका दिल धड़कता हो। २. भयभीत। डरा हुआ। व्याकुल। घबराया हुआ।

हौलदिला—वि० डरपोक। घबरानेवाला।

हौलदिली—संज्ञा स्त्री० [फा०] दिल की बीमारी दूर करने के लिए गले में पहना जानेवाला संगयशब (पत्थर) का टुकड़ा।

हौलनाक—वि० भयानक।

हौली—संज्ञा स्त्री० देशी शराब बनाने और बेचने की जगह। शराबखाना। भट्ठी। आबकारी। कलवरिया।

हौलू—वि० जिसके मन में जल्दी हौल या डर पैदा हो। डरपोक। घबरानेवाला।

हौले—क्रि० वि० १. धीरे। आहिस्ता। धीमी चाल से। २. हलके हाथ से। जोर से नहीं।

हौवा—संज्ञा स्त्री० [अ०] संसार की सबसे पहली स्त्री, जो आदम की पत्नी और मनुष्य-जाति की आदि-माता मानी जाती है (पैगंबरी मत)।
संज्ञा पुं० दे० "हौआ"।

हौस–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हवस । चाह। लालसा। कामना। २. हौसला। उमंग। उत्साह।

हौसला–संज्ञा पुं० [अ०] कोई काम करने का बहुत उत्साह। उमंग। लालसा। उत्कंठा। मुहा०—हौसला मिटाना=अरमान पूरा करना। इच्छा पूरी करना। हौसला पस्त होना=निरुत्साह होना।

हौसलामंद–वि० [फा०] १. उत्साही। २. लालसा रखनेवाला।

ह्याँ†*–अव्य० दे० "यहाँ"।

ह्यो‡*–संज्ञा पुं० दे० "हियो", "हिया"।

ह्रद–संज्ञा पुं० १. तालाब। झील। सरोवर। २. ध्वनि। आवाज। ३. किरण।

ह्रदिनी–संज्ञा स्त्री० नदी।

ह्रसित–वि० जिसका ह्रास हुआ हो। घटा हुआ। कम किया हुआ।

ह्रस्व–वि० [संज्ञा स्त्री० ह्रस्वता] १. छोटा। लघु। 'दीर्घ' का उल्टा। छोटे आकार का। २. नाटा। ३. कम। थोड़ा। ४. नीचा। ५. तुच्छ।

संज्ञा पुं० १. दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोला जानेवाला लघु स्वर। जैसे—अ, इ, उ। २. वामन। बौना।

ह्रस्वता–संज्ञा स्त्री० लघुता। अल्पता। छोटाई।

ह्रास–संज्ञा पुं० १. कमी। घटती। अवनति। पतन। २. ध्वनि। आवाज।

ह्रासन–संज्ञा पुं० ह्रास करना। घटाना। कम करना।

ह्री–संज्ञा स्त्री० १. लज्जा। शर्म। २. दक्ष प्रजापति की कन्या, जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।

ह्रीका–संज्ञा स्त्री० लज्जा। शर्म।

ह्रीकु–वि० लज्जाशील। शर्मीला।

संज्ञा पुं० १. बिल्ली। २. लाख। ३. राँगा।

ह्रीति–संज्ञा स्त्री० [वि० ह्रीत] लज्जा। संकोच। शर्म। हया।

ह्लाद–संज्ञा पुं० आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष।

ह्लादन–संज्ञा पुं० प्रसन्न करना। आनन्दित करना।

ह्वाँ†*–अव्य दे० "वहाँ"।

ह्विप–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] १. सचेतक। विधान-सभा में किसी पार्टी या दल का वह नेता, जो मतदान के विषय में सदस्यों को निर्देश देता है। २. चाबुक। कोड़ा। ३. कोच-वान।

ह्विस्की–संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक तरह की अंग्रेजी शराब।

ह्वेल–संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक विशालकाय समुद्री मछली, जिसका तेल बहुत उपयोगी होता है। इसका आकार इतना बड़ा होता है कि यह छोटे-छोटे जहाजों को भी नष्ट कर देती है।

संविधान-शब्दावली

भारतीय संविधान-परिषद्-द्वारा स्वीकृत

हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय

अ

अक्षम—Incompetent
अक्षमता—Incompentency
अग्रिम धन—Advance
अतिक्रमण—Violation
अतिरिक्त न्यायाधीश—Judge, extra
अतिरिक्त लाभ—Excess profit
अधिकरण—Tribunal
अधिकार—Right
अधिकार-अभिलेख—Record of rights
अधिकार-पृच्छा—Quo warranto
अधिग्रहण—Requisition
अधिनियमन—(n) Act
अधिनियम—(v) Enact
अधिपत्र—Warrant
अधिभार—Surcharge
अधिमान—Preference
अधिवक्ता—Advocate
अधिवास—Domicile
अधिवासी—Domiciled
अधिष्ठाता—Presiding officer
अधिसूचना—Notification
अधीक्षक—Superintendent
अधीक्षा—Superintendence
अधीन—Subject
अधीन अधिकारी—Subordinate officer
अधीन न्यायालय—Subordinate court
अध्यक्ष—Speaker
अध्यादेश—Ordinance
अध्यासीन होना—Preside
अनन्य क्षेत्राधिकार—Exclusive Jurisdiction
अनर्हता—Disqualification
अनर्हीकरण—Disqualify
अनियमिता—Irregularity
अनुकलन—Adaptation
अनुच्छेद—Article
अनुज्ञप्ति—Licence
अनुज्ञा—(v) Permit,
अनुज्ञा (n) Permission
अनुदान—Grant
अनुदेश—Instruction
अनुन्मुक्त—Undischarged
अनुपाती प्रतिनिधित्व—Proportional representation
अनुपूरक—Supplementary
अनुपूरक अनुदान—Supplementary grant
अनुमति—Assent
अनुमोदन—(v) Approve
अनुमोदन—(n.) Approval
अनुशासन—Discipline
अनुशासन-सम्बन्धी—Disciplinary
अनुषक्ति—Adherence
अनुष्ठान—Exercise
अनुसमर्थन—(n) Ratification
अनुसमर्थन—(v) Ratify
अनुसंधान—(v) Investigate
अनुसंधान—(n) Investigation
अनुस्मारक—Reminder

अनुसूचित क्षेत्र—Scheduled area
अनुसूचित जनजाति—Scheduled tribe
अनुसूचित जाति—Scheduled caste
अनुसूची—Schedule
अन्तर्ग्रसन—Involve
अन्तर्ग्रस्त—Involved
अन्तर्देशीय जलपथ—Inland waterway
अन्तर्राष्ट्रीय—International
अन्तःकरण—Conscience
अन्य-देशीय—Aliens
अन्य-संक्रामण—(v) Alienate
अन्य-संक्रामण—(n) Alienation
अपमान लेख—Libel
अपमान-वचन— Slander
अपमिश्रण—Adulteration
अपर न्यायाधीश—Additional Judge
अपराध—Crime
अपराध—Offence
अपराधी—Criminal
अपवर्जन—(v) Exclude
अपवर्जन—(n) Exclusion
अपात्र—Ineligible
अपात्रता—Ineligibility
अपील—Appeal
अपील न्यायालय—Court of Appeal
अप्रवृत्त—Inoperative
अभिकथन—Allegation
अभिकरण—Agency
अभिकर्ता—Agent
अभिप्राय—Opinion
अभियाचना—Demand
अभियुक्त—Accused
अभियुक्ति—Charge
अभियुक्ति—Prosecution
अभियोग—Accusation
अभियोजन—Proseution
अभियोज्य दोष—Actionable wrong
अभिरक्षा—Custody
अभिलेख—Record
अभिलेख न्यायालय—Court of record
अभिशस्त—Convicted
अभिशस्ति—Conviction
अभिसमय—Convention
अभ्यर्थी—Candidate
अमान्य—Invalid
अयुक्त प्रभाव—Undue influence
अर्जन—Acquisition
अर्जी—Petition
अर्थ करना—Construe
अर्थ-दण्ड—Fine
अर्हता—Qualification
अल्पसंख्यक वर्ग—Minority
अल्पीकरण—Derogation
अवधिदान—Adjourn
अपमान—Contempt
अवयस्क—Minor
अविभक्त कुटुम्ब—Joint family
अविभक्त परिवार—Joint family
अविश्वास-प्रस्ताव—Motion of no confidence
अवैध—Illegal
अवैधाचरण—Illegal practice
असमर्थता—Incapacity
असमर्थता - निवृत्ति वेतन—Invalidity pension
असैनिक—Civil
असैनिक शक्ति—Civil Power
अहितकारी—Detrimental
अंकन—Endorse
अंकित—Endorsed
अंग—Unit
अंश—Share
अंशदान—Contribution

आ

आकलन—(v.) Credit
आकस्मिकता निधि—Contingency Fund
आचार—Custom
आजादी—Freedom
आजीविका—Callings
आजीविका-कर—Callings tax

आज्ञप्ति—Decree
आदेश—Order
आदेशिका—Process
आनुषंगिक—Consequential
आपराधिक—Criminal
आपात—Emergency
आपाती—Emergent
आपात की उद्घोषणा—Proclamation of emergency
आभार—Obligation
आय-कर—Income-tax
आयात-शुल्क—Import duty
आयुक्त—Commissioner
आयोग—Commission
आरक्षक—Police
आरक्षक बल—Police Force
आरोप—Allegation
आरोपण करना—Impose
आरोपण—Levy
आर्थिक—Economic
आर्थिक क्षेत्राधिकार—Pecuniary jurisdiction
आवर्तक—Recurring
आवारागरदी—Vagrancy
आवेदन-पत्र—Application
आस्ति—Property
आहिंडन—Vagrancy
आह्वान—Summon
आंक—Estimate

इ

इच्छा-पत्र—Will
इच्छा-पत्रहीन—Intestate

उ

इच्छा-पत्रहीनत्व—Intestacy
उगाहना—Levy (v)
उच्चतम न्यायालय—Supreme Court
उच्च न्यायालय—High Court
उत्तराधिकार—Succession
उत्तराधिकार-शुल्क—Succession duty
उत्तराधिकारी—Successor
उत्तरवादिता—Liability
उत्पादन—Production
उत्पादन-शुल्क—Excise duty
उत्प्रवास—Emigration
उत्प्रेषण-लेख—Certiorari
उद्ग्रहण—Levy (n)
उद्घोषणा—Proclamation
उद्भव—Descent
उद्यम—Enterprise
उद्योग—Industry
उधार—Loan
उधार-ग्रहण—Borrowing
उन्मत्त—Lunatic
उन्माद—Lunacy
उन्मुक्ति—Immunity
उपकर—Cess
उपक्रमण—Initiate
उपचार—Remedy
उपजीविका—Occupation
उपदान—Gratu ty
उपदेश—Advisory
उपनिर्वाचन—By-election
उपनिवेशन—Colonization
उपबन्ध—Provision
उपभोग—Consumption
उपराज्यपाल—Lieutenant Governor
उपराष्ट्रपति—Deputy President
उपराष्ट्रपति—Vice-President
उपलब्धि—Emolument
उपविभाग—Sub-division
उपवेशन—Sitting
उपविधि—Bye-law
उपसभापति—Deputy Chairman
उपस्थित होना—Appear
उपाध्यक्ष—Deputy Speaker
उपायुक्त—Deputy Commissioner
उपायोजन—Employment
उपार्जित—Accrued.
उम्मेदवार—Candidate
उल्लंघन—Contravention

ऋ

ऋण—Debt
ऋणग्रस्तता—Indebtedness
ऋण-पत्र—Debenture

एकक—Unit
एकल निगम—Corporation, Sole
एकल संक्रमणीय मत—Single transferable vote
एकस्व—Patent

क

कटक—Contonment
कणकु—Account
कदाचार—Misbehaviour
कब्जा—Possession
कम्पनी—Company
कर—Tax
करार—Agreement
कर्तव्य—Duty
कर्त्तुमभिप्रेत—Purporting to be done
कर्मचारी-वृन्द—Staff
कानून-सम्बन्धी—Legal
कारखाना—Fctory
कारबार—Business
कारागार—Prison
काराबन्दी—Prisoner
कारावास—Imprisonment
कार्मिक संघ—Trade Union
कार्य—Business
कार्यकारी—Acting
कार्यपालिका शक्ति—Executive power
कार्यपालिका—Executive
कालदान—Adjourn
कावल—Custody
काँजीहौस—Cattle-pound
किराया—Fare
किसान—Tenant
कुर्की—Attach
कृति स्वाम्य—Copyright
कृत्य—Function
केन्द्रीय गुप्त-वार्ता-विभाग—Central Intelligence Bureau
कैद—Imprisonment
कैदी—Prisoner
क्षति—Injury
क्षतिपूर्ति बिल—Bill of indemnity
क्षमताशाली—Competent
क्षमा—Pardon
क्षेत्र—Area
क्षेत्राधिकार—Jurisdiction

ख

खनिज—Mineral
खनि-बसति—Mining settlement
खनिज-सम्पत्—Mineral resources
खर्च—Cost
खंड—Clause

ग

गजट—Gazette
गणना—Account
गणनानुदान—Vote on account
गणना-परीक्षा—Audit
गणपूर्ति—Quorum
गवेषणा—Research
गूढ़ पत्र—Ballot
ग्राम-परिषद्—Village Council
ग्राह्य—Admissible

घ

घोषणा—Declaration

च

चद्टम—Act (n)
चर्चा—Discussion
चल अर्थ—Currency
चलावणी—Currency
चित्तविकृति—Unsoundness of mind
चिह्न—Mark

चुकती—Agreement
चुने हुए—Elected
चुंगी—Octori
चेक—Cheque

छ

छावनी—Cantonment

ज

जगह—Post
जनगणना—Census
जन-जाति—Tribe
जनजाति-क्षेत्र—Tribal Area
जनजाति-परिषद्—Tribal Council
जल-दस्युता—Piracy
जल-प्रांगण—Territorial waters
जामिन—Bail
जांच करना—Inquire
जिला—District
जिला-गण—District Board
जिला-निधि—District Fund
जिला-न्यायालय—District Court
जिला-परिषद्—District Council
जिला-मंडली—District Board
जीविका—Livelihood
जुआ—Gambling
जुर्माना किया—Fined
जेल—Prison
ज्वार-जल—Tidal waters
ज्ञाप—Memo
ज्ञापन—Memorandum

ट

टंकण—Coinage
टांच—Attach
ट्राम—Tramway
ट्रामगाड़ी—Tramcar

ड

डिक्री—Decree

त

तत्समय—For the time being
तत्स्थानी—Corresponding
तदर्थ—Ad hoc
तीर्ण—Passed
तीर्व—Assessment
तृतीय पठन—Third reading
त्रैवार्षिक—Triennial

थ

थाना—Police Station

द

दत्तक-ग्रहण—Adoption
दत्तक-स्वीकरण—Adoption
दस्तकारी—Handicraf'
दस्तावेज—Document
दंड देना—Punish
दंड-न्यायालय—Criminal Court
दंड-विधि—Criminal law
दंड-सम्बन्धी—Criminal
दंडादेश—Sentence
दंडाधिकारी-न्यायालय—Magistrate's Court
दाखिला—Entry
दातव्य—Charities
दाय—Inheritance
दायित्व—Liability
दावा—Claim
दिवाला—Bankruptcy
दिवाला—Insolvency
दीवानी—Civil
दीवानी-अदालत—Civil Court
दृष्टांक—Visas
देय—Fee
देशीयकरण—Naturalisation
दोघरा—Bi-cameral
दोष-प्रमाणित—Convicted
दोष-सिद्धि—Conviction
दोषारोप—Charge (cr.)
द्यूत—Gambling

द्विगृही—Bicameral
द्वितीय-पठन—Second reading

ध

धन—Money
धन-विधेयक—Money-bill
धर्म—Faith
धर्मस्व—Endowments
धंधा—Occupation

न

नक्ष—Design
नगर-क्षेत्र—Municipal area
नगर-ट्रामवे—Municipal Tramway
नगर-निगम—Municipal Corporation
नगर-पालिका—Municipality
नगर-रथ्यायान—Municipal Tramway
नगर-समिति–Municipal Committee
नागरिकता—Citizenship
नाम-निदर्शन—Nominate
नावधिकरण—Admiralty
निकाय—Body
निक्षेप-निधि—Sinking Fund
निखात-निधि—Treasure-trove
निगम—Corporation
निगम-कर—Corporation tax
निगमन—Incorporation
निगम-निकाय—Body, Corporate
निदेश—Direction
निधि—Fund
निबद्ध—Registered
निबन्धन—Registration
निबन्धन—Term
नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक—Comptroller and Auditor-General
नियन्त्रण—Control
नियम—Rule
नियुक्ति—Appointment
नियोजक उत्तरदायिता—Employer's liabili
नियोजक दातव्य—Employer's liability
निरसन—Repeal
निराकरण करना—Abrogate
निरोध—Custody
निरोधा—Quarantine
निर्णय—Judgment
निर्णायक मत—Casting vote
निर्देश—Reference
निर्धारण—Assessment
निर्बन्धन—Restriction
निर्माण—Manufacture
निर्यात—Export
निर्यात-कर—Export tax
निर्यात-शुल्क—Export duty
निर्योग्यता—Disability
निर्वचन—Interpretation
निर्वसीयत—Intestate
निर्वसीयता—Intestacy
निर्वहन—Discharge
निर्वाचक-गण—Electoral college
निर्वाचक-नामावली—Electoral rolls
निर्वाचन—(v.) Elect
निर्वाचन—Election
निर्वाचन-अधिकरण—Election Tribunal
निर्वाचन-आयुक्त—Election Commissioner
निर्वाचन-क्षेत्र—Constituency
निर्वाचित—Elected
निर्वासन—Transportation
निर्वाह मजूरी—Living wage
निलम्बन—(v.) Suspend
निलम्बन—(n) Suspension
निवारक-निरोध—Preventive detention
निवृत्त होना—Retire
निवृत्ति—Retirement
निवृत्ति-वेतन—Pension
निषेध—Forbid
निषिद्ध—Forbidden
निष्ठा—Allegiance
नौंदना—Register (v.)

नौकरी-कर—Employment
नौकरी—Employment-tax
नौकाधिकरण—Admiralty
नौ-परिवहन—Navigation
नौ-सेना-सम्बन्धी—Naval
न्यस्त करना—Entrust
न्यायपालिका—Judiciary
न्यायाधिकरण—Tribunal
न्यायाधिपति—Justice
न्यायाधीश—Judge
न्यायालय—Court
न्यायालय-अवमान—Contempt of Court
न्यायिक-कार्यरीति—Judicial proceeding
न्यायिक-कार्यवाही—Judicial proceeding
न्यायिक मुद्रांक—Judicial stamps
न्यायिक शक्ति—Judicial power
न्यास—Trust
न्यूनन—Abridge

प

पक्ष—Party.
पण लगाना—Bet
पण-क्रिया—Betting
पण्य-चिह्न—Merchandise mark
पत—Credit (n.)
पत्तन-निरोधा—Port quarantine
पथ-कर–Toll
पथ-नियम—Rule of the road
पद—Post
पद—Office
पदच्युत करना—Dismiss
पदत्याग—Resignation
पदधारी—Incumbent of an office
पदाधिकारी—Officer
पदावधि—Tenure
पदावास—Official residence
पदेन—Ex-officio
परकीकरण—Alienation
परमादेश—Mandamus
परन्तु—Provided
परमिट—Permit (n.)
परामर्श—Consultation
परित्यजन—Abandonment
परित्याग—Abandonment
परित्राण—Safeguard
परिपालन—Implement
परिप्रश्न—Inquiry
परिलब्धि—Perquisite
परिवहन—Transport
परिवहन—Carriage
परिव्यय—Cost
परिषद्—Council
परिषद्-आदेश—Order in Council
परिसीमन—Delimitation
परिसीमा—Limitation
परिहार—Remission
परिहार विधेयक—Bill of Indemnity
परोक्ष निर्वाचन—Indirect election
पर्यवेक्षण—Inspection
पर्यालोचन—Deliberate
पशु-अवरोध—Cattle-pounds
पंचाट—Award
पंजी—Register
पंजी—Registered
पंजीबन्धन—Registration
पंजीयन—Registration
पात्र—Eligible
पात्रता—Eligibility
पार-पत्र—Passport
पारण—Pass
पारित—Passed
पारितोषिक—Reward
पारिश्रमिक—Remuneration
पावती—Receipt (paper)
पीठासीन होना—Preside
पीठासीन-पदाधिकारी—Presiding Officer
पुनरीक्षण—Revision
पुनर्विचार-न्यायालय—Court of Appeal
पुनर्विलोकन–Review

पुरःस्थापन—Introduce
पुरस्थापना—Introduction
पूर्त—Charity
पूर्त धार्मिक धर्मस्व—Charitable and religious endowment.
पूर्त संस्था—Charitable institution
पूर्व मंजूरी—Previous sanction
पूर्व सम्मति—Previous consent
पूँजी—Capital
पृष्ठांकन—Endorse
पृष्ठांकित—Endorsed
पेशगी—Advance
पेशा—Profession
पोषण—Maintenance
पोषण करना—Maintain
पौरत्व—Citizenship
प्रकट करना—Discovery
प्रकाशन—Publication
प्रक्रिया—Procedure
प्रख्यापन—Promulgate
प्रग्रहण—Arrest
प्रचलित—Current
प्रचार करना—Propagate
प्रतिकर—Compensation
प्रतिकूल असर डालना—Affect prejudicially
प्रतिकूलता—Contravention
प्रतिकूल प्रभाव—Prejudice
प्रतिकूल प्रभाव डालना—Affect prejudicially
प्रतिकृति—Copy
प्रतिज्ञान—Affirmation
प्रतिनिधि—Representative
प्रतिनिधित्व—Representation
प्रतिपत्री—Proxy
प्रतिपालक अधिकरण—Court of wards
प्रतिभूति—Security
प्रतिरक्षा—Defence
प्रतिलिपि—Copy
प्रतिलिप्यधिकार—Copyright
प्रतिवेदन—Report
प्रतिव्यक्ति-कर—Capitation tax
प्रतिषिद्ध—Prohibited
प्रतिषेध—Prohibition
प्रतिशुल्क—Countervailing duties
प्रतिषेध लेख—Writ of prohibition
प्रतिसंहरण—Revoke
प्रत्यक्ष निर्वाचन—Direct election
प्रत्यय—Credit
प्रत्यय-पत्र—Letters of credit
प्रत्ययानुदान—Votes of credit
प्रत्यर्पण—Extradition
प्रत्याभूति—Guarantee
प्रथम पठन—First reading
प्रथम सदन—Lower House
प्रधान-मंत्री—Prime Minister
प्रपत्र—Form
प्रभाव—Influence
प्रभु—Sovereign
प्रभुता—Sovereignty
प्रमाण-पत्र—Certificate
प्रमाणीकरण—Authentication
प्रमोद-कर—Entertainment tax
प्रयुक्ति—Application
प्रयोग—Application
प्रयोग—Exercise
प्रविलम्बन—Reprieve
प्रवर-समिति—Select Committee
प्रविष्टि—Entry
प्रवेश—Access
प्रवेशन—Accession
प्रव्रजन—Migration
प्रशान्ति—Tranquility
प्रशासन—Administration
प्रशासन—Administer
प्रशासन कार्यक्षमता—Efficiency of administration
प्रशासन कार्यपटुता—Efficiency of administration
प्रशासनीय—Administrative
प्रशासनीय कृत्य—Administrative functions

प्रशासित—Administered
प्रशिक्षण—Training
प्रसंग—Context
प्रसारण—Broadcasting
प्रसूति-साहाय्य—Maternity relief
प्रसूति-सहायता—Maternity relief
प्रस्ताव—Motion
प्रस्तावना—preamble
प्रस्थापना—Proposal
प्राक्कलन—Estimate
प्रादेशिक आयुक्त—Regional Commissioner
प्रादेशिक क्षेत्राधिकार—Territorial jurisdiction
प्रादेशिक निधि—Regional Fund
प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्र—Territorial constituency
प्रादेशिक परिषद्—Regional Council
प्रादेशिक भार—Territorial charges
प्राधिकार—Authority (ab.)
प्राधिकारी—Authority (con.)
प्राधिकृत—Authorised
प्रान्त—Province
प्रापण—Accrue
प्राप्त होना—Accrue
प्राप्ति—Receipt
प्रामिसरी नोट—Promissory note
प्रासंगिक—Incidental
प्रोद्भवन—Accrue
प्रोद्भूत—Accrued

फ

फरियाद—Complaint
फारम—Form
फीस—Fees
फेडरल न्यायालय—Federal Court

ब

बंटवारा—Allocation
बनाए रखना—Maintain (v.)
बनाए रखना—Maintenance (n.)
बन्दी करना—Arrest
बन्दी प्रत्यक्षीकरण—Habeas Corpus
बन्धक—Mortgage
बल—Forces
बहिःशुल्क—Custom duty
बहुमत—Majority
बाँट—Allotment
बंटन—Allot
बिल—Bill
बीमा—Insurance
बीमा-पत्र—Policy of insurance
बेकारी—Unemployment
बैठक—Sitting
बैंक—Bank
बोर्ड—Board

भ

भत्ता—Allowance
भविष्य-निधि—Provident Fund
भर्ती—Recruitment
भागिता—Partnership
भाटक—Rent
भाड़ा—Fare
भार—charge
भारग्रस्त सम्पदा—Encumbered estates
भारत-सरकार—Government of India
भारित करना—Charge
भू-अभिलेख—Land Records
भू-धृति—Land tenures
भू-राजस्व—Land Revenue
भ्रष्ट—Corrupt

म

मजूरी—Wage
मण्डल—District
मंडल-न्यायालय—Court, District
मण्डलाधीश—Deputy Commissioner
मण्डलायुक्त—Deputy Commissioner
मण्डली—Board

मत—Vote
मतदाता—Voter
मतदान—Voting
मताधिकार—Suffrage
मतिमान्द्य—Dulness
मध्यस्थ-न्यायाधिकरण—Arbitral tribunal
मध्यस्थ—Arbitrator
मध्यस्थ-निर्णय—Arbitration
मनोदौर्बल्य—Mental weakness
मनोनयन–Nominate
मनोवैकल्य—Mental deficiency
मन्त्रणा—Advice
मन्त्रणा देना—Advise
मन्त्रणा-परिषद्—Advisory Council
मन्त्री-परिषद्—Council of Ministers
मन्त्री—Minister
मरण-शुल्क—Death duty
महाजनी—Banking
महाधिवक्ता—Advocate-General
महान्यायवादी—Attorney-General
महाप्रशासक—Administrator-General
महालेखापरीक्षक—Auditor-General
महाभियोग—Impeachment
मंजूरी—Sanction
मानदेय—Honorarium
मानव-पण्य—Traffic in human beings
मान-हानि—Defamation
मान्यता—Validity
मार्ग-प्रदर्शन—Guidance
माँग—Demand
मीन-क्षेत्र—Fishery
मीन-पण्य—Fishery
मुक्त—Exempt
मुखिया—Headman
मुख्य—Chief
मुख्य-आयुक्त—Chief Commissioner
मुख्य-निर्वाचन-आयुक्त—Chief Election Commissioner
मुख्य न्यायाधिपति—Chief Justice
मुख्य न्यायाधीश—Chief Judge
मुख्य मन्त्री—Chief Minister
मुद्रा—Seal
मुद्रांक-शुल्क—Stamp duty
मूलधन—Capital
मूलधन-मूल्य—Capital value

य

यथास्थिति—As the case may be
यन्त्र-शास्त्र—Engineering
याचिका—Pet tion
यातायात—Traffic
योगकाल—Joining time

र

रक्षण—Reservation
रक्षा-कवच—Safeguard
रक्षित वन—Reserved forest
रथ्यायान—Tramcar
रद्द करना—Annulment
रसीद—Receipt
राजगामी—Escheat
राजनय—Diplomacy
राजस्व—Revenue
राजस्व-न्यायालय—Revenue Court
राज्य—State
राज्य की सरकार—Government of a State
राज्य-क्षेत्र—Territory
राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन–Extra territorial operation
राज्य-निधि—State Fund
राज्य-परिषद्—Council of States
राज्यपाल—Governor
राज्य-सूची—State list
राय—Opinion
राशि—Amount
राष्ट्र—Nation
राष्ट्र-ऋण—Public debt
राष्ट्रपति—President
राष्ट्रपति-प्रसाद पर्यन्त—During the pleasure of the President

राष्ट्रीय राजपथ—National highways
राष्ट्रों की विधि—Laws of Nations
रिक्तता—Vacancy
रिक्त स्थान—Vacancy
रिक्ति—Vacancy
रिक्थ—Property
रुकावट—Bar
रूढ़ि—Custom
रूप—Form
रूपभेद—Modification
रूपांकन—Design
रेल—Railway

ल

लगान—Rent
लगाना—Impose
लघूकरण—Commute
लम्बमान—Pending
लम्बित—Pending
लाइसेंस—Licence
लागत—Cost
लागू होना—Application (n.)
लाभ—Profit
लाभांश—Dividend
लिखत—Instrument
लिखित सूचना—Notice in writing
लेख—Writ
लेखा—Account
लेखा-परीक्षा—Audit
लेखानुदान—Votes on accounts
लेख्य—Document
लेना-देना—Dealings
लोक—People
लोक-अधिसूचना—Public notification
लोकसभा—House of the People
लोक-समाज—Community
लोक-सेवाएँ—Public Services
लोक-सेवायोग—Public Service Commission
लोक-स्वास्थ्य—Public health

व

वकालत करना—Plead
वकील—Pleader
वचन-पत्र—Promissory note
वचन-बन्ध—Engagement
वणिक-पोत—Merchant marine
वयस्क—Major
वयस्क-मताधिकार–Adult suffrage
वरी—Duty
वसीयत—Will
वस्तु-भाड़ा—Freight
वहन-पत्र—Bill of lading
वाक्-स्वातन्त्र्य—Freedom of speech
वाणिज्य—Commerce
वाणिज्य-दूत—Consul
वाणिज्य-सम्बन्धी—Commercial
वाद—Cause
वाद-पद—Issue
वाद-प्रतिवाद—Controversy
वाद-मूल—Cause of action
वाद-विवाद—Debate
वाद-विषय—Subject matter
वायदा बाजार—Future market
वायु-पथ—Airways
वार्षिक—Annual
वार्षिक-वित्त-विवरण–Annual financial statement
वार्षिकी—Annuities
विकलन—Debit (v.)
विकृत-चित्त—Unsound mind
विक्रय—Sale
विक्रय-कर—Sales Tax
विघटन—Dissolution
विचार—Consideration
विचारार्थ प्रस्ताव—Motion for consideration
वितरण—Distribution
वित्त—Finance
वित्त-विधेयक—Finance bill
वित्तायोग—Finance Commission

वित्तीय—Financial
वित्तीय भार—Financial obligation
वित्तीय विवरण—Financial statement
विदेशीय कार्य—Foreign Affairs
विदेशीय विनिमय—Foreign exchange
विधान—Legislation
विधान-परिषद्—Legislative Council
विधान-मंडल—Legislature
विधान-सभा—Legislative Assembly
विधायिनी शक्ति—Legislative power
विधि—Law
विधि-प्रश्न—Question of law
विधि मान्य—Legal tender
विधियों का समान संरक्षण—Equal protection of law
विधि-सम्बन्धी—Legal
विधेयक—Bill
विनियम—Regulation
विनियमन—Regulate
विनिमय-पत्र—Bill of exchange
विनियोग—Appropriation
विनियोग-विधेयक—Appropriation bill
विनिश्चय—Decision
विभाग—Section
विभाजन—Distribution
विभेद—Discrimination
विमति—Dissent
विमान-परिवहन—Air navigation
विमान-यातायात—Air traffic
विमान-बल—Air Forces
विमोचन—Redemption
विमोचन-भार—Redemption charges
वियुक्त—Deprive
विराम—Respite
विरुद्ध—Repugnant
विरोध—Repugnance
विरोध—Repugnancy
विल—Will
विलेख—Deed
विवरणी—Return
विवाद—Dispute
विवाह-विच्छेद—Divorce
विशेषाधिकार—Privilege
विश्वास-प्रस्ताव—Motion of confidence
विश्वास का अभाव—Want of confidence
विषय—Subject
विसर्जन—Disperse
विसंगत—Relevant
विस्तार—Extend
विस्फोटक—Explosive
वीसा—Visas
वृत्ति—Profession
वृत्ति-कर—Profession tax
वृद्धि—Interest
वेतन—Pay
वेतन—Salary
वेलई—Employment
वेला-जल—Tidal waters
वैदेशिक-कार्य—External Affairs
वोटदाता—Voter
वंचित करना—Deprive
व्यक्ति—Person
व्यपगत होना—Lapse
व्यय—Expenditure
व्यवसाय—Vocation
व्यवस्था—Order
व्यवहार—Civil
व्यवहार—Dealings
व्यवहार अदालत—Civil Court
व्यवहारालय—Civil Court
व्यवहार न्यायालय—Civil Court
व्यवहार-प्रक्रिया—Civil procedure
व्यवहार - प्रक्रिया - संहिता—Civil Procedure Code
व्यवहार लाना—Sue
व्यवहार-वाद—Civil suit
व्यवहार-विषयक अपकृत्य—Civil wrong
व्यवहार-विषयक दोष—Civil wrongs
व्यवहार-शक्ति—Civil power
व्याख्या—Explanation

व्यापार—Trade
व्यापार-कर—Trades tax
व्यापार-चिह्न—Trade mark
व्यापार-संघ—Trade Union
व्यावृत्ति—Savings

श

शक्ति—Power
शर्त—Condition
शलाका—Ballot
शलाका-पद्धति—Ballot
शान्ति—Peace
शाश्वत-उत्तराधिकार—Perpetual succession
शासक—Ruler
शासन—Governance
शासन—Govern
शासन—Government
शासी निकाय—Governing body
शास्ति—Penalty
शिक्षा—Education
शिक्षा—Instruction
शिल्पी-प्रशिक्षण—Technical training
शिविर—Camp
शिशु—Infant
शिस्त—Disciplinary
शुल्क—Duty
शुल्क सीमान्त—Custom Frontiers
शून्य—Void
शेरिफ—Sheriff
शोधना—Research
श्रद्धा—Faith
श्रम—Labour
श्रमिक-संघ—Labour Union
श्रेष्ठि-चत्वर—Stock Exchange

स

सक्षम—Competent
सत्र—Session
सत्र-न्यायालय—Session Court
सत्रावसान—Prorogue
सदन—House
सदस्य—Member
सदाचरण-पर्यन्त—During good behaviour
सदाचार—Morality
संस्था—Association
सन्धि—Treaty
सभा—Assembly
सभापति—Chairman
समता—Equality
समर्पण—Dedicate
समवर्ती सूची—Concurrent list
समवाय—Company
समवाय-संस्था—Co-operative society
समवेत होना—Assemble
समागम—Intercourse
समाचार-पत्र—Newspaper
समापन—Winding up
समिति—Committee
समुदाय—Community
समुद्र-नौवहन—Maritime shipping
सम्पदा—Estate
सम्पदा-शुल्क—Estate duty
सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज Sovereign Democretic Republic
सम्मेलन—Conference
सरकार—Government
सरकारी अभियाचना—Public demand
सर्वक्षमा—Amnesty
सर्वोच्च समादेश—Supreme Command
सलाह—Advice
सशस्त्र-बल—Armed force
सहकारी संस्था—Co-oprative society
सहमति—Concurrence
सहायक—Ancillary
सहायक अनुदान—Grants-in-aid
संकटमय—Hazardous
संकल्प—Resolution
संक्रमण—Transition
संगणना—Compute

संघ—Union
संघटन—Organization
संघ-सूची—Union List
संचार—Communication
संचार करना—Communicate
संचार-साधन—Means of communication
संचित निधि—Consolidated fund
संदर्भ—Context
संदेश— Message
संबोधित—Addressed
सम्पत्ति—Property
सम्पत्ति-हस्तान्तरण-पत्र—Assurances of property
सम्पर्क—Contact
सम्मति—Consent
संरक्षक—Guardian
संलग्न—Append
संविदा—Contract
संविधान—Consititution
संविधान-सभा—Constituent Assembly
संशोधन—Amendment
संसद्—Parliament
संस्था—Institution
संस्थापन—Establishment
संहिता—Code
साक्ष्य—Evidence
साख—credit
साधारण निर्वाचन—General Election
सामर्थ्य—Capacity
सामाजिक बीमा—Social insurance
सामाजिक रूढ़ि—Social custom
सामाजिक सेवा—Social service
सामान्य मुद्रा—Common seal
सामान्य मुहर—Common seal
सार्वजनिक अधिसूचना—Public Notification
सार्वजनिक अभियाचना—Public demand
सार्वजनिक कल्याण—Common good
सार्वजनिक व्यवस्था—Public order
साहूकार—Money-lender
साहूकारी—Money-lending
सांसर्गिक—Contagious
सांक्रामिक—Infectious
सिद्ध-दोष—Convicted
सिफारिश—Recommendation
सिफ़ारिश करना—Recommend
सीमा—Boundary
सीमा-कर—Terminal tax
सीमान्त—Frontiers
सीमा-शुल्क—Custom duty
सीमांकन—Demarcation
सुधार-प्रन्यास—Improvement Trust
सुधारालय—Reformatory
सुसंगति—Relevancy
सूचना—Notice
सूचना-पत्र—Gazette
सूचना-पत्र—Notice
सूची—list
सूद—Interest
सूत्र—Formula
सूत्रित—Formulated
सेना—Military
सेना-न्यायालय—Court Martial
सेवा—Service
सेवा की शर्त—Condition of Service
सेवा-नियोजन—Employment
सेवा-भार—Service charges
सैनिक—Military
सैन्य-वियोजन—Demobilization
सौंपना—Assign
सौंपना—Entrust
स्थगन—Adjourn
स्थगित करना—Adjourn
स्थान—Post
स्थान—Seat
स्थानान्तरण—Transfer (n)
स्थानीय-क्षेत्र—Local area
स्थानीय गण—Local Board
स्थानीय निकाय—Local body
स्थानीय प्राधिकारी—Local authority
स्थानीय मंडली—Local Board

स्थानीय शासन--Local Government
स्थानीय स्वशासन--Local Self-Government
स्थापना--Establishment
स्थापित करना--Establish
स्थायी आदेश--Standing Orders
स्थायी समिति--Standing Committee
स्पष्टीकरण--Clarification
स्पष्टीकरण--Explanation
स्मारक--Memorial
स्वतन्त्रता--Freedom
स्ववश--Possession
स्वविवेक--Discretion
स्वातन्त्र्य--Freedom
स्वाधीनता--Liberty
स्वामित्व--Ownership
स्वामिलभ्य--Royalties
स्वामिस्व--Royalties
स्वामी--Owner
स्वामिहीनत्व--Bona vacancia
स्वामी होना--Own
स्वायत्तता--Autonomy
स्वीय विधि--Personal law

ह

हक--Title
हक होना--Entitled
हटाना--Removal
हस्तशिल्प--Handicraft
हस्तान्तर-पत्र--Conveyance
हस्तान्तरण--Transfer (n)
हिदायतें--Instructions

अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय

A

Abandonment—परित्यजन, परित्याग
Abridge—न्यूनन
Abrogate—निराकरण
Access—प्रवेश
Account—लेखा, गणना, कणकु
Accrue—प्रापण, प्रोद्भवन
Accrued—प्राप्त, प्रोद्भूत, उपार्जित
Accusation—अभियोग
Accused—अभियुक्त
Acquisition—अर्जन
Act (n)—अधिनियम, चट्टम
Acting (*e.g.* Chairman)—कार्यकारी
Actionable wrong—अभियोज्य दोष
Adaptation—अनुकलन
Addressed—सम्बोधित
Adherence—अनुषक्ति
Ad hoc—तदर्थ
Adjourn—स्थगन, स्थगित करना, अवधि-दान, कालदान
Administer—प्रशासन
Administered—प्रशासित
Adminstration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनीय
Administrative functions—प्रशासनीय कृत्य
Administrator - General—महा-प्रशासक
Admiralty—नौकाधिकरण, नावधिकरण
Admissible—ग्राह्य
Adoption—दत्तक-ग्रहण, दत्तक-स्वीकरण
Adulteration—अपमिश्रण
Adult Suffrage.—वयस्क मताधिकार
Advance.—अग्रिम धन, पेशगी
Advice.—मंत्रणा, उपदेश, सलाह
Advise.—मंत्रणा देना
Advisory Council.—मंत्रणा-परिषद्
Advocate.—अधिवक्ता
Advocate-General.—महाधिवक्ता
Affect prejudicially.—प्रतिकूल प्रभाव डालना, प्रतिकूल असर डालना
Affirmation—प्रतिज्ञान
Agency.—अभिकरण
Agent.—अभिकर्त्ता
Agreement.—करार, चुकती
Air force.—विमान-बल
Air navigation,—विमान-परिवहन
Air traffic—विमान यातायात
Airways.—वायु-पथ
Alien.—अन्यदेशीय
Alienate.—अन्य-संक्रामण
Alienation.—अन्य-संक्रामण, परकीकरण
Allegation.—अभिकथन, आरोप
Allegiance.—निष्ठा
Allocation—बटवारा
Allot—बंटन
Allotment.—बाँट
Allowances.—भत्ता
Amendment—संशोधन
Amnesty.—सर्वक्षमा
Amount.—राशि
Ancillary.—सहायक
Annual.—वार्षिक
Annual Financial Statement.—वार्षिक वित्त-विवरण
Annuities.—वार्षिकी
Annulment.—रद्द करना
Appeal.—अपील
Appear.—उपस्थित होना
Appended.—संलग्न
Application.—प्रयुक्ति, लागू होना, आवेदन-पत्र
Appointment.—नियुक्ति
Appropriation.—विनियोग

Appropriation bill.—विनियोग-विधेयक
Approve.—अनुमोदन करना
Approval.—अनुमोदन
Arbitral tribunal.—मध्यस्थ-न्यायाधिकरण
Arbitration.—मध्यस्थ निर्णय
Arbitrator.—मध्यस्थ
Area.—क्षेत्र
Armed Forces.—सशस्त्र बल
Arrest.—बन्दी करना, प्रग्रहण
Article.—अनुच्छेद
Assemble.—समवेत होना, सम्मिलित होना
Assembly.—सभा
Assent.—अनुमति
Assessment.—निर्धारण, तीर्व
Assignment.—सौंपना
Association—संस्था
Assurance of property—संपत्ति हस्तान्तरण-पत्र
As the case may be.—यथा-स्थिति, यथाप्रसंग
Attach.—कुर्की, टाँच
Attorney-General.—महा-न्यायवादी
Audit.—लेखा-परीक्षा, गणना-परीक्षा
Auditor-General.—महा-लेखा-परीक्षक
Authentication.—प्रमाणीकरण
Authorise.—प्राधिकृत
Authority.—प्राधिकारी
Autonomous—स्वायत्त
Autonomy.—स्वायत्तता
Award.—पंचाट

B

Bail.—जामिन
Ballot.—शलाका, शलाका-पद्धति, गढ़-पत्र
Bank.—बैंक
Banking.—महाजनी
Bankruptcy.—दिवाला
Bar.—रुकावट
Benefit—हित
Betting—पण लगाना, पणक्रिया
Bi-cameral.—दोघरा, द्विगृही
Bill—विधेयक, बिल
Bill of exchange.—विनिमय-पत्र
Bill of indemnity.—परिहार-विधेयक, क्षति-पूर्ति बिल
Bill of lading.—वहन-पत्र
Board.—मंडली, बोर्ड
Body.—निकाय
Body, corporate.—निगमनिकाय
Body, governing.—शासीनिकाय
Bona vacancia.—स्वामिहीनत्व
Borrowing.—उधार-ग्रहण
Boundary.—सीमा
Broadcasting—प्रसारण
Business.—कारबार
Bye-election.—उपनिर्वाचन
Bye-law.—उपविधि

C

Calling.—आजीविका
Camp.—शिविर
Candidates.—अभ्यर्थी, उम्मेदवार
Cantonment.—कटक, छावनी
Capacity.—सामर्थ्य
Capital.—मूलधन, पूंजी
Capital value.—मूलधन-मूल्य
Capitation tax.—प्रतिव्यक्तिकर
Carriage.—परिवहन
Casting vote—निर्णायक मत
Cattle pound.—पशु-अवरोध, कांजीहाउस
Cause.—वाद
Cause of action.—वाद-मूल
Census.—जन-गणना
Central Intelligence Bureau.—केन्द्रीय गुप्त वार्ता विभाग
Certificate.—प्रमाण-पत्र
Certiorari.—उत्प्रेषण-लेख
Cess.—उपकर
Chairman.—सभापति
Charge.—भार, भारित करना
Charge (Cr.)—दोषारोप, अभियुक्ति

Charity.—पूर्त, दातव्य
Charitable and religious endowments.—पूर्त-धार्मिक धर्मस्व
Charitable institutions.—पूर्त संस्था
Cheque.—चेक
Chief.—मुख्य
Chief Commissioner.—मुख्य आयुक्त
Chief Election Commissioner—मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Chief Judge.—मुख्य न्यायाधीश
Chief Justice—मुख्य न्यायाधिपति
Chief Minister.—मुख्य मंत्री
Citizenship—नागरिकता, पौरत्व
Civil.—व्यवहार, असैनिक
Civil court.—व्यवहार-न्यायालय, दीवानी, व्यवहारालय व्यवहार अदालत
Civil power.—व्यवहार-शक्ति, असैनिक-शक्ति
Civil wrong.—व्यवहार-विषयक अपकृत्य, व्यवहार-विषयक दोष
Claim.—दावा
Clarification.—स्पष्टीकरण
Clause.—खण्ड
Code.—संहिता
Coinage.—टंकण
Colonization.—उपनिवेशन
Commerce.—वाणिज्य
Commercial.—वाणिज्य-सम्बन्धी
Commissiom—आयोग
Commissioner.—आयुक्त
Committee—समिति
Committee, Select—प्रवर-समिति
Committee, Standing.—स्थायी समिति
Common good.—सार्वजनिक कल्याण
Common Seal.—सामान्य मुद्रा, सामान्य मुहर
Communicate.—संचार करना
Communication, means of संचार-साधन
Community.—लोक-समाज, समुदाय
Commute.—लघुकरण
Company.—समवाय, कम्पनी
Compensation.—प्रतिकर
Competent.—सक्षम, क्षमताशील
Complaint.—फरियाद
Comptroller and Auditor General.—नियन्त्रक-महालेखा-परीक्षक
Compute.—संगणना
Concurrence.—सहमति
Concurrent list.—समवर्ती सूची
Condition.—शर्त
Conditions of service सेवा की शर्तें
Conference—सम्मेलन
Confidence, want of.—विश्वास का अभाव
Conscience.—अन्तःकरण
Consent.—सम्मति
Consent, previous.—पूर्व सम्मति
Consequential.—आनुषंगिक
Consideration.—विचार
Consolidated Fund.—संचित निधि
Constituency.—निर्वाचन-क्षेत्र
Constituency territorial.—प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्र
Constituent Assembly.—संविधान-सभा
Constitution.—संविधान
Consul.—वाणिज्य-दूत
Consultation.—परामर्श
Construe.—अर्थ करना
Consumption.—उपभोग
Contact.—संपर्क
Contagious.—सांसर्गिक
Contempt.—अवमान
Contempt of court.—न्यायालय-अवमान
Context.—संदर्भ, प्रसंग
Contingency Fund.—आकस्मिकता-निधि
Contract.—संविदा
Contravention.—प्रतिकूलता, उल्लंघन

Contribution.—अंशदान
Control.—नियंत्रण
Controversy.—प्रतिवाद
Convention.—अभिसमय
Conveyance—हस्तान्तर-पत्र
Convicted.—सिद्ध-दोष, दोष प्रमाणित, अभिशस्त
Conviction.—दोषसिद्धि, अभिशस्ति
Co-Operative society.—सहकारी संस्था, समवाय-संस्था
Copy.—प्रतिलिपि, प्रतिकृति
Copyright.—प्रतिलिप्यधिकार, कृति-स्वाम्य
Corporation.—निगम
Corporation, Sole.—एकल निगम
Corporation, tax.—निगम-कर
Corresponding.—तत्स्थानी
Corrupt.—भ्रष्ट
Cost.—परिव्यय, खर्च, लागत
Council.—परिषद्
Council of Ministers.—मंत्रि-परिषद्
Council of States.—राज्य-परिषद्
Council, Regional.—प्रादेशिक-परिषद्
Council, Tribal.—जनजाति-परिषद्
Countervailing duty.—प्रति-शुल्क
Court.—न्यायालय
Court of Appeal.—पुनर्विचार-न्यायालय, अपील न्यायालय
Court, Civil.—व्यवहार-न्यायालय
Court, Criminal.—दंड न्यायालय
Court, District.—जिला न्यायालय, मण्डल-न्यायालय
Court, Federal.—फेडरल-न्यायालय
Court, High.—उच्च न्यायालय
Court, Magistrate.—दंडाधिकारी-न्यायालय
Court Martial.—सेना-न्यायालय
Court of Wards.—प्रतिपालक-अधिकरण
Court, Revenue.—राजस्व-न्यायालय
Court, Session.—सत्र-न्यायालय
Court, Subordinate.—अधीन-न्यायालय
Court, Supreme—उच्चतम-न्यायालय
Credit.—प्रत्यय, साख, पत
Credit.—आकलन
Crime.—अपराध
Criminal.—अपराधी, दंड-सम्बन्धी, आपराधिक
Criminal law.—दंड-विधि
Currency.—चल अर्थ, चलावणी
Custody.—अभिरक्षा, निरोध, कावल
Custom duty.—बहिःशुल्क, सीमा-शुल्क
Custom, frontier.—शुल्क सीमान्त
Custom.—रूढ़ि, आचार

D

Dealings.—व्यवहार, लेना-देना
Debate.—वाद-विवाद
Debentures.—ऋण-प
Debit.—विकलन
Debt.—ऋण
Decision.—विनिश्चय
Declaration.—घोषणा
Decree.—आज्ञप्ति, डिक्री
Dedicate.—समर्पण
Deed.—विलेख
Defamation.—मानहानि
Defence.—प्रतिरक्षा
Deliberate.—पर्यालोचन
Delimitation.—परिसीमन
Demand.—माँग, अभियाचना
Demarcation—सीमांकन
Demobilisation.—सैन्य-वियोजन
Deprived.—वंचित करना वियुक्त करना
Deputy Chairman.—उपसभापति
Deputy Commissioner.—उपायुक्त मंडलायुक्त
Deputy President.—उपराष्ट्रपति
Deputy Speaker.—उपाध्यक्ष
Descent.—उद्भव
Derogation.—अल्पीकरण

Design.—रूपांकण, नक्ष
Detrimental.—अहितकारी
Diplomacy.—राजनय
Direction.—निर्देश
Disability.—निर्योग्यता
Discharge.—निर्वहन
Discipline.—अनुशासन
Disciplinary.—अनुशासन-सम्बन्धी, शिस्त
Discovery.—प्रकट करना
Discretion.—स्वविवेक
Discrimination.—विभेद
Discussion—चर्चा
Dismiss.—पदच्युत करना
Disperse.—विसर्जन
Dispute.—विवाद
Disqualification.—अनर्हता
Disqualify.—अनर्हीकरण
Dissent,—विमति
Dissolution.—विघटन
Distribution.—वितरण, विभाजन
District.—जिला, मंडल
District Board.—जिला-मंडली
District Council.—जिला-परिषद्
District Fund.—जिला-निधि
Dividend.—लाभांश
Divorce.—विवाह-विच्छेद
Documents.—लेख्य, दस्तावेज
Domicile.—अधिवास
Domiciled.—अधिवासी
Dulness.—मतिमान्द्य
During good behaviour.—सदाचार पर्यन्त
During the pleasure of the President.—राष्ट्रपति-प्रसाद-पर्यन्त
Duty.—शुल्क, कर्त्तव्य, वरी
Duty, custom.—सीमा-शुल्क
Duty, death.—मरण-शुल्क
Duty, estate.—सम्पत्ति-शुल्क
Duty, excise.—उत्पादन-शुल्क
Duty, export.—निर्यात-शुल्क
Duty, import—आयात-शुल्क
Duty, stamp.—मुद्रांक-शुल्क
Duty, succession.—उत्तराधिकार-शुल्क

E

Economic.—आर्थिक
Education.—शिक्षा
Efficiency of administration.—प्रशासन-कार्यक्षमता, प्रशासन-कार्य-पटुता
Elect. (v)—निर्वाचन
Elected.—निर्वाचित, चुने हुए
Election.—निर्वाचन
Election-Commissioner.—निर्वाचन-आयुक्त
Election, direct.—प्रत्यक्ष निर्वाचन
Election, general.—साधारण निर्वाचन
Election, indirect.—परोक्ष निर्वाचन
Election tribunal.—निर्वाचन-अधिकरण
Electoral roll.—निर्वाचक-नामावली
Electoral rolls.—निर्वाचक-गण
Eligibility.—पात्रता
Eligible.—पात्र होना
Emergency.—आपात
Emergent.—आपाती
Emigration.—उत्प्रवास
Emoluments.—उपलब्धियाँ
Employer's liability.—नियोजक-दातव्य, नियोजक-उत्तरवादिता
Enact.—अधिनियम
Encumbered estate.—भारग्रस्त-सम्पदा
Endorse.—पृष्ठांकन, अंकन
Endorsed.—पृष्ठांकित, अंकित
Endowment.—धर्मस्व
Engagements.—वचन-बन्ध
Engineering.—यन्त्र-शास्त्र
Enterprise.—उद्यम
Entitled.—हक होना
Entrust.—न्यस्त, सौंपना
Entry.—प्रविष्टि, दाखला
Equality.—समता

Equal protection of laws.—विधियों का समान संरक्षण
Escheat.—राजगामी
Establishment.—स्थापना, संस्थापन, स्थापन करना
Estates.—संपदा
Estimates.—आंक, प्राक्कलन
Evidence.—साक्ष्य
Excess profit.—अतिरिक्त लाभ
Exclude.—अपवर्जन करना
Exclusion.—अपवर्जन
Exclusive jurisdiction.—अनन्य क्षेत्राधिकार
Executive.—कार्यपालिका
Executive power.—कार्यपालिका-शक्ति
Exempt.—मुक्त
Exercise.—प्रयोग, अनुष्ठान
Ex-officio.—पदेन
Expenditure.—व्यय
Explanation.—व्याख्या, स्पष्टीकरण
Explosives.—विस्फोटक
Export.—निर्यात
Extend.—विस्तार
External Affairs.—वैदेशिक कार्य
Extradition.—प्रत्यर्पण, राज्यक्षेत्रातीत वर्तन
Extra territorial operations.—राज्य-क्षेत्रातीत प्रवर्तन

F

Factory.—कारखाना
Faith.—धर्म, श्रद्धा
Fare.—भाड़ा, किराया
Federal Court.—फेडरल न्यायालय
Fees.—देय, फीस
Finance.—वित्त
Finance bill.—वित्त-विधेयक
Finance Commission.—वित्तायोग
Financial.—वित्तीय
Financial obligation.—वित्तीय भार
Financial statement.—वित्तीय विवरण
Fine.—अर्थ-दण्ड, जुर्माना
Fishery.—मीन-क्षेत्र, मीन-पण्णी
Forbid.—निषेध
Forbidden.—निषिद्ध
Forces.—बल
Foreign Affairs.—विदेशीय कार्य
Foreign exchange.—विदेशीय विनिमय
Form.—रूप, प्रपत्र, फारम
Formula.—सूत्र
Formulated.—सूत्रित
For the time being.—तत्समय
Freedom.—स्वतन्त्रता, आजादी, स्वातन्त्र्य
Freights.—वस्तु भाड़ा
Frontiers.—सीमान्त
Function.—कृत्य
Function, administrative.—प्रशासनीय कृत्य
Fund.—निधि
Fund, sinking.—निक्षेप-निधि
Future market.—वायदा बाजार

G

Gambling.—द्यूत, जुआ
Gazette.—सूचना-पत्र, गजट
General election.—साधारण निर्वाचन
Govern.—शासन करना
Governance.—शासन
Government.—सरकार, शासन
Government of a State.—राज्य की सरकार
Government of India.—भारत-सरकार
Governor.—राज्यपाल
Grant.—अनुदान
Grant-in-aid.—सहायक अनुदान
Gratuity.—उपदान
Guarantee.—प्रत्याभूति
Guardian.—संरक्षक
Guidance.—मार्ग-प्रदर्शन

H

Habeas Corpus.—बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Handicrafts.—हस्तशिल्प, दस्तकारी

Hazardous.—संकटमय
Headman.—मुखिया
High Court.—उच्च-न्यायालय
Honorarium.—मानदेय
House.—सदन
House of People.—लोक-सभा

I

Illegal.—अवैध
Illegal practice.—अवैधाचरण
Immunity.—उन्मुक्ति
Impeachment.—महाभियोग
Implementing.—परिपालन
Impose.—आरोपण, लगाना
Imprisonment.—कारावास, कैद
Improvement trust.—सुधार-प्रन्यास
Incapacity.—असमर्थता
Incidental.—प्रासंगिक
Incompetency.—अक्षमता
Incompetent.—अक्षम
Incorporation.—निगमन
Incumbent of an office.—पदधारी
Indebtedness.—ऋणग्रस्तता
Industry.—उद्योग
Ineligible.—अपात्र
Ineligibility.—अपात्रता
Infants.—शिशु
Infectious.—सांक्रामिक
Influence.—प्रभाव
Influence undue.—अयुक्त प्रभाव
Inheritance.—दाय
Initiate.—उपक्रमण
Injury.—क्षति
Inland waterways.—अन्तर्देशीय जलपथ
Inoperative.—अप्रवृत्त
Inquiry.—परिप्रश्न, जाँच
Insolvency.—दिवाला
Inspection.—पर्यवेक्षण
Institution.—संस्था
Instruction.—शिक्षा, अनुदेश, हिदायतें
Instrument.—लिखत
Insurance.—बीमा
Intercourse.—समागम, वृद्धि
Interest.—ब्याज, सूद
International.—अन्तर्राष्ट्रीय
Interpretation.—निर्वचन
Intestacy.—इच्छापत्रहीनत्व, निर्वसीयता
Intestate.—इच्छापत्रहीन, निर्वसीयता
Introduce.—पुरःस्थापन
Introduction.—पुरःस्थापना
Invalid.—अमान्य
Invalidity pensions.—असमर्थता-निवृत्ति-वेतन
Investigation.—अनुसंधान
Involve.—अन्तर्ग्रसन
Involved.—अन्तर्ग्रस्त
Irregularity.—अनियमिता
Issue.—वाद-पद

J

Joining time.—योगकाल
Joint family.—अविभक्त कुटुम्ब, अविभक्त परिवार
Judge.—न्यायाधीश
Judge, Additional.—अपर न्यायाधीश
Judge, extra.—अतिरिक्त न्यायाधीश
Judgment.—निर्णय
Judicial power.—न्यायिक शक्ति
Judicial proceeding.—न्यायिक कार्यवाही, न्यायिक कार्यरीति।
Judicial stamp.—न्यायिक मुद्रांक
Judiciary.—न्यायपालिका
Jurisdiction.—क्षेत्राधिकार
Justice, Chief.—मुख्य न्यायाधिपति

L

Labour.—श्रम
Labour Union.—श्रमिक-संघ
Land records.—भू-अभिलेख
Land revenue.—भू-राजस्व
Land tenures.—भू-धृति
Law.—विधि
Law of Nations.—राष्ट्रों की विधि
Legal.—विधि-सम्बन्धी, कानून-सम्बन्धी

Legislation.—विधान
Legislative power.—विधायिनी शक्ति
Legislative Assembly.—विधान-सभा
Legislative Council.—विधान-परिषद्
Legislature.—विधान-मंडल
Letters of credit.—प्रत्यय-पत्र
Levy.—आरोपण, उगाहना, उद्ग्रहण
Liability.—दायित्व
Libel.—अपमान-लेख
Liberty.—स्वाधीनता
Licences.—अनुज्ञप्ति, लाइसेंस
Lieutenant Governor.—उपराज्यपाल
Limitation.—परिसीमा
List.—सूची
List, concurrent.—समवर्त्ती सूची
List, State.—राज्य-सूची
List, Union.—संघ-सूची
Livelihood.—जीविका
Loans.—उधार
Local area. स्थानीय क्षेत्र
Local authorities.—स्थानीय प्राधिकारी
Local board.—स्थानीय मंडली, स्थानीय गण
Local body.—स्थानीय निकाय
Local Government.—स्थानीय शासन
Local Self-Government.—स्थानीय स्वशासन
Lock up.—बन्दीखाना
Lower House.—प्रथम सदन
Lunacy.—उन्माद
Lunatic.—उन्मत्त

M

Maintain.—पोषण, बनाए रखना
Maintenance.—पोषण
Major.—वयस्क
Majority.—बहुमत
Mandamus.—परमादेश
Manufacture.—निर्माण
Maritime shipping.—समुद्र-नौवहन
Maternity relief.—प्रसूति-सहायता, प्रसूति-साहाय्य
Member.—सदस्य
Memo.—ज्ञाप
Memorandum.—ज्ञापन
Memorial.—स्मारक
Mental deficiency.—मनोवैकल्य
Mental weakness.—मनोदौर्बल्य
Merchandise marks.—पण्य-चिह्न
Merchandise marine.—वणिक्-पोत
Message.—संदेश
Migration.—प्रव्रजन
Military.—सेना, सैनिक
Mind, unsound.—विकृत-चित्त
Mineral.—खनिज
Mineral resources.—खनिज-सम्पत्
Mining settlement.—खनिवसति
Minister.—मंत्री
Minor.—अवयस्क
Minority.—अल्पसंख्यक-वर्ग
Misbehaviour.—कदाचार
Modification.— रूप-भेद
Money.—धन
Money bill.—धन-विधेयक
Money-lender.—साहूकार
Money-lending.—साहूकारी
Morality.—सदाचार
Mortgage.—बन्धक
Motion.—प्रस्ताव
Motion for consideration.—विचारार्थ प्रस्ताव
Motion of confidence.—विश्वास-प्रस्ताव
Motion of no-confidence.—अविश्वास-प्रस्ताव
Municipal area.—नगर-क्षेत्र
Municipal Committee.—नगर-समिति
Municipal Corporation.—नगर-निगम
Municipality.—नगर-पालिका
Municipal tramways.— नगर-रथ्यायान, नगर ट्रामें

N

Nation.—राष्ट्र
National highways.—राष्ट्रीय राजपथ
Naturalisation.—देशीयकरण
Naval.—नौसेना-सम्बन्धी
Navigation.—नौ-परिवहन
Newspapers.—समाचारपत्र
Nominate.—नामनिर्देशन, मनोनयन
Notice.—सूचना, सूचनापत्र
Notice in writing.—लिखित सूचना
Notification.—अधिसूचना

O

Obligation.—आभार
Occupation.— उपजीविका, धन्धा
Octroi.—चुंगी
Offence.—अपराध
Office.—पद
Officer.—पदाधिकारी
Official residence.—पदावास
Opinion.—अभिप्राय, राय
Order.—आदेश, व्यवस्था
Order in council—परिषद्-आदेश
Order, standing.—स्थायी आदेश
Ordinance —अध्यादेश
Organization.—संघटन
Own.—स्वामी होना
Owner.—स्वामी
Ownership.—स्वामित्व

P

Pardon.—क्षमा
Parliament.—संसद्
Party.—पक्ष
Partnership.—भागिता
Pass.—पारण
Passed.—पारित, तीर्ण
Passport.—पारपत्र
Patents—एकस्व
Pay.—वेतन
Peace.—शान्ति
Pecuniary jurisdiction.—आर्थिक क्षेत्राधिकार
Penalty.—शास्ति
Pending.—लम्बित, लम्बमान
Pension.—निवृत्ति-वेतन
People.—लोक, जनता
Permission.—अनुज्ञा
Permit.—अनुज्ञा, परमिट
Perpetual succession.—शाश्वत उत्तराधिकार
Perquisite.—परिलब्धि
Person.—व्यक्ति
Personal law —स्वीय विधि
Petition.—याचिका, अर्जी
Piracy.—जल-दस्युता
Plead.—वकालत करना
Pleader.—वकील
Police.—आरक्षक
Police force.—आरक्षक-बल
Police station.—थाना
Policy of insurance.—बीमा-पत्र
Port quarantine.—पत्तन-निरोधा
Possession.—स्ववश, कब्जा
Posts.—पद, स्थान, जगह
Power.—शक्ति
Preamble.—प्रस्तावना
Preference.—अधिमान
Prejudice.—प्रतिकूल प्रभाव
Preside.—पीठासीन, अध्यासीन
President.—राष्ट्रपति
Presiding officer.—अधिष्ठाता
Preventive detention.—निवारक निरोध
Prime Minister.—प्रधान मंत्री
Prison.—कारावास, जेल
Prisoner.—काराबन्दी, कैदी
Privileges.—विशेषाधिकार
Procedure.—प्रक्रिया
Process.—आदेशिका

Proclamation.—उद्घोषणा
Proclamation of Emergency.—आपात की उद्घोषणा
Production.—उत्पादन
Profession.—वृत्ति , पेशा
Profit.—लाभ
Prohibited.—प्रतिषिद्ध
Prohibition.—प्रतिषेध
Prohibition writ of.—प्रतिषेध-लेख
Promissory note.—प्रामिसरी नोट, वचन-पत्र
Promulgate.—प्रख्यापन
Propagate.—प्रचार करना
Property.—सम्पत्ति , आस्ति , रिक्थ
Proportional representation.—अनुपाती प्रतिनिधित्व
Proposal.—प्रस्थापना
Prorogue.—सत्रावसान
Prosecution.—अभियोजना, अभियुक्ति
Provided.—परन्तु
Provident fund.—भविष्य निधि
Province.—प्रान्त
Provision.—उपबन्ध
Proxy.—प्रतिपत्री
Publication.—प्रकाशन
Public debt.—राष्ट्र-ऋण
Public demands.—सार्वजनिक अभियाचना, सरकारी अभियाचना
Public heatlth.—लोक-स्वास्थ्य
Public notification.—सार्वजनिक अधिसूचना, लोक अधिसूचना
Public Order.—सार्वजनिक व्यवस्था
Public Service Commission.—लोक-सेवायोग
blic Services.—लोक-सेवाएँ
Punish.—दंड देना
Purporting to be done.—कर्तुमभिप्रेत

Qualification.—अर्हता
Quarantine.—निरोधा
Question of law.—विधि-प्रश्न
Quorum.—गण-पूर्ति
Quo warranto.—अधिकार-पृच्छा

R

Railway—रेल
Ratification—अनुसमर्थन
Ratify.—अनुसमर्थन
Reading, first.—प्रथम पठन
Reading, second.—द्वितीय पठन
Reading, third.—तृतीय पठन
Receipt.—प्राप्ति
Receipt (paper).—पावती, रसीद
Recommend.—सिफारिश करना
Recommendation.—सिफारिश
Record.—अभिलेख
Record, court of.—अभिलेख-न्यायालय
Record of rights.—अधिकार अभिलेख
Recruitment.—भर्त्ती
Recurring.—आवर्त्तक
Redemption.—विमोचन
Redemption charges.—विमोचन-भार
Reference.—निर्देश
Reformatory.—सुधारालय
Refundable to.—लौटाई जानेवाली
Regional Commissioners.—प्रादेशिक आयुक्त
Regional Councils.—प्रादेशिक-परिषद्
Regional fund.—प्रादेशिक निधि
Register.—पंजी
Registered.—पंजीबद्ध, नौंदना, निबद्ध
Registration.—पंजीयन, पंजीबन्धन, निबन्धन
Regulate.—विनियमन
Regulation.—विनियम
Relevancy.—सुसंगति
Relevant.—सुसंगत
Remedy.—उपचार

Reminder.—अनुस्मारक
Remission.—परिहार
Removal.—हटाना
Remuneration.—पारिश्रमिक
Rent.—भाटक, लगान
Repeal.—निरसन
Report.—प्रतिवेदन
Representation.—प्रतिनिधित्व
Representative.—प्रतिनिधि
Reprieve.—प्रविलम्बन
Repugnance.—विरोध
Repugnancy.—विरोध
Repugnant.—विरुद्ध
Requisition.—अधिग्रहण
Research.—गवेषणा, शोधन
Reservation.—रक्षण
Reserved forest.—रक्षित वन
Resignation.—पदत्याग
Resolution.—संकल्प
Respite.—विराम
Restriction.—निर्बन्धन
Retire.—निवृत्त होना
Retirement.—निवृत्ति
Revenue.—राजस्व, आगम
Review.—पुनर्विलोकन
Revision.—पुनरीक्षण
Revoke.—प्रतिसंहरण
Reward.—पारितोषिक
Rights.—अधिकार
Rule.—नियम
Rule of the road.—पथ-नियम
Ruler.—शासक

S

Safeguard.—रक्षा-कवच, परित्राण
Salary.—वेतन
Sale.—विक्रय
Sanction.—मंजूरी
Sanction, previous.—पूर्व मंजूरी
Savings.—व्यावृत्ति
Schedule.—अनुसूची
Scheduled area.—अनुसूचित क्षेत्र
Scheduled caste.—अनुसूचित जाति
Scheduled tribes.—अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित आदिम जाति
Seal.—मुद्रा
Seats.—स्थान
Sections.—विभाग
Security.—प्रतिभूति
Sentence.—दंडादेश
Service.—सेवा
Service charges.—सेवा-भार
Session.—सत्र
Share.—अंश
Sheriff.—शेरीफ
Single transferable vote.—एकल संक्रमणीय मत
Sinking fund.—निक्षेप-निधि
Sitting.—उपवेशन, बैठक
Slander.—अपमान-वचन
Social custom.—सामाजिक रूढ़ि
Social insurance.—सामाजिक बीमा
Social service.—सामाजिक सेवा
Sovereign.—प्रभु
Sovereign Democratic Republic.—संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
Sovereignty.—प्रभुता
Speaker.—अध्यक्ष
Speech, freedom of.—वाक् स्वातंत्र्य
Staff.—कर्मचारीवृन्द
Stamp duties.—मुद्रांक-शुल्क
Standing orders.—स्थायी आदेश
State.—राज्य
State funds.—राज्य-निधि
Stock exchange.—श्रेष्ठि-चत्वर
Sub-division.—उपविभाग
Subject.—अधीन, विषय
Subject matter.—वाद-विषय
Subordinate officer.—अधीन अधिकारी

Succession.—उत्तराधिकार
Successor.—उत्तराधिकारी
Sue.—व्यवहार लाना
Suffrage.—मताधिकार
Suit, Civil—व्यवहार-वाद
Summon.—आह्वान
Superintendence.—अधीक्षण
Superintendent.—अधीक्षक
Supplementary.—अनुपूरक
Supplementary grant.—अनुपूरक अनुदान
Supreme Command.—सर्वोच्च समादेश
Supreme Court.—उच्चतम न्यायालय
Suspend.—निलम्बन
Suspension.—निलम्बन

T

Taxes.—कर
Tax, calling.—आजीविका-कर
Tax, capitation,—प्रतिव्यक्ति कर
Tax, corporation.—निगम-कर
Tax, employment.—नौकरी-कर
Tax, entertainment.—प्रमोद-कर
Tax, export.—निर्यात-कर
Tax, profession.—वृत्ति-कर
Tax, income.—आय-कर
Tax, sales.—विक्रय-कर
Tax, terminal.—सीमा-कर
Tax, trades,—व्यापार-कर
Technical training.—शिल्पी प्रशिक्षण
Tenant.—किसान
Tender, legal.—विधि-मान्य
Tenure.—पदावधि
Term.—निबन्धन
Territorial charges.—प्रादेशिक भार
Territorial jurisdiction.—प्रादेशिक क्षेत्राधिकार
Territorial waters.—जल-प्रांगण
Territory.—राज्य-क्षेत्र
Tidal waters.—वेला-जल, ज्वार-जल
Title.—हक
Tolls.—पथ-कर
Trade.—व्यापार
Trade-marks.—व्यापार-चिह्न
Trade Union.—कार्मिक-संघ, व्यापार संघ
Traffic.—यातायात
Traffic in human beings.—मानव-पणन
Training.—प्रशिक्षण
Tram-car.—रथ्यायान
Tramway.—ट्राम, ट्रामगाड़ी
Tranquillity.—प्रशान्ति
Transfer.—स्थानांतरण, हस्तान्तरण
Transition.—संक्रमण
Transport.—परिवहन
Transportation.—निर्वासन
Treasure-troves.—निखात-निधि
Treaty.—सन्धि
Tribal area.—जनजाति-क्षेत्र
Tribe.—जन-जाति
tribunal.—न्यायाधिकरण
Triennial.—त्रैवार्षिक
Trust.—न्यास

U

Undischarged.—अनुन्मुक्त
Unemployment.—बेकारी
Union.—संघ
Unit.—एकक
Unsoundness of mind.—चित्त-विकृति

V

Vacancies.—रिक्त स्थान
Vacancy.—रिक्ति, रिक्तता
Vagrancy.—आहिंडन, आवारागर्दी
Validity.—मान्यता

Vice President.—उपराष्ट्रपति
Village Councils.—ग्राम-परिषद्
Violation.—अतिक्रमण
Visas.—दृष्टांक, वीसा
Vocation.—व्यवसाय
Void.—शून्य
Vote.—मत
Vote, casting—निर्णायक मत
Voter—मतदाता, वोट-दाता
Votes on account.—लेखानुदान, गणनानुदान
Votes of credit.—प्रत्ययानुदान

W

Wage.—मजूरी
Wage, living.—निर्वाह-मजूरी
Warrant.—अधिपत्र
Will.—इच्छा-पत्र, विल, वसीयत
Winding up.—समापन
Writ.—लेख